

बृहत् हिन्दी कोश

शब्दसंक्या १३६०००

धम्पादक कालिका प्रसाद

राजवछम सहाय

मुक्रन्दीलाल थीवास्तव

धनारस ज्ञानमण्डल लिमिटेह

मृत्य १५)

प्रथम संस्करण, रथयात्रा, संवत् २००९ द्विधीय संस्करण, रामनवमी, संवत् २०१३

द्वितीय संस्करणकी भूमिका +

'युद्द हिन्दी कोस का यह द्विशीय संस्करण पान्कों के सामने प्रश्तुत करनेमें इमें हार्विक मसम्रता होती हैं। इसके प्रथम संस्करणका जैसा स्वागत-सरकार हिन्दी जगद्दमें हुआ है, उससे हमें यथेष्ट कक मिका है और अब इम तीन-धार वर्षके मीतर ही द्विगुणित बस्ताइसे हसका वृस्ता संस्करण सेकर हिन्दी-अमियोंकी सेवाम उपस्थित हा रह हैं। इसमें आवह्यक संशोधन, परिवर्षन करनमें इसने अपनी औरस मरसक कोई कोर उसर नहीं होने दी है, दिर मी इम नहीं कह सकते कि इस इस प्रयासमें कहाँतक सफल हो सके हैं। विशेकसील पाठक ही इसके वास्तिक निर्णायक हो सकते हैं, अतः उन्होंके उपर इसके गुरवांकनका भार सोह देवा इसारे किए अकम होगा।

प्रथम सस्करणको ही तरह इस काकृष्टिम भी मत्ययोंसे वने संस्कृतके तक्य मूरु सरदसे प्रथक् रसे गये हैं किन्दु अन्य मायाओं के शब्द वहाँ प्राय्यों के मिछनेपर उनके मूरु रूपम कोई परिवर्षन नहीं होता, मूछ सन्दर्क साथ रख विये गये हैं। इसी तरह बिन समस्त पहाँमें सम्बिके कारण विकार हो जाता है वे मूल्शन्यत प्रयक रखे गये हैं। इसका कारण पह है कि सो कोग सन्यिके नियमोंसे कपरिविध हैं उन्हें उनका रूप पहचाननमें किटिगाई हो सक्यों है। इसी सिद्धान्यके अनुसार हमन वितन ही समस्त पद वो पहले पूछसददके साथ रख गये थे, इस संस्करणमें प्रयक्त रखे हैं जिससे संस्कृत न जाननेवासोंके वियु भी उन्हें पहचानन या हुँ होर्में क्युविया न हो।

कसी-क्रमी समस्य पड्का क्य सरसरी वारस देखनेपर भाष-माफ समसमें नहीं भाषा, असः क्षय प्रसा कोड् प्रान्त अपने स्थानपर अर्थात् क्षममें न सिल, स्य पाटकोंको निराम हानेके समाय एक बार यह विकार कर सनेका प्रपरन करना चाहिये कि यह किसी क्रम छादम सो नहीं बना है। ऐसा करनेसे उचित स्थानपर उक्त पादकों हैंक निकारममें कुछ मी किटनाई न होगी। खालार पावन्त, अराम, कमानेस, दरकार, सुविधा, गटसाक, पसोपेग, सकरपाला आदि ऐस ही शक्त हैं लो क्षममें न निलकर इन पारगेंसे साम पेरा पहेंगे — सा, पा, कम, इन, इन, सु, सु, यह समा स्वार हर।

ममूचा कीता फिरस बोहराया गया है बार गय-प्यकी किसनी हां अन्य पुरसारें पड-पड़कर पूटे हुए सम्बी तथा अयोंका संकक्षन किया गया है। ऐसे हजारी तथ्य मूख मागरें ही समाधिष्ट कर विश्व गये हैं किन्तु को वहीं गई। विशे जा मके वे परिविष्ट संग्या में में एये गये हैं। इसके सिचा इस संस्कृत्यकी उपयोगिता बहानकी दिस्स इमम विभिन्न किया के तथा की तक्षी हैं। इसके सिचा इस संस्कृत्यकी उपयोगिता बहानकी दिस इमम विभिन्न किया की प्रमाणाम है दिये हैं जिसम किन्त काम अम्बिक्त मसीत होनेवाके दावहाँ उदाहरण भी प्रधारपाम इससनमें जिल्लामु पाटकोंका आसाणी हो।

इसी वरह परितिता होमें दिव हुए आंग्रजीके पारिभाषिक सब्दोंका वा संगता दायी पता या गाँ गाँ है। प्रथम संस्करणमें यह परिशिष्ट कुछ ३६ पूर्वीमें समास हुआ था आँर अब इसका विस्ताद ५९ पूर्वीता हो गया है। पहिल्ल क्षममा ३३०० पारिमापिट साहर्गीके पत्रीय दिश गय थे, अब इनडी संतवा कोई ५६५० सक पहुँच गर्वी है। इसादे परिणाम

इस संस्ट्ररणकी वक भीर महत्त्वत्य विदोधता यह है कि इसमें साहित्य, राजनीति कादि विभिन्न क्षेत्रोके कतित्वय मसिद्ध व्यक्तियों—महरूजी, गोलक, पूर्वी बेसस्ट, विक्षाक, स्टाहिज, जानशैतपीय प्रमु, वैकिमपेद, रकार, हामर, टास्टबाय कादि—के नाम और उनका गंशिस वरिषय भी द दिया गया है। आजा है, इसस हमारे कासका सहायता केनेवाक

हस प्रकार इस मंदररणमें कुल मिलाकर दो भी पूर्वोकी युद्धि हा गयी है भीर कार संगवा भी 1 लारा २६ इज्ञारम घडकर सगमग 1 खाख ३६ इजार हो गयी है, किर भी प्रकाराकेंका इरादा इसके मृत्यमें पृद्धि करकड़ा गर्ही था 1 किन्दु कागजरे दाममें तथा जिस्ट् सन्दीकी चीजींके मृत्यमें भी वृद्धि हो सामेके बारण उगके किए इसका मृत्य बराना आवश्यक हो गया। इसका उन्हें साम्वीकि फोद है।

हम संस्करणका मुक चोपनेमें हमारे सहकार। तथा सहयागी भी भीसकर सुक्त तथा भीमारकरूद्य नुक्तन विशय परिभ्रम किया है इसके किए हम कर्वे इत्यमें पन्यवाद रते हैं।

रामनवर्मी, में पद् २०१३

किन्होंके चारक धिरोप साम बटा सर्वेत ।

मुकुन्दीलाङ भीवास्तव

प्रथम सस्करणकी भूमिका

हस कोसके निर्माणका काय सामसे कहैं वर्ष पहल आरम्म हुना या। हिंदीमें यथिय नागरी प्रचारिणी समाका वहा कोश "हिंदी शब्दसागर" मिकल कुका था, फिर भी महाध होनेके कारण पक तो वह सर्वसाधारणके किए उपलब्ध गर्ही हो सकता था; तूसरे, उसकी सभी प्रतियाँ प्रकासित होनेके कुछ हो वर्षोंके भीतर समाम हो जुड़ी थीं और उसका तूसरा संस्करण निवकनेत्री कोई संभावना म थी। इसके सिवा यह भी अनुभव किया गया कि 'बादरागपर'का निर्माण किस समय किया गया या तबस हिंदीमें कितन हा नवेश्मय शब्दोंका समावेश होता रहा है और संस्कृतके अधिकाधिक शब्दोंके प्रयोगको और भी ग्रायानादी करियों तथा सम्य साहित्यकाँकी प्रयृत्ति वत्तरी जा रही है। इन सब बातोंको प्यानमें रलते हुए दिंदीके एसे नये कोसकी सावद्यकता प्रतीत हुई थो आकारश्वकारमें 'सादसागर" जैसा मारी सरकार म होते हुए भी अपने सावमें परिपूर्ण पूर्व सर्वीपयोगी हो जिसमें दिंदीमें प्रयुक्त किये गये या प्रयुक्त हो सकतेवाके प्रायः समी सब्द और उनसे वन मुहायरे आदि का प्रकाशन इसी परिकरणाका परिणास है।

इसमें छगमग । खाल २६ इसार सबद आये हैं सितने हिंदीके अन्य किसी सी कोशमें सिक्षिय नहीं किये जा सके हैं।

प्रश्ययांत शहर

कार्यार्टम होनके याह शहरोंके खुनाव भीर उसके रखनेके वगर्मे किंचित परिवर्धन करना वदा । पहछे प्रत्यमें के योगसे यमनेवाछे ज्ञाब्द भी समस्त पर्दोकी तरह मूख शब्दके साथ ही रसे गये थे (यह रूप 'मिलनसार' शब्दमें देखा का सबसा है जो भूरुसे पूर्व रूपमें ही रह गया है,) भीर प्रस्पयांत तथा समस्त पढ़ीमें संधि बादिके कारण होनेवाले विकारोंकी ओर संयेत भर कर दिया गया था । यह पहाति आकार छोटा स्थानेके विचारस तो टीक थी. पर इसम पाटकाँको कोशका उपयाग करनेमें असुविधा और शहरींका रूप समझनमें अस होनेकी समावना देखकर संस्कृतके सारे प्रत्यवांत सक्त अलग रहे गय और अन्य आपाओंके शस्त्रोंके साथ केएक पेसे प्रत्यव रहन दिसे गये जिनके मिसनपर शब्दके मुख रूपमें कोई परिवतन नहीं होता। (ता' और 'रब' प्रत्यवोंमे यमनेवासे शब्द कम की दिये गये हैं।) मस्कृतके प्रत्ययांत शब्दोंको अक्तर रतनेका एक कारण और या-समास-पद्धतिका प्रयोग । मूस और प्रत्यपांत कार्नीम वसे हुए समन्त पद भगर साध-माथ दिवे बाते तो उन्हें मममें रखने और पाटकें हो उन्हें हुँदनमें कम दिवत म होती। भी मोनियर विकियन्समें अपन कोशर्मे प्रत्यांत शब्द प्रायः सूम शब्दक माथ ही रसे हैं और बतार प्रत्यवांत हारतसे बननेवास समासोंकी संद्या अधिक नहीं रही है वी उग्हें मूक शब्दम वन हुए समासींक मिलसिएमें ही रात्र विवार्ट । भेंग्रहार्में एक ही भाकारके तरह तरहके टाइप होनेके कारण दानों प्रकारके शास्त्रोंमें अंतर करना आमान ह, पर दुर्मान्यपत्त इस द्विवालोंके किए बह विश्वति बर्मा नहीं आयी है।

समस्त पर्

समाम-बद्दतिका सद्दारा धते हुए भी सारे समस्त पर मूट शब्दक साथ द्वी नहीं रखे गर है। जित्र समस्त पर्दोमें संचिक्ने कारण विकार हुआ है व मूट शब्दम पुरुष्ट्रारी सर्व है— समान विकारवाले समन्त पद अस्वयंत्रक होनेवर स्वतंत्र क्यमें और बहुसंत्रक होनेवर विकृत वृर्षेत्र हवतंत्र दारव्हे रूपमें रटकर उत्तरपद माथ रार दिये गय हैं। इस प्रकार मुम्स काव्हे साथ केवल जसे ममस्त पद मिछी जिनके रूपमें कोइ विकार नहीं हुआ है। विकारवाले काद् इस कारण भारता कर दिय गय हैं कि ऐसा न व्यतंत्रद सिक्टि क्योगों अपिरेकित व्यक्तियोंको समास वनातंत्रमें दिवस होती—'विद्वस् 'साइसं 'कार' ओव्हेम 'विद्वस् केम प्रमाया, पह ममस्ता उनाहे किन स्टब्स मो होता।

समस्त पदों श्रीर मुद्दावरीं में सूछ ताबद्दे छिए हैता (—)का प्रधान किया गया है श्रीर जहाँ समस्त पदसे पुनः समास वनानेको जावद्यकता पदी है यहाँ मध्यवर्ती पदके छिए सूच्य (०) रूप दिया गया है। 'कष्ट' हाबद्देश यने हुए 'कछदकाक' पर प्रधान देनेपर बहु निवस स्पष्ट हो जावसा। मुहावरों में सूच हाबद्दे रूपमें परिवर्तन हानेपर या ता पूरा सब्द दे दिया गया है या परिवर्तन संदेत कर दिया गया है।

इसर आपामांके रारदेंकि साथ भी समास-पद्धित वरती गर्वा है, पर यह पद्धित भंभी
वर्षीतक मामित रमा गर्थी इ त्राह्मिक पूर्ण या उत्तरपद्दका रूप इतना मही विमाद है कि
वह सपद समाराम न का मदे । उदाहमणके रूपम तिरमक्ष और विराय सावद संस्थित ।
पित्रण पूर्ण और उत्तर—दानी प्रदेशिक कृप मामानीम समाराम भा काला है, पर कुमरें में
वत्तरपद्दका रूप बतना रुपण मही है हसकिए 'विरमक' तो हमने समस्त पद्धि रुपोर स्वर्त में रुपोर 'तिरमक' स्वर्त मामान पद्धि रुपोर स्वर्त में रुपोर 'तिरमक' स्वर्त मामान भा कि ।
भीर 'तिरपक' स्वर्त म्यमें । अधित हो पह हुआ होता कि 'विराय समारत भीर स्वर्त म्यान ।
भागों रुपोर्म रहा गया गया होता, पर कारतपद्धि भागों स्वर्त मामी है लिक का कह करें। विष्कृत का कि समस्त पद्ध मामान मिकनेया कम्मी भीर स्वर्तक कर करें। विष्कृत का कि समस्त पद्ध समान मिकनेया कम्मी भीर स्वर्त का प्रदेश है सामान है, इसलिए इसमें इस सरक्ष प्रस्क होना स्वामाधिक है। बासा है वह प्रवृति विद्यानीको पसंद कायोगी।

यिभिक्त भाषाओं के समझ्य झरहों के अर्थ साथ ही रख गये हैं, जाश-संतर्ध अंतर साथा-परिवायक विद्व हारा स्पष्ट कर दिया गया है पर अगर देने शक्सिक भाषाओं के समास बनाने पहें हैं सो वे असग-असग रखंगने हैं। बीचर्स नानेवा के समस्य पहों के मुहाबर वेतम म न रस्तकर ममस्य पहों के साथ ही कोड़ों के कहर रच्न दिये गये हैं। सुविधाके विचारसे हमन पंचम वक्तक स्वामवर अमुस्तारका प्रयोग किया है और अनुस्तार तथा दिशां गुरू वर्ष आरंभी रहे गये हैं। मूं के बाद 'म' आरंपर 'म' आरंपर 'म' आरं 'म' का स्वास स्वास प्रयोग किया हमा प्रयोग किया हमा हो।

ह्य रहने दिना शया है। इान्द्रोंका मूल क्य

संस्कृतके दारुष प्रथमा विसारिस सुण्य दारु हिंगीम आत है और कोशोंसे दनका यहाँ रूप दिया जाना है। इसने इस स्पर्क साथ ही शारुका सुरू कुप भी हे दिया है जिससे पाठक सारुके सुक रूपमें परिचय प्राप्त कर सर्के और उन्हें समास वभागे या समस्य पदका रूप समझगमें सहस्थियत हो। मुक रूप न देनेपर समस्य पदका रूप सारका हा शामकी संभावना रहती है। वराहरणार्थ वह केशोंसे 'अभिकारी' शास्त्रके साथ भाषा-चिक्र हिंगे होता दिवा मा दिया र तसका सुरू रूप अधिकारिय नहीं दिवा गया है। परिचार कर अधिकारिय नहीं दिवा गया है। परिचार स्थाप स्थाप होता है को से साथ स्थाप स

भरवीन्त्रास्तीके सब्दोंका मूम क्य सर्पत्र दिलकानेकी बसरद नहीं जान पदी, ये बहुत इस उचारणके ही अनुसार रखे गये हैं—'हमेसा' न देकर सिर्फ 'हमेंसा दिगा गया है। संस्कृतके सक्तावा सम्म भाषाओं के शब्दों के साम कोग्रोंके अंदर भाषा हुआ अंता उनके वैकरियक स्पन्न योजक है। 'कौंपरी' के साम कोग्रोंमें 'की' रखनेका समिप्राय यह है कि कौंपरी' और 'कौंपरी दोनों रूप प्रयोगमें आहे हैं।

कोशकी प्रामाणिकता

इस कोलकी बपयोगिता या उसकी 'उच्यसता' णादिके संबंधमें कुछ कहनेका हमें स्थिकार नहीं , यह इस इसके गुजाराही प्रयोगकर्तामाँपर ही छोव पेते हैं। हाँ, इतना सवस्य इस वह देना चाहते हैं कि अपनी ओरसे इसने इसे ''प्रामाणिक'' और प्यासंस्थ परिपूण बनानेकी वाकिसर पेटा की है। तुटियाँ हो इससे हुई होंगी ही और हुई मी हैं, क्योंकि इस सर्वज्ञ एवं प्रमाददीन यननेका दावा नहीं करतः। वस्तुतः प्रेसके मृत्यां, हिष्टेष्ट्रेप, ससावधानी या इसारे कहानके करण इसने वहें कोशां, विशेषकर उस हास्रतम स्थ कि प्रतुपके समय इसमें हमें कुछ शीमता करनी पड़ी हैं, भूकोंका न रहना ही आध्येका विषय होता। उत्ताहरणार्यं, 'अवस्थाण कावर्यं आपने हमें हम सर्वज्ञ एवं होते से अध्येका विषय होता। उत्ताहरणार्यं, 'अवस्थाण कावर्यं आपने महीं कहाँन टपक पड़ा ही और 'सहसावारं' यम गया है, गाँस हम सर्वज्ञ हमें साव्य 'सहसावें'का कार्यं, को सवर्षक साथ ही निकार दिया यमा था, संयद्ध हो गया है। कहाँ कहीं क्रम कीर गिरामसंवधी मृहं भी देख पढ़ती हैं। इस तरहकी कीर भी कई मृत्यं होंगी को जानातीसे स्पष्ट हो कार्यागी। काशा है, पाटक उनका मुचार कर केनेकी ह्या करेंगे और हो सका तो हम भी हादिष्ट्रय क्यांकर अन्ते हम एवं होंगे और हो सका तो हम भी हादिष्ट्रय क्यांकर अन्ते हम एवं होंगे और हो सका तो हम भी हादिष्ट्रय क्यांकर अन्ते हम एवं होंगे।

च्युत्पत्ति क्यों नहीं ?

प्युत्पत्ति कोशका एक महावर्ष्ण क्षेत्र है, फिर भी हमें अपना कोश हस अंगसे विश्वत स्वाम पढ़ा है। शब्दसागर मादि दो-एक वह कोशोंने कुछ शब्दोंकी प्युत्पत्ति पा सुक रूप इनेका प्रयत्ति क्षित स्वाम कहना पहता है कि इसमें उन्हें प्रति उनका पह प्रयन्न इसावनीय भी है पर खेदके साथ कहना पहता है कि इसमें उन्हें पूरी प्रपत्नता गर्दी मिक्षी है और कहीं-कहीं तो वह ऐसी उद्वर्दींग है कि सससे पाठक गुमराह भी हा जा सकते हैं। उत्वाहाणके कपने करोरा, कागद, गाजर, गेह, ठार, होम आदि कुछ शावर किये मा सकते हैं। य समी शावर कम्य शब्दोंने पिहृत रूप माना गर्दे हैं, पर खावस्थाय आदि कोश दिस्तीर पत्नी विश्वत रूप माना गर्दे हैं, पर खावस्थाय आदि कोश दिस्तीर पत्नी विश्वत है। यो समी विश्वत कार्यों के साथ है जीर अपने वतमान क्ष्मोंमें हो संस्कृतके प्रयोग स्वाम है जिस स्वाम कार्यों से हो संस्कृतके प्राप्ति कार्यों कार्या हो गाया है कींसा-कोशस सबका बनना ठीक नहीं जान पहला 'स्वाम स्वाम कर प्रति कीर 'कारात'का हो गया है कींसा-कोशस सबका बनना ठीक नहीं जान पहला 'स्वाम' साम पाद है माना गया है, पावर'का हात्र रूप 'सूंजन' साम गया है, पावर' 'स्वाम कर प्रतप साम विग्वत पा हुआ सामा गया है। 'कीशशीकरण की स्युत्पत्ति हो प्रयत्न कर कर से समसमें नहीं आपी। इस कतियय उत्वाहरवींसे यह असी गाँति स्वष्ट दा जाता है कि यह काय विज्ञा कटिन और समसाप्त है।

दाव्योंका स्याकरण

सद्दोंका सद या व्याक्त हिंदीन अभी विवादण विषय बमा ही हुआ ह । एक ही सद एक प्रतिक्र स्त्रीतिक्रामें स्वृत्त करता है और बृत्तमत पुर्तिगमें, और विधित्रता सा यह दे कि दानों ही स्वात गुरू मान जात है। उदाहरणार्थ गागर्थ त्रचारिणी समावान 'त्रीतर' प्रतिहरें परिहर के बहु का दूरी हमस वर्षों मानत है आर अन्य यहुत्तस उत्तर प्रतिक्र में हिंदी हम वर्षों कर सह का दूरी हमस वर्षों स्वात के अनुमार दोगों रूप दिव हैं और क्वर्ड न्वर्टी व्याप के अनुमार दोगों रूप दिव हैं और क्वर्ड न्वर्टी व्याप अपन अपनि सहस् वर्षों कर सहीं साम विधा अपना है।

संस्कृतमें तो पुंकिंग हैं, पर दिंशीमें ये झीसिंगमें प्रयुक्त हाते हैं, इसकिए हमाने भी पेस शब्दांके र्मवंपमें हिंबीका ही प्राधान्य माना है। यह भंतर संस्कृतक पारकीका कर गरक सकता है पर इसार किए और कोड साग नहीं था।

द्यान्त्रांका खुनाय कोराका कलेवर बहुत शपिक म बहुने हेन हुए इस सर्वोच्योगी बमानेके विचारस हमने अधिकम अधिक दावर और अर्थ दकर गागरमें सागर भरतकी बक्ति श्वितार्थ करनका प्रयास किया है। शब्दों के शुनायमें इसमें यहुमचन्ति या अस्पप्रचलित होमेका भद्र नहीं श्ला है और इसमें एसे भी बहुतमें सब्द और वर्ष देख वहेंगे जा अब केवल बोबाकी लोगा बहाते है। हमारा रायाल है कि कोशोंने जसे शब्दोंका समावश हाना आवश्यक है। आम जब कि अमक्तित दाददतक हैंद-हुँद कर प्रयोगमें साथ काने सग हैं, उपसर्गों और प्राययोंके योगसे नव नमें प्राव्य समाप का रहे हैं और 'नहिक' (मैगडिक) और 'सहिक' (भौजिटिन) जैसे सक्त मममान वीरपर गरकर काशों में रख जा रह है और उम्हें चलामेका प्रवास किया का रहा है तम उत्तराधिकारमें प्राप्त दारमें और अधीका देवस अस्प्राम्बद्धित या अमब्बित हानके कारण वहिष्कार करना उचित नहीं जान पहता । कोझींमें बन रहनेपर ऐसे शब्द और धर्म भी चीरे चीरे प्रयासमें आने सरोंगे । हाँ, जिन शब्दोंकी रचना और जन्मास्य बहुत निरुष्ट हा और सी हिंदीकी प्रवृत्तिके अनुकुछ स पृष्ठते हों उसका त्यास कर दर्गमें काई हुने नहीं है।

अंतम परिशिष्टके क्याम कुछ हुटे हुए सहद और सर्थ, साक्षणिक सहदीकी स्वापना भीर शजनीति, अर्थशास्त्र, विभाग आदिमें प्रशुक्त दोनैपास करामग ३२ . अंग्रेजांके पारिभाविक शब्द हिंदी पर्यायके साथ से दिये गर्व हैं जिससे कोसकी उपयोगिता बहुत

धर गयी है।

इस कोशके विमाणका काथ "आज"के प्रचान सहायक संवादक भी कासिकामसाहत भारीम किया था और रोगामल हानेके पूर्णतक वड़ी काम बरावर करते रहे, पर भारा व हमका वतथान रूप न्यानके किए इस संसारमें महीं के क्रियका हमें बार्दिक हुत्य है। आशा है, इसके प्रकाशासस उनकी स्वर्गस्य बारमाको अवस्य शांति सिखेगी।

भी बंदादेव विभागम य भ काली अरसेतक और भी शिवनाय यस य न मी क्रम दिमों एक इसके संपादनमें सहयोग किया था। भी मार्कडेप प्रदमस इसके अक्रममें विशेष और संवातनमें भी कहाँ सहावता मिकी है। अगर हमें इब सक्रमांका सहयोग न मिका

होता सो इसके प्रकासनमें दो-तीन वर्ष और छग बात ।

इसके संवादणमें हमें दिवी पाष्य-सागर, दिवी पाष्य-संग्रह, संस्कृत-इंगविका दिवसनरी ् मोनियर विकियम्स), संस्कृत वृंशिका विकासम् (साम शिवास कार्य), अमरकोप बावस्त्रस्, सारक्रम्यमुम (संस्कृत) बामिदस्त्रात सामा शिवास आवे), अमरकोप बावस्त्रस्, सारक्रम्यमुम (संस्कृत) बामिदस्तुसात सामा साहेगी, प्रस्तुसात, प्रवासन सारक्रोप (डा॰ स्थुवीर), सासमनाव्यकोस (सहुक सोहत्यायम) स विशेष सहायदा मिसी है। प्राइव इस इन कोलोंके संपादकों, उक्त सहयोगियों और इनके सर्विरिक जिन व्यक्तियोंसे क्रमें भागपक्ष कर्पमें सहावता मिस्री है क्रम सबका भाजार स्वीकार करते हैं।

अंतर्से सहत्रय विद्वार्णीसे हमारी प्रार्थमा है कि वे इस कोशकी भूटियाँ विकासकर भीर सरपरासर्व देकर इस ममुगुद्दीत करेंगे विसमें इसका दसरा संस्करण अधिक उपमोगी

प्रमाया जा सके।

सकेत सूची

#-पद्मम प्रयुक्त	(तिर•)विरस्कार-सूचक
†-स्थामिक	[तु•]-तुर्की
अ ०—अध्यय	वीनद्-वीनद्याक गिरि
[स] घरवी	दे•-देखिये
भ० कि०-भक्रमेक किया	(না•)বাবহ
(भप्र•)-भप्रचिकत	(ज्या•)-स्याध
समर०-जमरदेक (पृदाधन खासवर्मा)	प प्रायत, नामसी-कृत
सत्य - अस्यस्थाह, (श्रष्ठ क्यस्याह)	[पद•]-पदकवी
कृदिस्या-(वृंदायमछास्र वर्मा)	[पा•]-पासी
(शा०)-आधुविक	(पाराशरसं•)-पाराशारसंदिवा
(भायु॰), (धा॰ वे०)-भायुर्वेद	पु•-पुंकिंग
(१) - इत्यादि	(इ)-प्रराष
[इ॰], [इव॰]-इवरानी	[पुर्व •]-पुत्तगाळी
(उ०)-वदाहरण	म•-मत्यम
चप•−उपसर्ग	(प्रा•)-प्राचीन
(अपति•) अपनिपद्	
क्षति की कविताकी सुदी (रामनरेश क्रिपाडी)	[सा•]-फारसी
(का•)-कामृत	[फ्रॉ॰]-फ्रेंच
(कास•)कासंदकीय था कामशास्त्र	(र्व•)—र्वगासी =- 1 —र्वः
(की ०)—कीडिकप	[ब•]-वर्गी
(E+)-===q	(बहु०) (बहुव०)-बहुवचन
(ग॰)-गणित	वि-विदारी रस्माकर
(गी•)-गीवा	बुंदेस-पुंदेनजीं योसी
गीवा=-गातावडी, तुस्सी-कृत	(बू॰ मं॰) वृहत्सहिता
गुलाव-गुकाबराय-कृत जवरस	(बो) (बोल•)-बोल-बाल
माम•-मामगीत, रामनरेस विपाठी	(ती • वांद •)-वादसाहित्य
(मा)-मारम	(भाग•)मागवत
यमधम भागेव ब्रम्यावली	मायविक-मायविकास देव-कृत
(वि)-विप्रकारी	मू॰ मृतज-मृतजप्रधावका
पचीम -पत्तीसगई बोसी	भू० कि०-भूतकाकिक किया
ত্ত্ৰ - ভলমভাতা	(मनु•)-मनुन्यृति (मी•)-मीमौमा
(म) जरमन	(गु॰) (गुग॰), (गुगह॰)-गुगहमामोंमें प्रचार
जिद्गी जिद्गी मुसक्रापी-कन्द्रपाकास प्रभाकर	स्म -म्यानयमी (ब्र्यायमहाह बमा)
(४०)-प्रेन साहित्य	[यू]-यूनामी
(म्या•)-ज्यामिति	(बोग•)पागतान्त्र
(म्यो•)-म्योतिष	रपु -रपुराजनिंद-कृत रामस्वर्पपर
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

रतम०-रतमह्यारा राम • –रामचंद्रिका, केशवदास-कृत रामा • - नुष्पमीकृत रामचरित मानस रामो-पूर्णाराज रासा छछित--छरितस्थाम, मतिराम हत (কা+)-ভাহালিক 😺]—स्रदिव

(होक्)-काबप्रचकित (पा ०)--याश्य विक-विद्यापम कि ब्री--विशेषम खीकिंग

विचा = विचापित (ये०)-वेदांत (बं•)-पंदिक (णं •)-च्याप

(ध्या०)-ध्याकरण (शुक्र •)-सुकमीवि भेगर-पोलर, एक ओवसी [मं•]-संस्कृत स॰ कि -सस्मक किया

स , सर्वं • सर्वंशाम (सांतप•)-सांकपशाध्य (मा•)-साहित्य

शुंब , सुंदर -- सुंदरदास भुवान - मुवामचरित, मुद्दन इत स्॰, स्र स्रवास (स्की॰)-स्कीमत (बि॰)-दिवाँदी वोस बास मी•-मीलिंग

(स्मृति •)-स्मतिम व इजारीय - इजारीयसाद दिवेदी (इरि॰)-इरिवंशपुरान (वि+)-दिवासे प्रयुक्त अर्थ

[क्-ि]-हिंदी भाषाका शहर

बृहत् हिन्दी कोश

अ

स-देवनामरी भीर मंन्युत-दुर्दुंग्यो सन्य वर्णमालाओंका प्रदण स्प्रेर भीर स्वरण । स्वरण आराजलान वंदर्दे । स्वेननवर्गीता ज्वारय वस स्प्रुरक्षी स्वायताके निना नहीं है। स्प्रता स्मीलिप व स्व आरी वर्ण 'स्वरार व साथ बीले भीर स्वित्र बाते हैं।

संक−पु [मं] पिक्व छाप संस्थाका विक् (१ २,३ भारि)। सरण क्लिसर सर्वक, वाग टिठीना; वस सुद्रा का सोमदानिक निक्क भूपण भारकका एक याँ न या सर्गः। रूपस्का एक मन्तर हुक वैद्या देश आधार: बहा रेखा प्रकार मोड गांठ होडा स्थल स्थलो क्या वित्रपुदा आने देह* दफा बार पाप: अपराम: पर्वतः प्रकटी र्षेक्या। —करण-प्र विष्ठ कगानेकी कियाः —कार्- वामी भाविका निर्णायकः वह योका विसके हारने वा भीवनेसे हार ना जीव मान की कारी भी । —ग नित-पु॰ पंदमाओंका दिमान संख्याओंको जानने प्रणा माग बादि करनेकी विद्या । −शत नवि पक्तमें आया हुना। -तन्न-पु अक्छास पाटीगमित या बीजगणित । च्यार्थ-प देहपर सांप्रदाविक विक (ब्रास कक विद्युष्ट भारि) इपनामा छाप समनामा !- धारी (रिम्)-वि॰ इस्त च्या भारिक विद्य पारण करनेवाका । -पञ्च-प्रश्निक स्वयुद्ध मिलनेवाका कागज्ञ द्वकता टिक्ट स्ताम्य । -परिवर्तम-पु करक बन्छना अवसंद्रा शहरी रवरसे उवर शामा। -पसई-सी (हि०) > पन्धे । -पादमन-पुण्ड जन ।-पासि -पासिका-नी गाँद दारे कार्मिगन । -पाछी-मी॰ परिचारिकाः वेदिकाना मक बॅमडम्यः। आक्रियतः। --वादा-पुगरिक्तः। म्ब किया। ∼प्रण−तः शुक्तः। –श्रीध~तु० झुशकः गोरका माकार बनाना मलक्ष्मीम मनुष्यका वित्र अंतिम करना । -भाक (ज)-वि गाउमें केटा हुआ। बहुत निरणः -मास-पुमानियम् भेरतारः। -मानिका-र^क अंद्रमारू से^{न्}द्री मारू। – मुख्य-पुरुवादवका आर निक्र भाग दिसमें दोज-स्पर्ने कथानक दिवा उदना है। -गान्त-पु क्युविधया -व्याप-पु कर्नवीधशमा। =विद्या-रने भेरगांश्य 1-दार्गिनी-नि स्तै दशकों मानवानी। स्रो पनी। ~ार्ग्या(चिन्)-हि बण्डमे भी बाला । सुरु -बुना-श क्षणामा ।-सरमा सरामा--न्दे नगसः विश्वासा**।**

भेडक-पु [मं] दिसाव विद्यालयाच्या चिद्ध वरकेपाच्या । [वर्गः भीरित्यु । रे

भैक्सो-३ एत् रश्च १ क्षाना ग्रेस प्रस्ता

भैंकरी - जी० वस्त्रका छारा द्वक्षा, क्कारी ! भैंकदी - जी थीं भैंटिया समी देरी गांती; छमा ! श्रीकरि - पु [र्च] दवा भरिम महाग भरिनहोत्री ! श्रीकर्मा - पुण्ड [र्च] निष्क बरमा रेपान घरीरपर घं श्रीकर्मा - भण्ड थीं श्रीकरात श्रीक स्वानिका छाप भैंकमा - भण्ड श्रीकरा थामा क्लिया याना; भरित हैं। व स दिश श्रीकरा । श्रीकरीय - निष्ठ [र्च] श्रीकरक दोग्य छिन्द करने योग भैंकरवर्ष - न्या भरिका श्रीक रुप्पेत समर्मे जान एक विषा । श्रीकरा - पु एक पासा श्रीकर ने भीवरक। द्वक्षा । श्रीकरा - पु एक पासा श्रीकर ने भिवन ।

र्धेंकरा—को छात्र अंकर (अंकरास्त्र अस्य∘)। ऑकरोरी ऑकरीरी—को कक्षी; कक्ष आणिका य छोरा द्वकरा। ऑकसामा—स कि अध्य कराना आंक्नक दिल्लेशी कराना स्थाना।

करना कराना । श्रीक्रवार-त्योश्याट अंक आर्थियन । मुश्च -हेमा-न हत्याना । --भरमा-नीटमॅ भरना गोरमॅ बचेडा रहना श्रीक्रवारनाश-सुरु दिश्ल मॉन्याम हरना, सेटना ।

भॅकवारी०-स्ता गोर। अंकस-पु० [मं] विद्य धरीर । वि चिद्यपुक्तः। अंकोक-पु [मं•] जसः।

भैकाई-की अंदनकी किया पूर्व भेटाका; आएसे उत्परतः

भैँकामा∽सः तिः भंगाका लगवानाः नेंदवानाः वि बुद्रानाः मृत्य द्रद्रवानाः।

ॐकाव—पुंश्रीवसेका कामः भेटाका लगानेका काम। श्रीकायलार—पुंसिं] भेरक शेंतरा वद साग श्रिक काम्य श्रेतके व्यक्तिय विषयका ग्रूपमा रहता है। श्रीकल—वि [सं] विदिष्ठा लिगिगाणिनातृशा ।—सृस्य

चु॰ बद्द मृत्य को सिनी सुना अन्यपत्र आहित्य अहि हो पर जा विशेष व्यक्तियों या विशेष काल्पीन पटन बन्ता रहे। अकिनी-न्या विशे निप्तीरा मनुद्रा निद्वीसन्त्री स्त

े अधिकारी-वि अधिन वासाना। पु -रामा ग्रमासी अवश्(वित्र)-पु मि । एगा नगाना गुर्ग्स (: श्रीविधे त्वर् बक्रमा जासरः)।

' अंतर अंतुरुक्क-पु [सं] शुरूर करू।

ऑक्टा~श्रीग र्वतय~वि॰ [मं॰] निष्क करमे शोम्बः दागने शोम भैक्श-प सोदेश देश श्रीता छोत्यी एवं या बैर्टियारे वन कुछ भौतार। कुमावा। विशालको जुलमें ठीवनका (अपराची) । पु॰ गृह्य, प्रसम्ब भादि । सोदेका मयहः मुसरुरीका एक औषारः गाय-देलका अभिवाशिक-सी अस्तिः विद्यान । पद रीग । र्थन्तमीचर्ना-न्तः , अन्त्रमृह्मी-पु आरामिपाना । र्भेषुष्टी-स्री (अञ्जाका अस्प») हुद्धा सीहारीका यक अँदाशा॰~अ॰ क्रि॰ अनगाना । र्वेलिया-सी मदानी करनदी करन + स्त्रा। भीत्रारा इलका वह भाग विसमें फारू रुगना है। व्हेकै परियेदे भीतीपर सगावी आजेवाली औल ! - बार-विश भॅसुआ −पु॰ शंदुर कहा। भेलुआमा-न॰ कि॰ भगुना रेंदमा । मिरामें भेक्नो स्रगी दाः गड़ारीखार (बद्धीया)। भंकर-पु (र्र-) भेंगुवा दामा कमी। रीओं वेदुशा व्यंग-पु [सं] देहः अस्तरः भाग विभागः गौष ग संतति यका रुपिरः मौतः अनेवः सूत्रमः भावता भरावः मानित वर्षा, वर्गा, प्रधान वा भंगोका सुद्वावकः स्थानः मोक्दार अवश् । साधना मना नगतन्त्रः (हा ०) ६३० मृथ्याः सप्रत्यः अंकुरक-पु॰ [मं] व्हेंसलाः मोर । क्ष्यका प्रत्यवर (इन भाग प्रदृष्टि (म्बा); शास्त्रको पौच अकरना, अकुराना-अर्थ कि अगुवा शूनना, बीहर र्सियवोक्ते अतर्गत एक क्यविमागा भंगी या भारपा एहा-यक पात्र (मा); सप्रधान रश्च (मा॰); नेरके छूट संब क्यमा । अंकृरित-वि [ग्रं] अंकुरकुक्त अगुजावा हुआ। प्रस्तु (द्विया बस्य व्याप्टन निरुक्त क्वीतिय हन्द्र); हेमान रिन ! -थाबमा-सी बद को जिसमें वीशमंड निद चार अँग (द्वाधी, अन्य रूप पैरुष्त); यामक आह और मक्द का लुके हो। (बमः निवमः भागनः प्रामानामः प्रत्याद्वारः ध्यामः ऑक्टरीरे−मा भिगाने हुए कमे आदि। ऐस पर्न आदि भारणा, समाभि) राजनीतिके सात जी। (स्वामी-बिसमें भिर्मानेके सारण अंकर निवक आवे हीं। अमारव, सुद्रण, बीप राष्ट्र दुर्ग, सेना) । १% मंतीपना **भं**कश-तु [मुं] संदिका क्षेश्र वा एक नरदका भासा भागमञ्जाक भागगामका प्रदश्ता हिंह | बीटा क्या प्रकार । क्रिमे महाबत हाशोदे सिरपर बोचकर क्ष्म चन्ना है। वि॰ संख्याः भैगोवासाः निष्यः गीमा प्रनीक स्वस्प । रोक्तः इवाश निर्यंत्रण । 🖚 ह्र--पु ० महावन, योजवान । **−कर्म(म)−**५ −किया−श्रो• द्यरीरमें बस्रन भारि -इंता-पु [हि] वह दाथी जिल्ला एक वीत सीवा मसना देश-संस्थार । -प्रह-पु॰ देहका पकानाः देहका पीड़ा ! - चाकन-इ दाथ-पेर हिलाता ! -- धरेड़-इ भीर इसरा मांचेडी भीर सुका हुआ है। - हुर्चर-पुरु मरत श्रेक्स न माननगरू राशे। न्यारी(रिम्)-प र्धनकी कारमाः शरीरके भेग (हात और शहर, काम हे 'श्रेक्सपद'।-सद्वा~सी वगस्त्रिकी अंकुशाकार भादि) बद्रवारेका ६८ ।—ज —जात-वि देवम सन्दर्भ पु॰ क्या क्टीना रीम काम मद सारिक्य निहारीमेंसे सदा । संकुमा, अंकुशी-सी [सं] २४ मैन देवियोपैने का। वीम-हाव भाव और हेका (मा); रीग !-बा:-जाता-अँकुशा-पु अंकुछ, हाभीडा शिर खेंचनेका यह इविवास शी+ वेरो ! ~जाई+-मो वे ! गुना^{*} ! -प्रबर-पि मोक्सी गरक सुरा हुआ करेंग हुछ। क्ररोत्सरकः। तः राजगेग क्षपरोग । न्यान-पः मर्फ अंबदित-वि॰ [सं] अंड्रप्त द्वारा कावा हुआ। बस्तर बला –इ−५ देश क्रममें । –हा–सीश र्मकुसी(शिम्) −िव [र्म•] अंकुश्चवाकाः अंकुश्चको सरा-इक्षिच दिखाके दस्तोकी भागी ! –दान – प्रा तुक्षमें नास-समर्थेया (स्थेका) हेइ-ममर्थम ।-हार-प्रमुख सम बताते बादमें बदनेवाका । शाक, नेत्र गुदा कारव-धरीरक वे ९ छित्र (वशीर अंक्स+-पुरु है 'अंक्स'। में क्यी नहीं सोहबी सुकारी हुए बीका इक कोईबी देही आदिने दम हार मान है जिनमें अग्रांट भी है) घरोरके छद जिसम पाररने नगई। या सिरकिमी लीली जाती है। इस्रहेड् । −द्वीप−पु॰ घः दोरों मेस एक ।−घारो(रिव) फल तीवनेकी सम्मांके सिरेवर वैंची छोटी कड़ती; मडीली -प प्राप्ति शरीरी। -स्पास-प क्रमी वा शरीरकी राख विकासमेदा एक भीजारा नार्यक शे गिरी विकासने-विशेष रिमतिमें रहानाः संशोधार धरत प्रच एक-एक र्थमके हाबसं १५र्ज करमा । **⇔याक-पु० बंगोंके त्यनेका रीम** ! क्षाणक छोरा जीजार व ~पाछि -पासी-ली जात्मन । -पासिका-ली॰ **अंकर−**प [सं] ६ 'अंकुर'। वान । --प्रस्तेश-पु देवका इरण्ड श्रेम !--प्राविश्यः-श्रीकप-पु॰ [सं] श्रीकुशः नकुछ । श्रीकोट, संकोडक-पु [सं] अंकील वृक्ष । प॰ अधीयमें देवशाहिके किए दिवा जानेवाला पानस्य गानहित्ततः । --प्रोक्सभ-पु भेग पीतना । --भेग-पु॰ भौद्योका-प एक तरहता सँगरः वडी करिया । दिही अंसका हुट जागा: अंगीका रेंडला: + अंगर्मगी ! भैकोर -- प्राप्त अक्रमारा मेंड नजरा पृश्तः- देखा लाख विक विकार्णय । -श्रीवासा(सन्)-लोक क्रेग शास दम दीम्ब अँकोरा ∽प । कनेवा छा% । मानमकत्या । -भैगी-स्ता मोहक भैगर्भचाकनः स्थान भौकोरी≠-न्दा गोदः शाक्षिमन । ~शाव~ड र्सगीत आर्रिमें भंगेंके द्वारा मार्थीतन । बोब्रास-प सि] एक प्रशास पेट जिसकी छाल जनके ~मृ~पु• पुकाकास। वि छरीरसे बलका ∽मृत∽ काम भागी है। -सार-प व्यक्तीकने पेन्छे पैदा होने दिक ऑगस्यस्य नमा हुनाः शेवनंत । पु पुत्र । - नाति बाका विवा ~सी वक रोग विसमें दिसी वंगते कम्य वंग होनेका क्रांकोसिका-को [र्त•] शाकियन।

भम होता है। --सर्व-प० हरियोंसे वर्ष होनाः सानिश करनेवाचा गौकर ।-सर्वक,-सर्वी(दिन्)-प्र माधिय सरनेवाका नीवर ।—सर्व न—प्र मास्त्रियः । —सर्व-पु० गठिया रोग । --सप्रि-स्त्री पत्तमी मास्ति । -रस्त-पु॰ मृद्धविद्धेष । ~१क्षाक्र-पु॰ राजा महाराजा काणि वर्षे मारमियोंकी रक्षापर नियुक्त वन नाडी-गार्न (वन्तार)। -रक्षणी, रक्षिणी-औ॰ कौईकी बासोका बना हुआ वर्ग, जिरह, वस्तरः पोश्चकः। -रक्षा-सी० शरीरको रक्षा। -रम-प पत्ती, पस भाविका कटकर नियोश तुभारसः। ≔राग⊸षु सुर्गविद्य कंप या जबटनः धनका केपमा ⊢राज्ञ−पु भौग देखका राजा कर्णवा क्रोम-पारा सहद्वरम् बाह्यसम्। सहेवस्य 🚩 भाग-राग । -छोड्य-प॰ प्रक्षविद्येष । -धिकल-वि० विद्रकांग मुक्ति। -विकृति-का॰ वेक्में कोई विकार दोला। मिरगोस्थ दोमारी । -विभोप-प॰ दोसले वाले मादिमें द्वाब, पैर, सिर भारि दिखाना जूला।-विद्या-भी पानक सावनमूच म्बाह्मण मादि शासः प्रश कारूमें संगोको पेश या संगोके विश्व नेसदर श्रामासम करनेकी विचा । -विश्वस-पु संगन्नाति, एक रोग । च्येक्टत−५ धंदेत या मुखनुका दारा जातरिक भावीका मकाञ्च। −ऋदिः न्सी स्मानादि द्वारा घरीरको ग्रुदिः। -शबिस्य-प्र श्वरोरका डीलापन । -शोध-पु० सुखा ना सर्वादों नामन्त्रे नीमारी । नवंश-प्र सभीग छरीर संग । -मंगिनी-वि स्त्री शंग संग करनेवासी ।-संगी (तिन्)-वि० वंग-संग करनेवासा । -संचासन-प दावपाँव आदि दिलानेकी किया। -सधि-सी० हे 'र्संध्यंग ।~सस्कार-पु॰ देहको सेवारमा समामा बनाक-मिगार । -संइति-सी० अंगसमध्ः अंगीकी बनावटः धोरा-विकास्त्रा मन्त्र गटन । स्थावय-प्रभाव मेत्री । ~सिहरी-लो॰ [दि॰] वरेया <u>स्वारक क्हरेटी व</u>र्षप्रीयी : वृत्ती । -सेवक-प्र निजी सना-रवस वरनेवासा शीवर । ~साष्ट्रय-प्र• भंगोदी बनावरही भूवरता। -स्पूर्ण-S धरीरका न्यर्ग भदीश्यक व्यक्तिका इसरोंके छने थीरम दो काना। --क्षानि-स्त्री अंगविद्यवरी द्वाशिः बिहाति। सुरूप वर्मके सद्दावक वर्मको ल करणा या ठीक वरहमे न करमा । —हार--पु॰ भंगविश्वेषः भूखा ।--हारि--न्ती । एक मृत्रि । पु । वे नेगहार । -श्वीम-वि अंगः विजेष-रहिना निकलोना उपहरण रहित (पूजा व)। पुरु त्रार्थेग, काम 'व । सुक-करना-व्यक्तिर करेगा।-सुना-वसम गाना । -इटमा-अँगडाई भामा क्यरने पहले देव ट्टमा (!)। - पश्मा - पहनमा भारण करना । (पूछ) ~न समामा−भर्त्तंत प्रमन्न दीना । —मोदना—हःजासे देद मिश्रीवनाः भेगहार्द सेमा ।-- स्टबामा-विधानाः भाषार का प्रदार न्द्रको पुष्टि करनाः परधना । न्यद्रशासान विशाना परनानाः निवाहमे देना । भैगद्धे -1 येगामा। भूतक-ते [स्] म्पां द्रोहीर इ भेगवाई ०-११)० इ श्रीयवा ।

भेगद-संगद-विद्धाः इता स्था स्वान्युवा । य

समान ।

रुवा-पूजा

र्थेगडाई-सी० बन्हा के साथ मंगोंकी धानमा। देवका टटमा । स॰ −सोबना −शैंपदर्ज होते समय दिसोद्धे क्षीपर हाब रसकर अपनी देहका भार देना (वा मामग्रीरपर मगहस समझा जाता है) फछ काम म करमा । भैगशाना—२० कि अँग्राई स्ता । भंगक-पुर्वाति विश्वापन । श्रीगति-प॰ (र्थं •) अग्रि: अग्रिदीत नक्षा; विश्वा स्वारी: संगठ-पु॰ [धं] बान्क्ट, विजायठः वास्कित बेटाः कदमणका पद्म भूषा सूर्वोषनके पद्मका-एक बीजा । शंगवीया-ली मिं किम्मणके पत्र संगतको मिन्ने राज्य (कारपथ)की राजवानी । **भंगन**-पु॰ [सं॰] टब्डनेका स्थानः मॉगन, चौकः टढ् सनाः बानः सवारी । र्थगमा –सी॰ [सं] स ६८ वंगींबाडी सी सी सम्बक्तिया सी: उत्तर दिशके हरतीकी मार्या !-राण-पु० रित्रवीका सम्ब । -- जन-पु॰ स्रोवर्ग । -- प्रिय-पु॰ श्रप्तीक वश् । र्भगना -पु दे 'भगन'। भैंगनाई -- नी॰ भीतर वा बनानकानेका मॉगन । र्भेगनेवार्ग - भी • दे 'ऑगन'। भैगवीक−५० फिा•ो शहर । भैगरका-प एक क्षेत्र वंददार मदीना पहनावा अंगा, पायकता । भैंगरा -प्र अंगार; वैक्कि पैरमें दर्व होनेका एक रोग । ऑपारना≉⊸भ कि दे• ऑगहाना'। र्भगरी !- सी॰ किरद वस्तरः गोहके चमत्रेका दरवाला । भैगरेस-त रंकंड देशका रहतेवाला, 'ईरिक्शमिन' । भैगरेजियस-स्रो अगरेजपन, अंगरेजी चाल-बाल । र्वेतारश्री-वि सँगरेव-पूर्वश्री भगरेजका । स्ती । श्रीतरेजी-की माचा। श्रेगस्ट-प्र॰ शरीरका गठन था श्रेया । श्चगावना#=स• नि भंगीकार यस्ताः सहना- स्क कुन्छ निव भेगवनिदारे व रिननाथ सुमन सर मारे -रामा । अपने सिरपर क्षेता। भैगवासा -पु॰ भेतनी भोता में पारपरिक सहावना। गांबके छोटे दिश्मेका मानिक। अंगोगिमाय-पु॰ [मं] अंग और अंगोहा मंबपः परस्पर अंग और देव गाम और मुख्य उपदारक और क्षणदार्थभा मध्य । श्रेगा-प भेगरया । अंगाच की-म्पे बारी लिही (जो अंगारीपर विस्तर बनायी जानी है) 1 र्थनाचिष भैगाधास-तु [मं] क्यापा स्वामी सहः रामा दर्श । भौगार-प [सं] भगारा दरकता द्वया स्रोयणा या काप्टर दे कायणाः संगण प्रदा दिवायणी सामदा पाधादक राजा हान रंग। वि हान।-कारी(रिन)-तु स्मिके निय बोक्ता सेवार बरनवाचा । - बुद्दर-पु दिनावना नामक पंथा। -धानिका -धानी -पानी -पदरी-सी मेंग्रेटी । -परिवाणित-वि भगदेश प्रावा

वंगारक-शंगरि

द्वभा । प्रक थमा गराच प्रश्ने । ~पण-पुक गंधवपति वित्रदव ! -पुष्प-पु • विगोधका वेश, ईग्रामी ! -संस्रती। -मंत्री-मा रक्त बर्शन बृष्ठ बरीया । -मणि-पुर र्गुगा । -वस्ती -वही-मी प्रक मार्गा वैवयोध वेल ।-चेलु-पुण्ड सरहका वास । -सकरी-को॰ भेगारी ।

भेगारक-त [मं] भेगाराः छोता भंगाराः भेवक शहः र्मगरूबार। एक सीबार गरेछ। कुर हका भू गराज एक असर। एक रहा औपधियोंन मेराने बना हुआ एक सक- कतिच्छ पराधीमें पाथा जानेवाना एक बधारवीय युक्त एरव । (बारनम)-मणि-प भया। -कार-प॰ मंगलनार। अंशारकारफ - पु [मं] कार्चम और आल्सीजनक मेशर वननेवाका एक अस्य । **अंगारविस-वि॰** सिं•ी भागन बसाय या भंगारीयर

भूमा हमा । भेगारमती~सा निं∗ो कलकी सी: † हाधधा उँसिनकों-

में डोनेडाना वस्त्रीय वसका। र्भराज्य-पु वहवाना द्वाला क्षेत्रमा कृता आधि। अग्नियंत्र । नि॰ भंगारे मैमा भाछ। स॰ -बनामाः -हो सामा -

शीमा-ग्रहमे, क्रोवमें लाख हो जाना। -(१) उरालमा−वर्तान्द्री धुमाना। ~पर्वेकमा−देशा धाम करना निसंधा पन पहुत हुए। को । "करमना-नाप वरसना सक्त गरमा पहना देव-कीप होना। ~(रॉ) वर पर रुपना-पान-पानर अपनेको राखरीवे बालनाः इतरामा : -पर कोटना-कोथ वा ईप्यांने करनाः वह-पना विक्रम दोना ।-पर सोदामा-बकामाः तक्पाना ।

र्भेगारा – दु॰ दे अंगारा । भंगारावक्षेपण-प [सं•] जेगारे ग्रामि या बीनने विकतेका एक पात्र । **भे**तारि अंगारिका−सौ [सं] क्योडाः रक्षण्टाः

किरासको बर्ग । भेगारिकी-माँ॰ [मं॰] धोरी भेगीठी। अस्त स्पैकी सार्किमास रेक्षित दिसाः एक क्या (क्षंतारिष्ट-(वे॰[सं] एक्श दरबप्राय । पु॰वरनए-कन्मिका ।

भंगारिश-स्त [सं] अंगठी। क्रांटका। एक स्ताः एक नदी है भैँगारी-न्ही विमगारीः है शरीः भैगीकी। क्षेतारि(रिन)-वि [सं] वर्व कारा कर ।

बातारी-सी र्वटासेसे कार प्रप बंदाके छोडे-छोडे अबने। रेखके सिरपरकी पत्ती। धंगारीय-वि [मं] ग्रेबना तवार धरमेके कामर्ग आने

सायक ।

श्रंतामी-स्रो [र्हे ०] श्लेषकेमा वेर १ **अंगिका—मी** [र्स] बॅगिया अंजुकी ।

अँगिया-हो चोको, बंबुको; दे 'बॅबिवा'। -का कंगा-का घाड-भैगिनाका परेंगान, गर्केडे नीचेडा सुका माग । -का पाम-करोरोका कारा उक्ता। -का बेंगका-वेंगिवाकी करोरीको कनियाँ या फॉर्स को गोखक गाविके श्रीकरेने वन जाती है। (दो व्यक्तियों बीनेसे 'वैंगका' और दक्षनारव बीनेसे करपूत्रा कहते हैं।) नकी कमोरी।-

की सुरुकट-भगियहरू वह माग जो ननपुर प्राप्ता है। -की चिकिया-क्टोरिवेंकि वीक्फी संसन । -क्टी दीबार-क्यारियोधः मंथिया भाग । -की धरर-करोरियोंपर विकास टेंका एथा मात्र । -के एकण-भीगियाकी पीड़की ओरके इसरे । —के बर-वे शीरवाँ जिनमें फेटडी और जेरिया क्यी जाती है।

क्षेतिर-१० मिं। एक अंबद्धार करि को प्रधान सन मानस प्रवीतिसे वढ पत्र और मप्रविवीतिसे एड ऋषि तथ पद ग्युतिकार बहे जात है। श्रंतिरम~प [मं•] परहारामानहारमें विष्णका एक **धत**ी भौतारा(इस)-४० (सं०) एक मंबरसरा है 'ब्रेशिए'। भौगिरामा-अ कि दे अंगशास ।

अंगी(शित)-वि॰ [र्स॰] देव ३ छ। अवववविद्याद प्रवासः र्मश्री। प∙ प्रधान पात्र का नामकः प्रधान रस (सा)। (सी धंगी = धंगवान्ये:-समामातमें)। भंगीकरथा−प [मं] त्वीदार वा प्रदेश करनेकी निकाः बाबा करनाः राजी श्रीता ।

श्रीशास-प [मं] स्थीकारा शहमा कपर केवा, प्रशास (शम, जिम्मेरारी बार्ति)। अंग्रीकम∽वि निंी श्रेगीदार किया हमा ३ श्रंतीकति-मा मि निर्माहति, मंगरी । भौगीक-पु भेगीठी (क्)। र्केसीडी-न्द्री आग रखनका परतन, मानिशदान केरमी। श्रीतीय=वि वि वेशन देश-संदेशीः घरोर-संदर्शी । भेगुराक-पु के भेगुरा । अँगुरी-सी पैरके अगुद्रेश व्य गरना । बोगुर-पु दे 'अंगुक'। बंगरि अंगरी-सी [म] हाथ वा परको चँगठी।

अँगती -सी॰ वे 'अंगरि' । -की चाँची-म्ब सरस्मे वांगा विसंसे परक बनाते हैं। अंगरीय अंगुरीयक-पु [मं] चॅगकोपा एक महन्छ भेगदी है इतेत्रुख∽पुर्वि विवेदकीः पद्वनाप् चैनक्रीको यीतर्मः क्सिका १९ वॉ माना बास या १२ वॉ भाग (क्वी॰)।

क्रगरिया÷−सी दे 'केंग्ररो'।

बाल्डायम मुणि ।-प्रमाणा-माम-पु० बेयुक्क्य लेगर्ने। वि= जीवक्यो क्वार्यवासः । क्षंत्रकि क्षंत्रकी≔को कि विश्व करो हाथोधी **प्रिका** अग्र-भागः अंगुष्प-मामा गणप्रणी मामप्र क्षाः । सीरण-ए० ककारवर वमा बभा चैत्रनका कर्जकाकार विक्री →ध्र∽प्र अंतुलिकाणः सिवरावते वजावा जानेवाणाः

र्ततवाम (सितार भीन कारि)। -ब्राय-प्र• गौरने

व्ययदेका बरतामा भी बाज बन्धानेमें संगक्तिको समसी

बचानेके किय बबना बाता था। - बिर्जेक्स-प्र किटीकी

और धीनकी लडाना निंदा करना। करनाम करमा रूर्यचक्र−पु शाक्का गांधी बंदारियाँ । -पर्य-प्र बंधकानी गेर वह गाँउ। -सुक्-मु॰ बंगकानी मीक। -प्राहा -प्रविका-की शाम सुवी हुई या मुद्दरका काम देनेशको अंगुडी । —मोरम --स्पोरम--पु बंगमी प्रकाताः पुरुषे । न्येष्टक न्येष्टम-५ दस्तायाः।

-सजा-ली• उँगहोसे दिया हका संकेत । -संदेश-म च प्रतिको महा या भावायमे इन्नारा करना ।—सैमतः —वि० चैंगडीपर या चैंगलीसे छरफत । प्रानसा। भंगसिका – तो मिं) मेंगुली: एक तरहम्बे थींये । भेंगुकी –स्ता दे० 'बंगुहि'। र्मग्रहीक, संग्रहीय, अगुसीयक−पु [सं] केंगुठी । भंगस्पग्र-पु [र्स् ०] धॅगलोकी नोक । र्मगुस्यादेश-पु [सं] चँगकोके द्वारा किया हुआ धंदेत। भगस्त-प फिल्टी रॉयको । - समा-वि विक्की कोर र्षं गठी बढायी बाद, श्रमाम ! - नुमाई-सी॰ श्रीकत-मुमा शैमाः रदमामी, कांग्रन । -(इत)मर-पु॰ बेगुठा। भगुस्सरी-स्त्री [का०] अँगुठी। अंगुस्सामा−प्रकािको देश पीतरूकी टोपी की **क्लिए**रमें र गभीके बसाबके किए ससपर पहल की खाती हैं। तीर दाजीके बच्च चेंगलीपर पहलनेके छिप सीम बा रहीको बनी हुई अँगुठी । भंगप्र−प सिं∘ो भंगठा। –सात्र –सात्रक−वि॰ मैग्टेनी रूपात या आ**का**रका । **अंतु**ष्टिका-मी० [मं•] एक झुपा संगुप्टय-प [मं] भगटेका नालन । भगुसा। – पु अंतुमा। भेगुमाना । अ॰ कि अंकुरित होना। भेगुमी-सी॰ इसका फाका सुनारीकी वह भनी जिससे निरागकी भूँ बक्तर शाँका ओक्ट्रे हैं। र्थेन्द्र्य~ पु हान या परको पहलो और सनसे मोटी उँगकी। स् = भूमना – सुद्धामद करना सुम्मान या बहुत बिनब मग्रद बरना ।—खूमना:—वदा द्वीक्रद बलेकी तरह माध्यक्षी का काम करना ।-दित्वामा-अवद्यपूर्वक, विसोकी तुष्छ समञ्जेका भाव दिगाते हुए जाही या इनकार करना। भेगूडी – सी॰ सँगक्षीमें पदनतेश्वा एक सदना सुँदरी। **भैग्र-**पु [का] एक प्रस्तिक कल की पक्रनेपर बहुत मीठा दीवा दे, हाथा दारा [दि] भरने हुए थावदे काल दाने। 🕫 संस्था अंदुर । 🗝 ही द्वरी-वह टही विसपर भंग रही देन बदान है। -ही बैछ-वद सना विसमें अंगूर प्रसत है हाला कता। सुरु - तद्भामा -फरना-भरत पारपरको गिरीका पर पाना । -वैभया

र्वेगोछ्य∽पु० देइ पोंछनेका कपदा, गमछा अंगोचन । श्रेंगो**सी−साँ० छोटा गमछा** छोटी घोटी। **भैं**गोजना≠~स॰ कि॰ दे 'मंगबना' । भैगोरा ! - ५० मम्हरः फनगा । ऑगोरी-स्वी० क्षांगः दिनगारी । भैगौँगा-प अनाव वा अन्य दिशी वस्तुका वह भाग जो उपयोगमें वानेके पहल बर्मार्थ निकास दिया आदा परो हितको देने या देनताको पदानेके किए राजिसे निकास गया शक्त औराऊँ। र्केंगोरिया – प्रमवदीके भदने इल चैन लेकर धेवी बरमे बासा इकवाहा। अंग्य∽वि• [सं] अगोंने संवय (सनेवाना । **बँदोज्ञ**—प वे केंगरेज'। **अंब**स-पुर्नि । पाप । **कॅघट**ा '−पु० पैरमें पहननेका द∄मेशा छसा। र्थेषरा**ई।** –सी पदामॉपर समनवासा एक कर (प्रा.)। अधिया - सा० झाते सपहेमे भद्रा छलता। अंब्रि−पुर्मि] रॉब, थरण पदकी बट; धरका परगा -नाम(न्),-नामक-५ वृद्ध मृत्र पैर ।-प−५ वृद्ध (जडमे पान करनवाका) : -पणिका,-पणी,-वतिका, —वासी—स्था सिंहपुच्छी नामक पांचा। —पान-वि० वर्षोठी तरह केंगूठा प्रधनेवाकाः पु केंगूटा प्रसना। -स्टबंध-प पटना प्रद्री टलना। श्रेचति-प्र [सं] इवा; शक्ति; जानेवारा । **अंचती-सी** [सं] दे 'अंचति । र्धेषरा!-प दे॰ ऑक्स । अंचल-पु [मं] क्यका ग्रीतः सात्रीः भीवनी भारिका बह छोर थें। छाती कार पटपर रहता है ऑनक छोर। देखका प्रांत माग कोना: नट, किनारा । धेंचसा∽पु दे॰ 'जॉचका **श्रीचबन**⊸पु०दे 'शबदस्। **अंच**यना~स कि∘ के अपदना'। **अँचवामा**−स॰ प्रि: दे॰ 'अयराना । **श्रंचित—वि• (सं•)** सुद्धा या सुना द्वमा, कुरिन, टेन्स प्रथमले (बाल): संदर गया हुआ। सिदीहा हुआ: ग्रीमा हुआ। मिठा हुआ व्यवश्वित पृतितः -पग्न-पु पस प्रकारका कमल किम्म्की पश्चिपों देशे वा मनी कीनी है। -भ्र-तिक की देती, कमास सी भावारी । सीक देती भावामी हो। र्वटर-पुरुद्ध मुररीया रे क्ष्म्यर मन रीना । -मारमा-अह देवा दरना। अञ्ञद⊶पु॰ क्षत्र ध्रमण। श्रीज्ञल-पु [सं+] बाजल- रिव्हांश्रमः गुरमाः स्यापीः माया (निर्वेदन)। राजि। पश्चिम रिगाः पश्चिम रिगास इत्मी एक नागः एक किथिनानस्य गठ परत सीमाग्रिस एक क्या व्यापना कृति। कृषि (एपरक्ष) एक नरस्या वरणाः अव्यक्ताः रणमः सिण्यनः ध्यापः वरसा । –दःग-

पु रोष्टा दि जिल्दे सन्द सन्त कुले हो। -हेगा-

की हर्गिकारियो साम्य क्याच्य तिहाद हमाना

बान बहुत का बीहें हैं। -सिहि-पुर बोमरिहर ।

श्रीज्ञमा∽श्रीक्षा ─मामिका-न्ही० भारत्या एक होग विक्यी ।—झलाळा केंद्वरी» श्रेंबुलि, श्रेंबुकी प्रती दे∗ 'संबंह । -- स्पो+ क्विन या सरमा कगानेकी समाई। --साह--वि० र्भेजीर, भंजीरा#—प्र वजाला, प्रसद्य । [वि] अंजनमुखः।-हारी-म्याः [वि+] विनमीः श्रीविधाः। भंजीरमा=--स•कि घरमधरमाः समरक्षाः शिवामान्ता। भंजमा-लो [सं•] इम्मानको माताः विस्तीः क्षत्रमा र्वक्रोरी#-न्यो॰ समासा, बॉदमी । वि. स्त्रो स्त्रिवाली। वस्तिः एक सरहकी छिएकली। है अंजनानती । एक एक र्वदरा—पु॰ अमध्याय पुर्दीः मागाः छो॰— र्वहासी दिव-तरहरू पान । -सिरि-पु॰ एक प्रवाह । -सँवस-की गई संशासी सहल दिनि -म • । होए। प्रक्रमान । र्शरकमा—म• वि. दे॰ 'धरकमा । र्वजनार-स॰ कि॰ दे॰ 'बॉबना । भैंटमा-- न कि॰ समानाः ठीन भागाः ठीन नापना दाना भेजनाधिका – छ। [मं] पच तरदश्चे शिल्लली । (कपहा, खता ह)। काली बोमा: बुरा बहुमा। श्वापवामा। अंजमायती~को• (मं•) उत्तर-पूर्वके दिमात सम्बंधकी कॉटर्मट-वि . प देश 'श्रेषद्रध्र'। भाषा दासीवन कर। र्भटा—प वडी गीकी; बडी बीडी; स्त वा रामस्य संपन्न भंजनिका-मी॰ [मं] एक तरहरी तिपरुषी: शुरिवा: विकियाँ हा सेक्स । - घर-पा विकियाँ सेमनका हमरा । उत्तर-पर्वके दिशामध्य भाषां। भौटागुक्तुक्−िव वेसुक वैद्योग्न नग्नेमॅ प्र।(वोक)। अंद्रजी-सी॰ [मं] हम्माम्की माताः चंदमः कुकुम र्अटाचित वि पुरी तरह वित रत्तव्या महेमें बुर देशक भावित अनुक्ति सी। दिसनी। माना बहुका पृष्ठ वार्का मधार बंधार (सा॰)। कन दुध । — नंद्रव−पु इतृमान् । अंद्राव घ-पु॰ सन कुछ हार जानेपर दोनपर रसी जानेनामे मंजवार्−पु (का } तवाके काम भागवाका एक वीधा। राजनको कीरी । भंजर-पंजर-पु मरीरका बीक ठठरी: इट्री-यस्सी। अँडिया-नो पास, पतको करहिबो इस्तुनी आरिख अम्ह-नगल । स्॰ –दीला हो आला –बीप-वाद सद्याः गश्चिमाः पन्ना । हिल काना सब अंगेर्नेका शिथिल हो जाता । कंटिबाला-ए कि व्याधिकोंके शंत्रमें दिश हैमा गावर अंजरि*-तो दे 'अंबिट' । करमा। वेरिया बनाना सरवदी विद्री बनाना । श्रीब्रख−पुश्रीबाका र अवासन (१) । ऑडी — त्यां दार्थं गलियों के बीच की जगह बाह: भलीगी **धंज्ञ**क्ति−लो• सिं] करसंपदा अंजनिकार वस्तः वर्गाः कारा 🗟 का परकी, कपेट। गाँठ: हेंद्र, बोर्ड या: पहकरा नीमा 🕶 बादनका संदेत । -बर्स (स्)-ड व्यादरपूर्वक मगरकार वादः बटेरमा कही। शह वा रेशमध्ये सक्ताः विवाहः श्रीधे करमा । —कारिका — यो । नमस्कार करने से सदावासी बान्धे (-बाश्र-विश्वगाषाय परेग्री । सुरु -करमा-मिड़ोक्स छोटी मृति" संस्थात क्या । "शत⊸वि व्यवकारी गास उन्न सेमा सन कपरदर क्यी दमाना ।~हेमा~नर या इभेक्नियर राग हुना ।-पुट-५० दानी इवेक्निकी इतिबा देता ।∼गर ऋषमा−भोसा सा बाना !-सारमा-मिकानेस बननेवाका गएडा । - वदः-वि+ करवदः। दसरेडी क्षेत्र बीरेस क्ष्मा बेमा: बमवीकमा, बांदी मारना। बॅटीलब-प क्षेत्रपं जाते हुए देखका अभिनेत्र स्थाने अञ्चलकिल्य प्रदेश के किल्लाम का एक पाय। बातेवाले बक्त । **श्रंत्रक्रिका**—स्रो [सं] पुरियाः शतु शका एक वाण । र्केंद्रही-श्री क्रचीके स्टनमें जिपदे रहनेवाले होदे की रे **ভারদ্রী**–ভাগইণ গ্রাল । किसमा । **अँठक्की−श्त्री जवादाका उम**ध्ता द्वभारतन । श्रांटी—स्त्री शहरो गिस्टी: गाँठ गिरकः **नं**ठर्सा । अंड-प सिंश्री बंदाः अंदर्वतेषा योगाः प्रकारः गर्वा स्प पर सदावतः । भागि, माप्ता, दिवा - कराइ-पु प्रदांत । -कीरर प्रथमी-रजी जीलपुदा सामक पीत्रा रे-कोशा-कोया-क्रोपक्-मु कीमा सुसिवा नदादि। ∽ज्ञ-पु॰ वरिसे करपद्य होनेवाने शांधी (पक्षी सांच महन्ती र)। विश श्रीमें प्रमुख । ≔जा-रमी करपूरी !-धर-प्र हिन । **−पामा**−पूरा द्वाना । ─बर्धन्-पु॰ ─बृद्धि─रणी फीना व्यक्ति बीमारी ! --स्त−वि अहिमे उत्पन्न होनेशामा । **ओबस−**प मिं] हारा श्रीयाः अटकोस्र ।

भैजनानाः भैजामा—स॰ क्रि॰ भैवन सन्वामा । श्रेजस-वि [सं] सीवा अनुदिक वैमानदार। **अंक्र**सर—प्र. [मृं] बादोरी करपर। साखात जीव चीर **अंअसायन**−वि [सं] सीवा जानेवाका । श्रंबद्दांलि संगायकाः [को श्रेजदो] गतका नावारः क्रीडास्~पु॰ [पा] अंत, समाप्तिः पृतिः फक्ष मतीजाः सु•-को पहुँचामा-पूरा करमा !-वना-पूरा करना । श्रीक्र−पुर [से] प्रेरक अंशमेनाकाः भागेशकः तिर्देशः स्ता अंबराग रंगः जनमहिता। अंक्रित−दि [र्स] अंत्रम-हक्ता। **अंडजेयर-यु** [मं] पस्य । **र्वा**ज्ञच−वि [स्] (पश्चिम विश्वमा । **र्वाह्मण्ड**—पु में सिर-पैरकी बाद्य । वि॰ वे-सिर-पैरका अधिक अधिका-पुनि देसी। भंजी-सी [मं] बाहीर्वाद, शुस्काममाः पीसनेका पंतः **ब्र**टक्टींग **श्रंसका**णीम । अंधरनारी —भ∘ कि (वस्तका) रॅब्सा । दै संगि(स्ती)। र्मजीर--पु (पा] गुकरकी आतिका एक प्रसिद्ध करू। र्शकरमां —स्त्री अध्यम **क**टिनाई। क्षांचा⊸पुबद्द गीरू पिंड वा धीरू विश्वमेंसे सीप महकी रुसका पेश । पिड़िया जारिका नवा निकल्या है। +रेड, पिंड ! सं* अंश्रमण-पु फा•ोसमा समिति, मवक्सि, मदकिका ।

-सटकना~भटेका तक्कता ⊢दीछा हो आमा-कमबोर या बीमार दोना, दिक्छ दोना न्विलिया दीना। -पुरुता-अटिसे बरोबा बाहर भागा ।-हे सेना-पश्चिमी का अपने संदेपर बैठकर गरमी पहुँचाना घरमें बैठेरहमा ! -(ह) चय-भीतार, संशान । -शहमा-यक तरहका समा । -सरकाना-दाव-पैर दिकाना । भेडाकपण-प॰ [मं०] श्रेन्रहित करना, नपुंसक बनानाः वविदा करना । भेडाकारः भेडाकृति−वि० [मं] वेटेकी आकृतिवान्य । **बंबास-पु॰** [मुं] मस्स्य । भंडिका –स्त्री [मुं•] एक तीस (चार यन) । संक्रिपी-स्क्री [मं] रिज्ञबॉका एक रोग, वोनिवन् । श्रंदियार - प्र• बाग्ररेकी एकी हुई बाला अटेरनपर छपेटा इबा स्व। संबी-रभी। रेंड या परंडका पेट वाबीज एकरेखमी कपटा। भंदीर—पु०[सं] जवास पुरुष ∮वि वर्गी। संद्रधा-वि• वी विश्वा न किया गवा हो। पु॰ ऐसा प्या । - बैक्स-पुरु मॉड्स वैरू, स्प्रॅंड; वड्डे अडशोखवाका वा सन्त भाइमो । **भंद्रभागा~५० कि. परिवा करना अंगद्र**शण। **भंडवारी-रवी० एक तरहरी छाटी मछलो।** सर्वेम-वि० स्त्री जिसके पेटमें करि हों। भंता −'र्जवर'का सुमागठकप ।—कवा −न्त्री विसी प्रसुंगर्मे र्षेकेतिन अन्य समा महना या नातः। **—क**रण— पु॰ मीतरी देदिया दान सुरा-दुराके अनुभवका सावन, मनः मनः इ.कि. विच अवकार इत भारवृत्तिवाका योग। "करुइ~पु• मापती छहाई, गृहयुद्ध । -शुर्विक-वि भीतरका कृतिक छनी । —क्कोण-पु भीतरका कीण 'रेटीरिवर ऍगरू ।—क्रिया—स्त्री॰ मीतरी स्वापारः मनकी ह्य करनेवामा कर्म ! - यह - तु कृत्दे और बुक्र विमक्रे **पीन परा किया जानेबाला ऋपहेका परदा: अंतरीटा !** ~पदी~न्त्री वह वित्रपट जिसपर पर्वत नदी आरिका व्यव भेडित हो । -परिधान-पु सबसे नावेस इपना । -परिषि-रवी परिधिकै मीहरका स्थाम । -पविद्या-नि॰ रवी॰ शुद्ध भेतन्द्ररणवाकी । —यह्य-तु॰ पहाुओंके माममे रहतेश समय रात्रिकाछ । -पास-पु अंत पुरका रक्षका -पुर-पु॰ राज्यमानः वनामधाना, १रम। - = प्रवार-पु नियोध गण। -पुरिक-पु भूष,त्राक्षा रक्षक कर्तका । —तिर्देश—स्त्रीक भूषात्रहरू रहतेशाची रत्री । -पुच्च-पु निवधित रचन्यात्र आर्रभ दीतं ६ पूर्व (तिवीमें वर्तमाम रदनवाला स्थावका हम्य । -प्रकृति-रथा सूत्र स्वभावः राजाक्षासंत्रिमेटकः भारमाः रूष। - प्रभू-वि भारमणानी। - प्रबाह-पु भीनर दी भीतर बदनेवाली चारा ।--मॉलीय --मावेदिक वि री या अधिक प्रांभीये अवस्थित या जनने सैनथ रसान वाष्ट्राः - प्रस्मान्त्रताः सदत्र प्रत्याः - न्यरीह-पु अंततोग वा~भ+ (में) नियान अर्थन(कार अन्ते। नुस्य एरोर् । -शस्य-दि भीतर् सामनेवाला शॉ तैसी सरर पुत्रनेशाना । –द्मदि–श्वीः निष्धमुद्धि । –संच∽ अपने गुरा कुरा कि अनुसरीकी प्रदेश में कर सम्बन्ध

बाहा (ब्रुध भार्ति) । —सम्बन्धि जिसक औरर दारित

हो। पु॰ मिलाबाँ । -सत्वा-रत्री॰ गर्मबती स्वी। -सक्रिका-स्त्री है॰ 'र्शतस्त्रिका'। -सार-रि पु॰ इं॰ 'बंहरसार'। -सस्र-दि॰ मिसे भांतरिक सुख प्राप्त हो। ∽स्था∽वि मौतर वा वीचमें रिवत । प्र• स्पर्श और कभा वर्गोंके बीचमें पड़नेवाले या रा, का व पे चार वर्ष । ⊶स्बेर--प॰ हाथी । अंत−वि॰ [मृं०] निकटा आसिरी।स दर सनस**स**रान सनसे द्योटा । प॰ समाप्ति नासिए नासा मूला, भैतकाल सीमा छार, अतिम मायः सामीप्यः पशेक्षः परिणामा निवटाराः निवच्या शुष्त्रका अंतिम मधर समासका अंतिम फ्र: भीतरफा हिन्सा;पूर्व राधि बहुत नहीं संस्था: प्रकृतिः स्वभावः भेतः वीतःकर्यः भौतः । कसः भौतमेः थम्यत्र !: -हर,-हरण,-इत्,,-भारक-कारी(रिन्) -वि॰ माद्य धरनेवासा, संदारक !-कर्म (न)-प्राप्त नाम्र :~कारिणी-वि+ स्त्री । साम्र करनवारी । ∽कास –पु॰ मृत्युदाक भाषिसे **वक्त । −कृत्−**वि करमेबाका । प्र० मृत्या यमराघ । - क्रिया - रक्षा अंत्येष्टि वृद्ध-द्रित्वा । ∸ग−वि॰ पारगामौ । –गसि –१भौ मृत्यु । वि श्रेटको प्राप्त होनेवाकाः सह होनेवाका । —गमन— बंततक बाना, पूरा करना। −शामी(मिन्)-वि देश अंतगति । -धाई १ - वि अंतमाती, दगावात्र, बीखा देनेवाळा ! - चार्छी (तिन्)- वि दगावाव । —चर∽दि शीमापर खानेवाडा (कार्य)परा धरने शका !~च्छर्-पु॰ मीतरका प्रदा, भीतरका भाष्टा दन । ~ञ्च-वि० सबसे पीछे उत्पन्न दोनेवासा । नदीपक पु यक काम्यालकार।-पास-पु॰ सीमारककः दारपासः। -सद-वि अंतमें दीनेवाधाः भंतका। -भृत-वि मौतरकाः सम्मिस्ति । -भेदी(दिन्)-पुण्क तरहसा ब्यह ।-रस-वि॰ ताशमें भानेर माननेवासा ।-शीन-दि॰ ग्रिपावा दुमा । —क्कोप —िव विस(शब्द) के संनिध कशरका कोप हो जाय । ~वदि-प प्रवदानि । −कासी(सिन्)−िक्ष यस या सोमीवमें रक्षनेवाना । प शिष्य बांटार ।-बिदारण-प प्रदुष्टे तम मार्थे। मैंस एक । --बेका--१नी॰ दे० अंतराम ।--ध्यापत्ति--रती॰ सम्बद्धे मंतिम बद्धरका परिवरन १-सम्बद्धा-स्त्री भूमिदास्याः निना शृख्य अरबी इमञ्चान । -स्रिक्श--स्त्री अंतिम मंस्कार। —सव्∽पु द्याप्य (गुरद पस रहरूर क नेवामा)-साम-पु अवभूध आन।-श्रीमता -स्त्री असीमना । मु**० -पाना-**भेर पाना ।-वनना-अंतिय भागका अच्छा दोता ।-विगदना-अंतिय सागका भुरा क्षामा । --मेना--भर रना । अतिक−नि [मैं] भाग वस्तरामाः पुश्यस्य दासः वभराजः इषरः सनिपात स्वरका हर मेरा सीमा । भॅसडी-स्त्री मेंत्र। र्भततः~अ [सं] अनिये कमन कमा भैरान भौतर ।

र्भन्म-वि मिं•ो अति मर्म⁴ी।

अंतःस−वि॰ [मं] भीन्देश मनिविष वा पनिष्ठ (भ)

(शाप) । व संदेश क्षेत्रके क्षेत्र क्षेत्रक्ष है। (इन्द स्टिन्स्)।

भेगंधीय। -मचिव-दु नियो संचर प्रारवट क

र्भवरंगी-भंतर

टरी ! -ममा-रभी दिशी समादी गावैदारिणीसमिति। अंतरंगी(गिम)−वि [सं∗] दिकी, भीतरी । प्र॰ दिनो दासा । भंतरसन्प्र• [सं] सीमा, क्यारशक ।

भेतर-वि [एं०] नीतरकाः भारतः विकास भारतीयः

समान (रबर, ग्रन्य) बाहरी: भिन्न इसरा (समासमें) । पु• भीतमपा भागा थादाया जिला भारमा। सना वर्षा क्रमारमाः शेषः अक्याराः रशानः प्रवेधः। पर्देषः अवशिः

मानः भवसरः पर्दाः शेष (गणित)ः प्रासका बर्गाः विधेषमा निर्वेकताः गोपः हतिः निश्चमः क्षित्रात्रः पद्योजमः गौपनः भोरः भयायः वस्त्रः प्रतिनिधि । अ॰ वरः भौगर । -अवम-प्र• दे 'अतर्गृही । -पक-प्र शरीरफे शीतम्बः छ । चनः (तंत्र)ः स्ववससम्बद्धः निर्दर्शेकी बोसीब आभारकर शुभाज्ञत काननेक्क विचाः विद्या-विदिशाद बान दे अंदरका नवर्षाय । —छाख-शी॰ [वि] सम्बद्ध

भौतरका भरम साथ । -ज्ञ-वि इत्यको बात जानने-बाला । ∽तिहा।-सी थी दिशाओंके बीचको दिशा-निरिद्धा । -पट-पु पर्दाः दुरान निनादके समय वर भार बन्याके बीच टामा जानंबामा परता। करेडीमडी। मिहीके साथ रुपेग बानेवाना कपना ! -पतिस आय-न्त्री । सीदा क्षेत्र करनेको बस्तुना । -पुरुष-पुरुष-पु भारताः श्रीताकरणसे इद्यापप्ते रिशत धरमारमा। –प्रसच-प्र वर्षतंद्वर । -प्रभ्र-प्र वद्य प्रश्न भी पदल कही हुई

प्रदक्षते संबंध ररानवानाः अपने जात या प्रदेशमे वान बासा । -राष्ट्रीय-दि है 'अंताराहिय' । -प्रायी-(बित)-वि० अंदर रहतवासाः विश्वन्थ (बीबारमा) ! -संचारी-पु॰ संचारी मान । -म्या-स्वामी(यिन) -

बातम हो मीसर हो। -प्रावेशिक-विश् सपने प्रांत वा

क्यित-वि सीत्रद रहनपाच्य (श्रीवात्मा) । शनरसाख~तु+ कथरत करनेकी एक ककरी।

श्रीलरण-प सि विश्वविद्य हरलाः व्यवसायन व्यवसान द्याप्रमा ।

श्रंतरतम∽ि• [सं•] शहमीयः श्रीः समीपी । प्र स्वरते भोषरका मागा, टिलम्बे महराई।

श्रीतरम−त्र [सं] दे॰ श्रीदराय'।

क्तरास-प्र [मं] क्योंके बीचका माग वक्क स्वरू । **ब्रोहरा-म** [र्च] मोतरा गीवर्गे निजयः सिगाः क्ष्यमगः वश्यका नदान्त्रसा कुछ कारूके किए प्रशंगतः। प्र. श्वाबी या टेक्टो होत्कर गीतके और सन चरण । --विक-सी विदिश्त । - सबवेह - जी अक्शनः गृत्व और बन्मके वाक्सी रिवतिवाकी वारमा ! —वेदी –भी संगीके सकारे

नताह्या कर्कियः। भैतरा-पु॰ कीनाः मागाः न्हावटः एक दिनदे वंतरसे आनेवामा क्वर । वि यस छोड़कर बुसराः वो यक दिनके वंतरते ही वा अले (भेतरा हुन्तरा वेतरे दिन) ।

भैतराबा • -- स कि भीशर बरमा छिपानाः अकन करना । र्धतराप्रवा−िन स्त्री [र्ल•] गर्भनती (द्यी) !

श्रंतराय-प [तं] विधाः अवस्था जीवः मनको पका-मवामें भाषक वार्ते (वे)। शुश्चिकी आहिके अवसार्थ करो अप व्यक्तिकं मार्गर्थे पाधक होसा ।

र्थतराखः अतराखक-पु॰ [र्छ] मध्यवृत्ता स्थानवा काः। बीच, मीतरका भाग । --विशा-स्थ विविधा । र्भेसरिका-सा॰ सि | दो महामंदि बाजका स्तर । र्वतिशा−प्र [र्थ+] पृथ्वी और स्थान बीक्स स्वान

भाषात्र । वि अवस्य । —रा,~घर —चारी(रिष्)— पुरु पद्मी । विरु आहाराते चलनेवाका । - ऋउ-तु शोस १

र्भतरिक श्रीतरिष्या#~प० है 'अंतरिया । अंखरिख−वि [सं] शोतर भाषा या किया दुआ। दिला हुआ। धीनमें आया हुआ। इका हुआ। सहा अवस्ता पुरक् रिया हुआ' तुष्छ समज्ञा हुआ । हु॰ संप (गणित) ।

अंतरिम-वि हो समग्रेंद्र बाबका, मध्यवती (रितिस)। र्थेतरिया−वि एक ⁄िनके अंतरमे नामेवाका (क्वर)। श्रेतरीका - प्रामी के अंतरिकार अंतरीप-प्र॰ [सं॰] मुनिका तुबीला माग वी स्मुहर्ने **इ**र

तक बन्ध गया हो। एस (र्वतशीच -प्र•[र्स•] जबोवक, मान्ये पहननकाकपदा, बोग्री: **अस्तीरा । वि**ः भी**गरका** । भैनरीडा-पुण पारिक छात्रोके मीचे प्रश्नमेका प्रपुष्ट **मरत**ि समा ।

भेतर.--म [सं०] गीतरा शेषमे । - ब्राग्नि-सो बढ राग्नि । वि अस्तिस्थ । - असण-तु नीचे बानाः गावन योगा । --अवस्थ-प्र सीतरका लेगा -काकास~त मध्यरवडा मनुष्यद क्ष्यमें रहतेवाहा अस्य । —आकृत्र—प्र ग्रस व्यक्तियान वा परेश्व । ~ आगार-पर परका भीतरी भाग ! - आत्मा(धान)-मा भारमाः भैवन्द्रसम् । —भागम-पु मगरके नीवः

का गांगर । -माचाम-५ दक गांचन रोग ।-भारासँ -वि समये वार्थरका अनुसव ग्रहतेवाछा । **-ईव्रिय**-को • न्यन पुढि भारि भीतरको देखेगो । नागा-सो • शह बा रिनो हुई धेगा ।-गड़-वि अनावस्पदा वेदारः अकामकर । -गस-दि भौतर समावा बनाः धामिका

द्याः। −गसि−का मानना मनदा प्रदि। −गर्म− विक गर्मेश्वक (नगीयार-प्राप्त विकास सर (संगीत)। -शह -शह-म समझ भीतरी श्रंट। -शुरी-वी तीर्वस्थानके भीतर पदनेवाके स्थामोन्। बाबा । -घर-प्र वंशन्तरण । ∽वटर∽प्र कृद्धि पेर । ∽कासीय∽

वि यो ना कर्र जातिनेके नीनका (अंतर्जातीन निगार वा भीव द०)। —काञ्च∽वि जो बाबोदी पुरनोकै वीच रक्षे इय हो ३ -- खामी ० -- वि [कि] वे 'जेतवामी'। -- जाम-पु • वंशकरणमें अपने भार वपन्नेवाका धान र्शवर्षेत्र । −उपोवि(स)−सा भौवरका क्रमण् वि जिल्ली भारमा महोसमान हो। —ज्वासा-स्रोध शीतरकी नाम निता, मेताप ! -- त्यान-प्र• सराव भुकाना ! - कृषाम-पु गायव दोधा, क्लिना ! -- दर्शी

(शिक्)-वि मीतर देखनेपाका, बहमनिरोदका दिल को नार्छ आमनेनाला । -- दमा--भी : मदारहाने भें ए गंध प्रत्येक सहका शोपकाल या आधिपरण्याल (स्वी॰) ! –वसाह−५ मृत्युके घपरांत दल विनक्ते मोतर होतेनाने

भूरव । —राष्ट्रि—स्ता॰ भीतरकी लॉस, पानपा<u>त</u> श्रंत म सी रशि। -- तेरुरीय-वि यो या अधिक वैश्वींके शीच का बा उससे संबंध रखनेवाकाः देखके गीतरका (शम केंद्र अंतर्रेशीय भ्यापार ।) — द्वान-पु० दे 'अंतर्थान' । ─ब्रंड्र-पु अंदर हो अंदर चलनेवाका हैंड, पररपर विरोधी म बॉक्स संघर्ष । - हार-प्र मौतरी वा श्रप्त वर भाजा। -- प्राप्त-पु अस्टब, हुए दी जाना। -- नगर-राजप्रासन्द । -नाव-पु अंतरात्माको जानाज ना भावेख । -निविष्ट-वि भौतर गया, समावा या एसा हुआ । - निहिस-वि भौतर रिवत, अंतरमें रिवत । -पोध-पु अंतर्दर्धन सहय पान भारमगोप। -अधन --पु॰ दे अंतर्गृह ।--भाष--पु श्रंतर्गत होनाः समापः दिरामानः बाद्यनः मौतरका सनका,मानः अस्कम(बैन)। ∽भावना−सौ मन दीमन किया थानेवाका वितन, भंतरम मामना । -भावित-मि० शंतर्गतः छिपाना ह्वा। -भूत-वि॰ मीतर धमाया हुआ, अंतर्गत । पु॰ षेत्रारमा प्राप्त । -भूमि-न्यो• मृगर्म । -भीम-वि नमीतके जंदरका भूगमंत्र्य। - भना (नस्) - वि बाहरी डिनिवासे स्थामान रहकर अपने विचारोम हो हवा रहने नाका, समाहितवित्तः, वदासः वनशवा हुना। -मळ-प्रभावरका मकः चित्रक्कार। -मृद्य-वि भीतरको भौर सुदाबाजाः भीतरको भार जानेवाका । [श्रो० अंत-हुया ।] पु चीर-फाइमें काम बानेशको एक तरहको र्वयो । ∽सृत−वि सृतकन्ता, गर्नमें दी सर जानेवाका (शिशु)। −यारा−पु॰ मानस वर्ष वा पूजा। −यामी (सिम्)-वि दिसकी शत याननेवाका। <u>प</u>्र अंतः करनमें रिश्व जीवक्षे प्रेरणा करनेवाका ईसरः जारमा । -याग-द्र प्रवाद भितन । -शक्कीय-(असञ्) दे॰ 'अंतार।हिन'। – छंदा – पुबद विकीण क्षेत्र जिस्से भीवर क्षत्र भिरुद्धोः – स्त्रापिद्ध्य–स्तौ वह पढेसी विख्यायत्तर रहीचे अधराते निवनता दो। – क्रीम – भीतर छिपा तुका दुवा तुका बनानमञ्ज ।—शक्तिकः च्यासक-पु॰ मदिशाओंके रहनेके शानका निरीक्षक । च्यमि-सी॰ भर्जान् । ~धग-<u>प</u>्र किसी वर्ग या समूद के भीतरका छारा वर्ग । -वर्सी(तिंत्र)-वि भीतर रहनेवासा । -बस्तु-ग्री दिसी पुस्तक, पात्र देटी भाष्ट्रि गीवर जी कुछ हो, (क्रीब्टम) । -वस्र -वास (स)-इ मीतर परनमका कपड़ा। —बाब्बी—वि• विदाम् भागविद्। -बारप-पु भीतरी बुपा जिसमें भीग न निक्रमें। —विकार—दु धारीरिक भर्म मान निक असुभृति । -विरोध-पु॰ भीतरी विरोध, आपनी वैममस्या दं अतर्रह । -धग-पु अंतरिक अधारि निकाः भीतर रहनेपाला क्यर । - यह-पु < भेदर्वे । - बद्ता-शी इत्रमधे वेदला। - वदि --वेदी-त्री संगा भार यमुनाके धादका देश, अझावर्ग । -वेष-प्रशासका मांडीवेदानसमा पेड़ा।-वन्म(स्) -अन्तपुर ।-पदिसक-पु रे अंतर्शतकः । -स्याधि ~री भीतर**दा शम। −म्रथ-पु भीतर**रापामा। -इन्सिन-वि ने। दायमे या दावधी वर्डवर भीतर रो। – इ.स.– दु शुल्बर न इसी अल्यानी इसी।

−हित-पु भव्यव, गावव। **−धुत्य**-पु॰ हरपका भीतरी माग । श्रंतर्थि-पु [मुं] बुद्धरत थी राज्योंके मध्यमें रिश्व राज्य। श्रांतर्थे−िव [सं] मीतरका, वीचका । ~इस्टव्−पु० [सं०] भीतरका भावरण। **अंतर्वेती अंतरकी**—वि न्यी [सं•] गर्मवती। र्शतदा-- शेवर्'का समासगत रूप। - छव-पु॰ मीवरका धानरेज । -छिन्न-पु॰ गीतरका छर । अंश्वरम−५ **इ**त्य, **जं**शकरण । क्षप्रस~'मंतर का समागन रूप। --तप्त-नि॰ मौतर बका हमाः परेद्यान । −सक-पु॰ दरदाः −ताप−पु॰ मौतरी बेदना भनरताय ! —सकिस-र्म विसन्धे भारा मीतर ही भीतर, जमीनकं अंदर ही भेदर नहती हो। **≒सक्तिका−को० धरखतो या फरम् नदौ । −सार−** बि॰ भौतरसे ठोस, पोड़ा; बसवान् । प्र भौतरो सार तस्त, दम, ठीसपन मन, मुक्ति, भईकारका, योग (सा०); र्वेतरास्मा । अंतस्य−५ [सं] शॉव ध अंतइपुर•−पु दे॰ अंत पुर'। अंताराष्ट्रिय अंताराष्ट्रीय∽वि० [५०] दो या अविक राष्ट्रोक बीचका उनमें संबद्ध या उनमें प्रचलित (विधान मार्ति) । शंक्षावरी-मी॰ शैतशी। श्रंताबद्गाची(विन्)-g वे 'श्रंतावधानी'। अंतावसायी(यिन)-प्र [सं] यांदाङ नार्र मौथ वारिका व्यक्ति। (भी वैरावसायिनी ।) असि–स्रा• [सं] वदा वदन (ना•)। अंतिक−वि (सं•) नवदीको, धर्मापी पासका; अंततक पहुँचनेवास्य । प्राप्त नैक्ट्रप, सामीप्य । अंतिका−र्या॰ (सं•] बरी बहन (मा); पुस्हा, मही; सप्तका नामक पाचा । श्रीतकाकाय-9 [मै] निक्×वर्गीका छदारा ममीपरश्रका धवर्षवत । अंतिम−(व+ [मं] सब्धे पांग्रेका,आधिरी परम । अंतिसोक-१० मि॰] नाध संस्वा । र्भती-मा [मं] पन्दा। असेवर, अंतेपर - प्रे दे 'अंतपुर' : अंतेशासी (सिश्)-प [सं] गुरा पान रहनेशना जित्या कोशक । वि. पास वा मात्र **रह**मेशका । संस्थ-वि [मं] अंगडा चारिएं। सन्ये गी हे या पीर्यक्रा नापका। पुरु मुक्ता भागक भाषा अन्यका छ। मीहकी ٠): হাজকা মানিম को अंतिम चोद्र मास कास्युना अंतिम एका अंतिम सपुत्र । -कर्स (मृ)-पुर -किसा-गो नद्दस्र भा^{ति} भैरवति । च्यामन=पु॰ कॅपी नातिको भीदा श्टारिने संकथ करना । 🗝 🗷 🖰 शहर अहुत । वि र्वनम् वर्वता । -पद् -सून्य-पु वदरा सक्त बहा मूल (र्शन्त)। -म-पुरेगी स्तत मीन राणि।-यग-य बन्तिम ।- लाव-व अध्यक्त भागम अध्यक्त छेन्। -वय-पु श्रूणा - विपुत्रा-भी श्रद्भ कृत्ता।

शंस्या−सी॰ मि॰ो श्रंत्यक् सी । भैरपाक्षर−पुनिो शुभ्य वायप्रकाशितम अध्यर ।

भेरपाक्षरी—सी• मि ो प्रचपाठको वट प्रतिवीतिना क्रियों पद्दम परे हए एक्ट्रे अंतिम अक्षरमे भार स बानेबाला एक

पाना डोता है। भंशानुपास-प [मं] पपके चरणोंके अंदिम अखरोंमें ममानवा द्वीना तकः काफिया। **भं**रवाचसायी(यिन)~पु+ [ध+] अति निम्नवातीय

म्बर्फ-टीम जमार बारि । संस्पाधम-पु [तं] भारित्री भाषम सुन्त्र्यामम्।

भं पाधमी(सिन्)-दि [गं॰] श्रीतम भाषममें रहने बाका। त स∺वासी।

श्रारवेष्टि-स्था [मं] सत्दर्शमा

अंग्रंप्रमि – ला॰ [मं॰] बर्शर्जः बायुके कारम वेग्लाकुसनाः भंत्र-पुरु [मं०] ऑठ,ॲठरी । -कुब,-कुबम,-विकृतम

-प॰ अतिमि होनेवासी गुदगुदाहर । -पाचार-प॰ एक पीपा को दबादे काममें बाता है। - सताह-पूर्वातीमें

बधन होता ! - बुद्धि-मी॰ जीत एतरनेकी नीमारी। र्भटकोस स्टमेका रेगा। श्रीसाय-प्रामि विशेषस्य स्थितः

संद्री –श्री [सं] छगवांशी सामक पीषा) ● दे 'श्रंष'। **श्रीयक−**प जैतिबंदा संभ्याकालीन मीजन । भौदर-भ [का] सोतर ⊦पु टिक (भौदरका सक्त) ३

भीवरसा-प एक प्रसिद्ध मिठाई। अर्थवरी—वि मौतरका। अंद्रकृतीलि [फा॰] सीवरी अंदरका।

संदाक्र – पुष्ता] दंग दवा सोहक दंग अदा। जलका, उधिन सामा। दि० ऍक्रतेवान्या (श्रीवाकी अंतरी—-वैसे तौर्रदात गौर्भदात)। ∽पष्टी नस्य कमकृत । ⊸पीडी न स्रो भावपर इतरानेशको गाँ। सु॰ -अबा सेमा-

दिसीकी तथकी नकत करना । **संदाजन-भ** [फा] अरक्तरे अगमन।

अंदाहा - पु [का] शरकर, अनुमान संसमीना । भैदाना - स दि क्याना वरकामा। संविका-सी [र्सण] चुन्हा, भैगीठी। वही वहन ।

संतु-पु मिं] वंबीरा दाबीके पाँव वाँवनेकी सासन्तः भारोंमें बहननेका क्य गहना वानेव, पेटी अपर। भेंद्रभा-पु शाभीके पीठेके पैरमें शाकनेके किय काठका

बना हुआ एक कॉटेयार लंब। श्रद्धक, श्रद्ध चतुक-तु [मं] दे॰ 'श्रंदु' । संदिशां - पुरे वे 'बरिशा । र्मदेशा~पु (फा] सीन विताः सक मासका यतसा

दानिः दुविवा । अदिस*-पु दे अदिशा'! भेदोर-पु शोरगुरु, होलाइक-'नावन नावहिं होर र्वदोरा−**द०** ।

श्रीकृत्यु [फाण] बुका, रजः करकाः। ≔नाकः~ वि गुम्सद। र्थाप−वि [सं] श्रेषाः विचारशीयः निर्मुविः वर्षेतः | प्रत्मत्त । ए॰ नेप्रदीन अवक्तिः **र्वपकारः** अदाना का पॅक्षिक जरू; एक तरहका परिजानका उस्सू । कमनारहा ण्यः काव्यवीषः ! -कार-पः अभेराः -कास-प्रवासिक] केंपरा । —क्य-प्रक केंपेरा कुर्वा; सूचा

कुर्मी भिसका सुँव भास पानमे बका दो: अवामा एक मरक ।- न्योपडी--वि॰ [डि॰] मासमझ मुर्ज । --समसः -वामस-प्र• पीर जंबदार कॅभेरा प्रष्य रे -तामिक -सामिक-पु मिनिटोपकारा अग्राना ११ नर**स्**वेती थका गृत्यु सम । —धी-वि मासमञ्जा –पूर्वक-पुरु वॅनिरा। वनिरु पुराचार 1 -परंपरा-स्त्री० निना सेने-

समने प्रानी रीविका अनुमरण भविवार्गसान।-प्राया-न्ती॰ समुसमें कवित यक शक्तपद्द । -बाई॰-नी॰ माँची।-मशि-(व अवस्मा र्वधा। -मधिका-सौ देवताइ मामक पांचा। −राजा (बनू)-प्र[®] मीविशाव भारि न जानतेपाका विकेशस्य राजा। -विज-गर् र्मासके भीतरी परवेका सम्बाधभाषी निर् वा स्ला!

─विश्वास्त्र —त निना सीचे-समझे किसी नातको मान क्षेत्रा विचाररहित किवास वहम (~अळर-लॉ≉विवार रहिन शका। -सिन्ध-प्र वद सना विसे सैनिक विका म मिन्दी हो । वि 🗣 निवक्ट । **र्धव(म)**-५० [६] बाहार, गांची मात । र्खक -वि [र्स] भंगा। पु शिवके दानों मारा सना एक बैरबारक बादन विसंधे बादनोंको भंगत प्रास्तान्तको ।-पासी-(तिम),−रिपः-काञ्च−प्र शियः सर्वः चंद्रसाः समि । **भेषकारि—५०** [सं•] शिव ।

अंधकारी−स्थे (र्थ] मेरव राम्को एक सी । भंजव-पु॰ भाषी पुकान । संबरण-प्र देश संबर्धः संबद्धाः। **अधिरा•-**प्रभंपा मनुष्य ! वि. अर्था । र्जना—वि विना नाँखका। वैसरोको शक्तिमे रहिना भगः

बरा सीयमेमें असमर्थः विवासीमः विना सीयेसमेरी काम करनेवाका। भेवेरा (श्रंबा ग्रह्मा) । 📆 प्राची !- माईमा-पु दे 'अंग सोसा ! - कुर्सा-प्र' सका कर्मी अंबक्तपा करवींका एक सेक । —श्रीका~प्र°

बता (सञ्चन्नमार)। -विराग -दिया-प्र प्रेयनी

रोजनीयाका भिराग ।─तारा~पु नेपपुस दारा।─सैसा

-पुरुष्टिकाण्य सेन। -प्रीज्ञा-पुरेश आर्रमा

विसमें थेदरा साफ न विद्यार्थ दें । अ: −वजना-वेरपूर्व

वमनाः भीरा रामाः वान-वृहत्वर एपेदा करमा ─थनामा—तरस् वनामाः ठणमाः । —(भ्रे) की सक्दिः −व्या भारी−एकमात्र स्वारा । क्षंबार्ज्य-अ॰ विमा धीचे-विचारेः वेदिसायः वेतवाया ! वि विचारदीय । स्वी यशा अवश्वादः अपेर चीगापीगी अञ्चयस्या । श्रंबासकरण-५०(सं] औरा मृँबकर विशोधे पोक्रेपकनाः

किसी व्यक्ति वा व्यवदारका दिला दिवारे अमुकरणकरता। **श्रीधारम**-त अंबकार। र्वकासकी~मी र्थमा प्रोगा।

र्वाबाहिः वीवाहिक−मु [सं] एक विवहीत सर्व। ^{युक्} तर्वकी मध्यी।

भंपाहरी-सौ॰ भोरपुष्पौ नामक हुए। संधिका-को॰ मिं ो रातः सांसका एक रोगः वासाः क्षिकोंका एक भेता।

भैंधियार भैंधिवारा#-पु० भंगकार ! वि० वैंधेरा ! र्थेघियारी-सी॰ संबद्धार मोडों, शिकारी निविधों नारिकी बोबॉपर बौबी बानेवाली पड़ी !

र्थे भियासी-न्दी॰ जंबकार । र्धश-प्र [सं] केंगा महन शिक्ष।

अंतरु∼प्र• सिंी किरीय क्या।

र्कप्रेर-पु अमीति अम्पाय, बीगाबीगी: नियम व्यवस्थाका भगाव ।~साता~पु• गइषः अन्यवस्याः हिसाय-किताय का ठौकान रहना।−नगरी∽स्री वह स्वान बहुँ कीर नियमं अववस्था न हो।

अंधे(मा÷−स• निः अंधेर करमा। अंबिरा करमा । **र्वेदेश~पु॰ वंबदार मैराइबः एदासीः छावा (अँपेरा** छोडो) वि० प्रकासरहितः वंबकारमद । - सन्धास्ता-पु॰ सुप्रेट भीर श्रीन कागजेंको बिश्चेष प्रकारने अधन्कर वनावा हुना एक ग्रिकीना । --ग्रुप्प_ण-प्रध्य-पु॰ वहरा मैंबेरा मोर अवकार। -पामा-पु क्रुश्न एहा। <u>स</u>् -प्रा जाना-अत्यधिक अंश्कार होनाः बहुत वर्श दानि

भादिक प्रभागक होनेपर कछ विशास न देना । --(१)--उजेछे-समय-कुसमय । −शरका उजाखा-अति संदर या बांतिकुक्तः एकसौता वेटा । -श्रीह्-पौ पटते समाला होनके प्रत्ये।

भैंचेरी-स्रो अंश्रहारः अंश्रहः घाडे वा यसका जारायर टाक्नोदापर्यायाज्ञातीः दक्षिण मारतका एद स्वान । विर्मा वंबदारभरो । स॰ —कोटरी—गर्भ कीयः ग्रप्त मर । - •का बार - गुप्त प्रेमी । - डासमा बा हेमा-

भैंभेरिया-ता॰ भंबकारः अवरा पादाः ईदाका पहला गोहाई।

काँग मुँदकर धुरांति करनाः यागा देना । भेषोरी-सा धोरे या बैकडी ऑखपर टास्नेका पर्दा, सन्बद्ध ।

भैभौती - सौ॰ दे अन्हीरी । भैष्पार=-प्र अंबदार।

भैष्यारी १ - ली अधिवारी अधकार।

र्मभ-द [मं] निविष भारतका एक प्रमेश आंका पद भौत्यव पानि। बहेतियाः मगबका एक राजवश्च ।—ऋत्यः— पु॰ मगपका एक राजवंदा को अंग्र-वादे बाद कला ।

र्भव~५० [म] पिनाः स्वरः वेद रवर करनेवालाः अगिरः वतः ≑ माम । स्वी दे औवा । र्वचक्र−पु [स्] भंगर गितनेत्र (१)। विनाः नांना ।

भेवर-पुर्सि] आकाण वन्याच्या विदेशप्रकारकी गांधीः बगरः शमुण्डे हिमार पार्वा जानवार्तः एकः मुधवित बरतु নাবৰাহ কাম জাৰা চঃ কখনে জয়ক, বাস্থূৰানা बाम्ब महरा परिधि धेरा ६०'म आँडा बुराप्र पापा स्या • दारल । – चर्-पु प्रीः दियाधर । ⊶शारी

(रिन)- इ धर । - डंबर-पु [हि] न्यान्तरास्में र्शापम (रहामें निरातं देनदानी लाही।- च्-पु ब्रहण । -पुरद-मु भर्गमदशा ।-वाही-मा [हि]हस्रहादा में रर'६ बाम भाती है।-ब्रम-की [हि] मारामुरण ।

-मणि-पु सूर्व । - पुरा-पु० कपर धार नीचेका क्या। -संसी(सिम्)-वि गगनस्पत्ती । -शेफ-प्र वहत कीया पहाड । -स्थळी-सी॰ प्रमी । **मंबरसारी~सी॰ (१)** एक प्रराना कर वो परीपर **रु**गता

संबाति—प्र० मिंग्री क्षितियः बसका छार । **भैंबराई-का , भैंबराध-पु० म**मराई।

अंबरीय-प र्सिंगे मात्र दाना भूमनेका मिडीका वरहन तका विष्णा शिवा अनुतापा पक मरफा सूर्या अमहाः छोटा जानबर, बछड़ाः अबोध्यत्य एक सूर्यबंधी राजा जो विष्णमस्त्रिके निष्य प्रसिद्ध है ।

भेवरीका(कस)-प॰ सि] देवता । **अंबख-पु॰** माश्क पशार्थ सद्दा रस ।

श्रंबष्ट-पुर्सि] एक प्राचीन जनपर (कादीर और उसके भास-पासका मदेश) और उसके निवासी एक बाहि जिसकी प्रकार बावान पिता और बंदबा भारतस मानी पाती है: शायरबॉकी एक उपवाति: महाबद ।

श्रेवप्रकी-श्री स्रीद श्रेवहा'। अंबद्या−स्वी (सं•) जुदौ सवाहा सुक्रिका अंबद्र जाति

अंबष्टिका−स्वां [र्म•] ब्राधी कता । **भैवा-स्रो**० (स्) मानुः सम्माः दर्गाः शिवस्रे भागाः " काश्चिरात्र इंट्रचम्नकी तीन कन्याओंमेंसे सनम वर्षा जिसका भौष्मने अपने साई विविध्यश्यमे निवाह सरनेरे छिए इरग दिना था। पादा कता। ≠ तु आमः। -पासी--न्द्री [द्विक] अभावन अमरम । **श्रंबाडा-मा** [मं•] माताः अमकाः

स्रोबायु −स्त्री [मं•] माता। **अंबार-**प (का॰) बरु राखि । -ल्लामा-पु॰ गोदाम र्मनार ।

भंवारी-प 🕷 अम्यारी । अंदासा-स्था (सं] माना। अंबाधिका-मी [में] भाषाः पादा रूपा कार्याराज इंड्रचम्नकी भीष्म हारा हरी. गयी क्रमाओं मेंस मुबमे छोटी बी विचित्रवार्यकी क्रिनिष्ठा वसी और प्रांद्वामें माता थी। व्यक्तिका-को [भ] माना हुनो पार्वती पान सना। काशिराय इंडचम्नकी मीध्य हारा हरी गयी मैथली। सन्दा को विनिजनीयकी वही रामी और बनराहकी माठा थी। -- पति-पु िव । -- पुन्न -- भूम-पु भूगराष्ट्र । -- यश —प् यद्भ बुरायवरित शतः समर्थे तस्य भैतन्तर एक् बस् ।

श्रीविकेय−पु[मं]⊁ अशिश्वपं≀ श्रीविद्या−न्या छाटा ६ था भाग जिसमें जानी न परी हो। रिकाम ।

भैविरधान-वि नृवा।

अवेद-पुरु[सँ] जन-रत्तका प्रश्रद सारा स्ट्रार्टः जाम र्क्टरोमें श्रीबा रक्षातः भारती स्थाता ।~करक **~िका**त – प्रवत्। – कीस – क्र्मै – पुर्वे पुर्वे । – के्नार – पु रामगब्ध शब् -किया-मे पिर्मना-।-ग - चर - चारी (रिन) - दि यजी में रदनशाना (साम अर्थः जनवर्ः) । −धग−पु श्रेन्दाः – स्तर्र-प्

```
अंपुजाक्ष-अंहिति
  हीतः। -बासर -तास-४० विवाहः। -श्र-४० वध
                                                   श्रीभोजिती-स्रो [सं॰] धर्माहनी न्द्रमहपूर्पेद्ध स्परः
  में उत्पन्त । पुरु कमका कहना; र्याया वका वैत्रप्र मानका
                                                    वह न्याम वहां कमनीको बहुकता हो ।
 पेट: बैंत: बपुर: मारम पत्री- १८फा चन्न । --आ--ची+
                                                   ऑमीरी-मा॰ दे० भारीरा'।
 यम रागिनी (`~सम्बन्-पु० सूर्व ।: →द्र~ति० प्रकृतेन
                                                   र्भेषवा=−वि आशा, त्रिमुका सुँह संविक्षें बार हो।
 बाह्य । प्र वाह्य । – घर--पि जल पारण धरनेवाला ।
                                                   भैवरा भैवला -प्र• दे॰ 'बॉरका'।
 ~धि-पु॰ ममुद्रः तक्षपात्रः चार्दी संदेवा । ⊸श्वावा--
                                                   र्भेबळी†-स्वी छोटाओंक्सा।
 स्रो॰ धाकुमार । -नाथ-पु॰ समुत्र । -निधि-पु॰
                                                   र्जा''-ड सिं•ो माय, दिस्सा; चीना भागा सेन्दर
 रामुद्र । -प-पु० समुद्रा बरण चक्रमर्थक सामक्रा पीपा ।
                                                    मागः क्यकी परिविद्धा १६० वो भागः। भाग्य श्रेषः विक
 वि पानी पेनेप्राक्ता । -पश्चि-पु० रम्मुहा वरून । --
                                                    की स्कोरके कपरका औक एक बाहित्य। हिना ईवा
 पद्मा-त्यो॰ उद्यश नागर्मोवा । -एक् सि-ओ॰-यास
                                                    -करण-ए॰ माग क्याबा, बेटबारा करबा । --एव-
 ~प्र बलपहार, भारा । -असार् -प्रसादन-प्र•
                                                    प्र• वद टेम्पम विसमें हिस्सेपारीका दिएसा स्थित है।
 करेला निर्मेसी । - अस-पु करून । - भूत्-पु बादका
                                                    ~भाषः (ऋ ) ~भागी(।गरः)−वि
                                                                                     हिस्सा गरे
 सम्बा मोना अवसा -मान्रज-पुर शंबुक योपा।
                                                    वाला ! - सहाा-न्वी० वसुना नदी । -इस-हारी
 ~राज-पु॰ समुद्रा वरण । ~राबा-पु॰ समुद्र।~
                                                    (रिन)-वि० हिम्सा धानेवाचा ।
 सह-प्रभाव । -सह।-सी० स्वक्षपवित्री ।-वोडिजी
                                                   र्श्वयक्र-पु [स॰] माथ छोटा दिला हिरमेदारा दावस !
 -सी दश्ड । ∽वाची-सी० वाबार कुण पश्डे
                                                    वि॰ हिरगा पानेवासा ।
 दलमाने चनाइमीत्वय चार निर्माक निर पृथ्वीके किय
                                                   <del>খাঁয়ল'</del>—১০ বি<sup>(</sup> হত প্ৰাট বিশা হৰ্মৰ ।
 प्रमुख होत्तवासा एउ विभेषण (इस समय पूर्णा रजरवन्त
                                                   अञ्चल-प्रसि विभावन विग्से परना ।
                                                   भाष्ट्रिसा(मू)-डि [बं] हिस्से बाँटनेवाला।
 माना जाना द और क्रविक्रम बंद रहता हो। । —यासिनी
 -चामी-की पारका सामद पीथा । ~बाह्र~प्र॰
                                                   अंग्राज-वि वि ) दिन्मेगार व 'अंग्रक ।
 बारका माना १७ मा संस्था। तीन । त्यादिमी त्यां।
                                                  बोसाबतार-पुर [मं ] वह अवनार विस्ते वैदार वा
 शाबको पानी बसीयनेका बरतन वह कानेवाली सी।
                                                   देव विनोपओ परी कहा जवतीर्थ स दर्द हो।
 -बाही(दिन्)-प करका सुरूका ⊢विहार-पु०
                                                  श्रंशी(शिषु)-पि [र्च ] हिस्तेवार विश्वन को नेत
 क्षक्रद्रोद्धाः -बेलस-५ पानीमें पैदा डोनेवाका एक
                                                   या अवयव ही, शक्यकी: सामर्थ्याम ।
 क्तरहफा बॅच । -शामी(बिन्)-ड बिग्नु, नारावण ।
                                                  भंझ-प [मैं ] फिरण प्रमा; स्वमाश क्रेंट निपा
 -शिरीपिका-नौर एक वीका !-सर्पिकी-सी जींक ।
                                                   तागका छोर। बम्बाभूवनः केना एक कपि । --जाक-उ
 -सच्छर-अपे॰ वह छिप्दते वा उद्योगनंदा (काइका )
                                                   प्रकाशर्थन । —चर –पति ~ सर्ता(त) —स्वामी
                                                   (मिन)-प धर्व। -नामि-नी वर विद्वासिस
 मात्र ।
ध्यक्राम-(व [मृं•] क्यक्के समान नेत्रीताका। पु
                                                   किरणे पदन दोवर शिलें। -पद-पुर पद तरदस
                                                   रेखनी करवा। -सर्वन-प्रश्रदक घरतुरः। -साधी
विष्यु ।
बंबुद्धासन−९ [मं ] नद्या ।
                                                   (म्बन्),-इल-पु० पूर्व ।
अंदुजासना-मा [मं ] टर्मी ।
                                                 र्थशक्र⊸पु स्ति] वक्ता स्क्ष्म वक्त वारीक करणा
र्धतुससी~खी॰ [र्थ•] व्यः नरीका गास ।
                                                   रेशमी कपना वपरना सपडाः तेबपाता भस्य प्रकास ।
श्रीच्चा+−দু আন।
                                                  भंडासमी-मार्मिशे पासप्त्री ।
संबोद-पु [पाः] मीत मलमा।
                                                  र्वभाग्(मन्)-3 [धं ] सूर्व बहुमाः सूर्वधी राजा
संमा-९ [मं ] भंगम्या धमासगड रूप।-पति-९
                                                   सगरका पीत्र । वि॰ वैशनुका प्रसासका माहवारा वंड
बमस । -शार-पु मोती । -श्-पु० कुर्जा, भाष ।
                                                   मव।~(सन्)५०सा—स्था करणीः
भेम(म)-पु॰ [में ] जका बाडाणा देवता। मनुष्या
                                                 अंडाळ-वि॰ (सें ] समायुक्त । पु॰ वाशका सुति ।
 शक्ति तेप पिनए पिन्होदा कमाईडकाम कन्नमे बीधा
                                                 अंस-पुरु [में ] अंश क्षेत्रा । --क्ट-पुरु स्त्रिका कृष्य !
न्यामा जाववारिमक ग्राप्त (को०)। चारकी व्यवसा एक
                                                   हिरसा । --आरिक--विच क्ष्मीपर नीम क्रोमंबाता ।
 राक्षमा गढ बता ।
                                                 अध्यक्त-वि [मै ] सवकृत क्ष्मीपाकाः तगहा ।
श्रमिषि-पु दे श्रमोनिषि<sup>9</sup>।
भंगन्तृष्टि—मी [मं ] चार आध्यारिगढ ग्रांस्वीरीम
                                                 भौस = प्रामा क्षेत्राः स्रोत्।
                                                 अभिना अस्था~पु दे० अन्ा
 यक (स्रो) ।
र्थमो~'श्रेमम्'का ग्रमासस्य कृत । ⊸ख∽वि० सरुमें
                                                 अँसमामा∽म कि मन्। भरभाना।
                                                 श्रीस्थ~वि [सं] क्षणान्तर्वर्थाः।
 हरम्ब । पु कमक श्रीराः भेद्रमाः भारश कपूर । -- ०
 क्षति - ० क्षत्रमञ् - ० क्षत्रमा(त्रमण्)- ० वोशि-
                                                 औट(म)∽पु [सं] पापः विशास कट ।
 पुत्रमा। –द्~भर∽पुशरकः मोशाः ∽वि →
                                                 क्षेत्रकार -पुरु मरखरा ।
 निधि-पु समुद्र । -० प्रदेशक -० ब्रह्मक्य-पु०
                                                 र्वदेशी जेंद्रती~को [धं०] दाम त्यामा कट रोग <sup>‡</sup>
 मृैताः। −राधिः −९ छश्रदः। ∼स्त्-९ कमकासारसः। ∫
                                                अंक्रिकि अंक्रिती-स्ता [सं] वान।
```

```
11
मंडि-पु• [६ ] परवाः इक्षमूल । -प-पु० इसः ।
 -स्कंच-पु० पदी सार पुटनेश्व दीयका याग ।
म-३प॰ सि॰] यह व्यंजनादि मंद्रा और विशेषण श्रम्टॉक
 पर्छ सगदर शारस्य ( अनाक्षण ), भेद (अपूर) अन्पना
 (क्सूभ अनुदरा ) अमान (अस्य अकाम ), निरीव
 (बनीति) और अप्राद्यस्य (असाम, असर्वे) के वर्ष प्रस्ट
 करता है। स्वरसे आरंग होनेवाले छम्प्रेंके पहले आनेपर
 रसकारम 'अन् 'दो चाता दे। प्राविष्णु' वितः असाः
 मायु, मेहमामर मिहन अमृत ।
अइस्तो-पु॰ मुँदः देश ।
जद अहरां - भ० भीर, तथा ।
भरुदा-पु॰ इपशा मापनेक काम भानेवाकी जुङावींकी
मठतः - वि निपृता निर्मातान ।
 मऊसन्।-म कि इस दौना, बरूनाः गरमा पत्रनाः
  चमनाः छिक्तना ।
 अक्ल, अक्ली(बिन्) - वि[रं] जो कनाया कर्प
  बार न ही ऋगमुक्त।
 अपूरनाक-स कि संगीकार करना अव्याकरना 'दिको
  धी सीस ज्यार के माध्ये भावि अधरि -वि०
 भक्टक-वि [मं ] विमा काँ देवा; निविच्न; शहरवित ।
 भ इठ-वि॰ [६] बिसके कैठ स क्री स्वरहीन कन्नछ ।
 मक्रंप-वि [सं०] क्रम्पविता विवर ।
 भक्रंपन-पु० [श्रं ] रावणके दकका एक राक्षस । वि०
   दे वक्दपं।
  मधीपेद-विश्सि ] जो देंगान हा रिशर । पुनदा
   बीर (अंतिम तांबकर) के न्वारह क्षित्रवीमेंसे एक ।
  भक्रंप्य∽दि [सं] ओ क्यंपनदाका न दी निश्यक ।
  भक्र-पु (सं•) बह, हुप्सः पाप ।
```

मञ्च्छ-नि० [सं] नेवा; मंपर।

~पाझी-मी पेंड, पमश्र।

बढरा-पुरु भागवीका ग्य रीम ।

way !- fied maters :

भक्रदेनी-दि दे अद्युदाय ।

भटचा -ति द 'अहस्य ।

भक्रकर चमना-छोना क्यारवर चनना ।

```
अक्रवक*-प्रभागापीछा आस्का ।
                                               शक्तमा*~स कि कान नगाक्य सननाः सननाः माहव
                                                केना पा पाना ।
                                               शकाना-ल०कि प्रवासा।
                                               अक्तिष्ठ-वि [मं] वो सबसे छाटान हो। पु• हुदः
                                                बीक देववगविद्येप ।
                                               अकन्या−ला [सं] वद कन्या जिसका कीमाने नष्ट हो।
                                               अक्वक−प्र अंडवट वार्ते प्रकामा सुबद्धाः विसाधस्थाः।
                                                वि॰ चक्ति निरमध्य । शु० ~करना~प्रकाप करना ।
                                               अक्टबकामा−क कि मीनदाकीनीः प्रशानाः
                                               अक्टबर−नि [भ ] नहुन नता महस्तर। प्र भारतके
                                                मुगक राजवंद्यका तीसरा और मुगक साम्राज्यको नीवें
                                                पक्षी करलेकामा बाग्याहा ।
                                               शक्तवरी-वि अक्षरका चलावा हुमा<sup>,</sup> सहरर-संर्थाः
                                                नेमेख ( निवाद )। न्यी॰ यक मिठार्ट; सम्बरीपर की
                                                वानेवाकी एक शरक्की मकाधी ।
                                               अक्रयास∽प०दे० श्वरूका ।
                                               अकर-वि [मं ] विना शावदाः विना महमूलकाः करसे
                                                मुक्त बुष्करः निध्यस्य, वा कार्य न कर रहा हा ।
                                               अकरकरा~ु त्याच काम आनंशका एक पीथा,
मकच-वि [मं] कहरहित गंजा। प्र केत ग्रह।
                                                भावतपत्रका १
                                               अकरलवा = - स मि आह्द करना रतियना वानना ।
भक्टक-वि [मं ] या कट्ट या बज्या न हो; अहांत ।
                                               अकरण-वि १मं०] रहिव-र्यहन नेड इंन्विगरिमे रहित
भक्टार∽वि [मं•] यो कटोर न हो। कमतार ।
                                                (परमारमा): बहुबिम स्वामाविक ! * अकारण कारण
चेकड्-ग्री अद्रवृतिहा मान, दिठा वाहापन, धनान
                                                रहितः जिसका करमा अनुधित ना कठिंग हो । प्र. क्रच
 <sup>६</sup>ठः धर्मदः इटा स्वामिमान । ⊸सकक्-जी
                                                ज करना कर्मद्रा भगाव ।
 पॅठ आन-वास, बॉस्ट्रपस : -कॉ-स्वी गरस्वक खाल,
                                               अक्ररणि−श्री• [मं ] अस्यस्यतः नरार्य ।
 भेटा ! :-वाई-मा वद राग जिलमें वस तम आता
                                               अक्टरणीय-दि [भ ] च करने पीरय।
 दै। —बाक्र-वि अस्पद्धर यननेवाना, वर्मटी।
                                               सकरमध्-वि अकारण अकारणा ।
                                               अक्रमीयश्—वि देश सहरणीय ।
भक्षनाच्य वि स्राप्तर क्षा बीमा टिवुरणा सनमा
                                               श्रक्षरच-पु [अ०] विरक्षः वृक्षिक राशिः वह योगः विसक्षे
  एटनाः पर्भव बरनाः स्तम्भ दीनाः तनना तमकर
                                                 महत्र देवेत शीमराजिके भाग दूगर रहन रीए हो।
  भनना' बिर दरना। भूष्या करना' ग्रह होना । सुक
                                                अवसा-न्यो [मं ] अ मन्यो । ० वि. वतमृत्य गरा माना ।
                                                अक्टराधः -- निश्चायन ।
 वदम अक्षह-पु [सं०] एक तीविक थात ।
                                                श्रद्धराम−५ [त्र ] अनुगद विश्वा ('दर्म'ना वट .
                                                 इज्ञाम भारतम्) ।
 भवदाय-तु भवतनामे क्रिया, मनाव पटन ।
                                                आक्रमाण्∽ि सि }ें अभर्यनर म हो भूर साम्य।
                                                 ⊭ वि सदानका।
                                                अञ्चलक न्य सुम्ही आवश्या आगारे ।
 भरतानि कम शक्ति। अक्ष्माता सरागर ।
                                                अफ्रम्मी-निर्मी विश्वभैद्याः गर्नेक्नाः।
                                                अवरी-मा इसमें लगा दुआ योगा जिल्ला की प्रतिसाद
```

अकृष्यज्ञ−वि [मं] दर्पशील जो पर्मट सक्रेरे।

अक्टबित−दि॰ सि] जो न ध्रद्धागया हो अनुक्तः गीप

अकृष्य-वि० [मंग] जी यहा न वा सुरे, स्थानके भगीन्त,

सक्य#-वि दे॰ 'अक्य'।

भक्तच−पुदे• अक्त्रः

(बर्म-स्या०)।

श्राक्रधनीय−विसीये शक्रम्य'।

क्कभनीय कड़नेगी मस्तिके बाहर !

```
सद्ध्य-भेदार
```

देश एक विशेष पीपा । अक्षरण-वि [मं•] करणारवित सिद्धर । सक्क रा-विश् [सर] एम शतारशित, भरम सुर । **सक्तर्ज~ वि• मिं•ो** निमके द्यान छोटे हों। कश्कीम, बदराः

क्रिसमे प्रवार न दो । पुर्शेष ⊨धार-विधानगढी न । शक्कक≔ि मिं∘ेदपद्यान ।

भ×वर्ष~नि॰ (राँ॰) वी कारोंक योग्य म दी ।

धक्तंत्र-वि [गं] मी प कारेः बीजा।

भारत व्य-दि॰ [र्नु॰] म करने बोरब, अविदित अमुनित । प । अग्रिय वर्म । अकता(तृ)े~वि०[मं] यो दता शही कर्म सक्रमेशका,

नर्मसे अनिस (पृद्ध) । शक्तृक्र−वि [मं] विश्वताकोर्दयनां सदी।

अकत्त्व-प्र-[सं+]कर्त्व एडाएन्डे अभिमान्ना सभाव। अक्टर्मे(स) -प॰ मिं] दर्मका भगाव निकित्ताः दर्मका

कर्मको म करना। तरा काम । -भोग-त० कर्मककः सागरे मुद्धि । –सील–वि॰ मुख, भानसा ।

सन्तर्भक्र-वि•[र्स•](वद क्रिया) विसक्ते छए कर्मकी अपेक्षा म हो (ब्या•) । द्र वरमात्मा । **धकर्मध्य – रि॰ (सँ॰) क्**र्मक अयोग्यः मिरुन्याः आक्रमीः

अकर्मा(भैन्)−वि [मैं]कर्मरवितः, को कुछ करता न हो। निजन्मा। संरकार आरिका अमनिकारी । सस्मीन्वत~वि• (र्ध•) अपराधीः सम्बर्गतकः निरुष्ठाः

स बहते की वा

नेसार । **सकर्ती(मिन्)-नि॰ [मै॰] दुष्कर्म क्**रमेशका. पापी । अकर्पण−प्र [म] कर्पण का विकासका न क्षेत्राः भाक

र्थण, आहिषाद । सक्तरंक∽वि (सं•ोक>करवित नियोंच वेदाग । प्र

एक जैस । भक्ष्मंद्रता – लो • (सं) शेवद्दीमना । भाक्र**कंकिय-दि [8** •] निर्दोष शुद्ध, केदाग !

अवयुक्त(ब्रेस) आरोप: श्रीशरहिता निरा-भक्रम−वि चं 'दारा कमादीना गुपदीन । स्ती अवस्त । --वाद सी

बदान होनेपर निकलनेशको दक्त अनकता धाँत । भक्तसन्तरा-दि सबेका धातेगामा स्थापी। ईप्यांतः पी मिछनसार म हो। भक्तकारु अक्रुक्तीर-५ एक ग्रीमा विसन्धे जह रेघम-

यर *६ग व्य*हानेके काममें आती है ? **अक्टूब्य-वि र्स स्टब्स्, सम्बोन, निर्दोप** ।

अक्ट्रक-विष्यं विना तबस्टका निर्मेश शुक्रकीप्पाप। शक्तक, अक्रम्बन, सक्क्षकण-वि सं विनव वेंग रचित्र। निरदंकारः स्मानशर ! सफरकता-भी [र्स] ईमानदारी, ध्रवता।

सक्तरका−सी० [सं] चॉदनी ज्योरका । **क्षक्र**य−वि [सं] कतिवंशितः निवस स माननवाणाः दुर्गसः अध्याः जतकनीय ह

अक्टिपतः रि [र्न] कश्पनार[क्षेत्रः क्लाल्पनिकः बद्धविमः। **अफर**सप-दि [६०] केरागा निकॉन, द्वास । अक्टब-वि [सं] अस्त्रसः सत्त्र।

अवस्त्राण-पु॰ [सं॰] अमंगका महित । वि॰ समूम । लक्ष्य, अक्षमा-नि [र्थ] जनगंतीयात्री हुन्छ वा प्रतर म हो।

अकवश−वि [र्थ] कवपरवितः, त्रिप्ततः करनशः स्कार अक्टबरा-ए० अर्थ, जारका वेद ।

मक्रवास~सी॰ [श॰] श्रीमका शहु॰ । भक्तम∽पु॰ वैर, हैप; ईप्यां; वरावरा । अकस्मार -- अ० कि॰ वरावरी करना। वैर करना। इनावा। अक्तर्य-वि॰ [ध॰] बहुत अधिक । अ॰ अधिकत, बहुवा!

 वि० अहेला । † अहंने, निमा विश्वीकी शाब किये। बत्थम देत गन व्यमभति अवस्तर आगेषु तात'—रामा । शक्सी-वि बाह्य रसनेवामा प्रष्ट। अकसीर-न्त्री [अ०]कोमिया, बहदवा जिससे सत्ती बहुते

सीना बनावा था सके रोगविदोधको करूत गुणकारी जब्द भौपि । नि अपुरु, अन्तर्व । - सर-विश्वसीया बनागेवाका !-की बटी-सोमा-बोटी बनानेकी क्ये । **सदस्तात −थ** नि । सहस्र अचानद्वः प्रदानः श्रीकारमः

विना सारण । असद्दर-वि अवर्षतीय संबद्धते वोस्या बतुविहा। अकड्रवार-वि अस्वतीय जिल्हा वर्षम न हा सुके। भऊडि−नि॰ मिंी निमा थड या तलेका सवलाहण

असमब होनवाकः । अ अकारम हो अधानकः -बाव-वि॰ अधानक पेटा वा असमय अस्तव । -सोइव-उ म्बर्थको बहस उद्यक्त-कृद आहि । --पाल-प्र अपानक मरित होनेवाको बरमा। • जास-वि॰ कम 🚉 ही मरनवाका ।-धूक-पु अवानक होनेवाका उदर**-द**ः। मकादर-प भि दिसार हैया।-मच-प्र नर्ग-ग्रामा अकार्जरेंड-प 👫 दिसान क्यिनेवाका समीमादिसम

गौपमवाका । मकाञ्च⊸त्र कार्यदामि, इत्री हामि; विशः दुम्हर्ने हुए कासः ४ अ व्यर्थे ही निकारोजनः।

शकाजना*−स कि दानि करना। असि नद्र होताः शा रक्षमा । शकाश्रीक-वि वकान करनेवाकाः श्रात वस्यो ।

अकार-वि को कर स शके (वक्षोब र)> कर्राण्यीम ! शकात्रध −वि दे÷ सन्दर' (असूत्)। अकासर−नि [सं] को गोर वा दरी।साद म दो। अकाशक-नि अकुमनीय ग कुन्ते मोस्न 1 अ अकारने व्यर्थे ।

अकास-वि [मं] कामनार्गात निकाम श्व्हार्णया उदासीना मनिष्क्रदा । यु॰ बुष्यमे । क बा॰ निध्यमी वर्षः निमा कामकै । —इस−नि जो इक्छा हे प्रमानित म ^{हो}। चीर, द्यांत ≀ अकासता−की सिं} स्टलका वभाव ।

अकासी(सिन्)-वि [सं] वे 'मकाम'। अवस्थ-वि॰ [सं] कावरवित अक्षरीरी। पु॰ राही वरमास्या ।

शकार−५ [र्स] 'ज अक्षर वा क्सको क्वारम-मार्थि। **क सम्बद्धार** ।

नानेवाला । न्येक्टर-त्यां अक्षमय । न्याइ-वि जो दर य प्रष्ठ छक्ते कवारा जो निरंतक मण्ड न सक्ति । नकाकिक-वि [मं] अद्यासिक । अकासी-पु सिसीका एक संप्रदाण वस्तु स्प्रदायका भनुषाको ।

होनहाली मृत्यु । - वृद्ध - वि समबसे पहले बूटा ही

भकारमे एक -दि॰ [मं] की शमयम पहने सत्पन्न तुआ हो। भकारमे -पु आक, मदार ।

सहाम = - दु है आहारा'! - दीवा - दु आहाराया । - भीम - दु एक पेड़ ! - बाली - हो आहारायाया । - येल - पो असर ४० ! मुख्यांचिला - ऋषेष्य दार्थ हरनहा दब करना - गुर्थान दहा सुग्र दाव, वांचा परत कराइ - हु !

महासी-तो त्य पत्र क्षा काणा

भिक्रेचन-दिश्मि] जिसक पास पुरा स हो। असीनार्थस दीर्घा कर्मपुर अपरिवर्धशः पु पद सम्मु स्मितः कार्र् मृत्य म दो। दिद्र क्यांस्त परिवरण व्यास (नेस्)। अस्टिंचनसा-रो। अक्टिपनस्य-पुर्श्वशः विश्वतमा प्राप्तास्य स्तार (नित्र)।

मॅंबेशिय-रि [मं] जा पृग्नभी सञ्जनगढी दालीन। मॅंबियियर-दि [सं] जिस्त दिये कुग्न स दासह लिसेंदा सुद्धाः।

स्तित्व-वि [सं] को अुआरी म हो निष्मप । स्तिष्ठ-तौ॰ दे॰ कड़ी-तृत्व-तो समागेमें निरकने

वाला दाँत । -का अजीरम-नुद्धिश मितरेक (म्पं॰)। अक्रिटिन्य-वि [सं॰] पापरवित निर्मेश।

काकारव्य∽ाव (स॰) पापराइत निम्नः । अङ्गीक्र-पुर्व (स॰) काल रंगका ण्यः बरुमूस्य पावर । 'काक्रीवत-न्मी (अ] स्था । -र्मच-वि स्यानु ।

जक्रावृत्तान्ताः [त्र] अस्ताः । अस् ।तः अस्ताताः । अक्रीतिक-ली० ये० 'असीति' ।

अकोर्रातक-स्था०दे० 'अकोति'। अकोर्ति-सौ सिंी अपथरा, दरनामी । −कर-पि»

अपन्छ देनेवाका अपमान करनेवाका। अर्कुट-वि [म] जो बुँठिन या मोत्ररा न दो। कार्यक्षमः

मेंकुरु−वि [म] जो बुंदिन या मोबरा ने ही। केविश्वमः शक्तिशाकी सुका हुआ। तौश्य पैना स्थिर सप्तति

इतः (१) । — घिष्क्य — पु० स्वर्गः। अक्ट्रीयल — विकित्र विक्रिये

मकुटिख-वि [मं] मौबा सरक मोला माठा।

अकुतामा≎∽अ प्रि दे 'उक्ताना । अकुतोश्रय∽दि (नं∘) विशे दरी वाकिनीसे सदन दा निर्तात सबदान्य निष्ठर !

अकु सिल-वि॰ [र्स॰] अर्थिन्त्रीय थी बुरा न हा। अकुच्य, अकुच्यक-पु॰ [स॰] वह धातु जी बुरी न हा,

मीना वा जोती । अकुमार-वि॰ वो कुमार न हो जाप्तवदरक । अकुछ-वि॰ [सै॰] अनुष्ठील कुसरहित । पु॰ धिव- सुरा

श्रदुन्छ – वि० [सं॰] श्रदुन्हीयः कुक्तरदितः। पु॰ शिवः शुरा - कुकः। श्रदुन्सा–स्वी [सं] शिवा पार्वतीः।

मकुरता−त्या [स] ।श्वा प्रवताः मकुरतानः—श्र कि॰ शकुरु होना, प्रवासा विद्वस

होना, मन्त्र होना । अकुसिमी-नौ० व्यक्तिपारिण त्याः वि० त्याः ध्यप्ति

चारिनी। अकुर्म्सान-वि [६] दीन इसका नीच कुलमें उत्पन्न

कर्मामा। पूर्णिमे मेर्डक न रहाजेदान्य अवश्वितः । अकुसाल-विक [र्यक] अतार्था, (दिन्ये) काममें कवाः मान्यद्वीतः अद्युच । पुक दुराई, अमेगल दुरा राज्यः ।

बकुमीत्-वि [सं∘] सुर वा साम न तनवासा । अकुर्, अकुर्य-पु॰ [स॰] रंमानगर आरमी । अकर-वि [स] जो पंता न व, अमाप (सन्व) जो

चारा न द्वा (सिद्धा)। चारा न द्वा (सिद्धा)। अनुस~4० विगमी नृत्य व्यक्तियान सीमन विष्णः

अक्तुन-विश्विमधी कृत या श्रीतास सौँस्य विद्युल, अव्यक्तिनाथ अन्यायक अक्त्रमान्(१)। अक्तुयार अक्त्यार-दुर्धी] समुद्रस्य स्थल वर

महाकरण्ड जिस्स क्लीड। भार माना भाग है भट्टल । विक अन्द्रे विस्पामकामा कारियन स्पत्नेम । अक्ले-वि मिं] कपण्डिया यस्तास जिसे क्षांम ।

को । पुत्रहाः अकुष-दि में दिना कृष दिमारकाः गीनारहित्।

अपूष-4 में विनात्य दिमान्दरः गीनारदित्। अवृष्टप्रण-दि भएरपिरः प्रगति ।

अष्टरणू-६ में बिनात्र स्टब्सीय समान। पुरुष्य गरिनाीस अभाव।

अरुवर्ग्न(विद्रम्) निव्य के इत्यस्ति । अष्टमनिव्य कि को जी प्राम क्षिमाना दो विगन्त स्था म्रज्ञा−भक्ता

वा अन्यवा किया हुआ। भी विश्ववि हारा बनावा ज गवा

है। महिमा विसने कुछ किया न हो। स्विक्तरिता अपका

पु• अभूरा काम किसी कासका धूरा म जिला जानाः

मक्ति: कारण मोख । --कारड-वि - गैनमीवादी: विमा

सद्दरा (र्वचरः)। -चिकीयः~लाः सामादि अपार्वीरे

कार न माननेशाजा।∽धी∽क्षकि≔िव

शक्ततास्थाराम्-पु॰ [मं] सङ्ग्य कर्मके फलको प्राप्ति ।

अक्षुतादा-दि [म] दिसमे प्रनोंदा चलाना न सेन्या हो।

सहतो(तन्)-वि [मं] सङ्ग्रन भनाही निसम्मा।

अक्टल−(द॰ (ग्॰) स बुटा हुआ। जिसकी क्षर-च्योंच न

श्रद्धारथ−वि [तं] जीकरने केल्व गदीः तुं कुण्डर्म

देभेदालाः जिससर प्रीयो म कगी हा ।

रमी माल की मंदी ही ।

अक्रतार्थ−वि [सं] विक्रकः।

क्य गयी हो।

क्षकृतीहर**्**ष [म] अनिवाहित :

अपराव । -कारी(रिन्)-वि॰ कुकमां।

शक्तिम-वि सिं•] यो गनावर्ध न हो, स्वामानिकः **म**सनी। मधा । श्रक्तरस्त−वि० (सं०) अध्रा, को प्रा न हुआ हो । अक्रप-वि [मं] निरंब न्याहाने। शक्रपण-वि• [मं•] जा कृपण स द्वी उदार । धक्रपा~न्योः [र्म•] क्रपास्त्र अमाव नारायो । श्रक्तका नि वि] बादुरता-रततान दी सुरक गीध-शाजा ! - सहसी-वि वसवसाको । जी प्रमुप देवर्ग ।

शक्कप्र−वि मि] बीसीवाल गया दो की कीलाल

गुंगा हो। पु परती जमीन वह अमीन की जैली न गबी हो। -पद्म-नि विज्ञा अते हुए लेतमें जनने एक

मेराला (छस्प) । -रोही (हिन्)-दि॰ दिना जुनी

समीममें अपने आप बगनेपाका ।

अकृष्ण-दि [मं] जो कारा म दी, सफेंग निर्मक, सब ! पुर निष्क्षत्रम् चेत्रमा ! ~कमा(मन्)-वि पुण्यारमाः तिर्दोप निर्माप। धारेतम्-वि [मं] गृहहोन, वंपर-वारका ! अकेस-निश्मि] भाष्ट्रतिरहितः विसन्धे पश्चाम म हो सके । मक्रेड*−विदेश साला। **अक्षेत्रा−ि विना मानीका धनहा वेजी**क फर्वः **सानी** (मकान) । प्र निर्वर्ग रकाम । [स्री 'अकेमी' ।] ~

विसके साथ एक और हो। इका-दुका : -(स्त्री)कहानी--सी परतरका नात !-कान-सी जिल्हा कार सानी भ द्वी तल-नगदाः भक्रेके~» विना फिटा माधीके, समझा नेतक ! —अकेले ─विना फिलीफो मात्र निवे सरीक किंदे (─गिकाववा)

दस−पुण्ड हो प्राची । ~हुकेडा−वि व्यक्तेलाचा

14 यामा) । - बुक्रेस-अक्रेड या एक औरके छात्र। अकेश~वि०[मॅ] केशरहिता अस्य केशनुका पुरे नार्केन्छा । अर्कतच~पु॰ [मै] शिष्कपन्ता । वि निष्कपः, निक्रमः। अक्रीया~पु सामान छादसमा भेका गीन। अकाट−पु [सं•] सुपारी या उसका प्रशः । के वि• वक नित करोहो।

मयी संभि फरमा भार उसमें छोटे, वह वर्ष समस्य राजा-भकोतर सी~वि सास व्यः अधिक, व्यः मी व्यः हु। भीकः यदाबोरद ध्याम १८३२।। — इत— वि कृतध्य ७५-एक साम्बद्धी लेखना १ १३ सकोप-पु [मै]कोफ्डा मगाव राजा दशरका व्यक्ती। ग्रान म इत्। −द्राहक−वि भौगीयास्थानीवकर न सम्बोध्या पणपात्रा-भा० [मं+] (स्वेदा प्रयक्त स्त्रे अकसा−दो (मेर्गेवा व्यक्ती जा वक्ती समानाविका भवन्यनमें फिसी सरहकी बाबा भ होना। अकोर*-पु॰ दे॰ 'श्रीदोर'। सङ्खारमा (रमन्)-वि॰ (मं॰) बद्यामी भर्मसूल मत-**क्कोरी*≕मा अंद्रवार,** गांद । बाबा: विसे देरवरका साम्रास्कार न हुआ हो (साथक)। मकोसा-प अंदीक का। कको विद्—वि [सं] अवंदित मूरा शनाही।

अक्टोसमाध-स कि॰ कोसता तुरा भना दरना, बार्टनों दैना। अवश्रीमार्ग−पु मदार भाषः कसरो, पंदी ≀ अवसेटा चित्र गरायका इटावाधरा। **अकारिस्य**~व मि] कीरिस्का समाव सरसन्छ। धर्काना~ए दे॰ 'कदरन'। अस्त्रीराक−पु [मं] कुशकतला समान अध्यता। आका−सी [सं]सलाबननीः **अकास** – पु (ब) अनम उतारनेवाना फोग्रेमाकर। मकासी~सी फोटी क्षीपनंता काम । अक्नाइ∽वि सम्बद्ध अहिट, उद्दन्तः समाक्षा दोन्द्रक क्यनेवाका निटरा सगदासु; बट, मूख : ~पम-पु॰ क्षत्रहुरम जमना अशिहता; रूडाकापना निर्मेदता। । बह्मचाविता । **भावसार***—पु के अक्षर'। कावस्ता-पुरुगीम । जनगो सनगो ~ प्र नन्त्रेको नहस्त्रामहे क्रिय क्रहे जाने

अन्छ-वि॰ [मे॰] अंत्रत क्या द्वमा किस, किया द्वमा क्यासः स्वरक्षः मरा हृषाः <u>ब</u>रक्षः (समास्रोत्में-जैसे **वैणक**रे शीका प्रमा अकावा द्वा। अक्ता−सी[मी]सप्रिः। शक्तवर−५ र्रमकी मालका दमको मदीना । अक्सा−पु[र्म]वर्गकरवा अक्रयू—पु• [अच] प्रतिया वक्रारा विवाद निकार। -मामा~पु विवादका मनिद्र¦-वत्र । -वैद्री-खीर

शाने एक शानवदा भग्न । (शरी सजरस वच्चेको वशनेके

किए किमी दीपप्रके पान हाथ के बाकर पत्रके (क्लें)

मुँडपर पेरत डण कडता डै—'मक्सो-फस्टो तिया परम्कीः

की गरे वक्केकी सबके उसकी फरें वाली जबसी है

विवास-गर्भा ५५मा । थळ-विविधितः। अक्रम−वि॰ [धं] क्रमरदिश अध्यवस्थित वेशिलतिकाः मरिदीम आने कानेमें अनमर्व । पु॰ क्रमका अभाव के त्रतीभी, अञ्चवस्थाः गतिबीतना । - सत्त्रमानः पु संबद्धः का एक ग्रहार (जो शासम-व्यवस्थाने महसार भारत व क्रियागयाचा)।

भक्रमातिशमोक्ति-गो॰ [गं॰] गतिश्रमाक्ति गर्धकारका एक भन्, जहाँ कार्य भीर कारणका एक श्राप ही होना

दिएछाबा प्राय ।

अक्रम्याद−वि सि•ो निरामिधमोत्री ओ ग्रांस न ब्रांता हो। भक्तांत~वि० भि० जिसस कार्य आगे मा निकल गया हो। मपराजित ।

मकांता−र्याः [मं•] मृदती चंदकारि ।

मक्रिय-वि [मं०] निफिय काहिक, को कुछ न करे। कर्मश्रम्य (परभारमा); निकम्मा।

भक्रिया-ऑ॰[सं] निष्क्रियता क्रांत्र्य स करनाः दुष्क्रमं : अक्र-वि [सं] बमातु कोमस विश्व । पु यक यात्रव

वा कृष्यके बाचा और मन्द्र थे। महोध-पु॰ [म॰] फ्रोबका निवंत्रण वा अमाव, सुद्विष्णता। वि॰ माधरदित ।

मकोधन−वि[सं]दं 'अक्रोय । पु भग्नत्वका प्रव ।

भक्तोपसय−दि [मं∘] क्रापरहित ।

भक्क∽र्ता॰ [प्र] मुक्ति समझ। ~सद्र−िव चतुरु इकिमान्। [-की हुम-मूर (ब्ब०)] - मदी-की पतुरार । -(इ॰) इसामी-स्ता भागवनुदि -कुम्ब-प्रमाधकार विससे राव किये विना कोई काम म किया वास । —हैवासी—खो पशुदुद्धि । अु॰—ऑधी होन -देमक होना ।-आना-समप्त होना।-का कस्र होमा।-अग्रदी कमी होना दुदिका बीप होना। ⇒का कास म करना--इछ समनमें न भाना । --का शकरमें भाना-हराम दोना धकित दोना। -का चरने जाना ^{—समझका} जाना रहना। −का चिराग गुक्र होना− ण्ड बातं रहना : -का बुस्मन-मूर्त ।-का पुतसा-पुत तुर्विमान् । —का पूरा-मृत्र, बुद् (भा) । —का प्रत्र-भहना दमा । -का सारा-मूख । -की पुदिया "इदिमनी । -के धाद दादामा-तरवक्तरहर्ता करमग प्रना। - के सोसे बद जामा- बास ठिकाने न रहना। न्द्र नामुन सना~समतदर वान करना। –के वीछे सह स्मिथं फिरमा-माग्रम है। इस करना ।-के बन्तिये उधदमा-दुद्धिनट कर देना । -गर्च इरना-माबना धमनमा समात4े दाममें शामा। −गुम होमा~ङा मोरी जाता अप्रया दाम न करना । - चकरामा-चिन्त हीना हरान हीना। —आती रहमा—श्वका आसा। ~रिकाम होमा~होद्यमें भागा । —हमा-समधाना 4ुनामा :--पादामा ~सिदामा ~सदाना~सोचना गौर राना । -पर पाधर पदमा -पर पदौ धड्ना-प्रद नता रहता। ~मारी जामा ~दगुद्धि दोना। ~सरि पात्रा-नीत् भर दाना । -से तृत -म बाहर होना-ग्रामा र सानाः

भक्तम-पुर्वाः } झांतिरीलनाः विस्व वर्गनाः। मद्भाग-रिक्जी यशा मही हानि शहन ।

महिका-मी [स] मीटरा घोरा।

महित्त∽वि [सं]ोभा³या (शास दाः ∽वर्धे (ब्)=५+ अंगरा एक देंग (मादे वर्टी, जिल्ला) है।

अक्रिप्ट-वि० सि०] हेश्ररहित अद्रांत को सांत म हो। अनुनिध जो हिट न हो सरस :- कर्मा (मैनू)-वि० वो काम करनेमें वदे नशी।

अफ़ी-वि॰ वृद्धि-संबंधी, अपूर्ने बानेवासी (बात); वृद्धिकत । मु॰-गद्या सगाना-अक्कारवामी गरना ।

अक्रोब-पु० [मं०] सुसापन ।

अक्सेच-वि०सिंगोंगो मिगाया या गीला न दिया जा सहै। **भक्छदा~प॰ सिं॰} व**त्रश्चीनता । वि. वक्रेदारद्वित । वर्श्वतरथ~पि [मं•] कक्षम्य ।

मध-पु॰ [सं] सेहनका पासाः पासीका प्रेष्ठः चीसरः पश्चिम, चक्र पश्चिमा पुरा: बर्गाको पुरा: गाही:मूमध्य रेजाके उत्तर या दक्षिण किमी श्वानका गोलीस अंतरः स्ट्राक्ष सर्पः साटइ मारोद्धी एक दीन वर्षः एक पैमाना (१ ४ अंगुरू); तरामुझे बाँधी कानूमा केनदेनका सुद बमाः नथुकुमार धानः शनिद्रिकः अध्यः जनमापः भारमा गरव ततिया सीपर नगरः गुद्दागा बहेदा !-कर्ण-५+ समकीन त्रिमुबद्धी छवसे लंगी मुखा । --कास-वि यह प्रिव । —कुमार-पु• राक्ष्या एक पुत्र जिस इनुमानन मारा था । -कुलए,-काविद -शींड-१० जुभा क्रेस्नमें बतुर । -क्ट-पु॰ शायको पुतना । -क्रीहा--नौ॰ पासीका एंक' लुआ ! –ज-पु होरा। यह विष्णु अत्यस द्यान । चद्रशैक−तुन्यायापी उपर्याप्यक्षा सूर का निरोधक ।-हेबी(विन्)-प जनारी ।-धरा-प जुना । –च्छिक-पु॰ जूपमें शतेनाठा झगरा ।–धर-वि अरेको चारण करनेवाना । य॰ विष्याः परिवाः छास्रोट क्छ। −ध्रर~प पहियेका प्रता। −ध्रमं−वि ज्ञमा धेलमेमें कुछ**क । -पदार-**पु स्वायासक सुक्रमक कागम रखनेका ज्वास । --पाट --वाट-पु० बसानाः जुमायामा । -पाटक-पु धर्माप्यक्ष । -पीडा-सी इट्रियों वा भंगोस्थे छतिः वर्षतत्त्व कन्ताः ~वध-प द्य वांध देनेकी विचा अवरवंडी। - साग्र-पु निमिष। –सापक्र−प॰ बद मध्य देगनदा पद यंत्र । –सामा− न्याः रहासन्तरे मालाः वर्गमालाः वरिष्टरी पर्याः भरभनीः मास्री(सिन्) पु॰ रहाङ्की माला पारम बरनेवामा; द्यास्य एक शाम । - स्या-स्ने पुरास्य रेगा ।-बास-अपने सप करनेवाला। −ियनेप∽पु सटाधा -विद्-वि॰ पृत्य । -विद्या-मी पृत्रविषा भूता। -पृत्त-पु अर्धान-इर्धक पृत्त राजिस्क्र । दि॰ जाप्दा आदी। जुआ केनन समय महिन दानगाना । - सम्ब-पुरुद्धारी साला-अपनाला । —सम-पुरुद्धानीम राजाः ∸डीन−रि अंशाः ∸हृद्य∸पु पृत्काहतः। अभक्-पुर्धिः) कुर्यबर्धः विनिधः मृत्रः। श्रष्टाण-(६ [मं] अधार्मावदः।

अक्षणिड-विश्वति] सिर, दा जा करिए सही। **अक्षन**−िर [मं] स्पर्शनित र मृता शनदीम (हम) १४ न अधी हा । पु शिश स्माहित भारत नाराजी पाना हारिका जनाव बरवारा(इक्स)-पानि-वि श्री किस्स कीमण यस का की ने समाग्रस जात भा हो। जी जिल्ल कत्या (दिवादित या अधिगारित) । अवीर्य-दि अस्पूत वेषे ब्रह्मारी। पुरुषभव क्रिक ब्रमूम (ह)।

बक्षता-मञ्जीहिजी

शक्तता∼सी

काकशासीमा ।

अक्षय-वि मि] श्रविदोस रहित । भश्रम-वि [ग॰] शगा-रहित असहिष्णः रेप्यां करतेवालाः क्षमता-रहित, असुमर्वं । भक्षमा-न्या॰ [ग] अपारताः क्रोपः ईप्याः अनुमर्वता । **अध्यय-विश्**मि हेशमा न दरने बोध्य ।

भक्षय~वि० मि०] अवर्शान अविनामीः निर्धन। प थरमारमा ।—शुण **−पुरुट्टृत**—पु• श्चित्र ।—**तृतीया**~सी

[मं•] कुमारीः शक्तशीतः ऋषैटशंगी,

वैदारमन्द्रका तृतीया । — भाग-पु बिष्टेश मोखा नवमी-स्रो कार्तिक-ब्रह्मा भवमी।-सीबी-स्रो श्वाबी दान वा निक् (वी)।-यक्-पु मोधा -स्रोक-पु स्वर्ग~चट ~बृहा−पु॰ प्रचाग और शवाके बरवृद्धविश्चेप

(रतका प्रकार भी मात्र न कीना माना बाता है)। शहरपा-त्ये [मं] पुष्यतिशिक्षेत्र ।

अक्षयिमी~बि स्पं [मे] त 'क्ष्म्रक्षा । स्पं पार्वती । शक्य र्व(विन्)−ि मिंी क्लिका माध स दो। अक्षया-वि [म] ध्रव प्र होने बीम्बद्धमी मनुद्दनेवाका।

∽नथसी∸स्या काचिक्र-ऋदासम्भा। [मं] शास्त्र में पिल्लामके कार दिवा सञ्चय विकास बानेवाका बस्त मह और तिसका कप ।

अधार−नि [सं] जनियाको जपरिवर्गनही*र जम्*नुत नित्व अक्षय । पुत्रम वर्षः स्वरः श्रम्यः मद्याः भारमा दिवा विमा राहा साम्राक्षः मोद्या तपरकाः बकः अग्रमार्गः । *-ग*्रियतः-पु शैजगनितः । -वेपु -थण,-चम -चुंचु-पु सुवेखक । -ध्युतक-पुरु वक येत्र ।-जमनी-को हेएनो । -शावक,-जीविक -व्यक्ति(विन्)~पु स्थिपतंदन पेद्या करनवाला नेपादः। ~ज्ञान∽पु सिन्द्र-पद सनेकी वीश्वता, साक्करताः ⊷त्छिक−त्सं रस्ताः।−भास्−तुत्रककोक,गोक्। −स्पास~प किगावट, तंत्रकी एक दिवा ! −थैकि~ श्री ण्यार्वदिक इत्तां~ कश्र∽षु ण्यावर्गहरू ।~ सास्रा ~सी वर्णमाकाः। <u>न्युक्त∼द</u> विकाशी विद्रान्। व^र अक्षर । वि+ शहर सीरामेग्रङा । *− म्र*टिका−सी र्श्वभावित्रों ४ भेकेत शारा वेक्सा । —वर्जित —शञ्च—वि अपर, निरद्यर । ∽वित्यास-तु वर्णविन्नाम विक्तैः निर्मि । -ब्रुस-पु वर्षकृत । -संस्थापम-पुरु स्थिः द्वप अध्यु सिपि । −समाद्धाय~दु वर्षमाका । सु०− चीरका-अक्षर किरानका अम्बास करमा।-से मेंट **व** होमा-विस्कृत अपन होना ।

अक्षरश'−ध [मं∗] धक एक कक्षर, हर्पःशहपः। सीलही भारे पनतवा।

भारांग−प [मं] किपि: हैम्पन सामग्री ! मझरा−ली सि॰ो उच्छ। भागा। मक्तराक्षर~पु∙ [मुं] पक्ष प्रकारको समाचि ।

भक्षरार्थ~पु० [मे•] श्रन्दार्थः मंदुन्दित कर्षः नशरी-की [सं] वर्षाकतः वक्त मी दिश्वे (शापुनिकः)। बाह्यरीटी-मा वर्णमालाः किविका बेगा सिवारपर शेक

निकासनेक किया ! श्रद्धर्वे−वि सि•ी श्रद्धरःसंश्री । प॰ एक साम । अक्षांति-स्ता [मं] र्वध्याः वनीरताः अस्तिष्मुतः । अक्षोप्त-पु [मं] भूमध्यरं साले एकर बार्श्विक प्रकार अशाम-पु [रो॰] पूरा वा प्रश्चि छार । -कीछ-भो• ~क्षीलम्~पु ५३तीचडे निण स्नावी बानेशली बंदी **रुहै और जुपको जोड़नेवाली सुँदी।**

जकार−4० [नं•] भाररहित । प्र प्राप्तिक स्मर। -सबण-पु प्राञ्चिक अनन, वह नमक विसर्वे द्वार न वी दिना गमफ्ता इविप्याप्त।

अक्षाबाप−पु [मं] ज्ञारी; अ्त्रा सेकनेवाका । अक्षि-मो॰ [सं] ऑम: होको संस्था । ~स्व-प्र पण्ड मारमा ।-बूटा-कूटक-पु॰ वॉसकी पुगती, नेक्केरन। ~गत~वि॰ रह, देला दुमा विषमामाईध्य ।-गोसक" पु॰ भारतका डेंबर ।—तारक-पु॰, –तारा-पु व्यक्ति वृत्रको । - निमेप-पु एक, इत्र । -पश्म (मृ)-पु वरीमा ।−पटल ∽तु व्यासका वर्ता आँशक्रे मोरुक्ते वीवे की शिक्षो । −भू~वि दश्य सम्ब अवार्थ । ∽मेपव− यु पश्चिम्नाम । - स्रोम(म) - यु वरीनी !- विकृषित --विश्वविश्व-त+ कराख निरुधौ विस्तवत । --विश्लेष**

पुण् कराह्य । **मधिक, शर्हाक-पु॰** [मं] शृद्धविद्धेष रंजन बृद्ध। अक्षित्त−वि॰ [सं] जिलका क्ष्म सं द्वशा हो) न फ्रीमी बारुग। जिसे बोट न क्यों हो । पु जका दस हाराओं संस्था। - बसु-५ १६। मक्रिश्वर−दु[स∗]बन। अक्षिति-मा॰ [मै] समरता ! वि श्वश्रदित ! श्रक्षिय, श्रक्षिय∽पुर्व [म] वे 'श्रक्षीय'। अक्षणि−वि [न] श्रीय न दीनवाका श्रमवर। श्रज्ञीय सञ्जीय∽पुर्मिश्री सविष्यमः समद्रव्ययाः सिर

ब्रह्मण- ब्रह्मप्य−दि [प] कशुन्ति अध्यक्ष अस्ति अपरावितः अकुञ्चल । अक्षर-विष्यि] यो नीय,छोटाबा तुष्य न हो। पुर्वास्त्र मासुध्य~वि॰ [मं] मृत्य सह करनेवाका विसं भूस व समती हो। बाध्यक्य-वि [मं] द्योभरहित। मश्रीच-वि [म॰] क्षेत्ररहितः कृषिके संशोधन परती । उ

तुरी अमीमः) क्वामितिका **क्यूब** वा' स्ट्रान विश्व स्ट बुद्धि छात्र ।—क्क −विवु-वि नाम्बात्सिक बानसे स्ट्रि विने शरीरकी महरीका बान न हो। आ क्षेत्री (त्रिन्) – नि [नं] मिले लेव म क्षी **व्यक्षोद−**पु [र्स] पर्वतीय पीत **रुद्ध,** क्यारीरका पेर । **अक्षीड अक्षोडफ**−५ [मं•] दे अक्षेर'।

अक्षोधक-विमिं] की मुखान दी।

अक्षोपित-न्या र॰ अर्थाहियो । अक्षोभ-पु [सं] शीयका जमाव शाहिः शर्भा गंभमे का शैंदा। वि॰ छांत भीर, वो सुष्य वा प्रश्ताना व सी ! **अक्षो**रम्य-वि॰ [सं॰] भार, गंगारत अद्यांत न बीमेनला । पु तुक्कः एक नहीं संस्था। -ऋषण-पु: प्रः रंत्रीस

क्ष्मच । सक्षीद्विणी-नौ [नं] चतुरंगिणी सेमाका एक शरिमान

14 पैरक. ६५,६१ मोडे. ११. ना निभाग (१,०९,६५ ८७० रथ भीर स्तुने ही हासी)। भक्य-वि॰ [र्ड•] अलंड । यु सुमय काकः। भरस-प [म] परवार छावा वित्रा पारी। स०-उतारमा-हरक नक्ष्मी बनानाः फीने शाबना । -ग्रामा-रगका बत्तर वाला । -क्षेमा-किमी तमगीर पर गरीम कागम रसकर साका सेना। संबस्य-४० दे 'अन्तरर । प्राव'ः बहुना प्रकाशी । अवसी-वि॰ छाया सर्वती; अवसके अरिये किया आने बाह्य (बित्र भारि)ः फौराप्राप-संबंधी । -तससीर--मी फोरा सावाजिक। वर्षग≉−िव न पुरुनवाका। ससंद्र-वि• [सं०] संपूर्ण शक्किक; बहुर, वावारदित जिल्ला सिमसिका न हुटै। ~ब्राव्की~सी० मार्गकीर्व इतमा द्वारभी : -पाठ-प्र॰ बद्द पाठ की मविरास क्ता रहे। -सीमाम्य-पु० मीका भागरक मीमान्य नगै रहना । मसंडन-पि [मं+] भरोडिव असंन्नीय समूचा। पु० परमतमाः कानः स्वीकारः संद्रभ न करना । वसंडमीय−दि॰ (मं०) जिल्हासंत्न न किंदावासटेः **छप**ः भविमास्य । वर्सहरू १ -- विष् अर्थण सुपूर्व । पु॰ आर्थणक इंद्र । अर्त्तरिस−दि [मं] अर्खेड सट्ट सवावितः त्रिसका संदन न हुआ हो। असागरिया-पु० एक तरहका पेक्सर योहा । अल्डन-(वेव अधाय । सन्दर-पु॰ [मं≎] মিৰাত ৰুস্ত । भप्राष्ट्रि−त्री [मं•] वात वृत्पताः असन्व्यवदार । भलड़ा -पु॰ तालके बीचका गर्वा । भगरईत-पु॰ पदलदान महा। भगती - सी दे॰ सानीय । अस्पनीव क्रमा अक्षय तृतीया । बन्दमी-सी दसनी धीरवा। अत्यवार~पु॰ (अ) समामार ('लबर का क्रा)- समा-बारएम । - मब्रीस-पु॰ अद्युवारं कियानवामा प्रवहार । -मबीसी-मा० वत्रदारी । महाबारी-वि समानारपत्र-वंबी। बार्य=-वि ३ भाइव । अमर०-व दे भवर। भारता-भ कि रावना पुरा सगमा। कठिन वा पष्ट मर् जाल वाला। मन्त्रा−पु किमा कुरै जीका आसा ≉ अञ्चर । ७ वि भी शरा न हो। भगगाबर-गी बण्माताः अध्यक्षमादे अनुसार आर्थ

हें भेरण स्वाम्म्हः जायभी वृत्र एकः रूपुर्धन ।

भारतार-पुरुद्ध प्रसिद्ध मेरा आर उस्पा वेड स्थानमी÷

[सं] को धारादा हिगनाम दी। बहा।

धनसम्बद्धी-स्रो दंक अगरावट १

1 वादरण।

भारतं-हि

¥47.1

ससर्वा-सी० मि० एक पीवा । अल्लाहाक-पु॰ [श॰] शिष्टता सीधन्या स्टापार । अग्रादा~पु॰ कुरती कहन वा क्सरत करनेका स्थान व्यायामधारा सांप्रतायक मामुजीकी मंत्रमाः सामुगीके रहनेका स्थान, गठा करतम दिसान या गान मगानेवाली की जमातः समा, दरवारः अड्डाः जमपर कॉगनः (इंडरका असात्रा) पृत्यशाना, रंगञ्जाका । सु०-गरम **दो**ना-क्याता मीह होना। -जसन(-रोगाहिशोदा क्षमाहेरी बमा द्वीना और दर्शकोंद्री मीध क्ष्मना दिमी बगह बहत्तमे आद्यमिनीका बमा होना। ~(हे)का सद्याम-क्सरती बदनका भावगी। -में आना-मुकाबस्में सहा होना । -में उत्तरमा-मुकावका करनंत्र किए अखाइमें भाना । भक्तादिया-वि० रंगकी (पहनवान) । भकात−पु॰ [मं] प्राह्मतेक सील ताल; सार्गा। अवाध-वि [मंग] न छाने बीस्य असध्य। सकामी-सी॰ दैंगरीके समय बंटल एकम करमेका एक भौत्रार । असार-पु मरिवा आदि बनानेके क्रिय शक्यर राग बानवारा मिट्टीका सीदा । असाराक-प दे० असाहा : अस्तिक-वि [र्स•] रोगरहिता क्रें शरहिता अप्रांतः प्रसन्त । अखिल-वि॰ [मं०] संपूर्ण साराः कृपिये दोग्य, कृत (ममि)। अग्रिका-वि० शरिकतितः अमस्य । अविकाधा(प्रान्)-प [मं] विभारमा। अभिन्ने - पु॰ [मं] एवम्म स्वामी परमेवर । अव्योग !- वि अधीय म ग्रीयनेवासा अविसाती । भारतीर -प॰ शि] अंत, समाप्ति । भगोरी-वि अग्रीरका भेतिम। अल्हर-वि भगंड, जो घटे नहीं भशवः अस्तविदः। **भक्षे**र∗~पुद्य सम्बेट'। असरक्र-पुरे 'अमोटर'। अरोटिक-पु॰ [स॰] वृद्या वह कुत्ता विभ शिकारका पीछा दरना सिमनावा वना हो। अस्त्रेष्ट्-पु [मं०] दुग्य वा शेग्का भभाव प्रसुक्ता। (४० प्रमुख दुन्धरहित । भ प्रमुखनापुर्वक । अरोही(दिन)-दि [र] अस्तेत की बढान हा। [ग्री अभेतिमी ।] असीलतंत्र-ति की गीवना मंद्रा अर्थयम विवस भारम्यवृद्धः । अस्य -विवदे 'अध्य । -बर -बर -घर -घर -घ अश्वपद 1 अस्तरी-भी सुमाने बार्न्डि निए रेटन इम्टन्डी समी। अल्बार-विक किया तुष्टा क मध्या मंत्र संदर-निर्दोष । पुरु निष्टमी भीज मुत्तान्त्रकारा सराव पास । भागामा-पुर्धाः वृद्धाः

अवाह-पु उत्तर-प्रापर प्रमान ।

ZEI I

अमार असारा-पुर जोन वा स्वीता निही एत्रासेता

अम्प्याह्न ॥ [अ०] आस्थल-पूच्छ कर्गार (किशीके कले-पित भागमन (मक्षन वा कावपर मान्यते क्षे) बहुत ज्वा । अग्रम-पुर (स०) प्रदण करमे, पक्षनेता थाव । सु०-क्षाम-प्रदण करमे, वर्ष वा गतीचा निकालना, वातसे पात निकालना । सम्पत्र-पु

अमस्तर-चु [कर] तारा हवा । चुनार-चुर वशातवा।
—चुनारी-वर्ष कमार्क्ष चला।क्षेत्ररारी शरत कमरा।
चु —चमक्ता-नतीव जागना, आम्ब्रकः वस्य होना ।
काल्यारा-चुर दे "शिलावार"।
अस्यार-चिर् [र] अमंतिकः क्षातिकः विविधः विविधः।
कस्यार-चु रे "बाह्मार"।
अस्यार-चु रे "बाह्मार"।
अस्यार-चु रे "बाह्मार"।

भारि - पु (बना दाभ-रेप्टा यह।

भारीता(कु)-वि० [भै०] ज मकने म जानवाका । [सी०

भारीता ।]

भारता [न] पकनेमें असमर्थ, स्वाबरा, देश महानेवाकाः

भारता [न] पकनेमें असमर्थ, स्वाबरा, देश महानेवाकाः

भारता [न] पकनेमें असमर्थ | प्रताह पेष सोग प्रति प्रशास्त्र ।

सामन्त्र स्वाह प्रतिवास्त्र सीगते । पु० [सकाम्या; स्वार्थ ।

सामप्ता - प्रतिवास्त्र सीगते । पु० [सकाम्या; स्वर्थ ।

सामप्ता - वि० | महान्य । - का स्वर्थ । विकास्त्र ।

सामप्ता - वि० | महान्य । - का स्वर्थ ।

कारट-पु नामके दुक्ता । कारटना-च किए प्रकादाना । कारटना-च कहर ¹⁷द। कारदच्या कारदच्या-दि नेवान्सादा,केना,का-कहा। कारदच्या-दि क्षत्रवृक्त, नेसिर-पेरका। पुरु केश्वेट कारदच्या-चार्चा-पुरु कारद-सर्व्याचीमी वाकार-कार-

का बेतरतीय वर । असकी न्यों के प्योंका असंक। असराम-पु [से] दिसकत कार स्था-जगम तस्य रस्यः, सम्पन-यो करके आदियें सद्भाम माने वाते हैं। आस्थान-वि [७०] कामनीय असंस्थ

कराजनीय-दि० [सं] दे० काग्ज्य'। कामकिल-दि० [सं] कागिमत व्यक्तिया । --मतियाल-दि प्रमान व रिये कागके कारण कीग्र हुमा! --कम्ब-दि० काशका रामाक म करनेवाला। कागस्य-दि [सं-] अरोक्या हुच्छा, पण्डिमीव!।

क्षप्रस्त - वि. [१०] क गवा पुरुष । १ 'कांगे नकी' (विकि)
वि (हार्यक्री आव नवार्यके किय महानती हारा अपुरु दिना वातेपाका इच्छा । व्यक्ती वे 'क्षप्रीत । स्माति - वि । ग्रीका समाना पहुँचका व होना व्यक्ति कार्या है, पित स्वस्त्राति स्पर्ध समान स्माति - वि । वि । वित्तरात हिरासन । - गाति - क्षीप्र

क्याहित रिक्र एरावं । वि गाँविदीना निक्यावं । स्मादिक-वि [संन्] निरम्पया निरास्त्रयं । --गावि-क्षेण् सावत्रवी-वि एक्टांक्स कार्यकार्यं (स्वर्धः) । स्मादी-वि एक्टांक्स बनाविकारीः कुक्मी, नाणी । प्र-पाचे स्वरुच्य । जी एक शिमा जी क्येरीन्यके स्वरुक्ते आस्मा स्मादीक-वि (से] स्विप्तरं क्षमा व्यविकारी (स्वर्धाः) । स्मादीक-वि (से] स्विप्तरं क्षमा व्यविकारीं (क्रमार्थं) । दे॰ 'जगरिक'। अगरवा—म [मं॰] आग व्यवस्त, क्षेत्रमें; सदसा; कन की प्रार्किने काचार होत्सर। अगर्यकार—पु [सं॰] वैच। अगर्यकार (संशोधिकार) क

भागत् - विश् [संश] सीरीम स्वर्धाः न शेकनेवाला । प्रशीपन प्रमास्य सार्वास्य अस्तित्वः । स्वर्धन्तः अस्तित्वः । स्वर्धन्तः अस्तित्वः स्वर्धः विदिष्टाः वार्षाः । स्वर्धाः । सिक्ताः वार्षाः । स्वर्धः विदिष्टाः वार्षाः । स्वर्धः । सिक्ताः वार्षः । स्वर्धः । स्वर्यः । स्वर्धः । स्वर्धः । स्वर्यः । स्वर्धः । स्वर्धः । स्वर्धः । स्वर्यः । स्

अगमितः - पु अधिकाल दक्षित-पर्वका दोना ।

स्वामी-स्वै थे थे दिरस्तक्षे भारते; स्वरः । ६ व विकः । स्वानः स्वी सान्नेव स्वैतः । स्वान्ते असर्वस्य-पुः अस्टियः । स्वाम-वि [मंग्रे म सम्मन्नामा सांता स्वय्-क्षे स्वान्ति । वि दे भागस्य । उ दे जिन्नने स्वामन-पु [संग्रे प्रमान समाद म समा। व साममान-पु स्वान्ति । व व जान्ना। समामानीया-वि स्वा [म] व व जान्ना। स्वाममान-पु स्वान्ता समाद समाना

भगमासी~सी दे बतवीसे ।

भगम्य-वि [मं॰] दुर्गमा पर्देशक बाहर, कारामा स्तुष मन, तुमिके परे। कठिना सपारा अबाहा बिरानी स्तरार म किया वा एके। ∸शा−मी अपन दुरपने ऐंप रक्रमेगासी न्ही। -क्रय-वि विस्त्या स्त वा सनार समझमें न काने। क्यम्बा-विसी [सं•] म रामन करने भीरन (संदे)। न्त्री नद स्वी विसक्ते भाव समीग निष्कि हो। बंदर्गा —गमन्-पु अगम्बा स्त्रांने छहवास इत्ता (१६ वर्ष) पालक)। -गममीय-वि भनेव सर्वव विवयाः गामी(मिन्)-वि अभवासमन क्रोनाका! अगर−तु एक पेत्र विशवध क्षत्रहोग शुर्गत दोतो है मेरि शुष वद्यांगर्ने पश्ची है। कदा -- क्सी-न्दां• कस्पी मधी । –सार-प अगव गामक बद्य । अगर—म कि]यदि जी । —च −म वचरे । मु* —सगर करना—वर्क करनाः जागा-पोडा करमाः स्त्रः

स्वार्—म कि] यदि यो। —च—अ वन्तरै। मुं— स्वरं करना-ठाई करना। जागा-वीडा बरमा रले यदिक करना। असरह्रि—वि॰ कालापन विने पुण सुमक्ष्यं स्वदा। स्वार्याण्—म दि स्वरं जाना वा बुना। स्वार्याण्—पु ब्रोज्योच्य एक केद्र। स्वार्याण्या—पु बल्कोर एक वाठि व्यारकः । स्वार्याणा—पु कि मण ब्राहा; काव-वारवे करणे यूव ननाना। च दि स्वारं आदि काल बृह्मामूर्वि स्वव्यार करना। स्वरंदी-का दे स्वरंशि पुरुषी स्वारक्षा एक देवा है दुरो बात; चिं०] यक विधनादाक हका देवनान बुख । स्वार्द-पूर्व चिंव) अगरता येद या ककाई । स्वार्दो - जिल सामतो, आगे । स्वार्दो - वि चनका भेद्र; अधिक, निपुष । स्वार्दो - वि चनका भेद्र; अधिक, निपुष । स्वार्दो - वि०] गर्द या अभिमानसे रवित । स्वार्दो - वि०] को दुरा न हो, अधिक । स्वार्दा - वि० चनका भोदी समयका, पुराना; स्वार्दा - वि सान या सामनका बीते समयका, पुराना; सानेता को स्वार्दो अध्या बसुर, पाकक स्वार्दी पूर्व कर्णकुको आगे करी हुई और गाँव और उसकी

अगवनार-स• क्रि॰ सहना अंगवना । शाकि॰ अग्रसर होना । अगर्वोसी—सी हरूको वह रुकड़ी जिसमें फोक रुगता है ।

भगवाई - स्वी भगवानी । पु भगुजा । भगवाइ। - पु बर्द्ध सायका साग वा मृति, 'सिटवाध'का

करवासून पुंच करके कारका आग वा शून, रिकटनाव का क्यारा करकरा।
करावान पुंच अगवानी करनेवाला अगवानी ।
करावान पुंच अगवानी करनेवाला अगवानी ।
करावानी प्रति अगवानी करनेवाला अगवानी ।
करावारी पुंच करका आगवानी ।
करावारी पुंच करका आगवानी पुंच अगुआ।
करावारी पुंच करका आगवानी पुरोशित प्रकीर कारि
को विनेत किर स्वित्वानी राजिसे अक्या कर दिवा आता
है। कीमात समर्थ पुरीवे साव वहीनाका इकका अव।
पीरा कार है अगवान।

भगसार जगसारी -- अ आवं।

आगान-पु डेम्बी सालको आवना अद्योगाः है 'आगस्य'। आगोन-पु मिं] एक प्रार्थान अपि (पुरायोमें इनके समुत्रको पुरुक्तमें यरकर थे वामेको बात कियो है)। एक सारा, एक दर।

काराय-पुष्ठ [मं] है अगानित' दिवा। —कूट-पुक्
परिष्य एक पर्वत किमने वास्त्रपणी गरी निपन्नी है।
--गीता-ननी महामारत छानियने कियत एक गोता।
--वार-मार्ग-पु अगानव भागक वारोका मार्ग। — सीर्य-पु रद्विपता एक प्रतिक तील। —बट-पु एक परित्र मान जी दिमाण्यपर है। —बीहिसा-नगे अग रूप मुनिर्देशन एक प्रतिक।

भगस्त्रीत्य-पु [भ] अगग्यका उत्रव (इसका समय भादपत्रका सुतक वर्ध है) ।

भगाइ॰-वि भगाम १८१में स आने नावतः श्वासः PEV- अवारवा दुग्गास्य वन्त्र वा विश्वते बाहर ।

भगदन-पुर आहायः दा मार्गशीय माम । भगदमिया-(। भगदनमें दीनवाना (पान) ।

भगदमी-(र अगाममें तंत्रार वानेवाला । की अगवनमें नेवार देंगियाणी एगान ।

असद्दर = भ्राम पर ।

आहंडर-चु वर मृति जे बहुत रिजी। विशेष अधिकार में पार्च गांचे ही आहं जिले वह ही हिले दे तथार से ही। आहंडर-चु ज जासार। आहंदर अने अंग धारची अप। विकास प्राणेशना।

अमारको +—भ अपने अस्। २००६ भगार्के अगाऊ-वि॰ पेदांगी भागका । भ जागसे पहरेसे । भगाब-पु इनकेकी निगाओं वेंस्टीकं प्रीरपट स्मी पत्नी

स्थाक् - पु दुस्तका निर्माका दश्काकछारपर क्या प्रदेश स्कर्णा

स्वताङ्गा-पु॰ पहले भेवा आनेवाचा सावाचा सामान । स्वताङ्गी-स सावप पहले सामने मदिन्यमें । सी॰ क्रिजे सरमुका सावजा हिस्सा पोडेको गरममें वैधी रस्तियाँ; स्वतारों या पुरतेका सामनेका भाग; सेनाका पहला भावा । स्वताङ्ग-स आगे, पहले ।

जगासा(नृ)-पु॰ [मं] शब्दा न गानेवारा ध्यक्ति । अगारमबा∽नौ [मं॰] पार्वती ।

स्मार्थ-कि मि] अवाह अगर क्रिक दुवाँप स्टेव। पु स्वादकारकी पाँच अम्मिनीमेंने पढ़; गहरा टेर गद्दा। ∽जळ-पु• गहरा बकाउप (होत आत्रि)। ~रुचिर-पु बहुत अविक रकः।

असाम≠−वि जहानी मासस्य । पु नासमझी। असामि≉--अ वागे।

सगार−अ भागे।पु∘[सं]दे सागार। अगारी−भ° मी दे सगारी। अगारी(रिम्)−वि [सं] सन्तनामा।

अताय-पु॰र्रेशक उत्पादका जीरम मागा। अतासाश-पु॰र्ण भाकाशा द्वारके सामसंका अवृत्ता। अताह•-वि॰ अवादा अत्यविक उदास, चितिनः दे॰ 'आताह। ज्ञ आयसे प्रस्तेते।

क्षतिक — स्वी० क्रांन्सिया (समासुर्वे प्रयुक्तः) विहस्त स्वरः — वृद्याक – विकासिया कागासे याता पुत्राः । – वृद्याः पुत्रे क्षामित्रादः । – वृद्यामां – पुत्रमानं यात्रासे या स्यानेका स्वरामः । क्षरिम – स्वरं कामः वक्त सोर्थे थिडिया व्यक्त सामः करस्का

छपरका दिश्मा । वि० बहुत अधिक, लगमित । —हास— तो० जलपिणली । —बाब—पु नापायों, विध्यवदर पीड़ोंने दानवाला एक रीप । —बोट—पु श्टीमर,

भुज्यंकत्ता ।

स्तित्तसः स्विमित्तन्ति दे ० आगोरनः ।

अगिया—स्ती० अगिन याष्ट । पु एक पीयाः पीडी-वर्षोकः

कः राष्ट्र एकः एकः रोगः विस्ति परमे एातः पन सान दः

विक्रमादित्यकः एकः नैतालः । —क्ष्महित्या—पु वक्षानः

क्ष्माः सा । —वैद्याल—पु रिक्रमादित्यने गिकः

क्ष्माः सा । —वैद्याल—पु रिक्रमादित्यने गिकः

क्ष्माः सा । —वैद्याल—पु रिक्रमादित्यने गिकः

क्ष्मानार्थेषे एकः भ्रीद्रवे सारा अगन्तवालः मनः पुवनी

पुरनी अगिर्वे । विकास अगिर्वे । विकासनार्थे मिन ।

अगिर्व गतान अन्ती (न्याले नी ह)।

स्तिर्वायानी—अ क्षित्य । वर्षान सारा उध्यानः देशाः।

मा कि चरनाना भागते नामा उठाना स्थान मा कि चरनाना भागते नामा ज्ञान स्थान स्थानसम्बद्ध पुत्राहे निग करायो ज्ञानसभी जान है हि निमत्ती आगं स्थाह समयाप रहे सा स्थानसभा

ही (महर्ग) गीयमाद) । स्रतिवासी नन्दी भूगणी सम्दर्भ सम्बेग्ने मान्द्रेश कानु । जुगारिकाला सम्बन्धः

अधिर-पुनि देश दर्श कर कराहा।

```
अगिरी – मगिन
```

स्रमिराँ-स्था परका स्थानावा । स्रमिरीका(कस)-नि [मं]रवर्गमें रहनेवाका (देवता)। समकोरी म स्क्रमेयाला ।

अभिकाति – दि अग्रुका। अभिकासो – पुष्टे अभिकास

भगीटा-पु रामनेका दिग्याः बयवाशः पान वेसे किंतु ससम वह पर्चोवाका एक पीधाः

स्तरमः वद्र पद्योगाला एकः पोधाः। स्वरासि-पद्योसक-पु स्वरवादा-पिछवाधाः। सः वाले-पैछेः। सन्-पु [नंश] राहः अधनारः।

अगुआ-पु भागे यस्तनवासाः ग्रुसिया एकप्रवर्धकः विवाह तत्र करानेवासा विद्यागा यस्त्रः भागमा हिस्सा ।

भगुभाई-न्यो॰ मेतृत्व भागंपवर्धना भगवानी । भगुभाषा-ए॰कि भगुभा बनाता । भ कि भागे बाना ।

अगुमारी-की भाग जाकर खाग्धा करना। अगुण-वि [सं] निज्ज एक्सिट्स कमकी। यु अव ग्रज कीच।-ज्ञ-नि विसे ग्रज्की परस न वी स्वार।

ञुल दावा — ज्ञा—ात । वस गुणका परस्य व वा गवार । — कादी(दिन्) — वि क्षेत्र निकास्त्रकाशाः, स्टिहास्येषी । — इतिस्न वि कादास्य सिकासाः ।

अगुर्मा(मिन्) –वि• [मं] गुवदीन । अगुरु–पु [मं] अग्रः श्लीष्टसका वेद । वि दशका क्यु

(बर्स); निर्द्यराः ग्रुक्मे मिक भी ग्रुक्त व हो । सरामा-प है भि.(भा ।

सगुषा−उ ६ म⊍सः। सगुवानी−सो दे शगशनी'।

क्युसरमा*-व कि भाग-समा। क्युसरमा*-व कि भाग-समा।

अगुद्धारमार-स कि नगरनप्रागः। अगुद्धमार-स कि॰ नगरमा घर हैमा।

कर्माः — पु वेरा । असूद्र — वि• [सं] प्रकटः रपदः स्वयः । — संघ−पु ः—

शोद्या—को द्रोग! —भाव—वि सिसकाशन वर्षगृह, क्रिया हुमा मुद्दो सरक विच ! अगुलाक—अस्तुमा मुख्य !

कार्ताः>−अ काराः मामनं । कार्ड्ड−वि [सं] शृहदोनः, वेयर-वारकः । सु वानप्रस्त । कार्रेष्ठ∼पु [स∗] दिमाक्य ।

करोधू-युदै 'भैंसेब्'। क्रारोड-वि [सं]दे 'क्रारूब ।

सर्वार्ष्ट्रभ=विश्व की जो ग्रह न हो अकट। सर्वार्थर≕दि (संश्) विभक्त कान दक्षिणेंसे न दो संके

झराचिर~ाद (५०) विश्वेष घल वेश्वेष संविध्य इंद्रियातीत अपन्दर । धु वह जी ईदियातीत हो। वह को देश्यावा कानान चासकी जका।

कारोडरू-पु भार रोका कारा मुहारिश स्थान। वि• कारका गुरुरिश सुरक्षिण ।

असीटमाण-स कि धैंबना बेरमाः क्षिमा ना रीक राजना धेर करनाः स्वीकार करमा शुनना । अ कि स्वनाः धैंसमा स्वकता ।

सरोताक−म मस्मुख कारा पु+ कारवामी। सरोरदार−पु रखनासी करनेवाका।

भगोरना! – सः किः गतः वोदनाः व रस्याणे वरणाः रोकनाः । भगोरा! – संगोरनेकः दियाः स्टबलीः निगसनीः ।

भगोरार्ग−पु नगैरनेश्वे दिवा श्यवलीः निगधनी भगौरियार्ग−पु श्वेत नादिश्वे रखवाली करमेवाणाः । अवोहीं -पु॰ भारकी जोर निराहे हुए संगोंबका है। अवोहा- हिं•] या क्रिपारी दा इद बाने बस्थन

कार्गींडीं −ना ६ कागाव : कागीडा(कम्)−५ [मं॰] पर्वतवासो; विद्या स्थी। अस्य।

भगीकां —पु पेछगी ही बानेवाठी रक्षम । अगीता≉—म भाग । पु अस्त्रानी। वेद्यमी ।

क्रशीली (- न्यों) हें क्यायानी (; वरात क्यानंसर हारपूर) के समन सोही जानंबाकी कातिस्वामी (क) बाद (क्यारीम - प० के (क्याय) (

अगीरा~पु॰ दे॰ 'जगाद' । अगीरी अगीडीां ~ला॰ श्य तरहका रंख ।

क्षशीक्ष्यिक क्षाये भागकी और। क्षम्मक्ष्ये सम्बद्धानसम्बद्धां परिमोनाका क दृष्ट् सो भावपर्मे जविकताने राज्या जाता है।

करनाथी — स्री [년] अभ्निदेक्डी स्था त्याहाः केपादुव। अस्ति — स्थी • [ि] आग्य पंथमदापुटीमेंसे एक राष्ट्र म्हाडाडा करणा परमी बटराम्मि पिश्च स्थिन्सम् अस्पनकी क्रिया समा • देशे स्टेब्स् (देस्क्के प्रगादुवर्स अभ्योते शीम अर्थ • • मीमास्मि — ब्राह्मतिसे अर्थक

ब्रामिक शीम भन है- ? भौमामिन सहार्वात्तरे अस्तर-र विष्यामिन पित्रको अस्त्र-आस्त्री, है वदर्गानि-जरार्वे अस्त्रक्ष, स्मात्रको असुसार, तीन पर है है- ? यावत्रवार र जाहबनीय है दक्षिणारिम। द्वारास्य रन जानियाँ में है- ? आस्त्र २ रंजक- है कस्त्र ४

लिनवाँ वे हैं-? आजक २ रंजर, १ क्या ४ रतेहरू भ बारक, ६ वंशर, ७ हाकड, ८ लास्क सरक, १ क्यानक): जिल्हा मिश्रा स्थिती सामग्रीतः। —क्या-पु चिन्हासी। —कुर्म(ब)-पु सधिबीय शाम छन्नादा सरस सोहसे बास्ता।

पु अधिवीच हामा छक्ताहा गरम लोहसे बाल्ला।
-कस्या-की लाधिके बद्धिक क्लवर्ती-क्यों वा मूर्गियों
मेंसे कोई। -कारिका-को लाभेदका 'लिसहुट पुर-क्षे' - मंत्र किस्में कम्म्यावाम जिल्ला कार्या है।
-कार्य-पु अधिमें बाहुति शाहि हैना कोरो बाल्ला

परम तंत्र बादिने बहुद समें आदिको जनावा वे 'श्री' भारत । —बाह-पु॰ बरभेको बक्को । —काट-पु॰ मयदर नामका कोषा। —कुंड-पु वेदो इदनहुँ । —कुक्कुब-पु बुका।—कुंशार-पु क्रिकट पुन कोणि

केवा यक जिल्लाके रहा। —कुक्र-पु श्वविद्येश्व स्व वंत्र विश्वश्ची कराणि सामित्रुंडम मानो जातो है-पनम् परिवार, भाष्ट्रस्य सामित्रंडा जोर चींडाम! -केन्न-पु कुमी शिव नामनके यकके हो राख्य जो राम्य हाथों मारे विश्वे थे। —कोश-पु —विक्य(बा.) —को पुरव श्रीर

विधानका कोता। - किया-सी जनका दाहा वाधना।
--क्रीका-की जातिकामात्री!--वार्स-वि निक्के मेटर
जान हो वा विकास कान बैदर दा। यु अर्याद स्केटर
मृद्धि जातिकी कीचा। -- व्यक्ति-पु क्वाकास्त्री वहार।

न्यामाँ न्त्री समी वृक्त महान्वीतिन्मती स्वता प्रक्रिः। न्युक्ष प्रदेशीय रहमका यर वा स्वतः। न्युक्र प्र

हारी रहे जीतर के इन नामों में से एक (बीक) ।- चय -चयम -- पु अध्यापान वह मंत्र विससे कम्यापान किया बाता है। -- चित्र -- विक अधिवासी। -- स -- चान्सा (असक्) -- जात -- पु अध्यापार वह सुवर्ष। कार्यिकेस विष्णु । वि० व्यक्तिसे उत्पन्न अस्ति उत्पन्न करनेवाकाः पापकः। --बार्,--बास्र-पु सिंधुफला, गत्रपिप्पसीका पेत्र । - जिल्ल-पु० देवताः वराहरूपवारीः विष्णु । वि० व्यक्ति हो जिसकी जीम है। -जिद्धा-की भागकी रूपः भग्निको सीर्ने को ७ वतायी जाती है (कार्का, करानी, मनीवना, सुकोबिता, भूसनर्पा, नमा और प्रशिप्ता)। कांगमा वृक्ष । -बीबी(विन्)-पु॰ मस्मिके आवारपर काम करनेवाले-जैसे सनार जहार आदि।-उवाल-प शिव । - जवास्ता-स्ती० भागकी सपटा बस विध्यकी। भागनी । -शुक्रावटी-सी० भनीर्थ दूर करनेकी एक गोनी (भा वे)। -तेष्ठा(खस)-वि० वस्ति सध्य तंत्रोबारी । -चय-पु०,-च्रेता-मी बभाविभि स्थापित वीन प्रकारको भन्ति (गाईपस्य, भावदनीय और रक्षित)। −दंड−पु झार्गमें बकानेका ६ट। – द्-पु झारा छगाने-वालाः दाइकः । - सुरद्य-वि० वितापर विविधूर्वेकः सकाया दुमा। पु० एक पितृक्स (− हमनी− क्षी ेयक झुप । च्याता(ह)-पु श्रीतम कृत्य (वाद) करनेवाला। -दान-पु विदामें भाग कगाना ।-दाह-पु वकानाः धनदाइ । - तिच्य-पु० मध्तिपरीक्षा । - तीपक-वि० शननञ्जलः बहानेशस्य। -हीयम-पु वटराग्निका दौपन पाचनद्यसिक्षी वृद्धिः शायनद्यक्ति वहानेवासी दवा। -दीप्ता-त्यो॰ महास्वादिष्मकी क्वा । -वृत-पु अधः पपमें भागादित देवता। —हेच-पु∙ अग्निकी पुत्रा दरनेवाहा । —देवा-न्दौ० कृतिका नस्त्र । –धान-पु॰ पवित्र अनिन रखनेकी जगह । ~ नक्षत्र-पु कृत्तिका नस्त्र । -निर्यास-पु अन्निवार बुद्ध । - नश्च-पु देवना मात्रः। −पक्क∺दि आनःपर पकाया हुआ।। -परिकिया-स्रो अग्निक्यों होमादि करना !-परिग्रह "३ शासीक महिको अर्लन रखनेका अतः –परिधान "उ वदाकिरी परनेसे घेरना। - प्रशिक्ता-न्वी अग्नि इसा प्रांता जनता भाग, सीनते तेन भाविके जरिवे रिमोध गरी-निर्मेष होनेकी कानः सोना-यारी आर्थिती मागमे तपाप्पर परसानाः बक्ति परीद्या । **-वर्षस**-पु॰ भाडामुधी पद्दार । ⇔पुराण-पु भ्याम रशित अङ्गारह महापुरागों मेंसे एक किसे फट्ट महान माधाने वसिक्षका द्यनाया था। -युक्षक-दु आगद्धे पूत्रा करनेवामाः पारभी। -प्रथम-पु अधिदीयधी अधिका भैतपूर्वक संरक्षार बरमा । - प्रतिष्ठा - स्वा भाविक कृत्यी विश्वपक्षर दिशहके असमरपर दिया जानशंका अधिका आशाहन भीत् पूजन । — प्रयोक्त — पु आसमें प्रवेदाः स्तीका पतिकी वितामें प्रवेश ।-प्रम्पर-पु चक्रमक परधर ।-बाल-पु ४६ गाम क्सिसे मागडी ल्या निकरे ।—बाहु—पु भुर्मीः रतार्थमुत्र मनुका एक पुत्र ।--सीम-पु सीनाः र् असूर। -भ-प सीना। इतिहासध्य । वि अबि वैसायम दनेशन। - मृ-दु दाधि।य। - मृति-पु शीव र्वं वरण्ड । वारक शिक्षीनेश स्कृत - संय - संयम-पु अर्गान रगण्यर आस्पापक बरनाः उस बार्यने प्रयुक्त र्भत्र स्विष रोधा देश !-सच-पुरु अस्टीन्य में। स्ट्रनियो-से रपाचर भाग निक्षणनवाना वर्गएका अधिक्षणनवा में भरापे£ो कड़ाहै। ⊷झणि≔दु सर्वेतांत्र झसि। ॑

भातिशो शोद्या !-मांद्य-प॰ बठराधिका मंद हो जाना र्मवाक्षि, हावमेकी खरानी !→मत्क्षि-पु॰ भगस्य ऋषि। -मिद्य-पु॰ दूर्गर्वद्यका यक राषा, पुष्पमित्रका स्टा। -मुख-पु ब्राह्मण देशवाः प्रेतः मग्निहोत्रीः चीतेका पेड भिकारों; एक **वधिवर्धक** भूर्ण !ः ~सुरती~लो । गायत्री र्मंत्र भिकार्गीः पाष्ट्रदारा । - सुग-पु स्थातिपर्मे माने गरे पाँच तुर्गोर्नेने एक । —शोक्रम ─पु अधि प्रम्मतित करनेकी किया । -स्वा(जम)-प्र वीरवहरी; मीना । -रहस्य~पु॰ अधिकी उपासनाम्य रहस्य[,] शतपथ मामण का दसवी कांट। -दहा-त्यी मामरोहिणी नामक वौका । -रेसा(तस) -व भोना ।-रोडिणी-सौ॰ ण्य तरबद्धा फोबा बिमर्मे स्वर होता देः ईसीरा : - स्मि-पुरु आवन्द्री सप्ट देखदर शुमानुम फल न्तानकी निचा । -कोक-प॰ पक कोड विसद सधिकारी अक्षिरेव माने गर्वे हैं। –च श—प्र अग्रिक्टल । – धभ-मो॰ स्वाहा । -वच(स)-प अधिका तेव। -वर्ण-वि मागरेसे रंग्लाका। पुण्ड ध्र्यंत्रं श्री राजा। -वर्णा-न्यी देव द्धराव ।--वकक --वद्धन-विश् याननगरिक बहानेवाहा । -बहुअ-पु• श्राब्ह्य राषः -बासा(सम्)-वि अधिसम्बर्धाः वस्थाकाः को साम सुपर पहले हो। —वाह्-पु धुर्मीः नद्भरा । वि० अग्रिनाहरू । – धाह्न-युः कहरा।-वितु-पु चिनगारी। -विद्-वि अधि होत्र जाननेदाला। पु॰ अग्निहोत्री। -विद्या-सी॰ अक्षिद्रोच । −श्विसप−पु॰ भउद रोगमन्द वस्त ।−भीर्य −(व अक्षि वंसे तेवदाका। पुअक्षिका तंत्र; साना। -वेश-प॰ वायुरेंद्धे शास्त्रवन्द माधीन शर्मि ।-शर्मा (र्मन्)-वि• वर्त सीवी : पुरुषक नापि ।-सारा-सी अय्याधानका स्थान ।~शिल्व~५ इसुमधा पै"। बसरा सीनाः दीकाः बाज । वि अधियोनी शिखा या श्वामा बाह्य ।−दिएया नसी आगन्धी स्वान्य या संपर; करि वारी बीभा । - ऋदि-न्या आयमें तपस्य शुद्ध बरनाः अधिपरीक्षा । ~दान्तर-पु कमर पुसुमा गाना । -च्टोस-पु+ वर्षाविश्वष ।-छ-वि भागपर रागा हुआ ! पुरु छोट्टेब्स कहादी ।-च्यास-पु विनरीक्स एक गण था वर्ग। – सभाय – वि॰ आगमे उरस्त्र । पु अरब्द्नुमुभः सीनः भावनदा रम् । —संस्कार-५ भाग वमानाः का करनाः अग्नि दारा शुक्ति करनाः यूनवःनाद शास्त्रे ण्यः विचि । −संहिता-स्थाः अविवशःरिता । विवश्मा र्धंव १-सन्ता -महाय-पुरुतायुः पुत्राः चीगमा स्थूनर । –मासिक−ि अधि दिसका माठी द्या पविधे माठी बहरे दिया हुआ (बहे)। -सास्-वि आगर्ने बनावा दुष्टा अस्ममान्। न्यार्-पुरस्तिन्। नरेवन-पुर भाग तारना । -स्प्रभ -स्प्रेमन-५ अविनी पाइर यनि रोकनसे किया यत्र कार्यर निष्य प्रमुक्त कानशामा वद दा औरता -स्ताक-दु विन्यारी । -हान्न-पु बिक बंधा र प्रस्तिवे भागुनि देना दिनाहरी मान्तामून अधिने निवसारक हरन वरना । ~क्षाप्री(ग्रिप्र)-(र यु = अन्तिहीत्र बरनवाभाः । अधिप्र-पु [६4] एंत्राच । संस्ट्रीह ६६ ६५। ६६ तरहरा श्रीवा

भरिनसान्(सत्)-पु बिं) वधानिवि अयनापास बर्ध-बाला दिल अग्निकीको ।

अग्रप्रीधा-प मि विद्याप्ति प्रकारीनाका अस्तिकः अद्याः यधः होमः स्वार्थम्य मनका एक पश्च ।

अप्नीय-वि॰ [मं॰] शम्ति-संबंधीः अस्तिके समीपका । भगन्यगार्,क्षमन्त्रागार्-पु [मं•] पद्मानित रलनेका स्थान ।

कारन्यस्त्र~प [धं] यंत्र-प्रेरित शाय विश्वसे आग शिवक) अग्नियासित साथ (६तक, समेया सादि) । ध्यस्याधान-प• [मं•] वेदयंत्र क्षारा अस्तिकी स्थापनाः

स्राप्तिकोत्रः । अस्त्याक्य-तु [मं•] हे 'अञ्चलार'। श्रादनपादाय~पु [म•] भटराग्निया स्थान ।

अवस्थादित-प्र[मं+] अस्मिद्रीओ, साम्मिक् अञ्चरपात-५ [स] अध्निकाटः स्टब्सायातः। अम्बुष्सादी(दिन्)-दि॰ [नं] बहारिनकी दुसने दैने

भयन्युद्धार−पु [मं] दो अरणिदाशेंका रगक्कर भाग

उत्पन्न करना । **ध**रन्यपत्याम् – पु० [तं] अभिनद्दात्रद्ध लंतमें द्दीनशाली

करिनको पुत्रा वा क्छका मंत्र । श्राम्थ−ि हे 'अग्र'।

भाग्यार-की दे आया ! अरधारी - सो॰ जागरें ग्रह, दर्भाग आदि हाकनाः अप्यार्थः

करतेका पत्र (१) । श्राप्त-वि (सं] अराजाः पहकाः मुक्यः अभिकः। अ आगे। पु अगमा भाग मीकः जिल्लाः अपने वर्गका

सबसे अच्छा पदार्थः वह-चहकर द्वीता कलार्थः कहनः आरंगः एक तीकः भाषारकी एक मात्रा। समुद्र । -कर--प आक्षका क्यांना हिस्सा चैगली। पहली सित्न । न्या-प्र जेना गावक।-शब्ध-वि यणमाप्रे पहले थानेवाला मुह्य । –सामी(मिन्)−वि भागे वक्रनेवाका । प्र

साबक अगुजा । [त्यां + जमनामिनी ।'] -श्र-वि + काने सनमा हुमा; व मेड । पुरु पड़ा भाग्र जाख्या व सपुत्रा। -कश्मा(श्मन्)-पु दश माईः माध्य ।-जा-सी वर्षा विद्या । आता - जातक-तु - काति - स्पा जावन । —बिक्रां —सौ भीसका भगका हिल्छा ।—शी−थि आगे बक्रमेशालाः भेद्र । प्र नेताः अग्रमाः एक सरिनः —दानी(निम्)−प चतनके शिशिच विवाहका पदार्थ का सहस्का ताल प्रदेश करनेवाका परिता जावान ।

--वत-प्र वहरेन प्रुंभकर किसीके आनेकी स्वना वेनवासा । -निरूपण-पु भविष्य-प्रथन । -पर्णी-को अप्रकोमा कुछ ।~पा—वि वक्ष्त पीमेवाका 1-पाक्-पु पृष्टिका अगस्य काम अगुरु। - पूजा-सी सर्व प्रथम पृथा; सर्वाधिक पूक्त मानना ।—बीज्र∽प्रः वह दृश्यं

बिसको काठ काटकर करावी बाबः वक्ता । वि इस प्रकार जननेवाका (पीथा)। --साग-धु अंश्र वा जयका मागः सिरा, मोकः भावः नादिमें नहकें दी वानेवाकी नस्ताः प्रेष भाग : -भागी(शिम्)-वि भवम गाग वानेका

भविकारो । —भुक(ज्)-वि पहले बाजेवाकाः विका

वेब-पितरको भवित क्रिये छानेशाच्या पेडू ।--भू --सूमि--

की॰ सदयः महानका सबसे अगरका मायः छ। -सडियी-मा॰ पटरामा । -सास-पु॰ इदव बस्त्रक ण्यः रीग । —पाम –पु सब्दे स्पतेक सिम् आस सके

वाको सेना । वि अमगामी । -- वार्यो(चिन्न)-रि आग वर्गनेवाका अनुस्य करनेवाना। --योघी(धिव)-पुर सबसे भाग सम्बद्ध करनेवाला प्रमुख बोब्दा ।-स्वरं-पु॰ समापारपणका सक्य (स्वानकोय) हेरा 'स्ट्रीय वारिकिन' : –काहिसा–श्वो० (वेस्प्रे साउ । –वक्त-

प्र भीर-फाइका एक भीबार। —बर्सी(तिंच)—स भागे रहनगरम । –द्याद्या-स्था॰ भोमारा ।–संपादी-ली बमकी वह परतक क्रिसमें समध्यों के कर्म किसे बाने है। -संप्या-थी॰ प्रातःबाक। -सर-वि, प॰ वर्षे वानेवाका व्यागामी, प्रचान अगुआ । (वी॰ 'ब्राप्यती।) ⇒सारण−प शामेब्री तरफ बदाताः क्रिसीब्रा सारेख

पवारि अपनंशे को कभिद्यारोके पाम स्वीकृतिः वारेव आदिके किए मेवमा । -सारा-स्तां गीवेसा कुम्परिक शिरा । -स्वी-का सूर्व्य मेक् । -साबी-रि॰ [हिं] मानेको बात सोबनेबाका इश्वरहीं।-स्थान-प्र⁴ प्रचम स्थान । —हर--वि प्रथम देव (वरत) । —हक--पु चैनकी दाशीको स्राह्म नोका - जायण-पुरु कर इमका महीमा । −हार-पु राज्यको भौरस जक्रको निर्वाहार्थ मिकनवाका भूमिताना इस तरह ही हुई सूबि

आक्रायनो बेलेके किए खेतको बन्दरी निकास हमा बन्द । भवता (तस्)-- श [तं•] सारो, पहडे: आयेमै । भग्नवास-प् वैदव्यका एक मेर अगरवाका। अध्ययः(दास)−व [सं∘] वारंभमे दो ।

भग्रह-प्र•[मं•] ग्रहम न करनाश्चव्योन व्यक्तिज्ञानवर्ता। भग्नीस-५ वि वे नगमग्रे। सप्रदेश – १ [री] वेंद्रीय विद्रा भग्नाक्षण-प्र भग्नाहिः-सी॰[मं]स्टास्न्रहारको निगरन। लग्र जीक, अग्रामीक−५ [शं∗] फीवका नावे प्रातेवला

शहात्म्य-वं [नं] जो देशती न हो नगरका; वा पार्क्स, न हो। बगकी । अधाराम−प [मं] भोवनका वह अंध जो देवत⊍ यो

आदिके किए पहल निहास दिया बाद । ब्रह्मसम्बन्धः [र्मण] सम्मामका बासन ना रबान । क्षप्राद्धां निव [मं] प्रदानके क्षत्रोगकः त्वास्त्रः व्यक्तितर णीयः विश्वसम्तरीय ।

कात्राह्म(-सी [में॰]सीधारिक काममें म कान कामक मिट्टी ! काश्चिम-वि [र्स] एक्टा अनुकाः [हि]क्षेष्ठ प्रचया वेद्यगोः आगामीः स्थमे वदा । प्रः वदा मार्दे । अग्रिमां--तो [र्न] श्रीष्यवा कोचा मामक कर वा

क्रसम्बद्ध प्रस्तु । व्यक्तिय∽दि [सं] केष्ठ उत्तम । पु॰ दश मार्थः व्यक्ते स्थानेनाके फ्रम ।

अधिविधियु—पु [मं] ऐसी भीने विवा€ करतेवाका दिव मिसका पढ़के विवाध थी ज़का हो ।

अग्रेविधियू—सी [सं] वह विवादिना त्या विश्वक्र की विदेश मनियादिया हो ।

```
24
भवेमर-वि॰, पु [मं ] आगे जानेवाला अगुआ । [स्री॰
 'बदेसरा ।]
भग्नेमरिक-पु० [मं ] नेताः माक्रिक्के आगे जानेवासा
 भीकर ।
भग्रप-वि [मं0] जो सबसे जाने ही अंग्र कुल्लक, गान्त ।
 पुरुषदाभागम् सन्तानकी छत्।
काञ्च−वि० [मै०] श्वराकः भाषी। दुखः पु० पाष दुश्कर्मैः
 रु:सः विपत्तिः अञ्चीयः वंशका एक सेनापति । —कृषद्धः --
 प्रभायभित्तक्यमें किया जानेवाका एक कठिन वर्ष। —
 कृत्-पु० पाप सरनेदानः । +-ानः-नादाकः,-नादान-
 बि॰ पापनादारः । प्र भिष्य । ~भोजी(जिन् )~वि
 भी देव पितर, अतिथि भारिके क्षिप साना न बनाकर
  केम्स अपने छिए बनाने और खाने ।-सर्पण-वि पाप-
  माञ्चक (संब)। ५० श्वयदीपासनक अंतर्गत एक पापना
  दिनौ क्रियाः क्रम क्रियामें पड़ा वानेवासा एक संघ।
  -•क्रुचक्क-पुद 'अयहण्ड् ! -मार-वि• पापका
  नारा इरनश्का । - छ - वि पापनाभुक । - शिय-५०
  बहुत विपेका सुप । – संस्य – पु॰ दुष्ट मनुष्का दुरायं आदमै-
  मानाः भोर भवते कुमार्गको सूचना देना । वि अव
  रंगी (सिन्)।] –हार-पु मसहूर बाकू।
 सपर-वि वी घटे नहीं, की एक-सा बना रहे क विल,
  भवें स्व [सं ] स द्वीने भोग्य कठिन।
 अपदिस−वि० [सं] को हुआ न हो। न क्षोनेवाका अर्थ-
  सन् अयोग्य, अनुभितः । अन्दन्याषीः । अ पन्नेवासा ।
   "भरनापरीयसी-नि॰ न्यां थे। कुछ नहीं हमा है
```

व्से करनेमें कुश्रक (माया)। **अस्ट** = - वि दे 'अपट -- दीपक दीनदा तेल भरि वाली षरं अषट्'-सम्बी।

भदन−दि [सं] जो यनाया ठोम न 🛍 1 अपर्स−दि [सं] को गरम ज थो, दशा। भधर्माद्य-दु [०) चंद्रसा।

मदवाना−स क्रि• दच्छाभर खिलानाः सं<u>त</u>्रष्ट करना । পৰাত্ৰ=-যুত নৃদ্ধি দাবাদ।

भघाटां - पु पह मूलि जिस वेपनेका अविकार धमके रवामीन्द्र म हो। अधार-पु [4] पात वा दानिका अभाव + आपात

मदार, भीर । वि भेटमर। ज्वादा बहुत । भपासी(तिन) वि [मं] जी पानक बाहातिकारक सद्दा ।

नघाना-न प्रि॰ नगरना सुप्रदोना स्वता विसी वन्तुः भेवन या उपभोगमे जी भरताः । प्रमन्न दीना । भयायु(स्)-वि [१:] पापरमः पापका श्रीवन विमान

बागा । **थपारि-दु** [मं•] बापदा नाण करनेवालाः अप नामक

दैस्प मार्मेशन पूरण । अपागुर-पु॰ [मं] कुल्ल समयस्य टक दास (यह

प्रानाचा शास भारे और बंगना सेनापनि था) । भर्पा(पिन्)-वि [मे] पार्था।

मधरमा - पु भीदा मीश भाग । अधारी-विन्यु दे अधारी ।

ď

. f

٦,

भपार-पु [त] शिवशा एक व्यन् एक लिवन्यवस्य वंत ।

वि औ पीर वा मवानक म हो, सीम्य । -धोरकप-प शिव ! -साथ-पु शिव। -पंथ-पु• [हि०] समी रियोंका पंच या संप्रशाय !-पथी-वि०, हा विं ा अधीर मक्का अमुगायी । न्ययः-मार्ग-प्रश्रवना बपासक एक सम्राज्ञ । अधोरा~न्वै॰ [सं] महत्कृष्णा प्रमुदर्शा ।

अधोरी-वि प्रणितः गंता । यु अपोरपंधी, भीमक भिनौनी चीवें साने-पीनेशछा । बाघोच−वि [मं] विना शस्त्रका अस्य ध्वनिवासाः व्यालीस रक्षित । यु एक वर्ष-समुद्र (प्रत्येक वर्गक प्रथम दो अध्यर भीर झाय मा)।

अधीय-प [स] पापसमूद । अध्यक्त−विस्तिनिमारनै वीस्वः प्रद्रशासोद्रः। असम्बा−सी [मु]गायः मद्यान+−५ १० 'माग्राण'।

आयाजनाच−स क्रि+ गयं केना, संयनाः। अध्येय−वि (ઇ०) न र्स्पने यीग्य । पुनचा अर्थचळ-वि• [मं] वी चंचक न हो, रिवर; बीर I अवड-दि॰ [सं] जी उम्र स्वमावका न हो शीम्बै। अधडी-- औ [मैं] शांत गावः श्रीप न करतेवाही श्री। भचक्र-वि [सं] चंद्ररदित । श्चमद अचंग्रो, शचमा - पु० भन्मा आहर्ष। शक्तमा—प नासर्वः विरमयः भाश्यवेत्रन्तरं वातः । शर्चिमिस॰-वि चक्ति विश्मितः।

अच्छ-दि• बरपुर न युग्तनग्रहाः ≉सी भीवद्यापन, अवद्यानेदा भागे । **अवस्**चामा – था कि भीषदा दाना, दिन्मित दाना, र्याक श्रद्धता ।

अच्छन-प्र नंबा बन्धारार अँगरस्या जिसमें पहले गरेबाँसे कमरपद्गीतक अर्थचंद्राकार वंद छन्त व और वद सीप बदन हेक्स हि । **সভ**মতি−স গৰালড।

अच्छा-पु॰ अनवान । -(क्टे)सॅ-अनानश, पॉग्पेमें । भच्छ-- वि॰ [मं] यहरहिन, विनमें पहिने न ही। अयह,

शियः । अध्यक्ष(स)-दि॰ [मं॰] पन्न-रहित, संधा। प तुरी

अचशुर्∽ अवशुम् का समायगत रूप 1 ~हर्राम-प्

नेशनर रंकियो हारा प्राप्त ग्राप ।-विषय-वि रहिन पर ! अध्यक्षरकः-वि [मं] नवरदित अंधा ! अचगरा॰-वि बत्यानी सटगट श्रताती-'वा करे। सुन रारीत अयगरी तक सीमना जाया -गू ।

अचगराव-स्वी नन्साधे श्ररास्त्र । अधनर-रि [में] चारम बनित तिग्रदेशस चारम दम ही भी पत्र या बुश्य न थी।

भाषाना -ग तिः र॰ हपता ।

शक्यमः-वि[1]अने™ थीर विदा; कच्चल हिरा। भाषप्रसाहरू-शी अलनगा (प्रत्यनाप्त । अवदर्भः नहीं हेश्यर होया।

अवसीम ०-५ अना हरी गण देश भारता

भचमन • ~ प० दे शासान । अच्छा-विश् [मंश्र] अजल स्थावर । यु स्थावर प्राची सा परार्थः स्वर राश्च-(वृष सिंहः वृक्षिक और कुंध) ।

भषरज-प्र शासर्य, शनमा । विश्व अन्यवधरा, मनीसा । भचरस−ि [मं•] या अंदिन स हो। भचरित-वि सि विमयर बोर्ड क्या प्रश्लीः अध्ययकाः

मधता। प्र गतिरीय।

सि॰ो गतिको स्थार विदरभाषी सन्ता रष्टनेशनाः अग्लः अपरिवर्तनशीलः। पु पदाष्टः श्रीषः, भदी के की संस्था (क करू-पर्वतीपरने): अका विना

भागा । -कन्यका - अ। -सन्या - विद्या(स) -समा-की पार्वता ।-कोछा-की प्रश्री ।-क--फाल-वि पहावपर बावदावरी अध्यक्ष ! -त्यिट (च)-

प्र कोनिक । वि स्थिर कोतियाका । -ब्रिट (ए)-प्र रंत्र । – एति – सा यक श्रुष्ठ । – पतिः – राज्य – प्र• हिमाकम् । – ज्युक्त-५० असंहत्त व्यवस्था एक येथ ।

भचमा∽यो [में]पूर्णाः विश्लो स्वननेवामा। -सम्मा-िया नाप-सुरुक स्तनो । अधराधिप-प्रसि•े दिसालक।

अच्वनां – पुद शायमन'। अचवनारं - छ० कि जावमग करना, पीनाः शोष देमा ! म० ति ॰ भोजनोप्तांत क्रांग्रे आवि धरना । अचवाई*-विश्मश्चान्ति सम्छ।

सचनारा∽म० कि आचमन बताता । **अचाक, अचाका !- मः श**यागढ । अचाक्सप−वि [सं]ओ देशा गना सके अवस्यः

क्यालको । भाषातर्थे~प्र सि•ी बहरावैदा में बीमाः अ<u>कस्त</u>रा मनाद्यपन ।

श्राचान+~श अपातक सहसा। **बाचानब**—श वदावक, कर्नपृक्षित वा असंगानित कर्मने

भीकार । भारतायसः असायस्य-वि (६) समयक रिगर । ३० भवपणवा रिवरदा गंमीरता। धाचार-द विरोगासा प्रका फल या तरकारीमें मिर्ण-

मसाबे बगाबर इन्छ दिनोतक तेक वा सिरकेंगे रखनेसे वता भरपरा साथ # देश 'मापार'। भचारमन्द्र है 'वाचार्य । अचारी!-वि , पु दे॰ 'आचारा' । सी आगोंकी

मान्द्रोंको भूगमें सिझाकर बनावा डेजा अनार । श्रा**क्ट−ि** [र्न•] जर्सदर । क्षशास्त्री लयुः मां पक्रनेशका वा क्षम पक्षनेताका अहाय ।

समाहरू-भी भाइका समान भनिष्या । नि एका-रक्षित निष्याम । अधाद्वा*~वि निस्त्री चाद न ही: वी प्रेमपात्र न ही:

प्रोति-रहित । पुनद म्यक्ति जिल्लार प्रेम न दी मा औ

प्रैम न करे। क्षाही श्~िव श्या-रहित निष्काम 1

अस्तित-वि [मं] भिता-रहित, वैक्टिक । श्रवितानीय-वि [सं•] विसका विताम न वी सके, कहेगा

লামলিক, ন্যায়োহিত । ব হিৰে। अर्थिना-सी [र्थ] कापरवादी, वेफिडी !

अचितित-वि [र्थ•] जो सोमा म गुदा हो, स्तुरिक व्यवस्थितः समस्यादितः द्वेष्टिन् । अर्थित्य-वि० ति | वे अर्थितृतीय'। -क्र्मं(व)-प्र• पेसा कार्य वा (धतनसे परे हो । -कर्मा(संब) विश् अनिस्य कर्म करनेवाला ।~सःप=वि स्त्रीय करेवा

भागतिगामा । **कार्चिंग्यादमा(ध्मन्)-प्र**्मिश्च वरमारमा, विसंध्य क्र धारणीं न वसी । भश्चिकिस्स्र-नि [सं] को विकित्सके बीच स हो। अमाप्त काइकाच (रीग)। अधिकीर्य-वि॰ [लं॰] जिसे (कर्त काम) करनेको एका म हो यी कछ दरना म पाइता हो नाइसी ।

अधित−दिश् मिं जो सोधान गता हो वो स्टब्स किया गया हो । शक्तिवन-वि प्यत्यः निर्मिमेप। अचिल्−वि [सं•]अचेदम यदापु बस्यकर्। अधिल-दि॰ मि] जो समनके परे हो। निर्वादिः बदाना

विसकी बाद ध्यान म दिया गया हो। अप्रत्यादितः न **धीषा इमा**। अधिचि-शो॰ [मे॰] बदान द्वानामा^{त्} ? श्रक्तिय−वि सिंो वी बहरेबाल की किसवें मेद में किया चा सके। अचिर-अ० सि•ो शोधः काकी कल हो पहते। नि॰ क्ष्णरवाचीः शक्का । -युद्धि -प्रमान-मा(म)-

रोचि(स्)−की॰ विवकी । −धस्ता−की शक्सी व्यानी हुई गान ! ~ खूत-नि भी कुछ हो देर परने मरा हो । श्रचिरता−धी॰ [मं] श्रमिद्धाः। शक्तिरम् अविरादः, अधिराय अविरय-नः [मं*] शील अधिसंग्र बासमें कुछ ही पहले। अविश्रशिद्धाः – पुर्विति विश्रवी ।

असीसा-नि जनसीपा, भारतिका जनतुरीन, गाउँ

मभिक्त निर्मित । [की 'क्वीती' ।] श्राचीर-वि [मं] वस्त्रधीतः। क्षक्र-विण्याको ए व्यक्तिकामा कामक। निक्रित अभ रशिशः। अन् धीयन्यपूर्वकः, सकार्यसेः निवान-पूर्वकः। असेत-जि॰ नंदा-रहित वंदीसः म्याकुकः मानिकः देसवध शासमधा वात-रहिता जब ! 🗢 पु वह परार्वे। बहरता भाषा ।

अचिराशा∽सी [सं•] विद्युत् ।

अचेतन--वि॰ मि] चेतमा-रहितः बदानः तित्रीयः छदाः रक्रितः वेस्तर । पुण्यतः परार्थ । ब्राचेमा (शस)~वि [तं] विच+तिया चेतना-रिकि अवेता निर्माण । [मी 'मपतमी ।] सम्बोध-वि॰ सिं∘] निश्नेक प्रवस्त्रीनः गविदीत ।

क्रवीत्रम्य-दि [र्स] चेदमा-एविक वड । त चेदमहर्म ब्रासायः अधानाः वैद्योशीः जब परार्थं ह क्षणीत्≉—विश्वेत्रीत्। पुनर्भेगीः।

बचैना−पु॰ स्मारीका ब्रुंदा जिम्पर स्वत्री वा पास रखकर कारते हैं औहा। अचोना≉−पु भाचमनका पात्र । शच-पु [मं] म्बर वर्ष (भ्या) ।-- संधि-र्त्या स्वर-मंथि। **भर3-**वि० [मं०] स्वच्छ, निर्मेख, पारदर्शन । पु रफटिकः सास् एकः पाचाः सास्मुक्तः + श्रांनः सहारकः राबणका पुत्र बाह्यक्रमार' वि अच्छा ।-भएख-पु भाखा। **अबद्धन~पु॰ द 'बश्चत्' । वि० असं**वितः सगानार । क्षरक्र(†∽पु० दे 'क्रह्मर'। **भप्छरा, मध्छरी>—स्रो दे॰ '**शप्छरा' ! **अच्छा-वि॰** महा, बहिया। ठोड, संदर रारा सकुशकः र्चगाः नीरोगः शुवरता हुआः स्थारव्यकर (बरू-पासु)ः संका, प्रतिष्ठितः दाममें मुनासिव, सरता (१) भो बुरा न ही। कामसलाका पुरु सेष्ठ पुरुष गुरुवनः वहा-बूदा। अ॰ अवकी तरहः रवीकार-मूचक उत्तर, हाँ गीर (अह. मार्थ्य मी प्रक्र करता है-अच्छा, आप हैं !) i-हैं-सां॰ मनाई अच्छापन स्वीः। –सामा−वि कापी मण्डाः ।-पन-पु० उत्तमतः स्टर्गाः ।-सुरा-वि० भकाः 5रा ।-विच्छा-नुम्स्तः समा-बंगा । सु०-भासा-ठीम वक्तपर जाना (अयंग्बर्ने इसका उत्पटा) सुंदर वनना। -करमा -तंदुरस्य करना; भाफनसे बचाना । जवस्य काम **बरना । -बहना-तारीफ करना । -क्काना-संदर** चनना पर्नद भाना सन्ता साम्राम् दोना। −(दशी) कटनाः - गुकरना -वीसमा-भाराममे विन गीतना । -(प्छे)-अप्छे-वहे भारती ।-यश-अहरत हे वस्त । ─स पास्त पदमा—वडे देवव भावमीथे वास्ता पदना । **"हालों गुअरमा-बारा**ममे दिन गीनना । सप्प्रवाद-पु॰ [मं॰] भामवागदा ऋत्विद को दौतादा घटायक होता है। मस्मित्र−वि [मं] छित्र रहित असतः निर्दोषः असी दिन । पु अञ्चल्य अवस्था निर्दोष काय । मस्छिप्र∼दि [मं] का करान दा अस्तरिक्ष अवि मक, बहुद; क्यानार बसनवासा । -वद्रः,-१वा -९ **ए। योदक मादि कुछ किनकी परियोगरावर बनी रहती है** हेरी पदी जिनके पर करे या श्रुत न हुए ही। भरतुसा-दि रनी [मं] निष्पाप (ग्नी) । स्पो+ बीनीकी ष्ट्र^{के} स्था। **अप्**रिका-मी [मं+] यक सन्त । भप्छदिक अस्टेंदिक-नि [मं] त्री कारने या छेदन बाप म हो। **अ**च्छेच-[4 [मं]िमरा रेज्ज म हो मक्के अविधास । **बर्धाटन-पु॰** [में 3 अमर शिकार फरना । कारणीत - वि पूरा अधिक बहुत । भरतोद्-वि [में] स्वया देल्यामा । पु दिमानस्थी एक हाल (कान्स्ती) । भव्योग-यो॰ [६] १५ मर्ग (पुरार) । अच्छोडेन अच्छोड्नी-मी है अभिन्ती। भरपुत-(र [ा] का महन स्वरूप नागश्य स्थाप । वयुग न दुभा था। अपन अस्मानिया निवित्त रा विवतः। म प्रेमला। व प्रवेशर शिल्हाः हरू ।-कुल -शाख |

 पु॰ रामानेवी साधुकोंका समात्र वा दिएय-परंपरा। —अ−पु जैनदेवताओंका एक वर्ग।~पुद्य-पु० कामदव कृष्णका पुत्र 1—सध्यस⊸पु० संगीतमे पक विरुत्त स्वर । -मृसि-पु विष्णु ।-धास-पु० वर वृक्षः समस्य वृक्षः। ─पद्यत्र—पु॰ संगीतमें एक विकृत स्वर् । अच्युतागम,अच्युताचाज-पु॰[सं] कामरेवः कृष्यपुत्र । अच्युताप्रश्न-पु॰[मं] विष्युक्ते वदे मार, (ह (रह तथा बामन दोनो करबपक पत्र ने); कुप्पके वहे मार्र, अच्युतामव्−वि० [र्स०] विस्का शानंद नित्य हो। पु॰ परमात्मा । **अच्युतावास-पु** [सं०] दे० 'अच्युतवास'। **अग्रक•**--वि• जो छका म हो, अदूस । भग्रकस्ता−न कि न छक्ता इस स दोना। अस्तर्भ -- अ॰ विषयानगार्थे, रहतं तुरः मिवा असावा। वि अविधमान ('छनहुँ अछत गुमान) । **अप्रताना-पछतामा--म॰** कि बार-बार पछताना या संद दनमा । **भग्र**नर-पुषदुत्त निम । व्य भीर-पॅरि । अछना®-अ कि॰ विश्वमान रहना । अखप ३ − वित्र विश्वत कावक, प्रक्राः। **अध्य+**−वि•रै 'ब्रह्मय ।~कुमार−पु दे अक्टरा, बाहरी = सी • वं 'अप्तरः । सप्ररीटी-सा वर्णमाना। अख्यर-वि वि | निस्तरू सीपा-सहा। **अछवाई** * − न्हीं सुफाई । **अग्रयाना∗**−स॰ क्रि॰ साफ करना, गुँबारमा । बाइबामी-सी एक तरहदा अवरह की प्रयुप्त सिवोंकी विया जाता है। अछास≉−िव भो दुवना न दा भारा-ताजा, इष्ट-पुष्ट । सिंदर-अ०दे० 'सद्या । अछित्र-वि॰ [मं•] छित्रर€ितः निर्दोप । अञ्चल-पु अपूत वानिया मनुष्य अत्यम, इरिजम। किंन छने योग्द∗ ≉ दे अछना'। अस्टना—वि• बाल्बान गयादा सस्ट वाकामने न काया गवा दी कीरा, नवा । **अछनोजार−९ अ**छनीरा उदार वा सुभार। रसका मरन या और हिन । असेष्ट=-वि० अध्यय अभय । पु छन रिष्टका अमाप निष्याग्याः भभद्र । अग्रच-दि [मै] जिसका छेत्रम या राज्य महो सद्ध सविभाग्यः । विनर्दरः । असम्=-वि दिन्दर्शि निरीय। आग्रहर-विक म लगानार निरंगरा भन्यपित । श्रद्धोप॰-वि संशा सुरुष्ठ संस्थः दीन I भाष्ट्रामण-वि क्षेत्रसर्दिन संगीर यांता निर्मात, ग्रीह र्रारगः सीव । आसार≪—रि भार-टेप रदिष ।

शाहाद-पु र-४ समना दा ६ व्यक्त प्रशाद इनित

ियसमा वि निर्देश निष्ट्रहा । प्रश्तिक क्षेत्रमहिल ।

अर्थम - वि मि दिल्हीन । प॰ मेनव- सुवी घण्यकी वह भवरबा जब बसक दाँत गई। निकले हारो । श्रञ्ज−दि [मं•] अञ्चन्मा, अनाति सालरी विषमास । पु० ईप्रमुद्दः महाहः विष्युक्त छिनः जीवारमा यद्यप्रकृते विता एक कापि: वकरा: भेंता: कामदेव: चंत्रमा मेप राक्षि एक थान्त्रः माधिक पासः व्यक्तिः सूर्वेदा रथः एक नक्षत्रवीशी । -कर्या-पु असून नासकश्रहा-कर्णक∽पु साकश्रका। -रांधा -रांधिका-मी अवमोदा । -रांधिकी-सी० शतर्थाती पीवा: वजतुरुसी। —ग—पु॰ शिवका चनुप: बिच्या सरित ! -शर-प्र अवदद्या एक विद्याल सर्प वी अकरी, हिरल कादिको निगल काता है। एक असर । - • इति - स्रो निरथम या भगवान्के मरीले रहनेकी कृति । -शरी-वि [हिं•] भजगरमी, -कीसी, विना परिभम**क्षे** । स्त्रीः अजयरो इस्ति। एक शैवा !-गाविका-न्दा पर्वोद्याण्य रोगः। – जीवः – जीविकः – व वदराः पाक भीर बैनकर जीविका चनानेपाला । -श्रेडी-मी एक प्रेमित अध्यक्ति । - देवला - प्राप्त प्रमा पात्रकरा नक्षत्र । −नासक−थु+ एक शानिज इच्च । –ेपसि–थु सबसे बच्छा बस्ता भंगन । - पथ-प अवर्गशी छाया-प्रशः ~पम्प्र−पुतंगरालादराः ~पद्र ~पाद्-पु । एक स्ट । --पाक-पु छामगानकः वश्चरथके पिना । ⊷क्षच−तु वदरेका मार्थ । विश् सूर्ज (का) । − मक्स− पुरु वकुमका पेड़ । -सार-पुरु वकर-कमावः काममेर । —सीड्र-पु दे• क्रममें। –सुका-पु॰ वश्वप्रवापति (बीरमद्रने छिन्छ। बाह्यांछे छिरब्छेनके नाव वक्तेका छिर जोड़ दिवा था)।—मुन्ती—जो० एक राक्षमा वो भरोकः बारिकामें शौनाजीकी निकरानी करती थी। -सोदा -भोदिका-स्रो स्वत्रावनका एक मेदः स्वत्रायम् । -संवन-पु क्रीतांबनः-स्वोमा(मन्)-पु -स्रोमी-को अग्रवणी मासक पात्रा केवाँच । -वाड-ड ४००-काठिबाबाक्का प्रराना साम (बन दिनी बडाके काम क्य रिवेसि बोविका भकात है)। नदीयितन्त्रीयीनन्त्री सूर्व चंद्रादिके गुमनके तील मागीमेंसे श्रदः स्प्रवापतः। -श्रंगी-को विभागो नामक पीषा । श्रम—भ कि] से साथ। —**सुर्**—न॰ सुर्-वसुर क्षपनि काप । —ग्री**श—श** मैनसे परीक्रमे अल**ह**िन रवामरे । क्यु अध्य स्वान । —श्रेडी—विक नैव असर्किन

स्थातसे भानेशका साम्हरिसक, मालुमाना (अजरीवी गीका —तमामा —मार्-मभानक मानेशानी विषयाः देवी कीप)। -सरे मी-भ तने छिन्छे ।-इन-भ नेहत्,मस्वविद्ध। भक्क−पु्र•[स] पुस्रवाका यक् श्रीष्ठव । भजन्य-त [मे] शिवका वर्तम ।

कक्कम−न्दी [मं•] कम अवस्थाकी वक्ती व्यक्तिका एक रांग चेंदर; शजागकस्तन ।~जात-पु॰ ऑक्का एक रीम टेंबर ।

भाजकाब-पु [मुं•] द्विवका थमुष् ववूशका देश एक वस बातः बेंटर् नामक भौराका एक रोग ।

कासगय~पु[र्म•] शिवका धनुष्; अधवीती । अवगाव-पु [मं] पिनाका जनवीथीः पक नागपुतः एक

वद्यपात्र । अजगुत्त#—पु॰ वर्णमध्य पान विभिन्न व्यापात **व्यव** नातः । वि नाक्षमीरपातकः मन्दमव ।

अक्षासम्म-वि [से०] जो अंतिम तुम्छतम वाससी भीव न हो।

भजटा-नौ [मं•] मृम्बामकरी।

असड−वि [सं] का बर स हो, चेदस समझ्तार। दुः थेतन परार्थ ।

अज्ञय्या−यो [सं] गोठी वृद्यी कर्ह्नोद्य हुंगः सप्तरहा—५० फि:ी अनगर। अञ्चल-पु [र्नु॰] बजाः तुष्छ व्यक्तिः गमन । वि॰ निर्मेतः

जनहीतः ६ वस्मरहितः सबस्या । -मोनिश्च-५० स्थ । भवपक-विश् वि | शनस्यवदः अक्रस्**द** ।

भवनति⊸सी० [सं] सन्मराहित्व । अजनवी--वि॰ फि:ो वपरिवित्तः अनजातः परदेशी।

अञ्जनि⊶सी [सं]मार्गसङ्का श्राजन्म−वि० देश 'जबरमा' ।

शक्रमा(म)−५ [मं•] चरमरा भगाव।

अजन्मा (न्मन्)-हि [मं] बम्म-रहितः बनारि । अञ्जन्य−वि [मं•] को उत्पादन≰ बोग्य न हा अक्स नीवा मनुष्यके लिए बनुपयुक्त । हा मानवभाविके निर व्यक्तभवाषक बन्धा-भूकप आदि उत्पात !

शक्रप-पु॰ (र्व•) उचिन क्यमे वाठ न करनेवारा वा पर्मिक्रीओं ध्रथ प्रदनेवाना जामणः क्षवास्त्रः क्षरापाहकः। अञ्चरा~ना (चं∗) एक सत्र जिल्हा बकारण गर्नेगरे मीतर-बाहर नामे-जार्ग भाषते दिना जाता है। इस-मंदः

'सोऽइस्'। — अरप⊸प्र अन्यानंत्रकावर। अञ्चन-वि [थ] विचित्रः भनेत्राः । प्र अक्रकः वर्षमा। अक्रम−प [श] अरक्षे मित्र देश विशेषतः ^{हरान}ः

हरानः वं कोग की बरव न हीं। कारामत−स्था (च) वड़ाई हुन्याः गोरव चमस्प्रारः। कासमी-वि [वा] क्षत्रमञ्जाः पु॰ शत्रमका रहनेवाकी ईराभी तरानी।

अक्रमीड−पु [नण] जनगरः वसके भारतपनका प्रदेश पुरुवंशीय दरिसका पुत्र सुविहिए सुदालका दक पुत्र । अप्रज्ञाच—की [स] पराजय । दि अभेदा पुरव ⊅स विष्णुः बन्तिः एक सरी ।

अजयपाध्य-पु गैरन रागका यह पुत्रा यह राजी क्रमानगेटा ।

अज्ञमा-नो [में] भागः भाषाः दुर्गाको एक मुद्दवरीः भदरी ।

अध्यय-विश् (सं] को भीतान जासके अप्रेका ऐंतर्य स जीतमे भोम्ब ।

अजर∽नि [नं] जरातीहत ची छन्ना बचान रहे भून रहिता है जो पचे पहीं। पु परज्ञका देवता एक वीवी बोर्जकीयो रे

अज्ञरक−पु॰ [मं] अम्जिमांच । सजरा—स्वी० [म॰] चुलकुमारी द्विपाननी !

अअरायज≠−वि भीव म डोलवाका विरम्धवी, विक्र≸

श्राज्ञर्थे~नि [सं] जरागीता विरस्थानी। मो क्वाना म

१९ बासके। पुनैची। कत्रवाहुन, भर्यकायन ∸शी पन प्रसिद्ध पीचा और उपके दाने की दबा और मसम्बेदे काम आते हैं। अजस -- पुरे० 'अयद्य'। भजसीर-विद्वास किल्ले हावरें वश्चन हो। शक्त-वि•[सं] अविष्याच अनवरतः । अ० निरंतर,शततः । सञ्ज्ञहारी-सौ० दे 'अबहरम्यार्था । अबद्द्रन्दि [सं] जो छाद या सीवे नदी । नम्बार्थान सी० वह मध्येजा दिसमें बाज्यार्थका स्वाग किसे विना बन्दार्भका कीप द्वीता है, उपादान कक्क्या (सा)। भावदर्शिग-५० [मं] वह श्रम्य को काव किंग-वायक श्चरके विश्वकरणमें व्यवहात होनेपर भी स्वक्षितका स्थाग न करे। ससर्दे, शराईं + न्य शास मी; शवतकः। भव्रॉ-सी [ज] ६० 'सदान'। सर्वाची-लो॰ [सं०] एक पोषा, शेकपुष्पी । मजा−थी• [सं] प्रकृति माना शक्तिः क्करी पक पीना। =गस्त्रस्तन~प्रवद्धिः गम्पे स्टब्डोबाकी रऽनाकारः भेरी (डा॰) उस बेसी निरर्शक वरत । जीव, पासक-प्र• स्मापक्र । **बहा−र्रो॰ [श•] शोक मातम; मातमपुर्सी । –ग्नाना**∽ पु॰ वह सदान जहाँ भातम किया काय, मसिये पड़े बार्वे या वाबिवा रक्ता बाय । - वार-पु मातम करन वासा।-वारी-भी भारम करमा, मनाना। मजारार-वि० [मे०] की जायत न 🐧 । प्र- श्रंगराज । भजाच+-वि• दे 'सजाचक'। अजाचक, अञाची+--विश् शिसे किसीसे अछ मॉनमेकी भावस्थकता न हो अन बाल्यने शरपुर । मजाजि, भजाजी ननो [मं] शेर या फुल्ब जीरा। में≱क्त्रीस∽द्र[अः] श्रेतान । भजाव−ि [म•] भगग्याः अनुस्पन्नः श्रायक्तितः। ~क्ट्रय्~ड बद सांव निसका दिला भगो न वटा हो। ~पस-वि॰ विसम्भ पंछ ग निकले थे। - प्यासन-वि विमर्भे ज्वातीके विद्व प्रस्ट न दुए हो । –ध्यबहार–पु वह स्वक्ति जो अभी बाहिए न हुआ। छ।। —दाञ्च—वि० रात्रविद्यान विस्तरा धार्र चतु न (जनमा) दा । पु वुधिविदरादार कर्यन्त्रवर्वित काशीका वक शामाः अग-बान् बुद्दका ममकार्यान एक परामंब-दंशी मगयन श ।

हीर्पियर रिक्ता व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति होती । स्वाप्त हो। स्वाप्त क्ष्मित्र स्वाप्त क्ष्मित्र स्वाप्त हो। प्राप्त स्वाप्त स्

नमाजके समभको सूचना देनाः मुगेका गाँग देना । श्रजानसा# – स्टी० श्रदान, भने\स्ता । अज्ञानि-वि सि॰ो पसीरहित, विधर । अज्ञानिक-पु॰ [धुं] छागपास्क । वि दे॰ 'मदानि । श्रानिय~पु [सं] अन्धी जातिका गाहा। अज्ञाय-पु० [त्र०] पापके बरुपमें मिल्मेबाला दास ग्रनाइको समा पीका शंतर वरोता।—के फिरिटने— ब फिरिश्ते को पापियोंको दंट धेनेपर नियुक्त है (मुसन्)। **मु॰−भोक खेना−अदारण द**ष्ट शहारमे प*ना । अशामिक-प [मं] पुराण-वांशत व्या पातको यो मरते समय अपने बेटे 'नारायण'का नाम धनसे सङ्गति पा गवा। श्रामाय~र वि० वेजा अनुचित्त [से] पर्मोरदित । **अजायय−**पु (थ) अरमुत, जनानी बरतुर्भीका समृद था र्धमह ('वकीव'का वहु)।~ख़ाता,~घर~पु∙ भड़ा तालवः, म्युबियमः। शकाया÷−वि मराद्वमा वृत्त। भजार>−पु गीमारी। श्रति−वि [र्पुण] जानवामा गमन करनेवाला। स्त्री गतिः गमनः पॅन्टनेकी किया । अखिमीश-पु॰ शाजीके पिताका घर । श्रावित्र~वि [सं०] विसं कोई बीन न सका हो। अपरा जिला अनेव । पु॰ विष्णु शिका तुक एक निपंता सूपका पहने मन्त्रीतरका एक देववर्ग । -- माध्य-पुर चैनियाके द शरे शीर्वकर ।- वका-स्ता० एक जैन देवा ।- विकास-वि॰ किसका विक्रम अपराजित हा । पु॰ दितीय अउग्रह-की उपाधि । अजिसा−मी [मं∘] महत्त्र-कृष्ण एकारही। अजिते हिय-बि॰ [में] असंबमी विषयामक, जिमे अपनी इंडियोंपर अभिदार न दी। अजिन-पु॰ [मं०] साल, वर्ष कृत्य गृग, व्हाप्र भानिका समया एक सरहकी समीकी धंनी; भारती छाहा। -वद्या,-पद्मिका ∽पद्मी-न्सं धमगतक।-योनि~पु हरन !-वासी(सिन्)-वि गृगपर्म पारण करनवाला। −मध-द्रः मृतकाताः ध्यवसाय परमेशना । अग्निर~पु• [मं०] ऑगनः शरोर बातुः र्रादिप-दिगय छहें वरः मेड्ड । नि॰ श्रीमगामा । अजिरा-भी॰ भि । पर नदीः दर्गा । श्रामिरीय-वि [मं] क्यान-संतर्गाः। अफ्रिक्का−वि [सं] गुरूच में देश न दो; ईमानपर सरा।पुनेप मध्या। ~ग~नि सीपा प्रानेशका। म भाषा भजिह्न-वि॰ [धे] निहारदित १ पु भण्ड । अजी-स मैंबाधन ^करी का ल्या कप (बरावाबाजी क (१ए स्वयुक्त)। अजीक्ष−पु[4] दे॰ जनवर'। भजीयम-पु [वं] मीर एड मृतुरीत अपाप पुन

कार्रोक्स-रि॰ (पर] किर प्यप्ता प्र निक्र संदर्भाः

भिगदे पुरारे बान्हारामें न्यारि । -नार-पुर मेहनू।

विद्याल । - मुली-के दोगीर दिश्यात । मुक --

रोक्स निया म

```
मजीजी-भटकाव
```

करना-प्यारा जानना। -कामना, -रकका। -का करना, प्यारा समझना, जाहमा ! -होमा-प्यारा होगा (किडी बोजडे) हेनेसे संक्ष्म होना ! क्षम्रिप्ती-न्नी० रहाई; दोरती वस्त्रन ! क्षम्रीद्वी-न्यी पर एक्स्प्रदेश होणी अपस्तर, 'प्वजुस्ट'! क्षम्रीत-वि० [वं०] का सुशांवा हुआ न हो, पी संद स एक्स हो। • अधिता, क्षम्य।

्षत्रा हो। ७ अजितः सबेयः । अज्ञीति-त्येः [मं] शस्त्रुत्यः श्रृवरादित्यः । सज्जीय-[मं [सं] शर्मुतः अमीमा । -व(वः)गरीव-

वि जनोरताः पुष्पाप्य । अप्रीरत-पु० दे० भगोष । गु०-बाना-भारी, वृतर होना (नो भगोरन भगोते हो गवे दम) व्हिन होमा । अप्रीर्ण-पु (सं) अप्य वश्वन्योः भारितः जित्रप्रसा

हातिहा ह्यामार्थ । देश को प्रकास हो। वो एका सही। को बुद्धा मा पुराना सहुत्रा हो। अवीर्षि अवीर्ति-कोश [सं] अपन, क्रहकसी। अवीर्षि (जिन्)-वि [सं] अवीर्ष रीम्बाका।

स्रविगि(जिन) - हि [सं] जाने प्रेरामाण । आजीय - दिण [मंग] प्राप्त-रहित मृत्य कर । पु चूलु श्रीत-वहीनता; वह प्रश्नां कर जगत् (वैग)। स्वजीवन - दिग् [मं] जीवनारित । पु जीवन वा व्यक्तिका नगर, चूलु ।

भजीवनि-मां [सं॰] बोवानाम मरण। भजीवित-पि [सं॰] एता पु एखु। भजीवित-पि [सं॰] एता पु एखु। भजीवित अहुगुत-पु॰वे॰ भिज्युती विश्शकुका असंसर। भजापितत-पि॰ [सं॰] बो पुरा प समझा गमा थे, ओ

नायमंद न किया यना ही। सन्दर्भ-अ देश अजी (मन)। अञ्जाश-पु एक सुरोकीर जानवर।

अञ्चल – पुष्क प्रशासन् जानवर्। अञ्चल – पुष्का अनीसी अनरवरी वाजनेवाको भीवः। दिशासीय। अञ्चल – दिला पुरुष्का पुरुष्का आस्त्रा । पुरुष्का स्वयूरी।

सन्हरू-पु सुमा। स्रसं अनेष्टु सम्बन्धि वं सनवां। सन्दर्भय-वि [मं] वे 'सनेवाः सम्बन्धय (मं) मित होई मीत न एके। समस्या-पु सं] पर रहा विन्यु।

स्रज्ञकपाद-पुर्सि] यक रहः विन्तु । स्रज्ञेब-वि [मं] स्रो स्रोप-प्रियं स दोः स्रशामित (इस स्रोगैनिक) स्रज्ञोताक-विक सनुविद्यः, स्रशोध्यः विरोक, येवीच ।

लक्षारा®—१६० शतुः वितः क्षतास्यः वर्गकः, धवात्रः। क्षञ्जोदना®—६० किः धोनताः दरणं करमाः वदीरताः प्रकृष्टितं करनाः।

प्रकाशित करना ! अविश्—सः सात्र भी; सामतक, मनतक ! सरमुका अवजुका—सी॰ [मै॰] वेश्वा (मा) !

श्राह्मरा-को [मं] भूग्यासको । श्राह्मज-पु [मं•] राजा संगारा । श्राह्म-वि [मं•] राज रहिता पूर्व नासमहा व्योतन । श्राह्मता-स्रो श्राह्म व-पु [मं] व्यवास, शालमही।

श्रमेतनदाः। श्रद्धारु--वाश्ये श्रापः । श्रद्धारु--वंश्य किस्त्राताः। विश् सिश्रीसंज्ञानाः हुवाः। क्षेत्रकटा क्ष्मस्याधित । —कुस्त-विश् त्रिसके कुन बरिस पता न बी ! —चर्चा-चीश फिल्हर रहना, कुरस्थ। —मामा(मन्)—विश् त्रिसका भाम बात व के

क्ष्माभिद्धः । --पितृष्क-(विः विस्के पाष्ट्रः प्राप्तः है। रामकताः । --पूर्ण-(वः वो प्रदर्भेद्धः प्राप्तः वः हो। --वीवपा---वी॰ ग्रुत्वाः नामिद्धः विशे वीवनानद्यः प्राः न दो। --वास--(वः प्रावातः । --व्यासिङ-विः (स पन) विस्के व्यानीका प्राप्तः हो। अञ्चलकः-विः (सिः) अविशिद्धः व्यासिद्धः।

भजाता—स्रो (४०) दे० अग्रात्तीवना'। भजाति—पु (म०) वह स्पष्टि में संपी प्रदा। भजान—पु (मं) ग्रानका लभावः मिस्या वाम बरेचा वि ग्राम-पदित सूर्वः (—क्क्ट्रा—वि० अनवान्ते स्मि

हुआ। असता अधानवद्म दिवा हुआ। -तिसिर-उ॰ अद्यानस्य अंबद्धार् । अज्ञानस्य (तस्य)-अ (तंश) अद्यानह्म द्वाराय, स्वासह

(किया इका)। आझामसा—सी॰ अञ्चानपम-पु मूर्धेग्रह असी मासमझी। जञ्जावी(विद्य)—ि [१] अद, मूर्ख प्रानस्थ। अञ्चय—वि [१०] वो याना न बा छुटे, मानस्थ।

जानने वीस्त्र म हो । — बाद—पु० ईस्वर वा स्टब्स् बद्धेव दे—बहु सव! बहुवेछ—बि [र्म०] बी सबसे बड़ा वा सर्ववेष व छै। विद्युत बड़ा मार्च व हो । सर्व्योठ—बार्च दे कार्यो ।

श्रामर्∞-वि श्री म हारे; न बर्धनेवाला (वारस) ! श्रामोरी®-श्री होलो (वो द्वेपर कटकामी वार्टी हैं) ! श्रादेशर-पु वेर राहि ! श्राट-वी प्रतिवेद हार्ग ! श्राटक-की रीकः अवस्था स्कारन दिस्का समार्थ रह

नदी । पुरस नामका यक नतर । दि [संग] प्रवर्ग करनेवाका, प्रमण्डीक । अदकन—की रोका वश्यन, वक्षान दिचका वस्त्र । अदकन-वटकन-पुरुषोका एक केश । प्रश्-लेकनी

नेशार काम करना। कारकमा—ज कि॰ ककता; बोकने वा खनेमें रक्ती ककता; बदल करना; गर्मते न उत्तरना; देनगर्की वैका।।

स्टबरण—सी दे 'स्टबरण । स्टबरणा सटकमाग—स कि सनुवान स्टबर्ग संदान चयाना।

अद्यक्तक-को जंदाबा, अनुमाना प्रश्नाना । -पर्-ति० केशामी जनुमानातिका । व कारान सम्बन्ध सहरो । ज्यान-ति को कारान जनानि तेन के अनुमानजुराका । ज्यानी-को कारान बनाना । अद्यक्त-पु व्यवसायनीको कारान प्रभाव । तेन

श्रदकामा-स कि रीकमाः वक्षानाः देर क्नानाः। शरकाय-तु॰ प्रतिभवः, श्रदनेशः भाव स्कानसः अरुवः। सटलेसी−ना दे° 'सठमेता ।

अटन-पु॰ [म॰] चङना मूमना, भ्रमण । वि॰ भ्रमणदील ।

श्रदमा-म कि पूरा पश्ना काणी बीमा वीपमें पश्कर भीर करना; भटन करना, प्रमण या बात्रा करना। भटनि, सदनी-सी॰ मि] पनुष्का अग्रमाय सर्वी शरी

अदानः अदना—सा• [म] पतुष्का अध्याग अद्या व - वॉबनेके किए गद्द्वा बना दोता है । अटपटक−वि दे अटपरा'≀ ग्री० कठिनाई।

सद्यदा-वि टेंद्रा, कठिन कटप्रांगः सनीखा करु दाशवा हुआ।

सदयदामा*--श॰ फ्रि॰ अञ्चना चगरानाः वियक्ताः कर पत्राना ।

मदपदी≠−मा नरखदी छरारत।

सटस्वरण-पु भार्डवरा कुर्दुव । सटस्य भटस्य भन्न्स्यक-पु [मं] बासक अध्या।

मटल-वि अयुक्त निस्त् विश्वर, निश्चित, सन्वस्त्रीयाची द्व, पद्मा।

भटवादी-सटबादी-तो पार-सगैका बारवा-विभाग । सु॰-सकर पदना-सटकर भटन वा बैठना ।

सर्विष सरवी-त्या [मं०] इन । – वस-पु॰ अंगसियों-श्री सेना ।

भडीकः –पु [मं] ६ 'आर्ग्वकः । भडहर –पु बरा फॅराः अक्चनः।

भटहर-दु बरा फूना बहचन । मदा-सो॰ सरारीः [सं] पर्वटनः भ्रमणदोक्ता यूमनेको

भारत (मन्न्यासिबॉकी) । + पु अटाना हर । भदाउ+-पु विगाइ। सरारत ।

मटाहर-वि अनिगत वेशुमार ।

मदारी−सी॰ क्रांठा अट्टारिका । मदासा–पु॰ देर अवार; अधुवाब; कमारवीकी वस्ती ।

मटी-त्ये॰ पादा नामस्य विदिया ।

भट्टर-वि म ट्रन्यासा रह, सबबूत असीतनः म नुकतः यासा बहुत, अपारा अवेदाः

करत-पु गत्ति आरी नामेका यंत्र कुत्तीका यक देशभाग फेरनेका चक्कर । वि बुक्का शोध । —काखा —पु वीपकर पारका सकर दंगका एक साम नरीता ।

सु -- कर युना - इरा देना अहा हेना । - परेरणा - चीडे से कावा देना । -- दाना -- वृत्त पुनना शा जाना ।

कटेरना~स मि गुणको मात्री बनानाः । बहुन अभिक गुणक रोता।

चराकः −ि प्रतिकश्चीनः।

षह-वि [मं] छेषा उत्पारशुक्तः भूगा हुआ तिरंतर।
3 वीमा अगरी महना मुक्त जला अन्ता हा उनामी
वर्गा। वद्या पहन बरता अन्तियाना प्रापाना । -वर्गाः वद्या महन्यं मता कुला अगर वा ट्या । -वर्गान -हाम -हाम्य-धु दीवनो इत्ते दुव्हरः।
-हामक-पुत्र मुंग्हा पुत्र देर प्रथा । व जहन्म
वर्गा -हामां(सिन्) -वि अन्हाम वर्गनेवन्य।
3 विरा।

बाहुक-पु॰ [मं] कोठा महत्त्व बालाराना । बाहुम-पु [मं॰]ण्क चकाकार वासुभ वरेषा, सबगानना । बाहुसङ्-वि अन्वंन, अग्रहम-वग्रहम । पु॰ निर्द्यंत्र बात । बाहुस-पु॰ सचान ।

भहाहबास-पु॰ [स] दे भहदास'। भहास, भहासक-पु॰ [से] भटारी; नाकारानाः सदस्य

अद्भारत वृत्ती । अद्भारत वृत्ती । अद्भारत वृत्ती [सं] मदस पद्यो समाग्यः अगारी ।

—कार─पुराजः। आद्टी—की सुत्याजनकारुप्छा।

आकृ(⊸क्षा स्त्याजनकारू प्लाः। अनुहा⊸पुताशकावद प्लाधिसपर शाठवृश्यिः हो। अनुहाह्स,अनुहाह्स,⊸वि वीस और शाठः। पु२८ स्त्रे

संस्था। अद्वानवे—वि॰ नम्बे और आठ ! पु ९८ दो संस्था।

अहारह−वि,पु॰ दं सहारह। अहारम−विपयास भार शाह।पु ५८ को संस्या।

अद्वारत्भ−ाव प्रवास आर्थनाराषु २८ को संस्था। अद्वारती--विश्व अरसी स्रोर आर्था पु ८८ को संस्था। अस्या-स्था [सं•] परिश्वसण प्यस्त।

अर्ठगर-पु मर्द्या वोगको साथना करनेशमा ।

अठ-आठका समासमें प्रमुख स्व । —क्र्यु-न्याः हे 'अठवाना । —पतिया-न्या एक तरहके नहारी । —पहुख्य-वि॰ आठ पहुजेवाना क्रियमें आठ पान्य हो। —मास्य-पु है 'अठवासा'। —क्यासा-पु समंद्र

भाठवें महोने होनवाला संस्कार: भाठ हो मासमें जाम स्नेत्राला वचा: वह देत वा भाठ महोनेनद बोतकर दिना वोबे छोड़ दिवा क्या हा। वि भाठ हो मासमें उरद्ध होनेवाला: —हाररा—पु भाठ दिनका ममन ! —हास्री

्रभी बाह दहारीने चननेवाकी पातकी मार्ग्य उठाने के निज मारी चीकर्मे वांचा कानेवाना वासका दुकता। -सिक्सा॰-५ (१) सिक्सन।

भग्डमी-सी २८ गाडी फलोको स्रुया । भग्डम-सी अष्टमी ।

भरकीमल-पु पंचायतः मत्रणः सन्तादः। भरक्षम-वि शागः पुरुषुत्रा गिताशे (श्रमः)। –पन

न्युः जुन्युकापन शारो । —पुः जुन्युकापन शारो । अटक्षेत्री—मी दिनौनः भागी भुन्युनापन; इसदमरी

भटकारुराच्या । ४२०० काया मुन्दुनास्य; इसरमरा या मरनाती चाच । (प्राय चटुवयनमें हो स्थवहमः) सुरु—(सिर्यो)करमा—स्थिष करना स्थारुर मात्रस

साय स्थ्या । अहसर्-वि पु दे अहस्या । अहस्या-स्यो आरु भानदा विदा ।

भरपाय॰-पु शगरन नरगरा। भरपाय॰-पु शिर ह १६८गमा ।

अद्रयमा≠−भ कि जनसा रजणाः अद्रहणर्—कि संस्तर भारति पुण्टकारत्याः।

अहारू-वि ज्याने साम । अन्तर्-वि स हाने स वर्गयाम (वाम) वहिन

(बाम) । चु वर विशेष । अल्लासा—म कि संदाला क्षेत्रमा देवाचा देवाचा । अक्टारह—दि दम भारे मार्ग । चु १८ वर्ष संद्या ।

भठासी−वि पु॰वे 'अद्वासी । भटिलान(−अ०कि दे इठकामा । अठोठ≠-प= दींग आनंबर । भदोहर मी~वि णह सो आठ। मठोसरी-स्वा॰ एक हो आठ बार्नेकी महरा। मठीरा-प वह सींगी जिसमें पानके बाठ बीके उसी हों। सदंग-वि दे० 'अडिय'। भव्गा-पु भग्काव रोक्र, रकावर वावा। कुछरीका एक पेंच । -(रा)बाज-प• अरंगे क्रगानवाला ।-वाजी करेगा लगमा । स० -(गा) कालमा--स्त्रामा-प्रश्यन टासमा बीते हुए कार्नमें नावक दीसा ह -भारमा-अर्थवेदा पेच करना: विज **बा**क्ना । सर्वद्र∳-वि दे 'अरंक्य'। सार्धवर=-पुदे 'आन्वर'। भव-मा• अवगेरी क्रिया, टेक, इठ !-गवा-पु वैस गावियों के ठहरन या कैनी आदिक विक्रमेका स्थान। --भोजा-पुर सरस्य नीपाबोढे क्येमें करणावी वामेवाकी संपन्नी की तब वीवनंश वाधक डोली है।-कका-प मस्तनमें भेग रहतवाला पाछ चढानेका उँडा। – लख-यु और बहाना आक्षय छाता। श्रिक - व्यक्कद्रजा - अस्ता—पनाद र्देश्ना था पनादमै आना ।] —हार—वि अवनेवानाः सस्त (बार्था) । श्चाद्धाता । - सुरुक्तिः अकारा दिकामाः प्रकटाणाः । क्षद्रश:-विस िनानेबाचा रिवर। शहसन, शहसस-त्यो व्हावन वाचा ! **अवस्पोपो†-५ इ**ल्डरेखानिदः मार्टनर फैलानेनामा । भद्रताहित्य अवताखीस-वि॰ पानीस श्रीर गाउ । <u>उ</u> ४८की संख्या । महसीस−वि चील और आठ । पुरेद की ग्रंस्वा । अखनाः—च कि॰ रकताः अरकताः वट करना । **सदपना**−स कि॰ दौस्ता-क्षपस्ता । **अवर्षा अवर्षाम**ेिव देश विकटा विकला वडवा देवं मित्राजवाका । शबर#−वि निद? । सद्द∽प्र एक राग किसमें बॉच स्वर कगते है। शकसंड-वि॰ साठ और काठ । <u>स</u> ६८ क्षे संख्वा । क्षवहारु−पु हाल श्वकाणक फूल को देवी की वहाया व्यक्ति है व्यवस्थान । सदासदी-भी० हीत सागश्रह। अक्षाय-प्र श्रीपानीको रसनका वरा धारकः लहार । भावास-पु कक्तभी जनव प्रशन ! भश्रमा-म कि रीक्षमा जरकामा। टाट क्यामा हूँसनाः दरकाता। पुण्यक्षाम दार भूमी। भवानी-पु वहा पंता । ओ॰ कुरतीका वक्ष वेंच करेगा। कंदगोबी रीड या सिक्ध-दरवाबेंगे बगानी वार्ता है। भवायती*-वि भाइ क्रमेवासा ! भवार−पु वेरा जनागेओ काशीका देश रूक्शीकी बुकान १ विनिक्रीका तिरछा। अधारमा • स• कि टाक्का देना !

भवास-पु [मं] एक तरहका नाम मनूर कृत्व ।

अविग∽िं को कपनी बगइसे दिग नहीं शक। अविषयः-वि॰ जहबर चन्त्रनासः। सहरः हर्छ । संदिवा~नी गुरूशीको हरहो। अवित्रक−प वे 'अरिल'। सदी – स्पांदेश 'लड़'। बरूरतदा बस्ता। अवीर-विजी दिवाई सदैः गर। अञ्चल-प भिर्णे अलका एक भाग। अञ्चलमा ३-- म कि दाक्रमा एरेलना। भवसा-प॰ परः पीचा विसक्ते क्ली बार प्रकासक काम-भासकी संशय औषवि है। **भवोर*--प॰** शीर गुरू अंदीर । वाडोक*-वि वन्स, शरिम: खम्ब। **भड़ोस-पड़ोस-**प शास-पास पान-पड़ोत ! अबोम्बी-पद्मोमी-प पास-पड़ीसमें रहतेगते ! अक्कन−पु[सं∗] दाल । बाड़ा -प्र मिश्यन वा इकटा डानेब्द्र पनदः गार्टे सुन रियों रंश्यिं का देखे मिलनकी अगदा कुरनिवास कैस बोको बोमेपाले सदारोंके रहमेका स्थाना व्यॉन वॉर्ने आदिक रकत उद्दराकी बगदः रिमीके वस्त्रेनीसी ररास क्लाहा केंद्रस्थामा पिजनेके भौतर जिहियांके वैदनके किए सभी आधी सन्दर्भ या छहा बच्छरीके इंडिंग कपहंका गदा किसपट झोपी कपड़ा रचकर आसे छै भुकादेका करकाः जानी कादनेता नामदाः वर ग्रीप विसपर वैठाकर गोरा हमसे हैं। † प्रतीस वासी अड्डी--भी भनी नीवें हेडनेहा करमा ब्रेडेश क्लिए। अक्टब्क−पु जक्दलका पुरू । अकृतिया-प अञ्चलका कार्यार करनेवासा वर्डेटी भद्रप=−क्षं सर्वोद्याः **धरवना**र-म क्रि भाषा देना । अवकासको −पु वह स्पक्ति की इसरोंकी काम करोंका मारेश दे। भववयां -- प्रदेश अप्रवादक' । अदिया! - लो॰ काढ या प्रभाषा पत्रा हुना होता महन्त्र लीदेकी दल्लमें क्रोगी कशादी जिसमें समहर गरा *न*र्मी होते हैं। अपुक्त+−५ ठोकर। **अनुक्रमा**®−अ वि: ठीकर रामाः महारा सेना ! अहँबा-पु बार्र शेरकी तीक वा बादा हार्रगुनेका काली आविद्या वैजवाका । अणक−वि (सं•) वहुत स्रोत: तुच्छ, दुरौसन जवमं। उ पक्ष सरक्षका पक्षी । अव्यक्तास∽वि र्सि] तच्छ वस्तु-संश्वी । अवस्थ-पुरु [में] गीता आदि वैसे पान्य कराव दरनेश्र शेष । अवि−र्ता॰ [र्ग] जना जेल्हा वारा <u>स्</u>रीठी कीला वारा कोंगाः सीमा !—सांडस्य—पु॰ एक श्राद्मण कपि (क्री भाता है कि सम्बें चुकी की गयी भी 🕽 । कणिया(सन्)-स्ता [सं] अनुत्वा स्वमना। वीक्सी ८ शिक्षिमेंसे पहली मिससे बोगी अनुस्प धरण गरी अरहर ही सकता है।

समिमादिक-सौ॰ [सं] अभिमा आदि आठ सिबियाँ (मणिमा, महिमा, रुपिमा, शरिमा प्राप्ति, प्राव्यान्त र्वेशिख, बद्दात्व ।) लमी∽सौ [≓०]दे 'शति'। ≉ अ० सरी। अप्र-प मिने पदार्थका सबसे होग इंडिय-प्राह्म विभाग या मात्रा ६० परमाणुओंका भषातः परमाण् कण अर्रा माभावा पतुर्वात (एंड) एक मुडतं(४८ मिनट)का 5, ¥4,84,0 वाँ यागः संगीतमें तीन ताकके काछका पतुर्वाराः सरसीं, इंगली देशे पान्यः द्याव । वि० शक्ति साम । ~मा⊸नी विज्ञहो। ⊸भाष्य⊸पु ज्ञक्षसङ्ख्या वस्त्रमापार्यका भाष्य ।-मान्न, -माग्रिक-वि॰ क्युके मान्त्ररका ।--रणु--पु० बहुत छोटे कम (जैसे सूर्वरहिममें दिसारं देते ह) । -रेवती-न्यो अंती ह्हा-बाव्-पु बीवको अनु मामनंबाका दर्भन बस्छमाचार्यका मतः बलुको नित्व कीर प्रपंचका कारण माननेवाका रिकांत, न्याव वैसेक्टि दर्शन : -वादी(दिन्)-वि॰ अणुवादका असु बाबी ।-धीक्षण-पु॰ स्हमदर्शेक येत्र गुर्वबीन ।-ब्रह-पु॰ चैनवर्गते अनुमार गृहस्थवर्मका एक अंग :-व्यक्ति-

पु॰ छोटा बान्या एक बहिया बान भागीव्यूर । अनुकन्दि [मे॰] अनुबन्धुक्म। यु छरती बीन बान्य । अन्योरणीयान्(पस्) निव [मे॰] छोटेने छोटा अनिस्क्स

(श्यरका विदेषण)। यु जयनिषदका यक मण। भण्यत-यु (छ) वास्त्रक्ष द्वास्त्र निकासनेवाका प्रदन्। भयक--यु॰ दे॰ आसंद्व। भयता-वि० दे॰ 'सरबंत'।

सर्वेद्र – वि] तंत्र वा नेतु-रहिन । पु॰ अनि पेत्रित क्षत्र । व्यद्रित-वि• [मं] तदारहित वातकक, तत्रहै ।

क्षतिवित, कर्तवित्रल, कर्तामी(विन्नु)—वि [मं०] दे० 'मन्द्र'। कर्ता(तम्)—प्र [मं] दमक्रिय, दम कारण कदमे।

भाग (तम्) - प्र [मं] रमाजिय, रम कारण जनमे।
स्म प्रांतमी। रसमे जमभी अस्त्रा। - प्रस्— व असमे
साम।

भवज्ञप्रविम्=अ० [#] साग सबभे बाउमें ।

भतापक-ये [सं] समितः सत्त कारणः समीते। भतट-दि [सं] नग्दीतः खडी शतकात्ताः पु उत्ती कर्मातः प्रदार सामग्री लोग्नी नमीतका विभागा माता मन्द्रपात-पुर सीवा गिरनेवाना मन्द्रपा माता अता।-प्रपात-पुर सीवा गिरनेवाना मन्द्रपा

भतस्य-दि [मं] वी तस्य न दी भमाव, अवशार्व राजाः

भेतद्रगुष-पु [rio] एर अधारकार क्षिममें समानि आरि बारम यात्र डांग दुर बस्तेया गुण सहण म बरमा रिमास बाता रें।

भन्दन-ति [] या उसके सरस म हो।

मततु-रि [मं] देशांदन । यु नामदव । मतद-रि [मं] जोग अवस्थित ।

कार-दि [र] देश जनुभित्य जानकहोता थी। दिभी बाती म लगा हो निरुला ।

वनप्र⊸रि (मं) जी नस सागरम न हो !—तजु—दि शिम्दे नम मुनुस धरम दी दी। दिना ग्रन्दा । तु०

विना छापका मनुष्य । भसमा(मस्)-वि [सं] अंपकारराष्ट्रत । भसमाविष्ट-वि [सं] जो अंपकारसं धान्यज्ञ न हो ।

अतमिस्र−वि [मुं] यो कंपनाराष्ट्रव म हो। अतम⊸प इत्र प्रस्तास (– शास⊸प शतस्त्रस्त

अतर-पुस्त्र, पुष्पक्षरः । – द्याम-पुश्चतर रखनेका पात्रः। अतरम्ब-पि [मं] जो तरम्या द्रवन दो गाप्ता, ठीमः। अतरमम-पुण्डस्या पाटनेकी परदस्को पटिवाः छाजनर्मे

बारायम-पु॰ छात्रा पारनेकी प्रवाकी परिवाह छात्रनमें खपरींके सीचे पैछायो जानेवाळी मून पा इस तरहका और कीई सुण। बारासीं-व परसींके वाद या पहन्या दिन, बाजसे

्वारका या पहरेका चांचा डिल । अत्तरिक्द•—पु दै 'अत्तरिक्ष'। अत्तक⊸वि [मं] तर्वदीन, समंगत अदे<u>त</u>क । पु∙ तदंका

कराकाणक हुन । पर पान जनाता नहातुक र पुण प्रस्ता अभाव वर्षहोत्न बहुन करनेवाका । असर्कित—वि० मि | अनुसोवा अनुसामाः आकरिमकः।

काराव्ये—वि [मं] चणताचा कार्युवानाः कार्यास्त्रः कारावर्ये—वि [मं] तर्कं न कराने योग्यः विवासः काराक्य-पुर्व [मंत्र] सात व्यवैष्णकोतेस्य पदकाः पिनः। विव तर्क्यानः, व्यवहः।—स्पर्योः,–स्पर्धीः (सिन्)—वि वर्षुण

गहरा व्यवह ।

असस्य-पु॰ ण्क तरहरू रेखमा हपना। असर्वातक-पु बह महासागर किमके पूर्व स्टपर कर्यका और पूरोप तथा पश्चिमी तटपर अमरिफा महाहोप है। [अ ण्टिकाटिक ।]

असवाजः-वि० वहुन अविक ।

श्रातवार—पु॰ रविवार । श्रातम—पु [मं॰] बाबुः भाग्याः अतमीके रेशीमे बना हुआ करकाः एक श्रातः गुस्स श्रुप ।

असमी-सी [सं•] शहसी। प्रमत ।

स्ता-पु [अ॰] वान बस्प्यियः। - नामा-पु॰ बस्प्यिः। नामा वानप्रवः। - चरमा-पि॰ उदार सरीः। मु॰ - चरमा - फरमाना-वेना। - वाना-मिन्ना। स्ताइ-पि विमने सुर संस्मा है। यो दिना सेस्स हुए

नताहु-।व । त्रमन्त पुर सत्या दो जावना स्तर हुए कोर्स काम कर चट्टर चाम्याच ट्या अनावां दिसे देखरको देनक रूपमें दोरे विषा आत दुरे हा (च्य.)। पु॰ वह गवैदा या वय क्रिमने अपन कामक्री किसा म पानी हो। —कुम्या—पु पत्नीरा हुग्या ह्वर क्रपरंग सीरागृह्या लगा।

अताना-पु मारुकाम संगरी एक सांगती । ~

भतापीक-वि तापरवित्र द्यांतः। भतापीक-पुरुषि] शिश्वर पुरुषः

सनि-उर [ग] एक उत्तमा की भगके वृष धानार जिलादना गोमध्येष भवता प्रत्या साधि धार विविक्त तथा अन्यपर्य पूर्व धानवर निधित्तवा स्थान वरता है। त्री सधिरना र्योगणता स्थान नोसोबन्यन।

कतिक्षेत्रक-पु (र) दिन्तन मामद प्रशाः समिक्य-विक [सं] अतिर्मित अधिकामीया वदनी समिक्यासम्बद्धाः

अवस्थि मृत्र समात्रके विद्यांका समामकेशना । अविद्यान्ते [मं] अंतर त्य बहानी निर्मेदसम्।

भतिकर्पंज−भतिदर्पं भसिकर्पण-पु [मं•] रहत अधिक परिश्रम । भतिकति—वि [सं०] दइत अभिक्र प्यारा । असिकाय-वि मिश्रो भारी डील-कोश्रवालाः विद्यालकाय । प रावक्का एक बेटा । असिकाफ्र−पु[सं०] वेकाका वैश्व बाना अवेर । भतिकायकः - प्र=िमे•े बत्तत् बढा बढा एक कठिम जन । वि॰ अति कठिन । मतिकत~वि॰ मि॰ विमे करनमें वर्ति या मर्वातम्ब मतिकम किया गवा हो। असिकारि-सी मि प्रवादाका असिकामः १५ वर्गीवाले वश्चाः श्रतिकेशर⊶प्र• [मं] कुण्यक मासक पौथा । अतिकास अतिकासञ⊸प [सं•] सीमा पा नर्यादाका सहर्यम ब्रद्धमे आरो जानाः अर्थश्वका वर्तमनः वरुपयोगः प्रकृत आक्रुमणः वीतमाः गुजरुगा (मनयकः) वह बाना (वह मंख्या आदिका): भीतना काब पाना । असिक्रांस-वि [ए॰] माग क्या हुआ। वीना बुधा जतीतः असम्बर्ध प्रक्रपन किया सभा । य भीती हुई बात । ─सिपेश्च─वि जिसने निरंशधाका उलंबन किया हो। ─भावभीव~प० वोगिनौका पक भव । असिकास≪ ∽प्रसि }कम या नर्यातका चर्चनन **करनेवाला** । श्रतिक्रञ्⊸वि [म॰] रहत नाराज । यु यक वंत्रीक संघ। श्रतिकर-वि [सं] बहुत निष्ठुर । पु॰ एक संत्रीक मनः कर प्रेष्ठ, श्रमि भारि । भतिशिष्ठ-वि [tio] अत्यंत पूर वा सीमामे पार पेंका हुआ । पु॰ नस आदिको मीन्द्र, मुरकन । श्चतिसदक्र-वि सि विरायमित रहित वा वरेः वारपार्वके धमानमें काम चढा देनवाटा। अतिरांड~दि मिं] विश्वे हरीक वहें हों। प्र• यह ताराः एक बोगः बहा क्योंकः वहे क्योंकीवाका व्यक्ति । अतिगध~प [सं] चंचका के बा फुका मुद्रण सुप्तर भादिः गंबद्धः । वि॰ तीस्य यंबनामा । असिर्गभासु-पु [मं] पुत्रवाको स्था। श्रतिरात ~वि॰ [मं] श्रतिको प्रदेश क्षमाः क्लाकित । श्रतिगति-सौ॰ [सं] क्तम नतिः अक्ति । अतिगब~वि॰ [मं] अस्वत मूर्यः वर्णनातीत । अतिग्रहम अतिग्रहर-वि [में] बहुव महराः विसमे प्रवेश करना बहुत कठिन हो । अतिराण-वि॰ [र्ष] बहुत अष्ठे गुर्गोबाङाः निकम्मा । प् अच्छा गुग । भतिगढ-वि॰ [मं] बहुत मारी। मु बहुत कादरनीय व्यक्तिः पिता साथि । सतिग्रहा⊷नी [मं•] पृक्षिपणी नामक पौदा । भतिगो∼सी [सं] ऋत नतैना गान ! श्रतिग्रह्र~वि॰ [र्स] दुवीच । पु॰ श्रावेदिबीका विकास सदी द्वारा भाग क्ष पाना बहुत भ्रद्भ करनेवाका व्यक्ति। मतिप्राञ्च-पु॰ (सं॰) वे 'व्यविप्रव्'। अतिप्राद्य−वि [सं] क्लिक्सने रक्षने थोग्य । युक्लोति श्रीम पद्ममें सगातार तान कार किया जानेवाला तर्पन ह भतिष-पु॰ [र्स] एक नानुवा कीव !

श्रतिष्त−वि सिं∘] स्टब्स् माध्य दूरमेवाला। अतिष्मी⊸मी•िमे•ो ऐसी गहरी निदा वा विस्तृति निर्मे अदौनकी सारी अधिय वर्से भूक आई। अतिचर-वि॰ [मं॰] बद्धत परिवर्तमञ्जाक । अतिचरण-पु॰ [मं॰] विद्या करना हा कान लोक करना । शतिषरा−सी॰ [मं] यक कता स्कचीशी। भक्तिचार्~पु॰ [सं] लक्तिसम, जागे का बागः पर सारिका भीगताक समाप्त हुए निना इसरीमें पत्ता पानम मर्बाद्याका स्वष्टपाः बद्धत क्षेत्र-समाध्य बेक्सेका शेष ! मतिचारी(रिम्)-वि सि व शदिक्रमन क्रापेराका वारे निकल बानेवाला । अतिच्छत्र अतिच्छन्तक−पु [सं] मृत्यु, छवद्र । भतिच्छप्रका, भतिच्छत्रा-तोर्गान) हे 'बरिफक्र'। मतिज्ञानी ~ ली॰ सिंो १३ वधीके प्रतः। स्रतिबन्-वि (ई॰) अवस्तित थो शाक्षक्त संदो। चतिज्ञच−पु० [सं] असावारम गति वदुन तोत्र नति। वि॰ शति देगवाम् बद्दन तम उक्ततेवासा । अतिकासर−वि मि सिरा बागता रहनेवासा, बानस्क। श्रीका प्रकार **अतिकात-(वे॰** [सं॰] (पेतासे क्या हुआ। शतिबीन-प [मं] असावारन उदान (विश्विमें)। शतितत-वि+ [मं] बहुन दूर फ़ैकनवाकाः अपनेको गा विद्यानेशका भार्न्थरी। श्रतितरण-पु[मं] पार करमा मराभृत करमा! अतिवारी(रिज्)-वि [सं] पार करनेवासा विक्यो। अवितीक्य-वि•्शि] बहुत तुत्र । पुञोमोनन **१व** । श्रतिर्ताम−दि [र्] पहुत तेज। प्र तोमसे सं कैंपा स्बर (संगीत) । अतितीवा—सी [म] गंदपुर्गः। अतिनृत्य-वि [स] दिसे बहुत वश्विद योह पर्देशो हो। अतितृष्ण∽दि [मं] रहुत प्याचा अत्यक्ति सावनी। अतिकृष्णा—स्वं [मेर] अत्यक्ति प्राप्तः बल्वेत वास्त्रः । अवित्रस्यु∽नि [मं] बहुत अधिक बरनेवाला । अतिबि-प् [मं•] अम्थागतः वह सत्रवासी वी क्सी ^{वह} रातमे अविकास ठाइरेड अनासक ब्यामा हुआ मेहमानी अति प्रव सहीतः वरिनः वप्तरें सीम-संबंधो अर्थ करने वाका जनुषर 1-किया-जी आतिथ्य 1-वेश-वि विवने किय नतिथि देवस्य हो। —होय-पु॰ अतिथिवींने पृणी कर्ना ।--धर्म-पु चानिकका वर्षिकार चरितिके प्राप सत्कार । -धर्मी(सिम्)-वि अतिक्की माप्त होनेवाने सत्कारका जविकारी !-पति-प्र गेजवान । -बूजा-सी॰ अधिक्या स्वागत-मल्दार । --यज्ञ-पुरु पंच वदानर्योति पद वह भूवत अवसानकारो । —संविसास-५ नार विकासनीमेरी एक (मैस) । —सन्धार—पु —सन्धिमाऽ= सेवा-त्यां अविभिन्दा भेदमानकी मादमना । अतिबंतर-विक [लं] विसक्ते गाँव बहुत वर्ते वा कार्या निक्ते हो । व्यक्तिवर्ष-वि॰ [सं] अरवधिक धरिमामी ! पु अरवधिक बारियामः एक सर्वे ।

स्रतिवद्यी(जिम)-वि सि] बहत दरण्यी । सतिवात (त)-पु सि] बहुत बढ़ा वानी व्यक्ति। शतिदान-पु [सं•] बद्रत अविक थान अस्वविक छरारता। भविदाह-पु [सं०] सविवाफ बहुत अभिक असन । विविष्ट-वि [सं] प्रमावितः शाहरः कृमरेके स्थानपर रया दमा । वितिप्य-प• सिं•ो रक्त वित्रक **पृ**क्ष । अतित्रमाइ - वि० [सं०] विसका सहम करना कठिन हो।

शतितुर्गस−वि• [सं०] जिसको रिवति बहुत नुरी हो । सतिवर्धर्य-वि [सं०] विसदे पास माना कठिन हो। जो

बद्ध भइकारी हो ।

श्रतित्रय-प सि ो सद देकनाओं से बड़ा देवता: शिवः Rug (!) : धतिवेस-पु० (सं०) अन्य वस्तुने वर्मका अम्बपर आरी-पना निर्दिष्ट विश्वके सकावा और विश्वीपर मी काग

दौनेनका नियमः सहस्त्र, अपमाः निष्क्रमे बारमधात् दरना ।

अतिदोष-द मिं∘े बहुत बदा दोव, अपराथ । अतिह्रय-वि• [स०] दोनॉभ क्य हुआ अवितीय। मतिप्रस्था(न्यन्)-प्र[सं] महितीय गौर। वह की सब मुमिका अदिरामण कर गया हो। एक नेविक आचार्य । भतिपति −सा मिं र वर्षोदः प्रतः १९ का संख्या। भतियेतु−दि॰ [मु०] जो अपनी गायोंके किय प्रसिद्ध हो। अविनाड~द संधीर्ग रागका एक भद।

विनाद-वि [सं] सतरेसे नाहर । भविनिद्र-वि• [सं] जो बहुत सीता हो। निद्रासे वेक्ति । सतित अतिमी-दि॰ [सं] नादमे जगीनपर बतरा हुआ। मेर्सिपंपा−सी० [मं] वह शक्षिका निमका योजवी वर्ष म्बर्तात हो मवा हो।

मनिपद्मीक्षप-पु [मं] पर्देखा न उडाया भागा (मा॰) । मतिपतन-दु [मं] मूस गण्डीमे सुर जानाः वहरूर माये निकल जानाः सीगासे बाहर जाना, अतिकामण । व्यतिपतित~दि [सं] अतिम्हांच सीमासे नाहर गया हुनाः भूता दुला ।

व्यतिपश्चि-मी [Ho] श्रविजनणः समयका व्यतीत हीनाः कार्व पूरा न करना।

वतिपर्य-पुरु [६०] इतिनद्भर बृद्ध मागीम । वितिषध-पु [मं] उत्तम मार्ग सम्मार्ग ।

अतिपद्र-दि [40] परदीनः जिसमें एक वर्ण अधिक धो (र्देश) ।

वितपच−4ि [मं] अनिकोत वीना दुकाः भूना या एस दुभा ।

र्मतिपर−ि [मं] जिसने अपन शतुओनो पराजित कर िदा इं। दु वह राष्ट्र में नाति में बन-यन हा । मनिषरोद्या-दि [मं] रहिन दिनपुत्र पटे अटरवा जी

िता माही प्रदेश - कृति-वि अपयनित जिल्हा कर बर्नेत म रोगा ही (छन्द)। मनिप[टुर्बचञा−र? [सं] तीपवरमा शिवासन (जैत) ।

मनियान-पु [र्ग] अन्त्रमः निदन या मर्यारावा , अतिमर्या-पु [र्ग] बरन अन्दि रागः ।

वर्हधनः (बाल्का) स्वतीत हो बानाः अस्यवस्थाः घटनाः दर्म्बहारः विरोधः बुध्मयोगः विश्वः। अविपातक-पु [सं] वर्मशास्त्रमें वहाने हुए महा-

पातकोतींसे सबसे बढ़ा ! मतिपातिस-वि॰ [सं०] पुण रूपसे तीश हुमा स्थागित दिया हुआ । पु० इदशीका विस्कृष्ट टट जाना । असिपाती(सिप्)-वि॰ [धं] गतिमें भागे वर जानेशसा (समासमें); तीव (रीग); भूक करनेवाका :

अतिपारय-वि० [मं] स्थित बरने वीम्य कछ देर बार बरने बोग्य । असिपटय असिपटय~प सि प्रथम भेपीका मनप्र

बीर पुरुष । अविभक्ताचा-वि [मं] बहुत मशहरः इस्पात ।

भविशक्तस−नि [र्स॰] वो प्रकृत का सामान्य रूपने कटस वद गवा को । असिप्रवर्ग−पु० [मुं] अनसता विस्कृत सगा होना। अतिप्रवळ-वि० सि॰] शत्वविद वटा द्रमाः गर्दकारी । कतिमद्दम-पु [सं] मदापका कतिम्मण करके किया ववा प्रयाः सम्वित क्लर मिक्न्यानपर भी दिया गया प्रथा अतिप्रसंग∸प अतिप्रसक्ति –ग्री [मं०] बहुत अविद संबर्ध बना मंत्रक पृष्टताः किमी नियमका बहुत मधिक विस्तार ।

अतिप्रीहा-भी [र्न•] वह करवी वा विवाह करने य ग्य हो गया हो सवानी सवसी।

असिबरच-प्र• एक धंद ।

असिबल-वि [4] अति वकवानः (ऐसा वोका) जी बदुर्वो-से भक्के छड़ सके। पुरु बहुत बड़ा बरू ग्राफिशामी सैन्य। अतिकद्धा-स्ता वि । यद अल्बिया या विभागित्रने रामको सिकामी थी। एक पीवा को त्वास काम भागा है। पीतवहा, बंगदी।

भविषारुद्ध-पु• [मं] शिशु । दि नाम्य रक्षा प्रमा । असिकाळा−सी० मिं देश वर्ष-धे साद ⊩ दि स्ता वदत धरी (नरग्रे)।

अतिमद्भाषाये-प्र॰ सि] जदायर्थ अतका युट्ट अधिक पासन । बि॰ जिसने ब्रह्मचंत्रत संग्र हर रिया है । श्रतिमय-प• [मं] व॰ बाना, परादित करमा। जतिसार-पु॰ [मे] बहुत अधिक भोता (भारपदी)

अश्यष्टनाः गनि । ~श-पु सदर्। अतिमारारोपण-बु [मं] पर्श्योपर श्रीक श्रीप्त श्रीप्त श्रीप्त (भ) जैनोंक अनुसार व्य अत्यापार है)।

अक्तिभी-री [मं] वजमाना निक्रणी। स्रतिसू-विक [मैं] नवसे वर आनवामा (विष्यु) । असिअमि-नी [मं] अभिकता प्राप्त्री भक्षता मर्पात-भेगाः विश्वान भूमि ।

असिमोजन-पुरि] अधिक सान , रेन्सन । अतिसंगध्य-वि [मी] बर्व शुभ । यु विष्य वृक्त । अतिस्रति—की [में] अवंदार, बर्ज कवि सम्पन्ध

अतिमध्येदिम-पु [el] गरो पुत्ररी । अतिमार्थ-(१० [गं] मनुष्दरो र भिन्न पर अमानुस्ति ।

भारतमास-भारतेय्ययम अविमास-वि [e] मांसक, अधिक मोसवासा (बैसे बंबा) । सिद्यमाध-वि० [से] शिविद्यय शत्यभिका मात्रासे प्रभिक्त । भतिसाम-प्रवृत्ति । त्रवृत्तिस्ति । त्रिव अवस्मित्र बद्धत विस्तृत (बद्धा) । अप्तिमानुप−वि० [शं०] मानवशक्तिकै वादरकाः अबौकिक। भविमाय-वि० सिं०] जी मानासे रहित ही गवा ही. भौतरास । असिमिस-विर सिर्वे अपरिभिक्त वेशिसावा जो भौगा T 18 1 अतिसिय-९ [६०] पनिष्ठ थित्र सुभ प्रव । असिमिरि-(व | म्) श्रीव्रतामे प्रको गिरानंबाका । असिमकः-नि॰ सिं०] बिस मक्ति मिक गरी हो। बीक्त-रागाप दं ^दनतिसम्बद्धाः सरिमुक्तक−प्र भि ो माधवी बताः विनिध दक्षा विवस द्वास काळ प्रशा **व**तिस्य∽पु• [मं] बहुसूत्र रोग। अतिमेश्चन-प्र [सं] बत्यविष भी-संभोग ।

अतिमोदा-तो (सं०) सुनंपद्धी अविद सावा सव भक्षिका, संवादी । अतियव−प [र्स•] एक तरहका थी। अतियोग~प [सं } व्यतिस्वताः रेक-पेकः श्रीवर्धेः इम्ब्रिकेटेक्ट्रो निवत मात्राने व्यक्ति मिकामा । अक्षिरंद्रमा नहीं [धं] वहा-कावर कहना, अवि स्बोक्ति। अतिरक्य - लो॰ [सं•] अध्निको सात विद्वार्गेमिरे एक ! मतिरम, भठिरमी(मिन)-प्र [मं] क्केंडे बहुताँसै कक्रतवाका रवास्त्र योद्धाः। मतिरमल-इ [मं•] बसापारन गति । भतिरसा-चौ [मैं] नवी कहा। शस्ताः वसीवनक । अतिराध-पु॰ [मं] क्वातिद्येम वद्भा एक वैक्क्षिक वंगा

इस बहार संबद्ध एक मंत्र भाषायम मनुद्धा का प्रवा मध्य राजि।

असिरिका-वि [सं] क्या हुआ। शिवत परिमाणधे अविका

मतिराइ−प्र[मं] एक नहा।

प्राप्तिकः भिन्ना अदिशीयः व विभाग अस्माना । ~क्ष्यका-को चौर्वसरका सिद्दासम (वैम)। ~पक्र-प्र वद्य समाचार मा विद्यप्ति आहि की नक्य कायकर समाचार-पक्के साथ चाँदी भाग कोडका ! **मतिरुचिरा−सी॰ [री•] दो प्रकारके बाथ !** अतिबद्ध-वि० [में] बसाः कठीर प्रेमदीन। ब<u>द</u>व स्नेही । मुप्तक यरहका लखा श्रतिसप-वि॰ [म] शाङ्क्तिशीना श्रवि श्रंपरा कपसे परे (परमे**श्वर**) ।

भतिरेक-पु० [सं०] आधिश्य गतिश्रपता आगस्यकतासे भविक, काजिन होनाः बंहर । श्रतिराग−प [सं] रावनक्षा *श्री*नरोत । सतिरोमस सतिरोमरा-वि [तं] वनुत वार्कीवाला !

पुरु कंगली क्यराः एक तरहका र्वेदर । अतिसंघन−५ [मे•] दोर्च क्यासः वरिकामण । भतिसंसी(भिन्)-वि [सं] ग्रस्ती कानैवाना ।

अतिकोसचाा—सी॰ [सं०] नीस्पुदा नामक पीना। असिकाक्य-पु [सं॰] बहुत तीत्र स्वता। अतिवक्ता(क)-वि [सं] वस्तारी वृत्तव वीक्रतराता। मविकका−र्गी [सं] प्रदोशी एक तरहको पाछ । अशिषया(बस्)-वि॰ [मं] विश्वतः दूरः। (ग्री॰ मतिषयमी । अतिवर्त्तम−पु॰ [मं] क्षम्य अवराषः दंश्से सुद्धिः। अतिवर्सी(सिंस)-वि॰ [मं॰] पार करनेपाना वाने भ जारीबाका सबसे भाग बढ़ा हुआ बहुत श्रविद्ध। सतिवतुम्र--वि [र्श•] बहुत मोतः। प्र यद्भ स्वादकानः। **अविवाद-पु॰** [सं] कठोर पपन; टॉक अकिम्बना। मतियावी(विम्)−ि [६+] न्युत शेळनेशका छन्हे महन्ता चंदन कर अपने पक्षकी रवायमा करनेवामा वरी नात कदमेदाका थींग मारनेदाका।

अतिव≀स~प॰ सिं बाबके पहरूँ दिन विवानने एक उपन्ताः । अतिवाड - प्र [सं] सूर्य धरीरका शन्य देवमें बाता ना है अस्ता। श्रतिपाइक-प्र• [तं] स्ट्रम शरीरक्षे देशंडरप्रक्रीर्ने शहायक देवता । अधिवाहन-पु॰ [र्स] विदासा, यापना संबना सुर मापन परिश्रम करमा ।

अतिवाहिक−पु [सं•] प्रस छरीर। अतिबाहित-वि [र्थ] विवासा हजा । प्र साम प्रणेप भवोकोलका निवासी । सविविकर-वि॰ [री॰] बहत बरावता । तु हुद्र हासै। अतिविधिन-वि॰ [सं] बह्रतसे बंगकॉवाका। विसर्वे मनेश्व पाना कठिन हो। सतिविश्वरुष नदीशः नशी सच्या वादिश्रका एक सर !

जविविपा-स्था [स] अतीस नामकी एक बीचरि से जबरोसी बाँती है। श्रतिविश्तर~पु (र्द॰) बहुत कवित्र फैकान स्थासका ! मतिवृद्धित−वि [मे] पुद्य वा अञ्चल मिना हुन्य । अतिकृषि-सी [मं] पर बानाः अतिकामः अविध्यती तेबीसे निगत्कना (रक्त) ।

अस्तिनुख्या—वि [सं] बद्रात वदाः प्रपद्ध संप्रकानियाः

श्रतिविय-वि [स] शहत सी जहरीना।

श्रतिवक्रा/−सी थि] वदत वदी शत (वी मस मच्ची enk) (श्रातिकृष्टि—की कि] अरमध्यक वर्षा, सर्वाकी मुक्सान पट्टेंचानेवाधी वर्षा । व्यक्तिचेतिस~दि [d] बारल चकावा क्याः ठ^{41मे} चक्रमेगांका ।

शतिबेष-तु (री॰) निषद संपर्व। इशमा और प्रशासकीम संपर्ध ।

आतिवल-नि॰ [मं] किनारेके कपर चठा हवा। बदेविता मर्शायका अधिकामण करनेवाकाः अस्वभिद्यः सीमाधीत ! कशियेका-न्यौ [सं] कशिकाक अवेरा वेशाना *व्यक्तिय*। कतिष्यथन~५ सतिष्यथा∽ठो [मं∗] तीत्र हेरता

अतिसय बातवा ।

ł

¥

s Lend tints blinger

₹~₩

Ruff Staff and 1

वितिपासम-दि [में] शक्यिक सुर्वेषकणा । पुतरा

अतिकायको(न)-प॰ सि विश्वर्थ ग्रापी करनेका काम-व्यतिमीडिस्य-५० [सं] बसबर स्नाना । ক্ষালকাৰীকা কাম I अधिरयुक्ত−वि [री•] बहुत मोटा अस्वत मूर्या । पु० भतिष्याप्ति-स्था मि । ब्रष्टागर्मे सक्ष्यके भविरिक्त अन्य मीटापका रोग । बस्तुका भी भा बाना (न्वा०): लक्षणके तीन दीपींमेंसे एक। शतिस्पर्श-वि० मि०] इंज्युत इमीना । प० उचारणी विशक्ती, अतिशक्ती-सौ० [मै०] एक तरहके कृत। बौम और तासुका बरप रपर्श (स्व:•)। सतिशय-वि सिंगी बहुत क्यादा, अस्यविक । पुण अतिम्बच्य-५० [सं०] अखबिक निद्राः स्वप्न देसनेको मिपरता, अतिरेक्षः सेष्ठता एक वर्षालेकार । शनिक प्रवृत्ति । असिहत-नि॰ [मं] मनवृत्तीमे जमाया हुमा पूर्णता स्रतिप्रयन-प० मि•ो शाधिक्य प्राच्ये । सरिरायमी-भी । [मं] एक कृत । नष्ट श्रिया द्वामा । अतिरायिस-वि० [सं] बहुत अभिकः आग बदा हुआ ! अधिहसित-पु॰ [मं] हास्के छः मेरीमेंसे एक देण भतिशयी(यिन्)-वि० [सं०] प्रवानः मेड अस्वविक, 'हाम'। बोरकी हरेंसी। बहुत स्थाना । असींडिय-वि• [सं०] र्राह्यांन्यं पर्दवरे बाहरः अगोचरः भतिशयोक्ति-सी [मं] दिसी बावको दश-व्यादर प्रवान । पु आतमा प्रदृति (सं) मन (वे)। असीचार-पु॰ दे 'मतिबार'। श्वना मतिरंबनाः एक अर्थातंबार विश्वने विशी बलुका अविरंत्रित वयन होना है। भतीत-वि [मं] बीता हुमा, गरा मृता परे, पार सवा वित्रय-वि॰ [सं॰] श्रुक्त वहा हुआ। दुमाः निर्हेषः स्वारा । पु॰ भृतकारः सम्। सम्न्यासीः अतिशायम-पु॰ [मं॰] अधिक द्दोनाः वद बानाः श्रेष्टताः गीमाइंचोंकी एक जानि: + अतिवि । स परे । **ब**िद्यार्था(यिम)-वि• मि] आग वह जानेवासाः अतीलवा ७-अ कि॰ बीतना, गुजरमा ! मेडा अस्वविद्यः। अतीय७—प• ६ 'अविधि गोसाईयोसी एक जाति। विक्रीसन-प्[ां] अभ्यास वरना। सतीर**क**−प० (मं०] दे• अतिरेक्षः । व्यविद्याद-पु [सं] अस्वत्र । **अतीब**∽श्र [मं] बहुत अधिक अस्तंत । मतिशंप-पु॰ [सं•] बया हुआ श्रेष्ठ । शतीस -प• सि॰ो एक वर्तीपरि । अतिस्रेष्ट-वि॰ [सं०] सर्वोस्ट्ट सबमे अच्छा । भतीसार-५ सि देश गतिसार'। वित्येश-पु॰ [सं] द्वनार्यंग आहाका एउनेयन । अतुंग-दि [सं•] जो केंदा न दा नाटा, टिंगना ! नतिसधान∽पु॰ [मं॰] भारतः इ.स-कप्टा अविक्रमय । अतंत-वि सि॰ वा इट-पट म हो, दुवना-पत्ना । अतिमंत्रि-मा [मं] शक्ति विश्व स्थानता देनेको अनराष्ट्रं÷-सी शातरना वंबलना। प्रविद्या प्रकृतिवरी सहायनामे इसरे मित्र का सहायक शतराना≉-अ॰ कि आतुर दोना वर्श मचाना। भै मामि । कत्रफ्र~कि मि] विस्तर्य सीट मार न ही सके अमित व्यतिसंधिन-वि [+] अतिकांत वंकित ग्रहा गया ह अग्रीमः तुलमार्हित । पु निङक क्यु भनुक्छ भावक वृतिमंध्या-मा॰ [मं] सूलोरवड़े औक पहले और (केश्वर) निलपप्पाक्तक दलमा। मुबालके क्षेत्र बादका समय । अनुसर्भाय-वि• [मं•] विसुद्ध तुसना म हो सुदैः **मतिसर−रि॰ [मं] आ**त बढ़ आनेवालाः सबसे आगेदाः । अवस्थित । पु॰ प्रपान प्रयास । अमस्ति-वि [र्म•] दिना सीन्य दुआः देशिशारः भवारः वतिमर्श−दु [मं] श्रष्टा पूर्व करमाः देनाः पूर्व-वजार । बरना। वि० चिरस्याची निरम् मुन्तः। अनुस्य-दि॰ [मं] देवीर । भतिसर्जन-पु[मं•] अधिक दान बदारना वधः धीनाः अनुप−दि॰ [मं] दिना भृष्टीया । भावेत्य । अनुपार-विनिश्वे को देश सही। -कर-पुरु गृद्ध ! चतिसप्रभ∽पु[सं] तीत्र गति नत्रीने चनना (गर्ना अन्दि-मी [मं] अप्रयक्षता असंगाप। धाम बच्चेका)। अनुद्धित−4ि [मं] चें ठंदा पदी। ∽कर ∽धाम मनिमर्व-दि [१] है अनिमेष्ठ । पु ईरवर । (प) -रहिम -शिब-पु ग्रा सतिमानियम-पु॰ (तं) यह करिन जन को प्राथितिय अनुधन-वि अपूर्व अनुष्य । म्पर्ने स्थि। बागा है। अतुम्द+-रि देश अनुसा मनियांकमर--(४ [मं] एए साहये अधिक रिवाने या अनुजान्-पु [4] बानरा जनप्रनमा सामा वा भूम धर्मका । म गक्त हो। चनियास्या−री [दं] सपुवहि। अनस-विविधि भगेष भूगा। मनियार-पु+ [गं] रून का ओवरी वीमारी। अनुसि-हो [मं] स्नृष्ट म दीनेरी धराना अर्थनित। व्यतिमारको(विन्), अनिमारी(विन्)-वि [4] अनुष्ण-वि [शंव] मुख्या रहित बिन बोर्च भाषा बामना

म दा ।

प्रशिक्ष समाचा शुरूपी ।

भगव(म)-३ [+] पर एक एका भ्राप

```
सनेबा-सथक
```

भतेमा(बस)--वि० [मं] वो ध्यकीरा न हो। प्रेषकाः कमबोरः तच्छ । असीरक-वि• भटर । सतोकः सतौल-वि विना चीका हुमाः वनीतः विकास । भारक-पु • [र्यु॰] पश्चित्र, सुसाफिरः धरीरका श्रेग । असां —न्दो॰ वृद्धि, स्वाद्धी । श्चालस्य – दििंम•े खाने बोग्य । अप्ता−न्त्रो [सं•] माताः मौसीः नशे नदनः शास । सत्ता(त)-प [सं] सानेवालाः वरायस्का प्रदण करने बालाः दिस्तर । असार-पु० [स] दल वेचनेवाका बुनामी दवाएँ बनाने. शक्तिरू-सी॰ शति, वनावशी; कवम । श्राप्तिः अप्तिका−स्तो० सि•ो वडी वडल । अस्त, अरम्-५० सि] सुर्यः वातः पश्चिकः । **बारयंक्जा** ~ दि० मिं•ो निर्मेश्रमा स रहानेवाका । भत्यंत-नि [मं०] इदसं क्यादाः अतिश्चयः पूर्वे, मिलांतः मर्गतः विरस्थाया । अ अत्यविकः पूरे तीरम सीनवी भाने; इमधाके निम्र ।—ग—वि वहत् तेत्र वडनेवाका । -शत-वि॰ को इमछाद किए क्या गवा हो।-शामी (सिन्)−वि॰ न<u>ष्ट</u>त अविक, न<u>ष्ट</u>त संब कननेवासा। -तिरस्क्रत वाच्यध्यमि-स्रो एक व्यनि विसर्वे बाच्यार्वका पूर्व रूपसे स्थाग श्रोता है (सा॰) ।-जिस्सि-खी॰ पूर्व करहीतः पूर्व कपसे कक्ष्म वा प्रवक्त ही बाला । −बामी(सिम्)−५ इमेछा भानार्यके साथ रहनेवाका विचार्था ।- सकुमार-विश्वहत् क्षेत्रकः। प्र. एक भाग्य। अर्त्यतिक−वि• [सं•] बहुत चरुने वा मूमनेवाला; अति समीपी। भरय तीन – वि [र्छ•] नत्रत जविक पक्तनेवाला। वहत तेव चक्रतेवासा । भरपरिन~दि [मं∗] अधिनसे क्या तथा । जी पाचक-क्रियाना बदत तेजीसे होता । भरवास्क−प्र [मं] श्रमकीका पेत्रः वृक्षास्थः निमानिकः विभीरा भीत् । विश्वतृत सङ्घा ।-पर्णी-चौश लताविधेपः रामयना । भारवस्था – त्ये सिंशी वंगली विभीता शीव । शत्स्यय-प सिं•ी गीतमाः भगावः विनाधः गृत्यः अंतः **इंटर अपराधः भारतमणः मर्नाताका अतिकासणः श्रेणीः** रातराः कष्ट 1 अध्ययिक~वि [चै] वे 'कारविक'। भरवयी (विन्)-दि [मं] भागे दह जानेवाका ! बारवर्ष -वि सि॰ विनित मामसे वाहर, वहत अधिक । भाषप्रि-मी [र्स०] १७ वर्णीवासं वृत्त । भाषञ्च∽वि स्थि∏े यक्क दिलसे अभिक कालका ∤ भरवाकार-प्र [सं] प्रणाः नियाः बहुत वहा बीक बीक । **अस्याग~पु [सं०] स्तीकार प्रमू**ण । भत्यागी(गिन्)-वि [तं] विपर्वोद्धाः स्वामः म कर क्नमें किस रहमेवाशा विववासका। भव्याचार-पु [मं] अभुनित भावरण दुरस्पारा डीमा भूरम जरपेडन, अम्यास ।

भ याचारी (रिन्)-वि॰ सि] क्रवापार शामेरनाः अध्याज्य-वि [र्ग•] को छेका म बा सके वा संस् भौग्य स को । अस्याधान-पु [रं!+] क्रिप्तीपर रहनेडे क्रिक्त केंद्र अतिज्ञमणः श्रीमारिनको सरक्ति च रक्ता । अत्यार्जवा-सी॰ (सं०) मैशनसे स्वाधीनक को लिखे पक रोग है। अत्याय-५० [सं] सीमोर्डवनः अतिक्रमवः नर्गएकै। बहुत जभिक् सरम १ अस्यारुक-विश् [मंग] बहुत का हुआ। अत्यास्त्रहि-सी॰ [년॰] बहुत केंचा परः बम्बुरन। अध्याक-पुर [र्स] रक्त विश्व पूर्व । अव्याक्षायं च्या [सं] राजशेषिकोसी समिता। अस्याहारी(रिम्)−वि [सं•] अधिक अवार करवेरामा अप्यादित-वि [शं+] अर्थिकर । प्र अर्थिक सीता चंदर यतरा दुःभाइरिक कर्ष । -कर्मा(मेंद्र)-तः तुर, बदमाश्च । सन्तुकाः, अन्तुप्रधा—तोः [मं] एक नगरः देवः। शरपुक्ति−तौँ[मं] फिनी गान्की सा-कासर सब सुवालिगाः एक भक्तार जिसमें कारताः सेरहा साम्स बहुत बढ़ा पढ़ाकर बर्जन किना माना है। अरमुझ-वि [र्म•] बहुत प्रचंड । प्र• वह बंदरूका हैं। अर्युपच−वि [सं] परीवित, निष्टा। मत्यूह-पु [र्स•] बहुत सीचनिपास बाल्ड स्त्रंम वेर अस्युद्धा-सी । धं•] चीकिका नामक रीवा । अग्र-अ (र्स॰) यहाँ इस समझ श्रम संस्थाने स्ट्री -स्व-वि वहाँ रहनेवाका, श्व वनहका । अग्रत्य-वि [र्थ] वहाँका इस स्थानसे संबद्ध वहाँ करा। सम्रप−वि [मं] तिर्कंक अविनीत। अवस्त अवस्त अवास-वि [सं] निर्मीक हेर्नीक निदर । काकि - पु [सं०] एक संत्रहरू कवि वो समस्तिमें सि नाने हैं। एक तारा ! -ब-पु॰ मानि पुर-नार बचामेन पुर्वासा ।-बात-पु दे 'अववर्ग ।-गार्क -नेवजः-नेवजम्ब -नेवजस्तः-नबम् -वेबस्नः प्र चेहमाः परम्यं स्थ्या (गरिन)। —विधानमे भविको पत्नी भगसूचा ।—संहिता –स्यूति संव की अनीत धर्मेशास्त्र । अग्निगुण-वि [सं] तीतों गुपोम परे। अविकाल−९ [सं•] प्रथम तीन वर्षोंमेंने किया वर्षी मनुष्या विवस्मा दे 'अति'। अन्त्री(दिन्)-पु [मं] का नानेवाणा, रह्मा मग्रीगुण्य—पु [गं•] साव रव तमका भगाव! अरब**भ**-वि॰ (सं॰) धर्मरहित । शरबरा−सी [सं] श्रीप्रताका बमान। कथ-थ [सं॰] बारम तथा मंगठ-त्यह भ्रमा ^{का} अमंतरा क्यार । यु आरंग आरे। - क्रिम्-वर्ग औ क्याः वीः जनस्य । —च—न औरः और भी । हा नी प्रतितक-भाविते जंतवक ! स्रयक्-विश् म श्वरतेपन्ति । March.

भधना, भधपना - अ० कि० शस होना ।

स्थमना । पश्चिम दिखा।

भयरा—पु॰ मॉ॰, मिट्टीका एक चीव गुंदका नवा नरतान जो करका रँगने आदिके काममें बाता है ।

भगरी-की॰ डोग अवरा मिहोका हिप्तका वरतन किसुमें रही बमाते हैं और कुन्हार होंगे रखकर बांधीसे पीरते हैं। समर्थ-पु॰ [मं] एक बेर को बीबा बेर माना बाता है। -निधि -बिद्य-पु॰ अवववेनका ग्राता। -चिरला-

ंसी -दिस्(म्)-पु॰ एक चपनिषद्। समर्चण-पु॰ मि] दिस्स सम्बद्धित्।

भवर्षण-पु (ते॰) सध्वभिरोक्त कर्मीको जाननेवास्त्रा सम्बद्धाः प्ररोहित ।

समर्थमी÷-पु॰ बम्रादि करानेशका पुराहित।

जमर्बा(बन्) - पु [सं] एक मुनि को बहाके पुत्र और कारिको स्वर्गते पुत्रवीपर जानेवाले माने वाते ह ।

भवर्षाण-पु [र्सण] शक्तित्र वा उस नेदमें कहे हुए कमीकी माननेवाका।

समयमार--भ कि॰ भरत होना-- पूरव करी पश्चिमध्यक्षी - मखै वयनका फूकरे-- ध्रम्बी ।

भगवा-त्र [सं] वा या। भवाई-न्या वैटकः भीपाक गाँववाओं ६ एकत्र देशिका स्वान-वाट वाट पर गत्नी जवारी, कहाई परावर लीग

तुमारं -रामाण गोडी मेन्ही।

समान व माराः समामाव - अफि वे क्षेत्रकाराः स्वाह स्वाह

इएना। पुण्ये व 'अथान ।

ण्याचतः – वि अरस सूत्रा हुना । श्रमाह−वि बहुत गहरा कगाणः कपार वदिसायः स्थमम्य । पु॰ समुद्रा गहरार्थः । भू० –में पद्मा सुरिद्धसमें

पप्ता । अधिरुक-वि अस्तिर श्रणस्थानी ।

कभेपा-नी दे 'अवार्र ।

समार्≄-वि बीक्यन दी अविक बहुत। सर्वकर-पुकर भया।

नर्षः - (६ (६०) नर्षः नीयः कतिभवः विना महसूनका । नर्षक्रमीय भर्षह्य-वि (व) बदका नमविकारीः

रंत्मुक्तः। अर्देडमानश्—वि वर्गस्यः।

भरत-ति [संव] पेर्शालकाः जिमे दाँत च निवार ही । पुरु जीका एक माहित्य र

भर्तप-वि [बं] रान-बंबंधी मधी जी बाँदीके बीस्य ज दी दाँतीक किर शानिकारक।

भर्म-दि [मं] दमर्राहिता समार गरमा क अपूरिय रवामादिक । पु शिरा संभवा काराय रारायत ।

नर्ह-वि [व] वंतरीत र यु निवर्णतान वर्ष । भररा-वि [व] अमुरान्य सर्व वरणहरू ।

अपूरित्त-दि [तं] बावा दिना वश्तिवादा (यून्ति)। अनारी। प्रतिकृत ।

मर्गत्त्रदीय भरकित्य-वि [मं] यो दक्षिणवा प्रवि-

अतृग-विश्वेदाग निर्दोषः अछ्ठा ।

अदृश्य−पि [सं•] न वका हुमा छाख्यविषित्ते न कराया

अब्तन्ति [रंग] जनुषित तरिष्ठे दिमा दुमा; वो दिवा न भवा हो। दिवार्ट मिले न दिवा गया दो। न वेनेवारा-कंतृत । पुण्य वर बान वो रह दर दिया गया हो। न्यस न्युण्योरी वर्वेती (वेन)। न्यूवीन्सी० वह बस्या विश्वकी मेंगती न दुई हो।

भव्षा—क्योः [सं∘] अभिनादिषाकल्याः वि० सी० न दौ दुर्दः

अत्त्−पु॰ अ०] संस्था क्षेत्रः। अत्प्र∽पु०[मं॰] मध्य सानेकी किया [सः] स्वर्गका बह उद्यान वर्षी देश्यरमे अल्मको रखाया अरनसागरका

ण्क वेदरगाइ । अद्मा−वि॰ [श॰] छोटाः शुच्छ ! अव्यक्तिय~वि॰ [सं] साने वोस्य ।

शत्त्र-पु [क] वितय शिष्ठाचार; वर्षेका सम्मान; साहित्यसाम बास्त्रय । –कायदा-पु विनीत या शिष्ठ स्वत्रहार । –किहास-पु≉ सम्मान । सु॰-करना-किहास करना (–की समाह-वद म्यक्ति या वस्तु निस्का

भर्गकरमा वहरी हो। अवस्यवाकर−अ हठ करके अवस्य।

अनुस्न-वि [क्षेत्र] अनवर, प्रमुद क अपार ।
अद्मा-पुत्र (सत्त्र) अपास, अनित्तरः अपुरिदेशिय ए केस ।-तामीस-चौत एमन आदिता गासित म होना।
-पर्या-चौ पुरुरमेसे किसी भरीक्ष्मी ओरहे जकरी कारसाईका न द्योग। -पुत्रमत्त-चौ अनवकाछ।
-मीगुक्सी-चौ अपुरिदेशिय । -पास्की-चौ कमाक्षाछ।
-मीगुक्सी-चौ अपुरिदेशिय । निर्माणका अमान ।-इसिरी -चौ अनुद्धिया। पुत्र-का राज्य सेमा,-को सिया

क्ता∽परसीय सिधारना सरनाः अल्ड्य∽वि• [मं] की त्वायां न जा मदेः बस्त्रत्र प्रवतः। अक्य~वि• [मं] निष्टुर निर्मयः।

अत्य~ाव [म] । नश्चर । नग्ब । अनुरक्ष~पु एक पीका विमक्षे गाँठेवका घरती असोर

भारिके रूपमें साबी वाती है। अवस्की-भी भीठीरा।

अध्रद्धा—स्था भागरा । अनुरार्ग—स्थी दे आर्था ।

अनुरामा-अ॰ कि आरए मनुदारमे गर्रबृद्धि द्वीना मिजान विगवना दगराना । ॥ कि आरए मनुदारमे दिवास विगवना ।

अवुश्न-पु [तं] नवे चं-माक्षा रिना आरंग भारेता । अवुश्न-पु [तं] दर्शनका भनाव रिमार्ग न रेनाः

कोर पाछ जेभादि अराप तमः। अनुसामीय−वि [सं]-से देशन योग्य म शासदा अराप

सत्त-(१० (मं) दिना प्रथमा दिना नताना। पु एद पीपा दिनाण [ध] देव आरण ।

अवस्य वद्यम-पु देश्यर परिवर्गनः। अवस्य-स्थाः (१) एक प्रेमा प्रशुक्तारो।

षद्रभी*-वि॰ स्थायी न्यावजीव । भवकीय-वि प्रि वेशे किया वसका नवी,विसावकवाला। सरवादन ५-भी ० वे 'क्टबान'। सदबान-स्टा॰ चारपार्रके पैतानेकी रस्ती ओनवन । भवस-प० थि॰। मनर । सदहम-प बाक-पानस आदि पकानेके किए आगपर चहाया गया पानी। सीसता हुआ पानी। ग्र॰-चेना-**भवड़नका वानी आयधर बहाना 1** भवीत-मि [धै] को दशमा भ गना हो कार्यों न किया क्षमाः निमने भपनी इंद्रिवेंका निमक्ष म किया हो । अवॉन-वि दिना वॉलका (प्रा) ! श्रदा - सी [ब॰] देना जुद्धाना, पूरा श्रदनाः स्वान करनाः [पा] इत-मान मोहक नेहा हेगा तर्न ! -कार-प मभिनेता । -बंबी-सी॰ फिस्तबंदी । -वसी-सी॰ मुगवान जुरुवा स्टला । श्रमहाई०-दि पाल्यामः क्टर । भवागा भवागी :- वि केशा साफ, स्वच्छः निकास । अवाता(छ)-वि [सं] को न दे, जनवार, करना विवाह के किए (कना) न देनेवानाः विसे पुकाना न हो । श्रदास-# वि नादात, नासमझः [धं] म वैनेवाकाः क्षेत्रस । प्र विना सदबद्धा बाबी । सदामी -- वि कुरग केव्स । बाबाय-दि [मं] हिरसा पानेका अनिकारी । भवा**र्यो**क-वि वास प्रतिकृतः दुरा । श्रदामाद~वि [एं॰] एक्टाविकार-एक्टिश करापिट । अवाबिक-वि [र्छ•] कावारिछ। दाव-शत्तराविकारसे संबंध त रायतेशका । सदार-दि [सं] विपरनीक, रेंह्रजा। अवास्त - ली॰ [स॰] न्यायास्त्र । क्षतासती--वि+ मराकतः-पूर्वतीः सक्दमेगाव ! **अदार्थे –**पु॰ कुदार्वे, कठिनार्द । अवाध**त**∼की [अ•] वेर, छइता। सावादशी-वि॰ मदावत रक्तनेताकाः वेत्रसे किना गवा ! ब्रदास−दि [सं] जो दास न दी, स्वाधीन । सहाह*-सी हार-मान, अवा ! सराहमः ~ वि (ई॰) न क्यानैवाटा। अताद्ध-वि॰ [मं] म करूनेशाला; वो वितापर प्रसाने-मोध्य म हो। भारमा वा वरमारमाका एक विशेषण । भवित#~प भादित्या रविवार । श्रदिति~प [र्स•] तृत्युः ईदनरका एक माम । श्री• दक्ष्मा पूर्वा जो बहरवपरे प्यार्था भी और जो माहिरची वा देवताओंक्प्रे माता मानी जाती है। प्रज्ञी। प्रकृति पायी-पुनर्बस्य नक्षत्रः सिर्वनताः सर्वत्रताः स्रहीमताः मानुर्वः पूजताः मानः दूषः। --अ-धः कारित्वः, देवताः। -भंदन-पु देवता। अविम−पु कृदिन कुछनव अभाग्य । अविष्य-वि (तं) बीचिकः रचूकः। पुरु बीचिकः नायकः। अदिच्या – तो [सं•] कीसक नानिका। अविद्यां~प के शरकः धुर्मास्य । अविष्टी ० - वि अनुरुद्धीः हुद्धः अमामाः।

अवीक्तित-वि॰ [सं०] त्रिमने दीक्षा नहीं सी है। अवीठ#-वि लच्छ न देशा हुना; हिपा हुशा। भवीन-विश् [र्थः) दीनता-पहित समात्राः न ववनेनकाः तेबम्बाः वदारः !-बृत्ति -सरव-वि० तेजीमवः। अहीनाच्या(भ्यन्)-वि [सं∗] हे 'अहीनशृंख'। वाबीपिस-वि वाप्रकाशित ! अवीयसाम−वि [सं•] को दिया न बा सके अनेव। महीर्थ-वि [र्थ] क्वा नहीं। -सच,-सर्चा(प्रिन)-वि तेव, म्फ्रतिकला। काम करनेमें विलंब में बरमेशला। अवृद्धि अन्ति सरीर्घ, छोटा । अवंतर रूपि शिर्देश, वेशिक्षः प्रांतः वेजीतः। अदुन्स~वि [सं] दुन्धसे रहित। - नवसी-मा॰ यह-धृतका नवमी (रस दिम निर्वा दन्सके निरासके कि रिनीकी पना करती है) । सहतिय - विण्यदिशीय वेशीय। अवूराँ-वि॰ कि]दर्ग-रहित किस किमेनंदीकाः अदर्गम । ~शिष्य-प॰ वर्गदीम देख । भतका≉−दि शहितीय। बहर—थ [नं•] निकट पस्तादि पस्तक्यां दु• सामीप्त ।~दर्शी(शिन्)-वि दूरतक न सावनेगरम जविचारी ं ~सव-वि पासमें हो रिभद्र । अ**दयम~दि [सं] द्यनर**हित निर्दोष : अविचित्त-वि [मंग] समिक्त स्टब्स, निर्दोग। --धी-वि पविचारमा किएकी तुक्कि झह न दर्द हो। सदद-वि [संव] क्रमबोरः शरिवरः चंचरः । अद्यान-वि+ [ti] वर्षरदित निर्मामान। करहरूय-विश् सिश्रों को विचार्य न है, को हैसा स वा सके ब्रगीचरः द्वार गानवः यरमेचरका यक्ष विशेषत्रः । अरप्र−िष (स¤) न देखा हुमा; जलाम; बजात मार्थः महा कम्बोक्का नवैथ । हु भाग्य, महस्था धर्मनम् सरकार, पूर्व बम्मोंने सनित प्रमा-पाप को १ए कमने समाध्यक्के बारण माने जाते हैं। यह विवेधा हम्म द क्षीर। -क्रमाँ(सन्)-वि जिसे कार्वका सम्बास वा अञ्चलक स्रो । −शक्ति−वि किश्नी गक्तिकि कर समझमें न आ में। - सरु-प्रस्प-प्रदेश सेनि मी विता मध्यस्थके दीली दक्ष भाष्ट्रांसे मिलकर दर है। -अर-संश्चि-को। संसी संधि वा प्रतिका को निर्माके संधि इसकिए की जान कि वह किया अन्य व्यक्तिने कीर्र कर्म सिद्ध करा देगा। ∼पूर्व−वि जी पहले स देखा परा पुन्त-पार्रास हो। अव्यात विकश्य । ~फूस-पु श्रविष्यमें ग्राप्त होनेशका प्रक । वि क्षित्रका दश चवल दो। −बाद्~पु प्रारम्भक्त नियनिकर। **भरशासर-४** [र्च] येगी स्वारीसे किय अवर में साबारण अवस्थामें अवस्य रहें विशेष रुपायसे ही गी भासकी। सहरार्ध-वि० [र्थ०] आच्चारिसक का गृह **सर्थ** रचनेवा^की जिसका निषय १दिवसीयर M दो । अरहि-सी [सं] क्रुस या शुरो रहिः देख न पन्ता। कि अवदा मध्टिका−यो [सं] दे ऋषि'।

सर्देश - नि अस्दर्भ न देखा हुआ। जो म देखा बाद ! सर्देशी - दि० जो दूसरेका सुद्ध-उत्कल न देख सके, बाही ! दि० औ० म देखा हुई !

भदेष-वि [मंग] त रेने योग्या शिक्षका बान जीवत या वैश्वन हो। विस्त देनेको कोर्स विवाद न किया जा सके (स्तो पद्म)। पु वह वस्तु मिरो बेना जनेता वा बाल पत्मक न हो।-वाल-पु अवेष बाल अविद्येत दान। अवेत-पुण [मंग] वैविधा कर्यों कर तेया। वि जो वेवता संस्थी न हो। वैविधा कर्यों का व्यापिक। - मातक-

दि॰ वहाँ वर्ण न हुई हो। वर्णके बमावमें वाकाव आदिके बक्ते सावा हुआ।

स्रदेशकः लवि [सं∘] यो देशताके निमिश्त न दो । स्रदेशताल्य सि ट्रेटि (स्रदेव'।

न्युवता तु (ठ) प न्यून्य विद्यान्तु॰ (छं॰) अयोग्य, अनुप्युक्त देश तुराय निरित्त देश।

भदेश्य-ति॰ [सं] बो स्थ्य वा सवस्तविश्वेपसे संबद्ध न हो विस्तृता सारेश वा निर्मेश करना स्राप्ति न हो।

मनेस+-पु भारेशः प्रणामः दे 'करिशा'। भनेद-वि० [सं०] देवरदितः पु कामरेव।

सङ्ख्य-दि [सं॰] दोनता वा दोनतासे रहित । पु॰ दोनतास्त्र जसाव । सदद-वि॰ [सं॰] देनताओं वा उनके कार्वीसे असंबद्धः

चत्रोग्या(रष्ट्)-वि०[मं] अद्योक्त, विचारवान् (अरेष्ट्) । सन्तप-वि [सं] तोपरहित, वेरेवः निरपराव ।

नदोस०--वि दे 'जरीव'। भदाद-पु (तंश्रीवद समय अब बुदना संमय न द्वाः

न दुदना। भदीरी नन्दी पर्दकी सुमादी दुई वरी।

सर-५० [म] त्ररागञ्च ।

मद्र - दि दे भद्रे।

मदरब॰-५ ६० अध्वर्धः।

नदा-अ [मं॰] प्रत्यक्षनः निश्चयपूर्वकः निरुत्रहः सस्य सै। -पुरुप-पु प्रत्युरमः एका बादमो। -सिकितः वचन-पु स्वष्ट-संदेशे मिथ्या वचन (वैन)।

सदा-पु दिमी चीवको आपी ठीक वा नाप चीतनका बावा पीडमी; एक चीनमी चा एक पार्ट प्राराण आप पेटर पत्रनेवाना गंगा थार मात्राजेका एक ताम्य स्मीर म'रका जावा मारा जी दनवानिक पाग्र रह नाता है प्रमाण एक ग्रीये माना साथी हैं।

मही-यी दमहोका भाषा पैभेका सीलहर्षो आग- मल मनदी क्रिन्या एक तरहका नहिया नारोक करपा।

बर्गुन-दि [म] दिनिश कारिया किमायवस्त । तु कार्या कार्यास्त्र द्वार्थ या पाना कार्यास्त्र जी त्यों सेत्र कार्यास्त्र स्वयोधार स्कार दे। -कर्म(स्तृ)-दि नर्भुश कर्म करतेशाया। -क्यून-दि देशनी कर्मुश करीक्या क्यानेशाया। -क्यून-पु बीहारि की शाहित करा-त्याम क्याने की रागोर्थने एक्स -मार-तु संरापार। -क्यून-दिन दिनव दसर बाह्य । पु॰ द्यित् ।

भव्भुतालय−५॰ [सं] वहाँ अद्मुत यस्तुमींना संगर हो भवायवधर।

अब्भुतीपमा-सी [मं॰] उपमा धनकारका एक मेर (उपमानमें ऐमे गुगोंकी ध्रयना करना जिनम सुद्ध होनेपर उससे उपमंपको तुकना की ना सके)।

अद्यक्ति-पु [सं०] अग्नि।

क्षात्र — पुष्टि व्यादा अधिक स्वानेशका, पेट्टू । स्वाद्य — स्व (हि.) आवदक आदि स्वानेशका, पेट्टू । स्वाद्य । पुरु बाहार, साथ प्राप्तं ! — दिन्न, — विवस्य — अस् सावका दिन । — पूर्वं — अस्ति प्रदेश । वि अस्ति प्रदेशता ! — प्रसृति — मरु आस्त्रे स्वस्ते । — स्वीन — पि सायक्रकों विदेश दोनेशका ! — स्वीना — स्वीन — पि अस्तवन — विद्या होनेशका ! — स्वीना — स्वीन — स्वित्य स्वानेश स्व

अदातमीय—१० (सं०) भावका, भाषुतिक । सद्यापि—श (सं०) मात्र मी; श्रप्त भा भावकः स्वस्तः । अद्यादिये—स (सं) स्वादकः, स्वदकः ।

अय््य−वि• (सं•) जुण्से नहीं ईसानटारीसे प्राप्त किया हुआ।

असैव⊸न•[ंं] शात्र दी ं

अञ्चल—वि [सं] तरच नहीं ठीस, इ.टिन । पु॰ इ.टिन प्रदार्थः। अञ्चय्य—पु•िय•ो तप्यः दस्तं निरुम्यो चीव । वि विसदे

हिस्य-पु•[न•] तुष्ठ रस्तु नि पास क्षेत्रं सपित न हो दरिह ।

स्वत् = न्सं व दे चार्या ।

स्वति च [च] प्रवास परवर विवर्धः वृद्धः प्रवस्त परवर्धः वर्धः वर्षः परवर् परवर्धः वर्धः वर्षः परवर् परवर्धः वर्धः वर्षः परवर् परवर्धः वर्धः वर्षः परवर्धः वर्षः वर्षः परवर्धः वर्षः परवर्धः वर्षः परवर्धः वर्षः वर्षः वर्षः वर्धः वर्षः वरद्धः वर्षः वरद्धः वर्षः वरः वर्षः वरद्धः वरः वर्षः वरः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः व

सिष्ठाभीतः । वि. पत्तनः मैसारः चटिनः। अर्जीदः, अज्ञीदा-पुरु [सं] दिमानवः। अज्ञोय-वि. [सं] सत्त्व-देशरवितः।

अहोह-पु [मं]देवरादित्य । -बृष्ति-न्दो प्रीररस्टित जानरण ।

अज्ञोद्वी(द्विष्) - दि॰ [सं] हीररादितः । अक्षुत्र-पु [सं] स्यायः शमादः । ~परवर-दि॰ स्यायः श्रीतः, शमादः वर्तवानाः ।

बर्द्द् - वि [में] स्पूर्ण देन ।

सहय-वि शि वेशियां महेना इ इन्हा भनाव स्थान हुए। -बार्ग (दिन्)-वि स्थेतरामा सनुवादी।

भद्रार-प मिंगे द्वाररहित स्थानः वह प्रदेश मार्गे औ द्वार न दी। महिसीप-वि [मं•] श्रेसा कोई बुधरा न वो, वेगीव, भासानीः महेलाः भद्र मृतः अनोन्हा । प्र**ः त्रहा** ।

बाहेप-वि• सिंो केपरवितः निर्वेदः वैद विरोध स रक्तने नामाः स्रांत । प्र० हेपकोनता ।

महोपी(पिन)-वि० मि] हेनशीस।

सहिए(प्द)-पु०[सं•] बह की हैपी वा शत न हो,सिन । भद्रिस-पुनिश्रे दश या मेदफा समानः जीव-ज्या ना जट चेतनको एकता त्रहा । वि अधितीय । -- वाब-प्र जीव बीर बदका अर्थन नतानेवाला दर्धन, धगत्का मूल तस्व मक बाबी यब मत, देशांत ≀ −बाटी(बिन)−वि वाडीत बावके विकासकी गाननवासा, वेदांसी । -सिकि-नी जब भीर काल्के अनेन्द्री सिम्हा श्रोकर नेपालका ज्य विशेष प्रकरण !

मद्रीध−वि [मं] को दी भागोंमें वैंडा न हो। व्यविद्या

मध्यानगरहितः यरा ।

सद्देष्य सिम्न-पु॰ [सं॰] क्रिसको मेशोमें किसी सरहका भीड नहीं ऐसा मित्र (म्यक्ति वा राष्ट्र) ।

खंदा(चस्)-अ०[सं०] नीचै। नीचैके सोकर्म पाताक वा भरकमें। (समासमें नाम वा विशेषणके पहने क्यादर 'नीचे वा 'नीचेका' लबें प्रकट करता है) !-काय-प्र- वेचका नाभिके तीचेदा गाग ! - क्रिया-स्ती किसेकी भपगानित वा विरक्षत करना, मीचा रिकाना ! --पतन --पास-प मीचे रिरमा। पतन जवीगति, मननति ! -पुच्यी-जी गीविका सदास्तुप्यो ! -प्रस्तर-प् मरणार्कापकाने व्यक्तियोंके वैठलेकी एक चटाई । —सम्मन-प्र अमीनपर धीना । -शिरा(रम)-वि निर नीचे रसनेवासा। प्रश् एक नरक ।-स्थानिक-पु अशेक्ट्रि ।

साथ-वि 'भाषा'वा समासमें स्ववहत नमु क्ष्य ।—क्ष्यरा वि अपका समृत्या अभृती जानकारी रमनेभाना अप्र-शुन्तः समग्रदा । -केच्या -प्र मरीके तरकी वह एक श्रीम भी बाह्यई बीती हुई भानीन्य स्ताबने मह बाती है।—कहार ~पु॰ वहा**ण्यो तमस्**रीको सन्द्र लगीन ो─कपारी−सी काभे सिरका दर्ग जानासीसी। ~करी नगी० माक ं गुवारी, समान भाविकी आभी किरत । —कदां─नि बान्यह क्ष्यरी कहा हुना ! - विका-वि व हॅक्निसिस ! −स्का∽िव भागा सुका हुआ। सम्रोग्गोवित (ऑसें क्ष्मी ह)। --गोरा-मि मुरोपिनत नार एशियाई मॉन बापमी संवति बुरेशिवन, रेंग्लीइंडियम । -बटण-विक को पुरा स मटें। शरपद्र अर्थवाका कडिल !-क्सार्ग-पुरु ! सहैं भीर चरिको समान मिन्यक्त । --व्यस्-विश आणा थरा या साथा साथा हुआ अर्समहिल । - ऋरण-दि बाषा जरून हुवा ।~जस्त−नि॰ बाषा भरा हुमा (यहा इ॰) ! ~ आसा⊸वि अर्दरम् आवाणका द्वला !~ पर्डै~ सी॰ एक नार जो भाषा पाप दौता है। --धर-पु॰ आवा रास्ता बीच।-बुधन-वि सर्वधिकित। -बेस्टन-वि अभेड़ ।—सरा −सूजा−ि अर्ज्जूत कृतपान ।—रात्त∽ खी॰ साथी रात ।-सँघा-दि॰ सावा अवादा वा पागर क्या कुत्रा । -सेरा-पु॰ बाव सेरका बार ।

अधवी -वि॰ अधरमें रिश्वतः प्रद्रपटींग ! काशत - विर्णयं] बनाशैनः स्वतंत्र धन-संपर्धिका अत्रश्कितीः अभवा-पुरः सम्बद्धी-श्री बाद मानेदा पिदा । अधन्य~नि० भि विभागः इत्योः निषः वो कल्वारिने भरापरा न हो: वा प्रवृति न कर रहा हो । अध्यक्तरंग-च अवरः अंतरिद्धः।

अधम-वि॰ [सं॰] नीप निकृष्टा बुद्ध पापी बीनतम्, भतिहीन या दृष्टा निर्काल । प्र-कार्गी। प्रहोका एक मन्द्र वोगः परमितक कृषि । -भूत -भूतक-पुरु निम्न वेपी-का भीकर पीरिया ! -शति-तां र स्वार्थक्य की वाले-

बाली मीति । सद्यमई अधमाई४-ली॰ स्वमना नीवता। अध्यस**र्ण-पुर** [मं०] जल केनेबासा कर्जरार । अध्यसीत - प्र सिंगी भरोरका नीचेगाका मागः हैर । संबद्धा-सी॰ सि ी सामिकत्वा एक मेरा निम्न नेपीकी भी। फर्मश्रा ली ।

ससमाध्य-वि वि] तरेले तरा भीपतम । श्रममार्क -पु॰ [सं] वेदका नाभिके नीचेका भाग । "> श्राध्मामा≯-वि वे 'चर्गामस'।

मधमोद्धारक-वि॰ [सं] पापिबीको तारनेवाका(महात्वा

परमारमा १)।

क्षपर-नि॰ [एँ॰] मीचाः मीजेकाः प्रकेशाः मीप उस थिकाः (बा€ वा अकरमर्ते) परावितः चेच्छ ! 🖫 नीचका भौठा होठा छरीरका मिचना भागः वरती नीर नकाक्षके बीचका स्थामः अंतरिक्षः पाताकः रतिग्रह वीति। विका विका ! -कार्य-व जताका मीका भाग ।-पाम-प्र॰ शॉठ पुमनाः भूवन । -ब्रुद्धि-वि॰ ह्या वा मीच प्रविवाका । -शक्त -श्म-पुरु सवराष्ट्रण । -सपश्च-विश् विसर्वे यह द्वारकर मीन दी मने ही। -सदार-तो अवर रसस्यो समृत (-श्वक्तिक-उ* अधीकिय । अर -चबाना-मोबानेयमें बीतीने स्पेक् वराना अत्यंत एक दोना !-में ब्रह्ममा -में पदना:-में करकमा-बीपमें पहा रहता। अपूरा रहता। द्विपाने पक्षा रहना ।

श्राप्राण−प्र | श्रीडॉन्स्रे करूपे वर्र पानदी क्सीर ! अधरम-पुरु है॰ 'जनमे ।-कायक-पुरु हे 'जनमंदित' काव"।

बाबराबर-प्र. [में] मोचेका ओड । काशरासूत-पु॰ [सं॰] अवररसके रूपमें रवनेवामा सब्ह ! बाधराधकाप-पु० [सं] ओड भराजा । अवरीय-वि [र्शः] निरस्तुनः सिदित्तः मीव ।

अधरसु (शुम्)-पु (शं) परे दिन परसी (शेवा हुआ)। अवराचर-वि [लं॰] वेपा-नीवाः जनमनुराः कमेरेष्ठ । अवरोष्ठ, अवरोष्ठ−पु सिं°) तीपेका भोठः तीपे भीर क्षमस्य जीठ ।

अवर्गे-पु [र] वर्गविष्युकार्ग शास्त्रविष्युकर्मणा आवरण पाप, बुप्पर्माः सम्बादः सक्टांन्यः एक प्रवासीते । -मंद्रशुक्-५ वह बुद्ध की बीती क्योंका पूर्व पार बरमेंद्रे किए हा प्रारंभ दिना नवा ही।

धावमारिकाय-५ [मं] वैधमता<u>न</u>सार इम्बद्रे क्र

मेरीमेरी एक। स्रवामी(मिंगू) - विश्व शिश्व अवर्थे करमेशां पार्थे। क्षत्रपर्य-विश्व [नेश वर्षे विषयः अवर्थीः अधिकः अन्यास्य । स्रवर्षेणी(शिल्म्) - विश्व [केश] चो दशाया या दशाया व वा सके, प्रपकः निर्मर्थ ।

अधवा−खौ• [र्स•] निषया पतिरहिता, राहः । अधवारी-सी॰ एक हुन्नः ।

सधरचर~पु॰ [र्ष] सेंध समावर श्रांती करनेवाका चोर । वि नीभेजीमे या बमीनपर रेंथकर चरुनवाका ।

सपस्-स [र्स॰] दे॰ 'सथ' । न्तक-पु नोनेक काटरी मोचेकी तहा तहस्राना । न्स्वरितक-पु॰ दे॰

'मश'स्वस्तिक'। अधस्तन्-वि [सं∘] मीचा, मीचे अवस्थितः पहरूका ।

मधस्तान्-म [सं] नीचे।

वर्षोगा~पु॰ एक तरहकी विविधा । मधारबीय-वि॰ [सं॰] या भागुका न वमा हो, बातुमे

नित्र परायसे बना हुआ। समापुष-अंदै० जिलानुंतः।

मधाना-पु॰ रावास्त्रा एक सद (संगीत) ।

मधानग्रक् य-पु • [सं] वह स्वान वा प्रदश्न जहाँ यान व परा दोता हो।

सवामार्गध-त [स्०] सपामार्ग ।

मधारक-पु॰ दे॰ 'माबार ।

सवारणक्र-वि॰ [६०] वो कासदायक न हो। सभारिया-पु॰ ईहमाडीमें गाडीबानके बठनेका स्थान, मोदार

नवारीय-न्दी॰ भाषार सहाराः समुशीको ककोः सुमानियो भेषारीय-न्दी॰ भाषार सहाराः समुशीको ककोः सुमानियो भेषारीय-न्दी अन्द्री अस्त्री सम्बन्धाः

वाली । पु. वे-लिकास्त हुआ देख । भवामिक-वि० [सं•] अध्यक्षि, धर्मसे संवंच न रघनवास्त्र प्राप्ती इच्छमी ।

नेपानर-वि जो भीटनपर आवा रह गया हो आटकर नापा दिना हुना (इन १०)।

वधि-वर (सं०) यह कपर, मुख्य प्रमुत्त (अधिराज) विषेत्र, अनिरिक्त (विधिमास) श्रेष्टवी विषयक (अधिवन वरपारन) आदि अवीका गीवन करता है। तो यह की विक्रता माजिक शाव यह रहा हो। विता, सनापीसा।

स्पिक-[40 [40] बहुत, स्वाराः बद्दा तुआः असावारः विशिष्क प्रारंद्रक, हिन्देप वावकः गीण । यु पकः सर्वे स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वरं स्वरं कार्यस्य सावारः व्याप्तः स्वरं स्वर

विभिन्नर-दि [मं] भार व्यक्ति, हिनीकी शुणनामे विभिन्नरा। संबद्धत स्टब्स, स्वादानर ।

निधिष्टतः स्था [म] बहुत करम्, उधादानरः । निधिष्टतः स्था [म] बहुतायतः व तौः निचनाः।

विविद्यान्यु [मं] बाबार अप्रय अधिवान संत्या । मञ्जा दरावी दावा प्राचान्य न्यावतकः कियाना

कापार, सातर्वी कारकः स्वाचात्व प्रस्ताः, करवास, वह महरण या परिच्छेट क्रिप्ते किसी विधवकी पूर्ण विश्व धना की जाना अधिकार-प्रधान, निमुक्ति । न्योसक्त प्रवादायोदा । न्याद्य-पुरु न्यासाकत । निस्चास्त-पुरु किसी सर्गुके गुण्मे सात्र वा शक्ति करते जाना। निस्त्रुतित-पुरु वह हिस्सीत सिसमें हुछ भीर सिसांत्री वा अधीका वेडायी का (ज्यार)। अधिक त्यावक-पुरु विश्व स्थादानी-गुण भविकारी।

অধিকার্গা(গিন্) - বু (গ্রু০) নির্বাহ্য সম্মন্ত । অধিকার্থম – বু (গ্রু) এবিচারে । অধিকার্মি – বিও (গ্রু০) লম্মিকার্টা ।

अभिकार्ति निषः [संः] सम्बद्धारणः । अभिकार्त्ते (म्) नपुः (सः] निमारानां निरोहतः। नकरः - कृत-पुः प्रवृद्धे आर्वकेशास्त्रीः त्यामा करनावासा, सः। अभिकार्ति (संग्) नपुः (सः) निरोक्कः, अभ्यतः। अभिकार्ति सः पुः (संः) व्यापारितीते सुनी वपुः करने

वाका अभिरारी, बहुत्त्वहा । अधिकोग-पु॰ [सं] अविरिक्त अंगः वि अतिरिक्त अंग्वासः।

कचिक्†श−पु (मंग) वदासायः। वि अभिद्यदर। स० बहुषा अस्टमर्≀

वर्षपा अक्टनरा स्राधिकाई रूक्षा अधिवनाः विद्येषताः सदश्य । स्राधिक रूपि , सर्द्धा अधिवस्य अधिक, स्वारासे स्वतारा ।

अधिकाताः - अ कि॰ अधिक दोना वन्ताः। अधिकानेदरूपक - पु [तं] रूपक अर्थकारका दश् अपनद अनुवे उपनान तथा उपनवस्त्रं वेदा अनेद दिख काते तुर भी पीछेते उपनवमें कुछ विधेपताला उन्तेस्त्र कर

दिया जाय।

अधिकार-चु [मंग] प्रभुत्व द्यांच्यः हरिन्यार। इस निरोस्वयः स्टाम्यः वर प्रवत्तः स्थानः रस्तः कश्या राज्यः,
इक्त्मत वावना योग्यनाः वाना कर्म-दिश्लमध्ये पात्रनाः
प्रतर्णः, विषयः नामको प्रशान कल्का प्रशुत्त या वर्म
प्राप्त करन्त्ये योग्यना वह सुम्प्य निषम निष्का और
नियमीयर मा प्रयान हो (स्थान)। -चाप्त-दिग्
व्यव्हित्यार्थः योग्या हो (स्थान)। -चाप्त-दिग्
व्यव्हित्यार्थः योग्या हो (स्थान)। -चिप्त-म्यं
वह विषयि निष्मते स्याचिदित्येद्यं क्या करनेये अधिकारस्य
नीय हा।

बरानका राज दरानेबाला व्यक्ति मारा हो बद एक अभे मुख्य पानकी प्राप्ति हो। अधिकारी-(१०)में] जाँव विवश-व्यवन-तु अर्थान का। अधिकृत-वि [में] अधिकार या पश्चम भाषा हुआ। अधिकार-वृक्ता साहरणक वास्त्रणा राजनारणा। पुरुषा

मधिकारा(रिम्)-वि॰[६०] अधिकार रयनवाना वर्क

बार । पु बह बन्धु जिभवर किलेका स्वल्व हा बह जिसमें

मात्रमा हो। माल्क, शामका अगगरः पुरुष (सृहिक्सी):

क्षप्रित्ती मध्यस्य । अधिकृति–सी० [रंग] मधिरुए १४च ।

अधिवेस अधिकमण-तु [१] आगाः वर्गाः इस्पः। अधिक्षित्त-विकृति] जस्मानितः निरुष्टतः गैताः दुभाः निवतं दियां दुआः अंबा दुष्टाः।

भषोक्षत्र-भष्यह -गमन-प्र॰ दे॰ महोगति'। -गामी(मित्र) वि परान वा शवनतिकी और जानेवासाः अरक जानेवासा । ~र्घटा-स्त्री अवासार्थे । - जिक्किश की० वहेका कीभा ! - विक (या)-श्यो विश्वा विद्याः क्रावेदित । चेशा-प्र• चरीरका भीषका भाग । -mार-य• गुवा । ~निसम-पु॰ नरक !~मुबन~पु पाताक बादि गी**पे**के सोबः।-सृति-सी० पर्वतके नीचेकी मृथि।-सर्श(पू)-प्र शक्त होर । ~सार्ग-प्र॰ सु(यक्त शस्ता शुद्रा । -सम्प,-वदम-वि॰ विस्ता सग विनेधे और हो। भीप । अ मुँद्रके वक ।—ग्राक्ता—खी० गोजिक्ता !—ग्रह ~ि जिसका यून मीचे को !-र्यक्र-ए अमका !-क्रीब -ए संब, सारस !-सोख-पण गीपेसा बीख !-बाय-था। मपाम बाबु, गाँव।-बिद्ध-पु पेरके मीनेका विद्ध। अधोक्षय-द्र [ए॰] विष्युः कृष्ये । अधोरध*-भ दे 'बरोब''। मधोई-- ज॰ तीचे-ऊपर, वस-ऊपर । मधीबी-ता॰ वामा घरसा। मोटा वमका । - वस्तर-५० अतेक शकेके कपरका मोटा चमका पद तरहका जता विसर्ने भर्गाहोस्स भरवर हो । य॰ "सनमा" के ऋष भर चाना ।~शामना~एककर साना । मधीरी-दी एक इस को विशेषतः विमानवदी हराईमें पादा बाहा है। शहरी, भीरा । **स**ध्यान~पु० (सं∗) पेट कृष्टना अपना। सच्चेंद्रा, सच्च[द्रा∺सी [सं] जनकी। भून्यामक्की। सच्चश्च−वि [मं] गोक्ट ध्यव । पु॰ निरीक्षः नियासक संचाकक सुस्य अभिकारी: अभिकारा: सफेर नदार: शोरिका शासका ग्रेमा शाको । अध्यक्षर-पु (सं०) कोम्' मंत्र । स कक्षरकाः अध्यक्ति-पु [सं] पत्र तरहका सीमन निगाहकै समय अद्विकी सांकी करके सम्बादी दिया जानवाका जन । अर विवाहकी मधिक पाछ । अध्यवस्तर-पुरु देश सध्यक्ष'। भारतयन −प [सं] बाह्यलके छ समीमेरी पक परमा। अध्ययनीय-वि [संग] अध्ययन करने वोस्त ! सच्चळ-हि॰ [सं॰] हेइ । तु॰ वात्र । कारपार ह - प्र [मं] यह रीमा, किन स्थानपर पत्र बार कर्नुद हुआ हो वसी स्थानवर होतेवाका अर्नुद । कारमकसाल-पु॰ [सं] तिकारा प्रवस्ता अध्ययसायाः प्रकृत और समझ्तको पेसी व्यवस्थाता निसमें व्यवस्थ बुसरे के हारा निगरण हो (शा) t श्रद्यवसाय~प् [सं∗] शत्न, अवमा लगातार फीतिया तिश्रवा ब्रह्माइ । भव्यवसावित−वि॰ सिं] जिसके किए श्रवसा दिशा गमाधी। भप्तवसामी(विज्.)-वि [सं०] वाध्यवमानं करमेवालाः क्त्प्राद्धीः स्वत्रमधील । धरवदमित-दि [लॅ॰] त्रिसद्वे किय प्रवस्त वा संकरा किया गया दी। **अभ्यवसिति न्याः** [मं] प्रवस्तः प्रयासः।

अध्यक्षन-पुरु सिंठ] व्यक्तिभीजना यह नारका साना को बिना फिर धा हैना । अध्यस्स-वि [सं] आरोपितः समक्य प्रतीत वा अनुमृत् । **भच्यस्थ**~पुर्व (एंट) मरिबद्धे छपरका हिरसा । अध्यक्ति - स्रो [सं॰] अरिक्ट कम् निक्**टमे**वाडी अरिश भध्याग्स-वि० (मे०) आरमारी संबंध रक्षतेताला (४० बाह्मा-परमाहमा-मेथेपी विचादः परमाहमा । - ज्ञान-प् परमारमा वा भारमा-छनेभी पान । -वर्धी(निव)-विश् परमारमान्त्री जानशेवाला । -योग-प रहिनैते विभवेंसि मनकी बटाकर परमारमान्द्र ब्यानमें वेंद्रित दरवा। −श्कि−ि परमारमार्के स्वाममें स्था रहतेसाला। -रामायण-स्तो एड रामामन विसमें रामचरित्रम स्र्वर करत हुए अध्वारमक्त्रका प्रतिपादन किया नवा है। --विद्या - को । भारमा पर मारमाद्या रबस्य, संबद बहरेस विचार करनेवाका शास्त्रः प्रक्रविचार । -सास-३० व्यवस्य-विद्याः र अच्छारिस**क−वि** [सं०] बध्यहर संबंधी । **बध्वापक**∽त्र (चं] प्रामेशका विक्रकः। अध्यापकी - ली॰ शिक्षण-वार्व आठन, प्रानेका बाम । क्षद्रयापम-पु (सं॰) मह्यमेंने छ दर्मीयेन गद्ध साना। अक्टापविसा(स)-प॰ (स॰) प्रातेशका । स्मि 'समा-धविनी ।) अध्यापिका-सा॰ (सं॰) क्यानेवाकी, शिक्षिका ह अञ्चाय~प सिं°ो परमा मध्यवना पाठ-परिष्ठेता पाठका समना नियाली, पहलेनाका (समासमें) । श्राची(विच्)-वि [तं] श्रावनमें तंतप्र ≀ इ विचार्थी । आध्याद्वात –वि [मं∗] सुनार, पहा श्रमा क्वाटर वी निम्मत्र । श्राप्तारीप, अध्यारीपक−त [६] एक वस्तुक श्रवापर्व का समवद्य अन्य भरतमें बारोप क्षत्याः बामानाः मिना धान (वे) । भाष्याहीपित-- वि॰ [सं] प्रजवश्च (एक वस्तुका ग्रुव-वर्व बन्ब वसारी) बारांक्ति । अध्यापाद्दनिक-पु [मं] कृत्यान्ध्रे विराहेके समब दिवा भानेताका एक मकारका भोजन । मध्यास−पु [सं•] मिथ्वा घानः प्रति पान वा मनीवि (रस्तोरी सोप सीपर्वे चरितहा प्रय) । कालासन-प मि] बैठना। निरोधण करना। काला श्वाम । वि 'मध्यासितः जन्मासीन' ।] भाष्याप्रयम-प्र शि वि वेश 'बाध्यापार । आरश्राहारं~सु [सं] शत्रमर्मे छुटे हुए पर वास्रोंकी वार्ववृतिके जिब क्यारी बोद लेगा तर्व-विदर्का अमुमान । अध्याहरू - पि॰ [र्म॰] भव्याहार किया हुआ ! अध्यपिस−पि [शु•] निवस्ति पसा हुआ ! अध्युष्ट-वि [नि•] सक्ते होना अध्यक्त-पु [ते•] क्रिमाही । व्यव्यव-वि॰ [सं] उत्रतः सभ्यः वया नत्वपितः। ५° विवाहकै पूर्वकै गर्रस प्रस्त प्रमा रिम ।

भक्त्यदा−न्त्रा सि•] यह स्त्री विश्वका पति दूसरा विवाद कर है प्रथम विवाधिता की !

धरपृष्टन-पु [मं०] (राग सारिको) परत वाकना । शस्त्रीतरयः अध्यय-दि० [मं०] पहनके बोग्व ।

अध्येता(ह)-प [सं] अध्यवस करनेवाला। [ली 'भणेत्री । ो

भध्येपण-प० [म] बादरपूर्वक विसी कार्यमें प्रपृत्त

क्र⊍प्रेपणा – स्पै। सि } निवदन माचना ।

अर्क्षि−कि [मं•] जिसका निवंत्रण न हो सऊ, को क्यमें भ कियाजासके।

अधियम् ज-दि मि] को परदर्मे न का सके मून । अध्यत-वि [मं+] सस्थिर। अन्यामी अनिश्चितः मंदिरवा

वी प्रकारिका जा सके। पुरू अनिधय। भाद्राय−पु॰ (सं०) तन्त्रा एक रोग वंद्रमदाह ।

अरुपर्नाम क\कन्य∽दु सि] यात्री पश्कि । वि० वात्रा करने देश्य तत्र मन्त्रभेकाना ।

सरपर-प [म] वद्या मीमवधा शल्काणः शाह बसुओं में-स एक। दि । अङ्कृतिकः मानवानः व्यक्तिकमरदिनः टिकाक। -कस्या-मा काभ्येष्टि वद्य । -कोड-प्र ब्राह्मणका एक संद्र ।∽ग्न-वि अध्वर्षकेकासमे मानवाला। **अध्ययु –**पु [सं] पार कविन्धे-वय करानवानीमैन प्रकृतिस्थान्य । - वेद्र-पुथल्पेर ।

क्षरवांत-५ [मं] र्यम श्रेषकार छायाः यात्रका भंग । ~शास्त्रव~पुर्धानाक नामक शुप्र।

मध्या(ध्वस)-पुनि] राग्ना पथा पाधा दुरी आल (बी): साधमा बेल्की शाम्याः स्थानः भागमणः तरीका। (अच्छ)श-त परिक नातीः सूर्व संधरः। - •भीस्य - युः आधानक वृधः । - गर्णत-प्र #बारका एक साल । −बार−स्पी नेपा लदी । −बासी (मिन्)-(व यात्रा वरनेवामा । - आ-म्बो॰ मर्द-पुष्पा। -निवेदा-पुष्पाव। -पति-पुष्प्यं। माग निर्दाष्ट्यः। -स्थः-५ यात्रायामः योत्राप्राकदन्। -शस्य-प्र अपामार्गः ।-शायि-पुरोगनिगतः।

अध्याति – प्र[स] पविष्ठ, मनुर श्वकि । **अध्याधिष-**षु [सं] मार्गनिरीधरः।

अभ्यायन-पु[र] बाता सका।

मध्यश-पु[म॰]१ अल्हानि ।

अन्य-वि वि दिश्वरदिन विमा बहुन। आपूर्तिशीम । पु बढ़ जो अंग सही है बारूदेव अन्ताशास्त्रन्। 🗕 #सदा∸सी कासनीताः सभाक्ष मधने नी भड़ोसैसे ब्या । −द्र=ि कामीग्यदक्त ।–हरा–पु कीवरणस्था सद प्रस्मिद्ध (स्तरून) क्षेत्र (—क्ष्टन्य —क्ष्टन्य —स्टे प्रसूचन) ∽राञ्च-पुतिदा-दास्तर-पु॰ देन्द धन्दा स्टास्ट सद।

भनेगक-तु 🕩 }निरु यन। भभ्गमा – २० 🖂 पेम्प द्या विद्यादीमा ।

भनेगपनी-कि? स्मिकर्गधनी। भनेगारि~तु[ा] लिया

भनेगामुसद्(ए)-५ [१] स्थि।

अनुसी(सिन्)-(६ [॰) [जा १०वा कणाता । अनेतासिसीय-वि र] प्रश्निकणात्र समाप्त सरका

पुरु प्रसिद्धाः कामनेव ।

अनगरि अर्गग्छि-वि [६०] त्रिसे र्नेगस्मि न हो । सर्वश्रम वि सिंग्री अंजन-रहित बंदाय- निर्दाप निर्दि

कार निम्देर्गम । पु परमद्याः विष्णु आकारा । सर्गत−वि॰ मिं देशिसका अंत म का कानीम अपार भन्य । पुरु विष्णुः विष्णुका घंसः कृष्णः शिव स्ट्रः रोपनामः क्ष्यमभः क्ष्मीमताः नित्वता मोक्षः बहरराम बासुकि; बाकास वायरू मिदुवार- असकः श्रवण मक्षत्रः मधा जैनोंने एक शोधकर बॉडपर पड़ननेका एक गठमा भनेत चन्द्रीके जतमें पहलनेका एक गंदा ।-कर-दि० नदास्टर अमीम करनेवाला बहुत अधिक कर देनेवाला। ~काय∽प वे कनस्पतियों भिनको सानेका जैन वर्मने निवेध है। ना-वि० अर्थत कावसद बरुतेवासा । नगण-वि चर्छाम विशेषताओं से सुक्त । – चतुत्र सी – माड इतका बहुर्नद्यौ । --स्रिल्-प् वास्त्रेका चीरक्षवे जन अर्दत्। -ईक-पु एक राग जा मेवरागडा प्रत्र माना जाना है। −तीर्यक्रम−पु अनत्रवित्। −दर्शम-पु सम्बद्ध इसन (बै)। -इष्टि-पु शिव इंद्र। -स्व-षु शक्तामा श्रेषशायो मारायम । – माध-पु अनोद चौन्दर्वे तीर्थेकर ।-पार--वि सीमार्गद्रतः । - साक्षी (चित्र)-वि॰ अगन्ति छल-एगोवाना । ~सार-प व्क रक्षणायक पाना सारिका।−राहि।−सी राणि वा परिमान । – क्रय−वि अनिकान गर्पेकका विष्युका वक विशेषण । —विक्रय—प्र विश्विर्के कंग्स्या नाम। -वार्य-वि॰ अपार मामध्यंशामा। प्रानीके तेर्रेसर्वे सीथक्र (माबी)। −प्रस−धु अनेत चतुरञ्जा त्रत् । −शक्टि−वि प्रवशक्तिमान् (परमेवर) ।−शाय-ं विष्णु परमधर । −शीपी−स्था बाहाक नामक परमी । --धरि-वि अमीय म्बर्पवालाः परमेशस्त्रा एक विद्योषण ।

भगतक-विश् मि] समीयः शिल्या प्राधनतुरु (३)। अन्नेनर्−म [पं] तुरत बाठा पीछे। ६० अंतर रहिनः मृग का रागा हुआ। पाम वा बहेन्सकाः अपन क्रांध होतः गीनेके का वा । दु भागीप्या लगा हुआ हाना असा -- अ-पुर -- जा-सी० धेमी मनान जिसदा पिनादा की मानाके बान्ध ठीक कपर था (बेरबा माता धानिय हिना)। तरपरिया मार्र-पहिन ।

अर्जनस्य-९ [मं] जंगरना अभावः अर्थातवास । धर्ममराष∽ि वि] श्रेन्दर्दिनः निविध्न ।

अर्थनरित−पि ^{[रा}॰] अरा^रेन भटर । अभेनतीय-वि मि विभागभी द्वीद वास्ता।

अनुत्रवाम्(धन्)-वि [०] अर्थाम निवास प्रसन्ह चार सर्वे (हमी काववती अस स्पन्न भार समृह)-देशका

अजना-म्हे [र्थ] पू रा पार्वना अनुसूत्र आहरूको इक्कार व्यक्ती स्थापन

अमेता मा (मन्) - पु [मा पराया ।

अमनामुख्या(चित्र)-पुः [ः] M जो सभी ने प्राप्त 1

अनंती-भनववाम् का एक विद्येषण ह भर्मती-सा॰ [६] स्थितीक वार्वे वाज्या वॉवीका गेटा। सर्नत्य-वि [तं] अत्ररहित, श्लीम । पु निस्तता हिरण्यंगर्मका भरत । अमंद~वि॰ [मं] भानंदरहित । पु॰ एक प्रेतकोबा एक वर्णपुत्त अदे 'आसंद्र । भनंदन ७ - भ कि० आनंदिस द्वासा । अर्नदी−दि०दे• साॉ(!'ांपु एक पाना भर्मचर-वि० [मं] निर्वस, संगा । पुरु एक तरहका बन RIV I अमेदा−वि० [सं] दिल्हा कोई माग न दो किल्हा पैठक संपत्तिपर कोर्र अधिकार न हो। माग-रहिता निष्णु बा कादाशका एउ निशेका। अर्थश्चिमारपःस्म−भी [मं] कत्रही, देला। सम−पु (सं∗) मास-प्रयास । • स किया, वरीर (कप-सर्गके तीरपर यह ब्यंबना? शब्बोंके पूर्व मां कगता है~ बैसे असहीता, अमरेल) । † पु अमान । विश्वसरा । **अन्त्रमहि**यातः-पुर्श्निस्द । **असङ्क्षित्रक-निविद्यागा च्छाम कायमी हो, पि**ना भनइम भनइसा÷−दि दे॰ 'कदस, 'कनैसा' । अनुभ्रत्तक−स्था विरुद्ध सद्धः अनुश्रासः समयः क्रमक्रियर-निर्देशमारहित निवर । यु श्वनका समान । शान्क−विश्मिंश] दे 'अथका। पुश्चे 'अवका ≉ देश 'बरासक । भनकर्तुंदुम~पु (सं॰) इध्यक्षे पितामह । सनक्रद्रंद्रसि<u>—५</u> दे॰ भानक्<u>रं</u>द्रिश । असकमार~स कि॰ सुननाः हक-किक्टर सनमा । समक्ररीय-म [स] पत्न, ग्रीज क्रीन-क्रीना गरी माव'। भगकरमात्-भ [नं] भवागत नहीं: अकारण नहीं। भन्तकहा-वि विना कहा हुमा अनुच्छ । सत्त्रहो । मु० -(हा)देश-बुवश्हना। शनका−पु[स] दे॰ चनका । भन्दादा—वि भौतिकालान गया हो, विना निकासा धनकीय-वि [मं] दे 'अयकीव ! सनस∸दि० मिं दिह्यीन शंशा। भनक्षर-पि [मं] सिरक्षरः मूर्मः गूगाः विमका कमन स्कान हो। पुरुवंचन, शाली। शमशि-न्दी॰ [र्स] धराव श्रांस । भविभाग-वि [मं] भवदीन, अंघा। अनल−पु॰ होष रोप कातिः लदः वकतः वहंसदः िहीया । वि [म] मध्यदीन । अनस्त्रमा≠-अ कि रश्रद्रीमा सीक्षमा ! भनव्याना*∽ज कि स्ट होनाः लोशना । छ॰ कि रष्ट करमाः रिकामा ।

भनसाहर-गाँ ग्रीनवेदी क्रिया सीहा।

शतकाि−नि जनसः करनेवाका ऋोगी।

अमसौडाँ६-वि अनकभरा, दुनिनः विश्वविद्याः मुन चित्रः कोपोरपादक । [नो॰ 'जनदीही' ।] भनगड्-वि॰ विना यहा तुमा: वे-बीम; देश-देश: स्ट्रे रहता क्रमाः श्रमका । अमरान, जमसिम्ब-वि॰ दै 'सन्धिन्त -'सन्द मोनि करी बहु लीका बसुदानेंग निवाही --मू । अमगना-वि को गिना न गवा हो, देस्मार । पुरु वर्गम बाह्यों मास । स कि सपदा करना। अनगमिया≐-वि अयभित वेशुमार। कारगणनाः - अ कि जान-पुरुषाः हेर सगाना-पुर चेमति ^{हॅं}डी वस्ति, ईंसति अन्यनतितार -वि∗ सम-मधेल इत्सा । अनगामा÷~ष• कि देर सगाना। ए• कि॰ मुतत्परा (हेजारी) ! समगार-वि॰ वि॰ रह-रहितः र भगवदारी सम्माती। जनगरिका−सी सि॰ो ध्रमणकारो सल्दानीका बॉसर वा सवस्था। जनगिमतः-वि जगन्ति वेदिशाव ! अवश्विता−विदेशनानित्तर्थश्चानितान्यवादी। अमरिगित-वि॰ वै अनिग्नित । अनगेरी−वि अपरिश्वितः वेज्यानाः गैर । अनिनि−िव [मं] बिसे श्रीविद्या आवस्त्रकृता व दी अधिकोत्र न करनेवाका औत्त-श्मार्त वर्ग न करनेत्रहर नविमांच रीगसे प्रस्तः अभिगहित ! अन्ध-वि [सं] अवदीन, निष्पाप पूर्वत अर्डाप निर्मेकः सुंदरः निरापदः श्रोत्रज्ञीनः। प्र• वह को पतः व को। पुष्का विष्णुः श्विव। श्वर्फेट सरसी । **अवप**री*-वी कुसमय अनमर। अनुबैरी रूषि अतिमंत्रितः जनादृतः। भगवोर*-पु जन्याय व्यादती । अनयोरीर-म पुपडेसे, अवस्थ-'जीति यह अनीपे वाने'-स्थ । अनचहार-विजी चाहा न गुना ही अप्रिय अधिकिता। अनकाद्मा>−विभ प्रकाइमा। अमचाइस•-नि न चाइतेशका प्रेप्त-रहित । उ° व बादनेवाठा व्यक्ति। अमचीता−वि विशा सोचा द्वमा न वाहा दुमा । अमचीन्द्रा*-वि अपरिनित वे-जामा। **ध्यस्त्रीतश्च**म वेन्त्रीहरू। अनुष्कु−नि• [सं] जी साफ न दी गता। कारसमा≠—वि विमा दशस्याः सरवका अगञ्जका−यी [मं] होटी करी। अब्बान-नि अग्रात नासमञ्जान वामनेशन्य अमिन्स अपरिचित्त । पु अद्यानावस्थाः अद्यानाः एक वेदा एक वासः। अनुजानस्र*्विम जान-भारतः अद्यान । क्षमञ्जेष्मा-नि॰ म शीका पुत्रा ! असटर-पर अन्याय अनाचार सनीति। अवडीठण-वि अवेशाहमा चयाः अवद्वकिद्वा-नी [एं॰] गोतिहाः भर्गतम्रहः । अमहबान्(अमबुद्द)-प्र [सं] कैन, सांवा नृप राणि। मनसहा∽दि यो मुकान दो;क्लिना कारमञ्चात हो ।

मनदुद्धाः 'सनप्तादाः -गाः ।] सुव (उपनि)। [स्वी सम्गु−वि [सं•] को सूद्य न दो । पु सौदालख। भमत−वि [मै॰] न झुका हुआ, अनुस्र । ♦ अ॰ अस्पत्र, भीर दशी ।

भमति – भौ [मुं०] सभता या विजवका अभावः धर्मेष्ट । वि० मतिया उस्टा, भीषा ।

अमदेन्या-दि म देखा तुभाः

भनदा−दु[मुं•] सुद्देर सुरक्षो । वि• न स्नान बोग्व । भनवतन-वि [सं] आवदे विनसं संबंध न रखनेवालाः

भावसे पहल वा ग्रेडेका । पु भवतनसे भिष्यकारः। -संबिध्य-पु॰ मनिष्दत् कालका एक मेर (स्था)।-अत

-- प्रशासकायक मेद (स्वा) ।

अन्यिक—दि [मृ] को अधिक न दाः अधीनः पूर्णः जिस्में मोर्ड बढ़ म सुठे या जा बढ़ाया न का सके। अनिधिकार-प [मं] अभिकार छक्ति बोग्यता पात्रता इक आरिका जभाव । विश् मन्किर-एडिन ।-चर्चां-ह्या विना पान-समझे वा योग्यवाके शहर क्रिमी विषयमें बोलता दराल देता।-चेष्टा-माँ विमु बार वा कार्यका

अधिकार म दा बद सरना। **अमधिकारी(रिम्)−**नि [मं] अधिकार न रगरनेवास्था रिमी विषयको योग्यताः, स्थानताः न रखनवासाः [न्वो •

श्रमधिकारिया ।] भनश्रिकृत-दि [मं∗] क्रिमको अधिकारीके प्रपर नियुक्ति म दुई द्वाः जा अधिकारमें न किया नया दा । भन्धिरात-दि [मं] न बाना हुआः भन्नासः। --शनोर्धः

—वि मिनको अभिकापा पूर्ण न हुई हो निराध !—हास्त्र —वि जिम शास्त्रीका दान न हो ।

भनधिगस्य−वि (सं•) पटुगळ बाइरा अप्राप्ताः अदेयः । भनधिप्रान-५ (सं०) निरोधगदा अमार । **मन्धिद्वित−4 (**मं) जिल्ला (मध्यारेके प्रपर)

निवृत्ति न हुई दीः अनुपरिधन । भनचीम−वि [सं] स्वाधीन स्वतंत्र कार्य कारीवाला। पु वह रवतत्र दृद्ध वा अपने श्रम्मानुसार बाब बरना हो । **मनध्यध-६ [मं∗] १**त्रिवील जिसका द्यान स की

अमृत्यक्षः भप्यक्षमित्रः द्यामस्द्रीत । भन्दयम् – पुर्नि । अध्ययन स करनाः अध्ययन करत समय बीयमें होनेशाना दिराम ।

अमरायमाय-पु• [गं॰] अध्वत्नावता अक्षाव क्षेत्रे मिनना जुनना एक सभा कार किसमें जिननी ब्यानी इंस्ट्रिमों दे शेष मदी परन्तिमी एक दी बस्तुक मेर्रको स्टेंड प्रक्र किया जाय।

अनक्षाप-पु [सं] पर्या स दोना वर्षा देश रहनेका िम पुरी।

अन्तरपास-दिश् [मंग] यो धानभ हा शिरपुनः जो भूत म्बः 🚮 ।

भनम-५ मि । गम रेना जीता ।

मननुषास-४ [मं] जिसको अनुमति म मिली हो। #14.24 I

चननुभाषण=पुर्वाः } मात श्रीकृतिः ग्यः निप्रद्र-व्यान्-बारी के जरानी बान गीम बहर कह पुष्टनेपर भी प्रशिक्ती।

का चुप रहना नो उसकी हार समझा बाता है (स्या) । अननुभूत वि [मं•] जिसका जनुभव न फिया गया को अधात।

अवज्ञास नि सिं] विसकी स्वीकृति न मिसी हो; वो पर्यंत्र न निन्धा गया हो। अदोग्य ।

अमश्च⊸पूर्व[मं•] अञ्चसे मिख पदाध की साने वोग्य न हो। भनकास-पुष्क पांचा विसमें उपरके हिस्सेमें फल बैसी ण्क गाँठ वन जाती है । इसका स्वाद खटमाठा होता है । अमन्म−वि [र्-०] एकनिष्ठः एकामगीः अन्यको भीए न जानेवाला अभिन्न वही। अदिनीया एकाम् अविमन्तः। चाति−स्रो प्रसाण सदारा । वि प्र॰ 'बसम्बगतिष्ट' । ⊸गतिक−वि विस्की दसरा छ्याव या महारा न हो । -- गुरु-पि जिससे कोई का म दो !- चित्त -चेता (तस्),-मनस्क -मना(नस्),-मानम-वि० प्रविच विसका सन और कहों न हो ! ⊸ड ∹धन्सा (न्मन्)-पुकामदेव। -द्रष्टि-स्त्री एकटक देखने रहना। विश्वी एक्टक देखता रहे । -वेच-वि जिसके

भीर सीह देवना न हा परमेहनरना एक विशेषन ! -परता-मी एकनिएना, एकको मन्ति । -परायण-दि• विश्वका और किशी(मी)फे प्रति प्रेम न शा। -पर्ध-प नद पुरुष विस्ति और कोई स्वी न हो। -पूर्वी-स्वी० विनम्बादी न्ती, दुमारी । −भाव-पु प्रकृतिष्ठ मस्ति या साधना ।~योग-वि॰ वो और दिमीके योग्य स हो। विषयाध्मा(ध्मन्)-नि जिल्हा मन पद्म ही लडवपर वमा दो !~क्वचि~वि ण्यानिष्ठ मनीप्रतिवाद्याः दिसदी इसरी मीविका म हो। बसे ही रवनावका ।-साधारण -

सामान्य-वि इस्रोमें न मिठनेवाना अनावारण। अभन्यता∽न्धा• (मे•}ण्यनिष्टमा । अनम्पाधिकार−९ (र्ध•) तिमी वरशक बनामे-वेबन

आन्द्रिय ग्रहाशिकार इजारा । अनम्याधित−वि [मं•] थी दिनी इम्रोदे आमवसैन ही स्वाभीत । प्र वह संपत्ति विसाद कोई कपान

निया गया थी। असम्बद-पु० (मं०) अन्वय-मंत्रंपात असाव एक अवी-त्यार जिल्लमें उपमय स्वयं हो। अपना उपमान होता है।

अनन्धित-विश् [मंश] अमंत्रहः दे-लगावः अमंगनः वीजनः र्राटन । भभप−4ि [मै] बनदीन (वैमे पंटिन तुर जनागुद) ।

अनपकरण अमपकर्म(म्)-पु [म] नुपमाम म पर् पानाः वर्षे म अना काना (कानून)।

अमग्रकप-पुरु [मे] अपदा मही, उपन उपन्ता अनपदार-पु॰ [मॅ॰] थरिन म कम्मा निरोचना । अनुपदारकः-६ [म] मर्राजनसः निर्मेषः।

अनवकारा(रिन्)-वि [र्थः] निरोप ४-गुरुक्त । अनपत्रत−वि [म.०] जिल्ला क देश न दिया शहा हो।

पुदायाभाव। जनपद्म जनपद्माम-९ [में] में इतन न प्राना । अनुपश्चिषा-स्मी [मं] दे असूच्यार ।

अन्यय-९ वरश्यमी अपना अनवह-वि वेदाः निरमः।

असपरब-वि० सि०) संतामधीनः विशवताकोड उत्तराधिकारी म हो। थो वदाँक अनुकल म हो !-सोप-पु० वाँसपन ! अनुपरमञ्ज-वि० [मे•] सि सेतास । धमप्रप्रप~षि सिं०ो जिल्ला वेहवा । अमपदेश-प्र सिं∘े कथा दश्रीक अहाता तर्थ । श्रामपुरा का-प० [सं] बह शब्द को श्राह मुडी व्यावस्थ को परिने सक राज्य । श्रमपर-वि सि वसरेसे रहिता जिसका कीई शनवाबी भ हो। लढेशा पद्धमान (तहा) । कनपराद्य-वि [सं•] दे 'जनपरानी' ! क्षमपराध-विश् सिंशी नियोप वेगमात् । प्र नियोपता । मनपराची(चिम्)-वि [सं] वे-कस्ट, निर्पराच । अनगसर-दि॰ [पं] विसमेंसे निक्कोंका गार्ग व की। सन्धास्यः शहरूर । श्रमपाकरणः मनपाकर्म(मृ)~प [सं•] इक्टार पूरा न करमा कम वा सकारी म प्रकाश । -विवाद-प्र॰ अभिक्तें और दशौगपतिबांके शैचका बेतन-संबंधी विधाय । शभपाय-वि [र्स] अवरविकः अविमयर । य अनयरताः नित्वताः सिव । मनपायी(सिन्)-वि॰ [मं॰] अवलः स्थावी रिस्टाः माखरहिता अनिकारी । [सी॰ जनपाविती' ।] -(वि)-पद्य-प• स्थित्पद मा**स**ः क्षत्रपाश्चय~वि [र्स•] थ्रो किसीका वाशित महो। रवर्तक। समपेश, अमपेशी(सिन्)-वि [धं] चाह ना परवाह म रखनेवाकाः स्टरकः सिप्पद्धः वर्शवद्धः स्वसंव । क्रमचेका~सी [रं•] अपेक्राका समाव, अभिच्छा, वे परवाची । क्षमधेक्रित अन्येक्ष्य∽वि॰ [रं॰] क्रिस्की पाद वा पर बाइ न हो। धालपेल -विश्व सिश्री को गता था गीता न हो। अधनका क्रियासपात्रा भविरहित । अनुकास-५० वंदका उक्य सुकि। बनका~प [ब्•] क्वीदिक्के १९ बोगॉमेंसे यक । श्रम् वर्ग की विगास स्थास । क विश् विवेश अनेक। सम्बद्धिक-वि है 'सम्विधा'। क्तृतिधा नि निग-विवा (गोरी)। सनवश्-िष देश अनुस्र'। क्षान्यकार-वि म क्या दकाः वदराईमें न वैठा दका । अमबेबा - विश्वदेश अमविदा' । अत्रवीक, अमयीका-वि॰ न बैक्तिवाकाः केजवान (पा. हिस्स **१०)** । शमबोक्ता~वि वै॰ 'सन्तेत' । शबस्याद्या-वि जिल्हा स्वाद ल हुमा ही अविवादित । मनभक्र≠-प्र वहित दानि । सु॰ -साक्या-वहित चाहता । **चन्मका*-वि• पुरा कुरिस्त निय।** सन्भायः सन्भाषाक-नि॰ न । मानवाकाः अधिवः

मस्विक्र ।

भन्भावताव-नि॰ वे ^{*}जनमाना ।

कतिग्रह-दि [र्त•] मेर-भावधे रवित । प्र• भेररावित्व !

अनुसिश्च-वि॰ [सं] सूर्य, वृक्तिहोन; अनुहान, बनाई: कारविधिता । अनसिमेत-वि॰ शि॰] सोचे इपके विस्ता को करी सही थाः सन्ति । अमभिभूत-वि [सं] अपराजितः अवावितः। अवस्थितत्त -वि [सं∗] असम्प्रतः वनग्रहः वनिदः। भवभिरूप-वि॰ (सं॰) बस्त्या बतुम्दरं । अन्तिमसाय-वि+ (सं+) इच्छारतिय । व+ इच्छा वा ससका अभावः रक्ष का स्वाद न मिकना । अनुनिवास-वि सि वि वि व्यक्तियम् तथे क्षेत्र म हो। अनिम्मक-विश् (र्वश्र) की स्वक्त वा प्रकृत सं हो। एक करता । असभिसंघाम-५०, अनसिसंधि-स्रो॰ (सं०) वर्षियन का प्रयोगमध्य अग्राम । अनुसिहित-वि [सं] विसन्ता नाम न किया क्या है। जरंड । जनभीष्ट-वि [सं०] अवधितः अधिवः जनदि (१)। अनुसेवी 🗲 वि॰ भट्ट स बाननेवाला । अनुभोर-पुर जनहोंनी बात स्वरूप। विर वहाँकि शर मन । अनमोरीक-ता मुकाना भासा। धमम्बसिश्च-वि वे कतस्वल । भगस्यस्त~वि॰ [र्थ] बिसका मध्यास न दिवा गया है विसने अभ्यास न किया हो। सनस्याधा~ति [सं] तिकत सदी दूर। अनम्यास-प्र [सं∗] अन्यासमा अनामा अनुसंस्थ मस्य वा मनरत्या न बोना । वि॰ दे॰ 'जमन्याद्व' । जनस्वासी(सिन्)-वि [धं] बम्बास न दरनेवाला । श्रमम्न-वि सि । विमा नावकता। -वस्त्रात-उ व्यापक का परत्याकी विपत्ति । -ककि-मी॰ देख काम का माप्ति विश्वको भाषा वा बनमास सहय स दिन समा हो । भनस-प्र. [र्च] बाह्यन (वी इसरेकी वसस्वार व करें)। **# वि पद्या**। अन्यसम्भागि सररहिता निरशंकार । जनसम्-प्र [मं] ज प्रकृता। व विश् वे 'बनम्मां'। असममा-वि उपात क्षिका शक्तक। अनसर्वेशा~पि पिना सौमा बुआ, अयापित । असमापा®-वि॰ जिसकी माप व की सके। की बाप व धक्तर क्षेत्र । अनुसारगण्यः कुमार्यः अवर्षे वृष्यसं । अससिरगण्याति वैण्यामीयः । अमितंपच(-मितंपच)-वि [धं•] विमा शेले व प्तानेशका बंजूम । जनसिज−वि (र्श•) विश्वका देशें सञ्जान दी। प्र यउ न होनेकी समस्या एक अववनरेख । भगग्रिक, जगग्रिकत्--विश्वे-मेल अर्मुक्यः विकित्तः क्रमशिकता#-वि अ शिकनेवानाः अप्राप्त । अनुसीसमा = - ए॰ कि और वोरुवा ।

सब मरीको मोकप्रद माननका गरुत सिवांत । (वै॰)।

धनमेस-वि॰ ने मका साहिस I खनमोस-वि अमृब्यः बहुमूरव । अन्य-दि॰ [सं॰] अविनीतः उद्दः धर्मद्री । भनव-पु॰ [सं॰] मनीति धन्नाया दुर्नीतिः कुपनेना व्यसनः निपद्ः दुर्याग्यः एषु तरहकः जुएका सेक । समयन-वि॰ [सं०] नेत्ररहितः नेवा । अमयस≉−वि दे॰ अनैस । भनवास≠−भ दे नगशास । सन्तर्थ•-५ दे॰ 'सन्त्रे'। समरमा#-स॰ कि॰ सनादर करना । क्षमरस्य-पु० रसका क्षमाना रखाई। रोगा विवास बुन्छ। रसद्रीन रचना । दि॰ मीरस । श्चनरसमा श−म कि॰ प्रशास दोना, निच दोना ।- देंसे इँतत अमरने अमरसत प्रतिनिम्नति क्वों झाँवें -गीता । अनरसा-पु• पद मिठाई। ● वि अनमना। सनरमा। - अ॰ दे॰ 'शवरली'। अतराता+−दि न रैंगा दभा । अमरीति - की करोति, जनौतिः अनुभित्त अनवहार । भगर**च**•-वि• अवन्दिर । सन्दर्शिक-ती अवनि, शनिष्टाः संदाशि ।

भन्स्य+−ि कुरूप भमद्य । भनर्ग स−(व• [सं•] वेरोक, कगातारः अनिवंतितः यन मानाः विचारदोतः।—प्रस्तरम्—प्र• नेश्वकी द्वाँकनाः मनमानी वस्थास । समर्ग-दि [tio] अगृश्यः सम शृस्यकाः <u>भ</u>गकत

कीमत, अमुक्ति मृस्य ।-अध्य-पु नामार भागने अविद मा कम मृस्वपर परिन्ता। (थी)। -रावन-पुण्क मसिद्ध संस्कृत नाटका −विक्रव−५० वाबार भावसे अभिक्ष वाक्रम मूख्यपर वेचना। भन्दर्व−वि• [सं] अमृत्यः कम मृश्यकाः स्वाधिक

सन्मान्यः प्रजादः अशेग्यः । भवजित-वि॰ मि] न दमावा हुआ। अपाप । -आय-ररी॰ घीजों के दाम बढ़ायक चढ़ जाने हैं ही नेवासी आज

या लाभ । भनमं-दि [सं] निकामा भाग्वहीना दानिकारमः तुराः सर्परीया निष्ठ सर्पराहा। पु बहरा शर्मा अध्या अनावा वर्षहानिः मूस्यका स होताः नैरादयप्रनक घटमाः अनिष्टः रारानीः निकरमी भीवा भवकी प्राप्तिः निष्णु ! -कह-कारी (रिम्)-दि॰ अमर्थ ५ रनेवालाः द्यानि या अनिष्ट ६२नेदाना । [सी॰ मनवंदरी । अमबदारिणी ।] दर्मी(शिन्)-रि भदित सीयने वा चाहनवारा। अनु परीमी वा निक्रमी धीजीपर ध्यान देनेताला । -शासी

(धिन्)-प्रशाप - निरन्तंध-पुरिमी समग्रीर राबादी रहनेके रिय बमाइटर स्वयं भारत हो जाना। -बुद्धि-रि मिससी समग्र दिनपुत्र गयी-बीडी ही। ~भाष-दि हुरे स्ववायवाका । -सुस-वि मारहीन विषयी । मुखः। —संशय~तु वह कार्ष विसमें भन्त वह भनिष्यो भारीना का वह र पछि जिससे लिए कारे रातरा न हो। -संग्रधापन्-पु॰ शतुभेभे विश्रोद सुदका भरएर। -सिद्धि-भी यन यित्र और आर्थारको संधि।

अमर्थक-वि॰ सिं॰] अर्थरदिता निष्प्रयोजन, वे मतस्यः अकासकर: भाग्वद्वीत । पु० कर्षद्वीत वा शर्मकर बात । अनुवानियां प्रवंध-पु॰ [सं॰] किसी वक्तान् राजाकी भुद्रके किए उमाइक्ट खर्च भक्तम हो जाना । अमर्थानुर्वध−पु• [सं] वैरोका ऐसा विनाश न दोना कि भगर्थका संदेश म रहे। अनुर्धार्थसदाय-प्र [सं] ऐसी रिवति विसमें एक भीर भर्गप्राप्तिकी भाषा हो और दूसरी भीर भनर्षका स्टिह । अन्यांबांगुर्वच-पु॰ [र्गु॰] अपने कामके किए सनु या पहोसीकी बन और सेना हारा सहायक्षा पर्देचामा । **अन्यपं-वि॰ [सं॰] ६॰ '**अनर्थरः' । क्षमञ्जे-वि॰ मि॰ वियोग्यः अनुपयुक्तः अनुविकारीः दंड वा परस्कारके नवीम्य । अनुक-पु॰ [सुं॰] कप्ति, जागा अधिके अभिग्राता देवताः पाचनद्वरिक पाचन-रक्षा पिन्तः बाह्यः बह् बहुर्मीनेसे पंचम वता एक विश्वतेषा परमेश्वरः श्रीवा विष्णुः वास्तरेवा एक बानरः एक मुनिः एक एम्बरः तीमको संदवाः कृतिका

गक्षत्रः ५ वाँ संबस्तरः नित्रकः मिकत्वाँः 'र्' शक्षरः। — भूकों – पु वास्त्रः – द्-दि ताप वा भीने स्रोत करनंशका । -दीपम-वि॰ बडराबि तीत करनेशका । -पंच-[दि॰],-पद्म-पु॰ यद विदिया (दास्पनिक ?)। —प्रमा—ता क्योतिष्मती स्ता।—प्रिया—सी० भागनेवी स्वाहा । -मूल-वि॰ वर्धि विस्तृता मुख हो । प्र॰ देवता। माधनः विवदः मिलावाँ । —साद-प्र॰ मधिमांच रीम । मनकस−वि [मं•] भारत्य-रहित जायसक, पुरत, पुर्वीकाः श्रवोच्या मसमर्थ । श्रमस्रसित-वि शास्त्रपदित । अनुसदक्क-पु [ब॰] मैं इक, वर्ष प्रदारिम (परमेपर

₹•) I अनुद्धा-न्ती • [र्स •] दक्ष प्रजापतिकी यक कन्नाः मास्यवानः नामक राधसकी एक धन्या ।

समस्यायकः – वि० अयोग्यः । धमछि-पु॰ (तं] वद पृथः।

अमसेन्द#-ति॰ महस्यः अगोदर् ।

अनस्य−वि• सि•ो धोदेश वहटा अभिरः बहाराहाय। —भाष-पु॰ बहुन क्याना शास्त्राम ! —सन्द-वि॰ बहुत अधिक संदर्ध अनवकास−नि॰ [नं•] दिस्तः दिए नोर्र ग्रैनारस वा

मौदा म हो। अप्रयास्य । पु॰ अवदाश्चका अमाव। पुरसन वा श्रीवादशका म बोजा ।

अनवकाशिक−प मि॰ो एक पैरपर गरा क्षेत्रर दव बर-स्थाना कृषि ।

अनुष्यात्त−दि॰ [थे] अदात संज्ञाना दुना। भनवगाह भनवगाहा-वि [मं] नगाह वर्तन गहरा । अनवसाही(हिन)-वि॰ [वं•] दुवस न क्यानेसना अध्यक्त ज कार्निशाला ।

अनवर्धान्-वि• (वे) अनिशित्र । अनवप्रद्र-वि [म] अनिविधन, भा रीका मु जा स. अवासिंग स्वय्धे ३

अनवरिक्कय−दि [] न विद्यासा दुशा, अस्ति

चंतररहितः वपरिसोमितः शनिविधः !-हास-पु॰ चौरकी समलार प्रकृतेवाको होती । असबट-पुरु मह आमुफ्त की पैरके कैंगूडेमें पहला जाता है। शास्त्रके वैद्यमा अधिका बदानं । अनवरच^{−े}प• (सं•) व्यवसम्बद्धः होना । श्चनतद्य∽वि [रो•] व्यक्तिय निरोध । अमृबद्यांग्रन्ति [में+] सुदर अंगोंबाका । अनवकाण-वि [रं•] अनिवित्त । समस्यान-प्र• (सं•) अभनोबीगः, असाववामता । वि• प्रमानी, जापरवाद ! सनवधि-वि॰ [सं॰] असोम, वेहद I श्रमकम~वि॰ [सं] सदावता या नामव न देनेवानाः क्रमद । पु॰ भाभनामान । अनवनामित-विश्मि वे श्रे शकावा प गवा हो। शनवज्ञ-वि॰ [सं॰] अञ्चलाः जनवरः रथानी । असम्बस्त−वि [सं] तच्छ वा बीन नवीः वकाः श्रेष्ठ । समय्यक-पुरु में झ, कुका दें 'शामन'। अनवर-वि॰ [मं०] अवतिष्ठः शम्बूनः मेष्ठ ! भनवरत∽वि॰ [र्घ] अविरामः निरंतर । वा॰ खगातार । धमकराप्यै−वि [सं] स्वीच्या प्रवास । असवरोध-प्र [सं] विना रोक्टबेक्टब, मुक्त । प्र॰ कव रोषका समाच ! धानवर्जन, भानवर्जनम् --वि० सि] अवर्जन-धीन वेसहारा ! এ॰ ভেশহরা। श्चनवर्कविष्ठ-वि [मं∗] विरागाः, भागवदीन ! अनवसोसन-प्र• [सं] धर्मके तीतरे मासमें किया जाने बाकी यह मंस्कार (धमचसर-पु॰ [सं॰] निरवकास अवसरका अमाव। कसमब । वि अवस्त वैन्यरसत्तः वसामनिक अप्राप्तकालः अवते स्वासपर नहीं ! क्रमब्रमान-वि सि॰ो बंद-रहितः देख-रहितः विस्की समाप्ति न हो। क्षमवसित-वि [सं] वसमाप्तः वो असा न द्वना दी। ~संचि-सी धीपनिवेदिक संवि। जंगल वा कसरकी मानार करनेके किए वो व्यक्तियों या राज्योंकी संवि । श्रमचसिता∸भी सिंकिक्सरा। सनवस्कर−वि [सं•] साम्छ, गक्ररवित साल । क्षमक्षक-विण [धं] जरिवर चंत्रका सम्बन्धित । श्रमवस्या न्या (सं) क्यरिश्तिका जमानः अरिश्रता अञ्चनस्थात्परित्राग्रहता एक तुर्वशोप-सर्वे वा कार्य-कारणकी पेही पर्देपरा मिसका म श्रंत ही, म बिसी निर्णवपर पहेंचे ! भगवस्थान-प्र* [सं*] असिरकाः अगिथितकाः वातुः धाचरमप्रदेशा । वि दे 'बमवरिवर्ष' । भववस्यायी(थिक)-वि (र्स•) कनस्वायी। भनवस्थित−ति [सं] चरित्ररः वरित्ररित्ताः। मनयस्थिति-त्या (तं) वायस्य, अरिक्ताः अर्थेः भामयका समायः जायरमहीतृताः समाथि माप्र होते पर भी विचका रिवर म बीना ! अन्नवद्वित−वि चि जनाववाय । मनवासाना-स॰ क्रि॰ मने वरतन आविमे सभम नार

काममें काना। असर्वासा-पुकटा दुई प्रसक्ता पूताः एक बनक्ती वरपत्र क्रमण । असर्वांसी-साँ० विस्तांसीका वीसरों वा विसेश ४००ई भाग १ अजबादक-पुरु कुरोक, बुदर्वयम् । असमास-वि [स] अप्राप्त । सनवासि~सी॰ सि॰] प्राप्तिका समान सक्ताप्ति। व्यमबेश अमबेशक्र−वि [सं॰] क्राप्रवाहा क्रास्ट्रेव। अनवेदाण-प्र अनवेद्या-सा॰ (सं॰) काररवारी, का ववानका, क्यासीनकाः निरीक्षमका समाव । अमसम-तुर (सं) बाहारत्याम प्रपत्ता दिशी विदेश सेन्द्रपद्ध साथ भादार-स्वाग । वि वप्तास क्रमेवला । जनकर~दि॰ [सं॰] सनातन, भाषता प्रना वर्षनाहो, गिख। अनसकरी~की पद्धी रसोई। अमन्यच**्**षि॰ श्रसत्य । अनसम्बद्धः । सन्दर्भागः अमसमझा=िव नासमझा को समझा द्वना न है। **भनसङ्ग#−वि असद्य**ा अनसाना!-व कि॰ ब्रॅडकाना क्य होना। अनसूनी-वि॰ न शनो पूर्व । सु॰ -काना-सुनकर में त सुगरे कैसा भाषरन करना। जान-दक्षकर होना करना । भनस्य-वि सि वसवारहित हेवरहित। अपस्यक, अनस्य-वि [सं] दे 'अनःहर'। अमस्या-ना [सं•] वसरेके ग्रनोमें शेष इंडनेको एप का न दोनाः देखां वा देख्या अमानः श्रादी एक दम्पाः वाणि कामिकी परमोह सन्दोतकानी यद सन्दी । मधस्रि∽पु सि] मूर्ख नदी चन्नर व्यक्ति । अनस्ततित−वि [नं] को अन्त न हुना हो। विस्ता प्रवन म दौता हो । भगरित व~प॰ विं] अस्तित्वका समान समिवभारतः नेसी । अवस्थ अनस्यक्र−नि (र्त•) श्रम्भादित। असदकार−५ [चं] अवंदारका अमल । ति **जहंदार न ही.** मिराहार । अनद्वास्त्र नि [सं] नवंदाररविता अनदक्ति जी नि॰ (तं] दे॰ अनदकार'। अमहत्व-पु दे 'समादत'। -माद-पु देश 'सवी' क्षत माद⁹ ३ अन्तद्व(म)~च शि•ोकदिन तरादिम । अमर्थित 🗝 प्रार्थ अदित । दि॰ वर्गिय महित्तारी । अन्नहित्—वि॰ अग्रुम श्राहरोदाका अपदारी । अवहोता-वि निर्भयः अतीकिकः वर्गमर । अमहोमी-नि सी ए होनेनाको सर्ग्यका अमेरिको रही अनदीमी वास । क्रमाक्रमी असक्रामी#~भी हे सामकामी ! अलाकार-वि॰ [सं॰] गिराबार, जानारहोमा प्रमेरपर एक विशेषण ।

પરે बनकास-पु [सं] दुनिधा -सूत-पु॰ वह व्यक्ति को मजमरामे बबनफे लिए चावती करता हो। अनाकाश-वि• [मे] अपारदर्गक, आकाशमे मित्र । सनकात-वि [t]•] जो रोका न गवा दो, सनिवारितः बिसुद्धी देख भारू न की गयी हो। भनाकात-विमिश्री को आफ्रांन या पीडित न हो। भगाकांता-सा सि दिन्हारि नामक पीपा। सनागंधित−दि [मं] न मूँया हुआ। अन्युष्ट । भनागत-वि॰ [मृं•] म भावा दुमाः भगात अग्रातः सातेवाहाः भावीः * भनातिः सपूर्व । स॰ अमानकः। पु॰ सविष्यतुकारः एक ताल (संगीत) । -विधाता(त)-पु आमेशसे अभिष्ठको पहलेम सीचटर उसके निरा करणहा उपाय करनेवासाः सविध्यक्ते विषयमे सामधान इरदर्शी व्यक्ति। भनागतापाध-पु॰ [Þ॰] मली बरः, राव शादि । अनागतासेवा-सी॰ [मं॰] वद वस्वा विसरा मासिक श्राव भारंभ न हजा हो। जरबन्दा । **धनागताबक्षण−पु** [मं•] दूरदश्चिता। भनाराति-स्रो [मं•] न भाताः भमाप्तिः पर्देष न हाना । अतारास−प [मं•] न माना सप्राप्ति । वि• अनागतः ब्रिस (मर्पाल) का अवपत्र या अभिदारपत्र न हो ! भनागमोपभोग-५॰ [मं] अभिधारपत्रके विना संपत्तिधा सपमीत । समागम्य-वि [यं] दुर्गम, अगम्बः सप्राप्य । अमागार्सा(सिम्)-दि [सं] न आनेवाहाः जमविष्यतः म कीटसेवाका । भनागार, अभागारिक~दि [मं] दिना वरका । पु साथ-सम्बासी । भनामात-प्र• [मं] मगोउद्या एक तात । अनाप्रात−वि [≠] जो स्वान गया हा। भनाचरण-प॰ मि दे॰ जनाचार³। भ्रमाचार-प॰ [मं॰] अवान्य आयरणः बुरायाणः बुरार्हः **5**रीति । वि सर्विशिष्ट असरः विवित्र । मनाचारी(रिन्)-दि॰ [मं] दुरे आदरण्यासा आदार द्दान कुचारी। भनाज-५ अग्र नाजः। मनाक्षप्त-दि॰ मिं] बिमद निए जावा न वो गया हो। -कारी(रिन)-4+ देश शाम धरनवाना जिसके निष बादा म नी गयी ही । मनाज्ञाकारी(रिम्)-वि वि वे शादाका वालन अ वरभेवाला । ममानात-रि [म] प्रदातः मी कुछ भरतर दाप दे उमने बन हुआ। **सनादा**—नि भटान मरुगन। मनाहा-वि [मं] बनहोनं हरिद्र । बनात्र-'र [मं] माराहीन छावाहार ४ गा। पुरु भाषान्धा असन्द छादा। ईन । भमानुर-दि [र्ग] अगुप्रदिनः उदानीम्। अर्हाना सम् Max- 1 भनाम(म्)−दि [सं] भाग्या या चत्रवरदित वदः | सनाम(वृ)−पु [सः] अर्थं दरग्रैरः।

बाध्यात्मिक नहीं धारीरिक, जिसने अपनेपर निर्यत्रण नहीं किया है। प्र जात्मिक, बढ़ पदार्थ, देवादि ।- ज, --चेत्री(तिम)--वि॰ भाष्यारिमद ग्रानमे रहित, भग्राम । ~धर्म-प॰ झारीरिक धर्म । ~धात्र-प अद्यादाः। अमारमक-वि सिं॰} व्यथार्थ शणिकः संसारका विद्येपण (वी॰) । —बुरक्त—पु॰ अधानमे अस्पन्न बुरुद्धः मनवाचा । अनारमचान् (वर्)-वि॰ [धं] असंगमी। अनारम्य-वि॰ सि॰] अद्यारीरिक । पु० अपने परिवारके प्रति स्तेष्टका शसाव । अनारवंतिक-वि० मि॰ो अतिरयः बंतिम मर्शः सविरामः पमरावर्च-६ । असाय-विक सिको जिसका दोई माहिन वा रहक न हो। क्सदाय, निरामक, दीन । प्र॰ विमा माँ-पालका वसाः बावयदीन व्यक्ति । -समा-सी अनावास्य । भनायानमारी(रिन)-वि० मि०] दोलीया सहावह । अमायाख्य, अमायाख्यम-व मिं। वह स्थान वहाँ विना माँ-बाव्हे बच्चे आदि १मे बावें, वहांमधाना । ममादर⊸प (र्र•) भाररका अभावः तिरस्कारः एक अवाः संकार विसमें अविक अच्छी रूगनेवासी दिसी अमाप्त बरतको पाढर वा देखकर प्राप्त बरतका भनादर किया बाय । वि वदासीमः स्पन्ना करनेवाला । अनादरल−५ [र्ड•] रुपद्या था हिररदारपर्ग स्ववदार । मनावरिष्ठ-दि० दे० 'अन्,ध्व । अवादि-दि॰ [र्स॰] मारिरदिता नित्यः दरमेयरका एक विशेषण। -- निधन-वि जिसका आदि भेन म हो। शास्त्रः विष्णुका वक् विशेषा । -सप्योश-वि० आहि मध्य, अंत तीनींसे रहित । -सिद्ध-दि॰ मनादि काकने च्छा भानेपाला । अमारिष्ट-दि॰ [मं॰] आनेय न दिवा दका । अनारत-वि• (सं•) विस्ता जादर स विया गया हो: तिरम्झन । जनादेय-वि॰ [र्ष॰] म हेने थीग्य, ममाद्य । अनादेण-प॰ मि॰] आवेदारा स दाना। ⊷दार⊷दि० विसक्ते सिप आगा म ही वह दरनवामा । अमाध्यस-विर्थार्थणो विसदा आर्टि मेर स दी। पर दिखा भगाय-वि॰ (सं॰) मनारिः न मान योग्य । भनाचमत-वि , पु॰ [लं] है मनाचेत्र । अमाधार-वि मि] निरवनव वेसहारा (जाराज ब्रह्म)। अमाधि-वि मि विनार्गटन । जनाएट जनाएष्प∽ि [नं] भरया अनिर्मातम् पूर्ण Aded 1 अनामाव-स क्रि॰ वैगमा। अजामपूर्व-दुर्गि] स्वित्र असमे न भामा। अमापद-श्री [म] मंदर था दिनसा म दीना । अनापनानाप-पु अन्तेन देशको बहरासु । अमापा=-रि शिमा जापा दुमाः अपरिवित्त । अनास-दि॰ [मं] यो आप-मानीय वदार्यदादाः शिक्तनीय या गुरुत सही। या प्राप्त न दुलाही। प्र अवन्यो ।

भनामक-वि॰ [सं०] दे 'बनाया'। पु० ग्रक्क्यासा झर्छ। भनामक-वि॰ [सं] रोगरवितः स्वरंथ≀ पु० शारोखः विष्णुः शिव।

भनासाः भनासिका--स्रो॰ [सं] कागो और निपरो रुंगर्किम्बे मेक्को रंगरो ।

सनासा(मन्)-दि॰ [सं॰] नामरविषः अप्रसिद्धः पु० सन्मास अनामिकाः

अमामिप-वि [सं०] मांसरविद्या प्रकीमनरवितः साध-

अनास्त-वि [सं∘] जगर।

अतायक-वि [सं] पानकशैगः सम्मविततः।

क्षमाधतः—वि [सं] अतिवंत्रितः शनिवारितः वे सदाराः अविश्वितः संकलः विस्तं प्रवर्गः न हो ।

श्रमामच∽वि [सं] सी दूसरेचं क्यमें ने हो, श्रवसीमृत स्थाचीन ! श्रमासास—पुरु [सं] कारास—वय, व्यक्तिगरेका असासा

आस्त्रः कापरनाही । अ॰ विना प्रवास-परिनमके नासामीसे ।

समायुष्य-मि॰ [मं॰] दांबे कोबनके किय बातक (शरी भीवम नारि)। सनार्रम-पु॰ शिंी वारंमका नमाव। वि वारंमरहित। सनार-पु यक प्रतिक पक्त और बतका पेका यक नारिव

बाबी; के सम्याव; कवम (तुरैकक); वी क्रमरीको बीहरी बाबी रस्टी ! —दान!—पुरु कनारके प्रकार बुए वाने ! कवारक्य—वि [ईक] कनवरकः निरुव रखावी ! पुरु वाने-फिलाको !

ास्त्रताः। श्राहरम्य−वि [र्स] मार्रम करवेके सवीम्म । श्राहरी≉—वि अनहरके रंगका काका वे॰ 'श्राहरी'।

पुण्डास्य नार्वेद्धांवाका कनुष्ठः। एक प्रकारण । सनारोग्य-विण्[संण] कपारणा स्वारमके किथ वाति-कारक । प्र थोमारी । —कर-वि जस्वारमकारः।

कारक । पुंचानरा एकरणाव जलारकार । अनार्ज्ञक पुंच [मंद्र] रुपा कुरिक्ताः रीग । नि कुरिकः वैद्यासः।

भनार्तव - पु [मं] रजीवनैका सनरोत । वि असामविकः समयस पूर्व वै-मीरिम ।

बमात्वा को सि॰ मरमरवण।

झवार्च-तृ [40] बो कार्य म हो, यह, खेक्छ। (२० सहस्य कार्यद्वित तीका अन्तर्माविकः (वह देश) वहाँ कार्य म हों ।—कार्मी(मिन्न्)—वि० देशा कार्य करनेवाका ओ आवोदित म दो। —चा—तु० अगुव कुछ। वि० जनार्य वा बहुदे करस्य ।—सुष्ट—वि जनार्यभितः ।—तिकः— तु० विरायवा।

जनायक∽पु [स॰] ज्युत काष्ट्र। सनार्पे जनार्थेय∽नि [सं॰] जो आर्थ∽नाविकृत ज बीः अर्थेदिक्र≀

भनार्कंप~नि [संग] वेसदाराः, वयवंपदीन १ तु अवः रुपदा अभाव ।

अन्तासंबम् −वि [मंग] वे 'अन्तरहेव'। अन्यासंबद्धिनारी (स्रो दिसारा एक बाग (सी)

सतालंबी-न्या [सं] विवश्च वक्त वाप (वीचा १)। सत्तालंबुका सतालंकुका-नो [सं] रक्लका सो। अधाखाप-वि [धं॰] मीनः मितमारी, नविक प हैस्से बाका | पु मीना इस बेकता । जनाफोपिश-वि० [धं॰] जो देशा स नवा दो करेसेंट्स विशयर सब्से मॉर्ति विचार म किया क्या दो। अन्तविं —खीं [धं] न कीरमा, क्रिस् कम स हैस, मीखा ।

श्रमावर्षण~पु॰ [तं॰] अवर्षम, सुझा। अशावादमक−वि [तं] गैरजदरी, क्रिक्ट नासस्य म हो। अनाविद्र—वि॰ [तं॰] न देवा हुमा अनाहत, दिसे देट

ाराचिक्क स्थापित का प्रचा दुआ करावित, स्वाचक म पर्वेची हो । सनाविक चि [र्स] अर्पक्रिक;स्वच्छा;सारध्वस(हैह)। सनावृत्त∽वि [र्सुं] जो बक्ता म हो, सका ।

जनाबुरामान (राष्ट्र) को कहा न हा, सुकार जनाबुक्तमनि [सं] को कोटा स हो। को दोहराना न जना हो ।

पनावार अचावृत्ति – सौ॰ [सं] य सौटना; फ़िर जन्म व इसः सीक्षः। अनोवारि – सौ: [स॰] अन्योज सचाः

अनावेदल-विच [त] जिल्ही विश्वति स की तरी है। जी जनभा न गवा हो। जानाए-वि॰ [त] निराक्षा जिल्हा सहस्र महो। में स्ट

स किया क्या हो। जीपित । कानासकल्य (पं∗) सोसनारिके आर्थरेसे पॅस्टिं अमिनक्यर तर्राहे, तकसास वा नास स करनेगरा। दे

ज्ञानस्य तुराः, तुक्तातं वा नाश्च न करणाः छवनास्य । अनासस्यन−पु [मं] त्रस्थांदरमा । अनासस्य −वि [मं•] अप्रश्लेतः । अनासस्य −वी • मिरास्य ।

अनासी(सिन्) - [स] बस्पर (आसा, म्हा)। अनासु-वि॰ [सं] बस्पर; अव्यास्त्रः स्व वहाँ, क्षरा अनास्य-वि॰ [सं] बस्पर; अनास्य-वि॰ [सं] बस्पर।

शासमयर्थेडा अनुसरण न क्रमेशका । अमाभ्रथ−वि [सं•] शासनरदित वेस्टारा ।

क्षमाभित-वि॰ [वं॰] वो दूसरेपर वासित सबा स्वापेयः। क्षमास-वि॰ [वं॰] गासिकारदितः। क्षमासक-वि [व] वासकिरदितः।

अनासकिः—नी [मं] आमक्तिका जनाव । बागासादिशः—वि [मं•] अमानः। जनाकांतः आदिने अस्मित्वदीनः।—विश्वद्वरूपि विने पुद्ध करकेका वर्णः व मिला हो।

भगस्याच-वि [सं॰] नमात्यः भगस्या-वि [सं] रिना नस्याः स्थ्याः। भगस्या-वो [सं] नारमाद्यां भगम्। भगस्याः

्वप्रसोनवा । [वं अनारव —बदासीम |] बानारसय—वि [तं] डोसरीरन । बानारसय—वि [वं॰] निमा स्वारका, विरत्त । प्र॰ रवार

्का अवाद जीरमता । अमास्वादित∽ि [र्थ•] (अम्ब्र्स स्वाद मध्या पत्र हो। अनाइ∽पु॰ (र्स॰] पेट कृषमा, अन्दरः । भनाहत-वि [सं॰] भाषायरिका भौरा। भो भाषावते प्रत्य म तुमा हो। भ्रम्मप्रेम । पु॰ हरुयोगिके अनुसार प्रारंके द पत्रीमिते एक निक्रम्भ स्थान हरून बदम सामा भागा है। नमात्र, नस्टब्-पु सीरोगोंको मुनाई सेने साभी एक भागिरिक पत्रीन भीग्र अभि । भनाहग्र-पु॰ [सं॰] भाषारका भागा वा सामा। वि निरहारा, सिवर्में कुछ न स्वाया बाबा। नमार्गणा-सी॰

चीतर्योच्या व्यक्त श्रतः। अभाक्त्रार्य-विक [सं.] अकृतियाः अमोश्यः। अनाहिताग्नि-विक [सं.] विसने विभिन्नतः अस्पाधान न

किना हो अधिहोत्र प स्टनेनाका। सनाहृत-वि [संग] विन-तुरावा अनिसंत्रित।

भनिष्य । भनिष्य निष्य न

श्रामिख-वि [सं] निर्योग प्रश्नंसनीया सुरर । श्रामिशाईश-वि० सम्बादी ।

श्रानिकेश्व-वि• [वं•] विस्का कोई नियत वामरवाभ न दी। सन्वासी। पानावरीस !

भनिश्चित्त सन्य-पु [मं] तोहो वा कार्यगारने मुख की दूर सेमा।

श्रमिश्च-पु• [सं] ईस जैमा गढ पीचा। श्रमितील −(द [सं•] को निमन्त्र न गया हो। जो छिपा न हो, प्यक्त।

श्रातिग्रह्—पु [सं∗] वंदन, रीड वा वंदका लगानः कर्तने दार न माननाः वि श्रानिवंदितः अनेवः।

क्षरिया अनियाक, अनिया, अनियाक-विश् [सं॰] अनिया अनियाक, अनिया, अनियाक-विश् [सं॰] अध्यारकित न याक्ष्मेशका ।

क्षित्रहा न वाहनगरः। स्रान्द्रहान्द्रोतः (संग्) स्टान्तः भवादः सर्थः। स्रान्द्रिह्य-(२० (संग) को स बाहा गदा हो। स्रान्द्रह्य-(२० (संग) सपना नहीः, इसरेकः।

भनित्-िर [म] रहित, बीजन । भनित्व । भनित्य-िर [म] जो महा म रहे महबर, धुन्दरबाजी भनिवमित: अभावारण: भरितर।-कर्म(म)-पुर-क्रिया

ारी॰ सामिक कार्य (च्यारि)। न्यून न्यूचक न युद्रम-पु॰ वह स्वरुक्त थी गीन भिन्ने माने के बिच भग्नायी वा भारतिक स्वर्भे निवा जाव। नभाव न्यु॰ स्वर्मायाला। नम्म-पु वाति वा मस्यू उत्तरके वीतीस सेरोमेन एक (स्वर्)।

भनिदान-वि [म] श्रारण्यदितः। अभिद्रा-विश् [मिश नोरं म आये। अभिद्रा-व्यश् [म] नोरं म सानती नीमारी। अभिद्रान-वि [म] जो सोना न दो जायत्। अभिष्ठ-विश् [मेश] स्परामृत अनिग्वितः। अभिष्ठ-ये गोनारी।

भनिपान-पु॰ [में] अनतना जीवनवा नमा रहना । अनिपुन-पि [में] अनुसार अध्यपदेश

अनिवद-दि [रं] मानेदः नेनामाव । न्यामाय-पु ने मिनेदर्भ वाप । हो। वृष्टः शरिवर! -संधि-ली० सिसी राजानी सस्यंत वर्षरा सृतिको सरीन होनेके राष्ट्राक राजाको वह सृति देवर को हुई सीत। शनित्य-ति [सं] धनारीन, तरीहा। स्रतिसंक्रित-ति० [सं] विना सुकास हुमा धनाहृत।

करिस्सिक्त — दि॰ [सं] विना सुरुपता हुआ अनाहृत । अनिसक्त — पु॰ [सं॰] सेऽका कीवसा असरः समुसबरीः पधकेत्रस्य संदुरका पेषः अभिसा≅—सी॰ दैं 'अपिमा'।

अभिश्चित्त-वि॰ [तं॰] कारणराटित, भरेतुतः साकारिकः । पु॰ स्थित कारण्या च वोताः भरचनुता । अ॰ विता रिमी विश्व कारण्ये । —ितराक्रिया—स्वा॰ अपरस्कृत वा स्थित-त्युकः विद्योका निरारणः । —श्चिंगनास—पु॰ अभिका का स्वा निरस्त मनुष्य भवा दो जाता है । अभिश्चित्तकः—वि॰ [तं॰] स्वसं, प्रयोजनरादित ।

कानास्त्रक विद्युतिका निवासिकार विकास निर्मात्रक निर्मात्रक कानिस्त्रिय कानिस्त्रिय निर्मात्रक हिना दिवासित । अ दिना प्रकट दिवास मध्यम महाका । —व्हि, नसम नहीक्तन निर्मात प्रकट देसनेवासा ।

सनिमिनाश−पु [सं∘] वह व्यक्तिजीण्यटकदेग रहा हो। समिमियासार्य –पु॰ (सं.] देवगुरू वृहत्पति । समिमियायार्य –पु॰ (सं.] देवगुरू वृहत्पति ।

कानामचाय="वर्ण [मण] दवतान्दरभा । अनिर्वाष्ट्रतु-ति [मण] प्रतिवेभरहितः स्वर्ण्टरः निर्देवसः । —सामम-तुरुण्यतेत्र वा निरंदुःगु राक्यः।

सनियत-दि॰ [र्थः) स्थानियतः स्थानिया गरियर स्थाना स्थानसरमा सम्बन्धिः शारणदितः जो नेना हुना नहो। न्युंका-स्थीन स्थानियारिया। न्युंका-ति वैश्वाकाम स्थानियानाः विस्तर्ये साथ नियत नहो। स्थानियतासा(स्मत्)-दि [र्थं] नियता मन स्थाने न हो २ क्षार्यातः।

क्षां चचकप्रताव । क्षांनियम् पुरु [सं] तिवमका कमानः स्वत्रवाका अमानः वेकायरगीः तिथितः आन्छका म दोनाः स्टिदः अविदित् वर्म । वि नियमदोगं अनियमितः ।

ण्याः। व । नयमहान आनयामदः। अनियमित-वि [मं•] नियमरदिदः नियमपिरकः, विरायकाः।

अभियास, अभियास्-पुरु ६ 'अन्याय'।

अनियारा-नि॰ अनीगर पैना - बाहि छा छोर्र पै जाने प्रेम बान अभियारो - च् १ ५८ीलाः शेका बहादुर -"बम्पतिराव बढ़ अभियारे - छत्र ।

अभियुक्त-नि [मं] की नितुक्त निरुषा गया दा जो अधिकार-नित्त मं ही। चु दिपारपरिटा यह नदायक जिम्मी नियमानुमार निर्देश्च न दृह ही और विशे अपना अस देनका अधिकार न हो।

अभियोग~९ (सं॰) प्रधायका भगारा अनुष्युक्त दर । अनिसक्तका—९ [०] निवरण स दरसा ।

अनिसकरण-पु [०] निवारण न करना। अनिक्चः-वि०[सं] रिखका सन्दर्ग निर्मापन वा ध्वारना

ज तुर्दे हो अन्दर्भ । अनित्य- (किं-) निषदा निरोध न दुभा हो या न है। यद दरिका स्वरूप । यु० कृतद एवं प्रदूष्ण चुपा अध्या तुरुपर। न्यपन्तु अवस्था।

भारत तुम्परा - नवा - चु कारणा। भनिम्पर- वि [त] निजी नदी सार्वशिका वो तिया स्र अनिमय- चु [१०] तिस्वरा अवस्य अनेवस्य। [वि

'सनिर्णात'—समिश्रित । ी धमिर्देश, धनिदशाह-वि॰ (सं०) विसदा वधाह-बनन

वा मरण-संबंधी-अञीचके वस विम∽न बका हो । भनिर्विदय अभिदेश्य-वि० चि] क्रिका निर्वेश ग कियाचाशयः ।

श्रमिद्दिप्ट--वि० [एं०] विस्का निर्वेश न क्रिया गया श्रीः न नवादा हुण: सनादिष्ट । ~सोग~प किमीकी विसी बसाकी विमा उसकी आहाके काममें काना ।

अमिर्देश-५ (सं०) निश्चित नियम वा आदेशका अमाव। धनियांतित-वि० [सं] अभिश्रितः। श्रानिक्रप−वि• सि ो नेवनस्थितः स्वर्णातः। श्रामिर्मर-वि मिंशे क्यांक सही। बीहा इसका शनक संवित ।

श्रमिनेद-५० मिं। भेर म **डोक्**मा । अनिर्मास्या-को [सं] एका नामक औषपि ! समिर्फोचित-वि [सं] सविद्यारित, सविदेशित ।

श्रानिव चनीय-वि [ए०] गिर्वचनके अवोग्या विसके सद्भग भारि न बढाने का सके। वर्गनके। वयीव्य । प्र सावा भवानः अभवा सनिवाच्य-दि॰ (सं॰) हे 'अशिवंचगीव'।

अनिर्वाण−वि [सं] न तुहाः तुमाः क्यसाकितः। शनिवांड-प॰ [मं०] प्रा न होना अभिव्यक्तिः असेपतिः अपर्यंत्र काव ! समियाम-दि [सं] निर्वाहके वीस्त नहीं ।--पन्य-प बह बस्त जिसका राज्य वा नगरमें कावा बाता भना हो।

श्रामिक्षिण्य−वि सिं•ो निवेदरक्षितः **भर**ासितः। सनिर्वित−विनिशे सद्दांत ३ क्रसिक्स-वि [मं] सिन्। क्यांत तुःशो । भतिबंदि भनिबंदि-को॰ (रं॰) विद्याः नेमैगी निर्व-

स्रतिर्वेद⊶प्र सिंशी दिशासका समानः स्वानन्यन । अतिर्वेद्य∽दि॰ सि] इ'सितः देशीत्रपार । अनिस-प [मं] बायु, प्रथम इत्राः (इसने सात मेद वे

र्द्र-भाषद मिनक घटक संबद्ध निवह परिवद्दोः प्लम देशः जह वसमोगैसः प्लब्धः वातरीनः प्रवा-यहा ४९ प्यनीमेरी एका क्ररोरका एक करना 'न अक्षरा

स्वाति शक्षकः विष्युः ४९७३ संस्थाः सागीनका देव । --कुमार~पु॰ इसुमान् स्मीमः देवताशीका पक्र वर्ग (वे) । --श-वि॰ वातमम् कितर दूर करनेवाका ६ --शक---प॰ विभीतक क्ष्य । -पर्यस्य-पर्याय-प॰ अतिका एक रीय जिसमें पड़कें सस बाती हैं । -प्रकृति -नि॰ वातकी

प्रकृतिकारु। पु शनि बद्धाः --व्यापि-स्रो बाठबस्य विकार । -सफा,-सारथि-प्र अधि।-हा(इन्),हन्-वि० है। भनिना । भनिख्य-वि [मं•] विमान वा निमान-स्थानसे रवित । मनिश्तिक-पु (हे] बंपाखुण रंपुता । मनिकासाज-पु (सं] इनुवान्। यीयः। श्रमिकापक्र−वि (तं•ोदे 'अभिक्या ।

धनिमामय-प॰ (तं॰) बातरीय ।

'हवा प्रेक्ट रहनेवाका । अनिकोडित-वि॰ [सं] अनुभवदौन । अनिवर्तम-नि॰ [सं] रिवर; अपरिस्पास्त्र ।

अनिवर्षी(सिन्)-पि [मंग] म होप्रवेशका पुलेर गीठ न दिखानेगका, गीरा निष्म और परमेश्वरका ध्र विज्ञेषण । अनिवारित=वि॰ [सं] अनिवंतितः वो रोहा स यसाही। सनिवार्य -वि सिं•ो विस्ता निवारण न को सके। आसः

अत्यानस्य । अमिश-अ [र्स*] नि(तर, श्वातार ! अनिश्चय-पुर्शि निश्चयक्य जमाना स्टेड । अमिक्सित्र−नि सि किसका निश्च प्रदेश हो गार श्रोः कचाः संदिग्यः। कनिपिक-वि॰ [र्थ] को गर्जित या नविद्वित मही।

श्वमिष्कासिमी-चा [ई] फ्रांनहीम भीख। जनिए~दि॰ सि विशेषा म हो। स्वाहित शतिहरी बरा। प्र∘ महितः प्राप्तिः असेनकः विस्ता —कर−नि हानिकर I--प्रह्न-पुरु तरा वा शामिकर यह I--प्रवृक्ति —वि राष्ट्रशेक्षी, वासी । ~प्रसीत—प्र• अवस्थित परमा। द्वरे विषय वा कर्मका संदय ! —युक्त – प्र इस दरियाम ! --**शंका**-नी पुराई वा शहितको शासेका ! --हेत्र-उ तरा श्रम्भान । मनिद्यपादम−५० अभिद्याप्ति-स्रो० (स्•) वनिस्रो

मनिष्ठाक्षेत्री(सिष्ठ)-वि वि वे विष्ट वा इरमेक स्का। अनिष्यक्ति—सां (सं∙) कपूर्णता जससामि। अनिप्यक्र-वि [सं] शतुर्थे, बसमाप्त । अभिस्ट-वि (रं•) जिसमे आधा या अविकार व क्षिया हो। जिसके स्परीय या व्यवसारको साम्रा म से गयी हो। अभिच्छोपमोच्य (क)-प्र[स] वरोहर रवनेनमे आधा किने दिना भरीहरको उपनीगर्ने जामेदाला आहि

अभिस्तीर्भ−नि [स] यो पार न किया गया थै। निर्मे

धरम्बरा न मिका हो। जिसका बच्च ग दिवा गर्ना 🖟 🗓

भनिस्तीणीमिषाग-प (स) वह अभिवृक्त विस्

प्राप्तिः स्वांडित बदना ।

आरोपकी असरब प्रमाणित कर एससे प्रकास वर्ग चवा है≀ सनी की भोड़ क्षीरा हगने शुमनवाको वाहा महर्गि कुसमया माक्की वलदी। जूतकी भीका वानीमें निक्की हैं। बगीनको मोका समूदासेना।-दार-दि तब मोकामा। सु० -का हाच -ही चाट-सामनेका बोट ।-पर कर्म बाइमा-न्डानिके कार्य कर्ना बान्पर महमहाना बरमा । अवीक-पु [में] सेनाः शमुक्तः पीका सैन्यपीका र्या शुक्क क्षत्रक कांधिः विज्ञारा । + वि+ यो मीज अर्थार्

समीकिमी-सा॰ (मं] सेमा: अक्षीक्यी वा पूरी हेनाया दसर्वी मार्च-११८७ दावी २१८७ रव वेपर१ मीरे और १०९३५ देशकः हमकिनीः महिमी I भनिकाशन भनिकाशी(शिव)-प [सं] भाँप। विश्

बच्छान ही सराव ।

सन्तकास-वि० (मे॰) रच्छानुक्कः रच्युकः कामुकः। पु•

अमुकासी(सिम्) अनुकासीन~दि॰ [सं] अपने इच्छा

अनुकारी(रिम्)-वि॰ [सं] मकन वा देखादेगी करने-

अनुकाछ-वि॰ [मै॰] समनोभितः सामविकः। अनुकीर्तेष-पु॰ [सं] रूपनः प्रकाशन ।

रुपित रुप्ता ।

मनार कार्व करनेवाला ।

वाटाः आधाकारी ।

शतीदः - वि० भनिष्कः अभियः जुरा । भनीठि॰-स्तो॰ दुरार्दः कोष । भनीय-वि॰ [सं॰] विना वीसन्त्रा वाशवहीना वसरीरी। अधिका एक विशेषण । शनीत#-सो॰ अग्वाय, दुव्यंबहारः दुष्कर्म । अमेरिक-सी [सं॰] सीतिका एकटा अनैतिकता अन्याय, अमुश्रित स्वयदार। दुरापार। र्वति-संस्टब्स अमान । भरोप्सिय-वि (र्थ•) अनुभिक्षपित अनिविद्यत । मनीसवाजी(विन्)-प [लं] सपेत्र वाहोंनाका, वर्धन । अमीस-नि• [र्स•] बिस्मा कीई सामी या नियता म हो। प्रयामः बसुमर्थः अभिकारहोनः अन्यनंत्र । प्र॰ हैशर धे मिश्र-जीन या माना निष्ट्रा अनीवार-स्थे॰ (मं॰) जमहायावरवा, दीमता। श्रमीश्रर-वि॰ [स] विसक्ते क्यर धोर्र न हो। ईश्वर-एहित र्देशरकी न मामनेवाकाः असमर्थः म्पानका यक विशेषण (सां•)। →बाद्र-पु श्वरका व्यस्तित्व न माननाः मारिक्स मन । -वादी(विच)-वि॰ वैश्वरका मरिनाच म मामनेबाकाः नास्तिकः। श्रमीस्ट−विक्राशादेश अनीश्र[®]। भमीस्म-पु+ [यू] एक प्रजारको सीफ । भनीह-वि (सं०) स्प्यारद्वितः उदासीमा वेपरवाह । पु अवीध्वाका एक राजा। भनीहा –रगै॰ [मै॰] सनिष्छाः स्थातीनताः निर्वेशता । अम-जर [सं] शब्दीन पहले मिलकर यह पीछे (अनुबर) समान (अनुरुष) लाव (अनुषान), बारकार (अनुसीसन), प्रस्पेद (अनुदिन), भोर, थीव्य अनामित्र, द्यान गीच आदि सर्वीका चीतन करता है। पुरु वदाति-काएक प्रमा≁ दे लग्'। ० ल सना द्वीरटीका अनुक्रिम-वि [H] दवात इमदर्व / द स्वा, सहा-सुभृति । अनुक्या-सी॰ [मं] दया इमर्था। मनुष्टियत-विश् [मंग] विश्वपर अनुस्पा की गयी हो। अनुक्षंप्य−दि [मं] दयनीय, दशका शांव । सन्द-विश् (मंश्) कामुपः कामुकः भागितः। मनुक्रधम-पु • [4] पेरे बहनाः बर्गनाः बाहधीत । भनुकरण-पु॰ (सं) मक्का विमोत्ती वेगारणी करना । **अनुकरणीय−ि [मै] अनुकरण करने** याथ्य । भमकर्ता(सं)-प [सं] जदल करनेवालाः अधिनेताः। [मी अनुदर्भा'।] भनुकर्म(म्) अनुकार-पु॰, अनुविध्या-धी॰ [ध॰] मदन । समुद्रमे अनुद्रवीय-पुर्वाते 🕽 मार्यका, विव्याका देवताया भाषाद्दन। रंगद्रा समा। यर्तन्यका विभागे भागन ।

भवित्रस । अनुकूसमाञ्चन विश्व मसत्र द्वानाः सुमापितः द्वोना । अनुक्ता-मी॰ [मं] एक वर्षहरू पंती पृष्ठ । अमस्त्र-विश् सि] विसन्धे नचक की गयी हो । हो भाग दिखाया नाय । अमुक्रप्ट-वि॰ [सं॰] भाइष्ट, सिया हुमा । क्षमक्त वि सिंश्] सम्बन्धिन, न कहा हुआ । अनुक्टि−गी॰ [शं] स गैकनाः अनुविद्य शद । श्रमुक्टंद्रन-पु॰ [मं॰] उत्तरमें मंदन धरना । g) (तिचा देश 'जनुक्रमणी । अनुद्धमण−५ (सं]क्रप्रपृष्क अने वन्ता अनुगमन । शक्यकी । स्थित परिगणित । अनुकोस-पुर्वि] दया अनुद्रमाः अबुशय-म॰ [मे॰] प्रविद्या, लगातार । अनुरुवामा(न)-१ [म] पता ममानवामा । अनुरुपाति-भी (वं] प्या नगाना । अनुग~ि (सं) पीछे फल्नेवाला (समासर्वे)। ह धनुषरः शापी । वु मेनर भुशामन, मनुदार । अनुगतार्थे∽वि [मं] भित्र उत्राधनसाः। अनुगति~ही [मंद्र] अनुगमना अनुकाच ! अमुकस्य-तु [मेर] गीए विधाना मुख्य कामके अधारमें काममें कार्या जानशको सत्प्राद्याकृतु (अथ-जीश अभाव-द्रामाः सहमार अध्यापा समाप्ता । ăr∦)ı भागराजिम-५० [मै] गर्दन शमार्गन्दी प्रशिप्तान । भनुकोक्षा-को [ते] स्वता। अनुगर्धाय-पु [र्र] धीष र रहन्द्र । मनुके शिल-वि [मॅ॰] बाबा द्रमा दविएए । अनुकाद्मी(दिन्न)-रि [वन्) भावनशामा प्रस्तुत । प्रतिस्थित बरन्याना ।

अनुकंचित∽वि [मं•] शुकाया गुकाया हुआ। अनुकुरु-वि॰ [सं॰] गेल रखनेवाचा, मुभारिक: सहा-बक् प्रशास । प्र- निवादिया प्रशीमें बनुएक रहनेवासा नायकः विष्णका एक नाम (सर्वप्रिय): क्रपाः अनुप्रकः अर्थासंकारका एक भंग जिसमें प्रतिकृत करतुसे ममीऽनु कुछ करताही सिक्षि दिसाबी बाती है। 🕈 🕬 भीर-अनुकृति न्याँ० [सं] नक्षमः देखारेखाः एव बाध्यासंकार क्रिसमें एक बरतका किसी अन्य कारणसे इसरीके अनुस्थ भागकरूच-वि [गं॰] जिसमें बीत बमादे गये ही (आरा अनुकास∼दिर्वी मामगद्धा पुरु उपित अस्य, सिक अनुक्रमणिका अनुक्रमणी-गी [मंद] दिवसमुद्रीह अनुमान-(४० हि) परितः कमपूर्वद दिवा हुआः वृति अनुगत-ति [ग्रं॰] अनुगामी। अनुकृष्ट पंपनुतः। अरीत्। भन्गम अनुगमन-१ [ग] पेध प्रता: स्टब अनुमादी(दिन)-दि [त] दूरते दे - दे ना दूरहरे.

भनुगामी~मनुदार भनुगामी(मिन्)-वि॰ [सै॰] पीछे घटनेवाटा, अनु बाबी साबी। बाह्यकारी ! ब्रिके 'जनगामिनी' ।] धमुशासुक-वि० [मं०] बारतन पीछे क्यनेनासा, नरा-नर पी**धे चल** तवाला । **भनुगीति∽न्धा०** [मं] एक मात्रिक छन्। अनुगीता−स्रौ सिं] महाभारतःशब्यमेवपर्वके १९ से ९२ तक्क अध्याव । **भत्राण−नि० [र्स०] समाम शुन्नवाको; अनुकूक**, अभुगत । प्र अर्थालकारका एक संद विसमें किसी बराएमें पालेसे विषमान गुणका बम्ब वस्तुकी संगति या संसर्गने वह आसा दिस्मकाया भाग, स्वामानिक विशेषता । मञ्जास नि [सं•] क्षिपाया प्रभाः रक्षित । अनुगृहीत-वि [पं] विपपर अनुग्रह किया गया हो धपकृत, एइसानमंद । **अनुग्रह−**प्र [सं॰] कुपा, मसायः राज्यकी कुपासे माप्त श्रहायता वा समीताः सेनाके प्रश्नामधी रखा करनेवाका इसः # अमिष्टनिदारण । सञ्ज्ञही(हिम्)-वि० [सं०] वाजीगरीमें <u>क्र</u>ास । भद्रप्रासक-पु॰ [सं•] धौर, नेवाना ! भनुपाहकः अनुप्राही(हिन्)-वि [सं॰] जनुषद करने-माला मेहरपान। सनुबाह्य−वि [सं•] बनुबहरा पात्र । अनुभदम-दु [सं] संबंध स्थापित करणाः पदस्पर मिनाना । असुपात−५ [रं°] निनासः। असूचर~पु (एं॰) पोडे कानेपाला मीदर रहता। सानी। [सी नतुषर्ये'।] मतुचारक~पु [र्ट•] भतुषर ≀ [त्री• 'शतुचारिका ।] शतचारी(रिन्) -वि+ [चं] पीछे कन्नेवासा । प्र मीक्ट अञ्चर। शमुख्तिन-पु॰ जनुर्विता−त्वी [तं॰] धीक्ना नार करना सवद विवन । [वि 'अनुचितिव' ।] अनुचित्त−4ि॰ [सं•] शागुवासिन, नेवाः तरा । सनुच्छिचि-सी , पु॰ [तं॰] इत्यार अक्रम म दीनाः भाषा न दोना, बनवरहा । शन्दिक्कष्र~ दि [6+] वो क्ठान दी क्<u>र</u>ाक दुवा। सञ्ज्योत्-पु॰ [सं॰] दे अमुन्तिशि मन्तरः पेरायाकः। समुद्धम्ब--वन् देक बमुक्ष्यं । समुज, सनुपास-वि॰ [मे॰] वीछे अनमा हुआ। यु॰ भोटा भारे प्रभीवरीक नता रक्षणप्र । अनुजनमा(नमन्)-पु॰ (पुं॰) वे 'अनुन'। भनुजा भनुप्राता-मी॰ [मे॰] होटी बहन वानगाना कता 1 अनुजीबी(विन्)-वि [तं] किरीके सवारे जीनेनाला बामित । पुण सैक्ड । असुश्रसि∽रहे• [सं•] वे• अनुदापस'। भमुजा-स्रो [मं] अनुमति स्वीकृति आधा यक कांक्यालंकार बहाँ ककी गुणको काव्यताने बीववाली वरतकी भी इच्छा की चान। अनुनात-वि [मे] अनुनति प्राप्तः वाविष्टः -व्यव--

पु॰ सरकारको औरसे दिवा गया कुछ वस्तुओंको वेक्ने का ठेका। भनुष्टाम-५० [मंग] बनुमति स्वीहति। अनुकापक-पु॰ (सं॰) अनुमति वा शका देनेनका। भि अनुद्यापिका'। **अमुज्ञापम−पु॰ (सं॰] आधां दे**नाः अनुमृति वा स्रीरः कार देशा। अनुज्योत्त−ति॰ [सं•] सबसे बटेसे क्रोस्त । मनुगञ्ज−वि॰ [ग्रं॰] अनुरापश्चकः रंजीयाः सिच। **म**नुतर−षु (र्थ•] साव मादिशा भाशा, किराना । अनुवर्ष--प्र∙ [सं] रच्छा। प्यास- मवः मवधान वा सन्-यात्र । **जनुराप ल−प्र॰ (सं•)** भवपान वा उसका पात्र । भन्नताप~त [र्ग•] शेर रंकः पष्टतामाः बरुन तार। मञ्जापम−वि [संग] सेर स्त्यत्र करनेवासा । मनुरक्र∼वि॰ सि॰ो को विक्ति वा किच न हो प्रस्ताः ममुक्तम−वि॰ (सं | सबसे अध्याः सबसे अक्या वर्षे। पुण क्षित्रा विष्या । अनुचार-विण [मे०] निरुचारः प्रवानः सर्वोचमः रिक्सः ग्रुक्त दक्षियो । पु क्यरका सभावा स्वीत-देश्यास्ता एक वर्ग । अमुक्तरिस−वि सिं∘े क्रिक्टा एक्ट न दिया भग हो। अनुक्तान−वि [सं] विश्वनहीं पट शीनेके वक केंग्रहणीं अनुचाप-पु [मं] श्रीकाँके मनुसार वस क्लेपोमिरे वहां ध-नुरधान−प्र [सं] परशानका मनान नेद्यका नगत। [वि॰ भन्नतिवतः ।]-अनुत्पत्ति—को निश्च नतस्वताः व्यक्तिकः समा^{त्} । ~सम~पु॰ बाति था वस्त् उत्तरके थीनीस मर्जेरेंडे यक (स्था) । मञुभ्यक्तिक∽वि [र्स•] जो अवतक करन्त्र न द्वना रो । अमुर्पक्र−नि [elo] को पैदान हमादी। वो पूराम इशा हो । अनुत्याव अनुस्पादन-पु [नं] ब्रह्मक्ति। अभार ! अमुरपाबक-विक [ईंक] की करपत्र न करे वा जिस्मी करमञ्जन हो । अनुरसाक्ष-पु॰ [सै॰] पेदा वा प्रवासका बमान' संकर्णा भाग । वि. किसमें संदर्भने खंडा न हो। जसाहरीन । अनुस्तुक-वि [मै] श्रीस्तुरवरहितः शांत । ^३ अमुक्तेक-अ [मंग] दर्पामल वर्गत्र न होता ?? अन्तुक-वि [शे॰] चक्रशीत (मस्मृषि); अस्य वक्रमाणी बिरी कोई पानी बेनैपाला स थो। अनुत्य-वि [तं]कॅना नशं कोमटः अनवीरः निरतेव । अनुक्त-वि [सं०] सोइटा नाफ दिला हजा। कीयवा Rall I असहर-नि॰ नि॰ पनली बमरवाका। श्रीम वर्तता । अनुदर्शन-पु [सं॰] तिरोध्य पर्वेद्यम । अनुवास-वि (वै•) क्याच्छ क्ट्रस होरा, नीवा ो 5° मीचा स्वर । अमुदार-वि [गं॰] कराताः कंत्र्मः संशोनं हरवा या करारः जिसकी पत्नी नकी वा अनुगमा करमेवाकी है।

असुदित-वि [मं] अद्धितः अक्तनगीयः निया को रुदित का प्रस्ट न हुमा हो।

अमृतिम, अमृतियस-अ॰ [रो] प्रतिदेन ।

समुद्रहि-सी० [सं०] अमुक्क दृष्टि । वि० अनुक्क दृष्टि रक्रतेबन्धा ।

समुद्रस−नि [सं•] विनीतः शिष्टः सीस्व ।

अनुकरण-पु• [मं∘] म इटामा' प्रमाणित न परमा । समुदार-पु॰ [तुं॰] दैंटबारा म करना दिस्सा म लेना

म इराना । अनुद्रत-वि॰ [सं] व्यविभक्तः वसतः भग्नमाणितः विसकी

स्वापना म की गयी हो है अनुद्धट-वि॰ [सं॰] मरम स्वभाववाका अवृष्टः निरहंकारः

सीम्य । समुचत्र-वि॰ [सं] दे 'समुचम'।

अनुदास-पु [सु०] स्थमका अमार्थ । वि+ स्थम न करने-बाला, आसरी ।

अनुदामी(मिन्)-(४०[गुं०) उपम न दरनवाका आसमी। अनुचौरा-पु॰ [मृ] उद्योगका अमाना निशेषणा। वि

तिस्पीयी जाइसी। अनुदार्गा(तिन्)-दि [ग्रं] उपीग न करनंतालाः निभिन्नः उदासीम् ।

अनुद्रतच्यु [सं] संगीतमें यक तत्त इतका आधा। वि मनुगद अनुवादित ।

अमुद्राह-पु• [मुं•] अपरिवद, विर-क्रीमार्व ।

अनुद्रियन-दि [मं॰] निसका मेन शांत हो, आगंका, चिता बादिस मुक्त ।

भनुद्वरा-५० [मं•] भय भागेका आदिका भगाव । वि•

दे॰ 'अनुदिग्न । **अनुपायन** -पु॰ [मं॰] अनुमरण विगनः अनुसंधानः धकाई किमी सीध्ये पानेका अवल करना ।

भनुष्यान-पु [सं] धिनन, व्यान ।

भनुनय-पु [मं+] दिनव प्रार्थना प्रमादमा अमुद्यासम। श्रमुम्पी(यिन्) व्हि [मं] मन्न दिन्यी । भनुनाय-पु [मं•] प्रतिप्तनि गीव।

भनुनादित-वि [मं] प्रतिधानित बिसारी गूँग दुई हो।

समनावक-वि॰ [मं•] दे अनुनयी । श्रमुनाविका-न्यी [सं] नाविका6 साथ रहनेवाडी नी

(ग्रनी बामी भारि)। **अमुनासिक-दि॰ [मे] निष्ठका उपारण सु ६ भार मारु**म

दो-(र मृश् नृष्भीर भनुग्नार) । पु अनुनासिक बर्भ उत्तस उदारण । भन्नीत-(४० [मं] अनुनाधित सुमाध्यः भन्तः द्यांत

रिया हुआ। प्राधित ।

मप्तरीति≕मी० [सं]दे० अपुनयः

अमुकत−दि [र्ग] अक्रपर बटाया संगया ६। दिसन पक्षी मनो हो।-गाल-दि जिल्दे शंग पुरु म दी वा **पर्कपन के सक्षी** ह

अनुस्मत्त−4ि [सं]ी सभावा पासक सक्षेत्र भनुम्मदित-(६ 🗗] हे: अनुम्बर्ध ।

अनुन्यात-पुर्वारीशीपारतपनका समाव। वि दे 'सन् मर्च'। असमयकार ज्या सिंगी व्यक्तित वराई । समयकारी (रिन्)-विश्विं रेजफार न करनेवासा कुतार; निक्रमा। -(रि) मिश्र-पु॰ शतु राजका मित्र।

अनुपक्षित-वि [र्व•] विसे शति न पर्वेभी हो। अनुप्रात-वि मिं) अप्राप्तः अमनुभुद्धः दूरवर्ती । **जनपशीत-वि० [सं]** अप्रशंसित ।

असुपातीकसीय-वि• सि]प्रीविका न देनेवाला जीविकातीन। अनुपतन-प॰ वि] एकके बाद इसरेका गिरना पीछा करनाः दे॰ 'बनुपात'ः शैराधिक (मणित) ।

अनुपद्-न० [सं०] क्रम-क्रमः राष्ट्रपतिश्रम्य । प्र• गीवदा टेक । वि॰ (किसीके) पीछे-पीछे फलनेवाला, परामुख्यपदारी। अत्येक श्रम्यकी स्वास्मा करनेवाला (माध्य) (बेरो-अनुपरस्त्र) ।

भमपदवी−नौ मि•ोमार्गसक्दाः

अनुपविक-वि॰ [मृं॰] पीछे-पाँछे चलनेवास्ताः पीछे गवा RMI I अञ्चपविष्ट−ि [मं] भिम शिक्षा न दो गयो हो

षश्चित्रियः । अनवदी(त्रिन)⊸दि ि! अगुसरपदर्श

सीग्री । **मनुपदीम(−शी॰ [मं•] मोबा ब्**ता।

अमुपचि-पि [ग्रंग] एक-इपर-गरित ।

अनुपनीत्र−वि [र्त्र•] म काया हुआ; प्रपनवनर(इत । अमुपन्यास-द [वं•] अतिकि, प्रमाणित न दोनाः अनिश्चय रहिए। [वि+ 'अनुपन्धरत'।] अनुपपक्ति-सी [मं•] अनिद्धिः असंगति सुद्धिका अभावः

कमुमर्बता, दैन्यः शुंबतः । अनुपपछ−वि+ [में+] वो प्रमाणित न किया गवा हो

मञ्जू भे कहा म गया हो। अनुद्रशासित । अनुषम-वि [मं॰] उपमारदित वे मोह, सुबीसम। अञ्चपसद न-त॰ [मं] किमो आरोप वा अभिवीपसा

संद्रम न दोना।

अमुपमा-न्या [र्थ•] रहिय-पश्चिम दिशाके गत्र (बुमुत)-की पन्ने ।

अनुपसिन−वि॰ [र्व•] दे 'अनुपा'। अपूपमेष-(४० (५०) अनुसनीय ।

अनुरायण:-वि॰ [मॅ॰] विस्ताः सरवाग म हुआ हो। अवारवः अनुविधः नामीर्धः निरुग्मा । अन्पर्योग−शिक्षीं विभक्तक वेद्धार । पु उपकारी

न बानाः उपयोगमें म भागा (माइज भारि) ।

अनुषयागी(गिन्)-वि मि] उपवेशार्यात दे समान्द्र । अनुपरत-वि [६] वृत मद्दीः भरापितः।

अनुवर्णभ-पु॰ [मं॰] धानानाच जानसारी म दीना । अनुपरकित-वि [मं] रिमरी पर्याण म तृहश्चा अविदिय ने बामास ग्या दी।

अन्यसस्य-वि [मं] अप्रयाण जलान गरा हा। शिष्या निधद म दुमा हा ।

अनुपन्नरिय-भी (शै०) अमधि यानवारी न होसा। –सम−ड करिपरेण सन्देने स्द (सा)।

```
अनुपर्वाती(तिम्)−वि॰ [६०] यद्योपनीत वारण म
    करनेवासा ( आदिक्षत )।
   अमुपसय-पु॰ [धं ] रोग क्हानेवाहा कारण ।
   मनुपस्कृत-वि॰ [सं॰] विस्का संस्कार या परिकार न
    किया गया की जो सिक्सका न गया की द्वाक निर्दोग।
   अनुपस्थान−१ [मं•] बनुपर्श्विति ।
   समुपस्थित-वि [र्थ ] जो सामने था पासमें म हो, गैर
    इ।विर अविद्यमान १
   भनुपस्थिति न्हां [ई॰] शश्चिमानता गैरहाविरी ।
   मनुपद्दत−नि॰ [सं ] अक्षतः दोरा, भवा ।
   मनुपारम−रि॰ (र्टी को साफ-साफ देखा था पदयाना
    न वासके।
   मनुपात-पु॰ [सं॰] सापेश्विक संबंध तीन वात संस्थाओंके
    बाबारवर ची बैको निकासनाः बैराझिक (वणित)। स्वके
    शद इसरेका गिरनाः अनुसरण ।
   शतपातक-पु मि•ी जहारवादि महापातकोंके परावर&
     पाप-बीरी इस्था परश्रीगमनादि ।
   अनुपारक−पु॰ (सं॰) सम्बद्धने भी स्६म म्बतरव (र्गत्र)।
   अनुपान-प्रमि दिवाके साथ या पीडे सी कामैकाओ
    वरतः ।
   अनुपानला−वि [मं] पत्रज्ञानरहित।
   असुपानीय-विश् [सं ] दवा कालेके किए पैनके अपने काम
    देतेबाका। पुनद्द पीनेक्स बस्तु जो बादमें पी बाद।
   अनुपासम् –पु॰ [नं•] रक्षकः बादापाद्यतः।
   शनुपाभया भृति−सी [र्छ•] वर शृपि जो वहाँ वसे
    इस कोमॉब्स बनावा और विश्वीको जानम न वे सके।
   असुपासन-पु [नं•] व्यान न देना। [वि• अतु-
    पासिन' - उपेक्षित । ै
   मसुपुरुप−५ [मं ] अनुवाबीः पूर्वोत्त व्यक्ति ।
   सनुपुष्य~उ [सं] सरदंश।
   सनुपूर्व−वि [सं॰] ऋमवद्य, सिलन्तिकेवार । ⇔गाना, —
    र्षड्र-वि जिल्हे पात्र बॉत मादि वंदीक महीं।-
    बध्सा-क निवमित स्पत्ते क्या वेनेकारी धाव ।
   सम्बद्धां-दि॰ (शं॰) इसका, निवनित ।
   स्मिपेश-वि॰ [सं ] स्प्रीधिकः समुपनीत । (विसी ग्रन
    बस्त भादि)से १हित ।
   अनुस्र~दि [सं] को बीवा न नवा ही (बीज) ।-'शस्व~
    वि परवी (प्रमीम)।
   अनुमज्ञान∽५  (स॰) परिदेशिका अनुसरण रोह क्यामा।
   अनुमदान-पु [री॰] दान (वी ); प्रक्रि ।
   अनुप्रवहा-पु॰ [मै॰] प्रवेश शामिन होसाः अनुकर्भ ।
   खबुमस्त-पु॰ [लं॰] पीछै विशा कुमा प्रस ।
   जनप्रसक्ति नवी • [सं ] प्रगत संगंप ।
   भव्यास्थ∽वि [सं] पीरार्दश्र सुनाविक ।

    अनुप्राचन~नु (सं•) प्रामसंचारः गेरणः स्कृति ।

   अनुमानिन-वि॰ [सं ] श्रेरितः सुमर्थित पोषितः दुष्ट
   Bei gert
   चवप्रासन्-प्र• [त्रं ] श्राता, शोवतः।
 ... अपुत्रास-पु (०) वद कृष्टालेकार जिल्ले कर-विशेष
 ें या वर्ष विकेश क्लोबो मानुधि होनी है। वर्षनास्य ।
```

```
अनुप्रोक्षा - सा [र्म•] थीरसे देखनाः मनत विकृत।
 मतुष्रव-पुर्व [र्त्त•] साथीः बनुवारी अनुवर ।
 अनुर्वध-प्र [र्ध•] र्ववन र्स्ववा शिक्सिकाः अस्य दका
  मतीनाः मार्गः क्षत्रांशः संबंधः कोवनेवात्मः रावाः बारसः
  छहेहर, भीवतः आवारः प्रकृतिः प्यासः बीम वा अप्रधार
  नखा अस्य रोगके साथ दोनेवामा गीन निकार ध
  म्बानिः गुरुवर्गोता अभुवानी बाठकः। -क्युप्त-रूप
  निषय प्रकेशन, अधिकारी और संबंध-४२ चारबा स्थ-
  बाग (वे )।
 अनुवधका~वि सि }संबद्धः
व्यमुर्वधन∽पु [सं] संग्रहम सिहसिका।
भनवंधी-बा॰ [मं ] प्यास रिक्से।
अनुर्वपी(पिन्)-वि॰ [सं ] अनुरव पुष्ठः संग्रः ।
बतुबद्ध-वि [सं ] संबद्ध, लगाव रगमेवामा ।
अनुबक्ध--वुर्व [मृं•] ये:हे रिक्ट रक्ष्य हेना ।
असुबोध-तु [मं ] स्मरणः पाँछे होतेवाका रमरवा कर
 पत्नी हुई सुर्गाचिकी तम करना ।
अनुबाह्यज्ञ-५० [मं॰] ब्रह्मग्रहान्सः हमें।
बनुभव~पु• [सं ] प्रश्वक द्वात देग्न-सुनकर वा। प्रवेत-
 परीक्षामं प्राप्तः कानः सनसे बामनाः मन्द्रमः, महस्स
 बरनाः स्टब्स्वस्यम् अपनाच्या । नसिक्र-विश् मनु
 मन करके वेद्धा श्रमाः परीक्षा-छिकः।
अनुसदना ७-स कि॰ अनुसद दरमा ।
मनुमबी(बिन्)-वि
                        [संक] अनुसम् र<del>ुप्तेनाक</del>ा
 विज्ञिषेद्धारः शुक्तमौगी ।
अनुसाय-पु सि॰] मनोशत मानद्रो सुनद्र बाह्र दिवाँ
 (सा )। प्रभाषः बढाई। लेखनः रह विमास I
```

अनुभावक-वि॰ [तं] अनुभन करावेंगाचा । अनुभावन-५ (सं॰) कंगमग्रे द्वारा मनोका नर्तानी व्यक्त स्थला । अनुसावी(विन्)-वि» [ri] क्तुसव हरनेवानाः वर्धनः दीन गमादा मानवस्य चित्र प्रकार करनेवाला। वीधे देने या कानेकाता । अमुमायम-पु (पं॰) बही पुरे शास्त्री पंरवर्त स्थि फिर करना। नवनको भाषाचि करनाः शर्वाकारः समेरि

अनुसास−तु [सं]ण्यः तरहवा सीधा । बनुस्त∽वि॰ सि] बनुसव दिया धनाः आवगानी **प्रमा** परीधित । अमुस्ति−खो॰ सि । अन्तर्भक्ष स्वित्रकाः प्रथम् गर्धः मिनि उपमिति और धन्दरीय द्वारा माप्त द्वाम (ना)!

असुमोग-त• सिं•] उपमोया सेवाडे वर्ड मिलनेवारी माध्ये बमाय । **अपुध्नता(तृ)-**पुर्ति] छोरा मार्रे । व्ययमीता(न)-वि [मं॰] इजावन देनवाताः क्रिते कार्य

की होने देनेवाला। अनुसन्-वि [र्थ•] सन्मतः रबीकृतः प्रेवः मनीरमः!

पुर लोइनिः सहस्रविः भागाः प्यार करनेपामा । बनुसति−सी [र्न•] सोहति स्वाक्तः पर्दाधीउँव पुरिया। - यश्च-पुर्वाङ्गी सुरुद्ध प्राथा देशः।

धनुमत्त-(६ [सं०] सुद्यंत्द्र सारे आपेसे बाहर, व्यानं-दोन्मत्त । अनुमनन-पु॰ [सं॰] स्वीकृति वेमा ।

सनुसरण-प [सं] सर्वा दोगाः श्वमरण। भनुमा-सा [सं] अनुमिति, अनुमान।

अनुमात(त)-दि० [सं०] अनुमास इत्सेवाला ! [सी

'अनुमात्री' ।] अञ्चलन पुरु (र्:०) अरक्त, अंदाधाः प्रत्यक्षः अप्रत्यक्षः

का बान (मुगाँ देखकर भागका बाम), स्वायखालके मामे द्वप चार प्रमानीमेंसे पकः अनुमति, स्वीकृति ।

अमुमानना • - स • कि अनुमान दरना, सोवना समझना। अनुसानोक्ति∽कौ [सं] तर्दं, छ्या।

शनुमापक-वि [रं॰] अनुमान करानेवाकाः विसके

सदारे अञ्चलात किया का सके।

अनुमिस~वि० [सं०] अनुमान किया हुआ। अनुमिति - स्रो [सं] अनुमानः अनुमान कारा प्राप्त दानः। असम्बद्धा∼सी॰ सि] वह स्ती वो संती हुई हा।

अनुमेय∽वि [सं०] अनुमान करने बोध्व।

अनुसीव-प्र• [र्स०] सद्दानुमृतिकम्य प्रसुवताः समर्थन्,

स्वीकृति । भनुमोदङ-वि० (तं०) भनुमोदन समर्थन करनेवाङा । मलुमोदम∽प (सं] प्रसन्न करना वा होना समर्थनः

स्थोक्टि । भसुमोदित-वि॰ (सं॰) समर्वितः श्लोकतः प्रसव किया

हुआ । सनुपाता(त)-५० [६०] अनुपुरव क्रानंबाहा, पीछे

पक्रनेवाकाः, क्युवादी । मनुपानिक−पु [सं०] धनुवानी; धनुनर ।

शनुपान-पु॰ [धं] पौढे दशना ।

भसुयायी(यिन)-वि॰ [छ॰] योडे चडनेवाहा अन-गामी किसी मत वा नेदाका भनुसरण करनेवालाः समान सरह । पुरु पीछे असनेबाकाः अनुपर । खिः। अनवा विनी' ।]

अनुभुक्त∽वि [सं] जिससे पृष्ठताछ को गयी हो। परी-

ঝিতা সিহিত।

भनुयोत्ता(क)~पु० (सं०) प्रशास करनेवाका परीक्षकः मानाएक । [सी 'अनुवोदत्री' ।]

भनुयोग-पु॰ [मं] प्रश्ना विद्यासा पुछशाछ। अमुयोज्य-वि (सं०) जिसमें प्रश्न किया जा सके। जिससे

बीट-फरकारके साथ पृष्ठवाध्य की था सके। प्र सेक्क. मापान्धरी पेश्वः।

मपुर्तमक−पु [सं•] प्रसन्न, संग्रह करनेवाका । श्रि 'भन्र(क्रिका'।]

ममुर्वान-पु॰ (सं) प्रसुध करना मंतुष्ट करना । मसुरंकित-वि [सं•] प्रसन्त, मंतुरः।

मनुरत्तः-वि॰ (तं] मनुराग-तुकः, प्रेमी आसकः वका-पारः मसत्र, सतुष्टः काकः। —प्रकृतिः—वि (वह राजा) विस्त्रो प्रभा वसमें बनुरक्त हो।

सनुरक्ति-नी [सं] मेम आएकिः मकि।

अनुरणन-पु॰ [मं] पंटा, मुपुर आरिकी मतिकानि, गूँव

म्बंबना । अमुरत−वि० [सं०] अमुरकः।

अनुरति-सी [सं] अनुराग।

अनरम्या - सी० सि ी सहक्षेत्र वमस्की राह, पररी । **धनुरम-पु॰ [मं] गीणरमु (सा॰); गीण ग्वादा**

मतिप्यनि । असुरसिस-पु [सं०] प्रक्रियनि । वि प्रक्रियनित ।

अनुरहस-वि० [मं] यकात । अनुराग-पु० [मे०] प्रेम, बास्त्रितः मक्तिः हारु रंग ।

बि॰ काल रेगा हुआ। अनुरायनार-स॰ कि॰ प्रेम करना । अ॰ कि॰ जनुराग-

शक्त होनाः प्रेममें मग्न होया ।

बनरागी(यिन)-वि (सं) प्रेमी, बामसः, मसः। भनुराज्ञ--भ• (सं॰) हर राठः रावमें ।

अनुराध-वि [एं॰] दित, यकार करनेवाकाः अनुरावा मखत्रमें उत्पन्न । ♦ पु विनती, अनुरोध ।

सनुराधना*~स कि॰ दिनता करना। अनुराधपुर~प (र्च०) संधानी प्राची राजवानी ।

अनुराधा−खी (सं•) एक नक्षत्र ।

भनुरहा−सी॰ [सं॰] एक यास । अनुस्प−वि (सं॰) समान क्षत्राका, सरहा पोप्प

उक्दक । भनुरूपक−पु॰ [सं] प्रतिमृति ।

सनुक्यमा = स कि सम्य बनाता। मनुकासिङि⊸ची [र्ष] प्रवें भई-वंधुमी वादिको

साम वाम साविके हारा प्रकार करना (की)। मनुरेवती −स्री [सं] यक पौका।

अमुरोदन-५ (सं) समस्यना प्रश्नाद ।

अनुरोध-पु [र्ष] अनुसरपा किराबः विचार पार्थनाः बिनव' मामहः वावा स्कावट ।

समुरोबक-दि० (सं] दे 'अन्तरीवी'। भनुरोधी(चिन्) - वि [धं] बनुष्ठरण करनेशकाः अपेक्षा

रयनेगका । अनुस्नान−वि [सं] संस्पन।

भनुसाप−९० [र्ष] पुनश्चित प्रमानिकराकर वार-वार यह ही शत करमा।

अनुकास, अनुसास्य-पु॰ [सं॰] मीर ।

अञ्चलेप-पु॰ [र्स] सर्गनित केप स्वटन आविः ऐसी बरतुओंका हेप वा गाविश्व ।

अनुहरेपक−वि [र्थ] कंदन पनटन भादि अगानेवासा ।

[सी 'नगुडे(फा'।] अनुक्रोपम~पु [सं] दे 'अनुहेप' : [मि 'अनुक्रिप्त' ।]

अमुक्कपी(पिस्)−ि [सं] दे 'अनुकेप्द'।

अनुक्रोम-वि [मं] कपरते नौजेकी और आनेवासा वधात्रमः अनिकीम । पु संगीतमें स्वरॉका बधार अवरीह । च – सन्मा(श्मन्) –वि अमुकीम विवाहसे परभ्य । -विवाह-पु० उथा वर्षके पुरुषका अपनेमे श्रीन वर्णकी

स्त्रीमे भिनाद् । मञ्चोसन-पु॰[त॰] महादिको निवत सार्गते बाहर निका-

कनेका उपाय करना, उन्हें पथा पिषठाकर मीचे काना।

भनुकोमा~खी• [पं] पविसे श्रीन वर्णश्चे स्ता !-सिद्धि-स्त्री पीरी, जामपरी और सेशायतिबीको बान और मेद है शारा भएन मनुकृष क्ताना (की) ।

समुबंधा-पु० (छ०) बंदान्यः बंदान्यः। भनुवन्धा(क)-पु॰[स] पाछे शेवनेनावा,उत्तर वेतेनावा अनुवर्षम~ने [मं] दुवरानाः पाठः प्रिश्वणः भाषकः

शक्षाव । अनुवध्यर-पुर्वार्ध] क्योतिबोक्त पौंच बरोद्धे शुगका चौधा न्पं∣ल इरसाक्र∤

भगुभतम-५ [तं] भनुसरण, बनगमनः आधापसनः परिणामः शहर करना ।

अनुवर्ती(तिम्)--वि [सं] अनुसरम दरनेवाला अनु-याबी: मादाकारी; समामः उप्दुष्धः [सी॰ ¹बनुवर्तिनीः 1] सनुबंश-वि [सं•] नाद्यकारीः वृक्षरेक्षी श्वक्षरे बनुसार

पश्चनेपाका । पु॰ भाषाकारिका । मनुबस्तित −ि [७] वसाम्ब्यारितः वादयः, श्रेष्यः। मनुबह्-पु॰ [मं] कशिको सात विद्वार्थीमेंसे यह। अनुवाक-पु [स्॰] दुइरानाः अध्यावः वेदीया उपनिमाग। अनुवाचन-पु [रं•] अध्वर्षेडे अदेदानुसार दोवा दारा ऋग्यरके मंत्रीका पाठ। पाठ करना वा कराना । भागवाद-पु॰ [सं] फिरसे कहनाः व्यास्था था समर्थन

क्यमें प्रनक्षित्र समर्थनः अपदान्तः जनस्तिः निप्रापनः मापगका भारंभ; ब्रुवा मार्शवर ।

भग्नवादक-प्र• (र्थ•) अनुवाद करनेवाकाः भावांतरकार । वि॰ दै 'अनुवादी' ।

समुदावित-वि [t] सनुवाद किया हुआ; आवांतरित। ममुदादी(दिन्)-वि (रं•) व्याक्वाके शाव प्रदरावे-कामाः समर्थन करनेकाः। सरकः। ५० संगतिर्धे स्वरका

यक मेद्र। अनुकाच-वि [सं०] अनुकार करने योग्य । अनुवास, अनुवासन-पु [सं•] भूगादि सुगंधित हम्बंसि सुर्गवित बरनाः वस्रानाः रनेववश्चि-तेतः वणवीन्त्रं यनिमा।

एसक्रे किया I कनुषासित्−ि [मं] वसावा हुआ। वस्तिहिवा हारा

विभिरेषत् । भनुबासी(सिन्)-वि (एं) वसनेवाकाः पद्मेसमें

रहमेवाका ।

भनुवित्ति-सी [#*] प्राप्ति : [वि अनुवित्ते :] अमुबिब-नि [धं] दिया हुमा, टिबिका मिनिक, चेंबुका बहा हुआ (जैसे रक्)।

भनुविधान-पु [सं•] आरेशपालन, आधाकारिया । अमुबन्त-ति [र्थ] अनुसूरण वा आदापालनं क्रसीवास्ताः भविभिष्टकः सीकानुगतः जिल्ली अमुद्रति की गयी हो । अनुवृत्ति~सी॰ [तं] अनुसर्गा स्वीवृत्तिः बाधायानमाः मान्तिः भनुकरमः शलकार्भ रतः वरनेके किए पूर्ववर्ताः

बारमका कुछ श्रंद्ध केना । भनुवेष-पु [4] रिश्मा, स्रास करमाः मित्रग । अनुमेहित-पु• [र्न] पट्टी शॉपनाः यात्रपर शॉपनकी **य**क तरदक्षी बड़ी ।

अनुषेश अनुषेशन-९० (लं॰) अनुशरण, पाँछे प्रश्च

करनाः वहे मार्वे पहले छोटे मार्द्धा विदाह । अनुबेदय-विश् [सं] वयक्दे घरमे रहनेवाला । अनुस्वातवास-वु (१०) सत्रादिका अर्बश्रद्धाप्ट माः स्मानः किसी माद्यास्मा वह माग् विसमें दक्षित हमारिहे म्बास्या हो ।

जनुष्याच⊸५ [सं] दे॰ 'जनुरेप' । **बनुष्पाहरकः अनुष्पाहार~९** [तं•] पुनरक्ति शार ! अमुद्याबन, अमुबान्या—को [तं•] वरसे बादे मा तिरा होतं हुए ज़िए बन या मेहमानके साथ हुत्र इर जाना। अनुवत-वि॰ (र्छ०) निर्धारित क्रांग्यका समुक्ति रक्षे पाकन करनेवाका । पुरु वह शरहका जैन साप ।

अनुसारिक−५ [सं•] सीने व्यक्ति हिपादिरीका वास्का अनुसप-प [स॰]कार्यनारसे भ्रष्टम क्रिया हुना बस्सदा। बनुध्य−पु [सं] परवानाः दुःग्रः शति हैनः उपन केर मासकित योग हुए क्योंका समझेर (१०) रान-संबंधी विवादींका निर्णय ।

जनस्थान-पि [सं] पशाचाप करनेवाका । अञ्चलकाना−शौ [सं•] वह पर्योका माविका मी प्रैरके मिन्द-रथानके नष्ट हो बानेसे हु खित हो।

अनुसायी-ची॰ [धं] पैरका एक रोगा मरहक मारिये निश्चनेवाका पीडा । अनुरायी(यिन्)-वि [सं] पश्चाचाव क्रुरनेवाका रैर वा देव रगनेशकाः अर्म-प्रक्रमा भोका (जान)। शतक प्रभाग संबंधी विवाहींका तिर्णव करनेवाला । अमुद्दास्तक−पु॰ [मं] अमुद्धासन करनेवा¥३ द्वासद

খিবছ । अनुशासन−पु॰ (र्थ•) अहेशा शिक्षा (विशी विवक्ता) निरूपक्षः निवत्रम् या श्रास्त्रनः बंटः निवस-वार्थनः । "वरि वि नायकारी । --पर्य-पु महानारतका स्व की

अनुपासित−दि॰ (ते॰) जिसका बनुधासन किंवा में को। मारिए। वंश्वि ।

अनुगासी(सिम्) अनुसास्ता(स्प)-प [सं] रेप भन्दासङ् ।

बयुक्तिष्ट-नि [र्ग] बमुद्रासिद । अनु रिष्टि−मी [में] शिक्षा **मा**रेश शासन [‡] अञ्चरीयन-पु [१०] भवत तथा गंगीर बामाना विक भित अध्ययन । अनुदारेस्टिय-नि॰ [र्ग] किएका बलग्रीयम विरा^{त्स}

हो। अधीत । अनुस्तोक, अनुसाचन-पु [सं•] क्रतानाः दुःस हरमा। अमुत्रोचक अनुमोर्चा(चिन्)-नि॰ [तं॰] कराता

ध्यनेशकाः संश्वनहः।

मनुभव-५० [मं] नेशिक पर्वरत ।

अनुवृत-पि॰ [मे] परंपरामे माप्त (प्रान नारि) ! अनुभृति-नौ [र्न•] श्रृति-वरंपरानेप्राप्त कवा धान द०। अमुर्चरा-पु [ग्॰] संबंध अनाया विमया अर्थपृतिके विष विसी वश्तुकी प्राप्तिक पर्या वा प्राप्तारिको मार्गि क्रणाः अवस्थानी परिचामः एक ग्रन्दा सम्ब ^{श्रामक} शाय वा कारण और कार्नका संरंध- बास्ट रच्या। बानव और नियमनमें सर्वेमान शारिके हारा मंत्रकारन

ų. (FRT+) ! अनुपंगिक-वि॰ [सं॰] संबद्ध प्रसंगत माप्त अनिवार्य प्रसरस्य । अनुपंगी(गिन्)-नि॰ [तं] संबद्धः अभिवार्य परिवास के कपमें आनेवालाः सामान्य क्ष्पंते प्रयुक्त बीनेवालाः भासकः अनुरक्तः। धमुपकः – वि [मु] संबदः संतरन । अमुपेक, अनुवेचन-पु॰ -[सं] फिरस सीचनाः वरावर स्रोंचना या क्रिक्स्ता । [वि॰ सनुविक्त'] । अनुरुप्प(भू)-स्रो [सं] १२ अक्षरीका एक मसिक छेद वाणीः सरस्वती । क्त्मरातच्य-वि० [सं॰] वे॰ 'बन्धेय'। भ्रमुद्वाता(म्)-वि , पुण [सं] अमुप्राम करनेवाका कार्य मारंम करनेवाका । बसुपान - पु [सं०] करनाः आरंग करनाः कोर्र पार्मिक कृत्या फल-विद्येपके निए किसी देवनाका जाराधन । --क्रम-प् वामिक कृत्वोके करनका कम । -- सारीर--पु॰ सुद्दम और स्वृत्त छरीरक नीचकी देव (सी)। ─स्मारक─वि प्र वासिक कृतवीका स्मरण करानेपाला। भनुद्यापन-प [सं] कार्य कराना (मे) ! अमुद्धावी(विन्)-दि [म] कार्र करनेवाका । अमुद्धित-वि [स] विभिष्वंक किया हुमाः माचरित । शस्त्रीय-वि [मं] शतुष्ठानके बीव्कः करणीय । अनुष्या−वि [सं] की गरम न हो उंदा; सुस्त, आलसी। प्रामीक क्यात । ⊸ग्रा–पु० चंद्रमा । −विविध-स्ती वीक दुवी 1 भनुष्यक्र−विसि]दै बनुष्य'। सनुष्यंद-प्र• [तं•] पी**टे**का पहिया । अनुसंधान⊸प [सं] अन्येषण, स्रोज, जॉन-पहतासः प्रवद्या बीबना आयोजमः व्यवस्तितं करना । **अनुसंधाननाः –**स कि **इं**डनाः विचारना । अससंघानी(निन्) अनुसंघायी(विन्)-नि <u>इसक् ।</u>

कपुरसामार्गितम् । कहना। त्यारागाः कपुरसामार्गितम् । कपुरसामार्गितम्)-वि [लं] क्षंत्रम् परदादः वा खीत्र करनेवाका। वीत्रमा वनानेमें कुछ्कः। कपुरसिय-चौः [लं] ग्राप्त नेवना ग्राप्त योजना। कपुरसिय-वि [लं] शास करने वीत्रमा। कपुरसिय-वि [लं] शिक्तके खीत्रमा वा बौक्-पवत्रक क्षंत्रमा (विश्वकि) नामार्गित वा बौक्-पवत्रक क्षंत्रमा विश्वकि नामार्गित वा बौक्-पवत्रक। कपुरसामापन-पु [लंक] निविध्य व्यक्ते कर्षे लेका करना। कपुरसामापन-पु दे कपुरसाना।

शतुसरण-पु [सं] भीते वहनाः शतुकरणः शतुक्रः भावरणः प्रमाः अन्यातः । अतुसरमाश-स तिः शतुसरम करना अनुकरण करना विद्योदे पतुक्त कार्य करमा । अपुसर्य-पु [सं] सर्व स्टब्स् ग्राणीः सरीस्य ।

ममुसर−वि• [सं] मनुसरण करनेवाला अनुवर इस

राषी साधीः • है 'अनुसार'।

नशुसप−द्र [सं] संव स्टब्स् प्राणीः सरीस्य । नदुसाम−दि [सं] संवद्य क्षिया द्वारा चनुन्छ । नदुसार−द्र [स्] नदुसरनः प्रवाः प्रकृति वा प्राकृतिक

अवस्था पक्षनः परिणाम । वि॰ अनुकृतः अनुस्त्रः, मुताबिक । अमुसारक—वि॰ [नं∘] अनुसरण करनवाकाः योज वस्ते

क्षमुसारक−ाव० [ग०] अनुसरण करनवाका; सात्र करन बाह्य अनुस्प । अनुसारणा—सो० [सं•] अनुसरण करना , पीछा करना ।

अनुसारमाश्र-सः क्रिः अनुसरण करना, कोई काम बरना; शारंस करना प्रकाना; मेबना, पठाना । अनुसारी(रिम्) – विः गिः) देः अनुसारा, १

अर्जुसार्यक-पु॰ [तं] सुगंतित परार्थ-न्त्रेग अगुरु आदि । अनुसारत-पु परं, गैदा । अनुसारत-पु॰ दे॰ 'अनुसारत' । अनुसार-दि [तंश] अनुसारा दिवा हुमा सापरितो अनुसार-पो (तं) अगुसारा पुरुष्टा यो । अनुसार-पो (तंश] कि कुमासार प्रचार कारिक्वाव

जनुव्यक्ति — जो [व] अगुस्यण कुक्या को । अनुव्यक्ति — जो [चं०] कमानुद्धार रचना; दाविरववाव औरत । अनुव्यक्ति(विन्) — वि [खं] आवरत करनेवाल; आतो । अनुव्यक्ति — जो [चं] आक्स्प्रस्त आवरण; गावा वह गाव विद्या अधि-चंकारके अवस्पर विकास निया आयः अनुव्यक्ति — वि [चं] आस्प्रस्त साम क्रा करना । अनुव्यक्ति — वि [चं] विष्ठित या स्वर से विस्त । और विषयोका त्याय कर एक विषवका विद्या वा सरम । अनुव्यक्ति — वि [चं] प्रवित्व पिरोवा हुआः क्रिका कुमा

धंक्द्रों स्वतुस्थान—पु॰ [थं] प्रतिष्यति गृँदः । स्वतुस्थान—पु॰ [थं] सरके बार दोसा सामेशाचा इतंत्र स्वतुमाधिक वर्ग विकात विद्या यह दें (), शतुस्थार युक्त विद्या । समुद्राय—पु॰ [थं∘] समुक्तरण, नकत करना; सारस्य । श्रमुद्दरण-पेन स्वतुस्थण करता हुसा। सनुदरम उपयुक्ता

अनुहरिया॰—को आहति पंदरा। वि तुस्य छरण । अनुहार—को नेत्र प्रकार कारति । प्र [सं] बनुकरण समावा। वि तुस्य समात । अनुहारक—कि [सं] अनुहरण करतनामा नक्र वा सरम् कार्य करनेवामा ।

अमृहरमा॰-स मि अनुसरण करना नवल करना।

सरस्य कार्य करनेवास्ता। अनुहारनाश—सः कि समता करना प्रयमा देना। अनुहारिश—वि अनुसार समान योग्या, प्रयनुका। औ

मुसाङ्गि चैदराः वैद्यः। बमुद्दारी(रिम्)-वि [सं] अनुदारकः। अमुद्दार्थं-वि [मः] अनुदरम करने घोत्यः। अमुद्दोदं-वि [सं] वैद्यारो (१) १

कानुकार -- स कमातार निरंतर । समुक-पु० [सं] मेक्संड रीतः मेक्सक्के बीचको कर-वेत्रीका पिछला दिस्साः यश-सर्वेत्री एक पाता पूर्व जनसः

र्वद्याः स्वमानः वद्यस्यमानः । अनुकाशा—पु [मं] प्रकाशकी परुकः इवाकाः उदाहरमः । अनुका—वि [सं] हृदराया हृमाः अनुषठितः।

अनुक्ति-अनैश्वर्य अमृत्ति-ती॰ [र्स॰] दुहराना, शतुपाठा व्याहवा: वेदा-प्यवत । अनुधान-वि•[सं•] विद्रान्: रनातक, वेद-वेदांगीर्ने पारंगतः विनत्र समीत। भनुषराम्—दि भनुकानसः, शैकाः। भन्ता-नि० भवभूत, भनेत्याः संदर् । मनुद्ध-विक [संव] शविवाहितः अवहित । भन्दा-तो [र्थ॰] मनिनादिता सो । -गमन-पु॰ अवि वाहिता सीस संबंध रखना । —आता(मू)-पु॰ जनिवा-दिता सोका सार्व राजाको उपपक्षका मार्व। अनुक्तर*~वि० निरुक्तरः मीन । अनुवस-प सिंशी बसामावः समा अवर्षयः। अमृद्यो-पु॰ (र्ए॰) मानीम काक्को एक मकारको लाव (बह ४८ हाव लंबी) २४ हाव जीवी और २४ हाव खेंबी होती थी)। समदित-दि [र्म•] पैछे स्वाह्ना उक्या दिवाहुआ मार्चातरित । मनच-वि॰ [सं॰] पीछे को बागे बोग्बः अनुवाद करने बोस्द । सन्म-वि [मं∗] अभिन्तः अन्यनः भो दीन वा परिवास हो। संपर्ण समग्रा विसे पूरा मिलार हो। अस्तर -- वि अपमारक्षित, वेजोड: स्रति क्षतर: [मं] जकके पासका वा करकी अधिकताबाका वलक्कबाका । पुरु शक्तमान रशास वा देश: दक्तमा: ताकार: (नदी शादिका) किनाराः मदकः तीवरको जानिका यक पक्षाः भसाः हाथी । ─मास−९ नदीवदपर दशा गाँव । अमरु-वि• मि०] जिसे जंबान हो । व• सर्वेका सार्वि सम्मः सर्वोद्ध । ⊸सारवि⊸पः नर्व । अनुर्जित−वि [सं•] वण्डीन शहकः निरहंकार । अनुवर्ष-वि [सं]कैंदानहीं नीया। अन्मि-वि [सं॰] कहरीका बही, नतर्गितः अनिवि करमीत । अनुपर−वि सिं∘ी रेडवालाः क्लिमें रेड न दी। जन्द्र-वि सि] समझमें न आजवाका अवनका विवार शीम, कापरवाद । सनुह्न--वि॰ [सुं॰] जी ऋजू--शोधा--म दी, कृटिन देशाः बटः वे देमान । भनूप-वि [तं]च्यारीन व्यवतुक्तः≀ अनुसी(जिन)-वि॰ मि॰) दे॰ 'अनुष 1 सन्त⊸तु [सं•] अमुम्य सूद्धा रीती । वि≉ श्रुटा (द्वारू बारुप) + कान्त्रभा उक्तरा । - भाषायाः - भावत-प सर बोलमा ।-बादी(दिन्)-वि शुरु । -धत-वि अपने रचन वा प्रतिद्वाद्वा पाठन न करतेवाला । भनुतक सनुतो(तिम्)-वि [शं॰] शुरु वील-वाला। अनुनु—स्ती [मं] बनुप्तुक्त समय असमय । ⊶क्रम्या— स्ती वह प्रस्था जी शभी रजश्यकान द्वर्ग हो ! − प्राप्त सम्य-५ वह मेमा जिसके अमुक्त बहुत म पहती हो। भन्तरांस-दि 🗗] जो निर्दय या कडीर भ की न्यून । समें अ॰-बि॰ बुरा; कुशिल । अनेक-विनिोधको अधिक कांबद्रवा - कास⊸ी

वि वहतसी इव्हाओंवाला । --कासावधि-व दिर कासरो । —कृत्—प्र धिव । —बर्—रि॰ शृंड स्तुकर रव्नेवाका, समूदर्भे रवर्नेवाका । - चित्त-वि विसय मन जंबक हो । --क-वि+ विस्का को बार कम हो। पु॰ वक्षी १० । ∼प∼पु हाथी। −मार्प−वि विक्र कर्व जिलाँ थीं। --मुक्त-नि॰ कर्व दिशामीमें वानेराता। --स्त्प-वि॰ कर्र स्पीनाकाः शरिका परिशानग्रेक । पुर गरमेश्वर । -कोचन-प्रश्रीवा (हा विराद प्रस्त । -वचन-प्र वहुमबन । -वर्ण-प्र• सपाव खडियाँ (वीजगणित)। -विधा-वि० कर्र प्रकारका। -सक्-वि फटे सुरीनाका । --शस्त्र--विश् पर्वाववानी।--साधारधा-वि वहतीमें पाना जानेवाका-सामान्व (पुरू)। अनेकता –सा अनेकस्थ−प (तं०] एक्ट्रो श्राप्त होतेस मान, विशिषता, बहुत्व । अनकद्र−क [मं] कई सनह∤ श्रमेक्या~त्र [मं] का तरहसे। जनेकात-वि॰ [म] अनिश्चित वर्कनेराला। -वार्-प्र जीनवींका स्वाहार । -वाही(दिन्)-पुर अनेतीन बाद मामनेवाला । अनेकाकार-वि॰ [सं॰] स्टुत्तते लाकारी आकृतिवासमा। अनेकाकी (किम्)-वि [tio] की अवेका गृशी तिमके साथ कर हो । मनेकाक्षर−वि [मं]कई अक्षरीवासा । मनेकाल−वि[म]कई कामीमें छना हुआ। श्रानेका प्−िव [म॰] जिसाँ पक् चिक स्वर हो। भनकार्यक−वि[म] जिल्लाकां सर्वहों। भनेकास्-वि [र्गः] क्रिएमें एक्से सचिक स्थार हो। अनेकामय अनेकाशित्र-वि [तुं∗] एक्ट्रे श्रवित्र रहनवाका पकाधिकवर अवसंवित । शनग≉≕वि है 'आलेखा अमेड-वि [मं] मुर्गः निकम्या रहरावः देवा-'विका मारम श्रुपम हे तेरा चकत शतेह -छाडी ! -मूक-पि गुगा-पहरा। भंचा। दुषः छठो । अनेसा! - पु मानती कता। अमेरा - वि॰ स्वचार विवरमेवाचा मिर्दुका ने-रीजनीस वहा प्रकार व्यर्थः शिक्षम्या । सर्व स्वर्थ हो । अमेरा*-वि वनिश्व अपित तुरा।पु+ वदिया निर्दा भनेइ-पु धेंद्दा अभाव नगीति । वि सेद-एदिन । अमेहा(इस्)-पु [मं] काल समय। भन्•−प है शतव'। अभैकति-वि [सं] दे 'अवेदान । अनेकोतिक-वि [में] दे 'अनेकोन । पु॰ वड देता' मास-व्यक्तिभारी क्षेत्र । अनकां प-पु= [मं] वाकनवाना अस्वर प्रपृद्धि। अर्थनय-पु [रा॰] एकलाका अमान भा प्रकरा। ग्रुत्स **फ्रट मतमेश अध्यक्षा ।** अमेतिक-वि [मं] मीतिविरय, अविदेश जनपुण−पु [नं] निपणतासः भ्रमान चनग्रनगः। अनियर्ग-पु [तुं॰] ऐश्वरं प्रभुता, प्राप्ति शत्रावधीया अस्तरप १

धनैतः = पु अनिष्ट, दुराई; श्रेन्द्वा विश्व दुरा । धनैतमा = अश्व कि स्टब्सा, व्यवत्य दोमा । धनैता = विश्व कित्ता दुरा !- "तदनिमरी यद महर्यत जनेती धनेरिह नात विद्यापे — यु । धनैसे- स्व दुरे सावते ।

सतैद्व(*-पु उत्पातः मधकता । अमोकदाायी(यिन्)-पु [र्थः॰] धरमें म सीनेवाका

अनाकशाया((वन्)-पु श्लिष्) बरम ॥ सानवाय मिस्रुद्धः।

श्रमोक्कर्~वि० [सं०] वरका परिस्तान श करनेवाका। पु•वृत्र। श्रमोक्का-वि० अनृता, अर्भुता अपूर्व। नया सुंदर।∽पन

—पु विकश्चनता स्वरता सवापन । सनोदन—वि• [सं] मिरादार (बैसे नतमें) ।

सनोदन-वि॰ [सं] निरादार (वैसे नतने) अनोसर०-पुठाहुरवीको ध्रयन कराना ।

अनुस्तर•−पुठाकुरवाकाध्ययन कराया। असोचिष्य−पु[सं•] भौचिरयका समाय वा उचटा;

सनुवित या नामुनासिव दोना। सनीकस्य−ए [सं] छक्ति, वकका समाव।

अमीटकच्यु दे भनवर ।

समीद्धार-पु [मं] उच्चुश्वकता या दर्पका समापः विन-त्रता हांतिः (नदोके पागीका) कैंना न होता ।

समीधिक−व द्याप्त विना देर किने ! समीपस्य-वि [मं] सदितीय वंबोध!

कानीरस्य-वि [स॰] जो औरस-विवादिता प्रकासे छरस्य समीरस्य-वि [स॰] जो औरस-विवादिता प्रकासे छरस्य

न दा जनेप का गीय किया हुआ (पुत्र)। सम्म-उप [सं] अ (नज)का त्वराति खन्योंके पहले

कगतवाका क्य (दे 'का')।

भवा≐−वि सन्य वृत्तरा। पु[र्ख] खारेकी भोज, भोज्य पदार्व एका अन्नः भागः अनाव धान्नः अकः। पृथ्वीः ध्र्वः विष्यु । -काक-पु भीजमका समयः बारीम्ब-साम करते हुए रोगीकी पत्न वेनेका समय। −किह−पुदे अक्तमस**ं −कृ**ट−पुगात्रका मिद्वाचादिका पहार था बेटा कार्किन्छहा मितपदाकी द्दोनेवाका एक उरसव । —कोष्ठक−मुकीठिका, वदाराः गोकाः पका ग्राच पदार्व रसनेक्षः शाकमारी । त्यांचिन की अदिसार। -शसि-सी अक्रमणाकी।-अस्र-प्र दानापानी भाद-दानाः स्वातविशेषमे रहनका संयोग। ─दां —खो दुर्गा अधपूर्णा = वासा(तृ) —वि अख दैनेवाकाः प्रतिपासम् कन्तन्त्राका । पुरु साविकीके विषय धेवक्∐ कारा प्रमुक्त सरीवन । −शृश्स−वि॰ गोजनमात्र **स्टार काम करनेवाका (मीहर)** नदीच-धु वृत्तित अल धानेमे होनेवाला रीग १० निविद्ध कत खाने वा झहाधा **नधके** प्रतिप्रवसे बोसेवाला पाय । **− हवानूक** – पु० वस्त्रे इनेषा रइनेवाका दर्दा — ह्रोच-पु मोजनकी व्यक्षीय मृ्खभ रूपनाः −पति−पु वक्कास्थासी सूर्या अधि फिन।—पाक-पु अधिपर वा पेटमें साथ पदाशका वक्ता। -पूर्यो -स्रो अक्की व्यविष्ठाची देवी, दुर्गाका एक रूप ।—वूर्णेश्वरी—सो॰ शक्षपूर्णाः संत्रोक्त एक मेरवी । -प्रस्य-पु मृत्युके बाद शरीरका अब बा भूक कपमें परिवत होसा। ~प्राप्तन-पु॰ वधेवी पहकी बाद अब विकानेकी रत्म या संस्कार, चटावन । ⊷तुरुप्ताहु−िन

स्त्र सानेका बच्चुक । न्यस्त्र-पु० सिद्धौ, विद्यां यद । -चाह्यै स्रोत्तर्(स्)-पु० अध-मिस्ता । - विद्यार-पु० श्वतक कर्षतर-रस, रफ, मांग जारि । - स्वर्षत्वहार-पु साम्पामर्थपंगे शिवम वा प्रवा । - तोप-पु० चुठन, मृसी-चोलर बादि । - सरस्वार-पु० वेचारिके क्रिय अवता । विस्ता । - साम-पु० वह संभान वहाँ सापु-मकोरों, गरीवें-बचाहियोंकी जीवन दिया बाता है । सु० - तास्त्र बद्धान् रहमेवा संगोग वा सहारा म होता । क्षात्रम्य-पि० (सं] बचारे वना अच्छे मरा। -क्कोरा(प)

—पुण्वेद्दिने माने हुप याँच की होनेंसे पहरू स्पृष्ठ सरीर । सद्भा-कीण्यास माता ।

अञ्चादम्छ−पु० (सं] दें+ अनाकाल¹। __ सम्बाद−दि०[सं] अञ्च सानेवाला' अम्म्री भूसवाला । पु

विष्णु ।

आस्य — वि [संग्] दुस्ता, गैर; मिश्र क्साक्षारमा कृतिरेख क्षित्र महा । क्राइक् — वी अक्रमत की । क्रिक् — वि स्टिक् वि क्षा । मा — गामी(सिन्) — वि क्षा निव क्षा । मा निव मिल कि स्टिक् । क्षा मा निव क्षा । क्षा वि । क्षा वि

कीवण ! —विष्विचित्त—वि दूसरेक द्वारा पाला गया !
—वार्ष्ण —वार्ष्णक —पु० वपने वर्मका त्या त्या करतेवाका कारका !—संकृति —वि विष्यं कम्मवाकी)से संबंध कर किया है !—संस्थान —पु० अवैव संबंध !—संस्थानक्षम — पु पहले कमारो गाँव पुस्तवप क्षक मात्रको मात्र त्या पुरुष्ण पुरुष !—संस्थानक्षम — व्यापका पुरुष्ण पुरुष !—संस्थानक्षम — व्यापका पुरुष्ण पुरुष !—संस्थानक्षम व्यापका पुरुष्ण पुरुष !—संस्थानक्षम व्यापका पुरुष्ण पुरुष !—संस्थानक्षम व्यापका व्

दसकर बुद्धित थे। -साधारण-वि का (बात ग्रुण) बहुतीमें पासा बात। !-श्रम्यख-न [मं] और भी। इसके दिना। अन्यका(तम्)-श्रः [सं] पूंगरेम: दूसरे स्वानसः दूसरा

धा ब्रह्में कोर करवन। कार्यतास्त्य-पु० [सं श्रमु, मितप्दी। कार्यतास्त्य-पु० [सं] कहतीमें एक, पुरा, सिक्षः। कार्यतास-वि० [सं] वीमेरी एक, पुरा, सिक्षः। कार्यतास-वि० [सं] कार्या च पुनः, सकाना। श्रन्यश्र~भ [सं•] इसरो वगह, और कहाँ। धरमस्य - प० सि०] परायापन । - आसला--को जीजा-रमानी ऋधैरसे मित्र मानना (जै॰)।

धान्यया-वि (सं•) एकरा, विरुद्धा शह । अ॰ नहीं हो । -- अनुपपश्चि-का॰स्क नरहके अभावमें दस्रीके अस्तित को असमानना ।-भाव-पु॰ निच क्यमें होना !-बाही (बिम्)-वि विमा भूगी या महस्क दिये शास के

कानेगला (की)। ~सिकि~की० स्याय≪वंधी कक बीव असंबद्ध कारच द्वारा सिक्षि:।

अन्यदा⊶व० [सं] दूसरे समवा एक समया बदानादा।

अन्यदीय-विश् [सं०] दूसरेका, अम्बका । अन्यहिं-स० सि 1 किसी और समय।

अन्याद्या-वि [सं] कन्य मकारकाः परिवर्तिकः विधित्र । भन्यापवेश-५० सि । भन्योक्ति ।

सम्यापदेशिक-वि [सं] जो इसरेके बहाने अन्वोधिके रूपमें बढ़ा गया हो ।

शन्याच-पु [मं∗] स्वावविश्व कार्य, वेशंसाफी अनी-

वित्य प्रमान्धतावार । अन्याधी(यिम्)→नि [धं+] अन्वान करनेवाला । सम्पाद्य-वि [धं•] स्वस्थविकः क्रावितः।

श्रान्याराच-नदि॰ यो ज़रा न हो। शनिकः शनोखाः शीरः मनीवारः नहत् । सम्बाधैं नदि [सं•] मित्र शर्थ रखनेवाला ।

क्षम्याश्रितः-वि॰ [सं] दूसरेपर अवसंदितः। श्रम्यास+-ज॰ है 'जनानान ; अकरमाव-'मीको वस अपराथ कगावत हुना भई अन्यास²—सः 1

अस्यासाधारम-वि॰ [सं॰] असामान्त्रः असामान विभिन्न ।

क्षत्रसून-वि० (ई०) असरर अक्षित्र नद्वतः । सन्येदा (सुस्)-अ [र्स•] दूसरे विमः यक समय । अल्पेस्ट्य-वि॰ [सं] बूसर दिन वा अतिदिन दौनेवाका। पु॰ रीज दोनेवाका क्यर ।

शन्योका(कस्)-वि॰ [सं॰] वपने वर्शे नहीं, बूमरेके वरमें सामेवाका न

धान्योक्ति नदी [तं•] वेटी वक्ति की साथमंके कारम कृतित वस्तुके निर्दारिक नीर्रोपर भी परित हो तक। अध सोमोंसे हरे अर्थालकारका एक मेच मामा है।

कम्बोहर्य-दि [सं] महौरर नहां अन्यसे बरस्य। काम्पोल्प-अ [मं] परत्रहः एक दूसरेको या पर । विश दि० प्रारापरिक, भारतका । <u>भ</u> भर्नाकंकारका गढ़ मेर बहाँ को बस्तुपे परस्पर एक हो किया करें। बीरे हुमसे बह रमयी शोमिन होती है और कामे ग्रम । --भेद-प्र भागसन्त्र मेर धनुना । —विभाग-५० वैतृक संपत्तिका

आपसमें बैंटवारा । -पूचि-स्त्री बारस्परिक प्रमान । -- व्यक्तिकर -संभव-तुर् पारत्यरिक मेर्गंग (कारण और कार्यका) । अन्योन्यासाथ−५ [सं॰] जनावका एक मेर, किसी एक

पदार्थका भग्य बदार्थ न होता ।

अन्योग्याधाय-पु [मुं०] एकमा इसरेक्ट अवसंवित बीमा परस्य कार्य भारत संबद । वि० वस बुसरेसर आमित ।

सन्योज्यासयी(यिन), सन्योज्यासित-वि (de) sa

दूसरेपर अवस्थित । -अन्यक∽व० (तं०) दीछे नहर्मे। सनुकुरू कृपमें। अन्यक्ष-वि॰ सि॰ दश्य, प्रत्यक्षः अनुभवनमाः शहरः।

अ॰ पीछे, बादमें शामने, सीधे। बम्बय−५ (र्र•) अनुगमना र्रदंश संका वरप्राधानसर्हे

परीका परस्पर छवित सर्वकः बाह्मकः वेहाः निकासम्बद्धाः वनारवाम रखना। हेत और माञ्चका साहपर्व (मान्): कारण-कार्यका संबंध । -- स्मातिकेज-प - जिसम और क्र-बादा संगति और क्संगति । ~स्याप्रि~सो॰ विश्ववहरू **पा स्वीकारात्मक तर्थ ।**

भन्तपागत-वि [सं] बंदालगत । अञ्चयार्थं -- पुरु [सं] जन्मवसं निरुक्तेपका वर्ष । अन्ययी(चिन्)-वि [सं] अन्यवस्ताः संग्रः न्हरी

क्लका । धन्तर्थ −ि [सं∗] कर्वका जनुसरक करता हुआ, वसर्थ

रपष्ट कर्ववासा । मन्त्रचकिरण~पु (सं∗) क्रमपूर्वक पार्टी बेह स्विरका। अन्यवसर्गे−9 [मं] द्येशा करता: इच्छातसार **भर**सर

बरमे देवा। मन्बधसाबी(विम्)−वि+ [धं] संबंध रघनेतान्य भागितः भवसंभितः। जन्जवस्थित−वि० (सं] संबद्धः सायदः।

भन्नवाय-तु [संव] बातिः वंद्य, कुछ । अन्यवेद्धा-की [र्स] विचार: विदान, स्वान (विशे

व्यक्तिका) । बम्बप्टका−सो [सं] चीच मात्र और फास्समधे इन्ह **नवर्गा जब सारिवर्गीका मातृह शाक होता है।** सम्बादमान−५ [मं•] प्रवेदनाको स्वादनाः समार्थः

पर्थं । भन्याचय∽प्र [सं] सकत काम या विश्वके सार सेंप काम वा विवयको बोहना। इस मकारका काम वा विवय !

अन्याचित−विश्रास्त्री वीवा शास्त्र । अन्यादिष्ट∽वि॰ [तं•] एमाय्क्रवित, प्रदल्तो पीते मीयः प्रशनियक्षः ।

अम्बादेश-इ [७] क्या इर रात वा सन्दर्भे तिर करनाः एक कर्म हो जानेवर इसरे कार्यक्रे किए करना ! अञ्चापान-पु॰ (सं॰) श्रामादीत्रको शक्ति स्वापनी बाद बसुमें ईबन बासमर ।

करवाधि-सी [सं] जनानृतः वर्षकारी व्यक्तिके देनेचे किए किसी अन्य व्यक्तियों कीई वरत बना। प्रशासिक नगानि मानसिक व्यथा ।

सम्बाधेन, अन्ताधेनक∽५ [मं] स्थितके बाद स्पीधे वृतिहरू ना दिशुहरूसे मिरुनेदाना भन् । काष्याच्य-पुरु [मं] एक देवसर्गे ।

अन्याय-प् [गुं॰] गैनाके रिला एक श्रंपद्मा अपिदना ! सम्बारम∽पु॰ [रो॰] वह शामग्री जो वर् अपने पिछले

यरसे केंद्रर भागी 👯 । क्रमार्थम, क्रमार्थमण-पु [सं] प्रधापका रहर्र

(आरोशंद देंने आदिके निष्)।

का वितारीहण । मन्वाकसन, जन्वाकसन-पु॰ [सं॰] मृठ (१)। भन्नासम-पु॰ [सं॰] सेवा भारावमाः पीछे भासन प्रदण

कर्ताः प्रधाचापः स्नेह्यस्तिः कारस्तामाः, श्रिस्पगृहः । कम्बाहार्य, सम्बाहार्यक-पु॰ [सं॰] वयमें प्रतिवितको

दिया बानेगका भीवन था दक्षिणाः मासिक भागः । सम्बाहिक-दि [मं०] वैनिक । भन्याहित-प (सं•) दे 'अन्याभि'। वि अभिकारीको

दैनेके किय किसीके पास भगा किया प्रभा । सम्बत-दि [सं] युक्त, सदितः भरत (शोकान्वित)ः

शंकार: समामा क्ष्मा t श्चन्तितार्थं नपु [सं∗] पेसा धर्भ जो सन्त्रम करनेसे सहज

द्वी समझमें आ जादा दि ऐसा अर्थ रखनेदाका। सन्विति~स्त्री [सं] अनुगमनः आहार । श्रम्बर−वि॰ [सं॰] रन्कितः हुँदा हुना ।

जल्बीहरू - प्र[सं] बारीकीसे देखना खोज, अन्वेपणः मनन ।

भन्नीक्षा-जी० [सं] भनोक्षम ।

अस्वीत्र−वि [मं∘] दे 'अन्दित'। अम्बीप-वि [सं०] बकके समीपद्धाः प्राप्त ।

अन्वेप अन्वेपण,-पु॰, अन्वेपणा-लो॰ [सं॰] स्रोत करना, जॉब-पश्चास करना। अन्वेपक−वि० (सं०) अन्वेपन करतेवालाः श्रोधी ।

सम्बेपित-वि् [सं०] विस्का भ्रम्वेषण किया गया हो । भग्वेपी(पिन्), भन्बेद्वा(प्ट्)-वि [सं] नन्वेक्त। धम्बेष्टम, धम्बेष्म-वि सि] अन्वेषणके बीरव । मन्द्रशां लप्त नेप्रदीन व्यक्ति । वि अवा ।

सम्द्रवामाः – स॰ कि॰ नहकाना । भन्दानार-ज कि॰ नदाना।

वर्षक्रिक्र∽दि [सं] दिना क्रीधक्का' स्वाः निर्मत्त्र । व्यर्परा-वि जंगहोतः सँगहा-द्वकाः अञ्चलः।

अपंचीकृत्र−वि० [सं•] विस्ता पंचीतरण ग तुका ही (पंच मधामुर्वीका व्यमिश्र-मूहम क्य) ।

अपंडित-वि (सं•) मर्ख निरमर, कानकीन । भगगम्बदान-प (सं] (राज्यीकी शास्त्रको) पानीमें

डवाकर भारतेका दंद (की.) । अप-जय [सं] एक उपसर्ग को वैपरीस्थ, वैकारक प्रराई, भाभिक्य, निषेच दौनता वृषण विद्वति, विदीपता स्त्वादिकाचीत्रत करता है। छर्ग [क्षि॰] आपका संक्षिप्त

रूप (मीमिक श्रम्थों में): —काजी*—वि• स्वाधीः स्राद परव । – देसा÷ – वि धर्मही । – हती÷ – सी० स्वार्थ । --वशक--वि की दूसरेने नक्षमें न क्षेत्र स्वाधीम । —स्वार्थीं। —विस्द्रगरंज मत्त्रनी ।

भपकरण-पु [सं] दुर्भवदारः दुष्कर्म । भपकरमा-वि [मं] निर्वव निष्द्रर ।

भपकर्या(ग्)-वि [सं•] अपकार करनेवाका शामि था तुर्धरं करनेवाकाः शत्रभाव रखनेवाका ।

भपकर्म(न्)-त [सं] नुरा काम बुन्कर्मा भागपरिशोध।

अपकर्मा(मेंगू)-वि॰ [सं॰] बुष्कर्मी, प्रदाचारी।

अपकर्प-पु॰ [सं] मीचेकी और खींचना या साना। वावनति, गिरावः शैनताः ध्रवः अपमानः अपमधः । —सम—पु॰ बातिके बोनीस भेडोंमेंसे एक (म्या॰) ।

अधकर्षक-वि० [सं०] अपनर्स करमेवाका । अपकर्षण-५० (सं०) दे 'अपकर्ष' ।

अपकर्तक-प॰ सि॰ो स मिटनेवामा कर्मस ।

अवक्रकाच अवक्रवाय-वि० [सं] पापरवितः निष्करंक । अपकार-५० सि] अपकारका करूटा हराई। अहिए। शनिष्टपिताः सबसानः शतताः अपमानः अस्याचारः

शीच कर्म । भवकारक, अवकारी(रिम्)-वि० [सं] अफार करने

अपकारीचार÷-वि० अफ्डार करनेवाकाः विभारती ।

भवकिरण-त [सं] विश्वेरता, क्रितराना । अपकीरति•—का वे 'अपकीर्ति':

व्यपक्षीर्वे—स्रो॰ [सं] अपवद्य, क्दनामी । अपक्रत−वि [सं] विस्का सम्कार किमायया दी।

पुण् श्राति, द्वानि । वपकृति,−सी वपकृत्य−पु (सं]वपकार। अपक्रष्ट−वि (रं•) दशम द्रमाः नष्ट मिना द्रमाः

गिरावा बुकाः वरियाः सराव । पुरु कायः । - चेतुम-वि वरे विचारीवासा ।

अपकीशाठी-सी: [सं•] समाचार, ध्यना । अपक्ति∽की सिं∫कवापनः अवोर्ग।

अपक्रम - प॰ सि ो पोडे स्टनाः माननाः भागनेकी सीमाः व्यक्तीत होना (समयका) । वि कामरहित, जिसका कम ठीक न हो।

अपक्रमण, अपक्राम~पु॰ [सं] दे 'अफ्रम'। भपकसी(भिस्)-वि० [सं] जानेवाका, इटनेवाका; देशी से म बानेवाका।

अपक्रिया-की [र्थ] दानि, शक्षेत्र अदितः होहः हुम्प्रमेः कणवरिक्षीव । अपक्रोक्स−पु [सं] मिंदा करना, अपस्थदका प्रदोग

करना ।

अपन्य-वि सिं°ो न फा हुना, क्या; न फावा हुना; जनम्बरत ।

अपश्च-नि॰ [सं] विना एंश्वकाः निसन्ते सावी-समर्वक म वीं:शिष्यदाः प्रवश्या राज्यके प्रश्नामे लाहोः वश विससे राज्यको कोई साम म हो। यह किसका किसीसे मेक भीक न बी। वह जो दिखींसे विक्र-मिक्कर न रह शके ≀ —पास~प्र पश्चपालका बामाव । —पाती(शिम्) —वि पश्चनात म करनेवाका, निष्पद्ध ।

अपक्षय∽प सिं°ोधोबना हासः मात्र । वि 'वपक्षीव'। अपक्षेप, अपक्षेपण-पु॰ (ए॰) पॅमनाः गिरामा पुरसानाः किशी वस्तुसे उकराकर पेंका भागा । [वि० 'क्रपश्चिम']

क्षपर्शत्व-वि॰ सि॰] वे 'अपीर्श्व' ।

अपरास-वि [सं] गवा हुआ। वीठा हुआ। माना हुआ। विरोहिता मृत । -प्याचि-वि रोगमकः। अपवाति -सी सि॰ विभोगति। दर्गतिः वर्मान्त ।

की समा ।

खेवी । वि. सी॰ वृत्तरी ।

अपरारा-व मिंशे समंतीयः काता । अपरास्त्रि-ली॰ सिं॰ो दक्षिण और यहका बन्ति दिन

अपराजिल-वि॰ (से॰) जो जोटा म मना हो। इ. विन्ह

अपराजिसा-स्रो [एं॰] इर्गाः शेफार्क्यः वर्गाः क्लि कांता, शंकिमी भारत पीचे। अवीध्या मनती। वह बर्राच

भपराद्ध-वि [र्स॰] जिसने जपराथ किया है। से रिक्षान

चुक गया बी। बीपी, यसवी बार्तगास्मा अविकांत्र वर्ड

अपराध-१० (र्स•) दीप: दंग वोज्य क्षमी जमी क्षमी

वाय ! -- श्रीक्षक्र -- प्रश्न अवसावी वा पार्वेका वाध करने

वाकाः क्षित्र । – विज्ञास-५० वयरावीके कारवी स्टारी

वपराची(चिन्)-दि दि | नपराच बरनेपका रेहे।

भपराक्र-प सिंग्] दोपहरके शतका करू तीगरा घर !

भपराक्षणन~वि वि वे अपराम-संश्वी वा इस कार्ने

-(चि) साक्षी(क्षिन्)-प्र• वद्रवामी गवाह।

अपराजिः—कौ [सं∗] भ≈, होषः अपराषः पार्

क्षिम, ११ सर्विति एक: एक विवैद्या कीशा ।

क्चर-पूर्व विदिशाः यह बोरिनौ । अपराजेय-वि॰ [सं॰] थी जाता न जा स्थे।

वित । प्र॰ अपराधः तरार्थ ।

का विवेचन करनेवासा विद्यान ।

अपरापरण-वि॰ [मं॰] ति संनात ।

मपरम्ब्र्ं~पु [मं∗] क्तराई ।

उत्पन्न ।

अपनार्गी-अपनियस्य मपसार्गी(र्गिम)-दि॰ सि 1 क्रमार्थवामी: पापी । अपमार्जन-प्र॰ सि॰] शुद्धिः सकार्यः नाळ ननानाः खंदः द्वका । नि॰ नष्ट करनेवाकाः प्ररानेवाकाः। अपमुख-वि॰ [सं॰] के ग्रॅबवाका । अपस्याप-सी॰[सं॰] अकाक चृत्यु साँप कारने वित्र सानै। कोई वर्षदमा हो जाने आदिसे होनेवाडी सुन्तुः बहुत वहा बदरा या रीग (जिससे अनुष्य क्य कार)। अपस्यपित-वि [सं०] अस्यद्व (बाववादि): असद्य । अपयश्(म)-प॰ [मं॰] अपकीष्ठि, वरनामी । ~(स) कर−नि असीतिकर। अपयान-पु॰ [सं] बणायन मागनाः दिसक बाना । श्रवयोग-तु॰ [री॰] क्रवोगः क्रसमवः क्रमाक । अपर्रच-न॰ [एं॰] और मी। वृसरा मी। फिर I भपरेपार-वि॰ अपाटः अम्रीम । क्षपर-वि॰ [ने॰] सन्त्र, दूसरा; विद्यका; निष्टुण सावारका इसरेकाः पश्चिमी इरवर्ती विससे व्यक्त वा विसक्षे वरा-वरी करनेवाला कीर्र म ब्रो । प्र बाधीका पिछका पैरालक्ष मनिप्यतन्त्रस्य का मनिप्यतन्त्रसम्में किया जानेवामा कार्य । ∽कास्ट−प नावका समय । ∼ac⇔वि॰ नावमें प्रत्यत । प्र• प्रस्वारित । -व्यक्तिम-प्र- वक्तिप-प्रधम धील । —विका−मी पश्चिम विद्याः। —वक्र∽त महीनेका इसरा प्रश्नः प्रतिपक्षः प्रतिकाती पश्चाः --धर--वि+ यक

और इसराः कर्षः −प्रकय-तु० श्रेष्टवः - मणेय-वि भी इसरोंसे बक्द प्रशानित हो बाद । - शाय-त निव होनेका भावः भट्टा **अंतर । —शत्त्र-प॰ रा**विका अतिम भाग । -सोक-पु० वरकोकः स्वर्ग । -वक्य-पु०, -वक्या-सी॰ पूर्च विशेष । -वश-वि॰ वरतेत्र । शपरस्त−वि० सि•ो दिना (नदा: रक्तान: असे<u>त</u>ह ! अपरक्रम÷−नि अप्रचलक अन्तकृत को क्रियान दी। मानुत, मण्डच किया हुआ शहा अपरसंद्र-विश [मंश] यो किसोड़े क्यमें म हो, सर्वत । भगरसा—तो॰ [लं॰] मिन्नताः एवनतः वैशक्तिकः १४ शुक्षीमेंसे यकः नेकट्या हरी । भवरति-नी [हं] विष्णा अमेरीय। क्रपरती≑−सी है॰ भएमिं। **भपरग्र−म**िन ी सम्बन्ध और कभी ! क्रपरमा•⊶भी दे 'जपमी'। सारहरूक्क -- विश् प्रवतः क्यतः प्रवेतः। काप्रब-प्र [मं॰] हागशाः विवाद (मंपित मंपंथी) । सपरस-प्• रक्र चर्मरीम । ≠ वि॰ अरप्रव ।

परस्पर या भाषसन्धाः 🖩 हो ।

षश्चिमी सीमांतका रहनेवाका ।

भपरोतिका-का॰ [संब] बैनाको ध्रदका रख भेर ।

देश था विकास ।

अपराक्षेत्रम—वि॰ [न्ं•] वे॰ 'अपराक्ष्यन'। श्चपराञ्च−प्र **१० 'अ**पराञ्च । भपरिकलित-वि मि विद्यात अध्या अपरिकार-वि॰ [र्ग०] क्लनेमें असमर्थः परिवय व ब्दरीपाचा । अपरिद्धिय-वि [सं] आहं वातरत सदी समा अपरिगण्य~वि मि•ी धनरिनतं बहामार I अयरिंगत्त-वि [लं॰] अञ्चातः अप्राप्तः । अपरिग्रहीत-वि [मं•] स्रोहार म विना तथा लग अपरिश्वद्वीतागमन-पु [मं•] एक तरदका अनिवार(वै•)! भगरित्रह-पुर्ण्य] रामका भरनेकारा भग्नेरवाको सिर जिल्ला आवस्त्रक हो बलने अधिक देशा, अब आदि व हेनाः निर्थमताः चौगदर्शनीन्तः बर्मीमेने एवः । वि॰ चरिमा भ करनेवालाः सपन्ति, वास आदिसे रहित अविश्व ! अपरिशाक्य-विश् (गे॰) थे। केस वा स्वीकार करमे केल अपरस्पर्-दि [सं∗] सन्पर्शति अविधिक (कार्य): वो न दो । अपरिचय-प [मं॰] परिपयस समान जान-पर^{प्रम} अपरौग-दु [सं] ग्रुजीभृत व्यंत्यका यक मेर (सा॰) । म रीमा । अपरिचयी(यिन्) अपरिचय-वि॰ [मे॰] निमन्ने बन्ते क्षप्रशंत-प थिं। पश्चिमी सीमांतः पश्चिमी सीमांतका पदकान ज्यादा म हो। भी मिलनशार म दी। अपरतिक-पु [मं] है॰ अपर्तनः एक योत । वि॰ अपरिचित-नि [मं] अहात सम्भिता परिचर्कानी अञ्चलकी । अपरिच्छन्-सि [सं०] मन्त्रशोत्। फटेशाल मरीन ! अपरिष्णुच अपरिष्णादिश-वि [मेर] आवर्षपरि **अप्रा**–को [चुं•] जच्चारम-रिचली ग्रोड़कर शैव संपूर्ण विया; लीकि दिया, वेप-वेदांगारिः पश्चिम दिशाः प्रश्नन की दक्षा न हो, जंगा। सक्नापर ।

भवरिष्यास-वि० [सं•] अंतररदिता सीमारदिता विभाग-रहिता अपरिच्छेन्-पु॰ [सं] नियान, निकास वा सीमाका समानः क्रम या स्थनस्थाकः समानः गैरंतवैः विपार वा विवेकका जमान । अपरिवात-वि [रं०] अनक्ता, कवा; अपरिवर्तित, स्वी-का स्वी । भपरिणयः अपरिणयम-पु॰ [सं॰] विरक्षीमार्य जहानर्यः। मपरिणाम-पु [सं] विकाररावित्व । -व्यां(विंगु)-वि॰ नद्रदर्शी । अपरिणामी(मिन्)-वि [सं] भी वरके नहीं, निर्वि-दार, एकरस । अपरिजीत-वि [तं] अविवादित, काँरा । [सी 'अपरि पीता में अपरिपश्चित संधि∽साँ॰ [एं] केनल नोखेगे रसनेके किए की जानेवाकी एक मकारकी कपटमंत्रि । अपरिसाम-वि० [एं०] दे० 'अपरिमित । अपरिमित्त-वि [सं] वे का; वे हिसाव; वस्वविक । अपरिमेय-वि [6] विस्का चौक-माप म हो सके वे भंगायः भनगिमतः। भपरिस्कान-वि [सं] म स्रक्तानेवाकाः विस्वता क्षय न को । प्रमदासदा दक्षः। अपरिवर्त्त नीय-विश् [सं] न क्यलनेवाकाः अध्यः अवस्यं भाषीः वी वद्रकेमें न दिवा जा सके। अपरिवर्तित-वि॰ [tl] विसर्ने कोई परिवर्तन, हेर-केर न दुमा हो। अविकत । सपरिवाद्य−वि० [सं•] को मर्स्सनाके योग्य न हो । भपरिवत-नि॰ [सं॰] को चारों औरसे भिरा न हो (क्रेव): **भवरिच्छन्न** । अपरिशेप-वि [सं] इन्छ शेष न रहने देनेशासाः म्बापक । पुरु सीमा वा श्रेक्टा कमाव । अपरिष्कार-पु [सं०] महापन- संन्कारका भगावा मैका-पनः उ**न्हांबटता** । अपरिकात-वि सि] यो माँया नोवा स गया हो। मैकाः भराः धर्मस्कतः । व्यपरिसर-नि [सं•] निकट नश्री वूरः अञ्चलतः। प्र विस्तारामान । अपरिस्कंद्र⊸वि [सं]गतिहोन। भपरिहरणीय~षि [ध] दे 'अपरिहात्री'। अपरिदार-पु (६०) अनिवारणः वृरीकरणके सपायका **अमस्य** । भपरिदारिश-वि [सं] जिसका निवारण न किया सवा दी। भी दूर न किया गया हो। अपरिदार्य-वि [सं०] जिसका गरिवार म दो सके, अभि-नार्नः अवस्त्रेसातीः वाखान्त् । मप(दिशत−वि [सं•] क्लिम्बे गरीक्षा न पूर्व ही ज भावमापा दुवाः मूर्यतापूर्वः विचारसून्यः वप्रमाणितः।

सपदय-वि [मं] क्षीवर्राहनः सक्ठीरः, सुबुक्तः।

महापन हुस्पता ।

अपरोक्ष-वि० सि॰] जो परीख म हो, प्रत्यक्ष, इंद्रिय गौयरा को दूर न ही। अपरोक्षानुस्रति-ची॰ (५०) मत्त्रस्थानः नेदांक्का एक प्रकरण । **अपरीध−पु० [स्•] वर्जन,** निवेच । अवरोप-प्र[सं] सम्बन्धन, विष्यंस; राज्यस्तुति । भपर्ण-वि॰ [एं॰] पत्ररहित् । अपूर्णा-सो॰ [सं॰] पार्वेसी (श्विकी प्राप्तिके निमित्त तप करते समय पड़के तो पछ साता रही किया भाग परमार धन्होंने पत्तीका खाला भी छोड़ दिया, इसीसे भपर्या नाम पह गया) दुर्गा । अपर्तुं-वि [र्तः] असामविक, वे-मीसिमः जिसके मानिक धायका समय बीध गया हो। निक्तरजस्का (स्रो) । अपर्यंत-वि [सं] वसीम, अपरिमितः। अपर्याप्त-वि॰ (सं॰) नाकाकीः अपूराः असीमः अयोग्द । व्यपयाय−वि [सं]क्षमदीन्।प•क्षमदीन्ता। अपर्व(मृ)−पु० [र्⊲∘] वह दिन औं पर्ववाकास हो। −दड-पुण्डईछ। अपर्वेष्ठ-वि॰ सि॰ो संविधीन : अपवां(वंन्)-वि [ग्रं॰] गंपिरहित । **क्षपछ**−कः वपक्रदा वि सि प्रे प्रकारत संसरक्रित। प्रक्रिक्षा, भगंका **अपस्य** - अ प्यटक निर्तिमेच । **रूपकराण−**प सि•ी करकाणः अव्यापि अध्या अति• व्याप्ति-वीषयुद्ध कक्षण । अपकाप-प [सं•] छिवानाः (वीपादिसे) इनकार करलाः सत्त्रका गोपनः कृते और पस्तिवाँके वोच्का मागा प्रवासः सम्मान । अवस्रापी(पिस्)-वि [सं] क्यकाप क्रुरनेवाका। अपकाषिका −की [सं] जल्लपिक तृष्मा या ठाकसा। अपकारी(पिन्), अपकापुक−वि० [सं∘] प्यासाः विसे शुभ्या या कास्त्रा न हो। अपकोक•-पु अकार क्रनामी। अपवस्तन-प्र॰ चि] भिरा अक्टर । अपवन-वि॰ [मं॰] वायुरदितः वायुरे ग्रुरक्षित । पु॰ क्ब, ख्यात, सम्बन्ध । अपवरक-प , अपवरका-सी [सं] दावनागार, अंदर पर वातावम । अवशरण-पु (सं] भावरण-पोद्मान्तः। अथवर्ग-पु (सं॰) मोख निर्माय स्थाग दानः विदेश शिवम, अपनार (वाण) छोइना । अवसर्जन-प [री•] स्वाग दानः प्रकाना (ऋण आहि)ः वक्तपारुनः अववर्ग । अपवर्जिस-वि [सं] स्वाप किया हुना; दिया हुना । अपवत-प [सं•] प्रथम करमाः बटामाः सामान्य विमा-न्क (गणिव)। अपवर्तक-वि [सं] सामान्य विमाबदः। अपवसम-पु॰ [लं॰] परिवर्तना बढाना, स्थानविश्यः भपस्य-वि [तं] इत्य गरा अपूर्व (३)। प्र नि देव मागः विमाजक १ अववर्तित-वि॰ [र्व॰] परिवर्तितः बटावा हुआ, पूथद किया

प्रभाः सामान्य निमायकसे मिन्द्रीय विमय्क किया हुआ । भपाम बासुका स्वाग, गीज । मपबर्ष-दि मि॰ दिसका सामान्य विमाजकम ति'शैप अपकाम-प॰ सिं•ो विराम निकृति। विमाग किया जा सके। सपवहिस~वि [र्थ•] इटाना हुआ, स्थानांतरित । पद्भाः गाब मा भौतंसे किन्न पद्म । भपवाव-प (सं•) निवा वयनायीः कांग्रनः सामान्य निवसको बाभित या गर्बाटित कालेबाका विशेष नियमः इस्तिसनाः स्रोतन प्रतिबादः श्रीतं धारणाका निराह्यकः भारेशः विश्वास प्रेयः हिरन भावि जानवरीको कैंसानकी अंतिम सडी, पहला: बरम १ क्षोरी वटी वा और बोर्स वाथ। अपध्यय-मः (भः) तक्षियाः अपधायक अपवायी(विन्)-वि (चं॰) निता करमामी अपभी-वि॰ [ने॰] श्रीहीम । राटन मात्रि बरनेवासाः वाक्य । अपयास~ड मि] बपम माड । अपवारक-प (छ०) भागरणः मिरी हुई ना परदेवार **अपद्य**−प= [स+] बंदुस्की मा⊼ । व्यवहार श्रवचार्य-प [मं०] क्रिफ्ताः बक्ताः गावन हो जानाः व्यवकातः व्यवधानकारक वस्त । अथवारिश-वि॰ [मुं•] छिपा हका, वंदवित । अपस्याम-प्रदेश 'अपस्कृत'। मपवाह, मपवाहन-पु (छं॰) स्थानांतरितकरमाः ध्यानाः एक कृत्त । वि मीच। अपचाहक-वि॰ [६०] होते था क बानेवाचा । पु॰ किसी शरतका एक कगइसे इसरी कगइ है जानेका साधन वा वंत्र ! अप्रधाहित-दि॰ [सं] दे ^{के}जपवहित्त । इरी (स्वा)। अपविज्ञ-वि [मं] अवाधित। अपविश्व−वि [सं] बद्धार्यः मापाकः मैला। निबक्त भागनेका रास्ता । अपविश्व-वि [मंग] छोरा हुना। वेवा तुआः गीयः अपसर्जन-५ (न०) त्याना दामा मोद्या कृमीमा । -पुन्न-पु॰ वारह मकारके पुत्रोमेंसे रक, वह पत्र को माता-पिता हारा स्वक्त होनेपर कस्य हारा पाकित हो । -होब-वि को इस एंगरकी छोड़ भका है, एत । अपसर्वित-दि [नं] गबा प्रभा अपविद्या-स्त्री [मं] भाष्यारिमक नदान, अनिमा । अपविष-वि [मं] विषश्चा । श्रविधा~सी • [मं] तिर्दिशे नाम≸ पीवा । भपवीण-वि+ [मं] स्टराव वीनवास्त । क्षप्रसः-वि [र्व-] समाप्त क्रिया हुना । रपना । भपवति-न्दा सि]स्राच छिक् १म। अपवृत्त-वि [मे] प्रगाया वा रकटा हुआ। श्रुव्य किया हुआ; समाप्त किया हुआ; कीवा । वेंद्र देशा । क्यवसि-स्थे [म] क्षेत्र समाप्ति। कापश्चम-पु [सं] गणत कमह या तुरे तरीनान (मीती इस्वादिमें) धद करना । अपबोदा(इ)-नि॰ [मं] यो पा इयनेनामा। भपय्यय-पु [तं] अनुविश्व स्पन्, प्रिजूनसभा । भवस्वयी(विम्)-दि [६] व्यर्थ का अञ्चलित स्वय भगसृति-मी॰ [६] दे 'अपस्रव'। करमेबाला शिज्ञकराचे बक्तक। अपसीस≠-पु• दे अप्रधोन । भाषधात-वि [६] भागविद्या सर्ग न करनेशाला अत-अपसोसपा॰--भ कि भागेश करमा। स्वामी । पु श्रीम मदः। अवसान् - चु अपराद्या। **भएशक-वि**[ग॰] निम्हंक, निश्चंक अपशक्त-तुर्मि वेसमुग भनिक्र-स्टक्ष शहुम । भवसर-प [मं] दे अध्ययः । मक्, निष्ठा बोनिः गुरा । भवदारत-प्र [मं] शहाज असाध दान्य शिगहा हुआ अपय्यार-प (सं•) पुरनेद मीपरा भाग । अपस्त्रेंब, अपस्त्रेंस-तु [टं] रांते हे शतका वर लेव यम्यः मान्त्रः सर्वेश्यः शाली-गरीजः निर्देश सन्दा

अपञ्च-वि [सं॰] पञ्चरदितः निर्णतः पु पन्न नहीं देश मपञ्चक(प्)-प [तं] भागा : वि श्रीमहित। अपसीक-वि॰ [मं॰] छोस्त्रवित । व॰ बछोड वस अपन्निस-वि॰ [मं०] क्षतिम जिसके पीप्रे को गरी। **अप्टड**्र-वि [र्म•] क्रव्या विपरीक्षः वामा ग्रीमन । दु• समय । अ॰ अन्छे हगमे; विक्रीत इपमें । खयम्बरः खयम्बद्ध-विश् (मं) एकाः विगरीय ! अपन्यय-पु॰ (सं॰) अमुलोम विवादसे तलब स्टाम। व्ययसमा व्ययम्बदा -- अ क्रि॰ भागमा नुपरते पत्र देना-'वीन वॉषि अपमर्श्ह अग्रसा ~पण्र अपसर-५० [००] प्रत्याना प्रशाबना छन्ति सरदा अवसरण−g [ri•] इर जानाः वोधे हरनाः महाना अवसर्पं, अवसर्पक-४ (स) सर्दयाः वासूसः। अपसर्वण-इ [मं] शीरनाः गीछे श्रदनाः जातमी दरमा अपसम्प-वि॰ [सं] सम्ब(बाबों)का बस्ता, पारिना बक्याः विसन्धः यद्यापनीत शाबिने बनिसर बी ! सुन -करमा-शक्ति भार श्युते दुव शिक्षां परिव्रवा करना । -होना-वनकशमद्या वार्रेसे शास्त्रे देशाः अपसार-पु चक्रकाः माव । [६] । 'जनसरम'।' अपन्यारण-तु [म] ६६ हे जामा। शहर वर हेगा अपसारित-वि [दावा हुआ। इर दिवा हुआ। अपसिक्ति-पु [भ] गण्ड या प्रमञ्जू निर्देश म्ब निम्रहरबान (म्बा)। (बन्ध मिद्रांत (बे)। अवस्था-त [दं] चवा गुजा। भागा हवा च्युता केलाबा हुआ पेंचा हुमा; बुद्ध गागा हुमा (दी) ! अवसीसां → अ दि॰ वानाः प पनाः प्राप्त होना । अवस्थार-पु [६०] वाधाना कार्र दिवता चदिवा आधा

भपद्रास - प्र [सं] अकारण या ने मौका हैसी। धपद्रास अपद्यत-नि [t] नपहरण किया हुआ, छोनाथा खराबा इ.मा: − ज्ञाम−दि + स्प विसके द्रीय गावन द्रो गवे हों।

अपहेका-सी॰ [र्:•] दिरम्कार, मर्सना। भगव्य-पु [मं] छिपाना बस्तुरिश्वतिका योपनः नात बनाताः एत्वका सम्बापः ग्रहीबर्द्यः प्रेम । वि मपदत् ।] भप**र**्मति – सी॰ (सं] अपस्ताः अवासंकारका एक मेर निस्म स्वयेवका निषेत्र कर उपमानकी स्थापना की

पार्ता है। भपद्वोसा(त)~वि [सं॰] दनकार करनेवाका क्रियाने-

भपक्ति, भपक्तिम भपक्तिम - वि सि॰ विस्ति वैठने-साथ मोजन बरनेका भगशिकारी (माळण), जाति वहिष्कृत । अपॉग~(द [सं०] अंगदीम अस्तीरी पंतु। पु संप्रदास प्रमृद्ध विक्कः मस्तिनी कोरा कामरेनः अपामार्ग ।--वर्षम —प्र **—रश्चि—स्त्री** विरशी थिवनग । मपौगक-वि पु [ते] वे 'अपौग ।

अपौनाथ, अपौपति-पु॰ [सं॰] समुद्र; बरण । भपौनिधि-प॰ सि॰ो समद्र। अपोपिय-५० [मे] अधिः एक पोपा । अपाँद्धास्त्रा⊸की [र्श•] पवित्रदाक्री। अपार्थ-स्थी० हे० 'सावा' ।

सपाठ – पु० दे० 'सपाद'। क्षपाक-वि (सं०) भनपका । पु• अपयः क्रमापन ।-स-वि॰ जो पक या पद्मकर वैवार न हो। प्राकृतिक ! -- शाक -प॰ **सन्**रक ।

अपाकरण-पु, अपाकृति—भौ० [मं] दूर ऋरना निराकरणः अर्गक्कितः (ऋणादि) सकता करना । वि० 'थपाकतः ।

भवाकर्म(भ)-प [मं] मुकाना अदावणी। अपाधा-वि [धं] चपरिवत, प्रत्वश्वः नेत्रहोनः तुरी आंसींबाका ।

स्याची-सा [सं] नक्षिण ! [वि शपायीम', 'शपाय्य'।] अपाच्य∽वि॰ [छं•] को फ्हायान का छक्के -को पक्र सन्देः वक्षिगी । अपादव-पु॰ [र्स] अपद्वता अनाक्षीपना मदापना रोग

श्रत्वरथता । वि अकुश्रम, अनादी; रोगी; मदा । अपान्न-वि॰ [सं] अयोग्य, मुखं: अनिकारी: शान, शाक भादिमें निमंत्रक्ता सन्विकारी (शाक्त्र)। प्र० निकम्मा बरतमा अयोग्ब म्बस्ति दान सादि पानेका भनविकारी जावाय । - कुथ्या - खी० वह बर्म की जाहानकी अकृत बना दे। - बाबी (बिमू) - दि अपात्रको दान दनवाका ।~भृत्-वि वदीग्यका समर्थन करनेवाका । अपाद-वि विना पैरॉका एए ।

अपादक-वि (सं∘) प्रदोन ः भपावास-पु•िसं] स्टानाः इर इरनाः विस्तानः स्वाहरदः-र्थे पॉ**न्डी कारक**। अपान - पु भारमणानः भारमगीरदः होश-हवासः शर्द कार। सर्व अपना। प्र [सं•] पॉच प्राणीं मेंने एकः मीतरको साँची बानेवरको साँसः गुदा-मार्गसे बाहर निकसने बाकी हवा। ग्रदा । वि दुन्छहर्ताः हेमरका एक विश्लेषण् । -हार-प्रग्रहा ! -पवन-प्रा-वाय-की ध्रवा मार्गसे निकलनेवाधी बाब गोफा।

अपामन-प्र [सं] शींस क्षेत्राः मूत्र, स्राव ।

अपासूत-वि [सं] मिथ्यासे रहित सत्य । लपाप-वि [सं] पापरवित्त निश्रीव । पु पुण्य । **अ**पामार्ग-प [सं] एक पूरी विचित्रा ! अपामार्जन-पु [एं॰]सफार्य शुक्तिः इर बरमा (रीगावि)। सपास्तरम-न्मी सि वे 'नपस्त्व । अपाय-वि विना पैरकाः निस्पाप । पु [मं] बामाः विक्यावा क्रोपा नाया दानि। शंत पुरार्देः सवराः विपक्तिः ≇ संपद्वव । भपायी(यिन्)-वि र्षि । यानेवाका नाधमानः

शानिकर । अपार-वि॰ [सं] जिल्ला पार न हो। असीम, सर्गहरू। अस्विपिका एई निके बाहरा जिसे पार या परामृत करमा बाहिन हो । यु एक तरहरू मानस्मि संदोष मा तर

```
अपारक-अपूरा
```

अपीच्य ७वि॰ (सं०) शति संदर: ग्रुस, हिना हुना । लता। भस्तमति नदीका बुसरा तर, असीम सामर्। मपारक-नि [र्न०] अञ्चलक अदोग्य । अपीक्षन-पु॰ [सं] पीका म देता; द्या, स्पुर्या। अपीश-वि [tio] विसमें सम्पान नहीं दिवा है। से भपारा-मी॰ भि॰ो भरती, प्रजी । अपाभ-वि [मं•] निष्टवर्तीः दृरवर्ती। पैका नहीं है। पुरु पीतसे भिन्न वर्ज । भपाय - नि॰ [चं] अर्थहीन निप्तनीजन । पु निर्द्यक **अपीति−न्धै॰ [र्थ•]** प्रवेशः मान्नः शनिः प्रदयः। या भर्तगत बात कदना वा वैसी बुक्ति देशा (स्वा)। अपीनस—प्र [सं] नायको सम्प्रताः शामकवित्रे प्रसि -करण-पु० दानेमें झुठी बधीरू पेश करना । नुकाम । **भपार्थक−दि॰** [र्स॰] निकस्मा निर्श्वेद्ध । अपीक्र−तौ [अं] शामध्यार्थमाः वर्ते बारिके निर अपार्थिय-विव सि को प्रको वा मिडी-संबंध न हो सार्वजनिक प्रार्थना। किहा भराकतका कैहना शरणानी मा उसम बरुक न हुआ हो। न्धिय इससे कपरबंध भशास्त्रामें बरबनामा बेना, पुनीर पार**ा** मार्थना ।-अनुष्यस्-मा अपीत सम्तेये वरिः अपार्शक-प॰ सि॰ दि पैया वा सात। ध्यपाद्ध-दि॰ [ध्रं] सर्राक्षत । कारियों वा मातक्त बहालगाँके फैनल किये हर सकारे क्षपाद≉~पुदे चिपाद + । शननेवाको भदानत । अपावन-वि [सं•] मपविषा मैका गंदा। भवीक्षांट~पुर्विष्याज्ञ स्रमेदान्य । भपाषरण-पु+, भपायुति-स्रो॰ [मं॰] श्रीक्रमा, स्टाप्रनः क्षपुच्छ-वि॰ [मं] विमा पुँछका, बुच्छविद्दीत । हकता। छिपानाः येरना । अपुष्या - यो [६०] श्रीधमक पेर । अपाचर्तन~पु, अपावृत्ति-ती॰ [मं•] औ्रनाः पीछे कपुरुष-वि [सं] कवासिकः अपनितः हरा । द∙ प्रत्या **ध्रमा भलोइ**तिः पूसमा च**दर दे**ना । समाव । भपायत-वि [सं] सुका पुनाः इका वा छिपावा हुआ। अपूच अपूचक, अपूचीय-दि० (ई०) प्रवरीत, निर्मा अपुशिक-यु [स] ऐसी अपदीका पिता जो अपूत्र होने भरा दुमाः स्वतंत्र जनिवनितः। के कारज उत्तराविकारियों न बमायी या सके। भपाद्यस-दि [सं] भीराया वा पीछे स्टांबा हुआ। हिर् बपुत्रिका~नो॰ [सं] पुत्रहोन पितनदे पेही क्या नि स्कारपूर्वेष अस्ताकार करनेवाला । पु कोटना (ये।क्रेका) । अपाद्मय-पुर [म] आमवः चेत्रीतः सिरदाना । नि प्रथम ही। बपुनयो जपुनयी-पु १० 'जपनयी'। भामवद्दीन । अपाधित-वि रि) अधिवसितः आवदः अवशेरत मपुनरावर्षम−पु (शं॰) फिर न कीरताः मीख । अपुगरावृत्ति-ली (स्वि) हे अवनरत्वर्तव'। सर्वास्त्रद्धाः विरक्तः स्वाग्यः सम्बद्धः । भपार्मग−५ [सं•] त्लार। अपुनर्भष−पु[नं] पुनः कम्प्त म हेना, मो¥। अपुराष-वि॰ (सं॰) दुराला नहीं नवा भवासम्बन्धः सिंशी पेन्द्रसाः अक्ष्य करसाः वद करना । [वि 'अपासिक 'अवास्त्र' ।] अपुरुष−ि [नं•] अमान्यविद्यः अमान्योवित् । दु• हिन्द्राः सपासरम-प्र• [र्न•] अपसरण गममः प्रधावन । [नि अपुष्कक्त∽वि०[स] अधिक नहीं; नीव कमीना ! अपुष्ट−नि [मं] विसदा दोवन दा बाह और हार्दने भपास्त ।] म हुई ही कमबीरा मंद (सर); यह अर्वदीन (शा)! अपासु-विश् [मं] निर्वाद, बृत । अपुष्य⊸नि [मं]पुष्पदीत्र की स्कृते। पुन्दसी भवाहक भवाहिक-प अवंगः निकम्माः काकसीः पेट्र ! -फ्रांस -फ्रांसब्-वि विना कृत्रे पात देनाला। अक्रमंद्र । भाषिको(किन्)-वि [सं] विन्यवित अधरीरी। प्र वस्तरका गुक्स । सदि-भ [म] बीर, थी; बगरये । --थ-भ+ और भी अपग्रह-रि भि] क्यापिका भारत भविनीत ! बन्धि । -ल-ध॰ किंद्र । अपूजा-सी॰ [मे॰] अतारर अपस्ति। अपूजिल-वि [र्ग॰] जिसकी पूत्रा वासम्मान व दिस श्राविगीर्ज~वि [रो•] वदित समित । भविष्युम्न-वि [सं•] भवन्तिः, स्वच्टा यक्षरा । गया वा । अविद्य−दि• [सं] तिर जनमा गुधा। गुक्तेष्ठ मसा। क्षपुत्रय-वि (सं•) पृत्रा वा सग्मानकै **धवी**म्ब ! अपूरा = - वि अपूरः अवस्थराः अमनिषः स्रविनीतः। भवितक-पि [मं•] पितृशीना अपैतृक I अपूत-वि [रो] अपनित्र अहातः अपरिप्ततः । निर्मा अपि।य-वि [संव] अपत्का अपूप-पु॰ [नं॰] माण्युमाः यह अनुबद्धः, मनुबाधीस सपियाम-प्र [सं] स्वताः क्षियानाः स्वतं आकारमः शता । श्रावरण । कपिनञ्⊸ि [तं] दका हुआ; वधा हुआ। क्षक्रव-निमि] युवा-नीरी । पु• भारा । अवरबन्दि भएपर प्रसर । भविमत-वि [नं=] शाबिक कुलका सहसाधी। रस्ट अपूरकी-भी (i] शाम्मकी दृश ! हारा नेपद्ध ! अपूर्वा - म कि भएता। देवना बहाना । भिपिहित-नि [मं॰] एका छित्रामा हुआ। धौ छिपा मा अपूरवण-वि दे अपूर्व । दक्षा माही स्पष्ट ! अपूरा ० - वि दे अपूर् । ज्याह ! भवीय#-- नि दे क्योच्य ।

अपूर्ण-वि॰ [६०] वो पूरा वा सरा व हो। अवृद्धा नात भागा स्त्रून, कमा - स्तृत-पु॰ कियाके व्यक्तका एक भेद कियमें भूतकाल तो पाना जान पर कियाकी समाधि स दूरे हो (ब्या०)। अपूर्ण-वि० [न] को ना नेसा पहले म हुमा हो। अप्युत्त ने नोता अप्रति अन्नतारी पहला मही। पु परमका कमेका करह कहा, प्रयुक्तवा - प्यति-की० कुमाधी कमा। -क्स्म-पु० अपनिकारका एक भेद। - बाह-प० महके संपंधी हिन्दा नात्रकाल प्रवत्निकार।

अपूक्त-दि॰ [छ॰] अस्तुका असेनद । अपेक्षच-पु [छ॰] अध्या करना या रक्षना पाद आखा या जावरकता; विचारमा; कारककार्य आदिका छंपे स्थान देना, देख साम जावर ।

-विश्वि-सी० नया माविकारिक भारेख ।

कार्यसर्पात्र स्रोपेस्य निश् [लेश] कोक्षा करने घोर्ष । स्रपेक्षरान्त्र स्रोपेस्य निश् [लेश] कोक्षा करने घोर्ष । स्रपेक्षर-स्रा [संश] रे कोप्रस्ता । क्लान्स्य हिनीकी तुल्लार्गे (स्प्ताहिक) निस्तरूप । स्तुद्ध-स्रोश नेस्तुर्ध । स्पेपिक्षत्र निष्मा प्रसिक्ष स्रामित्र यासाम्य

कता हो। करोहां(हिल्) – वि (सं) अध्यक्षा करनेवाकाः आवांद्वा प्रतीका करनेवाका (बैस परसुरापिक्षो)। करोच्छान् – को र्र्व 'करेक्षा ।

अपेत-वि [सं] पना हुआः स्कानिक वंशितः रहितः सुक्तः । --राक्षसी-की तुक्सी नामक पीना ।

मपेय−वि [सं•] न पीने योग्न ।

सपेस॰-वि॰ भट्टण; सदार । स्रोतक-विः वेत प्राप्तको ।

बर्पेटम-वि पैठ वा एड्रॅक्से बाहर पुर्गम । अपीगंड-वि० [सं•] सोचड वरससे अधिक जवरवायका, बाक्ष्मा: भीव विकटांग ज्यून वा अधिक अंगोंबाचा; शिद्ध विद्योर ।

सपीड−वि [मं] दे 'सम्बद्धित'। सपीदिका⇔की [मं] यक पीना।

अपीड अपीड्न — पु मिं] पुर करना, निवारण ठाई, दुष्ति द्वारा संकानिवारण यक ठाँकी कान्नेवाला वृत्तरा ठाई (क्वारोड़)।

अपीरुप अपीरुपेय-वि॰ [मं] पुरुपार्वद्वीतः शीव अपुरुपेषितः सरीमिकः, देश्वरीयः शतुष्यकृतः नदीं, रेकर करा । प्राप्तिकः अभावः स्वतीमिकः शक्ति ।

कृत । पु पीरपञ्च अभावः अभीतिक शक्तः । अप्-पु [सं] पानी दवा। —वर-पु॰ वक्ततेतु। -पित-पु॰ वस्य समुद्राः -पित्त-पु अक्तिः एक

पीना । —सर-पु वहचर प्राणी । असु-पु [सं०] छरीर: अंगः वहपद्यु ।

अप्यम-पु॰ [सं] माझ कया नंधीय कोए। अप्यस्त-पु॰ [सं] फेल संधीमा श्रेष्ट्रमा । अप्यक्षप−षि॰ [सं] रिशर्ड जिस्सा संन्य महुआ हो। निस्का करुर महिया गया हो।

स्थाकर-वि [मंश] जो प्रकार मा हो हिया हुआ। अमकर-वि [मं] हुबार रुपसे कार्य म सर्देशका। समकरण-पु [सं] अध्यान विषयः आकरितक शा

कर्तम्बः विषय । अप्रकारमञ्ज्ञानि [संग्] विसवे क्रिय स्पष्ट भागेदा स हो, विसे करनेनं क्रिय नाच्यता स हो ।

ावस व्यत्नव रहण वाज्यता स इति कामकोद्ध-वि० [मं∘] शास्त्रारहित (छोटा)। पु० श्चव शाही ।

लामकारा-पु॰ [सं॰] मकायस्य लमान वेनेरा ग्रुप्त नात रहरमः । ति मकायरिताः क्षिपा हुआः, अपकारपूर्णः, लमकटः स्वता मकाशिता । आमकाशिता-वि [सं॰] मकायरिताः लमकटः म क्ष्या इसा को क्षयकर बनसावारणके सामने न साना दो । अमकाश्य-वि॰ [सं॰] मकाशित या मकट करनेके अयोग्यः।

हुआ को छपकर बनसाकारणके सामने न माना हो। अध्यकारम-कि (संक) महारित या प्रस्टकरनेके स्योग्द । अध्यक्तर-कि (संक) अध्यक्षरें, बनाक्टो अध्यक्षरान, आहु पंतिक गीणा अक्तरिकक्ष विषयसे असंनद्द । पुण अपरातृत, विषयाम ।

आमकृति — न्यां० [सं०] पिकृतिः पुरुष जातमा (स्रो)।

— स्था – वि अर्द्यश्चारीण उदेग आदिके कारण विस्तरः
तन सम स्वामानिक अवस्थाति कृषा।
आयक्षण – वि० वि विलेखः करा। युक्तकः।

काप्रकृष्ट – दि ॰ [टं] नीच, दुरा । युकाकः। काप्रकार – दि [मं] अतीरण सुद्धाः कीमतः। काप्रवासम – दि ॰ [चे॰] सकतः। दिनीतः दम्बू जो प्रीट या डीठ च डी। डीका।

या बीठ ज बी। बीका । आप्रमुज-वि॰ (सै॰) व्याकुक, ववदाया बुजा; व्यस्त । समग्राह-वि (सै॰) अतिवैधित ।

अप्रचक्कित−वि॰ [सं] जिसका श्रक्त या व्यवदार स हो। अप्रचोदित−वि॰ [सं॰] अतिन्यतः अत्रादितः। अप्रचक्कि –वि॰ [सं] अत्रादतः प्रस्ट सुका तुना।

कामच्छक्क — विश्व हिं] क्यांच्य प्रकट सुका हुआ। कामच्छक — विश्व हिं] व्यविमक्तः कामच — विश्व हिं] निस्संतानः क्यांच न कममा हुआ।

| काग्रज−वि॰ [सं] निस्सेतानः वशात न वसमा हुआः | काश्रतितः । | काग्रतकर्य-वि॰ [मं] को तर्कया बनुमानसे न जाना

वा सब्दं जतनर्व । अप्रति—वि॰ सिंी व्यक्तिया अप्रतियोगी । अप्रतिकर्—विं सिंी कियस्ता विकासपात्र ।

कप्रसिक्तर-पुरु [ए॰] प्रतिकारका कमाव उपाद पा बदलेमें बार न करना । वि निक्पान, सान्कान । व्यवसिकारी(रिन्)-वि [सं] प्रतिकार न करनेवाका ।

धप्रतिगुक्क – विं (d) विस्तका दान स्मोकार न किया वासके। धप्रतिग्रहण – पुंचि०) सामादि न केना कन्यादान पुक्रमा

अप्रतिप्रा**क्ष**−वि [सं] प्रदण न करने चोच्या। अप्रतिष−वि [सं] अवेषः पौ रोकान वा सवेः अक्ट्रदा

अमितिमास-नि [मं॰] मितिभात वा निरोपस रहिन; आमातसे वपा हुआ।

अप्रतिहरू—वि [मं] विना प्रतिष्ठीका वे बीष । अप्रतिपद्धा—वि [सं] अप्रतिनीती, विषक्ष्युत्य; असमान अमस्य 1

जनशङ्घ । अग्रासिपण्य-वि० [तं] जिसका विनिमय या विक्रम न हो।

सकै।

```
मप्रशिपत्ति नरी • शि ोमिश्चका असावः वर्तक्षका निश्चव
 न पर सन्तमाः विश्वचताः अमगचताः स्पृतिका अगाव ।
भप्रतिपस्त्र-वि [मं•] भनिश्चितः भर्मपण-वर्णव्ययासस
 डीम ।
क्षमतिबंध-प॰ सि॰ो शेक दोक म क्रोना स्वच्छता।
 नि॰ वे रोक-धेक, स्वर्ध्वदः निना किसी सगहेके प्राप्त (का॰)।
भप्रतिबञ्च-वि० [न ] वे-रोकः समसामा ।
अमितिबद्ध−िर [मं] ने बाशताकतनाका।
क्षप्रतिस-नि [सं ] प्रतिमात्रीन, निरी वशाव या नवाव
 भ स्प्री अप्रत्युरुप्तपतिः चत्रासः मेदा सम्प्रास्त्रकः ।
क्षप्रतिसर-नि॰ सि॰ो प्रविमरदीम जिस्का सुकारका
 क्रनेवाका कोई न हो । पु॰ येसा योका ।
क्षप्रतिमा:-श्रा॰ [सं ] प्रतिभाष्टीनताः वादमै प्रतिवादीका
 बार्याचे तक्कीया कत्तर म वे मतनाः वस्तुतन क्रमा-
 शीनरा ।
सप्रतिस-वि सि विन्दीत सनुपर।
बाप्रतियोगी(गिन्)-वि [सं] विस्ता की मुकारण
 करनेवाचा म हो विसक्ते मुकानन्त्रा इसरा हिस्सा
 स हो ।
सायतिरथ-वि॰ सि॰) अधितीय गीर' विसक्ता कीर सका
 बका करमेवामा स हो।
सप्रतिरच-नि [मृं०] विमा विवाद या शगहेका ।
भगतिरूप−वि [सं] जनतुरूप, अवोच्या वं जीह रूप-
 बालाः अद्वितीय ह
कप्रतिचीयै-नि [मं॰] अ<u>त</u>क्षित चक्षिताना ।
भप्रतिसासन−वि [तं ] विश्वका प्रतिश्रंको छालक न वीः
 एड हा शासनके भगीन ।
अप्रतिप्र-वि० (सं०) वे-वक्षण ववनामः अरिवरः विकन्माः
 फेंबर क्या ( प्रकारकः ज्ञान )
               [ri] आदर भागका अभागः वे-स्टायीः
भप्रतिद्वा−स्त्री
 ध्रता वा रिनरनाका समाव ।
अप्रतिष्ठित−वि [सं∗] प्रतिकासीय समाजये विस्ता
 भाइए-सम्मान स हो। वो रिवर वा श्वरतायन न हो।
कप्रतिमश्रद्धाः सूमि-शीः [गं॰] नद्द भूमि वी वस इन्हरीः
 से सम्म को। (की)
काप्रतिद्वल−दि (सं+) किसे बीर्य राक्रनेकामा ग दी अवा-
 धिना अपराजिता अहाव्य । इ० अंकुश । -गति-ति
 किसकी पति किसी प्रकार रीकी म जा भन्ने । "नेग्र—पु
 रक्ष बाढ देवता । -स्यूड-पु वह अध्यवनिवत स्पृह
 जिल्ली हाथी धार हा भीर नियहां एक इसरेक्षे चाढे
 हों (की 11
अप्रतिद्वार्थे~(व [वं•] बिस्त्य निरोप व दिवा जा शरीः।
भगतीर-वि [नं ] भंगतीन सरीरहोनः नक्ता एक
 निरोक्त ।
भगतीकार-पुरु दि [६] दे 'व्यातिकार'।
संप्रतीकारी(रिम्)-(व॰ [र्ग॰] वै॰ 'अप्रतिकारी ।
भग्नर्वाष्णन∸वि वि} र अप्रतिपान ।
भगतीत-(१ (मेर) धमसवः समन्यः निरोपर्शस्तः एक
 देशमें ही प्रसिद्ध (लर्पदान्ता-वक शक्तारीत)।
श्रमतीति−न्त्री• [मं•] प्रतीतिका समावः स्विकाराः (सर्वा
```

जीतर्नेकी योग्यसामें कारण छससे संबंध रखनवाटी *प*्र> बीका हिएसाए न क्रिया बाय ! अप्रस्थम-पुरु सि ी विश्वासका समाना प्रयोगिका वागर कसाव । वि० विमस्तित्तीत (संज्ञा, मार्टिपरिव-मार्थ): विभागरक्रिकः समस्रिप्त । अप्रत्यादित्त−दि [मं] विनश्चे बाञ्चा न रही हो} बन सीपा *बाह्या* मह काजधान−वि मिश्री माध्य छोटा। प्र मीत दार्थः कप्रयुष्य−विश् (संश्] अवेदः । भग्नम-वि [मं] प्रभाष्ट्राव् धुँवना हुरा। धप्रश्<u>र</u>−वि [मं•] सममर्थ, सरोष्य । अप्रभृति ∽ना•[सं] शक्य वन; भाषताः अप्रसाच−वि [मं] सापरवाड मधी **सावभाग ना**पर^के क्षप्रमान्-वि [मं] बाद्रोर-प्रमीत हे विराध कान नप्रसन्त । अप्रसय∸वि सिंशी सनपरा अप्रसेद । थमसा~सी [सं•] भ्रांत दाना। अप्रमाण−दि [र्स] जो प्रमाण श मोना श सर्वे ^{प्रमा} माणिकः ममापरहित् जिला सुबूतका समिदितः स्पीतः अपरिभित्त । यु बह की प्रामाणिक म माना जाना 🕬 मेपिडना । क्षप्रसाय्-प्र शि•] सावधानता जामस्कना। दि मधी रविना भारता मुस्तर । मप्रसित−वि [वे] को माधान सभा दी। मध्यम[ा] अभिकारी बारा प्रमानित म किया गया ही ! अप्रसय−कि [सं] विस्तार साप न दा सरे∤वें€ि वै-दिशारा जो लिए वा प्रमाणित म दिवा जा महे। वदेव? भागोत-५ [म•] इह हर करनेद्रो अग्रमता प्र^{महा} का व्यभाष । भग्नम्~ि [न] प्रदम भ करमेशना करावर्तन **बदासीन । यु अवस्तरा जनाय ।** अञ्चुकः-वि[म] शिदासमें न नावा नया की अ^{ञ्} बद्दा गण्त सरीक्ष्में काममें लावा द्वमाः अप्रविता (লম্ব)। अप्रयोग~पु॰ [ग॰] प्रवेशका जवाब या वध्यवेता कार्यने म गामा अवायमै म भामा (दाध्यद्धा) । अप्रक्रीय∽ि [सं]देर स क्यानेशामा क्षेत्र मुखा अमयतक अमयती(तिन्)-वि [ग] सतिये राज्य हाने ह लिए उद्येशित म कर्रावाला विध्यक्ष अशिक्ष अप्रयुक्त-वि [ः] भी प्रयुक्त सदी। ~अप-वि बिय्यी भीर । सहात्रम् म हुन। हो । अप्रकृति:-व्या॰ [व]०] प्रवृश्विद्य अमाना ब्रोहनस्ता !

रिका) रफ्ट न होता।

नि अञ्चलगान, अञ्जितीय ।

सप्रचा∸न्थी [र्स•] कुमारी बन्या ।

अप्रतीयसाम⊸वि० (वे०) शतिश्रित । 1

समच−वि॰ [मं०] सम्बन्ध न क्रीटाबा हुआ।

भगतुरस-पुर्व मि] बजनको क्रमी अभावः बादारक्य।

कप्रतादत~वि॰ मिं }े जो प्रियाई न दे, जनाबरा प्रोध।

अप्रत्यमीक−प मि≉ी यह **वर्शनं**कार क्रियों दश्रो

अप्रदास्त-वि॰ [सं०] अप्रशंसिता निषा सरा। अभिदिता श्रीम । अपनीग-प [सं०] भासकिः संगति सगाग भाविका

बासाब । बि० अमेचका प्रमेगरवित ।

अप्रसत्त-नि [मं]आस्तित्तीनः निना संगति या समावका। अग्रसस्टि-सी [सं] अगास्ति संयमना परिभित्ता । अप्रसम्बन्धि [सुं०] प्रसादरहित, सिच, जनास मास्य साराव ।

भपसाद-पु॰ [तुं॰] अकृपा, जनसुकृकता ।

अप्रसिद्ध-वि॰ [tio] बिसे अविक कोग ा जानते की ग्रमनामः असामान्य कनिष्णव ।

अप्रससा-सी • [म] चंप्या सी ।

सप्रसात-वि [सं] सन्परिवतः असंबद्धः अवस्यः गीणः अप्रवासः अनुषत् । पु॰ उपमानः। -प्रश्रीसा-स्वी एक सर्वाचेदार नहीं प्रस्ततक अर्थ अप्रस्तुतका वर्णन किया

अप्रवत-दि [मं] असूताः न बीता हुआ (बेत)। कीरा ना न पहला बना (कपना) ।

सप्राकरिका−वि [सं] क्रिस्ता प्रस्टण या विकासे

संबंध स हो। श्रमाकृत्य∽वि [सं] भस्त्रामानिक अक्रीतिकः मशापारगः

समाहातिक -वि [सं•] अस्तामानिक, असीस्प्रह ।

सप्राप्तय-वि० [सं] सप्रवास, मील । क्षप्राञ्च−वि [सं] यानदौनः अविविद्धतः ।

समाचीन-वि [सं] प्रस्ता नदी, नगाः प्रदीव नदी,

पश्चिमीकः ।

भप्राण-वि [धे] प्राचहीन, निजीव । प्र ईक्र । अप्राप्त−वि [सं]न मिका हुनाः न बादा हुकाः न फ्टॅंचा इभा; बपरद्वेदा विसकी कारका विवाहक यांच्य न ध्रुर्द हो अस्पवधस्तः। ≔कालः≔वि विख्यासम्बन्ध माना हो। ने-नक्त । प्र नादमें मतिया हेत्र, उदाहरण भादि वक्षकाम म सक्षतेका दोष (म्बा)। -धीवन-वि० मुबाबरभाक्ये न पर्देशः हका । [न्धाः अन्नासबीवना धी -धय-वि [दिः] वै 'अग्राप्तवता । -वदा(स)-वि कथी एमका नावाकिंग। -क्यवहार-वि वर्षस नाचेका (बाहक)।

मप्राप्ति~की [मं] न मिलना **अधा**मः पूर्वनिवससे ममानित न होनाः घटित न होना अनुपात्ति । ल्समः प्र• बादि या बसद एक्ट बीबीस मेदोंगेंसे यह (न्या•)। भग्राप्य∽विसिंो समिक्तेवाका शहस्य।

 मप्रामाणिक−ि [च] प्रमाणरहितः न मानते थीग्यः भविश्वसनीय ।

अभ्याष्ट्रत−वि [स्त्र] चौ धकान दी अनावतः।

व्यभासम-पु सि॰] भनवन ।

अमार्मितिक-वि [सं] प्रस्तुत निपवसे कसंबद्ध प्रस्तुक विस्त्र था नाइरका।

भमियंवय-वि [तं] है । अमियवारी ।

अग्रिय-वि [सं] जी प्यारा न दी। अवश्यिक जापसीश कैर करनेशाला । पु॰ शाहा शाहतापूर्ण कार्या वेता :-करः-

कारक -कारी(विध)-दिश अवन्तिर ।-मागी(शिन) -बि॰ वर्माम्बद्धस्य । -बाबी(विन्)-बि॰ कडमापी, कठीर बात कटनेवाका ।

स्रक्रिया—सी० (सं०ी शंगी मधकी ।

अधीति∽यो [सं∘] बरचिः वैरः दर्गानः रनेदाभागः। -कर-पि कठोरा जनतुकुकः मप्रिय ।

अग्रेटिस-प किशे काम शीकनके शिप काम करनेवाका। उम्मेदबार । अग्रेम-वि सिं∘ी स गया तथा !- राक्षसी-खी॰ द्रकसी

नामक पीमा।

भग्नैक−त ईसवी सामधा बीधा महीना पनिच!=फुक-प्र पहली करीलकी मजल्दने बंबकुक बनाया जानेकाका अवस्ति ।

अप्रोपिष्ठ-वि॰ [र्स॰] न गरा क्षमाः मी बनुपरिवत न हो। अप्रीड∽वि० (सं∗) अष्टा ग्रीव मद्रा मधका नावाहिय । अप्रीदा−को (सं•ो क्रमारो क्रम्याः वद्य क्रम्या विसका

बाकमें की विवाद हुआ हो। पर एजस्वका स हुई ही। अञ्चल-विश् सि ी गोतशील जो तैरता स हो।

अपमरापति~प [मं] रहा

काप्सर-- की है 'अपस्तााप श्री है अप'हा। अप्यरा(रस)-सी [सं०] स्वर्गकोरू-बासिनी बेहवा परी। भप्स-वि [सं०] बाक्तविद्यानः करूप ।

अप्सुक्षित्न्य (सं०) देवता ।

अप्याचर-वि० [सं] वस्त्री रहनेवाका । अप्सम्बोशन-प्र [सं∗] अपराधीकी पकर्ने ज्ञानकर

सारनेका पंच (की)।

अप्सयोगि~प सिं∘] गोबा वेंतः अफ्रामि-वि+ [फा] अफ्रगानिस्तानका रहनेवाका । अक्रतानिस्तान−५ [का]भारतको पश्चिमीत्तर सौस≻ पर जनस्थित एक देश।

अफ़ाब्रॉॅं-वि० कि:] फाबिक, क्या वा प्रवरा द्वाया ।

भक्तवारे−प्र का दे॰ भक्तार'। अफलाकी ॰~प पहारपर पहलेसे जाकर कारासका प्रवेच करनेवाका कर्मकारी ।

अफ्लामा भाग्य कि क्यूक्याः क्रुक्स होता ।

अफ्रयुन-सो० [ब०] अफ्रोस। भक्रयुगी−वि [श] श्रश्नेमची।

अफरना-स कि बीमर बाना, बनाना के फुकना।

कमना (अफरा-पु देर पूरणनेका रीया अपन ना वानुविकारसे

पेरका प्रकला । अफ्ररा राफरी-सी॰ [फा] यहवड़ गोक्रमारु: बदहवासी:

भार्तक ।

अपतरामा≠∼अ क्रि वे अपरना'।

अफ़रीवी-प मारक्की पश्चिमीचर शीमापर क्सनेवाडी यक पठाम पाति ।

अफल-वि [सं] फल्म्सिहत निरर्भकः गाँस। प्र सामक या झाळ नामक बक्ष ।

अफुछा~सी [सं] भूग्यायनकी। एतकुमारी। अफ्रसात्म~पु [फा] प्राचीन स्नानका एक प्रसुख

```
अफ्रकित—संवास १६८

विद्यान् तथा सार्वतिक, द्वेदी !—का मास्ति-अपने वडप्पन
की बीग मार्विवाका !
अफ्रक्ट्रा—वि [६०] कक्ष्मीमा परिभायसूर्य !
अफ्रक्ट्रा—वि [६] जरपान्न, कामसायक, निकम्मा पदी !
अफ्रस्या—की कि 'क्ष्म्बाद'!
अफ्रस्या—की कि 'क्ष्म्बाद'!
अफ्रस्या—की कि 'क्ष्म्बाद'!
```

स्रफ्रसर-पु॰ का] मदान व्यविकारीः हाकिमः सरवार । -ए माखा-पु॰ मरोच अधिकारी । स्रफ्रसरी-सो॰ मदानताः अधिकार । स्रफ्रसरा-पु [का॰] कहानी आस्वाना वक्त्वास ।

कार्रामानान्यु (काण्) कहाना वास्त्राना वण्यातः । -नवीस -निगार-यु कहानो-वैद्यकः छपन्तसम्बद्धाः -मार्गवा-यु॰ ग्रीटो कहानो । स्रक्रर्स्-पु॰(द्या॰) बाहु मोहम-क्टोक्टरप्पविया ।-गर-

स्रक्रस्—पु॰(पा॰) सार् मोहम क्डोक्टप्पविया। - गर— पु॰ कावृगर। स्रक्रसीस—पु॰ (घा] सुन्ता स्रेटा पण्टाना। सक्रीस—सा॰ ऐस्लेस सॅन्सा श्रीह को नसे और वनासे

िय कासमें कासा जाता है। —ची-वि॰ व्यक्तीम धाने-का जाता। भाजामी—वि॰ दे॰ 'अक्तीमची'। मकुकु–वि [मं] बांक्किति (पुण्य)।

सपुरुकु—ार्थ[ह] आवस्तास्य (पुण्य)। श्राद्धेन्-वि [संग्र] विसमें केल न हो। हु व्यक्त अर्द्धिक-विश् सि [जो पंछ न हो। अर्द्धेक-विश् सि [जो पंछ न हो।

सर्वध-(१० [१०] वे 'कर्यचन'। सर्वधम-(१० [१] वेबन-(११०, एवण्डेत्र) सर्वधु सर्वोधय-(१० [१] तिमहीमा, श्रतेका नियते वेदेरं स दो। सर्व-त रस समय रस द्वाय फिल्हाका मारोसे!-का-

रब-म रेस स्वर रेस या फिल्हाक नेगर निकार वर्तमान करकत, सारका, आधुनिक । नहीं नके न्सर मार कारके बार! - जाकर-रुगों देर कर । नती -बार मी; देवनेगर थी। -से-मानेने बार्डमा सुक -तब करना-भार-क करना, साकसेक करना। -तब करना पा होता-मरगालव साना उठ देखा मैकरार होना।

सब-पु+[स] वार विगाः। सबलरा-पु [स] भाषा मुखारका वर्षः। सबदनां-मु दै विश्वतः।

स्वतार-(२० (६)] शिक्षा हुमा। दुरा, धराव । श्रवतारी-र्या० (घ्य०) शिक्षाः अपनीति, सरावी । श्रवद्य-(२० (६०) प श्रिषा हुमा हुस्का स्वच्छन, स्वायाः अर्थहीन नेमत्वता । -सुम्ब-(२० वी समसे स्वते वह स्कृतेस्था व जनान !-सुम्ब-(३० तीसमसे वह स्वते वह

भवत्क-ि [र्थ] देश भिन्दा । सम्पाण-दिश स्थाप । भवपूर-पु भवतून सन्दासी । वि नवीत । भवपूर-दि [मंश] न मार्थ भोगाः ववर्षके असीत्व

स्वरं निर्माण कारी। स्वरं किन्द्र से अंतर् । स्वरं किन्द्र संबद्ध वर्ष संस्था वर्षर । स्वरंकन्यु से अंतर्क । भारति - विश्व क्षार्यक्रमेद्री वार्यतिक्रमा रेग्सार वमासर् स्वी - एक वरहका रंगसर कागव वो निरस्के क्सर क्सर भारत हैं 'मार्स्क'। एक वरहका पायर। एक दरस्य साराव रेगारें। स्वादक्त-सोर्गका] भी। मुठ - पर (मॅं) बाज काय-क्रक कीगा, स्वीरी कड़ना। - पर सेस व वाय-

(जापाय जारिका) करार ज होता; व्यवेषांक्र रस्ता। अवक--वि [मंग] नकहोतः कमनोरा वर्धायः। पुण्न नस्त कृष्ण निर्वेष्ठमा। अवस्थक--विण् [घाण] सप्तेर-क्षाया; सप्तर और राज रणका निर्वेश्वयः। पु पेते शाका योगः।

(पक्रा न्यान्याः चु ५६ एका पारः । क्षक्रस्म-चित्र हेत्र अवस्क्रः । अवस्यसम्बा-चीत्र च्या चिरिता । स्वयसम्बा-मी [यंत्र] सी, नारो । अवसायस-पु [यं] द्वित् ।

अवयय-पु [म] तिनंत्रता, कत्वादी। करारायाः अवयय-पु॰ [का॰] मालगुजारी या जानस्य त्यनेतास्य अविरिक्त करः गौनके व्यापारी जारिते वर्वासस्ये मिकनेताला करः । अवस्य-अ [सः] वैक्टार, व्यर्थ। दि॰ निरर्थक, वैजायस्य ० जो अन्यने वर्षास्य संः।

सर्वाहु०-(वे॰ दिना गरिका; शनाव । शवा-पु० (व॰) संगेडे दमका एक बहनाना यो कार्रे शरिक क्या शिवा दे नाहम । श्रवाही०-भि निर्वाह; रिक्ट रूपमे बळमेवाला । स्वाहा०-भि निर्वाह; रिक्ट रूपमे बळमेवाला ।

स्वयात्तन-वि भाषारा सवदः। अवादानी-वो वे 'नावरानो । अवादानी-वे वे 'नावरानो । अवादा-वि-वे) पावराति नेरोकः निर्मित्ता स्मे रहित अवाद, असोन । यु वादा वा स्मेन न होता। अवादा-न्यों [बंक] निम्नको भाषारक्षा संदर्भ वदासिव। अवादा-न्यों [बंक] निम्नको भाषारक्षा संदर्भ वदासिव।

जवाधित-नि• [र्स] जी रीका म गया हो सामित

शिराका राष्ट्र में किया गया हो। जीनिक्स । असारम-शिक [में] जो रोका म जा रामे । असारमिय-शिक [कां] एक छोटा विशिषा की प्राप्त ग्रीकहरीमें पीममा बनाती है। असारम-जोड़ कथा, देर। मा छोटा जरूर हो-"रामी शिरावींह को स्वक्त रहीनकर असार —रहे। असारम-शिक होने की अस्टक म हो, जनाजा नास्त्रीना

नदी पुरुक्षेतित । हे पुरुक्षेत्र ईसुरियोजे वर्षी

े प्रानेगधी रणी । अवासम्लच्च माग्रह घट । सवाहा-वि॰ (छ॰) बाहरी नहीं, भीतरी; पूर्व क्यरी परिभिन्त; बिसमें बहियाँग न हो। सर्विद्यन-पु (छ॰) बाहबास्ति।

अधिया-पु० (ते०) रावणका एक मेत्री।

भवीत-वि॰ [सं॰] बोबदोनः सर्प्सक ।

सवीमा-वा • [सं०] कर्ग्यका पीना। किसमिस ।

भवीर-पु॰ [बा॰] वह सास रंग विसे हिंदू शपिकतर

दोहो बेक्सेके काममें कावे हैं, गुकाल।

भवीरी-वि अवीरके शक्तः। शतुक्राक-वि• सब्कः, नासमञ्ज

अयुद्ध-वि [सं] दे 'शतुष'। अयुद्धि-को॰ [सं॰] सदान, नासमहो। वि॰ सूर्यं,

नासमञ् ।

सञ्जय-वि [सं] मूर्व, नासमधा । पुर्न व्यक्ति । सञ्जयककाम भागाय-पुर्वनम १८८५, १९१२ में विस्

अबुरुष्कार आजाव वृत्तु कमा १८८०, २२२२ म अव विकार पत्र निकाम, सरकाम ने यह वृद्ध स्त्र मौकानाको नगरवंद कर दिवा। बनवरी १९१ में गुफ दुष, असद बोगमें महारमात्रीके साथ रहे। १९४४ में क्रिस्सके साव और १९४६ में निरिद्य मीनोके साव क्रोसेस्के एकमान प्रतिनिधिक्तमें वार्ता का। केंद्रीय सरकारमें किसामेंगे १९४७ से ।

श्राबुद्दाना रूम । भि भेषाविते आविष्ट होकर दाअ-पैर करकताः वढ करना ।

अस्-पु [अ] बाप, विदा ।

सब्द्रस∽वि नासमझ निर्वेकि अधान।

सब्तर-निमार्थ, नंदार। सबे-म॰ तिरस्तार-स्वद संनोदन नगें रे, अरे। हु॰ --

खबे करमां-अपसास-असक बंगते नात करना । अवेशक-वि जो विचा न हो अनविचा ।

सन्तर - सी । देर अदिकाक । मु वहना।

श्रतेस≑−वि मविकृत्दुतः।

शबैन#−वि चुप मौन ।

कबोध-वि [स॰] कबान मासमझ वनझ्या हुमा। पु बानका समानः -- राज्य-वि अचितमीय वारणा-श्रीकरेपरे।

अवोख~वि० म बोकनेवाका, मृक्, मीन; अनिर्वचनीव । पु कुनेक । थ॰ विना वोठे हुय, चुपदाप । अवोख्य≉-पु॰ स वोठना। रोध वा मानदे कारण न

भाषोक्तर - पुण्या नीक्रमाः रीप्या मानके कारण न बीक्याः।

लस्त-वि [६०] बक्से उत्तव । पु काक; श्रेख चंत्रमा मर्गवरित मिनुस बृक्ष कृपुत गर्ल (१, , , , ०)।

-क्षिक्त-को कमक्क स्ट्रमा गर्ल पु मक्षा।

-क्ष्मित-को कमक्क स्ट्रमा -क्ष्मित-वि कमक बेरे नवे चीर संदर नेमोलका। -बोधव-यु स्ट्रमा -मल -मू-मीनि-पु० महा। -मोग-पु० सँगीः। वशे क्षेत्री। -बाह्मा-ची० कस्मी।

-क्ष्मित-पु० सर्व।

अध्यात् पु [अ] अरवी वर्णमाकाके (२५) वर्षः अरवी वर्षमालाः वर्षति संकोका काम टेनेकी प्रणालीः - प्रवा-पु वर्षमाला परनेवाकाः मीसिटियाः।

अव्या-ती॰ [मं॰] सदमीः सीपी (मोतीदाकी)। अव्यात्-पु॰ [सं॰] इंस ।

अध्यात् तुर्वातर्वतः अधियानी−सी॰ [री॰] कमधिनीः पथ-समृदः कमरुकः

पीया कमक्ते मरा हुआ ककाश्चम । -पति-पुरु सूर्य । कब्द-पु किन्। यसा तेवकः [संन] पु पप नारका एक पर्वतः आकाशः भुस्ता मामक सान। ति । जक देने-बाका । -श्च-पुरु क्योतियो । -प-पुरु यह । -साहम-पुरु क्षित्र । देहा । -सार-पुरु कपुर ।

बब्दुर्गे—पु [सं∘] नद्द किया जिसके नारों ओर पानीसे भरी खार्य वा झील थी।

श्रवित्र-पुर्व [सं] समुद्रा श्रीक, ताक सातको संस्था।

-क्ष्य-पुर्व समुद्रा स्त्री - न्य-पुर्व प्रेमा; संक्षा सिंदगी |-व्या-पुर्व प्रमा; संक्षा सिंदगी |-व्या-पुर्व प्रमा; संक्षा सिंदगी |-व्या-पुर्व प्रमा | न्यारी-जीव सारकापुरी । -व्यवनीत्रक-पुर्व प्रमा | -क्षेत्र-पुर्व स्मा स्वापी - क्षेत्र-पुर्व स्मा स्वापी स्वापी स्वापी - क्षेत्र-पुर्व स्मा स्वापी स्वापी

अरुपाग्नि-सी॰ [सं] बाटवाग्नि ।

कारवारण—वि अवल, क्षतजोर । कारवार-पु [बार] वाप, पिता ('अव का संवोचन क्रप)।

—व्यान—पु॰ पिताओ। अध्यास—पु िक्ष ो अदम्मदके चनाः यक पीका जिसकी

्यक् जीर भूक व्याके काम भाते हूं। सञ्चासी-वि॰ [स] सम्मासके (भूकेंकि) रंगका, ठाउ ।

की मिल देशको एक तरहको क्यास । अस्मितु पुरु [सं] अमुक्त जाँस्।

कारमञ्जू-पु∘्यं] समुद्रण कार्य्। स्टम्पक्ष-वि (सं∘) पानीके सद्दारे जीनेवाका! प

्पानीमै रहनेदाका यक धाँप । असमञ्ज्ञण–पु [धं] पानी धुकुर रहना यक वरहका

बपबास जिसमें केवल पानी पीरो है।

सम्झ−पु० (तं•) दे 'सम्र । सम−पु (का] नादक, पदा।

अन्यसम्पन्निकः स्थिति । ज्ञासनके अयोग्यः अज्ञासनोभिकाः ज्ञासनके प्रति कैर रखनेवाकाः। पुरु ज्ञासनके अयोग्यः कर्मा विधापि कर्मः।

समाह्यस्य−पु (७०) वद जो माहरा न दी; माहरीदर कारितः। वि माहरादीतः। समाह्यस्य−पु (सं] माहराके कर्नकता स्टस्टनः।

भन्नाहाय्य−पु [सं] नाहामके कर्नमका स्टर्बन; भन्नहास्य।

अन्न्ना [फा॰] दे 'कपरः'।

कार्यगा—वि [सं] क्ष्माण्य न दूरा कुमा न दूरनेदाला। युक संगीतका पक ताका सराठी भावके एक प्रकारके पदा भंग पराज्य कार्यका नमाम। --पद-पु स्थय कर्तकार का एक में मर्ममें सम्पर्ध होना वीते सूनरा अर्थ निस्तक किया जाता है।

अर्जनी(गिन्)−वि [सं]दे• 'अर्मग'; ≉ जिल्लस क्येई अकुल गुक्ते सके।

असंगुर−वि• [मं] रिवरः जनस्यर ।

धार्मसन-वि [र्शः] विस्का संत्रम में द्वा सके। पुः किसी परार्थका कर तस्त्रीमें विभक्त स दोना।

भगक्त~भग्निजात ममकः −वि० [सं] विसमें भक्ति वा बारवा स हा। वर्त-बदः अपूत्रका अरबीहरता म खावा होना जिसके द्वकते न पुण को समुचा । पुण बाहार नहीं साधेतर क्याई। अमक्ष, अमक्षण-पुरु [धु] आहार स 'प्रहण करमा. उपवास । समस्य−वि० [सं०] म द्वाने वाग्यः विसके सामेद्वा विषय की। विसका साला पाप मामा गया हो। पुर वह साव परार्थ भी निषिक्त हो। असरा-वि० [मृं०] शास्त्रशील । अभगत+−दि को मक्ति न करता हा। असझ−दि॰ [सं॰] स द्वा हुआ, जबंदित; अवापित । असक्र−वि [मं∗] अञ्चय, धर्मगण असम्ब, शक्तिशः। पुरु महिता तराई: शोका पाप । समय-पुर [मं०] सबका समाव निर्मवता। परमारमा परमारमधान; मान; भवसे रक्षा क्षितः वद जिल्हे पास कोर्र शंपति न हो। एक बाजा-मुहतं; सस । विश्मवरहित निन्दः निरापद ।-वारी(रिम्)-पु ने अंगली जानवर विनक मारमेक्प मनादी हो ! -विविध-पु॰ पुरुवायः श्रदक्षको भीपना ।-इक्रिणा-स्रो+,-तान-प्र• रक्षाका वयन देनाः छरण दना । - एश-पु॰ रक्षान्य कियात कारात्मन । -प्रद-विश् असय देनेवाला । -सुद्धाः-सी समवदासकी मुद्रा। एक तंत्रीक मुद्रा !- बचन-प्र रहा-को प्रतिदा । −वस−५ १६८त वन रहाँत । →परिग्रह ─प्र• सर्व्यत मंगळ-गंथंभो सरकारी निवसका प्रशेषन । असवा−द्यो सि•ो इरोत्तकोः धर्मका यक रूप। अमरण-विण हुर्वह, की कठावा वा बीवा म का सके। भगरम*-५ र• 'बामरण'। भसरसः असर्म-वि प्रमर्शात विपर्धकः। समर्तुका−वि॰ त्री॰ (वं॰) विषवा: कुमारी । भमक्र*−ति महानहीं हुरा घरात। असद−प्र (सं•) ए होना अमन्तित्वा मोछा प्रक्रव ध क्रमक्य-वि॰ सिंशी व होते बोम्या भवीच्या कर्तरम बर्माग्रहिन्द्रः अमागा । असाळण-वि जरवित्रसः असंबरः असीमनः अमह । भमारा-दु॰ रे॰ 'समाम्य'। दि [तं∘] नित्तका कार्र हिरमा न हो। अविमक्त । **अभागा-वि•** भागवद्दीम क्टममीव । भसागी(निम्)-दि [मं] बायणात्रमें दिरमा पानका सम्भिकारी। समागा ! त्यो अमागिनी ।] अभाग्य-वि [सं] बृध्यो, भाग्यदीन । पुरु भाग्यदीसना, वक्तिसम्बद्धाः । अभाष-प [म•] म होना, अनिगत हाता कापा क्रमी। * दर्मात । दि रनेवदीम । - पदार्थ-त वद परार्थ जिगको सुना न हो ।-धमाण-पुन्यायमे माना

पाने बाला एक प्रमाच ।

करितशीय ।

भभावम् -- विश् सुन्द, रुनिक्द ।

acted t अभिकाश-पु [मं] अपग्रम्य इहमा। निहा करना। श्रमित्रया – सीव [बुं•] श्रीमा, क्रांति नाम, प्रतिरि माद्वारम्बः वर्धाः । श्रमिल्यात-वि [तं] प्रसिद्ध विस्थातः यश्रमो । अभिक्यान-प्र• [म] भामा बद्धा प्रसिद्धि । अभिगम अभिगमत्र-पुर्वानी पास जाना। पनेत्री अभिगामी(मिन्)-वि [मं] भूमिगमन क्रनेशता। भिग्राप्ति न्या [न] रक्षय क्यामा। अभिगोप्ता(फ)-वि वि रेसा वरनेवाना । अभिन्नारत-विक [म] शह हारा आकांत । असिमह-पु० [सं०] प्रदूष कृतदः सुद्धः आग्रमकापुरि शिकायतः शशिक्षरः । अभिग्रहण-पु॰ [मं] दिसी वरतुका उसके मार्थर शामन अपदरण । अभिषट−पुण्कप्राचीन बाजा । असिमात-तु [म] प्रहार जापात, शोर पर्देश विनास । अभियातक, अभियाती(तिन्)-वि [the] which **६**रमेगला । अभिषार-प (पं॰) यो। दीमर्ने योग्री भाइति। नपार । जामेचर-१ [शं॰] मीइए खन्नर । अभिचार-प [मं] नताल मार्च, मोहम उदार्थ के अमृशामा १रे फार्मी है किए संबद्धा प्रवीत । अभिचारक अभिचारी(रिमृ)-वि [rio] वॉर्स्य^{प्} श्ररनेवाना । व्यक्तिकन−पु[नै] पुन्न, वैदा प्रस्मा, क्षय कुन्नी क्रम जनमन्मि वह स्थान जहां भाष राहा आहि जनमें व रहने हीं: घरका मुस्सिना या अंध्र व्यक्तिः स्वाधिः अनुबस इमराधः । अभिजय-सी० [तं] वृथे वितय । समावमा-की [मं∗] (वंदरश अभावा प्यांत सारिका मनिजास−डि [सं] हय मुन्मे परस अभाषतीय-वि निन्ते विसदा विश्वम म दिला जा सके बीग्या श्रीपरा मेवा निशासुर शुक्रिमासूर पु वया वेगा कुरीनदा ।

अभाविस्तलि [सं०] जिसको मानना न को गरी हो।

अभाषी(बिन), असाध्य-बि॰ [मं०] स होनेगला।

अभि-एप॰ [र्ग+] यह सम्भौके पूर्व अन्तर और, हा

(अस्वायत) पास, समीप (असिसार), अपर (असि

में (निमार्ग) कति सरविष्य (मिन्दर), राज्य

प्रना-प्रना (अम्बास) बादि अबौद्धा स्रोतन बरता है।

अभिक∽वि० [सं०] कामी, इंक्ट। पु प्रेमिना इ

समिकाम∽नि॰ [मं] स्थारुः स्नेदीः दक्षकः। इ

अमिकस-पु (५०) सार्था प्रवृत्ता साहमना आहेता

अभिक्रमण−पु अभिवृत्ति-स्तं∗ [सं] दे 'वां

असायण-प्रसि निरोक्तर मीनवर्गन

समापित-वि [र्यः] सम्भित सन्तः।

असास≠-पु• दे 'सामास'।

मिमक्द-पु[4] (यहाइट।

प्तारः रच्छा ।

अभिभाति−सौ सिंीक्कीनता। अभिज्ञित-प॰ [सं॰] एक मधत्र दिनका भाठमाँ सुदूर्त । भमिजिल-वि [सं•] विजय माप्त करवेवालाः भगिनितः मञ्जूषे एत्पन्न । पु॰ एक नखत्रः एक रूधः दिनका साठवी सहतं दोपहरके एक पड़ी पहलते एक धर्म बान्तकका समग्र एक वक्ष विच्या । समिज्ञ−वि० [सं] सानतेवाला कुछ्छ ।

श्रमित्रा-छो• सि•ो पद्यवानना याद करना।

अभिकास-प [मं∘] पद्यासमा याद करना जानमाः पश्चामः निद्यानीः मुद्रान्धे छाप, मुद्दरः। -पण-पु॰ प्रमाचपत्रः सिफारिशकी निद्रौ । --सक्रीवस्त्र-प्र काकि दासकृत एक प्रसिद्ध सान्य ('शाकुतक' बसाधु) ।

अभिज्ञापक⊶ि [ध] जतानेवाला ।

श्राभितः(सुस)~म [सं] निकटः सब गौरसेः पूरे सौरसे। कमिताप-पु [मं] भरविष ताप (शारीरिक वा मान-

सिक्) पीड़ा श्रीमा मानावेछ !

क्रसिदर्भन-९ [सं] देखनाः दश्य दोना मकट दोना। असिद्धव असिद्धवज−पु[तं] बाकसणः श्वमिद्यत-वि [मं] नामातः रौदा तुमा।

समित्रोह-पु [मं] दुराई। हानि: निष्टुरता क्रापीइन। गाकी सिंदा। **अ**सिधर्मे−५ [स] शेष्ठ वर्ग- अध्यात्मतस्य (गी) ।

-पिटक-पु नुबद्धक उपरेक्षीके तीन संमहीमेंसे एक बो शैक दर्शनका मूल है।

अभिधर्पण-प• [मं] प्रेतादिसे शाबिह होना । **असिधा—को** [मं•] नाम उपाधि शब्द शब्द**का** बाच्यार्थ या बद्धरार्थ वाच्यात प्रकट करनेवाली श्रमध्ये प्रस्ति ।

व्यक्तिश्राम् -पु [म] मास उपाकि अवन श्रन्य, श्रन्य क्षेत्र सगत। - मासा - की शुक्रकाश।

श्रमिधानक−पु•[मं] भ्रष्य आवात्र। श्रमिद्यासक-प्र [सं](अर्थविद्येषका) वाषक माम देन

कहते या प्रकट करनंबाका । [त्यो : अमिशायका ।] **भमिधायक−वि** पु [मं] नाना करनेवाकाः आक्रमण क्रुएनेबाका आफ्रामकः

समिधायम-पु॰ [मं] शासर्गण वावा।

श्रमिद्रोद-वि मिंीनाम देने बोल्य दलनीय वाल्यः प्रतिपाच सामवाना नामक। य मानार्थ विषय ।

ममिच्या-न्यां व [मं] कालकः वच्या व्यवस्था भारते की श्रष्टा ।

ममिष्यान – पुर्मि पाद् प्रच्छाः कीमः चित्रन । अभिर्मेद्∽वि [मं]प्रमन्न करनेवाका।पु आसंद मसच्या प्रशास वनारः वन्त्रसः बोल्सावनः अस्य सन्तः

पन्मात्माका एक माम । मिनंदम्-पु॰ [मं] आमदित या प्रमन्न करनाः सराहना करनाः मौत्सादमः वचाई क्षेत्राः स्वागत करनाः विनतीः

रण्टाः सामा ान्यम् नपु मासयत्र "श्रेष्ट ।

भभिगंदनीय अभिनंदा-वि॰ [म] वागिनंदन क्री बोम्प ।

श्रामिमित्र-विश् मित्री प्रमुक्त श्रामितंत्रन किया गया हो। अभिनंती(दिन)-वि० [मं] अभिनंतन करनेवासा । अभिसय~प० सि•ो सनीयत भाव व्यक्त करमेवाको दारीर चेत्रा आतिः विसीक्षं कार्यः चेत्रादिक्षी स्टब्स बरलाः नारक सेकनाः नकक स्वाँग ।

अभिनध-वि॰ सिंो गयाः विस्कृतः नदाः ताजा । अभिनद्दन-प्र[सं] औदापर नॉवनेकी पर्हा।

अभिनिधन-वि रिंशी बिसका नाश विकार हो । प सामग्रहका एक शंत्र जिल्ला हैने अवसरपर अप करते हैं। अभिभियोग-प (सं०) संरुप्त होनाः (दार्वमें) वत्त विकास ।

समिनियाण-पु [सं•] कृषा शाक्रमणा शहुपर साह्यमण

करनके किए आगे गढमा । मिनिविष्ट−वि सि॰ो अमिनिवेश-तका

अमिनिकचि-की [सं]कार्वकी समाप्ति पृष्टि । अभिनियेश~पु [सं] जाप्रशः संस्टरपः स्टब्स्ट या स्व मनुराग पत्नी कमन कार्यविशेषमें एक निकास और मनी-बोगके साथ क्य बाजा। बोक्टर्शनमें बताये पाँच क्लग्रॉमेंसे

ण्ड-मरणसम् **मन्द्र श**ञात । श्वमिनिवशित्र-वि॰ (सं] प्रविष्ट किया हमा॰ ह्रवाबाहमा। श्रमिनिष्क्रमण-१ [सं∘] बाहर जाताः प्रवस्थाके क्रिय

गृहत्वाग (बी०) । मभिनिष्यत्ति - सी [शं•] पूर्वताः समाप्तिः सिदिः।

श्रमिनिष्पश्र−वि॰ [सं] पूर्ण- समाप्तः सिकः। अभिनीत−विष् [धं] अभिनव दिवा हवा; अनुकृतः निकट कावा हुआ। सुसम्बद्धाः क्षेत्रकः दोव्यः उप्तितः धार अक्षः

दवानाः क्रपासकः। शमिनेतम्म, श्रमिनच-वि [d] अभिनव करने दोग्य ।

व्यामेनेता(त)-प [सं] वाभवय करनेवाका पेक्टर : [सी 'नमिनेत्री', फेड्रेस 1] अभिज्ञ−वि [मं] यो अन्यम प्रदेश सददासत्र स

रखनवाकाः एकस्पः व्यविद्वतः अपरिवृतितः अविसन्तः। ~पच~प वचेप शर्डकारका एक मेद जिसमें प्रका शंग न का वर्गात परे परका स्लैप हो :- इत्तम -- वि पक्दिक्त एकवास 🕽

कमिश्चता−त्यो० [सं] भेट वा विक्रमत्वका अमावः गहरो भित्रताः पश्चस्यता ।

अभिन्यास~प्र सि] एक तरहका साक्रिपातिक क्वर । अभिपतन-पु (प्रे॰) मक्नीक जाना भक्रमण करबाः प्रस्थान करका ।

अभिपत्ति-न्यौ॰ [सं॰] निकट थानाः समाप्तिः पृद्धि । क्षमिपक्र-वि [श्रे] निकट पदा वा बाबा द्वजाः परा-यितः परामृतः भाग्यश्रीनः संकटमन्तः स्वीकृतः दीवीः

अभिपुष्प−वि [सं] कृष्टीसं दशा दुशा।पु विचाफुछ।

मृत- दूर इरावा हुआ।

अभिप्रणय⊸पु॰ [मं] प्रमा कृपा, अनुभाइ। मित्रणवम~पु॰ [मे] वर-पंत्रोंके हारा मेरकार करना । व्यक्तिप्रयय-वि [में] मतः।

थानिप्राणन−५ [मुं•] साँग बादर निकासका।

श्रमिप्राय पुर्व [र्थ] छरेश्य, प्रश्रांबमः श्रवकाः बाङ्यः, मरक्य रागः संश्रो विच्छा ।

मतकव रावः संबंधा विच्तु । अभिमेत-विक (मिक) छदिष्ट, अभिक्षिता स्वीकृतः भिव । अभिच्छव-पुरु (सिक) उपन्नव चरपातः उत्तराक्तर वस्ताः बादः। गवामयन अफ्ता अंगस्य क्रमेविशेवा प्रावास्त्व कानिरः।

व्यक्तिमत् -पु॰[तं॰] इराला दबा छेना; शाह्यमगा तिरस्कार, लप्मान: प्रदक्ता । लिमाना, असिमाबी(बिन्), असिमाबुक-दि॰[तं] इरानेवाला। वसमें बरनेवाला वदा रसनेवाला: आक्रमण

इरिनिमाला। बद्दार्थं करनेवाला व्या राउनेवाला आक्रमण करनेवाला। विरस्कार करनेवाला। संरक्षकः 'गाविवन' । अभिभारणा पु [४०] बोकना भावन सरमा। भावन। अभारपण्या (विश्वमा) सरका।

समापिका (विश्वित) मार्गण । समापिका (विश्वित) मार्गण । समामुक्त-विक (सं) पराजिकः बक्तमें किया हुनाः

भाकाता गेडित। असिम्हि-जी [गे॰] श्रीमम्ब। असिम्हि-जी [गे॰] श्रीमम्ब।

झमिमंडल-पु [र्न•] सवामाः क्युश्सवर्धन । समिमंता(न्)-वि [सं] गर्वे स्टनेवाकः वर्गते । समिमंत्रण-पु॰ [सं] मंत्र हाटा संस्कार वा पवित्र

क्रमिसंग्रण-पु॰ [सं] संग हारा संस्कार का पवित्र करनाः नावाहनः स्वत्राः नावाहनः स्वाहितः । स्वाहितः

কালাহর।
আনির্মান বু [년] কারের ফর বান।
জনিমত বি॰ [년॰] বছ দিব সনবার। প্রমান।
জারিমত প্রবাদ স্থান। মান্ত্রার বাব।

रवीहराः आस्य । प्रश्नाः शतः। मनवादौ वारः । स्रिमारि – स्री (११०) अभिमातः गरः १३ सिकादाः रातः विचारः । अभिमारु – पु. (११०) सुसद्दिः सर्वते स्रवस्त सर्वतन्तः

देश (वाँ महामारतमें नकतन्त्र्यका भवन करत समय मारा गवा)। का समय-पुन [मंन] माहा ववा सुब, संपर्वे। अपने पत्र हारा विशासपात नैरा वह वो निरास होकर सेंद्र वा हाथित करते कि अभी बड़े।

स्रास्त्रम् १०-५० (मं] पेसमा रणप्रमाः नियोगमाः कृषः स्थाः हुदः। स्रास्त्रम् स्थानसर्गा(शिम्), स्रासमर्थकः, स्थानसर्ग (सिन्)-१० (मं] स्थानसम् स्थानस्य।

(चिंत्)-दि [मं] वाभिमत्तेम करभवाचा । क्रिभिमर्शन क्रमिमर्थण-तु [तं∗] सूनाः कळ्नमवा मृत्तोगः। वकरकार (१) ।

स्रमिसाद-पुर्व [मं] नशा । स्रमिसाम-पुर्व [मं] गर्व, वर्धतः ।

क्रमिमामित्र-5 [मं] कर्षध्यरः प्रेयः संजाम । वि• गरित ।

गरित । अभिमानी(तिन्) -वि शि॰) वर्मडी वर्षा वयनेकी

वासमाना(पार्ट) वदा समझेवाला । अभिमुख्य-विश् [मंग] जो किसीकी बोर सुस किने हुय हो; प्रदुष्त कथन । अ और, सामने ।

स्रसिम्प्रम् (१०) सुना दुला नाहारः । स्रसिम्पन-पुरुभसिमाच्या-की [मं] त्रावनाः वास्याः सौरता ।

म्प्रांता। भभियाता(न) भभियाबी(विन्न)-वि [वं॰] निवद जानेवाकाः आक्रमच करनेवाका ।

क्रियाव-पु॰ [सं॰] सामने जामा। पुरदे किए नने व्यना, ज्यारं, शास्त्रमध ! असिमुक्त-वि॰ (सं॰) क्रियस अधिबीम क्रम्या का है।

ग्रेजियम व्यवस्थानी संक्रमा बाह्यदेश (दिवृद्ध वर्ष) स्व (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर्ष) वर्ष (वर्ष) वर

न्योप-पु स्व दोन विकोश निर्माण करा थे।

न्योप-पु स्व स्वीर दिल्ला स्वाद स्वाद

केता।
क्रांसिरसम्-पु [भं०] (क्रियं चांत्रमें) जानंद केता।
क्रांसिरसम्-पु [भं०] (क्रियं चांत्रमें) जानंद केता।
क्रांसिरसम्-पि [स्तुं] प्रतक्ष का संग्रह क्रिया हुन्या।
क्रांसिरसम्-पिश्च [संग्रह क्रांसिस्सम् स्रियः।
क्रांसिरसमि[मिन्न]—पि [संग्] रमण करनेचाला। संगर

करमेनाका। क्षांत्रित्वेक्ष-म्बा [सं-] चाद श्रीकः ग्रुकानः निधेर वर्गः क्षेत्रि कारिको क्षांत्रकाः। क्षांत्रित्व-स्व [सं-] श्रम्यानमानः ग्रीवत । तु सन् स्वर । क्षांत्रित्वा-स्वी [सं-) एक मध्यंत्रा (स्तरेग)!

अभिक्ष-वि [लंग] अनुस्या संबद्ध मनीवरा विश

अनुर, विश्वान् । पुरु क्षंत्रमाः शिकः विष्णुः कामरेव !

क्रमिरोस —पु॰ [नं॰] पोरानीया कह रोग । क्रमिस्स्रीस्त्रल —पि॰ [नं॰] पिद्धीने गुरुः गुरुं दि । क्रमिस्स्रिपन—पु॰ [नं॰] नाहता तरणा दरसा क्रमा करणा व्या क्रमिस्स्रिपन—पि [नं] पादा दुना, वर्गाट्ट । क्रमिस्स्रिपन—पि [नं] पादा दुना, वर्गाट । क्रमिस्स्रिप—पु॰ [नं] प्राप्ता क्रमा वर्गाना स्थापनवर्ग । क्रमिस्स्रिप—पु॰ [गं] प्राप्ता क्रमा वर्गना स्थापनवर्ग ।

स्रियसम् अभिन्यस्य-तु [र्गः) भार १५०॥ होम्स भिन्ने मिन्नभी १२६॥ अभिन्यसम्बद्धान्यस्य (१०) १० 'कनित्यमे । स्रियसम्बद्धान्यसम्यान् (१०) १० 'कनित्यमे । अभिकास्य (भिन्न)-१० (१०) नाहनेतस्य १९५६।

श्रविकाश−व [मं] याम प्रतन्त वादि शासा ।

.1

ø

43 स्किकिक-वि॰ सि] हिसा या सीवा हुआ। समिक्षीन-वि•[सं•] अनुरक्तः काशका पसंद किया हुआ। अभिस्कित-वि [एं०] शुष्य, अरियर मीहानुक । अभिसद्धा नभी [र्थ•] एक तरहकी मकड़ी । समिक्षेत्र-पु० [पु०] केस-प्रस्तु, तालकः आविका सुदा इसा देश । भमि**सेस**न~पु [एं॰] किसनाः श्रीदना । असिकेश्वित-प् [सं•] किपिकड् प्रवादि । वि• किपिकड् । भारितंत्रित-विक [सं] की छका गया हो, जिसे कीसा दिया गया हो। अभिवंदन-पु॰ [सं] प्रयास करना वंदन । अभियंत्रमा - स्री [सं•] मभन्दारा स्तुति । क्षमिर्वद्वनीय, कमिवंदा-वि (तं) प्रणाम करने वीन्त बंदनीयः स्तृति करने बीग्य । समिवंदित-वि॰ सि॰] समिवादितः वरित । भमिवयन-पु [सं] प्रतिशा नाया । **श्रमियदम~पु॰** [सं] नमस्कार, प्रणाम । समिवर्यन-प्र [चं] (किटीको शेए) यहनाः सक्रमण बरता । स्रतिबोधा-चौ [सं] इच्छा कमिकला। **अभिवांक्षित-वि॰ (सं } अमिलवित मनवादा । प्र** श्चमा विमित्राचा। कसिवादः कसिवादम-प (च) प्रणाम करनाः क्रीटेकी **भोरसे वहेंको** समस्कार । समिवादक, समिवादियता(त), समिवादी(दिन)-वि [सं०] असिवादव करनेवाका । कमितादित-वि सिंशे किसका आवरपर्वक अभिवादन किया गवा हो। अभिचारा~वि० सिंो अभिनातन करने योज्य । सरिकास अभिवासन-४ (श्रे) मानरण, चाररः प्रसादिसे भल्कादित करना । ममिबिनीत-वि [र्य] स्थील शिष्टा शिवितः शब्द पॉवेज । भगिविमान-वि [t]] अपरिमित अकारकाः परमात्मा-का पक्ष विशेक्य। कमिबिधार-(व [मं॰] श्रविस्थात शप्रसिद्ध । भमिवक्टि-सी [सं] सफलता। भरती जन्मुश्य । भमिष्यंज्ञक्-विश् [सं] प्रस्ट करनेवाला । भग्निय्यंज्ञन−पु[सं≉] अग्निय्यक्तिः। षमिष्यंज्ञमा—सी॰ [तं] शतिव्यंजन। धिमध्यक्त-वि सि । प्रकृत स्पष्टः महाशितः कार्वस्य-थमिय्यक्ति∹सा [सं] मक्त, प्रकट होना। कार्काः कार्यक्रपमें माविर्माणः प्रसाद्यतः । भमिष्यापक, भमिष्यापी(पिन्)-वि [तं] सव और चैका हुमा। समावेश करनवाला। **व**भिष्यासि –सा [सं∘] सर्वेम्यापनताः समावेश । अमिर्शका-स्रो [सं•] स्पेंद्रा विना। आहोका अन । श्रमिशंसन-पु (सं•) दीव क्यानाः स्टा वीव क्यामाः भोट पद्रमाना ।

भमिशपन-प्रव शि] श्रुठा भारीप । कामियास-वि [एं०] शापितः नमियुकः विसपर सठी तहमत क्रमाबी गयी हो। व्यमिक्सल-वि॰ (ए॰) कमिन्स । क्रमिश्रास्ति-खी० सिं०ो व्यमिशापः विपरि । अभिशाप-प॰ (धं॰) छाप, रिसीका द्वरा मनानाः रुष्टिनः विश्वा जारीय तराई। अनिस्का हेता । श्रमिसापभ−प्र॰ सि॰] शाप देना कीसना । श्रासियंग असियंजन-पु॰ [सं॰] पूर्ण संबंध वा मिकना वार्कियनः संगीयः धार दाताः अचामक बावा द्वमा संबद था भाषातः श्रमक कौसनाः प्रवादिका भानेका विर स्कर । श्वमिषद्र-पु॰ [एं] स्तानः वद्यका संस्मृत स्नानः वद्य शोमरस निषोदनाः सोमपानः चन्नाता (सब बादि) वागीरः कांग्री । असिपचय-प [सं] स्तातः सोमरस नियोजनेका सावन । अभिपवणी-सी वि विभागस निकाकनेका यह सावन। अमिपावक अभियोठा(ह)-प [सं] सोमरस नियो-क्नेवाका प्रदेखित । अभिषिकः−वि [ぜ॰] विस्का समिषेक हो चुका हो। क्षिएएर शाला एर अस्तेके किए अमिन्नेत्रित जरू छिड़का गवा हो। विश्वकारमान, क्यास्त । अमिप्रत~वि० सि । मिचीवा बनाः ची स्तात कर पका हो। ममिपेक~पु॰ [र्थ॰] वक क्षिक्तनाः रामका सिंदासनाः रोषण गरीमधीनी। प्रधारिके संतर्ने शांतिके किए किया वानेपाका स्वातः व्यक्तिकमें काम शानेपाका प्रवित्र जक । -शाका-की राज्यामिषेकका संदर I अभिषेका(क)~पु० [सं] अभिषेद्ध करनेवाला । बाभियेक्य-विक (५०) है 'बामिवेनतीव'। अभियेचन-प्र॰ (सं) अभिनेद करना । व्यक्तिपेषशीय, अभियेष्य-विश् (हिंग्) अभियेक्षे बोन्यः राज्यारीष्टणका मधिकारीः अभिवेद-संबंधी । मसियेणन-प [सं] धन्नका सामना करवेचे किय सागे अभिप्यंद-प् सि] शॉश्वदा एक रीया ऑश्व जानाः चून रसना साथ 1 अमिष्यंपी(दिन्)-वि [तं] चूने बारसनेवाहा रेक्ट्रा -(वि)शमण-पु छपनगर, वहे नगरसे स्या द्वचा छोटा सगर । अमिर्व्यंग~पु [मं॰] बहुत गहरा तंत्रंच अनुरुद्धिः मेम । कसिसंग-पु[मं•] दे 'कमिशंग । थमिसंताप−पु (सं•] संबर्ग, सुद्धः पीथा। अमिसंदेह, अमिसंदोह-पु॰ [स] विनिममा अन्तिक्रिया व्यक्तिसंघ अभिसंघक-पु [च] पोसा देनेवाला, वसका निरुध । अधिसंधा-भी [मं] वयना वादाः पोखा । अधिसंबान-पु [सं] वयनः कर्वः व्हेरसः भूगानः कक्ष्य करनाः भीसा देनाः स्थनाः संधि वा समझीता

```
स्रता।
                                                    अभी-च इसी बंक, इसी दल सत्प्रातः अन्तरः अर
अभिनंत्रि-को॰ [मं•] वचमा अविद्यायः मतः कश्याः
                                                      भी। वि॰ [सं] अवर्षित निमातः।
  समग्रीताः गोद्धेनामा अतारणा क्षमा गर्बन् ।
                                                    ससीक-वि+ [ti+] निर्मयः शहसा राज्ञेशनाः इनुसः
मिसंधिता-सी [मं•] कल्होद्वरिता नाविका।
                                                      चन्त्रका करः अभियनः सर्वत्रः । पुः पनिः वामीः धनिः।
अभिमंताप~प्र [र्च ] मिकन, संगमा युक्त संवर्ष। पत्तन
                                                    अभीवास-पु[र्स] है 'अभिवान ।
  द्याप ।
                                                    अभीतः-वि [र्स•] विदर, निर्मीद्र !
श्रमिसंयोग-पु॰ [र्ग॰] प्रगाह संश्व ।
                                                    मसीति~साँ० [रो ] निमासताः श्वममः, भाषाः मैदयः।
मनिसंप्रय−पु[र्ध•] रक्षा शासव, पनाइ।
                                                     विश्व निर्मादः ।
 अभिसंस्कार-पु॰ [सं ] यतः, निवारः, कस्तमा-निर्श्वेद
                                                    ममीप्सिल-वि [मं•] वांछित, पादा हुमा बाँगर रेड ।
                                                     पुरुष्ठा अभिकाषा।
श्रभिसम्मत्~वि॰ [मे॰] सम्मानित ।
                                                    अभीप्ती(प्रिन्), अभीप्तु-वि [तं ] रन्द् ।
अभिसर-प्र [रं•] अनुचर अनुवाबी। शामी ।
                                                    भभीम∽वि विोसवन उत्पन्न धरनशला। प्रश्तिमा
श्रामिसर्गा, श्रामिसार्ग-पु [र्ग•] मिनजेडे किंग जानाः
                                                    अमीसान~पु[नं•] १० 'अनिमान'।
  नाबक या मापिकाका मिक्रनके किए संकेतरथळवर वाना !
                                                    अमीर~पु [लं∘] अहौरः एक छंट्।
                                                    अभीरणी−थी वि•ील्क तरहका सौंप।
समिसरन*−५ सामश्र सहाराः प्रमिसरणः।
                                                    भमीराजी-सी॰ [शं॰] एक विषेत्रा ग्रीहा !
मिस्सरमा र~म कि आना संदेश-स्थलपर विवते विक
                                                    बसीरी-मी [सं] नहीरींसे शकी।
  नेके किए बाला ।
श्रमिसग−९ [मं]रपगा, सहि।
                                                    अधीय−वि॰ [सं ] निहरा को अवहायक म हो। निर्देश
                                                     पुर शिका नेरवा शुक्रमृति । -पन्नी-न्याः एतप्रे
अभिसर्जन−प [सं•] बाना देवा वर्षा
भभिमतः(र्श)-प्र[मं] इनहा करनेवाला, आकासका
                                                     सकावर ।
                                                   अमीरुव~वि [सं] निषरा निर्दोष।
स्रक्रिसार-प (स्र) श्रामग्रहण प्रियमे मिकमैके किय
 वाताः संक्रेतस्यमः साबीः अनुषरः सुद्धा शक्ति येत
                                                   भर्माक्र−पु[सं]नंदर कठिताई: मर्गद्वा १९५३
                                                   भभीशाप-५० [मं ] हे साँगशाप'।
 वभिनारः भीजारः शुक्तिसंस्कारः।
भशिसारना*~म कि दे भशिसाना ।
                                                   ममीसु भमीषु-पुरु [मेर] सगामा प्रश्नश्रम की
भश्मित्रा−का• [सं ] प्रिवध मिलनद क्रिय नि<sup>क्रि</sup>ष्ट
                                                    वैक्की ।
                                                   मसीष्ट−पि [स ] पादा दुआ अमिरपितः सन्तिऽ
 रमानपर जानेबाको न्यो ।
                                                    पिया देखिक, बेदारियह । पु अभिकाशित वरता अधीरम
अभिमारियो-को॰ [मं ] अभिमारिका यह क्य !
                                                    भेगी भिन व्यक्ति।—साभा—पुर अमीह नरनुकी प्राप्ति।
श्रमिसारी(रिन्)-द्र [मं•] श्रामिमार करनेवाटाः भावा
                                                    −सिक्सि−सो० जमीर कार्यको सिक्सि
 करनेवाच्या सदायक साथी दमराही।
                                                   भमीष्टा~सो [4] प्रेमिकाः वान तोष्ट्र ।
अभिसेस ७ – पुण वेण 'अभिषेठ ।
मसिर्यद्र-पु• [र्ष ] दे 'व्यक्तिभंद' ।
                                                   अस्तीष्टि—स्तानि दिच्छा।
                                                   अमीनार~५ [मं•] बाद्रमन १गङा ।
अभिव्रत-वि (पं•) एंटर मया, बाह्या बार्तार १ए
                                                   असुआसार-ज ति वैदायेशमे श्राप-शेव परप्रमान वर्ष
 मता ग्रिमित ।
भिमि≰वि-स्पे [में ] निशामा क्याना मारना। ग्रुपन
                                                    शक बरमा भारि ।
                                                   अञ्चल्द−वि [तं] न रामा द्वभाग्न भौषा उना
 किया। ग्रमनगरन ।
                                                    नपुना अध्यवद्वा जिसने मौजन वा भीय न दिवा हो।
श्रमिद्रर~प [र्थ•] हे भाग गः इरामा । वि  क भागः
                                                    ~पूर्व-वि जिसका प्रते उपसीय स तिपा नवा ही।
 बाला १
                                                    ~शृक्ष~पु ज्वेषा नक्षणक संत्र और मूख नक्षणके सर्वरे
व्यक्तिहरण-पुर्मि ] निद्रद्य कामा; सुहमा ।
                                                    की बीजी पश्चिम ।
भिह्नती(त)-१ [त] हैसर यल देवेनावाः अवदाय
                                                  असुरत-वि [मं ] व गुवा हुआ, अनुरिक, श्रीवार संस्
 फरनेशमा शक्ता
                                                    रीमहोस १
अभिद्वार-प्र [र्प०] योगा हाना। हमलाः हविवारने शैव
                                                   लभुज्ञ−ि [र्ग] बादुर्राहरा सुमा।
 द्दीनाः मिश्रणः प्रवतः गर्देशः सादि पीनेशका, सवपः
                                                  अध्य⊶तु[स्०] रिष्यु। ≉ शण् अन् मी !
श्रमिद्वारी(रिन्)-दि [मं•] इरण इरमदाना पुरामै-
                                                  अञ्चलन - ५० ६० जाभूपग<sup>्</sup> ।
 पाला— राजामी न और अभिवादिनी स्वरार्व है —राज्यानः
                                                  अनुस−नि [तं] भें। दुना तं है। अनिष्याम निश्ना
अभिद्वास-द् [सं ] दिल्ली, मनगरी, मनाका विनीद ह
                                                   असामाण ।-शोप-पि निर्मेष ।-पूर्व-पि वी वारे
अभिद्वित-वि [मे ] उत्ता भूभा, उत्ता अभिया पृथि
                                                   न प्रभा हो। धनीमा अझत १ – हात्रु—ि क्रिना होई
 बारा गेथितः भागद्व । ए बामा शब्द । - मंदि- स्तेश
 विना विगा पहेंची मंत्रि (ही ) ।
                                                   शक्त न दा ।
                                                  अस्तार्थ-पु [मे ] अधुतपूर्व का अनरोभी वातः।
¥भितृत-सौ [में ] बादाप्रनः प्राप्तः।
                                                  लम्लाइरण~५ [त ] दनेत्यां या म्लेल्यर रा
सभिद्योग-५० [Ho] पाना बातुनि देता !
```

रुद्धना (ना०) । अमृति-शो॰ [सं•] जविषमानता भन या शक्तिका अमानः नियनता । वि० निर्वस ।

क्षभतीपमा-सी० [मं] सपमा शर्तकारका पक अपमेर बिसमें उपमेचके विशय बलाईके कारण चपमानका अभन संक्षेत्र ।

समृत्ति-सी॰[सं०] पृथ्वीसे मित्र कीर्य नीजा ज्युक्त स्थाना स्वानामान । -प्राप्त मैन्य-प पेसे स्वानपर पडी बर्र धेना बहासि सबना मेगब में हो। प्रतिकृत्व भागमें पड़ी

क्षां सेना (दी)। असरि—वि मि किछ, बोका कतिपय।

समूप अमृपित-(३० [मं०] सनस्रत विना गइनेका १ असत असतक-वि [मं] पारिक्रमिक आदि न पानेबाळा ।-सम्य-पुरु बह सेना विसे बेतन या मचा म दिया गया हो (की)।

ध्यसदा−दिसि ोधोदा कुछ, चंद।

क्राप्रेन-प० मि । गेनका समाव परताः पर्वसमना । वि मैद रहित अनुक्षा अधिमकः । देश 'समेव' । - कमारू-प स्पद्धालेखारका एक गेर किसमें उपमान और कप-मेवको पद्या नतावी जाती है। −वाडी(दिन्)−वि भद्रेतदादी ।

समेतनीय समेतिक-वि० नि०) 'नगव'।

असेद्र−वि [स] बि⊕का मेदन न दो सके; बिसमें प्रसा म भा सकेः भविभाज्य । पुरु होरा ।

अभेष अभेव≠−ए अभेद, यक्ता। विश्वमित्र एकः। बामेरना-स कि॰ संबुद्ध करनाः निमम करना निकामा। भागेराक-प रगह रहर सुरुगेह।

समें म−विवे भागसः।

भमीक्तप्द∽वि [स•] विस्का उपनीय या उपदीत न किया बाव ।

मभोन्ध्र(बत्) ~ वि [मं०] उपयोग न करवेबाका परकेब करनेवामा विरश्वः।

समारा≔पु० (मं∘) मोतका समाव । ० वि असुन्तः। समोगी(गिन्)--वि [मं] बमोक्ता विरक्त।

क्रमोजक∼विदे 'क्रमोक्ब'। मभोजन-प्र[मं] मधाना सानेसे परदेव वपनसः।

मभोज्य-दि [सं०] व द्वाने बोग्य विसने शासका निर्पेष हो।

समीतिक-वि मि विशेष मतीये न बना हो अपाधिक। ममीम−वि[र्ध] या सुमिसे सल्बान तुत्राहो अग्राविद। भर्म्या~पु [मं] छेपमा तेल-जनरन भाविकी माकिया । अन्यंजन-पु[मं] १० 'अभ्यंग ऑसीमें सुरमा वा

अंत्रन सगामा तक अंतरागाति ।

भर्म्यतर-पु [मं+] वरद्वात्र मीतरी मागः भीतरका या गीचका भवकाशः अनःग्रहम । अ जीनरः शेहर । वि मीनरी सांतरिक संतरंग परिचितः कुराकः विसन्ते साथ मनिष्ठ गेर्बच हो ।

नम्पंतरक~पु[सं] वनिष्ठ मित्र ।

बस्यन्ट-वि [मं•] तिसे तब कादिकी माकिए की गर्मी ही। जो तेक-पुत्तेत समाये हुए हो ।

अञ्चयमा-पु०[म] काक्रमण चीर रीग। अस्प्रसित्त-वि॰ मि] कम्प' आहत । अम्पर्चन-पु, अम्पर्चना-सौ [मं•] पुत्रा भारावता।

अस्यर्ण →वि॰ सि०ो निवटः जासकः निवटः भानेपासः । प मैक्स्प सामीप्य।

क्रम्पर्यम्-५ । अस्यर्थमा-स्रो॰ (सं॰) विनदी प्राधनाः हरक्वारतः अगवामी स्थागन ।

अस्पर्यतीय अस्पर्य--वि० [सं] अस्वर्यमा घरन वाग्य । अस्यर्थित-पि [सं] प्रिस्की अन्वर्षना की गर्बा हो ! अस्पर्धी(भिन्)-वि [सं] अस्वधना करनेवासा । कारमर्यंत-प॰ [श्री] धरपीवन कह देना।

अस्यर्वित-वि [यं] विसंक्ष्ट तिया गया हो, च्रत्येक्ति । सम्बद्धाया-सी० सि०ी पना, सम्मान, रजह करना । अस्थबकर्षेण-५ [सं] धोपना निकालना (शस्यानि)। अस्त्रवस्कृतः अस्यवस्कृतस्य प्रश्निको सनुद्रा टटकर मुकारका करना' आक्रमण करने हैं किय आगे बदना जा कुष बरनाः शबको निष्यस बरनेके किए प्रकार करनाः भाषावा पत्रन ।

श्चम्यबद्धरण—पु [मं] नीच फॅक्स्ना: मीवन प्रदण स्तना. गक्रद नीचे उतारवा ।

अम्यवद्वार-पु [र्न०] मोजन करना; नाद्वार । श्रम्यसम-प्र॰ [ग्रं॰] बन्यान इरना; भनुशीसम करना । अम्बसनीय अभ्यसित्यम्-वि• [मं] अम्यासक्तलेबोग्द। श्रम्मसित−वि बन्दस्तः।

अम्यसय−५ [सं]क्रोधः देवः

अम्बरत-वि॰ सि॰] बन्धी हरड मीसा प्रभा, मदक दिया कुमा अनीत पड़ा हुआ। विसने अन्दास किया **हो,**कुश्**र**ा पक्काः भागी ।

सम्योत~वि [मं] रूपाः भाइनः श्रविवस्त । अम्याकर्प-प भिन्ने सीनेपर ताल ठींडना (काली) । अम्याकोद्वित−वि [सं] यादा ध्रमा अमिकपितः प्र•

मिन्ना विभिन्नेय शहा दावाः अभिकापा । अस्पारुपान−५ [सं] जुढा कनियोग या नाकिश्च । अस्यागस−वि (९७) सामने वा पास भावा <u>त</u>भाः अविकिक्के स्पर्ने काया द्वारा १ पु अविधि महमान ।

अस्थागस−प• मि] नवदीक जाना पहुँचनाः कासः रिसी परिधासपर पर्वेचना या उसका उपन्नेस करनाः स्टना अववानी भारता वय करनाः मुकारणाः इमना अन्यः पात्रवा ।

अभ्यासारिक-दि शि]परिवारके पातनमें महार वा इराम। अस्याचात−पु [मे] कालमय पात्राः वावा वक्तवदः। अस्यास-विक सि] मास व्यासः परमध्यसः एक विस्तवन् ।

क्षस्याचान-पु• [मुं] बार्रम ।

अस्यापात-पुर्मिणी निपत्ति, संदरः हुरहा । अध्यासर्दे−पु[नं•]युक्त स्रधान । काञ्चाहा−नि [नं]निकट पासका । प्र प्रशंस सामीप्पः

परिणाम अभ्युद्य । अस्यास-पु॰ [मं०] हिन्दी कामके बार्-बार करना - सदक्

सीरामाः अध्ययमः सामनाः भादनाः सैनिकः अगुद्धासन आहि। पहासा गुमन । -कसा-ना- योगमे एक कहा। -पोग-पु पद्यशिवयन्त्रे एउत् वितनसे उरस्य समाधि । सम्यासादन-पु॰ [१७] आक्रमण सामना । सम्यासी(सिम्)-वि [सं] सम्बासकरनेवाचा सावक्र । सम्याहर्त-वि [सं] शांकाः साहत, ताहित ।

सम्पद्धार-पु [संग] निकट लागा; कोनं, अवहरण । सम्पुद्धार-पु [संग] सिन्त क्षित्रकाष । सम्पुद्धित-वि [सं] सिन्धित, सिन्तर क्षित्रकाव कुत्र हो । सम्पुद्धित-विग् [संग] निवसित सम्बन्धित सर्वत्र अनुकर्म। सम्पुद्धार-पुण्ड सिन्ते स्वर्णता सम्बन्धार

बरशुष्तित-वि॰ [हं॰] निवमित प्रथमित प्रथाने बातुस्य। सरशुष्त्रय –पु॰ [हं॰] बर्गता, बृद्धि, उत्तरों, सरशुर्व। सरशुष्त्रय –पु॰ [हं] बरणान स्वरहायनकी यह प्रणाठी (मंगतः)। सरशुर्वाल-पु॰ [हं] चटना, विश्वीके सम्मानमें स्वरूप

(मंगीत)। सन्पुरवान-पुरु [सं] घटना। विसीके सम्मानमें स्टब्स् समा है बागां। परती, असर्व। स्टब्स् सम्पुरियत-मि [सं] यटा हुआ जो सम्मानार्व खड़ा हुआ हो। च्या, परित।

कारभुवत-पु॰ (त॰) पूर्व-चंत्राविका व्यवः वृक्ति, सब्किः वर्षरोत्तर वृक्तिः व्यवसाः वरसवः कारंगः संतानकी व्यविके क्लारप्र दिया वामेवाका माद्यः वृक्तिकारः । अभ्युवादरण-पु (ते॰) मिलाङ वा निषयेत वास्त्र वास्त्र

अन्युदाहरण—पु [छ॰] लिसाङ वा निपरीत वारू धरा किसी निषयता रखोकरण । अन्युदित्त~वि [मं] ज्ञा हुना करिया वो स्वरंत्रय हैं। आर्मेंड तम भी धाया हो। परिता, धसुविधासा करूव कारिके क्यों मनावा हुना।

आरोर्के कर्म मा चात्र चा चात्र प्रस्तुविभागा कल्लव स्वादिके क्यमें मनावा इत्रा । सन्युपराल-दिव (चे) पास नवा वा व्यावा हत्या प्राप्ता माना इत्रा। एक्ट । सन्युपरास-इ (मेन) पास वात्रा, स्कूबना पात्रा। क्षेत्र सन्ता मानवा, रवेकार स्टामा ।-सिक्कोल-३० गरीकार्क

काम्युपरास—इ [मन] यस बातां, बहुबता पाता होता सरना मानता, रवेकार करमा।—सिक्क्षील—इ॰ रवेकाक किर पहरे रवेकार कर योग्ने शंदर करना। सम्युपपत्ति—को [से] सहावता सेनके किर निवस बाता रहा हुना स्त्राहा वाद्याः समक्रीता। सम्युपरास्त्र हुन्। बुद्धाः स्त्रीकार, स्त्रीकार साथना

क्षस्तुपाय-पुरु [संन] बाहा; अंत्रीवस्तः, खीवस्तः वाधना वपाय । अस्तुपायन-पुरु [संन] केर दिश्वः । अस्तुपेय-वि [संन] यदा या पहुँचा हुआः स्वीक्तः स्वतः [स्या हमा ।

अस्युयः अस्युय अस्योग-पु॰ [मं] वह तरहरी रीटी।

अंद्रवद्ध आशार ।

क्षम्युचित् - (वं) साथ वा तित्र रहतवान्तः। युः राज मीदरः। अम्प्यूह-युः [वं] तुर्वः मिश्वयो, दरिवास वा कनः। अम्प्रेह-य-(वं) [वं) प्रकार्त्तवे। युन केंगा। युः हवाः प्रहारः।

पराणः ।
स्राधिद्व-(व॰ (वं॰) बहुत केंगा । पु बातु ।
स्राधिद्व-(व॰ (वं॰) बहुत केंगा । पु बातु ।
स्राध्य-(वाधित)। साराः मानायाः सीनाः सम्राध्य सपूरा
प्रस्य (वाधित)। साराः । -महानः सार्वाय-प्र ऐसारा । -पपा-पु॰ गुम्मारा 'वैत्य'। -पिसाच पिसाचय-पु॰ राषु । -पुष्य-पु वैत्या पद स्थापः

पानी। बीर्र अनुमन वात । - अर्ड्स (दिन्) - वि॰ गमन

भूगो। - मोन्यो - स्पे वटानाती । - सेव - द० वेद्ये ।

मिष । -बारिक-पु ,-वारिका-गो॰ मधनक पूर। सम्रक-पु॰ (र्ष॰) एक शाहु सरावः। -साप पु॰ स्रपातः। सम्रस-वि॰ (र्षः) प्रमारितः, रण्टः। पु॰ सिरातः द्वारः

कार्य-पान (१) प्रमार्थन, (११ । प्रनासना पान प्रमारा समार्थ-स्थान (१) पूर्वते समार्थ रेतारच्ये मणी। --प्रिय-पश्चम-पुत्र रेतारवः। कार्यात-वित्र (१) अमरावित स्थान द्यारा पीर। समार्थन्तिक, कामायकारी(शिम्)-वित्र (१)

कारावकारिक, कारावकारता(शिम्)-14० [१९/ १८वंदर । कार्किय-14० [र्स] नारकोंते कार्ड । कार्किय-14 [र्स] नारक, कार्य वा सुगाते कार्य वा संक्य । पुन शिवकों । कार्की-व्योव [र्स] क्रिक्स । कार्कीय-पु [र्स] कीवित्य; स्वाव । कार्कीय-पु [र्स] कीवित्य; स्वाव । कार्कीय-पु [र्स] कीवित्य; स्वाव । कार्कीय-पु [र्स] कार्य दलेवाका दिवंदर स्रष्ठ ।

कारच-वि॰ सि॰] महान शहत शब्द संवित्राता ¹57

ৰিপ্তাৰণ্য। মধিক হালি ।

कर्मगळ-दि० [मं] बहुम अस्त्यापकरः, मामसीव। युक मस्त्राम अतिकः दुर्गामः, पटेर दृष् । कर्मग्रस्य-दि [मं] देक 'क्यान्तरः। कर्मग्रस्य-दि [मं] गटेट दृष्यः। दि० दिना ग्रांत्रस्य (चाण), अनक्ष्यापक-दि [मं] ग्रंतर्गात्रम्य (देशिक) वेरे पाठकी वरेशा न रान्तेत्रामा (क्री); अवेरण (वर) वर्षम

क्सपिकारी। अर्मन्-वि (र्नण) सुरत नहीं तम परिमयो क्या क्ष्म नहीं क्याया सुंदरः कुछल । तु बहुः। अस-तु [र्न] प्रमा दवान सारः बक्त स्मा रिष् अयुक्त गौकरा साथ बाद्धः असित हिस्सी अवस्था। वि कृषा (क्ल)। अस-काम का समाध्यम कृषु क्यां —तुरा-वि-वै

सुबावे तुर बच्चे कामका पूर्। -एस-तु कामता ।
-१सी-विक कामके एसको सुन्दर्श। नहीं ।
की बच्चे कामकी सुरावेश। वहीं ।
कामका -विक प्याप्तिमा सुक्त प्रती।
कामका -विक प्राप्तिमा सुक्त प्रमानिक प्रयो और अपरी
नाम दें।

स्रभाव । विक भयाता स्वत्युम्ता स्व वाहा दुआ, स्वर्मे हृत्र । —परार्थता—व्यक्ति मुक्त रामस्येष (वहाँ हृत्यां सर्वे सर्वाध्यीय शा स्वशस्त्र वात पर वर्षा वर्षे ध्रैत होता है) । स्वति—श्री [सं] स्वराता स्वर्गवरिता। ग्राधाविता।

असल-पु॰ [मं] रीगः कृत्युः गमना पन्तिकाः अवश

विश्व पुरुष्टि वृद्धि । पुरु बाला यहारा । बाराय-वि [मंद] यो गरोमे म हो। मही रिमानसा नार्य बारा रिपारहोत ।

क्षमणिच-वि॰ नि॰] मणिद्येत रवरदित !

समत-पु॰ [सं॰] पात्र तास्त्र । धमस्मर-पु॰ [सं॰] मारसर्पका कमात्र । वि॰ मारसर्प रहित । समत-वि॰ [सं॰] मररहितः गंगीर- चेलानित । पु॰

24

[स] इराना, संकर्ता। समानन-पु [संव] सिमा सव [सव] इरादा करके,

वान बृक्तकर । भस्सपुर≕दि [सं∘] संपुर नहीं, कड़वा या किनी अस्व

रक्षरकाः सर्वश्वर । समन-पु [स] श्रोति, स्तर्गानानः रक्षा । ⊶समान-पु श्रोति और सरका या सम्यवस्था । —चैन-पु स्वर

द्यांति । -पसंद-वि॰ श्रांतिप्रिव । असन(स्)-पु॰ [सं] अनुगृतिका सनावः अनववानता ।

सममस्क-वि० [सं०] दे० 'समना'।

समना(मस्) -वि [तंश] नासमञ्ज अन्यमनस्क निस्का विश्व का प्यान और कहीं हो। काप्यवाद वैक्किक स्वाक्ष मिसका मनपर निषंत्रण न हो। स्तेहबीन । पुरु समेहबर।

समनाक्—श [चं] शेश गरी बहुत सथिक। समनि—जो [चं] गति। रास्ता।

ध्यसिया १- वि पवित्र श्वरः अधूता । चौ॰ मीवन बनान्ध्रे फ्रिया, रहीरे फ्डाना । असमुष्य-(वि॰ [सं] असमनवीषितः) वहाँ महाध्यक्षा धनान्यामा चुट कम हो । तु॰ महाध्य नदी, राक्ष्य

नादि। समस्तर-प सरवारः वश्वमं कारकारीका वक विशेष

चर्गाः विदारिक्षारीः क्षेत्रः काराः चर्गाः विदारिक्षारीः क्षेत्रः काराः

समगैकी सा समनैकपन । समनीकु-वि० [एँ॰] विचको प्रिय न कगनेवाका,

भवस्थिरः । भगम-पि [सं] नदंकारस्यः निग्स्वार्थं समतास्यः

कामनादीन । पु भागी विजविद्येत । भमर−वि [सं•] स गरनैवालाः व्यवसाद्यो । प्र• देवताः ण्ड मस्त्; पाराः घोनाः ११ **सः तस्**वाः देक्शरका ण्ड मंदा स्तुदो इस सेंह्रका भरिक्योंका देर । -कंटक-पु॰ विष्य नेपोक्षा एक भाग विसक्षे पाससे नर्मदा करी निष्टकी **रै । —क्षोर – [रिं] पु**राषपृतानानः। एक प्रसिद्ध नगर । ~कोश -कोप-प अमरसिंहका बनावा संस्कृतका मसिक्द क्रोस । (अमरसिंद मदाराज विज्ञमादित्वके वर वारके सवरस्तीमे माने जाते हैं।) -गुद-पु वृहस्पति। -ब-दु॰ एक तरदका सविर-दुश्च । –तरिमी-की देवनदी गंगा। –तद-पु करपहसः। –वाद-पु दैनराकः। –द्विज-पु० देनकः ज्ञाद्यागः कदः जाद्यागः जी मंदिर या मृति-संबंधी कार्य करता हो। -धाम(भ्)-पु देवकोड, स्वर्ग। -बाध-पु व्यक्त प्रसिद्ध तीर्थ। --पल-- द्र[दि] पितृपञ्च । --पति--पुदंद्र । -पत्-पु॰ देवपर। मोद्यः। -पुर-पुः,-पुरी-स्त्रीः रहपुरी, अमरावता । -पुष्प,-पुष्पक-पु स्रप्रश्च केतका सूतः क्षांस तुवा -पुरियका-मी अप-पुल्पीा -प्रमु⊸पु

निप्तुकारक नाम। —देख—सी [दि] सकतादेख।

--राज-पु॰ रकटिक! --राज-पु॰ १४! - स्टोक-पु॰ देवकोक, स्वर्ग!--वर-पु॰ देश!--वहरी;--यही--जो बाकायकता! --सिंह-पु॰ बनरकोश नामक प्रतिक संस्क्रकोशके रचिता! बनरका-पु॰ दे॰ 'बनरे'!

असरल-पु॰ [री॰] सगरत्व ! असरत्व-पु [र्ग] अमरता, देवस्व !

अमरांगना—सी॰ [र्स] देवपतीः मप्सरा । अमरा—सी [र्स] मगरावताः नामः भपरा क्षेत्रीः दृवः

गुहुच सेंद्रुका मोकुमार मादि । भागाई-खो॰ मामका नाग सुरकानन उपान-'दान-से

समराई – खी॰ मामका वाग सुरकानन उदान–'दान-स विराम सुरतद समराईमै'~कधिराम ।

समराड•-पु दे० समरारं। समराचार्य-पु [सं] बदस्तति।

धमराद्रि—पु॰ [सं॰] सुमेर वर्गत । अमराधिप—पु [सं॰] रह ।

समरापता – सी॰ (सं] स्वर्गता । समरारि – प्राप्त विकास, असर । – प्रस्य – प्राप्त स्वीके

गुरु, शुक्तः। अमराख्य∽पु [्ंि सर्गः।

समरावतीं -सी [एं॰] दहपुरी ! समरी-सी॰ (एं॰] देवपदी देवतुन्दा; एक दूछ !

जनसः चार्याच्याप्यसः वयस्याः पर्यस्यः जनस्याद्यम्भवि पुर्वि चमेरिकतः । अनस्योद्यान्प्रश्रम् योकार्यमे अवस्थितः एक सद्योधः,

भगेरिका । धमरीकी-वि समरीकाका । पुरु समरीकाका रहनेवाका ।

वसराका=ाव वसराकाका। पुण्यसराकार देनवाका वसरु−पु[र्ध] एक राजाबी कविसीचे। वसक्र−पुणक रेखनी करहा।

असकत-पुदेश समस्त्र'।

असस्द्र−पु परु प्रसिद्ध कथा। असरेस, असरेसर∽पुरु (सं∗) देवराव, र्रह्म ।

अमर्त्यं−वि [धं•] बनक्षः, मृखुरीकः विष्य । पु

मानविष्टव, देवादि । - मुचन-पु॰ स्वर्ग । अमर्प्यापमा-नी॰ (स॰) स्वर्गमा ।

कर्मार्षेत-वि [सं] विसका मर्डम न हुमा दो॰ अपरा-मृत, अपरामित।

असमात्-वि० वि] सोमारहितः सोमाना उस्तेमन बरमे वासाः प्रतिपारहित ।

शकाः प्रतिकारविष्यः। असर्यादाः ~सी [सं•] सीमीस्थमाः आचर्महोनताः

समितिहा। समर्थे-पु० [सं] अस्तिष्णुता क्रीन क्रीपः एक संबारी मान वपनी अनवा तिरस्कार भारिते सरका क्षीम।

समर्पन समर्पित-नि [सं] दे अमर्पा'। समर्पी(पिन्)-नि [सं] समर्प करनेपाला।

क्षसळ-वि [सं॰] सक्यदित स्वष्टा, निम्पानः तात्वतः। पु स्वष्टताः अवस्यः परमञ्जः। -क्षोचीने-श्री क्षेत्रेज्ञे वातिकः एक पेत्र। -शुष्टा-पु पदकात्र ना पद्म मामक वृक्षः। -पसप्री (विज्ञ्)-पु वन्त्र संसः। -मणि,-स्क्र-

पु रपःटिकः। असत्त-पु [अ] काम किया, व्यवहारः कर्मः; आधरणः उम्मीदः [दिं] बान बानता अधिकारः कता मधाः प्रमान समय ।- इसान - इस्तान - इस्

नाता है।
असक्षेत्र--जी० पह कता।
असक्षेत्र--जी० पह कता।
असक्षा--जी० [म] क्रेसी; नाक क्षेत्रका छातम इहा
शून्यानक्की। तु [क्ष०] क्रमेशारिसंक्ता वस्तर ('क्सिक'
का शु); तिरे तुर नकाक्का छानाच काठक्काक।
--जेळा--तुरु कर्मेशारिसंच्छ, धन सत्त्रके कहकका
मोकर-पास्त्र।--माहरी--जी कर्मचारिसंके वुछ सारिके

भागनवेस-५ एक ठताः एक बादा फल जी दशके काम

डायमें इस्ते नाम निराजना। असम्बादक, समस्रातिक, असम्बादक-पु [4-] अयवर्षेत। असस्रिम-(में [4-] निर्मेन स्वच्छा निर्दोष। असस्यी-विश्वभावसारिक, कायकार्था (असम्ये कार्रवारी) समस्या-विश्वभावसारिक, कायकार्था (असम्ये कार्रवारी) समस्यादक-पुरूष के मुने सेवान आदिमें दोता है आर्

शिमका फब सामा बाता है। असलोनीं-मी नानी या कुल्का पामक लाग। असम-दु [सं] रोगः समयः सूर्यताः सूर्य व्यक्ति। असम्दुल्-दु एक दृद्ध भो र⊛िय आरतमें बहुताबतमे

दीनादै। भसस्य−दि [सं] मुख्यम नदी, दशा। समस्य−दि [सं] दिससे छैनावा मख्ये गदी। ड

छेनेका पानी या महा। भमडमर्ग−ित दिख्या कार्य निवत आवास न क्षेठ की मकारु व्यापद्ध ।

समाम-वि [मंग्] मोग्ररहिता बुक्या काता, निर्वेट । बु मांग नहीं इतर प्रश्नुर्थ ।

स्रमायक-4 [र्लन] समात । स्रमान्तरी [में] स्थानतरमा श्रेयमधी १०वी कमा परः स्रमाम प्रमेष देविद्या सरस्या प्रामाणिक म होना । वि स्रमात प्रमेष देविद्या सरस्या प्रामाणिक म होना । वि स्रमात प्रमेष दाव । —मही,—मही—को २० व्यामासस्या । —पद्म-या [वि देविद्या । नक्षी — प्रामी,—पद्मा —वारसा—की कृष्ण वद्यो पंदर्वी या

भतिम प्रित्र ! अमातना*—सः कि पामश्रित करना, स्पोतना ! अमानक—पि॰ [सं॰] मानुक्रीन, विता मौदा !

स्वमान्द्र-पि॰ [सं॰] मागृद्दीन, विना मोदा । समारव-पु [मं॰] मंत्री ।

समाप्त-(र [मं-] सापारहितः विश्वस्थे मापनाव स हो। समसम्। समाराजः । यु सम्राजः वह सा साप नहीं ६। समारान-(। [मं-] परिमान रहितः स्त्रीमः संव्यक्तिः वृद्धन्तराकः मिरान्सामः, एटक वित्तवः स्टार सा प्रतिक्षे म हो। पु रहा। असवा रहतः आववः राविः । स्वित्सार्थं प्रार्थना करनाः प्रार्थ-बाहि स्वतः।
स्वाततः - जीव चित्र । प्रति । वादी । वादी । स्वतः । रस्ता देवः
स्वतः स्वातः स्वीतः प्रत् समन । - स्वादा-पुः वदः
या स्वीतेषः वदः साता निवार्यं स्थाननी रहते वतः यो
सावें । - प्रारा-पुः वदः स्वतः स्वतं । प्रीतं ।
स्वतः । - प्रताना-पुः वदः सातः स्वतः ।
स्वातः स्वतः । स्वतः सातः ।
स्वातः स्वतः । स्वतः सातः ।
स्वातः स्वतः । स्वतः । स्वतः । स्वतः ।
स्वतः । स्वतः । स्वतः । स्वतः ।

स्रमानस्य पु सिन् दुध्य चेता, स्यता । नि दुध्यः, पेर्यस्य । नि दुध्यः, पेर्यस्य । स्रमानाः, क्रमानाः । स्रमानाः क्रमानाः क्रमानाः स्थानितः सेवा न्यो (सिन्) स्वतः स्ट्राप्टमस्य वर्षेतः स्वतः स्ट्राप्टमस्य वर्षेतः स्वतः स्वतः स्वतः (सिन्) । स्वतानितः न्यो । स्वतानितः न्यो । स्वतानितः प्रमानाः । स्वतानिताः पु पक्ष स्टर्णस्थानः स्थानाः । स्वतानिताः पु पक्ष स्टरास्था स्थानाः ।

समानिया-पु यह ठएका परयन। समानि-की वह गांगीर कम वो डोक्स न निया पर ही। वह पीन विराद को रेक्टनेड न हो। वह पान मृत्य ये सरकारके निकारित ही और तिकका मर्नव सफरी म्हे-बारी करता हो। स्मानक्ष वनूनो सिग्ने प्रस्त गरी होनेके कारन कुछ गृह की बाद। निनेद। समानुद-निन नि-नि-निराममान दिनोद। समानुद-निन नि-नि-निराममान दिनोद।

असमुँचोक्तिः क्या । रयाचिकः । तुः सनुष्य नदी सर्वे दीन प्राची । स्थि क्यामुद्या । असानुष्य नि क्यादिकः देशाचिकः । असानुष्य नि क्यादिकः । असान्य निः (तुं) असाननीयः मान सा आस्टर्दे वेग्ये सदी । असाय-वि (तुं) असाननीयः मान सा आस्ट्रंदे वेग्ये सदी ।

स्रमाय-4० (सं] मानारहिता क्रमान्यस्य (हिता स्वान्ध्र वारा जो माना माना स्वते। पु महस्य। स्वाया-न्योणी] क्रमान्यस्य स्वत्या भाविस स्वाया-न्योणी] क्षमानारहित। स्वायिक स्वायो(चित्र)-विण् [तिण] मानारहित।

निया धरा। असार~पु [सं] अग्रय प्रनाद।

समार्थाः=-दि॰ पु दे 'श्रमायः समारी--सो [स]दे भगारीः।

असामा-९ ६ अम्मामा ।

अमार्गे-पु॰ [में] हुरा शाना सुमार्गः यार्गेद्रा बनार । वि मार्गेरित ।

समार्जित-नि॰ [र्न॰] जी शाह म हिशा गया है, बर रिप्ट्रम । समार्ज्य-नि॰ [७०] जिसहा मार्चन न हो सके, के स्वर्ण

श्रमात्रये-(० (५०) विमुद्दा याच्य न द्वा सद्द य व्याप म दिया जा सुद्ध ।

अभागर•~पु वर्षश्चारी यानगढः। अभागन्यामा-पु वह पुरवद्द क्रियमें वर्षशारिकीयो मणे-

प्रशेषकर्यास्थं र व च्या जाती है समेविवस्य (दुगलक) है असावर~मी० वह असदा रम मृशासर बनावी हो जेंगे पातः एक तरक्की मद्रकी ।

भगाधनाक-स कि॰ समाना गीतर वा सकता ! भगावास्य भगावास्यकः-वि०(सं०) अमावास्वाद्ये गात्रि

में परपद्या

भमाइ नपु गाँसको एक शेमारी, नाशशा । अमाद्वी-वि० समाद रोग-सं-वी ।

श्रमिक-पु० श्रामिष, मास ।

श्रामिर −वि॰ न मिटरेवालाः सत्रा रहनेवालाः अटक !

अमित-वि• सि] वे-इद, वे-हिसाबा अन्यविक, अपेक्षित **नवाता असंहुकृत । −ऋतु−िव अ**परिमित सावस वा नुकिनाका । ~तेबा(बस्) ~चति−ि वे-इन् कृति भीर तंत्रवाका । —विकास—वि॰ असीम ऋकिवालाः विभावा एक विशेषण । -शीयौ-वि वे-संशास ताकत-

WINT I [सं०] कि कांतियुक्त का तककी। पुरु मसिसास −वि बुक्का एक नाम । समितालम −वि (रं∘) बहुत श्वानेवाकाः सर्वेगद्याः पुरु

श्रद्धिः विष्णुः। समिति - ली [मं॰] असीमता।

समितीबा(सस)-वि [सं] जसीम एफिनाकाः सर्वे झक्तिमान[।]

कासिय-वि (सं०) सिल्होल हैरी विरोधी। पुरु मिड नहीं शहु, प्रतिपक्षी । - स्वाद-प्रश्रह । - बात --चाती(तिम्),-म−ि शद्वजाँका मार्च करमेवाका।

─बित्र—वि श्रम्भोको बोदनेवाका । —तपन—वि श्वमोद्ये पोडा देनेवला !-विचयातिगा(मी.स)-सा॰ बह बहाब को शहरेशमें बानेशका हो। -सह -साह-वि॰ छन्नभौको वसमै करनेवाका । प्र वंद्र । -सेना-

स्रो घट-सेना। अभिन्नो(दिन), अभिन्नीय अभिन्य−वि सि]वैधै।

विपक्षी ।

असिय ०-५० असूत् । +स्र रि~सी० शंत्रीवनी वृद्धे । क्रमिक-वि व मेरू मिल वर्षकाः विसमे मेरू बोक न बीः क्ष्यर-प्रावदः स सिक्नेवामा अप्राप्त । -पडी-सी भौडी तरपत्र।

भमिकतास-पु दे 'भमकतास'।

समिठातक-पु॰ [मं] दे 'अमहातक । अमिनित-वि [सं] को मिला प हो, पूलकः

भमिस्तीर-स्रो वैसवस्य, अनवनः इमकी ।

भमिश्र-दि [र्स] दिना मिललउका, साकिसः शर्सनुकः। ─सादि। न्स्री एकाईसे प्रकट क्षोत्रवाको साहि १ से ९ समारे कंद (व)।

ममिश्चित−4ि [सं] शमिश ।

भमिप-नि०[मं] निष्ठक । मु छल्कपरका स दोनाः श्रीसारिक सुद्धाः विकासकी वरशः गांस ।

भमी ७ - पुदे जमिद ! - कर्-पु भेद्रमा ।

थमी(मिन)-नि॰ [तं०] ऐगी। ममीद-त दे अभीरा ।

भमीत-दि [तं] जिसे अति न पहुँची दो ।व्यु शतु । भमीन-वि [भ] भमानत रहानेवाकाः विवसनीय । पु एक दीवासी बाहककार की पैमाइदा, बेंटबारे आविका काम करता है।

अमीमांसा-ना [सं०] मीमांसा वा विवेचनका ममाव । बासीर-पु• [बा•] अधिकारी सरदार रईसा बनी ज्यक्ति अफगानिस्तानके राजाको उपाधि। विश भनवाम् ।-सादा -प• वनिकता प्रतः करोन । श्रि: 'समीरवादी ।] अमीराजा-वि० अमीरी बतानेवाकाः धनिकोचित ।

संद्राधि --सी बीसमांती । विश्व कारीर के घोरत । बसीरक्षवहर-पि॰ (बा] मी-सेनापति। अमीरक मीमिनीन-प वि] मीमिनी ईमानवाकॉक्स सरदार सहस्मदकी एक उपाधि।

समीच∼प सि]पापादकः रीतः अत्र धति । अग्रक~वि॰ [गं०] कोई सास (बाइमी वा चीन विस्का भाग नहीं किया जा रहा है), फर्जी।

असक-दि (सं) को सकान को देश क्षमा किसका मीख म इमा थी। प्र सरा, कटारी मादि प्रश्निवार जो वार्थमें प्रकटर काममें कामे जायें। -इस्स-वि कम-सर्व, भरपम्यया !

असक्त∼वि• चिो स्थापीन ।

अमक्य-वि [सं] अप्रवान, गीण; निम्न श्रेयोका । अमुग्य-वि [सं] गूर्श नहीं, पतुरः अमासकः, विरक्तः। अमन्न-अ॰ सिं॰] वहाँ। उस कोक्सें परकोक्सें।

बरायस्य − वि सि०] परहोन्द-संबंधी।

अग्रज्ञ-नि [सं•] क्रिसके पास कही जानका परवाना का मदर न हो। असम्क∽वि०[सं] को सुक्ष या गूँमान हो। क्ला प्<u>त</u>र। अमुद्र-वि० सि] परशासा नहीं; सतुरः विद्वान् । पुरु

वंचतन्सात्र । अमृत्रै−वि [सं] आकार रहिता देह-रहित निरनवश (बाबाद्य काक शतु, भारमा, परमारना भारि)। प्र विन । ∽गुया⊸पु वर्ग जनमं आदि गुध (बी कमते

बोले हैं)। समर्ति-वि॰ [सं] आकार-रहित । प्र विम्यु । स्रो॰ माकारदीनता ।

भमृतिमान्(मत्)-वि [र्व] जलार-रहित्र।पुर विष्मु। असक-वि [सं•] विना अब्बाः निरापारः प्रमाण-रहित मनगरंता मिच्या विश्वका कीर्य मीतिक कारण न ही (Bi): SHII

अमृकक-वि [सं] दे 'अमृक'; अमृस्य, अनमीतः। असका-को सि । अधिक्रिया मास्क पंचा।

अमृस्य-वि [सं॰] अगमीकः बहुनस्य ।

अस्टण्यक-पु [सं॰] एक सुधवृदार पीनेकी वह,वीरणमुक, यस ।

अस्ति−वि (पं⁵) न मरा दुमा; न मरनेदाका; जनरः जमरत्व वैनेवासाः सुंदरः अमीष्ट प्रिय । पु अमरत्व वह करत जिसक पीनेस मुण जी जड़े और मीनित प्राप्ती अजर-अमर हो जाय शुक्षा आनेश्वानः अति मूपुर, हित्तकर बरता बहा थी। सीमरशायुव यदक्षेत्रा अत्रा माता अवा-भिन शिक्षाः भीषण पाराः शानाः देशना अव्यक्तरिः प्रदः सुषः श्रीवारमाः मद्याः वारावी बेदः विषः वरसनामः नामः

नितः बार-नम्बन्धे कुछ निशेष योगः चारकी संस्थाः कांति। -कर-पु॰ पंहमा। -कुंबसी -गति-न्ही॰ एक छंदने साम । –शार-पु॰ नीशादर । –गर्स-पु॰ जीवारमा। नवा । - जटा-कौ॰ बरामासी ।- **तर्र**गिणी-क्षां वॉर्गो। -तिस्स्का-सी एक छंदका नाम। --हीथितिः--चुसि-पु॰ चेत्रमा ।-क्रव-पु॰ वेत्€रण। -भारा-शो० ।क धंतका नाम । -ध्वमि-सो० यक क्षेत्रज्ञ नाम ।--प-पु विश्वा देवताः मधपः। --फक्क-नामपाती परवसः। -परका-स्वाः श्रेग्र दाखाः कॉक्सा।—कं**प्र**—पु रेक्साः चंत्रमा। —कंक्रु—पु॰ वक वपनिवर्। -मुक्(क)-पु॰ असूवपास वरनेवासाः देवता। - मंधन-पु समुद्रमंत्रन विसस अस्य रहाँकी राथ संगुतको नरपत्ति मानी भाती है। -आस्ट्रिनी-म्पी॰ हुर्गा।-सूरि-स्त्री संबोदनी बढ़ी।-योग-तु प्रतित क्वोतिपर्ने एक ग्रुभ याग ।—रहिम—पु॰ बंदमा । —रस्य— प्रभाः परमद्याः - रसा-सी णह संगुरः कनरसा मामक मिठार ।~सता:-सतिका-लो+ गुपुच ।-साक प्र स्वर्ग ।- बपु(स्)-प्र भद्रः विष्णुः स्वि ।- बह्नरी -वसी -संभवा-भी गृहुव। -सहोद्रः-सोद्रः-प्र माणाः वर्षेत्रस्याः --न्यार-पुरु सक्यनः थीः ।- रक्ष--प्र ग्रह। —स्—प्र थंद्रमा । —स्ववा—लो+ काली नामक पादा। संस्तक−५ [मं•] अस्त। **भय्तरव**−पु [मं•] अमरताः मोधः। **भस्**तदाम-तु एक दक्षनेदार करतन । समृत्यान-पुपक वरहका रोगन किया हवा मिश्रीका बरदन । भमृतमती नदौ [६०] श्यः कृतः। अमृतांघा(धम्)−प्र• (र्:] देवता। शस्त्राञ्च−प्र• [सं] चंद्रमा । मस्ता~मी [मं] मक भागवकोः हरीनकोः गुटुकः द्वानसी। देहवारणी। दर्शा दारीरकी एक मानी। एक सूर्य रक्षिम । – फ्रम्न – प्रापिटेक्ट परवर । श्रमुताक्षर-वि [मं] श्रविनश्वर । भग्रतास−तु[५] विभाग भगूतासन भगूताशां(शिन्) न्यु [छ•] देनता । अस्तासँग-प्र• [म] तृतिया । भस्ताहरण-इ मि] गक्ष (बदत इ कि वन्हीने अब बार असून चुराया था) । भमसाद्व−५ [†] नाग्रपती । अमृतेस−५० [स•] शिक्ष देवता । **ममृतेसय~**पु (ए॰) विभ्नु । भग्नधर-४ [सं]रे॰ अप्रतेशा मस्तरका~गी [मं∗] प्रश्ने दुई दर। मगृतीरपा भगृतीद्वय-पु [नं] सगरिया वृतिया।

अस्यु-रि [मे॰] समरः असर बनानवाणा है। शी

भमृष्ट-रि॰ [मं॰] न माँवा दुशा मेला शेरा ! -सूज-

भमेजना*∽स कि∗ मिलाना विकाश गरमा। थ

भगरन्। पुनिप्तु।

वि जिगनी सुदला अधुन्य 🗗 ।

कि॰ मिलना । समेरमाः भमेरमा•-स॰ क्रि• स्मरमा ! समेदरक⊶वि [सं॰] वसारदितः दुवना-रतन्त । अमेथा(धम्)-वि॰ [d] मूर्छ निर्दिह अमेध्य-वि [ग्रं॰] बढढे अयोग्या यदश धनविदारी अपनित्र । पु॰ अपनित्र परता मक आदिः अपधुरुषः । अमेथ-वि [र्ड•] छोमारहितः परिमानरहितः स'र । समेवारमा(ध्मन्)-वि॰ (सं॰) विसम्रे भारता महत् ति । पुरु विश्वा । अमेरिकम-वि [अं०] अमरिकामा अमरिका नवंधा । दुः अमेरिका निवासी (धोरा), सनुष्त राष्ट्रक विवासा । अमेरिका~यु॰ [अं] वे॰ 'अमरीका'। भगकी=-वि अक्ष्यका भनाप प्रमाद। असंबाध-वि विच क्षिमंत्र । अमेह-पु [६] पेठावका म उत्ता। असोक्स-दि॰ [सं॰] असुन्तः। पु ५वनः ऐन्युटिटे हुन कारा न मिक्सा। अमोघ−रि [सं•] अप्क,शस्तर्थ : पु∙ शसर्वताः (रहा विष । --किरण-न्या विन्त और भल इतिह समस्मे सम्बद्धे रिएमें। -इ.इ.-पु॰ वद्य शो दंह देशवें न मूर्र शिव । - प्रशि(सिन्) -श्रष्ट-विश् विश्वश्ने सह वर्ष न पृक्ती हो। --पसन-विकृत्वनक प करतका। -पास-त कीवश्वर तुकः -चाहित-विश्वश्री निराम न बीनेबाचा । -बाक् (च्)-विश् जिसके इन् कर्मा व्यर्थ म हो। -विक्रम-व शिका मसाबा−स्ती [सं] पाटका। निष्टंगा हरीजकी एक एँचा शिक्यो पत्ती। अमोचन−धु[सं]न छुटनाः क्षेत्रान पत्रना। वी म छुरनवाका दीला न दीनेवामा। भमोद्र~वि [सं०] मीत्ररहित निरानंग ०९ है। मामोट । असानिया-पु भौमान्द 'एमोनिया । ममारी~गी अेरिया शामग्रा। असासः असोसक्=-(४ जनमोन वर्त्ससः) असाला-पु अध्यक्ष रुप्ता दुशा योगा। भमादी -वि निष्दुर निर्मोदी। मसीमा∽नि वासके स्थला । यु जरीको शस्त्र नि मैं विवा रंग । अर्थान-पु [वं] मानाभास भारमदाना सुनि म रो भी अवस्था। मुनिक क स्थिका पानम न श्रीमा । अमान्तिक−ि [#] निर्मृतः मा मीनिक्र या न्तर्प रममा स का अम्बनी इतिहै आभारपर ना कनुवा मप्ति राजिनाः अञ्चलार्थे । अध्यय∽वि [सं] प्रक्रमे वना दुधा या प्रज्युद्ध । कामगरम−५ ०५ तरहरा **४**र्वर । भग्मों—रीमानामा। भग्मामा-प्र [ы] एक सरहवा सामा (अमे सुमुक्रम'म मापन है। अस्मारी-मी [भ] श्रीश सहस्तिता

अग्र−पु[सं]े॰ नास३ [त्र•] शारा। तिपा वाण

एसका फ्रम्स

कियाका भागास्य । भन्नास भन्नासक∽पु [सं] भामका नामका पेक भीर

मम्स-वि॰ [तं] सङ्घा । पु. **स**ङ्घपन, सटाईं; सिरना तेप्रावः जमकवतः वसमा महाः एक मीव्। च्यांड∽ पु स्वयत्यः। -केसर-पु विजीरानीवृ।-चुकिका-भी ,-चूड,-दााक-पु॰ एक सहा साग । -सबीर,-निवृक-पु मोर्द्य पेह : -अन-पु॰ पक गैस, माबिस वन । −सायक-पुक्षमध्वेतस । −निका-वौ० छठी नामक पौबा । -पंचक-पु॰ पाँच गुक्य सक्टे फल-र्मगोरी मीम् सङ्घा नमाठ रमको नार्गा भीर नमक वेतः। —पद्म-पु॰ सदमंतकः शासकः पौषाः। —पद्मी--सौ पकासी तथा श्रदान्त्रिका सामक पीचे। --पनम-पु नप्रदरः -पित्त-पु एक रोग जिसमें नाहार आभा-श्चनमें पहुंचकर अन्छ हो जाता है। -फरू -वीशक-इसकी । -सक-पाइप-पु० इमकीका पंडा -सेव्स,-वेतस-पुश्रमकरेतः। -सेड्-पुण्डस्य संबंधी रोग ! - हड़ा - स्त्री यक तरहका पान (जो मालह देशमें होता है)। -श्रोणिका,-श्रोणी,-स्रोकिका-स्रो एक सङ्ख्यासागा - वर्ग-पु अनात वर्षका क्रेम, देए इसीदा कोल अमक्षेत्र रुकुत स्थादि सहे पर्लो-वाके बुद्धोंका एक दर्ग। - बहुरी-स्पी विर्याणका सामक इंदरिक्षेत्र । -वाटक-पु॰ समदा । -वाटका-श्रौ पत्र तरहका पान । −वास्तुक-तु 'चृक । −कृषा-तु इसक्षेत्रः पत्र। -सार-पुं॰ नीव्: चुकः असल्बंतः हिंगाल बाँबी। जॉबकासार गंबक । -इरिज्ञा-मी० भॉनाइस्ती । भस्तक-प्र[म] वक्दर। अस्प्रकृत्स-पु [मं] यद तरहका राष्ट्रा साग । भरकाच्युपित−पु[र्म]क्षासका एक रोग। भम्छान-वि [सं] को ग्ररकाया वा कुम्बलाया न बी। मफ्क, प्रसन्तः रक्षकः, निर्मतः । प्र नामपुष्पं हकः हपः इरिया क्टमरैया। भम्छानि-वि॰ [सं] सदकः भुरताया नहीं। की প্ৰক্ৰি: দৰাণন। भम्हामी(मिम्)-वि [सं] माफ स्वच्छ। भक्तिका भक्तीका-सा [मं] यहा स्कारः शम्बीका वृक्षः पकाशी बादि पौते । **−वटक**-पु व्यक्त तरहरा

सराईमें भिगीया हुआ बढ़ा ! भरिसमा(मम्)-कौ [स] सङ्गापन । भम्साटक-पु० [नु] श्रदमंडक मामक पीषा । भम्सोद्वार−५ [सं] खदी व्कार । **मम्होरी−सौ अधिर प्**नीमा निकलनके कारण वटनमें निकन्नेवाडी छोटा-छोरी छरियाँ । भयंग्र-पु[स] शस्त्रंबरा ! अपंत्रित-वि (से) असिवंत्रितः सममानी करनेवासा । मया – पु[सं०] 'ध⊀स्का सगासगर रूप। – पान – प्र पद नरक जिसमें पुरामाध कथमानुसार तथा हुआ मोदा गतकाद गतमे हुँसा बाता है। --शकु--पु॰ भाहाः दिस्य । -दाय-दि कोदेमें सीने पारदनवाका (जनक)।

भम्रात∽सयमौत —ह्यक्र-पु० शासा। यस स्वयं वा कार्य । अय-पु॰[एँ॰] मंगल अनुसान प्राप्तन धुम पर्मा पर वर्ष पासा । भव(स)-पु [र्थ] कोहा फौकादः भा<u>तः</u> दक्षियारः सोनाः श्राम नामक पृक्ष । -(स) संस-पु॰ संप्रधा प्ताका या पान-पात्र । -कौड-पु सोहेका बागा बहिया काहाः ओहेका एक वहा परिमाण !-कांत- -कांतसणि -पु॰ भुंक्सः - भार-पु औहार; जॉमकाळपरका हिस्सा। -काट-पु॰ मोरचा, धंग । -कुड -कुम-पु॰,-कुमी-ली॰ कोहेका कुक्सा । -हुन्सा-सी॰ काईके मेरुसे बना हुमा रस्सा । -क्षाप-वि॰ लोहा गरम करने खयज्ञ-वि• [मृं०] वर्ध म करनेवाला ! अथज्ञक−वि [सं] को यक्के बोग्द न हां। अयज्ञिय अयज्ञीय-वि [श्रु] दहमें व्यवहारके अयोग्यः बद्धाः जनविकारीः सपीत्रः श्रवार्मिकः । अयत्त−वि [सं] शर्मवत् सनिवंतिम। सथर्ता(तिन्)-दि [tlo] असने नपनी रक्तामॉपर विषय नहीं प्राप्त की है। अपर्वेद्रिय∽वि [सं] प्रिमको रहियाँ संबद्ध न द्यो । **अवल**—पु॰ (र्त•) बह्नका भगाव । वि विसन्ते किए क्यांग करनकी भावस्वप्रमा न हो। —कृत् -वि॰ जो विना प्रवस किने ही आसानीसे हो जाय। - स-वि॰ निना प्रचीन क्रिये छरपत्र होनेकाचा । -ब्रह्म्य-वि० विना उद्योगके प्राप्त होनेवासा । अयथए-अ [मं] जैसे होना चाहिबे बैसे महाँ- अनुपित या गस्त तरीके से । पुंक्ष्माचित कार्य। —सध्य—विश नैसा पादिये देसा गढी सनोच्या सनुकृत गडी। विपरीता भगवार्थः - तथ्य-ह्यः अवधार्थताः सनीचित्रः सदीः व्यक्ताः व्यर्वताः –द्योतम्–पु अप्रत्यान्तित वटना था कार्वका स्वतः - पूर्व-दि भ्दक वैद्या नहीं !- मुझीन −वि विसवे अपना सुद्ध देर किया है। - इस्ते-दि तुरे वा गवत इंगमे काम करनदाला । −स्थित−दि नेश्तरतीय अध्यवरिकाः।

अयथार्थ-वि [सं] शुरु गस्ता

अवयाधत्-अ [मै॰] गस्त तरीक्षेत्रे । अवयोष्ट−वि [मं] रच्छाके अनुकप नहीं। मनिच्छितः नपर्याप्त ।

शययोचित्र-वि [≓o] शबे्।धाः निक्रमा I अयन-प् [तं] यति चक्ता सर्वद्रो विषुवत् रागामे एकर का विद्यारों गति। इस गनिका काला राधिकाओ गिष्ठिः मागः रास्ताः भ्यक्षमेत्रः प्रश्चाः करनका मार्गः गृहः भामव (बेसे माराबय)- कुछ विशेष यद्म (गवासबन); अंधः अनकायक् भाग शिसमें दृष रहता हा — कास्र⊸ पु सुर्वेके अध्यगवण या दक्षिणावन रहनेका काल। --भाग-पु दे॰ 'अथनीय । - बृत्त-पु प्रदण-रेखा। -संक्रम-प -संबंधि-नी मदर भीर करेगा र्डकावि राधिषक्षत्रे होक्ट धुनरनका मार्ग । **-सं**पास-**बु अवनांशकोय।**

अवनांत−पु॰ [मं] वा जवनींका संविद्यात ।

अयुष्ठ--वि॰ (सं॰) न बोना हुआ। न जोड़ा दुआ। रे हरूर

अवार्तिका अवेष्या अविवादिना आवर्षाता अवेशः

41

स्पर्भाग-**भयो**च्या अयमीश-पु॰ [सं॰] अयनका भाग, विदुषण् रेखासे मेव राशिकै भारमहरूके अवनका माग । अयमदिम-प्• [सं•] वह एक ही रात-दिम शिसमें दी विविमा गीव जाने । अपसित-वि॰ [नं] अनियंत्रितः वो स्त्रटा-छॉग न नवा षा (नग्र नाक); अस्टियन । स्यम्~मर्व० [सं] यह । सपय - वि+ [मं+] सभावग्ररतः में। पूर्ण स हो। जिसमें बौ राराव हो बाज हो (बद्यावि) । व ऑसीमें उरफल होने माका एक कृति। कृष्ण पाद्व ने मेल शत्रु पितृकर्म । अयश् (स)-पु॰ [सं॰] अपमञ्ज, क्ष्मामीः स्रांछन । -(स्)कर-वि देश 'अवधस्व'। अवदास्य - वि॰ [तं] बदमामी करनेवालाः अवदास देश । अवसम्बी(स्विन्)-वि॰ [र्रु॰] विसे पस न शास्त्री बद्दनाम । **अयक्ती∽4ि वशादीन क्वना**स। अबहसूर्णें – पु[नै] कोहेका प्रः। भयस-पु॰ दे अद । क्षयाँ-विश् (मण्डे प्रस्त सुना, वाहिर) अवासक – वि (श्रेष) स माँगनेवालाः कामनारविषः पंतुत्तः । क्रमाचित−दि॰ [सं॰] न मांगा द्रमा अधार्थित । ~कृति —ली —झत्त—पु• विना मोग मिन्नमेवानी भीसपर ग्रंबर बरमेका जन। अपार्चा(चित्र)-वि॰ (से) रे 'अयापड'। भयाज्य-वि॰ [मं] यद करनेका अनविकारीः विदा वादिन्तर । पुरु पहिल्हा - न्याजन−पु नय करनेके शनकिहारीसे क्य कराना । —संबाज्य =त्र॰ पवित्रक्ष निप बद्ध करना (बी एक उपपानक माना गना है)। श्चयाल-वि॰ [मं॰] ज गवा हुआ ः -याम-वि॰ विसे शक पहर न बीगा हो: ताजा उरका। यो वस्तीयमें आनेके कारण और्ण डोर्ण न तमा हो । क्षयाधार्थिक-वि॰ [मं•] जो मृत्य न वी श्वकाः नेतृत्तिः भवास्त्रविद्यः असंयत् । अयान-द्र [सं•] म जाना रिकना। रवभाव । वि. विना श्वारीका वैदल व अज्ञान। नय नयमग्रनपु अज्ञान-पनः भीमापन । भ्यानता#-न्दी अवातपन अग्राम ! अपानय-९ [मं] अच्छा वा बुग माग्व⁻ स्मितापर मीहरोंसी विशेष रिवर्ण ! भयानी-वि॰ जनान, प्रश्न मा भवाम-पु॰ [र्ग॰] यहा नदी; दिनका कीई समय ! अवारु-पु॰ (का॰) यो हे वा सिहबी गर्रनपरके वान-[n+] बाय-वचे कुटुंब । -हार-पु वाल-वचेवाणा । स्रवायत ~पु[ंं] स्वीत दासिमण न दोने दैना । भवास-अ अनावागः नहत्र गणिसे **भवास्य~पु**[सं] ऋषिरा ऋषिः माध वन्तु । भवि–म [सं•](*वंशेच*न) देव अरी । अतुरु(प्)-वि [वं•] * अतुग्म । ~छत्र~तु॰ गरि

क्स बच्च । -पहराश-त वे 'लबुश्यर । -शन्ति-

षु शिका - धार~षु वामदेवः

नतुप्यत्तः वे ठीका अध्यमनस्या ननस्यस्य । -इतः रिः दुष्कर्मी । –चार्र-पु॰ वह व्यक्ति जी प्राप्त जारो। अयुक्ति --सी० मि ी मंदंच या स्मारका समादा एउस-तुलिह वर्तका जमान अमीपितन ६सी बजाते सुमद देने को रंग करनेको किया। स्थाग-विश् [गं०] देश 'अनुग्रह' ! -पर्-अश दर्श साथ पदी, फमछ । **अयुगञ्च-पु॰ [मं॰]** गिहा क्यागल-विश् सिंश्री अक्षमा अहेलाः विषय । **अयुगितु~तु॰ [सं] कामरेव**ा भय गु-स्रो • [मं] एक संतान उत्पन्न करनेके नार शंपा 🛈 पानेवानी भी कार्र्जप्या । अनुग्याण-पु (वं+) कामदेव । अपुरस−वि [र्य•] जो बोहान हा अकेला सिम। -- बछाद -- पश्च-प् छतिषन ब्रम्स (सामर्ग)।-- बगन --मग्र-प (तीम औरोंन्स्से) प्रिना -बाण-पर-इ कामरेव (पंचशर) । -बाह्य-सप्ति-त दर्व (५गर रवराम्)। अयुज्ञ−वि० [स] विश्वका कोर साथी न हाः महेना दश्यः मयुत्त−पु [मं] १० इजारकी संस्ता। वि० व्यक्त १४६ : --सिक-वि विस्को अनियोगना निर्मा है। शतुधा-तु • [मं•] वह वा त कहे। व दे • 'शातुर । भयुष्य−दि [मं] अत्रेदः। अयुव-दि॰ [मे॰] जरिशकः वर्षस्य । सम्बे−भ [मं] संदोषनद्वा छन्दा विस्तवादिग्द्वक धन्दा अयो च्यु [मं] 'अयम् का समामगर रूप । नगर-उर वैस्त की और शृष्ट पुरुषमे उत्पन्न बर्गमेक्ट क्लाना -गुक्र-पु लोदेश वैदः -धन-पुरु मंग्रहमी। -प्रास्त-पुरु सः सीदेका जान वा वाणी ≥ विश्वीरे का काल रशनेवाला। - सस्र-पुत्रंग गोरमा। - सन -- वि विस् हे श्रीह वा सिरेपर सोदा नना हो। - हर्प" ति॰ जिसका दृश्य मोदेवो तुरक्ष कठिन की निप्दर ह सयोग-तु [मं•] रिनगावा अनुस्ताना अप्राप्ति अप्र^{म्हा} अभाजित्या संबद युष बाहादिका थीगा अनीवा पर्वी भारतार वीविध्या निपुरः वृद्ध । वि अन्तरहा वीपान कीशिया करनेवान्य । -क्रेस-प्रप्राप्त संबंधिय प्राप्त न होमा । --वाह-पु अनुसार, दिसमें प्रत्यागी तथा जिल्लाभूमीय वर्ष (ध्याः) । आयोगी •- वि अयोग्य। अयोगी(गिन्)-नि [मं] विमने शामानुनार बे.म्स अनुवास भवा किया है। अयांग्य-वि [र्ग] वेंगवनाडीन जानाविण निवन अमरिकारीः मामुनानितः। श्रमाध्यिष्ट-५ [मं+] मेरपा, नेप । अपोद्धा(स्)-पु [नं] नद्द शि देश मही है। निष् थोडा । रिया प्रदेश अमोध्य-वि [मे] क्रिक्ट पुद्र न दिना मा गरे। क्रेप अकोरपा-सा॰ [र्गण] अवश्वत एक प्रांगक गर्या सर्देवर

राजाओं शाजवानी, सामेत ! -कांड-पु॰ रामावणका पूसरा कोड वा संड किसमें रामके राज्याभिषेत्रकी पैयारी, वत्यमन भारिका वर्णन है !

भयोति-- [मं] धनन्याः निरम् भौक्षिकः ब्येखसे उत्तरम् नहीं श्रीय इससे उत्तरमः । पुः अभाः दिवः योति नहीं । - च-- दिवः यो अरायुसे उत्तरमः न हो । पुः विष्णुः दिवः ! - मा,-संभवा - सी॰ धीता !

िश्वर । —का;—संसवा —सी॰ धीता । सयोसय--वि॰ [र्स] बोदेवा वसा हुजा ।

अयोक्तिक-वि० [मं] युक्तिविस्त अमंगत।

भगीरिक-वि [सं] जनियमित क्ष्परे स्पुरपण क्या विसका दोगरे मंदेन म हो।

भरंग-पु सुर्गव !

सर्रगम-पु [मं] निस्त बानाः सदावताके किए मीन्द्र रदना ।

आर्रगर∽दि [मं]चटस्ट मधीला करनेवाकाः विवसे वनाहमाः

बरंगी(गिन्)-वि [सं] राज्योन।

शर्ड-पु० दे 'प्र्रट'।

भरमम-पु[मं] जतविशेष। भरमक-पुदै भारम'।

धर्रसन्ता≉−म कि बोकनाः नारंग द्योना। स कि नारंग करना।

भर- र सी दे 'कार'। पु० [सं] पश्चिमको लागि और नैमिके बोचको अकाशे आराः कोणः सिवारः ककासक पक्षीः पित्तपापता । वि सेवा में वा । - सहुः - सहुक-पु०

रहरः कृप । अरह्मः = वि चे चिक्रियकः । पु प्रवासमें संसान्यसुनाः का संसमस्वामः ।

कारहै—को नैनेको नोकपर लगे हुई कोळ विससे तब कहानेके किए वैक्को कॉक्टरे हैं। मुक् --देना -स्वभासा सामी-करमा।

भरक-पु [मं] बारागमः सिवारः विचयापशः * स्वीः सद्यन दे॰ 'कर्द्र' :

सरकटी – प्र नावकी पद्मवारपर रक्षनेवाना गाँछी ।

सरकता (०-स कि दकराना निवना दरकता । -वरकता -स॰ कि फाउमें स आनेके किय इटना वचना ।

बरकस्त∗-पुरोक मर्वाराः धर्गकः।

भरकार-पु गदासका पक नगर ।

भरकारी-पु॰ गिरमिरिया कुकिनेंकी भरती करनेवाका। भरकान-पु॰ भि॰] (गक्र-गरीम-का वट्ट) प्रवास कार्य-कर्म या कर्मवारी वे कोग सिनयर दिसी कार्य वा प्रवेष का यारमार हो। उद् एसीडे सावाक्य अहर। — (स्)-मीक्स - स्वास्त्रकर-म

वीकत -सस्तमत-पुराध्यक्षे कापारस्यंग-भेषी परदार कारि।

भरकोस-पु॰ वृक्षविद्येष ।

भरशित-वि [मै] जिसकी रहा न की गयी या की भारी की। विमार्वजनका।

भरग-प• है अरगना !

भरगजा-पुण्क सुगदित केंच जो चंदम, विसर आदि

ं मिलकर तैयार किया जाता है ! अरगुर्खी—वि॰ अरगजा वैधे (ग दा सुगंपनाका । पु॰ भर

गमेने रंगसे मिलता हुमा पीमा रंग। धर्मट-वि असग मिला।

भरगम-पु॰ एक विकासती नामा, 'मागम' ।

अरुगनी—सी॰ कपड़ा दौगमेके किप वैंची हुई ररसी, मीस आदि। अरुगळ—प्र किमानको भीतरसे वंद करनेके किप समापी

अरुगळ—धुः क्षमाक्ष्मा भावरत वय करणका क्रियः कर्णायाः - जानेवाको लाही क्षमुद्री, म्याँहाः । अरुगुलाय—धुः [फा॰] गहरे काल रंगका एक कुळाकाल रंगः।

अरहायासी-वि॰ अरगवानके रंगका गहरा साक। पु यहरा साह रंग।

अरगामाण-भः क्रि अक्ष्म दोनाः चुम्पी छापना-'स्ते छदन मश्रीमाके दिय वैठि रहे अरगार्द —स् ! छ क्रि अक्षम करना ।

अरच≠-दु दे 'शर्व' :

बरधइ−५ [सं] दे∙ भर'के साथ।

अरबा—पु अर्थ-श्रन्ता अर्थ-पात्र के शाकारका नता प्रश्नरका जावार निवर्षे ग्रिविस्मको स्वापना की जाता है, नरहरी; वह पात्र विवर्षे कर्ष रखकर दिना जाता कुण्डी जनवपर

पानीके निकासके किए बना हुआ रास्ता । अरघान अरघानिश—स्त्री शंव ।

अरचन॰-पु, अरचना॰-सी दे 'सनन', 'भर्नेता'। अरचक॰-खी दे 'बाइनन'। अरचि॰-सी॰ क्नोडि प्रकादः।

कराचा'—सा॰ क्यात प्रकाशः करचित्र*—वि दे 'क[कंत'। करवा–सा॰ दे कर्तः!

भरवना*-स कि वर्वकरनाः प्राप्त करनाः। भरवस-त श्रेषी सामक्ष एक पृक्षः।

करतक विश्वास प्राप्त पर पूर्व । करतक विश्वास विश्वास करते या करते ना, नीचा नीची व्यक्तिका । युवद योका किएके तीन गाँव सक्तर या ग्रह राजे दों ।

भरमस्क−वि [मं] वृक्तिरहित, सच्छः, बासनारहितः। भरमस्का−वि स्त्री [सं•] भरमस्त्राः।

करताँ निश्कि] एता । [की भरवानी ।] बरता(बर) निश्कि (करताक । निश्कीश है। बरताका और कम्पा मार्गन फिक्त एती प्रोक्टमार बरताल पुर्वा | करीते, नीच थोग (रजीक्टा नुरुः)। अरथी सी दे अर्था । श्री अरब करतेनाला

शाची। शाची। अरुग्रु-वि (छे•) बिसमें रस्ती ज दी। पुश्चारागृह।

अरहामा-अ॰ फि॰ दे॰ 'अरणना ।

अरहाा−पु॰ छोटी वातिका सन सनई। अरट्र−पु [सं॰] अरक भागक वृक्ष।

करांका अराजी क्यों । लं] क्या क्या गानिवार, अनेतृ ; कारका क्या विसमें (विनेता) यह क्र किर काग स्टब्स करण के सर्व अनेन पदमक शक्या सीमायाहा। अनेता देव ना क्या । —केतु — पु कनिनांव तथा। —सत्त — पु क्या देव।

सरण्य-पुरु [शंक] बन, जेशका बायपकः सम्बासिनींका

अरम्पक~भरविदिमी एक मेद; कर्पाल मामक कृषा ! -कणा-सी जीवकी भौरा । —कोड−पु+ रामाननका शीसरा सांड वा रो= । ~गाम-पु॰ शामकेरका बनमें गाया कानवाका गाम-विशेष । --चेहिका-स्वा॰ जनस्को भौरतीः (हा०) निर्वक श्रेपार वा बाभुषण, पेसा बनाव-सिंगार जिसे कोई देखने सराहनेशका न हो। - व्यन-पु॰ दीन मामक पौरा । -- जूपसि,-- राज-पु० सिंद् । -- पंडिस--पु॰ ऐसा ममुष्य को बनमें ही (वहाँ होई सनने शैक्से-बान्य नहीं दोता) अपना पांक्तिब प्रकृष्ट कर सम्रे । दि मुख (--सब्-दि॰ जंगहर्मे उत्पन्न । --सहिन्छा-छी॰ बाँस । -याम-पु कानप्रत्य कामसमें प्रवेश करना । -दिवस्त,-रोद्या,-विस्तप-पु ऐसा रीमा विसे कोर्र पुननेशासा न दो, निष्डल कशन निवेदन द॰ ⊢धास्तुक, -वास्तुक-प नगरेत ! -बा(बन्) -काम-प्र॰ मेरियाः गीदर । -पष्टी-शी० क्वेब्र-श्रक्ता पश्चेका अतः । **अर्थ्यक्र-पु॰ [सं] जॅमकः जंगलको समा, यह पीवा । अर्**ण्या∽सी॰ [सं] एक ओवनि । भर्ज्यानि, भर्ज्यानी-की [मं+] बहुत बढ़ा अंगल वा बीरानः बनदेवी बन्द फाओंकी माता। शरक्यायम-पु॰ [सं॰] दे॰ 'भरव्ययान' । अरस्यीय-वि [सं•] बंगकराजाः जेगलके पासका । भरत−वि [र्थ•] ग्रुश्तः विरक्तः भगासकः वर्ताहः । अरति—सी [सं] राज्या अगाव निर्णाण असंतोवः क्रोचा छचाटा थिता। क्रीय सुरती। व्यवा। वक पैचिक रीय । वि असंतुद्धः सर्घातः छक्त । भरति-पु॰ [सं॰] श्रॉडा कुदमीर कुदमीसे कानी चैंगरीके छोरकस्या माप । सर्य॰-पु हैं। 'सर्व' । भरबाना=-ए॰ ति॰ समहाबर वदमा, म्वास्या सरते हुए बहुना । **अरथी** —को एक छोटी बैधी भीत्र जिसपर सुरेंकी सुन्ता-बर इमग्राम से जाते हैं दिख्छै। वि देण नवी। भरपी(भिन्)-दि॰ [तं] बा श्वपर तवार न पीतर शक्षे पैन्छ । अरथु-वि [सं∗] रिमा गाँठगाः जिसके याँग हुट गरे हीं। पुण्यक्त पर्ज्ञियामा। विभादा । भरत्त्र-वि [मं] दे॰ 'सरा । # पु॰ दे० 'अईन'। **धर्**रवार-नार्वः मधममाः कुण्णमाः भगव-कुक्ननेरः मस् शबना। शरदस~पु॰ व्हिपमें वानेनाचा एक वृद्ध ! कारदानी-पु किमी वहें व्यक्तस्के साथ रहमेशाना शास चपरासी [सं॰ 'मार्टरती] । भरताबा-त दश्राह्मा शक्षः भरता । बरहास-भी प्रार्थमा प्रार्थना रक्षः शानवर्थमे हैयर प्रार्थनाः भेंद्र एउर [पा 'नश्रदारण]। भरपंत+-पु+ दे अद्गीत । भरपंती भरवाँगी-इ 🖹 'नदाँगे । **बर्**य+-नि दे सर्वे । अ श्रेर्र, भेरतर । भाग-त दक तरहती निहारी की जिएना न भरना-दु जंगरा मसा । कल कि दे ⁶भएगा⁷ ।

खरणि-सी॰ दें० 'जरणि'। क सहना; रक्ता। इह सरणा भरमी-सी॰ भरकि यदका अधिमंत्रम कास्य वनम्, रहा बरम्य=-पु हैं। 'अर्ज्य'। सरपन=-प०दे 'सर्पन'। बरपनार-स कि॰ वर्षम करना, मेंट करना; गौरनी पूर्व भीरूप परार्थ भगवानुको शक्ति रूप्ता । अर्**पित***—वि॰ दे॰ 'अपित । सरय-वि॰ सी करीत्र । प्र सी करीत्रको संस्ताः • मीशा ग्रेंटर [लन] बांद्रशा-परिषय परिवास यह याँच देश वहाँ इसकाम भर्मेने मर्बन्द शहरमहारा पना हरा थाः भरत बैशका निशासी । बारवर्ण-वि अंटर्वड- श्रुटिन, देदा । करयरामा≠~थ कि पंदरानाः करप्राना । **भरवरी०**—स्ती दहवती। अरविस्तान-५० [भ] भरव देश। **बर्वी−िव [श•] श्राम देशका। प्र• नर**गनिगरीः व्यरम्हा या भरवी भरतका मीड़ा। भरवी छेटा वह स्टाइंड वाना । श्री । श्रदको मादा । सरबीका॰-नि संस्थेट, निर्देशः गर्नेपुक्तः (१)। **भरवर्ग-**9 देश 'शरवी' । भरमक∗-पु॰ दे 'अरंक'। भरम-वि [सं] मीच दमीना ! अरमण अरममाण-वि॰ [शं॰] अस्वित्रः वर्गाउ **अन्तरीयजनक अभिराम** । बरमयी−पु• बारमीनिया देशका रहमेशना । भरमा•~गाँ॰ चमक्-"मैभियो-क्यिस शे**हरी**के ^{करम} धोई -सग्रिशम। अरमान−पु (फा] काळता, इय्हा, कामना ! सु* " निकलमा-रप्पा कामनाद्रो पृष्टि होना। -रह वामी **"मास्याः कामनाका अवस रह धाना ।** अरर-अ दिरमय, उल्लाम आदिका सूचक ग्राँद ! 5° मैनफलः 🗗 🕽 यरशासाः विमाशः सन्तरः सका स्थ्य 🗓 भररमा **प्रस्था**? – म. कि. पीगना रहना। अररामाण-अ क्रि॰ 'करर की प्यतिके साथ (दीवार देर वाल मारिका) इरकर गिरमाः भइरामा । भरति—शः भरती –स्था० (सः] दरवात्राः दिशाः । भरत-पु [मं] राष्ट्रा एक इक्षियार। एक भग्नर । अरसु~डु[सं]धाना गाउः। भरवग~षु काठकर लावी जानेवाकी करनी वस्त्र पार्टे वहत कारी जानेवाली प्रमुख की राक्षितामाँ स पर लागा काया । है। जरियम । अरुवारती --पुरु धोड़ेने फानन माधनी भीरी । अस्या~प्र निना क्याने भागका शक्या † संस्था अर्वासीन-स्र भेज्यो। अर्थायत्—पु [र्थ] बमका सारमा तांश 1-इसमम-उ त्या । -नयन -काचन-पु निम्मु । -बाम-वाभि-पु रिष्यु । -वंयु-पुरु ग्र्वे । -वानि -मर्-पुनदा । अस**बिराध-**तु [सं] रिष्तु । अर्थिदियी-न्धः [मं] मोननाः कमक-कराः क्षणानुस्

सद्भाग-को • यह ठरहको किकिन: एक पही, गरत । भरें - पु • दरवाने के कपर दीशारका बीक्ष सँगाकने के किए दी हर्र कहरी, हरगहना, नामा ।

मरैद्यां --प्र• किरापेदार ।

भरैमा-पुर भरतेवालाः भरत करमेवाका पाककः।

मरोस*-प दे• 'गरोसा'।

मरोसा-पुपदी बाह्या सदारा, बासरा। विश्वास । 🗝 (से)का∽विश्वसनीय ।

भरोसी - वि• भरोसा रसनेवाकाः भामितः विकता । सर्ग-पु [एं •] भूमना भर्मन; क्षित्रा जझाउ तेज, व्योधिः पक्र प्राचीन देख ।

भगवै–५० [सं] शिव ।

सर्जन-पु (सं] भूनताः वय करनाः भूनमेका सायन

कुप्राष्ट्री । विश् भूजनेवाका । भर्तं च्य-दि [eto] बहुन करते योग्यः भरण करने योग्यः

पाळनीय । मर्ता(र्रं)−५ [मं] मरण ऋरनेवाकाः स्वामीः पतिः मामका विच्या। (क्षी । 'समी ।] -(स्') सूच-पु० पतिके पुरा। -- अन्-विस्वामीकी इत्या करनेवांका। -- ध्यी--स्तो पविचातिनी स्तोः −दारक-पु तुवरान, राज क्रमार (सा) । ~शारिका~ली रावकुमारी (सा॰) । -देवता -देवता-को रतिको देवताकर्मी माननेवाकी सी। - इस-प्रपटिवन । - शोक-पुरु परियोक्त । -इरि-पु॰ -नेपार-सरक, मीति-शतक वैराग्य-सतकके रव्यविद्या की महाराज विक्रमादित्यके शीरोंके वह मार्द के

बाक्यप्रशापके कर्ता वैवाकरण कवि । मर्तार-प्रकात प्रति स्वामी । मर्तुमती-स्रा [सं•] सम्बासी।

मर्सक-प [सं] मर्त्सवा करनेवाका ।

मर्प्सम-पु॰ भर्त्समा-को [मं] निवा कानव-सका

मत्त्र । मस्सित-वि [सं] क्रिस्की निवा या विरस्कार किया मदाद्यो।पु•दे मिल्लंना ।

ममैं-क्षु है 'श्रम'; [सं] मजहूरी। सीनाः नाधिः एक सिक्सा ।

मर्म(म्)-म [सं] पोबनः मृति मनवूरीः सीनाः स्वयं सुद्राः चनुराः नामिः बोक्तः मकान ।

मर्मन ॰ चु॰ दे 'भ्रमन'।

भर्ष-५० [मं•] ज्ञरथ-योषगदा खर्थ ग्रभारा (धी॰)। मरा-प्र एक विविधाः विविधीकी वशानः दमः चक्रमा । मरोपा−श∗ क्रि 'सर् सर्' धुष्ट निकलमा।

मसंग॰-९ ३ 'अल्पंन'।

मक∗-दि पुदेश्यकारी

मककाश-नी गाँसी।

भसपति•-प भारता बारण करमेवाका। भक्रमनसात भएमनसाइत भक्रमनसी-सी गणा

मानुसप्य, सञ्चनता शरायतः।

भटा-वि अक्ता, नेक, सापुः संदर् (श्यमा) । गु. जकारें रितः च० मरता सूरा काषुपुक्त प्रत्यक्षक शास्त्रीये निवी का अर्थ देता है-"जला बही बालुने तक निवन

सकता है ! "वसकीके वर्धमैं-"सका वचा" ! -भाइसी —प्र मलामानसः, नेकः ग्रहोपः बादमो 1 —ई-वो• मकापन, अच्छाई। नेकी; दिल, सीरियत । -चंगा-दि: रनस्थः र्वतुक्तरः बच्छान्द्वासः । —श्वरा—वि॰ बन्छा भीर तुराः सक्तन्त्रस्त करी-खोटा (करना सनामा) ।-मामस —पु दै निका भावगीः (वर्षण) दक्ष ।

अख-न ज्न, जच्छा (सहै आये) । -ही-न ऐसा हो वी प्रमा करें भी वी परवाद नहीं (सहे ही हुम दुरा मानी)।

शक्षेरा#~प दे॰ 'मका'।

शहर-पु. [र्स•] माकाः मास्, शिवः मिलावाँ । ⇔नाधः --पति-तु वन्तिन्। --पुष्की-सो गौरधमुंदी। अक्तक-पु॰ [सं] भावाः सिकाबाँः एक (प्राचीन) बनपद ।

अस्कार-४० (थे०) माख्य पद्ध यहार । भक्कास भक्कासङ−५ । सहस्रासुद्धी−सी॰ [सं] मिकावाँ ।

श्रदसी∽वी॰ [एं] मस्तात्र विकासाँ। अ**स्तु**−तु [र्स•] एक मकारका स्त्रीपात स्वर । ...

भक्तकच्छ च्छा (सं] माखः। मक्ख्रुक−पु [सं] माख्य कुत्ताः [स्ती 'शरध्कीः]

सर्वग, **भवंगा=-पु**॰ सर्व । भर्षराम+-५० सर्प ।

अर्वत-९ [सं] वर्तमाम कान । + सर्व । आवदा । श्रवीति−पु (सं•] नतमान काळ।

सर्व**री-को॰** [रं॰] साम्मी न्ही; दे॰ 'सर्वाट । भवेंगा#-- अ॰ कि जुमना **पकर छा**ना।

भक्र-पुदे भीवर ।

भवें किया! - स्वी एक तरहकी पढी हुई साब ! -अब-पु॰(सं] परवरि बन्मा होना। मंस्ठिः प्राप्तिःसंसार। मतिः भिषः कुछकः 🗢 के॰ 'सम'। (धमासमें सि उत्पन्न का अर्थ देवा है ।)-केन्-५० एक प्रकार वारा ।-छिति −तो बन्नरवान। – यस्सर – प्रदानक। – च्य-प्र किस-किस करेंसे बोबातमाकी किम-किस योजिमें जाना वहता दै यह कामनेका चक्र (री)। ⊷चाप−पु द्विद का बतुष् । -च्छेष्-प् भाषागमनसे मुख्यि । - अख-प्र दे 'सबससुक्ष'। -दाद-पु॰ देवशार। -पर्या-पु॰ परमेश्वर । -नाशिनी-को॰ साबू नशे ।-प्रायय-पु समाथिकी यक अवस्था । —श्रीमन-पु संसार-वेशमा काम-मर्गका पक्षा - श्रीम-पुरु हंस्तिका बाता -- मंजन-पु परमेश्वर: काक । -- सम-पु वार-वार बन्म केने और यरनेका भव कहा-भामिनी -वामा-

की पार्वेदी ! --साथ-पु भीदिक संचासे मेम। −भीत∽दि विसे धुनवंग्यदा स्प हो। −सीति∽ सी अन्य मरणका वन संस्टिका भया सांमारिक सद । -भूत-पु बरमेबर । -भूति-स्त वेबर्न । पुरु 'उचररामचरित के रचितता। -शूप -वि रे॰ 'मंद-शृषम । ∼शृषण−वि वसद्देश्यास्य । मुक्तिका

मृत्य भरम आदि। -भाग-पु श्रीकिद गुर्खोका पर भीय । -सन्यु-पु॰ कौदिह ग्रुगमे निरक्ति ।-मोदम्-पुरु अवर्थनकी कारनेवाला कर्मकर । -रम-पुरु

दररा ! - गायम - पुः गुँदचोर गवैदा ! - चारी(दिस्) -वि॰ दरता हुआ काम करनेवाका ! - चिच्च-वि समर्गे दरा हुआ ! मीत-को दौबार; छत ! सु॰-में वीबना - चलिसे

मात-सा वाबार; छत । मुख्यमा वाबुका-बाकस | बाहर, बसंसव कार्य करमेग्रे प्रकृत कीला । भीतर-म अंदर: बरके अंदर: सच्यमें । पुरू संतर, अंतर

करणा जनानकाना । शु॰-का- जीर का मनका काकत सममें रहनेपाला । - कुकाँ-छण्योगी पर दिलीके काम क कानेपाको बन्तु । -ही असिट-यन दी भन, कार दो संदर । सीतिथि-स सीतर।

भीवरी-वि भीवरका भेरकनीः मनकाः भपकः । - टॉन-पु• कुश्तीका एक पेंच ।

मीति-स्रो [तं॰] सर दर;शंपः।-करः)-कारी(रिन्)-वि मनंबरः। -कृत्-वि मनोप्पारकः। -पिछन्-वि

मक्का निवारण करनेवाला । भीतिश—स्त्री संवा दोवार ।

मीन≉—पु॰ मोरः मिनसार ।

सीतवा-कर कि सीनान वेदस्त बोना, जनव बोना ।
मीती-विश् शि इच्छी मोठी (पुण्यू)।
सीत-विश् शि इच्छी मोठी (पुण्यू)।
सीत-विश् शि इस्तरा, मन वर्णमानेवाला; रियाल्ड इस पुरु भवालड रहा दिला परीवरा पाँची बांडवांचेंचे इस वे बाहुके पुत्र माने वाते हैं प्राप्तमाना बस्तरीक शिवा विद्यालेटा इंक्डचेंचा बैटा! च्छानी क्यां प्रमु)— वि इसनेते काम करनेवाला महा वराक्रमी : च्यां पुरु -पम्या (च्यां)—वि बहुत वह वृष्ट पुरु प्रमुक्ता। चुमार-पुरु परीक्रम। च्यांनी—मी क्यां वह वेते! -सिवि-ची मावस्त्रा रहमस्त्री। च्यांनन स्वस्त्रा

वर्ती कावाड़। देरा, प्रस्कालमें प्रस्ट दोमवाके सात वंशकोंमेंने एक। -प्राक्तम -विक्रस-ति विश्वका पराज्ञम वृद्धारेके दिखने यह पदा करे, यहा वको।-प्रकानी-को० एक दागिना। -पूर्वज-यु सुर्विद्धाः "पस-दु० वृत्तरपुक्ता एक दुवा एक धारिन। विकार कवाल्।-सुरा-यु एक तरहका वाका एक वालर।

्रम् - पु क्ष अनुर को कुमंतवारमें विश्वादे वार्धी भारा नया भुवराणका कह पुत्र कुम्मका बढ़ पुत्र - स्वी-भी कब कुम्मका के विश्वाद किया है। सिने वार इ.सा बहुद किन माना गया दी वक बुदायोख नगें। -मा-न्यों की ग्राह्म किया नया दी किया नगें। -कार्य कुम्मका माना गया दी । - कुम्मका क्यांका माने कार्य कुम्मका माना गया दी । - कुम्मका व्यवदात्री

रास्त्राता । - विकास-५ सिंव । वि सहा वर्छा । - विद्याद- वि सवान्य रास्त्र, रावव्यकार । - वदा-वि स्थानक वेगवाका । - वदास्य - प्रयम । - स्थेत-पुरुषे पांच्योस सूर्य, सोसा स्वर्यणी है विशवका साम्रा धीममेनो बसूर । - समी-वि [वि] श्रीयक्षेत्र-संस्थी।

3 मोमोमी कर्र। - जवादशी-मी अवेहन्तुडा वधान्त्री निर्मेग रहान्यी: - इप्र-पु वक्तरहरू कर्रा ने वर्षक स्थापित होता है वरस्य। -हास-पु० वर्ष-क

्तृतिकास्त स्त, हैर-स्त । सु०-के द्वायी-न कीटनेवाकी वस्तु । मीसक-तु• [सं] एक रीरव ।

भीससा-सी॰ [सं] बरावनावन । भीसर-पु [सं॰] पुद्धा जासून । भीसराज-पु भुगाज प्रश्ली ।

सामाना न की शि (ती) स्ताव महा।
सीमानिव की शि (ती) स्तावमी, भीवन रूप साह्यस्त वाकी। सी रीचना नामका गंवहम्बः, दुर्गाः, चतुकः, दक्षिण साहकी एक नही। भीमान्(भत्) निव (ती) स्वस्तातः।

जानाप्(अत्)=ाव° [त] जवत्रहुः भीनापुरी=सी॰ [तं॰] दमा । भीनापुरी=सी॰ वीवाँको एक बाति ।

मीर- च ची॰ है 'नीइ ; बाविक्य-'वर न समात मैमकी भीर'-गीतायकी । च विच भीता मीवा मि] वरानेवाका, भय प्रवृक्षित करनेवाका ।

सय प्रदाशन करम्याका । सीरना≑र्चक क्रिश्व बराया । श्रीदन्ति [र्मण] करमेका (नस्त्र) वरनेवाला (पापसीद) ।

१९ विधास काम कमयावारा; एक तरकाल; (पास्माह)। १९० विधास काम कमयावारा; एक तरका करा। और चतावरा मक्टीका टरपैक जो। औरी; कस्दी। छावा। —चेता(सस्) —कृदक पुर्व दिरम् । विश्व करणेक्, । —पन्नी;—पण्डों—की सतमुका। —सोच-विश् विसर्व।

सेना स्टलेबाडी हो। -वंश्व-प्र मही, पून्सा -सास-विक स्वयासता पीत । श्रीठक-प्र [से] वक तरहक कन्ना वता उत्तर, मादा, बाया विवार। वि श्रीक।

भीदता—सी॰ [सं] भवशीलता, द्वबद्दिको । भीदताई॰—सी दे भीगता ।

भीक-वि॰ की [सं॰] गीव रुपमाववाकी (भी) । भीरे-म पाछ नवरीक। भीक-धु मध्य बारत राजपूताना भारिने पानी जाने

बाको एक बंगकी जाति । - भूपण-पु॰ शुँवजी । जीकमी-को भोगकी जी । जीक्प-वि (मं॰) भीव वरणेक । प्र जासः ।

श्रीसुकः श्रीसुक-पु॰ (सं॰) माद्यः (त० भीकः। श्रीय०-पुः शीमः। श्रीय०-भी० देः 'शीम्'।

श्रीपक−वि [र्थण] ट्यमा भीरम । श्रीपत्र#=श्रु शिरक वैच ।

भीरण-वि [मं] यव वयानेवाका वरावना । वु भवानक रहा शिवः कुँगस्त वितानः कव्नरः दरानेश्री क्रिया।

श्रीपणक=दि [सं] सदानक। श्रीपणमा-स्रो [म] श्रीस्तापन। श्रीपण्यकार-दि [सं] श्रीसनी श्रास्त्रास्य। श्रीपण्यां-स्रो [सं] सीताझे क्यासा।

भाषमः -- वि । विश्वामः वद्यः स्ति। भाषमः -- वि । भीषमः । पुरु देवस्य स्ति। भीषा--- स्ति। स्वामः भवप्र-- स्व।

भीषित−दि [गं] दशयानुत्राः भीष्य∽दि [गं] अथानदः, भीषमः पु अधानद (सः

भी देह मानाहे प्राप्त बाजेशना समाह - कपु(क्)-बुक ! मनिय-१ [] मानेशन समारी हीरान रेड क्यारेज ४ टा का एक् अब रहे अवस बुडाना अक्त anti-eis-j fenkitz en bier ich मा । - विमास पु सायल मोर्ग्ड्ड शर्थः - स्ट्राप्ट- ^१ द इन्य (ध्यान) व -सूत्रय-म्दे सुनी प्रस्तान देव स रुशादा र सर्ग-दूष-पु×ै ६ इत्याः बहरता -काल-देश है है एसी संपूर्ण व स्थान । -रेगा-१ ६ श ! -मंगि(तिम्)-रि अर्थेश्व -पुराय-पुर सहराह पुरक्षेत्री दह । -यानि रामादे स्टरान्त् । न्योद्रश्वन्त्वि रजापूरी सन्तर स्रोतान कोपमा-व्याव्या क्षेत्र मान्या । रिक्र - मीराध्यम् - पुत्र वक्ष तरहरी नगरितः - सम्प्रतः अविष्यप्र-रिक्शिकी ही मेराना अपरेश एक शाम्या न्साधार -सिप्-पु+ शंभारकष् व्यक्त् इ सम्बद्धाः हो । जान्याः जीवता अन्दर्शनः देवेदाना । -पुरमान्यु स्रोधपुराद। 7 8 44 शक्तिका - दिल्ला के विकास करे - सामेत पु वह अरोपंड १३ -यमा(वप्) -वप्री(दिव्) भवर्ता=भी [र्ग] प्रदर्शनावण। शयरीय-वि [] भारत ह बुक बहु में भाग ह देशको बानु हो सामे हमा है भवद्रीयान्ति स्ते (६) अन्त्रते । क्वीर्रिशे ह -शासी-की स्वीप्यप्तवर, वैद्यान्ती ह भरत-५ [•] र्व.4 आहा प्रधा कारीन वर अहाता भवी(दिन्)-रि (लं) प्र'ता का लाक्न्द्रा क स्थान एक भनितः ३ व वर्डदगीः वर्षत् । **~क्**ल्रि~ अभिनित्तीः सन्दर्भ । म् पारा धारित र विकल्यो । श्रमीता नी धनरमन्यास्त्राचा । मपना - स हि है। ५ वस १ भवेश-५ [वं] नेगतक कामी दिन। संबर्धाः - सं । १६८३ । भ्राम-दि [तर] विद्याया है देश अन्ते; हेस्ट मसमीप-रि (मे) री 'पाना । हर्तम् अन्तः अपन्यत्याद्याद्यः अन्तः श्रीतः शन्तात्रः भ्रम् । -पुरु पंता श्रद्धाः श्रदेशः १ ध्यक्तिन्त्र [त] शिवद श्ला करण । श्चनमा∸मा (०) प्रशुक्तकः हो (वं। भवीतर-द रि विश्वेता नाव असर बाब्वा-ली (१०) शर्री। संबद्धान । भूष्यां स्थापन स्थापन । अप-वर् अर्थ अपार (तंत्र) कुरू श्री र्वितेषका भ्रषांद्रिन्तु [र]रे ज्याहरू र [मी मही 1] प्राप्ता-को वर्गनी ह MAR-30 [1] 3-1 सक्स-व (११०) वामवक्ष होत व अनुम-पुरु [त] अंदेशम् कस्मा ह प्रवासक-१ (१) देशका परेत् । अपनार-गार्थ है स्थारी मक्तिस=ति [ते] केलाका ३ अचा-शी (श्व) स्वर्ग मेरी १ स्तान्स्य - द्र (११) स्तान्द्रेश की स अच्या पु ८] ब्रेडेन्से दिशा ह भवातीन है । देश वर्त - महिन न्यति -बर्चन-१० हि किन रहर । ब्रह्मान्त्राम-र् १४६१ -न्य न्याप-र् देश असव-१ किनी भीता 474 1-MENTS 4"PERSFERE HULLING E SEVILEN SINI Have (ay) - P. Singay Barr (Singa) ! भगमंत्र- १ उन्हरून martineng fri fit eines i श्रमक दु है अस्त । MERCHANTS IN 1 THE S ment & martemetet fem # 11 **सरपता**-भी ति है । स्थली ह अञ्चल पुंदित हे बन में १३ भ्रम्बरम्भी-माँ ३१ ईदिन्दी अन्तर हर्षेत्रका हरत । सम्बद्धकार् के देश के हिर्दा हर में है किया के किये Miles - it to see a 81 17 32001 Right - 1 /to) should write a se Billed on gra gilb Labit garde : 412-01 ulte un'eng source WY THAT 4 THE 1 94 स्तिन्ति । भारतनाव करा श्रीदिमाला नाहि । हा है है बहुन सराहत है । अमीर ० १७ ३ मन्द्रिक्त समाप्ति । शिक्ष के शिक्ष के हैं के कि अस्त १ ६ ० १ ० रे १८३ मार्थ र म दर्भावन metro (a) to (to, 4-200 ment merte niget-st-1 the section 40,0 Manner to they had his and entitled attes MED IN IN 47 -6 E4 277 staff at footh on t A 1 10 11 catalantate milen fra for the fig. W 24 4 7 Martin de la jeden birde \$ % \$0 3t + +1,921 -47".

442

MAR NAT

an eine bieb aufe niebe da gene miter fiffenen, fi finanten mate beit ber -प्रश्री नम्नरी ११०६ वर्णस्य-पु बर्गस्य सूर क्यापर - प्रशिव नक्षे पाँच तिम हिन्दरे छण वस्त्रीय । रिक्त र दे - विकास - ४ वर्ष दश्चेमा ।-प्रक्ति -क्क्र-द बब लाहर हर्न काला-श्वाहात्राचन्त्र वस बुक्र । मीपाद-पुत्र को श्वामीके दिल दिलीवाला -धोमा-१३ वहान्ता । भीष्यां सी-भें (८) संदश्या कामी दिन दिन בייתש ביייקש לפריו Market & & plant AFRICA & ME 1 भोजन-पुरु बोजन बज्यकी जिसा है। श्रीक्षया - स. वि. ५ समाप्ता स्टारा श्रीक्रमा नक्षत्र है। मुकाबाना शपनना ह भौज्ञान्युन्दंशः भीक्षी-मी एवं कीए लिए है है। इस्ट्रेंट द्वारेक स्वयन्तर । सा रेड भ्रोद्धान्ति । दिना भीत का दिखरका दिल काहिए ७ हरून क्षा संबद्धी ग्रामी श⁸र चन्द्रपाई क भौडी-के यह देशी महाको की की देव होहा ह भूजीर भूजीरम-० दृश्हे मध्य अञ्चल । अपूत्र अने अने पुरुष । श्रापक पूर्व शहर । timere-b it have estable भूमान्य देव नमा १ Ment Mentente Se fein eine ? भूरें र में हो दूरि हे न भी द्यान्युरुष्य बन्त ग्रह रेश काम मार्ज है। नकरन्युर है न्या । mugetung und night aufest fem i eineme fungen. Ib feie au giften anfernich रवयमा न्याम नशीकर इ. श्रुवेश-सर्वर-पू. समादर् अन्तर च देश न्याचान्यु समावः SELECTIVE PROPERTY OF THE PROPERTY OF A -Alb-de bigge net in. bigginte matte-त न्यानामा नदान् ३ हे जुल्हार इत KNOW AND 3 अर्थ के के बेर्च के र Hereg ber mit mit WEST -WY KYT भ्याप्ति अवस्थानस्य स्था स्थाने समझ र्गते । RESERVED IN WAR REET MAY SEE CO. wer-fit tie House to a t. It town to his work works And the that the time to the to be the second and the second that the time to the second that the time to the second that the time to the second that the seco दर्भागीत अंतर जन्मानार्थ में सुद्धे सामान्य HER HURTE HOTE HE THE ZE Fit with to the fit the transfer that I are a first truck to the fit with the fir high while on 12 ft above a parties of an interest man and the againstifuled to dega an-The first growth about the ? + --- + 3

REEL ELIE DEN ANTEN SOMETHINGS SINGE SERN बान मार्थि - प्रमुनारि और बन बीवर हैदेसमा प्र रेगा नवस्त्रिम्न विवर्तन्त्र होत राज्य होत सुन्द्रोतिसम्बन्धः (२२०^३ ज्यातः भुग्य-भूम क वरायात करा - मार (र कारी हाजेरान्याः हुरारंत र नक्षरीनगर रहते हर्ने ग्रहे । क्षा करि बहेरे देशक द्वारक कुल बु रहा भूमका »॥ (K+१/५१ देश-) भूलान् -(१० मुशः । शाम-भी रिल्म करे मिन्त । भूत्यमा-मन्द्रिक्येत्रत स्वभावत हे दे त भूग बीचा । शुक भूगाय निमा-चित्रद मेना राता नेना श्रातिकाम-पुरुष्ये देशका ग्रीका का का का क्षित्र अन्याः सम्बद्धाः धर्मता द्वारा चन्त्रेत्रः । देश all starters मुरुषाकान्य कि सह व अहा बहुबर। सहाय हरता रिक्टका पहुँच का (हैंगे कारी अने बर्च अपना ही HEAST LAKE CAN TOWN गुराचा−र दि शेचकामा केशानाः भूगुप क्षांश्रास्ति करे *सीता* । uniffe ming ufe - eat ficht erg te beit स्था लाजीय -१ । श्वामा-दिश कृत् कृत्ते र approfes til j de glood by big to ver & अक्षा अभेषान्त्र एक अनेतान् दिनके रेनेटी करी 744274 भूक श्रृक्षपु-दिश्यूर्त प्रदर्भ । बारदी सरबार रिट्रबंस १ -बार्बिसी-ब्रॉ ४ वार्वि -ब्रिष्टा-भी सर्परका अस्मतीला वर्ष -42-4 nates adabate at 24 न्यापन-पुत्रक सन्तर्भाष्ट्र (त्र) मेर्च (fing) & the new t - white (fixe) & the satisf under alle melales describes -विष् शिष-१ १२० कटनः उप्पू र ^{सरद}ः -रिम्मू-दु वर पूजा इ असेन्स्यान की वेद क्षा Manhad fertile mon and negat ung WEST NOT ! industrial as the contract the meets I septiment on make such Highward of ! The first ! greiff auf ju julien an course et am? water a los to don't ma didde de yen, nature nage papa K. de die endma d. det. H. f. g popular a mar grang ganggane - 195 1

भोगो ! --कृद-पु रासका देर; यह वर्गत । --गंघा --गधिका,-गंधिनी-सी रेशुका (गंधहस्त)। -गर्म-त्र विभिन्न इस्र । −गर्मा – सी रेणुक्या कपिकसिशापा। -गाम-पु॰ समदेव । -चम -पुंस-पु॰ भरमराशि । -त्क−पु दिम, पाका। -ब्रिय~पु क्षित्। -बाक-पु॰ कर । ~मेडू-पु सदमरी (पश्री) रोगका यक सेंद्र । -राशि-सी रासका देर। ∽शेदा∽सी दरण वस दग्बरहा। -येघक-पु॰ कृत्र। -दायल -सब्या-धिव । -- सर्वरा-स्त्री पोटास (?) । -- शायी (मिम्)-पुक्षित। -द्वादिकर-पुक्षित।-ध्रुवि-कर-पु॰ शिव ! -सात्-वि॰ को मस्मस्य दी गया दी मरमीमृतः। -स्वाम-प्रसारी देवमे बस्म मक्तमा। ससाब-पु [सं•] सोनाः चाँदीः विष्टंगः एक रोग विसर्ने भी कुछ साना भाग <u>त</u>रत रथा जैसा ग्रांत होता (लेकिन पनवा नहीं) और रोगोक्त तेत्र मृक्ष क्यो रहती है ! सस्मांग-वि॰ [मं॰] मस्महे रंगका । मस्माग्नि-औ• [सं] मरमक रोग । सस्माचक्र∼प [सं]काशस्यका एक पर्वत । मस्माबद्दीप-दि [सं] का शतकमात्र रह गया दी जी नकदर राम्न हो गवा हो । पु॰ राखके शवमें बचा मंछ । मस्मा<u>स</u>र-पु [मं॰] एक देख किसने धिवने वह वरदान माप्त किया था कि वह जिसके शिरपर दाथ रसेका का क्रम बावगा। मस्माद्भय−दु [मं•] ऋपूर । मस्मित्र∽विश्वकादावतावाद्वमा। मस्मीमृत-वि [मं] बी प्रस्कर राख ही यथा ही नह। मस्सद्ध-वि॰ मोहा वेडीक (मनुष्य)। मस्सी-सो॰ यते कोवडे शारिका बुरा। महरामा-भ कि वक्तारगी गिरना ट्रट वहना ! माई −स्रो मीइ। महिं-पुसरारा। माँडरः भाँडरिश-सो देश भाँवर'। माँड १-म वे 'माव'। भौग~ दि [सं] भॉनदादनाः दुर्जनकाक्षेतः। मारा-सी गोकेश बाहिका एक वीवा जिसकी पश्चिमी नद्या पैदा बरतो है: इसदी परिवार इन परिवाही भीट कर रनाया हुआ पेन । अ॰ -शा आमा-महोमें होते **की की वार्ते करना । ∽द्धानमा~**भीग पोना । (घरर्से र्भेंबी)-म होमा-शरिद्र होना । भौगरु-पुर्शि घोषहा। भौगीय-पु[मं] मॉक्ट्रा ग्रेश । वि मॉक्ट्रा । मॉॅंड-सी मॉंडनेडी किया या भाषा मोर तदा नुवाई, भौतमा-स कि सद्घरनाः शेर आन्धि वर्द नहींकी वस्में मिनाइर बहनाः धुमानः (मुगरर मारि)। मोबा-पुदे भानवा। भाजी-भी बहदाने ग्टब्सनेवानी नाव । सु -सार्ता -बाबा राहमा १

मोर-पु॰ दे 'मार ।

मारा - पु देवदा

भौड-प सिंगी भीता बरतमा भी-तटका रूप्पा दुकार्यका माक सामाना बोक्टा एक साज महीका पटा भौका कामा एक बाजाः कर्रमोड इद्यः। म्योपक-पुरु बीस विद्यारमें पाच रखनेका काम करनेवाला व्यक्ति । -पश्चि-यु स्थापारी । -प्रट-पु इक्षाम । -प्रध्य-पु एक वरक्का साँप ! -प्रतिभांडक-पु विनिमन, भीजाँका भदकानदका ! -भरक-पु॰ वात्रमें रखी हुप वस्तुर्पे । -शाका-मी॰ मंदार । र्भोद्द∽पु मसस्यराः महारूकोमें हेंसी मबाककी सक्कें मादि करनेका पेशा करनेशामाः यह जिसके पेटमें बात न पनेः निर्केश व्यक्तिः वे 'भाँकाः = छपप्रवः हेसीः भंटाफोड-- 'इडा क्रक्ट कर होश्डि मॉड '-च ।-भगतिये नु नायने-गाने आदिका पैछा करनेवाले । मोश्क-प्र• [सं] छोटा पाना व्यापारिक वस्तुएँ । भौडव−प सिीझयका। र्भीकृता−स कि निगावना शष्ट करना; बदनाम करते फिरमा• पुन-पुनकर देखना। ज कि सरकता। माँका-पु करतना । माँक्थन । मा -(के)मरना-बछतानाः फूट-फूटकर रोना । -में की देना-दिसीशर दिक क्या होना । भावागार-पु [सं] भंगार, गोदाम। स्रवामा । मोबागारिक-४ [र्स•] भंगरीः सर्वाची । भौद्धार च ९० सि•ो भेदार । मांडारिक, मांडारी(रिम्)-पु [सं] मंगरी मंडारका रक्षक, भव्यक्ष। मांबि-सी [र्व] क्रिम्स्त । -याइ-पु ~शा**ठा~सी॰** नार्ट्यो दुवान । मोडिक-पु॰ [सं] स्थामा द्वरहो सादि स्थानर धनानेमाना । मांडिका-ती [र्च•] श्रीशरा यक पौथा। मांबिमी-की [सं] देवरी। माडिस-पु॰ (सं॰) स्वाम । मांडीर~पु [थं] क्राका एक शुर ।-बन-पु श्रंदावन का यक माग ।-- वर्षक्त -- व्यामी (सिन्)-पु कृम्म । मॉब्यो•-९ यतपम। भौत-वि॰ [चै] दीरु प्रकाशनुक्तः क्यारूप । मति-न्यी दे नीति। माँति-ना तर्द, प्रधार, रंग + मर्वारा । -माँतिके-शरह तरहरू, रंग-रिरंगडे । भोद-५ [स] ण्ड वपपुरात्र । र्भोपना-म कि रंग-रंगनं जान नेमा, शहना। सर्वि-वि सोंप जानेवाना ताद जानेवाला । भौषे भौरा-पु समारेमें दोनवामी भावाज । मावना-ध नि शशास्यर पुनानाः • गण्दर संदर बनागा ! मॉवर-न्ये परिश्वमाः विवाद इं समय द्री जानेवानी अस्ति की परिजयात कीन जोतन समय एक बार चारी और अन भागा। * पु सारा। सु०-भरता-परिक्रमा कर्मा। भौवरि भावरीरू-नी पहर शरहमा। भा∽ श नादेशाः० श कि दुशाःगी० सि०ो

सर्पिणीः मस्टेमा नदात्र । —च्छाया ∺खी॰ निरापद भामग। - ज्या-भी गुबको क्या। - वृंश-पु॰ वंड-रूप द्दांचा क्षेत्रा द्दांचा बादेंमें पहलतेका शीन फैरेका एक पदना।-व्छ-पुदाथः-पादा-पुगक्वादी।-र्वद्-पु [दि] वास्पंद । ∽र्बधा~पु॰ केपूर । –र्बधान-पु० अभगास, बाइँकि मीठर घर केमा !~बक-पु॰ बाहुबख ! -वाध+-पुर्वेदवार। -सध्य-पुकोड। -स्छ→ पु॰ बंदा। –पष्टि–सी मुक्दंड। –सता–सी सता बैसी कोमल कमनीय बाँव। -वीथ-पु मुजवक। −सिकार−पुक्षाः −ियार(स्)−पुक्षाः। -संमोग∽दु आर्क्षिगन। -श्तंम-दु वाँदका शकड़ नाना ।

श्चवरातिक-पु॰ [सं] गस्दः मोरः नेवका । भुनगामन-पु [धं] मौरः गम्ब ।

भुक्रोंद्र, भुक्रमेश-पु [धं] श्रेषनाग बासुनिः । भुजपाल+-पुदे 'मूर्वपत्र'। सुवरिया≉−सो जरई। भुजवां-पु सहसूँजा।

सुर्वातर मुजांतराक-पु [नं] शाती। गीव । सुबा-स्रो [सं•] नाइ सुना सर्पेक्ष सुंदर्का । -क्रंट-उ दाक्की र्वेमकीका साक्ता। −व्यक्र−पु दाय। --सम्य-पु• कुम्मी । -सृक्त-पु क्षेत्रा वादुस्त्व । सु०

चडाकर कड्मा उठामा या हेकना-मतिशा करना । शुनाध-त [सं] शाय। सुकाकी-की एक तरहका देहा छर। गुवारी। मुकिया – पु पनाले हुए कामका कानका की ना तेकर्ने

न्मी हुई तरकारी। सुबिच्य - पु॰ [सं] वासा रोगा इस्तव्यूत्र । वि स्वर्तत्र । सुबिय्वा – स्त्री [सं•] वासीः वेदवा।

सुनेमा - पु॰ वर्गना । सुबैस-पु• भुबंगा पद्यी ।

शुनीनाम-पु भूमा इना मन्ना गुनारंगे दिया चाने-

सुरुपु−दु [सं] भादार; पात्रा अग्नि; वद्य । र्धेहा-पु॰ मनमेन्द्रे इसी बाका लुमार वा बाजरेन्द्री बाक-গ্রন্থা।

सुदीर-प पोशंकी एक शारि । सुतनीरं∽को सो प्रेटा दे मृतिसी ।

भुनया-पु धरमेशका छोटा कीता करिंगाः ग्रुक्तः मगच्य माधी।

भुवती-सी ईबाधे फरानकी करानेवाका एक कीहा । भूनमा-अ कि मृता जाना, सिक्तमा वर्ष आदिका टीटे विद्वीमें बदका जामा ।

भुन-मुन-स्रो धोमी अरपष्ट व्यन्ति (दासकर कुण्डर बोक्शवाक्त्री) ।

सुन्तमुमाना-च कि 'भुन-मुन' करना, अश्यक स्वरमें इ न मध्य बरमा।

सुनवाई सुनाई-स्री मुनानेके बल्लमें दी बानैवासी रक्षम भीवा भूगतेसी पत्ररहा सुनाना-स कि मीरकी बपरी वा विसी वहे सिवहेका

कोटै सिवॉर्मे वदक्रवानाः मूननेका काम कराना । सुवि*~को• र भूमि'। भुमिया-पु॰ दे 'मृगिया'।

मरकना−स॰ कि क्रिक्तना, तुरकमा। स कि॰ मर भुरा होनाः + मूकना, शहक जाना । अरकस−५ दे 'अरक्स'।

अरकार्ग −पु॰ चूरा, इक्नीः मिहीको दशत, कुरशा । भुरकाना। ⇔स कि मुरमुराना छिकाना ≠ मुकावा देना (सुरकी~ली॰ छोटा गुरका, कुल्हिया° कोठिका; हीत्र ।

सरकुरा-५ कोटा ध्रेश । अरङ्ग-५० पूर्व । श्चरकुल-४ चूर्वः वह वस्त को चूर-चूर हो गयी हो। मु - निककमा - पूर-पूर बोमा। पीटकर भरता बना

दिया कामा । भुरता-पु दे 'भरता। अरसरा-वि॰ चूर्णकरा को शहर हरकर चूर्णकर वो जाव । −६ट−की मुरमुरापन।

भुरकी-को भुँडकी; फसलको कगनेनाका यस कोड़ा I शुरवनार- ध कि मुकता देना, शहकाना । अरसना १ - वर कि , स कि अस्सना । अरहरा=-ध मीट तक्का ! अराईं॰∽सी मौकारन।

अरामा≉⊸व∘ कि अुकारेमें भागा । सः श्रिः अुकरामाः वदकामा। मूक जाना । अरावना॰−थ कि स कि॰ दे 'तराना'। अर्थंड−प्र [सं] यक गोत्रमवर्षक कविः भारंडपद्यो । अर्थुरिका अर्थुरी-की । [मं] एक तरहकी मिठाई ।

सुरा-वि बहुत काका । ई दु विशेष प्रकारमे बनाबी 🚺 यक शरहकी चीनी । मुकक्क च-वि॰ वहुत जूल-नेवाका विश्मरणशील । अक्रमा निव विरमरचडीच । पुरक तरहकी वास । अक्रवामा-स॰ कि॰ भूकनेको प्रेरित करना वहकाना।

मुकाना। 🕇 स्रो देवा । ग्रह्मना−थ कि॰ स॰ कि॰ गरम राखर्ने मुक्सना। मुखाना−स कि जुनमा दे 'मुनवाना । स कि मुकाबर्मे पहलाः वरकताः विस्मरण दाना । ञुकाबा−४ वरकानेकी कुकि भीरता थकमा ।

मुर्थग - पु वे 'मुक्ता'। भुषंतम•−५ 🐧 'मुत्रवम'। अन्त−पु[मं] अनुसर्मेका कक्षिः। करी क्षिमः भी।

~पति-पु सुवकोंदका वृतिः ≉ राजाः -पाक्र≉-पु॰ दे 'भृषास । अवग-पु [मं•] कम्य क्लेक (तीम वा चीरह)। जन,

प्राणी। भाषाद्मा बना समृक्षिः चीरहणे संस्या (मंदेन) । -कोश-पु वृत्रेष्टम (ब्रग्नांट)। -श्रय-पु स्वर्ग अर्थं और वाताक । —पापनी --थी शंगा ! --भवा(नुं)--पु॰ बगन्ता थारण-पीतन करनेवाना। -माधन-पु

कीबगढा । -माता(म्)-मा दुर्गा । -मोद्दिमी-दि भी जगर्को मोहनेवाली। -यिदिल-वि स्पन्तस्थित। पत्तव को प्रविद्यान कार्य । अवदे-पुर मूर्व । अवदेन हैं व्यवका ब्रामकी बन्दा हो है है है एक अन्य कार्य करें पुरदारणो । -कारा -कारा -कारा -कीरा-पुन्ते। विकासकार हो। -र्शात-१ पर नाम्मायो प्रशीदण । -त्राय-पुत्र । मागवर्ग-स्ती वह लारसी दाने । ---

माहरू-र बारा देव हिन्दा भी रीज बरुदा) 475 21

H12.1 -d 3.m4 mj4413 मार्ट-पुरदेशाची राज्या देश, भ्रम्मा स्ट्रीमा हान्ति द्या सम्प्रता निवनता वर्गमा - नारा-म अर्थराजनादाय र ४००४ र ∽हन्न⊸की देशहु≱ । च्याप्तम् त्रमात्रदेशेल, हुर्गा समा अविहा-मा-म म्लेनरा

माप्र-५ देश शाह ।

माक्र -पु नारः वेगः स्थानः क्षाः प्रयोगः वृधिः । शागीरय-रि महिमा अस तर ।

भार्त्र रूक स्थापने । म ऋतो ~⊁ APR 8

माक्षर ५० वस नाहरी हरानी ।

मान-दि 🌓 थि। लिय भीवन दिस बाल हो। भर्ति हा दिनदा भारतारिक शीव हे प्राप्त ह भाविद्र−4ि [ं]शक्तितः।

सम्भ=(१ (स.) पर्च सर[्]वाका कर्न्यु।

सामक-मुहे अपरा भागमा - मर्गाद . म वि वदश केप्यात

MINITAN' & 471 I um-e ! Herr um ceren Cafteffen:

- अध्यक्ष भी हिने बीका वेशास - चाय-व समाना -चेष-५ अना बान्दा ग्रीवानः रापन्ति रिया मार्थिक ब्रह्म संग्रे में के महिल्यी स्नक्ष्म-पू प्रान्त्रो स ४६) सन्द हेरेसर जाग शब्दा वाल्या - " भाष(#)-(१ (१०९७ १~भ्द (भ) दु एया १

-war-it atterert eit feiteibre i लक्षारमपु तक एक प्रकार के क्यारि(हिन्द्र) औ fewit er و رکمل الاسل ا

क्षिणन्तु । एकः न्यत्ते । अवदः नृष्टे कृत्युक्ताः हे च्यारोजी अवस्तरम् । चीत च्याप्र∞ि अवस्त्री प्तरं सीहरू, रा सैन-सीवज्ञ-सन्दरं न्हर्स मुक्त अन्याप इं त्ये १ न्यू इक्यान्ती होते अन्या है।

mine of the sale with Halad-off that are a lightift at had

eren & 563

अनापीत को तीरतूर प्रापात

merena le fire esch er u bufa frer f mina-ge for afen ain ain esc nick f bit ANALES ALSO RECOL EST AL 92.45

mandard & tradition Marin & Sandberge

Revent on acres 1 mall on tent southern colors on arts

भ्रामानात्राच्याः अयाच्याः देवभवः भ्रष्टाः मातार्प (चित्र)-(क (१) (तमा पर्रापन) Mitte-fes , f fent acht beit fent

म्रग्रिक क्षा बारेक्चा ह मानिक-विक [न] भाषतंत्री अनिक, विना ब्दा व किये ह

धारिनेष∽द्र+ [र'] सामधः । मामी(मिम्) वि (१७) विक्षे ४० हिन्दे हे

fer lere milen with fernenth ures, at-बनो घेन्दर मु हिस्नेशार [म] स्मार्थनार । व द रे

डान्द्रव १ मार्गारधी-भी रही] मला संबंदी क्ट एमा है बंगामारे बहुनोही (बुद्दानीके म्यूनन्य मन्दर्भ नेनाके म्पर्दने प्रशेषर महरे ।

आगरि-व (८०) १४४१ए० मा बन्द (वर्गातिक なな 男 なる

सन्तर्ग - दिश हदीना र

wird-fa fet | faurper um. ferta nientit ह राजा ्यह बजेबन असा दिसी गारीय क्षेत्रा वश - **ब्राय-पुरापत्त्र अस पेर** ६ **- गोप** षु अर्थादक्ष रीष अर्थनाचे शहयो। **नवत्र**ा शास्त्रक एक ल्यानीहरू नशास्त्रक सामानानी है ≅ावदा क्वां (बहुन्द क्षा) रमक्षिक् क्षा प्रदर्भित रिकेर्ड को प्रदेव लेजेस दिए नक्षण हर है। रिमादा अवस्था - ब्राम न्यूमान्य अवस्थे ER ETELOG E - And-do K rig and E C. C. र नहीं वर्ष क्या वा रे जारर -क्यूरे(दिस्) हैं। बाररल ब रहेरबार -विश्वासा(म)-१ मार्ग danteum merer farer a far affert i -leide-3 were vordt femt fit -fegg-1 Telege -s-ell(feg)-fir I'm वन्त्र अर्थन्त्र क्षेत्रपद र मुद्रि है। वर्ष 444941

meretage)-fe in investor ash in बालावीय सारवादम १ € | अभास # all much men for

क्षान्त्रिक न्यूर (स्) अन्तरक्ष सूच्यन बन्दर्भ । mines-1 [] & fixe befreit feer et, vt 191" Intlate a mell

smeeting reject a selling an entit weethway of off

the fire from any fix are \$70 th man of he was

अन्द्रकार का दि है। अन्दर ेबर्गक १ । दिल ६ देव रिवर



441 माबी(क्रिप्)-वि॰ [सं] याग केनेवाका श्ररीक दीन गाणाः संगद्धः। प्राप्तेनकः नौकरः। भारप-वि• सि] भाष करमे घोरव विभारत । भाट-सो॰ नदोके किनारॉके शेषकी बगीन पेडा। दे० भार । पुरावल्पे मादिके बन्न बंध, वरितका यान क्रामेनाला पंदी। एक बादि को क्याने जनमानीका वंश परित भ्रमाने स्तुतिपरद्ध प्रवर्गदी मादि करनेका पेछा करती है। सुठी नवाई करनेवाना नापसूसा [सं॰] भावा, किरावा । भारक-तु [सं०] माहा किरावा। भारा-पुर शमुद्रके पानीके शिवतकातिक ज्वानका बतान् क्यारका प्रकटाः प्रदरीकी बजीत । माटि-सौ [मंग] भाषाः वेदवाको कमार्द । माक्रप्रैं≉∽पु भारका कार्य रत्तविकार । भाउ-सी॰ नहीकी बादमें बहकर आजवाकी मिट्टी की विनारेको बमोनपर बम बाती है। बारा । माध्य-त दे भादा : गढा । माठी−स्त्री माडाः ● दै 'सद्दी । भाद-पु॰ सङ्भूबंदी मही विसमें बाह्य गरम कर वह दाना भूनता है। सु॰ −झर्रिकमा−तुच्छ काम करना निर्दंश सम करता। -से बाय-पृक्टेमें जाव। -से श्रीकृता - में श्राक्रमा - चरदेमें बालना, नड करना। रपमाना । मादा-पुर वह रक्षम को किसी श्रीतकी इस्तेमाङ करनेके वदके दो बाब किराबा गाड़ी बादिका किराबा । —(हे) का उद्द -शबरतपर काम करनेवाकाः वह कादमी विधे पेता देकर जी जाहे दाम छे। माण∽पु मि∗ो कलक(ध्यवकल्य)का यक मेद (इसमें द्दारमध्ये प्रचानता होती है और वह यह शंस्का भात-पु बनाला हुआ चानकः न्यादक्षे एक रस्य नरके पिताका सम्बादे पिताके वर जाकर धर्मा रहोते खाला। [र्ष] बीसिः ममाद । विश् चमक्दारः मध्य दीववाला । भावि−लीः [स] चसऊ दीतिः द्वानः। भातु–दु [सं]स्वी। माधा-पु॰ तीर रराजेकी थेबी, तरकस बड़ी माथी। भाषी-स्री चमरेकी बीचनी। मार्ची-पु सावमके बाद पहनेबाधा महीमा, माइस्ट । मार्बी•-धु है 'बादी" । माह~षु [सं•] रे 'माह्यद । ~पष्-पु भावीका महीना। =पद्मा-तो पूर्व भाइत्या और बचरा माह पा सदल ।=पदी की भाइत्यक्षी पृष्टिमा। माहमानुर-पु[मं•] सनीका पुत्र। माही-सी (मेर) माधीका पूरियाः मान-व्यु स्पेत्र [सं] प्रकाशतकोशित शामा प्रनीति । मानजा-पु रहिनदा पुत्र : [शी 'बानजी ।] भागमा । कि शीरमा क श्मा वह करना । मानमती-सौ आर्दे शेल करनेवारी आहुगरनी। में • • का कुमबा - प्रहॉ-तहांश तिये हुए वेमेल स्वादानी-

छे बनो बस्तु । −का पिटारा-वह निसमें तरह-तरहकी

भीवें मौसूद हों। भानव-वि॰ [सं॰] सूर्य-संगंधी । मानदी**॰−श्री भ**मना । मान**वीय~वि॰ (र्स•)** सूर्य-संबंधी ३ प्रादिनी बाँ**स** । भागा—व• कि• रुपना अच्छा क्रमनाः धवशाः ≉ मान होना व्यान पहला। 🕶 सः क्रि. श्र वरायपर प्यानाः चमकीसा (मासु~पु (सं•) स्र्वः प्रमा किरणः मदारा राजाः स्नामीः विष्णुः धिव ! ~कंप ~ प्रष्टगादिसे स्वैविक्य कॉपना । -केसर-पु॰ स्वै ां ∽ख-पु॰ श्रनिः वम ! अशाः-तमया - तमुख्य-की॰ वसुना । -- दिन -- बार-- प रनिवार। -पाफ-पु शीवभन्नी बूबमें रक्षकर दैवार करमे वा वकामेकी क्रिया। ~ प्रताप-प रागावलमें वर्षित यक राजा को कहा जाता है कि ब्राइन्जोंके छापने दुसरे बस्पमें राज्य हुआ।~कुछा-ली॰ देखा।-मुद्री~ की प्रैनुको। - सूत-९ वस ग्रनि। - सुक्षा-भौ। बसुना । —सेन – पुरु दर्बहा एह पुत्र । भासमती-की [सं] गंगाः हुवोंबनकी पत्नीः विक्रमा दित्वकी रामी जो इंह्याल विचानी पटिया भी। भानुसाम्(सत्)-वि• (सं] तेबीमव दीप्तिमान्। सुंदर। य सर्वे क्ष्णकायक प्रश माप माफ्र-की प्रमाखे बीकानेस निधननेवाका वाच्याय कवा श्रीकते हुए अकते कपर प्रवतेवाका सुक्षम बरुक्त बाध्य दुबार। ठीस बा दर्ग प्रशामका अधिक तापने दोवेदाका यैस रूप। अू० – सहना⊸दि≩सॉका अपने क्लोंके मुँदमें मुँद काक्कर दना भरमा। माथरः मामर~पु एक बाछ बिलदी ररही बंधे बाती 🖔 रहाक्की तकहरी और तराईंदे गोफ्का बंदक । भाभरा*-वि* साक्ष (गका i भामी-ली वहे पाईको सी, मानव । भाम-प [र्रः दीव] दीति जनका सूर्यः प्रोदः मदारः वह नीर्श**रक इत्त**ा कसी भागिनी। भामक∽९ सि॰ो वहमोई। भासता?~९॰ भन्नता, प्रियतम १ भाससी १ – मी भावती प्रिवदसा। भाममी-प मि । परमेश्वर । शासद्द−पु॰ (सं॰) वद्ध क्षत्रं हार-छात्रो । भामा-न्यी [र्च] क्रोबी स्थैः सरपमामाः व स्थी। मासिम#∽मी ै 'मापिनी । आसिनी-ची॰ [मं] ब्रोब करमबाठी सी: शुंदरी छी। थामी(मिन्)-वि [मं] शोधी हुआ सुंदरः बीसिमान्। भाव• - व भारी माना इच्छा। प्रेमा परिमाण दरा दन । भाषप-तु मार्गचारा । भावा⁴ नि जो अच्छा स्वना हो, प्यारा । भार्रगी-नी [एं॰] एक गीपा विश्वकी प्रतियोदना दे काम मागी है। मार्रड~पु [में] वह पनी। [स्ते "मार्रटी।] मार-इ [र्ग॰] बीहा गुक्त्वा शादि देश विम्मेशारी। र्वेत्राकः कृष्टिन कार्यः । इज्ञारः युक्तः वस्त्र वस्ताः वस्ताः

का नीहा। वहेंगी। विष्णुः क्षेत्र नमानदा एक हंगा क

(६१)-पु॰ सनुष्यः। स्टब्सेट-पु कुकुरसुकाः।-स्वर्ते -पु॰ भरतीपर स्वर्गस्य स्थानः स्रमेस वर्षतः। न्स्यामी (मिन्)-पु॰ अमीनका माधिकः, क्रमीदारः। न्ह्रसः॥-पुः देश-पुरुद्धरः।

मूमा-पु वर्ष जैसा रेहोदार पदार्थ । वि सपोद । * स्वी । तुमा ।

मुई-सी॰ वर्षका छोता गासा ।

मूक-सी दे 'मूख'। पु [सं] छिदः काकः शसेवः भेकतरः।

म्**क**ना-भ• कि॰ दे 'श्रृँकना'।

भूदेख-पु॰ [तं] भिगदेश पीहा । मृख-जी आहारको बातस्मकताले बरस्य विकश्ताः भीवनको रच्छा, प्रथा रच्छा । —हद्वलाख-जी वंदियों बादिका विदेवमें खाला न छाना । सु॰ --सर बाला--

प्रवास्त मह हो जाता। भूष त कराता ।-(स्त्री)मरना-प्रवास्त्रप्ते पौरित होमा निरादार रहता ।

मूचल, सूक्तकम् ∺पुदे "भूवणः । मूचला≠−सः किंसत्राता, सृषिठकरताः । विक

चरवास्करता। मूचा−नि विसे मृख कर्गा हो श्वविता किसी चीवकी

पार रखनेवाका, रंजहुक: गुरुक्ष । - गंगा-वि अख कराके क्रद्रके पेक्षित दोन दरित । गुरु-रह्ना-वयवास करनाः कर रखना ।

मृदान-पु आसासके प्रचर और दिमाणवर्षे दक्षिणमें अवस्वित एक राज्य।

म्दानी~पु• भृदानका तिवासी। शृदानका थीता। खी

भूरावकी माणां वि भूरात-पंत्री। मूरातका । भूरिया-ति भूरातका । पु भूरातका रहनेवाका । -यादास-पु० यह तरह्या परानी पृत्र तिसका कम्म बाता व्याद है और कक्ती मेब भारि बनाने क्रिया बारी है। भूद-त्री वहाँ बनाना कुर्यका थीला।

मृत−वि•[सं] भो दो चुका को अन्तीत बीता हुआ। बल्हातः परिता करम्या शत्या प्राप्ता सुस्ता कम या सम रवाविशेक्को प्राप्त (पनीमृतः वंशीमृत)। स्वयः। पु पंजमहामृती-पृथ्वी, बल, देज, बाबु, आकाश-मेरी कीरं एक तरनः प्राची। प्रेतः विद्याना नीता हुना समय भूत काका कुम्बा पक्षा शिवा कार्तिकेका मगत । करवाना उत्तर वहत वहा सन्तः चाँचकी संस्थाः क्यत्रस्ताः - कर्ता-(रो)~द महा, सहा। ~कका~नी पृथी **गा**दि पेयम्तोको करवादिका निवृत्ति मादि गाँव करुाएँ (वेदी)। च्चाच−तु गतकात ।-केश-पु सफेर द्वा श्रावारणी -बेमी-सा दवेत प्रकति। -कृति-सा भृतावेत । च्चाना-प्र [ति:] बंदा घर। चौधा-स्त्री अस नामक गंबद्रव्यः। –शल- न् शिवके अगुषरः शैतकः। ~मस्त-नि विशे भृत क्या हो। ~प्राम-पु मानिसमिति देव । – स-पु अवस्था धीप्रका हैंट । ~मी~सी तुक्त्या। —शनुर्देशी-सी कार्यक-कृष्णा भवंधी ! -बारी(रिम्)-इ शिव !-बिता-को व्यक्तिनी प्रायक्षेत्र । - अशान्त्री जन्मानी । - अव-^{हरी} तररीयर प्राप्त विश्वक —तृष्य—धु वक वात्त । प्रशुक्तक—धु [सं] सुपेन्यरका वक् क्षेत्र ।

~ब्समी~की सिक्दी एक छक्ति। -ब्या-सा॰ संपूर्ण प्राणियोंके प्रति दयामान । -हाबी(चिन्)-पु कार्ल क्नेर । - हुद् (इ.)-वि धोवींसे होड करमेवाका । −द्वम−प्रविभागतक वृद्ध ।–धरा,–धान्नी,−धारिकी –सी भरती। –माय-पुक्षित। –मायिका–सी दुर्गा । ∽नाणन—पु॰ स्त्रभाः सरसीः थिकानीः दींग । ∽शिक्तय∽पु॰ दारीर ।–यझ-पु॰ कृष्ण पद्ध !–यति– पु भिनः मस्तिः ग्रुक्सो । -पद्मी-सी॰ क्रूचा ग्रुक्सो । –पुष्प−पु स्वीतलः वृक्ष । –पूर्णिसा−सी॰ वास्पितको पूर्णिया । -पूल-वि को पहले ही चुका है, पूर्ववर्ती, पहला। - प्रकृति - स्वा भूकप्रकृति। - प्रतिपेश - पु० प्रेतादिका निवारण। ~प्रेत-प्र भृत-पिधाण जादि। -वसि-सी॰ मृतवस्र । -मह्मा(हान्)-पु देवक, देशमास्त्र केमशाका माद्यल ! -भारां(तुं)-प्र शिव । −मावम-पु मृशीके छदा नद्याः दिवः विष्युः। ~भाषी(विज्)~वि० थोगोंको स्≥ि करनेनाकाः वरोत और यांची ।—सापा—स्त्री•;—भाषित्र-पु• प्रेतेंस्री माराः, पैद्याची । -श्रृत्-पु विष्णु । -सरव-पु• भैरक्का यक्ष कर ।~सहोहबर−पु क्षित्र ।~माता(तु)-को गोरी।—सातृका—को पृथ्वी।—साम्रा—को तन्त्राचा । −सारी −सी वीदानामक गंपहरू ।−धक्त− प गृहरुक्के किए कर्तब्ब पंच महायहों मेंसे एक बरिस् वैद्वदेवा —थोनि−9, परमेदनरानी −राज−पु शिव । −काव्−पु मौतिक काद ।−वास− त्र वदेवेका पेक्रा ≔वाक्स-तु शिवा ∽िविकिया≃ क्षा जनरमार रीया मेठनाना । - निद्या - न्या आसर्वेदका वह विमाग विसमें पिछान सादिकी नामासे उत्पन्न रीगों-का इकाव नताया पना है। ~ विनायक~त किया --बुक्क-पुनद्दनाः --बेज्ञी-मा द्वेत श्रेणाविका। —श्वि — सी प्रवासे पहले छरीर अवना प्रस्के बनादान क्ष पंत्रमृतीकी मेन हारा श्रुद्धि। -सेवार-पु मृता-वेद्य, मतवाया । -संचारी (रिन्)-उ वावानक । -संप्रव-त प्रवय ।-सर्ग-त मृत्यदि ।-साधनी-स्रो॰ प्रयो । -सार-प्रयोजलका प्रकार मेर !-सिख-जिसने मृतओव जादिको वसमें दर किया है। -स्वम-पु रामाव। -सृष्टि-मी मृतीही सृष्टिः भृतावेद्यसे अलाव सांति । —द्वंबी —स्त्री मोसी दुवः वॉश क्कोडी । – इत्या – सी श्रीनवर । – इत्-पु गुन्गुक्र । ~हा(दन्)~ध भीवपत्रका वृद्ध । ~हारी(दिन्)→ मु काम करेरा देवदार । -हास-मु सविवादका एक भेद । सु॰--बसरमा-पागन बर देनेवा∹ गुरनेका क्दर वागाः राज्या दृर्शे सामा। -कापक्षामः-की मिराई-अभवा दिसार देनेबाबा वा पन्द सह हो वानेवाका परार्थ। -चड्ना -सवार होना-गुरसेमें पामलता है। जाना। दिनी बामको करनेकी अन सहार वीमा 🕯 –वमकर व्यामा-दुरी साद पीछ समना । - यनमा-मधेने पूर शनाः मोधानिभूत शनाः क्रिनी काममें निक्र बामा । (किसी बातका)-सवार होना-निमी भीत्रके पीछे पह बाना उत्तरा हठ पर होना।

ब्राचेद्रा प्राप्त । हि. बीन्त्रवा संगोद का संदेश मा । – बेंड्र – कुरुपार प्राप्ता अपनी अपनीत् । नक्षा है भाषात्रीत – विरुद्ध है चेतुने दूस प्रकार नरि तार बदन करतेथे सबरे (येना) । न्यांशी । भाराकांगानको । देशद करान् । (बिन्)-१ अरस्यकः -लला-के रूबद्धी र्गभदा कल । -श्रेंब-४ वर्गे । -मारी-12°4 (रिन) - मृत्र-वि । भार बहुत काळवाला । - भूत्र-दि बेलक्स्बल स्वान्त्रानु विष्यु । न्यष्टिन्स र्वाते । ~वाद ~वादकः~वादिक:~५. २१% वे कनाः भेरदार नवाइतन्त्र कर्_यवाह्म वाहीर नवादीन का - पार्श (दिन्) विद्यासमा । -श्रीष्ट-५ - स. ६० (तहर) -- विश्व-५३ मारतर हा वर्ष प्राचीन स्वतार १ - साह-दि भागी नोग्र प्राची मुक्तरें हु तथा ३ −इर,−इस=दि सु योखी पर भेरता । -शाहि(हिस्)-पु हिन्दु सुभा हि भार बहुद का राजा । शुरु (दिलीका)-बदाबा-कार्र प्रधान भागा । - प्रमुख्या - दि १ कादन कर्नन क्षां क्षा वापा कामा शाम सिकास । नहेंबा-कोन्ट हे ₹WD1 £

मानक—दु[ा]यात बद्रावा

मागा-पुर्विभा राजे १७१३ जा शरूरा रिद्रानामा (अद्मरोणक्षा धरिनुषान् १.४) क्षांग्वाहना स्थान मान्त क्षित हमार प्रशास का भाग (दि)-विद्या क्षत्र कार्य है प्राप्त भगराज्य देव न्य । न**ल्**यन्य 🥍 त्य नमर । - प्राप्त-शि शिद्रागान्ये सम्भाद्रशा - मंद्री -इ नगर ६ थरी न १६१ सहामाधार-पुर दर्प पर्दर में नामे अस्थित उत्पाद्ध । नामा(न)-क्षे प्रदर्भ रोगे अल्पाद अनुसर्थ वर्ष-पु बद्दी-दे प का देने शह. हिरूक-अ । - बच्ची (ग्रिक्) -मुक्त अपना स्केप्राच हित्रणति । -स्मृत्य स्री अस्य द्वारक ॥ अन्य सर्थे । मारमाधि हि छि देश १५०%

मान के नार के मा दर्का Miletina English bark milet, biletil eaging the shifting the tre property. A A WE AR SELETING AM F क्षत्र निवास है। १३ व म दार १५० वर वाच द्वार wird claim in the first appropriate from the akan to everyon were as

Ł١ Ritan-fe de myaige met

morate was from a guyya fe yer write there of their

4 Cartet me id it witte, Ad trut ut da " SIFE THE PAIN

Butween the law state of witer in the distance of the

1 646.64

A-44 444

क्रान्त्रमान है के क्रान्त विश्वपान क्रान्ति अन्तर अन्तर है

A arres भारतपाम-पुर्व थि । कि प्रस्ता ।

आस्तप्रकृत्य-पुण (गंद) क्रेक्स सरप्रका । भारि-प्रश् (१) विका भाविक-वि (०) भागे: जुना दुना (१८१६) ३ दु

ALM & SAMES भारी-दिन बहिल बहा बहुत उद्याप लहा. हेरवे बच्चे anut n tell enet t -da-le n it sige ale बीशा स १६०० ह -धारुमा-रिव वर्षे बीव र नक्ष शक -बरमा-भार (प्रश्रा । (-पर) प्रदेश नगरीत दाना (=1) द्राप ह ना (स.क. रुपांस प्रचारे 1

भागि(तिष्) नंतः [वं] अन्तर्भः वरने भागीर-१० (ग०) १६ रही। आर्रिक-म् ति किन् विरोधाः वद राज्याना स्थ

SE SERGI सादय-दु० [१५] देश अन्य चीर अर्था पर देश है कारक पुरा इत्रतानार्थ कालि हो सर सहा सरी परा ह भारादि-बोर्ड] बनपर नेपट में कि । आसीप्रह-पूर्व (तर्व) देना दानेशन्त्र के पर ६ unfog feel af burge min fan en gri

mile-te feel auerel di alpane) ! मार्थे बार्च काम्य मुक्त शुक्राय है। ब्राइमारा बाहरेडा क्षरति दिशं बन्न बाबीन क्षत्रदा प्रापेश पृथानः

क्रानीही बादी बद्द हिंदू कार्य । नविद्यापुत क्रिये धनीयक-५ 📗 दिला मार्गाकी नक्षीय (तान) करती म वेदेन देवमाने दूर !

ब्राताचीप⇔दिक्ष लं] । शहरी । अन्यविश्वन्तु [६न] प्रत्यास ह with-up (n) and a

mediate from mertellar fo francens mie se in f nem erbamtig fen will?

Max m det v 3 कारों का इस इंस्टिंग्ड का पता नार्रेस्टिंग्सो to an bar forme partiers were to

gegung gig b nettung en mit entent 29 1 miegging fen fa. nerrigt man, lang gan g.

RR WELL GIRLS क्षान्तीय व लागे अनुस्ता स्थान्ती दूस है प्रसासकरे

4m HATHLEREN servet are to be an element of the time. अन्दोन दुर्ग प्रशास्त्र

newlyng a to faculting even event for OR THE PART OF THE

anyth ele seven de aftern titt men t has not that the man on the

weel drug by the wat it

कुर्ता । न्यूबील-पु॰ सिक्टा शिव । न्यूबी(शित्)-वि॰ वो किसोकी भी देखता रहे । प्र भाक्तिक व्यारेपर दौहनेवाका नौकर । न्यूब्(स्), नवयनः नीयः -स्रोबल-पु॰ शिव ।

मासका -की दे 'सक्का'!

मास्त्रमा∽त कि॰ मही मौति देखना। तलाध करमा

(क्रेवल दिखना के साथ प्रयुक्त)।

भाषांक-वि॰ [एं॰] (वह पुषर) जिसके मावेपर सीमान्य स्वक रेबारें हों। पु॰ सिना करणन मामका कम्प (आरा)। एक प्राक्त रोह मछस्पे। कसुमा।

भाका-पु बरका, नेवा । - बरदार-पुरु भाका बारण

इत्त चहानेवाचा।

भाष्ति÷~सी० नरछोः श्_ल ।

माडी-डॉ माडेडी याँतीः श्रृकः। माडु-पु॰ माड्, [तं] स्वं।

माहु-पु• मास् । धि । ध्र । मासुक, आसुक, आक्सुक, मास्सुक-पु• [र्ध•] रीछ,

मास्,। भास्,~पु≉यक्तकन्य हिंस अंतु विशके सरीरमर छदेकी वाक दोते हैं।

मार्बता - पु मेमपात - देखे मन धन खड़ते मार्वता है

मेश'-रतनः दोमदारः।

भाव-पु॰ इर, निर्बा; [नं॰] क्ला, बरपचित्र दोना संचा, मभावका बक्याः शिक्तमें उत्पद्ध होनेवाला विकास हर्ष शोकारि मनोविकारः भावनाः की कुछ मनमें शोका जाय, द्यवाकः शान्य या नायनका वर्षः आद्यनः रागः त्रेमः भाव-समय अंगचेवा भंगीः सबस्वा बराः देखिवत क्य (बासमान): स्वभावः सद्धाः मस्तिः वश्मकुंबकोके विभिन्न रभान (तमु बम भादि); गौदका माद बतामैवाको अंगचेदाः महोन्द्री सबन उपवेशन मादि नारह प्रकारकी बेहाजीमेंने कोई एका पदार्थ। बारमाः वीमिः हव्य ग्रनः कर्मः सामान्य विशेष और समदाय-ये ६-एडार्थ (वैश्वे*): निश्चयः मानीः व्यवदारः विस्वः कोकः दार्तेतियः उध्देशः यक चेनलारः दंग प्रदारः भारर-मानः निमास । ~गति-को इच्छा मनीमाद। -शम्ब-दि मनसे बाजने बोग्ब । -प्राही(हिम्)-विश् माव तारपर्वेद्ये समझने-शाला सम्। - ज - पु काम कामरेव । - श-- वि मनीमान समझमेनाना । -वर्सी(सिंस्)-वि॰ दे भारदशी (असाप्)। ⇔परिग्रह-प संग्रह म करते ¶प मो संग्रहकी श्ला करना (वे)। ~प्रधान~वि विरामें भावकी प्रवानता हो। जिलकी बालासुमृति अनिक वीत हो, मानिहा - प्रयम-नि आवप्रधान शावक। ~प्रवश्ना~मी भाषप्रवान होताः भाषेके वशः भाषे-सं परिवासित दीतेशी प्रवृक्तिः शासकता । ~बोधक-वि० भाव बनामे वा प्रकार करभेवाका । -शक्ति-भी अद्या-भक्ति, बादर । - श्रूपावाद - पु मुँदम श्रुक व शेक्सा रर मनमें सूटो कार्ते छोचना (श्री)। −स्रयून−धु सनमें मैपुमका विचार राजना (वे):- यशि-तु वह व्यक्ति जी वित भैसा बाबरण करे । -बाबक-वि विसी बीजना मार वर्षे ग्रुप भारि बनाजेशका (शरबद,मंद्रा) ।-वाध्य-🧵 भिवादा वट रूप भित्रमें बन्यपद्धा छहेरस दर्श या दर्भ |

मावह#-न मन्यें अपे वी पाहे हो।

भावक-वि॰ सि] भावना करतेवाचाः उत्पादकः भेव स्करः रखकः भावमराः भक्त र द्वा भाव, सनीविकारः । अ भोषः ।

भाषभ-की वहें माईको सी, भीजारै। हु [सं]दे॰ 'भाव'में।

सावता १ - वि की मनकी माने सक्या को - दिनि मनकी सह व ना - पानविकार पुत्र मंग्राम । कि 'मानकी । कि 'मानकी । कि 'मानकी । कि 'मानकी - दिने कि कारका माने कि कि मानकी । कि 'मानकी । कि स्वाप्त मानकी कि कि मानकी कि स्वाप्त कि स्वाप्त मानकी कि स्वाप्त मानकी कि स्वाप्त मानकी कि स्वाप्त मानकी मानकी कि स्वाप्त मानकी । विश्व कि 'मानक : कि साने कि स्वाप्त करने वाज ।

सावना- अ कि॰ है 'सामा । सी [गं] विवन ध्वान धवाक करना। स्वाइतः विवर्धनः अनुसंवानः स्वरमः प्रमाणः क्षीमः वक-पूर्णः आरिको एतः काव आरिको धाव वार-वार तत करके प्रोवनः । — सार्गः पुर-काव्यात्मिक वरवा ! — पुत्तः विवेदः ।

सावनासय-वि॰ (सं) मादनायुक्ता कास्यनिक ।

माबनाध्रय-3 [रो•] शिव ।

भावित क्यों जो वीर्षे जाया वो कुछ स्त्रेश हैं। भाषनीय कि [सं] वित्रकृष्टे योग्य करमाके बोग्य। सक्योव।

मार्बोत्तर-इ [तं] मनको भनत्या दूमरी हो भागा। कर्मातर।

मानामुग−वि [वं] मात्रका अनुमरम करनेवामा ।

भाषानुगा-की [मं] छाया। वि॰ सी दे 'भाषानुम। भाषानास-पु [मं] बनावये मावः सनुबपुक्त स्वाममें भावका दिखनावा जाना (छा॰)।

भाषार्थ-प्र[तं] वह वर्ष क्रियमे प्रश्वेक शान्त्रका वर्ष न देवर तम्ने वास्त्रका आराम दे त्या जान, सततन, सार्व्यः

भावाधीनां न्यां (मं) हत्या । भावाद-वि [तं] योगत्र, शानुदा द्या । भाषाधित-पु [तं] गृत्यदा रह मन् । सूमिका - स्त्री [र्च॰] परती; तहा; वस्त्रम्य विषयको पूर्वं प्रता, प्रभाविको प्रतानना, तमहोत्त विस्वतेका वस्त्रोत मोगाविको परिचे योगोवे दिनको कोई विकास क्यास्त्र (बी॰); नटको वेटापूना अभिनेताका पार्ट । —गत-प्र॰ नाटकोप वक्ष पहनतेकाला ! —प्राप्त — पु कर्त्व प्रकृत स्वाप्ता - क्रिसी वारको स्त्रोते नीवे योगे म कहकर प्रवे क्रानेते किर १९९८-वहरते बहुतारों बार्वे ब्यक्त प्रोहतीक प्रमाण — क्यारहरू केवा ।

भूमिया-प्रवसीदार; देवता। भूमीत-प्रविचे राजा।

स्मी-को॰ सि॰] है 'मृमि'। -कव्व∽पु दे 'मृमि करन'। -पति,-भुक्(ज्)-पु है 'मृमिपिटि'।

-सद्-पु॰ इद्धः । -सद्द-पुः इद्धविशेषः । सूमीच्छा-ताः [सं] बमीनपर गिरमे या केन्नेकी दच्छाः । सूमीचर-पुः [सं] राजाः ।

मृस्यनंतर-वि॰ [तं॰] दूतरे देखका । पु आतकको देख-का राजाः । मृस्यामसकी, मृस्यामसी नती [तं] पुरंगीयता ।

स्या (बस्)- ल [सं]पुनः और श्रीकः धावारणतः।
मूयधा (बस्)- ल [सं-] लविकनरः युत करके।
लविद्य ।
सुपसी-वि॰ को [सं-] नवट लविद्य (-रकिया)।

मूपसी-वि॰ सो [छं॰] बहुट अधिक (-रक्षिणा)। -वृद्धिणा-सी॰ वर्मकृतको अंतर्ने उपस्थित मासकीकी

दी बावेशको दक्षिया ।

म्परस्य - पुंचि । प्रासुद्धं प्रचानता । स्पिष्ठ - वि [से] बहुत स्तिकः, स्रावधिकः । स्पान्य (स्तः) - व्या (से) पुन - पुनाः, नार-नार । स्राव-पित वेश मृरिं। पुनेता स्वा भूकः । स्राव-पित वेश मृरिं। - पश्च वे स्वयंत्रवं।

भूरपूरण-वि सरपूर। सुरसी दक्षिणा-की है 'शृतसी वक्षिणाः वहे सर्वके

नार श्रीमनाने छोटे कर्च । मूरा−९ रवाद और समेरके नीवका रंग खाकी रंगा क्यों नीमी: बीनी ।कि मर रगका क्यांसी !=कम्बका~

3 पेठा।

प्रस्ता ।

प्रित्ति [सं] मुद्द बहुत ब्वाहा ववा । प्रस्ता ।

विद्या दिवा देह सीना । स्व बहुत स्विक्त प्रस्त ।

-विभा-त्रीव सुत स्ता । स्व बहुत स्विक्त प्रस्त ।

-विभा-त्रीव सुत का । स्व वहित स्विक्त । प्रस्ता ।

स्विद्या स्ता । -व -वि वहुत का स्वाहाणां ।

-विक्रम नेविक्त नेविक सित्त सुत नाम विद्या पर्या नेवि को स्वाहाणां ।

-विक्रम नेविक्त नेविक सित्त वहुत नाम विद्या पर्य निवासी को स्वाहाणां ।

-विक्रम नेविक्त नेविक्त सुत नाम विक्रम पर्य निवासी ।

-विक्रम । -विक्रम - विक्रम का वाली । -वुक्वा -विक्रम ।

स्विक्त । -विक्रम - वुक्य । -वुक्य - विक्रम ।

स्वाहा । -विक्रम प्रस्ता ।

स्वाहा । -विक्रम वुक्य । -वुक्य ।

स्वाहा । -विक्रम वुक्य ।

से स्वाहा । -विक्रम वुक्य ।

वि बहमागी। - सहरी-की॰ महामी नदा। - साय-वि आरी मायानी। पु सिवारा कीमती। - सुक्रिका-जी आहानी कता। - रस-पु कि । - क्या-की० सक्त वारपाविता। - क्या-वि वहुठ कामदावक। पु० बहुत काम। - विक्रम-वि वहुठ वना सुर-वीर। - अवा(वस्) - पु० कीरव-पक्ष्मा एक महारभी वो सायाकिक वानी मारा यवा। - सक्त-वि विस्के बहुठ-से मित्र वी।

भूरिक-को पूजा। भृतिक(क्)-को [सं]पूजी।

मृरिता-को [सं] शाविष्य, बाहुश्य । भूज-पु [सं] बोजपणका पेह । -कटक-पु

र्चकर वाति । -पदा-पु॰ भीवपत्र । भूणि-को॰ (सं] एक्की मस्मृति । भूमुब-पु (सं॰) ब्रह्मका एक मानस पुत्र ।

न्ध्रद्भ = प्रश्निका स्थानात प्रभाव प्रभाव पृक्षांक प्रश्निका विश्ववद्भाके विश्वयक्षा वेखः भूक-को भूकनेका साव असा धृका दोषा सकती

पुष्ठ-का भूवनका साथक जमा युक्त दाए। सकता व्यक्ति-व्यक्ति-व्यक्ति मुक्त्-कृत हो तो केम-दैनको कमी वेदी औक कर को बाय (दुर्ज दिक्त प्रीवक्त आदिक्त विकास कार्यों)। - मुक्तिम-की वह स्वाप्त विकास रास्ता थेटा वक्तरदार हो कि नादमी वस्त्री पाटर न विकास को । - से-पूष्कर, सकतीते (" नाम म केमा, यहा करना वास करना,

्याद् शक्तरपार्रः। *********

शुक्कक भी पुरू करतेसका।
शुक्कता-भ कि चाद न रहना रिकरना प्रचा करना।
शुक्कता -भ कि चाद न रहना रिकरना प्रचा करना।
सकता गठका रारवर बाना। शेखा कामा प्रहादेने
वहमा। देशकर, अदेन होना। रहरामा। की जाना। व
कि बाद न रहना। जुका देना। ने वि विभारपाले ।
कु भूक्कर-पृक्षते गक्कोमे (सी)। वनाम म हेनाकर्मा वृक्ष न करना। श्रृक्ष मटका-बो रात्मा भूक्कर,
साविरोंते विद्वाकर मटक रहा हो। श्रृक मडके-

शृषा-पु, वि कसी दैण मृता ।
भूषण-पु [र्लन] गहना जेवरा सबस्या श्रामाननक वरदा-विश्वा-चेरिका-ची० रनामस्या । भूषणीय, भूषण-वि [र्ल] अन्देट करने योग्य । भूषण-पु

भूपना॰-सः कि समानाः मृषित करनाः। भूपा-स्माः [मं] गदनाः भूपनाः सकारः श्रेपारः। भ्रषित-४० [सं] समाया द्वाराः अस्ट्रनः।

भूष्णा—वि॰ सि] दोनेवाना, भवनशीना प्रेनर्देश रुक्षुद्ध । भूष्पा—वि॰ सि] दोनेवाना, भवनशीना प्रेनर्देश रुक्षुद्ध ।

भूमगा॰-व दि है॰ भृषा। भूमा-पु॰ गर्दे वी कारिका इत्तरे हुद्दर दिना दुवा रहन

जो प्रमुश्रीको शिमाया जाना है । भूक्षी-व्यी भान चने संदर्भादिका (एक्सा ।

भृस्मुण-पु [नं] वद पाम वरियाण । सूरा-पु: [मं:] सीराः दिननीः एंदरः भैगराः भंगराः

शर्भवद्य – प्राप्त शांतिक="र (०) अन्तराचात आपका कामाविका क्षा ने कक्षा न मुख्य क्षा कर्मन है ए-मून स् अन्ति प्रश् राज्य र राम्यर रचेन दरशाहि हे क्या है अन्तरे पूर्व क्षेत्र वर्षे साथ परिश् 21-fey-[e ा भी की बर बुक्टा चिर्तित सामा पुराप REPLANTED LAND LINE BUT ON HERE प्राप्ता ही देदी हो। वालिन हिर्दिया बदल दिवा बचा । ~मर्दिन्दि है किरीवरणस्य है भावितानमा [1] बेन्द्रपत अन्दिनान्या (सम्)- १० (००) विन्त देवर व्यवन हत्त्र भएने अन्या रुष्ट्र वर ब्यू हो। हंगा रक्ते छ। सावित्र-५० [तेन] विभी ६-०वर्ग श्रापे और बापुर्य । मानिय-१ हि विशेषक अवस्थानिक माहिनी-को [में] से में को। राज्यी की। बादवाकुल मो। ब्रोप्टॉटर मो। धीरते (२) । भाषी-मा होता हो प्रचार वाच र मार्गार्शिकोनीर िशानेशना हो नान्त श्रीतनता F FIRST SPECE सामद्र-पि (संदेश में) अन्ते धार्मे हिट्टेपप बीदन बरह प्राची दे मानि है। बाब बीदनदिना सहरव राम्य स्त्रमा १५ । इ. ११८मी राष्ट्रा समार समार । अन्यक्षानमी (१०) मनुवक्षीक अन सक्रवन्ताः। wife-weite mitt ! भागीहरू नपुरु (तेर) यह प्रथमध्य काल विकार क्या

शक्ती कार्ति और दुसीय अपन पूका की और करवरे हो। gamen de (m. 3) सम्बार्शन्त्रकारि (र्तन) कार्येक अन्येक कर्त्रेत स्वत भाषामध्य-वि (८) शावीकर । urmerfin a fe frieningen serenta () विदेशमा वार्ता वार्या देशके वीचा Sex मात्रे श्रेष्य हतुव में शह

Bules and day ! street of 167 412 for the feeth 711 And the stand of banks Krist a - to first of progra a lera feurite analis و معودي کي क्षान्त्रकार विश्व विश्व हरण ह

्ति करान् वनक अवेदार अक्षान T WEE AS CH ?

Martin St. willigereit mattell debn beiben ! their effection assures with engineer t Reign search the grap deaples that a grap. THE EXPLANT BUT FOR THE STATE SE ATTOM नेते करामण करिएक प्रदार अधेव कारण हु अक्रकरिक्य अधेदेवे वा वर्ज शहर प्रतिभाष प्रभा देशारी १ अरचामद बात न्यान्त-१ अर्चन । अद्युत्त ३ And made as made with a felt man all all all and the same of the same o or frew

हिल्पी अपन्य अन्तर्ग । क्यांगिकाट अर्था विवर्धि) अन्तर्कत ग्रेग्डिक बन्दी नगर दूर्ण कार्या है The state and it is necessarily because in some the love and it is not be that Berlich if alleit feint were ab wern ar bereig if bie b

m. pig r श्राचित्र-वि [ते] श्रापः स्ट रेफ्टेन्ट्ररे । अराविका-वि वर्ग कि रे रिको अरोपानी व व ተማን አርቀን ፤ धानिम्-विक्शि] साँ प सन्दरपुर समय कीमी ३ सर्वित्राति है। या वी वी वे वे वार बार्टर का प्राची(विश)-हिः (n.) दिश्यादे क्षेत्र) स्पापन אל יציול יו ידינלפטן למים מיון ליבולפלן अज्ञानको सन्तेन्त । (विशेषको(विश्व) - १० एको बामा पारे ।

मारब-१० विकास संबंधित के कि दर का क्ष्म द्वेवके क्षात्वा विश्वा भागता । है। बारे ब्रोम्स । नक्षम न्यूमन्तुत्र क्षम्प क्रिसने र स्मा आसीत्-ति विन्त्री प्रकृष्टिया पुरद्देश पुरस्की BES NAGEL भ्रत्योती-अरे [tho] श श व

आराज्य मि ने समय रोगि। सराजा योग लेंग part seggiste un milit fint fint freit ब्रह्म (लेक्क्य) करामानिक क्षेत्र पर पर १ मधीन-पू . १६ Error t भागक-दि पु [] बदार-वेद बर्ध देव १४ । शास्त्राच्या भारते हिंदी हथा हैका स्वयन अपने असे

COTA ! भागाम-५ [स] बदबना रेपान रेजान MITTERS-W To mere Wir Mrift ffe den - av my & stite at w y fire and multi-reem for from servi श्रमधीत -१६ वरर १३ आगमन वि [] जनवरण दृष्ट विधने हैंग

gw 1 a ga wit s बार्न्सक हैं हिंदे हिंदाई के देखा में हैं हैं धानिम विश्ववि सद

बन्धं(विष्)-६ (, च ध्रेरनः । streg-g i judit I magnet give may best क्ष्म्या-४ Rei bellet agler ? - gert-ib. ? id. 48.1 Jace on tommer so FLET WER TEL THE Gi T -41-4 the applies and applicable the mary and and some for the talk the

Aspen a difer & walt a wall of themes for a wes

Richagolia es don dies depet depet Bar !

क्ष्णे जाते. क्षणीयक अनुस्था = श्रम् ३ व्यापा अस्तर हो -अर-भी ४ रंगे। -वृत्तिहर-भी रीप्रीश्वास्त्री। -रिका-1" सप्ति सत्तात -शाध-दुव्दा घेता रह को चार जाहरी हार। न्यूप्रकार रह की ह -विदि -विदि-प क्षित्रा वद इत्यान । -वोग्र-षु १९ मारावे किए। अवस्यानपुर बालामा वर्षक ६ १। -प्रत्या-वी प्रतितृ । ज्ञार्य-पृत्रिः क राज्य जनसम्बद्धन्तु हो देशक ा है । जार भी दराब स्तीर व 270-8-4 मुतास-र् ति }रता स्था स्था स्था म्हार्माष्ट्र-५० (धे हे अन्य ह मृताप-५ (८) २ नेके शारीक्ष के वीक्षणक L week र्थाल्यस-१ (१०) धन स्वत श्रीतनी-भी । [त्र] देशा ! store for learning after भीगाच च । देवना पार्था म्लिन्दर्ग-मा है। हेर । विच्चेत्र । ब्राह-तु (तन, प्रेरोक्श के बढ़ त Hill-4 Iften te maret क्षेत्रियां क्षेत्रमार्थि - पुर (११) है के प्योर्थ । mitt-et's fr Tabb frad- after undt: w का रहा दे अपी नरिहारी। माँ विकास से स स्ट मी (सिंद) नवु कि) विवक्त बाद मान वर्गाए । म होस प [m] fre ! म तेरिहे - इ. १ हेरे चेश्वीर । सुद्रम सुद्रम-१० (००) भी नेयर (भी नेना। मुख्ये भूक्षेत्रीनको ए किनेश्मीवर माजीविका बाग्ना (१०) वह लेक्टबीय कर्ष में क्या देवन है क्षात्रे क ने हैं। ब्रह्मारे व क्षात्र वारे मुख्य र हा मुख्य है। gran fire at saymerand milital suggery. ष् अतः ६ स्टीवन स्थानवृद्धवन्तुः क्षत्ररहर्तः र्मा र जीवनपुर विकासका यह ५ के र नहींसुनपुर राम १६८१ -सम्ब नसमझ न्वाद है है। द्वार्ट the said a thing but gibt mirting cin: -24-to tal -jus and at किन्द्रा र राष्ट्र पर पुना मृत्ये कन कार्यक हिन्द्र र materials gale thankly, Edite sadat ÷दल्ता (१७६६ ० वर्षाच − धोष्ट्र = सम्रख= (A street of market and a line settlement to ben fe a & ere freige ber gem ! to a weign emit fie bir for gwie luten of g dealeg kind the him diate integra र्ते हे (अपने वे लोक्क विक्रिक्ट वर्शकरपूर्ण हैंग्रेट और अर्थ देशी बद्दार प्रवेशक के प्रेरोण में हैंक WYS ? BATE BY JUST 14-54 924 bland and epitylist fail) Amenden 3 Sente girlig al. a. s. meneng & of Explanation 4 **

केंग्र बाज्यिक्षेत्रवा । नवारेशान्त्र असा केर हेवर बाय बारीयाना औरह ह नाहक (या) कर हैकर ere die gebene diere angage fill have कता है कि कारिया पर दे का में हिंदी मारे कार दराहर। ma-li l latte ged freit Beri-er साम्-१० विका देवता आस्य-१० मधीन, रहाता -अर्था(में)-पुर कीक्ष्मीका सम्मत्र सावेसका का श्रादी र −साय पुरु ने दाराप परतार र नवर्ष भा इम्पन्दर १ - बुम्बन्यः । रेपर ४१ रूपर १ ज्यानी (for)-ft fint erst tre it. माना-मा हिनामा भाउर स्थि-में लिंगे व्यवस्था अस्त-हर हैं। वे हरा प्रया प्रतिकारी है सर कन्दरिक (-कोश्रम-१८) ४५७ क्षेत्री । -शन्दर्गराणे बहुम बहेर जिल्हर । न्युनीस न्यो हमनीर अस रिक बहरान्य ३ -विज्ञा-मीर धरानीकी र ME-19 (it) the Callmatt at six gay bear बुका र पु प्रदास हमा कार र ज्यार न्यूर पुर्व देशका ह्मा कर देशका १ -हिंदुमा-दुन भूमा दुन्ना क्षा । मुक्तक-१ (८ किन्द्र शृष्टि-को ६ (वं) सदता श्रुपी शार्रिश र और-म दिवस हमधान मार्ड affine and the thorough with an empire of the SEEK! 6 र्भेष-को है। यह । र्वेन्द्र, विकास-मा हि सर करवा । मी भीरक-पुर देव थर । धेक-५ (का केरवा केर बारेफ बारको न एकी #+ #[4"#1 - H#(#) 3 1"11 -11"" F16 11-11 बेद्दल्य कुर्त है है दिवस के ब्राह्म के क्षेत्र के भेदी क्षेत्र है कि है रहर लगा सेम-दु है भारत भेषक्रवच्युत हैय ^दरद्व । Empres le me rentine ern abe-द्वानार्थ अपनेक का इन्तरका देवार करना । भेजनम्लम् दि संबर्धान अनुगरिकाण שמלמ חום ביווים שליים ביפים בישום ge gridiet ein de and Reiftel mer um ft fre. bere min e fin tal. STEP WENT-BESS & & STOP ST. ST. ST. April 4 to 2 see are not struck for Agriculture & set 197 ele de e ent ent क्षेत्रं क्षा हेच। होत्र अवस्थानको स्थान मरा^{त्रा} 20 4 31 30 E

1 \$7 500 3 - 3 - 4 + 10 A4 974 45 50 500

Brouge a great a not be

मास्वती-वि की [चं] दोहिमती। सी॰ एक प्रानीन नदी। मास्वर-वि॰ [सं॰] दोहिमान्, चमकील। पु॰ स्कै। देना

निम् । —वर्षे—वि प्रकासके रंगका । सारवान्(वर्)—वि [सं] वीसिमान् चमकता हुना ।

पुर स्रो गीरा दोसि । सिमान्त पुर के 'संग': क्लिमी । रे की वाया ! नशा

सिंग- • पु॰ दे 'सृंग'। दिस्तनी । † स्त्री नाना । —शस्त्र -पु दे 'सूनराज'।

र्सिंगामा-स कि वर सिक करना। सिंगोरा-पु॰ मैंगरा। सृगराब पद्मी। सिंबामा -स कि॰ दे॰ 'मिगोना'।

र्मिजोमा र्मिजोयमा • – स फि॰ है 'मिगोना'।

मिंड~पु[र्स•] मिंडी !

भिक्षिपाछ-पु के सिविपान⁸।

शिवराखन्यु द सारपाल । सिद्धीन्त्री [सं] यह प्रुप कीर वयद्वी फको को सरकारी-के बाम आही है रासदरिष्ट । —तक-पु• निवास प्रुप । सिद्दाख, शिविपाळन्यु [सं•] दाकरे फेंका वानेवाका

होटे बड़े जैसा एक मला देकवाँस । सिंतु-वि० (सं०) तस करतेवाका । स नित्र । की बड़

सम्बद्धाः प्रसम् करनेवाको स्त्री । अर्थस्टका प्रसम् करनेवाको स्त्री ।

सिंसार-पु स्नेरा दपाका#। सिंधार-पु भार्द।

मिझक∽दु[सं] सौख मॉनवा।

शक्क चु (ठ) जो का लागा।
सिद्धा च्या (छ) मोनना, शाबना भीवा छेवा छुटि
सबद्दिः भिक्क छन्दासीको मोबनार्थ दिवा बानेवाका
(छिद्ध) शब (इरता कराना)। —करान चुक भीव मौनना —करा-बार चु सिद्धकः।—वर्षां ची मौन मोनना भिद्धास्ति।—बीबी(विष्कृ)—वि शीध मौनकर बोविका बनानेवाना।—पाल चु मौत मौनक का स्टब्स कपाल सिद्धास्त्र छन्दिस्ति। माहि—् भीव मौनके बस्टम।—माह्यन चु वे भिक्कालार्थ।
—सुद्ध (क्)—वि सिद्धानीया।—बुक्टिच्छी शीव

मॉक्टरे ग्रजरं करना मियारोका जीवन । मिशाक−दु [सं] मिश्चक ।

मिसाडम -दु [सं•] मास मॉगनेके किय फिरमा !

मिक्साच-इ [सं] मिदामें प्राप्त शता ।

मिछार्यी(चिंद)-वि , दु [छं॰] बीस्ट मॉननेशका, मिसारी।

मिसाई-दि [सं] भिद्या देने शासा ।

मिसासी(शिन्) - दि [सं] निहानीती। निद्यात-दि [सं] निधानै स्पर्ने मास्र।

स्माद्यतः – । स्मानिक स्वयं भाराः सिद्यो(दिन्नु) – दि [सं] सीद्यं सॉयनेवाकाः।

मिश्च-पु [मं] भीच स्थेगनेवानाः सन्म्यासीः वीद्र सम्मयासीः न्यापीन्यो मिश्चासिः। न्यूप-पुः महा देव। नसंघ-पुः वीद्र सन्न्यास्त्रीकः स्थः। नसंबासीन् स्थे निर्देश करे भीकः गुरुषीः। नस्य पुः वीद्र भित्रभोदे करे कुर नियमेका संग्रहः।

मिसुक-इ [गं•] भीए मांगनेवाहा भिराति।

निशुक्ते-भी [मं] मिपुक्र भी।

मिश्रुची-भी [तं] शेर मन्यातिनी।

सिख-'भीख'का धमाधर्मे व्यवहत रुपु ६५.१ - संगत, -संशिष-की॰ भिखारिष, भिष्नुकी । -संगा-पु॰ भीख मौगनेवाला ।

मिस्तारिणी-बी॰ दे॰ 'मिस्तारिन' ।

भिकारिन, विकारिनी न्यो सिम्नुद्धे, मिस्नुर्मान । मिकारी न्यु मीस गाँगनेवाला, भिम्नुद्ध । वि कृगाङ, अर्दियन ।

शि**क्षिया>** – सौ० मीस्र ।

मिलियारी - पु मिसारी ।

मिगाना-स॰ फि॰ दें० 'मिगोना' । भिगोना-स फि॰ पानी बादिसे तर दरना ।

मिगीमा!-उ॰ दे 'बहुगुना ।

सिच्छा॰-औं ६ 'मिश्चा'। सिच्छु॰-पु॰ दे 'मिश्चा'।

मिथ्युक्-पु॰ है 'मिस्रह्म'।

सिजवना॰-ध कि॰ सिगोमेका बाम बरानाः सिगोता । सिजवाना-च॰ कि॰ मिगोमे या भेजनेका काम करानाः।

मिकामाः सिकोमा॰-स॰ द्रि॰ है मियोमाः'। सिटमी:-सी॰ स्तमका अधमानः चलकु।

सिबध्या सुरमेर।

भिष्-की वर्तवा, वरें । मुख -का छत्ता-ऐसा कुछ, बुदुंव किसदे यक कारमीको छेदिवे तो सब कदनेसे सामाना

हो बार्ने ।

मिल्ना-व कि॰ टक्समा स्टमा कहना, गुपमा । मिल्सियां-वि॰ भीतर रहने आनं-वानेतका अंतरंग । तु॰ बन्यमञ्जलके मीररॉम योदर रहनेवाका पुवारो । मिल्स्का-पु॰ कावेके भीतरका क्ला करत । दि॰

मीवरी ।

मितस्सी-ली॰ वदीके सीचेका प्रश्ना मितासा≉-ज कि दर्शा भीत होगा।

भित्त-५ [र्त] क्षेत्र हकता माना बीबार।

मिणि-की॰ [तं] योव दोवारा नीवैं। वित्राभारा भेर, बरारा प्रवा हुरी हुई वस्तुः करावैः दोवा अवसर । — स्रातन-पु पृदा । —बिग्र-पु दोवारपर बना हुवा

वित्र । —चीर-पु स्व नारमेशका घोर । -पासन-

मिसिक-वि [मं] सोवनेवाका । यु दोनार ।

भिक्तिमा-मी॰ (सं॰) दौबारः क्रियम्मी । भिन्न-प्र (सं) मुख्यसायक सेन ।

मिक्॰-पु॰ मेर अन्तः।

मिद्क-अ [मं] तक्तारा वजा दौरा ।

भिव्यान्य कि छित्या विद्वाता प्रमान, पैवरत

होना। सिन्।-मी॰ [सं] टूटना, करनाः धर्वस्या संतर्। मेट्र

महारः जीरा। मिदि, मिहिर मिदु-दु [तं] यह ।

मिनुर-पु निश् निरमा परना नष्ट होनाः पासरका पेश नका हानो वीचनेकी अंबीर । दिश छैरने काइने बाला ननका निर्मितः।

भिदेशिय-वि [वं] इतुब्द वो भागानीम दृर माय !

भेदिया घसाम-पु॰ मेह जैसी श्रंण जनुबरणको प्रवृत्ति । मेक्टरा-पुगवेरिया। भेडी-सी॰ (ते॰) मेपी। मेड्-प [सं] मेडा मेप। मेतम्प-वि॰ [सं] जिससे टरा जाव। भेचा (च)-पि [सं•] भेदन करमेबालाः विम्न काल्पी-नका मेर सोकनेनाकाः पड्यंत्र रचनेनाका। मेर-प् [सं] छेरम शारमः विक्रमान अंतरः तादारम्व का भगवा इति, भौटः परिवर्तमा होकः परावतः क्रीप्र-ध्यि, रेपमः हिमी हर्द बात - रहस्यः गर्मः प्रकारः कुटः बुक्ना प्रकट होना (रहस्यमेद); राजनीतिके चार छपानी-मेरे एक प्रमुख्यमें कृट बाकमा । -कर-कारक कारी(रिन्) -कृत्-वि मेद करनेवाका । -जान-प्र बेवबान बेतको प्रतीति । -वर्धी(किन्) -बर्छ-वि विदयको परजवारी भिन्न समझनेवाका असवायी। ~वीति –छो• फुट बाकनेकी मीति । –प्रस्थय–पु र तवारमें विश्वास । −सुद्धि-को० अतर करनेवासी वटि दैवमान। नि∙ दैवनाती। --भाव-<u>ध</u> हो व्यक्तिनीः क्मोंके साथ की सरक्का व्यवहार, प्रकं। ⊸वाद∽प्र दैतनार । ⊷वादी(दिम्) − वि दैतनादी । −विदि।− सी दी वस्तुओं में संतर करनेकी शक्ति। -सड्ड-वि॰ नो मेर शक्कर जलग दिया था शके। भेदक-वि [tio] मेर करनेवाकाः छेदम करनेवालाः शह करनेपाकाः जीतर करनेपाकाः रेक्क । ध्र भेनकारक शुग विशेषमा । मेरकातिसयोक्ति-ली [मं] व्यविद्ययोक्ति वर्गकारका एक मेर विसमें और हो 'म्यारा सादि खन्हीं हारा जप मानसे बदमेवकी मित्र कहा जान । मेरशी-को रवडी। मेर्च-पु [सं•] छेरना फाडना। विकयाना। मेर संतर करमाः रेकमः दस्त कानाः चुलरः श्रीयः अम्कवेतः । हि॰ वे भेरक 1 मेदिका—स्त्री [सं]नाग्र ध्यंसः विश्वती दे 'मेरकः भेदिस-वि० [सं०] छेरा फाइन विक्याया हुना । भेदिया-त मेर बागनेवाकाः बात्सः। मेहिर, भेक्र-प [संग] बन्न । मेदी(दिन्)-दि॰ [सं॰] मेदकारक मेद जाननेनाला। भेद हेनेबाना । प्र अस्कवेत । मेदीसार~पु छेर करनेका श्रीबार, गरमा । मन् - प्रभेद जाननेवाका, सर्वह । मेच−दि [सं∗] सेर करने कोस्यानु विशेष्त्रा≔रोग्न⊸ उ वह रोग किसमी चिकित्सा चीर-फाइकी वरिये की ৰাৰ ৷ भन-रिस बहिन। पु [सं] स्वैत्रिक्ता। मेपार-सर्कि मिगीना। भेष−ि [सं•]द भेनम्ब । मेर-५० [६] मनाहा दंबा। भराक-पुष्क नरस्यो माव सन्ता। मरिभरी-सी [मं] है भीर । -कार-पु भेरी वजानेतमा ।

मेर्नुड--वि॰ [सं॰] भयामकः। पुगर्भवारणः एक पक्षाः विका जंद (मेविया, शिवार कादि)। भदंडक-पु॰ [सं] सियार भादि हिंस वंत । मक-वि॰ [तं] मीक मूर्का लंगा, कॅबा; मरिवर; क्रिप्र ! प नाम एक प्रति। सेसक-पु[सं]मादा भेष्ठम-प्रसि•ी तैरमा। भेका - पु मेंटा मिहता भिकानों। नावा रं गुह साविका arer före i भेकी-सा॰ गुड़ मारिकी पिडी। गुड़ । भेक्क -पु० [सं] शिक्का यक जनुकर । भेव म-प दे॰ 'सेर': बारी। भे**वमा**ण−स कि मियौना। मंप-पु दे 'मेस'। मेपज-प [सं॰] दवा; वपसार। वक्षः विष्यु । विक बारीस्य-काम करानेवाका । - करका-पुद्भा सैवार करना (वी) । -- इस्त-वि मीरीय दिवा क्रमा । - सीर्य-प भीषपद्मी मोरीग श्रुतनेशको शक्ति । भेषसांग-प [र्थण] बवा कातेके साथ या नाव सावी वानेवाकी भीत बसुपान। मेपकागार−पु सिं दिवाकी दकाश। भेपज्य-वि [सं] जारोम्बदावकः। मेपना*-स कि मेस दनामा। मेस-इ बाब क्या प्रमाना वेश-मूना प्रमाने आदिते बच्छा हमा कप (बनामा बन्नकमा)। अस**ञ्च**≎−ए० दे० 'सेचक्र । भेगना≉∽संकि भेसुवनानाः र्जिस-की गीबादीय यह माश्रा पश्च बिसका पूर्व मायके कुषसे अविक गावा और रलक पुक्त दीता है, महिनी । र्मिसा−प शसका नरः मदिव । र्मसीरी!-का मेंसका काला। मैंश-पु दे 'मय । -श्रामध-विश्वदेश 'सवजनक । --वा#-वि अवीरपाद**६**। भक्ष-पु॰ [र्स] निश्रा निश्रामें प्राप्त बल्कु मीख । (विश विश्वाचीची । --कास-- प्र विश्वाच्या समय । --चरणा--थर्ष-पु ,-वर्षा-सी वृत्त-पृतकर मीप्र मॉगना। -जीविका "मी भिशापर बीवन म्यनीस बरना । "मूक (म्)-वि निश्चानीयी । -बृच्चि-सी है। विस भी निषदा । मैसर-चु [सं] दाग भीता। भक्षय-वि [सं] मिल्ल मेर्नची । तु मिलुक्रीका समुद्र । अक्षाच-पु [मं] भीयमें भिना दुशा सद्य । भक्ताची(सिन्)-रि॰ [र्स] मिसाम्म सामेशका । पु॰ निश्क । भक्तदार-५ [नं] विहाद । भेद्राक-पु [मं] निश्वक्तका मध्याम् । भवष-पु॰ [मं] भीगा। अध्यक्ष-वि वे 'शीवद'। भषक-वि [मं] भेदन्त्रंशी । भदार-वि भवशवक।

ful-sul रेस्तानीय कि है कि लिएको है कि स्टेन्स of after well nave t विमा हि 📑 📢 भटनीय ६ ५० भट नगरिको बहरण बिन्न-दु (१) ४२३ निमञ्जानम् हि सीयरोश विक्राप्तानाः हिला (दरी) भीतार भीवनीहे होहहा देशना बहुत गरा FREE & A READ ! भित्र भित्र - १ । एस्से बार्ल दे परिशे कार्य । निमन्तिरमा-४० दि । हीमानेश्वर है किया बाला । जिल्लास जिल्लास = ५ ४४४ च न्या । निवर्ष = भ भरी नरकड सिक्ष-विक (१००) प्रवतः ,रहा दिश्व वर्गीरणः सावुर्गानाः । (इ.स.) इ.स. १८७१ है के रूप रूप स्थापन दल ही (स.)ह त्रमार ग्रद्भार क्षणाद्रभूता ६-भार्-दिः ४ ४ श्रेशको∫३ हे -कार-१ मागदाचा -चूर-विश् वायम्परित, विमन-पूर्व परिदेश । रे नरे (१४०) र -बम-देश बस य बेपपुष्टर पुरु विक्ती-पु देश प्रनार १ प्रवर्ग । स्मानिर्वार पर बाली क्रावेग्या ।-सूर्वन | विकास-बीव इदव€ कर । नगाविदा-भोग वर्वत पूर्व नदार्गि(शिव्)-विन्रे भौगमा-भ (६ देश्रीदेशमा । परणाला - देशीय-वि पुत्रते देशका विदेशीया, व्यापित-को देव विति । (विम्)-ो ए राग्रे भाग मामरावी पानने रामा। केव भाग ना वा वा वा वा -अर्थार्-मर्मार्('(रिक्) - कि अंश्लेस वरता धेल दर रोजे अर्जारिक - काञ्चली-भरे कालकोरध में औं अ अवस्थानका अस्वित को स्व विकेष रेतान्त्रीय वि किन्दी श्री विकश्ची १-वर्षेन्द्रिक ficing that six -gw-fix haden बार को केन है दिनारे शेरन को देन हो। न्यूनिक. the hot find ! is that they to game! both mit Glat wit mugfanfer fimet mit felbem ; tiem im mer gugenemit fem if bie! हो मनाही रिपूच्य २ ल्ह्रपुत्र-दि जिल्ला क्रपन दिन्ही म्पा हो । क्षिप्रयम्प (त. हेरीहरू रिकाम-भे । ३१ व ६ ३६ अन अर रिकास Europe un le macri a दिक्याचे-हि (⁵ दिक्क मी प्रध्याना एक कर्नामन् । Francis is a server fargutung ib uier greit formed [set making & "for s Parterny 2 4 furrers to be see faller- + we fullter a ; likewes ford or a new favoret of the county flower water that ब्रामा है ब र ब्राप्ट प्रवास की वेपकान का तर है कारान्यहरू the manifestation of 4 4-41 - 16-44 7 41-4 4

श्चित्री-भी []कपार बिसीट बिसारव-पुर्वाटक क्षेत्र निश्या - पुरु देव पृत्या । बिक्नो-पुबरायी श[ा] क्षेत्रेरम् 📺 । 1918 Trues 1 20 (4)-20 (#) 386] -पाम-पु अपने नेय १ - विका-र्यं र महत्त्वर विषय-निवद वर समाध्यम हत्त्र । - विषय - हे हेरही -मोर्ग-में भार्त है । -मानुर्(म्)-मेर राज्य mym i magage afectatiti aferage विकिथ्य केंग्र जिषक्ष पूर्व -पुरु (संर) कृष्ट । विकार-पुरु [सर] रोद्धीन रङ ७ ४४ र fagt fangt-ete ne fen ! दुमान रामा दिया दुमा विराप परिवर्तिया काम विष्या विधिया विधिया विधिया विधियान वि TEST ! जियमञ्जू विदेश गर्न । वि क्षिपार स्पर् विकार रहा हो। अस्त-स्वरू (विका) । विकास विकास विवेदार स्थान है। देश दिल्यों -वेद्द-दि अन्दर्भ - माजभू-पु घोड दृष्णाः हे शिवन्थ-१०६६ अन्दर्भ दृश्यान्दरेश सार्वितः -भिकाला(सम्) पुरु भाग । -मानुवर्णकी भित्रमात-सर्वाद संन्यान स्वयं करणा प्रविधिक uffempe fie ift i eritat t mermite admira t बीईर-पूरे बंध र MIN-IF EI AN I शीम-ब्रोप दिला बाबमा प्रांत्रको इप प्रवर्ति भीवामक-रि हैं जीपा ह minme-4 gete fer : africance to gold of the particle मुच-(क्षे) विश्वीनवर का स्टब्ने क्षत्र कर देन कर्ता हुवा ने कर्तापुक्र सारों हु पूर्व बर्ग ही बार्निक I who I I Where is the territor \$ 4m 8 MAT. But any Jr. East decide \$ 20. June 1 वीकृतक कर्णात्रीक व्याप करण भागत् स्था i term star t - malan-2 5 white at the stays of artist where at animal fear Nogre e Bresen from I te t Water of the 19th MAY WE F. F. F. ate is the exigen according to diffe

มือยู่ยชายสำเ−> ชไดะเ श्रीभाष्य नहिंद्धन के के देवाना व M4 -T + H1 भीना(क्न) – र िक्षेत्र दश्याप ४ दन दरहे धमान र रिको और रुपे र यू यहरूवा शीवाई 4741 भया-भी कि उद्दर्श अन्युद्धारम् स्ट्रीत भाषा प्राप्त कर्तक कर कर में बार का देश के बाल कर ≪ असार - राग पु र्यापा - पारी - स्टब्र प्रदेशका -त्राच्या दर्जन्य ग्रहा दिलेखाः to it were refer evil; ure to The comment of the best feet welferer ित भर अवागद प्रथा यह गर यह राष्ट्रातामध्य en e itregen proj-meren-fe un erit -तंत्रत्राः नंत्रीः च -लक्ष्यन्तुः विन्तृः -शत्त्रकः

भारतीलका तकोषु एक सवादियाचीको वदावदा। FT AT THE NEW THE BEING STATE SE BUT B. ALL FROM A PRESENTATIONS THE क्षाकी हिथि। इक्तर व्यवसानी की नावकारी । हा बूरे Rich and mitt ent ; werner-alle en grand a in the want entit americation ernig ureman mig biffaß fire uber gegent. w - 21 भारतीय-देश में हैं देशन रहेत

धीरकेंग्र-४ (से हेरिक्त किया भक्तमा १ रे नेपर र अक्ष्यं न्यू च दिवस विवस्ति । अक्ष्यत्र (स रेक्ट क्या क्या है। भरवाम र 🚺 भरेकर, विशेषका विकास क्षेत्र) मार्गेन्यर 🖟 grente an gwireball mit tie taues I tam da e WHEN HE SOUND AND PROPERTY. Gere-fie mente en gur foret fter be ! we were to the

भी दर्शानक है। एरोन्ड न्याको के बहेगार अपूर्व arts himself Behalf where I were give afterballs speak MA "F# 513 Men 1 here भीपुर ^हें के उद्देश करीण के नहें। हक्ती

A M I HARMAGE BETWEEN SETTINGS More Monorate face we be a file Historia at 1700 of 1704 arright ete : 742 ge 47 mes it a. mer # f targe to भौति । मून्य कारत

ब्राह्म प्रोक्तेन क्रीताते वृत्रदालय प्रदानस्य atual but the all ones

whater a service degree and the design of ** "

um teren geberen mite athem bas gie हाजार दिखा ह क्ष्मितान्त्रेतः अत्यः अद्वत्तार सर्वत्तार । wind to and a star for to

म पर परित्र अनीता, क्रम होपात पूर्वन के है विकास क्षेत्रकार्याण क्षाम्य च स्थे व दर्व काम anthere and heart out and family 47 वस्ता अ देशका विकास अन्दे नाम मानोव वापर विकित स्वित का क्षेत्र किया वृक्त असे असी

ल्यान करण ५७ हेव ६ च्यान्य न्यू नेराय १७४३ ∞दूर-पुर प्रवासकार अञ्चल-पर क्षेत्र रा**या**त्रे कार्या -मुक्ता-क्षे भारति स्वरण राज्या नहीं न क्षा मायाहे बार जीवनजन्दी क्षाप्त नगर केम धी बिर विकेशक साथ दर्जा अक्टान्य होते. -काम-पु पान्य कारोहणा -पनि दूर प्रदेश frank yours worken y rise to free Fall. th part manging er ire eifer fint इन्दर हेरेनाकेटी ब्रह्माई पूर्व हैं इस साई चीना ब करें units affere for -une (as) fo and held बन १ - भूम बार महत्त्वीहे कि देश बारा adultration for water & the dist. AND CAR MARKET HE WAS LINE WATER a sery che mete ufmaran d'une च्चार । चर्चसम्बद्ध=पुर ६ ति दे व वी दश्य हेंपी

स र १ - सीमानी अने १ - सद्यापि हेन। जनान MY W HELMANN & SUS RAJE without to the program and might are mit बुर में कुछ बहुज र ने बहु है। भोगको नको अब स्थल, सन् करो १९११ रहें। भी द अर्थंदर्क झा है है हिए राग्ये सामेंप अर्थे 84.41

अन्यान्त्रान्त्रिकार्यकर्थकर्थक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक

का बंद क्या ल्लेसना व करा

aheam on the trainer o

a when the two appeals over the

कर बहर- ल्टेसे बली देश महरत है.

WHERE & PL ? CAT ! MITTER (44) " IF , IT " ands i fin ben bee was an employ by E ----如外线 Known + & g . The material E way a v fragering and Special Spaint

sco, qua b

AM & F TT in the Parameter franke 4

سند وساداتها THE RIM RECT

क्ष्मरुपूर्व स्थान । मरधी~लो० ण्ड कं≾ पुरवीं। **भरस−वि•** [मुं•] रसदौन नीरस फीका; बसम्ब- सुरतः निर्वेतः भयोग्य । पु रस्का भगवः * नाकस्य भाकास - 'बान्ध्र तेग भरममें बुरूं' - छ० प्रवा छता सहस्र । धरसद~वि , प० दे॰ 'जइस्टै'। भरसर्था - प्रमासिक भाव-व्यवका स्टेग्ना रखनेकी नहीं । भरसन परसन*~पु दे 'बरस-परस'। करसमा≠−व कि डीका या <u>स</u>स्त पड़ना। भरसमा-परसन् नः कि॰ छुनाः वाकियन करना । बरस-परस-पु जॉबमिपीनीस एक केका दरस-परस । सरमा−पु[स] समदा वर्गका मैदाम देरा वहत दिन, सुदत । सु - न्त्रंग होना - कठिनाईमें पहना । सरसात~पु पक तरक्का सरैवा छा। भरमाना÷-स कि सरुपाना। भरसाका−पु [सं∘] स्वादरवित स्या-स्था स्यार्थ साना ।

भरसिक-दि [सं] करसक, काव्य संगीत भादिका रस हेनोमें बसमर्थः स्वादहोन इन्सा इन्से स्वमायका । **धरसी॰**-सा बन्सी दीसी। भरसीसाः भरसीँहा*-वि॰ नक्सावा हुमा । **बरहंत≈**−पुदे 'अईट। **बरह(स्)-**पु [सं॰] रहरव वा ग्रप्त मेदका भगाव ! अरहट−पुं॰ कुर्येसे पानी निकाकनेका नंत्र रहट। बरहन-प्र साग भाषीमें फाडे समन मिकाना बानेनाका

थारा वा वेसन । धरहमा»-को पुना।

सरहर~सी वाक्के बाम भागवाना एक भनाम तुमर I भराक-प भारा भगवा !-सरी-को है 'सवामवी'। अराक्र−पु[स] जरत देशः नहाँदा पीता। बराब्धम-प वर्माचा एक प्रांत नी भारतकी पूर्वी शीमाके

पास बदता है। भराग-नि [मं] बाचनारवित होतः भरारा(रिक्त)−वि मि] अरंबितः रामकीन वासना-

रहित । भराज−दि विनारायका शराक्दा प्र अराजकता। **भराजक−**वि [र्व•] विना राजा या राज्यकाः भराजकताः

वादी । प्र राजान्त्र म द्रीमाः विश्वव । सराबद्धा-स्वी [मं] ग्राममका समावः सध्यवस्वा स्थलमको ।∽बाद्−पु राज्यदीन समाज-व्यवस्थाका प्रति भारत करनेवाका महबाद । -बासी(बिन)-वि अक

सिक्तिका प्रतिपातकः समर्वकः ! **भराजन्य−दि [मं•] धत्रियरहित** ।

मराजवीजी−वि॰ [मं] अराजकता प्रैलामेगळा; राज-विशेष प्रचारक ।

मराज्ञम्यसन-प [मं] भरावकनामे सत्पन्न वा तत्नं वंदी संदर ।

पराकृती~सी॰ [स॰] जमीन चरती (सर्वसा वह॰, अव ण्कत्वनम् प्रयुक्त)। **धरात•-पुदे न**राति'।

अराति – प्र [सं∘] बुदमन, दश्च अंतर्भका कठॉ स्वान काम-कोवादि पश्चिपु वन्ती श्रेक्या ! **अराद्य्−सौ** [री•] पाप अपरात्र हेप असफकता । **बराधन**≉~पु॰ दे 'कारावन'। **भराधना***—स् फ्रि॰ नारावन करना । सराधीर-प आराधन करनेवामा । भराबा−प• मि े गर्ही, रनः तीप कारनेकी गानीः अक्षाबम्द पक मार एक बार कीय दागना।

भराम*-पु॰ भाराभ नाग। **भराकट**ः भरारोट-५ पक्र वीचाः उसकी सबसे निक्रकनेवाका शत जो शीखर वैशा होता है भीर प्रावा बीमारोंकी दिया जाता है ! भराख-वि॰ सि॰ देश । त॰ राष्ट्र मतनामा प्राचीः वक

बस्तः एक सम्रहा भराका-ती॰ [मं] पुंस्तकी बेहता; सब्ह सी। अरावक-प बरावक अधगामा केया। भरावसी-पुरामस्थानका एक प्रशाह ।

भराष्ट्र−५ (सं) राष्ट्र नहीं राजसन्ताका नैत।

शरिंद•~पु॰ शुद्रु । सर्दिय-वि [मं] खबुर्योका दमन करनेवाका जबविद्यती। **व्यरि−**पु [र्थ•] छड्डाकाम कोच भारि पढ़िपुः बन्मकंड*ही*-में रूप्तरे छठा स्थाना ६ की शंक्या। एक तरहका बहिर। स्वामी हवा वामिक व्यक्तिः रवका पहिना वा और कोई भाग ।-इर्यंक-वि श्रहुमें हो पीडित वा परामृत करने गणा ।—केसी−५ [वि] केशोके शहर कुला !—ध्या— वि॰ चन्नजैका साध करनेवाका । पु॰ सन्तन ।-वितन-प्र-चिता-सी ध्रम्भे माध्या एथव सीवनाः ─दमनः — सर्वेन — वि शहुका नाम करनेवाला। -विपात-पु शकुश्च काक्रमव । - <u>मृत</u>-वि∙ क्रिकी शतु भी प्रश्नंसा करें। - प्रकृति - चौ भूग्रांक प्रशासे शहनोंकी स्विति । -मेद-पु विर्वादिश मॅथिमा नामका कीवा ! - सेवक-प्र॰ मक्रमें करपत्म डीनेवाका श्रु क्रीहा । ~सदन-वि सहस्रोदा माध्य क्षत्रेशका. शक्म । अरिक्थमाक्(ज्), अरिक्थीय-वि [सं] यो पैतक

धंपचिमें हिस्सा वानेका मिकारी म हो।

अरिश्र−पु [सं] बर्रेंझ संगरः नाव पोता वि सञ्जने रक्षा करनवाकाः आगे व्हानेवाका ⊢गाध दि क्रिक्टा । अरिया-को विशेषत पानीके दिनार रवनेवाला एक विकिया !

अरियामार्थ-संश्रीहः अपमानवनद दाध्यसे संदोधन स्टब्सा । अरिस्क−प १६ मात्राओं हा एक छंद ।

अस्थिब-प रासीका पंदा जिसमें वहा आदि प्रेंसावा बाता है।

अस्य-पु [ग्रं॰] स्वातार वर्ण होगाः एक गुदारीम । अरिष्ट-पु [मं•] बुर्गाग्यः अग्रुमः विपक्तिः शहः अनिष्ट मह वा शहनीय प्रमुखारक बीपा (रीगांके) प्रसम्बद क्ष्मणः मुक्रपादि करपादः दवाभौके रामीर्से वनाया जाने

वाका मार्गक वर्षे छद्युन; बीजा: गिक्: रीका: संकादे वासका एक पर्वतः सारीः तकः एक समुर विसे कृष्णने

मरिएक-मक्सना मारा या एक प्रकारका व्यव । वि. अविनाती पिराच्छा भग्नम । -गृइ-प मीरी । -मेमि-प॰ करवपका यक पत्रः सील्यवं प्रवापति जैनोंके वार्यसवं तीर्वकर ।-प्रधान-प्रशिव या विष्णाः शरिष्टक-पु मि•ु शहा। **मरिएा−त्या [सं] दश** प्रजापतिको एक बन्या और कहवप कवित्री फ्री विसंधे मेथवीकी चटपाँच मामी जाती है: कटकोः पद्मी । मरिष्टिका−छो॰ [मं•] रोडी; कुटकी। सरिहम−पुरेदन विश कदावमा। अरिहा(इम्)-वि• [सं] शहुक्क बाह्य करनेवाला । प्र धायान । भरी-म॰ सिमीके किए व्यवहत्त र्स्थापन । मरीका-प्र रोग। अर्रतुर्∽वि [मं•] समेलकीका देशनेवाकाः सर्वपादकः सगनेपासा । पु सब् । भर्यवती-स्रो॰ सि॰) बसिए कविया पत्नीः दक्षको एक कृत्या अथवा धर्मेकी एक एमी। नहाँच मंडलके चासका एक छारा ताराः बीम ।-जामित-भाग्रत-सङ्चर-पु॰ बनिहः। -दर्शनस्थाय-ए स्टब्से सहमध्ये और बाना (अर्थ-भतीके नवन होरे बीतेके बारण पहले उसके पानके वह हार (बशिश्र)पर ही शह जाती है)। सद≠-अ॰ भीर । सद(स्)−५ [सं} स्वं रक्ततिरः अर्धे १३३ जस्यः ममौगः भारतः। अरुधा-पु स्य दृष्ट् या वंदाक महास आदिमें अधिकरासे दीता द (शस्त्रो सक्ता दीन, तल्यारको स्थान आर्थः मनामेक काम भावी है)। † तरकारिक काम आनेवाला यक र्या । अरुई!-सी देश अरही । सरक्(त्र)-वि [संग] रीगमुक्त मीराग । भरम्य-वि [मंग] मोरीय स्वस्त्र । धरुचि-नो [सं] (दिगी वर्गुका) अच्छा ≡ सथना मनिष्ट्राः प्रमाः विरक्तिः भूगः स समना अधिगांव रीतः र्शतास्थमक व्याप्याच्या समाव । -कर-वि जी पनेर म आर्थे म स्वभेदाता। भराचिर भरूच्य-दि (मृं॰) भ्रता व तगरणता, अञ्चि-करः एकन नेता करमेनाका । भरत-रि [मं•] मोर्राग, तंरभ्धा । प्र मामक बीबा। शरप्रमा≠-म+ कि उन्हाना योजना अल्डना। सन्त्रनाः बदमें मंहप्र होता ह सरसान(*-स कि॰ बन्हाना। अ॰ कि उत्तरमा। सरम-(६ [वं) नान, उना या निहरके रंग्या पनताना हुमा मृद्धा तु शास (म उसमे हुद ग्रावा रंगः शाध्य कारिया। गुर्वः मुर्वद्धा भारति याम महीनद्धा सर्वे। निद्वा सीमा इंत्या गुड़ा बर नरदका तुब रागा एक छीन रितामा जीता एक आरिम्या केलालकी कर मोटी। मुकाय क्षा - कर - किरण-पु गव । - वृष्ट - शिका-पु मुर्ग । - ज्याति(म्)- दु शिव ।- नव -सोबन- दु

क्वतर । - प्रिय-पु॰ धुवं । - प्रिया-स्ते भू रो स र्देशा छावा । -सल्हार-व• मधार समझ रह हा। -सार्धाः -प्रश्ना खरूम -सी॰ [सं] उपाः मगीठ, द्वेषकी सर्विताः, स बारणी, काना अर्वतमूल इ० । अरुणाई = न्यी • साहिमा । सर्ग्याग्रज-पु॰ [दो∉] संग्र ! अरुणारमञ्ज-प्रश्री देवि एम्, ज्याव मुझीर दर्जनः। अरुमध्यज्ञा-नी॰ (सं॰) युरुमा और हारी। **बरुवानुकः अरणावरक्त-५ [मं•]** भरदः। **बरमार-१० दे० श**रमारा । बरुगार्चि(स)-१० [मंग] एवं। सरणाइब-पु॰ [सं•] **म**रन्। अरुणिन=वि+ [र्श+] लाह रंगमें रेंगा हुना ! अरुणिमा(मम्)-न्दी • (तु०) हासी । **भरजी~सी॰ (सं०) शम** मादः उरा । करुव्योद**क्र−प्र॰**[मं•] श्राम ग्रागरः ए**द शं**त । अरुगोत्रय-ए वि० तरुमान, तरुमा भार।-सप्तर्मा मी याप शका शमगी। अङ्गोपन-पु[म•] साह मामक रम ! अरम्ब-विवास अस्त्र'। -ई-मी -ता-मा रे 'अरनाई ।- चुड -दिसा-पु देश'मर-पु -दिसी सरनाईं≠~श्री सहारं। अरनामा*-अ कि शुर्ती थाना माव द्वाना । स• रिम काल करना । **भएनारा**#--वि कार । अरुमोदव+-प दे अरुपोरय । अफरना#-म कि सिकश्मा रूप सामा। भरुराणा#-म कि निक्षेत्रनाः पेढनाः मरीहमा। अठवा-१ एक एता विमाधे भवमें बंद दोता है। सम्बद्ध वल्कृ पश्ची । अक्प-वि [मं] अत्यक्ष वस्त्रीलाः अक्षा र धरि^{हा} लान पाष्ट्राः अवस्थाः सर्व । श्रदरी—स्वी॰ [रो] उपा; इनाहा; मृशुपत्री i अरुष्क-तु [मं] भारतना कुछ वा उमारी निर्ता अरुमा । अदयक्रर-वि (ते॰) प्रत्युत इल्सारका तु॰ म्या^{न्द} **1**0 1 अरहा−नो [गं•] ग्रनामच्छा । अरुश-वि [गे॰] दश गरी मुसावम । अस्त्रामा=~ल कि विश्वका संगठना ! क्षरुद−दि [मं] ओ स्त्र न हो अप्रदर्शिक रें WIE . 1 अरूप−दि [गे॰] जापृतिदीन दिना रकशादणस्य वृद्यः असमान । वृत्रदी स्ट्रा अस्त्रक-वि [ते] जार्थनरीत अर्थावर स्वर्धार आसि संदर्ग (श्रान्तिक) । अस्त्रहार्य-वि [मं] यो गेर्र्य द्वारा माइट श स्टे ब दिया जा मदे। अहरता -म कि अवित होता गीति होता। अस्त्रमार-भ वि दिशमा व'सा।

मोगिनी-सी (सं) नाविनः राजाकी उपपत्नी । मीर्गीह-पु [सं] श्रेषः बाह्यकः पर्तकरू । सोगो(गिन्)-वि [सं०] मेरेन करनेवाकाः विपवासकः भौग विकासमें रहा इंटकी बुक्त फणवार । प्र साँपः बमीदारः राजाः नार्तः । -(गि)कौत-प -गधिका-सी अपुर्यगुष्टा नामक बृद्ध । - भुक्त (ब्रू)-पुगीर। -वन्नम-पु॰ चंदन।

मोगेइवर-प [छ•] एक दीर्थं । मोस्थ-वि [तं] सोग करने वीय्या यु भीस्य वस्तु, वन-संपत्तिः। भोगवयकः रक्षी हुई चीव । - अस्मि-सी॰ भीमदा स्वानः मर्खकोकः।

भोग्या-स्री सि विश्या।

भोज-पु॰ [एं॰] मोत्रपुरा राजा इंगुका रक पुत्रः कान्य कुण्यमें नवीं श्रतीमें हुआ यक प्रताये नरेक; माक्रवाका परमार्खश्ची राजा जो बड़ा पंडित ऋषि और गुणी जनींका बादर इस्सेवाका वा (१००११ वॉ छटी), रामा मीव। -कर-पु शोबपुर । **-हेब**-पु काम्ब**क्र**ण गरेश नोबराब। -पति-प्र मोकरानः क्ष्यः। -प्रर-प्र मोक्सर गामका बनकर १ - पुरिया-नि [विंग] मोब पुरका। प्र मोजपुरका निवासी। -पुरी-नि [रि॰] भोजपुरका । प्रामीजपुरका निजाशी । स्त्रीण मोजपुर मरेशको शेषी । -राज-ध रामा मोन : -विद्या-की इंद्रवाक ।

मोत्र-पु बहुत्तरे कोगोंका साथ बैठकर सामा, ज्यानार" ण्ड तरहकी शराबा बाक्काका। -भात-प्र भावका मोद।

मोजक−९ [मं] भोजन करानेवालाः परसनवालाः मीवन सरनेवाकाः क्योतियो । ति अशानेवाका शोवन दैनंबाकाः * भोमी ।

माजन−पु[मं] टीस बाहारको नलेक नीमे पहुँचाना यानाः वानेकः बीव द्वादः सिकानाः मोगनाः पनः एक र्मतः। – ब्राह्म-पु धानेका समयः। – सामी≉∽को रसोर्द ः लग्नाइ – दु रसोर्द्यस्, माननञ्जाका । –स्याग− पु नाहारका रवाग चपवास । –सङ्ग-पु [हि॰] पेट्टा च्युमि∽को÷ मोत्रम क्रानेका स्थाम । चरत्र∽द यानाध्यमा । -बेसा-को ,-समय-५ दे॰ नीवन-काम । -स्वाप्र-वि साहेमें शंकानः विसे गाय परार्थका समाव हो । =स्यच-व साते-पीनेक्स सर्थ । "सामा-सी भोजन बरनेदा श्थामा रहीई।

भाजनक∽दु[मं] एक यीघा।

भोजनाच्छाद्न-९ [म] सामान्डपहा । माजनाविकार-पु [नं] पारशास्त्रध अध्यक्षमा । मोत्रवार्वी(चिन्)-दि [र्थ•] मीजमका स्वपुद्ध, भूसा। मोजनास्य~दु[मं] भोजनशाकाः वारणः। भावनीय-वि [सं] गाने योग्व भोज्या विसक्ती और दराया जाव । पु अन्हार- समुद्री समद्राः –शृत्न−ि

को अभागीले बरा हो। माजनोत्तर-दि [नं] किंगे भीत्रमके बाद सावा जाय (केपी आहे)।

भाविषेता(तृ)-दि [सं•] गिलानेवालाः

मोबी(बिम्)-वि [सं॰] (समासोतमें) मोबम करने बाकाः। भौगनेबाद्यः।

भोज्य-वि• (र्र•) कामे योग्य भोजनीव । प्र मोजन काव। -काछ-पु॰ मोजनका समय। -संमध-प श्ररीरका रस 1

भोज्याच-वि॰ [सं] जिसका बच काया था सके। पु० क्षाय भव ।

मोट-पु॰ [सं] भृदाम बैद्धा तिम्बत्।

मोरांग−पु• [र्ष] भूरान । मोटिया-पु म्यानका निवासी । सी भ्यानकी भाषा । ─बाहास─प्र मैंगफकी। बाखस्थारा ।

भोटीय~दि सिंोगोट देशका ।

भोडर मोडल•-तु नप्तक, धुद्दा । भोषर⊦भोषरा−वि क्रिक्टी बार डॉर हो गयी हो !ं मोबार-पुरक तरहका थोहा। भोगा - म कि र रामा। सनुरक्त होना। पैदस्त होना। भोपा~पु॰ दे 'में पा'।

भोमिण-स्थी है 'ममि'। भोमीरा—भी मुँगा

भीर-पुराव बीवने और स्पॉटब होनेके बहतेका समय। तक्का, प्रमातः एक सहावदार दृक्षः एक वधीः * मकः जम। ● वि भोकाः विश्वन चंदर प्रमुखा निरक्षि सीमाः भई वस्ती भीर'-साः।

भौरा*-वि॰ दें॰ भोका । [न्दी 'मोदी'।]-माध-प• दे॰ 'मोकानाव' । -ई-खी॰ -एम-पु॰ मोकापन, सिनाई ।

भोराना=- । कि वहकामा पुक्रामा । अ कि अपमें पड़नाः मुख्यवेमें भाषा ।

भोक-पु [ti] वैदय पिना और नदी मातासे एत्पन्न संवान ।

ओखमा≉—स+ कि व**इ**काना ।

मोला−वि॰ धीवा सरू विसमें वसवट बीः मूर्य तुर्व िन्माय-पु शिव । वि धीमा सादा -पन-पु निवार्ष मूर्येगा !-भासा-वि सीया साराः निष्धपर ।

मोशि-पु॰ [मं] करे।

भोहरा - पु दे ' भुरंदरा'।

र्वी-सी ऑसक उपस्थे श्रृपर पतुर्वे आकारमें जमे इप कर । मु॰-चड़ामा -मानमा-रीव प्रका करता। माराज होता।

ऑक्ना−अ क्रि॰**१**० 'शृंशना' : श्रीचामां −पु० धृद्यं।

र्भीदां −वि॰ दे 'में। शा

र्मीकी -सी पदादी। वि स्पी मोदी।

र्थोनुवा-त प्राप' दावमें दोनेवाना एक तरहवा बातुन धीव शेगा एक छीराँ ग्रीमा तकारा नह ।

र्थीर॰-चुभगरः बनावर्गः।

मीरा-पु एक काला सरनार कीसा की मून्ने का प्राप्त मानत बाना है अमर वही बपुमक्ती। पदियेश मानि रहत्थी यही बहसी। व वह रिलीमा नरदा हिरोजेंमें कपर

1414 स्रीष्ट । पु॰ स्टोइन, मतकन । सक्रस्म−नि•[व] गाँटा हुआ तक्तीय किया हुआ। पु नौंदा, भारता भारत १ -सक्षेत्र-पु॰ साजक १ -•भाक्स-पु मदत्तम समापनर्षक । सु॰ -का किसा —सम्बद्धा किया तक्ष्रीर । सकाई!-की देश पर्वा ! मकार-सी [४०] बैठनेकी अगवा गुरा मण्डार। सकाम-प भि रहनेका स्थान वर। ~बार-वि मकानवाका । पु सकानका साकिकः । सु 🗠 हिस्सा देवा -नद्रत श्रीरमुक समाना । सक्तमात्र∽पु≉ [झ॰] 'सकान'का बहु० । मकाम~पु [क•] ६० 'मुकाम'। **सङ्•−व पादेः व**रिका शायद । सक्द−५ [सं] सक्दा सञ्जना-पु विना दाँचका वा बहुत छोटे दाँलींबाका (नर) हानी। वह परव जिसे मुँछे म हो। मकुनी-ची नाटेमें बेसन मिकाकर वा मरकर वभावी हर्ष गरी । मकुर-पु• [सं] कार्रना मुकुर। कुम्हारका डंबा; मीह-सिर्धः कको । मकुक-पुर्व [सं] इत्तीः रकुत रुख । मकुष्ठ-पु॰ [सं] मोढः वनमूँगः। सकुमी - बी दे 'महुनी । मङ्क्ष-प [सं•] इत्रो; वंतीका पंक् । मकूसा—पु॰ [स] पक्ति, वचन कील, कदावत । मकेदक-पु [सं•] यह तरहका पराभवी बीट । मकी-की है 'मकीव'। मकोईंश~को० हे 'तदोव' ≀ मकोबा-पु छोरा धोका (बोकाके साथ प्रमुख) । मकोय-की यह श्रुप क्रिक्त प्रक, पत्ते बादि दवले काम बादे हैं। इसका फका रसमरीब्द्र पीवा मा फल । सकीरमा≠−ध कि॰ दै 'मरोहमा । भक्रोसख-पु: एक सदादहार देव । मकोद्या-पु ऋत्रसम्बन्धाना एक श्रीहा । मेक्षव्−द्र मर्मक्षा। –दाखा−द्र मक्त्रीका शाका। मदरा-पु दे सहा। महम-पु [सं] प्रवृताकी शोनेवाका एक प्रकारका श्रूक-मेका-पु मर्का वहे दानेका क्वारा (व) जरवड़ा एक मनान बगर वो गुहरमहका अस्मरवान और शुसक्रमानीं-का सर्वेप्रधान शीर्थ है। मिक्कार-वि [ल] शह करनेवाता छनी। मकारी-भी॰ सद्भ, क्ष्य, भोग्रेशको । समी~दि मन्द्रेशाः पुत्रसदेका रहमेशालाः। मरकृत-५ [सं•] शिलावतु । संबद्धील-पु [श्रेक] सहिवा । मरकन-पुरुष वा दहाँकी विदन्तर्ग को सबनेसे निक ण्यो है कवा यो सबतीत । मचन्री-स्रो सर्वत्र वाया जामेशन्य एक परवार बोहा विद्याः मनुमन्त्रीः वेट्डः समेथेशः वदं निद्यान । महत्त्वन्त-वि (वर) मिना-तुन्त, सङ्ग महः।

विश्वति कदंवका निष्ठामा औक किया बाता है। -- वृत्य-वि॰ वारी कंत्रुस (राष्ट्र भाविमें पड़ी मक्कीतकड़ो चूछ जानेशका) । --मार-वि॰ मनियामाँ मारनेशकाः भिनीमा। पु॰ एक छोटाच्छा। 🗝 काराज – पु॰ एक चेपदार कागन निसंपर मस्थियों निपन्न और कुछ देर शह सर वाती है । सु॰ -छोशना हायी निगसना-होटे दोवरे वपना और वड़ा बरुगा। -पर मक्सी मारना-वेधमधे, पूरी मक्क ६रमा। मिक्समाँ मारना -वेदार बैठा रहना, इछ म दरना ! मञ्चल--पुर्व (संर) मकुना शाभी । सब्ध-पुलि] बनाबर, थीखा, इक कपर करेंद्र । — चाँदभी-की पिछ्की रावको बाँदगी बिससे स्पेटा होने-का भीका होता है। मीका देमेनाकी सीज ! मक्ष-पु [सं] क्रीक समूद्दा अपना दीव हिपामा । -थीयें-पु+ पिवा**क इस** । मक्किक-को (सं) मनुमन्द्री। मन्द्री। --सस-नु मोन । मुक्-स्वाने मझिका-मक्तीपर मक्ती मार्गा। पूरी और देखें ने समज की मानेवाकी मक्स । मक्किकासन∽द (६०) नदमनियमें भा छत्ता । सक्ती-प काका या काके दागवाला सकता भीड़ा । मका−प्र (तं•) वड ! −किया −की समध्ये विधि । − धाला(तृ)-प (विधानिकते वस्ती रहा बरमेवाते) राम । -हिर्(प्)-वि ववश्यो । पु राक्सा -होपी(पिन्)-विश् वहदिरीपी अवनाशक ! प्रश्रिष ! -बह्रि-पु यक्ति। -शास्त्र-सी यक्तासा। -हा(हन)-५० चंद्रा दिन । अल्लक्षम-प [क] खबाना मंदार क्या करनेको बगह। गोले-नार रक्त मंदार, 'मेग दीन'। मसत्य-पु॰ कामा रेशम। सवाह्मी-वि॰ सवाहत्त्वा वता हुना, काने रेशमदा । महाबुस-वि [अ] सेवितः सेम्ब पूरम । पु स्वामी । मसब्मी-पु पून्त, मेध्य (संरोधन) । सलावस-वि [अ॰] विससे दनका दतरा हो भव संक्रम । असन्≉−पु॰ यस्प्रन । अनुसीया-प अस्तन पनाने वेयनेवाका । विश् अस्तान निदासा हुआ (स्थानिया दूप) । सत्त्वनी-न्दी व्यक्त छोटी मछनी। असाकी-वि [ल•] दिया द्रशा ग्रह । महासम-सा [४०] पढ मीता रेशमी द्रवता यो कपादी बोर बहुत बरम और रोपेंदार दोना है। श्रीकार्दके पीअपर तमबेबाह्य कृष्य ह महामधी-दि सदानन्दा अधनत्का वसाः सदानन्साः। मक्रमसा~तु [व] शपराः समेका। महामूर-वि [अ] नधेने पूर रामस्त । मत्तरअ-पु॰ [म] बहम स्रोतः मृतः ! मात्रस्ट् क्र-वि [ल] की वैश विका गया हो, सुर । लीक गानीः सदि निश्चत् । मग़तुकात-भी बरापर अगर, सृष्टि।

-- 1. -- 11 - X-4 14 i Tour maniful and any मीतिकार के ब्रिजा प्रवासिकार ः प्री १इ−५० (००) क्षेत्रप्रस्य ३ Millert - C Cating (4-4) 5 श्री हरी-१८ [४०] १९०८ छ । श्रीशनमा पह बारे बरे पुरुष पदा देव शुक्रा # # -# + [+] #2 eve s हारएक बरे बाउरे अन्य भारत पर पावधे करें धारप-पुर (१०) हैन चेटेचर (चिती-पु अवश्वदशकार्थाच्य प्रतिहास FE 274 E 67.8 ग्रीत प्रमान्यु कि देशोरे नियम क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र dir-or t Mirr e t ufgte s क्षेत्र विश्ववद्या स्ट्रीसम्बद्ध मीर-तु हे अराहेर र र-प्रत-संतर-तु विशेष संतर-तु [र्ग] रहे हिन्दा परत का े क्षेत्रक हैं। भी है (भारेक्का ह P(PF EMM!) alletinents (r) get each अन्तिन-वि [ल विदेशितवाद्वन वर्षका भीतक भीतका नेरा पर वा क मर्थ । दूरारें हका | अमरे(शिक्)-रि (१४) दव दीने एक शेवने (सा Ritgeni eine Eigent ! 15.33 24 सक्तान्य विशेषिकिता स्वा मान्यान १ (१ हेल्ल कर्मा विकास mine-u fo atu : अर्थाहरूके [त] है। सर्वे । भीप्रक्रिक्षको र सहयोग अरवदर- य दहार ज भी गाँव है इसकार पुर्व (वृत्व) स्थापन स्थीत-५ (००) रे वदह र WINT HEELT भीकर्ष क्षांचीत्र । अस्य बहार हेरी भीत अर्थाप-पु (भे) श्रेषा वय व र अस-नु [१०] प्रस्त पत्र अस दल्द दिला धीळलार−दु श्रीदेशक कर्द वे इ.स. हिन् इसाबी भार क्रमहता. राम है... भीत्र - पुन के देश के बार के बिलाने बजारों जान क जनपूर्वा एक प्रया जन की गा प्रदेशका हैगा क्षत्र सकार संभार हो संभारे हैं। mir-y in literaturate well serves are authority a new affect भीत-ति (रा भूकारके अर्थनो अ श हैए--erli(fig)-it usmes 1 - mis 1 +1-क्षण । - प्रत्य-पू र्यप्तादा स्पष्ट र अन्तर ter ameres ter grit ergert ufer ! कर्ज यदर्गन्ते स्थापन्तुः कार्यो कार्यसारी क्रजीहर शक्त ह रहे । र द पूर नांशीवम दू अपट्टा mirge-fe [it] #9 fer ! affent fe ! of maniet, aura , at fein jamen 3 fie f den gefen, au mitten. an man and an any man and a light TELL VETERS WENT (RR) #1 4 174 Jeste -femfita-4 un fat adent with freezes . Sirifte met and a mil ! were mireten - mie i te es mien RIVER OF STREET STOP ! were or follow hours for all more we con you fall - famengo at five and with the parties of the same of the same took with mir a facelies bein : wayth a juilted a twelter wife विकारण के दुल्लीक स्वीक की E LITTE City to the city to the 4 4memi MAN & MPA 1 MA 40 3040 , server in fair que inverteem de l' ufre my be be Act is to need an exert 4447 8 44 5 Mate wet to over 1 فيشدفها فللسامية geing a river at until Howard for a to some & act PER TENTE - TERR & CHEST PER th before an own the same of Ma इत्ता अवस्था में देश बदाद के fen g tie tomen gammera tid ! क्षत्र वर्षात्र कामान्त्रका अर्थाना वर्ष सम्ब ematin men gebinefam bil fort one a sperime food so · tricks are mark to P# 2 2 र । अनुसरि प्राप्ते कर्तर है। migt gt to 2" 1 A-11 matter a date a tente a son 4 Z4 1 F egn (grams, a feet of figure bed में के सुर-रू with the ~त्रष्ट र वस्त्र देखार प्रवासाय दे t auer f ut ertem! 4-34 7 weet it that temporare inst 4 . . - mater of the state 9 ~ 4 F. M. A. त काम की पुरस्का पूर्ण में हैं A GEW L 4 14

```
रहाप्तुकाम-प्रकारक
मनुष्मु एकान्त्र=दिन (बन्) टीलना मार्ग अप न
मन्त्राम-दिश् किने श्रेण दिश मुख्य आर्थे विशेषीर लिन
wer fer yer t
धारणीय-धोः तः ३ वर्षः भग्न वर्णातः
श्रमापल-पुर्वास हिरे शामित ह
मना क्षा-म [र ] सहाच मानश्रम अह ।
समाप्राप्त-पु रि हेन्द्रसभाव
सर्वात-भी है संबंधि ।
EDIRI-S TE PREMI ATEL
श्राचीत्र-५ सन्द द्रशाः
शानिक्या - पेन प्रमुक्त वर्ग गुन्मा ।
und gele bereiten
मग-इ लि विच्यानिक व्यवसायकारी अन्तर
 - THE - F. STREET BANK B
सर्गर-रणने रू<sup>त</sup> ६ ४६ -क्ष्म्-द्रिक संपर्गत्य ।
RPR-4 5 AVII-WE IT IN A MINHOUS
 नक्षणो = मर्टी को प्राप्त यात्र प्रथम सक्ताना
 -वर्षा-भ्य अच्यादी।
सगरी-मीर्श्य में है रहते क्रांत्र स्थादी करें
सराह अस्मारूच – पुत्र रीत का अरहके बना फाका हुए ह
Rifero-e & facer o
मार्ग्य-६४ है । ४ लिए दिश बर्जन केंग्र अन्य
 for "I we wree a
सराया-१८५ (१०) (४५४) ३
मार्थ-विष् मान्यहरू-पु : न्हें बरामरशा कालंगर है सक्य-को जान सब्ब र
BITTE'S - 4 ( ) BOTTE CONTRACTO
द्याप्त रेग्डान दूवा काविद्यालय सम्मीदित
मानार स हिन्द्रान्द्रेगः।
morely by the property was a sales and
 प्रशेष रहेर्गात १ स. हर्ने ने हैन बर १ नहींने
 mg en men dien aber meren geneme
 42 Ady house 3
meer to near uit were
प्रशासिक । जिल्ला रूप में शिक्ष कार्रिक क्षीनुसार
  नक्रप्रति १९४० अन्दरने दक्षिकः सर्वे स<del>वाक</del>
 HET COT BE F
market to the a
                        No ki etheri
 ガレアキエレクタがる かっ がっか かかかか
more-fe lat the contract of a
BUTH BUYERS
groups and a second
Brownia for Jean 2 1 day anged
graphy att fee of a mate
 Me niture prom
meters of 2 and 1 to
 RAY" I & KYY TO FIT TO BOD.
 make weeks a net for
 BANG AL ANIMA Print_ERPORATE AND AND AND
  metalism and med on another
```

```
अच्छा सामा है।
         अपू −५० देव फर्या ।
         क्षानीर-४५ स्टेन्ट अटबी १
         Minia-dag til t
       मिन्न (अर्थ क्षेत्रे ग्रा हिने अन् राज्य
          गत्त्रास्य लक्ष्युर्नीय स्थय प्रश्न स्टेस्प्य असेव
          -व्यूरी-मी व सरक्ष पर अप्ता प्रदास कारे दीगरी
          बार भाजा । नवाबी-स्टेन जाप करों कि इस्ताना ।
       । ज्हीरायाच्या श्रीयामा । नामा १ १५० द्वार
       १ -मूर्व के बीर प्रश्नानस्थान धेना व प्रया
          न्या प्राप्त नया क्षत्र न्याप प्राप्त व्यवस्था है
          क्ष्मान करायो कर देवा ६ -ईडालीयका बहुका न स्टाउत
          ate an tatt
       ् मान-दिन् । ह्राष्ट्रणान वर १रॅ कः उनियीन
          ∞देव∽व रुप्तर≠ वका र
         mingel feeder teek a ter en en
          Trough up
       र प्राथमार्थ क्षेत्र हे-क [१] हरा अल्लो प्राप्तने अल्ला
          अन्तर्व -श्रिपु-पुर्व केरबार र जनसन्द्रव राजन
          Mark 9
         श्रापुरम्भाको (सं) क सम्पन्न देने प्रकारी देश ज्यान
          -व्यक्तिराहिनको अस्त्राच्य अस्तिराह्म अस्त्राह्म
         -1 TCREE
        क्ष्मीबीवन्त्रमा प्रशासिक
        समीशालपुर मोने किया सम्रा क देश करता है
        解释医院一种 【花 相对作 计转子单分数 电对象 红红色
          mines milla neur wegen ber fit wer
         नारहे था. यो नीरीरी दक्षित्रमार संदर्श स्तरण
         te erere
        munt-e nentebel fei
        restrict to see a figure
        MARINER OF SEA AND ALA GOA SEAS
         ह बन्द के बचन ह
        अवस्थानामानम् हेर् सम् १३ अध्यापान् अस्पर्या
         to we a face i
        preferences a total
        multiplicate for the market are total
        Remember in Stead to by de might be
         order to the the special open
        mem a small a moselful
        graphys is the high why here is a few
         Wern & P
Ray a laterly an even sick an
        ATTE & NO 4" FF
                      The Read of the Alle
        BOA W WIT
        engrymous to a be an erior detector
         REST & WEST
       manage of the second men that we still
```

भ्रमरातियि - प्र. सि वेपका भ्रमरामंद~वि॰ [सं] दहण इस । झमरारि-पु [सं] दे 'अगर गारी । भ्रमरावछी-छी॰ [गुं•] यारोंडी गंकि। ध्रमरिका−सी सिं] पारी तरफ गगना। श्रमरी−का॰ [र्ष] यहा माराः पार्वताः बतुका कता । झमारम**क−वि० [सं•] चोक्षमें अल्लोबाका,** संदिग्ब । भ्रमाना*—स्॰ फि॰ पुगाताः बद्दानाः अगर्गे डालमा । भ्रमास्टर-पु [मं•] तकवार भावि साम्र भरमेवाला । श्रमि−सो [मं•] पद्यः कुम्हारका पातः खरावः मॅनए वयुक्ताः भ्रम भृकः सेनाका चक्राकार व्यूवः। म्नसिव∽वि [सं] प्रमता पद्धर सावा इमाः प्रमावा ककर खिकामा हुना । ∽लेक्न−वि वेवा-ताना ।

द्ममी(मिन्)−वि॰ [सं] वृगने चक्कर धानेवाकाः भ्रममुक्त । समीनश-वि अमन क्रत्नवाका I भ्रमिमा(सभ्)⊸सौ [मं∗] तमता अतिवारु। ब्राप्ट-वि [सं] नीचे शिरा हुना। क्षिणा हुना। पूर्विय भाषारमाकाः तीनः नष्टः-मे च्युतः। -क्रिय-वि विसमे भपना विक्रित कर्म छोड़ दिवा है। - निद्ध-वि निदासे र्गक्ति । – शार्ग−वि जो मार्गम्क गया दो । −श्री− वि माम्बद्धीन ।

प्रष्टा~सी [र्स•] पतित की दशरिया। **प्रदायार-वि॰** [सं] विस्का भाषार विग४ गणा थी। 🖫 पृषित भाषार। वेदेगानी ।

म्रष्टाविकार-वि॰ [शं॰] परच्युत । श्रांत-वि [मं] मका हुआ: श्रमशुक्तः हैराम, परेखाना प्रमान, बहर रात्ता हुआ। पुरु मतवाका बाथी; पत्रा

प्रमन्, पद्यरा मृक्र । श्रांतापइ लुति न्त्रो [मं∗] अग्रद्धति अवस्थारका यक मेर बहाँ किसीकी किसी परार्थमें करूप परार्थका श्रम ही नामपर सुदो नान कहकर जसका निराधरण। किया नामा

र्मानि दूर करमद्र किए सुद्धी बात कहना।

भौति-सो॰ [मं॰] अववार्ध दान भ्रमः चटरः अरिनरताः **ध्रिश पंत्रशहटा एक अभासकार वर्गा वर्गमानके सराह** बनमब्दी देमानपर छएतामका निधयाश्यक अम हो। च्चर-वि भगवसद्। ~नादान-वि भ्रम प्रांतिका माद्य करमेवाका । बु द्यित्र । - क्षर-नि आंतिका गाश्च करमेकाला। पुस्की।

प्रोतिमाम्(सत्)-वि [ते] प्रमशुक्तः चक्कर साना इमा । पु एक भवांत्रकार, श्रांति मामक अनेवार । धाज-पु [भेर] एक सामा साम ग्र्वीसैमे एक । भागक-पु [मं] स्थ्यामें स्थानेशाला विच (मा वे)। व चमद्रानेवाका ।

भाजमु∽५ [गं•] दोहि नम⊊ा भावन-पुनि | चनकाना। संस्थार-भ कि शांतित होता। चनस्ता । धाजमानः-वि॰ शीमावमानः।

मात्रि-को [मं] चमद्य होति। माजिल्ला-रि [4] यमकीशाणा ६५ रिल्ला विका आबी (जिन्)-वि॰ [एं॰] धमक्रमेवाला, दौरिप्रक्त । भात#-पु॰ दे॰ 'भाता' । भासा(नु)~पु [सं•] सगा मार्थ । −(नु)र्गधि;−गधिक −वि सिर्फशासका माई। ~ख~पु॰ माईका पुत्र। ~ जा−सी शाईकी पुत्री। −ञाया−कौ≉ सादत्र । ~ दक्त-वि भारते निका हुआ । यु विवाहके समय भारते

वहरूको भिन्नी हुई कोई वस्तु । –हिलीया–की कार्चिक शुद्धा विद्योषा भैगाटूका −पुत्र-पुरु महीका। ⊷महिट −पु॰ यमत्र मार्द ! −भाव-पु॰ भाईकासा स्नेद्द, मानव मार्रशारा । -वधू-स्त्री भागमः । -इबह्यर-प्र विका वहा भाई ! --इता--खाँ भाईकी इत्या ।

आतुष्यत्र≔य• मिं] यदीया । भातप्पन्नी~ली॰ [एं] मतीनी ।

भानक∽विश्मि] भादेकाः धार्रमे निवा द्रथा । भ्रातृस्व−९० [सं] भावप ।

भाज-५० [सं•] भारे ।

आवीव-विश्व (श्रंश) शाहा संबंधी १ तुश महीया । क्रात्रेष~पुरु[र्गर] मतोबाावि आदा-संत्रेषीः।

क्राम्य~५° (छं•) मायप आतुस्तेह ।

आस−वि [सं] अयतुक्तः सूमनेवाशा । तु मूल पोद्याः। क्रामक∽वि॰ (सं∘) भ्रमजनकः पृष्ठः। अवकानेवासः । प्र शियारा श्रुंबका ठग ।

ब्रामर∽वि॰ (र्स•) भगर-संबंधी । प्र॰ भारींका दक्ष्मा किया हुमा शहराः पुंतका भवरमार रोगः एक वरहका मृत्य । भामरी - जा• [तं•] कुग्री भॉवर ।

श्चामरी(रिन्)-वि [तं॰] अपरमार रोगते पीडिड: चक्रर थानेवाचाः घरदरी वना द्वभाः

प्रामित्त−षि॰ [मै॰] श्वमाना, श्वनका शिलाना हुमा (मेचादि)।

शाक्र−प्र [सं•] आकाशः वद सवतः विसमें मदर्गेने दाना

ब्रास्त्रिक∽३ [मैं] घरोरको ग्दा नारो । आर्थन अर्थन−त नि निवेद देशमें दान दरनेताना

भूकंग भ्रवंस-तु शि] दे 'त्रवर्ष'। भक्टि अकुरी-सी॰ [सं॰] भयंगः मा । भूष-स्री भीर।

म्—न्त्री [सं•] भी । —कुटि —कुटी—स्तं• सूर्धन । ⇒ •मुल्ल∽पु यक साँग । —क्षेप —विसेप~पु भी देश करमा भूतंगः – बाइ–पु भीका मृतः – संग – मेद-ध भी देश करमा या बनाबर रोप प्रकर बरना। ~मध्य~पु दोनी भगेंदे बीच्या रवान । ~शका~ ली वेदरावरार भी । -विक्रिया-सी सूनेय।-

विमास~पु भगेश गेंदद संवानन भगे। भ्रम-पु॰ [मे] गर्भरथ प्रिशु । -ध्न-दि यु भणदृष्या करनेशकः । —इत्या-न्यो॰ गर्मपान द्वारा गर्मस्य निमुद्री बन्दा बरना । -दा(इन्)-दि॰ पु भूगहन्दा बरने

भ्रेप-पुर्विने मन्त्राह्मग्रहरा व्यवस्थान-अन्द्रि शीत होमा हरमा। कते हो होत्ताली भाषात्र ।
स्विधा-को छोटी, वीकोर चौको जो खाटको तरह
सुरको बारिकी हुनी पनी हो ।
स्विकर्ष-को स्वकतेका साव, हर ।
सप्त-पुर दें 'सरस्य'; वहा सहको। —भातिसी—खो
और।

नेती। सच्छद-पु• दे 'सच्छर'।

सच्छर-पु॰ पक बननेवाका कीवा को काम तीर से वरसाय मैं पेरा होता कोर कामसियो-वामवरीका क्न पीता क्या को रोगोंके फैकनेका कारण होता है। -बानी-की॰ सम्बद्धीत क्यानेके किए कगावा चानेवाका वालीदार परा ।-प्र०-पर तीप कगामा-कोटे कामसिको बाली

रंड देनेके किय भारी तैशारी करना । सण्डर॰-पु॰ दे॰ मिरसर' ! --साध-को मरसर । सण्डी-को॰ दे॰ 'मास्टो । -कॉटा-पु पर तरवरी

शिक्यां - सहज - पुरावानी के सहजे विदिवादर सिक्यां - सहज - पुरावानी के सहजे विदिवादर कारिमें सद्धिकाँ पाकने के किए बसा सालाल वा दीवां - मार-पुरुस्मा, सहादां

मण्डोदरी≉~सी श्रास्ट्रो मादा सरक्ती । सङ्गरेग−४ ण्ड कश्यती , त्रनी चड मस्तर्शन ।

सछकी - बो। एक प्रवास प्रकार विश्व होये नहीं कार-रिश्व बारियों होती है और वो। फेड़केंड बढ़के गक्कावेंड ऐसेड केशा है, सराहत मठकोंकी सहका करका 1-मोहिटा-उ इस्तीका एक पेंच ! - बुदर-पु बरीको पक पुनावव! - मार-पुन महुवा सारोगीर ! - बढ़ा रोक-बाँड मान-में मठकोंड इसेनेडा सो केशों केशकों रोगोंने कामकारक माना बादा है। - कह सोठी-एक तरहका पनावधी

भोतो । सम्बद्धाः नुप्रस्थांका शिकार करमेको भाग । समुक्षाः सर्व्यक्षाः नुप्रसम्बद्धाः करमेका वेद्याः करमेवाकाः,

मारीनीर। मेहन्द्र-वि [स] विश्वका विक किया नवा हो कवित क्या हु० पूर्व, विका - ए-बाका-वि० क्या कहा

डुना पर्स्युक्तः। मङ्गाकृरा−वि विश्वी क्रथितः, एकः।

नाम पूर्तानाव [जन्म] कावता ठवा । सम्बद्धिल प्रमुख कादि हामीक करनेका काम करने भागा अवैद्यालक स्परास्त्री मिसे तक्यानेसे समस्त्र दो। सम्बद्ध

मैजन्द-वि [ब्रा] नजन किया हुआ। बीचा इका धर्म महत्वमें बीन। मस्ता नैप्तन । द्वा वस सुस्क्रमान कडोरी-ना नर्ग ना मंग रहते और असंस्त्र, अर्वहीम नार्ते पत्तते हैं। हुक -की सक-बसंस्त्र प्रनाप पर्गतेनी नरक।

सङ्गर्-पु॰ (चा॰) बकरतः समदृशीचर काम करनेवालाः सीरियाः पनिदारः उत्परकाशे बीविकः बरधेवतकः। -दम-पु॰ गंवरित अभिकार्यः। -संब-पुः शिवते वा व्यवहार्वितिवेदे सन्दृर्शकः रिवः।

महर्गुरी-सी [का] श्रारेशम बीस दीने जादिका व्याप त्रदाव वारिशिकः। —चेशा-नि श्रेवनव स्थ र्रोकः पेता करनेवाकः।

मबना॰~भ कि इचना निमश्र होना।

मबन्द्धा नावस, कैस बहुत दुनका-पत्तका बाहमी; केर सबन्। सबबह-पु [अ॰] बबह करनेकी बगह, वशस्तक। सबबह-वि॰ [ब] दव, पदा, ऊकाठ; पुट, बकसूत्त।

सञ्जन-वि* [ब] पानक वामका सिक्षी वादिन किसी

पर सरनेवाका ! पु नरवीकी प्रशिक्ष प्रेसकता केला-

--विक्रका-को दिल्का व्यक्षित । समृब्दी-को व्यक्त किल्कानम् समस्ता, तस्त । सबद्द-वि [क•] विसपर वज्र विद्यागमा हो, विद्यु,

सबब्द-नि [श•] विसपर वज्र किया गया हो, निका कावार ! सकपूर्त्~स सम्बद्ध होकर, कावारीसे !

श्रमक्र्री-सी॰ विराजा, काषारो । श्रममानपुर [म॰] कोर्गोसे समा दोनेस्त्रे सगद्दा भीत, समाम । "उद्यक्त समाबद्देश्युर । श्रममुखानि [म] वसा दिया द्वारा संगृद्दोत । पुर सीशा संप्रदार गाँउ देर । —(ए) का द्वार –पुराचा निवासी विराज संदर्भ दिसे हों । —साविता दीवासी –पु

ावधम कर दन मन्द्र हो। - ज्याविद्या दीवानी- इ धीवारी प्रकरामेकी विचार-विशे नवानेवाला क्यानून संग्रह। -व्याधिया कीत्रवारी- इ धीनदारी प्रक-वर्गोकी विचार विशे दवावेदाला क्यानुस्त्रीम । -दार-, पुत्र मुगलकाकका पक मांक कर्मवारी। प्रवादक-वि स्कट्टा कुरूका (-क्यान्य)। सामादिक।

सन्तर्गन-तु [ल] केसारिका विषय, केरादिसं तिषद भाषा विषय केस तिर्थश - नवीस-तु केस विस्तर्ग बाला विषयकार । नवीसी-तो केस विस्तर्गका काम । नविसार-तु दे॰ 'सक्स्तृतनवील'। - निसारी-की वेश वाष्यमं व्यक्त करता । - क्षत्रमा-देशे भाष को केस वाष्यमं व्यक्त करता । - क्षत्रमा-देशे लेसी, रचनागोठ माव शिक बाला।

सहस्य-(० (ल.) विदित तुरा मीच । सहस्यत-जी (ल.) तुरारे निरा सर्छना । सहस्या-(१. (ल०) बोता-पोदा हुना । पु. बे मीरो हुर्र बमीन थेत ।

समस्य-वि [भ] योद पाना हुआ, मारा हुआ। तु० विका। समस्य-वि [म] विवे पीद करी हो, सदसी पानक।

शतकिस~ची [त] करुदेशी रेटनेशी काश छता। वरिषर् बरुमा। स्रतकिसी-वि छमार्थनी। प्र समाप्त स्रोतेन

वाका सम्बन्धः आज्ञासम्बन्धः विक्रो शिसपर प्रथम दिया तथा हो।

सहराह्म-वि [४०] क्षिप्त हुन्स दिया गया हो पीटिन, सरामा हुना । सहराह-प्र [न] रास्ता वंच वर्ध संप्रसादा दीला।

नाहरूवी - विश्व प्रश्तिक वर्ष क्षत्रीक्ष होती । नाहरूवी - विश्व प्रश्तिक वर्ष क्षत्रीक्ष होती । तु भंगी निया - स्थाहारूवी - वर्ष क्षत्री क्षाय-रुप्ती रार्ववता ! - ज्याहारूवी अमें के मामक्य अमे

की रहा ना मनारचे लिए कीनेसला लड़ाई। महा-दु [ल] स्वान रस जायका समझा सुस्न, जानेर तुल्ल समझा सम क्येंडल ! -(ह) सार-

वि॰ श्वारिष्ठ वर्णिया विसर्थे सुन्तः, शानेर आदे।

an start regulars Minute-er & um or aber ferreis महित्या≠-दि भूपर ने १६८न ६ भीश-में भवान के बद बुद बान का है है शुक्र ; भीबी-भी कर्निक प्रदेश हुन है मा पुरुष राज्यान है। य राज्यान एक स्थान है। यो REPERCIANTI 2 5-12 6 13 1 mirer-ge be nice s भीत-पुरे प्रदादे सम्। - प्रशास्त्र विकास कर्मम धरावर । भीतीतिक-दिश्हि हे यू जिल्हा रही ह श्रीचक श्रीपद्धा~दिश्चद दा शाधरै इ^{ल्ल} क्टा हरे व । भीत्रीतान्तरिक (म.) कृतिन वर्षः वर्तः वेदा । भौतिक∾स्टेरिक स्वयंत क्रीक्रिक्तिनभी र प्रदेशक अवस्थान के बहुति जा क्षी तीव 47-17 -41C1 મીજી કુંમીલી કે ખરત વક્સ વેઠી એક भीक्ष्यं पुरुष्यानः। भीगम-पु 📑 हेबद्द शुरुष वस्य विगरे वजावा राजान म बर राजा माना हो कार दे है। धीट-६ मि] र सर्वातरको । मीवर्नाः (तर्भ) प्रकारका अर्थन्ये 😅 वे 🖘 वेटन क्षित सम्मेदरा पुत्र देवक, पुत्राती। अस्त्रहा ३- वहा majali étélé p क्षीलक निवर्ग (त्रोक) क्रम विकास कीनिक-दि रिन्द्र अवन्तरका प्रथमकानी का दि है। ወደ ደግኝ የደግ <u>ያመን የች</u>ው መኖሮ የነባር (well fignagers a sherifice mer met ent बर्द्दव अर्थि-स्पर्धित नवाष्ट्रन्युः प्रवस्त्री कारमाञ्चल विषय अधिकामान्यु वर्षात्यकः Beid eifig em meren fin eifen eine bie foreign of the profession of the con-P Bawas Pa Afice at ears मीली कर संदेशका Marting 18 124 1 when we fix me mean o भीराकन्द्रा ५ १ = १६ / Marin Can Cure, Profile THE PART & BANK attereut an man gam mit ma -/24 2 te maldader nural eyden वर्षप्रदेश नक्षा न न् --- 47 Egg -- 44 भेपद्रश्रीका चप्प क्यानाम के लेश हैं है भोक्रमान्तुः । प्रश्नानिकेत्रस्थानं सन्दर्भ Park J I fitrent ? भीक्षापुष ५ (च. भारतार L FLA SELLES al wanter * AND L SLAME the M menes of the A

一口作的水 生芹麻籽豆

र्श्व भर हो

मीरण्यु ६ रण नेसामें तेन, इद हेर । Bilang fel laterage भी दिरा-भी क [तम] हर नव र atigatofic (palls of principle) श्रीगीलपुर एवं शुजार दरनेशका परिला ४ र्थात सग-१ [ए०] इन्य (द्वारा, इत्य इत्य यन कार्यन विश्वतिक होता. क्षीत्रक्ष व भीतम् भीतम्-१ [»] तीने दिश्यः वस्यः क्षेत्रा १९ क्षेत्र है क्षेत्रक ह स^{ित्}पल्सिकार्ग) शोधे तिम बन्दार्ग करिया र ग्रहाँ (निष्) निर्दाति क्षेत्र हो देशका देशका । सार्वेशना बारता द्वारेशना । संबंध-५० (११) भी रहणारी हर १ स्ववृद्धि-क्षेत्र (क्षण) हे अस्ववृद्धि व स्रज्ञन-५ [म] मुक्तर-१ 11 Phys 2 (44) 5 Page 1 स्पर्यसम्बद्धाः । विकास स्थापन ध्ययं न्द्र कि विश्वास चन्नदर सूच्य अप्यान विद्या mend and (51 supplying extent thinks. अवन्तर्गा क्षत्र वन्त्र क्षत्र भट्टेग्ड क्षत्र है। सम क्षांप कारायाः स्वतंत्रः अस्य संभागः - a fi(fig) ft do end to mitted be महरू र - प्राप्त-पुर के प्राप्त । - मूचक 🗘 स्मरी क्षान्य प्रप्रात्त्वे व्यक्तान्तुर अरहे ही अने करहे tagen and the statement made to unn 3 [m] gen feen um afeim बचरा कर येथा = बारो(सिंब) fr १० १० १० guert -fenften-3 es dut -dupert. मन्द्रास्त्र वर्गसः वर्गः स्टब्स् स्टब्स् र ब्रासको नभी व हिं है सक्षेत्रकोत्तर विष अवव स्वारेश enelula i foliantenia egant सामानुरी को (१४०१ मही का दोन मारिक मारिक 4 1 APR CHIEF I MEMORING & MATE 4 the state of the state of the state of the state. S MA W BYN क्ष्टबर्देशक नामा है। अपूर्व है Minton I you will the way water wer werge - mien 5 mit tal tal ate we want need to to \$ to ny wen the nit at waters of men fort when as he ed that who are diffed as it save for engeliest again melerur Constitut - feur y mellete meren aufwinferen au ries atr ments of anni femineral ever west y take a surface of smant des dates from yes mer # 1

REIT -ET - हमी नर्ग अप्या अप्या श्रेष्ठ - विश्वति स्रोतः-रमन्त्र होता सार्वेदा सार्वेद स हिल्ला। अवस्तर अ वाबा-पून प्रकारित क्षेत्र शेला - स्वास-विदेश चन्न प्रभाना तत हैया।=म्प्रवा-शा योगान तृत्व का तार न(हे) का-मर्गाता है के देशा करा पुष्ठ, बाद चयात्र अस्ते हो। नशीकण-नशहे ही प्रत्यक्षे क्षा । चया-प्रश्नामीक क्षेत्रके । महाप्र - पुर (म.) असमेदी साम्रा कार कार्या करेंद्र und biein fiel fiendi : - mife-fer frieg प्राप्त = प्रपारत = प्रश्ति = व्याप्त = र प र्राइक्षेत्र सम्रा ETT-4 (C) प्रकृतिकृत्यां निर्देश हिन्दी । ७० सक्ष्यां वे व Harp-le (u. j wererte ufer aferenne पु अपूर्णन्द अर्थने भरतर पा: वहरणी : -(H) शक्षाचन-३ है। अते दिवद बरवेदा चर्च 2 2 27 1 अप्राप्तम् अ अन्वदरः साम्यानेः निवयाम्भारः सम्प्राप्ती - वि साम विश्व वर्त पट, परामहाह क्येंट्रीव fett Remble सप्राप्त-पु (mo) दिए गाँगी कार प्रमुखा कर र श्रावणीं । स्रोप रेट्टी, बार्वरी । प्रचार - भी । (सर्) चर्चा, सम्बद्धी, सक्ष्युर व man -afte & "x"pe 1 स्मित्रहेर प् अ रे यो श्राहेत्वारे सुक्रे बीर सम्बद्ध Mirel E R & Term; prere : मोलाहरी को बनाहेका कर बच्चा क्षीकड़ेराईट market # महोद भीन यह नगु निष्यों भरी और प्रविश्लो व च्याताल महित्रका अपर है। सर्थाते नर्थः अवादः (लगः क्याः **द**र्थः) mate west went ያያትያን ያን ይመር ተንድነር ብር የውቅ የተነ የእት for ex-1 8) सर्वत्त्र न्यू र निर्मेद वर कुल्लाके । हिम्पर वर्ष कार्य १० वेश वर्ष १ payled \$1 678 3 #321-m el 3211 man at 3 and a BRA Ziga Cele me Bate Mere Batt Statement of editionism sections PRINT T OF P SOUNDS proved ter feest effe ein me eiter All 36 plet as more materal againsts. 4 874 876 - 188-1- 24 (w) + ed a service erter also by and a er/we) Made of 3 as Billion of the same of the State of the Stat

where the month of the state of the

हैका किन्दी देन अन्ति हैक्की क्षेत्र हैक उन स्व म एका का लहे ज बका । महारू-दिश्ची वह , १९७१ची १ सहायान-संरक्षित नैहरू बहेड बाबा। का हिर ASTABLE, Advite RRTFFFF TV2 ELGZ 1 मुराजनाव-मा विश्व मा वि हेर प्रभूषण र मिरियान नम हिन्दा होता। Rutter-? Erm dat. 1 Effe-olo E, ker 1 महामा-पुर वयांत हाते वहता राजा सर्वत tu tent t सहोक्-मुरु बेर्गधरीचा एड की स्मा है है । इति । क्षाप्रोमा:-विषयप्राप्त व शहर वर्ग वर्ग वे थीपना ब्रह्मीनी-को बोर्डरीय एवं को सर्व दव माहर कि try's fee are to be represent न्हेंतान-१ अरुदेवत ११वे हेंने। व्याप्त १४४३ -र्राष्ट्र-दिन जिल्हे तथा, संस्थान सरक्ष-भी शाक्ष्मीस अन्त असीव अन्य अप्रतास्य [#4] श्वर १ र्याच्यानसम्बद्धः अभिन्नार्थाः कार करते ही कार ने हिलाना बहुका कर गर है। Ttel 1 अरहर्त्तिण-भीत्र देश देशहरू । बरका-पूर को हैं। देश का अपन streeting the first such small fix काल को लगादी जान्ये विकास वर्ध र । साधी न्था । शेरा साथा साथ । arefmefte arefen : MIT-T CE ELLA MA DOUBLE CAN ME EVER A mit and \$1 washed the steel and विश्वा न्यानीन्य हे अवस्थित न्यूर है करा है हो हम्द द बाद जुश रिकाबर समारी ही हैंगी न्द्रीपन्तु सम्बद्धिमान् हेन्छ। अर्थाचान्युः वीवै विकादक वातः । करिकारण्यक है। दिहें क्यार येजनार न संस 4 ft) 2 Milenay seath, expended file bet the graduate surply to seen but they are the marting which is an white filling to have extent कोर्ड हर केर जिल्ला रह महीना होता है। الراخحة وإدعاره BYRTH POR B AND P Stight Single wifer Site 845 5 Manda fen' an total ted at helm day Mindel Mil 1 MEN I HER WALL Manufacture franchist and the say law

1005 भ्रमरातियि~प [ई॰] चंपक≀ भ्रमरानंद−वि॰ (रं॰) बङ्गक वृक्ष । भगरारि-पु • [एं •] दे 'भगर-गारी । भ्रमरावष्टी-सी॰ सि॰ो मीरॉक्ट पंक्ति । भ्रमरिका-का• [सं•] चारों तरक पूमना । ग्रमरी-सौ सि॰ो मादा गौराः पार्वतीः अ<u>त</u>्रका कता । भ्रमारसक-वि॰ सि॰ विक्रेमें बालनेवालाः संदिग्य । भ्रमामा≠--स कि॰ बुमानाः वहकाना भ्रभमें दा**ण**ना । भ्रमासकः—प मि] तुक्ष्वार वादि साफ करनेवाका । ग्रमि−को [4] चकर कुम्हारका चाकः सरशः मैंनरः बतुनाः भ्रमः मृहः मैनाका पश्चाकार व्यूच । श्रमित्र-वि [र्:] वृगता चक्कर याता हुनाः युगानाः भक्त बिकाया हुना । −तेल्ल −विश् वेचा ताना । म्रमी(मिन्)−दि [सं] धूमने च€र रामेवाकाः भ्रमनुष्ठ । **समीन=**-वि॰ समग करनेवाला । भ्रक्तिमा(सम्)-सा [मं•] एग्रहा सतिवार । प्रष्ट~वि॰ [सुं] नीचे गिरा दुआः विगना तुमाः वृतित मानारवाकाः धीनः नद्य-से च्युन । –क्रिय-वि विसने अपना विदित्त कर्म ध्मेड दिवा है। - निह्न-वि निहासे वेंचित । −सार्ग-वि को मार्गभ्रूक गया दो । −क्री-विश् माग्वहोत्। **भरा-सां** [सं•] पवित सांद्यरिया। प्रधाचार-वि (सं•) जिसका आचार निगइ गया हो। प्र दुविन बामारः वैर्देशानी । अद्यविकार−दि[मं] परच्युतः। भारत-वि [तं] मूला हुनाः झमञ्जूकः देरानः, परेघानाः

भगाः पद्धर याता द्वभा । पुरु मतनाका द्वापीः बत्राः भ्रमम बहुरः भूतः।

भौतापद्द <u>ज</u>ति ~सी [मं] अवहति अवस्थारहा यद भेर, यहाँ किसीकी किसी पदार्थमें करन परार्थका अस ही मानेपर सबी बाद बहबर उसका निराकरण विमा भागः

मांति दूर फ़रनंदे किए सुबी बात दहना।

भौति-सौ [मं] सन्धार्थ द्वाग प्रमः चटरः अस्थरताः र्जीक्ष परशहर यह समापकार वहाँ क्यानके सरघ क्षमेनकी हेरानपर प्रथमानका निश्चनात्मक अस हो। च्चर-नि भ्रमबन्ड। -शाहाश-वि भ्रम भौतिसा नोघ करनेवामा । पुश्चिव । – इर-वि ऋतिका नाश **ध्र**मेबाका । दुर्मत्री । घोतिमान्(मन्)-वि [मं] भनतुकः परस्य साधा

प्रवा । प्र प्रकाशनिहार, भौति नामक असंबार ।

भाव-पु [मं] एक मामः सात व्योगिन एक । भागद-पु॰ [रो] लवामें (इनेबाना विश्व (बा ने) र

वि भगकानवारा ।

भाजनु-दु [सं] दोप्ति चयक्र । माजन-पु[र्ग] वमकाता।

भाजनार-म कि गोनित बीमा वसकता है

श्रातमाम•-वि श्रीमायमाम्। मात्रि-स्ते [1] बमर, दीप्ति।

मामिष्यु-दि [तं] बमक्नेताला ८५० विष्युः दिव ।

भ्रासी(जिन)-वि॰ सिं॰] चमक्रनेवामा, शीरियक्त । आत≠−प्र 🖡 'भावा' ।

ब्रासा(तु)-पु॰ [मं॰] सथा भार्र । -(नु)गंधि,--गंधिक ~ वि सिर्फ मामका भाई। ~क ~ प्र• साईका पुत्र। ~ वा-ती भार्दकी पुर्शा - आया-की मादन। --वृत्त-नि मार्रसे मिला द्वला । प्र विशाहके समय भार्रसे वहनको मिली हुई कोई वस्तु । –द्वितीया–न्नी कार्त्तिक शुद्धा वितीया, भैगावुष । —पुत्र –पु मतीया । —मांद -प यसन मार्र । -भाष-प्र मार्रकासा स्मेह, मार्ड,

मार्वचारा । **~बध्-स**ी मानम ! **~इवद्धर~प्र•** जेठ

पतिका वहा भारे १ ~हत्या - सी भारेकी इत्या। भ्रातुष्पुत्र∽पु[र्श•] मतीया !

भ्रातुरपुमी∽सी [मृं] यदीनी ! भारक-वि• [मं] भारका गाउँहे विका इसा ।

स्रामृत्व-दु (सं०) भागप I भाष-पुरु [मंत्र] भारे ।

क्राचीय-वि॰ [सं] शाता संवर्ध । प्र मतीबा । भानेय-प्र• मि] मतीजा ! वि भारतःसंग्री।

साम्य-प (सं•) मावन सारुस्तेह।

भ्रास−वि [र्ष] भ्रमपुरुः पृथनेवाला । पु शृक्ष भोसा। आसक-नि (सं॰) असवतक, वृद्धः वहकानेवाका । पुः सिवारा पुंचका ठग ।

भागर-वि [d] भगर-धंबंधी । प्र+ मीरोंदा रकटा दिया हुमा द्यद्वरः भुवकः अपस्तार रोगः यक तरहकः मृत्य ।

भामरी-सा [सं] हुयाः माँगरः।

भ्रामरी(रिन्)-वि [र्थ•] अपरमार रोगने पीविता पक्रर सानेपाला। धरवसे बना हमा ।

प्रामिष्ठ-वि॰ [में] हमत्वा चत्वर विकास द्वार (मैगावि) । आक−त [सं] आकाषा वह अधरी विसमें भद्रभूति दाना

भगते 🗗 । ब्रास्त्रिक−<u>त्र्</u>र्मि] इरीरको व्कनाती। झक्स, झक्स-प [सं] श्रीके देशमें काम क्रामेदाना

भ्रह्म भ्रह्म-९ (सं] **१** भ्रदा'।

भक्टि भक्टी-स्म [मं] भूमंगः भाः

भ्रव-सा॰ मीर्।

ज्ञ-मा [ग्रं] मी। - हरि - हटो=सो प्रसंगा -बेमूरर-पुथक साँव। ~क्षेप -विक्रोप-व मा देश करमा भूनेग! - ब्राह्-पु भीका मूल। - भंग -मेश-९ मी देरी करना थी बहाकर रीप प्रश्न करमा। -मध्य∽तु दीनी मचीदे शेवस स्वास। -लता-स्तो मेदरारदार था । **-विक्रिया**-स्ते भूनेग। -विकास-पु अवैद्धा गोइफ संबादम भगा। अर्थ-पुनि] वर्धेन्द्र विशु । -रब-वि पु भगदाया

करनेवाना । --इत्या-न्दी गर्वपान हारा गर्वस्व छिन्।दी इत्या करना ! -हा(हन्)-दि तु मृगहता करन

धोप-प्रिंगे नागा गमना दरा स्बद्धसमा०-अ० दि औत होना दरना।

**

1+14 निकास किया गया थी। करेंछ । गठ~पु॰ [तं] छात्रावासः साधु-सम्प्यासियाँके रहनेका स्थान, भाजमा देशाच्य । - चिंता-सी॰ मध्या कार्य मार। -धारी(रिन्)-प्र भठका प्रवान सम्म्बासी । -स्थिति-वि यस्में रहनेवाका । मस्रना-५ अमारी और क्षेरीका यक भौजार। मठरी-सी दें 'मठली । सरमी - सो सेरेको बनो एक तरहकी नमकीम सिकिमा। मठा-५ दे॰ 'मडा' । मदाबीश-५० [सं•] महेत । मध्यवतुभ−५ भठः विधासक। मद्रारमा न कि॰ ग्रीकाई कानेके किए बरतमको सक रमेसे पीरना । मिटिना∽सो+ होता भठा फूक्फी बनी हरै जुबियाँ । मसी चौ सिं∘ी क्षेत्रा मठ । मदी(डिच्)-प [एं॰] मडाबीस I सदबी-को है 'मठकी'। महोदा-पु कुएँकी बगत । सदौर-भी दही सबनेकी सदकी बीड बनानेका माठ । मठौरा−प्र• एक तरहका रंदा । मक्डे-ली करा जारिके संगीवर अपार रखकर बनावी हरं इसी सोपदी ! सक्राना-व । क्रि । देश मेंडराना । सद्वा-पु॰ हे 'संहप'। सब्दर-- पु॰ दे 'सर्बर' । मदा-५० 'मादा' मासक नेपरीगा प्रकोत, कमरा । सदाक्षां - प्रस्ता वाकार पोसरी। मेक्यार-पु॰ ध्रश्निमाँद्ये एक बाति । म बुका-पुरु एक मोदा भगाव । मदेया-की मदर्श भोरती। सह-पु: मठ । दि भी एक जगह दें जानेपर वहाँसे बस्द इदे लहीं। महना-स कि ऐसी बीज बहना कवाना निससे पूरी वस्तु दद जान (तसनीरवर भ्रोडा चीरारा, मेवपर कवना) गामें हैं हुएए जमहा लगाना। बोएना (दीप) ! मह्माना-स कि प्रतिकाकाम कराना। महाई-सी महनेदा दामा महनेदी मनहरी। मारी-को छोटा महा छोटा मंदिए। कुटी । मदेवां−५ बढनेवाला। मणि-दु को [मं•] बहुमूश्य और कांतिवुक्त शर्मर, रेष जनाहिरः मेप्रजना वक्षरीके बलेको बेली। किंगका व्यममाया योजिका अध्ययाना करात्रै मनिर्वया यहा है "चंडम-तु रसमरित बोडम । —कंड-पु मीलवंड ची। ~ इंटब-तु सुगौ । ~ इर्विका-श्री अधिमय केर्गम्बनः बाधीका एक प्रतिक तीर्व वर्श कहते हैं वि विभुद्धे इत्बर क्याना देसकर विक्या शिर दिसनेमे वनदे कामका मनिमय बुंटल गिर गवा । ⊶कर्णेश्वर-उँ कानकपरा यद शिवस्थित। —कांचन – पुरक्ष और भीना। - • योग-वु राज और सीने जैसा शौधानीर रता वर्णनेवासा संबोग । -काच-५ रखटिका वागका

पंजनाका हिस्सा । -कार-पु॰ बीहरी। जनाक गहसे वनानेवाका । –कुंडस-पुरत्नवटित कुंडस । –कुर-पुरु कामक्ष्मके पासका एक पर्वत । -ग्राण-पु पक वर्णकृतः। --प्रीय-प् अवेरका यह प्रता । -- शारक-प्र शारसः। -तुंदक-पु॰ पानीपर रहमेवाका एक पद्यी। —वीप—प्र रत्नवदित शोपः वियेशः काम दैनेवाला मनि । -दोप-प रत्नका दीर । -दीप-प शीर सागरमें अवस्थित मणिमव बीच की त्रिवासंबर्धको निवास-स्वान माना वाता है। -धनुष्(स्)-५ शंहवनुष्। ~बर-पु॰ खाँपः एक समाधि । ~पदा-पु॰ एक मोधि सस्य । -प्रर-त• भारतम और वर्मान्ये सीमापर सदरिशत यह देशो राज्य। उसकी राज्यामी ! -प्रथ्यक्र-प्र• सह देवके एक्स्प्रा नाम । -पर-ए सपन्ना नाडोदे संदर माने इए छ क्डोंमेंसे तीसरा बिसका स्थान जामिसे का कपर माना वाता है। ⊸र्थभ −तु॰ कर्राई। ∽र्थपन – मणिवाँका बाँचा जाला: मोटियाँको करो। कवाई । च्चीअच्यु जनारका देहाचमद्रच्यु≉ एक वश्चाल मङ्गक-पु रक प्राचीन बातिः एक मागराव । --मारव -पु॰ शारस । -मिश्च-की घेननागका महक । --भूमि-सी॰ राजेंकी सान। राजबरित भूमि। नर्बजरी —কা স্বিৰ্টান্ত (কি । — স্বিত্ত – এ° স্বিক্তানিল मंद्रपा श्रेषमाक्का महत्त्व । -मंद्रित-वि॰ रस्म वदा इना । -संप-प सेवा दमक । -साक्षा-की मधि-बॉक्टी माका। कर्मी। जमका यह वर्ष्ट्स ! −सेक्टल ∽ विक मिलवासी पिरा ह्वाः मिलवासी मेघलासे सुक्तः। —मेच-प रक्षिण मारतका एक (प्रतगर्गक्त) परंत । -यष्टि-सी योदिवासी करी। रत्न मही हाँ छही। -रश-व॰ दक रोपिसस्य । -राग-प शिपरकः रतन कारंग। -शाज-प्र दौरा। -शीग-प्र एक रोग । **−वर−५ दोरा ! −शिक−**५ मंदरायस**के** पूर्वमें रिक्ट एक पर्वतः । —हयास—उ मोसमः । —सर--प् भोतिबाँसी माका। -सूत्र-प्र मोतिबाँसी क्या। -सोपान-प्र• रस्तवदित मीवी । -सोपानक-प्र सीतेके तममें ग्रंपे इप मेंग्रेतिनें भी माला। - सक (m) -मी शर्लेका द्वार । -द्वारपे-३० रस्तवदित वा स्प रिश्वमे पता महक । सिवान व [र्व] विद्वास बद्दाः रस्तिस्त्रीनिर्वेत प्रासादः वीतिका अग्रमाग । मिष्याम्(मध्)-वि [सं] मध्युक्त । तु ग्रह्मं एक पहास । मचीत्-पु॰ [मं] शेरा। मजीस−पु[र्श•] द्वापः कृषः मोनी । मजीवड-५० [र्व] बेहबात गाँगः यस्पर्यं पद्मा । मधीबक-प मि दिला मर्तग-पु [मं॰] वाबीः बारकः एक राजदि । - प्र-पु मर्तेगी(गित्र)-५ [सं] शानीका नगर । सत-अ म मही (विदेशसम्ब, बैने-मन करें) ! स्रो •

रै मिति । वि [मं] सम्बद्ध कवियेत, माना द्रवाः।

व्यक्ति श्रीवाविवास दुवा सम्मानेक गरावर विवा

श्र-देश प्रती श्रीवामाचे दर्गांश ब्राँट्स स्थेतप्रन्याँ है मुक्तानाराज क्षेत्र क्षेत्र जाविद्या । स्टारी स्टी, अन् A 4-6 5 प्रीकृतनम् (१५ राज्यस् दर्गीतः) प्रीकृत=५ (३५५) भारिता । म्बर्का (वन) नहिं शि अध्यानित संक्षत्र-तु [म । जोपार श्रेपते करव करवार । सीं - भ (तन) हुत्य कृत्यन्तीः अवश्वेत वन्त्य erit: nier-I in] Ra atrenter outrastes? anduly t भ्रती क्यों के ने दें राज्य प्रशास्त्र प्रदेश है वह श भ्रीत-स्रोतः । ज रुप्पत् र पुत्र (स्रो) अत्रवद्वा स्थाना स्वातः । र्मेशक संग्रह-दूर रिययन कालका श्रीहरू (मधी के में के अपन कार कर कर कर के अपने के पत क्रील नेकेट क्ष्म देश्य की दुई भीवा क्षाप कार्य बारेश रस्य । न्वी क्षेत्र-पुत्र बीगा हैनेश श्रीवर अर्थ वर्ष व होगार-दुर (में] हाल के सम्मार्ग ने भा कर्माह आहि। रिर्देश में (प्रेरवंदर बंद बार जो पुष्टिंदर बुद माना बील Elementiften wirdet meift wer-4 (L. I'M EN ROPTE) 1 TEI EC 1-BER-कर्र(म)-५ दणरेश्वरे अक्षण के विद प्राचेता है बाला । - बल्या - तु देश याल्यक्षी : - काम - दि क्षापनी देग्दर्श सार्वेशका शृंधिके**। -क्षाल्या**-मो । प्राचामार्थे स्ट एता । अक्षाक्षक क्षामी(विक्र) नदि । 414प्पर P 1 - बार्य-पुत्र पूजा वर्ग्ड अवाप साम बर्गरा रूपर । -क्षम वृ श्रुरवरी १-छोत-पु प्रजन्मीहे रूपच सरवा संवेशक हेराने वसार - preparation of the state of the bank of the bank whigh a bengwantat man anglas apa : बुच्च हु शुक्ष के है है है हम है या वर्त है हुए। वर्त हम्ब क्रमध्य पर अन्ये ब्रह्म अपेरी-मा १५ देशी हो भरवासम्ब राज्य दशकान्त्र्यं न्यून्य ५ १ व wertt tig worde ? - bereit fie wurgen ergen-bit bramite Reeban मध्यप्रिकारी । अबहे कार पर ब्रीजेर्जी वर्तने ब्राइत FER GE-TUNG Artal a 11 wen fter कार्य का राजा नकारक वे वर्षा का व्यापना वे कार्याना व -efe-fe fen en geet i -en g et इ.स. हिम्म के कर्णकों चार वर्षों हो र बन १४ १४८ ६ दिन एक पुन्न १०४५ करे ACT - EU-OF EL BUT BUT FL HERE ते में नाह रूप पंत महिश **- मुं**ध का सन्तर स्मान्त्रतं कार्याः संजेदानः होतः <u>सर्वेशस्</u> लहो व I would a marked might want (fet) * mertelbruss-un ume

य दु रोजसादेशनद हिंस क्षेत्रका नहिंद क ar thatte for the the feets RR : -ittl-de ficetal Est ; -ilet . j. मधीरमधाने वर न्यूपन्त्र राहरितास्तर व्यक्त समा बानाम है बादने एवं शिक्ष करते हैं रण्या किसी द्वारा सीधि भागा था राजा दर्शन हता। न्याम-पुर वोज्येष व्यवस्था एर शक्ति देशने क्षित्र विका आन्द्रेक्षण्या स्थाप । र्जानमाध-रि (११०) दशक्या स्थापना (शन्तर । भॅगना-६ व्यनी (१३४) ६ - मुस्री-के रेशाः। Minar-ere in I the great the minger शीमी इबाह भी । - अप-पु शिव पर्यां ने बन क्षित प्राजेत्या वर मृत्र मीतकाहरू-पु (नेप) बद शरदार अदर र अंगलकामान्य [सं] शहर वर्षके अपने समा क कारणी की बार्नेटको हैकानुर्गण ग्रंग को निमा अकेरच्या दोर्गंबद दर सर्दर । र्वतनाचार-दु (तर) ब्रेन्स्ट्रिस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस ल्या शुक्ष नुष न । जीतकामान्य विशेषका दिशा स्टूरे हैं। में इंग बचेल है। ह स्चित्स-द्र (१०) ६९७३ श्रीरामात्रम् – दुः (४०) श्रीनाशः भगेरशः मारेर संत्रणस्र-दि (त.) इत्य संस्कर्ता। ऑक्टबन-४ (६) देव रेरा इ र्शनकष्टन्तु है।] देवप देवना, पत्र सेर परिवर्त बर रहते हैं द प वे किया माना है। स्थान्यास्त-त [म]कमानद् र न मेर करा । 医复数性 医毒素 商 成 6 अंतर्की है। जिसे स बुस्को हैंग की बुंग्ली करि बारते का करवे मान का की के भिन ₹= #4# 1 होत्तरीय नोहर हर १ राजस्य अन्या है। Airdrente fo jene ungezunten ein क्षेत्रप्रेक्षप् ५ (१) बन्दरव १५३) # ESULTING S PLOT IN 1 1-350% everage the series for the bet "I at belie and a reverting year فيتنظم مثر اجدا لماء وفيد له بايدين وه per my rest will be within this Leerman in gebe eine ein fo fie 更幸 香日 Borto Rabbon we as ह्र स्व 141 days of at the thirty of the mil

çł ¢

मंगोस-पु मनुष्याँकी पार मूल वातिवाँगेसे एक वो विम्मत, भीन, भाषान आदिमें बसती है और जिसका रंग इक्का पैका तथा सक्त विपयी दोती है।

मंच-पु॰ [सं•] साटः मवियाः मवामः सिंदासनः रंग-म्मि। "संदय-पु॰ पसकती रखनाकीके किय वा विवाहारिके अवसरपर क्लावी हुई गचान । -यूप-पु॰ मधानको संमाजनेवाका संमा ।

संचक−पु[सं]संगः। मंचकाभय-पु॰ [सं] खरमहा। मंचिका - बो [सं•] मनिवा।

मंखर=-पु: दे: 'मत्सर'। मंत्रन-पु वाँव मादि साफ करनेके काममें सावा बाने गठा विशेष चूर्ज ।

मंबर-पु[सं] मोतीः तिस्क कृकः वस्कीः दे 'सवरी'। मंहर-पु [ब•] दरिहा कामगु दश्य नजारा। देखने नीम्न वस्तु वा स्वातः सरोताः।

मंबरि-को॰ [सं] दे 'संबरी'। मंबरित−वि• [सं•] संबरियोंसे छ्दा हुवा ।

मंबरी-सा [सं] इस्का, बॉएका सीक्रेंग करे हुए छोटे

वने फूला मोती। विस्त्य वृक्षा कवा । तुक्सी । —बासर— उ मेंबरोकी शहका पर्नेर । −शस्त्र−पु वेता।

सबरीक-पु [सं] तकसीः तिकक वृक्षः नंतः मधीक पुरा मोदी ।

संवा-सो॰ [सं] वक्ताः मंबरीः कता । में बाई - सी भाँगलेकी किया; गाँगलेकी स्वरत ।

संबारी श—स्त्री । विद्यो । संवि−तो [सं∘]संवरी;क्ला।~फका—सो बेलेका पेड़।

मंबिका-सी [सं∘] वेदवा। सॅबिमा(सन्)-नो [मं] श्वेरस्ता मनोहरता।

मॅक्सि-को [भ] बदरने या उदरनेकी जगह पहान, प्रकाम। एक रिमका सफरा मकामा पांक्सका मकावका दरवा या ध्रक्षः वह स्थान जहाँ बाक्के भीते वहते बार्वे ! ~गाइ~च सी वतरमेदी सग्र। -(के)मक्स्र्र-ची असक मुस्दर। ~इस्ती−तो जिल्लो। मु•~ बद्धना-मद्भान दनाना । -भारी होना-वात्रा पूरी क्रमा क्र**ेत्र होना। -मारमा-बात्रा पूरी कर**माः

मुरिकन इस करमा । मॅबिशा∸सी (सं] मजीकः −सेड्र∽पुदक प्रकारका मनइ (सुन्त)। -राग-चु मजीठका रंगः मजीठके रंग

वैसा पदा स्वादी अनुराम ।

मंत्री-स्रो [सं] मंत्ररीः कता। मंबीर-इ [सं] दुंपस, मृदुरा मशानीका रोटा श्रीवनेदा

रांना। वह वाति । र्मेंबीस−५ ३ सत्रीसः।

मंत्रीक-तु [d] वह गर्ने त्रिपुर्ने शुक्यक्वसे भीती

मंह-१ [तं] संरर मनीहर। -केशी(शिक्)-पु॰ इन्द। रि गुंदर वाजीवानः। -वाति -वासव-रि धेरर पात्रवाचा। −गमना−विकी मनौहर् गति-मार्गास्यो इसिमी । −शत⇔दुनेपाकः −शुद्र−पु

मनोहर ग्रंबन । -धीच-दि भपुर, मनोहर बोकवाका । पु॰ पंडुका एक पूर्व दिना वर्गप्रचारके किए बीन बातेवाले एक वीद आंपार्व । ≔भोषा≕सो≉ एक अभारा । —चेव−पु मंसुयोद। —नाम,-भह्र−पु एक पूर्वविन, मंजुबोव। -मायरि-को संदर को; दुर्गा रहानी, सभी। -पारक-पुरोता। -प्राण-पु -मापिणी-वि•सी• मधुर गाविगी।-मापी(पिन्)-वि म<u>भ</u>रमाची । --वक्त्र-वि॰ सुंदर सुखनका, सुंदर । -वादी(दिन्)-वि मधुरमावी। -श्री-पु मंझ-वीत । ~स्वरा,~स्वर~वि॰ विस्त्री जानाम का बोली मीठी हो। मंह्यस-वि॰ [एं॰] सुंदर, मनोहर । पु॰ इंगः धोता।

र्मण्र−वि॰ [स] जो देखा गवा हो। पर्छर किया हजा। स्वीकृत ।

मंबूरी-की स्रीकृति, मंबुर होना। मनुषा-को [र्ष] पिटारीः मनीठः पत्वर । र्मयुसा−सो∙ हे 'मंबना'।

में इस्ला−वि देश 'महाका'।

र्मामा~तु दे 'मॉहा'; बंदेरतके गीक्के स्कड़ी। वरकेश हुँक्का। ≉ वि मञ्जा, वीक्सा। सँड-पु॰ (र्स॰) मेरेका बना एक फ्कान माठ।

र्मंड-त [सं] मॉक्स सरा मकारी सुरा। परंका एक शाकः मद्वाः आभूषमा सेवकः। ∼प≔वि माँदः पीनेवासा। पु दे॰ क्रमते। —हारक-पु मच थनानेवाका कृताल। मंदक-त [नं•] वह प्रकारका विरुद्ध वा रीथा गीतका रक्ष भंग।

र्मंडन~दु [सं] समाया श्रीपार करना; आमृत्रण; शुक्तिः प्रमाणसे पश्च विशेषकी पुढि करना; नि स्टेगर करने-वाका। ∽प्रिय~वि अनेदारका प्रेमी। ∽सिम्र-पुर समितिक भीमांसक की कहा जाना है कि शंकरावार्यक्ष शासार्वेने रहावित हर थे।

मंबना - स॰ कि सवाना सेंशरमा दे 'मॉइमा'। मंडव-पु (६०) छावा हुआ पर बारी ओरमे सुना ह्या वैद्योका स्थाम मेहसा क्रिय (तेसे छठामंडर)। वि

दे॰ 'मेर' में । **भंड**पक-प्र [सं] छोटा मंदर । मंहपिका-सी [मं•] छारा मंदप । मंदपी-सी छोटा मंदपा मरी।

मंदर=-५ ६ 'शहक'।

मेंडरमा=-- म कि मंडल बॉबना। सब भीरते पेर क्षेत्रा । मेंडरामा-अ कि संरक्षकारमें यहर हैत हुए उरनाः क्रिमीके आए बास बहर कारना वृमने रहमा। में हरी-मा पराचनी बराई।

मंदस-पु [सं] मीत देश इतका बुंग्सी। मूर्व-वनका विवा वर्ष-बंदके वर्ष-गिर्व ववनेवाला घरा पर्विका गीवा तमूह मेटली समिति। एक प्रकारका सैन्द-स्पृहा पार. कार्येच्या वस संदा ग्रहीका यतिसम बच्चा दिनिका विका प्रदेश साम-समृद्ध रह नरहरा साँग कुरा। एक तरहरा कुछ रीन जिसमें शरीरमें गीन मुस्टेर दाग

र्देरिया। -श्रंची(चिन्र)-पु मसुआ। ~सुद्रा-सी तांकिक प्रवासे व्यवस्त एक सुद्दा । - एक,- रंग-पु॰ महर्गक्यो। -राज-पुरोहित नारोह मछकी। विरार-मरेश । -विद्या-स्रो० एक पीथा । -वेश्वन-प्र महन्त्री परिवासिका साँदा, वंसी । -वेषमी-सी पंस्ता, इॅरिया। --हा(हम्) --पु सञ्चला । सरस्याक्षी-को [मुं•] सोमल्याः त्राहो। गावर वृत्र । मत्त्वाइ-वि+ [सं-] प्रद्यको साक्षर रहनेवाका । मरस्यावदार−५ [सं] विन्तुके दस ववतारॉमेंसे पहला। सरसाधन-पु [सं०] मद्धरंग पक्षी । वि॰ मद्धकी खाने बंदा । मस्यामन -प्र• [मं] तांत्रिक सावनोंमें व्यवहृत एक मर्स्येद्रमाझ-पु॰ [सुं∗] मध्यकाइके एक प्रसिद्ध इट बोर्यो भी गोरखनाबद्धे गुरू थे। मस्स्रोतमा−स्रो [सं] सरवस्तो। म्ब तीम महोवरी। मस्बोदरी(रिम्)-प [म] विराटराव। मस्योदरीय~५ [सं] व्यास । मस्स्रोपबीची(बिन्)-पु [सं] मसुवा। मयय-द [सं] मधनेकी किया का मान विकीवनः वना क्षेत्रा गनिवारी मामका बुख । -पर्यंत-इ मेररावक । मधना-स कि बाबोदन करना, दश, दहीको नवानी भारिसे विकोनाः किसी वातको बार-वार सीचना निवारनाः सान शबसाः (कोडेका) ग्रहमेदे किय बीपना, स्केशसे व्यक्तिक करमा। नाष्ट्र, शक्रम करना। इ सवानी। मधनाचछ-पु [सं०] मंदर पर्वत । मयनियाक-न्ह्री दे 'सवासी । मयनी-को दद्दी मधनेका मदकाः मधनेकी कियाः मधानी । मधबाह-पु दाथीवान, महावतः मस्तक-गोहा- दिस्टि पर्देगे देर म अला। बनु मनदाह रहे शिर काल'-प । मधानी-स्रो वही सबनेका संबा विसक्षे कत सिरेपर ब्दानदार सोरिया समी होती है। संचित-दि [मं] समा द्वाराः पीटितः दक्तिः । पुण्यद महा वित्तमें पानी न मिलाया यथा दो। मियेता(त)-वि पु[र्स•] नास करनेवाका । मधी(धिन्)-पु[संग] मधानीः किस्मः कत्र कान्। मपुरा-तो [तं •] प्रश्नादलके बंतर्गत वक प्रशिक्ष लगरी भार तीर्व मी मारतवर्वकी मात मोधवाधिका पुरियोग परिवर्णित है। -नाथ-न कृषा। मधुरिया-वि मधुराका। मपुरश-९ [सं] कृष्य। मयूल-५ मस्तून। मध्य - पु है 'माना'।

मर्निका सर्वती-स्री [ध] ण्ड शृति (वेवीत)।

मर्-सा [ल] दे 'सर् । च [ले] सप≰ संवतनी

मनमें दीनेवाका विकार, मधाः मस्तौः मस्त दाधीको कनपटीसे शरनेवाका बका धामादा हुवी गर्ना करें 'सथ'। ≉ वि॰ मत्ता -क्ट~पु दिसका नपुसक, पंड । –कर--वि॰ नद्या पैता करनेपाला । –करी (रिन्)-प मस्त हाथी। -कस-नि॰ मस्त मरी-ाचा भारे-भारे, भरपह. शोधनेवालाः मस्तामें मूखा दुआः शक्का । −क्रत-वि॰ भदकर, महा पैदा करनेवाका । —कोइल-पु॰ सॉं≢३ ~गंध•~पु॰ छतिरमः मच । -राधा-भी महिराः सक्ती। -रामम-प मैसा। ~शक्र~दि॰ दे॰ मन्द्रक'ा ~धनी-सी पृतिका। - व्यक्त-वि बी मसेमें पर शेकर स्वक रहा हो। -बल-पु मस्त शामीको कनपटीसे सरनेवाका वक दान । -क्वर-पुर कामज्वर; वक भादिका भई, नका। −द्विप−पु मस्त दाशी। −भा€−पु मदा भारतमें कडिकित पद पर्वत । -पति-प्र• शह विष्ण । ~प्रदं~वि॰ मत्त करनेवाका । ~प्रमेक ~प्रस्ववण~ पु सदक्क । - भंग-पु वर्गव पुर होना । - भंजिमी-की शतन्त्री। -भरा-दि [दि] मरतः भारकताः बसका की मदमरी'।} -- मत्त-वि॰ मस्त मत-वाका, संदोत्भत्त । -सत्तक-पुण्य तरहका पतुरा । ~साराः-वि [दि] मस्त मदमसः कामुदः। सि।• 'मदमाता'। - मकुस्सि-नि नदी, मरती भारिसी अक्रुँदी (अधि) ! - सुकुलितासी - जी वह सी मिससी भौतें नक्षेत्रे कर सी हो रही ही। -सुक्(च्)-दान सान करनेनान्य (दानी)। -मीदिस-नि नरी वा थमंदने भूर । ∼राग−पु कामरेनः मतनाकः। मुर्गा। -क्षशा~सी॰ महत्रकसं नगनेवाको क्योरः एक वर्ष कृत । ~वारण~पु॰ मस्त द्वाबी । **~वारि**−प्र दान बारि। -विक्रिप्त-दि सस्य मच। -विद्यम → बिह्नकित-वि कागातुर । -च्याचि-औ वमस्त्यव । ~बा**क**~प॰ पोद । ⊶र्डीहरू~प् बादी फरू ।~सार~ षु श्रहतृत्का देह। -स्यस-पु धरावकी दुकान। −स्थान~पु मक्कदा ~साबी(पिन्)~वि॰ दे॰ 'मरसुद् ! -इस्थिमी-सी यत दरह्वा करेंव ! ~हेलु~च अरतीका हेलुः कारणः वायका पेड़ । अक्क~की अक्षोमके एक और पानके योगमे वननेवाका एक नशीका श्रार्व निसे संबाहत्ये सरह पाते है। नवीन वि अदक पीनेपाला । सर्फ्ड-वि॰ (ब॰) पूरा हुआ; रिफ(धन)का रीगी ।

सव्भूष-वि [व] दासिन किया हुना प्रविधा अद्र गुरूप − सी (ल०) वह सी का यरमें दान मी गरी

हो स्थसी। सद्द~को [ब] सहायकाः कुमक् । -रार्च-3 किसी-द्व सदावतार्थे दिवा जानेवाना भना वेदागी। -गार्-वि संशायक।

अन्म-न [र्थ•] कामरेवा कामा प्रेमा वर्गनकाका कानि गमका एक भेग भागतः संबना धैनकता गैरा मागतिरी। वतुरा मीम । दि सद्दारकः - बंदवः-पु सारिवदः अनुराग वनित शेमाँच ! - क्षत्रव-पु ित !- क्षत्रह-तु भगरम्बर । –काप्टरय-च करीतः। –क्रिप्ट-दि

nemme benern wert eine felles fret av gram fre unt eratet sim t-mitte-रि. रिराप्त, परवासुध इवा की ३ क्यून्ट्रन्यर प्रदेशन × र द"ने पुर प्राथमा । —वश्विष्ठा ⇔भी । साम साह

41711-4438-4 RERIEL -48 (Ma)- मंदरप्रदेशकाष्ट्रमण्डम् अवश्वन्य वैकासारी वर्षः र्श्यप्र-५ (४) आहेत्वा देश अस्य ३ प्रदेशनकार प्रदेशनकार-दिश (मेर) अंतर है आयापका

و جوالي

र्मप्रताम पर कि है यह अनुवाद विकासी की से हान गर्द हो गेरहा Memfer-y in 18 terrier t elem-fier-e fe lite andure t

श्रीकृतियान्दि (सेर्) वर्गेशन्त्रम रजना द्या । र्श्वरणी कर में में देशक बराने करान्या पूर्व अपन्य र प्रोहसी (सि.म.) - रि. (र.) मेरल एक्स क्रेमी प्राच्या । 4 mirt ereinn weifeit feere mur fin. PER PROPERTY 1

र्माद्रवी इ.-५ (स. योग्भका नामग्रहरद नामा र संवर्ताकरण ५ (११०) ६ एक व अन्ती वंजाका संवर्ता

ereas t अवस्थितः च्या । विशेष अपनेतः व संबद्धानम् (%) देशका बागमः भीक्षाः

र्याहलपुर्वाह । जुन (लन्) एक अंक्षपुर शालास हा 415 को हो दब रहते हाते दुनेशन हे राज्य हाता ह 着をマーミ トイマ ピートリート

संदानको है। द्विरात को स्तान के ब्रा प्रशेकता है। an aferi

प्रेरिक्पली (त् }णश्चाद्धाः अस् । क्षरित्या(म) वर्षः (२५ क्लीटम क्ष श्रेषाणः रेवा १५००) ह होती-को रिका सम्म केश्व है बीच दिस्ता शहर 46. EVERS A RICE STAMPSHALL ALTHOUGH

1401 র্মী কুলালর বার বীশা প্রবাচ ।

ATE I finite as mules sever ser ! the comment of any proper and an m + Etan mme 31 marfauft breit tie ****

क्षेत्रक का पान का का का का का का का का Arts/ wars

3 4 24 (4 15

- In र्मुहान्तु वद औषत्र में बन्दरम्य बम्पेरम्प है बाह

den pertual tolk for may stored ate i a and the bits problem among the them? e ateran managias

arens the sent were all everyther many drawn ary part of probability Park Spot !

t in the court and a server in the server

Trans and antiques a seriege Endergamente entre f End felt. क्यापै-पर क्षाल्या तिरुव - प्रपुत्त क्षाप्त Ren Griffen ! miten aufm enter - Big-de tion at t - Bal-ded ale e tate THE - FRENT WHAT -- MINE LANGER g die guges weld aubereit - e- eine

(a)-2 24 1 -42"(fox)-44"(45) It देश्यक्षेत्र सामान्यक प्रश्निकार अन्तर्गतिक वर्ष प्राप्त -fent-Z Relbestenen Lettinge-पुरु एरे हरने नदे हेंह र ज्यान ज्यानि(हिन्)ज्यन मंत्री १ ज्याप्रज्युन वेट मधीना यात्र । ज्याप्यानीन मोर

द्वारा राज्य दिला एवा १ - सर्वेश्व - राज्य देव - रे throught dails with he have distant ब्ल-प् सप्ति अभित नश्चीय नपीत्र न्य सारा बहुक्त बर्ट क्योप-ए राज व द्वा बाद औ for more workeneds and a fir to

दिश्र द्वाना वन्तर्य - व्युनि द्वा दिन । व्यूनि देव श्राह्य द्वारक इ. श्राह्म मुक्त में प्रतास में है । नवी प्रा कुर देवर १९०१ - बार्स (दिस्) - इ देवर वर emmebre men a fece "fer fe uter लियाल है। तंत्र प्रवास दिवा । जब बजने का का रूप राज्या अस्ति न्या वर सम्मारिक एक ने इन fantate -afente-ge der afte arfret entel fondlan titug de transmere uner

reference continue die nes des

कर्नेन्द्रक, हिराजी हरका, जनकृत्रक, मोजा, ही ए और Profestion of a state of तु क्षेत्रवेद द्वारेश र र स्था निर्देश भी REAL FOR the west weet that I met 17 मक करवर पर्यापन स्टार मेना र जन्म है । सम्बन्ध

mit to a be seene e melle fe feit bet. af the accept to Affre a fie funte wier ta er mutt beeft

RESTRICTED A हरिकालको विशेषिक करवार स्टेर

अधिक पुर्व दिवार राज्य के प्राप्त है । का करका मध्य कर को सहस्र The first to e K k⁵ ?

alliane a finational state on the At in at the after their terms and the P 45 1

difference ?

te mate #glifeq)-g in fail made a whom the end of a serie on order or another there we appear a set forth over er house ore are fi traffe to stre admires estable

344 the net water and the propully & agreers Ready

भ व में र म्हार-पु यम अवस्त्रामें में सहार के नहीं क्रमात्र । च्यानेन्स्य चर्चात्र वाच्या । च्यानेन्द्रियो क्रीता देश रेषि अगारीय नन्धनपुर वे वेश और नहासान्य रद गण । न्यूपीरार्श-को । नेप्राणा प्रवेशको । -रमध-१ िटा -रहमे-१ बारो मनादेश बार शिव । -रिवार-१ अस्तीन्त्र । -प्राप्ती-के तराह प्राप्ता -रिस्(क)-र दिश न्दर्शालको । ५४को प्^{रा}वात लक्कारिका को । with all a-graft (first) -- you was an angree -दु ६ त्यः नवृत्या कावान्त्रा ६ अ व्यागः । ⇒क्षत्रः न्यु सन्दर्भ र न्यायन्यु शिक्षा विकास सम्र सेट । -अवस-पुर्व अक्षारे ६ विद्याच स्थाप र अक्षाप्रीयान-पुर्व petrent - min gelfe I ubd mett es र्नम तर्राच्या पुरुष्य । नक्षत्र न्यू व्यक्तीर व वर्ग रह बाग्रह । - सहीतारकप्यु अ गुरेशह होचारि है जना रमा द द मोज राज्य ही अवश्चार द्वारीने म श्रीपर बागाया क्षीता -श्रीवृत्तेलयु कुम्पा शिपु व लिया-मित्रानीय द्वारीपारे प्रकार मुक्रान्द्रीयः असीवन्तराज्यी वयुवनेत्रणः क्षेत्रकः g menmilen e gefallem gurumen न्धानन्दरं नमः व∟र्षाः संशरः नशर्मन्तुः वर्षाः ning o'd und meif wie ! miffen ale ; Bart germet en miffe ger e menendafie) grant tour get neat to WITH KIND क्षर्राष्ट्रसन्यः । }े न अध्ययः। menter-1 (moltre) प्रदेशकारी । जीवन काली मेरे बाल करता METPHENT (en) 6/10 1 Effetika 7 jan An I memmente in ja umer प्रश्निकृत न्यु अन्यु अन्यु स्थानिको Mangantan an Edlid : Ridamador? (4 jens martitate) betatelle many aparticipation in a security of संदर्भ भी ह A Mirat Säglichen HERMAN ! I HAR E ! AP I HAV I'V AN AM THE STOP 1 प्रार्थ अलान्त् । (वश्वकात्त्रः रोगी) MECHEL & C S SE were a ! tale a de une neur fend | merment im beter REPORTE ON ARE MY THE SE W THY SE E अनुस्थित्या अनुस्थितिका । ४ वर्ष ६६ विद्याप । ३६ व वि १३ व द्वा स्टब्स् perfege (ghat' à ou me fei nebeim who was been used as bearing metergeds on over 1 a site fit are 4 + 494 -** \$44.4 41-7 man in the first

सर्वामा-१० (म. हेच हेटी समय करवाचार meren ar efet con en ere en men मर्गमी-विक्रमारणका । यु अराध्या स्वरेत्यन र अर्रोता है। अन्यक्त रेप्स प्रेस नेहिन अद्देश-हिं हिंगे त्रिक्षा का क्षा अन्ति होने क्षण की दश्च क्षेत्र व मरीका पुर्व [में] कारका दारो। सम्बद्ध से व मर्राष्ट्र सर्गाव(स्)-पु किशे बर पर व मरायुग-वि लि (अस्ट(दार) । सरका-दि विव क्रमानु नवकारता सर्ग्यं सर्ग्यप्-द किनो स्टेंग स्कापन हे देशन विद १ पर १ शहरिक्तकोर स्टेस्ट्राच्या विभाग स्रवाद्यम् - दुव ्रिश्चा वन्त्राता र Ridand mat [no] and Eng! de l'antice extent by the fact schools assess anger steamanger Court fight area in a की पुर्व ह सम्बद्धी – पुरु शाबीन्दर) चंदर बाजू क्याप्टीयाचा र अहरपान-देश (सं र्राजा स्टेंड-४,४४ ट्रान पी र meren-er in I deret ein erne fete अध्यादिक क्या (कल्या क्या अन्य अन् भाग संगीत गर्दे (t or were numerical) सर्चार्ग (रिप्त) व रिन्हे क्षेत्रक र ming fie fe I feur at greit art श्रादिनको (तन्त्री कोल क्रिया है। मार्थिक -भी है साहा ह Mild it in I am und gli ergementer -tu(vr)-uen fe gertärfen t सर्वता था (ल्प) वन स्वतार क्लोरत) स्थ भर्ग with which the same of manage व्यक्ष्म । Michaelpones or State and miles manages स्र^{हरूनसम्बद्धाः} स्व [अ] ५६५३ ५ अपर⁹ स्पर्दे merengag () generat i Maletonia Malebation c. a. miga de p. arthury in I amy works of the decision genera men ber miller g met , the partie of the state of Join or x 1 9 amount metrice for metale fate feet with a s Migration in fee or one mank was the a part has been Budgderberging on for it is in parties on Newson my for grown by it were not not the

का मंद्रक परिषद् 'केविसट'। संघोत्क-वि संदर्भ विस्ता छन्ने वी।

मंद्रोतक-पुश्रीममेतित वह ।

संय - पु [सं] संवता होता स्वातीः धर्मः किरणः पक देवा रामसे बाता पैरा करनेका एक शायनः अधिक मेकः करमुकः कुण्यार गुरुका एक ग्रेरः । -जन-पु सरकता । -तिरिः, -वर्षेट पु स्वर वर्षेष्ठ । -शुण-पु सम्बन्धां । -तिरिः, -वर्षेट - पुरुक्त - पु सुवातीका देवा । -विकास-पु वर्षेट । । निर्मा क्षानीका रस्ती वाँची बाती है। -सीस-पु भरु पर्वत ।

संयक-वि संवत इत्नेवाका ।

मेचम-पु [ई] मजना विक्रोमाः तत्त्ववीयके किय रिजी विषयको बार-बार पदना शीयमा मधानीः रणस्ती आय पैताकरना। -बाट-पु -बाटी-स्त्री वसी स्थानका

सरका भारि ।

संपति - वां [सं] दही अथनेका बरता ।
संपत्- (दि) सुरहत अंदा, बहमादित रण्या भीषा
देशी हहा, बीहा संपीर । पु कोण सकत तथा सवानी।
कीषा सिर्देश हाला अस्पता । पुराव प्रतिकृत पाठा
संदर पर्यत हर्षक हरिल । — गति - की० अंद्र गाँठ भीमी
पाछ । वि भीमी साहजाता । — विवेक - वि अल्ल

संबरा-चा [सं] कियोधी कुन्ही वासी (श्लीके नर कानेसे रानीचे श्रस्थित रामकी नमवास नीर भरकते

राज्य देवने पर मंति)।

संबदित-वि [सं•] शेर किया हुना। संबद-प्र• [सं] देवरकी हवा।

संबा-सी [सं] सेथी।

मंबाचछ-पु [सं•] संदर प्लंग । संबाद्वि-पु [सं] संदर पर्वत ।

संभाव∽षु [सं] सवाती संपद वर्गता अधिकतासः सिवकारकामासः।

।धरका एक साम। संधावक-पु[सं] यक तरहको थास। संधानी-स्था•िसेच्य वहा सक्तका सक्का। संधा(धिष्ट्)—दि[सं] सबसेवालाः पीटक। संधोदक-पु[सं] औरसागर।

मंपोद्धि-प [मं•] शीरसागर । संस्थानिक रिकी संस्था स्टूडिकार ।

मेंच्य-दिश्हि संदेश करते वाल ।

स्वादि [संश्वी सरण भीता संगीत गुरु सूर्यः हरूका ।

स्वादि [संश्वी सरण भीता संगीत गुरु सूर्यः हरूका ।

स्वादि (संग्वी हर्षे हर्षे (स्वाधि)) मीत्र । यु

एति वसः समान्यः प्रच्या कर तर्दका वाणी । न्यम्येदे यु 0-50 वस्ता करते वा सन्तेमाण । न्यम्यि (संग्वी वि

क्षात् कर योध्ये वस्तु मान्यः । न्यम्बित्यु व्यस्ता ।
दि समान्यः हृत्या । न्यम्यि (संग्वी वि

स्वाद्या हृत्या । न्यम्यि (संग्वी वि

द्यात । न्यावि वि वी साम्यावा । न्यम्य न्यावि ।

स्वाद्या वस्त्रे । न्यावि वि वी साम्यावा । न्यम्य न्यावि ।

स्वाद्या वस्त्रे । न्यावि वि वी साम्याव । न्यस्त्र न्यावि ।

स्वाद्या विभिन्न विभाग । न्यस्त्य न्यस्त्र ।

सिन्न) निः भीत्री वाक्षी वस्त्री वाला । न्यस्त्र ।

सिन्न) निः भीत्री वाक्षी वस्त्री वाला । न्यस्त्र ।

-धी -सुद्धि-दि भोदी बहुबाका सरद्धि । -पस-पु प्रशादिका एक भेद । वि देरते एक देनेदाका । -बहु-विश्व कक्षीता । -आक् (ब्रू) - वि संद्रमान्त्र । -आगी(शित्) - आगात्त्र । विश्व क्षायाः अदर्शक । -सित-विश्व भोदी वा सोदी बद्धवाका । -विभय-वि दरित्र काँक्यन । -बीप-वि शक्तियोत्त । -स्मारि--सार्थल-पु क्ष्म्की वैशी ।

संद्रक-नि॰ [सं॰] मूर्त पुर्वू। सद्कर्णि-पु [सं] एक कानि।

मंबर-पु [रां॰] पारिमद्र या देवताव पृष्क, परशा ।

मंत्र्यंती-खी॰ (चं॰) दुर्या ।

संदर-पु॰ सि] वह पर्यत जो पीरामिक कथाके अनुसार समुद्र सबसेने सवानी बनाया गया या। संदारा स्वरी। भारतेना। आठ या शोक्य कड़ियोंबाठा सोतिसोंका दार। वि संद्। -िगरि-पु संदर पर्यतः श्रीवेरके पासका

एक पर्वतः -बासिनी-स्रो हुगां।

सँवरा-वि ठिंगना। यु एक तरहका वाता। -सँवरी-की एक पेड़ जिसकी ककड़ी गावियाँ आदि बनायेके काम आती है।

संबद्धा-प यह तरबद्धा गाया ।

संद्रसान, संद्रसानु—9 [चं] अक्षा प्रना और। संदा—वि मेद भीमा। बीला, बिलसे सींग कम हो, बीचे सावपर विक्रवेदाका (सीदा)। स्टाम । सी [छं] सर्वोद्ध संक्रीनि चो क्लरा क्रम्शनी क्लराबारा, स्ला

सम्बद्धाः स्क्रांगः चा वचरा चारशृतः वचरानादः, सचरा आइपर और रोहिन्दे सञ्जनीते पदः । सीहाकिनी-चो॰ (सं॰) संसक्षी सर्गते सहसेवाको भाराः

भाकाश्चरेगाः शंक्रांतिका एक भरा एक वर्षेत्व । संदाकात-वि [सं•] भारे-भारे जागं स्कृतवासा ।

संबंधित-को [मं] यह बण्युच । संबंधि-वि [सं] मंत्रुपित बॉसवामा । यु कस्ता । संबंधि-को [मंग] वायवधिका वुर्वक के वाया।

हाजमेका निगइ जाना ! सन्तारमा("मण्)-वि [मं] मृर्गा नीय ! संतारम-वि [मं] जोसा करनेपाला !

अनुन्द-वि [न] बन्दा करनाता अनुनन्द-पु [ने] भेदाबि ।

सन्ताना- ॰ भ॰ कि संद पप्ता। संदानिम- ९ (सं॰) पीनी सुखार बादा।

संवामित्र-पु [सं॰] पीमी सुखर बायु । सवार-पु [सं॰] शंदशसनको पाँच वृक्षीमेंने वक्षः वारि

अवार च राण्य प्रशासना वाच प्रशासन व्याप स्थाप व्यापन व्य

र्मशास-पु [सं] दे मेनार । संदास-वि [सं] विस्त्री मॉन शाम को रही हो।

सहातु-१व (सण्) विश्वस्था मान शाय हो रही हो। संदित्ता(सन्)-व्यो (तंक) संदत्ता श्वानी श्रीमायन । सर्दिर-पुरु [में] यदा हैबाहना नगरा ग्रिनिस समुद्रा।

-पशु-पु वि-पे । -सविा-पु• शिव । संविदा-को [यं•] अस्तवन ।

मॅदिरा−व्या [मं०] अस्तर्यः । मॅदिस०−५ मंदिरः यर ।

र्मदी-सी मेर होनेदा जार संबोध प्रस्य साता।

18-8

1023 सब्गु-पु [सं] मॉगुर सक्को। एक अकपकी पेहपर रबमेशका एक बंदा एक वर्णलेकर बादि । सवपुर-५ (संग्) मॉयुर महको। एक वर्गसंकर वाति । ~प्रिया-चा॰ सिंगी सक्की । सह-ती॰ [ब] भारी क्योर विसे खोंबकर गीन केवा था हैया कियाना जारंग करते हैं। हेराकी श्रमातिपर बॉर्जी वानेवाको क्यारः शीर्षकः निमामा बावाः खानाः। -(हे) मज़र-वि जो निगावके सामग्रे हो। पहिस **गर्व ! ~फ्राडिक~को॰ नैकार मह, नेकार पीज !** "मुकाविक-वि+ वरावरीका दावेदारः प्रतिस्पर्वी । मर्−पु [भ] क्वार् ! –व अक्रर्−पु क्वार गांग । मदस•-की है मदद । मदा−विदे 'संदा'। महाह-नि [ब] मदद बरनेवाकाः मर्शनकः। महाही-स्रो प्रशंसा धारीक करना। सदबसाही-प्रज्ञात्रहरू पुरामा पैसा । मंद्रिम−वि• भष्यम। क्रम अच्छाः भदा । सद्गे~ व वीचमें। सद, बालेमें। सद्य−पु॰ [सुं•] शहुप आहिको पाँसमें श्रीमा हुआ मारक सर्व, सुरा शराव ! —क्षीर – पु० शिरकेमें जन्मक कीशा ! ~कुर्म-पुदे 'समुमांव । −ह्नुस-पु मावका पेत्र । -पंक-पु॰ श्रराबद्धे पाँस(f) ।-प-वि अय पीनेवाका एराना । ~पान-पुञ्चता पोना । ~पाची(यिन्)~ वि नवव, सरावी । —पुष्पा,—पुष्पी,—सी॰ भी भावकी ^ह -बीब-go समीर । -भांड -भासन-go धराव रसनेकावडा मरका मधुषट। −संड∽म छरावका फेन : −बासिनी −स्रो हे॰ 'नवपुन्य । ∽विकय~ प्रशासको विक्रो । —संधान—अ दारान भ्रमानाः मद्रम्बनसम्ब मचपात्राम् – पु॰ [सं] तक्क, पाद । मध्यक्षेप∽पु[र्थ] श्वराव पीनेश्ची कत । मधामोद्र−पु[सं] वकुछ वृक्ष । मानंकर-वि [सं] मंगककारी। मद~५ [सं] एक प्राचीन बनक्ता ग्रह गरेका सहवासी। वर्षः संगतः। ~ सता - स्ती माही । मञ्जक∽पु[मं] महवासीः माहका राजा। वि सहसे मेदिका−ची [सं]सददेखकी ली। महास-पु॰ ६० भारतम । मध समिक-पु, विक्ष है किया । मयु-दु [मं] धरदा मया दुम्परसा वसंत आता चैनका महीनाः वतः सीमरसा कृषा मुतेकी सर्वरा। वाशेका विचाने दावों मारा गया एक देखा वि मीठा। ~कंड~पु॰ क्षेत्रसः । ~कर~तुः भीरा। कामी पुरव । -करी-ली अमरी। पढे लगको भिशा को सल्यासीक किर विदित्त है । -करी(दिन्त)-पु असर। -कड़े रिया-सा निवास मानू ह -क्करी-सा निवास मीव्। सन्तरका कथा -कार -कारी(रिक्)-पु मधु मनग्री। मनुष्या । -किसी-स्त्री एक स्था । -कुछुत्री-

स्री॰ रक मीन् जिसका नृक्ष बदनुदार दोता है। - कृत्

−पु+ म्युमन्द्याः गौरा । —केंटम −पु विष्णुके कानके मैलसे बरपब दो देख-मधु और बेटम ! --कांश --कोप ~ प्रश्वका छत्ता । ~कम~प्र मधुमक्कीका छत्ता । -क्षीरः-क्षीरक-पु॰ सन्द । -- अर्ज्**रिका,- सर्थ्**री -पु॰ अपूरका एक गेर । -शंघ-पु भर्तुनका पेपः मोलसिए । -गंधिः-गंधिक-वि॰ मीडी सुर्गववाका । ~गावन-पुकोबक। ~गुजन-पु॰ शोमांबन वृक्षा -प्रक्र-प् नाजपेश नग्रके अंतर्गत श्रीनेनाका शहरका होसा-सीप-पुकोयका-चक-पुञ्चरको मन्त्रित्रोंका क्षता । ⊶च्छदा –सी मयूर शिला। - क ~- युगोग। ~- क्वा−की मिसरी; पृथ्वी। ~- कास-क~ प्रभागनतीमा छत्ता । ∽िकत्−प्र विम्यु । −कीवम – पु वहेकेश पेत्र । – सद्ध-नृष्य-पु रेख । – स्रय-प्र तीन मोठी चीबें-छर्ड वो भीर छर्डरा । -दीप-पुकामदेव ! - तृत-पुकामका पेत्र ! - तृती-की पाटका । ⊷ह्नारम⊸पुंगहुषका पेड़ा श्रामका पेड़ी −हिंद् (प्)−पु॰ विम्पुया कुला। ~धातु−स्रो माक्षिक। – घुकि – सी कॉर्ड सक्दर। ⊷धेनु – सी॰ दानके किय करियत शहद भादिकी यात्र (-मार्डी -स्रो मपुमक्सी-के इन्तेका कीय । -मापित-यु एक संकर जाति मोरफ । ⊸नेता(तृ)−पु॰ भीरा । ≕प−पु मधुक्ररु अमरा = व्यवा देवता (कविमि+): दि श्रारादी (कविमि+) -पटक-५ जरुरको मस्चिमीका छत्ता। -पति~५ कुल्य । --पर्क-प्र दही थी, शहर, प्रश्न और शहरका बोग जो देवता और अदिनिके सामने राज साता दे। ~पक्यै−वि॰ मधुपर्शका अधिकारो । ~पण्लिकाः,~पर्शी न्था नासका भीषाः गु.अपः गंगारो ! —पयम—पु बार्सती इस । --पा**का-को धरबूबा ! --**पाध-पु वास-पात्र (मधका): धराव रखनेका वरतम । -पासी (बिम्)−तु भौरा । −पीसु-पु चसरिट।−पुर~ g −gरी—स्थे मनुरा। −पुरप−षु महुमा। अञ्चोदः बीकशिरीः शिरिस । −प्रप्या−मी॰ मायरंदीः पी। --प्रणय-प भराको कर्त । --प्रतीका-न्ता १ समापि क्रीपकथृति। = प्रमेद= पु॰ सपुनेद्द। = प्राद्यन = पु॰ वक संस्कार विसमें सबजात जिल्लाको मधु चटावा आना द्दै। −प्रिय−पु॰ वटरामा अप्तरा भूमि अंदु। −थुछ− पु मोडा मारिक्छ । –फक्रिका-स्वी मोद्धा गुजूर । -भग-पु [lk] देश्यपुरम । -यहुन्छा-स्ता मापनी लता !-बास्त -ली अमधा श्रहात विवानेवाली क्रम्या । -विथी-सी बुँदस। -पीत्र-तु अमार। -मोह∽ त्र दारावदा वरवत । -भार-त्र एक मानिक एव । -मित्(प्)-द विष्यु । -मृमिश्र-पु॰ मधुमनी भूमिकामें रिवत कामो । -- अकारी-स्री [कि] एइएकी मनगा। -सम्बन्द असर । -सक्त-न्ये असर । −मक्षिका −सहरी−सी शहरदी मस्त्री । −स्रज (अन्)-पु अधरीरका पह । -- भक्त-वि शरावदे मधेमें पूरावर्गाने वर्गा। -सम्रम-पु विश्वा-मलिका−सौ माठधीलता। ∼सलक−दु सदेमेची शहर निकासर बनाबी आनेवाची एक नरहकी मिठाई। -मात~इ ६व शन । -+ सार्शन-द+ शान राज्या

श्रीराग-को (६.) शरपका नार्त । न्यांत न्यासम् । धणप्रा a mini र्बर्राइक-वि [र]रिल्डे अस्तुरा ≥ हो । द्रीराप्ती नक्षा वि इरायादी बादी की यह बाक्स्स ereim e guerratte un mit miet biffe E + CH ARE PORE ポティールマ しかくりょ

महिष्म है। । विकासक पुनवृत्ताः ein e u. be e erfagebend iffer bereimig! LE REG ME ERREITER UND MEINE MER 4 & 4, 144 bear manuell to talk-तो -उपाम-तु मधीर परीम सरीद ।

संद्राप्त-५०३ दशला । सीरा-६ देश स्वकः । र्धापनारे स्तर कि संभागना । र्श्वयाचन है अध्यक्ष ब्रीसार-१५ वन्, रन्धाः व्यापन र

मीगुध-पि रे जनएस ३ H-5 [r] fret ber femt biebt biebt an ann रियं अपने रे लालन्य विकास यह न्योतिको नेती कार्य देव हैं। सहबार-५ हे सहबा ह

medie-le & late : मार्च-की [बर के दिवस स्थान पानवी कारण की बाद देवासरे पहुना है। सारव नह है। यह व-श्रीवार्ध-की है है व है और भक्ता बर्जियो शब्द ।

मदल्लिए न्या है भोड़ी है है स्रद्रमीर-भ्ये ध्येतं वरिश्र । mag-of serra

EWHAR CLARGE YNTERNA gramment fan markt op 118 wom marke.

THAL POPUL ! megi a ne Certimet bif er reen gwe किंद्र महरू अच्या उत्तर है और अपने गर्दर अधिवाली है म अवधी म रहेर कर कथा है।

संबद्ध १ ५०३ हिस्तरे हातेचा श्वास अन्यक्षाचन (1) en @ riemen bei freigne neb@ern, } रिच जो अन्यान्तरम् संबर्धनानाः व

REPRINT 1841 ANTENE SERVICE & SERVE BETWEET - No and \$120 and except t my en a conference and a milital be freely

who more by be marrow's a literature familia an

gebe go ar fat au bier aur die prime total and but gar per

अवस्थित । अन्यानक क्षत्र क्षत्री के अर्थ विनासकः and the graph of the property of the same of the party of the same WETTON . HO ENH MITON, SW. DE LANGUE

सक्रमान्द्र (४) ५८६ १५८ । REPROTO [#] Tint fert ent fere ; eve

रथा दूरा अज्ञानुमै रिकान्सा RESTRICT TO SET SET SET SET SECTION OF SET SE range, mare a

महत्रकार-दिन मिन्दियार काम दिशा का हो। की Bit (don appl) t माम्बूच दिश्वित्री बतुव्य दिश्त करा अपने द्वार नेतृत -(वे) जुरा-दि शाप सना ।

मञ्जूष्टियम् नभी । (शि. ६) दिव का म्हण्य में प्रदेशील firm : nufe-g fa-) gwat en ng gwe be-

Street, their word bie ger bie net i सक्रदेशक्ती-भी (सं दिल्ल मन्त्र) श्रकर-पु (बंद) छला बर्गकामा मान्य राह्य संगारे bit mir giete if fafet bit in bit-t अर्थन्तर ३ ज्यांबार ५ अवस्थात दश्या जीतर च्येत्रच्युव कारदेश । चक्क त्रिनको शेनाम रेगाम ३३ अंद्र दर्शन्ते हिंदण क्लीता । नवस्त्र जु अन्तरेत PERMITE THE FORD AND KIND AND वह ब्राइनोर्ड के बेरेने बहुता नहीं है। बाहु १६ १३ afes en entige : merfumat wer tiltens

यब (रशर) दर्भित - वर्गक्त पुत्र व महेरत - प्याप

-प्र नक्त । -क्ष्यूह-पु अपन्ये अन्यान्ये सीपृत्ते heren i -dang-nit ka ton ikit किम दिस सूर्व क्रम्पास्य हैन्यू है। न्यूक्ट अप REAL PROPERTY. शहर है है। दिस १ न्यूनियोन्योन है जिहे

ALTER B अकामार-५ राजनेद राजन

mutte-y []a ete: शक्ताकृत्य-विकासं कार वा अवस्थित साथ देश RIM-L THE REAR RIM!

सम्बद्धन्तु । वी सन्द्र पूर्व प्री वन्द्री व वी बन्द्री MG: 5 田田田一郎 えぐり

metals & pleaft mana 2 wlatte BUT OF FRONT AF mutter) or se nece THE R.D. .. | Go Munchen &

M-3-44 48.43 अपनीताल्यु स्टब्स्ट्रास्ट्रास े क्रफार्क हैं नजाँ ५ राष्ट्र वर देश और ह

Martin to the Janes day and Migrations to fairly make it at mile of

we to find only the fresh to scalled with analysis to been a few spread on 1 mange to for financial cold bet a bet

MARK-or an Saya don time is given face

बद्ध भेट्र । नक्षण्यकपुर राज्यनी सरान्यवसीर रेएम्। ३१ पारणा -शायरी-भी १६ शहरी, करान एक राजियों । अक्सान्तिक पुरु कर १९५६ T(H | - 11 | 4 - 2 | 11 | 11 - 2 - 11 | 2 - 11 | 2 - 11 | मरा । - इत्या पूर्व वे इ. सरेग्याकानकान्य मूल-१ ३ ८ १ -ग्रीह-तु देशकः सम्बद्धकर के देश प्रदेश क्षेत्र अमेरी(दिक्क) देश लग्न בנו ל" - בלפני-מ": פלת - בעל-מי: रेग - स्थानीक एक प्रवास से तत्त्र हैए. मार नायानमी पुरा दश हराहे, पु^ररदा न स्थित में श्रामा न्यंत्रकन्तु क्षीरश निवित्तन्तु fren i mit ting stratetion mette a un #] नी रवन्य राष्ट्र जिल्ल अर शहर राष्ट्र रोग होता. ई र नमाम न्द्र चल सहत्त्व र निवर(४) न्देह -सर्गिरिय),-नामुद-५ क्या श्वक-इ वर दर्भ भे अपूर्ण रहण मां कीर पर्रा राजन्त्रे अवस्तु अपूर्वत्यार हि है अपूर्ण बस्ता हुना रिटर्स विश्वम बर्गा बान्ते "बिकान कर बड़ जिल्ले सुरोब रहता हैरा को स्ती हो। (474: -45/1-4) 2 mis -44 (4)- Hafter(44)-31 14 1(214 144) मुरक्तन । सम्बन्ध प्राप्तक की का ब्याहरूको क्षेत्रेस सका निर्देश (स्व)-वृत्तिका नक्ष्यन पुर ह रह र जन्म राज्यों अपने वक्षां हो अपर है अपूर्व की विश्वेर अप १५० वर्ष - lant -le Blas få : = fant-st. # fenet | #det-st. fi.s | t.d ! काम र । -किन्त-तीय व कोटा -मी-क ृष्टि-व ि वृत्ति के बारमंत्रि मेर ALE AT 1 - MAY-NO MAY 3 - SENSO-NO वीर्ता -व्यापान्य अपूर्व देश : नक्षण नजहारह नगर्गवन्तु दारिक निवयक तु देख ल HTT-7 4 "FI-TTV-" FT T-CHT) बेल देलां हा १ प्रश्नुप्रशेष्ट्री पत्रक सन्द म**ब्रम्म प्**रक्र चैत्रहेत् रूपण्ड **म्बब्र्** यू प्रद geb if find getter fim the nerme-भी होता तेरते हेरादेश खार्च (बस्) न g rite bet ent i Cime -gefeielgull mit laumbem u touettebe. रेस्ट RINDAPLE OF E. AND I SEE METERALE

mys y (-RALL LAND Edition 515 to fact 803

men tie mitter mer mit giftig gm } th she se the shar Paran 1 minimize a section with

बर्बराजन) र ६१ सन्दर्भ ह #110 + XATEV 1 *1 + 400 e y ard to make an ex-+ + I'm for the not the se at the mer gefrei ogune affeligge E REPORT A REPORT L सेन् अस्तर रे दूरत अर्थाहरू पर Par car erry f erre where t

(a)-to ge gar alatte ela -बार-पू देशक वस अर शानवार व न्योक्स go an miter mit - mag (jal.) if gein, entition to the entity of a page के केंद्र वर्षा -शर हो । जिल्ला -क्ष्म-पेत्र देश श्रीत का नेम र वर राप न्या वि क्षेत्रं स्वरणा श्चरहें व - अरेप दिश्या प्रजूरे । urent-ft [laye ferry die err सर्कान-बा॰ सर्काण १० ० । द्रांक १००। Maliforn, Sain, frimt अनुस्थान-म हि द्वित्रण है। दीवान Efta-1 ! | faat #461x#-3x (n, 3 m.n.) > सन्दिका-भा कि । यस सीच ।

सपूरीक-भी है बच्छी र कड़िंश में पी 400 S सप्दर्भ का अपने हैं। अनुस्री ने majent de | wjegar mym-fe ie fereifrenge g bei सम्बिन-पुरुषि १ देश र West 44 to 14 hours

मध्य ५ रे ५ वध्यक्त myles he tre get set hereigh बनके ही दर्ग ह सन्तो से हैं है न न देह चर्या है है हैता Mangalature for spices many

MACHATA IN JANGARA

4 6 5 45 F F 778 PM सर्वान मा न द वर न लेक्षेत्र करका । मन न र वनके बानी दव द वार मान HET REFFERENCE OF PERSON total and the stands are and mane à se suove mare à tit stells plooped of a feet more in a 18 09 10 6 7 Fe Pet en a suppliched of the supplication weens a war feet s tree white to sink and to select by 4 I a so LESK Avine ar more के देशक प्रभावनात्रे न सम्बद्धा होते अन् न्द्रक्षीवें[निद्यों नहें समस्त्रीय want takes so m

शक्य−पु[सं∘]स्र्यं; एक सर्पं।

बारे-अन छोटोंके किय व्यवहृत और प्रावः तिरस्कार-स्वक संबोधना भार्म्य दुःसः, शाकुकता वादि प्रकृत करने-वाला प्रप्रार ।

अरेजु-वि• [एं॰] बिसमें वृष्टि न स्मी हो जिसका वृश्विसे स्पर्धं न हो । स्त्री॰ वृष्टि नहां ।

भरेरना*─स कि॰ रंगइना।

धरीसी – स्रो० तेपाकी कागज बनानेके काम आनेवाकी एक

अकारकी शाही !

अरोक−िं० भगाव्य भो रोका म वा सके। [मं∘] छिद रहित कातिहोन निष्यम । -वैस-वि विसके दाँव काले था सायमुमें सुप मिले ही।

भरोग−वि [सं] नीरीय स्वस्य ।

अरोगना≉~ष कि खाना। अरोगी(गिम्) अरोग्य∽वि• [सं] स्वस्व, नौरोय ।

अरोच+-पु• भरमि अनिच्छा। **अरोचक-वि** [सं] को चमकोण न हो। मृख मंद करने वाकाः समिन पैरा करनेवाका अवश्विकर । पु अक्षि-साद्यः सम्बद्धाः।

अरोक्की (किन्)--वि [सं०] अधिमांत्र रोगसे पौषित ।

बारोधा – पुपंजानको एक हिंदू बाति। **अरोध्य−वि [सं] जो रोका न का सके, जवाबित ।**

भरोर÷−िर सन्दरहित छोत।

धरोहन+-पु दे• आरोहन । **अरोडना**#---ज०कि चदना आरोडण करना।

मरोद्दी>−वि दे आरोदी⁵! **करी**ह−नि [सं] को मर्यकर न को। विश्वका पक

मर्क-पु• [सं] क्योति, प्रकाश-किरण; सूर्वः मग्नि; रवि बार' तांबा; रफटिक आक, मदार; इंद्र; विष्णु; एक पार्मिक कुरमः उत्तरा फास्युनी नक्षत्रः यक तरहका काथः

विद्यान् म्बक्ति वड़ा भार्यः आहरः ११की संस्या । वि पूजा करने दोग्य । -कर--पु सूर्वकी फिरण ।-कस्रा- सौ सर्वमदक्तम् वारद्वां मध ।—क्रांता—सौ बाधुक । −क्षंत्र−पुसिंद राशिः। −र्चद्रन−पुकाल चंदन। --चः-सनम-प्रकर्षसम, सुग्रीव शादि।-खा --**सनपा** न्लो॰ यमुना साहो । −हिम−पु रविवार। -नंदन -पुत्र,-सूत -सूनु-नु शनि, कर्न, वम

भादि । -- नमन-पु॰ विराद् पुरुष । ⊸पृत्र,--पूर्ण-पु॰ वर्ष-पुद्ध।-पुद्धा-को सुनेता वर्षमूत्त।-पुष्पी-को

प्रमुखी । ∽प्रिया—सौ≉ जपा । −र्श्यु—पु गीतमः क्मकः । —भ —पु स्र्वेप्रभावित सञ्चनादि । —भक्ता —कौ

भरदुरः । -मूम-पु ,-मूका-स्त्रै। सुनंदा ! -रिप्-५ रातुः - बस्रभ-पु वेश्वः कमकः। - बस्रभा-सी

जपा। -विचाइ-इ मदारके पेड़के साम किया जामे

नाता विवाह (डीसरा विवाह करमेवाछे पुरुपके किए पहले मरारमे निवाह करनेका विधान किया गया है शाकि

तीसरी पत्नी भीभी हो काद)। -- अध-पुतालीश -पत्र। अन्यन−पु अन्धना−सी [मं]पूत्रम वैदन। -- मत-पु स्र्वेश एक जल (वह मापशुद्धा सामीको

अनुसरण करना (सूर्य ८ महीने अपनी किरणोंसे पानी **अ**स्म-पु अर्सा। शोखता और बरसातमें जसे मई गुना करने बरसा देवा है, बधात लोककी वृद्धिके किए ही एस भएण हरता है)। –सोवर–पु० पेरावत । −श्विता–सौ भर्गस्रोता ।

अर्फ्र-पु [४०] रसः फिसी भीत्रका समकेसे धीचा हुना रसः पर्याना ! -शीर-पु पगरीके नीचेकी टीपी भीनके नीचे रक्ता वानेवाका सम्पेका दुवना वा क्रेन्छ । −भागा⊸ पु पुरीनेका भर्द जो सिरका मिक्रकर सीचागनाको ।

किया बाता है)। राजका प्रवासे कर केनेमें सूर्यके गिवमका

-वादियान-पु॰ सौपका लर्थ । -रेज़ी-कौ॰ कठोर परिमम या प्रयास । मु॰ -होना-पसीनेसे दर ही बानाः कश्चित होनाः पानी-पानी होना ।

अक्रोंस−पु [सं] दे॰ 'बर्धकरा'। सकौरमा(समन्)-पु॰ [मं] दे 'ककोपक' । **अकीय अक्यें-वि॰ (सं) कर्य-संबंधी पृत्रित ।**

अकॉपल – पु[शुं∘] स्देशीत समि; चुकी । कराजाः≽~पुदे 'भरगवा'।

अर्थेख-पु॰ [र्पण] क्योंका, अवदी: रोक कियार, रुद्दर: एक नरका मांच । क्यांका-का [सं] अगरी; सिटकिमो; दावी वॉवनेकी

बंबीर; दुर्गा सरस्तरीके भादिमें पढ़ा बानेवाका एक स्त्रोत्र । **सर्गोक्षिकः—खो॰ [सं•] होटी शर्गशा** ।

मर्गेष्टिनु-वि [सं] भगशेसे क्य किया हुमा।

बर्गेडी-मो॰ [सं] १० 'कर्गका'। **अर्थ**−पु॰ [सं•] पूजनके १६ छपचारोंमेंसे एका सूब, सूब,

चानक जादि मिसा हुआ कर की देवता वा पूचनीय पुरुषकं सामने रखा बाबा दाव धीनेके किय दिया गया दल १५ मोतियोंका धमृद्द जिल्ह्या वजन एक पर्ण ही

दाम, मृक्दा करूव भीवा: मबु, सहद । ~दान-पु॰ अध अपेच करनाः -पत्तम-पु सन्तो होना साथ गिरनाः -पाद्य-पु अर्थ अर्थण करनेका पात्र अरका । -पाद्य-प्रभवे और पाँच वीनेका चल या इन्हें प्रस्तुत करना।

-वसावस-प्र विका मृत्यः वरतामीके मृत्यको तेनी भौर मंत्री। -धर्मातर-पु अच्छा भौजमें रही भौज मिकारर अच्छी श्रीबद्धी द्वीमतपर देवना । ~वर्जन-

माम नहाना बन्धुको असारण मर्बगा करना। ~बृद्धि—खी भाव ब्युमा, मर्वेगी होना। –संख्याम, --संस्थापम-पु• ध्वापारिक वन्तुमोका मृस्य निर्वारित

बरना । थर्षर−५ [मं] तकः अर्घा−पु॰ दे 'जरदा'। श्री [तु] १

रूका विसन्धे चौरू ४ माध हो। अर्घापचय-पु[मं] मृस्यका हांग्र द्वाता।

भव्य 🖛 🖣 [सं] बेंट या पूजाके बीग्य। भर्षेद्दर~पु॰ [मं] छि**र** । अर्घ्यं−वि [र्स] पूजनीयः यद्वमृस्यः पु पूजाने देने-

बोम्प बस्तु अर्थके प्रयुक्त द्रस्यः एक प्रकारका मनु । अर्चक-दि [मं] पूजा करनदाटा।

अर्थेनीय अर्थे-वि [सं] पूत्रनीयः गम्मान्य ।

सचमान ~ अर्थतः सत्तमाम−पि भि दि॰ भवेनीय । भवां-दी सि | प्रका मितमा किसकी प्रका करनी ही। जर्षि(स्)-सी० सि॰] किएणः शन्ति-शिकाः प्रश्नाद्यः पुष्ठि । अस्तित-वि० [सं०] पुष्टितः सम्मानितः। पु० विष्णु । **कचिती(**सिन्)-वि [सं•] पूजा बरनेवाका । **अधि**प्पाती-मी० [सं] अग्निपुरी, अग्निसेन्द्र; दस पराभौनेंसे एक (बी०)। अविध्यान्(धात्)-वि० [सं०] चमकवाकाः कपरवासा । प॰ अस्ति। समै। एक उपरेष। विष्ण । सर्ज-५० (ण•) निषेदमः प्राचनाः पौडाई । —हरमाछ-य राजानेमें रुपना जना करनेका चाकान । —बाहत-पु कियान पार्वना, प्रार्थना-पत्र सर्वो । - साह-त-पु निवेत्म प्रार्थमा ! –हास-पु॰ निवेदन ! भर्तक-वि॰ [सं॰] माप्त करनेवाला । पु सितवर्गास सद तक्सी ! धाञ्चल-पुरु [मंरु] क्षमानाः संबद्द करमा । साजनीय−दि० मि ो संग्रह या माप्त करने वीग्य J अर्जित−दि [मं•ों सनाया हुआ: वर्धेरा हुआ ! क्षार्ती−स्त्री कि ोधार्थनापवः दरस्यान्तः। –वाका~प्र दीवानी था मारूके मुक्तरमेमें बादी पश्चका प्रार्वनायत्र । - नवीस-९ अमी नियनेवाना । - नाकिस-मी हे 'अविद्यात' । - सरस्मत-गो० आवेरनपत्रकी कीई मुख डोक करने या कोई बात बड़ानंके किय दिया जाने वाला आर्थनापत्र । अञ्चल-प्र [मं] दीटुके गाँच प्रतीमेंसे महत्वे वी प्रशा मारक ग्रहमें बांडबप्छके भायक था बैहमनराह कार्नशर्क। इंद्रा सफेद रंग यह यह विस्कृत छाल दवाये. काम आती है- दक्षमीता बेटा: मीर: वॉदी: शीमा: व्यक्तिका एक रीग द्वा वि राप्रेदः चमकोताः स्वयाः -यानि-विश सप्तेत रंगका । -- ध्वज-पु॰ इनुमान् । -- पाकी-न्स यक पीचा । -- प्ररूप-प्रश्न मध्येम भागक द्व । श्चर्तनक−दि [ते•] शर्तुन•ार्श्यो । तु० वर्तुनका पूत्रक । आर्ट्सी-ना [र्ग०] स्थेन गी। यह मर्पः अनिस्क्रकी पत्ती, कथाः करतायाः मर्दाः प्रदेशीः 🛭 भर्जनोपम~प [सं] साधीन क्छ । कार्य-प [नंग] बाला धारा (में): व्यक्तर मधा गागीम बुद्धा दक दंदन कुछ। युक्तदिका शीवता क्रील्युम । भर्म(म्)−९ [त्रं] यष्ठा भाजीय-पु [न] समुद्रा भारा। श्रीरिक्षा गंद्रा सर्था एक प्रता चारकी संस्था; रम मानि !- ज -मस-प्र गुमुद्र-फेन । − मेनि − म्हाँ + पूर्णा । − पति −पु+ महामागर । ~पोत -बाध-इ नदाव ! - मंत्रिर-प परण ! सम्बद्धोद्धय-पुर्व (तुंर) व्यक्तित्राह मासक पीपा: व्यवहा समृत् । **भजवाज्ञवा**—स्वी [मं] संस्वी । भगस-वि॰ [तं] तरंगीन भरा हुआ। भर्णस्थाम्(स्वत्)-५ (सं) सहह । ति अधिद इस्थाना । भगां-सा [मं] नरी (वे)।

अर्जी-"अर्थमु"का समासमत रूप ।-इ-पु नारक मुला नामक पौचा । −निधि-दु समुद्र। मर्खेगस-पु॰ [सं॰] दे॰ 'बार्तगह । असम-त [मृंग] नियाः जुगुसाः वि निया स्वतः घौकानिया रिशा। भर्ति—सी॰ (तं॰) बेटाः वतुष्य छोर । व्यक्तिका-स्ता॰ (गृं॰) वदी पहन (मा)। **मर्थ-**प [सं•] ग्रान्ट्का समित्राद मानो अनगर हरो-बना कामा मामला: हेरा, निमित्त: हेरियेकि देश्य-इन्ट. रपर्श, रस कप और गंधा वन धारोदिक वराय कताओंदी परिका साथमा पैसा क्यामा दी. दोवन्दे पर पुरुवाधीं मेंसे एक माना गया है। बचनेगा साथ (न्करर्ग स्तार्थः रच्छाः गरबः वार्थनाः शताः बस्तरिर्धतः स्टेधः मुक्ता निवारणा फल परियामा धर्मप्रका एक स्व कुडकीमें क्षाने दूसरा स्थानः निष्मु े -कर-पिर लिने पैसा मिने । न्यां अधन्ती ।] -क्सं(य)-पुर गर कार्य । --कास-वि चतेष्यः ।--किदिवपी(विन्)-रिः क्षपे पेंथेके मायकेमें बेईमानी करनेवाला । -कृष्य र पैसेकी संगी: राज्यकरको आयमे स्थयका अभिक होगा। —गत−ि (शुष्तके) अर्थन् सामिन। -गूर्-गु सञ्जाः −गीर**स−प॰ भर्**ग्यं गंभीरता**ः −म**−मि अपन्ययो । —चर—५० सरकारो श्रीकर । —विनय-५० इंप्योपायसका बराव सीचना। −विद्या≕मी॰ वन म पेमेको पिना। – इंड-प् इत्यन्तिको समा। – र्-प्त भग देनेवाका । प्र कुरश क्य देवर प्रानेवामा निया। ~दर्शक −६ वन मंदरित्संबंध सुदर्गीमा विदा गरे बाला। -बूपण-पु अपन्यवा अम्बाबसे दिगीम पर सेनाः दूसरेका थन वह करमा। नर्वमे दोत्र हैंग्याः -दोय-पं वर्ष-संबंध दाव । -वति-त और राजा । -- विद्याच- ५० स्रति धरानामी । -- प्रमध-प्र नाय-व्यवको व्यवस्था (क्रमान्स् । नर्थय-५° 🕏 नानय मारिको रचना । -पुद्धि-निः म्हार्वे । -मार् (च)∽वि दिस्सा वातका सविकारो ! =वन 5¹ तमानाइ सेवर काम करमेवाना वेतनमानी स्पेवाधी –भूभ-पु॰ नरशारी। दरश्यका नुसान होना । −र्नार्डी (चिन्)-९ वह गंबी विगन विगमे राज्या बचार वा विश्वमंत्रीः -युन्दि-स्त सामः -वर्जित-ति महराबील । -बाल्-पु किमी व्हेरद्वा महर्गवा कपरेक्वादिकी व्याकता, तीन प्रकारके बारपोर्देने पद (व्या॰) ।-विकर्ष-पुरु समनद वरल्या । -विनाद-प्र अवेरीका अवेद्यान्त । -विदा-वि सारी समाने बाला । - स्प्रचरणा-स्री शार्ववेतिक राज्ञाव और करे आय-स्वयकी क्यति।-साग्य-तु अर्थविकानी राज्यीन विद्यान। मीनिशाल १ -वीच-५ मेम-देन वा रेग कमानेमें ईमानशारीने कान ब्रह्मा । -मचित्र-उ 'जवर्गती । -सिक्-रिव प्रसंशने की जिल्हा को स्त हों। -सिक्सि-भी॰ अमेरपी माति हर्दपक्षे िति। -इत्-विक कंतराविकार्य प्रमाणाय बरनारणा । वीत-शि निष्मा में मानी। अध्यक्त । अर्थता(सम्)-अ हा] अर्थक्र दरिने रहार नव्यव

~प्रसता-विसी । वह गाय विसे वचा दिवे कुछ दिग इए हों : - भक्त-दि (श्रीवनके) वीवर्ने कामी हुई (रवा)। -भारा-पु गोकका मागः। -भाग-पु गोपको सवरथा। ~सकि⊸ए शारका सुरूप रहन। −सच्या−सी॰ एक *मुच्छेता (सेगीत)। −साम*−पु पक ताल । ∽द्यरा−प्रोप्राचीन और चर्चाचीन काणक गैनका समयः मारतके इतिहासमें शाजपतकांकर सगक काशतकका समयः यूरोफ्ड विश्वासमें वे से १५० रेख्योहक्ता बाळ । -शक्र-प -शक्रि-स्पी रात ! - छो इ - प्र सर्वडो इ मुको इ ! - वय (स्) -प्राची अभेद्र बग्रा: -वया(यस्) नवे जेनेद **पंप्रताका। −वर्ती(र्तिक्)−वि वीपमें रिशत केंद्र** वर्ती । पुः पंचा सच्यरम । - विद्या-वि । सम्ब शंचीका न नमीर, न गरीन । 🗝 स-पुनामि । 🗕 स्थ-पु रिजमाः स्टर्धः बनामील । वि. सध्यमें रिवस । –स्थलः – प्रमाणकार ।

मध्यम∽वि [सं] वीचका सँशका मैक्कोकाः न वदिया, न परिवा । प॰ सात स्वरोगेंसे बीचा तीन प्रकारके नावकामेंसे एक (सा) एक रागः क्रमर (तनुमध्यम)। ~पद-प समासका बीक्का पर । -- कोपी(पिक्)-3° समास बिसमें पूर्व परसे उत्तर परका संबंध कोहने गका पर इ.स.को (स्वकंदकधा—सोनेका गना क्रमा क्षम प्रापादक)। -पांडच-प कर्नुम। -प्रदय-🖫 प्रस्ताचन सर्वनामके तीन मेहींगेसे यक वह प्रत्य बिस्स गत की बाद । -राग्र-9 आगोराठ ।-छोक-मर्लकोकः, भूकोकः, करता । -बय (स्)~प , सी अपेड बना - वयस्क-वि अपेड मध्यम वय बाबा । -संग्रह-पु यहने-कपत्र आदि मेजकर परली- प्रमामा। –साहस-पु मनुके मनुसार कठीर भीर नरमके बीचका बंड-धॉमरी प्रवतका लुगाना । मध्यमक-वि [सं] गोपका सनका। पु किसी पीज-का मीतरी भाग । मध्यमा-स्त्री [सं] बीक्की वेयली। वह कक्की जी हम रंग्डा हो चुन्द्र हो। मानक्ष्के प्रेम या दोग्डे अनुसार वस्त्य भारर मान करनेवाको न्यो। कमकती करिंग्सा ।

सण्यसाहरण-दु [में] भाषण मान निकासनकी किया (थै व)।
सण्यिक्ष-न्यी [संग्] रच प्राप्त कड़की ।
सण्यसिक्ष-न्यी [संग] मण्य गंत्रीय कड़की ।
सण्यसिक्ष-दु [सं] आगोर्ने दिवा एक हिम्मिन ।
सण्यस्था- प्राप्त | दिवा स्थाने हिम्मिन ।
सण्यस्था- प्राप्त | दिवा स्थान ।
सण्यस्था- स्थान । दिवा स्थान ।
सण्यस्था- द्वा | दिवा स्थान ।
सण्यस्था- द्वा | दिवा स्थान ।
सण्यस्था- द्वा | देवा स्थान ।
सण्यस्था- द्वा | देवा स्थान ।
सण्यस्था- द्वा | देवा स्थान ।

मप्पाद्वीचर-५ [मं] गीसर। यहर दीखरके बाउका ममद।

मध्ये-न ६ महे।

सप्त-तु एक समझान प्रतनेक कीर नेशांत गुणोपर माध्य निपनेकान वैधान कामार्थ । —संग्रदाय-युक सप्तवाश अवित वध्यनन्त्रपत्ताव । सध्यक-पु [सं] मनुसरवो। सध्याचार्य-पु॰ दे॰ भिन्न । सध्याख सध्याखक-पु [सं॰] एक तरहका बामका देह।

मध्याचाम-प्रसि] भागका पेषु । मध्याशी(शिम्)-प [सं•] शहर वा मिठाई सानवामा। सध्यासम्बन्धः [ध्री] सदएको वनी द्वाराव । शच्यास्मवनिक-प [मं] श्रीकेका स्थारबाध-वि सि सिधर इस्पारवासा । मधिणवा∼सौ (सं•ोभव। सनम्बद्धिपतः-विश् सि । मनगरतः फार्गे । समाधीप-पर् सिरी मनका श्रीम। सनःपति-तु (सं•) विभाः। सन पाप च्या (सं] सामसिक पाप। सनग्पीदा−सी सि । मानसिठ ६ । समन्दत-वि (सं॰) सम किस पवित्र मानता हो, अंद रात्मा द्वारा अनुमोदित (ममापूर्व समाचरेत्)। सनामणीत-वि [सं] सबकी मिया करिपट । समञ्ज्ञात−५ (सं 1 किचकी प्रसद्धता । मनामस्त~वि [र्त•] मतन्कविष्ठ । मनःमियं-वि [सं•] मनको प्रिन । मगत्रीति⊶की (चं] किल्को प्रस्तवता। समस्मक्ति⊸वी मिं∘े समोपस । अवस्थिक −प॰ सि॰] मैनसिक १ ब्रसम्बद्धाला−व्यार्धीमेनस्टिस्

सम्बन्धाकार्यः (हि) मनावकः । समामाक्षित्रः (हि) मनावकः । समास्त्रेक्य-पुः (हे) दिक्की दक्षाः । समास्त्रेक्षार्-पुः (हे) सम्बन्धः परिकारः । समास्त्रेगा-पुः (सं) भाषाकः । समास्त्रेगा-पुः (सं) भाषाकः । समास्त्रेगा-पुः (सं) भाषाकः ।

वि सनको मानेवाला मनीतुन्त प्रिवः। — मावता — भावस्य-वि को मनको मार्थ प्रिवः कम प्यापः। क्रिः सननावणीः। — माति-वि का मान वहे वर करनेवाला वरक्ष्यां। — सम्बद्ध — प्रश्लानाः—वि मनमानाः। — मानाः—वि को मनका मान्य रुपे; दो

कामरेव । -कोशिश-दि है 'वर्गावंशित । -भाषा-

मामिरी-की [मं] किसी कारकाने आविकी सन तरह की महीनें, नंत्र-समष्टिः किसी मंत्र या नरहुके कक पुरता। सम्ब्र-पु [नः] किसी कामका अध्यास, रस्य कुष्णकता-मासिके किय किसी कामको नार-नार करना। महराक्र-वि [न] महरू रसनेवाका, मध्यस्य।

महत्ताक्र]-श्री॰ कम्परतता, निपुत्रता । महत्ताक्रो-श्री॰ कम्परतता, निपुत्रता । महत्ताता-श्री० [ज] खिलोका वसाव-सिंगार करनेवाकी

नरसाता=आ∘्चा। चौ प्रसाक्षिका। मप−पुदे 'मखा

मपि – स्त्री [सं•] ≹ 'ससि'। मपी – स्त्री [सं] वे 'सिसा

किए रहे को हों।

मष्ट*-विश् चुप भीन । सु०-करना-चुप करना चुप - देना। --मारना--चुप रदना ।

मस-पु [सं॰] सैक मापा [ब] स्पर्श झूना। संयोग। सी॰ [रि] मुक्तंबा कार्रामक, रोमानको रूपा ने दे 'मिर्च मुक्-(स्) महिला या मीगमा-मृंबोधा स्पान सिक्कने काता।

सस-पु॰ सम्बद्धः। —हूरी-को बाकोदार कपनेका गरदा वो सम्बद्धांने नवलेके किय सस्वद्धांके कर लगाया भ्याया है। वह एतंत्र क्रिसके पार्योचे सस्वद्धां क्यांनेके

सप्त[ा]संचि का प्रसावने व्यवहात कपु कर । — स्ववान-रि सीप पानेदाका।—हार—वि पु कैन सोवासारी । सप्त[ा]नाम का प्रसावने व्यवहात कपु कर । — बारा—पु स्प्यानका सप्तवदे एक सहीने वारका स्वान । — बारा— पु प्रमुक्त सप्तवदे यो एक प्रशास एक स्वानेसने व्यवक ने रहे। जो एक पुस्कते साथ एक स्वानेसने व्यविक

रस्तेताको को बेहता। समक∽षु को दे "सञ्चक—"लिज पीदन अनुसार विमि समक बद्धांकृत अक्सप्त — रामा०।

ानान समझ्य कडाई अक्टाय — राजाः । समझ्य — कसी है सदावहर्णः यु अरव देखकायक नगर वर्षका समार सारतमें आवर दशी जामने विकता दैः वर्षते आनेवाका अमार ।

सप्तक्षाः न कि दबाब या यतावसे बरकता। कप्तक्ष्या स्म सद्द करना कि ताने-वानेयोगे किनोके सार सावित म रहे (भिक्ता) नसीक्ष्मना विषद्यसाओं पीडा अनुभव बरना। ह में दबाकर वा तामकर कावना दरार वाल देना। समस्यमा।

मसङ्गाः - वि पु वे भारता ।

समञ्चा-पु (त्र) मिहजाररोका वक्त बीजार । समका-पु सब्दाना दवीहा पानीः वेंचा हुना पारा । समजीव--वि दे सिस्टीम ।

मसन्दरा-रि (अ) देशेड परिदालिय । चु हैसी भगाद पनद करमेनाला परिदालिय व्यक्तिः विद्यकः । पपन-पु उद्दरभी वैश्वपनः ।

मसद्यानिस्यो मसद्यापन ।

मसजिद्-न्या (अ॰) सिक्या करवाडी वर्गाट वर्गाछना-न्याः वर रमारत विसमें मुगलवात १२द्वा बावर समात्र रात है। मुण्नमें चिरात कालाना-मकत पूरी करनेट

्किए मसविव्के ताकोंमें दीयं बढाना ! ससम्-प्र_ष्ट्र [सं] शीलना, साप करमा; जोववि। भोट !ा

सस्तव ्-प्र॰ (ब॰) वदीः वडा तकिया। -वदि-ि सस्तवपर वैक्तवाला। पुराजाः वादशादः अमीर।-का यद्या-मूज अमीर। सस्तवी-न्त्री [अ] चर्च-कारसीका वद्य प्रदेश-काम्ब

विसक्ते दर शंरके योगीं मिसरीका काफिश एक, पर दर शेरका काफिना अुरा हो। ससनुर्द्ध-वि [वन] बमाबरी, कृत्रिम।

संसर्भृष्="व [क्रिक] वर्गवात हुएत् संसर्भृष्="पु वद्यप्रदा | संस्यात्व = पु सम्बद्धा |

मनरफ्र~पु [ल•] सर्फ (उर्च) करनेको बगह मीला; काम; उपनेगः।

मसरक्री – वि व्यवदारमें आता है। मसरा – लो॰ [सं] मसूर। ससक – प्रदेश मधक'।

ससक्का-वि [स] पुरावा हुना, पोरोडा । ससक्का-वि॰ [स] एकं किया गया; काममें लगा दुना । ससक्-की [स] कहावड, बोकोचि मिलाक ।

ससकतिश्यमिश्यमित्रात् । ससकतिश्यमिश्यमित्रात् । समकति सक्षी अञ्चलता ।

मसलमा - ए॰ कि किसे नरम श्रीकको दबादर महत। रगक्ताः महत्ता

सससन् न विशासके दौरपर, बराहर एकस्में।

सार बहुत – सी [म] दिक्कर समाहः दिन समाहे
दिक्की यह मीदि। – अंदेस – मि प्रकृत सोधने
बाणा, दिक्की पदि सार करमनामा। – (ते) प्रमृत – सो बढ़
वो सामविक आगण्यकराकी पहिले क्रमेल्य हा सम्बक्त

ससस्वतृत् - ४० (मस्टब्स-दिन) लामधी रहिने । सस्का-पु [अ॰] स्वाकं, प्रस्ता पूर्वने काम बातः विश्व (मजदरी मल्ने), समस्या । सु॰-हरू होता-वक्षम्न कितारिका दूर हो बाना या स्तुत्र वराय मिल बाता ।

ससवासी−9 दै 'मछ (माम)दे हार । ससविदा~9 दे 'मधीरा । ससहार•−दि 9 दे मछ (मांछ)दे साथ ।

समा-पु॰ दे 'शमा'। समाम-पु सुरदे समानेका स्थान व्यक्तान सर्परा वर्षोका वोनेवाला यक तरवका पुना; ० स्थापि । सु॰

-ज्ञागान-श्वसायन बरमा । ससाबान्यु [स॰] येशायमे येथी मृत्राशय ।

सम्पातिमा -- पु समान जपानेव ना भोता: होस । सम्पाती -- वि समान जपानेवाना । र'। समानमें रहने-वानी विश्वादिनी भारि ।

मसाल-नी दे 'यशाव ! —र्षा-पु॰ दे मशावदी । —दुम्मा-पु एक विदिदा । समासद्व-पु [अ] स्वियो सन्ताया(समनदतता वट्ट),

मसालाः समासहत-भी [स] सुनद्द दरशा सेन दिस र सम

बाब १ कर एर बाजी-मी अनेतानुग बाराशहे । न्म्रारीक्नी असी की क्रिएल्च मुक्ति हैं बा and no arm bears to the grange was may a tradition to a base and they अपूर्ण क्षेत्र । भीक्ष्माना । सामी मोर्गिक्रमा रवारा । स्वी अने पन री पुर हुनार समीजीन रिन बहरी दी ही काले हरान्त्रक ब्राय ब्रालेहान state to Band & Collect - (Ballonda) क प्रमान । वृद्दे संराज । च्हीचक चीर कर मुराधिका कामुन्यु दशकी है। च्हरनी E aber g kamer i -pra-fa ubr ; this replied bibe fer to effeit -gratiten to karran - ere-griefe t uber a maffert ab-wrem -Melatarian a con man fr dan (tentata) - win- fre fir an - am arm-fre Chart Com Kanna maragmann den Transfer this waste and the प्राप्तः सर्वेदः अक्षणात्र वेदनात्रः वृत्ये अन्तः हे -का भेजा-स्टेरिक के **-को सम**र्थे बदका - र्र राम पूरी संदेश वालार प्रचाल होता है - वहें , सीजन्यवर्ग भएता। 🕏 एएक ब्यूपानन ग्रीवेहनी मानदी ना १ । ११६ प्रथम बीज शायाची पुरूष प्रव जार सम्बद्धाः । विश्ववा द्वाराष्ट्रकारं सम्बद्धाः वद्धाः to water and formation of many merett men trofer immeren eine ein अन्दरमा दिवालि को अन्य । अन्यदेशा की अना बहाना smile for a material and in any to invite the for each an acres the appeared with their tree admit there for we do for done the significant wanter smooth दरक ६ दिल्ल के वो अन्तरी (द्वार्थ) दिल राज HOW BEE WEERWAY'S BE AS BEING BE ablemm Prifer un et et ent है। होता नदीसाधान उच्चार करहे हुते ह wer margier tot er teing en e क्षेत्र प्राथमिक अभिकास क 44-48* READ TO A TOWARD & THE PART OF THE PERT OF A AM Abdicate agil a algebie agil इत्स इतिक कुल्या व स्टब्स met of and see medan at the thirty or this tip out in a tibe property of in its order with

war war king da di adada grapher of growing by a street of the contract program to be as our we tail you are to make the section सम्मूत् भ सा क ल्याहान्त्र प्राप्तिक स्ट

भारे । भि रुक्ता है -क्षाबी-में क्रावा क्षावन । हे हे भार का करे है हिर बर बन हिन्द were maximal weekenft too ever gette werd teamfre ner t eter traini movement to exchange and are as he and up at 6 अभियान-मु कि दिल्ला हरता अन्य दिल्ला । nearlied in Indian en de muntare eatherm min can t समाय-पुर्वक दिन शहर भी जार रहेश है। degree it for early ne neglect After SHALL A MARKET क्षाप्राची-कि कथा । एको अनुकृषिने प्रवर्त भी ret estable ERRICH INTRACT RECT STAF क कहा क्षेत्र स्पेट के के दिल्ला महिला से केली. ank इन्छ। *नर्शक्तीनमः* अवश्वनः न पीर क्षान बार्रीयाम् । इत १०४ व १ ६५६६१ । भी marger affere feit efte für margarett fo marge of 1602 48 & ten at 1 ENGRACE IN TERRESPONDED सर्वात्र न्यू रेव इत्र के हेर सर्वार अस्तित्रीयः । १० । १० वाकाकाव वेद में विकास

marting-e fale t menfen-it fa fet fete fer ant ta nad 15 214 1 क्षत्रमुक्ते नको ८ वर्गाय है ३ हा अपर ३ morge ter la freit for ent HT & bet 2 ~ 4

अवस्था १ केस्ट ५१६। देशक स्ट राज्येशम १० विभी e i wary to a 40 to their appropriates the time their median in an attention to the test action er a neegy fee ere ure " " ने इनका प्रश्नमध्य है हुन्त्वे दुर्जी

> great terp He who is no a marging well your Wavere 4 Let 2.300 to meres i on control than क्षाप्रमान है । या असेर मन्द्रिक महानार MARCHARY OF PARTY LEEC ALLEGY والمراواة الماس والمراويج

management of the professional in each ser on foot and the 4 0 m 14

anner and provide in the Be about the

मानः रिवरभित्त । दानिश्चव । द्र अरम मानका पुराच-वर्षित बंतु । भनद्रसर−विश्वे 'मनद्रसिर्! समद्र*−व भानो । मनद्वस−वि [म] बमायाः अञ्चमः बञ्चमयुवकः बदासी मर्ग हुना (मनहस स्रतः)। समहसी-ची मनइस होतेका भावः स्वासी। सना-पुण्य | रोक, निवेष । वि निषिद्ध सविदित । -ई-सी॰ दे मनादी ! शवाका च्छो । ही । इकिनी । मनाक्, मनाग्−अ॰ [सं] नोश-सा वरा-साः वीरे थोरे। -(क्)क्र्र-वि शुस्त, कादिक।-प्रिय-दि० स्तरपश्चित्र । सवादी-सौ दे समादी। सनामा-स कि कटे, विगाने हुएको प्रस्ता करना, राजा करना। दिसी बातके होतेको प्रार्थमा करना। प्रार्थना करना, मनुद्वार करना । मनामी−लो [सं]दे• 'धनावो । मनार-पु [भ] मीनार, क्योतिरतंमा मसमिवका वह स्तंन निस्पर ऋजा होकर सुमन्त्रित मर्जा देता है। मनास्ट-प्रचित्रहारकारे भेदा मनावर्गा - प्रमानेकी किया। मनावी−श्री [सं•] मनुद्धा पद्यी। मनाही नहीं सुमासिवत निषेत्र। मनि-पुत्नी के 'मणि। -चर-पुते 'मणिकर' । -पार्≠-दि चमकता हुनाः श्रेपर श्रोमानुकः । शनिका*-पुदे 'सनका। मनित-वि [सं] जामा हुना काला माना हुआ। मनिवा~स्त्री मनका, गुरिवा। मनिहार-पु॰ चूडी टिक्की छिनूर आदि (फेरी करके) अभिदारन मनिदारिन अभिदारी-श्री पृशे नेवने या परमानेवासी सी नुविद्यारित । नक्षीका नेसी मनि-हारिन रमद्भर राषाची यही पहलानेकी क्रुणको सीछा । ममी-सी [ब] बीर्ष [फा] गर्व अभिमाना करे 'मनि'। [मं] दरवा पैसा । -शार्डर-प्र टाक्यानेका भेक मिसके अरिपे अन्तर रिवड अनके वास क्वना मेजा माता है। -बैग-इ चमनेका बना बद्धमा विश्वमें क्रवा पैसा एकते है। मनीय-१ [सं] बंबम्। सनीबर-द [बं मैनेतर] किया कार्याचन संपत्ति भारिका प्रशेषकर्ता । मनीपा-को [मं•] दुदिह हच्छाह विकास स्तुनि (वे)। समीविद्या-भी [सं] तुद्धिः समीनाः इच्छा । मनौरित-वि [सं] चाहा हुआ अभिक्रवितः। मनीपी(पिष्)-दि [तं] इक्रियान्। पंदित, दिवार गीम । इ अदिमान् मनुष्य पेटित विधारतीय तुरव । मनु•-म मानी। पु [मं] अन्नादे मामसपुत्र स्वार्थनुव मनु भी माहिमबादिन और मनुश्तृतिके बनी माने बाते वेदा मन्देशरदे अभिकाला हीत है। अक्षाद १५ मामलुक्ती

मेंसे कोई एका मनुष्या विष्युः मना स्तुति मंत्र । स्त्रा मनुक्ष्ये पक्षी, मानवी; वनमेत्री । —क,—धालः-पु मनु संताम, मनुष्य । -का-सी॰ सी । -स्पेद-प तक वार । - क्रोप्ट-प विष्यु । -संदिता-स्ती मनुस्मृति । च्छति – स्रो वादि मलका बनाया कर्मधासा । समुद्रता - लो । सनुब्रश्व - पु मनुष्यता । मसु**कार−५** [सं] नरमधी, रा**ध**स । मनुभाषिय-पु॰ [년॰] रावा र मनुर्वेद मनुजेदबर-पु [सं] राजा। मनुजीत्तम्-पुबद्द नो मनुष्योमें नेप्र हो । समुप#-प्र• दे 'समुख्य'। मनुष्य-पु॰ [सं] मानव आश्रमी, रंसान । नकार-पु॰ मनुष्यका बचोग, पुरुषार्थ । -कृत-वि मनुष्यका किया, वनावा हुआ। ~गणना - सी मर्दुभधुमारी। - साप्ति —तौ मानवसमढि मनुष्वसमुदाय। —धर्मा(र्मन्)— प क्वेर। -यज्ञ-प अविभिन्तत्वार। -क्योक-प बृक्षकोस करती। -वाम-प्र॰ पासम्ब्री। -हार-प्र॰ मतुष्यकी पोरी अवहरण। -इस्सि(रिन्)-इ मतुष्य श्री भोरी करनेवारंग । समुख्यता -थी (र्शं) मतुष्यी वित मान शुण दया पर्य-नुक्कि शीयस्य बादिः ईष्ठानिबद्धं । सनुसां - प्रमुखा बदान मर्दे। ममुसाई-सी पुस्तार्थ मदौनगी। सनुसामा-अ कि पुरुषका मनिमान, मर्दानगीकी प्रावना अगमा । मनुद्वार – तु मनानेके किए की जानवाकी विनदी सनाने का पका दिनती इस्लामर ! - नीति - श्री सनाने प्रसन्न करनेकी मीति । समुद्दारमा ॰ न्यु कि ॰ मनुद्दार ऋता मनाना। अनुरी-ली॰ मुरादावादी दकर कर नेमें दाम आनेदाका ण्ड बरा। सने - न वि दे भागा। सर्वी≉−व• वें 'सर्वि'। समोद्धासमा न्यो [१६] मनदी धामना अभिकाप। समोरास-दि मि] मनमै परा, विषा द्वना । प्र इक्ता विचार । भवोगति-सी (ए॰) इच्छाः मनश्चे गति। सनोगपी—स्री [म] रच्छा । मनोगुप्ता-न्ये॰ [सं] मैनस्थि। ण्ड देख । मनोगुद्दीत्र−ि मन दारा प्रश्न दिना द्वना । मनोग्राही(हिन्)-वि आहर्रण संदर् । मनीज-५ (सं०) कामरेव । मनोजय-वि [सं] मनदे जैमा देग विमना हो सर्वि नेगवान् । विवृत्तस्य । वृत्तिम्तु । मनीजपा-सी [मं+] बद्दिही एक बिहा। दुर्गादी एक शक्ति वरियारी । विश्वनी हे सर्वेत्रह । मनोजवी(विम्)-वि यनदी दरर तन। मनोज्ञ-वि वि] संग्रह मनोहर । समीना-सी [मं] राज्यमारीः वया दमीताः व स क्त्रीशावित्री है भिनेष्ठ ।

होता । मस्तु-पु॰ [सं॰] वहास्त्र पानीः छेनेका पानी । मस्तुक्षप-पु [सं॰] टिमाय ।

सस्त्रस—पु [पूर्व] नाव भदायके बीजमें यादा हुना क्या रुदा विसमें पाल बीवा बाता है।

मन्सा – पु सरीरपर दानेके स्थमें बनता हुआ मांसरिटः

नक्तातीरको नोमारीमें शुदाके नावर और मीतर सिकल नानेनाका दाना। मार्टेक-अ॰ में।

महँगा-वि जिसके दास अविक वा उचित्रसे अविक हों। गरीं। ~ई-सी महँगी। सदेगीका सत्ताः

महैंगी-को महैंगा होना गरानी। आवस्त्रक वस्तुओंकी वर्तमता।

महत्त-पु मठानीस्, सायु-संपन्धः मुख्याः मुख्याः।

महेती-की महेतकापर पाकाने। महंश-वि महर्म, कहा।का दे मई । —राज,--रामा-पुदे महाराज। —रामा-पुदे महा रामा'देश क्रममें।

मह्(स्)-[सं] बीक्षिः करतवः वक्षिः वद्याः सक्ताः विकासानेदः प्रचरकाः कष्ठः।

महम-सी॰ गंधा वास । --दार-वि महकनेवाका

सुक्ष्युदार । सहक्षा-अ कि सहक देना वास साना।

सहकारिक-को सहक। सहकारा-प्र [ब] हुनस करनेकी सगहा कनहरी।

विमाग, सरिवता ।

महकाम-स्रो॰ र्गथ वास । महकीसा~वि महकरार ।

महरूप-दि [अ] बिसे धुरुम दिना सर्वा दी। वानीनः सासितः

मदत-वि [स•] खाकिस निरा केवल, फटना सरा सर (म देवहून्द्रो)।

सहस्य-पुर्व [बर्ग] हाबिर हीलेटी बगाई। वह साहबक्त विसरर बहुतनी कोलेंडे हरसाक्ष्य हो। - नामा-पु विमी हरमा बगारेडे गरंबमें किसाबा गया साहबक्त या सहारसनामा जिसपर जास-सरसे बहुतनी कोलेंडे हरसा-

घर हो। महजिद्रक-स्ते है अस्त्रिप्द (श्रुरिश्रंह)।

न्यात्र-ता व मधावत्र (वारकार) महस्त्र-तु [मेर] देश महाजले ! महत्त्र-तु सहस्त्रा ही प्रतिका-'वत्रन रहीर कहन

करि वादत अपनी महत गैंबावत'-सर् । महतवाम-द्र अर्थेमें पीटेको ओर कमी हुई गुँधे ।

महतान-इ करवेमें चीएको ओर कमी हुई र्युग्री। महता-इ मॉक्का मुस्मिया, महती। मुंग्री, मुक्टिर।

भी अपनेशे वहा जानता गर्व ।
 महताय-भी [का] चौरती। महतायी । पु चौर ।
 महतायी-भी [का] एक तरहकी आवित्रायांनी क्रिम्के

महतारीर्ग~की नाताः।

सब्ती-वि को [सं॰] वे 'मब्द'। को भारदक्ष बीमाः सब्देशः वनसंदाः -ब्रावदी-की॰ भादपर श्राहा बावसी।

सहतु≉-पु सहरत वकार्य-'वंदायन जसको सहतु कारी यहतु≉-पु सहरत वकार्य-'वंदायन जसको सहतु कारी यहरूको जाह'-सूर् ।

महत्तो पुत्रमुख इनका गाँवका मुखिया इछ इन्हेंकी वर्षाय ।

सहत्—वि• [सं] वडा, बृहत्, त्रेष्ठा ठैवा भारी। तीत्रः प्रवात । [को 'सहती'।] —कम-वि• वापस्ताः।

-सस्य-पु मङ्गविका प्रथम विकार, द्विरिवस्य (सो)। सङ्क्यम-वि॰ [सं] सबसे बढ़ा । -समापध्यक-पु

वह बड़ीसे बड़ी संस्था विसका माथ दी वा अन्य संस्थाओं मैं पूरा पूरा बा सके।

सङ्घर−वि [सं] (दो परार्थों, विषयों भादिमें) नविद्व वका । पु प्रचान पुरवः गॉक्का मुखियाः दरकारीः धूर ।

सङ्खरक—यु (सं॰) बरवारी, शुसादव । सङ्ख्या∽सी (सं॰) वहप्पनः प्रदिसाः गुरुताः सम्र पर् । सङ्ख्या–थु (सं) बरुपनः सङ्ख्याः गुरुताः सम्बद्धाः

परिचाम जनक अविक आवश्यक होता; श्रेष्ट्रता । - पूर्ण -पुक -शाकी(सिम्)-विक महत्त्वता ।

महती-पु [ल] पर्य प्रदर्शक रहमुमाः मुस्कमानीकं बारहर्वे हमान को महत्यकालके कुछ पहले प्रकट होने।

सङ्क्र्रूच्∽िर [ला] विसको दर्घ वीचारी गयी हो, सीमिषः निवतः। सङ्क्रुम्पदर्वका समाध्याग स्वाः —सावास—प्रावदन

स्वान्योडा सकतः । नशासय-विश् सैन्यं सन, विचार बाका । नशासय-पु वहेंद्रा शासवः । नगुल-वि विसर्वे महाल प्रकल्दे ग्रल कों । न्यारक्री-स्वी सक

क्ता सर्वेद्रदारची। सद्भव•∽पुदे मधना

महाना - स कि द 'मचना ।

सहनियोां –बु॰ मधनेवाला । सहनियोां –बु॰ मधनेवाला । सहनियों –बु॰ मधनेवाला ।

मीरवपूर्यः महत्तुः – द्रः भयनं बरनेवास्यः माध्य बरनवाताः।

सङ्क्रिक्र-सी॰ [श॰] लार्रायवोदे समा दोनेशी शगहः बक्सा समाः माच-रंगदा बक्साः सु॰ -सम्बा-बक्सा स्थाः सस्प्रेटा रंग सम्बा।

सहकूत्र−वि [ल] विश्वती दिवाबन की गयी हो, रहित निरादर।

सहयूव−4ि (व•) प्वारा प्रेनशव। सहयूवा∼निकी (व] प्वारो, मेसिका।

भहर्मत्तक-दि॰ सरमच-ध्यन कुंत्रर महमन वा फिरता यहिर गैमीर -सासी।

सहमद्•~५ ६ 'शुक्ष्यः । सहमदी=~नि ५ ६० 'शुक्ष्यः ।

सहसदाः == । चु ४० मुश्याः । सहसह= व वहताः चुर सहस्र-गहितः।

सहसह-व अस्ता पुर सुदान-गरित । सहसहा-विश् सहस्ता दुशा शुरादगर- मुख राज्या अहसदी वादी वृत्री वात न्यवीर ।

महमहामा == अ कि महबना सुरं व बहेता।

सन्देशना (१४८ जिल्हा मनपूर्ण-वि १६३ ३ ५ त[ा]रेल विश्वदा सन दिवी परपूर्ण में पूरी नरह मार रहा हो। प्रश्री निहा हुआ ह मामान्द-दुरु[र] कन्द कन्छ र्वेड्य क्रान्या समाहार्((हिम्) = विकास) अन्यो वात्रांत्राका है मनाजयन-१ ि कित दाल प्रता अन निष्ट-प रेशी धन्दी स्थल प्रतिस्थी स्ट 21121 मनानिया-५० । भूमन सन्तः mainfra-fe f face face gem ger go मनीमेग-प [स] बरम्भे हिंदण १९६० meineng [i]amtel सबीमाय-पुरु (म) स्टब्ट स व वृत्त व Kaplundadela antitane समीत्त-१ (६) थ्रथ । संशोधक १ (०) क्राप्टेश सक्तिम्निक्ति () द्र वेश मानम् -कम् पु Mater Pates and a mater mberferent in nad meter neberge Referet (Pity) = " | figner e mag at b. AND 1 सर्वाचीगा नष्ट १० ३ वन्त्र वि ने विकास प्रवे से ६ ६ इस्ट्रे प्रतीपोर्धि १ 🚼 🐧 रेका अभोद्राच रूपि । १०७४ वर प्राप्त = ३ प्रथमित है कि है अन्तर व रिवर शुक्र है जा है। to Att 62 7-27 07 LOGICAL BEERS FARS ी रम र अन्तर प्रश्निक पान क्षेत्र पुरू रिपाई ह -१७४१-वि १ न हो दाले ना व वी-४१७५ १९७ व १० हो mebrum tig gerer um mitem s to the sale all man to at 2 EPER . 19. P. P. T. S. P. T. E. T. T. E. T. profession in the man in the section EN TO TO ES mere (4)-5 1 to 10 Replied & Cang mant then Magazine de las Rose et esco de Re file & 1 4 7 4 mc h # 474Th & LIC SERVE क्षा वृद्धानको है। कल्पीकोतकन वृद्धान्ते ياسفط يغرفكا ATE WIR THE PURPLE pullerment of aniforce and are क्षेत्री नेप्याच कुल का का का का का का का का personal participant a test managed to and a बार्जा १७³भव १ है। अस्य विशास करक

لكرز للأوساء

Beigliente fe fine feca fier en Retenten fe Tuar feer art, . ter Brifte Ge-fit in aufin ebe HE HALLOW [40] Kund सर्वेदरा दिल्ली । ३१०] क अस्तर र सर्वेत्रस्य - पू अर्था विश्वास Rate - Cas of a floor o mertelie fei im & geb gebre gan T C'34 to raile EXTERN BY IN JUSTON सर्वातानंत्र को स्टेसार इ.स.६ अबोहर्गा(ने)-पृथ् ्रहेन प्रा हेरेला ह EATHI((14)-9 (+ EE 1171 + + 1 सदाहा को धिर्म देश सन अभीती नथीन शरापत छन्नान अपन्त ब्राह्मपुर्न्था । हिरोप्त ५८ हा दि भारती प्रदेशीत म e fant treut ga gree aaan maan ma द्यमाद्या वय पूर्व दशका अञ्चादश्चान प्रति होतर । memungald fante tea ben ferret eten megging. Gefein mitte fie freiten waren-g feine martine fie barafte er क्षत्र वर्षेत्र । न्युष्ट् पुर्दर क्षेत्रप्रकार । क्रम्यक्षी हु। हे बन्दरश्या है BTRTTRE-1 (] e L f d I अवस्थानमञ्ज्ञ । ४, ५ ७६ हेर् ४५६ TEAM SHEETH SHEET RUTH-FRE FI P 17 9 शताबी(विष्)-र्रा (०) ६३ थ व स्टब्स्ट्राम्बर है है जिस्से स्टेस्टर स्टेस 26.8 8 54. i teres of fully ex a tyle to be. property () and arealy are a personal IRRAFIE STORE । अल्लालः (० वन्द्रेश क्षेत्र द्वापर्वतः क्रमण्ड नवी । दिन्दश्च दिन्तः । हे क्षम् न्यु । दिन्दश्च क्षम् हे 12 14 the सम्बंधान(सन्)=५ (व अंध्य अवितर नेप हत्ये ने दृष्ट gregat i a segardan tite titte eta 1 46647 4216 4 2 द्विष्ट्रक के के अभ्याद्वा अभ्यादी है। जन्म At the fee of the state of the state of wayings for the oat offer 4-1 P HAPE T कक्षण के कस्ते हैं। या संप्रेट महें सक der bereit unt bet bieb bief tte m'y BRIGHT HAT BY WHILL 5° Art

Htt Kt Rather of 1 mert tear Reflered to Es 412 th the 48th ي سوي सर्गान । कि है किये ब्रह्म केलेक की श्री की प्रदेश के श्रीकृतिक के अपने क अपने के अपने क e estat a el ama la propia e el trafette. t tope fires rent of a so side, now with intale tends fores than be not ers mean म्पूर्णकृत्याः हे । देशर रेक द्विकेश स्थापन स्थापन the treat for a sil reserved a

trance & desce mouth for god greet t preture or energy rays or proven an अप्राण्ये प्रयुक्त सम्भागत एक्क प्राण्येत लेटा यह कहा । विशेष र द्वार्ग अंदर हो व दशका बहुर्राक्त स्थापन दरशास परदेश सामग्री हरणाच च वर् दिन्द्रभुक्त मान्य बार्यक्षा के बहुते । बारत है कर्नुहर्त He -terrain of to there at 1 att | state A(44) sets (-44) +1 (1) +2 -4

बेर्च बर के व्यवका सराह्य रहत है। 610 स्पारमान्त्र इक्षा । जेत्र त्र विदेश न्ते । है के । जब चेदार का लीका प्रश्नेक्ट ल f - 4 mt + 4 4 45 344 80%7 51 m + 54 BEAT BURREN & STAT ROSE -(2)4 /- 1 -5 Fo at

as for mer-e g fell # sim gabbe men 1 44 4 HTPM 12 3 Ft a >

#रुर=क और र क≓ पण्य का देखा*र* to it as much #F 4 45 F F 11 PTVES IF COME S

the front plays and HTER AL ALLEGE FORDER AND A atte g men b. gm. enth of mind offer

おける マー . .. HOT WEEK T errifig in organisma the secondary . . te unice a a 4" farte

男子付き 九 フ चेत्र १ ४० ३ला३ ४ १ त स्थल

THE CELL PROME ARRIVE STREET . माथः . मेन्स्रो १ अरा भारता जारापुरः प्रकृतिकालका

१ वर १५१ सम्ब

my the retained a collection my b der - (mb)per e arest aber : AFTER ASS TRES OF EN FOTTER ant fes unter git er e erer ge

कारा होता अभी शहर काला Mighe erfer nagene fine bien. RITTE & THE MATTER AT THE BING

attail the care white territor for mene feeln Jacobe filb es fert

mina-fe in] to be able to belled atiere e awgediffereis अरुमुओं के जिल्हा क्षत्र कर है यह mign fi fo & Pir 15 fichter wirt

to bei श्रामात्र-१ (४ र्वाचन रिम हो स्टी f THIPFEL

BYT was 2 at 2 erin h I have entere pre Westen fang er na gree ift feit. F4| F4 - [+ 44 7 F2 serve fol ben he

अविकार न्यू १६ हिंदिर अ.स. जिल्ला Etfang : 14 mailteet tabs : क्रफ़ा वर्ष बहु रक्षील हुई दे दे दे किला हुनी TO BE POSTERS WITE Y WITH FIT इ. प्रशंत च. राज्यकुन् हिन्दे क्षाप्त इ. स. am englet u bung begit em fe एक अर्थेण है देश दर्शिक करें की किए की इ.च.च्या राज्यों सम्बद्धां स्ट १५ । १५ र गिर्म म menting the balance of the age fire express age set g agras we arenes to a gent uben fein abfen at mit

The entire and above the time of their

the mile some designed as

a mar man that the man and gabet on seafur for made age of 7 बंद है उस्त इक क्यूचर रह सराहत कुन to be deal of the extendal If the gradition of H to or so with mo see bother so time to with का दिवाली को उस कहाँ जान अग्री पानी सेनी सेनी मित्र के अपनेत देश है के अपनेता है रूप ने the on & Anian Melantum 1 L. ** 1" 41 34 FRE FY PPR 4"A

and it busines that make the persons the

रकृत कर रही कन ममासिकों-सा केसी --कामानगी) । मसारकी •--को दे • 'मगरकी'। समास≠-प है॰ 'ग्रदास'।

मसिया-वि समेरा, मामाके वरवेवाका । --शासर-प्र• पति था पत्नीका सामा । -स्वास-की पति वा पत्नी को मामी ।

मिमपोरा - प्रमानका घर ।

ससी-की (मिलके किसी भावशायका) सरवित क्यसे रसाप्त्रशार्धेक ।

ममीरा∽त ४करोको चारिका एक पौचा जो वॉसके रोगोंको बचम बोवधि माना बाता है।

ममोस्र-पु एक छोटी विक्रिया, धीनिय ।

सर्यक्र+-प्र• चंद्रसा । सर्वहरू-पुन्तेहा विद ।

मय-प्र॰ [सं] जिस दान्द्रमें कगता है क्ष्मसे बना हुआ (कन्छम्ब) गरा हथा (बस्तम्ब), बुक्त (द्यागय) शादि वर्ष प्रत्यक्ष करता है। [की 'मबी'।] प्र दानव-विक्पी क्सिने इंड्रमरवर्मे अविद्विरके किए कर <u>भूत</u> समागृह ननावाः सन्मरः धीडाः केंद्रः अविसको(जमेरिका)में प्रशने वमानेमें वसमबाको एक वाति । -तनबा-नी॰ संदी-रसे ।

मर--म [ब∘] हे 'मैं'≀ स्तो [का] शराव ं ~कदा, "म्राना"त मदिराक्त्व । -कक्क-वि॰ श्वराण पीनेः पाका । - अक्टी-की सराव वीमा, मचपास । - एकार-- मोश-(व दे 'सबब्क्स'। ~खवारीः- मोशी-की दे॰ 'सवदक्षी । -परस्त-विण सरावी सदिरा-मख । -परस्ती-स्त्री अविराजेश । -असेश-प्र

स्ताव वेचनेवाला । सबगक्त#-पु भरत हाबी।

सबद-दु [सं] पर्यक्रमा सपन = पु॰ भरत कामरेव।

मपर्मंत सदसन्तर-विश्व सदसन्त भरत ।

सयष्टः सञ्चलक-प्र [सं] बन्तर्वेत ।

मबस्सर-बि [भ] हे 'शुबस्सर'। मेंबा~क्सी व मानाः मोदा संसारः प्रेम वंबनः बचा ऋषा

" हो हो बाद गुन्हारे हुएको सवा करति ग्रम एडियो ~ ध्यः [सं] बोहीः प्रवरीः करनी ।

सपार-वि दवान क्ष्यानुका।

सपारी-मो धरत-धान बंबुमद ग्राविहम रणी वितर मवारि -स् !

मञ्जन (तं) विकरा दिरत । -शत्र-पु अनेर । सपुरर-इ [मंर] दिरवा शिकात वीति। श्रीमात कीक । सपूर्वी(गिन्)-वि [सं] कमरीका बीसिमान् । इ०

पढ मानीस **अल**ा

मपूर-५ [मं] भारः वस पर्वतका जाम । -केनु-५० कोधिरेय। –गति–स्ता यस वर्णपृत्त। –श्रीवक-दुः प्रिंका। –चरक-पु गृद-कुरपुर। –अंघ−पु सोनाः गारा -तथ-प स्थिता -ध्यक्र-पुर है मीरपातः । -मृत्य-प्रश्रदक्ष सरका भाषः। -पत्रकः-3° मीरदे चाँवकी शहका नगतुन । —पुच्छ-तु मीरदी |

पैछ । –श्य – पु॰ कार्षिकेष । –बिदसा – सी॰ श्रेषका । -विका-सी मोरकी बोटीः एक श्रव। स**मरक**−प्र सि] मोरः निष्याः सरिया ।

संबंदिका-सा सिंशी संबंधाः ग्रीप्रवा । मयरी-की [धं] मेरनी।

सयरेज−प॰ सि विकासिकेत। मर्रव-५० (सं•] मक्दंद ।

मर-प॰ सिं•ी प्रत्यः करती (वै) । सरक-प्र॰ [सं] मरी, महामारो । * ली वधारा, श्रह-नदाना- जरते टरत न वर परे वर्ड मरक यन मैन'-

मरक्शा-प्र• [म] प्रच वा शावरेका मध्यविद्य बॅटा सहर

मुकाम सक्य रथान । मरकारी-वि॰ बेंडीय, प्रधान (कमेटी, इकुमत) । सरकत−प्र∘ सि॰ो पना । --वाग्री--श्री पानी ।

सरकमा≔न कि॰ शक्कर टटनाः श्वना ! अरकद्वरा - वि (धाँगसे) सारचेवाचा (वैक. सेंसा द०): इक्टूड । [सी॰ 'मरक्दी' ।]

शरकामा~स कि॰ बगकर दोत्रमा ।

अरक्रम−दि॰ थि] किसाहमा, हिस्कि (रक्तम−हिस्तता)। अरक्षका-दि॰ मरकश्चाः स्रोमसे मारवेदाका ।

अरहाक्का—दि प्र७ दे 'सहनता'—'संख सिस्न संदर दिव सत्तके अव मर्गमी परोरी - धर ।

अरबर-पु॰ बद रवाम वहाँ सुडें जरु।वे बाते 🖏 महान । अ•-का अतना-भसानका भूषा **दरावनी धाउँका बाद**यी।

मरचा-तु॰ दे 'भिएचा'। सरक्र∽९ है 'सर्व'।

मरबाद मरवादा-सा दे 'मर्गादा !

अरुखिया-प्र वानीमें इक्कर कीने निकाकनेवाका, नीवा कोर-'नो सर्विचा दौर वह सी पानै नह सीप'-व । वि॰ की सरकर विवा ही। की मरते-मरतं दवा ही।

अपमराः मरमेक्षी उद्यन । गरजी⊸न्दी॰ [अः] सुद्धीः स्दोहति। हण्या रुपि ।

सरजीवा−९ 🐮 'सरमिवा ।

भरण-त [तं•] घरमा, मृत्युः नवनाम । -धर्मा(सँग). —क्षीशः=वि मरनेवाका मार्थे।

सरणांतक-वि [पं॰] विस्ता मंत्र करन हो। जाननेता । अरवाशीय-इ॰ (थं॰) बलादे बारण शावित्रमान्धे सम्बे-नाका भग्रीच ।

शरणीय∽वि [र्थ•] मरनेवाला मत्त्री। अरबोन्मुक-वि॰ [मं] वा सर रहा ही आसक-सरथ।

भरत−९ [ग] मश्च। मरतवा⊸पु [ब] दे• 'बर्नेना ३

मस्तवान-१ शेगन दिवा दुना मिट्टीका वरनन जिल्हें

भवार, सुरब्स भारि रखते है ।

भरता−नि॰ मता प्रजा दुर्वत । सु॰ -क्वा म करता-भावनते निराध व्यक्ति सब मूछ करनेको तैवार वाना रे 1-(ते)का मारना-दुग्गवाको और शताबा । -जीते-विमा तरह क्यों स्थों करके। -श्यतक-आदिशे बकाब, विश्वीमर । -मरवे-मरवे समझ मारदादो। दि० दचक्रुकमें दल्ला। — क्रुकीन−दि सैंचे दुक बरानेमें जनमा हुआ । —कुछ –पु• गसित <u>इप्र ! - क्रवस - पुण् भारी तपस्याः विष्युका पक नाम !</u> -कृष्ण-पुपदरीका दाला साँग। --केनू-पुछिद! —कोश्रस−९ इक्षित्र कोश्रक बायुनिक मध्यभदेशका रिंडीमाची भाग ! —कोद्या ~कं। एक संदी । —कतु ~ मणा वद्य-अवसंय, राजस्य आहि। -क्रस-प् निभ्युः – कोथ−पुक्ति । – इतिर−पुरंधः । – अपर्वे – प्र• सी ग्रबंद्ध संस्था। -यसा-सी महाभारतमे र्वनित प्रक्र नदी । ~शीच−यु इत्यिदश कुटका सक्ष्येत । रि॰ तील गंपवाका । −र्याधा −सी मागवकाः केवकाः पर्मुडाः −गद्ध--पुरित्यदः −गचपत्ति –पुगनेञ कारकरुपः धिनकायक अनुचर । ⊸गद्र−पु•क्ठिन रीमाकार । ~सर्थ−पु किन्तुः किन्। ~सक्र−वि० संगी बर्जनवाका । −शुष्प⇔ति अति शुक्कारी (भीवय) । -गुद-पु॰ मेप्र गुक्तन-माठा पिता और कापार्व। ~गुस्मा−मी सीमस्ता। ⊣शोपा−को भनतमूह। -गारी-की दुर्गा -ब्रॉब-पु नहा ग्रंथः व्यक्ति महरूका प्रथा – प्रह्न−पुराहु। – धीव−पुर्वेटा Bरः −चूर्यां−को स्थः −वृत्र−पुत्रवृत्र **पौ । −भोप−दि वहुत बोरको भावाञ्चला । पु**मारी रस्नाः शासार । --बोपा-सी काक्कासिनी । --चंतु-उँ पेंक्कासमा। − चंड− पुबस कृतः क्रिक्का पक भनुवर ! --वंडा - क्यो चामुंडा ! -- क्यावर्ती(तिंग्) ~5 सावमीग नरेख समाद्ः −**चम्**∽मा विशास सेमा। –शुप्तय–पु शत्कृद्धाः –छिद्र।–की महा-मेरा। - संबीर-पु॰ कमका नोवृन -- कम-पु॰ लेडवन प्रा भारमी; बाक्षि या श्रेणी विशेषका सुधिनयाः समसमूह वनता देन हेम इ.एतेनामा साहब्द्रार । [-जनी-जी [दि] महाबनका पञ्चा क्यमेका छेन-देन ।]~ अस्य – दि ^{प्}रत रहा निकेतः। – ऋछ + ९ छन्नद । – कारूनि न्त्री पीनावीपा: राजकोपातको :-बिह्न-दि जिसको जीम बहुत संगी थे। पुरु शिवः यक देखः । -शामी(नित्)-वि ^बर्डी बड़ा प्रानी । प्रमहामुन्ति शिव । – ज्यो**ति(प्**) – 3° दर्प धिर । - ज्योतियाती - लो + रही माठकँगमी । ~श्वाछ~वि मगक्ता हुवा बहुत बगवता हुवा। हु रनमध्ये वार्तमः शिवा वक्त गरक। -सरबण-पु देश मस्यसः । -सपा(पस्)-वि इठार तप करनेवाला। 3. विष्यु। –तस्रकृषत् –पुण्क हृष्युवर। –तक्र− उँ भीवेड सान लोकोंसेने चॉववॉ I -शाबा-स्पै॰ एक वंत्रीच हेशा वैश्रोती एक हेगी। - तिकट-पुरु सीम। ~सीहग=वि अति तीहल ! ~सीहणा-सी विनासी। "सेजा(अस्)-वि अनि तेवस्यीः अनि पराक्रमी । पु बीर। शराः कास्त्रिया अस्ति ।-स्याया -स्यायी(सिन्) −ति बद्दनस्थागशीलामु शिवा – इंड-पुसरी प्रवाश्चारी पंड सवा। यमहतः। -० धार-युवमरावः। - व्यासी-त [हि] यमराज : - इंत-पु वन वॉर्टें वातः द्वायीः शिदः। –वृता-न्यः जानवेनः। –वृङ्ग-अ तिकाकद राह्म । —इसा −सी मनुष्य के बीवनमें महिरोपका निर्पारित मीन्द्रकाल । -क्षाप्र-पु वका ।

गवा है (तुकायुरुष सोनेकी गीका दान, गमदान, कन्या-दान इ.)। ~दारु न्यु देवश्यका –देव – यु शिवा -देवी-सी॰ दुर्गा पार्वती; सबसे बहा रानी पररानी। -वैश-पु मूर्गंटकका कोई मुख्य भाग विसक्ते अंदर कर्ष देख दो । −द्वस−यु पीपकः दश दुशः −क्षोण−पु शिवः सुमक् पर्वतः। — द्वीय्या—स्वीः द्रीयपुष्पीः। — द्वारः— पुनका वा भुक्य दरवाना। – द्वीप-पु महादेश पुराणानुसार पूर्णाके ये सान गुरूव विभाग-जेषु क्षस्र, भारति कुछ क्रींच भारत और पुप्तर । —यम-वि बहुत बड़ा यनी बहुमूस्य । पु सीमा; बहुमूस्य बन्धः तंत्र भूपः सेती । - धनुप्(स्)-प्रक्रित्र । - धातु-पु सीनाः सुमदः। - नीर्-पु नीर्वसके अन्तीत एक राजाः दे कममें। -र्गदा-स्ता बंगासकी एक गदी। मुरामयादे+ ऋसमें। −शनर−पु वदा शहर। –सद−पु छित्। –सदी-सी॰ बही सदी, शसुद्र गामिनी गरी। वहीसास श्रीकर बंगारूको बाहीमें मिरने बासी यक नदी। -नरक-पु॰ २१ मरकोमेंसे प्रदा - जनमी-ली॰ वाधिम धुहा जनमी । - नाटक-पु• इस अंकीशका मारकः। -माच-तु वहुन बो(की ज्ञानाव हाथी। गरबनेनाका क्षत्रकः दका दील: श्रे**ः**। कानः धिवः सिंदः सेंटः -नाभ-पु एक दादवः। -नारायण-५ विष्णु। -नास-५ दिव। -निव-षु वकावतः। −निद्रा−ली० शुन्युः। −निधान∽पु० वातुमेरी करा । -निवम-पु॰ दिम्मू । -निर्वाण-पु व्यक्ति सत्ताका पूर्व नाश परितियांग। - मिशा-सी राविका दूसरा कार शीसरा पहरा दुर्गाः प्रकवरादि । -नीच-पुरवका -नील-वि गदरामीनाः प्र यद वरहरू नीचमा भूगराथ क्यों । - सूरद - लेग्न-पु धिव । - नसि - पुर्के मा । - पंक - पुरक्त पाप (वी)। -पंचमृत्य-पु येन भरती शानापाडा काहमरी और पाटना-इन पांच देशोंकी जहाँका दीता। ~पंचविष-पु सिपिश (श्रामे) श्रासक्त, मात्रा नछनाग और असक्तीं-इन पॉन सिपॉका समूह ।- **पद्ध**~ वि वहे पथ इक या **कटावा**ना। पुरु गृहष्ट। —धार्मी (क्षिन्)-पु बस्यः। -पय-पु रावदवा महाप्रस्थान का पर शृत्यु। दिमाञ्चके कत्तरका वह रात्मा जिल्ले पुरिक्रिर मात्रिने स्वर्गारीहरा दिवा मा। एक मरक ।-पश्च-पु इनेन कमला सी प्रथम संस्था। इहिल शिक्षा रियगमः कुरस्का सी सिविधोर्मेन एक। एक संप्रवेदी राजा। --० र्जब्-चु भरवंशका अंतिम राघा। -पविश्व-पु० विश्वा -पातक-तु वदुत वहा पादा स्युनिवर्शित वे र्षं व महाराष-अब्बर्ग्या सुरापान भोरी गुरपनीग्राम और दम प्रदारका कर करनेकाओं हा मंतर्ग । - पासकी (किन्)-वि महाचन्द्र धरनेशन्तः। -पाग्न-विश्वर्य बराने आर उमदा दान रेमनाता ब्राह्मय महाबाद्धमाः महामत्री । --बात्-पु दिव । --पाए-पु महाचानक । ~शाच्या(सन्)~ि महापानको । -पाशुपन-पु॰ मीनतिरी।-पासक-पु बीम सिम्रा। -पुर-द रम और मस्य क्यानेश एक शिक्ष विशि

दासः वन सोवद दानोंमेंसे होई बिनका फल स्वर्ग माना

Agrand on the Park method to the state of the stat 4 4 Riditation Ryan Riblini Man P EFFIFE & A-PREFIE still be to go the stilling 114 2 24

क्रमाज क्रमाज

#7K+1 t fct= 1 tern in the direct star after free ex-दो बाज बाक होता अवना अरहात्वा करकार हो। साहस्यत्वा रेश , क्रूप क यह र सूच क्रकेश व wan an are do to have again by दर ६३४ अटर १८४ प्रश्ना⁴(१४) प्रभा (प्रश

भाग दापन भागि एक (द्वा, त्रम प्रकृते ६ इ.१. इन १९९४⁾ ५०० ४ ४ ११७५ अस A F F F FAY BAR TOTTON toward in earn mon the art war. to a general by a topic to be about the second of ६ (हिंग - ५ राज्य ३ हरू साक्ष्य वर्षणा - है

रत रथक सामाद प्राची बादर देत हैं। रक्ष अन्तर अस्तर अस्तित्व र नेवा द्वारान्त्र वर्षा के क्षाप्त कर्या है । किन्द्री वर्षान कृता कार्य दिना है सी ८ लेगा । शामेण्यूषी पात्रप्र संयोग्यन्य ६ मोर्ग । शामाण प्रत्य ।

APPRO S'E PO ATON M'S AR PERS ET . PRESSE SORT foretreet at one by present wind ! endem entice

とい かってき シベト BITTE - 42 2 JET

pred at 8 with engly ence BAN-GOAD BE RIF & + GOAR F. mem with all

Tingt Kug mann mellengte binge of a freit Municipal BE &

क्रिक्शान्त वर्षात्र है जाव भावतात्रहरू_{ये} क्रांतिक करें । क्रांता रेचे मराभारक के दि अर्थन देखा र वादन एक इसीएक बीच के के प्रेमण है है. से सीईमा

* 41 1 I F YSTE BY WATER OF BUT BY BY A A CONTRACTOR # *न्ये क्रूपन*्दर्श

were from being a ser ers THE PERSONS ASSESSED. **27** 1 2 2 7

Primi e & sie gete in le *144

Property by the same

प्रतिकान्त्रीयः वश्यक्तं द्वीमानिवृत्ते कृताः प्राप्तकन्तु है क नहैं-को बार्ड मते की है तह या रीवार्गक, मात्र की बार्क है समुद्र ferthie b bint bie na eigen um क्षी अन्य विशेष किंद्र पान र सक्की पर RINGLE AND E SPARE S. BARRESSEE

27 f 2 e often मरहार मरहार म देशका । ्रा विस्तान्त्रः चौराहत्र निरम्बूष्ट विश्ववर्षः है। व कानुकरद्वा क्षा चरार्थः व Bill of the state water by the fitting । न्यपूर्व क चल्दा क्षत्रेयक क्षताब्द वह ब्यूक्स

X*22 \$# # 8 TINT-Er strate

mittered to be a state of the first gist wer e ha & Cabit ber ere fie. करेरीचे कर्र पूर्व ब्रह्म राज्या हैस्सूने स्व पूर

enteres y y m 1 1 - (it) yer g englis eig en i buch kith क्षेत्रीतात । क्रमहत्रकारिक विकार देशक विवास कुण ए meger-fe at a bereitungt fr

At wise in from about any man graps | mitting neven boar foreig at 9 bel. ter "fre d' er ain i mifren me fmeitent wennet un ffe at ?

मार्ग प्रश्न क्षा क्राहित्यान्य के हैं न सम्बद्ध सम्बद्ध हैं। क्षार प्रश्न क्षार प्रश्न हारण हैं है REE SAME ELL BUT & DE FIRST I MELDE OF WAST OF FREE PARTY AND STATE

ह तदही दक्षांबहरू हरासहर व्यक्त merging and production of the profession BIRT & & same per it on their Rent & it from an eigh die et Therefore I be note that it is not a new a constitute that I " Refitte & 2 Provide

> Afterlay & 7mg 45 pm # 9 4 when a statem sets to the th # 720 W 24 x er is a rol and 4 a the

4 - 25, 72.2 MEGNET IN THE 2ND AND THE PARTY OF success on 124 than telly the p mar denomina e po fo

for farms a new [\$44) , at is t to a ster eve is a f

9

मरीचिका−तौ [मं•] शुगत्च्या । मरीची(चिन्)-वि॰ [सं] किरणींशशा । पु स्या । मरीम्र−नि [न•] निसे रीग की दोगी। मरीज्ञा−दि की जि∘ीरोगिजी। मरीना−पु [स्वे॰ 'मेरिको'] एक मुकाबम कनौ कपका । मर्रहा – सौ॰ मि॰ | सँचे कहाटवाकी सौ । स६-प्र• (सं•) मरुम्मि रेगिस्तानः मार्वाङः पर्वतः इनवद बस: मरमा नाभद पीमा !~साता−सी स्ट्रेस ! -वेश-पु• रेगिस्तान । --व्रिप-पु• **ĕट । --द्वीप-पु•** भदमृपिमें रिवत इरित स्थान जककिस्तान । 🗝 धम्य 🕶 धन्वा(म्बन्)-पु॰ सस्मृति। ~धर्-पु नारवाङ्। "मृश्नि-सी॰ रेविस्तान सलरहित रेतीका मैदान ! -मुद्द-प दरील !-संग्रच-पु॰ एक तरहकी गुणी ! ~संमवा~ची॰ महेंद्रवाक्षी। छोटा बवासा। यह तरहका । **धरिर । ~स्थाल**−पु रेतीका सैदान रेपिस्तान । मरुभा-पु पर्दी श्रेष्ठा एक प्रैया। वह ककड़ी विससी हिटोका करकावा चाता है- 'मक्सा रूगे नव कड़िश क्रीका सुविधि सिक्य सँशारि⁷—शहर वैकेट । मक्क∽पुर्वीसीर। मस्त-पु॰ [सं] बाबुः देवतः। मरुष्-पु (सं] प्राप्ता बाजु (इनकी संख्या साथ मानी यती है-कम मीम भांत धुनि सासङ्ग अमिनुस्व षिद्विप)। देवताः बाक्का अभिप्राता वेनताःसोनाः सबमा । -कर-पु बरद ।-तभय -सुत -सुनु-पु॰ वन्यान्। नीम । ⊸पट−पु वादवान । −पछि −पास्ट−पु• इंह । ~पम-९ बाह्यसः। –प्रब−९ सिंहः –फ्रक-५० भोकाः −वरमै∽पुजलास्टः। −सका∽पुशनितः। मदल-पु[सं] यद चंद्रदंशी राजा जिसने अनेद वहे मने नय किये थे: बाज । मदत्तक−दु[सं•] मस्त्रः मागरीना । मस्पती-सी [सं•] वर्गकी पत्ती। मरुवान्(बन्)-दु [सं] धेहा दन्यान्। मरुद् - मरद्का समासगत क्य ! -शबा-पु॰ देशगा विगधी संस्या पुरामोमि ४९ बताबी गबी है। -स्य-बु नीका देवरथ । नशाह नयु सुन्नीः नाग । मदेशा≉−व कि मरीश काना का छाना १ मस्स-पु [सं] कारंदन ! मर्थ-पु [सं] मन्त्रा। मस्तक न्द्र [तं•] सरभाः स्वाधः राष्ट्र । सक्ता-g दे 'सक्ता । मस्त्र-विश् बार्टिम । -बारि-बार्टिमाईसे । मरूक-पु मोरा यक तरहका हिर्म । मरुन्दवा-स्मी [में] क्यासः ववासः। मरुरा॰-पु॰ मरीइ पेंडन। मरोद∽को ऐंडन बक्ता औवछे रोगमें जाँवीमें दोनेवाणी रेंटन देशिया • शीमा वर्मद । -कली-स्पी वेशियामें माम बर्नेदानी दक करी। सरोक्ता-स कि एँडमा वन देना। वनेडमा (कान)। मन्त्रकताः दोहा देशाः यरदम मरोहदर मार बालका । महोदा-पु॰ देंडम मरीपा देनिया।

सरीबी-की गरीह, एँडना गीहे बाटे बादिही बची बी शर्थोंको सक्तेसे वन वादी है। मरोरक्-सी वेंडन; गर्ब~'साबू बाबत देखिके मनमें करें मरीर'-साबी; क्रोब: पछ्ठादा-'बॉ मन माई मरोर बरे बिमि चोर भरे बर पैढ न पायो'-सवानिषि । मरोरमा*-स कि दे मरोहना'। मु० हाथ मरोरमा ⇒ पछतामा~'काइ हरने न पाये, गये मरीरत हाथ'-पन। सर्क-प्र॰ [सं•] प्राणः वेशा शंवर ! सक्केक∽पुर्सीसद्भगा। सक्ट-पु॰[सं] वंदरा सकताः हरगोडा पद्मीः पकरतितंत्रः एक रवावर विवादोदेका एक मेदा छन्मवका एक मेद्र। -पास-प समीव। -पिप्पस्नी-सी विचवा। -प्रिय-प्र किरमीका देइ I-वास-प्र मक्क्षीका बाला I -शीर्प-पु॰ हिंगुल । मर्केटी-सी [सं•] बानरीः सहस्रीः अवभीशाः होंछः छंदके भी प्रस्पवीं वेंसे अंतिम । मकरें ~पु[धं] भेंपरा। मर्करा न्यां (सं) तहपानाः सरंगः संस्था स्रो । मर्बेट~प्र [मं] ब्बापारी ≀ महा-द [ब] रीय व्यापि शेमारी, भागारा भारत कतः दुःद्यः। मझीं~सी वि }दे• 'मरती'≀ मर्च-पु [चं] थीपीः पोठमर्द । स्ती भीना । गर्वे मर्चे ∽द्र [सं] मनुष्यः भूकोदः। मर्तवा−प्र [ल] दरकाः परः साट दश्चाः मतवाम-इ रे 'नरतशन'। सस्य-वि [ध] मरणकोकः नदवर । पु मनुष्या -खर्मा(मैन)-दि॰ भरणग्रीच । -भाव-प्र मसम्ब श्वमात्र । - अदा-इ किमर विस्का मेंह मनुष्यका भीर थह रहता मामा वाता है। -सोक-त सनम्बनीय भुकोस्त । मर्ब-९ (सं) मर्रनः (का) प्रम्य नरः मतुष्या बीर प्रकापि । - भावमी-पु भना भारमी। बहारूर मरदाना । -बचा-पु बीर, बहादुर । -बाज्ञ-वि• र्थ्यती । -(वें) सुदा-प्र• भगवान्दा मसः, लराका वंदाः महा मारमा । -(दो)ग्राम-पु॰ की पुरुष-काम स्रोग । मद्क-पु [मै] गर्रन करनेशना । मद्न ~पु॰ [मं] बङ्गा माक्षिश करना। रीतना कुकः कताः भूगं करनाः पोरणाः मारा करना । सर्वेश-से कि गरेंग करना मारिए करना शहना कुपक्रना- सहस सुनियण सुबूदमिको महिया अधि-मान'-राम गूँबना महिना। धूर्म करना। माध करना । सङ्ख-पु [मं•] प्रंपमे मिनता-सुनता एक प्राचीन सर्दानधी-सी [का] बराहुरी। पुरचन मर्दानाएन । महाता-विक [का] बुरूप-मंत्री महीना पुरुशासिका वहादुरः अधीम । पु मर्शना देखा स मरीनी

तरह प्रशीवित प्रस्पमे । -बार-म मरीदी तरह

प्रदेशका निवासी बड़ा राष्ट्र । [∽राष्ट्री~सी मध्यकाक की वा पूसरी प्राकृतीमेंसे एक सुक्य भाषाः महाराष्ट्र देखकी मापा, मराठी । –शाहीय-वि अहाराह संवंतीः मदाराष्ट्र देशनासी ।] -शह-पु: विव । -रेसा (तस्)-पुन्नियः - होय-पु॰ मारी रोग (भायु-वेंदके मत्तरे ये बाठ रीग-रामाव, श्रव दमा कीव, मनुमेह, रभरो चदररोन और भगदर)। -शेमी(शिन्)-वि॰ महारोगस् ग्रेडित । [स्ती॰ 'महारोगिणी' ।]-शैज्-वि अप्रि सवानकः। पुरु शिवः। –रीष्ट्री-सी दुर्गाः। --शौरव-पु २१ तरकॉमेंसे एक। -खक्मी-की नप्रामनको प्रष्ठि कर्यो । −िस्ता-प्र शिन ⊢कोक~ ष्ठ क्षेत्रा। ∽सीह∽पु शुंक्क। ≔र्वश्च∽पु ईसाकी गाँचना खतामें रचित एक पाकीसव विसमें बीजवर्ग और क्षिक्का दिवस्य दिवा नदा है। -थशा(शस्)-५ हिन । वि विद्यास बद्धादाका। ∽वर्थ−५ पना भीर वहा अंगरू । −धरा−की दुव । −धराह्-पु विष्णुका बराइ अवनार । -वस्सी-ली आपनी कता । चस−५ विञ्चमाठ स्मः -वाक्य−५ महर्ष मकारक गावव भाद जहारिम तत्वमसि , जयमारमा प्रसः सादि उपनिषद्भागः। —कातः – वृत्रानी इवा मेनका – वादी(दिन्तु) – वि छारकार्थ करनमें तेया -वायु-सो दे 'स्वावात । -कार्यी-को नंग-रनानका एक विश्वच वाग की चैत्र-कृष्णा प्रवीदशीकी सतमित्रा मध्य और श्रमियार द्वीलस पहला है। =वासिक-वृ पावितिके सूत्रीपरकात्वावनकृत वासिकः। "बिक्रम=पु सिंद्र: यह नाग । —बिशा—बी+ तंत्रीक वेस वैनियों-यनको सारा भोडची दुवनेश्वरी भेरती विषयरता चूनावदी नगठामुखी मार्तगा और **ष**मका-रिमका दुर्गा गंगा। -विरति-पु शिवः -यिकः-५ अल्बासः। -विष-५ दो-मुँहा शोपः। -विपुध-उ मेक्की स्क्रांति (इस दिन दिन-रास बरावर बीने ⁸)। −वीचिर−पु रक्ष नरका −वीर∽वि व<u>द</u>त पेश बीर कोक्सा। प्र सिंदा बजा निष्णुः सम्बाद्य मान्। बबाधिः श्रेवसः सफेर भोताः बायः यैतीके भीते। **एवं भीर अंतिम तीर्थकर (त्रिद्**लाक गर्मने उत्पन्न महा-राज सिदार्भंडे पुत्र भी युवामरमागै ही राजन्यार शीरकर वेष करने वजमे चल गर्य। मिर्मादकाल ५१७ ई)। "पीरा-ची शीरकाकोली। -वीर्च-वि अति वीर्य धानो । पुत्रक्षाः १८ तुद्रः वाराषो अर्थः - सीर्यो -की मनदरासा महाशामावरी। गुरुंकी पनी गेहा । "र्थ-पु• शेट्रेंका ताका बहुत बक्षा वेश । -श्रूप-प् एक सोबंद मारी देल सोंद्र । -यग-पु श्चिमः यस्ट । वि प्रवस्न नगवाला । —स्याध्य-न्या सहारीय । ^{--ध्याहति}-भी शत न्याटनिकीयेसे पहकी तीन-अभ्, अभुद अध्य को शायशी संवर्धे गृदील है। ~मम-त• दुर बचा। ~शत-तु वपुत वश ककिन मना वारष परस चलमेवासा प्राथमिकाम प्रान । वि रे 'मरामनी । —ससी(तिन्)-दि सरणा' थारण करमेशामा।पु सिवा -सीता-पु क्या धाः लखादः बनयोरी बद्दी। सी संयक्षी संस्थात हुनेत्या एक निवित्त "

−शकि−की॰ महती इक्तिः पुर्गाष्ट्र कार्तिकेयः शिव । वि भवती शक्तिशरू। −शरु−प पतुरा । ~शतावरी~सी वही संगवर । ~शस्त्र— पु॰ किंगा मछ्छी । −काछः −पु वका गृहस्थ । कास्ति − पु छना सुधनुदार चावल ! -शासभ-पु भवत्वपूर्य राजाबा। वि निसन्ध शासन महाम् हो। –िरास (शस्) – पुण्क तरकता साँप। − शीता – स्ती स्रत गुक्री र −हाकि –को सीप र −हाक्का –सी सरस्वती। -बुअ-पु चौरी ! -सूत्र-पु॰ गोप ! ~सूत्री-सो• अक्षेरिन । ~सून्य~पु आकाश्च । **-इ**सदाम~पु• काशी नगरी बाराणसी । -श्रमण-पु हुद्धदेव ।-भ्री-वी दुबरेनक्र का छक्ति। -स्वास-पुर्श्वास रोगका पक भेद । −इवेता∽की सरस्वतीः दुर्गाः सफेद शकर । =पद्मी=सो॰ तुर्गाः सरस्वती । =संद्रःति~स्तै। मसूर चंत्रांवि (१)। −संस्कार~९ शेलेकि। −सती−स्रो परम साध्यी परिज्ञता। -सरब-वि अति व्ह्यानी, मदामना । तु : तुब्रहेवः कुरेतः बृद्दस्काय वहा । --समा--की वहा बक्साः महासंगः हिंदु महासमा । -समाई-वि , पु॰ [४॰] दिंबू महासमाका बनुबाबी ।-सर्मगा-तो कन्नमी भोवनिका वसा≀ −समृद्ध−प्र वहा समुद्र, महामानर । -सर्ग-त महामलवर्क बाद होने बाक्षी मधी सुवि । -सर्ब-५ वतदस्त । -सह-दि बहुत सहमेबाला, थमाश्रील । पु फ्लबाबा कुम्बद्ध पृक्ष । ~सङ्गा~को मापपर्यो अन्तान दृष्ट । ~स्रोतपन~ पु॰ थक जन । -साधिविमहिक-पु परराष्ट्र मंत्री । -सागर-पु॰ महासमुत्र । -सारमि-पु भरण। —साहस−प्र वर्षि साहमा वकास्थरा बदरदरही छीन नेता व्येती। -साइसिक-वि वर्ति साइसी।पु बलात्कार करनेवान्या वलपूर्वेक प्रश्न करनेवाला । -सिंह-पु दुर्गाका बादम सिंहा धरम । -सिद्धि-सी यक तरहका बाहु । ~सुम्ब-पु श्रंगारा रितः पुरदेश । -सुक्सा-मी रेत । ~सुन-पु पुरका दंबा। -सेन-प्र महामैनापतिः कोच्हिया शिव। -र्क्य-पु क्रेंट। -र्क्या-मी बाग्ननदा देह। –श्थक्री−न्योः पृथ्योः। –श्यायु –पु• वरिवरंपसनाद्योः। -- हश्यम-वि भारी राज्यवामा । पु• व्यव शरहबा दीमा -इंस-प् विष्यु। -इवि(प)-प्रवासका वी। –हास-पु भट्टाम। –हिन्दा–सी दद तरहदी दिथकी। स्•-सा**ई आमा**-मदन श्रॉरने हतमा परहराम दा जामा है अहाही - स्री अपनेदा श्रामा संवत्त्री वजरूता महाबस्त•−५ दे 'महादर । शहाबर=-द्र है 'सहावर'। महास-४ (वं) विश्व मद्राचार्ये−५ [शं] प्रवान भाषार्थः महाद्य-वि [वे] कृति श्रमी। पर्म श्रेय । महातम - ५ १ फ्लास्य ।

सद्दाग्सा(ध्मन्)-५ [ti] विगयी जाग्या हा रक्पाद

रिया महत्त्वामा दुष (म्द) ।

महामु हो कथाएपा धन बीगी। विद्य पुरस परमाप्ता।

सर्वि- सक्तेव ه بربايديم अप्तै-पुन (मन) कार्न अपुत्रम सुद प्रश्न के में अप्तास) mite-ft fregulaftenger um, fie gem Ref-M's fo latte t Stages the fearings 4-1 muffer-d'e feif abn mit enten fber **वर्ग-भा श**िल्ली पुरुष् सर्भा-पुर पूष्प पुरम है। स्टी: स्टी एका) र कर्रीर मेंत्रनातिष्ठ वर्ष पर धररे हे होत सम्बन क्षानंत्र काल नाना करा हरा है। राजान सर्भ-१० (४००) ६ मध्य सम्बन्धन को ब्रोक्ट द्यार्थ ह न्याक्रार-१० मेन्सी स देश्य १ न्याकृती-क्ष्में हुई सम्बद्धान कार्य के मिना क्षाप्त है। Baran dad t mandand Luid to Ind. Little मा चीरते संस्था क्षत्राती मन्द्रता स्थापिक द्र अपन्ति । -शिक्त्य-हि क्लान्ट्रेश्वरण्डे क्षेत्र रीपरा । -- ब्राह्म क्षेत्र अस्त न्या वर्ग कर् mer 1 - Trenfr-etts bet betreift fait. बन्दा । अनुपर्याच्या अनुस्तर । अनुस्तर । अनुस्तर । APP EPATRICI dir tun t mat fam efe te jeten #CER-go Er Wirth with शर्वार्ट(दिव)-हि । ११मेश्व भवत्र का रामा अप्रिक्तेनक्षेत्रकः हेन्द्रश्चान् द्रान्तर martem mat gent geben 1 ab etter सरे-१ (गोरेन अरे १ /६ क्वार्ट-दू (स विश्वत रीप्रतीकाताः सर्वे(१) १० र }प्रतेत्व स्ट्रस्ट ४७ प्रतेचेत्र nearly follows because weller ह्मिन्दर मि देशन वर्ष भरे । मनदेते महिक दीव ही बानत कुल्बी प्रापः क्षेत्रक भी। राग रम राजे। min gele jeter gergent: ref dad न्योप्तर रोग नह राज्यों के का कुन क्षाची किन्द्रिक मान्य effects following in active of (मिष्)ान वर्षात्र अन्य व वाजेल्य ४ ०था-हिर भारत बालाने -विश्वत्नांत है हरे हैंगे । well (fle) to less the explor time. The transfer of the transfer of the state of man-do month & delight of \$2 at the Chapter to the -able-befer Be bieet endit में बेटेनमां मंत्र है। सा र अहाप्त-दूर अवैरूप स्मर faries was a may governer merce इरहेर *भरता नक्षेत्रर-पुर्यन्त्र न*चा नक्षे*हेर्(हिन्*)क the best craim of gar fiel and रन्त्र न्यूचर हु दिस्ती सम्मान 47 1 And Life. क्षेत्रका कर्णात्रक स्टबन ज्यक्तिर्ज्ञात्त्र अनेत दर्जात्त्र <mark>क्रिक्टी (विक्र) =</mark> दे दे देर्ग । -Milliamed - A SA S and A SA the the the the field high high and mer witht a Heftuge to arabilist with the feet from हिर्देशक साम क पारिक सामान्य । अवस्थि का WHITE I ELMAN CALL HANGE **सर्भ**ती भीतं न वेद नावद देवन अ दक्ता अ untite of its following to an meles & fen eret briger: अन्त्रेष्ट १ वेन वर्गन्यकात वन بالثمط شيأت matter to be all and one Military and the states and order tooks and the s MALANT OF AN markete a line free, an chieff | managed or train a to bright county . BIZENT 1 ATTO PART WITHOUT

THE R HAT STREAM FOR

Arteren in 14 men best best after

mand inite estimat betaring बूच दुरेन्द बद्द करून दोर करेंद्र रोज संपर्नेद militat die ent feen en finitet for the set with the south the बच्चा - व्य है। अन्यक्ता । हुन देशको हुन्या न्यादिकी अन्यादारी नम्भ दू की प्रपत्ति -gree ft act areas -gree fte) who After a greater that I contracte बार्य करोड प्रकारकार करें भी मार्ग करी करे करते क्या कर कर्मार्थ (दिष्ट्) पूर्व कर महित्र के रचु की बरुएस बस रूप रहर है। जब दा बा^{ले} mat-de Suert einte, nat tit & (4) I der-pleten in the if after a gebrehand aple after to contact explorer to free to state FR APLY & FRISHWY WHITHME HT se a tologica a stand feelt I would have been ning in you and to one stated to the it the mate a franchist menge fa tette bem lemm b paging a supply the femore of the "L'MA 3 Substitute of the part and all े बाव हु प्रकृति हैं ए किए हैं जिस्सी में किए में किए हैं अक्टी है अस्टिए क्रील देशन करने स्टेस्टर I seemed a till smetter to those young

1.1

सक्सम−पु•दे 'सक्संम'।

सम्बाना∽पु भारदा-कदक्का वपेरा गार्व को बत्तस्राज का पुष था; दे॰ 'मलकामा' । # वि॰ मलबाही ।

मस्यज्ञाः-विश्वमका दका द्वसा, भरगजा । पुश्वीगलके वंशेवरे इक्लेंकी फ्टीशा ।

स**बद**-पु [बं 'मैंसंट'] करुनेका बनीवा । मक्का−वि∗ पिसा≣का (पैसा कपना इ.)।

मस्य-पु॰ (सं॰) गर्रन, मसक्रमाः क्रेय करमाः तंत्र ।

मसमा-ए॰ क्रि॰ मसक्ताः माकिस कर्नाः मरीक्नाः

रावसे रमक्ता । सक्ती−सी कुम्हारोंका एक औजार ।

मक्का-प्र कृश-करकटा गिरे हुए मकानक ईंट-परवर, मिद्री बादि । मक्रमक्र−ली॰ मारतका एक वारीक, सफेद सुती कपड़ा

मी बहुद प्रसामे समामेसे प्रसिद्ध वा और जिले बिहेशी भी भी चानसे मैगाते थे।

मसमस्राना-स कि शारकार खोकना, क्षोकना-वंद करना (माँख पक्रक); क शार-बार आर्किंगन करना । सक्रम~पु० [में] दक्षिण भारतका यक वर्षत को शांत इक्फोरोंके अंतर्गत है और जिसपर अंदनके पूर्वोस्त

नंद्रकता है। पश्चिमी पाटका मैसूरके दक्षिण और निर्वाहर के पूर्वमें पड़नेवाला भागा मलावार देशा क्याना नंदन काननः वर्गतका पार्श्व श्रीकांपः प्रशासनकिन १८ द्वीपीमेंसे म्ब । -गिरि-प्र मध्य परंतः + भंदन । -गिरी-प् [रि] दारचीनीकी वाविका एक पेड़ । —क-पु चंदना

एदः -हम-पुपद्मा भरत दृधः - वासिमी-बी इग्रें। -समीर-पु महत्र पर्वतकी ओरसे आनेवाकी

इन दक्षिणी नाय ।

सद्भवा मा [सं•] निसीया बकुवी।

मक्यागिरि-चु है मक्बगिरि । मकवाचछ-पु [सं] दे॰ 'मकवनिरि'।

मध्यातिक-पु॰ [सं] मक्क समीर।

सक्ष्यासम् च दक्षित्र सारतका यह प्रदेश । सी॰ वस मरेक्टी भाषा ।

मस्यासी-पु मस्वास्त्रमें क्लीवाकी वस बादि। वि मक्रवाक्रम देशका । ली मस्त्रशासम देशकी भाषा ।

मस्योज्ञय-पु॰ [सं] चरन ।

मकरानाः=-छ प्रि: दे महराना - क्रीक दुवराने मनरावें क्रोळ सुरकी वनावें क्रीक देति करतारें हैं --रामरसाः ।

सन्दर्गना∼स कि सक्तरेका काम कराना।

महासा-दु एक तरहका कुला विश्वमें यो आदे रखते हैं। महास-पु० दे 'नरहम'।

मकाई - सो दुव वा ददीकी साही वालाई। सार मागा यक्तेकी किया। मलनेकी मजबूरी ।

मकाइपी(पिंग्)-इ [सं•] संग्री।

मनाका-ची॰ [सं॰] कामनता की। ब्सी। वनिनी । समार-५ मोरा परिवा कागत थी कागतकी गाँठींपर करेश रहता है।

महाब-रि हे म्यावा

मकानि चौ 'म्हाति'।

मकाबार-पु दक्षिण भारतका नरन शागरके तटपर बसा #भा मरेख। -क्रिस-प्र वंदर्शको एक प्रशास कार्र विश्वासीका निवास है।

मकायारी-पु मकाशास्त्र रहनेशका ।

मकामस-शौ [ब] क्रिक्से, फटकार, मर्सनाः गेन्यो । सस्राया−प् वर्गाके दक्षित्रमें श्थित एक प्रवद्योग।

सकार-पुष्क राग भी वर्ष कहामैं गया भाता है, मह्मर। मकारि~प्र• [सं] एक धार।

सकारी-सी वसंद शमकी यह शामिना ।

सकास∽प्र [ल] पुरका निपाद । स०—सामा – किसीकी नोरसे निचका खित्र हो जाना मनमें मैस था बाना ।

मस्रावरोध-५० (सं] कृत्य ।

मसाराय-धु [सं] वही वाँठका निसना भाग बहाँ मक रहता है।

मखाइ-प॰ दे॰ 'मताइ'।

सकाहत-की॰ [ब॰] नमकीनी। सकीनापन, संदर स्वींबकापम ।

सक्तिं•−पुदे सक्ताः

मिक्दि-पुन्नसर। मक्रिक-त 🖛 रे बारखाद, धुक्वान, सरहर और पंजारकं मुस्कमानींकी एक सम्मानजनक स्पापि । -**कादा-५० साहमारा । -सुभश्क्रस-**५ समार् ।

मकिका-जी [ब] महारानी: [चं] दे 'महिका'।

मिक्किस सकिच्छ≉−पुदे 'स्केच्छ'। मकिन-वि [वं] मैका सक्युक्त काठा वृमिकः क्वासः पापमें क्षि रखनेवालाः सुद्रः सोदा । प्र पापः महाः सदागाः । - प्रस-दि जिसकी प्रमा समित् हो गरी हो। - मुक्त-विकास हा जिला मेठा दक तरहका बंदर, गीबंगूछ ।

मक्किमता-को॰ [d] मैकापना अशुक्रता वृभिक्रता श्चरता ।

मकिनोपु-पु [र्रः] स्वारो । मिलना-ची [र्थ] रवस्त्वा सी। वाक श्रीर ।

मक्षिपाईं • न्यी महिनता।

मसिनाना≠-न कि मसिन मैदा दोना। मिक्रमी-सी [लं] रवरवदा शी।

मस्टिम्दुच−पु॰ [र्थ] महमामा बागुः वक्षाः चीरः विवय

मकियामेर-वि मिट्टीमें विकादमा तरए-नरस (ही आसा) ।

मसिष्य-वि [मं•] अति मक्षिमः वार्गाः। मिख्या−धी [मं•] रवरदता स्री।

मसिस-भी द्वनारींद्य एक बीवार ।

शकीदा~प पुरमा करमीरये वननेशाला एक कसी करता की महा जानेके कारण अधिक तरम और यहत होता दे। (का मानीश-मना हजा हो

सन्दीन-वि येटा, महिना स्टान । मसीनमा−रौ धन्तिमधा।

मछीमम-दि [4] मैना दाशा श्रापी। त बोसा

सहीर-को है 'महेरा'। महीका−की॰ सि े दे० 'महिकाः'। सहीस−प सिं•ी प्रश्रिबीयति राजा। महें भ−न दे 'महें'। महमर-५० मदारियों हारा दवावा बानेवाका एक वावा, र्तुगो । † को॰ दे॰ महश्रदी । सङ्गरी । जो अङ्गा भिक्तार प्रज्ञानी पूर्व रोटी । महुमा, महुवा-पु पद्ध प्रसिद्ध पेड़ विसके पूर, प्रक धामें और छक्ड़ी र्रवनके तथा हमारती कार्नीमें वाती के मनुद्धा सहभारी-को॰ महुएका वाग । महुक्स । - वि दे 'सुइक्स'। सङ्ग्रहेरू-५० सङ्गेत्स्य । सद्भवरि-सी दे॰ 'सड्बर'। सह्च+-पु• दे 'सब्द । महरत-पु, सहरति-ती॰ दे शुहुर्त । सदिन-प्र सि विष्णुः इद्दारक कुरुपात । नकद्कीन सी एक प्रकारका केला। -प्रशीपको॰ अगरावती। −वारुजी-सी वदा इंद्रावन । सहदी-को [सं] गुबरातको एक नदी। महर-मा दे 'मदेरा । शगहा अक्नम । महरणा-सी [सं] धलकी कृष्ट्र। महेरा−५० महेमें नमक का भीठा टाककर ऋता हुआ परिका सहा । महेरि॰-ची दे 'मदेरा । महेरी−ली इवाकी हुई क्यारा ≉ दे 'शहेरा'। दि नाना कारुतेवाका । महेंसा-पुर काओंदो विकास जानेवाका रुक पुष्टिकारक प्रमासी [सं•]दे 'महीका'। महें किका−सी॰ [सं] महिका सी। महेश-प्र[सं] शिवा परमेशरा -बंध-प्रश्निस क्ष । महेशानी∽की [सं] पार्वती । महेस्वर-ड [सं] श्विवः परमेशवर । महेबरी-ली [संग] दुर्गी। महेप्यास-वि [सं•] वहे बगुवृशकाः वहा शेदा । सहसार-पुदे महेथा। महेसी - न्दी पार्वशी। महेसर -- प्रदेश महेरवर । महेकोरिष्ट-इ [सं] मरणाशीकडे अंतमें किया बाने बाका एक मास । महैसा-मी [सं] वहा इलावधी। महोश~पु० [सं•] वहा वैस । महोल-पु॰ हे महोसा । महोत्रा-तु धीरके माद्रारकी एक निदिना निमनी नानी वेडच तम होती है। महीगनी-इ एक सदावहार देश जिल्ला स्वती मेज पुरणी आहेर बनाने दे काम आसी है। महोराज्य -9 है 'मही सर । महोरी-भी [मं] ब्रह्मी शामक श्रुव।

सहोती-सा॰ महपदा एक । महोत्पस्ट-प्र+ [र्स+] पन्नः धारस प्रश्नो । महोरसव-५० सि॰) वहा बत्सव समारोह । महोस्साह-दि सि] दे 'महोषम' ! महोबधि-पु॰ [सं०] महासागर । सहोडय-वि॰ [सं] अदि समृद्धः गौरवशाकीः महाम मात । पु काम्बकुरम देश; काम्यकुरम समरी; स्वामी; मोक्स । महोदया – सी [सं] मागरण। दि सी दे• भारी महोदर-दि [र्स॰] वहे पेऽवाका । पु भूतराष्ट्रका एक तका एक राक्षस । महोव्री∽विश्वी [र्ष] वहे फेरवाडो । सीश्यमती। मेहोदार-वि [मं] व्यक्तिस्य बदार । महोद्यम-वि॰ (ते॰) बतिग्रद बदम उत्साहबाहा । मडोक्कर−वि [र्स•] मठिश्चम बच्चत, ऊँचा । महोपाध्याय-त [सं] दश शब्दाएइ वंित । महोबनी-जी एक वृक्ष तथा करहा दक । महोचा-पु इमीरपुर विलेका एक कसना की हिंदुकालमें परित राजामीकी राजधानी का और जावहा कर्यका वासरकान दोनेके कारण वद्य प्रसिद्ध है। महोविषाः महोदी-वि महोदेशः। मद्रोरग-प्र• (ए॰) वहा स्पः यद सर्पगत्र । महोरस्क−ि (र्ड•) श्रीरी धातीयला । महोका॰-प नहानाः दीया । महीब-दि [र्ल॰] विस्त्री बारा प्रदार हो। महोजा(जस्)-दि॰ [मं] अति औत्र, तेववाला, प्रम तेबस्यी । महीपध~की [मं] कवि शुमदारी भीवप; होंठा वह सनः बछनानः नतीस । महौपधि-सी॰ सिं] शेष्ठ शोरधि। वही। दद: एकास: श्रुतावरी सहदेवी जादि जिलका पूर्ण श्रमिपेट्ये अक्षार मिलाबा बाता है। महीपधी-मी [र्ष•] सपेर मरबरेबाः माधीः कुन्धीः जनिवकाः हिलमोधिया । र्मी- • अ में । सी॰ भाषा बनती । - चाई-सी सुर्गा वहन। -आवा-पु सगा गर्द। -बाप-पु मादा-विताः यात्-वित्रशास्य व्यक्ति । - व सरहार-सी माध-वित-ग्रस्था (रक्षण पाश्चन करमैबार्स)) सरकार । शॉप्प•~प दे 'सस्य । मॉप्रना॰-व कि॰ कीव दरवा, नाराब दोना। र्मीय-स्वी वाक्रीको संवारकर वजायी दुई रेगा। -चीरी-क्षी साँग-वही, क्लाव-निगार । – टीका-पु माध्यर वहननेका एक यहना।~पृत्य=पु दे 'मॉलरीका'। सु॰ -उत्रहना-विषवा होता । माँग-भी साँगनेदी क्रिया या भारत यावनात भारत तत्रका मधिकारहरूपमें की हुई बायना (बा)। -प्रॉबर-का -तॉगकर-श्वर-कामे स्वर । र्मोगन −९ मोप्ना भग्या दे 'संत्न १ माँगवा-च 🏗 बाबमा बरना गुछ देनेश्च पार्वना

सर्चना-सी० सिंगी प्रार्थना, निवेदनः दावा । श्रमाहर-पु॰ [सं॰] दूसरा विचवा नवी रिवतिः दूसरा मतस्य ! - स्यास-पु० एक सर्पलकार वहाँ छामान्यसे विश्वेषका, विश्वेषसे सामान्यका अथवा कारणसे कार्यका था कार्यसे कारणका समर्थन हो।

अर्थागम-पु० [सं०] पनसम, वाथ ।

भयांतिकम-पु॰[सं] इस्तगत चत्तम वस्तुकारवाग (की॰) । खर्यात्-भ• सि] यानी, दसरे शब्दोंने ।

अयाधिकारी(रिम्)-पु॰ [सं॰] सामांची अर्थमंत्री । भर्षांभवांपद-पु [सं] पक भौरते काम और कुसरी बीरस राज्य जानेका मन ।

सर्चांशाक्ष-सर क्रि. अर्थ क्यानाः व्यावया करना । सर्मामुखाद-पु [सं०] विविविदित विववका पुन' कथन मा मनुबन्धन (त्था) ।

अर्थान्वत-दि [रं•] वनीः सारगर्म महत्तपूर्ण । अश्रापत्ति-सी [e/o] एक सर्वालंकार विसमें एक वर्ष हारा दूसरा स्वत' सिक् ही काम विसमें वह दिसमाया बाब कि बब इतनी नहीं नात हो यनी तब इस छोटी-शी बावके दोनमें क्या संदेश दो सकता है परिणामः एक प्रमाण क्रिसमें एक नातसे दूसरी नातको सिक्षि दोती है (मो) : —सम-प चारिके चीवीस मेदॉर्नेसे एक

(न्वा)। शर्याप्रतिकार-प्र [एं०] कारकानेके बीकरी और कवा माक नादि हेनेवाचे मनुष्यांकी बेशन, मूख्य नादि देनेका प्रबंध करनेवाका व्यक्ति ।

भयार्मी(र्वित्)-वि॰ रि] पतकी कामना र**क**ने वा क्सको प्राप्तिके किए प्रयास करनेवाकाः गरस वा सक्तवन रक्षतेवासा ।

मर्थार्सकार-प्र [सं] **वद मर्हकार जो श**न्द-प्रयोगपर नहीं फिंह्यू अर्थपर मानिय हो।

भर्षिक-पु॰ (र्ध•) प्रशा राजाको सोने और सक्जेक धनवन्त्री सूचना बेनेवाका स्मृतिपाठकः। वि. किसी वस्त्र

दा चाइनेशाला। **मर्थित-दि॰** [र्थ] भौगा दुनाः चादा दुशा ।

भर्मी(बिन्)-वि॰ [तं] याह, मरब रखनेवाकाः प्राथीः बारी। सेवा करनेवाकाः वनी । प्रण्यागिनवाकाः निप्तकः बारीः मासिक ।

अप्यं-वि [सं•] मॉगने बीम्बः वर्गसुक्तः वनीः बहुर्। प्र• খিলাৰীত । भर्दन भर्दन-पु (सं०) पोटना वका वासना। जाना। शैंका देनेवालाः सह करनेवालाः वेथैनांसे भूमने वा वकनेवाला ।

अव्मा—की (सं•) दे॰ 'अर्थन'। # स कि कह पटुँचामा ।

भर्तन-पु [सं॰] रोगः प्रार्थनाः शिक्षाः अग्नि ।

अर्दित−दि [रो•] पीटितः इतः वाधितः वदा द्वारा । प्र• पद बाठरीम पर्रन और हुँदब्धे यक भीरकी विधानीका वरू बाना।

सर्वे अर्थे−ि वि ∫ अर्था। पु अर्थामागः आगः इकि: इनाः समीपता !-काकः,-बूट-पु शिव !-बेतु-

त कह ।~गंगाः-आडवी~खो॰ कावेरी नदो ⊢गुच्छ~ प० जीवीस लवियोंका द्वार । —शोस्र −प० मगोच गा स्नोक्का नावा, गोकार्द । -चंत्र-पु० नावा बहमाः विकासः सामनाधिकतः चित्रः चंत्रविदः वदः वाण जिसका फळ सर्वाचेताकार को: मीरपंशपरको माँस। विधेप प्रकारका मखक्षतः मिकाक बाहर करनेके किए गर्नममें हाथ कमामा। वर्णनिया हिना)ः एक प्रकारका त्रिपंत । --चंद्रा--स्री• कर्णस्पीद नामक पीचा, विशास । -चंत्रिका-सी० एक कता !--अळ-प॰ भवको काम कराकर भाषा महरू, भाषा बर्धी रक्तनेकी किया। - ज्योतिका~ सी॰ ताहका मक मेत्र (सं)।--तिश्वः-प नेपाकी नीम।-तर-प वाष-विशेष (सं०) । - नवन-पु० देवतामीका तीसरा नेष । -साराच-प्र एक तरहका वाग 1-नारायण-प्र० विकास एक कप !-शारीशा-शारीश्वर-प्रश्वितका पद कप निस्तें आबा मान पार्वतीका होता है शिव-पार्वतीका संबक्त रूप। -निशाः-राश्चि-को भागी रातः। -पारावत-५० तीतर । -प्रातेश-प पुरुषे शैयसे संमेतरुका संतर । −भाक्(ख्) −भागिक∽वि यावेका हिस्सेदार वा इक्टार । –शास्कर-पु॰ मध्याह । –मागधी−खी प्रसातका वह कम जो पटना और महराके बीच वीका बाता था । ⊶माणवः-माच्यक-पु॰ १९ स्टिवींसा दार (∽साद्या—सी० भागै मात्रा; व्यंत्रन वर्षे ।:−सास श्रुत-पु अर्थमातिक वेतन पानेवाका मजदर या नीकर । --रथ-प॰ किसीके साथ होकर कवनेवाका स्थारोही। -विसर्ग -विसर्वनीय-५ क भीर परे पढ़ने शानगरू। विसर्गसा क्यारल । -बीझण-प्र तिरसी वित्तवन । -बच-त पुराधी परिविद्या नावा साग। -बुद्ध-वि अभेड बजका । -विक्रि-सी० सर या किरावेका भाषा । -वैनाशिक-यु कमारके अनुवादी । -वैसस -पु॰ कावा वब, अबूरा वब (बैसे प्रतिके नाशसे प्रशास्त मी भाषा नाश्च हो बाता है)। ~म्यास∼प॰ बॅटसे वरिधिकक्को वरी । - शका-प्र एक वरहको मधको । -शब्द-वि भौगी भागमगुका । ∽शेप-दि विसका भाषा की क्या की । —सम-वि श्रापेके करावर । प वह इस्त या अंद विसका पहला और ठीसरा तथा दूसरा मीर भौवा चरण समान हो (जैसे दोशा भीर सोरठा)।--साप्ताहिक-वि सप्ताहमें दी बार निकलने वा होनेवाका। म शासदर्भे की बार निकलनवाका पथ । —सीनी(रिक्र) -प बटाईवार, वरिश्रमके नवके आभी प्रसक्त सैनेवासा कुलक । -हार-५० ९४ (बा ४) अवियोद्धा शार । -श्रह्म-<u>अ</u> सञ्जस्तरका काना । अञ्चल, अर्थक−वि[मं]भाषा। अर्द्धोगः अर्थाग~प (सं॰) वानी वेदः पदापात रोग फालिकः थिप ।

अर्ज्यांगिनी, अर्थांगिमी-व्या [मं] फ्ना साम्बद्धिया । अवरांगी(शिन्), अधाँगी(गिन्)-प [सं•] शिव ! अवर्षशी(शिन्), अर्थाशी(शिन्)-वि [म] भाग विस्तेष्ठा अभिकारी । अर्क्षा अर्था-स्त्री सि॰] २५ मोतिशीका वह प्रकार

क्रिसकी तीक ४ मार्च हो।

सर्दार्द अर्घार्च-वि [ए॰] साथ-भाष कापेका सावा, नीवार्र। मर्दाक्षी भपासी – न्याँ । साथा चौपाई । भद्रावसेद्क, क्षधांवसेद्द-पु॰ (ते॰) आपार्शती । भवाभित्र, भवाराम-त [सं] आवा मीवम । **मर्श्**सन, मर्पासन-पु॰ [सं॰] बाधा नासन॰ व्हत श्रविक सम्मानकी खगह अरावरीका स्थान ! अर्दिक अर्धिक-वि [60] मापमे बापा। गांभेका गांप कारी । प्र• जादान पिता और नैस्या मातासे क्यक नेनान-भागमासी । मर्देषु, अर्वेषु-पु॰ [de] स्ता चेद्दः -मीक्षि-पु॰ दिव्य । अर्दोदक, अर्घोदक-पु [सं•] आपे शरीरतह पहरा पामी । अक्टोंद्य, अधोद्य−५ [सं•] ल्क्क पर्व जिसमें स्वान करमा सबै-प्रदय रमानदा पुच्च बेनेबाठा माना वाता है। **भर्षेग**≠−प दे• अद्योग'। सर्पगी :- प दे • 'सर्पाता' । सर्चेक-वि [सं०] चन्त्रतिद्यांका अर्थण-पु• [मुं•] देना दान करनाः भेट दरना वापन करना रखना (परार्षम); धेदन । -प्रतिमृ-तु येसी प्रमानत करनेवाला प्रतिभू को ऋबीय न द एकनेपर रवर्थ पन देना स्थितार करे। अर्थेना≠−स∘ कि अरपना ै। अर्पिस−4ि शिंो अर्थभ क्रिया द्रजा। अर्पिस−पुर्मीद्वयः द्वयानांसः। **अस द्ध≉−**ष्ठ भन संपंति सन्द•दीकतः। श्राप्त र-प (में) यस क्रोहबी मंद्रवा: मान् पहाद: यह रीय क्रिप्तमें धरीरमें यानी बढ़े बन्ये जैसा मोर्सायक निकल भाशा है। एक देख जिसे देहने मारा था। एक प्रराणीक सुपं, दो महोसेया गर्म। भारतः बैनियादा एक तीर्थरवानः धन, सरक् । अर्थुदि~दु (सं.) अपुर नामठ राह्नमः सर्वभाष∓ fac (भर्तशि(दिन)-४ [स] अर्दद श्रिक्ते ग्रन्त । भर्भ-द्र [र्ग] द्विशु, क्याः एस्य नेक्शला द्वा । अर्थेक−द [सं] वया धीना नेपवाना गुणाः सूरः भारमा । वि भाषा धुवका मूर्ग निर्देकि छल्छा वदी 1सा । भर्म-पु॰ (सं) कॉगदा व्यवस्थ गांच्य वैधापुराना मा भाषा जनका दुआ गाँव । **भार्य-(व [र्ग्न•] अवः पृत्रव सन्मान्या स**ण्याः पियाः द्वाञ्च । तु रशमी। बदय । भर्षमा(मन्)~५॰ [मं] सूर्यः बार्च शान्त्वोदैने ब्यहः एक पितर की पितृराज माने जोते हैं। वसरा काश्ट्रकी गर्म, भ्यारनः अंतर्थ निश्र । भवी-मा॰ [मं] बैन्य बालिहे औ। र्थामा है भवाती-सार्श्विशे वैरव जातिहासा हो। अर्थी-की [गं•] वैदरका का । भर्रवर्-पुस्प∝दीपात्र।

भरी-पुष्यविशेषा अर्छ-पु॰ [अं] इंगपैटके सामंती और घडेनर क्रीन्टेट यक सम्मानित बपाबि । (वह मार्चि मुद्रे मीपे और ४३-कीटके कपरकी पंपार्थ है और बजानुसम्हें रिप हे नाता है ।) अवर्दर∽[मं•] रास । भवती-को॰ [धं] भोगी कुरमी। विपापरी। **जवॉ(वन्)−पु॰** [सं॰] योदाः चंत्रमा**दे हा। दो**होदेने रदः 收 मर्वाङ्(ण्)-४० [तृं•] १व८ रस मेतः देशे रष समीपा मीचे ।-(क्)क्रालिक-विश्व शहरता अपृत्यः। −शत−वि सीसे मीच । −मोग्रा(तम)−३ स्टरे वारी, बामुक, संपट । कर्षांगु~'संवाक'का समाग्रगत कर i −बिल-रि॰ शिन्ध हैंद गोपेओं और हो । ∽वसु−वि• धन रैनेरका । इं भारकः वर्षा । अवांचीन-वि॰ [सं•] को पोछ जरन्य हुन। रोह शार बाक्याः। माधुनिका नवाः कृपायष्टे रखनेवलाः। बक्यः। अवर्षप्रमु—पु (र्ष } देवताओंका होता। अपूर्क∽ ९ [मं•] महाभारतोन्छ वह जाति। सदा −पु+ (स] तकता रातः शाकाया रतनात्र स्ती अनुमार भावनी शिक्ष्म वा शरीब स्वर्ग कम बण्डेने परणी । सु**० (दिमाग)~पर होना~अ**पनेपी स्टा ^{हर} ममञ्जना। अपनी श्रक्ति-शामध्येषर इनराजा। परेपी मन स्वे गाँपना । —से फर्ल**सर**—बाबाएमे परगीतर । **अर्ग(स)**—पु• [मं] ग्रुएका वक रोग परामीर ! भर्जस−4ि सि विशे रेशशनाः । अर्थामान-पु॰ [मं॰] बहिह यह शहम । भर्दा(दिन्न)-वि [तं] वक्तोरका रहते। अक्रों-'अ'ंस् दा समासगन रूप। -धोर-दि॰ वर्ष रीगम नावद । -प्न-प्र श्राका क्रियां प्रमण्या गुप्तका सुप्तेर भरमी । -ध्यी-सी॰ तान्त्रती । -वर्षे (स्)-पु अर्थाता एक भर क्रिम् में (गुरा ला मंदरे विनार) चुनियाँ नियमती है । -हर-5 है बटोंडों। −हिस−पु॰ भहालदः। भारत-नि॰ (मं॰) चीरव । चु चुका जिना सिन । **अर्ह-**4 [मं] पूजनीयः शामान्या मीन्दाः विकास शानुका प्र विन्तु। रहा ज्वना जीविय क्युक्त यनि । बाईबा~पु॰ बाहबा अहाँ-न्दी॰ [ग्रंथ] पृत्रीः स्टाप्प बर्दणीय-वि [व] पृत्रा वा श्वासामके योग्य र आहेरा-यु [र्ग•] परम यानी। युद्ध शार्वहर । विश् पृत्त प्रदर्भिका प्रक्रिक १ अञ्चला-मी [मं०] वाग्यता, दिनी पराधिके न्यि व বিভাগ গ্রাম্পারি। **अर्दिश—वि** [सं•] पृथिता सम्मानित र

भग्न-वि [तंक] पूजनीय अर्थनजीव: बेंग्या अस्टिटें!

अर्थ- भगव का गमामाम करा -काम-इ॰ न्यान

संवादाः क्रम्याः -वन्ति १)-दिः संविद्याः।

-बार-पुर राजाना भूगा अभूगा ग्रहाम स्वापन

पद कता, चर्मदवा । ⊤छता∵सी मोसको सिक्रवन, पमधेको सरा वका - विक्रय-प्॰ मस्ति विक्री। ~ विक्रमी (मिन्)-पु॰ कसारें। धनके किए पुत्र वा पुनौकी वेचनेत्रका । -पृद्धि-सी० मांसका वह आमा । -सारः —स्तेष्ट−ए० घरवा । –हासा –खी चमहा । मौसीस-वि [री॰] गुशारा स्वृत्त, प्रष्टा बस्त्वाम् । --फमा-की भंटा वैगन ह मासाद मांसादी (दिन्)-वि (सं•) गांस सानेवाला। मौसारि – प्र**िंग) नम्ब**नेत । मासार्गेष्ठ-प्र• [सं] मुँद्रसे सन्दर्भवाका गांस । मासार्ष्य-पुरु [सं०] एक रोग । मोसाप्ती(भिन्)-वि [सं] मोसादारी । पु॰ राह्म्स । मोसाहारी(रिक्)-दि॰ [सं] मोसका बाहार करने

काका । मोसिक-वि [सं०] मांस वेयकर बाविका प्रकानेवाला। मसिनी-सी [सं] ब्ह्यमांसी। मांसी~सी [सं] बटामांसी। कन्द्रोकी: गाँसक्टरा ।

मसिष्टा~सो० सि०ी यमगारक । मोसोदम-प• (सं०) मांसके साथ पदाया हुआ भावकः

मोसोपबीबी(बिम्)-वि , पु [मं] मांस वेयकर बीवन

निर्मात करनेवाका । मॉइॉिं≉~स दे 'माई' । सा-भ (सं] निवेषार्थक-नहीं नत। सी व्यमीः माताः मानः, सापः न्द्रंत्न्तु आनक्य पंदः। न्द्रंदीन सी॰ श्रीपकाः ग्रीत श्रीरतः सद्दाभारतमे वृष्टित वर्क नगरी । —घद−५० विष्कु;दे• क्रमने । −नाय ~पति−५ विज्ञा।

मा~सर्व[अ] प्रस्तवाचक-स्था, धीन; नो वो इछ । -कब्छ -सब्ध-वि की पहले हो, पूर्ववती। प्रथमीयः। ~बाइ-वि• भी शहमें हो, परवर्ती। ~सिवा~स इसके सिना । इ. कमारम पदार्थ मान ! - हसक-प्र बी हुए हासिक हो, पत्र, सपका नफा । साई, साई न्यो छोटे प्रभा बीता मोठा वा नमधीन 🌃 अर्थ कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य है। मार्गी 😎 देशे।

माइकेल मचसदन दल∽द वेगनाके महाम कवि बिम्होंने 'मेहनाम क्य काव्य' आदि काव्येकी रचना ☆ (१८२४-१८७३) 1

माई-छी माता गाँ पृद्धा बादरणीया सीका संबीधमा रिमी भी सीका संदोषमा # कुछ देवना-" "कर माइन-मैं विश्वी –सूर ।-का सास-दिग्यतवासा, वीरा स्टार रामा ।

माबर-विश् (श्रं] मस्रसी संबद्ध था प्रत्यत्त । माक्(ी-सी [d] माव-हाइः सप्रगी। माककि-बु [मं] रंद्रका शास्ति (मासकि)ः अहमा । माश्क-दि [सं] भइने जानेवाका सुविधाद्या डीवन मुनाधिका अस्था। कासी। समझारा किटा बावमें परा-निय कारक (-करमा)। यु सर्वशास दक्ष्मशास । -पर्संद-वि विभिन्न बातको मान क्षेत्रेवाला समर्गाह । ((-=

मसिक-मारा मा कुछिपत मा कुछीयत-सी•[न•]शंसारीयत, समग्र-बुध, संजीदगी । माकूस~वि [ब॰] एक्टा निपरीत । माझिक माधीक-नि (सं) (शहरको) महिस्रवेडिंग मनिखयोंसे प्राप्त । पु॰ शहरा सोमामनकी रूपामनकी । --श-पु मीम । --फ्छ-पु पक तरहका नारिय≢। ─शक्टेंश─सी श्रव्यसे बनाथी हुई मिसरी। मास्त≉~प॰ अपसमता रोग गर्न-'तिन्द्रभई रावन हैं क्शन सत्य नदहि तम माध्य -रामा० । माखन-प दे 'मध्यन'। -चोर-प माखन बराने बाबाः कृष्णः । आ**सना≉~क॰ कि॰ रोव दरना अ**पस**स हो**ना । सास्त्री = स्वी संस्वीर सोनामस्यो । माराध∽वि० [र्स] भगभदाः मगवसे करपत्र । पु० भगभ-मरेका मारका पेक्षा करनवाठी एक वर्षतंकर बादि। • बरासंध । मागया-श्री [र्छ•] यवषकी राजकुमारीः विप्यती । भागविक-वि॰ [लं॰] मगव-संबंधी । पु॰ मनवनरेश । मागधिका−की (सं } फिपकी। मागधी~सी (रं•) मगबद्धी याचा बार मतय प्रकरों: मेंसे पका मगवकी शतकमादी। सफेर बीटा। किपकी। थीनी। वृषिद्धाः एक तरहस्तै हकावश्रीः एक सदीः माराव बातिको सी । माध-द [सं•] ११ वॉ चांत्र और १०वॉ सीर भास फालगुनके पहलेका महीना। शिशुपाकवरके रचनिता मिस संस्कृत महाकवि (१० वी शती है)। -कार्य-प्र शिक्षपालक्य । भाषवती-स्री (तंशी पूर्व निया। शाधी-वि नायका । वर्षे (संग्) मायको पूर्णिना । भाष्य-प्र मि॰] क्रिका भूक । माच = - प्र रे 'मभान'। भाषना ०~व कि दै भिषता । साचल १-वि अवस्तेवाचा हती। साचा -प्रश्ना मिष्या। माचिका-सी [सं] मरपी: बामरेबा पेर । माची!-स्री प्रश्निषा इसके साथ स्ववहारमें कावा बाले-बाला ज्ञाना बेलवाड़ीमें वाडीबानके बैठनेकी जनहा। सारा १ - च भएकी। माछर=-पु: मच्छर । माणी - न्ये मस्यो। माजरा~त मि विप्ताः। इत इलः। माज्-प सरीची ग्रह्मा व्ह शाह । -बूस-पुर माब् दे शास्त्रा गींत्र । माजून-स्थे॰ (w) पालनीमें बरास्वर बनायी दुर्र

माट~9 वही स्थानेदा बरदा। वह मरदा जिनुमें रीव-रेम रंग एएए है। मारा-५० चीरींबी ६३का वह देशा बीता की प्रचा देती-

इवा, वाकः विमी हुई साँव जो बाह्यसीमें दासदर क्रमा

की गयी हो। कर्र भी थे मिकाहर बनायी हुई बल्हा ।

-कश-इ मानून निवानमेशी सुर्वता या कमवा।

1049 मिक्समारी-सी॰ मिकनसार स्वयान, सहीकता ! सिखना-अ कि संबोध दोना। लुइना सटनाः एक श्रीमाः मिश्रित श्रोगाः मेंट श्रीमाः मेंटना, वहे निक्रमाः भिश्वा, प्रमा। समान होनाः पक्ष-सा होनाः पाना (पता, मफा): काम दोना: सरीका सेव दोवा: पक्षमें दो बागा-बनकर हो बामा: ७ दम पहला । सक सिख-प्रक्रकर - इस्ट्रे दोकर, गेडके साथ। -(मा)क्रकमा-भेंट मुका-कार राहोरस्म । -सिछ बाँटकर कामा-सक्की बाँटकर मके भारिमें दसर्देको सामिल करके साना वा वयमीग मिक्रनी−सो॰ व्याहको व्याहरम कन्यापसमाओक। वर ध्यनावाँसे क्ले मिकना और बन्डें वर्ध देना । सिक्षवतारू म कि है 'सिलाला'। सिक्याई - सी सिकवातेकी फिला वा भाषा मिकवातेकी **बड़के दिया आतेवाला बल**ी मिस्ताना~स॰ कि इसरेक्ट्रे सिकने वा सिकायेक किए वेरित करमाः मिकन करानाः बोग कराना । सिस्पर्ड-औ॰ सिकानेको किया। शिकानेको वयरता नेंट मिक्स (केरीके साब); मिक्सी । मिक्ष-क्रका∽वि मिक्षित गद्ध-सञ्जा। निकान-पुर मिकानेकी किया। सिकाकर बाँचनाः ग्रक्नाः * पहाद-'ओडि मिकान की पहुँची कोडें'-प । निकामा –स कि एक चीवका बूसरा चीवमें बीग करना, मिकानर करवा। इकट्रा करता संयोग करनाः सरानाः बीहमा। मेंद्र कराना। एक व्यक्तिको इसरेक पास पहुँचाना। सी दुश्यका संयोग कराना। मेळ कराना। मिळाकर देखना, प्रकार करनाः मिलान करनाः किसीको अपनी और बरनाः इसरे पष्टते फोइनाः (गानेके) रवर्षेका नेक द्रस्या । मिकाप-पु॰ मेका मेंदा मेस दोस्तो । मिकाय-दु दे 'शिकावड ।

मिसायह – सी॰ मिकावा जाना मिलवा वरिवा चीक्रमें षरिवा चीजका सेक । मिकिंद्र-दु[सं] मौराः मिसिन्द-पु [सं] एक तरहका साँप। मिकिक-जी है मिस्स । सिक्टिरी-वि [मं] हेना-संबंध की मी। की सेना Sta i मिक्ति-वि [सं] सुस, लगा बुला गिका बुला।

मिसीमी-सी मिकानर मिका पिकमीकी रतम वा कसमें मिका दुशा क्यवा। मिस्ड-ली [स] अधिकारमुक्त वर्ताः साल जावदायः मृतंत्रकः कागीतः, माग्री । मिरिक्यत-सा॰ ६ 'मिन्दोवत ।

मिसकी-इ मिरक्ष्याला अमोदार वागीरवार । मिस्सीयत-भी बह भीव विशाप माहिकाना इक ही बारदार बमीरारी। मिस्टन जॉन-पु रासटका महाम्यदि जिसने विरा-वारत कारर' शामक महाकाम्प (श्वा (१६ ८-१६७४)। मिछव-को मेह-बोल, मिहमतारी। [ल] मबहुर,

दौन, संप्रदाय: बावि, फिकी ! मियास-प॰ बि॰ विशेष सेवा बना प्रतिनिधिनंडकः मिश्रवर्मिबॉक्डो ईसाई बनाजेके किए मेने हुए बर्मोपरेश-काँका गंबका अदेशविश्वेषमें भर्मप्रचार करनेशकी संस्थाः वीवनका वैश्वरशियक्त कार्व । सिकासरी—प॰ वि॰ो (वैसार्य) धर्मोपदेशक, पादरी । 🥆 मिशि, मिशी-की [सं] मगरिका अवसम्पा बरा-माधी ! विश्व-प ते 'विश्व': [सं=] जेब सम्मानित बन: आहमी की एक छएजातिकी छए।भिः दाभियोंकी एक माठि भी पर क्रमणः बैह्रमनः ऋषिकाः विश्वासा नक्षत्रीका गण (स्थे)) । वि विसमें कोई भीव मिकी दो दा मिरावी गयी है। को बोबोंके संबोधसे बना हवा: संबद्ध । -केसी-सी थक कप्सरा ! ⊶शका~पु• [हि॰] भाने-पार्र, मन-सेर आदिका ग्रेचा । -ख-ए॰ खबर ! -साति-वि वर्ग-संकर, दोसका। -धान्ध-पु वह भाग्य जिसमें कई अनाव मिन्ने ही वेशक। −पुष्पा-की मेनी।-भाग-प्र॰ आने-पार्थ, जन-सेर आदिका भाग ! ~वर्ण-वि दोर्रयाः बहुरंगा । पु काका शत्रुष् ! -- १ फका--सो-भंदा । -शस्त्र-प्र• खबर ।

क्रिक्रफ−वि० सिं०ो सिकावट करमेवाका । प्र सारी नमक अस्ता" नंदनवनः महाभारतमें वर्षित एक तीर्थ । विकासायण-५० [सं] नंदनदन । सिद्यण-पुरु [पुरु] मिकायर, दी वा अधिक चीजेंको एकमें

विकास । मिकिल∽वि॰ सिं•ी मिकाया मिकाया हवा मिलाया सिकिया−सी• [सं] संदर मादि सात संक्रांतियों मेंसे एक ।

मिश्री-सी दे 'मिश्री । सिक्षेया-को [र्स•] यस सागा मनुरिका शतपुर्या । शिय-पु (सं] क्ला बहानाः स्पर्धा सीस् !

मिथि मिथिका मिसि-मो [सं] बर्गमासी। सोबाः भीफ । सिष्ट−वि नि । भीका रवादिका सिम्ब सर। प०

मिकासः मिकार्र । -पाष्ट-त सुरमा । विष्याश्व-त [मं] मिकार मीका प्रवान । शिस-पु॰ वहानाः क्षेत्र । −दा०-वि

एकी 1 ग्रिस-मो• [बं] हमारी, रितम्बारी अपने ! g [का] साँवा । -गर-तु कशेरा ।

मिसकीन-वि[म] दें 'विस्दीन । सिसकीनता®-मी गिरबोमी दीनता।

शिसना=−न• कि भिक्तपा जामा; मका जाता। तिगर-त है 'मिल'।

शिसारा−तु॰ [ल] दरवा9ेवा एक वट रिवादा धार वा वैनका आपा माग। (मिमरर)ण श्रीवस्त−पु देरका परमार्क्यभागवा परग। ∽सर∽पु• नीया भुस्त मिनसा। -सरह-द वह भिन्दा में रचनाहा हो। तुकीत (काफिया रजीक) बनानेडे लिए रथा दा भुना

नाय, पूर्विके किय दी दुई शमस्या । ٠,

ሺሳትስ-ተና 41 ሳላይ ድብደ *ተ*ታወቀር ይሉ። 1 ** रेक्समा को देव भी ना ह

क्रमहरू - रेर हेर भी च # ≥ हिम्मान के असे कार अन्य का नेटन हैंग

हे. चारंस सामा बन्दर रहत अवन्त्र और ^{है} भाग भारतानाची हा बीच देवीन वह बीच बी

मान मान्य प्रत्यक्त है स्वरं का हत् former of these

PART HE M & " " A

Carrier at to be for a start form a tre art mile fit at diefter mit feft af ? are

हो रिक्ट में रेडे कर कर होते हैं है की बह क्षत इंडरता, हो जिल्हें को है जिल्हों ह felocial task established when

farmer of more proceedings विकासीयनी के दलक संदेशक मुख्य देन मान्द्रमः अपूर्व १ रिक्ट्र म् इत्या चीर

Annie ar at in in mint ! General of ide by language the or empty than Epokaren gir samar alt sam are die a dereseste

का देशका नहांका क्षा नवा के जुन्न अवका क दिराहर हर पर्व अध्यक्त करतेच्या नवन्ते जार करता प्रति का राष्ट्र प्रसूचन क्षेत्र । अनुकार अकाव

क्षेत्र सम्बद्ध Parent j pro entr gener tent auz måten. E PRETER THE

Face years we seem group of fronts time to war and with fresh RESERVE WAR

Particular to the a deposition of a design क मार्थन का बाह कु अ राज्यों है है का राज्यों बाहा the 1 tons emby 2 youngs

famorin a tre or a arter a by the his most must see some will be a mishar that I are 化烷基酚 医多种性性

EAST I MIN TY IN COT WINDS OF रदी में तर विश्व के का का का ्र राज्य का क्वा स्टब्स 419 # 1

tema net to a tea Person of the street at the series 4 7年阿维罗MK产生的电源检查 - 4

Green or the house for their best his finish ent on the tope your east make which is the the total THE REAL PROPERTY AND PARTY OF STREET propriet alies ordering stills ボッル もちにまん प्रे**रम्प्यम** सम्बद्ध जिल्ला केर द्वार प्र

forms of a sta ब्रिटिश की श्रीचल शिक्ष Afred by where a to go a दिन्द्र = अध्यो चर्मान करूप अप्रतिष THE EXCLUSION IN EXPENDING

freerest in it here i

frem d'+'s]t Vere

ो **विर्**देशकार प्रभाव के भी की देश देशका अर्थ के तुम

futtrung : Mir

Prow ft will Magazine (it works all a find for t

PHOT WIFTER Present ? Gaut Effensor & Sten Aver Kerner attemption and a colored to their en अंतर हुई - १८६० करूपर हुए न्यापूर्ण करी

bears der breiter? when the following that the first the रेश्यून हुने अनुकादक र देशकार नेदानी - कुर्यान्ते के अन्दर्भत् केने अन्त की meine fich abne um em f brudert ! felical additions the building 404 141

Spole of the gas attent of the later been being girps selfs ein peter Royal of the straint of the falge & go sail a ming a ugh

the state of the state of the せいもか 4 14

give to the thirty and his lates during \$39 The gray At 21 of PH 47 and It some to trade to the out the wave seen the west t *(12/ 1 44 4)1 4-1 3 dates made you'll blick middles हुनी व हुंद अथा धर्म दूस प्राप्त त्वः त्रुपः केन सार्वक्षः स्वतः । स्वतः

any first offert a second cuttre the technique of the technique party In gare bijd - Afte offe and an aft authorize a popular track track to the district THE E S CONTROL OF E TO STORY IN

grade a good died and speed t

वाका काक: (संगीत) स्वरका रिवतिकाल, एक स्वरके सम्बारणमें करानेशका काका बाहरमें करायी जानेवाकी स्वर-यूजक रेखाः औषवका यक्त नार सेवन करने वोस्य परिमाल सुराक, इंद्रिया इंद्रियकृत्तिः क्ला कानका एक बामूनमः सददर । --च्यूलक्-पु॰ वेशी रचना विश्वरे कोई मात्रा इटा दैनेसे दूसरा अर्थ निकते ! ~वस्ति~सी वैक्नरित । -क्स-प मात्रिक क्षेत्र । -समक-प एक एक । -स्यझे-प विचयके साथ वंदिवका सेवीय। माग्रिक∽वि [सं•] भात्रा-संबंधीः भात्राओंकी यसमावाका (छर)। - छेर्च(स) - प्र बह छेर विसमें माशामींकी यणसा की बाव र मारसर-दि [चं] सरसरवुक्त।

मालाप-प्र• [र्थ•] मत्तुरहाः मत्त्र ५ क्रोका छत्कर्प देखकर शकता । मास्य−वि• [सं] मस्य-संबंधीः महकीका । तु थक

क्षति । मात्स्पक−प [धं] शदका।

माम−पु[सं•] सथमः पंथः ≉ वै 'नावा' । सामना*-- स॰ कि॰ दे सकता ।

माथा-त मस्तक, कलाट, पेद्धानीः वस्तुका वामनाग । मु॰ - कुटमा-सिर् पीटना । -बिसमा-अनुमव-विमय बरना। भूमिछे सिर कगक्तर प्रणाम करना। ~टेकमा~ मृमिसे सिर क्लाकर प्रवास करना । -उनकना-किसी धनिक्यो परकेसे आहंबा होना। -पद्मी करना-हैर क्य धोषना-समझनाः विशेष परिश्रमसे समझाना सिर रापाना । - माहना-सिर माहना मानापण्यी करना । ~रगइबा—दे ⁴माबा बिसना । –(थे)पर बङ

पदना-चेहरेसे रोच अग्रसच्छा प्रकार होना । माश्चर-वि [सं] मजरावा । प्र मजरावासी वीवेः

कावरबाँको पक सप्ताति । मामे-न मानेपर। भरीते। अ० - वहाना - श्रिरीवार्व करना । –टीका होना–(किसी गाउका) किसीके गाम हैना होता, बास सीरसे किसीके जिम्मे होता !- महना-

गके छनाना लिए भोपमा । माद−पु (सं•) मद, सचता; दर्गः नर्ग । मारक~रि [सं] संशा पैता करमेशाकाः वर्णजनकः।

[सी 'सारिका' ।] पु वस्तूह । भारकता∽सी [सं] मधीकांगम ।

मादन-पु [मं] मचाता कामरेवा पत्राः शांगा वि 4761

माइनी-भौ [संग] भौग।

मार्र-सी [शार] माँ । -आव-दिर वन्त्रका नेराएशी (-अंश)। सहोदर । -० शंबा-वि यक्षत्र संवा विसदे वरमपर ग्रा न हो। -(१) व्रम-की बरशीओ माना सास । -मीहर-की पनिश्चे माता सारा । माव्हिया = न्या है मादर - मादहिया घर वेटी आहे -4411

मार्गी-वि [का] गाँका पैरापणी जमसिद्ध । - ह्रदाच-सी मानुसादा।

सार∽सी॰ गर्भा । ~ए-गाव~सी गाव । माविक#--वि॰ दै॰ 'मावक'। सावी-सी॰ दै॰ 'मवा'। मारक मारस-दिसिंगे मध्येसा। साहा-प्र [म] वह परार्थ विस्ते कीर्य वस्त क्ष्मी हो या बनायी जाया जब पदार्थ। श्रम्यका मूळ बातः समागः वोम्बताः मनादः।

माशी-वि [न] माशका भौतिक बहा पैदारखी। माहबती-सी [सं] माही जो वकुण-सहदेवकी माता योः परीक्षितको परनी । माजी~की [सं] गांधको इसरी परनी। -मदम्।-

सरा-प्र• नक्त-सब्देव । माह्रेय-प्र [सं॰] माह्रोडे प्रत-मकुछ सीर सहदेव। भाषच−ष्र (सं•) विच्युः कृष्या वसंतः वैधासः सहयकाः पेक काकी सँगः सावणावार्वके भार्त जी पीछे विचारण्य समिके नामसे मसिक इए । वि मधुनिर्मितः वासंतिक । माधविका-वी (सं•) माधवी क्या । सायवी-सी [सं॰] यह सुरंभित फुटोंबासी बता

वासंग्री। सहरसे वनी खरावा मध्यस्त्रदेशा एक शामिनी। क्रम्बोः सुर्गा । -- स्टबा -- स्वी॰ वासंती क्रता । माधवेष्टा-स्ता (तं॰) बाराही स्ट्रर ।

मायवीचित-प्र [सं] क्टोक।

माशक-प [सं] महत्त्वृतिमें बहिश्वित एक वर्गसंदर जातिः महण्या श्वराथ । माजुकरी-विश्वा [सं] मपुकर जैसी, भगरकी सी। माञ्चर-पु [मं] चमेठीका फूक । वि मधुरसे अरहत ।

माञ्चरक्रं *-- स्त्री विकास, मान्तरी । माप्रस्ता*−सी है 'मधरवा ।

मावरिया+-ली ६० 'मापरी'। मापुरी-न्यो• [मं] मुश्ररवा मिळासः धरार ।

माध्यें-त [थं] निकाधः काश्म सहत्र सुन्त्वाः हवालता। पांचाकी रीतिवाले काम्यका एक ग्रुग विस्तर्मे

हवर्ग और संबुक्तक्रारीका जमात्र सामुखार वर्गीका प्रयोग तथा बुद्र समासीका व्यवदार होता है। शक्या वहाँमें मनकी मीद हेनेका गुन ! -प्रधान-दिः (काम्य) जिसमें माधुर्य ग्रुपको प्रवानता हो।

आधक-वि [ग्रं॰] विद्याची । पु॰ एक विद्याचित्री वर्णसंबद जाति । माधवा॰-पु॰ दे 'मारव ।

माघो माची=-धु दै 'माध्य'। मार्प्यदिन-दि [सं] मध्यम, दिवसा । प्र कोपदर।

शक यमुरेशको एक सम्भा।

मार्पिदेवी-नी [सं] शुरु बतुरेंस्य बद्ध शामा । माध्य−वि॰ [धु॰] सध्यदा विवदाः।

माध्यम-वि [र्व.] मध्यका विषया मध्यक्ती। पुरु कार्वनिशंतको नाहमस्य वरणः मीहियमः साधनः अरीया ।

माध्यमिक-वि [व] मध्यका विवस्ता। [गी० माध्य-मिनी । प्र श्रीसक्तेचा एक संपन्तव । मादा-स्रो [दा] स्तेः स्रो प्रापी, शरदा सन्ता -पू | माध्यस्थ-दिश्[संश] मध्यस्था दरस्य । पु भागस्थना

विभासवादी । —र्तेंदी-कॉ/॰ व्यद् । —नजर-की॰ प्रेम-मरी पडि । -मींद~की॰ सुक्की गीर, निर्मितताकी नीर ! -सार~की वह मान विसकी जीटकपर न विचार है। -सक्की-की मुक्ती। मुक्ति चकाना-दोस्तीके परवेमें गुका कारमा । मौद-तो॰ एक स्वरते दूसरे स्वरपर बानेका एक संदर दंग (संगीत) । मीद−वि [सं•] मृतितः। मीडरमः मीड्वा(द्यम्)-पु [चं] दिव । मीबा−प•देभित्र'। मीन-इ [सं] मधको; बारव राशिवॉवेसे अंतिम। ~ केतन -केत-प्रश्नामदेद । -गंधा-तो मस्त्वनंदा सरवर्ती । -गोधिका-स्तो॰ ताक तकाव। -धाती (तिस्)∼पुक्तका। ≔ध्वक-पुक्तसरेव । ∼सेचा~ सी गंदर मी। - रेक, - रेश-पु मध्यम नामका पद्मी। वस्त्रीमा । स॰ --सेवा निकासमा-चीप निकासनाः **छिद्राम्बेक्य ब्र**रमा । मीना−द्र रावपूतानाकी एक कुद्धपिय काति। स्रो 🖫 ी मीठा रंगः रंगनिरंगा धीसाः धीदी भीर सीने चौरीपर बमाया जानेबाका रंगीन कामः सराबद्धी बीतक धुराहो। (ला॰) धराव । −कार−पु॰ मोनाका काम करमे राजा। -कारी-स्रो मीनाका काम। -बाह्रार-ध भीइरी नामारा सदर नीमोंका नामारा नह नामार विसमें कियाँ हो एव बीजें बेब्दी हों। मीमार∽को [ब 'मनार'] स्तंशक्यमें वनी द्वर्व अधिक कैपी रमारकः मरिवर्मे अवाम दैने, वही सगाने, वहावी-को रारता दिखानेके किए वने हुए रहेंस ! मीनाध्य-दुः (सं] समुद्रः । मीर्मासक-वि , दु॰ [सं] मीर्मासा करनेवालाः गीर्मासाः सामका पंडित । मीसौसन∽दु [सं] मीनोसः करना । मीमांसा-को [मं]विधारपूर्वक तत्त्वमिर्वद विवेचना करना। ६ वर्शमीयेंने वक जिसमें कहादि वैदिक कर्मद्रोटका निरुपण और मंधेंकी अर्पविचयक शंकाओंका समाधान क्षिमा गवा है। जैथिनीय दर्शन (१मे निग्रेष्टाः पूर्वनीर्मासा भीर वेरांतरराज्यो क्यरमोमांगा कवत 🛍 । --कार-प्र मीमांसान्वडे रविना वैनिनी कवि । भीमांसिव-दि [एं॰] विस्त्री गीमांता की क्वी हो। भीमारप-दि [सं] मीमांमा दरने शेव्ह । मीपार्∽मी [ल] हे मीआ र । सीपाची-वि दे बीबानी । मीर−दुर [संर] समुद्रः बकः सीया । ∼का−सीः कद्मी । मीर-पु (का) ('नमीर वाल पुरुष) तररारा प्रधान |

चीका मठारहवाँ वरस (विवाँ इसे मनहूस समझती है)।

-- सात-पु॰ दे॰ 'मीठा चादक'। -- सीठा-वि ४७का-

दक्का भोडा-भोडा (दर्द)। -विष-पु॰ वत्सनाग विष

मीठी-वि॰ की मिठासयुक्त, प्रिव मधुर् । -गास्ती-

सी वह गाको को दुरी न करें ससरास्त्रों निक्रमेशाकी

गानी । --प्ररी-वि बोरत वगस्त गसा काटनेवासा

नक्षनाग । –सास्त-प• है 'सीठा बरस' ।

अभिकारीः नेताः मुसियाः वास वा गंडीयेके बादशाहका पत्ताः प्रतिनोगितामें भौतने औरक होनेनाकाः प्रसिद्ध वर्ष कवि सीर सहस्मद 'सकी'का धपनाम (निवन १८१० ई०)। ~भरव~प् अरवदे गीर वही । ~सर्ज-पु॰ वास्ताह॰ के सामने कीगोंकी कर्जियाँ पेछ करनेवाला कर्मवारी। -- वस्म-९० शाही संदा तेदर चक्रनेशता ।-शाखोर--प्र= अस्तरहरूत दारीमा । -आतिस-प्र दोपदारेका वारीया या मध्यस ।-क्षाफ्रिका,-कारवा-प्र• काफ्रिके-का सरदार। - फ़र्का - पु॰ मारी पत्थर जी फर्डकी बना रधनेके किए उसके बारों कोनॉपर रखे जाते है। ⊶बस्रशी~पु॰ एक अफसर की सुसकमानी राज्यकाकमें क्रमेंचारियोंका बेतन बॉस्का था। -बहू-५ प्रकरिना पवि अमीरक वह । -भुचड़ी-पु॰ यह करियत वीर विसे दीवदे पूजते और अपना मूल पुरुष बताते हैं। ~मंश्रिक-प्• मुसकमानी राज्यकालका एक कर्मचारी विसका काम छाडा की बन्ने पहुँक्मेके पहले पहान पर प्राचिकर वहाँका अवंश करना द्वीता था। --अज क्रिस-बु समापति । ~अतबदा-पु शहरचीयानेका वारीमा । - महस्त्रा-धः महस्यका वीरते । - मुंसी-प्र प्रधानकेयक, वेशकार । -शिकार-प्र रामाओं वारमारीके शिकारका प्रश्न करनेवाचा कर्मवारी। ∽सामान-१ नवानी बरदशाहीकी पादशाहाका मर्गबन्धः । मीरजा॰-व दे॰ भिरणा । सीराज्ञ∽की [श+] दे∗ मेराज'। मीरास−सी [ब•] कुट व्यक्तिओ छोडी दुई संपरि को इसके कचराविकारियोंको मिन्ने तरका नपीती। श्रीरासी−धु एक सुधक्रमान वादि श्री गाने श्रमानेका वेद्या करती है । (की॰ 'बीरामिन(सब)' ।] भीरी-को॰ भीर होनेका भाष छरहारी। प्र प्रतिवोतिया आदिमें औरस (हमेशका (बहका) । मीक-पु॰ (रं•) निमेचा दता (लं•) दूरीकी एक नाव १७६ गत (मोटे दिसाद जावा दीम) । सीसम-प (तं•) मूरबाः विशेषना । मीकित-वि॰ [सं॰] मूँदा दुवा। सिकोश द्ववा संक्रवित । प यह वर्षालंकार वहाँ क्वारिका साध्यक होने के बारग अपमाम-अपमेपमें भेद न देख वहें दोनों एकमें भिन्ने अप-से कर्ने । मीबर~दु॰ [सं] सेनारति । वि शतिकारक, दानिस्टरः नुभ्य सम्मानाई। मीपा(बन्)-पु [मं•] पररकृषि। बाबु। धीटा, शीकर । मुँगरा-पु योच मुहियानार सदशी वी हॉबमे-राटनेडे

काम भाती है १

र्मेगरी-की धात मुँगरा।

मुंचन −पु० दें शीवन'।

मेंगीछी - माँ० मेंगदा बना एक पहला ।

अ्चना॰-स॰ निः सुनः क(ना, छोहना।

र्मुब−इ (तं∘) व्यासाय भोवका वया जो अस्त्रातका

वनि था। -क्सी(सिन्)-पुरु रिका। -गाम-पुरु

मुँगीरी-भी गृंगको दानको गरी।



मिमरी−रि , दुः स्पै॰ दें मिनी[†] । मिमरोटी−सी॰ वर्ष सरदको दासैकें बाटेकी बनी मीटी

रीति, वारी । शिराम – भी ॰ दें शिविन्य ।

सिमहा॰ - वि दे सिमोसे । सिमास - भी (कः) नजीर वर्शन समुता थिया प्रति-कृति परसान अन्तम अमृत्रा (श्यून जगर) और आहम कराह(सारमाजीं) और के वैष यद स्रोह की

स्पृत ज्यापका प्रायम्ब है स्थलन्यम् (ब्रू॰) । सिमार्मा-पि॰ स्थापक्षः । विसिद्ध-मी॰ (७०) सुक्रसेक्का कार्यकों के कायणा

ओ रण्ट्रा बरके जानो कर दिने गये बी इटिए इस कार्य भी गुणांत्रकेने जनास्त्र एमें गये वी कील्का एक दुका। सिमिस्टी—दिन निश्चे वाग्ये वीर्र मिणिक यन सुद्धी दी, महाकारण।

सिरक्सा-इ ग्रेडल करनेद क्रीआह ।

पिछ्छीन-(६० (स०) अंगण व्यक्तिया धूना, दोना भगराय - स्तुस-दि दिल्ली स्टारी दोनता केर भीनाग्य प्रदेश हैं, दर कहानमें जो स्टारती कीर दुए हो। सिर्द्धानी-नी सिस्टीनसम्, बंगकी दोनना है

शिस्कीट-पु॰ गाता गीजना गढ अब या दण्डरखाकः प्र देटदर शाना स्पत्नेवातेः गुन प्रदेशाः । बिरदर-पु [अ] नाव या परनोषकः नेतावे साथ रूपाना जानेवाका गानाग्युवक गुन्दः बहायव जनाव भीजना समझलाकः।

ओञ्चाहा समामावद्ध । सिरमर-चु छन बमाने, चन्दनर बरनेमें दास भानेशका -िरमा मोक्से रिकिश बनामेकी क्षत्र ।

मिग्नरी-पु॰ कुशन कारीगरः कन पुर वह काम कामने कामः -प्रामा-पु शोबारः वहर्वे व्यक्ति दिलकर काम वहरूपि सम्बद्धः

मिनिमोहमान्यु ब्राएकी वण्यामित्राह क्यार बास्यह व मिनेत हा वद्योभूत कर त्योकी दिया श्रमीतृतक रिया ऐगा असह दारूका रिवाल संस्थितिक ह

सिम्प-पु (स.) शहरः पण्यन्तुरी अलोहादा शहरेशः रिमारी पुरानी अभ्यताची मानशः दुनिवाधी साधीयतम , मानगाभीने नी अली है)

सिर्मार्गार मिगवा १९ मिगळिलगो। भोन धीलंडी यस सित्र है सिन्दी। सिगवी भाषा। सुन नदा ब्रुजान पूरेने अमाधी पूर्व सिमी। नक्षा द्वाचीनव्हन औरी सीत्र ह

सिम्पन-दि (म.) गरश हुस्य क्रानिय ।

मिन्ना-द्र नृतः में इ अर्थाशः भूतरः वर्धे नरहवी वाणी-व दव मान वीमदर् कारा दूधा अरह ।

व रह गुन बन्नर (बनाटा दुना अध्यः । हिमारि-मेन पद मेन्स मिने मिनो सिना है निद्र कोनेन बन गी है और जिन्हें स्वाप्टेने उत्तर्द स्वाप हों। मा माना दें। --बाजम-पुर बनाय मिना र --इन्म-मू --पून्यी-मों (बना) देखरेट एकर --सुहासान-जे --प्रकलियार । --बो मही-जिन्मों श्रेष का विवर्ष और्योप्टर स्वाप्टे हैं।

विष्यमा नगदि अन्यक्ष्या दशका ।

सिहसाय-मी० [४०] दे 'सिर्दार । सिहसायिक-की प्रथानी । सिहसाय-मी० (१६) वाका, दिव । सिहस्यान, सिरीचना०-मा० दि० दे 'सीनागा' । सिहिर-तु (१४) कुई। मदमा। बास्त्र वाहा बाहा कात्र । स्व

मिहनत-मा॰ (ज॰) दे॰ 'देहनत'।

सिद्दिरकुरू-पुरु हान रक्षारीको स्टानेसामा स्टेस्ट हुई दिश्या । सिद्दिराज-पुरु [ग्रंग] सित्र । सिद्दीं-पुरु रू 'स्टाम्स' । सिद्धान-पुरु रू 'से'ग्री' ।

सीरिश-की शिरो, संस्थः। सीजना-सश्कि सनुसना, द्वाना, दायो संस्था स राधना सर्गन सरमा।

रशक्ता संभाव परवा।
स्टिक्क - पुरु दे के देकां।
स्टिक्क - पुरु दे के दे

पुरोजा पत्र । श्रीच०-को० बृत्यु सीत्र । सीचना-तः कि (बांध) बृत्या वर बर्टना । सीजनां-तर्ग कि सकता, समझ्या ।

सीहात-तु [सर] बीर बमा स्वाहातुत्र राहै।
-(वे) मुक्त-तुर तुक रद्धे वा अवस्थित वेर वेर शिल । सुर -सिस्मा-स्वानर्दश केरन बारर देशा

मीहर-यु [सं] त्यां हुए याती शिवारी करिये जाति वा वत्र वा स्टिट-दिन किसी स्टास्त हो जात रामा प्रतास हान्यी। मेरिट-दिन किसी स्टिट-दिन किसी स्टास्त हो जाति हो स्टास्त हो मेरिट-दिन किसी स्टास्त हो स्टास हो स्टास्त हो स्टास्त हो स्टास्त हो स्टास्त हो स्टास्त हो स्टास हो स्टास्त हो स्टास हो है स्टास हो है स्टास हो है स्टास हो स्टास हो स्टास हो स्टास हो है स्टास हो है स्टास हो स्टास हो स्टास हो स्टास हो स्टास हो स्टास हो है स्टास हो स्टास हो स्टास हो है स्टास हो है स्टास हो स्टास हो स्टास हो है है स्टास हो है स्टास हो है है स्टास हो है है है है स्टास हो है है है स्टास हो है है

न्तिक्तान्तु अध्यक्ष निवर्धः स्वतं । न्यानित्रः स्वतंत्रन्तुः यस द्वाराक्षः क्षित्रहे को स्वतं क्षत्रः स्वतंत्रः स्वतंत्रन्तुः यस द्वाराक्षः क्षतंत्रः स्वतंत्रः स्वतंत्रः णांविका (ता॰) । मार्गी-की [चं] मारनेका यात्र किछमें वी संबक्षिम कीर बीन साने। सीकड देशका नकता माना वका कुदाक भारिका किए किछमें मेंट रहमांची आया वह छेट किछमें कीर बीम सही बाता अन्यक्ति करपताने पाठकी ककती । हा] समें, मतकत, समिमाया वेद्य (ब्युटमें स्वत हुए)।

मामी(निम्) - वि [धं] मान करनेवाचाः मानवुष्कः, प्रवि विद्याः सामिनामीः कठा हुना (भावकः)ः (धमाधके नवर्मे) माननेवाकः (पंडितपानीः स्टबानीः)। पुरु सिंवः।

मानुख≉~५ दे मनुष्य'।

मामुष-वि•[सं•] मनुष्य-संदेषी मानव । तु मनुष्यः प्रमाणके सीम भेदोंगैसे एक ।

सातुषक, सातुषिक-वि [एं] मनुष्य-पेष्यो । सानुषी-वि सानुषीष, मनुष्यका । कौ [एं] स्रो, वारो; विवेदसक्ते सीम मेदी-आसुरी, मामुषी, वैदी-सॅसे

णः। सानुष्यः, सानुष्यकः—पु [सं॰] अगुष्यताः भानवदेदः, समुष्यकादिः अगुष्य-समूदः । वि अनुष्य-संवीः सनुष्यकाः।

सामुख=-पु मनुभा, नाहमी।

मानै-पुरु मानी भतकन, नर्थ । मानी, मानी-अरु वीने, योगा ।

मानौज्य-पु [मं] मनोदरता।

भानीक-द्रां मानीक-

मान्य-वि [सं∗] माप्तमे बोग्य जावरणीय, पूरव ! ~ काम-पु॰ मास्वता, पूरवताका कारण (विश्व, वंधु, वव,

कर्में और क्यां)। साप−को सापनेकी किया वा शावा वापा परिमाण मिक्टारा बाट-साम ।

सापक-पु॰ [सं] माधनेवालाः चैमानाः वाहः भगान

वीकनेदाका नया (की)।

मापन-दु[सं] नापनाः तराब्द्ः।

सापवा—स॰ क्रि॰ बरतुका दिस्तार, यताव या यत्रव नावस करना जापनाः पैमादश करना। ● श॰कि सख भगवाना दोना माताना। यो [सं]दै 'मापन'। साक्र-दि [स॰'मुसरक] समा क्रिया हुना, वदशा नवा।

्षरी∽द्यमा करो; शस्ता को: काम छोड़ो। माळक्त माफ्रिक्त-स्वी दे 'मुकाफ्रियन'।

माफिड-वि अनुक्त जमुसार।

साओ-रो क्या मुद्ध किया जाना। वह वसीन जिल्ही नानगुजारी वा सनान माक हो टादिसात पनीन ! "दार-४ फिस्के पाछ माठी वसीन हो।

माम = - चु ममता बहेता ।

सामरुक् न्यों [ल 'मुआरिक्य'] मामणा शायकः विषयं वानेशस्य स्वारं । न्यार-पु करणेक्या स्वारं । स्वारं । न्यार-पु करणेक्या स्वारं । न्यार-पु कर्माक्या अर्था ऐक्-रेना स्वरं । न्यार्था । न्यार्था । न्यार्था । न्यार्था । न्यार्था । न्यार्था । सामारिक्य स्वारं । न्यार्था । सामारिक्य स्वारं । सामारिक्य (वि.) स्वरं । सामारिक्य सामारिक्य वि.) स्वरं । सामारिक्य सामारिक

धीया करमा !

मासा−पु॰ मौंका मार्च मातुक । सा। [फा] माता; वृक्षा; खाना पद्मानेवाको पानिका; धेविका, मौकरानो । —िगरी —मीरी—स्त्री मामाका काम ।

~गारा चा मामका काम।

सामी न्हीं सामाधी पत्नी मातुकानी; अपना दोष स सानमा ! मु॰ न्योभा न्वयनी गठतीपर ध्वान न देना ! सार्स्टन्य सामा, सातुक !

मामूर-वि [न•] भरा हुआ। नावादा सस्य ।

सासूच-वि॰[च] जनक किया हुआ। विश्वपर वसक किया जाय । यु वह बात जी रोज को बास, तिरव निवस) अभ्याध्य रोति दरगुरा दरगुरा। वह म्याहि जितपर मिरने दिवस वा विम्मारिक्स किया जाय। सु --के दिस-रजीवर्गक्ष समय (--से होना-मद्रामरी होजा (सुस्कः)। सासूखी-वि॰ रोज दोनेवाका, सामारम।

मार्थे + न मध्य दीय।

माय−वि (तं•] मावावी । पु कहरा ग्रीतांवर । ♦ सी भारता मों}दे• 'माया' । का दे॰ 'महिं' ।

मायक्र*=ि , पु॰ मावा करतेशका । भायका=पु वीहर ।

मायण-तु (तं•) देशमध्यकर्ता शायम भीर साथरके विता।

मायन~०पु॰ विवाहमें मातृकापूबनका दिना उस दिनका कृत्य (सं•) दे॰ 'मायण ।

मायनी १ - छो । भाषाविमी ।

भाषछ∽रि [ल] मेल करनेनाना, शुका हुना आहुष्ट; (रंगवाची चम्दीचे समस्य दोन्दर) मिठा हुमा शुक्त

(सब्बोगायस सुर्गीमायक)।

शाया-नी॰ [सं॰] थीखा, क्षपटा इंद्रवाल, बाहु; पर मेपरकी जन्मक रीजरून सक्ति वो प्ररंपको कारणपूरा बी प्रमृति अविवा बीवका वॉवनेवाडे बार वाडोसिसे यह (देशनम)। मोइफारिनी शक्ति सहसी। दर्गाः प्रदा (१०); प्रपा: पुरुषी माठाका माम: बीला, करामाव (यह सब क्ष्मीकी माना है); बन-दी-व (हिंग); ममता (हि) संसारास्त्रित पुत्र-क्रमाशिमें राम । -क्रारा-कृत-पु॰ वाष्ट्रार देशक बरनेवाला । -आख-पु॰ माया मीरका परेशा पर-गृहरबीका बेबाड । -श्रीवी (बिन्)-प र 'मायासार'। -हेपी-पी प्रवदेवस माता। - पट्ट-वि मानावी। - पति-पु॰ ईन्हा -पाश-प्र मायाका गर्रा। -प्रशी-स्री हरिहार। ~प्रयोग~पु एचप्रदीय पूर्णनाः जानुदा प्रपान । -फर-इ यान्यक। -स्ग-पुर शीताची एक्स के किए मारीच रायम क्षारा चून रवर्गगृगस्य रूप। -मोइ~९ अहरींको गोदने हे क्यि विश्वासी हैहमे वरपत्र पुरुषविधिषा माका और मोह । -पुदा-तु मावा-बत्तमं दिशा यानेशस्य शुद्धः। -बाद्-पुः संगारकी मिच्या माननंदा निर्दात । -बादी(दिन्)-पु॰ मावा-बारको मानमेकाचा । -मीता-मी भीगाहरमदे वर्ष विद्यारा रश्चित वरुगी छीता । –सूत्र-पु॰ बुदरेव । शायाति−९ [गं] भागति।

बाँका सठारहवाँ परस (कियाँ इसे मनहस समझती 🕻) । -मात-प्र दे॰ भीठा चादक⁸ । -मीठा-वि० इकका-इक्का, भोडा-भोडा (दर्द)। -विय-पु॰ बत्सनाग विव

मझनाय । -सास-पु है 'मीठा वरस'। मीठी-वि की मिठाएयुक, विव, मधुर! -गासी-भी वह गाडी में तरी मू डर्ग सहराकर्में मिकनेदाकी गानी । -प्ररी-वि॰ दोस्त चनकर गका काटनेवाका विभासवाती । --सँबी-न्सी करप । -- नजर-की मेन-मरी पडि । -मीर्व-को॰ प्रवासी गोंद निर्श्वितका मोर । --मार--सी यह मार विसनी चीट कपर म रिवारं दे । -- कक्दी-ची॰ सुकेशे । सु॰ --सूरी बहाना-दौरतीचे परदेमें गढ़ा दाटना । मीइ~बी॰ एक स्वरसे हुसरे स्वरपर वानेका यक सुंदर इंग (संगीत) ।

मीड−वि• [सं•] सृत्रितः। मीद्रुप्तमः सीक्वा(द्वस्)-पु [ध] किन।

मीर्ता∽प∘ देेे मित्रे । मीन−पु• [सं] सछकी; कारह राशियों मेंसे व्यक्तिस । — केतन -केत-पुर ध्यमदेव ! -शंधा-की भरत्वर्गका स्त्वनतो । −गोधिका−सो० ताक तकाव । −घाती-(तिन्) – द दसका । ⇔ध्यक्ष – प्रसारेव । − नेत्रा ↔ भी गेटद्वी । –हेक, –हेंग−यु लक्ष्यं जानका वधीः मक्क्षेत्रा। सु∗ –सेल् निकासमा∽दोप निकासना **डिप्राम्बेक्य कर्मा** 1

मीना~प रावपदालको एक सुक्रप्रिय जाति। स्रो [फा] नीका रंगः रंगविरंगः शोधाः श्रीके और छोने चौरीपर बनाबा आवेबाला रंगील काम: शराबदी बोठल घराहो। (सा•) श्रराद । ~कार ~पु मोनाका काम करने पत्ना ! - कारी - स्रो मीनका काम ! - वाहार-5° भीइसे बाबास संबर बीबॉका बाबास वह बाबार विसमें विमाँ क्षेत्र सम की में ने बती की । मीनार-स्रो [ब 'ममार'] स्तंमकरमें वनो हुई अधिक

 वी स्मारक महिन्दमें अजान हैने वही क्याने जहांजी 🋂 रास्ता दिकामेटे किए बने वद रहीन !

मीनाष्ट्रय-पु॰ [सं॰] समुद्र ।

मीमांसक-वि , दु॰ [सं] मीवांश करनेवाला मीमांश-

भाग्नका पंडित । मीमोसब-५० [सं] मोमोसा करना ।

मीमांमा-भौ [तं] विवारपूर्वक शस्वनिर्जव, विवेषमा परनार में बर्शनीमेंसे एक जिलमें बज़ादि नैदिक कर्मकोटका

निम्पण और मंत्रोकी अर्थविषयक श्रंद्राभोद्य समाचान विना गया है। जैदिमीन इर्छन (इमे निहीननः पूर्वमीमांसा भोर नेरांतरसंनको क्लरमोमांछा करते 🖰 । –कार-प्र नीमांसाक्तके रचविता जैमिनी कवि ।

मोमासित-वि॰ [वं॰] विचनी भीमांता की गयी हो। मीर्मास्य~दि [सं+] मीर्मामा करने वाध्य ।

मीपाइ-सी [ब+] दे मीमाद् । भीपादी-पि॰ हे 'मोजानी ।

मीर∽द्र॰ [सं] समुद्रा बन्द्र सीमा । —क्वा−न्ये व्यक्ती । मार-५ [पा] ('समीर'का लपु क्च) सरदारः प्रधान]

अभिकारीः नेताः मुलियाः ताश्च वा गंगीरेके बादशाहका पत्ताः प्रतिबोगितामें बौतने, औरक होनेनाकाः प्रसिद्ध पर्य कृति मीर मुहम्मद 'सकी'का चपनाम (निषय १८१० ई०)। -अरब-पु॰ भरवदे भीर अज्ञी । -अर्जू-पु॰ वहसाय-के सामने कोगोंकी अधियाँ पेछ करनेवाला कर्मधारी । -सस्म-५० सादी संहा लेक्ट पतनेवाला ।-आस्त्रीर-पुः वस्तवकका दारीया । -वातिश-प तीरकानेका दारीया वा अध्यक्ष !-क्राफ्रिका,-क्रारवाँ-त कार्यान का सरदार ! - क्रवी-प्रश्मारी प्रश्नर जो पर्श्वनी दवा रखमेके किए काके बारी कीमींगर रही बाते है। ~बर्ध्सी~पु वृद्ध शक्षसर को सुस्तक्रमानी राज्यश्राकृष्टी क्रमेवारिवोंका वेतन वॉटवा था। --बहू-पुर जकसेना-पि अमीस्त वह ! - भुचड़ी-पु॰ एक ऋरिएत बीर विसे दीवहे पूजते और अपना मूक पुरुष बताते है। -मंतिक-इ ेशुक्रमानौ राज्यकासका एक कर्मशारी विस्का काम साही फीबके गर्देवमेके पहले पहान पर पर्वेचकर वहाँका प्रवंध करना होवा था। --अज किस-१ समावि । - अस्वस्त्र-५० वावरचीयानेका बारोगा। - सहस्रा-९ भइरूका बीवरी : - मंसी-मधानकेयक पेछकार। -शिकार-प राजाजी नारशादीके शिकारका प्रश्न करनेवाला कमेंबारी । —सामान-५० घवानी बहादाहोकी शक्काकाक

मीरवा≠-पु• दे• 'मिरफा'। मीराख−ष्री॰ (व) १० 'मैराब'। मीरास-की [बर वह व्यक्तिये छोड़ी हुई संपत्ति

प्रयोगक ।

नो रुपके बचराविकारिनोकी मिन्ने, सरका नपीता । सीरासी-प एक मुस्तमान वार्त वो गाने नवानेश रेखा करवा है। [सी 'मीरासिन(सन) ।]

मीरी-की मीर दोनेका मान, सरदारी। प्र शेक, प्रतिबोरियतः बादियें भीवन श्रहनेदाना (नहस्रा) । श्रीक-तु [र्ग•] निमना बना [में] हुरीकी रह नार १७६० गान (मोटे हिसाब माबा बीस)।

मीकन-पु (सं॰] मृतनाः सिदोरमा । मीसित-वि॰ [सं॰] मैदा हुमा सिक्षीता हुमा संबुधित। प्र वह वर्षां कार वहाँ स्वादिका साराय होनेके कारन

बपमामकपमपर्में मेर म देख वर्ष दीनी एक्से मिने इष्ट-धि को । मीबर-१ [र्व] सेमापि । वि श्रियारक, शानिकाः

पुम्य सम्मानाई। मीया(बन्)-इ [र्न) वन्त्रहरीमः वाद्याः ग्रीताः शीकर । मैंगरा-प योच मुक्तिपाशार करती थी बीबने-बीहनेदे

बाम आग्री है । भूगरी-की छोटा मुँगरा।

भूगीछी॰-ब्लै॰ सूरका बना यह बहुबान । मेंगीरी-न्ने मृंगते शन्ते गरी । मुंचन ००९ रे भीवन ।

र्भुचनाव--तर्ग कि सुद्ध दरना, धोरना। मुत्र-पु॰ [र्र] मै्बारावा शोवका पत्रा जो अग्रनेत्वा

करिया। -केगो(सिन्)-इ रिन्तु। -माम-पु॰

PETE TE E T TAL

प्राचनार्वे कर्त के विकास करें कालान क्षत्रक है है है जाते रह क्षत इन्दर्भ, पर्यो । । इत्या शर्व वारीवन

Te stands of the tength of LYLN INEFEE Br It AND THE EMPLE

1 1100 0 5041 शाप (ल्रु) । यह देव राज्य व में प्रेसाई च ५ ट्रिंग का च ट्रायटिंग व्यक्ति दिवत

mid-er bach, nat jebe migente ; uf ein ub uberte ne alle i fem miren fente gente.

a fer at time & at tige affer unberen. 24 2 7 7 8 9

द्रणकृतक दर्भवृतिक न्यू के व्यवस्थित र क्षाचीरीय है । अपने अन्य कर्या

अन्तर्भ र न रिश्च अध्ययन pright to restrict to mil b. (ber be gegafe a matti Ga. en ein an en galt wer?

mangament and moves it a missing Par 35 1 क्रम्ब क्षेत्र के हैक हैरक अन्यू अवस्थित अवसे हैं

BOOM & WE HA SO THE PERSONS Bran erren er de all bimble et ine ert erreit wig uelfan bif bagmis ann i print e st monte à mitre

बार्ट र पर का " बर्डेडमा न्यूप्रकार संबंध र कर हैं डिक्ट के ग्रेडिक क्रेस्टर होते हे जे वे ते के के अध्यक्त के अध्यक्त the state of the fact of the r#1 द भ थ थीं दर

a tem a tiem a-pa that but be a set by direct as on 1 : 4-5-4-3 P24 | 4#5 #4+6 Mg4 \$14. 75 4 1

grang de lity des e pa ८ हे अन्देशन दश्य नक्षा है er & by L hart der 34 affeld 4 40 ≠ <u>শং</u>ারু LAT SO STAFF 4 3 418 4 4

programme a second whether have smore sugar to be delicited in the later

ፋተ 645H A ** + 2 **1 *

MANGE E RILE U WANT SHAM m frem 4 (Enter my 2)

EMPAR IN F NAME

the major that he had the

file e tres erfes merres ser ten en 5 Peter

द्वापुर भारत्वे अस्त अस्ति द्वार दर्भेतः र well but a the first the the for what were stay fact to you this amount set got find of the blue an antenne affen i ber bill auf be-

ALL THE RESE MEN THE THE इन्द्रण राज्य हिमा स्ट्र व्यून मान नान efer ar fer terret uner mir gitt and and fåre Bathi (Gent Hald) t ENTRY OF (SO) WHILE SING BUT WILLIAM

SPEED-A ARREST PATE Edelat Calant de Ballet, seu merenghafes ar ere feit gi bigreriff

af mer til mi graphically of highways of the party than । इस्तर्यं कर्तायस्य सः । १९ जीन fermanterent and se setting it he

54 W 1 Betware of 1 - Ase Kitsky 1 क्रम्प्यम् क हराम सुरचा स्थाप शामा है। कुर के मैंतर के शहर नगाउँ। The same of the bull all the

THE BOOKS & THEY S they be not the the grade for the Be griffin

ample to the extending a substitute and the second state and it has

इन्द्रों की ल क्षी बर तकी पर शामीकार्यः १५ व्या १ क्या अवस्थाने व्यापः क देव - यूने क्वाबून प्रोतिका जनगति के प्रश्नित दिर्देशीमधान्त्रम् यः चार्यः तस्त स्त तस्ति 4 2 4 411

क्रमांच्यी की म न्य दर नाए संक्रांत है। Merge er nie ersefut middle to distribute the first ANTAR-WHATE IS RETURN WHEN THE with the second of the second 424 ** # \$ \$ KING 3 44

SHERRY TATE BY PARTY CAS. 45 NO. 74 str brets | g f Fte

Shade I & gre midgen all more and he have stated to a few server for and deposit of the best death of

महामारवर्षे बर्षित एक आधीन चगर। ~अणि-४० वक्राम ! -मेराबा-मी॰ मैंस्टी बनी मेराला। -मेल्रही(सिन्)-प्रशिक्ष किल् । -वट-प्रवद्ध प्रामीत तीर्थ ।

सञ्जल-पुर्व [संर] भोडोंकी जीवामें डोनेवाका एक रीम । मीतर∽प [मं•] कमछकी बाह । मंजवान् (बत्) - पु (सं॰) कैनामके पासका यक वर्गता

सीमक्रताका एक मेर ।

मंजातक-पु॰ [र्च॰] में वा २६ दर । में ब्राह्मि-प सिंशी एक पर्वतका माम ।

मेंद~दु [रं] सिर, मेंद, मस्तदा बना दुशा शिरा मुँहा हुमा छिए। नार्रः शुमना नेमापति वक देखा राष्ट्रा मेटकीएनियर । पेरका रैंडा एक प्रकारका क्रीता जीवा बसाबीका विश् मुंदिहा अथमा -कर-पु दे परि शिष्टमें। -किष्ट्-यु संहर । - चयाक्र-यु सकाय केराव ! --कक्र-प्र मारियन ! --मास्तर-भ्ये • क्टे इप सिरों वा सोविश्वोंकी मान्य। -मासी(किन)-🗓 मुंदीकी माला भारत बरनेवाला शिव। -सीह-प्र मंदर ! -- शास्त्रि -- प्र वोरो भाग ।

मुँडमरी-सी प्रकोध शेवमें सिर रसकर बैठनेकी मुँदिचरा-१ दद तरहके मुसनमाम धनीर थी जरने भिर नेहर जादियर छरेश बाब बरबे भीम जॉनने हैं। -पम-प हैन-देन मारिमें श्रमश और इड ।

मंद्रक प मिं । में बनेवाका बार्यः विराभववेरे ब्यो पद प्रचनित्र को इस अवाम क्वतिक्यों में है संदर्ध पनिषद् ।

मुंबन-मु [एं+] मेंबना। दिवारिके किए विशेश एक शंस्क्राट, बाल्क्क के सिर्दें बाक पहली बार मूँबनेटी ११म । र्मेंद्रना−अ+ क्रि+ मेंदा बामा, हमा बामा। में दफा-इ. वरशेको वह अंग जिल्लार मान श्वती है।

मुद्दा-दि संवितः यंत्राः विमा शीगवा (देल वहरा)। प्र दिना मौक्षक जुता। यह बादिवाली वाति की द्रीरा मतापुर स्त्री। सिरवापुर भारिके जंगली मागीमें बमती है। स्त्री मुंदा कीतोची मात्रा जिसके लंदर सरवार। र्धवानी गुरारी, बोरवा भारि मनेड वीतियों माती है। [रो॰] संदिता श्री। समबामिनी वैरान्त्रिः वीरधान्ते ।

मुँदाई-सो पूरनेका सामः मुँदनेस परहरी।

मेंबाबा-श॰ कि है 'हराना र शृंदायम-दु [शं॰] एक महारका कांद्रा शंहर ।

मुँहासा-पु निरंतर वॉबन्ट्रेडा ग्रन्ता । मुंबिय-वि [म] मूँत दुना । पुर बोहा ।

मेरिया-शी दे 'सुरिया' । • दु रिर सुंशबर बना इवा सार्थ सम्बाधी । संबी~सी यह सी जिल्हा निर∄श दुआ दी। देश

भौरता गैरक्षमंत्री ह मंदी(दिन्)-रि [र्द] निगढे हिएडे बाब केंद्र रिवे गरे ही दिला भौतहर हे हु। लगीर शिक्ष संस्थानी ह

मुंबीरिका मंत्रीरी-भी [र्थ] गोरवर्गरी । पुरर-को रोजधे बेराहे अहेरा ।

मेंडेरा-प्र• छठडे बारों औरबी मेंड चैसी बोसरा बाता। मॅबेरी-स्त्री॰ छोग्र मॅरेरा। मुंबी-स्रो॰ शिरर्मुंशे ब्लो-शेंह ।

मृतक्रिक्ष−ि ।[च+] र्रतिकात करनेवाच्या एक्से १५स अगह या बुसरे हाधमें जानेशका या गया दुना । र्मेतराय-वि॰ (भ) इंत्यान हिया प्रमा होता रूमा

विवादमग्रस्ता सारकः । मतक्रिम−रि॰ (भ॰) रंदवान करनेराका प्ररंद्ध।प्ररंद कशकः मित्रम्बरी ।

मुंद्रक़िर−4ि [ल•] ईतमार करमेराला। मंहिदीर-वि [ब] विसनेवानाः विमरा द्रवाः वि ?

स्ट्रीय । मेतडी-(१० (भ०) इंतिहा, इस्से वर्डवानेसला पारवानी

(विद्यान) । सँदमा−व कि बाँसदा देर होना, रहत वननः

र्दक्रना, केर दोना। क्षिपना विदेशित दोना। भेदरा-प• एक तरहका शुरूष । मेंदरी-की एका भेगूछै।

मंशियामा-वि मुधियों येसा। मुंडोवे बस्टा । मंदी-प [ल॰] मदमून छोषमें निमनेराया हैया। सुंदर मात्रा सुंदर अधर क्यिनेशकाः दिरानी सुर्दिश थामेका मुद्दरिश वर्ष कारक्षी पणनेवामा । नहामाण्डेण डर्-दारशीका दश्वर । -शिरी-को• केपवर्ताः, द्वरः ffè i

र्मुसरिम-पु॰ (ल॰) प्रदंश कामेराना। यमे वन्तरी मान्द्रि रक्ताका प्रदाम ।

मैंगरिमी-स्त्री संस्थितका कर का काम । मुंगिक-पुर (बर) इंसाफ क्रामेशक, स्वामार्गर) न्यापविजागका एक अधिकारी किनना पर सर्वजर्ये द्यार दोना दे ।-सिङ्गाज-दि स्वावधीय दंगणानीः। मंसिज्ञामा –दि॰ श्वादीशित स्वाबदुक्त । मुस्तिकी-ली॰ श्वावयोगका <u>मं</u>प्रिक्स परा मुस्तिकी

बर्गतम् । मुँद्र-पु॰ प्रानिरेड्डे विदीनाममे दिवत वर चित्र विभी म दारप्रदेप और योजनेदे शायमस्य सरस्य रीटे हैं मुक्ता थहरता होत, चरामा बरदन माहिका वर हैर विगुने कार्र भीज भंदर हान्ये जाना नण चारा दिशाण बोग्दर्शः स्थित्रः वामध्ये दिष्यतः महासः। सः 🗗 और िकाम (पूर्व क्षर) दिस हुँद की की मा -कींचेरे -श्रमाने-म श्रून तरेरे तरके । -- समर्गन -ति वदानी मीजिङ। -चैय-१० दह राजः। ~पटीवणां नमी पुताबादी। वस्तर । नबीरन विक की बुक्तीने किए किएने इस्तिके बाहते कारेंगे

−सुमाई-मी पूर्वनेशे तक भग्न सरवा। नहरle ffene ! - pit-le egn dinten met. बतारहाकः समायको व सावनेकमा (वीक) । - होती न्द्रोः व्यवस्थानं बहारसम्बद्धाः रहन्यानी । १९१मुँ र

वयनेराचा शेंपू । -चोरी-के हस्केर संभा।

ल मानने बुबहु । -दिमाई-भ्रा दुवरिका हिर देशानिक दश्यो वह यम आयुवन आहे. हे दूस दशक 1041 मारुज़∽नि [न•] नर्जे किया हुआ। मिवेदित । दु• मिवे दन, प्रार्थना । मारूका-वि• भि प्रिक्षिक बात (किया) विस्तका कर्ता मासूम हो। मारे-न॰ "के कारण, व्यवसे । मार्केड-५० (सुं०) दे० 'मार्केडव' । माक्डेप-'प्र+ [सं+] एक प्रसिद्ध भाषि । -पुराण-पु+ १८ मुक्त पुराजेंमिंसे एक को एक पक्षी और मार्केटिक अधिके पंतरकार्ये हैं। (दुर्वासाधको इसी पुराजका एक अंछ है।) भाक-पु॰ एक बर्मन सिक्सा जी भंगेगी शिकियक बराधर बीवा है। मार्कर-नि॰ [सं] नंदर-संबंधी। मार्चन-५ [सं•] भँगीया । मार्की-पु छाप, निद्वा दि विद्ववाला (समासमें)। मार्केट-५० [सं] वाबार, मंदी । माकिस-दु [मं] भीन सरवारोंको छपानि निसका दर्ग रपुत और जर्मने गांच होता है। मार्ग-पु [सं] रास्ता, पकः समस्यव (सदका)ः गुदाः क्ला्पेः कुगक्तिरा नक्षत्रः मार्गचीर्थं मास । **—तोरण**~पु॰ (मिमनंदम बादिके किए) रास्तेमें बनावा हुआ तीरण वा प्रत्यः। --इसंब-वि०, प्र रास्ता दिखामेबाका रह देगा । - ब्राय-पु राजमार्गके स्वर-उपर वसा अना नावार, बसना आदि। -श्रेतु-श्रेतुक-पु एक नोजन ना पार क्रीस । - वंश-प्र रास्ता रोकनेके किय रखे गये पत्तर वस्त्रे आदि । -श्काक-प्र रास्तेकी निगराणी करनेशका । -सोधक-पुरास्ता शस्त्र करनेशका नमन्त्रे । -इभ्में-पुरामपश्चर नमावा हुना प्रासाद । मार्गज-प्र [एं॰] सन्तेषण खोबा प्रमा बायना। बाचका मार्गबाक्र−वि पु [सं•] बाधक निवेदक। मागन्य-स्रो [सं] सन्वेदमः बाधना । मार्गम == पुरु है 'मार्गम' । मार्गव-९ [सं] स्तृतिवासे अमुखार वद संबर बाति। मार्गेशिर मार्गेशीर्प-इ [धं] अगहमका भद्रीना । मार्सिक-पु । [र्थ] पविका सुगोंको मारनेवाका शिकारी । भार्तित-विक [सं] अपनेवित । मार्गी-सी (सं•) संगीतमें एक मृत्यांना । मार्थी(र्गिन्)-(१ [सं] आये बहुबर शाला बताबेबाला; ध्वप्रदर्शक । मार्च-५ [बं] ईसरी सन्दर्भ तीसरा महीनाः सैनिकॉक्स नेपी तुरी बाक्षे बक्ता। धनाका प्रत्यानः कृष । मार्ज-पु [तं] मार्थता वीतीः विष्णु । मार्बेड-दि पु [में] मार्बेड दरनेवाला है माजव-५ [तं] थी-मॉजबर साक करनाः ग्रीपनः ग्रारीर की नंत्रशीस शुक्षिक किए संत्र पाते हुए कुछारिते जल शिक्सा दीवर्शकमा बीचका देव । सार्वजा-स्ते [नं॰] मार्नमः भृतगः स्वति । माजेशी-स्ते [वं] शाह । माजनी(निय)-दु [चं] मझि।

मार्जनीय-वि [सं] मार्जन बहने योग्य ।

मार्खोर-पु [सं] विकाद!-क्ट-पु॰ मोर ! -कर्णिका, -कर्णी-औ॰ पार्शना । **∽र्गधा**-सौ• सद्वपर्णा । सार्खारक~प॰ सिं०ी विस्त्रीः मेर । मार्खांश-सी [सं•] मादा विस्की गंधनाककी: बस्त्ररी । -**होडी**-खी॰ [हिं] एक रागिमी । मार्जीरीय मार्जाकीय-५० (६) विस्काः द्वारः देशका भार्त्रम करनेपाला । साम्राह्म-प सि दि 'मार्गर'। मार्बित-दि [सं] श्रीपित । सार्जिता-सी [तं] दहोमें यी, भौगी शहद शादि बान **कर बनावा बामेशला एक शाख (शीरांड १)**। मा**र्तंड**-५० मि] सर्वः सक्तः मारु । मार्चिक-दि [सं] मिट्रोसे बना हुआ गृक्तिहासे निर्मित । प्र कसोराः प्रस्वा । मार्थं -वि॰ [रं॰] मर्लं मर्जहोड । पु॰ मरणशोडता । मार्चय-प सिंशी भूतंग बत्रानेबाकाः मगर । मार्दगिक-वि पु [र्स] भूरंग श्वानेदासा । मार्वंब-प्र [सं] मृहुवा विश्वक्ष कोमलताः नरमोः परावेका हुम्स वेसकर हु"सी होना। यक वशनंतर बाति। मार्डीक-वि [सं] स्थाना-नेप्रका बना हमा। प्र• मार्हत-सा [बर] दे भारपत्र । मार्मिक-वि [सं॰] सर्गद्द, स्दी-वारीकी समझनवाणाः मर्मस्पर्धाः । सार्थेक -वि [श्रं] तुरोपनोगी। वौरः तदमिव । प सेनापरिके बरवैका कांबी अस्सर। -शा-प प्रौडी अवस्तिका धासन सैनिक सासम । सार्च सार्विक-पू [सं] मरहेका शाग । आर्टि−सी सि॰ी मार्वेस धावन । मारु-प [मं] एक म्नेष्ठ बाति। शंगासका स्पापरेश आयुनिक मेरिनीपुरः श्रमः कपः वनः विन्तुः हरनास । सास-क्यों है भागा। चीही सहसा म हु है भितः [स] असराव सामानः वद्दमूस्य वरना भन-बीन्दा बस्तु, सामग्रीः वाश्यय-सामग्री मानगुजारीः राज्ञानः स्वारिष्ठ और तर मोज्य परार्थः देव मान्सि भवा जानेवाका सामाना वह चीन निसंगर निशी शाली बावा उपादानमृत परनुः वर्गद्य पानः इध्येषन इतनी (कुछ मान्य स लगशना) । -अनुस्थन-न्यो । स्थाप माहराबारी भारिके सुक्तकी ग्राननेवाली भगाहतु । −्रताना-द साल-मधुराद रखनेदा स्थाम गीटाम । -शाबी-सी भाल बीनेडे काम मानेवानी देल। -बुहार-पु॰ मान्धुबारी भदा करमेवाचा जमीनार (मध्य देश) । –शुक्तारी-स्थी गृथिकर जमीनका सक सून वा बमानर सरकारको करा करना है।-गाहास-प्र वहे व्याहारीका भारताना व्यापारको मस्तुर्वे रघन-का स्थाना इस अहात आर्टिसे आसे बार्नेहाना साथ रसनेका स्थान । – ज़ासिन-पु॰ मराग बमानत देने बाला । −डाल-पु अपया-वैमा साथ मत्ता । ∽दाह-वि वनी। -पृथा-पु यह हदान शा अटेटो योगी के शमने चीतवर और मेरे शानवर भीमें दूरांची तरह

मेंद्र देशकर उसे दिया जाय। -देका-वि॰ विल्कुक क्षरी शिक्षाकः मेंश्र ताबदा रहनेवाका । -पास-सी॰ रे 'मुद्दनारु'।—प्टर--प्रभोतेका एक सा×, सिरवेद । ~पातर*~नि मुँदका दकका, मुँदफट। ~फट~नि भो मुँहमें आदे वह रक्त दैनेवाला धवान-दराय, करवनाग। – संद्⊷िव शिलुका मुँद सुरू। स दी। विज विकाः कुमारी (बाबारी) । -वैद्या-पु मुँबपर कपका वीव रखनेवाका जैन साथ । -बोस्स-वि : संबसे कदकर बनाया हुआ मामा हुआ अवास्त्रविद्य (मार्ट बंटा) । [सी 'मेहरोडी']-योडी बहिम-सी वह सी विससे मुँदरी कदकर नदिजका नाता और किया गया हो। ∽भर⊶म अच्छी तरइ दिख्ले (बोधना वात करना)। ~मराई−की वृत्त। ~सँसाि∽वि वपना गाँगा हुवा (शाम); मनोमिकपित (मुँदमाँगी मुरात) । —खगा—वि• रोड ग्रीव सिरपदा। शु॰ - अर्रेसुओंसे योगा न्वहुत रोना । -- भामा-मुंदमें छाड़े पहना । -- इतना सा निकस बाहा-बेहरा भेंस बामा बहुत दुवका हो मानाः क्रस्तित हो जामाः चेहरेका आव उत्तर वाला !-उज्ञला होना-इज्जब रह बाना वेबायक्वेंसे वय बाना। "उठाकर कड़ना-वेसीचे-समझे वोकना जो बीमें माने सब देना । - उठाचे चखे जाना-देशवक दिना रमर-चनर देशे चक्षे जाना । -उत्तरना-मॅरूपर तेत कांदि म रहमाः चेहरसे सरक्षी छवासी प्रकट दोना ! − कींधाकर पक्षमा था छटमा∽दुः छ। रोत वा भानधे म्मन्य जाकर पत्रमा । —करना – गोरोका भूटना । (किसी भोरको)-करना-किमा भोर जानेका विचार करना । —का कथा-तिसुदे परमें वाल म पने। विसकी वालका मरीसा न हो। स्नामका झटका श सहनेवाटा (बोहा)। च्या कड़ा या सङ्ख-मुँडवेश सगमका अंकुछ न माननेवाका (वीहा)। -का कीर या निषासा-वहुन मामान काम । - छीममा - दिसीकी रीती छीमना मिकती द्वर्रं बस्तुमे वभित्र क्षरमा । −क्का सीटा−कपरमे अल्का पर रिम्प्या सीयाः चिक्रमी-एन्डी बार्वे करमेवाला । -कास्य करता --(भपन) अंदमें क्वानिया पोगना; व्यक्ति-भार, तुरे कर्म करना। दूर होना किर लेंड न दियाना (बा भगना मुँद काला कर)। (इसरेकी) वेशन्त्रती करना। हुर करना अक्रनाः भानत भवता (ग्रेंड काका करी ऐसी भीवक)। (किसीका)-कास्य हो-संदये कार्तस्य तथा माध दा (साद) ।-यासा दौना-सुँदमें कारिस समना वेरमन होना। हर शनाः मत शनाः –या शका–वातदा वनी वारेका पदा (-किसना-ग्रेह क्रील रिया जाना जराम रंद हो बाना !-व्ही व्हान(-व्यवह शांना पित्नाः विषेदा पान पाना। बुरी तरह बारना। जलीत बीना ! -की या मुँहम य'त छीनमा-रक भारमी **वी ना**त बहना पाहता हो इसरेहा उसमे पहले कह देना। -शास दैमा−भंत्र-पक्रमे बदान दंद कर देना भुष दश देना। पूछने हुँद बंद कर देना। -के की पुत्रक जाना-भेडरेपर इवाहमी उहने लगना। इबाम गावन ही आला ! —के टुक्ट दक् जामा—पासमें अधिक कुता हानेद कारण र्द्धकार वामा। –क वस गिरवा–िरमी वस्तुकी

प्राप्तिके किए भाद्वर हो बाना। भौधा खाना ।-वे संरक्षम शहना-निर्कात हो बाना ! -के सायक होना-(किस का) रिवरिके जनुक्य द्वाना ! --सुसमा-(कोई भादिका) मुँद नहा ही बामाः नोलनेमें डाठ हो बाना नदबनागांधी भारत कपना ! -सुस्रधाना-नोठनेकी शाधार करमा। गुस्तास बनाना । - सुद्दक होना-दे 'श्रेंद स्परना । ~स्रोककर रह वाना~कुछ ६४तकहतं सुप हो जाना । -चपदा कर देना-करकेपर भोरका तमाचा हगामा। -चलना-मुँद धनाया जाना ! --चकामा-खामाः बीहे का कारनाः वदानदराभी करनाः :-- चारना -- पार करनाः हुशमद करना ।-चिदाना-दिशंको मुखापूर्वि, बीकने-के बंग मादिकी नकक (चिड़ामेंके किए) मुँह विगाइकर करवा । -धूम छेना-किसीकी शक्ति, बोम्पदाका कावल हों जाना अपनेस बबुत बड़ा मान देना (कोई कठिन काम करमेकी जुनाशी देनका भाव होता है-तुम अमुक काम बर सके वी ग्रन्हारा मेंह जुन सँगा)। -छिपानाः-खुपाना-रुआवस सामने न बाना क्रांबर होना। -हुना-दिखानेके किए कपरी ममसे कदना । - महर हो बामा-गुँहश्च बहुत क्षुमा हो बामा । - जुरुरमा या ब्दा करना -प्रामेश नाम करना, बरान्स प्राक्त छोड देना । - जोवृत्ता - काना-कृती करना । - शुक्रसमा -मेंदको भाव कगानाः लामत भेडमा ।—हासना-धीपार्थी-का बारेस ग्रेंड क्याना, ग्राना । - डॉक मा डॉपकर रामा-मुँदपर भाँचच वा स्थास रखकर रोना अधिक रिकार करना । ∽तक या साकके रह जामा~परिज शहर पुर रह जाना। -तकमा या ताकमा-क्रिधीसे भाग नगाये नहे रहमा। पश्चित इतनुद्धि होक्ट दिसीक्षी ओर देखना । ~तफने या शायने रुपना ~पक्ति होसर न्द्रितीका मुँह वैराने कथना । —सोबकर प्रचाब देता-⁹सा जनाव देना कि वृत्तरको सुप हो रह भाग। पर । --तीब जनाय-निरचर बर देने गुप वरा देनवाता सवार 1 -धयमा-बद्दमभे वासिद्विद्दा यद्य जाता र्तुह दुसने बगना । -धुमाना-र्नुह एरद्वामा । -विरमाना-सामने भाना । (दिनीरा)-दराहर-(किमीका) किशाब करकें। (रि ग्रेकी) प्रमुख करगेके किय (वर्षाका मुँह देगकर वन शह रही हूँ)। - यात कहना न्यस्त्रीको वार्ने बरना । -देसकर पटना-गरदे श्रीख गुरुत ही स्टिनेपर निवाह पड़ता। - हेररमा-दे 'मुह तसमा । - वैद्याने स्थामा - दे शुँद तकन मगमा । -वृत्ती करमा-रिसीशी रंग्छा वा सुद्रीश सदान रथ-कर व्यवदार करमा पद्मान करमा । -- देखी पात--िहात्र मुरीवत्र हरफनारी चापनुर्हेग्द्री वात । **—हे**स्सुद्धी -कदरी दिगाक (-प्रीप काद)। -हेमा-दन धा¢ मारिका चारेवर मुँह बार ना । - घा रावा - रछ भी बसी भाषा न दरी अपना मुँद देशो । -पद्रदमा-शेक्पेग्रे रीवमा । -पर्मा-दिग्यन होना । -पर-मामने, द बहुः श्रीठीपर वनावएरः चररेपर १-पर जाना-विदान बुरीशन बरमा । --पर शकरी स्पर समा-अबुरीशन श्री जाना । –पर शामा स्था जाता-प्रशास देर ही अन्ताः जुम्मी शाव तमा। -पर सूक्ता-बावधिक शामसाय

ere az 3 m am bi næbe at lated የችንንብነ የ ቸያዉተ ነ ይችና ጋዩ ነ ተመቸዋት - the merel of a territoria many-The effect of the contract of MR Peres unen bemeine Cfereie warrante and an broad and andrew a En green et antener det pringeret mit ein umm gefe, for gietal. महत्त्रण है। इ.स्टेंग करणहेंग के ज 医甲基乙基 化甲磺胺酚甲 医乳炎 医中间性 电子 at it is without the last a factor that I a stein mit b fie Anten Emiliation of hallockers force

e +++1 make and some a king to a grant 4 444 44 5 444

EPPE & LWIS मार्गकोच मानकार सामाव राष्ट्र १ । यह ब्रान्ट्रान्थी (८) रहर रोजी A 11"

FFF THREET ENTHER TRANSPORT

emerine for the total and the sale of the sale of the sale of the sale of TO CA PIE ETT BELL TO 1979 EE and the same of the state of the same of t TET -(n) b t cr rates & man a material to a stand we are a topic to the material Men down a wind of society in

2 2 4º 1 क्रम्पर्क १९७६ दक्ष क्रम्पर सम्बद्धिः १९७६ दक्ष क्रम्पर 15-48 KP Nets Go. 642 C www.weitestina Pass Buntles of Let # Bun wed 4 # 9 Acts more went a ve RIMPE OF THE HITE E.

groups by on the tr. made a surger * 4

अपन्तुः च चेक्का काल्यदेशिय वदश्यः भीकृत देव सदर एक अञ्चलक 9.4% 840-A

Mindel & the manufacture of 44 **

Mountly of hings included my a wall designation. For the Rive of the document F 44 House 4

Endelpha on the in third MEN THE WAR AND A THE PERSON Brented bring by the most free I want a grant than Down Transactioners

HE HAR HANDLE WITH BE A TO AN PART Print with the second of the second

I'm Arete this promote at at a क्षणार्थनिको । । विश्व राशिका देशोध सामा स्वय क THE PRINTER

served at it is the new got since an ere and ared when their THE THE S S WILLIAM STREET WARM 皇 有不多 发增二配点 发行时 山柳 4 server werde g file nerenture urm They is comen at you after sent had on a. Pat ter time alman were data am f दर्श की कर्पाल र क्या-ए रेजल काल

Siftengen ge en entrater men Bir g at gil ffe-den gen in ere 214 67# 1 Branch is and there in sal in

strategies of the graph क्षाप्टचीम ताहवार militaria jarus tila kelitiris de era mierr freiten.

I ample to the first first fres

THE L ROLLING TO BE \$15 my com f to an element of on \$1.765 A4 613

क्षान्त्रक र । एवन्द्रेन्द्र पूर्वपादन्त्रवार गीनी grifest to for allow any entitle for I P I THINK I PARK HOPE & 3" with a gray a gray pull gray event has to be the

gerffesteine is a finale material with artigar actions of the

entering in an enterin more and the second of the difference of the dif क्रूप्ता विकास का अप

gene englisher in a dise seriel the 40 of 100 9 04 to 1.20 1 40 warm on the first a find of the 上門 有田田 野事

them were gar

mure and an an are move agrammeral exest my and a second day

enge is not good मुँ६-मुमा था निरस्तर करनाः सरमानित करना । नेपर म घकना -मी देव रागामा, रुप्ती भार देशमानुह मही। -धर मात्र म होना-निर्मेख होना। -धा फैंद दना या फ्रेंड मारना-बर्ग शका होकर कार्र पीन देना वा हीता देमा। -पर महताच छटमा-चेहरा पीका **(**। जागा, भेडरपर इबारवाँ खड़मा ! - पर शहर खाना या हो जाना-सुन्धो माप भना पर राज्य भी म दहना ! -पर रग्रता-पराना गामा (तोप बादिबे) माधने पन्पर रगना ! -पर शामा-दहना स्थान करना । -पर शास्त्रः पानना-प्रमधनाने भ्रदेपर लाही आ श्राना । -पर इपोइपॉ उड़ना-भव वरराहट आदिन मैश्रेपा पंत्रा वा सुपेद की नागा । -पसारकर वीवना -दोर्र भीव पारेचे क्षिप चपरना ! -पमारमा-वेड फैनाबा। (श्रेष्ठ) रानेचे निए भग रहनाः अधिक राम मॅंपना । -पाना-रस वा मधी पाना भाषानकन िरामा ! ~पेट चल्ला - है त्रत दोशी हेमा ! - फरमा -एरटी शुर्शके बारण होठी क्योमेंच्य श्रमा स्मादर णाना । -पुरवाना-नाराव होना क्वना । -पुँहना-में हकी भाग लगाना कानत मेचना ! -केर क्षेत्रा-देक्या या नाराज ही जाना । -- एकाना- अधिक दाम मौगना। श्रीक कीश करना। ~कंश्वकर देना~सूप कर देना; मूस ददर नपन दिश्य कुछ करने, कदनेसे रीख देना। - बंद कर छेना-पुर हो आसा। - बसपा रहारे-दे० भीर थी रशो । - बमामा-भरतेकी शहन विवासमाः भेदरेने धेर प्रदाश दरनाः मेह न्दिना । -वाना-देश मेंद्र केवाना । -- विशास केना - मारक्ट भेदर' सराव हर रेजा। -विशाधमा-मेद बनाना, थेहरेसे नरावनी प्रचार करमा: मेंडका स्वार विगाद देना ! - भार कामा-मेंहमें पानी भाना अनुकी कोना । -सनके-अनावक मर इस ब्यक्त । -अस्ता-ध्रीत्मै श्रीर बालनाः वृत्त देवा गुंद र्थद करना ! -मारवा-वारेवर हुँद शहना। वान्ने का सेंद्र सकामा कारनात व भागा बात करना !- औरत बरमा-भिडारे माना खिलामा पुछ हनाम माहिदे इपने मुठ देना । ~मीटा होना~िशीध बुछ विल्लाः मेगनी होला । नर्मे झाला-वशनपर बाना। ५में कारित्व पुगना या समना∽मारी वस्तामी दीमा षण्यस्य स्टेंडा सरमा । -से हारक-धुरमे साथ १६ (भराम या दिवर्णको मान भगने या दुगर्द संदर्भ निक-समेदर ६१न है) । -में व्यूत्र स्थाता-वगस्य स्थता। -में गुर-पी मा पी°शहर~तुम्लारा क्रेंड मौटा हो (रिगो ६ वीर्ष इपका नमानार सुभानार, ध्वर्थ है)। 🗝 🛱 सनम्बिमा भर छैना∽पु"ये गाथ रेनः जुक्ष यन जाना । -में प्रवान म रगमा-देग होना देवधन होना। ~में ग्रापान रत्यना या होता-रैक्टवे समर्व दीयाः बार स्पेत रुवाना (इम भी हुंड्रमे चरुम रक्षते 🐮)। 🗝 से बाबा-रण्या प्राप्ता ध्यव ववता । —ोर्रे निवदा समा ⇒र्मा रोज वरण रोगीने (त्रवा दगावा । →में घडता -परीम नेरारत सरना । - में बॉल व बेट्रोरे अल्य- | भनि इद रोगा । —में बड़ना वा कोराना-बन्गे अंधी माराध्ये दाना या रीपनातिः दूर्गाक्षेत्र हो।

−में पानी भर बाना-एन दरहना, रूनवाना । −में समास व होना-क्यानपर संप्रध न होना के सम आपे बढ देना । -से खुदा संगाता-वृद्ध गुलतकः र्भेड काला करना । -माइमा-देसमी करना ध्यान न दैनाः अञ्ग हो मानाः इनकार् करमाः इराजाः रो दरेन देना : -अश्वा -द्रभग दरमा वन्तनाः जिले म बीलमाः बन्हा शतना । -मगाना-दीरीमे पुरस यग्यमाः द्वार, शुरक्षायः दमामाः - सरवाना-हर उन्हानाः मुस्ताकृतिके शय बादि प्रस्त बरमा । –प्रचर कर पड रहना-दन्ध या रोधमें मेंद्र द्रस्थर पर रहना। -- सास द्वीना--ब्रोहमे भेद्दांश सात दामा। (अपका: सा)-सरर रह जाना-स्नित्र दोदर घर हो बागा विशिवाहर रह जाता । -शाहासे घर देवा-(१५ समाचार समानेशलेको मेह मोक्र रामा - मेमा छना-जनान कार्ने रखना श्रीव-धमग्रदर रोजरा (वृंद स्वासकर कार्ने करो)! -सीना-युपी क्या लेला। -सावना-यथा जवानदा नुग्रका महये तर यर याना वररा बला । -से-नरानीः कारे (-दश्ना) । –से तथ इपरका या नृपन्नी बू बावान दथा नाटान, पासमा होना। ~स निरमका दश वाना। –से फुल्द झड्मा-शब्द वा रागीने रेडी मिकाम दौना । -से वात व निकसमा-हर वा 5ाम के बार होंडले जाबाब न विक्या । लग्न राष्ट्र वा सार दपक्रमा-दिसी बत्तुदे हिए तामधित र'न' सनमें अति कीव होना । "से सास प्रमानवा"दूँवर नपुत्र मीडे शब्द नियानना । —स्याह होना—रे 'ईर काना दोला'। -ही मेंहमें-मुक्त-मुख्दे (-दाना बाने स्त्मा) । र्में हा चड़ी = न्ता = डीव वारता — ईंडापरी मेमापी कीयी सकतालर सम गर्व बहायो **~ग्**र । मुँहाभुँह-म सुर्देग्ड विषद्रम काएतह। मुँदामा-प पुतारकाये बदरश निवस्तेरणे स सरहरी कुंगी ह श-पु॰ (d॰) ग्रोस्ट अंथन ! मुत्राह्म-रिश्विशे शून इतुर्मी महार् सुमाहिम-पु॰ [ल] अशे दैनेशता समाग्रे हिर भाडाय शरमेवाणा । शुक्रभाष-दि [थ] शाली वेदात काम स हेरेनचे (अंग)। शामने प्रथ अर्गाहे (बस सबन दिया पुण सामाची रूप) ११व्युत (१मेपारी)। मुख्यारी-सी मुख्य दा रा मारा मुखदय-रि [अ] शंधरत विद, सुन्द । मुभरवाना-म अर्रहे सम्। मुभहिष-पु+ [स] भन्य मिसानेशना । सुभवना-पु॰ (अ) व(की: देवार वातः (शवः गु॰ - लुलमा-धर गुण्याः गुण्ये गुण्याः। शक्ता-विक [बन् देवा केन मात्रेरणा ! सुम्राह्म-१ [#] तास देनेदहर दिएक। भूमतिमा-स्त [#] दिर्दरा ! सुम्रा-दिण्मराहुमा चुत्र (विश्वति सम्बन्ध (विष्ण))

मासहर-प्र [सं•] विस्व-प्रश्ना केवका पेड़ । माहेप-पु॰ [सं] माठी ।

साधेपा-सी सि | वदी इहायपी।

मासीपमा-सी॰ [सं॰] धपमा अवकारका एक मेद विसमें एक सपमेबके अनेक सपमान करे बाते हैं।

मास्य-पु [सं] माका इतः पुष्पा-कीथक-पु माली। -पुष्प-पु सनका पीवा । -पुष्पिका-सी

द्यपुर्णा। - स्वीच-पुमाली । मास्यवान (वत)-- दि॰ [सं] को माना वारण दिने हो।

पुराचीम वर्णित एक पर्वता यक राम्छ ।

सास्छ-त [सं] एक वर्गसेकर वाति। सास्कवी-बी॰ सि] करती।

साबत्र मन्त्र है 'सदावत'।

साबकी-पुरे सिवाको ।

सावस•-की है॰ समावस ।

माबा-पु सत्त माँहा बोलाः कंतनका दशः संबाक्ने बाका बानेशका सुर्गवित समीर, मसकाः [#] आभवस्थान क्रियाना।† इसी मा।

मास−५ [फा] बरद । मु॰ -भारना-वरदकै दानीपर

मन पान्तर किसीपर प्रकृता जाडू करना। माशा−पु भाठ रचीका यक वजने दोमेका वारदर्वी भाग । सु॰ −सोका द्वोता−विचका रिवर म दोमा छन-छनमें

ददकता । माधामस्लाह-थ को जस्ताह चाहे। नवा कहता है ! (क्लिके संदरकाकी सराहता करते हुए नीकते हैं। सुदा

मबरे बरसे पद्मावेकान्सा भाव बीटा है)। माझी-दि परदके रंगका । पु स्वादी सावक, इरा

माद्यक्र-दि [बर] किसपर कोई बाधिक ही मैमपान

प्पारा। सुंदर, मोदक । -(के)हन्नीकी-ड सदा ।

माद्यक्य−सी [थ] प्रेयसी प्रेमिका।

माद्यक्षानाः∽दि मासक्षे बीता ।—श्रीतावा—प्रशा—लवा—

स्त्री मन क्रमानेशको करा दाव बाद। माराक्री-को माराक्षरता मोहक रूप दार मार्ग । माप-० ५ रे 'मारा ; [र्व] करवा माजा मरसा। महानूर्य । -कस्राय-पु करह । -पर्णी-स्पे अंगणी धररा−बोबि−च पापशा−खळळ−प शुनारा

भाषाद−५ [नं•] दलका। मापारा मापाशी(शिन्)~ु [मं] नीहा।

माम-५ [धे॰] वर्षका बारदर्गा माग महोगाः ११वी संस्या । न्दालिक-दि महीनेमर रहनेवला । नद्वात —वि पद्म मदीनेका (दिन्नु) । —हैय~वि जिल बदीने भरमें मुद्राला हो। -प्रसित-पु प्रतिपदाका चेहता। ~प्रवेश~पु सहीनेका आहंज । ∽क्ल-पु शास विधेषका शुवाश्चाम कर । - माम - प्रवर्ग । - म्हाम -3 एक वरा

मागम-तु[मं] भोमराबी ज्ला । मासनाव-म कि मिलनारेश कि मिलानार मामर-पु [र्न] माँझ यहोंने प्रयुक्त रह येवा वर्धनी । मासारि - पु॰ [सं] महीनेका लंगा बमावस्थाः संकाति । मासावधिक-वि सिं॰] एक महीने बना रहने या महोन श्रदम् होनेनामा । मासिक-वि [तं] मास-संबंधीः प्रवि मास क्षेत्रेवासाः

माजनार, महीनेमें एक बार निरुक्तनेवाला (पत्र, परश्रक) । प्रविमास निकलनेवासा पत्र, मादनामाः मासिक मास । -धर्म-प कत रवीधर्म ।

सासी~सो॰ मीसी मॉकी बहम।

सासीन−वि॰ [सं] एक महीतेकाः माहवार ।

मासरी-सी॰ सि॰ी रही।

मासम−वि [थ॰] निष्पाप निर्दोग क्तप-रहित । मासर्-वि सिंशी मगुरकाः मगुरको मान्यदेका ।

मासेष्टि−सी॰ [सं] प्रति मास किया वानेवाला बद्ध । सास्टर-प्र• [बं] माधिकः गृहरवामीः शिक्षकः स्वापारी वदानका कप्तानः दिक्यक्षित्रेवमें निष्याद उस्तार । -बाब आद स-त सम्हित्वको एक हिमी वा उपावि, यम वे। —ेआव् काक्र−प्र कानूनको एक टिग्री वस-वस यम । −की−सी वह संबं बिससे अस्ता-श्रवम इंविमोरी लड़नेवाले बहुएसे ताले सरू बार्डे। −देखर-प॰ श्रोसियार और निषम दश्री । *∞पीस-प* मेब म्हलामय शति ।

मास्त्ररी-धी भाष्टरका मान वा काम, सम्बापक-प्रति । मास्य-वि [मं] महीनेमरकाः महीबेभर बना रहनेबाकाः

सार्ह्र•−थ मध्य, शीप में ध माइ-०५ र भाषा दित] चौर महीमा मासा --शाब-पु बॉदमी: बॉद ! -शाबी-सी एक आतिश-बाबी। धन वा चबुतरा विसपर बैठकर चौदनीका आर्मद के सकें। पढ़ीतरा ! -नामा-तु । मासिक क्य ! -वमाह - अ इर महीने माइकार! - एक्ट - इर- वि ऑहसे मुखन्तका, चंद्रमुख । -बार-म ४८ महीने प्रति मास । वि मासिक । - बारा - प्र मासिक वेजन सम खाइ ! -धारी-म दे माइदार ! सी मानिक देवन णृतिः मासिकपर्वं रशेष्ट्रश्रंतः : -(हे)क्रामिक-इ पूर्ण बंद्र, राहेशा - जी-प्र प्रवदा चौर । स॰ - ताब तेसा -तापके प्रवातिम शाम देना ।

शाहकसम्बन्ध-सौ॰ [मं] यक प्राधीन जनकर। साइतः - भी मद्या महिमा।

भाइन−९ [सं] त्रादार।

माहना॰-स कि धमहमा पर्मगर्ने जाना । माइस्टी॰-५ महरूपा मीक्स भेक्द- " कीन र्राप्त कियो

क्षीम मानु साम मारुगी'-दक्षिता ।

मार्डी॰-अ० दे 'स्ट्रे': 'साई । माहा∽न्दी० [तं] नाय पेनु।

बाहाकुम बाहाकुमीय-वि [तं] महातुम, देवे थरानेमै सरपन्न ।

माहाजन माहाजनीन-दि [नं] यहावनीवित दरे अप्रमी ६ कोम्य ।

माहारम्य~वु [में] महारमता चरिया। मीरवा रिजी क्षण स्तान प्रानको पुरस्कानक प्रताहम प्रश्नको क्षणी बरनेवाणी रचना ।

1041 [को॰ 'गुर्र' ।] -बाव्छ-पु॰ दर्गन । -(ई)मिड़ी-बरना । भुकरी-सी वह कविता जिसमें पहले कहा हुई बातका बो॰ हाद्य, भ्रव । --• की नियामी-मृत स्वरिको भेतमें संबन-छा किया बायः पहेकी मैसी कविदा ! संवान की स्मृतिकिङ्क । मुभाइना मुमायना-पु [न] नवर्जीकम, निरीधन मुक्दरेंस−वि [व]सम्मानितः पुरुषः [सीः 'मुक्दरेंमा'।] शुक्करें सी~'शुक्कर्रम'का शंगोपम कारकका कम, 'मान्यपर' वाँच-पहलाक । सुभाक्र−वि [भ]दे 'मक्तः । मादिका समानार्थक । शुकरेर-वि०[वर] पुरराया हुवा कहा हुवा, दिस्छ । समाफ्रिक-वि देश भुवाधिक । अ॰ वोवारा फिरसे (कहमा)। -से इकर्रर-वीवारा-मुनाफ्रिक्ट-सा॰ अनुकृषता मेह नाहा। सुभासका~पु॰ (च] दे 'मामका । −वॉॅं –फ्राइस, विवारा, गार-पार । -दिश्यास-वि• शातकी तहतक पर्वेषनेवाका, सनुमर्ग । सुक्ररेर−वि [ब] ठहरावा हुया, वे किया हुया, वियक्ता निमुक्त । [सी॰ 'मुक्त(रा' ।] स भवस्य निसय । सुभासिज-पु [स•] इष्ठांच करनेवाका विकित्सकः मुक्रर्ररी−को नियुक्ति निश्चित देशा गया नेतन या वैष इस्त्रीम । सुवासिजा~पु [ब•] इलाव करना विकित्ताः मीवधी-राजस्य । अक्ररिर−वि॰ [#] सक्ररीर क्ररमेशाचा वस्ता। वकार 1 मुक्क−पु (से] भगभवास गुग्गुक। सुभावक्रा−पु [ल] वह वीज वो किसीके करकेमें दी बाब बर्का, प्रकाः श्रुतुका मृत्यः तायाग वर्जाना । मुक्काना∜~स• कि योजना 1 सुबाहिदा−५ [श] कील-करारः श्वरारनामा । मुक्कव्यियात−सा [ल] प्रतिकारक दवारें। सुक्रम्बी~दि [ल] शासत देनेदाका वरू बहानेदासा मुक्द मुक्दक-पु• [सं] प्यात्रः कुँदकः साठी पान । सुकर-पु वै 'सुकर'। प्रक्रिकारक । मुक्कापका−पु [ल] परावरी करमाः थरावरोः मामनाः सुकताई * न्यां नुक्ति मोक्षकर ! शामनाः मुठमेश कशर्रः निरोधः मिक्तम्बर् आँवना सकता− * इ. ६ 'सच्छ । † वि वद्वचा मिकान पुण्लोका एवं भार शहराके श्रीच वक सीमने सुक्ताकि । सो मोतियों की करी सुक्तावकी । द्यागा। मु॰ -(२) पर या में आमा-कदनेके किए सुक्तिक-स्त्री सुद्धि। श्वापने बाना। शामना करना । सुक्रणर−वि० [व०] टरकावा द्वथा वृँद-गूँद करक वर-मुङ्गाविक्र∽वि॰ [थ] मुद्धावका बर।वरी वरनेवाका। कावा साफ किया हुआ। मुक्ता−दि [ध+] कटा-छेटा हुआ कतरा बुआः सम्बन् वितरपदीः शासनेका । व आमने-शामने । मुकाश-त [ब॰ महाम] ब्हरने छहा होनेदी पगहा क्षिक्र । − दादी – न्यो । छरअके अनुसार वराबी दुर्द शही वहायः ठहरायः वासरधानः धरः भीकाः सरीपदाः परवाः (祖祖) | सावसमा अवरवानभूमिः मूमिका (स्) । सु० -करमा-सुकद्मा-पु [ल 'सुकद्मा] स्टाक्टमें गना हुना मामका व्यवहारा दावा माकिया। -(मे) बाज्ञ-वि डहरना बहरमा । ∽धोस्नना~श्रहरने, पहाब परनेका मुक्तमा करनेवाका जिले शुक्रमा करनेका शीक ही। इपन देगा। सुकामी-वि स्थानीय स्थानविधेस्वे संबद्ध 'कोदल'। ~पाझी –श्री सुदरमा करना। -कळसर-पु+ रशातीन मनिकारी ! -धाबर-भी मुक्तइम-दि [अ॰] परका आका। भी पहले ही शुक्र दी प्ररामा। पर्ज, अनदन कर्तन्य । धः गाँवका भीषरी । श्यानीय समायार ! मुक्रियामार्र-स कि श्रेषी बगाइर शरीरकी पीरा इर सुक्र**रमा~द्र [ल**] बारंग प्रशासमाः सिरनामाः करनेका प्रवरन करनाः (रक्दे) पूँमे कगाना । षरमाः वदारुद्धमे गवा हुआ मामला अपवहार । मुक्तिर मुक्तिर-दि [ल॰] श्वरार क्रानवाला रनीकार सुक्रइर−५ [ल] माग्यरेश माग्य तक्कीर। –आज बरनेवाका। दरनारेज नियनेवासा । सुरु -होमा-इद माई-स्रो भागको परीक्षा वरमा। मुक्रदेस-वि [ल] पवित्र, शक्त । -किलाब-श्री पात करना I इकडामी कियान अपीक्षेत्र भर्मेश्वन (कुराम, इंजील इ)। सर्केद-ध [र्स] विष्णुः इत्याः सुवेरको भी विधिवनिधे -इस्ती-इ रान पुरव महान्या । व्हा व्य रक्षा वारा- में दरः ।

मुक्ता - म कि मुक्ति मुस्सरा प्रमा पुक्ता ! मुद्रक−त्र मि विभाग शही पान । मुक्रप्रस्य-दि॰ [ब] दुवस-वाना सवावा दुवा ५६। मुक्र−५ [सं] मीका जल्ली। शुक्रमल-दि [ल] पूरा किया हुआ सताला लेपूर्व सक्त-प्र [4] एक प्रसिद्ध विरीज्या की सामग्री तरह बर्सर । वारण किया बाता था। -घर -घारी(रिज्)-वि मुक्तिमस-वि [न] पूरा वरनेवाना । सुरूर पारम करनवाना (राजा) । सुकरना-म कि कहा हुई बानम बहमा महमा हम-मुक्तर∽वि मुखानु येथी। बार बरमा । मुक्ताहल - १ मोगै। मुक्तनी-भी दे गुक्ती । सहर-४ भि । स्था कर्षनाः श्रीनागरीः कुरहारदा सुकरामा ॰ नतः कि मुक्त कराना। एकरनेमें मक्षा विद्यासिका क्या कोनी बुद्ध है 'मुक्त ।

favormera ova, 1 1 a or aborta. Affat groop ba allo vo atreo at ou

दिश्यानुष्यं पुरुष्यं स्वरूप्तं अप्यूष्ट दिल्लानियान् पुरुष्ठेशकः स्वरूप्तं अस्यूष्ट्याः

हिमानार्थिकारण वार्या । वार्या मान्य वार्या । दिस्तराष्ट्राच्या वार्या मान्य । दिस्तराष्ट्राच्या । वार्या मान्य ।

दिल्ला क्रमान्तु । संस्थापुर्य कर्म सिक्षा के के द्वापा आहे क्रमान्त्र के तिल्ला के सम्बद्धियाल क्रमान्त्र के

face of the property take to a company to the perfection of a company to the perfactor of the perfect of the person of the perfect of the perface permit in the time of a per-

हित्यामा अ. च. व. १८ वर्षी ध्वाम होता है है व. चप. च्या ता च. च.इ. विद्यालय होता है है क. ते इ.व. चतता

डिम्पिक पूर्व में जिन्ह के एक बार को बाबक बार्ग कोंद्रक जागा अपूर्व के देहत बार्ग्य व्हार के स्वत्येक जी डिस्टन्सर के बार्ग के जागों के देशक

्यक्ता इंड्रोडक्ट्रों के बंगेड ड चर्च मर्थाप के डिड्राइट बॉल्स से क्री का स्टी फास्टी केंद्र

उत्तर प्राप्त क्षेत्र कि ता जो में के का मिक्स इंग्लिक क्षेत्र के क्षेत्र के का मिक्स इंग्लिक क्षेत्र के मिल्लिक मुख्य मालास इंग्लिक क्षेत्र के मिल्लिक मुख्य मालास

April + to retain + the many and

শ্ৰেষ্ঠ ক'ল ইব্লেন্ত্ৰ কুৰু ক'ৰাক ক' ক' বাংকাক বিব্লেন্ত্ৰ কুৰু কুলি ক'ল ক' বাংকাক বিব্লেন্ত্ৰ কুলুকালৈ ক'ল কুলি কুলি কালে কুলুকালি ক'ল কিছু কুলি কুলি

स्ताक ते प्रवेश प्रशेष की दें देश त्या प्रवेश व चेता है। तुस्यों केला ते प्रवेश की प्रशेष मुर्गात की तुस्यों केला केला की विशेषकार वक्तान्त्र तहीं की तुस्यों के विशेषकार ्वत् केर्द्रश्रेष्टराज्यः ६३ - क्षण्यमान्त्र कार्यः हेर् स्टब्स

विश्वास्त्र के से विश्व क्ष्म के व अन्तर व्यक्ति करों के हैं है के प्रेक्ति क्ष्मित क्ष्मित तर्म के व क्ष्मित क्षमित क्षमित क्षमित विश्वास कर्म कर्म क्षमित क्षमित क्षमित विश्वास क्षमित क्षमित निव्दे से क्षमित केम्म क्षमित क्षमित क्षमित

freedom and the tenth the

father to be they up as the or a service to be the father to be the father than the service to the father to be the father to

विश्वपृत्ति को ६६ महत्त्व निष्य कार्यों । विश्वपृत्ति पूर्ण कर्म संकृति कार्यों क्या कर्मार्यों महत्त्व में या कुछ क्षाव्याची क्या मही की मृत्याची है जीता का ही जिल्ला कर्म की जा गुरुष है जीता का है किया है कि क्या कार्यों में गुरुष क्याचार क्योंक्षण है कर बच्च की में गुरुष क्याचार क्योंक्षण है कर बच्च की में

Patawa no in del Parando E a a LE s Europe y E no in Parando monto trans Europe in the trans Europe in the monto

form that and the factors the following

हिल्ला कर कर राज्य राज अर्थन व्यवस्थ र करा राज्यकार कर आर्थन करा है जन र का क्षा कर हिल्लाहरू सार्थ करा करा सामानिक

where the terms of the property of the propert

Paraboliphing to Angless of the totransing for the first and the Mont Beginning to the park to be an interest the toward the follow

मरम-गुप भुकुम-पु+ (रो+) यथी। वह कमी जिसका होंद्र भरा जरा राजरहाडी सरीरः बारमा। सुकृतिन-ति [में] सुकृष्ठितिक संपन्तिकाः अवधैदाः।

सुक्षकः सुरक्ष-५ [वं] भोठ ।

गुरेम-१ दे स्थारा'। मक्टक-५ मि रिवी क्या गर्र पद-दि अ दिर किया हुआ वंदी बैक्से बंद । मदा-प गेमा भारतेक निष् शोधी हो सुद्री । -(हे) थार्री-सं पुनवारी ,श्रीको स्वारे । सही-मी• पुँमशाबी) हर्षे दर बरनके किए शरीरवर धीरं-धारे मुद्र सगाना । सबेम॰-व दे॰ प्रकृष । अक्ट्री - ५० सोने-प्रशेषा सार, बारका श्राच-पांश्य सारीका बना कपण लाग । अपूर्वेशान्यः सानन्धरियः वारोधा वना वरी या वःद्यका बता हुमा (-गारवस्-प्र• तारोदा बना बद्दाम गीवास् । अवगरी-प्रथा दश्वार । स्कृ-वि (मेर) मीरपाप संबद्धाने सक् बंबनरहित रान्यः इत्ताः छराष्ट्रमाः शिक्षः प्रेका ब्रध्याः − व्यंचकः− बिन (बह एपि) जिमने रेंच्या प्रधार थी। हो। -कंड-वि जिसको भाराज शेली गुणी प्रष्ट हो। नेपक्षा। -यथा-वि जिस्हा कार शुला ही होगी पहली बाला (स. चीय धम्ब्यामी । -ब्रेश-वि जिसके बाल रेंपे श्रेषे न दीं। –केशी–न्यो॰ काची। विस्ती सुने वानीशानी । ज्यास्य स्)-वि जिल्हा सांध सुनी बी । इ निष्ठ । -चेता(तम्)-विश्विमधा पिश्व स्थारकी भारति । निमधी जारमा श्रव बंबसभ प्रकृत हा पुत्री हो । -ब्रार-वि जिलका दशाबा राजा थी, निर्देश । - माति-मी वैमावरने कार्नराने मानपर पापड कर न रुप्टनेगाओ वारिका मीर्त : ~िमार्कि - वि जिसमें बाजने वें जुना छोता हो। बुदर साप मिनी हें मुन प्रश्न संस्था पहने लाही हो ! - संपना प्रश्नी श्रीतिका कृत्या एक अद् देशा । - स्मा-भी शासा ।- लक्त-वि शासाहित निर्मा - बमन-रि निर्मय। १ दिनंदर केरा -धर्मी-वि भी जिल्ली बेली क्यों म हो। मीत होतरी । नर्शन-प्रश्तिमारणे । नर्शन-विश्व विसर्व गमात्र विकाशि मार्ग्यन ८५ ही हो। हु परिवासका -हाल-दि जिल्हा दाव तुला दा दाती, बहार । स्॰ -इंडमे~कवी आवादमें। शुल्बक निकारीय € ४में ६ मुन्दोबर-३ [मे] देन। सुन्दा-सी [राष] मेन्ती नेरवार दारमा ६ - बामान्य-५०

(प)-भी गाँच । - स्त्रा-श्री भी विद्यो कथा।

~शु^रना:∾सी वर सोच शिलाते होतो नेश मीला है।

च्यप्रोद-पुरुशोद ६ **- हमान-पु**ष्टाभाषान क्षेत्रह ।

रवानः सोर्थं । -पश्च-प्रश्रहारेश्च सरच्या ।-प्रदू-वि सक्षि देनेवाका । -फ्रीय-मो॰ [हि॰] रेहारहे का यक सेवा और धर्मप्रवास्थार्य क्रयमाना मंत्राय. 'माननेराम भागा । —म'रप-पु॰ विश्वनायमें'((६)श्री); व्यवशावधामरिक्त स्वान विशेष! -मार्ग-पुरु मुक्ति वामेका मार्ग, मार्थम । - मुन्द-पुरु निम्ह ! -काम-व मस्ति, शरकारा मिनना। -स्वान-उ प्रकारी समाप्ति बीडाई बार दिया बानेशना स्वान ! मुक्तिका~को [सं] मीता । सुरत−तु [d] हुँका दरबाजा निकाने पेडमेका सारा। ~कमस-पु॰ कम= थेम! पुल । ~क्रीते~की वेहरेका भार, भारते । -शुर-पुर श्रीर । -संबद-প্ৰণ লাভ । লয়খদলটি বাহাছ। লয়ানাল सी आवा ग्रन्था वस मेर्। -विश्व-प्र स्पार्वस छपा हुना विज । --पोरि--गो॰ जीत। --वृत्र--ध नेहरेक्ट सम्बनेका सुगरित कास्तर। -ध वि मुराम पत्त्व । तु॰ माळा । -पूर्व-तु॰ व्यापः -वृत्तिका-की धेरोरा होनेवामी ग्रंमी। -दोष-पुण्जीमका दाव । -धायग-पुण् हेंद्र भीमा । -धीना ~न्दी जलतप्ति नामक **१**८ । -विरोक्तक-रि मामनी निरुप्त (भारमी) ! -निपासिमी-^{१९} स्र न्त्रती । --पर-पुर पुरसाः गुंबर १ --प्राप्त-इ ति पामा। वैसी भोगो सादिका होनेवाका देव देख र निविध -9 झागा पून व्यक्तिके घरेश्वमें अंतिके पूर्व दिश वानेराणा दिर । -विदिशा-गो॰ <u>मे</u>दागा ! -पूरप-त हागरे भरा द्वारा राजी पुरका सुगरे कोर् भीर भरमा । - पृष्ठ-पु पुरत्य महीत्व दव आरिया अन रगन्त । -अक्षासन-तु हिर पीमा तन्द्रशास -प्रमाद-९ सुपारी प्रकारणा सुगरी क्रमा हरा। -प्रिय-दि॰ भी गान्दे अच्छा को प्रापर् । ई मार्गात संबंधा सर्वत । -संबू-पुर (हिर) सेर्पेट वर शिम १-वीम -वीमन-पुर पुरुषको मानारमा मूर्यक । -मूचम-प्र पाम । -भाष-पुर देशीका विद्वारी वाना । -मंडवक-५० विकट वरा हराच वार्गा थान । दिन द्विकी कीचा चानिक्षण । - मंदक-प्र भेतरा । -मात्रम-तु धर गण्ड क्रमा कृतप्रकृत । -मोयू-पुरु सत्ता सहित्रम् । -चंद्रम-पुरु स्तापः) मीन्यांम ४ए। -तुम्न-सुम्म(म)-द मीभसीता -स्थि-को द्वारांति । -रोग-९ स^{३ अर्डे} मरी (-शूर्मपु १९४) -पुरुष-पु होरबा बीवान श्रीम अ विमे हीजेशाचा होया १ - अहेरामा नपुण मध्य न्यामुनमी शीव । न्यासवन्यु शे^रवर्षका दार । कुर्या नम्प्रन्तु भीरदेदे निर मुत्तार रहारा अने ~रम-पुधीरी कर्रा-मणि-पुगीरी र-माण् बाबा मेपा बाह अवशिव ३ -बहाम-वि १४ मेड १ द

अमारुका देव र = वास्तिका=की | क्रांका I = वायन्त्र

र्रदर्भ नक्ष्मद्र क्षोप्तम्य यात्रः १ ल्यामन्द्र क्रिल

अध्यवार-५० विने सेव १

मध्यवाय-५ (वं•) तीप !

मुन्धरमा(ध्यन्)=वि+ [गं] प्राप्तमीका भागस्ति(ति । भुक्तवसी-मी॰ [मं॰] बादिदींदी क्रशे ! गुन्दि-सी॰ [tlo] श्रण्डाराः मीछः प्रयस्तका वेषमने सुरकार। मिनना, बद्धारदर पनी प्राप्ति। बाजारी । -क्षेत्र-ब कार्या । ~धाम(म्)-ब॰ मुस्रि देनेवना

विश्विष्ट श्रम्य-योजना वा अर्थ-धमस्कार-ज्यपमा, इत्यक अनुपास साहिः वह हाक-मान वा किया आदि विश्वसे क्षिणेका सीदर्व वहे । - • साखा-पु॰ अवकारका वर्णन, विवेचन भादि करनेवासा द्यास । ∽कुछ-वि० जर्नकार युक्त, मृपित । - कृति - स्त्री० असंकारः सत्रावट । शर्सेग्+-व बोर्दरफ !-पर आना-पश्का मस्ताना ! श्रतंपनीय, श्रद्धंच्य∽वि० [तं] जो कौंचा या गार न

किया या सके; बटक । **सर्धजरः** शक्तंतुर−पु• [सं] दे० 'अकिवर'।

आसंपर-वि० [सं] सचरित्र । यु अंत पुर । **शर्खन=**-पु दे० शासंद¹।

असंतुष-पु [सं] बमनः छैकावी हुई उगिलयोंके साथ इनेसी रामणका भनी, प्रइस्ता एक अञ्चर निसे पद्मेतकानने

माय था। श्रमंतुपा~को [तं] विभावरी॰ समीती वकरेरत (प्रवेश रोक्तेक क्रिय) ।

बास-पु [सं] निष्मूचा दकः निषः दरतारु । —सर्वं,-गर्च-पु यह तरहका पानीका साँव।

सफ्ट्रं-ली॰ एक देंडीकी कता । असके−द्र [मं] सिरके वाकः लुक्का पहाः इरवानः **ध**पेत भदारः पायक कुत्ताः श्ररीरपर ठेपा हुजा **द**सरः महाबर !- मैदा - की ८ से १ सास्तककी कवा। पद नदी।-प्रमा-सी अक्कापुरी।~प्रिय~पु पीतु-साम नामक इक्षा - संहृति - खी अध्योंकी कतार। मरुक्तत−पु[स•]काट देनारु कर देनान मानना। -क्रिस्मा−म सारोप्ट जुकासा वह कि।-ग़रक्र−ब०

निदान चुनाचे। **शककतरा**−५ काते रंगला यक गाहा हव जो सकती भारि रैंगनेके बाम बाता है 'क्रीक्तार'।

मसकसदेता, मसकसद्भीरा−वि काइका दुकारा । भसका−सी (सं०) क्रवेरपुरी। बाठ और इस वरसके गोषको **अ**क्की ।−पत्ति−तः कुनर । **बरुकाचिप, असकेबर**−पु [मं] कुनर।

भसकावसि-वो [सं] शटाँकी को बेरापास । **असकोहरू**-त [म] श्रूरासार रिपरिट। **भसत्तः धरुत्तः – पु** [सं०] हासः मदावर । –हारा–

प्र महाक्षका काल स्या। **मस्त्रश**ण-वि [सं•] विहरदितः विसर्गे नीर्व परिपादक विद्व स क्षाः अञ्चल । प्रः अपराकृतः पुरा विद्वः अनुपत्तकः

परिभाषा । **घसक्रित−वि** [तं] न देखा हुमाः मधातः भरण्यः गुप्त । **अवशितांतक-वि** [तं] अवासक गरा दुशा ।

भसद्मी-सौ॰ [मं] दुर्मान्य दास्त्रिश । असस्य~वि [सं] चद्दयः अद्याः निहरदितः विस्ता

क्क्षण न किया वा सके ।−शति−वि अध्यवस्थमे गमन करमेवाला। - दिंग-वि भी वैद्य बदले हुए ही भाग पदा छिपा रसा हो !

भस्या−वि वो देखान कासके अस्तर्यः सरीपर। पु परमेषर । ~धारी -मामी-वु थौरख-वंदिवींका एक संपदाय और वसदा अनुवायी । -मिर्रजन -पुरुष-पु

परमारमा । सुरु -क्यामा-'भक्त 'भक्त पुनारदर परमारमाको बाद करना और दूसरीको ब्यक्त प्रेरणा करना^{, 'कस्मा' (अकस पुकारकर मौस माँगना ।} अफ्रस्तित्र∳-वि० दे 'अक्रप्रित ।

बक्रकिया-पु॰ दे॰ 'बल्स्बराएँ'। भक्षम-वि चुदा निका दूर स्टस्था सुरक्षित न्वारा,

बिद्धिष्ट ।—बद्धग्र−थ व्यक्तिश्च , प्रत्येक्को या प्रत्येक्को । -थक्क्य-वि॰ जुदा धूर । सु**॰ -करना**-ह्र करना इयाना काम वा मीकरीसे इया देगा। वेचना। स्तुक कुर्दुवसे पुक्त करना छाँदना । −होमा −दूर या किनारे होनाः संबुक्त परिवारसे पृथक् होमाः नौकरी या काम छोषना ।

अस्तराहि-पु॰ दे॰ 'अईगीर' ! अखनानी - हो। इपने याँगनेके किए शाँगी हुई रस्सी ना

वाँस । वास्त्रगरक्तां −वि० स्नापरवाद ।

अस्गरसी†−वि जापरवाइ ! सी कापरवादी । बक्रमाना~स॰ दि: अक्रम धरनाः दूर धरमाः छौरनाः र्गकार भारी चीज कपर छठाना वा चठानेमें सदाबता

दैना । अरु कि असग दोना। अस्तोत्रा-पु॰ [स] एक तरहरो गाँहरी।

बस्तर्गाञ्चा – प्रकट्टगी, संयुक्त कुटुंबसे करून होना वेंग्यारा । मछपु−दि [र्थ] इकडा नहीं, मारी॰ लंबा बन्ना गंमीर।

अखरछ≠-वि दे 'अकस्य'। मस्म−पु यस तरहका मधी । कवि दे जिल्ला । असम्बी−स्त्री [वै॰] श्रीसका जरूमाया श्रीक एट

र्शवरीग । मस्य्य∽दि [मं] रूखारदित देह्या।

अक्ता-पु० त्वरों ५ परॉमें स्थानेके ध्रम आनंबाका एक प्रकारका साथ रंगः रासीको मूर्वेदिव । अस्प+−विदे 'अस्प'।

अस्तराक्त−५० दक्षिणी समेरिकाको एक बामबर जिसके बाधीका बहिया कन बनता है। बसपहिता कमा बसपहि का कम और रेशम वा ध्न भिनादर दुना हुवा क्षपता। [पेस्नियन-चिरुपेदा'।]

सस्फ्र-पु [ब] बोहेका पिछली टॉगॉफे वरू छड़ा होना। असकार-पु[भ] दिना वॉदका दोलादाका कुरणा किसे माय' मुसस्माम फबीर पहना बरत है। [सी 'सस्फी'] अस्वता—स [स] वेशक, निस्दिद हों।

अक्रवम−पु किं] वसकीर रखनेकी किनाव या कार्याः

वित्रावार निज-संग्रह । अस्त्रवीशक्तवी—स्त्री अस्त्रविद्वाहरू देश अरवी-फारसी

भादि विदेशी भावार्षे । अस्त्रभार-वि श्रंदरा अन्ता वादाः मनमीमी। प्र

नारियकमा हुका । [सी 'बहरही ।] व्यसंस्थ-वि॰ [स्] अभाष्त । -नाम-वि॰ संस्कृतान ।

−निङ्∸वि जिसे मौदन व्यापी हो। −भूमिकस्य− प समाधि म लगनको अवस्था । -स्मापासमृति-स्तै। सेना संघद्द करनछ अबोग्य भृमि (भी)।

भन्नम-मस्पिक सम्मार-विश्वेत 'सनम्ब'। ससम्य~दि॰ [र्म•] जो म भित्रता हो, ब्रमाप्त- दलका बहुमृस्यः असमील । भरुम-पु॰ [थ] दुग्दा' शोक्षा होदा, निद्याना माना । -नाक-दि दु*एमदा सवि दःखर । ~वरवार-प श्रदा वडानेवाला कार्य या अतिकान विशेषाँ आग रक्षनेवाकः । भस्तमनक∽पु दे 'शास्त्रमनः'। **असमर−पु** पद पीता । **जरु** मस्त-वि० मस्त अस्ताकाः मीजीः वे-फिक्रः । असमारी-की॰ पुस्तक आदि रक्षानेके किय बना काँ धानींनाटा कैंपा संदुद्ध वा बाला । बहमास∽त्र• दिस्ती दौरा। ससम्ब-स∙ [मं•] प्रयास काफी, पूरा। क्स, बहुन ही मदा । अस्तय−वि• [मं] गृहदोनः चनता-फिरताः अनस्तर । पु • निरवता माझामाष- धग्म, करपति । असर्क -- पु ॰ [मं०] पागन कत्ताः सफेद मटारः यक कोहा । भसम्बद्धः - वि॰ भरतन्त्रपृष्यः । कारमञ्जूष्टा-प्र भीतका जनास नया। मत्त्रक भारती ! भारत्रद्वित्याव−न [न] निना दिसाव दिवे । ग्रंथ ↔ देवा-पारतका हिए। (भैने निमा कुछ रक्य दे देना । अलराजा - म कि विस्ताना, गठा काइकर गायना । थसर्वातः असर्वाती - मा अनुवा वया। असवाई-दिनी॰ विने शतमें ही वया पैता हजा हैं। (वाब-मेन्र) । अस्तवास-५० (अ०) एक तरहका कर्ना शाल । असप्राप्त-प्र• मि] दे॰ 'आहवात । अस्त्य-वि [मं॰] भाषमा सुन्तः भवनावा दुशः होतः मिष्टित । ए पर्दा प्रथानियोंके समाचा सहसा रह प्या हक छोटा विपेता जेतु । समस्यक−५ [सं+] अवीर्ण रीमका यह भर । शनसभा। भससाना≔म कि॰ ब्हावर वा सुर्गा मानूम होता। कुछ क्रामेंक्षे जी म कहता । भाषमा:-गो (मंश्री इंडवरी कना कजानु । अस्तान असमानि+~गी जानवा। **क्षरप्रसी**—म्द्रो स्क बीचा और उसके बीव दिसस सम िषकता है, दीमा । * वि. जालमी । क्षमसद्द-स्रो॰ भड़घनः बर्धवाः टिलाई अलगट्ट । अस्त्रादिया-(६ अनग्रद शननेवाना । भारमध्या । - विश्व भण्याचा द्वारा होते । अलस्त्रबाह्-म [अ] सरेर तर्के। भारद्वता-मा दिलगाव मनगॅका। श्रामद्वद्यां-दि [ध•] धनग अुदा। असङ्ग्री-(१० दे० 'अहरी । भनद्दनियाँ। -- (१) भनद्दा, श्रदर्मण । असदिया-स्थे॰ एड शनिनी ह भागदेशी-पु [अ०] गद्ध हो मृत्रप्रताणा कर । क्रामाई-निश् माणसी शाहित हे पुरु धाल्यी यद वाति । समाग्रहाग-इ मुखबा एक रेंग ।

11: अकारा-त॰ [सं॰] भेगारः तुकारो । -चक-तु स्था वा कुलती जुमानेसे बमनेवाला मंदक जन्मी व थी। असान-पु॰ हाथी वॉपनेका स्टा मा ग्रीवहा देता के पहालेके किए गाडी हुई एक्सी। अस्तिया-अ॰ [ध॰] शुर्व रायान हरेसे बोत। भसाप-पु• दे अस्ताप'। अस्तापना--अश्रीतः वात करमाः बोलमाः यानेवे अरबा का अनीय करना । **अकापी=-वि॰ भागाव सर्गेवाका**(वोजनवाताः मानैराज भजाञ्च असायू-तु [गं॰] क्षेचे ऋरुः तुँरो। **अत्यास+-वि** वात बनानेवाचाः विष्पावादी । सकारत⊸भी॰ वि े विश्व-पहचान सदार रायाना मान्दि विद्या अलायक्र≠∽वि संवास्त्रः निद्रमा। क्सार~पु [मं] क्रियाहः # अमार अभवा रेर ! भलारम-१०३ 'जलार्घ। अखार्म−पुर रागोको सुरता। ~धरी−स्रो निष् समयपर वंडी बनामशानी बड़ी ।-सिरामल-५० साउनी युषना केमबाना शंकन, (रेलके टप्पेये तमे) हैंगेर मारि । मु॰ -वजना-शनान्धे पंद्यं नवना । সন্মত∘–বি॰ গঠানৰ ভাবিল ∤ असाब-त कार्श तापनके तिय बनानी हरे माप बीध । भरावज−पु[मं] एक प्राचीन वाजाः। भक्तावनी-भी॰ एक पुराना वाता । भक्तादा−अ॰ [श्र] शिवा, अनिर्दर्स । अन्ताम-त॰ [र्थ] एक रोग जिसमें श्रीवर्ध मोनश हिं^{स्त} पक बाना है। असार्य−4 [मं∗] वी मृत्य म कर रहा का अल्डे जी काममें व लगा था र असिंग−दि॰ [र्|•] दिना विद्व वा संपूर्णका जिसकी ^{राज्य} म दिवा वा गढे। तुरं पिद्यांनाचाः (बद्द श्रूष्ट) जिल्हा होते िम स ही या जो सर मिनोंसे स्वयहन 🗗 गुर्फ (रहा^{स्ट} मारि-न्या॰) । तु॰ देशर, प्रसारमा; निहानाव । अस्तितर-पु[ल] बहा; होतर । असिंच-१ [मंच] बाइरी ब्रुवाबिक्क मामसेका भीतरा वा रामाः हारबीत पीरः एक शापीन जनपदा 💌 में 🖰 🖟 अस्टिएक मस्तिमक-पु [लं•] हे 'अनिसक ! अकि-यु [र्ग•] मीराः विच्छा बोबना बीबाः द्र⁸र्द राधा महिला। त्या है जिले। । -कुम-द मेरिस शमृह । - + प्रिक् - + मंबुक्ता-भी धरेगी। - + संप्राप-तुक जुक्त जायक रोवा । वि प्रमारि ~गर्दे,~गर्धे~तु एक जनल्ये ।−जिद्धा −जिद्धिम!~ जी। गरेके मीतरका कामा वांदा । -मूर्यानमी कामा हुन्। -पश्चिका-पूर्णी-मी वृधिक्षप राज्य गुरु। -थ्रियः-बहुल-पु कान दयतः। -मोर्-ना र्याचारी मामक पीचा । -बिराय:-विस्त-3 भीरेड वंजन । अभिक्र-पु[4०] सावा रूमार । व्यक्तिप्रच-पुर (०] कारता भीरा। द्रापा व

मुख़ासच−वि [ब०] विससे सिवान किया बान विससे

नात-भीत की जान, संवीधन ।

चैते । -बासन-पु मुक्तको मुकासित करमेवाकी भोवनि । -वासिनी-कौ सरव्वती।-विद्या-की रीक्पाविका नामक बौहा जिसके सुदास्पर्शरी थी किसी चौवमें हुर्गंदिका वाती है। →क्वादान-पु॰ वैंगाई। न्सु**दि**—को दातुम बादिको सहायतासे सुख साफ करना। मीवनके नाद पाम, इकाननी मादि खाकर सुख धुव इरनाः इस कार्यके किए कपयोगी वस्तु । –कोप-पु• राह्र । - झोष-पु भुवन्ध्र स्वन । - शोधन-पु मुख शुरू करमेराव्य वस्तु दाकभोनी तत्र । —सोघी (विम्)-पुर्वदौर।-द्योप-पुर्मुद्यसमाः व्यास। नमीनको सुँदको छोमा स्रोति ।−समयन्यु नाकका उप्सरमूक । नशुक्तानपु॰ उद्यारमको शरकता या शहरवै। -लाव-पु कार, सामा। श्रुक, कारका बदना । -हास 🗝 प्रसम्न भुवास्त्रते । मुखदा−पु नेदरा मुखः। मुख्रसार-पु [म] अविकार माप्त व्यक्तिविश्वेपके प्रति-निविक्तपर्मे कार्व ६८नेका अभिकारीः पर्वेटः कानुसरेग्रा वर्षका यह मेर को बद्धोलने छोटा होता है। -कार-पु कार्याकिकारो । –कारी –ली मुखवारो । –कामा – प्रवास क्षेत्र विश्वते प्रशेषे कोई भावमी मुख्यार भनावा नाव मुस्रतारका भविकार-पत्र । - • भास-पु मुख वारेमाम बनानेका मधिकार पत्र । - म्बास-प सरा वारेपास बनानेका अभिकार-पत्र । -(१) आस-प्र वह म्पक्ति जिसे किसीकी ओरसं क्षेत्रें कार्य करनेका नांपकार रिवायया हो । −कुक्त−पुधर्मनिकारी । −सास−प् गर निसे किसी मुख्यमध्ये पैरनो वा और बोर्ड सास काम करमेका भविकार दिवा गवा हा। मुप्रवारी-की मुखनारका काम वा पेका। सुम्रक्रस−वि [ब] दिवदा, मर्द्रसक्र ः शुराप्रक्रफ-दि [ल] तसकीक दिवा हुमा पश्चा दुना। तु शस्त्रका समुक्तप (बैठे माह का 'मह')। वह धन्द विस्त्रा क्षेर्द्र वर्ग था मात्रा यह गया ही। शुप्तिकर−दु[न] एतर देनेताचा जास्मः वह जुल बिम भी भगराच रवीक्रार कर छरकारी गनाव वन बाय ष्ट्रभा क्रिमे माफ्नै 🏲 दी बाय । मुज़बिरी-मी बालूनी। सराम्मम−दि [ल] पॉच कोनींबाका पंत्रगीशाः प्र बद बस बिसमें दर बंदमें पाँच मिनारे ही। मुगर-रि [मं] अधिक वीजनैवामा वाकाका छीर करने वालाः मनियवारीः वजना धान्य करना हुआ। विरी

सुसरा ।] पु र्चता श्रीणाः सुन्यदा ।

मुरारित-रि [मं] ध्वनित ग्रध्यावसान्।

दे बहरे घरद हुँहने भग देनेरी मिका ।

सुरुषप्र-विश्व[मे] इंदरण अवाजी कार ह

मुक्तिका-स्ये [मं] हे 'मुक्ते ।

सुरारी-भी [मं] सम्मानः बीहरी।

मुग्गकृति-मो [सं] पहरा।

Hannis - Ho f Bann 1

मामक पासः कपूर, काँग बादि हुँदको सुगंपित करनेवाकी

शुस्त्रातिथ−वि [म] द्विताव वा संतीतमकरनेवाका नात करनेवासाः मुखबश्चहः । मुखापेक्सी(क्षित्र)−वि [सं] (दूसरेका) मुँद जोदनेवाका परामित । मुलामप-पु [धं] मुपारीन। सुल्रासकत-सी [अ] विरोध- इंडुता। मुख़ाकिक-वि [न•] विरोध करनेवाकाः सञ्चः तकसः । मुकालु-पु सि॰] पम मीठा बंद, महाबंद । मुखासमत-सी (न) शपशाः प्रयुता । मुकासम~पु• [सं] ध्रहः राक । मुक्तास-इ [स•] रहता। मुलिया – पु प्रशास व्यक्ति, शतुमा; वह व्यक्ति जिल्हा कर्तच्य गाँवमें दोनेवाक सपराचीं दुर्घटनाओं आदिकी स्वना बानमें भेजवामा हो। दश्कमनुकके मंदिरोंने मृतिके पुजन भीय लगाने भारिका काम करनेवाला । मुक्तिय-वि [सं] मुख-संनी मुक्त । मुस्तिकिक्र−वि [व] मिन, हुदा विस्त्यः कर्र त्रहरू। मुख्यमर-वि [🖛] संदिता शारवपा होदा । मुख्यसन्-च [ल] धोदेने संद्वपर्ने । मुरुवार-पुं (भ) द मुख्वार । मुक्य-वि (सं] मुख र्सवेदीः प्रकान प्रथम भी गीण स की। शेष्ठ । तु मुखिवा अगुआ। यदादिमें भारतीक प्रवस करुप। - संबी(चिन्)-पु भवास संबी। -सर्ग-पु रबावर सृष्टि । मुग्यत्(तम्)−थ (र्द•) प्रवाननः सासदीरसे। मुस्यार्थ-पु [र्थ+] श्रन्यका प्रभान अर्थ । मुगर्र-९ यानस्य ग्रुंगरी की व्यायामके काममें काबी बाडी है, बोही (परमा हिकास)। ञ्चलकी−९ (च]यौदाधकार्यतः।[स्रो सुपश्चिमाः] सुगरा−९ दे सुँगरा । सगरी-ना ६ सँगरी । मुताख−९० (फा) यह प्रमिद्ध कराकृ वावारी कावि (विसदा जाहिरवान संगीतिया है भीर विसमें संगेत शाँ इलाक् वाँ और तैवृद जैन प्रतिहामु-प्रक्रिक निज्ञता हुए। बारतका वेशिम मुभनमान राष्ट्रका हमी बार्निहर वा)। - है-वि दे क्रयमें। - पराम- पुवर्गानपर शामें बॉन्डिट १६ वंददिबॉने भक्ता जानेदाका एक रोज । मुशलई मुशलाइ-वि [का] सुपत्रीकान्ता सुनभी। -रोपी-नी वद तरहबी केंचे गाँछोबानी टीपी। -पराद्य-पु एक विधेष बदारका काठा त्री मेर, अहे वाहिर बीगमे तबार दिया जाता है। - स्ट्री-सी भीरी-एउटी सम्बन्ध हुई।। मालाबी-को [का] सुबद की। इरमासा(अंत पुर)-को बामी। मिकारित काम करनेवामी भी । सुरवानिय-स्ते [1] प्रेयमधी भाग-विशामे भाग क्यान मुग़लिया-वि॰ (दा) दे 'मुदरावा । असाकी∽ि (या) सुन्देशाः सुगरीश-मा । −पृष्टी= की कुरू बढ़ेंकों हैं। बानेवर्ग्य कह रिधेर पूरी।

को रमामदुरीन सदीद हुए। शोककारः कारान्त्रे जार रोनारो । सु• --की पैदाहरा-सदा श्विष ज्यास रहने, रोगी शक्त रूप में रखनेवाला। महर्रमी-वि॰ मुद्र्रमद्भाः रीती स्रतवाताः शोरुम्बेबदः ।

सुइरिक-पु॰ [ल॰] इरकत दैनेवाका चाकका प्रेरका मस्तादकः। मुद्दरिर-पु॰ [ब॰] क्यिनेवाला केरक, मुंही; बब्धेक्का मुंधी । ∽धाना−पु थानेका मुंधी । −पेशी-पु॰ बफ

सरकी माशारें किरानेशका कर्मेशारी। -फाटक-प्र

मनेशीसानेका मंत्री । महरिरी-की मुहरिरका काम था पेछा।

महस्रत नती [ल] शर्काश, कुरसतः कार्य-निधेश्के क्रिप मिकनेवाका समय ह

मुहस्का−पु दे॰ भहता ।

मुद्दसिन-प्र• [श] इद्दराम भकाद दरनेदाका चय-कारकर्ताः सद्दायकः। -क्टरा-निश् महार्वे करवेवालेके साथ तरार्थं करनेवाको कृत्यन । –कुदाी – सी॰ कुत्रध्नता। मुहसिक•−५ दे 'मुहस्त्रिक'; व्यादा।

महस्तिक-९ [न] महत्क वत्त करमेवाला शहतीक दार। वहसीक्ष्मा सिपादी ।

सदाकित-त 🙀 } दिफानव करनेशक। रक्षद्र। ~ल्लामा-बु क्यइरीके अंतर्गत वह स्वाम वहाँ नियात

मामकीको मिसके रखी जाती है। -बन्नस-५० मुद्दा फिनसानेका निरोक्षक रेक्ट्रकीयर ।

सुद्दाफित्रव-सी [म] रहा, रखशली निगरानी I मुद्दार−ली [भ] ईंट्यो सदेख। सहाक-दि॰ [भ॰] बढ़िनः नामुमकिन अमहोनी । पु

दै 'सहाक'। सदासा-पु शानीके बाँवपर नहानी हुई नीतककी नूरी।

सुद्दाबरत-सी [बन] क्रायर नाठचीत करना। सहाबरा-तु [म] बैक्कान बाहबीत काञ्चीतक बा

विचित् स्वंग्वार्थमें सह वानय वा प्रवोगः अञ्चास । सहासमा−प [म] दिसारा हिसारको गाँव दिमारके नारेमें नृहतार । **मु॰ -तस्य करना-दि**सार मौगमा ।

मुदासरा-प्र॰ [म] कारी नीरत घेर केना देश (€एसा)। सुदासिय-इ [अ] दिलाप जानमें करने केने या

प्रोपनेवाका । सुदासिक-५ [ल] मालगुजारी राजन्तः पैदानमः

माना नका (महसूनका नरु)। ∼हासन्यु कुम वैश-बार कथी निकासी।

मुद्दि - चर्व दे मोहिं।

सहिदय-वि [भ] सुद्दम्त क्रिमेशका ग्रेमी । -(इस)-चतन-तु देधमल स्वीग्रमेमा।

सुद्दिस-भी [भ] इकिन वा मारी कामा नुका चर्च । स्॰ नगर करमा~कहारै बीपनाः वरिन वाम करना । सुदिर-दि [सं] मूर्ग । इ. काम रेका सुद्रीमण-ग्री० दे 'सुद्रित्र ।

मुद्दार् द्वस्)- भ [संग्) शर-वार पुत्रा-पुत्रः । मर्मिष्(म्)-४ वि] योगा

सहस-पु॰ [सं] १९ युग्रह्म समया हो श्रंड बा ४८ मिनटका समया विवाह, वात्रा आहिके किए पालिस क्योतिषके जनुसार श्रमाद्यम दार ।

सहैपा-वि [ब] वैदार, प्रस्तुता भागाया सीज्य । मुद्यमान-नि॰ (सं॰) मृश्कित होता हुना मोहसुन्त । मुँग−ली दालके काम भानेदाका एक डिर्ल लनाव । मु॰ –की बास जानेवासा –वेदमा दरपोठ।

मुँगफड़ी-को यह ध्रुप विसक्षे प्रत छाने और तेत निकासमेड काम माते है।

मेंगरी-स्री यह तरहरी तीप ।

मेंगा-पु॰ चूनेके तस्वते निर्मित कर्र रंगीवाचा एक कठोर फ्टार्थ को समुद्रमें रहमेशा हे यह तरहके की श्रीका पर दोता है और बी रत्न माना नाता तवा दवाने भी काम नाता है प्रशास रेक्षमका यक भेद । र्में गिया−वि॰ गुँगडै रंक्डा इरा। पु॰ इरे रंक्डा पक्र

मेर । र्मेछ∽ली कपरके डॉडपर चनी हुई रीमरावि को पुस्क दीनेका विष्ठ हैं। करी निक्ली, शेरके नवबाँके सगल-वगल

डगनेवाहे सर्वे दिएक शाका शु+ -का गास-विसदा हिसी दे वहाँ बहुत मान-कार प्रमाद 🚻 1-तीची होना- विश्व दोना । −(छ)उछद्यामा − मृँछोद्दे पात भुनदा हेना क्डीत करना गर्व भूर करना। -- उत्पादमा-वर्ष शह करता। कही सवा देना ।-मरीहना-दे 'मृंती

पर वाब देना'। -शुक्रवाना-दार मान तेमा पुरनत्व का दाना त्वाय देना (नद्र शत हुई तो मूँ छे ग्रीहना हुँगा) । -(धीँ)का कूँदा-धेनश्वीकी नमान भी देदेश माने मीयवेपर मुख्यान कियाँ रिकावी है। -पर ताम

देना - मूँटींके सिरींक वालीकी मरीवना अवनी वडाई करना । मैंब-सी पढ़ तुग जिसके क्रिक्टेंडी वास बरस और बद-नवनके समय महातारीओ जिसकी संस्ता पहनाते हैं।

मुँबां-प्र क्षिर कशका -कटा-वि प्र मणा बारने कामाः भारी <u>त</u>्रकरामः ९१ वानेवाता । सुरु -चहाना-सिर् बदामा । ~मुँदामा-सम्बास हेना । मुबन-४ शुं"न-सस्त्रार १ - छेदन-४ शुंदन और सन **गेरन**।

मृब्बा-स वि शारदेवान उरगुरेने बनानाः दवामण बनानाः भेवा बमामाः हगमा ।

मुँबी-को सिर। - काटा-वि निरुद्धा मरने पाग्य बच्च (पुरवोदि निए शियोधी एक गामी)। -बंद-पु क्रमीका एक वेंच ।

मृब्ना-स कि वंद बरना दबना स्ट करना। में दरण-भी श्रीरी बेन्दी।

स्-त का वाला - सस्-म वालवामा क्रीव वर्षे । -बाक-पुबद वस्त्री का कीता जिमे नियाँ भोडीमें बाजबर गुंबती है। -दिस्साङ-पुनानकी साज थीवनेबाहा । –दिवसाद्यी–भी - सन्दर्भ साल धीपना पुरुवारीभी।

श्क-रि [म] ्या। -वरिष्-रि कुम्परस्य । - विवासय-पु रूनि-वहरीया विवासय । - माय-

मुप्तकीया-वि (का॰) मुगरीका । −द्वानकाम~ध्र॰ हिंदुम्डानका मुचन राजवंश ।

मुग्तुत्र, मुग्तिहरू-दि [बर] बोटा; गहा। मैटा,

र्यशाः भरतीतः । मुग्तहात, मुग्तिहास-म्पे [ब॰] पंदी गनियाँ । मुधकता-दु [भ] भोगाः भ्रम ।

मुग्प-दि [मं•] मोदितः मुः घोषाः सुरर । –कर्न मुग्र भोदित करनेशाला । स्मि -पुद्धि-रि मूर्ग मासमदा भौका । -बाध-पु

वापे वरून कार्शिक संस्कृत-स्वादस्य । भुरका-स्था (सं•) दौरमप्राप्त सर्छ स्वमानवाकी नाविद्या।

मचड-प [मं•] बाला लाह । मुप्रकृत्र-पु[मं] एक पेड जिल्ला छाल और कुल रवाके दाम भावे दा देश 'मुल्डूद'।

मुख्या−स कि दे॰ 'सुन्या। मुचनका-पु [तु•] को साम काम म करने या निवत तिविपर दाविर दोनेका मनिकापम जिसका पाल्य स

द्दोनेपर प्रतिदा दरनेपाना निवारित वर्षश्व देशा श्रीदार रुरता है (हेना, क्रिसना) । गुचिर−दि [सं] दाना। तु धर्मः वाशुः देवता । मुचुर् र-पु [मं] मह स्पेन्द्री राजा जी मांबानाहा नेटा था और जिसकी निहा मंग करनेके सारत बानववन बक्टर बरम ही गमाः मुक्तुंदका पेत्र ।

मुषुदी-भी [|] सुट्टी नैयरी बरबानाः भेष्सी । सुर्धद्र-पु• वदी मुँछोबानाः भोदी शङ्कवाना भीर भीद् । शुष्ठ- मे्छ का समानमें न्यवदन कपु नव । -श्रीहा-बिमने मुँछे भुरा मी हो । मुखाकका, मुख्यित मुख्यित नि वही मुँगीवाला ।

सहस्रार−प (श•) हर पुश्या प्रतिव (व्या०) । -समाई-५० बनमुधा भीत्का गुनान । मुत्रक्ति-इ [w] दिव बरनेवामा बाद बरने बराने

बान्या सगरामुद्धा साथ उपनेशना । सञ्जतिष्य-त [म॰] धीरिश वरनेशमाः सही शास्त्रा निदाननेशायाः विदार वरनेशाना । गुज्ञसिल−दि [#] संध्वने विवशः जिलमें श्वीरा ज

क्षीर शब्दा रिमा दमा र गामरा-विश् [अ] जारी दिवा बुजा। दिनावने क्रिया (बा निजदा किया) दुष्पा । दुः वरीणः निजदार्दः अदस्ते मुचाम करना। राजाओं मार्डि छात्रने बाहर गचान करमा देश्याचा महाहममें बहदर गाना ! -- है-पु

सुप्रसा धरनेवामा। सन्याम करनेवामा। दरवारी । न्वाह- भी शाही दरवारमें वह व्यान कार्य शहे होत्हर नीम समरा अर्थ ६८ । मुरु –क्ष्मा-मिन्दा कामा ब्राप्तमे समाग्र कामा। देश्याका देशकर-दिया आवदेeran I

मुप्रस्मि-५ (स) दुर्भ वर शाला अवस्तरः मुक्तिय-मी [#] हालि ब्रह । मुक्तर ५-६ [#] अदेशाः अधिकारिका विकास मृत्राच-रि [ब] ए प्रशाहिता नुभा अनुमृत्र अनुद

(तुरबर १४१) र अञ्चारता -पुरु अञ्चादर बीज १

समहाय्-दि॰ [ल॰] विश्व वैशा दुमा, विश्वराह : सुक्रम्बहः सुक्रम्यहा-वि० (त्र) तक्षीत्र दिशहराः मस्त्रावित ।

सुजवियतः-पु॰ [अ॰] तत्रवीत करनेवाना, परपारकः मुबस्सम-दि [अ०] विग्मशंभा ग्रहीरवाही मृद्रिकत्।

मुबस्समा-पु॰ 🖛] बृठि, प्रविमा। मुजाबुन्या-पु॰ [ब] युद्ध सप्ता मार्यार । मुत्राचिर-पु॰ [ल॰] शरीग्री। यमब्दिमें रहनेशना बरगाव बादिमें शाक्ष समानेवाना ।

सुमाबिरी-न्ये (स) शुक्राविरका का वा का वै । सुष्टायङा~पु• [ब] अवपनः वरवा । मुबाहिन-पु॰ (न॰) धीरिय धरमेनाता। विशास धरने बाह्य । सुज्ञाहिम~वि ३९ [च+] सुज्ञाहिमत करनरात्राः रीधने

नाशा नायक। <u>सुकाहिमत</u>−ठाँ॰ [ब•] रोद-रोद, वारा, स्थित । मुक्तिर-वि [अ•] शानिकर । मुझ-सर्व॰ वैर्थ्य वह रूप की बन्ते और मंदेर दाएड की छोड़बर धंद बारकीय दिमस्ति बोदमे हीता है। मुझे-सर्व वै'का कर्म और संप्रदान कारका हर।

मुरका-पु॰ एक मीटा रेक्सी क्षत्रा वी पूरत महीवे भौगोन्द्री जनह शहमा जाना है। मुखी−मी+दे गारी'। मुदाई-नी मीतापमा प्रक्रिः वर्मद्र। मु॰- वामा-यर्थंड बहुन्ताः । मुरामा-भ कि भीत होना वर्गरी हो बानो ! सुटामा-दि॰ वी वैतेवाना ही जानेके करात वर्षणे और नापरवाद हो गवा हो।

मुटिया-चु बीहा हीनेबाला । मुद्वर-पु बाल-कृत सर्वय आहिया मुद्दीरे अने व रह पूचा पुक्तियाः इस्ता मुहिना । मुद्दी-स्थी वेथा दुई बवेला सुरत मुक्ति हाति मारेका बरपाः स्ट्रांक्य चीवार्वेद्य मावा वहत स्वता (-में सभः दोना)। पूमशी। मुद्दोसर अत्र थी दानदे किर निक्रण बाव भुरकी । मुरु -शहम करबा-हाबने भुरहेते नहरै पर देना पूर्व देना। -में आता वा दावा-पुण्टे

बात करनेकी बीधिश बरबा। मुत्रभष्-मा निर्मशः धामना (न्हीना) । सुरिका॰-मी॰ सुद्दीः पूँमा । मुदिया-मी बन्मा बन्ना पुनिषे देशम जिन्दे दे टॉन्डर मन्तरे हैं। मही॰-भी दे॰ 'सुद्दी ।

बार्मे भागाः दोशा । -में हवा चंद्र बरमा-सन्ति

मुद्रशीक-ली बास्स बना रहे तरम दुन्या । ग्रह्मचा-भ हिर श्रहना है सुवना-म दि शीरी थोल्या सुबना धन होत अगल-गण्ड वा दे देवी और बुजना दर्जिये रिप्टा की मभार है वैंदा प्रामा; इस बानर ह

सुब्रमा १ – विश् ने मा ६

! शुक्रवामा~सः वि अवृत्तवे सा अप्ति ।

मक्षा-मर्द प्र• भीतः भैवादनः । मकता = ना कि हा गाननाः वेशनमस् करना । मुक्ता - पुरु भौगाः रे सक्दा । मुक्तिमा(मुक्त)-सी [श्रुक] ईगापन । मुग्रजाग-ग० ति ५० मुगना । मचना =- स ६ दे वीचना । मछ-भी देश बंद । मुत्री-रिकि देश देश पीटा व्यूपानेवामाः जानिमा रह। स॰ −का चीत्र-शहिमका चेश! -वा साह -शारिम वा इंत्रमदा मान I सूर-सी॰ दण्या, दरनाः सुद्दीः सुद्दीयर श्रीतः ६६ तरद का जना थी कीवियोंको मुद्रीये बंग कर के सना जाता है। एक तरहवा संभवनीय। सु०~करना-वरेरको सुद्धीर्थे पद्भवर महादि किए नेवार कामा । -मारना-मंत्र रण्डर बड्धे मेर कीर भीत पेंग्रना होना करना। इस्त भैधन करना । स्टमार-सर्ग्यः नष्ट होना । म्बा∽द•दे गुहा। मुद्रि•−सौ देश मृह्य दे भुद्री। मुरी+-भी+ दे+ सुद्री । मर-पु रेश वृह । महता-म कि दै भेंदना। मुद्र-दि॰ [मं॰] मुरश्र वदा-बद्धा, हैरामा वर्ग, करवृद्धि । 🖫 भोनरर्गनमें माना को विषय देव मुनियोंमें। कुसरी निसदा तमानुषद कावित्रपति निवेदण्य दीना । -गाम-द रुत या निगश दशा गर्म। - धाट-प यत्त बाल्याः माममहादे सबी बन्नी शह बना अला । -प्राष्टी(दिन्)-शिक्षिण सिकान का का राजन कर्ने भगावर बगम निषदा रहनैयाना दुरायदी । -चेला-(तम्) -वृद्धि -मन-विक मृते भागमा !-ग्राध-दिश बामए. रिटिन । **मदना−भी** [भे•] मूर्गेत नाममती। म्वान्मा(पान)-(१ [१/०) मृगे भीवह । मन-प स्व देखार ह मनुबा-४० कि वैदार करना। मंच-ब (तं) रेस्स्में द्वारे हारा वाकि ज्योब हव तो मुशाश्य(बमुन्ता)में त्रया ६६८३ है और जान्य बहुनेने बचर निरमण ६ वैद्यार । -क्ट्यू-पुरु शहर और eng dia gate maget ein t-fid-d de dietat मुबन्धान रेश्य । ~प्रीयि-श्री नृबन्धान रेशनशबद्ध भर । - अहर- मुजापान्दे बार्ग बागा दिहार । -दाय-पर रेगारचे नारे सराधे बीमग ब्रदेश -बिरोप -शप-इ रेडाव वर मानेडी वेद है। -सब -प्रसेड-पुर स्वमार्थ श्व गी १ -एशिया-को रेप्ट रही ज न शूच दे हैं व सं शासूस करना र न्यूमाthe adult ergy : -te-fee tige gine alb शानी ((१)) -वृद्धि-मी: वृत्रहा प्रकृत राजन्ये क्षांच है ना ३ लहाइटल्यु ह्यारे माथ चीरे क्रिक्सेटेंबर है विष्यानम्बन्द्र अवस्थिते र ज्यान ह्या वृदिन्ति । 4 to k t

मुजाधात-तु [र्थ] वेधार ५१ हा वानेश रोव ! मुखायप-पुर [त] देवने विश्व मेही विश्वदे रेप्टर रकटा क्षेत्रा है। मधिका-भौ [मं] सर्वशिका मुखिन-दि [तंर] मूचडे रूपमें निहना हुआ। यो देहार सर अभिने कारण करा श्री गया श्री। गुर−पुरु वक्तर पश्चिम अशोद्रामें समनेशानो गई कुपक थान अहि। 🖈 मृत। मृत श्रुप। श्री। मृत ५३ । मरल•~रि• रे मधः। मुरस्तराई॰~सो॰ मूर्धशा मृत्रहमा॰-की॰ रे 'मून्यंता । स कि सुन्दिन रोता। मराग=-सी॰ दे॰ 'म हो । गरम-मी दै॰ भृति । अरति = = भी दे + 'श्रांत । - बंत-दि । पांत्रपान । मृश्य+-पु+ ६० 'व्र्यां'। मृति सुरी १-%) १ मून्त वर्गे, बुरी । मरिय-९० [थान] बारिम करनेशाचा, वह रिमने सिमन को नरका दिने; जून वृर्धप्र । -- (म)भागा-पुरुवा बा कुलका बाहि बुद्दर, मुख बुह्द । स्टल -- विश्देश मार्थ । सूररे-२० (५०) सूर, जागमत बदा शरधेराँगा अर्थमहिन गावधी व जामन्याना । --पंडिडन्सी पत दिगा मूर्थ। **–धानुद्ध-**दि शिवश प्रदेश्ये ही र -मंदल-इ -मंदली-मो स्गी**ध**ोर्गःस्म । मृत्यता-भी सूध्यत्य-५० (मेर) मूरना अन्नस्ते। मृश्तिनी ६ – सी । मृतां, मृतं भी । मस्तिमा(सब)-मा (०) वर्गता। मृष्यम-९ (५०) वृष्टित होमा वा वस्ता होड गीगरा संस्कार। बढीछ बरमेडा गया है। 'जुमीनी मृत्यांबा-भी [de] ब्रुक्त अदेश्वे संबद्ध मूल भाग, मानी दशीका अपने आरोह-सबरीह ह ज्यां-लं (वं) देशही त्वांक्र राम्प्राचिक इक्ति स्वापि । -रोश-पुरु देशेयोधी रोशांची विशेष रिया रीम । शृष्टांच∽रि [र] शृ('दन संदर्शन । शृब्दिम-वि (संत्र) बुन्यानुत्त, देहोझा व्यव्य दिश दुआ (क्नीवर अक्षा आहि)। यविष्य अनम रिक सम्बद्धः) ६ सूर्व-दि (ते] स्पेतुरः, सरदरा देश वर्षे वर्ग मूर्ति-की॰ [संन] शहारा लक्ष्य वा प्रशा प्रकेप सूर्वता शिवास । -क्या-भी मृति स्टिशी क्षा −बार−पुत्रियनारेश्चार चपेन्द्र शुरुद्रीसर् बरनरालाः प्रवास । ~ब्बद्र-दि व्यक्ति द्वा करे नामा कर्यात्त्र - ब्या-मान देश्योव धर्मा −श्रीत्रक्रच्याः वृत्तिवी हे त्रोहर्तेशकात् वृत्तिका मृतिमान्(मन्)-रि (र्र) वृत्तिक अधारी च^१। स्वं(व) सर्वं(व)-'वरो सः स्व ह स्टम्पे स्तरी हर १-वर्षी -वर्षी न्योग हनते छव १ नते वर्षी नि कि ए स्था महाति । क्षेत्र के प्रमाण

1010 मुद्दवारी - सी सिरदामाः मुँदेरा । संबद्धरा - सी॰ साडी वा भादरका सिरके कपर रहने बाका भाग । मुकाना−स॰ कि॰ सिरके काक करतरेसे बनवाना । † का॰ कि मुँदा बामा। स्गा बाना। मुदिया-पु वह जिसका छिर सुँवा हुना हो। सन्त्वासीः वैरागी। सी मोड़ी किपि महाजसी छिवि। सुराजदिव-वि• [बर] यिने हुए; कई, अनेक; बहुरोरे । सुरुमशी−दि॰ [ब॰] सीमाका अतिक्रमण कर्मेवाका पत्नी पूसरेकी कगनेवाला, संस्थापक सुरावा (रोग)। एक्पंड (क्रिया)। सुतमहिक्र-वि [स] एजस्मुक, क्यांव रखनेवाका संबद्ध संबद्ध । मृतमित्रिका−वि [स] संबद्ध। मुतमितिक्रीन-प्र [श] वरके क्रोग, बाक वच्ने । शुंदमहिम-पु• (भ] इस्म सीस्पेयाका, शिक्षावी शिष्य । सुदमस्सिव−दि॰ [ब॰] तथस्युन (धर्म काठिका पद वात) करमेवा**काः** क<u>रूर</u> । सुरक्तिस−९ [४०] दकाम दर्भ, बोक्नेवाकाः कत्तम पुरुष सर्वनाम । शुव्दक्त~पुक्रोडे या वरामदे**डे किना**रे रेकिंगका काम रेमेरे किए खड़ी की हुई, पतकी, शीभी दीवार। [ल॰] देविया समानेको अगद्य तकियागात् । द्विता−वि भृतनेवाकाः अविक मृतनेवाका । शुरुक्रधी−वि [#] बाक्कात, फरेनी फसादी। पुरुकरिंक्र−वि [स+] सक्रग-जक्रगः विविधः पुरुककः क्पिरा द्वभा । र्वेदकरिकात−सी [श] पुरुद्धन थोजे। पुरुद्धक दावीकी शुत्रदशा−दि [ल•] गीर किया हुआ । पुरुषक पुत्र केशक्य । शुवदर्रिक-वि [ल] बरकत देनेवाका पवित्र । भुवमीबस-वि [अ॰] बनी मालदार । शुवरिक्रम-पु॰ [म] वरज्ञा करमेवाला उलवाकार। शुवरहिद्-दि [ल] चितिष पिक्रमंतः वदिग्न । शिवराविक-वि [म] समानार्थक, इममानी । सुनसङ्ग-वि [थ॰] बाजाद, वंपनरहित । ध॰ विस उन्। दन्दे। पुरुष्ठा-ली [अ] तलक दी हुई सी। सुनवक्ता-दि [बा] सबको (बाह्या) रखनैवाका सम्मीद्वार् । मुनवज्ञह्-वि हे सुनविज्ञह"। सुवरमिष्-ि [ल] तरम्पुर करमेशाना व्याम हेनेबाला । मुतदप्रज्ञा−दि० [अः] बफात कावा हुआ। कृत परसीय

मुत्रवस्त्री-तु[म] मरिकर वा वरक संवितरा प्रवंत

मुत्तवस्मित्त-(व [स] दरमिवामीः वीवकाः मृध्यम

दरनेवाता तरहक ।

श्रेजीका । मृतवातिर-वि॰ [अ॰] क्यातार । स्तसदी-पु [ध] सेदक मुंधीः विसान विसनेनासा वजकः - गिरी-सा॰ मुदसरीका काम, हुदा। <u>सतसिरी*−की गोतिबोंकी कठी ।</u> मतहरिमक−वि॰ [थ] क्यांत्रत करमेवाका सहनशीक। सतहरिक-वि॰ [म] दरवत करनेवाका, गाँवशीला स्वरयुक्त (वर्ष) । <u>भृतायक्रत</u>-को [ब] मुताबिक होमा सदश अनुहूप होना ! मुताबिक्र−वि॰ [ल] सरध सनुस्य । पु॰ श्रीवनके बाद छापी बामेबाकी कापी। स्तास्या−पु [म] गॉंगना, तस्य करना; गाँगः पावना । अवास−सी॰ पेधा**रकी हा**वत । स्ताइ-५ [न] मीवादी भग्यापी निकाद भी सुसक मानीं के छीवा संप्रदानमें बावज है। मुखाडी-की अ देश की दिससे मुखाई किया गया होः रहेरी । मुतिकाङ्व•−५॰ मौरीक्रका स्वश्च । अवेदरा - पु क्यार्पर परननेका एक गहना । मुचक्रिक्र−दि [ल] दक्तियाक करमेदाका, सहमतः रक्राव संबद्ध। मुचका-वि [म] विशे श्विका की गयी की स्वित भायाह 1 म्चसिक-वि॰ [श] विभनेवासाः कया द्वारा निकटस्थ। मुचहित्-वि [व] श्विहाद रखनेवाला संबुक्ता वक् । मुचहिदा-वि [ब] स्वहा, संयुक्त। मुचिय≠-पुगोती। मुधरीस-प [सं] रत्यग्रात शास्त्र योग (स्त्री)। भूक्-ध (से) इवं; वर्गरा अव्यक्तिर-दि॰ [थ] तरवीर शरनंदानाः शुद्धिमान्। प्र राज्यप्रदेश करनेशना, मधी । मुदम्मित्त-वि [स] दिमाग रगनंदालाः यमंही । भुदर्रिस-द [म] विद्या (नर्म) रेनराहा अध्यादह । सुद्धिती-स्व [ब] सुद्धिका दाम, अप्यापदा । मुद्दंत -- वि इवंतुक्त, सुरित । महा-धी भि] हर्ग, मीर । ० म मनन इ यह दि: सेकिम 1 महारासत-स्वी [#] दशम देना इत्त्वपुरा रोड शेड । – देशा−की बुसरेके पर का जमीतमें उसकी इवाजदके रिता चना जाना । म्रवाम-अ [अ] सरा नित्य। मुदामी-दि [अ] सदा रहनेराना । मुदित-वि [में] मीन्युक, बानरित । पु बामशास्त्रे वर्षित वह प्रकारका आदिगन । सरिता-की [5] इर्च आर्गा निश्चमि वह अवस्था विमर्वे दुसरेका सुध देगवर सुग रोजा दें (दी+)- वर परकाना की परमुक्त्या गीति वा ती कामनाके अकरमान

नुरी 🗊 बारेने प्रसम्ब होता है (छ।)।

1.00 पु॰ देश । – उथोति(स्) – स्ता॰ नवरंत्र । – पुष्प~ पु॰ सिरिसका पेड़ । -- स्य-पु॰ मॉड़ । -- बेप्टन-पु पगुरी १ मुर्देन्य, मुर्चेन्य-वि॰ [सं] मुर्वासे बत्तव मुर्वासे बब रिता अंग्र, शीर्परश्रामीय । --वर्ण --पु॰ देवसागरी वर्ण-माठाके मुवासे एकरित वर्ण (ला', 'लर्' दवर्ग और 'व')। मुद्रा(बंस्), सर्था(बंद्र)-प [स] मन्द्रक सिए सुराके मीतरका ताल और चंठके शेषका वह माग को मन्तक का धीर्वस्थातके ठीक भीचे पहला और जहाँसे मूर्वन्य वर्ष्योका क्रकारण होता है। मृद्योमिविक:, मूर्घामिविक-वि [संव] त्रिसके सिरपर भाभिक्य दिशा गया हो। श्रेष्टा एक्सान्य (सत्त निवस)। पु॰ राजाः धृतिकः एक वर्गसंकर चाति । मुद्यामिपेक, मूर्यामिपक-बु (संग) रायाओंक राज्या-रीइजबे समद सिरमर किया खामेवाला समिवक । मृद्धाभिसिकः, मूर्धामिसिकः – पु (सं•) नाहान पिता भीर शक्षिय मातासे करका पक वर्णलंकर जानि । मूबी सूर्वी-क्षा [स॰] सरेक्पको कता। मृस-तु [सं] चड़ा द्वारा मादि कारणा जल्पविरवास[्] बा(म) प्रभक्तारही मूल श्रम्थानको (टीका व्यावनानु मित्र); मूच वतः द्वाप-पाँव कारिका चारि गाग (सुब-मूक, पारमून); वस्तुका निचका भाग भावमदेश (वर्षतः मूक)। भरमा १० नदाबोसेने छक्षास्त्रीः ग्रुनित राशिका मुक्तः निकंशः धुरमः विकास प्रधानः - चर्मा(स्) – प्र प्रसारन महोकरण बादिका प्रवेश की मंत्र और चरी-वृत्त्रिमेश्चे खरसे किया काम हीमा । −कार-पुरु मूच प्रेथक्तो । -कारण~पु॰ सादि कारण प्रधान रंतु। ⊶कारिका−सी निही ध्वमंशकी स्कोकपद निष्ठि। मूल पत्रको कह निरोप कृति वा म्याका मही। -क्रुच्यु-पु ११ गर्गकृतम् ब्राग्नीमेने एक । -ब्रांब-🗓 मॅब्बारको मूल रचन। असल निगान (निस्त्री दीका म्पादमा 🛍 गरी ही)। 🗝 छोत् – च्छेत्म – पुरु बहते बनाइ हैना समूच बाछ । - अ - प्र नदस्का अइसे बारम दानपाला गीमा । वि मूल नयूनमें बार्या । -तरब-द भाषारभूत सिक्रांतः स्≉ परार्थ । -स्क्रिक्रोण-अ महीको कुछ विश्वय रहिल्लोमें रिवित । —हैव— भौरशासके मनर्थक एक अविश्वांत । −मूब्यु,--भन-९ व्याचर भारिमें सगाबी हुई वृंजी। -धा<u>ल</u>-भी मध्याः -पदार्थ-दु ग्रीतिक वनन्दा अवाराम मृत सरोगिक परार्थ सन्द । --पर्णी-स्पा संनक्तानी । -प्रस्प-त बेन्डा माहि पुरुष । -प्रदेश-पु पुप्तर मुका - पोती-स्पेट पोटा - ब्रह्मति-स्पे प्रपंत्री बारदरूर शांचा दुवी। लख रज समग्री साम्बारसा मनान (तो) । –कन्द्र-पु बहदसः। –वीव-पुः इंडवीयदे अंतर्गत दक शिया । अभृत्त-वि अन भाषारस्य अरका शाम देनेशाला, बुनियारी । ⇒सुन्य-उ इरामा या पुरनेगी मीहर । -- मंत्र-पु॰ भूंबी मून तरक। -रम-पु॰ मीरटा शना । -ताप-प॰ बरीकी बीने शेरनेशसार -विस-पुर बु= धन र -व्यसन-द्र प्रायाद्य -व्याधि-की॰ मुक्स रीय

म्द्रस्य-मृपी असक मर्थ । - ब्रासी(सिन्) - पु केनल वर्ने - क्षेत्र, मूक -शाक्ट रहतेगामा । -शाक्ट -शाकी(किम्)-प वह रोत विश्वमें वर्ते पदा ही वा की। -स्थान-प भारि स्थान नापन्याचीका वासस्थानः परमेशरः राव वानी। मुकतान नगर । ~स्थानी-श्वी॰ गारी । -स्रोत (स्)-प्र॰ सरमे, नदी आदिका बहम रभाम; मुक्य बारा । श्रुकक-वि [सं](समासके बंतमें) मृक्वाला। मृक्ते सर्वक (पादमूबक, भ्रांतिमूबक)। मृत मक्षत्रमें करपण । पु॰ मृती। ण्यः स्थावर विष । ~पूर्वी~सी श्रीमांत्रन बुद्ध । ~ योतिका-न्योश गृही। स्छतः(तस्)∽च (तं∘) वृक्ष क्पमें। भारिमें प्रथसतः। मुखा~सी [सं] मुक्र मध्यः स्ताबर । मुख्यकार-त [सं] मानि और शिवनके मध्य रियत एक श्नुम्बद्ध−वि॰ (सं॰) यूक्ष्मता गीतिका प्रशत मुख्य । तु० वर्षे ग्रास्ट्र रहनंबास्तः तपस्यो । मुक्किका−सी [तं•] सदा बदीः वर्गेका देर ! मुक्किम−वि∗ [सं∗] मूलसे बरपचा सुबुधा अस्तिनी - सी [सं] ओपपि, वड़ी। शुळी – जो यक पीपा विसको वह और परे शाकरो दरह राजि जाते हैं। मुखी(लिन्)−वि [सं] मृततुक्तः तु∙ दृद्धः मुक्य-वि [वं] कम्यूलनके पारवा धरीरन बोरवा की भूक्में हो । पु वस्तुके वरतेमें दिया वानेवाका वन कीमत रामः वतन पारिममिकः कपनीनिता। -रहित -हीम-4॰ विस्ता कुछ मृस्य म हो निवन्मा।-कृतिह−सी दास दइना। अवयवात् (वत्) - वि [वं] मृश्यवाना दामी क्रीमधी। सुद्धव{कन-9 [सं•] मुख्य निर्पारित या निश्चित करमेद्री क्रिया । शक्त-पुरु (का] जुदा १ **~दाम~पुरु जुदा पॅ**मानेका संद्रक था पित्रशा । श्वासी-सी [मं] सस्पृती। शृष-१ [मं] प्दाः गराच मोसाः सेता-पीरी गनाने की कुरिस्था । मृपक-९ [सं] प्राचीर । - पर्यो-मी भागुरती । -बाइम-९ पनेश। मुक्य-५ [मं] मृत्रना बुरामा। मूपा-मी॰ [मं] बुदिशा गंबाधा बुदिश्या देवनाट बृद्ध । -कर्मी-न्ता जातुदशी। -सुत्य-पु मीला योवा। मृषिक-पु॰ [नं] प्ता थोरा मिरमरा देश एक प्राचीन केमक्त । -श्य-द्रे व^{र्ष}श । -विकास-यु सूरका सीग अमहोती वात ह मृषिकांक, मृषिकांचन-पु॰ [तं॰] शरीश । मृतिका-मी [र्थ] सुरिया। हरिया। मृतिकाद मृतिकाराति-इ [40] (बटान । मृचिकार-पु [मं] नर पृथा।

अपी-भी । [मं] माना आहि समान्त्री निह्या ।

मृथी(विक्)-पु [नं) वता वृद्धा

मुद्दिर-५ [६] अयः कामुकः स्पनियारीः जैन्दः।

म्र-शिपर−ि (स्र } यान, मेन्छ।कार । मुद्र−पु[र्ग]र्म्गा जलकोम्प ग्रह्म । ⊸प्रशीं∽शी० बनर्नेग । -भूक (ज्),-भाजा (जिम्)-१ बीहा । ~मान्ड−दु ध्रीपदा सद्दु । मुद्रर-प [मे॰] मुगन्तः दशोदाः मुगताः वद मानीन षस्यः मेरवरः । – भरम्य – पु॰ मानुर् मछती । मुद्रम-पु॰ [ग॰] एक गृष, शेविष- एक गोत्रधार्मक भुति । मुक्रचन−५० (ते } करम्य । सुरुष्ट सुरुष्टक-द (शे॰) बसमून । मुद्दमा−तु [ब•] अभिन्नाय मन्तर, इच्छा । हि• विश्वता रामा दिया गया वा चावा बुगा। - अस्ट्रि-प् दे॰ स्रुप्टेर । - • शस्तीबी -पु जी महत्र सुक्र-मेरी तरनीयके क्रिय अरावेद बनावा गया ही जिलके विकट कीर्य पाररमी स मोगो गयो हो। −अस्पदा-सी० महानेह । मुरह्मा-नी मुर्द । मुद्दै-पु [म] दावा करमेवाना। बादी। व वैदारः f 133 (मुद्दत-सी [स] भएता हैश अरहात दाला अवर्षि, मीमार । ~ द्राज्ञ ~ स्त्री लगा भरता, बदुल दिल । **मुद्ती-वि [अ**] श्रीभादवाना शावशि । मुद्दालद्व≘द्र जिम्ह्य श्रामा क्रिया गया द्वा प्रतिशामी । सक्द=-वि दे सुरुष । सुद्धी "भी । ११मी हीशीयी रिश्यमहाली गाँउ । महरू-५ मि] छापनेशामा विदर् । सहरा-५ [र्ग] सदर धरमाः छापनाः छपारै। ग्रेंश्ना । सद्याहर-५० [|] टारणसभा सम्। महोकत-तु [मं] मृत्रा, मुहरमे छापना ग्रापे । सुद्रोदिन-दिश् [में] शहर दिया दुला क्ष्मा दुला । --यद्य-त मार्माक्ष्य कर कर निमास समाधिया विभी अविदारीको सहर लगी हो। करवाना । महा-सा॰ (rie) सामग्रे सुरद: मिका: नाथ सुरी हुई भेगू-के। सुंग इत्था गर्नन ज्ञािको बोर्ड कि डेच मानगू-बद्ध लिति जुराबद्दा प्रतीरक्त एएतावे हुए विक्ट्री माक्बी-राम थक भार्त ६ विद्यार नेगुलबर्ग द्वाराधी गिनिहोसा वि 'व विग्याम (त.)। ब्रह्म्यात्रके अन्ताना दरवाना सन् बारी। मीनेट इन हुब अहर था रायनहै बाम भाने हैं शहर । वर्षन का स्वारिकार यहा बुहाय भी भारधारी है। म न्ये परनते है। इद अनंदार वही प्रश्न अर्थने अने-रिष्टप्यमे बुन्द्र कार भी माजिल्ला सम्म तिवस्त्रे है । -बार-पुर शुहर यशा रिका १-हो (१-४६) [वि] वय राण्यि । -माच-तु तुराये गिक्षीय सहते देशविदेशका द्राचीन प्रशिद्दल मान्याचे नेदा दिलान । नवारीनदुः मद्यांत्र । -श्रीय-तु छातेशे सम्भागांत्र है।--रहाइ-पु रह अधिवारी विगडे वाग राज्योद गवर

रर । -शामा-न् विराधरकर्श न वद अनुता

म्पर। ∽र्तिष्-+ । इत्।। ~विशास =राष्ट्र-

Baimt-3 [4] Bate matterate

3 Esteret 1

(पानशर्र) देवेवान्य अधिकारी (दी०)। मजिकण-च्या दे सदिशा सदिका-स्ते (र्त) सुरग नाम सुरी हुई भेगूरी। भंगूरी। मुद्रित-वि॰ वि] सुदर विया दुव्या छत्रा दुव्या हुत हुमा चंद्रादिमशिका । मुधा−स॰ सिंबियर वैद्यापणा । ♦ व. सह । सुमका−पु (ы») शुरावा दुशा अल्र, प्राप्ता । ञुमव्यत्त−ि (व) वनाया हुआ। पुरश्या को सतहरी बधरा हुना हो । नकारी-मी वेच ब्रांश कार भी कहती बाद बादिवर किया पाय । मुनमुना−पु॰ मीरा बना दुना वद पदक्य । मुनदमर-वि० १० 'मुनदहिए'। अनहिमार-दि (स] घरा प्रभा अवस्थित महिता ञुशासरा –तु∙ (ब+) वान-देवान द्वान्याध तर्देदान । मुनाशा-वि॰ [ब] निम्ने पुरुषा मंगीपन विशा मध (eqps) (ञ्चलाद्यां-पु [ल] पुदारमेशका हिरोरा प्रेप्तेशका। रवी दिवील दीन केश्वर दिशी बाहबी येचा घरना ह सुमाञा−पु+ [सः] मधा, काम (शुक्ष सनास्री) शुनार, सुनारा-प दे 'बनार -'श्वत प्रते प्रश भद्ध शाह म पहरा होरे -दरेर ! ञुनारायत-न्यो॰ (अ०) ५१रार धुरंबा मंत्र बर्गुक गः। मुनाशिक-दि+ [w] बाहिन डीटा परिरा! भूमि~वि (ते] अनुस्रक्षीत । ध्र श्रीनप्रती वर्णां को कर्षा राज्यो। जिमा नुद्रा मानदी सम्बा। - बन्दा-मुनिकी देरी । ल्बुसार्-पुर अत्सर्ध मुद्रिः न्यार्नुही-स्था+ कह सरहक्षा ताहर । न्यार-प्र धनितन । भारा भन्न वस मृद्ध । भारा भारा प्राप्तिक कारवाबस और बतबनि । न्यूस न्याइप-इन् हरीनका बारमा --धारम-दु निम्मी । -शिमत-दु मेर्ना -पुंतक-पु मुनियेश (-पुत्र-पु दोशा -पुष्ट -पुर राजमा दसन वृक्ष । -पुरन-त सुनित्रमध पुर । -भन्द-पु रिप्तांका नारम । -भग्रज्ञ-पुर वरा गर बागाः अधानवदा कृषः । –शासन् + द्व निजीश कावन । च्युचि=नि वास्तेश क्षेत्रन शिचनशामा र नक्षी a tidtul t मुश्यिमाँ-मोश्रह स स्पोधी भणा । गुनीय-५ [] श्रीभोद्रा व्हरेर । मुमीब-पुरेव हुवि । मुनीम-५ हिंस स्थित्य हम्प्रयंत्रा वर्षकती । मुनीसी-क दिल ६ कि इन्द स्यानेश नाम ! मुनीस मुनीबर-५ [००] ए'न्नड नहरेवा रिप्ते मुक्ता सुरुर्वे-तु एते क्ष्मीका ध्वादा स्वीपना शुक्राच -पुरु (४)०) विजयान वापत १ शुक्रम्प्र-दि [m] a)मा सनद्या स्टेस्ट न (क्षेत्रहेर्) गुजरीय-रि (४०) पाम पराप प्राप प्रणा रे माप बा क ह और कारशी नमा मितायती ही है | Hafd-fer [m] dies ghent umminent:

सुत्राध्यश~go [बंo] काव राज्यमें बानेदा ररहत:

į

मचीड-५० (में) वहा भ्रा । मुर्गाकरण-पुर्व में विवेद्दराधे एना बोरी अपी म्म-पु प्रार-श्रानानी प्रारंगनेका शृह्य स ffart t मृसना-म ६० मुरामा बुराइर हे जाना। मृपर - पु रे 'स्पन'। म्मम-पु नदरीका भोरा देश शिसमे भाग पृथ्त है मुक्त । - चीत्र-पु मर देश भीगता । - भार-स देश मुगरापार । मु॰ -(सी)हास बजाना-बद्दा सुरी मराना अन्तर प्रसुक्ता प्रदश्चना । मृत्यर्था - गी एक पोधा विक्रशी जह बताब बाव आती स्मा-तु प्राः वहरी भर्ते प्रश्ने का भवनर का रेश के मरेद्याहरू माने अन्त द । -ई-यु मृमाका अनुवादी, बट्डी । नकामी-भ्री० एवं स्ता क्षेत्रवादे काम आगी Ŷ ı भूगी हार-पुरु (कारु) यह बन्दिन एही । श्सीक्री=मो+ (का } संगीत-विद्याः स्केष्-पुर [म] एक मूनि साध-म ऋषि दे विता । स्त-प्र[मं] रहा अंगडी जानवरा दिरमा अपारी-प्रशामी पहार दशेना बन्देशनः योद्याः दश्तरीः हाधीसी रद मानिः मुप्धिरा नश्यः मर्गाटीचे माना भवर शक्तिः भेड्याका लोगना बामदान्यमें ज्ञान तुष पुष्टक बाद भेड़ी। मैंने यद्भ) =कानम=भु क्याना शिक्तके वास्त्रीय मराद्रभावभा∹ चर्म(क्)⊸द (६९०४) शान⊲ा ष'दन मानी जाती है। -शासा-प् (दि•) दे० 'सून ष्पे । - छीना-९ (हि] गुगरानः हिस्स्यास्था। -- अग्र-प्र मृग्रुभ्या १ -- श्राम-प् भूगानधे रमाम भनदेभी भाष । - ऋधिका-भी हिस्सेश्व पंगतक प्राप्ताः - अधिम-पुश्चिक्तरी आवाः -नृपा-नृप्या-मृष्टिहा-भी वरी पृप्ते हरीने भैशनों में दीनेशानी समय शाही विश्वा सनीति ।-व्हेश -र्षशक-तुतुत्ता । - वाम-तु शिक्षके अवस्तीन भराद्रशा रनः गण्याच । −चर−षु ५३शः । ∼धर्ते -474-3 िम । −मधमा −मपर्मा−६ स्रो० रिम बा गरपाररधे-थे # ² शर्था (श्री) । ~शांकि = षु क्र तृति कर्रातेश्य । चण्याच्यो वस्तृते । च मेजा-भा ेर मार्गधीवने कुछ विशिष्ट गार्वियाँ । -बति-द्र निद्दा -बाधिका-भी वात्राहरमा -यामन्द्रः स् धीना । न्यायन्द्रः वर्शनपर वर्धाः हरे मागः - मंधिनी-क दिश्य वः वशः बाधः -ययात्रीव−पुरुभाप दिस्ती। -शहयर~क स्टा मानी । नमपू-पुरुवानी । - वाला-कत्य री ८ ११६३ । −शास−दु कार्यंश्ची सन्त । ∽शिक्र⇒दु इसा - मृत्य-इ संबद्द इर्णात - सेव्य-इ स्थ-मा क "री : - सूच-पु हिर्ज़ दे: होत : - देमा-के नहीं र न्यान्य हिना ब्लाह ब्राह्मा देन दिया मात्रक र नक्ष्मित्रका नाम अर्थना अर्थक क्ष्मिक -११ (स)-१ थिर। -शेवता-क रेगा वन दश्याप्रामी सूती-वी (मा) १/१/१८/१

मुगीक-मुदा

राग १ -रोम(न्)-पुरु क्षत्र १ -ध्य-पुरु क्षत्री स्था। १ -श्रीतन-पुर वहमा स्वरित।-समा-8° दाव का कथा सर्वक - स्पेशन-प्रश्नात भट्टा । - सोकश -कोचर्वा-दिश्योश्युत्मस्त्री । -बद्ध्यप्र-दृश्यः थात । च्यारिच्युक सुरक्षम । च्याहरूच्यु बन न्यादि अभूप । —स्याय—पुर दिश्रातः रह अपूर्व। -शाय -शायक-पुरु मृग्दीना, शिरनका सुरकार बद्धा । -तिस्(स्)-पुर -तिसा-भार रश्यक्ते मैंने बॉनवों । -हार्य-पुरु मृत्रिया मन्ना मर्पर र माम । ~सेष्ठ-पुन्नाथ । -हा(हन्)-दुर्श टिस्पी । द्यस्त्रच"−औः थि दिशेष भ्य-वद्याः। क्रमया-सौ॰ [गं॰] शिहार, महोट । नमाब-पु. ह'न-वन शिक्षारक किए बाबर । -यन-तुर विकासप रमीत १ क्यव∽द्र शि.] अधाः श्यानः म्यारः । क्राच्य∽पु॰ (वं) स्थाना ४ क्ष्यांक्र−पु॰ (र्ग } रदना। भेद्रयाद्यथमा वर्षा वर् बस प्रसिद्ध रशीवन । युगांद्रजा-भी॰ [म] दरारी । शामीतक-दु [व] धीता । मृता-१ प्र• हित्य । भी (१०) सरीरे । मातारी-रि॰ ग्री॰ सि] मगनवनी । श्याजिन-पुणि] भूषपर्रे। गुगात्रीय-९ [40] स्थान। श्यादम-५ (१) देश भागा । सुवाहमी=श्ये [मृं०] सहरेरे देशकाया वह गार्थ क्ष्मोदी (श्वाराणि−९ (नं०) हुमा; विद्रः हिंद र्पट । म्युगर-इ० (लं) बुला हेल्हा स्वान्तव स्ट्रीरश भिष्ट पाछि । श्वनाविष्(६)-५ (८) भ्यापः अगास सुगाराम-पुर (रेन) मिर ! शुरितन-वि [मं] जिलका पीक्ष किया स्थाप अले विना वर्गान । खुर्गी-सी [म] हिरसी। भिनेपा रह शा [ता । रीत् । -पशि-पुरु प्रथ्य । स्वीत्-तुक [त] विद्या व्यवता -व्यवन्तुव वाय tt# I युर्गेशाही-औ- (तः) # हुना । स्रोधमा-दि भी (८०) मानवती। स्री प्रमोद। Mildir-ap (4) tex stadits siefe-4 [ife] aner ett ज्ञान-दि लि दिलार रोता का अनेता दिए करा Quarter-5 [it] bar at ne wha a-4) MH-do [me] &(a) Mal-#] [40] m.141 अवय-वि वि वि वि विदेश मुद्र-५ (→ारिः। SER-S (ne) mint parent

 मुख्यादु और मुगंभित, टिल-(अगरको ताकत दैनेवाको ६वा (दिम्ब)। मुक्रस्मित−नि [म] गरीन, कुगाल, निर्वेत । ~का

मा#-धरता मान (देशैवाहै) । मुक्रकिसी−वी [ब•] गरीबी, निर्धनता ।

मुक्रसिद्-नि [४०] फसार करनेवाका शगहास्

सगदा सगाभेवासा । सुक्रस्सस्र−वि [ब•] वपत्तीक्ष्मार, निस्तृतः क्रोक्ट्रर

बनाम किया हुमा । व॰ श्रीक्यर, म्होरेबार । पु॰ बेंड्र ना सप्ररक्ता बळता. ब्हेंदरथ नगरके दर्श-विर्वके स्थान ।

मुकस्सस्रात-पु [व•] बेंद्रस्य मगर्के वर्ग-गिर्वेके स्थान । मुक्रस्सिर-पु॰ [ब] तफ्सीर करनेवाका, व्यास्त्राकार । सुफ्रीइ-वि [ब] फायरा करने वेनेशका कामकारी।

─संवस्त्रच-वि प्रवीवनके अनुकृक । मु॰ ~पकृताः

−होना−कामकारो, बनुकूक होना ।

सुक्त −वि॰ [का] दिमा दासका सेंतमें मिला हुआ। विनदामी । ~क्वीरु-क्वीश-वि विना मेहनत किने, बुसरको कमाई सामेशका। -का-दिना कुछ रिवे माप्त चेंतका। स्वर्थका। वेफावदा । (-का मारू

दर्शसर १) -- में -- विनदामों; ब्हर्व वस्तर । प्रफारी−नि [भ] धुरा श्रह्माम बगानेनाका। द्यारी

पार्वे बनानेशकाः फशादी ।

सुम्सी~पु [ब] फरवा हैसेवाला; इसकामी कामृतके

नतुसार दंशवा करनेवाका शरहे दाकित। सुवर्रा−वि [भ] वरी सुक्ता पाक निर्देग।

शुवकााः सुवस्ति।-वि॰ [भ] कुका बोहा-साः दारा परवा हुना। पु मात्राः रक्षम वपवेद्या संवया (शुव

क्ष्यि पाँच दश्ये)।

शुवस्सिर−पु• [ब•] प्रानेवाका, समोक्षक । शुवद्भिन-दि [म] अरपट, गील इ वर्भक (बात) । सुवादसा-पु । अ] वरका मुजाबना। शरक-वरक ।

सुबारक-वि [थ] जिसमें नरकन दी गरी हो। शरकन थ हेता सीमान्वयानी। शुभः महा । स्वी॰ युद्धयवरी । ~पाइ-सी पु वचारं, शुमकामनाः तुवास्क हो, द्वरा बरकन है बबाई। -बाबी-सी है 'सुवारक नार'। वशार्द्धे गीत । —सम्रामत-भी व्याह शार्द्धे

नवम्स्वर यक्ष दृष्ठरंकी सुवास्क्रवाणी देना । सुवारकी-स्त्री सुवारकवादी वयाते।

शुंबासराा - पु [म] इरहे न्वादा तारीक वा अराहै बरना भरतुच्यि गाइर कहमा । ~आमेश्र~वि व्यविशित

रहाकर दश हुआ। सुंचाशरत−स्ता [ब] संगोग मैजुन।

सुपाइ-दि॰ [स] जायन शरीअबके अनुकृत-विदेश। शुवाहमा-९ [अ] वहस वादः वादः निवाद करना । सुप्तरा-पु [अ] बा(भा वरेहब (व्या) ।

मुम्बर्ग-पु [स] आरंम करनेनालाः भौतिरित्वाः आरं

बिंद रहादा छात्र ।

शुष्टामा-दि [अ] पददा दुआ; चँगा दुआ क्या दुआ। ~पृथमा-वि सुमोदनमें वेंगा हुमा विवासान्त । र्मिक्य-रि [#] श्री दी मदे, दीनशमा लंगान्य ।

सुमविद्देन-पु॰ (ब॰) इंग्विहान हेनेवाला प्रशासक) सुमक्कत∽खी [अ॰] सस्त्रनत राज्य। सुमानिसत सुमानियत-न्ता॰ [ब] रोक निर्वेष, मनाही।

सुमुक्षा~को॰ [र्स•] मीक्षको कामना ।

सुसुद्धा-वि० [चै०] मोक्का व्यविकारी । पु सनवासी । मुमुचान, मुमूबान--- पु [सं] बादम ! वि॰ विस्ती

सकि ही गरी हो। मुभूपाँ-सी [सं•] मरनेकी १०छा।

समृतु-वि [र्व] को मर रवा दी शासक मरणा मरणका श्चमुद्धाः

स्यरसर-वि॰ [अ] आसामीसे मिकनेवाकाः सपस्याः मस्तृत् ।

सुर्रवाः सुर्रवा - पु मृते गेह्रँ भीर गुपका कट्रमू । सर-प [र्च] एक दैरव भी विष्णुके द्वार्थी मारा गया। देटम ।—ज्ञ−पु पतावब स्त्या --०फस-पु स्ट इकका देश। ~जिल् ~इरु-रियु-यु+ सुराहि कृष्ण।

-मृत-पु॰ सुर रेशबड़ा बेटा बरसासुर ।-हा(दुन्) -हारी(रिन्)-पु॰ विष्णु। इत्रा ।

सरईी-ली दे 'मूली।

मुरक-सी मुरकमेकी किया वा भाव !

शुरकता-म फि॰ गुहता मोच यामाः चौडना व हिम-रुनाः नष्ट (रेमा ।

मुरकाना-स॰ कि भुरक्तेका कारम होना। भीतनाः फेरनाः मह दरना ।

मुरकी-को कानमें पर्यनेत्री होटी-सी वानी सानकी की। **१ 'मुक्त'।**

मुरलाई•-सौ मूर्पनाः।

सुरवा~ड़॰ एक पांचत् कड़ी बिसग्ने गर्के सिरपर कम्मी होती है मुरगीका नरः मुर्ग । मुक -वमामा-विमीकी जकरूँ बैठाकर और पुटरीके बाबसे दोनी बाब निक्रमता-कर कीन पढ़बाना (वंत्रणलंडका एक प्रकार) ।

मुरगाबी न्या दे सुयांशा ।

अरवी-नी भुरवेरी मादा पुरदुरी ! -बासा-म सर गियाँ वेबनेवाला । वि सुरगीका बना। सुर -का-मुरगिका जना (गारधे)। -का गू-निकामी भी डा --

विरामा-मुरगीको भीका विरामा ।

मुरचंग-पु है। मुह्यंग'। मुरचा~पु रे 'मारचा'।

मुरस्वा - अ कि ग्रिश श्वा । मुराजन- मोर्यनका बना थेवर ।

मुखा-सी दे॰ भृष्कां । -चंतर-रि॰ स्वितः।

मुरणनाग-भ कि मुन्या होना। मुरिक्त-विदेश्हा

सरसमा-म कि मुग्रमाना।

मुरझाना-म दि कृत वधीबा न्तने त्राना कुरहसानाः थेहरेने शुष्तवा वशनी का वश्र होना ।

मुरत्तिकय-तु [ल] दर्गतकार करमेराचा। हिमी क्रमेंदा बनाः अस्तरीः ।

मुर्तित्र-१ [अ+] स्मनामनं किरा हुमा, मुस्त्रमान वो

स्डीक-पु॰ (तं॰) रिवा दिरमा यक मध्यो । स्थाद-पु॰ (तं) कमकराक कमत्नी यह सस्। -स्य-पु॰ कमकराकका तेतु ।

सृजासिका –सौ॰ [सं॰] कमकतारु । सृष्यस्मिती –सौ [सं॰] कमकका योषाः कमकिसोः कमक

सम्ह इमसेंसे मरा हुना स्वान । समाधी-सी [सं०] इसस्तास । सनासी(सिन्)-पु [सं०] समस ।

सुष्मय-वि॰ [मंग] मिद्दौका बना हुमा।

भूष्मृर्ति—सी॰ (सं॰) मिद्दीश्री मृर्ति ।

स्त-वि [रं] मराहमा मुद्दी सूत्रवदः माराह्नवा कुरुता (बाहु)।पु॰ मरमा भीख माँगना। **−कस्प**--दि सृतप्राय सरादुभासाः −गृह्−पु कत्र। ~वेख~ पु• भूरदेने कपर बाधा वालेवाला कपवा । ~कवि ~ पु॰ विक्रम बृह्य : - सीधन - पु॰ ग्रुरदेशो जिलामा । -कार-वि पुरुषा। -निर्यातक-पुप्तरीकी इमञ्चान प्रदेशानेका पेशा करनेवाना । - मतुँका-सी॰ बहुकी जिल्हा परिमर जुका हो शैंह। - मच -मक्क-पुरुगास । -मानुक-विश्व भिक्को माँ भर पुद्धी हो। −परसा−माँ॰ वह न्यीवा गांव निस्की मंतान बीवित न रहती हो। -संजीवन-वि सुर्देकी विकानेशका । पु॰ सर्वेदी जिकाना । -संजीवमी-मि स्त्री मुद्देश्वी क्रिकानेवाली (ओपनि)। न्त्री मुद्देश्वी विकामेको विमा संघ। - सत-प्र रमस्वित । - सतक-पु गरा वया जनना। -स्लाम-पु किमी व्यक्तिके मरमेपर किया बानेवाला रनात । -द्वार-प्र बुदें दोने

का काम करनेवाला । सुनक-दु [मं] सुर्रो स्रवा मरवासीय । सुनकोतक-दु [सं] गीरव सिवार ।

स्वास्क-९ (ते॰) भावको ।

स्ताशीच-द्र [संग] स्युक्त न्यकः। स्ति-भौ [संग] स्यु भीतः। न्यां-नौ शबक्री

गलमञ्ज रेता।

प्रशुद्धक करा। सुत्तिरितन हि [मंत] जो मरकर किर जो बढा हो। सुत्त्र्) नजो [मं] मिट्टा। नकर न्यु कुक्तर। नक्ष्य न्यु निर्देशक ररवत। न्याकक न्यु करवर। गोरोपेक्स। नजक न्यु बुग्दार। न्यास न्यु मिट्टा यु मिट्टा बरत। न्यिक न्यु मिट्टा बेटा लोगा। सुत्तिका नगे [मं]। नक्ष्यल न्यु जोता।

सृत्युंजय-वि [र्स] सीतकी श्रीतनेवाला । छ शिका शिक्सा एक भ्रतानकृतुनिवासक्ष मंत्र ।

मृत्युन्तरी [4] प्रान्तियोग सत्ता क्षेत्र । यु वस्ता ग्वारः रहीविति यकः । न्यून्ति सत्त्वाकः । यु विक्रीयान् वितित्व कर्षाः विविद्य विक्रीयः विद्यार्थः विविद्य विक्रीयः विद्यार्थः विविद्यार्थः । न्यून्तः विक्रारः । न्यूनः न्यूनः विक्रारः । न्यूनः न्यूनः न्यूनः विक्रारः । न्यूनः न्यूनः न्यूनः न्यूनः न्यूनः । न्यूनः न्यूनः न्यूनः । न्यूनः —स्रोक-पु॰ यमलीकः मार्थलीकः म्होतः । —वंश्वन— पु॰ शिक्ष काला कीमा । —शास्त्रा—स्रो॰ वह प्रध्या । विस्तर रोगोदी पुल्ह हो मरासीकः देशे रोगोदी प्रस्य । को योन्यार दिनका गोवमाम ही या निक्की युद्ध निश्चित्र । हो । —स्रित-को॰ केकनेकी मारा । मु॰ —हास्त्रापर पहा होगा—स्रोणादिक रोगोदी पीडित या होन्यार दिन का मेहमान होगा। मुक्ता स्रम्यला—स्रो॰ (स॰) अच्छी, निक्की मिट्टी; मिट्टी —"गुरुवा-स्रो० राज्ये । सुन्तराही । ।

पुरस्त (त वर्ष वर्षात् — पुन पुरस्त — पु [मं] पृष्ठ । पुष्पाक — सर्व , नाइक । पुरुष्कर — पुरु [संर] दारीत वदी ।

खर्ग-पु॰ सि॰] बीलकी तरहका यह वाचा, मुरद । -फस-पु॰ कटहरू। -फसिनी-जी॰ क्रोशातको।

च्चादकच्छ सूर्यग वजानेवाका । सूर्वगीरूकी सिं•ी सोर्व।

भूदेगालका (सण्डेपारदा स्टर्परी(सिन्)--दे पु॰ (सं०) ध्रदंग नवासेवाका । स्टबा~न्से [मं] मिट्टो । --कर-पु वज्र ।

स्वित-वि [मंग्] कुषका मसका प्राक्तिता हुआ। स्वित्री-ची [मं] मन्द्री मुकाबम मिट्टी।

सुद्धं-ि [46] कीवक प्रकायमा दवातुक को तीवा मंदी सुद्धं (चरा बवना) मंत्रं (गिरी)। —सोह-ित मंदी स्वयं (चरा बवना) मंत्रं (गिरी)। —सोह-ित मंदी स्वयं (चरा बवना) मंत्रं (गिरामी) देश मा त्या कि स्वयं मा निवास मा निवा

श्रानावम की। प्र बीमस स्वर्ध बहुन इल्के हाथीं।

्ष्रमाः स्तुताच्याः [मं]नरमी कीमनताः संद सपुर कामाः। स्तुत्रम-दि [मं]कोमन नृदुः वृ तनः।

सुनुरसम्ब-पु [म] भीभोत्तका मीन एव । सुद्धी-मी [मेरु] भेगूर सुरिष्ठ हुन्हा । (३० स्त

कीमनांगी । सूत्रीका-की॰ सिं॰] अंगूर क्रांत्र हाला । सर्वोक्तसम्बद्ध की वेसको सम्बद्ध ।

गद्रीकासम्-६ [सं] श्रेम्रा छरावः। गुज्ञ-६ [रं] बुन्ध्यम्। स्वास्त्र-पु० दे 'गुग्रकः। स्वास्त्र-पु० दे 'गुग्रकः।

हाड, मिला। -नान-पु॰ करात। -आर्गि(रिन्)
ति हार शंकीताथा। -बाय-पुः स्टाः मिला शंका
वावरणी। -बायि(रिन्)-ति हादा मिलामारी।
स्वाच्यापी(रिन्)-पु॰ ति॰) एक स्टारना स्टारत।
स्वाच्यापी(रिन्)-पु॰ ति॰) एक स्टारना स्टारत।
स्वाच्यापीरिन्। विश्वी-स्वाहारा वुः करोवर बन्दा।

स्वालक-१ (में) भागवा देश ।

द्मिपर ही बाव। मुरसदिन-दु [बन] वह निसंदे पास कोई योज रिहन षा रंपक्र रसी जाय रिवनशार ।

मुरत्तद−वि• [स•] तन्तीर थि। दुमा वरशुमें|द्री यवा-रबात रमद्रर रश्चित प्रस्तुत । मुरत्तिष-पु॰ [श•] तर्ती व देनेवाना । मुरदा-रि (फा॰) मरा हुआ जूना वृतवा देशान अदि दुर्गना पुत्रा, मुरहावा हुमा। भारा हुना (बालु) दुरता ! पु मृतद ग्रंथ, साग्र । -द्रोद-वि दे• मुरदाहबार'। −दृत्रार~वि मुरदा ग्रानेशला। −दिक~वि जिलग्री सरीवत मरी दुरे हो, निरत्माह । --दिकी-न्नी मुखा-रिष्ठ दोमा। −यात्रफ्र−तु० स्वंता −संबन-पु दे० मुरदार्थन । - स्री - पु सीमे और सेंदुरका मिलन भी दबाढे काम भाता है। -समन-पु रे 'मुरदा-संग । मु॰ -इट्या-बनावा ठठनाः वरना (शाय-प्रमुख्य मुरेहा वहे) । - उद्यामा-मुरुदको दाइ द। दश्रम करनेके लिए से जाना। ≔कर देना−मार दालगा। मधनरा दर रेसाः (दिमीदा)-विकने-मर बाव जनावा वढ (शाव) । -(वे)का बाल-नावारित माल, मृत अनदा होड़ा दुवा पन ! -बी कम बा गार पट-चाममा-इमरेकी पाताको एक्सकी बच्छा सह सम्प्राताः प्रदे वतुर होता । −की मीं€ भोना-नेपक्र दीकर श्रीता शुरांटे भरना। -मे शुन्ने वॉवडर मोना-ऐसे मीर होना थो बगाने से मो करा म शुक्र । मुरदार-रि (चा) मरा इका मुरदा। नेवाना अपनिष्ठ, नापार- मादारा (नि०) हे हैं जाश अपनी भीत यस हुआ कामनर । स्मोर-पि है मुखारनदार । ~एयार~व मरे द्वप जानवरका मांस मानेशना ।

बानदरका मांस धाना । मुरधर्= च भर्म्यत मारवाह ।

शुरमा - म कि दे जुरना । मुरस्था−पु (श्र+) कमोंका पाक भी करों कशमदर और याग्रमीने राज्यर तैशार किया जाना प्रमुख्याय क्षत्र तिमके भारी मुख बरावर और काग समझीग ही। रेडनेटा एड भागन । वि. वर्ग नगोहण । -प्रारोश-

–माश-पु॰ इराम नात । सु −न्ताना–मरे द्वर

द्र हरभ देवनेशका ह

मुराबी-वृ [ब] बानन करवेरानाः रहन: शर करान, नदादस ।

मुरमुरा∽द क्षत्रे मध्येये द्वरी। प्रते द्वर बारक कार्र भारि । शुरू --(री) का श्रेका-भेरा-गश स्पर्धा ह मरमराना-॥ कि सुरी वा देखे काएन दिशी चीतवा हर याना रिनो बढीर शतुबै हरनेने इन बहाएश

श्चन्द दीमा ह मररिया॰~मी मुरी, देहन। मुरब्द-पु [५०] इद शापीन वाय ह मुखान्मी [त] बर्दश क्या मुख्ये ।

मुर्गेदरा-भी () हिर्मी। मार्गक्षा - मा माना

बार्य दरमैवाने, कुष्प १ - झमोद्दर-पु॰ कृष्य १ मुख्यां-पु॰ वेरका गृह।

मुरवी॰-सी भनुषद्वी होती।

मुरशिद्-पु [अ०] धीपी शह (सम्मार्च) रिमारेट्डा शुरु, बीर । -कामिल-पुरु समा गुरू ! - क्राइर-पुर ग्रहमारे पीएक रेग र

मुश्सिस~पु (व०) भेदनेशमा १४०था ।

सुरम्पा−दि॰ [ल] बदा दुआ, रातवरिष, अहाह ह उ वह सच या वय विश्वमें इर इसरा ग्रम्ट दाहे दन्त का इमहत्रन और कादिया हो ! -कार-५० स्त्रांने मगीमा बाराज बहुनेशाना बहिया। -कारी-श व्यक्तिका कामा -निमार-पुर वर्त ग्रेस हरूर व्यक्रनेबाखाः।

मुरहाँ।-९ मिर्।

मुदद्दा-वि॰ सूम सदावर्षे वतना द्वा (शहको। स्पार । पुरु है पुरुषे।

सुरा−स्त (तं•) दक्ष तंबद्दम्बः संह्युप्त मीर्दश्र मण्य । ग्राचा०∼पु॰ तताठी−'शम वर कार्यान'मा स्थि सरावा शाव ~दशैर ।

<u>सुरहरू</u>−मी॰ [थ] सहकर अमीटा कमना मनीरवा सु॰ -पाना ~वर आया-पानश पूरी देशे। वर्ते रथ किंद दोवा। -(वॉं)के दिश-पुरश्रामा।

गुराविक-दि० (ल) समानार्थक, दममान्धे ! मुरायी-वि॰ मुदार रक्षत्रेरानाः जिल्ला केरे वारण हो। गुरामा - न दिः पुत्रतासा परामा दे भीता ।

सुराज्य-पुरु [बर] केंनी बदलहमें पुत्रनिवसकी मर्जन्य महील ।

मुराषडां - पु॰ पवशे सुरहा। मुखर-६ व्यवस्था पर विस्ता सरम्भी पनमे हैं। ब

र 'मुल्हि'। मुरारि ~3° [र्थ•] (वृर दैल्पड्री मार्टनेर³) इ.चा रिणु।

मुरामार-पु सादी इत्हेज-'सने हरावा विराध्या बी सुरुत्तव दुवि बार'-विश् रे हिराता'। सुरीय-१ (बर) थया, दिग्या बसुगतन बरमेरामा ।

मरीदी-भीः (थ) (उन्तर गानिर्धः मुद्द-पु दे तृर्'। -मुत्र-दु दशनी(।

मुदबा॰-दु॰ वैरहा दूरा। मुख्या - (६० ६ वृत् ।

मुदलाई०-शी० मुसेना।

मुद्राया - अ दि दे बुरात्मा । मुरेरा-बु॰ शहा ।

मुरेर-को है 'जरेव' । मुरेरमार-त कि रेर बरोरका र

ufti-got Cettid inftr ! मुरीबळ-दि [ल] क्ली मवर्षका

मुरिका-दि सुरेपका मुरीवन-की [us] बर्शनामा प्रशासका प्रमान

री कवा बूगरे दर बिदाना सुक्य का र

श्रीश्रमी-रि मुर्रशन्तमः मक्षत्र ।

Birg-er in Jach wat : - di-3 Reg | Rig mis mai eine beiter ben einen

स्पोध-इ [+] विश्वा स्थल । विश्व विभागात्री । स्टूड-वि [संश] शोधित, ताल किया दुला विभाविता सुना दुला । दुलियें ।

मृष्टि-भी [मं] धौरना निवर्धः छुना ।

मि-म अविद्यास बारकका थिए। स्थी॰ वक्तीयी वीकी।
-मि-सी॰ वक्तीयी वीकी।

र्मिशनी—को ४ - संकती । मेर्ड—चु न्यो॰ शेपको दपवंती सिवार्य मारिके निव बनके - क^{र्म}ित्र बनायर दुजा मिद्रीका येखा कॉना कशिका ।

-वंदी-मी दर्दरी मेद्द बनाना। मुद्दाद-पुरु दे संदर्ध। मोददी-मी दे संदर्ध।

सदका न्या ६ सदना । स्थिपहा, संद्री-स्था (सं) तेर्रो । सैंबर-पु (सं०) सरदव सवामर ।

संबरी-स्य स्वरूप्ताः वेशस्या वर । संबरी-स्य सर्वे तसी।

न्य=३ पा गणा महर्दा=को दे धरेरो ।

मण-पु॰ (म॰) वदरी (मर मादा दानी)।

मेक्प-दुर [रोन] भगरकाक वर्षतः -कन्या -सुता-स्रो | मुश्या मरी रू

स्थलाहि सल्याहि−तु [सं] स्थल पर्वतः −का− स्थल तर्वेदा तदीः सम्बन्द दे भित्रः।

सम्बन्ध द "स्व । मेर्ड्ड-मो॰ (दा) देश भेड़ी धीम। सु॰ -हॉब्स्टा-डाव्य रहे धीमें देदि देनेदी शता देशा, बराग रवा सेता । -सारशा-धीम होसमा वायक दोना स्वादर

कारनाः। सम्बद्धा-तुः हारे सारिक होदशः गाँवनेका गाँवकी सहीका केराः।

परार झतार−क्ष्मी देक नेताला हे पूर्वी देक सेंद्रण (तप्रभाष्टी) ह

रामम्म धा। [मंन] करमगी किल्यो। भने बारियो वर भनो बरियुवा गीन संशोगने श्रीन मेधना धी करनवह सम्मद्री महामारियो पराण करनी बनने है। तसवाह परिचा करवार महामारियो पराण करनी करने है। तसवाह स्वान, दीन निर्माण परिचा सोधा गीन स्वान

पिट्रोका देखाः सम्बद्धी—भी पार्रणेणः भारिमे व्यवस्थानक बहुमानाः = भरपणे।

सराजी((मज्)-5 [लेग] नेंगकावारी क्रसवारी: दिव । संप्री-रि [का] निवधे नेयारे के किया का बेर -काया-5 वह दस्सा निवसे के को देव रो निवस्क भी रुपे केंग्र में का महिला कहा है!

सार्शिय-पु र करवाना ताथ र स्वयं से सेवर्गन है सेवर्गा-का भारत्य हो आर्थि में हिंह अप-पुरु [हो] बराबा वाग्नेराका कावा व्याप्त हा सुबद हार्येटेने बडा बीचा ह -बाल पु वाल्या ह

नार्वतन्तु -गर्वता-के कार्याः -वस्त द्वाराज्यः -गर्वतन्तु -गर्वता-के कार्याः करवाः -किस्त-पुरु कर्यः । -क्याः-चु वेत्रपूर् वस् पा । -प्रीयपन्तुरु क्यान्तः -क्योर्ड(वर्)-भावः दिवामी ! -विवर-पु बाररीका गुरवशा ! -शीव-पु+ fant) - gu-g nentfe aufermer ce un-काम्य जिल्ली एक निर्दा नवने अपनी देशकोई सन् जरना नीसा मेवनके लिए मेरकी एउ बनावा है। **-**द्वार ~च आहारा !-नाच-प्र॰ मेरका नरेना समा शास का नेता प्रतिन्त जो सक्तमपढ़े हाथी याता दका। -·जित्-पु सहत्रम । - वश-पु॰ मारदेन मनुत्रक रचित नेगमादा प्रसिद्ध बदाहाच्य । -बादामुखासह-प्र मोर। -नामा(सन)-५ राज्य। -विश्वीप-पुरु बारलीका धर्ममा ! -पुरपू-पु सना क्षेत्रम विका वा प्रधाने रक्ते भार योगीयेने एक्टर माम। —सीदक-पु॰ नादास । ←सारार--प॰ एक विष स्तर । −शासा−शो॰ नाइरोदी र्जा । −शासौ(बिन्)+रि॰ वा क्रीते पिरा एका दशा। - मर्ति - श्री सिक्यो। -मदुर-वि बारबीन मिल वा निकार -बीनि-पुर बुद्धाः पूर्वा । नश्य-पुर सेपवान । नोमधन केन्द्रा-म्हा० घेपरिक । -बर्ज-६ शहरूकेने ।स वाला । --वार्या-की० मीनदा देखा । --वच-द प्रमयकातीय (बारमीश्रर वस भेर, हंदन र अक्की

समयकाणीय (सारणीत एक भेर, तीरण ! —सर्पा (म)—द भाडाश । न्यद्वि—दु रिक्षणे : न्यार्थ-स्वी विश्वाचा बारणीत ममुद्दा —बार्च-दुर्गराः —बार्य(म)—दु साराश : न्यार्थ(म)—दु स्वरद्दा —सर्व-दु स्वीरिका स्वृत्त । न्युक्त (१)—देश्योराः स्वर्णा —स्वित्राह्म –दु दिस्स्य कृत्र। स्वर्णा —द्वित्राह्म –दु स्वरुष्टामा

समागन्त्र । । । वर्षादा अता मार्ग्यान्त्रः समागमन्त्र (ते । वर्षामान्त्रः वर्षाः आत्रः । समाग्यान्त्र (ते । वर्षाः मे स्टब्स् क्राः । समार्थेद्यन्त्र (ते) वर्षाः । स्टब्स् । । समार्थेद्रान्त्रीः (ति) वर्षाः ।

मधार्मश्री(शिन्)-पु (मं] मीर। मधार्मश्री(शिन्)-पु (मं] मीर। मेधारि-पु (मं] बखु।

मेपावरिक-को वस्त्राः। मंपाकिर-को (+) जेना। मेपाव्य-व (+) बन्दा वस्ताः। मंच्य-वि (+) दस्य कृत्यत्त्रोः व वस्ताः के

कारा भेषा सुरमा। कार्पिटवा । सम्बद्धाना स्था । तो प्रेयुरमा स्वयो । सम्बद्धार्यक्रमा । स्वयंगा ।

वैद्वानको (चा] नवती शमारामर आर्ग हो पति हैते भोडी मेरेसामा शामे (स्थल कर्नाहे कारणहेड मेरे बहारों अभी जाती है देना है नवीतान्तु हैते रिशा नेक क्षाह - नवाबन्तु आर्म के बरोनान्त्र मेरानका विद्यान्त्र देवेत्याह स्वामीनकोर स्टेन्टर

लन्तरः विद्यानस्ति। ग्रेक्स-पूर्वि] यस परेती कदमर स्थितः वरं करणः अवृत्र कर् वृतिरादेद अर्थकः सीन वाप्तर्देशः स्टेबास

्युक सद्ध पीती प्रशास । शिक्षाक कु कि हुन ।

ब्रेड्डिटी यो (य) पना बर्ड्डिटी व स्था प्र अन्य ब्यूनामात्र प्रमुख्यामा ह

1001 क्शारण दूरमा (संगीत) । मुर्ग-पु [स] विदिवा मुरगा! -केश-पु० एक पीवा बताबारी। -बाज्र-पुरु मुख्ये कहानेवाका। -बाही-औ• भुरते इहाना । →सुसस्कम-पु॰ सम्बा पकाशा हुआ शुरवा। -(शें) खमन-पु बनपद्यीः पुक्तुका – क्रर~पुध्रका मुगेकी शहका प्याका । मुगांधी-सी [का] एक जलपदी जो मुरगीके बरावर दीता है चडडुमपुर । मुतंबिय-पु॰ [ल॰] दे॰ 'मुरतदिन' । सुर्वनी-स्रो कि] शृत्युके विद्व जो नेदरेश मकट हों। भारी भव था गहरी विदासी छाथा (-छामा) । मुद्रां-नि॰ पु॰ [या] दे॰ 'मुरदा'। सुनुर-तु [र्¦•] भूगोको मागः कंदर्यः चर्वेका बीहर । मुर्री-पु॰ मरीइफ्डी: मरीइ । सी मसीकी यक चावि की कविक दुवार होती है। मुर्री-न्दी पेंडमा पानी आदिके दी सिर्देकी कीएमके किए बढ देता: बोतीको क्षेत्रेकर कमरेवर काका हुमा बका क्यहेकी अनुजी मादिकी बढकर बनावी हुई बची। ~कार-वि गाँडवारः पॅठनवार । मुर्वी-स्त्री • [सं] बसुवृक्ष्मे कोरी । मुधिब-द दे सुरक्ति'। सुधक्र-पु देश 'सुब्ह'। मुलक्द-को॰ बैनियामा वह हिस्सा नी स्तनपर पहना है। मुख्यना १ - न कि भेर मेर वेंसना मुख्याना। मुक्तकिश्च≁−वि वो मुसकरारवाडी। सरुहस, सुक्कतिस−वि [N] जिल्लार कोई रक्जाम, **दोर क्यां**या गवा हो। प्रश्नवह व्यक्ति जिल्लार किली जुमैदा रक्ष्याम समावा मानः अभिजुक्तः। मुख्तवी-विश् [अश] देश 'सुस्तवी' । सुसन्ताम-पु (परिचमी) पंत्रापका यक मसिक नगर । मुस्कामी-वि धुनवानका । पु भुनवानका रहनेवाला । न्दो १६ रागिनो । --सिद्दी-न्नो एक वरहको निक्रमी मिट्टी को भिर मरूने, रैंगाईमें अलगर देने आदिके काम भागो है। सुसना≉−पु दे 'सुताना । **शुक्रमची-पु॰ मुक**म्मा करमेवाका । सुम्ममा−ि (स) भमकावा दुनाः धौरी वासीनेका पानी पराया दुआ। पु श्रोदी या नीनेशा पानी श्री बूनही पातुषर पहाना बाबा निन्दा कर्मा मुलम्मेका कामा िरताचा दीमदान। न्यर नसाम्न-इ शुक्रमा करने सुमद्द≽−रि॰ [ल] रुपा जुदा दुआ वशुरक्त । मुलइती-सी॰ है 'मुन्दी'। मुमदा - वि० हे 'मुरहा । मुलदिक्र-रि॰ (ल॰) देधेन आदर मिल्मेबालाः मिलाया जानेवानाः चामितः १ मुलदिय-वि [अ] धर्षे (रामाय)मे विमुख ही आने

दान्त्रेशस्य ।

मुक्ररें॰~पु॰ मुहा । मुखाकात−सी॰ [न॰] एक दूसरेस मिकना, मेंटा मिस्ना-जुलना हेल ग्रेक; बान-पहचानः साहब सकामत 🖰 का बिश-फैबिबों, वहे अविकारियों जाहिसे होगोंकै मिलनेके भिप निवस दिस । भुस्यकारी-पु मिस्नेगस्य मिनः परिवितः। मुकाज्ञमत−सी॰ वि•] नीक्री सेवा । −पशा−वि गौष्ट्ररीसे जीविका करनेवाणा । शुक्ताहिस−पु• [म] सदा एक साथ रहनेवाला अञ्चरः नीकर, शेनकः कर्मपारा । -(मे)खास-प्र मुखायम-वि [अ•] भरम क्षेत्रल, सुकुमार; भनुकृत । ~चारा~तु ऐसा मीत्रम था सहजर्ने साधा-पराशा चा सके, नरम चारा (धिचा) इक्तवा द०); क्षोमक धरीरनाका । अुकायमत−की॰ मुनायमपन, भरमी क्रीमकता। सुकावभिषतः सुखावसी−म्पे• सुकावमतः। श्रुसम्बद्धा-पु [बन] देशना, निरसनाः क्रिया सुरी-वत । मुखक−५ है 'मुस्स । मुखेरी-जी गुंबा कताकी बह की दबाके द्वाम आती है, बहिमपु बेडीमपु । मुक्क-पु [थ] Рधा राज्या प्रदेश। ∽गीरी-सी• इसरे देखाँको बोतना भीर बनवर शासन दरमा, राज्य विस्तार । ~बारी −सी श्रासन । –रामी −सी+ राज्य प्रश्य । – (के) सुद्रा−षु दुनिया बमद्। संस्की-वि॰ [म] <u>स</u>ल्बका देती। सासूत-प्रवंश संदेशी मन्तिका −काड−पुगवर्गर पैनरका अस्त्रज्ञी~पु॰ [श॰] दरितमा करलेवाला आयाँ। मुक्तवी−वि॰ [स] देर करमेशाना आगढे निय रास्त्री बाला। रीका वा भागके किय टाका दुवा, रममिन । पु नम्बद्धे एड गाम पाक । मुख्य-त दृष्टा मुस्ता। मुस्त्वा~प यह रही मी और दक्षिमोंकी ईसा कि सिप पाँव वीचवर आकर्ने दाल दिया नाहा है लुट्टाः [wo] मीकवीः मसविद्धे रहते वा ममात्र पहानेवामाः ममतिह या सद्दर्शमें वद्यों के प्रानेवन्ता । मुस्कामा-तु भुवनाः समित्रको रीटिवाँ शानवानाः कट्टर मुसक्याम (मालामाका विद्वतानी स्प)। मुस्मामी~भी मुक्ताओ पानी। मुक्त-पु [४०] वह निमे बीर्र बाम सीश गया शा रम्पराणाः कार्वनिधेरणम् निष्ठश्च ऋरिर्मा । सुषक्किल-पु॰ (ज॰) बढील करनेवाला। बाससायनेवाका । [म्पी० 'सुव[इरक्षा ।] मुर्वात्रच−५ [व]दे 'बृब्धावन । मुपेशा - अ कि यहता। मुबदिनद्−द्व [स॰] पैरा दरवेशना जनद। भुवस्तिक - पुरु [अ] बोराइड, संरचनवर्ग । मुल्डिम-इ [ल] इल्हाम करनेवाला (१०वे कोई वाल मुषस्तिका-वि [स] स्पृतीन व वरिन्त ।

मुचरिमर-६ [व] कमर बर्नेशमा बार्गर ।

मेरमरिम्म-प॰ [बं] है 'मिरिमरेजम'।

मेरफ - प मिरावे, नाम धरनेवाणा ।

मेरमराष्ट्रकर-४० [ज] मिरिमरेजम दूरनैशका ।

मेर-प् कृतियों, सबदरीका मुख्यित, समादार ।

मेरनहार>--प्र मिटाने, धम्बवा करनेवाका । मेदना - स कि दे 'मिटाना"। सेटा*~प भाँडा। मेरिया - सा वक, दन नावि स्थानेका कोटेकी सहका, पर दलते कम्र वहा मिडीका पाच । मेठ-प॰ दे॰ भेट : [धं॰] हाशीनामा मेदा ! मेद-प , सी॰ है 'मेंद । मेदर्ग-प वक्त, मंदल; देता; बुंदर्श, केंटी। शेडफ-५० (४०) फ्रइ, वसना । मेरिक्स-वि॰ [बं॰] विकित्ताशास-संबंधी। मेरिका-की॰ मदी। मेरिसिम-सी [#॰] दिकिसारासः दवा । मेडक-पुषक छोता चेता को वक-स्वक दीनोंमें रह सकता है। संबद्ध । मेरकी-सी मादा मेरक मंद्रकी। सुरु -की खुकाम होता-होरे अन्त्रमीमें वहाँको बरावरी करनेका शीसका होना । मेदा-प भेरुका गर, मेदा -सिंगी-स्ती पढ कता विसन्ध्ये बर दवाके काम भारत है। मेबी-जी होन हिबोबाकी बोटी। सेड्-प [सं] मेहा; किंग, शिवन। -श्रीनी-की मेरासिनी । मैथि-९ [सं] अनाम दोनेक समय देशोदी पहराया बामेबाला अभारतः। मेथिका~सी [संश] मेथी। सेची-तो यद पत्रधाक जिल्ले वाने मसाठे और €वा-के भी काम जाते हैं। मेथीरी-स्थे मेथीका साग मिळाकर बनायी हुई वरी। महा-पिरत हा समास्यव रूप ! -प्रच्छ-प वृंश ! - सारा-सी अप्रश्रंके अंतर्गत यह भीवनि मेदा। मेद- • नरा दे 'मेरा । प्र• [लंग] दे मेर(स)'। ~क~त एक प्रदाहत ग्रामुल । मेर(स)-५ [नं] मांसरे वत्यवयक बाह्य वर्ताः मधी को मीटार बहुत कर जानेका रीग । -(स)इस-इ मारा भवपाद-तु मेशहर मदस्यी(पियू)-4 [मं] मोटा, विसद्धे बदनमें अधिक वरी हो । मेदा~सी [सं•] भद्रवर्गके अंतर्गन एक ओवृति । प् [भ] भागाद्यय पेट । मेरिमी-की [मंग] पृथ्यि वर्ती। मेरा। वस शब्द शेव शे मंदुर−ि [सं•] श्रीरश्य निक्रमाः बीटा । मदी- मेरम् का समामना क्या -- -- प्र-पु क्यो। "वृद्धि-भी परीदा र" बाजा अधिक मीता ही जाता। streft ! मेथ-पु॰ [र] वहादशियह नग्नु जिल्ला वहने दकि

को साव । -ज-पु॰ विष्यु । मेथा-कौ॰ [सं॰] पारणाभक्तिः दुविः सरस्वतीका एक रूपः वस शक्ति (ने) ! -कर-वि स्पृति, सुक्रि वहामे-नाका। -श्रित्-प कारकावन। -हान-प काकि श्रांस । मेघा(चस्)-पु॰ (सं॰) स्वाबंत्रव मतुका एक प्रत्र । मंचातिषि-प॰ [र्ग] ममस्मृतिके एक प्रसिद्ध टीकामार । मेघाचाम्(बर्व)-वि (सं] मंबाबी । सेवाबिमी-विकी सि निभावासी।को प्रशानी। मेबाबी(बिम)-वि [सं] मेबायफ प्रविमात । पहिला पु वीवाः व्यवस कारिके प्रवद्य शास । मेधि - व सि कि 'मेवि'। ग्रेजिए-दि॰ सिंशी मेचावी । मेथिह्न-वि० सिं] शिट्टान मेनारी। शेष्य∽नि [सं] रस्ति तकि वहानेनाका मंत्राजनका परिता यह संबंधी: बहके बोम्ब । पर बी: सहिर: बहर। ह मेच्या-ती॰ (तं॰) केतक, शंखुष्यी, नाबी, मंद्रकी आदि विश्वयंक वरिया । ग्रेजका-मी॰ सि॰ों एक अप्सरा जिसके गर्मरे प्रश्नेतका **दी उरवर्षि हुई। दिमकान्**की परमी, मेमा । शनकारमञ्ज~की [रं॰] चनुंतकाः पार्गतो । मेमा-श्री वि दिमवानुद्ये पानी मेनदा। मेनाद-प्र सि | भीरा निही। रहरा । मेश-सी निगरिया अधिव वा बुरोपीय सी: बाह्यसा व्य पत्ता विसे 'रानी भी कार्ते हैं। -साहया-सी प्रतिष्ठित भेगेन का मुरोपीक महिला। सेसना-पुर भेरका रचा: * बोरेकी एक बानि । ममार~द [अ॰] रमारत धनानेवाका राज ववर्र । शेशी-त [अंश] येगो(दमका क्रम हप । मेमोरियक-९ [मं] स्मारक, वादगारः प्रार्थना-४त्रके शाब भेजा बातवाका तब्ब-विवरणः जानदन पत्र । श्रेगोरें**ड**स−५ [बं] बारदाहड़ा व्यापारिक किया-पड़ी में किया बानेवाला एक मकारका पत्र विसमें संदीपन वेबद्दा माम कारि मदी दोना । मेथ-वि [र्ष] विषयी माप-धीन ही सदी को जाना संबद∽प्र [ॳ] ग्युनिशिष्ण बार्धरगनदा नामश्च । मार•~पु रे० मेथ । अरबन्ते - स्री॰ मिनामाः हिनाबर । अश्वमार-पुरु कि देश मिकाला । अशा-मर्नं में का संनेपकारक रूप मरीय । * पु र है महाड महाब०-पु० मिलाव भेर-'महब पूर दिनकर **ब्रार्** मिल श्री अपेड मेराड -प मेराज-सी [ब] वीनी तपर यानेका साममा समूत्र मामीदे विद्वामानुमार सुरम्यरका साममानपर नाकर र्वेषर-शाधासार दरना । भरानां-स कि निवासा

सर-पु [नं] सुमेर परेंगा बामानामें सन्ते करत

रहनेराना प्रवास प्रतहात बरमानामें ग्रेनमोडी देश

मुबाही-दि॰ [ब॰] तुरद सममूख । ब॰ क्रमम्म, ब्रीहा-

मुवाफ्रिक्-दि (४०) अनुष्ठ, बनुगारः तुस्य, शरह,

बन् (स्पर, दीप धारिक मात्र व्यवहत-मुन् पाँच वीहे)।

मिनता जुनताः बीरदः, प्रथितः। मुश्राच्यर्−रि (स] ब्टेशरु रेण पूरेपाछा । पु० ब्टेशर् TTC: I मुद्रारी-सी [पं•] स्रेत बंग ध मराजिक्क-पुर (धर) १११६मा वस्तेराचा अनुपादकः मिय । मुश्रहब-पु+ [ल] पानी पीनेकी अवह दीव हारता श्रीना प्रवदश तीर-सरीका । CIEC 1 मरारिष्ट-९ [ल] मुराक्षी जातमें दूसरेकी छरीक करने माला देश्नरके अतिरिक्त दिगी औरकी भी मुख्य जगारय माममेश्लम हाहिर । श्चि । मत्तर्रक्त-रि [स] बिने सरफ वर्श्य हो बदी हो। सम्मामिता रिम्पिन । मुसर्दद्र-दि [म] शिनको धरह स्वास्त्रा को नदी हो। विद्याः विश्वाद । वर्धवतः । मुशन-पु (सं) पान शरवारि कृतनेका थोशा हंदा, भूमन । मुरार्गी−सी [स+] १० 'ब्रुवनी । मुश्रमी(लिन्)-इ [4] हुधनवारी बनश्य । धम है) । गुप्ताबद्दत-नी [त्रण] मच्छ दश्य वर्ध बेग्रा दीवा है मुसाबिह्र-दि (च) स्त्रध समस्य मानि॰। मतापर:-पुरु [मरु] धावरीका रहता दोवर होट प्रश्वा करियापाटरी सम्रान्ध । मुपर्व-भी । गुंबर् । महाहरा-न [भ+] मानिद नेतन नवीदाः। सहरू-५ [फा] बरनूरी । -बामा-५० एक बधुका बीब की रकार दाय भागा है। लगाजाल्य बस्ती-सुषद्री वर्गन । –सार-निश् भनि गुर्गनित । –विकाध-मु संपरिनार १ -- मृ-वि जिपने करन्योदी संप कावा श्रांचित । -बेर-प्रशिवने बोनेशला एक नरहका देव मा दराहे हाम भला है। मुख्यिस-दि [म]वर्डिम वयुगारका दिए वहिंदार्वि शारी । सम्प्रापे भावेदासा । −क्ट्राग−(४० व∟रतारे दृद्द दृद्दे शंदर कारतेशामा । - कुशाई-मी करिनारे दर करता गरद बारना । - पर्मद्-पु स्थमानै दिए छन्दावनी रमनेशक रिश्कविष । मु॰ - मागान होना-हरिनाई पूर् बीका अंदर बरना ह महर्थी-वि (क) कर्नारेडे हंग्दा क्यां कानुरीकी ररशालाः बिन्दी बर्गारो हिन्छ हा । मुख्ये-वि (यान) बाल्येट (त्यः स्वाहः ॥ स्वतः रमधाबीरा र मुश्य-५ (प्राप्) मृग्या पृत्या ग्रहात (१० मुद्दीबर (योत) भीता रण । -दशकः-मीन त्रद्रीता पुन्नः विद्वीयाः मुग्या समुध्या - प्रम्म- ५ देंगेबाश प्रद्यवस्था दानुः भपुन 4रनेपामा र **~कृती~म**ी पु^{र्}रत्यो। स्वयन्त्रनी दारेत ल्याल्यु सुर्काशसम्बद्धाः को । 4 641 F −सम्ब⊸सम्ही⊸को इव हो सक्ति है मुत्रत्त्र−९० (००) धरवनेतला अस्तित कर्रो |

मुश्नवद्दा-वि॰ (अ॰) कियार या किमी हत्ता है। संदिग्य !-आयुमी-श वह विश्वर चेपी करी बरनेश मीब किया जान मंहिए। सम् । मुद्द्विमछ∽वि॰ (त्र] शामित्र विकादवा मदस्ता मुस्तरक-दि॰ (भ) धरोड़ दिना दुभा संतुत्त । गुस्तरका~वि॰ (वध) निसमें कोई शरीब की गरीब मेनुसः। - प्रानदान-व धेषुक्र परिवरः।- प्रायदाद भी॰ मेप्स मर्गात गार्मको बीव । अक्तरिक-रि॰ (ल॰) हारीह आयो। दु अने£र्रह भुस्तरी-पु॰ [न] सरीशरा द्रश्राची यह ! मुस्तहर-दि॰ [म॰] हारत दिवा दुमा, सीमर, रिण्य मुख्यदिर~प्र [#०] शरितशार देनेतामाः रिवाधमः। <u>सुरुतद्दी−ि [w] भूस मनामेशना श्रन्तुद्ध ।</u> मुखाक-दि॰ [स॰] दथाद, अल्लाही, हो द हमे राया मुचक-पु॰ (स॰) रे॰ 'मुवह १ मुपल-बु [गं०] भूगता मुचनी-भी॰ [गं॰] हिन्दनी। वासम्तिहा। शुपनी(किन्)-9+ [शं+] शतराय (श्वन श्निम म मुचा-मी॰ (सं०) शाप्त ग्लामेडा दश दरिया। मुपि-बी (40) शरी मृत्रमेदी किया। गुपित-वि [मं] पुरावा द्वना इंदिन । मुच्ड-पुर [रांक] अंदरीया चीरा देश मीरश बाबश है। वि भोशन्तायाः स्रोतमः। -सून्य-तिः सर्वतः। ~शोष-९ अल्डोन्डी इतन्। मुच्छ-५ [वं] एक १४ वेशिका मुच्छर-वि पु+ (वं } वहे अंदर्शनवामा । मद-वि वि विश्वराशाहण। मुहामुद्धि मुहामुद्धि-को [तं:] १६% नार्न १ मुस्चिप-१ [म] रूपहा मुहि-वि हर मीन-भंद हिरे बण वर्ष कीरी भिने मध्य मुरि करि शहरे -क्रीर र स्री [मर्ग हरि श्रुवान्द्र भाषाः बृंताः गृंद दश्या प्रजीतिहरू मा । द तीते । वा बना बना बीं । बनामा वद मह दह देहा नक्तरान्यु कही स्पेत्राह नदेशनी अमुक्ता अन्त अन्त । - स्त-१ वद त्रात सर दिनमें क्ष्मीदे सीमध्ये चीमध्ये नाम साथी लगा तम (मुक्ता है का किया (ताह) मर्ना हुमा मना है। -र्बय-पु नृष्टी क्षित्रा। सुरीव सरेव कारा ! -विश्वा-मो> मुद्दोल अपन्यो विद्या ३ -मेष्-विष niftet man gaet flatett gate alle. T. ब्रेनेवासी, वारिताव । -ब्रोस-पु अनाम मुता Aga-d (1%) ent tieren er alang g बसरामने हात्री अन्ता दुवा। दुवा। दुवार है

ब्रेंडनेशका ।

हारहा सत्यमाँ हें हुनुहरू विनास छंडीयी होत्या नाननेशे प्रतिया (दिस्त) कहर भूत्र। -हें हुन्युक रिगा रहते दूसरे भूत्ये बादेशका सांदान करू रेगा। -देयी-कोक कश्मेत्वरी सागा। -यामा(सम्)-पुक्ति । -पूत्र-पुक्ति काराधा । -येम-पुक्ति नहीं स्वतंत्रस चन्न कराधा । - विराहर-पुक्ति सांधा रहरतार चन्न । -सायक-पुक्ति सांधा । सेट्ड-पुत्ति । पुत्र पुना।

मर्द्शि(हिन्)-दि॰ [मं] मेरर्व-विदेश ही नामा

(साना) ।
अस-5 [ते] सिम्ब रिनाया त्या मनाः [देव] प्रीते
प्रस्तरं तिम्बा सिनाया ब्लून म्या प्रमीतः विमाया
बीव या १९८८ः तरह दिगमः - जीस्न - निस्ताययु प्रीतिनःश्य राहारम्य पतिकाः मुक्त - सम्मायः
स्त्रना-परना समुनना होनाः त्याति वृद्धानः होनाः
सेल-मा [त्र] हास्का प्रमाः त्यादः हार्य भवी सान
वर्णा निद्धि स्तितः राह्यायोः । - नृत्र-सी हास
साप्ताः - पान-पु त्यात्या यह प्रस्ता दिगमें हार्द्ध
सेवा वराः ।
सेलाइ-पु (१) सिन्मा स्त स्वाया सेनाः निवाहो ।

निराहरः
साम्प्राल-म् कि विष्णाताः दालका, प्रेटलकाः पर् मतान-भगे कह सुमारी काला-दामालः विकास कारा-भगे कर सुमारी काला-दामालः विकास कारा-भग सम्बन्धाः कृतिवि विश्वतम् स्था-दामः दर्गनाः अश्वतिः विश्वतम् समापस दीनाः

[10] विश्वा शेशः सुरुतदा विश्वासा

शंदधने प्रशादिका क्रिमान करना ।

शसन- ५

पर्वनाः मनोतुः मनोतुकः मनोतुक-५० [तं] वदार मनिः

सना-भी० [से] सिन्य नयममा अवस्य रीवनारै। सीरवार्चमा युक्त सेव असवा भीनित स्रोतिनित्री नेवन्त्रित सेवेशस्त्र तीर्नेत्राची अपीठि निव्य निव्य ति च भीर न्वासी, द्वीतेरूचा कार्येका स्थान । स्टेश्य नामसासन्त्री तिन्तु रीतन्साया। सुक नक्सम्बान् न्यास देश सोव स्थान।

भेग्यर्नेश्=मो+ (सं.] प्रवाणः मनिवानः । सन्दानम=चुः सीतमः नदाशः देशः यानना—गागरः गोरः - सेचान बुद्धिः वर्षदे रुपुष्टमः भाषः नादामः ।

सैमारक-पुनि विकास व्यक्त वन्त्रेगमा सर्वेश अन्यास्त्र करण्

भागावस-५० रि.] निगता रोतेन, गरावत ६ द्वारी-कि अर्थन की ने देव देण स्थानेत्रका, दिलस भारत प्रस्तित रनी ६ न्युपादस्तीन्यु अर्थनाची किंद्र

देव-५ राजपूर्णाति देवात घोष्ट्रचे वस वर्णा सव सर्गात वर्णात व प्रावस्त्री द्वाराज्यकर्ति हिंदी हुएका वर्णात वर्णात है। वर्णात केलेश्वरते बहुत्यार वर्णात है। विद्यालय कि प्रिकार हुएका हुएका एक राज्यानिकारिया भारत्य कर्णा ११ - स्ट्राइन्डि व्यवस्त्रा हिन्दार अस्त्रीहर्ण -इ ताम वा सुमार दूर कम देवने दर्भ। मैवारी-भी॰ देवा भरवर बमाबा समेशका हर हर बाव। मैवाब-इ॰ राम्यवामाचा यह राज्य दिस्सी सरकारी

भवतं निर्मात कीर तिहास है। यह दे निर्मात कीर तिहा कायपुर रही और शिष्ट हो थान जुल कारी बीरता और स्वापीलता देश शिष्ट कि की थान की बटिमें देशा जाता रहा है।

मेपापी-वि भेपारकः । पुरु भेराप्तिसारो । भेपात-पुरु राजपूतातासा एक प्रणादा को अन्य प्रशास विने (पूर्वी पंजार) कीट अनवहर स्था स्टब्स्ट्र ॥वेटे कोप्रपंत है।

संवाती-पुर वेशावा रहतेरामा, मेर । अपासार-पु देश श्रेताम । संवासीर-पु देश श्रिताम ।

सेर्सीम, मेर्सीनशी-गी०(बंग) है। 'यदोन 'यदोन) सेंग्यानी ! सेंग्य-पु [1] । भार शाहर शहिनोहेन सामी रापे ! -क्षंत्रम-पु० क्सी दंत्रम । न्यास न्याप्त-पु० हो हिसा । न्यास-पु० कोर देगार हमा ! न्येश्वन-पु० पहर्वेद ! न्यास्ती,-विशामिक निश्न मी कीर सेरामियी ! न्यूयल-पु० कीर ! न्यंत्रम-पु० वह गत्त्र हिस्त शिक्षा ! न्यंत्री-मी श्रीमियी ! न्येश्वन कराव्यास्त

शित । संचानसंग् [तं] होते स्थापनी । सर्पापन समीननी [1] भेता श्रम्यमं । (१ तरु देवं । समन्दुरु [4] दिवादियं को शे श्रम्यते के वे वे म्यूर्ण मोजनायदा हाथास्त्रपति ६०६४ मोजनायद । सम्माहद्वार-द्व [4] है वे हैं। भारतस्र ।

सामितिमान्तु (सं) है पीतीसावस । सिर्देशी-को वह सामी जिससे व्यवस्था हिस्से सामित कार्य सामिति हिस्से (सामित)। मुक्त -सा वस्त्रमा-निर्देश (स.सि.पी.) -स्थाना -क्याना-हास थेए किन्दे किन है पि विकास कर्याना (विस्त्र)-हाम होना-निर्म सामित कर्यान सामा सामग्र सामा सामा

मेह-पु॰ वर्षः शरीः (रवधाः रत्यमः) : मु - बी वीर्व म सुम्मस्-कार्यः र रहते दशे दोनाः

मोह-पु (वे) जना प्रमेहा केन रेगा नवरा है। -भी व रो। महन्दि (वा) नवा पुत्रती नरहर है। जना है।

सबित बहुर वृत्ति । वृत्ति वृ

हित्यामी -कोर भेरत । सिम्म 3 [1] कुम हिरमा मेरदा मादो केर दिम्म -क्ष्म [स्रो क्या हित्य केर्य केर्य केर्य -ति देशन केर्य केर्य का मार्थित केर्य केर्य स्टार्टिश कुम -विश्व कामान -क्ष्म कर्य केर्य स्टार्टिश कुम -विश्व कामान -क्ष्म कर्य कर्य

हैहममुखान्तु प्रशेषिक प्रश्नी कर परी केंग्री हैहममुखान्तु हैक व क्षेत्रिया प्रशेषकी मृष्टिकांसक-पु [सं•] कराम । पुष्टिका~को [सं•] सुद्दोः प्रेंसा। मुद्रक-पु [सं•] काली सरसी । मुसक्ति, मुसक्तिया•∽को वे॰ 'मुसकान'। मुसकराना-व • कि • इस तरह हैंसना कि न सब्द हो म बाँउ दिखलाई हैं, बाँठोंमें देखना मंत्र मंत्र देखना। मुसकराह्द∽नी॰ गुसकरानेकी क्रिया मंत्र हास । मुसकान मुसकानि*-जी है 'मुसकराहर'। मुसकामा-ज कि॰ दे 'मुसकरामा'। मुसक्तिराना मुसकुराना∽ण• क्रि॰ दे॰ 'ग्रसकराना' । मुसकिराहर, मुसकुराहर-सा॰ दे 'मुसकराहर'। मुसक्तिन-वि [थ] चुप करानेवाका शस्त्रीन देने-बाला । पु तसकीम देनेबाकी दवा । मुसक्यान*∽स्रो॰ दे॰ मुस्दान । मुसक्यामा•्य• कि है 'मुनकरामा । मुसकार - पु रे॰ 'मुखकार' । मुसदी−सी चुद्दिया। मुसदक्य−ि [त] तसरीक किया हुआ। वाँचा हुआ ममानीहरः । मुसद्स-पु [ब+] हाः भुजीवाका क्षत्र या काकृतिः वद एव बिलकै बर चंदमें छ' मिसरे हों। मुसदिक्र−दि [अ] तस्त्रीर्व-करमेवाका। मुसमा−व कि धोना या शुरावा जाना~ पश्चारत वर मुसी नाइको रच्छा बरने जागी चौर'-धुरर। स कि 'मुमना'−'बोर सुम वर आहे ∽ध्वीर। ◆ त्र चुदा- बातिक यनपवि दुर चैंगना, एक की मोरपर एक मुसना'-विचापति । दि सुभनेवाला । मुमग्रक्रा∽ि [स] तमनीफ किया हुआ रजिन । सुराध"-पु [ब] सत्तव(सेब)ही बोब गरून दूसरी प्रति । रमीयका अज्ञा की देनेवालेके वाल १६ जाना है। मुम्पविक्र-५ [म] तमनीक करनेवालाः रचविता मध्यार । सुसच्चिक्रा−सी [स] रचवित्री ऐतिका। सुमद्रकी-वि॰ (म) सर्फ बर्मेशका श्रीवक । --व राम-दि रक्षश्रीवद्य। मुसम्बर−पु पोकुमारका जमाकर सुखाना हुना रम वी दबादे क्षाम भाता है। सुसमुद्द सुसमेध+-वि ध्वरत दश द्वभा । पु विकास । मुसम्मन-दि [अ] अध्यक्ष अष्टभूत । पुरु अष्टभूत धव बाहति। -शुक्र-पु दिल्ली बागरे बारिये दिली-के अउपहस् दुर्व । भुसम्मा∽वि [ल] (अमुक्त) श्रमशाना मामपारी । मुसम्मात-विश्नी (च] जामवानी जामधेवा 1 शी भ्ये (के) । मुमरिक-५ [स] कब्ल्य-१ उहाह । सुमारव-को [भ] गुणी वर्ष भावाद । शुगरद्द-दि [#] तमरीह दिया पुत्रा क्योरेबार । मुसल- । वि मूर्ग- " स्रोर्व मतियंद्र इत्तिमय सुसक

भुसलमान−५ [अ॰] इस्हाम म**बद्द**ो मागनेवाहा मुशक्तिम । असम्बन्धानी-वि॰ मुसक्तमान-संबंधी ! स्वी॰ मुस्तमान श्रीता इसकाम मुसक्यात वर्षेक्ष कियंद्रिवके अध्याग-को त्वचाका काटा जाना धतनाः शुसक्रमात्र स्त्री । मुसस्राधार-म॰ मोडी नारसं नहीं नहीं वृँबोंसे मिह पर सना)। वि गोटी बारावाका ! शुरु ~मेह बरसना-व्येरॉन्डी वक्त दीमा । मुसलामुसकि-सी॰ [सं॰] गूनकॉकी कहाई, एक-दूसरेपर मुमकींसे महार । असकामुध-पु॰ (सं॰) पहराम । मुसक्तिम-पु॰ [अ] मुस्तमात्र । —क्षीय-खो॰ दिंद रतानके संप्रदानवादी असकमानीका महिनिधित करनेवाकी संरक्षा (१९०६ में स्थान)। —छीगी – पुरु असकिम भीग का अनुवादी । मुसक्षिद्व−प्र [शर] इप्रकाद करनेवाका सुपारक। सुसकी-सो [मं] एक नगरपति जिल्ली वह दवाके काम भाती है छिपरखी । मुसस्त्री(सिम्)-पु [सं] मृत्तस पारण करनेवाके, वकराम १ मुम्पस्य−वि [सं॰] मूलक्षे मारमं या वर्ष करने वोग्य । मुनस्क्रम मुसरकमा-वि [भ] तत्तरीम दिवा हुआ मामा धुभाः नराष्टितः पुराः निविदाद । असस्ख्य−दि॰ [बा] विश्लोगा। पु॰ विश्लोन । मुसस्का-इ [म] वह वरी का बेहरिका जिल्लार समाज पड़ी जाय, बाममान समाब कानेकी जगह, बैदगाहा 🕫 भगनमान । मुमन्पिर-पु [ब] तमबीर बनानेबासा वित्रकारा देह बुटे बनामेवामा । मुमस्परी-पी [अ] मुमस्परका काम या देशाः थस्क्षाची, निश्रद्वारी । असदर−५ यद वंगमी (बरिशमी) वानि प्रादीने यक्तमें बनाने आरिका काम करना है। मसद्वरिम−षी मुसदर न्दी। मुसहिल-वि [भ] बरत कानेवामा विरेवद्व । पु+ दरन लागेशली दवा विरेचन । समाजिय-प सि॰] सकर करनेपाना वामी: वरदेशी । -प्रामा-त मुनाफिरीके बहरनेकी लगह सराबा रेकर श्टेशमपर (तीसरे वरअंदे) मुलाविरीक उदरने दे किए बना हुमा सायवास । --शाकी-स्री० वावियोशा ने श्रामेवान्य रेलने हेन पैनेंबर हुन । मु॰ नकी शहरी-सर्गमे सुद्धा देवा आरमी । मुगाजिता मुसाफिरी-की [ल] सदर प्रवास बररेश । मुसा**हय~**पु दे॰ 'मुमादिव । मुमाहबन-मी [अ] शाव प्रदेश-प्रदेश मुमाहिती । मुसादिब−५ (०)मात्र कारो रेजनेरच्या गावी तर नती राजानवार्वं देवे दरवारी जिनहा साम साम बाद भीतन बनदा िन बहनाता होता है। सुमादिषी~मी० गुम^नदेश्या ९७ दा काम ।

ट्रेसनकार ।

थी। दु[मे] सूनल । ∽धारं∽श्र

मेहमान-पु [दा] वो इस्टरें पर जाकर दिने जीतिवि पाइमा; भीवनते किय निर्माणित वन ! —हात्राना-पु किरिक्शांका, सुर्माफरकाना !—हार-पु किरिक्शांका, स्टरेनेवाना, मेत्रवाम !—हार्य-ची किरिक्शांकर, मेहमानीकी दातिर तवावा; मेहमानी !—मवाझ-वि महमानीकी दातिर तवावा; मेहमानी !—मवाझ-वि का छोडीन !—नवाझी-चो किरिक्शांकर!! मोहमानी-ची गहरान्वरारें। किर्माण वेष्टांन वेष्टाना वेना,

्पतुनार्थ। सेइर—स्त्री॰ दे 'सह । —ब्राम्न—वि पे॰ 'सेहवान । —वानी—स्त्री दे 'सेतवासी'।

मेहरा-पु बनला स्त्रैनः पत्रिशेका यक सह । महराब-सी [अ] मस्त्रियमें यह पत्रुपाकार स्थान वर्षा हमाम पड़ा दोस्ट नमाब पश्चा है। टाटवाला गोक दर बाबा; दरबाकके कपरकी पत्रुपाकार बनावट कमाण ।

च्यार-वि मेहरावशका वतुकाकार। महराबी-वि मेहरावशार । स्रो वक तरको समदार

तक्षार । मेहराकां -- स्ता श्री श्रीरत । महरी - स्ता सा, परमा ।

मेद्द~पु [का॰] युवं। स्वी प्रेम प्रीतिः हुपा, दवा। --वान-वि॰ क्वतातः अनुप्रदस्त्वी प्रीति रस्रनेपाला। --मामी-ची कृमा अनुप्रदाप्रीति।

र्में चर्च सत्तम पुरस्का कर्ताका रूप अवस् । रिकामक के सीन्द्रा

मुँदि॰–छो॰ दे 'मैड'। मुँद∽ग्र (चे॰) एक क्षप्तर जो विष्णुके दावों मारा गवा।

गान प्रश्न प्रकाश कार्या वा विश्व कार्या गार गार प्रमान है जह । क [क] शाव, शावित (प्रियं में में में में हो है जिस हो है जिस हो है जिस है जिए जिस है जिस है

भूता~तु है आवका । भैयनाकारि~तु [श्रं] अध्यत्र जातिकी वैत्रशिक और राजनीतिक रवाचीनताका क्षिकारकत्र जो वर्गने १२१५ है मै अपने तकातीच नादग्राह व्यागरे प्राप्त दिया था। भूगनंद~तु [श्रं] तुंक्क वन्तर।

मागनंद-तु [बं] पुरुष गणर । सगम--वि हे सरगन ।

मेच-इ [सं] मुद्दार- या कुशन्ताना प्रतिनेधिनाका धैन त्री रो प्रोक्ष बीच ही १२०१ दिवासनाई १ - बाजस - प्रतिकारिका दिविद्या ।

न्त्र । १४पामकास्त्र । दारवा । सञ्ज्ञ-२१ ६ मेर्डिक । स्रोतिक-इत्र (च. १०००) क

सीतक-पुरु (स.) जाहूः जातूका रोगः। —सिहस-पु पर बन नो गोरीपर बने दुध शिवका वरिवर्द्धित प्रतिश्वित भागन दुध पूर्वर तम पुरु गोरीय का नव शाकाला देः स्वारित्य-पुरु (स.) विशेषक करनवाला गानीगरः। सरद-पुरु (स.) दुध्या जब क्याका बंदीज दिला दुधा

्षेपा, समावार काहि । मैब्रक-जीव मेंडा प्रतिद्वा । मैस-कि सिंबी मिसका फिक्का रिका

त्रिश्र—(व [र्षण्ड] पित्रका पित्रका निया क्रमा पित्रमान क्षका मित्र(वर्ष)मंत्रणी । युण मित्रता स्ट्रेस्टोझ अगु रावा नक्षत्र श्रुदाः सकस्यागः त्रासनः नंगाली त्रासगोका एक मात्र!

मैवक-पु [मं] मिनताः बीद मंदिरका पुनारौ । मैनायण-पु [सं] एक निष्का नाम । मैनाबरुण, मैचाबरुणि-पु [मं•] नगहस्यः वसिङ (रन

अन्नाबक्का आधावकार—्यु (१८०) वागरवार वासङ्घ (१८० दीनोंकी बत्यति मित्र और वरुण दोनोंकी संयुक्त वोर्यसे भागी गर्वी ही। वायके २६ काल्यकीमेंमे यक । सन्नी~ची॰ सिं] मित्रना बोरती ! —यक्र~पु तक ।

नता कार्युद्ध) त्रकामा बार्स्सा — चक्क चु चुका मेहीय — चु [र्स] एक मानी वृक्षा सूर्य; एक क्रिक्स दक्ष वर्णमेकर कार्यि। सम्मेयिकर — स्त्री [सं] सिम्बद्धक कोरलोके नो क्षकी करार्य।

सम्मानका न्याः (च) याप्यसम्बद्धाः पत्थाः अदृश्यः । स्रीप्रेयी—की [सं] याप्यसम्बद्धाः पत्थाः अदृश्यः । स्रीप्रयं—तुः [सं] मित्रवाः।

श्रीपरु-वि॰ [सं] मिल्लिका । पु मिल्लिमिवासीः मिल्लिमर्थ (बनके)। —कवि —कोकिक∽पु विधा-पति।

भार । श्रीवृत्ति – तो [सं] सीडाः मिनिकाको भाषा । श्रीवृत्त – पु: चिक् । कोषा राजा ची-पुरुवका समामन, राडामिताः विवाद । – स्वाद – पु: कामस्वद । भारती (मिल्र) – वि: [सं] मैसन करनेवाना ।

सदान्य (कार्य) बहुत वारिक साधा । नसक्वान्त्री एक वर्षा । (है)की कोई-बहुद मुक्तवम (देश) । मित्रानं-मु (का.) बोले-प्यारी समतक अमीन; पुर बीह, शिक बारिका स्वाम: रमक्षेत्र अस्तारा; क्यानस्थ

सराता विश्वारः शेष (पालकता वैदान)। — (ते) खंग-तु सुवध्यः रफ्यृपि । शुक - करमार-सुव करमा । - ध्योक्या- क्यार शिक्ताः रुप्धृप्त मागना। - खाना-श्रीवर्ध क्यार-विश्वारः स्थार । - खंग्राना - मारमा-कहाई बीचरा विद्यान्त्राभ करमा। - प्यर्वा- क्यार-स्वन्तराताक विद्य दिन स्थान विद्यु करा- । - स्थे

काना-सहये शुद्धाव-के निष्य मामन नाना। - में उत्ते रना-मुहनोके निष्य कवाहमे माना। कार्य प्रमे भाना। -साफ कर देवा-निष्य गामाभीकः हुर कर हेना। सक्तो मार भगाना । -साफ होना-राश्टेव केर्र निप्य-गावा महाना। (किनीका) भरना होना। -हाथ

्रह्मा-कहारै जीवना । श्रीदार्माः—वि मेनानकाः मैदानमें बाम आगेवानाः सम तम । सी वह बाम्प्रेन आर्थानमा नरकारी वा गार्चा

बाका माट वा मैं देश समीररार यीन । मैंगन है भोमां शायने निकास द्वामा भागन मेन तुरत पर पावक दिय जाडी स्थिरि दरेंग नामधीरामा । दे समान १ न्यामन हु यह देविना द्वारा समझ का को दशक साथ माडा है। नामधन-दि स्पाद्वर।

र्वान-५ (भेग) यनुष्या प्रश्न व्यक्ति (मुन्सिकेन मार्गान-यम मा.) । अनेमिस-५ यह स्तिन इस्त्र क्रिने शायर स्वाहे मुर्माय**न-**मुहर्रेम मुमीबतु—सौ [स्र] दह दुग्गः गंतरः विरः व्यक्तः । -इदा-वि रिपर्मत्त्र दुनिया। मु०~का मारा= विपर्यार अयागा। - के दिन-पुर्दिन कहतान। मुगुबामा १ - ४० दि दे " भुगवरामा । मुमुराहर•-मी• रे 'मुनरतार'। समीग्र-९ रे सुमन्दिर । ममोनिर्मा (वेनिटा)-प ३८८३-३ ८,१ देश्शब् फामिरी रमदा नेता भवा दरभोडा प्रवास अंत्री ३०२३मी मस्कगना-च कि है॰ मुमदराना । मुरस्राहर-मी दे नुस्रताहर । मुस्कीरं-स्था के मुनदराहरे । मुम्बपान −मी रे• 'मुमकाम । मुरन मुस्तक-५ [4] मागरभाषा । मुम्नभद्री-(व॰ (व॰) प्रश्तीका देनरामाः वाध्ये सायने शता । मुस्तप्रथिस-विश्व स्थिते अन्य आनेवानाः भारी। युश मस्पित्रुक्षात्रः । मुग्नक्रिष्ठ-नि॰ [ध॰] रिश्त स्थावी गरा रहनेवालाः पद्या र": पर्रावित्यार वद्यायी मध्ये निवालः स्वाचीम । -जगद्व-सं स्वादी पः, शीवरी । -मिकाञ्च-वि रिवरियश । मुम्पक्राम-दि॰ [थ] सीपा कर्नु। ठीव । गुस्तारीम−3 [म•] इत्तवाधा दावर करनेवामा, करि-याणी अभियोगा। मुस्त्रदक्षि:-वि॰ (ध॰) मंगा, संनोतरा । दु॰ समकार धनु सुरसद्द्रं-पु॰ [#॰] प्रार्थमा करनेवाना वन्तुख । शासमार-दिश् [ध] सना यानने भारत, प्राप्तानित टक्रमाची दिश्यमंत्रेष ह सुम्तका-रि [४] युवा द्वा अधा पु पुरम्पाधी शरी । - बमालपाशा-इ. अपुन्ति गुरी ६ निर्माता भीर दश्य राष्ट्रपति। मुग्नप्री१-वि. स.] सावधा यह नगमाः कारणा शाहने सम्पर्गतान्ति 🐄 🕽 अनग विकादका अस्त्राहरून ह मागरङ्ग-विश्व मि हे इस देश ने नाहा, अविद्या है। बीहर है मुत्ता-से [ां] दह तरहकी वन्त्र, दावा ह शुक्ताद-दे (११०) बच्चा रास । मुन्ताम-पु (६) भारतमाना ह मुग्मेर-वि [ब हुर दर्ग] तेशर अधादा सग्यदा लाम नेत्री । बास संदोनशा । सम्बद्धी-कार देशकी बग्दरवार वर्गा व ै । मोन्दी प्ररम्य (ल) हो बाद बन्नारेक्टर । गुम्भी प्रधानमें देरे नहा। मुग्नाकी-पु कि र दिगार दिनावरी जीव वर्तेशया PART HERRESHER STEET मुक्तस-हि (स) यहा सहयूत हिल्लाह मुरम्भा-द (स) दे विश्वका व

मुर्गिकप्र-विश्वति है सहस्थित वरवेदाला वृश्यवद्यारा है

रो मिह करनेरक्या नार्शनक, राजामेरी। मुहत्तमिम-पु [म॰] वहरिमाम क्र्मेशका प्रश्य । -चंद्रोक्स्त-म पंताबाहरे कामशा प्रवास करेत्रको सेटिनमें बाहिनर । मुद्दतरम-दि॰ 🙀 🕽 सम्मानित आरश्योच । मुद्दमाल-दि [म] विशे दियो धीनदा महत्त्व होत भावायस्या हो बाजग्रहा याह रमनेरात्या साह निमी बालके किय देशाबार आमित्र (रिवार क्षित्रेश मा नाम म दरे)। दिश्य । -गाना-पुरु स्व त्यान पर्य गरीबींनी मात्रम मारि दिया गांद । मुहताची-की मुस्ताव होना। मुहरिम-१० (ब०) र्रोप्य एता। महनाम-की चातुरी शरी दीये निते हुस्ते शालासी निगाणीयर स्मावे ै । <u>ल्ह्हरवत्त−शी॰ (ल॰) बाह, मीति। धेम, शरदः श्रेर</u> विषया। --मासा-पुर प्रेयरम, एव या विषयस चन । सुरु – इद्यमना–धवदा बीछ मारमा। नदी महार,-की निगाइ-प्रेममूबक शरे ! सहक्यती-रि प्रेमी रतेष्टर मा मुह्म्मान्-रि (स) बहुन सराश हुना: मी मार्नि रे तु रमलाय वर्षदे प्रदर्गंड स्मिरे मुफ्नमान रेश्सर बून और मरिश्चराहक (रनुष, देनंतर) समर्ने हे केर बस्द विश्वान मुनार जिस्दे द्वारमें हरान बन्धं (०० -६१२ हे)। -शोरी-य दरायुरित हामा गेरी जिनने नन् ११९१ में महाराष कुमीरावधे का^{र्य}टा दिया । मुहम्मही-दि॰ (४०) मुहामरवे भंदर दुश्मारा ९ शुरुवर्दा अनुकारी, मुमधमाम । मुहच्या~ि (स) रे॰ मुरेवा न गुहर-मो॰ दिनी धोज्यर गुरा हमा बल पर प मरीक कि) पात एरके बहुते या बल्की पार विष्कारी बिर ग्राप मढे गुणा। हत प्रदार छात्रा हमा माम भ[ा]र ग्राका केंग्री। अरवरित - अव-४ हरर धोरनेर'न नुगासत । -बरबार-पुर (राजा वा क्रमास्ट) पुरर स्थ>समा भरिदारी । ∼शाही-मं रपप्रदर्भ हुदर राजधेव नहर । शुक्ष नदरबानमुद्रर आकी। -समामा-(बादा कारिया) रहा दी बाला बावाले काकी शांच असे माला । -सनामा-वरावर हैता प्राप्तिकाची सम्द है देश । मुद्दवा-पुरु शायवा भागा शाम्य शारीका हें। अप forme dies funt und bet un et bed क्षांत्रात हे सेंट -स्टबी-तेंड्डबर ब्रोक है -(१) ब्रा बरदा बहुबा-नीव वर्ग्ट्स आहे. श.मी धना बहुदा ग्रह्म-त [बान] कीर एक प्रवाद है वा हुन राज सन्दर्भ श्रम्भिया चेलाको केस बादक प्रति के नेव भारत के लाग - मानी क्षेत्र के ने मुद्दरी-भीत्र है होत्रा है की र gefu-le [n] ven gereiten friet?" क्रमाना मानवा त्रवा स्ट्रेना क्रिक्ट क्रमी स्ट्रेन

र्धका – घोजर कारते साने है । मैंबा-मी वढ भिड़िया भी बाने शेवची गिठाबढ़े निष् प्रसिद्ध है। गारिका पार्वनीकी सामग्रह साथ ह भेताक-तु (गं∗) रह परंत जो बुरायानुगार दिवाचय का देश है और जिसद चंदा इंड्रफे हाथी बाटे जानेश दथ मधे है। एक शासद । मेमाल-१० शि | मरबा १ मीमंत-विमध्यक्षा ध्वीता। संसम्बद्धाः स्थलः । मैवा~स्रो मला। र्रीपार-प सि ने पापमे-गीलनेश भारत बाँदाः बागीराः शास्त्रक्षमः कोर्यः । परिया किस्मकी वरिकार जमीन । मीर-मीश सर्वनीत्रयो सहर **।** शासां - प्रतिकार सामान करतनामद वेहते है जिए धनादी दर्दे मदान । मैत्य-पुनि] एड नत्त्वा यय । र्मिल-पु॰ शरीर अपद अशिमें चित्रका द्वारा सल्य करें एक में सा बरते रामी औष समा निष्ठा । दिनीकी और में बनमें संवित्त कुम-दुर्भाव । -नवारा-वि जो बैक की विश्व गरे गर्दभीश ((ग)। पर वर करना की कुमरे बदरीका प्रता होतेश बकानेके जिस मीन शामा माना मयरा । गु॰ -कादमा-मैन दर करना । मेना-4 हैस्यामा स्थल गा। प – ऋरी हा−दि ४९व हेना ३ भैसान-कु [w] मनदा शुक्रण शक्ता शक्ति श अरहरू - पु । मापना । मी -प्रदेशियां हर्व हे सी। भौतिरा-पु दे 'मूनरा नवा मेलरा । मींच-भी दे 'मेद । सीबार-पु अवस्ति बालका सीहा-पुर बांध, देन बादिका जिन्ह नेमा गीनावार 書で日本 (भी र नार्ने में दा बढ़ गय जो अब और सर्वाचे दिवतिह सारिके लग्भी दी काण है भेरा । क्षी है - श्री व सीवे शया पूजा कारा व शाबा-५० [का वे ब्यूक ह मीडम • म दि इभागाः पॅडमान रेश्सी नहीं बंध स राज मीतनी -रामण मोक्तर-६ व्यवस्थि स्वयं ।

सीक्षका०-६ है साहण । मोका-१ दे शीका न्या ल्या ।

शीक्षण-पु (शं•) भीत्रश धाइमा, मीपम निराम-वें रामा । सोवय-दिश सिंगो अल्डो काम अस्टिश अध्यक्त । योगा-पु॰ रोधनशन शरीनात बढ १ए अच्छा। मोरारा−५० वर भीर व्यक्ति सर्वाश्य क्ष्याना देश) सोगम-पण्डे० 'सर्वन' । मीगसी-४० वद अंदर्भ वेद । मोध-रि॰ वि विवर्षेट, व्यर्व शनेशना । दश्याप परकोश ! -क्यां(संतु)-दिश निर्श्व कार्य कर ह्मा । -पुरश-मी पंत्रा । भीषा-सी निन्ते शतन्त्रः पुनः शियः। साधिया-ली० मनिह थीते. यो और मेर्ट मरिया मोच-मा कार-वंश नर्म वर्ष किया बंध्ये वेपरी मनवें थोर बादिने धोब और दीश दील दा दशका मान्टे बगहरे वह बाबा (बाला) । व [गं०] देना। व (स्प क्षण्डा निर्धात । -निर्धात -श्या-सार -सार्थ -राह-५० धारम्बर्धाः स्व श्रीचक-दि श्रि शहरदारा रिमानेशमा पुरन्धारह । भुक विशाली। बीला खेला गाहितम । ब्राचन-१ [सं] पंपन ६३ मारि हराना गुप्ता देश रिनामा पुरा (का-प्रेयम) । हि॰ (गहणी ग्रहानेनामा (सहरधीपम) । माचना-+ व 🍱 विरामा (जैन्द्रीः सराजारित स जीवार विमाने जारे शृंध कारिके पर पान प्रधारण है महारीक्ष पर औक्षर । शाचनी −भी छोग ग्रीनमा (सर्) माधीया । मानविता(भ)-विक [ते] दाव रा विकास हायबदर्श र शीचा-शी [लें] देवा। शटित्रमा श्रीवटा मैश तेवते ! भोषार-तु [र] उवाह जोरा: बरमें संबंध बेची TOTAL WORLD जीची-पु अनुस्थितका अवदेवा दाव दाने। पर भी [गंग] हिम्मोर्निक्य । शोबी(बिन्)-रि (ते) हुन्द बादेशका हुएकावाने मोरए०-पुरे भीत । श्रीकृतलपु (सार्व) परियो प्रश्नितीया वस पुना देश देला muritt geter ent mit ftent frat um PI Par BE fin ! सोक्षिप्रारूपुर्वास]कारपार क्रायात छ। कप शैन्य-प [ते] शुक्रमा क्रेक्ने पूर्वा सुरवासः श्रीवद्या अन्य बाध्ये वनवारे शाल gfgi feray अध्ययद्भित्ती को ही। मीर-धी व्यक्ति पर भागात विविदेश की वि शरका (बाल पर्ला वेदना (शरमी) पार्टनदा हैए। मीरक-पुरु [में] रिल्इकिमें स्वतंत्र होता गेरा देव -बा-दि भी मूल हेत्रेशमी। की मन्द्रीर्थ राष्ट्री १४ छो । अरुषी अरुपियी अर्थ की की TELT ! देवेशको ६ व्यक्तिम् वीको बन्ती हिन्तीला अन् (क्षोत्सी-भी में देशक ग्राध्मा र रीय बाजर अनुहार-पृत्युदेश बाह्य राजिश अध्योजन Apala-Lo [14] of the Court all ; MIRE-M' [al] pfiefer bberer der El et 3 mein en-mifenfer fut fi marab arear मंद्र १ - न्यापद्र पुर अवदार्थास्य ४ - नमान्यम् -पुर हे (भागीत द्वारते सीवान्यप्रका) द्वारा संभित्र सार्ग

भेएका प्राप-शय, दल बीग साम र

मेट्राहा देश संपद्ध ।

भोशक-वि विशेष्ठिया स्था देशका। रा

असोडित-वि॰ सि॰] थो काठ न हो। रक्तस्त्व । पु॰ **शक्ति**स्—वि० [स्०] किसा केफ्डा, असंकरना वे-कामः असा-काक दुसक । पतः निद्यौप । असीकिक-वि सि॰ो यो लोकों न मिस्टा हो, कोबी अस्तिमक−पु [सं•] ≹० 'अमिमक'। भवी-स्रो० सबी (प्राव: संबोधनमें प्रमुक्त)। पाँछ । क प् भीरा। [घ०] मुसलमानीचे चीचे खडीपा, ग्रहमारके **ध्यस्क:--**प्र० सिंशी नद्याः अवयव १ वमार और हमाम द्वरीनके गए । - वड--पु॰ एक तरहका सम्बद्ध । मसी(किन्)-प [सं०] प्रमतः विक्या ससीय-वि० [सं०] अप्रिया मिथ्या, सूठ, मनगर्दता अस्या कुछ । पु स्रकार; अप्रिय दिवय; शुरुः स्वर्ग । 🛡 स्वी० नप्रतिष्ठा । अस्त्रीकी(किम्)-वि० [सं०] अमिना स्**ट**ा अकीगद्र-पु दे 'विश्वार । भक्रीआ#-वि॰ प्रभुर, बहुत-सा ! सकीत-प दरवायको बीखरका साहः बरामरे जारिका बंसा को दौबारसे कमा हो । वि॰ जनुभित अधाक्ष । सर्खीपित•-वि जक्ति। बसीस-दि [कर] धीमार। सम्बोदय-दि अक्रीका धालुक-पु [सं] पक समास क्षितमे पूर्वपरको विमस्तिका कोप नहीं होता (सरसिव, कद्यवपस्था); आखनुबारा । अक्षुत्राना÷-व कि दै॰ विश्वाना । **अध्यता≐~०० कि० कोरनाः स्वयकाना ।** मस्सिनस-पु॰ यक बाद्ध किएके बर्तन बनते के 'बद्ध-मिनिवम'। असुप ≠ - वि० दे॰ 'बसोप । अञ्चलार्थ-पुरु नुकनुसा; कप्या नहार । काक्रेक-वि० के-द्वितानः वादेवः कावस्य I **अधेका॰--वि॰ ब**नगिनतः वृदा । **सक्षेत्री*-वि० श**न्वादी अविर शरनेवाका । अस्पक्-वि॰ [मं] वेन्दाम । द्वः परज्ञका । **भक्कोक-वि** [सं•] अव्हरा विर्वतः पुल्वद्दीत । पु॰ करत् वहाँ पाताकादि कोका संसासका विनासः आध्यारियक वनद्र + मपदश्च पदमामी ।—सामान्य∽वि कोधीचर् अस्यक-नि सि] थोशा छोटा । बसावारच । क्रहोकनाक-स कि देसमा अवक्रीकन करना। ससोकमीय−वि [ग्रं॰] सरस्व । भक्तोक्य~वि [धं] बसावारणः विसे स्वर्गकी माति न क्समें मरनेवाका । शीसके। **मस्रोचन~-वि॰ [**सं] नेत्रशीमः विना विश्ववद्योक्ता (मकान) । भरमेमा-वि विना नगरका; वे सवा । सुरू →रहमा-कम भारार । नमक न धानेका तत रखवा। सकोप-पु॰ (सं) क्रम म बीजा (वर्ष जारिका) । » वि संबत रहता हो। तुप्तं चटाव, पावव । महोमक−ि सि]केशसीत्। श्रास्पेसर-पि [सं॰] वदाः जनेक बहुत । मसोर-वि [सं•] अपंत्रक, निरा इच्छा वा गुन्हारी रविव । प्र वक्क कृत्य । अस्तर-वास्तर-पुर्वद-वद अनाप-ग्रमाव। मसोबिक--पु भवंबस्या । भस्मेसु-वि [सं] निषयोसे उदासीन ।

भरोसुप-दि [सं] की काकवी न ही कीमरदित।

चरः भमागुपीः जविषक्तः असापारणः अद्भुतः विरक्त । अस्प−वि॰ सि ो तच्छः बोबाः ऋमः छोटाः मरणशीकः निरकः कम जनस्थला। पुरु जनासा। -केशी-कार मृतकेशी नामक बीवा ।--सध-पुर रक्त केरव !--सीवी (शिक्)-वि॰ अस्यातः । -श-वि० वीका चामनेवाकाः मूर्ज । -तुन्-विक ठिमनाः दुर्वक, पदकाः धीरा इक्रियी-वाका। चत्रियाचिक को वश्चिमा देनेमें स्वार न हो। चवर्षम -दृष्टि-वि संक्षत्रित रहिनाका, सदरवर्धी । ─थी─वि० बोधी वृद्धि रक्तनेवाका सर्खः ─थन्त—प० पक चरवकी शक्सी ।~पद्म~प्र॰ रक्त कमर ।~प्रमाण्-ग्रमाणक-वि० धोडे क्यलकाः वी वहा प्रमाण म हो। यु अरबुवा; तरबुवा । —प्रसार-पु॰ छोरीसी जांगक्रिक सेना था सदावता (की॰)। ∹प्राण−वि अरुपशक्तिः अस्पस्तः शासरीगी । ५० प्रत्येक व्यंजनवर्गका प्रवृक्ता वीसराभीर पाँचवाँ अक्षर तथा व, र, ठ, व (स्वा)। -बित-मति-वि दे॰ 'अव्यर्थ' ।-मापी(पिन),-वादी(दिन्)-वि कम क्रेक्नेवाका । -सन्त-प्र• शाकाना भक्ता था ततसाह धानेवाका कर्मवारी । - सत्र-पु॰ क्रोटा, सरपर्धक्वक पह वा समुदाय, बहुमतका उकटा ! ─सभ्यस-वि क्सिको क्सर प्राकी हो !─सारिय-3: चाक-विश्वेव ।--मेघा(बस्)--वि० नासमझ, मूर्व !--वय स्क_{र बया}(यस्)-वि छोटी क्षका, कमिल -िवरास-म अर्थरोक्के किय किसी ग्रान्यक गाउ थोड़ा उदरमा। इसका विद्य (,)। –व्यय∸पुददकाम वी केवल वोत्रासा मचा बेमेसे हो जान। -व्यथार्गम −िव और ही व्यवसे वन वानेवाका (बी०)। —शसी—बी धर्माकी बातिका यक स्रोता वृद्ध । - संक्या - संक्यक - वि क्रम वनसंक्या-वाका (समयाव) । -शंतीयी(पिन)-वि॰ भावेसे संदोच क्ट देनेवाका ।-सार-वि॰ बीवे मूक्यका । -स्थाप-पु विभाभ करनेका पहुत कम स्थान या अवसर प्राप्त होना । अस्पन्तः(थस्) – म [मं] भीड़ा भोड़ा बरके। अस्पायु (स्)-वि [तं] विसन्धी वायु वीकी की छीटी अदयार्थ-पु॰ [सं॰] छोटे वैमानेयर होनेवाका आरंभ । अस्पाद्वार-वि [में] दे॰ अस्पादारी । प्र सावारवसे अस्पाद्वारी(रिश)-वि॰ [र्स] विस्ता भारार चोहा वा अस्पित−वि [सं] पशका का कम दिया हुआ। प्रपेक्षित । अल-पु वंद्य या कुल्का माम (तिवारी वॉक्रे,मिसिरह)। अहार~पु दे अहाद'। सी [मं∘] माता; पराधक्ति। असामा=-थ• कि॰ वितासा। आहामा-वि• [था] वहा आक्रिम मशापेटित । † सी

ब्दारो स्त्री ।

बाह्याद्र-प्र [अ॰] परमैश्वर, सुद्या । —सास्या-पु॰ पर मैपर । - असाह-विस्मव और शापानावक बहार । ─भामोन─भाषीर्द्रायक प्रारः, 'तुरा स्रुवास रूव'। -का मास-कुछ मी भरी भाग छेनेसर (उस्रधी पहाई सियाई मस महादका नाम है) ।-बेब्री-ईश्वर रक्षक है ! —मियाँकी गाय−सोधा, भारत, विना छक्के पंकेस ।— (शे) अक्टयर~रंबर गराम् ४ (श्वकाप्रकाशुस्य नारा) । सम्हजार-पु• इवर-उवरकी बाह्य गए। **अस्टड**−िर नाकेश्यित सरस्रता-दे साथ गरत और वापर बाद्य वर्तियादारी स जानसेवाकाः ग्रीका । ए० विसा ार्वातका बाइसमें न निकासा तुआ बछवा। -पक-पुण

बरधक स्वमादः भाषापन और कापरवादी । अस्टरर--वि अस्टर, मन्त काट साप्ट्रवाह। भवंतिः अवंती-भी (रं•) व्य प्राचीम नगरः अल्पनिय उन्नीन मानद जनपर । ⇔सोस−पु॰ स्रोडी । सर्वितका नती। [मं] धरधम- सरबैतको माना ।

श्रद्धश−वि०[सं•] नित्नेदान । धु भीय वा सराव कुरू । भय-दप• [सं] यह हर वा नीचे हान, निमय, ज्याप्ति, करपता, बाम भान भाडिका नाथ कराया है। शबकर-४• [र्न•] बहारमेंसे निकतो हुई जुल आदि,कुड़ा। श्रमकत∼५० [गं॰] द्ववता गंद।

श्रवकतन-प्र (सं•) बादमा विमानम ! **धयक्र**पण-९• [मं•] (रिसी चीक्ये) जेरने सौयना भीने सामा। इटाना दूर परना ।

श्चपदम्भन-प्र• [मं] देखनाः जामना। प्रदण। सरक्तना ॰ ~ भ • कि • दक्षनाः समग्रमे भागा । अवस्थात - वि० [मं] देखा दशा वानः ग्रहीनः दृह ।

श्रवक्रकन-पु (शं•) व्यः साथ मिनना ।

भवका-सी (संश) भेवाछ।

बायकाया-तु [सं] रमानः शून्य रमाना श्रीरः, व्यवसार पासता अवसरा दरार किया श्रेमाचा इरसण, ग्रहीर रहियात । "प्रदर्भ-प काम मा मीतरीने अलग दीना, ५द्यम हेना रिराधर दोना । ~प्राप्त~ि भी नाम वा भीररांगे बत्तग ही सुद्धा हो, 'रिराय^ती

भगक्रिरण-प्र• [गं] रिगरमा दे 'जरार' । भगकीर्य-वि [मं] रिमरा हुआ। येनावा नुवा। पूर

दिया ग्रमा ध्वरतः जिल्हा ज्ञद्यक्षे प्रत्न ग्रम का ग्रवा की। -बारा-इ॰ सन्त्रपर्व प्रत धेन श्रीनेपर प्रावशिक्तरप दिया भानेताला वद्यान्ति हेत्र ह

भपर्राणी(र्णिन)-नि [गं] ब्रप्टवर्षे ब्रगने व्युवशी

यानेशला ।

धावकीलक—दु (गं) गुरी ।

अवर्हेचन-तु [तं]सिरीश्माः श्रमेरनाः भारमाः एकरीयः **भषकुरम-**पु [मं] पात्रना, दश्रनाः चरिनेष्टित करमाः मास्ट करना ।

भपकृतार-पु [म]वैम्प्य, स्प्रतिहति । विश्वपुर्शयस्ताः भग्नामग-रि (एं) दिन्ति। हु दिन्ता

अवस्थ-ति [र्ग] बहिष्ट्या हरावा हुमार जीवा वर्तवस्तुत्र । द्र विक्ति ते व्यक्ति व्यक्ति । वर्ष व दरनेवाका सीदर ।

अवरोग-वि॰ [सं] जिसके बाम नाचे सन्दे पुर हो। अवदेशी(शिम्)-विक (सं) कन म उन्तर करनेएक (कुस): अस्य या कार्ट भारतिकाला । प्राप्त म देनेक्क

921 (**अ**सक्तरमञ्च्य वे 'अवेश्रत'। अवक्तस्य-विश्विशे यो एवने योग्य अ हो आर्थण ममुभितः निष्। शसस्यः वर्षभागीतः। भवन्त्र-वि॰ [मै॰] विना मेंह्या (प्रीष्टा बरनन)। असम्बंधन-प सिंगी अंतम, पितादर रीमा । अधकम-पु (र्ध•) शीथे भाना, गिराम, अरोगदन ।

भवक्रमण-पुर [मृंश] वर्षप्र माना (शैश, हैश)। अवक्रय-द॰ (सं॰) मृत्या भागाः पारतः हरः मरहर हिरायेपर हैना । अवक्रोति-मी॰ (प्रे॰) दे॰ अरक्रम'। अवद्यतिक-वि [मंग] मेंगती सिधा दुशा । स्यक्टोदा−प्र+ [मं] कीसमा: शाप देनाः भिना । अवक्रिय−ि सि | औरगदमा हर। अबाहेर-प्र• [र्स•] (रधना, ताम । भवकाय-४० (चं] नाध वर्गरी । व्यवद्यास-वि•वि शिरोपे शिराया हुनाः विदिना गारित्र। अवहाल-वि॰ [मं] जिल्लार धीड क्यी हो। अवसेव-प्र• [सं] लागनः निया। आहोर-आर्थेट स्था। अवसेषण-४ (सं) मोधे चॅडमा या गिरानाः कापनाः निवा करनाः दीष कमामाः पराभन करनाः प्रचारनी दिरक्का दिशी बरतने ग्रजरने समय बक्र श्रामा (**अव**ध्येपनी-स्या [सं] नगाम । सपर्याचन-प (d) विमाजन करताः मह करताः ।

भवगान-प्रति । गहरा गन्ना या धार। अषगाद−५ (d+) इस माशरी मनुश्3क भिरारि । अवर्शह-पु [म] धहरेपायो पुंछी था पृश्यि। अवस्था-ति [सं] जी अपने मिपी ! इसमें ही स्कार्य ! अयराजन-पु अवराजना-मी॰ [+७] अरहा भरीः सताः शिरापारः पार शानाः निशे दरनी १

सबग्रक्तिन्-वि० [ध] जाराच (११११चा परार्ता विभिन्न । **असगत**—रि [गं] जाता हुआ, धाल; गरा वा गिरां हुआ।

बारा दिवा दुवा ।

अवगणना १- म कि भीमना निवास्ता । अवस्ति-छी॰ [र] । धान, नीमः जिस्दवानय प्रणी

नरी गनि ।

भवगय-वि (ते॰) माप्रस्थातः **बदगम, अपगमन-पु॰** (ले॰) वानना रामक्ता। मिरन वास्मद्र हाम प्राप्त करमाः नीच जाताः कराई हेता ।

अप्रशस्तित-नि [मं∗] रिपाणमा अवगाद-नि [र्थर] निर्मातन नीगर रेग दुनगः पतरा यमा क्षत्रा !

अवसार-पु [सं] सार्वांश बाली क्ष्मीप दा क्ष्मा धीरा बरनम ।

सपगारमाध-। हि.० सम्रहाना ।

पारी मोटरकार । **-कार-स**ि मोटर, दनागाही । **-**ख़ाबा-तु मोटरकार रखनेका स्थान, 'मोटर-गरेश । --बाह्रवर--पु॰ मीटर पत्नानेवान्य । --वस --छारी--ली भारमी ना मारू होनेवाकी गावी थी मोटर-इंजनसे परिचाकित हो। -बोट-सी सोटर-वंत्रसी पाकित मान । ≔साइक्छि-औ• मीऱर-इंबनसे पकनेवाली सारकिक 'फरफरिया'।

मोट(!-ना॰ दे॰ गठरा। मोदा-वि विश्वकी देवमें मांग्र मेद मधिक हो, श्र्वकायः मांसका वहे वेरेनाका। गाढ़ा ददीज (क्रपड़ा कागज)। जी रवका वा पारीक न दो (सूत व्यक्क्षर आरा); भारी; परिवा स्वमता सत्ता स्वृत (दुक्ति, वात); मदा; ≉ मक्नाम् पनर्रस्तः। [स्रो 'मोद्ये'।] क्या [सं] न्यरि यारा। −भन्यासी-प्र• साकदार भावती। -ई-सी दे कमर्मे। —कास – पुनिसमें व्यविद्य पुदि या कुशकता की भावस्वकता म ही । -झोटा-वि+ वटिया मामूकी (मनाम कपड़ा) । ∽ताका−नि इट-पुट, तगड़ाः (री)भक्ता, समझ-सी सूर्य पेयदार वाठीको समञ्जेमें असमर्थ अदिः। (- का-रव्रू-द्विः मूर्सः।) चभाषात्र=स्थै मारी भरी भारात्र । च्युनाई-सी॰ समगढ डोकॉकी जोडाई । —शास-न्यो सुब्धे सम्बद्ध समझमें भाने कावक वात ।-(ट)मळ-पु अधिक मीटा, धैने क्रवनाता आरमी । —हिसाय~श+ अंशवम कय मय कुछ कमी नेस । -सीरपर-शानारण या रब्ड रूप षे । स्॰ ~सामा,-पद्दनसः-सरमा, वश्वि अन्न-दस साना पर्नना ।

मोटाई-मी मीरा दीना, रबुकताः धन वा वक्का नर्ने । स॰ ~चडना~पर्मडी सरारती हो जाना । —झहना~ नमंड वा शरास्त दूर द्वीता।

मोद्यना-भ कि मोरा होनाः पैनेवाका होनाः पर्मही 🗓 वाना ।

मोदापा-प्रमोगर्द, श्यूकता ।

मोदिया-त बोग्र हीनेशसा सुबीः गाहा यंत्री । मोद्दापित-तु [संग] यक दाव-विश्वकी चर्चा कक्रमेपर

माविकाफे अञ्चलका छिपानेकी चेहा करते हुए मी शब्द भोड-पु॰ दाकके काम वानेपाला क्य मोटा बाग वसमूँग ।

मोस्म•-१ पुर।

माय-प सुबनका भाव भुमाना राततका पुगान वह जगह बर्बों से सरवा बूमरी दिशाकी और गवा हो। कागत्र आदि का सुका दुवा कीना । ~तो इ-५ दुवार ।

मोदना-म॰ कि प्रमानाः मुद्रामाः देश करमाः दिशा बन्तमाः सीयमा पीटेशी भीर फिरानाः कागत क्ष्मारि हीं किसी स्वानक्त बन्ध्यक्त दवा देना या बीदरा कर

मोदी-नो मराठी मात्रारी एक लिति । मोच-५ [सं] म्या कवा मगरा मनग्री। शावा । मातदिल-वि [अ] बिसमें प्रशंक (सम्ता) हो स

गरम म गर समग्रीशीला श्रीतृत हर्यका । मोतवर-वि [#+] एतशर सरीमा करने जायह विस

सनीव । मोतवरी-की [ब०] विदवसनीवता ।

मोताद्र−पु (ज॰) निवत मात्रा स्ट्राक, वह मात्रा जिसकी भारत हो।

मोतियसाम-पुण्या वर्णकृतः।

मोतिया-प नेलेका एक भेदः एक तरहका सकमा। सी। ण्ड विक्या । विश्मीतीके जेसाः छोटे गील दानीवाका । -विंब्-प ऑस्टोंमें पानी जनरनेका रीम को भाव^{*}

त्रापेमें होता है। मोती – पु पक वहुमूक्य राज्य की छोपीमें छे निकला है क्षकाः कसेरॉका एक भीवार । ● स्रो॰ वासी । -- सूर--प्र छोटी देरियोंका छण्यू। - झिरा-प्र छाटै बार्गो-न्द्री चेवक । -वेक १ - सी॰ मीतिया नेता । - मात १--पु एक तरहका भाव। -महस्र-पु दिश्लीक दिने की एक हंदर इमस्त । -मसम्रिद्-त्यो िसीके किने में बनी हुई संयमरमरको संदर गमबिद । -सिरी#--सी॰ मीतियोंकी माला। ~(तियाँ)का झाला-कानमें पहनतेस्य एक सामृश्यः। गुरु -दगसना-ग्रेंद्रशे ग्रेपर मपुर धन्त्रवर्ण निकासना। -गरमना-मोतीने वस पक कासा। — ठँडा द्वाना≔ मोठीका हट कामा था वेधार ही बामा। -धुक्तमें क्रोक्तना-सुंदर, बहुबूहर

बस्तुकी नकारी करमा। -पिरोमा-गीतिकाँ श्री सही बनानाः बहुत संदर असर किरानाः सुदर लक्ष्टि शस्त्राः वकी सिमाना श्रीकमा। -होसमा-मोती बटोरमाः रिना महनतरे पन कमाना। -(तियाँ)सं माँग भरमा-र्मीयमें मोती विरोमा । -से में ह भरना-गुधरायी वा सरर वासमे रीहाकर निकास कर देना ।

मोतिकार नेहरू-पुबम्म ६ मई १८६१। वदालतसे काकी रुपया और वंश कमाया ! जिल्लांबामा बाम इस्या बांदरी वाँचडे शह बाएने हैए हे किए सर्वरण स्याग रिया। देशके शास्त्र भाव मिलकर स्वराध पारीकी श्यापना की भीर मारतके किए एक मंदिवासकी रूपरेरता भी वैवार की । ६ फरवरी १०११ की भावको ऋगु हुई । वंदिन वदाहरनाम नेहरू मार्ट्स एक्साव पुत्र है।

सोयरा॰-वि मोदरा 🚉 । मोषा-च शागरमात्रा ।

मोद-५ [तं] दर्व बारानः सुनंबा - मादिमी-भी अभुन।

मोदक-पु [गं॰] नष्टहा मिस्रोर यह कांनंदर जाति जिमकी बरपंधि श्विष विदा और शुहा मात्राम बतावी थयी वे मधुनादिशा वि मोत्रतन्ता - कार-पुर इनदारे ।

मारविका-मी॰ [त] मिहाई।

मोर्डी-सी [मं] एक तरदरी गरा ।

मोदम-त [बं] इवं। भार बालंद देना। सुर्ग्य शिक्त रना । विभिन्नस्य

मानुमा - म कि ब्यामेरिन बीना, प्रमग्न बीना; मुर्गभ पैरामा-कृति कृति सब कृत्र बहारत । ओरत सहा सेंद कर्मादर -राम । स दिश्यमध्य दरमा । मोद्यंती-र्ग [+] बन्धा हा।

प्र रहतींकी सदीन करनेवाकी यंत्रकार रेखा । न्द्रीपन प• भाषा द्वीपका प्रराजा नाम । ∽जास्ठ∽पु• भीके स्रो रंडका जुनाएमा पीवाः जुभारका दाना । -- क-पु क्स्यार्। -पास-पु॰ रहेकोः प्यावः वीतः बरामातीः करका पाक्षवद्धा पेड । -बिंदा-ए वह दौरा निसमें विदसदित प्रदेशा हो । -मच-पु औद्योगसाम । ~मध्य-पु एक तरहका बीका एक चौहारण अका पाँच रिबद्धा एक वस । —सास;--सूक्त,--सूक्त्य-पु॰ दवा सार । -बयान-पु॰ एक बहरीका कीहा (सुसत)। -शाक्र-पु+ यह प्रधारका शाक् । -शाक्र्-पु+ यह शास जिसमें केनल बीके आदेखा व्यवहार दोता है। -सुर-पु॰ जोस्धे चरार । मवक−पु[सं•] की। यवश्य-दि सि वि दोनेके स्पत्का विसमें का बीवा गवा हो । मदल-प॰ सि] गाबरा गेर्ड देगा तेव घोडा। यूनानका निवासी मुस्तमानः दाकवरण वामक राजा। -हिए-पुरु गुरुगुरू । -- ब्रिय-पुरु मिर्वे । मबनाचार्म, मबनेश्वर्−प् [रं•] यक्त जातिका पर क्वीदिवाचार्यं । षवनानी ~सी (शं•) युगामकी मात्राः वृतानको किपि। मबनारि-पु [सं] कृत्न । स्वमास्र~पु• [र्श•] मिनिकाका एक प्राचीन राजा। मवनिका-मी (संग) तारक्का पर्याः क्यातः । मचनी-भी [सं] वरव बाठिको गी। वरनको मी। ययमेष्ट∽त [सं] एक दरदका कहनुमा एक तरहका प्बाबा मौनका पेश मिनी सीसा । ययमेद्य-स्रो [सं] कंग्ली समूर। भवसती−स्रो एक वर्णद्रच। ममक्षक−पु (सं•) यक वदी। यबस−प्र [सं•] यासः मूसा । सवाग्-इ (संग) वी या नावन्त्र श्रक्तहर शहा किया इना गाँद भीको काँथी। मवाम-पु॰ [सं] जीका हुँ । -- अ-पु वनदारः अत-वायभ । बबान-दि [तं] वेयरान् तेत । ववानिका, धवाबी-ना 😢] अवदायमा रहराव 📚 । षपाश्च~तु [सं] बदाना द्ववा की । पवास्क-५० (सं•ी जीको बाँजी । यवारा-४ [र्न॰] वीध्ये ऋछक्ये हानि श्रृंबानेवाहा ग्रह भोषा । बबास यपासक~५० [लं] ववाला नामदा पीवा; वद वरहका बहिर । ववासा-सी [मं•] यह गुप्त। बबाद्ध-दु [लुंग] बबस्यर । वविद्य-५० [मं] मरने छारा धार्रः भीवरानः श्रीनः कारेरदे रह मंत्रप्रा कवि कमित्रविष्ठ । वि सहने धोसः समिताः। वर्षीवर~तु [मं] पुरायवस्ति वक्रमीन्द्रा एक प्रश नायराधे मनुसार दियास्या दह दुव ।

थबीयान्(यस्)−वि॰, प्र॰ [सं॰] अपेमाकृत छीता । स्तो • 'वबीयसी' । यवोज्ज्ञच-प सिंगो बदासार । यध्य-वि• सि• दि 'यवस्व' । प महीसाः भीका सेत । यय्यावती-स्रो सिंग्रे वैदिक कानसे एक मनी या नगरी । बक्षमधेप-विश्व मिं विश्व । षश(स्)−वु (सं•) कोविः शुस्वावि श्वनामः प्रतेशा । म - गाना-प्रथंश करनाः इत्य होना । - मानना-श्रुवय होनाः निहोरा मानवा । यदाव-पु॰ [सं॰] बस्ता । वशक, बदाम~पु• [स] यह प्रकारका हरा प्रश्नर की रिजकोसे क्यानेवाका और रोग वृह करनेवाका माना बाता है। संगे बच्च । यसस्कर-वि (संग्) क्रीतिजनक (वहारकाम-वि सि विद्योक्तिमा। बरास्य-दि [सं] स्वातिहारह, बद्धस्टर । बसस्या-की [सं•] बोनंती, ऋदि मामद पीथा। बशस्पती - ली॰ (र्थ॰) क्षेतिमती। यसस्याम् (वत्) -वि [सं] पश्रवी कीर्तिमान् । बशरिवनी-की [सं] बनक्वासा महाक्योतिपाती। र्गया । वि॰ स्ती (बह नी) बिसे यस प्राप्त हो । यशस्त्री(स्थित)-वि [सं०] सस्यात जिल्हा स्थ वश हो। धनी-दि वदासी। बसीस•-वि धीर्दिमान्। बद्यमंतिक-स्थे देक विद्योश । वसीयाथा-छी॰ (सं॰) क्षेत्रियान, गीरवद्वश । यक्तीव-पर्व [सं] शारा । दिर यस हैनेवाला । वार्गोहर-स्ती॰ [सं] संदक्षी पानीः विशेषको माताशासामा १६ बर्देश्च । -मंद्रय-पु॰ हृध्या । यशोधन-रि॰ [सं॰] वर ही निस्का वन है, दशसी। यसीयर-वि॰ [त्रं] बपना यस कामम रसनेवाताः वसरवी । 🖭 रहिमणीये कारक हामाना एक प्रका एक अदेत्दा सामा मानन मानका गाँचमाँ निम । यशोधरा-नी [तं•] थीतम हरकी पत्नी। सावन मान-की श्रीवी राष्ट्र । यक्षोपरेष-इ [सं] यदीवराम्य पुत्र राहुछ। यशासूत्-वि [मं] महिन्द, मामी। वसोमति-छा दे वहोसा । वार्गेमती नहीं मेर्द्ध फनी।[तं•] सुरूपप्रध गृतीया। वसामना-इ [बंध] मार्चेच प्रामेश्व एव बारिया षद्यीमाधष-५० [वं] दिष्यु । वशीबर्ग (व) -पु॰ [मं॰] ब्रोजित । बसीहा(हन्)-वि [ते] बग्रस माध ध्रमेशन। पष्टप-वि [मं] वर में । यष्टा(प्)-इ [मं] बहदर्श । यहि—धी [र्ग•] भागी ग्रहो। प्रतासा संसा स्ट्रां हाना देशे मुक्त सुरेशा मोतियों वा एक मकारका शारा

माना-मी • [वं] अवमण्याः मोहात्य-र [] जामका देश । माहारा-दि॰ (वं॰) हर्वेद्रछ ।

मात्राहरा-को [मंक] अध्यक्षात्र । वि क्या के मोगा है।

मीदिन-दि [मं] मुरित क्ष्युंच दिवा द्वना ।

मोदिनी-स्त (संश) अवधीया प्रतीः चनेत्री कन्त्रीः म'रा।

मोदी-प्रश्वान भाषन आदि वेबनेवाना, वर्षनिया।

- हाना-पुरु मंशह । मीदा(दिन्)-दि॰ [मै] प्रमश्चः प्रमुख करमेवाकाः सुन

विया सुगंद चीनारीयाका । शाबुक-बुक (से) मार्था । मापु-नि घे'ट् स्रा

स्रोत -g दे पाना । मामा-प्रमुक्ति मिला । तेतु राजा स्थिए।

भौतिपा। – स्पै श्रीश योगाः। मीपीप्राप्त-त [मं] दी तीम भएतें है संबोधने बना रिमी नामक्ष मध्यम सांदेशिक **रूप** ।

माना राह्य मनीन-मी [मं] बधाव वरनेवली वर महीम बिगमे १६४६ मध्य राज्या और दशेष होता मायमा-पुरु बहावार्षे बागीवासी एव समस्याम सर्वि ।

मोम-५ एक इसके गेने श्लाश दिएकरेशाना परार्थ क्रिएमे दृष्टाची प्रतिसर्वे अपना धना बनाती है। प्रभावा दुशासिदीका तेम । −शद्र−पु॰ सीमदीकीने नमाने

बाबा । - जामा-पु मोमका रेपन पहाना हवा इटा रिन्दर वाती हिमन बागा है। -हिस-हि मरम (रज्यान: प्रवर्गीवस । -बर्णी-स्री भागार भीम भगवर बमारी हो बधी निमे रोधानीते.

तिथ अवाते है। सुरू **~डी लाफ~**मरिवरनिय स्वति जिल्हा ही शह चारी अनवा की १ **−की मरियम**− #डि सुरुमार स्थी र ∽होना~डिपणना नरन चीनाः ब्हीर श्रदेवार श्याने इतिए ही माना ।

मोनिय-नि (४०) देवानाप समा । ५० सदा दुलक-मानः गुनरक्षान जुनारश क्षीका । क्षोमिया-मा (यान) स्तामा मनकर रथी वर्ष मन्तर बंध देलाना निने गानेन एक नेदे नियं सम्प्रार

बराग द र मीमिकाई-भी (पार) एवं नश्यका रिकालपु । शुरू -विकासमा-करी हैह 🗢 नेता। बहुव संपन्ता। भोजी-ति । येव पेमा येमध बना पुणा । -धीर-क्षा कर प्रदेश बहुत मुख्याब है । है - औसी-बु

धोष्य-१ यान्यन्दे विद र मुख्यारेवे की देता । हे −१८२ − कि. कि.चे. भी पन कि. वाया वी क मोर्राप्त देश है। इस इस इस इस्ट

LE PERSONANT REPLA

क्रोरूनम् वद बर कर्षे ६१ क्या हराम और नुगारे

विष क्रमेन्द्र है अहर ००वीहरू०~पुरु है। तीव ग्रेवा⁷र है -वीरका-को कोर्रकोषे कार नहीं हुई भई बाद हिन्दू-मू ् ोकी पर कारीताना।

पुर मीरकी बुंठर वर्रोडा बेंबर । - ग्रामी-पर रेपहर विमानेशमा १ -ग्राहरू-मी देश विग्रहम १-१४४-पुरु दक्ष राजा जी कुन्नहें बहुमें। बहुते हेर स्रोते निरवानेके निष् तैयार की यदा बार --प्रशी-मी पह नाम जो भारते बंशके बाहराको हो दह लाहर

वृतिवाँ । —चास्त्र—पुण्णकः नददश्ची कागृत्तः। —हापः

र्थरा भी भीनमेंने अंदलकार ही के पा है जनानही यक बागरते । -पान्ता - म भीरता ग्रेस सीहरता है। क्त्यती । -शुक्रुप्र-प्र- वीर्परावा गृहत् रिने एकः नीबादै मन्य कृष्य बारम किश बरने है। - हिम्म-

भी। यद प्रदी है मोरका-पुरु (प्राप्) मिनेदे रहार्च उपदे भारी और बोता हो सार्थः पुरुषे ग्रामेश्वे निष् शेरा हो बने बाहित मोरपेरर वा उन्हें बीनर रहायानी है। -वंदी-धो॰ सार्वे, दुस भागि द्वपुनेतन्ते वरने वयते पुर अवनेका वर्षक करना । शुरू नक्षियान बीएवार्डी बरना । -बारमा -हेना-बीएम बीएन । सींक्या-प [का] जबी बहुँपनेने मीरेशर बक्रनेनमी बीकायम निवेदर भाग दह की वान्दी पेरेरी मा कावती है जेवा आहेतेवर बसा द्रमा मेरू मेर्निरेफ न्द्र बाति । अ० ~लावा~वेद रणनाः वाष सं ^{से} ^{के} रण प्रक्रिया बादा च्येत्रना । बोरट-पु+ [शं+] ईसादो अपः प्रमाने १९४ राप नाम देश क्षेत्रीया केश बनुवेध स्था।

मीरश~मी (र्व) वर्श बना ह मारम-गा विधान ह मीरवार-१० हि॰ है आया। वर्षभेश्रास्त्र द्वि मधा । मोर्की—बी+ गारा गोरा अपने बटर नेथा किरा र मी।या-९ व्यक्त सुन्धा व भी (मर्रा मेंपाबा-नवन कि दिशामा है कवारे दे सूत्रे हैंगई श्रेवारियों सन्तवा ३

मीरी-सी बाबी। वह बनीरी संबंध व बनीर हुन्छ। सीर्षां-पु देश भीरवा । शास-९ ज्ञा रागः। भनाम नशास-३ रण्डाः राते भी । बरानेदी बागु केपांबरमा होता। मुक्त करणाल्धीको राम ने बरमा प्रतिको प्रविदेश म तमा १ -वहामा-दास भाषा । परेमाप्टरी मिलाइ था व्यक्त अस देशर क्षतीतमा हाल प्रशास है

Shalfarel Hayes सामाना - म कि क्षेत्र वा वा वा वा ming-g [wo] et au t सोपाया-सक दि है 20 6 क्रोल-पूर्व कि है पेरिय प्रया क्रीम जाना वेश है

क्षेत्र-वर्त केंद्र क्षेत्र वर्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष

मीक्सार-पू दीवासा दीरदी ।

मानवीन्तु है भेतर ह

ल्या बॉरा टो । रेस १ लहाइ-३० देश्वारी १ ल्याचा-हि बान बमारेश -मयु-इ मुद्रेश नेप्रेस्ट्र -पंत-इ वह प्रवाति वि में को हुई छान्छ छाना में समयका दाल क्षत्र हा ह यहिक-तुर (r) हेटा स्पीटा अन्यप्रस्ट ह

यहिका-३ । । इसे करी देरी मन् बार्ट बादयी। दार यही। पश्चिम्मरगन्तु (ग्रे॰) वन्को इंतर वर का उद्यव (एमन्) । सष्टी-भी॰ [शं॰] गु?डी। यान्डिनी यन्दा जिसमें दीव

बीममें ग्री ही है यमार-पु [४०] श्रदित प्रमृत दीवना वार्या द्वारा अजन्ता सनुष्य । वि शार्थाः ∽यग्रल−वि वर्षाकीर

सरक्र-पुरु (११०) यह १९७ धरानेंद्र अर्थेश क्रान्डस्ट दिना ह यह-६५ िधार शमुखा भिन्द सर्वाय (सत्त कार भीताची हो पद्धार होता गानी आहें। बीट बहाबी है निय प्रवेशक होता है। दिल्ल करून समूच क्षमध

केप साही केली में अन्य कोए जनवाशायें का की सन्ता है)।(१९ वर दह देशाव को रूप होती है छर षष विशेषादा दाय करता है- हेने वह आहमी । यद्वी-भगदम् स्थादनर, इस बराह । यदि-मर्व बढ्डा विधन्ति सन्ते दे बढ्टा पुराना रिरो क्या हि अहाहै शाल प्रमुख क्रानेस्ट हिटेका

क्षी ज्ञाना है। यहिया-पु वर्ताका पुत्र भी हैलका पुरश्ये यद मारबह बा कार हैमादे (देश है) होनेका समा पर लागा भा (प्रत्यक्ष कर दिया गरा था प्रत्या पूनरा नाम mark 31

यदी-भर्ग (साने हो) विधिय करें। यह बह हो । यहूच्-पुरु(दर] ६६ हेए र्रमच्याकासञ्जासक बहुन्त-पुरुष्टा कीवा सहसा क्रिकेट अपने क्राप्त का राज वहुरी बहुर ह बद्ददिय-यो बद्दरेकी भी । बद्ददिबा=द्वर दिनातीन केंद्रबन्त नातुना बनावा HERE WHI

afaiel afeiten na Afternot arts मॅचमार-क रे इस्ता । माचि नी उत्तर श्राप्त भारति अववाह क्षेत्रिक-दि हिंदे देवपान ते। erang mount for all time solvens an का कथा। दिव पानी । अही नेपार हिंग्युल होग्या है --

मक्टबीलयः एवर नेराश जिल्हा नेश्वर क्राफ्ट कारिय

er a tier feliget was so and weller PERSON TO PRESENT (C. 2) ARE EMPTY MARKE E MADE IN THESE METERS AND A PARTY IN -wat parel)-et fifti free n 3 etcl BEF FEET I'M I MORRELL IN NOW THE E

Pagarta ta - Grang of grove electrics;

केशन्त पुर्याच्या दिस्त्रहरू विद्यापून । न्यान भीक के परवरतियाद (दशा, आधर्ष) । याम-५० विमानवार मिन्नोबानागर प्रेमी के किन्नो

देशक बाबनी जेवर बनाय है र क रिक एक (रहाराट) र याष्ट्रग्र-पु [म] मान रमश घट रेएटेका राजा माना एक शास पुताप विगाद द रूप प्रत्य हो। ~क्रियारी~श्च निवार के रेसक. कार्य र याग-पुरु (तंर) यथ । -शीगुन्त-पुरुष्ट्रिय ४-१।

याचड-१ मिने मेर्टमेरना, (गारो) थायक्ता~भी [रो] धेरा मोनेशकार (५६/६ थाचन∽3 [सं]दे 'बादन' (मे } ह यायमध-पुर्शः ।] वादसः। वाचनानम् कि अर्चना काम्यः मन्त्रः। स्ट 📳

मांबरेदी विकास वालप्राय-वि [में] वा व्यावस्थिता शब्दी वाखिन-दि (र्ग०) प्रादित अभागाता । पुर्व किन्तुति। वाक्तिक-प्र. ियंग्नीयो स्टा वाचित्राति)-१० हिंगी (नगरी। श्रापी । वाविका-वि वि कित्रेगे विशेष भारत है। बारमा-स्था (त) देव बांबा । याच्या-दि [बंब] बाचना दन्ते शेपर् के देव सा

याज-पुरु (११०) सन्ना यद बरोगामा २६ व करे गार १ बाजक-दे० [र्शक] बंध श्राप्त श्री श्रीतिक हं इत बाबी: सान बाबी । काळल−५ [स] बटकर> ६ ३६ ६ देश of I need of the fact that पात्रमान-३ बबद बहमा है। याका-दु (या] ६०१मी संप्रकी। याजिनकी [मं] इन । प्रत्यक्षानेगण। यामी(मिन्)-रि (र्ग) वश् बरोक्त राज्यान्तरा बाह्य-वि (+) बहरा अवि ।

वाचुपी-वि की [लंग] बसरेंदने धार धारेरणी ?

बाब्रस-१० (म) दावाम है। सब दश्री अनव रीम बाओ अनगेरे पर हो वा बाग अनदी वर्ती के HE & STRING MEN STORE TO WARTER TO रीती वार्ष क्षेत्र प्राप्ती अंग्रज री सर्पत्र से हैंग्यॉर 87 17 W 1 बन्त-दि (१) बरशाबन्द स्ती। बामग्र-पुर िदश्यक्तक सन्दर्भ STREETS TO SEE STAND OF SAL would be apply use monthly also determined the दश कृषि सम्प्रकारक वृष्ट्री देश्रीतः कार्यवस्त्री 40 46 F amenti-may I'm altain the fait militaria [] an den unbeimi umig Rinn W alf gamite efft deilte Ein gint ga.

matte apacht weren't feet

A PECTATE

militarile for passion and article literati

सीयण-पु (से] भुरामाः छहनाः हारनाः वर्ष । मीपयिता(ए)-पु [धु] भोरी करामेवाका कड़ कराने-राजा ।

मोड-प [सं] मुच्छो। अञ्चान अविद्या। वेहादिमें आस्य-नुद्धिः समताः झांतिः (सोइश्रनितः) हुन्सः ११ संवारी मार्गोमेंसे एका 🗢 स्नेह ! -बस्तिस-प्र मोद्दशस्त्र, माबाजास । - मिद्रा-सी मधान और अंपविशासमें वृता रहता । -निदाा-सौ॰ मोहराति । -पाश-पु॰ मोरका शक्त । -भंग-पु भाति निवारण, बग्रानका हिरोमान १ - स्ट्रां - पु. गीवमें बाधनेवाका मंत्र ! - सुद्रव -व संबरायामं रियत एक स्तीय । -शान्ति-सी जवाके ५ वर्ष गीतनेपर बीजवाका सकता माह-कृष्णा शहरीकी रात । ∽क्षास्त∽प्र मोद्द वधान शरक दरनैदाका

श्चाक प्रेव । मोइक-वि [सं+] मोधनमकः सुन्ध कर हेनेवाका। मोहका - प्र नरकन नारिका मुँहा वस्तुका नगणा वा कपरका माना दे 'मीहरा' ।

मोइतमिम-व दे 'मुइतमिम'।

मोइताज-विदेशहताय। मोइन-वि [मंग] मोहनेवालाः मोइकारकः यु मोहना, हुमानाः बामदेवते गाँच गार्गीमेले एका कृष्णका एक मामा धुरत संगोपः (धनुक्री) वेसूच क्राहेनवाका मंत्र, दक्ष #सिवार। वत्रेका पौथा ।~भोग-पु [हि] यक तरह का बक्का। -साका-की छोतके वासीकी बनी हुई

मोदनक-द॰ [सं•] चैत्र मास ।

मोहनदास, कर्मचंद्र शोधी-पु है गिना । मोदना—सः विश्वतमानाः एकना—'माबापदि दृत्वदि यह

मीशा≔रामा । अत्र के सुरव होना । मोदनास्य-५ [सं] संबरक्ते चालित एक शला वो धक्र-

भी मृष्टित कर देता था ।

मोहनी-को [सं] माना। पीईक सागः मोक्क प्रमान पर्योक्रापः एक तरहक्के जुड़ी । वि स्ती है ॰ मीहिनी । मु "बाह्ममा-मम मीद केना जा, बरना ।

मोहनीय-दि [सं] मोहने बोग्द।

मोइफिल-सा॰ दे नहर्तिक। मोइस्वत-ला॰ दे 'सहस्या।

मोइर-की दे सुदर।

मोहरा-पु ररतन भादिका हुँगा दिशी चीत्रकः कपरका वा मामनेका क्रिएसा; शेनाका वद्भावः शेनावा अग्रजायः प्यानोडे मेंदपा बॉपी जानेवाको जाली। लेगियाका बंद या तनी। बाहर निष्ठकमेखा छैद वा हार। (का॰) दातरं बढी mið i

मोदरी-सी दासमेक मीधेकी औरता गुँद पार्वेचाः बरनम बादिका छोटा ग्रेंडर 🕆 वह रक्ती को सरहते वर्शकी में इंदर समादर पनदेश बीव दी जाती है।

मार्थीर-५ दे सर्वर । मोइसव-सो दे धुइसन ।

मोहता-५ दे 'महरता ।

मीहरर-तु दश्रक्ष मन्तिर्देश्य एत्या तुरस हेर दार ।

मोहाछ-पु देश 'महाल'। वि दे 'महाल'। मोहिँ मोहि॰-सर्व॰ सुसे सुसको (बब भीर बनपी)। मोहित-वि॰ [सं] भोदपाप्त, मुग्या श्वमाया ह्रमा ।

मोहिनी-वि सी॰ सि] मोहने, मन तुमानेनासे । सा एक मध्यरा। विष्णुका वह नारी-हम को सुनुह मंधनके समय बन्होंने देखींको धक्रमेके क्रिय बारण किया याः वैद्यादा-सक्का एकाएसी- नारीका यह मेत्र- सोहकारक प्रभाव काह (भा)।

सोही(हिन्)=वि [छं] मीरकारका माहत्रछ। हमेह करतेवासाः क्रीसी ।

मोहेकी-मा॰ एह तरहकी मध्यी।

र्मीगीर-विरुक्ती शुप मीत। मींब⊸वि॰ [मं] मुँबका बना हुआ।

सींजवान-दि [से] मुंजवान परंतपर वा वससे अपनत ! मीजी-ना॰ [थुं] मृंबद्ध वर्षी हुई तीन हवोन्ध नेसला। -वंबा-वंबल-पु मूंबढी करवनी बारण करता, सप-

संवस । सींदा०-पुणक्याः।

मौका-पुब्धि] बरित होनेका स्थान वामासका रिक्न होनेका रवान (प्रकानका सीका)। प्रप्युक्त काक अवसर । -(क्रे) चेमीक्रे-म आहे जब अवसर-भगवसरका विवाह किये विना । अ्• ~तकना,~हैराजा-अनुकृत अवसरकी राह देखना चार्तमें रहना। -हेना-अवसर अवद्याश देनाः −बात है∽समय मिठा हो । −(क्रे)पर−पेन वक्तपरः भावत्रवद्भगाके समय । -से-स्पप्तः समयपरः

ववावसर । सीकुक्ति−पु॰[सं]क्षीमा।

मीक्क:∽दि [ब] रोका ध्वराना हवा। रद निया हमा। होश हजा: मीक्टोन शुहाबा हुमा; वक्फ किया हुमा; अवसंदित मुनद्दम्र । पु बद बाग्रर जिल्लार बार जिल्लाहे वहलेके मक्षरवर हरकन (बेर अवर वेश) म हा।

माबको नहीं लि के बाद या होस्सीने सनय दिया बानाः गरहरको ।

मीक्टिक-नि [मं] मुक्तिके लिए प्रदान करमेशका। प्रभोती ! - तंदल - प्रकार सदा। - दाम (न) -पु॰ मीतिबॉरी करी। धर विशेष । "प्रसद्धा "प्रास्त्र-स्ते मुकाशुनि सीपी। ज्यर्-पुर भर्गतेयोदा द्वार या नहीं ।

मीक्य∽पु[र्न•] सृद्धना मील । मील-वि [पेर] मुगापंत्री। पुरु मुरामे दानेवाचा पान (अमस्य महान अशान्य-दश्य ह)।

मीगरि-पु [मेर] एक माधीम विकृतकार्य । मीरार्य-पु [म] सुमारता ।

भीक्तिक~ि [मं] सुररश्रंवरी प्रवासी । मीरप-इ [मं] सुरका।

ग्रीप्य-पु [मं] श्रीपना ल्युबंबना ।

মীখ-বুমি] বৈল (রুখ)।

मीत्र-की [#] जदर दिकारा धमडी शहर शहरा सुरा बार्नाः समृद्धिः बमार्थे विषा दुवा राम-विश्वि

निश्चार 🛚 पर्वे है लागमधी और नहि । म -

3650 [tje] यह कराने याग्या यह करमैका पाउप−वि मधिकारीः विसक्ते किय वस किया जानः वी यक्षमें दिया पा पहाया जानेशका हो। यो वह करनेसे **प्राप्त** हो (इद्धिजा) । पुरु यह इती । मात-वि•[सं] गत्। व्यतीत । पु॰ यमना कुपा भृतकार । मातन-प्र• [सं] नरका, परिशोध पुरस्कार पारिसोविका मितशोद । यातमा-छी॰ [सं॰] अति कह, पीड़ा; वमकोकसी दंब-पौद्रा t बातस्य – वि [सं] बाक्षमणवीस्य (सृषु)ः भाकसमीय । बाता(तृ)-को • [तं] पठिके मार्रकी स्री, नेठानी वा दैवरानी । वि श्रामेवाला । पु सारवि । मातायात पु [सं] आमा-काना, गमनागमना च्यार साम्रा । बातु-पु (सं) रास्ता वक्नेवाका, पविका वामेवाकाः कार, समया बाह्या करे। दिसा असा रायस । -ध्य-पु• गुग्गुरु। – भान-पु सहसः। – भानी-सी॰ राधसी । सालु≰−<u>पु</u>[सं]पविक्रः। यात्निक-प्र• [सं] एक नीह संबदाय । याचा-सो॰ [सं] बानेको नियाः सीर्ववाचाः वाविवीका समृद्दा मेकाः मार्गः कान्यापम वामः प्रस्थान वदार्थ शुद्रवाचाः वचाव व्यवहारः जीवन-निर्वाहः जलावः मृत्य याम-पुक्त, रासलीबाके बंगका बंगालमें अवस्तित यक शमित्रव्। – प्रस्तार– दुर्जीर्वेदाता। थान्नापास-पु धीर्थशस्मिति देवदर्शन करानेशका पंदा १ याद्रिक-पु• [सं•] थामोः राष्ट्रयर्थे नानाकी सामग्रीः रोर्धवातीः वह की भीतम-पारमके प्रवृक्त की। यात्राका क्टेंब्या बल्प्या प्रयास । वि यात्रा-संबंधी। रीविके अनु सार, प्रवासुकुन । थानी(जिन्)-पु सि] वात्रा बरमेशका मुसाफिरा तीर्यान्त करमेवांका । दि॰ वी पात्रा कर रहा दी । याबासच्य-दुर्मि] बबार्वता असस्यितः भौनित्व। याधार्यं नद्र [सं•] यथार्थ दोनेदा मान यथार्थता, सखा वर्त्रकता । थार्ग्यति−पु [H•] समुदा वरत्र । माद-गी [का॰] रमृति रमरवद्यक्तिः रमरग करमेको रिया । "मध्याम-स्मै॰ भूतकारिक दशासी बार ! - मरुप्रा-स्ये शुराधी मारा दक्षीरीका सनाम सनाकी रगरत । [मु॰ - होमा बान-परयान होता ।] -भावरी-की वार करना विश्वात-पुरशी करना पत्र भेतना -गार,-गारी-नो० स्मारक, स्कृतिकिद्वा ~दार्त-सी स्मरण्यानि स्मनि। स्मरणार्वे कियाः द्वा रेग । मु॰-करोरो−न्मरण बरीमा शहतार्थेमे ।-क्रिया दै-बुबाबा ८। - बरमाना-बारवाद वा वय वरा-विदारीका विभीकी नुष्रामा १ पार्य-प [गे] बहुदा बंध वा बुद्धा गीवन । वि बहु-गेर्दो। −मिरि−५ ४६ वर्ततः।

पाइयी-भी [तं] ५३५ त्यो सीह दुर्गः वृद्धिने ह्याः

याज्य-यामि महिरा। गृहनुद्ध (मा)। बादवीय-वि॰ [तं] शहरूतंत्री ! पु॰ गृहयुद्ध । थावस्मौताम योदसांपति-पु॰ (सं॰) दे॰ 'बाइ बिट'। थाषु-पु॰ [मं॰] पानी; कोई तरक परार्थ । यारक्ष-वि [सं•] दे 'वाद्य'। बाहरिककुन्दि॰ [सं] स्वतंत्रः येक्प्रिकः अप्रत्वासितः। =भाषि=ंसी॰ ऋषधीय किने विना न शीटनेवाकी **गिरकी बस्त ।** बारका~वि (सं•) श्रेसा, विस प्रकारका । (सी: 'बारकी') थाइ-पु [र्श•] बदुवंशकाः बदु-रविधी । याम-त [र्व.] स्वारी, योका-गाड़ी श्रयादि बाह्मश्रयमन, वासाः व्यविदानः वाद्ययम् । 🗝 र-पु । स्वरं । –पान्न −पु योत्। −र्थरा−पु दोत्रमंग । यानक−पु[सं•]नाशी दक्षनः। यामी—ज [अ] अर्थतः मत्रक्रवाहि है ! यापन-दु (ते॰) विदानाः चन्ताः स्पवहार करनाः परिस्थामा निरसम निषयना । यापना~छी [सं] समद काटनाः महानाः योगम विर्वाहरू किय दिया हुमा प्रम । यापनीय-वि [र्स] थापन करने घोग्य याच्य । यापित-वि [सं] व्यतीत क्षिया हुमा। हुशया हुमा । यामा-ली [मं] स्था बाप्य-वि [मं] वाक्त करने बोग्या छोइने वोग्या मोद-मीव राज्यीयः नियमीव । पाञ्चन-(का॰) भागरमी, कामा पूस, कप्री आगरमी। −मी∽पु॰ पाने कारक दरतुः ऋच-विक्रको रक्षमः व्यपिद्वार १ याप्रता-दि (का) पावा हुवा सिमस्त परीमे-भनर यास्ता 🕽 । यार्वदा∽दु साप्त दरमेवाला । याव−९ (ढा॰) पानेशका (धमरू शम्श्रीमें दीने दाम थार्थ, 'कतहसार)। याष्-पु॰ (फा॰) ब्टट्टा होश बीश । षास~पु[ली] मैपुन संमीग ह थाम-वृ [र्न•] पहर: शीम घटेका शमदा बाक शमद: नियंत्रम रोका यमना मगति। थान स्वारी: शरदा वद प्रकारके देशता र वि । यम-ग्रंपी । श्मी र रात । - योप-वि वहर वहरवर वेन्द्रने शब्द करनेवाका । पुरु गुगाना मुक्षः वडी ै − घोषा −सी पहीता वंत्र परियात । --भाकी-भी समय बनानेवाची बडी । --वसि-प् रंहा - पृत्ति - स्ये सदर्शना । यामक~पु [मे] पुनेशा पराह । यामकिमी-स्री [मं] कुलवपुर वहिना पर्याप्त । बामक-तु [ग्रं॰] जुरवी वर्ष्या वस्तु प्रसारके तंत्र-प्रंथ-मक्त विष्मु दर व का शाहित्व-शामन। वाभवनी-सी॰ [मं] रान । षामाता(तृ)~५ [ंं] रे नामाना । यामायन - प्र[र्ष] वर नो दम दोवर सवसी। षामार्द्ध-५० (में) चहररा अन्या भ्राम 🐉 धृद्ध ।

वामि वामी-की [मं] वामिनी रात्र इत्रवस् गरिमा

मारना - गुरा भीगा ने न बरमार वहर्रे बहमा । - में | मारना - वर दिए वरणा र भागा-यनमे राज्या यज्ये भागाः विनीशं क्या देने भारिक्षे र ता होता । मीहर-५० 😾 } स्वम, हरानेश क्रम्ह होंद । मीजी-वि जो समये भादे वह दर दरनेशन। मार्गरी है मी 🚰 ((अ.) वपन दिवा युक्त तुमा युमा हो ह बार्ज बस्याम । शेरह छारे विवयमे गुह (१व) । माजुद-दि (कः) उल्ला सुद्ध निवन विद्यमान, सामने गर्गा उपनिष्ठः नेवारः प्रवरम्प । -ग्री-म्पीक धव । रिवर्ग शाबिरी । मानुना-६ (४) वर्गमान राज्या। -हमाना-प् वर्गमन्म इत्न । मी प्रशास-भी । [बर] गृष्टि वरायर प्रमन् । श्रीदार-चु श्रादा । सीन्य-५ मि । मृताः स्थाना मीत-मी (दा॰) मृत् वरण शायत कृतिरत । सु० −भामा-रूप अपन अपना -का घर देख ज्ञासा (मेसा)-नग शार स् रू आनेवी कार्टका द्वाना ह "का दलका" मराधमान रोगीरो कॉर्गोन वानी बहुना ६ – का समाया – धीवडी बाट (न्यानेदानी बटा ३ _१ −का पर्मामा−रेगी के मार्चे गुरनेवाला पर्गना की शृपुदा लगन माना जाग है। ≔का साममा≔भारी (शास्त्रा प्रचमन् । च्या स्थिषद् व्यवसा⊸भीत क्(रि दील मातेदेशिय भागा ~की प्रदी-रायुवादा न्य याद बसारमा-शाः रभमा । नके दिन पूरे बरमा—४५न दिस के सा वडिमोरी भीता । —के मुद्दम् जन्मा-रारोधे परना अन्ती केणेय नेता। र्न्साम्बर=४९ विषयिने व्यक्तर ही समाना र सीर्क-वि [मंग] मेर्ड विकास विकास सार्क्स-व [मं] ४-८६ विदेश दण्याचे । भीत्रति-पुति विशेषा व मीप्रका-९० मि वे हात्र हार्थश हुए। क्षांत्रसायम् - वृ [ल] क्षेत्रसार वह द्रम्य दिल्य व क्षीद्रीय-५ [4] श्रेग पात्रज्ञ शीन वीस्त्र "त । मान ९ 📢 १९ नियन्त्र स्र देश ए व्यून्ते । नर्मश्र – । पुरुष्ठ व नोदंबा भूग्लेख नदर देशना ३ - हाला-सी मृत्ये की समाव र नक्ष्युन्यु श्रदीय ने हैं अपूर सरी(तिम्) वि भीतवत्वव श्रीमा १ देशा है सा शासी − प्रेल ६८० दिल्ले अर्थ स[ा] क्रीले सर्फा Cital 1 - Millandi-F Ent. without 1 ग्रामी(विश)='र () देवशासीर इं. हुआ, क्षी प्रश्नर रो. अन्य । अनुबा<u>ल्य</u>य के हैं क्षीयप्रक मीमव-५ [] वश्र प्रशाहित्या है। भीर-पुरुष १९४ मा अ व्यापने करणाहर शा-District Barner Tickle or early to learned by the off the 60.1 दौरीयद्व ५ (१५ दुरव दर्शरेक्फा)

सारमिरी - भी है भी नामा । मौर्श-भी छण्डता मीरुमी-विश्व हिंदी विशेष दिश्व दुशः राज्य राज्य देशह (लेन्छ) । -काहनशास-पुर का ब्यायन विमाधे समैत्यर प्रगडे बार्सिको मी पट पड दाविस हो। सक्त्ये-पु (०) मृत्ता भीर्षे-पुर्वि] मारनशान्द्र शाभेत्र राष्ट्रीय भारत गुप्तमे आहेन बुधा ह मीवीं-मी [मं] चनुषदी शरी। धनीरी हे परव राहे नोम्स जुर्बन्दी देशना । सील=हि [मॅ॰] ब्बगुए मुबावत दुरावा दुर्गनेते (गेवक १०)। अवस्थान (प्रथा) । थ । वश जागिए हैं। मीनबी-पु॰ (थ॰) उधनायो पर्यतान'दराध्य र्रोडा महरी-कुरानीका आक्रिया धर्मीनकु (मुग्तमान) आहे कारची कालेकाला। ~िहारी भी धीनरें। की मीलविही-मा व्यालपार के शिक्षेपूर्ण ^{कर} यपर भरवान शेष है, बहुम । मीका-पु (अ) वार्तिका प्रदेशना बाह्य मार्ग दिवा दुव्य गुणाम सरावदा क्षीती ! - रीता- प यानाधानमः वत्रस्यानः वता राजी । र्मीपाना∽पुरु [w] अस्तेदा स्पृत्त रेट नेदाप् वर धीर 🔭 । મીલિ-૧ [લે] અહાદમાનદા કિટેટ લ્ટ્રા પ્રાપ્ર कृत की है परिकी है नमित्र पुर हैंगूर के देशा वर्षा – शक्तर-द सुद्र सार्थ । मीलिक-दि० [मार्क] मूलर्डदेश सूत्रमण महा नह श्रीता की किरोबी शाको यमक अनुहरी मारि मारी पु कर मूख शोरते देवतरामा । शीलक्ष्मा-ध्या [सं] भी वह ही के पाव มานา-สาข [] ขุนไร 1 मेंगो(निय)-रि [तं] दिन्दे रिशा केंग्र ह PF E'I सान्द्र-वि (व) कारपत्र गिन्छ)। उ कर्या नेटा देश दीवा संस्था । नम्पानम् अवस्थानम बर्दनेक्या । न्यांत्रिय-देश्याक्ता अवदेश स बर्ग मानिये कर बना बड़ी बड़ा men-1 [i. j diet 1 niese its [n] equality and make 1 यु प्रशास रणवा रव वर्त । मोदा-भी । भी बेहदान बेंगकी कर है। men-fele | ju das WITH 9 EN SOR ! ment -le & beent ! alma-fe gefenft aber t मेमा द १ द विश्वतवर्वद भेगवा राज Rithman (n 16m ene en talta) 3 dalle ballende bet en suetabil

माधिष-प्रापी कारण को प्राप्तिया विद्याः धर्मेशी कर्णका साम । (बड उपच है सम्बक्त है) । यान्तिष-पु [त] परम्भा, पहरेनाइ रहि याम-गरेपी र यावम-पुरु [रोर] नोरभा । वि वसन्दर दश्य दश्य । यामिका-सी ('=) शात । −बम्ब~प्र• दिनप्त । यामिय-व [1] देश 'बाहिब' १ -बेय-वश देश याजनब-र विजिल्लानी सर्वार व-विश्वतेत । वायकार-१० (से) दक्षप्र संभार । यामिम सामिति।-भी० है। 'वानिन्हे । याचनानी-क्षे विशे दलीये बतारी सी धीती । याययी-मी विशेषशानि मण्डरेखा ति मे-यामिनी-सी [स॰] रात्रा इतनी वश्वस्त्री दश्वनी । -भर-५ रणमा ४स्ट प्रशी गुरुग्य । የየምተተረየ ፤ पामीर-पर् शि विद्या । बारर-विश्व (का) शरपदः (मल्प-विश्व । वामीश-१३ (वं) रात्र १ थापरी⊸मा • रचन्द्रशाः विषशाः दिवादशः भदारः । यासम-दि॰ (ते) यमुवा गंपरे। बसुपानरवर्गी । दुः यापग्रह-५ (सं) अरचार । स्राता ग्या वेगार माभावे, वामुमायाया एक प्राप्टेम बाबार-तुरु (र्गर) बाल्या देश बंदश्या पुरा मूल दर र अञ्चल एक ती के एक प्रवेश है यायानमञ्जूषा विद्या सर्वे । याम्बरक-प् [१ +] ग्रेमा । याधाम-तर (००) वनानेकी द्वात । मामद-पुर [14] बहुत्या करशा धर्में वे पानी वासीमा बाविक-पुर्व (वेर) मक्त, अवार र याजिहोळ-पुरु [गृंग] बह्न र M 641 1 षाची-भी (में) ग्रतिक्ष वर्ग । मान्य-प [गंर] पद्दशा निगा द्विष- सगलका पदमा बाहर-पुरु [र्ग] कानियन ग्रीरक्षा सबीत। भरमी नग्रन । है। वस गंदेनी: दक्षित्रदा । -दिगसवा--भी तमानाची । - इस-ब श्रमनका देव। यादीच-त ति विशेष है वारा−व किशेषवाम येशा मास पदाना स्था कि वि याज्या नन्ते । शिको दक्षिण दिश्या अस्त्री कार्या वादि ह ेराव संबंधा अब श्रीशा ! दारपायम – ५० (११०) बॉल्शावन १ पार्वामाहिगेश-५ [गेर] मंबंधारियंत्र । यामानन बारस्यीय-को (बार) परेनी ह धारपालरोग्या-भी [मं] क्य का पत्र हैया की दिसी यामा−की [[•] क्षेत्रश्च हेल । यामीम-०१ (m+) शास्त्रचं प्रशासक रह सार में रबाजी यनकर ग्रामेक्या याके बारी क्षेत्र धानी गती है कियमचे वर्षान्ति ब्रह्महिनी का लंबाने उनका कार्य वर्ग या भी भारत बोदी है। म नरे जा भारतम रण रेसावा वह प्रमा प्रीतिक याम् ==ए। देव अन्त'। TITE-5 (4) ATE CHA SET TRACET माला व पा रो रो । याम्बाइस्ट्र-वि (वे) दक्षिणी कर्ण ह बार्ग्स सुन्ते । बाबायर- व [] भारत बन्ननेशाना वाजागरीय पारकापति-१ (सं) बास्त्रे शेष्टे वत्त्र प्रापः जिल्हा कर्ष निष्ण क्यान म हो । ज नान्वाणी परि-शाहिक-मर्व शामी। वाह-(वा] रेशुश ६ ५ वस प्रश्नस द्वान (क्ली सारका भारतीयध्य योगा अस्त्वाच हानि। साराच ३ Ern D' l'ein nie') vefe feunit & ! याची(बिन्) -विन [ग] मानेवाना र बार-५ [का] निवाबेशी बामीने सम कातेशमा विष्यु-दि (११०) पुत्रान्द्र का शहर्द्ध बाहर कारेएका विषया-६ (१) हेच्या हेनेमा शनका महारक्ष विभावके । न्यातानी अपने देशके क्ष्यारेशामा । —सार-वि (क्षप्रध्य दिल्की माने-दिशामा-भी (तेर) बारेश शन्ती। बन्धाः -(१)रामिश-पुन वदः सददा धानः । बीग्र-५ वेना सन्दर युंत्राम-१० (n.) क्षत्रीय अञ्चल कालको केन्द्र Allha-de fu f engwei de uetret gediel भीजी लेहिर उन्हर्भ कर साम । ध्रेत्रामधन्तु० (स.) सुबान रोजाः। मुख्य-पुर्व (बार) वह साम (बार हाथ संगो। देश वपुरे artiumes fu of but mat nam (etheran) t ce grei mit dict ift ter ger ant' fri to face or forms San aller a to takel then this and WITH BY PAPER -unf(da)-le fei ebt ein abn erif' बाबीयम् । (१) वर्रे केपी प्रमान पूर्व । -अवा(वर्ष्)-ध रहात्य । नाव-पूर्ण um-40-13 Riedrienber urm: STANGES -- INT. M. MAINN THE EMP! क्षाप्रन्यु (मार्थिक) शत् कथा क्षाप्रस्था है। योजी - इत्य-दिर अध्य अनुस्वत - घेरणी-व्य वटार्य earch gar haze कुन्दर नर् (र.) की अन्य सम्बद्ध के देश की नहीं नहीं ART KOPPET I क्षापुर क्षमाबाद, बामार १ हामार अन्ती पाल रान्सी हीती है बुन्दर को (अ) स्थापन ४६ मूल I बुक्तकाल्य हिन्द्रेत्रकृत वर्ग देवारा गर्नि *** 1 मुचारमान्त्र किन्ने के देश वर शार्थ कर्त है BARIAN PARTARAN PARTARA

कार्यपूर्णीर (तेन) रिमान अवस्य वर्षा रहा रहा अवस्य विश्वासी रेत (तेन) अवेत्रक अस्ति रे

वर्तन ऋग्रा मौतिमी-दि॰ 🗷] बिसका मीसिम ही (वर्तमान) कतका मौतिमके कारण दोनेवाका (बुसार व)। -फस -पु ऋतुपाठ । -शुद्धार-पु भेत वा मारी कुमारके मधीनोंमें बोनेबाला बुधार !

मौसिया! −५ रै 'मीसा ३वि रै॰ 'मासेरा'। मौसी-सी माधी। माँकी पदम ।

मौसफ्र∼वि [ज] वरक किया बुआ वर्णिका प्रशंसित ।

स्थि॰ 'मीयफा' **।**] भीस्म-दि [अ] नाम र**वा** हुमा नामगरी । [श्री॰

'गीन्मा'।] मीसुछ-वि [म] वस्त्र किया हुआ मित्रान किया

इसा सिलाइमा । स्थि भीयुका ।

मीसेरा-६ मीसीके नातेवाकाः मीसीसे संबद्ध वा क्ससे

सरवद्ध (−भाई वहिन द÷)।

मीहर्त-प्र [सं] सुहर्त जाननेवाका क्वीतियाः सीहर्तिक-वि [मंग] शहलंगे बत्यक । पुण शहरविचा, क्वोतिकाः बक्षक्री कृत्या मुद्दर्शने कराव एक देवसम् । झात−दि [त्+] पदा या सीखा हुमा अस्वरत । स्पीय-लो दिखाँकी गेली । सुरु -की डोर-दिरडीका

भुँह । 🗝 पश्चदमा-सरमे अपित छनरेका काम करना । - स्पाँच करणा - दरके मारे भीमे रवरमें बोकना ।

स्थान-पु (का) तककार जारि रखनेका कोष या गिकाकः यहगञ्जेषः + धरीर । स्यानार= H कि (तरबार भारिकी) स्थानमें करसा

रप्रशाःस १ भियामा । वि नीयका महोकाः मोरा ─'क्षांकी है ल हैंमनी म पातरी म स्वामी है ─संबरदाल ।

स्थामी-स्थ ६० मिथानी । स्यनिसिपस-वि [मे] म्युनिसिपनिया (नगरपानिका)-

संबंधी (-कर्मवारी) । स्यमिसियद्विदी-ची [अं] स्थानीय खायच्छानुमका अधिकारप्राप्त नगर या कनशा वेशे नगरका प्रशंप करने-

नाली क्रमेदी भगरसमा मगरपाकिका।

क्युक्तियस-पु [अं∗] कठा, पुरातरम, प्राणिशस्त्र भारिकी निदर्शक वस्तुर्वीका संग्रहाकक समायक्कर ।

रमीं-सी० हे 'स्वॉब'।

र्व्योद्धी−स्ता यत सवावदार पेत्र निर्मुद्धी, सिदुबार I ख्या-पु [सं] कपाः अपना दीव क्रियानाः प्रश्नम् । स्रक्षण~प्र [सं] तेकः स्नेदम केपनः मिकामा विश्रमः

एकडा करना । अविमा(मच्)-नी [ग्रं॰] भृद्ता ।

ग्रविष्ठ-विर्वासी विश्ववस्य मृद्

सियमाण~नि [मं∗] मरता हुआ। मरा दुधा-सा, बून धारव ।

म्कात−वि+ [सं] कुम्हलाया हुआ मकान ।

म्छान-वि॰ [सं॰] कुन्दलायाः सुरलायाः हमा। दुर्वलः गकिना गरा ।-मना(मस्)-वि॰ दिवनित सरास । म्ख्यमि-सी॰ [रं•] म्बानसा कौतक्रयः महिनदाः चरासी ।

म्कायी(यिम्)-वि (र्ष•) कुन्हकाता स्वता, ध्रेत्रता हुमा ।

म्बिप्ट∽वि [से] अरुक्त बावब बोक्रनेवाला मनान । प्र अस्पष्ट बाबय् ।

म्डेप्छ∽दु [र्स] बद्र मो संस्कृत म नीटनैवाका की अनार्षः विदेशीः मार्थ-सदाबारका रामम म करमेशकाः विक्रम विभएका धाँगा। अनार्थ भाषा ! वि पापरतः नीय। --६६-दु सहतुत। --ब्राति-न्दी अनार्द। असंस्कृत मानी आदि । -देश-५ अनार्व देश आह र्वन्यं व्यवस्था भाविसे रहित हैया । - माधा-सी॰ अनार्व भाषाः विदेशी भाषा । -भोजम-पु गहुँ वाक्छ। -मंबस-५० म्हेच्य देश । -मुख-५ वॉश ।

म्सच्यादा−५ [मं]गहै। ब्द्रविक्रम−पुर्व (सं•) कोच्छ भाषाः अपनावाः वरमापा ।

ब्हारा०-सर्वे० इमारा।

य

 च-देवनागरी वर्णमानाका राज्यासवी व्यवस वसे (क्षे और) म ६ मेर्वोतम रूपम कुएने माने मुखाहर)। शार्य भीर अध्यवसीके बीचका वर्ग होनेने वसे अनुश्ववर्ण काली 🕻 । इस् दे समारयामें कुछ भांति(क प्रयस्त समा कुछ बाह्य प्रवान भी हो र है। यंत यंता(त)-द [नं] संयानक शासका मार्शका महत्त्व ।

चंति−सी [मं]दयगा यंग्र-तु[म] मेड वा अध्रोते प्रतः निधव अध्यत् या बोड बिनर्ने देवराशीका बाग माना अना है (व) अनुहर भी बार, वन मशीना ताथा। बीगा। बाबा। बायने उत्तव मंगीमा ४, का एक दिरोच बरनता निर्वेतदाः जास बारा । चरदिया=सी सामागरको पेते। ÷गृह=स् देश गामा। दंबणाग्ड (माधेन कन्दने कलादिवीके निर्द शेत मे): स्वान या यर वहाँ दल भी बार संशीतमें बाय होता ।

क्षे कारमाना । -वहिन-दु वानीन**रो** । -हक्का (इस्य)-पुर्ववनिर्मायाः। -- मास्ट-पुरुषे अस निकाननेदा मन् । -पुत्रक-पु ,-पुत्रिका-को॰ द्या रिकी सहायताने दाव प्रव दिलानेवाली पुतनी । -वेपानी -शः वडौ र -प्रवाद -पु कृतिम सोत । -संग्र- श्रेना शैरका । —सामृद्धा—स्रो चीनढ कलान्तिये एक जिसमें यंत्रका कमाना और बसका स्वत्रहार करना दानिक है । -बाग-५ नदर । -सम-५ धरी वारीक्षे गरिका ग्राड एक एक एक (भी)। -विद्या-की वंत्रे के नियान कार कामनकी कला। -शर-पु अत्रमे बसनेरामा वाद्य आर्थि । —शास्त्रामनी । वैवद्यासाः वद न्यान वहीं महीनें वर्त्र कीर कातार वारि ही। -स्थ —च् काच्छभी नवागेका वाका भूद । वंत्रक-तु [में] पा नावल वॉपनेदा कारेटा वंबता शिपन पंत्रक वसने वस्ते वस्ते वस्ता

यस्त्रहार-प्र [सं] विश्वत नाहार । वि विश्वत नाहार करनेशका ।

युक्ति-स्त्री [सं] बीग, मिकना तकी कदा। वकीस, छनित विचारा देत कारणा स्थान, नोतिः कीशक, पातुर्यः बतुमानः हपाय शेवनाः वाकः रीतिः एक अबंदार वहाँ धपता मर्ग छिपानेद किए किसी किया वा थपाव द्वारा दसरेकी बीद्धा दिवा व्याव । --कर--पूर्ण--वि तर्वते अनुकृतः विचारपूर्व । -धुक्त-वि धुक्तिपूर्व विभिन्न चतुरा प्रमाणित सिक्ष । -संगत-वि॰ वृक्ति वा शर्दरे अनुकृष्ट ।

युर्गधर-नि [र्-] जूबा भारण करनेवाला । पु इरिस कुनरा नाग्रेका नमा गुणिके पुत्र शास्त्रकिक गीतः यह पर्नेतका नामः अलका एक मंत्र । मुरा-पु॰ [सं] युग्म बीक्षा गोदी पुरुषा विस्रातपर चणी जानेवाली पासकी मीक गोहियाँ। पासके दिवकी वे की मीदिनों को साथ 🛍 एक परमें आ आयें। शृहरशतिका एक राशिमें स्थित रहतेका पंचवर्षिय काक समय,काक बमांमाः प्रराजनतमे कालका सुदीवं परिमाण सस्य वेता, हापर, ककिञ्चमः (गार्वाका) घूमा । वि योची संस्थायाका। - क्ष्रीसक -पु श्रीका नम और जूपके मिके छेदीमें बासी बानेवाकी सकती।-क्षय-पु चुगका भीत।-बर्म(म्)-पु• जुनाठमें छगा हुना बुदरा चुनवा। ⇔चेतना-चौ॰ बालविशेवको विशिष्ट प्रवृत्ति । --धर्म-पु॰ समया-हुनुक भाषरच व्यवहार । -च-वं गंधर्व । -चन्-म पद्म अपूर्ण अपूर्ण-प्रातः साथ-साम वक्त साम पद समय । - पद्म-प वह बस किसकी परिवाँ संक्रवपर भामने सामने कीं; कवशार कीविदार; यहाती जान मूस । -पश्चिका-की शोधमका वेत्र । -पुरुप-दु० प्रवेका महानः केष्ठ प्रवरः। -मतीक-प्र तुगदा मित निषि मेहतम पुरुष ! -वाष्ट्र-विश्वनी मुजाबाका विसक्षे सुवार्षे भूगमे समाग्रीर्वशै। ∽सुग⊷व मद्रत दिनोतका ∽क्र−चु जोड़ा, जुल्म । विश्वद की बीध्ये मेरवामें हो।

मुगतिग-स्वा दे बुद्धिः। प्राम•−५ , वि• दे 'भुष्य ।

प्राक्षक-पु [छ॰] बीका वर्षोद्य वह बीका विश्वका यक साथ बार्य हो।

द्वगन्तरूप~दुर्शि वेश्वरू कृष्ठ । प्रगांत-प्र (सं) सुमध्ये समाप्तिः शक्त । पुर्गातक-पुरु (संर) प्रस्यः प्रस्यकानः ।

प्रगतिर-इ [मं॰] अन्य पुगा पूलरा समग । मु॰ -करमा-कामूल परिवर्तन कर देनाः समय प्रवादन्त देशा

प्रमोतक-तु [सं] वर्ष साल । 🏗 तुमको विसन्ध बरनेवान्य । मुनादि-मु [d+] सार्टका प्रारंका गुनका पहला शिक्ष ।

वि चुगढे बारभका दुराना । -कृत्-पु दिन । मुगाचा-को [16] मुग्लंबडी किन वह विकि जिलने तुर मार्थ द्वा (देशाय-हाहा प्रतीवा सरस्तुय कार्षिक हाडा जनमी मेतानुगः माळ वृष्य अनीवशी । क्षापरसूत्र और पीर अमानस्या कक्षितुगके आरंधकी (तिकि है) ह

युगाध्यक्ष−पु॰ [सं] प्रवापतिः शिव ।

अगाजतार-प्र सि] समका अवतारी महान प्रवयः जुगस्बरूप पुरुष ।

ब्रगेश−त [सं] प्रस्पतिकै साठ वर्षोके राशिवक्रमें गरिकामसे पाँच पाँच वर्षोवाले पुनीज बारह अभिपति । यगोरस्य – प ्रिंशी एक तरहको मैन्य व्यवस्था ।

युग्म−पु॰ [सं॰] जीवाः जम्बोन्दामय-संबंधपुक्त वस्तुएँ बंद्ध कुरुक्ता एक भेद अगरुक्त मिश्रन राशि । वि दोकी संबंधावाले (व्यक्ति, पदार्व भारि)। ~चारी-(रिन्)-वि॰ बीइमैं चंडमे, यूमनेवाडे। - अ-पु॰ मुक्त वर्धे, यमज वयल । वि कोहेके क्यम करपन । -धर्मा(र्मन)-वि स्वमावतः मिछनशोह मिलन-थर्मा । - पद्म-पु॰ कपनारः मोत्रपत्रः स्रतियमः क्रति वन, पुग्नपर्यः -पर्याः -फका-स्रो दक्षिदासी।

~क्किमी-न्ये दुशिया <u>इद्यो । ~जञ्</u>ञ-प्र ऑस्ट्री प्रत्नीमें बढ़े इप दी शहर दिए।

पुगमक-पु॰ [सं] बोहा शुग्म : पुरमाजन-पुर [संर] सोतांबम कीर धीरा(बनका संगत ।

प्रमोध्धा-सी [सं] संभीयमे १६८।। पुष्य−पु [सं] मोशी नद गाड़ी भिसमें दी पीड़े का नैक जुतै। की कहा की एक साथ गाड़ीमें अते। बीही। वि भीते भाने योग्या भोना भानेयाता । -याह्य-प्र माही

वाम- भोदी इक्तिमेदान्य । बुक्य-पु [वं] मंबीन शिकाना एक प्रकारका छाम ।

वि मिछा हुमा। मिलाने भोग्या उश्वित ह यत-प्र नि] पार दाक्की एक मापा वि मिला दुनाः सदिना - थय-पु पंक योग जिल्ली चंद्रमा रापधरसे सावर्षे स्थानमें वा रापप्रदेशे साथ होता है।

भुतक-पु [सं] थोशा अंबन्ध एक प्राचीन परिवासः राएके दोनी ओरके कठे हुए किनारा मैत्रीकरणा श्रेत्रका मरिष्ट 1

शति-श्री मि विकस मिनाए कीना गाडीमें बोहेका विनेधे रानीः नाषः विसमे जूषा और इरिस्धे एड मैं जोरने है।

पुक्-पु भि । परस्य अधिपानुदे नियु शस्त्रप्रसारका बर्म नेमाम ल्हारे रण। -कारी(रिम्)-प योदा। वि॰ युद्ध करनेवाला। -काछ-पु॰ युद्धका समय। -क्षेत्र-म दे॰ 'मुक्स्पि । -शोधन-पु सुक्के गाने : -मधीन-दि शुद्धकी बनामें दश । -मास-प्र पुरुवेदीः वक मध्यस्या काम, शाक्षपुत । ~भू -भूमि-सी श्यक्षत्र मित्र स्वानस्य बुद्ध हो। -मार्ग-तु सुत्रको पहति । -मुष्टि-पुण्वप्रमेनका वस पुन । -र्रश-त युद्धस्यः स्टब्स कार्तिसः -क्य-पु पुरुषा प्रवास्थिति । -विद्या-मीर -शास-

इ दुबका साम विरात । -बीर-इ सुद बरने बाका परामानी व्यक्ति बीररावि बादकता वह केट बद्धनान्तुः (१) (१०४२) व वर्णास्या वर्णाः पंद्राचन्त्रः (१) (१०) (१०) वर्णाः पंद्राची पंद्राची-स्थेः (१) (१०) वर्णाः पंद्राचीव-द्रः (१) (१) वर्णावर्णाकः स्वरं विमने रक्त

्दा रंग पोला दी जाना है। वंजासब=ड्र. [तं.] वंजारानाः वाचानामा मेस । वंजास=ड्र॰ [तं.] नद राम ।

सम्राप-दुरु (४) वृष्ट एम। समित्रहा-री (में) वजेकी छोटी वहस धीटी नाली। धीटा नाला।

पॅतित-दि [4] रेडपाय-देश हुआः ताना सपाया हुआः उटाः हुआः दर किया हुआः -क्षण -बाकः (प]-दिश शुक्र किया हुआः । पंदी(पित्-)-दि हुं। दिस्पण करने व्यस्ते सामाः तया स्वयः हुआः वासा वसनेवच्छाः ताविकः

जेनरवार्ताः

=-वृष्ट् ति] समस्य करमेशस्या याशीः वातुः वगसः ययः

यदाः संदमः भागः यागः श्रीः रवामः मक्ष्यः । —शसः—वु

क्रियः वद गरः जिसमे सहसः वर्गे स्वृष्टे श्रेष्टे श्रेष्टे

मुख कार्य है । यक्र−दि० (का०) वदः क्रतेना। −तन्त्रस−क० रद रारगी । −श्रद्रम्-दि+ कानाः एक रणका (निश्र मादि) । ─च्हर्मा=वि॰ शवधी एक निवादने देखनेवानाः दक्षः स्मी (तगुरीर) ! - ल्लारी-वि । वक बादाकी (भीवार) । - प्रयाद-विश्व पार्ट्य वदात्र वदा आवासानी । - शिव - भ्द्रोक्ट कहना-शिषक्ट एक वात कहना श्रेन्त्रवर्षा -विश्वहरूपार्थः (वेद्द्रः या शिक्षीम)) —ज्ञा-विश्वहरू निवानुवार जात्राह्यसच्या व्यक्त वीतान्यवार । -आम-रि न्द्र प्राधिना दुशः वरदिशः -सरक्त-निश्यक महत्त्वका । -- भाष-भी वह बाद की हमते ! मध्या दिवार थिये निमा सी वा कावम की जाये। ~• कैमना~पुबद पेत्रण नी क्यादनर पर्दा दिवन्द्र याने दिवा अन्त्र । चवराच्यु वह नरहव सदे: दर्तर। -प्रदी-प्रयमी-वि भी गण्य बद्ध शामा केंगा हो। (प्रयोज) । - समाग-१ एड रूर र (धे मरुदेशमा (रोहा)। -वहाइ-सा श्रहार ६६, चरान्द्रः -बाहारी-सर् अक्षाप्तपु सहसा अभागक । ⇔स्रोहिक्सा⇔ि एक स्पीतनपाना (श्वान) । –सादरी-पे दढ दाँदे (व०दे) । ∽हाइन-स+ दक्षेत्र वय बाह्य । -ह्या -ह्या -ह्या -ह्या -ह्या -ह्या रान् भार बन्दर्ग दश्र । -क्ष्मा -श्रुप्ती विश्व वस् MINT RESIDENCE -W-R GE OF FOR इक्ता --रीमान्दि एक दिल्ला - लक्तान्त्र

विवास प्रदेश - अर्थ-भी की वर्ग वहाँ

य की बन्दर अपन में निर्मात कि अपन हैन्सी बनी

रेन्द्रो । - ब्रोड्डी वि भी भारे दे एक हवदेशा यहा है

होर्न तराप्त नेहाचा करापी आदि। व स्थीपानी

क्षम म (दुन) र नन्देशी नहिन और विकास (पूर्व) र

-धेरा-प १ ३४ ६ -मर-दि कोजा हाधा

्मानो व्हें *क्लाहक वदनो होना । न्यार-*वि

पुण र नर्सा है। ४६ का श्रह कराश्वरण *न्यानीस*म्य है

164

पर भेषा : -माका-शिः यह हण्यहा : न्यू-शिः
यह भेषा इशा इत्या : न्यू-शिः
यह भेषा इशा इत्या : यह : - न्यू-शिः
मणः उद्दर्शन शिक्रमां, शिशामा शिर्ता : सु० भीशः स्तर मुंब्र्श-अन्नार सद बीमार-भेरेन थेन अगर अहन्ते वाहनेशरे ! - जाम हो बाक्य-भेरेन दश्य वित्र ! - ज यह ज्व वा दृगशः ! - न्यू हुद् हो हुद् - एक थना ही थी हो, दृगशे और देते परेश न्यशि सद व्य-इड़ा शो की मार्थिने पराह है। वहे बाद बुंग्ली-वस्त्रे का दृगशः - शिक्षप और स्तर्भिते है देवार हैं। - माद बृहार मीश-ब्रद अब और

यहीम-पुरु [वर] (वराणा यदीत्। तुरु -मायः-विषक्ष दोता। -सरमा-विषक्ष दर्शाः -क्षण्या-व्यवस्था-अर्थाः -सामा-पुरु कामी-यदीत्या-अर्थः (लालोक्षाः (त्राक्षोत्राः विषक्षत्रेषः) यदीत्यी-विश् (कार्ने अर्थोत्त्रः) यद्भान-भी [वर्षः] मरीत्रेशेष्यभी गरीस पदमः वृत्र्य-भी [वर्षः] मरीत्रेशेषयभी गरीस पदमः वृत्र्य-भी [वर्षः] मरीत्रेशेष्यभी गरीस पदमः वृत्र्य-सुन् [वर्षः] मरीत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वृत्र्य-सुन् [वर्षः] मरीत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः

दे कण्यो रुरेश्विद दनाः यहण्यास्त्रवान्त्री (ले) तिण्याः, यसाः यहण्य ११-११ वहण्या या भन्याः यस्त्रवान् ११०) एक १९वोदा दुरेग्दे १९वा दुरेग् वहण्यास्त्रवा ११० हे स्वत्रवे ११०० वदा भन्यवि १९ वहण्यास्त्रवा १९०१ हे स्वत्रवे ११०० वदा १०० लेगाणाः स्वाहन्युः एक दिश्य प्रदा तिल्योः नवकण्य वरदाः स्वतृत्य दुश्यास्त्रवे १९१४ वहण्यास्त्रवे १९०० वद्यावकन्यान्योत्तरः दुरेगः नवहन्यु वर्षायास्त्रवान्यान्योत्तरः वर्षाः

पू बोदे रण हे तैयार का दुरे घरार । -राम-इ॰ इ मेर र

न्सक्रिन्थाः दास्तरम् । निमन्द्रः ४८ ३५९ ह

वाहार्य तरक वनकी केनच रामणाओं की । हैं क्यां प्रदेश के करता थी। -- स्वास-तु सक वैशानिक लेप । बाहार्य-तु [वंश] वृश्या प्रदास । बाहार्यित वाहार्यिय निन्तु [गः] कृरेर । बाहार्यास्य सन्तु [वंश] (रामस्य ।

वसाराम-पु० (६) वर्षात्र वण्याम वर्षात्र । व्यक्ति, वर्षा-को (६०) वश्यो की मुनिरी की । वर्षा-पु (६) वश्य वरतेत्वम वर्ष प्राप्ति । वर्षा-पु० (६) वर्षात्र ।

वार्धेत्र-तु (में) कुरेर । वार्या-तु (में) वे शरका व्हारम् व स्थानम् वार्या-तु (से वार किने क्या -वर्यान्ते वार्यान्त्र -वर्षे-क्ये-वार्या क्यान्त्र वार्यान्त्रम्)-तु (से-) क्यान्य परिष्ट

nan-n, lat | bod enet pereng, Aj eig

पुरुष-पूर (ता)। -शन्द्र-भी० द्वर वरवंदी शॉल १ -शासी (lity)-lt मुक्तियाँ मुद्र एएए बर्गेशामा । -मार-पुर्वाशः मृद्ध-पु (श) भेदा। हुद। नुजवारी वियान (शा) । युद्धमय-दि [१] पुरुतिया गुढ-गर्वेश । स्याकार्य-१ (०) ब्रह्मस्याक्षी हिशा देवनाना । पुदाक्रि-१० () १६ वर्ष । मुखारमण-१ (६) एक राज्ञण, महीपर । वि शुद्धः < निर काला मुख्ये अन्यविशाम । सुर्याचाहिल्यु (४०) बढ करि ह मुंबाजि-५ (स] हे नुदाबि । मुचाकिन्-८० (रो०) चंदबरावदा द्रव भारतवा सावन राजा मान्द्रका एक पुत्रा मुक्तमा एक पुत्र । मुक्तम-५ (त०) इन्तरश्वर । प्रयामन्त्र-व [सं:] शंबररदेश रह श्रीर ! युवागर-पु (ते) शरका गढ मात त यपिष्ठ-रि (१३) नव्यवन्या शेष्टा । मुंचित्र-पुरु [4] हुनीने क्या बाहुदे मरते परे दुव पर्नशास धरेतुव। क्या-पुरी विद्युपः अमन्द्रमा वक्ता तुद्रः वीद्यार्ग मुध्य-रि॰ [1] तुद्र दे वेण्य दिनमें मुख दिना वा 874 1 व्यक्तिप्रसिद्धां-भी ६० वनिष्यि । बुंचिय-वि [का] निरांता दुमा बराबा दुमा ब्रांग C 171

युप-५ (३)येना । युक्ता-प्र- (स.) ४६ तरका छ श नाय । युप्तमान-दिन (संब) अपने न क्षेत्रका क्युका मिलन, I BE THE PARTY IN

सुबुन्सान्त्री [1] बुद्रकी दन्या नैरबाद दापुरा । Adull-3 [4] Azine ne Zan fe Aunt इन्त्रं महत्त्वी प्रणास्मनेगणाः प्रमुक्तिम-तुरु [र्ग] बीक्षा धानिकावतः सम्बद्धियासः

ATT T

ا تراكم ي 3-144 ا स्रोविक्मनपु वि देशभू अस्त्री। बुब- दुवन् व १ मण्या रेप र - व्यक्ति - हि हि है का देव की बनगर ही की ग्याकी । नर्गक्रनपु र्मकता -क्यों-दिए अन् राते ही बुद्र दिवानी सहक बन्द १ - परित्र हि जिल्हें बान अराज है हो नही री को दो। नहिद्दिश्चनको । वेदका नार्देशन nt seiner an 2 g Jette t-tim-7 शास्त्र कार्रा चारे चारे राज्यस्य र च्याप्री-स्रो (हर) बेस्रायर पर र ल्ह्या(हम् }-प्रश्चानाम Abakalı Maytanı, t बुक्य - १९ हे शहल करान धोलहरू लेल सर्वरी MITTE FOR

1.45.44 मुक्तिपुर्णानकार (१०) होता हुए। अवनेतृ स्वर ह

बेंब्रुड बेंब्युंग्लंडाली] बहाद का हनदी हिंदर

युवनपूर्व-पुर्व (ग्रंथ) प्रश्नन रेन्स्य पुत्र कोन्स्य स्थापना। An मुक्तपुर्नी [त] करण नाया मुंबा(बन्)-(२० (११०) श्रम्य श्रमा । मुषाम-दिश् गुरुत्र । भूषानक-दिश् (शंश्री है 'पुरास । मुच्यारीय=बि॰ (ते०) तुम्हार ३ मै-सर रेर बीरें। यु-भो॰ [मं] शबक तुम र युक-प्र [4] द्विपोधर ! - सिक्षा-मे द्व का कीस र

युक्त-भो । [र्ग] में धा निरक्षे बचीने होता है। धारण गूलरा अजगवन एक परिवाम, प्रदेश ज्ञालक है। वर्षपुना ।

पुत्र≁-पुरे (वृदि । युनि-मी० [मं] श्रम िषत्र, विनादा ह पूज-पुरु (गेर) लगारीच औरवेश सन्दर पहाप होर थेना भीड ! -- गा-पुर दक देश्वर्ष ! - शारी(शिष्)-दिन श्रुप्ति यसन्त्रमान्य (वंदस्य श्राप्ते । हिर्म आर्थिः । ल माथ -प -पति -माग्र-५० शुरुतः रशर्थ वैशः सेमारवर्ष । -कथ-पुर सेताकी दश प्रश्ती नपूर्व । **~सए−ि** पूत्रपे विकला या निवाला पूजा शाहिलां ~

🛎 नीमाधी दिनी 🛮 दर्शका प्रशास रे पुषक-पुरु (१८०) हे . ४५ । युविका, यूपी−श्री [म] न्ही (हुन केंद्र) । युक्क-पुरु दर्शकी शर्म । वृत्ताम-पुर (स्टेब आदानिया | द्रीप्रशासक देश वे भाषीम ब बारे बहुती शहरा भारता बरेश हारू भी मार विशेष प्रक्रिय का व्यूक्ति प्राव्ह का बार्ट कर वे के en twei ce gir ? i) पूर्णणीलपु वृज्ञानक्षर काल्पीबा को प्राप्ति वर्ष

बुकालको विकासनाको एकको । वि बुक्ता विक मुजाप्त शर्वती । पृतिचन-को (च) स्व शकार-वेश-क्षम उ^{क्}

रिवरेन कीर काष्ट्रवादा वावृत्य राजान हारा व श्रृतिविधिताने -को (कर्ने दिन्दि दिन्दी दिन्दी की कर का दोनोपी करवान है जिस दर्भ र विस्तानक मे we abit when it feare air ? here.

विराक्ष्य सम्बद्ध यूनीवार्थ-१ (अ : किन्ने रिटेंब स्तर्नार्थ रि^{नेड} रेशक ह

Ad-3 [] attended to the evelope, का बहु रेन्ट पी बहुए समान्त्र है है है भी है हिसा र जा र ल्या था पुरुषे हिते अन्यवस्थान स्थाप नीरेव बरार नवर्षे दु बाद की कि बला केषुण्य अर्थकात्र-केची(प्रिय) व नदरमा -arrest the last antictives duri within इत्ति न्वयोश्यन्तुः भूतं अत्योगः बत्ते । नद्यन्तुः Ein, ant, ant all allmate fin je न्त्रकान्त्रे वस्त न्यास्त्रे स्था सन् सर

1091 धाकेसे जमा हुना पानी । याप्रभी-की॰ (फा] श्रीरकाः एक्के हुए मसिका रसा । शंगानत पंगानगी~सी (फा॰) संगीपताः निकटका संबंधा मधीसायना सहयोग । भगाना-वि॰ (फा॰) जारमीयः **अवेताः** शदितीयः यगर-प्र• एक दुश्र । माम∗−पु दे 'वह'। यक्तर-पुर हैर 'बंधे'। यरिक्रवी - न्यो । दे 'वश्रियो । यकत-प्र [सं] यक्कतो। सञ्जत-पु [सं•] ऋतिकः एक वैतिक कविः शिकः चंद्रमा । विण पूछ्या परित्रा देश्यरीय । मजन्न-पु॰ [सं॰] अस्मिदीती। यह करनेशाला । स्वम-तु (सं•) यह करनाः नकका स्वान । ~कर्ता(स्) -पुषद इस्तेशका। यज्ञमान-प [रं•] वह करनेवाकाः वक्रिया आदि देवर प्राक्षणीते वार्मिक कृत्य करानेवाकाः महादेवका यक निमहः स्वरूपः भरिवार या चाविका मुख्या । सबमानक~पु [सं•] दे 'वजगान'। यजमानी-सी वजमानींका शसरवान- वजमायका माव वा वर्म। विवाद आदिके अवसरोंपर पुरोदित नाई, वारीके काम करमेका अधिकारः प्रशेषिती । पञ्चाक−दि [सं] वदारः नृबक् । यकि~ दु [सं] वदः वदक्तो । पत्नी(तिन्)-पु॰ [d] वद करमेवालाः पृत्रा करनेवालाः। यहाँद-पु [स] मारिवाका सहका समिया द्यानराज-का बूसरा राजीका जिसने करनज्ञका शुरू कराया और क्षिप्रमें हमाम इसेन धहार हुए। बहु (सू)-3 [सं] देरके एव मंत्र (क्षित मंत्रीमें परण या अवसान निवयक कोई नियम न हो ने बज़ 🚺 है बनुरेद । ∽धुष्ठि−सः बनुरेद। पत्रवित् पत्रवेती(दिन्)-पु॰ [सं] बहुने॰ जानने नहां। मञ्जर्वेर-प्र• [सं] चारी नेशीयेशे एक, वह नेश निसमें बम्मी(थय मंत्री)मा समह है (इसमें विशेषनवा बदही यहर्वेदी-वि दै॰ यहरेनेद । पतुर्वेशीय-वि॰ [थी] बहुदेरका बाताः बहुनेद्दे अनु

कियाओं और वसके मेर-प्रमेशीका निवरण और प्रतिपादन है । रक्षके को भर है-कृष्ण बनुवेंद्र, शुक्र बनुवेंद्र का वैतिरोप और बाजधनेया संदिता । बजुरें हके दी जायग दे □शुक्रका धारुप जासन और कुणाका तैशिएक जासण) । सार इत्त्व करनेवाला (बाह्मप)। यञ्जनेवन्त्रवंशी । पत्रुपति-दुधि | रिजा यतुरराव-इ (ले॰) एक बटराय। चब्रर-५ [सं∘] प्रास्त्र । पश्च (है) इतनपूरतपुक्त एक देविक कृष्य कन्न मन याना नीवहितदे दिवारमे की हो पूजा अञ्चलन

रोग रय-रेपका रिभ्या सम्म । -क्षमाँ(ग्रेंस्)-वि

दहरे एगा द्रमा १ - कक्य-दि बरमुख्य । पुरु रिजा ।

-काम-वि वह करनेस श्रापुक । -काल-पु॰ दश्या

वित्यक्ष भौवनेका सूँध । "पुरंब-५० इतन करनेका कुँड अनककुँड। −कृत्-वि॰ वद्य करने दरामेवाका। -केतु-पु॰ पढ़ राह्मस । -कीप-वि॰ वप्रसे हेप रसने बाका । पु॰ यह रायुस । -ऋतु-पु॰ विश्वाः दवन मदौरसव । -क्रिया-बरे॰ यदके कृत्य । -गम्य-दि॰ बग्रहारा प्राप्य (बिष्यु) । --गिरि-पु एक पर्वत । --पुद्ध-पु॰ विष्णु ।-धन -हूट्(६ू)-वि॰ वद्यविष्यंसक। थु॰ राश्चस । —र्रांग्र-पु भएका विस्तार । —नुरंग-पु॰ वप्ता भीशा । -शाता(श)-त यदरम्बा विभा। -बृक्षिणा-स्ता शुस्त, यद कराने हे चमक्यमें नादार्थी-को दिवा हुआ थन । -इश्वक-पु॰ यदके प्रसादरवरूप माप्त पुत्र । -ब्रेपी(पिन्)-वि वधविरोधी। [सी 'वद्योदिनी'।] ~श्रुच्य~तु यक्को सामग्री। ~धर्~तु यध-पारमक्तां पुरव विभ्यु । - पूम - तु हो महा सुनी । -नेमि-द• कृष्यका वह शाम । -पश्चि-प् वसमानः विष्णु । -परशी-स्तर• पत्रमानको स्त्रीः बदको स्त्रीः इक्षिमा ! -पद्यी-स्ता यध्नमें स्वस्थानसे मदःदीयग क्रनेको किया। ~पर्वत्र~प् पुराण-वर्गित एक पर्वतः। ~पहा-प वक्का विकन्त (पीहा वदरा)। ~पाग्र ~ भांड -भाडम-पु॰ वध्म दान मानेशहे ४१तन। -पुरुप-पु विम्यु । – फ्रम्बर् – पु॰ वहका एन देमेशहै, विष्णु । ∽बचु-पु वयने संदर्भेग करनेवासा । −बाह्य -पु अग्निका **एक माम**े - साग-पु वस्त्रा श्रेष्ठा (वर्षाध बानेवाने) देवता । - भुक् (खू)-प्र• देवता। –भावन −पु॰ विष्यु । −भुक्क(पा) नपु देवता। – भूमि-सी वक्षम्र स्वान । - सूपध-प्र क्षप्र। -शृत्−िवि॰ वषका भाषोत्रन करमेवाना। पु विष्यु। -मीखा(क्तृ)-पु (क्षेमु । -श्रंडप-पु∗ वर्ष्टा मंडच ! -- माडल-पु वयके लिय थेरा हुना स्थाम ! --महोत्सव-इ॰ वटका विद्यात समारोह । -मृग्र-प बरका बारंब । -मृति-द्र विद्या । -मृप-द्र परका विष्णु वीपनेका सेना वृषदात यहरतंत्र । -क्षीम-पुर बिन्तु। -बोध्य-वि बद्दे पीग्य। पु गृतरहा पेह । -श्स-पुर क्षेत्र । -शद्(म्)-पुर बंदमा। -रेत (स्)-प्र करता कीय शिम । - हिंग-पु • क्या ~सिर्(६)~इ यत्का वास्तारमध्यो पुरोदिन। -बराष्ट्र-प्र• विष्युदा शुक्रर-मरवार् । -बद्धम-रि• यदक्य विरतार अनुहर करमेवाला।-वस्क्र-पु एक लागि बान्दरस्य दे विना । -बारी-स्वी० स्रीमहत्ता । -बाट-अब स्वान को दाएडे किए मैरा और दैवार दिया गाना हो । ~वाइ~ि यरका क्ष्यान्य दरनेवाना । ~वाइन -इ यह करनेवाला लग्ना विष्णुतिक ! -बाही (दिन्)-दि दे बह्याहै। -विद्रांश-पुण्यक्त बो निष्ठकता । -विश्वष्ट-नि यदने अपूत्रहार्य निप्तन वीनेशना १ -वीर्य-५ रिग्रा - वृत्त-५ रराप्र। -बेबी-मी बाबी देरेबार -प्रत-रि वए बसी बच्चा बर दे निद्योंका बच्च कर नेवाला । - सामू-बु शालम अतुर ! -शरवा-बु बयमंदन वह कुर में छात्रा इमा स्थल जिसके मीने दग्दार्थ क्षेत्र होगा था। --

शासनिर्दिष्ट समयः पूर्णमासी । −कीछक-पु॰ वरका

-मूर्दा(द्वन्)-पु॰ वृषद्रा शिरा। -सक्त्य-पु॰ क्ष्ट पक्षी। -बाइ-वि क्प के जानेशका। -बेप्रज-प यपको दक्तनेवाका बरव । -संस्कार-पु यूपकी स्वापना प्रतिया १

थपक-प [सं] पूपा अकृतियोंके मेदा प्रकार। युपीग-पु [सं] पूप-संबंधी कोई भी बस्ता।

पूपाक्ष-पु [सं•] एक राइस ।

युपाष्ट्रति –सी॰ [सं] यूपको स्थापनाके समयका एक HARTE !

युपोद्यार्थे-पु [सं] शूपको स्थापनाका कास्त्र । मुप्प−पु[सं•]पटाद्याः

पुरप-प दे 'बरोग ।

षुरास-पु॰ एक पहाड़ । स्वी॰ पूरीप-पशिवासी सीमापरकी

पुरेनस-पु॰ [मी] एक मोक देवता; ग्रहविशेष (हशेक मारिपात् । पुरेनियम−५ [बं] एक मारी और शुभ्र बाहु-तस्त्र वो

पानीसे १८७ गुना मारी होता है। थूरेश्चिमन-पु [# यूरोप-!-एडिएम] विनदे माँ-शापमेंसै

भीरे एक पश्चिमाना तथा दूसरा सुरोपका हो। पुरोप-पु [अंग] पूर्वी गांकार्दको छन्छे छोडा महाग्रीप बिसके बत्तर माक्टिक, पश्चिम श्रतकांतक, बश्चिण मृतस्व छामर तथा पूर्वमें कार्देशस और बुराल पर्वंत है।

पुरोपियम-तु [सं] पुरोपडे विशे देशका आगरिक। मि ब्रोपकाः मृहोप-मंद्रशी ।

युरोपीय-वि वृरोपकाः वृरोप-संग्री। मूप-प [मं] दान श्ल्यादिका पानी जूम, शोरवाः

घंडतराया पेत्र । मुस्प्र-पु [स] बाहुनका शुंदरतम कदका विशे वसके

भारबोंने रंभ्यांसे निग्नी सीदागरके बाब वेच दिवा वा वर्षे गाइमें वह बहुत प्रतिष्ठित पर्यस् बहुँका । पुरु- पु समूद मुंदा सेमा।

थे- धर्व बह सर, धर्वनाम 'बह का बहु ।

मईंध∽सर्वे बही।

पक्रण-सर्वे यह मी ! येता=-दिश्दत्ता।

चेन−सर्व[मं] बिनसः। ≁क्षत्र प्रकारेच−क्रिम क्रिमी मी तरहमे । यन-पु (बा) जापानको सुरुव मुद्दा ।

थेसन-पु[न] श्रीमना धानाः।

यह-सर्व है नहां।

यह - भ॰ वह मी।

र्थो−× इत प्रदार। ∼ही −व वती रूपमें: हमी बरहते: निप्तकोत्रम्, बंगनस्य हो।

यो - नुर्व । यह ।

योक्तस्य-दि [।] आहते कोग्या शिकुल करसे योग्य । बाना(४५)-दु [र्स] बोहने विचाने वा वॉबनेवालाः गारीशमा बमारनेशमा, बदेविन बरनेशमा ।

पोषत्र-त [र्ग] राजीः वद दस्ती जिल्लो गारीका देव मुरुचे क्या क्षेत्र हरती वॉपनंदा वेच कीजार ।

वीर्वचर-पु [सं] पीत्रकः संत्र को सल-स्तांके सोवनके क्ष्पि अञ्चल होता वा ।

योग-पु [सं] जोड़नेका कार्य (ग); संबोगः संबंध संपर्कः अकिः चपायः नियमः विवासः स्वा ववनुकताः परिचामा बीयकः बसीकरणः गारी, बाहना क्वतः जामः वनः व्यवसायः श्रीपणः ध्यानः संगतिः छकः, विश्वासमातः शहनासके किए आयोजित मंत्र मंत्र पूजा, एक अपट नादि बुक्तियाँ; वृद्यः सुमीदाः सुबीमः विच्रवृत्तिका निरीवः मोसका बपाया प्रेम-प्रवीमा मेठ-मिकापा मेरान्या मामा मान बादिः द्वय कानः साम बादि बार प्रकारमेः स्पानः सहबोधिताः क्योतियमें प्रधान महाता सुन्ति, प्रयोग व्यामिचारिक बनुद्वान भी शरह है भीय, उठारा प्रवास: जलाब, वर्षे (स्तान बादिका)। संपत्तिका छाम भीर बुद्धिः वक छंदा बंद-धर्मकी विश्लेष रिवतिके कारण होनेबाले क्रकित क्योतिको बिधिट काका निविष्ट विवियो बारी भौर मधनोंद्रा निश्चित मिदमसे पदनाः नदांग योग जिसमें बम, नियम भासन प्राणायाम प्रश्नाहार, बारण प्यान भीर समझ्विका संतर्भाव है। इक्नोग । -कम्मा-मी वराहाकी कम्या । - कुंडिलिमी - सी यस उपनिवर को माचीन नहीं मानी बाटो । —धुस-पु• अक्रम्प वरतका काम और सम्म वरतको रक्षा करना। राष्ट्रका समर्थाः कामा करवाण मंगला निवाण, सांतिः वृक्षरेकी भन-संपत्तिकी रहा। वह वस्तु की उत्तराविकारियों में म वेटे । -शति-स्त्री चेनवप्री स्वितिः नरस्पर धनस्त होना । -वासी(मिन्)-दि योगस्वते बानेवासा (बायुमार्यमे) । -चन्नु (स)-पु॰ मामान । -भर-इ दन्तान्। - चूर्ण- द बाद् रिधानेवानी इसमी। --ख--वि+ बीगमे प्रसन्त । पु+ घीग-साचनकी यह अवरथा। अवस् कदारे । - क्षत्र-ह वाह अंदीदे बोइनेसे प्राप्त ६७। -तस्य-दु योगके सिकांकः एक वयनिषर्। −तरश-ध परस्पर मिछे दुप तारे। दिनी नग्रमका प्रवास दारा । —दर्शन —तु महवि कांजविक्रण वीयन्त्र । - वाम-प् वीगरीयाः सहयोग धरमा, हार वैशनाः करण्यान । -धर्मी(सिंद्)-प्र वागी। -बारणा-ली॰ व्यामकी वदास स्विति । -धारा-स्वी॰ अक्रमुपदी यह शहायद नदी ।-मंद-पुरु मगरहे भी मंद शनाभौनेने वसः - नाध-तु छितः। ~नाविक-तु वक मधकी ! -- निहा-न्यां समावि निहा, धर्द समावि और निद्दात सुनके अनुवे प्रस्तवकासकी विष्युनिद्धा जी दुर्गा मानी गयी है। बोगबी मुमानि सुद्ध-ग्रेपमें बोरीकी बृग्यु । - निक्रासु-बु बिग्यु । - निक्रप-बु॰ महारेव । -पह-पु॰ वह मापीन परिपान जो पीठसे पुरनीनक थीता बा। श्रेवण (प्रापुर्वेक्ट)। ~ पति−प्र शिका (वच्यु । —पानी—भी॰ बीयकी पानीः पंत्ररीः वागमाना । ~पथ~र वोमधी और क्षे जानेवाना मार्ग । ~पश्ड~ षु भार संगुल भीता रह प्रधारका उत्तरीय था पृत्रनादि अवसर्पेपर उपशेषके समान पारण दिना जाता का कौर वाप, दिरमके कमई वा न्यका दोना था । -पार्-मनीरशायक कृत्व (वे०) । -पार्रग-क शिक् बोली, वृत्तं दक्षीर दिव । नवीद-त बोददे बोस्व

वज्ञ स्वया शाला-शो बन वरनेश स्वान बन्धीरिए । नशास्त्र-पर भोजाना । नशिष्ट नशायनप यहचा स्थानिय । न बील-वि बार-बार का वासावने का करनेवाला।-श्रद्धान्त्री । नीयस्त न्यू बद्दे निष् भव इब्रह्म सम्प्रदी । −र्मशिल=दिक बदने बल्पादित । ~ मंत्रहरू - १० वरपान । - संस्था - मी० वरस्यान स्व। -मनम-द॰ दर्भशाक्षा । बाम वदम्य । -साधम-षु । बहरहादा विग्यु । न्यार्-पुरु गुल्हवा देश दिल्हा । -सिक्ट-को यहसे समाप्ति । -सप्त-त वर्नेक, बरोपरीत । -सम-पुरु रिक्ता यह दामशायत हेवर मरेशा - स्थाल-पु वे 'यहपुर । -हम -हा(म) ~ १० हिन । - हरप-४ (२०५ । - होता(त)-इ बच्ये देवनावेष्टा बाराहत बरमेशामाः बनुदा एक प्रतः। यज्ञास-त [र्गः] यदवर्गा बद्द । यक्तीरा - च [मं] वहनगमधीः गुण्यः वाण्यः यह दिस्स कुल्लाहर दिला ! - मानि-मी वर-मामयं दा कप ल FOR 1 यनशास्त्र (ह) शेवनता। षञ्चानार−५ [मं] यदम्यान बद्यानाः। यक्तामा (।मन्)~५० [र|] विन्तु । यज्ञाधिपति-पुर् [मं] बध्द स्थाभी शिल्ह बरापुरू ! यक्तप्रतिष-५ (ग्रं॰) अस्त्रिष्टमध्ये याचा आपंत्रामा DE STIEL DE ME CEI STR I बतारि-५ वि विवासका । बद्धापपथ−५० (१०) विश्व । यतासन-द (व] विनार विति द्र−प (०) नदके वनाप्रश्तर प्रवास क्षत्र क्षा करा है । यनिय-विश् (संग्) बदनांश्यो का बदके वायुक्ता बन्दा ब्रेस्ट्यर्गाः प्रयोगीय दे किए सम्बोधीः प्रविध १५ - देवताः । इत्तर तुन । - देश-५ श्रीमाधि निय वस्तुक देश । कारभार्तः प्रभागारं चगर्यः वगरवन्ति । बार्टीय-वि (मेर) यह लंदबी। बादका । हर शुनदका देश । - मद्याराय-प्र विवास वा बलेश-पुर्व (००) विला गुर्व । ब्द्रसद्वर-दुव (संब) दिग्ना बाजय-पुरु [रेन] रेग्दिन समा १ दि । विने बद वह हो महरीहरूरम-पुर [110] बयमें बाब बानेशने पावर्गह : बक्तीप्रवीत-१ [म] वह ह हा शब्दा दिया हुता. unter aufe, uber -efreie-ne ubenn ! at any when attached that it factored in नेरको किए लिक विक सरावान निर्वाध Per () 1 बार-पू शि विशय कारे केल कुलाका पू बहा। **बन्दा**नके (⊷ेदह। सम्पन्त (मेर) बार मा वागीरीय मार्च्या है। हमा gebrant ann gen gebenfinnt ne ge मान्द्र(शाप) १ [१०] व्यच्छत्रात्र शिप 421-4 F4 55 F पण (तम्)+स (स. हेन्। a. वृद्धिः wenfer i bere ne im ein feetger u. ?-

मन निर्देशित हो। -सम-दिक स्वादे । बराम-८० [लं] बन्त बरना । दमपीय - पि॰ वि वे बच्च बच्चे होता । यनमाम-वि (गं०) क्या दान-त्या शेरीहरे तर रमा चेम्प र । थागमा(भान्)-रि (र्राः) संदन्त्रकः संदर्भ । यनि-तर [ग्री] विनेदिय विरक्त होसर प्रेपटे किर मवन्त बर् मालाः राम्यवरी कार्न दरेगंका श्रेन बना BETTE TE AN ARCHARD DE AND PRACTE THE RESIDE COURSE BE UP ! AT POP P. धीरमें विकासका क्षांतर कोड क्याचार सर्वाप्तर कि यान यह राजः विषयाः स्रीतः स्र्यंतरा स्व प्रदेशः -चौत्रायश-यक यनियोदा विशेष प्रोत्रक प्रशा - चर्च- ५० राज्याच । अञ्चल- १४ व्हेन्स दिशाहर -धंत-र स्तरे वित लिपित स्वयत्त हे हैंदेस शीव । - प्राप्त-पुरः वनिर्मय शीरने बुग्द ग्रीह । - शाव श्वामान्यापन्ये । न्यानियम् - ५० ६ पन्न वर्षे मुख्यम बोहर बामम दिया अजैतामा मेर विके दब इतः साह दिनेक दब इत (४ राग)। विशानिः [तेन] नेकिनः यतिमी - ६३ व [सं र] (१६५) र वर्ता(तिम्)-५ [१] सम्प्रणी । यतीम-पु (भ) रे श्री-रापश क्या करपा ॥ दिन' भी पापका (बचा)। वेषण । -शाम-पुर करें THE ! दगुरा वर्तका-मार्थ (तंत्र) वदरेरदा रेपा र यमेक्टिय-वि वि विशेष परिशेष बल्-सर्व [त] आर -किब्यू-व क्रेप्टन हुए नरत बस । च्या सारित-विधन बात नर र विच"र **व**िमाद । winft [t] 254 meligergermetel यम-त [त] क्येप्ट प्रशास सहस्त्रामणः विकार का अराज अक्रवादा ब्वायस क्षत्र ने क्या दिनी तीय प्रकार वे-क्षांन विष्यंत क्षेत्र प्रवासीय है न्यर-रि वे विश्वरात् । न्यर्वदन्यर श्^{रीक} कार बार र नशीय-दिश सन्दर भारती स्थान mil i बाबामी-दिव की किनी एमारे बना दूरे ! मधान(वप्)-वि [वं] कानांच दश्र म 24"1 बुर्याच्या (ए.) प्रदुर्गत अनुवास्त्र वर्षा ^सर MALL & أططمها (ال) المساهرة التيدية ودور ورسو ar teen quin-le [e] unt agen er fiet! the same to I take the lead to be and addite

ber seit auf mer fin marfes me anng

mint i mittink departs nach er

advant mergins in an average arrest

वदा - विच - सना(नय) - सनम-विकास-

बनात देशेक केम्पान । - एक्प-पुरु स्वार्व-पिटिने तिष गांचा प्रथा कारामी (ची०) र -चक्र-४० चोरानेन भाग करा । -बल-पुरु न्दोपल बीग-नाबानी अधित भागी ६६ ग्रांतः । – प्राप्ट~ि (वह बीती) जिल्हा दीव पूर्वत प्रभादः दीग्यारी स्त्रुपः −शाक्षा(तृ)−श्री० रेन्द्री इसे । - माया - भे जुद्दम समाधिकी अर्ड दिस र्षाना रिष्युरी रुन्ति, सामिः बरुप्यसी कारा ।–प्रवि पर-व रह प्रदर्श दे रियाः दिश ।-पाला-सै० वणसी माना वर बामा जिल्ली प्रधान्यान वीम बीर बामाके अनुकृष व q (प्र= वदी») र ∞युन्तः-वि+ बोनाप यीव मध्य । न्युन्द्रिनमा । बोग्यो बालुन्द्रि रोबोर् समहियो र्णन दाना । -योगी(गिम्)-५० योवामीन घती । -श्य-दुक सार्वादे १ -श्य-पु बेंग प्राप्त बहनेशामा भाषतः । च्याजपाग्य-पु गुग्गुष्टज्ञपान् ६४ व्येषा यो गरिना बानरेल सक्त अन्तिये वदशास है। -इन्हि -भ"+ दी हागी दे शेमी बढ़ा शब्द दिममें वर्ण द्वाल भाने सामान भर्व छीतहर विशेष भर्व देवे हैं-ये हे देव-रा । - रीक्षता -- की एक देंद्र आदिक लेप (रम्बी स्थाने ब^{्र}में अध्यव हीनेकी श[ी]ल का जाती है। देशा बाला मन्तर है) । अक्षाची-मा । हिमन्यका यह गोर्च । --बासिष्ट - बासिष्ट-व वद बर्गान्तरंत्र जो अन्तर्वनित् महा माता है (कुछ कीय कश्योद्धीय हामाबर है अंतर्गत शान्त है)। -बाइ-५ अनु रूर और स्मिदे। -बाडी (दिय)-त श्रीपन, हम्य ना बी भोग्रीयोधी व्यवे मिमने बेर्य बरें। बायबा साम्बता संग्रीयाना वादा !-विकास-मु कप्रापूर्ण विकास । - विकास मु क्षेत्रका क्षापी। दिन बोर्ल होते हैं होदने बोर्ल बहाने शका बाबीतर रेप्रमानिक । अपस्तिअभीत क्षेत्र हारा यात्र विराही राज्य ब्रीत ।-सन्दि-को भीगनाचनमे त्रात्र शांस नशेएक । -शाहर-म माधनर वर्ष हैनेशमा बीरेन्द्र शहर । -सारीरी(शिष्)-देश मेंगो ! - माछ-देश संक्री बन्द्र केप्लियाई मेंक हा दाओं में कह रिवर्ड दिल्लानिके दिर्शालकः गांबीर्यम विकेशन है। सारवरक्राणी दह राषा भाषत्वा मा वायो है। देशन शहरे बढ़ भारत मान है। बुरुष देवेंच शास्त्र मानिक जागाया जागाया । क्रन्य मार्ग प्राप्त की शास्त्रविका रुग्वे रिटाइ की सिरात सिरमा है।-शाको(किन्)-तु केल्टामध कृता : अक्षिमा = व्योष : वर्ग वर्ग = शास्त्र = व् flif det enner gman-31 rebiffit -तारम् एराहे हिए रेज्यन का जाते प्रस्पः गापन रिताम में- कि प्राप्ति कारे क्या के लाह री। - विद्य-पि रियो क्रिय क्षेत्र कृत ही मुख की र - (र्राष्ट्र-को - देशहो स्थमण र-स्थ-पु -म के बारे र मूर्त के केंद्र उन्हरू-दिन बीएडे एर दूर्वा है बोमाराय-१ (१५) विन्यु र

कोम्बन्ध्(क्यू)-व [जोपोर्टा (को जोगार्टा हा बोम्मेन्-वूरि जिपोर्टे यह ही कहाई-व्हाहित्य जन्म कम्पार्ट व्याप्ट वृद्धा विद्याप्टि ह विभाजके-वूर्ण हिंदी हरा दिशा विश्वार्टि क्यूपे बन्धेरे कम्मेन्द्र कमार्टे कहाई होता होग्यु केन्द्रीय को पूर बानेशामा मेहन प्रदेश । बोगांत-पुर [10] तन गांप बारों के सम शिवदे दरण बहरी कराने शिक्त है (एक शर) । बारागोगाय-पुर (में) मेरोटे शिक्त केलों किए शिक्त बारक सम्बद्धारित ।

योगोना-भी० (वंग) पुराने गाँद ना कर दिनस्तर है और मूस पूर्वापण तथा वरणत्वम सम्मेने वाप वरण है। यागांवर-पु (वंग) रह नीद देशना यागा-भी० (वं) भोजनी एड स्वर्ण । योगाव्येश-पु० (वं) याज्यों में स्वर्ण कर्म विकारीताली स्वर्णता गाँव।

किनानेशाली काररेग राज्य । धोतामान-१० (न) वेण्याच्या । धोतामान-१० (वेण) वेशेश तह राज्य करण्य रिगारी नामार्थेश स्थित रिजा वाल है और तन्य पार दिएका विके राज्यिक काल बाना करण है सिक्य गांवा बोगा-काल्यावा धोतामार्था (अस्)-१ (कि) वेण्या । धोतामुख्यानान-१० (कि) वेण्या । धातामधिन-थी (वे) होति क्षणी प्रसाव है करण वेण नामार्थित-थी (वे) होति क्षणी प्रसाव है करण वेण

वाण ग्रेंबर ()
वोग्राम्यम् (० (१) वेग्राम्यमः वेश्वे क्रिये वः
नित्यं भावम् ।
बोग्राम्यम् (१ (विष्कृ) महि (१०) वेग्राम्य दृष्टम्यः
वृ वोग्राः
वोग्राम्यम् (१ (विष्कृ) महि (१०) वेग्राम्य दृष्टम्यः
बोग्राम्यम् पुरु (१०) वेग्राम्य । पुरु (म्यूम्य वेग्यः)
बोग्राम्यम् (१०) वेग्राम्य । पुरु (म्यूम्य वेग्यः)
बोग्राम्यम् (१०) वेग्राम्य । पुरु (म्यूम्य वेग्यः)
बोग्राम्यम् (१०) विष्कृ व्यास्य द्रम्यः (म्यूम्यः) (१०)
बोग्राम्यम् (१०) विष्कृ व्यास्य द्रम्यः (म्यूम्यः) (१०)
बोग्राम्यम् (१०) व्यास्य व्यास्य द्रम्यः (म्यूम्यः) (१०)

कारिया-१ रहरूम जिल्हासभार होपार क्षेत्र^{सर} वीरामस्टर्

वीचीहरू (वर) वर्षके वेची? वीची(विक्) नी: (वर) वर्षके वाचकों हरू की है। वर्षकेश द्वार कर प्रमाण वरणकी हरू की हैहें कर उद्देशका क्षेत्रक हैं। इस का व्यवेद : न्यीन)बुंद पुत्र वर्षके का भूद की इस ज्वार कुछ की है। व्यवकात की कार्यकों है

न्तर क्षाप्त करें है। क्षेत्र है कि क्षेत्र करें हैं कि क्षेत्र करें हैं कि क्षेत्र करें हैं कि क्षेत्र करें

~कासी(सिन्) −कारी(रिन्)-वि+ संग्रापारी, गतमाना करनेशका । ⊸कास्य−श इच्छानुकृक। -काय~न कामादे अनुकृषः। -कार्य-न• कार्यके शतुक्त, भैदा करना पाहि**ने। −काछ−श** समित समयपर । वि समयक तप्रमुक्त । -कुम्ब-वि कुका-मुसार् । −कृत−दि+ निगमानुसार् दिशा हुना । -माम-म मामहं अनुसार। पु दशामेल्य शामक मर्गातंत्रार । ~सम-म• चकिंगर । ~जात~वि॰ गुर्गः मीय। - ज्ञाम-ज जहाँतरु मासूम हो। -सथः-सम्प-वि व्यक्ति स्वी, हुनहु भैसा बुबा हो । - मुहि-ल॰ वो गरकर ।-दिक्(स्),-दिश−ल चारों शेर । - १४-वि वेसा देखा हो। - मियम-वि नियम-मसार। − निर्विष्ट−दि जैशा तिर्देश दिवा गया दो। —स्वाद−क स्वादानुसार । विस्वादानुक्क । —धूर्व-वि॰ पहलेकान्सा वयोंकाल्यों । अ॰ वहरेकी तरहा -प्रयोग~म प्रयोगके सनुसार । -साग-वि+ वित्रमा माग इ उत्ता वदी वितः अ भागके जनुसार। —बुद्धि –सर्वि∽म समश्रके मनुसार। –सुक्तीन~ विश् को सामने देख रहा हो। -मृस्य-वि मृत्यके मनुक्प । – यथ – त० वदोबित क्वते । वि वदोबित । -मोन्य-वि जैसा वादिके स्वतुक्तः -शीति-वि मचकित प्रभाके अनुकृत । ∽हन्ति∽वि इच्छा€ अनु रूप। म इच्छातसारः — स्टब्स् — वि प्राप्तिके अनक्तः वभागाम । - साम-विश् जो मिन्ने वर्ताके जतुरूप । −वत−वि क्योंदास्त्रीः अ श्रीमा चादिये समी हरहा - विभि-म विभिन्न की विभी वी वही है। अनुमार । -पिडिस-दि शाग्शनुमीदित । -दाक्टि-षण शक्तिके जनुसार शक्तिकर। −शक्य-अ रे• बमाद्यस्य । – हाायु – भ दास्यानुसार । वि जीसा शासमें दिया हो वैसा। -श्रति-वि वैदाननार । -संदय-त वद अवीनदार वही कुछ बलामें का करेत एक क्रमने हो और आगे चटकर छनने एंनेबिन बस्तुओं-का वर्णन भी कमी कामी किया जात । - सँसव -साप्प−न की ही सो मरमक सःमर्जकर । ~सम्रच- म निश्चित समस्तर । ∽श्चाम−श क्वित श्वामपर । पंचागत-दि [गं] हर्गं। यपानुपूर्वे - भ [मं•] परंपराक्षे भनुमार, झमानुनार । मयाभिग्रेत चयामिछपित यदामीह-वि वि । इच्छा-देशमुस्यास श्रहानुनार। यवास्य -दि है 'यबार्य'। मधार्थे−4ि [मं] सत्त्व, प्रकृत कवितः। ≔र्थे−दर असन वरमुनः। यमार्पतः(तम्)-व [नं] वन्तुनः ववानुवन् । षयाई-शि [नं] यथनीम उरनुका -वर्ण-पु द्य १ यमावरास-अ [मं] शतगर्दे अनुनार् । षपारव-रि [गे] बनार्थ । पपटउ-वि [मं] रग्णानुसार मनमाना। यथरणाचार-पु [ग्रं•] स्नेग्धाबार सनमञा कृत्य COST 1

वयेष्ठाचारी(रिप्)−वि॰ [सं॰] संच्छापारा जपने ममदी क्रुनेवाका । यथेप्सित-वि सि•ो वधेश्यः। थधेष्ट-वि• [सं•] जितना चाहिये घतमा । वयेष्टाचरणः वयेष्टाचार-प (शे॰) सेप्छापारः भनमामा भाषरण इ.टना जैसा पर्छर हो वैद्या भावरण इरवा । वयेष्टाचारी(दिन)-वि सि॰) मनमाना काम करने ৰাভা i थयोक्त-विश्विशे जैसा कहा गया ही क्षत्रतानुसार । ─कारी(तिम्)=िष शास्त्रातकुरु काम करनेवाकाः मायापासक । थयोचित-वि॰ [मं॰] त्रैसा बादिमे वेसा समुचिद्र । थयोपयुक्त-वि॰ [मं] वशाबीम्य वशोपयोगी । यद-दु [स] हाथ। वदपि = अ दे 'वधि'। षत्रा−अ [र्न•]बर तिस समय बर्ही -कट्रा−अ० अक्तम क्यीन्ह्रमी । यदि-अ (र्र) भगर, को (र्रह्मय और ओस्रान्यंत्रह वर)। -च -चेत्-श॰ वचि अगरचे। वदीय-वि• [एं] क्रिप्तका क्रिएको । यह – प्र∘ [तं॰] रामा वयःतिका स्वेष्ठ तुमः युरुष्काः द्यार्थ देश ! -कुछ-पु दे 'यपुर्वदा' ! - मेद्रम,-माथ ∽पति,−भूप −शज~५ 🛛 🕶 ! –राई+–५ बदुराव कृष्ण। —वीश-९ राजा बहुका कुछ। -थंदी(शिन्)-पु यदुक्तमें बत्यम् पुरुष यहाता। ~बर -बीर-ध रे 'बरुतारं । यत्त्रम-५ [तं] इ.स.१ बहुच्छुचा-स॰ [एं॰] बनवाने ठीरकर, दिना किछी निवस या कारणकः अक्रमात् , दवबीगते । यरच्छवामिञ्च-इ [सं] सत्थी की यरनाके समय कर श्मान् आ पर्नेश्च हो। बहुच्छा-मा॰ नि॰ रश्काभाव भनमामापना भावरिमक र्श्यायः स्वतंत्रता । - प्रकृत्त-ति स्वतः निष्कः, स्था हमा आस्छ । - छरच-दि देवनेगने वर्तका सना बाम शहर - कामसंत्रह-दि दवने की का मिन बाय स्मीमें संभाव बामनेशका । -बास्य-पुर व्यक्ति विशेषका स्वर्गन नाम ।-संयाद-पुर संवागमे द्वारं मेड या वानधीत । वर्षाच्छक-तु [मं॰] वर तुब धा गीर निये सामैदे क्रिय इन्ह्यू ही। यद्यपि~न [गे॰]भगरन, यदि य । यहा-म [र्व] सवसा सप्त्ये । -तहा-म वश्नास जैने-तैने । पुरु राष्ट्रपराज । यम-५ [ब] क्षुदे देवता दिनही संस्वा चीरह मामी यदी है। यमरामा मुहर्ग शंताल यम वा मंत्रमा नियह। एह मत्रदश क कि कीला। इति। (रुप्पु) बाबु। की में संबंध । -कात -कातर-प्र॰ थयका शरा, शाँका, एक प्रकारकी सम्बार । -क्रीट-पु बेंचुरा पुत्र । -क्रीस-पु

रिष्णु । --घॅट-पु॰ वीतारतीक्षा दूसरा रिल कार्तिक

शहा मितामा वर पृष्ट दीय दिसमें हान काम बहित है।

बाधवस्त्रथका सामः ग्रिव ! योगीइयरी-सी॰ सि॰] दर्ग्य । योगेंह-पु•[सं•] एक प्रकारका रस (जा•व)। महान् कोगी। योगेश, योगक्षर-प॰ (छं॰) छिब योगोववरा कृष्णा शिवा देवद्रोत्रके पुत्रका सामा एक सीर्थ भी सर्वभेद्र योगो (क्रवि, इरि, अंतरिद्ध, प्रमुक्त पिप्पकानन आविशोत्र, द्रमित अमस और क्रसाबन)। योगेहवरी-स्ता [सं] दुर्गाका एक रूप छार्कोकी देगी। वर्गाः ककीशाः

योगेप-द• [सं] एक बादुसे दूसरी बातु वा बसी बातुका बीग बरनेद्धा सामन (सीसा) ।

योगोपशिषद्—सौ [सं] एक ध्वमिनद्ः ग्रुत रूपसे तना छक-दप्रते श**तुनासको तुक्ति** । भोश्य~वि [तु•] पात्र अविकारी, सायका मेड ग्रीक्शान्तः प्रविद्या बीड्रमे कावका सुंदरः भारत्यीया जीतमे कायका समर्थः मिपुस । पु॰ इव शाहीः पुष्य नक्षत्रः कविः सामकी

भोषधिः चंत्रतः । बोग्यता-मा (मं) प्रयुक्तताः श्रमताः तुरिमानीः प्रतिहाः भीकातः अनुकृतनाः वास्यकेतीन तालर्ववीवकः

गुनोमेंसे एकः ग्रन्ट-अर्थ-संबंधको संमयनीयका । योग्या-को (सं॰) बुवतीः मन्यासः शक्यक्रियाकः भन्यास

(तुम्ह)। भोआके−पु[सं•] पुनियोका नद्य पतका सन्त नो दो वहे मुलंडोंको मिलावे। वि संतुक्त करनेवाला संवीतकः बोदनेवामा ।

योजन-५ [सं] एकपीयरण मिलानः योगः परभारमाः बुरीका मानविद्रीय (दी चार थाळ कोसकी मतभवसरी। सिवियाँ मानी बाली है। बोलकी संगर्ध ४० बैमी वस इवार क्षेत्रका योजन जानत है)। −र्शया∽ मी सम्बन्ती छोडनुपत्नो म्यासब्धे मानाः धीवाः करतरो । −र्गधिका−मी सरवरतोः कलारो । −वर्षी

∽वस्की−सी महोड**ा** षोजना-व्या [मं॰] नियुक्ति, संयोजनः व्यवस्था आदी बना कीरे काम करनेका विचार जानी कार्यकातिको पूर्व-करवना 'रक्कम । कोर मिलामा वनावर रखनाः परमाः व्यवहारः प्रवोगः।

योजनीय-वि॰ [मं०] योजना बरने योच्या जिलाने बीइने बीग्य ।

षोजम्प−दि [तं∗] बीजनकाः योजन-तंत्रीः ।

कोजित-(व [सं] सुक्त की दिलाया गवा की। जिब मिनः बनाबा हुनः १थितः

पाम्प-दिव [मंव] व्यवदार-बीम्बा जीवने बीम्ब । प्र

वे भेक्नारे जिल्हा बीत दिया बाद ! बोब-पु [मं•] जोत माचा, वह रस्की जी जूएको हैव गरहमंने बोहती है। बहाबा संपत्ति। जब-दल ।

~संबद्ध-वि भनो संबक्षिशको। -हीन्-वि÷ भन दीन निर्देश । बोद्रस्य बारव-दि [सं०] सुद्र कानै दोग्या जी सुद्र दरता की ।

धरनेदाला । बोध, बोधेय-पु [सं•] रणकुशक सैनिक। योधक-पु॰ [सं॰] बीबा, बीर ।

थोषन-पु [सं] तुब छश्ररी रणसामधी। थीघा(ए)-वि॰, वु [सं॰] दे भीगा ।

थोधी(धिन्)−पु[सं∘] थोबा, शेरा −(धि)वन−

बीनस~प [सं] बनार मधा, वनमाल।

पु एक विद्येष संगक्ष (प्रा॰)। योगि-ली सिंगी बस्पविस्थान, बहाँसे कोई बस्त पेदा हो। निवासी सननेतिया वेहा संतन्त्ररणा कारणा गर्मा वर्षाद्ययः वरमः वरूः यह मही (कुशादेवकी)ः भावतः **कानिः माणिविमाग (पुरत्यमतसे इनक्षे संदमा ८४ कास** हैं। इस २१ लाख मानव ई)। —ईद्-पु॰ योनिसा रोग-निधेष क्रिसमें गाँडें पढ़ बाती है। - स-पु: योजि छे बलक भीव (बरायुक और अंडक)। --हेक्सा-पुरु पूर्व कान्युनी नक्षत्र । -दोप-प्र प्रपदेश गरमी। ~फूक~ड़॰ [व्रि॰] बोनिके बंदरको गाँठ जिसमें एक छैद दोना दे और जिससे दोकर दीवें गर्माध्यमें बाता दै। – भ्रांश-तु यक वीतिरीग क्लिमें गर्माश्चय अपने रमामसे दर माता है। -मुक्त-दि मुक्त, वो भारत-

यमनमें एट यथा की । ∽शुद्धा−न्तों संविकीको दक शहा जिसमें वैग्राक्योंने योनिका आकार क्यांसे है। ~र्यद्य−५ पद व्यति संदीर्थमार्थविसे पर दरने बारेकी मोदका अधिकारी मामा जाता है (बह गवा कामाला बादिमें हैं)। - रंजन-तु रज्ञ'तार। - धुस्-प्र॰ योगिको पीडा स्थिबीका एक रोग। - ब्ली-

की धततुष्ता। –सकर–तु वर्षमेश्वर। –संद्योचक~ पुरु योजिको मिकावजेका कार्य एक भीवन । 🗝 सम्ब-पुरु वह वी वानिसे पैश हा अरापुत्र अंद्रत । -संबाध-9 गर्नवनी सिर्वोका यह रोग जिसमें वर्षधा में बंद ही मानेने बचा हम प्रश्वर मर जाता है (हसमें तकि)

4ी बामका भी **एनरा रहना है)** । क्षोत्र्यर्श(स्)∽ष् [लं॰]योगिक्टर वीनिद्धा वक् रोन

विसमें भेदर गाँठ वह मान्त्र दे। योप-द्र [स] दिवन दिमा ताऐस तिथि।

थोरोप−९ [अ•] दे 'दुराप । यौरोपियन-वि य [व] १० वरोरियन'।

योपणा-सा [मंग] पुंधनी, युवारिया सी: मरपुरती, REPORT B

योपा−श्री [मु•] स्पै नारी। यापिता-स्पे [तं०] 'बोविप्।

वाणित्-भी [मं॰] भी जारी। -शृत्र-वि नारी-इत ! - प्रतिपातना - भी भी प्रतिमा ! - प्रिया-

की इरदी।

वाषिष्- बीविष् का समामनन कष । -प्राष्ट्र-पुर सुस पुरवधे की ग्रहम कानेशका पुरुष । -१४-पुरु मारीरक १ बीर्र−मण वह का दैल्याहेका गए।

र्याणस्थ−पु[सं] रक्षसमः

भोदा(इप)-१६ [4] तुद्रदर्श, रण्डुद्यम । तु तुद्र | वास्तिक-तु [4] नवेसमा अध्या स्मित, रीक्स

वमद-वर 1941 - सक-प् वयराज्या शंभ १ - अ-विश् अवसी । पु धारवा-कीक जिंको एक जान्यपेस । यमल-विश्विशे की कीवें की प्रति प्रति के बह लगा भारा जिमहा एक भीरका संग क्षान दश्क भीर दस्ता क्षेत्र बदी अग बीच की कविनी हवार अपनी भेज्या वीशा । नद्याद्रनपुर स्वमार । नद्रद्रन्तु न्थे। -प्रची(यित्र)-विश् बमरी जीवनेशना। आसीता की विशाह है -मू-भी। वह मान दिनाने दर -जान-दिर पु देर 'यमन र -जानमार-सीर देर करमें दी बच्चे रिवे शी। दमबाध्या । - जिल्-दि स्प्युक्ते अध्यतेशाला लुप्ध-यमहा-भी॰ [ग्रं॰] दिषद्रीश हीन, दुर्श हिनके स सदा - नर्राल-पुरु पमश्री लिक्षि निर्मित किया मरी- एक तर्शनक देनी । आनेशना दक्ष दद्र । −वीट-प यमनाञ्चन, यमनार्जुनक-पुरु (सं) रोजुन्दे ही रोजून यमरावदा श्रेष बाचनंदा मनुष्यके मानवस्त्रको हो। महारको हेगाओहेन िक अर्थन परा । वडा - ह्रेटा-मी० यमरी हा । वड निवारीय भीर यमणी-की [लेक] जैपी रहते हिन्द हो ही रहते मृत्युक्ते रिक्षेत्र समयुष्ट काछ कार्यक्र और सगरम महीको-बापरा भीर कामी ह के पुर (ाम (बार्व) । -वृतियार-की दे वन वर्मातक-पुनि] दिन, मधुनन। दसः। दिनीया । -वृष्ट -वृत्रय-पु ब्हीनाः समके दुन । यमासिराध=पुर्व (मं] ४९ रिधीर्य वीदेशका रह रह । - कतिका-मा इमर्ग र ~देवमा-पुर मरमी स्पूत यमाहित्य-प्र[में] सूर्वेदा १६ वर । बिसंदे देवना यस है ।-हम-प्र सेमरबा देश ।-हार-यसानिका बसानी-लोग (सं) अप्रशासका अप्रराज्ये यादा दरवाता। -द्वितीयर-भी० यमानुबा-भी । [यन] बदास्त्रद्ये क्षेत्र प्रपन प्रपन्त । साचिक्ताका हितीया वैदाहत। न्यर न्यार-प यदाहि-प निने दिला। दीनी ыर परवाकी तलवार का बहारी र ~धानी ~सी+ प्रमालय-५० (११०) बस्दा वर बहरर । वमकः निवासस्यातः। -वद्यात्र- द्रः भएगे ल्युनः पशिष्ठ-पुर्व [र्ग] एक प्रकारका लाग है -बाध -साष्ट्र -पुरु यमीदे स्थामी, वर्षराव । -पपु-यक्तिल-बिक विको संबन्न स्वापा दक्षाः वैशः देवा । बुर बद पर क्रियारी ब्याहरिय बुदे थी। - प्रारत-बुर समध्ये याती-मीर सिरी क्ष्मधी वहम बसवा होते। काम ! - बर - प्रश्नास्य स्थान वसनेत्व ! - प्रती-वयी(सिन्द्र)-वि (सं०) शेरमी। दमशारी वसकीड ! (श्र॰ ०० पहुँचाबा नार वाहि-पुर [१८०] रह परि १ राजना, प्राप्त के देना) । -प्रदेश-पु । समराजा समरे याना-ली॰ [रांश] यहता लता बनदी राना दुर्दे । इतः -प्रस्थ-प्रश्च प्राचीन मदरः। -प्रिय-प्रश -जनक-त स्रो। -यति-त निग्रा-भिराप्त दापुर । - भगिनी - सो • वपुना जरी । ~यातना ~ यमगढे की धान बरहोक्त वसहात । - ग्राम (मृ) "डे क्षी । मरकदी दीशा अंग्रहानकी देश । नरच नवाहचन वस्थालती—पुरु दक्ष कृति थी बहुतत्था रहवनवार दें र बुक देशा । -शाम-बु यानेदा व्यापी, नदेशाम !--रावि -राष्ट्र -महरू-५० दमभेद। -ल-५ है। यमण्डा-सी॰ [त] दीन वानीयण वीवरीयी श्रावदे हे -- ब्रारा -- दिए जीन काराम करिया हिता दिए हो नेतर प्रदान के । ह्यारो । - ज्ञान-पुर बन्दे भवध्य निपाय राजपर्य यप्रसानव (मं) जरणी मक्षयः। राजाद हर, जिल्हा । अगरामानको व्यक्तावरी सभ यरेचर-न (गर) दिवस स्रीत नमून्यु मूर्वत और वह को जिस्के अपनी etiffe-g [66] electe es eleb upf 271 बच्च बी । नगुर्य-पुरु वि हो दशरीहरण प्रदान -व्याप-त अदामागानि प्रवस्त दी वे । किनदे पर बसीका एक प्रभा की की दूक्तीबाद्विता। सप्राचर-पु (स) देश दापावर । -स्याहा-पुरुष हिमने के प्राप्ता वह कर । थवि-पुर्श [र] वशाहत शहस । ~रबरार्(स्)-भी बहुना गरी। दू ो। नद्रेगा(म्)~ वयो(बिच्र)-पू [व] दिश दरश देश। पुर बागदा बाद्य वरतेश्वात । बयु-९० (८) बद्धा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्र uthid-2 [no] ladio at th thing to बसक-१ [तेन] एवं शामान्यार दिवये वक्ष हो साम यान बंधारी क्रिके स्थी योगां वर बात है किया। मा सन्दर्शन-बाल म रेड वे ती किस करीर एक हो एक-तु [त] की प्रद केरी यह तेना संबंध कर्त करेब बार प्रदेश बीना है। बाद बुला केक्नार बाद tan't freiten feit beid att im अद्वासमय ग्रंथ । दिन अवव्यासीहरू ।

हेन्द्र बड बाद की होते क्षेत्र क्रमीत है। ममर्गात्र-दू [गंग] दे अवर्गान्त । क्षेत्रस्ताः -क्ष्य-कः सहि। ब्राय-[म] बारद, यह श्रीष्ट । मु मिर्ग्य बरमप् -625-4 -Min-Z ar ag netiuf la 1 - N. - ag. etes frem bar, buert word unerer fe-सर् १८ रक्षनी ज बब साहर न्यापुन्द्रण की बे बंदेंगे [१4] ज्यावय इरवेशका । मक्ष्य विकास हवा कर बस्मर । नकीर " बक्रमान्यार-५ हे उपलब्धना । मूर्व नविष्ट पु भौदा भारत अन्यमार्थ बार देशांप यप्रविद्यालयो (६०) वे "वर्गलहा ॥ द्वाचन्द्र । - सन्द्र क्लाजा व्यक्तिक क्ला बसरी-बान यह दीरती करत १५० (१४४६) । वर्त - दिल्हा-भी र १. उर्व बाबद्री सर्व १ - हैंपन unen-y [no] fact

शादी। वि. हुन्तिशृक्त नदानेतृत्र व बीर्तपर-प [त] बर्भारिय मी बर्भाया निकास की । धीर्मधरायस-१ (ते०) माना गोपडा स्वन्ति जापस्या 103.87 योग-पर्शः] देश्य सर्गेन्दा सन्यानी वृदेष (बीताब-६० (ने०) बणवण बोग-मंदेरी ह यौरितक-रिक (१०) विनय हाला हे या बादारीस माधानी-बारे द्वार प्रकारित राज बरोदेने बढ़ (ब्बार) । न्हारप्रन THE WINTER STATE योजन्य-१ (१०) यह बोधनत्त्र बानेशका । धीनक बालक-पु [६०] विरुष्ट्री विका प्रका पत दरेका बद शार्थ्य की कलाके शिवसीकी बीसी बर महत्त्वी ही बानी है। बहाना (बुटविजनी गामही)। WIGHT ! मीचिष्ठ-दिश भिन्ते प्रवक्ता राज्य गरियो। शहरी दक्षते बन्दान भी सन्देश मील-१० (रे) दीहा, मिलाही। विश्व भीर । मीक्प-पु (तं) क्षेत्राः प्राचीन कन्योः एव प्रद-प्रजन

कार्तित कर प्राचीन देशा मुर्विदेशहर हा भूत । यीय-रि [र] दे जिल्हा के केलरेरे । एक पर्नन विशेष (स्थल है)। विश्वप्र व्यवेद ह सीवस-पुर्वार्थ) अष्टीवोद्या रामका माराज्यकारका स्थ बीएनेय-१० (६०) दूरहेप पुत्र । थीयब-व जि हे व दश्यात है बालों क्षत्र जिल्ह the the his selector is that सरी वेचा यम । नवायानिवायनम् नेराना -ergent-E miene Erleit ein ! यीवनाधिकारा-१८ । (स.) तर्गा । यांब्राच-५० (००) योपाउन्हा ६६ दाव १ बीबजिक्र-हि [ा]०] बंपलका बैरामापरी । चीवभोक्रच~प० [do] स बौर करन ! थीवराक्रिक-रिन् (तन्) बुरराज्यम् मुसराजनंदरी । बीबराज्य-पुर [र्ग] पुराप्तका था। मुत्राच्या र वीक्ताम्बाधिकेड-व [नं] र अहे डल्टरेसरे वि स्रवास्य स्थापित सर्व ।

₹

मन्त्रम बर्गः प्रयागा स्वान श्रुद्धी । दूसा क्षरेमे प्रयुक्त दीनेपर बद . और --वे तीन क्या ग्रेहण बनता है। र राजीर (सिन्नरी) सक्रवानीय क्रारी हैं ⇒ेरी ब्रान्टर मापा । हार । र्दश्च-कि [14] दिर्देन वरोगा प्रथम अंत्रमा मेर स्थ्य भक्ताहै । [सी॰ रहियो १] हु॰ निर्वय भ्याता विद्यार करण मन्द्रम् । र्रक्र-पु [य] महेर विशिष्टीबाना हिरण व हींगुल्लाक (रेल्स) होता बाला। क्षेत्र बार्ड व्याप्त व्याप्ताना प्रतिकार सन्दर्भ (गार्थेश समामग्रह तमाना सामग्रह) तम्ब्रुटि, मुद्रश्चना मन्त्रा बोदार वार्रशास्त्रा वर्ग दिनो भरार्थका वर हात जिस में यह मुद्दे किराते के सहा अवीकी केरिय क्षेत्र कृत्रका स्थाप्ता कर अधिवार राष्ट्रता सवा BUIL A HI BOY & (BA WOW ON HALL KEIN'S बर्नेको होता है का शावध प्रतार्थको विज्ञा हो दिएक प्रथम प्राप्ति गरी होना । दिन प्राप्ति करव कराइया पाक्रीक वीधा है हे करें हैं। तो देन क्षेत्रे अपन करें। विशेष करें एतंत्रका करें। च्यार-पुरियोगा । ज्यापु-पुत्रारकारी १९४) नक्षेत्रनपुर सर्वेटररूका राज्यः, स्टार्नेहरूर ecurs wifeng mire, wareset seral were i प्र अन्तर अन्नव बाहिता। -श्र व तितृही -प्रदर्श-भी पाल भार १००वीचमा-क रिवर्ताता atabel 1 wattaging labour 1 mange श्री हमार स्वारिताल ह मानु साम्राज्या । अपनीय ह ज्यूप nerent from THEFT THEFT THE COURSE PROPERTY AND THE Billing Bracker from the State of The Control Right.

र−रेरनातरी वर्णवणाता राज्योलको अवज्ञ और पूपरा (

हारः बारस्त्री पातास्यः । अपी अपूर्णानकी सी मायदा देश : -वीद-प्र असमाचा । -व्यवन्ता व्यातनके निवृद्धि है वाबहा हेकाच्या बचार न्यात -पुर (दिन) क्यार (क्यू) र -विरोध-^रवीतः दे [रि] सदेव (वीक्या स्ट्रीन क्यान्तर नमीत उन्हे fritte a -utfest-5 ffeb ten e cearb wan feate, eine mitet fen berbem ~संबत-दु काश्चानकोर शिल्मिश्चिक मा रम्बद्ध । -सुनि-सीर सर्वतः रोजना पुरिका -मृशि-भी वर्षतम् अध्यक्षिये अस्य गर्न क्षाच्या बुद्धान्य क्षाप्रस्थक अन्नदेश अन्नद्ध सम्बद्धाः रवाद र नर्शकान्यु वर रवाद वर्ग जावरेरच, जीव मर, मन्द्र क्षेत्र अक्षण बचार कें। नर्वकार र्ग्युन जागण्यात अस्त्रान्त्र (दश्क प्रेरेत न्यारी=भी योग क्या नदार प्र^{ाह}े भेगरिकम्बर स्थान क्षतेप्रवस्त भगद्रगं निर्देश रक्षाचा राजा कारकार रतना नेवानीयी No that such also to be being the minimal mountain scomety, y early 2 fft] of the feer and 1-total that HE EN I PHARICPHIAR (STEAM मस्त्रा के अंशिक्त संबंधिक रेप्कार्यक -भार क्षेत्र की १,७ तकार क्षत्रीया के ^{जर्ज} त्रम्पी ६ लॉबझल्या हु भार देश जुलकरेल पूर्ण mide was been an myth as topa म्पर्वति है । वृद्धि हे महत्त्वते वह वह वह वह है क एक केप्यानाम् । अञ्चलका र द्वा अवस्था अवस्था ment of a to me are in since I water बंद्यांबर-एक इक्स के हैं दलन क्षत्र इसके स्थ

भवगाइ-प्र•िस्ः पानीमें यतरहर भवानाः मौतर पैठनाः इपनाः भार सेनाः सीव, खानशैनः नदानका स्थानः शस्या । सत्रोदी जगहा कठिनाई। । व व अवाहा महिल । भवगाइन ~ पु [सं०] अवगाइकी किया। भवगाइमा १ - ए० द्रि • विहोइना : इडप्स समानाः पार बरनाः वेश्वनाः विधारनाः छासवीन बरसाः प्रक्रण बरना। प्रि. सबसी क्यानाः क्लमें प्रसक्त स्नान करना ! सवगाहित-वि [रं•] मधावा हमाः विसमें नहावा नाव (नदी थादि) ।

सदगादा ~दि॰ [सं०] नहाने वा द्ववदी हगाने वोग्य । सवर्गात~वि० [सं०] तिरितः बुहः वार-वार देखा बुआ ! इ॰ निदाः वैसरा गान ।

मवर्गुटन~पु [मं] प्रेंपरा स्त्रोका माथा और मुँब बकसा पूँपर निकासनाः पुक्ती पर्शः पद आदिये सँगठियोको निकासर बमायी जानेवाकी एक विशेष मुद्राः झाह् । धक्र्युंटनक्सी~विक्री• [सं०] बुंबरवालो । सक्तुंदिका - स्ता॰ [सं] गूँपण परवाः आवरणः थिक । बन्गुरिद-नि (सं०) दका, छिया पुत्राः चूर्णित । सवर्गुडिस-वि॰ [सं] चूथ किया हुआ।

बदर्गुंद्रन - पु० [सं•] ग्रॅंबना हुनना। थवर्षित−वि॰ सि] रॉथाह्या तना हमा। भर्**ा**च-तु [सं०] दीव चेव, तुराई।

भवगुन-पु॰ दे 'अवगुज'। **भग्रा**रण, अवगोरध−पु• [सं•] मारने-पौरनेके क्रिय क्वत होना नामात करनेके किए इधियार घठाना ।

नवगुद्धन-इ [सं] छिपाना गले क्याना । चवप्रह्-पु [सं] स्तावरः वाकाः संवि-विकटेय (व्या) धन्दके बीचमें प और ओके बाद जानेवाका कुप्ताकार (s): भवर्षकः देव (अनुसर्का चनदा); बंकुछः शामिबॉकासम्हः रागैका कराट प्रकृति, स्वभावः क्रीसनाः प्रांत सत् ।

भवप्रहूष-पु• [सं] शाया, स्कावटः अनावदः। शान । नवमाह-पु॰ [सं] किच्छेर, पार्थक्या वाचा अमिछाप। वयद-विश् विक्य दुर्गम।

नवबर्-५ [सं] विका मॉरा गुपा। नदी। दिकाना । व्यवपर्यय-पु • [सु •] रगपनाः पोलनाः साथः करमा भावन इता।

भवपात-पु [र्च•] मारनाः आधात करनाः वान शादिको कृटनाः अपसृत्यु ।

भववूर्ण-पु [सं] वातावर्त ।

भरकुमन्द्र [सं] हुरुक्ता पद्यरदेना। भवमादित-वि० [मं०] सब ओरसे बन्ना हुमा ! सवयोपक-तु [मं•] असरव समाबार कहनेवाका अफ गार् पैकामेबाका।

मदच्द∽सी दे शीपर'। श अन्यानकः। धवषन-पु [री॰] कुपी मीनावधंवमः निदा। वि॰ सूद्र। सरकतीय-वि॰ [सं] कहने नोप्य नहीं बस्सीकः निरा दे योग्व मही।

मरवर अवकाय~पु [सं] पुष्पादिका क्यन, होइकर रदृष्ट्रा करमा ।

भवचस्कर-वि॰ (सं॰) मीन, न बीकदा हुआ । अवसार-पु॰ [री॰] सङ्कः कार्यक्षेत्र । अवचित--वि॰ [सं०] बटोरा हुआ; अधिवसित । अवज्य, अधज्ञ-प्र• (सं०) भाषाके अप्रसारमें नेपा हुभा मधोमुस वसरोह ।

व्ययप्रि, ववक्रिका-को॰[सं] टिप्पणी, संशिप्त व्यास्या। सवर्चुर्जिस~वि॰ [र्स॰] चुर्न किया हुआ, पीसा हुना । अवच्यक-पु (सं) मोरके पंदा या सरा गामको पैछका बना हुआ चैंबर।

भवचेतमा →भौ० [सं०] अंत'संका ।

अवच्छन्, अवच्छात्~पु० [सं] अस्ट्र, ४क्स । अविकास-वि [सं] अस्तावा तुवा; सौमितः सविशेवग । अवच्युरित−वि॰ [सं] मिमित : पु॰ अर्ह्हास । अवरक्केन्−पु० [सं०] रांड, अंश परिवरेन्द्र। विख्यानः सीमा। (श्रम्भार्वकी) शीमा शॉबना। निश्वका परार्वका वह **गुण को वसे औरोंसे सक**ग इर दे स्थापि।

अवच्छत्क-वि [मं॰] शवक्षेत् करनेवासा । व विशे रणः सोमा । अवच्छेदन ∽पु [सं०] कारकर जरूप करना, विमाबन,

इद वीवनाइ । सबस्या-पुरु देश 'उद्यंग' !

अथवाय∽की सिीपसबय। भवज्ञित-वि० [सं] परावितः विक्तिः दिरस्कृतः। मवज्ञा−सी [सं] बनादरः भपमानः एकेश किसी भादा

या कानुनको न मानमाः अर्थालकारका एक मंद्र शिसमें यक्के गुन-वीचसे वृसरेमें गुन-बोक्का न होना दिखकाना अवज्ञात−दि•[सं] क्रिसको अवदा को गयी हो। टिरस्तता

अवज्ञान-पु (सं∘) भवदा तिरस्कार । अ**वजोध-नि॰ (**सं•) सबदादे घोम्न । **अबर~प्•** [मं] गर्दाः कुनाँः हाथा पॅमानेका त्यापटा

तित गहरा यह मरका काँच भारिका गहरा। बाँछका मददा नाडीवय वाबीवर् । -क्ष्यप्रय-पु । जनुभवदीव व्यक्ति । ~निरोधन-पु॰ पद नरदः। अबरना-स॰ कि॰ वे 'बौरना' । सु॰ -(दि)मरमा॰-

क्षप्र एठानाः ठोक्टे धामा । अवटि, अवटी-सी [सं०) दूम गर्त नाडोजग शाहि ।

अवटीट−वि [सं] विपरी नास्त्राका । अबद्ध-पु सि॰] गरहाः कुनीः मौदः क्लेका पिएका मागः एक बृक्ष । -अ-पु॰ सिर्फे फिल्के भागके बाल ।

श्रवहंग-९० [सं] हार, वाजार ।

अवडीन-पुर्मि] पश्चिमीन्द्रे एक उदान नीचेद्रा और

अवर्धर! –पु॰ शुन्य, वसेहा ।

अवडेरला*~स मि रहनै न दैना, परवासनाः शंकरते शक्सा परेगास करना ।

अवदेश-वि क्षेत्रस्थाकाः पदरदारः मरा । जवतंस-पु॰ (तं] वाकी। करमपूका देवा सुबुट वास-

पाह बारा ! बुबबा !

बायतंत्रक-पु॰ [मं] यासी। परनपुका आमूच्य ।

मवर्तमित∽भवधीरित अवर्तिमत-वि॰ [७] या दार वा सुपुट पहन हो। रिमृपित । अधतदाण-पु० [सं] कारकर पुक्ते-पुक्त की मुद्दे बग्तु । भवनत∽वि मिश्री फैडाया इसा। भवतमम्-५ सि॰ो ५३ए।५३३३ अंपकारः कार्यकृतः । भार । भवतरण-प॰ मि] बतरनाः मीध भागा या जानाः महाने के किए असमें बतरमाः पार दोशाः देवारिका पानिष रूपने मक्ट होनाः नदीका यादः बाटकी सीतीः अनुवारः मामिकाः उद्यक्त लेशा, बद्धरणः एकाएक नामव हा बाना। दीर्थ । -चिद्र-ए० उदरण-चल्क काटे कामा (')। -संगछ-पु॰ मदापृषेक स्पानत करना। अवसर्गिका-ग्री॰ [एं॰] प्रवारममें की बानैवासी सर स्वती भारिको मंतिस बेंग्लाः प्रस्तावना । अवतरणी-धी॰ [सं] प्रश्तावनाः परिपारी । अपतरमा#--म॰ क्रि॰ अवतार सेना मक्त दावा; कराव शना । **भवन्**रिस-निव उत्तर द्वया। अक्तारके स्पर्धे बल्का पार पदमा दक्षाः रसातः जन्दितः उपवृत । अवतप्रज-पुर [संर] श्रातिकाशक ध्रवसार । काया द्वारा । अपतादम-प [शं॰] क्षकमा शीरमाः वीर देना ! अवसाम ∽प (र्व•) फैलायाः कमलको होगे शेवी करमाः मेंद्र सरकाताः पीथका पैकताः सावरणः चेंदोषा । अवसापी(पिन)-वि॰ [मं॰] (वह रवान) बडी गर्मका शाप बद्धव अभिक होता हो। **मध्यार-**प (सं•] घटरनाः गीमे भागाः विधी (नवा क्षा है 'बरवर्षिता वा रेप्प्रवा मनुष्यादिके रूपये अस्म केना वा बैमी व्यम म्बस्ति (इमक्ते स्त्या २४ मामी नयी दे~मझा, गराद

अवसार ((पन्)-ंव शि॰) (वह रवान) वहा एक स्वान पूर्व का विश्व होता हो।
अवसार-पु [लं॰] उत्तरता; गीये आना हिंदी देवता
वा हैरदरना मनुष्पादिक्ष करने अन्य केना वा हैरी बार्य
स्वादि (सम्ब्री स्थ्या २० मानो गयी है-नवा; नाराव
स्वाद सरवारात्य , विश्व , व्यावेद, वय अवस्य हुए,
सरद, कनार भर्मतिरे, गीदिमी, निविद्य वास्तर सरवारात्य , विश्व , व्यावेद, वय अवसा हुए।
सरद, कनार भर्मतिरे, गीदिमी, निविद्य वास्तर, पर्दा प्रस्त कराय, व्यावेद, वय अवसा हुए।
स्वाद स्था वास्त्र कराय, व्यावेद, वय अवसा हुए।
स्वाद स्था वास्त्र कराय, वास्त्र, विश्व वास्त्र, पर्दा प्रमा वुक्त हुद्ध करियो। विश्व वास्त्र, पर्दा प्रमा वुक्त हुद्ध करिय।
सामा हुक्त हुद्ध करिय। विश्व वास्त्र, पर्दा प्रमान स्था स्था करिया।
सामा हुक्त हुद्ध करिय। वास्त्र व्यावेद करिय।
वास्त्र सामा सामी अवसा वास्त्र वास्त्

नाना भूतप्रेतका कावेता कनुवारः मूमिद्रा वन्त्रा धोरा प्रदर्भ । भ्रमतास्मार-स जि जान वेता पेता, वरणा । भ्रमतार्थि(विन्)-दिः [संव] भ्रमता वेतेवणा विश्वज्ञे

机制闭孔

अवधिमाम॰~५ रामु~ ।

बीमीर = दें सर्वाप ।

अवसी-वि अस्तन गर्यत्र स्थानेसाम्। भी अस्तरी

अवसीरणान्यः (०.) विस्तारपुरवः मर्थतं वस्ता ह

mudifin-(६६ (६)६) (१९१४) तर निरंत है।

हिमो देवताचा भागाएँ भाग दिया है। तु बढ साविष्ट छैं । भागांगि-दिन [संब] एक्टा द्वारा भागे भागा दुवा। भाग्यांग भागाय कशो भागा अभी नगरा वा भाग दिशादुवा। वन्द्र रणा दुवा। भन्दिगा सन्द्रश्या वन्द्र रणा दुवा।

अवसाम्बा-सी॰ [सं॰] वद को बा गाव विश्वता किसे वर्षेडनाके कारण गर्भ गिर गरा हो। अवर्दरा-पु॰ (रां॰) प्रधारक मा म्यूल प्रशास वर्दरान्ध मरमये भीज में। समयानके समय साबी मार्थ है। एक सवर्थ-५ दे० 'अवर्था'। अववरअ−पु॰ (रो॰) फीइमा: फारमा: अरम करता। भवत्राध-पुण (सं०) शापा बरुमा ग्रीप्म शतु । श्रवदास-वि [र्गण] स्त्रप्रवतः निर्मेठ संदर्ध रेचा कुरू विशिष्ट । प्रण्य सकेर या पीना स्य । अपनाम-तुर्व (र्व•) प्रदास्त कर्म, हरूलन कर्म, दरफ्रवा उरलंपनः विमात्रनः शाहः शौरणम् । अपदान्य-रि मि वराक्रमाः क्रमः। अवदारण-त॰ (सं॰) चीरमाः दिमाञ्चन दरमाः सीरदाः बाउनम हरू उच्छे करनाः हराहा गाँवा । अबदारिस-वि Po अवर्'त्रे'। अधवाद्य-त. [मं॰] बलामाः तापः बीरगमन । अवनीर्थ-रि॰ [io] शांतित, निमस्त्र दिवना द्वता पर भगदाइ-पु॰ [मं•] इवः पुदनाः । सक्ष्य−4 [मं•] निया स्वाज्यः कथमा पानी कोडीः चयाने अवीम्य । प्र. अपराधः यापा श्रीवः निवाः गानः । अवच-पुर (वं०) कादाना अभीच्याः चन्त्रप्रदेशसा वह क्षेष्ठायय संदरना। वि ची **श**र्यके दारम मं हो। ^क अवधान-त [नंक] ध्यानः मनोदोनः निती रिश्वे बनरी एष:समा। श्रेडशायमः • सर्भ । अच्छाको(जिन)-दि० (गै०) स्वाम देनेवाचाः मनेत्येप धप्र । **अवचार~पु॰** [मे] नियम् श्रीमा प्रवृत्ता । **अवधारक−ि** शि} अवधारम करचराना । अवधारण-१० [ग] निधय ब्रह्माः ४१ श्रीवनाः छण्डार्यः की शीमा गौपना। (ग्रव्सविधेष्यर) बीह देता । श्रवधारधीय−(व. [नं•] निश्चम करते दीन्या दिवसपैता आपधारमार्थ-११० विक सद्दर्ग करना, चार्च वरना है **अपगारित-दि॰ वि.ो निधिक सराज्** । अञ्चार्थे~शि॰ मि | दे॰ 'जरपार'रेश । अवचारम-१० [र्ग] योग बरमा १६ रमामन्द्र प्रत्यो अवयाविष-वि [म] दोटा दिया हुआ। शाक दिया हुआ चीवा दुआ। अवधि-श्री । । शेषाः श्रीत सेमा निर्देशी भीया : यानाः भाषा । अ सद ।~ज्ञान "स्मन"ई हर्"द्वी दे जंदर्शन धास दश्यो मध्युओला ग्राम (३०) । सु* -देशा -धामा -बद्धा-मध्य निवन करणा, देर^९

तर थाता ! - त्यंधमा - दासमा;- फ्रॅंकमा-पानीये पुना रंग दान, दिक्कारी मारिष्ठे क्रिसीयर दालमा (प्राया दोनीके सरसरपर रेसा दिना बाता है) ! - नियस्ता रंग बड्केसल होना ! - क्रॉक्क पदना या होना-देक 'रंग वत्यरता' ! - सरमा-थिनमे रंग पुरना; रंगना ! - सपना-रक्षममें सीवन बुख होना ! - सपाना-

भृष दुइ: करनाः शृम मचानाः। रंश-प क्षोमा श्रीदर्यः यीवना वार्शन मावा हाट-बाट, साब सामान टीम-दाम: बाल इन- तिनकी दान क्षेत्र है इससी देशह इसकी रंग'-स्टा प्रकार छरडा असर, प्रमाना रीव बाका भव्युष्ठ ध्यतः व्यापार विद्यंक्त समृद्धि आदिके प्रदर्शनमें देशकर, स्थामीके प्रति इत्रहताचे किए-असे कश्मीकी यह अनुस इता बन्धीका रग है) प्रेम, राग अनुरागः सर्वन, बीकः इसा । -इरा-त इत्ह दशा स्थितिः दौर-वरीकाः माबद्वार चकादाः विद्व समाग । -तरा -त वही मीठी भारंगी संतरा । ⊶रस्री च्ली॰ भागंद मौब, रेंका। म -धाया-धार्तर आना । -अज्ञहमा-इसरीयर प्रमान रोन चान स रहना। प्रतिकृष स्थिति दोना। थानंदका पर बामा नाए हो जाता। - उत्तहना -दतरमा-धोधाः शैनक पटना । -काप्रनाश-शाव चक्रमा हैन प्रवत्ता प्रदेश करना । -चहना-दरित प्रोमाः रजित्त द्रोनाः प्रभाव असर पत्रवा । ~ चनाः~ इपकरा-बवानी भागा अवानी समक्ता बीवमदा निवास दोना । −क्षमया⇔नक रोग प्रभाव बसुक्ष स्विति होनाः जुर जानद मशा होना । - समाना-प्रमाय रवाप्ति करना थाक दैठामा, बॉथना । - देमा-अपनेमें मेमाएक करनेके किए किमीके अति मेम प्रकार करमा (राजाक) । -एकदना -पर आना-रीजक बहारवर भाना। -धैधना-रीव जनना, पाक विजना। -पदस्तवा-रिवर्तिमें परिवर्गन बीनाः अण्टी बद्यामें होना । -बरसमा-रोमक श्रीमाध्ये वृद्धि होना । -वाँचमा-महस्य प्रभाव श्वापित करनाः रीव गाँठना । -विगइमा-शेर प्रभाद कम दीना नद्य दीना। -विगादमा-रीर महस्त पराना मह करना। ग्रंगी दिर क्ति करना । -में इक्षता-दिमोदे प्रमान समरमें भागाः विग्री ६ मनुबुक्त भाषरण कर्माः, वसमा । -- 🛣 भेग परमा-दमानमाया छेन विवाहना। आमंद हर्वडे श्चम प्रदाद करना । अमें हैंगमा-समय हामा। भनुकृत कानाः विभीका अनुदर्ग करना ।-रश्वामा-धामक बद्धन करना । -हमना-मोहा प्रभाद करना । -सामा-महर दियासाः विश्ववता अस्य करमाः रिवरि भेदरशः करकत्र इ.स्मा ।

हैरा-चु [का] वर्गे; वह तुक्सीशार भीत श्री वाल्योसे सिम्पी और करण ककी आर्ट नेत्रीक तास कारी है। किरणेशार (ताल्या सन क्षेत्रीकर वहना व और भी रंग कियो पार्च दारा प्राथित होगा दे वर्गे वनसे दिगारे देश है। घरच देश लोका भाग स्थान नामा कार, हाला तेनक, मुख्यानी; इंच (गाउदे केपोर चीवस्त साम रंगी बाह नेत्रीची।

~अळवाजी~मी रेग छिक्डना।-पासी-मो∙होडी का धरधन ! -भार-प्र वासका यह ग्रेक ! -साज्ञ-पुर्व रंग नमानेनाकाः दौबार, येथ आदिपर रंग धराने वाका ।-साजी-सी॰ रंगसाबदा काम । र्रगहीं -9 धरे हर कपने बोनेवाली बोनिबीन्द्रे यह बाति। रगत-सी बाक्त दशाः वानंदः मना रंग । र्रगर्मा – पुरु एक पुरु ! र्वामा-स कि॰ रंग देवा (रीवार, विष आदिमें); ११में प्रबोना (क्यहा) । र्रगपुरी-सी॰ एक तरहको भाग । र गस्ट-प्र [बं 'रिवर'] नवा सिवाही; नीसिसिया । रैंगरेज - प्र (का) कपका रैंगनेका काम करनेवाला। खी 'रॅनरेडिन' il र्रेगरकी-ना दै '(नरही। रेंगोनी: –का॰ कास रंग्रदी पन्ती । रेंगवार्ग-प॰ मानवरीका यक रोग । रॅगबाई-की है॰ रिगर्स। रॅंगबामा - स॰ कि 🔾 रॅगामा । रंगीगण-पु (सं) रंगभृति। रंगांगा-की [मं] फिटक्री। र्रेगाई-खा॰ रैंवनेका काम या भागः रेंवनेकी सजहरी ! रंगाजीय श्गाजीयी(विम्)-पु (सं॰) रंगारंसे गुजर करवेदाका, रंवसात्र ।

करवास्ता, रस्ताम । देशामा-चु विक रेंग्नेसा काम करामा । रेशामरण-चु [र्च॰] तालका एक मुक्त मेर । रेशारा-चु॰ राजपूर्वकी एक जण्यामि; एक वेदस दर-बाति मर्ज्यपेश और विल्य भारत-निवासी एक बाति (स्त बातिक कीप राजीका रेसा करत और अपनेकी माम्रय करते हैं। रेशारि-चु [र्ग] कीर ! रेशारि-चु [र्ग] देशेर !

रिमायट-जी रेगारे । रंगायदारक-पु (नं०) व्यवस्वा रंगसात्र । रंगायदारी(रिज्ञ)-पु (नं०) व्यक्तिता । रंगिणी-व्या (नं०) याग्युगी कैर्साटक क्या । (स. स्ता०

रंगरासीः विवादियो रहितंत्रः । वृँशिया — पुर्देवारिक काम करनवात्राः रंग वमानवात्ताः । रंगी(विम्) — वि [मं] विनोदा क्षेत्रों, रंगवात्ताः वैद्योतात्राः कमारकः कनितन कम्यानकाः ।

रेननेवाना बमुरका बनिनव बरनवन्ता । रर्गाम-वि कि] रेग हुआ। यमकारपूर्णः विद्यान-पित रेग्नपुर्णः

श्वीबी-सी॰ रंगीन शमाः श्रीतर, सवादः हेंये साहत । रंगीरटा - पु वक नंगली पेट्ट ।

हैंगीला-दि भीगा श्रेष्ट भेगी। [भी '(तंभी')]
-पन-तु रंग्या देशिया चार रंगनी। -(का)-श्रेषी-भी एक स्थिती शरी स्थितीका एक भरू। हैंगियां-तु रंगनेशाना

रंगोपञ्जीवी(विज्)-१ [मं] अक्रिनप द्वारा रोजा बमानेशना महर

र्शव श्वक-वि भेड़ा करा, सिन्द्रि

रतुक्तां−पुरक्रमास । रत्वां –पु॰ पेहाको रंग ।

रहोपस॰-पु लाब दमका गेरा लाब शुरमाः लाक सरिवा ।

रतींची नहीं यह मेक रोग किसमें रीगोको रानके समय महीं सूचता।

रत्तर-निरुष्ठ रे रका

रचक-पु कुछ-पुछ काक रंगका व्याकियरकी छरफ निक्रमे बाका यद्ध पत्थर ।

इसी-सी॰ बार्र को या बाठ पावलका एक माना वुँवयी।

 शौद्यं द्योगाः। इरयी−सी॰ सक्त्री वा गीलका बाँचा संदुक आदि जिसपर

राउन्तर शबको अंतिम संस्कारके किए से जात है टिक्की, मरबी विमास। एस-प [रं+] बहुमूस्य और चयकीके परार्व विशेषण

छनित बल्बर कि हैं आमूबजों में बढ़ते हैं होरा एम्मा मोती माधिक काल, जवाहर, गगीमा कादि (मुक्द रस्त ही है-मानिक मीसम बहुतुमिया दौरा पन्नाः पुरस्ताव सूना भीती, गीम्न्द), अपने वर्गमें बातिने प्राप्त वस्तु मार्कि, पदार्थः सम्बद्धान, सम्बद् बर्छन, सम्बद्ध बारिस्व (से)। -कर-प्र -क्विंडा-सो+ कार्नोका एक जहाॐ भागूपन (मा)।

-क्रीतिं-तु० एक तुर । -क्ट्र-तु एक पर्वतायक बीबिसरव । -केन्-प्र वक हुद्ध यक वीधिसरव । -शर्म-६ हुदेश एक हुद्रा समुद्र। -गर्मा-सी पूरती । -तिहि-पु विश्वारका यक प्रकार (शतपर राजगृह राजधानी रिधन थी)। यक मध्यरका रस (मा

दे) । -शह-नु स्पूरके मध्यकी कीवरी निसर्वे चा<u>त</u> रारी जाती थी (गैं) । नदीव नतीर्थ-पु पक तीर्थ । --वंद्र-पु रत्नीं के अविद्वाता देवतार एक पानि-सरा । न्यूड-पु वद्ध शेथितता -वडाया-छो रानीके द्वावा कांनि चमक । −सपर-व रानानंतृत

द्याया । - ऋष-पु सम्बद्ध दर्शन सम्बद्ध द्यान, सम्बद् चरित्र (वै॰)। –हामा~स्वै॰ राजा वमसकी गी_। मीदा॰ की माना (गर्गम्)। शर्जीकी माला । नशीय-पुरु कविषत ररनदिरोद (बहा माना है। पाताममें वसीके कारण प्रकाध

रहता है)। एतका था एलजीन बीपका -हाम-न मेंगा। - श्रीप-प् राजमव श्रीपः मवाक ग्रेगाशीयः। च्यर-वि• धनदाम् अमोर ! -धार-पु॰ वेद पर्येत

(९)। – धारा – थी एक नदी (५०)। – धेनु – भी रामनिर्मित याव (८६ महाशान)। -धेय -श्वाप −पुरक्षीपिनरवा −नाम∽पुविचा। −िनचय-उ रातीक राशि । -निधि-पु शमुद्दा सुमेर वर्षता

विश्वा राज्य पूरी मदीसा । - पूर्वशिक-मु श्ल-पारती भारते। -पवत-पु सुदेश व्यतः -पाणि-१ एक वीवितास्य । -पार्क्सी४-५० शम प्राप्ते वह भागनेशामा । --पीड-पु एक गीर्थे (१) । -- प्रशीच-

🕱 श्रूनविधेष जिसमें दीवदाना प्रदाश हो। –श्रम--उ. एक प्रकार के देशका । वि. शाम के समान वीतिनाम् । न्यमानको दश्रीश-बाहु∽तु विन्तुश नवाका÷

मणिगोंकी भाका, बार: वरिकी कन्ता ! -- मासी (किस्)-पु॰ देववर्ग-विश्वयः : -- सक्ट-पु॰ वक् गोधिः सरक !-अवय-पु: होरा ! -शज-पु: काक मानिका। -राशि-सी राजीका छम्द्र । −शासा-सी राजीके रधनका स्थानः रत्नवदित गर्भः। -समब-पु॰ प्यामी बुद्धः एक बोधिसस्य । -सानु-पु॰ सुमेर पर्वत । -सु

-सति-सी श्रमी। श्रुक्तवती—सी॰ (मे॰) पृथ्वीः मेर्र्डनुष्टी फन्या । श्रमा—भी [र्श•] **ध्यः** वशी (प्) !

रस्माकर-पु [मं∗] समुद्रा बाहमीकि मुनिका पूर्व नाम: यान मणिबाँच निकलनेका स्थानः रामसमूदः एक वीभिसस्य ।

रस्नागिरि-प॰ दे॰ 'रस्नधिरि'।

रश्माचक-तु [सं] रहाँदा देर; रश्मोंका कृषिम पदाव बिसे बामके लिए बमाल है (१)।

ररमाद्वि−ु [स•] एक पर्धन ।

रामाधिपति-५० [मं] क्रथर १

राजाम्यज−५ [तं] रान-बरिव आमृतम अशाक रश्माककी - [सं०] मणियोंकी माचाः वक्र राविमी : वक्र

अर्थालकार वहीं प्रस्तुत अर्थ निकलनेके साथ साथ क्ष्यित क्रमसे कुछ अन्य बरहाओं या तत्त्रीका बतेस्न होता है।

यक प्रकारका दार । रानेश-५ [सं] कुरेर समुद्र।

इस्मोत्तमा रस्मास्कर~मी [मं•] एक देवी (तं) । रध-प्र+ [सं] बादन गांकी, यान (मोही मादिसे बादित बुक विदारका बाम निमर्ने की का पार पहिने होता ने

और दी वा चार पशु माथ वाने बे)। देठ चरमा द्यारार बदम सना (आ. च.): अंग मानाः निनिष्ठ वधाः भानेनः क्रीदारभाग विदारस्थमः धगरंत्रका एक महरा तिमे नप्रति क्षेत्र कहा जाना **है। —कद्भवक्र −**प् वह सभिकारी

जिसके अधिकारमें राजाओं दे रथ बाहन जादि रहा कान वे (मा): बर, बाहल नेदा आदिको सुकता स्परत्था करनेशका पनपनिशेका कपिकारी (मा)। -बार-प रूप बनामेयाकाः एक वर्णनंदर जाति रिमरी पर्याप्त माहिष्य पिना (शपिय-वैश्वास क्षत्रक्र) और वरिधी माना-

(बैश्य-शहासे वन्त्व)ने सामी गयी है। - क्रट्रेबिक-४० सारथि । -अति-पुरु एक प्रदास्त्रा तान (गंधित) ! -क्षोम-पुरुषका दिल्ला-पुलना । -गमक-प्र पाककी मालनी (क्षीपर से बादी बानेवामी रवासार सवारी) ! -शुसि-की स्वरंग्निते सबदे दिलार नवा हुमा समारी। सोद मारिका पैरा की पानीके प्रदार और

श्दर्मे कमे बयावा था। -चरण -पाइ-पुरबद्ध द्वियाः चटवा वज्रवादः --चर्या-भी रूपमे याचा करना । ---वर्गबाए-पु० १वॉस्ट तिए १वी सहस्र (सन्तर् मी रक्षी और परवर्ग बनावी बाती बी-मा) ह

-चित्रा-मी व्यवसायीत मरी। +ह~दु वना प्रिनिश हुए । नमीद्र-दु १४६ भौगाका रेनाम नेहन की बगद गरी। -पनि-पुरशे रवदा महरू । -वर्षाय-ध वेता दिनेस इस। -प्या-सी दह

र्श्य-रक्षरपत 11+1 रीय-पुरु किन्दे हारह क्षेत्रह हर्षे अवस्थित अवस्थान रे रीय-पुरु बन्धा रिक्षको कार्ये दे रिप्य होना हरे अस्मे बह बार्या । १ कि शहरत । or in fert Brice, but freit bie are रंजार-पुर (र) रेल्वेश रेट्य का श्रेष्ट्रा देहरी बारहरी भी चलावे है। जिलारे विश्ववेद ६६ अधि (शुरू:) । विश्ववेद्या वि हिंदमा-मन्द्रिक रेश्वरेशक युवस्थाति रश्तेष बाम करनेवानाः यनाग्यस दर्वश्यकः। महेरुविहानी गुनद्र चिश्रमामा । बंहर, मारक्षी रामारकी व्यामीह बाहार की प्रार व्यामीहि हेंद्रा-पुरु बण्डरोंद्रा दक्षः भीत्रण द्विन्धि कदरेगी हिन्दरे रंगे अप: गीम नमान्श दम (स्थाह)। परिवह क्रीर रूप वन्तु है । बाग सोधा अरदार भूगो है हुए -प्रभास-बहुद्ध, सीध-न्याह्र-म विको सम्बद्ध संबद्धिमा सारा अध्य की स्वामीये मामल शाहर प्रमानाः वादमा (शाजाम) । -पार यामा-भार अंदरकी ध्यानीती राष्ट्रका ही र्वधम-९० (गा) रागेर्ड क्षेत्रप्त स्थापा सर सरपा ही अन्दर हद प्राप्ता थाओं दीला व शुरुता। बरमा । वैधिम-विश् वि] बदाशा शेषा कृतः वस्ति । दुना र र्गा-पुर (नेर) हैपा देच अर बदने अवर राहर र्वभागत-त निर्शेषीय देशन्या एवं क्षित

-रिकामा-नीर पेरवर्ध व्यानीय शब्द रगता ह र्श्वम-पु (सं) रिवर्नेश व्हायः, रिक्स्य भ्रम भ्रम्भ सम्बन्धः इस कमानेहे मारकामुल जाएँ-विकासिका जनगा श्रीत व्रष्टम सरीर मा दार्गुव्यक्षरीचाः लोजाः भाष क्या काय भारता शिक्ष श्री शंशक । - ब्रेशी-सी में होत्र दर्श

इंडानफ=्य ांगं+} कररण ह र्जना -म हि इपिन्द्रस्था धहरा। हेन्स्र १ रंजनी-भी (रं) दल्या परेशे महारचा अंची पूछ मनीया परानी अन्य क्षमधी नीव अधिनीते हुनती (वर्तन । न्युरप्रनपुर प्रतिहास स्था। र्रज्ञभीच-रि [ग्]रेंग्ने बेंग्या दर्वे आपंत के सकी

#11 र्वेज्ञाने नकी १६ बद्रानी समर्थ । dinn-les fart for not affer many हेतिस र्ष्टीरुगी-के कि कि मानवरी अनस्य, BERFF L

इंबर्रिक्र निर्देश (चर•) सारश्रार दाणी र इंड-दि [तांक] पूर्ण हेरीमा विषय: मिका कवा एक हो बरा हो 134 निर्माणय वर्त नवा स. जा आव 441 हेहछ-पु (में देशहीन पूर्व व

mur-nt 1 3 ebn fewen : रिक्या-५ वेश्वर रिशामका(विष्य)-१ (६) पर पार्थ करवादे कर

रिकार क्षेत्रिक्या सुरुत्त । र्देशी की जन्दर सारेश करतान्य करतेह में। कीह बज budite a ship of quadrat age a state gittern ! - nibjort, gittetin i ibo errer tie C. bum in fine em enter i

र्वेड्सर-८ वट ६ ४ हेरान्ट व्यवस्थ करो की र Fairt - 9 Igens Ex () - AC+ fret 1 fr(q)-(es fo) can man achemic a f WPIR I

ffquar feir] are then a unique course gut ale neuer Cortin trati feir gie--from to just and or o

र्रेबा-पु अक्तीय १६ कीशः स्टिम्टेन्टेरी गर्द

वंश्वतीते (स्ट.) र्वस-पुर [म] नर्वमा देव, राज्या धर्म होते होते. हेन बुका यह अग्रह । र्राया-पुर [गेर] र्वावा वर्गदेगम् (१) १ fure-3 to the 1

हैंबा-पूर्व मेर्पेका क्षेत्रा क्षेत्रा विद्राल सा की बी प्राप्त कारिये हैर कार्येये का बारा दें। केंप [40] guit de mildet nint auch fen, निकारता कीरीत कनत्त्री दिल्ला एक नारका भागा -मुत्रीया-कोश प्रवेत्र शुन्ता एतेया १ -प्री दद्र । -पूल्य-१० देशा श्चिमधानमः विश्वनवद्यानेकरात्रः हिंदिक्त-को विकास करिया । र्वित्र-१०० (१००) छार दिला दुव्या रक्षा रेका वंशी(जिल्)-पुरु [सर] हारामा प्र न्एमण्डे।

हैसाइ-दिव की (अंब) बरबीर वहें सम्ब हैपीरवें Cathi mer i 48(21)-4 [cm] 40, 057 2 Fewir-y turyind e'en ume : Anda for & matterday, the or ga house men del set de tot & ton 3 to ehrm unter murten a begegeben ge-न्त्रम पुत्र के नाम का के मान पूर्व हुन और बुलरा क्यू बीना है। है राम्य करेंद्र र energy-of the fractional and a surf Present the few feets feward at क्षेत्र अवस्थित - अपूर्व हैं है है है है। हैं।

हि देगा न क्रिकट बाबने बता है।

southern marked days that was maggier street tim mie eleter to meadown emperors represent which the tenth of a water of a ten time attends exists as and an entreme marrie for fethers of these and

कता । नक्षाक्षेत्रीनको अकत्तं क्षत्रतं स्त

का नामा । - शिक्षा-मा । मुब-निवा कलाधी विद्या । –संदुम्त−पु॰ द्वमुत्र हुबः वनपौर शुवः। –सऋा÷ सी मुद्दा बचीय, मुख्या वेदारी। -सहाय-प्र-बुद्धमें महावद्ध, मित्र ! --सिया,-सिद्या-पुर [हिर] तुरकी नरसिंघा। ∽स्त्रीम-शु॰ तुक्रमें मान्न विजवका रमारक रनेय, विजयरतंत्र । -स्थक-पु॰ रणकेन, कहाई का मेरान। -स्वामी(मिन्)-पु॰ दिवा सेनापति प्रवास प्रवास संवासक । 🗕 हस-यु एक वर्णहरू (अस्य नाम मनदस, मानसहस्र)। रणस्कार-पु॰ [सं] समझनावर, धन्यः ग्रंथन (प्रय-रारिका)। रणीगण-पुरु [संर] मुक्क्षण, क्यार्रका मेदाल (रणाजिर--पु॰ (सं॰) रणधन- बुद्धस्थि । श्मेचर∽व [सं•] निष्मु । रजेश-५० (सं०) दिया विषय । रणो।कड−९ [सं•] कार्षिनेत्रका एक बनुवरा एक देख । वि॰ भी तुक्के किए बन्मच हो। **रस−िव॰** [सं•] असुरक्त प्रेमर्ने पश हुमा। कीन कमा हजा। व संयोगः किया वीनिः प्रेम । −कास्ति−प्रश कुन्ता - गुरु-प् पठिः स्वामी । - काकी-सी कृदसी । -बाराच -मारीच-पु॰ संपटा प्रचान काम-देश -निधि-पु॰ राज्ञम, रोटरिय । --वश्र-पु॰ दे॰ 'रतिसंद । -प्राण -शामी(पिम्)-प कृता। -हिंदक-पु॰ लंदा, दुरवरिया की बोर । रत्र- राष्ट्र'बा समासमें व्यवदेश केन्द्र करा ∽जगा--बु॰ रहीप्रवामरणा वह बासन की रातनर कामकर हो। मात्र कृष्या दिवीसाध्ये निशिष्टा स्त्रोदार क्रियमें खियाँ करती गाती है ! - बाँसां --प्र॰ रात्तरत्र व्यारा (वानिवी), धीर्वेदा) । रतम-द दे॰ 'रान"। ~जीत्र⇔को नमिनिसेन। रक श्चानबीपबीमी यीचा (बुमानू , क्यमीरमें दोना दी। पृष हेती, वर्श हेती । रतवाकर १ -- पुण देश 'राजाकर'। १० 'रतमञ्जेत'। रत्तनागर•~पु• समुद्रः सागर । रतमार-दि॰ दै॰ 'रतमारः । रतमारा-वि क्रिक्षिए ठाक कव्युः कानः। रसनारी-म यक विशेष भाग । भी काकी, ककार्य, सन्ति। दि की देश दिनमारा । रतमासिबा=-वि• दे रतमारा'। रतमाबसी-धी॰ हे॰ 'समाबनी । रत्तर्भेद्रीय-वित्र काम भ्रदेशका । (श्रीत 'रत्नुंदी') पुरु चंदर । रतवादी-न्दर बीम्ह चनमेपर पहते दिन रण चेंदनेका क्रम । হঠান্ত্ৰদ্যা-নাত ভাল খাল। रतिहरू-५० [००] द्वा । रतार-मा॰ वर्षेत्र अवरी । रतामा *- म । कि एत होता । सा कि मानेमें रा इद्धा । रतायती-को (रां) देशका, रेटी ह

रतास्त्र प्र• पिटाम् ; काराही क्षेत्र । रति-क्षक है "रती । सी [सं] बसमभागीओ करना कामरेनको समी। मेंन अनुराम, ग्रीदे, अलस्टि त्तेमान, मैश्रुना सीरये, स्रोमा। श्रीपार रमका स्वासी जावा वह कर्ने विसमें बदवरी मन प्रसंब हो। रहस्व द्यार भेदा श्रीजान्य । --कर्-वि० मान्द्रवर्दश प्रैमपर्दश्च । प्रक एक समाधिः कामी । —कसङ् – प्रक संमीतिः ग्रेषुत्र । -काश-पु॰ कामरेगा -मुद्दर-पु॰ बीटिन मगा -केसि,-किया-की॰ संभेग । -ग्रा-द॰ दे॰ पित-सबन"। -शा-तक वह मी रक्षियामें श्रीम ही। बीवें अपने मति मन सत्त्व करवेमें वस पुरुष । -तस्कर-कुपंत्री, दुरावारी, वह भी अपने हार्च सिवींकी द्वरापार्थं बहुत करें। ल्हाबल्ब् बहुत मंगेय। –वेच−पु॰ निष्पुः क्रुक्ताः यद्ध राजाः –नाग−पु॰ सोक्य १तिर्शियेरी रख। -माथ-बायक-पति-पु कामरेव। -बाह्य-पु बागरेव। -पर-पुरु एक वर्षेत्रतः । -पास-तुरः वक्तः रतिरेदः। -व्रिथ-वि कालक. जिसे मैलन जिप हो । तु॰ कामरेप । -जिया-वि सी (बह सी) निसे मैनुम प्रिष् हो। सी सुन्द्रिधी वृष्टि (तं)। बाद्यानिकी । –शीता–की॰ कानिनी। मैनुमसे भाषंदित होनेवाकी सी । 🗝क -नि श्रांदेवमें क्षानंद कारक करनेनाका ३ −वंद्य-पुरु संगोगका दंग प्रकारः वासम । —वैध~पु० परित्रमायकः। —समय -मंदिर-प वेद्या नेनिकाका राज्याया मेनून-राष्ट्रा बोलि अव । -- माच-पु की-प्रकरः वरश्य अन-हाय वांपायमान (शेपारका स्थानी मान)। प्रीतिः अन रायः −भीवर-पुरुदेश स्तिमनतः । −श्रदा~ली अप्युरा । - मिल-पुर १६ धर्मेगमुरा जासन । - **रम**ण —तु कामरेवः मैजून । ─इस-वि० प्रेम नैना मपुर । ब्राह्मसम्बद्धाः । नहाह्य-पुरु काम^{न्}र । नमंपर - (२० काबी ! -- लक्त - श्रु संनीय ! -- लील-- प्रक ताल (नंगांत) । ~कोछ~दु० दक राहन । ~बर~पु बामरेवा शरीको मेर (बी शतिके व्यनिष्ठावस) निशी क्रीको रो यान) । -बर्दम-प्र- कामग्रांक नर्दन एक प्रकाररा मोरक (मा॰ रे॰)। नवछी-मी मैन प्रगय अनुराग । -बाही(हिन)-पुरु यह राग । -झन्द्रि-मीरु गंगीय क्षांक। -शुर-पुरु पुरत्यकुद्ध स्वन्ति। -संयोग-पुरु शंत्रीय । -शंद्रिता-दि० विसमें देन ना मानकी व्यक्ति। हो । -सत्परा-बो॰ राक्षा । -समर-५ - देनुन । -सहबा-पुरु कामरेव । -सायम-पु दिस्म निम। -श्रीहर-पुर सब रहिनंत ! वतिका-अ बीहाना जराना, रणीमर ह वृतिहा-सी० [र्न०] कास्त्र एरएको गीम सरिवेदिने संगित (मंदीन) । वितारा - वन तक्के शुक्ती संवेदे प्राप्त श्राम । विविधान-विश् स्वत्रात संगरा रती- व सा= है शीव । व बार् को बा बाट धानण्डा माना पुंचनी, ग्रेंबा । जर बीड़ा बन, बरा, ज्यान्त रचीमर मिथ्दि। रतीश~इ [सं] कामरेव !

कारके साथ अलग जबन हो ! सी॰ एक पंशाबल जिसमें कारतकार सीभे सरकारता मानग्रवारी देता है । रहुमत-सी॰ से 'रसस्यार' !

रहकी॰-श कुछ मी बरासी। स्ट्रिमि॰-सी॰ रबनी राव रैन।

रहें नो सीसर, मक्तो वही मनते के ककते। गेहैंका बरदरा काटा एवी भूग रिकड़ा सरमार्थक करो। • वि॰ सी अनुरफ, वर्षी हुई मूबी हुई। सहित सुक। मिनी हुई।

रहेंस-3 [ल] तास्क्षरेयार खरवार (राजा जवार क्षेत्राचित ग्राहमारा द्वाकिन क्ष्य वर्गका बारमी, व्यक्ति वर्ता)। ग्राहेक विष्ट, प्रतिक्षित महान्य । न्यस्य व्यक्त तु प्रक्र-प्रताचित । न्युस्तुम्प्रतास-धु वद् प्रदेशार को क्षित्रों क्षेत्रों न हो। न्यादा-धु परेस्का

करुता । —ब्रादी—को॰ ररेसको करकी । रजसाई/गे—बी असुना स्वामित्व ।

रतताङ्गा च्या प्रमुगा स्थामत्त्र। रहरी चर्च सप्पस-पुनरका सावरण्डक संवीपम नाप।

रप्रेजत−का दे॰ रजन्मधः । रक्ताः -ध पतीर पर्चोदी पर्धोडी रिक्वेंवः

एकछा—पुग्तार पदाना पराना ।स्वत्रः । एकछ॰—पुनसूर्वे स्थापः विकासः । —क्रीवृश्—पु

्रम्मा विज्ञा रतास्, राजपकांत्रः । रक्षतीकश्चपु स्रोगा केम्स्य इंतुमा काल पंतमः । रक्षता—पु॰ क्षेत्रफण, बंदारै-पोदारिका ग्रामा करमेरे मास

गुरानप्रका पिरी वृद्दे जमीता भेरा, कहाता । रक्षवाद्दा-पु भोडोकी पक्ष काति ।

रक्तांबरी-सी॰ एक पीवा ।

रहमी-वि निधान किया हुआ किया हुआ। पु० कद सरका निमान निसंदे साथ कुछ रिशायत की आसी है। रहका-च [स] सरम औरस पासीसा वि सरस (रिप्त)।

रकाम-१५ ४व सरीका संगाम ।

रहात-भी [म] डोरेडा वाराम यो वाजमें दीनों और राजी वा सामें में स्टब्स रहता है और जिसवा हैर राजद पीतिर वहते हैं वाण्याही अमेरीकी स्थारी वा वोगा अम्पदार, ध्यात्मा वही हवारी। —बृहर— यू वोश्यर ध्यानेक्यान भीतर मार्गमा वह जीवर यो क्योर आम्मिकी भीते काल तीराय है। सामावरणार वारा पीति में वा स्वान देवर चन्नेसामा मेहर, सवाद वार्य जिसारे नेगर वाजस्य वेश्वेषणां आह्मी बन्नाती, स्थारी जिसारे नेगर वाजस्य वेश्वेषणां आहमी बन्नाती, स्थारी जिसारे विशेष स्वान स्थार स्थानमा । —शास्त-पुरुवा—

रकाको बनने करकेत समार्थि हुट बाना । न्यासमा-योनेयर किसीके बहुते समन सार्यका रकान पकाना । -सें-सहस्रका, बनराब । -सें पाँच रकाना-बीनेयर समार बोजा ।-सें पाँच शहरा:-बर बक्त बक्तेको तैनार रकाना ।

एका। व्हार्यी जोश करवरी भीगी मिट्टी स्थानिको बनी भागी; किछली छोटी पाफी विराधी बीचार नाइर सुनी दी साथी; किछली छोटी पाफी विराधी बीचार नाइर सुनी दी साथी; वह भीड़ कि वह बहुत रहेदार ले बाउँ। बीड़े के नाकमें अवस्थित एक महारक व्यापा; करीयर लावा मानेवाका प्रकासकारक विराधकों के 1—बेहुरा—चु भीग हुँ। गीठ हुँ। —महादय पुल वह बादमी वी लीमसे कमी दबर, बन्दी स्थर हो मुख्यापी, मिकारी बाहुकार 1—सामना—चु बर्चाइ, गीठ हुँ क क्ला हुँ ।

रकारचारणा (लप्) यक भागकाक कर प्रशा होती। सन्दर्की प्रतिवेशियता। रक्रीकर्म्य (स.) यानीके समान जून सरका सुरुपमा

भरम । पु शुकाम । -- ठक कस्य - वि मरमरिक । इकीका - की वाँदी कीदी, कमीम । इकीब - पु [ल] महिस्स्सी; एक मैनसीके मिनिवोमिने

कोरं कहा संरक्ष । इक्रीकानेपुरसः इक्ष्म काम-पुर [ल] सात मिनारे, कार्ति ।

रकेमी - सी॰ दे 'रकारी ।

रकास-वि नायनेवाला । (की॰ 'रदासी'।) रक्तमा-स कि॰ वे 'रधमा'।

रफ्त−9 [सं•] लह् विपरः कास रंगः सौंबाः पुराना भावित्ताः क्रिका कारका कार्त्तः भारतः अनुरा ४ तेत क्षे कवरी: दिन्तक, नड (बदोडापर दोमंगका): गुलद्य इरिना पंत्रका एक मध्यो। एक जबरीका मेटका विश जनुरुक, जासका रेवा हमा। सूर्य काना विकासी व्याचा हाइ धोषिय । तमासातिसार न्य पक्र रीन विसमें कहुंदे दश्न आहे दें, रक्ततिसार। -कृतु-<u>प</u> शायका पेड़ (रहमें राज निक्रमती है)। —हंटा—शी विवेकत कुछ । -क्टेंट-नि जान बेंटवाला; गुरीकी काराज्यामा । पु॰ कीयला भंदा । —क्रंदी(दिम्)~(३० ग्ररीकी अन्याक्ष्याचा। दु कोदनः - इट्-पु र्वृह्म विन्मा काक व्याव १-कद्गत-पुरुम्या प्रदान विज्ञम । ~क्षेत्रस~तुः पूर्व मीराहर पुरारा ∽क्षत्रय-पुर एक मकारका कर्षण दिलाई कुल राष्ट्री काल रंगहे होता है। -क्यूकी-भी क्यायेला । अक्रमण-पु लात रंगशा क्षमण ।~करबीर~शुः लाल क्षमेर ।~कांक्म~पु+ लाज क्षमारका इप्र ! -वीमा-बी शक गरहपूरमाः राह पुनर्नेता ! -कारा-पु॰ एक रीत क्रिसचे चेच्हमे सहस्रे राष्ट्रभूत निरम्पता है। नक्तक्ष-तु प्रपादी सवसी। -526/-541-5 Til -9422-9 करेंस(वा १ ~कुद्र-पु किमाँ शेम (सम्रा लग्न रे-सारे धारेशों अनन क्षेत्री-क्षेत्री साम शाहा ही माना भीर हुप्रधी अंति नशना) । -बुनुस रु असनार। चामिनका देश महारा चारिनह वा चरहाका देश !-

रतुमा!—पु॰ यक्त पास । रतुमां —पु॰ पंशेषी रेख ।

रतीपक्र-पुनार क्ष्मका गेहा काक शुरमा। ताक सरिवा!

र्स्टीची-सी एक नेव रीग जिसमें रीमीको रातके समय नहीं सूप्तता।

रच+-रि , प्र॰ रे 'रच'।

रसक-पु कुछ-कुछ काम रंगका व्याकियरकी तरफ मिकन-बाका एक पत्थर ।

हत्ती लाहे जी वा आठ वावरूका यक माना पुँघणीः क सीहर्य होगा। हस्तीनची सकहो वा गीसका होंगा संबुक जादि विसप्त

रसाधर धनको चंत्रिम संस्कारके किन से जाते हैं। टिकडी सर्थी विमान । रसा~प्र [मं] नदुमुख्य और धमकीके परार्थ विद्येषकः

प्रतिज शासर किर्दे बाजूरणोर्म बहते हैं, दोरा, फला, मीती मार्फिक लाल, क्षतहर, नर्मावा आरि शुक्क राल मी है-मार्गिक, लीक्ष बहादिया होरा क्ला पुराराज मूंचा मोती नीमें) अपने वर्गेंग्र जातिमें बाकुत वस्तु ध्वाहि, परार्था सम्बद्ध काल स्वयद् दर्गेंग, स्वयद्ध परार्था । -क्षर-चु कुरेर। -क्योंका-को कार्गोका एक काल्यक जान्यक (परार्थ) -क्योंकि-चू एक बुद्ध । -क्ष्ट्र-पुर एक विशः स्व

नेविमान्तः । नक्षेत्रन्तु वस तुका सम् नोविद्यतः । नामीन्तु कुरेरः यस द्वार सहारः गर्मानान्तः वस्तो । निर्दितिन्तु दिक्षास्यः यस वक्षारः (स्वरूर राजगुर राजगानी रिष्ठ थो)। यस अध्यय्का रस (सार-वे) । नगुर-तु न्यूरं अध्यक्षे बीटरी विकर्षे नाह्र-रही जातो थो (वै)) नमीब नर्शियेन्तु यस

तीर्थं। -चंद्र-पुरत्नीके विश्वाना देवना एक देविर सरवं। -च्द्र-पुर कर वेदिनश्थं। -च्छाया-व्यक्ति रानीकी द्वादा कांद्रि पमकः। -चयन् प्रत्नार्यक्ति एक्षाः। -त्रय-पुरस्कित्वेत्रके, सम्बद्ध् द्वात स्थाक् चरित्र (वे)। -द्वासा-को राज्ञ वनककी को सीना

की माना (सर्गतन)। राजोधी माना। "वीच"धु करिशन राजविशेष (कहा बाना है पानाकमें रसीके कारण प्रकार रहता दें)। राजका या राजकरित दीवक। "सुमा-धु मूर्गा। "सूचि-धु राजमन द्वीवा मवाक सूचारीक।

रहत है। राज्य मा राज्यकी देशिक "कुम-यु मूंता! - मूरिय-यु राज्यक देशिक मदाक मूंतारी। --पर-शिक वनमान् अमीर। - प्यार-यु पक परेत (यु)। -पारा-की एक मती (यु)। -पेयु-की राज्येमिन गाव (क महामान)। -पेयु-पाव -यु पर भेपिसद। -माम-युक शिन्यु। -मियप-दु रहते प्रीया साम-युक स्मार मुक्तेर वर्षनः

विन्ताः रोजन वनी, महीलाः - प्रशिक्षक-पु रस्त वरागे श्रीरोः। - यवत-पु तुमेव वर्षतः। - याक्रि-पु वृक्ष श्रीवनस्य। - यारस्थि - पु रस्त परान्ने वर्ष

भागनेवासा। -पीह-पुत्त कर होई (त.)। -सब्दीय-पुत्र स्विटिय विनमें दोख्यामा सवाश वा। -सम्ब-पुत्र प्रवादि देवता। दित्र स्वये स्वयंत्र देशियाल्। -प्रमा-मी इस्मा। -बाह्य-पुत्रियान्। -साक्य- को॰ यदिवाँकी माला द्वारः बाँक्यः क्या । - माझी
(कित्)-पु॰ देववर्ग-विशेषः । - मुक्ट-पुः घड वीति
सल्ता - मुस्त्य-पु॰ दीता । - साझ-पु॰ काल मानिव।
- साझि-की॰ रस्त्रीका समूद । - साम्य-पु॰ रस्त्रीक रस्त्रीका स्त्रीका समूद । - सम्य-पु॰ प्यामी
दुद्ध यह वीविशक्त । - सानु-पु॰ सुमेद क्या । - स्

—सृति—सी० १०पी । इस्तवती—सी [सं] पृथ्यीः धारवेशुको कन्या । इस्ता—सी [संग] एक महो (प्) ।

श्रासकर-पु॰ मि॰ समुद्दः शास्त्रीकि मुनिका पूर्व नामः साम गणिर्वेके मिक्तनेका स्वानः रानसमूदः एक वीभिन्तव ।

रामागिरि-तु है 'रामगिरि'।

राजाचक-पु॰ (छं) रहींका देश राजीका कृषिम पहाड़ विछे दावके क्यि बनात हैं (पु) !

श्याद्मि-पु॰ [सं] एक पर्वम । श्रामाधिपति-तु [सं] कृतेर ।

रामाभूषण-पु॰ [मं] रात-नटिश आभूषण पहाऊ गहना।

ावना: इरामाच्छी-[ध•] मणिवेंद्ध माका; यक रागिमी ; यक कर्मार्सकर वहाँ प्रश्तुत वर्म निवनते के छाव छाव उदिश्व क्रमसे बुध करव वरमुर्थी या तस्त्रीका विस्त देश यक प्रकारका कार ।

रानेस—इ. [सं.] कुरेरा समुद्र । रत्नोत्तमाः समोस्का-न्ताः [सं.] यह देशे (सं.) र

लारियां - क्यांन - जु रस्व महारता लाल (नंती?)।
- क्यांन - जु रबस्य विन्ता-दुलमा । - मार्में क- पु पानक्य मार्क्यो (क्यांन से स्वारी आनेतानी रण-वार समारी)। - मुस्ति-मी रचर्रामां रच्ये दिनारे स्वा हुम्म स्वत्ती लीडे स्वादिया परा जो ग्रामीक प्रमार केर् इस्टरने क्यां बचाना सा। - क्यांन-नी रनमें सामा क्यांना - क्यांकार - क्यांन-नी रनमें सामा दरना। - क्यांकार - कुर रने दे निर रही सार द्वामां ।

--चित्रा-स्थे एक प्राचीन मरी। --ब्रु-९ देन निन्दा १४३ --बीड-९ १वडे धेन्यका स्थान बैडन की बगर गरी। --यनि-९० १वी रवडा नावक।

-वर्षाय-द्र रॅटा विर्तिश पृष्ठ । -ध्या-मी ६६

कुनुसा~मी अनगरा देत्र - कृदिशा−मी० अप मन्त्र । -दिमर्-पुर प्रश्रद प्रशिव्यक्त देश ! -देशी (शिष्) दि गामा काम राष्ट्र बालोबकार —देश्य−द्रः नान पुरुषा–कोसमद्द−दु० सभावश्या -शर-पु ४'वर वहना रामगाव । नगन्दि-पु वक्ष १ दिनके कुल कुल हो। एकमार । **-गोरक**-षु राज्यर रेता –शेवस-५० वस्त तंब्राध्य क्षेत्र १– र्मधा-मी सर्गन अदग्दा । -तार्घी-की देवदेवा देश । लगस्य लहरू 📧 भी रोग जिल्लो ज्योग्रयमे रूल को स्टिति है। अरो है। अरोत्हरू अरा स्ट िरा --प्रीय-पुर सर्परा राज्य । --प्रीय-१ माम सप्रदेशी। एक शेल दिख्यों छहीरमें बनाई बाँउ बन यान है। नम्बन्यु रिवेन्ट एका विक विमी रम नद्दी र च्यानिमी दशदूर नदर र च**र्य**न षु नीप्रामुद्धाः**-चंदव-**पुन्नमं श्रीतः -विद्यर्थ-पुरु मान भीना कुर्र । नमुधी-पुरु हेर्सा कृतीया। ~रहर्षि-भाग रचत्रमा, ध्रमे हे । -अ-वि० रछने शापक्षां द्रानदेशारोते बीजेजामा १ -- क्यूजि-यु ११८ शिक्षा कि वर्षता । - प्राचा - श्रीक देशहुम, अशबुक्ष भारत्य !-जिल्ल-पु जैर शिक्ष । दि काल श्रीयशाचा । - वृत्त-पु+ अटर केप्हते ३ - तुंद-पु+ तोता तुवा । ी दिन्दा है। अन हो। अनुहरू कु यह की हा भूत्र ता, क्ष्युवा ६ - मूख-पुरु संपत्र रोगश पुरुविर्देश ! न्तृद्यः = भी दक्ष्यः । विष्कृतिका = भीव भेटिका बन्ध प्रधारके बार राजनेका अपूर्ण कार्यकारी इर्तः । - इंती-मा दे सम्प्रान्धाः । - इन्त-भाव मोन्दर मानद संयान्त । न्यूपन-दिः ६४४ दृदितं बर्दने बचा शृष महार बहेरेराती । नष्ट (छ) न्यु क्षेत्रा दश्या प्रदेश साम् । वि साम अदि वार । न्याय-पुत्र लाक्ष सीवाम्ब पूछ । न्यात्रा नामी अनेगडे बीतासी इस्ता द्वार दीना की रूप प्राप्त करती है (बा. है) र न्यून्य बाँच मेहर मंदा ! न्यूब्य-दिक यु है 'रचर्ड' ! व्यक्तिवर्ध' हैं है अपेट है जाना होते. रिक्षेत्र । नवाच्य-पुत्र सूचना थी (द्वार) -वाशिवाद-षु प्रश्नि = निर्वासन्तु अभ्य तीवन्त्रवर्णः ३० क्षीत -पुर प्रद अप्रेट दिवार शिक्ष किम ३१ -मैच-हि पुरु वे विकास अन्यन्तु राष्ट्रमाहि स्मर्ट्स स्ट कें) स्था । नक्ष्म न्यून अवर स्न्यूर न्यू अवस्थ हि med 444 attytus imda-de jimd i mdai w क्षान प्रापृत्री जान्य प्रश्तिक रूप्यूष्टी नक्षी अवस्था भ र पूर्व नवर्ष न्युव काम राह्यपुर रह ६ व्यक्तव न्युव METERS - MILES BESTER -Mr. Chipana ndid-filipian alian in ure bermere fertifteter em et weur f. अन्यक्षर । न्यून्या वर्षेत्र अन्य । च्यून्य च्यून्य व्यवस्त हे बे छ । न्यापी(दिव्) विश्व बाज का सामाना भूत । 4>cantigle bublig iff mice sebitif while a ger fine their a maneral यम प्रचार रक्ष करिया । अस्तुमा अस्तिकः द्व नवद्य परमुक्त रमभद्व व्यक्तिहरू असम्बर्ध

-विया-पुरुवह रिकासि होई अन्न अन्तर गुरु केनि अर्थि रेज दिएए है। - व शानक र नहा बुंद रे-जुद्याळ =पुत्र रेंद्र रेजका ६% दीता र-पूत्रवीय--को कान (एके दुनर्रेश रहरूनाता बेलपार प्राप्ति प्राप्ति לשעלפי אייני פולי (חוד ושנ יי בום वर्षिक , बीज एक पुरिद्याः सम्ब । न्युरम् पुरुवरीर, बररीया अगरा पेतृयः पुत्रायः अनुन्तः । --पुरस्या-पुर बकार्या "प्रवा - नुस्या-भ्रीत नेपना चरावेच" निर्देश मार्थाचा प्रदर्भग्रह -पुचित्रह-में अप वंग्राहम्म पुरुवेदात अपूर्णी-मोन सार्वाद्धे रूप थी। व्याप्त कार्याचीया अवन् अनुवन - वृत्तिवान बार लक्ष देर्दे अन्य राग्धा पूर्णकार न्यूबा दूर बाबाव (पुरु) : --ब्रश्च-पुरु इसमी । --ब्ची-पिरमधे सा द्वभार -प्रतिहत्ताच-तु अधन्तर वर्ष देश -वर्त-पुरु प्रत्यक्ष एक अर विग्रंपे श्रीको स्थापन बीना बहना है। -प्रमेद-पु पह कुरन हैन रेप मुल्काता ब्रह्मीय देशन होना है)। अपनि बीन दिशान्त्रक्षेत्रने देन्नेद्रामा १६ हेव । न्यामार-कृत्रकृति कृद्धा सन्त्य अनेद्दा अन्यत्य अनुवाद्या । अन्यत्य । क्षी हेश्रद्धानी स्वयंत्री : -ब्यून्टर्न्य मि इक्ष ६७ छ । -वीलक्ष-५ क्षेत्रा पुण्या १ वस्य पुरुवांत दोर्थ । -बोजर्-पु देश्ये क्या मेंका -संप्रति-भी लाम बनेर् ! - संहात-पूर १^६८ देश वर्टी (हन्द्र)। बाल क्षत्रना एक नरिया गृह्र। ~र्श्वक्रिका~भी शाम बाह्यती, वर द्रांगमी पुर कोड, राष्ट्रभावि को रख केडर लग है। न्यूलंड ~पु कार स्वाधे वह क्षेत्री सक्ती र नशासा है सरम १ हि. साम सानुस्ताना । अस्तुप्रान्मी देने De allung gege engelnt an imp g. ne रोग (४)। न्यूचन्यु रेपू सक्तरे वर्षेत्र वर्षेत्र स्दो(बंद)-यं भारतः न्यूबद-पुर रेक्सर जारेक रेवा। -श्ला-श्रीर संस्था संस्थीत -मेर-इ रे॰ 'रमश्रेष १ - अग्रम-१ श्रेर संग्य granbag ein genanger gen ein fan वे]। -शेषम पुत्र द्वारशास्त्र निरमान -वर्ष-मं वर्ष्टानीयान्या वेर्यानार्थाः and o free a widtend befreit mitterte. ales 4 -bila-obe sights oft (644/44 paget gill 2 dnitt feit audfan, -turn ge mitt everne an be meben रक्तीको बेजनकात्त्व, वेते पुष्ट वालीका की do g conga a malimate and abacter न्यारीनम् १ रक्षा ३ न्याँ ३ र^{००} EST THOSE IS BE THE SHIPE BY क्षा भीत कर्मका मुख्या (१९३ १५ रिनामा) है न्यवं-प्रशास्त्र हार देविता बर्टन, ब्राप्त anythe altre one eet it am ton -बार्यक्ष-रेर केन्द्र सम्बद्ध रहे र ज्यामा सुद्धियो gt | -que ge fers ft en mien नक्षीबुनको कंच मारमुगा व्यक्तियो

माबीन मही ! -महोत्सव-पु: है: 'रवनावा' ! -पाया-सी॰ सारत सुठा दिसीवाकी प्रशीने बीवेबाना वस्तव जिल्ले सुमद्रा रहराम और बगबावकी सृद्धियाँ रवपर निकासने हैं (हिंदुओंके व्यतिरिक्त क्षेत्र भीर भीक भी यह सरस्य मनात है और रथपर जिम एवं बुडाईर मृतियः निकातन है) । —योजक-तु सार्वि । —वस्मै (म)-पु॰ -थीथि-न्या सुस्व सबक, राजमार्ग । -वाइ-प्र• मारांबा थोशा । -बाइक-पु= सारांव । -साहम-प्र• रक्ते परियोके कपरमाला वाँचा । -दासा-मी॰ रन रखतेकी बगद, गांदीयांना *।* -दाराज-पु :- विद्या-स्त्री १४ पतानेकी विद्या । -ससमी-नी प्राप-शृक्षा सामी, गूर्वक रवार्।हवकी तिथि। -सून-पु सारवि रवपासक। रथवास्(बर्)-पु [सं•] श्रारकि, रव बाँकनवाका । रथोग-प्र॰ [में] रमध्य पहिला कार, यह बाला पहला ! -पाणि-प्र• पद्भपायि, विष्णु । -वर्ती(सिंग्)-प्र• प्यापती, समार । रमार्गी-न्ता (सं) कक्रि नामधे भोगपि । रयास-त (संग्री रक्ता प्रशा परिवार कार्तिकाका रक **बसु परा चार अंगुकका वक प्राप्तम परियाम**ः श्याप्र-पुर्व [सं] सेप्रतम बीजा, वक्ष बीजा जिल्ह्या एव यद्भी सबसे भागे रहे । रथान्न-५ [म्] वंतर रथायरोद्दी(हिंस्)-वि मु सि वि रणी। रमाधर्म-९० थि] दक तीर्व । रचिक-प्र (र्ग+) रथका स्वार रथी। विनिश्न ब्य । र्षी(धिन्)-दि॰ [तं॰] रयस्य धमनवाना। म बोडा। क्योग्स्य-ए [मं] रथकात्रको असक । र्चोद्रता-मी [मं•] एक वर्षश्च । रक्षोपस्य 🗝 [मंग] रवका मध्य माग । रधोरग-इ [सं] एक प्राधीन कारि । रधोन्मा-ला [सं०] एक नशे (पु०)। रुष्ट- मु [संग्] फारा पहिचार रथमें सुमनेशाण पीवार मार्थ । र्ष्या-श्रो (मं) रमेडा मार्ग भीका राजमार्ग सक्क प्रधान पता र । ११ हाम भीतो लहक (ता)। भीक। भीराज्ञा बढ़ स्थास जहाँ कई मार्ग दिनें। स्थोंका समुका माठी मारदान । इक्र-पुरु [शं] इति। ~दछप्~पु ओह सपर। -छन्--पुर बीहा बनिका निष्ट विशेषणा दिवाल क्षा) । -शाम-प्र कार्तीका विद्य शामना । -पर-पु औड, अपर् । रय-विक शराव रही। प्रचा बीमा बीका । -बदान-प परिवर्गत जन्द्र-पुन्द, लग्न-वर्ग । रदम-बु॰ [तं॰] होत । -वसप्-बु॰ कोड, अवर । रक्ती(निक्)-दि [मं] बॉरीवाण देनस । इ दावी । स्वी(दिन)-इ [सं] दावी। प्रशास-पु (सर) वीते, जीवर पीछे वैदनेशामा आएऔर बीदेशी हैना। बहु छान बा बहु भी चेट बहुन, बही दे में बारिये कोबानुबान दे बाते बार-बार कार्य । –बार-

थ अगुरहासमे । शुक्ष - चमस्ता-स्त्रीकवा बमाबार-पूर्व होता । -बाँधना-स्टोबका स्पदशर् दरवा । राइ-विक [म] कारा छाँटा पुत्रा शोका बदला प्रमा धराव निकम्मा । पु॰ ग्रुटलानाः गणतः सादित करवाः व मानना केर देना। श्री वयब, दै। --(रो)क्इस-पुरु पेर्पार सस्य पर, वरिवर्गन । रद्दा-पु॰ तद, संब, स्नर; कारी और श्वर नार्वे बठायी जानेवाली मिट्टोकी बीजारका कंशविश्वया पूरा बीबारकी संवादेंमें एक देशकी जीशारी निकादेवींका जुनान (बार्ग-में)। मररभवर कुरनी और धनारेड़े बीचको बड्रोते भाषान करमा (कुरतो)। यमश्रक्षे मीहरी (सिडेश्हर मालुओंके ग्रेंबवर वॉबनेक्प)। सर -- जमामा-मारीव करमा, रक्षमाम समाना । -शामा-एक तक्षर इसरे हर्ष रशनाः रहामाः रशमाः शाबेपर ग्राना । रही-वि॰ (म॰) निख्या वेदार। मी॰ वंदार चेंद्रे हुए बागन बाडि । −हराना-पु॰ वह श्वाम वही सराव, रही कोई वेंबी हसी सार्वे ह शकारर्ग−को दोत्रर श्रीक। रघेराजास-त छोटे छेरीका बाह्य । रम•~च तुरा: शंगत कर ! –छोर-ड् • रै • रमधीर !। ~कका~ि घर-मेरा बोमा प्राप्त । ~पॉक्स~ि० बोद्धा बीट। -बादी-विश् करावा मोद्धा घट। रम-ज [अं•] ताम शीला तमाचा क्षेत्र वितेष (वेने रायाचा रम)। तिनेट तिसमे वस्थेतानका एक बहित्रपमे बुमरे बहित्रयम्भ विना वहिर्गत बुद शीह समानाः बाहम । सम्बन्ध−भ कि (वेदर भारिया) मंद्र मंद्र शास्त्र बेंग्या । श्रमण ०—स ० कि. श्राप्त करमा श्रमकार ४१मा । क्षाचरिका~न्दर्भ नेपाक्रमें वाबी कानेवाली दक्ष मेह । द्वयासः दनिकाम-पु॰ शनियोदा महतः श्रीतःहर । र्मिष्ठ--वि शकार बरता नुभा, बनना द्वमा ध्वनित्र । श्रमीक-निका प्रकारित वीर । श्वदर्श-मी भारत भन्नाम वान (भा क्रिप्रक्ना बाक, बनारा बीह (निशेषक सेन बीह)। हसमा अपना रिक्ट्री । रवरमा-भ कि मोन वा भारती भीर विमयना गर क्षमा क्षम म शाबादन्तीय तिमा वर्षे अवर्थ अर्थ ब्रह्मा । मः द्वित अस्थित दर्शाममा भैनुस करना (बासक) । रपरामा-मन कि सरकामा दिल्लामा। स्थानेको बेरीत बरकाः करवर बीर्वे काम पूरा कराना । द्यहा-तु विलक्षा विभवाद। कीत प्रदा्ता बीत पूर ! क्क्र-विक [बं] बचा वा व रामें दिवा हमा, मंबूटेडे चीरपर बना प्रमार वो लगा, ब्रोड म बना हो। गुरहरा र क्यानेक्यां-यक है 'स्थानक्या ह क्कड़ी-पुर्वांशं) वह भारती भी दिली बातने त्रोप भारी म शिन्द करें। क्षास-पुत्र करी भागर देवर १ की० वस प्रधानी सूच-⁴रशका १ श्राप्त [mo] प्रदाना क्षेत्रा श्रास्ता नाती। निवानना

मश्रीठा वंदीत्पका प्रपारी नक्षिकाः विती तता । ~वसन ~पु+ सन्धासी । वि+ विसदे कपने काक दी । ~वात~ पु एक शतरीग नातरकः। -शालुक-पुर्वास्त्रहः। -विद्यिप-छो॰ रख-निकार जनित विव्यक्ति कीका । -विरक्तोरक-पु॰ गुंबा जैसे साह प्रफोले पश्मेवाला एक रोग । - विद्य-पु विश्वि बूँदा काल विश्विताः भपासामा काक पंचे दाय । —बीज-वु काक नीजका धमार, नेरानाः रोढाः एक राधुस जिमके पश्मीपर गिरमे बाले रक्तक विदु विदुत्ते राघ्यस सैवार की बाले वे भीर विश्वका वर्ष श्रीक्रकान क्रिया या (देवीमागवत)। -बीजका-मो॰ तरदी, एक देंटीका पेड़ !-बीजा-सी॰ सिंड्रिका सिंद्ररपुष्पी । **-बृंतक-**मु शरवपुरना, पुन-र्मवा। -वृंता-सा केटाव्या निगुडी वरविकार। -बृष्टि-सो॰ आकाशने लाक (यो पानीको वर्ग । -- झण-- पुनद्द कोड़ा जिससे सवादको जगद रख निकले। —शयमं – दु क्रमोका। – शास्ति – पु॰ काल चायल राज्यसानी । ज्यासक्या साम कामकारी जार मसीइ। ∽शास्त्रकि−पु॰ लाक पूर्वीवाचा सेमक। —झासन-प्र सिद्रा - क्रिय-प्र लाम सदिवन । -इरिपेक-पु सारसः वंशन्तिरोजा । -ऋंग-पु हिमालवका एक श्रंम । *-श्रं*गिक-तु॰ एक निव! —श्रीद्धर—प्र• प्रदाग । ~श्र्वेस—प्र भनि विपैका विष्यु (<u>श्र</u>मुत) । —ष्टीबी-स्तो॰ बातक सविपातका एक मर्रा∽संकोच∽तु० तुन्नमरा पृक्रा ∽संश्रक−तु केहर, इंडम ।~संदेशिका-को जॉक। -संबंध-५० र्वधगत रेक्ट बंध, कल्प्य संदेश ।—स्वित्रण⇔ष्ठ सरमा । -सपय-प सात हरसी । -सार-पु॰ काल चेरमा रीरा प्रांपः बाराडी बंदा अगलनेतः रक्त नीमालन । -स्तंमन-९ वहतं रखरी रोक्नेका कार्व । -साम-प्र गृह्म बहुना निकल्पना गिरुना। भी ही का कह रीम श्रिप्तमें भौतीन परिर का लाक पानी नदना है :**—होसा**— की एक रानिया। ~हर-पुनिशाशी। रक्षक – तु [म] रविरा लाल बन्धा काळ रंगका योहाः काम सहितना काम रेडा शुन बुपहरिया। बुंकुम । दि० भन्नसमीः विनोधी । रक्ता~नो∗ [तं] कालिमा कनाई तुनाः रच्छमा नहीं [मं] काराठीठी काकर्तुती: गुजा हशी बरवसी । रख्येक∽इ [सं•] र्मुता । रक्तीग-प्र [त] देनदा साम काना क्योसा। हैंगा-रारमकः संगत सदा बीर्नगी । वि+ छान श्रहीरवाला । दलर्वती −स्थे [सं•] बोवंतीः तुत्रको सबीठ । रक्तरेट-पुरु [तरि] वीरीहे बंदकावका वन्त हीता। श्मांबर-वि [धे] लान वन भारण करनेवाला । प्र लाम बररा (रिजेपडर रेसकी)। मुम्पवानी । रना-की [संव] बंबम व्हरकी बाद मुनिर्देशिते दुलरी (मान्त्र)। मधीर। कारा उंतराता एवं तरहवी मेमा वैषयी। रूप्पण्डेश बचा रक महारकी मकती। दिशा शय (बानके रणही)। विकास अनुहरका। रनावार-पु[:]ब्रांशाः दि क्रिमदी वृति सात्र हो ।

रख्यकः - वि [सं] रख्यी रेंगा प्रमा मा चपदा हवा। पु॰ शाक चेयन । वक्तास-वि॰ (सं॰) काक नेवीबाकाः समेकर । प्र कन्नरः सारसः नकोरः मैसाः साठमेंसे महावनमाँ संवासर । रकासिमार-प [सं•] वर विसार विसंग सुनके दरत बात है। एक्ताधरा~मी [र्च•] किश्ररी । वि• सी• सास क्षेठ वाकी । रक्ताचार –पु॰ [मं॰] बगरा । रकाचिमध-पु॰ [सं] रक्तरिकारसे हीनेवाही बॉब्रोकी रक्तापह~पु [मं०] एक गंधपूरमा भेका। ग्चाम−९ [सं•] शेरवहुदी । वि रुख देसी मामाबाखा । रक्तामा∼सी० [सं] आस बदा। रक्तामिर्प्यंद-पु॰ [मं] यह नेवरोय जिसमें भाँगीसे काल वामी निकलता और बनमें कारू रेस्सपे दियार्थ हैती है। रकास−प सिोकाल क्रप्रदा रकाम्सानं –पु॰ (रां॰) कान कुलेंनाका एक निराप पीपा । रक्टारि-इ [न] महाराही एक पीपा। रक्ताचु द - प्र. (सं.) यद्म रीग विश्वमें परुने और बहमेवानी प्रमिनों निकन्ती है और घरोर नेका वह बाता है। यह दाकरीय विनिध रीत विश्वमें निगरर काब कोब और साल वंशियों निकलती है। रक्तार्म(न)-प [मं] भौराका रक्ष रोम विसमें बोदीपर कमलके जाकारवाका प्राप्तिक वक मेद्रस वन जाना है। रकारों (स्)-प्र [मं] श्मी स्वामीर । रकामना-गरी भिन्ने प्रश्रीह । रकालु−९ [र्र] रताम्,≀ रक्तावरायक्र∽वि [में] लूनकी बहत्तम रीक्ष्मेदाला। रनाबसेयम-तु [तं] फल रक्षमोझन ग्रहारध न्म नियम्बाना । रकाराय-५ [म] देशके मान भारायों मेंने चीवा जिसमें रलका द्वामा माना भागा दे (देवता द्वाद नहुन आदि बाढ़े विनमें रक्त रहना है)। रकारतीड-5 [मं] का# अधोद । रकाशारि-५० [मे] काम बनेर । रक्ति-भी [में] प्रम बनुरता रशी बरावर दीन । रक्तिरु-नी मि रिक्षी प्रेय १४ श्किय-वि [मं•] समारे निर्दे पूर्य मानियायुद्ध । रिनेमा(अन्)-भी [सं•] सली ननारे। रणेश-५ मि जिल्लान । रम्पोश्याल−दु (शं०) का० कमना रोमन र रणादर-त [में] रीहा एक बहुत बहरीता रिनाह (सचन) । र्ग्नापद्श-तु [वे०] रशाविदार्थ पत्रव गरमी आन-एक रोग । रमप्रेपस-पुर्श्ति] स्कः १ रक्षम्पम-५ [मं] राष्ट्रमीका ग्रम्क । रक्ष-दि [मं] इतार क्रान्नेदामा रहक र तु रूपा। माद

लायाः कावतः साम्य संस्थाः वदः वदसेदः। न्यासः-

ब्र्ट स्टानाः वृद्ध करनाः समाप्त करनाः फीसका करनाः निर्भात बात । - दुझा-पु करम करना। फैसका करना। पीछा धुरानाः प्रेससाः तबशुदा नात ।

(फ्राइस-को॰ (ध॰) संगः मेक्बोकः वकादारीः व्यक्ता । (फ्राप्त-को [ब] पुक्षरी कॅनाई; परीचितः प्रविद्याः (फ़्रीझ⊶4ि॰ [ब॰] ठॅंचा दुर्वद ।

(फ्रीक-प्र [म] संगी-सांचीः सक्तारीः मिनः साजीवारः समादित ।

रफ़ीदा~पु[ल०} पुराने कपहे को इक्के सिक्टे कीं; गडी विसार बील कुमुत्रे है। बालुक, गुरा वह गए। विसकी लगाकर मानवार तंतूरेमें राधी चिवकाते है। वीक, वेदंगी

काडी (अवदा अनादर-गूजक) ह श्का-पु । [स ।] सने 'फूढे स्ववदेखे छोडे शुराखर्मे वानं भर कर बराबर करमा, जाको कगाना । *-गर-पु॰ र*फ्ट*क*रने शका । नगरी-सी रक्त करनेका कामा रक्त करनेका पेशा । सुरु -क्यूबा-असंबद्धः विवृदीत वालीमें सामेबत्व भीरता । - सुक्रमा-रम्-के शागे हर कामा । - श्र**क्र**स होमा-चंपर, गांवन फरार दोला। क्सक जानाः कुलेनी चका चाना ।

रप्रस-तो [का] रवावयी गमन (मैसे-जामद-१६०)। बध्यतारी∽स्त्री राममः कालाः निकाके क्रिय माक पादर मेजना, मालको निकासी, निर्वास ।

रप्रतार – जो [का] गति जाकः वस्तरेका देगः शव । —<u>गुप्रतार्</u>नको नाश-पक्त शोर-वर्गका।−जन्माना स्त्री बमानेकी गरिक्त गरि, बाल । ~(१) सस्तामा —सी मरतानी बास शूम**भू**मकर वस्त्रों। नखरॉकी

र्फ्ना-र्फ्नाः — क्रमञ्जन सनैशन्त्रनेः योरे भीरे । रब-प [ब] हैनर परमेश्वर, शासिका परनरहिगार,

पाकम पोपम करनेवाला। * मुसकमानी नत-'कान्हा करण श्र<u>त्र</u>श बोहाई फेटा रबस्च -मूबन । रबद-इ एक पृष्टके रख का निर्वासकी पकाकर बनावा क्षानेवाला एक क्रमीला प्रार्थ। रशहकी बनी हुई बीजः वक्र कृष । की॰ नहरा सम, रवश क्रमुख हेराओ केट, बहरा

बुमार चरुनेके किए वर्षिक दूरी। ~छँदू~तु नाशानी मान्धि पंपर्जीते सक्त द्वर । रश्चमा न कि कैरनाः प्रवास चनाता। अ कि॰

पममा, चनता । रबड़ी –की भीराबर माण दिया हुआ चोगी गिशिव हुन

रबदा-५० कीवडा बार-बार याने-बानैसे श्रीमेवाका शत । मु॰ -पदना-शेखी वर्ष द्वीना ।

1 483 .2 [44] E-385 श्वती -भी रे॰ 'त्वरी (

रबामा 🕾 रद छोडा दफ किनमें सबीरे भी समें रहते हैं।

रवाय-तु [ल] एक तरवयी सारंगी । रबाविया-पुरशव बतानेशाला ।

रबी-पु [ब] भीनम बढार बर्छनः बर्मन मानुमै कारी मोनेराणी पमन भैती। ल्यस लागिर वा मोमील्य

मुस्कमानीका वीमरा महीमा (चार) । रबीक-सी॰ एक चिदिया !

रक्त-पुरु [मरु] शरमास, रषट, मस्कः संबंध रिक्ताः मेल-बोका बंदिश, जोवना। - ब्रस्ट-पुर मेश-बोह राह रस्मः भागव-रपदाः निरीतं करनाः वज्यः करना । मु॰ --छडना - छुडमा - कगाव व रचना; वंदिश दुरस्त ज रक्षमा । न्यासन्ता-मक्क, भग्नस क्रमा ।

रब्ध−नि (सं॰) भारंम, श्लरू किया हुना। (की 'रमा'ो।

रस्व∽पु (त्र•] दे 'रव'। रक्या - प॰ (का॰ जरावा") सोप छ जानेवाको गावीः वैक

से बॉपी चानेवाली गावी, रथ । रस्याच~पुण्डेल देशाय ।

रब्दुसरवाथ−पु॰ [श॰] पाक्कॉब्स प्रतिपाकक । रमस-५० (तं॰) भौतपुष्या भावेद्या वेग, स्वरा (बस्द-

वाजी-बुरे मावमें); पूर्वापरका श्रविचार; ग्रीक अनुताप पछ्याचाः मिल्ना हर्षः रंगः रहरयाः मेमोरसाहा प्रकृत कामना। कोया एक रायस । वि॰ वेगपुक्ता प्रवटा हर्य तक ।

रभेगक-पु [र्स॰] शॉपके क्यमें रहमेवाका एक राक्षस । रम-रि [सं] प्रमुख करनेवाला आनंदकारकः संदर-प्रिया ध आनंद, इपं, रमचा कामरेवा काक क्योंका पतिः गमी ।

रमक−की कद्द त(गः वेंब (शुनेक्ट)। प्र• [सं] प्रेक्टाः

कांता धपपति । रमक−वि (ल॰) बद्दव भोवा; जर⊱छा । स्त्री आक्षिते शॉला मधेका मसरा श्वर भोरान्सा क्षेत्र ।

रमक्यरा~५० मार्थेने पक्तेराका रह मोटा भाग । रसक्ता-न कि विशक्तिपर सूक्ता पेन नारना:-'होटा महे रमस्त्र रोक दिसि, बार परसद बाव'-इरिसंहा

श्चमी शक्ताते द्वय चक्रना । रमश्रक्तरा~प नेपनकी मोटी रीटी ।

रमचारित्र प्रमा धोरी करधी ! रमकान-५ [ब] मुत्तक्यामा वर्षका नवीं भरीता । रमकानी-विश् रसवानकाः रसवान-वंगीः रीक्रीकाः

वसके शुनितक। रमशानमें अश्वता पु सुसकतानी मान्। रमहारेकां ~पु॰ दे १महोता ।

रमझीखा-प्र• नपुर युवस । रमठ-पु॰ (सं॰) बीमा एक प्राचीन देख हा बढ़ोंद्रा

रमण-वि [सं॰] रमनेवानाः विव मनोदर । पु सनि, विलाभ कीवा संगोग मैचुमा विषय करमा, धुमना कामरेवा पाँठा गया। अपना बंदबीया पूर्वेका सार्राव अरुना प्रवस्त्री जना रूपक नामक वर्षा वदावन एक वर्गक्ता वक वन । -बोह्याचर बेंबर-यक प्रसिद्ध भार-तीव वैद्यानिक जग्म क जवम्बर १८८८; बीनिक विरास्त्री मीरेन पुरस्कार प्राप्त १ १० स्न्यसम्बद्धा-स्री शब्द माविका जिलका मानक तो भंकेन रनामपर बहुँच धारा हो। घर वह न्दर्व म क्वर्यरक्त ही कारी।

मुनकमानीका भीवा नहीता. (पांत्र) । ∽डक भीयक ∼ | श्रमगढ़ −५. (गं.) बीनदीवका पुत्र; वंशूरोवका एक वर्षे ।

हम्र – स्थितामा werk-do the attitue रप्र(स) -प्र [स] राहम अक्षा किरा र्घाद्र-दि पु [शरु] बहरा देळालाः बाल्य दहनेशालाः रक्षा बर बरम्बन हर्राहर रखकेताला ३ रक्षात्र-पु [राष्] सुर्वात्र स्थान्य प्रशास्त्र सरमा स्थानानी बारा पानन रोपन । -क्यों(मी)-दिव, पर रक्त करने THE STEEL रस्रमारक-नु[०] मृत्रपूरण्युरीनः। रसर्थि रक्ष्मरी∽भी (ग्रे॰) पाष्यामा अगा र रहातीय-दि [में] एशन बेंच्या रहा करने काल । ### + 2 € • 1 mm 1 पुरवार-म डि० एहा बरबा डेबकरा- भरे €स शर भने मुद्रारक रखन रेपुम्तमाचा -रपूरात । रक्षात-पुरुष अहर ३ रक्षा-न्योर (तंर) (६६, स्रॉनर - क्यॉन्स) यदानेदी किया स्थापनी। स्थाया शरदा वस्य स्ताः करण्या रशहरता मूल को विशेष व्यवसारहर प्रवर्णनेहर वर्षेश क्रमण है। लगुद्द-पु चोची। विज्ञास स्थवा भीगी, लुलिहार राह अवेशायाला । -याति - या सगरवानिशीका शक्त (शार) 1 -- एय-मु भी मन्त्रका देश मदेर सर्मा । न्यार नपुत्र नपु पर्वेगार अवस्थि नवसीयनम् यह बीयक और श्वामीयों) स्थानेके कि अन्नावा प्राथ (१)। -वंदान-पूर्व साध्यो का समीठी बालका स्वीहार भी मारण प्रिक्ति होगा है दिन अवायपर बहने करते. बारबोन्धे और पुरोरिष अरने बनमधोधी बनाईवे बयल मा रेमभका सर्विमार्थन रहालान वर्ग्यते हैं। ३ - अनुवास-पुर भरत प्रतर अरब को भूग देशकों ने बन्धे किए। पहला बारा है है - संगल-१ - अनुदास करिक किया तिन भूरु६ प्रचारे बचने है हिए दिया प्राप्त । नक्षणि न -राम-म पर करिया गामी करकरन करते हैं। दिवादने बाल्य दिना अ.स.) thinks property PRESENTATION OF THE PARTY OF THE PARTY WITH 40 (4 11 THE THE OF LOOPING CO. WITCH MY SERVENCE はふうか おしょ र्मीतव - पुर्व (सं. हे रहे के संशामेश करा बर्रोशाह र र्षाध्यालको [त] दक्षा न्य कार्चके किए विश्वक क्षा । efere-las (res) ferell re all no all en gres करियानित र पन अहं सं यद सवापति नेत । र्राक्रमा देश की [र] रह की हो करायी होते. 44 EE MALLE atanan(id)— e * d [ine] adi mendini e Alpendo carentes 1 **नक्षी (दिव्य) नपुन**्ति | च्योदार अनेक्ट्राया स्वाप | 417141,1945 IN FAME wet wert flenten bei ging gederen : दब्द का बाद है। इंक्टरुकी क्षाफ्री राज्य है

to be seen and the to the factor of the sections of

यह न्दरश म बर ~(क्तें) लाक्रम-१४ श्रेप E are lend bur if if d'e rent gert काम कार्य के बाहु अनुकार समान्त है। ब्लानिकार किया मानेरामा यह साथ क्रियो बालाई का देशारा का परा जीवकर सबाद जनाने नरता है ३ फ्हाइसॉन षु क्षेप्रे । पेपनर्रश्रमें ब. क्षेत्रं रिकरण । भक्रास्य We for where weers where ett करणा । -विशियल-पुर क्रिक्ट क्रिक्ट क्राव्यक्त कारण । न्यामी-या पर नारश अपा असी बर-पु मरीनरको १इजियो भीर दल्टेन हिल्ला ह बका क्या-भी। जो बहाबोडे परनेरे किर हारीन क्षित रामीयाः एराप्ता पूर्व बरम्बाः यह बाव र were finish windered nest at an **ፍ**ተራስ ከተብ ብ ፣ वस्त्रमान्त्रक दिक बहुता कि का प्रशासन क्षेत्र रणा करना (करनी नीव रणना सेनी) हैर्नर प्रकर बरता (बान स्थाना) हिस्तान्त बारा कर व रेडे But (tier emnit ban uem (Strebet un रमामान्य भीषमा शाक्त बान्या देशा नाम बाना भारते बाची - अपिकारते बरनात पात्रत देशा व्यवारा के किए कारे वर्टरकार्ड केम (रेग कर मामर शास्त्रा विकृत बाम तेमन दाश विकरे है। भ इदी दशामानि हो है हैना। चीट बहुब का दिना र दान empelt ungft uner ger frem und fet un amet tellit aufreg a erer umm mit were non edills with news feel with atron (negmite fregere um uben fin ६६मा म स्थाननी (बक्री) सम्बन्ध समान नार therein earny his exist exemplified of mmit ent frei f i mi grab simm er fe mi वर्षे क्यानात दक्षेत्र क्षत्रभ हैराकारों; कर्त चनक दराज the easer (toleran a) has ever med fork as such by every lettle more अन्य कारते के अ इन्हर्मा-को शाम रहने हुई को करानी ह and a far i dim to earthe inc HRBITALI CAMPA PERTY RAME & enter-f to felen t रशक्त की नहींका येशका रक्षाति है hu supple the stile interact the

Eliate Court teldidia-die fre tage die fayt bem.;

HEREIT - AT TO THEFT !

641

tatalone titten appea sitte te

े इसक्रियानमूच रक्षा क्षेत्रहरूका अपूर्व चौर्यापन सा

tranta-les fa ffert en et che e- etm

बच्चर−९० (स०) बाब्र, शास्त्र सुप्रराप ≔पार्यापर

हॅंद्रेरामपुरुष्य बाज्यप्या ४

केलि, कामकोशा राजः यस्त्री, वनरपतिवीधा वसीय र्वा को कुटने, दवाने का निषोड़नेसे निक्कता है- शोरका रसाः शरवत पृश्वा निर्वास गौरः योहो, बावियोका यक रोग (इसमें बैर्वे वाजी निकल्का है)- बीर्व हागा विषा कृषा वसूता संवरम शिकारमा कारा हिन्छ। किंगरफा भारतभीको ऐक्कर तैवार किया ग्रमा सम्म (मेरी-रशिंद्र-का वे०); एक गंबहरू, वोक; एक प्रकारकी भेड़ा माँति । -कपूर-पु: [हि:] श्रीवयीपनीयी सफर रंगकी म्ब बातु । --कर्म (न)-पु बारे दारा श्रष्ट रीवार बरमेमा किया (भा० वे०) ।-ब्रेडिय-सी० विदार क्रीटा रेंसी रिक्तनी + केसर-पु॰ क्रवूर 1-देसरी(रिक्र) -पुण पारे, मंपक आदिके मंत्रके तैवार की जानेवाको एक रसीवर । -कोरार्ग-प्रश्न सम्प्रता । -गर्वर-प्र ध्यवरिया संगवसरी । - महिन् सी [वि] मीडा मान । -राया,-रायक-पुर रसीता किंगरका बोक मामक अंब इन्द । "-शतस्पर-प्र॰ छरीरको भक्तमें प्रविद्य करा ! -गर्म-प्र• रचीतः रचांत्रका देशर दिशकः क्षिणस्य । −गुनी (−वि॰ रस्य, कस्थ, संगोक्त द्वाता । −गुक्त-प्र [विं] छेनेसे बनावी जामेवाकी वह मिठाई ।-प्राह--पुरु जीम । ~यम-वि जी श्रम स्वादिश दो। पुरु व्यानीयम्, इप्याः - प्या-प्रसागाः । - प्रकारां - प रेक्सा रम धाननेस्थ ध्रमनी । -ब-१ ग्रह रसीहा धरानको तकछट : ~बाल-पु॰ रसीत । ~क्क-वि रमुका पावा। क्रम्न नितुगा काम्बनर्मत्र । -क्रा-शीन बीमा संगा । वि स्त्री देश रस्य ।-वयेश-पश्रामार रक्षा मन्तर, मीडा रस । "बक्षी-मो । विशे एक प्रचार का गर्बा । "सम्मादा"-सी॰ वसकी रामादा (सी॰)" दे 'तम्मामा'। ~तासदबर-पु एक मकारका रह (बा देव)। - तेब(स) प्र रक्त प्रविर । - लाग-पुर मिनम नानारसे स्वादिष्ट क्याचीडा त्वाग **करता** (वे) र च्ड्र~वि* सुम" आभेरतातका स्वादिस्र । तु० निकि रसका -दा-मी सप्रेट निर्मेश सिवनार। -दार-नि॰ [दि॰] क्रिमें रथ हो चौरवैदारा रहवाका (माम मीं (भारि): स्वारिष्ठ : -हाक्रिका-श्री नवा, उन्हा -द्रायी(पिम्)-९ श्रीठा बंगेरी मोन् ।-धानु-सी० पाता प्रतीरको साल बालुबीमेंचे बढा -चेनु-को दासद निमित्त निर्मित गुहनी गांव ।- साथ-पुरु वाहा । -माम-९० स्तीतः -मायक-९ भारा धिनः -- विर्यास्-५० सक्त दृष्ट् । -- वेदिका-थी वैत्रगिक। -पति-पु कारा। शंकार शमा शका। कृष्टी। चंद्रधा । -परित्यात-१ रे 'रमाकान'।-पर्वरी-व्यो गारेडी शोबस्य बनाया जानेशामा यह रस (मा है)। -शास्त्र -वेश्मीतं योग्री। -वासक-ते श्लीपक ब्रोडन बनानेवाका । -पुरय-तु संवद-वारे जमक्ति निवित एक् इवा । --वृत्तिका-की॰ शतावरः जावर्धनीः। -प्रवंश-द मास्या प्रशंकतान्त । -क्स-दुः वारि बन्दक देशा । अनेपकर --पुत्र शीतकत् । --वीदन--प्र प्रशेरके मौतर माहेका वह श्रेश (बाब्देव) । -- वसी --भी॰ [रि॰] दुराती चाकडी वंड्डेनीरे सम्पेका प्रशंभा ।-- मरी--भी [दि] व्य प्रत अधीय ।-- अप

उ रक्त कथिर !-अस्म-प्रक शरिका भरम। -भीना-वि॰ [हि॰] धार्मस्मे महा मार्ट, तर । -मेर-पु॰ वारेंग्रे तैवार की जानेपाली कर भीवपा राज्या भरीपपेर (सा॰)।-सेव्री(दिय)-५० पक्टर रसको बारिकानि करा हुआ कक । -सर्व-पु शरेको मारने अरब करमेक्ट्रे किया । -अळ-१० छरोरस निक्न्नेशाहे मन। ~ससा≠-वि॰ आगंदमग्र (यमें माता वर्तानेते साम मविद्व तर्भीका । —भाषित्रप्र—इ इरताम भारीसे बताबी जानेवामी एक भीवर । -माताश-मी॰ है ⁴रसंगातुका । —सामृका—को॰ कोम । —सास्थ-५+ पारा मारमे, हाज करनेको किया । ~भाका नमी ४६ सुर्गवित इस्य धिमारसः। -र्मही-सो॰ वि } एइ बॅगका विकार । -मीची-मां वो शहेवा वराम मेर (बैसे-बद्धभातीता तीत:नमधीन भेगा(नारका)। ~योग~ड एड औषर । ~राज्र-ए। शंनार रहा रसीया पारता व्यक्ति मध्य शंबद, शरे बर्माके बीपने वमानी वामियाको वक सीवप । -रायव-पुरू देव 'रसराव ।−छ∽रि॰ रस्तरका, जिल्में रह हो ∺नहरू अ पारा १-कोड-व रस्राधमः शारा ३ - वर्णक-व० उन्न विशिष्ट हरूब विसमें १व निवामा जाना (जैमेन्न कास इसटी मनीड, वस्त हर्रात्तपर अर्थः)। न्यमी-की॰ [दिं।] दें। रहावमी :-वाद-प्र: रहामाप हेम, भागीरको शासनीतः छेरदानः लगनाः रहनतः । - बास-प्र इनगढा पहला भेर बिसमें वह तुर और एक क्यू रहता है।-बाडिबी-की मीवनने बने रमदी हैगामें कानी बादी (का वे) ! --विक्रपी(विक्)-इ मध-विद्या शराव वेचवेताला । -विरोध-पु रारिया अनु िया देख (बेरी-लोगा-मीका बहुमा-मीका क्व-मान्वे प्रे दक नवामें ही प्रतिवृत्त दशोंकी रिवर्डि (वेगे-मंग्रार-दिय-द्वारत बवामक १०-वार) १-वेथक दुर गीमा १-सार्य छ-इ रह बाबुरेंशित रम की प्रमुशके किए प्रकारिय है। ~शाक्र~इ (सापन शास्त्र । −शेसर-द्र॰ पराध बारी में बपबार बद बायने रेक्ट रहा। -शोधन-पुर हदानाः वादक्षे हाद करना ।-मंत्रव-५० रहः, भूषाः -संश्रम-त शरेके हाद दाना मृन्तिम काम वीवमा और भ्रत्य बहता।-ग्राह्मार-पुर फरेशा स्थर मुच्छेन वारव भारि भग्नारह लेखार ३ -सागर~५४ रेगडे राजा ग्रन शोराच रह राज्य (१०) । --साम्य-पुरु विक्रिकार पर्व परीमा बरमा कि रोज़िके शतीरमें बीन इस क्ष्म और बीन अर्थक है। -सार-प्र मर्थ -सियुर-तु को नंपक्दे क्षेत्रमें निवार एक शीरन र -सिक्ष-वि रमध्य स्थितिक मारिके कुछ्य । " क्षाल-पु र्वताः दिश्य विश्वतः । च्याव-पु अपन 121 हम-दि० (बा०) वर् बन्तेशवा रियत वीतेशवा हुने-बाला । वृत्र बाहारी जिल्हे क्ल कोर्र पूर्ण है।

हसक-पुरु [सं] क्षांदरिया भग्यान्तीः विराधते । च्यान

बेल्ड-इ स्टेक्की, काला सर्वीवार -पूर्वर-इक

दक्षम् होता स्वरीका ।

श्रादा-भी । [५०] दक्ष तुरु नि !

रप्रवासी-सी रवाकार्प दिकामन, सुरक्षा । रक्षशी-सी वह मच विसे परार्था, नेपाकी पीते हैं। एलाई-ची॰ रहा बरनेकी किया रहा बरनेका भागः बद्द धन मो रहा करनेके बरडे दिया बाद । रत्याम् नती रसीताः वरारेकी मृमि । क्रि॰ रखदानाः रक्षा धरनाः, रसमधी रधामा-स

करना । रकारां - प्रयुक्त प्रधारका हैंगा जिससे चंबई राज्यमें सूर्व हुए रोवडी समक्र करवे हैं।

रशिया≠~प रश्चनेशका रङ्क।

रिक्रपामा-स कि रासमै मीवना (बरतन कारि); पहाने भीरका कपनेमें क्रिफ्टर पानी चलने और बसाव नि**इड नेदे दियार** हे रा**स** में रहा बाना ।

रखेदिया-पु॰ दॉयी साधु रास रगइदर बना दुना साधु । रलेल, रदाकी-की रसनी, उपपरमी (बी बिना बिवाह किमै परमें रखी बाद)।

रतीया-५ रहा करनेवालाः रखनेवालाः।

रखींदी।−स्रीराखीरधास्त्राः रखींत रगीमा-प थरी बरनेडे किय रछाती पूर्व

प्ररहित यूदि ! रप्रीमी −सी दे 'रायी'।

रप्रश-पु॰ (का] स्पीर-काल मिथित रंगा बीहार इस्तम

का पोश । रग∽को (का) नस, मानी। कुरू परेका रेशा। व्यॉपका दांता तार, तामा। मस्त बाता बूब पिलावेबानीका प्रमानः तरी अदिवा हठ, जिदा -जान-वि फरर श्रोकनेशासा वृश्वि एक निष्मकनेशासा। −काँ~सी० बह पढ़ी रब बिएने ममी स्वीमें इन पर्वेचता है। -प्रासी-वि जिसमें रगोंका का**ड** दीना दो ।-दानीरी-की बूनवा वेर्रमानी । -बार-वि॰ रेग्रेसरा परी भारतदानाः शिसमें प्रच मून समरे हुए ही (हपता) ! धसक-जसल दत्वारिका पता होता । -981-3 −रेशा~४ अस्य मस्या पश्चिमोंकी मर्थे। स्रतीरके भोतरी भेग । −(गे) अन्नम−सी नशकोंकी स्वाह थारी । सु॰ --उत्तरमा-मॉड बदरनाः विदे हर होनाः हीच बतरना । नका सक्ष काना-परद सक्नानेवर वेहर रहत निक्षमा । "रहही होमा" मन कुत्र जामा । -शक्तना-रपरी पर्य सा मून तिरमना । -**बर**ना-दिसी मनदा अपनी जगहरी हरना। हीथ जाना। हरूदे वश होता। ~बाबसे बहादीक होमा-वट्ट निकट शोगा ! - हवना - दरनाः दनाव मानता किमीदे प्रमाव मविद्यारमें होना ? ~पहित्राजना~भ° रहण्य जानता । -पात्रा-आस वानं मानूस वरना। -एक्क्सा-रान्धा शरदण करना। अनिष्ठदी छंदा बीना मादा ठक-समा । -कृत्रमा-मृत्रहे ४शावने रुगक्षा मोग हो आसा । -प्रिमता-बन्द सीमन्द्र तिए दशेवनेप्र रगरा का मयानाः रहरव द्वान होता । —में हीद जाना—असः वरमा । -शा चत्रमा-अधिक प्रमान आवादे मदम प्रका होता । -हमझे-हर स्मार्ग गारे शरीरहें । -रगमे बाहिक होना-पूरी तरह जानना । -रिहोरी

पदा होना-किसी भावमी^{में} किसी स्रोधे भारतका शरपपिक मानामें बीनाः गोरव-पोस्वमें श्वामिक बीनाः ममक्रम होता। -(ग्रॅं) निकल भाना-नदुत दुवका होना । -मरमा-नसँधि ठाक्ट बातो रहनाः मामर्र हो बाना। क्रमबोर हो बाना !- (गीं)में खन दौरमा-मसीमें सगकी सब चरक होता है

रगड∽खी वर्षण, पिसनेको किया वा भारतवह पिद जो पर्यवसे हो जाना कवा परिश्रमा पठा शगवा। हेवा वस्ता (बहारोंके कहतेमें); इसकी चीर विसमें चमता क्रिक आया कोक्सा जरुर अरुर वजना । —मुरू-स्थामा—पर्यः राता । —हेशा—पीत बाह्मताः र्वग करना ! —पदमा— अधिक परिश्रम पहला (उसे नवुर रगर वृक्षी, इसीसे धक ववा)।-सगुना-छिट जाना, एककी थीर माता।

रशहरमा∽न कि+ विसंगा, पर्दण करमाः पौसना (मसाकाः गाँध)। बोर्र काम बार-बार करना। कोई काम जस्द और चरिवमपुर्वक करमा (यह काम ही वस दिनीमें रगष डालेंगे)। तंग करना परेशान करना। स्त्रीके साथ संमीग करना (शाक्षक)। स॰ कि विकास स करना, वहाँका हवाँ रक्षनाः अत्वविक परिश्रम करमा ।

रगडवामा-स॰ कि॰ रवडनेमें महत्त करना रगडनेका

काम बृत्तरेते क्रेमा । श्राका-प रतह वर्षण अति परिश्रमा शागशा जरेर संत म होनेनाका श्रमहा। -श्रमहा-प्रश् वदार्य-गाहाः क्षेत्र । अ० - देमा - मिल्ला रणक्ता ।

रगहाम-सी रगता रगतनेश्चे किया या भाग। रगडी-दि रगरा करनेराका क्षणकान, उत्पानेराका ।

रगदना-छ कि है 'रगेहना'।

र्गायत्र−सी॰ (अ॰) स्वादिश भारत्। भार रफ्गा प्रकृति, ग्रि मुक् -भामा-प्रकृति होना। -सी व्यक्तिसे दरावा-वर्गर दरवा। स्ताहरा दरवा। -हिम्सना-क्यमाना चाह देश करना !-हरवना-१५छा क्वादिश होना !

श्यारण-को देन राष - कन्द्र बोरि मून स्मार प्रमारी -(IHI)

शासा है १ भारत

शावामा - स कि धांत चुर करानाः नदमाना (श्योग्रे)।

शाम-प्रकार।

हमाना!-भ कि॰ पुर शीव होना। त॰ नि॰ पुर कराना शांत कराना । हमी-की मैन्द्रमें होनेवाशा यह मारा अग्र । वि० दे

'रागेला' (

श्मीरम−नि विदी इदी। नामी नरमादः। रगेर-भी॰ दौहाने भगानेक्ष किसा संबोग-प्रदक्षि भारा शाना (रक्षिको भारिका) १

शोदमा−न कि॰ वयाना शरेबमा दौदाना । रण्या पुरु यह प्रधारका थारा अन्न भी दक्षिणी बहातीसर दीता है। स्थी वर्ग की कदिक वर्षी है बादरी पूर्व भी

रीती दे विष नामशायुक्त शीती है। रप-५ थि॰) वर्डवंडीयब राजा रिमीप भीर स्टी 1981 श्सद−प फि:•ो लगात्र, सामेका सामानः भका राज्यनः हिस्सा बजराः संनाके किए खाच सामग्री ! वि . प्र सि•ोदे 'रस'में। इसन-वि सि] पदीमा कालेवाला । प आस्वादन, स्वाद केनार व्यथित बका विद्यार है रस्सा है रसमा~+भ क्रि॰ रसमन्त बीमाः प्रपुष्क बीनाः चन्मन हानाः पूर्व होनाः । भी रे-भीरे नहताः उपक्रमा । सं क्रि कोर्र इद परार्च पीरे चीरे छोडमा उच्छमा । सी॰ [सं॰] बीमः रशस्त्राद (स्था): एक ओर्डा रास्ताः मागदीनीः र्यक्षमद्वाः मेखकः करवनीः ररसीः क्ष्मामः चंद्रशारः । --स्य —प्र पद्मा (शीत न बोसेसे बीमसे ही बोक्सेवाका) । मु -प्रोसमा-शेकना बारम करना । ∽तासमे कगाना —बोकमा बंद बरना । रसमापद-प्र[मं•] मिर्वद। रसबीय-दि॰ [सं] स्वत्र छने या क्यमे योग्या स्वादिष्ठ । रसर्नेडिव∽ली [सं]रसमाल्लाल⊈ रीहव, बीम। रसनेष्ट−५ [सं] रेखा रसमीपमा – ली॰ [मं] बरमालका एक मंद किसमें ठक-मार्जीको एक शुद्धका रहती है और अपनेव उपनान होता वाता है। रसमसा−दि रस-मन्तः वसीयेथे बुक्तः वसमद मार्गद मब- योपी भी गोपाकको श्राठ रसमसो समाव'-इरि ध्यम् । रसमि - जी रहिम किएम प्रकार, आगा । रस-रम•-अ धारे भीरे, सनै-धने । रखरां – ला रस्ती –'दी यहे खाँक कर, कवे वही रखराँ – च्याम (१६१*५४)* । रखरा 1-प्रश्रे 'रस्मा । रसरी = ली रत्ही बादे ! इसर्बंत-- वि रसमरा रमीका । प्र रसिका ग्रेगी।

रमबंती-स्मे रखंद। रसबद-मा है रमीद ।

रसवरी-मी॰ [मं] शुद्ध त्वरवाकी वक मंपूर्व वातिकी रागिनी। रक्षारंबर । वि. स्ती. रखपूर्व, रखीनी । रसबत्ता-सी [संग] रसीकाका रसंबुक्त दानाः नासुर्यः, मिकासः गुरस्ता ।

रसपर-पु॰ भारदे रिशेषी घरनेका शसाना । रसवाद्(बत्)-दि [सं] रश्यांका विसमें रहा दी। बु॰

पक अल्फार जिममें एक रम किसी दूसरे रमका लंग शोक्र प्रमुख हो। रसॉ-दि [का•] व≰यानैवाका दुर जानैवाला (वैसे~ विद्यो(खी) ।

रसरियक-पुरु [र] भीरद्रः वृषदा वृष् रसोबन पु [मं]रमीन।

रमा-को [मं•] भूमि पृथी-मरी। रहातका विद्वाः क्षेत्र आयः संप्रतानः शिलारकः कारीणीः वैनानीः संस्थे। कटा: मैना १ - सम्बन्द हुर्गी १ - तस-ब पूर्वि से मीने हे मान लोहों में पे छहा है सुरू --व्यक्तियां -वरवार कर देशा मटिवामेश करवा ।] -पश्चि-पु॰ |

राजा। -पायी(विन)-वि जीमसे पानी पीनेवाका। पुरु कृत्या । -- भारत् -- पुरु शंप्रस्थ, पोस्त । 🔻 रसा-प शोरवा शोक (तरकारी भाविका)। वि [फा] दै॰ 'रसी' । --दार्-नि॰ श्लोक, श्लोरनेपाका ।

रसाइन=-पु दे॰ 'र्सावन । श्साकृती -- पु रसायमी, स्तायम विधा धाममेवाला, भौगिवागर ।

रसाई-की॰ कि] पहुँचा दाधिका । रसामध-प सि॰ रसीत। रसाजाम-त [सं] स्थाद, रसका पटा न होना। रसका अनुभव न करना चयानेपर यो खडास मिठास नाटिसा भनुषय स करमा (वाण्ये+)।

रसाक्य−प [रां•] अमना । रसारमध-वि (सं•) रसमुख्य संघर । रसाधार-प थि॰ वर्षः रवि । रसाधिक−प्र [सं]श्रदानाः।

रसाधिका-सा (सं•) दिवसिय। रसाध्यक्त−त [मं•] मारक इच्योंकी बॉच-पहतात तथा विश्ववद्यी व्यवस्था करमेत्राका राजकर्मभारी ।

रसामा∽न कि नानंद शहना-'रावा वज मिश्रित वस रसनि रसारदे -भागरी ।

रसामास-त॰ सि] किसी रसका मन्तिक प्रकरण वा स्थानपर वर्षना एक अर्थाकंकार (श्समें इसी प्रकारके वर्णन

रसासृत−९ [सं] रक मकारका भानुरेंदिक रस । रसाम्छ-प्र (रं•) जनकरेवा इक्षान्त विशंविता एक एसरे तहा

रसाम्बद्ध-पुर्शि । दक्ष तरहव्ये पाम । रसाम्बर−स्था [नं•] क्रस्यविश्चेष च्छाधी। इसायक−५ [सं] व्ह वास ।

इसायन−५ [सं•] एराओका तत्त्वमतकान दे 'रमायम शास : बराम्यानिमाग्रक भीवनि (बेसे-निरंगरस (क्षीरस इ॰): ताँदे²। मीना बनानेका क्वरिएत योग: बातु जीका वरण करने एक बातुको इसरी बातुके परि वर्तित करमेकी विचार मध्य, तका विचा करि, कमरः वावविद्रमा गम्छ । - छ - वि प रसायमविद्यादा जामने नाका। --क्राका-मी॰ दप दरें। -वर-प्र कद्युन। --वरा-न्या काक्षत्रेपाः ईगमी । --विज्ञान --साम्र--

🕱 परार्थीमें मिलमेबाड तस्योंका विवेदम करनेवारा

और तत्त्वाता परमाणमें में परिवर्गन बोनेपर बराबोंकी

मगौ रिवरिका निरूप्तम करमेवाला शाखा ∽भ्रेह−पु० शारा । इमायनिक-दि पु दे॰ रासावनिद्धाः रसायनी~पु वीनियान्द । न्या [तं] पुरादेश दूर करने बाली श्रीवरित गारगरुवी। श्रमूनमंत्रीवशीः शुनुषा सदा कर्मा मधीना ममीका मांगरोहिक्याः बंदगिक्याः बन्हीना ■गाः नपद निर्मोषः शंबयुष्पाः मादी ।

हमारण-दि पु दे+ रमात'। रसाल-दि॰ [मंग] रसीनाः शीठा सनुरा रचारिक्वः सुररा शुद्ध मानिष्य । पु भागा करहमा हैरा। तही सोराता

श्कृत्य-(प्रतीस 3111 हार्यक्रमादे कुन और अपदे हिना बन्द्रांटरे मूल कुरूप थीरह संदी-इंडी वरह बर्दी प्रशासनी सार्व्य क्षेत्र यक्तन्त्रात काले. बहायका प्राप्त हैं। क्यू त्पाद्धदे प्रथम अनुष्य । हि. अन्याद्धे र **– वश् – प्र**थ elignen an tin i man-le fant auf Alla' maet na Legge dert feg b. bei र्वज्ञदर २**०० केरस∽तु** १९४छकरो अनुर १०० औरस en niet mitt niem all self. - ७ व्हेंगू - ७ शिल्हा - ० ज्ञा - ० वृत्ति - ० श्राह्म -मन्त्रपुष्टा वस प्राप्ति । बाबाद सब अवन जीव (क्षा ब्यर्-क्षीर-पुरु राग भा-मुखीर्शार-पुरु बद्धरुक्रके बरमान्त्रजीक्ष हेर होता सामस्या स्ट्रीटस्ट स्टब्ट हेराह क्लेक्ट्रे सुदृश्याः शासवेत । +शासय-पुरु रमुद्धे सार्थ राथ <u>पुरुष्ट साथ क मर्राट इक्ष्या अच्ये हैं। इक्क्ष र फ</u>्र थंत । −ित्रक्षक्र −पुरु स्थुदरणदे शुक्रण प्राथ्य पेत्र । −शहस्र स्रोतित्य होतो स्रोतित ३६७३ । चक्का-देर [तित] -पुराहर् । -भाषा-पुण रपुर्वे ६ १४को रायचंद्र । पूर्व बाग श्रेषाच्या गरी। ⇒नामक्र−ष् १षुपुणचे घरम्य, शायनद्र ३ ०वरिह∽षु am-Lo (m. Jorde i it jentem (taja) i श्चरण्ड पार्मा शास्त्रेत् ३ -शाह -शाच०-५० रूप \$25-40 [40] 414 t मुक्ते राजा, राजनह । - वैद्यान-देन रपुरान । - वैद्या रमारिन्द्र शृष्ट्र कारत -प्र रएका दश भागतामा काविकाम विदेश वर्त प्रशा इक्षर्त्रमण्यको बीदल्द, शुरुरा कृष्य । - व स्थार-पुरामध्य । - व स्थि-पु रजन-पि॰ [सं] शुद्धः चरणः चरशसः स्टेरी विषयः रपुरान्धे क" राजपर । -चंत्री(शित्) पुरु वर ना क्रीका कार्य प्रशास अर्थिक केल अर्थार ह्युदे बंद्रदे बारक हो। द बंदन्ती एक प्राप्त हि ह्युहे men in: egietem ufett greitigt - auf 3" प्टेंगेश बन्छ। च्यूर-पुर शर्म की ये था। बंदाये अपरा गरि जान है)। नवह नवीर अग्रेष्ट्रनपु (प्रशाने अब बेह रामना । -प्रयोगी-शांश कि है व्यक्ति का श्रेष के बीरवरणः कर्णकाम कादिके १५ भई पूरे द्रावेक्ट अवापा च रेशम क्षणम**्पर**्शि देशसङ्कामध्या रपुरद्र-द्र+ (ग.) स्पृत्रीयर ने प्रचान राजन्य । क्षत्रह (min) १ -- शाहि-बिंग १२ण जेला प्रशासन त दर्भात्।-आस-त स्वद्यात् राज्याति रचेष-५ (११०) रमविता रथना बरनेराचा । व विर पुरु पुरेरदा एड पश्चर । अवर्षतुन्यु स्टीय स्टर 1 345 5 -वाय-पुरु भोग्या स्त्यूत्र अस्त्यून्यूर हेल्ल रचन-प्र. (र) हेरू १७२० । uffi -- minn-ge fatent erri te रचना नमें भूमें किमाय प्रजानको विना कियनको प्रक्रिया। भ्यवन्त्रः अवदा नेवानीः पारान्त्रः सवगृतिः 741 क्रीपाना स्थित वस्य (का अने होन अन्ति)। सुदि। व्यानशास-वि (१०) वर्षेत्र वस्त दुर्गः । हिन्दामा ४ राहता विषय, बेल आहेश विज्ञाहक्वक रअवाई −की शदरिक प्रदेशन बळाइ स्पूर्ण राग प्राथ दिश्वदार्थ हो हो (पूर्व) ह \$교속[폭작=중+ [H4] 닉드스턴 47박 3 इडाइ च्य∽पु (१) इक्रली, देवल भीति सह ma fan fistari fakin menisfelin menisferin ध रीक्ष वर प्रविद्य वर व वी राजके किर बराया अपन बरमध् संबं भारि मिराना काल्य कान्या हान्या बहना भाषी हत परमा भाषा १५मा। वश्या वर्गा व १९८०६ Elet ernied-y be रजापास-पुरिंग हेल पान भी । Hit GER" HOT GEM ER! ERRENOUN-TRAC रक्षपारीर-वो १ सम्बद्धाः । after extent a mer fan menn men manne from fen इत्राच-तिक (१००) है जेवाचा है हुन तकरेंद साथ * P 19 4 47 1 farm and the free courses werter das इच्चित्र-(त) दिव [म] हिन्तान प्रतेत वस्तेत स्वत है entited of full and the Red And days मून धरेरद र इ we to draw, and grunt wir unter de emeint-noth Hamben barratie gurat elepate and chargenouse 間1920年ま expendent for the think has not not all previous la subse eas easte ateu am eichementimment ein amfft. I race blit with with spat s some mit miss mested with the spen Laffel Harrie eferente ma, " et e eures gons Mr. E at at an at and at any and any and steers to an every many warriters t eferfen-ie elnu eel nemige Geb. ल्क्स्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र निर्माण tall after the east sit are and the stee wer i mility \$ 5-48H 12 1 of all militarial most a sound dejudical LANG F POPERS Mound of Canada and 1 mine I the **** TWY F कारी बहुताह कुला की क्षेत्रपट संज्ञित 8139 -4 E 844 (

t Secret

the account that he was the transfer

केलि, कामग्रीका गुणा फर्की, व्यवस्थितिका जलीव मंश का कुटन, रशने या निचोडनेंधे निवकता है। होरबार रसाः श्ररमतः इष्टका निर्यास गीवः गीवे, बाकियोका मक रोग (रहमें देरने वाली निकल्का है); बीवें। हागा विषा क्षा अनुता गंपरका शिकारसा पारा। क्षितक शिंगरफा पानुसीकी ईक्टर तैवार किया प्रथा भरम (बेसे-रप्टिन्ट्र-मा०वे): एक संबद्धमा, बोम: एक मकारको भेदा माँति । -कपूर-पुर [दि] श्रीवरीपयोगी सकर रंगकी एक बातु । -कर्म (भू)-पु॰ बारे कारा रस सैवार करनेकी जिया (बाव वेव) ।-ब्रेसि-माँव विदार, क्रीया हेंसी दिलगी ।-बेसर-- बनुर !-बेसरी(रिश्) -पुर पारं, गंपक मारिके मेक्नी तैवार की जानेवाली कर रसीरम । —कोरा!-पुरु रसगुरा । -ग्रवंर-पुरु रापरिया, संबर्धारी । नमीर नसीर [वि] बीडा बात । -गंप,-गथर-त रहीता तियरका की मानक वंश इन्न । "गतुरुवर"-५ करोरको चातुमै प्रक्रि क्वर । -गर्ब-प रपीन रप्तांत्रमा इतर, दिश्वक विकास । -शनीरं-दि रसय काम्य संगीतका धाना । -गळा-Bo [it] होने से बनायी जानेवासी एक विकार ।-ब्राह--अ. सीम । —धन-निक की परम स्वादित हो । प्रक धानेत्रम प्रथा । -ध्र-व सहागा । -एका -प्र देसका रस कालमेको सकता । -ज-त+ शहा रसीवा द्यदरक्षे तक्षक्रर । -जाल-ध रसीत । -ज-विर रसका प्राचाः क्रयतः निपुत्रः कान्यमर्गेद । −ज्ञा−सी॰ भीमा संगा । विश् को १ है "एसए"।—उपेक्ट-अ. शंनार रता प्रपरः मोडा रतः (~ क्की - मी॰ 🕼 ीण्य प्रदारः का यक्षा । -सम्माधा-मा० अक्बी सम्माधा (सी)ः दे॰ हामध्या । ≔साक्षेत्रवर≕त पद मदानदा रख (क्षा दे०) । −तेश्व(स) द्वा रक्ष, व्यार । ∼त्याग~द्वव दियम आपाएं। स्वादिश क्याचीका त्याग करमा (वे) । —त-पि॰ समार सामेररायकः स्वादिकः। य विकि रसक । -क्षा-सी श्लोपे तिग्रही गिंधुआए । -क्षाह~ [दि] जिसमें रस को क्षीरवेशारः रसवाका (माम. मापु आहि)। स्वान्ति । ⊸दाकिका−भीव पता, अना । -प्राची(चिन्)-इ मोहा प्रदेश शेवू I~धान-मी॰ बारा। धरीरके सात्र बालुकीदेने बढ़ । -बानु-मी॰ बाम दे निविष्ठ निवित्र गुरुद्धी गाम १-माथ-पुरु वारा । -नाध-१० रसौत । -नायध-± शहार जिए। -वियोस-इ शान १६ । -वित्रधा-मी वैगमिन। -पश्चि-तर दारा। स्वार दवा राजा। वृद्धी। चेहचा । -बरित्याग-व दे 'रसत्वाम 1-वर्षशे-को करियो शोपपुर बनावा पार्वेशका वढ रह (आर्थेन)। –शास्त्र -पुरु गुरु बीमी । -बाबक-पुरु सगरना शीमन दमानेराचा । - पुरुष्-पु गणवः पारे भगवने निर्मिष दक्ष इवा । -पृतिका-की स्पापतः मान-देशी। न्द्रार्थक्रच्युः मारका घरंचकान्त्रः। नक्तवन्त्रुः नातिः वकाश्चरका । अवस्यकर-त स्रोमनना । अवस्य-तु • क्ष(रद बीटर मारेका रह शंक्ष (मा०वे) । --वर्णी -offe [ft] geich word deld't einber क्याना :- मारी-वी [दि] १६ वल मध्य !- मय-]

पुरु रफ्त कविर !-अस्स-पुरु पारेका भएम। -मीजा-वि [दि॰] अपंदमें मन्ना मात्र, तर्। -ग्रेड-पु॰ पारेंसे वैपार की मानेशाली व्यक्त भी पत्र राज्या अशोपपर (सा॰)।-धोदी(दिम्)-पु॰ वहचर रमधी अर्थकशाने कता हुआ कर : -सईन-पु॰ शरेबी बारने, साब करमेकी किया । - सक-ब शरीरही निक्रकेशने मण। ~ससा¤-वि॰ वार्भद्रमा, इंगमें मरदाः पर्धानेते अरा मोतः तर्, गोमा । —भाजित्व-पु॰ इरताब क्यांपि वनावी वानेवाको एक भीवर । -प्राप्तात-मा । है। 'रहमात्का'। – सात्का-की जीम। – मार्च-५० वारा मारने, शुरू करमेद्री किया । नक्षासानमा । ध्य शुर्वधित हुन्य, शिकारस । —प्रोद्यां—सी वि] एव र्षेत्रण मिठाई। -मैग्री-सी ही रहेता क्यान मह (वेशे-कड्रभा दीना दोशान्वयद्येतः संगात्वस्य १०)। -चीग-प एक भीवता -शात्र-पुर शेकार रहा रसोठः वाराः संविद्ध भरतः शंबतः यारे अप्रविद्धे बोन्फो पतायी बाबेराओं एक औषर । -नावर-द ने रेखराज ।-छ∽वि रहाबाताः, जिलमे रत्न का।-सह-3+ वारा ।-कोट−५ रशांत्रनः वारा । -बच**क**-3 अक्क विशिष्ट हरूब जिनमें इन मिकाचा असा (नेगेण ≅ारा, क्रम्सी, मंत्रीड, दश्दः हर्रासनार मार्टि) ।∽वन्ती~ व्यो • [हि॰] दे 'रसहस्ये' ।--बाइ--प्रश्न रमञ्चार द्वेय मार्गहको बादबीका देशप्राका सम्बन्ध महत्राह । —बामा-हा सम्बद्धा प्रदेश भए जिल्ली बच्च हुए। और यद संपू रवता है :-बाहिजी-सी॰ मीजनमें नने रसक्य कैमार्भ-शान्ध लाधी (का ४) । −विक्रपी(दिन्)−तु मपुः विश्वता, शराव देवनेशामा । -विशेष-पुरु रशिका बन् विन शेल (क्रेन-नोत्तर ग्रेडर सरमा-पैडा १०-मा नै)s यद स्थान की जारिकत क्षेत्रको निवति (नेमे-न्येयार प्रि. हारय मनामद १०-ता) १-वेघक पु शना १-वार्ष स-त यब आवरेरीक रम का प्रयूत्तके लिए बपनीकी है। ~शास-पु रमायन शास । -शेमार-पुर वस्तव मार्गि वनकारक वक मान्वेदीए रहा। -शीयम-पुर श्वामा शरेको द्वार कर्या ।-संबद-दुव स्थ अस्य। -संश्राम-त वारेकी शहर बरमा अधिक बामा वॉब्सा बोह बस्य करवा ।-संग्रहार-तु फोशा करन मुख्येत शारम आरि बहत्तव अंत्यार । -मागा "इन क्षेत्रदे रमका प्रश्न बीपपन वस माधर (दु) । न्याव्यन पुर विक्लियां पर में वर्ताण बरना कि रिन्दि प्रार्थि बीच रम ब्रम और बीन ब्रॉट्ड है। लगार 🕾 👫 -सित्र-९ कोरे लेका दे बीम में विधिय कह स्थीरने ह -शिक्ष-वि कामी श्रांतावील मारिके इरण ! " क्याम-इ दीव विद्यात विकास १-माम-इ सम्ब en-fe feit] ag aifteinti fer didenn Di-बाला । प्र वह बारती दिलके बाद को बाद था। रमक्र-पुरु (तं] बार्यका चनत्त्रता रिप्रवर्ता : न्वार-

बहुद्ध-पुर्व संनेशाची दश्रत सर्वाशा - रर्दुर-द्रेर

दक्ष हारू योजा गाप देशा ह

शरका-थो॰ (ते॰) एक स्वरीप ।

रमपुत्र-पु है॰ 'रामपूत'। [सी॰ रमपूरिम'।] रज्ञवती - सी • राजपूत्रवन स्थितला घरता बीरता । रजब-पु॰ [ल॰] भरनी और मुलकमानीके पाकका सातनों बांह्र मास (बहने यह मान परित्र समझा बाता वा और इस मासमें सक मिपिक था) ।

इज्ञग्रहा-पु• नदी या नहरंसे तिकाका हुआ वका नक । रवर्ती रसवरी-दि सी॰ जिसे रमलाव को रक्ष की. रकस्तका ।

रखवादा-पु॰ वैद्यी रियासत, राज्यः राजा ! रजवार+-पु+ राजशास राजाका बरवार।

रअस्यका-वि थी (थे) शतुमती। सी॰ वह ली

जिसका रण मगदित हो र**श** हो !

रका−मो॰ मि॰ो समीर श्यावत अनुमति। <u>र</u>सी मस बताकी रिश्तिः सुधनुरीः भ्यस्त सुद्रीः स्वीकृति। -कार-वि सुद्धाः पुरुष्येनेकः वाष्ट्रवितरः।-जोई-स्ता वसरेकी रासन्ती, वसरेको लाख करनेकी कीचिया । -वडी-को वर्षको छट्टिवाँको सूची। -संद-वि राजी गुधनुर । -संदी-सी॰ राजी-सुखी। मंद्री । रजाहरा, रजायस रजायसु - ली आहा हुवन जनु मति ।

इद्याई −को राजापन राजा दोनेका भाग ० दे० रेका : के पिचार्ट। के रमाना

रक्ताई-सी [का] रंगीन क्ल्डेफी रईशर दुवाई, छीटा

किराफ । रजानां = स कि॰ राज्यसुख मीग कराना (राज्य वा राज' घण्यके साथ ही यह प्रत्यक होता है) ।

रजाय = न्त्री शादा हुरम, मजी, रच्छाः दे । रजा । रक्षिया-नी दे सेरको एक मान विससे अमाब माना

बाता है। रक्तिका चेतास-को 🔎 । ग्रहामनेशके दिनीय शहरताम बास्तमान्द्री सक्द्री जिसमें १९३६ से १९४ ई. एक

दिलीकं वस्तपर घाषन किया !

रजिस्टर-प [बंध] साहे क्होंकी वही किलाब वही

बिसुबर सानेवार, सिक्तसिनेवार किसी चरका भाव-चव किनी विश्वका व्योदेशार विषया किया जाना हो। श्वतर, माध्यारत शामिरीको कितान वंगी।

रक्षिस्टर्डे-वि० [मं] देः श्विन्द्रीत्रुण । वंशेवक्र ।

रजिस्ट्रार-प्र [भे] यह व्यक्ति को रजिस्टरमें हुने बढ़े को रंजिएने करे वहा सरकारी कर्मकारीका रक वह र

रजिस्टी-की॰ [बं] टाइइस्में महमून हेटर एवं आहि रक्तिररमें दर्ज बराबर सजनेवा कर्ता वस निकाम अजी मानेराणी निद्धीः रक्षिग्दार्ड एकिन्य्से कोई वात दर्ज बराना। बीर निनित प्रतिकारण कानूनके अनुसार सरकारी रमिगारे में बर्ज करानेका काम र -शाका-वि निमसी रहिन्द्री बराबी मेरी था। रहिन्दरमें कर्ने किया द्रमा घरी निसान्तरीबाला ।

रिजार्देशन-इ [#] रिजारर्भे सर्वे करता (कराता दोना) वंडीवस १

रहाँकि-वि+ [स] दशीना पाओं। छोटी मादिका ।

62-4 £ 115 1

रक्रोकछ=-प॰ राजपरिवार राजवंश। रजीगुण-पु॰ [सं] शहरीका वर्मविश्वय तीम गुणीवैसे एक जिलके कारण भीग विकास प्रदर्शनकी रूपि पेटा

ब्रोटी है (सां+) । ∽शोख-प+ वसिप्रका पन (प+) । रकोदर्षानः रखोधर्म-५० (सं॰) रयसका दोनाः निर्मोका मासिक वर्ग।

रकोरस∽५ [र्थ•] अंथकार ।

रज्ञाक~वि [ल] रोगी, भूराक देने पर्ववानेवासा । प्र• ईयर, सदा ।

रुख्य-ली [र्स•] ररसी, बोर, बेनरी; नामधीर क्रमामकी शारी: मिनोंड सिरडी बीबी ! - कठ-पर एक मानाये ! वि॰ जिसके धर्मिने एरसी छगी वा वैधी ही ! -शासक-प्रकार क्या। - वाक्य-प्रपद्ध प्रश्नी (स्थः)।

रस्म-को॰ (व) शब्द र्यमान कराई। रझाना!-त रॅनरेबॉका वह बरतन बिमर्थ रंगे कपहेका रंग नियोक्ते है।

रटंत∽ली रटमंश्री किया वा भाव रहाई। रटेती - व्हा [सं] माय-कृष्णा भनुरंशीकी दुव्यतिकि ।

रट-स्त्री किसी शब्दका बार-बार बचारण करमा। कीवी-बंदी बोस्टी । रतन∽ती॰ रतमेदी किया वाभत्या + दु और बीरसे कामा बीकता।

रदना~स कि॰ किमी याच्य परः बास्त्रको बार-बार अल्प्रिकरमाः चंडाम चरमेके किए किसी संग्र पट. नारपदा गरन्दर चाढ बरना यीमाना। अ 🗷 थार

बार छन्द्र हरनाः दश्रमः । रटो-वि॰ मुम्बः स्या।

रक्रमा≉∼स कि०दे 'रटना।

रवियान-की वस सावारण देशी क्यास ।

रण-प्र• (र्ग•) पुरः, जहारै संधामा धम्दा रमणा गति। इंग मेगा। -कर्म(न्)-प्र प्रव संपर्ग। -कामी (मिन्)-वि श्रद्धित्व संघाम पाइनेवाहा । **⇒हारी** (विश्व)-विश्वश्रद्ध ग्रंमाम करनेवाता । -क्षोध-पु श्रद्धकीय श्रद्धकी सहायदाकी लिए विशेष स्पूर्व प्रवृद्ध दिया गया थम । -शिवि -शोणी:-श्रमा-मीरू-क्षेत्र-9 प्रवसा स्वाम मैशान स्वलः) -रहेन्द्र-पुर

दे॰ 'रमधेत्र । -शोचर-दि॰ गुक्रमित । -छाद-प्र [हि] फूब्ब (प्रशासको संशाहेम राज्येत्र श्रीहरूर हारका अभिन वह साम वहा) । -सूर्य-पुरु रूसम्(), युक्तका वाप विशेषः ग्रारक्षे । -वृत्यमी -भरी-स्रीव रपत्यं । -पंडित-विश्रामी द्वारक प्रवेत,

दए। -प्रिय-वि बुढ्देमी । -भू -मूसि-मी बुदेश्यम । - मस-बु वागी । - सुवि-बु बुनिन्तु । -- सुम्प-पु॰ संप्रायका सुम्य मारा । - १४-५ राधी के दीनों बॉडीके बीचकी जमह र -एता-पुर सुक्रयेका श्रद संगामः सहारेका वामाच । -रवा-चु स्वापुणना

व्ययक्ताः धरम कामनाः पटनापाः मण्डतः -हणक-पु॰ प्रदश्न कामना पाईडा। शर्मात स्थापना वैसा कागरेव र ∽सदमी −भी गुडदो देशे का विश्व देवे

वाणी मानी पाणी है विवयमध्यो । ~बाद्य-पु= पुर

स्सद्-पु [फा] कनाव, सामेका सामामा भचा, रासवा दिस्सा नक्षरा; सेमाके किय द्याव सामग्री। वि॰, पु॰ [सं] दें 'रस'में।

इसन-नि॰ [छ] पद्योगा कानेवाका । तु० कारवादन, स्वार केनाः व्यक्ति इकः विद्या । इस्सा ।

स्वारं करा। व्यावा करा। विद्वार र रखा।
स्वारं कर विद्वार परिनार दोना। प्रप्तक दोना। सम्बद्ध होना। स

--बोहना बंद करमा । रसनापद-पुर्मि] निर्दर ।

रस्तनीय-वि• [सं] स्वाद की वा वसने वोच्या स्वादिष्ठ । रसमेंद्रिय-तो [सं] रसमा, स्वादकी रहित कील ।

रसनेष्ट−९ [सं•] रैय ।

रसनीपमा-तो (सं०) वरमानका ण्ड मेर् विसमें वर-मानीको रक श्रेषका रहती है और वरमेय वरमान होता बाता है।

सससा-वि एस मध्य प्रदेशेसे तुष्का रसमब कार्यर सव-'गीपी भी गीपालको श्रीत रसमसी समाय —हरि इन्छ।

रसन्तः। रसमिश्रणन्तो रहिम किरणानकाव भाषा। रसन्दसश्चम भीरे भीरे, शनैन्छनैः।

रसरो – को रस्तो – दी यह कींग्र कर, की वही रसर्-जान (२६ १ ५४)।

रसरां ∽पुदे 'ररमा'। रसरी ॰ न्सी रस्ती दोरां।

रसर्वत+-दि रसमरा रमीला । तु रहिकः मेमी। रसमा

रसबंबी-ना॰ रसीत !

रसवत∽न्धे दे॰ रसीय ।

रसवती-मी [सं॰] हाद स्वरवाणी यक संवूर्ण वाहिको रागिमी। रसारेयर । दि॰ मी एसपूर्ण, रसीहो ।

रसम्बद्धा-स्ते (सं•) रसेनाका रममुख दीनाः मानुर्वे, भिगता संदरता ।

रसपर-च भावके छरीकी भरतेका मनाका।

रमबान्(बन्)-वि [तंश] रत्याला, किसी रस हो। वुश् यह अर्थकार त्रिममें यक रस किसी दूमरे रामका जेग शोवर प्रमुख हो। रमों-वि [फा] वक्षणीयाका दूर जानेवाला (वेहे-

रमानाव (को) वद्भवागवाका हूर कालवाना (व विद्वीरस्त्री)।

रमीयक-पुर्वि] बीरेटा वृषका बृधः । स्मोजन पुर्वि] स्मीतः ।

रमा-मो (र्व) चृति इभोः सतैः रसात्रणः विकाः भैदाः सामः सेरवातः विभारमः असेतीः वैगतीः सर्वे: रणाः देशाः -रवन-१ असेताः नस्तन-१ इस्केड-देन्द्रेन साम कोल्वेति एसः द्वानः -स्वतन्त्र -ररवार वर देनः सीकारित वरवाः। -सर्वे-पु

राजा। -पायी(पिन)-वि॰ बीमछे पानी पीनेवाला। पु कुचा। -साव-पु पक गंपहन, नील। रसा-पु॰ धारवा होण (तरकारी नादिका)। वि [का] वे॰ 'रखी'। -बार्-वि॰ होल, होरवेवाला।

रसाङ्ग#-पु० देश रिमायन । रसाङ्ग्री#-पु रसायमी रमायम विद्या बाननेवाला, कौशियागर ।

क्षांश्वागर्। रमाई्रे−की कि:}पद्वेषः दारिका।

रसाप्रज-पु॰ (छं॰) रसीत । रसाबाग-पु (छं) रसाद, रसका पंता म होगा; रसका अनुसब म करमा, पद्ममेपर यो द्वारास मिटास मादिका अनुसब म करमा (का वे)।

रसाद्ध्य-पु॰ [स॰] अयगा। रसाद्ध्य-पु॰ [स॰] अयगा। रसाद्ध्य-पु॰ [सं] रसदुद्धः सुन्दः। रसाद्धार-पु [सं] सुनं रवि।

रसाधिक−धु [र्ध] शुरुवा । रसाधिका⊶ची [र्स•] क्रिग्रमिछ ।

रसाध्यक्ष-पु (नि॰) मादक हम्मोदी कॉब-पहताम तथा विकासको स्वतरमा करनेवाका राजकर्मवारी।

रसाना'- न कि॰ वार्गद सहना-'दावा वय निश्चित अस रस्ति रसारदे'-नागरी । रसामास-यु॰ [थं] किसी रसका नतुन्ति प्रकरन वा रवानदर वर्णना एक वर्षानंत्रार (रसनें देसी प्रज्ञरके वर्णन

रस्त छ। रसास्त्र−षु (सं) एक मकारका भाषुरेदिक रस। रसाम्स्र−षु॰ (सं) असकरतः दुशास्त्र, विश्वतिनः यक

स्तारं कुछ । श्मामस्य – पु. (तं) एक तरस्यो चाम । श्सामस्य – सं. (तं) कतारियेष प्रमासी ।

रमायक-प्र• (सं) वक बास ।

स्सायन—पु०[हं] पराचेंद्रा तक्ष्मात्वान है (सायन साय ; बराव्यपितायक औरि (मेर्-दिरास्त्र । सिर्म ह); सिर्म होता बनानेद्रा वस्तर माग्र बाह्यकेंद्री करन करने एक बाहुको हुएते बाहुके परि बिन करनेद्रा करना । स्तु-वि द्र रसायनियाद्रा सानने बाह्य । —कुम्प-नी इन हरें। -बर-पु हर्मुन । —बरा-सी काकनेवा; हंगनी । -पिरान न्यास्त्र-द्र पराचेंद्रे वित्तनेवाहे सर्वेत रिवेचन करनेवाल और तस्वयत रसायुक्तेय वरिवेन होन्स वर्गावेन्द्र नर्या विविद्या निकरण हरनेवाल ग्रास्त्र । —क्षेट्र-प

वारा ।

इस्तायनिक-वि यु दे 'राखायनिक ।

इस्तायनि-यु कीनियाम्य । गी (वं) युगतेका पूर करने
वाको कीर्या शीरपाइडी, जयुगर्यकानी। गुडुका महा
कर्रमा महोदा मनीक मान्यर्शिका), दररिन्मेवा कम्कोत्रा
कराम करेंद्र स्थित केर्युक्ति माना।

रमार०-वि पु है राजन । राराल-वि० (वं०) रमीचाः योदा प्रचुरः स्वारिका सुररः हृदः मानितः पु० कामा स्टब्स् हैया नेही स्रोताना

स्क्रम्प~सर्गाः का चारा −िशार-भी नुद्रविशा दशको शिकार -शंकुल-१ मुख्य पृत्र बनोह पृत् । -सक्त-भा । गृह व पर्याण गृहकी देवती । - सहाय-कु est erice fur : - ftur - fter-y [fte] सारी अर्थापात चालेस−ग्रन्थेया वृद्धे प्राप्त वित्रवही अस्ति अन्त दिल्ला स १ - अपाद-पुरु रणाण अर्था दा रिश्त : -श्यामी(सिम्)-पुरु धिया नेजारी मुद्दर प्रदान स्थान हा -हार-पुर दह वर्ष पूर्व (सार ו (שקוריות הדעה ביים रम्परार-९० (मे०) प्रयासाहर श्राप्ता ध्रम (स्राप्त ertat): रम्पीगम~९० (ते] मुख्यम सर्वादा मेदान ह रामिशनद्व [मं] शायण पृद्धभूति। श्याचर-तु [मे] रिन्तु । रक्षा-न भि । दिशः किन् । ent ez-ge fil bu fritant en wautene fer t वि अध्यक्षिति शम्य हो। रह∽रि॰ (ग[ा] अनुरक्त वेशने दश दुशा औन क्या दुष्टा । पु अभेग किंग को नार्वेश --कीश--पुरु बुला । नगर-दु पनि श्वाली । −सामी-श्री डाओ र चनाराच चनारीच=पुर कदा। तथा। साम देश - विचि-पुरु शंक्ष्य औरविष । -कथ-पुरु र्धारमः। -प्रमा-प्रामी(विष्)-५ द्रभाव -दिश्रध-क अस दृश्विशिको बोर । रम्भ रात्रां सदस्ये स्वत्रा अपू अव - प्रशाः-म् रामीपश्चानदरा अस्य गणना को रूप्पना अञ्चल्द हो। क्या कृषण हिल्लाही निवक क्षेत्रण क्रिके बिहर दल्ली मार्ग है। असीतां-१ राष्ट्रा व राश्तिकी भी में कार र श्याप-तुरेक समा अजेपालको वर्ष स्टेकाक्य भक्तभारीको योदा (समाज्ञः बाग्रोदमे बोधा देशः ज्ञाः Kim Albigan F स्वयन्द्ररम-द्र हेर १८ अच्छ ३ हेर १८४३ । CARACLES LOS BULLS रमान्द्रनाह है। १००५। । शासास्-दि० (६/५५ ४०० ४०छ्। ०७० । ह्मुक्तिन इ. इ. हिर्मेष कार्य की सकी जानी entife arek even s enginerante & te ett t इन्द्रक्ष्णीनम नहे ध व स्ति । क्लार्रेड्ड महिन काच प्रेटरकार (क et (* 1] **~17** 1 प्रश्नेत्रक के कम र कर 446E 4 14 , 4x 4

property that were

term de trace de l'Estate delle

8244 6

रसाम् प्रशिक्षकारानी प्रणा tid-san fo fol i one [ke] scilicht कता बागोवधीवाती। हेर कर्ताम प्रकार संबोग किया और के क्या ग्रेटर राख, स्टाई बल पर को रिक्टे प्रस्थे प्रद राम के साम क्रा बेरा श्रीवान्त् । स्वयुन्दिन बान्युर्वरा रे क्रार्ट्स । पुर दह संगति दारी । न्यम्ट्र-पुर रहेन हेरता -व्याप-पुर कार्याच्या -पुरा-पु क्षेत्र अस्य -देशि-विवा-भंग्या -एए दूरे पूर्ण min 1 -m-2 de nj divitare almin mj करने प्रति केन समय करनेने उन्न पुरशः सम्बद्धाः पुरु कुर्वशी पुरावणी वह श्री मधी मध्य निर्माण ब्रायाच्ये बङ्गा करे। न्याय-५ क्राप्त स्टमा -वैष-पुर रिग्म कमा रह रूपा। असा है। नीवह इतिरंगीयेन शहर अक्षायान्यानां नारिन तु कःसोर। प्याहरूप्यन क्योर। च्यापा स वर्षहर्म । न्यारा-दृश् दह शीररा नीत पि बाबुक्त विने देवुश क्रिय हो रहा अपने । नरिक्त रिक मीक (बह मां) दिन मेंपुर कि हो। में बाँकी कृति हैंसे हैं। कार्यास्थित : -बीता-से क्रोरी वैनुत्रमे अपनीत होतेशमी सी १ न्यूप है। नेरोपी बान्द्र बावब कादेशका १ -ईवानुन अनेगा है। BEIC mark 1 -44-4. All mer 1-444 -सन्त-पुर बेट्डबेरियमा शीधीराम बेरा ल्ड. यु:दि, यद । **- आव-पुन व्हे पुलका साम व**र्दे the electure (minist tent mat in mit tiet - uldende f. Carte, t - Eding. बन्दा। -विष-१ १६ ध्रेण्युद्ध सम्बंध स्थ -ge aucher fent -telefte gu bei met. पुर्व रशिक्तक कार्यर ३ - साहब-४ वाप्टेस रे नवीत न्ति काळी (च्याप्रच्यून प्रेरीत । नक्षेत्र वि वर إدالهم الملاد عد مقط المواهد المردا إمردا anterefet at (4) efte aferret. Bet # री वाली । नवर्षेत्र-पु वारदर्श्य स्टेश हाई शावेश क्षेत्रक (सः व) । - ब्रह्मी-मी व्हेर एनव अ रस व -onli((fa)-3 es ties -meren, ang स्थि। नश्रुर-१ रामपुन् स्थिते नश्रीति । केटेच व न्याहित्र ने विकास केव व कार्या कार्य री १ ल्याच्यालको अद्भ । लक्ष्यान्युर है ११ बहुबर पुरु कार्यर । ज्यास्त्र हु रिश्न क्रिके -मेर्-पुर वह र्रास्ता । Aghatema afelem Mirbe Saytt (talifi-m, que megit mit fin en tign ! tellet-me fer antereift es hante, aget 24417 | बन्देस्तरण्यक पारे वरहते करेहे समावेण ह affeten ! Marre get ! entire and suff entire and and कारा देवते दिवार का ग्रेस अने अने अनामा thinknesses of the Kins weigh angle and ; total fift

्रक्केक पुच के देव पर्देश र

अमक्तरता हुँदर तूना बील मामक ग्रंबद्धका, क शायस्य. कर, इरवाहर के 'रिमाल' ! -शाक्टेंग-की रसको चीनी । रमास्य-इ [र्व•] रसदाका रसमियोणका स्वाकः भागीर-प्रमीदका स्वानः आप्रका देव । रसाहस+−९ शेल्दा रसाससा-सी [म॰] पादा गद्या गहा बुंदर मून । रसाम्बा-न्दी॰ [मं] श्रीयंत्र, शिसरणः दशी वी विर्थ, शहर आदिके योगने ननमेंबाकी एक प्रकारकी णहती। बडीमें सामा गया सत्ता पीता बंगर, बागा वक विदारीबंदा श्रीय ! + प्र• हे ⁴रिसासा³ ! रसाष्ट्राप्र-पु॰ [र्च] दलमी जाम । रसाक्षिका-वि॰ की [मं] रसमुक्ता बुद्दा सभूर । स्त्रीण भैरिया सप्तका, सामसा । रसामिद्रा-नी॰ (सं॰) विज्ञन । रसासी-सी [र्ध] पीदा। रसाखी(छिन्)-पु॰ [मं] बीहा, नवाः बमा । रसाम्रेध-प्र (सं•) पौना । रमाप-प रसनेको किया वा भावा जीवकर तथा हैंगा भनाक्षर धेनकी वों को रहने हेमा । रसायरः रसावछ−५० दे० दे स्तीरः । रमाधा−द्र॰ ईराका कथा रक्ष रसमेका मिद्रीका शव । रसामेष्ट-ड [सं] गंपाविरीमा । रसास-प्र• (सं•) ययशम् । रसाशी(शिन)-विकास सि] छरावी मचन । रसामासा-सी॰ [ई॰] रनाही कता। इसाइक-पु • [में] पारा कोडा, ईग्रुट आदि बाद मदा-रसीका नमाचार । रसास्थादी(दिष्) - वि॰ [वं॰] रछडा जास्थावम करने बाबा रम यहारीबासा आसर केनेबाना १ प्र॰ असर १ 1 रमाद्ध-त [र्गण] संबारिरोजा । रस्राह्य−भी [सं•] रातनाः सनाबर । रनिमाबरां-४० रेप वा ग्राप्ते स्तमे काथा हुना चारल क्योर। मनवन हारा बख्य शतिकाहर श्रीकी समय गावा जानेगाना गीत है इसिमावर श्रीमभायल-पु+ दे विस्ताहर ३ रसिफ-वि॰ [मं॰] रम श्वार केमेवामा आलंडा नीजी सीवायेगी। रतञ्ज स्वारिका होरदः मनीहर । प्र प्रेमी। एइएव व्यक्ति बाज्यमर्गट रामेशा विश्वपविशेष-का बारती पंतिना बीता सारता दावी यह रहे । -विदारी(रिन्) -शिरोमधि-१० इचा इसिक्सा~मी० [नं०] इतिक्रमा शुरु या हैंनी-समाक । रशिका-को॰ [ले॰] क्यिएन, परीका धारवता बैदाका रता जीना कापनी सारिका शरीको पता है। acts & "cffs4" 1 ररिकाई--श्री शनिवता। रमिकेका-५० (ग्र॰) क्या र रमित-दि [मंत्र] रतपुक्त कान बरका बमना, बोमना gurg grantt fant gurt metruet auner emm eten gut i ge telle meil abelt titte, a'em

HE I रमिया -प्र• रमिकः रस नेमैनाका स्परित कागुमदा रह गीत जिसके गानेका स्वाब बन तथा वरेल्सांको है। रसियाय-१० इंग्रहे रहमें का यावस वसीर। रसी−की॰ यह तरक्यो सन्तो । पु॰ ब दे 'रक्तिह । रसीय-सी० (फा॰) पत्रच प्राप्ति। दिश्रो चीत्रदे दिनरे का जमानपत्र करत, पता । मुक -करना-(६१स. थपह जारि) समामा देमा । -कारमा न्यार (सम कर देगा। रसीम = - वि दे 'रमीशा । रसीमा-वि॰ रमपुक्त, रसपुर्धः स्वारिष्ट महेदारः रह व्यानंद केनेवाकाः व्यन्त्रभी तिक्रासीः वर्षेताः हैवा। न्ति "रसीती ।) -यब-वर स्मीका होता । रसम-५ (सं॰) बरसन। इसमा~त [थ॰] (ररमका बटु॰) ररमा जिल्ल कानना मेव, प्रवासगार दिया कानेवासा पनः सप्रशासा है। (विशेषक किमार्न'की ओरने जहारा(हैं।)। - जस्त-बत-पर सरकारी स्वामके निय सुकरमा पालर करते समय दिया जामेबामा पन बोर्टबोल सराध । रसस-त वैर्यंतर ईपरका दत्ता। रसकी-रि॰ वि ी रमुण-रोगीर रमुणका र क्षांत इक प्रचारका गई था थी। एवं बदारकी बाकी मित्री । रसेंब-९ [नं] बोरा पनिया येगन, विकास शहर और रमस्तित्वर बीग्ने कानेवाको वस रक्षीवश बन्ता राजमार । - बेपक-प धोना । रसे रसे ! = मण चोरे चेरे यूने यूने । रसेवर-त [4] प्रता १६ रहीका राजिका शंसमें बारेकी ब्रिक्स की और संबद्धी पर्यंतीया एक सामा गया है) ह श्रीमञ्जू पृष्यः समद्रा रसोद्वया−पु॰ रहोई बनामैदाना शुक्दार 1 रमोई रसाई-शी एकाना हुना साथ गरार्च भीवता नीयन दशनिका वर स्थान । - नामा - मा-प बीवन प्रवानेका स्थाप श्रीका शक्काला । ल्यार- त्याप्रका घोषक क्यानेशकः। —शारी—को मोजन प्रमानेका काम का पर ! -बरपार-५० गोजब से वानेरामा । रसाल-की है 'एकान र बर्मोप्टर-१ जि विशिवाद विशेष र स्मोज्ञपन्द्रः [र] रेतुरः दिव्यकारणीत्। स्मोप्भूम-९ (११०) रकोत्र व रसीम-पुर (४०) धरतुव । इन्सपम-पु [ले] मंत्री ह रगरेष ० - भी रुधर्ग औषन १ इसीतः इसाल-भार क्या ग्रांक्ट भीगाँ । हमीता-च , हमीती-भी वर्षे दे परने ही धेन बीत-बार की आदेशानी सामग्री रीजारे ह रुमीर्-पुर् देवदे रहाते १६६ मध्य रहिमातर । हर्शील-को वक्रमध्यकी परी बेटेनो बल बो बस बाय करने और हीकारे परियोग्ने सामी में रकते हैं।

100 **अवध्**-अवमूर्धशय **शयप्•-पु० दे• 'शववृत** । अवपाध-वि॰ [सं०] म्हेब्छ-भिसके किसी पात्रमें खानेसे वह पात्र दूसरोंके उपयोगमें काने वोम्ब न रह जाद। सबध्यः-वि० [मं०] पत्नोरहित । **अवपार-**पुर्व (तुंब) नीचे गिरना । **अवभृत−पु॰** [सं•] सम्म्यासीः साभुवींना एक मद । वि **अववाहुक-पु॰ [सं] मुजरतंम, मुजाब्धे गति रुद्ध जामे** विकास हमा तिरस्कृत-अपमानितः बढा हुमा विरक्तः माक्रोतः परामृतः। −धंदा--वि मञ्जा। श्चा रोग । जबपृषित-वि० [सं] सुवासित । अवसुद्ध-वि॰ [सं•] ग्रादः वाननंत्राजा । **धवपुरु**म-पु॰ (तुं॰) पावपुर दबान्धे अकृती अरकृता । भवकोध~पु॰ सिं॰ो कागनाः द्वानः नोषः विषकः बहामा । अवबोधक-वि० [शुं०] शाएक । पु० अगानेवाना-सूर्व **अवस्त−नि** [सं०] दे• 'अवनारित'। भवधेप-विश्वाले च्यान देते दोच्या एकते बीव्या जानने रंदीः चौकीदारः दिशकः विचार । बोम्य । पु० घ्वाम । **अवयोधम**~पु॰ [सं] वदामा, बताना: पान । भवपेश-प [र्ट] अववनरेष्ठः वद्यारथ । अवर्मग~प्र• सि] मीचा विस्तामाः परावित करमा । भवण्य-वि [सं०] वदके शदास्य । अवसास−५ [मं] चमऊ, प्रदाशः वामः निष्या पातः भवप्येस-पु॰ [सं०] परिस्थानः चूर्णः भनादरः निदाः मतीति विश्वार देगा। **भवमासक-वि॰[तं॰] प्रकाशमबः प्रकाशक । पु॰ परवद्याः** गिरश्र थलग होनाः ग्रिडकार । **नवभक्त−वि॰** [मृं•] विनष्ट मिवितः तिरस्कृतः चूर्णितः भवभासित-वि [चं] प्रकाशित प्रकाः प्रतीत । भवभामिनी-मी [सं] कप्रकाचर्म। परित्वकः क्रिक्टाया बुझाः क्रिक्डा हुआ। भवभूय~प्र• [मं] बक्का शंका बदके अंतर्ने स्विक्ते हिए **ववय-नु** [सं•] रहार: प्रसन करना प्रसनता गीति। रम्णा एंद्रोपा बस्दबाओं। • न्ही राम्ता भूमि। क्षिमा जानेवाला जामः मुख्य वस्त्री समाप्तिपर दोव-**बबनसूत्र-पु** [सं०] तारोंका गावर दोना । हुरिवॅक्ति प्रावश्विक्तरूपमें किया जानेवाला बद्ध । ∽स्ताम – भवनत्र-वि [सं•] श्रका हुआः गिरा तुआः पिछडा हुआ प वक्की पूर्णाइतिके बाट किया जानवाडा सान । धेन क्य हाता हुआ; विनीत । अवभ्रट-वि[मे] दे॰ 'सवनाः' । भवमंता(त)-नि० [गं] शवमान बरनेवाहा । **भवनति—को [सं] ग्रुकानः गिराग अव**ण्यतनः ख्वारः अवर्मय~प्र [सं] एक रोग विसमें किंगमें पंसिबों हो हुबना अस्त होनाः दंडबतुः दिनस्ता । वाती दे दि चूक्त पदा करनेदाला। मदसद्ध−दि सि] निर्मितः इका दुआः ⊲वा हुआः। अवस-दि (ए॰) अंतिमः अवस नीयः पापीः वटता वैशवाह्या। पु सूर्या, दोसा। विवत्सन अवन्तस-प [सं] ह्यूक्नाः पौष पहना । हुआ । पु॰ पापः चांद्र और छीर दिनका अंतरः रह्नकः ववनयन-प् [सं•] नीचे काना, नीच विराना। पितरोंका एक वर्ग। ∽ितियि – क्वां वह तिवि विसका छन स्वनाक-सक फ्रिक आसा ! हो गवा हो । भवनारः अवनासिक-वि (से) विपरी मध्यासा । श्रवमत-वि॰ (र्ष॰) भपमानितः तिरस्थतः। अवमति-खो [चं] नवया तिरस्कार; विरक्ति। प्र• भवनामक-वि [संव] सीचे गिरानेवाला ! भवनाम-इ॰ [सं] मीचे छ बानाः नीच फेंकना। स्वामी । सवसर्व-पु॰ [सं] रीवनाः स्टबैइनः वशः सबसे देशका **नवनाइ**—५० वॉबमा, कसना आवृत करना । सविन सवनी-श्रां [सं] धरती, प्रमीमः संगठी एक वदादी प्रदणका एक स्ट । **वदा।--वर--वि• प्रमद्यक् आवारागद्र।--बः-शुत**~पु अवसर्वत + प (चे॰) कुपन्त मा दगमा उत्पादना साहित्य मंगल प्रद !-- तस-पु बमीनकी संबद वरावल !-- प्र-परमा । ३० वहार । -प -पति -पाक,-भूष-प अधमर्दित−वि [ti] रीटा हुमाः मर्दन किया हुमाः सह =पासक=पुराजा; प्रदाव ! – स्कू-पुकृक्ष । किया प्रमा । भवनिकः "दि [चं•] गौता वा साफ किया दुशाः अवसर्श-पु [मं] न्पर्श-संपद । -संधि-त्यो मारध-सवनींद्र−९ [मं] रावाः शानके अनुसार पाँच प्रकारको मेविबीसैसे एक। भवनास, अवनीखर-प्र॰ [원] राजा। श्रवमपे-प [सं] आजोदनाः नाटराधी पांच मुन्य अवनेत्रन-पु[सं] भौना (द्वाथ वा पाँव)ः द्वाथ-पाँव संविक्त मिल मिल गर्भ करमर्थ और निर्वेदण मिले भौतेश पानीः पिण्यानको नेतीपर विछाने हुए कुर्धीपर यकः) मात्रभगः। वानी छिइक्जा । अवसर्थेय-प्रति•ी अमुहिष्णुताः मिटाना इहासा t ^आवपाक-वि[सं] हरे तरीकेसंपकामा हुमा । पु भुरा अवमान-प् [मै] अवधा, अपनामः विरम्हार् । माचा । अवसानमा~री [मं] तिरस्करणः भवसायम-प अदपादिका--श्री [सं] शिरमके अग्रमानके जमकका अपमान सरपा । **भ्द्र भागा।** अवसामित-वि (शं•) अपमानितः दिरस्कतु । मनपात-पु[सं] सम'पनकः रापट्टाः रंमः गर्तः वस्थै अवसाभी (मिन्)-वि॰ [एं॰] अपमान वा (तरस्वार ^{कृ}तायेका गङ्का । **दर**नगरा । व्यवपातन-पु [सं] मिरामा मीचे पृक्ता। अवसर्पदाय-वि [मं•] सँदक्षे वन छैरनेवाना ।

अवरोज्-(१ (नंग) दिनश ४'नी गरेग पुभाशी।

भवमोचन-१ [वं] तुक्त करनाः छोइ देनाः चीला अवराषक-पु [में] एक वादवा हीन किन्दे भूत पाने क्रसा । रक्तां है । श्रवपव~पु • [मं •] रारीर मा श्रारीरका कोई भाग (हास-अवराध-प्र मिंगी रीज, शरहाय: नुसमुक्त देश-पाँच भादि) श्रेगः (वरतुकः) भौगः सर्वे या वाश्यके पाँच नापरप, देव्हना नामा अंतापुरः सदस विसी राजध्ये मंगों(मतिद्रा, हेत्, दशहरण, छपलबन और जिगमत)मेंमे रानियोका समुद्र। महरी भीच बाला रिजी धैरो, १० परः; इपकरण । —धार्शे--पु० ओगोका शुम वा धर्म । भारिसे तेतुओंका निकलता । -स्पठ-त एक तरहता कपन विसमें क्षेत्रींक वार्योका अवरोधक~ति» [शु॰] पेरा यावराताः रोस्टेरकः श्री मारूप्य रिश्वनाया आवा है। बाबक । प्रारीका बाबा प्रकरी । **अवयवार्थ-**प सि । जम्बने सवदनी(प्रकृति-प्रत्वच)ये मबरोधम-न मि विदा रोह बाबा। विदा दभावा निकन्तरेवाका वर्ष । निर्वा स्थाना विकी भीत्रका भीवरी भाषा राज्यकार शबयची(विमृ)-वि• [सं] जिसमें स्थवन या मंग दों। र्भतःपुर् । पु॰ कर्र वानपनी-श्रोगीने मिककर ननी पुर्व वस्तु। वैद्याउप-भाषतीयनाह-स कि॰ रीवना मनाधानाता राजना नवन निगमन बादिका संयोग (स्वा॰) । अवरोधिक-प सिंधी अंतपुरका प्रदर्श हिं यस शबपान-प॰ सिं•ी तटीकरणः प्राविशत्त । शकनेशम्भा शेक शकनेशका । शवर-+ वि और दृष्ठरा; क्ल्योनः [सं] छोटाः गीपाः श्रवरोधी(धिन)-वि (चं॰) दे॰ 'बारोपढे'। होतः पोछे होनेबाकाः पश्चिमीयः बान्धाः अंतिमः आर्यत अवरोचण-प लि विमारमा मीचे व्यात्मा इसना। में हरे पुलतीत कालः हाबीका पीएका मागः पश्चाउत्तर्ध **भवरोड**−५ [मं] बनार, उपरंग्ने माने माना रहेरने देश । —ज−द्र• छात्र मार्गुन्द्र । ⊶वर्शनिक श्रद्र ववरों के कथाने औषे आतेका ब्राम अवोग्याएक हरू केर जिल्ली किली करतुके राज या शुरुका क्रामस चारता जाता क्ष्मा । प्रशान वर्षक, ⇔वर्षक न्यु ध्रह । ~ वर्ण भिनिवश-प भिक्ष बादियोगि बसाबा हजा उपनिवेश। हिरावा अव वर्राष्ट्र पहला दिशी बण्या हरके पति और स्टिपनाः मुख्या प्रासानि तंतुक्रीका निवयमा घर -प्रत-विद्यान प्रतार प्रशासका अक्षा विश्व - प्राप्त - प्रशासका अक्षा विश्व विश्व - प्राप्त - प्रशासका अक्षा विश्व विश्व - प्राप्त - प्रशासका विश्व - प्राप्त - प्रशासका विश्व - प्राप्त - प्रशासका विश्व - प्राप्त - प्राप्त - प्रशासका विश्व - प्राप्त - प्रा पश्चिमी पहार जिल्हा पीछै खर्बका खरत शामा मामा बा बमयो बाहा (स्रो) - झारा,-शारी(चिन) -शायी(यिम)-तु बटदूरा। षाता है। अवरण म्यु देश अवर्ग । अबराहक-वि० वि०) गिरमें मीन भानेशला गर भपरत-दि॰ [सं] रका हुमा। निकृषा विरामवृद्धा । परनवामा । चु अमर्गव । अवरोहन-पु [मं+] दगरता, गांधे बानेनी प्रिया गर पुरु पानीका भवर । अवरति~सी॰ मिं•ों इहराय, विभागः नियत्ति । वामा, भाना । अवराहमान-भग्नि उत्तरमा धामा । मन्द्रिश्राहरू **भावरहरः – वि० मिंशी भारतितः वीगान १ समरा** – स्वा॰ (सं॰) दुर्गाः हाबीशा पिछनाः हिरमाः दिखा ! संभित्त स्थानाः । **अव**रोडिका-स्तार (संब) अपर्राता । सपराधळ+-(त॰ भाराधमा बरनेवाला ! अवरीडिजी-स्तै+ गिंदी ग्रहीके विशेष स्थान*६ वर्ग* भवराधन+-इ भारापन । अवराषमा: - म: क्रि पुत्रा करना; समा करना। कापण नहीं दशा है अवसीदित-वि [यं] इन्हे नान संस्था गांव निग अवराष्ट्री ! - विश् देश 'कारायह । **अवरार्ध−ि [मं]** क्यार्थः तु पीरे मा मी⊲का क्षभाग की स अवश्रहो(हिम्)-विश् (तंश्र) सीच मानेवाला । द्र. करान भाषा माग्र। अपरावपतन्-दु॰ [मं] गर्नशान । भी ने नामेबाला १वर। बावा । भवरापर-वि (तं] सन्मै नराकः धारेने शारा s अवर्ग-विक [र्ग] क्षेपीर्शित । पुरु इतर वर्ण । अपस्त-रि [र्:•] १६३ मा रीका दुआ। गिरा दुसः अवल-दि शि दिना श्वदा दश्या हरा पर्वकर रहिता । मुर्जिया भारतयः। र्षणः मन्द्रम् । धपस्या-मा॰ (ri॰) रहेना । श्रापुरुमें -दिर [तुरु] शरील्ड करोग्य । पु अश्राप्त । अपनेंग-पु (में) पोरिशार्शरत रोगा। मन्तिपरा म स्वरूप-दि [मं] जनश दुन्ना, सम्पन्न वनदा रशार । विश्व विविद्यांत । बराहा हुआ ह ब्रदह्य-दि॰ (देंश) िनता क्ष रिश्न की ग्या की अपूर्ण =-पुरु है। अपूर्ण । अयध्यामन-दि (संब) स व नेद ना । रिसदा पतन दी गया हो। श्रवर्ररमा ! - स. कि. परेशमा श्रम्योर सीवमा। बेममा अवच । अवर्षेश-पुरु [मं] बबादा ह दीना एटा । **अक्रिया** । ~ सर्वे क्रिके स्था । भागमा सामगा। अवस्य-प् कराग्ने विस्तीकार कम स्तिः व पणान अवस्ति = भू [सं] शहारा, अच्चर प्रतीमा अनुधार्थी श्रादिनारी प्राप्ताः व्यंत्रम्, जन्मित्री वयत्। --दार्-विक दिए १५ (रेसा) र भवर्तवय-५ [] १४ १७ । freih witht (arei) t

अवर्गसन्-पुर्वाने हेन्द्र राधेना करनाता अवर्ग (प्राी)

```
रसीही-सी भीडोंडे पास मॉबडे कपर विस्टी विकल्पे
                                                   रहरू रहरू-सी॰ साद दोनकी छोटी गाडी ।
                                                   रहरूकमाध~प॰ विरक्त होकर एकंत्रदास करनाः विरक्त
 का रोग ।
रस्ता 1 – पु+ दे 'दास्ता'।
                                                    पकांतवासी सावक (१) ।
रस्तोगी-पु॰ वेश्वीकी यक सपवाति।
                                                   रहरेटा रे∽प्र• करिया अरहरका स्था प्रटल ।
रस्म-सी [ब ] प्रशा चकन रिवाय। वरताव मेड
                                                   रहक्क-सी॰ [था ] रवानगीः सफरः रहनेकी बगदः सकती
                                                    का बना बह बाँचा निसपर पुरवक रखकर पहुंचे हैं।
 को भा
                                                   रक्षत्राख-की योहेकी बाठ र्ग कि रहनेवाला।
रस्मि॰-स्री॰ दे 'रहिम ।
                                                   रहस-५ [र्न•] समुद्रा स्वर्गः • भामीत्-प्रमोदः, मानदः।
रस्य~प [तृं•] रकः करीरमैका मीछ । वि• रसपूर्णः
                                                     -बधावा-प [र्द•] विवाहको एक रीति (वर धनवप्
 सस्बाद ।
                                                     को बनवारी काता है। शुरूबन मुख देखते और बपहार
रस्या-स्वी सिंशी पादी, पाठाः रास्मा ।
रस्सा-पु॰ ननेक मोटे वागींसे बनाबी हुई मोटी रस्सी-
                                                     बेरे हैं)।
  प्रवृद्धार क्षात्र संगी और प्रवृद्धार द्वाव चीड़ी ४% नाए,
                                                   रहसमा 🗢 म 🖧 प्रसुद्ध, आर्मदित हीना — नोलेउ राव
                                                     रद्वसि स्ववानी -रामा • 1
  बोधाः बोजेंके पैरको एक बीमारी ।
 रस्ती-छी॰ डोरी रक्तु (बो सन, रामगाँस आदिके
                                                    रहसि≉−सी ल्क्षांत, ग्रप्त स्वान ।
  रेहींकी बरकर बनाबी बाती है)। यह साबी। -बाट-
                                                    रद्वस्-त्वी [सं•] व्यविधारियी, वंशकी ।
                                                    रहस्य-त [र्स•] शह भर, गोपनीय विशवः सर्ग, शेहा
  प्र रत्ती बढने बनानेवाला।
 रहें इसा-पुरु यह इक्फी याही; तोष कारनेकी बाही। रहें
                                                     निर्मेन पड़ांतमें वरित कुछा बुरोध्य तत्त्वा हैसी-मजाड़ ।
  करेपर बड़ी बीरी दीप ह
                                                     बि॰ शहा गोपनीय ।
                                                    रहस्या-स्ती (सं॰) रास्माः यहाः यह मदी ।
 रहेच्या - पु॰ पसका, किया। मनीरथपुरिसी बान्संद्याः
                                                    रहा−वि वया हवा छुटा हवा (रहता का भूतकाकीन
   मोतिको भार !
                                                     स्य)। -सद्दा-वि वधानवाना वना-सुचा।
 रहेँट~पु कुएँसे दानी निकासनेका बंधविक्षेप ।
 रहें स-इ सत कातमेका अर्था ।
                                                    रहाह्य-सी॰ स्थिति, सक्षता गरवाहतः ग्रंबाहस्य ।
 रहेंगी - लो कपास ओरनेकी पखीं: हुवी क्क्वा ज्वार
                                                    रहाईं • ∽ती रहता भाराम थेन ।
                                                    रहाळां-ली टेक स्थापी गोतका परका पर ।
   वेजेका चक्रम-विशेष विसमें मितमास कुछ वस्य करते
                                                    रहाट-वि [र्ष ] परामर्थ दैनवाला । प्र मंत्रीः प्रेनारमा ।
   रहते हैं।
  रहा(स्)-प्र[मं] पद्मीत निर्मन स्थानः आने मय
                                                    रहाना ≉−अ कि॰ दीयाः रहना ।
                                                    रहायमां - की गाँवके ब्लामीके सबे होनेकी बगह र
   सीला। बंबार्वता ग्रप्त सेर, रहरवा गुड तरव ग्रप्त नात
                                                    रहित−वि (सं∘} ™के विना, ™ मे दीन शम्य ।
   (बीग तत्र किसी दुमरे संप्रदावक) ।
  रह - राष्ट्र'का समासमें स्ववहत संक्षित्र करा। -जन-पुर
                                                    रहिसा!-बु॰ बना ।
   शहर, तुरेरा । -जनी -सी वर्वेठी, तुरेशायन ।-<u>अ</u>मा-
                                                    रहीम-वि॰ [स ] रहम बरमेशमा कृतन् । पु॰ अन्दुस
   पु परप्रदर्शक । - मुसाई - न्यो॰ व्यवस्त्रधीन । - यह--
                                                      रहीय सामसामाक्ष काम्यमामः परमाग्या ।
    प मार्परर्शक। −वरी−स्प मापपरर्शन।
                                                    रहेंबरां ~प्र• उद्दरधार धानेपर काम दरनेवाला ।
  रहच्या-पुरे रहेवया ।
                                                    शॅडिक-विक देव रेडि ।
  रहत्तहरूनमी बहबहाहर विदेशीकी शेकी।
                                                    र्शेंडडो-मी कम करवाक मृति (ग्रेडरीची प्रशीकी।
   रहटा-द्र भारतका सुद्धा शेषा⊱दंडल ।
                                                      कैंधोनीची मधि) !
  रदन-पु [म ] विरदी रसमा (माल जमीन भादि) है।
                                                     र्रोक्य~तु [सं] रं⊈ वृषके रोमसे दमा बल आहि।
     रेहन'। मो•[हि] रहनाः शहनेका हंग व्यवहार्।
                                                     शॉग-९ है 'शेवा।
    -सहन-मो॰, ९ ठीर-ठरोडा, दंव, शावरथ: थकाशः
                                                    राँगदी - पुष्ट मद्भरदा पारन ।
    भीवननिर्वोदका देग ह
                                                     रोंगा-प यस मिश्र बाह्य-एंग बंग।
   रहना-म • कि इद्सा, रिवत होता; थम जाता, रहना;
                                                     रॉच॰-दि दे (मा अ॰ अरामी।
    पत्तनाः विवासम्ब द्वीमाः श्रीवितः, जिद्यः श्रद्धनाः जीवरी
                                                     रॉयना॰-स कि वेस दरना, बनुरक दोना (त
    बाम बरना। स्थापित रिवत दीना ( पेट शहका ): रसेनी
                                                      पद्यक्ता १ स कि र्रेगमा, रंग पदाना ।
                                                     र्शेक्षना!-अ कि अस्तिमें कावसनगताः स कि
    पनदर रहनाः पचना हाता ।
   रहनि, रहमी • – भी • रहमेश्री किया या एंग, रहमा चान
                                                      र्रेंबनाः रॉदेने जीवना बाँडा क्याना (वृत्रे ४रतन
     दान, जावरमा स्वत प्रेत ।
                                                      अर्थियो।
   रहम-५ [ल ] छन्गः दवा कृषाः वयारानी अराजु ।
                                                     राँसां - प्र थिरिहरी, थिट्टिम देश रहेश । सी आरीकी
     -दिक-वि द्यातः
                                                      संदितिक भाषा ।
    रदमप्र-भी [व ] भेहरतानी दवा।
                                                     शुँड-मी॰ देश विधश विश ब्योद्ध प्रति मर सुद्धा हो।
    रहमान-दि [व ] श्रम इतातु । तु श्रमातमा ।
```

रेप्पा (री (स.) s

रॉही-पु यद ध्याची पारत है

ter, teft teitt-mit & miet i

PLC 1

रियम-द्र [में] वर्नतः प्रेश ।

रिकार्क-प [सं] रविवारको पढनेवाको रिक्षा तिथि । ो रिक्य-प [सं•] उत्तरा विकारमें म्यास वन । -आही-(दिन्)-दि रिषध प्रदश करनेवाला (पत्र माति)। -हारी(रिन)-पु क्लराविकारमें वस पानेवाका व्यक्ति। सामा । रिक्यी(चिन)-प स्] वे रिक्कारी'। रिध-प दे क्यां-पति-व वे 'क्रश्चपति'। रिझा-बी॰ [री॰] बीख जैंका शेवा; वसरेलू । रिकास*-प दे कदम'। रिचित्र+-पुक्रिशः। रिग•-प दे 'ऋक'। रिचा+-सी दै 'क्रवा'। रिचीक#-प दे 'क बोड'। रिष्या-प मासः। रिजक-प मि भएका रोजी कीरिका साना-विरी ष्ठी रिजक तेरे कर कैठे आवदे −शुंद०। रिज्ञबँ-दि॰ [अं] साध किया श्रमाः विशेष प्रयोजनके किए रक्षित निश्चित किया हुआ। अंदर्जे प्रयोगके निर्ण सरक्षित्। रिहार्विस्ट-द [बं] रिक्षत सेमा, सैनिक, संबद कारके किए सरवित सैनिक । रिह्नस्ट-तु [भे] क्रम नतीबाः परीकापन । रिज्ञवाम-पु [ब] विदिश्त स्वर्गः विदिश्तका वारोगाः परकता रजा । रिशासा-वि स•ोरगेल पात्री कमीना। रिवीकी +-मी निर्केशका । रिष्ठ-विदे 'कम'। रिका-प [अंशोदे रिकाट । रिसक्यार - पु श्रीसनेवाचाः विशेषता वा शुगपर प्रसन्त द्दीनेवासा । रिमचना-ध॰ कि है (रिज्ञावना?) रिप्रवार (रिप्रवया - प्र (प्रथ विधेवता क्रम कारिका) मसब दोनेशका अनुरागी प्रेमी-'रीसव गर्दि रिजवार वह विना दिवेदे स्थि -रवनहत्रारा । रिद्यामा-स कि अपने कपर किसीकी असक वा तह करनाः भुभानाः मोहित करना । रिमायस॰-दि अस्त्र दीने रोजनेवाका । रिशाय-प अन्त्य होना रोजना । रिमावमा - स कि दे 'रिज्ञामा । रिटर्पिंग अफसर-पु॰ (थे] चुनावडे समय मनदी राजना बर्द्ध प्रक्रियो बीपमा क्रमिताला अविकारी । रिटापर-पि [श्रे 'रिहाप्ट] की कार्यमे अवसर प्रहण दर पुरा ही भवदाग्रमात वैश्वनयानना । रित रित्तक-सी दे क्यू । -श्रंती-रिक सी क्रमू-मती वा रमस्ता (शी) । रिवमाण-म क्रियाणी होता। रित्तवमा ० ~ २० कि शाबी करना ।

विभिन्ना विभिया - वि क्ली ! रिनी!-वि अपी कर्नशाः। रिप-प॰ मि ी शका हिसार करते । विद-पु॰ [सं॰] शब वेशी अग्राप्ते प्रशा स्थाना अवस्थ पीम, ब्रिटिका पुत्र। -बाली(तिन्),-ध्म,-स्वत- श्वक्रीका माञ्चक । प॰ सक्य । रिप्रता-कौ॰ (सं] छत्रवा बेर । रियोर -- ली॰ [अं॰] सूचमार्थ घटनावि सेक्बा विरमुत वर्णना मतिनेदना कर्तका विवरण (संस्था, आरीक्स, सत्स्थ, भारिका)। प्रातम्ब वार्तीका विवरम (वस्तु, व्यक्ति शाहिके विषयमें)। रिपोर्टर-प॰ [बं] संशहदाता (समाचारवत्रका)। समा समितिका व्याक्यान, विवरण लिएनेवासा अटावत भौतिक भारिको रिकेट किसनेवाला सरकारी नादमी। विम-पु [सं] पातक, वापा कालुप्य। विक कीय। -बाइ-वि पापनास**क्ष**। रिकार्म-व [अ] सुवार संस्कार, वीव वा हरि दर दुरना । रिकार्मर~त [६०] समात्र-ग्रवारक । रिकार्मेसन-सी [अं] राबार संशोधन (रेमार मनका वह स्वार विस्का परिवास प्रीटेप्टेंट मन है)। रिश−तुरै 'कमु। रिमाशिम-की कुदार पत्रना छोडी छोडी बूँदें पहना । रिमाईडर-पु॰ [वं] वाददिशमी, वाददारत । रिमार्क-९ [वं] शन, भव प्रबट करना । रिमिका-ली॰ काडी मिनंदी रेक। रिया-सी [अ] दिखावा वनावड दुरंगी मधारी। -कार-वि॰ मदार ।-कारी भी मदर परेष (बरमा: द्रोताके शाव) । रियाई-वि (४०) महार । रियाझ-पु॰ [वा•] वागा 'रीका'का बद्र ; दे॰ रियाबत । स् -बारमा-परिवय करमा; व्यायाम करना । रियाहरू-ली [ब] निष्टनत ममहतः अम्यामा व्या-वामा मनपुरका देशा । रियाज़ी-न्दो॰ [अ] गरिन (अंद नीव रेसा ग)। र् वि मेहमती। क्षम्रती। रियासत−नी [ल] राज शामन हरूमनः रहेत्।© दुष्टमनमें रहनेशना इताहाः रहेम होता, अमीरी । रियागती-वि रिवासनकाः रिवामत-संदेशे । रियाह-सी [श•] इवारी अकरा पेन्धी बाय । रिर्देशा-स्व [तुं] रसच्य दिशार या संयोगकी रच्या । रिर्रम्-वि [गं] रमम, विहार का गंभीगद्धा रच्युक्त । रिर०-सी० विश इस । रिस्तारं−अ कि दीवता मेक्ट बरना विस्विशना । रिरिद्वा - पुक निवृत्तिक्षाकर वह समाक्तर स्रोमनेवाना । रिरी-मी [ने] देनदा रिदिन-भी हे कोई। -सिदि-भी दे की-रिम्पना −भ दि बुमना वैद्वताः निश्व बाना वृद्ध हो बाज १

हिलीक-द धिने क्राप्तक लाग्य (क

रिमक-पक्षे 'मुल'। -चंधी-वि कांगा।

रॉडन(–राज रॉरमा!-स कि रीमा विमाय करमा । रॉॅंभ-अ॰ पाछ निक्तः । -एडोस-अ॰ आस-वास-महोम-पहीसमें । राँभमा-स॰ फ्रि॰ पदाना (भोत्रम) पाद करमा। राँची - स्त्री मोनिर्वोद्धा समदा शन्त्री, तराहानैद्धा एक भी बार १ रॉमना-म दि पॅनाना, बोनमा थिनामा (गाय मैल, मेंस मारिका) ह रामा १-५० रामा । राष्ट्र*-पु॰ राव सरवार, छोटा राजा। राष्ट्रता-तु॰ दे॰ 'रानदा' । राष्ट्रप्रस्न-स्नी॰ [स्रो] एक शरदको बंदक्ष । राष्ट्रगारि द दे 'रामशना । राई-को एक छोटी सरमी काप परिवामः 🕫 राजनी रामा होता । नभर-म बहुत भोता। हा॰ नकाई करना या होना-34रे इक्टे बरवा, होना ! - नीन उत्तरमा - न मारि वच्चे हे शिरके चारों और राई समझ प्रमास्त्र आयमे राष्ट्रनेका होटका । -रस्ती करके-वारीक्स वारीक दिसाव करके । -से पर्यंत करवा-**परान्ती पांतको बद्दत बङ्गामा। द्यामको** सद्यान बमाना । राड•-त राजा। राजवां ~तु॰ राजपंदीय व्यक्ति क्षत्रिकः बीर उपप । शाहरं≠-- प्रमान्द्र अमान्द्रामा (रामानीका)-'वे सुमेत वर राजर भारति –रामा॰ । सर्वे॰ बापकाः औ मानुद्धा । राजमं 🖛 🖳 राजकुत्तीलच शुरुषा राजा । राक्स॰-पुराक्षप्त । -शहा-पुक्र(४ नागक वेला इस नेनदी बड़ा -सास-तु देशमके उत्तरकी दक्ष शील रावपहर मानवलारे । न्यचान्ड **अंगडी** वद्य । राबसिम, शकमी>-मी> राश्मी ! राका-मो (तंर) पृतियाकी राता पृतिया वहने पान रवादना श्रीनेवाची सीह ग्रामनीका शेव र न्यतिन्त्र पंत्रमा । राक्रिय-दि (च] विशत्नेवाणाः, सुवरिर । राकेश-पु [मं] चंद्रमा । राज्ञार-इ (तंर) दीव निषावत दुर दुवि व्यक्ति पुरेरके बाग-रसका बारे और संबक्त वीची बना बढ दमा प्रमाणक अंशन्तर । -विचाय-प्र वर निपाय विसरे ह्या हारा क्ष्म्या भाग की अन्य ६ शक्तानिन्दी (ते) नाएनकी भी। रखन भी। देव केर श्वमाववारी भी १ हारा-सी॰ अंडे परार्थवर धेष भरम १ - वाली-धी तिनदेश बाहिनी राख विशाने शोपनेती स्थाने र शास्त्रपात-शाक कि अवद अन्त्रा शिवालाः देव व्हाला । शासी-क्रीन रहारपमका क्षीरा, क्या मंत्रम्य (वी अन्यान शबा पहर्ने आराधी चुनियम्बा गर्नना है। ई राग्य WIR ! क्षान-पुरु [सं] रंबन यानथी क्षत्र वरणा है है। बहु रणा मादरेत (दिव वापु अंब दिव शुद्ध गरेरी)। वीका

वनेशोंने यह (वो०)। वह विशा देखी, हैना गुन्नित केर. जैगराम (बेरम, क्यूर, कम्पूरी बाहिमे तिमिन)। अपलक्ष मालका। रंग (विशेषकः काण)। रामाः चंत्रमाः रावे। स्वरी वर्गी, स्वरांगीने युक्त, विशिष्ट ताचनवनुष्ट धर्मन (स्वरमेरसे रागके गीज प्रचार कोत है-मूर्च-माठी रवरीवाकाः वाहव-छ स्वरीवाका और ओहब-बीच स्वरी-वाका । मर्नपद्धे मठसे सीम मेर वे दे-शुद्ध, मार'द और र्फिंडोर्च वा र'बर १ छ राग थे है-जी, बर्सड चंदम भैरक मैव भीर जर-मारावन) ! - पूर्ण-९ शामरेवा रिस्त पेश कारा । -ब्युक्य-पुरामा बामदेव । -बाक्रि-पुर मत्र । -प्रस्प-प् रंग । -प्रत्प -प्रशंप-प्र-प्र-प् धरियाः र्यमुगीयः रक्षाम्यामः । --पुष्पी-भी श्रवाः। च्यक(ज)~व माधिरव । विश्वसारीयत । स्रीत —त॰ याता रवामा (त शिरदमा का^{रि}) —**रज**न प्रकारिक ! —सता—सो शति कामोदक्य नो । -पाष्टव-१ वनारः दागुने नमनेशामा १६ माधीन स्तवः बामकः शुरुभा । –साहा–मी० वैननिय । शराजार-म कि॰ रैंग जाता। जनस्य शेना निमान होता । स• कि नागः, श्रनापना । शामोगी-स्था [र्थ] सबोद्ध र शागान्वित-नि॰ (सं) जलका अनुरक्ता कुछ प्रतिप्र । रागाल-वि+ वि | रेनेनी आधा रेपावर व देनेरावा । रागाशिल्ड (मं) डबरेव । शमित्री-ची॰ 🖯 रे शबरो पत्री (रून द्वारोस एमिनियाँ मानी जानी है-संगीत)। जबभी नांभी रुपमा निरम्प वा अनुवासी भी । शामिक-रि [न] इन्दुर, स्वातिकारेर र राधी = स्तं रामी, रामाधी भी र रागी(निक)-९ [मं] प्रमीर मधीप रुपा मळना सदरात छ मानार्थ के दौर । वि र्या द्रमा राजिया सामा ब्रव्या विषयामध्य (त्रम क्ष्म्ये) र्यनेराचा । शायक-पुरु (लेर) शामा स्वयन्त्रा अमन्तिः सहस्याः अमा एक बहुत नहीं समुद्री महत्त्वी । शृष्यम्। -- ध । कि रुपमा । अ कि १ वा मानारिया मामा। प्रेम करमा, मनुरण्ड दीमा। भीन प्रस्त होणा धीमः देनः ऋषमः प्रमधः होनः। शक्त-पुरु बारीयरीका स्रीमारा दानेका सामा प्रधान निराने का जन्मचीचा वक भी महा एक हो है। भी महत्वा साथ, पी है। अनुमा बरान वयाता वशीके दीवता भीता ।-वैधियान पुरु एता वीपतेका बाल चारतेमाना त्यांका का नामने है हा - समामा - किरामा-नावी वाववीतर चाना कर्षे बारिक्षे परिश्रमा करावा । राजप॰−९ दे राजन । राज- राजांक समस्ये ध्यरत स्थ (यह अतेत्र छापी है शान अमृत्य होहर नवार अपना अनीया सर्व करा माना दी र -क्या-की विद्यार राजकी क्या । -क्यूंब-वी अनुगीय प्रजीपाना दर्शन - सम्बागमीन gregelt Gebet gut -un-g tiere farnt -कर्री-हो कारी । -कर्म-त इस्टिन्स -कर्ना(d)-वि हावा दरानेदाचा वित्रो की मासिने

पीदिवेंहि किए)। रिवाज-प्र [न] रीविन्यश चक्रन ! रिवायस-सी [श•] वृक्षरेके भ्रष्ट बुहराना कृतरेकी बाराकी मकक; किरमा कहामी। इदीस, इरकामी पर्(परा)

तहरीरी फतरे । रिवास्वर-प• (#•) यह तरहका तमंगा जिसमें एक साथ

कई गोलियाँ गरी और एक-एक कर छोड़ी बाती है। रिष्यु—सी [st] ननप्रकाशित प्रस्तकको संदित माको-चर्माः बाक्रीधमा देख (दिशी पुस्तक्ते विषवर्ध); करेक

विषयों पर विकार अस्तुत करनेवाकी पत्रिकार (जैसे-मादर्ग रिव्यू इंडियम रिस्यू); सवरसानी, दिने हुए फैसके पर पनविचार (बहाकत)।

रिक्ता-पु॰ (का॰) सं4ंथ माता। -(क्ते)दारा-सद-पुरु संबंधी । -- हारी-सीर संबंध । रिश्य-प [र्श•] सग ।

रिश्यत-स्त्री [अ॰] लॉब बूस, क्ल्ड्रोच निवय विकार काम करामेके किए किसीकी दिया बानेकाका चन । -छोर-वि , प्र• प्रस कानेवाला । -खोरी-की वृष्ट रियम-प र 'क्रवम'।

विचि-प है । मानि । रिचीक-प्र• सि] शिव ! वि• हानिवारक । रिप्र-प [सं] मंतका रुप्रतिः अग्रामा बानिः पावः हुर्योज्यः।

माञ्चा म द्वीना । दि॰ यावकः वरवादः मद्वा 🛎 मसका मोदाताकः । रिष्टि-सी॰ (र्र॰) बहुमः बहुन ।

रिच्यमुक-पु (से] यक व्हाप (श्लीवर राम-प्रयोवकी मैत्री हुई भी) । रिस-स्रो स्रोप क्षोप । मुक्-मारमा-स्रोपको दवाना, ग्रस्ता पी बामा ।

रिसमा-न॰ कि नर्नेनन्दें प्रेरीते तर्क प्रव्याशानीः रेक भी भारि)का सिक्तमा । रिसवाना!-स कि॰ दे 'रिसाना'। रिसङ्गाण-वि स्त्रोपी, बात-बातपर विगदमैदाला, निद-विदा ।

रिसद्दापा॰-वि कुनित कुद्धा रिसाम-इ वानेडे क्लेक्ट साब करना। रिसामारूल कि॰ क्र्य, मारात्र दोना। स॰ कि॰ िसीपर कीय करना !

रिसामी#-भी ब्रोव-'वीर बार बग्रुनाव रिसामी'-रामा ।

रिमिश-सी वेश 'रिस'।

रिसिमामा रिसियामा - म कि क्य, हु फि होगा स॰ कि किसीपर विवतना, और करना। रिसिक-सी सद्ग तक्ष्मार।

रिसीहा॰-वि॰ विजिल् कृपित, कुन्स । रिस्टबाच-स्ता [बंग] ब्रहारंपमा रिह्वी-की रेटीकी बमीम।

रिहम-पु॰ [बार] दिरदी: दिरदी रक्षमा, बिहोको (नाम, वगीन नाहि) कोई धीव हैकर शव हेमा । -मासा-पुर रेहनकी बस्तावेज । रिहर्सक-प्र [र्न॰] बाम ठीव देनसे तथा डीक समबहर

करनेके पहके बसका अभ्यास दीवारी करवा। मारकके मस्मिन्द्रा अस्यास । रिहक-की [ल] गोशी रएकर क्रमेढ़े किर बाउको बनी यह मन्द्रारको सकते और वंद होमेवामा एक्टी।

रिहरूर-सी [ब॰] रवानमी, कुपा मीत (इरमा, दीमा: के सार)। रिहा-नि॰ (का॰) छुटा हुआ, मुक्त (बंबन कारा आदिसे)। बन्धाः नवा हवा (संदर आहिसे) ।

रिशार्व -चा॰ मुक्ति, मुख्यरा । र्शीयवा−स कि॰ रक्षमा स्थापना राज्या र री-व एरी, जरी (सिटाबीके लिए संरोधम)। ली [संरो हारम टरक्सा। गठिः स्थः द्यानः । रीगर्का ज्या भारीं क्रमारमें होनेनाला पान ।

रीछ-पु॰ भारतः। -पश्चि -राज्ञ-पु कामर्थाः। हीडवा-छी [र्थ] धनाः भासनाः निरा। रीय-सा राजने मक्त्र दीने वा मीदित दीने की फिया ! रीप्रजा-थ कि॰ मध्य दोनाः सुग्य मोदित दोनाः † श्राता रक्षमा - रक्षर देखे वर्द्य भाव'-प्राप्त । रीड•-सी धक्नारा छद । वि धरामा मञ्जूष । रीडा-15 चुना बनायेडे किए बेंडर मुंडनेंडा यहा

[छं॰] करंबा कांबकी बाठिका पत्र पूछा कैनिक (रछके

प्रक्रकी शिरोक्ट शहनेसे फ्रेन निकटता है जिससे क्रमी

कपटे साफ किने जाते हैं) ! -कर्रज-पु रोडा नामका वेद 1 रीटी−मी दे रोहा 1 रीट-ली॰ बेस्बंट, नर्रमधे दरितद बानेशनी यद भरिक र्मुद्धला । रीरक-द (एं]रीहर

रीहर-सी॰ [मं॰] जबहा १ रीय-विश्वति विश्वति स्वयं पुत्रा स्पन्ना द्वा। राज्यासनकर प्रतिष्ठित करने वत्तसनेकी शक्ति रक्तने गावा । −क्रहा−सी॰ चंद्रमाकी यक कला । −क्रहेद− पु मागरमोशा सङ्गुरशा । –कार्य-पु॰ राज्य संबंधी कार्यः राजाद्यः । —कुँभर+∽५० राजकुमारः । ~कुँबर→ पु॰ श्वकिशासी रामा। -कुमार-पु राजका पुत्र। -समारी-स्वी राजाकी पुत्री १ - कुछ-पु राजवंधाः राजपरगारः स्वादारुयः राजमासामः राजपार्थ। -कुरुक-पु ११४७की गंत । **~कृ**प्सीड−पु भेगत। -क्रीफ़-पु॰ वश देर । -क्रीसाइक-पु ताबके साठ भदीमेंहे एक। -कोपातक-पु -कोपा-तकी ननी वहा हैमुआ विषाः तरीई। न्यावक∽ षु वक् सरहकी राई। - सर्जुरी-सी विश्वसन्तः। -सरी-न्दी [हि] रावधिदासमा राम्बाधिकारः राज्यासिवेदः। -शर्यी-स्त्री शावको कारिका यक पशुः -तिहि-पु वधुन्नाः मनवका वकः वर्वतः। -सृद्द-पु राजाका महका निहारमें एक पेतिहासिक रणान । -ध-दि० राजानी हरया करमेवासाः श्रीरण । -र्चपक-पु पुद्मागस्य भूतः।-चिद्ध-पु शत्राके विष्ठ-स्त्र पॅथर आदि। - चित्रक-प्र श्विदन, ४ भव। - पृष्ठासणि~ प्र शास्त्र साठ भरों मेंस प्रका - श्रीबृ-पु वका बामुना विद्यान्तः - अक्ष्मा(स्मम्) - पु हे राजवरमा'। ~बीरक-म दक बीरा । ~तद-म दनियारी कविकारः अमसतास । -सहगी-मी॰ एक सरहका सफेर गुलाबा बढ़ी सेवती, सुबर्मपुष्य । -ताल-हु <u>भ</u>पारीका पेड़। −तिसिधा −तिसिष−<u>५</u> तरन्य। ─तिस्र≡─प्र राज्यामिपेडः भवे राजाके राज्यारीहणः का बस्तव । -वृंद्ध-पु राजधासमः राजाया विधान-से दिया इक्षा देव । - इंत-पु॰ चीका सामवेके मीचे भीर कपरके बीन्दी वहे बॉल । -बुल-पु किछी राज्य बा राजाना (संघि, विशव मेरिक काबोदिनमध्यी) रहेश डेक्ट्र कियो सम्ब राज्यमें कानवाका स्पक्ति, प्रतिनिधि (प्राथीन बालमें राषद्त विशेष अवस्तीपर मन बाह दे अवरवादी रूपन सभी देशीमें सभी देशीके राज बृत रहा बरते हैं। नुकारमात्रे समय शतुरेशीमें राज दुर्तीका बापस तुमा लिया जाना दं और शतुरेशके राषद्वीकी कीटा त्या जाता इ)। -वृद्यी-शी बरी पश्चिमों मीडे कॉटीबामी दूव गॉटर ! - रपक्-म्बी॰ सबीहा मीनका पाट। अञ्चलीय-विश्वात्राक ममास राजवस्य। अहस-८ अगलताम बारम्बर। —होइ-पुरास्य या राजाडे शिरुक्त बादरण थया-47 निर्दाद । - होडी(हिन्)-नि दाजहोड करने वाता वानी। -द्वार-वु राजका शारा ग्यावासय । -पर्तुरक-५ ८६ पन्ता कनक पन्ता। -धर्म-🗴 राजाबा धर्म वर्तस्य (शानित्थावस प्रजाशास्त्र MIS): महामारतके शांतिपर्वका साम्बर्गव्य विषयक मंद्रदिवेग -धर्मा(र्मन)-तु वस्यवद्य १क तुत्रा सारमें का राज्ञा (सं अं) । वि राज्ञ दे सनान काच-रे वरनेरकार न्याली-की सुरवकार शंगाल-वेदा राजा साम्बद्धे १६>वा स्ट्रा -प्रान्य-पुर रद मान दशामा भार। -पुर-तु शासनकर्।

-पुस्त्रक-५० वडे फूक और वडु भाररमपुक्त पन्रर कनक थन्रा । - त्रय-पु राजनीति । - नामा (मन्)-पु॰ परवत । -भीति-स्रो राज्यकी रहा भीर शासनको एक करनका स्पाय बतामैबाभी मीति। -मीतिक-पि रामशीति-संबंधाः -मीरु-पु•पका सरका सणि। −पटोश्र~पु परवसा −पट्ट−पु यह जपराम । --पष्टिका-स्त्री शतको। --पति--पु सम्राद् । ∼परमी−न्या रामी । ∼पभ∽पु वरी सक्क, मुख्य सर्ग । -पद्मति-न्यो॰ राजनीतिः राज मार्थ। --पर्शी-न्दा प्रशादिनी करा। --पर्शाह--प्र काल प्याय । -पाछ-पुरामा; प्रतिका शासक गनर्गर । राज्यका रक्षक (बेसे सेना) । -पीलु-पु मधापीतः कृशः। - युद्य-पु रामकुमारः श्रुतिकः ण्ड वर्णसंकर बार्ति विसक्तो स्त्यप्ति स्त्रिय विद्या और कर्य यातासे कही काती है (पु) वही कारिका भागः तुष ग्रह । -पुत्रक-पु राजकुमार । -पुन्ना-सी॰ राजनावा जिस कीका पुत्र राजा हो। -पुश्चिका-की राज्युजारी। श्वेन बही। एक विविद्या शरादिः बोतक । —पुत्री—स्वो । राज्यस्थाः राजपृत बाह्यः जू€ः मानतीः क**ुना कर्द्र**ः रेजुकाः छर्ट्रेस्रः। --प्रर-प्रश राबाका नगर राजधानी। -प्रस्प-प्र राजक्रमेयारी। -पुष्प-पु कनकर्षपा मागकेसर। -पुष्पी-सी वनगटिकाः वानीः दश्यो पूछ (श्रीद्यामे) । -वृज्जित-ड नायाः । वि निसक्तं जीविकाका मध्य राजाद्ये और से दी। -पूज्य-तु सुवर्णः -पूल-तु [दि] राज पुत्रः (राजपुतामाक्षे शक्षित) । -पुतामा-प [हि] राजस्थाम । न्यासाद-पुर राजमयन । न्यिय-पु करणीका पून्य नाम प्यात्र । –प्रिया–सी साम षान, निक्कासिनी; काल थ्यात्र । −प्रेस्य−प् राज्ञ-कर्मशरी । -व्यविष्टाक-पु मारंगीका देह । -वृत्त-9 वराजाम।परवन सिर्जी।~कम्या∽मी जासन। ~कस्तु~ध च्डगुनर बटमरा ~बदर-पुर पेउँहो वरः ममकः व्यवकाः -बाबी-स्या [हि॰] राजवारिकाः राजाका कथान । —याद्वा-पु [दि] ४४० महर । -बीबी(जिन्)-वि राष्ट्रण्डा । -संदार-प्रश्न-कीय राजस्था संज्ञाना । -अन्द्र-दि राज्य का राजा मैं मर्किरशनेवाका। — भक्ति: – की॰ राज्य दाराज्ञाः कै प्रति ग्रेम । −थहिका−श्री दापुर्था रोमॉदी**र** सामक अवष्री र -धाइक-पु॰ वारिमाइक दा पर्यूण ब्रुव सर्थे^ल महारा भीया बुद्ध । ~भवन −९ राज त्वल प्रामाद । --भूष-पु राजाव । --भूष-पु राजकारीयन वेशनमीत्री मीदर । -भौगा-पु [वि] वद महीम थान । -मोग्य-तु विशीश तिवाला रामधीय बाना वानियो । प्रशेषक - वु राश्य ६ मान-यामके भारी ओरके साम्य (गीति शासके बारह राज-र्राण माने ग्ये हैं)। -मंदूब-द बदा मेहद ब्दं थीय।-सन्तपर -संग्री(जिन)-पुरु राजका समाप्त। -मरास-द राज्या -मरून-द (रि) राजा-का भारतः रंगानका यह बन्तुन-इसमी सहाह । -महिली-क्षे दहरा है। —माना(नृ)-की राज्यो सन्ता।

कसमीवन । रीतिक-प्र [र्ध•] प्रप्रोजन ३ रीतिका-लो॰ सि ी पीतलः बस्तेका भरम । रीम-सी॰ [बं•] बीस दस्ते कागमको गङ्काः । पीव संबंधिः तकारतः । शीर-सी॰ दे 'रीह । रीरी-सौ॰ [मं॰] पीतस । रीवमाँ-सी॰ [फा॰] रस्ती बोरी। रीपसञ्च-प॰ दे॰ 'रिप्यमङ । शीस-सी दे 'रिछ': * दाद: स्वर्ण वरावरी-दिवन सीम चदाव कीन तथ रीस करेंगो ~वीमहवाल Ì रीसवार--म॰ हि॰ हुद, दफा दीना। रीसा रीडा-को एक झारी वनरीया। शीक्ष-स्तर्भ कि देशाः गठिया । धंश-- प्रकारका वाला। रुब-प (सं•) पर जिसमें सिर न दो कर्नवा निना दाय-पाँचका सरीर । दंशिका-को [मं+] रणमृशि कवार्रका मैरानः विमृतिः रविकाः देवरी । र्देश्याना-स क्रि॰ पैरॉसे कवण्याना लेश्याना शैद बासा १ र्देश्वती श नहीं अरंपती, वसिष्टको पत्नी । र्देशमा-व कि वस्ता। मार्ग म विक्येते स्टना। चेंसना उक्ताना। रोज, रक्षाके किए काँटेशार लाहिबोंकी बाद रुपना भिरनाः किसी बाममें सगना । ६-प (सं रेपानि शान्त, बता वका गति। * अ 'अव' का मंदिल कर, और । बना- •प रोगी, घरोरके छोडे नारु † यह मानेदा भतुर्वाद्य एक वैसा । कमापास-न्यो यक तुर्गनित पाल। इस पासने तुरासित हेन । हप्रामा । न कि है 'स्थानः । सभावने-पुरु दरदशा बाढ, रोडा बालंड, बहु । रभाकी-भी वर्रश्चे शकी बत्ती, वसी। कों - स्त्री एक केड़ जिलको छान विश्ववाँ रेगार्टक काम भावी है। दर्द-सी बतासधी दोंदी बीएका मीनरी बूमा रेशान तुल (दीने पढ बामैपर कर कानी है और वह बाहर रिगार्व देशी है दिए हमें प्रवृत्ता क्षता है। रहे मीदी

स्त्री विकित्सा। सङ्ख्य-पु॰ वि 'स्क्य'] पुर्वा, बिट, छोटा प्या निर्म EIGH 1 इनसार-पुरु एस देव । रुक्म-प [सं॰] स्प्रेमा। कोहा। पत्राः नागरेश्वरः का प्रम । -बाहम-पु॰ होगाचार्य । हरमक्ती-सी॰ [मं] एस छेर अंप्रहमाका। द्यमांगप्र-वि [एं॰] शोनेके बाब्दंद प्रयनेवासा। पुष्क वंगरङ्ख्या राजा। ध्वमांज्ञनी-नी॰ एद कृतदार दीवा। पविशेष वर्ष (क्रे)। रुविमण-सी० दे० '६(वमा) । रुक्तिमाणी-न्त्री [मं] कृष्णकी सबस परनी औ रिस्में दरमी(दिमम्)-व [८] मीप्पदश और प्रम बारीय कर तरहकी बीली में लने रेरीकी वर्ष अवधी समझी आती है)। दि॰ रहें अधान महस्र, मुकादस दु कृष्य । (कोर थीत) : - बार-वि तिसमें वर्ष मरी हो। शुक रुझ-दि [सं] जो रिनम्प विद्या म ही हसा। -का गाला-१६६ गाने ला सच्छ कोनक । -की सरक्ष मीरम कटीश म्सारकवर सावर । यु पूछ । त्मया-भोजनाः वदुतः धारना-वीक्ष्माः वसाव-वर्गः रभता-नी [मं] स्मारत मराचे। बरना गाहिको देना ।--ही तरह पुपना-मृद मारना हत्य-व जुर बास- वस्या^लका समाममें स्ववहत हरू। -चडुका-पु॰ वंतरः भून (वेडपर रहनदाका) । क्त-पुरु [का] थेइरान जुग्गा गाल क्योंका आपूर्ति थेडरेका मन्द्र हरत्यीः मुखाइतिने मक्द दीनेदासा भावः ध्यामः जारहा संया हंद बहिएत विद्यान पर्धा श्री रोमन केर्दश शिर्तनी एकमा (बाबास)। इष्ट-इष्ट वाबीवह की बड़ा से जाता है। शतरंक्या वस मीहरा।

प्रात्ता !-सा-६र्द≩ समान जरम । रक्ता~स क्रि धमना उधरनाः जागं स वण्याः वादीने सांचा दोनाः भागा दीए। बहुनाः रंग दोना (साविदी रिना बाम क्या है); इ.म. हुरना (वाहबा क्यूना);

कर-उद्दर उद्दरकर । **रुक्रमं**गद॰-पु॰ दे 'दरमांग्स । रुकर्मबनी-खी॰ सवाबटडे किए बागमें रुपाया बाबेबासा एक पीचाः स्तर्गाधनीका कुछ । रुक्तिमती-सी॰ हे 'इक्सिजी । रुक्शा - प॰ एक तरहकी ईस । रुक्वाना न्स कि रोक्नेका काम करामा । रकाव-प॰ नगरीय, अन्दाया महावरीय सम्बा सांमन । रुकावर-मी॰ रोक गया । रुकुम≉~पुदे 'स्वम । रुक्रमी+-पु॰ दे॰ 'स्म्मी । दक (व)-सी [र्ग+] शोमा, दांति। इच्छा। भागंद । रक (व) - सी [सं] दे॰ 'स्वा'!-(क) प्रतिक्रिया-

जनपना हुँटी, कर्वदारकी औरमें महाजनकी किया हुआ विमगीका यक भारे । दि अमग्रीता । -कारक-पुर तुनार ।-केश-त विदर्भरात मीध्यक्षका प्रथ ।-पाका च्या प्रका थरा विसकी सहावतासे गहने आदि वहने बात है। -प्र-पु॰ एक मगर, प्रराणातसार गरहका वासरवान (-रथ-पु शोगावार्यः मीध्मकता पुत्रः शहर

रुविम-तु [मं] रम्बक और हैरम्बवर्षके बीच रिवन

नरेश मी मसकी पुश्री थी (हमुका विवास शिक्स सामें निधिन वा पर कृष्णने ६रम बर दे हमने दिनाह दिया)। रविमधीका बार्ड (श्वम कुफाबा भारी मुद्र इसा था विसमें पराजित होतर यह अपने मन्त्में सकी यका और इमरा नगर बसाबर वहीं रहमें लगा)। -(हिस)इए,-बारण- दारी(रिम्) -सिव-प् वनरेव। -शासन-

-मात्र-पु॰ नाममात्रक्ष शता । -सानुष-पु राज -मार्ग-पु॰ सुदव सहद्र, कर्मगारीः राजनंती । रामपर। -माप-पुन्ही बर्द, मीक मार ! -माध्य-पु॰ वह सेत जो हरह नोनेदे नीम्य हो। -मुनू-पु॰ सनदके रामधी मूँग। "सुद्या" स्त्री राजाई गांगदी वा सरकारी मुद्दर। -मुनि-४० राजवि। -सूर्गोक-पु वस्यामें दिवा जानेवाला व्या मिन रस ! - यहमा-(श्मन्)-प संवर्गन, त्रवेदिक : -बहमी(विमन)-वि स्वयरोगी । -याम-पु॰ राजाकी सवारी। राजाका जुन्छ सवारी निकासभा पानको । -बीरा-१० बीय-द्यासीक एक योग, महायदोगः दिग्रीके बन्मके समय प्रदेखा ऐसा एकिएल जिएके प्रमानमे वसके राजा वा रामाने समाम हो जानेकी संबाधना रहती है। ऋदेग्य-विश्राज्ञाने उपयुक्तायु यंदना --(श-४० चांदी। -रम-पु रामका २४। -शश-पु॰ कुनरा चंद्रगाः। समार्। -राजबर-पु॰ वद रहीका (हाद प्रवासिमें मानेपी): राजाविरातः। - नाजेश्वरी-स्री वन सहर-विधानींमेंने एकः महारामी । -शीत-शी॰ बौसा । नशेग~पु॰ महाध्य योग; श्चय रोत । —हाशय-पु॰ वे यिद निनके होनेमें मनुष्य राजा होता है (सामद्विक)। -सदम(म्)-पु॰ रावश्वितः। -स्वमा(वसम्)- अतिहर । वि॰ राजक्यगञ्जक (पुरुष) । -सहमी-की राजगी, राजनैयस श्रामाध्ये शक्ति और शोगा। -र्धस-त राजस्ता हरू। -वंदय+दि राज्येत्रकः राजादे कुकर्मे बरस्य । च शहाबा बंधव । -वर्षम-प्र राजशक्तिः राजस्य । -बन्में(स्मेन्)-प्र राज् मार्गा वही भीड़ी शहरा इक्ष राज ! -- बला-सी॰ नेव प्रशारिको र -पशुभ-दु० वहा मात्रा विरीक्षा निर्मात पर्वेदी देश यह रशीरभ । नि राजाका त्रिव । न्यती-स्रो० व्यक्तियो नेप । -यमति-स्री राजवर्ष । -प्रारमी-सी सम्बिधेन । नवाइ-पुरु धोना । नवाद्य लब्द राजाका दावी । लिक्कियल्यु॰ संपूर्ण कातिका ra रात् । -विद्या-को॰ राजमीति । -विज्ञीह-दि र बहोर नगारत । -विकोडी(डिक)-वि रायदोह बरभेशमा शारी ! -विमोर्-पु॰ यक ताल (रंदीत) । -बीबी(बिन)-हि सवरंहदा।-धीधी-स्रो राज-मार्ग । - पृत्त-पुर अयकत्त्वा दियक द्या धरकृत ब्रमा दर्भेमाद बृद्ध । - पैछ-बु॰ राज्यने दे दहाँ रहने-बाका नेवा पुरात चिक्तिक। न्हाय-पु बरमत ! -शबर-पु॰ रिक्सा महानी । -शाक-पु ;-शाव निका-भी॰ वसुना, वालुक ३ -चान्ति-पु॰ महोन श्चापित कारण राजभेगा - सिंही-भी भीती, गूरे दार क्षेत्र । -ग्राष्ट्र-५ वह वही मानिक करत होता प्राष्ट्र १ -- अ - पुरुष स्थान १ - श्रीग-पुरु राज्याताः माग्र मण्डी । नमी-मी शब्दा बेला राजमी द्योगा । -संबद्-स्वी० शहरणः दश्वतः अहारामदः वर्षानंबरम् जिसमे राजा हो र न्यकानशैक राज्यक्ति। शारण्य (बा.)। देशनिदेशको यमाः अस्तर्भे अरप रेक्टरे किर रहारित याहरू-दावावा : -गकर-प्रश **दे राजदश्र । −शसा−को हरण्ड राजनी**णमाः∫

राजानीकी समा। —समाज-पु राज्यामाः रामगरकीः राजगाव । -सर्च-पु॰ वस बना साँव, मुझ्यमीती। -सर्थेप-पु॰ राई । -सामुख-इ राजार । -गारम -पु॰ मीर । -सिंह-पु॰ श्रेष्ठ राजा।-मिरी०-न्ती देव राजभी हं -सूच-पुर बद्दशिय विमे करावे से किमा राजाकी 'समार्' करकानेफा शरिक र प्राप्त हो जाना है। -सुविक-वि राजगुर यक्ष्मारेथे। -स्ट्रंप -पुरु वीहा, अथ । -श्रांब-पुरु वह प्रति । -श्याव-त राजपुरामा । -र्ष-पु॰ राजाका भेंश भूमि साहि का राजाकी दिवा जानेकाका कर रायधन । – स्थापी-(सिन्)-पु रिम्यु । -ईस-पु ग्रेना ग्री (स्की भोज और पैर काल होते हैं): शांधह यमोहर राच और भी रागर मेक्से थवा वद स्वर राग । राज-पुराव्य द्यानित देशः वर्गः। प्रवादानवरो व्यवस्थाः, शाममाः करियारकाक (बारशारीका राज)ः श्रयानः, पुरा अविकारा सम्बद्धारवत राजमे निकासी है। -कात्र-तु• राज्यसर्थ व्यवस्था । न्यार-तु शास्त्र रावर्षेक्रापना देश जनपर (रद्ध शत्राः राध्यदे सर्पान) । श् - देना-शाममार देना ६ - वर बैग्ना-शामाः, राजरीय मधिकार पाना । शक्त-बु सकाम बमानेवाका, धर्व । नशीर-बु सक्षा वनानेवन्ता। -गीरी-स्थे राज्यीरका साम दा १८। हाल – च ॰ (चा०) रहत्य भेर शत दात्र । राज्ञक−रिश् [र्न] दोजिसल्। यमधनेरान्त्र । धार्था भगरा राजा ह राजकीय-दि॰ [मे॰] शक्षा या शास्त्रम भेटर रखनेशका । राष्ट्रयी-को शहस्य १४३ राजगोपाकाचारी(चत्रवर्ग)-९ अम १८०५ स्थामन शीरपर क्यायरमें शामिक १९१९ दे धेन सामार्थ ११: स्ट्रान्टे सुरक् संबी १ १७-१९१६ प्रक्ष आर. तीर वार्थर जगरम १९४८ ५०; युन बद्रमादे सुपर मंत्री १९५२मे १ ५४ सर्र रहे । शकत-दि [मंग] चेरीशा भौते (दिगा हु। चेरी । राजना−ती॰ राजन्य-पु (गै॰) राजादा मान बा दर्प शक्द । राञ्चता+—च विः रिधानमाः रहतः ग्रीवित होता । राजम्ब-इ [तं] राज्या राज्या ग्रीमा विरद्धां से हे -बंग-५० राधित सम्बद्ध (दीमार्च)। शक्रवि~१ [तं+] राष्ट्ररा कविष्यममें हारश्च वर्षा राज्ञस-६० [धं] रजांतुसमे बन्छ । ५ करेड केना गर्द । सञ्जयित्र-वि विशेष्ट्रेन्ट्रेन्ट्रेन्ट्रेन्ट्रेन्ट्र स्टब्स् राज्यी-रि राशभेक्षा राहादे बीम्दर्श भी [बर्ग रहोत्रवर्ग । राजीगण-पुर्व [मं] राश्य मारदा भरेतन । शामा(अप्)-पु [तक] हिर्ग देश शत्य अर्थना श्रमक कीर जिलासक मरेखा करेंगरीत रशाबी मध्या ग्राम्यती अक्कार कर अक्षांदा करो। दिया देवतार (श्रामा रेड शक्तिना शिक्षेत्राज्यसम्प श्वाद्यान्त्री [श्रीत] राजाती वाका र

श• तरफ, थार। साममे ।

रुखदार-पु (का] शांत्रारमाथ (बरता हुआ)।

राष्ट्रसामा-पु (पा) विदार्थके समय दिया वानेवासा थन विद्रार्थः। दलसर्वी-वि• विमे भूडी गिली हो । मी विदर्श (एक-हिमकी), विदार्रके शमय विदा आजेवाला भन, विदार्ष । दशसार−पु [फा] क्रुपोल, गाल । रुनाई की स्थापन, रुखा शीनेकी किया या आया प्राप्तताः नगरीनती क्षीक्षका स्वागः व्यवशास्त्री ककीरता । रुजान-मा• हे॰ 'स्थामी'। क्कानां - भ कि रुदा होता विक्रमां व रहनाः धक्रमा ≀स कि ः श्ली तरक ग्य करना क्याना । इत्यानी−सी नदर्शका यक शीवार (विससे सक्ता क्षेत्रर, कारते और क्समें सब करत है); संगतराओंका राँधीः देशीका पानी चकानेका श्रीजार । रुपाबर, रुक्ताइर-को॰ न्याई। रुक्तिता≉-स्त्री क्रोथ करवेगकी शायिकाः मानवती । करित्रपार्ग - स्री पेड़ीसे इसी बगीन (दलरीरे –दी अना द्वार कता क्षेत्राः धोया पीवा र स्वर्तिहा-वि स्वान्ता, को बक्षार्व किये हो। [को॰ 'रवांको' ।] काना!-प्रश्नका एक कारीग । वशिवतं-वि वै रोग्छ । द्यान-वि+ [सं+] बीमार, अत्वरका सका क्रमा देशा हुदा हुना । हर्ग्-'स्बु'का समासमन क्या --हाइ-ड (सं) ज्यर विशेष समियात अबर (बह गीत विम रहता है। रोगी क्याना है। व्यक्तिकता जकन धरमें वर्षः व्यासः देश करती है, दुःसाध्य) । -अय-पु॰ (श्रिका सम। −मेक्स−यु रोमको दना। रुग्मी(मिन्) - इ [मं] अनुद्दीपक्र वक्र वर्तन । क्षा - स्त्री है । 'स्वि' ! -बाम-वि जनते, जन्हा क्यनेशाचा थीरन ! -क्च०-ज सनीदीनपूर्वक । क्षकानी [थं] स्वाधि जारकेशमा वनिकर। प्र बीकीर धनाः वीशेका साम शहनाः मधकः शाकाः समीतारः कामा समका निष्यः सीनेका तक प्राचीन सिक्स बावदिश्रंमा रोक्सा यांगस्य ह्रव्या दिशीरा मीन्। बरेंगा बन्तरा रहिण विद्याः यक तरहकी प्रमारत जिमवे तीग और छाता हो भीर वत्तरकी मीर बंद ही ह र सन्तर-अन् फि॰ पियः अन्द्रतः साम पहनाः वर्गद सामा । सुद्धा-स्ती [संक] होति सकामा वक्तमा गोमा सुद्दत्ताः चिरियो(मैगा तीवा तुकत्रत मारि)का शेलमा ! रासि-व [सं] एक प्रवासीत शीवन सुनिके दिता। श्री इच्छा। अनुरामा मन्ति, यमरा क्रीतिः क्रिमा धीमा शुरुता-'ग्रीमत बददशी वनि वमी-रामका मूरा सानेशे इण्छा स्या त्योरोचमा काविगमना यह प्रकार । -कर-दि० भिय अच्छा स्थानेसन्छा सन्दा रवादिक १ - कारक- विक वृत्ति वैदा करवेवाकाः स्वादिक । दशा-तु [न] बानरमः विदियोदा दीलमाः स्वति प्राप्तः।

-कारी(रिन्)-वि सस्तादु स्वारिका मिन बनी-इस विकारक। -धाम(म्)-पु स्वं। -इस-रुज़िसव-सी [म] ज़ुड़ी, वावीकः परनानगी भाषा यु मासवाती । - मर्सा (तृ)-पुण स्वा स्वामी। मानिस । रजाजका विदार्थ, प्रत्यान, रवागगी: गुद्दकत, अवसाध । −वर्बक−वि कथि बड़ाने, देश बर्देशका मुख वहानेवासा (इचित्र∽नि॰ [सं॰] श्रीध्वतः समस्याः। तुर रच्छाः मीठा पशार्थ । दियता∽सी॰ सि } क्षि क्षेत्रा/ शक्कताः होया संबरताः अनुरामा **म्यः स्ट्रंट असिक्ष्मतीका एक भेर**ा रुपिमतो – सा॰ (सं॰) देवरोको माता क्रपन्तो मानी। रमनेनकी प्रशी। क्चिर-वि॰ (सं॰) चमधीका सुंदर, मनोबरा मीठा अपुरा मूल कानेवाका। हा बुक्ताः वैधारः बुंहमः क्रीवाः -केश-प्र व्यापिसला -श्रीत-प्रवासका निवारम । —श्रीगर्थे – तु • वह बोविसस्य । द्धिराज्ञम−९ (चे॰) सहित्रन, शीमांत्रन । रुचिरा~मी [र्च] देशरा मुना कीया ग्या वर्णहरू यक माणिक छोटा यक मधी है क्चिराई॰–वा० संरका, मनेप्ररता। क्षक्रिया-पु॰ (सं) मधुर भीका धायनरार्थ । वि॰ विसे वातेची रच्छा हो। रची-स्वी (संवीदे 'सवि'। रुक्त = - वि करीर (न्यवहारमें)। अपित अन्या एरा। पुरु दे 'स्वा' । रुदय-दि (तं०) वर्गर कामेशका धनिसरा स्वसूत श्चर । प्र स्थामी शक्ति जनवन वाना श्रेंचा नम्ब। परिचारक बस्ता करक इसे ! "करू - प्र तहन मीत । हरू~व [त•] रीगः वादः कदः माँगः नमदेखे यहा दक प्राचीन बाजा ! -प्रस्त-विश रोगी, विश्व कोर्य चीमारी को । ह्या-स्थि [संव] रीया वसः भेदा भंगः भवावा कीरा ~कर्~ि रीमधारमः । तु० समस्य नमः न्नावि । -सष्ट'-पु॰ स**द्व पू**ण पश्चव । क्षप्रायक्र-विश्व विशेष वर करनेवाका । स्वार्य-वि सिन्दे रागने बोदित रागी। राजानी ननी शिंश्री रीम धीवाका समक्र । क्ष्मी • -- बि॰ रीगी, बीमार । क्ष्यू—वि (ल॰ 'रज्जा') समृत्य /: पुविद्या और वी कारता गुकाव देशा । क्षाना=-== कि मरमा पुत्रमा (पात्र आरिका)। है॰ 'अवहर्ता_व 'वत्रहरा । श्वतनी−नी प‰ धोरी विदियाः; हर (व)-मी॰ [र्ह•] मीच । शरक-प औप शरणा र श्रद्धशा - तक कि वेश किया । विश् क्षाप्ती संवति-शका है हत्रामा-स क्रि॰ नाराज, भर्रनप्त बरमा ! रमा-मी मि । शरश्रती अस्ति १४ शामा । क्किन्-दि [मे•] पश्चा शनदारता शन्य करता हुना ।

```
राजातम-पु॰ [सं॰] पिराष, विराधीका दश्च।
राज्ञास्यवर्सक-पु॰ [सं ] राजावर्ष, काजवर्र पत्वर ।
राबादम-पु॰ [में ] किरमी। निरीबी। टेमू।
राजादनी-सो॰ [धं ] दिएनी।
राजाहि-पु[र्भ] यहा अदरका यक पहाए ।
राजाधिकारी(रिन्), राजाधिकृत-पु [एँ॰] न्यावाधीश
 विचारपतिः राजक्रमेवारी ।
राजाधिराज-पु॰ [सं ] राजानीका राजा समाद ।
राजाधिक्यन-पर सि ] वह नगर वहाँ राजाका मनन हो,
 राजवानी ।
राजाच्या(ध्यम्)−पु[सं•] राजमार्ग ।
राजामक-पु [सं] छोटा राजा सामेत ।
राजाच-प्र [सं] राजाका अकः यक चान पीर्य-
  245 1
 राजामियोग-९ [मं ] राजाका प्रवासे वरूपूर्वक कोर्र
  काम केता ।
 राजामियेक-प्र [संग] राज्यतिहरू।
 राजाल-दु [सं] छोटी गुठकी अधिक गृहेवाका वहा
  बास, राजपुरु रसराग्र ।
 राजान्छ-पु॰ [मं ] समस्रेतः।
 राजार्थ-प॰ [सं॰] सफेर आह ।
 राजाहें-प [सं ] कपूर; अयर; एक पान राजाक नामुन
   का पेत्र । वि राजाके बीग्द ।
 राजाहीम-प सिंगी राजा द्वारा प्रश्च वरता वनदार ।
 राजामाधु−५ राजासायू-स्त्री [मं•] नहा सीमा
   बद्द ।
  राजालुक-पु [सं] यूनी।
  राजावर्त-प [सं] एक बपरान कामधर्म।
  राजासन-इ [सं ] सिंदासन तकतः।
  राजासनी-सी [सं] वयम शाम राजेकी चीकी वा
   पीदा ।
  राजाहि-प [मंग] दुर्नेश सीप।
  शाबि-छो॰ [सं ] पंकि बनारा रेखा सबीरा शहे।
   ड ेलके पीत भागके तथ । -क्सा-को सीता
   कदरी ।
  राजिक-वि॰ [म ] री वी देनेवामा वरवरदिगार ।
   राजिका~नी [सं] पंकि अंगीः नगरीः रेगाः कासी
    भरसी। म.शुकाः बहगूल्या छोरी पुनिवीका रीग (बूप
    क्याने समाके तावन होता है)। एक परिमाण। - किस-
    इ. सरसोंके दाने जैसी विश्वित्रों तका एक साँच ।
   राजित-वि [सं ] दोशित दौनायमानः वरश्वित ।
   राजिमान्(मन्)-प्र [र्धन] एक सॉब।
   शामिल-५ [मं•] एक विषयीन सर्वे । -फका-स्वी
    परवक्त बन्धते ।
   राजिष्ण-प कमका
   राजी-की [मं ] कनार भेगी कागी गुरखें। राई।
     -क्स-दु पर्वतः।
    राजी॰-श्री रवामंत्री।
   राष्ट्री-दि [ल ] अनुकृत सहसन्ता सन्तना भौरीन-
     स्या तुनीर नेपुर । -नामा-प्र वारी-प्रविद्यारीके वास्त्रीपकाच-पु [ग्रं॰] राजविद्य ।
```

मतीनवरी मुक्तमा छठाने, वश्यित निर्णय देशे हे किय दिवा हुमा हैसा। शजीष−पु• [सं] कमक; मील कमक; एक प्रकारका सारसः रेगा मसको। एक प्रश्नारका मृगः द्वाची । वि• भारी दारः राजवृत्तिमे निर्माद करनेग्ना । ~गम-प्र• एक मात्रिक संद, मास्री । राजीविमी-की सि॰ो कम्भिनी । राजक-त (र्ध•) एक प्रतिका प्रशंध करनेवाला राजकर्म-पारी (मीर्य)। राह्यदरु⊸द्र (सं∘) यक क्छ । राबेंद्र-५० (सं] रागाभिराजः एक प्रतान रामाति । रार्वेद्रमसाद∽द स्वर्धन भारतके मधम राष्ट्रपतिः धन्म रे दिसंबर, १८८४, कांग्रेसके महामंत्री १९९१: कांग्रेसके मप्पायु १९३४ तथा १९३९। बेंद्रके ग्रायमंत्री १९४७: भारतीय गयतंत्रके राष्ट्रपति १९५० से । राज्ञंप~प्र॰ [सं] परवक्त । राजेश्वर-प [मं] महाराज, राजाभिराज, समार्। राजप्ट−९ (र्थ•) राजमीग्यः राजाच चानः क्षाक प्यात्र । राजद्या नहीं [र्व] केंग्रा विज्यानर । राओपकरम∽पु [र्थ•] शक्तिद (श्रंदा) निमान भीवत इ)। राजोपजीवी(बिन)-१० (सं) राजकर्मपारीः राजाको रेवा करके बोविका अर्थन करनेवामा ध्यक्ति । राजीपसेवी(विन्)-त [र्स•] राजाका सेवज । राज्ञी-सी॰ [सं] रामी। स्वेडी पत्ती संदा (मत्स्व प्र•); भीक दुखा काँसा । राज्य-प्र• (सं) चासना एक राजा वा राज्य-प्रवृतिका देश (जैक्षे-दरान कल आदि)। मंदल शहा देश विषय । -क्टॉ (र्च) - प्र सासक अविकारी राजा । ~च्यल-दि॰ रावसिंदासमधे दरावा हवा राज्यभ्रष्ट (राजा)।-च्युति-को राजाका राजीवहासन राज्या-भिकारसे वेशित किया जाना । - संत्र-पु॰ शासनका दंग, प्रमाधी पद्यति । - जूक्य-तु राजतिनक्का राप-करण सामग्री। -प्ररा-सी राज्यका शासनमार-छासनकी विभ्नेशाधे। -अव-वि॰ राज्य देनेवाना। -भंग-व• राग्यका नाश यस । -सक्सी-सोक निवयधीरय राज्यवेगय। -छोम-पुरावदा होन शान्यप्राप्तिकी नार्याक्षाः वारी सीन । -श्यवस्था-सी शक्यका निषम मीडि विभाग कानुम । "स्थाधी-(वित्र)-पश्चासक राजा। राज्यका-सी [सं] सर्वा । राज्यांग-प्र [मं] महति राज्यके सायक लेग (राजा लमास्य राज् युर्गे कीय, यक्त सहयू)। राज्याभिषिक-दि [मं] जिल्हा राजनिकद वा राज्या-विवेद दमा हो ।

राज्यामियेक-इ [सं] राज्यारोहण राज्यारोग्र बैटामे

की दीनि (वेदमंत्रमें पवित्र तीवादे जल और और विवास

व्यतिषक किया वाता है) राजनूत बर है वा दाशाका

हीर्वजनानि अधिक ।

118* ∗ली दे 'सतु'। रतमा-न [न॰] बोहरा दरना मर्तना वस्ता हर मताकदर, पाया, प्रविधामा सीती श्रीना। -वार- श्रीक, कैंचे इरकेश प्रतिक्रित । —िश्चनाम— वि॰ पत्र, क्तवा पद्दवाननेवाका । —शिनासी--न्यो॰ क्तवा पर्वानना । एदंतिका−सी [सं] दे 'रुपंती। रुरंती-सी [सं] एक छारा पीवा, संबोबनी यहा मोधी। विश्वा रीवी हुई। रत्य−प [सं•} वचाः कृषाः भुगो । इदन-पुरोदन, रोना विकाय क्षेत्रम । ध्यसम्बद्धाः । इदिल-दि [सं] रोवा दुआ। रोता हुआ। जो रो रहा हो । पुण्डरन इत्या **एड्रमां - पुश्रगद**निया जान । स्टुवारी ∽पु चायल-धाएक संद । इस्ट्रे-दि [एं॰] रोक्षा हुमा येरा हुमा। रका हुमा। सुँगा हुआर जिल्ली यदि रोज की गयी की। -कंड-वि बिसका गढ़ा देंच, फोस गया वो और बीकर्नमें असमर्थ हो । -सूच-पु॰ सूबक्ष्य पोहाकेशाथ पैशाव बतरना । स्बद्ध-दुं[सु) नमद्र। रह-पु [सं] एक प्रकारके गणेनता (रनको संवया ग्यारह मानी जाती है-जजैब्दाय, अदिलयन, खडा विश्वकृषद्द बहुक्दपु ध्रवेषक, लगराजित क्वाकृषि श्रंष्ट कस्टी और रैवत । इसकी स्टब्सि स्टिमें अस्तर अद्यादे मुख्ये मानी बादी है। वेदमें बहु श्रम्द करिन निज बरूप, पुत्रा साम आदिके किए हो ब्बबहरा है)। स्वारह की संख्याः शिवका कप-विक्रेषः विश्ववस्थाना प्रमा एक प्रकारका बाणा आक, मतारा रीत्र वसा माली नवात्र । वि रोनेवामा अदल क्षरमेवालाः विकानिवालाः भवंदरः । -कमक−५ बदाधा --ककरा-५ महरातिके समब प्रदोगमें सावा बानेवाला बन्छ । -काक्षी-स्त बुगाँदी पक निरोप सृति । − बुंड− पुन्क सोर्थ (जलमें)। − कोदि-मी एक प्राचीन शीर्थ। -शण-प शिवक मनुषर (श्तद्धे संस्था तीम दरीह मानी वाली है। ये योगगापनाद किम दूर दरने है)। -गर्म-पु अधिन। -ब-इ पारा। -बडा-सी रैमरमूह_ा सुरश हरा। श्रीका तीम-बार बाब कैंचा एक बीवा (तसके वस संज्ञा) भार वर्षे और कपर समग्र धारे धान बात है फल साल रवास काम इरवरीगामै सपकारक) शपका बदाशी मैत्रपुष्या । ~तत्रय-मु शीसरे कृष्य (अन इरिवेड) । —तास-दु मृग्नदा यद तात । —तुज्ञ~ [दिंग] मु कासिदेव । - पति - मु शिव । - पत्नी -सी दुर्गाः सक्तीः −दीठ−पु एक तीर्थ(तं)। -प्रम-त बारहर्वे मनु रूमावशि । -प्रमोक्स-प् पर स्थाम अहाँने द्विपने विपुत् राष्ट्रसप्त बाजवर्श की थी। – प्रिया – नौ पार्वतीः हरें। – भूमि – सी रमधाम मरपरा एक विदेश शृथि (भ्दी) । -बज्र-पु रहटे बरेश्वन दिवा जानेवाचा यह। -बासल-पु नेरव-नेरवेद संबाहते कुछ एक संविद संव । -शोहम-

पु॰ सीमा । –शेमा-सी॰ कार्तिकेयकी यक मालुका। ~ससा~की॰ बहुजटा पीपा। ~सोक-पु वह सीद वहाँ क्षित्र सर्वोक्त वास माना वाता है। −वर-पु एक प्राचीन सीर्थ । -वहन-पु॰ धिवके पाँच मुँहः पॉक्की संस्था । ∽विंशति∽की रहनोसी, प्रमनादि ६० वर्षोमेस वंतिम वीस साथ । —वीग्य – स्तो एक तरहस्य वीवा । –सावर्णि–वु॰ वारवर्षे मनु ! –सुंव्री–स्तो• देशीकी यक सूर्ति ! — सू⊶की ग्यारइ पुर्वोकी जननी ! -स्वर्ग-५० रहकोड ।-हिमार घ-५ हिमाकवधे एक बोटी। - हृत्य-पु एक क्पनिएर्। रुव्यको – पु • रदाश । रज्ञट-प् [र्ध•] काम्पालकार प्रथके रचनिया, मह बामक-कं पुक, नज्ञमङ् श्रातानद् । रुद्रश्य-पु । (५] बहरू। याथ वा वर्ग, बहरा। कन्नर्जती −सी॰ एक वर्गीदवि । रुद्रवान्(वत्)−वि [शं•] रद्रयमेंसे शुक्त । दु•सोम इंद्रा भग्नि । क्ष्मा∽सी (सं∘) क्ष्मया पीनाः विद्यम लखा एक र्वबद्ध्य । रहाकीड-पु॰ (र्थ•) दमसाम भरपः। रुद्राध्य−५० (रं•) एक वहा क्या विसारे दातीकी मानग वापनेके किए परम एक्टिमानी बाती है भीर शैकोंने विसका बहुत भारत है। कि साम **मॉ**रॉबिसा। हद्वाची−की [सं] सहपत्नी पार्नतीः स£त्रटा नामक कता । रुद्वारि−पुर्सि]कामरेवा नदाबास-५ [मं] शिवका वासरवान-काशी, दैनाम, रमद्यान । रुद्धिय-वि [मं॰] रद्र-संबंधीः बहुद्धाः भवासकः। पुरु प्रमञ्जा आनंद । रही−सी [पं]सद्शीया≀ रहोत्रनिपर्-सी [मं] वक् वर्गनवर्। दशोपरथ-पु [नंग] एक पर्नत । श्चीर−9्र[सं]रक्त, सून वड्डानान वर्षः संगक्त शहः वस गाँदै न्विराह्यानि सा**न राज्या**। ~गुरुम-पु॰ यक की रीग बिसमें देवी शुरू वाह बीदा और गानात्सा गूमना दे जिसने मर्मका मी अस ही जाता दै। –पापी(पिन्)-दि गुन पीनेशका । स्रि 'बर्दिरवाविमी ।] प्र राग्रम : -पित्त-प्र रक्तरितः भवनीर रविरामय । -प्लीहा(हन्)-न एक तरहा<u>र</u>ी विषयो । -बृदिद्शाह-पु रोगविशेष (रक्तडी व्यवस्थाने मुनोंसा निवलमा शहर और ऑगका रंग ताँवेसा ही नामा मेंहमें रचकी श्रंद काना) ! रुपिरान्द्र-वि [1] गुन्नमे श्रीमा दुवा; रचना बाल । द्धिराण्य-त [में] एक स्वरत्रमणि (करत है, होरा रतीया परिचाम है) । रभिरामन~तु [मं०] संगक्तको बळ गति (स्या) । रुधिरामय∽दु[म] पद (गन, रचनित्तः। दिवसम्बन्द [मं] रायुक्त १ वि द्वित् दोने, द्वित्मे

ब्रीनेशना ।

राटि-पु (सं•) पर्श । न्याँ • पुद्र । राष्ट्रस-पु॰ सक्का, काहा मादि शीलनेका वदा शराज् । राद्(म्)-पु [सं] राजाः शरपार श्रेष पुरत (वीशिक राष्ट्री दे भंतमें इस्ता प्रदीय होता है)। शहरूप राज्या राजा । राज्यर • - पु • दे • राकोर । राठीर−पुरावरवानकाण्य प्रसिद्ध शाव∫का रावपूरीकी यक अपनाति । राष्ट्र-दि निकम्माः शैन नीमा कावर धगीवा । राबा-पु॰ सरसी अग्रही माहिन्दी एक बास शारी। शद−दि दे॰ टाव । † न्दे।॰ हार झगड़ा । राष्ट्रा-म्बी • [सं•] एक पुरीब्द्रा नाम (शा): बांति चयह । शहि−पु उत्तरीय नंग (घा)। शवी—ली॰ एक मोश यास ह शण-दु॰ [मं+] पत्ता मोरदा दुँछ। राजा-पु॰ राजा (राजपुतामाढे क्रष्ट राजाबी तथा मेचान्द्र सरदारीके किए प्रवक्ती । राजिका-न्यो [मं+] सनाम । राष्ट्र-सी॰ संध्वाम सर्वरेटब्डा समय वर सर्वेडा प्रचाय मही भिन्नता राति रवनी। ~हिल-अ॰ नडाः सर्वेडाः -राजा-पु॰ बल्धा -रामी-सो व्य धीवा और बनका कुल जो शतमें कुलना है, इबनोनपा है रातची रानशी - भी रान। राससाग-अश्रेष अनुरक्त दोना सुन्य दोनाः रेंबा भाना। बाद ही जाना। नाल रंगन रैना बाना ह राता≠=दि रगा द्वभार काच सुध्य, किशीओ हिंदी तक । रावि==मा•दे राव'!=चर=५ राहम निराधर। रातिय-पु । म] प्रामीश दैनिक माशसः शवियेका माथ (निरोधनः वयः) । राह्मस−९ दे 'राह्रक । रातिस-५ सुनारके किर शांतिकर वक होग कांच बीहा? रामक-दि [मं] राकिनांश्यो । पु चेदवादे यर वर्षत्रर रहनेशना । राक्षिपर-पि [तं] राजमें पृश्वेषात्रा म राधन निधाषर । राचिरिय-भ [ध+] रात्र रिन । शक्ति-मी [र्ग] रात निशा रच्यो । -वर -वार-थ भरता सपूर । नवा,-वाही(दिन्) नि , प्र० देव राष्ट्रियर १ - अ-दुश्हार आर्थि । - अल-दु श्रीतः । -जनार-५० राजने जाएना का पहरा देना। इन्हा विक्र राज्ये जारता १६नेशाचा । - व्यक्त स्वयव । -तियि-भी रृष्ट्र देशिक -बाय-पु यहवा व -बाहाब-व गुर्व (-पारशाला-भी: वह वाहराजा बर्त रागमें र संक्षेत्र स्टराश हो। चनुष्यच्यु रागवे शिक्रोतिक वित्र करें रूबक -शह-में शहरी करें। -मन्द-त व सार्कपुर १-१श -श्यक्ष-त प्रशी -शाग-पु अनेता ३ -बाग्(श)-पुत्र अंदर,श रात्री रात्रीका काता । -विगाम-विगाम-इन शिक्षात्र, प्रधानः प्राप्तदः न । ~िक्कावरासी(सिन्) न

चक्या । -वेद -यदी(दिन्)-तुः शुरमा । -साम(म्)-पु: साम विदेश । -मृत्य-पु कारी का यह स्कार्यो समाति वर्गन एक गुन् । -शाम-द्र• इद्रह । -हिंदर-द्र (रागधीर) ५० द्रास प्रदरी रागर्ने भरत समानेताला । राजिक-वि॰ [तं] दे 'रावक ; कुछ राजीके किर पर्याप्त । राधिका-गी॰ [मं] राजि । राम्बंध-रि वि रे लोगीस रोपेर राज्य देत स्था में भनमर्थ । राम्बर-ड॰ वि ी राजमा चीर (राब-पु॰ [स] दिवसीको कपदा गारमीका फरिस्ता । राख-वि॰ मिं] राँचा द्रमा। ब्रीट, मिद्र विदा दुमा। परा किया द्रभा । रास्त्रीत-त (नं) सिश्रीत। राज्य-स्रो [सं०] निश्चि गायन्य । राध-१ (मेर) वैद्यारा प्रया अनुप्रश सम्बद्धा प्रमा † सवाद १ -ईक-पुर हका वर्षाः श्रीलाः । राधन-प्र• (र्थ-) साधनाः बातिः क्षेत्रः अंति । राधमा- क ते दि पुत्रा, बाराचना करना। परा, निम् बरबार साथना, काम निकायना । को ार्ग ने बारो । राचवी−सी० सि दिशा राधा-की [बं] वेधामध्ये पृथिता। अनुसन मीतिः क्रवालका कृष्टकी मैनिका निचना रियामा नवना जीवनाः यह बाहुता समिरवदी क्यो दिसने कांदा याजन दिना था। --स्ति-शहम-९० १५न । -ब्रंड-प्र गोरर्शनके गणका यह वंद । -स्प्र-प्र क्ट नेच (रस्पे मंत्र दे शादशाव रागाडी प्रस्थमधी बन्दरिश वर्गन है)। −थस्ममी−द् [(६०] दक्ष देन्तर ग्रेजदाव । -व्यामी-क [दि] २६ मनपार्वेड ब्लकार्द ८६ भ्याप्त । राधाकृष्यन (गर्बवर्ता)-इ अन्य ५ निम्बर १८८६। Trial Riving agin t tt to a amife fe १९३१ ३६। बिट निय दिया शब्दी अन्तर्पत १ । तथा बनमें बारमदे राष्ट्रक है। ६५२। बारमद प्रशाप ชา 15 ลิไ เ राधाष्टमी−भी [मं] म द्वर शुरा भएमी। शक्तिका-भी [r]शशा सुन्नश्चर सा स्क्रमाहिक शयी-स्य (६) विद्यान्य प्रस्तान राध्यय-पुरु मि] वर्ने (राष्)-मर्ग्रहरूको प्रश्नीक्ष माराप E F1) 1 राज्य-दि थि विभारतको बीच । शाब-भी। शि] ग'व। राजारहै-को बस्ती नरीहै। शाबा-त रे शामा । -पश्चिम्य लगे। शमा-रिक्षि विश्वास सम्बद्ध र धन्तेराहरू हात्त्रस हुरहा - है को [का] सुर्व्यापन अस्मनी । शाबी-को व राजायी और वस्तीतमा केरियाने जिस क्षेत्रपुर्व अर्वेष्टन्य विश्वपेद किए क्षेत्र न्यूक्ट समी

रुभिराबी(दिाम्)-वि [ने] लून बीनेवासा । रुपिरोक्रारी(रिम्)-प्रक [सं] बहरपतिके साक्र बनीवेंसे धेचादनदी । दि॰ इशिर वमन कामेबाला । रनश्य-सी नृषुर माहिकी शनकार। रुताई :- सी: भरगारे, बालिया । रुनित=-वि वयता शनकार करता प्रशा इमी-पु॰ भीड़ोंकी एक बाति। रमुक अमुक-सी मृतुर कारिकी क्यातार हीनेवाकी मनकार । रतुरुत् = न्यो॰ मृतुर मानिकी श्रमकार । रुम्क-प्रदूषकारका वेत । रपी - सी० अमस्य । डपन्तर-व दि॰ बमना, समाचा, गावा वा रीपा शामाः सहसा, वर काया । टपमनी≠-विकी क्यक्तों-विकलों एक काडिक-मनी -पश् । रुपना-पुर भारतका मुक्त शिक्षा की बाहुसे बसता है। पन-संदर्धाः ~पैसा~त वन-बौकतः। – बाका--दि० धनी, अमीर । सुरु - उद्यामा-वपवा खर्च इरहा । -खबाना:-वपमां कर्ष वरतार करना । -- क्रीक्या--वम नरीरमा संदित करना । -शिक्सी करना~श्राप्तत व्यव मभावदवक्ष सर्व करना । -पानीर्जे क्रिका - वैसा वर वादं करमा । स्पाहरा - वि देश न्यवसार । हपहरूप-दि॰ वॉदीके रंगका, कोरी बैसा ! [मी 'हर-इसी'।] इपार्च-पुर दक्षित भौती करा। क्षिका-स्रो [सं] नदार आहा रुपया!-प है 'स्पबा'। क्योलां-दि है 'स्परका । क्याई-सा [म] बार विक्रोंका वह वर्द-कारसी छेर (मबस तीन करन सामुबाह होते है)। -एसम-पु शासक रायका एक भर । -तरामा-त क्यारे क्रियके चारी चरच सामग्रस ही। दर्शक=−५ है 'शियांच 1 इमय-पु [d] सी ओड़ नानरीका मूक्पने यक मानर (शमा)। इसम्यान्(वल)-१ [नं॰] व्ह क्षिः नमहाद्री शान-शासा यक वर्षता क्सांचित- । वि दे श्रेमांचित । दमा-सी (सं) तुपीरकी पति। नमक्की रक्ष छाना एक नहीं। रमास-इ है 'स्मान'। रमाधी-सी किसीना संगीत मुगदर भावने, दिलानेका एक दाव । रमाध्रक्षी•-सो॰ दे 'रोमावली । स्ताई = न्सी सी वर्ष योगा ! रत-तु [सं•] बाला दिरमा व्य कति। विरवेदेवींका वय गर। एक फलराट दुवा एक भैरन । रहेक्पीब-प रहेते कालीका प्रीध (भारते क्षीपर-क्षणा-म वही आतिका वक्ष प्रकारका वश्त्र ।

दक्श-विश्वस्ता रहा, वी विस्ता मही। रुखनाई-म कि॰ मारा-मारा फिरमा, मानारागर दीमा श्वर जनर किरना दिख्ना-⊈क्ना। इना रह माना-'मनकी मध्मै मथ शी में बक्ति वादि है -- ररमादर I क्छाई-न्मी रोगा; रोमैकी रुका या प्रवृत्ति । इस्तमा- त॰ कि॰ किसीको रोनेमें प्रवत्त करमा। भाकाना क्रिरामाः वरवाद करवा । दल, रहरां~ली॰ वह नमीन विस्त्री दर्वरा शक्ति वर गर्वी हो । क्ष्मार्ग~म श्रेमक्ष्मी वर्षे । रुवाई~सी दे॰ वस्त्रं। श्याप~प• है '(भाग'। रुष स्थाक स्थाक-त (त्रेक) परंजवधा रुप्तेतु-बु॰ [तं॰] यह कवि नृतेतु । दुसना-नी॰ (सं] सहको २% शती। । श्रीक (क्षे) १-१३ रपा−की सिं•ी श्लोब ग्रश्मा । न्यादिशा−दि सि1 झोपसे मरा∎याः कृषित-विश् (संग) ऋड, कृषिता हुन्धी । च्च्छर~प (रं•) करत्ये द्राः निकासी। राप्र-विश् विशे क द्धा समित नारात्र । रक्ता-की॰ (सं॰) रह होनेका मान, अप्रसन्धता । वह्यसी-मि॰ है॰ 'इस्त्रस'! स्ति ना॰ सि॰ की पीप । दसमाज-स कि॰ दें। 'इसमा । हराबा-वि का] सिरिया बनीक, कांग्रिया क्लार, अपनावितः वदलान, वेरोरत । -है-लो॰ धर्माशना वेद्यादीः स्पारी । बमा-पु दे 'रुपा । रुसिस्ट॰-वि वह अग्रमद्र ह दश्रा-त [म•] बहुँच, रमाधै पतबार। स्टापन। सम बुनी । रसम-द दे 'स्थ्य' । इस्ड-इ [#] सुराधी वरकते पैशाम वानेशका व्यक्ति पैर्वशर, रम्म । रतर १-दि है। ५६। रुस्त∽नी (का॰) बनना। नि॰ सबद्धा तमानरा हिसेद ।--१रोक्स-विकास दुआं ह बस्तनी-वि (का॰) को उसा मधी बीहे श्रीम प्रमा इस्तम-३ (पा) कारसदा प्रसिद्ध रहक्षाम श्रीवदा नेहा। वि बीर, नरंजुरः निमीतः दिश हमा ग्रमी। -(में)श्रहन-वि विश्वविद्या अपने समयशा सरने वश बहसवाम । -हिंध-दि हिन्दनामका सबरी दर्ग पश्चमवाम । रहक-५ [थं] छैर दूरस्य। रहरिक-शी॰ कठमा । एडा-सी॰ [र्थ] बुद्दा ब्रायवंतीः बद्दारे। धनिरताः सीतः रीक्षिपी क्षण । रहिर#-पुरस्तु मह मिर्।

~कासर-पु• एक पान ।

रापद-पु रमर।

रापती की एक नदी (नेपाक्त निकक्त सरप्रें। गिरती है)।

रापरंगास-पुषक तरहका मृत्य ।

रापी-सी दे 'राँगे'।

राव−की॰ क्षाक, गावा सीरा (विसमें बाने पड़ जाते हैं)। रं क्षेत्रकि एक सिरेसे दूसरे सिरंतक क्यों दुई लंगे। रुक्ती।

रामदी-सी॰ रवदी, वसीवी कारकर यादा वभाषा

दुमा हुन । रावना~स कि रोतमें एक विशेष बंगसे साथ देना । रामिता~स कि] संबंब, मेस-मिकाण कोर्य थींक की

मिकाम वीध दुवस्त करे। बीड मेल ।

शसस्य∽द्र [सं] प्रसन्नताः वंग । राम-प [सं] परशुरामा बकरामा बाधारवि राम रामचंद्र') तीलको संबन्धा बीका मेगी। बरुणा **ईश्राः नम्रमाः असोक वृद्धः रमणः एक माणिक छ**र । -अंजीर-प॰ [दिं•] पाकर क्य -**4381-9** [दि] एक पाना -कपास-सी [दि] भरमा देवक्यास । ~कसी~सी [हि] एक रागिनी भैरव रामध्ये स्तो । -काँटा - प्र. [हि] एक प्रकारका वर्ण । −केटा−पु• [दिं] यक प्रकारका केलाः एक प्रकार का काम । - गंगा-मी एक सदी (ग्रेकीमीत्से पक कर मंगार्थ (मसमेवासी) । -शिरि-प्र• रामरेक माग-पुरको एक पहानी (मेमहत्तमें वर्गित)। -गिरी-सी वे रामकको'।-चंदरि-न्यो हिं] एक तरहको तीप। -चंत्र-प कीयस्थाके गर्वते जल्पन राजा दलरवरे श्रम (शामावन शामचरितमानस नावि कान्योंके मावक, विभादे सदय दस अनतारीमेंसे यक्त)। दे॰ क्रममें !--राक्र-पुरु ७१८को पीडीमे निर्मित यह प्रकास, वका मीडी रोडी बाडी।-जनमी-को रेगुका क्षेत्रस्था शिक्षित । -जना-द [दि॰] बिस व्यस्तिकै वितादा दना ज ही वर्णनंदरा जातिनिदीव (इस जातिकी लहक्किनी नेहचा-कृष्टि करती है)। -जनी-की (है] शामनता बार्तियो स्त्रीः विस सीन्द्रे पिताका पता म हो। वृहचा । -सम्बो-तु [दि] यद वारीमः भावत । -सर्वती-भी एक देशीनृति। - जासन-प् [हिं] यह मणीने भारतस्था जामुनका पूर्णा -जी-पु [हि] एक मबारको वर्र (बाने जीने बढ़े)। -बाोक-प [क्रि] पायस पालेगा - टेक-पु [हि] है 'शामिति । -दोबी-स्पे [दि] एड संदर सागिनी । -तस्त्री-की भीताः भेरतीः ⊷तरोद्रै−सी किंिकाः। —सारक=९ रामीशमधीका मंत्र 'तो शामक नम' । ~तिम-दु ६६ तिका ⊷त्रमर्ता~को है 'रामा-प्रवर्ती । ल्लाजपान-पु [दि] यद प्रकारका नेज पाना -एम-पुर रामधी वासरी सेना। वही कीर भवत मेता। -दाता-दु [दि]सोर दानेपाला मरनेक्षे जानिका यह क्षेत्रश जसके बीजा वज बात ।

गुकः एक बातः । ∼वतः~पु• दनुमान् । ∽वृती → सी॰ एक तुस्सी पर्वपुर्णी विश्वस्ता, मागरीना नाय-पुष्पी । -विष-पु॰ रामा रावस्थानमे प्रवक्ति एक पंत्र । - मनुष्-पुरु बंहवतुत् । - भाम(म्)-पु साकेत लोका - मनुका-प्र [हि] श्रीकी, पीवा। -शबक्री-सो श्रेत्र-शक्ता गवमी रामका भरम दिवस । ~नामी-नी [दि] पादर, दुवड्डा निसमें राम नामकी काप कर्गी हो। सोनेका बंटहार ! -- नीमी -की कि है॰ 'राभगवमी । —पास-पु॰ [दि] नीक्षमी वातिसी पक् झाड़ी । -पुर-तु• अनोधनाः स्वर्ग । -फछ-प सीताकल, घरीफा । -वेंटाई-सी॰ [दि॰] दीमें सम विमाजन आपे माथकी वैटाई। -- समूख-पु [हि॰] यह प्रकारका बनुक, क्रीकर ।-वॉस-प् प्रिको पत्र मीरा वॉस (इससे मास्कीका दंदा वमाते हैं)। देवद्येकी वादिका पक पीवा ।—बाल —पु [विं] एक प्रकारका वरसक रामधरादे 'रामगण'। −विकास−५ [हि•] एक थान !- भोग-त कि रिष्क शहरा भागा एक शहर का धावक !- संवा-पु देश रामवारकः । - रक्षास्तोध —प् निश्वामित्ररथित एक स्तीत । —स्त्र(स) –स्वा• एक प्रकारकी पीन्धी मिट्टी। -रम-प्र नमका रे शबी हुई भंग। - • कास्त्री-स्त्री [हिं] एक प्रशास्त्री ईस्ट। -राज्य~प् रामका धाराना स्थासन रामकाना म**व**⊱ सुराकारी कालना मैसूर ।-- राम-इ ममरकार, प्रयाम । भी भेंड सुकारतात । अ प्रमात साधार्य आदि राजाः धन्द दिः बाद ।-रीसा-तुर्न्दि] व्यवंदा शोरपुर । -खबल-त सींगर नगद। -शीमा-लो । सके वरित्रका व्यमिनया रामक वरित्रके अभिनवके किर धीने वाका समारोह। -वस्त्रभी-५० हिंदे यह वैध्यत शंबदाय । ≔वाण-पु० अवीर्पके किए उपनीमी एक रशीक्या । श्रीम श्रवकारी क्योगी सामग्रावकः अभाव (भीवर)। −धीरग्र∽रो पद बीला। ∽द्रार~ प र्वतारे मादार-प्रकारका यक मोरस पीया । −शिमा--को गवाको यक पहाको । —क्यी—कु बद हास । -सन्ता-प• समीव ! -मनदी-प [हि] ४६ वै।पर र्थनराय । -सीता-त (दि) सीतादक करोदा । ~सतु-पु॰ रामचरम्के निक्ट गमुहम्थ बहानीका समृह (श्मे रामके सेतुका अवनीय मानन है)। -शमुर-पुर [हिं] कींसा एक प्रकारकी बास । रामकृष्ण परमहैन-५० रशायी विवेदानंददे गुरु (१८३३)

१८१६)।

सामर्चन्रशुक्त-(१८८४) ४२ १०) दिरोदे सहान्
सादिक्यमोग्रह निकाने स्वीमर्चन हिंगे समिन् सादिक्यमोग्रह निकाने स्वीमर्चन हिंगे समिन्स सर्वाणे क्रिया दिया। आपने मनीन्तेने रह स्व भौदित निक्षं सो तिमे दे दिवसा हिंगे मादिक्यों निर्धित सात्र है। स्थानों-नुत्री यह कोर जावारे सार्वास्वयी समीन्ति विशेषादिक्या स्वीम् विस्ताना निर्धं सोम्बान्ति हिरीसादिक्या स्वीम्

रामड-पु (एँ०) जानीस श्रीमा विवक्ता एक हैसा हम देसका निकामी ।

-दास-3 प्रमुपन्। मनर्व रामराम हिनाबीटे रासरी-की [4] होता।

बचरमें क्सा)। रहेस्स – पु॰ पठामींकी यक वाति । क्रॅबार-पु 'जलब-गरुख' कहकर मोथ गौगनेवाले मिश्रकः देश ^लस्खा । कॅगरा-पु दे॰ 'रॉ बरा'। स्द्रमा-स॰ कि दे॰ 'रेंदिना'। र्क्सम्बन्धि स्काडमा। रूँचना-स॰ कि॰ (रहाचे लिए) कॉटेशर पौर्थी वादिसे मेर हैना बारी वा मेरा बमा हैना। राखा बंद कर देना । क्र-पु• [फा] पेहरा शुँश शनक, खुरतः सामनेका हिस्सा, आया। कपरी भाग, सिराः कारण, पनकः च्याणः बहाना दीका शक्रमरीकः रखसारः (समस्त परीमें म्बन्द्रत-वैशे स्वरः, मादरः)। -यु इसीम-बु वरा तल बनीनको एतद। - प्नाई-प् पीका चेदरा। वि कश्चित छर्गिता। -पृत्तात्-ली दे 'स्वार'। -- क-स्त्रभूम -- पु॰ स्वित, इद्वारा। संदोधन, विद्यातः। -शिरवानी-स्त्री मुँद फेरबा; बनावत, विहोद, अवधा करना ।-तिहाँ "-वि हुँद फेरनेवाकाः फरार दो बाने बाका। मृद्धः नप्रसन्नः जिल्हा मीतर-कशः बदसीं दी (क्यका)। वेदिमाम नुद्धिशीया भीवरी भाग बाहर किया हुना (कृपका) । —दाइ – छो॰ गुजरी धुनै वाते। समा भारा शाका निवरण किरसा, बाक्ता अशाकती काररवार्धः बटना द्वारमा मया व्यवस्था मुक्दमेका रंग-दंग। - मुसाँ-दि सुँद दिखानेवाला। वादिरः प्रकट दीने वाका । ∽तुमाई-सी॰ शुँद रिकामाः शुँद रिपीमा (यह यम जी इस्टिनकी असके संन्यों मुँह रियाने-के बदमेमें केंद्र करते 🚺। -पाक-मुक्ताक।-पीश-दि वो <u>सँद छिपाने इप वा (पीश</u>~धोदाका संक्षिप्त क्य)। प्र वह अपराधी भी दिली लुकरमेकी स्वीतके समय माग बादा अञ्चपरिश्व ही जाना । -पोशी-स्री मुँद क्रियानाः माग बामाः गायव क्षे जामा ! - वकार-म परवामा, तहरीरी हुवमः वह खत की बरावरीके अप्रसारको मेना आव । दि कामक किय शैवारः आमे-वाकाः होनेवाका । -बकारी-की॰ <u>स</u>क्त्रमेश्ची पेग्री । -बराइ-वि शुक्तरः श्रमलाह किया क्रमाः प्रत्यान बाबाबे किर तैवार। बामके कावक काविक देवार। -- बर-- म शामने, भाग गुकाविम (भाषा करना धाना, श्रीना कियाओंके साथ न्यवहरा)। -श-मेहरा-वि अच्छा दीमें की तरफ मावल । —रिकायल—व्यो बास, निवाब, तरफशारी (करना बीनाके साथ व्यव इत) । – शितास-दि आतपद्यांनी परिवित । −शिनासी−भी परिषय धरना खाद∢ छताबत । -सक्रोद-वि मोरे पहरेका मुक्तुरता प्रविश्वित ब्रायन बारा बाबदामना निशीय नेपेश वयानवारार (हीनाके साथ भ्यवहत) । -सियह -स्याह-वि बारे हिस्सा ग्रमहरातः नरचनन परकातः बनीनः क्यक्तनः वर विश्वता वेश्वता मुत्ररिम अपूर्वती । प्र आकारा। तूर्व । क्रो-मा दे 'स्रे । - बाह-नि दे स्रेशर । रूक-५ वडमा यह भीपरोपरोगी पृष्ठ । • भी धनवार ।

सक्त-प्रमुख । वि० [सं०] को कीमल, विकला न हो । क्राध्य--पुश्चास्तु, येद्र । श्रा विश्वस्थाः क्रमहाी∽पु वेक्र। रुलवा÷∽व॰ कि रुठना, नशावदीना । क्रमरा-प्र॰ रे 'क्ष्यदा'। वि॰ रे॰ 'क्सा'। रुखा−वि विसमें विकतापन न हो (असे-स्त्री वाक); विमा शेक-पीका बना बना भरविकर, स्वाददीम (भोजन): मीरस, प्राप्त, रसरीन: लरदरा, भस्मा रनेद्रद्रीम मेमग्रम्यः कठीरः विरक्तः वदास्प्रेन ! --पन--क्कार्यः क्या होनाः गीरमधाः करार्धः कठोरवाः स्वादद्वीनताः स्टासीनता । -मास-प्र• मद्वाद्वीदार बरधम (कसेरा) । -सूच्या-वि॰ दिना वी और मसासे का बनाः जिसमें अरपरापन न हो (मोजन)। मु॰ -पदमा-धील-धंदीय-पहित दोना नेमुरीवत दोनाः तीया पहना, भाराम द्दीना । रूपमा॰-ज कि॰ दे॰ 'स्थाना'। क्क-पु॰ (बं॰) वाकों और भोठींपर सुखीं कानेके किय कराया बानेवाका यह विदेव प्रकारका पावटर। एक उरवर्ध प्रकर्ना विसासे सोने-भाँदी मादियर कहाई करते है (बरिया पारा मिलाकर इसमे बरसनपर कर्ना करते हैं) । रूजवेस्ट (फ्रेंककिनडी)-इ १८८२ १ ४५, समेरिकन राष्ट्रपति १९६१ से १९४५ तकः(विभोदोर) १८५८ १९१ समेरिकन राष्ट्रपनि १९०१ से १ स्काना•∽भ कि **दे** अवश्रना¹ 'तकप्रया । स्ट॰-मी स्टना नाराव दोना क्रो**प**। करन-मी रुठनेको किया या गाय। कटना-अ कि काएक, नाराब दोता। स्वसिश∼सी 🖣 फेब्स (क्ट−पु॰ [भं] पौथ नवका एक नान । कर, रूवाक−दि उत्तमाओड । (सी 'हरी'।] स्-ब-वि [सं•] उरपत्र संज्ञातः प्रचनितः प्रशिकाः शवि माम्य जदेलाः (वह संदया) जो विमक्तम श्रीर पडा बुना आस्टा + गेंबार वसका कडीरा करा। प्र वह राज्य को समुरावशिक्ति मर्पनीयक हो। विस्ता संह म हो (वीगिसका निकाम-3में पर, गा हर) न्युराशिमात अर्वे, महति-मत्वव-पुक्त अर्वेद स्वानपट दुसरे अर्थका महाद्यक्ष घष्ट । -योक्सा-मी आस्य-जीवमा । रुडा-को [सं] प्रसिद्ध प्रयनित अर्थने विनित्रक कारणा (सः) । कवि-को॰ (र्तु॰) वस्म बर्लाखा प्रतिक्वि स्यावि। प्रवान चाला चढाई चड़नेका सावा वृक्षित बमार बढामा शस्त्र की शक्ति में। वीगिक म होनेवर को कर्न रुष्ट बरनी है। क्य-४० (का) नहीं। मानाः मात्रका नारा गैता भागरा हरर दुवस पर नुपा की। स्प-पु॰ [ब] स्रत प्रक्षा राव पाने बाद विश्व वर्षेत् किंग्र)। प्रकृति स्वमादा रामा भावमा धारीरा विमत्तिः मापनदे बोर्ग्य वनै श्रम्यकः मपात्रर रनस्या देश-कालका भर रहा। क्ष्मा निद्धा निद्धार भेरा

रामधीयर-रामय रामणीयक-पु॰ [मृं] रमयीवता । वि॰ श्रेरर, बनाहर । रामति॰-मौ॰ विदादे निष् प्रवना-प्रित्ता विद्यापन । रामना १ - म कि दिन्दरना धूमना-फिरना । राममोक्षन राय, राजा-५० श्रिशन तथा वसिद्ध गमाव-गुपारक, 'माबारच प्रदासमाज'की स्थापना जाएन की (toox-tc## fo) | रामक-रि मिंशे रमवनंशी। रामा-भौ (तं॰) सूंग्री शल्य, सी। गान-काश्यत मी: बर्शोक, मरब्देशा धीरुवार: वीरीवता बीव: ईवर: मस्य रुपिमयी: राषाः सीताः बन्नमीः संबंधिः विधिन्नः भर । ~तुष्परी-छो॰ सकेर बंडबवाडी नुबनी । -प्रिय-व बारबीमी । रामानेर-५० (ए) रामाध्य संपरावदे प्रश्नीह एक बेजार बायार्थ (१३५१ १४९७ ई०) । रामार्गरी-नि रामार्नर-पंत्री। प्रश्रामानंद्र एंद्रशाव का जनवादी । रामामुख-पु [मं•] रामके छोटे भाई, नवनका बोर्वेच्यक संप्ररायके प्रशतिक एक बाबार्द (मे॰ १०७१-११ ४)। रामायम∽छो॰ [मं॰] रामपरित्र ग्रेपंची वाश्मीदि सुनि रिवेश भादि काम्यमंत्र (अन्य वर्षे मंग्र मी वर्श मामसे परिचित्र है-जैंगे अध्वारम शामावय, अग्निरेश शमायण, गुम्मीदानका रामचरित्रमानग्र ह)। रामायणी-वि रामावण-संबंधीः राजावनका । एक रामा-यमका पाठ बरनेशामाः रामाचनका पंडित । रामायत−पु• रामानंद हारा प्रवित्त वक नैप्तव संबदान । रामायन = -पु र र (रामायन । रामावय-५ [मं] पनुर । रामापत-त [सं•] रामानंद शारा अवतित 🗪 वैध्यव वरसंप्रदाव ह रामिक्र-मि॰ [ब॰] श्राता क्रतेवाटा (रम्ब्-श्वाध बरमार्थ । रामिसः=पु । [सं] प्रेजीः चटिः बाजरेकः शेक्यातः । हासी-भी कॉल शावक पाछ ! रामेचर-५ [मंग] हारामदे रामेवर नामक श्वादमे स्वारित यह क्रिक्टिय क्रिक्ट स्वापत राम करे बात है. चार वहे दीवें देने वह हीवें । रामेपु-द [4] रामधर का राजवाद जावद दीवा: रैश-का एक भेर । शामीपनिपद्-शी॰ [एं॰] कवरिरदी एक वस्तिपट् । राप्या-सी [से] रजनी राध। राप-त राजा गरास मुस्तित काली विद्रणेती से बानेरच्या एक क्लानि भार ।-कर्रीहा-इ न्याकरीण। ~क्षपास~र नैप्रोधी वह प्रशाति । ~वेल-की० तुरह, तुनंपित पृथीशाली एक बना । -भोग-पु॰ शाक शोध पात्र 1 -मुनिया -मुमी-क्षे सफ श्रीधी

मारा । -रामान-इ राजारिसात-सुधितत कान्यदे एक

वस प्रकृति ।-शासिक-भी शहरीह हाजावावावाजाः -साहब-द्र रंग्य हिंदू स्टामक्टेंके जिलनेवकी

दिशिय बलको एक ब्राहि ।

सुसाव सर्वीर । सु॰ -कापम करना-निर्मद करना प्त निधवपर श्रीपना। रावर्गी--(४० (फा॰) (राखेपर पड़ा दुआ) मार्च अधारर नेरकत् । रावज~दि [अ॰] प्रथतित, जारी। वो रोति दे सनुमार हो। शायटर~पु [श्रं] वाल व्युक्तिवत्त नेरम बारम वद्य बर्दन व्यावारी जिसने समापार-पत्रीको सार क्षारा शबरे क्षेत्रकेटे शिय युनेमी श्रीकी थी। संयापार मेजनेशकी एक रूजेने । रायता~पु॰ बरते साग बर्द पुण्डा है वा मार्दि रार्ट समक, मिर्च औरा आदि ममाने तथा दशे शाहबर वैवार किया दुना एक भोरद परार्थ । रायक-दि॰ [मं॰] शाही, राजग्रेट । औ॰ धापमधे २०ईम घोडी और २६ईव लंबी मारा इस मारदा दृष्ट्य छापनेशनी महाशि । रायमा-प्र• डिग्सर्वे विभिन्न दिश्वी राज्ञका चरित्र-विषयक काम्य अंच रासा (नेमे-मन्देशम रासी) बीमकरेष राख्ये। रार−सी॰ शयका, सदरार । राख-को प्रशिक्त बारमध् धंयनीते निमनेशामा दश्व सत्रावहार देश रत देशका निर्धाम और (काश्रा. करे.१). कुष (शानिया कीश्व दे बाल बाता है/त दशना, अस्तार मुक्त बहाले का यह रीम । mail!-मी॰ धोरे हामोधा वावरा ! शब-द [लंक] श्रवा धींबार आशाक्षा [हि] शाबा हरवारी छरवारा राजाभीकी चरवी (६५०, राजपुनामादे क्य बार्गोरें। वनीः अबीरा वंदीनन जार चारमा है हिशासको हरायि दिवनेशना एक देश। -धहारर-थ तिदिश्च बालबी यह बरावि !- स्थार्त-म दिवामय बर होनेशामा वय बरम बना देत ।-साहब-५ मिरिय शातमधानकी एक बदादि । हाबचाब-९ हाय-रंगा माय-याना धार-दुवार । शबरो - १० शबकामारः यस्त ह रावटी-भी बन्हे मारिका वर धानशारीः बन्दररी। शक्त-ति (वे॰) शाशकार करनेशाला र ५ वस्यका प्रशिक्ष राथा विक्रमा वय शामने मुद्देमें दिया दरामन <ेड्ड (हरू दे रिताका साम रिश्रमण गुका बागावा बैडमी का) ! - गाँगा - की निश्च में देव नहीं (१०) ! राबच्छरि-पु (कं) राम । शायकि-य (मेर) शास्त्रा दीरे प्रथा मेरवार र राजन-१ नरदार गामेश्र क्षीरा राज्या धरा देश बीजा मैनार्श्य है शास्त्रक-देव देव शास्त्र १ -- शह-पुर रहा । श्चामां - गः दि मृत्योधे स्थाना । शबर्क-पुरु क्षेत्रपुर रिन्तास् । सर्वर आकर्त । शहराण-गाँदे समर । शक्क-चु १एमा कुछ शमानेंदी प्रशन्ध शरहर। मार्प Mus neun feign Walle ferte w mir gt. ह्यिपान् १ शाबी-मान्न तंत्रपारी ग्रोध मरी गीते है वस र राय-की [का] मना कामारे नवाना नमार विभाग | रासव-3 [मंग्रेशन, मिनारिकी मनमार नियतिन

सुनारीका एक भीजार: धान-"ज्यों कीरी रेज जुनै'-क्योर । मग अवद । रेजिडेंट-प [बं] बेंगरेजी शावप्रतिनिष जी वैशी राज्जी-में रहा करता था। रेक्किशा−मी [फा॰] अवसम । र्जामेंट-यो [अं] सेनाका एक स्थानी निमाग (कर्नकड़े भवीम और बर्ज द्वकृषियों में विमक्त)। रेशा−प्रअध दगानेका यक तरदका रेशा। रेट-प [भी] मान दर निर्मात्र वाक गति । रेडियम-५० (७) एक प्रश्रासमय पात । रेपु-सी॰ [मं] पुरू बाम् : क्रिका बहुत छोटा वृदि मागः समाधः विर्टेग । -रुपित-त गथा । वि वक्रमें सना हुना। -धास-यु मीरा। -सार -धारक-यु॰ कपूर । रैलुका-ली॰ [सं] सन्द्रः पूरून परशुरामको माताः सँगासः स्वादिपर स्थित एक तीर्थः = पृथ्वा । - सत्त-पु परञ्जराम । रेतःकुरुया∽सा [धं•] यह बर्द्ध, रेतकुष्ट । रेत∽सी वानः वर्त्तरं भूमि । रेस(स)-५० [सं] बीर्यः सकः वारः। -क्र-मः नुष। ~खा−सो॰ वासः। रतन-९ [सं] गोर्थ । रेतना- । कि रेशीएँ रवश्वर दाउना विद्वना करना। भी बारकी भार रमक्ताः भीरे-और रगश्कर कारमा (वैसे-गसा रेतना) । रेतस-पुरक्षाः। रेतका∽वि दे॰ 'रतीला। रेतवा! – इ. रतनवाका। रता−पु वाद्यः वृक्ष निष्टीः वर्द्धरे धृनि । रेतिया-प रेतनेगाना रेती-को बोईका एक बीबार विश्वमे रगडकर कोई वरा कारी या विकास की बातों है। अरी, एमुहारकी बतुई मृति। मदीका द्वीद, टापु पानी परमेंग्रे पाराके दीप तिक्रती रेडीकी मृति। रितीमा-वि पञ्जमा शङ्करामव । [की 'रितीकी' ।] रिय-चु [सं] दोतकः रेप्र-इ [मं] बोर्व शुक्र वासा महन बावृव। परवास ह रेगा!- स कि किमी चीव दे महारे स्टकाना । रेली-मा अनगमी। (व देनेवाको वरम् । रेतुण≕सी दे रेखु। रेपुद्धार=सीर देव रेपुद्धाः रेप-पि+ [ले+] हर। मिदिन श्रुगितः हरा । पि:−प्र[संग] 'ह आकरा हका दिनो कर्न्दे परहे आमेरर मानदस्य रूप " (असे-दर्व पर्म वर्म आधिमें)। शासः द्राध्यः थि॰ कुल्डितः निवितः ऋणितः । रेम-इ [रां॰] चारेडमें इहिरीत एक कवि दिन्हें बगुरीने कुरैमें डान दिया था। यह करवन वंशीय ऋषि । ररिद्वान-५ [सं] शिवस यह मामा अनुरा भार । **रेदमा** रेज्या~पुपुरृ, वहा परन्, । रेस-मी॰ वहाय भाराः बीवः बहुनायतः । -रेफ्र -यम-

की मीदमादः बद्धमरकाः अधिकता बद्दनावन । रंख−नी [अं∗] बोदेशे शहतीर, सबाग्र मोरी हुई काइम को बगीमपर निर्धा रहता है सोहेग्री परी (जिन् पर रेक्ष्माची पक्षती है)। रेक्ष्मारी । -इंजिम-प्र-रेक्स इंजिन । -यादी-सी॰ सीहेजी पर्यरेगोपर घटनेवाकी माड़ी, 'रेलने इस'। -पुछ-पुरेक्याको बामे जानेके किए बना हुआ नदी, माने बादिका प्रसा - मौद्री —पु मंत्रिमक्तका वह शहरव जिल्हे किया रेक्का सोरकमा थी। -मीटर-सी॰ यह मीरर की नेक्स सक्तर वर्षे । -रोड-पु ,-छाइन-ची पररी रास्ता । -थे -सी रेक्टी सक्दा रंक्टा रिमाय । रेखना−स कि॰ थका देश दक्षेत्रसाः अधिदास क्षेत्रस रुक्या । अ विद्रः अभित्र हाना, सूत्र भरा होना । रेजा-त वावा कराई, बाह्यमाः मीडवादः बहरा सहस तीक अधिकताः तमुदा पंतिः। मदीन और शुंदर शैकीकी बजामेकी रोति (तरका) ह रेकिंग-की [अं] रोस्टे किर क्यामा आनेशामा प्रश्रार वा ईंट एस्टर आविका ध्रीवा । रेविंद्या 🗝 शक्के काम भानेतामा एक दिश्त सत्र । रेपंस-पुरु (संक) सूर्वके एक पुत्र । रेबंड-इ का] हिमानवपर निक्रभेरामा रक्त पेत्र । रेबर-५० (न॰) गुभरः गाँछः विषवेदः रक्षिणावनं ग्रंस । देवह-द भेहें का सबूद मस्का। रेबदा-प्र चीनी वा गुक्का पाश्चनी फेटकर बनावा हुआ **इन्हरा विस्तर दिक बमाना श्रोदा है।** हेंबडी - श्री छोटी छोटी दिनियाने रूपमें बना रेवता। मुख –हे केरमें भावा-जलपर्ने परमा ह रेबह-१ [वं] अंशेरी मीब्र अमक्ताम आरम्बर वृक्षा यक राजा रेक्नीका विका और कररामका नहार। रेक्तक-पु॰ (सं॰) व्य शरदा सन्दः नारेवन वृक्षः। हैबली−श्री [मं] मतार्थमर्थे मध्या गाया यक बासप्रका दर्शाः रैवन बनु Ф मानाः वसरामशे पश्रीः । − भव − ५० श्रीन । -श्रमण-९ वसराय । रेबना!-ग कि दे रेगा। रेवरा - इ. दे॰ रेवरा । सी यद तरहरी हैंछ । विदा-न्या [सं:] तमेश मरी। बानरेवशी स्ता रांता मीव का पापा। एक सामा दुर्गी। मर्नेशका प्रशाहधेत्र रोगी। दीषक रामकी एक रागिनी । हेस-मी [पा॰] वही और एंदी शारी ! -सक्रेड्-इ॰ वडा भारमी । रेशस-५ [का] जन्ताः सम्बन्धन नीर पनदीना रेगा विमे रंशयका कीवा नाया-अवना कीश-वनामेके किर निमित करता है। रेशपका ग्रा रेशमका करता ! -शी गाँड-रेशमह रहे भारकी छोड भी बड़ा बहिनारेंने सुननी है। ह्या - व यहना-स्थित समदा बर्त मस्थित हीमा i] –के कच्छ-राजबंद चार्ग'दा गुच्छा 💵 मिठाई जो रेखमढ़े बार्ग की शहर होती है। रेशमी-वि रशसकाः रेशमने पना दुमाः (८व मा प्रमा बम बा नियमा बदव दी धर्म । रेशा-त [का] सनका सूनकी तो दक्तरी पीत (रंडमी

मस्य तवा मात्रामें वस्तुमोंके वितरणकी व्यवस्था । राशि-स्त्री सि । समान वादिकी बहुत सी बस्तुनींका देरा क्रांतिकत्तमें आनेवाछे विश्लेष तारासमूद यिव इन मिलून कर्र, सिंह कम्या हुका, दृश्यिक, धन मकर, कुंग और गीम)। -चक-पु॰ महाँके चलनेका मार्ग इत्त राधियोदा यह अंडल । -नाम(क्)-प्र सन्मकाकको राहिकै अनुसार रखा हुआ बाम । -प-प्र किसी राष्ट्रिका स्वामी अविपति देवता । -भाग- मन्त्रंत्र किसी राधिका भाग अंश । –भोग-प् किथी गहकी किसी राधिमें रिचीता किसी गहकी किसी राष्ट्रिमें रिवरिका काल । मुरु -कामा-मनुकूक दोना । -सिलना-मक मिकनाः दो व्यक्तियाँकी वह राधिमें बत्पचि द्वीमा । शावति−दि+ [अ] रिक्रवत केनेशम्या, पुसस्तीर ।

राष्ट्र-पु [मं•] देश राज्यः वावि 'नेशन'ः पुरूरवादे वंश्वन काशोक्य पुत्रः हेति देखस्वापी वाधाः - कर्यम-प्र राजा का शास्त्रका समापर अस्याकार करवा। -कूट-यु परुधात्रय राज्यंत्र राठीर । -गोप-त राजाः राजाका प्रतिनिधि । दि॰ राष्ट्रकी रहा करमेवाला । -संब-पु• राज्य द्यासन-पद्धति । -पसि -पु राष्ट्रका स्वामी। बहुमन हारा निर्वापित किसी देखका सर्वप्रथान शासक (मानुनिक प्रवातेत्रप्रयाकीये) 1-पाछ-पु० राजाः बंधका पक्ष भारे। – सृत्⊸पु राजाः प्रकाः शासकाः। -मृत्य-पु राष्ट्रका रक्षक शासका श्रमा । -भेद-पु शहराज्यमें विद्यार, विद्रोह अलब करानेको मीति। -बासी(सिन्)-पु॰ राष्ट्रमें निवास करनेवाका प्रजा। -

विद्रय~प वस्त्रा, विहीइ । राष्ट्रक−प [सं] राज्या देख । वि राष्ट्र-प्रंबंदी । राष्ट्रीवपासक-पु [सं•] राम्यका सीमारहरू। राष्ट्रिक-प्र (सं) राजा प्रजा ! वि राष्ट-६-विशेष राष्ट्रहा ।

शक्तिका-स्पे [सं] मरबरैश बंटकारि ।

राष्ट्रिय राष्ट्रीय-दि॰ [सं॰] राष्ट्र-नंदंगी। राष्ट्रका । प् रामा रामाम साम (सा.)।

राम-५• [मं] युन्द ध्वनिः शेलाइकः नृत्यद्रीश (याना बाता है कि रहका प्रदर्शन कारिक्की पृथ्विमाओ कृष्णने दिया)। कृष्ण-कीसादै अभिनवपुक्त नाटक वद सीवगाम रशिया विकासः नर्जवीका समाजः श्रीयला । –शास-९ ११ मात्राभीका एक शक (गंधीय) । —शाही(हिन्) -पु इप्यदरितदा अभिनय दरमेशका व्यक्ति या समात्र [यह अभिनव गीत मृत्य कायने सुद्ध रहता है]। -मृत्य-पु गृत्दा यह भर । -पूर्विमा-नी रास भारम रोनेसे डिवि कार्रिस्टी वृद्धिया। -असि-की रासक्ष्रीत्रास्थान । - संदल-दु सन्त्रदीय दस्मे वालीका नृष्टाकार समूद; शामकारिकोका अधिनव रास पारिकोका समाज । - मंद्रमा-को वास्त्रारिकोकी शेरी। -यात्रा-सी शत्त्र्दिनका यह उत्पाद (दु): वेषपुरियाचा एव शासः वन्यव । नशीसा नशीः कृष्यका बीरियोदे मात्र कृत सुरद स्प्रेटाः राज्यारिसीयः कृष्य सीशानांवधी अभिनंद । —विशास~दु राष्ट्रशासृत्व

ह्मीबा। -विहारी(रिन्)-पु॰ कृष्य। रास-सी क्याम, बाग हेर: मंबादि राह्या धौपाबाँका समूदा बोद ब्याज । पु॰ यद होदा सास्य नामक नृत्यः यद स्थानः गोरः, वत्तकः । - चक्र-पुदेश्राधितकः'। -भशीन-पु॰ वह वो गीर किया गया हो। सनवचा । मु॰ −र्षेठामा −क्षेमा−गेर हेना ।

रास-पु 🙉] बंदरीय बोही वैक्रोंकी संस्थाने किय प्रमुक्त सन्द (दी गस वैक भार रास मीहे)। वि को क दुरस्तः मुवारक (शस्तका संक्षित्त रूप) । मू॰ -भाना-अनुकृष्ठ दीना और होना ।

रासक-पु॰ [मं] दर्द काम्बका यह मेद [यह बंदका, पात्र पाँच-इत्स्वरसप्रधान भावक मूर्छ, माथिका चतुर, स्त्रपार नहीं होता।।

रासन-वि [मं] बीम-संबंदीः सुस्वादुः स्वादिष्ठः स्रध्द करमेवाका । वु कास्वादम करना। शब्द करना ।

रासना-स्त्री है 'रारना'। रासम-पु॰ [मं] गवा। रासमी−सी [मुं•] ग्रही।

रासविद्वारी घोष-पु शंगावने शुक्यात विभिन्न किन्होंने क्ष्म्कण विश्वविधानमधी आरो रक्षम दानमें दी थी

(१८४५-१९११) (रासायन-वि [सं] रसायम-संबंधीः रसायमकः। रासायनिक-दि [d] रसायनशास वा कस्त-संबंधी। प्रश्निवयाती। -शासा-मी॰ रसायमधान, तस्त्र-विषयक प्रदोग परीधाका स्थास ।

रासि-सी दे 'राधि। रासित्त-वि [#•] पद्याः सद्दन्तं, पायवाराः विक्सनीयः

यात्मि सरा। रासीरं नजी रही निष्टर छराव (दीसरी बार गोभी दुई); सम्बंधि विवस्ति धराव (राग्री दार) ।

रामु॰-वि सेकासीया। रासेरस-पु [नं॰] रामरिहार, ब्रीडा। उत्तव हारव

विभोद्य मीषीः श्रेपार ।

रासेत्रवरी~सी [म•] राषाः

शसो-पु॰ दियन भाराये हिदिन काम्बर्धर (हम्में द्विमी राजाका वरित्र पुत्रः वीरता प्रेम-विषयक वर्णन रहता है-दीमें पृथ्वीराध राम्रो शुपास राम्रो बीमनदेश शसी ।)।

शस्त-वि [का] पनिषा अनुवृत्त, मुवारिका दुस्तत डीक सबी। शीषाः सथाः मेदा - गी-दि प्रदिन सन्य शेवनेवानाः -याह्न-वि सवा देगपरारः। -बाही-सी सुबार, रेमामदारा ।

शस्ता-त (का॰) शक्त पान प्रशा दराय । मु --कटना-मंत्रिष्ठ शाला तव शाला। -काटमा-यवने बार के आग दीकर एक ओर्ग दूसरी और नियम जाना (अरशहुनग्रव-शिरो मान्डि हिर प्रमुख)। -देखना-वार ओहनः प्रतिशा हरमा। -वतामा-शकता इसमा। -(१८) पर सामा-ग्रेड करमा विश्व मधीरर काना शुवार्गस्त समाना ।

सस्ता सम्बद्धा∸से [सं»] एक का मेरनातुकी

1121 नगरपतिको फर्को सादिमें मिलता के)। —दार-वि॰ रेक्षेत्रका । रेप-प [सं] दानिः शक्तिः दिमा । व सी० दे 'रेस । रेपण-पु [सं•] घोषका दिनहिनानाः धेर वा सिंहका नरजना 1 रेपा -द्यो [सं] देशा होसना, बोहेका दिनदिमामाः सिंह का गरवना । रस्तोर्र, रेझॉ-प्र• [वं] वह स्थान वहाँ मारता और मीजन शादि मिठता है, बपाहारगृह । रेइ-मी पारिमधित पृष्ठ रेखा-क्सत बसीधीमें मनी वमक कमककी रेड'-मविराम । रेडम-प॰ (का॰) ऋष देनेनाडेनी कुछ वन-संपर्ध एस शमनतको किए देवा अश्तक असका दिसान जुना म दिशा जार, भेषक गिरवी। -बार-प निस्के पास कीई बाबदार वक्क रसी ही ! -मामा-पु॰ वह कागव विश्व पर रेडनको झर्नोको सिरश-पदी को गयी हो । रद्रक∽स्ते [भ]दे रिद्रचा रेहमा-वि रेवगका जिसमें रेव अविक हो। रेस्न रे॰ 'रोह ३ रेसिति+-को है 'रैवत'। रेकेट-पु॰ [बं] देनिस धेननेका बहा। रैतिक-दि (सं] पोतककाः पीतल-मंत्री । रेतवा-प दे रायता । रैक्ट-५० [मं•] धोतकका वरतन । रिशास−प रामानंत्रका क्षिप्य और कशेर शादिका सम काकीन पर बमार मक्तः बमार । रेशासी-पु॰ मोटा पान जन्दन । दि रैदाम-प्रवृतित संप्रदावका । रेन रैनि॰-न्यो रावा रेगु-भीनेबुंडनाथ वर बाखिनि चाइत या दर रैन −धर । रेनी-सी तार प्रीयनेक्ष याँशी सीनेकी गरको । रेमनिया-की जात विदिवादी माशा वह बरहर। रियंत-सी [भ] प्रजारिभाषाः। रेयाराच-पु॰ धीरा राजा एक पुरानी वहनी की राज वपने सरदारोंको प्रदान करने वे । रेक्षण-स्थे राधि समृद्द शुंद । रेबत-पु [सं॰] एक पर्रतः एक छाममंत्रः शिवः वदः हैत्य विसक्षी गणना बारुप्रवमें दे। भागर्गका एवं राजा देवपीके गर्मश्र उत्पन्न चाँचने सन् । रैवतक-प्र [मं] हारहा है बामका वह वर्षण । रेक्ट - चु [सं] धम दीहरा एक प्रकारका साम। रैमार्ग∽च दिवादा शगका सक्षाई। रेदर-४ क्ष्मा बुद्धाः रेडॉ-इ [अ] एक सुर्वधित पीवा। वश्चिम (सरावी): भीवारा गुजाराः १इम दनावतः। सिंभॉ-इ दे रोदी । र्शेग-५ धेम शबा शिया-5 रीवाँ भीम । मु॰ -(र)मद होना-रीमांच र्शियरी=भी+ रेशियामी (अंतमे)= शेंगरि दश्त तुम ऐन्ड 🕴

रेप−रोगन शीमें परी कहा वह वानि - तर। र्रोबद-ली मैक मिद्री, पट ! रियो - प अमहर, सरावी हुई बामकी सराई। रॉब-- प्रामा । र्शीसा -पुछोनिया बोहेकी एको। रोआय-प है॰ कमाय । रोक-पु [सं] सब्द स्पया, रोक्या मक्द दाम देकर थीन खरीवनाः छित्र वीशिः नौद्या विश्वस्त, मति माम् । सी॰ [हिं] अरकाम कवाम हेंका रीक्रमेनाती पीज (विशेषण बामवरॉक्डी रोकनेके किए बमायो हुई वाद चढारबीवारी जादि); साम करनेपर प्रतिबंधः मनाही निर्पत्र । -झीँक,-टोक-सी दावा, अवस्थि प्रतिर्वतः निवेतः, मनादौ । ⇔धास-स्तो० रोकरोकः, अव रोक्कन-व्या॰ नक्द रहम क्षया: बमा, पूँजी । -वडी--स्ती वह वही विसमें नकुद रपवीके क्षेत्र देसका हिसाब हो। - विका-की वह विका को नक्त वामभर की गयी हो । मु॰ -मिछाना-भाव स्वयक्षा हिसाव सगास्त रदमके यहने बहनेका पठा समाना । रोकदिया−पुनकृत क्ष्मा, रीक्रकरमनेवाका सुमीम, रोकना-स कि यदि पास देश प्राना (असे~मोरा रीक्ता पालीको पार रोहना। बानपे मना करनाः किसी काम, नातका काम वंत्र करनाः नावा कड्यन बालना मना करमा। करा भ भाने देना (बाढी तन बार मारिका प्रदार काठी तत्त्वार मारिमे रीकना): वञ्च कावुमें रदावा संबद्ध रहाना (मन रीक्स्ना काक्सा रीडना): सामना करना (बाना माकमग रीक्षमा): वेंद्रमा (रास्ता रिक्मा, प्रद्राश रीद्रमा) । रोका≉−पुदै रोपा शेग-इ [सं] धरोरको विकारकुर्व भवरका बीमारी। कोई वीयारी (देवा हैग भेवक र)। -हारक- श्रीमारी पैश करनेपाका। -काछ-प्र पश्मकी क्दमी । - इस्त-दि॰ बीमार धेगसे पीरिन । - म-रीगनाशकः । पु॰ भीत्रसः मापुरेदनासः । -नागक-वि वीमारी दूर करनेवाला । -विदान-प रोन्डे सूच कारण उसके लक्षानिये पहलाम करना। -परीमह-पु॰ होने ६६ रोवध दिना दुछ भाम िवे बरदारण बरमा (10)। -मुसारि-पु बस्स्य वस बीरभा -- राज-इ यहमा ध्यरीमा -- सक्षण- शेगढ करूम बिनमें रोगडी परवान था। -शिम्य-मैमस्त्रित । -शिस्पी(पिन्)-त मानापूरा देव। -इ-पु भीवन। -इर-नि रोगनाग्रहः। -हारी(रिन्)-रि रीयनाएक। तु रेथ। शेमद्र्य रागर्या-मी 🖁 राग्या । रोहाल-पु का॰] सी^ट विस्ती सीव तल की दश बद बन्मा रेड बार्रिश वर्गमध (मृत छट्डी आर् वर भगवः भानेके तिथ स्ववदारं की जानी हो। भाग मारिका नमा समाना (सिहीक वरनमें पर न्याका जाना

ही। वर्षे मनका बना यसका (धमनेक) मुन्तवस करने

भी हरासमः एक भीवनः, वन्तापनीः बद्दारे प्रधास पानी । रास्य-पु॰ (सं॰) इत्यात्र (बहामालके नि०) ।

रास्य-५० (स॰) इप्य । राष्ट्र- • प्र १० 'राष्ट्र'। सी • (का) शाला बाट, मार्थ। रीति-रिवाण प्रथा । -शुष्य-पु॰ मार्गेक्स्य । -गीर-५० पविदा मुलाकिर । -भवनी-ां स्वी रवर्गके मार्गये मुलासमको सुसिद्ध सदस्यमे किया आने बाला यसन्दे सटह आदिका दामा अहद तृतीयाको रिया जानंदाना देसनके अद्दुः यमेका भूता वाना मरा द्रांशर, भी आदिका दाम । -चसता-तु॰ रास्था भक्रनेबाच्या परिका शाक्षार्य आदशी अवसरी । च्चाइ-स्ते॰ रंगरंग । च्ची(ती-पु॰ दीराना भौप्रदामी । -- इज-५० छररा, वास् : -- इजी-मी० सूर, दरेती । -दामी-स्नै पार्यव कारायो '। -दारी-श्री राह सहस्रका अहन्त्र करा सुगी। —[● का परवाना—अपाधन जिसके हारा दिसी वार्थ री बाने साम ८ अप्तेका अधिकार दिवा नवा दा पर वामा राहरारी 1] -वर-द्र गार्गप्रराफ 1 -वरी-रनी मार्गपदर्शन । - रसम - रीति-की॰ व्यवहार, सैन-दैना वरियय। -(ई) स्त्या-म नुदाके तिर, पुराके मामपर । भी । रेशर-वारिका शावन, मार्च । शुरू =ताकता,=देगना-प्रतेषा करना।=पदना+-स्र काका पहला । - एकला-रास्था माह्य करना । "चापन डोना~राट धरग दोता। -लगना~दार **दे**गना रास्ते जाना । राहदी!-पु॰ यह परिवा धंत्रत । राह्य−भी [म] बाराथ थेन अल्ट्रांग सुध करार । राइमार्ग-स कि चाड़ीके पारी का रेती मारिकी सुर हरा दरमा । <u>इक्र मिट्टीका चब्तरा र</u> शहिब-सी शया।

राष्ट्रर -प्र नरवर । राष्ट्रां - ९ . च्या पर मोचेशा चार वैद्यानिके लिए बनावा

रादिश्य-५ [1] श्रीण दीनका भार समार ल

शाहिम-५० (स) रेशम नेपद रहा पामा र

शाहिम-दि [भ] ददम कानेशण। राही-क्स्नेक रावा । इ. मानी सुनाचिर । सूक --करना-रण्या यणगा दश्मा । -हाता-दस हेना । राष्ट्र-०५० ६६ मधनी, रेप्ट्र- बमा शह अराजुनके

माना -पर्दा (मे) रहणा धानाव अन्तरहा भी धारे-देने दर दिए पाँच और विदिशात उप विद्रापनि बार बारम-दिश्यादे समाव दममे श्री शिक्षत बस्ताहर क्या बद किया था। यह १८९ एटेलंडने होर्ड १(६४५) में रेल विचा जिल्ला क्लिने की बहरे वना। कुलन हमदे हिंद कहा धन सम्बन्ध की नदे पर पर क्षा बद्धा नामे पूर्व-प्रशी केशीवादे किर पर मोरेको समय है कियो हो प्रामास संस्थ है-म्) । -हमम -मास -साम -साम -समझ -स्पर्ध - रिजमा-स्रो (१)) व वण अप्यो रिजा

-क्छत्र-पुर बारी बराद ! -मेरी(दिव),-मर्फ भिष्-प विश्व : -शामा(म)-मा विदेश : ~रस्त−पुण ग्रीमद बनि ।

राष्ट्रस-इ [मं] दशीपरामे क्षापत्र सीपम मुद्रका पुत्र र राहरिग्रष्ट राहरसूष्ट-पुरु [मं] वश्चन ।

स्रिया-पु [शंव] देव शिवा । रिंग-सी॰ [बे] बीगुडी एमार्गीक बड़ी पूर्त रेंड पाचान्या चन्ना देश मंदल। -माम्टर-पु गुरस्टी बीबबी विशे दुर्व अविमे बोरे आदि भानवींने तद

शरबंधे काम मेनेवामा कर्मवारी । रिंगम-पु॰ [मं॰] रेंगना परदर चीरेचीरे चयमा रारक्षना विमन्त्रार विमना दिवनित रीमा ।

रिंगम • - स्रो है 'शियन । रिंगमी - न्यं ॰ प्रप्त प्रश्चिम होनेसमी दद न्यस्य क्यार !

रिगछा –पु॰ दक्ष बद्दानी बॉन । रिगाला - अर दि रेगला, भीरे भीरे प्रथमा । ल जिल गुमाना पिराना और भीरे भागभा गरिसमपुरेड

शौरामा (रवॉर्ड निए) । रिशिमा - मा वहाशके मध्यूनमें श्रीप की रागी। हिंच-ब (का) कार्षिक चंचगोकी व अ'ननेवाला रक्तराज्य समसीकी बांध्यीन समस्यक का अनेत् वाहि R- 8 -et 1

हिंदार-वि ब्रह्म निर्देशक

विभागारी-पुत्रम गावश कीवर र रिभावश-की: (सः) रहम मामी दयात दिशायनः विकार और व्यान व्याना वापाल नियमें या है शोश्कर प्रचा प्रपापूर्ण बरमाथ बरमा। निवास नरफ

असी । रिमायसी-वि रिकायत दिया द्वारा - प्राप्तन-की ब्यारक प्रशीने काम करने है बार एक महाने हैं विष्ट शहान विष्येत्राको हो है।

[Me] ('रंशन्त्र का वह , जर्मे एक शिषाया~भी

संबंद) संग्रं । विक्रमें स्वान्त्र देवन बाजारकी गाँध की अमेरि

वर्ते अधिम वनावा द्रमा धाव पार्च १ हिकाम-त [धर] या परिशेष्टी एक शरी नारी विशे

कारमा मीक्स है। लग्नी बडे इन्हों मार्ग निवरे मीन परिषे पान है।

Deni'-it Fa: विद्याप-मान्द्री वद्यात ।

Burdi-15 to 44 C 1

तिकृतस्य न्याः । अ.) कन्यासम्य श्रेमा ६ र पण्या द्रीमा Car es ent

विन्द्र-वि [4] दाल क्षानी (34-विनवर विकास falgen uner -fa-getimte faufe हिर्देश सन क्रेंग्ड जना -बार 1 तुम्प बाल्डा न्यून्य-वि विदेश श्राप्त एवर

S प्राप करण पूरे बाबा शह शहा प्राप्त श्रीमा र दिल्ला-भा ते हैं बनके जादी केंद्र करों के निर्दर्श

दे किय कारामा जाता है)! -कोदा-पु यक तरह-का साजुन! -त्राम-पु करका करहाल किसमें यो दागते हैं! -पार-विश् रोगाम ज्याना जुमा, यम-कोका!-करदा-पु तेशी: -(विग्रक-पु पुकार-के कुलका तेक! -मुद्दर्ग-पु॰ थी! -स्त्रमण-पु कहवा तेल! -सिपाह-पु॰ अन्योका तेल; कहवा तेल!

रोप्रमी~वि [का] ठक को कमा या मुख्या हुआ। वार्मिण किया हुमाः विश्वके समीरमें रोगन मिलाया गया दो। –रोटी~लो समीरमें रोगन मिलायी हुने रोदी को मुक्ती हुने रोदी।

रोगाक्टांत-(व [6] रोगो, रोनचे पीवित । रोगाद्ध-(व [6] रोगो पनराम हुमा पीवित । रोगाद्ध-(व [6] रोगो पुन्ती स्पाकुक । रोगाद्ध-(व [6]) कुप्बी एक सोपनि, कुट । रोगाय्ध-(व [6]) रोगो पीवित (को) । रोगिया-(व [6]) रोगो पीवित । यु कुर्चेका पामक पान ।

रोमिया-पु॰ भीमार, रोगी। रोगी(सिन्)-वि॰ [सं] अस्तरव व्यापिमस्त वैभार। -(सि)तर-पु कशोद्ध।

रोचक-दि [सं] इचमेवाला प्रिया मनोरंजक, दिक चरप । यु मूटा हैक्या । राजरकांदुः । विवश्या, भेडेकर (नेवाली) ! — द्वप — द्व तिर और सेवव कवण ! रीचन-दि [सं] प्रिय अच्छा तक्षत्रेत्रका छोया-वार्य दीतिनुक्त । द्व चूरा कला सेवरा छक्ते स्वति कता च्याना कर्यका देखा अविशेष्ट कलारा अवन्याला क्यांता, क्रांदिवस गोरोचना रोचवा रोकी रोगक लग्न-क्यांता, क्रांदिवस गोरोचना रोचवा रोकी रोगक लग्न-क्यांता क्रांदिवस्त्रीत क्ष्रमध्येवके धीच वर्गमिने दका

स्वारोबिक् सम्बद्धके इंद्र । -कल-यु॰ विकीश मीन्। रोचनाक-यु [के] जेदौरी मीन्। वेटकीयन। रोचना-को [कं] एक दमका नेवाकीयमा करनान माज्यास सावा सिम्हा गोरिनमाईदर की। बहुरेनके न्यो। रोचनी-को [कं) जैनका मैनसिक सके विकीक

योरीचना। कमीका। देही। वारा । रोजमान-दि [सं] चमकता हुना। सोमानुकः हेरर । दु पोस्ती मरदनरत्त्री श्रद्ध मैनरी। स्ट्रांका एक नदु

वर।
होबि(स्) – हो [मं] प्रमा वगड बोवि। दिरक
(रिमा वश्वित अदर होती हुई खोमा।
होबिएगु – [मं] च तब दर्शर क्लंबरी कारिने वय
समाग्र हवा संवि (मून) क्लानेमान।
होबी – मो [मं] दर शास हिम्मी (न्या)

होत्र-पु रीमाधीमा निकार रीमा-धीमा। रीम-पु (दार) (ता स्वाः म मिनिय हर रीम तित्र । - मोटार्यू-पि मिनिय स्त्रीनका (स्म स्त्रा सार्थ)। यह प्रिम्मर्थ

बय मार्डि) । हैनिक दिवरण मिन्स् रोजका दिसार निर्दे दिशाव किसमें बरवा है

रोहागार-पु (फा॰) जीतिका धनसंध्यसका काम उपन व्यवसाय (मु॰ -चमहत्ता-व्यासार, व्यवसायमें साथ बीना ।

होता!

रिह्ना—तु कि] यह सबदयी वर्ष जिसमें मारान्याल कहा हो तास्ति संव्यक्त कर वर्ष नारक रिक्रम वर्ष सामान्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स

होजाना-स कि] तिल दर दीत । होज़ी-सी [दा] श्रास्त रिस्टा मेशिया ।-दान-दिश कि हे दर्गके कि दिल्ह मुख्य रिमा जात । -दिगाइ-वि सदी होजी दिवानेशका निकम्य । -इसाँ-दि शोधो वर्षेवानियाग । पु पदरहिराहर ।

होजाना है [का] दैनिक देवम मजारी (शे राजाना मिके)। सुराक (शे राजाना दो जान)। पैदान वजीना। १ क जिल्ह मनिरिज ।

होझ०-छो०, तु मीलमाच- इस भी बाइन पूजते होते बनके रोझ'-खासी । होड-५० बहुत मोडी रोबी। घरवण महर्ग्ड रसमें दसावी

शेटिका-ली [संग] पुणको सम्बद्ध छाये गिये। साटिहार्ग-पु शेटिगोंके (मानेके) नरनेमें काम करनेमाना जीवर १

होटिहालां - पु बारे शिरो पहानश ऐसा बनुत्ता । शिरी-को पुने कारेणी वरेण का सामार मिसे केंद्र वेकम वा दावने दनावर पहायों को मिसे मिसे का प्राणी पुक्रमा भागा, जाहार भीवन। - कपहा-पु सामा-क्षणा पुत्रर कारकी नामानी। - क्षाक-को शिर्म केस प्राणा कारका - क्षान- कर्म

की शीर कार याना भागना - परक्र-पुंडक चका दश चनका पेता शुरू - कसामा-शीरिका, रीपी पकामा पेटा करमा ! - की पीड-बनावर शेका माने-

104 अवस्वना∽सवसविधका सप्रक्रंबमार-−स०क्रि आस्प्रव हेसा। **मबस्राज**∽प्र (सं∘] सोमराणी नामक पीपा। यवसंवित-वि॰ [सं॰] यात्रित, मुनइसर कटकाया दुवाः अववद अधवदन-पुर्शि अपनाद, निंदा। सलर । अववदित~वि॰ [सं०] सिक्साया प्रमा। भवकंबी(दिन्)-वि॰ [सं] अवस्थत करनेवाका । अववदिसा(न)-वि॰ [धं॰] निर्णावदः। भवसक्त−वि• [सं•] सन्देद रंगका। पु सपेद रंग। **जवमरक**-पुष्टिं•] छित्रः खिशको । भवज्ञान-वि० (सं०) बगा या खटका प्रमाः सटक्त रखा अवधात-प [सं] मिया, अपनादः विश्वासः स्पेशाः ब्रमा । च कसर । विरस्कारः सद्दाराः । सब्धि - सी० दे॰ 'बादली' । अधरा-वि० सि] वे-वस, कानारः इंद्रियोंका वासः को मबक्रिप्त-वि॰ [सं] (निसी बस्तुसे) पुता, जुपहा हुआ: दूसरेके बसमें न बी। निर्देश्या स्वापीन, पाप न मानने बाटा। खी० 'बबधा'। कगान रस्रवेगकाः भर्महो । अवदास-वि॰ [सं] अमिदास, जिसे द्वाप विशा गया हो । भवसी-खी॰ पाँता समृद नवाचके किए खेतसे कारकर अबदासन-पु॰ [सं] पट करमाः मुरश्चानाः श्लौगै श्लोनाः। काना हुना कुछ भैद्धाः एक नार काटा हुआ कल । अवधिष्ट-वि० [सं०] बचा हुमा बाह्य पाबिछ। अवसीक - वि० निष्यापः वीपर्दितः। भदसीर-वि० [सं०] चारा हुमा ग्रावा हुमा। श्रवक्रीम−प [सं∘] विच्छा। अवद्गीर्ण किया - सी [सं] विरक्त मित्र वा राज्यका कीर्य **ववसीसा**—सौ० [मं] क्रीबा क्षेत्रः भनावरः विरस्कार । वद्धंचन-पु॰ [सं] काटनाः प्रश्लावना स्रोक्तमाः इटाना । नपराव करनेके कारण निकाले इप व्यक्तिके शाब फिर सबसुरेन-पु॰ [सं॰] कोटनाः सुरनाः। मंशि करना (धी॰)। **व**वहाँदित—वि• [सं•] सुक्ता हुआ। कोटा हुआ खुटा स्रवज्ञीर्यं ⊸वि [चै॰] किसका चिर हुका हो । प्रक नेत्ररोग । मवर्तुपम-पु० [सं] (किसी चीवपर) भयानक टूट पहना अवशेष-पु• [सं∘] वह भी १७ रहे दा वान्धे रहे। समाप्ति। श्रपद्वा भारता। वि॰ वदा हुमा; समाप्त । सर्वस्थनपु [सं•] अुरची हुई चीकः **कु**रचनाः होदना । **अवद्येपित-**वि॰ सि॰] **दे॰ 'शवधिट**ः नक्षेत्रन-पु [मं] सुरपनाः सकीर सीवना देनी मवद्यंभावी(विन्)—वि (तं] मटक विस्कादोना करना नाम शाहमा। निश्चित हो। मवसेस्तार-स फि॰ मुरचनाः निह करना। अवस्य-वि॰ [सं] की वसमें म दिया का सके। मतिवार्य । भवकेसनी-सा॰ (सं०) क्या अहा। अ० चरूर, निश्चव १ - सैन्य-वि० (वह राजा वा राष्ट्र) मब्देखां – वी [पं] विक्रधारीः रगवना स्वाना । विश्वकी सेमा बधमें न ही । अक्केप-दु [सं] केप करटम, चंदम आदि। केप करना **अवस्थानेव−व** [सं] निस्तरिक वद्मीनन् । मास्वया संग कमावा वर्मट विस्ता काक्रमका अपमान । शबह्यव~प (पं•ो 5वराः मोसः पाना । मबस्यन-पु [ti•] सेपम; उद्दान तेक आदि; केपनेकी अवद्या~सी (सं] पाकाः क्रदराः स्वतंत्र स्ताः निवाः क्यावः पर्मटः चंदन बृद्धः । अवस्थाय-पु॰ (सं॰) पालाः हिमक्त भोतः शर्मिमान । वरहेरू-पु• [ti] चरनी चारकर सावी चानेवाही दवाः अवश्ययग⊸प (सं॰) भाग वा चुन्हेपरसे दोई चीच माजून। छ्यास्ना १ **सरकेर्**म-पुरु [संर] बारमाः करनी । **शरकाणी** नवी [सं] शहत दिनोंके बंदरसं क्या हैने मनकोक, समग्रोकन-प् [सं०] देखनाः अनुसंगनः बाढी गाब । निर्देशमा शक्षेत्र सहिवात । अवर्ष्टम∽प्र [सै] वानय सदाराः दोना पर्नदा शारीयः वरधोकक-वि [सं•] देखनेकी रच्छा रखनवाका (ग्रुप्त शाहरा रक बानाः वायाः पदावातः स्तरवताः बहामृत बर्बे रूपमें)। श्रोनाः भेष्रताः सीना । भवतोकना १ - स॰ नि देसना । अवर्ष्टमन-पु॰ [सं] सवारा कैमा; सवारा देना; वहामुद अवसोकनिक-ची वैकनेका चैन विहः भितनमः। कामाः स्तेमः स्कृताः। अवसोकनीय-नि [सं] देसने कोम्ब। असप्टब्ब∽वि+ [सं] बाक्षित, रक्षितः निकःवर्ताः वाभितः भवसोकित-वि० [तं] देका दुवा । य नावकः निरुपेक्षितः नावतः पराभृतः। वितवस । अवसंज्ञन, अवसज्जन-प सि] भारियन। मदकोनितेबर~प [सं] एक नीमिसस्य । अवसंबीन-पु [तं] पश्चिमें के समृहकी मीनेकी औरकी भवकोक्य-वि॰ [तं॰] Pसन योग्य । पद्मान । नपकोषनाः -सः क्रि भिवारण करणाः दूर करमा । अवस-प्र• मि] रामाः सर्दे भारः नाहारः समहारा भवसोप-प [tio] काटकर शतम करना। नह करना। रक्षण । कथ दे 'जनस्व' । * नि कापार । पैत कारना। पूसना । अवसक्त-दि॰ [सं] संस्थ । पु॰ संपर । भवस्त्रेसम्-च्रेहि } विषयवासमा । अवसविधका-सी॰ [धं] वैठनेकी एक सुद्रा निसमें पीठ नवसोम-दि [मं] बनुकूक (व्यक्ति) डएयुक्त । भार परनीकी बांधत है। इस महार बाँधनेका कपहा। उपम ।

भयसथ-प॰ मि॰ी रहनेका स्थान बरा ग्राम विद्यासका सवमध्य-प [मैं॰] विद्यालय । वि॰ ग्रह-मेश्वी । भगमञ्च-वि॰ (१)०) सरत के दमा उरास, श्वितः अपना कार्य करनमें असमर्थः समाप्तः द्वारा दशा (का॰)ः माजी-

मधमर−प्र• [र्ग•] शकाः भुवागः भवकातः वरसरः भनिष्याः वर्षाः राप्तः परामर्द्याः अशास्त्रारका एकः भेट । -प्राप्त-नि अवस्थारा प्राप्त 'रिटावट'। -बाद-पु• सामविक परिरिधतिके बनसार मीविका निर्धारण जैसा मीत्र ही रसा रन जाना !-बाटी(विस)--वि॰ अनसर बान्धी मासन कार बरननवाना । स॰ -चडमा-गुपोनका साथ म पठाना मौक्रोक्ष क्रांग न करना। -साकमा -भोका हॅदना । -शारा जाना-भोठा हारसे

निस्त जाना । **अवसर्ग−प्र•** सिंी शक्त बरनाः दीका करनाः रीक न हगानाः स्वतंत्रतः।

भवसर्जेष-प (सं०) छोइना, मुक्त दरना । स्वसर्थ-प• [ti] भेदिया, भारत । अपसर्पंश−प [सं•ी मीचे प्रवरना वशेरमन । भवसर्पिकी-स्रो [हं] वैतिबाँहा व्यक्त संबाधात । श्रवसम्ब~ि॰ भिं०ी शहिना ।

भवसाव~५ मि हे सती। विभिन्ताः उन्नतीः भाषाः अंतः शर (डा॰) :

भयसावक~ि॰ [मं॰] भवरात्र-कारक सन्ती सानैवाकाः समाप्तं करनेवाका । भवसादम~पु॰ (सं॰) पतनः नाग्र कार्वकरनेशे अञ्चलाः

जरपीयनः समाप्त करना सरहय-पटी करना । भवसारी(दिन्)-नि॰ [मं॰] अवसार अकः। भवसान-५० मिनी विरामः समाप्तिः ग्रस्तः हरः समाप्त हरना। घोडे आदिने इनरनेका श्वामा धेन्का भी। या धेर।

भवनामक-दिनि] जो समाप्त वा नह ही रहा ही ! भयसाय-पु (तु) अंतः माद्यः देशः समाप्तिः (नरमपः

भयमापी(दिन)-दि [h] (इनेवाना । अपसारण-९ [मं] इरामाः चनाताः सममने प्रकृष

क्रमा । अमिनिश-भ भवरत।

भवसिम −(४० (में] शीपा ¥भा ३

भवसित=नि म स्पा इताः [र्ग] स्थाप्तः गता दातः व्यक्ति निर्मित्र मोहा दुवा (अनाव) मंदर जमा दिया हुआ (अक्ष) । ५० रवनेपा स्थाम ।

सबस्य - (४० [र्स् ०] सीवा हुआ।

भवापुर-रि [मं] दाश हुना दरिवक्द कांसा क्रिका द्वामा ।

भवमेश-५ [नं] दिलन; रह वेचीन ! भवमगर-५०६ भवधेष ।

अवमेनम-दु [4+] नेक्ना हिरकमा भीवा क्यारिके क्षापर्वे अपनेशन्त्र पानी। क्षीना निरमना कडेला अ रूनेश्च दिवा: औड, प्रश्र बाडिने वर्षिने हिन्

अबसेर॰-नी॰ देर, अरेर-परी रही हरि वेस्त मणा वहाँ मात्र सम्मेर सगायी'-मृश जनप्रना हेरू-'याहनके अवसेर मिटावट'-तुका विका स्वापनका प प्रचीधा । अवसरमार-पर दिर वह देना चौतान करता।

अयसेचित्र -- थि॰ दे॰ 'अवदिल'। सवस्कृत-म सि भारतमगाद्य गाना दिसि हासी।

अध्यक्षक - पु॰ [हो॰] वह जी मीमीरी अगरण हत यसते मारे-प्रदेशीया । अवस्कृतिस–दि॰ [मे॰] आग्रांतः मीचे एवा दुभा बाप । -भ्रमी(मिन)-प्रश्मवदरी नेबर भाग वानेशना वदारा

क्षयस्कर-पुरु [मंर] विद्या मन्। मुष्यपूर्वेदिया प्रशा पूर । - अम-पु पाशानका मन, मिरा (रो. !)। —संत्रिर−प• श्रीयास्य । अवस्करक-पु॰ [तृं॰] गोवरीनाः मैदतरा हार । **अवम्मार-त** [र्स•] १रदा समेड पार्री भेतदा का मे

दीनाठ क्रमाठा घडाहै। श्रवसा-दि॰ (गं॰) तुष्ठ (तदम्मा) गुम्प। भौ॰ समुचन

निकमी चीज नारहीनता। श्चयद्य-रि॰ [से] क्लदीय मग्ना अवस्थ-त [4] प्रापरिवा

अवस्थांतर-५० [गं॰] दमरी या बरली हुई असथा। अवस्था-लो॰ मि । सनतः दक्षाः देशाचि कापाः अवस्था-सन्दर्भ, बरानी, बुगपा भादि। तमा निर्मा रिवरता। बाइति। भग । - चत्रस्य-५० धीवनरी नार अवश्वादे-बास्य श्रीमार श्रीयम आर शर्जाबन ।-सदण व जीवात्मा वा निकडी तीम भरापार - शर्मार्ट स्था

नुपूर्ति ।-वृहाक-पु॰ धेमीन्द्रे तस् अवस्थापे-अनिमाप निवा, स्पृति गुणकार योग संनार, क्याए स्पर्धर थश्या और अर्थ । -हच--५० प्रोन्सरी श अरग्धर्र-सरा आर दारा। -वरियाम-प्र• देश रियाम (वी) ।-वर्क-तु वास्त्र मा । क्रांदा र असन्तर्ग

काम, विशे कृष्टि (वर्षाश्चमन (क्"समा), अवस्य मेर धवा १ अनुस्थान-तु [र्व] दहरनाः रहनाः रहते दहरेश

श्यासः पर। रहनाहोता रहेदानः मौत्या द्वदानं न। रह भाषा द्वर है। बार ।

क्रपरमापन-पुरु (सं०) हराना - वादिष क्रह्मा। (रद^{ाना}

रह-देश स्थाप । अवस्थित-वि+ [र्थन] इदरा हुआ दिया हुमा कर्रेटर्र

भीवरा मगावानियम् । श्चान्यति∽त्यः [मं } भवानानाः

अध्यक्त्री-पु [ग्रे] शत्मीरा स्पत्रना । ज्ञबरवेद्य~पु० [र्गर] दिशुन्त, बून्य, अपरात् ।

अवद्रूलनि [र्थ] व अर्दन्तको निना मरीना^{ने}मा रिक्षोर्ड क्टबल 'किंग' (ह) ।

(sh) dre west Thurn kill)

वाका रोटीका पहलू। रोद्धां −प्रयक्ष तरहका नाजरा ।

रोबा-प दंदर, रंट-परकरके दुकते। एक पंत्रामी माना

पंजानको एक जाति भरोहा (का॰) नामा । सु॰ -हासमा-नाना वही दरना। -(हे) अटकामा~ षाचा **राक्र**ना ।

रोद्(स्)-पु [म्] स्वर्गः भूमिः वाबाप्रविनी । [स्री॰ रोक्स्म ।

रोव्न-दु॰ [सं॰] रोना, दिकाप करना ।

शोदा-पु भनुक्ती डोरी प्रत्येकाः वारीक, सूक्ष्म ताँतः पेरकी शास ।

रोध~पु [सं] रोक, निरव नावाः पेराः तीर किमारा बारी । −कृत् −पु • साठ संबत्सरीमेंसे पैताकीसर्वी (स सं•)। -वक्स-सी देदे दिनारेवाकी नदी। **रोचक−वि** [सं]रोकनेदालाः।

रोधन-पु[सं] दुभ प्रद शेक, अवरोभा दमन।

रोधना = स कि रोस्टना। रीध-प [सं+] पापा अफ्राया क्रोध कोबका पेत्र । रोमा-न कि श्रोक स्टब्सित विस्कताने कारण उछ बह उरमा कुछ विशेष प्रकारके स्वर निक्रकवा और माँग् बद्दमा चिक्तामा तथा और बहाना, रदम वा दिकाप क्रमाः शिकायतं करनाः मचलीतं करनाः सॉबनाः र्देश गर्म, छोड करमाः अवनाः वानेका करमाः करियाद करनाः बु'सः वदान करमाः पछतामा । वि रीतेबासाः ग्रहर्रमीः विद्विद्याः प्रश्नासम्बद्धातः कुर्रामः मातमः जपनीस गमः सिकानतः तक्रमीका

फरिबारः शारेकाः सुदव । सुरु −भाना−दिक घर नाता अपसीस दोना । -पदना-मातम दोनाः करराम मधना । -पीरमा-विकासरः शादी पीरकर रोना । श्रीती-प्रोमी-विश्मी हीनेपीनेशको, महर्रमी। ब्रीक

दरम दिकापकी प्रवृत्तिः मनदसी । शीप~प [र्स+] रीपम (भाग देव आदिके लिप): उद्यशक. मकाबर। द्विद्रा क्षेत्रा बागा वृद्धि केरमा औडना है बरिसके

छीरक्रकी प्रिये बारबाकी इसमें समी सक्ता। रोपक-दि॰ [सं॰] जमाने समामेनासाः रवादित दरमे

बासाः (रोवार भारि) वडानेवामा । ९ छोने-चौरीको धीनका एक मान आकर्षका छत्तरवाँ भंडा ।

रीपण-५ [सं] बगाना बैठाना (शेव देश): स्थापित हरनाः कपर रयानाः गरा हरना प्रज्ञामा (रीबार शारि)ः मोदित बरमा मोदन तुर्दि छैरमा तुद्धि विकारमें महरही देश करला। पारपर दशही वेंथला, शुराबा। किमी

बदारका लेव समामा ह रीपमा-स॰ कि भगाना भगाना धीवा लगाना वक बन्दने दूमरी वयद गारमा। श्वापित बर्मा, रशनाः बहराना, रिकाना: बीज बीना: इसमा: हवेगी का बीर्ट

बल फ्रेमाना बीर्र काय आये बरामा (बीर्ड वन्तु हेनेडे रोपमी-भी • रोवार्ट वोपने (बाम क्या के बीवीवा गाएने)-RI KIR t

रोपिश्च∽वि [सं] बमावा रूगाया दुमा पठाया सूदा किया दुवा। रखा हुआ, रशापितः मोहितः भ्रांत । रोब−पु [श 'श्थव] शक्द, बनदशः तेत्र प्रतापः आर्थकः। —वाब−पुतेत्रः आर्थकः। –दार-वि+ तपस्यीः प्रमावद्याकी । मु॰ -में आमा - पाक, प्रमाव मामनाः वव मानमा ।

रोर्मध-पु [सं] जुगारी, पागुर ।

रोस~प्• स्टलोकी राजधानी। [र्स] क्रिया वरू । रोम(म)-प्र• [सं] रोबॉ, रॉगटा, शरीरपरफे बाह्य पर ।-कर्णक-पु श्वरगीश ।-कृप -द्वार-पु॰ त्यवा-के वे छोडे-छोटे छेर विमसे रीचे निकतने हैं। -केसर,-गुच्छ-पु॰ पॅबर ३ -पाड≠-पु अमी क्रश्वा ।-पात-प्र अंगरेक्टका एक राजा जिसन कथ्य शिक्षी पत्नी शांदा को बोद किया था। "यद्-पु+ वह वल आ रीवेंसे क्षा वैंथा हो। वि शेवोंसे धाँचा, बना हमा।- सूमि-को भगवा, त्ववा। -राजी,-सना-सी रीमावती रोमोंक्ष नेगी: पेउपरके गहरे नाक मामिसे कपरके नाक ! -हर्ष-प रीवें, रॉवटे खड़े होना रीमांच। -हर्पन-प रीमोंका सना दीना (दर्प, छोक, मन मादिके कारण): वेदम्यासके एक जिल्ला, नृत पीराणिक। वि रॉनटे सके करनेवाला, मर्वका, भीवग । म -रोमर्से-सारे श्ररीर में, अंग अवर्धे । -शेमसे- वृत्ते हदवरे, तन मनसे । रोमक-तु [सं•] सामर शोकका नमक, सामांगरी पांश कवणः क्वोतिक्का एक शिकांतः एक प्रकारका चुंदरः। रोमन-पु [मं•] रोम-निवासी । - इथसिक-पु सा-

इबोबा एक दुराना नंपदाय (इस म्पदायमें मुरियमको क्यासमाध्ये प्रवा है और विरवायरोमें मुद्रियों भी रही वाती है)।

होसाँच-इ॰ [सं] रीवॉदा कमरमा राहा होना (बार्नर भव आरिसे) पुचदः।

शेमांचित-वि [यं] प्रवित्र इष्टरीमा विसन्धे रीवे सरे हीं।

रीमांतिक मस्रिका-धी॰ [नं] सबद्व वैमा एक रीग छोधे माना ।

रीमाग्र-प्र [सं•] रीवेंदा हिरा र

शेमानी-दि॰ जिसमें मुख्य स्वते शारीदिक प्रमदा वर्षम शे ।

रोमाली-सी [मं+] रीमायनी रोमरात्री रीमीफी रक्षि । रोमायस्य रोमायखी-न्द्री • [मं •] रोमें स्पे पंकित मासि से कराबी और जामेवाली रीमपंकि ।

शमिख-वि रीवेंशर शकोवाना।

रोमोहम रोमोहेंद्~तु [नं•] रोमावरं, रोमांव ! शेम्पॅशिकॉ-पु॰ (१८६६-१०४८) वृश्यि कांग्रीमी सेतकः भोरेन पुरस्कार विवेता, १ १५; रिक्सांति हे समर्थक । दीयाँ—पुनीय रीम रीन्स। सु≕लक्षाद्दीमा— रीमांप दोना । ∼टदर व दाना-कुछ न दिग≰ पाना कोई शति न होया (शल व दा म होता) । -पर्माप्तवा -१दा दरबना सम्माई होता :

होर-की रीमा बीमाहम दर ।; बन्तु-रे मीर्ग्नेटी श्रद ताच निवली हुई व्यक्ति होने िस्त्रानेद्य प्रभाग इस एक.

की किया। एकशनेकी किया । स्त्राव-पु॰ श्रेनंन, तास्त्रक । छताबट−सी संबंध प्रेम व्यार रक्त कका। स्मावन-सी॰ रोगैके साथ साथी जानवासी जीव तीवम सालना = स्नाव संबंध। छगावना+~स क्रि दे॰ 'स्यामा । स्ति। -- अ दे 'स्य' । स्रो करामा दे "समी । क्रगित-वि [सं] संयुक्त, शंबबाउ माहा प्रविध । छत्ती∽सी शंत्र, प्रेय म्याविशः मृद्यः तरफदारीः जागः # दे॰ 'कामी'। ─लपदी─ली तरफदारी ! सु॰ ─ श्रद्भवा-दच्छा पूरी हाना। ~श्रुरी होती है-व्यक तुरी बका है। क्युड स्त्रुर ब्रमुक−५ [मं] काठी दंदा वक तरह का छाता सीहरहा हाल कोए। -(क)वंशिका-न्यी॰ यक तरहका छोटा गाँछ । - हस्त-पु॰ छड़ी-परदार । वि दंड बारल करवेवाकः। स्गुडी(डिन्)-वि॰ [सं] दंडवारी। हरावा!-वि पीछे वक्नेनासाः साथ साथ कानेवाला । स्तार, स्तास 🖛 पु । हुन । सरो - स दे अगः स्मी-वि [स] वेदार, स्वयं समंगत बहुका । सी । वेद्वदा वातः।

कर्रीहर्र-वि कगनेवाला रिश्ववार । करता-प अवसीदार संबा-पठका बाँस (बह पेडोंसे फर्स होइनेके काम भागा है)। लंबा बॉस्ट गांव कैनेका वीसः संबा बाँस सनाकर बनावा हुमा वास, कीवर बटाने का फरसार काम शुरू करना कामने दान बाकना (स्तामा संगामाके साथ) । मु॰ –सन् कामा–काम शरू हो आसा कार्यका स्थापत हो बाना । -छगामा--कामकी मिलसिका बना बराबर यक्तावे जाना । इस्सी−सा छेदासभ्याः

सम्बा-दि सम्मेशाला । क्षाचन-त नामा एक तरहका चीता अक्षत्रमणा । कामा-५ दे 'कमा । सायी-सो दे 'हम्पी। क्षान-५ [मं] राशिविशेषके वरवदानका दिनांश

(वर्षे): बिमी बामका करनेका शुभ महने (वर्षे) निवाहका शमया ध्याका सहासमा वंदी राजाकी रत्तुति करनेवाका विकास हमा भूग पुणा गाँछे स्था प्रभाः मरन (दाधी): शुमा सम्बद्धाः -क्षेत्रण-पुरु विवाहके पहले बर-कन्याके हाबने बाँचा जानैवाला मंगकस्य । -कुंडसी-सी सम्मदशी सम्मर्गटकी। -प्रदू-दि॰ भागती । -व्हेंट-पु॰ गात-पत्रात समय स्तरको मृतियोका संदरतान लेयोग वस्ता । -दिम-त्र निराद आदिका शुध रिम । -पश्च-त्र• --पविका-भी यह पत्र जिसमें विवादकर्म क्यारी विकि आष्टि। यस्या हो। -गुहुर्त-पु विवादका इति साम । रुप्रक्र∽द्र[सं]प्रतिम् वासिनाः शासीराधः।

सप्ताचार्य-त (म) क्यानिया ।

सगाय-स्मृ बन्नायु(स्)−भी॰ [सं॰] रुपके अनुसार स्थिर की दुई मातु । म्बाह-प्राप्त के कि है । स्रशिका~नी॰ (सं॰) दे॰ 'नप्रिका' । करनेश—पु॰ [सं] क्याका स्वामी ग्रह (स्वी)। करमोव्य-पु [सं] कदका बदयकारा कप्रके सर्व से ब्रह्म कार्य मनाग । स्वयटि, क्षयद्—पु॰ (सं॰) पासु । क्षप्रकृतस्या-पु कम्हर्यस्या। सचिमा(मम्)-सा [सं•] एक सिक्रि विसन्ने मभावसे शिक्ष प्रकृत्र वर्षेष्ट छीटा, इकका की सकता दी करूता का अनुस्व । क्षप्त-वि (सं•) पुत्रींकाः इककाः होटाः निर्वेकः प्रुक्त ् श्राह्य पत्र अवयः निरसारः अस्थिरिनचा स्वरवा ग्रस्व यक मात्राबाकाः विवार प्रसास क्षासाका भगरा प्रदर्श क्ष्योकी यक कालगणनाः शरह मात्रामीका प्राचामाः यक मात्राके शरू-अ, इ, ध, म: (अपा॰); एक माधा (धेर): पुल्का: चाँदी: स्वरंथ व्यक्ति । -ककोस-प्रश पढ छोता वंद्रोक । —शंटकी –सो क्रमासू । —क्रशहें – यो । [दि] दे 'संस्कारी । —क्षण-पु । सपोर बीरा । -कर्षत्र-त अभिर । -कर्जी-को सूर्व । -काय-प्र कारा । वि छोडे छरीरवाना । -काहमर्थ-प्र इट्डल । ≔काष्ठ∺पु टंडेसा शार रोक्तेके काम आनेवाका दकका बढा । -कियरी-को॰ संबद्धक यक माधीन नाम । - अध्य-प्र ३ ठ गति तेत्र मातः । वि तम चलनेवाका। -क्रिया-स्रो होती वाता। -कटविका-त्यी भारामकुद्धी प्रथिया । -श-पु० का**बु । —शया—यु० क**दिवनी, पुष्प दश्न नक्षत्रसमृद् । -शति-वि वेब थ#नेवाला । -शग-प्र देंगता तीन बॉटेश्चे मठली (त्रिस्टब्र); येता मछली । -श्रंदल –धामा(मन्)−९ भगरः सुर्गभद्रक व्यक्ते । -चचरी-मी एक शास्त (प्रेगीत) । -चित्त-दि श्चेयन विकास । -विमिद्य-मी॰ दर्शत इंद्रवाहणी । -चेता(तस्)-दि मीच मीचाद्यरा -चादा-न्ती॰ वही महावर । -यंगल-पु कवा बडी । -ताल-पु पद तरहका वाष (मंधीत)। -तिक्त-पु अरहा-गंदा । -तुपक-मी (१६०) तथमा पिस्तीत । -इंडी-स्पे छोटी स्पार -हुंबुझी-सी हुम्पीर −हाक्षा−भी क्षिणिया । - हाबी(विन)-वि अस्य विषयने या वहनेवामा (वारा)। -नाम-कर्म (म्)-प शह कर्म जिससे धरीर म अधिक गुर दीता दंस कपू (थै)। −माटिक− धीरी वंद्र। -पंचरा-पंचमृत-प् गेचरा धार्मिन्दी छोटी बताई विडवन वही क्टेक्स-इन वाँव वनस्पनियोंकी अधेका संपान की कपवागी भीवव दे। -पत्र-तुबसीलाः -पत्रक-तुरीवनीः। -वजी-सी रोपल्डा देह । -पर्सी-सो मधेन्द्रनी मुर्ग नतावर । –याक-दि॰ सुप्ताध्या क्रश क्राने-बाता । हु॰ शुक्रस्य न्याय स्थार्थ । --पाकी (दिन्) --पुरु थेना यह प्रकारका अग्राहि अस्य प्रवासका।

ने किए कगावा जाता है)। –ओदा-<u>प</u> पक शरह का सामुस ! -दारा-पु॰ करछा, करसूक जिसमें वो दामते है। -दाइ-वि रोगन चढावा हुआ, अम-क्षका। - क्ररोदा-पु॰ तेकी। -(वे)गुक्र-पु गुलाव-के कुलका तल। -ज़र्य-पु की। -तकाश-पु करना तक । -सियाह-पु॰ अक्सीका तेका कन्ना रोतनी∽वि [फा] तेक, यो समा था चुपता हुमाः नानिस दिया हुना विसदे समीरमें रीगम मिलाया मया हो। - रोटी-की शागीरमें रोगव मिकाबी हुई रोगा यो अपने हर्र रोग । शेगाकत-वि [६०] रोगी रोगसे पीवित । रीगातर-वि [एं॰] रोगसे वनरावा बना केरित । रोगार्त-वि [सं] रीगसे हन्त्री व्याक्रक । रोगाद्यप-५ (सं•) कुएको यह ओपपि कट । शोशियी-दि+ न्वी+ [यं+] रीगसे पोहित (ब्वी) । रोगित-वि [सं॰] रोगी गीवित । यु कुधेका पायक-रोगिया-प्र नीमार, रीगी।

रोगी(गिन्)-विश् (संश) करवरच स्वाधिप्रस्त बीमार ।

−(गि)तर-पुथरो≒।

रेषिक-पि [मं] वचनेवाला विद्या सनोरंपक, रिक वररा । पु भूका केला; राजपक्षेपुः व्यंविक्तां, विद्यत् रिवाली) - क्रूप-पु रिट कीर प्रेवक करवा । रोजन-विक [मं] वित्र जन्मा क्रुप्तां करित्राः क्षेत्राः नार् । पीतिषुकः । पु नृगः बाला हेश्याः क्ष्रितः क्ष्रितः क्ष्राः व्यावः क्ष्राः विवा विद्याः विद्याः क्ष्राः विवा विद्याः विद्याः क्ष्राः विद्याः क्ष्राः क्ष्रा

यु॰ योक्क्ष्य सरदनस्रको यक श्रेंदशि स्थेषका यक क्ष्यु कर। दोर्बिस (सू) नशी (सं॰) प्रशा क्षमक क्षांतिः किर्य रशिमा क्षांतिः प्रस्त कोनी दुवै दोषा। रोविसणु नशि [थ] क्षमदरारा कर्णकारी कारिने वन

रोचमाम-दि॰ [सं] चनवना हुनाः भागानुष्कः शुंदर ।

होक्टिप्यु-िशः (सं) असम्बरारा अलंकारी आदिने । समावा दुशा स्वि (स्टा) जगानेवाना । होची-सीश [संश] यह साह, दिलमीनिका ।

होची-सी॰ [मं॰] यह सास, दिलमीनिका । होचा॰-चु राजा चीमाः निचाय, रीजा-पाटना ह

गीरी बनाः दम्भाकाः बंदीः सारा ह

हराज = द्वाना चारा प्रशासकार प्रशासकार है। ग्रीम = प्रशासका का मीतीला, हर रीत शिखा : - नम्मज्यें - वि मितिस्त वन्त्रेतामा (बन, बात कार्डि! - - नाममा - प्रशासकार कार्योश कर कार्डिश्य हैकिट दिस्टर किसा कार्य कार्योश कर कार्डिश्य तोका तिसात किसा कार्या कर सेता कार्या कर सेता कार्योश

है पुक्ति बानैका एभिसर में १ तिसमें पुरिस्त वैनिक कार्यीका विवरण किया जाता है। -नामा-पु॰ विधितकः दैनिकः एष । -क रोज्ञ-न॰ मीर्थिय वर रोज- कमछा समातार । -मर्रा-म• निरव, प्रति दिन, दर रीज । पु॰ अइडे जवामकी साथा, नील नाव के खब्द और सुक्षावरे। -शेक्न-म प्रतिहित, हर रीत । - व शव-व राज-दिना हमेशा निरम। -(हे) क्रमामः-क्रमासव-पु॰ बनामतक दिल। -अक्रा-क्षमीका कल मिलनेका दिन क्यामतका दिन। --वरव-प्र• दे रीशेवल । --मजाल-प्र दरकारी रिहार्व पानेका दिमः क्यामतदा क्रिम । --क्रिक्क-पुरु विरष्ट वियोगका काम समय, मन्ति दिया -यत्-त तुरे दिव । -इभ्र -हिसाप-तु॰ ह्या-मतका दिम । शोहागार-पु (का] जीविका असर्वक्यका काम, स्थम स्थवसाय । सुरु ~कसक्रमा-स्थापाट, व्यवसायमें काम होता । शीला-पुरु कि । एक संबद्धनी पूर्व जिसमें प्राप्तश्याप यक पनी रातमे लेपनके एक गरी नाइतक रिलक्त मही सातिः वच्यासः अनाहारः रोजेका दिनः रोनेका महीनाः रबबान। −द्रोद-इचार−५ रोजान रखनेराना शासमी । −दार∽द्र वह मी रीजा स्पदा है। हा -अप्रतार करवर-रीवा धौनना । -शाना-निवन होश्रीमें कोई न रशना ! - न्यासमा-दिनमर तर रहने-& बाद संव्यानके पहले पहले हुए खाना । -द्रहमा-सन रहित होना । शोजाना~भ (का] नित्व दर दीय। रोजी-ली [का] स्टान दिका भीतिका !-हार-नि तिथे सर्वेदे शिष नित्य हुए दिना जान । -विशास-ति० लगी रीजी रिगापनेयाना निकामा । --वसॉ-- वि होश्री पर्देवामेवाना । ५० परवर्दियार । होजीला-पुरु कार्श दैनिक बेजन, नगरश (वा रोजाना क्षित्र): शुरुष्क (की रीवाबा दी बाब): वेंश्रम वजीका। है क्ष शतिस्य मनिदित् । रोझ॰-स्री पु मीलगाय- इस मी पाइल पुत्रते हीते

होस्थल-की पु योग्याय- इस भी पाहन कुमरे होते बनके रोक -साधी। होट-पुर कुम कोटी होते। प्रश्तन सहुब है एसमें बनावी हुई मोटी हाटी। निष्टु बादिवीना राजित। होटका-पुर नावत। । होटिका-की [न] पुरूषी बनकी छाटी मीटी। होटिका-कु शिविके (सामेटे) वाहिने काल करने साम

वीद्वर। शिदिवानी-पुरु गयी रीदिवाँ राज्येदा दोसा बहुगरा। होटी-जी शुंध कादेदी तरेशर या जागगर मिसी और देख्य या बाको बशाबद वार्ची दुर्द होन दिस्मा, बहुगरी शुन्का, धाना आहम सेवार सेवार । व्यक्त इ. समान्याता शुद्ध सम्हत्यी मासारी। -शुन्न-

तु रहमान्द्रपत्ता प्रवस्था भाषामः। "प्राण्डः यो रीमी भीर वाणा नोजनः। "प्राण्डः वस् प्रकारण प्रण्डा पेत्रः मुश्चिम्सानः मीरिकः रीमी वसामा पेटा बरुमा। "सी पीड-पणस्वर मिन्ना मानेः

-पिरिग्रल-पु मृदर्गदारक। -पुष्प-पु॰ भूरेकरेर। -पुष्पा-सी पीठा बेनदा । -प्रयक्त-दि॰ माक्सी, कारिक ! - फास-पु॰ गूनर् ! - बन्द्र-पु एक तरह का छोरा नेरा - भुक (क्)-वि॰ क्षम छानेवाला। -मय-प्र• गनियारी (छोटी)। -मति-वि स्वस्त-नुकि कमवृत्त, सूर्व । ∼समा(अस्)∸वि० № 'सपु-पता'। नर्मासन्य• तीतर पद्मी। नर्मासीन्सी• धीरी बरामसी । -साम-५० नारिहाका (भावकपर) **इनरवा**यी रीप । ~झेर-प० व्यक्त ताळ (संगोत) । ~स्रप्ता~सी॰ स्र**दे**न्द्री वेता वर्तनमृत्ता -स्रय~पु० यसः समञ्जूष समग्री वास ! -कोलिका-सौ सोनो, एक साग । ∽बक्ति−वि इतद दिलकाः मध्यपरिश्व । – इंडि:-सी देशाय करना। – इंटि:-पु पीचा ! —शिक्षर्-पु एक ताल (संगीन)। -शीत-पु॰ क्रिसीशः। -समुख्य-पु वह राजाया रास्य विसे पुरुषे तिथ होता तैयार किया का सके। -सहाकना,-हेमहुत्वा-व्यो डपृदंगरिका।-हस्स-दि तहीते शय पतानेदाका। तु अच्छा बनुर्यर । सब्द-दि [र्त] इत्रदाः महत्त्वदीन तुन्छ । स्पृतम-वि [तं] सबसं छोटा । -समापक्षे-५ "बह सबसे छाडी संस्वा जो हो था अधिक संस्वाजीसे पूरी-पूरी पैर बाम ! स्रोता—सो॰ मयुत्र-पु [सं॰] अपु दोनेदा भार, इसकापन धोराई। 🗝 भावना-भगमेक्षे धोरा वा भगमर्थ समझनेकी मध्छि । सरबाहाँ(शिक्)-वि [सं] अत्याहारी, इम गानेवालाः भ्रम्याद्वार-वि [मं] है 'रुव्हाशी । स्पती-भी सि देश अमररग छोडा रवा क्षेत्रक कंगी-शको एउको स्त्री i सच-मा अपदान, सरामा विशो वरतुके दवने जुद्दी का ग्रम । सच्छ, सचक्रम-को छन्छनेश मार वा दिवा । सच्चका∽म कि मंदी थीउका दवान मादिने सुचनाः मिन्नोदी बमरदा गररे जन्मकाने शुक्रमाः चलते भगव विवोदा प्राथः मुद्द मुद्दद् यनना । सम्बद्धि - स्रो सम्बद्धः स्पीनायम् । सच्या-१ दढ तरहवा दीश। क्षच्याना-स कि॰ सुकाश अवाना। संपर्धाला-रि दनने वा लयमेशामा कवनशर । संबर्धोदार−4ि संपदीशः संध्यानाताः शदा धूना । मचन सचनि∽सी देशच्छ । अध्यमा-अरुद्धि है सप्तमा;सदना। सपा-वि भी दिवस कर्फ संबद्धीय समग्रीत है सच्छत्ता-विश्ववद्यात्। -वश्व-पु क्षयद्य गृहात का गाम है सचाना-म दिश्वपदाया। क्रचारण-दि है 'नायप'। अचारी- • श्रेष्क दे लागारिके शामनी में दा दक भेर | सप्रायम - पु दे भिनातु ह वा रिरामदे कुछ रवाने में प्रवर्णन है। निर्म जनवने | स्वताह-पु रसानि निप्रत कानेवाना वक रेपा। नवा पुन्त अपन्ता अपन्त मीरफीवरार + वर्ष'की दी वाने- | कवायमहारार=पुर व्यक्तित वरनेदरवा र

बाबी बेंट, उपायन, नदर । सचीसा-वि कवहनेवाका, जो भासानीसे दुव स्री वस्त वस द्वानेवामा। --यम-पुर वस्तुर्वे प्रदर्शे क्षप्रक्रीका शाम । समुद्री -सी॰ मैं²से बनी मुलायम पूरी, गुप्रे । सरहरू मु बहाया, ब्यापः निधानेदे किर निधित स्थान । बस्तुः सी इबारही संग्या करा। सी रे ⁴ठडमी १ विसी दनार था एक लाग । सच्छम सच्छन = पु॰ स्थान, विद्वा स्ट्रमा। स्थाता°∽मी॰ दे 'तथना । स॰ दि० संधीता देखना । कच्छमी-सी है 'हएमी'। सन्धा-पु॰ तरतीनदार तार होरेबा गुन्छा सून्या(रेक्षम न्त मारिका संबक्ती। धर्ने भाने शामिक हरे हुन उक्ते क चर्चे हे देवडी बनावी हुई बोर्ड पीजा मैरेने बनी हर निवार्र की मूल-मी लंदी और रेछेशर शोनी है। बाँरश केमरा वक महमा जी तारीको को सहील बनना है और पॅनिमें बहना जाना है। -(शहे)हार-रि तिसमें हरे पर थीं (बीर्स सालेबी बीब)। देरता बनवेशकी बने-हर (कान) ह खप्ति∗−तुलार १६ कामग्री भस्ता । भी० नश्मी। -नाव -निवास-त रिपा। अधिग्रत - वि कर्य, विदिन दिया हुमा। क्यूग्युका बालीधिन । हरिएमी −धा•दे हर्मी। कच्छी-पुधोडीदास्य धराभी भी कर दना वत स्त बाहिया सरेटा हुआ हुआ। • १० फर्मी -मिन्धी नी पहें बारिस दोने - सूर । लाइन् 4 – पु० लगुग्ध **ल**६वथ । **म्यांना कि दे नागा**ं लक्ष्मन-९ दे ४६मच ।- लुका-५० राखी वर्गीका शास्त्रेराचा पुना रश्रीमारादगढे शास्त्रमें एक श्राम वहीं ऐसा वृष्ट है। एक देखा लग्रमथा-भी है अध्यक्ष ह कप्रमी निविधी?-स्थे १ 'तश्यो । क्षप्राशाक-वि लगा वहा । स्त्रक∽भी सचादर्भ । सम्बद्धानिका-भी [गं] नदरणु मामद पैथा। कालना - ज फि॰ स्तरिया किन्द्रातीना। सक्रमी नहीं समाप्त पेपा। राज्यमेत्री ७ -- विक स्त्री । स्टार्शाच्या । स्त्री + संज्ञास प्रीची । लजवाना-म कि॰ श्रीवण श्रीवा दरमा। सक्रापुर्व-दि॰ शमीना पर्त समानेशना। पु सम ५ माम्बद्ध दीपा । मजाबा∽भ वि अध्ये बन्धित को को भागाव क्युभर प्राप्ते मेर्नित होता क्रजेया । ए दि. राजा 42711

बाका रीटीका पदस् ।

रोद्धां - प्रयुक्त तरहका वाकरा।

रोबा-पु॰ इंबर, ईट-एल्स्स टुटने। एक पंजाबी बाना पंजानकी एक जाति अरोहाः (का) नाना । मुख -दासमा-नाथा सही करना। -(दे) अटकामा-

भाषा कामना । रोद(स्)-पुर्नि]स्वर्गः सृमिः वावापृथिवीः स्मि॰

रोस्से ।]

रोव्म-पु॰ (सं॰) रोना दिलाप करना। होता-पु भनुद्दी दोरी प्रत्यंपाः वारीक, सूक्ष्म ठाँठाः पेडकी साम्ब ।

रोध-प [सं] रोक निपंद वादाः वैराः तीर किनाराः गरी। -कृद-पु साढ संबत्सरीयने पैवाकीसर्वा (ए० सं•)। -- वक्कर-न्यो देई किनारेवाको नदी।

रोधक-दि [सं] रीकनैदाका। होधम-प [एं॰] तुत्र प्रद शेक, जनरोत्रः दमन ।

रोधना≉−स कि॰ रोकना।

रोध्न−प्र [सं] पापा अपरावः कोण काफका पेड़ । रोमा-अ कि श्रीक कटबनित विकलता कारण कुछ बह बहता, इछ विशेष प्रकारके स्वर निकलना बार और बहुता, चिहामा तथा धाँखु बहाना, स्टम वा विकाप बरनाः शिकायतं करमाः अफ्टोस करना शीक्ताः रंत्र गम चीक करमाः कामाः वानेता करमाः फरिबाद करनाः दुग्छ वयान बरनाः पटवाना । वि रीनेबाकाः मुद्रर्भीः विक्षिका । यु न्दन सम्पादाः इदरामा मादमा नपसीस गमा सिकायता तदलीका फरिबाश बार्वकाः दुवन । सुरु - ज्ञाना-दिक भर बाना बदारीम दोता । -पदमा-मातम दीमा-

दुस्राम मधना। −धीटमा−शिक्तास्त्र छात्री पीटकर होती-धोमी-दिश्मीश होनेभीनेवाको सुहर्रमी। सी

रक्त विकासकी प्रकृतिः मनदक्ती ।

शोप-पु (मं) रोपा (शाम येह आदिके किय); उहराब म्बाबर। रिप्रा टेपा बाणा दुव्हि फैरना ओहमा 🕆 हरिसद धीरपरको अधिके पारवाशी इसमें संगी सकता ।

शोपक-दि सिन्। जमाने श्यानेदाताः स्वापित काले बालाः (दीशर भारि) क्यानेशला । तु शोने-चाँरीको धीरका एक मान शहर्गका सक्तवाँ अंश । रोपय-9 [मं•] स्यामा, वैद्वाना (वीत्र पापा); श्वारित

बरमा। क्षर रशनाः गरा बरना उडाना (रीवार बाहि)। मोहित बरमा मोहम पुढि केरमा पुढि विधारमें गहरती पेटा बरमा: बारपर क्यही र्वेचना, सूध्यनाः दिशी मदारका क्षेत्र कगाना ।

रीपवा-स॰ कि रुपामा जमाना। शैश रुपामा २क अधरने दूसरी चनाइ गाइना। स्थापित करूमा स्थाना उद्दरामा रिद्रामा रीज शमा रुगमा हवेनी या कोर्र वन प्रेनामा कोर्र वाच माग बणना (कोर्र वरतु हैनेदे

रापनी नमी रोक्षा रोक्ष्में (बाम मार्डि बीवीटी बाहने)-क्ष काम ।

रोपित-वि [सँ॰] बमावा, हमाया द्वमा। बठावा स्पद्मा क्या दुमा रखा हुआ, स्थापितः मोहित प्रांत । होब~पु• शि• 'रश्चव'] थल्द, इक्टबा; तंत्र प्रतापः वार्तकः। ∽दाय−५० तेवः वार्त्तकः।−दार−िः तेवस्योः प्रमानशाकी। गुरु -में ब्याना-याक, प्रमान माननाः भव भागना ।

रोमंध-पु॰ (सं॰) जुनानी, पागुर ।

रीम-पुरुक्तिकी राजवाती। [सं] हिन्नः बस्ता रोम(म)-प [तं॰] रोगाँ धंग्या, भरौरपर्के बाह्य रर १-कर्मक-पु॰ धरगोश । -कृपा-द्वार-पु स्ववा-के वे छोटे-छोटे छेर जिनसे होवें निक्षत है। - केशह.-गुच्छ~पु चैंदर । -पाट+-पु• रुमी क्रपहा !-पाद-पुरु संगरेणका एक राजा जिसने ऋष्य गिकी पत्री श्रांता को गोर किया था। ~वडू ~ पु वह वल जो रोजेंसे द्याः वेंबा हो । वि॰ रीवेंसे वेंबा, तुना दुमा ।- सूसि-की चमहा लाचा। -शसी,-सता-सी रोबोंकी बेची। पेटपरके गहरे बाच, नाभिने कपरके बाक ! ~हर्य-त शेवें शेवटे खड़े होना, शेमांच। -हथल-प रोगींका खना दीना (हर्ष शोद, मय नादिके कारण): वंत्रच्यासके एक शिष्य नृत पीराधिक । मि रीगटे सके करनेवाला, मर्वदर भीषम । मुक -होमसॅ-सारे शरीर मैं अंव-अंगमें। -शेमसे-पूर्वे इत्यते, तत-मनतः।

रोमक-तु [सं] सामर शोटका ममक, साबंगरी पांश करण। क्वोनिवडा एक सिक्षांता एक प्रकारका सुंदक । शोमन-९ [अं] रोम-निवासी । - ई.पसिक-पु रेसा-हरोंका व्य प्रशाना संप्रशान (रस । प्रशानमें मुरियमकी क्पाछनान्ध्रे प्रथा है और पिरवाषरीमें मृतियों भी रक्षी वादी र)।

रोमांच-१ [मं] रोवींका बमरमा धड़ा होमा (बानंद. वद आहिती), पुनद्र।

शेमांचिष-वि [मंग] प्रकटित शहरोमा शिसदे रोहे छरे हों।

रीमोविक मस्रिका-स्व [नं•] भयत वैसा एक रोग धोरी माठा ।

रीमाध-पुर्शि] रीपेंद्रा मिरा। होसानी-रि विसर्वे सुरूप रूपने शारीरिक वेसका वर्षम

रोमाणी-न्यो [वं] रीमावडी रीमराश्री रीमोंदी रिक्ष । रोमाचित रामापनी-छी [मं] रोमीधी परिप्र मापि

मै करादी और वानैवाली रोमर्शक । रीमिल-वि रीवेतार वानोदाना ।

रीमोद्रम रोमोजेद-५० [मं] रोमर्च रोमांव। सम्पतिसाँ-पु॰ (१८६६-१ ४४) प्रतिक्व क्रांभीमी सेतदः मोरेन पुरस्कार-विजेना १ १५। विच्छानिके समर्वेक । रोपॉॅं-पु॰ कोम रीम रेन्द्रा सु ∽नाहाद्दाना~ रीयांच दीना ! -रेदा न दाना-कृत म रियद शता कोई हार्ने म बीवा (शब वर्षा म दोना) । -पर्माममा

- न्या उपन्ना स्टम्पई होना । शेर-सी देश केलास इवना बद्द-में अमेरी बद

साव निवली हुई प्यन्ति शनै निस्तानेका राध्या इसमृत्र

कवायना•-स कि॰ दे॰ 'कवनाना । स्तियाना−न कि दें 'स्वाना'। स कि स्व गाना, कवित करना । स्त्रीत-वि [स•] स्वादेष, कस्त्रकारः प्वारा ! स्वीसा∽ि धरीका क्ष्माशेल। स्वारी!-सा॰ रत्सी, टोट हेन्द्र (कुरैंसे पानी भरनेकी) । क्रमोर#-वि क्रमादील। **क्षेत्राः-विका**शास्त्रक, समीला । समीना :- वि॰ श्रमीताः समित करनेवाला- स्र नेत्रस्त मदन-सभीना'--सूर । क्रबीडॉ॰-वि च्याशीस । क्रमचा−को सि[†] बनक्रवास । काज़स-सी [ब] स्थाद, मना। सुवा। -हार-वि स्वाद्धः श्रामकेशार । स्करी−सो॰ सि] स्वाद्राः समा-सी [एं॰] स्वसाव या अपने किसी जन्नित आध-रमदे कारण हुई मलको संदोपपूर्ण बनरभा जोडा' मान। प्रतिकाः कवातः। -काः,-कारी(रिम्),-पद -वह-वि कारवाजनकः समिता करनेवाका । -प्राचा-स्वी+ मुखा माक्किके चार भेदींमेंसे एक (केसर)। ~शीक-धर्मा**डाः विनम्र ! —धून्यः,—द्वीन**—वि विसर्वे क्यमान दो निर्देख । सम्बापयिता(तृ)-वि [सं] क्रमाजनक। सकावित−दि (सं•) समिदा समिता। इस्टालु−पु[मं] कनाइद्, मामदा ग्रीवा। दि॰ कमा-श्रीच । सञार्यत-वि सबीका । तु स्रवास, कावनेती । रुज्ञावसी-औ [सं]कावर्गती । वि सी समेंकी । स्रवास्त्(बत्)-दि [सं] समाग्रीतः। समित-वि (से) कवाना हुना, समाञ्चल, प्रमिश । कविनी, कविरी-की [सं] कवान्य । इट−तु[सं] चोरः वधीया मुख्येकी तरह बात करने-बाका दोद, देव । -वर्षा - प्र वारमीमी । क्षर-को भीभे कटकमेवाले शिरके करे वाकीका एक ग्रुप्ता तरसे हुए बार्कोक्ष ग्रुष्टा। यक नेता ऑसमें बहने वाने वारीक की वे मुका। व सपट । ∽शीरा∽यु विवदाः यक जहन्म । मु॰ -छिरकामा-निरके वाबीको शोककर विश्वेदनाः -पदना-सिर्दे शमोदा वक्दाना विष्टमाः। छरक−की करकन। शुकाशा मुंदर थाल अंग भंगी। पु० [ध्र] इमा दुष्ट स्थतिः दुर्वतः। **करकम-पु॰** शरकनेकी किया। तरकनेवाली श्रीता सुंदर नालः मारका एक गहनाः निरपेनमें कवा द्वाना रक्षगुन्ताः माक्रप्रेमका एक व्याचामा पद्र कुछ । मरकमा~न कि केंग्री बगइक भागवने गी-नग्री और अवन्दित होना। कैंदी प्रमहत्रे दिन्नी श्रीवद्याः आधारक्षुत

दौदर शुलना। रॅगमा हुए यन वित्रण दोगा। किग्री हे

नागरेमें रहना काम पूरा म बोना हैर दीना। कर

म्दरका−द्र बारका। दीम श्वारिका छोटा मुलग्रा। गति प्रवा

कती चाफ-रब साठी दूर्र शुंदर यान ।

करक्षामा नम दि० संख्यानेका काम कराना ।

शत-पीतका बनावटी हेगा एक तरहका चकता गाना । खटकाला-स कि॰ खटकनेमें प्रवत्त करना। टॉगमा: किसी खड़ी बरतको किसी भोर शकामा रंतवार कराना, पँसा ्रबानाः हेर बरमा । सरकीसा~वि॰ वक सानेवाका क्यकनेवाका समने वाका । खरको – पु॰ एक पेड़ विखयी छाड़ते रंग निकारते हैं 1 स्टब्हीमाः स्टब्हीबा-वि करकोवामा । – साम्रसंस – य बह माकरास जिसकी रुक्ती भमिमें गरी न हो ! करमा-ज फि॰ वक्कर गिरनाः रीय, परिश्रम वादिसे कमबीर पढ जाना। बीका, सत्ता पडना। ब्याकुक दोना। इच्छा करनाः करुषामा। सनुरक्षः आस्तः होना-'क्रं करी सब देखि शिकावरि वेदारि क्रोब्रि करे करि कपर'-मन्द्रविकास (सरपट-वि दे 'सरपटा । सटपटा-वि गिरता-पत्रताः बीका-बाका, सरका हुवा। दूरा फूटा (स्रथ्य): और स्था की क्यावरिश्वत स हो। वेदसः शिथिक बका हुमात्म बद्धत गमा म पतका सुरपुरा। मका भागका गींवा हुआ, सक्तरदार (क्षप्रा) । सदपदान-स्रो । स्थापाददा संदर पाक, सथकः। करपरामा-म कि कमगीरी नहीं भारिके कारण सीधे न चक पाना कड्खडाना थिरना-पश्चाः विचक्रितः अरिवर दोना' पुरु जाना। ठीक न पुरु सहना: मौहित हो पानाः अनुरक्तः बाहक होता । कटम, करह-दि (ते॰) श्रंतर । स्टा॰-वि॰ दुवना। श्रवाः पवितः तुम्छः संया दुरा-'सिक्टि शिवक चौरमी सुरर सबहि सहार। समे चोर बिचमें करी बढि रहीम मन बाह -रहीम। करापरी-सी करपरानाः कहाई-सगहाः भिर्देश मिश्रम् । कटापोड+-वि॰ कहाकोरः मुख्य आसन्तः। ष्ठदिया-मा॰ कप्री, न्येंद्रां -मन-पुपरधन। मु• -करना-धनको कपेटकर शाँध कपटा प्रमामा । क्षटी~को यप सुद्री पाठ। दुरी पाठ। पर्या। साधमी । वि सी दे 'स्टा । सु० - मारमा-यप शॅबमा-भव शुरुभक्षे बदम निद्वारत मार्न फिर्न हरी नमूर । सदुभा०-धु दे 'सरद्र'। सटक−द हुदार। सट्रीव-मी॰ दे 'बट्टी । स्टूर-पुर्देश स्ट्रा स्ट्ररा1-पु कुम्पा ३ कट्टरी॰-की शिरके बाबोदा करक्ते राक्षा गुच्छा, अक्स । छटीरा~तु दब देव नहरीरा किमोदा । सह-पु॰ [मे॰] दुर्वम । सहप्रश्न-वि वे स्थपप'। क्षरप्ट-पुर नक्षीका चनाव वनावदार एक प्रकृतका शाम नहां (रमुद्रे मीचे यक्ष क्षीत लगी क्षांगी है जिसमें तून लगे। कर शाबेथे गाँवनेपर यह यहर बाबर मानते अमना है)। विजयीका वश्त । - चार-वि सटट्ट जेगा। बटड

बामा ! -- परावी-सी वह बनरी विमदे उत्तर गीना-

मा बना दोता दे और बाग ध्रमान्मा बादर मिदना दोता

मुमनामा उन्द्रवः निर्पनता गरीनी-'रीरके बोरहें सार गरेना किया पश्यो हित्र शारका नाय उपयो'~सरा विपत्ति । वि॰ हर्यमनीय अयंद्य सद्धता दुष्ट, जल्याचारी । शेरा-प्र गाँतेका भूरा दे॰ 'रीर' । रोरी - स्त्री देश 'रीका'। अ भूग पहल-पहक बीहन्य - रीरि परी योद्धलमें सहै वह गाह फ़िरत पत्र बीवनकी —मूर । वि॰ स्त्री = स्विर, स्ट्रंट । तु॰ छड्सुनिका मग । रोक्श-धी [धं•] बरम विधाप बार बार रोना । रोर्फय-पुर [सुर] मनुष, जगर, झुष्क भूमि । विश अविद्यामी । रोळ⊸पु• पानीका रेटा शोव, वदावा स्छानो जैसा पक भीबार विससे बरदानको नक्काजीको वसीम साफ करते च्यति, भाषासः।

है। [मं] हरा शररका । ७ ली हरका कोकाहकः शब्दः रोकर-प अ कुलकनगढ़ी बीज, रेकन; स्थादी दैनेका वेकन की छरेस और शुक्ष मेल वा स्वर्ध बनता है। -फ्रेम-प्रवेषनके बनानी। -ओक्ट-प्र सरेक्ट रीकर डाजनेदा साँवा। शेका-त शोरपुत्त, ब्रीकाइका नेनमा बीर द्वका २४

मानासीका एक छंदा 🕆 काञ्च-बरत्तम करसेका काग । रोक्षी-ला॰ इकदी-पुरेश्चे बनी काल तुवनी, श्री (विस्त्वा दिक्क क्याते हैं) । ब्रु. कहसुविका मग । रोधनद्वार । - वि. ए० रोमेरालाः बृत्युका श्रोतः करनेराणाः भारमी व रोबन्द-नि बहुद बरदी रीमेशला हर। मानमेवाच्या विश्वतेवाचा, रोक, हैसीमैं तरा माननेवाचा । व अव कि है शेता'।

रीवविद्वारा#=वि उ दे 'रीवनशर' । रोबनी-धोबमी !-- स्त्री देश रोजी-पीजी ! शोवाँ-इ दे॰ 'दोवाँ'। रीपासा-वि रीनेसे वैवार, रीनेका वच्छक । [थी रीवासी वी रीगाथ-वि [पा] जलता हुना महादिता महासपूर्ण चमकरारा प्रसिद्ध प्रकातः मध्यस्य माहिरः मन्तः।

−मारा(बेगम)−लः वादम्बांद्यं पुना । −धीकी~ स्ती एक किमाके नामेबाजीकी चौकी शहमार्थ मधीरी (प्रतिक्षी सामाओं के कार्यर पहर-बहरवर वसने के कार्य शादा बह मान पता है)। - ग्रमीर - दिमास-वि॰ अप्रसंद, तुनुद्धः । -दाम-तुन् भीन्या, सर्थसा । रीशनाई-नी स्वादी, मनि प्रकाद रीयनी। रोपाली-ली प्रकाद क्याला निराण, दिया। बीचमाना-का प्रकाश, बीबोल्पना शान शिक्षमा प्रकाश ।

शीय-प [मं] कीया विदेश विरोधा थिए अपनेशा

बामाह बर्मन बोध ह शक्य-पुरु (संरू) पासा वसीया कनर भूमि । सि स्रोपः THE RE शेषास्त्रित शेषित-दि शिश्के असः रोनी(चित्र)-दि [मं] रीप बरवेताना करेती ।

होसार-पु दे शिव । जी देन होग । होसमाई-भी है रोजमार्द ।

रोसमी-क्षे दे 'रीशमा । रोसा-प्रश्यक सुर्गधित पास कृमा । रोड-पु [सं] क्यार्थः यान्ता संबद्धः सँगुत्रा ब्रागी संब गान । व वि चारीवासा । -रा-पुर सिर्वश एक बहायः भारमधी बोटी, विहूर परत ।

रोडक~नि [सं] कानेशन्तं। द्र संशर। राहण-प्र॰ [से] यन्मा। मेड्रारेत हीना छन्मा उपरही भीर बड़नाः गाँपैः विष्टराद्रिः वदः राज्य । रोहम-पुरु वद वेड स्ट्रम या मुझा वृष्ट्र । रोहमा = - अ॰ कि॰ गहना। कपत्को बहुमा | बाना। सुनार

बीमा । स॰ कि॰ पहानाः रूपर करनाः भारम करनाः भपने करर रहानाः सवार बरामा । रोडि∽⊈० सि] योज पृद्ध । वि० पानिकः प्रशी । शोद्दिण−पु॰ [सं] वरगरका पैतः गुलरका पेरः मृत्रस रीकिस मासा पंतर मार्गीमें किस्स दिलका नवीं जन (इसकी देशी होहियों हैं) ह रोडिणिका-सी॰ [तं] काक भारेवाती भी (बीत पा भक्त राथ क्षेत्रके कारम) ।

रोडिया - रहे + (र्श) नावा विश्वभी। बहारेगी। कश करेंग रीठा। महारदेश सकेर कीमाठीठा लाल यरहतुरनाः विचारिया (है)। यंत्राची। सजीह, मंत्रिक्षा जाडी वरी। करा क्री बीकी वर्र, जबरीपियी। रीटकी-सी एक मछली। श्ववद्याता करवार पंचवद्याता हुमारीर बक्टरेनकी दक्ष ली वनरायकी मातार शतारेन मनवीमेंने कीना (वह रबके आबारका और गाँप कारोंने गया मामा माना है। प्ररा-भागमार वह दशको बन्दा और चेत्रमादी वानी है)। श्राचाओं राज्ये परका गरेका दक रोग । —पति —बस्यार ~ व बहरता बहरेर १ -योग-इ रीहियी मग्रयस्य श्रामाने साथ बीम (भाषादके कृष्य पश्चमे यह परित शोना है) । ~सस~ड माह-क्रमाष्ट्रमोरी दिवा काने बन्ता एक मन् । रोडिशीश-५० (मं] ५१मा: रहतेत्र ।

होडिश-दि [गे०] साथ (गम्रा क्षांदित । ५० काक रंगा

रकः गृतः देशपञ्चम् धेमरः ब्रुतमा शाहितः रोहश प्रका वर्रेका कुल शोह मधनी। यक स्था यंत्रवीकी यक मानि । ~बाह-१ मध्य । राद्वितक-प्र [नंश] रोहेश पुरश्रममी। शोदिलायम-१० (मेर) अक्षि राजा हरिएनंद्रका एकः रीक्तामगण (भागनस्वर) । शोद्वित्तेष-तु [सं] रीदिग्रह पूर्ध । रोडिल-प [अंश] गुर्वे । सी० कृती दक्ति आब (रू की भीती करवात महीर कर लगा त शक्षिणी १ - स्वा दे देखिया । रोडिश-५ [नं•] एक पाम क्रिपको वह गुर्मीना शेनी वे कमा। रीहिच-९० [र्ग०] कुमा बामा रीह यद्यनी गरमे विश्वना-सुन्धना वद्य चून् ।

शीही(हिम्)-[६ [६] ध नेशकाः तु ४८ प्रधः अवन्त प्रथा कईवर वृक्षा समा प्रमा पटेश केरन बुर्शा तथ जेता होते संग्रेगी। क बंदा सब्द १

दे प्रजेदार साथ । स॰ -होसा-बोदिय सुन्द होनाः भारमें चलांक्ति, हैरान होता ।

सह-पुर मोटी बाठी । -र्यव्-पु सर्वेत साठी धॉर्थने वाका कारमी ! - बाज़-वि काठी चक्रामेवाकाः काठी वॉभनेवाला । –वाडी-सी॰ काटीकी कवार । –शार--वि॰ मारगेवान्यः कठोरः कत्ती (वातः)। स —श्रियं फिरमा-लाठी डेकर पडना; जिसी क्लु सिर्वात व्यक्ति का बरावर विरोध करना निकस भाषरण करना (तीस--महन्त नीध नष्ट हिये फिरमा)।

सहरां−दि दश, दबोर।

कट्टा~पु॰ बमीन नापनेदा वींस को शाई वॉब हाथ क्या दोता दे। रुक्तीका संग द्वरता शहतीर। एक्टीका ग्रांगाः छावन पारममें क्या बहा, क्र्यीर गाड़ा मोटा क्यमा, गफ मारकीन । -बंदी-साँ० छउ्डेमें की वागेशली बमानकी

सदव−५० [सं] बीहा। यह राया भावनेवाका कदराः

ण्कं जाति ।

सर्पा−नो• [सं•] तर मक्दा प्रशी व्यक्तिवारियी। यौरैबा: मुस्कित, विश्व बनानेता साथमः शुस्रेयः करंजकः यक मेदः प्तः।

स्ट्रधाका-सी [सं] वस पत्ती लद्वा। 1,39, \$ 5-218

क्षरिपसी~ि नरेट । स्रदियां−मी नाडी रंटाः

स्टैस-वि॰ साठी यमानेमें हशक, सप्रवास ह

सर्वत्र∽सी मिर्टतः मुख्यका।

क्कद्रचन्त्री क्रिक्ती वस्तुद्री ज्ञानदद्र-शोक, लंशाईवे ५०७ धीरित हरमीके प्रवर्ते विसावर करे हुए तारीमेंने कोई पक्ष पंथ्या कतार कमा कृती, शेरीका ग्रामें इंग्सा गुक्ताः मुरु −सिकामा−वेन विदता दरमाः −र्मे रहना-दिमी इत श्यम धानिव दीना रहना।

सबद्ध-"त्यक्षाका नगत्तमे स्वयक्त क्या - शेल --भेषवा-पुर वर्धाचा रोगः मामूनी वान आमान दाम । -- यम -- प्रभारत्याः वर्षे हे मी चंदल्यः । -- प्रक्रि--मो । रण्यो जैसा दुद्धि, सारिएए मति ।

सब्दर्श=सी सहक्ष्मा नायनी। चित्रदेशायन मर-

यदी ।

सब्द्रान्य शास्त्र (मो भीन्य वर्षने क्य व्यवहा देते: पुष। -हैं।-सी॰ दे अन्दर्भ। -याका-पु र्शतान, श्रीक्षादा धरेवार अथवश्याः । -(श्री)का

होज-अनाद वा महस्वहीत रूप । सद्विमी (- नी देश रिपयी ।

सदबी-सी॰ रातिका (दिस्की मध्यका १६ वर्गी कन हो)। पुत्री देशे । -बाला-पुरु (ब्लाहडे अरमएपर)

क्रमात रिया वा गोरहा । क्रमाण । सक्तोर एक्डीरी!-दि॰ की ^{३० स्}तरकीरी ह

ल्युक्रीरी-रिश्मी (वर्षमी) क्रिमक्के गाउँ क्या दो व सर्वत्राचा-४० हि० रगवान्त्रा हिल्बा-द्ववशा दन-मगहर जिला शीका सावश निए बानण निविधन, #रिवर होनाः पुढ शाना ह

कदराष्ट्री-सी॰ कद्यप्राद्य, दगम्गाद्य । सङ्गा-ज॰ कि एक वरार्थ, म्यतिका दूसरे पार्थ व्यक्तिते स्वकृत शाना, निष्ठ शामाः कुर्यो करना, रह बूमरेकी पन्धनेका प्रयान करना। एक दुमरेका प्रदार

करनाः सगदा, बाग्युक् करमा। वश्य करमाः बाँगरः की पाठोंकी नेपार करमेप्रे किए कानूमी श्रीरीप्त रस्या वेन सामा, पूरा पत्नमा अनुकृत एव जामा। मंतुष श्रीना ।

कदबदर्श −िव• स गांगा, व दर्शना, बट्टरा: प्र(नद्र : सदबद्दामा−भ• कि दै॰ 'शहसदाना'।

धडुमापरा, सङ्यावसा-दिः पुत्रेनितः पुत्रस्ताः उत्रु भीर मामुमान करकपन(परे भर्धमें)से स्था बजा-वैदार। खबबीरा-विश् देश 'लपुरावसा' ।

सहद्व-दि दैश 'सरद'।

कवाई-सी॰ महार, भीत करनवानेवर प्रशां, भीत करना बुद्धः शा छेनाओं शाज्योद्धा यह कुमरेशर बाह मण, संमामा करती, महत्त्वका श्रमशा करता परश दशकरा कानुमी श्रीर देश करमा: मेर, अनरन ।

सराका-रि रहतेगमा बोहाशसमधापुः चनारी । कदाया-त कि॰ यह दूमरेंने लगाई बराना। शर्मी दनहरी नमाना। रेंद्रमा दामगा रेंग्रामा समजानाः कामबाबी राष्ट्रनताचे निष्ट भाषारिपार करागा रह चीत्रको कुमरी भीत्रमे भीग निकासमा प्यार दलाए क्रमाः व प्रेमन देना ।

क्षदावताण-शिन्तता प्यारश सच्छि-रि [पं] रथर-पथर पूमना हुमा।

क्सी-मा॰ बनार पंतिः ग्राप्ति सरका गुरुगा। ४६ साब विसादर वरे द्वर शमी। ग्रामीचे श्राप्त गढ मीवर्वे ोंचे सामे दुई हिमी चीत्रशे नाथा परिदा

स्वदीका−दि कात्रमा ध्यारा।

ब्रह्मा, सर्वा-९ नर्दा छहेता~वि कानेशाना कशहश राजना शिमका शुरू अधिक व्यार किया जाय ।

my-9 [#]t '#E !

लहेडू लह्युड-९ (११) देव रिहरी।

सहरू-पुंतिरोदे अक्पनी नदी हो एक विद्यार बीन्द्र। प्रश्रामको -सामा-देने नावही करका बहता क्रियंक्ष दीमा वक्षित हो । -शिक्षाबा-अन्तर शहत भाषा । -वेंद्रमा -ग्रिनमा-शाव शेवा । कल्याबाध-न हि अविद भार-व्याद दाजा।

स्त्रीत-बुक बुर्ग का रश पेथा स्ट्रा - पु वैनगारी- 'शानदि वह स्रशाय कप बरि "

नग्रमस्रितः।

सरियार्ग~को छोरी द<गारी ।

मात्र∽की पुरी अक्षाप यात्र देश सार्वाद्य गणाराणी अवश्य रह । -सीर -सीरा-रि वरेश की ब्रावेशमार्थाए। पृत्रमा ध्रेसर देश्या १५८३ शामानेतर एका दुश्य दर ५ क्रमेंब. बनार चार्ति ! –सर्वेद-पु रेश्में शंत्रका रेतीक शक्ता नहीं रि कान सन्देशना शिश देव नार्ते ।

रोहम-पुरोदन परा रोहू-पु, की॰ एक मछली की बदुत बच्छी मानी बाता है (बह सामान्यतः पाँचसे इस सेरतककी दोती है। इसके काक पर होते हैं, अंतर काकपरा भी कहते है): ठाकिस्थिगमें श्रीनेवाका एक पेड़ । रोस-इंसीमें हुर। मानवा रीना। विक्कर (टि−सी

वेईमानी बरना ।

र्शेंद−स्त्री रीदमेका मान या कामा चवर, गस्त 'राउंड' (सिपारी) । सु॰ -पर जाना-मश्तके किए निकल्मा ।

रिंदम-सी राँदनेकी किया या भाग मर्दम। र्शिता-ए॰ कि पैरीचे नुषसमा प्रशक्त करना। पर

बाद, तहस-भइस करमाः कारोंने मारना पीरना । र्रीदी†−सी वानवरीकेरइनकावाकावेरा।

र्रीस॰-५ पद्रा निञ्चान- रामहि राम पुकारतो मिन्ना परिगो रीस --क्यार ।

रीसा−प ं बोड़ा, कोविया: कोवियेके बीजा वंगींका केमॉक्टे ग्रेम ।

री~की॰ कि। विका स्थान गतिः वेनः प्रामीका नदान छीतः रेला; इस चाला; धुन श्वाबाला; कोछ ∜ाँधु एक सरक्का पेटा क दे 'रव ।

रीक्स-दि [मं] रूपम-संबंधीः सोमेका बना हुमा ।

रीक्य~प्र• [मं•] क्यापन रुपार्थ । रीह्यर†−मो वड मृमि जो वादमें वास् का कानेसं

ग्रराव हो गयी ही। रीतन-प्रजि | विक्रमी पीत्र तेष वी बादिः कास

भाविसे निर्मित पलकारंगः रीशनी−वि तसका रीयन फेरा, कमाया हुआ ।

रीचिमिक-वि [मे] रीकी मोरीबन-संनेषी रीकी

गोरीचनम रैंवा हुना। शैष्य∽पु [मं] शरहर्वे मनुः विकारवकारी सम्म्यासी । रीक्रम−पु [फा•] ग्राय धेरा दशरा रीशनदान ।

रीज्ञा-प भि । गाम मक्षरा समावि (विदेवतः प्रवच्चार) ।

रीत†−९ समुर।

रीताइम−मी राव रावक्ष्यी पक्षीः अपुराशमः स्पिबी-के मिर एक भाररमूबक संराजन। रे क्यारिश ।

रीताई-स्त्री राष, राष्ट्र क्षानाः बद्धरारे सरदारीः राव रावनका पर ।

हीद्रां−पु चूप मानः

रीद्यां – पु 🧎 रोगः ।

रोझ-वि [गं] रहभंत्रथाः सहकाः सवस्यः होवपूर्वः। प्र काम्यके भी रमीसेने एक जिसका स्थानी आब स्रीप रे। क्रोपः भूर पाम वगरात्रः ग्यारद मात्राओं दे तर | प्याच-पु॰ दे 'राव ।

ਲ छ−देशमाग्री व-मालाबा भडाईमर्वा स्पांतन कार तीसरा | लंकन्यट~पु [र्ज 'लरिष्टाव'] एक मत्रवृत्र भीटा सूत्री

भगरम वर्ग । क्षत्रार्गरवास वंद । भू य !- नाय - नायक - पति - पु राका विश्वीवन । विनकी संस्वा १४४ तक है। एक कका एक केता साठ मेंसे चीवनवाँ संबरसर। —केन्द्र-पु एक केन्द्र (पूर्व दक्षिण आकाशमें शुक्ये अवसं दिस्तेका था; भाकाशके तीम भागीतकमें गमन करनवासा-४० सं०)। -- दर्शन-वि॰ वेदानेमै सवामक।

रीहता—की [मं] भवंकरताः अपंदता, समता । रीहार्क−पु [सं] २१ नात्रामोंके दंरीका नाम । **रीहरी~को** [सं] स्ट्रको परमी, गीरी: गांधार स्वरको

पह्ली सति ।

रीन 🕶 पुरमण बरमेवाला, पति । रीनक्र-की [अ] चमक तानः गूनीः तामगीः बदस परका वदार। –काक्ररोहा–वि रीतक बदानेवाका। -दार-वि॰ वहारदार; सजा हुआ । -(फ्र) सह

क्रिल-वि समामृत्य थी महफिल्ह्ये बार्नदमय बनावे। रीनी * – का दे रमणी। रौप्य−वि [सं] प्रौदीका चाँदोका वना द्वामाः प्र•

पाँदी, स्वा । रीमक रीमस्रवज−पु[सं]सॉसर नमकः।

रीरा - पु॰ रोट, बहा, छन्द । शैरम−वि॰ [सं] बरावना, भर्यदर; क्य2े, बूर्तः नावपर

व्ह स रहनेवाकाः वरु सूग-संबंधी । पु यद्व भीवत सर्द्ध । शीरा!-प दे 'रीका'। सर्व रावरा, जापका। त्यी रीरा में

रीरामार्ग−म कि वसमा बहा प्रकार स्टमा। रारिक-सी कोकाइक, और।

रीरेो −सर्व भा**दरम् वक्त संदेशका** आयः। रीका-इ दहा दूराश अथम दक्षम् । रीस, शैक्षि!−मा भीन, तमाचा शाप्रः।

शैशन-विदेशोधना रीगबी∽को॰ दे रीवनी'।

रीस-को गति इरकन यात। यात-कात (त-दंगः भागको समारिकीके नी अवस शरलाह सम्बन्धनो कपर बासी मिक्सी (भीगमके कपरका) चारी तरफडा बहुना

रास्ता । रीमधी – भी• विक्रमी प्रपत्रक मिट्टी।

रीसा-१ रे॰ 'री सा ।

रीडास्तां -मी चीरकी एक चाला बोरोबी एक माति । शीक्रिण−५ [सं]परन≀

राहिणय-पु॰ [मं॰] रीहिचीपुत बनरामा दुव प्रहा मध्याः मरकतः एका ।

श्चासब्-धी• दे 'दिवासत । भ्यारी-स्थे वे रेवश ।

ETTI I क. ६० - गी. कमरा लंका मामध द्वीर हावण्यी वाल ! खंबा - मी. [मं] मारत द्व विण्यता एक द्वीर, सिहक (करत है, शारण हमी बीपका ग्राम्यक बा) एक शीका शारः बन्छाः, विदेशाः नरम शुपाच्य (मोबन) ।--रिका-

स्रो बद्ध प्रयोगला जाहार । "मिज़ाज़-वि सुध

⊌र्तीक्रा−पु॰ [म•] स्**माः** नामुक्त भीर बन्दा चीकः

भुटकुका, हास्यरसकी कपु कदानी; हैंसी-समानकी नाराः

मित्राच, विदादिक, एसिक ।

कत्रदी-सी॰ दे 'कतरी' । सत्तपत-वि देश 'सभपभ' । सतर-सी देश, कता। क्षतरा∽पु॰ यह मीता बद्धा रॅब्छ । क्तरी-तो मोठ देसारी; एक तरहकी चप्पक I क्रवांगी−सी (सं]कारुवासिंगीः कतां चती [मं] बगीन या किसी वाधारपर फैडने-नाका पीना नेका कीमल शासा कांट मिनंगुः बूचा मापनीः भूतो वादीः रप्तकाः व्यक्तिमातीः ग्रेवरी मीः क्साः मोतिबाँको कहाः शंक रेसा। -कर्स-पु: णक तरहका कंशा। ~कर~पु दाथ दिकानेका एक इंग (तृत्वच्छा) । **−क**स्तृरिका−को एक खेवा। - इंज-पु क्वारी पिरा छादामद स्थाम । - गण-पु फ़ैनन्बाने पौथे : - सृद्द - अधन - पु॰ जनाओं से मंद्रपक्की तरह निर्मित स्थान । -बिह्न-पु -तर-प्र नारगीः वादः सम् । -वास-प्र दिताक का पेका - हम-पु सराधाका - परा-पु॰ (वि.) कता और पंचे पेड़-पीरेः वरिवानीः अकी बुढी। -पतस-प तरबूव। -पर्वं-पु विश्वुः -पर्वी-वातम्बः मध्रिका । -पाका-पु स्वानीका वाह, समूद्द । -प्रसान-९ क्वा-संतु । --पास-पु पर्यक्त परीक्त । -याधा-त कामदेव । -अज्ञा-सी महाती करा। - सहप-पु कराओं हो स्थन करके बनाबा हुमा थर, रबान । ~संडल~पु कठाओंका थेरा **इंद**ा − समि−दु मृँगा। ~ सरुन्−पु• प्**वा**। - धृग− पु॰ बंदरः बनमानुम ।-वष्टि-भी॰ मजोडः। -वाबक-पुरु प्रवासः विद्वारा अकुर १-१४-५ वानी १-रसम-पु सर्वा ∽वस्रय−दु कक्षगृद्दा ∽वितान∽पु कताओं से बना तुमा मंद्रप ! −थूक्ष पु॰ सन्दर्भ शहस्त्री बुद्धा मारिकक । -बेप्ट-पु एक रतिक्या एक प्रधान । -बेप्टन-तु मानिगनका एक प्रकार । -बेप्टिश-नि कतामाँमे आस्छारित । पु व्ह पदाइ । –वेष्टितक∽पुव मार्किगमस्य पद प्रसार । ∽र्शकुत्रद्र∽दु० शला। -शंक-द्र सामुद्रा वृद्ध ! -शाधन-पु व्यक्त नावना निमका अधिकरण छता अर्थाप् स्त्री **इं (शाम**गार्ग) । सताइ-भी दे सभाइ। सताहमा - त॰ कि शहमा कुबलगा; वातरी मारमा करकारमाः देशम करमा अद्राना । कतामन-पु [र्थ•] इश्वपारुमहा यह प्रकार(नृत्यक्ता)। सताक्रत-सी॰ (ब॰) रतीफ बीमाः ब्र्मना सुकुमार्गाः मुराना कालिया स्वष्टता धोमा रस रीपकता त्रक्षि । सताक-पु: [सं] दरित पलांदु दरा व्यात्र । सराकफ~५० [मं] शाबी १ स्तिका-सी [मं] १४ डोरी हमा। मानियोसी बड़ी ।

म्यतियर कतियस-वि सन्धोर ।

41-5

सविदर, सविद्स-वि देश शिवद ।

मा(मा।

अगुठी, पमस्कारपूर्व बात ! -गी-वि अगुठी बार्ते कदमेवाका ।-याम-वि धुटकुठे छोवनेवाला विनोदी । मु॰ −कसना−र 'पुरकुता छोहना'। ∉त्ता~पु फटा-पुराना कपकाः कपकेका द्वकताः कपका । मु॰ -उद बाधा-इदरे हुक्ते ही बाता, तह हीमा। कत्ते हेना~वनामा देंही बदाना ! इस्तिका−सो॰ [सं∙] गोइ । ¢ची−को मारमेके किय चलावा कतावा हुनापेर (बोड़े नथे, बैक आदिका); कात मारना; अपनेश्री छंगी भीर, बाजी ह अध्ययच~वि तर, भौगा हुआ। शता हुमा। क्रियरा हुमा। छथावृ−सी॰ पटकदर पत्तीरमा कोटानाः पराजवा दानिः शिक्षी बॉट-बरकार ! सु॰ -रताना-पटका पछाड़ा यानाः भ्यस्त, तष्ट तिया बानाः शिक्का बानाः। --पश्चना –दिश्का बाना । #यावृत्रां~स कि कोववृत्राति पेलकर गंदा करनाः पछावनाः पछात्र कीटालाः शिवकताः रीदनाः हैरान क्र्रमा । क्रचेड्ना-स कि॰ धीवह आदि कराना, सानना। गंदा करनाः पटककर भृमिपर वसीटना रगहनाः पटकना पछाइनाः पश्चामा, देरान परेद्यान करना बाँटना दपरमा । श्रद्ग-सी सदाद। इंड्मा-म कि मारवुक शना दिशी चीअरे दिनी भीवका टक, मर बाना। विसी भारी भीतका दूमरी भीवपर रखा बाताः सामान हे जामेदाडी सुवारिशेपर असवाद रखा जानाः देर होताः चीता छरना भर चानाः वन होना समाप्त होना । सन्त-प्रेंदा - वि माराकांत । सङ्कद्र-म (किटी गीली और गादी चीवचे गिरमेट अलब होनेवान) 'सर-सर शब्दके साव ! खद्यामा~स॰ कि काइनेका क्षम क्रामा । सन्तर, सन्तर-- प्रसाव मराव। स्दामा-स॰ मि है सर्वामा'। सन्व-प् भारनेका कामः बोलः छन भारिका प्रापः विमा कडी परमके उद्दरमेवाकी देंडकी जीवाई छत्। मिहराव विसमें निमा कड़ी अरल द हैंटबी जीवार कहरे। सब्दावना ० - म । कि लश्यानाः मात्र ताद्वर् हे बाह्य । स्तुमा मनुषा-दि बीत होनेदाहा ! सम्बद्ध-पुर्व [र्थ] वद क्या । अयुक्-ि नीम होनेशन लडुमा। कर्यपु-वि गुम्न काविक। -यम-पु दिकारे मुत्ती। स्रविपात्रा-स कि रीवना हैरोंने बराना राजीते जूब सक्ता -स कि शामा में ना। स्भी ना वनवारीकी व्यारी । कप-पु ह-रीनी शरीकी तबीमें दिलानेमें बत्तव श्रम्दा कर्ताक्र-वि (४०) वारीका साथ-शुवराः रखमयः वायके-) तक्षार मारिकी जमकरी पांच समी। चेनींडा चेटित

≓्राधिनाय~संजिका शतकरमा कामा चना साधा वाली। दी दलॉनाले (हिर्फ) बच्च की दारुके काम आते हैं दिनी पान्या कबराः देश 'कंकिमी' । —शाही(हिन्द)—प्रश् बनुमान । -माम -पश्चि-५° राज्यः निमीनम् । संबाधिताथ संकाधिपति, संकाधिराज-प्र• [धं] रावपः विभीवयः ! कंडापिका संबाविकाः संकारिकाः—स्तै मि] अनु-**क्षंत्रारि−प** [तं] रामचेर । संक्रिमी-सी॰ एक राह्यसी विसन्ता वश हनुमान्ने सम्हर् = पु देव संग्र । सकेता. संदेखर -पु [मं•] रावणा विभीषय । मंकोई-सी दे॰ 'लंकोविका'। संकोरिया, संकापिका संकोशिका-साँ [मं•] अस-बरम । संसती-नी [र्ष•] क्यायक्षा ग्रेंडमे रहवेशसा अंश । स्रा-सा• कॉन काछ । पु० (शं०) सकः स्पर्धाः (का०) सॅंगरापन । वि कॅंगरा चाँद दराबर चलमेदात्य । संतब-९ [सं॰] वरपति। सँगडार्ग - वि॰ लंगा । र्जीतरी!-भी हैंगोरी। दि की पंची। स्पाद-दि संगदा। व संगर।

र्कीरदाना−न कि॰ नैंगशकर चलताः र्सेंगदी−त्वी एक छंर। दि स्रो⊳ दे 'वैनहाँ। सीगव-पुरुषिना संयक्षः। श्रीतरी-श्री अस्तानी ! संगर-प्र [का] मोरका बहुन भारी कोंटा जिने मान बा महामद्री राहा करनेके लिए रख्यी या जंगीरसे जीवबर मर्गा या तमुक्रमें विरा देन हैं। भीता रश्ना वा अंबीरा वह रशान बड़ों ग()वींको पका शाना बीटा जान बढ़े न्यारिक सम्। बहुनशामीका २०१८) बाँगवा करने दे पहले बमहेमें भरे बामेबान होके; दरहाई बायपे गण्मे शीमा बानेवाका ।।ँदाः परियो भारिषे तार आदिके सर्वारे नश्कावी जाने बाबा मारा भीता बगर है भीनेडा हिल्ला हैर में पश्मनेका कोरीका सीका क बागरीर ! वि अधनकारः शासनी ब्रीड- सर्देश सेरेडे भिग्नान संबद मी दिन भार -दि । स्यहा । - क्रे-सी है 'निवराई ! - स्तामा-पु पते गानेदा नव । -गाइ-९ सी तंगर करने बहाबीहे प्रश्तेका स्थान । ∽दार-पि मारी (नही विनदी भाग संबर सनिमें को ।) शक-उद्धाना-के ब्रेप बहात-का रवाना दाना । -करता-प्रदायका उद्दश्या पहान दरमाः शरारतं दरमा । -हाममा-अहाक्दा संदर स्मृद्रमे केंद्रमा प्रदाय सक्त क्ष्म्या । —वॉयमा∽वहरू बारी करमा सप्तानी प्रस्तुत बीना अक्टबर्न चमय बरमा । -सँगोर(किमीके) माग श्लमा बा (बिमी-को) देशा-बदणशामी शंदानेके बिन्द किमोकी विन्दना

र्छेगदा-नि॰ क्रिस्का रह पर द्वरा केनार हो (लारमी)

बानवर); निसका कोर्र पाना हुटा को (वर्लन आदि)।

रेष पद्म प्रतिकादनभी काम।

र्खेंगराई*-सी धरास्त क्रिकार्र । सँगरामा!-ब॰ कि दै॰ ईम्हामा'। कॅगरी॰-सी द्वरारत। र्थेगरेवा*-सी शरारत, शृहता । क्रीह-पुनि देखा संगुर"-सी [सं] एक वरवदा पान्य । संगृह-पु॰ कांनूनी संदरा दुम (रंदरको)- यह यहा नंदर (दसकी दुम वही और श्रेंब इथितर्स और तुल। क बीते हैं) ।-फक-तु॰ मारितम । सँगूरी-सी बोडेबी बप्रसदर बसनेको बास; घोरीकं थारी गये पराजीका पता बतानेके बरते दिया आवेशन हमाम । र्सग्रह्म∽पु॰ डांग्र्च, दुम पूँछ। सँगीचा!-त करुमा, गुरुमा, बीमंते घरवर सही ही मामगरकी भाँत । सँगोड सँघोडा-पु॰ कमरपर श्रेषदेश बलविशेष दिन्त क्षपरंत्र और निर्वत बायुक्त रहते हैं (बहसवान का कमरयी शोग करती वा स्थायाम**है** समय हमें हो। वॉप्प है)। → (१)र्वत्-वि अद्यापारीः सैनोट गाँवनेशालः । मु॰ -वा बीका-बामी । -का सचा-को श्री शररातमे गर्मा रहे । –फाक शासना – इस्ता झेर देना । 🗝 विज्ञा –

स्रीबार बरना ।

इत्तोडे किर देवार होजा।
स्वितीयम बार-चु- शालीयन।
स्वितीयम बार-चु- शालीयन।
स्वितीयम बार-चु- शालीयन।
स्वित्वाचा-चौरा सापन सेमा! -चौप कमा-चौरा
चौमाना-चौरा सापन सेमा! -चौप कमा-चौरा
चौमाना-चौराद कना देवा! -चौप कमा-चौरा
चौमान सोमारिक हमीना स्वाप्त करा ।-चौप किरामा-रुरेशोडे कारण चंना दिवारा !-विकायम-देवा स्वता (वन्ये) दिकोडे कार स्वीतीयम सर नार! -दी सरन -मरीकोड स्वापने सुख रहनेतामा। स्वयान-विकाय (चनाया) सेमाना स्वेतामा।

अधिकाय करपा थोरेले बहुत तेत्र पाषः हिमी क्षाये हामना कानेटा बचाव । स्टिमका-पु [में] नीवते वार सानेदा छावतः दुव । स्टिमका-पु कि. स्टिमा चटिया। वहि विश्वते स्टाब दिया वा पुगा-शिह ववा सम्बन्त हो थी यात्र साहर -क्षार। शी हिम्टे ट्रिटेश स्टाबास्ता।

संदर्भीय-वि [तं] क्षेपनंद योग्या काम्पवन वर्ते वीग्या : विद्यामा-स्वरु किः कार प्रमारमा वा बरना । संविक्त-विक [बेक] स्पेपा पुत्रा सस्विद्या कोर्यान । संप्या-वि [लंक] स्पेपने वीग्या सन्तिवनन वर्त्ने वीग्या करतान कारों वोग्या ।

र्संच-दुर्श | विशासका प्रस्तात्त । क्षेत्रा-स्मार्श (सं) शिक्य । क्षेत्रा-चुर्श में विशेष स्थाप वृत्रमं । क्षेत्रा-ची [सं] विश्वा (नाम वीश सोमा) दुन्या । क्षेत्रका-भी [सं] विश्वा । भर कीर्र वस्त । - इस्प-विश चंत्रक, शरिवरः अशीर तेम प्रतीका। स्त्री तेथी। संबक्ताः हामधी स्टाई: मारीकी सरुमारता प्रेम भारिकी ब्लंबक एक बेका को सीकाडे मंतर्गत है। - चास-सी॰ देशी या तेश वार । मु॰ -छप करना-कडोली छशीकी हवामें तबीसे दिकादर व्यनि श्रेपण करमाः शक्कामाः, पमकामा । ~से~स्वरापर्वदः झटसे ।

सपक-मा॰ करा, की: यमका तेजी बेगा प्रत्ती । सपदना-म फि॰ अटपर यक परमा। तेवीसे जामार क्रिमीपर शपरमा, इर पश्मा, भाकमण करनाः कार सीव पानेके सिए हान बडानाः।

कपकी-सो॰ एक तरहरी शोबी सिठाई ।

स्वट-स्री अलक्ष्मी की क्यांका। तवी दुई हवा, ऑप गरमोः गंपः मंपपुरित बालुका शीन्यः शक्का रे किए टमेधी किया।

रुपटमा∸भ कि भाकिंगन दरना। सरना सब होनाः पिरमाः क्या रहमा। युत आधिका क्येश काला ।

कपटा-त योठी और गारी चीत्रा बदी। हैर्स है है 'कपटीमा ।

कि कियाना विषयाना क्रांकियन सप्रामः – प करता वर्त समानाः पेरमाः क्ष्म कोर वैशी श्रोत्रने श्रेरे पारका परमा, अपरमा । अ॰ कि सामा श्याबा। र्यमबा क्रममाः अक्ष्यक् होना ।

सपरीमॉ-4॰ क्रिप्टमेशांगा सत्र हुआ। पु॰ यक जेटकी বুৰ 1 सप्योमां-पु॰ दद तरहकी वाम विसंदी वास कारते

चिपक मानी है। वि॰ दे 'लपरीमां'। सपन-को हस्तेक्रे किया। इ॰ [म] सुदा क्यत

मार्ग । क्रम्यान्सः क्रिः क्ष्तरो, स्थीती छन्। सारिका प्रमानेने

सप्ताः श्रदमाः देवीने चत्रना + सम्बनाः । हैएल धौराम होना ।

स्वस्वामा-म कि म्योगी हती मारिका स्वानेने शहराः दिलमा दुलमाः शलदार मादिका समस्ता। स कि तमबार मार्रिकी तुमाकर मुख्यमा। सरी दन्ती योषका दिशाना द्वशानाः सम्बद्ध अतिकी निदारकर यमस्या।

सपलपाइट-सीर किमी पनश्री सभीती वर्ताहे बहाव था श्रीक्षेत्र लक्ष्मेदी जिल्हा समस्त सपनी-सी मेहा वी शास्त्रद नगरा द्रमा मारेदा

प्रतना प्रवदा रुपा हैई। शपाता-स॰ कि॰ लघनेवाडी भीववी नेनीसे जनपत्र

मधनाः वले बन्छ । स्रविता-दि मि किहा हुआ बदिन । दुरु बयन, वैति।

सरोर-म' • करेर देश दिया बेरा दियो के असे केसाँ 42 मिलारा रह, देहना करतेते एट को बहुती व^{र्}दनेने बाती है। यहर तरामा दरता क्रानिश वह राम । सर्वेशन-मी क्षेत्र पुत्रात, बेरार क्या क्यांक

महोता है,इस । पुर क्लेंड्डेस्ट्रश श्रीक मॉक्टे देरदेहे काम मार्केक्टको बोक्ता कर बरेश को देखें अन्ते। देखें कुपकारे-दि है 'सन्छ'।

र्देशनैयाकी सीव ।

छपेटबा-स॰ कि॰ स्त, इपने आरिको दिना पान्हे चारी और फैरा, पेरा देवर क्याना, र'दना। क्यि बीवको तह समाहर मोहमा समिता रेहन आर्थि बीचनाः समस्य क्षरीरको बेटोरकर पैरमाः काव परसमे करनाः थान पति वंद करणा होत्य कन्नमे शहर कैंसानाः वाही गीको, विस्तुनेदाको भीवको सकत्। का

पोनना । सपटवाँ--विक हदेशे बुर्श क्षेत्रने बोध्या शरेत्वर वर्ग हुई। बाँदी, शीनेके बाद क्षेत्रहर बनावा हुई जिल्हा वर्ष गई हो। प्रमाद-प्रियादकामा श्रष्टरकार ।

सपेटा-वश्वी 'कपर'। क्येत - प्र [मं] यक दाव को शत्कवर माना भारा है।

सप्पद!-त∙ दे वस्ताः । स्पिरा-सी॰ (सं॰) स्पर्ध । क्ष्मार-५० मि वेस्तरेटी दारी ।

सप्ताची (विश्व)-वि [र्थ] दानेवाका (घरत) । कर्यना-वि॰ क्षा 'कर्यन विश्वसा साहरा शासा

बुद्दवरिष । सप्रमान-भ= कि देव 'सरका । क्षप्रमच्चमा−भा•िद्य स दिग्दे करदचना ।

छच्छकावि+-स्री कपक्षश्रानेदी क्रिशः चाद । द्रचाना∜∽म॰ कि हैं। बराना । एक्रप्र-९० मि | यथा वर्षत्रस यान्य सन् । – स सर्व

−थ सथसाः। सप्रशी-वि व्यक्तिक बाच्य ! - वाबी-५० ग्रामार्थ

वाच्याचे १ क्षत्रकाञ्चल-दि॰ (अ॰) कचोदार याते दरभेशमाः अनि हंत्रमा दरनेदाबा, वानुनी ।

कक्षाक्री-मी बाचान्या बच्टेशरयभारतीस प्रश्ना

वारवारंदर यश्चनीयन । कच-तु का] जोड होड़ दियारा तर। -वन्तव-वि भीवमे मेंच विकारे हर । -रेश-वि मेंदवर महा दुला । -(वे) चाय-त नती गरीवर नती वा क्षिमारा । = श्र-प्र मरोडा (स्मारा : = इरिया = प्र वरिवादा दिनारा । नगरूफ-मन् तर्वदे दिनारे। ~(वी) सहजा-त नीव 'दा देश नदास्य भीर स्तान बानकी विशेषता । शु -शहक दोना-दोढ स्पाना । -कालवा-धन्त्रा वन्त्र वाता । -वर् भाषा-शिर्टि दर भाषा कहा जाला । -सीमा-मेर देर सामा। −द्विमान-दान (सदन्याः। −(धी)पर प्रापा था इस आवा-धरणाण्य देता । -से समावा-हैरने श व्याप्ति

छद्याना -भ दि र्गान्य, प्रमाना । अवद्यीची-को अवंश पुत्र गराम दशानुस्य भीर

क्षत्वसम्। अमेरि अन्यादा मुखारा देनेगाची दी Ment i

शबद्दमारू अ दि । हाइ वीक्सा यह अपूर्ण अर री

इंट-वि मूर्सः बसम्य उडहा।

संड~पु• मिंग दिइसः [सं] विद्या, मल ।

संबरा-वि दुमदय (पद्मी) । संतरासी-सा थि दिंग भारमप्रश्नेसा । **संदराज-**प्र एक तरहकी मोटी व्यान्त । स्पेप-प वि 'क्षेप | निराग दीएक। क्षंपक-पुनिशोषक जैन संप्रशास । र्ध्वपर-वि (सं) कामी विषयी । पुरुष । संपरता-सी [र्स•] कुदमं कामुद्रता। संपाद-कि [सं] संपर, कुरूमी । पु मुदंद नामक एक प्राचीन देश की पश्चिमीचर सीमानर था। क्षंत्र∽द्र कृत्र । संब-ए [र्म•] दिसी सरक रेदाके जावारपर धनकोज बमानेवाकी रेखाः एक रागका मेदविदीयः नाथमेनाकाः मेंट, रिश्वतः पृतिः शंगः निपुत्र रेखान्य समानांतर एक रेखा (स्वी)। प्रश्नीकी विश्वय गाँउ (स्वी)। यह राक्ष्मः प्रसंदासरः एक देखा एक सुनि । वि कंदाः ● स्ती• बिलंग । - क्राफ - वि विश्वके काल वहे हों! प्र नक्षराः द्वाचीः गभाः स्टरगौधः नामः रास्तवः असीट इस । —केश-वि जिसके वाल करकते वी । —धीव--प और । -- भ्रष्टर-वि दौरवाका । -- सक्रा-वि िताकसास्त्राः —दंता — को सिंद्रस्की विष्यको । -पयोधरा-मा॰ कार्भिकेपदी एक मासूका ! -शीजा-सी एक तरहको पिपको। -स्तुनी-सी वह सी मिसके स्तम करकने हाँ । संबद्ध−५ [मं] लंगरेखाः किलो धवका कोई कथ्यायः पात्र विद्येषः मधाका रोगविसेषः एक तरहका बीग (हमका और पंडड कोता है−वयी)। **र्मवन-**च् [मं] नामिनक कर-इनेवाला दार। शकते ही किया अवनेव जामय क्या शिक्टा एक लाग । संबमान-वि [धं] दूरतक गया वा फैला हुआ। स्थिर-पु: रे निरा [मं] यह तरहका होस। -वार-पु [दि] दे 'मंगरदार । रुवा-सी [सं॰] दुर्गा कर्मी। रिवन। यह शहरी कारी करती । वि [हिं] दिसके दीनों सिरे एक पुछरेने दूर की जिसका विश्वार की बाईसे अधिक हो। (बैसे संबा बाँस रारता, नफर) वी अविक क्रेंचा ही (संवा भारमी पेड़); अविक विस्तारकामा (समय साम मामक रिय-बेश गरमोके दिल और बाहेकी रात्रे **पं**नी दोती है)। दीर्घ परिमाणमें अविक (बेसे संदा धर्म)। --वादा-वि विस्तृत। -सक्दर-पु दृश्की बाना। मृत्यु । मुण -- करमा-किसीकी शरुता वा निव करनाः दरात्र करमा । -कममा -होना-वन देना माग जाना। श्रीवाई-स्वी संबा होनेहा भाषा संबामका बरिमाण। -चीवाई-की संशाम-बीशमका वरियाण। संवात-स्रो संबद्धः -धीवात-श्री ज्वारे-बीहाई। संवाकारे~न कि लंगस्थानः र्णयायमान-विवद्ग बाह नेश दुआ। संविक-पु [4] क्रेन्स ।

संविका-सी॰ [सं०] वाँध, गतेके संदरको वंटी । संवित~वि [सं] स्टक्ता हुआ; अवसंवितः पैता, इवा इमा । अधिनी∽धी सि•ोर्स्टब्सीएक मात्रहा। अंबी−दिसी दे'बंबा'। मु०~चौदी हॉक्सा— थींग गारका । —सामकर सीमा—विकास क्षेत्रर सीना । ─तानवा—विक्रिक्रीसे सो व्यामा; वेसवर दोकर वैरतक धीना । -साँस भरना या क्षेत्रा-धोक-प्राप्तते साँस केना आहे भरमा। संबी(बिन्)-वि [संवे] करक्षीवाका (समासांतर्मे) । संयक-प [एं॰] संबद्ध, स्पोतिषिमें एक बीयका सामा एक साग १ संब्-वि वंशी टॉगॉवाका (भारती व्यंम्बर्ने)। र्क्यूपा−स्तो॰ [सं] सात कदिबाँका दार। संयोतरा−दि कुछ-कुछ क्या, वो स्वारं किये हुए हो। क्योदर-पु [सं] गणेस । वि वेटः अभिक सानेदानाः वदी सीववाका । क्रयोष्ट-पुर्सिण्] कॅटायक देवता। वि वर्षे भीटवाका। संबीध−वि पु[सं]दे ≒सीधाः स्मेम ∽दु [सं•] प्राप्ति । संसद-वि, पु [सं] प्राप्त करनेवाला । र्धमन-प्र[सं] प्राप्तिः व्यक्तिः क्रीयन । क्ष्ममीय-दि (सं•) प्राप्य। संमित-दि (सं] प्राप्त कराया हुआ। क्रमुक-वि [सं] बिसे बरावर प्राप्ति होती रहे। स-प (र्त•) रहा प्रशीस (र्न•); मपु मात्राका स्ट्रिंग (प्रशास)। क्रड°−ली शीसगनः। कडमां−५ सीना। सउद्यी - सी श्री श्री सरदी॰−सी॰ सदुदी । क्रकक्र-पु• (अ) पारहर सानेक्षी दवा, अवसेद् । सक-पु (सं॰) कतारा जंगकी दानकी बात । सक्य-पु[मं•] है 'रुकुष् । सक्यवादा~प परवाशमे पहा दावा । रूक्ष्मामा - प्रशिवेदी बातिका एक पंगकी जानवर । सक्द्रारा-पु जंगक आिमे उद्दियाँ तीरकर देवने-कक्या-ध नक्षीका वहा और मोटा बुंदा ह लक्क्यामार्ग-भ कि समहर लक्क्षांकी तरह साल हो जाना। दिना मांसदा 🛮 बामा दाइ-दाइ हो वाना विज्युक दुवना हो जाना। सक्कड़ी~सी देहका कोई भी स्रत द्वभा भाग शास्ता-इडमी जाति सेव दुसी आदि बनाने वा बलाने दे किए बारकर सुरशका दुवा पेड़ा दवना जाडी वैमामी। गनदाः परा निवदर।शु -चन्त्रा-नारी यनमा भार-पीर धीना । - हेना-मुस्स बनाना । - मा-४८७ दुरमा । -हीना-बुक्ता और क्यबीर होगा ! सङ्ग्रह-पुरु वि] परिवक्त मैतान बीरान वंबर वह

मैरान नहीं देव भीदे और वास म दी। १ दि० साद

4944 सम्बद्धा-पुमीरा अनगद रंडा। सबदी-सी छोरा बन्दा। सवनी - दो॰ संशे हाँही विसमें ताड़ी पुत्रामी बाती है। भारा निकासनेका सीवा । धवरा~ दि गणी; स्ठा स्ठ बोकनेवाकाः † वार्वी । सबस्थी-स्रो बंदरके वीदेको कमानी । क्षप्रकर्ता - विश्व कोई भी चीज देखकर पानेके किए कपरानेवाका, क्रोमी: कपीर, जंबका विमा अवसव दिसी भीजपर हाब भकानेवाला । समाया-प [फा] एक लंबा और डीला-डाका पहलाबा कोया, श्रमाः भ्येतार कोगः। क्रमाय-(व [ल] साकिस वेमेल । पु शार्राय सुकासाः गृहाः मध्य । समारी - वि शुरु । गयी नकी । सवारी-को । शुरु गोकना । । वि भुनल्खीर शुरु । स्रयास्य-म॰ मुँद वा किनारेतक (मरा हुना) । खबीं-सी बॉद राद। स्वयं - प्र [स] 'तव'का बहुश यह तरहका मान्स । एचेइ-प्र• इदि रीति, लोकाचार, परंपराः वेदनिगद नियम । छनेदा−पु॰ बनगद, मोरा और छोटा दंश । क्रमेदी-सी क्षेटा एतका र्टबाः अवरवस्ती । सबेरा-द समीका। स्क्रध~कि [सं] प्राप्त निका हुआ। माग करनेसे बास (पुरू ∸ग); अधितः, पैदा किया हुआ। −कास− विस्तर्ध बांकापूरी हो गयी हो। —कीर्ति —गामा (मन्) -प्रतिष्ठ-वि॰ प्रधिकः वशस्त्रो । बेरा(तम्) –र्रज−ि दोसमें भावा द्वमा। –वन्मा(न्मन्) – वि जिसने बरम किया है : ~तीर्थ −वि जिसे अवसर प्राप्त हुन्। वै । −दास−दु० जन्मसे प्राप्त दान । −नास -द• प्राप्त वरत्वा साधा । -प्रशासन-त प्राप्त वन सुवासको दास करना । ∽कका ~छक्ष्म−वि जिल्हा निधाना रूग गया हो। जिल्लकी वह मरत मिक यदी हो। -सक्षण-दि निधे कोई काम करमेका जवसर विका 🜓 । -- साम-दि॰ जिसे साम हुमा 🖭 बर्देश्यक्षे प्राप्ति द्वर्रे हो । ∼पर−नि विमे नरदान निका हो । −कर्ण− नि निहान पंडित । ~ विद्या-नि निहास । ~दादद~ वि कम्पनामा । -सिदि-वि विग्रश्ने शिक्षि पान ही गयी हैं। सरपद्र∽दि•[न] मिलादुमा प्राप्त । सद्यम्प-दि [मं] प्राप्त दरमे थोग्द । सम्पद्धि−षु (सं•) भागद्रण (ग०) । सरपा-ली [रं.] विप्रसम्बा संदेशसम्बर नावकृते स मानेने मिराश हुई माविद्या । सच्या(स्पू)~वि यु [र्त] प्राप्त करमेवाना । करपानिशय-दि (१/०) त्रिमे अमाबाहद उद्धि पान ही। सरिय-भी [तं] साम प्राप्ति। मान्यको नावत दारा श्मिक बर्नेने प्राप्त जानका (न)।

समय-पु [मं] प्राप्त करनेकी किया। गर्भवाहरा ।

नमय-५ [मं] रिणाशी वह रतनी जिल्ले पोहेंदी |

विश्वकी टॉर्ने नौंपते हैं। पनः धायक । स्तरय-वि [सं] पाने चोग्या छपित, स्वास्त्र । क्स-'लंबा का समासगत क्य । -शिरदा-प्र· मीटी बानेशर रेती । -योदा--र्थगा-वि॰ वंनी सँगवाका । -श्रिषा-वि कंगी शरदनवाका । -एक-पुरु क्रमूनर वाजोंदा सम्याः संवी धंवृक्त (पुराने संगक्ते); माला, सौंया । नि॰ एंडा और पतका ! - सुभा-नि॰ क्वीतरा !- तबंग -वि चंदा-तगहा (मारमी) । क्रमही-की यक तरहकी मधुमक्छी। छम्ब-वि [सं] बंबर, विकासी । प्र व्यवशि । कमक्ता- * म॰ कि परमुक, उल्क्रीटेत होनाः कपकताः † भंद भंद चळना (श्वाका)। छाचारी-प्र पक्र गरशाती पास । श्चमक, क्रमण्डक~५ <u>क्रम</u>को नातिको एक महस्तेशको থায় ভানৰ। समबीगां - पु॰ एक अंगकी बागरर ! समधीं - प्रमधीका विद्या क्रमद्वा−पु (वर्श निमेष पक्ष क्षम) छमागा॰-स कि चंश करनाः दूरतक रहाना । अ कि दूर वद्, निकल वाना। क्षय-सी॰ स्वरा स्वरके भारीहा अवरीहका हंग यानेकी पुन, जैबी। सम (संगीत) । पुरु [सं] मिक्रना, दक्ष बस्त का इसरीमें नग्न निकीन दोनाः प्यानका प्रकाम दीनाः दार्वका कारमने भीन होनाः प्रकृतिका विपरिमाम सहि का प्रवयानस्थामें अम्पक्त हो आशा होए, विनासः सोहाः गाने और बाबेडे स्वरींका मेला रचैव विशास विभास रबक वामसिक निष्क्रियताः शाक्षियमः परमेक्तः मुक्ताः इति पार्टा −गत-वि की विद्यान की गया हो। -वासिक−पु॰ शैक्ष मॅरिर। −पुग्री−सौ वर्तको । − यह्र−दि क्दमे देंगा हुना। खयम-दु [सं] क्व दोना श्रोतिः दिमामका स्वानः धारण भागव संगा। स्वार्थन, स्यार्थन-पु (तं) नर्दद, नमिनेता । क्याई-इ [वं] भववदालका मूर्व । क्षरूक-सीदे 'तह। **एरकर्त्र°−की लग्द**पन नादानी ! करकरा - न कि करकमा। मुक्ता। विरुश होता। क्तका>−९ दे ठवका । बरकाना = - छ । रू. स्टबानाः गुद्रानाः निर्मा धरनाः हरामा अरा १४१ वनर रिश्त करमा १ सरकिमी?-मी उरदी। सरगरमा≠~न कि दे 'तरपशमा'। सरगरवि॰-नी दगमगाददः रिची गठिमें स्युति, सह राशहर १ करणराना॰-म कि॰ दे 'कप्रसाना । सर्जना॰~म कि॰ रोपना दिनमा पुनमा(रहन जाना भवगीत डीला-'तिनकी तुनुब देखि मेंबडू म सर्वा --भूषमा क्षेप्रमा ३ सर्जानिय [का] दारनेशकार

सरका-पु [का] दैवरती बरवराहरा मुदीमा जुरी-

सुपराः काज्यसः स्वच्छा विकला । सक्रम-५० (म) गुन, बोम्पता वा पर-सूचक शाग पत्रवी ।

सक्ती --सा॰ दे॰ 'कस्त्री । सक्रमक-त [म] बंधे धैंग और गर्यनवाता प्रदेशक वक्षी सारछ । वि संबी डॉगीबालाः ब्रवका-पतका

(भारमी) ।

कड़ना-तु [भ•] एक बीमारी विश्वमें मुँह देवा ही जाता है भीर करन संगोपर सी रसका असर होता दीएक नाही संबंधी रीय क्रिएके कारण प्रमाधित अंग निष्येतस और शक्तिकोन हो बाता है, ब्यानात, फारिक । स॰ --सारता - सन्दर्भ रोक्ते अस्त होमा ।

क्षकसी-सी एक प्रकारकी करणी (शतके तिरेमें क्रंची<u>न</u>मा क्रिस्टी सकरी वा सोदेखी मर्बंधुत्ताकार अंक्रमी वेंबी होती है और रास्ते कैंचे देशेंने फक नूनी संवत्वाँ बाहि

रीयते 🚺 १

क्रकर−पु॰ (फा॰**ोदै सका**। रुकारी - भी वितियोधी एक बाति (शरके कोशोंने एक त्तरहका सुरक निकल्ता 🗗 सुरुवदिलाव ।

सकासक-दि पूर्वतः सन्छ।

सदीह-स्त्री कामन, स्तेर भारिक्त भीमा पुत्रा संवा निशास, रेखाः बमोमपर वैरानी आदिसे बमानी हुएँ छंपी रेखाः सॉक्स गतिका विका भारो। छक्त्री मीर नारिये के परिचीदः नियामः कतारः समः चीक । सः ≔का ऋषीरः -प्रशामी रीतिवीपर असि मुँदका चलनेवाका। -पर चम्रा-पूरामे वरीवेपर क्लमा ! -पीरमा-प्रशम प्रवासीवर बननाः पछनानाः।

सक्रम-तु (लं•) बहरतः • दे 'सपुर'।

श्चर्य-प्र एक पर भी विशेषण वंशालमें होता है लकार. क्सोटा [मं] छत्ते। लाठी ।

कनुदिया, सनुदी+-न्ये एवी। सबुटी(दिन्)-वि [सं] विसक्षे वास काडी हो।

सकरीय-सी सन्ती क्यां। साबोद्यां - इ पहाची पहरीनी वह जानि जिल्हे वानीन

शाम-पुशाने बादि बनने हैं।

सम्बन्ध देश 'त्रवता । सका-पु का 'कब्रा) भीना विशा कर बन्तर विस्तरी कुछ प्रसिद्धी बरह और अपर कहा होता है सभा गर्डन वीठेशे सबा दोनी हैं । -कब्तर-प्र नामकी वक सहा क्षिप्त अर्गक कमरके रण बगलने मुक्कर निरस्ते जनीमके समीक्षक से बाता दें। है 'क्या'। सपरी-पु॰ बीहीका एक भेरा बधानती। वि कामके

dom I

सरा -[द [सं+] बाज १ -सर्मा (श्रीप्)-प्- बाब बीच १ सक्छ-तु [तं] धनक्य, महावदः तता विक्या । क्षिका-मी [त] सोह।

सध-वि [तं] भी दवार हे पुरुशी दवारको संस्था tooo का निष्ठान निष्ठा पैरा भोती। वहामा: अन्तरह बेची (चित्र) - दि क्यांदेश के बरवेशवा । -गम-

वि॰ सीनेका वदाना करमेवाता । सम्बद्ध-वि [संव] क्य करामेशका प्रश्र करनेवका।

संबंध या मनीजनमें अर्थ प्रदर करमें राजा ग्रम (सार) हम्मान अप र (वास)

अक्षण-प्र [सं॰] विद्येक्ता-मूमक श्रम्भ क्रांतरव रिक सलक विका शुभाद्यमधी सूचवा देवेवाने बंगारिवन विक (शामुद्रिक): घरीरकर स्थित विधेष प्रदारका काना शर-कमानः निर्वारित वरः अस्य उद्देशः प्रश्चात्र विका मामा दर्जना परिमाणा चाल-दास है 'बहमण । मारह पद्मी । वि॰ पत्रकानेवामा स्तुष्ट । -कर्म(प्)-पु॰ ग्रमीना वर्तना परिमाणा । -श-दिन धरीरपरके निक्षेत्रो वानमेवाना । -प्रशस्त-वि॰ बच्छे विश्वीदे दारव विकास । "अष्ट-विश्वको विद्योगे वंचित्र, मान्व-दीन i —एखण्या—ब्लॉ॰ ब्रह्मनाहा रह श्रेप्त दिनये रहशा

क्छण दसरेकी मात को जाता है (सा०) । कम्बलक-प्र (सं॰) निद्ध निद्यान ।

सकार्या – भी [मं] यह श्रान्धानित जी सामान्य वर्षने शिक्त अर्थ प्रस्ट करती है। अभिनेत अर्थ प्रस्ट करनेवाणे श्रम्पद्मक्ति (ना), नदव तदश्या इंसी: धरधी: मानीय (चीर्क) ।

खक्रवी(विन)−ि (सं∘) विद्व वा क्रम्पराच्या स्थ्रवी: का पारपी ।

सम्बन्ध-नि (एं॰) निवका बाग देनेशाला हात निवी

काशना≉−च कि रिमार्थ परना। स देशना। न्दी है। शिक्षणा ।

क्या−सी (सं}द्रशामके शंग्या ६ ००३ खदिर•-को रे 'कश्यो : पु रे• 'सहप'। न्दक्षित्त-(६० (सं.) देव्या दुषाः धनुमामनः मनका नावा

इवाः करान, विश्वनामा । –सञ्चामा –सी नवागाया दयः मेर । क्रतिसरप∽दि मिं ी क्रिसे विदित्त बरमा हो। क्लिसी

परिमाण करनी हो। कक्किन्छ:-भी (संग्री यह गाविका जिलका परवर्ग प्रेम

प्रकट की सदा ही। कवित्तार्थं –gs [र्!] नधात्यक्ति हारा हात्र भर्ते ! अस्ती−भी [तं] एक वर्णपूर्धाः

क्रमी(जिन्)-वि (००) अच्छे विद्वीशया ।

लक्ष्म(न)-प्र+ [मे] विद्या दागा विग्रेशमा अपना धीमारा ।

क्रमाय-प् (तं) सुमियाने उत्तम दशरवदे प्रयाजिक माभा मारणः माणा पुर्वोचनका ४६ पुत्र । वि. विश्वीवाणाः जानकानी। कर्पाकी । - प्रमु सी सुविधा। हामाणा-को [मंग] यह पुत्रश अरी श्रेत देखाती। इंगीर महत्रदेश बुद्दानेनकी करवा, कुणाती आह कार्यान

बीमेंने एका इब्हेंचनकी पूर्वी । क्रव्या(सक्)-पुर्व [सं] शुन्तवार्थ भने पुत्रा साम स्थी। मध्यी-की [व] वस देश जी बन्धे अर्थवर्ता मन्द्री अल्पे है (समुख्यान) प्राप्त १४ १वीवे एक वह में

at why freq gitt toward eftere at atth

काविका-स्रोद्धाः वसार । सरक्रिया-सी॰ कि:] देंपर्वेगी, बरबराहर । सरदार•~दि॰ वदत अभिक मात्रामें सक्तम्थाः प्रन्तरः वर सना हमा । मरना#-म कि रि॰ 'तहना'। सरमि॰~सी॰ डवारी दोद-'न्दम विश्व शिखी सर्गन' -गीताभः सर्वेदा सरोदा । करमां-वि नरम । प्र वैशव। सराई≉∽सी दे॰ स्थातं । सराका॰-दि है 'बराहा'। सरिफर्ट॰-लो॰ हे 'नरिकार्ट'। छरिकमछारी+~मी कर्डोद्ध दोन~'बादास ग्रथ करत दिमहि दिन ऐमी चरिक्सकोरी -सर । सरिका॰-व दे॰ 'ठरका । -ई॰-सी॰ वचपा बास्यावरथाः संबद्धीया काचरणाः श्रेतकाता । सरिक्ति € का है। मरी≉—सी दे॰ 'तथे। सर्ज-इ सिनारका प्रेयमें तार को वीनश्रका होता है। समितिहा-सी [र्न•] मीपेवह शरदमेवाना द्वारा मीह । सम-(देशीसंश) चेंदित (श्रीम): दिशानकला: ग्रेगी: ब्रीक-धीतः रुप्तर्भः । प्र॰ एक संबद्धमा अंकरः क्यान ।-जिह —दि बीम तवचवानैदाशा बीम संदर्भवाता हुना। भवं बर (प बचा केंद्र) सस्रक-लो॰ वक्ष्यती रच्छा, नहरी मान्छ। । कारकमा-व कि॰ किसी श्री बढ़े किए मरश्वित कार्य होला, यहरी लाच्छा होलाः वर्मवने घर भागा । समबार-मी तननेदे निष मतित्वीको समीती हैना प्रसारकाः क्रितीको सबनेके हिए बणवा देना । सक्कारमा - स कि विष्णीको वर्गनेश अनीयो देनाः दिसीकी दिसी भारमीर्थ करनेश बदाबा देना स्थाean i ससबित-दि गहरी चाहते मेरिन। magar-н. ५ दि॰ दिनी व्यविश्वतित वस्ताही शामिके क्रिय बरसक अवीर होता। मामक, तुम्ब होना बावता बरना । सक्तवामा-स॰ कि दिनीश इंग्र शमेश व्यथा वंश-बर बचीर बरवा। कोर्र नुवारणी धीव दिखावर कनेके तिए मार्क व्या करीर करना। भोडित सुन्व करना । सर्वाद दे श्रेष्ठना । सक्ताहि -दिश्यमयामा दुनाः काशव काल्य करने क्रमिद्व-रि , इ (ए) है र्राज्यात । सक्त्यु - इ [मं] मीत्वा देव । mun-ft [ci] alleinlin i go alleis fantat पाइन, तरमपाना। नरदा क्या सन्त, तिदाह ब्रिटीकी पूर्व न सामकड़े जिए ग्रेसभ्डेयक शब्द ह सलवा-सी (सं) सी। कामिनो। त्रीता वह वर्षहर । -तिय-पु दर्शका देश-एक संपद्म्य शीनेर श्री श्रीमधी दिव समित्रेगमा स्वादिका स्वानीकी दिव कथ्रीयम्बर्ग

कलनिका-सी॰ [सं] धारी सी। सुरत सी। सम्मी°-मी बॉनुटी मधी-'दहरि दश्रा स्थारे सथना वीहि कीने बदरी -शेरद : खसरी−मी दानको सोनको। सम्बद्ध-इ (सं) अस्यष्ट ब्राह्मारम् । समझी छठ-सी । मार्ज्यमा गरी, इत्स्ती । ससा-प स्वर्धीया सामान्य संशोधना स्वया (वी धारा. बुन्गरा हो)। मेथा, भावहदा स्तीपन । सम्बर्ष्ट्र ∸ग्री॰ शहाँ। श्राभी । सम्पञ-५० सि॰ो तिश्र । कमार-पु (सं०) याथाः भाष्यः । -तर-पु सन्ना-क्षी दाल था तुल । -प्रदान,-पष्ट -कुमक -पु श्रादे-का तक, विस्तार । -हेर्ग्या-शेर्गा-की मरउक्की रेक्षापैः भाग्यनेक । ज —का खिला—सम्बद्धा क्षेत्र । −में होना-भाष्य शुरुपेर्मे दीना। समारक-प सिंगी मनारः संपर प्रभार । क्लाराध-प [d] विका सखादाझी-मी [सं+] दगी । क्रसादिका-न्यी (शं०) मारदा यह भागूपण दीधा गिष्य ६. रोधा । क्काइफ~वि वि <u>वि</u>तर क्षत्रस्थामा । क्रमाह्य-विश् (तंश्रो शहार संबंधी। सन्तारी वत्रवत्त । करवाना = न कि हिमी भी बर (बोहिन हम्म होना। . किमो चीवके जिए लक्स्पनाः शत्नेके निष्ट क्रपीर होता । छत्ताम-रि [र्ग] निद्दशमा श्रीरेट रमगेरा सेष्ट बक्ता । त्रण अवनः शस्य निनमः निहा मनाशः प्रम दंश और पनाका। पंतिः। दुगा गीता। माध्यासा निष् (बाच पाँडे आहिड): थोउडा आमरमा अदान । सकास(म्)-प्र [4] बाम्यम मनावा स्रोबन्धविद भिक्रा विका शंदाः इत्रा सीता भीता प्रतान । सम्बद्धक−त∗ (००) जनके शामा (मानेवर मनेविके मिर) । जन्मस्मी-सी शहरता। शाबी (मेर) बामधा एक व्यक्तिम्-वि विक्री स्रोदायोकः वामीः संदर्भरमानिः शहाः निशीशः देखितः दिशः दीमाप्त्रामः हिमन-बीवना पुत्रा । पु. न्यून्य रक्षमा वह साविक सत्ता बद्ध करेबार अर्था वर्ण बाह्यदे गृतको मा अप बन्मा क्षा की म करकर जात्या जो विकास करन दिना कार है। किसन संबंधन किसिया राह-राम देश बा है दिया बन्दवाना अवदे हार्ड के एक विशेष मुद्रक कत कामा कर दिवस मार्थकता अठेशा में देवे - समा-भी की रवेडे अप्रत्ये व्याप्त होने शाही कथा (रंगेफ बन्ध वर्ताते । नवांतान्त्री इतो । नतावन्त्र शरीतमा वस राजा --चप्र-विक श्वार वर मन्द बच्चा ब्यु एक अर्थिक श्रेष्ट मार बोरे । - प्राच-षु *ज वर्तीस र पुरसा परिनात्ता − प्रशा*न्तु* इसका भारता -तिय-पु इत्तका एक समा -लीकश-वि होत् अधेतामा -वितास-या रेग salities : -alfa-l senere (ge):sa

महास्थ्यी क्षमका भी स्वेद्धमाता। श्रेपरता, श्रीमा। प्रमुद्धकि। चेहमादी ग्वारदवी कला। अन्युदवः सीमान्यः सफ्रकताः बोरांगमाः गृष्ट-स्वामिनीः तुर्गाः सीताका प्रक मामा माहि भावभिः वृद्धि सामको औरवि मोतीः फक्षवान् बुधा क्षमका बुलदी। शमी धीकर, धफेर कीकर। सफेर प्रकरी। मेहासिमा यह वर्णकृत । —कौत-प्र विच्युः मरेश ।- गृह-- प्रकार कमक !- जनार्वेग - भारायण-प चन्द्रविष्ठपुक्त एक तर्हके काले शास्त्रप्राम । –होबी– स्त्री [दि•] एक संदर रागिनी। "साख-प्र तरबका ताल वृक्षः १८ मात्रालीका पक्ष ताक (संगीत)। -धर-प् विष्णुः स्रविमी एवं । -माय-प् विष्णु । -निधि-पुधनस्कापुत्र ः -सृसिंह्-पुदो चक हथा वनमाक:-विद्वित शास्त्रमाम । −पति –पु॰ विष्णुः हाआ। सीमका पेड़ा सपारीका पेड़ !—प्रश्न—प्र॰ सककुछ। थोडाः सामरेषः वनी मारमी । -पुष्प-पु॰ सङ् माशिकः कीगः क्षमतः। -पृज्ञा-सी कर्मीके पृथमका स्वोद्यार जो दीवावसीक दिल दोता है। -फक--पु॰ मीफ्क वंक । -रमण,-चल्लभ-पु विष्णु !-बसर्ति-स्रो॰ काक कमल । ~बार~पु गुस्कार । ~बेश~पु शारपीय। -समाध-दि॰ छोमा या येश्ववेते संपन्न। -समाह्या-ली सीता । -सहस्र-सहोदर-प्र• र्वहमाः ऋपुरः इहका भोशाः शंकः ।

स्वसीक-वि [मं॰] बनीः भाग्यछाणै।
 सहसीबाय्(वर्त)-वि [मं॰] बनवान् संपितमान्।
 सुरर। पु विष्णु। बटद्या नेत रोदित इहा।

कश्मीश-५ [मं] विष्णुः सामग्रः पेवः संबध व्यक्ति । **स्वरथ**-प (सं) निद्यामा समानेको वरत (विद्य निर्द्यत रथान पहा वा अन्य कोई जीव जिलपर निशाना कनाया बाय): निद्यानाः भमीत वस्तु बदेवयः अस्त्रीका संदार विशेषा अल्यानका विषयः अनुमया अध्यमान्यक्तिमे प्राप्त अर्थः स्माय पदामाः काराजी श्रम्याः। वि वर्शनीयः क्रिसका कथम बनाया जान को उद्देश बनावा जान। −प्रद−पुनिद्यामा सनाः −ण्-वि• पु सदवदा दानी ।- ज्ञाब-पु सञ्चलीके दर्शनमे अलब दाना दर्शत अन्य बान १ - अब्-प् ए स्थका भरत करणा (निरीपत मित्रहोड सरवद्या) । -बीची-मी॰ बरवव सिद्ध कामे माशा समें, क्याया प्रदल्जिका घर, देववामनार्थ : -- धेक —पु दे 'रुद्यभर'! – वेघी(धिन्)-विश् सहवशेत करमेवाका (विशेषना गठिशीन कश्यका)। -सिबिट-न्द्री बर्द्रमको प्राप्ति । – सुक्त-वि दे 'क्रह्मुस । −हा(हम्)−पुदाम । सप्तरा-चौ । [तं] चदप होनेदा माव ।

रूप्तार्थ-पु॰ [मं] शुरुषी कश्चना-शक्ति द्वारा माप्त वर्षा

लल- ताम का समासगढ कर । -यती-पु लायो सर्वकेश मार्किड, बहुन बनी लाहमी । -येद्रा-वि लगा व्यक्ति पोचाना (बाग) । -हार्ड -दार्च-पु लाय वेशेशला बगा बहुत वहा बगा । -सुर०-वि लागो हो रेनेशला लाहम्ब करमेशला ।

श्त्रपर धनावर•~इ दे 'शांगापृद् ।

छात्म•—पु रुद्मम्, रामके छोटे गाई। जी॰ देखनेका भाव। स्टबना॰—स॰ कि॰ देखनाः समझनाः वायनाः ताद

षाना ।

सक्तर—पु॰ एक वृद्ध काकवारियों नरकीक । सम्बन्धरत्र—वि॰ फिर] दुवला-पतला । स्वी॰ भूदा-प्याससे - यका सूर्य जानेवर तससे मिक्टनेवाली नावाब ।

क्षप्रसन्द्रा∽पु [अ०] अंशर, करत्री, कमर आदिका योग यो वेदोदी पूर करनेके काम आठा दै; वह पात्र त्रिसमें यद पीत्र रसी वाती दै।

कसाह्रभ≕की॰ पदचान । क्षचारुश≔यु देश 'सन्दाव'।

स्वकाशा - ज॰ कि॰ दिसाई देना ! स कि॰ दिखामाः शुरानाः, अनुमानं करामा । सम्बाद॰ – पु॰ पहचानं विद्व निसानीः, पहचानकी चौत्र।

িবল থানিবাতা। জন্মা-বু॰ কাতেই গৈছো বীবা কাটো। কালুআ, কালুবাণি-বু গাঁইবা থক বীব ভাষা, আহী;

क्षुबा; क्ष्युबा: "पु गहुक: २क राम ठावा; काहा; दे 'क्षिता ! क्षेत्रुमा = स्ट कि गरेहमा !

सन्तरा—पु काराकी पृषियाँ नमानेपाला; काराकी पृषियाँ बमानेपाकी एक दिंदु कपमाति । सन्तरोद, सन्तरिक मुस्ताठ जामक पेर मा कराका करा ।

सकौर०-को कासको वृहियाँ। समीरा-पु शियावरा उध-पका व सिंहरको विविधाः सम्प्रको वृद्धी- वापनि कमीरा वार वृद्धा पत्र समी⊷ै -व्यक्तिसाः एक सुर्गित केप।

कारीशी-गरी मेंशीका बरा पुराने शंगको कारी भीर पनशे हैंटा किसी देवताको पसके मिय तनका पता, पूक यक कारको संस्थान पदाना ।

कारत-पुका देवना येदा -(एस)जिसार-पु॰ कोन्द्रेका द्वबनाः बदुत प्रिय व्यक्ति वेदाः

सर्गत—सी रूपना जासक दोनाः संभेग करना । क्रार्य-म॰ तक पर्वतः समीप पासः लिप वारते। शंग, साथ के समाग । श्री अस स्थान ।

कातिका-सी (धार) किसकता बहारहाररा मृश्यूष। सगद-वि [में] सुंदर।

सगतग-त- रे 'तपश्य । सगग-तु [मं] पश्चमीता एक रोग वित्तमें गाँठ पृष्ठ

वाती है। कार्यों — की कवरी, वह विस्तरा को वधीं है होचे

कपनेकी मण्णुमी बचानेके निय हात दिया जाता है। स्थान जो मन महरिका दिशी और कपना मुक्ता, तो, पुना जाता स्था पुरु (श्वास्त मुक्ता, तो, पुना जाता स्था पुरु (श्वास्त मुक्ता, स्था निज दिशी शिवार मारि शेष्ठ हैं वे दिया [का] मोसक्षी मणानेसी पाणी। जाता गूंगत निवार्ग मारि सानेसी साणी। नियमको एक रीति विश्व वर्षे दिय बणीन संस्थार सिकारसे मेत्री मारी है (मुख्य)

बोनिसल । क्रक्षितई = ची दै॰ 'हक्षिताई'। स्रसितक~प [मं] एक प्राप्तीम शीर्थ । एकिता-नो• [सं] एक मृच्छनाः पार्वतीः कामिनीः राजाकी एक सदी (पद्म अहारे पु) करतूरी। पद्म गदी (प्+); एक वश्वाच । वि जो सुंदरी । -पंचमी-सी वासिन-प्रद्वा पंत्रमी ! --वडी--खी॰ सार-ह्रणा बद्रौ । —सप्तमी-न्हौ॰ माह हा**हा** सप्तमी । स्रक्षिताई ≉−सी सुदरहा ध कक्तितार्थ-वि [सं] रंगार रक्ष-प्रवान (रवना)। क्रसितीपसा-सी॰ [सं] चपना शर्लकारका एक अप-भेद बहाँ एक्मेब तथा बपमाममें सावश्व दिख्यानेके किए इब की, सम कादि शक्क शब्दोंका प्रयोग न कर ईप्या मिरादर, बरावरी आविके शुक्क पर रखे कार्वे । स्रक्षिया!-पुकास रंगवाका वैस्त। सारी-तो सरकिमीके एंशेयनका शब्दा व्याप, तुकारसे थबी कप्रकोर साविकाचे किए प्रेमम्बंबक श्रेगेषम् । स्रष्ठीतिका-न्यो [सं+] एक तीर्थ (म मा)। ससीहाँ - दि॰ कताई किये हप जाताल । सरकर-वि॰ [सं॰] इक्जानेवाका । mm:-प करकोदे किए प्यारका संशेषमा प्यार दलार का अपका: मीप्रवामीका श्लेशकुण संशोधन (धनिया), सम्बद्धी साध-पु: प्रेमसागरके रचनिता निनकी गणनाः हिरी मध्के जार्शमक केएकोंने की जाती है। -**छक्रो−श्रो जीम। −चप्पो₁~पत्तो~को नाइकारि**ना उक्तरसदाती। विद्यमी-व्यवही क्रान्त । श्चवद्वरां−पु यक तरहका साग । क्षवंश−पु[सं∗] कीमः कीमका पेकृ। −कक्षिका− सी॰ कीय। —पुरप्-प्र कर्षमका कुछ। —खता— कांगच्य पेशः शामिकाकी यक स्थाति विके ने यक चरवको मिजाहै । अक्रव+−सी दे की । −छनि−दि तस्त्रव, यद्म । स्थ-त [मं॰] नश्य मात्रा थोड़ा लंगा कासका एक मान १६ निमेक्स समय। कवा वर्ताः कारमाः विशाधाः बह भी कारा नामा कल नाका कारा हुआ। श्रीश शुरा गावकी पुँछ हे बाला कामानका बावकाला कर्नगा शामके बद प्रवटा माम । -छेश-प्र एवरव माणाः वीवा i fichen & 5-offen i haft रूपक-वि [र्व] कारनेवाका । पु एक विशेष हुव्य । क्षयस्था - म॰ दि अमसमा, कांशमा तिहाई देना । --क्षप्रकारिको पगढ कांगः (रश्ली। सबय-दि [सं] नमशेना ग्रंदरा कान्नेवाका । प्र कीय समका एक राज्ञान कारनेकी किया। काटनेका क्षीमार देशिया सुरी आति। -स्रीतकन्यु त्रपण-विकेश । -शार-पु यह शरहवा गम्ह । - अम --शोप−4 सारे-पानीनाचा । पु समुद्र । – सूच-५ रक्ष माग श्रीनी जनश्मीत दुवता दुल्याव विदी । न्यूच-मु स्थव विदे कीर सक्क मामक

तीन नमकाँका समुचय । -धेनु-त्यो॰ गावके क्समें स्वापित जमकाधे राजि । -पाटकिका-स्त शमक्त्री थेली (वी)। −प्रमाद-वि जिसमें सकत अभिकादो । ~भारकर~पुतीमी नमक जीर कर्म भोव भिनेंकि योगसे तैयार किया द्वाना एक पायक पूर्ण। -सद-प्र सारी नमक । -सह-प्र• प्रमेश रोनका एक शेद (था॰ वे)। —यज्ञ−पु ऑनिविकॉका पाक वसामेके किय एक प्रकारका पात्र (भा वे)। −वयँ − षु अक्रुडोपका एक श्रृंड । −धारि−कि, पुदे किन्य जरू"। - व्यापत्-पु॰ अभिक समक सामेष्ठे होनेवाका वोहोंका एक रोग। -समूत्र-पु॰ सारे पानीका समार। कवर्णातक-पु (सं॰) कवणाद्वरस्त्रे भारतेवाके, दाशुक्तः जीव 1 खबजा-मी॰ [पं॰] भागा यमका वैनेरीः जमकोती सका क्योतिय्मवी छता। खूनी मश्री । सवणाकर-प (र्श•) ममक्को खामः धौरवंता मायार । स्रवणाचल~पु॰ (धं॰) दान दैनेके क्रिय करिका समस्रहा क्षा (मस्य प्र•)। क्षचणापण−५ (र्र•ीशमद्यका शकार । क्षवणाविष−पु(सं∘]समुद्र।−का−पुशमुद्रीनमधः। सवजार्जब-(सं] समुद्र । कवन्त्रक्रम – प्र. [सं] समुद्राः मपुष्रते (कवन्नस्टरक्षे) बसावी प्रते भाषुनिक मधुरा)। क्रमासूर-पु [4] एक राइस (रस्का पर शहफाने किया था। यह मनुका दुव था)। क्रचणिष्ठ−वि [मं∘] समक मिकामा द्वजा। कविना(सन्)-सी (एं॰) नमधीमी सकीनापना भीरयं । क्रचणोन्कर−पु (सं] वद भीवन ब्रिस्में बसक् अप्र-दमक्याने अधिक एक गया हो । इटकोत्तम−५ [सं]सेंबानमदा कवमोरधा—मी सि॰ी क्वोतियाती हता। रूपणोदक-५ [सं] धारा वानी समूत्र । छवणोदधि-पु• (व्•) सरपस्मद्र । क्षवण-पु [मं] कारणाः रोतक्षे कर्त्रा, तुवारं: सीमी वित कारमेवी मजदूरीये दिया गया अस (वो बंदक दे साव दिवा नाता है)। विश्व कारनेका भी बार, हैसिया । स्वमा-स वि: धमनको कारकर बंधरना । वि सम कीना संदर । --ई-मी श्रेररना । कवनि न्थी करन पथी शेरी बारना। शेर कारनेथी मध्द्रशी । लबसी- वसी नवनीत मरसना है 'सबिन [सं] शरीचका पेड़ या पत्ना बारनेकी किया। बारनेकी अधरता कारनेका भीवार । कतनीय अध्य~रि [मं•] कारने योग्य । लका−की ऑब ब्यामा लक्ट। स्वकासी ० – धी० प्रमर्त्तव । सवर्त्य-सी [मं] योने (तक्ष) एक लगा एक (दवस व^{र्}ष्ट्या क दश्यारेवडीका मृद्धा वा प्रमुख पत्र ।

लबहरां – प्रचारशीयपने ।

 पढ वृत : -पत्री-सो० दिवाह तिविष्यपद दिवाँ (विसमें विवाहका दिन, मुहुर्त निधित किया बाता है। यह सम्बाद पिताको ओर्मे नरके पिताको भेगी जाती रे) । स॰ -घरना-विवाहका सुहुर्त ४वराना ।

सगनबद्ध-सी प्रेम, सगम । ≢नाना─+ पु• एक मूख। व कि ञूक्ष्मा, निसी पीत्रमें पुरति भीजका जोहा कानाः सुरता एक जीवका दसरी भीवसे निसनाः जड़ा बच्चा सिवा बानाः रगइ यानाः " से भारत**-पे**टा बानाव भिड़मात रावने किछ माना बट बानाः गहना, पसमा धुननाः के हामाः तकपर पहुँ यमाः फारता शेवीय दोताः बार बस्ता स्था। हस्य करनाः प्रमाद, असर करनाः दानिकः त्रमाव धोनाः "का बसर बरना, बनुधर होना बान पड़नार"का शीहर करना। का भावक होन्या" का वंशीय केंग्रमा बीटा बरमा साथ भरताः १९, संबंध रिश्ता दीना। काम भामा रार्च हाना सो जानाः प्यार द्वेत्र होताः दिस्वरको होसा। बसन भुतपुनाहर बरसा: बार्श होकर बारी रहता। कमभार, इन्ह होता। महीनी बीबीका रिसी रिमागक्त तेव क्छर दोनाः प्रक्र मारिका एक्साः क्रमान्त दीनाः छुमा समीप कानाः वस्त्रना धन्छात् बरनाः बरतेमें जानाः धीर दिखानेपर पर्देशकाः धीर्षोदा सम्माः मनना, नष पद्भनाः ग्रह्माः श्रामने स्थान वानाः वहा नामा, वृथ देत रहनाः नामी शॉब ररामाः छरमाः निष्ठाम बानाः निधत बार्कः स्थानपर क्षेपमाः बोनाः केष दिवा बामा। सम जाता लिवट बामा। रिक्रमत बारी होताः दरकारः आवरतद होताः क्रयः सिम्पति वेथे रसा सञ्जादा जाजाः स्वत्रेश दीनाः नकेर दीनाः वानी यस कारीदे बाद वस्त्रेवाके परार्थका सकतर तबमें बैठ मानाः मिनता: में क्षेत्रोंडा क्यरियत बीमा देवका निक्ति श्रामा भाराप विका जाता: अकना। रीधनी होना। श्रीह बैडमा (बंबो)। हिमान होना। "का क्वारन करना। वासमें रहना। बारवरीका और। सगया। प्रकृत क्षेमा । मु सत चलवा-दिगीका साव रकत्रमा । समती वास-नवते नदारनेशांना शत मुधेनी शत । नर्या स्यानी-हता हो, प्रहर्र । सने दाय ना हार्थी-साथ दी वसे मिश्मिक्षेमें।

सग्रिव•-स्रो दे कमन। सरामी-सी रिकारी छोडी बाबी। वातणनके कंटरबी

राम राजमेकी तरनरीः वरान १ स्तातीय-रि [मंग] जी मंदऊ मंतुक दिशा जान ।

क्षरामय-सर्व बरीव-करीव ह

सरामात नहीं स्वंत्रत बनीये बोड़े आनेताने स्वर्-बिद्ध ह सगर ० - व यह दिखारी निहिया नाम । सरासराध-विश्वकारीर बुक्का-प्रमा बद्धमा ।

साय = नि वेदार, एर ! सरावामा नय दिन भगानेश काम वरामा ।

सराबारक-त बार बरदि ! लग्रवीयत्नान्धी (स) वेडायी ।

क्रमहर्श-पु रामेनदार क्रीसः तराज्य विकटन सरा दुभा । रि॰ स्त्री॰ बूच देतेराडी (गाव) ।

लगाई-ली॰ समाना भारीप। -वहाई-ली स्पत वात ववर का सुधाना। "स्त्रतरा"मी वक्रप्रे दूर्त दशरी करना कनाई-कार्न ।

समाळ-वि॰ समाधेवासा, अपनेवासा ! क्यातार-म॰ निरंतर परापर निरा रहे हुए, निक-सिन्से ।

क्रमान-पुरावा सरकार वर्गाशासी मितनेशका मूमि-कर चीत, रावरता वह स्वाम वर्श मीविया बीत समस्र हरताने। नार्वेके डहरनहा स्थामा को बहानीका गुण हवा र्मस बहाँने भागा जाना संभर हा आगा लगगा। अनका । -अर्क्री-य बर्मामडे तिर सहार दिना हमा स्नादा

-वाकर्र-पु॰ ब्राप्ती मुविद्य । समामा-त कि बोहना ही धीबीके शेवना एडपे करना संज्ञा सरवाः संकाता मिन्धिथम रमवाः रीयमा। सरामाः नियदानाः दीर्द योज रमस्ता योज्या मलमाः कावन करमा स्वत्रा करमाः लगुमद करमाः किसीमें नवी बादन शासनाः प्रदार भीत बरनाः कि करना जनमा शकमा। सहाना मीह, महमा ६९ हेना कपराधी बनामा। दालन्द उद्दरामाः गार्मा औरमा नियुक्त सुकार करला। इच बहुमा। अपने माथ पीछे विमोध्ये ने बतना वा क्रिने फिरना। हिराप हरमा। नंतुक, नंबद करवा। जुमनी करमा। वंद करमा। वामी दौरस्ट रसमा। भएते भारती दिगी विश्वमें का भारत समझना। बारण करना की ना शुक्रामा, राज्य संदर्भ कराजाः ध्वान देवा चन्त्र वर्देवाताः निवेद स्वानदर पर्रेषालाः पार वेत्र करना मान परमा। राम क्रमना त्व बरणा प्रदर्शना। दरनेमें देशा बरना। निवित्र क्षरताः चैकाताः निद्यालाः करमाः सर्वे करमाः निपार बरता । -(मे)वान्य-दि॰ यान्यतीर १५९८ हपर क्रमेशला । श्रव -ब्रश्नामा-अपश रहामा । -ब्रामामा हागका करा है शुन्द बताना ह

हरगाय-बी (का) कीरका रॉनरार छन नी भीतेडे मेर में कवाचा जाना है। इस रावह सिरीयर वंधी राग्ये। काश राम यान शुरु -कारी करवा-मोरवी मान थीमी इरमा। कार्यादिका निषंत्रम करमा। -चरामा -हेमा-बोर्ट बाब करनेने दिगोदी रोहना अधिक दरमध संयन करता । -श्रीशी करवा-गाँकी मनवाही चाम बस्ते देना बार्शास्था निरंत्रम श स्माना : -सिवे विकास-सिमीकी कारते अपनी बरनेहै निव हिमें वीका बरमा । (बिक्री ब्रोजको)-शासमें स्वा-नंद रमगुष दादमै नेना ।

क्राप्तित्र = शी० क्रेम, जनम∽ स्र वहाँ भी स्थम सार्व है निजनी वर्ती सीजिवे क्यांव -- शुर । ह्यापन्-ल॰ (ल.) जंत्रद (शस्त्रमें है। दस्य वर्ष

हाराहरू-वी क्लिनिया द्वारा स्टम सेवा मनिव संबंध

न्यांत्र अर्देशः वराव्य कार्ते साम करन जाता रेतेता वर्ष रधान वर्षा जुन्नारिकोडी निष्त्र दिसनेसा एका दिके। द्र संदेशी। यह विनेशका ।

ं सराक्षरी-छी॰ कार व्याराज्येकनोका कार्य या बनाने

सवा~पुरद्भ क्हीः र्र लागा, काना, श्रीतः । कवाई~वि स्ता सम्मान्त्रा हारुक्की स्थायी हुई (भाष) ! सी समनी रोतकी कराई। रीत कारनेकी मजहरी। सवाक-पु॰ [सं] इतिवा। कारनेकी किया। ¥वातिस~पु॰ [भ॰] 'काठिमा का बहु॰, हे 'तवाठिमा । सवाजिमा-१ [म॰] बस्री सामानः यात्रा आदिमें साव रहनेशका शामान । सवाहिमात-पु॰ [बा॰] 'तवादिम का बद् , तपकर्ण सामम, सामग्री । ष्टवामक-पु [सं•] €सिया। स्वारा -पु॰ वर्णा । सवासी १ - नि गप्दी बढी। शेवर । स्रवि−िव [सं] बाटनेवामा तेत्र बारवामा। प्र बारते≩ काम भानेशका श्रीवार । छविय-त• [मं•] इंसिया । छदेटिका−सी सिंशी बदा। मयोगम-पुर्व (११०) बढेंबा दुवशा । सदा-पु॰ [सं] गीं-। समाकर-इ [का] मेनाः सबस्य दन (मासकर सरहरी पढानींका)। अभियमित सेनाः विजा# जनसमुदाया धावनी । – कहरी – स्त्री चन्नार्थं दनका । – नाइ – पुण् म्ह्री छात्रमी ब्रिक्ट : -ब्रक्टिस-दु॰ सेमार्थे दगप्रदृष्ट सॉंश्नेबाका कर्यवारी औत्रका वस्त्री ? कर्मन कर्मम-५ [वं] नश्सनः सहकरी-पु (का) मैनिका बहानपर बाम करनेनाका ! सेमा-एरेपीर बहाजी ! मी अहाविशीमी माना ह —बोडी-को॰ को व्यक्तिंग गेला जो लागडीरने विपत्ती होती है। क्षपण-विश् (ते॰) दश्या करनेशण। छपन०-९०६ सनना सब्बार-पर दि देश क्याना । क्षपित-रि [र्ष] शन्तित । सरर-५ [मं] सर्वं ६, नापनेवानाः व्यक्तिया । सार-वि [र्ग] पपडता हुमार विकास हुमा । तु कैटरा स्पर्ध लाम बंदमा (दि॰) विषयोत्या गुणा विषयानेवाली भीज मी" सामा। शहर्षत्र । -शह-निश् सनहाना । इसम्बन्धि [मं] अर्थक बाग्य मृत्य करमेशामा । १० KK GW ! क्सक्र कमगर्र-पु॰ दे 'लग्नर' ! समर्था-दि [6] बादती हुई अल्बीदना (हैवे सर्वे) । सराना 🛩 🕃 चयहना राणक्रमाः रिश्व हीनाः दिशा है देशाः रिरायमा बाचना । धन् किः विषयमा न्याना । समिति - न्ती । द्वीनित दीता। विश्वता उपनिवृति । ससम्ब-(वं शीध निवन्ता (जेना बार्टि) ! समरकारे-दुरु संदर शास्त्रक (न्यानक) । क्रमक्रमा-विश् विश्वविद्याः, योष्ट्री त्रव्य विषयवेषायाः, सनरार १ -इट-नी दिश्विशहर । सगलगामा-म हिर विश्वपा विश्वदा क्या-स्रोश्ति है इस्ति वैभर ।

क्सिका-की॰ [र्थ] बृद्ध, बाठाः पद्धाः। स सित-वि॰ (सं॰) सहीतिना प्रका होराई न । क्रमी~सी क्षा, विस्ता शास्त्रीया संग्रहे संस्था क्षेत्र मारिकी भागा। दूष या वहीं और क्लेंडे मेरने का स्सीका-मा॰ [र्थ] काका। मांत कीर धवरदे शेर रवनेवाका एसः देशका राग्ना कसीका-वि चित्रवियाः कमदारः आवर्षेतः शेएव **क्स**श∼५०६ व्हस्ता समुनिया⊸९ य€ २९मृत्य दरवर ! लसीबा-त यह ब्यु वा बस्का बन को शहरेरी जैग धार और इसदार शेला है। समोदा-नु दै 'महोदा । स्मीदा-ब बहेरियोदा विदिवा वेशानेदै दिव बला रखनेका बॉमका बॉना मीउरानी। कस्टमपस्टम-वर दिमी दिनी टार स्वीरवी दरदे। भीरे-बोरेर सम्बद्धारवत इन्ह्रमें र कस्त-वि बहा हुआ दीवार मधात समहोरा [मंग] कीरिटा साथ चीमामुका कालियिता संप्रत, न्यू र कस्तक-९ [नं] पनुरुद्धे मृह बीधश मंश । करतही(दिन्)-पुर [सं] पनुर । करतगार्थ – पु० बार्टन करना (रन कामका अर्थना क्या बीके स्थार शंरका विश्वनिधा (इरहड शर्थमा यस् गवा है)। लस्यान-दि (स॰) पर्य रोतनेवामा वाचाना सप्टेशम् भागा शेकमेशाणा शब्दा । इस्मानी-श्री वायावता शहावाभी । कस्ती-को विश्वनिशहर क्षमा गढा (रथिय)- वच बा रही और रहेंद्रे घोतमे बतावा हमा धरवत । न्द्रेगा-५० निवेश दयरहे मोनेदा पेराहार दद दर मारा भी कारमें मारेने चौना माना है। यांचरा ह **कडक** नती॰ कावदी चडार चमदा शीमा । **कडकमा−ल** दि+ दशका बनना, जो है देना। बद्दामां, हिन्यानुषता (इशके जीनो देहनीरेका)। असरा अगमा कम कावा परवारा क्षेत्र पार्ग कोर्न भीर वाने हेंगजेहे तिर शामा भक्ताता चाहमे सर्गत होगा। सहकार-प्रत्यक्षा प्रता मेता। न्द्रकाना नत्र हो हो हा विकाना भागे बगुलगु बांबा ^{के}बार भोज जन्दमें करदश्या रहाता आम बहुबाया कार शिलामा अमापमा (विश्वी दिवस) । अक्षारमा-स॰ दि जनपूना बहाबा देना उप रिकामा बीतगरित वस्त्रा कुता होस्त्राः कुनेना सम्बन्धाः (fire and set) t अक्टबीर सङ्ग्रहीरिक-कीर दृष्ट्रे और दृष्ट्रीसका बेपान रे यह दुशोदी अपी शबसे कुछ भिणाना । ब्रह्मा-पुंकि] वैचनेता धारीचे प्रधानका मण र्दगा रीम्पान। तथ । सद्यानपुरु (अ.) यज्ञ राज्ञ जिल्हेय । #25-40 (#] #21

```
मधद्वार−भाषकृत
मवहार-पु [सं ] मपहरण कौतानाः चोछ सुँस, अछ-
                                                 अवान-वि [सं०] स्ला हुमा, शुन्द्र (फ्रादि) ।
 इस्ती। रणविरामः जाति वा वर्गका त्वागः भागंत्रणः पास
                                                 अवापित−वि० सिं०ी बीया दशा नहीं रोवा दशा ज हटा
 कानै वीग्य बस्तु ।
                                                   द्रवा (शक्)।
भवडारफ-वि० सि०] अवडरण-कारकः तक वंद करने
                                                 अवास-वि [सं] प्राप्त, मिला हुमा।
 यासा।प्रस्था
                                                 अवासि ~ स्रौ [स्रौ] प्राप्ति ।
भवड़ (पे-दि सि ) हे बाने वोच्या बिसे कौटाना माव
                                                 अवाप्य-विश्विति प्राप्त करने वीस्यः न कारने कीस्य
 रक्द हो।
                                                   (केशादि) ।
भवडास्थ्वा-खो॰ थि॰) मार्पार, दौबार ।
                                                 मधाय≠−वि॰ मनिवार्ग उद्गत निरंकञ्ज ।
भवडास-प [सं ] मस्कराहर, मुस्करामा वपहास
                                                 अवार-पु: [मैंo] संगक्ता इंबरका क्रिमारा  धारका एकटा
 खिक्री बहामा ।
                                                  रस पार ! -पार-पु॰ समुद्र ! -पारीण-वि
भवदित-दि [मं ] एटाप्रक्ति सावधान ।
                                                   धंबंबी। नदी पार करनेवाका ।
अवद्विरथ-पु, अवद्विरया-मी [सं०] एक व्यमिपारी
                                                 अवारका, अवारिका-पु॰ (फा॰) स्वितीनी; अमारार्थकी
 मान बिसुमें सजा भव बादि भानौको छिपानैका भनत
                                                  वद्यी। गोद्यवारा रोजनामचा ।
 होता है। मारगोपना
                                                 अवारणीय-विश् सिंशी विसका निवारण न हो सके
श्रवहत-दि० [एं०] इरच किया हुआ: पुरावा गुमाः
                                                   কা-ব্লার চ
 विसपर जर्माना किया गया हो।
                                                 सवारथा*-स कि॰ रोकना वारण करना।
भवदेखना, अवहसा-न्ये (वं०) अनावर, जवग्राः तिर
                                                 अवारिका-सी [सं•] वनिवा !
                                                 अवारित−दि [मं ] अनिवारित विसपर रोक म समावी
 स्कारः चपद्या ।
सपद्रेकित-वि (सं ) अवदातः तिरस्कृत ।
                                                   गयी हो । ~ द्वार-हि दिसका दार ग्रका हो ।
अवॉ-पुदे आवा'।
                                                 अवारीण-वि• [सं ] पार गया हुना।
भवोडमीय-दि [सं ] जिसकी चाइना न की बायः
                                                 अदार्य−ि [ई] दे 'बवारक्षेव'।
 सन्मिक्यपीयः अधिवः।
                                                 मबाबद-दु [सं ] उसी वर्षके इसरे परिसे बरपथ पुत्र ।
भवातर−वि [६ ] शेवमें स्थित, मध्यवर्तीः अंतगतः
                                                 अवास+-प्र १० 'बाबास ।
 मीज। -दिशा-सी विदिशा, दी दिशाओं के वीजका
                                                 भवासा(सम् )-प [मं ] दिगंबर बैन । वि० नान ।
 कीय । -- देश-प् दो स्थानों वा दशीक शैपका स्थान
                                                 भवास्तव-दि॰[पं॰] की वयार्व न हो मिन्ना; निराधार !
 या देशा - सेद-पुगौप मन उपनिमाय।
                                                 अवाहन-वि [do] विस्त पास बाहन म की जो
भवासना-स कि दे 'अनवासना'।
                                                  भ्रवारीपर म हो।
मबाँसी~थी नवाधदे किए फ्लक्रमेंने बाटकर कावा तजा
                                                 व्यवि−तु [तं ] रहक लागी। पूर्वः वातुः पदावः दोवारः
 पडका बीज ।
                                                  वैरा अक्रवनः मृतिक श्रंतक समुरः मेवा वक्रवा। स्वी
अवार्ड-की आगमना गहरी जोतावे।
                                                  भंदः रुखाः क्तुमती सी । -कट-पु भेदीका श्रंद ।
भवाक(च)-वि॰ [सं ] अवीमुखः मीन चुपः साम्बः
                                                  -रांधा,-रांधिका-स्री अवसंश सामक पौथा प-पट⊶
  विभिन्नी । अर्थ मोचे दक्षिणको कोर । पुण तक्का ।-पुच्ची-
                                                  पु॰ कती बस्र । -पास-पुगरिया।
  सी मनपुष्पी।~द्याख-प अक्टब पीप्ट।-प्रति-
                                                 अविक-पु॰ [सं ] मनः होरा ।
 वि गूँगा भौर वहरा।
                                                 अविकल अविकलित-वि [मृं] वंद अविकतिन।
मबास-पु॰ [सं ] रखक, देख मारू करनेवाला ।
                                                 भविद्रस्थ, अविद्रश्यम-वि [मं•] यम् व म द्रुरनेवासा
भवागी÷-दि मैना।
                                                  डॉग स भारनेबाडा ।
भवाक-'अवाच'हा समास्तर रूप !- निरय-पु॰ नीचेका
                                                 अविकश--िव• [मं ] को परावा-न्हामा या नदका म गया
  भरक (पृथ्वी)। - सनसगीचर-वि यम और वायी दे
                                                  हो क्योंका स्पाँ हो। व्यवस्थित जो बन्पैन न हो शांत !
  परे, भवर नीय और अस्मिद (ईश्वर परयतका) ।- अदा-
                                                 अविकस्प-वि [सं ] विकरपरविद्या अपरिवर्गमीवः निश्चितः।
  मि मबीतुरा, विस्का मुख मीचेश्र और ही लिखत ।
                                                  पु विक्रम वा शरेशका समाव ।
 भवाची – सी सि विश्विष रिशानिस्न देश ।
                                                 मविका मविता-ली॰ [मुं॰] मेरू ।
 सवाचील~वि [मं•] दक्षिणी: अवीमगढ़ अधीवन ।
                                                 अविकार-वि [मं ] विकार-रहित म वश्यनेवासा, एक
अवाच्य-वि सिंगी न बहुनै वीग्यः बात बरमैके अवीग्यः
                                                  रूपीय विकासमावाः
  सरपद्यः दक्षिणी । पु अपसम्बान न कहन योग्य दात ।
                                                 अविकारी(रिन्)-वि० [मै०] वे अविदार ; श्री दिर्मान
  -देश-पु॰ योगि।
                                                  का विकार न हो।
भपात्र - सी दे 'आवात' ।
                                                 अधिकार्ये – वि [मं] किसमें विकार या परिवर्तन सही
 भवाजी •−ि आवाद करनेदाला ।
                                                  अपरिवर्तमधीयः।
व्यवास-विक मि निर्वात विना प्रवादा ।
                                                व्यविकासी(सिन्), अधिकासी(मिन्)- वि [मं•]
मवादी(दिन्)-दि [एं] जो बादी मही है अविरोधीः
                                                  विसका विकास म हो। स विकर्मदानाः म धमक्तेदासा ।
  नरकः ।
                                                 अविकृत-वि [मं] भो नरहा था दिवता न हो।
```

```
अविकृति—सी [सं] विकारका समाव मूल-प्रशृति
                                                     अवितर्कित-वि [संग] िप्तार विभाग न (रशा गरा
   (Hi+) t
                                                      दी सरहच्य ।
 अधिकस-वि [मं•] श्रविद्यान क्षत्रवेर । पु• मीतना ।
                                                     अविश्व-विश् विश्वी विर्वता अविश्वा अवत्य ।
 मविकात-विश् सि ] विसंते कीर वड़ा हुआ म दी कम
                                                     अविश्वि-गो॰ [तृंश] अप्रप्रीत शुद्धश्रीमद्रात निर्देत्ता।
  भौर चलिकौन ।
                                                      विश् मृत्यः जिने प्राप्त न दशा का ।
 अपिकिय-वि॰ [गुं॰] सनिदारी । पु॰ असा ।
                                                     सविध्यज्ञ~व सिंशे पारा ।
 भविकेय-वि [सं] की दिनोके लिए न हो।
                                                     अविष्या-शोर्श मिर्श शबध्या मामस देशा दशे एन।
 अविशत-वि [मं ] मिलकी श्रवि म दूर का समग्र ।
                                                     अविदाय-विश् (गं०) अधवताः अध्ययाः अर्थेत्तः अर्थाः
 ममिदिरस-वि॰ [गुं॰] जो फैंबा म गया हो। एकाप्रवित्त ।
                                                      ५० भेरका दब ।
 अविरात-दि॰ [तं•] का गया वा बीता न दी, सीमुद्रः
                                                     अविदिश-नि॰ [गं॰] गदात अप्रदा पु रहे प्रदा

 सम्बा समातः स्थितासी ।

                                                     अविशा-विश् (मृंश) अमरिया । अक्षा - अमरि-अंश
 र्क्यपेगील-वि विशे बॉनेडिल।
                                                      पाटा कता ।
 अविश-प [रं•] करमरंद्र जामद ग्रह वा उसका एक.
                                                     मधिष्य−दि [सं•] अन्तर वृत्तः ≉ ल्यः तुत्र (९) ।
  करौदा ।
 अधिप्रह−वि+ [मं ] मिराहार देहरहिता बाबाता निन्द
  समास (ध्याः)।
 श्रविधात−दि [तुं ] नानारदित । पु+ विप्तामान ।
 भविचल−वि+ [सं•] अयह, रिशर ।
                                                      वि अविषासे शरपञ्च ।
 भविचार-प्र•[धं•] कविदेद, मासमाने मन्याय भगीति।
  fire mirani i
मविचारित−रि [सं] त्रिसंबर विकार न किया गर्वा
  ध्री दिना सोच समरी दिना हमा।
                                                     विधासका भवार ।
सविचारी(रिम्)-वि [गं॰] विवक्कांत जवित-समुधित
  का भिवार म रहानेवाला ।
 भविद्यासित−वि मिं∘े भरक, श्वरः वित्रवो ।
                                                     दिमयदीम ।
अधिरित्य-वि [मंग] अधिमस्य नी कगातार हो।
अविच्छेर्−ि [सं ] विच्छेन्द्दिस। द्र विच्छेर−िक्ष
  गावका समाव !
                                                     धार्वे हा)। लंदेच जनाव !
अविरयत-दि [मुं∗] अहे अहमे स्थायने अह स दुना
  श्री धारदत निरव ।
भविद्योग•-दि॰ अदिन्धित भट्टर- वो तुनि होर ग्राम
                                                    षर्नग्री ।
 पर प्रीति शरा वशिप्रीत'−रामा० ।
श्राविकत - व देश श्राप्तिवर्ग ।
श्रविज्ञित-वि शि∗ी भी बीता श गया वी !
सर्विता−वि [मं] चत्रपा ननारी।
सविभात-विश् (में ] वे बामा समाता श्रीरण्या अरस्य ।
 -क्षय-५० ग्रार श्वासमे का मान्त्रिकी निमा जनावे
                                                    पश्चिम स्वरम ।
 कीरे बन्तु रारीहमा। व्यवहारमें भाषा मान मह ही
 वाना । -शति-दि॰ विमरी गर्निदिवि ग्राप म भी।
मधिकाना(म्)-प्र [मृं•] क्ष्मेंपरः विद्या ।
अविक्रय-ि॰ [मृं॰] जी पहचाना न वा मन्द्री मी माना
                                                    MATE SHEET
 स जा मर्डे स जानने दीम्ब । व वर्गावर ।
भविष्टीम-पु (सं») पश्चिपीया गोप गायते व्युवा ।
श्रवितत्त्-रि [मं ] (सम्द्र । ~कम्म-पु॰ नावास्त्रपः
 पुरा समन्ने बानेशने बार्डक बहरीय मानना (राज्यका)ः
 विश्वासम्ब
                                                   ब्यान संशोताः नेपः ।
भवित्रय-पि [सं]को यनत दाशह मधी रही।
 क संपर्ध
स्रवित्रहारम-पु (००) ४८(८ वरमः निरम्ह व<sup>ाने</sup>
 SERT !
```

भविद्यमान-वि वि] जतपरिवत्त असूत्र । भविता-नी निशे विधा या प्राप्तक अनामा हित्ती । द्यामा भ्रांति। बद्र भ्रांति जिएके कारच ज्ञाने जातारी प्रनोति दोनो है सावा, प्रशनि (सो)। ~कन ~कम्ब− कविकास-प शिन्ते विचानका समाव विकासका स द्वाला । वि. निविदिस्क अवैषः अविदित्त । काविधि-दि [सं] अर्देश दिशिदिश्य । गीर्श वि का **अधिमय−ना॰ [**र्व] रिमय या संभगता अवादा की क्रमाः श्रष्टमाः गुण्यासीः। अजबयनः घर्मदा अवगरः । दि **भा**षिवश्यर-वि. (संब) रिमका मत्या न हो । ह. शरम्म । अविवासाय-५० (गुं०) अभिष्टेच गंदर (वे । सम और श्रविनाशी(शिक्)−दि (सं+)मा"ा(त, धनव निवः अधिनामी • - वि• दे अधिनाती । १० वेरस्र । अधिर्मात-विक (संक) अन्तरः अधिष्ठा गण्यासः संबद्धाः अधिमीता—स्रो (सं+) कुलग प्रश्लिका(१^० । अधिपद्य-वि [मं] प्रश्निती अप्रथा। श्रविप्रश्-मा (५०) द्वाराजाना गर्नाद । अधिपत्तं-वि [६०] को शरियम्त स राम्य हो। दिन्धार अविवर्शय-पुत्र (संत्र) भित्रप्त दा ब्रायसम्हा स शेला। व्यविपाद्य-पुरु [र]] अवी ने रेख । दिन अवीर्पेने प्राप्त । श्रविश्वय-विश्व [र्ट] श्रविद्योत, भूरा (पुश्रवेगा) नरी अधिसन:-विश्व नि जिन्दानित स्वाद सुरित सुनुष्प जविभाज्य~वि० (६०) को पीते के बाल्दे। हु वर्ष शांत क्रिया शिक्षी भागम म दिवा जागरे। श्राविमानन-पु [तं] (राने ततन्त्र, त्रार दार शास्त क्रविसाम−१ (वं } अनुरुष्य नदी आहर-गुप्पण । अविश्वल-(१० (स.) अल्ल यह १ मु. (४१व्येट^{ाल्}रा) बाधी-बनस्ति ।

स्ट्रम~पु वाना प्राप्त करनाः काम करमाः † एक वैंटीकी सावी वीमा।

सद्भदार-५० महावन, ऋषराता ।

सहसार - एक हि पाना काम करना '। काटना। फलक काटमा धीकना, तराहना। पु छवार कल दिना हुआ मार कामके वरहे पिकनेनाक। थना मार्थन एक्सीर। -पड़ी-की वह महामनी वही शिक्षी कण कैमेवाकीके मार्थ पत और रकमका स्पोश रवता है। मुक्त - जुकाना -पटाना -साफ करमार कम है देना, कमें कना करना।

करना। सहतीरूको कश्चि, प्राप्ति फक्रमोग र क्टेरॉका वर्तन स्रोदनेका जीवार।

सहसर-पुत्रशी और दीकी पोश्राक कीमा, क्यांशा पद्म तरहका तीमा; स्थी। प्रेशा, निशान ।

सद्भवरी-पुरस दर्दका दोवा।

छइस−दु[स]मांखः

सहसा-पुक्षत पन, मिनट करपस्य काल।

सहसी-दि गोरवनाका।
सहर-की बायुक्य गाँउ कीर रणकंछ वानीमें दोनेवाओ
सहाय ज्ञारतार दरका दिस्कोर, दिकोरा। बीछ कर्मय।
बेममयी मानना, मनकी मीना किछी दिकारीच हासके
सेतमयी मानना, मनकी मीना किछी दिकारीच हासके
सेतमयी क्रमेरिन रह रहतर वहीगी ग्रीश व्यक्ति क्रमेरिन
सराता जानेर इसे ज्ञारतका
रनरपंत्र गुँका मोह बड़ी दुई देश बाका नक्ष कुरिक रेखा।

द्वार राश्चि करोरको करि। -बार-वि कररेराका सहसारे के बारेराका। करियो है। -बार-वि कररेराका सहसारे के बारेराका। -बार-वि कररेराका। -बार-वि कररेराका। -बार-वि कररेराका है। -बार-वि करा काला-पुन वेवना प्रथमका कोर मारला | -काला-पीन वेवना करेरा रेरा होता। छोरके कारनेरर वरनमें करर करना। -च्याना मीन काला कीर वेवना करेरा करना। -च्याना वेवना करेरा होता। छोरके काला कीर वेवना वेवना करेरा होता। चीरका काला कीर वेवना वेवना वेवना करेरा के बार के बार वेवना वेवना। -च्याना वेवना वेवना वेवना वेवना केरा केरा वेवना वे

एकता। सहरमान्•श्र कि दैं 'तहरामा; गंवरचता। सहरान्यु• सहर; मजा चानरः वालेपी गत जिसमें सात-परीको देवन स्थ शेगी है; वादरोका नुस्त देर औरने परनना सन्ना गंपक पास्ता।

मारना। -(१) शिक्षण-वेदार रहवा वैदागनीमें

सहरामा- म कि इनावे दिवेदी दिवना-पुरूषा भर बारामा इनाव पत्ना प्रतीदा दमके कोरेने दसकीय देशा कारे-कार नारकीय समाना देती देशे नाक बन्ना वर्षन, जाममें हो बामा वर्षित होमा क्याना (दिवी बागुदे नियो; वदका महकमा (बामदा)-दिराकना चानावमाय होमा। मक कि दिनाना प्रमान (बाबुद मार्गे) रेग्नेमा चरामा।

श्हरि-का [सं] स्त्रमा

कदरिया-त 20 मेरी रेखाओंका नव्दा सबी। गीरे रूपये मारिको पहरदाह हैंगारी स्थीन साही, बाहा

विश्वपर देशी रेखाएँ बनी हों। बरीके क्यांकेके किनारेसर बने क्षुप वेक-बूटे; एक कपना। ब ली कहर। - दार-विक कहरिया बना हुआ, क्यार्ट्सर, वेक-बूटेंबाला। क्ष्यद्वरी-ली [सं-] कहर शरंप। वि अनमीजी। क्षादरिकानि क्यार्ट्सर।

क्रहरू-पु॰ पह राग (दीवक्रका पुत्र) ।

खड्खड्—वि॰ इरान्भरा चड्डहाता हुआ। अ॰ छड्र के साथ। खड्खड्ग-वि॰ डढ्डडा डरामरा, प्रपुरुष, भार्यतमय,

इक्-पुरः । स्टूस्ट्रहाना-श•कि इरा-भरा सरसम्ब दोनाः सुदी-से मर सामाः स्टो, मरसामे पीपे पेक्से क्विसासके

वक्षम माना, क्षपनाः मोराना इह-प्रद होना ।

कश्वती+की॰ दत्तदकः। कश्चका+प्रादेश 'कश्चवा'।

कहतुन-पु एक पीपा विश्वको वह पंक्तिका बनेसि बनो होती है (हरूको संग स्थानको छरह बम होती

है)। मापिकका एक दोष काशोगक। कह्मपुनिया-पु वृत्तिक रंकका एक क्षोगवी पत्वर वी काक, पीक और हरे (पका भी दोता है।

कर्मुवा!-पु॰ क्छोरा। क्योरेडे पूक्का साम । स्ट्रा॰-पु दे॰ 'कार' ।

कद्वारोद्द—पु नावकी एक गतिः नाम, मृत्वकी द्रव गतिः

सहासहर-वि दरा भरा। मञ्जा

अश्राकोर-वि वैर्पाने बोटना द्वमा प्रसन्ना नहासिना सुर्वा तुष्य सर्हा

अद्वासी−को बाँग।

छहासी-ली नाव बहाब वीवनेकी मोडो ररमी। रस्ती। स्रदिण्—न तक, पवत ।

सहिला!—१ दे॰ रहिला । श्रष्टीम-वि [अ] मोदा-सावा मांसक ।

सहुर-स वर्षत तक। विश्वयु छोटा।

बहुरा॰-वि॰ नषु, रोहा बनिष्ठ। [नी॰ सहुरो ।] सहु-पु॰ सृत रखः -सुद्दान-वि गृनसे सरः। सु॰-वबसमा-सहत गुस्सा भागा। -दसर बाना-विभी भगदमे रह बीग्राचीमा बुरदे निवनमा ।

्वर्धीटमा-कोष या गमछे थोदा देशा होना। -का पूढ़ पीकर रहा बाधा-गुण्डा छह देशा -का प्यासा-वाणी दुरवर। - सुरह कर देशा-दुश रा देगा। -पसीता एक करता-६ रहशानी रह करमा। -पानी एक दरमा-छर मुझेक दक्षमा -पानी एक होना-गुओरे वा(सामा-पीना ब

त्र तमता। -पायी द्वीला-क्षीमामित्न होना। -पी जावा-कार वरता। -पीला-तारशंक हेना। -पी पीकर वह कामा-गुरसा पुरसाप वरतित कर हेना। -पिगावता-सूच्या सराव द्वीला। -स्वीक्षणा-दृश्या

र्रावतक्तारम्ण्या गराव होता । स्वीक्षतारण्या स्वातिकार्य प्रवट होता । स्वीक्षतारण्या विरात होता । रुक्ता या सक्षत्र हार्दाक्ष होतारसोहा काम करके वहां बात करनेवाओं वे अस्ती रुग्ता स्वातिकार स्वातिकार

```
सेपबा-स॰ कि मोही बीब धेवना, पुरवना !
खेपनीय-वि सि नेपके दीरव।
क्षेपासक−५० वत्तक्ष प्रवासनाः।
सेपी(पिन्)-(१+ [t] ) छेप करमैवानाः निप्त ।
क्षेप्य-दिश सिशी हेपन करने सायकः साँनेमें बाकने
 कायकः। --कार,--कृत्-वि , पु॰ छेप करनेवाकाः ईट
 पावनेशाला साँचा बनानेशाला !-- मारी;--सी-सी वह
 स्त्री जिसपर चंदम कादिका केप क्या बोध्दे किय
 कामिनी ।
केप्यमयी-सी [सं] प्रवर काछ, विद्वादी पुचकिका।
केप्रिटर्नेट-पु [०) सहावड दर्भवारी। क्यानको अवी-
 भवामें बाम बरनेवाला सेमाध्यक्ष । -कर्नस-पु वर्णक
 का सहायकः। -अन्तरस्र-पु जैनरकका सहायकः।
क्रेयर-पु [बं ] शारीरिक, भागसिक परिजयः समाजकी
  भागस्यक्ताओं के पूर्व करने के निय किया दुशा अगः
  वरिमम हारा छत्पानन इरनेवाका अभिक्षोदा संग।
  ─पार्टी─सी मबद्रीका प्रतिनिधित्व करनेवाका दक्त ।
  -मेंबर-प शासनको कार्यसमितिका वह सरस्य को
  श्रम और श्रमिक्रीको समस्याजीका उत्तरवायित्व बहुन करता
  देः − मूमियन − भौ श्रीम‰ सबदुर संगः।
 छेतरर-पुँ [सं] मबदूर समग्रीती।
 सेपुरू-पु [थं•] बीनम बहक आदिपर कमा दुवा पता
  या विवरण-पत्र ।
 संबोरेटरी-सो • [मं ] वैद्यानिक परीक्षाका रवाम। प्रवीग
 क्रेसम-पु [वं ] नीप्: -ब्स - क्स-पु नीव् नारि
  का सन मिनादर बनावी हुई संबदकी विकिया !
 क्षेमनेह-दु [बं ] नीब्दे सहदे यीयभे बनाबा हवा भीठा
  वसी १
 सम-५ [फा] मीच्। -नियोच-१ वह आदमी वी
   इर एडडे साथ धारीमें द्यानित ही बाय।
  क्षेप−व सि•ोसिंद राधि ।
  सेस्मा॰-पुष्टका † लट्डू।
  छैरवार-पुदे देनका।
  सेसा-को सिं] इंपन । रेप में क्यरिय क्याः
   साथ सम्मेगाला व्यक्ति ।
  हैत्ययमाना−सी [तुं ] अधिकी सान विद्वाओं मेंने एक ।
  मेकितद केमीतक-१ [मं] गंदक।
  छेक्तिइ−५ [सं] व्हानीय ।
  केलिहा-स्रो [ग ] र्वगन्धियों वे वह सहा।
  सेरिहान-दि [मं ] पगने शर-बार पान्मेबालाः नव्य
   मन नावा दुशा । पुरु सौदः धिव ३
  सेलिहाना -सी [नं] उैय? योधी दक्ष सदा।
  सेप-द बार मारिक्त सगानेकी दवाः बॉयने वधानेडे
    निर इंडी अधिकों देंडीकर कंगाया खानेवाका शक्त या
    मिट्टीका लेका दीवारकर लगानेका गिकावाः बतवा पानी
    बरत्तमा कि मिट्टी बानी मिनकर वद 🏗 बाब । सू० -
    चरवा-मीध दोमा (व्यं )। -सगवा-(वान आदि
    रेनेदे लिए) मरहे बरावर पामी दोजा: मॅदनक बानी भरे
    द्वर शेरका शेरकर भाग शेवने सायक दिया बाला ।
```

```
स्टेवय† −पुश्यक्त कृक्षाः
केयरमाः क्षेत्रारना!⇔स कि कदगिक करमा ।
क्षेया-वि॰ केनेवाका (बीधिक रूपमें प्रयुक्त-वैधे माम-
 क्षेत्रा) । पु कहरिक, शिन्यव्यः वर्षाके पानीमें मिद्दीका
 भुक्र बानाः छेपः बना † दश्ररी । मुण -क्रगमा-वान
 बोने सायक स्थिति शीमा।
केवाहेई-सी लेन-रैम।
खेयार् !-पु॰ केव, गिकाव कहांग्छ !
छेबाछ−५ हेने स्रशदनेवाका।
छदा-पु॰ [र्म•] अणुः स्र्म मेध, भरपताः समबका एक
 मानः पढ वर्षात्रकार वहाँ गुणको दोक्डे समान और
 वीवडी ग्रथके स्वयः विकासेका प्रयत्न किया जाव । एक
 त्तरहका गाना (१) । वि अस्य, भीरा ।
केसिक∽पु॰ [सं] वासकटा ।
केशी(शिष्ट)-वि [सं] विसम सुदम शंग्र हो।
केशोक-वि (छ॰) छन्नेप या छन्तिमें बहा हुना।
केश्या—को [सं ] प्रश्चाद्यः जीवको विश्वेष भवरका विसक्ते
 बारण कर्म छसे गाँधता है (वै )।
छेप≁−पुरै किञ्च, 'डेख'।
छेपनार-चिक्र दे 'क्यना', कियना।
क्षेपनी १ – सी १ है १ किन्ती ।
स्पेश-सर्वेश विही ।
केष्ट-पुर्धि} भिद्योदा देशा। ∽थन,-सेद्न-पुरेता
  रोहनेका एक भी बार ।
 केस- 🕫 दे 'डेडां । निन्धा प्रशिक्ष पानीसे
  वीककर गारी बनावी वर्ष चीज अस ! - बार-बि
  लगीका कमदारा गोरेवार। वैक्र कगावा हुआ।
केमक सेसिक-पु [मेर] गवारोही।
शेलमां~स कि वजना प्रत्रक्ति दर्गा−केसा दिवे
  ब्रेमदर दीवा चव । पोतना विपदानाः दीवारदर मिट्टी
  आदि देवारमाः पुगकी काला कमकाना ।
 छेमो∽पुटः दोशे पानदा गहा।
रेड-पु•वड वृद्ध सीका[न ] चारनेवाला। बारनेवी करता
  माहारः प्रश्नका व्य भर ।
श्रेष्ट्रन-९ [मं ] पारनेदी क्रिया।
रीष्ट्रमा-प्र• शेवमें करे एंटलॉका पुना। मर नार्व भोगी
  सबगी करनेवालों आहिको दिया जानेवामा प्रमुख्या
  मारा दीनों शाबोंके बीच बठातेनायक टंडला पानवार है
  पारा ।
 खेदमुमा~द्व यह तरहरी शताती मन (यह क्रीमन और
  क्सीमी दोशी है। पंची तरफेदर रोटीडी इरह पूजती है
  और रने सामके शीरपर साथ और जानवरोंकी भी
  दिनाने है)।
 रेडमुर्ग-पु विद्वीका बीड बरवेका कुग्हारीका भी बार ।
 लेहा हा ~ अ० दे० ५ तदाता ।
 ब्रहाशार्ग−वि दे िहाका ।
 संद्रापी-सी देश विद्रापी'। मु -वरमा,-समा-
  बगाना हैंभी छहाता।
 itris-4 & betr 1
 मेहिन-५ [मंग] गुहाया ।
```

सामक-प्र• [सं•] बानका सामा । साजना॰~न॰ दि॰ कवाता, कवित दीना। स कि कवित्रत गरमा ।

का वर्ष-भागत

साजपतराय (साम्या)-५ वंजावडे देशमक नेता किन्हे अपने उम्र विवारीके कारण क्रम समबतक निवासित व्यवस्थामे रदमा परा । साध्यन क्रमोद्यमके वृद्धिपद्मारकी

समामें पुक्तिस द्वारा भावत बोनेसे आवशी मृत्य को (१८६५ > १८) 1 माजबर -प फा॰] मीने रंगका एक परगर विशक्ती

मणना रानीम दे, राजावर्तः वद शरबदा विकासती मीका रंग ।

स्टासवर्श-नि कामनांद रंगका गोका । साजा-हो। (र्स) पारक बानदा सवा मील।

माक्रिस−र्वि (चा॰) रना द्वता को श्रमन य किया था एके करे, बराय कर्ममा - ग्रम क्य-विश्व इस्टरेंसे संबद (दी की वे) को एक इसरेंसे सकत ल

थीं या सर्देश भवत्रव धर्मस्य । साजिमा−द॰ (थ.] धंबद बस्तः बस्ता सामान ≀

मातिमी-दि॰ दे साविष'। साट-थी मारा हैं वा यंगा (यह वाबर, स्वती वा क्रिसी भावका दोता है। येसे अञ्चेषको कार- वालापकी

सह्यो । पु [भं 'कार्य'] भौनेनी बुक्जातके समयका श्रीत वा देखरा नश्मे वना धालक गर्नरा [र्थ] अनुपास असंसारका एक भए जिस्मी दान्य-वर्ग एक

रबते हैं पर कान्य करमेश्र बानवार्थ नवल जाता है। बाबीदे ब्रह्मवस्त्रे रीवने ० किंद्र बनाया द्वाना व बाह्यक रावके रक मानका मार्थान माना नामका नियाती। श्रीमंन्द्रीयं करका वा गहना। करका बालकी यैगी

भाषा । वि सार-संबंधीः प्रधाना, करा हमा। वसीवा-शा । -पन्न,-पर्न-पुर दारधीमी । सरेंद्र-प [बं] एक शाव रामी पूर्व ची मीता देर निवने.

शीवान करने स्परिके (बार) । सारक-विक (मेर) कर देशनांची ।

सॉटरी-को (अं) व्यवे या मामामके स्वमें बुरम्बार देवेडी एक स्वारणा विश्वमें विद्वी मानदर ना विश्वदे संशारे विरोधको साम विश्वित किया गांधा है।

कारा - इ. मुने बदुर भीर निनदा नरहा मुना महत्ता। माराम्प्राग-५ (सं) अनुवासका वह भर तिwith I क्तरिका-लोश [तं] शोर-शीरे पर धीर लबालवाडी

रमगरीत (रमके अतिरिक्त सीन कीर रातिकों है-देशमा सीही, क्वासी) ह सारी-कारीक मूच कीर औड गामेशी रवा- गारी क्रम् राष्ट्रि ग्रेंड काछ -समा १ [व] हे॰ व्यक्तिसा ।

ette-fte [ne] de ette 1 mig-go do feit tall ho feit i

स्तराजारी-भी शादीं। परंग्य वशार बरवा । कारी-को॰ बना, बाली लंगी नवता (वे बाँटीको क्षांचर बनावी सार्ग है और देवने मार्वशामाधि बास अन्य रोत न्याबन्द्रण गोती तिन्दतिग्द है करमें के किए पुक्तिसका काठीने प्रशाह करना । मु॰ -चलना-ठाडीमें मारपीर होना ! -चलाबा-हत्त'ने मारपीट करना । -बाँचमा-काडी भाष स्थाना दिने रहमा १

साव्य-पुर कातम, प्यार, दुशर । -चाप-पुर प्रान-इतार । -सहैता-वि वहे प्यार्थे ग्राव वहा हुना । छाष्ठा-दि॰ धारा, दुवारा । [हो॰ 'बारबी ।]

सावारी-प पुरुषा । [ब्दी • 'ताही ।] काडिक-पु॰ (शं॰) रुपद्या मीदर । काइ-- न॰ सदबः दरियो नारंगी । व्याविया! - पु बुकानरारने मिका पुत्रा बनाब की ग्राप्त की भीता देवर माळ दिवसता है। -पब-तुर बनत

भौगीशामीः कारिवेका साम । मात-मी॰ पैर, परा पार-प्रदार । वि॰ [सं] बाप, तिया प्रमा र सु: - ग्रामा- मार राजनाः पैरक्षे बीचरने मारा जाता । -चकामा-कात्र) मारना । -जाना-दार्वेः वार्षिकी बात अस्कर द्वार वानवरीका दर बाना । --आरका रावा क्षेत्रा-धमन्दे बाद मोधा चलने-विहेनेदे बीव्य होगा। बीरीय होहर यनने-विरने क्षतरा। --

जारमा:- क्रिके बरमधी तथ्य समारदर शीव देखा: ब स्टा क्ष्या स्रता ह व्यवसाँ – ली॰ असमा अना । माति-सी (र्रः) शनेधी क्या । श्रामीत्री −श्री (**वर्ण श्रीत** शाका र

हार्था -- ५० वहांया ।

लाइ-भीर वीने दशरी जग्द के जानेने किए हैं। रेक, यांची माण्यर कारना। यांची निवालनेके निव देशीहे हुन्तरे निरेश्त करा दुशा बीता निर्देश्य केंग्स सारि । -पार-का॰ कारनेश शय।

व्याच-सी वॉट भेडरो है. र सुरु -बिहर्समा-टीर निक्रमा। भेगरी निक्रम माना । सारमा-स॰ कि सन्द योगीरी ददरर व्यवसार क्षेत्रेके जिल बीसा अरबात किरीयर जिल्लीशाही, बाह द्रामगा १

लादियाण्य केल बाहबर से वानेका बाय कानेका (रेन दरह मेर मरिसर) । आही-भी बीरिवीकी गरती। बेग्ना र्रिक्ते प्राप्त कारतेका) १ माध्यान-ना कि बाभा बात बरमा- शे कुछ दिन

शबकारि व बन्दन से शुभ नेहिन बाबी --ग्र । लाल-पुरु [स] पादार दिन्छ। सन्त्रा मन्त्रा - मृत्या कु प्राथित, बामन समाग्रह ह काम-प्रवित्र वित्र वरी बाग्युच्य हैरान । अदेविया-पुरु हो है मेशानमें पैना अपनेशाया देशका यह अब व

अनुकृतको [अ] प्रादार स्टिस्टर, अध्या -प्रामासन् औं अर्थनाः दिश्वतः प्राथति मा " का लीक (शासी) वृद्वा-न्याम नेरान वीमा । बार मारा-प्राप्त वृष्टिता अवस्य ३ नकी बीजार म समाना समारित सर्जाता । नवागता-वेरोगर

सेटी-मोद शेडी-मी व [मं] बामनं शिरेपर शोमेशाला दक रोग । मेही(हिन्)-वि [व] बाटनेवाना । सेम-९ [मं] भारते योग्य पीत्र भारती । विक सारते योग्य १ र्मेग-वि [र्थ•] (स्य संक्षी (स्त्र•) । तु• एक प्राय और पढ उपपुराय । -धूम-प्र वह प्रशेदित किने देवनाधी बादिका ग्राम की। स्रशिक-वि [सं•] दिग, चिहीने प्राप्त (बमाव) ह ब नतुमान प्रमाण (वेशे): भाग्यर, शिक्ये । र्केगी-मी॰ [मं] निधिमी नामक बुटी । र्सेंद्रो-मी भि ने एवं तरदयी बोहावारी । र्द्धिप-पर शिवी थिराय शीपक लाल्देल । Ř¢−₩+ #¥. ₹₹# ! सैरिय-मी॰ परणीही पुरामी जाना जी रीममसानमें प्रक-बित भी नातीमी । र्रेतोसक−<u>प</u>• [ब•] रात्रमशेल दीवादवाना । स्त्रन−मी [में शास] रेगाः शोश रेबा। शॅका परण मेनाः निरादिशीका निवामस्थानः वैश्वः । -शोशी-मा रेडप्रमा । स्त्या - पुरु जरहान अगहनी भागा हती. शह पीबीवें पागरर बनाबी करवे आनियी होतीओ प्रावसकी बनती। पुगरी। स्व -स्यामा-पुगरी क्षाता। सह-प्रश्वा होय कथा। संड−भी [६।] रात्र ।−(स्रो) विद्वार−दुरात दिव । र्रमा-सी॰ का विमान्यवर्गको प्रमुखानीको स्मविका भीर महतेश्री प्रशिक्षा देवती। शेरदी: हवाया १-मामर्ने 😁 कुर मेला और संबर्गः मेला संजर्नेको क्षरानी। स्थापिक माग्रद । सीवेंडर-य [अंश] विशासती दश की यक कुलने वैदार किया जागा है। स्टार्गर-वर [को 'सन्दर्गेश'] विशेष अधिकारका अमान-THE REST. Ret-le Rutt abeal's geen marguit fanu! व कोना (दररेक्ट नशानेक)। यह दरका जिला द्यामीः + ४६ शहरा वाण । र्सी० चन शामाना *व*र्ष क्षांचीरं-को शासदी भी। साँदा=इ. क्रियो गोनो बन्दाका विका सा-स दिगांदा प्रांत काष्ट्रप काले का अध्यक्षे प्रक बर्दे किर प्रमुख कोरेकामा एक शब्द । सोधर कोर्र-पुर्वि । योजनी सरावगा सरोगा । क्ष्रोपुत्र-पुरु से स सीम । भी र चारवा का, प्रवास । स्रोपन -पुर सम्होती बस्तार प्रदेशीयम सेव। क्रोड़े-को र होते बसके है जिस में जे इस आरड़ी में बीत दह तरहवा अनी बंदण १०% अन्त । सोचेत्रम -5 देश ३६४२ **।** स्राक्षताक-पुरु पहची बाद क्युदाब्द आनेवाकी खन्नाहे . HIS CHIEF THE क्षीद्वशी नवान वह ^क व ह शनदाक जानेशकी नवादि है

era arteret einfra

कोड-पु शिवी दिचदा देव दिशाम अस्त (सन्दर्गन रवर्ग पृथ्वी और वापाल-वे तीत बोढ बाने अन् है पर निधेष निमाम है अनुसार १४ साथे थाने हैं-# करा, का माने हैं। सामाना वालाहामा वर्ष होते छ मानवकानि, समाजः प्रवाः समुक्षः भूमान, प्रांतः विकन् श्यामा दिशा। सांमादिक व्यवहारा द्वारा व वा 🖫 🖒 शंतकाः वशः । - व्यंद्रध-वश्यकः व्यक्तिः । - ब्राम-वी वन-समावने प्रयानित कथा। -कत्ति(न)-ए० ४६० विण्या महेशा । - कोल-विश् सर्वेदिय । - कोला-भे । कटि नामक कोक्कि। −कास−दिन विधेत √14का रथाक (न्यास्यानको० मानस्येत (न्यारन्यु वेन) −क्षित्-वि• स्वर्गमे रहमेशाना । – सक्षि~क्षी • क्षेप भार । – राधा – ली० प्रवस्थायत्र बीटारि । – गीन-प साधारण बनताय वयस्य गोपः। -चस्याः ना ध्वं । -चार,-चारित-इ काद्यबार । - जनके -साता(त)-स्त्री न्यमी । - जिल्ल-वि नार्धवन्यी । त्रक कवित सद्ध । च्याचेश्व-प्रक बद्ध । चर्मप्र-प्र बन्धन । -तस्त-५० मामनमादिका शाम । -तसार-त कप्रता —सद−५०,-सपी-सी नौनी कोड− बाबाछ, पालाम और वानगीड ।-वंशक-वि दनिया को क्रमनेनामा ६ —इपान-दिन मेपिको हति पर्देशके बाला ।-हब-पुत्र स्वत आह कृती ।-हुन्ह-पुत्र बहर्षश क्षार । -बातार्(न)-१ रिप । -बारिमी-मी इस्ते। -पश्चित-भी हैत्र भीश्वर्यने । -अस्ति-भी बाहरात अमग्रीत । नमाय-प्र मध्या रिन्ता श्चिम राजा प्रज र अमाचा -पूर्णाधीका सकत करने-बाबा (वर्ष) र -वेशा(त) -५० (६०१ -य -क्या -युक्त दिख्याच्या वरेश्व १ -यनि-तुक्त प्रदार दिच्या करेश । -पच-तर -पळति-भी र दिवराश गरेका । -साम -9 -रामा रिक्पण स्थामक-पुरामा ।-वातिमी ~भी दुर्मा ।∼जिलासह - तुर प्रद्या । −प्रकाशम - दुर सूर्त । न्यामाय-पुर यह को रशास्त्र करेश बर्धान्त हो (बना भारि) । - प्रशीप पुरु तह । - प्रपाद-दु स्ते मानारमधे सर्वातन वात १ -प्रवाही(हिम्)-हि इक्षिताके साथ २६>४०० ६ −५क्षिळ-४४ विक रिम्मात मर्वेदाय । - वीच - मीवच-मु दिशावरे । -बाह्य-वि हुनिवारि विका गरादेश गरावारी की गून । -शर्मा(ने)-प्र ।अत्या अरम्पेनम कामे शन्ता । -धारम -धार्म (विन्) - पुर अन्तरी अनेर्न अव्विक्तानाः भीत् रक्षण यर्भेराणाः । न्यान्-पुर बहान के राव । न्यापाया-के लेपरशा न्यादेश्वानप्र र्दिणा १ - मण्या (वृ) - श्री अहम । मेरी १ - सर्प ॰ यु कादप्रवर्णिक दवा । च्याचा-धी वीमध्यापी भागत्य द्यवस्थातः चर्तसम्बन्तः समानदे संस्थातः बन्दा दियान अन्य बरमा १ - रक्ष-५ वरेट १ न्यर-बुर सम्बद्ध अनुसूद्ध -भीक्ष-को हि है जैन मर्कार र-सेमा-पू मारास्य रहर-शास्त्र ना रहेर वयम् - वृ अवस्य । अवस्य - वर्णा-क क्याप्य व न्यिक्षक्रन्तिः क्षेत्रिक्षेत्रः वन्तिक्रम् नीव HIRRY & - Telsy to family be the Ti

1140 धराती, मनहूसी होनाः कानतदी वीकार होना। ⊶मेजमा-विवदारमाः कोसनाः प्रणापूर्वक स्वाय देना उद्याना । सामती-वि कानतके बोग्या कानतका मारा । **कामा**~स॰ कि के जामा करोंसे कोई वस्तु लेकर कामाঃ छपरिश्रत इरना सामने रखनाः पैदा इरना (विक्रीका करू भारि); * भाव करामाः करामाः। स्राने≉~ज॰ किए, बास्ते । काप-प [हो] बाहमा कबन (बार्ता के शाब समस्त रूपमें प्रदुक्त)। सापितिका -स्रो॰ [सं] नार्वाताय नार्वशैष्ठ । सापमी≠~सो दे० 'क्रपरी । श्रापिश्वा−स्रो [सं•] यद तरहदी पहेली ! कापी(पिस्)~दि [सं॰] दोकलेवाका परवासाय करने-वाता । छापु∽पु [सं] एक भीजारः एक वनीववि, सहर्वती । क्राच्यें −दि [सं•] बोसनं, कइने बोन्ध । स्ताक्ष−न्दो • [फा•] बारमप्रश्लेखा बीगः। ⊤ज्ञम−ि बीग इत्कनेवाका । —ज्ञमी – स्रो॰ बीग डॉकना ¹ साब, छावक-पु [मं•] एक पश्ची। साबत – तो [म] स्वाकानुसीचे निद्यक्रनेवाका तसः, तरक पदार्थकावा। **छावर#−4ि शुठ नी#नेराका उपार** । हातुल्यु, सायूल्या (सं∘) एक तरहका कीना, सर्द् । राष्ट्रकी सी॰ [सं॰] यह तरहकी बीगा l साहर-ज [ल] जनस्य निश्चा साबुदी-वि अनिवार्य अवस्वकर्तव्यः। छास-पु• [चं] प्राप्ति निश्चि कावदा नक्ता महावै धपुदारः मनुमृति यानः वित्रव । ~कर,~कारक -कारी(रिन) - कृत् -दावक-दि विससे काम हो। —क्षायिक=पु कर्मधमके कद त्राप्त क्षेत्रेकाला पुष्क (३०)। – सर्–पुबर भनिमान विसमें कोई अपनेको कामान्त्रिय और बृक्तरेको पुष्पदीम समझै (बै०)। - सिप्सा-स्रो कामधी प्रवक इच्छा । -स्थान-<u>व</u>+ मनमुद्रशीमें रूपमने गाःहहर्शे स्थान (जी धन विधा बारिका योगक होता है) । मार्थादराय-इ [मं] वह क्ये तिसके वहवंगे सामग्रे रिप्न पर्या है (वै)। साम-तु कीवदा दरता (बनमें पेरक, सवार और तीप सामा दोना दें) जिनेदा समूद (कोनोंदा शेमादा) 1 अक -पर जाना-सदार्थि मोर्नेपर जाना। -बॉयना-सामाम भीर बहुन-से लागीको एकत्र बहुता । माम-निव दूर। पुक्षि] अरशी वर्गशालाका यह वर्ग। -बाफ-इ बेहरा नोरे छछ-बीडी अवस्थ । शुक -बाह्र कर्ना-दुरान्यता कर्ना नामत्यनाम्य 1 1772 गामत्र−पुदै 'लामान∓ । नामध्यक-पु (म्॰) शेरहमूख। स्पामन "दु० करकता दिननाः हे सहैता । लामपा - इ. बमरमे पैश होनेवाडी एक पन्छ ।

सावती−सास कामा−पु [ति] तिव्यत और मंगोक्ष्याके शेदाँका वर्मान च्यद्य और प्रासक । † वि• क्षेत्रा। कामी!-पु॰ एक फर (दिस्की, रावपुतानाको और होता हें और साथ, वरकारीके काम भाषा हैं)। सार्गी†−थ० १र । साय#-सी॰ सपर, उदाका। श्रामित । काष्ट्र १ ~प अध्यक्ष, यामका कावा । सायक-दि [ध+] वोग्य- गुजवान्। वाधिकारी। प्रयुक्त मुनासिन । सामक्री-सी वीग्वदा। श्रमश्री†∽श्री॰ इषावची । स्रायनां – तु गिरनी रसी हुई नीज । स्मर-ली॰ कोर्र चीज साते समय मुँदसे निकरनेयासा क्सदार तरक इच्य कालाः बनारः समार। सु× **-भाना**। "टपक्रमा-6िमी चीक्डो बातका लोग होता । **सार*-त्र• शाद, पीठे । मु॰ -स्नगामा-दें**साता । कारी-को॰ (बं॰) माठ और मुसाफिरोंको दोतके काम भामेवानी वड़ी मोटर् गाड़ी ! हारूक-पुक्दर्भ कार्ड-पु [शं॰] रंग्डको समीरारी और रईसीको समापिः वर्गीरास गाठिका ईवर । "समा-को ईम्प्रेशकी पार्नमेंटकी वह शासा जिसमें अभिजात नगींय प्रतिमित्रि रक्षते हैं। छार-वि माणिक रक्त मान्ति रंगकाः मत्वविद्व सुद्धः बीचके धानेमें बहुँबी हुई (बीसरक्षे गोरी);- चरी बाद तरी करी दरित सारी नाल'-दीनदवाल जिलको सब गोटियाँ बीचके खानेयें पहुँच गयी हों (बीसरका समानी); **२१**के पदके शक्त कोमेशका (धैनाई)। −क्रांगारा → समुद्धा−वि+ निद्दावन गुर्द्ध बद्दन काल; ग्रुरमेश्री बक्रहमे रुष्या क्रिक्स अनुकारी कार्या । **-अंबारी-को एक** पद्भा । –श्रविष-पु॰ एक एश्री ! –शासु-पु॰ रताम्, अर्दो । – हुस्रायची – स्वी १ वर्षे १ मध्यो । – **ऋरप** – पुर्वता गमकर्म भागः। - समयी-पुरानभारमी (रीवा कुन)। –धास–स्रो यक तम गोमूत्र तुम। ~चंदन~<u>प</u> रक्त ५१म । −चीता~पु सान कृत्रदा वित्रक कोना । -चीमी-पु शिरपर तान विदियाँनाहर सफेर बब्धर !-शाना-पुनान रंगदा पीरतहा दामा लाक दासदास ।-परी-श्री श्रराव माल पंगीवाली परी। −पानी−नु शराव । --पिरुदा-पु॰ सप्रद देनो भीर दुमवाना वद लाल स्वृत्र ।-पष्टा-पु मुग्हरा !-नुपूर **द्वर**-पु॰ विना सर्वे वाने अध्य≥ते सननद सराजेदाना. भगम्य वार्वोकी समनानेका दावा करनेवाना । –हेरा–पु वक परवार काल कीवा। अमनमान मंगियोंचा वक पीर । -वर्गी-मु कात वेगका अनुवादी क्दलि, संग्री मेहतर ! ~मर्रेड़ा-<u>व</u> एक लाटा -सिव-मी मिरवा। -शुँहा-पु एक तरकका निजावी । -शुरगा-पु+ वक पश्ची मब्दियाः गुल्ममस्य रेवा। -मुसी-सी। नण्यम । ⊷लाञ्च-पु० एक विशेष प्रवारकी मारंगी । -वाक्रर∸भी विना साथ ही दुर्र योजी साँहर -सक्ती-पु अमस्य ।-समुद्र-पु देश्लात सामर।

करते हों । -बिद्ध-- वि अनगतक विवयः सबसे मिश्र मत रप्रनेवाला । - विकाल-वि वगडिक्यात ।- विसर्ग ~प संपार, सहिका बंड । -बिसवी(विंग)-वि संसारको रचना करमेनाका १ --बच्च-प कोकरोदि । -म्यबद्दार-पु सोकाबार । - शति - बी कोक्क्यारिः मप्रवाह । -संग्रह-पु॰ सोस्वस्थाणः सोगाँकी सकार्य बाबनाः मानवसंपर्दते प्राप्त अनुसनः कोदीका संघदः सारा विश्व । -संप्राही (हिन)-वि कोगोंको संतह करनेवासा । -संपद्म-वि न्वीस्टिक नुदिसे अकाः -संप्रवहार-प सारे संग्रारमें दोनेवाका स्वापार वा र्धपर्देश सोमारिक कार्य । −सत्ता−को॰ वह शासन व्यवस्था विसमें सत्ता जनताने दायमें हो। -सत्तादमक -वि चनता हारा संचाबित (छासन) । -सार्रग-प विष्य । -सिद्ध-वि कोड या समात्र द्वारा स्वीकृतः प्रचलितः। −संदर्-दि सर्वप्रशंकितः पुरुषः -सेवक-व सार्वेजनिक काम करनेवाना । -शॉवी!--सी एक तरहकी इस्री। -हार-यु॰ संसारका मास बरनेशका । -बास्य-दि॰ शेक्सिरित । -बित-प् मानवमात्रका करवान। वि शंसारका करवाम करनेवाला। मोक्टी : –सो सोमरी – सिंहर्डियहा केंग्स्टीको सर – STE I क्षोकन−प्रसिद्धिकनेश्वीकिया। सोबमा-स॰ हि दिसी श्रीतको गिरमेसे पहड़े ही हार्वोसे पदः केताः दिनो नागदे शेषमें हो दसनदेशः वस रहन लमजाः शास्त्रमें की चका हैसा । माक्सी - ली है 'सोइंडी । कोक्सीय-दि सि] देखने योग्यः वस्य । सोकरा। - प्रविधना। स्रोक्स-वि [H] स्थामीन स्थानविद्येक्ने संबद्ध । -योर्ध-इ निर्वापको हारा खनी वर्ष विशेषसमिति को भमागरिशेक्टे सार्वजनिक कामी सबक, सकाई भारिका प्रशंप करती है। सोर तर-१ [गं] परहोड (यह लोक बड़ों भरनेपर धीरकी काना पहला है) ह साव[तरिक=दि [मे+] कोडीरो वीय अवस्थित । मोद्यांतरित-दि [संग] परनेक नया ग्रमा सम्। स्रोकाकारा-पु [मं] अवकाश आकाराः शीवी धीर त्तर्वोद्या भाषय निच (वे)। लोकाचार-पुर्धि नेसारका स्पवदार पत्रन । सीकार-तु वह बुए का उपका कर जी देखें बरावर भीर पद्धनेपर चैन्या और मौडा होना है। स्पेकातिग−वि [र्न•] शराधरूप । मोग्रहिशय-६ मि । असायका । मोद्यदि-पु [मं] रिश्च कार्य स्टिस्टी। मोराधिक-वि [मं] मसावार्य । मोशायिप-तु [नंश] शोदपना बदा बरेश । शोबागा है कि की बीह बगाल्या। दिगीदी की पीत वराण्डर देना (अंग्रे तेर बाहि)। सीकानुष्यक-दि+ [d] भोगोपर दवा दर्येवामा । शोबासुमह-दु [मं] शोवाँका दस्वाय ।

खाकापवाद-पुर्शि | क्षेत्रसिंदा वदवासी। सीकामिलपित-वि (सं•) संसार दारा शक्ति । प्र• स्रोकारपद्य-प [सं॰] संसारको क्वति । छोकायस−प्र**िक्** स्मा लोदपर कास्था रखनेशाना व्यक्तिः वार्यक्रमा सनवागीः वाराय-राजन (परोक्ष परलोक्षणदक्त रहेबन करनेबाला नारिसक मल): दर्भिन श्रंत्र । लाकायतनः स्रोकायतिक-पु॰ [सं] मान्तिका थार्यकः। खोकायम-पु[र्ग]नारावम ! कोकासीक-प्र [सं] सावों समझौंको परिवेष्टित करन-बाकी पीराणिक वर्षतमेथी, करुवास । सीकित-नि॰ [र्न॰] देसा इवा । क्षोकी(किम)-वि॰ [लं॰] जी ठीकका स्वामी हो। जो **छोद्धमें निवास करे ।** राकेश-प [सं] लोकका स्थामी तुका पारा । सोकेश्वर-पु [तं] सोसका स्वामीः तदा । क्षोद्धेषणा-सी [सं॰] कर्दर्ग, सम्मान भारिको काममाः **एक्टी अ**मिन्यमा । लाकोक्टि-सी [मं] कदावतः एक शहंकार (श्वम **कीओकिया प्रवीग किया जाता है**) । सोक्रोत्तर-दि॰ [र्स॰] कीक्रमें मास परावाँ है उत्तम असा-धारण, विकास । छोकोपकार~पु॰ [गुं॰] सार्ववनिक सामदा काम । कोन्बडी ० – सी छोमडी । कोग्रर-वु नार्छ बहर आदिक लोहके सीवार। किमवत । क्रोस-प ममुष्य (रहु में महुक्त)। -बारा-र सर्व सानारम जनता। सोगाई • - सी है 'तुगार । सीच-सी रक्षेत्राक्त सबद बीमनता, मृद्ताः अक्छा र्देगा * स्थि। असिनाताः त्रेत्रमं, नीयना बसायनाः। पु॰ (मे॰) धर्म । -सर्बंड -सस्तक-पु रहवरा मामक भोरति। -सामक-तु अभी राउडे रहतेशा स्यप्त । सीचक-दि [र्स-] मूर्ग जिलका भारार दूव हो। पु शांतपित औराका शांता बाजना निर्वेदि स्वक्ति विवेदि समार वा कामका एक गहना। मीना कपहा। करणी बैनाः बेंबुनीः मत्त्रेवाः सुरिवीवानी स्वया या सनार । स्पेचन-वि [मंग] चमकामेशना । पु भारत- रेग्रनेकी क्रिया । --गो**णा-** प्रदेश स्थलपत । दिन स्रम् । -यय -मार्ग-न रहिश्व रहिन्दे अंग्र पहनेवामा ध्य । -पहच-वि कावपूर्व रहिने देखनेवाला । --पात -पु र्याटपान नवर टाममा। -हिता-सी तरपी-बस । स्रोचन पुर्नि काराया कोता । साचना-रंग कि वृति इतिस देश दरना इच्छा वरनाः + प्रदास्ति बर्गाः । स कि चारमा +तवनाः विशासना । ई पुरु बस्यादे अन्यापनी द्वीनेपर पितृशृहारे भेजा कानेर ना सांगतिह सरहार जिसमें में है, गुरु बादि

धीर्वे रहती है। स्त्री॰ [सं॰] एक श्रीह देशी।

—सर-पु॰ यह पद्मी (गर्मम, निरक्षा रंग कान, प्राची विद्यहर्गा, पीढ कार्मा, देना सुन्दरूगा। —सामा—पु सर्घा। । —सामा—पु सर्घा। । —सामा—पु कर पुन्त निर्मा कार्मा कार्

सास-सी॰ नाना, नृह, राकः = ठालमा इच्छा पु॰
मूरावन क्लि मान रंगरी छोरी विशिषा श्रीताचीका पर रामा पारा उपा पुत नत्स्या प्रिय, प्लारा व्यक्ति प्रस्तो मेगी बाटगी। = बाहत प्लार पुनरा (प्लान) मानिका ग्लग रंग। - मान = पु पुष्पा पह जारहक होता। मुन - इगाडवा - मण्डी प्लारी महत्त्वकी कार्ने कहना।

करमा। सासक−दि [मं] दुलार फार-इरमेशना। पु॰ विदृश्छ। छासकीव~पु॰ दे॰ 'नानऊीन ।

सालय-५० कोई भीव शामेश्री बहुत नहीं हुई बच्चा, होयी सारमहाँ - नि० विसे बहुत मध्य कोम हो, कालयी ह सारमधी-दि० होनी होतुर ह

साउद्देम-स्वी॰ [अं॰ 'लंदर्ग } दावमें करवाने हाबद विनर्गापार सेंग्र सावद्वी-भी नव और वालियोगें योगीके दोनों और

हारक्ष्रा∽मा नव भार गाववाग आर्था कामा बार करावा आरेवाता काम रंगा क्यर । करावा मुठ्ठ वरूक प्यारा क्या ! विरामीः [मं] प्यार करवा मुठ्ठ वर्षाक मार बाला प्यारा कुरे देश वक्क विवस अंतु । वि व्हार हार्यश्याः ।

सालगा = ना कि व्यार वरमा १ हा करना । सालगोब = वि [मंग] व्यार करने वोव्य । सालगो = सो १व सरदण ग्रीरा न्यांत्रण सरद्वा ।

सामग्री-सी आपनी सम्मानिता नगीना। साहरा-मि (सं) वंशका नित्त निर्मा भीत्रकी प्रश्न दश्या हो। भोदच, मीना कन्छर। कुलानगा वरीनना।

स्प्रामसङ्कारि [र्गाण] है व 'साराहा । स्प्रामस्यानकी व [र्गाण] दिशी की गर्दे व गर्दे किया स्वया सिंह इच्छा, सर्वनामा की गुरुवस मुस्तियोधी व स्थान बीन

्वित्र इच्छाः, क्षांत्रमात्राः काञ्चन्ताः नाजदान्तः नक्ष्याः इत्या त्रदः कृदाः सेदाः कृतन्त्रः । क्षाप्तसीकन्तिः प्रभावः प्रशास्त्रकाः वस्तेत्रमाः ।

द्भारता हुन - स्वान व वा वा किया कर्या कर कर द्भारता हुन - स्वान कर दूर क

विष हो (महन्ने लारि)। नाय-पुर सार सामा महनी। नहाय-पुर सार, बृह बरमान महर्गना हारा महन्ति। नहाय-पुर सामा महर्गना हारा मान्यदिक रहतेवामा भीता। हेक्कि रहतेवामा, बन्दरे कारापीत कार्यवास वह सहस्र। सामाय-पुर (१०) मृत्यो।

क्षाकाय-ची॰ [ब॰] क्या । स्वामाय-चु [ब॰] मूच्यो । स्वामायिक साराष्ट्र-कि [ब॰] गार स्वस्था हुमा राज्य-कम्बास हुमा (बारा बुमारा । स्वादिक-चु [ब॰] स्वार-दुमार दिसा हुमा । हु॰

खाळ-५ [चेन] घ्वार-पुगर दिशा हुवा। पुन मानेश मेटा ; सानिश्वर-५० [गंन] येव व्यक्ति। सानिश्वर-५० [गंन] येव व्यक्ति। सानिश्वर-५ [चंन] विश्व व्यक्ति। स्वारम्बर-५ [चंन] साम्बर-को।

कारिमा नहीं साथी सुधी। कार्सी नहीं व्यक्तिया सुधी। वैद्यासमा में पारिक दोवान कार्यो स्वती। कार्यो (चित्र) नहीं (विश्वोधा) कुमार्यदर ने बारे

कार्या(किन्) - पु [गंग] [क्विकोश] कुमार्थर हे र बाह्य पुरुष । (१० दुबार प्यार स्टिनेशका । कार्याल-पु [गं] क्विम । स्टालुका-सी [गंग] एक स्टरका हार ।

राम्म-पु॰ करवान बरिश । शु॰ --पदमा-दियो बोक्ष-की गाने देजनेदे निद दश्यना लाटादिन बोना । सामो॰-पु॰ दे॰ कांचे (मंदर ।

कारच-दि० [र्गः] कारण थाए दर्शते ग्रीहरू । शाहरूक-तु कार्य रादश्य तामः स्टाच-तु (ग्री) स्था सामक प्रश्ली कारणाः शास्याः स्टाच-तु (ग्री) स्था सामक प्रश्लीतमा। तद्य स्टानेहामा। स्टाची स्टीय, सामा है एगी। पंत्र स्टानेहरे योजस

यो वानेसामी रहता पह प्रांमी पह िमी माध्ये माने दान्य मृति। न्यार्ट्यु नोपी मणी मणानेसाना। दि दान्यत्व विच नेस्पर्ट (त्रिप्ट)। न्याद्वर-पुरु शामाने सामान, सम्मराष्ट्र। सुरु न्यायान स्थमे । त्रामी दिश्य दृद्धीन संस्था।

शासक-पु (मं] स्था वर्णः कान्नेशस्य दिव्यप्रकारे पानकी समुख (शाहबी)। यश्यः जीर पुरदर्शे वैशीवे पञ्चार काने-सतीत पेरा, वर्णः ।

लायब-पुरु कमता यहा रूपा रह वातीन राजा। प्रावस-रि [१०] सरपपुरू रूप टेना निम्हा संस्था स्वर-रे दिया यहा हो (तीचर भन्दा) । पुरु रूनीपरे सारी भीरदा रूपहा एवनी रूपर ।-रिप्स-पि रूप्

रेपक्कारी-चु वर्गनान्त्रे एक सर्वत्र र राष्ट्रिका-वि (वि०) स्थान नेवरी सामक्ष्या अवस्थाप राज्युन (बीचवरी)) सुरह १ तु. करण (वस्तुस स्माप्त

साबन्य-पु (वंश) वयरत्व अमृद्येत्रीहर्द्रशाम् द्वर्णः सन्तर्भ - कतिमु-दिक्शीदर्शित्र् र अस्तुमी असीन

होपुन-पुत्र (लंक) क्षेत्रह क्षिप्तर कारका स्टाब्ट कारक है

स्रोधनायात-५० (ई) रहियात । क्षोत्र-पुरु [मैरु] भोरी या सुरक्षा पना स्टूट सीचनामय-९० [मं॰] क्षादा राग । सीय-मी शर सारा ! -पोय-विश् नवार सन् दर स्रोधनी-सी [सं] यदावाविषदा नागढ वाविष । दुमा है अरु -विरंमा-निद्दत दौता कारा क्या । सोबारब-प॰ (मुं॰) एक सरक (१)। च्डालमा-दरवा दरना मर दाएका । लोधग-प्र• सार्का यरा। लोडेबे बैनका धर्म । स्पेषण=प॰ मांसरा दश प्रका। सीट-सी शायमा बीटनेश किया । मु नाटा व निवनीः कासराद-प० दे० 'तीबका । 🕇 मीट कागमी सुदा ।-पटा-र प्र विवाधकी एक रस्म कोबाशी-की॰ क्य शमीवेंने सहस्र दिल्ले सीर विसमें बर बचके थे। बर्ध जान है। बल्ट ब्रेट । अधीर-माना । – स्टीप्ट-पुरु एक तरहका होता गया । मी बाराम बरना लागा। दि ईसोई प्रोयने क्योर। क्षाधि=-शी १० नीव । म - पोर शामा - इंग्रेका दाव या वान देख सनकर साय-पुरेशीय । दैनन इस्रत गिर भइमा ।--ग्राहमा-छेरनाः क्सिके ग्रेमप्त स्त्रेची. स्रोधी-पु पहासीको एक सर्हि । भपीर दाना । -स्यासा-नुष्यमा हैट वामा दिनी मोध-१० एक प्रश्न जिल्हें कल नाम वा सरेट पीर है। नी अपर आधिक दामा। जिर करमा। जहाँ जामा-मोधरा-प• वाराममे मा>ेशना व& सरहरा ह¦ए । द्दाना - रीशमाः स्वापुत्र दीना । क्रोध-वर्गालं हे सावस्य देशः सारत ५० मुनियर नप्यमेगाना ग्य बनतरः दहरी क्षोधक-४० (मेर्ने काप ब्रुप्ट र जीनारे बरनेदा एक इसा शारतपरका बंदर । -साम्मी-न्दोम०-पु जनम समस्य प्रग्रहात्मा सन्द्र ४१-प्रशासी -की यह तरहाई गुग्री । विक जमक्दराम क्षाप्त । (स्वाप्ति किर क्ष्य लोटमा-भ कि सीथ प्रश् क्षा हुए बाला सुदक्ताः शान्य देशियों ।) करमटे बरलमा एउएरानाः भाराम करना नेटना। स्तोबा-दि अवधील नवीता, होरा । पु क्षार मीटा ~पीरमा-भ कि लेखा। होगा। स् कोट जाना एक लाग जगनीनी । कम दिश प्रमुप क्राप्ता । - १९ ६.मा: र्याहीय श्रीमा था गर शामा । स्रोटला को एक प्राप्ताहरी ह विरमा-वरपमा हिरमा आहम होता। मोहचीह-शोगाई ०-भी टरश्या । कर जब लक्षा बाबा-बीमार बीकर भरणा दी जाना । क्षीमार्श-क मध्य पत्रने किन्नेश कर का मोटा मोटा फिरमा—दर्र भार्ति एक्पना । मीबिका-मोर्ग मीनी बाबका माग र स्रोदा-च जस स्थानेका पानुका यक छोडा वाम ! म्यीक लोजियर-व जनव बसाने और देवनेना स्वक्रमध करने [मं+] यद माग अयवानी । नामी शक्त जानि शीनिकों। इसे मीओ सम्बन्ध कारिका-श्रो॰ (ते] यह समा समयोगी । मीबी-भी वह लगा अयो में को धे चीनरोवर क्तेरिक-मी फेरा मेरा I विश्लेषामा थार प्रारा दारा दा सहय विश्लाने ही कोरी-मी॰ धोग भीत । निष्टी। लीकाः क शुरूर सर्धवद्या र क<u>म</u> सदमीपु र स्तित्रच्यु [तं] क्षतीकार कारता छ दशा ३ −शू−की० स्थाप-पु (संर्व) माधा बीहान प्रेमा सूर्व अन व (लागन बीनेके क्षीरलेका स्थाल है शक्ति वियो महाका गुप होना ह कोहस-पु[riu] (गर हिमाधेको किया । लीपक-वि. [10] बाचा बाननेर साह साह बहरेपचा ह स्टाइय-दु [44] दिलाने दुवान ग्राम्य का सक्षांत 74 kH 6 मोपम-पु (मेर्न संब बरना) गए बाबा। गए कारण स्रमेदी दिश्व वदम्। आह्नार-म ६६ अ द्या करत प्रदर्श करना व P43 6 माहित-दि [ग्रेन] हाँव शाम दिवा हुना । मारामान-सन्दर्भ दि दिसमा, सत्र प्रशास अन बाजा farmin a fa funt en fanteren सीरबन्धां स्था कि ने ने ने नाहरा । सीयक्रिय-१ [रा] १६ धरन (त्ये लगानेताना नरार सारबद्ध-एक द्वित कोएमा जन्द बरमा। + (कुक) शांत्रमा - वह बाली वह दूध दिन दिल बीन्त आही -रीलाव । ही म गा है। कोषा जोपनापुर-बोन (त.) शिर्म शाहकी रूपिन कथ दि भोतमा प्रधानक वर्गातक व मुन्ते क्षेत्र अन्तर्राकृति वच्या अन्तर्रा अन्तर्राकृति वृत्त अन्तर्र अ मीपा-पुरु विवाह येमजेडे किर स्माहमा बायरका येम शत हुइशा दृहा । -हाल-हि श्रीफ (दरमा) । सुक Charle un eine e जीवास-व कि किया ग्रांचा गाउन है -कारमा-सद करना । कामाग्रक-द (स) रे जीपक र सारियानभी धेशा वणा व मीम-न रे भीता [अव] शेथीश भाग र सीवाधिका~थे (तंत्र) सत्ता। मीवर्गवया-मा [०]६६ लक्ष्य दिशा । क्षोच्या लोगान्त्रा-स्रोश मि । प्रश्निका । जीवास जीवनाष-दु थि । मेरश, प्रेन्ड जीवर । क्षेत्रहरूपु यह तरहड़र क्ष्य€ । सीरिका-को (४०) वस रापके रिवारी र the with the first first framewall & क्रोही(विश्व) हिंद लिंदी ब्रांच स्ट्रेब के ब्राह्म अन सार्के स्रोबी-ब्रोप ब्रह्मीओ ह बना को हर हो हहे।

छास्यक~प [र्श•] मृख ।

```
2255
 स्रो॰ शरवनिक संदरता ।
सावण्या-की [से] त्राकी सूरी।
छावण्यासित-वि [सं] सीत्र्य द्वारा माप्ता शु स्वी धनाः
 दक्षेत्र ।
सावनता॰-सी कारम्य, सुंदरता ।
स्वादना*─स कि काना।
स्रावनिश्-सी॰ अथम्य स्टरता।
काबमी-सी एक यौन छेद: एक तरबका चक्रता गाना !
  —श्राञ्च─वि कावशीका श्रीकीनः कावनी गामेवाका ।
साववासी-वि निवर, बेफिक । की कावारगी, वंफिकी,
  शोधी। प्रभारा वा वेफिक बाइगी।
सावा-पुक्रमा प्रभी सामा सील। --यरछन-पु
  ue नेवादिक रोति । सुरु - शेक देवा+-श्वसे स्वाटन
  काला ।
 काबा-पु [अं] स्थाकामुली पर्वतसे मिक्कनेयाका हव
  पदार्थ ।
 क्षावाणक−९ [मं ] मगक्के पासका एक प्राचीन देश !
 काविक-पु [सं] भसा।
 साविका-ली [सं] स्था पढ़ी। मैछ।
 खाइ-पु[सं] दे 'लानु।
 साध्य-वि [सं ] काटमे योग्य ।
 क्काश-स्त्री [फा ] युत्त हेड शव । मुरू --उठना-मर
   बाना । -राक्षियाँसे खिचदामा-मरनेके नार वर्णक
   हरता । -पर स्राहा गिरमा-(ब्रह्मी) बाह्योंका केर करा
  म्बासा-पु+ [पा] अदि पुर्नंत, द्वीनकान नगः पृदरेकः
   श्राप्त ।
  साप = न्यो = बास बाह !
  सायना = न कि भारते के पंर करना ।
  सायुक्त-वि [सं ] कीतुप काक्यी।
  क्षास-पु [मं ] प्रक्र-मृत्य मृत्य रागा निजीका क्षीमक
    भावमय गुरवा जूम रखाः शार ।
   स्तसक-वि [मं ] होशास्त । पु मन्त्र शाकतेवाकाः
    अभिनेता। शिक्षा एक नामा आर्तिगमा एक अन्ता शक्ते
    क्षरको मेबिकपरका क्षमराः वहा ।
   सासकी~न्ये [मं ] मर्तको नविगेत्री !
   मासन-पुर्मि । १५-संपादनः मानगा ।
   कासा-प्रकार, विषयिपी,विषद्वीवाधी बीव-देसाने
    भिषक्रमेशासी भीज, गाँद चेत्र । जुक -क्रागामा-हागदा
    कराना। फॉछना । नहीं जाना-विदय जामा: वीता म
     धोशमा ।
   सासि मासुर∽५ दे 'शस्त्र'।
   स्प्रमिष-(६ (१) नायनेवाला ।
   मासिका-गी [सं ] मर्तकी वेदका उपस्पत्या कह भेदा
   न्यमी!-नी यहूँवे सपनेशना यह बाला बीशा, साही।
     शरमी ।
    कारी(सिम्)-वि [सं०] मृत्य करनेवासा ।
    मारकोरती-स्थ [मं ] छैप्र करनेका एक श्रीतार ह
    मास्य-पुरु [मंग] मृत्या वह मृत्य विसर्वे वाद्य और गीत
      का थीन हो। सी नृत्यः वर्तकः अभिनेता ।
```

```
कास्या-न्त्री [सं•] मर्गसी भमित्रेणी।
            काक्षा काद्य कादी। चगढ कांति। पु:
आह≉−सी
 अभ सुनाफा ।
शाहरू • ~ प्राचीन र
साहिक-वि पता ] वो पैछरो भाकर मित्र छगा, जुड़ा
 हुमा: पोछे क्या हुमा (शोगा) ।
साहिका−वि वि•ी संशुक्त, संकान ।
साही!-को  काम पेदा शरनेपाका काक क्रीका। फसकते
 किए शामिकर एक बीड़ा को निशेषकर गेट्टें भीमें सगता
 है। सरसीं। काई, ग्रीक । वि॰ महमैलापन किने काक,
 काइके रंगसे मिकता हुना ।
छाद्वीरी मसक−पु॰ सेंगा जमक !
सादीक-[म ]शेवान या बुद्र मनात्मानोंकी मयानेके किए
 प्रयुक्त, 'कादील वका कृषत दस्ताविस्का'का पदला छन्द
  को चला विरक्तिया धुरी बातपर सेंद प्रकट करनेके
  किए बैक्टे है। मुरु -पहला-पिशाय भारिकी मगाने
  के लिए 'ठाडीसम्बाक्त्य
                         पद्माः कामत सेवसः ।
छिंग~त [र्व ] विद्य किसी वरत परार्थकी पहचान
  का साथन नवली विद्या प्रमाण। कारण अनुमान,
  खाबक देतु (न्या )। प्रवान, गुरु मकुदि (खां )। प्रवय-
  की जनमंद्रिय दिक्ता शिवन्तिमा देवमृति। शान्तिहा प्रकृ
     आरि-संबंधी मत्र (स्वा )। रीगम्बा क्यापः
  सर्वचोत्तक शक्ति। किंगनिर्मयके छ सङ्घर (मी )। एक
  पुराय । - देह-की - बारीर-पु: सूक्ष्म देह, सूत्य
  के बाद फक्मीगड़े किए जीवारमाने साथ क्या रहते
  वाका सूरम छरीर। −धर−वि केवल विश्व चारच
  करनेवाला धाँगी। -धारी(रिम्)-वि विद्वापारम
  करनेवाका । - जाश-पु परियायक विद्वता माद्या
  अंबद्धारः गीलिका गामक नेत्र रीमा शिक्षका नाद्य।
  ─पीरः—चु अरमा । —पुराण—चु अठारद धुरामी-
  मैंने एक। -प्रतिद्या-स्त्री शिवक्रियदी स्थापना।
  -माग्र-प प्रधाः -धर्ति-स्ते बननेदियदा दढ
  रीय। - यद्य-वि कियमें क्रवन सानेशका। पु
  देश। -वर्द्धिशी-न्या विषयाः, अपानार्ग। -वर्द्धी
   (दिए)-वि दे 'सिगवर्डन । -यूलि-दु वेश
  बनाकर शिविका अर्थम करमेवाचाः मधनी मातु । वि
   दोंगी जारंपरी : -बेपी-स्री भरपा। -प्रोफ-
  धु शिक्तरी प्रम । -स्य-पु नदावारी ।
 क्षिंगक-५ मि विश्वस्थादेत।
 सिंगन-पु [मं०] गने मिकना आक्रियन।
 सिंगपान्(यन्)-वि॰ [शं॰] निह्नाना। पु एक रीव
   शंप्रदान को गरेमें किय कारण करता है किंगानत ह
 सिगायन-तु वढ शेव श्वदाय विगवान् ।
 रिंगाचन-पु [म॰] दिवनिगद्य पुरन ।
 वितार्था (स्) वित्रोपद्धा-पु [र्थः] जननेत्रिवदा
   त्यह शेव ६
  र्मिगारिका-मी [में ] का सरस्य पुरा I
  सिरिक-दु ≓गशपन ६
  हिंतिमी - मी [मं] पर्मका मार्टनर करनेनानी मो।
```

सोशा(प्तु)-वि [सं•] यंग करमेवाका ! सीप्य-प [सं•] चीरी या सहस्रा माड ! [न•] गुहियाः पुरुकोः खिलीमाः वित्र । क्रोडत∽सी -पाह-पु इठपुर्वाक्योंका तमाद्या करनेवाका । स्रोबान-प्र [स] एद ब्रुका निर्वास विमे सुर्वेषके क्रिय जागपर बलाते और दबाके मी काममें कात है। कोमानी-दि॰ बिसमें कोवान दो या बिससे कीवान मिक्के। क्षेत्रान जैसा, सफा । - सत्-प्र एक तरहका सक्षर कर । स्रोबिमा-पु+ बोहेका एक मेद किसकी तरकारी नजाते और श्रीजॉन दाल और वास्फोठ वैदार दरते है। -क्षेत्रई-पुगदरादरारंग। स्रोम-पु [र्स्-] दूसरेका यन हेनेकी रच्छा, कालय: काकसा, कारुवाम सभीरताः धेनुसीः स्वागमे नायक श्रीनंबाका कर्म (में)। -मोहित-वि कोमसे विक कित । -विजयी(यिम्)-वि अन लेकर तुरू न करने शका (राजा-की)। -विरह्-पु कोमका जमाव। ~ध्यम्ब−दि कोमरहित। सामन-प्र [सं] शास्त्रः सामसाः सुवर्गः वि प्रमाने स्रोभमा−≉ अ दि शासक, सम्भ दोना। स कि॰ कुमाना, मुख करना । शोमनीय-दि (तं <u>] सुनानेवाका मनोदर काटर्व</u>दा मोमाला*−ध कि नोइना मुग्प दरहा। सं कि भौदितः सम्प होना ह क्षोभार = वि शुमाने भुत्व दरनेवानः । क्षोमित-विदिशेष्ट्रसम्बर्ध मोमी(मिन)-वि [र्:] दिनी बरतका कोन रखने बाठा काठबी: तुम्ब । क्रोप्रय−दि [सं•] **डो**मनीय'। काम(म)-प [सं] धरीरवरके वाक रीमा पैछा कोमरी। -करथी-नी एक शैपा बढामानी। ~कर्द्रश्चे∽ही सबभेषाः ⊶कर्ण~पु॰ ग्रहगोशः। -कीर-प्रार्थे। -क्प,-नर्श-शत-विकर-प्र रीरॅंकी बक्पॅका ध्दा −ध्म−प वालीको सह बहते वाकारीय गंबापना ∽द्वीप−षु अर्थेशा एक कीटा —पाथ-प• अगरे राजा (बद्द अयोग्नागरेस दसर≪डे मित्र थे)। ~प्रर-प्र थंबा मगरी। वर्तमास मागस ९९।⊶क्तप्र⊸पुमन्दा –युक्र⊸पुर्दा–राक्रि– सी क्षेत्रास्त्री। - इसाचार-पुत्रीय। - वाहन-वि वाच बादने कावब तेत्र। -बाही(हिम्)-वि वि बान्देशमा वा बान कारनेडे सावद तंत्र । -विच- विसुद्धे बानमें विष हो । पु॰ व्यामादि । ~हात्सन-इरनाथ । -इर्प-पु रोबांव : -हर्वक-वि रोमांबदारो । -हर्गण-इ म्बामदा दद शिक्ष उग्र भराका पुथ, गूना रीजीय ! वि आवश्विक प्रथा वर्ष मारि दारा शर्दे सहे वह बेनेवाला (राय वृक्त आहि) । "दारौ(रिन्र)-विक नाल कार देनेनाना। -हस-T TESTA ! कोमको(दिश्) – दु[शं०] क्री।

सीमटक-पु॰ [सं॰] सोमधी १ क्रीमही-सी थीरक्षी वारिका एक मानवर । क्रोग्रशी:-खी॰ दे 'क्रोमग्री । क्षोसदा~तुर्वातं विश्वीयक कावि (ये समर माने जात ई--ष): सेक मेका: यक पीधा। विश्व पने रीमोसे झच्छा बिसपर बास भग था। -कर्ण-प्र मीरमें रहनेबाका पद जानवर । —क्हेंबा-लो॰ क्क्की । —पग्निका-स्तौ॰ एक तरहरत कुम्हहा। ~पर्णी -पर्णिबी-स्ता॰ माक्यमा भोववि । -पुरम्क-पु छिरीव छिरिछ । -साखाँर-त कोमरू वार्कीवाका एक विलाह जिसके श्रारीरसे गुर्गंत्र निकल्यी है गंपविकाद । स्रोमदार-खी॰ (र्स॰) काकर्षमाः मांसीः नवः हाकश्चिमेः महायदाः इसीसः कोमगैः श्रमाकोः एक तरहन्ते वहरोः दुर्गाक्षी एक समुचरी। वेरमेत्र रचनेवाली एक स्त्री ! स्रोमशी-सी [पं•] एक पौथा ! क्षीमस्य-प्रश्चित्री सपरीकापन् । कोमस-पु दे॰ 'कोमध'। भोमांच-प्र [छ॰] दे 'रीमांच'। क्रीमा-ली॰ [सं] स्य । क्षोमाह-५ (सं) वृद्ध बारिका एक क्रीर। क्षोसाहित क्षोमाकी कोसावसी-की सि है सोमेसे नामित्रक एगं हुए धने शस्त्र ! कोसासिका-सी॰ [सं॰] कीमरी । क्षीमादा-प [सं] गीन्द, श्लास; होमदी। क्षोमाशिका-न्वी॰ (सं 🕽 :याली; क्षोमही । क्रोय॰-पु॰ क्रोफ कीमा ऑदा सी॰ दशसा सी-···बरसी विसदी कीव -सामी । स. दे. ही '। क्षोयम् ०-५ सीवनः श्रीतः कावस्य । कोर्श्र-विश् कील, चंपलः बार्वाटित चलाकः। प्रश्नकान को छोलको कररी। कानका कुंटला सरकम शामका। व्योध्- बाद भानन कारपारा वरनि कापे बाय'-एर । क्षीरला*~श कि॰ चंपल दोनाः शक्ताः सरकता. कस्मानाः शोटनाः शिवटनाः देरना । छोरवार्ग-प नानू, कार । कोरी-को वर्षोक्षे सुकाने समय गानेका योध। सीतको बद्ध काति । क्रोक−ि [सं] यंघयः दिलता-शतनाः शुर्व सर्शातः श्चिक, अरियर: वन्यनेवास: वरियामी, परिवननशीन: कासका कीमी। यु निया। - बूता-दि सुदरी वास शुभनेवाना । -घर-पु॰ वागु । -वाधु (स्) -ययम -नेत्र -मोचन-दि विमधी भोने पारी तरक दौरती हो। - जिद्व-वि सान्यो। पु मर्ग। - विनेस-पु सीमार्थ। स्पेसक-द सर शादिका अन्द्रमा धटेका *भट*कमा होन्दी ह क्षोसद्दी~की दानदानिचला माग अवर्ता। सीममा०-अ कि दिश्ना-शक्त्रमा संयम होना। म• क्रि हिन्नमा। मामा~की०[र्व] वीवा कर्मी। पंश्वा भी। वद वर्ष-

बुक्त विजनी। यह विदेश प्रकारकी मार । हे पु वर्षी-

ग्रीनता−मी (ग्र॰) संत्रानताः वस्त्रीनवाः निःमेन्द्राः

बराग्रीमता। सीनो टाइए मसीन-न्यां [भेग] वर मधीन विश्वमें पूरी पंकि दमकर क्षीय होती है (पाव: क्याशारी के किस मस्क)।

भयुक्ता - स्व किल् पोतनाः सम्मादे तिए जमीन, दीवारपर मिट्टी मोतरका तेप पहाना । सुरु - पोतना - सम्मादे वरना । भीप पोतम्बर यरायर करमा - काम दिवादना, पीरर करना ।

क्षीयरु - वि॰ मैन, क्षेत्रव भादिसे मरा हुना । हु कोवह - मेधियाँ बीवर वेसरे नासे - प्रामगीकार्यदमी मैनायन ।

सीमू≉−पुसीद्≀

स्तिर मेना परामा इक्सा कारी - नागकी नानम कर गयो और नीर तात पे तद गयी - महाराष्ट्र।

कीलरूनि सीने रंगसाः शु सीमः। —कंडो-शु देश नीमकंडः । —राडा-नाशां —सी देश सीन-गासः —रारां -शुश्रेंगरेजः।

सीलक-दु देशी ज्तेकी मास्त्रर अगावा जानेवाचा दरा चन्नरा। रि. सील।

सीलमा १ - ११० कि निगणना १

क्तिया-भ• [गं॰] रोनमें। एइव दो । सीमहिं॰-म• शेनमें सनायाग-सति करंब हद भैत

नत नीनहिंसेदि वढार नरामा । मीनहेसुबन्दु (सं}दे नोबादमनः।

लीका-० व तिरामा काल पोला । ६ कोला । की

[मं] जीना करिन (स्वान विवास छोटले न्यामा-व्यास

स्वीदा अनुहरमा स्वनादिक अधिन अन्तर्या स्वास्त ।

त्वासार - पर्य-व तिर्मार का मोत्रक । न्यास्त
तामार - पर्य-व तिर्मार का मोत्रक (स्व वास्त्रव)

तामार - पर्य-व तिर्मार का मोत्रक (स्व वास्त्रव)

तामार - पर्य-व तिर्मार का मोत्रक (स्व वास्त्रव)

तामार - पर्य-व तिर्मार का मोत्रक (स्व वास्त्रव)

तामार - प्रमान का मात्रक । न्यास - म्यास - विवास ।

तामार - व त्रामार का मात्रक । न्यास - म्यास - व्यास ।

तामार - व त्रामार - व त्रामार का मात्रक ।

मात्रक - व त्रामार का मात्रक ।

स्वास - प्रमान - व त्रामार का मात्रक ।

तीमार का मात्रक । न्यास - मात्रक व समार का स्वास्त्रव ।

तीमार का सार । न्यास - व विवादि तिर्म वासाव्रका तीमार । - मार्य-विवास ।

स्यतः - द्र क्रीसार्यः रकामः । गीपात्मः गीपार्यित् - द्र (त) दे क्रीनाद्यमः । शीपाद्यस्य - पूर्वः (त) देशः क्रीप्राक्षः (तर्षः प्रशाद्वरः) भूपा (देशः समन्यः दृद्यः गारिः) ।

मूरर (२५ कमन्या ६६० मा)) । गीनामय-(४ [मं] बीहानुन्य क्रीकार्थ भी । स्रोतादित-(४० [मं] क्रीहा क्रीनेवाना। जीवनंव सहसे

बाना। तु जोता सहजतिश बारी । सीमावली-रि भी (लंग) जीहा दिन्यम दश्येवली । भी दुर्लेश एक प्राया सुरह भी। साध्यानपंथी तुर्वी

कार करको बनारी हुई ली-पदेश्व जीन्य दुश्यई वद भूप नारीकी रुगैर-गेर यह लायिक ६४ । भीवामाम्(बम्)-ति [,न] सीववेदम अस्पीया स्टिया शील । सीमोचान-पु॰ [ग॰] वह श्यान शिममें बोश द्ये बाहा

राज्याचार पुरुष १९०१ वर्ष वसाय (उसस ब्राह्म क्षीहा की जाए) स्तीबर-पुर्विको सार्पेने स्टारेकी यह रिवर्ड की इससे कमनेनानी सार्पाकी वनास्त्रों साल्यम होती है।

सुग-पु॰ (सं॰) रक्ष मीन् मानुन्त । सुंगार्ग-नि॰ भावरण सर्वण वरमाध ।

र्सुंगादा-पि॰ तथा, बन्तासः । सुंगी-मी॰ छोटी भोती चत्रमणः करहेवा दुरुवा; शावराः सुंग-बि॰ मिं॰) बाटने, क्षेत्रमें, मीवते बगावनेशणः।

द्व कारमाः ग्रीतमाः प्रशादतः । स्वयम-पुरु (मेर) कारमे, भीवमे अर्थस्य दिवन

चैन पतिपाँका प्रेमीत्यास्य । भूषमा-मी [सं] संशिष भाषम् ।

सुचित्र-वि [सं] मीथा कराता दाश धीना दुना। --केश -सूर्यश्च-तु जैन वित (जिसके सिरके वन्त्र सुपे हों)।

र्श्वज्ञ-विक विका दाव वैरका लगा। श्रमा प्रकारित

सरका सुंदद्व-पु (सं) यह माग ।

र्मुय-मी (वं] हे द्वार स्वाह-द (वं] हे द्वार र

सुंदित-वि (तं) दे दृष्टित । सुद्द-तु (तं) दद नरहरी दास १

तुरक-वृ (वं) चोर वृरेशः

संग्रन-इ [में] भोरी महाशास्त्र । संग्रन्थी [में] भोरी तुष्ट्रन ।

श्रीयर-४ (५०) बाहा धीवा। संस्थान

मुद्रि-मी [तं] मृत्यारः। सुद्रिय-दि [तं] मृत्यारमा मृशया मुशया हुआ।

वार्वको स्वानं में मार्थित होता होता है। मुद्दान्त्र इव वर्ष नमूंबन्ध दिमा शिर्वेश्वास्त्र मार्था

वदशा दुना । सुद्धान्ति : १ ए-त्यारेन (स्ट्री) (रेन वटी) जिससे

र्वशानाः प्रदानम् । पुरुषानं (न्यूपा (रन नदा) । उत्तर

मुंदियानमी [लं] धा पीत्र शिष्ट । मुँदियामार्ग-स॰ कि रिरोट ६५६ मन्द्रमा (ब्रम ६मी साहित्र ।

मुंडी-रि जिमडी ईत बाबर इन बदा हो (बिरिश)। जी दिए गोगी (बरेरे दूर व से) (से] मुरुलसारा

विवेद्यीलनाः। सुविद्यानमीः [५] १६ १९१६चा क्षेत्रः

तुंचेत्रीलको [4] बरिलस्युट पाम्पा १५ वर १९ अदेवा याग दुशा वधारद राज्यानारी ।

मुमाइ∺दु दे नुभारः । मुमारा≔दु॰ सन्ती दुरेना नपन्मी नदरी र

सुभारी-को छना छप राह सुभाष-दूबि देशा का रहम (प्रसादिक)

क्षेत्र कर्ण थो । -दूस-दि दिस्में हुए दिस्टें क्षमात ।

खोचनापात-इ [सं•] रहिपात । **छोधनासप−**षु [ध्र•] बॉयका रोग । छो बमी - स्वी [सं•] मदाशाविका मामक नोवि । सोबारक-इ दि] एक गरक (द)। सोज्म-पु॰ ठोरेका प्राः शहके मैक्का पूर्ण । स्रोट-मा॰ सुरकता, डोउनेकी किया । पु॰ यारा # विवकी; † मीट, कायबी सुद्रा ।⊷पटा−≉ पु विवादकी एक रस्म विसमें बर-बब्बे एके बद्ध जात है। सकट फैर I -पीट-स्री • भाराम करना, बरना । वि॰ इसीच्ड प्रवेगसे भर्गात । म॰-पोर होना-इँसीका ध्यव वा वात देख-सम्बद्ध र्रेसने रेसर्व गिर पश्मा ।-सारमा-बेटनाः किसीके प्रेमस वर्षार होता । - स्माला-सरक्याः देव वामाः विसी वीतपर वाशिक दोनाः कित् करमा। −क्षो कानाः− द्वीमा−रीक्षनाः व्यक्तन द्वीमा । कोटन ५ भृतिपर हुनुकनेवाका एक कन्तरः गहरी बोतार्रं करमेका एक इका राष्ट्रापरका संबद्ध । ~सक्की~ सी दक्ष तरहको सक्ती। कोरना-न• कि॰ मी केच्यर दोते हुए जामा, सुदक्ता। करवर्षे वरक्षमा इदयरानाः भाराम धरना स्टमा। −पोरना−भ कि केरना; सोना । सु॰ कोट साना −स्टब्सः संबाहोत होना वा गर बाना। कोटका फिरमा--तहरता फिरमा ब्लाइन होमा । सीट-पोट-कर दठ सदा होवा-गागर होकर नच्छा हो जाना। क्षोदा-क्षोद्वा फिरसा—दर्व मारिसे सम्बन्ध । सीदा-५ वह रामेदा शतुका का क्षेत्र पात्र। सी [र्स् +] एक साम, अमसीनी । कोटिका~सी॰ [tj] यह साग, अमनीनी । स्रोडिया नकी क्रीस कीता। सोरी-सांधीय कीय। कोट-पु (मे) अमेरपर शेरमा सुन्यमा । -भू-सी बीचेने कीटतेका श्याब । क्रोडब-पु [सं•] सिर हिकामेको किया। सोहन-९ (एं॰) दिकाने मुलाने सुच्य या असांत सरनेको किया संबर्ग। क्षोद्रमा*−स कि पाइना श्र**र**ण भइन्स धरना। क्षोबित-वि [मंग] मधित श्रम्य विमा हुना । सोइकमार्ग-च क्रिक्ट 'तुइक्ना'। क्षोडमा "स मि औरनाः साफ करनाः • (कूक) तादना -'बर् मानी वह मूक सितं दिन कोइत भागी¹-दीमद । अ कि क्रोरमा बमीनपर वसिडका । सोता-पु॰ सिक्दर पीसमेडे किए नगा दुवा पत्यरका गीक संबादकता बहा ! -हास-वि भीपर (करवा) ! ग्रुक -हासना-सम करना । साहिया-नौ शीरा केंद्रा । स्रोष-दुदै 'स्रोम ; [मं॰] सोनीका साग । बोक्स मीलास्था−नौ [वे] श्रदाम्बिका। कोजार-प यह तरहका सार । स्रोणिका-की [प्रे॰] दे कीवास्का । सोबी-सा॰ जमगोनी। होत∽प [नं] बाँसः विका नसका सहका सारू ।

कोश-पु॰ [सं॰] बोरी ना सुरका चन; बाँगू। क्षोथ-क्षा सन, कास । --पोध-नि वसपन, बहुत क्या इना। अ• --शिरमा-निष्टव श्रीना, यारा कना। -हासना-श्ला दरमा मार शहता। स्रोयका~पु० मांसका नका उक्काः क्रोधरान-पु वै 'डीधरा'। कोथारी - ली॰ बम पानीमेंने शावको किनारे स्वीव सामा । –क्षीर – पुरु पण तरहका होरा संगर । कोविश−सी दे'लोगा कोव-त दे 'शेष'। कोदी, कोची-प पहानीको एक कानि । कोध-५ एक इस भिल्डे ५० ठाठ वा स्पेर होत है। कोधरा—पु• बावायमे भानेनाता एव तरहवा तींदा ! कोधा−प सि•ो सोपदापेर। को प्रक्र-पुर्तिनो की प्रमुखा कोन÷~प स्थन, यमका होत्रता कलम्पः।~हरामी[‡]~ वि॰ नमस्त्राराम कराम । (सहावरोंके किए वक्क सभ्द देखिये।) क्ष्मेचा−4ि नमधीला संकोगा सुंदर । प्र∙कार, क्षेत्राः एक साम अमरोती। # स+ क्रि स्ताना, कारना। न्हें एक काइगरनी । छोमाई≠-को शुररता। कोनारां – पुनयक क्तमे मिलनेका स्थान । सौनिका – सी कोमी नामका साग । कोनिया-त वसक बताने और वेश्वमेका व्यवसाय करके-बाकी एक बाहि मोनियाँ। स्त्री होनी साना। कोनी-स्री एक साग अम्होगी; चनेको एक्सिंगर मिलनेवाका छाट श्वारः शोरा वा वमद्र निदासमेश्री मिहीः सीमाः + हंदर प्राविका । + पु॰ सबमीत । कोप-प [सं] मासः बरेग्ना भग सूदः अभावः दिनकाः धन्दमें दिसी वहरदा हुए होना । क्षोपक-दि निश्री दावा दान्योदासाः नाश्च दरनेवामा । प्रमंगा कापन-त सि ी मंग दरना। तम दरना। नह दरना क्षोपना॰-स कि विद्यमा त्रप्त करनाः भन करनाः विचाना। स कि निका द्वार दोनाः किन्ना स्पेपोडन-प्र[मं•] यह नंबन विसे सवामेनक। भारत हो जाता है। कोपा, सीपासुद्धा-सी [गै॰] विश्रमें गरेशको प्रक्रिंग यत्री और अयस्त्वको वन्तीः अमस्त्वमंडलके वान करित धीनेबाका एक शारा ! स्रोपाक-पु [सं] एक तरहका गोरह । स्रोपायक-तु (ह) दे सीवार्धः। कीपापिष्य-सी॰ [री॰] श्रूपाकी । सोपायिका-चौ (ते॰) रह तरहरी विश्विता। कीपासः स्पेपाशक-तु (रा॰) गीरहः, बंदुकः, शावती । कापिका-की॰ (सं॰) पद तरदश्री मिठारै । कोपी(पिन)-दि [रा॰] श्राप्ति पटुंचानेदासा। मंग दर्श शला भी चत थी सबै ।

1104 सुजार्≠−की सु, गर्भ इदा∽'कैनी यह ग्रीपमकी भीतम लुक्रो-सा॰ दे 'हनुई' । तुमार **दे –श्ला**कर । सुर्वासन-पुर एक बंबन वी क्यानेवाकेकी कारान कर लच्चमान्स किश्मोजकाता। सक-पु एक रोगन को मिट्टीन वरतमीपर जनक कारिके क्रिए सगाया जाता है। शायकी क्रमश विनगारी I **~बार** क्रमीमा, वदमाग्रः दुराचारी संबद्ध । -वि विश्ववर श्रुष्ठ पेरा गवा हो। -साक्र-पु॰ शुरू फेरनेका काम करनेवाला । सर्दश्च भागा घट । खुटक्रमाण-श*िद* हैं? 'छडक्मा' । क्षुकना∽थ कि धिवमा, भावमें दो जाना। सु• खक क्रिएकर-नद्भव हो ग्रप्त रूपसे। सुक्रमा~पु॰ [थ] कीर, धास । हर्≢सार-पु [अ] कुरानमें वृत्तित पक्रश्रक्षीय को अपनी सर-सर वार्के । दुक्रिमत्ताके निप प्रशिद्ध है। मु −के पास क्षा मईा-सदरवा-म• क्रि॰ लेखाः हरस्या । रोगका अम्राप्य दोता । -का द्विकास सिधाना-दुदि भुटरा-वि॰ धुँवरासा । [खों 'सुररी' ।] मानको अद्ध सिम्हानाः वेदकृतीकी वात करना । हर्≽रीरं∽की सुधादी कटीदावलती ह्रई सक्दी। सका-क्रिपी – खी॰ हकते छिपनेका पद सैछ । वे**रोक दा**न वा **सार्थ** करमा । सुकाट-पुण्य बृद्ध था क्सबा एस । खुराबना + - स॰ कि दे॰ 'तुराना'। सकाठ−० प्र वे 'तुपाद हवे 'तुकार । सुकाना-स कि छिपासा। थ कि छिपना सुकना। काम करना। काम चीपः करना । लुकार - सी अम्म बनानेशको हासि-'व्यापते तुकार शुन्रेखां~पु ९७ प्रदारका पद्मी। कर्रोत काम जारनको -रहा । स्टेश~पु॰ सुरुमेवाका, बाक् I सकारी!-स्री यह शिरेपर जस्ती हूर्र स्वती ना भूसका सुकेटा≉−९ जनती हुई सक्तरी तुकाठा। सकीना - स कि छिलना-" बोर की केरि कछि <u>सुरामा०~सः कि कोशमाः हरकाना ।</u> श्रुष्ट ना क्षत्रोने स्-दोनदवाल । छक(प्)∽द्र[मं]कोष। क्षेत्रमा (बैसे पोहेका) । सकाबित-वि [म] छिपा प्रका अवस्य, अंतरित ध लुक्सा−थ कि॰६ 'नाक्ष्मा । सुरित्या-स्रो पूर्व भीरतः प्रेयसी वेरवा, कुस्टा । लुबकामा-म॰ कि॰ है 'क्रुकाना'। कुराबा-प करवा भीतनी । <u>सात~सा॰ [म] यमा भागा सम्रकीसः सु• −</u> शुक्तुकामा−भ कि कश्यकामा। **धाँरमा –झाइमा – पाक्षिय प्रदर्शन% तिय द्विष्ट** अप्र-मनित द्वार्गीद्धा व्यवहार करवा । -तराशामा-श्रम्य गॅ॰नाः द्विष्ट शुभ्यावनीका स्ववदार करना । सुगक्त-१ योगी भीत्रका गीता, लॉडा (कायत आदि हरेनमा 🕼 शहर शाना पुरे 🖹 । बनानेके (तप तैवार वस्तुका प्रारमिक विद्यार) । सुगद्गी भी पीधी दुर्र गीनी बरनुका पिट । चयम विदासमा कोश बाना। शुगरा- • ५० वरशा भाइनी छाडी चारश पटा करशा । 1 वि चुनल्हीरः। geit - I सुगरी-मी इधे-पुरामी थोनी र पीड पीछे किसीका बीच करना पुगरी। सायी-वि [बर] तुनसदा कीशमा अनुनी सून (धर्य) धरारनीः बरमाध । [ब्री नुवरी ।] -मामी-पु॰ शब्दार्थ असनी मानी। लुक्तीं−भी दें मुत्री। शुगाई-मा औ; पानी । लुसा०-सी शाद, माञ्च । Binu-3 [m] , Ran et al ! Analag! fint. OU ! दुर्गी • न्थी - श्रुंगी। क्ये थाती। स्ट्रेंग्सा किसारा । Anlia-do Stal ! शुद्रा-५० एक मन्द्रमी बान । खब्दना!-म कि शास्त्रा।

...

सुचक्रमा-स॰ कि शटकेंटे कोई नीय ग्रीन कना । सुचुई॰-सी॰ (मदेकी) नरम भीर शक्ती पूरी। सुचा-नि॰ कोर्र चीव **तुषस्त्र**, मागमेनामा चार्रः लुकी-सी दे॰ 'गुपुरे'। वि॰ सी० दे॰ 'गुब्बा'। ल्दरमा−अ कि बाकुवीं कारि द्वारा स्टा शामा नरवाद तबाह होता: कोरना: तिछाबर होना-'क्यों न श्रक्तमकर सुरावा-स कि किसीकी सुरने देनाः रुक्तिसे क्रम दाम पर कोई भीज माइकको ै देना। बरबाद करना। श्रेषाचुंच लुटिया-जी छोरा कोरा। हु॰ -क्कुबाना-अनयसका सरम~प्र• सिं] तुत्रको वा सोटनेकी क्रिया। खरुना - म कि॰ भूमिपर छोट बामा सोटनाः हरकमा -'तुरुत सक्के सीस घरन तर युग ग्रन गम समवे'-स्र । स्तरित-विश् वि] सुरक्षाः गिरा वास्त्रेश हुनाः पुर ल्लकी सरकी !- लो॰ बहोमें बनी हुई मींय ! हुदुक्ता−ल कि॰ चक्र मानं हुर भाग स्ट्रमा शा विरमा मीचे कपर दोत हुए विस्तरना रपरना। ल्दकाना−स कि कार्रभीत्र श्वनी सशीने फेंक्सा खुइमा॰-म॰ वि॰ सुद्दनाः निरमाः (पुथ बादिहा) लुहामाण-स॰ कि॰ दे॰ 'तुहदामा'-'कवहूँ दस्रो देख कुढ़ियामा~स कि॰ गील गुरूबना ग्रनमा। लुनरा-वि शयश अगानेशसा निरम सुगन्तारा सुन्द्र-पु [ल] रम मना जानेरा सूरी अनुप्रदा माभग्य । -(प्र)क्तिनगी-ब जीरनदा सुग जीनेदा शुनना-छ॰ ति॰ पत्रन कारनाः नई करनाः इराना ।

1141 स्रोप्ता(फ)-वि [तं] भंग करनेवास्त । सोप्त-प॰ (सं॰) बोरी या खुरका मात्र । सोबत−सी॰ [च] गुहियाः पुत्रसीः श्रिकीनाः वित्र । -शात-प॰ ६८पतकिबाँका तमाशा करनेवाका । स्रोतास-प॰ अ॰ पद प्रप्रदा निर्वास विसे सुर्वपर्क किए भागवर असाते और दबाई भी बागमें कांते हैं। स्रोजामी-वि बिसमें कीवान हो या जिससे सीवान निहत्ने। सोवान सेसा, सफद । - ऋव-प पह तरहका मधेत स्टा स्रोबिया-पु॰ नोदेका एक भेद जिसकी तरकारी ननावे भीर बाजोंसे वाक और शक्योंठ तैशार करते हैं। --कंडाई--प्रगहरा दरा रंग। स्रोम-तु [सं:] इसरेका पन लेनेकी इच्छा, लाहपः काकरा, बाढांद्वाः क्यीरताः संज्याः त्यागमे वाक्य होनेबाका कर्म (बै)। -सोहित-वि कोमसे विक Bot। -- विश्वयी(यिन्) - वि धन नेश्रर युद्ध न करने वाका (राजा-की)। -विरह-प कोथका समाव ! —धम्य−वि कोमरदितः साधम-प [से] काळपा काकसाः सुवर्ण । वि॰ सुपाने वाहा । कोसमा−≉ स्र ८६ शासकः तुम्पदोना! स्र फ्रि॰ तुमामा मुख करना। स्रोमभीय-वि [t] तुमानेवाका मनावर कार्ट्यकः। क्रीभारगण्यस्य कि मोदना, मन्द्र दश्या । स क्रि सोहित सम्प होना। सीभार+-वि समाने सुग्व बरनेवाक।। सोमित-दि [सं] मुख हुव्य। मोसी(मिन्)-वि [तं] दिमी वश्तुका कीय रखने बाहर काहची: तस्य । क्षोत्रय-वि [सं] कीयमीव । स्रोम(म)−प मि । धरीरपरके कल रोमः वॅटः कोमनी । -कर्णी-स्थे दक्ष पीपा बरामासी । --कर्कटी-सो॰ अवशेगा । --कर्ण-पु० सुरयोग्र । ~कीर-त वै। ∽रूपा-गर्त -रंध -विवर-प रीपेंडी जड़मेंडा छेर । -मन-पु बानीकी सह करने वान्य रीग मंत्रापन। −द्वीप−प्र वॉ वैसा व्यवसीट। ~पार-प्र• क्या इता (यह क्याच्यामरेश दशरकडे निष थ)। -प्रर-ट थंश मगरी वर्तमान बागन बुर। -- एम-- प्रथा -- एक-- प्र्या -- शक्रि--भी कोमानती। -कताचार-पुतीर। -पाइन-वि पान कारमे सावक तंत्र। ~पादी(दिन्)-वि वि शासीबासा वा बान बाउनेडे सादब तेत्र 1 -बिय-वि जिसके बाजमें विष हो। मुख्यामाहि। - हासस-इरताब । -इर्प-दु रोशंच । -इर्पक्र-दि रोमोबदारी । -इपल-दु स्वातदा दद शिष्य, तश-भराषा पुत्र गृहा रीमांचा । वि अन्यशिक सय क्रवे मारि दारा री में सदे वर देनेवाला (रहप वृक्त आहे) । -शारी(रिष्)-वि शान बाट देनेवाना : -शान-5 \$531=1 क्षोसका(क्षित्र)-९ [तं०] प्रशेष

स्रोमरफ-ए सि॰ो स्रोमही। क्षोग्रही-सी॰ गीरक्षी जातिका एक बानवर । स्रोमगी – सौ० दै॰ 'सीमशे'। कोसदा~प [र्स•] एक काचि (वे अमर माने चार्स द~ य) मेथ भेबा यह बीबा। वि पने श्रीमॉसे प्रका जिसपर बास बनी हो। -कर्ज-पु॰ माँड्में रहनेबाठा एक बामवर ! -कांद्रा-मो॰ कक्षी ! -पग्निका-स्रो यद तरहका कुम्हजा। -पर्जी -पर्जिमी-स्रो मानपर्वे भोवन्। -प्रध्यक-प हिरीन सिरिस। -भार्जार-प॰ कीमरू शृष्टीशका एक विकार जिसके चरीरसे सर्वंद निकलती है गंददिना**य** । क्षोग्रका-की [मंग] काकर्गवाः मांसीः वचः राक्षांत्रसीः महामेता: क्सीस॰ कोमडी: श्रमाडी: पक तरहकी बरशी: दर्गाकी एक अनुचरी। बेल्यंड रचमेवाकी एक स्त्री । कोससी – स्री नि रेक्ष पौचा । स्रोमक्य-प सिंशो ध्रवरीसायन । स्रोमस-पु रि॰ 'कोमरा'। क्रोमीच-प विशेष्ट भीमीच र क्षोसा-ली [संग] सम्। क्रोमाद−द [सं] ज्री वातिका यक क्षीर। कोमासि, कोमासी कोमायकी-स्री (सं) सोसेसे नाभितक एगे हुए यने बास । कोमासिका-सी [म] कोमरी। क्रोमाप्त-इ [मं॰] गीवह, स्याह सोमरी। क्षेत्राशिका—सी मि] शुगकोः होमरो । कोच+-प कोस कोगा गाँछ। स्त्री॰ स्वासा, सी--···वरमी दिसको कोव --सारो॰। व है॰ 'नी''। क्षोबन + – पुढीपन औरः, काव्यः। क्षोर+-वि सील, पंचला शलादित, शतुद्धा पुदान को लोलको उकरी। कामका डुंडल: स्टबन सुमका। मॉस- चार कामन कोरवारा वर्रान कार्य काव'-सर । क्रीरमा॰-म कि॰ यंच्छ दोना सुकनाः हपदमाः सहस्रमाः कोरनाः सिप्तमाः वेरमा । सोरबा!-५ जॉन् होर। स्रोही-स्वी वर्धीको छनाचे समय मानेका बीटा तीनको হছ বাণি ৷ क्रील-वि [मंग] वंबता (हरूता-शनताः सुन्तः अग्रांतः द्यानिकः अरिवरः वदकनेवाना परिवामी वरिवर्गनदीसः बलाकः लोगी । पुनिष । −क्रम − वि सुवक्षी वात सुन बाका । ~घर-पु॰ बानु । - बस्तु (स) - नपन्न -बाद -साचन-वि विशास भोनी बारी शरफ बीरती हों। -बिद्ध-दि॰ कान्यदी ! पु॰ गर्ने। -दिनश-प कोचार्य। शीसक-पुर तथ भारिका नरकता परेका सरकता स्रोसकी-मी कानका नियमा बाग समर्थ । सामना - अ कि दिवना-शन्मा संबन काता। स कि॰ दिलाना। लाला-स्त्री [थ] प्रीयासहरी। ५५मा स्त्री वह दर्प

वृक्षा दिवशी: वह दिश्व प्रकारकी मात्र । हे पु वर्षी-

सुमा≰∼हट्ड सुनाई −= सुंदरता, मलोभाषमा प्रमुख बारमेठी किया वा मनदरी। सुनरा-पु॰ बमुठ क्षश्टनेवालाः यह जानि जी धीरा मादि बनानेका काम करती है ऑक्टिया। स्यमा•~ च कि॰ नक्ता विका। सुस-दि॰ [मं] दिया पुणाः भवत्या सद्या महा जी मूर निया यया का जिलका कीए ही गया की जिल्हा प्रयान न दोगा दो । पुन्त हुआ जाल । - पह-वि जिसमें पर(शब्द)का सजाव ही । -पिंडीव्यक्रिय-वि॰ भी साकारिसे विशव हो ववा हो। -प्रतिश्च-वि विसने भपनी प्रतिसाभग कर दी है। -प्रतिस-वि॰ विदेशहीन । लुसापमा∽स्रौ [सं•] बरमा कर्नद्वारका रह मेर जिनमें बसका यह या पकाविक मंग तम होत है। स्प्यमा+−अ+ कि तुर्दशीना। स्वरी-मी॰ पानी मान्मि मीने वैठा दुवा मैल, दह सुपुष+−वि• सुम्य सुमाना वा सक्तवादाह्याः पु• शिकारीः हेमी । मुचुधमा । – म॰ कि॰ सुन्ध, मोदिव श्रीमा । सुरश-रि॰ [मुं॰] बाएक, राम, आर्राक्षाराचाः सम पाना समाना द्वारा शेक्षितः वरताया हुना । उ व्यापः कामकः । सुरचक-पु (मं) होती व्यक्ति लेखा बहै क्षिता वह मसाध्यान हारा । लुरधनार-ज द्वित सुध्य होना ह सुर्घापति—क्षी त्रीम नारिकाम यक मेर (केएव)? सुरव-पु (अ] बार भाग गूरा, शुकामा । -(स्वे) स्वचाय-पु॰ शास्त्रा सार विचीश वय । रुवाना-वर कि आइव मोदिए रान्युक दीनाः बाजवी पृत्रा काकता करमा । सः सीवी RIMAL PRESENT सुधिल-दि॰ (लं॰) ववहादा हुवा असाहा हुव्ये । Uर−५ रेंछनी जल्बको यस प्राप्त काति को सकट्ट

दसके निद्यानिक है। च्यम न्यमा-पुर सूर्मना इश्युक्त । सुरबना!-म कि शुक्ता करका । PRINTED PRINTS शुरकी-स्री कामदा एक संन्यूतन कामती कासी। हे १ क्षाप्त १ Minia-n tee mien, finni, Le genit हिमस-दोनता रह शरदी शा बन्धा ग्राट बाह्य 1 154 द्वारियामा == अ बेंग्यश Regia ent peris करन गरियान हैं सुरी-को बन्दें Q44-70 [1-18

1171 मुखाय-पुरु [मंत्र] भना । -क्षेत्-पुरु महिनक्षर । -कोशा-म्यो॰ येम । सुकाय-पु॰ [बं॰] दे॰ 'तुकाव'। -केनु-पु दिनाः एक गम । -सहमा(रमन्)-१० वस । सुसित-वि [र्थं •) करदश, शुक्ता दुशा अप्रांश विसंदर तुमात दवाबा दुमात पदरता क्वानत होतर। -कंडल-रि॰ मिलके बुदल दिव रहे हो। -प्रहर-विक विकती पुर्द शहरियोशाना (१६)। +सहय-विक अरिवरदामें विग्रके बाबरमं हिल्दे भी । - स्मास्य-नि (निरंगर) निसंदर प्रश्वरत विद्वते ही । लुपार॰-स्मे॰ गरम भीर तथे दूर हर स्. तुनार ! लुपम-इ [गुं॰] मल दावी। स्तरग-त॰ [र्ग] धनुषका होर ह सुर्वेगी –मो॰ लीहा-मा नही, कार्यण । लुहुमार-भरकि नोहित्र होना सम्पन्ना । सहसीरि-५० द**ढ सदह**नी पान ३ सुद्वार-पुर शीरेका बाम करनवामा। मीरेका बाम दरने वाली एक जाति । [ली.० हहारित ।] सहारी-सी॰ सीरेश्व बागः गुरारक्षे मी । र्खेंबरीन-मी कायग्री। ख-बी॰ तमे हुई बाबु या बसका होता ! सूरू - साहबात --शराबा-धार हवा त्वनेने स्वर आति ही बामा । हरू-त द्वरा दुशा गारा वेल्डा-- िन श्री तुद्ध गरन विकि जान -रामान्य कारावी एका क्वांना अवनी करते (जिल्हा कोर्र शीर जल रहा हो)- दक्ष लूक ल्याची पार्टि -एपुरास । स्पेन नरमोदी नेपी हुई इश सू । हरूबर-पुबन्ध करा समारी- विदि सुस गाँची अपूत दाने । तकि प्रश देशक मुक्त मार्थ -क्री () हाक्रजा+−म दि+ भाष क्रयामा जनामा । च दि+ विषयः।

रहचा-त अन्तर्भा करा करामा निमानती स्वती तिमका मिरा करना थान सम्बद्ध कारा आपना, गुट्टा बोम्हा बाच -वासी। है बचनी बैमानेहा बाब है झुंच -स्राप्ता-बाच नगता बनाता । (श्रीहर्मे)-ब्रशासा-मेर बनामा दिशस्ता, अपनान वर्ग (बीपनाकी मांची) । श्राचीर-को विनासरे। बल्से हुई ५ से स्वरी३ श्रुक -शरसामा-भाष नमाना। दिगोधी प्रशापन दिने श कीर प्रभागन देशा ह सूच-वि [ते] क्या । लुम्सा०-वि देश श्वा ।

म्यानेच्यु वस्तरको । Amie-2 Han and if nett t क्ट्र-ऑ॰ ल्प्पेस स्थित, वरेगे अस्ट तथा देगे शाम । -शारीह-मी बाहरता मण्ड दोनगा पुरा - अपन - अपने के द्वार में के संपत्त VA CHART I

स्तिष-द सरका नक्त मृति।

ीर अपन्ता सुरशक्तारे बद क नेपाला है

का एक किमीना ।

स्रोसाझिका, सीसाझी-श्वी० [सं•] पंक्क मेवीवाडी अवदि ।

कीसार्क-पु (सं•) एक । एवं। -कुंब-पु काश्वना एक टीर्थ।

स्रोसिका−सी [सं] एउ ग्राक, वांगेरी। छोडित-वि॰ [र्च] दिशा हुआ, शुल्य ।

स्प्रेकिमी~की [सं]चंबलाकी। कोलप-दि॰ [सं॰] काछबी, कोसी। कोई वस्तु पातेके

किए मदौर, बरमुद्धा चटीरा माछदा । कोलुपरा-को॰ कोलुपस्ब-पु [र्त•] काकवा काकसा । क्षोद्धपा−सौ [र्स•] मारवनिक रूप्छा, सावसा ।

स्पेरस्म - वि [संग] दे 'कोलव ।

कोराय-वि [मं] पार-बार **क्र**स्टनेबाका । कोसेश्वरा~वि [र्] है० 'जोक्रपक्ष'।

कोबा-की कोमदी। प्रश्नवा नायका पक्षी।

कोशान-प्र [#] बाब बाढि बोनेके किय वानीयें त्वा मिसाकर वैवार किया प्रजा हव ।

कोप्ट-प [सं॰] देकाः विश्वका साम देनेवाणी कोर्ने करता कोहेका मैक, मुरचा (– द्वात-पु क्रेनेने बावाद **ध**रना । ~ध्य -श्रेंजन -सेरव-त क्षे कोवनेका साववः परेका । -सर्वा(हिंग)-वि वेका तीवनेवाका ।

कोइक कोप्यु-प्र [मं] हे 'कोह'। कोर्हेका २-५ कोहेका एल एएका काहि।

क्रोड-वि [र्स॰] सर्विदे रंगता काला कोदेवा कता। प्र क्रीकाः साँग सीमा मादि कोई भी काराः काक वकता रक्ता वनिपास महन्त्री प्रेसामेका काँगा नगर । -- इंडब्स-पु सदम कुछ । -- कडक-पु कोहेकी नंबीए । -क|त-द मुंरका -कार्ऽ-कारक-द मोदार । -कार्यापम-पु॰ रह सिका या कर । -किक्-मु सोटेका मैक । -गाँच-प्र एक बाहि । -बाहक-प्र होतार !-चारकः-दारक-प्र १८ गरक ! -वाकिका —को एक तरस्या पस्तर (की)। —शूम—त (दि] हे॰ 'लोइयुर्य'। —युर्ण~पु॰ कोहेका मैक मोरयाः कोहेका दुरादा । -श-प्र कोहकिन्न कींगा।-शास--कर्म(ल)-प विरुम्। -जिल्-प्रशीरा। -आसी (दिम्)-प शुरामाः बम्बन्त । -नास-प् कीदेवा वाय, नाराय । --पहिका--वी॰ कोहेको तस्त्री ।--पाछ —पु•वंशीर (~पूछ~पु एक पक्षी क्ला। ~प्रतिसा∽ क्षा जिहाके कोरेकी मृति ! - चंबा- ! [वि] वे 'बोहोगी । --बन्द-वि क्षेत्रा बना द्वमा । --सस-प्र मोरका ! --मारक-पु एक शाय ! --मुखिका--स्रो शास मीतो । "रज(स्)-मी दे 'शीरमन्'। ~राजक-द वॉरी । ~शंगर-द [रि॰] वशावका कंसरा कोई वइत मारी चीध ! −किंग−पु॰ १७०में गरा इसा कोना । -श्रीकु-पु वक मरका बरछी ।-श्रीगक-तु द्वाची गॉपनेकी जेमीर ।-र्शकर-पु॰ कर पातुर्वीका मित्रनः इत्यानः। ~संश्लेषकः-प्रः ग्रहायाः। -सार-प्र क्षीकारा क्षीकारकी पंजीर ।

कोइमीर-को सलका नाग वन्यवस्था नीवना नगा

वसका । कोइवास-पु॰ वै॰ 'कोबान् ।

कोइस-वि॰ [सं॰] कोइसे बना हुआ। अलाह बीतना हमा । प्रश्निकाका सक्य कहा ।

कोहांगारक-प सिंशी एक तरका कोडॉॅंगी-सी॰ वड काडी विसमें किसी सिरेक्ट सोक्षा

क्या हो । कोद्दा-त एक मसिक बाह्या हनिवास कीवमिनित बलु, पुर-'दुनी बजी धनमुख भर्ग कोशा भरेत असूत्र'-पन माना काल वैका विश लाका बहुत बहार करोड़ वह । सु॰ -करनाः-देना-श्रतारी बरना शरतरी यस करके बवरेकी फिलान बूर करना। -गहबाव-बुद करना। बुबके किय तैवार शेमा । -बजवा-बुब, संबर् होमा । -वरसमा-दमलान हुद बक्रना । (किसीका) -साममा-(किसीका) प्रयान प्रमुख सामगाः **इ**स मानना । (किसीसे)-क्षेत्रा-क्ष्मां

सामना करना । -(डे) का डिक्क-विच्टर दिस । -का पानी-तनवार आहिपर बढाया आभवाका पानी ! -की

कारी-स्वर दिका -के बने धप्राना-बद्ध बहिन

कार्व करना । —उँडे होमा:~कांतका क्रम ही जाना । क्षोदाक्य−पु[तं] अगुद्र।

कोदास-४ [सं] शास करता क्रोहाबा-अ कि ओहेके पात्रमें रहनेड कारण दिन्हे

वस्तुने बसका स्वाय का रंग कामा । कोब्रामिद्यार-प्र [सं॰] नोराजम-निषि विसमें जबवाधा-

के किय क्षमाँकी सफाई होता है। कोद्दासिय-५ (तं॰) काक क्यरेका मांस ।

क्रीब्रापश−नि सिं•ी सॉरेक्स नगस्या। कोद्वार-पु॰ कोदेका काम करनेनाठी एक दरपाति। -प्राता-त कोदारके काम करनेका स्थाम । -प्री सही न्यह मही विख्में भोडार छोडा नरम करता वा पिनकाता है। -की स्पाही-क्सोस । सुरु -प्रानमें

सेषष्टवर्षि वेचना-वेपकृत्राका बाम करता । कोद्वारी – सी चीदारका काम वा स्वक्ताम ।

कोडि--१० (रं) यह तरहका सराना । कोडिका-ली [र्थ] कोदेवा तमका।

कोडिश-वि [र्श•] काका सनिका बना ध्रमा । पुण्यक रंगः प्रांतन शहा सर्वे। एक हिरमः एक चाना प्रक्रमण वरा तींबाः रच्या कैसरः जबः एकः चंद्रमः श्रीदेश मतना 😘 समाहः बक्त शोकः प्रतक्षका एक रोगः एक रक्ष नामा मन वस्तु ।-**श्रायक-**विष्रकायाव रोक्से प्रस्तु ।-प्रीव-उ कति । नर्ववृत्र-तु केसर । नतुस्त्र-वि साम सिपाः वाका। - जयम-विक क्षिप्रदी करिरे (ब्रोपरी) शाब (वी समी) ही । —पाडकः—दि विसन्धे तक्षेत्र अभी सम हो (क्या) । -पुष्पक्र-पुरु अमार । -मुक्ति-शी दक्क क्षोमती क्यर (~क्ष्टिका-सी ५६) -शग~ यु कान (ग । -बासा(सस्)-वि विस्के वल मान ही वा रक्तमे रेंगे ही।-इस्तपम्न-त अक क्यन। कोहितक-प्र [सं] काक मामक रक्षा संगत मदा हाँसा

वाँगाः एक वाग ।

सहमा-स कि वनरदरती छीननाः नरवादः तनाद करमाः भीने सम्बाद अनुषित इंग्से क्रिसेका पन के हेना; हरिवसे अधिक दाम केना, उननाः वशीभृत करमा मोदनाः मोगनः । सु॰ ==साना=नावायव दंपसे किही-का वस भीगता, है हैमा !-पाटला-सुरमार करना ! स्टि॰-सी॰ दे॰ 'स्ट्र'। स्ता-प पक पैर्गवर को इलाडीमके मतीये ने और बिनके द्वारा मर्वादेव संप्रदान करामके अनुसाद पुरुष-मैञ्जनके पापसे ईश्वरका कीपमाञ्चन क्षीकर सब क्षी गया। की मद्द्री। वि॰ [सुं॰] संदित, विमक्त ! खता-सी [सं] मददी: प्रफोने जैसी पुंडियाँ (कहा नाता है, ने मकड़ी के मुठरोसे होता है)। चौटा । -ततु-पुर सद्द्रीका आक्षा-पष्ट-पु सद्द्रीका संद्रा । -सर्क टक-प्र• बनमानुस । सकात-प्रसि] भौदा। **स्तामप−इ**[सं] मक्की नामक शेग। खुतारि−पु[६७] एक ध्रुप । वेद्धका व्यक्तिः कोटेशज । † को सुत्राठी । सुरु – क्यामा-हरका भाग बनाना ।

स्तुतारि-चु (६०) एक प्रथ ।
स्तुतिका-स्त्री (६०) होता सकते।
स्तुतिका-स्त्री (६०) होता सकते।
स्तुति-चु स्तुत मामके पैर्ययर सारा प्रवादिक संपदाव वा
संक्ष्मा स्वाद्यक कामके पर्ययर सारा प्रवादिक संपदाव वा
संक्ष्म-स्वाद्यक कामके स्तुत्री होता है स्त्री है स्त्री हुना।
स्त्री-चु रे 'कीन ; (६) वृष्टा वि क्ष्मा हुना।
मह दिया दुना। कुतरा दुव्या आहता किया हुना।
मह दिया दुना। कुतरा दुव्या आहता किया हुना।
मह दुव्यक्षित स्त्री से मह कर दिवे हैं।
पदान-दि विस्ते क्ष्मा को मह कर दिवे हैं।
पदानक-दु स्त्रीयरां।
स्त्रीक-दु स्त्रीयरां।
स्त्रीय क्ष्मा कामकर्षा हुना।
स्त्रीय क्ष्मा हुना।
स्त्रीय क्ष्मा विद्यक स्त्रीका)। (६) वृष्ण, लोग्रहः।
स्त्रमा व्यवस्त्रीय क्ष्मा वादा।
स्त्रमा व्यवस्त्रीय क्ष्मा वादा।

—विच−ि प्रम दंक मारमेनाला । प्रे चेमा बीद (बिच्छ भारि)। सम्बी:-सो नोमक्तः ख्यना=- भ• कि• स्कतः नरदशाः समरां नि सवाना जवान (तिरस्कारमें)। स्तुना-म∘ति दे 'तुरना'। ख्नानदि दिना दाक्दाः वदामः महदाय । सम्बन्ध [मं] मेरका स्ट्रॉ-वि नाममा चम्द्र। मु॰ -बनाना-नूर्य ढइ-राना (वार्तीमे)। सपदत्स निदा बर्जा। হুৱ†−নী হু। सहरू - भी नामका। सेंद−५ [६] मन। धिय-त नेवा हुआ मन को मोटी वशीके स्वमें निक सँदी-मा वदरी मारिदा गात ५वा दुशा मत १ सेंदुश्यां – चु कायबदा एक श्विशीना वी विहाने वा

लेंस-५ [बं] स्टिप्टेको बेंद्रीभृत बर्दनेशना सीधेका |

डन्डानेश्र सहा ही बाता है।

रीक 1 र्खेंडचां~सी दे• 'सेंडिया'। र्वेड्या~प (थोपायाँका) समूद, सुंद । केंद्रवी-सी॰ (मेवी, नकरियों मारिका) सुंह। क्षे - म शह रोहरा तह। **केहां** −थ तक, प्रवित्त । छेडूँ –हाँ • कपसी; विपदानेदे कामके हिए बोहकर प्रकामा हुमा भाराः रहेंकी बोहाईके किए गक्षा घोटा हुमा सुरको सिमित वारीक धृता। - पुँजी - स्त्री सर्वस्य सारी सेक्सर-तु[सं∘] व्यास्याम,भारत प्रवयम ।~बाज्ञी--की सूर केमबर दैना। बहुद शेष्ठना बद्धवास स्टरना। सु॰ -साइना-बोडके साथ शेहना वा व्यास्यान देना। क्षेत्रचरर−पु (अं॰] बच्चा भावन करनेवासाः वप-प्राप्ताः क्हा केस-पु [सं] पंक्तिः किनिः किकानटः किन्नी नातः पत्रः केसा, विसाव-विद्याव: देवता । 🔸 वि: विधाने या केसा करने योग्यः ≠ अर्थे पद्दी शतः रेखा। ~पत्र~पु, -पत्तिका-ली पदा दस्तात्रका -पद्गति -प्रयाक्षी-सी क्रिक्ते के हैसी। −शाका नमी विद्यासा सिम काबेका विचालन। -शास्त्रिक-पु लेख शास्त्रका छात्र। -साधन-पु॰ टिसनेदा धापन । -हार्-हारक-पु॰ वववाहकः। –हारी(रिमृ)-वि॰ पत्र हे जामेवाका । क्ष्मक-पु [मं] किपिकारः क्रियनंत्राकाः, हृदः भित्रकारः शंक-रचविताः पत्राविके किए केस किसनेवासाः पत्रः इत। ~प्रमाद्-पु विपिदारकी भृत । क्षेत्रम-वि [सं] सुरवनेवालाः वर्धेवदः। दुः विद्यमेदा कामा किएनेकी कका विश्वकारी। कृतना, देखा कमाना। कै बमन करमा। भीषवस रखादि सात बाहुजी जिद्दीवी-की पत्तका करमाः वरीयमः कारमाः मरीयमा (आ वे)। त्रितीचीका कम्मीकरण करनेवाली औषवा भीत्रपत्र ताह-पना रक तरहरून सरश्ंदा (जिसकी दलम बनावी जाती हैं)। खाँग्री। सुरवनेका भीजार । -वरित्त-स्री साह बालुओं विदेशों, बमन आदिको बगला करनेवाली पिक्यारी ! ∼साधन−पुक्षम ना{दे। केन्त्रमहारण-वि किशनेशका नेराद्वा छेखना॰-छ कि नियानाः दिश बनामा। दिमाद सर्गनाः धीयमा समलमा । शु - अंग्यमा- भंदाव अगामाः कृतनाः स्रॉप करना । संक्रिक-पु [सं•] पवदाइका नियानेवालाः अपने वरते दूसरंग दरनावर करानेवाचा निरम्द व्यक्ति। स्प्रमिका−मी॰ [तं] शुन्दा। क्षेत्रती-स्रो [सं•] विधने अधर पतानेका साथस, क्षम वर्षपृक्षिकाः करती । मुक-बरामा-क्रिमना श्रद परणा । क्यबीप−दि [सं] विसने धोष्या भोगपा करि थरानेमें क्यारेगी। सम्बद्धन-द्र[से]देवनेहर्सा

सम्बा⊶मी [मं•] रेमाः विषयः विदि दिदः दिनासाः

मेर ६ र गा शरीतकर अञ्चापिने समार्थ स्ताना ।

सोहिसांग-प [सं] मंगल प्रदर कांपिक नहां । कोडिताश-प [सं] एक तरहका साँप कोवक। विष्णुः स्करका एक बनुचरः काल पासाः काँचा जाँव । कोडिसाक्षक∽पु[र्स•] एक सॉप । स्रोहिताधिय-पुर्सि मेगल महा सोडिसामम-वि [सं] तात मेंद्रवाता । प्र नेवका । छोदिवाय(स्)-पु [पं] वाँना। कोडिसायस-वि [मं] कान बाहुते विक्रिता प effer t सोडितास-५ [सं] अधि: शिव। सोहितिमा(मन्)-सी [मं] कालिमा। क्येडितीक-प्रस्कि एक बाद या शिक्षा। स्रोडितेशज-दि [सं] हाह औदीवाहा । सोडियोद-पु [तं] एक शरक । वि साक पानीवाना । कोदिस्य-प [मं] प्रदापत्र नदः एक समुद्रः पक तरहस्य वास । कोडिया-स्री [सं] ज्यानदीः व्याभया । स्रोहितिका-स्रो [मं•] यह प्रमाः एक शेथा । **धोडि**ली – लो • [सं } ठाठ वर्षकी सी । सोडिबी-श−सी [सं•] काव दांति। मोदिया-पुर सोदेका कारवार, स्वापार करनेवाला। मारवादी बनियोंकी एक वातिः काल बना कोहेकी गोली। विकीक्षेत्राः लाहः रमकाः (जानवर भादि) । लाडी-न्या प्रत्युवधी काली-'होत मीर लीडी लायत हुए अनम सबै - शासगीता कीरी व चुननी। सुक = फरमा − पी फरना । सोह-५० रक, वह। सोहीसम-५ [मं] सीना। सोद्य-५ [मं] रोतन। मी 🗝 भ तकः, प्रयाः समान वश्यरः। स्तिमार-म हि॰ पमदनाः पदापीर दीनाः वृहनः रियाई देना ।

सींग-सी एक प्रकारका बुध या कनको कती। नाक, कानका गढ आभुक्य । −चिका−तु वसनके सकते बनाया आमेशका यह तरहवा दवाव । -महद्ध-प एक सरहका पूछ । - लहा-मी वक नेगना निकाई। सींगरा-म बरसानमें बगमेबाओ यह बास । की गिया मिर्च-मी एक सरहको छोग्रे निर्च बी बटन महमी होती है। मीटा-तु शोदरा अवका ममबीन मुंदर उदबा।

मारान । -पन-प साटा दीमाः स्वरूपमः रिक्षोर्यम । -(हे)बाज्ञ-वि प बाक्क्ट्रीने देव भीर भगकृतिस संबंध करनेवाला । वि की किशीर थयदे बानकोमे अमुचित्र मंदंच १६१ नंबानी ग्रीहा (सी) । -बाप्ति-सी॰ सी श्रम होना कीटोने अनुधिन संदेश रसका । कींद्रा!-पुरेशीदा । मॅर्रा-को दानी रहनजी मञ्जूरजी। स्पेद-दुदमसमा

र्गीद्रारं -पुरु पर्मा वर्षा ।

रुखि-पुदे 'ठाँदा। सौ∽को रुपा, ज्याका दोपदिका शास्त्रो। चाह-काग भूमा बाद्या कामना । सीमा चित्र कातुः क्रदर । क्षीकमा! - वश् क्रि देख प्रशा सीकालिक-प्रश्री है थें यह स्वर्ग ज्ञानोकी बास करनगर जीव (वै)। सीका!-५ करहा सीकायतिक-पु॰ [शं॰] चार्शकका अनुवादी जारितक। सीकिक-वि [एं॰] कोकमा सांसारिका व्यवहार-संबंधा

व्यावदारिकः सामान्य । प्र संसारिक व्यवदार, बसना सात मात्राओं के छंद्र । क्रीकिकान्नि−की [र्ग] वह मंद्रि विसका संस्कार न इसा हो सामान्य अदि । कीकी (-लो कीमा कर्डा मनकेमें लगावर शराव लुवानेकी नहीं । कीरय-वि [मं] को सारे संसारमें फैका हो सामास्य। सीगाक्षि – पु. [मं] धर्मशासद एक प्राचीन भावार्य। क्षीब्र-स्ता [ब] बादामा बादाम मिनाहर बनाबी धर्म यक तरहकी शरकी। सीज्ञात−सा [स] है 'कीदिवात'। ~की शार~ समोसेकी गीर । सीजियात-की [अ] शीवका ना । वादामका दलवा।

सीलीमा-त बारामका इतवाः वस मिठाई विश्वमें

सीबोरा!-पु॰ वातु यक्तमेका काम बरनेवाका । सीह-न्दी॰ सीरना पुनाव । -पदा-पु १० 'सीरपरा' ।

बादाम विश्वा पीसकर बासन है।

-पौर-मी दी ग्या छपाई। बल्डमे-प्लटनेदा द्वामा दे 'लोरपोट । -फेर-पु बारी परिवर्गन क्रम्ट-पेर । कीरमा-अ कि॰ वापस जाना फिरमा दोछ मेंड फेरनाः सुकर जाना। स कि बन्द्रना बन्द्रना इधरते दशर दशमा । सीरान-स्थे सीरनेश्चे रिचा। शीराना-स कि बाक्न बरनाः फेरना, बन्ननाः प्रसर्थ वर बायम बरमा। उत्तर-पुक्तर करमा । सीरामी-म कीम्डी बार १ सीवा-५० पुरुषध् अनमिद्रिय ।

नरम दहनी । क्षीम≉−पुन्दगमग्रहः सौनहारां – पु प्रमन काटनेशना । सीमा!-१० जानवरोका अपना और विद्यान वर साब वींबनेदी रस्पी। कमलयी बटाई र्वंबन समादस । क रि संग्रा

सीह लीव्सा-प धामनके काम आनेवाशी अरहरकी

सीबी−को कमुनदी दशस्य भदनारमें जानसामा कटा हुआ एउम । ७ व व्ययोग दस्यत् । सौरी :- सी विटवा-भी सुनि शारका कीह गई हरि बीरि के मीरिक में सब्दाओं -शुकाति ।

शीस्य−<u>व</u>्वि•] पंचलतः अस्थित्ताः सीधा नामसा । शीस-९ [का॰] त्मि दीनः निराधः प्रभा ।

-बलय-प भारी भौरते मेरनेशकी रमा । -विश्व-भी निप्रांदन। −र्मापे−भी धौईाँवा श्रीरशका सन्ता-प्र दिसारा भाव-ववधा क्योराः श्रीका विवार । -पत्तर-पु • -बद्दी-मी श्रिमान-दिनावदा शामकः रीकारही । मु॰ -देवद करमा-दिसाव साफ करनाः भीपर बरना । -पूरा या माक करना-दिमार सुद्रगा बरमा ।

रेगार्ड सेगार्ड-व सिंगी विश्ववेदे वायदा राष्ट्रवर । हेरिका-ओ [मं] छोटी रेगाः विसमेशनी हर्यः

रेख वा प्रंव निरानेशको । सेनित-दि॰ [मं॰] तिम्तराया हुआ। पिना हुजा । स्रिमी-सी [मंग]शरही।

हेररी(सिन्)-वि [सं] मॉबमे, यरीपनेशका सम शका । र्रेग्रीसक−५० [मं] १४-सह्य ।

क्षेत्रे-अ शिवारानुमार गमशर्ने । मेल्य−वि+ [मं] सरीयने वाचा निक्रमे बोम्बाओ निमनेके निर्देशी र पुरु नेम निमनेकी बन्ना विश्वा

पपः रानार्या - प्रत−रि को निसान्यो दर्दे ददा क्षिम गया थो । ≔पणिया∸सौ क्ष्मम गुलिका शाहि । -इस-द श्रीतान-पत्र । -पत्र -पत्रक्र-त्र क्याः दश दरवानेत्रः वाहवा दशा । - प्रसंत-कु दश्वानेत्रा

धर्गनामा । - स्थाप-९ ४५१९ । म्प्रेयस्मद्र∽(दे [म्ं•] (न्या-क्नी दिशा दक्षा दरप्रादेशी ।

सेजां-भादे सेहर। शाम-पु (का] यह तरहती क्षमान क्लिमें ठॉटनी बग्रह भीरेकी अंबीर मती हीती है और जिमके म्बारे

बमान की जानी है। जरम और संधीनी वमान विक पर शीर्रदा नीवा भण्यान किया जाता है। रोज(गां−५ क्येका दक्ष विशेष (न वा द्वा

मेजिस-पुदेश तेल्स ह के जिल्लाहिय – दि (से) ध्यपरया, दियान भिरी। –

कर्में क्की −क्षी व्यवस्थितिया स्था। ∽र्वे विका-की म्बनस्वातीका वरिवार् । क्षेत्रुर=स्रो ११९१ मु मे १५३ निकामे की रस्ती ।

मेजुरा-द्र देश नेप्टरा है वस अयहनी पान ह सिक्सीर-को देव नेहर 1

सर-१६६० हत्या म रिके बोल्ने बना प्रशास्त्री सव ह U [n] Gen uner all mirelet gie et alg.

द ला (दर्मदारी हैंस भारि) । -श्री-सी नवद गैन मानेता हादगाने कर्रहरें कर्र जोड बगा दर भी जीता Brut-us fas faut meiter en ermit gereit

uttin atmi ft & Wart mage feine ut ! श्राना ।

हेरा-पु (अं) कटरा हि प्या - अवस-पुर भग्ने महिल्ली द्वित है है। स्ट्राह्म के उत्तरी दिद्वी

ritge meing titet um Zui biff : **₩21.4 - 40** 57° 6

RUNI-R DAT fettet s

ga-le [4] at all egel tang milgit; neim, A et nie beaturtaga ;

कपर मीचे बोनेमें बचाने और 5 था रमाधि निर वैस्तिवेदि बीवमें समामा प्राप्तमाना प्रोपा कन्ता न्होस्ड~षु क्षेत्र दण्नेदा मॉया।

केंद्री--११» [#] शर्ड भारतादी समी। अ^{रा}र्णा को बस्या थी। अंदेशी पीशनरामा सी (तुरे अर्देव)। -शॉररर-धो॰ मीनीएर (

छेत∽पु० [गं•] अ¦म् । र्रेषो-पुरेश नोबो ।

सेंद्री-पुरु पानुसर्ने वाबा श्रानेशाचा एवं सुरहवा गीत । संद्रकार्न-पु• रह तररको हह*ी* ५४।

केंद्री रं –सी॰ ताबाबदे कम समेराहो ४४ मो विशेषण कुँव चौत्री करहे हैं लिए इसके श्रीये हैं रिगी है वैश टुमा मासका पुरुष काम भारत ।

सन-पुर्व[है] देनेद्री दिशा प्राप्त पन भएता गाना। -- बार-प यहावन अपनेशा, बनायर्ग - देव-त्र नेमादेवा बारानप्रशमा कथ नेमेरीया दार महाबनी । सुरु - इम स दोता- मरोक्षप्र-रेश म

हीना । मेम∼सी (अं∗) गरी।

ब्रमहार्व∼पुर कहनेशारः कैन्शना ३

केमा-स कि बात बरना पहुन्ता, बामना गरी-बनाः मीतना अविदार य नेमें बरनाः वदारः यने नेमाः जापने पुण्या पश्चमाः जगनानी बरजाः वि १ कामका मार प्रधाना। कि की श्रीकार पारम करना (पृष्ठाचे निर्मुण नेवा)। नेवन बरमाः संनेप कामा । के भी दिया नवा समादेशा-पुरु मेन देशा ल भाषा-राजा । शुरु के प्रवृत्ता-६५ पान देशर भाग काशा दिला गर्ना वा सा वर्गात स्टामा अ बालवा-मध् बाराद बरम्प दरामाः द्वा करमा निष्टाना (दीर्व कार्य) । से हबना-भारते नेप्क दूसरी-को भी तर बरमा । से-देकर-बी(यातका दर्शिक्ष में है है करमा पुरात नदरार दारणा सार्थास परिवास काल बरना । क्षेत्रा शब्द स देशा थी-वीर्ड बरोजन वतनत संबोधा । क्षेत्रीहे हैमें पुरुषा-नामने शाने हादि होता। के पासना-ग्रेट राग्द्र नेजा। **ब्ह्र बहन्तर—१**९११ गर्नेश्च हर अल्ला रेजान भरित है अपने नावनश्चरनाः विशेषणश्चर मुझे हर्दित

मत्र हो जन्ता । से शासा-भदने स व वहरू कारों। क्षे स्वाहा-समीदरशस्य ६ (४) ३ हेनिन (निदोन्ध)-१८०० १०२४ वा अ^त रा*ने*ण

tite dett me are e titke p tite 网络 有效整体 有效分析

स्पन्त [] स्थे रेन्स्स रेस्स [] इन्हेंड अमेरेकानी बोर्ड कोओ थी हा प्रशास करहता मानक रेटर Cal that Age marky was dath a sain वर्शनमी-को शंबदेड १ दुर्ग को दो गी। Remift fei far an beier erfet arben fi

ESTON SEES A LES Sales [4] gratten ge etraleen

कीइ-पु (से) डीहाः स्रस्तासः, दशियार । वि॰ कोवी ना प्रेंदिका नता प्रभा; काकः लाक वक्तरेसे भंगंत्र रहाने बास्ता । -कार-पुर्वोद्दार । -चारक-पुण्य मरकः -ज-पु मीरचाः -वंध-पु कीरेकी वंबीर इमक्की । −भांड−पु कोहेका पात्र । −भू−की० करिकी कराही।-सस-पु॰ सोहेका सैक। -धुरा-पु भीदके माध्यक्त प्रयोगका येतिहासिक काक !-व्हेक्ट-प्र र्षे **'काइएंक'। – सार** – म**ाइ**मिनित एक समय । सीड-सी भि•े हिस्सेची तबती परिवार परंतरका पचा। - मर्बास-म प्रतक्ती प्रके पूर्वी समावर करनेवाला विज्ञार । -(हे) पाक-सी॰ कोरी परिवा । -पेशामी-स्रो क्यालकेल, आव्यके**स**ः -सङ्कृत--सी मुख्यमानीके विवासामुद्दार वद परिवा विसवर मनुष्यके संपूर्व कर्म किसे बीते हैं और विसर्गे कीई देर-फेर नहीं हो संबता। फीडा-+ प्र+ है 'क्रोडा) को (एं॰) ठोंदे भाविकी कशकी ।

स्तीहाचारी-पु सिन् वाहारिया वागरेसावा। "
स्तीहायस-पिन सिन वोही वा तरिवा नगा।
स्तीहायस-पु सि] कोहे के सोगरे करनेदावा रा वाहार।
स्तीहाय-पु सि] कोहे के सोगरे करनेदावा रा वाहार।
स्तीहाय-पु कोहक कारकार करनेदाटो यह बारे कोहिया।
स्तीहाय-पु सि] रिश्वक कारकार करनेदाटो यह बारे कोहिया।
स्तिहाय-पु सि] देन 'स्तिहाय'! स्तीहाय-पु सि] जह सरका बाता अस्पुत्र करा व्य साहाय कर कांत्र एक तीने कांक्र के कांत्र करा व्य साहाय कर कांत्र एक तीने कांक्र के कांत्र करा व्य साहाय करा हो।
स्ताहाय करा हो।
स्ताहाय करा हो।
स्ताहाय करा हो।
स्ताहाय करा हो।

_ ` =

ब्र—देवनायरी वर्णमाञ्चला क्रमतीसवाँ और जीवा अंकस्य ह क्री । बचारयस्थान इंतीष्ठ । क्षंक्र−ति देश सुकाहमा≀ तु (ते॰) नदीका क्षमणः नदीक्का भाषारा आध्यो । −नाक∽को अरोरको रूक माद्यो । - नास्त्री-स्त्री <u>शत</u>्रमा नाद्यो । - सेन-<u>प</u>्र० ब्रमस्तका पेड़ । संबद-विश्टेता। निवर । वंकरक-तु [सं] एक पराव । यंकर-पु [सं] मदीका मीह। **बंब**ा∽भी [मं] चारवामेंका अगरण विस्ता को रोक्के क्रिय सँचा बना दोवा है। र्वकासा नमी [मं] रंगाकडी पुरानी राजनानी । वकिनी-स्रो [सं] व्ह वीवा। वीक्स-वि कुछकुछ देवा। वंक्रिक-वि [मृंग] ब्रॉया । वृष्य-दि (मृं») देशा सवीका नगमजीस । वंकि-छो [सं] पर्श्वाः (वीहे जावि) वासवरीकी वसकीः क्षरीः एक प्राचीम वाजा ह बंक्षण-पु (सं०) पेड्र और व्यविके वीचका मागा कर-संधि । कोन्-भी [सं] अवसस मरीः नंगको एक शासा । र्बय-द [थे] रेवाका एक पासु, रॉवाा रोनेका भरमा क्यासः नेगनः यद्य सहर्वधी राजाः एक प्रदासः एक दस्य । -ज-प्र सिद्दा पीतल (वि वंशावसे करफा वंशावी । -जीवय-दु घोदी । -देश-दु वंगाळा । -सल-स्थान वातु सीलाः —शुक्तमञ्ज्ञ पोतकः कीताः। न्होन न्हानक-पु कान कृतीवाला **व**गरस्य । धगक-प्रतिशी एक वृक्ष ।

र्वगन-दु (सं] वैगनः

वंगका-सा (नै॰) एक शामिनी।

वंगारि-प्र [सं•] इरताक। वंगाछ-पु[र्ग•] एक राय। वंगासी-का [सं] एक रामिना। वीरिका-मी॰ [मं] ठेवरी दक्षिता ! **थंध−**पु[तं]**पक्ष**-विशेष (र्वचक-वि [मं] उन पूर्वः यकः। पुश्नीरशः मीध माध्यो। शस्तु शेवका । **र्वक्ष**रा न्यों [मं•] इसी पूर्तता । यंचति – पुष्ति | धानि । र्यचय∽पु[नं•] पूर्तः क्रोबकः समय । बंचन-पु (वं) क्यो। पूर्वता प्रवासमा । -चंचुता-की अगोर्थे कुछकता । न्यबन्धन्ति अगोको श्रोर मन्त्र । - पारा - ९ अमेका सम्बाम । वीचना- । कि हतना भोका देनार । समा वर्षिना। सी. [सं] इतका उन्होः मद्र काण वालमा। 🗝 वंदित-वि उन्हेमें बद्यका वंचनीय-वि (सं) परिस्ताय करवे याग्यः भी उगा वा र्षचिता(११)-वि, पुर्शिः) हमः पूर्तः। वंशित-वि [र्ग+] स्था भोद्धा द्वावा द्रभा, मतारिता रदित निमुख । र्वेचिता-सी [स०] वय सरहकी पहेंगी। र्शशुक्तः वश्यकः—विश् (शेश्) भृतेः वेर्रमाव । क्ष्य-वि [गं०] हमा जानेताकाः स्वाप्त ! बॅल्रफ़−प़ [नं•] निविद्या वाहीदा वेलस १वक्यमा ^{१६} पक्षीः वक्ष सदी । —हस—पु कक्षोकः । —प्रिव*—*5° वंश्रसक−प्र [मं] एक पीवाः वद पद्मा । वृष्टिका-न्यो॰ [सं] कांपक दूच देवेदानी गादा दक नरी। वंड-वि [सं] पुन्तव्योगः कविवादितः। द्व॰ कविवादिव

श्रविमुच्छेदवर-अ**र्वत**निक 113 अविष-विर्णार्थको विषक्षीतः विषकारक, रक्षक । पुरु समुद्रः विमुक्तेस्वर-पु•[सं•] कार्याका एक प्रसिक्त दिव-सिंग । सविपुत्त-वि [नंब] सविभक्त, मिला हुमा, संयुक्ता की राजाः आकाश । कविषय∽दि० [सं] ओ किसी शंदियका दिपम न दो र्वर्भ हुना हा । भगोष्यः प्रतिपादनके भयोध्या निर्विषयः । 🖫 समानः ष्मवियोग-ति• [मं] संबद्धः मिन्न हुआ । पु• उपस्थितिः **छोपा इंत्रिकोके विवयोंकी उपेक्षा** ! संक्षेत्र । -ब्रह-पु० मार्गशीय स्रष्टा तृतीवादी दामेपाला अधिया—सी० [ग्रं॰] निर्देश तुग 1 स्रविषी-स्रो॰ (सं] पृथ्वी नदी भारता । व्यक्तित-नि [मं•] विरामहोन- व्यनिशृत्त स्रगा दुशाः भविसर्गी(र्गिन्)-वि [सं॰] म इटनेवारा, भगातार परिवक्ता म स्मातार, निरंतर। बना रहनवाका (स्वर)। विरिद्यि को [मं] विरामका समावः शासकि । अधिसद्या-वि [सं०] (वह पदार्थ) को रोग छत्पन्न करे। मविरमाव-अ नावक, वेकार । बिसमें दीई गुल्म सहो। -दुम-पु वह दुग विसमें छन्त बबिरस-वि [म0] मिला, मृटा हुआ अविरता यभा। प्रवेश न कर शके (की॰)। -धारासार-प संपानार होनेवाको मुसलवार हृष्टि । अविस्तर-वि॰ [मै॰] बोडी लंगाईका मंशित । स्वीरहित-वि [मं•] सविज्ञक, जी पृथक म ही। अविस्तीर्ण-वि॰ (सं) जो अभिक न फैकाकर छाटा कर विराम-वि [मं•] दिरामहोत । अ॰ कगातार विना दिवा गवा हो। ब्बरेश्वस्त्राये । अविस्तृत−वि [मं] रुमा दुला, यमा । विरुद्-वि [सं] वो विरुद्ध सहो अमतिवृक्षः अनुकृतः। अविद्व - वि० गविनाधी वीहर । विरायन-पु[मं] कृष्य कृत्नेवासी योज । अविडित-वि॰ [र्स॰] शासविस्तः निविद्यः पदानिना विशोध-पु [मं] विरोधका अभाव मेण सामंबस्य। भन्चित्। विश्विष्ट - विश्व [सं] विश्ववरहित । का० स्थयर तुरत । अवी-सी [सं] क्लुमती की वस्कुस्थी। भविसहर-वि [मं•] विसका कोई छठन न हो। अनि-अवीचि-दि॰ [र्स॰] दिना कहराँका । पु एक नर्रका

षविसित्र-विक [संव] स कियानवाकाः बुरा कियानेवाकाः क्रिवेशक्से निष् धविस्प्रेक्नमाध~स कि दं 'व्यवसीयां'। व्यविवासित-वि [सं] अनुविष्ट विसन्ने विषयमें व्यवना व हो। व्यविदाद-पु [मं०] दिवादका लगाव, सदमति। वि निवार रहित । विवाहित-दि [सं०] दिन व्वाहा काँरा !

विविद्य-वि सि विविविद्या मेवरहिता मानप्रनिकः

रिस्द ।

विका-को [सं] ग्रेह।

निरेक्ट(हिंह । मविषेत्र-पुरु (संर) भका-पुरा समञ्ज्ञ सलिका सभावा व्यविवादः नासमझी । विविद्या-सा [म्-] अविदेश । विवेडी(किन्)-वि [मंग] निकारित माममश । मेबिसेक-वि [ग्रं॰] शंकारदितः नि^{न्}र । विद्युत्-वि [सं०] को द्युक्त म हो अपविषः मिकावरी । विशेष-वि [मं] मेदरवित समान पुर मदक वर्गहा मनाव सुमानताः पहताः मूरम भूत (स्रो)। -सम-

विक्रम-पुनि] विश्वासका भगाव अविश्वास । सविद्यात-वि [सं∗] स क्रमेंबाकाः अविरामः जो श्री-मस्त म दो । भ कगातार । विषसर्गाष∽वि [मं•] जो विधामके बीम्ब म हो । मविकाल-वि [तं] किनदा विकास स हो संकेशका

भविश्वास-प [मं०] विश्वानका न होमा ने-एउडारीः रोग सीर । मविश्वामी(मिन्)-दि [गं] विश्वास स करनेवालाः

महारोना जी विश्वामहे मीम्य न शा ।

उ पानिरे संबोध भनेतेने एक (न्या)।

अवेग०-पुत्र 'आवेदा'। अधेन्ता∼न्त्री॰ [पद्द रें] पार्यानयोंको मुख्य वर्गे-पुरदार डे॰-अदेरता । अर्थतनिक-वि॰ (रं॰) वैतम मधाने वा मधेनवादा

सवीज, सवीजक-वि॰ [धुं॰] दे॰ 'सरीज'।

अवत-वि [d] भी रोका सगमा दी ने पुता हुना

अकृति-वि॰ [धं] अस्तित्वहोम, रिविहर्दान; वीविका-

अवृद्धिक-वि॰ [सं॰]विना वृद्धि वा स्त्रका । पु॰ मृत्त पन।

श्रदेशय-पु• [तुं•] देवना। निरोधम दंधभात। वि•

अविण-वि [मं] कर्पारदिता वो साथ मिलकर मवादित

बारेल-दि॰ मि॰ो सीमारहितः मनागरिक। प॰ धार्म

अवंसा∽मी [मं] बतुरपुरू समर, कुरेना; वरित

अवेशकीय-वि [व] देशने बोस्व निरीक्षण मोस्य ।

रहित । सी जीविरुका जमानः रिवरिका समान ।

अस्या-म॰ (सं] ध्वबं नशी सफ्रस्तापूर्वक (

सबेक्षा-ची [मं] देखना ध्यान, खबाड ।

अवेत-वि [र्ग•] रोता प्रभा माहः संयक्तः

श्रावेद्या-न्यी निं∘ो विचाइके संबोध्य स्त्री ।

अवैद्य−दि॰ सि विदेश जनस्य । प्र रहता।

अवीका−सी० [सं] दे 'क्नीबा'।

बर्गाक्ता नपरामृत् ।

हेच-पाठ दरनेवाना ।

अवेज+-५ श्रका।

शबेदि-स्तै (मृं] कड़ास ।

ਸ 🐧 (ਜਾੀ)।

योपन अपहर ।

तौर्ज वा चुरा वि

श्रवीरा−सी०[सं•] पुत्रद्दीना निषदा।

अवृष्टि-सी [मं] अवर्षेण मूर्गा।

```
'मानरेरी'।
 सर्वदिक-विश् मिली वेदविष्या अवदीला।
 अवदा-वि॰ [र्न॰] वो वैय या विश्वान गर्ही है।
 कर्षप-विश् [मंग] विविविषय, अविदेश विधाननिवर्ध,
  गैर-जारैमा ।
 भविमत्य-पु॰ [र्ष॰] वेदमायः मत्तर्भरका समाव । वि॰
  सर्वसम्मत् ।
 क्योद्धण-प [थं•] हाथ विरछा करने कर छिरकमा ।
 अवोद~वि॰ [र्ह्न•] गीना, भाई । वः गीठा दरमा ।
 अर्घरा-वि॰ [र्न•] जी देश मेदा न हो, सौदा।
 शरवंतीत-वि॰ वि॰ विछदे शंग देह न हों।
 भाष्येगा, अध्येषा-सा [सं०] शृष्टिशी, गेशीय।
 अन्यज्ञम-वि॰ [मं॰] विदर्शतता सुवद्यपरहिता अर्पहा
  विना सीयका (पहा) । यु विना सीयका पहा ।
 शस्त्रक-वि+ [मं ] भगरत, अरहपा अग्रेया अनाविर्मता
  भदाता मनुधार्यः सनिरिचतः। पुरु वृतः प्रार्थतः शरिवाः
  जनाः भारमाः पुरुष धरीछ जिथः विष्णः सामदेवः सूर्ये
  व्यक्ति गुनुप्ति जनस्या । -क्रिया-स्योग,-गानिहा-नुग
  गीजगणितका एक दिसार । -गति-दि॰ अस्तरित गणन
  करनेवाला ।-पश्-दि॰ बिसम्बा बदारण महो सकै।
  ~राग-दि॰ इसदा सान, ग्रहाबी ।~राशि~सी  वह
  राधि क्षित्रका मान निश्चित्र न हो (बी. व०)।~सक्कण~
  म श्रिन। -सिंग-नि॰ (वह रोग) जिसके सद्यय स्वर
             महत्त्व (थां•) ।-नाम्य-प कथ्यस
  मधी। प
  राधिनौद्धा भूमीकरण ।
 अम्बकानुकरण−पु•[मं•] वर्षरहित व्यतियो(द्या शारिकी
  नोनियों)का समस्रण ।
 भरवन-वि० (र्ट-) योदा म देनेवाला हवामा व्यव-
  रहित्त । ५० स्ट्रॅंप ।
 भप्यथय-पुर्वार्धरो योगा ।
 अय्यथा—मी॰ [मं॰] हरीतको सीठः (अम्बरम्यः गोरस-
  मंद्री। मॉथकाः भ्यवाराहित्य ह
भाष्यभिष-५ [मं•] नुर्वः एतुह ।
क्रस्यधिपी-भी [मं•] शुन्धाः व्यवस्थितः।
भ्रम्यपी(पिम्), श्रम्यप्य-विश् [सं ] व्यवाराहित। तिलीका
  प्राप्ता म दैनेशाला ।
श्रम्पप-दि॰ [ग्रं॰] सम्रात्ता ।
अध्यपदेश्य-दि॰ [मे॰] जिल्हा समय म बहा जा मदे।
 बिल्का निर्देश में किया जा सके। हैं। अंदा निर्देश
 कर दान ।
अध्यक्तिचार-पुर [संर] एवनियमा, वधामरी। निष्द
 नाहर्ष ।
भग्यमिकारी(रिन्)-वि [पेन] मरिरोपी अनुप्रमा
 मसाप्रदिक स्थारी निष्य सामग्री।
भागप-(१० (र्ग ) अतिकारीः अञ्चनः जिल्ला कन्नश्र । द्र०
 बह शब्द जिनके क्याने बयल शिय आहिके कारण कोरी
 रिकार मही होता। महा दिशा विन्ता क्षेत्रमी ह
श्रम्पचीताम−५ (त ) वर समान विमान पूर्वप अध्यन :
 री (क्रेने स्वामानिक अनुस्य) अन्त्रश्या अवस्यान
```

(जिलेक्यादे सम्बद्ध) ।

```
अध्यर्थ-हि [तृंव] स्वयं म होनेवाना। संस्था अदृष्ट ।
   जम्पर्कीक-वि॰ [मं ] सह नहीं, स्तरः प्रियः।
   अभ्ययधाय-वि॰ [लं॰] निक्टा मंतरहरित सवपूर
    विना रीवका।सापरवादः। पुरुष्ठाः स्वादीः सन्यवः <sup>१</sup>८७४।
   कस्पवसाय-पुर मि ] जयम या निश्चदश समाव र विश
    उपमर्राहतः निकम्माः भारती ।
   ब्बन्यवसावी(विष् )-दि॰ [मं ] ब्यवदीन १
   अध्यवस्था-नी० (सं०) तियम स्वश्रवादा अभाव, वे
    कायरंगी, गहनक नदसमस्त्री। धाल्यनिस्य स्वतरक ।
   अञ्चलस्थित−दि० [मु०] स्वदावशीमः ग्राल्यमद्देशरे
    विस्ता वरिषर । -चित्र-दिश जिसदे विषार वाको
    रहें, मरिशरपिया।
   अव्यवद्वार्थ-विष [र्ग ] व्यवदारके अवान्य, भी कावदे
    न नावा का सके, जिसके साथ धामनागढा स्पराहर है
    रखाचाता चानित्रतः
   बन्धवद्वित-वि [तुं•] श्ववशत्रदक्षि श्वाद्वशासर<sup>ा</sup>
   सरगणकल-विश्व मि ] को भ्यवदानमें लावा गया हो।
  क्षम्यायल-दिश् विशे व्यक्तनहोत्र, विने कोर्र हरी का
    न समी हो। पु॰ व्यक्तका समान ।
  शब्बाहरू-वि [र्थ ] अन्यस्त्र, जीवस्य बहुमा ही?
    व । भक्त अञ्चित (शां )। जगदका कारयरूप अदान ।
    —धर्म-प॰ वद स्वमान जिसमें ग्राम और बताब दीवी
   प्रधारके बाम दिवे का सके (वी०) ।
  शस्त्रानवात∽ति+ [मं ] जिएको स्थानदा वा रस्टेदरा
   श किया गवा है।
  अध्याधाल-दि [बु ] वे रीवः स्थानार वेतियामा ।
  क्षाचान-दि [rio] दिना एक सरादा । वु एक क्षाःस
   क्यांव शरलगाः वेवामधारो र
  श्राप्यापचनि [गं॰] में। मरा न दी भौतित।
  अरवापार-पु॰ [यं ] कार्य, उपमदा भवारा शहरत शहर
   श्र रसमेशना दाव।
 करवायी(विक)-विश्वि ] को मर्नेन्याने म ही। मेर्नेव५
  व्हरिध्यक्ता श्री शासानव स की निर्मय ।
 अध्यास-वि [मं+] की मर्नव ब्याह म हो। परिविष्य ।
 क्षरमाहि-भी+ (त ) बन्दो भागि संग्रामा स्दर्भ
  वांता म दामा (ग्या ) ।
 अस्प्राप्त-वि (do) व्यक्तिक्ति ही मारी रिग्रीके
  क्षित्र कानुज्ञ हो। --कृति-भीत्रवह नृति भी देश
  कारनी रहिते मोबिन हो, आगड व हो ( इस हम्म
  हेब्नान भार्ति के संबंधी प्रदेश) ।
 अध्याकृत-वि [यं ] अदिभावद भट्टर, अदिरेन्दल ।
अववाहन-विश् वि ] क्रांशानगीरन अवारित क्रांगित
  arry i
अध्युविद्यास-वि [नं ] अध्यादना अन्तर्वना अपूर र
Midda-lto [4] when and wing to
 (शभ) क्यान्ने दिव म रो सदे. सुल एएरेरा । इ
 स्टाहरू म कार<sup>े</sup>रका म्हीद्र ।
सदय-दि [स ] ब्यान दिन बेन्द्रा मी बेन सर्वह
 बार्य सराव स ब्रुक्त की विद्य (दर्दर) र वु अध्यक्त
 रह रेग ।
```

1144 पुरुषः मागः देंसिया भारिका दस्ता । घंटक-पु [सं•] (इस्सा भाषा बाँदनवाका । **बंदम-पु॰** [सुं•] हिरसा सगाना चौंटना ! र्धटनीय-वि धि] को नौटा जाय भौडने याग्य । बंटास-पु॰ [सं] हुदास, स्त्रितः नावः युद्धा एक मध्यर । वंदित-वि॰ [मं॰] वेंदा हुआ विमाश्रित । बंड-पि [सं] विकलांय पंतुः अविवादित । पु अवि बादित पुरुषा सेनदा दौना भाष्मा। बंडर-पु॰ [से] तालका कला। वॉसके मये कस्पेके कपरका पद्म या भावरमः बद्भरी बादि वीवनेकी रस्तीः स्तनः कुचा। कुचेन्द्री दुमः नादन । बंदास-पु॰ [मं] दे 'बंदास । वड-प [सं] वह जिसके किंगायपर चयहा न दाः ध्वज्ञभगः दि विक्रकांगः। यंडर−पु [सं•] इंज्ञूसः खोजा औनःपुरमें रहमेशाला सेवक। र्वद्य-सी॰ [म] पांशुका व्यक्षिपारियो । वंद−दि [मं] प्रसंस्का वंदक-पु [सं] एक परोपजीनी पीना करा; नारणः मिशः । र्थदका−मी [स] वंदा। पंदध-प्र [रां•] बारणः बंदमाके योग्व व्यक्ति । र्षद्म-तु [स] स्तुति। पूजना नमस्तारः एक विक यह रोग बीटा; एक असुर । —साखा –सामिका-की वंदनवार ।: - व्हार-पु [हिं] के अंदनवार । **र्वरमङ-५** [मं] सम्मानतुष्कः अभिवादन । वंदना-नो [म] स्तुतिः पूत्रनः वीडोकः एक पूत्राः दोमभरमका विरूद्ध । बंदनी-सी [सं] रतुर्ति भूका बायमा वा पारी। मर इएको जिल्हानको एक स्वाह कोकालुः वहीह वीराचसह दिक्द । **चंद**नीय-रि [म] बंदना सन्मान्दे बोग्द । पु रोत चेनराम । चैद्मीपता−स्री [म] वेदमीय दोनेका शाद दा गुय। वेदमीया - न्ये • (सं•) ग्रारायमा । चंदा-तो [सं] यह श्रीकरीना गीवा नोंदा मिछुकी। वहिनी । **पंदाक−दु**[सं]वॉदाः वंदाका। वंदाकी-भी [शं•] दे वदाका। र्षदार-पुसि] यह परीपत्रीनी शीवा नरेंदा। वैदार-पु [मं] श्नोष: पारण । वि विनश वेदमधीलः। वरि प'दी-भी॰ [मं॰] देश दश्या बंदना, रनुनि।सायाम। -बार -प्राह-तु दारू । -बार्-तु श्रीरः हारू । --बास-पुर व्यक्तिका रहाक क्षेत्रह । वंदित-(र [शं॰) वृतिकः पूत्रव । वेदितम्य-दि [मं] पूर्य पूजा करन काम्य । वंदिता(तृ)-५ [सं] स्तुति करनेव का। धर्मुक । बंदो(दिन्)-पु व [र्ग] वंदी चर्या हैरी।

वदीक-चु[सं]रहा

धंध-वि [सं•] बादरशीय, पृक्व ! वधा-सी [मं॰] बॉना पीरीवमा । र्धंद्र∽वि [मुं∘] पूता मक्ति करमेशका। पु॰ मक्ता **अम्भुरव प्रस्वामः** प्रानुर्व । वश्र-पु॰ दे॰ 'बंधु'। र्वश्वर-पु (र्स•) कोपवानक वैठमेकी जगह। वि• हे बंबुर्'। वंध्य-वि॰ [सं॰] अनुस्यादकः निष्क्रकः सरीपः। –फ्छ-वि॰ प्रकार । र्वप्या−ली॰ [सं] वह स्रो या गाय किसे वद्यान दौता ही। यक गंबद्रम्य । --कर्कटिका-स्ती एक बीवृष्टि । -कर्कोटकी-सा॰ यद भोरवि, दिम्या ।-समय ~पुत्र। -सुत -सुनु-पु॰ कीई श्रान्यत वरनु रावाली पाँच ! -दुहिता(तृ) -खी कार्र करियत बस्त । बंस-पु॰ (सं॰) बाँस । बमारव-५ [एं] रंगानेकी भागात्र । वंश-तु [नं] वींसा वॉलको वॉडा ईखा छशतीर वेंद्रेरा वाँसुरी। मरुर्द्धा मासकी अमरुद्धी सूर्यी। कोर्र संबी-योगी बच्चीः तलबारकं बीचका कीका भागः कुछ परिवास बातिः संतानः एक हो मैसी वस्तुओंका समूदः बुद्धीपदर्भः लबाई मापनेका यस पैमाना (१ हान); विभ्युः बंधलीयनः दर्गः शाकपृष्ठ । –काटिम-९ वॉस्टाः जंगक । –कृप्र-प [दि] दे 'वंधर्ग्रर'। —कफ्र−पु शकाश्चरे वदमवाका एत । -कर-पु वंश्वप्रवर्तकः पूर्वमः मुत्र । -करा:-धारा-सा॰ महेंद्र पर्वतते निकल्तेवाको एक नदी।-कपूर-पु वंसकीयन।-कर्म(स्)-पु वीसकी दीकरी मादि वनामेका काम । -मार-पु संबद्ध। —कीर्ति=वि॰ क्रिमसा देश प्रसिद्ध क्षे**। —क्ष्र्स्**य मूह पुरव । - इत्रच-पु विद्या प्रमाना । - इस्स-पुर वंशवाविका —कमागत-वि आनुवंशिक। —सय-९० वंसका साथ । – हरिही-भी० वंसकोपन । – गोप्ता-(फ)-प कुल्का संरहह। -यदिका-मा॰ वर्धीका पद्र क्षेत्र । —चरित्र—चु वंधका रनिद्यम । —चित्रक्र~ इ कुरसीमामा वैदार दरनेवाला । -ध्येता(मु)-इ वंशका वंतिम व्यक्ति । -अ-दिश वंगना वसा हुआः… कै वंदामें बलका। पुनिस्त्र पोत्र; संतान। — हा—सीक र्वससीयना कम्या । -संहरद-पु॰ वॉनका यावण। -ताबिका-को धंतर्थ। -तिस्४-पु॰ एट एँद। ~त्का-मी वह तृष बोरिडा । -घर -घारी(रिक्) ज्बु वीन बाह्य क्रसेवाचाः बुलका रहाकः मेणान । --धाम्प−षु व^रसदा बादत । -नर्तो(निन्)-पु भाँड मसगरा। -नादिका -भादी,-नासिका-गी वॉसडी वहीः वॅसुरी । —सम्ब-दुः मुख्या मुनिया। -नाश-पुण्ड विजेष बीग (स्पी) पुणका भंता -निधेशी-श्री श्रीमा भी । -नेप-पुरस्तरह की हैंगा हैग़की जह वा पीर जिल्ही अंगर दात है। -पल-पु दर्शका वातका पथा दद छन। वद नरवदा सरबंदा । -पश्चक्र-पुरु स्पतंदा दक तरहरी हैसा एक मछनी। हरनात ।—प्रश्नवनित-पु॰ कह छए। ~पर्यां~की व्यक्तम वृत्ताः एक सार्धी शीगः।

बीटाः पुनः वस्य नामक कृक्षः कृषः केंद्रः चनुवृद्धः एक भटेबारः ए६ वस्त्रमेश इंडा वर्गा -साछा -सक (व)-र्या॰ वनमावः। वरणक-वि सि० इसने विपानेनामा ! बरणा—सी॰ [सं] यह भदी बरणाः सिक्की यह सदा-यक नदीः बरहर । mauft - और बिसी धार्मिक कार्यके किए वस पाणानि हारा परोद्वितादिका मग्गान । यरणीय-वि [र्थ] चुन्तर बोल्वः प्रश्च करने बोल्वः प्रार्थना करने शाय (बरके किय)। बाग्रा-सी सिं। चमडेका तसमा हानी ना पोडेका र्तय। ≔कोड−प्रतसमेका द्वका। बरवी-सी॰ [शं॰] दिसी विभागके कर्मचारियोंका विशेष प्रकारका बला। परना- ७ पुदरम केंट्र । ♦ स० क्रि॰ वरण करना । म फिा•ो म≰ी दो, फिर । द्यान्-स वरम्, वस्ति देशा नदी (कः)। दरम-पु करवा [ब॰] छोव, सूत्रव : -(मे) शिगर-पु जिगर, बक्तका श्रोष । वरमेस्डा-पुण्य काक नंदन। शरियता(त)-प [सं] विवादके किए प्रार्थना करने-बाका पति। मरछ−पु॰ [मं] भिक्र । वररा-श्रो [सं] इंसिनीः विका परदक-प (धे) एक वनपर । करही +-प मोर ! बर्गग-प [मं] मस्तकः मग बीतिः सुरूप भागः संदर रूपा विभाग दहनी। एक महाना बारपीली। हाथी। एक मञ्जनमं । वि श्रीरर शरीरनाष्टा । पर्रागक−पु॰ [मं] दारपीनी ! दि॰ सुंदर अंगोनाका । वरौगवा – स्वी [मं] संदर स्वी। यरांगी-न्मे॰ [मं॰] इदिहा; नाय-ैतो; वंत्रिहा । थरोगी(गिन्)-पु[मं] अम्तवेषः वि श्रेष्ठोगनुद्धः। परा-स्ये [सं] अस्दुकः देशमा सम्यः दश्रीः बाद्यीः विश्वनाः गु.इवा रेनुसा राहाः विश्वाः मेदाः सीमराबीः श्वमूली; स्नेत अपराजिताः पार्वती । वि स्ती वर्ष करनेवानी (रसडा परांत्रमें ही प्रवीम मिकना है-जैस स्वयंदरा पनिवता आहि) । पराक-पु॰ [मं] शिवा सुद्धा वर्षेट, पापश । दि० शीमा हरनीया मारवहीमा दुरसी। हीन, बुरा (थन) । यराकक-दि [सं] दुरा दस्तर। बराक्षी(भिन्)-(६० [तं०] मनारव शिक्षिके किए मार्थना बरनेशना । पराजीवी(विन्)-दु [तं] देवर क्यांतिकी। बराट-पु॰ [मु॰] कीही। रस्ती । बराटक-पु [मं] कीश्री रस्तीः रघ-गीव कमनगहः । ~रजा(जम्)-इ जगरेमर १५। वरादिशा-भी॰ [तं] कोहीः नाग्वेगरः तुष्य वस्ताः पद बाजास्तिक विच । बरारी परादी-सी [मं] यह राग ।

वरणक-वराह्यारी वराष-५० [सं] संदः वदग कृद्धाः वराणसी-सी (सं) १० 'वारामसी' । वराडम-प्रसि•ी शतादनः विश्वकः। वरानना-सी॰ (सं॰) समयोः संघर सी । बराक्र∼प∘सि ी उत्तम शत्र । वरामिध-प्र• सि] अनुसनेत । वि• वेद्रनामा । वराम्र−प सिंकिरीया। परारक∽प्र [सं•] शोरा । बरारणि-स्री सि॰ो माता। वरारोह-प्र॰ [र्स] विष्णुः एक पद्मीः स्रवारः वजारीतीः सवारी करना । वि+ अच्छे मितंबींबाठा । वरारोहा-नि ची [सं] निसंनिमी । स्रो संदर स्रोध करि । बरायाँ नि सी [सं] पति-कामिमी। बरायीं(थिंग)-वि॰ [सं] वर चाहमेदाला । बराबंक-पु [सं] देसर, संरत आदिसे बनी एक पूजा-सामग्री (१) । बराइ-नि [सं] दर देने योग्य, वो दरका पात्र हो। वह्मस्य । बरास, बरासक-पु [सं] सीय। वरासि-पु॰ [से॰] चंहमा । बरासिका-सी [सं•] दुर्गा। वराधि बरासि-९ [सं] मीश कपना। बरासत-ली [ल] बारित होना। वचराविकारा सन प्राचकी छोड़ी हुई संपंधि तरका रिवव ! -की समय-वारित होनेका मनाय-पत्र । - नामा - प्र कत्तराधिकार बरासत्तन्-अ बारिस दीनेके आविकारसे उत्तरप्रिकार इत्यमे । वरामन-९ [र्थ•] हुर के वैडनेका पीड़ा: उत्तम कासनः सिहासम्बद्धम् हारपाकः उपपन्नि आर । बरामी-सी [में] यह तरहरू मोटा इपना बराह-१ [र्र] स्वरः मेहाः साँहः बादका मोबाः सीमा ममरः विच्याः एक मामः एक पदाशः नाराही के । यक होए। यक पुराया बरावनिहिता सेमाका बरावमहार अपूरा विज्ञुद्धा रक अवतार । -अन् -मामा(सन्)-त बाराही देर ।-कर्च-दु एक तरहरा बाग । -कर्णिका ~सी एक जला। ~कर्जी −एकी~सी≎ शतुर्व। --कस्प-तु वह कान विसमें विष्णुने वराहका अवतार निवा वा । —क्षांता—सी॰ वाराही । —कासी(सिन्)— प्रदेशको कृत । -मोता-स्रो कमानुः पराधाः । -वंड-यु वह श्रद्रशेग ! -सिहर-यु वह प्रसिद्ध वयोतियो : -- सुच्छ-न्यी एक मोनी जो बराइमे बास्त माना जाता है। -युच-पु स्वरीका श्रंट। -स्युह-तुः तुद्धाक्ये सेनाचे वह विधेष विवति । -शिला--नी वक्ष प्रविच शिका (हिमाचयपर रिवत)। -श्रीग-तु शिव १ --शक-तु दक पराप्त । --संदिता-सी बरावस्थितिर-मधीत एक वश्रतिसम्ब पुरुष्टिता । वराडक-पुर्नि] व्यव्यागरात्रा डीसा (१)। गूँग (१) । बराहांगी-मो॰ [मं] पूर्णने (!) ।

-पाश्र-पु∙ बॉसको टोक्सी बादि ।∸पीत-पु गुन्पुछ। -पुष्पा-सी यह कता, सहदेई । -पूरक-पु॰ देखकी वर विसमें वेंद्रभा दोवा है। -पीट-प्र वॉसका र्थकरः अच्छे कुक्का रचा । —बाह्य-वि० कुक्की नतार क्षिता हुना । -- सब-वि भीतका नगा हुमा। सहस्रमात। -स्त-प• अक्का प्रधान व्यक्ति । -शोक्य-वि विसपर वद्यागत अधिकार हो। प्र• मीक्सी आवदास । -मुरु-तु रेक्क्से वह । −यव -प्र॰ गीसका जावन । -राज-पु बहुत लंबा वॉस । -रोचवा-सी कोचन । -स्थ्या -को कुलको संपत्ति । -खुन-वि० क्रमे प्रथम, अकेमा । --स्रोत्तन-प्र-शॉसके पैठि भागमें वननेवाका सफद पदार्थ । —स्रोचना —सी 🐧 विश्व-कोपन्'। -वर्धस-वि॰ जुलको बक्तत करनेराका। प्र बंधकी एकति करना। -वितिति-सी॰ बँधका र्मगरु ।-विस्तर-प्र पूरा बंधबुध ।-बुद्धा-प्र वॉसका पैका किसी कुच्के वृत्रपुरची तथा वर्तमान सवस्त्रीकी कुछके देवपर बनावी हुई ताकिका करसीवामा I-पाकि-मी कुर्शकति। --श्रक्तका-सी० वीचागुक, वीचके मागर्ने सगावी बानेशाची चूँरी। -१थ-पु॰ वक पूरा। ─स्थविस-पुरक्ष छदा वाँछके अंदरका योका गाम । -डीन-वि बिसके बंधमें कीई व द्यो संतानदीन।

श्रीकारक-पर्व (मिंग) एक अध्यक्ती एक वनी हैका यक तरहता क्षांश गाँस ।

वंद्योद्धर-पु [सं] वॉस्क्य वंदर । र्वज्ञागस-वि [सं] बंधपरंपरासे मासः वसराविकारमें

प्राप्त (**र्थशा**म−प़ [र्स] शॉलका कीर।

वैसासुकीर्तम=ड [सं•] वंदर्शका वस्तेस ।

र्मसामुचरित−इ [सं] **वंबद्**छ।

र्यसाबसी-सी (तं•) वंद्यगाकिका ।

बंसाह-५ [सं] वंसकोयन ।

विशक−प्र [र्स•] अनरा काला नवा। चार स्तीमको रक्ष माबीन माना सह और नेपीछे जस्पन दुन ।

वंशिका-मी (सं०) वॉस्ट्रोर अन्तरः विश्वकी ।

द्योदी~की दिं] गोंस्रीः भननीः चार कर्यकायक नानः बंगकोश्यम । न्यर-प क्षमा । न्यन-प्रश्न वेशीको ध्यति । -शद-पु॰ वह वरगपका पेड जिसके सीचे क्रम्य र्मश्री प्रभात ने । -- बादन -- प्र- मंधी नगमा।

बंब((शिक्)-वि॰ [सं] वंकविशेषका। वंशविशेषके संबंध ररानेशलां ।

र्बंशीय-वि [सं] वंशविधेवसे संबद्धा एक वी कुल्पी

बरपदा बच्छे ५एका ।

बंदरिज्ञव∽वि [सं] इक, वंशमें घरपच ।

बंगोजवा∽की [सं] नेसकीयन।

मंदय−पु (सं•) पूर्वमा संतामा विज्ञानः क्रिपा रीत गीठ की बन्ना। बेंदेर, छात्रजाहे शीकही स्वाही। साह बहुत करार बीचेका संबंधी: पंक्रके सहस्य । वि विदेशी क्या प्रधाः मेक्टरे संबद्धः सर्वरामे करवता वंश-संबंधी ।

धंत्रपा−क्षी सिीपशिका∤

च−g [सं•] पाष्ट्रा परुषा संप्रणाः वसना गावा पाष्ट्रा (

छमुद्रः पानीः सांस्थनाः अल्बरः कस्यानः नासस्यानः सैरको कोर्र का संदर्भ व्यामा बंदका केला रहा धारधरी पुरुषः एकः कराः करुत्वते वानिर्मृत स्वति। स्वा प्रयेशम कुछ । वि॰ श्रक्तिशस्त्री, वणवान् । ल॰ [का॰] और मे (संगीतक अन्वय को माया पूर्वाभरके अकारसे मिक्स भी' हो जाता है-जैसे महाजन क्रमेनिए ।)

वक-प्रसिशी वे विकासिमास भी। वक्रमतः, वक्रत-सी [न] स्थतः, प्रतिशाः साम्र निवास बढ़ाई, सँबाई 1

षकस−५० [सं] शीवरा⊈ छाऋ । वकाची −स्तां [सं∘] एक सरवका मधनो । वकार-प्र• [म] वहाई प्रतिक्वा गांगीर्न ।

चकासत~थी॰ [श] क्छेक्टा दाम पेशा; इसरेदी ओर चै मुक्काभेकी पैरवी करवा। प्रतिनिधित्व ! - मामा-इ किया मुकरमेमें वक्षेष्ठ होमेका प्रमाण्यत वह रेख जिसके वारिने किमी क्योक्यों किसी सक्तमेशी पैर्वीका मिक्स

विवासाव । वकासराम् – श मधीनके शरिदे । बन्धसर-४० वि वेदक राज्य ।

बची−ंकी[तं] दे∙ 'सद्रा। वक्रीस-वि+ कि] वक्रमदवाका प्रतिविद्यः कैवाः सन्त-राजा (

वकील-इ. [न] मधिनिषिः इसरोंको भोरसे सहस्योंको पैरवी करनेवाकाः वकाकत करनेका व्यक्तिहो। राज्यति विषि । -सरकार-प्र• वह क्योक की सरकारको औरमे

मुक्तमाँको देखा करे। वक्तीसी!-सीं वरीक्का कार्व वा देशाः क्कांच देशी

१६स । दि. स्थीलका स्थाप स्थाप स्था। बकुक्त−पु[रो०] १० 'बकुक'।

बकुम्या−की [सं] यह भीवनि कुटग्री ।

बकुम्बी-सी [र्ग•] बहुकदा कुमा गढ भोरपि कामोकी ।

बकुश-ड [मं] अरीन्द्र श्रम नकी भारिकी विद्या करने-वाका वित (वे); बुवॉकी पत्रलकोमें रहनेपाना स्व 喇!

वक्रथ−प [ल] पाहिर होता परित होना। स॰ ∽र्ने आमा-बाहिर वा परित हीना ।

वक्रमा—पु॰ वरवा, वारवानः बंगामा, प्रसार ।

क्षक्र×−प [ल] धमञा नानमा नामारी, खरत नप्र भवः उद्दर्भाः -- चार--दि वामकार, अनुमर्गः । मु -पक्षका-का शीयना ।

वहरा-पु [ज] समय काल; भवकाश मीक्रा निवत काका मीलको नही। सुधीरतको पही सुदिस्का को भागकारू कर्ता । -का-वर्षमामकाविक, क्यामेका। -का पार्वद-की सब काम सिवन समवदर करता है। सम्बद्धालकः । -का बाद्याङ्ग-वर्गवान आवर्षे राज्य बरमेवाका राजाः विधितः सिर्देह । —की ल्यो-कारका प्रभावा दुर्मोग्वकी देश । नदी चील-मामविक वरणा काल वा ऋतुविशेषकै अंशुरूप राग रागिमी ! न्या बग्रत-दे 'बरत देवस्त । -बेबल: - धनव-गुम्पाना

```
वराडिका-सौ॰ नि वेशेंचा
                                                     वरुवानी-सी॰ (सं॰) वस्त्रको सो।
 पराष्ट्री-सी [रं•] समरोः मागरमोशाः अध्यांताः कः
                                                     बरुणायि-सी॰ [सं॰] प्रश्मी ।
  छोटा पद्योः बाराधी बंद ।
                                                     भरुनेस−पु॰ [र्स॰] छत्तमिषा मञ्जूष ।
 यरिसा(तृ)-वि॰ [सं॰] पुत्रनी, पर्छर करनेवाकाः क्याने,
                                                     वरुपोद-व [सं•ो एक समद्र।
  पर्दा करमेवाका ।
                                                     बरुब-पु: [सं:] क्चरीव वप्रमा !
 वरिमा(मम्)-सी [नं॰] धत्तमना श्रेष्ट्रता प्रथानता ।
                                                     वरक-वि [धं ] संमद्ध !
 बरिबसिस, वरिवस्थित−वि [सं∘] पृत्रित आस्त,
                                                     वक्ष्य-पुरु [मं ] बस्तर, श्रवादा वमाना स्वपत्वा परम
  जपासित ।
                                                      हाकः सेनाः सन्हा कोवकः ममानाः समन् । ~u-g+
 थरिबस्था~साँ । [सं ] पुजाः द्वाज्या ।
                                                      ब्बनायका सेनाएति ।
 वरिशी-को [चं ] मछली फेंसानेकी केंदिना !
                                                     बरूयवती-सी [सं•] सेमा !
 बरिय-प [सं•] वर्षः वर्षः।
                                                     वरूपाधिप-१ (सं०) सेनावायह ।
 धरिपा—का॰ [मं ] वर्षाः वर्षा कतु । −प्रिथ-पु॰
                                                     बरूथिमी-सी॰ (में॰) शेमाः वैश्वास-सम्बद्धश्चे रहा-
  বারক ।
                                                      दशी।
 वरिष्ठ-वि• [सं•] वृष्टमीया सबसे अवसा वद्यव मारी
                                                     वक्त्यी(चिन्)-प्र [र्व ] शामेक्य काडी; रक्षक रक्ते
  बहुत बढ़ा: बहुत सराव बुध । जु तीवरः ताँवा: नार्श-
                                                      किय बना हजा गेरात रथ । ति रथास्या करवशाया
  काक्याः मिर्थः।
                                                      सैमारी रक्षिष्ठः क्षायेवाला !
                                                    वर्रेड - प्रश्न वि विश्वेश राजाः वेनासका एक प्राप्त ।
 मरिद्या~सी [सं]दस्तोः यक्ष गौपा द्वरहर ।
                                                    वर्रेज़ी-की [सं] यीप देश।
वरिद्विष्ठ-पु • [सं ] सुर्ववरहताः दास ।
                                                    बरी-म परे दृश उस भोर उपर।
वरी-सी [सं] स्वंद्री मही संबाः समावन ।
वरीता(१) - पु [सं] यणवासांशी निवादासांशी करने,
                                                    वरेष−प सि•ोधिका
                                                   परेलुक−पु (ले॰) असा
  परदा करनेवाला ।
बरीमा(सन)-सी [र्स•] वे 'वरिमा'।
                                                   बरेच्य-वि [तं ] सुक्या पूजनीया विस्ता एक्सा से
वरीमाम्(बस्)-वि॰ [मं] नवा नेवा भरक्त-
                                                     आवा स्वीतक्रत । ज महादेश केमरा शाका एक प्रश्न ।
 मीजबास । पु पुरुद्द माविद्धा रक पुत्रा रण बीगीमेंसे
                                                   बरेस्बर-५ [सं+] क्षिम ।
                                                   वरोट-पु [सं] सस्या नामक पीवा वा बसका कृता।
                                                   बरोक परोक्त-रि सी [मंग] बचन गांगीनाकीः
वरीक्ष्यं – पुर्शः ] देखा
बरीपु-चु [सं]कामदेव।
                                                    संबद्ध ।
बहरू-पु• [तं ] एक करक ।
                                                   बरोक-पु (सं] वरें।
वरुट-पु॰ [सुं॰] इड अन्छ साहि ।
                                                   बर्ठ-प्र (वं∗) काय।
यरुड-पु (संग) बेंग्रसा काम करमेवाकी एक संस्थान
                                                  यक्र-पुर (क्षेत्र) काम करमंत्रासा (संग) क्यामा सरम
                                                   बहाः बढ्टाः मेमना भेक्षा बच्चाः बद्यान बाल्यः मानवरः
 साति ।
चरुल−तु [मं] यक भागिरका यक देवना को करुके
                                                   परिहास । -क्कर-बु॰ वकरा शादि बॉपनका ससमा ।
 अविपृति कीर पश्चिमके रिक्पाल करे वर्षे है। बका समुद्रा
                                                  बकरा∽क्षी० (लं•) पठियाः जनाम रक्ष्मी ।
 त्वी शाक्षामा एक पृथा एक माना एक मान, 'मेरच्यून'।
                                                  वर्षशह-पु (सं•) कटाला सीके कुषश्का मध्या।
 -गृहीत-वि अभोदर रीयसे मत्त्व ! -मह-द बोही-
                                                   कक्र बढते द्वर एउँडा प्रदाश ।
 का रोम-विशेष नक्या ! - देव - देवत-त शतिविश
                                                  वर्किंग कमिती-स्रो [थे ] कार्नेकारियो ममिति ।
 स्प्रम । -पाश-इ वरमका अस पाछ पैशा एक
                                                  वर्कित इतस-९० (बंध) समित्र वर्गे ।
 बह्नच्छ, माह, नक ! --प्रधास-त वस्पडे पाशमे मुक्ति
                                                  बर्फेट-५ (से ] क्रोक्ट किसी।
 बारीके लिए आवारकी पूर्णिमांकी किया बालेबाका एक
                                                  वर्ग-९ [नं•] रवशसीय वा समाम-वर्मिनीमा समुद्रा
 भनुदान । -मंडल-५ (रेवती पूर्वाचन, नार्रा
                                                   दक्ता रह रवाममे बच्चरित होनेवाने वर्णेदा सन्हा
 भारतेवा श्वामिया सादि) मधुत्रोदा एक मंडल । -स्रोक
                                                   र्घवटा विमाशः अध्याषः समाप्त संश्रीदा भागा वह सम
                                                   क्रीम बतुर्नेत जिल्ली संनारे बीतारे बरावर दी। शक्ति
 - इ. वर्गाका क्षेत्र अस ।
                                                   क्षेत्रः अर्थे वर्गे काम-त्रिवर्गे । -चर-पु पामेन
बरमध-५ [स ] बस्त कृत्र ।
                                                   मछनी। -पद-दु वर्षमुक वह संदया दिएके बार्ड
परजोगस्द-५ (मे ) भगरत्य ।
बदना-तो [सं•] यह नदी ही बादीमें संगाड़े साव
                                                   गुष्परमे वर्गदा बंद प्राप्त हो। - इ.स.-५ समान
                                                   राशिबॉका शुधनधन । -शूल-१ वह संदर्ग निर्मे
 मिक्ती है।
बरम्याग्मजा−भौ [धं] शक्त्री छरार।
                                                   वर्योक वजना है। -इथ-वि अपने सरका साम देने
धरुमाहिराम-पुरु (सं०) देव-वीचीका वस वर्ग ।
                                                   बाना ।
                                                 वर्गना-मी [हं] गुन्म,यलः।
वरम्बसय-५ (संग्) तमुद्र !
                                                 वास्तिवा-स कि बदमाना बहदाना विशेमी वर-
बद्द्याबास-५० (र्धः) नसुर्।
```

किसी समन इमेशा! सु॰ —व्याधाना निवतकारू मीक्क् वहा वा बाना ! -गुज़ारवा-समय नद्र करनाः दिन कारना । -श्रंग होना-कालका प्रतिकृत्व दौना । -देमा-किसीसे मिकने बातचीत नादिके **किए स**मय नियत दर देशा । -पदना-मुसीयत आगा, वक्रिनार्थमें पदना । --पदेपर-मुद्यानतके बक्त । --पर-मौकेपरः काम पहनेपर गाइ वस्तपर। न्वेषकः काम आना-बहरतके समय काम माना ! चक्तन् फ्रबक्तन् - स अन्तन, समन-समयपर ! बक्तम्य-वि∗ [तं•] करने योग्या निवनीया प्रथ्छ शहर दक्तरहानी । पु॰ कमन, वचन; किसो विवयमें कमनीय गता निवाः नियमा शिखाः इक्ता(क्तृ)∽वि [मं•] कड्ने वोकनेवाकाः भाषमकलार्ने प्रवीमा, विद्वाम्: रैमानदार । पु ६४। कद्दनेवाका पुरुव म्बाम्। अरबापका बुद्धिमाम् स्वक्ति। वर्त्त्री−वि वर्त्तका, सामविकः। वकुकाम-वि [मं] बीकमेटा बन्मुट । वकुमना(मस्)-दि [चं] को केलमा वादता हो। वक्तूक-प्र [मे॰] बोलनेवाला, भावणकर्ता । वनतृष्ठा-म्या , धनतृस्य-तु [सं] मात्रमा नाम्कीश्रस बाग्मिता। वरल – पु. [मं] सुक्ष भूधन, चीवः वंतः तगर मूकः एक र्धशः वाक्त्ये नोकः कार्यारमः एक तरक्ये पोछाकः । —स्टर −५ दॉन । −क−५ शदाणः शॉदानि समुधे अरुधा−ताल∽धु मुँदते बरुक किया हुआ ताल} मुँद भे वजाया चानेवाका एक वाजा। −र्लुड−पु गणेशा। -दक्क-पुतास्। -पष्ट-पुछोवशा । -परिस्पंद-इ भावी। न्याष्ट्रन्द्र नाराही करे । नभेदी (विन्) न वि बहुत बरपरा। -वाम-पु भारेगा।-शस्या-को गुंबा धुँपनी। –द्रोधन–तु शुक्रशुक्तिः सम्ब। -शोधी(भिन्)-दि संबधोषक । प्र वगीरी गीव । धक्तासब - इ [सं] राज काला। अवरम्यु । बक्य~पु [म•] इदरत्यः शुराके मामवर धोदी पूर्र

भीता देशीचर एंग्रीचा क्षेत्रीयकाराव की पुरे बस्तु (बरमा)। -नामा-प वह रेख क्षिके हारा कीई भीव बनद्रको पाव । मु॰ −कर त्ला−रैवरार्गण दर

िमा (पुष्पदार्थमे) सगा देमा।

अग्रका-म उद्दराव विराम। देश अवव विनंद । बक-वि [मं•] देश गुंबा हुनाः निरक्षाः वालवातः रेर्रमाना निर्देश शृद । पुरु मासिकाः संशोका सीवा शनि। मेंगका रहा वरु शहा वर्षेट अदिवर्गम्बा एक प्रकारः विपुर राह्मा वह राह्मा ग्रीटेची और प्रस्ता । -बंट-यु श्रहाकृष्ण -बंटक-यु सहिर कृत्रः -कीस-तु काबीके लिए प्रयोगमें आनेवाना अंकुछ । -सम् -सम्ब-् करवाक । -ताशि-नि वनशी मनिवाका (मदारि): पेरैमान, ब्रुटिल । स्री वक्टी रेगे भाव । पु संयम मुदेशे योपनेते कारनेत्व सह । -गल-५ [दि] ईकी बनानेका रह बाता । −गामी(मिन्)−६ १ वहराति । ⊣प्रीच−त रिश -चेषु-९ कोणा। -ताम -नाक-९ मुँदमे | यहीमनि-९ [छै] सोनेपर पहननता राज।

वक्तम् फवकःन्-वद्योमणि वजामेका एक वाजा। --श्रंड-पु॰ तौता गयेसा -र्श्यू-पु स्वर। -इष्टि-सी देशे विवादः स्रोप पूर्व रहि। संद रहि। -धर्क-पु शिव (भी दूसके के पाँरको पारण करते है)। -ची -बुद्धि -मति-वि पूर्वः वेरेशान । को पूर्वता वेरेमानी। -- मक--पु पुगवसीर, पिश्चना वोता । -मासिक-पु॰ एस्स् । वि•टेडी सक्तवाका। ≔पात्र्लवि विस्तापेर टेडा शे । -पुष्पः,-पुष्पिकः,-शास्त्रिः,-स्रौगुस-पुः कुषा । -पुरव-पु अवस्त्वः प्रताष्ठः। -मणित-पु॰ कुटिक वानम । -शुक्र-पुरु गनेश । -वनस-पुरु स्भर । --शस्या-स्ता॰ कुटुंबिमी मामक शुप । व ऋ∽द्र [ल] नवार्द सन्मानानीरनः पदास्त्र --कोना-मान प्रतिष्ठा गैंबाना ध वकता-सी , वकाय-पु [मं] देशपमा कृतिमताः पोछेकी भीर श्रुटमा । बक्कम-पु॰ [सं॰] पकावन । बक्य−दु• [सं] मृस्य। बक्कीग−वि [र्स•] देहे श्रीवरका । प्र इतिः स्त्रीप । वकारुप-पु (एं॰) दीन । बन्नाग्र-पु॰ (सं] आनेका टेडा मागा एक बीबा । वक्रि-वि॰ [र्व] शुरु शेक्नीवाचाः हु दिक्रमावी । बक्रिश्र-वि [र्ग•] देहा, शुक्ता हुमा बसीमृश्र । वविज्ञा(मन्)-स्व [सं] देशपन, कृदिसना यह दीनेफी किया वा माव । बक्टी(किन्)-वि [र्त•] कुटिनः गरदन देही करने, लुकानेवालाः पीछेकी और यमन करनेवाला (प्रश्)ः नेर्रमान पूर्व । पु बक्त बादा पुरु था मैना वह जिल्ल कंग जन्मसे ही रेड़े 🚮 । वाक्रोक्टि-सी॰ [सं] ९% अन्यार विसमें काकु या श्रेष के वसवर निक्र अर्थ किया काता है। जमत्कारपूर्ण विका काडु विक । --वीविश्व-पु भाषायं मुद्रप्रसूत्र साहित्य का यक प्रकार भेव किसमें बढ़ोरिको हो शान्यको भारमा बद्दा यदा है। वक्येकि, वक्रोष्टिका-ची॰ [मं] मंद ईसी ममक्यम । बकस−५ (सं•) एक तरहकी शराव (तुन्नुस)। वक्रमम्मर्विगी-मी॰ [भं०] शनी । प्रसारयस−५ [सं]दे वसरवड । वस (स्)-पुनि] के और गरेडे बावका दिल्ला छामा। वैश्व । वक्षण-१ [धं] धीना। धन्नि। शक्ति प्रदान करने बाका परार्थे । वहासा—जी॰ [सं] पेश मणी था बसहा पार । बसर्फर्−तु [म्रे॰] करवा वश्चरथस-पु [धे] होना दरव । वहा-मी [नंश] देश 'बंसु'। यसीवीय-पुर्वि दिशामित्रका व्ह पुत्र । बस्रोज बस्रोरह-दु [८०] दुव रत्य । वसीर्मदर्शा(विद्य)-पु॰ [मं] नृत्यमे दावेदी एद विजेष रिवनि ।

साबर कीर्र काम कराना ! वर्गोक~पु• [मुं•] यह शंद जो किसी संस्थाका वग दो 1 वर्गी(र्गिन्)-वि [सं•] वर्ग-विश्वेषसे संबद्ध । पार्शिकरण-पु [त] वर्गके अनुसार वस्तुओंका विशाध बरना । बर्गीण-वि+ [मुं+] वर्ग-विधेपने संवद्ध । बर्गीय-दि॰ [सं] वर्ग दिशेवसे संवद्ध । पु॰ एक वी वर्षका सदस्य अक्षर कादि । बर्गोत्सम-पु[स] राधिबीका लेख विसमें रिधत बीने से ग्रह हाम दोने दें (फ॰ स्वी); प्रथम पाँच स्पंतन-वर्गीका संतिम वर्ग । धार्य−वि [सं∗] एक दी वर्ग, एक दी वाति वासमूद **का । पु॰ सहयागीः सहयाकीः समात्रका स**न्स्य । वर्षम्थान-पु [मं] पाद्यामा (पराधारमृति)। वर्ष(भू)-पू [सं•] इपः छक्तिः कांतिः तेवः अतः ৰিভা: ভাকা। वर्षटी-स्रो [तं] एक तरहवा वामा वंदवा। वर्षस्क-पु [मंग] तेमः सकिः निशा वर्षास्य - वि [मं] शक्तिवर्षका मल-विसर्थनपर असर शक्तेत्रका । वर्चरवास्(वत्)-दि [मं] धक्तिशाकीः तेत्रोमय । बस्सी(बिस्)-वि [धं] शक्तिशानीः कसादी । दृः पंद्रमाः व्यक्तिकाली मनुष्य । वर्षा(र्थम्)-द्र[स] नंद्रपुत्र। वधीवहः यंचीविनिवह-५ [धं] काव्रवदना कन्त्र । वर्षोभेद-त [सं] भगीसार। वर्षोमार्ग-५ [संग] गुरा। वर्ब-नि [सं] रहित, मुक्त, परित्यक । पु परित्यान । श्रतेख-दि [ri] परित्यान करनेपाना, धोयनेपाकाः तिवेध करमेवाका ! पर्श्व-पु [मं] निषश छोड़ना, स्वागः हिसा वय । बर्शमा-+ स कि निषय करना रीक्सा । ली• [सं] दे वर्जन । पर्जनीय-वि [से] निविद्या मित्रभवीच्या अमाध धारमें बीग्या मनुभित्त निया चक्रपिता(न)~दि [मे] गर्वन स्थाग गर-नगलाः बटलनबासाः वरस्रानेबासा । षजित-नि [सं] भ्यक्त, धोशः द्रमाः महाद्यः निविद्यः रदिन ! पक्रिश-मी रे 'शर्राट्य । पर्जी(जिन्)-दि॰ [मं] निपद परिताम करनेवाका । बाउपै-रि [र्मण] बार्रभीया निश्चित्र । पुण चीहमादी वह विशेष रिवरि विभवें कोई नवा काम शुरू बदना मना है। वर्ण-पु [सं] रंगः रंगने नियानेके बाम आवेशाना रेना बाति। मेरा कण्डा दाव्या न्यस क्यानि यद्या मध्या गुपा प्रशंसा बाह्य स्था बोह्यका आष्ट्रीय स्थारत रष्टम बारहगा मीत बारिकी शिक्षा वस ताल वसर्वे का भने। भरात साथि (ग०)। एक्की एंजवार कीजार वार्षिक पूर्वत अगराय-वना धगरा यक रंगीन लेवहच्या शर्वे से स्थानम्बीर । -वॉट-वु नृतिया । -वश्वि-

पुरु कुनेर्द्धा एक पुत्र । - कृषिका-सौ मसिपात्र । −क्रम∽पुरंगीका क्रम । − स्वद्यमेरु−पुर्धदश्यासकी एक किया निसक्ते अनुसार विना मेक्के निश्चित वर्गोके पत्ती आदिको संस्वा आस्त्रम हो जाती है । ° −गत−वि+ रैंगा हुआ वर्षितः बीजगणित-सेवेथी । -गुद-प्रस्ता। -वारक-पु वित्रकारः र्यसात्र । -३वेस्-भेष्ट-पु∙ त्राद्यम ३ −तुष्कि −तुष्ठिका −तुष्की-न्तो वित्र क्ताने की कृषी, करुम (पित्रकारकी)। -व-प्र• मक सरहकी सर्गवित पीडी क्यापी, काशीयक । वि रंग देनेवाका । --दाव्री-शाँ॰ इस्री । -नृत-पु॰ पत्र मारि :-सूपद्य-य बारिश्रह करनेवाचा पतित समुभ्य। --धर्म-पु वाविनिशेषका वर्षम्य या पैशाः −भात~सी० गेर इतुर शादि। - मष्ट-बु॰ छंद शामको एक किया निमुप्ते निश्चित्त वर्गोर्के किसी मेरका क्यु-गुरुक हिसावसे रूप माश्चम दोता दें (∽नाइस,−पात−दु निसी मधरका ভ্ৰুথমুদ্ধ দুম হা ৰাদাং −বলকা−কা∘ হাৰ হাক্ৰ एक विवि विश्वते वर्णवृत्तीके भेदीने आनेवाली लग और शुक्र मात्राओंकी संस्था मानुस हो जाती है। ∽प्रस्न∽ यु ४ पात्र वित्रमें चित्रकार रंगरखता दे। -परियम-👱 संगीतका वानः व्यवस्थिता दान वसनेवासी पुरितका । –परिष्यस−९ वातिसंश। ∽पातास−९ धंराश्राम ब्दी वड प्रक्रिया विश्लेश निश्चित संबदाने वर्गोने मंपूर्व क्सों और क्य कर्यंत भारि मात्राभीकी मंध्याचा बोब दोवा है। -पान-पु॰ दे॰ 'वर्गपत्त्र'। -प्रद-पुर शहर राज्या एक भेर । -पुष्प -पुष्पक-पुराव त्रणी मामस प्रपा पारियात । न्यारवय नप्र भर्मवसी दे कुक भेद जाननेदी छंद"हासको दिशेच प्रक्रिया। -प्रमादम-द् अगुर । -प्रस्तार-प निश्चितसम्बद्ध बचाँडे भेर उपमेर और स्वकृत प्रकृत करनेवाली होर' छान्यकी विशेष मिन्निया। ⊶िमञ्जान्त एक ताला। −मी६−९ रक्त सक् ! −भेटिमी−सी शापरा। -अंचिका-थी॰ २६ दाह ।-अर्थेटी-सी॰ संदाशास्त्र की एक विधेष महिया विश्वते निश्चितसंख्यक क्षत्रीके मंबाप्य क्वों माहिदा का नगता है :-माता(तृ)-मी: देशमा ।- मानुका-म्यो॰ सरम्बता । - माखा -शद्वि-क्षी • मध्रोंकी यवाक्रम यूपी व्यर-पंत्रत महिल सभी असर्।−यति∽सी व्युतान। –हेसा~समाः− मेरियका-को शहिया। -सील-पुरु एक मास। -वर्सि -वर्सिका-स्वी चित्र बनानेशी तूनी। -शादी-(दिन)-प पारंग। -विकार-पु (रानी वर्ग हा कारे वर्षका रूप धरण करना (निरुक्त) । -विकिया-सी० वातिकै मति शुना । -विचार-प वाहि भादार. व्यवस्य और स्थिक नियमोध कुछ स्वाहरणका एक बाम १-विवर्षेय-पु दशीरा धन्य-देन हीता (निरुद्ध) । -विमाग-पु दिवृशमात्रका माद्यत शतिप नैरम भार भ्रष्ट-श्म बार जानिकोमै भर्मभागराभुमार रिमाजन । -विद्यासित्री~को ४३३ । -वित्रादक-पु• सॅप बारनेरान्या स्वता-चीर । - विवृत्ति-की हिक्का --युन-पु वह एंग्र किन्द्रे पराधि बचु हुद स्वास्त्र क्षेर्यर्गम्बासमान हो। -ब्रिय-पुरु वर्गानेस।

वस्यमाय-वर्त मध्यमाण∽वि [सं] वक्तम्यः को कदाबाददा दी कथमका विषय हो ! वराका वरासामुकी-की॰ [सं] इस महाविवाओंमेंसे ण्क (ते)। **प**रिद्व−४० [स] रत्नादि । **व**रमु−पु[सं•]वक्तः । वि• वक्वदिवा । वर्षश वर्षश-का । सि] देविकी वसी करार। मैमा । धच-प्र• [सं] छोता। सूर्व। कारण । वि॰ बीकनेवाका (समासांचर्ने) । वच(स्)-प [सं•] शब्दा वासवः पश्चितीका यानाः परामर्थः आहेदा । वचनम् - वि॰ [मंग] । बहुत बोलनेबाला वक्ष्माती । प्र शक्र । _बचन-पु [सं] शिकनेकी क्रिया। भादमीके मेंब्रसे निकते हुद शार्थक अञ्जोद्धा समृह बात, बान्धी: करी हुई बाता मासारिका बाववः शारीया वीवना। क्यारमा प्रश्रका मर्च या भाषः राम शिक्षाः सीठः एकः अनेकका नीच करानेवाका व्याक्तका विशेष विवास ! -कर-वि वोक्नेवाका जन्मकारी ! -कार-कारी(रिश्व)-विश माहापासकः -गुप्ति-स्रो बहुम हरियोपे स्वमेके सिप वाणीका संबम (भे)। --गीरव-९० माजाका आवर । −आडी(डिप्:)−वि अवाश्वरो । −पट्ट− वि ग्रीकर्मी इसका -यज्ञ-नि वित्तमे बोर्व पादा किया हो। मतिशुत । - रचना-की मारणका बच्छा क्षम । -- स्थिता-न्दो॰ वद परक्षवा मारिका विस्थ बार्तिसे वसका प्रेम प्रकृत हो। -विद्याना को वह परकोवा जाविका को बाद्यपातुर्वमे किसीको वसीमृत करे । -सहाय~प मित्रमग्रार सामी । बचनातुग−दि० [सं०] भावत्यरी । वसमावसेप-इ [सं॰] अवस्मान्वं वात । बचनीय-वि [सं] कहते बोत्वा निहमीय । पुर्व मिता । -शोप-त मिदारमद दोनेका दीन । वको - बक्स का समाधानत कर। ∹ग्रह-ध काल । -बिद-वि॰ श्रीकनेमें कुश्क १~हर-मु । धंवादवादक !

बच्दरीयक्रम-पु॰ [सं] भावसदा कार्यम् । बचर−द (तं॰) मुर्गाः नीच व्यक्ति । वचलु-पु [वं] शहा दीव वपराव। ध्यस-वि [सं] बहुत बोमनेबाका। पतुर I बचसावित्य [संग्रे स्टरम्बि । वक्सा - व [सं] वचन हारा । क्षचरकर~वि [व] दे 'वयनकर'। बबस्बी(स्थित्)-वि [मं] मारमपुढ । बचा−सी [में] यक भीयश्वि मैता। **बर**ु•−g क्य, छानी। वस्त वचा। बहान-पु [ब॰] तीरुमेधी मिला। वीका भारा द्वांके क्यों का मात्राओंकी माद (उर्द-फ़ारसी)। बद्धलत महत्त्वा मान प्रतिहा । -- इक्ष-पु शीननेवाला । -- बार्-दि मोशबाकाः मारीः महस्वतुक्तः वक्रमतः रमनेवाताः । यहामी-वि पत्रव रसनेवाना भारी। महत्त्वपुत्तः । यज्ञहरूको मि बिहारण शुरुतः अरियाः चेहरा समा

र्वग रीति । —(हे)समास−ली जीनकका सामा। बझा(बङ्गस)-पु॰ [ब] रसनाः गरतीत देनाः वनानाः बनाबटः हॅगः रीति-जीतिः बेछभूवादा प्रवक्ति हेन देशनः प्रसन। मिनदार । -दार-नि सम्बनमा भीग्रेन वरहरारः श्रेदरः द्वीरानदा क्यांक रखनवानाः मे। चली बबापर फायम रहे, अपनी शिति-मोतिका स्थाप न कर। ~वारी~खी॰ क्षेत्रर नैक्समूचाः तरहवारीः सफ्ती रीति-भौतिका निर्वीद (−हमरू−पुप्रशत दथावनना। यहारत∽सी [म•] नबीरका साम वा शरा वजाहरू – जी॰ (न] सदरताः भम्बताः सम्मतिव होता वज्ञाह्स-की [श+] श्लीस्पर रहमा, निरदारहे पनामा बश्-ता है 'त्रम्'। बञ्जीका-पु॰ [४०] निरुष्धमा निरुषास्त्री पार्वमा रैनिस क्षिः माधिक बहमः बैद्यानः हात्रवृत्ति ।-प्रवादः-हार-व वधीष्ठा वानेवाचा १ बहारि-तु [शर्] संबो, सक्तिर । −(रे)माह्रम∽दुः प्रचाप संबो १ - जीरा-प्र हुक्संबी ।, -ताकीम-प्र क्षिद्यामंत्री ! -सास-त अर्थमंत्री ! वजीरिस्तान-९ नवीरी दरीहेका प्रदेश । बद्भीरी−पु सरदरी पठानेरेका एक सनीका वा बादि। को दे चबस्य। वजीह-वि (वर) ध्रुरः मन्तरक्षाः सम्मामित । वञ्द−दु (व] विषयानचा मीन्दगी विदयी। <u>सु</u>० -प्रकार -पामा-अस्तिलमे भागः। वशकात् सबद्ध-ती [म•] 'दबद'वा बद्द•। बक्द-पु (वर) जानंदाविरेका जानंदाविरेक था (काच्य) र्सनीतकी) रसासुमृदिने दीनेवाको भारबविरवृद्धि । सुक -में भाषा-वार्श्याविरेटने शमते वर्गमा वा भारत-विरष्ट्रत को बामा (बद्ध−दि (र्थ•) बदुत क्रहोरः भोदमः भनीरार, कॉर्ट दार । पु रहेका करने कुल्किस कसमि (ब्रह्म भाषा है कि नइ बचीचिकी मरियसे बनावा गया था)। विक्रमी कोई वावक कला भारता होरा काहि दिवनेना भीगार। हीरा। स्ट्रीजी। यह न्यूष्टा रह दरहात रवेत हुन्छ। रह तरहका गंगा। हरपानः बारका बन्न धीष्ठी कर्न माणाः नका। वज्रपुष्पा बाजी। बोहिनादा मुखा भृष्यु यह बान (व्यो)। विष्णुके पर्योक्त थिक श्रतिस्तका वक पुना चक जैसा थिए (वी.)र ४४ असना यद प्रतः। ≃दंबर≃ म बनुमान्। -कडक-प सेट्रा कोकिनास देर। ~कटलास्मली~शो एक मरक । **~क**त्र,~कर्ण~उ जंगनी स्राम्य शक्तकर: ताक इरहा पूछ । ~कपंग=5 -कपासी(किन)-प वद पुर (री॰) च्याच-तु वतुत सवतृत, असेम दशका स्थ तरहरी समापि ।-बारक-पुत्रब मानद्र ह्रध्य ।-बासिका-सी मानहेनी पुरसी धनना। -कामी-मी पर जिल्ह्याहि । -क्रीश-पु यक क्षेत्रा (सरस क्षात्रस मरम क्रमेशायां) ।-क्षील-तु रित्रनी । -कुक-उ यक विशेष समाधि । -कृष-पु वक परावा दिमालकार

-प्यसिकांता-सी॰ शर्गेसे मीच कांके साथ संबंध करनेपाठी सी । -ध्यवस्थाः-ध्यवस्थिति-सी० वर्त विमाम । -संकर-प्र दी मित्र जातिनोंकै सी-पुरुषके सहवाससे बरल्य व्यक्ति । -संस्था-५० अंतर्गतीय निवाद !-संदार-पु प्रतिसुख संविद्धा एक अंव (वा) । -समामाप-प वर्णमाका । -श्राची-को क्रांशाब-की पक प्रक्रिया किएके अनुसार वर्णपूर्णीकी श्रव संख्या भीर भेदोंने भारि-संत क्यु तथा भारि-संत गुरुध संस्था मास्तम ब्री जाती है। −स्थास~प॰ यसा। ← श्रीस−वि वादिष्यतः। क्यों क-प मिन्ने नकानः व्यक्तिताकी योजाकः रंश-कंगरागः चारवः सिंवरः चंदनः अक्षरः इरताकः धेरा वरिषि परतस्त्रा अध्यानः विश्वकार । वर्षका - ची [री॰] मकानः रंग रेंगनेका साथमः चंदनः शप्तानः इत्तः । वर्णम−त [र्च•] विषणः रैंगनाः क्रियमाः कीर्द नात म्बोरेबार करमा वदानः प्रचंसाः ग्रमकवन । शर्णमा—खो [रं•] भ्योरेनार क्र**ड दर**नाः प्रशंसा ग्रम-प्रण नातीत−दि र [एं] दिस्का वर्षन य किया का सके। बर्जदीय~ि [मं] पित्रन या वर्णनदे बोस्त । क्ष्प्रैयती−सी [सं]दर्शी। वर्षसि-४० (ई०) वह । क्षणांका ≃ली सिं] क्रेबसी । बर्णांतर⊶द्र [मं•] भित्र बाति दुसरो वादि। बर्ज-सो मिीशरहर। क्वांगम-प [सं] क्वांगे किमी अग्ररका भा विनवा । क्जॉट-पु [हं] दिनदारा गावका ग्रेमिका नहीं दारा अधित प्रवसे सिर्वाह करवेवाका । क्रमांसम्ब-वि [एं॰] (ग्रम्) जो वर्गीने किसा वा छने। बर्णातमा(सम्)-५० [सं] सन्द। वर्णाविय-इ [सं॰] वर्षो(मासन, स्वियावि) के शविवति सद (ज क्यो ।) यर्थानुमास-४ [सं] एक शब्दानंकर, हे 'बनुमार्थ'। बर्भाएसव्-द्र [मं] वह वी वाविष्युत हो । बर्फापेत-दि [म॰] वर्फशन। पर्णाहे—इ [मं] मैग । वर्णाबर-वि [सं] निम्नवर वातिका। धर्माभ्रम-पु॰ [मं] जाति और आसम । ⇔ग्रट-पु शिव । -धर्मे -पु वर्ष और भागमन्त्रंथी वर्तव्य । वर्षि-१ (सं०) शोनाः अंगराग । वर्जिक-प्र- [नं] केसका दि वर्ग संस्था । --बाच-प्र हे 'बर्ज्या । वर्तिका-स्रो [सं] वित्र या वित्र-वैद्योर्ने व्यवहर विश्विष्ट वर्षी, (वीषा समयाना श्याही मनि। सोमेका पानोः गरिवाः भडमाः विनेपमः अभिमेनावी पीछानः । -परिप्रद-प रूप भइग (ना॰)। भाषानमार भित्रमें क्लेंका प्रकीय है वर्णिय-वि (ते) दक्ति। बदय ववान विवा बुधाः वर्ती-श्री शिशी है वर्ति । वर्ती(तिंत)-रि मि वरतनेवाचा रिका रहनेरामा विविद्याः प्रदेशितः ।

वर्षिनी-चौ [र्स•] ची। किसी एक वणकी ची। इसी। वर्णी(किन्)-पु [सं] विषयाः सेवका मदापारे। वारों बर्णोमेंसे किसी एक बर्मका म्बक्ति । वि विशेश (व वा वर्षका (समासके व्हाप्त) । बर्ण-प [सं] यह मरा सर्वा एक प्रदेश, बस्म । वर्णोहिए-प्र• [तं•] छंद शसको रह महिला क्रियो किसी वर्णकुराके किसी भेडका कीई विशिष्ट रूप असा कार । वर्ष्यं – प्र [र्च] प्रस्तुत दिवना धरमेना क्षेत्रसः नमतुत्रती। वि वर्णन या विकास दोग्य। वर्त-प्र [सं] भाहार, बीनिका (पाय' समासदे संतरे अनुका-बस्थवर्त-प्राच काकका मीजन)।-जन्मा(श्राप) प्र बादक, मेथ । -तिश्य,-क्रोह-इन क्य तरहरा शैवक वा श्रमात । वर्तक-पु (सं-) भर वरेश बद्धमा। योहेका सुरा एक क्रद्रका पीतक । वि॰ रहतेवालाः जिसका शांतिल होः वर्शका बतकी-की (सं०) मारा बरेर । वर्तन-दि [र्षण] रहमे अवरमेराकाः गतिमान सरने वालाः जीवित रखनेवाका । प्र• वीमाः बद्धर सामाः पॅडनाः करपारः इंडरनाः चीरिकाः नेगमः वृक्तिः स्थापारः व्यवहार जावरका प्रदीगा रहता। मेंदा बार-बार हहा हमा खम्बा बोहेंडे लोटनेडी समहा साथा पीसमा। बहुआ। पात्रः विष्णाः क्षीत्राः सकारं कमाकर पावका रूप देएता । -दान-त औतिका देना । -विनियोग-त वेहन । वर्तनार्थी(र्षिष्)-दि [मं॰] नीबरा बादनेवांचा । बत्ति-प्र• (ति॰) वर्ष देशा मामाश्रद रागदा कह भेरा स्तीत्र । स्ती धार्यः कोदा रहनी । वर्तनी-को [र्च] मानी क्लिर्स सरका। रहना दियो । वर्तमान-नि [मंग] चलता हुमा पूमता हुमा, बान्ह। क्परिचत विषमाना सम्बादः आधुनित हामका। पुर व्याकरणका रह काम विस्तृत स्थित होता है कि किया मीन्दा सनदने दोती या हो रही है। क्लांना करता व्यवसार । वर्तस्य~९ (नं०) हारणमः गनिहीन वस आसी होश-का पीसला रक नहीं। दर्गन-पूर्व कह यजायह । पर्वि—मी॰ [र्न] क्षोर्र मधेरी हुई परन वर्ता नवना वाक वें सरमेको वधी। वावपर वॉवनेको वक तरहको बही। बरत्त, अनुनेक्ता गीली पदी। रेगाः गरेके स्वता प्राप्त का बिरामा कर हरे छोरनरकी ज्ञानर । वर्तिक, वर्तिर-९ [लं] वरेर । वर्तिका-मी [र्स•] वची। सवारें, ग्रमहा। तृतिका। वि वरेरा एक प्रकृत अव श्री । -विद्य-प्र होरेरा वय दीन (वर्तिष्ठ-६ मि] दुमाना चन्द्रमा दुमाः संग्रादिय निवासा हुना । --बस्या(न्यम्)-नि बलारित । वर्तिका-दि [तं] चटर सानेशाला रहमेशामा वर्तमा कार। रिवरः युक्ष्ये महिल रहनेवामा ।

रिवत एक पौराभिक भगर । -केत्-च भरकासुर । –क्षार–पु• एक क्षार् । –गर्म-पु पक वीविसला । -गोप-पु रहतहूरी शेरवहूरी। -धात-पु वजका भाषातः।—स्रोप-पु विज्ञसौन्धे कृष्यः पैसी भावाम । ∽चंतु –पु• गृत्र। –चर्मा (मैन्) –पु• गैवा। –जित्-पु सरका निजली। -- प्रचाया-भी नेरीयनकी यक पीत्री; कुंमकर्गकी पत्ती (?) । —टीक-पु पक पुरः। ∽क्षाकिनी~स्त्री एक क्यारम काकिनीवर्ग (दी)। ~तुंड -पु॰ यनेशः गरदः योषः मच्छरः सेर्डेड ः~तुस्य-पु॰ मीलस । -- र्यंड-पुण्क अला (देर द्वारा अर्जुनको प्रक्तो । – इत्त−पु वृक्षात्मर । – इति – स्री एक बीबा (दासमके काम आता है)। -व्हूं - वु बीरवहती। यक्ष राशसः (मा॰) । —इसन-पु वृद्या । -वेदा-न्यो यक देशी । -ब्रुम-पु॰ सेईव । -धर-पु॰ बंदा नीथि सन्तः बस्सु िन्धात्वीश्वरी-स्ती वैरोवनकी पनीः यक र्दमदेवी । -धार-वि हीरेक्षे तरह कठिम बारवाना । −नस~वि नृसिंद।−माश्र−पु कृष्यका चका स्थंद का एक अनुवरः राजवेंका यक राजा। -वियोप --वियोप-प विश्वतीका करकता । -पस्तन-पु॰ वज्र॰ का निरना। -परीक्षा-सी॰ दीरेकी परसा। -पाणि-पु ईहः ब्राह्मणः एक वीविस्ततः । -पात-पु॰ वजका मा बन्न-सा गिरमा; भारी विपक्षि । – पुष्प–पु दिल्का पृत्त । –पुट्या –की श्रतपुर्या । ∼श्रम – तु यस विधा-पर । −प्राकार−पुरक समाधि । −प्राय−वि० वद्य करोर ।-बाहु-पु रहा अग्रिः गर् ।-योजक₁-बीजक - प्रतास (जा - सकटी - तो एक तंत्रदेशे (शे) । -भृत्⊷द्र रोहा -भीरव-द्र एक गीज देवता। −मचि−ु दोरा। −मति∽षु यक बोथिसरव। —सास्त्र-क्षी एक प्रकारको समानि। *—सु*खा-प्र पद तरहको समाधि । - मृष्टि-पु॰ देश खदिन बोदाः यक इविदार। बाल चनानेक समयकी दावकी यक निरोध रिवनिः भीगनी भोतः। -शृक्ती-मी॰ माचपणी। —योगिनी∽न्दी द∉ देवो बरदयागिनी (ते)। −रम−तु छविष । −रद−तु शहर । −सेप∽त∘ वद पणरवर, शीबार आदिवर समानेका वक मनासा। -सोइफ-पु भुरका -वय-पु नजनानमे होसेवाली मृत्यु । -पश्ची-मी अस्वितंदार शता। -पार्यः-पु भाँच कवि जिसके स्मर्गने बजागातका निवारण दीना हैं (बैभिनि वैद्येपायम पुन्तरस्य, पुन्नद्द (समस्त्य !) सुमेत करि) ! -बाराहर -मी यद तंत्ररंगी (थी); मागरियो इयकी माता । - विष्कीम-पुगरका वस प्रमा -विद्या-वि विषय् द्वारा निहन ।-बीर-पु महादान र्मा -मृश्र-पु सें_का -वस-पु एक राग्या एह वियाभर । - ध्यूष - पु : पुवारी तलवारके आकारकी मेना-रचना । - शस्य-पु नाही नामक जानवर ।- शास्त्र--न्दी बार्यस्थामी द्वारा प्रवित्त एक संग्रहाव (३)। -र्ग्यकरा-स्पे भीनह महाविद्याओंचेने एड (रे) । -मंपात-इ पायर श्रीवनेश सनामाः भीय । -सहत - इ १६ १६। - माल-इ ध्यामी इद। - समाधि -भी एक समादि (श.)। -मार्-पु॰ श्रीरा।(र

बबुत कठोर। -सूचि -सूची-लो वद सूर्व विस्ता भोकपर दौरा लगा दी । -सूर्य-पु: पक पुर: । -सम-प्र मक्र गोभिसत्त्व । नद्वस्त्र-प्र दंदः शम्मिः मस्त्रः श्चिम । न्ह्रद्य-वि नदुश करे रिक्का । बज्रक-प्र• [सं] दौरा। वजसारः सूर्वका एक वपप्रदा वर्गरोगके किए विश्लेष प्रकारत देवार किया जायेवाला एक तेला एक अति (संगीत) । वज्रीग-व [मं•] इनुमान्। साँप। बद्धांगी~सी [र्श•] सीविद्धाः यक कता ४४जोव (पोऽपर गुषकारी) । यदानुबा-सी॰ (सं] एक मीद देशी । মরামু−এ॰ (शं॰] কুজকা বন্ধ এর । वद्या∽सी [सं] कुर्गलेंद्रकाश आरच। षद्राकर~पु[र्स] दीरेकोसान । वज्ञाकार बज्ञाकृति-वि [सं] रजको धरनका। वज्राहरी-सी [सं] सेंद्रका बद्राक्य∽दु [तं] एक बहुमूस्य प्रथर्। बद्धाबाल-पु॰ [मं॰] (बब्दीका भाषात । षद्माचार्य-पु• [तं•] एक तांत्रिक बीद कावार्व कामा (बह सी-प्रम सहित विदारमें रह सकता है) । बज्ञाम−५ [सं] व्यः बहुमृश्य पत्वरः। वज्राभिवरम-दु [मैं] एक प्राचीन अनुद्वान (हममै हीन रिन देवण भीका सच साहर राहते थे)। षञ्जाका−पु॰ [सं] काल रंगका अञ्चक्ष । वज्ञानुष-५ [से•] रहा बज्ञाबर्स-प (सं] पढ मेप। बद्धाञ्जनि~पु(सं]यज्ञ। बजासम-५ [मं] यह तरहवा भामना हुवा वह शिला विसंदर पुर्वने जासनं रुगाकर पुरुत्र प्राप्त किया वा । वज्ञारिय-सी [यं॰] सेंदुर : -श्रंससा-मी होक्षि नाव क्य । वज्ञी-सी [मंग] भेंद्रर । पत्री(जिन)-इ [र्न॰] रहा करना श्रीय सम्यासी। -(क्रि)जिल-५० गर्थ । षञ्जेदेवरी-न्यं हि] एक देशे (शै) । वज्ञोत्रस∽प्र सि•ी एक समाचि । बज़ीमी-मी [र्थ•] र्वयन्दिको एक विशेष रिवनि । वष्ट-पु [मं] बरवान्द्रा वृद्धा कीक्षाः मोसीः बरिद्धाः छीता र्वेश शुन्या यह तरस्थी रोटी। ररसी परस्पता यह तरस का पर्यो । - च्छान् - पद्म-पु वक नरद्दी सर्दे - तत्त्वी। -पत्रा-सी दक्ष हरहकी परेंगी। -पत्री-भी परबर को व सामक वीवा । -बासी(सिन्)-पु द्याः वटक-पु [में] वहा पदाहा बहा। गीनी। बाठ माराधी ater 1 वटर-पु॰ [र्ग=] वद विविद्याः वटेरा वद सुर्गावत मृद्या एक नरहरा अमरा मदानी। पर्यश बटारी भेर । वराकर बटारक-पु [में] १रसी। बद्यधय∽दु वि}द्वरा बरि-मी [मं] १६ तरहारे चोरी।

वरिक-दुः[सं०] १:३(असा मेपूरा ।

(परांतमें-जैसे दरवर्ती आदि); करनेवासा ! पतीर-प्र• [स] बटेर । बनस-वि [सं•] गोस, कुशाबार । पु॰ गावरा मरर। गेटतया सहायाः गेंदा शिक्का यक मणः वर्षः । वर्तसा-सा सि] तरुणके धोरपरकी बंदी । पर्न साहार, वर्तुसाहति - वि॰ (सं॰) गोक। वर्तकाक्ष-पु [मुं+] एक शरहका वान । वर्ते सी – स्री [धुं] यत्र-पिप्पकी। बर्फ़ (म)-पु [सं] मार्गः कीका प्रवाह कका औठ, बारी, किलारी: आबार, शामय: शबकाछ क्षेत्र ! -कर्युंस -प॰ एक सेवरीय विस्में बाँदामें कीवड़ लाता है। -कर्म(म)-प पश्-निर्माय !-पासन-पु वातमें स्वता। -वंश -वचक-पु॰ भौराहा यह रोग विसमें करें स्वकर महां सुकर्ता। −माक्षिका −न्याः सोनायासी। ~रोग-प रहस्का रोगा -शकरा-सी परस्कें द्रोनेवाकी एक तरहकी असी। वर्ध्यनि बरमैनी −ली॰ [सं] सक्क रास्ता। वरमाँबास-५ [म] राम्सच्छे थकावर। बारमार्चुद्-पु [संग] पसबोका एक रोग शिसमें पण्डोंके भंदर गाँठ दन जाती है। बरमांचरोह-पु [मं+] क्वकांका रोगविज्ञेष । वर्डी-सी दे 'बरदी। वर्द वर्च-प [सं॰] शीक्षाः श्राह्मणवहिनाः कारमाः विमा भनः बढ्दीः पृति । वर्षक, वर्षक-दि [मं] बहानबालाः पृतिकारक काटने, धीलनेबाका । पुन्दर्श जास्त्रममध्या । यदंषि, धर्च कि-त [सं•] दे वरंकी । वर्षकी(किन) वर्षकी(किन)-ड [सं॰]वर्रा धर्मम चयन-४ [म] काइना धीननाः वृद्धिः वहानाः अस्परय करनेवाकाः दमरं बॉटवर जमनेवाका बॉटा शिवः बर्टिनिका वर्धविका−लीः नि] प्रदेत जरू रहानेका द्वीरा पश । वर्षमी वर्षमी-मी॰ [मं] शाह : अर्थाः ब्लगी धोरा Ret I वद्मान वर्षमान-६ [मं] बहुता हुआ; वृद्धिशील। प्र परवडा बुझा वट तरहकी पहेली। विल्ला नेगालका यक विकाला नगर वर्षवाना यक पात्र वसीराः वह मकान जिल्ली इक्षिणकी और क्षार न हो। एक इंडरयमध रेगानित्र वा बनी तरहका बना दुधा प्रामान बा मंदिरः मीस मी 🐧 भंगरा। मृत्यकी एक मुद्राः एक वर्षेष्ट्रचः जिल विदेश । पर्दमानक वर्षमानक~ड़॰ [सं∘] छोटा पाव बा ददन ममोरा । वि॰ शुद्धिविद्याः । बद्धविता(न) वर्धविता(न)-पु [नं] बहानेबाधा ह यहाँ वर्षा-का [मंग] पातावरीको यह सदावह वती । वद्रिय वर्शयन-५ [मं] बारमा। नाती-ग्रेरम (बह

नारी विमक्त मंदेव नानिने होता है) मान कारनार जन्म

नेनेदे रिनदा मारी छेरनने संदद्ध यह बलावा वह बलाव

वर्जितः वर्षित-दि सि॰ो यहा हमाः स्टा हमाः भरा दुशा । वर्बिष्णु, वर्षिष्णु-वि [सं] शुक्रिशोक। वर्षामा, वर्ध्यां - पु [सं•] अंत्र-धर्य, बाँत वताना, विनियां। वेश्वयस्थ जयः । बद्धाः वर्धा-प्र• [सं•] चमशाः चमशेका तसमाः सीसा । बर्विप्रका, बदार्घी, विभिन्ना वार्धी-सी॰ [सं] नारी, चमनेकी पेटी; बढ़ी गामका गहना । वर्म(म)-प्र• [मं] बस्तर, दबका मानवरवामा बनावः विश्ववापकाः छाकः। --कटक-पु० पिश्वपापका, पर्यटकः। ~क्या,~क्या~सी॰ साम्राः —धरः–द्वर~वि० क्षम भारण करनेवाला कुशश्चाह ! वर्मण-प्र∙सि•ो मारंगोका पे∀। वर्मा(मैन्)-प [र्त•] यह स्वाधि विष्ठका द्वतिन कावरव भादि प्रवीय करते हैं। वर्मि−९ निरिक्र बक्तरी। वर्मिक-वि [तं] क्षप्रमुक्तः। वर्मित-वि॰ (सं) किएमे ध्रवस बार्य दिया हो। वर्मिसांग-वि [सं॰] विसका द्वरीर करमसे एका हो। वर्मी(मिन्)-दि [धं] दे 'विमेत्र । बर्मप-१ [सं•] एक एरहको महको । वर्ष-वि [र्न•] मेडा भुभने बोग्या प्रकान (पर्राटमें प्रमुक्त-बैने पंडितवर्ष) । पु॰ कामदेव । बर्यां-सी॰ मिं] सम्बाः परिवरा सम्बर । वर्षर-प सि॰ विश कीरेवा । वर्षणा – स्ति (सं) सीको सस्तो । वर्धर-प [रं॰] एक देशा नीच वाति। वर्धर देशका निवासी (वेंपराने वाळवामा); मूर्य) आर्रिभक्ष व्यक्तिः शन्ति संवातने जलक शन्तः तुंबराम बाला सरवका वक् देवा रेगुरा वीना चंदन । दि० सरक्तारा अस्तर (ध्य)। वर्षस्क-पुर्शि देश भेशना वर्षरा-सी [मं] एक मानी। वनतुन्ती। वर्षरी-सी॰ [मं] वनतुष्या । वर्षशेष-प [नं॰] वनतुनसीः भारेगीः महास्तराः गुँपरान्त्र बाङ । यवाँ-मी॰ [गं] रे 'वरंश'। धर्मि-विक् मिको देग । वर्षुर - धवूर-पु[र्ध•] व्यूक्त । क्यें-इ॰ मि देश क्येंद्र अपूर्व गिरमा शुक्रमान। यह काल वरिमाम भाठ (सीर पांह, नाधन और सावम)। पृथ्वीका गाँदा भारता शान्त । -कर्-पुर शहस मेंच ! -करी-भी शीगुर ! -काम-यु शृष्टि बाहनेवामा ! -बामेटि-व्यी व्यादे निय दिवा जाने वाका वड । ∼कासो−स्रो - वीरा । −वन्-पुकास बुमर्नशाः -काशः -कोश-पु॰ स्वीतिशाः सरीनाः -वाहि-शो० [हि] है 'बरमग्रेंड'। ~स्त्र-बु वबन इवार वर्षनाण्य सह-सेमा । रि वर्ष छेडमे दा वर्षमे वयानेवामा १-अ-दिक वर्षाताम या दीरांशसे विसमें तरबीक्ष बामना करते या तरबीवर क्यार्च देन है। बराब दीनेशना वर्षने उरावा ६६ गानदा । -स-

वरिका-स्री सि गिलिश नरीश सर्वाश्वसी वीटी। वत्-सी [सं॰] रवर्गश्ची एक मदी। तु॰ सद्द अरेए-बदी-साँ [मुं] गोक्षाः रस्ता । वरी(रिम)-वि॰ [सं] त्रिसमें बीरी क्यों हो। येक । पु० दे॰ 'वतिक'। बद्ग-पु [एं+] महानारीः वाक्या । चद्रक∽पु [मं∗] मेरन निश्चया नास्त्रका जारावारी । षटोइका−सी [सं+] एक सदी (मा)। षष्टक~पु [सं] गोको, वश्विदा । बटर-त [मं] विकित्सक बक्तपात्र। वह बनाः नर्बा । वि मर्दाः इष्ट । धक्य-प्रसि विश्व वीषा भी वीकी बीसा हो। -होन-स्री॰ मीडी। बबया-स्ते [सं] योषी। अधिनी मधना वासी। वेश्याः माध्यय कातिको स्त्रो । —सर्ता(ल)—प्र॰ वर्ण्ये:मवा । — मुन्म−पु• बदबानक; शिव । −शृश्च−पु• वश्विनीकुमारु । वदमा-सी [सं] पक शरदकी विकिता। वडमि बडमी-सी [र]] सबसे कमस्यो गंकिकम्रका कमराः सकानको दास् छायन । वडव∽पु∘[सं]दे 'बडव । बढ्या-भी (संशी दे 'बढवा'। **पडड्रां**सिका, चड्ड्रंसी-सी [सं•] यक रानिनी । वदा~सी [ग्रं•] मोठी वरिका! चंद्र भी । विद्यान्य [सं] कॅरिया वंसीः नश्वर लगामेका क घका हो । भीनार । बाहु∽वि [सं] वहा प्रवद्ः वर्ण-द्र [त] शब्द श्रीराङ । प्रणित्(ज्)-पु॰ [तं॰] काविक्य व्यापार करनेवाला। मनिया । -(क्)करक-रे शक्दसार्थ । -कर्म(स्) -प -क्षिया-स्ना वित्रवेस पेडाः सौराम्सी । -पय -पु+ स्थापास बुकाना तुका साथि !-सार्थ ~प् स्नापा-श्रमा समा रिवीका निरोध कारवीं। वित्याम-पु [तं] स्वापारिवीका मंत्रक । बिनार्वपुर-इ [तं] मीहाय गीपा। वक्तिम्भाव-प्र [मं•] स्वापार । प्रजिग्बह-पु (ते•) और। विभागीयी-सी॰ (सं॰) बार, वातार । विधावति-ली [मं] आशर । विकास-प्र (से) सीशायरः शिका हुवा राशिः एक क्रणने मारा वा । करण (बधी) 1 बणित्रक-पु (सं) स्थापारी। पणिजा~सौ [d] स्थापार । विकाय-मु, यिकिया-मी [र्स] व्यापार, सीपागरी । बच्चे ही। बर्तस-प्र• [मं] क्लभूबनः शेसरः बार । यतंत्रित-वि मि॰] १० 'वक्तंतित । mn-ध सि । सेद अनुदंश संशोध, विरमय आदिका बीवक एक शरू । वतम-प्र [क] अन्मरवानः मूक वासरवान १वदेशः। –होस्त−प् वैद्य दितेश । ~पश्स्ती−म्था वैद्यमकि । बाहर्क विक्य कवना । यतनी-वि अपने देखका रवरेंग्री। स्वरेश्वनाची । वतीरा-प्र (भ) वरीका बल्हर चन्नम राहा

का एक रीगा शुच बीक्रवेवाका व्यक्ति । वतोका−सी [गं•] कंप्यासी। बद्र की नामान जिसका गर्म दुर्घटना आदिसे पिए जान । बद्ध-अ [र्स•] साध्यव वा समानतासूक्य वद्ध ग्रन्थ की एँधा वा विधेवणके अंतर्मे कोशा बाता है। बरस—पु [र्स•] वस्रमा, मापका वच्या संवास दुव (पाय प्यारका स्थल करनेज निम्र स्थीपन्ने स्वरू)। वर्गः वस्तासरः वद्यः छातोः एक देशः – कामा–वि॰ मीं नवींको प्यार करनेवाणी। यजेनी चाह करनेवाल (स्तीया गाय)। —घीष ~ पुनश्च मध्ये मध्ये प्रथम वर्ममें (१०७ एक देश । -तंती -तंत्री-स्त्री वसशेक्षे बॉबरेपे कंगीरल्सी (−र्शा∽पु यक तरहका गरवा)−वास− तुरु एक विवैका प्रीपा, एठ तेज बहर, बढ़नाग । -पाह--पाछक-प पछप्रीकी बैरामान करनेवाकाः कृष्यः बकराम । -पीठा -सी वह याम को क्टरेको इव पिका सुबढ़ी हो । —राज्य-त वस्त देशका राजा का वन ! – रूप – इ. कोरा दक्ष्मा । – शासा– सी दा रवान बडाँ बडाडे रही बाउँ र बस्तक-त [सं•] बछवा होटा बछवा क्रिका बच्चा करना प्रपनसीसा इंड की निर्मात । स्वीध-व वध्सत्तर-प्र [र्व] जवान वग्रहा का इक्से स क्षेत्रा वध्यत्तरी –सी [र्स॰] सीम साम्प्रेसे बटिया बलीर । बरमार-प्र सि॰ो वर्ष शास्त्र । वरसर्वातक-पु॰ (सं॰) वर्षका भेतिम मास । वस्तरावि –पु॰ (शं॰) वर्षशा पदका मास । बरम्बराज्यँ – पुर्चि व्यव वर्षके किर किया या दिवा कम्मस-वि (सं) प्रवासेनसं सुक्ता धीरीके प्रति प्रव सामेन करनेकला। युपादिके प्रति रतियना तक को मागा रिम्पका एक मामा प्यार । बस्साधी-जी॰ (र्य॰) रद दरदये दक्षा । बरसादम∽प (तं•) भेरिया। बरसावनी-नी॰ [प्रे॰] ग्रुप्य । बासासूर-पु (सं•) दशका अनुपर एक अनुर मिने बरिसमा−सी [सं]वदिया। बत्सिमा(मध्)-मी [मं) वपदम । वस्सी(रिसन्)-मु [मं॰] विष्यु । वि विमद्रे बहुन-ने वरमीय~५ [लंक] शोपालक ! वि वरसन्धंवी । बर्शति वर्श्सी-स्पे [सं] शत कमनः कमा। **बद-**वि [से] नीसवराका (समामानमे-असे निवंदर) ! यहरू-प् शिक्षे बस्ता, बदनेपांका । चत्रतोत्रयायात−प [रा•] क्वनका रोप पन्ने करी हैं। बहम-पुर [मंत्र] पेहरा सुखहाः गुद्धाः धननः मानदः क्षमा अवसाना विद्यमधा दोवे । - प्रथम - मार्ग-

```
रममी नामक् शुए। — ज्रा−पु॰ सिर्थः विर्वके कृत्रोंवाहा
   एक पौषा । -शूर्या-सा । एक तरश्की वास, मालावृशी ।
   –सरम-५० धरनम्बद्धी ।
  बस्किका न्त्री [र] कता नेना एक साग नीई।
 वदिसकाभ-पु । (सं ) मृँगा ।
  वस्किकी-स्त्री सि ] बाच-विशेष (संगीत) ।
 वस्तिमी-नी [मं] शहित्वां।
 नस्की-मी०[सं ] कताः अवमोदाः व्यव्यवस्थाः देवतिकाः
   चम्ब सारिका, गुरुको विदारी और रजनीका एक वर्त ।
   ~गर्-पुरुकमण्डी। ~व~पुनिर्मा~बदरी~
   मी एक तरहबादर । –बृक्ष−पु≉ शाल कृश्व ।
 वस्त्रीया - स्रो [ब ] स्रो श्लो।
 वस्तुर 🖳 [र्म•] इंभा मंत्ररी। क्षेत्र सेतः परती समीनः
  स्था निर्देश स्थानः रेगिस्ताना थीरामः कुलेका गुण्याः
  मुखाया हुआ मांस ह
 बस्दर-५० (म ) प्रमें तुलावा द्वशा मांतः प्रंपकी स्वर
  षा मंत्रिः क्युरः बंयकः क्यापः द्वारी बगीन ।
 बस्त्या−को [सं•] वाको वस ।
 वस्वरा = प्र [सं=] भारता ।
 वस्त्रज्ञ प्रस्त्रज्ञा-को॰ (स॰) एक तृत्, अकर ।
 वस्वल - १ [सं] २६ असुर विसे वस्त्रामने मारा था।
 यक्तिक=प्रसि•ीदे शब्दीक'।
 बय-पु [सं] एक करन (क्वी॰) ।
यर्शकर "वि॰ [मं ] बद्धमें करनेवाका ।
यशंक्रतान्ति [सं] वसमें किया हुआ।
 षश्षद्-रि॰ (सं॰) बद्धवर्तीः भाषाकारीः ।
 वरा-इ [सं ] किनोका प्रयान शक्ति विश्वते दशरेसे कीई
  माम करा निवा जाना काका क्ष्मा । चादा किमी वानकी
  नपने नतुष्ट्रन करामको छन्त्रि मधिकारमें करमा। कन्तर
  चढ्छा नेह्याओंक्स निवाधस्त्राम । नि अभीवा नारा
  बारो सुरवं। –कर−विवसमें करनेवला। –क्रिया~
 स्रो॰ वर्शकरण । -श-वि जाशकसी । -शत-वि
  बद्योग्त । −रामम्⊸पु इनरेडे व्यक्तिस्मरमे जाता । ~
 गा-भी भाषाम रहनेवाची नो । -गामी(मिन्)-
 श्रि वहाँ वानेशका। -वर्ती(र्तिन्)-वि को क्रिमेक्ट्रे
 मधमें थें। सु∗ –का−शिसपर और वा वशिकार थे।
 -थक्त-कृत दरमेदी चक्ति होना : -में होश-
 भविद्वारः भादामें होना ।
बार्स-प्रश् (का ] संदावरींने शुक्त बीकर सा समका अर्थ
 देश है (माइवश्च-बॉद-सा-न्द्रेश्र) ।
पशका~नी [मं] शाक्षामें रवनेवाओं पक्षी।
बराम∽पु[रं•] इच्छा दरमा ।
बद्दा:-मी [मं] मो; गावा इतिमी; कमा; ननद; वॉश
 म्यो वा गाव ।
यशाकु-इ [मं] एक विशिवा ।
बशाह्यक-५ (ग्रं•) स्ना
वज्ञान्त-पुर [मं ] बाहादाये, दास । विरु वशीपृत
 वश्वती ।
विदा-स्पे [में ] क्छ में इदमा।
वशिक्ष-नि॰ [सुं•] शुन्ध, रिखः ।
```

```
वशिका~सी [सं०] अगर।
  विशेषा-चौ॰ विशेष-प [र्ष•] अभीनवा समोपनः
    योगकी एक सिक्रि ।
  विश्वानि-स्थे [र्स+] श्रमी, श्रीवनका देश शीरा।
  बद्दिमा(सन्)-सी॰ [सं॰] बदामें बहमेबी बहाने प्रप
   घक्ति।
  बश्चिर-पु [र्स•] समुत्री सम्बद्ध नत्रविष्यक्षी वक्षा प्रमा
   व्यवामार्ग ।
  वशिष्ठ-पु [सं•] वे 'नसिष्ठ' ।
  बसी(बिाम)-वि॰ [सं ] सक्तिसाठी संबर्धा अस्तेधे
   बक्षमें रचनेवाकाः बदामें दिवा द्रभा, क्योस बदावरी।
   थ शासका भवि t
  बद्दक्तिर-दि॰ [र्ग#] बद्दमें करमंत्रामा ।
  वद्यक्रिरण-प्र [सं+] वसमें माना मदादिब प्रयोगने
   विसीको बद्योपत करमा ।
 बशीकार-प्र• सि विश्वमें करना ।
  वक्तीकृत्त−वि [सं•] वष्टमें किया हुआ। मंत्र हारा दक्षमे
  किया दशा ह
 वशीयृत्त-वि [र्ष ] अभीवः दरापीतः।
 वर्शेद्रिय-वि॰ (सं॰) विवेदिय ।
 वह्य-दि [सं] वसमें किये जाने थोग्य दा किया जाने
  वालाः वसर्गे किया हुआ । दुश् दासः भावितः सागः
  -मिच-ड वह भिन (राष्ट्र राजा) विश्वका दश्कासमार
  वपरोन दिया था सदे !
वायक-वि (वे॰) शाक्तकारी ।
वञ्चका−सां[सं∘] श्रद्धामें रहमेवामी ली।
वर्षता-न्धे॰ [मं•] बरोबता ।
वद्या-मी [मं ] बद्धानृता श्रीः क्रमामः मीरीनमः मीर
 भवराशिया ।
वयह-म॰ सि । बदाहति दे समय ४४ समान प्रान्तः।
 -कर्रा(त)-५ वषर्का बधारम बरमवाता । न्कार-
 व वदरका उधारमः द्रीम ।
धरम्ब-१ नि कि मानका प्रशा
बय्क्यची वय्क्रविजी-स्तो [मं ] यह माप (अत्रः)
 बराका करा ही गया ही वर्षेका गाय ।
क्षांस-द • [लंक] छ अनुक्षीयेने यद ये। वैश्व-वैशासये
 होती है (बस्ता देवस्पर्मे कामदेवका सदयर माना मान
 है)। अधिनारः मगुरिकाः विश्ववका मचवित सर्वे
 (al )! an Ant de tial de tant Zidlich ;
-कास-पु॰ वर्गत कन्। -बुनुम-पु वृह्णिया
-धीय -धीयी(यिन्)-५ धीदेत । -जा-सी
सपेद बुर्गा मापनी रुता। बर्मनीत्मव । -तिमक-
य -तिसका-तो य्य वर्षक्त ।-वृत-त कोकिया
भाग इस नेत्र माना हिडीन शत : -शूनी-मी
पारमी मृद्या भारती छनाः गनिसारीः श्रादत । 🗕 🛣 🛎
हुस-पु काश वृत्त र —र्वचसी—स्थे साव हुद्धा रचेत्री
और कम दिम दीनेशला स्वीदार ! - मुप्प-5 BE
पुरुषा यह तरकृता करेंच । -वंतु-पु कामीन !
-भरूबी-मी॰ दद शरिमी । -महोत्सव-५ हो<sup>०</sup>
कीत्वत । -माह--पु॰ [वि ] हाट क्यांका रह रावे
```

साँस । ∽मदिसा∽सी मुखावृक्ष व्यवस्थित । मुख्यत एक शेमः चेवरेपरका ~इ्यामि**का~**श्री कालापन I वद्नासय-वु [तं] मुखदा होग। वदनासब-पु॰ [र्न॰] सातु वृद्धः अवरमनु । वदमोदर-पु॰ [मं॰] शुसका गहर । धदन्य, पदान्य-वि [तं] धदारः वालंत दानशीकः बारमी: ममुरमाधी, बातमे संतुष्ट करमेवाका 🖫 कदार स्पक्ति। वद्मान-वि [तुं•] वाक्नेदाका भाषण कर्जेवाला । वदर-पु [मं] देर। कपासका नीम । वद्रा~न्त्री [मं] इपासका गीथा। पदास-पु [मं] बादाम नामक फुछ । बदास-प् [सं] अस्तर्त मेंबरः एक मछणी, वदिमा पासेम् । **बर्**गस्टक-पु [तु] यह तरहरी मधनी वराज । बदावद-वि॰ [सं॰] बहुन बोठनबाला । वदि-न [मं] कृषापद्रमें (महीनेडे गामके शंवमें बोहा चाना है)। पदिश्वरप-वि [सं] कदने योश्न । बदिता(तृ)-पु॰ [सं] शेरमे कदनेशला। पदी~न द वरिं। वदीशत-सी [स] ममानत परोहर। वदुसाना च कि मला दुरा कदना दीवारीप करना । **मध~दि** [मं∗] क्रणी वीस्त करिया पु० वास स्थमः कृषा एश्वरे दिल । न्यवर-पुरुष पश्च पध-तु [मं+] सार नास्त्रज्ञा नाश्च इनना गृत्युया धारीरिक र्यंट। भाषामः स्थलाः निकीयः ग्रामननिषाः मारनेवाना । -कर्माधिकारी(तिन्)-त वहार । -कोझी(क्षित्)-वि कुलुडी रच्छा वरनेवाला । -काम-वि मारमैक्षे दण्छा रक्षनेवाला । -काम्या-मारमेकी रुग्छा । –क्षम-वि अवसे यीग्य । -जीवी(विन)-प्र• वच्या काम करके होशी कमाने वारा−दमार्थ बक्षार, स्थापा भारि । −वृंड −निग्रह− दुर्गोनोक्री सना ! −मिर्णेक्र−६ इत्याका प्रायक्षितः। ~भूमि-मी -स्थान-पु वह स्थान अर्थी प्राप्त्रंट शिया आय यपरवल । बचक-वि [सं+] दरमा बरनेवानाः यानकः। हु जाप्तरः व्यापाः मृत्यः एक तरहरा महर्वशः । षपग्र-पु [शु] धानक दक्षियार । यधीगक-पु [मं] स्वरागृह । चपाई-वि[ां] वयदे देश्यः। पश्चिक-दुदे वश्विः [शं] करपूरी। विध्य-पु [मंग] बाम ना बामामितः। पथिर-वि [मे] दे अधिर । वत्र बचुका-स्मे [गेण] पुत्रवशुः बुलदिनः नुवशे। बयुरी-सी [संग] दियाके गांव रहनेवाणी अवयुवती। JATE 1 यभू-भी [1] दुनश्मिः पतीः गीतः भी-गारः आन वर । - गृहमध्या-इ अन्ता दतिके वर्गे मरेश करते

प॰ बन्नापक्षके स्रोग । ~थका~पु॰ विवाहके समय कृत्वाकी टिया जानेशस्य वस्त । बच्ची-सी॰ [सं॰] नवनुवतीः पुत्रवप् । बभूत•-पु वे 'नवशूत । बबोदक-वि॰ [ने॰] विसको परिगति सरसमें हो। वधोद्यत-वि [र्स॰] मारनेको तत्पर । पु इत्वारा । वधीपाय-पु [सं] मारनेका इविवार या क्याय । बच्य-मि [मं] इंतब्य, सार दालने पीरपा इंट्य । पुर बह जिसका वय वा सजा की जानेवाकी हो। -धारुक -ध्य-दिक, पु प्राणनंब पाने हुए व्यक्तिका वर्ष करने बाक्षाः।-चिद्धः-पुग्रामर्गद पत्ने द्वयः अपराचीका निश्वः। -विकिश-त 'कष्यपरद'। -पट-तु वमश्य दिय बामेके समयका काल बखा। -पटइ-प्र पाँसी देनेके समय को बानेवाको सुनारी । ∼पाछ −९ कारारधक, 'बेस्र' ! -मृमि-सी॰ -स्थल -स्थान-पु दे॰ 'बबध्मि । - मासा-की आणवंड पामेबाडेके सिर्पर यहमाया बानेवाका क्षार । -बाम(स्)-प्र प्रावदंद वाने द्वार व्यक्तिया वस । -शिका-की वह शिलाबा वेशी जिसपर क्य किया जाता है। बच्या-हाँ • [र्स] वय इत्या । बार-पु (सं) एक पासु सीसाः वसदेका तस्या । प्रमुक-पुरु [संर] शीक्षा । बाह्रि-दिश् [सं] पशिया । विधिका-द [र्छ+] विवत प्रगय, श्रीता । बारी-की [सर्] चमरेस दसमा। बार्य-पु [सं] भूगा। यम-पु॰ [र्थ] जेगना बाग अपवता जला घरा शरमा। प्रवादिका समृहः पुरक्षत्वरक, पून्नोका ग्रन्छाः सन्त्यासिही की एक छपाचि। साठका पात्रः काका आपन्य-निवासः प्रकाशको स्टिल । -संदूस-पुण्य अपटी जातिका सूरतः -कणा-त्ये वसदिवशे ! -कप्रशे-हा मंगरी येला । -करी(रिन्)-पु दे 'यनपुंचर'। -काम-वि अंगलमें रहनेका हम्युक i - कुछर -गाज-यु अंगरी दावी ।-क्षोक्सिक-युर एक दून ।-क्षोह्रय -तु वह करण ।-क्टोसि-दर्श स्तर्भ देर ।-ग-पुर बनवानी । भ्यासम् – व्राच्याम सदगः । – गाहम – व्र यना जैगक । -गुस-धु अल्ला । -गासर-दि प्राद धेगरमें जानवानाः अस्मे रहनेशाण । पु स्वापाः बनवानीः धंगर । -प्राही(हिन्)-प् स्थापा। -चैदम-पु देवशाना --चींब्रवा --प्रयोगमा-सी॰ एक तरददी यमेंनी ! - चंपक-पु चंदाका वस अह । -चर-पु॰ वसमें भ्रमम बरसंबाता भारमी। जेन्ही भारमी। वया एक भीका स्टब्स । - चारी (तिस्)-पु बनवर । -ग्राम-पु॰ जेननी बद्दराः मूकर ।- अ --वि॰ बसमें बनाब । यु अंगरचे १६ अशन्। हारी। ब्रामान भीबाः जंग्णी विजेशा शीव्यवस्तुम<u>्यो। ए</u>क बार_ार्सी -जा-मी वनपुरशी शुप्रदर्भः समेर कृष्यारि । —चीर्~पु॰ बार्ग जी(ो)

को यह दिथि । —धन-पुण् स्रोका निजी थन । ~पदा -

1203 वारिका राग । - मासिका-सी॰ एक छंद । - बाग्रा-स्त्री वर्ततोरसव। –योध-पुकामदेव। –हा**व**-पु•कतुरावः – झव्र−पु समृरिकाः। − झत्र−पु• कोषक (१); वर्सकोत्सव । —सन्त्र-पु॰ कामरेव; मक्या तिस । -सराा-प [हि•] वे 'वसेतसस । -सहाय-पुकामदेव। वर्गतक-पु [सं•] वसंत क्याः एक सरहका दवीमाकः । वसंसा-पुपद्भ विविधा। थर्सतार्थ-पु [सं] बहेवा विभीतकका येहा वसंती-पु• भरमोंके पून नेसा एक इस्का पीलारंग। वि॰ वरोती रंगका । सी वासंती कथा । वसंत्रोरसब-पु[मं] होस्किरेस्सन । पस्यत-लो• [भ] फैलहा हुशारगीः गुँबास्यः भारामः मीकाः पुरसतः बहुतायतः । थसति बसती-नी [4] दास, रहनाः वरः शिविरः भाषायी बरतीः भाषारः विभाग क्रांकः रातः साधुर्मीका मठ (वे) : बसय-प् [सं•] रहतेका स्थान, वरः मीधः। वसन-पु [सं] वसः इक्नेकी वरतु आवरणः मिवासः मकाना निक्षा कमरका एक गहना रखना। तेवपात । -पर्याप-पुतन परिवर्तन । -सग्र(भ्)-पुलेमाः बसना, बसमी नती [सं•] कमरका एक गइना। वसमार्योद्या – स्ती [मं] पृष्की। बसमा≔प्र [अ] नीत्रके परे जिन्हें मेहरीमें निकादर बार्कीमें दित्राव करते हैं। वक तरहका छवा हुना क्रवहा । -दार-दि धन्मेमे रेंबा हुआ। -पोद्म-वु बरमैसे रैंगा हुआ अपना पहननेवाला। सूरु -करमा-वार्थी-में रिवान कगाना । दसपम्त-९ (#] दे बसवास । बसवास-पु [म] मुकाबाः प्रमा संका मेह। पसबासी-दि मुहादेने शहनेवाहाः धद दरनवाहा । पसद्दर-पु वैस । यमा-म्रो [मंग] मेरा मेर या चरवीबाका परार्थः मेबाः भररक नेमा एक मूखा - अनु-पु थक वृत्रदेनु। - छरा-सी मेबा। -पापी(यिम्)-९ कुत्ता। -पाशा(पन्)-वि मेर पीनेवामा। पु यक्त वैदिक देवता। -प्रमेद्द -भेड-पुण्ड प्रमेद विसर्वे सुचक्के काष पदा निरमती है। -शूर-इ एक जनपर। —शेद−पु॰ दुकुरमुक्ताः ३ वैमाद्य वमाद्यक्र-५ [मं॰] गुँग । पमातत-सी [अ] मव्यत्थना वरिया । बमाति−भी॰ [मं] बढ़ बनका उथा। यु बहाति त्रमण्डका निशामीः दश्रापुदा एक पुत्रः वसमवनदा पुत्र। यसार्जी-सी [4] दीना शीशम। षमार-९ [मेर) इच्छा अभिप्राया प्रयोजन । यसि - भौ [लं -] वल्दः सद्यतः । वसिक-वि [१:०] रिका, गाली । कु वशकानमें वैडने माना । वरिम−4ि [न•] यस्या दुआः नगादुआः जमादिया द्वमा । यू सम्भावाम-स्थान ।

वसिसच्य-वि [सं•] पहलन, भारण करने योग्य। बसिता(४) - व , प्र॰ [सं] पश्मनेवाका । वसिर-पु [सं•] सप्तुदी नमका गत्रपिपकी। काक विषया बहनीम । वस्पिष्ट-पु [मं•] एक स्टिष (वेडके बहुतसे मंत्री विदेन वत' अन्वेदके साववें अंडकके रचविता यदी कहे जाते है। इनका नाम रामायण, महामारत और पुराय र्मभौमें प्राच काता है। ये सुदासके पुरोहित थे। दिया निवसे वह करानेवर सुरासरे क्य हुए और विधामित्र-से भी पर हुआ। पुराणीमें ने बहाके मानसपत्र करे गये हैं)। सप्तर्विमें क्या यक तारा: एक रमृतिकार। -सिद्द्व-पु॰ यक शाम। -पुराज-पु॰ यक श्रप-पुराण। -प्राची-सी० एक जनवर। -थज्ञ-पु वप्रविशेष । -शक-यु यक शाम । -शिक्षा-नी पक शिक्षा । -संसर्प-पु भार दिन वकनेवाका दक्ष वय । -सहिवा-मी एक स्वृति । -सिद्धांत-पु॰ एक क्योतिय-ग्रंप। बिसेएक-पुनि•] वशिष्ठ करि । बसिष्टौकुत्त∽तु [तं] रक्ष माप्र । वसिद्यानुपद-पु [मं] रह शाम । वसिष्टोचपुराज-प [०) व्ह उपपुराज । बमी-प्र [ल] वह व्यक्ति जिसको वसीयत की गली हो वा निएडे नाम बग्रीबतनामा क्रिया गया हो। धसी(सिम्) −पु॰ [सं] कदविद्यादः यसीश-वि॰ [य] चीहा पेना हमा विरन्त । बसीजत बसीयत-न्यो [स] मृत्यु या वंशे बाधाने अवसरपर सुरुषे बाद अपनी भंगतिके प्रश्न बक्तीम आदिके विषयमें किया हुआ आदेश ! - नामा-प्र मृत्युक्ते बारके कर्नव्योक्त आहेता पत्र मृत्युवय । बसीक्र-वि [भ] एइ, मनवृत्तः दिसास । वसीक्रा-प श्रीक-करारा रदशस्मामाः दस्तानेत्रा क्रम पत्र । - बार-वि क्सिके इक्ते वर्शका किया गया हीः महाबन् । -सरकारी-द सरकारी कमपन, शबबेट बांड । पसीम-दि [व] संदर। थमीछा-५ [थ] अरिवाः महाराः महाबता । षर्मुचरा-मी [मं] बृध्यी। रेशा रास्या वितिः सपस्य की बन्ना श्रांवडी व्ही। ग्रह देवी । न्धर्-पुर बहाइ । -श्रव-९ राजा । -भृत्-५० पहार । -ग्रानामीर-

वसु-वि [में] सर्वे थमनेशकाः मधुरा शुष्ट । प्र

थना रहा सीना। यह परायाँ यह समदा रोगी मैंगा आह

देवनाओंका व्यावर्गः आध्या संस्था मुरेरा विका स्राधाः

क्या सरीवरः समाय वागानेरः तुवा वीवनधी रस्मी।

ग्वैं। चॅर्याः भीशनितीः एक गरदक्ष महनीः छात्रवदा

व्यक्त भर । की महाश वीतिः प्रदान-रिमा एक प्रशी

वृद्धि अमरारती। अकटा। दशकी न्य कर्या । -वर्ष-

तु व्य मंत्राष्टा करि। -क्षेर -कृति-पु निमुद्द।

−=-९ ६६ करि। -चारड-१ मोना।-रिसहा-

की नवादेश : -- यू-वि धन देनेशनाः यु कुन्स

त राजा ।

दासाः नदेशिना । --विका-पु॰ वन वरीवको । --विकाः -सिक्तिका-स्रो नाका र -तुकसी-सी॰ पर्रत। -व-पु॰ शहर । -वृद्ध-पु बनाधि । -वृीप-पु॰ ननपंत्रः। –देवः,–देवता–५० क्ष्यस्का नशिक्षाता देशता [श्री विश्वविद्या] -क्किय-पुक वनकुष्टर । --धान्य-तु बंदती बच । --धेमु--ती॰ गवनी। -प्रस्य-पु योगोजन मामक रूप । -पौसुस-पु भावा ।-पिप्पकी-स्रो कोरो पीपस । **-पूरक**-पु जंतती विजीस नीवृ। =प्रवेश-तु दे० 'वजसम्ब'। -प्रस्थ-वि तरसी । -प्रिय-पु कोनका सीमर तिरतः नरेहेवा पेहः वपूरवचरोः -मूपणी-सौ क्षेत्रक । न्यसिका-खी॰ बाँछ । न्यक्षिका-खी॰ Hadisi पौषा का फूक । ~सार्त्या~प्र कन≰कर । -शासप-प्र• एक तरहका चंदर । -शास्त्रा-सी वनके कृतीको मास्राः पुरर्गीतक क्षेत्रे कतु-कुरायीको यास्रा (इन्को) । -माशिमी-को इारकपुरीः वाराही। −मास्री(किन्)∽दि॰ बनगक्ता प्यननेवाका । पु० इच्या । - सुक् (च) - शत-पु कारका - शह-पु पुरुवका - पुत्रा-सी पुत्रपर्वी। - सूर्ववा-सी जनको विजीस नीयु। कालकासिंगी । −शोचा−सी भंपती देखा। ~राज्र~पु> सिंहा एक बृक्ष, कारमंतक। -राजिः,-राजी-सी वन बंगल व्यक्तमुद्दाः,अंवस्मी पगरंगीः गल्देरको एक दाली । -स्व-तु सम्ब ~कस्मी~या पन्छ होस। देखा । ~छता~सी अंदनी वेस । −वर्ष रिका-सी॰ वनव्युरी । −वास-पु॰ वनमें रहता ! [मु॰ ~•देना-नस्ती धोवकर वनमें रहकेशे बाधा देसा । - • छेमा - वस्ती छोड़कर वश्मे रहना । ~वासक्-पु शक्षमको क्षेत्र।~बासम-पु गंपविशाव। -बासी(सिम्)-वि वनमें रहनैवाना । प्र वनमें रहनै बाक्ता म्यक्ति एक ओवधि जावभ वाराही करा शासनगी क्षेत्र होन्साक कोठा कीनाः बीटमहिष मामक क्षेत्र । -विकासिनी-से यह बता, शंधरुष्ये । −वीज -बीबक-प बंगको दिवीरा नीव्। -ब्रुताकी-सी दत्रमंश ! -- वृत्ति-सी॰ संगतमे बीर्वेडा स्काना। −भीकि~त तिश्री । −हाक्सी~सी केवॉवा बंगली स्वरो । -श्रीराद्य-स्रीरादक-पु वीयक !-द्योमन-पुरुमतः। -शा(श्रदः)-पुर्योशकः नागः वंत्रक्तिमः। -संबर-प्र महर । -समूह-पु बना जंगन । -सरोजिमी-को वनकपासी । सिंबर-पुरु वसनेवर । -स्म-द् वनवासी व्यक्तिः वानप्रत्वः तृगः। -स्य**ड**ी--सी वसकी मूमि बड़ाँवन दो। −स्था−ली वीएन इस बरक्य ।-स्थायी(यिन्)-वि अंगडमें रहनेवाका । पु• तपरथी। ~लक्(ज्)~शी बनमाटा वंगरी पुर्वेक्य माथा !-इरि~ड सिंह !-इरिज्ञा-की वन इस्ता। -इद-पु एक दक्का वर्ष ।-इस-पु व्येगः एड पूत तुर्द । - हासक-पुदाग्रह्म । -- हृतासन-पुरमान्ति। यसर-पु॰ [मं॰] बनमानुम् । षमस्पति - स्रो पु॰ [न] रिशा भूओं के बुद्ध (गून्यः पीपण पावर ना^{त्र}-मनु): कता, पृत्र नारिः मृँगप्रती |

आदिका बनावा हुआ तेल (का): दरमदा सीमा तमा वयस्तीमः फौसीको टिकठो । तुः भूगराङ्का एक दुवानिष्याः सम्म्बासी । –शास्त्र-पेड श्रेपी आदिने विकास सामी पाँग विवेषण करनेवाका विद्याल, बनस्पति विवास । वनाँत-पु [तं॰] बनकी मृत्रिः वसका श्रीमांत माय। वर्गातर-पु॰ (तं॰) अन्य पनः पनकः मोतरी माग् । वनास्-य (संग्रेसरहा । वकारिन-सी॰ (सं॰) वनमें कमनेवाको क्षाय, दावासक। बमाख-पुर्शि | बंगको नद्वरा। वनारम-प॰ सि॰ी वय-प्रयथ । वनाटु-पु [सं०] एक तरक्ष्मे नीकी मक्सी। वनाय-त॰ (रो॰) एक प्राचीन प्रदेश (अवके पीती**ने** कि प्रसिक्त); बमायुका निवाधी; पुरूरवाका एक प्रव ! --बा-पु बनाबुमें उत्पन्न पोहा। षनारिष्टा~सी (र्स॰) वनदरिहा i दमार्चक-तु (सं∘) हार नगामेनावः। वसाखन्द्र, वनाखन्द्रक् – ५० [सं•] मेहः । बनासिका-धी (ए॰) व्या तता, शाबीसंदी ! वनास-नि॰ [सं] देवक वस पोस्त (हमेशका । प्र॰ रह सरका होरा थी। वयाभ्य- 🖫 (सं॰) काका क्षीताः संगत्तमे रहमेवाका । थनाहिर-५ (सं] रंगशे भूतर । बबि-प [सं] नरिना देश वाचना । सी १५५१ । बनिका-की (सं) धोरा यस क्षेत्रयम्। वनित-रि सिं॰ वाधिया सैवितः मॉमक्षितः पृतितः। विश्वता-ची [र्स] स्त्रीः विवा, मेनसीः मादाः दक्ष कुछ, तिक्या । - ब्रिट्(प) - पुरमणे वेशा : - भोगिशी -को॰ नायन बेसी को। - मुन्द-पुण्य बाति। -विकास-प्र नियोका विदार, अंग्रेश शारि । वनी-सी• [सं] होदा वन । थमी(मिन्)-इ [सं] बानगरवा ब्रह्मा सीम । बमीक-प्र (सं) विश्वकः सम्बासी । वनीयक वनीयक-तु (सं) मिल्लक। वर्नेविद्यक-तुर्मि] अवासक वासहय मिकनेशको बस्ता । बनवर-पु॰ (सं॰) बनवर, अंगळ्ये फिरनेवाला; धंपणी वारमीः सनवामीः पर्। । क्षाय-९ [म्] शहिशा आमः पापनः वर्षरः। चनेविस्तक-पु [सं] दे बनेदिशह'। वमोस्पर्य-५० [सं] संदिर, दूप आर्टर वनवाहर हार्ग वनिक अपनागक किए दाम करना । वमोत्माइ-५ [सं] वंदाः वयोज्ञया~सी [सं] दनदपानी। थमोपद्रव−५ [तं] वनदार र बनोयक-त [र्म•] यूमा थीरह बंदा ह वनीका(कार्)-पु॰ [सं॰] श्रपन्तः भरन्यशक्षा ५५७ ध्वर भारि भानवर । वर्गीपधि नमी [मं] यंगशी बही वृद्धी ह **वस-५** (सं०) माग्रीदार माग्री ह बन्द-रि [मं] वसमें पैदा हीनेसन्दाहर्यक्ये । पुरु संपर्ग

एक पुत्र । —हासा(सन्)-पु॰ मृदद्यका यक पुत्र । -वेष−पु कृष्यके विद्या। - स्ः-सुत-पु कृष्ण। -वेवत-पु॰ वनिष्ठा नशुत्र । -वेय्यो-व्यो• थनिश्चा मधनः पद्मश्री नवा तिथि। −वैत्र −वैतत् –पु• वे• वसुरेवत'। -हुम-पु॰ शृतर। -धर्मिका-ती॰ रहाटेंड ! -धा-ली॰ पृथ्वी, शिवि राज्य; कर्मी । -- शम-पु: परातक । -- घर-पु: पदाप: विप्पु । -- भगर-पु **क्र**नेरको शबधामो । -धाम-पु धन वात । - भार-वि॰ वन क्रीश रखनेवाला । पु॰ एक पदान ! -भारा-सी॰ यह देशे (नी॰): यह शक्ति (बे); कुनेरकी पुरी, बक्का; यह तीर्वं; मांदीमुदा मादका इत्वनिशेषः) एक मही। यन या वालका प्रवाहः। च्यारिणी-सो+ पृथ्वा। -मेन्र-तु+ प्रश्ना (वा)। -पति-प इथ्ना -पाता(त)-प इथ्ना-पास-पुराजा। --प्रदू-वि वन देनेवाका। पुछिवः 5 देश स्पंदका एक शतुभर्। −प्रसा~की अधिकी एक विद्वाः कृतरुकः राज्यस्य । - प्राप्य- प्र अधिः - अप्र-महादान शहाके एक प्राचीन श्रीक भाषार्थः। —श्र— पु॰ पनिष्ठा सद्यम् । — श्रदित्तच विः पनपूर्व । — सना-(मस)-पुण्क संबद्धा ऋषि। यक क्रोस्टनरेखा - सिम्न-पु॰ वैमाविद छेपदावके एक शावार्थ (सदावान बीक्र) । ~रश्चित्त~प्र• एक बीक्र भाषार्व । ~रात्त~प्र यस कवि । ∼इन्छि~पुण्ड गंववे । ∽क्कप∽पुछिव । −रेता(सम्)−५ धिक अधि । ~रोचि(स्)−५ मद्राः नव-पुरुद्धिशालिकदेशा - बाह-पुरु मावि । - विद-दि भन माप्त करनेवाला । - मध-तु एक तरहका अमुद्रान । -- क्रबा(बस्)-पु॰ शिव। न्मी-को स्थंतको एक मातुकाः नमत∽वि धनके तिक विक्यातः। —स्रोष्ट-वि वसुभौति मेश्र (कृष्णः) । स भाँदी । -पेय-दु इर्मः विष्यु । -संदक्ति-सी धन प्राप्ति । -सारा -स्वक्ती-न्ये इनेस्का राजनगर । -EH-5 alitati an 241 -ES-EE#-5 बस ब्रुप्त । यमुक-द [सं] सीमर नमक प्रीमृत्यका एक वाला मक बुरा यस पुष्पा काका सगर। वही मोस्निरी । **मस्कोदर**~९ (सं•] तानीधनम् । वसुभाषिय-५ (से) राजा। बस्त-५ [व] वदा बसमही-सी [नं•] पृथ्वीः देश राज्यः वर्गानः एक इस ।-पति-द्र शका।-पृक्र-पु भरानल।-सूनु-पु भरहा बसर-वि (सं) मृत्यकान् । यस्छ-५ [म] रेक्झ ।

वसक-पु (सं•) वह इत वा वतवा प्रमा मौबर

यसूत्र-पुर्डि] वद संबद्धा करि।

बस्चम-५ [मे॰] श्रीष्म।

यम्मती-स्म (सं॰) वर्गा स्मे।

सम्द ।

विम्यु । −दा=स्त्री॰ पृथ्वी; एक वेवी; सर्वन्द्री एक्

मातृका । --वाम-पु निरेश्रायका एक पुत्रः बृहद्रथदा

वस्रा~मी वि] शस्ताः पस्क∽पु• [बा] निकना प्राप्तिः पर्देशनाः विशी, गर्देशे दुरे रक्षम वा भीज। वि निजा हक्का माता वसमी-वि वसक होने बोम्ब, प्राप्तम्ब । हो । 'वस्त'। वस्क-पु [सं] गमनः अध्यवसायः। वस्कथ~त्र• सि] रे बच्छव । वस्कमती-सी [मं] है 'वपत्वती । वस्कराटिका-श्री॰ (सं] वृधिक (षस्त−त [र्स•] क्टराः रहनेदा स्थान वा मदान।† की वस्ता। -क्या-पुश्चास कृता -र्रादा-सीध सबर्गंशा - सोद्रा~मी अवसोदा। वस्त−म [ब•] वीच दरमियान। पु बच्च बाग स्रि । −(रते) दिव~त सम्बन्धातः। घरतक-प्र• [र्ष] कृतिम क्रमा बस्तम्य-दि [संन्] रहते, ठहरने बोग्या व्यनीत करने योम्ब । वस्तांती-सी सि कि धेना कारशिका। वस्ता(त)-वि [र्व] वस भारत करमेवाता। पमान थस्ति-की॰ (श्रे॰) वेड - मानिके मीचेडा माना नुशस्त्र विषयाती (श्लीमा); विवास क्षत्रेका छोर । न्यर्म (व) -प्र किंग, ग्रदा मादिमें विभक्तरो देश। -कर्माप-पु अरिष्ट इस । -बुंडल-पु -बुंडलिका-ली॰ मुशासनका पढ़ रीय जिसमें इसमें व्यव पर पार्थ है। -कोश-इ नृपाद्यका -सल-इ सूत्र पेशारा -बास-यु वह मृत्रशेष । -शिर(म्)-यु धनिया की होता मुख्यसच्या करस्या संबोर्ग भाग । —श्रीर्य-व मुवाद्यवद्या कराव्या संद्रीर्ग माग । -शोधन-पुर यदम धितदन्तः। बस्ती−ि दरविदामी वीवका । वस्तु –तो (वं∘) दिमो योजदा भाषार, दोड: वह परार्थ विस्तरी स्थिति स्तरा हो। एस्या भीज पदार्थ। मारा बारिक वहायी बन संत्रति। बवदरमा बृतांत, शतिका मारक्की कहानी, बरता क्या-बल्हा धर्म स्थाना बाबता। -कृत-रि अस्यस्त । -अरात्-पुश्रार माम जगपु । --वाल-पु बरतभीका बीग । -- शान-प्रके बरमुकी प्रवासक करवान सब मारवटा कीव ! " निर्देश-पु वह अंगलावरण किमारे दशादा पुछ गरें। भागाप रवता है। सूर्या १ - क्छ- न् वानुका गुप वी ग्रस्ति । –भाष-पुत्रवार्थता । –भार्-पुशास्त्री र्थनर । –शास−व् दिन्ही निषददा शाध क्य । –स्पर्धा -भी श्रेनी। स्थापातुका निश्राप्त । -वाप-तु पर्व बार्रिक निर्मात क्रिमें १६५ मन्द्रका बमारप 🗗 यानतः ॥ भृतवादः। -विनियय-तु वन्त्रवीवा अर्थः दरम । -बूच-तु वदार्थ दिस्त । -शुक्य~दि॰ जिने बबार्वशास को अवशी । – रिचनि – सा परिवित्त । बस्तुक-दु [शं+] सार् थागा रह साम वाध्यद्य । **बरनुको –**म्पे [सं•] इने५ पिट्टी झा**र**ा यस्तुतः(सप्)-म [सं]यदार्थनः भत्तक्रीः।

```
धम्या-वयस
```

बातबरः अंगले प्रेणः वाराष्ट्रेतंदः वमस्यानः ग्रंखः स्वता। -हिए-यु अंगले वार्षो । -एस्सि(स्तिन्)-यु अंगले

निश्चित्रः - मूचि-को अंगलमें करक प्रार्थं । वि ऐसी दोजोर कोकत वितानका । करमा-की [सं] सपन वना वर्गका समुद्रा कर-प्राप्ता करुरातिः योगल-कर्माः समुद्रापः सुवयो। सुद्रापाः

महमुस्ता। वस्योपोदकी-श्वी [मं] वसपोव।

1111

यस्पापात्का न्या (७) प्रसाध । यस्पाप्य (संब्) मुंदमा बीव बीनाः वदमा बीमेबाका । वयस-पु (संब) बीव बीनाः केश्च मृदना सुका नार्वकी

हुकानः तंतुष्वालाः करपाः। धपनी-न्त्री॰ [सं] बात्र बनाने या कपना हुननेका

श्थान । दयनीय⇔दि० [सं०] दीने दोग्यः सुंदनके बोग्य ।

वपा-सी॰ [सं] मेरा वॉवीः विवस वॉर्टीका वर्ष ।-कृत् --पु॰ समा।

विपेश्त−वि• दोवा हुमा। विपेश्त−प्रसि] बनक, दिया।

वापक=दुः[सं] स्तरकारसः बद्रास्त्रद=दु॰[सं] स्तरकारसः

वयु-पु [सं•] धरोर । बपु(स्)-पु• [सं] घरोर, देश माझतिः सीरवैः संदर

स्य ।

बचुम-चु [सं] बाना देवता । बचुमान-वि बचुमान्, संदर और पुरु वेडवाकाः संदरः

साहार मृर्व ।

षपुर्यर−वि॰ [सं॰] मृर्तः सुरर । षपुर-पु [म] बाङ्कि-सीरवं ।

बदुपा-सो [मंग] इदया।

बहुइसा-दि को [सं•] परम सुंदरी। को श्रमकारियी कताः जनमेनव्यी पत्ती।

वयुष्माम् (प्मन्) – वि [सं॰] शरीरीः, मूर्नः संदर । वरोदर-वि॰ [सं॰] वीदवाका ।

वपोदर−4॰ (रं॰] तीरवाडा । वसा(प्नृ)−3 [रं] पिटा, जनकः नार्यः वीज वीनेवाडा

दिशाना करि । यम-पु॰ (६०) भीटा, इहा, मिट्टीका रत्या बुर्ग भगरकी स्पारंधे निक्मी मिट्टी। सींड मारिका भीगते इह मारिकी

थिही बुरेरना। बैपा बिनारा, छर गेमः भूनः पहानेश्वे बाना प्रवादधी भीताः अधिष्यतः गीवैः दुमेश्य नगरका विवदारः परियाः मैदामः धेराः यक जनायी। शीलाः विचाः स्वातः कुणादैवादमः भीत्वते मनुका एक बुधः।

-- किया,-- प्रीक्ष-भी स्त्रैं कार्रका दृश्यों विद्री कुरुता।

बमरु-पु [र्न•] परिषेका पराः वरिषि । बमा-को [र्न•] मजोडः तोवकर निमिक्ती माना (रे•)ः मिट्टोका विवरे सिरका वींच ।

विश्व-पु [मं] समुद्रा क्षेत्रा दुर्वति, स्वामनी वृद्यस्ता । विश्व-मो [सं] वर्षी मिहोका दृष्या ।

वजा-तु [भः] वयमका सान्या (गीति निवस सारि का) निवीदा सर्गेन्यान्या सुरोतात क्षत्रपा । न्यून ति वयननामका सीति विकास सरीवन क्षत्रपा । न्यून नाकाः रनामियकः राजमकः! — दारी-की वकाशर होनाः प्रीति वारिका निर्वोदः रनामियकि, राजमकि। वकात-की [अ] कृत्यु मीतः। मु॰ —पामा-मर बामा।

को होनेसाका रोग (देवा केय र०)। -वूँ-वि० महा-गारिक्य द्वारो (नीमारी)। वयाक-पु० वि] कठिनारी होरा मारा वटा, सनिशाप। वि० मारक्य, यूमर! -(से) जाग-वि० बानका समाप भारी कटका कारण (दी जाना)। वम-पु० (वि] वमन, की।

बससु-पु॰ [सं॰] बमना ब्हा मतनी; हाथेश्चे हैंड़े निकाला हुना पानी। बसन-पु [सं] बजदी, के करना; बाहर निकालना; पीड़ा: बाहरि: बमन करानेशको दवा; धाँग।

यसना॰-च कि॰कै करना । यसमी-की [सं•] योड । यसमीया-खो• [सं] सम्ती । यसि-की [सं] यसनका रोगा यसन करानेवालो दवा ।

पु॰ निधा पुरा थन्ता । वसित-पि॰ वि वसन किया दुमा शमन करावा

() हुआ। यमी-सी (रं॰) दें॰ बीम । यमी(मिम्)-वि॰ (रं) बीम रोमसे मस्तु।

वमति-ता॰ [सं] वमन करनेकी किया ।

बन्य-वि (चं] क्लिने वमन कराया जाय । बन्न-पु॰ (चं] दे क्ली '। बन्न-पु॰ (चं] बीरा दीनका दि पहुत छोटा ।

पद्रते⊶को [तं•] चोदी; दोसका -वृद्र-तु ४ दिमीट।

वयःक्रम्न-पु [मै॰] वयः अवस्थाः । वयःपरिणति-सी [मै] जनस्वादी मीहवाः। वयःमुमाय-पु [सं] बीदनदानः ।

वसार्मिक् छो॰ [नं] बास्य और सावण्यके बीवका कान। यवण्यकिति [सं] वयाना वडी। प्रान्त प्रसम्माम

विक व्यक्तिः समस्यस्य विक । वयान्या-नी॰ [सं] प्रान्तिः पुत्रभीः आमन्त्रीः वर्षान्त्रीः गुडुचीः छोडी दनावचीः वाद्रोनीः अन्तरस

वर्गाः मन्याद्धीः पुत्रतीः स्वतीः। वदम्यान~५ [छै॰] दीवनः। वदस्यावन–५ [छै॰] जनानी बनावे स्वताः।

वयं स्थापन=षु [म॰] ज्वानी बनाये रसता । वय=षु [र्च] सुद्राहा । वय(स्)=षु ली [र्म] वस अवस्था वयानीः

को। वका प्रति, स्ताप्तः। -(म्)इर,-हृत्-रि स्ताप्तवर्दः। वयन-दु [गं] दुमना कुमन्धि दिसा। ययम-मर्गः [दं] इम सर।

वि वचन-वात्का प्रीति विवश मारिका निर्वति करने | बक्य-व्योक मन्त्रा कमा पूर्व [सं] प्रशेष

बस्तुपमा - सी [सं•] उपमा अलंदारका पक भंद, वर्म नसोपमा ।

वस्त्य-प्र• [सं•] निवासस्थान मकाय ।

बस्न-पु [सं] सपका पोशकः - कृष्टिम-पु काताः रोमा, दल । -कोश-प वल रकनेवा वैका । -ग्रह-पु छेमा। -गोपम-पु ६४ इकाओं में से एक। -ग्रीय -को इवारवंट मोबो। -मर्मरी-को छक्रमी वा छाननेका वस्ता । ∽तदार∽सी कपदेश्री किमारी । ~ भारणी-बा॰ बहानी । -धावी(विन्)-वि कपश गीनेवाका । - विश्वेत्रक-प् योगी । - पंत्रस-प् एक दंद, क्रोक्संद । ⇒प-पु वक्त विशेषक राजकर्मेचारी (ग्राप्तनीति); एक तीर्थस्थान । -प्रतिका-की गुडिया। च्युत्त-वि कपदेशे छाना हुआ। - पेटा-ची कपटेकी होस्रो । -पेसी-सी हाकर । -वच-प नीही नारा। - भवम-प्रसमा। - भूपण-पुरक्तंबन। -सूपका -रंजनी -सी मजीठ । -सेदक,-सेदी (दिन्)-पुदर्शा - योनि-सी शसका उपादान र्कस्तिरः –रंजक।∼रजन∽पु कुनुसकापीयाः। ⊸ विकास-पु वेश-भूग-प्रिक्ता । -वेश -वश्म(न)-व सेमा। -पेष्टिस-दि कपोसे आवत।

मक्तरु-पु[मं]क्षपकाः। यस्रोबस वस्रोत-५ [र्च] इपनेका छोर। पद्मीतर-प्र [म] अवरका क्रपना व परना ।

वसागार-पु [मं•] करहेडी द्काम । यस्त-पु [मं] बस्यः निवासः छाकः वेतनः सबब्रीः

मस्या तथ्या पना सुरत् । यस्तम-पु [न] शियोंका कमरका एक ग्रहमा, करवनी बरिभवत् ।

दस्तसा-ली [मं]रनम्यः शस्त्र। परिनक-दि [सं] देनमारकी हो। कमा यर्क्र-९ [ब] गुप स्वी। प्रशंसाः पर्वात । हम्म(स्) – पु [मं] बस्रं। निवासश्यान ।

पस्मा-इ है 'बनमा'। परर-९ [मं] दिना मकान निवाम-स्थाना श्रीराहा ।

पस्य-पु [अ] विकन देवी वेविकाका विनय-क्षेत्रेत, सहबास ।

बस्ता~प [भ] मिठन दोष्टः वैदंद ।

परधी-भी की बीपमें सुबी दुई दिनवाँ विवयर विश्वा कानंत्र शिपकार वर्द्-फारसीके साथ सुसानवीमीका भागास करत है। दि॰ मिक्रमेबाना वश्क शास्त्रिक करमे बाला ।

वरवीकसारा-स्ते [नं] इंद्रपुरीः क्रोरपुरीः गंगाः इह नदीः कुरस्मदी ।

परंत-बु [में] बाद्राः शिञ्चा

यह-सर्व बात-धीतमें बूररियन वरीध स्वक्रिके संवेतवा म रा दूरस परीय पराचे का मंदेन (विश्ववणके क्यों भी प्रमुख क्षेत्रा १-वेमे वह सक्छा)। पु [सं•] कीका बाह्या बातुः मार्गः मदः प्रशाहः भारतः बैल्का देवाः हे जाने दीनेश किया बार ही का दश मान : वि है भानेर नाः पात्र बदनेशमा (स्त्रतिम्-प्री) म्परहो ।

वहत-प॰ सि॰] बैका पधित । सहित-प॰ भि । शाया मित्रा सविवा के । बहरी-सी॰ मि॰} गायः नरी ।

बहुत-पु• [सं] वैका पविका

वहबत-सी थि । एक बकेला होना भरीतमान, सरा-का एक, भवय द्वीता ! -द्राना-पु एकतिवासका स्थान । -(ते) बुजूद - ली सृष्टि है संपूर्ण पदावाँकी जहा की हो अधिन्यक्ति मालना 'सर्व धारित्रते जहा का विजास (सच्छी) ।

षद्ववानी –वि॰ पद्धते संबद्धः महीतवारी ।

वहदामियत वहदानीयत - लो । भि । महेला, भरव होगा बक्तार्च वीहोत् ।

प्रज्ञ-प॰ सि॰] देश माथा वाताःशीचका, समका कारी है जानाः सिरः इपियर सेनाः बारम करनाः स्टानाः बहनाः रामेका सबसे भीचेका हिरसा (बारस)। वि • है वानेवास्त । - भैरा-प् पीन श्रादिका मेंग होना, द्वव व्याना १

बद्दमीय−वि [सं•] यहा वा स्वीवदर के बाने दोग्बः धारणीय कपर केने बोस्ब।

पद्मम-तु॰ [स] श्रदा श्रदा। बदपना। प्रमम्बद्ध, वकत ध्याल । –का प्रतसा–रहमी ।

पद्ममी-वि अमधनिता वद्मम करनेवाला ।

बद्दर्ख~प सिंधों नाव देशा वि कर्दशा प्रवरी#ा। es, ममन्ता भार बोन या खानमें अन्यरत (देस आहि)। -र्गध-पु॰ शेषर चंदम । -• चन्न(स्)-पु मेप-शंगी। −स्थच−पुश्चित्रधीय।

यहरू।-सी [में] शक्त यत्रप्रथा रही हरूमधी। दीपक शामकी एक शामिनी ।

यहश-पु॰ [ब] प्रंतकी बानवर ।

यहस्त-भी॰ वहधीयन मार्गमेवीसे प्रश्वमंत्रा मादः वंदराहरः विचये वनि वंदस्ताः यदः सुनद् । -शस्तर-वि वरराव्य पदा करनेवाला । -माध-दि दरावना । बहरियाना~न वहसोन्धे तरह शंगनी जानवर या ज्ञाण्यो दे असुरूप ।

बहरी-दि अंगमी भाविष्योदी मुद्दतेने घराने भागने बानाः बन्द्र असम्बर् यु जेगनी बानवरः प्रेगनी भारमी। भगन्य बन । -श्रीम-सी श्रंगशी समस्य

अति । -सिम्नाल-विष त्रिमके स्वमावने बहुदी-इन हो।

बहाँ-अ॰ इस बग्र (१९६ (२०) । वदा~भी [शं}नरी; पारा।

बद्दाबी-पु भीवती अध्युक्त बहार-प्रवृतित एऊ अुस्/क्रम हैयताब का बैदन हुशनकी मामना इं इतामीकी प्रमाण मही मानना ।

वहि-(हिन्द्)-अ [तं०] बादर (भग्रन्त पर्दीये श्रीक)।

बहिस-वि॰ [मं॰] दोवा दुना; दातः विन्यानः मात्र । वहिष-प्र [तं] क्षेत्रायस नरक्या रका -कर्म-प्र वागका यह भागत। नर्भग-पु देश ददन-संग'। विदेशक-५ [तं] हे 'बहिय ।

बैसे अस्पनवस्त्रः समववस्त्रः। सयामाः नाकिम । ~ थयस्य--वि+ [र्स+] दे+ 'वय'रभ' ।

बयस्यकः-प [मं] गुमसामविक व्यक्तिः सकाः मित्र । वयस्या – स्रो॰ [सं०] सहेक्षीः संतरंग सम्रीः र्थेट ।

षमस्यिका-सी॰ [सं] सम्रोत सदेकी। विश्वस्य दासी ।

थया-सी॰, वयाक~पु [ग्रं॰] बाधी, बहनी कता । चयार#-सी॰ हे 'नवार'। बसुम−पु [सं] भाना गंदिरा आनेश विषया रोतिः रपश्चा । (de) স্বাস্থ্য সম্পাদ্ধ, সীত। তু**ং** चयोगस-वि औदावरवा । वयोषा-स्रो [तं] स्रक्ति प्रक्रिये पृदि। धयोधा(बस्)-इ [तं॰] तथ्य अवस्थान्त्र व्यक्ति। बयोधिक-वि [सं०] अवस्थाने अविक । बयोबाक-वि [सं] सरव अवस्थाका । वयोर्ग-प [संग] सीसा । वयोवग-५ [एं॰] सीसा । बयोबिसेय नयु [एं॰] अवस्थाना अंतर । वयोद्ध-दि [तं] ब्हा । वयोद्वानि-सी [मं•] शक्तिश वासः शरावा नामा । बर्थ−स [मं] गरिका अधिता केश्विन। वर्रड-५ [सं] पंत्रीको कोरीत गुँदासत नासका केरा राश्चि सम्बंद की कनतेवांके दाविवांकी अलग करने बाजी दीवार । -संबुक-पु वंदीकी बोरी । बर्टडक-पु [सं] इहा होछा, मिलेका भीया दीनार। दीता। मुँदासा । वि॰ योकः वकाः दुन्धीः वरा द्वना । बरंडा-सी [एं॰] बटारा चिरानकी क्ली। सारिका ।

बर-पुर (हेर) जुनान। पस्टा रच्छा देवता वा ग्रक-

बनींसे रच्छा पृतिके किए की जानेवाकी प्रार्वमा वा

इनकी कुराधि मिकनेदात्म कका मेंटा दाना पराह दावा

इस्हा। मेमिका क्षाय बहेका कामाता। गीरा। देसरा

विरीशी। मीमसिरी। इस्टी। बस्ट्य । वि अह (समास-

के बातमें बैसे विभवर भिववर है। - मन्त-पु वेह।

-कोत्रच-ड कपनार । -थेवन-ड अका क्सा

देक्दार। -ज-वि॰ वदा व्येष्ठ, अग्रथ। -सेत्-प

इक्ष कवि । -तम्-नि धेर्र अंगेवाका । -सम्-

की ग्रंस की। -तिन्छ-त कोरैवाः वर्षेटा रीदितका

मीत्र । ~तिस्तिका-मी॰ शास्त्र । **-सम्ब**-तु शीमका

पेर । -इ -इस्ता (मु)-वि वर देनेवाला । -वृक्षिणा-मी॰ कम्यारतको जीरहे विशव समय नरको दिना

बानेशका पन बहेत्र। --ता-स्ती कम्बा इएएरा अरहरू; वाराही क्रंदा अवर्गवा । -- चनुर्वी-स्त्री माव

राष्ट्रा पतुर्वी । "दान-पु देवता वा गुरवनका प्रत्य

शीनाः विसीन्धे स्ट कानु देनाः दिलीकी कृपाने मास

थरत् । -बामी(मिन्) -शि वर देनेवाला । -बायक-

बरबास-पुर [संर] दरंद वृक्ष ।

विश्वर देवेवाका । वु एक समापि । -- हारुक-पुर भवस्क-वि• [सं] एछ, वनस्वाका (समस्तक्यमें प्रवाच-यक पीचा विसन्धे वर्तियाँ निनेन्य दोतो है। -हम-५० वक शरहका बगर !-मिश्रय-पुरु वर, वरिश्र मुनाव। -पश्च-पु वराती । -पर्वा**न्य**-पु दौ(र**्**युधे। वयस्य - वि ॰ (ते ॰ । समनयस्यः समसामविकः । - भाषा-~पीतक-पु अवरकः ∸प्रवा–सी॰ शीयमुहा। ~प्रवान-तु॰ वर वैभा ! ~प्रभ-वि॰ अरही संति-बाका । पुरु वस नोभिष्ठत्व । -प्रस्थान-त नरवाद्या। ~फरू-पु मारिका-बाह्यक-बाह्यक-त देसरा −मुक्ती−खो रेणुका मामक वंध्यस्य । -धाता-धो• **अ्वाहकै समय करका बाजे-गामेडे साथ बन्याडे पर** चानाः वरातः । -शुवतिः-शुवतीः-योक्नि-सौ श्चर सी। -धोम्म-वि॰ वर्शनके बीम्बा निगरदे योग्य ! - द्वि-नु एक प्रकृतत वैदाकरण और दर्शि : -कब्ब~दि जिस्ते वर पावा है। वरस्पमें प्राप्त । दु• चंतक हुन । ~बस्तमा−मी छाम । ~बरम~ु खुनायः वरका धुनाय । ~बर्ज-तु + होता ।-बर्जिनी-की उत्तम और सरस्तरीर सहमीर गीरीर कायुन कॅयतीः गोरीयनः काकः इस्ताः -पर्ला(विंप)-निः अच्छे रंगमा।—बद्धा–त ग्रिपा – ग्रिपा–प्र•क क्सर (र्देश हारा परिवार सहित निहत)। -श्रेहरी-की बहुत होरर की : -सरत-दि॰ एमिमियाने रहरवीको बामनेशका । -ब्यो-सो॰ प्ररोफ भीरत। ~सक्(म्)−स्री दुस्देश्चे पहतायी वानेवामी माना वदमान । बर-दि [का] 'कावर'का छन् ६४ (मेदावरींते मिमकर शका हा रखनेरामाधा अर्थ देता दै~भागर८ माहर८) : **वरक-पु॰ (री॰) वकः** स्रवादाः मावदा धरीपाः अवरमे क्षेत्रमेका वैशीयाः काकुन निर्मेशा शहररीः पर्तर्गेशा विवाहकी प्रार्थमा करमेवाना । बरहा-पु [ब॰] करा ध्रमा कायम पुग्तकका पक्षाः सीवे श्रीरीका वचरा कुल्म्धे वैद्युरी । "गरदामी"मी परतक्ती बच्द-प्रकार है सन्ता प्रतिका क्षेत्र करता ! -साम-प्र चौरी सीनेका क्वर बनामेशमा। सुरु उध्यता-पुरतक्की बसद-प्रमटक्त देसमा, पुरमक्तर शरक्यो नियाद बाल्यका मारो शरेपतेन क्रांति होना ! —स्वाह कश्मा−श्वृत निकता। बरजा-पु॰ वि] पुरतका रखा ! बरक्री-वि वरस्थान्य परवदार । बरहिया-की (या) अम्पानः शारीरिय समा समाराः व्यासाम् । बरक्रिसी-दि॰ दमरती । बस्ट-व [सं] रंगा विशा वदा अका मुगुमका वीमा **४% कृत** श्रुपा शिरियरीका तथ वर्गे ।

> बरटा-नी मिं देशियी वरें। वक बीता, मेंबियी बुरायका बीज । बरही~को [नं] शब तरहदी निहा हुँदमा पूरू । बरण-मु [र्स+] जुलनाः नामना बत्नाः भेरमाः बदनीः रक्षमा पश्चिमा पुत्राचा निवारचा पुत्रन नावता पर

> थरटक-तु, बरटिका-सी [मं] कृतुव बामद शेरेडा

नीय।

विष्यु । -हा-स्टी॰ पृथ्वीः एक देवीः स्ट्रेंब्डी एस मासुका । - दान-पु निरेद्दराजदा एक पुत्र। बृदद्रथका पक्ष पुत्र । - वामा(भन्)-पु॰ महहत्रका एक पुत्र । –देप~पु कृष्पके विदा। --• भू –सूस~पु कृष्ण। -देवत-पु पनिष्ठा महात्र । -बेच्या-की पनिष्ठा मध्या पश्चकी नदी तिथि। --दैव --दैवत--९० दे 'बसुरेवत'। -द्रम-प्र शुकर। -धर्मिका-सी रफ़रिका ∽घा−खो+ पृथ्वी, दिशि; रास्य;कहमी। - • तस-पु परातक। - धर-पु पहापः विष्यु। - • नगर-प डनेरको राजधानी । -धान-प धन दान । —धार-दि भन कीश रखनेवाका। <u>व</u> एक रहार । −धारा~सी॰ एक देवा (वी॰)- एक ग्राफ (मैं)। क्रनेरकी पुरी मधका। एक शीर्थ। नांदीगुस भाइका इरमनियोगः एक नरीः चन मा दानका प्रवाह ! -बारिकी-मो+ पृथ्मै। -सेन्न-पु• महा (स)। -पवि-पु इन्नः -पाता(तृ)-पु इन्नः ।-पास-पुराजा। ∽प्रद्र∼दि० थन देनेवामा । पु० द्विका 5ुनेरास्ट्रेस्टाएक अनुभरः। −प्रसा−सी अधिरधे एक विद्वाः कुनरका राजनगर । ∽द्राल−ु अग्नि । --र्ब्यु∽ महावान द्वालाके एक प्राचीन कीट काचार्ष। 🗝 ४० – पु विनिद्यानक्षत्र । – भरित्य– वि वसपूर्ण । – सना (सम्)-पुण्क संबद्धा ऋषिः एक दोस्क्रमरेखाः -- सिम-प् नैमारिक संप्रशबके बक भाषाने (प्रदाबाव वीदः)। ~१श्वित=५ वक् वीद्धः भाषावै। ~शरा-५ रक मन्दि। – इ.चिर−पु स्थानंत्र । – क्यूप~ पुहित । −रेता(सम्)−५ धिकः अधिः। –रोकि(सः)−५ वया । नवय-म एक वीराशिक देश !-बाह-प्रश्न कवि । -विद्-वि भन माप्त क्रिमेगका । -मह-पु पक देरहका जनुद्रासः। ⇔क्षवा(बसः)∽दु व्यितः। -ध्री-श्रो स्ट्रेस्ट्रीय्ड गाइका। -श्रत-वि धनके किए दिक्साद । -श्रष्ट-दि शसुधीय मेर (इप्प) । प्र बॉरी।-वेब-इ कर्गः रिम्तु। -संपत्ति-स्री वर-प्राप्ति ! -मारा -श्यकी-मी इनेस्का शावनमर ! -#H-30 482461 46 34 1 -EE-EER-3 नव इस । बस्य - तु [लं] सीमर मयक, चांशुक्ष्यण वट ताना अक बृद्धा यह पुष्पा कामा भगरा वर्षा जीनसिरी ।

यसकोदर-पु॰ [श॰] नक्षीश्चय ।

वस्याधिप~द्र [सं] समा।

दस्य-पु[से] दशः बसगती-मी [मं] पूजी। देश राग्यः वर्गामः एक इत्ता-पति∽दु राजाा-पृष्ठ-पु पंरातला-सृपु-

T 2778 1 बस्र-रि (सं) मृत्यवाम्।

वसुन्द्र-पु [तु] देवना । यसंब-प [सं•] वह मुध्र या बसका पुष्पा लॉबर

यसम-प्रांत के वह में बहरा करि । वस्त्रम-५ (सं) सीमा

बम्मती-भा• (५०) वनी की।

वसरा-मी (संगी बेहदा। यस्क-पु॰ [ल॰] मिलता, प्राप्तिः पर्देषसाः दिना रहेन दुरें स्कम का चीज । नि निरुगद्वमा प्राप्त । वसुद्धी-विश्वसुष्ट होने वीस्त, प्राप्तम्व । सी रे 'बस्त'।

बस्क-प [र्थ•] गममः अध्यवसाय । वस्क्रध-प्र[मं] दे० 'तपहर'।

वस्फवनी-मी॰ मि॰ो है॰ 'बद्धवर्धा'। बस्डराटिका-स्री० (स्०) पृथ्विक । बस्त−पु• (र्श•) वरुता रहनेका रवान वा मदान। f भो वस्तु । -कर्य-पु श्राप्त वृक्ष । -र्राधा-मे ।

अवर्थराः। −सीवा−सौ अवसेदाः। सम्द्र-अ [ल॰] वीच दरमियान। प्र॰ मध्य शक्त क्रिः - (स्तं) हिंद-तु सस्वमारतः।

बस्तक-दु [सं] प्रविम कदम । धस्तव्य-दि [सं] रहते, शहरते शोम्दा व्यतीत वार्थ बीग्द !

यस्तोधी-ला मि॰ एक शेवा, वश्यविक्रा । बन्ता(ह)-वि [धं] वक्ष पार्च करनेशनाः मनस्ने

वरित-भी • [मं] पेर् मधीन मी मेश माया मुनागरा विषद्धारी (वश्रीमा)। निवागः कपुरता होर । न्यमं(व) – पु किंग, शुरा बारिने विकारी रेना । -कर्मारा-व्यक्ति १७ । -ह्यंत्रच-५ -ह्यंत्रिया-मी सुवाधवद्या एक रीग जिल्हे बसमें थाँड वह जाती है। —कोशा—प्र मृत्राधनः। –सल-प्र मृत्र देशारः। -बाल-प वह मुत्रशेश - सिर(स्)-प प्रतिमा को रोधा मृत्राधवका करतका संबंधर्य भागः । 🗝 धीर्य-

तु जुनायक्ता अपरका संदीयं भाग । ~द्गीधम-पुर मदम मैमक्त । वस्ती-दि दरमियामी बीचका । वस्तु−शः [सं•] किनो चोजवः भाषाठ गोडः वद वरार्वे जिसकी रिवरि मचा ही। सरदा थीज, ब्यावीस्वार हारिक परार्थः भन, संवक्ति दश्वरणः बृत्तीत, शनिवृत्ती मारक्की बहामी। परमा कथा-परहा धर्मे समाग यावता । - **इ.स.-वि. अ**न्दरत । - ज्ञयस्-प्र ६६९ मान बन्द् । -बारा-५ वरनुभीका कार्य । -जान-षु अन्तुकी पहचाना सराज्ञान सूत्र महत्त्वा गीर । " निर्देश-९ वह संगनापर्थ जिल्ली क्याका हुए महे मामाम रहता है। श्यो । - सम-पु॰ मस्त्रहा ग्रुप वा प्रक्ति । - भाव-पु यथावना । - भन्-पु बार्नास र्शनर । -माय-पु दिन्ही दिनवद्या गाम रूप । - १पना --मी रीनी। बनावरनुका निकास । -बार्-पुर #8 शार्थिनक विकास निवास राज क्यारका बचारत सी मानत हे भूनवार । -विनिमय-५ बन्द्रभौदा भाग-बान । -बृश-इ नवारे विस्थ । -शुम्ब-विक क्रिके ववार्वता म हो अवसी । -रिधति-सी धीरिविते । बरमुक-नु [तं] शार भागा रह नाय मण्डेह । वस्तुका-सी [त] १४५ (निर्धा शाक्र)

सम्मुनः(सम्)-४० (४०) वदावना, अमबर्ने ।

113 भवत-भन्नोक धमत-वि [सं०] शासविदित निवर्मो, कर्तव्योद्य पाकन **चक्**ता । वि• शासनदौत । असास्त्रीय−वि० (रं•) शास्त्रविदय, सविदित्त । न करनेवाका, जतहीस । ए० जतस्वाग (जै०) । अञ्चितित-नि॰ [र्स॰] अफ्द, गॅनार ! बदाव~पु• [सं•] पासिक कर्तव्यका सरस्यन । भशिस∽वि॰ सि॰] सावा दमा । क्रम्बक्र-वि०[ल] पहला, प्रथम; सर्वश्रेष्ठ । पु• कादि, बार्जः ~तो-पद्दे दो प्रथमत । अ० ~काकाः-अभिज्ञ⊸पु० [सं•] चीर। रह्मा-प्रदियोगितामें सर्वप्रयम नामा । अशिर-पु [र्स•] अग्निः। स्वै वासः दौराः। एक राहसः। सम्बद्धन्-स० [स०] प्रथमतः । अशिव−वि॰ सि॰] असस्यागस्यः जर्मगळ-सचकः हरा **पर्रक, बर्सकित−दि०[**एं] संकारहिता निर्मक निरापन । बना। पु॰ सर्गगकः दर्भाग्य अदित। व्यशिक्य-वि॰ (सं०) संतामदीन । पु० शिक्सलका समाव, बर्सम्-पु॰ [मुं॰] सदस्याण; शहितः समंगरू । असर्बनी-सी॰ सिं॰ो एक बसीय पौषा । तारूप्थ । अशिविका, अशिकी -- औ॰ [र्च॰] मिन्संतान स्था। विना बस्तुन-पु॰ [सं॰] बस्युन, बहुम रुख्य । वण्येकी गाम । अग्र**फ−ि॰** [एं॰] इक्तिहोन, कमजोर; असमर्व अवीस्य। अशिष्ट-वि [सं] दिस्तारहित, क्यान्य तम्रहः अदि-मधक्ति-को [सं•] निर्वस्ताः मसामर्थाः नुदिका वेदाम होना (स्रो•) । मीता अवार्मिकः अविदित्त । अशिष्टता−को [सं] अशिष्ट /व्यवदा८ असम्बताः ममस्य~वि• [सं•] को म को सके, असाध्यः को काव्में म किया चा सके। उम्**ड**पम् । महीत-मि॰[सं] वंश नदी,गरम।-क्टु-रहिम-पुस्तं। समञ्ज~ति॰ (र्स॰) समुरविदा विस्तका सभुगोंकी गौरसे विधेव न हो। पु० चंद्रमाः छत्रुरहित होनेकी कवन्या। **अशीरि—औ** सिं]८० अस्त्रीकी संस्था। बसन-पु [सं•] मोबन; मोस्य पदार्थः) सञ्चलः पर्देचनाः अशीतिक-वि (सं०) ८० वरसका अन्सीसाका। असीख-वि॰ [सं॰] श्रीकरदित मश्रिष्ठ, व्यंदा क्यासीन । शर बानाः व्याप्ति, प्रवेशः बीताः, विश्वकरी क्यागे क्लिको करन **रुध । ~पर्जी—खो॰** परसन । पुरु सर्दश्ता, भविद्या । विश्वामा -सी [सं] मोबनेप्छा भृद्ध। अञ्चिल-वि [सं] अपवित्र नायकः मैकाः काका। स्री≉ मसगावित-वि [सं] भृष्टा। अपनित्रताः अपकर्ष । भस्ति-दु•[सं] बज्र, विजकी; क्या; स्वामी; बंद; कांग्रे ! अग्रद-वि॰ [सं॰] अपविष, मापाका सापः म किया हवा, बसम्-(१० (१९०) को अव्योगि व्यक्त न हुआ हो। मुक मधोषितः सरोपः गरूत । −वास**क**−५ संख्यास सप्तरिकः अवैदिक । प्र ज्ञासः। म्बक्ति। मद्रस्थ-वि [सं०] सामयहोतः, सस्हाय ।-सरण-वि **बहादि—साँ** (सं•) अशुक्ताः गक्रताः गंदगीः। बदराबी छरन देनेवाका (सगवान्)। ब्रह्मप्र•—पु विश्वनी प्रदात्र । नेसफ्र-वि [फा॰] सहत हारीफ छस। अञ्चल-वि॰ [र्ष] अनंगरुकारीः अनिहत्त्वकः अपवित्रः भगरकी-सा [फा॰] सोनेका सिका सदरा दे 'ग्रक-मान्बद्दीम । पु॰ अर्ममका पूपः दुर्मान्य । দৰহাঁ'। अञ्चल्या−सी [सं] विधियात्रस्थ भारामें न रहनेहा वसरा−३ [थ] महीनेका दसवाँ दिश; मुहर्गमका दसवाँ भपराध । बद्धान्य−नि [dं] साकी नदीं पूरा किना **ह**था। विद्याञ्च~पु• [फा] सबे कीर प्रतिष्ठित कीग (स्ररीफ की -श्रयन-प्र ,-श्रयमद्वितीया-भ्रो ,-श्रयमद्रत-प्र ₹) (मानभ-कृष्य दितीयाको होनेवाका एक प्रत । चेत्रसीर~वि• [सं•] स्तरीररहित निराकार। पु॰ पर क्षामक्र⇔वि सि०] वपरः, क्षमा । मारबा: क्रामरेव: सम्म्बासी ! आहोव∽दि [सं] आर्तरदादकः। बत्तरीरी(रिन्) -वि [सं] द्यारिकीन अपानित । पु ब्राहोय-वि [र्स•] संपूर्ण, समूबा सब्द्रा सब; अपारः मबा देवता । बसंस्य । ~साम्राज्य~पु दिव । चतर्था~मा॰ दे 'करएकी'। अक्रोपता−सौ (सं•) समधता। वसमं(२)-पु [सं] कट इन्छा सोकः। भर्शेश−पु॰ [मं] अहंत् (बी अब दिसाधी न हो)। मतस−वि [सं] समझौन निश्वका पुञ्चक न**री** । अञ्चोद्ध−नि [सं] श्रीकरदित । पुपक्क पेक्ष निमन्त्रो महोत-दि॰ [सं] चांकिरदित वेनैन बहिन्न अस्विरः पश्चिमों कहरबार और संदर होतो है और विरोपकर बंदन वर्तिकः वकासिकः। बार बॉबनेमें काम जाती है। बद्धका राजा दशर्थका एक वसन्ति −ती [सं•] वेचैनी धीम **सल्**नकी। मंबी; मीर्ववंशका एक वसरवी सभाट्: विष्णु ।~पूर्णिमा→ वग्राता-स्त [सं०] स्वी तृय। स्रो पास्पुनको पूर्विमा। -भंजरी-लो एक छन्। वसाम्प-वि [सं] को छोठन किया मा सके (वैर अञ्चोदका पुष्प । -रोहिणी-की करकी । -वनिका म्बरी)। क्याय-पुरु वस्तुविधेवको तरबीह देनेका कारण न बताया बतासीब~दि० [मं•] विनयदीन, दौठ। बा शहरा (रावचने सीताकी और दिसी चीवके बागों वरासन-५ [सं] धामनका बमावः अव्यवस्थाः बरा-न रक्षकर वाद्योचनाटिकामें की वर्षो एसा, यह बताना

भगोग्र-भन्द कृष्टिन ए) । -पाटिका-सी॰ अञ्चेक्ग्री माही वह थगोषा नहीं गक्दने सोलही केंद्र कर रगा था।-पश्ची-सी भैत्र-हाहा वही। मशाबा-नी॰ [मं] बशास्त्री बली पारा। भशाकारि-पु मिं किन्। भगोकाष्टमी-गो॰ [सं॰] यैव-हाङा बहमी। भरोच-पु॰ [मे॰] विनास भगावः श्रोतिः मध्या । भगाय्य-रि॰ [एं॰] शोद म करने बोग्य । भक्तोपित-दि [मं•] विसवा शीवम वा संस्टार म दुआ दो शाफ न किया हुआ। असोमन-वि॰ (सं] अनुदर, अग्द्र, च करनकाया। ध्यरीय-त॰ (सं॰) शपरित्रता, मापानीः अग्य-गरणके बारण हुर्नुरियों भीर सर्वित्र अमेन्द्रो कपनशारी शहा। -सकर-पुदी वामधिक भधीभीका धार्मे किन जाता। श्रदमीत-पु [मेर] पूरदा। रोतः शृखा वह अरन्। दि० बर्मः बसीमः भदमंतक-५० [मं] चून्हा: वोवायारः मृज्यः तरहस्य एक प्रस्त विसने ब्राह्मदेवी येमचा बनावी वानी वी: क्रिमोडाः पाषायमञ् क्ष्यनार १ भक्त-पु॰ दे 'अदमा'। भद्मक-पु [मं] एक प्राचीन वनपर, तिरवांपुरः वहाँ ६ शिवासी । सद्गार-वि॰ [मं॰] पपरीत्राः वन्तर-संच्यी । भारमरी-न्ये [मृं•] पश्री मासदरीय!-अन्-अद्म--षु वामा कृश्च ।~हर्~पु• कृश्विशेष । सहसा(इसन्)-9 [मं+] पहाडा पत्परा पारमका बादका सीनामाना धीशा ! - (इस)क्तृम्धी-भी काइकासी ! -क्षीर-प्रभारकाः । -क्ष्म-पुरु शह पापाणमेग मानक पोका र −रार्थ-पुरु भगवत । −व − प्र लीकाः रमा शिकामत ३० यत् − जत्क − व दिनामत् । -ताति-भी• का !-मान-पु शेंदे शांखा गर। -भेर्-प्• पापामभेरी अथा। -थोमि~ु सरहतः -सार-प्रश्ति । भक्मीर-पु॰ [de] दे 'स मरी' i महमारच-पु॰ [मं॰] हिनाजनु । भग-पु॰ [मे॰] भन्। ११६१-प-पु॰ रार्ग भरत्युक्षा अध्यक्त-वि [मे] मद्राहोनाः व्यविस्थाणी । **अध्यम्**। – भी [तं∗] बदाहा अवादा अविद्राग । अध्यक्त-विश् [#] कर्रहीनः वहुरा । पुश्मीरा वहुरास्त्र । सर्धात-रि [4] न यश तुमा मध्य १ पु विश्वासाय । सधान्य-वि (तृशीय रापने श्रम्य । अधि अधा-मी [मंग]कामानीक मरी चार १ स्राप्तीय-विश् [मं] सीदाम विशाँ। माम्बदीन ह सम्-पुर् (तं] सो-(१-वामा~मी अवृत्तिुर-पात-पुर महेन् रिएसा हिला १-शुन्त-दि० दश्रीमाः १६१७६ री पर 'रावा । सभग्न-६ (१) भागना दुवन शिवादेन अधिर्यक्त सर्गिष्ठ ।-बूच -हि १९३ स सुरु प्रसान सहस्त संप्रतिन्दिः [र्थ] क्रिपेति । क्षी प्रशासना दिशा -पानी देति। म मयनेवन्ता ध्वान व देवेवना ।

या" न स्पनेशसः । सधेय(म्)−पु० [#०] दुरारी जनस्य रागः (त निश्रमाः शैनतरः अयुव्यक्तरः । सम्रीत-विश् (वंश) प्रदर्शिक अने²एद । असाम्प−ि [में] प्रशासे भरोमा निर। अभिष्ट-वि [६०] रेग्सिट निम स्ट्रासिक अने व निरमत् हैं। सर्प्यूमः धर्मार् । सस्प्रेस-(व॰ (वं॰) बर्गा प्राप्त गरा। हमा। एए स सम्बद्धाः स्थानम् कामेवामा १ अस्तिनता−मी [र्ग] भरापता धान्यकाः रचनाते नर्गत ध्रम्शेका मदास्। बार्श्रेष-बिन [सं] क्यारित, बिन्नमें स्पर। कर्र व हो। मध्या-गौ [म्॰] व्हनप्रदानमव -मू-दु वेद्वसर। सर्थत-वि* [र्स] अमागाः अञ्चयाः धर्मामः । हः लहुः क्षत्र माग रणनेही अगहा हुई गमारि । अद्य-प्र• [र्न•] बोहार व दी रोगना (दर्गर रदद बोही को मंत्रवा सान मानी नदी ४)।-१ दा -वॉरिशा-रोड सरक्षेत्रा !-क्ष्म -क्ष्मेक-दु ० ५६ तरहरू द्वार क्ष्म बीडेबा काना अस्तिमेनता एक प्रदार ।-कुरी-भी पुरुषाछ । -शुप्रास्त,-कोबिय-मि पीर्य, १९४७ निमानम कुश्य म्-ऋद्-पु यस सरदया प्रीः देव ताओंदी सेनन्द्रा यद मायद !- मासा-भोश्या न्ये यह मुष्टना ।-सर्ज-पुर कवर ।-स्तर-पुर ६ सा श्रुत बढ सुर्गावत द्रष्य भगी (- गुरा - सुर्ग- मा प्रभागा। -गंबा-ग्री असर्थ ।-गाँत-भी भी/र ६९मा छ बुक्त विवस्त्रप्रदेश एक बार ।-शासुग-पु योगीयी जीते ।-सोष्ट-पुर भरत्रमा-प्राय-पुर इदान्त्रमणस्य हानव सिध्तर एक अशहर १०४०-५० महागर द्वार कतर १-चक्र-द्र भाषभा राम्धा एक लाहका सीका बोहेर विकास हाबाह्यमदा रिन र ।- विकित्सा-स बद्युविक्तिसा अस्त । - ब्रंडा - स्या २ १८ १- वृत्त-५ पुत्रगबार **बून ।—बाय—५०** ५१^२ स. ५१शहः ।—बिक पिक -पाम -पालक -रश-प्र र^मग ।-पति-पुः पुष्पराराः विका मधिन्याभरतम् सामा।-पुर्याः " भी। वाक्षणी ।-६६१-ए यह विश्वहामा शासि । ~क्ला−ठी+ वेदी।~क्ला-५ दुःगः!~भा^भे exeti-भार,-भारद -इगा(g)-पुरुक्ष र दन्त्री -Min-30 an atent that t- Bid-30 beatt रेश्री । स्माप-पुर । इ. मि. पूर्वी ह स्टा । की ध्वतन्ति राग्यास्य साम्रतसम्यासभीर रिप्त सुनी नेपीया प्रया वहवारी जवाने घारको सारका शामी भर्ते । इतन विद्या प्रभावा एक ए न कि । इ. ने स्थ बरी सन्तर १-अधिक-दि अदसद्र, र रव शक्तिमा व अवसन्ते मान्य में हा। अहाभागत्त्रा भारता पी। -मधीय-वि अधीर मेक्षी व सदरण्ये केल देशा-प्र(क)-वि विशेषता तथावी सर अपिती रूपाचे बल्डा १ व मानी पार में नरे Mali-Mand magne eies ege er eite -बारा-ड से हेरी हवरिये अन्याद अन्तर aru alun tustera e i l una-1

काम करमेवाका ध्यक्ति (समस्त पर्दोमें) । **~चौसस्टर**~ कुकपृति, विश्वविद्यात्रवद्या एक उथ व्यवकारी वी चांसन्तरका सदाबक होता है और क्षित्रविधासवकी व्यवस्था भादि करता है। -चेयरमेन-प्• ज्याध्यक्ष । -प्रेसिडेंट -पु॰ उपममापति । -शप-पु॰ ब्रिटिश शासनकाकमें हिंदरतानका सर्वोच्च छासक को रंगलंडके राजप्रतिभिषिकी **दै**सिबतसे मारतमें रहता था ! बाउचर−५० [बं] खर्चकी म्होरेवार सद दिखानेवाका बाक-पु॰ [सुं॰] बास्या बयबोंका होटा नगरीकी उदान । वि । वदः संबंधी । 🛊 स्त्री । वाली सरस्वती । बाहाई~म [ब] बरतूत', सच्युच । वि ठीक, दुवरता शंचा । षाक्रिमा, षाक्रोमा-पु॰ [न] नरमाः क्ताः पुर्वरमाः शरिसाः बुद्धः। −त्रयीमः ∽निगार−पु अवर्रे किस्सी-बाला बुक्केस्ट । षाक्रिञ्चात−पु [स•] दादिलाका बद्द•, बटनार्थे दुर्बट मार्थे वारिवातः वाक्रिभाती−वि घटमामूलक, परिरिवतिमे प्राप्त ।—सहा ब्द-मी (परमानी) परिश्विति मिकनेवाकी (अप रबद्ध) शहादतः। वाकिनी-मी (ग्रं॰) एक देवी (d)। वाकिष्ठ-वि वि] बालकार जानने, समझनेवाकाः भीगद्र । -- चार-वि किसी कामकी चानने समझने मासः परिविद्यः -कारी-मी जानकारीः परिचय । वाक्रिप्रीयत्—स्रो [स•] बानकारी अनिक्रमा परिवद । याक्रची−सी॰ [सं] जोदविदिदेव वक्रची। बाकुल – दु (मं•) बहुक, मीलस्टिराजा क≉ । बाई बाईश-दि [ब] होनेवाला वटित होनेवाला. सामने बानेवानाः असस्य । मु॰ —होना-वरित होना । पाकोपपाक-तु [सं+] बात, संबाद क्योबक्यन । बाक्रीबावय-दु [सं] क्लीपक्रमन वात्रवीतः तर्वः। पाक(थ्)-स्रो [संग्] शन्दा नागी नान्यः क्रवसः बार' बोकनेकी रहिया सरसती । -कम्बद्द-पु शागका बहासुनी । -बीर-पु॰ शाहा । -बेसि:-बेबी-नी ईमी मशकः। —क्षत्र-पु+ ठमनेवानी वानः। —खपस-वि वदवदिया । - छम- पु वदाना हानमटूकवाली बला काकुके सदारे निर्मदा सदा बरमा । -पट्ट-नि वान करनमें भनुर : -पति - वृ वृहवपति। नुष्य मधुना मारम-पुरास व्यक्ति, बाग्मी: निर्दोष पटु वयम । — स्य -पु॰ भारवदे योग्य अवस्था मारगढा श्रृत्र । -पाटव- भाषप-पर्ना । —पारच्य-चु कर्दश्या अक्तुव्य भारि । -पुग्प-पु॰ ऊँनी वहानवाने शम्द । -प्रतीष्-तामा। -प्रवा-स्थै सरक्ती मन् । -प्रसाय-इ वास्मिना। -प्रमारी(शिक्र)-वि आवस-बद्धाः --राष्ट्राका-भी समनेशनी शल। -संग-५ श्रीरेशीरे थोजना । -सायक-पुरेथनेशनी बात । -स्र्वस-पु भगा । रह भागा, बीच म निवल्ला। बाहा-सी [में] एड क्ती। बारय-दु॰ 🖾] सीदा वह मधुड जिलने वस्त्रसा अन्त

प्राव स्तरहा समञ्जीका जावा क्रथना मादेशा साहसः तर्कं पश्चिमोंका कलरणा ∼कंठ~वि किलके बंदमें गत हो, जो शेकने शका दी हो। -कर-पु अन्तेश पूरा करनेवाना । --संद्रम-पु॰ धर्मका संद्रम । --प्रद्र-पु मुँहका पक्षापातसे गस्त होना । ~पञ्चति नती । बापन वनानेका नियम । −मेद्र−पु॰ किसी नाहका परस्पर विरोधी कर्व करनाः चररकः विरोधी वास्य । -रचमा-की नलय ननामा । −वद्व−प्र• वद्य करी मावा। ~बिन्यास~पु पदींका वधारधान रखा जाना (न्वा॰)। चित्रारत्–वि॰ भारत-पट्ट । ~शसाका–सी॰ दे० 'वाक-शकाका'। -सारथि-पु॰ प्रवक्ता, वीकमेवाकीका सुश्चिदा! - हारिणी - जी देवी ! बानवार्टवर-पु॰ (र्र॰) बीर्प और क्षिष्ट छन्द्रसुक्त गलवा-वडी । वार्गत-दु[मे] चथतम स्वर । वागतित−प्र• [सं] ए६ संदर अस्ति । बागधिप-इ [र्स] बृहरपति । वागना॰-म॰ कि दे॰ 'वागना'; चलना-फिरमा--<u> उमुक्ति द्रमुक्ति</u> वार्गे ब्रीशिकाक्ते व्यागनम् –रपुराव ! वागपेत-विसि•ोगैतः। चागर-पु॰ [सं] निर्मयः बाहबानसः विभेद व्यक्तिः मेरिया साना करीया परिता समक्ष पापा । वागा−सी [सं] क्यास। बागाद-तु [सं] दचन मंग करनेदानाः आञारंताः निषास्त्राती । यागारानि−पु [सं] एक पुद्र। बागीवा-पु [सं•] कविः बच्छाः ब्रह्माः पृहरपति । वि अच्छा बीस्तेशमा । वागीशा बागीश्वरी-सी [मं•] सरस्ती। बागीइधर−पु॰ (सं] करि। त्रकाः ४ इत्तरि। एक वे।िक-सरद, मंजूबोब । वार्गुज्ञार-पु[मं•] एक तरहक्षी मटको । वागुहार-५ (पा॰) टीर देना मुद्धि। वागुहास्ता-वि का देशेश दुनाः दिवा दुनाः सीरावा द्रभा । वागजी-मी [मं] एक क्षेत्रिय वर्त्रमी, सोमराजी। यागुण-पु॰ [सं॰] नगमा कमरता । बागुरा-सी [मं] पंता जाक कृत भारि पँमानेश बान । -युक्ति-म्यो० ध्य आदि परश्वर जीविस पत्राना । वि रत्र प्रदार भवनी बीनिया ध्रमानेनाला । बागुरिक-पु [मं] दिएन फॅमानेशमा स्वाधा । बागुम-पु [मं] वद तरहरी वही मएछी। वान्क्रसम-दुर्वि] विज्ञान् । अवता मादण करनेवाता । बामाण-१ (सं॰) भारतको बन्तमना। बारगुर्-तु [र्ग] यह शरहका चमनार स्या पद्यी। बागुरि बागुरिय-५ [तं] वान देनेवाना राज्यीवय धनाम । बाग्जास-५० [मे] वन्त्रेती भीता थाग्दर-द [मं] शॉटफासार अल्लेना वाचीस

नियंचा ।

```
वार्वाकी – स्रो॰ [सं॰] एक पीया ।
पार्च-पु॰ [मुं॰] बादल मय।
बार्बक-त [सं ] बुबा नादमीः शुहापाः शुहापेश्चे कम
 जोरी: वृद्धीकी मंदक्षी । ∽शाव-पु्तुतापा ।
वार्यक्य-प्र• [सं•] बुहाया ।
वार्कि-पु॰ [मं ] समुद्र । -भव-पु॰ समुद्री ननक ।
बाद्युंप, वाद्युंपि, वाद्युंपिक बाद्युंपी(पिन्)~पु
 मि । एउटीर अभिक सुद समैकाला ।
वाद्र्वपी-लो॰ वाद्युच्य-५ [मं ] स्त्योती ।
वार्त्य-पु [सं ] समुद्री स्वय ।
बाद्ध्य~५ (सं ) बुहाया ।
बार्ध-पु , वाव्धी-ली [सं॰] बमके के पही तसमा,
  धर्मरवद्य ।
 वार्क्सीक्स-प्र[स ] हेरे कामीशका करता। एक पश्रीः
  शिक्षा।
 वार्षेर बार्वेड-५ [मं] नाव।
 बार्मब−पु॰ [म ] करवींदा समृद्।
 वामिण-प वि ) क्रमप्रशिका रह ।
 वार्य~दि [मं] बारण बोग्य जिस रावमा बारण करना
  शी क्षक संबंधी। प्र वर्दामा संवत्ति दीवार । - सूत-
   वि बर्द इस्पेने प्राप्त ।
 थार्थ्द्रव∽पु(६०] इ.सक ⊧ दि अकन उत्पन्न ।
 यार्थोजा(कस)-सो [ह] बॉब।
  यायक्य-स्त्री [सं•] वर्षमा मोके रंगक्रे वही मनशी !
  यार्प-वि [म ] वर्ष संबंधीः वार्विकः
  बापक-पु [मं+] सुपुम्त द्वारा विशक्त पृथ्वीके दश मार्गी-
   मैन एक (ए )।
  भाषगण-पृ[मं] एक तरहके वैदिक आधार्य ।
  बापम-वि [मं ] वृपम वैक-संवी।
  बार्यभानवा-मी [मंग] दुरमामुद्धी पुत्री राषा।
  दापल-पु [मं ] सूहका देशा । वि सूह मंदेशी ।
  बार्पेसि-दु॰ [मं ] शुहापुर ।
   वार्योद्धर-५ [मं ] यह साम ।
   द्यार्पिक-विक [मं ] वर्ष मंत्रीक्षेत्र मिन वर्ष द्वीनवान्तर वर्षा
    बासमें बीमेवाला। यह वर्ष विक्रमेवाला । ५० माधमाणा
    651 1
   पार्विक्री-भी [तं ] बायमाणा कताः वेनेका कुकः वर्वमें
    ,भिवमित रूपमे धीनैवाली वृद्धा आदि ।
   यापित्रप-वि [तं ] वष गरंगी । पु वशीदानः।
   यार्पिछा-स्रो [मं ] भीना बरहा।
   यापी भी [गं] दश ऋतु।
   वार्षे छ-दि॰ [म॰] श्रह्मेदाना वर्षवर्गातः।
   वाध्य-न [ा] कृषाः
   याप्त्रेय-पु [गंग] कृष्यिका बंशका कृष्या मलका सार्थि ।
    बाइ-रि [म ] भेरद पंथने बना दुआ।
    बाइन-५ (मे॰) प्रती दन, वद तर्ददा मधा।
    वार्दस्य वार्दद्या-दु [मं ] मृश्यका दुव, ज्यानंत्र ।
    बाहरपत-दि [रो ] बृहरपतिन शंबद वा स्थाप ।
    वादम्यन्य-वि [वं ] ब्रह्मवित्रं थी। पु ब्रह्मविका
      विष्या मारिनका कीनः पुष्प मध्या बृहरपितका सर्वे
```

```
দ্বাৰ ।
वार्हिण-वि॰ [मे॰] सप्र-संबेशी ।
बार्खंटियर-पु [भै ] पुरस्कार वा वेदन म केंद्रर सेमा
 इ में काम करनेवाका व्यक्ति श्वयंशेवक ।
बाख-पु [सं ] (वीदे बाहिक्ये) पुँछक बाक बाक । ~
 क्वांछ-त सर्व करते हुए सकता -केशी-सी पक
 त्तावका वयत्व । -धान-पु वृष्ठ ।-चि-पु वृष्ठ; एक
 मुनिः मसा । -नाटक-९० यह हरस । -पाशक-पु
 हाबीकी पृष्टका यक विद्येष भाग ! -पाइया-स्ती • बाक्ष
 गुरनेकी मीतियोंकी कही। - पुत्र - पुत्र में छ। - प्रिय -
 स्य-प वाथकी कारिका एक जानवर जिलको प्रका
 चैंबर बमता है। -वंध,-बंधम-पु
 वौननेकी दोरी। -मान्न-प्र शहकी मीटाई। -बीस्य
 -च विगमी वकरा। -ध्यक्रम-चु समर। -इस्त-
 पुष्टा
वासक-पु [सं ] बोड़े या दाधीकी पूँछ। बावछका संयतः
  वैगुरी ।
 बास्तरियन−पु[सं]दे 'शक्रसिरव'।
बाक्स - पु [सं] एक करण (क्यो ) ।
 बास्य-स्ता [म् ] नारियका एक सरहकी समेकी। क्स
  विदोप । वि० कि: ] कैवा: बहा: बुलुर्व । -गुक्र-
  गीहर-दि॰ दुनीत आकीग्रानशम । - ब्राह-दि॰
  कॅपे मरवरेशका । -सान-रि कॅपी शानशहा ।
 यालाक्षी−मी (ध•) र६ पीवा।
 बाएगम-पु॰ [एं ] शक्त नोका वस मान । वि शक्त
  मीक जैसा।
 वास्ति-वु [र्स•] एक वानर सुधीवका मात्रैः एक सुनि ।
 वालिका-सी [न ] मुबरको केंगुठी मुद्राहवास : कानका
  ण्ड शहनाः पश्चिपोंकी शरसराहरः दे॰ वाबिका' ।
 बास्टिक्~तु [अ ] बाप विद्या । ~तु सुर्गवार~तु पृभ्य
  विवा ।
 बासिबा−शी [म] माँ।
 वास्तितंत-९ [अ] गाँ-पाप।
 वासिनी-मी [मं] अहिबनी मध्य ।
 य ली-मी [मं] स्नेमा एक महना। यर्था वु [प्र•]
   मानिका शामक राजा सहायक भारत । -(सिय)
   मुस्क-पु नारधात् ।
 वासी(सिन्)-व [मं ] एक बामर, गुप्तीबका बना मार्छ।
   -(कि)इंता(न)-पुराम।
  बार्लक-इ बार्सुकी-सी॰ [मं ] एक सरहकी कहती।
  थासु-बु [बे ] यनवानु करियको छात्र वक गंपहुरन् ।
  वासक-त [मं ] यह विशा यह एश्हरूया प्रतिवाना ।
   वि बाम्बन्दा का बान्द्र जैसा; समद्रमे बना हुआ।
  यालुकांबुधि-यु (रां•) महमूमि ।
  वानुका-मी (वं ) १९, बाह्य कूम बहुत बक्ती
   शासा (दरन काद आदि) । -गष्ट-पु एक शरहकी
   मन्त्री। -प्रमा-मी॰ एक मरक (२)। -वंद्र-प्र
   भीषव निद्य बरनदा बन्ननि ।व ।
  वालुका महा-नी [4] छर्रा, दोना।
  वासुहारिय बासुहार्शव-९ [तं ]रेगिनास।
```

वडिमी-ली सिंगे शाव। बहिर्-'बहिस् का समासगत क्य ! -क्या-वि०, प्र० दे० 'बहिरंग । -इदिय-सो० दे० 'बहिरिद्धित । -गत-वि वे 'वहर्यत'। --- अगल्-पु श्रवमान जनत्। -देश-पु॰ दे 'निहरें छ' । -हार-पु दे॰ 'वहिंहीर'। -प्रामा-सो॰ दे 'वहिर्धामा । -शत-वि दे 'बहिर्मृत'। -मुक्क-वि पुरु देश 'बहिर्मुस ।-मोग-पुर दे 'बहिबॉग । -कंब-विश् श्रीवक कोणगळा । पु नविक दोन निमुखा - क्यांपिका-सी॰ टेहा प्रश्न नानव पेसी पर्दकी जिसका चलर प्रश्मके नावर बीता है। -विकार-प• दे॰ 'नविनिकार' । -शासि-श्री नाया रूव । न्यस्यस्य नपुरु काञ्चलता । महिमर-नि , पु॰ [सं॰] दे॰ 'नहिमर'। बहिप्-'बहिम्'का समासगत कव । -काम-पु॰ दै॰ 'नहिम्बरम । े-कार~पु॰ 'नहिम्बार' । ~ब्रुटीचर--पु दे 'बढिभुतीयर'। "क्रश्च-वि० दे० 'बढिम्बून । ~प्राण-प है॰ विदेशाण । यहिष्क-वि[शंक] बाहरका । यहीं-भ बसी जगह (दर परीक्षके किए) । षद्वी-सर्व • पूर्ववर्षित व्यक्ति, विविध व्यक्ति, दुसरा गर्दी । मी [म] हैनरीय छरेश या वारोध जो विसी पैर्गपर की मिले, इसहाम । बद्दी (हिन्दू)-दि (त्तं०) बार दोजवासा । द्र० वैथा। बद्रीह-पर्श्ति। पद्म मार्गेन्स्यः पेशी । सहरक-पु [मं•] सनवासिबीका यक मेह I यदेशकः बहेत्क∽ु (सं∘) यक्ष प्रज्ञ बहेवा । सकि-पु॰ [मं०] बाह्य अहरानिमः पाचमः सुवाः वामः पीश भारि जीव जायेगाने काशगरः होमध्ये संस्थाः निषका देवता मस्या सीमा फुल्का एक प्रका हार्यहरू यक्ष हुवा पुरीहिता वॉडवॉ करन । "कर~ध्र क्षप्रका रिवकाः। वडरान्मि ! --करी--श्रो॰ भागोगरी मासक पुष्पं भवा १ - काश - प्राचार १ - कोश - त ररानेद किर बना द्वला परचा। −क्रमार−५० वस वैदयन (ते) । —कील−<u>प</u>्र अस्तिकोच । ∽र्याच~पुरु गंबर्भना बस्यून ।- तर्म-पु गाँछ ।- शर्मा-श्री शर्मा बुद्ध । = बद्धाः - स्रोत कश्चित्रो । - स्रोधा - सी स्ताहा । -- अपाक्ष-तु एक नरकं। -- ज्याका -- पुरुपी--सी० पारको नृष्य । - प्रस्मी-स्रो अभिन्त्रमी श्रूप । -शीयक-५ इसेम। -शीपिका-को अमगीया। --वेबस-वि अग्नि-वृत्रका --धीत-वि अग्नि जैसा शुद्ध । -नामा(मन्)-तु विशव, विकास । -नी-मी ब्रह्ममुद्दी। गर्वादिक्की । नवीज-प्र शीना। रि बीका विभीश सीन्!ं−भृतिक-द्रः वॉदी । ~श्रीम्ब∽ बु भी । – मंच−पुरु गतिकारी। अस्तिमंत्र । ≃मार्क∽ द्र क्सो । −शिव−तु वशु । −शुल−तु वैवतः । -रेता(तम्)-इ शिव !-सोइ-पु०तावा !-सोइक ~पु नॉबा: कॉंग्रा । ~कक्ता~की करियारी। -- स्थ-को स्वारा ! -- वर्ण-पु स्थोपन !-- महाम-५ मृता। -महुभा-की श्राहः। -शिक्ष-पुरु बेगरा इतंत्र । "सिमार-प बोलमलाक । "सिमा- | बाह्स-पुर [अर] श्रतिनिके स्वारे पूर्णरे कावनर

स्ती॰ जागकी कपटः कठिकारीः पातको । –हाइ–िः कम्मि नेशा वर्षित्र । -शेखर-पु॰ केमर । -संद्रक पु॰ चित्रक । -सरा-पु॰ वासुः बीवक । -सुल-पु॰ **अवरसः। -स्पूर्यस्ता-पुः पित्रमारी।** व**द्विकः वद्वीक-पु॰** (तं॰) यदमः तसः। पु॰ तापः, गरमो। वाहीव्यरी-की (शे॰) वश्मी। **वश**-प्र• सि॰] बाहन, वाना धारी । वकाक-पु (र्थ) के जासंबाका, बाह्यक जेगा बामैराम वर्गी—संवर्ग, दशक्याद । वीष-पु॰ (ए॰) सहर (वागाक-पु॰ (ते॰) रक राय । वांगाकी-सी॰ (सं॰) पद राविनी । वांसक-वि॰, पु॰ [सं] श्वक्र करमेराका । र्थाप्रम-५० [र्न॰] १वझ करमा । वांग्रजीय-वि [एं०] बाहने बीम्य अभिनवपीय। बांका—को॰ (सं] इच्छा, बाह ! वांतित-दि॰ (सं॰) इविषय चादा प्रजा । प्र रूपः कारा एक शास । वांक्रितस्य, वांक्रय-वि (सं॰) सामस्त्रस्य जिल्हे श्चमा की जान **।** वाक्रिमी−थी (सं•) दंशकी। वांछी(छिन्)-(व. (सं॰) स्मृत्यः, पास्त्रेवासा संघर) वांश-वि (शं॰) वसव किया हुमा, सुँदसे निकामा हुमी क्षित्रचे बयम दिवा है। हु वयना वसन क्रियाहुआ दशरे। विशिष्-४० (सं) कृत्या एक पर्धी । वांतास-प्र (सं०) वमन किया प्रमा अप्र । वाँताशी(क्षित्र)-वि [सं•] बमन गानेवामा । पु• व पा गोगारिका बस्तेच कर भीता मौगनेवाला । वांति-ना (तं०) वमन करकेश्चे विवा! - हत्-रि वसम करावेवाका । पुरु कोइश्रंटक इस मैनकत । नदीन स्तो ६८६३ –साधसी~स्त्रो बीरा । वातिका-स्य (संग) वदयो । कौश-वि [do] गोसका यमा दुर्था। वांशिक-तु [तं] श्रीन कारनेशाच्या गाँगुरी स्वानेशाणा बांसी-सी मि | यसकीयम । वारिकरि-पुरु [सं] एस । बाध्यय-वर् (१)) क्रेस ! बात्रप्रज्ञ-पु [शं॰] सक्षाच स्थापार । बार्श्य-दि [मे+] या समीपे यहा थी। बा—म [लंक] संग्रव र-१व विद्वार मादिवा मर्थवस प्रान्त -श अवनाः [ल] है। नाम । • सर्व वस दा हिनार द्रभा रूप । बाहर-मर्पर क्षमुकी । सीर मारी । बाइबारवर-पु॰ [बं] इंगरेप्रदे मृत्यामिनीरी एक क्यापि १ काह्य −ि > ह िल] यात्र, असीहप करनेनामाः पर्टे या मीनिका क्षत्रेश कर नेवाणा । बाह्दा-इ [ल] हे नारा व

नास्त्रवीया-वाहीक प्र वक्षार्थवादीः महको । र्मुंबरी बाद-बाद मिक्छना, साबुबाद । वास्सवीपा-स्री शिवी शाहि। बाहक-वि॰ [सं] क्षेत्रे हे बानेवालाः बहानेवालाः वृति वास्तम्य-वि [प्रे॰] (निक्रमा धमहाकर) किसी स्नानपर महास करनेवाका । पु॰ वीदा कोनेवाना, भारवाहका छोड़ा हुआ। वसा हुआ आवादा रहनेवाला। बास बीव्य । सारवि वा वारोदी। एक विरोधा कीवा । प्र वस्ती। बाहम-पु॰ [सं] भीका रथ वा सन्त्र कोर्स सदारी वास्ता-पु [वर] संबंध, कगावा माता। वरियाः काम, बीमाः से कानाः सवारीके बाम भानेतामा वा मारू होरे सरीकारः विश्वया अध्यक्ष । अ०-देशा-शेवमे शक्रमाः वाका वामवरा दावी। प्रयक्त, क्योग करना । —कार-1 दहाई देना । -पदना-काम पश्मा, सरीकार दोना । रवादि बनानेवासा । -प-पु भारवाही पशुक्री रेडरेप मास्तिक−पु [सं] क्करोंका ह्यंथ। करनेवाका, सार्वेश ! – क्षेष्ट – व वोशा। बास्तु-पु (सं) मकान बनाने बोग्य स्वातः गृहः सवनः बाह्मा न्यो [स॰] सेमा : ● स॰ क्रि॰ दे॰ 'बाह्मा' । मकानकी थीवै। कमराः एक वसुः वनुष्माः पुशर्यवाः एक बाहनिक-प (सं•) भारतहरू कार्बोके शहर भारिक अकः -कर्म(म्)−पु गृहनिर्मोणः -कास्र-पु पेसा करनेवाका । प्रदर्शिमां नके किए क्ष्मुक समय। -क्राकिंग-प्र वाह्रमीय-५० (सं०) धारवाहरू पहा । तरन्य, कमीमा (१)। -कीर्ण-पुष्क तरहका का **बाइफा-सी॰ (र्स॰)** थारा प्रवाह कीन । मंदप। – ख−दि गृहज, परेलू। – ज्ञान – पुरु गृह बाह्य-५ (सं) अववरः दारमाः अनिवः एक शान । निर्मायको विधा। -देवा-देवता-प्र गृहदेवता।-सर बाष्टा-को [सं•] बाद । −पु॰ देवतारूपर्ने माना हुमा चलार्च भवन । ⇔ए 🕳 बाह्यबाह्यन-व [र्घ] इत्थने हाथ, दस्त-करस्त भागने पति – प्ररूप – प्र वाताले स्वामका हेवता। – प्रका~ सामने (मिक्या)। की बास्तरेबकी पूजा। -प्रशासन -शसन-व वरकी बाह्यपाहची−मी [मं•] बाह्यसः। बाहि-इ [र्षण] होना से बाता। द्वितः वा सरकार । -वंश्वम -विवान-५० ग्रहमिर्मान। -पाग-प रे॰ 'नारव्यक्ति'। —विचा-स्ता, बा**हिक-५** (सं] क्कमा नाग्री होक नमाना भार -भाषा-त गृहिमर्गण-संबंधी विद्या ! -सांति-सी वसक । बाहित-वि (र्ध॰) क्षेत्रा हवा वहन क्रिना हवा। व्यक्तीर गृह-प्रवेशके समय किया बानेदाका स्रांतिकर्म । ~शास-क्षिता हुआ। प्रवाहिता चालित च्यावा हुआ। वॅन्सि पु॰ वनुका : -संपादन-पु॰ मध्म-निर्माण !~स्वापम~ सह दिना हमा। बिसके किए प्रवरत दिना नवा है। हुन पु भवन-तिर्माजः। वारी शेस । भारतक-प्र• [सं] बद्रभाः प्रमर्वेशा । वाडिडा(त)-९ (र्ष॰) चकानेवाका नावक। बास्तकी-सी [सं•] यह साग। वाहित्य-त [सं] यक्तुंबडे शोबेडा हिस्सा, हाबीड वास्त्क−तु [सं] वहुवा। बास्त्यसम बास्त्यसमन-पु॰[र्र] वे वास्तु-छमन । मश्चक्रका शिषका दिएमा । बाडिय-दि [भ] एक, शर्तेका सदय । पुरु प्रस्ती बासी−स बिीकिंध देख कारन। वास्तेय-वि॰ [सं] बाशद करमे बीम्य नसाने शेग्यः संबनाः शहराह्य यक गाम । बाहिदिया-१ असम्मानांदा रद संप्रदाय । वस्ति वस्त् वा वास्तु-संवंधी। बास्तोप्यति – पु [सं•] बास्तुपति। ब्रेह् । बाहिनी-ची॰ (चं॰) मेगाः सेनला एक विजाय (८१ वासा-दि [सं॰] बलसे बना हुआ। वससे क्या हुआ। बाबी ८९ एवं ९४६ पीड़े, ४ ५ वेडछ)। नदी। --निवेश-इ सेनाका पश्च दिनिर। -पवि-ध प्र वकान्ध्रादित स्व । वारप −तु [लं•] माना नरमी। बीहा । रीमानाथम सक्दा बाम्पेब-इ [सं•] बानकेसर । बाहिनीक-५ [त] दे 'वादिमी । वादिगीस-६ [र्र] छेनानावक। बास्य-वि [संग] भाषकारित करवे बीग्या वसावे बामे बाहिस-वि बि] वहम करनेवाला होवसे क्याया भीग्य । तु तुस्दाव् । करनेवाणा । बास-इ [सं] रिम। बाइ-वि [सं•] बॉपने वा हे बानेवाला; वहता प्रभा वाहिमा-मी [भ] दरश्मा-शक्ति।

(समासरे अंतर्में) १ प्र हे बाना डीना। बाहम सवारी। मारबाइक पड़ा भीका बैक मता बादि। बाबुः मोटिबाः कारकर, सीवकर के कानेवाका भारत वक प्राचीन दान; बाद्र । ⊷द्विपन्(त्) −रिप्र−पु मेसा । −क्षेड -द बीहा ! बाह्-म [दा] साधु थम ग्रामाच मधीसास्थ्य सन्दर, कमी कमी सामर्थ और स्थानमें निवास मार भी प्रकर करता है। −बाह्-अ साबु-माधु वस्त्र-वस्थ वया बहुना है ! -- बाहुरि-शी वाह-बाह दोना, वनुशक्ति !

बेहवा वेशिर-वेरकी (बात)। मानारा वरमनता -तवाडी-वि निर्धेक देहरा (वाने)(-वदमा वॉडम्पी वाही(दिन्)-वि [र्व०] वहन धरनेरानाः वीनेरानाः वक्षनेवाकाः वदानेवानाः अध्यक्ष करमेवाकाः पुरा करमे बामा। युर्दा

बाहियाल-विक फि। विश्वविक का यह , बेहरी-

निक्रमी (वार्ते) । भी सुरस्काता वहमाग्री-कावारमी ।

बाडी-वि॰ (थ) इसन्दर इसा क्रमंगेरा निक्रमा

बाहीफ-पु [मंग] है शहीस'।

प्राय स्पष्टतः समञ्जूषे भा बादा क्वमः। मादेशः साहवः

काम बरनेवाला व्यक्ति (समस्य पश्चेमें) । ~चौसल्डर~ कुक्पति विश्वविदाक्यका यह स्थ अविकारी की वासकरका सदायक होता है और दिव्यविधाकवदी व्यवस्था भादि इस्ता है । —चेयरमेन-पु• व्याध्यक्ष । ~मेसिवेंट -प• प्रयसमापदि । -राध-प निटिश शासनकाकमें हिंदुस्तानका सर्वोच छाएक वो इंगलैडके रावप्रतिनिविकी हैसिबत्से भारतमें रहता था। बारुपर-त• (बं•) रार्वका भौरेवार मद दिखानेवाटा परवा । बाद्ध-पु• [र्मु•] शक्या नगलीका श्रृंदः नगलीकी दनान । वि वद्य-संबंधी। • स्त्री • वाणी सहस्वती। बाह्य र्रं~श्र [स] बस्तुतः, सच्युषः वि ठीक दुस्ताः संचा । माफ्रिका, माक्रेका−पु [ल] वदमा। वृत्तः दुर्पेटमा, दारिसा पुद्ध । - नथीस - निगार-पु खन्रें किसने बाह्य क्ष्म्यस्थाः वाक्रिसात्त−पु [स] बाक्तिकाका बहु∘, घटनार्षे, दुर्बट नार्थे वारिवातः। षाक्रिजाली-वि बटनामुख्य परिश्यितिमे प्राप्त ।- शहर रत-न्यो (बरनाबी) परिरिचतिसे मिळनेवाळी (अप रवस्र) छडाउतः। वाकिमी−स्थे (सं∘) एक देवी (तं) । षाक्रिक्र-दि [भ] जानकार वानने, समझनेपाणाः मनिष् । --कार--दि॰ दिनी कामकी जानने समझने षाका, परिवित्त । −कारी ननी वामकारी परिचव । पाक्रिक्रीयत् – स्रो [स] बानकारी भनिष्ठना परिचन । याक्रची-ली॰ [सं] मोनभिनिसेन नक्रची। षाकुक - पु [मं] नकुन भीनश्चिपका प्रश्न । बाक्ने वाक्नेस-वि [म] होनेवाका थरित होनेवाका मामने भानेनाकाः असको । स् -होना-परित होना । बाकोपवाक-पु (सं•) दात्, संबाद करोपद्रथम । बाक्षीयावय−५ [मं•] क्लोपप्रथम वातवीतः तर्वः। वाक(च्)-सी (सं) शब्दाशाओं वास्यः ऋषताः बादा बोक्रमेद्री इंद्रिया सरस्वती । -क्सह-पु तगका बराग्रुनी ६ −कीर−५० साका । −देशि −देशी−शी दैनी-प्रजासः। ~क्षत्र~ प्रस्तनेवानी वातः। ~क्षप्रहः– व ४६४६िया । —छम्द-पु नदाना शक्यप्रक्रवाली बारा कार् के शहारे दिवंदा यात्रा करमा । -पट्ट-दि मान करनेमें धतुर । -पति - पु बृहरवृतिः बुध्व नग्नमः मारग-तुम्रक स्पत्तिः बाग्मीः नित्रीय पद्व ब्यम् । - एव -प्रभावचारे योग्य अवस्था मावगढा क्षत्र । -पाइय-पुरु भारप-पर्वता । --पास्थ्य-पु सर्वेद्यता अस्ताः-बादि । –पुग्प-पु॰ ऊँची बहानवाने शभ्द । –प्रताह-5 वामा। -प्रदा-सी सरस्त्री मदी। -प्रसाप-पु वाधिना। -प्रमारी(रिन)-वि भावत्रवर्द्धा -समाका-मी तबनेवारी वात । -शय-पु॰ धीरे-वीरे बोनपा । -सायक-५ वेदनेवानी वात । -स्र्वस-५० भराक् रद बाना क्षेत्र स निदल्या । बाह्या-मी [तं] एड वटी । पारर-पु [4+] प्रीहा वह अनुह जिनने बचाका अनि

दर्कः पश्चियोंका करूरवा ∽कंठ∽वि विस्मे दंडमें वाट हो, यो बोकने बाका दी दो । −कर−पु आरोध पूरा करनेवाका। – अर्थबन – पु तर्पका संदन् । – प्रद्र–पुर ग्रॅंडका फ्यापातसे मस्ट दोना। ∽पद्धति⊸स्त्री बास्य वनानेका नियम । -सेव-पु॰ किसी वासका प्रस्पर विरोगी अर्थ करमा; परस्पर विरोगी बावय । – रचना – खी॰ वानव वनामा । —वज्र-पु वहुत करी माधाः। -विन्यास-पु पर्शेका बनास्थान रहा बाना (म्बा)। -विशारद-वि॰ भाषण-पड । --सक्षाका-स्तो• दे• 'बाध-सकावा' । -सारयि-प्र॰ प्रवस्ता बोस्तेवाकोदा सुविवा! -इरियी-वी वृती। वाक्यार्टबर-पु (सं॰) दीर्थ और द्विष्ट शब्दबुक्त नामना वसी । वार्गत−प्रसि∘ेरधतमस्यर। वारातिष्ठ-५० [सं•] एक संदर वाति । थागधिप-द्र [सं] ब्रहस्ति । वागमा=-म कि दे 'बायना । यहमा-फिरना--र्<u>ट</u>मुक्ति द्वमुक्ति वाग श्रीतिकाके ऑगनमें -सुराज । धागपेत∽4ि॰ [सं] गूँगा। वागर-प्र• [मं] निर्यंवः वाहदानकः निर्मय व्यक्तिः भेड़िया' साना क्सीया पंडितः सुमुक्ता वाका । षागा∽न्दौ•[र्स] रूपाम । धागाय-पु॰ [र्ष] दचन भैग करनेवालाः आश्राद्वतः विचासवादी । यागाधनि−पु[मं]एक प्रदा वागीस-प (वं) करि। बच्चा अझा बहरवि । वि बच्या रीस्टरेरामा । वागीचाः भागीवयरी-स्री [मं] सरस्वते । वागीव्यर-४ [सं] दनि। ब्रह्मा बृहत्वतिः एक बीधि-सरव मेजूपीप। षार्गुजार−पु• (सं] एक तरस्की महस्रो । बागुकार−९ कि] छोद देना, मुख्ति। वागुज्ञास्ता-वि॰ (का॰) छोड़ा हुमाः दिवा हुमाः कीरावा बागुजी-सी [सं] एक क्षेत्रिय बहुयी छीमराजी। वागुण-पु [सं•] वनमः दमरसः । वागुरा∽सी [सं]चेटा जान, पूरा आहे, केंगानेस जान । -पूर्णि-मी जुग मारि चहरबर शैरिश चनाना । वि इस मदार अपनी श्रीविदा चनानेपाना । वागृरिक-पु [मं] हिरन चेंमानेशका स्वाशा बागुम-तु [मं] एक तरहकी वही मएती। वारम्बस-पु॰ [तं॰] रिहान् । अन्ता भाषण करनेवामा । बाग्गुण-पु॰ [में] मारपदी बस्तन्ता। बाम्गुर्-पु [में] व्य तरहवा बमगान्य वा पक्षी । बागुष्टि वागुलिक-पुर्श्त] बान देनेवाचा रायभेवस यशन । थाम्बाल−दु[मे] शर्ने ही नदर। वार्ग्ड-९ [मं] शीरकाकार, मर्गना वार्मना

बाहु-को० (तंत्र) दे 'बाहु'।
बाहुक-पु [तं] दे 'बाहुक ।
बाहुक-पु [तं] दे 'बाहुक ।
बाहुक-पु [तं] दे 'बाहुक ।
बाहुबार-पु० [तं] नदाहैका पेष ।
बाहुबार-पु० [तं] नदाहैका पेष ।
बाहुबार पु० [तं] नदाहैका पेष ।
बाहुक-पु० [तं दोषा बोषा चा चका मानेबाका। दे
'बाह्ये । -धातियय-पु० विदेशी माल ।
बाह्यक-पु० [तं] त्या ।
बाह्यक-प्० [तं] त्या ।
बाह्यक-प० [तंत्र] एक विदेशा की ।
बाह्यक-प० [तंत्र] वाह्य पीत्रका । बाह्यत्यीवर ।
बाह्यकिय-प० [तंत्र] वाह्य पीत्रका । बाह्यत्यीवर ।
बाह्यिय-प० [तंत्र] वाह्य विद्याका माल्यक वर्ता व्यावस्था ।
बाह्यिय-प० [तंत्र] वाह्य विद्याका माल्यक करतेवाडी
प० वालिद्देशी (लीक काल, माल बीम बीर त्यचा) ।
बाह्यिय-प० [तंत्र] वाह्यका । -ज-पु० वस्त्यका वोह्य ।

वाहींक-पु [मं] है 'वाश्योक ।
विदान-पु० (मं०) योक्स सुर।
विदान-पु० (मं०) व्यक्ति सुर।
विदान-पु० (मं०) व्यक्ति सुर।
विदान-पु० (मं०) व्यक्ति स्वार।
विदान-पु० (मं०) व्यक्ति स्वार।
विदान-पु० (मं०) व्यक्ति स्वार।
विदान-पु० (मं०) प्राप्त करनेवाका। व्यक्ति व्यक्ति सु० (मं०)
विदान-पु० (मं०) प्राप्त करनेवाका। व्यक्ति व्यक्ति सु० (मं०)
विदान-पु० (मं०) प्राप्त करनेवाका। व्यक्ति व्यक्ति सु० (मंत्र)
विदान-पु० (मं०) प्राप्त करनेवाका। व्यक्ति व्यक्ति सु० व्यक्ति सु० (मंत्र)
विदान-पु० (मंत्र) प्राप्त करनेवाका। व्यक्ति व्यक्ति सु० (मंत्र) व्यक्ति सु० (मंत्र) व्यक्ति सु० (मंत्र) प्राप्त करनेवाका। पु० (मंत्र) प्राप्त करनेवाका।
विदान विदान विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त करनेवाका।
विदान विदान विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त विदान प्राप्त प्राप्त प्राप्त विदान विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान विदान प्राप्त विदान प्राप्त विदान विद

विदुरण-पु र्दुरको । विद्याल-पु रिस्पायल पर्वत । विद्यालपु-पुक, विद्यापयी-स्त्री [ग०] वनरापदा नामक पौरा ।

पिरच-तु [मंग] घारमः मध्यमे रिवण ण्य वर्षमध्यो वो वयर मारतकः वरित्रमे अन्या वरतो है और पूर्वो यार गया प्रियो पार मामक वहानोके क्यती सिरोफ भूत गयो है। -बूट -बूटक--बूटल-युक आगस्य स्रांत । -बूटमासयामिसी-श्री दुर्गाधी ण्य स्र्रांत। -प्रिका--विरि-पर्यम -सार्क- यु विभावेगी। -प्रस्तिक-दु सिप्य कर्गक रहित्रमें मानतावानी स्वार्गी। --विराम कर्गक रहित्रमें मानतावानी स्वार्गी। --विराम स्वर्गक स्वर्गको मानतावानी स्वर्गको युक्त स्रांत प्रस्तिक स्वर्गको निकासी सिन्तु। -दु है॰ विभावतायो। -यानियी-श्री देवेहरे यक्ष स्रांग। -प्रस्ति सिन्तु। -स्य-पु० क्यार्ट सुन्नि। विश्वर विभागर स्वरंगनाया।

विषया रहतेवान।
विषया-मा (मं) शारि बनावची। स्वयमे लाग्न्व कावा।
विषया-मा (मं) शारि बनावची। स्वयमे लाग्न्व कावा।
विषयाच्या-चु (मं) किया वर्षता शिव्य वर्षतारी यह
सामावर विवय यह दश्ती आर्थी विषयवानि हैवीक।
सीर है।
विषयादयी-मो (मं) विषय वर्षतावाबा निवय।
विषयादयी-मो (मं) विषय वर्षतावाबा निवय।

र्विष्यारि-पु [सं] अगस्य मृति। विष्यावसी-स्रो [संः] राजा नक्ष्मे स्रोजो नाजकी माता थी। विष-पु [सं] है 'विष ।

विषयः –पु [संग्]दे 'विषयः'। विषयः –पु [सं]दे 'विषयः । विषयः विषयि –सो [सं]दे 'विषयः । विविद्या –सोश् [संग]दे 'विषयः ।

विविका-सी॰ [सं॰] दै 'विविका'। विविक्त-वि॰ [सं॰] दै॰ 'विदिव'। विजु-पु [सं] दे॰ 'विदु'। विवोध, विवीध-वि॰, पु॰ [सं] दे॰ 'विवोध'।

विश्व-वि॰ [सं] नीसवीं। पु॰ बीसवीं भाग। विश्वाक-वि [सं] किसमें बीसको दृदि को गयी ही। भिस्तवें बीस भाग हों। बीस। विश्वात-वि [सं] बीस (कुछ समस्त परीमें)।

प्रसार । १ (३) गणा दुष्ण उनस्य राजा । सी॰ गेरुकी विस्तित्ति हैं हैं। गैरा गैरुकी सेम्पादा । सी॰ गेरुकी मंदमा; गैरुकी संदगका एयक कंट, १ ; का प्रकारका म्यूह । न्य-यु॰ गीरा गौरीका स्तामो । न्याहु न्युक्त -यु॰ राजा । न्यारिक-नि॰ शीरा पर्य क्रिकेससा ।

--पुं॰ राजग । --वार्षिक-वि॰ बीस वर्ष दिकनेवाला । विस्ततिस-वि [सं] बीएवाँ । विस्ततिस, विस्ततीसी(सिन्न)-पु [सं] बीस गाँबीका रहागी ।

विंगहराष्ट्र पु (तं] राज्या ।
विंगारित्राष्ट्र - वि | राज्या । विंगारित्राष्ट्र - वि | त्रिवर्षे शेश दिरशे हों ।
विंगारित्राण्ट - व्या (विंग) सद्भावा समाद्यम वाननेक्षे
दिशेष रोति (क्षी) ।
विंग्हें पिका - क्षी० | नि महस्की नेम्पा कर्वत व्यति ।
विंग्हें पिका - क्षी० | नि महस्की नेम्पा कर्वत व्यति ।
विंग्हें वि विक व्यत्मा नी स्वर्की देष्ट्र मान्सदर ।
यार्थव (विशेष) कार्ववेषरीय (विंग्हें के क्षाप्ति ।
विंग्हें मान्सदर्श (विंग्हाण) अर्गर (विरोध) क्षाप्ति विंग्हें विंग्हें के स्वर्विष्ट (विंग्हें के क्षाप्ति विंग्हें के आर्थिक विंग्हें विंग्हें के स्वर्विष्ट (विंग्हें के क्षाप्ति विंग्हें के आर्थिक विंग्हें विंग्हें के स्वर्विष्ट (विंग्हें के क्षारिक विंग्हें के क्षारिक विंग्हें के स्वर्विष्ट (विंग्हें के क्षारिक विंग्हें के क्षारिक विंग्

मारिका न्यन करता है। व नोता; माहा माहारा मीरा। वृ नी परी। यिकडर-वृ [तं] योगान। विकडन-वृ [तं॰) यह पृत्र निक्से स्मानीमें ना। पनात ये महारूष्ट्रां

निषय या राहित्य (निमन) परिवर्गन (निष्कार)

व सवाह्यः । दिव्हेंबत्ताः न्योः (संत्) व्यक्तितः । विव्हेंदक-पुः [सं] वत्तामाः निरंबदः । विव्हेंपन-पुः [सं] वत्तां पुःसः प्रेपतः । दिव्हेंपन-पुः [सं] वत्तां पुर्वः । व्यक्तां गति । विव्हेंपित-पिः [सं] वत्तां पुष्तः । व्यक्तां गति । वद्यं पुष्तः वद्यः सद्यः अदः स्तरीका सरीय क्षारः । विव्हेंपी-स्त्रं [संत्र] एक विदेशितः ।

१९६६) न्या (१९) एड बाहु (स्पत्)। विकेशी(विक्) नित् । विकेशना का दिनमा दूधा । विकेशा (विकेश विकेश व्यापी हो सामका कृष है। १९ एका विकेश न्युं (से) एका कह नृत्येहा स्व स्थापनी। हि तिला हुआ विकेशिया चैना हुआ। केट्रील किरा

बर्भें हार थी सिन्द्रम्य स्तर हो गरा हो।

पु॰ वह दपका, कागब लावि शिसपर पानीका जसर ज षोः वरसतो क्षेत्र । —फ्राल-पु॰ बक्रप्रपत्त । —साक्-पु॰ पानीको सतह यहराईका सप्तक निद्धा कानअवर इता क्रमा निर्माण-स्वान भादिका क्या और शाँकों और प्रकाराके बाब करनेसे दिखाई देता है। --ग्रेन-५० बाटर शुक्तारेका मेनपारप । - सेवेश-पु मैदाल, बकाशवके पानोद्धी सन्द्र । --बक्सै-प वह स्थान बहाँसे जगरमें पानीका निवरण होवा है। वादि-सी सि॰] पिरा हमा स्थान । -बीर्ध-प तरहकी यास या सरपन । बारिका-सी॰ (सं॰) क्वानः वह अमीन विसपर दमा-रह बनावी जाव । वाटी-सी॰ [एं॰] इमारतको बगीन मकामा उवाना रास्ताः एक सन्नः कस्तृष्ट । वाहक-पुर्मि] बहुरी भुजाहुजा थो। शास्त्र-प [र्म•] वरिवाराः समा जो । वि अधान-संनेतीः बरकी सकती से बता दुआ। -पुष्प-पु केसरा करम। -पुच्ची-मा अतिरका नामक शेथा । - संद - दु० मुने भीर दछे हुए भीका मॉर ह यातपा, **बाट्या**की –सी [सं] वरिवारा, वरिवका। बाळ्यायसी न्सी [सं] इनेन पुष्पनाकी वक्तिका । पाटपासः, बाटपाडक-दु (मे॰) दे 'बारपा । घाड-पु [मं•] बेहन ! बाह्य बाह्य-विश् मि] बोडी-भंनेरी । प्र मसूद्रहे मंदरकी भागा त्राक्षण बीहा या बोहिबीका समुद्दा एक वैदाहरणः यह भरका एक रविश्व । -इरण-प्र वोदेश बारा । –हार्ड-५० वद अध्येत । धाडशारित-भी [रा॰] सनुबद्धे श्रेर(श्री बाय । वादवानक-दु [मुंग] देश 'बादवारिन'। बाह्रसेय~द् [ध्] प्तरिः पोशः आद्यमः अधिनद्य । वाहम्य-पु॰ [मं] जासन-मंदती। साह-वि [सं] रहा मतिश्रवा तथ रवर्त्त्रस्त । चारम-म [मं•] तिमंत्र ही। जनश्य ही। नताही (क्लामें)। बहुत सविद्ध । क्राभ−ष [सं] दे शान'। शासि-मो [मं•] दुननंधी किया; करवा; वाणी, वयन। हरस्वती । वाध्यत्र-दु [मं] व्यापारीः बादवानित । क्षाविश्वक-पु (मं) दे वागिय'।-विश्व-वि वशिकी से व्यावाद ३ धावितिक-पु [धं॰] स्थायस बंबक, उस बाहबाबल । पानित्रप-त [ने॰]स्वासर । -द्त-पु किसी देशका बह प्रतिनिधि को अन्य देशमें स्वरेश है व्यापारिक हिनी-हो रक्षकी किए नियुक्त हो। षाचित्रवरू-५ [नंग] ग्वापारी । वावित्रया-भी [र्र] ध्वारार । वाकिसा~भी० [बं] य्यः दृष्तः। कारिक्ती-भी मि अविनेत्री, तर्दनी। कुवता पूर्व मस औ; रह कर्पात ह

बाबी-भी [लंब] सरस्वतीः सार्थं स्टब्स, वेचना वायू

शक्ति मीम, रसना, वालोको दक्षियः स्वरः ग्रंथ-रचना भरोसाः शुनारीः सरद्वेषा । वात-पु॰ [र्थ॰] वानुः पवनरेवः प्रारोरसे निवन्धे रूरे हवा। शरीरस्य वासुके प्रक्रोफी होनेवाना रीय, सर्दया नादि। वि॰ वहा हुना। श्रीग्रनः नामीय नार्ताः --कंटक--कु॰ पॉनके ओड़ोमें डोनेनाना नातरीम ! +-कर. ~कृत्~नि॰ (छरीरमें) नात करपत्र करनेवाका । ~कर्म-(म्)−<u>५</u>० पार गीव। –इन्हेस्सिक्य,–कदसी-मा• यक मूत्ररीय जिसमें देशान पीड़ा देशत मूत्र-मूर चतरहा दै। -कुम-त० दावीके मलकका नीचेका माना -केतु-दु॰ थूक, वर्ष । -केसि-मी॰ प्रेशालम वेभिक या वेभिकाके छरीरपर दातों या नर्सोका क्षत्र। —कोपम−वि धरीरस्य बातको कृषित कर्नेशला। -र्शंड-९॰ वातमय गर्सर्यट रोग ः -शामी(मिड)= द्र नदी । -गुरुम-५० गाउँदे प्रश्लेषके शहर हीने वाका परिवा रोगः शुकान। -प्रस्त-दि सर्वता रीयने पंदित । -प्री-सी॰ शासपयाः समयंगः। -खड-दु व्योतिक्संदंधी यह योग (इसमें बाहुरी रिसासे कराध्यका निवार किया जाता है), परंपर ! -चटक-पु॰ वीतर ! -ब-(व नामुसे सामक ! त वत तरहका शुरू । -प्रवार-प्र वान कृषिन हामेने वरनत्र दोमेनाका एक व्यर् । —तुम्ब-पुरु इदावे १५८ क्ष्मर वहनेवाचा सकेर और वारोक सामा वरियादा द्य रहत्व। –धरा–की तेन स्याः श्रीत शतः रीया एक तरहरी नमृरिका मंदर स्तो। - स्वज-प नेप, बारकः वृक्ति । —बाडी-मी वाल-प्रकेशी शॉप की जरुने शैनेनल्य एक तरश्का नाग्ड । –पंड-त्र यक्त तरहका द्वीर । -पर-प्र• प्रशाका, ध्यथा। मारका काठा - पत्ती-सी दिया। - पर्योव - ५० ऑबका रह रोग। ~पित्त−पु यक तरहका महिना रीय । −पुछ-पु॰ इनुवान् । मीमा वंपद । −पोधा-वोधक-पु॰ करास । -प्रकृति-दि॰ विसनी प्रस्ती बायुन्त्रवाद हो । -प्रक्रीय-पु॰ वायुक्त मविद्या। −प्रमी-पु॰, की (६रता पीता वेश्ना। −प्रमेदः –शेइ−५० २६ तरह्या कृत्र रोग । −प्रशसिकी= भी आबुक्षात । –पुनुष्ये –पु॰ पुष्पुधा भौनदा बानुने कृष्टना । -अक्ष-दि॰ इदा पोस्ट रहने।।याः ~संबक्षी-भौ॰ पात्रसर्ते । ~सम-५ - इसदे समग्रे ओर दीवनेशका शुरु र ~र्रग∽प प्रेक्टरा केरें! ~क्ट्र-कोणिय-५० एक रोग । ~७ घन-पु ४५५९ क्षा-द्य-तु मैदा -स्त-पुर्शस्त्रनुद्।त्रामा रिवन्त । –होरा –विकार – ५० वान-मारि । –रोदियी ओ॰ जीधवर वारी और केटियी शरह सांग कारनेश रीयः --व-पु चनाः वश्यु। दिश्वानु वरानेरानाः तकानी । -वस्ति-धी॰ वृत्र रोधना ! -वंदी(रिव)* पु नरेका नाराम ! -व्याधि - सी परिवा ! - भीव-पुरु केशू वरिता :-स्रश-पु व्यक्ति। -सर्-नि* गरिवा रोगभाना । -सार-पुरु देव । -मारवि-प्र अस्ति। नम्हण्यन्तु भारतादा वर मात्र वर्शना वृत्तिग्रीक श्रद्धो है। ~श्रुष्ठ-शि कमारवल i-श्री

विकथा-सी [सं•] एक द्वर, महातुंदी, क्र'नपुष्पी। विक्वित-नि [सं०] सूका हुआ; सिका हुआ। विकय्य-वि [सं] (वह गरी) जिसक किनार वक्तक म हो ! विकर-वि• [सं] यदाः विशाकः भवेदरः दुर्गमः थहाः,

विस्तृतः पर्नद्रीः संदर्भ देवाः सविद्रकः क्षेत्र वॉलॉनाका **रंतुरः निकृतः सरपष्ट । प्र** सोमकताः बृतराष्टका एक पुषा स्करका पक्ष मनुष्या फोबा, वर्षवा बैठमेकी एक सदाः एक विषा -- सृष्टि-विश् गरी शतकवाकाः। -वयन-वि भरी छन्दर्गाका । यु दुर्गाका यह अनु

पर । -विथायः-श्रीत-प्र॰ वारहसिया । विकटक-वि [सं] जिसके घरीरको नामवि धराव हो। गवी हो ।

विकशा-मी [तं] दुवकी बनमी मानारेगी; टेडे पैरॉ शाली कड़की थी विवादके बीव्य स हो।

विकासकति-वि॰ सि] धवामनी जवसवासा । विकराध्य-वि [मं•] श्रावनी श्रीस्रोताका।

विकशासम∽प (सं वे भवराक्का एक प्रमा वि जिसकी श्वरू भरी हो।

विकरमन-विक [सं] श्रीय मारबेवाका । पुरु श्रीय मारसा फॉन्बः सिम्बा श्लाबाः प्रदेशा ।

विकरणा-सो सिं॰ो बॉगः प्रश्नेसाः विश्वा प्रसंप्रत ध्वंग्यः हत्रोतमाः

विकासी(रिवस) - वि सिर्णी बॉन धारनेवाना । विक्रमा-सी [मं] वेदार, वेन्छर-पेरको वातः हुनरिस्त

वात (जै) । विशिव्य वात । विकार-त [मं] पक बार्गा विकर-प्र• [म•] रोगः बुक्का यह तरीका क्लवारका

यक्ष श्राम । वि चरत्त्रदीम (र्वकके कारण) । विकरण-वि॰ [मं] दार्नेहिकीसं शीम ।

विकरार+-दि स्विरात, बर्दबरा दिवत मासुक ।

विकास-वि [सं] भीपन मनेक्रा

विकराका-न्यो॰ [मंग] हुन्।

विकरासी(किन्)-वि (तंश) नतम तता । पु शाय। विकर्ण-पु [हरें] कर्नदा यह प्रशः दुवीवनका एक मादेः एक सामा क्षत्र प्रकारका शाल । नि वर्ष कालीवाकाः कर्णरहिता नहरा !

विकर्णक-प्र [त] गैठियमका एक मेदा शिक्टा एक

विक्रमिक-इ [सं] सारत्वन शहेश ।

क्रिक्यों-मी (संग) वह ठरवकी देंट (यक्ष्मेदी बनामेक्ष काम भानेवाली) (

विकर्णी(पिन्) - पु (सं॰) वह तरहका वाणा।

विश्वनंत्र-९० [मं] स्वां मदारा पिताको सम्बन्धत कर स्वयं राजा नवनवासा पुत्र । वि काप्रधेशासा स्वर करनेवाका ।

विकर्म(न) - पुर्शि•] सिविड अनुश्रित वर्मा विभिन्न मनाराहे कार्यः कामरे कामर ग्रहण बरना ! -किया-स्ती अविदित्त वा अवार्तिक कार्य ।- स्थ-वि , तु वंद निकार काम बरमेवाला पानी !

विकर्मा(मैन)-वि [सं] दुरापारी, क्ष्मेंसकः क्ष्में स बरनेवाला ।

विकर्सिक-वि॰ [गुं॰] जनुभित काम करमेनाताः विका कार्योवे संख्या । पु नाबार था मनका निरीक्षा।

विकय-प्र[मं] गोध फासका प्रस्था शोपमा । विकर्पेश-प्र• [सं] जावर्गम सॉक्स (प्रत्या); स्थाप मह करना। सानेसे परहेब करनाः स्टब्सेस्ट एक होग व्याचा कामदेशके वाँच वार्वोसेसे एकः अक्रवंत ग्राह्म निवरीत कर्पन, निक्क विकासी और दिल्ला, प्रतिकर्पन

(alle) 1 विकसंक-नि॰ [र्शः] चमभीका वेदाय।

विकल-वि [मं] मीता वेचेया व्यासका प्रत्या इतो त्साहः अपूर्णः संदितः करंगः घटा हुना, स्मृतः अन्तप्राप्तः करनामानिकः भएमधेः प्रमानदीमा गुराहाया हुना। -काल-विश्वीयः निस्तत्र शीवरतः। -करण-वि जसदाद, दवनीय । -पायिक-जिल्ल दाप करें हीं इस्तदीम, सूचा ।

विक्रकोग-वि (र्थण) वेकार अध्याकाः अंग्रीन स्पूर्णन विकास-नी [6] वर सी विस्ता कार भार्यकी शक्षा हो। रबस्तकाः ऋतुहीमाः शक्की गृहिको एक विशेष अवस्थाः स्थवकः यक बहुत छाटा मान शत्याकः ६० वी

माग । क्रिक्साता#−अ कि स्थाउक होगा! विकासमा - इ. चर्मा सहका माना मानगाला एक

प्राचीय शासा। क्रिक्टिस्ट-नि॰ व्याकुक, देवीम: हु:ग्री शोहित।

विक्लॅब्रिय-रि [सं] विस्थो शहर्य रिश्त ही विस्था अपनी शीरवाँकर अधिकार म 🕅 ।

विकरय~प (सं) विभिन्नताः क्यानः भवनुष्क दानाः अभिश्रद नरेहा मुक्त अग्रामा वसम्य, दशका प्रति बारणाः क्यमाः किनेना रविषः वस समानिः अयोगः बहरा वैक्षित्रका कर विवयों मादिमेंसे परका प्रदेश रह वर्धार्डकार वहाँ हो समान कन्याकी विकास बाहीयो केकर बड़ा काद कि भाती नहीं पता दोगी नहीं ही बह-बाता काम दी पूरा करेंगा था छरीर छोड़ हैंगा। -जाक-त सर्व-सर्वे द्विवारे ! -संप्राप्ति-स्र रीमीमें बाहादि दीवेंद्वा अनुमान (भा र)। -सम-ৰ নৰাখহগুলাইটা গ্ৰহ ৰাটি ট

विकरपम-पु (तं॰) व्यमिश्यय सिंह मानना। ही पा बीमे अधिक विश्ववीयेने किसी एक्की मानना। विक्रक्षियल-निक शिको व्यवस्थितः विभक्त अनिधितः

विकस्मप-वि मि निशेष, पारर्वित ! विकल्ल-(- [न] जिसके छरीरपर करण न थी। विकयर-वि , प्र [शा॰] दे 'निवानर । विकया विकसा-श्री [सं॰] मधीर।

विक्स-पुर्शिकेषस्मा विकासग-प्र[सं•] क्लिया प्रस्तुहम । विकसना-भ कि शिक्तना प्रसुधित दोना। विकसाबा∽स० कि है० विकसासा ।

संविद्याः अस्विमा ।

(इन्)−वि॰ वाबुनाधकः। वातक-प्र• [सं] बारः अश्रमपणीः -पिंडक-प्र बरमञ्जात होन (जिसके भेट न हों)। पातकी(किम्)-वि [सं•] वातरोगसे ग्रस्त । वासमञ्ज [न] एक दिरम। थासर−वि॰ [सं०] तुष्कानी तत्र। वातरकारि-पु॰ [र्स॰] विचन्ती कवा । बातरायण-प्र• मि ो धामः वाबका चळनाः चीटीः बाराः धरमत्त मनुष्या निक्त्या भारमीः साल्युक्त कोशः बातुर्जि-प [र्स•] ब्रोदे और बाइसे बना हुमा पान । वातार-पु॰ [तं] अंडब्रोक्टी त्वनं । बाता(स)-प [सं•] बाह्य । बातार-प [से] हिरमा सर्वका बोहा। वातात्मत्र-पु॰ [सं॰] इनुमान् ; भीम । भाताद बातास-५ [सं] बादामः। बातापि−पु[सं] पद राइस (कइते देवद मेह बस बाता था और इसका माई भावापि इसे मारकर कविबी-की विकारता या और फिर नाम केकर प्रकारता ती वह पेर काइकर निकल भागा। येथे ही यक अवसरपर मगसन इसे पना गर्वे।) -ब्रिट्(प्)-स्ट्ना,-क्रा-(इन्)−५ अवस्य । वाताप्य~प [मं•] श्रोधः खमोरः वकः सोम । वातासोदा-स्री [सं•] कस्त्री। वातायन-पु: [मं:] हरादा खिल्डी: राजा: बीहा: पक्र मंत्रप्रदा ऋषिः यद्य अनवद (रा०)। पातायु−५ [सं] दिरन। षावारि-पु (सं) पर्वतः एतम्लीः ग्रेकान्स्विः यवानीः भानीः रत्त्रहो। विदया स्ट्रमा अनुका । पातासी-मी [मं] त्यान वातावर्त्ते। पाताबरण-द [मं] १ मोऊ चतुर्दिङ् रिश्न वाहुः परि रिवति औषन्त्रे प्रमानिव करनेवाकी परिरिवति । वातावर्त्त-प्र (सं) वर्नहर । वाताश पाताशी(शिन्)−९ [ॐ} सॉद। यासाम्ब-पु [मंग] विश्वा तेत्र योहा । वाताहीमा-सी [सं] श्रदा यह शेन विमन्ने जानिके भी में कहा अर्जुइ यस जाना है। मातास≠~की वधार द्वा । पाताहार्~ि [सं•] इवा पीटर बीनेवाला । पाति−पु[सं}गूर्वः शहःचंद्र। वातिक-वि [मंग] मुद्धामीः वातप्रवत वशिया रीवमे वीदिनः पागनः पु वागनः वष्टवदियाः वानदः एक त्तरक्ष्मा क्वर । वासिय-द्र[मं] देशन । विश्वानिश्वाासी । वादिगम-दु[मंग] देशवा बातीक-तु [तं•] रह छोरा बग्री । पार्ताय-(र [मं०] वातु-संदग्ती । पु० वादमधी लव्ही a. di i वातुल-(र [मं] बाउमस्त गरिया रोगमे देशिया नापुनाधोरमे जिमहो हिंद दिकाने म हो चायन । पुरु प्राम नागान्ते।

बात्कि-सी॰ [गुं॰] श्वमग्रदह । बात्रुख−मि पु•[सं•] दे• 'बातुल्द'। बातोदर−५ [मैं] यक बातरोग विसमें पेर पुरू बाता है और खरीरमें पीवा होती है। वातोना-स्री (सं॰) गीविद्या । बातोर्मि-सी [सं] यह वर्षवृत्तः वायुक्ते संयोगसे प्रहो द्वदं सहर । वास्या—सी॰ [सं] दर्बंडर; तूफाम, अंबड़। —सक्र--प्र वर्षदर । बारस−पु [सं] यद्भ गोभकार कृषि। एक साम। बास्तक-पु॰ [सं॰] बछशेका श्रंह । वाध्सरिक-वि [सं॰] वाविक । पु॰ अमोतियो । बारसस्य-पु [सं] प्रेम स्नेद्ध संवामक प्रति मावा पिताका रनेदा – रस−पु यक भल (कुछ सावार्व बारसक्य रसको इसमाँ रस मानस ई)। वास्ति, वास्ती-सी [d+] त्राह्मसे उत्पन्न श्रूराम्हे क्ष्मा। – पुत्र – पुनारै इस्ताम। वास्य-वु [सं] व्ह कवि: वह गीव। बाल्स्यायब~पु (सं•) म्यायदर्शन≼ भाष्यकारा काम सुक्कार कार्य । वाद-पु॰ [सं] बात-धीता किसी तरब, सिम्रांन भारि पर विवार-विमर्शके किए होनेवाकी वात्रपीता तही वहसः रिवरणः व्यास्याः स्टिस्तिः प्यतिः प्यति सरमाः अध्योदः वचरः दावा । -कर -कृत्-वि वो शरीहे, विवादका कारण हो। -कर्ता(में)-प्र संगीत-वाय वकानेवाला । - श्ररस-दि अनिधिन, अनिधीत, विवा वास्पर । -चंत्र-दि शामार्थेने दश कुल्ला मजाद करमेमें हुशक । -इंड-पु सारंगी आदि मात्रीकी कमानी । -प्रतियाद्-पु बहस वत्तर प्रभुत्तरः शासीय तत्त्वविवासमें दोनेवाला क्योपक्षतः । -मुद्-पु । सगहा बहस । -र्रश-पु पोषकका पड़ । -रत-वि वप्रसम र्वनमें समा दुशाः वर्त्त करनेका आही । -विवाद-प्र० शगहाः बद्धः। -साधन-पुतर्देशः प्रमानः। बाइफ-प [सं] शेमनेवासाः शासार्थं करनेवासाः वज्ञानेवालाः श्रीस वज्ञानदा एक मास संग । वादम-तुर्म] बाजा बजामा बाजा बजाबेदाला । वादसक−धु[मं] भंगीन क्षय दशका । बादमीय-प्र[मं•] सर बाहर-यु [मं] क्यामडे एतका क्यमा क्यामका थीवा। वि मृती। बाइरा-न्यः [मं] कपामका शेवा । बादरायम~पु [मं] दे 'बार्रायण' (बाहरायणि-पु॰ [मं॰] हे 'बाहरावरिं'। बार्रि-पुरु [मे] बान्सादवदे पिता । बादविक-पुर्मिशे दर बीममेवाचा । बाइस-पु थेवदाराभ्यत्र दिनमा [सं] मुन्दी नदीसपु । यादा-पु [अ 'बाबदा'] वथन, मतिहा प्रवरार। करें अशा वरनेका क्षाः - निक्रमाङ - दि वयन संग करने-वाना को बारीको पूरा न करें। - विकासी-की वदशःसंग । −प्ररामोग्रेच−वि अपने दपत्र दारेको सुन

2243 विकसित-वि [सं] प्रस्टब्रित प्रकृष्ठा पंसव । विकरपर-वि॰ [मं] सुका इत्राह प्रपुक्तः विकासधीतः साफ सुनाई देनेवासा (शुप्त); मिष्कप्रः। पुरु एक काच्या संकार (इसमें विशेष बातकी पुष्टि शामान्य बातसे की चाती है)। षिकस्परा-स्री [सं•] रक पुनर्नेवा। विकास विकासी(सिन्)-वि॰ [सं] रच्छारदित निष्द्राम् । विकासा-औ (शं) इच्छाका समागः दिविधाः असि-इच्छ १ विद्यस⊸दि [सं] इच्छारदिव निष्कान । विकार-पु [मं] रूप धर्म कानि न्यामाविक अवस्थान का परिवर्तित होना। परिवर्तनः मकः रागः विचार बदेश्व आहिमे परिवर्तन कोनाः मावनाः वासनाः श्रीमः भाइति शत्कका विज्ञन दोनाः स्भ कप प्रकृतिका विकसित स्था जरूम क्ष्म । - हेतु-पु प्रकोमन या शीम छल्पन्न करनेवाका निवय या वस्तु । विकार−पुदे बढ़ार'। बिकारिस-दि सि] परिवर्तित वा खराव किया हुआ ! विकाश (रिन)-वि [मं] परिवर्गनधीला विकारपुक्त विद्वारवाका। क्रीभ भादि वृत्तः मनाविकारीवानाः बासकः विकारसरतं परिवर्तितः । प्र. यक् संवरसर । विकार्य-वि [मं] चरिवर्तनशीक । पु अवंकार । विकास विकासक-पु (सं) दिनांत संख्या। विक्रामिका-मी [स] जनगरी। विकाश-५ [मे] प्रदर्शमः प्रकाशः विस्तार ग्रेकावः सन्दर्भा प्रशास आदाद्या वक वाशीका मार्गः सिन्ध्या प्रस्करका बालंडा समिकाया संस्कृता एक कान्यालेकार वहाँ किमी बरहका निजी आधारका परित्याग किये दिना अधिक विकासित दीला टिगामा या कहा जाय: बुबिक निय बराब सप नादिमें निरंतर परिवर्तन दीनाः ण्यात स्थान विजन स्थात । विकाशक-वि [4] दे 'विशासक । विकासन-द [मं•] दे विकासन । विकाशिम-वि [सं] दे विकासित । विकाशिती-सी मि रिक्रिकी एउ मानका। विकाली(शिन्)-वि॰ [मं] पमकने वा देश वहन-बानाः स्टब्से वा शिन्दीनासः विश्वासाति । विकास-५ [मं] धिननाः गुनना (मुरा आरिका)ः प्रसुद्धका आनंदा प्रैकाया यात् । -बाइ-प टार्विस हारा प्रतिपारित एक सिकांत जिल्हों वह माना जाता दै कि मानियोंका प्रादुर्गार यक दी मूल तरहरी हुआ दे और ने कमश निकतित होने द्वप वर्गमान क्यूमें 474 E 1 विकासक-दि [सं] शीलने था (वृद्धि) बहानेवाला ह विकासभ-1 [म] प्र"शमः शिक्ताः पेकमाः सम्मना । विकासना - स कि निविध्य करना प्रकार नवनाः निशालना। भ्रस्ति प्रशत्या विश्ववित दीना। विकासिम-दि [सं] यदाधिता प्रतिक्षित मन्द्रावितः विश्वादित ।

विकित-प [सं] पश्चीः क्रेंजाः विधारता विसेरी माने बाकी बरहा: प्रजाके समय विध्त-निवारणके किए श्वर बबर फेंद्रा भानेबाला चावल बुँद-बुँद करके भूमेवाला पाशी । विकिरण-प्र• [र्स•] छित्तरानको किया, तितर-नितर करना चारों भेर फैकाना काइमा भारता दिसना धानः नर्कं वृक्षः किरनीका एकत्रीकरण (बैसे मादिशी शोरीमें)। एक समाधि । विकिप्कु−पु (सं∗) स्वश्नोंकालकगत्र को ४२ इंसका षोता था। यिकरिय∽प्र [सं] साक, मदार । विकीर्ण-वि [तं] क्षित्रस्या फेबाबा दुवा; भरा दुवा; मशहूर । पु स्वरके बचारमधा यद दोप । -कारी-वि [विं] फैरानेवाका । −केश − सूर्धक − वि विसके वाक विकरे हों। -रोस(भ) -र्सज्ञ-प्रश्यक्ष सर्व विद्युपीयत् । विद्वेषित-वि [र्थ] शिकुका हुआ, मुका धुना । विकेश-त [सं] महामारतीन्त एक बादि। बिक्टॅंठ-वि॰ [सं] तेव पारवामा: वा कुडित न हो: वारीकान वा सके। बहुत सीधरा। प्र विष्णुः विष्णुः भोकः वैक्ट । षिकुटा-सी [र्ग] सनका मेंडोकरमः विश्वको माना । विक्टॅटिस−वि [मं] भीवराः तिर्वनः। विद्धेगीड−५ (धं] यक्दागद । विकुश्चि− पुर्नि अभोष्याके राजा कुश्चिका प्रभाविक वीदवाना नुंदिस्त। विकृष्मा-स्री [म] जरविक सिंडा । विकुर्यया-पु [सं] थिया दयकामुसार क्य पारम करने की धमता (शे)। विकुर्वाण-वि [मं] परिवर्गनशीका अपना सुभार करने बानाः प्रसन्त । विकुर्वित-पुर्धि] विभिन्न क्ष पार्य करना। विकृत्स-त [मंग] गंद्रमा । विकुत्रन-९ [वं] पश्चिमित मूत्रनाः भनमनानाः पेरका ग्रहगुहाना । विक्रमित-पु [मंग] ग्रंबारः पश्चिमेदा बन्धान । विकृष्य- १ [सं] निरती चिन्त्रसः। विक्रिका-मी [म] माद मासिदा। विकृत-वि [r'] वरिवर्तितः विकारतुषः विगश दशाः अन्तरहत्तः सदा कुरूपः गीमानः वर्तहतः अस्तामाविकः लपुरा अपूर्णः अराजकः विद्रोधीः राधीः माराविष्ट । पुरु बुलरा मनावति। शेमा चरिवर्ग राध्यस्य पुत्रा विरक्ति (प्र): शास्त्रेन चौरीमर्श संबन्धर । -इर्शन-दि॰ शिमकी मूरत बर्ल गयी हो। - इष्टि-इ विवासामा। --रकः-वि मान रंगमें रंगा दुशा या मान भ रीमे मरा दुना। - यहन-वि वरमूरत। - वची(चिन्)- अमाधारण अस्य भाग्य क्रुनेशाला । -श्यर-प् नियत स्थानम इरकर इनरी मुतिरी र उदरनेशका म्बर् १

विकृता-स्य [सं] एक दोविती।

वादानुबाद-बाप्य वानेवाका। -दिक्त-विक वादीकी सोवनेवाका। यानग्रस्थ्य-पु॰ [रो॰] वानपरअदी अवरवा ! - शिक्ती-सौ॰ वचनश्रामः। वादामुकाद-५० [मं॰] शानार्थ, तर्वनिवर्द । वादान्य-वि [सं] वदान्य, प्रशाह । वादास-पु[धै•] बादास । वादास-पु॰ [सं॰] एक महाली सहस्रवंश । वादि-दि॰ [सं] निदान्। चतुर- वीलनेवाका । --हाट (म्)∽पु मंब्र्योत्। बादिक-वि [सं•] भाष करनवाकाः तकं करनेवाकाः। प्र• बामीवर । वादिश्व⊶वि [सं•] वकाया धुकाः वीक्रमेमें शक्छ विज्ञा हुन। पु॰ बाय-मंगीत। दादितस्य -- वि [सं•] क्टेबाने काम । तुवास-संगीतः। वादिल-पु (तुं) बाबाः भौगेत । - सगुष्ट-पु । नवादा बादि गत्रानेको छक्ती । थाबिर-द्र [लं+] रेर जैमे छोते प्रश्नवाका एक क्था। बादिस−पु∗[मं] विद्यान्। ऋषि । वि सस्वभाषी । वार्षीह-पु [मंग] बीज विक्राम् संज्ञुकीय । बादी-सा [पा] यादाः नशीकै विजारेका मैदायः बंगक । बारी(दिन्)-पु [तं•] बोक्रमेवाला वक्ता पूर्ववक्ता, अश्रक्षतमें कीई अभिवीतः, मुक्तमा चलानेवाला, मर्दाः गायका बाबा बबानेबालाः रागका सूचन स्वरः क्रीसिया-गरा दक्र । बाहुकि-दु [सं] विश्वामितका एक ३व । बार्च-पुर [सं] बाजा बानेका स्पर बनानाः कथन, प्रापन । वि भी दशाना नजाया जानेको दी । - कर--पु॰ शाबा प्रवानेवासा । —धर्−पु शाबा प्रवानेवासा । -किर्धोप-द शक्ति ११ए। -आंड-त सरमः stech I क्वेन आदि वाते। बाद्यक-पु [मंग] मगोत-बाद्य। श्राद्यमान-वि [सं] को वजने वा बीचनमें प्रपृत्त दिवा बादा पु वाय-संगीत। बाच-त॰ (सं) प्रतिरोधः प्रतिबंध । बाधन-पु [मेश] वाबा । बाधा-सी [मं०] श्रीका विचेत्र । यापुरुष, वाधुरुष-द्र [ग्रं+] दिवाद वानिप्रदेख । शाध्-सी॰ [सं] पातः नेशा मा**व** । बाध्य-त [40] एक गोवकार करि वाचीक गीनके अस दश्य ! बाधीयम∽द [मं∗] मैशा। बार्य-दि॰ [मं॰] वहा प्रमाः सुसामा प्रमाः मंगल-मंगेषी । पु॰ बहुना। गुर्बेश १इमा। यमना सुन्यना। सर्गीका तहना, वातीथि। सूमा प्रना प्रक तरवदा नेसकीवमा

-- चंड-च वामा रुपैरमेक्ष क्षत्री। दश्याः ।

वालक-पु [riv] मधापर्वातस्था।

वागर-पु॰ [मं॰] नेपरः पद्म संश्रदम्यः शेहेश्च पद्म भेरः। वि अंदर-मंत्रभाः वंदर श्रेषा । - केत्रम,-केत्र,-- द्वान-पु॰ कर्मुन । --श्रिय-पु॰ ग्रिएनीका पेह । पानराक्ष-प [सं॰] संबन्धी वसरा, बनाग्रय । वासरामात-पु (सं॰) क्षेत्र कृष्ण । वामरापसर~प॰ सि॰ो तका व्यक्ति । वानरी−श्री•[सं•] देवॉपा मर्दती; रंदरी; वानरीतो सेना+ 'करियो सदि विश्व वायरी यहाँ मगु सह बोय'-रनराय। बानरेंज्ञ-पु [र्ग] सुदीव वा इनुमान्। वागक-पु (सं•) काली वस्तुनसी। नामवासक-प्रवर्धि | वैदेशो माहासे बरपन्न वैद्यका वत्र । वानवासिका-नी॰ [गं॰] सीतह मात्राओंडा रह ग्रंट ! बागस्यस्य – वि [मं॰] वृक्ष-संबंधीः वृक्षमे प्राप्त बा प्रस्तुत बीनेपाला पृक्षके गीथे बीनेपाला (वहाति)। पृक्षके बीपे रहनेवाला (शिव) । पु॰ वीचा। कृत-कब देनेवाला वृद्धः मान जानम कारिः किमी शराज्य प्रकः वर्षेका समह । वाना-सी॰ भिन्ने बरेर । वानास-त (रं॰) भारतके परिभाक्तमे सररिवत रह वैद्या दिरम । - ज-प्र मानायु देशका मीहा । वाशिक्र∽विश्व चिंी अंतरुमें श्वमेवाला र वानीय−५० [र्थ] वेषधे सोवाः गीना । वि हतने बोग्या बामीर-पु सि विन या सरबंदाः विशव। -ग्रह-पु शरकरेका संबंद । - अ-पु क्षप्त नामक विदा वाणीरक∽त सि॰] र्यत्र । धामेप-तु [लंक] वालीमें दीनेवामा सुगविधेन, देवश मोबा । दि॰ अंशलमें रहमें या अन्तन हीनेशला। यह बाञ्य-वि (मं) वस-मंदंशी । शास्था⊶की॰ (मं॰) वन सन्द; ब्रह्मसा मी ! बाष∼व मिं] योगाः दनगाः श्रेपमा रोतः रीमेरानाः नीय। - एक - व करणा। वाचक-प [म] वीवेवत्था। बायम-१० विशे बीच बीनाः मेरन । वापम-दि (का] कीश हवा कोशवा देश हजा। वापसीँ-दि [का] श्राविरी, श्रंतिम (नॉस) । बायसी−वि केश कीशवाहमा। स्रो वाबस्र हैं? करनेश सार ! -किराबा-प॰ वारणी वाराबा किराबा -रिकट-पु पापनी परवादे शिय मिलनेवाका विदर्भ ─श्रमाष्ट्रास्त—स्था॰ सुष्टाधानके वालेमें को भानेताची मुक्तकान । -वाचा-सी -सप्तर-१० प्रस्थाने रबाबको भौरतेश थाता । वापि-को [मे] शामार । वज्रहे वा वें।नेदी किया कार्या बना बंगका प्रेंगकीका वाधिका-मी [तं] भीता कुर्वा नाथनी छोटा ताबार। ममुद्दा चतुर स्वरिता वया बामरा बीबारवेंबर छेटा सुरंग । वाचित-वि विके बोबादका यदा हुना। पुर पर सरहका बाम । बापी~श्री [मं] सानान । -बिस्तीर्श-५ वर्ष का यानप्रस्य-पु [मं] नार्वी दे चार जीनव-विधारी छेर (वडी वेंख) । −इ~च चानक पश्ची । भारतीयेने दीएसा दर भारतये प्रतियः व्यक्ति व्यक्ति मापी(पिम्)-वि [मं] पीनेवाना ह ए-वाली। मन्द्रका देश प्रष्ठाश्च । वि० वातपरधंत्रांदेवी । बाय्य~पु॰ [र्थन] नावनीया पानीह बांबारी माना पूर्व है

भिक्कति-सी॰ [सं] (विचार, क्षेद्रव आदिका) परि वर्तनः असाधारम था जाकरिमक घटनाः रीगः क्लेबनाः भौभा मानावेदा। मध आदि जिसमें रामीर पैता हो गया हो प्रमुक्ताः गर्मपाता परिवर्तित रूपः विकासः सामाः पक् इच ।

पिकुरी-सा [मुं•] रोगः विवः विकारः सच ।

विक्रप्ट-वि॰ [मं] स्थित हुना आहुत पूर्व किया हुमा। फेमाबा दुमा। छुरा दुमा। ध्वनित । -सीमीस-वि विस(धाम)की सीमाएँ वह गयी हो ।

बिकेट-प [बं•] (दिकेट) दोनों औरके तीन-तीन स्टंप भीर दो-चौ शक्तिमाँ। --बोर--प॰ अवाते वाग आदिमें जानेका वह चक्करबार फाटक क्रियमें अनुष्य ही जा छठते इं पर भीपाने नहीं का सकते।

विकेश-दि [संग] की ध्वमसे वृक्ति हो एका हो। जिसके पास झेडा स हो।

विकेश-विश् मिं ने ने ना जिसके बाक बाढे हों। य एक सनि ।

विकेशी-सी [सं+] नदी। महोक्ष्य शिवकी पत्नी। एक राक्ष्मी प्रवताः विश्वरे वाक्ष्मेंबाको स्त्रीः बेसरहित स्त्रीः वेद्याभ्धः। दिक्षे वेद्यवर्धिता।

विकोक−द्र• [सं] प्राप्तरका प्रत्र कोक्टा जसुवा विकोश विकोप-वि* [शं॰] क्रोध स्वानमें श्रविर्गत (तक्रमार)। मिसवर किसी तरहका कावरण जाण्यादन स हो। विसपर मुख्ये वा क्रिक्टा न हो।

विकीतक-वि [सं] किसमें कोई भौल्लाव वा दिक मसी न ही बदाग्रीन ।

विक्र−उ [सं] दाथीका क्थाः।

विषयोरिया-सौ [म] फिरनसे मिकती-सुकती वक तरहको मोडा-गाडीः निदेनको शक्यात रामी (१८१

१९०१) । त महक्रोय प्रश विक-वि [मं•] इक्कृ किया हुना। रिका

विक्रम-पु [संग] विभाग वक तेत्र कारिको व्यक्तिगाः कोरताः शक्ति करमः समनः गतिः दंगः मामः देशः रिवरताः कमदोन केरपास्त्रीः प्रमाणीः वीरदर्गः संस्तराः 'विक्रमादिस्य'। • वि केष्ठ बचन । ~पडम~ प्र प्रभाविती।

विकासक-पु (तं॰) कारिकेनका एक गय। विकासधा-प (सं०) चलनाः सादसपूर्वक मागे वप्तनाः

बीरताः क्य भरना करम रकता ।

विक्रमाजीत-इ दे 'विक्रमादित्व'। विक्रमादिस-प् [मं] कार्यावनीका रह प्रतापी राजा

(बद्द विक्रम मामद संबद्धा प्रवर्तक माना बाधा है और क्या बाता है कि इसने एकोंकी नरावित कर भगाना था और सारा उत्तरमास्त रसके द्वासनमें वा । वन्तंतरिः काश्रियाम आदि इसीके दरवारके नवश्रा के) ! विक्रमास्त्-५ [सं] विक्रमादित्व द्वारा प्रवर्तित संस्त

विक्रम संवद्। यिक्रमाक−५ [मं] दे 'दिक्रमािस्य ।

विक्रमी-विश्वकिमारित्व-धंरेशी। भिक्रमी(मिन्)-दि [सं] वक वर्शकमवाना, वीर्! विश्वित-दि [सं] सहागना श्रीरी। अस्तिवद्ध कठी

९ ६६३ विष्णुः दीर ।

विक्रमीय-वि [सं] विक्रमादित्व-संवि। विकाय-पु [संग] दाम सेकर कोई चीप हैता, नेद्या। -पश-पु॰ वह कायब जिसमें दिशी धीकहा नाम हास और प्राइक तथा विकेशकाविकाम रहता है। क्यारी विद्रान कैंस मेमो³। ~प्रविकोश(८२)-५॰ मौकाम स्तमे-

बाका भोकी बीतका माक बेघमेराला । विकवक∽प्र (सं∘ी वधनेवाका) विक्रयण-पु॰ (सं॰) विक्री, वेचना ।

विक्रमिक-पु [ग्रं॰] रिजेगा, वेवनेशामा । विक्रमी(यिन)-त वि] किरेता वेबनेशहा । विक्रय-वि [र्छ0] की वेबा बामको हो।

विकात-वि [सं] स्टासी बीटा विश्वीः प्रदारी वोक्राः सिंकः कश्मः वोरताः क्लक्रमः वैक्रांत स्वीतः ण्ड महायति। चक्रमेका धंतः दक्ष तरहका सम । -गवि-पुरु संदर बाक्याका अनुस्व : --धोधी(चित्र)-इ

विकाता—को सि॰ो काक कशलाः एक कगाः इंसन्ही। अवदकः वर्गतीः करणीः करिनर्गधः मुसल्हानीः सर

विकारता(त)--वि॰ [सं॰] पीरा विश्वयो । त सिंहा बड़ा विक्रांति च्या [सं] गरी। यक, शकिः विक्रमा सहस

बीरसाः बोरेकी सरपर बाज । विकास-प्र (सं०) थयको संवार्ध ।

विकाधिक-पु [सं] वेशनेवामा, विकेशा !

विक्रिया-न्यौ [संग] परिवर्तनः वचेत्रमाः काभः नप्र-सकता तरानी सक्षता हति अस्त्रकृता। निर्वाल (रीपका)। मुस्कोचा कर्नस्यका पालम म हाना। रीमांचा यागढ प्रधानाः सरानीः सरनरक्ताः ।

विकियोपमा -सी [सं•] व्य तरहवा तरमार्थकार । विद्धी-सौ वनतेको क्रियाः वेचनेने निमा हुना धन ।

विक्रीत-दि [धे] वेचा हुमा । विक्क-पु (सं॰) बीहारा गानी अपधन्द १ दि करी:

विना करोर। कर्मश्र ।

विकेतच्य विकेष-दि [धं] श्रीयगम्य विकते काम्ब ।

विकता(त)−९ सि] ४वनेवाचा। विकोध-वि [सं] कोपरहित्र ।

विक्रीश-१ [मं•] योदास मानी ।

विकोशन-प्र [40] पुदारमाः गाठी देमा । विद्योश (दर)-५ सि | वीहार घरनेशका। मार्ग

देनेशका । विक्रय-वि भिंगी नेपना सवास्त्रीता हरशहा समिन्। क्षुव्या मनदाया मुचार विरक्ता स्था प्रमार बर्दिया मरिवर I

पु॰ वेनेजीऽ परप्रसद । विक्रविश्व-पु [र्थ+] प्रव का नैरास्वपूर्व क्वन । विक्रति—वि [न] इतीत्सादा मानः भवा द्वभा ।

विक्रिकि-मी (सं•) आई गोण दीना र विक्रिय-वि [मं] जी वडी नेने बाई ही यथा है। 1212 वापीछै प्राप्त दोनेवाका (अक) को बीवा जानेकी हो। बाफ्री-वि [ब] पूरा, संपूर्णः वशेष्ट प्रभुरः वका करमे-बाटा, बबनपारुद्ध । धावस्तागी→मी [फा]कगाव में।व। बायस्ता-वि का देवा दूभाः चना, सुहा हुमाः संबद्धः संस्था। बास-क्क्षी खी बागा। वि [सं] वार्यीः विस्ताः टैहाः मीवः पुराः कठोरः निर्देशः स्व्युकः ग्रेपरः प्रिव । पु बामदेश एक रहा शिका बरूप: चंद्रमाके स्थका यक अधः रतनः पनः वसभाः नावाँ पार्यः कावाँ दाधः प्राणीः वननः मतकी। सर्पः निविद्ध कर्मः दुशास्त्रः संकटः क्रमीकका एक पुत्रा हुम्बदा एक पुत्रा वस वर्गहरू: वामापार । -क्या —प्रदासिक्षार ऋषिः वासककाथन वाचके सूलः पुरता-इक(श्)-मी जारी। -इशी-क्षी दें 'बामनदना । —इव-पु शिवः गीतम गोवात्पत्र एक वेश्विक ऋवि । - नेदाि-स्ती दुर्वः सावित्री । -- समनाः-सोचना-सौ सुंदर नेत्रोंबाकी भी। -जी-वि धन नानेशका । - भ्र-सी सुदर गाँगीशकी सी। नागी मी । -साग-प्रवेत्रिक्ट शंत्रमन (श्लमे मच मांस मैभून भारि निविद्य वार्तीका विवान ४)। -सोप-प बहुमुम्ब बरतुओंकी योरी । -स्प-ध वक गोवकार मानि नामरध्य मोत्रके मूल पुरुष । - इसिस-नि हरे समानका । -स्वमान-दि अच्छे स्परावका । -इस्त प्रकारिका गकरतन वा गलकंशक । यास-प् [फा] कत्र उपार (विदीने देवन कर्ननाम में प्रदुक्त)। बासक-वि+ [मं] बमन बरनेवाकाः प्रतिकृतः निष्टुर । प्र यह संबद् बातिः यह भावमंगी। वामकी~यो॰ [स] एक देवी (अध्यार भीर तांत्रिक भभीश-सिक्षिके सिय इमका पूजन करत है)। यामद्रम्य-तु [मं] ग्रह्माम एक वहादा ग्रह्माति।

क्षमील-विक्रिक्ष क्षिप्र स्वत्य पूजन करत है।

वि वामदेवने उपवतः

वि वामदेवने उपवतः

वामज्ञ-वि [में] पीता बहुत छाउँ टीट कीक्क्या; कल

वामज्ञ-वि [में] पीता बहुत छाउँ टीट कीक्क्या; कल

पर्य नौका बीता या विश्व-विक्षी सुकत हुआ। यु

वैता कारमी; दिवा यक विश्यान, यक माताः छाउँ टीन

दीतका यक बीता। यक नामा गणनंशी। विश्वविद्याः

क्षेत्र वृद्या नात वेचा हाव होश्या यक व्यवन विश्वविद्याः

क्ष्म स्वारः, विविद्याः, क्ष्याव्य पुरानीमेने वृद्याः —

पूर्या-वि मार ह्या ह्या हरात, वामनकी पृत्यानिविः

-पुराग-वृद्या-यु करात्य दुरानीमेने ककः।

प्राम्या-विवा व्यवस्थानिकी ककः।

प्राम्यकः—वि [मंन] छाउँ करका, पीना। यु धाउँ वरणकः

कारमी भीताः यक प्राप्ताः दिवस्ताः।

वाममा-विवा [में] एक व्यवस्था।

वामनिवा-सी॰ [मं] स्ट्रांशी यह अनुसरी। वोनी की ।

पामनी-सी॰ [मं] धीनी ब्यी धीती एक बानिरीया एक

वासम्दर=तु [मं+] रीमकोंका मोटा वस्तीब, विमीट ।

बामी गती बामोगी-धी० [ते] पत्री :

बार्मोदगी-सी वार्माश होता।

वरदरी स्त्री ।

पश्चिक्त । वामा-स्री [सं•] सी; दुर्गा, गीरी; नश्मी; प्ररत्नी; फ वर्णवृत्तः रस्टेदकी एक सनुपरी ! धामाक्षि-पु • [सं •] नाशी भाँसः शीर्थ इस्तर् । पामाक्षी−सी [री] दे॰ वामनवना'। वामागम वामाचार-५० (स्) एक तांत्रिक मत (इसमें पंच मकारोंके भामवसे उपारवकी पूजा की जाती है)। वासाचारी(रिन)-पु (सं) वांत्रिक मवका सनुवायी, बायमायीं 1 वासापीक्ष-प्रसि | पीक्ष ब्रह्म । वामार्यम-वि [सं] बरम्य न सुक्रनेशका। बामावर्ष-वि॰ [सं] वार्वा औरको मूमा हुआ; वार्वा और से पूमकर की बानेशकी (परिवामा) ! प्र वह शंस जिसमें नानी ओरका पुमान हो ! यामिका~सी॰ [मं] चंक्षिका दर्गाः। यामिक-वि [सं] संदर पर्मही। वृत्तं । बामी-नी [र्स•] थोडीः गरीः गीरदोः दक्षिमीः दमन । वामी(मिन्)-दि [न] वामावारी वमन करमेवाला। बामेश्रमा-सौ [र्ए॰] दे 'बामनवना'। वामोर, वामोरू-वा॰ [मं] तंदर कर-बोर्गाना बोर संदरी की । थास्मी−सी [गं∘ेब्द गोत्रदार सी । वाम्य-पु (५०) बदम्बताः वामदेव ऋविद्धा धीक्षा । वि वामरेच संबंधी। वसन करानेवामी दवाशींसे अच्छा किया वानेवानः । बाम्न−पु[सं]ण्कसामाण्डमः(दे। वाय-९ [सं] बुनमाः सीनाः तागाः पहीः भाषकः। * न्दी दापी। वासु । ० सर्व बाहि छमस्रो । - ब्र्रंड-प्र करवा। –श्रुह्य-न्ती करपेद्री देश वाय-ज [अ] हा दाव (दुःस या व्यवादी व्यवनारी व्यवदृत्ते । -किस्मत -तक्रवीर-दाव दिरमत । वायक-दु [र्न•] जुनाहार राशि समूह। बायन-९ [सं-] देवपृशके किए या निराहारिके भनसर पर बसनेवाकी मिठाई। एक धंबहम्यः बुनना । -क्रिया-न्ती वननेकी किया। -१३श्र-मी० दे वाय-एउन् । वायमक-मु [मं] दवपूत्रा आदिके किए मनी हुई मिठाई। एक संबद्ध्य । वायव-वि [में] वायु-वंबंधी। पश्चिमी छरः। वायवी-सी [शं॰] पशर पश्चिमहा कोम। वाययीय-रि [मे] बायु मंत्री १ -पुराण-पु अहा-रह बुराधीमेंन हहू। वावच्य-रि [सं] सागु-संबंधी । पु पश्चिमी सरकाराः स्वादि मधुना वागुनुराण रन्द अस्त । वाषरपा-नी [मं] दिधनीचर दिया । वायस-पु [मं] अगरा गारदीन क्षेत्रण बत्तर-पूर्वको

तरफ रमशका मदान । हि॰ बाद मंदेशे ।-जेपा-सी

वद वीवा करू त्या। -मुंड-५ इनुदा भोगा वीभा

बीदो । -पीतु-इ एक ब्रा, बावपेट ।

बाबमानिक-५ [वं] उस्हा

वासींदा-दि [ता] ये छ छुटा दुला। लहा दुला। लाबाराः | बाबसावनी-न्दी [बी॰] यह अता, महान्दादिग्नती।

पद्भवर मुकारम किया दुधा । ~हृद्य-वि दवाई । विक्रिप्ट-वि [सं•] शतिप्रस्तः क्लीक्तिः मष्ट किया सभा । प्रकासभारमञ्जूषा

विक्रीय-पु [सं-] मार्थ दानाः मार्दवाः बावणः विगवनः,

विह्नेदन~पु[सं] (क्शक या फ्टाकर) मुलाशम या मार्र करनेकी किया।

बिश्चत-दि• सि] बाइत, थायक पोट साथा दुआ। प वाव सबसा।

विक्षय-प [सं•] अनि मचपानसे दानेशना यह गेय (भावे)।

बिहार-पु (सं) विष्युः भूग्या वक्त असुर । वि अवाहित । विद्धारण∽त सिं विद्यानाः

बिश्नास्त्रिस्−ि [मुं•] भीवा हुवा; स्नान ।

विद्याद-प्र [सं•] सीसी रहेडा सन्द, स्वरा विहाहर ।

विक्तित-दि [सं] मीचे विरावा गवाः दुम्यी । विक्रिय−दि [मं] देंदा दिखेरा हमा। स्वक्त ध्येश

हुना। भन्ना हुमा। पाग्छः भन्नम्, ब्वाहुन्तः जिल्हा खेवन क्षिमा गुवा हो । पु जोलकी गाँच अवस्थाओं में से एक त्रिसमें विचत्रचि माय' अरिवर हो जाती है। निमेरा वाना ।

विक्रिप्तक-द्र [मं] विदोर्थ किया दुशा धन । विक्रिप्तता नवी [सं] प्रान्यम अन्माद ।

विभागिक-प [संग] देवसंदक्षीः विनासदर्गाः यह रवान बहाँने वामिबाहारी हटा दिवे क्ये हों। शिनके अनुवरीका **एक मुखिया ।**

बिझीर-प्र [सं•] बाक, मदार । विद्वरिणी-न्धे [सं] दुव्हे ।

विश्ववद्य-वि [मं] रीदा हुआ; चूर्ज किया हुआ; प्रेरित प्रोत्माहित किया दुना ?

विश्वन्न-ति [मं] को अपेग्राष्ट्रत छोटा हो।

विद्यारच-दि [मं] भद्रांता विसका मन यांन वा रिवर सं हो।

विश्वमा-स्वै [सं=] एक्टबा वह नाम ।

विश्लेष-५ [मं] निमेरना तिनर-निवर करनाः फेंकनाः १५१-६५१ पुमना दिनाताः विक्ना पानाः कर्मदमः बक्त बर्बाद करना। भनवशानताः ववशादरः प्रवः निक्की भरिवरताः सपराप्य कदमाः कृत्याः प्रेच्याः सर्वेदा संस्माः धिरितः एक रोमा अनीय मधरेसाः बराबः यक समाः शरा ! ~स्टिपि-न्दी एक प्राधीन निवि । ~सन्दि-नी वर्शियाको हक्ति।

विश्लेषण-त [मं] ऐंदनाः विशेरमा। मेजनाः हिलानाः शरका देना। प्रमुख्ये दोरी सीक्ष्मा। रिप्त वासा। मुक्क कारम दीनेशमी भरतादर ।

विधेसा(प्न)-इ [सं] विधारने नितर वितर बहते-नामा ।

विशास-५ [में] मनदा मारेग धाम- गरिः प्रयः आर्था संपर्त विनीत करनाह शादी है मएका वस जान कर्च ।

पैदा करनाः दिकाना । विद्योभित-नि॰ हिं•ो दिनामा हुआ; धुम्ब, मधांद दिना द्रथा ।

विक्षोभी(भिष्)-वि [चं] होन चरपत्र करनेवारा । विसंदित-वि [सं] इंडडोमें करा हुआ। निवरित दिवा दुशाः अंग भंग किया हुआ। दो मार्गोर्ने वैटा दुशाः भ्रष्यः बिसुद्धा संध्य किया गया हो (तही)।

विसंडी(डिम्)-वि [र्श•] तोक्नेवाकाः मह करमैवाका । विका-नि॰ (सं॰) सासिकादीन । * प्र निष, बहर । विकास-पुरि दिशेषनेके किया।

विकामा(मस्)-पु [पं•] प्रदाप्त सुवि।

विलाहा-पु दे विवता ; मस्त्र (!) । विसात्-पु [र्च•] याना नियकनाः नह करनाः ● है

विवाद 1 विकादितक-पु॰ [सं] मांसाहारी बानवरों हारा मधित

श्चव (वी) । विद्यान = - पु दे 'शिवाण'। विगानस-५ (६) थड मृति। विकार्येष-मी बहरदी से इस्ती ग्रंद ।

विमासा−छी [सं] वीम रसमा। विल पिएय विल विल -- दि [है] दे दिस'। विल्र-९ [सं] राधसा भार

विसेद-वि [र्थ] बद्धारः पीदम।

विरुपात नि [सं•] प्रसिक्त सञ्चट्ट सर्वविदितः नाम बारीः स्वीदार किया द्वमा । विक्याति-सी [मं] प्रशिक्ति शोहरत ।

विस्यापन-पु [लं•] प्रसिद्ध दरना चोदना दरना। व्यास्त्रा करनाः श्रीकार करना ।

विमेडीर-प् (सं) एक वरहका करा। विगंध-वि [4] गंबदीना वरवृतार ! विर्गयक-पु॰ [मं] श्वरीका मुख

विगॅपिका-मी [मं] इनुसा अवसंदा अवसेता।

विराजन-पु [मं] कपछीपन कर्न पुकानाः गणना करनाः निवार करना । विगणित-दि [मे] शुकापा हुमा (क्रम); निस्त्री गयना

की गयी थी। विचारित । विगत-वि [सं] अनीत बीना दुला बीने दुर्भ पूर्वदा। कृतः शहा अंबदारावृता अनुपरिवन, प्रथर-प्रथर यथा इमाः प्रमारीना मुकः विदीन रहित (मुमस्त

परीमें)। प्र थिदियोंनी वहान। - कस्मप-वि वायमुक्त दी गवा दो । - हम-दि० दिमकी द्वांति दूर हो गयी हा। - जान-दि॰ दिमनी मनस मारी मदी हो। - नयम- विश्व विमद्धे नेत्र मही अंदा। - सय -भी-वि निर्वाक । -शय-वि विसर्वे राग न रह गवादी। ⇔लक्षच-दि अवागा। −प्रीद्र-दि• दिमसी कांति चन्दी गरी हो- असागा । - म्यूट-दि

बिसने हरणा दल म हो। विरामा-स्री [मं] बर नवरी जी विराप दाम्य संदर्ध गरी ही संद्रीया।

विक्रोप्रम-पुरु [4] एक शानरः मनमें शेम होता या | विग्रतानवा-भी [4] । वह सी जिस्हा माभिद्र शास

काक्ष्मीरी की भाठीं हो। वायसाराति यायसारि-५ [मं] सन्द्र।

यासाद्वा-श्री॰ [मं] द्वाद्याची।

वावसी-सी॰ [सं] कीएको मारा। काकमाची छोरो मकीयः महात्वीतिप्मतीः क्षीत्राठीकीः संपेत् पुँवजीः महा-करणः काकत्रंशः ।

वावसेक्ष~पु [में] ब्रॉस ।

वायसीक्षिका वायसीछी-भी॰ (सं॰) कादोबी। महा-वबीतिप्मती ।

वास्-को [स] इवा (पाँच तत्त्वीमैंसे यह)। साँछ। प्राप-बायु चीवनवायु (जो पाँच प्रकारको दे-प्राप अपान, समाम ब्यान और ख्वानः हे 'पंद्रप्रक'। श्राप्त मेद दे समित्र तथा गरर्य। श्ररीशस्त्र गाँच बायुनोक्रे नाम--तथुक (वा नागशायु), धर्मप्रय, देवदत्त हुन्हर कुर्म । इस प्रस्तर सुक बस भंद हुए। बातमधीप ।-बेलू-पु भृतः। −कोक्ष−पु० पश्चिम-कसरका दोना। ∽गॅड~ g अजीर्म, अग्रास : -गश्चि-वि वासुब्ध शरह तैव पावराजा !∽शीत∽ि वाषु द्वारा नावा द्वमा (सर्वे विदित्त) । -शुक्स-पुत्र वर्ग्या वर्षार वात्रयका वेग्का एक रीत बाबगोकाः भैंदर । - अस्त- वि खेडपा बा क्ष्मार रीमसे भारते । ~ात,-तनव -भेरम ~ संसव -मूत्र,-स्यु-पु॰ इम्साब्ध योग । -दार ~ दाइ-दु मेप।-देप-पु स्वाति नदाव। -बिय्न-वि पास्त अग्रताः -धंबक-पुः छरोरशः पाँव बायुभीका समाहार । -पुराण-पु॰ जडारह पुरासीमें छे एक । -कार-पु करता (ह्यतुर्। - मझ - मोजन-वि शास पीक्ट रहतेवाका । व अग्रेपः बोगो सक्सी ! -भक्षक-वि , पु॰ इवा पोदार रहनेताका । -भक्षण--g बादु गोद्धर रहनाः हवा बीकर रहनेवामा-छवादि । ~शहर-ति हवा शेवर रहमेवाना । प्र सर्ग । ~शुक् -(w)-वि पु है 'वासुवस । -सस्तिपि-स्रो इस किरि (क-ितुनिरतर)। - महस-पु आकारा-बाताबरसः दर्बदर । ~यान~तु वर्षारं बद्दान ।~नजा~ सी ऑक्स क्ष कि । -शेवा-की रात्र।-लोक-तु पढ़ होड़ (दु) । −यरमें(म्)−तु अचात्र ।−बाह -द्र भुभा बार्ड । -बाहन-द्रः भुगौ तिन्तुः शिव । -बाहिमी-मी शिरा। -धगड -बेगी(गिन्)-नि हरानी सरह तह । ~सरा ~समा~प्र॰ मानि । ~हा (इ.स)-ब्रु बद्ध अहि।

शायर-रि [म] मानु-गुक्त मुकाभी । वासवास्पर्-पु [मं] साकाश ।

बार्क-ड [में] बढ़ा ।

भारत-तु [तं०] नसनारनी भूदा गष्ट शक्य निराम वा

रह भी गर। बार्यस-द्र (स्रे] नह भागापत्र जिमल विमोक्को कोर्र विजेष

दार्थं दरभेका अस्तिहार दिया भाग । -शिरपतारी-प्रश भरकारी बर्मवारीको किणीका विश्वताह बरलेट विष रिया तथा सर्विद्धार-वस !-समाहती-पु विमी वरवारी क्षेत्रारीकी दिमी स्थान व्यक्तिकी नुवाधी नेजके विध रिया दुशा अधिकारयथ । - तिहाई-पु अशानज्या व्यापायम विस्ताहे वनुमार शरकारी कर्मवारी क्रीमी मुख कर सके वा ३% मानराह गांगम कर सदे।

बार्रवार-म दे वार्शार । पार-पु आक्रममः बागायः नदी महीका रस्य किमारा-'दरि श्रुमिर्र सो बार है शुरु कुभिरे हो पर −सार्थीः [सं] रीहा दक्षण शास दिस दुवा स्वट्टा नियत समया वारी दका। जिम (धोम भीम भारि)। अन-

सरा समृद्ध बाबा शिवा मा"रावाब क्षमपावा एक स्टेडब निषा कुत्र वृद्धा जनसञ्जि । ~कम्यपुत –कम्या ~बारी ~मुखी -युवती,-योषिन्-व्याः वेऱ्याः -तिपः-की बरबा। -बार-त [दिंग] मरी मारिके दोनी किमारे । अ॰ इस कीरसे क्षम बोरनक । (अ॰ -- • करना~ पुरी मोटाई नेपडर दूसरी और निरुत्ता ! - होमा-पूरा निरतार वे करना में -पाशि -पाश्य-प है बारवासि ! -वाल -बाण -धारण-पुर करवा ~ब्रुपा -क्या-स्रो ६२मो । ~सुस्य-पु॰ गीरा स नर्तक । - मुक्या - ली अवान देखा । - रामा - वप् -वनिसा-सी॰ वेदवा । ~बाव्य-५ श्रोहरी बत्रानेगका

मुक्तव वर्षेया। न्याकाची छः, एवः संयासर । 🗝 काली न्यां । नेदवा। ∽वासि −वास्य=प्र• वद बतदा। ⊶विमाः सिमी - संदरी - सी-भी+ देखा । - सेवा-भी कमूर वेदबावृत्ति । मु -रनामी जाना-भारातना

निद्यानेषर म रूपमा। तुरिन्द्रा सदस स होते।। बार-त [थे] तुद्ध । -शिय-तु येती पहात्र । बारक-दि॰ (र्न॰) रीक्टनैरामा प्रतिरोधका निवारका

नाना यक तरहका पामा गारीर भीतेश करमा वस तरहका थीशा यह संबन्धा बह्हा ग्यान ह वारकी(किन)-५ [मं] प्रतिरंपक प्रतिरोधक राष्ट्रा

उन्नदा मध्ये बद्धानीताना बीहा; दर्बाधीरी ! बारकोर−९ [सं•] हारपाना नाहराधिः स्प्रानाः सीता

दवाः ज्रीः मुद्रापः। वारह-दुर्वि देशे वा ध्वसन्हा

बारदा-स्रो (तं•) (नी । बारण-९० (सं) निवारणा प्रतिरोधा निषेश शाबी **अंद्रशा करना प्रतिरोक्ता मात्रमा कामा ग्रीयमा गरी** महः हरनाषा सुद्रैन कोरेगा एक मुख्तः नक्कालमा मार्थाराणी ।-सर्-पु॰ शारीधी सूँद । -क्रूब्यू-पु वस कृष्यु जन । ~बुना-पहासा=मी देगा।

~शास्त्रा~सी० इरिनशास्त्र र ~शाद्वप-५ दरिननात्रः। -प्रकार-प्र• ६क तरहका संप्रवार बाधा । बारवर्गी~मी [गं+] वारापमी ।

बारणामम⊶च [त] य`रा । बार्जाबत-९ [में] गंधानरवनी १६ मन्त मही रिवे

चनने परिवेशी क्षणकर मार्नेचे निव सारान्यको निमाय बहाबा शह

बारणीय-वि [] निष्टेश बरने थान वना बर्दे मायका बानी-मंत्री ।

बारच-५ [मं] यमंत्रकी वर्ती, गमना ह वास्ता-सी॰ [मं] बढ शरहकी ि दिवा र बार्य०-५० शास्त्र ।

विगतास-विद्यम वंद दी गना दी जो गर्नवारमधी अन्तरवा पार कर म बी। असकमा प्रभावबीता अबूराः अम्बर्गरेकाः सिन्। गवी हो। विगुस्फ-नि॰ [ने॰] प्रपर । विगतास-नि [सं•] पृत्त । विगृह-पि॰ [सं॰] गुप्त, क्षिपा पुणा विसकी निराकी विगति - सी [एं॰] दुर्ग छा, दुर्गति । पनी थी। विगतोद्धव-प्रश् [सं•] हरू । विश्वहीत-वि॰ [तं । फैलाया वा निमन्त दिया इसी विगव-वि [सं] रोगरवित गीरीग । प्र॰ एक साम करें विद्रतेषय दिया बुभा। एक्स बुभा। विस्ता शिरा स तरहकी गाँव या सन्द होना किसी गावका प्रचार करना । सामना किया गवा हो; रोक्स हुआ । विगतित-वि [सं] जिसके संशंभी गतबीत की नवी विराह्मसम्म-५० (सं०) बाह्यसम्म बाह्यसभी दिए हो। वो पारी मोर ग्रेक हुआ हो (जन्रव)। वानैपर बलमार्वसे यागमा । यिगम-५० [सं॰] प्रत्यान, प्रयाय, पार्वव्यः अनुपरिवर्तिः विग्रह्मसन्-प्रश्री साक्रमय। रवागः इ।निः नामः समाप्तिः नृत्वः मीश्व । विग्रह्मवाद-५० (सं०) इदाः धनी सादहर । बिगर-पु [नं•] दिगंदर वृतिः प्रदाशः ग्रीवनका स्वाय विग्रहास-१० [सं] घडको श्रीक गरिका निग सा करनेशासा व्यक्ति। कवाये ही आक्रमण कर बेठनाः अंचार्थण पराई । विगर्जा-सी [एं॰] (एम्स्का) गर्जन । विग्रज्ञासन-पु॰ (सं॰) श्रद्रकी मृप्ति दशा एक्स रह विगर्ड ग-प विगर्द्रणा-की [सं] निवाः सल्पंताः को जीवनेमें असमर्थ होनेपर हुनेका अवरीप परना है बॅरिना-इरकारमा । विमाहा-सी॰ नार्य एउटा व्य पेत्र। विगर्द्वनीय-वि [में] सिंदगीनः बुधा विश्न-वि [र्गर] शुब्दा भीता विगद्दां न्स्री [संग] किया टॉट परकार । विद्या-वि विशेष विद्याः वधी। विगाहित-वि [मं] निविद्या क्रिस्टा शहा निविद्या विश्रह्न-५ (सं) अकयामाः फैकानाः निरतारः नियामः रार्वक्यः समस्त रहके अंडोको अक्षम करमा (न्या): राँदा पदकारा हुमा निर्मत्सित । दु निदा। क्का तक वरीय क्या हर हैरा क्या। संह मात षिराही(हिंच)~वि॰ [सं] निश करनेवामा । बिराक्य - वि [मं] बाँटने मिया बरने बीग्य । सवाब्ध क्ला विका स्टब्स एक अनुवर । - प्रश्न -प इन्द्रमहरू । ~पर-वि द्वार करनेस्र धुना हुआ । विशक्तन−प सिं•ी माद्यः पित्रसमाः यक्तमाः रिप्तनाः नइ जानाः गान्य दोमाः इत जागाः विभिन्न दोना । विग्रहण-५ [र्ग॰] ६५ वारण करना। शिमात्रमा कैनामा। वश्वकता है विगसित-वि॰ [सं] वहा धुनाः विवका बुनाः उत्त विग्रहावर-इ (वं) घरारका प्रव भाव। कट रिसकर शिक्षण हुमा। गिरा हुमा। स्छा हुमा। विग्रही(विन्)-नि [धं•] इद ६१मेशनाः सन्तर्भ बीला पहा हुना। श्रिमिका दिपहा सुन्ना दिरादा हुना। शयका करनेराला । य अब-मंत्री । सप्ता विशोगें (दि) i -केश-वि विसके वाल विसरे हों। -मीबि-नि जिनको ग्रंपि का इजारकेर जुल विमहेचह्न-वि [में] बुदवा रच्युक। यवादी। - संद-नि किलका वंशन सक प्रवादी। विशाहित-दि॰ (सं) विसक्त मनमें कोई तरो पारण —सम्ब−ित जिसमें समान रह यनी दी, पृष्ट । वय गयी हो। विमाशा-दि विश्वी क्याई बहने बोध्य शेवस्य ।

-- बसन -- वि॰ शंदा । विगाद-दि॰ [सं॰] रनाया प्रसा हमा, क्वा हमा: भेंसा

हुआ (इविवार); आये वहा हुजा: गहरा: जरवनिक । विगामा नती [तं] अर्था इंस्का एक मेर । विगाधा(४)-प (सं) दुवको नमानेवालाः प्रवेश करने-

गावाः सम्य बर्शनावाः पिराम-प्र [मं] तिहा अवरादा क्लामंत्रस्वः विरोधः

विगाइ-९ [मं] दुस्धे क्यानाः प्रदेशकरणाः ग्नाम

करना । विगाइमान-वि [र्थ] किनोहन वा अनगाहन करमे

वाका । विगाहा-सी है 'श्विगाना'।

विगादा-दि (सं] हुनको कगाने या प्रनेश करने बीम्प (बीमे चेचा)।

विगीत-वि [मं] बररपर विशेषीः तुरे बंगरी शावा हुनाः सिदितः सिनित्र प्रसारशे कवित ।

बिरारिति—सी [तं] भावार्तत्रका एक भए। विगुल-([र्न] शुलरीन निर्मुचा बुशा विसर्ने दोशी विशिष-नि मि दिसको सर्वन देव वा काउ हो

गबी दी। विषदम-प [मं] अनग बरमाः शोहमा। दिश्र निष करमा। मास नरकारी । विवदिका~की [मैं•] समक्दा व्य तपु मान, महैं ध भौगीसची दिश्सा (किमी दिभी के सकते देश्यों हिस्ती

विषयित-दि मिं हे तोश प्रवह दिया हमा। रिममा नष्ट किया दुव्या । विषक्त- द्रां ी १ वश्याः दिनामाः शीतमा अध्य करनाः व्यक्ति करमा साराज करना ।

विश्वद्वारीय~नि [सं+] हिनामे शोरने भीमा अन्त दरमे बीग्य ! विधक्ति-रि (ते॰) स्वश द्वमा तोश का उमा

शीना बुजा' व्यक्ति ना नट किया हुजा । बियाही(दिन्)-वि [वं] श्यानेतामा ।

विसम-द [र्ग•] इबीहा आयाप बरवा। मह वा परि भूग बरमेशानाः देहा + हे शिप्त । वि वाहिना 1234 श्वारवात-छो• दे 'वारिवात । बारम : - सी निद्धावर ! प : वंदसवारा दानी ! बारमा-स कि पक्षि बाना। करसर्ग करमाः सर्व जीन शादि बदारमा । पु निष्ठावर । शु॰ वारमे जामा-मिछाक्ट द्वीमा । काररिका-सी वि 'वानिश' इक्ष्णे आविपर जसक कालके किए कमावा जानेवाला एक रोगन। शार-देर-की निछावर, विशः बुक्बा-बुक्बिनके सिरके चौतिर्द धुमाकर सुराना जानेशका वंश्वा-पैसा । वारप्रत्याः -तः भारमविस्यृति वेदावः। बारप्रता-वि कि] भारमदिरमृति सूप बूप मूला हुआ वेद्धर । द्यार्थिताव-वि [म] निवारण करमे थीरन । वारियता(क)-प्र[मं] राहक जुननेशका पठि। षारका-सी [सं] वरें। इसी १ वारसीक-पुनिश्वस्था। बार्रागमा - त्वी • [मं] वस्या । वार्तनिषि~प्र [सं] समुद्र। वारा-प वयत किफायतः सामा नवी वारिका देवरका किनारा ! वि सस्ताः प्रस्तवीहत भी निकायर हुमा हो। -म्बार(-प्र पैनका निष्यस् । भु•-पद्रमा -क्रमा- वयन द्वीताः -होनाः- निछावर दोनाः। बाराशसी-सी [मं] कादी, वनारस । धाराध्यमेव – दि [मं•] बाडीमै जरपत्र वा नना हुआ । बारासिका-सी [सं] दुर्गा । पारावस्कंदी(दिन्)−द्र[म] अमिन। पाराधिन्द्र [में] चस्रहा पाराद्र−वि [गं] चूदर+विभीः वराद्य अवनार-विवीः बराविधिहरकुत । प्र विष्युका यक अवतारः सकुरोसिन ध्यक्षाः बाराही बंदा एक पहाकः क्षण्य बल्लेबकी एक शास्त्राः व्यवसायः एक तीर्थः एक पेश काली शैनीः बरुदे बारा द्वीनेवामा वेतः अंतुवनमः। –अंतु–पु॰ वदः सरहका क्षेत्र जिमपर शुक्ररकेनी नाम क्षात के । -कर्जी -पश्ची-स्रो असर्गद । -करप-५ दम नामका नदाका दिन भी रम समय बीत रहा है। - हान्द्रशी-नी माप शहा दारशी । -प्रशाम-प्र व्यवस्य प्रशासिमे १६ । पाराहोती-सी [मंग] वंदी प्रच ! बाराही−सी (सं+}शहरी;बराह क्ष्मगरी विष्युकी शक्तिः र इंदरी एक मानुका। एक वन्। बुक्ती। एक मानः एक मदीः बीमनी। दवामा पञ्जी। – व्हेंब् – पु. एक महाकदः,गाठी। षारि-पु॰ [मं] जन्द वर्षाः गुगरवाना वी सा यक पृत्त । भी भरत्ती। शापी शापनेकी जंगीत दावी वेंगालेखा गर्दा या भंदा: दाशी जॉबतेका स्थाम: बंदिनी: बागी: गगराः [दि] निरावर !-ब्रीटक-पु सिवाशा-कक- गग्रर !-वर्जिशा-स्त्री॰ ब्रंथिका !--कपूर-पु यक्ष माली। -बुरुत्र -बुरुत्रक-धु सिपादा। -ब्रुट-पु नगरको रहाके निद बना दुआ इसा । -कृति-पु योद । -कोस-पुरु दशुभा । -कोश-पु रिम्ब वरीणा-का अभिनेतित यस !-रार्थ-पुनास ! - वा गरू-पु कृतिका। बल्यां- ।- चर-षु वानिके भीव में व मएली। विस्टि-पु [में] बाबी ।

इंछ । -चासर-पु॰ सेवार । -चारी(रिन्)-वि अकर्मे रहनेवाका (जेतु)। -ज-प्र कमछः मछलीः संसः वींगाः होणे कवमा कीका रात्तम दारा सोमाः कीगः एक सागा वि चरुमें उत्पन्न । — जात-पु 'बारिब' । - जीवक-वि अलग्ने श्रीविका चलानेवाका। -तर-पु॰ यस । -तस्कर-पु सूर्वः बारक । -मा-भौ÷ छाता। –द्−पु सेच महारमीभाः बाका मामक र्थमहत्त्वा वि अष्ठ देनशका। -पूर्ण-वि जलके कारण दुर्गम । पु॰ दे॰ 'ससदुर्ग'। - जू-पु चातक । -घर-वि वत वारन करनेवाका । पु वादक !-धामी -की बसाधार । -धार-पु एक पर्वत । -धारा-को जलको गारा-वर्गाः -धि -निधि-पु समुद्र। -नाथ-प् बादकः प्रम्यः समुद्रः मागनोद्धः। -प-अरु पीमैनालाः सङ्की रहा करनेनाला । –पश्चिक – वि अच्छे मार्गमे गमन **क**रमेशाचा। ~पर्की ~पूर्णी -पूर्वी-मी अवकुंशीः पानीको कार्र । -प्रबाह-वक्ष्याराः वक्रप्रशतः। -श्रंधक-द्र गाँव गाँव कर वकको रोकला। ∼वद्रर~पु है बारि-बदस'। -वाकक-दु एक गंधहम्य ! -सव-दु रस्तित ! नि दे॰ वारिय ।-मुक(च्)-प्र वार्य ।-मुखी-सी दे वारिपणी । - मैंग्र-द पानी शीयनेका बंगः कीनारा । --रथ-पुनाव ।--राज्ञ-पुवक्य । --राश्चि -प समार -रह-प कमस । -कोमा(सन्)-प्र वस्त । -वद्य-प्र पानी-भागला । -वर-प् करीता। –धर्मक-पुनास्। –वर्त-पुम्क सव। -वस्त्रभा-सी (बेरारी ! -बह-वि पानी है जाने वासा । -- वास - तु कन्यसः, शराव वनानेवाना । --बाह्-पु मेंचा माथा। वि बन से बामेशाला। --बाहम −पुर्भेगः −कार्द्श(द्विन्)−विश्वकः दोनेदालः। – विद्वार-प्र अकत्येषा -श-प्र विध्याः -शय-वि अवमें शेरिकाका । -कास्त्र-प्र मर्गप्रभीत करित क्यातिचका यक संब (इससे कृष्टिके स्थान और समयका पना कमाया बाता है)। -संसद-प्र काम प्रक्र तरह का ग्रीमाः बग्रीर । –साश्य-१ दृष । वारिश-वि [मं] विशवा निवारण दिया गया हो रीका हुमा मना दिया हुमा। विपाया हुमा दक्ष हुमा। चाम−वि निषिद्ध वस्तुऔर निष्णामावित । बारिय-द [सं] निविद्य अविदिन कारोंदा अविदन । वारिय-वि [स] वत्ररमेवाना आनेवानाः पर्ववनेदाना। म [मं] दे बारि'में। वारिहास-शी [अ] ('वारिहा बा बद रदरवनमें स्थवहरा) बाला दुर्परमा। हान कुछ। हामे धारी-प्रतेशी शालाई । बारियाँ−स्थै निछारर दक्षि । बारिय∽दु [म] उत्तराधिकारी तृत प्रज्यो मंद्रिका कपिकारीः वालिकः सीवन्यवर शेनेवानाः रहनः । -(स) ताजीनप्रत-पु॰ राध्यका क्यराविकारीः पुरराज । बारीहर-पुरु [में] अपूर १ बारी-की [मं] के बारि की !

सिक्**सिकेनार, तरती**नसे र**ता**नाः तकाश **प**रमा ।

1220 नरमः नावलीसे रहितः निरम् । विधर्पण-पु॰ [मे॰] रगइने, विसनैकी किना । विचस∽प• सि•ी अर्ज्यंपवित प्राप्ताः भाषारा क्षेत्र अत्र, रिवता पिनर शादिके छपयागा वाद क्या हवा) साथ परार्थः सामेके बाद बचा हमा अंदा मीम । विषसादा विषसाद्यी (दिन्त्र) - नि अ [सं] देवतादिके पपनागर नाद बचा दशा अंदा सानेवासा । विभात-प [सं] चोट, शावातः द्वरुप द्वरूप करनाः निवारणः रोकः विराधः परित्यागः विषक्ताः चीवना फोहनाः नाशः इत्वाः व्याक्तकता । ∽सिद्धि~ती नावा दर करमा। विभातक−वि॰ [सं•] वादकः वायकः। विद्यासम्-पु• [सं] निवात करनेका काम किया। इरवा करना । वि - निवारण क्यानेवासाः बटानेवासाः । विद्याती(तिन)--दि सिं) इत्यादारीः पीर पर्देशने शकाः विरोध करनेवाकाः वावदः । विद्यष्ट−दि सिं∘ो उद्योगितः स्त्रेची आगावमे अद्याद्वला । विष्यिका – स्रो [मं] नाक। विवर्णन-प्र• सि] बमाना, बद्धर देना । विष्णित−वि सि देशमधाथाथवर त्रिकाका द्वथा। विधीयण-प मि । ईंबी शावायमें घोषित करनेकी किया विहासा। विल-प्र• [सं] बाबा जहचन, बुटिनार्थः विरोधः माछ षा मंग करनेवालाः गनेश कुष्तपाक कृष्ण काकी मकोध ! -कर,-कर्टा(श्रं) -क्रत⊶दि० वाचा क्यरियत करने वाका। -कारी(रिश)-वि वे विशव वेरानमें मयानदा − ऋत् ∼नायकः,−नाकक−पु॰ गनेश । -पति -राज -विनायक -इंता(न) -इरण-हारी (रिन्)-त नगरा --पतिबाहन-त च्या । -प्रति क्रिया-स्रो -विधात-पु शथा इरवरना।-सिटि-मी वाभाका दर होता । विभनकः–विश्मि) अद्वतः थापा दाकनेवाका । विप्नतिक-५ [मं] नगेशः विभिन्त-दि [मं] बिसमें निध्न वा राजा दांडी नवी धीः परताया तथा । विष्नेश-प्र [मं] गरेशः - कौता-स्थै सकेट कर। -पाइम-पुरु चुहा। विष्नशान∽पु[मे]काध। विभेश्वर-१ [4] गण्छ । विर्यात-वि [40] चन्दीत । वियक्ति-६ [मं] वश्सवाद्वभा भीवकः। विचहिल-१ [मं] एइ तरहरी बमेती। मन्त क्या । विचक-पु [मं] एक दानव (पु॰) । वि चमरहिता। विकासण-वि [म] विद्रान् बृदयशी चनुरा पार्शनम वश्चा पमस्या द्वमा प्रसाधमान । द्वः चतुर बारगी । विषक्षमा-भौ (ग्रं॰) मागर्गाः । विषक्षा(सम्)-५ [सं] आप्यासिम्ह शहर। विष्यु (स्)-रि [म] क्षेत्रा सन्तमः वक्तावा दुआ । विषयानः-रिषु ३ वियल्हा विषय विषयन-५ [मं] इस्ट्रा करनाः परीग्य करनाः [

विषर-वि [सं] अगय किया हुआ; मुक्का सरका बुजा । विचाल-प [ध] धमना-फिरमा, पहना भ्रमण बरना, पर्वटन । वि+ क्रिसके पर स हों । विचरणीय-वि• [मं] मापरण करन योग्व। विचरन॰-५० दे॰ 'विचरण' ! बिचाना-अ० कि॰ इतरतत गमना ! विचरनि+−सी+ दे+ 'विवरम[े]। विचरित-वि+ ति वितस्ततः गमा हुमा पर्वरित । प अभण पर्वेटन । विचर्चिका-स्या [सं] सुबडी सामग्र रोय। विचर्चित−६ [००] हेपाडुला। विचर्मा(र्मन)-वि॰ (ध॰) विसक पास हारू म हो। विचल-वि [संग] निरंतर भूमने वा विक्रमेगाकाः अस्विर; स्थायनं इटा हुआ। प्रण प्रतिदाने हरा हुआ। मनसामा हुआ। धर्मही । विचलता - सी॰ [सं] अस्विरताः पश्चादः। विचलन-प् [सं] अहाँ-तहाँ पूमना। समेद्र । विकलमा १-अ कि स्वामप्रद होता। प्रतिवासे विमनाः विवरित होगा। विचमामार--श. कि विचलित करमा। बदशहरसे शकता । विचलित-वि+ [र्र] गवा दुभा। सरिवर, श्रंपतः स्थात था प्रविद्यांग्रे विया हुआ। परहाया हुआ। विचार-प• [मं] निर्जयः तस्य निर्धेवः तस्य-परीक्षाः किसी विषयवर संमीरताके साथ सीयमा। कार्व-विधि-श्वान परिवर्तमा भरिष्ठ। विकटा बाद-विवादा जुनाव। विदनाः अमिवीग आरिका निर्मेत । -क्ती(नी)-नुव शोबने विवारने शक्षा अभियोगका निषय करने वास्तु स्वायापीशः - चृ-वि विवार करनमें कुशक प्रशीय। पुरु स्वायाधीश अव । - पति - पुरुष्टिका ऐसना करनेशता यव ! -श्-सी स्थायानद ! -स्यू-दि विमे शोयमे समझमेदी शस्त म दी। -शस्ति-सी विचार करमेकी शक्ति। -शास्त्र-पु मीमांसा शास्त्र। शोप विचार करमेको शक्तिशामा । −मील-4ि -शीलता-सी पुवियायी, समहाराती ! -सरकी-म्या विचार करनेकी पहति १- स्थान-पुर दिना विचय **पर विधारका स्थामा ग्यायासम् अदासतः सुद्धे ।** विचारक-वि॰ पु [मं॰] विवार करसेवाना दार्गनिक ! प्र जन न्यायाचीय मेता पपप्रदर्गका ग्रामधर । विकारण-प [मंग] विकार करनेकी किया। परीधाः भरेदा दिचदा स्थान परिवर्गन । विचारका-स्थै [मं] वरीधरः तर्नः विचार करनाः पृथना हिरनाः भरेहा योगोगा शास्त्र । विचारणीय-वि [ग्र॰] दियार काने याग्या निर्मा दिग्दा ममाणित करमे शोष्य । विकारमा नव कि चीर करमा योज बरना हैरुसा। विचारवान्(वन्)-दि [मं] रिपारक्षीत शानन

विधारनेशन्य ।

पारीकेरी−सी किटी मिय कमडी गांगा ट्र करनेंक क्षिप वसके शिरके चारों और प्रमाकर कोई वस्तु बस्तुर्ग बरना । पारीम-पु• [सं] समुद्र । षारुड-पु॰ [मं] सर्परामः मानका पानी वसीवयेका पात्रः गौर कामका मैकः ऑसका कीयह । यार्रबी-सी [मं] द्वारपिंडी द्वारखीचन। बार-पु [मं] वह हाथी जिसपर विजयपनाका रहती वे निजयक्षारा धीका । मान ही। बाह्क-वि॰ [सं] बुमनेवाहा। वास्ट-तु [मं] मरणशस्याः रिकडी बारबी । वारम-वि॰ [सं] सह, वदम, मृतु वा पश्चिम दिशा-मर्वभी । पु अका एक नक्षत्र शतिनाः सारतका एक प्रदेश हरतामा एक क्यपुरायः एक पर भरण वृक्षः चकर्त्या दरगदी छेगामा एक अस्ता प्रथिम दिशा। ~कमें(स्)-पु नभासन (कुनी कोकरा) आदि मनवानेका काम ! ∼पाक्षक−पु यक वहा समुद्री शंतु । ষাহলক−বুমিংীদহ জরবর। षारुणि−पु [मं•] अगस्त्वः सस्वर्शतः वसिद्धः मृगुः दक सनपर। वस्य वृक्षः देवैक दाओ । स्ती । छराव । XIC I

बारुनी-सी [धं] पश्चिम दिशा धराव महिरा। वरनको सी यापुत्री अपनिषद् निया (बरूग अपदिस दीनेसे); मोश्की एक पाक दुवः संटर्गा वक नदाः धनमिना नक्षता बंदबाबनी बेंदाबना दविनी। धवनिना-क्षुक्त चैत्र कृष्मा अवीहशीः शकरामके नियं वक्ष्म बारा प्रेरित कर्तवका इसाक्ष्यंको प्रक्रका भय । नगर-प्र थीथा होय और यसका समझ (नै)। - यसम-ड बरूप ।

वार्जीश-पु[+]• विश्वा बाहरूय-वि (सं) बरुमते श्रेनक । तु अस । बाह्रड-पु [मं] अन्ति। दिश्याः वस्त्रा ग्रीतः व्रवा⊀ का प्रशास्त्र पानव । बार्रेझ-पु [११०] गीव देशका एक प्रानीम जनपर (राज

धादी विनेद्धे जनगंदी !

पारेंद्री-स्रो० [म•] दे॰ वारेंद्र । बार्-द्र [मं] बका रएक। −भागन-पु वनावार। न्शर-प्रजानाः। न्दर-प्रवे अवसः। न्दर-प्रदेशसमे। ∽घामी~मी पहा। ~घारा~भी क्षसक्त बारा । ⇔चि~ड महुद । =० भव~ध समुद्रो सम्बर्धा ~धेरा~पु सम्गी नग⊼। ~सर~पु शहि वान । -सुक(च्)-प् वाहस । -राशि-व ममुद्र । - बट-चु बीत । - बाह्-पु वारत । बाधे-वि [म॰] पूर्ण मंत्रीत पूर्व का कालने निर्मितः क्षान्य द्वा द्वा । तु अध्य । बार्शी-स्ते [मंग] प्रचनाको भी । बाधर्प−वि [तं] संपर्शकायना प्रमार तु र्थ-दमः।

कुरीमें बिश दुश्रा स्थान है

बार्च-९० (मे] ४८ ।

शास-त [लं] रक्षा दिवादना दिनी साथ कन्महे निष भेरा हुमा रवामा वर्ष मानीमें करे हादार्देका मनूद | बाब्शिनका-की॰ [नं] पत्रा कन्न ह

(प्रवंश कादिको सुविशासे विभारमे बनावा बाता है। श्रमन कमरा विधान (जक अरस्तु:पर्वे) ! वादम-पु अ] रहकः माविवम अभिमानदः। बार्डर-पु [अंग] रहक, रहा करनेवामाः बेमद्वे धीन् रहमेबाला पहरशार । वाणिक-विक, पु (वंक) संस्कृत यासकः पार्श्वक-पु (सं) बटेर । बार्समामिक-वि॰ [तुं॰] वर्गमानकात सर्वती। जी विक वार्धा-स्पै दे 'बार्खा। बार्ताक वासामा∽तु [र्न•] वैनना व∤रा ⊶धाकटा −साकिस~पु धंटेका दोत्। बार्ताकी, बार्साकी-मी [मंग्] नगम ! षार्कोहः वाधाकः−५ [वं•] रेयन । वार्तीक पार्तीक-पु [मं+] भोरका रक भेर । बार्तीर वार्सीर-५ [मं] दे॰ बालीक'। चार्च-त (रांशी स्वारध्य आरोग्या वस्त्राच । रिश स्वरथा प्रस्काा निर्वतः कामारा बोर्ड पेता करना हान किया रीजगारमें लगा दुआ। जीरिकायुक्ता साराहक बार्क-मी (सं०) ठदरमा रहगा। प्रतमुद्धि अफराहा बामा। क्षांत हाला विषय प्रमेगा बाँडवीना बुद्धि जीविका (कृषि वाजिश्य आदि)। हुगाँ। भंगाः अन्य हारा धरीश नेवा जाता । -वति-द्र बामपर लगानेशकः श्रीविकाका प्रचेत करमेवासा । - बद्ध-श्र वृता मीतिः शान्तका नाव-व्यवने शंबक भागा बमनारी । --कृति--गवरक विशेषका थेरव ! - इर - हर्ता(में) :-\$17-9+ E1 F वार्त्तानुकर्षक-५० (ध) वासूय; इन । धार्त्तांमुर्जावी(विष्)-बि [गं] म्वाधारमे जीविका चनानेवाला । बाक्तोबन-१० (गं०) गुप्तवर: बचनी हुत । वासरिय-९ (मे] स्वाचार झारवार I

वार्तानाय-५ [मे] पानशेन।

शाहा-नार-तु कानावना

बाह्मश्रूर-पु[श+] एक ग्राय ३

समि स्वादी ह

ब्राशिका-भी [शं•] ध्वस्मायः वटेर । वास्तिकादा-१ [ते] ए६ शास ।

कुणानादीका बाज्यजिलाः सन्। रेशाय 1

वार्लिक-पु (र्ग०) स्वाम्यान्त्रंत्र (क्षान्यास्य कारिक्री)।

रिजाता व्यवसाधी। वैद्या स्वावता दिवाहरा मीजना

आभाग्यालका अध्ययम वर्तेशाना देन यर जानून

प्रोटा । वि । अवन्यवनुष्टमा समावार मंदेवी। ध्यानकी

बाह्यग्र−षु (गं०) अर्थन ध्यम । वि दर्शनीयी ।

वार्ट्ड पुर्व [ते] दहिलादर्ग संवाधीहरी संप्रकारी

दाको भारती मोरी भी दान मानी पानी दी भागती

वार्यल-तुः [वं] क्रोधारा दिन धराव रिना मनिया

याश्लोबरोप-रि [म] सून ।

विचाराध्यस-पु [सं] प्रवास विचारक, वत्र । विचारास्य-पु [सं] न्यासाकत् । विचारिका-की॰ [सं] गुरोपालक्षे वेस माल करमेनाकी

वासीः मामका गुक्रमा देशनेवाकी मा ।

विचारित-वि॰ [सं] दिवार किया हुआ। सीवा-समझा हुआ। संदिरका अनिश्चित निचाराशीन विसाद विचार वीता हो। पु॰ विचारा संदेश हिक्का

कीता ही। यु॰ विचारा स्वेषा विकास । विकासि(रिम्)-वि॰ सि] संबद्धा विवास करने, यूमने-किरनेवाकाः विवास करनेवाका । यु॰ कर्ववका एक युश ।

विवाद-प्र [सं॰] कृत्यका पक पुत्र । यिचाप-वि॰ (सं॰) विधार योग्व विवारगीयाः संदित्य ।

विचास-पु॰ [र्स] प्रबद्ध करनाः निमाग करनाः नीकका काम या स्थान अंतराम । वि नीकका ।

विचासम्-पु॰ (सं॰) श्रामाः नश्र प्रमा । विचित्रन-पु॰ (सं॰) श्रिक्ष-विद्या करना सीवना ।

विभिन्ननीय-ति [सं] विकारणीय ।

विश्विता – सी [सं•] सोच क्यार) देख माठ । विश्वितित – वि िमं] क्रिस्पर क्यार दिया यथा हो ।

विकितिता(तृ)-वि , पु [सं] निवार करनेवाला । विकित्य-वि [संव] वितास विवार करने वोल्या संवित्ता

जिसकी देख शास की बाद है

विष्ठक प्रकार के व्यक्त होंगे। विश्विविद्यान को [सं) इंदर, हांगा। विश्विद्योग-को [सं) त्रताड बरनेड रूपा। विश्विद्योग-को [सं) त्रताड बरनेड रूपा। विश्विद्योग-(सं) त्रताड बरनेड रूप्छ। विश्विद्यान (सं) त्रिक्टी चोल को गयी से। विश्विति-कोण (सं) विद्यार क्लेपण।

विचित्त-वि [सं॰] अचेता कर्तम्मविग्द । विचित्ति-व्या [सं॰] विभग वेदोशीः नित्त विकाने व

रहवा

विचित्र — वि [से] कई प्रकारके रंगी वर्षोक्षाणाः कलावारया पाढिय विरिध्य करनेतालाः हरेराः मंगीरकतः
विभिन्नः रंगा इमा। य रीच्य मनुका पक प्रव (१)।
एक कर्नार्रकार (रामें प्रकाशिक्षके किए करवा प्रवक्त
रिग्राला काता है)। विभिन्न श्रीका श्रमुद्धाम कन्या।
—चेद्व — वि विश्व वर्गारे वाचारण करनेवाला।
—देव — वि विस्का परीर रंगा था। जिनको वमावव हरर दो। य वादक। —करूप वि कर्म तरावके क्यावाचा। —वीर्च — य प्रान्त-स्थायनालि दिलीय पुत्र
(वि निर्मानान सर। व्याचनते वस्त्री प्रविद्योगि विश्वीम सारा भारतात्र कीर राज्यके वस्त्री प्रविद्योगि विश्वीम सारा भारतात्र कीर राज्यके प्रशा विकास) — स्थायन पर, स्थायम।

विचित्रक-पु (तं॰) में।बदशका देश भारवर्ग करोगा । वि भारपर्गजनकः।

विचित्रमा-स्रो [मंग] रंगविमन्त्रा अमीरायन । विचित्रोग-पु [मंग] सपूरा व्याप्त ।

विचित्रा न्यो [मं] यक् रागिनीः यक तरहवा साँद दिरम।

विविद्यात-वि [मं] तरव-तरवन्ते रंगोंने विवित्त रंग-

विरंगाः बारवर्ववनकः आमृषित्र (समासमे)। विधिनवक-पुरु [र्गः] समाज सम्वेषमः बीर, बीमा। विधिजक-पुरु [र्गः] यक विषेका क्षेत्राः।

विचीर्ण-विश् (संश) जिसपर गमन वा सन्त्रा दिया गरा हो। विसमें प्रवेस दिवा गया हो।

विजुवित-पु॰ (तं॰) खुनव । विजुवित-वि [तं] विशेष रूपते चूमा हुना। १५३ विवाहमा ।

विनेशम-वि [सं] संशाहीन वर्षता मूर्य, विवेक्सरिता विरमरणशीका निवास, गृत ।

विचेता(तम्)-वि॰ (सं॰) मृर्गा नपेता दुश रिन्स ्यद्वरः विश्वरणः।

विचष्ट-वि॰ [सं] निवचेष्ट पेद्यादीया यतिहीन अवन्यः विचेष्टन-तु [मं॰] छटपदाना, दबर-वधर कोटना तत्त-यमा (वेद्यामे)- कात पेंकना वा कोटना (योदक्य)।

विचेश-नी (र्स॰) प्रवक्त गति। स्ववहारा कुपहा। विचेशिक-वि (र्स॰) प्रितके किया प्रवक्त किया वदा होते परीक्षिता पूर्ववापूर्वक किया हुआ। अविचारिय। अमेरिय। यु स्वरोरको गति या श्रेयलका दक्षिता कार्य। आचस्य।

ुरा कार्व शुक्कर्य । विष्ण्यंत्-विश् (सं] विसमें कर्र सरहक संत्र शी । पुरु दें ''विष्योगक ।

ारचण्डः । विच्छत्रक∽षु (सं•) कर्रं मंश्रिकांशमा मकाम राजनासार स्थारे ।

विच्छप्रक-प्र• [सं] एक साव अनमा ।

विष्कर्तक-पु [सं] विष्यवक देवलंदिर सहस्र। विष्यवस्था-पु [सं] ध्यम की व्यवसार स्थाननाः स्था

विष्युद्धिन-सी॰ [मं॰] वमन । विष्युद्धिन-दि [मं॰] वमिन कै किना दुशाः गरिस्वधः

प्रपश्चितः शीमः स्पृतं किया प्रमा । विच्यक्त-प्रार्थः वि] वेतक्यं सता ।

विष्णाय-तु [मं] पश्चिमीके सुंदर्श छाता। मनि। यर विसम्भे छाता च परनी ता । भि विषमें कृतिहोसा

कारमहित ।

विधिप्रतिक-की (रि) इसका काम द्वस्त्री करना के करना निमाध पार्थका विधिद्य रिक प्राप्त करी मुद्रिश कामा क्षेत्रका विध्या मारिक्की कारवारिक देवियाचा शरिक्की विशित करना (रि) कारिक्की कर सरका हार कर कार (वी) केशारी पुरस्की हुए सरवेदा मक्का) वर्ति (देर); क्षोमा द्वर (यहानशी)। विधिक्क-वि | विधायत कम्य दिवा दुक्का (साम-स्वा करना मिला की सिका मा पुरुष्ति हो सुनिश स्वा करना मिला की स्वार मा पुरुष्ति हो सुनिश

विवारिकः विकित्र रेगारी विविद्याः छित्रा द्वभाः हेरितः । विच्युर्क-पु॰ [सं] छित्रकताः कंपनाः सन्ताः । विच्युरित-वि [सं] छित्रकः द्वभाः कंपा दुवाः दकाः

हुआ। पु वह प्रकारकी समावि। विच्छेत्-पु [स्ंक] काटकर अक्रम नर्रमाः त्रम हुरुवप अक्रम हुकडे हुकडे करना। दानि। नाशा निर्वेश करना। सनभदः परिच्छेट अच्चाय (बुरनदक्त)। वी-स्त्र करनार।

वति (८४)। बंद्यसम्बद्धाः संग होसा ।

अस्वक-अष्टक कष्ट(मृ)-पु [सं॰] कारकी संस्या। वि

बोहेके सह-मुद्दे हराय।~एसिस-पु॰ एक बृद्धा-सासा-श्री • एक् तुरह्ना सीप !—शक्य --पु० विसरु शंपव ! -वह--वाह--वाहक:-पु: भुद्रस्वार !--वार,-वारक--

प्र प्रकल्पार सार्वस ।-वित्-वि वे 'अवकीविद'। पु॰ राजा मक १-व्युद्ध-पु पुवसवार सेनाकी सामने और अग्रक-बग्रस रमाद्रेत रचा हुआ। व्याह ।−ऋकु-पु

110

भोग गाँपनेका मूँटा ।—दाकः,—शकुत्-पु॰ भोवेकी सीद। ~साम्रा-स्तो• प्रकृताल ।~साम्य-पु० वीवेके शुभाशुभ स्थ्य रठानेशला छात्रः शास्त्रहोत्र ।-सादः-सादी छाला बुक्सनारी ।

(दिन्)-पु० पुरुप्रदार ।-श्चद्य-पु० घोडेका चिकित्सा-बस्यक्र-पु[र्श•]होरामीकाः सावारिस वीकाः वोकाः। **बश्वकिमी:−श्रो** [मं] मधिनी मध्या अस्यतर-पु॰ [सं॰] स्वयरः एक सर्पराजः एक गंभवंदर्ग । बहरूय-पु [मं] योपका पीपकका शोदाः पीपकमें फल **ब**ग्लेका समदा सर्वका यक नामः समिनी नक्षत्र । **थक्त्या—हो [हं∘] आश्वित-पूर्णिमा (बिस मास**र्मे

पेपटडे फ्रम क्टवे हैं)। **मन्द्र**नास−वि० (सं०) योदेश्य-सी श्रक्तिनामा ! वनसामा(सन्)-पु॰ [सं] महाभारतमें कीरवपस्का ध्व महारबी होजाबाबँका प्रकासकामारवसे वत कहानी। संबन्धी−मी [सं•] होता धोपका पीपलको शहका यक द्रीरा देश ! सम्बद्ध-पु [सं•] यक् गीतकार कापि।

धंभरून अभ्रत्निक्र−नि० [सं] आवसे दो संबंध रखने नका। अमने दिनके खानेका ठिकामा न रखनेवाका । **अश्लोतक**−५ [सं•] कनेर। **वस्तास−पु**[सं] देवसर्वय नामक पीवाः वीवकी मॉरन । महराबनी-ली॰ [सं] चातुक । **वस्ताच्यक्ष∼पु॰** [सं] धुक्सवार सेनाका नायक ।

भरतामीक न्मा [सं] प्रवस्तार सेना रिसाकाः मररायुर्वेद-पु॰ [सं॰] अव-चिकित्सा-हाख । **बस्तारि-पु॰** [सं] असाः कनेर ।

सत्यस्य सम्वाराष्ट्री(दिन्)-विक [संव] की वोदे पर च्चार हो। व्यातीह-वि» [सं] दे 'कवास्य । प्र

ब्दबारोहक-५० [सं+] ससर्गंव । विदिनी-सा [सं] थोडी। ४० मधुवीमेंसे पदका मञ्जूषा बराबासी । —कुमारा-पुत्त-पुत्त-पु स्येकी पत्ती मनाई बोरीका रूप भएन कर केनेपर उससे कल्पा दो इन को देवताओं के वेश माने आने हैं स्वर्धेंग ।

व्यक्तिबुगस-पु [सं] यो करियत देवता को किसी-किसी है मत्ति अभिनीकुमार भी माने जाते हैं। वस्तीय-ति [मं] सम्बन्धनेती। बोहेके किए विस्तर । वपस्यान-मि॰ [मं] निष्ठे दोके अलावा सास्तेने म रेपा वा बाना हो। पुरु ग्राप्त मेना दी बायमिकीके भीच-थे मंत्रम है सपाद-पु[म] हे बाबाह । मयाहरू-पुनि] जाबाद मास ।

4-m

١,

अधिक या ९ से १ कम, बाठ । -क्सफ-प्र इठमोगर्ने मुकाषारसे मस्तवक्षक माने नवे बाट चक्र । 🗕 🚁 🗕 पुरु त्रका ।—कुछ-पुर पुरालोंमें शताबे गये सर्वोके साठ कुछ ।—कुष्ण-पु वहस-संप्रतावमें माने रागे कुष्पके आठ रूप⊸शीनाथ, नवनीतप्रिय, महरानाथ, विद्वहनाथ शारकामाथ गोकुलमाय, गोकुलस्त्रमा सीर मदनमोदन । —कोण−वि• अठकोना, अठपहरू । –गञ्च−पु० पूजनमें न्यबद्दन आठ सुर्गवित वस्तुओंका समृद्दः गेपादकः।-साप --[विं0] गोसार विद्वसमाधकी हारा स्मापित भार कवियो-का दक, जिनके नाम ने र-परवास, कुमनवास परमा-नंदशास, कुष्णवास, छीत स्थामी, गावित स्थामी अतुर्मे बदास, भैरवास । —तास्र−पु॰ संगोदने भाठ ता**रु ।** —वस्र⊸ वि बाठपहुंचा बाठकीना। यु बाठ दक्षीका कमक। ~ज्ञव्य-पु॰ वक्की सामग्रीके काठ **हरूव-**पीएक, गुरूर पाकर, बरगर, तिक सरसी पावस और इत ।-धासी-वि॰ [वि:] बिसके शाहा-पिताका ठीक पता म हो। वर्ज संकर : −धात्र−सा व्याठ सुक्य पातुरै—सोना चौंदो तांचा, राँगा, वस्ता, सीसा, कोहा और पारा !~नायिका -सी धुर्गाकी वे बाठ सक्तियाँ-**उपरं**श, प्रदश, बंदोबा, बंदगायिका, कतियंदा चामुदा चंना, बंदवती :

—पन्त-पु आठ दक्षीका क्रमल । —पद्य-वि॰ आठ परी बाका । प्र मक्का; कीका; श्राप्ता; सियकिनी; विसात: मोना कैकास । -पद्मी-सी॰ एक छेदा एक प्रकारका गीत यक तरहकी जमेकी वेकेका फुल और पीवा !~पाड —वि आठ पैरॉबाका । त शरम मदका । —प्रकृति— ली॰ राज्यके साठ प्रवास कर्मवारी **∺**श्चमंत्र पंडित संत्री प्रवासः सन्तिवः अमास्य प्राविवासः और प्रतिनिधि बाबवा आठ बंग-राजा, राष्ट्र, बमास्य दुर्ग, वस (सेमा) कोच सार्वत कीर प्रका (का धा)। --प्रधान-पुरु बाठ प्रकारके मधी-प्रवान अभात्य सचिव मंत्री, वर्मा व्यष्ट म्याबद्याली, वैच और नेमापति । - भुजा - भुजी श्री दुनो ।-संबद्ध-पु॰ सिंह दूप हाथी करूश पंता, बैजनता मेरी और दीएक-वे बाठ सनवा-माहान, नाव आधि सोमा थी_। सूपै जरू और राजा (जो मांग्रहिर्फ माने बाते हैं) ।-मृष्टि-खीं एक माप, कुरव !-मृति -प दिल (पूर्णी, जक तेल बास काकाश सर्व पंत शीर करिक्-रन भाठ क्योंबात)। -छोड -सोडक-प॰ दे 'बार्चात् । - चर्ग-पु सुमाश्चय बाननेका स्क ध्याः वर्णमाकारे बाठ वर्गः बायुर्वेदोन्तः बाठ शोपभित्रो का समूद्र-जीवक चपनक, मेदा महामेदा कासीया शारककोडी कवि और कृष्टि। नोविधानानुसार 'राभवदे क्षेत्रमृत्त कवि वस्ती दुर्ग, छेतु, इस्तिवधम ग्राम कर अक्षण तथा सैम्पर्शरवायन । -पर्या-स्त्री आठ वरसन्ध्र

कृत्या । - भवण - भवा(स्)-प्रमा । - मिदि-

ली योगप्रिकिते मिन्ननेवाली बाठ सिकियों या मलाहिक

द्यक्तियाँ-अधिमा यहिमा यहिमा सरिमा, प्राप्ति

अप्रक-पु॰ [मै] आठ वस्तुमेरित समृद्द या थीग आठ

अधियोका एक गया विभागितका एक पुत्रा अधाष्यावी

माश्राम्य विशिष्ट और वशिष्ट ।

(भवा)। सप्रका-सी [सं॰] अध्यो अवस्त, वृत्त, माथ और फागुनको कृष्णास्थी। अद्योको किया जानेवाका वय

वाशका बाष्ट्रम्, अष्टमक्-वि॰ [सं] भारत्।।

अष्टरिका~बी॰ (रं•) चार ठोडेका एक परिमाण। भागमी-सी० सि० सिव या समित प्रक्रको भाउनी तिथि क्षीरकाकीकी ।

छष्टौग~वि [सं•] विसक्ते जाठ जंग वा माथ श्री। प्र• शरीरके वे बाढ शंग विगसे सावांग प्रशास किया आता है-ब्रुटना, दाय, पाँच छात्री, सिर, चपन, दति और नुद्धि । −मार्गे−पु नुद्ध द्वारा व्यदिष्ट तुन्सनिवृत्तिका আৰু ধাৰীৰাজা मार्व-सम्बन्धिः

सम्परवाद् , सरबद्धर्म, सरवगाजीय सम्पन्नशामान, सम्ब-करवृति और सम्बद्धमाभि । **"योग**-त योगके काठ वंग-वम निवम, आसन, प्राणावाम प्रत्वादार, वारणा ध्वास भीर समाधि ।

मधौरायुर्वेद-पु॰ [सं०] कानुर्वेदके माठलगथा विमाग-शस्य, शास्त्रवर, कावविकित्सा, भृतविका कीमारमृत्व, भगततंत्र रसायनतंत्र और वाबोक्स्य ।

भष्टाध्यर-वि [मं•] बाठ अक्षरीवाका । प ॐ गरी नारावणाव' मंत्र ।

अष्टाव्दा−वि० [सं•] अद्वारह ३

अष्टाच्याची-स्रो (रं°) पानिनेश्चत्र व्यादः(व-प्रेथ । बद्याच्याची(विम्)-दि॰ [मे॰] बाठ अध्वावीवासा । अष्टाचऋ-प्र• [सं] एक प्रसिक्त कालि । वि जिसके बाठ

भंग टेड्रे हॉ कुरूप । —रीता—सी॰ अद्यक्त ऋषि रचित तरनेबानका एक प्रमुख ६व ।

अप्रि∽क्षी सि] १६ माभाओंका यक छंत। सोक्कको

पंचनाः बीजः गिरी । अष्टी-सी॰ [सं॰] यह रागिनी ।

महीख्य-प्र• (र्स•) यह रोग विश्वमें मामिने बीचे भीव की भावा है। गुर्नेक्ट एक बीमारी। गिरी। बीमा पत्थरकी गोजी १

अप्रीक्षिका-को [सं] एक सरहका जनः परवर।

बर्सक+-वि वे नशक'।

भर्मका~नी है "मार्चका"।

असेंडफ−वि [र्स•] बड़ों भीव न डी; शुला बुधा चीड़ा । प्र चौदी सदका

भर्ममात-वि॰ (र्च॰) जिसका संकामध न हवा हो। जो एक

धनते दूसरमें ग पना हो । तु॰ अविक मास । असम विसास−५ [र्स•] वर महीना जिसमें संक्रीत म

परे अभिक्र मास, मलमानः। **भर्तत्त्र≉−ि दे '**भर्त्वस्र'।

असंक्य असंत्यक, असंत्यात∽वि [सं•] अगणित, ने दिसाव वेन्समार ।

धारंक्येय−वि [सं] अगणित वैशुमार । तु शिवा विश्वा बहुयं नहीं संस्था ।

अर्सेग−वि [६०] अनासक, वंपनरदित, विक्तिः अवेत्काः भराधित । पुरु भराम के। पुरुष, भारमा (सां०) ।—बारी-

(रिम्)-वि॰ अभिवंतित रूपसं विवरण दूरनेवाना। असँगत-वि॰ [सं॰] के मेरू, असंबद, प्रसंपविण्या सर्वादर, मत्थाः मसमागः प्रवष्ट्र ।

कर्मगति –सा० (सं०) मेरका व दोना, मनीविक अर्छ-लंकारका एक भंद जिसमें कर्स-दारण, देश-दाज-संदे व्यसंगति(कन्यवास्त्र)का वर्षम किया बाय-कर्म करी. ब्रमण बडी दिखाना नाय !

असीयस—प्र• सि] अनासस्टिः मेव वा संस्वार बहारः पार्थक्या असामवस्य । वि अञ्चल, पृत्रकृ । वर्मचय-वि॰ [स॰] संगारधीन जिस्के शस वासक

बस्तुर्वे भीजूद न बीं । प्र संस्था मा संगारका भगार । असंचियक, असंचयी(विम्)-वि [do] संदव प सरने असंचर~प [मं] वह भी गमनायमक्के किए सुना वर्म नवीं है।

कसंच्छक्र⊸वि॰ वि ेे को द्वार स हा, अनस्त । भगेश्च-वि॰ [में] छंदादीन i असीला-भी • [र्थ•] असामंत्ररकः नाम नहीं ।

असंख्यर−वि+ वि] विसे स्रोप, घोषारि न से ! असीत−वि॰ अग्राप्र, राक् । अर्थाति अर्थतान-वि॰ [सं] स्टानरहित, गनस्र । असंत्रष्ट−प [सं•] बसूस व्ययस्य ।

असंतोष-प्र [सं] अतृति ब्रम्सवता, पारामधः नेप्रधः कीस । असत्तोषी(पिन्)-वि॰ [सं] संत्रह व हानेशमा सम्म

छोमी। असंदिग्य-दि [सं•] स्टेब्स्ट्रिश निधित स्वा! असंघि-वि [तं] विनका वीय न दुवादी (तय)। सद्धः स्वतंत्र । ती॰ संविका समाव । असंपत्ति-वि॰ (सं॰) सिर्थना माम्बद्दोन । खो॰ निर्वनाम

वर्मान्दर क्सफकरा । *मसंपक्रे−पु (तं∘) तत्व-*क्यावडा च होना । दिः एसं

शीम संबंधशीन। असंपूर्ण -वि (तं•] अपूर्ण असमारः अपूरा ।

असंप्रकात-वि [सं] सम्पद्म प्रदारत ने बाग इसी -समाधि-जी वह समावि विसमें झांता, देव, इत्वय भद नहीं रह जाता, मिक्सिम समाधि ।

असंबंध-वि [मं०] वे संसंदर्भ । पुर संस्था सदर्भ असंबद्ध-वि॰ (सं॰) संबंबद्दीया व संबा वे कवाया अने कि

भे-तुका । —प्रकाप—प्र ने-तुको स्करान । असंबाध-वि [मं•] संबोर्ण गरी, चीता तुनसमा हुण

तुमाः सामकासः कहरदितः।

अर्थबाधा−की [सं•] एक वर्षपृत्त । अस्मिय-वि [सं] म दान वा दो छस्तेवार । नपुरे

किम । पु क्यांक्कारका एक मर क्यामें का गिया णाय कि जी पात हो गयी वसका होना बाला गर जनस्तिस्यः असंबादनाः असावारण पटमा ।

सर्शमध्य असंमाधी(बिन्)-वि [एं॰] है॰ 'क्रांमा'। नर्समार-पु [सं] नावस्यक वरतुमी वा न्यारिक प्रशी म रहमा । वि जिसके पास मानरवर वन्तर प्राप्त 1225 विष्णेक्क-वि पु॰ [लं॰] विष्णेत करनेवामा कारकर अक्रम कर्जेशकाः विभाग करनेपाका । बिच्छेरम-पु [मं] कारबर जनग करना। मध नरवार **करमाः** भेद करमा । विच्छेबनीय-वि (सं) विच्छेर करने बोग्या काटकर शक्य बरने सावकः निमाग बरने पीग्व । बिच्छेदी(बिन्)-वि [तं] विच्छेत्र करनेवालाः विश्वते विष्टेर या मध्यानकाश हो । विषयेश-वि सि दे विष्येयनीय । विष्मुत-वि [सं] गिरा हुनाः स्थानस्रकः श्रीवित श्रेगसे कारकर निकामा हुजा (आ॰ वे॰); विमष्ट विश्वरितः शसऋषीमृत् । विष्युति को [एं॰] नियोग, पार्थनका पतना किसी भीवका अपने स्थानमें इट बानाः गर्भपात । विद्यक्रमा#-अ कि फिल्ममा स्थानश्रद्ध होना। विद्येद≉ - प्रक्रिक्ते विद्येत । बिछोई॰-वि प्र नियोगी जिलका मियमे विवीग हमा हो । बिक्कोह≠-पु विवीग प्रियसे प्रथम् दोना । विद्धोदी = - वि प विदेशी। विश्रंघ-दि [मं] संबादीनः (गाडी) विसमें परिया न को । विद्यई−विदेविवदी। विकर-दि मिन् लड़े हुए, जिनकी क्वरी म ननी ही (सक्)। विक्रविश्व-विश्वद 'अदित । विज्ञम्—दि [सं] कनगुल्य यकोतः।पुश्मिशेम याण्योतः रशनः साक्षेत्रा अभावः 🗢 दै 'विक्रमा । विजनता-सी॰ [मं] पदांतता जनस्य होता। विज्ञवन-पु [मं] बनन प्रस्व करना । विश्वमाक-पुर्वद्या, गीवन । विज्ञानिस-वि (मं•) बात करपत्रा जम्म किया दुशा । विजनमा(न्मन्)-५ [६] वरपतिका पुत्रः नावित्युन न्यस्तिका युगः एवः वर्षसंबद आठि (धनः) । वि जारमा । विज्ञन्या-दिन्दी (सी विभिन्नी (सी) चित्रापिछ⇔प [मं] पंदावि देश विकास । पित्रपैत−द्र [सं] **१**८३ पिज्रवंतिका⊷सी [सं] यक्क कोशिनी। बिजर्वती-मी [में] यह अप्तरात्र जाती वृद्धी । विजय-सी [सं] जीतका पारिनीविकः सुन्का मानः षदम गुद्र आदिमें दीनेशाणी भीता। पु॰ टिलसा एक विधेष भेगाः यह संबत्सरः वर्षवः शीसरः जानाः वह मैन्य म्पुटा प्रदेश, जिलाह एक तर्दकी बॉस्ट्री एक मानह देवताओंका रथ विमाना क्या वर्षतका पुत्रा पुरूका पुत्रा अर्जुना विष्युद्धा यक वार्षण बलका विश्वना वरिष्टुत्र। मत्तर्गदेश स्पेशाका एक भए (नेप्रप्): 1 जीमका भोकन करना। −कक्−िव रिश्व करने कामा —कुंत्रर—वु सुकक्षणी भानेशमा हाथीः राजाको सवारीका हात्री । -वेतु-यु शत्रुको जीतकर वदरायी वानेशकी व्यवसा यक नियापर र नदर्शनन्त्र

वाँच सौ मोतिबोंका द्वारः ५०४ सविवोंका द्वार। ~हिंदिस~पु॰ अुद्धका एक प्राचीन शामा । **~शीर्घ~पु॰** यक द्यौर्थ (पु•) । −र्वक्र--पु सन्दा निजयौ दोनेदाका मैन्यसम्बद्ध सेनाका वह विभाग विसपर विवय निर्मर हो; निप्रवस्थक इंड । ⊷ध्दामी – को ॰ दै निवस-वस्त्री । -बुंबुश्चि-सी विवयके समय वजाया जाने वाका नगावा। -र्मत्म-पु॰ दश्वाकुवंदी राजा वय। -नगर-पु॰ कर्णायका यह नगर । -पताका-सी बोतके समय फदरायी जानेवाकी अपना। विजय-सूचक विद्याः - पूर्णिमा - सी वित्रवादशमीके वादकी पूर्णिमा कारकी पुणिया । -श्ररवर्धी(धिन्)-वि विजनकी इच्छा रक्तानेवाला । --शनुस-तु है॰ विजय हिटिम^{*}। ─बाश्रा=की विवय बीलकी कामनासे की जानेवाली वाथा । --सक्सी:--सी-न्या दिशवकी मणिप्राणी देनी । -इडिज-पु सदा शीवनेवासा । -सार-पु दमारत भादि नगानेके कामको अक्डीनाका एक नहा नशा ! --सिव्हि-सी॰ एफक्ताः भीत । विश्वयक-वि [मं•] विश्वय प्राप्त करमेमें कुश्रूछ । विजया-ना [सं] हुवाँ। हुवाँधी एक ससी। एक विचा विशे निश्वामित्रमें रामठी सिदालावा बार विश्ववीसम्ब यमकी पतनी। एक योगिमी। पर्नमान अपस्थितीके दिशीय कर्षतकी गाता। दक्षकी एक करवा। क्राणकी भाषा: १५की व्ह होटी व्यवाः एक पीपेकी विपेक्ष सकः राजधीय दीमा। एक तरहका मेंडपा कहमीरका एक प्रश्रहश्रामा श्चमीका एक भेटा बचा। मधीठः अन्तिमंत्रः भौगः एक क्त । - ज्यानुसी-सी॰ आधिन सुद्धा एकापारी; पारपुन-हृष्णा ण्डारधी । - इसमी-सी आधित-शहा दश्चमीकी दीनेपान्य विद्युओं निशेषण स्विक्षीका एक न्धीदार (श्वी दिन प्राचीन काकमै शका भीग प्रदः प्रवद किए सर्गन्य निकलते थे) । -सप्तमी-स्रो प्रदेशरको पहमेनासी किमी माधकी हाहा मतमी। बिजयार्मय−५० [मं] सामका एक भेर (संगीत)। विजयाम्युपाय-पु (ग्रे॰) विजय प्राप्त करनेका सामज । पित्रवार्थी(थिंग)−ि [मं] निवय पाइनेशन्ता । विञ्चवार्य-५ [म] एक वर्गम । विजनी(विम्)-वि [40] विस्ती जीत हुई हो। पु विजेता जीवनेशाला । [स्पी निजविती ।] विजयश-प्र[मे] विजयक्ष अविश्वाना देवता, शिव । विजयोग्यय-प्र• [नंग] विषयादशमीका उरम्बः विषये क्षभ्यवर्गे मनावा जानेवाला सरमद्र १ विज्ञा-वि [मं] बरादीम जो बभी बुदा स दी। सवा, नरीन । पुरुष्टन । विज्ञा-मी [मं•] हदानेवदी यह गरी। विजर्जर-नि [र्व] जीनी सहस्यका । विज्ञल-वि [सं] निजेल, व सहित । द्व अवस्य

विजन्ध-स्रो [सं] एक मागः वातनः दोतने वनी द्वर्षे

विज्ञहर-चु [ग्] अमारशमात्र वदना वदनागः हत्त्वे

मुना ।

एक ल्हाकी शवती ।

शही वाने बहुमा ।

गबी हो। -धर्म-विक जिएक विवास अह वो (विछ)। विमष्टि-मी [सं] साक्ष प्रान्त कोष । बिमप्टोपक्रीवी(विन्)-दि [सं] सूर्व बाकर, अनि बिमस-वि• [सं•] नासिकादीन । 1 E बिनसला =- अ कि नह दोना। बितसाला = - ल कि नह दोशा । प कि नह करना । विमा∽श [सं]न दोनेपर व्यादमें, दनेर। -कृत-नि पृत्रम् दिया द्वमाः परित्यकः। -सवः-साव-प पायस्या पृथ्य दोना । -भास-पु॰ अपने निवसे पृथक् निवास करना । विनाद विमाद-पु [सं] चमवेदी वैसी। विमादि विमादिका, विमादी-की [मं•] वरिकाका सास्त्रीं भाव (१४ सेव.इ)। विनाती * - सी • विनती प्रार्थना । विमाध-वि॰ [धं] बनाब, निराजव, परिश्वक रसक-श्रीन अरखित्। किताबिल-(दे [सं•] शुरुरावमान किया हुना । बिमावी(विन)-वि॰ [मं॰] गरअने, शोर करनेवाका । भिनास-प्र[मे॰] बहुदा। (गैहारे) प्राप्टरका खुक जाना । विसासित्र∽वि [सं] भकाया द्वणा। विनायक-वि [सं] दे जानेवालाः दवानेवालाः । त यमेशः नायकः गरुदः तुक्दश्यः देवीका एक रशानः ग्रदः काक्ष्मं, किला । – केनु ∽पुगरस्यक कृष्ण । ∽यनुर्थी −स्ती मधेश⊸ीभः साम द्वरी चीव । विनायिका-सी [मं] गस्ट वा गणेशकी पत्नी। पिनाच्छा~को [म] (वपर्यका। विनास-वि• [म] बिसमें रंडक म हो। विमादा~प्र[मं] अरिवल संरहमा साधः श्रमः नीपः बिगइ जाना ।-धर्मा(भैन्),-धर्मी(मिन्)-वि• मधर नह होतेवानाः धगर्भग्ररः। -संभव-५ नाशका मुख कारण । —हेस – प्रश्नका कारण । विनाशक-वि [एं॰] नाश करनेवालाः विमादनेवाका । विनासम् −प्र [र्ष] माध करनाः हम करनाः सामाः ■■ अतर । वि भाग्न करनेशना । विनाशयिता(म)-वि दु [मंग] माश करनेवाछ। । विनासीत-१ [4] पाछ । विवासित-वि [मं] नष्ट-ध्वरण विथा हुआ ! विनाशी(शिम्)-दि [पं] भगरा माश करनेका । विवाहारमुख-वि [मं] माहाक्ष ओर प्रकृतः माधी यत्र। यदा हमा । विनाइप-वि [] नष्ट करने बोग्य। विनाय-वि [र्व] मासिकाहीम । • प्र दे विनाध । विमायक विमासिक-वि थि । मामिकारीज । विनामन - पु देश दिना ग्रन । विमासना न्स कि मध बरना, बरवाद करना। बाहार REAL I विवासिका-स्थान [र्थ] एक विवेता धीवा । विनाद-९ [सं] बुर्वेद(५६न) विनिष्-वि [6] हैंगनेवाशाः व जानेवाशाः

मिन्निं − विनिपातकः विजिल्क-वि थि । जिला करनेवालाः यह जानेवाला । विनिंदा-स्वी॰ [सं॰] शिकायत, निंदा । विमितिल-वि० सि । जिल्ली बहुत निदा की गयी हो नांकित । विनि'सरण-पु॰ [सं] बाहर मानेकी फिना । विनि'सत्-वि [सं•] निकला हुना बाहर गया हुमा। वय निक्रमा हुआ, भागा सुन्। विनिय्ससि—स्रो• 📢 ी.पडायम । विभिन्ताल-वि [र्शः) देशः, भकावा हुआः। विनिकपण∼पु[धु] सूरवना, धौणना । विविधार-पु॰ [सं॰] जपराया शति । विविकीर्ण-वि [सं] (ध्वरामा प्रमाः इवर-स्वर पंजा हमा। तीका हमा। वदा हका भरा हमा। विभिन्नांशम-प सि । कारना इसके दक्के करना । अध्ये दृष्टके दृष्टके करनेवाचा । विमिक्क-वि [सं] विसे छति पर्देवायी गर्भा हो क्षित्रके प्रति तुरा व्यवदार हुन। हो। विभिक्तच∽वि शि काद्यप्रमाधीराहमा। विनिकेत-वि मि रेग्डबोम । विनिक्रीचन-प [धं] (घारीक्रे) मंद्रपित करवा। विविश्विष्ठ−दि [सं] पेंटा हुमा। मीचे दशवा हुमा। विनिक्षेप-पु [सं] ऍडमा वडम्पनाः भेवनाः पार्ववयः। विभिगक-वि॰ (सं] दिसकं पैरीमें नेदियों स पड़ी हो। विनितसक−दि स्थिति पक्षीरेंसे दिनी पक्को सिक करमेशाचा । विभिगमना-की [लं] परस्पर विरोधी हो क्टोनिने ण्यामा मुख्य और ममायने निधव करना (वेदो) शिक्षांत । विनिगहित्त−4ि॰ (सं] इका या दियाना हका। विभिगृहिता(ल)-पु [नंग] दक्ते, टिपानेशासा । विभिन्नह्र-प्र [सं] पार्थक्या विमात्रना महिर्थपा संबमा अवरीकः वद्यावरः वाभा व्यामातः पारस्परिक विशेष । विभिन्नाद्य-वि [थुं] रोडमै घोग्य। विनिधृतिष्ठ-वि॰ [मं] गृमता हुमाः सुध्यः अञ्चलः विक्तान्द्रमचा वचा । विभिन्न-दि [में] नष्ट, बरवादा गुणा क्रिया हुआ। विविश्व-प्र [सं] अम्बद्धा एक संबार विसने निक्रिय या मूर्वित्तवी नहीची पूर कोनी है। वि जामन्त्र जागरर निगाश हुन्छ शिला का चीला हुआ। ख्ण्यीक्षित् । विनिद्वता−धौ विनिद्रस्य-५ [सं] प्रशेष, जाग-स्कृता निदासा अमानः जामन् अन्त्रा । विमिध्यस्म-ति [सं] मह वरवाद दिवा बुधा । विनिषसित्र-वि [वे] मीचे विराद्याः। विमियास-बु [सं] पत्रमा घ्लंस विनासः सन्दरा नरका दुर्परनाः कष्टः कृत्या वर्ग करवाः सनाहरः सन्माना क्षमञ्जनता । -- यस-दि दिएक स्वटमान । -- मनी कार-पु संध्यन नयनेधा उदाव । - शंसी(सिन्)--विपश्चिमी पृथना देनेवाना । विमियानक-दि [में] दिमाददार्ग, स्टारकार्ग, अपन

विवस्पित-नि० [सं] कविता मत्त्वह कथा गवाः वे शिर पैरको बनावी हुई (नाठ) । विकास - वि [संव] विकास विकास - पुनिने । विद्यागी -- नि उ निवीमी ! विज्ञात-वि [सं] करक असमा हुआ। दीनका, इराय-आहाः इसरे क्यमें परिचत । इ सबी छंदका एक मेद । विज्ञाता-को [नं॰] बारम, दोनकी करबी। समाग्रना सी। माचा । विकाति-वि [एं॰] विक मारिका धन्त वर्गका। सी धिमन बादि वा वर्ग । विज्ञासीय-वि॰ [सं] इसरी वादिका, किन्व वादि वर्षका । विकासक=दि (र्श•े काननेवाका परिचित्त । विज्ञानसा−को सि•ीचात्रवै। विज्ञाननार - स. कि. निशंद ६वरी बानना । विज्ञाल-प [सं•] कहतेका एक बंग, तकशारके १२ हाथीं में से एक । षिळापयिता(त)-वि॰, त [ti] विवय टिमानेवाका I-विकार!-प पढ दरहको महिना मूमि विसमें वान बीबा जादा है। विशास्त्र-सी [भ] वजीरका एवं वा कार्यः वजीरका धपवरः मंत्रिमंटकः। विजिमील-वि [मं] प्रसिद्धः विस्वातः। विकारिय-दि॰ [सं॰] दिवम भाइनेवाका । विजितीपा – क्षे [सं॰] दिवक्के कामना। विक्रियोप-नि सिं•ो निवयका वध्यक । प्र योगा | श्राप्तासकः विरोध ऋरनेवाका व्यक्तिः प्रतिकती । किक्रियरम−दि [मं] क्रिये युक्त न क्यारी दो। विजियांस-दि [मं] मारने था मह करनेकी श्या रधनेवाका । विजिज्ञासा - सी [एं॰] बावतेची रच्छा। सन्देवय । बिज्ञास-दि [रं॰] सीसने वा जाननेको रच्छा रखने वासा । पित्रिर-की [थं] मेंर, मुलाकाश देखन मिन्यदेक तिद बाबा, भाना । विक्रिटर-८ [अं] भागेतक, देखने वा विक्रमें देखन आनेव भा बिशिरमें पुरु-की [मं] वर पुरुष था होरबी, विवाहकी जारि सार्वमित्र रवानीमें अलेखबोडे विवाद. राय नियानेके निष रती रहती है। पितिर्दिग कार-५॰ [मं] छोरा-सा कार्ड क्रियुपर किमी-का नाम और पना दर्ज रहता है और जिस किमीसे मिलमा बीवा दे जमके वाल वह वस व्यक्तिक मानेकी सबना देते है किए भेव दिवा जाता है। किश्चित−दि सि] जोता ⊈भा विसपर विषय ⊈र्द हो। विमने दर्शभावः प्र भीता बुना देश मुसंदर्श बद ग्रह जो दमरे ग्रहमें तुद्दमें स्थूनवन हो (स्थो)। रिजय । -क्य-दि पराक्तिके रूपमें शानेवासा । विजित्तवान् (बन्) - वि [र्स+] विज्यो ।

विजिला(त)-प [सं॰] पृषक् या दिमावन करमेराला। भेद करनेवालाः निर्णावकः वद वी दर गवा हो। विविद्यारमा(सम्)-पु [सं] विषः। विभिन्तासिष-पु [मं॰] वह म्बक्ति विसने पत्रनीसे क्राभूत कर दिया हो। विकितारि-पु [सं] एक राधस ! नि निसने प्रपुर्गमी परामृत कर दिवा हो। विकितास-पु [सं•] राजा प्रमुखा एक पुत्र । विवितासु-पु॰ [सं॰] एक मुनि । विजिति-सी [सं] विजवा सम्जा विकिश्वी(तिम्)-वि• [सं] विक्रमी ! विकित हिय-वि [एं॰] विसने करनी रंडिबॉको वसरे कर लिया है। विजिलेय-नि [एं॰] विस्तर तियंत्रण या निक्त प्राप्त बरमी हो। विज्ञित्वर-नि॰ (ई॰) विज्ञवी । विजिल्बरा-सी [सं०] यह देवी ! विकिन, विकिक-वि [सं+] (क्पर्धा जारि) विसर्वे निषक्ष रस न हो । तु नक तरहाक्री कपनी । विकिष्णिक-नि [सं] वे 'निकिक'। विजिहीयाँ-नी॰ [सं] वृपने ना मगो(वनको इच्छा। विजिहीर्य-नि॰ [र्स॰] यूगमे वा मनोविजीरको हम्हा रक्षतेगाका । विक्रिया-वि [सं] देश हुका हुका हुका विरक्षा नेर्रमान ! विजिल्ल-नि [र्गण] विहारदित विसके बाम व हो। यिजीवित-रि [र्श•] बृत, वेशन। विजीप-वि [सं•] ववका श्चाहकः बित-अ [र्थ] क्योंके क्योरका वह नाग करीते देने निवस्ते हैं। विजय-प (र्थण) शतमसीदा पृथ वा बंद । विज्ञानी-की (एं०) एक देवी। दिवस दिवसी। विश्वंस-त [सं] सिन्दोहता (मी)। बेंगती । विश्वमक-१ [सं] एक रिमानर। विर्मुसय-९ [मं॰] वैमार्र हेमा। सुमना। श्लिमा। मध्त होता। कामकीहा। कैतानाः स्वानाः धन्त भगमाः सिद्धीयमा (वं)। विश्वेषा-की डिडियार्टर विश्वमिका-थी॰ सि] विश्वरि: शेष्ट । विक्रमिस-वि [मं] जुमानुका सिना दुशा गैरा हुआ। सीवा या सुकावा दुधा (चतुष्)। ह्योहित (हाम-नदा) ! प्र अवर्गमा थेटा आचारा परिधामा विवाद ! विश्व भी(मिम्)-नि॰ (र्न॰) सिदक्षमे वा प्रध्य होनेः ALACE I विश्वेतस्य∽नि सि ो भीटने कोस्य । विज्ञेता(तु)-इ [शं•] अब बाह्य श्रूरमेशालाः वह नित-ने बन प्राप्त की हो। विजेय-नि मि] पराधित दरने भीत्व । विजेब-मी बीट निजवा -सार-साम-५० ६६ 48 t मिक्रोस०~प विशेग ।

```
विविपासम-विनिवेशन
     मान बरनेवाला ।
    विनियासन~प सि ी गर्मपात करनेवाला ! े
    विभियातित-वि सिंगी गिरावा हवाः नष्ट किया हजाः
     मारा हवा १
   विनिपाती(तिम् )-वि [र्स॰] नह इस्मैवाका (
   विनिर्वध-पु॰ [सं॰] किसी वरहासे संबंग का कमान दीमा
     (ft ) i
   विभिम्मा-वि [सं•] इवा हुवा।
   विनिसय-प्र [सं•] करक वरक, प्रतिराना वंगदः वर्ण
    परिवर्तमा एक देखकी मुहत्का दुखरेकी मुद्रामें परिवर्तम ।
   विविधिय-दि [तृ ] किल्डा कोई वारतदिक कारक
    न श्री। जी किसी कारणने म श्रमा श्री।
   विविमीकन -पु॰ (सं॰) यह दोना, ग्रेंदवा (श्रींख फड
    ब्यारिका) ह
  किमिमीसित-नि [र्स•] यो श्रंद दी गया द्या सेंदा
   gar; !
  विकिशीकितेशण-विश् [सं ] विसने वाँसे कर कर की
   हीं का विसन्धी भीतें नंद हो गयी हों। ~
  किनिमेच विभिमेपण-प्र• [सं ] क्यांदेश गिरनाः वस्त
   समाजा र
 मिकिसत-वि [eं•] विशेषिका संबत । —चेता( तस )-
  Q+ क्रिस्सा मन निर्वत्रणमें सी I
 वितियताहार∽ि [में ] निम्हा भारत संबद हां,
  क्रिमाहारी अधिक बानेशे परहेब करबेवाला ।
 विक्रियस-५ मि॰] रोकः संबमः तिबंबणः द्यानमः ।
 किमिनस्य-वि सिंगी रीख-बान करमें योग्या संयत
  तिबंधित बरमें बीम्ब ।
 वितियकः-दि [चं ] कामने कगावा हुवा नियोक्तिः
  अस्ति। आदिहा मेरिया कार्यसे सक किया हुना ।
 विभिवस्थासा(भाग )-वि॰ (सं॰) दिसने मिनी विवव-
  ध्र अपना यन बमा रखा हो।
विविधीकान्य-वि [तं ] नियुक्त करने बीम्बर बार्विड
  करमे योग्य ।
विभिन्नोक्त(नम्)-वि , दु॰ [धे ] नितुक करनेनाका।
विशियोग-इ [सं ] विकाग वैद्यारा। निसुचित कार्य
 भारा प्रयोग संबंध !
विभियोजित-दि [मं ] नितुत्त क्याना हुआः अदिनाः
 प्रदित्त ।
वितिबोज्य-वि॰ [भे ] काममें सगामा जानेवालाः
 धरीवर्धे कावा जानेवाना ।
बिनिरोध-दि मि । अप्रधादिया निष्मव ।
विनिरोधी(धिम्)-दि [तं ] रोध्मे नाना शक्येनामा।
विभिन्न - विक मिक् बाहर निकला दुला। मुक्ता व्यवीवन
पिबिर्गति-की मि ने नाहर निकल्मा ।
विमिर्गम-त [र्ना ] बादर दीमा। प्रश्वामा क्रैल सामा ।
विनिर्धीय-इ [मं ] क्व श्वर ।
विनिष्टेन-वि [सं•] रिश्वक त्रवसान, बनयुन्य I
विभिन्नेय-सी [तं] इगे शिवन।
विविजित-वि [ र्व ] वर्षतः वराभूतः ।
क्रिकिक्य - पर्वासी क्रिकिश नियमा पूर्व निश्च ।
```

```
विभिर्णीत-विक [सेक] विभिन्नः विस्तर स्वर स्वर विर्देष
     किया गवा हो।
    विनिर्देग्ध-वि॰ सि ] पूर्वतः बसावा वा वट रिस
     ाषा ।
    विनिर्देहम−पु[सं]पूर्णतः वकादेनावानस्यर
     हैसा ।
   विनिर्विष्ट-नि॰ [र्स॰] विस्का निरेश क्या यस है।
    सीपा दुमा ।
   विनिर्वेदय-वि [सं•] विसन्ता निरेष, वर्ण्य क्रिया
    काव ।
   बिनिर्श्वस-वि॰ [मैं ] बॅनावा, शुरूप किमा हुमा परा
    Red 1
   विनिर्धत-नि [सं+] फ्रेंबा इमार बरावा हथा।
   विनिधंब-व सिंशी सरवरमाथ।
  विनिर्वोह्र-प [सं ] तन्त्रारका रह हात ।
  विमिमिश्च-वि [सं ] बारा प्रधाः क्षिता प्रभा ।
  विनिर्भोग-५ [सं ] वह क्सा
  विनिर्मात-वि+ [सं+] अस्वविद्य स्वराप्त, जिल्हों बरा
   भी सकता हो।
  बिनिर्माण-इ (सं } अच्छी तरह श्माना ।
  विनिर्माता(त)-व [बंदेशमानेशमा
  विमिसित-वि [40] --से बमा हुआ। रचिना मनावा
   इवा (बलाव): निर्वारित विभिन्।
 यिनिर्मिति − ना सिं∘े निर्माण रचना।
 बिनिर्मेक-६ सिंश्रोडीहा हमा रंगनरहिता निरुता
  gwi I
 बिनिमंत्रि-सी॰ सि॰) प्राव्हाराः मस्ति।
 विभिन्न ब-दि र्शिशे वा इतरहि स ही ।- प्रतिल-दिश
  बदने वपबद्धा क्लब दरनेशना !
 विनिर्मोद-वि [सं•] बायरण रहिता पथारीत ।
 विनियाण-५० (स ] प्रस्वान ।
 विनिर्वात-रि (एं॰) प्ररियम, स्था प्रभा ।
 विनिर्वेश-वि (र्व०) पूर्व क्रिया हुआ, संबंध निवना
 हमा, सरपञ्च ।
 विनिवर्तक-वि+ [र्ग ] पश्रदनेपामाः १४ ४१नेपामा ।
विधिवर्तम-९ [सं०] बीस्ताः धेन होतः।
किनिवर्ति-मी वि दिशाम निश्चि।
विविवर्तिस-वि [मंद] तीराया दुना। रचरा दुना।
बिनिवर्ता(र्तिन)-वि [मं ] शीरमे वन्दरेताना ।
विविधारण-५ [र्न०] रीच निर्यत्रया दूर रधमा ।
विनिविश्व-वि [मं ] बमा दुआ। रहा दुआ। मिल ह
विनिश्चत्त-दि [मं ] भीरा दुभा। दरा दुमा। नवामा
 सका तुम । -काम-वि किल्की रच्छात्रीका भी की
 बवा हो । - बाच-वि चारके ममावरे सका
विविश्वचि-मी [मं] दिराम मंत्र सुरकारा ।
विमिचेदन-१० मिन् वीदिन बरमा।
विनिवेदित-वि [तं ] वीचित समावा द्वमा ।
विनिवेश-प्र• [र्ग ] प्रदेश भारत शेवा धारा
 वरनदारिमें क्षेत्रा बरमा ।
विजिवसम्बन्ध (में) निर्वास व्यवस्था ग्राप बन्दा
```

विज्ञोति - वि , पु विजेती । विज्ञोती - पु विजेता तीत् । वि कमजोत, सर्वेत । विज्ञोद्वा - पु विज्ञोदा स्व कृषा । विज्ञ-पु [सं] प्रसी । पत्र ।

विक्रस्य - (वं] किसकादश्याला, पिष्टल । पु॰ यक तर्दका बावा सारमलोहरा यक तर्दकी पावककी लगती । विक्रस - पु॰ [नं॰] दे॰ 'विक्रिक' । विक्रस - पु॰ [नं॰] दे॰ 'विक्रिक' ।

विक्तां। विक्तक्ष-पु[सं] बारणीनीका छिल्का। त्वता ।

विम्हिक्त-चो [सं] पर कता, शतका, पदावी! विकोदा-पु दें॰ विजेदा । विक्व-वि [सं] वानकार; समस्यार विकान्। पु

विञ्च-(द [सं] भागकारः समझ्यार विज्ञान्। यु मतुर मतुन्यः सुनि । -बुद्धि-को सदानासी । -राज्ञ-तु कविरात परिवरात्रः।

विज्ञता-नो॰, विज्ञाय-पु [सं] बालकारी। इकि मचा।

विज्ञस-वि॰ [सं] स्थित बनावा हुआ । विज्ञसि-को [स॰] स्थित क्रतेकी फ्रिया। वरतवार विद्यापनः निवेदन प्रार्थना ।

ৰিজ্ঞিত—কী॰ [년॰] দিন্তন সাধনা। বিজ্ঞান—ৰি [নি] ৰাদা ভ্ৰমতা ভূমাঃ সভিত্ৰ।

। यहात्राम्य (म.) चाना छन्छः उत्तर नाजकः --वार्षे-विक क्षित्रके यह वा छन्छिका कोगीको बान वी १ -- स्पाद्धी-जनी बात वा सावारण व्यस्ते छैनार किया हमा पात्र । विकासका-कि (सं क्षित्रको सम्बादे कोल्स ।

विज्ञातस्य - (१० (६) वालने समझने बोम्ब । विज्ञातस्य - (१०) - (१०) वालने, समझनेवाला । विज्ञातस्य - (१०) - (१०) वो बस्तुरिबिटी सकी जीटि परिविद्य हो । विज्ञादि - की (१०) व्यास्त सामा जानकारीः एक वेष-वीति एक सम्प ।

विद्यान-तु [+] द्वान समझ महा विवेद, निव्यान सिका वृद्धिः स्थान कार्यकुरत्यकाः व्यानस्थान्य वान सरसारं-मीता कौरती स्थानीकां सान विद्यानि स्थानकां समस्य कौर क्यारित राजा को क्यारमः मास्र मारिका सान । -क्यार-तु यह तार्गिक कृत्याने । -क्यार-तु निद्युक्त सान । -पति-तु श्रेष्ठ सानो । -यान-तु स्थान । -मान्द-तु द्विर । -क्यार-तु वोगायास्य स्थान । -मान्द-तु द्विर । -क्यार-तु वोगायास्य स्थान । निममें केशन सामको स्थानां जातो है सन्तर्भ महोर । -यानी(दिन्न)-ति विद्यानकारका निवान मानियानां भाविक विद्यानका चत्रानी ।

विज्ञानसय-६ [मं] मणपुष्तः -कास-कोप-पु

विज्ञानिक-वि [सं] कि मानकार। विज्ञानिक-वि [सं] किसी विषयका दास वा पूर्ण विज्ञानिका-की [सं] किसी विषयका दास वा पूर्ण

विभागी(निम्)-वि+ [व] किमी विश्वक ब्रह्म बासा विश्वी विद्यालये निकात वैद्यानिक आस्त्राद्य भारमाने स्वरूपका तत्त्व बानमेनाला । विकानीय—वि० [सं] विद्यान-संबंधी ।

विद्यापक-वि पु॰ [ग्रं॰] समझाने, वतलानेवाला, १६त-वार करनेवाला ।

वार करणाराना । विकासमान्यु [सं] समझानाः स्थानः देनाः दरतदारः निवेदनः प्रार्थनाः । न्यमन्यु विकासनस्य अवसरः। --पुरितकान्त्री वह कितानं विसमें विकेश मस्तुनौंका परिचन दिवा दहता है पूचीनाः।

विज्ञापमा-जी [सं] विश्वति बरना सतनामा वत-नानाः निवदम । विज्ञापनीय-वि• [सं] विद्यापनके बोग्यः (स्टास्त्रोये

विज्ञापनाय=गण्य (स्तु) विवासकः वाग्यः (स्तुत्यः)यः जाने योग्यः। विज्ञापित=वि [सं∘] विवास वतवासा द्वासाः सुधितः

प्रकार किया हुआ। विज्ञापी(पिन्)-वि [सं] ध्यमा देने बतनामे विज्ञापी(पिन्)

वरणानवासः। विकासि∼सी [सं]दे विद्यप्ति।

रुपराहरका (छ) ६ राजाता विद्याप्य−६० (छ०) वत्रकाने स्वित करने योग्य। छ आर्थना, शिक्षमः । विद्यिप्यु∼िर (र्मण) स्वमा देने वा मिनदन करनंकी

र्षणा करनेवाका । विजेश-विक (सं) बरनने समझने सोरावे बोस्व ।

[बन्ध-[ब] बानन समझन साराब बान्स्] [बझ्य-वि• [सं•] गुनरहित (चनुष्)। [बिज्यर-वि- सिं] ज्वररहिता विग्नारहिता संदेहहीनः

धोव वतधारीन। प्रमुक्त सञ्चयाः विस्तरहरू-वि [सं] वेगलः अप्रियाः

विदर्शक विटेकक-निर्दर्शन द्वारा, रुविर । पु सबसे कैमा सिरा रचान' क्वूबरका दरना वा छवरी पहिलोका विवास वही कक्षी ।

विटंकिस-वि॰ [मं] सुद्रांकित ।

विद्— [मं] कामुक कामी। देखारोशी, वेदचा रहते बाजा वेरिका चृर्व। विद्नुस्कके केरीका एक मारकीय यात्र नायकका स्टारा नायकका एक भरा एक स्टारत एक सेरा नार्रीया भूता स्टीयन समझ एक प्रतिव हम्या कीएम्या रहती मारका । — कोता नार्यो स्टी । न्यू — दे कामी ! — परक् न्यु मृत्येन्नी ! — सियन्तुक सेरापा ! — स्त्रून — यु एक मारा । — साहित्व— यु व यक प्रतिव हम्य गीनासादी ! — सद्यान— यु सीयर समझ । — वहसान की पारकीय होने स्टीयन — यु सीयर समझ ।

विरक-पु [गं] एक प्राचीन वानिः वर्मेन दर्शसन एक प्रदेश (पु) कांगाः

विद्रका-मी [मन] विशेष करवर मिलनका कमरा। विद्यप-तु [मं] पेर या स्वाकी सभी द्यामा, केपका साथी एननार पेरा पेश कारियर-पा, पेलाव, विशेषी वरानेवाला केपकोद्यक बीच या मीनकी रखा।

बिटपक-तु [सं] पृष्ठा पूर्व । बिटपी(पिन्न)-वि [सं] शाखाओं सामा । तु पृष्ठा

शारी बरवृष्ट । -(पि)स्तरा-तु ४१८ । विद्यादिका-की [र्तक] यद तरहका मोत्रा रिगेदे वर वरद सिमनेदा कमरा ।

प्रदेश स्थिति। **≝**धाः निर्मित्त । बितिबेसी(शिन)-दि॰ [सं] प्रवेश करनेवाकाः रहमे, वसनेवाकाः स्विधितः । वितिश्रस-वि+ [सं] लक्ष्यित, वह, रिशर । बिनिश्वसिस-प• (सं•] प्रश्रास । बिसिन्धास-प॰ सि ी गईरी साँस क्याँस I विनिपृत्वित-दि [सं] पूर्वत नट किया हुआ। विनिष्यंप-वि सि विन्यंपित विन्रा विनिष्टस-वि• [सं] सूद मूमा हुआ। बिनिष्पतित-वि [सं] झपरा हुआ । पिनिष्यात-प्र सि] इत्याना द्वा पहला । विशिष्याच~दि [सं०] विसे परा करना हो। विभिष्येय-व [सं•] पीसमा रगरनाः सकना। विभिरस्त – वि [स] (केस्टित वर्णितः) विशिष्टल-वि सि विभावत बोट खावा तुमा। विनदा मारा बुमाः पूर्णतः परामृतः लुप्तः वक्तवितः पौक्तिः पु देविक वापः मारी विचितः कुमले 🗵। विनिश्चित-दिश् सि देशा इमा बमाना इनाः एक्स किया इशा। -इष्टि-वि जिसको दृष्टि किसी बीजपर क्यो हो। -मना(बस्)-वि वो विसी वातवर द्रका हो ।

विविद्यत-वि॰ [मुं॰] छिपा हुभा। अस्वीकार किया हुभा। दिबील-दि मि] दराबा हमा से गवा हमाः एकावा इनाः शिक्तः नय वित्रकीः बानकारः क्रान रखनेवाका बिनेदिया संदर्भ स्वच्छ (बक्त) । पु॰ सिप्पाचावा हुआ बीका इक्स स्थापारी। प्रकारतका यक प्रका दमनक। - चेप- प्रसारी पेश्वाकः।

विनीतक-प्र• [सं] श्वारी, शिविका आदिः वादक । विनीतता-मी , विनीतस्य-पु॰ (सं॰) यसना शिष्टता WEST 1

पिनीति-सी [सं] शिक्षाः क्षित्र व्यवहारः नवताः भारर सम्मान ।

विश्राय-पुनि किन्द्र, तक्छन। याद अपराथ । विमीलक-पुर्भि दिश्व प्रम का नीता हो गया हो

1 (1) विमण्यभ दिना।

विमृत्ति-मी [मं] पूर करमा, दशमा; यह पदाह पूरव । **विनुद्ध−वि** [र्थ] भगावा इरावा दशाः नाहतः १

बिन्द्रा - वि अनुहा, अपीय।

बिमेसा(म)-पु [मं] मायक, रहमुमा गुरा ग्रासका विनेष-(६ [मं] नैतम्ब भो ते वाबा वा दशया ताबः भी निर्दित किया कावा का शासित किया जावा 💶 शिष् ।

विनासि:-भी [सं०] एक साम्बानंदार वहाँ दिसी एक बरपुरे रिना बपर बरपुका छीतित होना वा छीतित म दोना दिगावा बाद ।

विनाद-पु [मं•] दूर करमा क्रानाः मनीत्रमा बदेशाः की पूरणा प्रस्त इच्छा। आहितनविशेषा यक प्रशास्ता

प्राप्तारः प्रमोद । ~श्सिष-वि० होराप्तीय । विनिवेद्यात-वि [र्थ] प्रविद्यः दिवा, अवरा हुन्या वसा विनोदन-पु [र्थ] व्याना, वर करमाः श्रीवा करनाः भन काळाना ।

विमोदित-वि॰ सिं॰ों दर किया इसा। इस प्रसन्त । वियोदी(विय)-विश् (संश) वर करनेवाणा बीत्रको, क्रीहालीकः मौत्री ।

विक-नि सि ी प्राप्तः कव्यः नियारितः रक्षा हुनाः विसन्ता व्यस्तित्व हो। चातः जाना हुनाः विशाहित ।

विश्वक-प•िसी कगरस्य । विका−न्दी मिं∘ी विवादितासी ।

विस्पय-पुसि | रिश्वि । विन्यसम्-पु [र्ध•] रश्वना, शक्ता।

विम्पस्त-वि [र्स•] रहा हुआ; अमावा, जड़ा हुआ। बाका हुजा: प्रदृष्ठ किया हुजा; ध्यवरिधत; अपित: जमा किया दशा।

बिम्याक-प॰ (स॰) छरित्रम ।

विन्यास-पु (र्स॰) रक्षनः श्वापनः वषनाः बारण करनाः शुन्दं करनाः व्यवस्थित करमाः श्रेगीको स्थितिः

फैलानाः प्रदर्शनः बाबारः संप्रद्वः समृद्रः । विषंचनकः विषंचिक-प सि॰ो शरिभद्रस्य ।

विर्णेशका, विर्णेशी-सी॰ [सं] एक तरहरी, योगा ह्योदा, देशि ।

विप-दि सिंशे दिहात ।

विषविद्यम्-वि॰ (वि॰) भूव परः हमाः विकासके प्राप्त । विपक्त-वि [सं] अच्छी तरह पहा हुना। पूर्व सहरयानी प्राप्तः पद्मावा प्रभाः क्या ।

विषय:-9 [सं+] विरोधी पद्मा ग्रष्ट विरोगीः प्रतिवादीः क्सि बावक विरोधमें कुछ बहना। किसी ,नियमके विश्व वारक निवय अपवाद (क्या); बढ पप्त बिसमें साध्यका भगाव हो (न्या)। निष्यवनाः वह दिन बन परा नदने । कि प्रतिरुक्त, बसदाः प्रस्पान-रहित निष्पश्च निमा पंकाशः - भाव-पुर - हृत्ति-न्ती॰ श्रष्टुशाब्द्री रिवति । - हमानी-की यह लो जिल्ह्यो

इमरीक साथ प्रतिदंदिता चल रही हो। विपक्षी(क्रिक)-दि [थं] दिस्य बग्रका दिला पंत्रका ।

प्रदाप्त व विपण-पु [तं] विष्या होश व्यापार। वाजारा शिष !

विपलम-पु॰ (री॰) विकव ध्वापार । विपन्नि विगनी-की [मं•] शाटा दुवाना विद्योधा

मानः ध्वापारः विद्यो । विषयी(विन्)-पु [मं] स्थानारी दुवानदार ।

विपताक-दि [मे] व्यवदीय । बिपतित-दि [ते] बदा हुनाः विरा दुभा । -स्रामा

(मन्)-दि विश्वके बाल निर् गर्ने ही। बियम्-'निवर् का समामगण क्या -कर-नि बारवंब करनेवामा । -काम-पु शंबद्धे रिम दुरिम । -- इन्द्र-दि संबद्ध समिवासा । -- सागर-पु वर्ष

वश गंदर । विपत्ति−सी [सं] संबद्ध कावना वृग्दुः नाद्रः यानना ।

-कर-वि शंबर क्षपत्र करनेवाचा । -कास-पु∗

विटामय~पु+ [सं+] विटक्षे रहमेका सकास ! बिटि-को [सं] पेट पेरम । -क्टीरव-प्र• ; यथ्य-सिकांतकी मुदीके रचनिया वरदराज । विद्य-सी (सं•) है 'बिटि'।

विद्(स्)-प्र [सं] प्रवेशः बैदयः, वशिवाः प्रशुप्तः। सी बन्दा। प्रजा जाति। परिवार । -कुश-प्र पेश्वका मर, परिवार । —यव्य-पु: क्यानारिक वरतुर ।—पश्चि-पु नरेषः वैद्योका मुख्याः वामाषाः प्रवान व्यापारी । बिट्(प)-मी [सं] मत्र विद्या प्रसार कृत्या। च्कारिका →सी एक पश्ची (चक्कारी च कॉतमें पत्रमे-वाका कृति ।--धादिर−मुण्या तरबका वदवदार और । -चर-पु पाकत् स्वरः। -द्यक्र-पु॰ यक्ष तरहका स्टरप्र**तः -संग−९० ६२३ । -सारिकः -सारी**-भी पक्ष शरदकी मैला।

विश्व - पु (सं०) विश्वा विद्यास-पु [मं] यक वैक्ता थी निष्णुकै अवतार शामे बाते हैं (बहा बाता है कि पंदरपरके पंदरीक जागड़ हाद्मागर्ने रिप्तृका नर्त हुछ थेड भा गया थाः उत्तरी स्कि वहाँ स्वापित ये और विश्वादे प्रतीकके क्यमें पूर्वा कातो है)। →कत्रच ∼प एक मसिन, करण।

बिर्द्र**क−ि** [म•] तीय क्मीमा धराव । बिटर-(नं॰ (सं॰) बाग्यो । पु बृहरपति । पिठल−५ [मं] दे॰ 'बिट्रक ।

पिछीबा-त **दे** निष्टक⁹ । बिहार-प [Ho] वादनिहान नामक पीवा की कृति-नाशक

होता है। विकास कुछल । विद्यंप-पु [मं•] मदला निशालाः देव समञ्जात दत हेनाः दिख करमाः हुदानाः देशसामी । वि. अतुकरम

धीन । बिद्धंबद्ध-वि [मं] प्री-पूरी मध्य करनेमामा सकत

बनारकर विदानेशका । बिटंबन-५ विटंबमा-सी [मे] बदक बतारमाः भिश्वासम् द्वेदगामी करनाः यह देशाः निश्व बरणाः निराद्य करनाः छत्नमाः वरशतका विवय । विश्वनाय-दि॰ (स॰) अनुदर्श सदस दरवे बीस्ता

क्षश्राध्य । क्रिक्टिक्स-पि [र्थ] क्रिक्सी मध्य प्रकारी मनी हो। विक्रम क्षिमा हुआ। भी परेग्राल निका बना चीर मीचर दीना बीमा सावा हुना निराध ।

विषयी(यिन्)-वि पु [मं] विश्वमा वर्त्तेशका । बिर्द्रहरा-पु [मं+] श्रमा या तपहासका विषय ।

विष्य-पु [बं॰] काका समग्रह बीजदा समग्रा प्रवत्ना प्रसामिश्या - नीय-पु निक्यनम् । – समय-पु• वृद्ध

क्षरण को इंबाई काम भारत है, काका नमक । पित्रसा≠-व कि कान्त्रा वरना मानवा तितर निनद दीया ।

विद्वरामा *- स कि भीशामाः मगामाः तिपर-विपर करतार एक करमा ह विदासक-पु [ले॰] दिलाप ।

विश्वारमा •- स कि के विकास ।

विडाक-पु॰ (री॰) है 'विडाक' (मसाम की)। विद्यासक-पु [सं०] वे 'विद्यासक'। विश्वासाक्ष-वि [धुं+] है 'विश्वासाक्ष'। विश्वाक्षाक्षी-शो (सं] एक राज्यसी। विकासी –स्त्री [र्थ] विस्त्रीः विदारीनंद । विक्रीम-पुरु [संर] विदिवोंके उपमेका एक प्रकार । थिडीलक−पु[मं] शहरा अक्रय त्रप्ताः। विद्वक-प्रसिधं] एक सरक्कारेंस । विद्वरज−पु॰ [र्ध॰] एक रस्त्र, वैदूर्व मधि । विद्याम विद्याम (चम्)-५ [मं] (ह)

विश्व- विष् का समासवत रूप । --गंध-पु॰ विद्वनव । -मद् -क्य-तु मत्रदीष । -मात-पु॰ मप्र-पुरम पक्ता। −व −सव-पु विद्यासे बलक द्वारा वि मक्ने उत्पन्न । – अंग – भिद्य – भेद-प्राधन कार पेर पक्रना। -भुक्(स्)-सोझी(जिन्)-सि॰ सक कानेवाका। g शुवरिका। -भेदी(दिन्)-५० दस्तावर दवा !-सम्बन-मु स्टॅबर शहर !-दराइ-प्रमान्य स्कूर । -विधात-प्रपक्ष मृत्र रोग । विद्व−७ [सं]श्रीस श्कार विष्टंबस-५ वे विद्वया

विशंद-प्रसि] एक तरहका ताला प्राची। बिर्तहा-स्वी [सं०] अपने पद्मश्री स्थापनाः निर्देश वकोकः हृत्यनः यकः छाकः कपूरः दिलाक्षयः कवेरीः करणः । –बाद-प्र+ निर्मय वसीलकः सदारा दनाः । विश्वति 🗝 🗝 निमा शारका नामा । निः निमा शारका । पितं<u>त−९</u> [सं] अच्छा दौदा । स्मं दिवशा । विश्लंबी—सीश् सि] यह मीचा जिसके दारीमा हमर विसंस – ९० (मं॰) पश्चिमी वा छाटे पराजीको पँचानेका

काक या धर्म्ह गौननेका शानना विषया ।

विश्व-- वि कुद्रका बालकार बंचा। ह धन, वैनदा HI TER I किन्नानी-सी विशेधीय वरनी।

विश्वत-वि (मे॰) विरत्त भीना राजा दुवा रहेंच हुआ (चतुन्ता ग्रुप)। शुक्रावा हुआ (धुनुष्)। दहा हुआ। मरा हुआ। प्रस्तुत किया हुआ। हु की प्रकार नार्वाले बाधः शेक आहिका शब्द । -शब्दा (श्वन्) वि क्रिल्मे पनुष्धे वृद्ध सीवा हो। -बप्त(स्)* वि अने-चीरे शरीरवाला ।

विश्वताच्या - नि [र्च-] क्लिमे बल्बी संबाधे की ही (विस्तानात-अ कि अधेर दोया।

विवतायुध-वि [र्थ] है 'विवयसमा । विश्वति-न्यो (स॰) विस्तार, र्यत्राया वाविश्वस्था परि माना समुद्रा श्रष्ट ।

पित्रतीग्सव-विक [संक] जिमने वासन्तर सामीहर किया हो ।

विश्वच-वि [सं०] मिध्या व्यर्थ, निर्द्यक् । द्र मारहाम गृहरेशवाओंका रह क्ये । -मयम-वि जिनके जन्मे निर्वस हो । -ग्रयोह-वि जिल्हा काचार विकित्र थी। -वाशी(दिय)-नि विम्ता स्थम दरनेशमा।

मान करनेवाका ! षितिपातम-पु [सं] नर्मपात करनेनाका ! विमिपातित-विक [र्संक] गिराका हुआ। सक्र किना हुआ। मारा हुआ । विनिपाती(तिम्)-वि० [वि०] मध बरनेवाछा । विनिक्य-प्र• [सं] किसी वरपूर संवेष वा अगाव दोना (¶+) ! विनिमश-विश् [तं] सूनः श्रमा । विनिसय-त॰ [ई॰] अदश वदल, प्रतिदाना वेवका वर्षे परिवर्तमा वक रेक्सी सुहत्का दूवरेकी सुहत्में परिवर्णम । विनिमिश्च-वि॰ [ले॰] विशवा कोई वास्तविक कारण म हो। जी किसी कारपंते य हुना ही। विविमीक्तन-पु [र्स॰] चंद दीना, श्रुंदना (भाँस कुन आदिका) । विनिमीमिल-दि [तं•] को पंद दी तथा दी। सेंदा हुवा । विशिव्यक्तिस्थान-विश् धिश विश्ववि व्यक्ति पर का ही वा जिसकी जीकें गेर को नवी की। क्रिमिय, विभिमेपण-पु॰ (सं॰) दनदीका गिरना। पक्रक सारका ! क्रिबियत-वि॰ [सं॰] नियंत्रिक संगत । -चेता(तस)-दि॰ क्रिसदा मन निर्वत्रपर्ये हो। विनियताहार-(दे॰ [मं॰] जिमका भारार संबत हो मिनाहारी, अभिन्न सामेशे परहेज करमेशका । विनियस-१ [तं] रोका लंबमा निवंत्रका शासन । विभिन्नरम्-वि [एं॰] रोख-भाग करने बोस्यः संवत तिवंशित बरमे योग्य । विशिक्षकः-नि [मं] काममें समावा द्वारा निवेशिका बरिता नारिष्टः मेरिता कार्यसे शुक्त किया हुना । विनियुक्ताग्या(गम्)-वि॰ (सं॰) विसने किनी निषय पर अपना मन बमा रखा ही। विमिधीक्तभ्य-दि [सं] मिनुक करमे वीम्या आर्रिक हरने सीम्ब १ बिमियोक्स(बन्)-वि प्र* [मं] नियुक्त करमेशाचा । विवियोग-९ [र्न•] निमान नैथ्नारा। मिल्रक्ति कर्न भारः प्रयोगः मंदेश । विकियोजित-दि॰ सि ी निक्क्ष कनामा बनाः निष्याः वैदित (विकियोज्य-वि• [4] कामने समाना जामेवानाः प्रयोगमें कावा जानेवाना । विभिरोध-६ [म] भगमानिया निभिन्न । विभिरोची(चिम)-वि मिं रेडिमे बाबा दासनेवाळा। विभिन्त - वि भि । बाहर मिहला हुमाः सच्छा व्यक्तीतः। विनिगति-स्रो [मं] बाहर निश्ममा। विविर्मास-५० सि॰ो बाहर होना। मन्याना चैन जामा । विनिर्धीय-इ [तं] कच स्वर ! विभिन्नेंम् - वि [त्] विष्युक्त सुब्रशाम, जनग्रह्य । क्रिकिश्रीय≕भी [शं] पूर्व निवया विविजित-रि [तं] पूर्णतः वराभूत ।

विकिर्णय-पु [गुरु] निविध निवमा पूर्व निवय ह

विनिर्णीत-वि॰ [सं॰] निभिक्ता निसका रपष्ट स्थने निर्देश किया गया हो। विमिर्देश्य-दि (सं०) पूर्णत जनाना वा सह दिशा gwr ! विनिर्वेह्न-पु [सं] भूषेनः जला देशा ना नदश्र दैनाः । विमिर्विष्ट-नि॰ [र्च] विस्ता निर्देश दिना यस री। धौपा प्रभा । विनिर्वेद्य-दिव [संव] विसदा निर्वेद्ध, वस्त्रेरा दिश नान । विविर्मुत−वि [धं] वॅदावा झम्ब विशा द्वमा देख विनिर्धात-निक [नंक] केंबा हमा। बराबा हमा ! विगिर्वध-प सिंग् बरवरसाय। विनिवाह--पु॰ (सं] तलगरका एक शाथ। विमिर्भिक-विश् (सं) बड़ा हुआ; दिश हुआ । विनिर्मोग~५ (तं०) रह क्या विनिर्मेल-दि सिंगी शाविक स्वयव क्रिम्में वरा भी सक्रम हो। बिनिर्माण−पु॰ [नं] बच्छो तरप्र रहाना । विनिर्माता(म)-तु [नं•] धनानेवासा । बिनिर्मित-दि भिन्ते से बना बना। रिन्तः यसका प्रमा (क्रसम्): निर्मारित निमित्र । यिनिर्मिति⊸की (सं•} निर्माण रचना। बिनिर्मुक्त−वि [र्स] श्रीश इनाः नंपनरदिता निद्रमा ENT I विविमेकि-सी [सं] सरकारा हकि। विभिन्ने ह-वि [र्गण] वी इनड्डिम हो।-प्रतिज्ञ-वि बनने बचनका शामन करनेवासा । विनिर्मोक-विश् सिशी भारत्य-रहिष्टा पश्चरोज । विनियान-प्रसि•) प्रशास । विनियोत-वि सिंशी प्रश्चिम नवा हजा। विभिन्नेश-रि नि रे पर्न दिशा हुआ संरक्ष निवया हमा पत्पध्र । विभिन्नसंब-कि नि विकासियाना रह बारनेशना । विविवर्तन-ए [में] कीरमा वेन दीमा। विनिवर्ति-मी (वं] विराम निवृधि। विजिषतित-विश् (गेर) नीशया द्वणाः रनश दुशा । विविधर्ती(र्तिन)-वि वि वि धीरन प्रमानेशमा । विधिवारण-पु [सं०] रोच निर्वत्रमा हर रसना ! विनिविद्य-वि [सं] बसा दुशा रखा ह्रमा। विद्य र विविश्वान-वि [मे] कीरा द्वभा। इस द्वभा। मनामा मुक्त नुम । −कास-नि नित्यो दरवाधीय क्षेत्रकी यवा को । –क्षाप-वि चाउढे मनावमे मुक्ता विनिक्रति-न्हीं [र्स] विराम भेटा स्टब्स्स । विनिवेशन-५ [मं] योपित बरना। विविवेदिस-- वि विश् वीरित बमाना हुना । विविषेश-४० [तं] प्रदेश वासार शीना गर्न करमका दिने यहिता करना र विनिवेशम् - पुरु [र्गर] निर्माणः स्दरम्याः द्वार बादनाः

वितयासिमिधेप-प॰ (सं॰) झढ बोकनेकी प्रवृत्ति । सुकक-पु॰ दास, वसीर् । विवासक-पु [सं॰] विस्तारः पेंगेशः मृश्य सादिके क्षिप बिसध्य-वि॰ [सं॰] मिथ्या, असस्य । कमरेमें विधाना जानेवाका वहा कपड़ा परिमाणः माड विवद्ग-की [र्घ] शेक्स विदस्ता नहीं। बिश्वनिता(न)-दि पु सि | फैकानेवाका। क्य वनिकाः संपर्धिः। वितनु-वि [सं॰] वर्ति स्थमः अरोररव्रितः सारशैनः थितानमा≉-स कि शामिक्षाना, तंबु मादि तामताः तानना अदासा (शनुप आदि) → जिस रपुसाथ पिनाक कीमका संदर । पु॰ कामदेव । विवास्त्रो वीन्यो निमित्र मही -धर । वितपद्य !- नि स्तुरपद्य कुञ्चल, प्रवीमः विकल । वितासम-प्र [सं॰] प्रकाश । वि॰ अंबकाररवितः समी वितासक-वि॰ सि । क्षेत्रकाररक्षितः अधान या तमी ग्रमरहित । गुणस्य । बिसमा(सस्)-वि [धं०] दे "वित्रशस्त्र"। वितार-पु॰ [सं] यह तरहरा केंद्र, प्रच्छक वारा : हि॰ बितर-वि॰ मि॰। धाग हे बानेवाका (प्रार्म बादि)। तारकडीम १ वितारक-पु [चं] यह बड़ी, विवास ! विदाय-प विदाय करते, वाँउनेवाका । विताछ∽ वि [र्स•] को ताकर्में न हो (संगीत)। पु• गक्रत वितरण-ए सि विर्वत करना हेना दाना बाँडनाः वॉर्रेनवाकाः पार करनाः यार करनेवाका । हाक (मंदीत)। बिसिक्स = - पु व्यक्तिम, कमर्मग। वितरम • - प्र नॉटनाः गॅटनेवाला । बितिमिर-वि॰ [सं] वे 'वितमस्ह'। वितरमा ४- ध कि वितरण करना, बॉरमा । विविक्षक-वि॰ [मं॰] विक्कः सांगराविक विदाने रहित । पित्रहिक्क≠−अ व्यक्तिरिक्क, हिना। वितरित्—ि [मं] गाँडा ब्रमा । वितीत#−विष्यतीत गीता हुना। बिसरिता(क)-दि पु [मं] दान दनवाकाः वाँउने विश्वीपाता-पु दे 'व्यतीपात'। विश्वीपासी निष भटपदः शरारती (सहका) । वाका । विक्रीण-वि [सं॰] का पार गया हा; बूरवर्ती। प्रदश्तः वितरकर-म म्यदिरिक्त स्थि। पुरुषे व्यक्तिरेकः । विसर्क-प्र• [मं•] विचारः स्टेडः म्लेडका विषयः बहु पूरा किया हुआ। परामृता परित्यका मीचे गया हुआ। धुमा किया हुआ। कहा हुआ (तुह्र) । माना दसीका पद्ध अर्थासकार खडी वक तरहके स्टेड बा वितर्भक्षा का सः किंद्र कुछ निर्णय स दिखाका जायः वितंद-पु श्रामी। पुनराष्ट्रका एक पुत्रः भाष्यारिमक गुवः प्रयोजमः अधिप्रायः वित्रद्र-पु [सं•] एक मृतनीति । योगियोका एक वर्गा विनुद्ध-वि॰ [मं] छेरा या भीरा हुमा। दु० एक साग विस्कान-पुर्मि । तर्रे या विवार करनेकी किया: धरेह: प्रमनाः पेशरः बाद विवाद । विनुष्टक-पु [मं+] यनियाः तृतिवाः तामस्की मामक वितर्वित− वि [मं] विश्वपर तर्कया विवार किया गया पीचाः बान्धे पहननेका कानका छेन् । विनुद्धाः विनुद्धिका-सी॰ (मं॰) ग्रेंशशमा । क्षाः प्रदूषम् समझा द्वामाः वितर्भ-वि [मंग] विचारशोकः महिन्तः विकश्चम । वितुष-वि [तं] निसका शिक्का निकात दिशा नया पितर्दि, वितर्दिका पितर्दी-लो [म] देविका मंत्रा की 1 च्या । बित्रप्र−ि िम] अम्तरः स्थानका विवर्दि विवर्दिका विनर्दी-मी [सं] है 'विनरि । विन्द्(प्), बिनुष-दि॰[मं] जी प्यासान ही विपासा-वितन-पु [गं] सान वयोको क्रोमेंने एक । शहित । विताली(सिम्)-१ [मं] वितक कांबकी चारण करने धिनुज-दि [मं] नृजरदित । बाम वक्देव । विनुस-नि [मं] संतुष्ट। वित्तष्ट-वि [मं] कारा गोरा दुआः समतक विया पिनुसक-वि+ [मं] दे+ विनुप्त । वितृष्य-वि [में] तृष्यारदित तदामीन निरम्ह। वितरता-सी [में] हालम मुद्री । विमुख्या-स्तै [सं] मृष्याका समानः संनुतिः विरक्तिः वितम्तास्य - पु [मं] तथ्रह माग्रहा कर्मीरस्य निवास-प्रवस्त प्रचारा । रवान । विद्योप-वि [मं] बन्धीन। विमन्तादि-पु [मं] एक पहार । विश्त-वि [मं] प्राप्तः दानः विवारिनः क्षीशितः प्रमिद्धः । वित्तरित-पु [सं] रिका, वानिश्ता वारह अंगुल्सी च अन नंत्रशिक्ष प्राप्त बस्तुक्ष अभिकारः। प्राप्ति । –काम– मार। – दश्य – दि अंक्षतस्य व्यक्तिका लंबा ही। N प्रमुक्त इस्युद्ध कीची। —कोण — पु क्दवारीमा पिताहम-पु[मं] दे• ताहम ।

वितान-पुति] कैनार विश्वादः राश्चिः समुदः प्रानुवैः

मगाना बृद्धिः यक्त नेरीबार मितको भेटवर केदनेही वक

पहीर एक कुत्तर गरी अनीर अवस्परत अवसान्तर हुगा । वि

सानी दिना बराम भीमार स्वार प्रतिस्थल । -----

रमनदी वेनी। -गासा(प्नु)-पु इवेर।-जाय-

वि विवादित दिसने पन्नी प्राप्त की है। -च-दि० धन

> वामा नहादकः। ~हा~स्री प्रदेणको यक्त मापूरा।

-नाय-पु कुरेर। -नियव-पु बनकी बात बही

प्रवेश- निवरि । हमाः निर्मित् । विनिवेसी(शिम्)-वि [सं] प्रवेश करमेवाकाः रहने नमनवाकाः अभिद्रितः । विनिश्रस-वि॰ [सं॰] अन्तिपत रू रियर। विनिश्वसित-पु॰ [धं॰] प्रश्रास । विनिधास-प्र• [धं] गहरी साँच वर्गींछ। विमिपृद्धित-वि [सं] पूर्णन अष्ट किया हुआ ! विनिपद्धप-रि [सं॰] बदंपित स्विर्। विमिष्टम-दि॰ [हो•] सूद मूना दुवा। विनिष्पतित-वि [सं] शपटा हमा। विनिष्पात-पु॰ (सं] सप्टमा इट पण्ना। विनिष्पाच-वि [सं] बिसे पूरा करमा बी। विकियोध-५० [तुं•] रोस्तः रयक्ताः यक्ताः । बिनिस्मृत−वि [रं•] किसित वर्णित । विनिद्वस-वि [सं] भारतः बीट खावा हुमाः विनष्ट मारा हुना। पूर्वतः परामूठः छन्नः कक्कविदः पीक्षितः । त्र दैक्कि वार्यः मारी विचित्रः चमचेडः । विमिद्धित-वि [सं] रद्या हुमा जमावा हुमा। पृथम् किया हुमा । -दाष्टि-वि क्रिलको दृष्टि कियो चीववर क्यो हो। -मना(नस)-वि जो किसी वा**उ**पर इला हो।

प्रण हो।

विविद्धतानि [सं] रिजा हुआ। अस्तीकार किया हुआ।

विविद्धतानि [सं) दरावा हुआ के गया हुआ। फैजावा
हुआ। विविद्धतानि स्तार किया हुआ। फैजावा
हुआ। विविद्धतान्ति स्तार क्षित्रकार कान स्वविद्धान्ति।

विविद्धतान्ति स्तार स्वार (स्वा)। प्राप्तकार कुमा
वैद्धान्ति स्वार स्वार प्रकारका यक पुत्र द्यानक।

विविद्धान्तु । स्वार शिविद्धान्ति।

विविद्धान्तु । स्वार शिविद्धान्ति।

विविद्धान्तु । स्वार शिविद्धान्ति।

विनीतता—को विनीतत्व—पु [सं॰]वस्ता सिक्ता भद्रता। विनीति—को सि] सिद्धा सिक स्पवदारा नजता।

विनीति∽त्यो [मं] छिद्या शिक्ष स्थवदारा नजता ृक्षसर सम्मानः

वियोध-पु॰[सं] बस्बः तमध्य पाप अवस्थ । विमीतक-पु [सं] वह शव को नीका ही गवा हो .(यो)।

विजुब-स दिशा ह

विकृत्ति-स्यं [4] बूर करना, बरामा पक एकाइ कृत्यः। विकृत्यः दि [4] सयाया वराया पुत्रमा ज्ञाहतः। विकृत्यः (4) वर्षा वर्षायाः। विकृतः (4) वर्षायः।

विज्ञा(न)-पुमि] नावक रशनुमा गुरा ग्रासक। विजेप-दि[तं] नैतन्त्र को ते वायाया दशया बावा को शिविन किया जाया को ग्रासिन किया जाय। पुरिचन

उ १०५। विश्वासित-मी [मंग] एक बण्यानकार नहीं विशी एक बर्फे दिवा भरत वश्तुका शीवित बीना या रोधित न शेला दिगाला आव । विशाद-मु [मं] इर करमा दशनाः मनीरजना ब्रीका

धीरमा परत रच्या आन्यनविद्या यह प्रश्रहता

प्रदेशः विश्वति । विनिदेशितः—(२० [सं] प्रविद्या (२६६), उद्दर्श दुव्याः नसा इकाः तिर्मेशः । विनिदेशितिकाते—(२० [सं] प्रवेश करनेशाकाः । विनिदेशिता । विनिदेशिता । विनिदेशिता । विनिदेशिता ।

विकारित-वि॰ सि] पूर किया दुवा; वेट प्रसम् । विकारितिका सि (सि॰) यूर करनेवाका कीय्हरो, जीवाशीकः मीवी ! विक्य-वि॰ सि प्राप्त कल्यः विचारितः स्टा ह्वाः विसस्य

विश्व-विश्वे । प्राप्तः कन्यः विचारितः स्या हुआः विसद्धः अस्तित्व दोः द्वारा वाना हुमाः विवादितः । विश्वक-पु [र्गः॰] शास्त्व । विश्वा-वर्गः॰ सि] विचारितः स्त्रीः ।

विज्यव-पु॰ [सं] रिविष । विज्यसम् – पु [सं] रखना बाह्ना ।

किम्पस्त-वि॰ [एं॰] रखा हुमाः समावा वदा हुमाः काका हुमाः मद्दल किया हुमाः स्परियतः अपित समा किया हुमाः।

बिन्याक-पु॰ [सं॰] छतिवन ।

विभ्यास-पु [सं] रचना स्थापकः कहनाः वाह्यः करमाः सुपुत करमाः स्थापितः करमाः क्रीकः रिवाकः फेकानाः प्रचरेनः भाषारः संप्रदेश समूद् । विर्ययमकः विपंत्रिक-पु (सं) मिन्मदकाः।

विर्युचनकः, विर्योगकः पु (संश्री प्रविश्वाहकः) । विर्योगकः विषयी-की (सं) एक तरहकी गेणाः स्टीडाः, स्टीवः। विद्यानिः (संश) विद्यालः।

त्वय-१४ (६४) श्वद्रश्यः विविक्षयः-४ (सं) व्यूष्यम् हुमाः विकासमे मामः विविक-४ (सं) अच्छा तरह यसः हुमाः पूर्व स्वरसादो

विराज्य-वि [स] अन्यार तरह पढा हुआ। पूर्व सनरनाकी प्राप्तः पठाया हुआ। कथा। विराज्य-वृ [संव] विरोणी पछ। श्रष्ट दिराणी प्रतिनानी। किसी वासके विरोधी पछ। श्रष्ट दिराणी प्रतिनानी।

विकास वायक नियम क्षयार (व्या)। वार प्या विकास सायक नियम क्षयार (व्या)। वार प्या विकास वाय वहने। वि प्रतिष्ट्रण वक्ष्या प्रशास्त्र एडित निष्पञ्च विना परका। —भाव—पु —कृति— को खुकुमार्क विना प्रतिष्ट्रण कक्ष्या स्थान

दूसरोद्धे नाथ मनिवंदिता चल रही हो । विचक्ती(क्षित्र)--वि [सं] विन्द्ध बक्काः विवा चंदका।

विष्युक्ति(विस्तृ) रूपि । सि । पिन्द वेद्यक्ति। पिन्ना प्राप्त पुरुष्यु । विकास स्वर्णा

विषक्ष-पु (सं) विक्रवा छोटा स्थापारः वाजारः दिव । विषक्त-पु ० (वं०) विक्रयः स्वाचारः । वाणियः विषक्ती-को० [सं] बाटः दुवानः दिक्रीका मान्यः स्वाचारः विक्रों ।

विषणी(मिन्)-्य [मं] स्वापारी दुवानपार ।

विष्णा(मन्)-पुन्य विश्वतिहरः दुवानस्यः विष्ताक-वि [व] अवसेव।

विपतित-(र [मंग] उदाहुमा; (गरा दुमा: -क्यामा-(मन्)-दि विसदे यान किर गरे हो। विषत्-'दिवर का समामान क्या -क्य-दि संदर

वस्त्रं करनेवाण । -काल-पु संकादे निम दुरिम । -कल-दि संका लामेवाला । -सागर-पु बद्रत वहा संका ।

विपत्ति—स्मी [मी] बनातः भावना मृत्युः माशा बाहता । —बर्=दि अस्ट रुप्पत्र बरमेरामा । —बाब—प्रश विदेश-५ [मं•] दूसरा देख परवेख, देखांतर । -श-वि• देशांतर गमन करमेवाका । -शस-वि० प्रवसितः परदेश गया हुआ। ∽शसन-तु परदेश जाना। --श-वि बुसरे देशमें उत्पद्ध । -सिरस-वि निरेश भ्रमगर्ने जानेर माननेशका । —वास-पु दूसरे देशमें रक्षमा। -बासी(सिम्)-वि परदेशमें रहनेवाछा। स्थ−वि परदेशमें रहने वा वटित होनेवाका ! विवेद्यी-दि० दे दिवेद्याय । प्रपरेष्ठका रहनेनाका । विवेद्शीय-वि• [सं•] परवैश्वी, बूसरे वैकन्ता ।

विवेद-वि [म॰] प्रशीररदिता अभेत, वेसपा गृतः विरागी। देहिक चिटाओंसे रहिता विमकी सरपत्ति माता-पितासे म दो (देवता आदि) । पुरु राजा अमका निमित् मिविकाः मिविकाके निवासी। सरीररवित व्यक्ति । -कमारी:-वा-की सोता। -कुद~पु॰ पद पर्वत। -कंबस्य-प्र स्रमुक्ते वाद मिक्रनेवाला मोख विवाय । - मगर--प्रर-प्र जनक्की राजवानी जनकप्र ।

विदेहक−पु[मं∙]पक प्रनेतः यक्र वर्षः। विदेहरब-५० भि] छरीर न होनेका मार्थ । -शत-

वि सृत्। वितेदा~की भिंीशिका। विवेदी(दिन्)-प [म॰] असा।

विद्याप-पु [र्च] पापा अपराधा मि निर्दोद : विद्योद-पु [सं] कविक बुदनाः किमी चीवसे सस्य विक् काम स्टानाः छोपन्।

विद्~वि [मं] प्रानकार पंक्ति विद्वान् (समासांत्रमें)। प्र तुप प्रदः दिल्का पीषाः विदान् स्वक्तिः सीः समझः बानः जानकारी ।

विद-वि [मं] ऐता हुमाः माइतः वानितः दिशीर्थः चालियः तस्य। जानकः मिला हुना पत्ना हुनाः चलायाः डभा। प्रज्ञना।~कर्म−वि विसने कान किने थी। ष्ठ विकक्ताः। –कणां –कक्तिका –कर्णां –जी वस विदेश राम । - प्रण-१० कॉरा भूमने कसकी सीक् इस्तेषे दीनेवाका बाद।

विद्रक-इ शि] मिट्टी खीदनेका एक पुरामा कीवार । विका-की [सं॰] एक एउ रिग विसमें प्रीमेशों तिक सती हैं।

विद्यासुच~पु (सं•) एक निशेष लंगारेका अञ्चन । विदि न्थी [सं] ऐश्ने बाशिकी दिखा।

विच-दु [सं] मासि माम ।

विधामान-वि [मं] वपरिवतः, वर्तमानः यथार्वं ।-- असि--दि वयुरा

विद्यमानदा -- श्री विद्यमानस्य-पु [सं•] छवरिवछि मीब्दगी।

विद्या-न्या [मंत्र] दान-विद्यामः किसी विषयका विशेष धान। बुर्गात मंत्रा व्यक्त गनियारी। छोती गंदी। यक बुर्गा मारको वक गोधो जिसे सुधमें रचनेपर सहसेको स्रक्ति मार को जानो है। -कर-वि शानको मासि धराने बाता । -कसं(म्)-इ धानादिवा अध्ययम । -गर-५ क्षिप्रक, पहानेवाना । ∼गृह—५ विचा पानिका म्यानः विधाननः। - चना - चुंच-नि विकान्

विश्वताने किए प्रशिक्ष ! ~शीर्व-१० प्रार्थन शिव । -बल-प्र जीवशस्त्र है। -स्वर्ति पदानेवाका सिक्ष्मः। –दाव-दुः तैरः स्टब्स पुरुषक ब्यादि देमा । - द्वानाव-पुर विकास विकासी ! - हवी-की सत्तदी पार्की ~चन-प्र• निषा हारा चौंश का सिम्बर -धर्-वि॰ विद्यालाका, बाहुम्। रू॰ स (र्शनर्व कियर आदि)। एक रशिनर रहरा ए यक् बंब । —धारी—भी॰ विद्यास गरिए हें (रिम्)-पुरु एक वर्षवृत्त ।-प्र-पुरु सिन्दर पु राजदरनारका सबसे वहा मिल्ला जनन कृषि । –पीठ-पुरु क्षिप्रावेदः वस रिल्पः प्र बायुक्ती शक्ति विवा द्यानसम्बद्धान (जु)-दि विहान्। -मंद्रका प्रश् -मितिर-य विकासन। -सा-पुः ए साधुकोसा विवासन । ~समि-पुर रिकार है -सङ्~पु∙ निवासा परेश ° ००० -सार्ग-द्र मोक्सवद मार्ग (**-स**≥ी

-राशि-पु क्षित्। -सम्ब-मिर सिंध b प्राप्तः। −काम−५ विवादी प्राप्तिः। −ि विवादे कथाएकोको त्यो । न्यपूर्ण^{ाहे} मरश्वती । −वित्रथ-पु॰ वन केर द्र^क वि विद्याल् । -विद्यानि विल्या के खाता थी। -विसिष्ट-विश् विको में -विद्योग-विश् मूर्य । -वृद-विश्वित क्ता हुआ। -वेदम(न)-सप्त(र) र -व्यवसायः-व्यसन-प्र• स्वागाः । ब्बध्ययम् । —झत्त-पु॰ मुक्ते प्रव करना । -स्थान-५० पानस स्ड गा स्नातक-पु॰ वह वो वेदारिक व को। — होस्-वि वसिका मुर्वे। बतुराई करवन (बामीनरॉका) 🕏 ~संबी पड़मा-चतुराई कराव (द⁷⁵ नामामयाव दोना । -प्रक्रशा-निगर व दीमा । -समना-दे 'दिशा कृत्ये

विचाकर-पु॰ [पुं॰] विवाहा शहर की विचासम-५० [सं•] विवाद शतका वर्ते विचाधरेंद्र-पु॰ [सं॰] बोरवार् ! विचाबार-इ [तं] बहुत सा किए। विद्याधिवेषसा-की॰ [सं॰] विद्यो सरस्वता । विशासिप-प्र [तं०] प्रिश शिर्म विचाचिराज-पु [तं] में विता

सिकानी हुएँ नियानी मचनको कार्य क्^{रा}

विधापुपासन-थी॰ [र्म॰] कार्सन हेनाः बध्यवम् । विचानुसेवम-५० [do] विवास्त्र

विद्याभिमान-५ [मं•] विश्व विद्याज्यास

बहरू दिन । मुरु -- स्टामा -होसमा-तेवलीय सहना। **बाटना-बन्तके दिस विवास । -श्रह्मा-विसीपर सहसा मारी दुन्छ पहना। -शोरामा-बह सहना। -में बाक्का-नियोको दु:स देना। -में ध्वना~ संस्टापल होना । -मोल सेना-बान बहारर संस्टवें पत्रना । –सिरपर छेमा-भ्यर्थ इत्तर दिव्यतमे पत्रना । बिएश-प [सं॰] भिन्न मार्गी पकत शस्ताः एक नेती मंदनाः एक तरहका रथ । -शासि-स्थी अरे रास्तेपर जाना । -शा-वि स्ती॰ कुशार्गपुर जानेवासी । स्ती॰ नदी। -गामी(मिन्)-वि कुमार्गगामी। विपदा~ना [सं] शिपकि हःसा बिपर-सी [सं॰] बाफत सेवडा इंस्युः नास । ─भाकति~वि॰ संदर-यस्त । —उञ्चरण —उदार— प्र संकरचे पुरस्तारा । -गत -प्रस्त-दि॰ र्श्नरतास्त्र । -देशा-ली एंक्टको अपरथा। यिपग्र-वि [मं] यूना मष्ट- लंदब्रमस्तः वद्य शक्ति। प्र• सर्व । विष**श्रक**−दि [र्म•] बदलसीयः एटा सट ! पिपरिक्रति-नि [म] साइसी बीर । बिपरि**रिडच−**कि ति•ों करा बना। नष्ट । —सूस-नि जिसको अब विजनक कर गयी थे। विपरिणमम-तु [सं] धरिवर्गम। विपरिकास-त [सं] परिवर्तना पक्षना औ" शेना व बिपरिवासी(सिंह)-वि॰ [वे] विस्तर्ध अंतरण नर् सर्वा कि । बियरिश्वाम-तु (सं•) वरिवर्तन विनिधय ३ बिपरिवर्तन-दि [मंग] सीटानेवाला । पु अवर माना ₩Hat I बिपरिवर्तनी विद्यानको (सं•) अनुपरिवद्य व्यक्तिको भीदनेके किए प्रेरिय करनेशला संत्र वा बाद ह बिपरिवर्तित-६ [मं•] सीराधा दुला । विपरिवर्श्व-सी [मं] डीस्मा। विवरीस-दि॰ [में] बल्बा। प्रतितृत्र निवसविरदा असरका विकास वैमेला अञ्चल विकास प्राप्त लेकार जहाँ कार्य-निकिम शबर्ग छात्रकता ही शायक द्वीमा दिरामाया जाम (वैद्यम्)। यक रशिर्यम् । -का -कारकः -कारो(रिन) -क्रम-4 विश्व काम कर-ावाला । -गति-वि सम्बे दिशामें कानेशनः । -धेमा-(सस) -श्रुवि -मिक्ट-नि विश्वा निमाम शिर गवा हो । -रति-मी रतिका एक प्रवार ।-ब्रह्मका-न्दी अवेरवर्धे सम्बो बान कहना । -कृत्ति-वि प्रतिकृत कार्य करमेवामा र पिपरीतक-दि [मं] उत्पटा महिल्ला। मु निवरीत विपरीत्रहा-भी , विपरीतृत्य-पु [मं॰] नियर्गव विषरीत हीमेदा भार । बिपरीता-सी [मं] दुर्धारण चुंद्रनी भी। पिपरीतार्थ-दि [मं] बन्दे कर्नवासा । विष्यात्रीयमा नभी [मं] क्ष्या धर्मकारका वक प्रकारक बरों को मान्यवानु व्यक्ति श्रीत होन दशाये दिस्रोना । विचाय-दिश [तन] वय या जारके बीगा ।

चाथ (केंग्रव) 1 विपर्णके नि॰ नि॰] विमा पर्णका । प्र प्रशासका है। विषयेष-प [सं] स्वतिक्रमः विषरीतना व्यवस्था चक्दरा पंचायनेत समाहित वर्दिवर्तन (श्रामि अमाहिक) अमरितरका दानि। विनादाः विनिमका मृत्रा मंद्राः प्रमुतः चिपर्यस्त~ति॰ शि] परिवर्तिता अस्त म्वस्ता उत्तर-पन्य हमाः भीरका भीर समझा हमा। -प्रवा-सी बह स्वी विसे पुत्र व होता हो। विषयांग-वि [र्श] देशा धारतामेका । विषयसि-प [सं] सरिवतना विष्योतना मनिक्ता **रुत्र≳-बस्टा ध्रम 'भूल, मिध्या धाम** । विपक-प [र्गण] समक्का एक वहन होता कान र पर साठवीं भाग । विपक्कायम – प्रमिणी भागताः विभिन्न दिशाओं वै अभवीः वियसायित-विरु (मेर) सांग्रा हुना। भगवा हुना। विपक्तांबी(विम्)-वि+ [मं•] माननेवाहा । वियक्तावा-वि [शंर] पपदीमा विषयम-वि सि] विश्वदारकः वाय-रहितः । प्र विशव्य वयम । बिययय-वि [र्शन] विशेष सपते हास करने बीम्य १ विचित्रित-वि [मं] न्द्रमध्या विदान पंतिन । इ विद्राम व्यक्ति। विपड्यम-पुरु (मंग्) यथार्थ शत ग्रहन दाम (से) I विवाची(विमन)-४० [तेन] एक १४ । विपानी(चिम्)-9 [सं०) एक प्रदा विपाद विपोहर-वि [स] पेना) विपक्ति-सी [त] महामेश । विपासक-वि [स] पुनिमहितः। विपाक-पु॰ [र्थ] दकामा। पत्रमा। पूर्व दछानी प्राप श्रीनाः पत्रनाः प्रमः यसेशा यनः वरवानरिश्नेनः बहिनाई, मंदर १ विचार-५० (छ) एक तरब्रहा राग । विपारक-वि [में] फाइने फाइन, वमाइनेशका है विचारम-१ [तं] वसाइन बोहनेश्रे विवा। विवारस-वि॰ [मं॰] बदुव शान । -मन्न-वि विवसी जॉर्से मान थी। क्रियारित-दि० [मं०] काहा हजा। प्रन्तनिता दूपन दिया KMI I विवाद(श)-मी वि] दे॰ विश्वाता । विवाद-तु [मं] यह मरहदा बरा नाम । वियास-५ (ने॰) माध । विकासक-वि पुर्शि । यहाने दिवत नेवाबार मार्ग ब्दरमें बास्ता ह बियानम−त्र [रां॰] नाग्र वहानाः यत्तामा र विवादम-५ [ते] वर नाग्र करना । विवासिका-मी [न] वैदका एक राग कारको देवनि पटेली । femifen-fe fe.] an fent gent be feit &m ?

विधार्जन-विद्वादी 1110 विभूद्राज्यक्ष-प्र [सं] यह शहरा प्रक्रवके सात 'मेवीमेंसे संस्कार । पक्त विमुत्पताक । विचार्जन-पु॰ [सं] विचारी प्राप्ति शाम वा शिक्षा द्वारा विश्वदर्ग-वि [सं] रबके क्यमें विज्ञानका प्रयोग कुछ प्रीप्त करना । कर्मवाका । विद्यार्जित-वि [मैं) विद्यक्षे प्राप्त माप्त ! विश्व दुवर्णा−सी [सं•] पक अप्सरा। विद्यार्थ-नि [मं] विद्यापासिका श्रमुका पुर विद्या विद्युव्यक्ती-सी [र्त•] निवलोक्षे काष ! प्राप्त करनेकी बच्छा । विद्यार्थी(थिन्)-पु [सं•] विद्या पश्नेवाला छात्र, विद्यारमापक-प [से] निवसीको शक्ति याँठ बादिको िधा मोसूम ऋरमेका येव । क्षिप्य । वि विद्याका रक्तक । विद्यासय-पु [तं] वह स्थान वहाँ अध्ययन किया विद्युरुमाछ−पु[र्स•]यक वानर (रा) i विद्युष्मासा-औ॰ [सं] वित्रतीहा समुद्रः एक टीरः बाहा है विद्याग्रह ! विधावान्(यत्)-दि [सं] निप्राम्। यक पश्ची । विद्युरमासी(सिन्)−वि [सं] विपुत्तको माठा वारण विधाशासी विधासागर ईश्यरचंत्र-9 बीर समावसुपारक आधुतिक बंगका गधके बनक करनेवाका । पु॰ एक देवताः एक विदायर एक असरः एक छंद । (267 -2647) 1 विश्वरमुक्त-५० [सं॰] एक उपवर्ग। विद्यु−स्तो शिवसी। पियुदासक-दि [म] (बद पराथ) जिसक यह सिरेसे विद्युत्तरा-मा॰ [सं] क्षित्रकोक्षा देशमहो रेखा । रपर्छ होत हो विद्यु पूसरे सिरेवक बड़ी बाद (धाँग विचयसमा – सो॰ सिंी विवसीयो सीका एक वर्णकृत । भारि)। विद्युस्कोचन-पु (सं•) एक टरइको समापि । विद्यविद्वस्ता-मो॰ [मं॰] विरेटी वरवाटा एक वीचाः विद्यस्कीचमा−की [सं]एक मागक्रमा। विधेश−५ (सं}धिर। ण्ड राष्ट्रमी । विशेषर-पु (तं॰) एक उपन यीति । विद्युक्तसाम-पु • [मं] एक माग । विद्योत-पु (ग्रं॰) वित्रकीकी समर्क वि समस्तेवाला। पिद्युक्तवासा-ली [मं•] कलिकारी पीधाः विवसीकी विचोतक विधोती(तिन्)-वि [मं] प्रकाशमान कांच विश्वित्रमाः। विद्वितिह्न-पुनि] यक राष्ट्रसः धर्ममधाका पतिः स्क क्रमेगाधा । यद्य । वि. वित्रती जैसी जीमगाना । विद्योतन−पुर्धिविष्ठीः। विश्वमन्नानेवाताः। विद्योता—सी [सं] एक भप्तरा ! विद्युक्तिहा−सी [मं]स≰दक्षेपक यालुका। बिद्युता—सी [र्थ+] एक निरोप शक्ति निम्मी। एक विश्वापयोग वियोगार्जन-द [श्रे] विदा शाह दरना धानार्वत अध्ययन। भप्सरा । विचीपाजिल-वि [पं॰] की विपाने सहारे प्राप्त विद्युताक्ष-प्र[मं] रक्तका एक अञ्चल । पिशुर्ग्−न्दी [शं•] (रजकी) पत्रा जवात पक सरहकी श्रमा श्री । विज्ञ-पु [मं] फॉब्रा शिद्रा गण्डा। धेर करना।धारमा। करका। एक पूछा यक बीजा। समावति वाबुवकी त्वार बस्यार्थं । ए एक विशेष समावित्यक असरः एक राष्ट्रम । विद्वाप-दि [मे] इष्ट प्रदा मोश-तामा पदा मत्रवृत वि वद्दन समझोलाः निम्नम । —क्रीप्र≃प् वित्रक्रीका थ्द सम्बद्ध समुच्छामध्य (१)। पुनिहर्षिः। भौभना। – केश – केशी(शिन्) – पु एक राक्ष्म। बिह्यपिनको [११०] छ।शा विशेषकर भेनरका। नक्तन, -पताक-द्र प्रत्यके मान मेथीमैन एक। -पर्णा-माध्यम−पु श€वन ोसोबन। मी दक्ष अप्यरा। -पात -प्रपत्तन<u>-१</u> विवर्शका विक्रधिका−स्थै [सं] प्रसद्यस्य क्राः। विरमा बज्रवान। -श्रेज्ञ-९ वक विधाधर। -प्राच-बिद्धव-प [सं] बदमाः पियलमाः भागमा पनावमाः पुष्य माविः वद देखा वि विश्वनी जैमा ध्याकने मार्थक, प्रवश्य पुद्धिः भया पुद्धाः निदा श्विकायत । बामा (-प्रमा-मी देखराव विशेष वीशीः वयस्त्राची-विद्वयम−द्र[धं•] मार्गमा प्रभावन । का एक गया एक भागतन्य।। -त्रिय-पु॰ बॉमा। विज्ञान-वि॰ [मं॰] सीनमे बगावा हवा जाराम् अवस्वा-विस्तरय−4ि [मं] 4िवर/भें रहमे या बसुश बन्दक धे सावा दभा । दानेवाना । विद्याप−पु[सं]े निद्रद । विद्याचान्(यत्)-दि [मं] विश्वतीवाता । चु वान्तः बिद्राबक्र−ि [मरु] सगानेव काः दिपनानेवाता ।

TE VETE ! बिद्रायण-दि [र्ग] भगानदास्य पदराहरमे हानने विश्वक्रस-द्र [सं] एड रेखा कान्या । पु अनामाः पराभून करमाः प्रकारमः रिपञानाः विद्यदुम्मप-५ [त] रिज्लोक्ष कीपर **८६ दासर ।** पिपुर्गीरी-भी [मं] इतिकादक मृति। विद्राविकी-मी (वं०)श्रीआहोंही। विद्वराम(म)-5 [तं] रिवर्गकी थमह या बसरी विद्यावित-वि [में] पराजून दिया दुला। मवावा दुला रेगा। नितर-वितर दिया ल्याः दिवनाया दुशा । विग्रद्योत∽५ [मं] विश्वनीशे चमकः विज्ञायी(विष्)-वि [4] सन्दर्भकार सगानेवानन *4-E

विचाप-वि [सं•] निष्पाप पाप-रवित ! विषापा-सी सि पद नदी। विवापमा(पान)-दि [र्] निष्पापः इहरदित । विपाध-वि+ सि+ो रशक्तीमः भरतित । बियास−वि [सं•] वंबनरहितः वंबन सक्तः। विपाशन∽प्र [सं] भंगनते मुक्त करना। विपाद्या – स्त्री [मं] व्यास नदी। विपासा-स्रो दे विपाशा ^१ विधिय-प (सं•) चंगल बगः वपदन ! - चर-पु• वतवरः बंगली भारमीः पश्च पक्षी वादि । --तिसका-सी पद्म वर्णकृष्णः। -पश्चि-त्र सिंदः। -विद्यारी-(रिन)-प बनमें विदार करनेवासाः कृष्य ! बिपिनीका (कस)-प [सं] वनमानुसः वंदर । विशंसक-वि सि] विसमें पीरक्के क्रमी ही पुंख्यहीन । विपुर्ती-को • [हं] प्रकटे-छे स्वभाववाकी की । विप्रज्ञ∽विश् [सं] प्रज्ञदीन । विपर-वि सि किसके रहनेका स्वान निश्चित न हो। विद्रष्ठ-दि [मं] बृहम् बहाः दिस्मृतः अविक, प्रभुरः पहरा अगामः रोमांचयकः । य मेन पर्वतः हिमाच्या सम्मामित व्यक्ति एक तरहकी हमारत । −प्रीय−विश संनी गरदनदाला । --वसाय-वि यमी कांवादाका । "संप्रमा-को दरे नितंशीयाओं स्रो: -ह्रस्य-वि भनी । -पादर्ब-प यह पहार । -प्रज्ञ,-ब्रुट्सि -मति−वि विश्वेष इक्षिमान् ।-इस-ध वैश्व ।-श्रोणि-नि विसन्दे नितंत नहे हों। -स्कंच-निश् भीडे देशी मामा । प्र अर्जन । - सन्ता - न्यो धीवनार । - ब्राय -वि चयारामय । विप्रसाम-दि [सं] बहुत दिरत्ता प्रस्कः रोमांक रहित । विद्रसता-मा , विद्रमत्व-प् मि । आधिकाः मानुनै। विस्तार । षिपुका-मो • [सं] पृथ्शे; यह दशः आयो दंदके शीन भेरीमेश पद्धा यह सुनी बहुला; यह ताल । बिपुसाई॰-को दे विपुत्रता[®]। विप्रसामया नहीं भि•ें हे॰ विवह सवा'। पिप्रन्क्षाम∽दि सिंी वदी ऑस्ट्रोंदाला । विपुन्धेरस्क-दि [मं] चीहे वद्यारवनवाना । विद्रष्ट-नि [मं] जो दुष्ट म दी जिसे पूरा पोरम म मिना दी। विप्रति-सी [सं] अस्पुरवा विप्रदा-विक [मी] प्रधानिक (ब्राप्त) । विपरिपत-वि [तं] मसक महतः। विषय-पुनि] मूँश कि शुद्ध करनेवाना । विषयक-त [म] सहार्देश सहा इका मही (वी) । विष्टम्(च)-दि [में] पृथक् अनग्। विप्रकत-दि [4] दिमक् दियुक्त अनग दिवा पुत्रा । विश्वकत्-विक [गंक] जिसमें मिलावर म बी: विद्यास । विपोदमा - स कि पीत्रमा छिल्ला पीतना शहार CENT 1

विध-पु [सं] बाह्यमा पुरोहिता मनुर आपकी चीपन

-काल-प क्यासका योषा । **-कंत-**प श्राद्य**क**री बारव संतान। −चरणः,−पत्र∽प्र• विष्णुके हरवपर वरित भगुरा चरण-विष्ठ । लतापस-प सम्म्बासी । −प्रिय−प्र• प्रकाध प्रष्ठ । −वंश्व−प्र• नीच जासन्। –भाष−५ जासगरा पर्। –{सम–५० परदाराम । −होचित −प अक्रामका वश्टिशः। −समा शस-पु॰ अक्षणीसे संख-बोक रक्षमा। --स्व--प० जलानकी संपत्ति । वित्रक-प्रसिं] शोध बाह्य स विप्रवर्ता(एँ)-प॰ सिं] भपमानः प्रति कानेशका । विश्रकर्प-त मिं। धीव हे जामा। पूरी कामका। भेर, र्धातर १ विप्रकर्षण−प्र सिंशी श्रीच के वानेकी किया। दर बरसा। कार्य समाप्त करमा । विश्वकार-प [सं] वपकार, सनादरः व्यक्तिः प्रतिशोधः शिक्षिक होग । विप्रकारी(रिम्)-रि [एं॰] बनाइए अफार करने बालाः विरोव करनेवालाः प्रतिशोव करमेवालाः। विश्वकरिये-(व॰ (र्म॰) हिनराया हमा। निरस्ता हमा। फैनावा बना। विरमूत । -शिरोठड-वि विसक्ते बाल किस्तो वॉं। विप्रकृत-वि [सं] अपरूत्तः अनारतः श्विमस्त । विश्वकृति - की [र्व] अपकारा वरिवर्तमा श्रति। विरोधा प्रतिशोध । वित्रक्रष्ट-वि [सं] श्रीसदर हटाया हुना हर किया हुआ। हरवर्षी। पैकाश हुआ। विमक्षक-विष् [विष] दरस्य । विप्रगीत-वि [मंग] विमुद्धे संविमें मत्तिवदा हो (1) (विप्रविचि-प्र॰ [नं॰] बमुपुत्र, दामव । विमच्छच-वि [री॰] छिपा द्वसा ग्रस विप्रव्यहा-तु [सं•] नास सीपः पृत्यु। विमतारक-प्र सि] वहत्र कोखेवाय । विप्रताहित-वि [मंग] यो एका गया हो। विमित्रकार-त [मं] विरोगः संद्रमा मित्रोध । विप्रतिकृत-दि [मं] विसवा दिरोप वा प्रतिशोध दिया नवा हैं। विश्वतिपत्ति-स्री [तं] विरोधः मनविश्वना। दो निवमी का बररपर निरूद बीना। प्रांत बारणा। स्टेका निरीधी थावः पारस्परिक मंदेशः चरदाहरः समित्रताः सरसीतिः विष्टांत 1 विप्रतिपद्य-वि॰ [मं॰] विसवा विरोध दिया जाया विभिन्न प्रदारमे निक् दिया वानेशासा । विप्रतिप्रयमाम-वि• [मे॰] पारी । विश्वतिषश्च-वि [मं] परस्पर विवदा दनवृद्धि जिस्रदा तिरोष किया नवा दी। गणता निविद्य अनिका परस्पर भंदर । - बुद्धि-दि जिल्हा मन भगगृष्ट हो । विमतिविद्य-दि [मं] निविष्ठ वीन्ता क्रिमदा विश्वय विवा गया हो। दिस्छ अपनामा ह का बुधा शिरितका वेहा विद्यान मान्यण स्ट्रितनहरू । विद्यविषय-पुरु (मेरू) निवंशका रोकाका कवनावा पर

पिक्समेकाका । ~ ~ बिद्वास्प -वि [सं•] सरामे वोष्व, वो मगाया जाव। विव्य-वि (सं) यस हमा। पेवका हवा भावा हवा। बरा प्रभाः पनवामा प्रभाः नष्ट । मृ मुख्या यक बंग । विव्वति-सी [मं•] गक्रमाः विव्वतमा धाममा प्रकानम मह बीमा। विद्वस-पु• (सं•) प्रवास, मूँगाः सुरातफरू । सब्द्राः तथा क्ला कॉपल; यक प्रशास । विक क्रमरविता - प्रशासि-प्र शिवा −वैद्य−प० रशकाली शासा। ~काउ~ पु यह सुर्गभित गाँव, इंतुर । +कता-बी॰ रस्त्रप्रक्री शासाः गठौ जामक गंबहरूव । - इतिका-सी॰ प्रक्रिका मामक संबद्धक । विद्रोह-दु (ए॰) दावि वहुँचानैके विचारसे किना हुआ कार्ना किसी राज्य था सरकारको बस्टमेन्डे किए किया बानेशका रक्त्या क्षप्रथ क्रोति। बिक्रोडी(डिन्)-वि॰ [सं] विज्ञोतः होव बैट करमे-वाकाः राज्यका अभिष्ट करतेराकाः क्रांतिकारी । विद्वासन-प्र[सं] रिदार प्रार भारमी। ऋषि । बिहरकस्य-विश्वसिशी को समिक प्रधान थी। बिद्वक्तम−ति [सं] बद्धत नवा विद्वान् । स् सिव । विद्या-सी॰ विद्यान-प्र [सं] बंदित्व प्रकि. वान ! विद्वारेशीय विद्वारेश्य-विश् [एं] है। विश्वतम् । विद्वास (इस)-वि [सं०] विवाविधिष्ठः अस्वविध शिक्षित पंक्षित तस्त्रवेशाः तत्त्वयः । व पंक्षितः वत्तरः म्बर्क्ड । विक्रिय (प्) विक्रिय-नि [सं] हेन छत्रता स्क्रने बाको । इ. शहर विद्यान-विश् (संग्) हैव अरनेशका । बिद्विष्ट-दि॰ [एं॰] जिसके मदि हेंच किया गना थी। विक्रिप्रता-की [मं] विक्रिट हानेका भाव, देव ! बिद्विति-सी [सं] विदय वैरा बिहेप-द [40] शहता वैश बना ह बिहेगड-वि , प्र [मं•] विदेश करनेवाना, शक्ता बरमेशक। १ बिहोबज-ड [मं•] वैरा वी वर्गीने वैर करा देनेकी क्रिया। शहा प्रमा करमेशाना ! क्रिटेच्ची-माँ • मिं बियना गाँ। हेव क्श्तेवासी मा । क्रिहेचिता÷की [सं] सन्ता-शैर । बिहेंची(चिन्) बिह्रष्टा(प्द)-वि [ही] विदेव करने बाबा । द्र शहा विश्वयद्यन्ति [त] प्रणा देश नेएक बोध्य । शु - वेद्रोज । बिर्धस - नि विभारत मध १ % विभाग नाश । विर्यसमा - स कि विश्वश्त करना, मह करना ! बिय-प्र [रंग] बनना प्रकार किरमा शामीका भारत तरीबाः महिः । महाः । यिचम्-वि [नं•] धनशान वरिह । वियमता-की [म] वरीबी। विचना∽सी दीनी नदश ≠ पु॰ रंग तका। स कि

प्रमामाः वेपमाः माप्त करमा । ७० कि॰ वया जामाः

र्यमधा भागा ।

यद्भग सही। विश्वमन-प्र [सं] भारता हवा प्रतिकार सुपापकः तुशाना समाना यह करमा । वि इशा करके दशने षा अधामेनाव्य । विधरा-४० त्वर, यस तत्था विभरण-प्र [री] रोधना, परस्ता । ति रोधने, पर-बनेवासा । विषयां(श)-पु [सं॰] प्ररंथकः सँत्रस्थनशहाः। विधर्म-नि॰ [सं॰] पुरा, शन्दामा। निधुव । पु॰ समान। विधर्मक विधर्मिक-वि [शं॰] को विस्त कावार करमेवाकाः वरधर्म मामग्रेपाका । विधर्मा(र्शेष्)-वि+ (शं+) अम्बाद, अमुक्ति दर्म प्राप्ते-बाना (विधारों(र्मिन्)-वि॰ [तं॰] श्वधर्मके रिव्य बायरन करमेशाला धर्मप्रष्ठ प्रदर्भका अनुवादी। विशिष्ठ प्रकारका। विश्ववन-४० [सं] दिकाना क्रियाना क्रंपमा विश्ववा-की [र्स] वह सी विश्ववे परिश्नो वृश्व हो यवी वी युगभर्तका वैदा, रॉब । - सामी(सिय)-नि विकाम भीन एवंच रक्षत्रेवासा । -विकास-५० विकास करवा । विधवापन-४ वैशम रॅशाराः विधवाबेदन-त [मं] निषयांते विशव करना । विश्ववाद्यास-प [मं] वद्य स्थान वहाँ विश्वानोंदे मरक पोषण कादिका प्रर्थभ हो । विधय्य-५ [मं+] बंदव दिवसा १ विक्रस~प (शं∗) मीम। विवासमाध-म कि विध्वश्व करमा, परवाद करमा । बिया-सी॰ [सं•] विमान हिरसा। प्रदार, शरीका रामी आदिका चाराः श्रीका नेवता संधारणः वेधन कर्ते । विचा(चस)-त (सं) ग्रहिन्ती, ब्रह्मा विभागपन-दि॰ सि॰ निर्वारित करने योग्वा शाह गरने बीग्या प्रशास्त्री बीग्ब । विधाता-को [लं•] मरिशा विधाना(त)-वि [नंग] न्ययग्या करनेरामाः निमान कर-नेवामा । प्र विधास ध्यवस्या करनेवालाः वनाने बामा। देनेवामा ज्ञवार प्रारच्या विच्छा दिवा बामरेवा

विधमुष्कः, विधम्वा(म्थम्) -ति [तं] विसने दम

विधानुका-दि की [स] (स्वादेका दिसान करने वार्की। विधानायु(स्)-तु [सं] प्रदेशमा प्रदेशमा क्रान्या विधानायु(स्) (स्व) दिसान करनेमा करनेम व्यवस्था करनेवाको योच्या विस्तान प्रदेश करनेम व्यवस्था करनेवाको योच्या वार्काना मध्य व्यवस्था निर्वादा-तुक्त (विधान करनेका करनेका विधान करनेका करनेका करनेका स्थादमा संस्थास करनेका व्यवस्था करनेका करनेका करनेका स्थादमा व्यवस्था करनेका

कपमर्गे वा बाववका कोगा भाव-इद्र । -स-५० ४/४५

दिस्क, आपापे। -श-वि विशास मान्येरका।

विश्ववर्गे १ ~(१) म - प्र मारह १

दिकारित ।

रपर विशेष: पर्यंत. तिवेध । विप्रसम्बन्ध मिं। वर्षः नहस्र नाद-निवादः विकास विश्वविसारः विश्ववीसार-व [मं] परवाशाया बुक्ताः विश्वकृष्य-विक [संक] बंधिता एका हुना। निराण एके क्रटिक्ताः स्रोपः। मन्त्रः विक्ती । विप्रतिसारी(रिम्)-वि॰ [सं॰] अनुवापनुष्तः विकल । विमस्त्रका-की [मंग] संदेत-शक्त प्रिवदे स विकारे बिप्रसीप-वि [संब] सक्या विपरीत प्रतिकृत्व । इ.सी मानिका । विप्रत्यमीकः विप्रत्यनीयक-निः [संः) शाशुमापूर्णं । विवस्तरपा(इप)-दि [एं०] एक स्ट्रीशस्त । विप्रसम्य−व विोधविशासा विप्रसम-पुरु [मंरु] विहोप, विहव पूर्वत दिसीन हो विग्रयिस-पि [मं] प्रसिद्ध । विप्रवृष्ट-नि॰ [र्ने॰] घटा पाधी कामी। शीव ! --माब--विश्रसाय-प्र• [सं•] रेमहरू बस्याः भरशर दारमभाग विश् करिक रहशायका । करमाः विवासः वयमका वस्त्रेयमः। वि. जिसमें शासीत विप्रमृत-वि॰ [सं॰] भाषा ह्या, प्रशस्ति । बात न हो। विग्रमप्-व [र्ग•] परेखामी, विशक्ति। विश्रकापी(पिन)-- वि सि विश्ववादी बलनी ! विग्रमप्ट-वि॰ [सं] जो पूर्णत नह ही गना ही हुता विमुखीन-वि [मं] विगतः हिन्तरामा इता हिन्तर तिण्यस हेसार १ निवर किया प्रभा (केय) । विद्यपास-प मि विश्वमेदा वस विद्येष बंगः विकास विक्रार्शयक-दिश (संश) श्रीम-अपरक्त में सेनेवासा बाते मीपै वानाः सङ्घ वस कीचय सासची। विप्रपुद्ध-विश् (सं) जगा हमा जागवकः दानी । विप्रसप्त-नि (सं•) सहा द्वना विसमें शशादानी विप्रवीतिस-वि [मं] जिसका विक्र हो मुका हो। वशी हो । निवारित । विश्वसम्बन्धि [सं] बडा सीश हजा एक्ष्म क्रिया हमा । विद्यसच~ दि सिंो प्रयादरवितः। विप्रकाेक-पुर (तेर) विशेषार, पहेलिया । विप्रसन्ता (मस)-वि [गं•] शिश्व विषण्य अनगमा। विश्वकोषित-नि (संग्री वस्त-व्यस्त विवा प्रभाव सराव Gut SMI ! इरोस्साइ । विश्वमाधी(भिन्)-वि [र] नवन करनेवाका स्था विद्यमीप-५० [सं] अंत नाइ पूर्वभोग। बिप्रश्रापी(चित्र)-वि (संग्) तोश्वेताचा । करनेवाला। मध् करनेवाका । विम्रमुक्त-वि (सं) बंबनसे मुक्त किया द्रमार छीड़ा विश्वसोमी(सिक्)-त [सं] विदिश्य नामह धैवा । देश हुआ। स मुद्ध (समासमें)। -अय-वि अव विश्वविश्व-वि [सं] वह भरिनदः पिप्रधाद−प्र [सं] विशास कन्द्रा मनभर । बहरेस सक क्रिया प्रमा । विश्ववास-त (तेर) विदेशनमन या विदेशमें रहना। विश्रमोदा-पु [रां•] वंचमते सुरक्षमाः सक्ति। मिश्रामीका एक अपराच यो अवना वस इसरेकी देनेके विवासीस्य - वि [सं] किसे हुक करना में। विश्वमीह-पु (सं०) विवासिरहा संग अस्ता । कारण शीवा है (ती) । विषयानन-५० (सं०) हैसनिकामा शरीवर्वे रहना । विप्रमीदित-वि सि विवद्धिः। विप्रवास-पु [संग] यस देना। वकानन । पिमवासिल-वि [6] इहाया हुआ। शह किवा हुआ विग्रवाय-वि॰ [मं] क्वाविन। तमी दिखाओं में माया (पापर्यर) । विश्वविद्य-वि [र्थन] विश्वर-विश्वर निया द्वामा धोरने ger ! विप्रयुक्त-दिक [र्थक] असन दिना हुनाः दिनुका हुक मारा या दिनाशा क्षणा । किया प्रणाः नेनित विश्वीत । विषयाजिती-सी (ग्रं) दी प्रश्रीने संस्थ स्तरेशणी विश्ववात-इ (मं) दिवीन (विशेषका जिन्हें) दिवीन श्वताया वाश्या मन्त्रः मनमेश्र मीन्य वा पात्र शीमा । विमया-व [तंर] सरहनोरी मधा विश्ववीगी(गिम्)-दि [सं] (शिव जारिमे) विवधः बिम्नक्षिक-पुरु [यं] देश्य अवैधियो १ को अनम दी। विम्नक्षिका-भी० (सं) दैनगा । विमसारण-इ [नं] दैनाना रिस्तार वरना । विश्वयोजित-दि [मं] मे मुक्त दिया हुआ। विश्ववृत्त-नि [sto] सन्त हुआ। वरावृत्त (निक्)। दौरा क्षिप्रकांस-म (तं •) द्रभ्य भीता महस्रामा शैराहवा राना बाजाः निराश दीनाः मैथिबीका विशेषः विश्वतेश KMI I बक्क । - म्हार- च विशेष श्यार विमापितरह वर्णन विप्रशाल-९ [में] को ६ वन । होता है १ विवाहील-वि वि क्षित्र स्थित रहित्र । विशासिय-९ [लेक] बंहमा १ विक्रासंसक्त-दिन (र्गन) बीमा देनेनाना, बंदयः। विधियंश्य-वि (संव) देश पेर्वियन्तर' । श्चिप्रजीमम-प्र. (riv) एक दाना भीगा देता । विशिध-तु [र्थ] अधिव कार्यः अस्तर्यः वि की विप्रतामी(भिन्)-दि॰ [र्थ॰] दे "विप्रशंसक । भाजपरायक न हो। अधिव ! -कर -कारी(रिय)-रि विप्रकृषित-दि [1] विसंपर तक किया गया बी अधिए साथै सरजेशामा ।

1724 पु शिक्षक, भाषार्थ । ५ परिषद् -खी । वह परिवद्, समा भी म्बबरमाती सुबार अपने चलानेके किय कामून थमारे । न्युक्त-वि विधानके विज्ञानक । नज्ञत-पु॰ एर्वदा बदविशय जो भाष सरी सहमीते केंद्रर पीचदक वक्ता है। -सप्तमी-की माप-शक्त सप्तमी। विचानक-वि• [मं•] ध्यवस्था करनेवालाः विवास जानने नाजा। पु विश्वेष आदेश (शासन)। कह, स्पणा। विधासिका-नी॰ सि॰ो प्रती। विभागी(निज्)-वि [धं] विभागमः विभिन्य कार्व क्रमेशला। विधायक-दि [मं] कार्य करनेवाला बनानेवाकाः व्यवस्था देनेबालाः रचनारमदः कानून बनानेबाका (बा): सुपुर्व करनेवाका । पु संस्थावक शिमाता । विद्यापी(पिन्)-वि [सं] व्यवस्था देनेवाकाः वनाने, परा करनेवाचा सपर्व करनेवाचा। प्र तिर्माता । विद्वारश्य-पु॰ [मं] रोद्यमाः वदम करनाः सँगासना । नि प्रथक करनेवाका। थक कता को उपप्रशास्त्रक भावि रोगों में विधारा-प बहुत गुणकारी होती है। विधारी(रिज्)-वि [ti] रोद-भाम करनेवाला । विधायन-प्र [मं] इथर-उथर वीक्ना । विभावित-दि [सं] दिनित्र दिशाओं में प्रकाशितः वितर वितर। विभाग्य-५ [मं] दंपन ! विधि-सो • मि । कार्य करनेका इंगर संगति मेकः प्रयोगः द्याससम्बद्ध व्यवस्थाः वर्षेत्रंथ स्टाब्ब हारा निधित कर्नव्य निर्देश: फ्रियाका यह एन विसमें निशीकी काम करनेका मारेश किया जाता है (स्वा॰)। यह संशालकार किसमें सिक विषयका किए विभाग कोता है। कार्यः मान्यः ण्य देशीः श्राककाल सामार-स्वनहार। प्र<u>स्तिकी</u> रचना करनेवाका, जद्याः विभागः सन्ति। समयः बाबी भारिका चारा। नुवा जन्मर्वना करनेवाका। 🗝कर 🗕 कृत्-विद्वम नेवा सानैदाका। दु श्रेषकः।--ध्य-वि निवमीश्र्णपत करमेशाचा । - १४ - वि विचि विचास बाननेशमा । -वर्शक -वर्शी(शिन्),-वेशक-५० वयमें बीता बादिके काबीवर सबर रखनेवाका । - इक्स-दि+ दिनानादिष्ट । —हिथ-प् निवमनियना ।-निपेश-🙎 कीर्र काम करमे वास दरनेका छ।कीय निर्देश। -पार-९ गरंगद्रे थार क्योंनेमे बद्ध ।-प्रयोगत-वि माभ्यमे प्राप्तः । –पुत्र –पुः वद्या 6 पुत्र नारदः। –पुर्-प्रकारित -पूर्व - वृत्य - वृत्य - निवसानुसार । -मयोग-१ निषमका प्रदीत । -बोधिल-दि० शास्त रिहित ।-यश-पुर विविष्क्र दिवा हुआ वस ।-याग-3 निवम-वालमा भागवता प्रमावता -वामी-स्ती० [[t] रे निविष् । -सोक-पुः त्रसमीस साथ काद ।-सोप-व निवसीर#यम :-धमू-की अहाबी वनी सरस्वती । -बजान्-मन देवशासी। भागवस्तात् । -बाइन-इ रंगः -पिपर्यंथ-मु मामको प्रति पृत्रतः। -विदित्त-दि नियमचा ग्रामके अनुसार

मतिष्ठापितः छान्वानुमोदितः। -पेध-प्र विधि भीर नियेव । -हीम-वि० मनियमित, मविदित । -मू०-वैठमा − मेरु सामा। श्वापन कुळ वार्च होना । षिथिस्समाम-वि (ए॰) वो करने वा देनेको प्रकार रयवा हो। स्वामी । विधिरसा-ली॰ [र्स] करमेको इच्छा मनकद प्रदोधन । विधित्सित-वि [री॰] जिसे करनेको रच्छा को गयी हो । प्रानीवसः अभिप्रायः। विधित्स-वि [सं] वो करमा भाषता हो। विश्रांस=-प्र• दे॰ 'विश्रंसप्र'। विश्रतिय--- प्र [र्स॰] पंहमान्त्री कश्र देनेवाका, राह्ने । विश्व-प्र [सं] बंहमा। कपुरा मक्षा। विष्युः शिवा वक् रायसः हुदः चकरनानः वादः एक प्राविधकः समय । -क्रौत-पु॰ यस वास (संगीत) । -क्षय-पु चंहमान्य धीय दोनाः अधित पस्। –हार्-स्री॰ चंद्रमध्ये स्रोत रोबिमा । - पंजर, - विजर - इ दाह, साँहा ।-परिष्यस-प्र अंद्रमञ्जा – प्रिया – सी रोहिणी: अमुदिनी । -43-3 5 सरका १८०० । ⊸क्षेत्री≑~स्त्री 'विभुत्तुयी'। -संबख-पु॰ चंद्रमंदछ। -सणि-पु॰ चंद्रकांच मणि। -मुक्ती -वद्दती-भी संदरी सी **पेदमार्के समान मुख्याको स्रो** । विश्वत-वि [सं] वे 'विष्त'। -पश्च-वि विमन्ने बरमे पंछ दिकाने हो।—बंधम-विश्वनमुखः।-सार्त्य-वि की पार्थित कराओंका परित्याग कर खुका ही। विप्रति-सी॰ (सं] १ 'विवृति । विज्ञर-नि [सं] प्रत्योश नियोगीः वंशिषः अभागमस्तः निरीची शहनापूर्ण। वचराया दरा हुआ। निरूत व्याक्तसः असमर्थं, असदाव अञ्चला परित्यका एकाची। निमृदः विसमें बुरान की (गावी) । प्रभव; कहा विवीमा मीका शहायक राह्मता वह पुरुष जिल्ही की मर गुनी ही। -वर्शन-पु॰ किसी भगवनक नदार्वका दर्शना स्थाति । विश्वरा-नी [वं] कामके पामको एक ग्रंबिः दहीको विद्युषम−प्र [मेर्ग]क्षंपन। विभूत-दि॰ [मं] बेंशवा वा हिसावा दुमा।बाँवता हुना। अरिवरः परित्यका दरावा पूर किया हुनाः निकासा दुआ। −कस्मय -वाध्मा(धान्)-वि शास्तुकः। -केश-वि जिसके बाल विगरे या शहरा रहे हों। - निक्र-दि॰ जगाना हुना,शासन् अन्तरतामें लागा हुमा ।-वस-वि जिमके बार बड़ या दिल रहे हों। विपृति-मी॰[मं] दिनना दंतम । विभूतन-पुर्मि दिकाना। बंदना अनिच्छा विदर्शन । वि॰ देशनेशमा । विभूतित-वि [सं] हिमावा हुमा बीन्ता ससीरितः

Hed I

विभूम-वि [र्थण] बृगरहित (क्रांग्र)।

रशित । प्र भाराची भवनामनाः अभीति ।

विष्टन-वि [मं] ग्रहण पारच निया दुना; सन्त दिया

हुआ। रीवा हुला। स्वादशीकृतः समिति। मैमासर हुआ।

विश्वा-वि [सं] भूनर, मरमेला ।

1110 विपद(श)-सी [मं] वक्सीकरः पिनगारीः कणः विद्यो । विप्रय-प्र सि] देवः सोकरः पक्षी । विचेत-प• सि•ो नाक्षणीका प्रवास । विवेधण-प वि | बारों बोर **देख**ना ! विदेशित-प• सि] द्रष्टिपात नारी भार देखना । विमेक्षिता(न)-वि [सं] पारी और पश्चित करने arrest 1 क्रिकेत-दिश् मि रित्तः को तितर नितर की गया को । विग्रोपित-वि॰ मिं•ो परदेशमें रहमेशकाः निष्कासित । -भर्तका-ली वह सी बिसका पति विदेशमें वो 1 विश्वय-वि [सं•] योवरहित । पु विभिन्न दिखाओं में बहुनाः विरोध प्रतिकृत्वताः प्राचनः श्रातिः दशः संबदः इसा-ग्रहाः बपह्रव विह्रोडः नाश वर्षत्रीः श्रतिः (सुनीत्व) प्रम करनाः पौत-भंगः धन्न भया सहास विका भाईनेपरका भवनाः स्वाप्तिः नियम बारिका भना पापः हुरताः शेरहा मचाकर शहुको मीत करनाः प्रसिक् बरनाः जल्बाचारः अपहरणः अवका अव्यवन न हीते हुए देशका अनादर करना । विश्रवक-वि (सं•) विश्रव करचेवाका । विष्ठ्यो(विश्व)-दि [तं] शुणमंत्रर अस्थायोः विद्रव क्रांति करनवाका । विद्राप-पु[मं] भोकेश्चे सरफ बाका बच्छावना वनदीः होइहा चपद्भव मधाना । विद्यादक-५ मि विद्युत वपहुत करनेशका बनवाई बिहोडी कानिकारीः बाद सालेबाकाः धकानेबाका । पिष्टाचम~प [मं] निरा करनाः अपरान्द कदमा ।

विद्वावित-वि [मं] बहाबा हुआ। प्रवहाहरमें टाला हुमा। मष्ट किया हुआ । बिहाबी(बिन्)-इ [म] प्रयह्नी; बाद वानेबाकाः

प्रैकामेबाका ।

विष्युर् (प्)-सा [सं] दे 'शियुर् । विपञ्जत-वि [र्] विदारा द्वमाः अरवस्थरतः वरदावा हुनाः भरका हुनाः महन्त्रष्टः बी ५थना ही यवा हो (नेप) भरन (प्रतिश नारि): उदेवितः वायारशेनः शिसका संबंधार गठठ हुना हो। कुरिनः श्रतिकृतः बस प्रावित । पु करमा २९३१ । - मेगू - स्रोचन - वि विस्ती वॉर्से वबुर्व हो । -भार्या(पिन्)-वि अरपट बीतनेवाका। -धीनि-सी है 'विध्वता । विष्युता-भी [मं] पढ भी-रीग (शीनमें सदा पीड़ा रक्षमा) ।

विप्तति-भी [में] इतवस अशांतिः नाम्न वर्शेशे । विभूत्रह-वि [र्थ] शुरुमा, बलाया दका । विष्या-मी अस निरुधिशाहे भेषा । विश्वन-दि [तं] दिना चण्या बलडीश (वृथ्)। ध्यर्थ बंदार निर्देश समुप्तम हनाग्र निराज संहरीना BRUITER : पिकला-मी [तं] देवशी ।

विकाय-५ [ध] मेल विवनाः अनुवृत्तवाः स्व । -(४)स्टि-म बार्डीय स्व ।

विकय-प [सं•] धर लेमा वंचनमें दासनाः एक तरहकी गोक पड़ी (मा वे); क्षीप्रवस्ता । - वर्त्ति - सी । पोडीका एक मृत्ररोग । −हत्त-वि कम्त्र हर दरनेदाश । विवेधन-विश् सिश् कृष्य करनेशाला । प (श्रीव शाहि का फोश) दीमों ओरसेगाँवनेका फिया ! विश्वय-वि सि रे वयदीमा जिसके कोई संबंधी स को। भस्दाय । विषदः-वि [सं•] गैंथा हुआ। यह (क्रोप्र)। वियल-वि [5] बण्डीन, निर्वण विश्व पश्चाम् । विवाध-त [सं] बताना दरीकरण । वि वापारविक । विकाधा~सी सि] कट, पौहा संत्रणा। विवाह-वि [सं] सुबत्तीन। विवक-प सि] यहीसे सरवह वैद्यब्द पत्र । विवड-वि मि विमा इजा विकसितः यतर तथ सपेत बहोश। विख्य-वि [मं] विशानोंसे शक्ति। पु निहान्, चतुर व्यक्ति देवता चंद्रमा ।- गुरु-पु दृदस्पति । - तटिमी -नदी-सी बाह्यसंगाः।-तद-पु इस्पृष्टा-द्विट (प) -विद्य-शञ्ज-९ देल्या- छत्-स्रो कामवत्रा -पति-त दहा -प्रिया-को देशांना; यह क्या -वेकि-सी [दि] धरपडता । -मति-वि चतर । -राज-प १x !-थम-प मंदमयम ।-बिहिट्(प) - प्रदेश - दिलामिमी-सी अपरा। - वरा-

य अधिनीकमार (-सम्रा(म)-य॰ स्वर्ग ।-सी-सी॰ देशांगनाः अप्सरा । विवयाचार्य-५ [सं] पुरस्पति । विद्याचिए विद्याचिपति-दु [म॰] रह । विक्यान-५ (से) भावार्यः पंतितः विवयापमा – सी [र्थ] आक्रास्त्रेत्ता । विषुपाचास-मु [मं] देवमंदिर ।

विवयेषर-त [न] रहा वियोध-दि [सं] अमर्थाम । पु बागरण अनुसृति। मधा समझा एक विमान (निहार प्रधान वा नविद्या बर बानेपर चैत्रस्य नाम-मा)। समन्यानताः स्टब्स सिकिये गुणी वा शक्तिका व्यक्त होना (ना); वक्त वर्ता । वियोधम-१ (धं) बागमाः जगानाः समजानाः

विष्रचेत्र-५ [म•] रंड ।

तस_ी देना≀ विषोधित-वि [मं] बगाया हुना हिन काया, सम शाया दुष्पाः विद्याप्तितः ।

विस्त्रोक-पु [मं] दे 'निक्तेंक । विमंग-पु [सं०] शुक्ता मंद्रपम (मीका)। एक शरीः विक्रा बाबार रीका छन्य तर्गा संय दूरमार विमागः वासींका एक वर्ष सोरामः मक्य दोना प्रस्कृतन । টি হছা।

विस्ति। स्त [५०] अनुकृति स्ति। विभंगी(गिन्)-दि बंदनदीमः मुरियोरामा । विभेगर-वि मि] अर्दिक (दरि)।

विमन्द्र-वि [र'] वेश कुमा विमाग विका दुमा। कन्तर दिया दुव्या निक्र विजित्र सक्ष्या अनेतृता माता दुव्या विष्वति-सी [सं] पार्थत्या विभावमा व्यवस्थाः निय-मनः पृथ्वः रस्तनाः शीमाः विमाजकः रेक्षा ।

विधेय-वि•[र्स•] हैने योग्यः प्राप्तः ऋत्मे योग्यः स्थापना-के बीग्या प्रदक्षित करने नोग्या प्रमातित करने बोग्या भवीत बद्धवर्तीः विकास प्राप्तित वरते चीरवः " वाटा .परामत । प्र• कर्नस्य कर्मः जानस्वकृताः जनस्या वह भंश की किसीके संबंधमें कहा गया हो (स्था)। - क्र--दि॰ कर्तस्य समझनेपाका । ~वर्सी(तिंग)-वि वसरेकी

व्याचारी रहसेवाका । विभेगता – सी [सं] निक्ति भोग्य बोलाः भगीनता । विभेयत्व-त [सं•] पपनोगिताः निर्मरताः जपानता । १ विभेषारमा(सम्म)∽पु [सं] विष्मु । विश् विसदी जल्या,

अंबत हो।

विचेमाविसर्प-प्र [एं॰] वावय-रचनाका वह दीव जिसमें प्रचान बात दनी रह काब ।

विभीत-दि॰ सि॰ो भोदर साद दिवा हवा । यिष्मापन-वि [६०] क्रितराने वा तितर-विदर

क्रमेशला । बिच्य-(६० [सं] क्षिरने योग्या मिसे बबना, छेदना 🛭 ।

बिच्यपराश्च—<u>थ</u> [र्स•] विवसका वस्त्रेयन ।

विष्यपाद्यय-पु [सं] निवसका पाकन। विध्यक्षकार-पु विध्यक्षक्रिया-स्त्री [स॰] एक कान्या-

संकार कहाँ किसी सिक्स गाएका निशेष मानियानसे, पुनः विचान किया नाम । विष्यामास-५ [वं] एक वर्तान्द्रशार विश्ववे भारी

अमिन्दको संभावना अवश्वित करने **ह**र अनिन्दापुर्वेस किसी बातको धनुमति हो जाव ! विष्यंस÷ड (रं•) विशासः स्ति। वैगनरवा प्रणाः समा

दर, अवसामा वैर । विध्यंसक-नि [सं] मागडा संबर । प्र निमासक

रब-रीव । विश्वसम्बद्ध [सं] माद्यः बरनार करनार अवमान acet । वि. भाग्र करमैवाकाः स्त्रीतः सह करमैवाका । बिरबंसिय-वि [मं] इक्ते इक्ते क्या क्याः वह क्या हमा।

विष्यंसी(सिश्)-दि [मं•] नश शोमेनाता नाशकः (वर्तात्वा) जाग्र करनेशकाः छत्र भरी । विध्यक्त-दि [में] नदा परवाद किया क्रमा। तिगर दिन्द किया हुमा; शर्ग (स्था) ।

बिनेसी(बिक्) - वि [सं] मध् सुन बीनेवाणा।

विवा-सर्व निमक्ति कानेपर नमा हुआ 'नह'का नहु॰ । अ० दिला भगर ।

विसम्ब−वि (से॰) वित्रकृत शेवा।

विनटन-पुर्डि विश्वस्तन समगक्ररमा। विनत-वि [र्व] ह्या हुआ। मनिया विजया ग्रिक्ट वका

बरीहरगढ़। भिन्ना भरत । पु एक तरहबी चीरी: एक <2१ - काय-वि विश्वत श्रीर शुक्र क्षा मनिता । विज्ञास-५ [4] १६ ५१न।

विमत्तवी ! - सा दे विमनी !।

विमता-सी (ते॰) मृदद्यानी सहसी। दश्व मनावनिसी र

अत्री कदंशको एरेनी। यहरको माताः एक तरहको टोक्टेन प्रमिष्करण ग्रीक या पेतका मध्यत कोहा। स्थापि सामेचना ण्य रायसी । -तनया-मी विमताक्षे तुरी, तुरी । ~र्नदम ~सुत्र, ~सूत्र~तु प्रशासको

विवासि-सी [म] शुकावः नप्तवाः विवासी, पार्वनः दमम । मिनसी−सी पूर्णमा। ..

विनतीदर-वि [र्शन] बमरके पास मुद्धा हुना। बिसय-प [र्त्त•] स्वति श्रम्त, शीरगुमा एतिका बासक विनशी(दिन्)~वि [नं∘] है 'निमादी'। विवद-वि॰ (रे॰) जुना वा मिला हुमा, संदीविका वेपन-

सच्छ किया द्वागा । विज्ञाय −७ [मं•] शकाया अधानाः शकनः स्वनः। विवासिस-विश् सिंशी हादावा वा (विज्ञा सरक) बनावा

हमाः शका हमा ।

विमान-वि (संध्) सुका हुमाः विमीत दिलवी सुद्रीय । -कबर-वि निक्की गरबन शुक्री हो।... विभागक-पु (ई॰) तयर-पुष्प । बिमय-वि [सं] थिया श्रामा दुर्बंच । स्रो मार्वप्रक

र्थमा अनुसारमा बासमा भएता दिश्वाः नम्ताः भार-रणा वार्षमा। इतक् करमा। इ विनेदिन, धनुमी। स्वर-साबी, स्वापारी। -क्यां(स)-त क्रियन। -क्षारी (दिम)-नि॰ अमुद्याममनाने। निवर्मीका करनेशका । -घर-त प्ररोदित । -विरक्त-त धातुम छेरेश निवर्मोका संप्रह (शे)! -प्रमाधी(धिन्)

─ित अनुसासन संग करनेवाडा । ─साक् (क्) ─िते विसत्त । – योगी(सिस्) – विस्ता । – वास्(च्) – र्ति मधुरनाथी । —क्षीका=नि निमा। —क्या-नि

भाग्रामारी । विमयन-९ [सं•] विनवा शिक्षया निराधरणा हुरी-

विश्वयम् (वद्य) - दि [ई॰] मन श्रिकः बिनवा-सी [धे] बारया-धे बरिबारा। विमयावनत-नि (स॰) निमम। विवयी(यिम्)-वि+ (वं+) विवय । विमधौत्ति-स्वी मिनी यपर वयन ।

विगवना :-- स॰ कि प्रार्थना अनुराय बरना ! विनदान-५ [र्ग] हानि नाया क्षारा वह स्थान वर्षी गरक्रती रेवपे क्रम 🗓 भागी है।

विमञ्जाह-- अरु कि अब दोना, परवार दीना ? विषशास्त्रा=~श निः श्रष्ट धन्नः वर्तरः करणा मन

कि अध्योगाः विजयार-म [गुं॰] शह दीनेशका, नाग्रवाम् वो (४६

श्वाची च हो। सन्तिम्ब । विमचरमा-सी । चिनवराय-इ [सं॰] अभिवडा मध्या ।

विषष्ट-नि॰ (स॰) ध्वरता स्तिम मरा द्रव्या स्वित द्रवी रिक्रमा अब । 3 ताव ! - बहा (श्)-(i. femit भौत गृष्ट में। गयी था। - दक्ति-दि जिल्हा दर्द भद्र ही

करमेवाका चक्कर यानेवाका (विभोत-वि सि] प्या स्थाः पक्त धाता वयता इनाः चारों नीर फैठा प्रमाः प्रथमें वटा हमा, धनवाना हमा । —स्यम-विश् विरक्षी विवयनवाका । !-- समा (मया)-वि इतहुद्धि । -शील-विश विश्वका दिनाम सरार ही गमा थी। यस । यह बंदर: सबै था बंदमहर्या में देखा । विभाति-ली [तं] भवर शानाः वस्त्रात्रीः वनगरदा शक भ्रम। विभाग्नित-वि॰ (से॰) चमकावा हमा। कांतिमध्य क्षिण इमा । विभाद-पु॰ वसेहा, गहवडी; आप्त । विसाद (स)-वि [सं] असंदारसे बीहा। विभान्त्य-पु [सं] प्रतिनेशिताः वैर शहता । विभ्रोप-प निकारतककाता। विमेदन~५ [६] धवाना अवस्था अवस्था । विमंदित-वि [सं] समाया क्या अलंकतः से बन्हा विस्पन-पु[मं]अच्छी तरह प्रथमा। विमक्तित्र-निश्मि देश हुआ, नियस विमत-वि [यं] क्लि वा विवय यहाँया हिस्स्ट, वर्गराता संदिग्य । प्र• निपरीत मता यह । विस्ति – वि शिं विश्व वा विष्योत मतकाः नर्गः सी भवभेदः मत्रविरोषः मापसंदर्गाः ग्रेखंतः । विमत्त-दि [सं•] भरतुकः भरत (हानी) । विमल्लर-वि [सं] देवरविक निम्स्वाव ह विस्तर-वि सि । भदरविकः मिरानंबः जी मस्त न की (कारत) कि विसदा-वि॰ [सं] की इस कास्तरक नवका तेनम भ करें। विसप्यस-वि [र्थ+] नीवकः बदाहोत् । विसय-दि क्षित्र बदास समामा। पिसमस्य-दि [सं] सिन्न, वदासा व्यक्तम, मधीर। विमना(बस्)-दि॰ [तं॰] क्रामा विका धरकाता इमा विरोधी मान स्थानेनाका । पिमनिया(मन्) - म्यो॰ [सं] बदस्ती, निवतः। विमम्यु-दि (हैं) होनरहिन। बिमय-इ॰ [तं] विमिमव । विसर्थ-पुरु [मंर] रयहना पीछमा शैरमा छंदर्थ लडा माता रेक्टाक बाबा। संबंध समाम द्रांति बार'बत थल ६ - अस-दि शीरमा शहन करमेंगावा (वरात्तर) । विमर्शक-वि॰ [र्राव] मनमे शैंदने ग्रीमने वह बस्ते बाजा । द्वारातने नद करनेश्री कियाः सहया पक्रवर्त । विमर्वन-५० [मं] यसक्षा करताः तद्र करताः मुर्वाक्षा एक राज्यमा पीनमें कुचण्येकी किया। तुक्षा मध्य वर्षेद्रीर प्रदेश । विमन्त्रीय-रिश् वि है मन्त्री शेसवे बीव्य । बिसहित-दिश् [मंग] बीमा, शीश हुमा; रगश हुमा मना इक्षा । विमरी(दिन)-दिक [बंक] सकतेवाताः देसकर पूर

दर्भेशाला नह बर्भेशका ।

यिमहों च-९ [4] वर्षमी बारव सुर्वार ।

विसर्व-प [सं•] विवाद, विदेषमा भोष्ट्रमा मनेपा चर्डे धाना धिवा चरम विद् एक संवि जिनमें बीवरी अधिक विकास दोता है दिन कम माह होनेड राने रे काचारिके कारण बाबाएँ धवस्थित होने समुत्री है। (बा॰)। -बाही(दिम्)-दि तर्द दर्भेशता। विमहान-मु [सं•] तर्द विनर्दः सीधवा स्मीरा । विमर्शित-विक (संक) विवादित, भारोपित । विसर्शी(शिन)-वि॰ [सं] विवाद करनेतकाः क्रां-विमर्पे~प्र॰ (सं॰) विचारमाः वाकीयनाः व्रामः वनः क्ताः सीम १ बिसल-वि॰ [सं॰] सादः वेशमा विद्वारा निशीश रण बारवर्धक वरेतः संघर । १० वक समामंत्री देशा वर समाधिः यह क्रीका एक चाँत वर्षः दक्षः शोर्वदरः रह शा-वाता प्रज्ञास सेंथा जमका अवस्य । --व्यक्ति-प स्व बीड बाबादे । - गर्भ - प० एड समावि । - वर्त- प० यक समाचि । – बाय – व देवद्रीत्वर्व दिवा मानेशना दान ! -श्वनि-पुरु यद पृत्त । -निर्मास-पुरु एद समाथि । - सेश्व-प॰ यद मद्र । -प्राचीप-प्र॰ एव समाप्ति एक तुद्र। - मास - द्र एक समापि। - मणि -ष १६६८कः। ~सति ~दि० श्रेष्ठ प्रदेशसा । विमक्त-को॰ वि॰) सप्तराः यद हेगाः निर्वरणे वन विवर्ते, वारवाजीयेने रकः वर्तिका स्वन्याः सरस्रते । -पति-त मधा। विमकारमञ्ज-वि [वी] निर्मेतः। विमसारमा (कान्य) - रि. [मं] विश्वका मन परित्र हो। उ भेरमा (१)। विसमाहि-प मिनो भिरमार परेत (गावशत)। विमलायं ६-वि॰ (ते) विमेष । विसत्यकोष-४० (सं०) यह होर्बरवान । विमसोदका विमसोदा-सी० (गं०) रह गरी। विमान-त [तं] (इसे मारिका) भवाप मान । वियासा(म)-भी भि । भीतमा मा । -(म) प्र-१० शीनचा मार्र । विभाध-दि॰ भिं•ो जिनका नाम बराबर म हो। विमान-वि विशे बनायारिक । पुरु अहम्यामा देश बानः बालुधानः शतः मंत्रिनीयाना गरामः राज्यानाः। वैवर्गरिशः सत्री द्वर्रं भएगीः रामभीका आदिमें यात्र आनेवाना यक सरवदा यामा तक तरवदी मीमारा ईमी पीता अस्ता देशात । ~चार्रा(रिच) ∽वाम-रिः विमानमे बाबा करनेशमा । - चाकक - व वापुराम बलानेबाचा 'बायनर' १ - निर्द्धांड-१ वस मगेरि । ~शाम-मु देवपानका चानदा बंदन अच्छा रिमान रे विसाधक-वृ [र्ग] बाग्यामः सात्र अधिकोशन्ता हरीने धा भीतार 1 विमायमा-की। [ते] ज्यादर शिरम्बार । विमानिश-वि [१]०] कमपत (तरस्य । विमानीकृत्र-दि [तं] दिरायतः दिवास वसचा ॥ व विभाग-१ [मं] बुमार्न शास्त्रात शा र । (40 प्रशान वर जानेशका । -वा -ब्यामी(मि)-नि हो राग्धे

भर्सभावना-जसब् 111 छीटे-छोटे समूबॉमें सेनाको प्रक-प्रकर हो, दिना सहारेका: * यो सँगाका न जा सके। नियाका −ब्युद्द~पु रिवत करमा । मर्समावना-सी० [सं] संभावनाका न दोनाः दोने योग्य अस≠−वि॰ ग्रेसा, जैसा, समान, क्रस्य । भ द्योगा अध्यक्षका। **असक्तामा**∽अ० क्रि॰ साहरव अनुसव करना । मसंभावनीय, भर्मभाष्य-नि॰ [सं०] दुवींका असंसव । असक्ष्या~पु० रेतीको सरहका एक भीबार । **मर्समापित−दि॰ [सं•] जिस्की संगा**वमा न रही हो। **असक्छ**-वि॰ (सं•) वर्सपर्ण १ वसक्त-वि० (सै०) बासक्तिरहित, वेन्हगाव; बदासीन । सम्बद्धाः भर्ममाप्य-वि [सं] म इहमे योग्य वार्ताकाय न करने 🕶 अञ्चल, दर्बरू । पोम्ब । पु॰ कुनचन । गराचार्यम-प्र• [धं] वह मृमि जिसमें शरवश्य अमसे मक बत्यक हो। बीडे परिमम भीर स्वस्य युष्टिसे संपत्त सर्पमृति को [सं•] अविषयानताः पुनर्यन्त म दोगाः मध्यक्ति प्रश्नृति । हीनेवासी खपव । कर्समृत-वि• [सं०] प्राकृतिक, अकृतिमा विस्ता पोषण असक्थ−वि॰ [धं] विसे वॉपें न हों। ध्मिष्त स्मते न हुआ हो। असर्गध−प पर पीता विसन्धे पर दशके काम आती मर्समोज्य−वि+ [सं] क्रिसके साथ काना स्थित न हो। है, अदयगंचा । सर्वज्ञस−वि [सं०] उदावको वा व्यक्तकासे रहितः असगुन∽दु अपद्यकुन । सव। यु **भीरवाः** स्रांति। असगनियाँ।-५ वह व्यक्ति विसक्त सुँह देखना असम ^{क्}सवत∼वि० [सं] संवमरदितः अनिवंत्रितः वंदनदीन । मामते हो। बस्यम~पु॰ (सं॰) संवमका बमाव मल, वंदिय बारिको असरोच−वि सिंी मिल मीत्र वा कक्का। रसमें म रखनाः विकासिता । संसद्धाख-पु॰ [एं॰] अधर्मकी और के जानेवाला शास्त्र । मॅसंयुक्त-वि [सं∘] विका न लुका हुआ, जुदा। अस्पञ्चारय−वि० सि] विसके साथ रक्तसंबंध न डो। बसंयुत-वि [सं] न मिकावा हुआ, श्रमिश । पु विष्णु। भयज्ञन~प्र सि ोदरा, दह मारनी। मर्सपौग-पु० [सं∗] क्षोग या मेरू न होता। वि० मिसकै अमदिया1 −५ सॉपॅका एक मेद । सर धंपर्क निविद्य हो। अमती-वि॰ सी॰ सि॰] अपवित्रता, पंश्वकी । वसंरोध-पु [सं०] अस्ति, श्रविका जमाव। असत्-वि॰ [सं•] व्यविद्यमान, जिसका वरितरव न हो। वर्मसस्य-वि [सं•] जो रुखित न ही सके, अवोधगम्य । मिथ्या। परा मन्याचत । प्र+ भनस्तितः महितः मिथ्यास्य। वर्सहत∽दि [सं•] को बकाम दी कुका दुवा। पुणक -कार्थ-पु॰ दुरा पैछा वा काम । -क्रस्य-वि दुरा बरका काम करनेवाका। -स्यासि-की मिय्या द्यान। वर्तम्बवहित-वि [सं] अवकासरहित, व्यववानरहित । ~पर्य∽प प्रशासामाँ सराव सक्दा। −परिश्रह ~ मसमय-पु॰ [सं॰] संसमका समान, सरेह, जकका न प्रतिबद्ध-५० निष्य व्यक्तिनोता दिया हुआ वा निषिद्ध धेना। वि संस्ववद्भाव संकारकित। बस्तजीका तान केना । - प्रश्न-प्र॰ प्रवहीन मशुम्यः क्यतः । वर्संभव-वि• [सं] वो सुनाई न दे। [सं] जनायर, आवमगत म होना भसत्कार-प क्यंदिरुष्ट-वि॰ [सं] बस्युक्त । उ. विह्न । अहित । बमंसक-वि [सं] क्लासका विसक्त। असरकार-वि [र्थ] जनायतः विश्वते प्रति हरा वर्ताव स्त्रेसिक्त-तो [सं] अनास्त्रिक, विरक्तिः संवेषका जगान। किया गवा हो । क्खंसा(!(रिन्)-वि [सं•] जिसका संसारते कोई संबंध असत्ता~ला॰ [सं] सत्ताका अभाव, नेरती; असावता । व धो, विरस्त । असरब~नि॰ [सं॰] अधस्तः, निर्वेशः शरवग्रवहितः। प वस्ति ची [सं] पुनर्यस्य न दीना, मोद्या कारताः **असा**श्चा । क्लंस्प्र-वि [सं] को क्लरेसे संबद्ध या मिला न बीत अस्स च−वि सिं] श्रष्ठ, मिय्या गडवा प∙ श्रद्धारैः शाथ म रहनेवाका । शुरु वीक्रनेवाला व्यक्ति। **∽वाद**-पु शुरु वीक्रना। क्यंस्कृत-वि [सं•] संस्कारशीम, जिसका कीई संस्कार -बादी(दिन्)-नि स्ट बेल्नेशका। -शीस-नि ने इवा ही जो संवारा सुवारा न गया हो। असम्बा बिसकी शुरु बोकनेकी और प्रवृत्ति हो। -संघ-वि व्यक्तिक विक्या बीखा देनेवाका, कमीना ! -सक्रिम-वि असस्य वैसा, ममस्ति-(१० (सं०) सङ्ख्य समस्रिकः विभिन्नः सागै अमीगक-सा । बरवराईत । असरवता-सी [सं] सुठाई। नर्मसान-पु [सं] सम्बर्धाः संबंध न होताः समाव। असर्- असर्का समासगत रूप ! -आगम-पु पर्न-मनेत्रित-विक [मंक] सम्मवस्थितः ग्रामएडितः सम्मगृहीतः विक्य द्यासाः अनुवित शावनीते वन माप्त करनाः तरा शावन । -आधार-पु धर्मे मीति विस्त आधारण वमस्तिति सी [मं] ऋम या व्यवस्थाका जगन्। धर्थमे । —मुद्धि – विस्ता – भाव – मु वसंदत-वि [संव] बसंयुक्त, बीटा। विवास हुआ। पु काशाय अनुपरिवति। दुरी भावनाः दुरा स्वमादः सध्य उत्त वा भारमा (सां)। एक शरदकी व्यूवरणना। म्बाबानसार वक दीव । -बाद-पु॰ सत्तादी दोई बस्त

अमरश∽ससहन न माननेका सिकांत । -शक्ति-विश्वराकारी वक्त का मारा । खी॰ दश्दा, घटता । -व्यवहार-वि , प देश 'अमन्दर्शत' । भसरस-वि [से] असमागः भगान्य, अमुनितः। वसम- • पु॰ भोजन; [सं] पॅक्मा छोडना चकाना (बानादि): पांत्रशाह नामक बुख र -- वर्षी-मी० सातक मामद बुध । भगना-पु० बुक्कविश्वेच । **ध**यमाप्र+-प स्तान महाता । अससक्र −वि सि] को इधियार न वॉने हो या तैयार न हो। वर्मनीः विन्तिमास्य । ससक्रिकपं-प [सं] निकट न श्रोताः (किमा परतका) इर होना। बसरियान-पु, अमिक्रिधि-सी॰ [मं] अनुपरिवरि दर दोनेकी रिशति समाव । भसंबिद्दित-वि+ [सं०] बूरवर्ती;गनन तरीकेसेरखा द्वथा। अमपम-वि [सं•] शहर्राहत भशहु । [स्री ^{*}ससक्ती -(बह नी) बिसके सीत सहा।) असपिंड-नि॰ [सं] को अपर्ने कुकका या कुलमें शास पैनिजेंचे अंतर स की। भसफ्छ−वि [सं] विफड, शकामदाव । ममफकतां नवी [तं•] दिश्रवता। मसवर्ग~ प्रस्त पास को रेशन रॅगनेठे कामने भागी है। भसवाब-प [भ•] ('सनव का वह) कारण: आवश्यक सामग्री और बरदा असाफिरके सामग्रा सामान । शसम्प−दि सिंो समस्ये अयोग्यः अशियः गैंगारः सामानिक व्यवस्थाने विश्वका हवा। जेवली । असम्बद्धा-द्री [सं•] प्रदिष्टताः गैंशरपनः अंग्लीपन । धसमंबस-वि [तं] बरका बबुक, शर्मात। मूर्गरापुतः राम सगरका क्यंप्र पत्र, अंध्यमनका विना।

मसम्मानः निरादर । समस्मान∽त [सं] निरादर । भगम्मित-वि (सं) वर्षार्टमेत बहुत शक्ति। भम्बित । प्रविधा व्यक्तिगरी भमीवित्वा शंतरा महा-सम्मत्र•-द च्स्हा। भसम∽दि [मं•] जो बरावर न दो। अशरका कैनीका क्नातस् । विषम, ताकः केंना-शीना आहमपार । प्र॰ अर्थालंकारका कम्पर-पु+ [मं+] कुकुरमुक्ता सामक पांचा जी दवाई कार्न एक मेर जिसमें उपमानका मिक्ना असेनव दिख्लावा भारा है। वाक वंशे−'याकटि सम संदर कुनम टॅंकेड मिकिवे मावि': तुद्ध । - मयम् - मेब्र-सोचम-प्र° तीन शासीनाके शिव । -बाण-द कामशैव । -बाश-द्र॰ वह बर्जबृत्त बिस्त सद बरचोंने समाम गय म हो विश्वन-क्षत्र । —शस्त-सायक-पु» कामरेव ४वशस् । मस तस्य । भससम् - (वे [री]) अध्युषः असम्बर्धः ।

मायीक्ट बानेक्सा बसम विका सम्प्रमण-प [सं] समयका करता अनीव कार, क्रसमय । अ॰ वे-वर्षः, वे-मीके । शासमर्थ-वि (ई) अग्रस्त, दुर्वज- अपेक्षित शक्ति वा दीश्वता स राग्नेवाचाः अभीधं अर्थं व्यक्तः स वट सकते ।

अस्यमत—हो [अ॰] परिश्वतः विश्वपापतः संशीत्।

-प्र'रोश-4 व्यक्तिपारियो !-प्रशासी-स्मे ससीत्य

असमम-दि [मंग] दिभिष्ठ रंगों वा गतींवासाः निविष

विक्रव स्थानिकार ।

बाला !--पब-पु अभिप्रेत अर्थ प्रकृत करते हैं समार्थ धन्य । --समास-पु॰ बन्नयवीष-पुन्तः समास ('बन्नाद-भोजी' और 'अस्ट परवा'में 'अ'का अम्बन 'माम' और 'सर्व'के साव न करके 'मीजी और 'परवा'के साव करना बोता है) । असमवायी(थिम्)-वि (सं•) वी सदव वा व्यविष्टेप न हो। भानुनंगिक समवाय-संबंध म रहानेवाका ।-(वि)-

कारण-प्र कार्यकारणका अभित्य संस्थ । -असमस्त−दिण [सं] जो पुराया कुल न हो सम्बन्धाः अधिक। को एकत्र न किया गया हो। एमास्ट्रिस धार्मिटीय विस्तात ।

बसमान-वि [र्सण] जो बरावर न हो, बरादरा । + पुर

असमास-वि॰ [ले॰] अपूर्व नातमाम अवूरा ! बसमावर्षक असमावरा असमावराक असमावरिक-विश् मिंशी जिस(विभावी)का समावर्तन-संख्यार न हमा को. जिस्का पंडाप्यवन समाप्त म इक्षा हो । असमाहार-त (सं॰) बर्ननार, पार्वपर, विसी वर्णामे क्षप्राप्ति ।

असमाक्रित−वि॰ [र्स] विसन्धा वित्त यकाम भ की। भरिषर I असमीचीम-वि (सं॰) भयकः समित्।

श्रासमेश्रण-पण्डे 'अपनेष'। बसम्मत−वि॰ [र्व] नवभेद रखनेवाका, विरुद्ध; अनारकः बरवेइत नार्मनर । ५ चनः विरोध बरनेशना । श्रमसमित्रच्या (रा•) सत्येदः अस्तीप्रतिः विश्वेता

शसचाना र−विश्वयतर सीवा थोका। असर-१९ मि॰ो सोबः स्टब्स्सः संदहरः छपः प्रमानः शुक्त दरावा प्रका दे॰ अन्य [अः]। असरार−प+िम ो भव रहत्व (सिरं'दा वद्द)। ≉ ध+

असम्ब-प्र• मि॰] लोदाः अतः एक मंत्र विस्रता वन भकाने समय वर्षेत किया बाता थाः 🕇 एक छार विस्ति। छालगे ममशा सिजात है । वि कि कि 'बस्तर'। असरिवात-सी वि । असल बात यानाविकताः वदा

अससी-वि सथा श्रमः लास्य । वृ [भ] सहर । असकेड॰-4 दे 'मध्य । सस्तवर्ण-वि निश्लो निष यम वा वातिका ।

नसवारां - प्र 🐧 'सपार । असमारी!-स्पे दे 'छवारी । असह-वि [तुं•] अगृहिष्णु न सह-(वाला; सवीर 1 द

सीमेदे श्रीमका दिस्या । असहसार-त [नं]रे 'असहरोग (असहस-वि॰ [रां॰] सहस स करनेवाणा, स्वाहिण्डा पर बालेबाका । –शा∽िव स्त्री प्रदेशकी । –द्यसि− वि बुरे विवर्गोकी ओर धरियात करमेवाका । -- प्रस्थितः -स्य-विश्वी हमार्थपर हो।

विमार्गक-प सिंगे किसी भीमकी तकाश करना। बिमार्जन-पर्वामी बोनाः साफ करना। पवित्र करना। विभिन्न-प [सं] चार योगीपर टिकी हुई वर्गीकार भाकाः वदा कमरा इमारत । वि परिमिता निविच्छा निर्मितः।

विभिन्न-वि॰ [रो॰] मिका हुआ। विसमें कई तरहकी ची वें

गिकी हों। पुरुषे साथ गुरू वन । विभिन्ना - औ॰ (एं०) हुन प्रदक्षी गतिका एक नंस ।

किसिक्सिल-विव सिवी एक्से शिकाचा गुमा विभिन्न । बिशक-बि॰ [मं॰] सक किया हुआ। छोड़ा हुआ। रवर्षणः परिश्वकः चेंद्रा यहाशा हजाः वंशितः, विसने अमी केंच्छी होत्री हो (सर्व)। श्रीर हातः - से स्ववितः वसा हमा: वरी किया हमा ! - बंट-वि जोरस विकाने वा रोमेशका । -प्रमद्ध-वि विसन्धे क्यान दोकी कर दो गर्वा हो। - शाय-वि विसे धापसे खटकारा मिक मबादी।

ब्रिसक्ति—सी मिं∘े रिवार्ड, सरकाराः पार्थपवः सक्ति

मोद्धा -- वच-- प्रमासका मार्ग।

विस्तय-वि मि । विशेषा विरत्य प्रतिकका विवतः इतादाः परदेवगारः उदासीनः शबदीमः द्वित्रदेति । विसारध-वि थि दिश्वकि, वदशावा कवाः असमै वहा

इ.मा: मीत: मोहित: मत्त : -कारी(रिश)-वि मोहने पाकाः भ्रममें बासनेवाला ।

विसरप्रक-पर मिर्ने मोहनेशकाः समिनवदा एक प्रकार। विमुद-वि [सं] निरानेर सिघ। प्र यक वर्गसंबना

(ñ.) i विस्ता-वि [सं] विमा सदरका किया प्रमा प्रयर । विसहस∽५ [मं•] शिक्नेमें प्रकृत करना।

विस्द्र-वि [सं] परशया हुआः शरीः वेश्वया सीदितः चतर । प्र एक देवयोनि । −गर्भ-प्र वद गर्भ विसर्गे थया मर गया को और प्रस्तरमें कट की। —कोला (तस)-पी-दि न्यं नास्त्राः । -भाव-प्र येश्वर शानेका सररका ! -संशा-वि परवामा चक

रावा हमा ।

विमृहक-८ [मं] एक तरहका ब्रह्मन (शा०) । विम्चर्य-वि [सं॰] क्लिकी कुर्ण दृर हो नवी हो। विमुर्रिक्त-दि॰ [सं॰] को जमकर नाम को गवा ही। ··· से अवादमाः मे पूर्वा मिश्रिता वेदीया ।

पिस्तं-दि [मं] बमाद्रणा बी टीस हो गवा हो । विमुर्धेत्र-वि [मंग] गंबा सक्वार ।

विस्त-वि [मं] बहने बसाह। दुला मृनदीना नह । विमुलन-पुर [सं] मूनो धीर करना। नाहा बरसा।

विसाय-(र [मं•] अस्ट ।

विगृहित-वि [मं] दे विगरित । विस्ता-५ [मेर] मीय रिनार विदेशन । विग्रास-वि [मं] जिलका विरेचन वा विचार करमा ही। श्मिक्षी गमीमा करनी ही।

विद्याप्ट-वि [सं] विचारितः विवेधित आक्रोधितः रगश हमाः सद्या हमा । विमोक-प॰[सं॰] मुक्त करनाः शंतः वरिस्वानः विवयादि

से पाटकारा । वि. सणकीनः रागधीम ।

विमोक्त(क्य)-वि॰ (सं] सक्त करनेवाका ।

विमोक्ष-५० (ए०) सरकारा। मुख्य मिर्वाणः भावाद करमाः बानः (बाज) अकामाः मेर पर्यतः ग्रहणका श्रेत । विमोश्रद-वि॰ सि॰। मक्त दरमेवाका ।

विसोध्यण-प (सं०) विमीचन चंचनमुक्त करनाः परि रवडनः (वाण काहि) वकामा ।

विमोक्ती (क्षिन) - वि॰ वि॰ विने विने मुक्ति, निर्वाण प्राप्त हमा हो ।

पिमोध-विश् मिशे व्यर्थ, नेकार, तिम्दकः अमेव ।

विमोचक-वि॰ [सं] मुक्त करमेवासाः विराजेवासाः छोडमेबाका । विमोजन-९ [चं] दूर करनाः मुख करनाः अपने

दशमाः निकाकमाः कॅबनाः विरामाः शिव । विमोचना - स कि वेपन मुख बरना। ग्रोबना। बहाना विराज्य (

विमोचनीय-वि (सं०) क्रोइमे दोस्व।

विमोचित−वि [सं•] श्रोका हवा तक किया हवा। प्र• शिव । विमोचितावास-५० [धं] अनुपतुक्त समझक्द होहे

हर रचानमें निवास करना (बै)। विमोच्य-वि [सं] छोरने, मुख बरने दौरवा

विमोह-द [नं] मतिश्रंका समा अवाना आसक्ति **एक सरक ।**

विसोहक-वि॰ [एं] प्रमर्गे शहनेवालाः तुम्भ करने बाब्या । तु यह राग ।

विमोद्दन-५० (सं) समा श्रीदर्भग्रा आहन बरनेक्ष विचा, क्यारमा श्रमाना। एक मरक कामरेक्टा क्य गण । -विक-दि भ्रमने दावनेवाना। सम्ब बरने वाला ।

विसोद्द्रण - व कि. मुख्य दोनाः थोदा दानाः स कि सुरूप करना समानाः ममानित कर वद्योभूत करनाः प्रांत ६१मा ।

विमोहा-मी [मं] वह एर ।

विमोदित-वि [सं] नुष्य मुख्य बेतुम, मृत्यांग्राता नदीक्त ।

विमोदी(दिम्)-वि [ते] गुल्व परनेवाला प्रमर्थे दाकनेवाचा। अचेन कर्नेवानाः मोहर्रहन ।

विमाह-पु॰ वमीहा श्री । विम्छापम-पु [सं•] सरशानेमें प्रशुच दरमेशवा !

विर्धेग०-५० वी बंगीनारि, महारेव ।

विष - वि शी। इमरा ध विषति – पु (वी०) वस क्यी। महुष रामारा एक पुत्र ।

विषम्-पु [मं] आदाशा वासुनंदल। वि गतिशील। --पशाका-नी॰ विवसी । -पय-१ वाशुमस्य । विवर्- विवर् का समानगर कव र-र्गगा-भी आहार

र्थना र ~गण-वि जाकाशने ववनेवाता । ~मति-

सस्तो देवानेवाला । प्रस्त चौजीती देवानेवाला नेता विभाु। −क्यवा(बस्)–पु॰ सर्वदी एक रहिस। -अन~पु॰ मानव-वाठि । -बनीवः-जनीय -जन्य नि सनके किए उपनुक्ता सनके किए कामदायक। -जयी (यिम्)--वि॰ मेसारको कौतमेशका !-जित् -वि• सक्को श्रीतरीवाका। पुषक प्रकारः अधिनका पर रूपः बदमका पाशः निष्मुः एक दानव ।-जीव-पु विश्वारमा देशर। -क्योति-(स्)-वि पूर्ण शीसिसे मुक्तः। पुरु एक् एकाइः। – स्पोतिय-पुरु एक गोत्रप्रवर्गक भाषि। ⊷तन्त्र-वि जडांड जिल्हा शरीर है। प्र• विष्यु । -तुष्कसी-सी॰ वन्तुस्तमी । -नृष्ठ-वि प्रत्येक वस्तुसे संतुष्ट । पु विष्णु । — सौथ — वि विसर्ने सक्ते किए अब हो ! - तोया - तो गंगा ! - प्रय-प् भारतस्य पातास और मर्त्वेकीका -र्दंड-प् मसुर । -दानि-दि स्वको देनेवाला । -वाच-दि **धवदो मुक्सानेशका। -हासा-सी अ**ग्निको साध रिशाओं मेरे एक। -१क्(स्)-वि॰ सक्दी राजनेवाका। --देव-पुपक्ष देवताः एक देववर्गः --देवा-न्या रख रंटोएका नावनसाः छोटो गरंपुका । -वैश्व -वैश्वत-पु वक्तराबाहा मध्य । -धार-पु सब्द्रो धारण क्रमेनका विभाग - घरण-प - घा-सी विकास गरम-वीतम ।-धाता-(ह)-वि पु विश्वको धारण बरनवाका । – घाम(म्)-पु दैयर । – घार-पु मेशतिभिक्षा एक पुत्र; वसके शारा शासित एक वर्ष । ~पारिणी-सौ॰ दम्बो । ~घारी(रिन)-नि विश्वको पारण करनवाका । पु देवता । - एकः - धत- वि मरमेक परार्थको चारम करनेवाला । —धना – स्री पृथ्वी । -नेर-ड नदास्य यक मानस धुन । -नाथ-धु शिषा बाधीका एक प्रसिद्ध क्वातिकिंग !- वगरी -पुरी-सी॰ बाधी। - भट्ट-पु॰ शाहित्वरर्वचढे रवदिता। - नाम-दु दिन्तु। - नामि-की दिवसी माभि विष्युक्त कर्मा – पति – पुरंकरः कृष्य अभि विशेष । -पर्यो-को भून्यामसको । -पा-पु सम्बो रधा दरमेवाकाः सूर्वः भहमाः अन्ति । -पाचक-वि मन्द्री पद्मनेवाला (अनल) । -पाणि-पु यद्भ ध्वाणी वीविभरव । -पासा(भू)-वु वक वित्वर्ग । -पाक ™3 विश्वका पालम करमेवाला देवर —पाक्रम-वि संदर्भ परित्र करनेदाका । -पायको -पृत्रिता-कौ० गुनमी । -पुर्(प्)-दि सक्का पोषम करनेवाला ।--पुनित-दि सबदे दारा पूजा आनेवाला । -पूछ्य-दि सर्वसम्मान्य । -प्रकाशक-वि सवकी मकाशित करमे दला।पुन्दं। ∼प्रदोध−दि गरदो सामग्दरमें वासा। दु मिन्तु। – प्सा(प्सम्) – दु देवना। सूर्य। भंग्माः नवि विधरमी । - वजु-पु विचढा मित्र ग्रिका−क्षीज्ञ−षु सून प्रकृतिः –कोच∽तु० सुद्धाः ~भद्र~ पुगर्नीवर सामद यक्र । वि पूर्णत अनु रूपः। -सत्तां(न) -पु सस्दा घरण करनेवाण वेंबरः। -भव-तु वर जिल्ला नवडी कार्याच दुई है जहा। -माव -मावम-रि॰ मरशे सृष्टि वरनेशका। <u>व</u> रैपर। -गुष्ठ(ज्)-वि मरहा श्रीप वर्तेवाला।

पुर्वहः शेका यक पुत्रः अधिः यक पितृवर्गः। - सञा--सी॰ यह देवी ।-मू-पु॰ यह तुद्ध ।-मेपज-पु सक्की दवा, सोठ। -भोजन-पु॰ सद प्रकारकी भीतें साना। -सदा-सी अधिकी सात विद्यामों मेंसे एक I -सहेरबर -प क्षित्र !-भाता(त)-खो॰ निषदी माता हुगी। ─मुद्री─सी॰ एक दाशायणी (बार्च्यर्में पृतित)। -सूर्ति−वि सदक्षेमें रहनेदाका सर्वस्थापके। प्र र्रवरा शिव। -मोहम-वि सको सुन्व करमेशका। पु विष्णु । —योनि—पु नक्षाः विष्णु । —श्य—पु• गानिका एक पुत्र। -राज्ञ,-राद्(श्)-म सारे विवका प्रमु । - इति - चु शक देवयोगिः एक दानव । ~रुची~सी व्यक्तिको सात भिद्राभौगेसे न्यः। −द्वाप− वि॰ सक्ष्यापका पुविष्मु हिन देवता एक तरहका व्यकेतः यक अञ्चर । कृथक-तु काका कगरः श्विरमी । -स्पी-नो अधिको पड विकाः -स्पी(पिस्)-वि विभिन्न रूपोर्ने प्रस्ट होनेवाहः। -रेता (तस्)-प्र त्रकाः विष्णु । −रोचन∼पु० कृष्टः नाडीय नामका समा।−कोचव−पुस्कै संद्रमा। −कोप−पुण्य वृक्षः एक वैदिक कवि :--बसि--वि+ सर 50 देनेवामा । -वर्णा-नी भृष्यायतको ।-बशु-पुः पुरस्काका वस पुत्र। −वाक्(भू)-पुन्रदापुर्व। −वास-पुसमी बस्तुमौका बाबारः बगत्। -बाइ-वि सबसे बारम इरमेबाका ।-बाहु-पु॰ विष्णु । -बिरुवास-वि की सारे मसारमे प्रसिद्ध हो। -विद्वासी(विम्)-वि सन्दो विजित करनेवाका (~बिक्-वि॰ एव कुछ जानसेवाका सर्वतः । दुः रेश्वरः । – विद्यासय – युः वह संस्था बहाँ सारी विवाभोको कैथो शिक्षा हो भाव । -विद्वान्(द्वम्)-वि॰ सर हुछ जानमेवासा।-विभावी(विन्)-दुःग्याः देवता। -विमायम-९ दिगः। रवना। -विभूत-वि विभविक्यानः -विच-५ विप्युः। -विमारी (रिम्)-वि नर्वत्र पैन्यंबाला।-विस्ता-सी बंधासी वृधिमा। - बृक्ष- दु विष्यु। - वेदा(दम्) - दिः लबंद्र । यु कारि । —ध्यापक — स्वापी (पिसृ) — दि जी सर्वत्र व्यास हो । पुरेक्ट । —स्यासि—सी सर्वन्यापकता । - सया(यम्)-५ रावमका विशा । -भ्री-वि सक्दे विष वस्त्रोगी (स्त्रि) । -संहच-ध ब्रत्स्य । −समय~ वि+ क्रिम्से स्वरं कृष्ट सराग्र हुमा ही। पुर्वभर। -सहार-पुनिषध नाध। -सगर-दु सरका नित्र । −सत्तम-दु दिप्पु-कृष्य ।∽सद्द∽ सद बुटका शहन करनेवाना । – सहा – स्रो पृथ्वी नविको एक विद्वाः -माद्यी(क्षित्र)-वि सर् कृष्ट देशान्यामा । तु वैचर् । —सार्⊷तु नवविश्च । -मारक-द शिर इस बंदारी। -गृह (म्)-दि गक्की स्वना करनेदावा। पुन्नाः ∽पृष्टि–सी विश्वकी रक्षमा।-स्था-भी यज्ञावरी।-वृद्धक्र(रा)- सरदा रवर्त करनेवामा (सहायुग्य) । - माणां (८) पु । महिना १वन्ति । - इत्ती(न) - प्रारी । - देनु-तु मनशे अवस्थित कारण विश्व । विश्वक-वि [श्वेण] नवयः सर्वेत्यास्तः । पु पृत्वा एड

विवन्मनि-विरस কী॰ খণ্ডার । बियम्मणि-पु [सं] सूर्य । वियम-पुरु [संर] देश 'विवास' 1 विमय-पु • [र्:•] एक प्रकारका बांत्र कृति । वियात-वि [तं] पृष्टः वेहवा। अशिष्टः परित्वका बुन्ही । विमास-५० [सं•] सहित्युताः शेका विरामा कर । वियुक्त-नि [सं+] करून किवा हुवा, परित्यक्त रहित बंबितः विस्का किसीसे पार्थवय हुआ की सुवाः जयावग्रस्य । विद्युत-वि [मे] से विक्का वैविध, रहिता विद्यय∽वि [सं•] बूबप्रह वो अपने श्लंबरो अक्रम हो गवा हो। वियोग-दि॰ दूसरा। वियोग−द सि•ो विच्छेता पार्थक्यः विरद्या धाराका पुरदाराः व्यवद्यक्तनः, वशव । –भाव्य(ज)~वि विश्वातर । वियोगांत-वि [सं] जिसक कवानकका भेग विवेशियों ही हम्बांत (बारकादि) । वियोगावसाम∽ति [सं] जिलका निवीनमें शंत की । बियोगावा:-वि [ti+] विच्छेर करानेवाला । वियोगिन-सी है 'नियोगिन।। वियोगिनी-सी॰ [धं॰] प्रेमीसे शिक्षी दुई की बिर कियी । वियोगी(गिन्:)-विक निन्: प्रिवासे क्लिका हुआ, निर्दर्श । स्त्रः विश्वी प्रवंशः चक्रमाकः। वियोजक-विरु [लंग] पुल्ल करनेवाका । प्र वहानी मानेवाली छोडी संस्वा । विषोजन-पु [मृ] रूपक् करनाः जुराहेः स्वयक्तनः । वियोजित-नि (में] पुश्क किया हमा। वैनित शक्ति । वियोज्य-रि [मं] अक्रय करने बोम्म जिसे पृषद् बरमा हो । प्र वह संक्वा जिसमें ने कोई संक्या परायी वाद ! बिर्दश-दि [सं] जिलका रंग अध्या में ही। दवरंगा करें रंगोंका । चुं (हिं] यक एएडमी मिट्टी चंत्रवा विराग । −काधुकी –द्र+ वावनियंग । [\$(44-40 [tj0] NEU] विरंचन विरंधि विरंध्य-त [मं०] दे 'शिव । विरंजनम-त यद वास । विरंजित-दि [मं] नियका प्राप्त, नासरिह में पत्र मदी थी। विरुक्त-वि [र्स+] जिसके (य. रक्षमात्र आदिये परिवर्णन हो गया हो। अनुमरक्ता पराधीना गिका जानका। ए तान देशे दे काम आनेवाने वात्री ह बिरन्द्र-की [मं] माप आदिका परिवर्णमा विशामा ममामाज्य परस्थीनगा विकास । बिरयम-१० भि॰ मधानेश दिवा पारण परना।

निर्वाप रचमा ।

बिरचमा+-म वि निर्माण करमा राजामा । क स

बिरम्बिसा(म)-५ [नं] निर्माण १५मा वर्गेवणाः

ति । दिरमः दोमाः चप्रामीत दीना ।

विरचित्त-नि [मं॰] तिर्वितः पूरा क्या हुनाः निक्ति रंजिता बारण किया हुआ। कवित । विश्वज्ञव-वि [सं-] रंग परिवर्णन करमेरासा रंग गरे वर्तनके किए प्रकोशी । विरवस्−ि (सं॰) र शिरवा(वस्)। -(व) वसा(सस्)-वि॰ तमीगुवते रहित समदुर्वतः। −प्रस~पु`ण्यक्षरा विरवस्क-विश् [मं•] है 'निरवा(अम्) । विरत्रस्था~की॰ सि॰ो मपर्शवा को । विरमा-सी [एं॰] बरिस्थानी नामक बीधा बर्गा न्युक की की। कुणानी यह संयोध बनवान क्षेत्र । विश्वा(बस्)-वि [वं] वृत्तिरहित सम्बन्धितिहा पुर निष्णा यह तीर्थ। यह करि। मनिश्वत यह गुरा की राष्ट्रका एक प्रश्न । की गतार्थना मी पुर्मा । बिरजाक्ष-पुरु [तं] मेर्बे क्षत् रिश्य दक्ष पर्यत । बिरट−५ [र्न•] क्षेत्रा एक तरहरा काका कगर। बिरण-प्र सि । एक सुगंबित यान । विरत-दि [मं] क्लिस भंत हो यना हो। भिष्टक रिमने हाथ गाँव निवा हो। विरक्ष, जनतुरक्षा होन*्*लम । विरक्षि-को मि दिशम अंतः मनदा १८ वाग-विराप । बिरध-रि॰ [र्ध॰] १व १हित । विस्था-त [सं] रिका विरध्वा-थी॰ (ई॰) हरा शरता । वित्रक्-म प्रशिक्त सन्ता यह कोति। वि [vio] दंशकीम । विरयाक्षणी-सी॰ कीनिक्षणा ग्रनवर्धन । विवर्देश--वि+ मामवर, वदानी । विरम-५ वि । समाहित भेता प्रयोतना व्याप । विरमण-१० (सं०) स्वत्रा उद्दरमा द्वार सीच हैन्द्र रवाग बरबाः रममा । विदेसनार -- वर्ग विश्व रथनाः यस सगामाः उद्दरशाः ग्राप बीवर क्य माना। देश मगाना । विरमाना १ - स १ कि. मृत्य बरमा: येमा रसमा: ध्रमे बाने स्स्ता । विरम्प-निक [में] अवदारा द्वारा पुत्रक क्रिया मधी-थमा नहीं। बाब विक्रनेवामाः वारीयः थीताः श्रीमाः पट्टाः बुरवर्गी । पुरु बची । - ब्यानुक-दि किनके पुरने बहुइ अनग हो । - हवा-सी पावन वा ध-व दिशी सपने नमी हुई वह तरहकी सपनी । -पासक-निर्मी हाया क्षेत्र पाच बारे । - मान्य-दि विश्वाम विश्व पा मा की, वर्ष क्षा शरबका (बाम जादि) ह बिरसागत−(र [शु•] भी प्राप्तर हो दभी परिण पीना विश्विका-मा [नं] स्थ तरहरू। श्रीना वर्ता ! विरक्षिण-वि मि विशेषना मही। बिरण-वि [लं] क्रिया राष्ट्रया बीरब र विश्विम-दि [बं] विश्ववे दिव्हें सही। विरम-दि॰ [मं॰] लेरमा स्थारदेशः अधिरः सी उर्दने mmit annet feifes & auf umes enerne

दीमं परा-परा म देरमेवाली (संस्था)। व्यक्तिमः वनील को कर समझमें म आने। विकास बटिन को जरह पत म 🛍 दुर्गमा स्थाता मोटा। सहस्रा तम प्रचेदा सतरनाकः तराः प्रतिकवः असावारण वेरैमान धर्मा बुद्दा सुविराम जीवर देकर होनेवाला (क्दर मादि)। मिछ । पु विष्युः अपमताः क्षापारणताः सम व होनेका भाषा रातर्जाक रिवर्ति लेकरा राजा अवद-स्तावह जमीनः असम बन्त ऐसा होत विसक्ते बहसी-के मधरादि बरावर स बी। एक काम्याबंकार महाँ अर्थत विस्त्राचता विभिन्नताके कारण दी बरणशीका संकोत 'कशे वट, कशे वह' कहतर अवोग्य बतकाया जाल या वहाँ कार्य और दारण एक इमरेके विश्वक्र विकास बा विरुद्ध हो था फिर कोई जच्छा कास बरवेडी चेना करनेपर काम म दोक्द कहरे शानि बढामी परेर यह शरक का साका असम राजियाँ। एक खडरानित । -कर्ज-दि नियुक्ते क्या समयान हो । यु असम क्रमीनामा प्रस्तिक सम्बोध विद्योगका वर्ग (वदा)। -कर्म(स्)-प्र असावारम कार्य ! - कास पु॰ बद्दान वा प्रतिकृत समक । -सात-प्र वह यस क्रिसमेंद्र गर्दे या पार्व वरावर र्म की ! −राम −रि० को काव-राज्य बर्गानपर रकत हीः संबद्धारतः। 🕳 चतुरसः – चतुर्वेश – चतुरद्दीश – 5 वह चरार्थव जिल्हों भ्रापे मसमान हो। -चाए-प्र समयर्थ मामक कृष्ट । --ध्याया - सी॰ टावा-वरीकी र्वापदरके समनकी छाता। ~उत्तर-प्र॰ वीर्णवरा। • विश्वत्र = त्र विश्वत्र विश्वत्री तार्थों अवार्ष वस्त्रातः थी। - धरि-वि रेप्-हासा। - वात्-वि अस्वरव (शत पिछ और कप्तको सम्बद्धित संबद्धा) ! - सम्बद्ध-मैम - विक्री चन-५० विक् । - वस्तका-इ समरणाः , छतिबन । -पार-विश् जिस्तः भारम असमान ही। ~वाणः-विशिषा -दार-त वामनेव । -लव्मी~ स्री कुनुम्य दुर्मान्य ।-शान्करू-पु नारंगी !-विमाग -इ स्पश्चिमा असमाम देशारा । -क्स-इ वह धेर् जिसके बरप्तिकी मानाई बादि समान न हों। -स्पूर-पु॰ यस प्रसारको स्पूर्यमा । –शिष्ट-इ नामधिएसी व्यवस्थामा यह हीते। वि (यावधिसाध स्ववस्थ) शे बहुत हो गंबी ही। बिसदा देखारा बर्बिड सबसे अ द्वार को (मरबेके समय संदक्षिका) । -शील-वि विश्विकाः मिसका मित्रास कर-ता म रहता ही । पुर रिक्टमारित्य । -संचि-को एक सरहकी लेवि क्यानेविका विनीम । -साहस-द श्रीकृष । -श्य-वि का दुर्गय श्याम क्ट करारेक्ट वा लंकामें ही । अवयक्षा असी दुसरका चम वेर्रेमामीने हैं नेका लागच ह विषयक-रि [५] अगुमाना निराधी पानिश वरायर म हर्रे ही (बोनी मार्डि)। विकासा-सी॰ विकास-५० (हे] जनवतः जेतरः

निरास्त्रता चौकामा वरिन्ता । विषमा-ची [५०] हरनेता वह नरवंश कहना । विषमाग्रा-दु (तं) तित् । विषमाग्रा-में [४०] एवं वहतादि (का दे०) । विपमाद्य-दु [४] व्यन्नियोग कहार ।

विपसायच-प्रव सिर्व बामीय । विषमावशार-इ॰ (र्थ) करह सारह-अमे भार क्यारा ! वियमाशन-पुरु (तंर) नियत समक्तर मोत्रव व करता विषयमाञ्चय-विश् (संश) वेतंत्रातः कार्तः । विपनित-वि [र्गः] अध्य या श्रांत स्ताहा हवा अम्बन्दिन्तः मी व्यवस्ताकः हैरी वन यका की निर्देश RWG I विपमझ्य-प॰ [हो०] तित्र । विषयोग~प॰ मि विषयोग । विषय-अ शि] बार्नेदिवों बारा एडीन डोनेवान दर्शन (कर रहा, शंच रवर्ध कीर शक्त), श्रीप्रवार्थ। जातिह पदार्थः कार्यारः इंधित्रज्ञन्य भानेषः स्टब्सः क्षेत्रः नितृत्यः विमाना कावना भारिका प्रकास: प्रान्या समावाशमध्येतः देशाः राज्या शासम-व्यवस्थायकः बट्ट क्षेत्रः अपर स्याना धाध-समुद्रा पन्ति हाका अत भावित अनुहाना वॉक्को वदवा । -कर्म(क)-५ समितिक वर्त । ~काम~द+ भौतिक परावों या मानंतको १४मा ।~माम ~प॰ इंडियाबॉका समय । -श्र-वि॰ विशेष विषय अभ्या यान रहानेदाता (~शान-त शांसारिक कार्यका शाम । - तिरक्ति - स्वा विषयाग्रस्ति । - विपर्मेरसी व्यक्रिकि - विकासकी अक्रिकि - गो। दिसी सक्ये क्यरिश्य विके मातेराने रिश्व प्रत्नान आदिका निका कानेवारी जनमंत्रिति ।-पश्चि-व राज्यपकः 'तवर्थः । -वराष्ट्रमञ्ज-वि सामग्रीक विश्ववीमे विरस्त । -क्रप विज्ञान-१० रेडियावेंका दान । न्याक्य-वि विश्वी सन्द्र । - प्रमंत्र - प्र विषयमन्द्र । - रम - वि विषय श्रीयमें कीत रहतेशामा । नतीश्चचनि विवद प्रधका सीवी !-बासी(बिक्)-निक व देशवारी। संसादिक कार्वीये एका द्वारा -संग-त वित्रकार्यका -ममिति-को १ है 'विचय-भियोरिको ग्रीमीत ।-सप-प्र (दिवशन्य समा ्रमार्थ-च ।~१७४।⁻सीर नित्तर ग्रामधी दन्छ। । विषयक-वि नि निर्मातिपरमा विषयोत्त−पुरु (ते } देद⊄ सामा । ferutar-s [it] nifest utrat fen fereet बनाबादन बरमाः शून निष्मको छ। स्टर रेपर्यपर्य वको बरमा । वि. बी वित्रमुख कामधी हा, को खंडी । विषया-भी। विषयागामा विषयगणमाने मण्डु । विषयाज्ञाम-१ (१) इर्थना धरा । विषयासम्बन्धिक (शंक) विषय अर्थनी। इदिव महिनी है विश्वस्विकृत-५ [तं] राश्यात त्यते । बिचवाचिय-त [६] दे रिश्व प्रीत । क्रियमाचित्रति-इ [व] ज्ञ' दा श्रमाद दार्थर । विषयानुबार्मायया-भी [स] रिग्न विषयप्रे ररेगम् १ विषयाधिरति-को , विषयाधियाप-प्र विषयभीग । विषयांची(विष्)-त [मं] शत्रा शानेत्रेता कारणे आहिणका कामरेश है

1941 होसा । बिरसा-प॰ [#+] मृत व्यक्तिः संश्वि, तरका, मौरास । विरष्ट-प॰ [सं] ज्वराई निर्दोगा जगान अविध्यानता परिस्वागः विवासमें अनुभूत क्षानेवाका अनुराग ! -- अ --अतित -चन्य-वि वियोगने उत्पन्न । --उवर~प विरहत्त्वम्य ताप । -विरस:-वि विरहका स्रवाल होनेपर का है जेशका ! विरद्यारा=-सी है॰ 'विरदानक । विरद्वाग्नि-को [में] देश दिरदानक'। विरद्यामक-प [सं] विरदक्ते अधि । बिर्राहकी-की । सं विशेष विशेष कि की मई द्वारिजी माविकाः सम्बद्धाः पारिअमिकः। बिरहित-वि [सं] परिस्वका रहित । [मं] विवादे वियोगसे **द**धीः विरही(हिन्)-वि शिवासे रिनुक्ता कहारी । बिरहार्त्करिसा-सी [सं] नायक्के किसी कारणसे म भानेसे इन्द्री नाविका । विराग-५ [सं] रंगका परिकर्तनः रागका समावः श्रमीयः अरथिः विदर्वनः विरक्तिः वह राग विसर्गे ही राम क्रिले हों । वि । रागहोल, उदासीन । विराती(तिह)-दि भि] चाह अनुरागरहित छहा-धीन विरक्त निविचन ! विराज-वि [मं] चमक्रीका । वु मंदिरका एक विशेष स्या यक तर्बका यकाहा एक यीवा; वक अवायति । पिराजन-प (सं•) ग्रासन करनाः स्वात होनाः भोसित होना । विराजना-म कि छामित होन। बैठनाः रहना । विराजमान-४ (में) ब्रह्माध्यक्त, समझ्ता अभाः वर्तमान विद्यमानः वैका द्वमा । विशक्तिन-दि [सं] यदिननः स्रवीदिन प्रवादितः प्रसिद्ध । पिराज्ञी=भी [म] राजी (वे)। विराज्य-त• [मं] शासना राभ्य । बिराद-त [गं] मास्य देश (अन्वर वयपुर कारिका मुमाय)। मत्त्व देशका राजाः पुत्रः एक तान (मंगीत)। -ज-प विराध्येशीय शेरकः शावपद्द । -यव(म)-त महामारवदा यह गाँउ। विराटक-द [40] दे विराटम । पिराद-वि वद्ग वहा। विराद (जा)-9 [ने] प्राथमका मरतका जधाकी पहली संभागा मादि पुरुष निधमप नदाः मीहर्यः बांतिः धतिया धरीरा एक एकार । विराणी(भिन्)-५ [सं) दावी। पिरातक-प निशेष्ट्रीत क्षा पिराक्-रि [मं] बिगसा माममा विरोध किया गया को। भवमानियः अदङ्गा बिराय-इ [सं] दिराव- बुहाबा, नंग करना। वह रेता। १६ रूपे शारम जिले शामने मारा था। विराधन-मु [तं] विरीक्त बहुबन्द बहुआत त्व बहुक्ता कष्ट पीता र

89-6

विराधा-सी॰ सि । बक्दार १ विराधान-प सि कि पौरा ! धिरास−५० सि ो ठडराव और दिमामा वानवीया बाक्य बादिक बाद क्कनेका स्वामः विभाग परिणाम (१) । ~ताक्र−त ज्ञातालका एक भेद ! विरामण-प• सि॰] उदराव । विराज-प सिंशी सार्वार विज्ञाय। विराव-प्र• [र्स] श्रन्तः भितादम इताः श्रीरः मन धनाइद्र । विरायण-वि [सं॰] शोएएड क्रामेवाका । विशाबिणी-वि की [सं•] बोक्से सन्द करनेवाकी: रोने विकानवाकी । सी शाहा हु एक गरी। विरावित-वि (ए॰) छम्दानमान किया हुमा । विरावी(विम्)-वि [सं] सन्द करमेवाला रीने विहानेवाकाः ग्रॅंथनेवाका । ए० प्राराष्ट्रका एक प्रम । बिराइस-प॰ (सं॰) काड़ी मिर्च । विशासक-पु दे 'विकास'। विरासत-न्या [ब] तरका दिरसा पत्तराविकारमें विक्रतेवाका मास्र । विश्वसी है - विश्वासी । विश्वि विश्विम विश्विम (से] नगा। विशिक्त-वि [सं] याको दिया हुमा। निदानदर साध किया हमा। जिसे बस्त कराने गरे हों। चित्रिकि-मी॰ मिं देशको बरानको क्रिया विदेशन । विरिवय-प्र [ई] स्वरः व्यक्ति। विद्रस्मान्(नमन्)-प [सं] अमहरार द्विवार या शहमा । विकाण-वि [मं] संदित विदीर्गः मध्य प्रमा प्रमा ग्रेट. शास्त्र बहुत बीमार । बिरुष-१० मि] यह अम्ब-ईरंपी मंत्र । बिध्य-वि मि विकास विदेश करनेवाला धीरा देते शामाः मीरीग । विकास १०-५ कि उरुपता। विद्धारा १ - स कि बनझाना । व कि मवस्ताः समागरा । विरुष्ठ-दि [मं] विश्वावा दुमाः गृँवता दुमाः शुभ्वाव मान । प्र विस्थादश द्योरः याना गुंबनः वजरूष । विक्य- दु रिं] कीर्नि गावा वह विनेता बादि बिसमें किमीक वश कारिका वर्षेत्र किया गवा हो। प्रशंकामूक्क वहवी। विस्थादरा बीदमा । न्याय-त राजदीय परादा । विन्दाबसी-की [नं] निरम्भ वद्योगान । विरुद्धिन -पु॰ [मं॰] रोना विञ्चानाः पादः। विवस्-वि [मं] वर्णात रांचा द्वमार विशवा प्रतिरोष दिया गया हो। अवस्था संदिरणः सन्तरमध्य निर्देशीः प्रतिकृत्वः समुकापूर्वः अधियः यो अनुकृतः सः १४ (बाहार का)। जो मेलके मही। बमेदन । युक शिरीया है। इस बर्धनंदार । स विरोधमें : ~क्सो(सैन) - दि असंगत कार्य करनेवाचा । -धी-दिश शवतावर्ग माव रगाने वका। न्यमीय-पुर्व विकिद्ध कर्ष । न्यतिकारिशान

विषयासक-वि• [सं] विद्य रत । विचास-प॰ सि ी निवसिनित साथ परार्थ । विषयासकि-की [सं] विषयमीयमें बीन रहना। विचापवादी(तिन्)-वि॰ (ति॰) मंत्र द्वारा वित्रका विषयी(यिन)-विश्वि] विकासी कामी। पुकामी प्रमाय वर करमेवाला १ पुरुष: नारितकः राजाः कामदेवः धामः भगीरः अर्थमानः वियापक-वि [नं•] विपताशकः। प्र• गम्बः सम्बद्ध द्यामें क्रियः सपमाजः अवर्ण्यं (सः)। नामक प्रधा विधापहरण-पु सि] विक्का प्रमाव नष्ट करना । विषयीय-वि [र्मु॰] विषय-संबंधी । पु॰ विषय पदार्थ । विषयेपी(पिन)-वि (से] विषयवासनामें वियापद्वा--नो॰ [सं] अर्क्समा बंद्रवारूपीः निविताः श्रीशारिक कार्मीमें क्या हुआ । नायरमनीः सर्वेश्वेद्धारिका । बिचयोपरम-प• मि े विषय-बाधनाका स्वाग I क्रियासका—को सि क्रिका। विषयोधसेवा-ना (सं] विद्यासकि । विपायुध-पु: [र्थ] साँग विपेता बंदा चहरमें हुआ। विषयः -- प्र [सं] दिव । विपाध-वि सि सिहने कोम्या परामृत करने वीग्या विपार-प• [मं•] सौंप। संस्था जिसका निश्चय किया वा सके। विधाराति-प (सं॰) कृष्ण भचरका विपांकर-प [सं] विषयुक्त किया हुमा अंकर: माका विपारि-इ [सं•] महाच्य वा प्रकरत ! विपासा-सी विशेषक मछली। (जिसकी मीज विपास्त हो) । बियोगना−स्रो• सि] दे विकल्यां । विपास-नि [सं] विपैता, बहरीका। विपास्त-प्र• [सं] साँपः कहरमें तुरााया प्रका हविवार ! वियोतक-पु• [सं] शिव। वि विवका प्रमान दूर बियास्य-प्र वि विशेषः करतेशका । बिपा-सी [मं] दुक्तिः सप्तनी संरोरी करनी कैंट्रपीः विधास्या-सी मि विकासी। काबोली। क्रकियादी: अविविधा । बिपी(पिन्)-पि [पं] विषयुक्त विशक्त । प्र निप बिपाक्त−वि सि } विविधितः चर सींप । विपालपा⊶सी सिं] महिकिया। बियण-प्र• सि ी विषय रेदा। विपाप्ति नत्तो , विपानक नदु (सं) विवयस्य समकः। बियक्क-प [सं] पाण। विपुप-पु (सं] निपुप रेवा । विपायब-५ (मं॰) तस्वार। विपाल-प [मं•] श्रंग (वाजा)। सीगः शुक्तर बाबी या क्रियम-दि॰ (सं॰) धोदा दला ! गर्नप्रका शाँद। देखनेका पंत्राः भीती शिराः संवानीः वियुच-त [सं] वह समय जब दिन शतका मान वरा-शिवके सिरपरको सीम जैसी धरा। चुनुका अपने वर्गका वर दोना है। -च्छावा-सी मध्वादके समय वृश्यक्षी प्रवासः सक्यारः । -क्रोदा-पु शांगवा योजका भागः। क्रिके द्वारा। -विम-त १ विषयरिन'। -रेग्या-पिपाणक−९ [मं] श्रीयः दाशी। न्यी वह करियत रेखा जी शीलों प्रवीके बीधीबीय प्रशी-तकरर बारी बोर गरी है। विपायति – इ. (स.) गणबहा वॉत । विचाविका-सी [सं] नेपरांगी। कर्टरशंगीः जापतंकीः विधुचत्−ति (सं∘) गीचका, सप्यरिषट । पु० है सातका। क्षम । 'विषय'। विपाणी-स्तो [सं+] करमका वर्षश्योगीः शीरकादीनीः विशुवद्-'विशुवन् का नमासगत रूप । -दिमा-दिवस-शमकी 1 प्र यह दिन बन दिन-रागकै मानमें क्षेत्रे अंतर सहा बियाओ(मिन्)-वि [मं+] धोगबानाः श्रोतबाता । व हीता। - देश ह विश्व रखाये मीथे पानेशह देश। सींग वा दोनवाका बामबरा दावी। कपनका श्रेगाटक । −धसम्,∽शुक्त−९ विदुव रेखा। विपाय-पु॰ [मं] अवसात वदासी। गमा वैराहका बियुचिका-न्धा (मं) एक तरहवा अवीर्ण जिल्हें हैं। बासाददीनताः तंत्रा द्वातिः सुर्ताः बहताः मन दवर और दरत दोता दे और पैधाव सदी बतरता देशा। बानाः एक संयारी जार (कार्य-मिक्रिके उपायीका अजाव विचैसा--विश्व विषयुक्त जबरोता। होनेने कपन द्वारा)। विद । नि विष वानेनामा। विचीयधी-सी [मंग] माग्रंनी । च्ह्रण् = जनक=दि सिधना भादि छल्छ वर्ग्नेशासा। विष्कंत-त [तंत्र] विद्याला नितारितर दीना। इर विपादन-वि [40] बरानी पैरा बरनेवाला । व० षते जाना । विवाद करवन करना। कश्च- शहायक । विष्केष-त [र्थः] वादा वतिरोधः। विपादशी−स्था [सं] दशाक्षी लहा । विष्यम-इ [मं] नामा रीका कर्गना शहरीरा स्त्रीम विपादित-वि [मंग] विषय्त, विषाद्युष्ट विद्या हुना । पुणा मेंबन पंटा कीनाथ विश्वारत क्याका क्याचा पर्वत विपादिता-स्रीः [मं] निवादको अवस्ताः विवयसमा । मेनी: शशासन बीलीमेने बढ़ (बयी); अंद्रोदे मध्य रहार विपार्ग(दिन)-वि [व] विवतान करनेवाका। विवन-मानेवाना वह जीत जिसमें दशानरको प्रदर्शका स्मेर भिषाः अधीर । रहता है (सार)। भोगना एक बंधा कार्य-संपादन कार्य विचार्∽रि [#] हिन कानेशना । प्र हिए। काय करना १ विपानम~पु[∯•]स्दा विष्कंभक-दि॰ [मं] नशारा देनेशका । ए० है

स्मी परका भनकिए वर्षका चीतक होना (सा)। -इरपामास~प एक प्रकारका हेलाधाम (agre) । विष्यता-सी॰ [तं॰] प्रविकृतवा, वैपरीस्य । विस्तावरण-पु॰ [सं॰] हरा मावरण, हुरा कर्म । विरुद्धार्थ-४ [सं] विरोधी वर्धवाला ! न्दीपक-प बीपक सर्वकारका एक भेड़ बड़ी बढ़ की बातसे की परस्पर विरोधी किया^ए छात्र साथ िरासी बार्वे । बिरवाशम-प सि । निविक्र का वर्तित कालार। बिद्दाचि-सी॰ [सं॰] प्रतिकृत वचन, दशह । विरुक्ष-दि [र्थ+] इसा दश क्र्यंश (ग्यन) । बिससण-दि [सं] ह्याने, क्या क्रवेशका संदेखक। प क्या करनेकी क्रिकाः मिताः प्राप । बिस्सित-वि [एं॰] एका बनावा द्ववा। तेव किया हुमाः भावतः। विरुद्ध∽प सिं∘ोधक अनिव क्रिसका रथाल सक्रमें साना माता है। विरुष्ठ-वि [सं] अंतरितः यसका चढा पुना । -बीच -वि जिसकी मंद्रि वह या परिवक्त हो नवी हो। विरूपक-प्राति विकरित अलायक क्लेक्सक (वी)ः हरवास्टा एट प्रश्न । विरूदि∽ना (सं•} श्रंशत दोना । विक्रियेत्री-स्रो [सं] हैप्राय-क्रम्बा वकारही। विकार-वि (सं॰) वरशक नदाः विसकी आहेति बिक्टन हो। एको हो। कुटाकार। विभिन्न महार**क**। करि वर्तितः इद कमा प्रवांत रीमा शिवा इक असरा क्र पताः स्व-निवताः सदौ श्रद्धः विश्वकीमुकः 🗝वर्षः प्र भारति दिश्वन बरमा। धनि प्रश्निमा। -वश्व(स्) पुर्वतित । -परिकास-पुष्कको अनेक्से वरिवति । -रप-दि दश्स्य, कुल्प। विरूप छ-दि [सं] करूपा अर्थक्या अनुनित्र । उ एक बाहरा ब्यंगस्थक माम । विकासता-सी [मं] कुरवताः विभिन्नतः वहरूकाः । पिरुपा-सी (र्न०) यमधी वनी। स्तिविका सुराणमा । विरूपाश्च-रि [तं] क्रिमधे जीवे इक्त की करक सरवयं काम कर्नेवाला । प्रश्न किंग किंगका वक्त गया रह स्टाब्ड वहा पढ़ समया वह राज्ञना वह जाना । मार्ग्स्ट्रिस अव मिरुवी(पिन्)-वि [तं] भरा बुक्ष । व निस्तितः। विकि-पुर [मुर] वांतकी महार्र मन-निष्कानना दिमागः को नदारी नुकार विरेशम । विरेषक-वि [में] सदर दश्य शारीवाना । बिरेचन-प (रां) दरनागर दवा मुखाना बस्त खानाः राज्यम् । (६ भीतने राजा । विश्वित-दि मि विश्वत बराबा बला। विदेशी(विम)-दि [६] धरतावर । विरेच्य - ६० [मुंब] शान पर दवा देने योग्य । विरेक्ट-त [सं] बारा, मती । विरेमित-वि वि रेपितः। पिरोक-पु [मेर] चन्द्र, वाना शुर्व रहिना बरारा क्रिया नर्शा ।

बिरोग-प [सं•] बारीम्ब, रोगरप्रदाय । रि• स्याव । विरोचन-वि॰ [सं] मध्यमित स्थनताला। पु॰स्रं र्चत्रमाः अग्निः वस्तैः एक तरहका करन एक तरहार वयोमाना राहित बचा राजा वस्ति। निता स्टिन -सत-प॰ रामा वि । विरोक्त (वप्र)-वि [सं] विरोध करमेशका, मचन कर में बाबर । विद्योध-प्र (सं) पात्रा प्रतिरोधा विरामा भारोत रोकः प्रतिबंधा गामंत्रस्वहोसनाः विपरोक्ताः वैदः हक्तः कुम्ब संबद्धा एक अवस्थित, विश्विभाषामु जहाँ विशिष्ट बीमैपर सी विरोध सा भाग ही-आहि इस्य ग्रम, किस वैसे किसी पश्चा इमरी कार्ति प्रव्यादिने विरोध कत वहें। कथानरतकी मर्याटमें एवमेवाको बाधा । -कारह-वि कमा पेटा करनेवाका । -कार्रा(रिव)-विश्व वन्त बदानैवासा । —कृत्यू – वि० विरोध करनेवाता । धु - दर्प। -किया-की अगहा संबर्ग !-परिद्वार-प्र• विशेष्ट इर होना सामवरव स्वाधित होना। **~पचन** प्र बंदन प्रतिकृत नार १-दासम-५० इतद शीव २९मा। क्रिकेच्छ-विक सि ी बाहद चैता बारचेशाचाः शास्त्र । इर अवर्गेश्रीय विषय (या+) । पिरोधन-वि (शेष) विरोध करनैवाना सबसेवाना है है बाबा, रीका कलका अंपने प्रतिरोक्त श्रांतप्रश्न श्रामा जनार्वहरका अवरीषा लाग्र । बिरोचना ० – ६० कि । वै८ विरोध बरसा । विरोधान्यस्य - इ. [मं] रायुनानुर्यं शार्थः दिनस्य कार्यः । विशेवामास-इ [गं] विशेषका आमाना एक कर्या-लंबार वर्षी वण्यविक विरोध म बांदर विशेषका लागाम बाष हो है दिरोप (अनदार)। किरोधिक-वि शिक्षे जिल्हा निरोध विका गया हो। श्रविधाना भागीहर । विशेषिता-लो [मंग] निरोधी दालका मान मध्योपी प्रतिचन श्रीह (वर्षीक) र विशेषिती-मा विशे वैदः विशेष करतेवानी और गर शासना (रामस्य) रही)। बिरोची(चित्र)-विर् [] विरीध करमेनावा गणा अवरीप बरवेशान्या बरानेशानाः वेरी अतुमन म पार्वे बाक्य (माहार)। यनि १ थ। वेयेच प्रतिस्पद्यो करतेर ।। श्रमहान् । तु परीनशे शंकामशः हन् । ~(चि)स्त्रेप~ व यक मधारका वरेवालकार वर्षा क्षित्र सन्ती दारा गी बर्मचौरी भर वा विरीप दिसापा भाष (केइन) । विरोधास्ति-भी॰ (००) दे॰ पेरोप वयम । विरोधोयमा-भी वि देशमा महस्त्रका एवं यहाँ दिनी बरतकी जरमा यह मार दी दिलती क्षमानी लाब ही बाय । ब्रिहोच्य-दि (तेन) प्रियदा दिराव बरश हो र विशेषम-५ [मे.] बीचा क्यानाः धानाः मणस भरमा। वि. होत्रजनान्यः थान भरनेशना । विशेषित-नि [त] रीता दुस्प मग दुना (र र) र ∽क्षप-दिश् जिंगाका थान भर मेरा हो । बिरोमा(मध्)-4 [बं] दिवा रीवेदः रीमारितः

विष्यंम' (ता)। एक दीग (व्योष्) । विष्केमन-पु (सं) वावा वाकनाः विदारणका सावन । यिष्क्रंमित-वि [तं] ब्रिसमें बाबा वहा हो। अल्बोबना - से प्रचा

बिएकमी(मिम्)-प [सं०] शिवा बर्गसः एक वाधिसत्ताः पक तांत्रिक देवता । वि+ वापा शासनेवाला ।

विष्क-प [सं•] बीस वर्षका क्षाओ ।

विषया-वि [मंग] विधरा द्वना थी तिनर नितर हो गवा हो। वो चना यवा हो।

विष्यस्य-विश् विशे सहारा दिया हुआ। अभावा शिवर किया दथा।

विष्कर-त (संब) मर्गकः एक दावका चढका वद देशः रही ।

बिरइस-नु [मं] प्रामश्हर। विष्कळन-पुर्व[4] भोजन।

विष्किर-प [मं] प्रशेष अवको क्षितराक्त छानेकले पदी (राष्ट्रार भारि)। एक सरहका सीमा यह जॉन्स पारकर उद्दर द्वदरे करना ।

विष्टंग-प्र [सं] रोका गायाः शहना मदिरीका यह मधेका रोका प्रशासातः प्रशासका आक्रमण ।

विष्टं सन-दि॰ [मं] एकारा केनेवाना रोकने वदावे वासा । त रीक्षना क्वाना ।

विष्यंभित-वि [मं•] र तापुर्वेद जमावा, वददा हुआ। ***से मरा था **बढा हमा** ।

पिप्रभी(सिन्)-रि॰ [गं॰] सहारा देवेबाला रीडमे बाला: मनियोग करनेवाका । प्र+ (मल आदिका) शेवक घराओं ।

विष्ट--वि• सि ी प्रसा हमाः गरा ६माः ऋषाः बिष्टप-प [मं] अबन को अ पांचा प्यांका । -हारी-(रिम्)-वि शोगीको प्रसन्त करनेवाना ।

बिष्टप-ररी [एं+] स्वाम धूबागा दश^रभीक । बिष्टरब-दि॰ [मं] दाताने बनावा वा शेवा हुना। क्या बढ़ा हुआ। रीका हुआ। महारा दिया हुआ। महा इच्या पीपनान ही। −गाप्र−दि० क्रिपृक्षे ००० वरे

बद्ध सन्तर हो । विष्ठिय-स्ये [लंग] हाताने बमानाः म्हारा दैना । विद्यम=व [सं] लो≼ ।

विष्ट्र-इ [६०] दहनेडे हिन्द चैनावी हुई बाडी सी धाना वक्के अधावा आसवा वनीय इस-ए-हा बना हुआ भागमा बुद्धा एक देवता अगत अवसी। यात्र : रि॰ विग्यत । -भार (प्)-वि अम्परचीत्र ।

- बबा(वम्)-इ॰ विद्याधिक। विश्वरा-मी [त] दक्ष बाग हिंदानियो । विक्राम-इ [स] ब्रेस्ट बर देश :

विषया नमीर (र्नर) सेटी बेनदी । किकि-मा [त्रा मान्ता बात हमा समर्थी नेत्रा प्रवर्तमा निवा गामेशामा कामः वेदास विवता मान शामा वद द्वारा धन्य (अवीर)र वृष्ट । न्यत्न्य शानेशासिका - इत्र इत्र

FETT-S [H] SEET PINE!

विद्यालको [मं] यह, वामानाः वर। नम्ह(३)-स्टर । - मृ-पु सन्ति। - मृशाह-पु भास-धवर । विधित-दि॰ सि ने विकासनी भीतर । विदेश-सी॰ [मं॰] इद्या । विष्ण-त॰ सिं। विद्यावि एक प्रवास देशा (रेटेर बेबताओंमें विष्तुका स्वाम गीण है अवका संगी और पुरानोंमें रमका महस्य रूप । इनकी विदेशने गएशा है और वे पामनवर्गा माने आने है। रिप्तुडे बदस्तिनी थप्यद करते हैं। विष्युद्धे इस अवनार अने को है। इनमें मुख्यतया राम और कृष्णको बचाएना बाते हैं। मन्ति वह देवता। वारह भातिरवीतेन प्रवया रह पर्ट-धान्यपेना प्रति। बच्च मद्यवः मंत्र, महत्र्या । ज्योर-प्र यह दश्बद्ध दश क्षेत्र । -योबी-सी॰ वर्ष्ट्रिय वक डीर्व ! -कोशा-स्त्री भीटी भवराविता ! न्योपी न्दी यह प्रापीन शीर्थ। -- शाख-१० रह नार -क्रीयण थीली अवराजिता ! —बाति—व शरहरेश क्वा; वसका कुना वक वान (संगीत) । नवीता-खाँ । बरशतिकाः वालद्येश्वरः सच्य द्यंपराचे । न्यांति । क्वी अपराजिता । -क्षेत्र-९ रक्ष तीर्थ । -गीगा-क्षी॰ एक सही । —संदित्-की॰ राह शंसराप्त्रे हे --शाम-१० एक वर्षि और नैबाक्तका पापस्य कारियर का श्रामनी सामा रिन्ताईद । -गमद-५ वरी मुगी। -सह-द वामनित्। -गोम-द रिश्व थ्या) -संबि-नी॰ शहेररी वह अंपि ! - यह-पूर श्चर्यं वक । -- अ-विश्वरण मध्यमे अस्त्र । पुर कप्रशासी सम्प । -तिथि-मी॰ स्वापी। दाप्यो। -हिंगल-इ बरच महत्र (शमदे रहामी दिन्तु है)। -विक्वानमा है विजातिक। ∽द्विद्(म्)न क रिक्रि हमा -श्रीय-म पर होने (प्र) र -धर्म-४ १६ शद । -धर्मीचर-५ (१५५)१० का बढ़ जेन यह करपुराय । -धारा-सीर रह माधेन होनी एक नरी। -प्रजार-पुर रिन्द्रश एक वरव (q) । --पाणी--स्ता १९२३: अर्दि । --पश्-५ आक्षाचा कर्मण। धीरतावरः राह परापः निगमधा पराण निह (यह में)। ~पदी~क्षां+रंग नरी; दर हैने ब्रांशक सिंह आदिको क्षेत्रांत्रदी हारकायुरी । नवरान यक्त-दि त बेचन विचारी योज बरतेशाही -वर्जिका-भी श्रीक्रणी विश्वम । नवर्षी-भी पुरुंब्रीका र न्योह-मु एक रोप नीशक्या है है। -पुराय-पुर कडारद दुरारे दे । यह । -प्रशि-मेर देहर, हिन्दुलाहर -विद्यानको अस्ती। तुन्छनी शेवा । -वीर्तन-भी विश्वनुप्राद विष् प्रतासी ही क्षांभेराची कृषि । - म - पूर्व मेरा एक्ष १ - माना वरित अन्तारका तिया र न्यास्नान्य प्रदेश -राम-पु राजा गरिपुदा -सिसी-क कीर क -बाह-में दे प्रश्नी हर -स्मिश-स्त सर्दा

भूषर्भवा प्रेचाः व्हिनारी अध्यद्भिया हे नवाहर न

बाह्य-पुरु बरह है बुद्य-पुरु बद रोहर प्रवेश

विरोमित-(वं॰ (वं॰) बरत-करा किया हुआ। विरोह-पु॰ [वं] अंकृरित होना। वमनेका स्थाप कड़क स्थाप । विरोहण-पु [वं॰] बंकुरित होना। रोपमा। यक साग।

[वे॰ (पावये) सरनेवाला । विरोही(दिस्)—वि॰ [सं] रोचने, पौवा कमानेवालाः अन्तरित दोनेवालाः।

विस्धान-पु [मं] कॉबना, फॉद मानाः अपकार अप-रागः कलंबमः मोजनादिसं परदेव ।

पिर्हम्मा नी [मं] कॉपनाः परामृत करना परावित करना।

विसंधमीय-दि० [मं•] कॉयने या परायून करने नोग्य । विसंधित-दि• [मं•] कॉया हुआ; स्टब्स्टिंग्ड स्टानित,

परामृतः । पु भौजनाविसे परदेवः । विश्वंदी(चित्)-वि [4+] कॉयनेवानाः अस्ववन बरने-वानाः पदमंबाता ।

विश्वंध्य-वि [मं•] पार करने योग्य (मदी व्यक्ति)। परा-

मृत करने वीष्यः महत करने वोष्यः। विसंत-पु [मं•] ध्टकनाः श्रूचनाः वैरः दीवप्यताः

सुरतीः एक संबरसर । वि. करकनेवाका । विस्तृतन-पु. [सं.] करकमाः देर दोनाः सुरतीः दीर्थ

भूतताः विस्तिवनार-म कि देर करनाः स्म कामाः कटकनाः

अवर्णन भेजा। विक्रंबिका—सी [संग] यक तरहका अजीर्यना मनावरोध को कारने मनले हैं केटी अंतिम नवरवा है।

विक्रपी(बिन्) - वि [मं] शत्कने सवारा सनेवालाः देर करमेवालाः प्रथम श्रवस्य हिन्देव ।

विक्रम-पु [सं] मेंदा दाना भौदावें।

रिक्ष-पु [मं] दे दिल (मंश)। विलक्ष-पि (संश] दारेपायक विद्रोगे रदिना दशतुदिः वदत्ताया द्वभा विद्या श्रामिशा लगिता लगाहितक, वत्रान्यो (देसी लाशि), ल्दबरदिना निशामा सूद जाने

वाला। जनावारण, अन्तिरिकः। पिकसमानिः [मं] जन्तिरिकः जसावारणः शिक्ष विद्वी-वान्ताः विमये कार्र निरीप करान न दो। यह जबरथा जिल्ह्या कारण म जान पत्रे। अद्युग विद्वीवान्ता। पुरु

नीरमे रैपना वह महाना निष्ठका कोई कारण जा हो। विकक्षण्या-की [मंत्र] एपनान्दिर्गत । विकक्षिण-नि [मं] एपनान्दिर्गत को गोरमे वेला समग्रा गता हो। हमपुनि चरामा हुआ। तुमा हुआ। निम्रका भर न दिशा बरा हो पार्थवन में दिस्तामा गुक्त हो।

विकास-(६ [मं] दिनका कोर्र स्थाप स्थाप त्रयामा पृक्ष वानेराचा (राम्)। विकासना-स्राप्त दुन्सी दीना। स्थाप व्याप स्थाप नेता।

विश्वसामा• – सः किः कः देना, दुःस्त देना। अः किः दुःश्वित दोना। विकास-- विकास--

विख्यानाक-स कि अध्यक्तना। अ नि

होना। विस्तिशत-विश्वति चेंदर चंडान।

विकास - विश्व मिं] आवस्त, संबद्ध, संन्यान अवस्तितः अरकता दुआः विवरतस्य (समी) व्यवीतः प्रतृतः, मासुद्धः।

पु कमर्, कटि: निर्मयः राधियोदा वर्षाः वेन्मपत्रिकः। --मच्या--की॰ पत्रवी कमर्पाणी थी। विस्तराज्ञक--वि॰ वे 'विकास्य'।

विस्त्रज्ञ-वि [सं•] निर्माण वेहता ! विक्रविकत-वि [सं•] सवाया प्रजा, श्रमिता !

विख्यम-पु [सं] दिकार करनाः गए-धप करनाः तेक सारिका नीचे कैंद्रा इका मैकः - चिनोद-वि रोक्ट

शोक दूर करना। विकासनाक - व कि रोगा दिलाप करना। विकासनाक - स कि रकाता दिलाप करना।

विम्मपित-दि॰ [र्थ] रीवा दिकाप दिया हुना। पु विकाय।

विकरय-वि [र्थ] प्रश्चा प्वर् किना हुन्या। विकरिय∽ती [र्थ] बुर करना हरामा।

विक्रय-पु [र्प॰] ह्रवर्ण विगणनः विक्रीन होताः स्पेपः मृत्युः माश्र प्रस्त । विक्रयम-पु॰ (र्प॰) ह्रवर्ण वियमनः सव होताः हराना

दूर करना। सर्व करमा। सर्व करमेशामा परार्थ । विस्तरन-४ [में] यमचना औरन ।

ाबस्थल – पुर्वा प्रसारका काइन । विकस्तमा≎ – ज॰ क्रि॰ क्रोधित होनाः विमान करमाः भीव आसर करवा ।

विकासमार- । कि मीगनाः चीगनेने प्रदृत्त ररताः । विकासित- वि [मं] चमदता हुमः। व्यक्तः धीराधिय रिनीण । पु चमदा चमदनेदी कियाः क्रिक्यक्तिः

सीवाः परिणाम कतः श्रेममंग्रे । विकारचंती-सी विशेष्टे वंशेषस्नदा स्पोरा ।

जिलाता-की [मं] एक तरस्थ्री विदिया।

विलाय-पु (सं) शताः कोद बरना । विलायम-विश् सिश्री रुपानसामा थी विनायसा सासा

बरायन-एर उर्ज रचनार्थानाः मध्य बर्धनानाः प्र हो (श्रमारि): रिक्नार्थमानाः मध्य बर्धनानाः प्र हो सावनः विकारतः सारमः

विसापना॰-न कि विचाप बरता । विकापविसा(न)-रि [मं] योडने रिपनानेवाना ।

विकारिश=ि (चं] बांडा रिस्पादा दुवा। विकारी(पिन्नु)-वि [मं] रोजे स्पार वर्सन्ताना। विकारिश-वर्गा (च) जाउना स्वरूपात स्थार वर्गन्ति

शास्त्रः वैदान-व्यक्षणानिकाना किटेना स्थितः वर्णका याः संदर्शकताः वैश्वका सम्मीप्तः । विकासमी-वि निजायनका वैदात्तिः स्थितेवा विदेशीः ।

-शनकाम-१ रामर्थनः -कर्यू-१ स्ट नतः मा कर्द्रा -कपदा-१ तिरोते मृतासा समा द्रशा 1965 −शक्ति−वौ स्थमी । −शिसा−को मारूपाम, कान्ने भिक्रने परपरको गोक वरिया। -मंत्रक-प॰ शक्य सक्षत्रको सल्ला । —संविता −स्सति−कौ॰ यह प्रसिद्ध रस्ति । -सर्वेक - प्र॰ एक कामार्य, सावम-के ग्रह ! - हिसा-सी तहसीका पौषा महमा । बिप्युक्तर-प [एं॰] विष्युद्धी पुत्राके निमित्त मनिका शास । विर्प्यद−पु[सं]दे विरर्गत । बिरपंदम-प सि] इंपन, वहबना आहे, या और चीमीके बीगसे बना हजा एक ब्योवन । विष्ययी−पु[सं•]यहौ विदिया। विष्यर्था ना (सं) प्रवानता प्राप्त करनेक किए की सानेवाकी होत्र । विष्कार-प [सं] है। विस्कार । विष्यंद-पुं [मं] बूँदा भूमा वहना क्षरणः प्रवाद । विष्युद्रम-प सिंशो यह तरहकी निठाई: शनाः नहनाः ष्टरकर बहुआः पिष्टकाः । बिध्य-वि [सं•] विष देवर मार शकने बीग्य । विषय-वि सि विषय दानिकारक । विष्यक(ष्यंच)⊶न [⊎] सनंत्र कारी और। प्र बिपुष । वि सर्वम्बाएक । -क्य-वि+ त्रिसके बाक विद्योरे हों। - सम-वि जी कारों और वरावर हो। —सेन-प विष्णुः शिषः विष्णुका एक अनुवारः एक मना एक ऋषि । -- श्राता-स्तो । मिथंग । -- श्रीता-स्रो एक्सी: प्रवंदा । - सेना - न्यो • प्रियदा । विष्यम् – दिष्यस् दा समासगढ क्षाः – अवेधाल⊷वि• पारी बोर देवारेवाला । - वालि-विश् सर्वत्र बानेवाला । -बात-प -बाय-की यह करहरी सर बोरसे बद्दमेबाको द्वानिकारक बाल । -श्रात-वि वारी कोरमे दिराह्या। बिमंबर-९ [मं] सिंबः रेग्ररी । दि॰ सवामक ग्रीफ विसंक्षक-वि [मं] की धवराधा ल ही धीर। व षरशहरका न होता । विमीगठ-वि [एं॰] वेमन किसके साथ संगति स को । विमीपारी(रिक्र)-(६ (६) इतरण्य प्रमण करनेवाला । विमेश-वि [म] संवादीन वेदीय। विसंशित-दिश [मं] संवार्थशित । पिमधिक-वि [मं] जिनकी संधि संप्रध स को। विसमरा~को (सं) क्रिक्सी। विसीमीय-द [सं] कार्यवय जादाई। विमंत्रक-वि [नं] विमुक्त, पृथक्क पिर्मबाद-पु • [मं •] शुद्धा बनना भासा। प्रतिए। श्रंग करमाः निराध करमाः बोटम अधक्यति । विर्मवादक-दि हु [मंग] घोसा देनेवाला प्रतिया शंग करनेवाहा । विमेवादी(दिन)-दि॰ [में] चीचा देनेवाचाः वयन भव करनेवालाः निराध करमेवालाः शहन करनेवालाः। प्रान्धे स्मी-स्मी समनेवाला ववर् (संबोत) । विमंत्रुच-वि [सं] करिवर शुल्या विश्वम औ समज्ञः | विमारिकी-की [स] मणहरूपः

स को । धिसंब्रल-वि सिंश्री जरुग किया बना। दीका दिया EMI 1 विस-प॰ सि॰ दे 'विस' । † सर्वे इम् । विसद्य-वि सिंशी नसमाय, मिका असापारम । विसंसाग-वि सि विसम्बद्धाः विरक्षा न हो। रिमस-वि॰ दे॰ 'विषय'। विसमाप्ति-न्वी॰ (सं] कार्यका पूरा न होना । विसयनाः विसयनाः - म कि अस्त दोना । विसर-प सि | दिमिष दिशामीमें बाना, फैलना मीक शंका वकी राधि। विसरण-प॰ सि॰] फैलनाः क्षेत्रा पहला । विसर्ग-त [र्श-] प्रेपण कलना, बहाना। फेंबमा: बान: धराना पृथ्ड करना वार्थक्या निर्मायः परित्यायः मरू त्याण मोला कांति वीशिः सर्वेका बक्रिमी अवमः शिभाः एक काशरका लेकेस (१) विसका समारण जाने 'ह'के समान दीता है। मक्या शिव ! - खुंबम-पु॰ निरा दीने समयका भूवन । - स्वस - प्र॰ विसर्गका छोप । विकार्गा(र्शिन)-वि सि॰) शाम बरमेराष्ट्रा स्थाप बरमेवाला । विसर्जन - प [र्र•] हाना भंत समाप्ति मन्द्रवागः खामा गैंद्रसा। दिशी कामपर बेमला। हाँक है जाना (बाबोंको): प्रतिमन्त्रा भारामें महामा सानाः विशेष अवसरपर साँद धीवना। धृति पर्देशना। निर्माणः प्रश्रका बचर हेनाः बाहत देवताओंसे मानेही प्रार्थना करना (भाषाहमका पत्र्या) । विसर्जनी-सी॰ मि शहाके मेहकरके तीन बत्रयोगेरी विसर्जनीय−4ि• (सं•ों मेदा तिकाठा जानैदाता। प एक असरका सबेत, विसर्ग । विसर्जेयिवा(तृ)-वि पु (वं॰) व्याग बरनेवरना । विसम्बद्धा-सी भि विदासय। विसर्जिल-दि [र्छ] भवा हुमा: दराया हुमा: त्यकः। विसर्च-व (सं०) वत्तरतता प्रयाग बरना। रंगनाः पीनमाः बार्यका मामामाशिस बुन्धार परिमाम (मा)। एक पर्वेशेग, श्वनी । -ध्य-पुरु मीम । विमर्पण-१ नि] सरकताः रंगनाः कैननाः प्रेयनाः रवान स्वागः पृक्षिः बादः प्रीहेक्य स्प्योटः। विसर्पि विसर्पिका-सी [मं+] गुजरो भागका रोग । विमर्पिथी-सी [मं] शागिनीः वर्गनेस्य । विसर्पी(पिन)-दि [नं] फारने पेननेशका; रेनने बाग्या सुबन्धे रोगसे धोरेत । ब्रु. सबनी रोगः हक भर्द । विमस-पुधिः है। दिसम् । विमाससी-की [मं] माधवदा समादा कार्य बार्य दरमेशरे दारणेका ज रहना : विसार-प्र [मं] चैनाश मध्येश कृषः चन्छाः स्थानाः शंसमा। निदयना १ विमारवि-वि (मंग्) जिन्हे मान सर्वि अ हो ।

९परा । ~कासमी−की कासगीका वक्र मेर । -कीकर-पु॰ पहाडी कीकर ! ~साक-भी मरीपसे भानेगली निहियों, भएगार मारि । -मीछ-प्र बीला रंग-विशेष (धीमका)। --पष्टमा-पु॰ साल पदुशा। -पास-प्र• रामशीर कृष्ण केतकी। ~प्यास-प्र पक तरहका प्याच (इसमें गरिवार कह होती है)। -विगम,-मेटा-प॰ एक सरहका सपे॰ पीतका प्रका टर! -सास-प शिक्षी माल पृहेपका माल। -सहस्रप-प्र• मसामेने काम शानेवाला एक तरहका स्वस्ति । -सिविध-५० एक वितेशी विशिध । -होस-म्बी॰ एक तरक्की सेस । विसायन-पु॰ [सं॰] एक प्रश्वाकरात्व । बिकायित-वि॰ [सं] द्रावित विषकामा हता । बिसाम-१० (सं) मार्शर, शिक्षक । बिकायस~पु दे 'निजायत'। विस्वापसी-चौ॰ एक रागिती। विकास-प्र• [र्थ०] चमक्ताः व्यथः होनाः क्षीराः प्रथथ मीकी बार मानः नजीनसार क्रेश्याः सीटवैः सक्रीय-मोगा अंगर्मगो। एक कृषाः -कामन्-प्रयोगस्यः। ~कोवंडः,~चापः,~धन्वा(श्वन्),~बान-प॰ काय रेव । -राष्ट्र -मयम -मंदिर -बेदम(त) -मय-(म)-प ममीरगद्र । -बातायन-प+ छात्रा । बिसासक-पि (६) इतस्तवः अमन करनेपालाः नाप करनेशसः । विकासन-दुर्धि । क्रीशा प्रेमाहिंगमा विभीदम । विस्तासिका-न्दी र्स । एक तरहका श्रेगर प्रयाम रक्षांकी काक । विकासिमी-सा॰ (सं०) संदरी तुपत्ता बाह्यक स्नी। वेदवा वंडानीः यदः वर्णवृत्तः । विकासी(सिन्)-वि छि] चमक्रारा श्वर-वयर मूमने बान्धा सीवाधीका बाती। भारामात्रवः। पुरः बानका कथि। बंहमा। सर्पः कृष्या शिवा कामदेव । विकारय-इ (सं०) रह तंत्रराण । विस्तिरा-वि [सं॰] प्रित्र निराधा । प्र॰ विद्वया जनाव । विकिथित-विक वि] हवा हुआ । विकित्सम्लद् [मं] स्त्रीपमाः विकासः व विकिशिश-वि [बंब] हारीचा हुमा बिनश दुमा ! विकिस-वि [riv] क्रिक प्रभा विमान वाम रूप एका ब्री बनुषित्र र बिरिष्ट−ि [तं•] इस श्रमाः वस्त्र-व्यवस् । —धेषण्र= तु अधिकार्यमध्ये दवा ह बिलीक - नि॰ व्यक्तीक, शतुपित । क्रिलीम-दि॰ [मं] संदर्ज लेलमा अवा दुला वतरा बन्दर बंडा हुमा (बड़ी)। विद्या हुमा। तुत्रः बना महा बना बना, थिएना बना: मबद्ध है विभीयम-पुर [वं] विपन्ना पुनना ह विश्वमन्त्र [मं] मीयनाः ग्रीमनाः विश्वीस-५ (तं) मुस्ताः भीते कृत्याः जीत्या व विमंदित-रि (ते॰) भी भूरा नवा द्वीर कोटा दुला ! बिर्मप ह-दि [d] लेक्से बीहरीबामा । मु मुरेशा | विलोक्यांयु-मु [ilo] व्येप र

मञ्जू करनेवाका । विमादिव-वि [र्शः] शुक्त क्रोजिक सम्बद्धा दशा। बिल्ह्स-वि॰ [र्च॰] शीरत विशेत्री अंतरिया हरा धीमा महा जरहता खुरा दुसा। -विशा-वि विषय थम कर किया गवा हो । विकसायोगि-सी [तुंश] एक बोनिरोग । विसमित-वि॰ (वि॰) भारत व्यरतः सभ्य । - प्रव कि शब्द देवने गयन करनेकाचा । विलक्षित-वि॰ [मं] हिल्ला हुआ, बहराला हुगा मन्त्रिया श्रम्या भरतन्त्रातः । विखन-वि [सं+] कारफर मध्य क्रिया हुआ। बिक्टेम्ब-४० [नंक] सार्वेषमा काएमा माहत करमा । विद्येदान-पुर [तं] यहाँमना सोहना क्यानमा वि वजानाः भीरवाः वरोका मार्गः विवास करवा । रिष क्षरीयमेक्स र विद्येषा-सी॰ (सं॰) व्याँका विद्या स्वरारमामा । विक्रमी(किन)-दि॰ (त०) क्र(विनेशमाः विद्व धनाने wrear (विकाय-म (तेन) सेक पावतीकी मीमा संगरामा गिरा पशस्त्रका लेक्साः वादा बन्धमा । विकासमान्य [र्गण] अंतराय समामा। समाने, हेर बर्पे क्षा क्टार्च, अंतराय । क्रिकेटबी -सी॰ सि } यह भी जिने अंदराय क्रमा हो। श्रीमा भी। माँ४। विकेपी(पिय)-वि [तं] तेर कर्नेशनाः स्थापर क्ट्रनेशकाः क्लशरः विषदा द्वेषा, साथ क्या द्वेषा । विमेच्य-रि [र्न+] जिसका नेत वा बनस्पर दिवा वाब (वारा भारि) । विमय्या-मी॰ [र्व] माँह। विवेदामी(सिन्)-५ (त) सर्थ । विकेशय -पुरु विन् विकार रहनेगाना जीर, सर्र, पुरु शाह, शरका भादि । विकोक-म विशे महाद, रहिएता काराहिस मना भाव । विश्वपद्मीत । विलोक्स-व (सं) देशमा दिवार करमा समाग्र बरमाः जानकारी बातित बरनाः ब्वान हेना अस्पन् Krat i विक्रोक्जा०-ग क्रि रेगमा र बिक्तेक्षमि - स्ते देशने ही दिया। विक्रोदशीय-विक शि हे देशने बीम्बर समाने बीमा विकोशिश-वि [मं•] हेवा पुष्पा प्राप्ता पुष्पा निर्देण्या पु अक्ष गाला सक्रत परीभव है विक्रोची(किन)-दिन मि हे रमतेर न्या भागवणी बाजिन वश्तेगायाः । बिलीक्य-पि (गं०) रेशने बीप्त १ विमीचम-वि [रा] क्या विशेष व बर वर भागी त्र भीवा महार एक विस्ता -पत्र-प्र द्वीतर। न्यास-४ धीरात्र (

बिसारिष्ठ-विस्मापक बिसारित-वि [र्:•] फैनमे, पहनेमें प्रदृत्त दिया हमाः शेपादित । विसाधी(रिन)-वि [नं] विद्यानेवाताः श्रवमेवाताः फैक्नेबाबा। पुनस्का। यिमास-वर्षि १० 'विद्याक । पुरु [बार] मिनन, संयोग (प्रेमी-प्रेमिक्स्का): संभाव । विसियी-सी [र्थ] क्रमलका पीनाः जुलाकः प्रथ समृद्र । बिसिल-दि॰ [मं॰] रिम प्रमाकसे संबंध रखनेबाहा । विसक्त-वि [सं•] सक्तरहित । प् • क्या में । विसक्तरा-नि॰ [एं॰] बिसडे क्यें सच्छे स ही। बिसग्र-वि• सि निराजंद । विसुहत्(द)-वि (सं) पिनहील । यसमान्य (तं) बमामेक्षे किया, मुख्य करवा। विस्चिका बिस्ची-सी [मं] है 'विश्वविद्या' । यिस्य-वि [मं] परशादा हुमा, शक्षिक निरस्त । विसरण-प , विसरणा-मी॰ [सं॰] द्वारा शोहा विना ferfic I विस्रित-इ [भं•] अनुकाव शोक। बुन्हा । विसरिधा-मां में रेसर। विसंक्य-वि [सं] मंत्रा छोडा जानेवासाः करवन किया आमेवाका । विस्त-(व [मंग] फैका फैनावा हुआ; क्षतित करहा पिसाबर-पि [सं] क्रेडने व्याप्त श्रीनेवासाः रेवने राजा । पिछमर-वि [मं॰] रॅंगने छरश्रमेशका पारों ओर फीकरेराकः । बिस्ट-वि॰ [रां॰] त्वक, छोडा दुवा। शेविना बेंबा दुवा। निर्मिता प्रदक्षा इराया प्रजा । पुरु दिसर्थनीय, विसर्थ र्षस्वा÷)। विष्टि-सी [सं] प्रदश्च वरिस्वायः ब्रश्मा लावः निर्मापः मंत्राव । विमाद-दि [मं] सदम किया हुआ ! विसोध-वि सिंगी सामरहिता पंडवीन ह विगीमय-पु [नं•] दुमा दहा विस्पितिन-दि+ [मं] (भार) थी और तरह म निक नवा दी। विर्ता हुआ। मूक दश्ता हुआ भाषा हुआ ? विसा-इ [त] दे भरता विग्तर-वि [तं] तिर-ता संशा मनुत । दु कैवार विम्मारः स्वीरः स्वीरेशर विश्वत्थः स्वयीः शासुरैः राजिः समुद्र। संस्तर दोड वर्तराज्ञात्र । विश्वास-प्रक [तं] दैवाश संग्रहि-श्रीशारी विद्यालगाः भौता बुच्य व्यामा हुन रूपने शामारे । विस्तारम=इ [सं] देर मन्द्र केवादेश किया । विस्तास्त्रा≠-स कि देवला। बिरसारिकी-भी र [५] इद सति (धुने हो । farmifin-fe [4] Corer gwit fernande ATI THE I बिग्नारी (दिन्)-दि० [व] दिश्तरवृष्टा वर्गाः एडि शामी । एक वरदेश । विस्तीर्थ-रि [8] कैंग हुन, सिन्छ नंशकीरा

विश्वासः मानविद्यः भागे बाहत । न्यूप्येन्तः राष्ट्री -जाम-स्री वक पैरीवासी नश्री (निवाद कराय)। -पण-पु॰ मानर्त्र । ∸क्षेत्र-पु॰ ६६ वर् । बिस्तत-वि [र्त+] ---से वजा प्रमा चैना द्वमा तुमा दुआः विस्तार्थकाः वहा विशासः प्रमरः भात । बिस्तृति न्या [मं] येनाव (सरतारा स्वामि) नर्य चीडाई कैंगाई या गहराई। क्लका स्थाम I विस्याम-विक [मंक] कुमरे श्वाम वा अंदरे संरेद शारे-बाना । बिरपंड-५० [मं०] संदम अवदमा १६ म्हेजन । विस्तार-प शिक्षे काला बरवराहरा स्थापी रहार संबन्धाः । विस्कारक-पु॰ [लं॰] एक मृतियान स्वर । बिस्कारण=च सिंशी चैकासा (हैना): सीहना । विस्कारित-वि॰ (वि॰) धीटा पैतावा हमा बार हमा प्रशक्तिक वस्त्र दिया हमा। ह धनुर शान वा बाद बडामा । विरक्षीत-वि [तंग] प्रवर । बिरकर, विरुपरित-(40 (80) रिता प्रमा श्रमा विश्कर-वि [नं] जिसकी कींसे गृह मुली ही। विक्पत्रवा-प (संव) (रियम्बा) संत्रता स्परता कीथ ! विरक्तवी-क्षी [गंग] रद पृष्ठ हेर । विस्तृतिस-दि [मंग] वर्षिना रहतिस्त वंपण गा दुषा मूबा दुषा । विस्कृतिय-५० [मं] चित्रवारी। दक्ष [१४ । विरुद्धिमञ्च-वि [सं•] चयरमा द्रभा । बिस्हर्य-४ [म] वर्षमा विरुद्धवन-त [मं] गर्वता प्रीप्त रहता धैनना । बिरहर्मनी-मी (वं) सेंद्र तिहद १४। विष्युर्जित-वि [वे] श्रम्रामाना स्पृतिश नेवारा हुआ। हुन्द, करिन । दुन बरधनाः मिध्रेन्साः स्ट्रान । बिस्कीर-प [शं] कामा पूर पहला बारोपा कोषा ह farelien-qo [ni] an eliti fig nuite 5T थेक्टा परने अहबनेदाला परार्थ। (र प्रश्लेशका । विक्कोटम-१ (तंन) पर ११मा में।। निवसमा हरेंग। विकासीया विकासीलाम-दि [त] अपारित्रवह । विस्तव-वि [लेक] संशेष्ट विश्वरा की गए ही ला द्वीत वृक्षा कार्या कर्गा पद स्थापी मान (नदानी व आवेशने व्यार्थेट रेशनेन्त्रको चाहिने होनेगण आवर्ष-मा) पर्यश्चित्रक नात् । अप न्यार (हिंद्र)-दि जाध्ये प्रत्य बरन्तराचा र बिकारवाम-पण [तंत्र] आव.चे, सनमा ! विष्याबाषुम-वि [म] श्राप्तदेवाता विकासी(विम्)-वि: [4] विकास्तात #425 वर tor 1 fattin-3 [n] da sout

-बार-नि॰ मिसका धार दिस रक्षा की।

र्मधन ।

बिसीट, विकोटम-प [सं०] सरक्या।

विकास-पु [मं] हुरकृता औरमध भारीकित बीगाः

विकोबन-प॰ सि ी मननाः विकासाः स्वर-क्वर करमा।

विक्रोबित-विक [सं] दिकाया हुआ। शुल्या मधिता

विक्रोबक:-स कि: मधनाः सच्न करनाः विकासः ।

विसोरक-प॰ सि | एक महसी।

विसोशक−व सिं विरा

सरकता बना । प॰ मठा ।

विकोना-स कि है 'किशा'।

विक्कोप -- प ॰ (से॰) अपहरण शेकर जांग चाना। वाचाः श्रतिः पोट, भाषातः माछ । -शृत-पु सट पाटका कीम दिखकाबर बमा की दुई छेना (की॰)। विकोपक-वि [सं+] दे विसंपक'। बिसीयन-प सि] संग करनाः नष्ट करनाः काटकर वा तीतकर अकन करना। ब्रुटना। चोरी करना। छोव रेनाः तस करना । विकोपना :- स कि कीय करनाइ टेकर भागनाइ वाचा बाबमा । विक्रोपित-विश् [सं] संग किया हुनाः गत किया हुनाः पुत्र किया द्वना । विकोपी(पिन)-व [स] नाम्र विकोष करनेवालम भंग करमेवाला । विक्रोमा(फ)-प्र• वि) चोरः बाहः । बिक्कोच्य-वि सि] ती इसे अंग करने सह बश्मे बोग्या विक्रोस-प मि विकास्त्रेन प्रकोशना अस भीका वह कावा । वि मिलॉम, जीमबून्य । विक्रोसन-पु॰ [मं] प्रमर्ने बालनाः गहकानाः मनीवनः पाइकारिनाः प्रशंना (ता)। विक्रोसिल-दि [में] सुमाना हुना। नहकाना हुना। छ किता प्रशंसित । विक्रोस-वि+ [मं] बस्या विपरीश क्रम वा रीतिविस्यः बस्तरे हरमसे बरपना पीड़ेका । व॰ बक्सा हमा सर्पः कताः बदया पानी निकासनेका यक बंगा स्वरका अवरोध (गंगीन)। -कारम-१० वह द्वाप्य को सकता भी पहा मासकेः −क्रिया−को दल्दे क्रजने करना अंत्रको भोरते वारिकी कोर वानेकी किया। ~क, ~ जास ∽ वर्ण-वि पिनासी भोधा बचनर नर्मनाकी भाताने यरपष्ट (शंताम) । - जिद्व -श्मान-१ दाशी ।-पाद-त अंतरी भी भी प्रमा। पिकासक-वि॰ [में॰] बन्दा, विक्रीन, प्रतिवस्त । विक्रोमन-पुर्णि | सरामंत्रिका वद श्रेग (ला०)। विस्तोसा(सन्)-वि [मं+] क्यारी और मुद्रा तुआ। दशरदिन । विमोमाशरकारय-५ [र] है दिनोमकाम्य'। विनोमित-रि॰ [री॰] यक्ता प्रश्ना। विलोमी-भी [मं•] जॉबका। विन्धेल-वि [नं] पंचन अधिवरः शुल्या कीनाः अस्त-भ्वरता रिमारे द्वर (शाम)। ग्रंदर । -शारक-रिक व्यंवम श्रीनीवाण । - सावन-दि॰ विमदे मेत्र अशुर्य हो । | विश्वयो(थेन्)-दि [सं] वांतिहान ।

विक्रोकन-प्र॰ [सं] दिकाना, पंपक करना। सम्भ करना १ विकोकित-वि [र्स॰] पुरावा, हिलाबा हुवा; प्रुप्प किया हुमा। – इक्(बर्) – वि शिसकी जोंसे चंचन हो। विस्रोत्स्प-वि सि] पृष्णारवित मिसे किसी बस्तुका छोभ न हो। विकोडित-वि सि] गाहा काक । प्र करा विकासक तरश्रका प्यामः एक नएक । विकोडितक-पु॰ (सं) यह सब प्रिस्ता रंग साम हो। थया हो । विसोडिता-न्नी [सं॰] अक्षिकी एक जिला। बिक्र-प्र[र्स•] दे॰ 'वितः। विक्य-५ [सं०] रे 'विस्थ'। -मंगस-५ सरदासका शंवा होतेके पहलेका लाग । विस्वतिर~प॰ सि] वश्वविक्षेत्र । विस्थेश-व [र्च] मिक्साका प्रताना नाम । विश्वचित्र-विश् [सं] छन करनेवाका चीसेवाज । वियंत्रि-वि [यं] की बंदमा वा प्रयंत्रा करना चाइता हो । विष+-विष्यस्य हो। विवक्ता(क्यु)-वि [सं] करनेवालाः म्बास्तासाः सुवार करनेवाका 'क्रेमपरर'। विकास-ती [सं+] बहरी, व्यक्त करतेकी इच्छा: प्रकार शनिमान भाग्रकः श्रीकः दिवदः । विवक्षित-वि [मं]क्ष्मनीयः कवित एकः अभिनेतः वर्षिकतः अभिन्यमिनः अपेक्षितः प्रवासः प्रिकः शास्त्रिकः। प्रभागन, अभिप्राया वर्षमा आहत, अर्थः को बहनेदी बच्छा श्री। विवध-नि॰ [नं] बीकनेश्री रच्छा रहानेवाला । विवस्त-वि• [धं] संनानक्षत । विषयमा−त्यी॰ [सं] यह माय विसे बछवा स हो। विवरमा-वि मि] को बोकमा चावशा हो। विवद्य-तु (र्व०) शगहनाः सुदरमेशाबी । विवद्मा - अ कि शगरा विवाद बरमा। विवर्षित-नि [र्गण] शगरा करमेवामाः विराद्यसम्बर जिसके रिय सुकरमा छन्। गया हो। विक्य-तु [मं] मार्रट, मुजाः अत्र या मृमेदा देश एक ब्रह्माचा सहक, रहममार्थे। ब्रह्मा राजकर । विषया-मी [मं•] मुला, लुबाडा। बंधन इक्द्री । विवयिक-प्र [सं] भारवाहका वैरीवाला विसाती। विवर-त [मे] दिना गहरा। ग्रामा भरवाया वर्षान श्यामः क्रिज योषः अंतरः स्ट्रमे आदिका मानः मीन्छे संस्था। चैकाश निरतार । -दर्शक-नि शोर रिया लानेनाला। ⇒लालिका−शी श्रीपुरी। विवर्ध-पु [र्थ-] प्राधीनः स्टब्स्सा स्यावकाः वर्णमः व्योगाः मान्य ६ विवरणा−म०६६ दे दिससाः

विवसमूत-रि (गं) विद्रष्टरेश।

विश्वराष-प सिंगे छोटी थितिया ! रि. भारताशर्मे गमन

बिद्वाराम-प॰ सिंी पक्षीः सर्वः एक देवनर्गः।

करमेदाका ।

1941 बिस्सापन-पु॰ [सुं॰] नाबीगरः अम, छक। कामतेवा रावर्षतगरः भागवेर्वे शहनाः अवंगेवे अकनेवा सावन । वि भाषपंद्रारक। विस्मारित-वि [मं] मूक भानेके किए प्रेरित किया विस्मित-वि सि । शाक्ष्यपद्धः पदिनः वर्षशे । पुर यक बचा। विकिम्ति नहीं सिंगे आधर्ष अर्थमा विरमन । विस्तर-वि॰ सि॰] भूका हुआ। -पूर्वसंस्कार-वि॰ परकेका बादा या. निधय मुख बानेबाका । ~संस्कार~ कि बादा आदि यस आनेदाना । बिस्सति - नौ • [मं] विस्मरण मृत्र जाना । विस्मेर-वि [सं] भाश्यांनित चित्र विश्वित । विसंध-प [धं+] है दिसंस' । विसंस-त [मं] पतना श्ररणा श्रवा धीकापना निर्वकता । विद्यंसन-प्र• [सं] गिराना प्रतमका कारण दोनाः होका करमा। वंदम खोकना। रेपन । विश्वंसा-स्रो [मं] हे 'विमंख । बिर्स्सस्य-ती॰ (सं॰) बादुदि देनेका वद उफ्टरण। बिर्द्धशी(सिन)-दि॰ [सं] गिरमेवाला सरक वा फिलकदर गिर जानेवाला (जैसे **दार**) ! बिस्र-५ [६] इन्हे मांस्क्री गंधा रखा वसा। -गंब -ाडी क्यमे मांसक्षे येर । वि कक्षे मांसक्षे गंथ बाक्षाः -रांधा-कौ इपुत्रा मामका वीताः -रांधि-मी इरदक्त। विस्तदय-वि[सं]दे 'विश्रव्या बिस्ता-त [सं] दरक बहाना कारा । विदायण−द [सं] भदना श्ररण। बिस्तमा-मी [मं] क्षीनताः महस्ताः प्रशास्त्राः। विरास्त-वि (रं) विदारा हुमा। रोता वहा हुमा। राम बोर बहुछ। -चेता(सस्)-वि व्यास विकात। -इंग्रन-वि क्रिस्टे वेदन सह गरे हो। -यसन-दि जिसके बन्द बीसे पर गरी ही । −क्टार-दि जिसका हार सरकदर दिए गया ही ! विरतस्य-दि [मं] दोशा दिला आनेशानाः धौना जाने काला (विराह-स्वी [मृं+] दिमार्वेशः इतुवा । विस्तामण-५० विज्ञाम आराम । षिगाव-९ [व] दे विसव । मौंह । बिग्रायम-५ [तं] बहानाः एक बहानाः अर्थं स्थानाः एक तरहकी शहरी चराह । विग्रापित-नि [नं] बहाबा हुना । बिगत-दि [मं] बहा हुमा (ग्या हुआ) दिम्बति-न्दी [म] बहना एएए।

विश्वर-रि [मं] स्वर्रीता वेथेन (स्वर): बर्देश ।

विदेश-दु [में] श्री। श्रामा बारका सूबै। ब्यूयार दव

माग । वि आहाससे गमन वरनेवाला । -राज-प

विस्वाद-वि [नं•] श्राप्तीम १

गरर । ∼हा(हमू) – ९ १६/नेदा ।

विक्रांगमः – स्वी सि े बिदिबा (माटा)ः वर्रेगी । विद्रागिका-सी॰ सि विद्रागी। विद्वयासाधि-प सि॰ वास। विद्यंशिका-स्त्री सिंशी वहेंगी। विद्वेदना॰-स॰ कि॰ यह करनाः ध्वस्त दरनाः मार ৰাদন্য। विश्वतस्य - विश् [संश] वय करने योग्या नश्च करने योग्य । विष्टेंसना = न वि असहाता ! बिहरा~प सि] प्रदी: शय. सर्थ: पंड: मेचा शहा शही-का एक विशेष जनस्थान । --पश्चि-शाच-ष० गरह । -वेग-पुष्क विदायर। विद्यम्ब-प सि । यस्त्र । विद्रगेश्वर-पु [सं] गरहा विद्यत-वि [र्ष] विदीर्णः मारा द्वमाः भादतः निवारितः जिसका प्रतिरोध किया गया हो; बाबित । पुरु जैजर्मदिर । विद्वति-स्रो [र्थ] भाषाता वयः रोकः निवारमः मयानाः विश्वकताः परामव । तु शिव छात्री । बिद्दमन-प [सं] दिसा वदा थोर पहुँचाना। प्रकिरीप दरमाः शया दासमाः असदी । विद्यर-पु [त] बरणा स्वान-वरिवर्तना पार्ववय विक्रोमा थमार । विद्याल-त [र्थ] इटामा, हे बाताः स्वान वदसताः योजना प्रेमामा मानंत्रे हिद पुमना-दिस्ता भीत ! विश्वरमा - अ कि शिहार करमा भूमना फिरना । विद्वां(मृ)-प [नं॰] शक् द्वर क्यर युमकर मीव रनेदाना । विष्टर्प-प [र्ग॰] भाषभिक प्रसुवता । वि॰ भार्मदरहित । विद्यमित्रका, विद्रसितिका-को भि । सम्बात । विद्रसन-पु॰ [सं] मेर मनुर दारय मुस्कान। विद्यसित-१ [में] समुदान । वि समक्रामा प्रजा: को हैंसा गया हो है विक्रस्त-दि॰ वि] दरवदीया व्याहन इतन्त्रिः देवमा **अनन्धरीः अधका रिधान् चन्र**ः विद्दरितत-वि [र्व+] परशवा ब्रधा, व्यान्छ । विद्वाग-१ व्यक्तराग । विद्याम-१ भीर, प्रातःबातः। । वश्यः । विद्यापा - स कि छोरना अपने ही पुत्रक करना । विद्वापित-वि [मं] स्वाग बरमेढे हिप ब्रेहितः प्रश्त । द्र दान । विद्वाप(म्)-५ [व] आसास । विद्वायगति-भी व्यवस्थि गनन बरनेश्रे एडि (मे)। विद्वायम-५ [में] भारामा १५%। विद्वापा(थम्)-त [न] की। विद्वार-पुरु [थे] कामा मार्यातीः मुमक्त मनार्थन करनाः कत्म पश्चमाः जीताः हीशवानः यम /जनका रवाना निश्ववेद्धा महा क्षत्राः रहेदा प्राप्ताः या प्रवास बामान क्षेत्राका वह करी विदेशगढ !-गह-व मोबा-

नामका नार मर गया हो। जिसमें नोक म हो (शक)। -करण-वि॰ वायका माव भरतवाका । -करणी-सी॰ पक्र भोषभि । --कृत्-पु० विश्वाकी बृद्ध । वि विश्ववय कारो । कतिकारीः अवमोदा ।

विसस्या – सी • [मुं] गुबुचीः महिक्तिसा- वंदीः तिपुटाः बिशसन-वि [सं] बातक, मारक। पु॰ वक्र खहा यक

गरका कारणा भीरना। वनः ग्रदः। कठोर व्यवहार । विवासित-दि॰ [सं•] काटा, चौरा हुआ। विशासिता(त)-प॰ [तं॰] कारने, चोरने, छेरन करते-

गमाः परितरः। विदास्त-दि॰ [मं] कारा हुना। कबहु, पृष्टा बर्जिंगत

विख्वात । विशास्ता(स्त)-प [मं] वर इत्वा करनेवालाः

परिश्व ।

विश्वस्ति-सी [मं•] वच । बिसख-वि• [इं] छस्रहोन। विशोपति-पु॰ [मं॰] राजाः जामाताः व्यापरिवीदा

मुस्यवा ।

मिशा−की० [सं] बाता क⊨ा निसाकर−पु (सं] भद्रचुना देती।

मिशाप्त-प [मं] क्रांचित्रेया मिछका वकुमा वस देवताः वाम चकाने समयको यह मुद्राः शिवः अगर्नवाः यबीचे क्षित्र धातरमाक समञ्जा जानेवाका एक देख (भवरमार रीत)। वि शास्त्रश्रीतः इरत्रश्रीतः विस्तरा सध्यमें सरका ∽ब्राह्र~पु वेल-दावेशा ∽ला~पुर

मारंगीका पेर । -इस-ए महाराह्यस कारक्का रच-विता। -पन्न-प यह शिहा रीव (बान्ये)। -मूप-९ यह देश विद्यालयक्त (१) ।

विशासक=दि [गं•] सामाजॅनला [†] विशास्त्रस-५ [सं०] बाज बकावेडे लमक्डी वड विशेष नका ।

विशास्त्रा नते [सं०] एक सक्षमा बूबी व्हेस बुसर्वेशा रह प्राचीम बनपर ।

विशामिका-मी (लंब) कारानुध्य बंदा नरहपूरमाः मोना भरतातिताः क्रीना ह विशासम-४ (वे) विष्तुः कारणः नाटित करणाः घट

करमा । वि नष्ठ करमेवानाः सुध्य करवैवानाः । विशाप-५ [मं] रह तुनि । वि शायतुन्त । पिशाय-१ (म) महरियोद्धा बारी-वारीने सीना ।

विशायक-दु (४०) यह क्या निश्चाहर । विशासक-पु [मं] आरम्, वयः विशासन् । विशास्त्र-सि॰ [मं॰] अनुजरी दुशका विज्ञाना बनुसा चानुबंदचे (बाबय)। रश्द्र विवादवाला। असिका बन्दान-

शक्तिमे रहिना लाइसी चीर । पुरु बनुव्व बुध । विशाहरा-भी [मं] केर्नथा शुद्र दुरास्था । विशास-दि [१०] बृह्यू, बहार बिग्युवा --- ते वृत्तीः

प्रस्थाना राजिकाली । मु यद क्षणी वह विरुग्ध शतका feitt ne mutt ernibet de Jat au getat en पुरा रक्ष रोजें।-कुक - पु अभिक्र नेस । - सेस्टार्ज-

बसरीर । -स्वक्(क्)-पुर एतिस्य स्वर्¹। -दा-की॰ एक कता । -तेत्र-तु एक वीश्विस । -पश्च-पु विवासः मानदश्यः -पश्ची-बोश्स्य बंद साइ । -फसफ-दि शिसमें वहे फर्च वर्षोती। ~कस्तिका-ली॰ विश्वादी । **—कोबना**-लो• ६० आँधीनाती स्ताः -विजय-तः स्ट श्राहशी स्त

विशासक-तु (र्श•) देश यरक रक्ष वस्तु । विशास्त्रा-न्यी [र्स•] बशापना विस्तारा स्वाति । विशासा-मी॰ मि॰ो शंहबारची। श्रायवनी संगो। क्रो दक्षीः महेंद्रवादणीः एक तीर्थः इक्की एक कमान्यः

मुर्च्या (संबीत)। एक नरी । विशास्त्रज्ञ-विश् र्वि विशे और्तीशस्त्र । १ १६ स्टा-का बस्ता शिवा वस्ता वस्त्रका एक तथा एक अन्त प्रतराहका एक पथ ।

विज्ञास्त्रश्री-चौ॰ (तं॰) वरी कॉस्ट्रेनाओं स्रोप्त आवर्तात शर्वतीः एक्स्की एक मालुकाः एक दोनिमी । विद्यास्त्री-स्रो (सं०) एकासी सनाः वनमौरा । बिशिषा-सी॰ (सं॰) राख् रेत । बिबिस्ट~वि (र्स•) ग्रिसप्रीया यंगा। (शप) विश्वपे

मोद बोबरी दो नभी दो। (मान) विसर्वे एक्ट व दो। उप्तारीम (पुनकेष्टा) । इ. शापा भारता एक तरहरा साबंदा । विशिक्य-सी [सं०] करामा धीश वामा यह लरहरी

सर्वे। तस्त्राः लक्ष्यः मार्थः वह मार्ग विश्वतर सनारी कीर औदरिवीसे दुवानें दी (थे)। नारना शतान । विशिवाधय-९ (१०) त्यार।

किशिय-fe [d] वेज सीश्य ! विशिष-१ [म] मदाबा प्रामाश देवमंदिर । विशित्सक-प्र (सं०) मेर वर्तमे पछन पर संव। वि मानदशीन ।

विधिरा(१स) विशीर्पा(चैन)-(१० (स) वानर-विशिष्ट-दि॰ (सं॰) (रशेषडायुष्टा अमापारमा अधिया

क्लमा --वे सर्ववेशः अल्डा विशेष कामी शिष्ट बडा दु निष्पुत ग्रीमा (१) १ - मुख-दि श्रश्चमात । दु बत्तम बुक्त । -चरित्र -चारी(रिम्)-पुर रद वेर्ने mer : -qu-g iffent -ufe-nt fete! -- निरा-दि० भिन्न निरुद्धा १०वर्ष -दि० वजन १४६३ । विधिष्टमा-भी शिर्धे (वर्धे प्रशः)

विशिष्टाक्षेत-व [व] राजात्व हारा प्रवित १६ मा जिनमें समूरि कीर पुरुष्धे निष्ठ और गाम मामन औ भी दीनोंदी अजिच मामत है। --बादा(दिव)-दिन

विदिशात मनदा अनवानी ह विशिष्टी-सी ंगिये एड्रायलंकी क्षापा र

बिशीचें-वि [गंव] शीवा बाबा विशा दुवा थी font fint at mer al (buh fon ger ferfer

अक्ष्म दिशा पुत्रा क्षमा दुवा (दामाना) प्रकट रगत देवा (संबद्धको) दिवस देश अस. बराम ग्राम र -पश-पु स्था -शृति-दिश् क्रिम्य प्रति मा

विदारक-थीण्य मदन । -देश-पुरु मनीरंशनका श्वाम । -श्रुमि-श्वीक मनी(बनका स्थाना बरागाह । -थम-प् क्रीहीशाम । -बापी-सो॰ ओहाके किय बना सुझा तालावा ·--स्यष्ठी-सी॰ "स्थान-मु श्रीहारवान। विद्यारक-वि॰ [र्स] पूम फिरफर विद्यार करनेवाला। बीक महन्त्रंशी । विद्यारिका-साँ० [र्ग] श्रीद सक । विद्वारी(दिम्)-वि [सं] मनी(बमद्दे क्रिय क्रमनेवालाः -तक फ्रेंकनेवाका (शमाश्रमें)। अवस्तिमा आनंद हैने-बाकाः श्रीरतः। पुः कृष्णः। विद्वास-५० [सं•] अस्कान । बिटिसक-वि [सं] हाति हानि पर्वेशामेगाला । विदिमन-५० (छ॰) किछोदो बानि श्रुति पर्देषामा । विद्यानिक (संग्री पुराई करमेगाणा पानिकारक । विहित-दि॰ [4] दिया हुना कता निर्मिता विधिता भारिष्टा निम्नका रसा प्रभा। विमक्ता सरने बावस किल्हा निवास किया यहा हो । प्र आहेश । बिहिति-स्री [तं] दार्वेद्या विकानः वार्व-विका दार्थ **प्रेगालका स्वदरका ।** विद्यान-वि [सं] पूर्णतः त्यका भाषा विश्वत रहित । - जाति -योनि - चया - वि नीच शानिका । - तिसक ~रि श्रांप्रशाविक विद्वति रहिता। बिक्रीमिश-वि [सं•] -- से रविश वंशिक्ष । मिर्देडम∽९ [र्थ•] शिवका रक अनुवर । विष्ठेन•-वि रहिन । बिद्धत-नि [मं] मोरिया निगक्ता ग्रीकामा हुन्या हुन्या इमा । इ० मिनोडे रस दारोगेंगे एक समाने कारण क्षमेके समय भी शहका न कहना (मा+)। बिहाति-स्री [संब] इरण के बामा। ब्रीशा, विद्या। क्रीवाक बाह्न बृद्धि । बिद्वेद-द्र [सं] श्वनि तुरारी। बागीयन ह विदेशक-दि [मं] हाति परेवानेवाला अरारे करने-बालाः मिरवः। विदेशन-१ [ग] शांति श्रृंबामाः रपहमा पीतमाः की का है लाग करा रेख है बिह्नप-दि [मं.] हुन्त कराति। स्वापुक प्रशास दुसा। संवाधिनुता नारेने वावरा वत्तुनित सक्षारता श्ताका विषया प्रमा । "काम "बैना(सप्)-हरूप-दि जिनका मन वर्षण व्याप्तनः शी। हरी गोर्थ ह -तथ-(व जिलका शरीर धिनिक वह नवा ही। ~कोचन∽रि विगमी भ"थे रिस्ट म ही। क्टिमता-भी , विद्वालय-इ [सं] श्रीम परश्याः विता परेकामी ह tarafit-fe [do] & "farm-93 1 famfen-fe [cie] to fent t -nein-fe-दिलका नगा ग्राटेट ब्रॉप रहा ही। शीमा-सो [मं] एड तरफो भाषा लाग मार्जन

ক্ষাইবা হয় লক্ষ্য সাধ্য হয়েছিলী।

क्ष्माचेत् हुरेस र

क्षीद्व-पुरु (सं) काबु करी। समा (अर्थ) शराप्ट । वि

बीस-पुर [संर] गरि, मजर, निगतर बाधरे। स्ट्र क्यू । वीक्षण-पु॰ [सं॰] विशेष क्यमें देसनाः विशेषण संत घीर कतरा स्टॉम १ पीक्षणीय-दि॰ [री॰] देशने वीम्बा दिवार दरहे दीना रम्मोक्त । थीह्या−सी. [र्थ•] रेग्रमाः दर्धनः वाच रश्नावः शर वेक्टिक थीकित-विश् (संग्) देशा हुमा । ५० धरि, महर । वीक्षिता(न)-वि॰, ९० (मे॰) रेघनेपाना । बीक्य-म (र्थ०) बाध्ये शिरमदा ब्यायनेत्रमह शार्र प्रका मर्चेक, अभिनेता। पीषा । हि॰ वर्शनीया मार्च्य पानक (वीषि, वीषी-लो॰ [तं॰] त(व, रचरा मनिवेदा सर काबा सभा चारक बोमि। अन्यता किरन । -श्रीम व(गोंका करना। -वर्रामधाय-५५ रुगाए बक्रीवाली लक्रोंकी तरह प्रकृति बाद बुमरा कर्न होगा। ~मान्धे(सिन्)-उ॰ सहर । -काफ-उ॰ ८४ पर अवधीता । बीज−९० (सं∘) दे≉ रोव (समाच मी) t वीजक-त॰ [सं] दे॰ 'नोबक । नमार-त॰ दिना शारके पांचा विभीता मीववा मार । बीक्रशान्त्री [वंब] प्रमद्या । बीजकाद्य-त (००) यह वेत्र रिनीरा मीत्र । बीजन-पु॰ (मं) पंता: र्परः पंता रूपता पदेश जीवंजीव आमक्ष वस्त्रीः वदावे नरपुरश्रीच । शीक्षक्रियाचन्त्र (मे] दे वीक्षद्राम्यम् । बीजाम्म-४ [थे] ब्याम प्रा। बीजाविक-पुरु (संरु) कैं। १ शीकित-वि सिंशी शभा द्वता पद्मा शनदर देश दिया इक्षा अवधे शीवा हुता । विशेक्षित्र) - रि. श्र. (वंशे रेश 'रोगी ह बीओइफ-५० (१०) दे नाबान्य । बीज्य-विश् वि) देया प्रचने बीम्या है 'दीका) बीटक-इ [मं] पानका पीता । बीरा-की० (ले०) प्राप्टेस क्लकालवर्षेटा सहसेन्द्र दक्ष दरदक्षा शही वंशा शही । नथल-५ हिंदने लगी TEXAL I थीटि, बीटी-मां (लं॰) साप्त्रम्पा पात्रस पीता ! बोरिया-मी शिन्ते हैं बीदित वश्रीका दंशी का दौर र स्रोम-की है। गीय । बीबा-बी [बं] फिलार बेमा दम बाबा जिनमें टे-टे विरोक्त होरे कम इंदर्ने हा। विश्वकी। एक बीर्यन्ती। प्रतिनnu felbe mutate feb) e -mittifun) -रणारि(गिष्) -पुर स्पत्रकत्रा स्थिता। -सपी (विष्)-इ राजासका -तक-युक्त कर देरा -fr-3 duiet mer de gib erverfemt --पालि-पुर शारदं ३ औं अरन्ती ३ -मगिर-पे क्रीपाक्षा वह पुरवा किकी शाका श्वर वर का क्री

यीकाश-पु॰ (हो॰) निर्मत स्वामा बदद साहि-प्रश्चा

हो समा हो । यु ब्हामदेव । विश्लीस-वि [सं•] दुरवरिष, दुष्ट, बदमास ।

विद्मवि-प्र [ग्रं•] करवपका एक प्रव ! विश्वाब-वि सि] साफ किया समाह पविश्वा निष्याप

वेदामः ठीका पर्मारमाः विनन्नः पमकता क्रमा सफेदः

समिथितः सर्पः सर्वं किया हथा (क्रजाना) । प असीर का एक चक्रा −करण⊶दि० जिल्लक्षे काम वर्गमद हों।

-पश्चि-वि• शुद्ध चरित्रवाका । पु एक वोविसस्य । ─धी—वि• वार्मिक वृद्धिवाका । —प्रकृति—वि वार्मिक स्वमावका। - भावः - भभा(मस्) - वि॰ पवित्र मन शका । −सरव−वि स्रदानारी।

विञ्चद्वारमा(रमन्)-वि॰ (सं॰) विसका मन विश्व हो। विश्वन्दि-सी [सं] पश्चिता शुक्रता मीह आदि बूर करना। (बैर, ऋषका) परिश्लोका मूल्शुकारा पूर्व छाना

सायदा - चाट-प पढ चड किसका त्थान गर्डमें माना वाता है। विद्यविद्या – सौ ० दे 'निष्युपन्या । विद्युम्य-दि [सं] पूर्णत रिका।

विश्वक-विश् (सं) इतिहोत विमा मानेका । विम्बास-वि [सं] श्रासारहित, ववनहीन कवि वॅबिता संप्रा बहुत अभिक सम्य करनेवाला । विन्द्रंग-वि [सं-] विना सीयका श्रमहीमा (वह पर्वत) विसक्ते कोई बोटी न हो।

विशय-वि [4+] असाधारण वसामान्यः वधिकः प्रचुर । 3 मेदा अंतर बरना। स्वाम धर्म शुण वा परिवायक निश्व अंतर करनेवामा विद्यारीगदी वह अवस्था अव द्विपार आरंग होता है: अंगः प्रकार किरमः भेड़गा क्षपमनाः हम्पोदाः (विमन्धे संस्था भी है) यास गुक (स्वा): सन्त प्रकारके पहार्थीमेंने एकः वर्ग जातिः

निषका विशेषमा एक अर्थानकार इसके तीन भेद है-(१) नहीं निना आचारके ही आधेयका क्यन हो। (१) भोरान्ता काम करनेपर ही दश काम वा लाम ही भूषरा (१) वहाँ एक वस्तुका यक साथ कर स्थानीन दीना वर्षित हो। -कुल्-वि अंतर करनेवाना। च्याः∸विद्∸ि किसी विषयका विदेश दान रकते वाना । - रह्म-वि अध्य रूपवामा । - यहानीय-इ ब्रह सास अवराथ था भग। -प्रतिपश्चि-नी सम्मान-प्रक विशेष विद्य । -आग-पु

मरनदमा वक विशेष भाग। -मति-यु एक वीवि-नारत। -सक्ताया - सिंगा-यु विशेष विश्व । विद्यपद्य~वि [मं०] मेद एवट करमेवाका (निद्य)। बु भेर करनेवाका ग्रमा तिलका रंगीम यंत्रहरूवन ग्रारीरका रेसार सोबनाः एक सर्वानकार जहाँ तीन वहींमें एक षी किया दोनेने दमका अन्यय एक साथ दी दी। नक ग्रंदरा पप दिलडे तीन इस्टेडॉसी एक ही किया दीती

(लसहरवर जिल्ह्स बलानेक्ट्रे क्रमा) ।

हारा विसका मेद किया गया हो। क्रमा मेह। विशोषी(विम्)-वि [सं] पृथव सिषा हो। दरने वासा । विद्येपोकि≔का [सं] एक अर्थाबंकार वहाँ पूर्ण या

विद्योपना - स कि विशेषता प्रदान करना।

विद्योपित-वि० [सं] विशेषनमुखः रुक्तिः विशेष गुणके

समर्थ कारणके रहत हुए मी कार्यका न होना दिखाना विशेष्य-तु [सं] विशेषजबुक्त संदा (स्वा) । वि विसका भेर करना हो विशेषता दिखलानी हो। विश्वच्यासिक्ति-सी॰ [सं] स्वरूपको असिक्ति करन बाका देखामास । विशोक-पुर्धि । शोकका लंगा महोकका पेश शीमका सार्थि महाका एक मानस्पुत्रा एक स्थि। एक दानदा एक पर्वतनेथी। वि छोक्सवित किसमें छोस्की कोई चर्चान हो। –कोट~ पुरक्ष पहाड़ा – पद्मी–सी

मैन-शुद्धा वडी ।

विक्रोका-सी [सं•] संप्रचात समाधिक पहलेकी वित्र क्षणि (वो) कोसराहित्यः रखंदको यक मानुका । विभोणिय~वि [मं] रक्त्र(ला विद्योचन-पु [सं] शुक्र करना साफ करना विष्युः पेडची बालियोंची छैटाई। रेचना निर्मात दोना। स्वत बक्ता प्रावधित । वि शह साथ बरनेवाना । विद्योचनी - सी [मं] जसाकी प्रशासी प्रशासी विद्योजनीय नि [d] ग्रह साप दरन कोम्ब; रेक्स कराने थोम्बः श्वचार करने योग्ब । विशोधिस-वि [संव] साम्न शुरू दिना हुमा। मैन दाग आदिने मुक्त किया दुवा । विशोधिमी-सी॰ (सं) मायश्ती । -वीज-पु बमास योदा । विधीयी(यिन्)-वि [तृं•] श्रद साप करनेवासा । वियोध्य-वि॰ (सं॰) द्वार, साम बाने योग्या की पराया वाद। दुक्ता विशोभित-वि [सं•] छत्रावा द्वशा सहंकृत ।

बाला । तु शुष्क करनेकी किया । विद्योगित-वि [सं] शुष्क किया दुवा; मुताँका दुवा। विद्योगी(पित्र)-वि [मं] अरा दरह मोधनेवानाः सुगराने रम्या । विदन-४ [4] क्रोति वमका गति । विद्यापण-९ [मेर्ग वस्त्र यह । विश्वेम-पु [मं] विश्वामा पविश्वता आत्मीवना। गीप-ीव विषया विभागः प्रथय बकदा वथा मनेदपूर्वक पृष्ट-হারিল্ড ব্যাং –অব্যা–পু আনত বলানীইটা চন্ত ताठ बरमा । —क्या-श्री प्रमाणार । -पाप-र मृश्चि-मी -श्याम-पु विकास काने घोरव विषय या व्यक्ति। - भूत्य-पु विभाग में बद्धा

विर्धासम्बद्धः [मं] दिवाम सार दरमा ।

विश्वी(मिन्)-वि [५०] रियम इंट्रेसमा दिखान

विशोषण-वि [र्दन] शुष्ट धरमेशसम (पान) गुसाने

बिन्तोप-ध [मं] शुप्तका ।

बिरायम-वि [सं+] विधेवनायीलकः । मु विधेषका वनी मेदाबा ग्राप बनमानरामा शब्द (ब्बा)। विश्वेषना भेगर प्रवृह करनेवामा विद्या प्रकार विष्माः व" जाना ।

किया भागा है। - स्व-५० शैयाका स्वर । वि० शैया-को तरह <u>गुनगुमानेवाला । न्यशन्त्राकाका</u> जी भीथे की बह कोंग्री बिसमें तार बॉबे वाते है। -बाद-प् योगा प्रयोगा। वि वीषा प्रयामेशाच्या -वासक-प बीमा बन्नानेबाहा। - बाद्य-पु मिन्ररायः बीणा वयाना : -वादिमी-स्त्री सरस्वती ! -बाद्य-प भीता नवाना । -विनोध-प॰ एक विवादर । -क्रिक्प-पु॰ बीजा बजानेकी सका। -इस्तु~पु॰ दिव। वि॰ बिसके दावमें वीपा दो। बीणानुबंध-पु॰ [सं] बीचाका गोपेके हिस्सेका वह साग बड़ी तार वॉधे काते हैं। भीणा**वती**—स्रो सि] सरस्वते। श्रीष्पस्य - पु • [सं] नारद । श्रीणी(जिन्)−दि [सं] दौजाञ्चकः दौजा दशनेवाका । वीर्तस-५ [सं॰] चिदियों वा जानवरीको फैछाने वा पंद करनेका जाम पित्रहा या इस करहका कोई साथन । षीत्र⊶दि सिं•ो गद्र तथः प्रस्थितः ठोडा द्वजाः भप-बाद किया हुआ। स्वीह्ना को पुत्रमें काम भाने बोध्य म हो। प्रांतः पाकतः। रहित निक्तः रिक्रमः बारम किया हुना, पहना हुआ आवृत्त । यु वृक्के अनुप्युक्त हाभी या पीषाः हानीको अंकुछ नवस्तर और पैरोंसे वयास्य पक्रमेके सिम् प्रेरित करनाः अनुमानका एक प्रचार । ⊶कस्मय-वि पापसे सका । --काम-वि रण्यासे रहित। -प्रण-दि निष्टर। -चित-वि विवा<u>म</u>कः । -जन्म जरस-वि॰ बन्म और दुरापेसे मुक्तः। – ग्रसरेणु−वि•रामदीनः। – तृष्य−ि क्रितमे गामनार न रह परी हो। लक्षेत्रलि निर्धियान विनम्र≀−भय−वि निर्मोद्ध श्रेष्ट् विश्<u>वा</u>शिव ।−भी− वि निर्मोद्धः - सीति - वि निर्मोद्धः पुश्यक्क अ<u>स</u>र्। −मग्सर−वि॰ मत्सररदित देवादिसे रहित । −मस− वि स्वच्छा निभ्याप। -मोड-वि मोडने रहित। ~राग−वि वासनारदिक बच्छादीना खांका विका रंगदा। प्र वह ध्यक्ति जिसने नासकि आहिया परे त्वाग बर रिया है। शैक या जैन महारमा । 🗕 विच-नि साफ, द्वाद निर्मेत । -श्रीव-दि निर्म-का -वंक-वि॰ निर्णंक निर्मय । -वोक-वि॰ वोक रहित गनधोद्र। दु अधीद इत !-सूत्र-दु बनेड। -स्प्रध-वि दश्छारहित । -हिरण्यय-वि जिल्हे पात गुपर्यपान न की । बीतक-दु॰ [रां] क्यूर और पंत्रमका चूम रखनेका पात्रा पिरी दुरे बमीन बाहा। थीतन−<u>त्र</u> [सं] इट्टडे दोनो पार्थ। षीतार्षि(म्)−ि [ti] त्रिष्ठश्ची ब्लाहा कप्ट शमात ही नवी दी। वीति-भी [मं] दावना गति। वाति वार्वववः प्रजनमाः भोगासकार वरना पुरु वीहा । – होल – पु स्रें। - द्विता - प्रिया - श्री स्काहा। चीतिका−को [d] सुनेदी। मोक्टिका । षीतौ(तिन)~पु[सं] १६ करि ।

षीठोणर-रि (तं) निवस्तर ।

बीयि बीयी-सी [सं•] पंति, क्रशारा शेवका चक प्रकटीक्का रास्ताः वाबारः युकामः विजीनी कनारः भद्धशेंके जबस्थानका एक यांगः सर्वका मार्गः मकानमें शामनेका छन्ना। दश्य काश्यका यक भेर जिसमें एक हो वंड एक्टरो पात्र और विषय शंगारप्रवान होता है और वाज काकाश सावितके क्यमें बोकता है। वीथिका-सी [सं॰] पंक्ति सक्कः विश्रोद्धः पंक्ति विश्रा-कित दीवार वा पट्टा छात्राः दस्य द्यायद्वा यद्व मेर (दै॰ 'बीबी')। चीर्व्यग-पु॰ [सं॰] बीबीका व्यक्त संप (ता)। ৰীয়-<u>ব</u> (রি॰) লাভায় বান্তঃ দয়ি। বি হাত, रबक्त 1 वीनाइ-पु[सं]कुपॅका बैंगका शासद्दर। बीनाही(हिम्)-५० [सं] दुनौं। वीप-वि [एं॰] बलदीम । थीपा−सी [सं•] विवदी। वीप्सा-सी [सं] व्याप्तिः कार्यका नैरंदर्य सुचित करने के किए सभ्यक्षी भावति युनरिका एक शब्दानेकार बहाँ भारत मार्थ्य भारेका मान प्रस्त करनेके निव एक श्रम्द वर्ष शर बहा जाय। वीर्रंबर−पु [र्षं } मोर शपूरा वंगको जानवरीके साथ दोनेवाडी महारी पमदेशी प्रत्री। वीर-वि [सं] बहाइट, जनांमर्ग हारा शक्तिशाकीः वहा-चड़ा श्रेष्ठ । पु॰ बोक्सा एक रश (जिसके बार भेट इ-दानवीर वर्मशेर, दवावीर और गुद्धवीर)। अभिनेताः नक्षि बदाब्रि पुत्रः पतिः अर्तुन गृहा जैना करबीर इकः विष्णुः सरबंदाः काती मिर्चः क्रोंभीः सम वदीर शृक्षः रेगी दिवा पुष्टरमृतः आरकः वाराही केरा बावविश्वा एक बाहुरा भूतराहका एक प्रवा मारहासका रक पुत्रा कृष्यका एक पुत्रा क आहे नहीं है 'बीर (की)। -करा-शी॰ एक मंडी। -कर्म(सृ)-प बीरवायुष कार्ष । -कर्मा(मंत्र)-वि बोरोधित कर्म करमेशका । -काम-वि पु पुत्रका रम्युद्ध, पुत्रेदी । -कीट-पु+ तुष्क मैदिद । -मुद्धि-मी सीर <u>प्र</u>प पदा बरमेवानी स्दी: पुत्र जननेवानी स्दी : --केशरी (रिक्) - केमरो(रिक्)-दि॰ कोरीमें निरके समाज पराक्रमी।-शुरिका-की कटार।-शति-सी युद्धमे आयोग दीनेवर थिन्यनेवाली व्यति ववर्ग । -शास-व वीरीका बुला -शोही-स्पे कोरीका भारतस्य वादी ताव। --बक-दु रह शतिह नदा वीरोंदी शनाः विष्यु । -श्रमुष्मान्(प्रान्)-पु विष्यु ।-श्रयां-स्रो० बीरतापूर्वं साहमिक्त कार्ष । -जनम-वि बीर कराज करमैवाछा !-अवसी-स्थै॰ बीर बारब बरनेवाछी स्थे । ~क्यंतिका~सी भैनिकोंदा वह मृग्य जी युक्से आते नमस्या विवयन्त्रासिके कृतः दोना देः सुद्धः । –सदः– दिस्तांतर पृक्षा धानीन पुत्रा निकारी। क्षेतिमाधा व्या सर्वदा। -साइक-न् विनाता। -मृश्य-न छरवेटा। −व्र−९ वर्धन हमः । −धन्या(स्वन)-प् बामन्त्र । - नाय-दिक विसदा शराएक रेट दा। -पह-त घट मदारदा शैं देव दल (शबासर पट

प्रमन्तर्भवेशः गोपनीय (बाती) ।
विभ्रमणन, पिश्राणन-पु [छं॰] दान-वान करवा ।
विभ्रमण-वि [छं॰] विष्यानीय मिश्राहः छोतः थीरः
वर्षा विनामः भनिजवः । —स्वोद्या-की सावस्यरः
विश्रास करवेशको ज्योदा नाविका।—प्रकाशी (विम्)—
वि॰ विवरण या ग्राप्त गाँग करवेशका। —सुस-वि॰
प्रारिष्ट्वंक सीरेसाका।

विकास-पु [सं∘] बाराम, विवास। विकासच-पु [तं॰] बाराम करना अंगोंका तवाव क्र करना।

करना। विक्रायन्तु (१०) विश्वास करावा द्वारा। विक्रायन्तु (१०) ग्रहारेदा मात्रन वासवरवात। विक्रायी(विज्ञ)-(२० (१०) वासव ग्रहारा केनेवाला। विक्रायी(स्)-पुत्र (१०) वासव विक्रानि। विक्रायप्त्र)-पुत्र (१०) विक्रावस-१०)

विभवा(वर्म्)-दि [मं] विश्वान । पुण्डकःवि यो रावम कुरेर आदिकेषिता थे।

विश्वांत-दि [सं] सरवाया हुआ क्षित्राम किया हुआ।
दिवाम करनेदाला। स्रोदा क्षता हुआ। (इन्छानि)। वहा
हुआ। समाना रहित वंदिया होता । न्याया सुरान्त्रानि क्षत्रोत्राम करनेदाला। न्याया हुआन-दिव निकस्त कृत्या।
पर सं गया हा। —दिक्तसा-दिव किसने क्षीत्रा वरित्या वर दिवा हो। —सर-दिवा क्षारिया वरित्या कर दिवा हो। —सर-दिवा क्षारिया वरित्या कर दिवा हो। —सर-दिवा करानी स्वीत हो हो।

यिश्रांति—सी [मं] काराम शिवामा बनी। शेवा पक वीर्थ। -कुन्-दि+ विशास बेनेवामा। -सूसि-सी

विभागका साथन ।

विभागित-दि० [मं] प्रश्ता विषयः । विभाग-दु [म०] भारतमः शांतिः वयरा राजि नेना (सादै वार्)। भारतम दत्तवै जवतः क्रमीः कंतः विरामः मदानः । —क्ष्-द्वीः विभागवानः । —वेदस (स्)—दु काराम क्रमेदः क्रमाः । —व्याव—दुः कारत्यः व्यावस्थितक्याः स्वाव या स्थानः।

विभागसम् (मंग) शिनाम कराना । विभागसम्बन्धः (सं) श्रीवद्याना वर्धावर्षेते दिनाम करनेवा स्थानः ।

विभाय-पुर (१०) वहना ग्रहण भीर-पुन्य कियाणि। विभायम-पु [मं] वहानाः भूम वहानाः सुनामा वर्गन वहता।

विभिन्न सी [सं] ब्राह्म । विभी-दि [सं] मोदीन क्षांनिदीनः ब्राह्म ह

विकास-निर्देशिक विशेष विभाग विकास विकास-दि (निष्) वदा दुष्णा वदमा दुष्णा विक्यान प्रमान १ पु वसुदेवदा केंद्र पुष्णा मनमूचि असिदिय

रिया। विभागामा(मान्)—इ मिन्) रिन्यु।

विभूति-की [र्गण] क्वांति श्राप्त आहा कर अहि (अदीत) ! विभाग-कि सि विकास चेत्रमध्या श्रांत ।

विभय-रि [मं] दीना वंधमन्या श्रांत । विभयित-रि [मं] टीमा वंधमनुष्य दिवा दुमा श विभिन्न-रि [संच] दीमा दिवा दुमा श्रवक दिवा कुमा बन्ती शहस दिना हुमा स्वान कर (बंदारे —संधि-नो अरिक्शन संविधान । विसेष-यु० [संन] विषेण; विषर्णा कार्यास हार्

विस्तेषण-पु॰ [सं॰] १वस् करमा, क्रिते चौत्रहे और भारत-भारत करवार मेर करना । विस्तेषित-वि॰ [सं॰] स्तिक, पुत्रक स्वित प्रमा, सिर

निवा हुमा मेन क्या हुमा । विश्वेषी(पिन्)-वि वि] विमामेवामा दोका कि

डुगा (प्रिय वश्युते) जरूत, वियुक्त । विसीक-वि [सं] विसद्य माम स्वाटित हो। , विश्ववर-वि॰ [सं॰] स्वस्ता निर्माद करनेत्वा

पुरु वेष । विश्वेतर-दि [तं] सरका परावर करनेशावा (ते)। विश्वेतर-दि [तं] सरका मरक बरनेशावा । द देरकर दिन्ता वक सरका निष्ठा लागा वंद। विश्वोत्तरक-तर्व (तेन) वक सरका निष्ठा ।

विकास, विकासी-मी (तं०) १३६।

क्रिया-थ सि विकास क्रियानी समग्र अद्योग स्थाप होय किन्ता दिया जात्या और मागर, मगर्जरानी तरहबी संस्था। वक यंत्रात्वा वितरीका एक वर्ग । प्रिव समय सञ्चा प्रत्येकः सर्वम्यारकः। –कन्न विश्योक्ष क्ष्मीमा । पुरु क्षमा दिकारी कृता । - वर्ता(म)-पुरु शक्ति स्विति क्रवेरस्र । - स्मा(मन) - १० रेर किल्यीः वर्षः वर्षयी साठ रहियशीयेते एकः मंत्र प्रशासन वरवेवटा विका रामा नहरे। भेनमा मागद बाला --बाय-दि॰ ल्हांट विश्वता छरोर हर दु॰ दिल्हा -काया - मी॰ राषायमीकी दह मृदि । -कारक - व शिव! -बाह-त विषय्भी! -बार्च-प्रश्नियो नाम प्रमुख रशिमवीवैभे वक : -इर-द+ दिनानदही दब चौदी। - इटल-दिश दिवदमोद्या सनामा हमा। 2-79-विरमधर्माः सारियनी । -मुप्रीहर्नाः स्वर्म रहमेवानाः नरके मनि नद्भाव रशनेवानाः -केन्-९० व्यवस्त्र । ⊶कोश -शोप-४ मेहार जिसमें विश्वती सारी बरपूर्व संस्तृति ही। रह प्रंथ जिममें मंशारके भार रिषशीया विरस्त हो। 🕳 🗊 - ब असम् । - शिकि-दि दे पिकारि । - वीता-क्षी वर्मकी वह सरी। -ग्रेच-विश् सर्वत्र पेर वैदानेशन। भी+ प्याप्त रह संस्ट्राप्त। भर्महा श्री कृत्ती। भनेथि-पुत्रभूदान्द्र नुपत्त नय ि सर्वत्र गाम बरनेशामा पु अद्या प्रतिकारी वाक्त मरीविद्या वस पुत्र । -शास-वि हर्नमान्द्र । -कार्र-ति शारी वस्तुभीको पार्म बरवेबामा वे उ रिन्तुः रिना रैनगरा कर पुत्र । -शुद्र-पुरु जीसी" रिम् । -शायर-वि मनदे निर रोपमा । नारिया (१० शर्वी क्लोने वंश्व । -शोसा(प्र)-पुर ^{हरण} जिया देश -मीच-मी अमनी। सार भरापूर -वंत्र-विक वृत्ते द्वितिने वृत्त ६ -वड-३। सन्द्र^{क्ष}री शक्ये हिंसा बारेरामा बढ तरहा हर्ता घटी -क्स-रि॰ नवडी देवनेतान ६ -क्सु(a)-रि

मदन । -क्षेत्र-प्रश् मगोर्रबमका स्थान ! -श्रुमि-छो। मनोरंजनका स्थानः धरागाइ ! -बस-प ब्रोडीयान ! ~बापी-सी॰ सीवले किए बना बना शकाव। --स्त्रकी-सी ~स्थाम-तु ह्रीहारवान।

विद्वारक-वि [संव] पूम फिल्कर विद्वार करनेवाकाः बीक मठ-संबंदी ।

विद्वारिका~सी सिंशी बीक गठ।

विश्वारी(रिन)-वि [सं] ममीरंबनके किए धमनेवाकाः नाक पेकनेवाका (समासमें)। जवकेविता आनेर केमे गाकाः संदर । प्र• क्रमः ।

विशास-प [एं) मुसकान ।

विद्विसक्र∺रि [सं] श्रति दानि परेंशानेशकः। विदिसम-प्र= [सं] किसीकी बानि, बाति पर्वेषामा : विद्वित-वि [सं] बराई बरवेबाका, बानिकारक । विक्रिय-वि [सं] विकाहना कृता निर्मिता विक्रिया मारिष्टः नियुक्तः रसा हुनाः विमक्तः धरने वीन्या विस्ता निवार किया समा को हुई अलोश । बिहिति-सी । सि व कार्यका विभाग कार्य-विभिन्न कार्य

र्सपादनाः व्यवस्था । विद्वीन-विश् (एं) पूर्णत स्वकाशीया विवत रहित। ~बाति ⊶पोनि,~वर्ण∽वि शोच वारिका । ∽तिसक

-वि सामदाविक विकसे रहित । विश्वीमित-वि [सं•]--से रहित वंचित ।

विष्यम-प्रमि विषया प्रस्तापर।

विक्रमण-नि• रहित।

विश्वत-वि [र्स] मीहिता विमक्ता चैलावा बुनाः दशवा हुआ। प्र निवांके एए हावांमें है एक क्रमाबे काल कश्मेके समय भी गाउँका न कहता (सा)।

विक्रति-चौ॰ [एं] इरण के बामाः कोशा निहास चैकाक बाह्य पुनिद्र ।

बिह्नेट-प्र (सं॰) इति, हरादै। क्योनन ।

बिहेंटक-दि॰ [सं॰] हानि वहुँचानेवाला, इराई करने-बान्धाः सिंदकः ।

बिद्रेठन-प्र [तं] शांवि क्युँकाशा रणका शीसनाः पीका बैनाः बद्धा रंड !

बिद्धक-वि (र्श-) श्रुष्ण, मर्शातः म्बाकुण, प्रवस्था इला। मनाधिमुका मारेसे बाबरा श्वनुद्धि स्थ्यारका इताका पिएका हुना । ~चेतान ~चता (तम्),~ ब्राह्म-वि जिल्हा मन बहुत न्याकुण बी। वर्गीसाह । -तन्-वि विलब्ध प्रशेर विकिन पह सवा हो। -होचन-विर विसम्मे गाँसे रियर म हो।

तिलकता - को । विद्वासम - प्र॰ [सं॰] ब्रोम, नवहाहरा विदा परेसामी !

विक्तकांग-वि [तंर] वेर "विक्रतातु"।

विक्रकित-नि [4] दे॰ 'निवन'। -सर्वांग-नि क्रिमाद्य सारा शरीर स्टेंब रहा ही।

बींचा-सी [मं] रक ठरहची थाता नायः मर्नेशा धोरेकी एक बाहा संभिः श्वासियी ।

की इ आहे (क्षेत्र) शानु पदीह समह (क्षेत्र) शाहर है वि क्सप्रीर, दुर्गंड ।

चीकाश~५० (सं) निर्मन स्थासः कमक क्रांतिः प्रसन्तः। वीक्ष- ह [सं] यहि, भवर, निगाद: माध्यं। सव वान । क्षीक्षण-पुरु [स्रोत] विश्रोप स्पत्ती विश्वताः विश्वास्यः वर्ततः रहिः सबरः भीतः ।

वीक्षणीय~वि [सं०] देसने बोला विचार दरने धेना रामीका ह

वीक्षा-की॰ (एं॰) देलमा- दर्शना जॉन नश्ताहा ग्राम विक्रीभी ।

थीखिल-विश् [संश] देखा हुना । तुश् रहि, सूत्रर । वीक्रिता(१)-विकृष् [संक] देखनेवासा । चीवय-प (र्शः) वाधर्य, विस्तवा आयर्थप्रवह रहा श्वया गर्नेषः, व्यमियेता। ग्रेशः । विश्वर्शनीयः मास

winds 1 श्रीकि वीकी∽सी॰ सिं°े तरंग, एउटा वरिवेका मा कादा सका वावदः शीतिः व्यवताः विरेत्र । -क्षीते-वर्रनीका स्थला । −तर्रशस्त्राच∽र स्थाद बाइनेबाकी कहरोंकी शरह ध्याके नार श्रमरा वहाँ होगा -मासी(किन्)-५० सम्बद्धः -सम्बद्धः ५६ स्ट ज्ल्बीमा ।

बीज-९० (सं०) दे 'दीव' (समास मी)। वीजक-त॰ [सं] रै 'शेवक ! - सार-प्र विम सारके बीमः विमीत सीव्यः सार १

शीत्रका−की [सं•] समझा। बीक्काइ-५ (ए॰) रह पर निशीस नायू। बीक्क-र [सं] र्वकाः चॅनरः पंचा द्रावनाः वस्ते। बार्वजीय नामक १६ी। परार्वे मत्ता छोप ।

बीजोक्सम्बाय-५ [एं॰] दे॰ 'दीजोक्समान'। बीजास्य -पुरु (लेर) बुशान्त, पुदा । बीजाबिक-पुरु (सेर) हैर । बीक्रित-वि॰ (र्थ॰) शहा ब्रमा, पंत्रा शहकर इंडा किना

इसा करते सीवा इबा । बीडी(बिन्)-दि उ० (ते०) दे० 'रीवी ।

बीबोबक-पु॰ (सं॰) दे॰ 'बाबोरब' । वीरप-नि [र्थ+] पंत्रा शक्षमें बोम्बः देन बीरव ह शीरक-प्र मि) पानका बीदा १

बीटा-सी सि] माधीय कलका नरकोंका ग्रह सेन्ड व्य तरक्षका शहीन्द्रेगाः शही । -शन-५ हेंबने अपी व्यक्तिसा ।

बीटि बीटी-को नि॰] शागक्स्मीः प्रमुखा ग्रीमा र बीरिका-मी॰ [तुं॰] है 'बीरि'; क्रफेस बंबन वी वॉंड ।

थील-की रै 'दीना।

वीव्या-सी॰ [में] मितार जैसा यह नावा क्रिक्ट रीवी शिरींपर हुनि कने रहते हैं। निमकी। एक बीदिया। महाँचा एक निरीय जनस्थान (क्वों)। -गजकी(किन्)-गुलगी(गिन्)-म गायबरणवा तुमिला। -धावी (थित्)-त बीकासका -संप्र-प्र एक देवा -ब्रेड-पु बीमास्य संवादंद ग्रेरोके बीयस्य दिला। -थाजि-पु नारद । स्थं सरम्बर्ध । -प्रसेप-प्र नीपाका वह जरमा निसमें सारका स्वर मंत्र का सीम

हैंप्यांहा न टिक्सेवाका । पु श्रृष्ठा सारविष्णुताः जपीरता । —त्तीक्र-वि सस्रविष्णु, विद्वविष्ठा, क्रोणो । व्यस्तकारिय, व्यसद्विताय-वि [तं] वे व्यस्ता ।

ससस्योग~पु० हिं] छड्योगका अभाव वा कटा शिक-रूर था छात्र काम न करना; छरकारछे वा छाछनकार्विमें छड्योग म करना ! –वाद्य~पु अस्त्रयोग बारा छरकार रह द्वाव टास्टनेका हिन्दोह ! –वादी(दिन्न)-वि०

बसहबोमबादको माजनेवाला ।

भसहाय-वि [एं०] निस्का कोई साथी एकावक न को, निरामन के-सहारा; निक्याम । असहिष्य-विश् [एं०] वर्षास्य । करनेवाला, विक्विका,

कोषीः सगशस्य ।

ससही रूपिश जो द्सरेको बद्दी न वेक सके अहेकी। स्रो॰ करही या क्षेत्रका पीपा।

ससद्ग-वि [मं] म सहने कावक, असहनीय ।-च्यूह्-इ॰ वह व्यूह्स विसक्षे दोनों पश्च फैका तिये गये हों ।

असाचा - वि असन्त, स्ठ ।

समांद्र−ि [सं॰] विरक्ष, को बना न हो । समांप्रत~वि॰ [सं] अयोग्य, अनुविधः असामविकः

पर्गमान केक्सा नहीं । मसौग्रदायिक−दि [सं•] बिस्डा किसी संग्रदायसे सं•ंप

मसीयवार्षम् – वि [संग्] विस्ता । म दीः परंपराविवदः ।

ससा-पु [क] टंटा सेंदा; सीती वा सोमा सवा हुआ सेंटा। -पुन्ताहो-पु॰ रावरंड। -चरवार-पु रावा १९६ भारिको सवारीके आगे कागे अमा केन्द्र पकनेवाका। सर्वाहंड-दि॰ अस्, मस्र।

मसाहिक-वि [सं] जिसका कोई शाही न हो। विसकी पनरीक न हुई हो: जिसका कोई अविद्वारा न हो।

भताकी (किस्) -दि [सं] को चहमदौर गनाह म ही। भताक नतनेके सदोगन।

मेमाइप-पु [सं] गबाइका न होना ।

भसाद-त जापाद मांस।

मसाका-पु॰ रेघसका बना हुआ तागाः एक तरहकी कवी भीनी।

नसादी—वि असादका। स्तो अग्रादर्गे दीवी जानेवाकी फ्रिका भाषात्रकी पुलिसा।

मसाद (-पु॰ मार्टी मिली, मीर (१)।

मसारम्य-वि [सं] अस्वारम्यकरः (वह आहार) जी सारम्बद्धे अनुकृत न पत्रे।

वसाध--वि• असाव्य वसाद्र।

नेमापन-वि [सं] साननहोन । यु सावन या सिकि न रोना।

सत्तापारण-वि [र्स-) यो सावारण, जाय न हो । यास, विदेश सावारमधे वरिक, गैरमामूली। पु कह देखामाधा विदेशका विदेश संस्थित। —यार्म-पु सावारण वर्षकी वार कर देनेतर वय रहनेवाला वर्ण, वस्तुका गुरुष वर्ण, विदेशका।

बसाधित-वि• [मं] बसिबं।

नसायुन्दि [सं] सह युष्टः शतदावारीः सीटाः स्प्रामानिकः शतराद्धः (राज्यः)। युः युरा नादमी।

∽वृत्ता-सी० पुंचली ।

स्यसाच्य~वि॰ [तं॰] जिसका सावन मा सिद्धि न दो सके; वन्या न दोनेवाका, कादकाव (रीगा); करत्वय आठि कठिन ।—साध्यप—पु वसाध्य—न दो सकनेवाले कामध्ये कर लेना।

ससाध्वी—सी॰ [सं] व्यभिचारिणी, सस्तो । ससामयिक-ूवि॰ [सं॰] जो नियत समयपर न हो,

वे बच्च, वे गीका । असामार्थी -- खो०[५०] ब्यह्मचा, मामार्थ्यं बेनवा निर्वे बता। असामाञ्च -- वि [सं] असावारच, यो जीरोंमें म सिके, विकेष !

ाप्तर्थः । असासी-पुर्वं (बंद) नाम नामय्ये ('दरम'-नामका यद्व): एपः नीकरीः कारककारः कर्मरारः प्रादेकः सुक विमा नामगो (कार्सीका नयामी) ।

असाम्य−पु [सं॰] जेतर असमानता अनुनुष्ट्रता (दवा, बाहारक्री) १

असार-वि [do] सारहीन, सस्त्युत्व; पीका; निरर्वक, निकम्मा; केयम । यु पर्रव; क्यार; महस्त्रहीन श्रंस्य । --भोड-पु परिया मारू (दी) ।

ससाध्यः – स्री [हा०] सरापनः कुरुनेनताः वह ! ससास्तुन् – स्राप्तः स्रुप्तः कुरुनेनताः वह ! सराप्तः – स्रोतः स्रोतः !

असास्त्र-चौ॰ वंसुर। ससावधान~वि॰ (सं] वो स्त्रग-चौरुवा न घो, गापिक,वेस्त्रर।

समावदानम् निक्षं हिं] परस्त, देशवरी । समावदानरि-को है 'समुद्रवानता'। समावदी-को एक स्थिति को नेस्स स्टब्से को स्

शस्त्रवरी — को एक रागिनी को नैरन रानको पढ़ी मानो बाती है। अस्त्रास — पु∘ [ब] ग्राङ-ब्यद्यस्य, पीत्र-बर्स्स । कस्ति — वी सिं•ी श्रृक्षणर, सह। सुनाको। साधा है०

ंक्सी ! - जॉब-पु॰ गाकके तीने रखनेका तरिका।
- चर्चां-की बहुनावर्जना जनाए ! - ब्हीमी(विद्यू)विश्व तक्तरादे वीविका करनेवाला दिपाई!! - वृंद्व वृंद्व - वृंद्वक-पुः सार वृद्धिना - पारावरुपः
वृद्ध-वृद्धक-पुः सार वृद्धिना - पारावरुपः
वृद्ध-वृद्धक-पुः सार वृद्धिना - पारावरुपः
वृद्ध-वृद्धक-पुः सार वृद्धिना क्षित्व तथा पुरुप्ताक्षाः
वृद्ध-वृद्धक-पुः सार वृद्धिना वृद्धना वृद्धना

कर सीमा। न्याब, न्याबक न्यु जनवार बारिको सकार्ष करनेवाना सिक्तीयर। न्येयु न्यो सुरा। सुरा। न्याब न्यु देश तकवारको त्यावर एक सरक। न्याबन यु देश। न्याबयन न्यु पुरागासुसार एक सरक व्यक्ति वेशके तथे तकवार थेसे हैं। न्याव न्यु आसारी।

—पाणि~वि सद्ध भारत करनेवाका !~प्रच्छः,-प्रच्छाक

-पुर वैद्या सक्त्यो मध्या । -प्रविका;-पुत्री-चोर पुरो ।-भव्-पु विस्त्यदिर !-यष्टि -स्ट्या-धो तक बारका कक्ष ! -इष्य-पुर प्रसुद्ध ! विर खद्वधे वय करने योग्य ! -हेवि-पु सहस्यारे ! स्वरिक-पु [स] और ऑस देविये वेपका विस्ता ।

व्यसिक्रिका-मी [सं] अनते वासी । अभिवन्ती-सी॰ सि॰] वंत पुरमें स्वनेवाको सुवती वासी।

विशास नदी। दक्षको पती। रामि !

भसिय-असृग् असित−वि [र्छ०] मस्त्रेत कामाः मीला । चुकाका या मीछा रगः शनि वैस्क ऋषि-षूच्ण पक्षः वद बुग्रः!-बेसा-र्चा कांचे वार्डीवार्डी स्त्री । -गिर्कि-नश-पुण् मीस गिरि नौडाप्तः। –प्रीय-पु॰ अप्तिः। –पृक्त-पु॰ रूपा ५३।~फस~पु॰ भीठा गारिवस । ~सग~प कृष्णकृष । -यवभ-तु काश्यवन । -बस्मां(समैन)-पु• अधि । असितौग−पु० (सं०) शिवका एक इप। वि काके करवास्त्र । भसिसांबज~प [सं•] गोल कमक। ससिता-सी॰ [मं] नीटका धीवा बसुनाः संतापुरको अस्तिकेशा दासी। बसपकी पंजाकी एक मही। राति । विमताचि(स्)-पु (सं०) वाधि । असितकोत्पक्र-५० [सं०] श्रीक कृतक । असितोपल-५ [सं०] संक्रम। मसिब्-वि [सं] मप्रमाणिकः न क्या हुवा, कवा। अपूर्णः असप्ताः विसे बोगसिद्धि न मिकी हो । यु पद्ध हेलामास भिसमें हेतु स्वयं असिद्ध दोता है। श्रासिकि-धौ [tj] अपूर्वताः विकलताः धावित न होनाः साधनास्त्रे अपूर्णताः कथापन । श्रासिष÷-वि• दे॰ 'श्रश्चिव'। ममिस्टेंट−4 [मं] सहावद्ग, भाषव (कर्मपारी)। –पृक्षिटर्−प्रसहावद्व श्रंपार्क । ~ कसेक्टर्~प्र हिप्ये क्लेक्टर; वहसीकरार । भसिस्टॅटी-मी अधिस्टेंश्का पर वा कर्न ! श्रामी –त्वी [सं] एक नदी (अव माका) या कादीके दनियम गंगामें मिक्टी है। भसीन!-५० सम्बद्ध देह । अस्रीम-वि•[मुं•] क्लिक्सं शीमा न हो, वे-हर्यः वे-हिसान क्रपार । शसीमित-वि• [सं•] किल्डो इर न वॉवी यनी वी। अपरिभित्त । शसीर-वि [शर] वंदी, देवी। असीरी~लो [ल] देर। श्रम[स−वि [श+] हुकीन पुद्ध (क्ताका) शरीक, वेका 申報目目目日日 असीम>-सी० आदीशह । भसीसमा ३~स॰ कि॰ बासीबीद देशा ! क्षसंदर~ (तं] भदा की शुंद न दो। अग्रहास्त । श्रमु~पु॰ [सं] प्रान प्रान बाबुः विक्तः गरमीः पानीः पण्या ग्रस्स मागा विचार। इरवा जीका क्वीहा । —स्वाग -पु प्राप्तस्थाम I-भारण-पु -भारका-स्था धीवन भारण मन्तित्व । −नीत-पु धमराव । −धाक्-पु पश्च कानपरिमान । --र्भग-पु॰ प्रान्तमास । --भृत-वि प्राची जानदार (मनुष्नादि) ।-विधास-पुण्य कृष्य । –सम−पुपि। । प्राचित्र। असुकर−4ि [सं] द्विभ करमा कविन 🛍 । असुल−ि [मे•] बपस्य दुन्ती; करिन । पु॰ दुःख মন 1-মাৰিয়া-না> বু-না খাৰদ (धमुनी(सिन्)-१ [40] दुःश्वमन, योकपूर्व ।

असुकोद्य असुकोदर्क-वि [छ॰]दुन्तकारकः दुःग्रातः। असुराक-वि० पुरु हैं। 'बासरा' । असुचित-वित् है 'अश्ववि । असुत्त-वि॰ [नि॰] पुत्रदीन । अस्छ-वि॰ [र्ड॰] बी सीया न ही बायदा हुना। बसुश*−वि• वे 'बहुम'। ससमाम्(मत्)−वि [सं•] दे• 'स्मा<u>मृत्'</u>। असर-प्र॰ (सं॰) दैत्य, दानवा समें। राष्ट्रा शबी। बात्या यक दुष्ट व्यक्तिः देवदारः समुद्री शमकः। रि योविक अपार्विकः अक्षा या वरणका एक विशेषम !-गुरु-पुरु भुकानार्वः - हृद्(६) - पु॰ देवता । - हिद्(प) - पु॰ विष्णु !- राज-प्र राजा वति !-रिपा-सन्तर-प्र विणु !- विवयी(विन्)-पु विजित्तको जाति मे छेपके की इच्छा करनेवाका शामा १- मोब-ए एक शाम विसर्व खरीरभर गया मगरीन वसनेकी बात भरी माती हैं। असुरसा-सी॰ [धं॰] तुससी मामद शंकेश एक मेर ! मसरा∽सी [चं] रात्रिः राशिः वेस्या। अमुराई®-सी अमुरत्व स्वाद । असराचार्य-प्र• [चं] द्वारापार्यः हार गर । मसुराधिप-तु [तुं•] राजा विस् असुरारि-पु॰ [तं] विष्तुः देवता । बत्रराह्=पु० [सं•] स्तेसा । समुरी-ली॰ [नं॰] राधसी। राई। असुविधा-की सुभौता न दीना। भइषना कठिनार । असस्य-वि [सं] अस्वस्थ शीमार । असहाती -- वि वर्ष अव्ही म करानेवाको <u>प्र</u>स्ते। असुक्षण-पु॰ (सं॰) भपमान मनादर्। असुझ-वि॰ वंबद्धारमवः विस्त्य वार्यार म सूने भग्नरा विकट । स्त्री अवृर्त्रशिका । असुत्रक-विश् असंबद्ध । अस्तिका−वि सी (शं•) विमने बदान बनाही वंपरा । असुचक-वि [सं] इसरेके ग्रामी दीव निकाननेतारा र्रपानुः अमंतुष्ट अप्रसन्न । दु र्रप्यां इर्द्रनाना व्यक्ति निष्यः । सस्या-भी [र्न•] शुप्ते गुप शुप, सर्वा मारिमे सहम न कर सकता। दूसरेक गुणमें बीव निकालना' बहन ईर्का-रोप: एक मंगारी भाव । शस्यिता(न), अस्य-दि (सं) अस्वदः। असूर्यपद्या-दि शी [तं •] हेने बहे वर्षे रहनेवाया कि गुर्वेदी भी न देश सुद्धे । सी राजमहिरी। प्रतिवता सी ! असूल-पु दे वग्ता (उग्न'। अस्क (क)-9 [तं । रक्त देतरा भंगत गरा रह बोग !-(क्)हर-पु॰ लक्षका !-प-पु॰ रखना गर **क्**रलगानः राष्ट्रमः !~यात्त~तुः रचपानः ।~रगर~5 श्चामा साम् । अस्य - अस्य का समामयत रूप। - प्रह-उ अंतर ग्रह (-ब्र-पु मानिक शाक्ता मधिक मात्रामे वा

अभिवरित स्पर्ने होता। - दोइ - वु भूत आवाः -परा-

सी वर्ग ! -धारा-सी रचन्नी वारा; वर्ग ! -वहा-

हिना बादा है। -एस-पु बीयाका कर । विश्वीगा-भी तरह प्रत्युक्तमितका । -बरा-ग्रह्मका-ची शीच की स्पर्य प्रस्ति विश्वी तर्ग श्री बादि । -बाद-पु॰ बीगा बनाता । विश्वीगा बनावेशका । -बादक-पु बीना बनाता। विश्वीनची सरस्ती । -बादा-पु बीना बनाता। -विश्वीत-ची सरस्ती । -बादा-पु बीना बनाता। -विश्वीत-चु॰ पक विष्यार। निहस्त-पु॰ बीगा बनावेश कना। -हस्त-पु हिन्न। वि विश्ववेद्याने बीगा हो।

विष्णामुर्वध-पु [सं∘] वीत्रामा जीपेके दिरसेका वह भाग महाँ तार वृत्रि काते हैं ।

वीगायती – सौ [धं] सरस्वती।

बीय्यस्य-पु॰ [सं] नारद । बीयो(फिन्) – दि॰ [सं] दौराजुकः शेणा दमानेशका । सीर्वस-पु [संशोधिका वा वानवरोको कैंग्रान वा

नंद करनेका जाल, पित्रहा या इस सरहका कोई साथन । चीत−दि सि•ो गत सप्तः प्रस्थितः क्षेत्रा ⊈माः वर-क्षार किया हुमा। स्वीकृता की सुद्धमें काम जाने धीम्ब न हो शांतः पाकतः। रहित निवृत्तः विश्वतः वारण किया हुआ। पहला हुआ आपूरा थु सुबके अनुप्युक्त दाधी या बीडा। डाओको अंकछ यहाकर भीर पैरीछे इरावन क्यानेचे किए प्रेरित बरना। मनशासका एक प्रकार । --काम्सप-वि पापते शकः । --कास-वि रकारे रहित। -एण-दि+ निम्द्रर। -चित-वि विवासकः। -- बन्म बरस-वि अम्म और बुदावेसे भुष्कः। – इसरेणः – वि रामकोतः। – कथ्य-नि विस्पर्ने वासनार न रह गया हो। - तंम-वि निर्धानयान विनम्र।−भय−दिनिर्भोदः दुविश्युः क्षित्र।−मी− रि॰ निर्मोद्धः -- भीति - दि निर्मोद्धः पु॰ यद्ध अ<u>स</u>रः। --मासर--वि+ मासररहित, हेवादिसे रहित । ~मास-स्वपद्य निष्याप । -सोड-वि मोडम रहित । −शरा−वि वासवारदितः इच्छादीनः खोतः विज्ञा रंगका। इ. वह व्यक्ति विसने भासकि भारिका परि स्वाग कर दिवा है। शेक का जैन महारमा । ~क्रिय-नि साद, शुद्ध, निर्मन । ∽ब्रीइ−नि निर्फया। -शंक-वि निराद निर्मव । -शोक-वि० शोक रहित गुनकोका पुणकोक इस्रा∽सञ्च∽पुजनैका -रपूर्-वि॰ १४८/रहित । -हिरण्यय-वि॰ विसक्ते पास स्वर्गपान न 🛍 ।

पीतक-५ [सं] कर्र और पंतमका मूध रघनेका पात्रा

पिरी दुरे बमीम, बाड़ों।

भीतन−पु[र्स] कृदके दीनों पार्च।

बीतार्चि(स्)-दि [सं] क्रिमनी ब्याका, रुपद समाप्त हो गयो हो।

थीति - स्पे [न] दास्ता ताता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता है। स्वाता स

वीयि, वीधी-की॰ [छं॰] पीछ, कतार; दोक्का पक, पुक्षीका रात्सा बाजार हुकान: विजेकी कतार; नवजों कदरधानका एक भागः युद्धा मार्गः महान्या सामनेका छत्यानका एक भागः युद्धा मार्गः महान्या कक, एकली पात्र कीर विश्व लंगारामधान होता है सोर काज बाकाय-माधिवके स्वयं बीकता है।

वीसिका~की [रं°] पंक्ति सहका थिमेंकी पंक्ति। किर्म किर बीमार या पहुः छन्दाः दश्य कास्पदा शहः सेद् (दे॰ भीभी')।

्रियांग-पु• [सं] बीबीका कड कंग (ना)। बीधा-पु• [सं] काकाशः वासुः कदिः। दि शुक्रः,

स्वच्छ । वीनाह-पु [सं॰] कुर्यका कैंगका वा बहन । बीनाही(हिन्) -पु [सं] कुर्यो । सीप-वि [सं॰] बक्तीन ।

याप — त्याप्त चिर्णे वस्त्रामः श्रीपा — स्त्री • (संश्री स्वर्धाः कार्यका ने

बीपसा-श्री [र्ष] व्यक्तिः वार्षका नेरस्यं स्वित करने के किय प्रभावी वाष्ट्रीय पुनरांकः प्रक प्रम्यान्धेवार वर्षां नावरः भावतं भारिका यात्र प्रदर्ध करनेके हिए एक सम्दर्ध गरं कहा बाष ।

वीर्रधर-पु [सं] मोर मन्दर वंगको जानवरीके साथ कोनेवाको कराई: वमकेश कराई।

वीर-वि॰ [सं॰] पदायुर, वर्षामरं शुरः श्रक्तिशासी। बहा-बहा क्षेत्र । पु बीक्या छह रस (विसन्दे बार भर है-दामबीर वर्मशैर, बवाबीर और बुदबीर); असिनेता। अग्निः बढाधिः पुत्रः पर्तिः अर्जुन वृद्यः बैनः धरबीर बुधा रिष्णु सरबंधा कानी निर्मा काँगी। राम, बग्नीर मुक्ता श्री दिया पुष्करमृक्तः आस्कः नाराही कंदः वानविशंगा एक असरा प्राराहका एक प्रवा भारतासका व्य प्रमा हत्यका प्रमा प्रमा । सार्थ सी • दे 'बीर (को)। -करा~सी एक नदी। -कर्म(न)-प बीरवापूर्व कार्य । -कमाँ(मैन्)-वि॰ बोरीबिन कर्म करनेवाका । -काम-वि॰ पु पुत्रका दश्तुक, पुत्रवी । -कडि-पु॰ गुष्छ मनिक। -पुक्ति-स्रो बीर प्रत पैता करमेवामी न्योः पुत्र कतनेवासी स्री । -वेतारी (रिप) -केसरी(रिन)-वि॰ कीरीमें निहके समाज पराष्ट्रमी ।-सुरिका-सी करार ।-शति-भी सदमे प्राणांत होनेपर मिमनेवाडी यदि स्वर्ग । -शाग्र-पुर वीरोंडा कुन । ⇔शाष्टी—भी वीरोंडा आएमदा वार्ताः काप । -चक-पु एक वांत्रिक चक्रा बीरोंकी समा विम्यु । - बहुप्पान् (धान्) - पु विष्यु । - सूर्यो - स्रो बीरतापूर्ण, साइभिन्न कार्य । -- अमन-वि वीर बलाब करनेवाचा !-अनवी-सी० बीर खेरव बरनवाटी सी। -अर्थतिका-भौ॰ सैनिकॉका वह सृप्य की नुक्रमें जाने भमव का विजय-प्राप्तिक शहर होता है। सुक्र । -सर--विव्योगर पृष्ठ अर्तुन पृद्धा निमासी श्रोदिनाश वृद्धा सरवदा । "ताबुद्ध-पु विवास । - तृय-पुक मर्दश । ~हू -पु॰ अर्बुन द्छ । ~पम्पा(श्वम)-पु कामन्द । -नाम-दि० विस्तृत्ता सहरदक गीर हो। -वह-पु॰ वह ब्रहारदा मैक्षिक दस्त (श्रवारदर का

करि। यैज्ञास्य-पु [सं] विज्ञातीयताः वर्ग-विज्ञता वर्णया जातिकी मित्रताः वैधिष्यः जातिके पृथक् किया जानाः बंपरता।

वैजिक∽नि [सं]दे 'नैकिक'।

ਬੈਡਾਸਿਲ—ਪੂ (ਜ਼ਾ•) ਸਿਹਾਨਨ ਪੋਇਨ । ਕਿ ਜਿਵਾਸ-ਸੰਬੰਧ । ਬੈਡਲ—ਕਿ (ਜ਼ੁ•) ਫੇ 'ਮੈਗਲ' ।

वंदूर्य-पु [सं] एक रस वेद्वे। एक प्रश्ते । वि वेद्वे विभिन्न: -कोलि-वि क्लिमें वेद्वे मणि वैसी पमक हो। --मम-पु एक माना ! --मणि-पु स्त मामका

्रतः। – सिकार-पुरक्ष पर्वतः। वैषा-पु[सं] बॉसका काम करनेवाका, वेंसोवः बड

साम । पैक्टन मि [सं] पॉक्टा बना हुना; बॉक्ट उत्पन्न बन या नवता बना हुना; बॉस्टो-संबंध। यु बॉस्ट्रों अब्द-पारीका बंद; बेंडोड़, बॉक्टा काम करनेवाका; साहिष्यं करवा माहम्बेट, पना पॉक्टा जावका बेंच नवीते साह

्षीमाः क्षमदीपका एक वर्षः वृष्यपिक-पु [सं] वंशी वजानेवाका, वेशुवादक।

पेनवी-को [मं]बंशकोयन। पेनवी(पिन्)-वि [मं]बोस्पीयान्या पु स्वितः बेपायस-पु [सं] बनुष्।

वधावत=३ १८ १५२२ -विक्रक=१ [सं] वीवा वजानेवालाः सक्त्यो शंव । वैशुक्र=१ [सं] वॉसरी वदानेवालाः यक तरह्या दावी-

का भेड़रा को चौनका गीकरार इकड़ा होता है। बुजुबीय-वि [सं] बेगुक-संबंधी।

वेलुकेप-वि [सं] वॉह-तंबंदीः वृजय-हु [सं] वेरको एक शासाः।

पेंग्य - तु [मं•] वेयका तुत्र पृत्तु । वेद विक्रम-दि [सं] नितंदा क्षणका करनेदालाः

्सर्कप्रियः। वैतंदी(दिन्)-पु[सं]ण्यः कविः।

पूर्वकर (क्यू रूप प्रमुख का कार्यकर । पर्वमिक पुर्व (से) वदेशिकाः आंखिकियाः पश्चिमी कार्य को पेसानेको किया ।

पेतरप-द्र [मं॰] कैमान, हिस्तार । पेतरप-द्र [सं] भिश्वास असल्दा ।

यवस्य – दु (स) विश्वास असलवाः। वैवनिक – वि [मं] वेदम या मश्दूरी क्षेत्रर काम करने-वाकाः। दु समदुरा वेवन स्टेस्ट काम करनेवानाः

कर्मपारी। पतरण-वि [गं] नडी पार करवेठा वध्मुकः वैतरणी

पारका मंत्री पार करानेशाला (नावन) । पारकी क्तरमी—मी [मं] एक पीरारिक मुरी (नवने

है कि बर पूर्वी और बनमोड के बीचने हैं और हममें भून अदिव श्रम आदि मोर् हें भार तब गरम दे। बाती रहमें पहुंच कि इस्ता मीरा बरते हैं किन्तु प्रकाशन रहमें पहुंच का बतात है। हम महोकों पार बरानेनामें गाव (के महत्त्वनो टी मार्गी है); कोमस्त्री रह रहिष्

बनम-वि [मं] वेत-वंदेशीः वेत प्रमा (प्रवन शहुके

सामने सुरू जामा) । पुर्वतको बनी हुई होकरो। पुर वेदिया जमकर्वत । स्थानेतन्य (त.)

पैतसेन - पु. [सं.] बीवसेनाका पुत्र राजा पुरूरका । वेतस्त चेतस्य - वि. [सं.] वितरता नदी-संन्धी, वितरता-से प्राप्तः ।

वतरितक-वि [री] यह वाहिरत क्षेत्रा (वाल) । बैताबर-यु [र्स] यह पर्वत । बैताब-वि [र्स॰] वय-संबंधा पवित्र । यु॰ तंद्र यह वय-संबंधी विधा वयस्त इवि ।

ज्यानिक-दिश् [सं] देशन नामक वह दिनि-संनी। वक्ष-संत्री। परित्र (वेरी क्रिक्ट)। यु शीठ दौमः क्रिय दोनको क्रिया वैतास-दि [सं] देशकका; मेरीक-संत्री। यु दे

्वेतार्क'। स्तृतिपाठक । वतारुकि-पु॰ (छं॰) क्रायेरकी एक साखाने प्रवर्तेक कवि । वतार्किक-पु (छं॰) स्तृतिपाठक, स्तृतिपाठ करके साबार्कोको स्त्रेर कमानेवाडा; तेतारुक स्वास्त्र वहा बार्वोप्या वह को साख्ये म माता हो (१); बीस्टठ कमानोंकेंठे किमी शक्का साव । मस्ट-पु स्तृतिपाठका

कार्य । चंताकी(फिन्) - प्र (सं) रफ्रंपका एक अनुसर । चेताकीय - प्र (सं) एक वर्षपूर्य । वि विद्यालन्त्र विशेष । चेताच्य - प्र (सं) पूर्णका निकास जाना ।

वतुश्य ५ १० ४ मूनाचा त्याका नाता । वितृत्यद पु (र्स•) व्यास इहानाः दच्छामे रहित होना वरायोनका । वरुवास्य – वि (र्स) क्रोर-संस्था ।

वंत्रक-वि [तं॰] वंत्रत्रार् । वज्रकीय-वि [तं॰] वंत्र वा छशो-तंश्वो : वंत्रासर-यु [तं] एक अपूर ।

र्वतासुर−पु [सं] एक असुर । पेव−पु॰ [सं] निवान् स्विकानिय कविके वंशव । पु वेष । नि निवान् संपेथी। विद्यान् । वेदको−पु विकासका शासा ।

वेत्रस्य वेत्रस्य-५० [तं०] दश्चनाः चतुरनाः पातिस्-वृत्ताः पीदवैः रविषदाः वपरिषन दृद्धिः वृत्ताः भीदवैः रविषदाः वपरिषन दृद्धिः । वृत्तर्या-स्रोः [सं] देः वेद्रस्य'।

वैद्य-दि॰ (स॰) बानदार । वेद्युत-१ (सं) यद साम ।

वहर्भ-वि॰ [सं] विहर्म मंत्री। वात्रपद्व । वृ विदर्मनरेशः इमर्वतीके निना भीमा कविमदी हे विना भीम्मकः समृददा

चीकाः चानपहता । चुनुमक-वि [मं] विदर्य-मंत्यो । पु विदर्य-निप्राणी । चेत्रमी-स्था [मं∗] विदर्यना रामदुमारी। अगुस्य-वाही।

सम्जी। बरिमणी। कह रीति क्रिप्तमें साधुर्व श्रीकह बगों स प्रवेश दिवा जाता है (हा) शिरमधी राज्याती कृति। व बदम-बि [व] बांगके बहु या बेला इना। दु दिरमाधा एक दिवेशा कीता एक छावधी गीठी बेलधी बती हुई दक्षिया। सन्माविद्यों निर्माण ।

वैद्रांतिक-वि [d] वैदांत वात्रभेताना । बदादिक-तु [do] एक तरहवा माजिया के स्वर् । बन्कि-वि० [do] वैदर्गस्थाः ो ४८६ अनुवृक्तरो

मनेका)। -पक्षी-सी॰ वीरकी मार्या। -पन्ना-सी॰ वित्रवा । चप्ती-सी० ण्ड कंद । ज्यर्थे-प० सरवर्ष । -पाल,-पालक-पुषक पेश की मुक्तों आहे समय वा हरमें सैविक पीते थे। -पान -पानक-पु दे॰ 'बीरपान । -पुरुष-प पक्ष पीका । -पुरुषी-सी सिंदरपुष्पीः शहरेर्दे । -प्रजायिनी -प्रश्रावती-वी॰ नीरजननी' !-प्रमोक्ष-पु पक तीर्थ !~प्रसवाः-प्रसमितीः – प्रसृ−को० दे 'दीरजनतः । – बाहु – पु• विष्युः श्वराष्ट्रका यक प्रश्ना रायणका वक प्रश्ना यक बाभर। −भर-पु॰ बोद्याः। −भन्न-पु अवयेक्दा भोड़ा: करा: दिनकी बटाने करपत्र एक भीरा श्रेष्ट शेर । −भद्रक−प उद्योर, अस । −मार्वा−साँ+ बीरम्सी ! - अस्टि-को॰ बीरमसि(वंगाक)का प्राचीम नाम। −सरस्य−पुथक काति। −सर्देन∽पुण्ड हानर ! - मर्दक--मर्दछक-त अवदा नगागा ! -- भाता(स) - औ नौरवननी । -मानी(निम्) -वि अपनेकी बीर समझनेवाला । -भाग-प सर्ग । -अहिका-सी॰ पैरको गोक्को उँगलोहा प्रका ! -पीराबद्व-वि शीरॉका वर्षन करमेवाला ! -रब(स्)-इ स्हिर्! -रम-उ॰ व्ह कम्बरस गरताका मान । −रावच-प्र• राम । −रेज् -प्र मोमसेम । - ककित-पु+ भीरके कार्न करनेका बना एक पुत्त । –सोक-पुरस्तां; वीर स्रोग । – वस्था –स्वै बोरमादा। ~पानी~सी व्य वदा, देवराकी। -याक्य-प बोरवापीत्य धन्त । -बाड-प बीरवा बन्द क्षीति । —धाइ-पु॰ रत्र । —विकान~पु पक ताक (संगीत) । -विद्याबक-प्रश्नामे भव लेकर दनन क्ट्वेशका । ~युक्त-पु मार्गी; विस्तांतर पुश्न देश्यान्त महासाकिः मिलागाः अर्जुन बुका साकका वेह !-बेवस-पु अमकरेत । -स्यह-पु॰ रह तरहरा न्यूह ।-सरा-नि रहानंद्रस्य, रहत्रते । व बीरताः मनु और समा का पुत्र । ∽र्बाकु-पु वागा -शव -शयन-पु• ~घरपा−स्तो बारॉक्ट छोनेका स्वार्व रमधेना नार्गकी शम्याः। —शाक्र—तुः वजुत्राः। —शीय—तु० **१९**६ प्रकारके देव। -संग्र-प्र वहितीय गाँद। -सम म्बिल-वि नौरीते दुक्त ! -स्-वी नीरमाता नीर वनमी । -सेम-त रागा शम्भे विद्यापक दानवा भारत भारतमाराः - ऋ-० सूत-<u>प</u> समा -सम्प-द नदशुना -स्कंप-इ मैशा। -श्य~त पत्रका शक्तिका (१)। -स्थान-तु सावदीका पत्र भारत नारातना स्वर्ग ! --इत्या-श्वी भरहत्याः प्रवस्ताः -हा(हम्)-पु विष्णुः वह अधिरोत्री नायन जिससी अस्ति आनश्य शानिसे कारण क्षप्त भाषः । वि. जनुभी या छत्रजीका वथ करमेवालाः - ब्रोम-प् किथ रिवन पक गरेश ! थीर%-५ (सं) ६२० क्रमीरः साथारण मोदा । वीरकरेवर-५० [मंग] विम्तु । थीरब-५ [मे] वद प्रशासका वधीर, यस । श्रीरण∓−९ [मं] ए€ नाय । भीरबी-सी [मं] तिराप्त नितवनः नीकी सूमि गहराँ |

वयदः वीरमधी प्रशे और चास्रवसे साता। यीरसर-वि॰ सि॰) अभिक बीर । प्र॰ वश बीरा शर वीरवती –की [सं] वर को विस्त्रापित भीर हर बीवित हो। मांसरीहिनी स्ता । वीरा-को॰ (सं॰) वह भी विसका दिला भीर पुत्र बीरित को। बीर मार्थाः पत्तीः माताः मादक देव महिरा। रह सृति (वंगीत)+ सुरा नामक यंबहमा- प्रवरहाइ केर काकीकी। कैनेका पेड़ा दुनिस्क्रा विदारी। मक्ष्मा की विवारीः महाश्रवावधा काक्षीका मास्त्रा व्यविवि भीत्रमः एक करी । थीराचारी(रिन्)~द सिं•ी नाममाधिबीका न्ह मेर यो मचादिमें देवताओंको बस्दना करते हैं। वरिराहर-पुरु (संर) अर्जुन १४ १ थीराय-दि ब्रिड विश्ववा द्वा बनहीता तराह सः गहानुश्रीकरा बीरामा-पुर [फा] स्थान अगदः धनसः। -मर्सी-वि र्यंतकर्में रहमेवाला। बीरामी~की वनादी, नरनादी: वीरान दी जाना ! **भीरास्म-पु॰ (तं॰) भागरे**तस । श्रीरारुक-प• [मं•] श्रारक शामक भीपनि । बीरार्डासम-प॰ (र्व॰) प्रदर्भे सहरेका स्थानः तुरस्थि बारा रैना। त्वच भागा । बीराधक−५ (सं°) कार्तिदेशका वक अनुपर्। वीरासम-प्र [सं] भारतका वद मदार वद प्रदान हेक्टर बैठनाः पुरुपृथिः सुक्ती वगवर्गे सीमाः महरीका बीरिय-५० [र्ड] क्सर बनीम । बीरिजी-ची॰ (र्छ॰) बीरमधी एड प्रवी, व्यक्रियी । बीक्य (भू)-मी [शं॰] बता भारता दहनी। कार हैनेवर वमा वह बातेवाला पौथाः श्रप । बीरुया-सी (सं॰)वे विकत्तः। बर्रिड -५० (सं०) गेरीका प्रचान । वीरेंबा-की (छ॰) वह बोरीमी। बीरेस बीरेचर-५ [मं] महानेवा बहुत वहा बीटा ! वीरोजार-त भिन्ने वह जाहरू हो बशाप्तिमें बाहरी वेभेये आपरवादी करता हो । वीरोपजीविक-पुरु [मं] अधिनदीवदा वदाना कर वान हारा बीरिका चलानेशका प्राद्मय । शीर्ये−५ [र्थ•] वीरता शीररा ग्रक्ति, तका ईंस्म शरीरकी एक पात हाम रेता सक्षमा (भीपवसे) बनार-कारियाः विका कांति चीतिः भोजः चीचीका नीजा भीरन गहरना नार तत्त्व । -- कर-पु + भारत । -- कास-वि र्युस्त भारमेवाना । —क्षत्र-नि वीस्वनं दिवा दुवा । -कुल-वि धीरको कार्य करमेराला। -ज-१०९^{मा} -धर-द्र प्रश्न होन्दर श्रवित्वर्ग । -प्रथ-नि वीरधा हारा क्रीतः -पारसिना-सी 🛮 मिडिबीनेटे रक श्रतिका चरनोध्यर्व (शे) ३ - प्रपान-इ शुक्रपान गीर्वेद्या शरण । -बाही (हिम्)-ति श्रीव क्रम बरनेशना। -विमृति-मी प्रक्रियो मनिमनिः

वैविका−वैशा**विक** वैद्विद्विद्यः प्रवित्रः वदश्च । प्रश्नेदश्च जालकाः वेश्यकतः । प्पान्का एक पुत्रः विज्ञकोकी अधिना वेदाय इसर क्षात्रित -कर्म(म)-पु देदशिहत दर्म । -पाश-पण वह जिसे एक वर्षे। नेरका नद्वतं भोडा पान हो। बैचोत~नि॰ (सं॰) कुद्ध । पैदिका−सी० सिं∘ो दनमासक। रेंद्रम-वि [सं] निव्रम, मेंब्छा। चविद्या∽वि (र्व) विदिशा नगर-संबंधी । व विदिशा-वभ-वि [सं] निवित्तंपव, निविद्या शावश कृत्रसे मरेशा विदेशा निवासीः विविधाः नवीश्रं तरपर स्वस्थित गुवादिस् । एक संग्रह । वैवर्सिक-वि॰ सिं॰ो जी वर्समान म हो, भविदित र र्मेदिइय-५० [मं] निविधाक वासका एक प्राचीन मन्द्र। र्वेदर्ये - पु [तं] जनमानना, भंतरः वर्म वा दुवरे मेंदुरिक∽पु∙ [धं] विदुरका भाग या सिकांत । मित्रताः कर्तन्यको भित्रताः नैपरीत्वः सनैपताः गारिकताः संदुक्त −वि० [सं] दिद्रस नामके वेंटका पना धुमा । ए० र्येधय-प्र [मं॰] विच-चंत्रमाका प्रत्र, कुष । र्वेतकी बढ़ा विभवेष-पु॰ [र्स] विवशास्त्र, विवशासे गार्थि सरक पुत्र। बेह्य-नि [सं] पंडित विद्यान्। बेबस्य-प सि | हैंबासा । - अध्यक्षीयेता - त्या देशमरे मेंतुपी-चौ [ई॰] निरचा नियाम। विद्यामें सफ कम्बा (वे) विवाहके संबोध्य मानी गर्छ बतुरम-इ (सं•) निहत्ता पाटित्य। हैं) । -बेजी-मां श्विमाप्त प्रपत्त । चैत्रे -वि [र्स+] विवृत्त्ते प्राप्त का कावा हुना । पु+ दक र्वयस-४ (स] वैक्स्स प्रप रामा बरिमेर । री रतन कहस्रतिका । भा**ग्यमा**का **मध्य** शहरा समित । र्मदेशिक−वि [सं•] निरेशका निरेश-संबंधी । ए० बैधातकि-च [तं] देश वैदाश्री। रुप्तरे देशका व्यक्ति (वरेष्ठी । नमीति नक्षी किसी राहर-र्वचाय-वि [वं] अध्यक्षे चलव । तुक दिवागारे 5% की परराष्ट्र था सन्त राष्ट्रीके शाथ वरती जानेवाकी जीति । समस्क्रमार । -स्थापार-प्र किसी देखका सन्य देखों के साथ होनेवाका र्वेद्धाधी~सी [शं•ो बाद्धी करा। प्रवामिक-वि [सं०] विशाम-संबंधी। विशामासहयः। " व्यापार । पैरेप्स-नि [सं] निरेशीन। स निरेशी बोलेका मान। **येकिक**−नि सि] दे• विंच'। −सार्य−त निरेशो सक (क्री)। **बचरी-स्रो** [सं] विद्यास्त्र वैक्की प्रतिकृतना । बेंबर्च-प्र [10] विप्रताः विद्याना सदिवसामना। का मेरेह-नि [मंग] विरेह वेध-संनेधीः संदर आयुनिवाका । रताः मैरास्या बद्धः बंदना थीन । विदेश-नरेष्ठा वक वर्षतंत्रकर वादि वैश्याने करण र्वचमारनी∽न्धः [सं] शान्त देखका वद मापीन समर। श्राह्म मा आक्रमीरे प्रत्यक्ष मैक्षम्या प्रमा मनिकः संदापुरः विक्त-५० (सं) विकृतिका संग्रमः एक ग्रंह (स्पारक्रमें का मेनक। सम्बंतरहे दे देवति । -बासिय-इ वद साम। र्मनेहक-पु [मं] विषयु स्वापारी। सिरेट पानिका वैचित-सी [मंग] चंद्र भीर मुदेश्च विश्वर निमंत्रि महा-व्यक्ति । - इर्यक्रम-ध व्यापारिके अग्रमें स्वतेपाला हैम बोगीरोंने १६ थी अञ्चन याना बना है (भी)। राप्रचर (की) र बेरेडिक-इ [मं] (११६ जानेका व्यक्ति वरिक् । विक्रम-पुलिश्वेद नेपृति। वैद्येष-ति [सं] विभिन्नंतेनीः विदिष्ठा मार्गे । प्र• इति येवेडी-की [#+] बिरेडकी शाक्तमारीः निज्ञेषतः सीनाः बाइमीः बाक्स्सन्यक्षा एक क्रिप्य । रीजवाः दित्यतीः वरेष्ट वातिका स्थाः विदेव देशकी गायः। वैद्या-वि [संब] वद-संबधी। वेदविदिता आयुर्वेद-संबंधी। र्षेच्यत∽पु (सं•) वसका एक द्वारपा≓। तु विद्वाल्य वेदब व्यक्ति अलुदेवका धाला विकित्सका र्वेश-वि [मं] त्य-संरथी । प्र वेसपुर, पुत्र । बेनलक-पु (भे॰) वय प्रायोग शाथ दिस्य थी एमर्ने रेक कार्ष। बातिविशेषा रस बातिश स्विता स्टुसा । -किया-सी निमित्रा सत्तेवा पेशा। -शाय-प था जिसमें बदारिन आदिमें की बावसे के । श्चित्रः पर्मातरिः निशारका वक तानै अश्चाँ शत मामका शिक् र्वमतेष-५० [मं०] यहहा अवया सरम्बा एव पुत्र । क्षिय है। --बंदु-दु आरम्बन १६ । - माता(भू)-र्षेत्रतेषी-स्रो [सं•] रह वैरिद्र ग्रामा ! सी बासक, बहुसा, बैक्टी माता ! -मामी(बिन्)-र्वेत्रस्य-विक्शिक्षेत्रस्य विश्वस्थानः। रि अवमेकाचैन माननेवाना। ~राज~व् धर्मेतरी। ধনবী⊸কী [নি] গ্রুমাধীৰ দ্বী। धार्त्रेगरके विना। अब वैदा। -शर्(ज्ञ)-मु चर्न्य विनम्त-५ [ने] एक गोषकार करिन एक वैरिक तरि । -विद्या-भी विकित्भागाल । -शाम-प्र शासा ! बिक्टिश मेरंपी मेर या दिया। -सिंही-न्यी अवना। वैनयिक-वि+ [र्गेष] विमय शिष्टगा अनुशासयनारी। पेतिकताका पाण्य कराजवामरा अवराय-वेदेश सक्तरी वैदाय-पु (शं॰) निकिशका विकिशामान । नि हारा किया हुमा। तुह दे अध्यासमें काम आनेशामा ह विक्रिया संस्थी। वर मुद्धाव्यानमें काम मानेशमा १४ पुर १व । भया-सी (मं] सम्बोधी वैषश्री सी। धी वय (विवासक-दि० [ते] विवासक मृत्यानविधी। पुण्यं बचाचर-वि [मंग] विवाधर-संबंधी ह

शास्त्रवर्ग ।

र्वमाविक-पु [धरु] श्रीक सम्म विदेश रण सर्गमध

यद्यापूरप~रि [sio] सुरदा, कुटबन (बोक्टा बनरा) र

पैचत-वि» [मं] दिश्लीका दिश्ली संवी १ व पु

-विरक्षित-वि॰ शक्तियान ! -इक्किकर-वि॰ वीर्य इताक−कौ० सिंो वैपन। महानेवाका । प॰ वाजीकरणः कामीडीएक श्रीवनादि। -पासी(छिन्)-वि शक्तिशाही, पराक्रमी !-शुस्क-प्र• विवाह आदिके सिए कोई शक्तिशाकी यहाँ। वि शक्तिके बनवर प्राप्त का झीत ! -संयम्त-नि शक्ति-साली। - इति - सी द्वीवता यक्तिदीनता। - हारी (रिन)-प एक दानद ! - द्वीन-वि शक्तियोगः कामरः श्रीवः विसमें नीज न दो। बीपैवान्(वत्)-वि• [तं] वस्त्रान्। श्रीकशानीः पृष्ट । वीरांतराय-प [सं] स्वस्य होते हप भी मनुष्यको शक्तिकीत करनेवाका बच्छमें (नै)। वीर्यां~की [सं•] श्रक्तिः पुंस्तकः वकः वादकःया । वीर्योद्यान-पु [सं] गर्भावान । धीर्यान्वित-वि• [सं•] श्रक्तिशासी । धीयाँबदाम-पु [सं] शक्ति हारा कार्यका संपादन । बीगावधत-वि [सं•] शस्त्रिम परावितः। वीवध-पुनि दे विवर्षः वीवधिक-प [सं] वहँगी होनेवालाः पुरुकर चीवें वैषनवासः विसाती । बीबाइ∽द [सं]ध्याद छादो। भौश्चित—वि [सं] फैना <u>इ</u>का। थीस⊸प सिीक्टब्सायक भदा बीहार-पु[सं] मंदिर, मठ (वे) जे)। बुक्तश-पु [न•] परित होना प्रकर होनाः (पहीका) नीचे **च्यरमा** । तुक्ता-तु भटमा; शरिदातः शगहा मारवीट । डुकक्र-पु [स] कानना वादिक होना धाना वृद्धि। पुत्र-तु[म] समावसे शहसे यथाविषि द्वाच-पाँव मीर सुँद भीना । स -बीसा या शिकस्त हामा-विग्मन द्दार बाना संबद्धर दिवित ही जाना। **इत्र**−पु [अ] होमा अतिनतः बीवनः अगिन्यक्तिः 44 हिप्राणी । - बेश्वद-प्र अस्तिस्वक्षीत वस्तुः स्वप्त वा करपना-असन्त्री बन्तर्य । चेंदित∽रि [सं]दश हवा तिसन्तः। इस्द−५० 🙀] बारिद दोसा उत्तरमा भागाः पर्देषना पंपारना । र्देष्ट्रं-दि [मं•] सुतने वर्मर करमेका वच्छक । द्वस्ट-द्व [म] रहेश मञ्जूती। मरामा। पुस्स-पु 🙀] वर्षेयनाः मिलनाः वानिनः, प्राप्ति । — कार्न-पुदर्भेद्रे रपमेदा वापस निस्ता । −बाक्री--भी वह रहम की प्राप्त मधुर्व दी। रहा दुशा श्वया दन्त दत्ता । पुष्पा-वि वन्तवहरने दोश्याक्षी वह रख्य क्रिने वत्त्व दरना ही। मूर्य-वि[सं] सुत्रापनर दिवादुवा। र्षेत∽ प्र. [र्ग•] भेटा: काशी दें प्रारंडला; शतकडा कारणा माय पुषुका पना रममेको तियाँ आहि । - मुंबी-की पद नरहरी मीन लीवी। -पल-पु वनन, धंटा। -पमद-तु वयदानदारका ग्रह भेर र

र्वेदक-दु[4] रहना

बेसाफी~सी॰ [सं०] संग्र, वगन । इंतिका−कौ सिंो छोटा इंट्रक । र्थतिता−की० सिं किटका। **बंद−**म (सं•) राधि समृद, श्रंथा गुच्छा एक मुहर्ताः सी करोबको संस्थाः सस्मिकित गामः गर्केका अर्थेह । दि० नहरीस्थक । -गायक-प वर्ष मायबीके साथ गाने शका । र्षादा~सी (र्ष•) तुरुसी; राषा । ⇔वन~प गोनरुके थासका यक बना तुबसीका योगा समानेका चनुतरा । र्यंबाक-प्र• सि ने परगासा । र्षेदार-प्र॰ [सं] देवता । वि दे॰ 'वृंदारक' । भूदारक-पु [र्न] श्रेष्ठ कम नायकः देवताः भूतराहका ण्क प्रवादि अष्ठ संदर्भनोग्रा श्रेदारण्य-५ [सं] ग्रंदावन । वृंदायमेश बृंदायमेश्वर-प्र• [मं] कृष्य । बुदायमेखरी-की [मं] राजा। र्मदी(विन्)−विस्ति]समध्याकः। बुद्देष-वि [मं] प्रद करनेवाला भोदा करमेवाला। प्र पीटिक पदार्थ। पुष्ट करमेकी किया। एक तरहकी मिठाई। वाबीका विग्वादमाः दारा असर्गवः भूमिकुमांड। -वस्ति – सी॰ वरितका यक्त प्रकार । वृष्टित-वि॰[र्स॰] प्रधासिया हुआ। पु हाथीकी विगयाहा बक-पु॰ [सं॰] मेहिया। गीरका उत्त्युः क्षीत्राः चीरा क्या कृषिया चंहमाः सूथा वक वृक्षा कारतका बृद्धार्गवानिरीजाः वक अञ्चर कृष्णका वक पुत्रः अध्यदेशवर्शी वक जनपर । -कमां(मंग्)-वि भेदियेशे तरह काम करवेशाला। -शर्त-पुण्क वनपद । -इंत-पुण्क रायस क्रंम-कर्मका महार । - इंश-पुकुत्ता । - इति - पुक्क का एक प्रशा - देव-प्र वसुरेवदा एक प्रशा - देवा. -हेची-सी देक्धे देवहती दत्या वसुरेवक्सी।-घप-म अनेक सुर्वादन हरूरोंके दीगमें बना पृथा साह पीन नरम बुख्डा निर्दास । - भूमक-तु वक दीशा । - भूर्च-पु॰ गीरह । - भूर्च ह-पु मासू । गीरह । -धोरण-पु एड तरहका बामनर । - निवृत्ति-ए कुष्मका यक पुत्र ! - प्रेझी(झिन्) - दि॰ भेदिदेश सरह हिमी बीजकी बार देसनेवामा । -रथ-पु अधिरवदा व्य पुत्र (म भा)। -वास्ता-स्त्री दरवावत पास लगायी बामेवाकी सद्दी। -स्थली-सी॰ माहिपाती मामकी नगरी । बुकार-पु [में] बस्द्रमन्द्रम् (र्शे) । युक्रहा−सी [सं] एक साही। बुका-सी [मं] पादा अंदबा सता। एक प्राचीन वरि मान्य (क्वासी-सी [६] त्रिश्त । युक्तविम-९ [सं०] एक ऋषि । बुटास्टिका~की [मं] एक गांसीर। पुरायु-वि• [तं] अदिदेशे समानवामा हिसा पु• बंग्मी कुछा। ६.८। बुबाराति बुबारि-दु [मं•] दुचा ।

बनुवायोः वीदः । षंतादिक-ति [र्थ] तियाश्चर्यश्री। नथरः विनाशर्मे विश्वास करतेबाकाः विमाश करनेवाकाः अवीतः परतंत्र । प भीड दर्शना बीडा महता स्पोतियी। वासा समीनस्थ व्यक्ति जन्मनद्यवसे तेईसवाँ नद्यव । -संब:-समय-प्रशीक दर्भन । र्दमीतक-प्र [सं] एक तरहकी पाक्की विसे कोनेके क्षिप कर बहार होते हैं और नारी नारीसे नदकते रहते हैं: बाइनका साथम (बहार, पीवा आदि)। र्वमेप-प [तं] स्नेत व अनेंदकी एक शासा। धर्मका विकार्या । वि जिसे वार्मिक शिक्षा देनी वो । र्षेन्च~प्र∙सि] वेनपुत्र प्रशुः वैपंचमिक-प• (से] सविध्ववका । धेपश्रक-दिश्री में विषय क्रमार्ग-संबंधी। बेपरीत्य-प [मं•] दिपरीत क्षेत्रिका मान प्रतिकृत्वताः सस्तिति । -सरबाख-प् स्त्री प्रकृतरहका कत्रास-पीपा । वैपक्षित-पु (सं•) ताश्वे कवि । वेपक्यत – वि सि•] कदिसान् संग्री । प्र ताश्ने कवि । चपाविक~दि (सं•) पात्रज्ञगसे पीदित । वंपादिका-सी॰ [सं] यक तरहका कुछ रोग । विपारों - प्र दे॰ 'व्यापार । र्वपारी! - प दे॰ 'ब्बापारी । विषय-दि॰ सि । एक की माला पर निश्व विभागींसे उरपञ्च (संवार्ते) । पेप्रस्य – प्र [मे॰] प्राप्तर्व अविकताः विद्यालया । चप्रीताक्य−पु [सं] नृत्यका यक प्रकार । वद्रव−प सिं•ो सादण सस्। बद्धस्य-पु [संव] विकलताः निरमकताः उपयोगराहित्य । धैबाध-प्र [सं] कत्व इसको प्रोडकर निक्रमा ब्रका पीएकः --प्राणस-वि निश्व कोइकर पीएकदा पेट निक्षमा हो। ब्युध-दि [मं०] न्वतान्तंत्री। र्षकोधिक-पुरु [संग] रागका स्टरेसारः वह वहरेसार वी भंग नजाकर बमाया है। रहानियां बारा शामको बगाने माम्बा व्यक्ति शहतिपाठकः। र्वभेडि-पु॰ [सं॰] एक गीत्रदार ऋषि । र्वमध-१ [मंग] ग्रस्तिः असीतिक शस्ति। वेशवे। शीरवा-न्दिन पर: मदचा 1 -शामी(लिम्)-दि वैजक्विशिक्षा वेबर्गवासा । र्वमिक-(१ [मं+] समर्वे कार्वक्षम । र्वमोदकि-पु [सं•] कप्यश्या पमाजन-वि [मं] जो कई लश्बीने विशव्य हो। र्षमाजिय-पु [धं] दिनाजमा वितर्शः। र्षमातिक-(। भि क्रियाभेरेकी । षमार-पु (ते•) एक परत नैहार (रावगृहदे शास) । र्षभाषर-रि[मं] राधिसंदेगी। शतका । यमाविक-वि [र्शः] वैश्री एक । श्रु विवाशा (एक वीक्र मंदरायोगा अनुवादी । विभाष्य-पु [सं] दिल्ला ध्वास्था ।

बैमीत यमीतक-वि॰ सि] विमोतक, बहेरेका बमा 万年[1 वैमतिक-विश्वास विविध-संनेषी । बैसीख-पुर्शि एक प्राचीन जाति। द्वीक्रा−प सि•ोविष्णकोकः। र्वाज्ञाजा-पु० [सं] विष्यप्रभेता एक कोका एक प्रवाह वक देवीयामः देवीयामस्य सरीवरः एक करण्य । अभाजक-पु [मं] एक देशोषान । बैग्रस्य~प॰ सि ो मतमेश, करः मापभंदीः प्रवेत य∉वेंडकी पक सामा । बैसनस्प~त [र्च+] अन्वमनस्कता क्रिकताः बदाभीः व्यस्वरवताः वैर । बैसस्य-प [सं] निर्मकता रवच्छता, विहासता ! बंगाय बेंगायेष-वि (सं) सीतेषा । ५० सीनेका मार्थ । वैमाचक-प्रार्धिकी सीतेका मार्देः बैमामा चैमाची चैमान्नेयी-सी [सं] होतेकी यहन। र्यमाणिक-वि सि विभागमें उत्पन्नः विमान संबंधी। विमानारोद्धीः गगनपर्यटका यक्ष शीर्थः स्वगत्य बीवः (**4**) i विभिन्ना –की [सं] १६५४की सात माताओं मेरे यह । र्बमुक्त∽⊈•[सं]मुक्तिः मोसः। निमुक्तः। वैमक्य-१ (सं॰) पकायन प्रमा विरक्तिः विमकता । वैमृहक-पु [सं] लीको योशावमें पुरुषीका मृत्य । बस्यप−पु [सं] मृत्यकी भित्रता। र्वयय-प्र वि दिस् वि देशकि। वस्य - वि चि दे विषय । रणदश्च (१) । बेमेय-पु॰ [सं] विशिमव वरकाः बेस्य−प सि ीगोपकर करि । श्रविक-वि वि) व्यक्तितः। र्क्षयप्र विषय्य~प्र [मं] व्यथना, व्यानु≠ता वश्ताहरा तसीवना । बबधिकरण्य-९ [मं] भिष्ठ श्वानीमै द्रोनेदा मान । वयसक-त (सं॰) एक वाति (म मा॰)। विषय्पॅ-पु (स] स्वर्वताः अनुस्पातकता । इयधन−५ सि•ोण्डसाय। र्वयसन-वि (वं•) व्यामन-वंशी। र्ववाकरण-पु [में] ब्याक्रण जामनेवाना । विक क्या-करण-संबंधी। -पादा-वि क्रिने व्यादरणका अच्छा वाम 🔻 हो । —भार्ये-नि जिल्ली स्री स्नाहरण जानगी थी। वयारय-दि॰ [सं] स्वास्था धंरीयः स्वास्या कुछ । प्र व्यारमा । र्वयाम-वि॰ वि॰) व्याप्त-वंत्रीत व्याप्त जैला व्याप्त करे में बाइत । पुरु स्थाब-पर्मने दक्षी पुरै गाही । -परिचाहर ∽रि व्याप्त पर्नने आवृत्त । बयाग्रय-वि [मं] व्याप्य दीमा (वस्त्रेको सुदा क्रामक)। तु ४६ जायमा व्यामको अन्तरम् । र्वपाग्य-पुरु [मं] पृष्ताः निर्मेशताः = देनदा कत्रदुरमा वंशाष्ट्रस्य-५ (२) वश्चिमा (३)। अवास-वि [त] स्वान्त्राः स्टाव संवते ।

काक 1-कास-पुर सराय 1-कावेरी-सी० एक नहीं । - **रुप्य-**प वृद्दे स्वस्तियी शारा किया आमेबाका यक वतः एक कुच्छ रोगः।-केशच-पु॰ स्वेधी यक मृति। -कोश-प बहुत अमीर जाहमी। -क्रम-पुर्व कहा म्बक्तिका पर वा स्टब्स । -श्रीता-श्री० वक्त समी वृद्धी र्गगा।--रामा-सी वह सी जिसका गर्ने कविक समयका दी गना दो। --गोनस-पु॰ एक साँगः --सिक्य-की पाना । -वारु-दारक -वाद-ह भीरताक, विभारा है -पूप-त सिरिस सरकता पेत ।-भूमा-सी॰ किसीवा। ─मांसि—वि जिस्सी नामि बच्चत हो। तंदिक तींदक । ~पराधार-पुष्क धर्मशासाधीयाः। -प्रधान -प्रविदासह-पु॰ परदाशका विता। -प्रमातासह-पु परनानाका रिना !- वका-सी व्ह श्रुप, इसही सदामका । **-बड**स्परिश-प एक वर्गनासकार। −वीधायन−व रख वर्गशासकार । −धारा–व पुरापा । --मत-पु॰ माचीन कवियोंका मत । --मस-उ पत्र नर्मधासनार । —धाञ्चवस्त्रन –पु॰ वद्ध नर्म शासकार । --पुत्रती-सी॰ कुडनी। दार्व पात्री । —पोपित – जी ददी जी। – राख−प अम्मनेंस। —चिम्रिय=प्र पक्त वर्गयासकार । —बासिनी—की न्यगाको ।−बाहन −पु० बामका पेड । −बिसीतक-पु० मनदाः - विकार-प्रश्वकारामकारः - वीवया-की प्ररामी रीतियोंका वंतन । --वच्चीय-वि वव्ह शक्तियाली ! -बेग-वि प्रचंड बेग्लाका ! -ब्रीसी-(किन्)-दि जिसका स्वमान कुटोंका-सा हो। -श्रवा (थस्)−पुरंपः एक सनि।∽कावक−यु≉ाना क्या - संघ-प प्रो, वर्गे, पंडिती-छ समा समिति ! —सुम्रक-त वर्षका गावा। हित्तूल तुनिवाका एए। -संयी(विन्)-वि वृक्षांका आरह करमेराणा। −हारीत=± पद्म प्रमेशानकार। बुद्धाक-पि (सं∗) अपिक अवस्थाका युहा छ दक म्बरिय भारताल द्वा । पृक्षांक्रि⇒कां वृक्षांगुष्ठ-मु [तं∗] सेगूठा (पेर तथा शायकः)। बुख्ति−९ [सं] सम्मान्य पद था व्यक्ति। पृद्धा−ति॰ सो॰ [तं॰] इहिव्छ तुर्दीः वंश्वता। शी नेंगुडाः महाभाष्ट्रिकाः वृक्ते स्ती । हुद्राचल-इ [तुं•] का तीर्थ। कुकार्क-इ [सं] कृतता हुना वर्षः संव्वाकात । बुद्धाबस्था-श्री [सं] दुशवा । भू**बाभम-**९ [सं॰] समबास । कृति-ली [सं•] बवती मानः मगतिः भेरमानामा महनाः चन-संपत्तिका बद्दनाः अण्युदया स्टाहनगाः संपत्ति। व्याम त्रा राशि समूद्रा श्वरतिशि काम मुनाका अंटकीशका वण्याः श्रीकाश्चर, व सारिकाशा 🖹 श्री आदि क्ष प्रदास करना (त्था); असका गढ़बाद शहरानेकी वक भीवनिः मतनाधीना एक मील (उनी): क्रेप्टर संशक्ति भवनर्तन दरम । ∼कर-वि पृक्षि दरनेशका । ∽कर्म (म्)-पु॰ नारीसुयनाद ≀ −अविक−ि निर्वाद करमेवाला : -क्षीवल-वि० वे ^वदक्षि जीवक 1

दे॰ 'वृद्धि-वोतिका'। -जीविका-को॰ त्रते वीवम-निर्वाह करना । ~व ~वि० अम्बुरूप क्रिकेशम्य न्यानेनास्य । ए० नानका शक्तकर । - राजी-की १६ पीया। --पन्न-पु॰ भीरनेका दक्ष श्रीवार। -क्रायू-प्र नारीग्रह्मभाद्र । प्रक्रिका~सी [सं•] प्रति नामधी मोर्गमा मर्गुरूदे वनेत अपराजिता । क्षविमाम्(मत्)-वि॰ (तं] वदा हुमा वनी। पर्वतः शीक ह बुक्ष्यासीय चुक्ष्यामीयी(विक्) धृक्ष्युपत्रीती (बिम्)-वि शि॰) एउस वीक्ति वहानैवाना। क्रक्रप्यक्य-वि [र्श•] जिसके वश्यने काम से काम थी। बूधसाव-५० (सं•) मनुष्य । ब्रुयसाञ्ज−द॰ [सं] ममुध्या क्ला कर्म, इति । श्रश्र−ध (र्ध•ी यह प्राचीम स्त्रहरू । शास्त्र-वि [र्सर] क्याने बीन्द । राज्ञ−वि॰ सि॰ो धरा हमा। मह दिया हमा। ह स्या प्रमार्थस प्रथम । यश-प्र [त] अवृताः चुदाः भरत्य । बाराा-सी सि॰] एक शांति ! बाबन-प्र [सं•] तिका पश्चिक−प (छं॰) किन्छ। यक राधा मार्गधीर माछ यक रीओरार कीशा नीररका कीशा कमश्रमा देशक शहम इस । - पद्मा-की पृतिका दोवा -- विपायहा-सी नकुक्र्यदा रास्ता । बुश्चिकर्की∽सी [सं॰] मूनावाबी, बासुदर्जी। बुबिबद-सी [र्च] विश्वह मामको पामा प्रेनिपर्गीः वरेत पमर्मवा । वृत्रिकासी−को (तं•] रङ ग्रुप नागरिका। कशिकेश-पर्व सि] वृश्चिक राशिका देवता अने प्रदर्ग बुक्षिपधी बुक्षिपर्वी-सी [तं] मेंवर्थपी। बुधिकाती। बुधीक-पु [लं] एक क्षेत्रवि । बुध्वीर बुध्वीय-तु [सं] ध्नेत पुत्रमेंदा। कूप-पु [रा॰] रेक, साँहा एक राक्षा वह भी बचने धर्मी छर्वलेश ही (शाल समार्गातमें): मजबूत बहा≪डा आरमी (कामकालके जनुनार पार प्रकारके पुरुपेरिने वक)। नेरी चत्रा जुबा। शिवका गरी। नैतिबता। पुत्रवर्मा क्षणी कामरेवा एकी विष्युत वक्ष औषवित प्राप्त पाणा शीरका पर। धिवा शका बना मंदिरका रह निवेध आस्त्रार: वक पाँडा भीत्रमास्त्र एक अदया स्थेरका १६ अमुचर । ⊶क्षणिका ∽कर्की-सी गुराना स्ता। -कमां(र्थाप)-वि वेजकी शरद काम करनेशामा −केतन−५ शिक्षा-केत−५ क्रियारक धनर्मग! --ब्रत्र-प्र ग्रह । --व्यक्ति-वि प्रदेशभारी । --गियां-मी मन्त्री। –श–दुधिनः –थक–दुसी मंत्री प्रभावक वागरेका एक बार जिसमें रेगके रिनिय भेगीमें नश्चनादि रशे बाते हैं ! —इस —ईस **–ईस**∓ " र्वशक्तक-मुस्तिशक। –द्वीप-मुपद्वीप।−पर

—पु॰ हिचा ~थ्यात्र—पु हिचा गरेका पर्माणा।

बैपबिक-वि [सं] विषय-संबंधीः प्रदेश सूमाग-संबंधीः संबंधी, विषयक (समासमें) । एक कामी, बंदर । मेपुवस-पु[म] विपुत्र (संक्रांति); क्रेंड् मध्य । वि० मध्यवतीः नियव रेह्यानावेषी । प्ययतीय-वि• सि देश 'बैपवत । वरह-पुस्ति है देखा। वैरिकर−रि॰ [मं] विसमें विश्विदः पत्ती आरि 🗓 (इर्डंड-धमद): चेंगमेंने वैदार किया दशा (श्रोरवा व्यक्ति) । एक पद्गाः पश्ची । चेष्टम-प्रसिष्धसम्। बैधिक-प मि देश विश्वमे बगोदार जनरदरती काम है बेगार करनेवाका । यप्टन चैप्टम-ए सिनी बीमका परम । बेप्ट-पुमि] भूरतः विभाग्न स्वर्गः वास् । बैप्लब-मि [मेर] दिष्ण मेर्नचीः विष्णुद्धी पुत्रनेवाला । घर विभ्यक्षी उदासना भारावना करनेवाला एक वार्तिक संप्रदान (विसमें दिशाबी क्यामका की बाती है)। — स्थानक-पुरंगनेवपर भेन वन भरता (ता)। बैध्यवाचार-५ [म॰] बैध्यवेंदा बाबार-विवार । वैध्यायी – स्रो [सं] बैभ्यय-नंत्रशबद्धी स्रोत विष्णुद्धी शक्तित दर्गा भीर मनसाः भपराजिषाः चवापरीः क्रमसीः मच्च नहत्रः द्वीय-भरमः मञ्चीनाका एक भेद । र्वेदज्ञदय∽दि मिश्री दिष्या-संबंधी। बसर्शिक-दि॰ सि ी त्यास्य विसर्वतीय । र्घसर्जन-इ मिं विगर्वन करनाः बक्ष्या विश्व विसर्व-नीव वंश्तः । वैसप∽दि [नं•] दिनगं रोक्से बस्ता पु• दिवर्ग रोना र्यमा≔ि स्म तर≰दाः ज वस प्रकारः बतना। वैसादश्य-५ [रां॰] दिश्यना असमानताः अनर ह पैमारिग-द• [एं॰] मन्द्र । बस्चन-५ [ग्रं॰] पुरस्का स्तेका शर्ट करना (वा॰) । र्बस[−]भ दनप्रदारमेः वॉ । वेस्तारिक-वि॰ [मं] विरत्त संशान्धीहरा विस्तार र्मकेरी । वैस्पष्ट्य-९ [मं] १३१ठा । वस्त्रय-दि [मं] शारमे वीवन करमेशका । इ स्वरते वीचन होनाः स्वर विक्रति । पहुँच-दि [मंग] पदी-गंदेशी । श्वाप-दि [मं] क्यो मंत्री । वैद्यापस-नि [rio] आकाशमें विभाग करनेवाणाः भारतश्रास्थः वातु-र्नवरी । पुरु देवता। एक शीन । बदार-प्र [तं] मनवदा व्यवस्था घेड़ारिक-नि [मं] रिसारके निष बायमें बानेशना । प्राच-वि [नं:] बिसडे शांव मजाब दिया वा सडे (साला भारि) । पुरु हॅमी मनाक, परिहास ३ वेहार्त्या-त्या [मं] आसेह। पदासिक-दु (ये) विद्वका अधिनेता । वि॰ वैहाने-बद्धस-पु [4]०] दिक्रभगाः निर्वेतराः, सम्प्रभाः । aiz-s [4] 251

बोक्-- अ तरफ मोर-'बर स्थाप कलोक निर्देश अन्त त्रमदी शेष³-सर । वोकाण-पु [र्स•] एक स्थाना वस स्थामकै निवासी । बोधान-वि देश क्षीम । थोड-पु [अं०] किसी व्यक्तिके त्रियोयमके तिर रिहा भागेबाका मत्त्र । बोटर-पु॰ [बं] वह स्वक्ति त्रिप्ते शत, शामाति हेर्रेश व्यविद्वार माप्त हो ! -किरड-मो । मतरातानीरो नये। बोरा-सी॰ [म॰] हासी। वोद्धिग~का 🕍] मत्रहामः मनप्रकृषः। बोड-मु [ग्रं•] सुपारी। बोबनारू-स कि फैलावा, प्यारमा । बोड-प [सं•] योनस सर्पः रक्ष प्राच्छी । वीरो-सी सि॰ रचडा थैना माग । बोड-वि [तुंत्र] निवादित । ह कर्तना दे चित्र । बोहरव-वि मिंशी सहसीया है बार्ध वामे योग्या गर्फा परा किये बाते थोग्य । बोडप्या-सी [सं•] वह क्या दिसका दिवाह होने राजा हो । वोद्या-ली॰ (र्न्+) क्यम्ब बामको भोपनि । वोडा(इ)-५ [सं] होते के मानेवाला जलक मेताः विक्र साँका सार्गि ! बीय-ए सि | बोहरमें रहनेशको लीका करका। बोड्ड-५० [सं०] सुनिविधेर । बोद-दि (सं०) बार्ड गीछा । थोदर बोहर-पु बरर। बोदरर-प्र [सं] अररासिगीः बंद्रश्र । बीहास-९ [वं०] एक महनी, बीमारी । बोपहेव-१ [सं•] शस्त्रके रह प्राचीन रिजान् र बोर+-सी बनावसा बोरक घोलफ-पु [गंग] नैराहा बोरट-व सिंधी बंधका भाषा वा कृत्र । बोरब-९० (सं०) नेही बाम । योग्लान-९ [मं] एक रिग्रेप रंगडा मीता। बाक-प भिन्ने एक तेन हम्म रसर्वत र बोक्साइ-पु (तं०) व्य रिशेष प्रधारका सम् (द्रम और श्रवाक द्वारा हीना है। । बोदिरम-पु॰ [में] बदाब दीन बदी बाद ! बीद्र∽नि [त] दे॰ नीहरी बीबर्-न [मं] इतिहानदे समय सक्षारम क्रिया मार्ने काणां यक शब्द था और वस्र । व्यक्ता-व वि विजिब्दित निरंग्ध । व्यंग-रि [र्ग] शहीरशीना काशीना रिक्रमंपा रांत्र मेंगहाः स्थापनिषयः । पु विकास स्पत्तिः मेरकः भायदर्द बावै थको एक रामा रग्याना ताना । व्यागार-दिश [मंत्र] जिनमें संबंधे अधि न ही। क्ष्याची-५ [शं] व्यवसन्तरिको हारा आह वर्ष संबेदिननार्थ (स))। व्यंगिता-को [तंत्र] विदर्भाषका। व्यंती(तिश्)~ि (सं) स्टिम'ना

~श्वद्धा-स्रो इर्या। -श्वोद्धी-स्रो नागरमुस्ता। -नादी(दिन्)-दि देवकी तरह जावान करनेवाका। -माद्यास-प्रविद्या विष्यु । -यदि-प्र शिवा छोडा हुमा सोंह। यंब मर्पुस्तः। -पश्चिका-ती वस्तांत्री। -पर्णी-सी॰ मुसन्दानीः सुरर्थना उता । -पर्या-(वन्)-पु विष्णुः शिवः एक दानवः एक रावर्षः एक बंदर। बलपात्र भूगावः क्लेकः। -पुच्प-पु । एक साग । - विथ-प निष्णु । - सासा-को॰ अमरावतो । -मान+-प रावादा पिता। -माम्-पु व्यकाः स्वादे 'बूपमान' !-- का - व्यदिनी :- व्यता-सी रावा। -सम्यु-वि वीठ सावसी। -मूक-पु अवसेको कर । -रवि-धु वृत्तमानु । -शवकेतन-पु॰ शिव । - सक्षणा - सी सरदानी करकी । - सीवन-प्र शिव। -कोचर-पुच्चा। -वासी(सिन्)-वि भूप पर्वतपर रहनेवाछे (छिव)। -वाह-पु पृष श्री सवारी करना । **∽बाइव**~नु शिव । ∽शञ्च~नु विष्यु । - शील-पु इवक । - चंड-पु यह प्रवस्कार करि। -साल-५ मनुष्या कृत्यु। -साह्या-सी प्र नदी। -साहा-त्वी प्र नदी। -स्टी(हिन)-प्रसिद्धा – सेन्न – धु कर्मकायक पुत्रा दसर्वे समुका रक प्रशा -रक्य-दिश वैत्रको तरह मजबूत कंदी-वाला। प्र•श्चिव। कृपक-प्र [सं] साँकः भाषसकः सामका वक भेदा मर साः सुरक्षा पुत्रः मिकार्गीः जुहाः हुराकशा । पुष्प-वि [d] शिवन करनेशकाः वपकारु बनाने पाका। पु अंदरदेशाः भवा शिवः कार्नवीर्वका पक प्रच । ~करछ-सी श्रेडकोछका तन। क्यवाहब-प [सं] यक वैदिक राजाः रहका बोहाः रक संबर्ध । प्रयम-प्र मि दैन, साँद यह बानवर। वह की अपने दर्ममें सर्वभेष हो (समासांत्रमें): इव शाद्य: एक ओववि करमा बैक्भी रोनिका एक मेर (हा)। काशीका कामा कर्पराम एक असरः गिरिजनका एक वडाका एक लहती। मतुकै दम पुत्रोमेने एकः क्ष्रंमान अवस्थितीका प्रवस भारत (भे)! − केन्रु − दवज्र−द्र शिव । − गति − पु शिर। – पुत्र० – पु रे 'तृपसप्पत्र । – व्यक्ता – सी दर्श रती। -परमय-पु अर्शा। -पान-प्र बेलगारी । - यीथि - न्यी शहरे मार्गेरे मी आगी-मैंने एक । - एकंच-दि चीड़े और दह एंडीवाका । क्षपमीक−५ [मे] शिव। बुपमा∽सी [मं] वढ नरी। मवा पुर्वाकीर बसरा कारगुनी नद्य । पुषमास-दुर्मि दिन्तुः वि देव देशे ऑसीशका। पुषमासी-सी [से॰] इनाम्म इंद्रवास्थी सता। ष्पमादि-५ [तं] रदः १र्रतः। कुपमी-को [मं] शिवरा। वेवाँव। **ब्यमेसच-**पु[संग] विश्वा क्षव-५ [मेर] सामद दनाह ! क्षम⇔ प्राप्त सरदा अक्षा नेता सुंबना जाति

मौर्व वही विष्पकी । -पाचक-पु शहरे किए मोजन बनानेबाका । -याखक-प्रश्न हो होए यह करनेबाका। इपसक-पुसि•े तुष्क श्रह । कृथछी-को [सं] शुद्राः वनिवाहित रवस्पना कम्पाः वह श्री मिरो रजन्मात हो। रहा हो। बंध्या मी। वह श्री जिसे मरा नवा पैश हुआ हो । ~पति-पु॰ सुद कोका पति । -प्रच-४० ध्रम्मा प्रचा - फेनपीत-वि विसने शहाका जुनन किया हो। -सेवम-पु॰ सुहाका सदबास १ इषस्यंती~की [सं] कामुख की; मस्त गाव। बुपांक-द [सं] शिवा वर्गात्मा भिकाबी वंड श्रीवा मोर। - स-प दमर। द्रपौचन−५ सिंकिता बपांड-प्र• मि] एक असर । क्पोतक−पु[स•] विष्णु। खुषा-सी [र्छ•] थी। मुसाकामी। बन्दीया दंतिका, प्रच्यर पर्णी' बड़ी देही। माकर्जेगती; असर्यंब । क्षा(पन्)-प [र्व॰] खाँका इव रामित वह को अपने वर्गका मुकाम क्षेत्र सभा बुद्धा श्रीका वेदनाका समामा **रंहा कर्पा म**न्ति सोम । वृषाक्रमायी -की (d•) कर्मी; गौरी; द्वथी स्वाहा: बचा: रंड भागाः शतावरः बीशंती । क्याकिय-त [सं] स्वंत निक्ष विष्णु शिवा हैह । बुपाकर-द्र (सं) दश्रा क्याकृति कृपाश-पु [वं] विष्यु । इपाच-पु॰ [मं] शिवहा व्यह अनुवर । वृपाणक-पु [मं] शिवः शिवदा एक जनुभए। बुपाणी-न्दी [मं] एक भटनगाँद मोपदि ऋपसन्त । अपादनी न्यो सि॰ो श्वायन श्रंद्रवास्यो । कृपात्रर्भ−पु [सं] शिक्षिश एक प्रम (मा) । मृपादिस•-९० दे 'क्वादिस्व'। बुषाविष्य-प्र [सं०] वृष(ध्येष्ट)को संक्रोतिके सूर्य । श्रपाति - प्र [मं] एक वदाप्र (केरक) । वृपान्म-वु [मं] पारिस बाहार ! क्वायण-९ [र्घ] जिना गीरना पत्नी बटका यपारणी बपाधिता-को मि नेपा। बुष्परब-९ [मं] कद्वरा सरदान। एक जेतुः शनाहा मारि स्थानेको सक्षा । कृषायाह-पु [तं] एवं सरहदा प्रेमनी रूप वा यादन। बुपाशील-पु [तं] १ 'वृत्त । क्पासुर-इ [सं] वद असुर भरमासुर्। क्याहार-इ [सं] श्वादा मादार करनेवाला विचाद । इचर्डा(दिव)−५ [गे] रिमा३ कृश(पिन)−५ [म•] सद्रा क्षेत्र-८ [मं] अध्यासीत वेस । बुधोत्मर्ग-इ [वं] वह शक्षित पुरुष एत बनके बाम दर बढमे दागकर मन्द्र धोदना । वृशीलाइ प्रवादर-५ [वं] रिष्यु । बृष्ट-वि [शंक] बरमा दुवा बर्राट क्यूने मिरा दुवा नतुत्र मान्या, धरिव वा देश्या मनाभित न्वत्यः चेत्रपुत्रः िबमन वर्षा की ही हो।

1252 व्यंग्रस-प्र• [तं] श्रीतका साठवीं माग ! ब्यंग्रह-पु० (से॰) एक गुरम । स्याय-वि (सं) स्वंत्रमानुदिः द्वारा वोवित संकेतित । पु संकेतितार्थं गृहाथ । - विद्य-पु [ग्रं॰] वह थिय भी किसी व्यक्ति आदिको अद्वक्त सत्राक वशानेके लिए बनाबा गया ही 'कार्टन'। स्पंरमोक्ति-सी [सं] गृह माना, वह एकि जिनमें व्योग्य हो । दर्यक्रक-वि [सं] प्रका सरनेवाका प्रकाशका वर्धका संदेश करनेवाका । पु॰ श्रांतरिक माव प्रफ्रा करनेवाकी बेहा, असिनदा संदेता व्यवमा शक्ति हारा अर्थ प्रदर करनेवाला शस्त्र । द्यासम्लयु [सं] प्रकर करना, प्रकाशनः स्वरकीन क्या किया छत्रवेश: उपरका पद्वित परिचायक विदा त्ताबच्यकोतक निका सभी मृद्धा श्रीयः मोजन-सामग्री मसाने आदिः दिनः वितपसुदा मेस्तारः पदा हुमा मीजन (बीक्रवाक)। वंसा (स्थायनका निकार रूप)। दे स्र्वञ्चमा (मा)। गुप्तचरः। गुप्तचरमन्त्रः। -कार-प्रभोजन बनानवासा ! -संधि-स्पे व्यंत्रन वर्णीका संदोत्। - द्वारिका-स्री एक पुरेश को निपादिता कम्बाद्धा बसाबा द्वाना स्ताचपदार्च (विसी किसीके मनसे भगरम शक) इरम कर केनी है। व्यक्तना-स्रो [मं॰] धीन प्रकारकी शब्बछ कियों मेरी एक को भविषा भीर नक्षणाने निरत हो। वानेपर मंदेतिमार्थ मक्द करती है। -- बुस्ति-स्रो व्यंग्यपूर्ण माथा क्षिप्रमेकी श्रेकोः वर्षत्रमान्यस्ति । वर्षकित-विश् [संश] प्रत्यक्ष प्रकृत किया ह्रमाः निकितः मंद्रितित । ध्यंत-वि [सं•] दरवर्ती दूरमा दर्यंतर-पु [मं•] यह सरहके विकास कीर वहा (वै); श्वद्वाद्याः शंतरामान । रमंश-पु• [मं] भिहिका और निप्रविक्तिश प्रण । ध्यंद्रक-पुरु [मंर] पहार । दर्बद्धक्र-दि [मं•] नगदीन गग्न । दर्मस-वि [मं] चीर क्योंशना। यु वक देख जिमे र्रहते मारा बार दे 'स्थंध । क्ष्यंसक=द्र [मं] वृतं एका काण्यो। वाजीवर । चर्यसम-५ [मं•] भोमा देना उगमा वितरण। ध्यंसित-वि [मं] वंशित भी एका गया दा प्रतारित ।

स्य-पु [मं] परवा करनेशाला वकनेशाला ।

निविद्याराना यहर विद्यान् । प्रणा प्र दोश्चिन साथ

सार्वप्रतिक कार्य । - राजिन-प्र अंक्यांचन । - र्वाका-

विद्वीवाका : - सक्का-दि॰ विसमें भविक नमक पहा हो। -बाक् (च)-सो० रक्ष वयन। -विकस-वि शक्ति प्रकट करनेवाका। व्यक्ति-सी॰ [मं॰] व्यक्त प्रकट दीनेश्री किया प्रकट रूपा स्पष्टलाः किंग (व्या)ः अंतर करनाः बास्तविक प्रकृति । पु व्यक्ति, बन (व्यक्ति वा समहिका स्ट्या) ! - गत--वि पक्रव्यक्तिका व्यवनाः निश्वी। व्यक्तित्व~प्र• [सं•] व्यक्तिको विशेषता, शुक्ता वद विशेषता जो किसी व्यक्तिमें भक्तामान्य रूपसे पाया जान । व्यक्तीकरण-प्र [सं॰] व्यक्त, प्रस्ट करमध्ये दिया । ण्यक्तीकृतः—वि [सं∗] मद्भाकिया हुमा । ष्यक्षोभृक्ष∽वि [मं] यो प्रकर हो गया हो । ध्यम-वि॰ [सं॰] इठदुकि, ब्लाकुरू, परेश्वान, मन्द्राया द्वमाः दरा द्वमाः संक्ष्मः व्यस्तः अरिधरः गतिशीस (वेसे चक्क)। प्र विष्यु। – सन्ता(मस्र) − वि घवडाबा इमा । -इस्त-वि विसक्ते दाव दिनी काममें करे हो । म्बस-प्रसि विशेषा। व्यजन~तु [सं] पंचा राक्ताः पंछाः पंमेके काम थानवाका साव-पत्रादि । −क्रिया-मी पश्चा शकनेको किया । - चामर-५ पंक्षेके रूपमें काम मानेवाली चैवरी मायस्थे पूँछ। व्यक्रमक∽पु (सं•) पंता। व्यञ्जनी(बिन्)-पु॰ [सं] वद पशु जिल्ला वृष्ठ चैदर बनानेके काम आती है। व्यव्यक व्यव्यम−५ [सं•] परंद्रका पेट्रा ध्य**ड−**पु० (मं] देश 'ब्याद्रि'। व्यतिकर-दि [तं] अन्योग्य परस्यर अनुवर्ती। व्यापकः संबद्ध । पु संबोग विकना मिमना भर्तन मंत्रई। बाबा। परनाः जवसरः स्थाः अम्बोस्य मंत्रंशः विजिसयः परि वर्गमः वेपरीरयः। जाद्यः अंतः ध्वमनः। व्यक्तिकरित-वि [मं] विभिन्तः मंत्रुक्त दिवा हुआ। व्यतिकीर्ण-वि (सं) मिलितः विरार। इना। यद्र-मत् । ब्यतिकृत्स-वि॰ [सं॰] ब्यतः । व्यक्तिक्रम-पु (सं] बानमा, गुजरमा (समय); सर्वमा छपेश्वाः रीति मंगा पाप ऋम-विषर्ययाः संदरः वाशाः। व्यक्तिक्रमण-पुति] क्रमभंग परनाः धाप स्थमाः शराई करना । व्यक्तिकशी(मिन्)्रें [शं∗] पापी अपराधी। व्यक्तिकोत्त−वि [में] यंग शिया दुला। दररंपिता विषर्वेश्याः वियायाः दुव्यः । धुः अदिक्रमम् । पापः । स्यन्त-वि [नं] प्रकटा विक्तितः प्रत्यतः एक्ट रह्याः व्यक्तियाति-भी [मं] पाप करमा। नुराई बुरमा। वपनिक्षेत्र-प [मं] अदल-वदनः विनंदा बजासुनी रिदान मनुष्या विष्युः स्थारक समाधियोगेन एक (ते०)। piner t व्यतिगत∽दि [मं] थीना दुका गुबरा दुवा (समय) । अध्यक्षद्रायम स्मृत्र स्प (स्तो)। −कृत्य-दु० व्यतिचार-पु 🔄] शाराधरम, दुम्बर्म । द्वतिपात-पु [मं] रिन्डम कारि मधारेस योगीमम मी विष्यनीर स्व^{र्}य्थिकार मीशी अपराजिता । न्हात्कः-भवकीने विदार्शियाणाः – इष्टार्थ- विक सम्बद्ध-रधाँ (माथी) । ≔भुक् (ज्) ल्वा नारे दश्य बतानीका ध्यनिभिक्र−दि [मं] कर्नगक्को युक्ता मधा घरनेरान (काष्ट्र) । —शदी:-भी वात शति । व्यक्तिसङ्-तु [सं] तुग्रव्य व्यक्ति होनास्थापि सन्धाः −स्प−५ रिप्ता -महसा(इसक्)-हि० प्रद> व्यतिमृष्ट-वि [संब] बहुन बरशका हुना।

इष्टि-स्रो [सं•] दश अवसे वक्कविद्योंका गैरनाः नर्राकी तरह किमी चीजका नहत नहीं संस्था था परि माणमें गिरमाः झडी । -कर-वि वृष्टि करनेवाला । -कास-वि वर्षांदा इक्ट्र्स्ट । -कासना-स्रो क्र्यंद्रो रच्छा ! ~काख-पु॰ बरसात प्रामुद् ! -धनी-सी रोटी रक्षावची ।—सीवन=नि० (अमोश) जो दोतीहे किए वर्षापर निर्मर हो देशमासुकः। बुे॰ पातकः। -पात -संपात−प्रवर्गका दोना। --भू-पु॰ सेटक। -सास -प वर्षा मापनेका वंश । ~केकत -प अतिवर्धक ता क्सर्वत ।

इप्तर्मञ् – पु (शं•) वर्णका सकः। बुध्यि-वि॰ [सं] कीबीः कुरः वार्धवः नारिकक वर्षे विरोधीः मर्चद्र । प्रमेषः साँदः प्रदाश-रविमः बाबः धिवः विश्वा हरः स्राधाः शहर । -शर्म-पु॰ कृष्यः । -प्राधः-प्रश्नावेरिका । अवस्वया-त क्रम्ब । अवस्य-प्र बारवीमें श्रेष स्वक्ति । कृष्णिक−पु[मं] एक कार्व।

बुरम्य−५ [सं•] बीर्य दुस्त्व ।

क्षम्य-दि [मुं०] पुरस्य वहासेवाकाः कामोदीयकः वाजी-कर । पु॰ शिक्षा माच करवा करवश कॉवकाः कृत्यक । -कंदा-स्रो दिशरीकंट ! -गंधा-को श्वदारकः सर्वात्रीः सरिक्ताः −र्गधिका-स्त्रीः सरिक्ताः । -वीटी -स्रो मनाशाती । -पर्की-की विदारीको । -स्रका -वा भागतको । -वस्थिकाः-वस्सी-सी+ विरात-बंद ।

बूप्पा-सो [सं] ऋदि भोपविः भूग्यामध्योः देवीयः भविवका। शतावरीः विशारीः वहा देवी ।

बद्दर्शय−प्र [मं•] प्रदानंत्र नामद्र शाख् । पृहचकमेर्-९ [मं] वर्गती।

बृह्दित्त-दु [सं•] फूरपूर विजीस सीनू। पृष्टच्छर-५ [थ] सहरीर।

बृह्दप्रकरी-सी (सं॰) सक्तरी महकी।

बु€च्डवक-दु [लं•] बिगर किनवा मछकी।

मुहरजारूपणीं-स्रो [गं] महाश्राकपणी । पृक्षितवी-स्रो [मं] सेम।

षृह्ळीरक-3 [H+] मंगरेला ।

बहुजीबंती बुहुजीबा-को [रं] बुहत् मीर्वेटिका वही

बहरतका नगाँ। [र्स•] स्लासका व्यक्त मेर्रः बहतिका-नी [र्मण] पृहती। उत्तरीय वान । बहती-सी [तं∗] दे इहती'।

वृद्दत्-वि [मुं∗] वदा मदाम्: मारी । --क्रंप-पु० निगुपंदा गावर । -कासशास-मु भुनर्गेश । -कास - व सहर धनशा ! - बुर्वहर-वि श्रीत्रक ! - कोसा-सबी-भी बेनुवा; तरीरे !-गर्वरिका-भी गुहारा। −ताक−५ मीतल १इ दिवान । −तिस्य−धी० होता चाडा । −मृश-५० थरेछ र −त्यक्(च्)−५० प्रद्रमाराम इत एतियन । -श्वच-ड शीम । -र्यच मूस-पु रंस शामाराका गंमारी चौटर और गामि-बारीका रक वर्ष । -पश्च-प्र॰ वनुमाः प्रशंशी कीपः

दरितदेद । -पन्ना -पश्चिका-की मर्दा - पर्ण-पु॰ पठामी क्षेत्र । - पर्ण्य-क्षी॰ सी वमसनई। -पाइस्टि-पु॰ धत्राः -पाइ-पु॰ सम्प वेक । -पारवत-पु॰ महापारेका । -पाछी(धिन)-ड काकी बोरी अनुबारक ! -पीसु-५ वहारो स्थ रीट, महाबाह्य । -पुष्प-प्र• देहार देश । -पुष्पा-की॰ धनसर्वाः। -पुष्पी-मां॰ सर्वाः। -कत-पुः कुन्दर्श कटरका जामुका विभवा । -परस्य-स्त्री और कर्तुः तिनकीकीः सहैद्द्रशरूपीः महार्थतः वदा बाहुक

देश सम्बद्ध सम्बद्धाः। बृह्यु-'वृद्यंका समास्यत रूपा −क्षेत्र-पुराधी। ~नम्स-पु वडादर, द्वारख । -एमा-नीः वरी बळावणी। ~गुइ~-५ कास्य देश: -गोड-तरबंदा - वंती-सी वही वंदी। -- इत-ए परिकाकोगा द्वतिवमा विताक क्या' कामर्वती । -- दन्य 'ली कवास्। -होथी-जी एक ररियाद! -धाम्प प्र नवार, बवनास । —बदर-पु॰ रश नेर । ल्यक-व महाक्षांपल । --बाध्य-न्ती॰ सहरेई: च्यावी धीर काववंदी । -बीज-५ वमहा । -अंडी-सी॰ पप माना क्यां। −भद्रातिका−सी॰ दुर्गा।∽भास्त−‡ करिनः सर्वः शिवकः (∼रथ-प नप्रपातः संवरिद्योगः सी सायचेत्रका एक श्रंद्ध । वि. अहत वर्डे रवदाला । -रामी (विश्व)-९ ध्रप्र वस्त्र ! -वर्च-५ सोनामस्यी ! —बस्क –बस्कल–धः १८ सम्बद्धाः प्रतिबन ⊢बस्की-करेका ! -वाल-त देवपान्त, अश्मरीहर ! -बारमी-सी महेंत्रपारभी ! -बीज-५ अवसा ! बह्म-'बह्द'का समासग्त कर। -नल-तु कार्रमा बाबा यक तरहका वडा नरशक ! - महा-स्री । विराह राजके वहाँ अधानवास वरते समय अर्बमका साम। -शास-९ वडा शरकता -विय-तः वदावन। -सरिच-सरीच-द का=1 मि√ं। व्यवस्थीकी-स्थे [र्थ+] कुलका नामका साग् । बद्धस्पति-च सिंगोरे 'बहरएति ।

वैक-प्र (ते॰) रक्षिण भारतका स्थ मागीन वयता। वेंबर-१ [न] द्रविष देशका नक परित्र परंत तिसी बोरीफ्र विष्युका मंदिर है। -शिहि-प्र वेंग्रर अन्तर वर्षत ।

वॅक्सच्छ बॅक्सहि-३ (गं॰) हे चित्र । वॅक्टेस वॅक्टेस्पर-पु [लंक] विम्तु (वेंद्रश्य वृति)। बॅबर-इ [म] क्वका मर्थ ।

धे-सर्व 'बहका बद्दा।

यंबर-पु [मं] एक यक्षणे आकृतः रितृतका देश

वैद्याल-तु [त] अपरो सरह देसना, देश मान । केंग-प [में] तीज प्रपृत्ति जर्परता। प्रवाद बाता संदर्भा रेत शुक्का मन-शूमके सिद्यमेची अपूर्णि श्रान्य र्शंकार (दिचारिका)। सदर अगरी, ग्रीमदर वार्ग्स की त्रगार प्राच्या संगरिक भाषती नाग्र सनिमाति सर्प भागः मार्गतः प्रशासताः शोभा भागांत(कः रीन्दा साह लया उपमा पृथ्धि लहात्रमोतिष्मती। साल इनलन

म्यक्षियात-स्प्रपाच प्यवियात−वि [र्स•] कीता, गुत्ररा हुना। स्पतिरिक्त-नि [सं॰] श्रातिशन, बहुत अविका पूजक, मिषा है मुक्त, रहिता रोका हुमा। बादवाह किया तथा है भ भिना सकाना छोडकर । भ्यतिरिक्तक-पु॰ [मं] उक्ष्मेका एक प्रकार । व्यक्तिरेक-पुर्वामेंशों सेंद्र, बंतर, पार्ववव; क्याव, राहित्व: अविकामा सर्थरेव कृत परार्वे (अम्बदका तस्ता-स्वा): ण्ड गरहको न्हारि (न्या): तक्तमार्ग वेपरीस्ट विदा-कानाः वस काव्यावकार सर्वे अपमासकी अवेशा स्वर्धेक-की अधिकता देशी बाद । वपतिरेकी(किन)-वि॰ [एं॰] व्यतिक्रमण करनेवालाः कराबोंमें विमेत्ता करएक करमेशाला, अंतर विसानीवाकाः मिषः विपरीतः बामानारमङः। व्यक्तिरेचम-५० [यं] हरूमामै अंतर शिखकाना । स्पविरोपित−ि [र्ष] निश्वासितः केरशक किया हुआ व व्यक्तिसंगी(चिन)-वि (तं) गिर्म रिमुक्तेवाका । व्यक्तिच्यस्त-नि सि वरत-व्यस्त । स्पतिपरा≃प [सं∗] परस्य विश्वना संबोधा शासकार संबंद: समाय-बद्याव निर्देत: विभिन्नव: अधिशीच्या वय साथ भोषना । क्यतिपक्त−वि+ [ti] भरश्वर मिका ब्रमाऽ आससाः भौत्रपोतः जिलमें अंतर्विषां हजा हो। व्यतिहार, व्यतीहार-तुक [संक] विनिमन, श्रह्मा; गावी-गसीयः भारपीर । स्पत्तीकार-त [मं] मिरंतः वे 'स्वतिवार । म्यतीत-वि [मं] बीवा प्रया गतः प्रश्चिमः यतः त्यकः क्षेरिया नापरवाह ।-काक्स−वि शिववा शयव ग्रवर यका हो। समामविका जनवसर । \$यसीतना*==== कि म्यतीत होलाः वीतनाः गुजरना । स्पत्तीपाल-प (सं) हे 'स्वनिशत': मारी जवहर कारातः सनावरः वनिधा आही सारि मधनीम वहनारै रहतेषर रविवारकी वहसवाको अमावरवा । क्यांक्च-पु (सं) व्यक्तिमा विवर्षेत, वदरीत्या विभिन्नव परिवर्गमा विरीवा वाचा । -श-वि विपरीन रिधामें गमन करनेवाला । क्यापास-वि [मं] विषरीत क्रमधे रका हुआ। विषरीया अमंबना इस प्रकार रुगी हुई (की बन्दुरी) क्रिमी एक इस्तीकी कारती हो । रमापास-इ [लं] है 'ज्यायन । स्वयक-दि [तं] पीश देनवाला धरत क्रमेवाला । क्ष्यम्-वि [मं] मुख्य क्रियेशमा प्रश्निका वह देवे बाक्या । प्र चीत्रा, ब्यक्ता ब्रीवना चरिवर्गन (स्वयक्षा)ः बश्मभृति। बह देना। छेश्ता । ध्यथिता(त)-रि [में] पीता दैनेशला नंड देनेशका। द्रयथा-न्दी [लूंश] बीवा दाला नक्ष्मीफा वर्ट प्रथा श्ति। वेनेमाः रोक (लकर-वि कश्यावक । ध्यपाक्क-मि॰ [ते] स्थ्यन्त स्वतित । स्वयात्रीत-दि मिन्दि व्यक्ति । स्मवात्र−वि [मं] दे स्वभित्र ।

क्षकारियल-वि [रो] अवित व्यवा<u>र</u>ूण !

व्यक्ति~वि [६०] बीवित इ'सित दरा इमा। व्यथी(थिन)-वि शि विश्वकित, बहुग्रस्त । व्याध-त [संव] भेरम- क्षेत्रवाः चीर बरमाः चारत रागः थानात बार १ य्यामन~प० सि] वेपना विक्र बरमा अमेर1सिः विक करनेवाला । व्यया∸भी सि•ीरऋद्याग रऋपात। व्यभिकरण -नि॰ (सं०) किसका बाधल मित्र हो। रुने कारका संबद्ध (न्वा॰) । तु॰ मित्र बाधारका होना । व्यक्तिय-पुरु [संर] विदा विकासक मत्त्रीता। क्यध्य-वि [संश] छेरते भेरत दरते बोन्द । दर पट्टर-की थोरी, मर्खका निकास करन । स्याध्य-प नि कियम, यही शरकः मार्गका कर्या व्यमुनाद-पु॰ [र्म॰] बृरहद सानेनामी संगी सनाम थोरकी ग्रैंस । रयपकर्प-पर्श्वानी अववाद । व्यवक्रष्ट ~ वि» (सं») दशबा ब्रमा जिसासकर समय स्मि दलां । व्यवसान-वि (सं०) क्या द्वारा प्रतिभाग सम 🛶 निय हमा वंशिन रहित । -रहिम-वि जिलमे निर्दे बिलीन हो गयी हो। स्वपूराम-९ [मं] प्रस्थामः धोषः (समय) गीतना । व्ययक्रप-दि सिंगी निर्ममा बहा इयपहिछ~दि० (शं) निर्दिश दिखकांचा द्रमाः नृदिशः बहाना दशाया हुआ। छमा दुमा । द्यपदेश-प् [सं] बुनना निर्देश नाग अस्तः दर्भि कुरा। बाति। क्यारि। बॉक एक। बहाना, विपान क्षास्त्रा (वै०) । स्वयदेशक-नि [में] भाग निरेश करतेशका । क्षापत्रेशी(शिक्ष)-वि स्तिनी बस्त, क्यापिशका। गुनका बरायक्षेत्रे बनुसार चचनेराका । क्ष्यपत्रेहम~ि॰ (सं॰) विस्तक्ष विदेश करना दी। निष् कररबेहर(ए)-दि [५०] निर्देश करनेशना। छनी । इक्ष्यम्ब-प्र [सं] स्थान इराता दर हरताः निवाध। बब्दबबन-पु [तं] छात्र देना निमेत्रेत स्थाप । व्यपनीत-(वं विश्वे द्वराचा दुवा पुरोहत । ध्यपमति-मी सि शिक्षाय शरीकरण । ध्यपमुद्यां(र्थम)-वि (शेर) विमा शिरदा । व्यवशिषध-त [मं] क्षम्पना बारमा तीर नेवा हर ब्रामा निष्पासनः कागास पर्देशाना । बयमवर्गे-मु [सं] पत्र्येतवा विमादा अंतरा अंत (है)। बयुवार्जन-पु [मं०] वर्रिम्बाग छोड देशा दे देन" ICCPIT F क्ट्रबंध**राज~** ु (तं∗) शीरमा बादम दोना र स्वयक्तक्र-विक मि] पुत्रक दिया बुभ्या दिसक्त । व्ययमारम-पु (सं+) भ्रमाना, निवाच शहर करना । क्यपाष्ट्रल−नि वि रे...मे सुद्धारित । व्यवाष्ट्रतिन्थी [में] बच्चमा आकेशमा जिल्लान बुरीयरथ ।

व्यापाच-त (ते] विसम, क्षेत्र ।

स्वतीका संगमः यक्त मदीः देवदाली । - वाम-प्र वास्तिक्ष

भोधे !-साधव-प् प्रयागस्य देवता विशेष ! --बेक्सरी

तंत्र कायु भादिमें पाना भानेताला एक ग्रुण (न्दा)। -ग-वि• तत्र सामै वा वहनेवाका । -गा-सी॰ मर्दा । −चन−वि+ तेत्रोसे मार्नेनामा । −ईड−५• दाभी । -धारण-पु॰ मक्रमृतका वेग रीकता । -मासान-प्र• दहेम्या, इन्छ । -परिक्षय-प्र• रीवकी बमताका कम दीना। -रोध-पुगतिमै वावा पदना रोकः कृष्यः - वाहिमी-सी गंगाः शवः पकः प्राचीन नदी। -थाही(हिम्)-वि तशीसे बहने, उदमें वा वानेबामा । −धिघास−पु भक्का वेन शेवमा। -विधारण-पु॰ दं 'नेग-रोष'। -विरोधी(धिन)-सी । गतिमें वायक होनेवाका खब्त करनेवाका ।~सृष्टि-वि बोर, तेज, मुमकबार वर्षा । -संपन्न-वि वेय-बाह्यः तेयः -सर-प्रस्पयरः। सेगवसी-सी ार्म विकास नहीं। एक ओपविश यक क्रु पद्ध विद्यापरी । वि. सी ॰ वेदवासी । बेगवास्(पत्) – दि [मृं] शुल्दातीत्र समाप्र मीताः यदः असरः एकः विचापरः कृष्णका यकः पुत्रः विष्णु । वेगा-सो॰ [मं] महास्थोतिपानी । वैगामास-प (स०) दे विगनिभारण । वैगालिक-पुर्वस्थि प्रचंद कासुप्रभवन । येगाबतरण-प्र [सं] तबीस गीचे आमा । वैशित – वि • [सं] देगदुक्तः छम्बः तम किया द्वमा । वेरिति निक्षा मिं निर्देश एक विशेष मा≪ारकी माय । वेगी(गिन्)-दि [सं•] बस्युक्त, तेमः बगः प्र वाज पक्षे प्रकारा: -(गि)इरिज-५ पक्र मृग श्रीकारी: बगास्य-वि [सं॰] बिस्का बहुत तत्र असर दो (बैसे (बेपका) । वेका-स्त [मं] सबद्री पारिमनिकः मृस्य । येखानी-ला [मं] सीमराणाः बेट-प्रमि] पीत्रक्छ। वेदा - की मि॰ देशबादी शती। बेटी-सी [मं]नाद। चेटेरिनरी-वि [#] पानत् पद्युओं हे शेगीखे संस्थ रग्रनेशना । ⊶अस्पताक-पु बद्यु-विकित्तासय विदेशिमरी हारियरक । पैर ∽द (सं) क्यमें प्रयुक्त क्षानेवाना श्वाक्षा जैसा यह TIME ! बेड-पु[मं] यद तरहदा धरन । बेडा-स्था [मं] मात देहा। मेदमिका-स्री [सं] वहरकी पीडी मरी हर रीती पहारे । षेण-चु [गं] एक प्राचीम वर्नमंदर जाति आ गानेका पैशा बरती भी। एक सर्वश्री राजा जिल काविक्षीते भाषाचारी दानंद कारय मार दाला. बाः मरससदा बाय

दरनेवाणा - योनि - स्या एक ल्या ।

41

पेत्रकी(बिन्) – दि [ते] केन्नकाला । चुटिया

बणा-सी [मं] शमा कृत्माद्ये रह महाबृह नही।

वचि-स्पे [मे] योग्रे गृहना। वालीका लखनी दुई यारी

(थाप प्रवास्त्रपतिका अर्थिका विद्र): अस प्रवाह:

दी या अभिक्र महिद्दी हा स्नामा देना यह ना की ह सुद

−কা॰ লভীভা নীকা– ভীমিলী – কা হঠা। वेणिक−प सि•ो एक बनपद । वेणिका∽सौ (सं∘) वाकोंकी योटी। शविभिन्त प्रवाहः गरसञ्ज्या वेदा । वेणिनी-सी मिं विशेषको सी। बेणी-सौ [सं॰] बानोंकी भोडी; बारा; देवताह: एक भवी। मंगी, मेहा गाँव, पुरु । -ग -मूखक-पु । ससु । ─वाम — तु प्रवासमें वाक करवानेका पक संस्कार । -संबरण -मंहरण-भहार-५० पीटी गैंधना जना वींपता । - स्वत्य-प • यह शास । बेजी(जिन)-१ [सं•] ण्ड भाषा थणीर−पृस्ति विश्वहरू काम। बेलु-पु॰ [सं] श्रीसा नरसकः श्रीमुरी। एक बादव मरेसा यह वर्षता यह गरी। राजा वन । - सर्वर-पुर हरीका क्नेर (१) !-कार~पु वाँसुरी बनानवाका ! -गुस्स,-खाळ-प्र• गीसका हारस्ट। - संध-प्र एक मनि। च्य-प्रविद्या पावलः काली मिर्च । वि वॉससे दलक (बैस विक्रि)। −हत्त−पुण्य प्राचीन न्यायाः -इस-पु थॉसका **क्टा। -इारी(रिन्)-दि गॉस** फाइनेबासा । पुण्य दामवा -ध्म-पुर्वित्रो वकानेवाका । -निर्सेन्यन-पु॰ वीसकी छात्र ।-मिस्वति -व रेख !-स्ट्या-सी॰ व्य तांत्रिक देवी ! -प-प» यह शापीय सनस्द । -पग्न-द वॉसका पत्ता । ~पत्तक~प प€ तरंदका साँग। ~पश्चिका,~पश्ची~ न्। दिगुपर्यो वंद्रपर्यः ।-प्रर-पुः एक मगरः ।-सीच-पु नौसुद्धा जानक । - मंडक - पु कुछही पदा पद्म वर्ष । ~सूब्रा−की पैगक्किंको स्क रिमेक सुद्रा (न)। –धय-५ वॉलका चाव× । –यप्रि–मी वॉलको धदी।-वस-तु वीमका वनः एक अंगल। -वाद -वादक-९ वॉसरी वजानेवाला। -बादम -बाद-वॉतुरी वदाना। -विदस-पु वॉस्टाकडा। -वीकाधरा-मी स्ट्रेडी रह मानुदा। -वर्श-दि नीमके कहीका नना दुव्या - सम्बद्धा-स्त्री • शीसकी सार। -इय-पुरु बहुदा यद वंशव। -होश्र-प पृष्टीनुद्धा पद पुत्र । वैष्यक्र-प [मं] बॉल्स्सी वॉल्स्प्री मृद्धियावाला एक स्टब्स का रेट (दावीको चन्दानके डिप)। पैना नातका एक जनपर १ वेणुका-गी [सं] विगैदे क्योंबाना एक कुछ। वॉसक वस्तेवाला यह नरवदा टंट (हायीका चनानेहा) । वेशुक्रीय-वि [तं] वेशुन्तरेती। बलुकीया - रु। [सं] यह रवान वर्श गीम अधिक प्रपृत्ते। चणुप्रच-तु [में] यद ओश्रिक લેળ ત્ર∽યુર્દિકો ક્ર∾ય વિનંક यणुमर्मा∽री [बं] व्दल्ती। वेलुसप−नि [सं} वेस्टायकाद्रमा। यशुमान्(मर्)-पु [मं] एक दरता प्रयोगिष्मान्दा दह बुवा बद्रमान् हारा छानित दह को । दि॰ बामुहा

स्मानास्य - वि मिं) जिसका कीर्र सहारा न ही स्वान संबो । प॰ गममः अंत. विरामः आसनः आववस्थानः सवाराः माञ्चा । स्यपाद्मित-वि [सं] जिसने भागव मध्य किया हो। ध्यपक्ष-वि सि । शासासका बत्सका शावपास । स्पपेका-स्रो सि | जासाः ध्वान देवा स्वाक रसनाः भाषसम्बद्धाः संबंध प्रकोगः। स्पपेक्रित−षि• [मं] ब्रिएक्श भाषा को यथी हो। विस-पर ब्यान दिया गया हो। परस्पर संबद्धा शहका । स्यपेत-वि॰ (सं∗) को सक्य हो गया हो। गया धना। विसदा बंत हो गवा हो। विपरीत । - कस्मप-वि निष्पापः - मूरा-वि निष्यः। - ग्रेपे-वि अवीरः। -सच-सी-दि निमीक । -सद-वि गर्वहीन। ~हर्पे~दि अप्रसन्तः। म्बपाध-वि (सं) इटावा हुआ दूर किया हुआ विस्क विषरीतः प्रका किया हमा विखलावा हमा। इपपोद्व-पु [रां•] निवारमा माधाः अस्वीद्यारः बहारमा । स्परोद्य~दि [न] अस्पीकार्वः स्पनिताण-पृक्ति । मरेद मनिथव। स्वसिचार - ए । सं । सत्यपदा परित्याय क्रमार्य-नमनः वाप बुराचार बुध्कर्मा अनुश्वित बीन संबंध नियमका बक्शांटर गंबन तर्द यह नर्द छोश्चर दसरेबा सदारा केनाः गक्षत्र देव साय्यरदित देव (म्बा)। −कृत्— वि अनुश्रित वीम मन्द्र करनेशाला । व्यक्तिचारियी-दिकी सि) पंथकी कुन्नदाः श्विर म रहनेवाकी (नक्ति) । स्पनिकारी(रिन्)-वि [एं॰] क्रमागगामीः दुधरित्रः भनुवित योज मंदंद करमेवाकाः को रिवर म रहे भरवायी। धंव दरनेवाना उस्मंपन दरनेवाना। निवम बिरुद्ध बर्ज गीम अभीनामा (छन्द) । पु कीई अरबायी परार्थ । -(रि)भाष-पु संयारी मान पद प्रकारके मान भी रबाबी म रहदर मनी रमोमें महाबद्धे रूपमे संबरण बरत है (आयाचीने इनको गंडका तैतीन था भागोस मानो है निर्देश महानि दांदा अनुषा सद अस भाभरव रेम्ब विना माह रस्ति भूति औहा चएवता इर्च भारेय बढ़ना गर्ने दिशात भौग्युपय निश्चा मप रमार सुप्त दिनीच अमर्थ अवदिश्य जलना शनि जया-संग स्पार्थ प्रमाद भरण भाग वित्तक । --गा) । व्यक्तिमान-पुनि ने ने ने ने पारणाः प्रति दक्तिय । व्यभिद्वास-५ [म] परिदास क्षत्रहास । रवर्भावार-५ [मं] दुप्टमैं। शररापः वरिवर्नम् । रवम-वि [मंग] मेपरहिता रक्षम-दिस्ति । अध्यमे शक्ति । स्पर-पु[मं] हव कीप साधः पत्र आधिका निमी बाममें स्थानः सर्वे (शायका करता); स्यागाः सम्बन्ध पारदरी रथान यह संपानरः २५०:पनाः एक आसः। -कर-रि परश देनेवाता । -करण -करणक-🖫 देवन चाँरनेशमा वर्धचारी । -शम -गुल-दि मर गर्थ दर राजाराजा र -गृह-पु अवसी शारहरो रवान । =भार मुख=रि० कष्म । ⇒भवन =श्यान=

प दे 'व्यव गृद्ध'। शासी(सिन्) -शीस-दि• अपन्यक्षी । -सङ्ग-विश् रिश्त म दोमेदाला (क्रोड्स) । -सहिष्णु-वि धनकी शामि वर्शस्त करनेवाका व्ययक-वि सि रे पूर्व करनेवाताः स्परा देनेवाता । व्यवसान-वि (से) अपव्यवी । व्यक्ति−दि॰ सि] छर्व व्यव दियां इका ! ध्ययी(यिन)-वि [सं] शर सर्न हरनेवाना श्रव होने बास्ता १ व्यर्ण-वि [सं•] जकरहित धरपीहित । ब्बर्ध-दि सि विक्ययोगी देकार निष्यकः संपत्तिहीन धनहीनः वेहकः बंगानीः असंगत । सः यांही, विना मत चर≼ नाइक । ∽नामक,~नामा(मम्)-विश्विस्म मामठे बनुरूप गुज न दों । ≔यरन −ि विकल्पावरनः शिसका प्रवस्त वेद्धार हो । व्यर्थक-वि॰ [सं॰] तिश्वक, मिर्खंद । व्यक्तीक-वि [सं] असत्यः अप्रिवः कष्टकरः असुचितः व्यक्षकी अपरिवितः वैसञ्चा जसस्य मही। पु मागरः बिटा अभिय बरता हुन्यका कारणा अपराधा कामज अपरायः छन्, प्रदेश मिच्यात्यः वैपरीत्यः अभिवताः क्टकारिता। - मिग्दबास-द्र धोधोच्छास। व्ययक्कम~षु [मं] पर्शन ब्रुहारी पद्म संस्थामेस दुमरी संस्या परामा बाद्धे चरादा व्यवकस्थित−दि [d] दिवीरिगतः दीवितः व्यवकतन् किया तथा वरावा द्वथा। पुदे व्यवद्वयम् । इव्यक्तिरणा-मी [मं•] विश्वा। व्यवकीर्ण-वि [र्स•] सिभिना " स मरा दुआ। फैलावा दुधा । दवबकोत्रम-पुर्मि । गासी-परीका निदान अपश्चरू गुली । दवचताइ-वि वि] निमम्ब योना नगदा द्वभा। ब्वबगृहीत-दि [मं] शीध कावा दुनाः सुकावा हना । दश्यविद्यय-वि [मं] कारकर अक्रम दिया हुआ। पूर्वक दिया द्वमाः विमक्तः भिन्नः विद्यपितः वावितः दयवच्छेर-पुर्नि । युग्यर भटन दरमा विमातमा श्चव्येशः प्रवास्ता पुष्ठ करमाः भंगर दिलमामाः विभावः (बाग माहि) चनामा। पुरबारा विशेषता हिमानामाः पुरत्रदक्ष अव्याव या गं°े −विद्या-सी रपमा विद्याम । व्ययच्छंत्क-वि [मं] शिक्ष क्रमेशमा, विश्वना निर

कानेवाका अच्या इर्शेव का ।

धीः दत्तवद्भिः ।

शरा भारता जिस्ह ।

दपवदात−दि [मं] मापः पमदीना ।

व्यवदान-पु॰ [म] शब्द स्म्बार सम्बो :

व्यवर्शवं-दि [मं•] संटिम, बाइवर द्वर शा गया

व्यवसा-मी [मं]वद । वीवमे भाषर स्वतसानः

क्यवधाना(नृ)∽दि [म] १४६ वरनेवासा वी**प**र्वे

व्यवकाम-पु [सं] वीयदे पत्नेतमा बाहा बाबा

ारमें हा जाता; बावरण दर्शा पार्वदर दियाग कन

का कानेवालाः परदा करनेवाना साम करनेताला ।

वेदोवित-वि [सं•] देशविहत । वेद्योपकरण-पूर्वि विद्यागः वेदोपनियद - स्री॰ [शं॰] एक वर्षानवर । भेराष्य-वि [एं॰] क्रेरन बोस्का वेदा(व्य)-वि [मं.] छत्रन या निधामा वारमेवाका । पेप-वि• सि] जानने शतकाते थोग्वा सवतीय सहते भोरदा बसन्ताने भीरमा स्तरमा माप्त करने बीरमा विवास करमें बोरट । येघ-पु [मं] देवना छेत्र करमा। प्रसानाः आहत करमाः सिहः निन्तः सुकार्यः गक्तेकी गहरावे। समक्ता एक मानः निद्धाना मारनाः वीडीका एक रोगः सर्वे प्रश्न आदिका रक्षान निर्मित करना। विसी प्रदक्ता वृसरे प्रवृद्धे शामने पर्देषनाः छेल्छाचा रशोदा मिलवा वारेदी रक किया। −गुस−पु यक शना −मुक्य−पु क्षत्। -मुख्यक-प्राह्मश्रीचा पीपा। -मुख्या-की॰ कलारी ! −शास्त्राच्या नहीं वह स्थान कहाँ वंशोंकी सदाबतासं प्रदों लादिकी वनिका एवंबेक्स किया माता है। बेधक-मि॰ मि । धेर करनेवाका क्षेत्रनेवाका (रस्ती आदिक्ते) । प्र कपरः चंत्रमः अम्मवैत्तसः एक गरक (जिसमें बाद्य बतानेबाचे जाते हो)। घतियाः सैधव जगहः भाग्यक बक्तमें क्या हमा भाग । वंधम-प् [सं] देवनेको क्रियाः (गणरे) निसम्बा मारताः प्रदेशः यनसः गदराहैः स्वाना आवत करना । वैद्यमिका—सी मि॰ (रक्ष्में) देश करनेका देश गील वाली वरसी । बेधनी-को [सं] रत्नमें हेव बह्मेकी वरमी। बाधीका क्रेप्रमीप −रि सिं} ग्रेश काते बोस्क भेदनीय । वैद्यस-प्र [सं] दावडे अँग्रेडो अस्के पासका माग भंगुहरूक, जाहातीर्थ । वेषा(घम्)-इ [सं] प्रशाः विश्वाः शिवः स्वै। धर्मः पंडितः अर्थः प्रतिश्रेष्टवः विता । बेघासम-५ (सं) दे विषयाका । वेथित∽वि [मं] छेदा हमा विका बैचिनी-मी [मं] श्रीनः मेथिका। बेची(चिन्)-नि [ग] नेप इरनेतालाः हैर करने बालाः जिद्याना मारनेवाना । प अन्तवेशस । मैच्य-वि [ele] देवम करमे थोव्य- स्थानका निश्चव था पर्ववेदाय करने बोग्य १९ निञ्चामा सम्बर्ध बेच्या-न्योः [मं] एक संगोतकाथ । बेन-प्र[सं] वेन नामक राजाः प्रजापति । वस्ता-नी [में] दक्षित्र भारतको वह गरी, वैधा ह वेपभु-पु [सं] वंश्रीक अवा -वरीत-वि वंशन-प्रशा - भाग-विकासमागाः। यपन-दुर्शि क्षेत्रमा बंदमा वानशेग । सि क्षेत्रे-बाला, को क्षाँप रक्षा बी। वीवानेताना ह व्यक्ति-वि [मं•] द्वितः। थेम चेमा(मन)-5 [तं•] दरवा, वावरेट ! बसक-तु (ने) सुनावा।

बेर-प्र [सं] सरीरा देशरा मंग सम्। बेरक-प्र [थे] करेर । वेरट-प्र [मं०] बेरका फन; मीच वा मंदर कांग्रस भाउमी । मेरि-की [मं] (तंत शारिका नता हुआ) क्रीकर धा वकतर । वैष्ठ-पु [सं•] कपपना श्रंब; एक वर्श संग्या (सै): मामका पेड़ । ~ध~प करना, नमधीन भीर चरस्त रवाध विकासकार सम्बद्धाः बरपरा १ चेक्क-प्र सिंगी सह और श्रविवासे ग्रप्त करने करत संवाम । मेळा-सी॰ [र्च] सीमा मर्थाता फाएका सहर भेर रशक्तको शीमा। ताः श्रूमा समुद्रताः समका समदध मानः बेटा या पहरः अवसरः। अवसाहातामा प्रसार वाची। रीया कुरबुकाला माजमका सम्बामीत्रमा ६६-रहित पुरस् मन्द्राः पुरुष्धे की; राम आसकि। न्यून-समुद्रतरः ताम्राचिम देश । -बक-सहिम-इ क्वारका जल। -उक्र-पु मरचकारमें होनेशक क्क्ट । -सद-प्र समुद्रकर । -धर-प्र व्ह सहै बार्डा -सूल-इ समुत्रतरा -विच-इ स्ट तरहस्य राज्यानिकारी । -विमामिनी-भी -बीबी-स्री स्ट्से टब्स्सियाको कटर । -डीन-ि असमय वा समयके परने होनेवाला । केवातिकम~प॰ (सं] रिश्न । केवातिरा-मि (संग) किनारेके कररछे वहमेवाला । बेकाळि-इ [सं] शतुहत्त्वनी पर्वतः। बेकाबिय-इ [सं] रिच-रात हे बरमांछका मनियति । बेसान-वि प्र [मी दे देनवा। चेकायनि - प्र [मं] क्या गीत्रकार करि । वेसाविननी है 'रिकाक'। केलिका−मी (सं•) समद्रशरदनी देश । बेक्सिसकविय⊸ए [मे•] श्रीरमयस्त भाग । बेमार्मि-की [न] दे दिवा प्रस 1 बेहर्तिर-पु [मं+] वस प्रत मोरतम। बेल-प [र्गण] यमना बंपना विदेया एक समर। वेस्पर! -तिरिरा-नी पिरंग्र।-ज्ञ-मध-प्र मिर्चः केक्सम-इ [शं] गमना चंत्रा (पांत्रका) श्रीतमा (गर्देके का) शहकारता धनना गुरुवर्षे ॥ १ वेदलमी—म्रो॰ [मं] एक तर्वको दुर्गा कारी मिर्भ र बेहकरी−मी [मं•] माना द्वा क्रुमे निवारा ! वेदमद्दर-५ [वंश] संपर । धदिक-मी [मं] शता । वेक्सिका, बस्पिकालया-स्म [मेन] पुणावजेर ! बेरियम-वि [मं] वंदिना शुक्षा दुवा दका किया क्षका । श्रा अंगना गमना वीरेका नीतमा । वेदिसतुक-पु [मंग] वस मोर १ ચલ્ચલે~માં શીકે વૈલ્લા वर्षात-त [रो॰] हाटा तानावः भन्ति । थश−दु [do] प्रश्या पर्-ता मदामा बदवा देशांणा केरबारा बर्शवा बार-शरा नेस्य और मार्गिस उप

ममाप्ति अवकाश ।

ध्यवशायक-वि विं । परता करनेवासाः, ओटो करमे-वाकाः दक्तेवालाः शतक बालनवालाः वावदः।

दववधारण-पु• [मे] निर्वारण विहोप सक्षय हा म्बाबमा औड ठीउ मिसप करमा।

रवयधि-र्मा [मंक] क्रियासा, औरमें कृतका बीचमें पदमा ।

म्प्रधम-वि [मं] उदासीन, विरस्तः।

ध्यवभासित−नि॰ [मुं॰] आक्रोकिन किया हुआ । रपक्रोकित-वि+ [मे] देखा नुमा।

स्पवसाट-प्र [मं] विरुत्ताः विर् बामा (प्रम ही बामा)।

क्ष्यवसर्ग-प [सं॰] सुक्त बहना पुरकारा। विस्रण गाँटनाः देनाः परिस्थानः।

स्ववसाय-पु [मं] प्रथम, प्रवास, प्रचीय; अधिपादः संबन्धः स्वापार कारवारः कर्मः प्रवम अनुभृतिः वयस्थाः कीश्रमः छनः कार्र पद्मा करनाः आकरमः टीनः विष्णः शिवः वर्मका यक पुत्र। -चुक्दि-वि रहनित्रसद। -वर्ती(र्तिन)-वि रहनिश्वयुक्त साथ काम करनेवाला । व्यवसायाध्यक्ति मि । संदर्भ वरसावसे वर्ष । ष्यवसामारिमका-वि सी [मं]के 'व्यवसायरमक'।

म्पनसायी(विम्)-वि [रां•] क्रसाडी क्यां परि ममी: व्यमंद्रस्य: मध्यवसायी: कोई काम करता तुला: विमी पेशमें नमा इक्षा । प ज्यापारीः कारवार करने-

बामाः शिखी ।

व्यवसित्त−ि [मं] क्लिके क्रिय प्रवान, क्योग किया गमा दी: भारंग दिशा धमा जिसके किए निश्चय का गंदन्य दिवा यदा 🖟 क्लातंत्रका आचीतिमा प्रयान बचम क्रमेहल्याः उत्सादीः स्टबा बुजा वनिनः वरात्राः पुरा दिया सुभा। पु॰ छका निश्चन गंकार।

स्पर सिवि-सीर [संब] संदर्भ निधा ।

—विडि=मी सिधवारिसका विडि ।

हपुबन्धा – मी॰ [मं] प्रदेश इंत्रणामा आवेधिक अंतरः मक स्थामपर रहमा रिवरणा बहुताः मध्यवनाया निधिन मीमा। विश्वासः अवस्था रिवानः अवसरः छाउँ। वस्तुर्वी-की रिवर्ण मा क्राम, कर्ने करोगेने श्यामा वाववय । -पच-पु॰ किमी विषयका किरिश ग्रामीय विवासः हरनारेश ।

क्पबस्ताला(मृ)-नि ; त [अ] निश्चव कर्नवाकाः क्रिनी दिनवंतर न्यवस्था देवेवालाः प्रवेषकः।

व्यवस्थान-तु [संक] प्रदेश निश्चका विभागः विश्वताः दरनाः भव्यक्षमायाः पाध्यमः भारत्याः विष्णुः । –प्रजाति-स्री । एक बहुन वही शंक्या (वी) । दपपरमापक +५ [त] प्रदेव वरमेनानाः क्रशनेमे रसन-

बाजाः निधव करनैवाताः स्थि दिवयदर अवस्ता देते मान्याः व्यवस्थाविका सध्यक्ता गरश्य ह दब्बल्यापम-९ [1] शावरवा वरला, शिविपूर्वक

ररानाः निधय करमाः मिकोरणः विकासका विशेशकः स्यवस

वयवम्यापनीय-() [मंक] स्ववन्त्र कर ने कोन्त ।

व्यवस्थापिका समा~सी॰ मि] दिशाव शामेरण बह समा विसक्ते महिन्द्रपुर सहस्य प्रमुख हारा रियो-बित दिये गये दौत है।

व्ययम्यापित-वि॰ (सं॰) जिसकी ध्वशका की गरी हें विभियुक्त रसा वा स्मासवा हुआ: विवक्ति । व्यवस्थाच्य-वि [र्व] विसन्त विशास, विश्वत सार्ग

हो । प व्यवस्थित किये जातेको निवति । व्यवस्थित-विश् सि । दीव दावनमें दिशा दशा मिर पूर्वक रखा बना व्यवस्था रिक्त निक्रिण विशेष विकास क्षारा निर्देश: अवसंदितः भाषता की द्वररा ही। व्यविकारीः बलमान । -श्रिमाचा-चौ० निधित विदार (व्वा॰) । --विषय-दि विसदा शत्र सीमित हो।

व्यवस्थिति – भी मि । अक्य रहा जाना, भर दिश वावाः उदरमः १६वाः लगा १६वा अध्यवसमा विभिन्न जिसस् । व्यवहरू 🗝 [र्थ] सुकरमा सहना। सुकरमेक्षे रेही !

ध्यबहर्ता(ने)-वि [र्नन] बारवार करनेवाना। र्तिन नीतिका पाचन करवेवाचा । तु विसी कारवाका मारे चक या संबादकः निवारपंति सदरमा सरवेरानाः शक्रे साथी: बेहर ! व्यवहार−९० ति । दर्ता सतिवार्ष **दा**र्गः स्वरदः वर्तानः प्रवीया बारवारः वेशाः व्यापारः सवाजनीः विषर

भावराः शैति जवा रिवादः धर्ने पचः रिवतिः स्विम मदरमाः मदरमेश कारणः मदरमेश निवास देश क्राप्तार विवासतको बीम्पनाः भीतिसः (विशसके विवरः मी। मंदिर पदा राहा एक कुछ । -श-वि द्विताले बीर वर्शकीका जानकार। अपना कारबार गैनामने बोच्य-वातिकः संबद्धमेश्री कार्यवार्दे समयमवाना । -शब-५ काचारशास्त्र । -वर्शस-५ सुक्तपेनी जीव सुक्तपेश तिनार । -च्छा-को॰ धीरमधी साधारम नियति। -इश्(६)-त विकारतीत । -यह-पुर ध्यवशा शुक्रतम् । विषय । -पान्-पु शुक्रतमेके बार बराप्री-पूर्वपण उत्तरपथ विचापार और निर्वयक्तर-मेंगे क्षेप

निर्वेषपाद । -प्राप्त-शि मिलको अवस्था होन्द्र वर्षे व्यविक्र का गयी हो), वर्धवन । - मानको - मी संस्थे क्षी कारहवादे। स्वाय-कार्यमे संबय स्टानरामा क्षीर्व (१९४) -मार्गे~९ लक्ष्मधि कश्यादेश सम अस्तर विषय । - महाय-पु सुरहमेक्षे अविनारेषी विदेशी ~ৰিখি-জা व्यवदारका दिवानः स्वापशार्था -विषय -स्थाय-५ सुदानदा शिष्य । -शाय-पु पह शाम्य किराये दिवाइ-प्रदेशी बात का निरंपर विकासका क्षा -सिद्धि-को प्रमुक्तके अनुकर मुद्रायंक्र निर्देश - स्थिति-क्षा स्वरमेद विवासे

गर्नन रमध्येवाणी कपरवारे । श्यवदारक-५ [त] ब्याररी ।

व्यवहारीत-प [शंक] दीवानी और कामरारीवें बानून। enverein-s fe] garker anreiter af

क्षपदाराजिशस्त-वि [1] जॉबवुक्त जिनके विश्वक मुद्रामा बाबर किया गया हो।

सेमाः पारिभमिकः वामा । - वान-पुदं विवदान'। -घर-धारी(रिम्)-दि दूसरेका वाना वारण करने वाक्षा । ~भगिमी-भी सरस्वती । ~भाव-प्र॰ वेदबाकी मकृति। -शृपा-की पदनावा, पासाका -युवती -योपित्,-वप् ∽वनिता-सी॰ भेगा । -वास-प वहता। -श्री -स्था-धी म् (किसीका)-धारण करमा-किसीकी पांशक धारिको सरक करना । वेशक-वि सि प्रिवेश करनेवाका । प्रापर । वेसम-प [सं०] प्रवेश करनाः मकान । वेसभी-का वि] क्योदी पीरी। **बेसर**−५ [मं]स्वर। वेजपार-पु [सं] दे 'देमबार'। वेस्रीत वेपीत-पु [मं] छोग ताकाव । बेशिक-पु [मं] दावदी कारीगरी, शिरपविचा ! मैशिका-सी [मं•] प्रश्य। पेक्स(शिम्) लं [मं] प्रवेश करनेवाका । श्रेद्रीज्ञासा−स्रो≉ सिं∘ो एक करा प्रवदावी । बेह्म(म्)−पु+ [ri] पर मकान। -कर्म(म्)-प्र+ गृहसिर्माण । -कस्तित -पुर्वस्ता-पु गीरवा पटका -इक-द्र विषया । -श्रटक-द्र गौरेनाका एक भेदो – भूस–पुपक्ष पीका। – मकुक – पुछन्निरा -पुरोधक-पु सेंच समास्तर कोरी करनेवासा (बी॰) । -भ-स्रो मद्मान बमानै योग्य स्थान । -बास-प्र• धवनायार । –श्यूष्या–स्तैः परका हुक्य स्त्री । बेदसौत⊶द्र [सं] शेव'दर कराकदाभा । चेदमादीपिक-पु [d] वर्षे भाग लगानवाला (बी०)। बेह्य-पु [तं] बहबाका वरः निकरवर्तीया अमीन मुभानः बद्दावृद्धि । –कामिमी –स्त्री-सी॰ वेरना । येश्यरंगना-ना॰ [सं] दुधका । पेश्वा~को [मं•] नाय-गान तथा कसवसे जीनिका प्रधानवासा स्वी । गनिकाः पाडाः यक वृत्त । - ग्रामन-पु • कामशामनाकी द्वारिक किय गणिकाकै पास बाना । -गार्मा(मिन्)-प (टीवान । -गृह-पु वहना । -घरफ-व वेदशा पट्टेबानेवाला बलाम । -खन-त्र वेश्वासम्ब । — समाध्यय-पु वश्वासय । -पन-ष्ट्रवासी भीगद किए दी जानेवाभी रक्षम । -पश्चि-प्र वेश्याका पनि आर । -पुण-पु॰ वेश्याका पुत्र अनेप दुव । —याम —येश्म(न्) —पु वेरवानव । मेहपाचार्यें न्यु [मं] (टोक्स दलाल जेहुला। गीठमई भरवार्षे रयानवाला । बेदपायत्त-40 [गं॰] जी निवाहत निय बदबायर निर्भर हो। बेश्याभय-५० [मं] देश्वालय । वेश्वर-९ (मं] सम्बर्**।** धेप-व [नं] नद्या मेरध्य रंगमंगद पीछ वेदार्थमा का रथानः देरपानवः कर्मः वरशः धुमा अशः। -कार-इ. नेरन पटन। स्थाम-पु स्ईमुसी। स्थरस वि वृत्तरेका भेम पारण करणे एका। - भारति (रिक्)-ी दे॰ रहपारी । दोनी । —भी-वि॰ श्रेर्रनापूर्वक

नर्दक्त । वेपण-प्र (सं॰) काममर्थ भूषः सेवा । बेपणा-सी॰ सि । पनिवा। बेपवार−प्र∙ [सं∗] दे 'वेसवार'। वेषिका-सी० सिशी चमेटी। बेपी(पिम)-विश् मिश्री मेस बनानवाका । बेटक-प्र. सि] वश्चिपसम्भेका ग्रका घोटनेकी ग्रेसरी । वेष्ट-प्र [सं॰] येराः फैसरीः शतका गरकाः मौदः भूपका पेश महा भाकासा पगती ! - वंश-प पक तरहका गाँगः रेशनंश्च ३ --सार्-न्यः भूषः गंधाविरीजः । बेप्टक-प्र• [सं] वरा बीबार, प्रस्तोताः पेका प्राक्तीः छानः भाषरमा गीदः भूप । वि॰ घेरमेशका । येष्टकापय-द (स) एक दिवरवान (प्र) । बेष्टम-१ (सं) बेरला अपेटलाः सपेटलेवाकी सीताः वेठमा पर्वती। पट्टी वंदा शुक्रदा चहारदीवारी। आवरण धीका वर्गक्रवरा यक करना गरबको यक नदाः बदस्तंत्रमे क्षेटी हुई एरसी; गुरगुक्त धहक करना । -बेप्टक-पुर चक्र रशिर्वध । बेष्टनक−प्र सि ी ल्इ रहिनेप । बेप्टनीय वेष्ट्य-दि सि विश्वे करहरे बोरका बद्या-सी॰ सि १ प्ररोतको । वेडित-वि [सं॰] वेरा हुमाः क्वेटा हुमाः वकाव्यानितः रीका बुभा, बद्धा पैठा बुभा (ररहोकी तरह) । प्र+ मृत्य की एक संदा। पेरमा। कपेरमा। एक शरितंप। पगढ़ी । वेध्य∽प सिं•ीवरु। येप्य-वि [र्च] विसने भेस बदका है (अमिनेताके रूपमें)। पुश्रमः कर्मः प्यतीः पटीः जल । मेसन-प्र[मं•] अने आदिको शक्तमे तैवार किया हुआ बाटा, दिवलपूर्व वेसन । येमर-९ [म] रायर अकार। षसमार−५ (धे] क्लि द्वा महाकाः विधे दद मांसमें शुक्र, प्रत नार निर्म मिकाकर तैनार किया द्वाना एक व्यंत्रत । थेस्द−प (चीचशिया। वेस्टकोड-पुरु [अंश] पतुरी आहेर । मेहल्-ली [में] पंच्या या पह गाव बिसका गर्म (Ar भाग । बेहानम-पु• (र्न•) वक तरहको निवित्र भारमहरूना (3)) 1 बहार-१ [मं] भारतका यथ प्रांत (शावव)-विहार । र्षे कि - पु [सं•] यक बोजपदनक मानि । चेंद्वि → पुं[सं] वद मुख्यिय माथीम जाति। विष्यानि [मं] विष्यपरिवर्शनिक्षा वैशासिक-विश् [मं] ग्रीममें गरीश दुआः । र्व∽० वि यो । स्रात्ति [सं] पक निश्चवीपक शास्त्र । मक्षेच∽पु०(सं] ४०६ पर्रतः वैद्यंत्रस-वि [सं•] विद्यंत्रका यता दुआ। पु है विश्वन । विरस-पु॰ (मं॰) करेड इंगार पर्ना दमा दारा वचरीय ।

स्पवद्वाराधीं(धिन्)-पु॰ [सं] नाश सुदर्श। स्पषद्वारासन-पु [तं] स्थायात्तन विवारासन । व्यवद्वारास्पत-प सि॰ प्रिरेशद गाकिश। व्यवद्वारिक-वि [सं•] कारवार-संबंधीः कारवारमें बना तुभाः कामून-संबंधीः सुक्दमनामः प्रपत्नितः स्ववदारमे भाननामा । - जीव-प्रवासमय क्षीप (वे) । प्रवहारिका-सी सिंशी रोडि रियाओ आह : बंग्शी । स्पबद्वारी (रिम्)-वि॰ सि । श्वारवारमें खगा हमा मकरमा कश्नेनतकाः प्रचलितः को व्यवकारमें व्याता हो । इयवद्वार्थ-दि॰ [एं॰] स्वन्दारक वीरय काममें छान बोम्यः दरने बोम्बः जिसके साथ व्यवदार किया जा सबै, ब्रिसब्दासाथ कियाचा सब्देः प्रथकिनः प्रयोगर्ने काने बोग्यः सदरमेधे कान्छ (विषय) । प्र॰ राजामा । स्पपद्वित-दि [मं] अक्षण रखा धुभा किमी वस्तुके हारा प्रथम किया हुआ। रीका हुआ। वाशिता आवृत्त परदा किया द्वां क्षिपाचा हमाः दूरवर्तीः जिल्हा समा सार मंत्रंथ न हो; पूरा किया हुआ संपादिश वपेक्षित छोबा हुमा: विरोधी । शहरा करनवाका: नीवा दिसावा

हुना । **म्यबद्धत−दि** [स] शापरित अनुधितः व्यवद्वार्या प्रदोगमें काबाद्वजा। पु व्यापारः शेषकः। म्यवहति – नो मि | भाषरण कार्यः संपर्कः व्यापारः

मुक्दमाः वातः करुवादः ।

व्यवाद-पु [मं] बाभाः पार्थक्यः व्यक्ति प्रवेदाः परि

वर्तनः मैनुनः संपरना कामकताः जावत करनाः कोपः প্ৰভাৱ সভাৱ কাৰি ধৰ। स्यपादी(यिन्)-वि [मं+] पृथ्यः करनेवाताः नीयमें भामेरासाः स्वाप्त दीनेरासा व्याचका कामका गसने बाकः । प्र. संपद्धः ब्हामोदीक्क पदार्थः ।

म्पदेत-वि• [मं] एवद किया हुआ (नीयमे अक्षर बादि रसदर): मित्र ।

भ्यशन-दि [सं] भोजनस् दरहज उपरास करनेशाला । व्यष्टक−त सि किल्मीसरमी राई।

व्यष्टका-न्यो [मं] हृष्य पद्मदी प्रतिपदा । व्यष्टि-मी [म॰] प्राप्तिः एकत्रता व्य दोनदा वान-

समक्रिया एकः स्वतन्त्र क्षेद्य ।

स्पष्ट-प सि विशेषात

ध्यसम-पु [मृं] निकासमाः पृथव करनाः भव करनाः शानिः मास्रा पराजवः न्हामी शुद्धिः मंदद विपक्ति दुर्भाग्यः (मूर्पादिका) अग्न काना पात दुरावरणः वृत्ती भारत तत संवानता। बहुत क्यादा जारी होता दक्ष सदीम्यनाः निष्यतः प्रवसः वायः स्पष्टि वदशाः विव विषयः -काल-पु मेरतका समय दुष्टिकः - महासी-(रिम्)-रि वह देनेवाचा (धपुड) क्रमणार अंगार बार करनेवाला । --प्राप्ति-की दुरिम व्यावा : -- महा चारी(दिन्)-पु सारसार दूजर भीगनवाजा र -महागव-पु विश्विदा मागर I -रक्षी (शिन्)-वि संदर्भ स्वानेशनाः -यागुरा-स्व वाल । −संदिधत-दि विगी स्वत्तनमें मतन्त्र रहते 4.64

श्यसनाकौत−वि [गं•] मुंब्रट्रपस्त । ध्यसमायम-५० मि॰] दतिनका भाना । व्यसमाधिमार-पु॰ [सं] बहुत बड़ी विपश्चि। वि• विपश्चिके भारसे बना तथा। व्यसनाध्यय-४ [सं] संबद्धा गुजर बाना ।

व्यसमान्त्रितः व्यसमाप्तरत-वि [धं] संबर्धे पहा दुभा विषद्ग्रस्त ।

व्यसनाव-वि॰ [सं] संदरापत्र ।

क्पसनी (निस्)-वि॰ [मं॰] जिसे किसी विषवका बहुत चीक हो। विषयासका किसी तरी चीत्रका जारी। पापी। क्रमसीयः क्यमके साथ परिश्रम करमेवाला, किसी कार्य-में की कामसे कमा बना।

व्यसमोरसय-पु [सं] पानोत्सव, भैरवीक्क । व्यसनोदय-५० [सं] ब्रिनिका श्रामा । व्यसि-वि [सं] सद्दीन।

स्वस-नि॰ [सं॰] निवाद मृत्।

व्यस्त-वि [सं] पेंक्रा हुमा यक्षाका हुमा। तिवर-विकर किया हुमा विधेरा हुमा। इटावा हुमा। निकाला हमा पुनर किया प्रमाः व्यक्ति क्यमें अक्य किया क्रमा। समास-रहित (ब्या); विभिन्नः अवद्शया द्वभाः श्रुक्तः जी क्रममें न ही जो टीक दाकतमें न हा; उनदा हुमा; स्थाप्त निव्दितः कार्यादिमें संन्ताः क्रमञ्जा हुमाः परिवृद्धितः। -केल-वि विसक वास विद्ये हों। -स्पास-वि• क्षवत्र-सावतः सिमटा द्वारा (बिस्तर आदि) । -पत्र-पत अदासत्तर्मे दिवा हुवा गंधवर वयान प्रत्यारीय समास रहित पर (ब्बा•) ।~चृत्ति−ि (धन्द) जिसका बास्त

विक अर्थ वरक दिया गया हो। व्यस्तार-पु+ [सं] मस्त दानीके मन्तदमे दानका बदना मद्रयाद ।

व्यस्थक-वि [सं] अरिवहोत । व्यव्यक्ति, व्यव्य-विक [मं] एक हो दिल न दोन्दर निक्र रिवसापर दीनेवाका ।

व्याकरण-प [मं•] वह विद्या विसद द्वारा भागाहे शब्दों वनके रूपी प्रयोगी मादिका दान क्षाना है। भद र्थनरः व्यास्याः मद्दारानः परिपदानी (वी)। निर्माप

र-बना। वनुष्दे रंदार ।-प्रक्रिया-मी॰ सम्प्रसन्ति। -सिक्-वि जो ब्लाइएएके नियमके अनुसार हो।

वशाकरणक-पुनि] बुरा व्यादरण। ब्याक्र(जोत्तर-पु [ग्रे॰] हिर ।

व्याक्तां(गुं)-पु• [मं] गरा परमक्त स्वास्थाकार । ब्याक्यण-पु [मं॰] आपृष्ट दरना सुमाना। व्याकार-पु [मं०] स्प परिवतना विकार अमिविहति ।

व्याक्षीर्ण-वि [ने] केलावा विरोत्त द्वमाः अस्य-व्यत्यः ब्यापुन सुव्या मु अर्पब्दल्नहाः गर्पप्रा

व्याकृष्यस्य-दि [मे] मुत्रा दुमा विकृता दुमा वस म्{रेपः ।

व्याकुल-वि [सं०] वरशका हुवा क्षत्रपदि। स्वास सीतः अधिमृत्रा किनी काममें शता हुआ। तकीने प्रशासकर यमना हुआ वरित (देश दिवत्)। -विश -वरा-(हम्) - सनम - सवा(कम्) - हर्य-वि विमुदा

4000-1200 THEY ENGRADE HAT BETTER HER SENT 79 41 The same of the same of Spite it , gother of win again! Septente in Shir shatt Je fremfer de fier eteinet als gegalain इस इट्टेडम व बैक्य - उ० [स०] बालन मुनि । बुक्क यम-पुरु [होरु] शहरदका बीसवर । क्षेत्र-र-पुर [नंग] विषशुद्धा वय करनेवालाः वक्षिपद्धावा प्य निधेर जाग नारे (१)। तेक्षतंब-[व॰ [सं॰] सूर्य-संपंती । यु सूर्यका प्रत कर्णः स्थीत । -इस-पु स्वेदेश । क्षेत्रमे-पु [सं•] बालव सुनिश बुष्यमं । केवर्य-पु [मं•] सनियवता विकासता। क्रिक्टिन मि [सं] देन्तिका संदिष्य अमिथित । हें करम-पु+ [र्स+] विकल्ता झीम क्लेबना; बीच हारि: स्वसदाः पंग्रदाः निर्वस्ताः क्रक्तिमताः अनरितस्य । बकायम नपुर [संर] यक गीवकार वानि । Amila-वि [सं] विकार-संगंगीः विकृत विगता हुआ। परिकानकोकः परिवर्तित । प्र विकासः भावानेक । --कास-पु भूनके निर्माधमें क्यनेवाका समय i --कंध -प वंबसद तीन महाँमेंसे एक (श्री) I केळार्व -पु • [मं•] परिवर्तमधीकताः परिवर्तमः विकार । केंद्रास-५० (do) बक्तका लेका । र्द्धातिक-नि [सं] संच्या संबंधीः संच्या समय दीने-वाला । प्र संप्ताधानको प्रार्थनाः व्यासः। बेकाकीम-नि [सं•] हे 'नैकाकिक'। बेक्टर-वि (सं•) स्पदादर छात्रा हुना । -वारि-ड **१९६७८र छाना दुवा बरू** । बैब्रंट-इ [मं॰] रंदा निष्णु हुल्सी विष्णुनीक स्वर्गः अपन्या पत देववर्गा एक साम (संगीत)। -गति-को भिष्युनीक्रमें नाना। -चतुर्दशी-श्री क्रार्टिकशुद्धा मनुरक्षी। -पुरी-सी॰ किलुका वनर। -शुकन -क्षीय-इ विभागेद। यक्रीय-विक [तंक] बैश्व संबंधी । क्रिक्स-नि [सं•] विकृत क्रिकारमाना विकारकन्याः परिवर्तिका परिवर्णनशील विकारी । व अवंतार नवं मादा चरिवर्गन विकार, करविकृतिः विकृत अवस्थाः प्रवाद बीमत्म रहा राज्या अहेगा संबद-सुबढ करना या स्थान ! - पर-पु॰ एक तरहका कतुनिवरीत क्वर । -वियत-इ क्रेग्र क्रकाबा पेहतिक-वि= [ने:] PERCHANI (HI) (F) संक्रा-त [अ] परि भागार्थ। 🖫 🛊 करेगा गोमसा ! केंग्रम-वि [सं] विकर् [#•] 15%

परिवर्तनशीकः । बैक्क बैक्क्य-पुरु [संर] विवस्ता स्वानुकता देश श्रीकः वस्तम्बरतता । वलरी-की [सं] बंडरे स्थार्वमान स्वर्रियेश गर श्रविद्र शान्त्रेगी सरम्बद्धी । वैद्याम-प्रसिशे निम्न । र्वेच्यानस−वि सि•ो शतप्रस्य बाग्रम-संश्वो । प• शर-मस्यः वपस्याः। विकासिस—वर्शिषद्व रोजकार कवि । वैकामसीबोपनियद्-ला [तं॰] एड वपनिषर्। बैकारक-वि (तं) बरपरा बीर समध्या । व वेता स्वाद । र्वगिधिक−दु[ई०]शंथकः। र्वेशियका∽मी (तं}रकपीपाः वीरानेट-मी (अंग) नव तरहकी चौपहिया धोपायापी निमुखा कपरका परदा समदा वा सक्ता है। वैग्राधेय-त (सं॰) का प्रवर्त । बगुच्य-पु॰ [मं] गुमदा भगत गुपराहिता वर्षी गुजाँका जमाना दीनः सुतिः गुज वा पर्मकी विकास हीनताः बरुप्रकतः । वैप्रक्रिक-वि [सं] छरीर-एंपेनी, शारीरिक। बेशरिक-प [न] बीहरी। बयसिक-दि॰ (ते॰) पटन यानेशमा । वैद्यारब-दि [र्ग॰] यात करने मार शानने सावक । देशप्रवय-पु [ले॰] पाह्यदे। प्रशासनाः। वैचित्य - त [शं•] यनकी जस्तम्बस्ताः यमः जन्मधनः स्कृताः संद्यादीनमा । वैचित्र-इ [नं] शिषवता । -वीर्य-इ प्राराष्ट शंह और विदर । नवीर्वेश्वनवि विविधारिनेमंत्री । हेक्किन्द-च [मं] विनित्रद्याः अमीम्पादना भिष्टद्याः क्षेत्र, अंतरः शंदरताः वाधर्यः गमः मेरादय । वैरपुत−९ [मं•] एक करि । बैच्युति न्यो [शंक] श्विमकताः पत्रमः। विक्रमण-तु [नं०] यर्चका श्रीनम् माम । वि प्रथमक येज्ञस्य-पु (श्रे॰) एकांग शिशेनका। विज्ञवीस-त [अंक] देहजामा दा वहा रहेत स्वेता स्व क्षेत्रा नरूनी प्रशिवन कृषा प्रशाह रहेकी अन्ताह हाती रत्योग अवर रिवम एक भेरक (रे) ! वैजयंतिक-नि [में] शेरानएशर शक्षा क्यानैशमा बेजबंतिका-सी [ले] प्राधा, श्रीशा वस तरहसी <u>भुष्पादारः व्यक्तियेवः अर्थनी मृश्च ।</u> र्पञ्चली-सी लिन्दे हत्या विश्वा विश्वपनाचा नान्ति श्टबनेवाची वॉच रंबोबी एक शहबी नामा रिचा[®] शर्वती पुत्र। व्यक्तियंव । < [वं] दिश्व मंदिरे। दिश्वशालका विशेष दिन नेश्वित । " Bier felbes mei's Ru

व्यक्तिसा-ध्याप दिक पहुत परताया द्वभा हो, स्था। -मूर्यज-विश विसर्व गान विसर् हों। —सीचन -वि जिल्ही शर्र र्मंड ही पश्ची हो । स्पाकुरुगरमा(रमञ्)−िव (सं०] दे 'स्थायक-थिस । व्याकृतिस्त - वि [र्थ] ववदावा हुआ। शीत । - चेतव -मना(नस) - हत्य-वि करा द्वशा प्रवस्था द्वशा मसिभन । दपाक्रऐंद्रिय−दि मि दि• 'स्वाक्क-किस'। रपाकृत-१ [एं॰] मानसिक काः अधरोस । वपाकृति-की [र्च•] इस कपर। तरी नीवत ! व्याकत−वि [मं] पृथ्य-पृथ्य किया हमा। सदट किया हुआ: निरहेरण दिना हुआ जिल्ली स्थायना की नवी ही। क्रपांतरित परिवर्तित विकास इपाकृति नमी [मं•] पार्थवय मेर, अंतरः विरुक्ताः स्वास्याः स्थ-परिवर्गनः स्वास्टरच । व्याकोच-वि [र्ग•] दिवा द्ववा, विकसित ! ध्याकोप-प [ग्रं] बॉन्न दिराच । म्पाकोश स्थाकोप−वि (de) विकासशहाः पर्यंत **भिक्ति प्रश्**तः स्थाकोश−व [मं] गाठी देना अर्लाम करना विकास । म्बासिस−वि [सं] फैलावा द्वमाः " से प्रदा द्वाः इत्तर्राह्यः हैरान् । व्याक्षप-त [सं] परशाहरः अस्तव्यस्तताः गापाः विश्रंश मर्स्तना ।

व्याक्षण-तु [ध] पवनावरः करनव्यस्ताः वाचाः विषेतः सर्वानाः वरपासेपी(पित्र)-वि [ध] कृर वर्गनेपानाः, वर्गनेपानाः । वरपासेपी(पित्र)-वि [ध] द्यानाः स्वान्ताः । वर्षाव्या-सा [ध] वर्गनः वरादिकः वर्षाः वर्गनः वाका विदर्शः श्रेष्ठाः वर्गनः । नागन्तिः स्वान्तरः

विदि सम्हात वावेवाका । पु स्थाप्त कामा । न्याय्य-प्र कार्याम्भयना तिशान्त । न्याय्य-पु यस्य रस्य (म क्ष्या म सीका) । म्याय्याय्य-दि (च्रि) क्षिय्ये व्याय्या ग्रीह्म यी व्यी ही। वरित्रा वर्षिया प्रयाद्य (छ) । ग्याय्याय्याय्य-दि (च्रि) व्याय्या करने योग्य, निन्दी व्याय्यायाय्य-दि (च्रि) व्याय्या करने योग्य, निन्दी प्रयाय्याय्य-वि (च्रि) होता करना व्याय्या स्थाय्या हरने हो। प्रमाय्याय स्थाय (क्ष्या) । प्रमाय स्थाय स्थाय (क्ष्या) वर्षेया भारत्य वर्ष्या। व्याया वर्षाय स्थाय (क्ष्याया) वर्षेया भारत्य वर्ष्या। व्याया वर्षाय स्थाय (क्ष्याया) वर्षेया भारत्य वर्ष्या।

स्यान्येब-६ [सं] स्थाल्या वरन समाप्ति वारकः स्यापह्म-पु [सं] रण्यनेत्री क्या, संवर्षमः संवत आर्थापनः स्थापदिम-दिव सि] रथवर प्रसार वित्य सामीदियः

वालारात । स्थापित्त - (१ मि.) रेशशा तथा तथा व्याभीतित । स्थापात - ९० (में) थेर व्यापात वश्वत । शेषा प्रत्या बारा निया (री वालीका) बरत्य विशेश यव व्यापा-स्थार को त्या व्यापात होता निया वालाने जो वार्य (स्था वाल, वर्षा स्थार व्यक्ति हाता नागे व्यापे) प्यत्ने । / 1866
विकरित किया बात बच्चा जर्म सरस्य निर्देशे
कियाओं बस्य वक शे कार्यक्री सिदि होना रिप्तना
वादा एकार्यक सोनोंच एक (क्या-)।
वादायातक व्यावादार्ग(विक्न)—वि (छ॰) अन्या रानेवाचात कर्माव व्यावादार्ग(विक्न)—वि (छ॰) अन्या रानेवाचात वर्षाव व्यावादार्ग(विक्न)—वि (छ॰) अन्या रानेवाचार विकास होनेवाची हुन्यु।
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिल्का, प्रोटा हेना)
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिल्का, प्रोटा हेना)
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिल्का, प्रोटा हेना)
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिला वापत होना।
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिला वापत होना।
व्यावाद्याव्य (छ॰) शिला वापत होना।

व्याप्रणित-वि॰ सि] शहर स्थाना क्रमाः <u>साधा तथा</u>। व्याप्र-५ मिन्ने यह दिस्य बेत वादा (समाप्रोति विश्लेषण करों प्रयक्त। सांध्रिय प्रधाना एक एरा क्टंब क्य राह्स। -निरि-५ रह द्रएगेव वर्वतः । –धीय-पुः २६ समस्र। बंटी-मो॰ एक वहा किंगा। -धर्म(म्) पुर बादकी द्वार । -हस्त-दस-पु राट रुड -ब्रेंड-व व्यः गुरुष । -स्ट्रा-पुरु वापदा कर रा वंज्ञा नदी नायक वंबह्न्या नायक सम्बद्धा छता रह कुर ।- महायह-पु एक ग्रंत्रमा ग्य प्रशास महारू। ~तसी-सी यसी नामक वंश्रद्भ । -मापंक~3 श्रुगाल । - पन्-पु क्य शैवा । - पन्-वि वामदेवे पैरोबाका । व एक पीथा । --पास् (क्)-व विसंका um मित । दि है + 'न्यासक्द । -पास-त विदेशमा Do बायके से वेटोंबाना । -पाइपी-मो सिक्टर -११च्छ -प्रच्यक-५ शक्ती हैंछ। इर्रह । -११व्य-तु तस नायक वेशहण ! - मुल-५ तक वराता १६ ब्रह्मपाः विकास । -स्टार-सी॰ वंध्वाप्टरी । -सीम (स)-प्रोरके वाला ग्रॅंडपर च नाम वृंछ । लखनग विक बानके से सरावामा । अ विद्यामा विकास एक सन्। -बा(क्षम्)-व व्याप्त देना अथा । -संबद-५१

व्यामाण-दे [सं] द्विनेश दिया । व्यामाण्यमी व्यामादियी-यो० (ते०) विद्या । व्यामाण्य-दे [सं] एव गण्यव्य वटा । व्यामाय्य-दे० (ते०) शिकी। देखा द्वय । वि देएं ने क्रासाय-

व्यापादा - व ि वे विशेषा वह अस्पता वह राहर

्तरस्थान्यः व्याह्मसम्बद्धाः [सं] ९६ शहरीरी र व्याह्मी≕सो [सं]शस्थितस्थरकारीः ९६ नरवदीकीः

श्वाम । -इस्त-९ (क पर्र !

(व)। दि बाबद्यान्ते शोधीवासा ।

ब्बाह्मार-१ मि ने मन रही।

यक गंव का महोह का वीम देवी । क्याम-बु [मंक] एक पीछा, वरेदा बहामा कीएक वृत्तिहा बुक्ता ह -काइ-बु कावशे बदाम ह नगुरू युक्त काही पुरु काम वहतेवाला, मधनी एवं ह-सर्वीदर्स

पूर्वता बृहरा ४ —शहू-पुत्र वसावध बरण १ - १५ २० कर्या प्रकार गर्भ १ - सिद्दा-सी १३(थी बेण्टी निशाबह कामार्थश, जर्श दिन से १३(थी बेण्टी

```
सरोग•-वि• असदाः कठितः।
अमेरत, अमेरानक, असेरानीय-वि [धु ] जिसको
 रेक्नेसे एपि न हो। अरविक संदर ।
सरोवन-वि॰ (तं•) सेवा म करनेवाकाः चवेका करनेवाका
 मन्त्रास प कर परिस्थाग करनेवाका । पु॰ उपश्वाः स्थागः
 ध्याम म हेना ।
बसेवा-सी॰ [सं॰] (रोगी भाविक्य) सेवा-धूब्या न
 करनाः वरेशाः ।
मसेवित-दि० [सं०] उपेश्वितः विसदी कोर व्याम न
 रिवा गथा हो। फ्रिएसे परहेज किया गया हो।
सरेसमेंद-५ [अ ] यह सगानके किय सकान अभीन
 चारिक्षे मारिशत बाँकनाः दक्षसीतः, करको रकम निश्चित
 दना । - माफिसर - प० तप्रसीसका काम करनेवाला
 स्मैवारी ।
 पतंसर~पु• [अं] फीक्दारी मामकींमें बन वा मनि
  पुरेको समाह देनेहे किए सुना गया व्यक्ति करकी मात्रा
 निर्दारित करनेवाकाः कर क्यानेके किए लाव, मास्त्रिकत
  व्यतिश्चे वॉच क्र्नेशका ।
 बस्तिक-ति [मं•] बिसका संबंध सेनामे न हो। मुश्यी।
 मसैकार-वि कुमर्गायामीः अनुचित् ।
 बसोक∽वि, पु०दे० जञ्जोकः।
 मसोबी-नि० दे 'बडीक'।
 क्सोच-वि विवास्टित, निर्वह ।
 महोबां-पुबाश्वन मास, कार।
 मसोड-वि[सं] जिसका सहन म किया जा छके। जो
  दश्रमें न ठावा जा सके।
 बसीसः - वि न समनेवाका अञ्चीव्य ।
 बसोसियेसन्-प्र• [बं ] इंप समिति, सना।
 वसीवर्व-दु [सं ] सुरुरतका भगाव, कुरूपता ।
 सर्वित्र-की दुग्य !
  वमीच-पु॰ हे 'असीच ।
  वसीम्य-वि• [मं•] सतंदर, सदाः अप्रिय ।
  नसीप्रव-वि [सं•] सीन्पंडीम भदा कुक्स । पु॰ निकः
   माक्त, गुनामानः बदापन, नुकप्ता ।
  मर्द्धहित∽दि [मं] जी गयान हो। जी फरान दो'
   मनाकृति ।
  मस्त्रच~वि+ [मं+] मस्तिर्थं भी भटा म बाह का उनका
   <sup>व क्या</sup> हो अनामता स्थायी विकास ।
  थस्कर्−पु[म ] क्रम्कर, सेना।
  बाब्दी-पु॰ [बा ] सैनिक, सिपाती !
  बाबस-३ [सं०] अस्ति।
  बन्द्रहित-वि [सं ] जो पिसल-बगमगायै मही। उचा-
   ति बारिम मुख्युक न करनेवाकाः शुद्धाः सरप्यसं म
   गरदनेशालाः अच्युतः।
   बर्गात-वि[सं] ब्या हुआ। नष्ट छुस ।
   पता-वि [तं•] इवाहमाः पेता हुवाः वतः समाप्तः।

    (एक पहुंच्या) क्रानाः करस्य द्वीना शासः पत्तन नंतः

   नीए। इंदर में बम्मछे साहवाँ सान । -गमन-पु
```

सं• रक्ताहिनो मार्था । −विमोहाण~पु० अन निक

```
क्षिप्रदर्ग - व्यवस्थ - वि• विकार-विकार वर्षी क्षा विश्वास
 हुआ, जन्ददरिशव वेतरतीय ।
सस्तन ० प० दे 'स्तन'।
अस्त्रज्ञी-सी मि विश्व क्या नहीं के बरावर स्त्रनीयाओ
जस्तवस-पु॰ [ब ] अवशाका, तवेका ।
अस्तरध-वि [सं ] धवणया हुना चंद्रक, अस्थिर। विनयी।
अस्तमती-सी॰ [H] शास्पर्या ।
सस्तमन-प सिं। इवना बस्त होना ।
अस्समित-वि [मं ] अस्तगत ।
अस्तर-प सिरे कपड़े, जाते आदिका भीतरका वह, भितस्त्रा
 जेतरीया दशको बमीना विश्वको बमीन गॅपनेका ससाठाः
 मीचेका रंग। -कारी-सी पलस्तर करना चुनेका छेप
 करना । - बही - सी तसकीरकी बनीन वेटिनेकी परधर
 को पही ।
अस्ताध-वि [स्॰] बहुत गइरा।
अस्ताच्य अस्ताहि-प [सं ] पश्चिमका वश् करियद
 प्रवंड जिसके पीछे सर्वका बन्त होना माना भाता है।
अस्ति-जी [र्ट ] स्था, मार, विद्यमानता । -अस्ति-
 –श वाइ-वाइ। –काम−पु॰ सिद्ध पदार्थ (वै )। –
 क्र्य-वि भावस्य 'पाभिटिव'।
कस्मित्द−प [पं] भत्ता इस्ता विषमान द्वीना।
श्वस्तिमान् (मत्) - दि॰ [मं ] माल्टार ।
असा-अ० [सं•] जो हो, प्रमा हो।
श्रस्तुति नदी॰ (मृं ) प्रश्नेता न करनाः •दे० 'स्तृति ।
शस्त्रत-पु॰ दे॰ 'उस्त्ररा'।
अरसीय-पु [मं] बोरी न करना चोरी न करनेका प्रता
 बोगके अनुसार पर यम ! — ग्रतः—पु॰ आवस्वकतासे
 अधिक बन्तुके संग्रह का उपवानको नोरी मानना ।
अस्तोत्य - प्र [तं ] काप अस्ता वदना विगश्ना।
अस्याम-प्र सि ] यस्त्रीना निना।
अख-पु॰ [तं ] इविचारः फेंक्टर चकाया थानेवाला इवि
 बार (शाध बारि) मंत्र-मेरित शण शादिः बनुपः बार
  कारका जीवार, नरतर । - वटक-पु० शम । - कारा-
 कारक -काश(रिम )-प दनिवार नेनामेवाला । -
  विकित्सा-सी चीर-पा", छरव विकित्सा ! - जीव।
  -श्रीवी(विन्) -धारी(रिन्)-पु छैनिस। -धंध-
 पु वार्णोकी अविराम वर्ष । -मार्जक-पु अन्य साफ
  करनेवाला । —स्राधव—पु॰ बला चलानंदी कुग्नलना ।
  -विद्या-ली अम्पर्नेपाननको निघा गर विद्या -
  क्षेत्र-पु धनुकेंद्र । -- सम्ब-पु करवान्वधिवार । - शास्त्रा
  -सी अस-सम रहानका स्वान !- निका-सी॰ अस
  संवालनकी शिद्धा । -सायक-पु॰ डोवेका नाग ।
 अस्तातार-पु [मं ] श्रवाश्विदार रहानेदार्भहार, मल्ल
  ग्राना 1
बासी(किन्)-वि [र्नण] शराते कड़तवाका, भागवारी।
```

चक्र। -सवस-पुर व्यवद्व कानसे सातवाँ कान। -सव-प्रकट कव्या (सर्व सावका): सर्वके साव

भग्य ग्रहोंका योग !—सस्तकः—हि।**य**र-५० भरतायम्बा

भव्यक्ति-वि सिंश्] विना सीका, रेक्षका । शस्यक्र≠-प• दे• 'स्वव'। सस्याई -- नि है 'रवाबी' । भरथारा-वि॰ [६ं०] बहुत सवरा। सस्थान-वि [सं॰] बहुत गहरा । पु॰ दुराश्वाम वा अव-सरा भरे॰ 'स्थान । मस्थामी(पिम्)−पि [सं•] भो सरा वा अधिक रिन रहनेवाला ग दो खाणिका नरिवर । भस्याबर~वि [र्स•] स्थम, चरू (संपत्ति) । मस्यि-सी० [सं०] इन्ही। मिरी । -कुंब-प यह गरक । -इन्द्र-व-तेस(स्)-पुरु,-मजा-सी॰ हत्योके अंदरका स्मेश क्या - मंद्र-पु एक प्रशीव क्दी । -धम्या(म्बन्)-पु॰ शिव । -पंत्रर-पु॰ इन्दिटबीका धीवा संकाश । -प्रशेष-प्र शक्के बक्तनेपर भये हुए मस्पितंबीका गंगा बादिमें विसर्जन । -बंदान-पु॰ रमाञ्ज । ~भग-पु॰ इदहीका दृद बाला । ~सम्र अक्(फ्)-प शरित्यों दानेशका, क्रुता । -श्रेष्ठ-इ दे॰ मरियांग । -साझी(सिन्)-इ छिन।-विशह-वि बहुत दुवका। प्र शिवका एक अनुबर, थंगी । -श्रंकस-च्ये ;-संदार-तु ;-संदारिका-की॰ प्रविमान् कृषः । - सेप-वि॰ विस्ते सरीरवे हरिट वॉमर रह गर्ने ही नहुत हुनका !-संख्य-न श्रवदाह के बाद गंगा मादिमें प्रवाहके किए हदिएवाँ वा राख करूप करनाः शरिवर्गेका केर् । ~संधि-स्ने इन्डोका बोड । —सभव-पु॰ मधाः। वजः। —समर्थक-पु॰ मंतित अस्थिबोस्टी यंथा मादिमें कॅबला । -सार्-अमेड-प् मचा । सरिपति-सौ॰ [सं॰] रिवर्ति या ध्वताका अभाव। मर्वादा-का अमाद । शस्पिर-वि॰ (एं०) की रिक्षर म हो, टावांकीक, चंचल; भनिश्रित वे मरोसेका । **सस्पेर्य-**प्र• सि ी शरिश्रदाः । करनाविश-वि सि निम्यसदीमः श्वक सरीररहित । श्रारिमम्ब∽वि॰ [सं] वी विक्रमा मं द्वी। व्रतिमा शुप्ताः निर्देश । – बार्स-प्रादेशशास्त्र एक सद । **अस्त्रेड**−९ [मं] त्मेडच्य समाव । सर्यंब-विश् (संशे) रर्परक्तदीम न हिस्से उत्तमेशता। भर्यतास-पुवनासामा, विक्तिसक्तम [बंश्वारियरक] । अस्पष्ट−रि सि ी जो साक दिसाई म दे वा नाफ समझ-में म आपे, पुंचला, संदिग्य । अस्पूर्य-(40 [तं0] स्पर्धे अधीव्या म छने कावक, अपूर्व । अरप्रस्तानशा॰ [तं] रण^डक्म अयोग्यता असुनरत । -बांबोएम-पु॰ अएतीहार-स्थाप्त मिशनेक अंदी-**事有** 1 अस्प्रप्र-वि [d] म स्याद्रमा अपूर्वा। अस्प्रह-वि॰ [सं॰] मिलीम, जिसे कालप म हो । बारकार-निश् [सं] जरपटा अत्रका । अस्मदादि अस्मदादिक-सर्व (श्रृ)[र्छ॰] इम कीव t

भागमशीप−वि [गं] मेरा ।

सरमद्—सर्व•[सं•] मै [अहमारिका प्रातिसरिक कर]। हु• भीवारमाः, प्रत्यगारमा । ब्बस्मार्त्ते – दि॰ [तु] वर्षपराविषयः, व्यवेश स्मानं स्ट्रासः का मही स्मृतिसे परे। अस्मिता—सी॰ (सं॰) नहंता, अहंदारा योगलानोच पाँव मकारके हे जीनेंगे एक। अक्ष-पुरु [संर] क्षेणा रक्ता भाँगः केसरः वेशः। --कर--प्र• वाचा - सर्विर-प्र• रचस्रीर वृक्षा - श्र-वु• सांस । -प-वि॰ एक पीनेवाला । पु॰ राह्मा नृप सवात्र । -पत्रक-पुरु मिटा बुध । -पा-सीर प्रीका टाकिनी; सुकेत । --पिश्च-प्र ग्रुस्स मार्दिने सूत्र गिरनाः रक्तपितः। -पत्काः,-पत्की-मान् मान्धे मान्ध पीषा । -मानुका-सो श्वरीररस । -सेबिही-सी समात शासक पीचा । - विश्वच्यदा - सो॰ कप्रमा बंद। मस-प्र• [म•] काना तथा प्रशा दिवदा प्रीमा पर । —की समाज∼शामको बमाज। असार्थं छ−प [मं∘] स्रेत तक्ती। कस्त∽प[सं]दे• अन्तः। अस्क-पुरु [अरु] यह, मूर्व; वीत्र; स्वादे; मून वर्गः मून वलाः मञ्जनका वलटा । दि० दे 'बस्मी' । --प्र-बारतवर्गे, सुच्छूच । **भरकी-वि॰** मीलिकः साहित्यः राताः समा । सम्मीवत-न्दी॰ वस्तस्वितिः सदी स्थिति वा स्था वर । अवर्षत−वर्गात्रको सम्बद्ध के 'अप्रसंत' (अस्ब-रि॰ [मे॰] धस**रो**न । सन्तरात-विश् मि ी ग्रेसा भेषमा ! अस्वर्सं स-वि [में] स्ट्रांच पराभीम । ध्यस्यम्न वि निश्वे विद्यार्शहरू । प्रश्रहेनताः सनिहा । **भरव**माव∽वि॰ मि }े निश्च स्वजानदा । प्र॰ मिश्च ना अस्वीमाविक रुप्तरा करकर-विश्मिने वरे स्वरवास्ता अग्यहः संद्र (सर) । प्रश मंत्र स्वरः स्वंतन दर्म । अस्वरमें-वि+ [मं+] जिसमे स्वर्गकी प्राप्ति न हो। व्यस्तरप-वि॰ [मं॰] अमङ्क्तिरथ अनुसन्। रोदी। बस्यायुक्टक-पु [थे॰] क्रोग्रम । अस्वाधीन-वि॰ [गं॰] वी इसरे दे बहामें ही। मरबाध्याय-वि॰ [तं] विमृते नेदीकी मार्गात गरी में हैं। किएमें नेदोंकी आपूर्ति सभी भार्म मधी को है । 🖫 वाद्यचिके अंदर पहलेगाना व्यवसाय वा अवक्राध । अस्यान्माविक-विक्शिके रेसवाविक्यः अनेमिनिक, बनावप्रै ! कारवासिक-वि नि विधा सानिकका कारारिम । प्र* बह भन या मंत्रीच विश्वका कीर्र कावागीर में ही है अस्वामी(मिश्र)--वि॰ [पं] मिनुका सरव म रो। विमान की शाक्तिर म हो ।~(मि) दिक्य-9° देश विक्रम जिसमें वेधनेवाला विक्री वस्तुका स्वामी न बी -संहत-वि ज्ञिन्दा मैमापनि माना म गना हो। बस्याय – वि॰ [चं] मिक्रमाः मिन्तार्वः प्रात्तीनः। कश्वास्थ्य-पु [सं•] रीम बीमारी (अभिवस-विक वि कि अन्ति तरह उनामा वा बंदावी म पदा दी।

निया 🏗 प्रकृत हो भवना वहाँ प्रकृती निया करनेसे किसी सम्बद्धी सिंदा प्रकट हो। -निक्रित-वि॰ सीनेका बद्दाना क्रामेदाकः । - दमसद्दार-पु श्रीस्टक्षपूर्ण, वृतीता पर्ण स्पन्तार । -शासी-सी पदली सहेकी ! -सस-वि दे म्बामिनिहत । -स्तुसि-सी निवाके वदाने रतुति। एक काम्यासंकार जहाँ देखानेमें तो किसीकी निवा की बाब किंत समझनेपर वह स्तृति अकृत हो अवना नहीं किसी पक्षकी वहाई करनेसे कान्यकी बढ़ाई जान पड़े। च्हत्त−वि चोसादैकर मारा हुआ ! व्याकामिप्राय-९ [सं] यनावरी राथ। ध्याद्वाद्वय−पु[सं०] दरका हुव्या जकती नाम । क्याक्रिक्र-∸दि सिं•ो सकाहजा कुटिक । क्याभी -- क्यो ० [मं] तीष्ठतेके वार बुत्त वे देना वसुका। ध्याक्रोकि - स्रो [मं] छलपूर्ण बातः यक्ष काञ्चाक्रकार यहाँ प्रकृष्ट होती हुई बरतका कपटने बहाना आदि बनाकर, गीपन किया जान । व्याह-पु [सं] (व्याधादि) दिकारी जानवरा सर्पः सक दसः इंड । वि देशेः नराई करनेवाला । प्यादायुक्त-प्र [सं] सन्य भागक गंगहरून । प्यादि−प [मं] एक प्रसिद्ध वैकाकरण। ध्यास-दि॰ मि] स्रोका हमा, ग्रेनाया हवा (मुस्टे (क्य) । ५ चीका या फैकावा हुमा सुख । स्पाचाननः व्याच्यस्य-दि [मे] विसका गुरा जुवा को । म्पारवृक्षी-स्प [सं] अन्त्रहोडा। खेलमें एक दूसरेपर वाली च्छान्यता । म्पादान-पुसिंगी सोकते फैलानेकी किया। म्पादिस-वि (सं) योका फैलाया हुआ । व्यादिश-प्र [सं] विष्त्र। प्यादिष्ट-वि [र्ग] निर्दिष्टा भाविष्टा न्यावमाता पहके दी दश हमा। व्यादीर्ण-दि॰ [मं•] फेकामा हुआ। ध्यावीर्णास्य-प (सं) भिन्न । म्यादेश-पु[मै०] विशेष अधिश । ष्याच~त [मं] दिकार हारा श्रीविका अकानेवाणी एक संबर मानिः यह पेशा करनेवाका बादमी बहेलियाः मीच वाक्रमीमा वादगी। -शीति-शी पटेलियेडी (बामवरीनी बुकानेकी) बीली । -श्रीत-पु दिस्त । ष्यायक-तु [१] धिकारी वहेकिया। व्याधाम व्याधास-९ [ते] ((हस) स्था व्यापि-स्पे [मं] पीका रीमा बुक्का कड पर्देकानेशासा व्यक्ति वा वरणु (का)। बुटा वक गंबारी आव वियागादि के कारण ज्वरादिका पराश्व दीमा (मा)। -कर्- ते दोग प्रत्येष करनेवाला अस्त्राध्यक्त । —सञ्जल-स्थापना मामद गंपद्रव्य । -प्रस्त-वि प्राप्त, अप बीमार १ -धान -धानक -जिन्-प कारम्बर पृथ् । —ध्म—वि - दीगनाश्चर । पुरु आरम्बर । -विमद-पुरीयका दशया जाना । -विजेष-भी रीगदा रमन । -पीडिल-वि रीगमरत । -बट्ट-वि प्राया रीमीका शिकार क्षानेशन्ता (बामानि) ! - अस

ध्यासामित्राय-ध्यापादित -पु: रीगका सव । -संदिर-पु श्ररीर ! -पुक्त-वि: रम्म । -शक्रित-विश् रीयमुक्तः मीरोग । -रियु-प कारम्बयः यह प्रकारका जारम्बन । – विपरीस~वि भी रोगके प्रतिकृष्क पत्रे । य॰ रोगके विषरीत प्रमान सरपञ्ज करमेवाको दवा । -समहोत्तीय-विश् रोगका स्वरूप वत्तकानेवाका । -स्थान-पु॰ धरीर ! -ईता(त)-वि है "ध्यापिका"। प बाराही करे; बारम्बर । - इन् -- वि• रोगमा**शक** । व्याधित-वि॰ [सं] रोगप्रस्त रूम । स्प्राधी-सी॰ रीग । रवाधी(धिम)-वि [सं०] मेरन करनेवाटाः वहाँ शिकारी प्रावः वाते बीं। रोगगरतः। क्याधल−वि (रं•) संपतसुकः संपित । व्याच्यातक-५० (५०) फुल इमा २४। व्याच्य-तु [सं∗] शिव। वि∗ भेदम करने योग्य (शिरा भारि) । स्वाध्यासँ-वि सि | रोगगरत । ध्वाच्युपञ्चमन~५ [मं] रोगमु**क्त** करना । व्याम-प [4] घरीरस्थ पाँच बाराजीमेंसे एक को छारे खरीरमें व्यास रहती है। -बा-सी व्यान बात देशे बानी छक्ति। – भूत्–वि व्यान वायुक्ती कावम रद्यने-वाका । रशासल – वि [थं] इन्हों हुया, जिसका सिर मगीनकी और सुदाशा । श्र एक मकारका रुदिर्दर। - क्राया-पुष्करतिश्व। क्यानञ्ज-वि [सं] परस्वर संतद्व । ब्यामस्र∼वि [सं] सुका द्वभा, नदः। ब्बायक-वि [सं] दूरतक, सक्त फैला हुमा, जो किसी भीवके सारे विस्तारमें हो। भाग्छाइका विसमें वहसके हारे विवारणीय विवर्गका अंतर्माय हो। जो एक मावने किसीमें बमंदा रहता हो। जो व्याप्यसे व्यक्ति विरत्तत हो (म्बा)। प्र वह ग्राय को पदार्थ में हमशा रह (स्वा•) -म्यास-९ एक तरहदा तांत्रिक शंकरवास । ब्यायसि-स्मी [मं] संबदमें पहनाः वसक्तवदाः हामिः नरनात्री। मृत्युः निसी अञ्चरका काप या कगाडी प्रगद्ध दगारे जशरका थाना । ब्बापय∽सी [सं] लंकर दुविमा माता मृत्युः। व्यापन-प्र [1] सर्वत्र पीनना भरता स्थाप होता भाष्यात्त्र **करना ददशा** । व्या**पना−थ कि** स्वात होना। दयायसीय−दि [थं] क्याप्त करने दाग्य । ब्यापन्न-नि [ये] संस्टमरना महा भूना तुमा चरिननित (स्वराधिके व्यागमके कार्य-स्वा) । व्यापात्-पु मिंश्रीमाध वरवारीः कृत्यु। वृति मीवन डेंबन्दिश दम पारीयेथे एक (वी.) र व्यापानुक-वि [वं] माधकारी पात्रक (अमे रीम्)। अवायासूत्र−तु [र्ग] अवदस्यिताः वधः मात्र वरवाती । व्यापादनीय स्थापाशः~दि (४) सर **व**र कर् थीरका व्यापादित∽वि [मे] तक दिना दुवा, ध्वाना इत्त,

शक्त्रची−लो सि•ोधनी, इंद्राणी । शक्तारसञ्जन्यु [सं•] वर्षतः अर्जुगः। भव्यसन--पु• [र्स•] सुटकः संग । शक्रि−प सि•ी बजा पर्वता दावी। बादका प्रक्रु-दि [मं] प्रियंगद : स्त्री॰ [स] स्त्र, साङ्गतिः संबुराः सक्छा, बनाबटः हंगः संबुध्धः हपान, हव (तिह सना, निकाकना)। रेखा-नमितको कोई मानूति । -(से)-मिमास्री-स्रो नमृता । मु॰ (अपनी)-तो देखी (हेक्बिये)-अपनी बोग्यता अपनी सामध्ये ती देखी (अमधिकार चेटापर ध्यंग्य) ।-दिन्यामा-भिक्रमा सामने भारता। - देवारी रह जामाः - वेस्ता करना-- पक्षित मुख हो बाना! -- म दिखामा-म मिक्सा क्षिपाना । -पकद्ता-स्प, आसार प्रदम करना । -पहचानमा-स्रुत्ते पहचाननाः चेहरा वा म्रुत्त देख-कर शीक्षम्बमान जान जेना (मै थोरको श्रष्टसे पद्दवासता हैं)। ~वनाना-शक्क विगादनाः असुंदर वस जामा। -बिगाबना-मेहरेको अहंदर कर छेनाथा कर देनाः पीरकर मेंडको सका देगा। शकर-९ [न] छ। इ । सकरी-सी [मं] डॅगडी: मुहिका; गाव: मेसका । शक्त(क्त्)-पु [सं] शक्ता झरुस्−पु [स] मामवरेड; व्यक्ति, वाहमी l भगमी-वि एक मारमोका वैवस्थिक। <u>-हक्त्मत</u>-की पदर्शन राज्य। शरमीयत-ला॰ वैदिखक विशेषकार्यः व्यक्तित्व । शराख-प [अ] काम। पंथा। मनवहश्रावः मनवान्छ भार । प्र**॰ -करमा - किसी गासकर खाने-पी**ने इदा चेने बारिके, दाममें चपना । सरास-दु (दा) श्रमान गीवह । शगुका−द्र हे जिगुका। शक्ति शक्ती-श्री [मं] इंडाणीः वका किमाशक्तिः नामी बावधक्तिः परित्र करो। प्रशाः स्वावरः । —पति — प इंद्र⊺ सळार−५ [भ] देश समदार कुछ । शकरा-पु [स] बंधबृक्ष । दार-दि० [मंग] बन्त गरहा : पु+ खडाई; तेत्राव । शास-मी [मं] क्याः भिद्येगर धेरका अवास ।

हारा — की [मं] कपा (निहसेनार धोरका क्यांक । स्रोद सारी — की [तं] कपूर कामाहकरी। कपूरकरी। नेवराका। हाइक — यू [मंग] कम भीर भीवें साम द्रभा मानम्बर पूर्य। हाद-दिग् [मंग] पूर्य प्रधी। यु धानिया। बालसी कारमी। पूर्य। कदमें नेम प्रध्य करनेशका मानस्थ। मानस्थ। प्रपृत्ता कपे मानो। कैमरा करार स्रोदा। — धी — युद्धि — समित-दि युद्ध विकाल। हाइमा — भी , साराय — यु [मं] सारका मान कर्म म्बरा मंगे।

राभ-द्र [मं] सनदा शुकार्थन । —कृत्-पु धर्मस्या

भागक हत्य । - पंटिका-को छप्तपुन्ते । - पर्ली--

मरौबा−मी [में] भंस्ता।

स्त्री॰ अञ्चनवर्णे । - पुष्पिका - पुष्पी-स्त्रो॰ वनसनर्पः अरहर । ~सच-प कुछ सादिको दनी पवित्री। दाणास्त्र, दाणास्त्रक-प्र. [सं] भगततास । शणिका-स्री (सं•ो शणपुष्पी । शाणीर-प• [में] सीम मदीके मध्यका पुलिनः गंगा और सरवदे गीचका स्वक, दीमाया । शत−५॰ [सं] सीक्ष संस्था। वि॰ सी। असंस्य। ~कर्मा(र्मन्)-पु श्वनि यहका माम । ⊸हुरेन्र,-कुर्नु-प करबीर, सफेर कनेर । -कुंस-पु॰ सफेर कनेर पक्ष पदाक नदाँसे सोना निककता है। -कुस्तीरक-प्र यक तरहका कठिम आवरणनाठा जीव। -कुसमां-को सफा −कोटि−पु॰ इंद्रका क्या होरा। सं करोडको संस्था । वि. सी करोड़ । --त्रात्र-प्र रेंद्र । नर्जंड न्यु स्रोना सुर्ज । नगुनवि• स्रो गावी का साकिका − ग्रीबि−सो॰ तृता − ध्मी ∺स्ती पत्थर में कोहेची कीकींकी गाइकर बनावा गया बार ताक **ब्**वा प्राचीन श्रका यह बारमें श्री बादमि**वीं है**। मारसे क्षका अस्त (वा तीप १); वृश्चिकाती; करंबका पेड़: एक प्राथकतम्ब गकरोग। -च्छन्-पु श्री पंत्रदिशीनाका कमका करकोश्या पश्ची । –श्रद्धानकी संदायर्। −तिद्द−पुशिवा −तारा−पु धविभिना सामक चौशीसचौ नक्षत्र (इसके कविष्ठाता वक्ष्म इं। इसकी आकृति मंदलाकार दे और इसमें सी तारे हा क्ष अभोमुख माना जाता है)। -इतिका-मी॰ मामरती। −इस-पु ६४च। −इसा-सी शतपत्री।−ह-सी पंजाबकी पीच निर्देशिये एक, सत्तव नहीं। ~धा-की वृर्षा अ०६ व.ममें। ~धासा(सन्)-विष्युः -पार-पुरह्मा यसः - यम-पु ण्ड नरका - शति-तु रहा प्रकाश स्वर्गा - मेविका-ली सतावर । -पन्न-पु क्मका मनुरा नारसा कठ कीइवाः वीवाः वानकी जातिका वह पन्ना । ---मियास-ल्या : -पयक-पु कठकोश्याः एक विरेता कीहाः यद पन्तः - पत्रा-श्री दृशीः - पद्मी-स्रो सेवतीः सफेर गुनार । --पध्यमाद्यान-प्रमाहिताध-बन्दवहुन एक प्रमिक्ष 'ब्राह्मच' जो सुद्ध यस्त्रहे अन र्गत आहा है । -पश्चिक-दि॰ बहुनमें महाँगी मानसे-शाना। -पय्-मु दनसद्ता गीवर। -पद्चक्र-इ क्योतिक्के अनुसार सी कोहोताला एक पता (हमसे मसप्रोदा बान दिया जाना है)। -पद्मी-स्री दे शनपर । -पदा-तु ६४न कमल । -परिपार्-पुर यक नमावि । -पर्या(कन्)-पु श्रीमः रेशका एक प्रकार । भी पूर्वीः बचाः धार्गवरानीः बीबागर पृशिमाः करुका। ~पविद्या~सी दुव की। ~पादिका-सी देश "रातवर । काकाणी । —वाद्-पु र रायपद । -बुवी-की मन्दुनिका।-बुरस -बुरियका,-प्रमुख -की सोबारा गागः वक्ष विशेष ग्रुप सीचः। -शाम-त्र करनीर र **~बाटू~**पु वक राधमा कर प्रधारका कीनाः वीडयन्ते अनुनार मारवा पुत्र । -भिय-पुर ~भिषा-स्तै है 'शकात र~धीद~स्तै *मति*शा -सन्द-पु॰ वीहः जक्ष्युः -सन्यु-वि महास्त्रोती ।

ध्यापार-ध्याख्म मारितः द्वीद्ववितितः । म्पापार-प्र[मं] कार्य, कामा विचान कारवार, येखाः बाजित्रयः प्रकाराः अन्यानाः स्वीगः प्रमादः सहस्यतः करनाः किमी वातमें बराव देना । ध्यापारक-विश् [मं] व्यापारवाना, व्यापार करनेवाना । व्यापारम-पु [सं•] किसी कार्यमें निवोशिष्ठ करना । रवापारिक−वि० [मं] व्यापार संबंधी । व्यापारित-वि॰ [मं॰] काममें कंगावा कुना। किमी स्वाम पर रगा वा बमाना मुला। व्यापारी-वि व्यापार-संबंधी । ब्यापारी(रिन्)-प्र• (सं•) कान करनेवालाः रोजगाराः म्बन्सायीः अस्याम् करमंत्राका । दि॰ क्रिसी व्यवसाय था कार्यमें लगा हथा। स्यापित-दि [मं•] स्थात करावा हुआ। ध्यापी(पिन्)-वि [मुं॰}स्वाप्त शनेवानाः सर्वेत्र ग्रैकने बाबा। बाध्यादक । पु विष्णुः स्याप्त क्षानेबाका पदार्थ । ष्यापीन−वि [सं] गहरे पीने (गऊ।। म्यापृत∽दि [सं] दार्वादिने संख्यका रजा हथा। बसादा क्रमा । प्रभीतः चला कर्मकारी । प्यापृष्टि - स्रो [मं] कार्यः व्यवसाया स्वीतः क्रियाः पैद्याः भाषास । ध्यास-दि [सं] पृरित भरा मुजा। आच्छादितः समा कांदा रकारेता परिवेदिना प्राप्ता एकमेवाका। अंदर्भना प्रसिद्धः फैला द्वलाः मिरव साथ रहवेवाका । प्पाष्टि – की [ti] स्वात होनेदा नावा ण्ड परार्थी कुसरेका पूर्णतः मिक्त कालाः शिरक लाइक्का विकासीय नियम: पूर्णताः माप्तिः व्यापदनाः बादः ऐवर्शेशेसे वदः । -कर्मा(सेंक)-R क्लिका काम प्राप्त करना दी । -- प्राप्त-त विधित नार्तीके आधारपर विश्वज्ञमीन निवस-का निर्धारम (न्या)। - ज्ञान-पुनित्य स्टब्स वा क्यात परार्थका याम (म्हा)। -निश्चम-प् नित्य सहयर वा व्यात दशबंदा निश्चय करना । - छसम-त्र मिल्य साहबर्यका पिश्व वा प्रमाण । स्वाध्य-दि (तं») म्यापनीय स्वात दीने वीस्प ! S सापम हेत्र (श्वा)। यक जीवधि । म्यायाच-द्र [मं] राग । ध्यासम्बद्धाः विक्री संदितः की द्वार हे ब्राह्म की नगा थी। ध्याभाषय-९ [मं] रोमनेषा रंग। वयरमुद्धर−वि [सं] शुक्रा धुना । व्याज्यक्षी-ली [मं] र व्याप्यकी । क्याम ज्यासन-इ [तं] अवार्धतो एक माप (हापाँकी मनक-तमन पूरा कैनानेवर उग्रतिकोडे क्रिरेटकरी संबर्धे) १

स्पासर्थ, स्पासर्थ-पुरु (बंध) क्योरता। रगरबर मिहाना है स्पासिस -दि (सं) एवं गांव मिक्षा बुध्या। विविध

प्रदारका: .. हे तुक्त शुक्त अन्यवन्तरह ! - व्यूष-प्र

भइ बहुद जिलुमें देशमा शबदल माहि चारी महदेवेदमा

भिने हो। -मिक्कि-क्षी चल-निषय शंकीश अपने

भनक्ष होमा (धः) ।

क्यासूच-दि [त्र) बहुद वरवाना दुआ ।

स्थासूष्ट−दि+ [सं+] रगनकर मिरावा हुना ! व्यामाक-द (सं) गुरकात मुद्धि। व्यासीह-पु [सं] नदाना परशहर । व्यावत-विक [मेर] पेकावा हुना। ग्रेमा हुना: सन्तरः मस्रगुल कार्यादिमें स्टब्स्सा हा। प्रतिहाली। बटिसा गदरा । -पाती(तिम)-दि द्रावक बीहें स्था (मैसे अथ)। व्यायतस्य−पु॰ (सं॰) देशियोका विश्वास । व्यायाम-५० (ते॰) धैनानाः बनातः सभासः विश अम्यास या शिक्षण (वीं+)। बंदाईकी यक मारा हुईन मार्गः बाहिनार्थः व्यावासः प्रांतिः श्रमः स्थारारः पानः युक्की वैशारीः क्षीत्रको कमायह । -वर्शित-रिर न्यानामके कारण को बुक्छ हो पना हो। - मृति ॰ शास्त्र-सी ज्यायाम करनेका श्वाम ! - मुक्-प्र भागमे सामनेको कहाई । - शील-दि० क्लरको । व्याचासिक--वि॰ मि ने व्याचाम संरंधी । क्यायामी(मिम्)-वि [ले॰] ब्यायाम, कसरत हरने बाला, बसरती। परिमानी । व्यासुक-वि [मंग] माग प्रानेशासाः वय निवत्तनेशाः। व्याप्य-नि [में] घण्डीम । क्याबीस-पुर सिर्वे एक प्रकारका संबक्त की एक हैं। अंडडा और शैररसमयान होना है। व्यायोजिम-नि (सं॰) सुनी हुई, बीनी (पर्टी) । ध्यारीय-दु [सं] ह्योप । व्यास-वि [मंग] सहयत्न दुःशी । व्याचीय-वि [बं] मीचे ल्यादमा हुआ । तु रत्न वर्ता । द्यानंत्री(चित्र)-रि (लं) म्हब्र दुना । रपास-वि [4] सन् दुश दुशा निष्ट्रश सेवारी। अवंदर ! पु तुम काबी। हिंदा मेंतु शाक्या लार्थ लिका बाया भीता राजा हवा विच्या यह कृता माउनी संस्था । "करका नगद्धा नशन्तन्तु । ज्याप्रनशः नामक र्गभहत्व । -र्गचा-सी॰ मानुसी । -प्राह -प्राही (हिन्दू)-इ धर्व परप्रतेशना, विदेश - मीव-त दद अपपर । −जिल्ला नहीं सहामर्गग । −चेंड " र्बद्धक-पु गोराक । -पन्ना-स्था• दशव । -पानिः-प्रदृश्य - बस - धन-१ है "म्यानगर । - सूर्य-विवाद जायदर विवा मेन् । -स्प-उ -स्वाप-पुन्ता व्यास्त्र - तु [तं] युव बाबी। शिकारी जामनरा नर्ने र द्यासामुध−<u>त्र</u> [सं] हे ⁴मालमम । क्यालि-पुरु [१०] वद नैरादर्भ, स्वाहि । व्यानिक-मु [यं] विरेशा बराबी(सिम्)-५ (तं०) दिव । बचामीच-मु [10] शर्रशासा प्रकार (वी देवि 📳 १८ १७८ म नियम्प हो) १ श्याक्रीम-विक [ती] लाव विषया द्वारा पता ! ब्बानुस-पु [१'=] भगेर्रहा क्यू प्रदार (रोजवा वी भीर राम भी निचना हो। 1 स्पान्द्र!—द हे॰ व्याद्द्र'ः क्षाल्यम-विक [वि] क्या दुव्यक्ष जिल्हा

रात जिसमें प्रेमीका मेमिकासे फिल्म हो । -पाडावल-ली महर्रमकी मनी रात किसके स्वरं इमाम हुमैनकी ग्रहादत हुई ।- (बी)रोज्र-भ रात-दिम, दर बन्द्र । शमका-पु॰ जि ो तारीका बना माठः कन्तर धैसानेका विक्षेत्रा जाल को रुवहीयें तेवा हुआ होगा है ।

ग्रवसम−ली श्रिः दिः दि ेटाव दी: सप्ट रेसका एक निदायत बारीय अपना ।

रावममी−मी फिी बह कपना की आंसमें चया है किर छत्रकरपर ताम देने है। असवरी । दाबर-प (सं•) दक्षिण भारतको एक प्रदाशी आर असम्ब

बादिः जंगतो मसम्बा शिवः एक प्रसिक्क ग्रीमांसकः हाभा यस । - व्हेंह-पुरु यह मीठा बॉर । - व्हेंबुस-पुरु एक यंत्रम की श्रेत-रक्त बध्या होता है।

क्षाबरक-म सि] जंगणी अहरती ।

शयरी-ली मिं•ी शबर काविकी मारी। रामावधर्मे

वर्षित शवर वारिको एक शबसन्द मारी । शासम्बद्ध मि विनिधारयोकामा सर्व स्वीसे कंकिनः विभिन्न मानोमें विमन्तः अनुपूत्त किसी वश्तकी मन्त्रपर नता दुना । पु निभिन्न प्रशास्त्रा (गः जनः । -चेत्रतः -

हत्य-वि पीक्षा संनाप काशिसे भ्ववित स्थाप । शतमा –श्री मि दिस्परी वादः दास्थन ।

धावसिका-सा मि । एक तरक्की निविधा श्रवसी⊶पी [मं] दे 'श्रवका'।

भाषाना-ति (दा) रातका । अ॰ रातको । त रातका सामा, करू या मजदरी। रामको नयी हरे होटी !-शेज −म रातकित प्रश्चिका

दाबाध-पु [#+] अवाली शीलने वालीस नरसरक्री क्याः नदुनीका अमाना । ३४० – फाइ वहना – अवानीका भीरवर होमा पुरी सरह शिल कठना ।

शपाइत नशी थि देश बाह्यति।समानना समस्यनाः। श्विस्ताम-त [का] (राजा-बादभारके) श्रीनदा बयराः भेतापुरा वर्त्रया महिन्दमें वह रशास मही शतकी स्थारत

शर्जामा=वि+ [का] शतका वाणी i

शयोह-सी॰ (स) क्यमाना विषे अनुस्य विष (सीयमा (तसमा)।

दादपु-पुरु [सं] आकारोहे किथे भी प्रदार्थ अपस शीम की बागुनरेग द्वारा कालीनक सन्दर सुनारे वह श्रवदा पह गाँड शिन्दके की प्रकार द-वनाग्यक नवा श्रामात्रका बाध्यप्ति प्राप्त शाध्य वयोगस्य है और ताल बुडगाडिमे बरक अन्य बरवान्यक व्यक्तिमान राष्ट्रके की दी प्रदाह है-स्थल (गार्थक), अध्यान्द (निरवद्)) (निविधादिक माथ को बर्गमनुष बारा निविध कीर नार्थक हो। ६६वि, अपात्रा आस-वयन अपाप पुरुष द्वारा स्वम्न बात जिल्ला भारिकी शाने ३ -- कारा-कारा (दिन)-दि शह बारेशना। न्योग न्योप-प्र बद्द इंद दिनहें शब्दे दे लगाद का विमाण कर्न अंदेगाः दरोप सार्ग की समित्राच १०-शाम-विश्वचार्ये जितिम १ -भट-त भर दिन बाम । वि यान्य-वाष्ट्य यान्य ४६९३(२) १-माम-५ एवर गत्र । -कानुर्य-५

सन्द-प्रवीतको बना, जातुरी बेन्बरेडे देवडी विश्वतः। -चित्र-५ व्य राष्ट्राज्यम् वर्गे एटन्स्य है हेरे वर्ष रहे जामें विगक्ते हारा विश्वपदिन्त निमतने निशेष पित्र पंग जायाः साहित्यहणतादा स्व वरेड मकार जिसमें राज्यों हारा दिली बस्तु व्यक्ति अरीरा इंड महा क्या आता है परेख । -बोर-ए समेटे रचनाके शब्द वहांबर अवशे अविमा नेसारिके क्षेत्र करनेवासा । --सूरय-पु+ पुश्यका हक प्रकार । --पृति-पु॰ कद्दनेमरको स्वामी वा राजा ।-वाशी(शिक्)-मे क्षण सम्बद्धे भाषारपर निशामा समानेशमा ।-प्रमाय-अधिक प्रमाणाः भारतमानः। —शोध-पु॰ मीन्द्रः सास्यादिमे माम दान ।- ब्रह्म (मृ)- पु वेर एक्य में महाशामा रहीर मायब शान्त्वा मह गुण । -- भेर-पु॰ न्याबरणमें अपने कार्य रियति संबंध अर्थि भाषाहरूर किया गया श्रष्टींका वह विज्ञानन विगने नियर होता है कि बोर्ड शब्द बंदा है वा सरेबाब किसार सम्बद्ध शबादि (अप्तीदे आह महस्रे है-नंदा, मर्ग माथ विशेषण किया कियाविशेषण गरंबस्वर, बगरा, लेबो हरू, विरम्नवारि बोचक) । -भोड़ी (दिन)-इ॰ रे शक्तेथी । -महेचर-त िन (बहावला है है पाणितिक अपना व्यवस्य प्रदेशको शापान निमा गा बह भी बहा जाना है कि शांधिनिकै ज्यादरा के भएति। चीन्द्र सूच सहेबर(शिष) दे रूने है अना व 'सारेवरपुर बद्धमान है। हस्सी कारगीते शिवका यह जाम सा)। —वीकि−भी० नातः धम्यकः कार्यातःवानः । −विधाः की शान्त्रवाध्य ब्याब्स्थ । -विसाध-पुरु व्यम श्रम बारा रिका जातेवामा विशेष । - प्रति-भी अन्यस कार्व (लार) । -वेची (चिन्)-त नइ ध्वस्टि हो बेक्च शब्द शबदर विमा देते ही एक्चर बाद मती। यह ब्रहारका बागः वार्जनः प्रार्थः -शन्ति-मान श्रान्यो विरोध वर्षकोपद शक्ति (यह क्षेत्र) प्रदास्यो होते. है-व्यक्तिक स्थाना व्यवस्त्रो ! - गान्य ५ व्यवस्ता -औप-व किन्न शब्दका की बा बीमें अधिक अपीर्वे शसक्त होना। ∼र्गश्रह−९। छन्दीका चपवः छन्दकाः । -संसय-५ वास् । -मायम-५ शास्त्री स्मापन रूपा १ भगी दिसामियाला व्यावसमया भाग । नशीदर्यन ७ के 20.5 भा । ∺सीक्षर्ये⇔त श्रूकोो वदाण थी महत्त्रा सुगमना ह्यस्तुन्तः। ननीष्ठथ-५ १६ना देशोडे प्रामीका भारते कियो प्रभावो समाग्री ~होत्र-<u>त</u> अवसंतिष शत्यका अरोगार्गा भन्नि

श्रदक्रम~वि [त] श्रद्ध करतेश्रद श्रद करता भेली

व्यक्तिः काराभः व erreitere - fe beild ung :

eterredu-fi [and farat dich wurfe fet' अंद्रिक इक्ष

शरराष्ट्रबर-तु [र'] अजन्दरद्द एक्टी चीर निगा uniq feen & grand us ub greiter with link भारतीकार्गानकी कार्य हो शारतीका बा दिए शास्त्रीका शहरानिम-९० (4+) विणु १

1101 व्यासा-सी॰ (सं॰) विदिशा। स्यास्त्रीस-वि [र्त-] पहर साता हुमा। धरिवर, वंबकः र्दापत । इसातदासन−प सि दे ⁴व्यवदक्षत । श्वाबक्रोशी−औं धि]गासी-गसीक! ध्याबचौरी∽स्त्री [सं] सापस±ी कोरी ! द्यावभाषी−स्रौ [तुं] गासी-गक्नीत्र । स्पादर्ग-पु सि विमायना विभाग। स्यावस - पु । [सं] श्रद्धर सामाः परिवेक्ति करनाः पृथक् इत्सा निवीकित इत्सा नामिन्द्रक उसरी दुई मानि चक्रमर्थ । क्याबर्तक-दि॰ [मं] अक्षम क्रुप्तेनाका, इटामेनाकाः मेर मंतर करनेवाका वकर दाने विकानेवाका । स्याधर्नन-प [मं] पराइनुका होनाः निवारण अकृत इरमाः सर्वे इंडलीः सीटना, ग्रहमाः चवर छामाः परि वंदित करमा । **बीराया इमाः पदर प्यावर्तिस−**वि [मं] मोद्या रिकामा हुआः वहका द्वामा । द्यावदिगत-वि [सं] शॉचे& साथ पत्रता तुमा ! क्याधहारिक-विमि । साधारण जीवन कार्व मंत्री। प्रवक्तिः वास्त्रविकः मिक्नसारः मुख्यमा संतेषी । प मंत्रीः कारबारः व्यापारः विचारपति । -भ्राप्त-प् अवसाय शादिके किए किया द्वारा अन्। व्याबहारी-सी [मं] भावान-प्रवाम पररपरहरन । प्रशासक्तार्य-वि॰ (सं॰) बाग्यः सक्तमः वो जीर्ज-शीर्य म का । म्याबद्वासी-को भि देशस्य देशमा। स्वाबाध-पु [मं•] है 'ब्यावाब'। प्यापिक-दि॰ (एं॰) बिसः श्वर सामा हुमा। विक्रम क्रिया हुआ। प्रक्रिष्ठ व्हिया हुआ। स्यापिच-विश्व [ri] विभिन्न प्रकारका । व्यापत-वि [म] सुका हुआ, जनानुता ददा हुआ, परदा दिन्दा हुआ। इटावा हुआ पूथ्य किया हुआ। अप बाट किया हुआ। म्यापृति न्यो [मं+] बाह्त करना कना पृथक करना छोरनाः भनावत बरना (१) । म्याकृत्-भी [ग्रं] भर श्रेतरः प्राथम्यः विराम । ─काम्न~वि प्राथाम्ब प्राप्त कर्मका वयुद्ध । च्याक्स−ि (तं] इरा इशाः श्रनग किया दशा धीटा तुष्ठाः सनियमानः चक्दर गाशा दुष्टाः परवेष्टितः निरना विमया निषा सीश मरीश हुआ। भीटा हुआ। क्रमेनना सुष्का गत तुम। एनंद किया हुमा। पेरा हुआ। प्रशंतित । -गति-दि बिसमी भाग मेर ही गयी हो। -चेता-(सम्)-दि निमदा समक्ति गया हो। -हेंद्र-वि मिसका शारी दिया गया थी (बहान) । व्यावृत्ति-सी [मं॰] मुद्र मोतना। वैतना। वैदेशी और न बामाः चुमाना (नेत्रादि)ः बावृश्चिः गुरुवारा मुख्यिः विवन बीमा छोड़ दिया जाना। बराया जानः अस्ती

ब्याब्रय∽ि [सं•] इसरेका सहारा ग्रहण करनेवाणा । प॰ साहास्य सहारा । व्यासँग−पु० [सं•] घनिष्ठ संपर्तः अस्वभिक्त कासक्तिः प्रवक्त बच्छाः मस्तिः कच्चवसावपर्यं बच्चवसः समीबीगः पार्यक्य निस्त्रादः ववशहरः यीग भीव । ब्बारमंत्री (रिास)--वि॰ [गुं॰] भरवविष्ठ भासकः मनी वासपूर्वक संबद्ध होनेवाका । व्यास-प्र [सं•] पार्श्वक अंगीम विमाय करना। समस्त पत्रके भेगोंको अक्रम-ब्रह्म करनाः सिम्न पत्रार्वे सादिका विष्केपणः श्रीवार्षः बेंडरी डीकर परिविधे दोनी हीरी क्टब्री क्री: विस्तार: विस्तृत विवरण एक वचारय-बीचा एंडक्स करनाः एकक्रमध्योः एक मनि कप्पारीपादम (वे सत्ववतीके गर्भसे पराश्चरत सरका द्वप के। पांतु, बुनराष्ट्र और क्युर नियोग द्वारा शम्योंने उत्पन्न हुए थे। श्रमोते वेशेका वर्तमान रूपमें संकल्प किया और मधा मारत वंदिसम्ब स्वा १८ पराणीकी रचना की।): रामानन, महामारत शारिको क्याएँ क्रोगेंन्डो समानेदाका ब्राह्मण द्रथानाच्छ। सी क्ष वयनदा वत्त्र । −कृट⊸ प महाभारतमें आने हुए कर श्रोदः ने कर-श्रोद्ध की रामने मास्वयान् पर्वतपर रहते समय मनवहकावय क्रिय रूपे था - गीता - मी कुर्मपुरायका एक अध्याश ! −मीर्ध -पति –राज∽प पर ठीर्थ। –देव-प॰ बादराबक, कुल्बईपायम । ज्यूजा ज्ली शुरू और स्थाप की पत्रा की बापाड़ी पुलिमाकी होती है। -माता(त) स-सा॰ सत्वती । "न्यूति-पु॰ दिम । -श्रन-पु॰ व्ह दनित्र वत । -समास-तु वताना-परामा विस्तार संध्य । -सराबर-प्र बहाभारतीक एक स्रधेवर निसमें इशोवन तुरके मन्त्रमें मन्तर क्षिता था। -सध-त ब्रह्मपुत्र । -श्चरुरी-मी॰ एक श्वान । -स्युति-मी यक रबुनिर्मय । ब्यासक्त-दि॰ [में] अस्तिपद्ध भागकः मंददः संनद्धः आस्तियनः वित्रका धनासका इत्तर्वाहः स्वानमः। व्यासारच्य-पु [मे] दे॰ 'व्याफ्र-वन'। व्यासार्ख-प (सं•) बेंडमे परिषयक्ती हरी। ध्यासाधान-प वि । दवाचायद्वरा भागन । ध्यासिक्-नि [धं] निविद्यः वर्षित्र (माक) । व्यासीय-वि [र्ग] व्याम-धंरेनी; स्यामका । ध्यामप-९ [थं] नित्रण कोना रोक् प्रतिरंप। व्यार्डसम्य-दिश[शेश] क्ष्मप्रमीय अनिक्रमन करने योज्य । व्याहरू-वि [मं] चीर वर्टेवावा दुशाः जिले वाचा पटुँचानी गरी है। निवारिता निविद्ध। रिकंक दिया देशा हनायाः व्यर्गेः परस्पर निरीतीः परकावा द्वामा बरा द्वामा व्याहतायता—मी [tio] एक एपनाकीय यहाँ पूर्व कृष्टिम बान असरक्ष्यतमे दिवत आय-१६वेद वाद्यी हीनगा मा भाष । व्याइति-भी [मं] बाधा बाहमा। परम्पर सिरीप, विम्द्र परना (म्बः) । म्याहमस्य−रि[री] बदुद ध√राम ।

व्याहरण-५ [मं] वर्ति स्थन प्रधारम ।

बार किया बामा। मेर अंतर, पार्ववत्र शिक्षणाः स्वरूपाः

श्रिम भेता एक प्रकारका क्षण ब्रह्मात प्राप्ता श्रुति।

1212 शक्तातीत निव [सं∗] विसका शब्दों द्वारा वर्णन न दो सबे. वर्षनातीत । प॰ ईश्वर । दास्त्राचिक्रास-प सि] बान, अवश्रीवय ! श्रद्भाष्याद्वार-प्• (सं•) बाक्यगत लेवर्ण कर्यकी प्राप्तिके क्रिए क्समें आवश्यक अध्योका समानदा करना । सम्दानुकरण-पु॰, सम्दानुकृति औ॰ [मं] सम्दका अनुबद्ध । सम्बन्धासमन्द्र (सं•) व्यक्तवः। सम्दारमान-वि [र्थः] शुक्र बरता हुना, सन्दर्शा । शस्त्रार्थ−५ (सं] सन्दका वर्ष वा भगिमान । दादशासंकार-प॰ सि] वह अध्यार शिसमें रजनाका अमस्त्रार या साधुर्व विशिष्ट छण्टों अवना वर्णीके प्रयोगः पर निर्मर करता है, उनके मर्थपर मही। शस्त्राख-दि [सं] सन्दर्भारी। प्रस्कित-वि मि वे व्यक्तितः वादितः आहतः विस्तकी भ्यास्यां क्ष्म गर्बी हो। भाग तीरपर अनावा हुआ। प्र• श्रोर । पार्वेक्टिय-स्व [सं]कान। शम-प [सं] शांतिः मानसिकः रिवरताः <u>स</u>क्तिः वंतः करण और मनका संयमः विदिश्चिका संबमः सभी सीसारिक कार्योंसे निष्ठिः क्षांत रखका स्थायी माणः वपनारः हाथ । --परु-प्रधान-वि श्वात । समाई-वि श्रमाकाः श्रमाके रंगका । -ईग-प स्वादी मानक बरा रंग । शमक-वि [#] छांत करनेवाकाः भुन्द करानेवाका । मसय-५ [मं] द्योदिः मनश्चे स्रोतिः मंत्रपादाः। दासन-पु• [eं•] खांदि। झांन करना। उताना। दर दरमा दशमा शहदे किए परान्ति। दिसा समाहित भाषात्क्रमें बाह एक सूत्र क्रमां अनानेक दिया ! वि सिवारक, निवारण करनवाचा दूर करनेवाका । -स्वामा(ख)-ली यमक्री वहिम समगी। शमनी−श्री [मं•] शक्ति । −यद−तु निधायर । रामध-९ [सं] विद्याः पापः अपनित्रताः नियस्ति समीवय । शमका-त [ल] शाल भी दंशीपर टाली वा निरसे बॉपी जाब: एक रराम तरहकी बग्री मिनी शुरामें बढीक गाउनके कपर पदमा बरन था पगरीका निरा शुरो । शमशाद-पु (का] एक क्या शुंदर बृक्ष जी सरीका पद भेर है और वर्द-काश्मीकी कविनामें शाविकाके देशका वरमान है। शमगीर शमगर-सी (का) तनकात वीपने शुक्षे पूर्व वनवार । (मूल क्य दामधेर-दाम-माधन होर-सिह) । -का रोव-एशत ! - हर-वि नहवार समाते था मार-नेवाका ∼क्रमी⇔को सप्तवस्थी सपार्थ। ⊸क्रस⊸ वि मनवारको बान रराजः सन्यारको साह करनेवाना ।

हो । -युक्ताफ़री-खी॰ सपेद मीमरची ।-य खामोदा-भी शुरा प्रभा धीप !--ए सज्ञार-न्ही • मधारका दीवा । ~ए-सहरी~ली प्रमादका, अस्ती इसनेवाला दीवा। -ताल-प• वह चीव विसमें मोमवर्गी सगाकर सकाते हैं: बीनर ! ~दख़--दख़सार,-रू-पि श्रीहर: विस्ता मुख्यमञ्ज्य वीसिमान ही । 🗝 परधाना – प और पर्तगा (का) मेमी और प्रेमपात्र । काशि−की [सं•] शिवा मामक वास्पः सफेर कीकर मामक प्रशाः प्रधाः – प्रच−प लबास नामक वीया । -- पद्मा-स्वी दे॰ 'श्रमिषत्र' । -- रोह-पु• शिव । शासिका−ली सिीशमीका पेश्री धासिल −वि सि•ो जिसका जसन विस्मा शवादीः छोत्। कास्मिर-प सि । वामीको बादिका क्रीय पेटा रोटा धमी बस्र 1 क्समी−न्यो॰ [सं] एक दक्ष (कदा जाता है कि इसकी लक्षांके मीतर विशेष आम होती है जो रगहनेपर निक किती है): विशा कामुक्ति । -शार्म-म अधिः प्रदेशित-थगडा माद्यण। -जाति-सी एक दिवल कमायः। -धाम -धाम्य-प मसर मेंथ मादि । -पदा-स्रो॰ पानीमें अपन्य बीमेवाकी रुखावती सर्वा । दासी(सिन्)-(व [सं] छोता जारमसंबर्धी । शसीक−प्र [सं] एक करि जिनक यनेमें तपरवा करते समय राजा परीधियने मरा सर्व दाङ दिवा था ! शमीर-प्र• चि] वै धमिर'। प्रसमार-की है॰ धमा । शस्म-प• [अ] प्रानः तस्योदमें क्यानेदा प्रान्त । शास्मी∽ि सर्व-संवेधी और। मी छमाही स्वस्थाह (धादी जमानमें दर छ मदीवेपर मिश्रा करही थी)। -सास-प्रभीर वर्ष । शर्यक्र-वि मि विषद्ध शीवेशला। सर्वदक-प् [स] विरिवार शय-प [गं•] सम्पाः निहाः मौपः शौरः दावा शापः मार्थमा । वि सोनेवाका (लमाम्रोतमें) । हाबल−१ सि ो निहाशीच स्थलित चंद्रमा (१) । शयध−दि [मं] शोदाप्तमा। प्र गुप्ता एक तरहका सीप अवस्त श्वरः मध्या । शयम-त्र [में] निद्राः शब्दाः मैथन मारी सहयाम । --बारती-स्रो राविमें देवनाभेंको सन्तान समय ≰ो वानेवाणी वारती । ~कक्ष ~गृह~पु सानका घ८ शकामार । -पासिका-मी शम्यामी रशिका । --थोधिनी-मा अनदन क्री एकाइग्री। - मूसि-स्री मीनेका स्थान । -मीक्र-पुर दे 'शहन-दश्र'। --रचन-तु श्रव्या समामा । -बाम(म्)-तु सीनेद समय वहन जानेवाते वन्त । -स्यान -पुरु है श्वम शायमागार-पु [मे] दे श्रयमस्य'। दावनीय-दि [वी] शबन करने बोग्य । पु स्थ्या । शयनकादमी−भी [मं] इतिहरना एकान्यों को माना माध्य हाह पश्चमे पश्ची है। ~प ¥तुमन ~महक्रिक्त-वि जिन्नी सहवित्रवी शीया रापोद-५ [म] ८६ नम्पर (

~(दार)श्रेग-तु योशवध्यक्र वरवी । -वक्क-रि

गप्रदरत । -बहादुर-वि गाम्बीर सन्वत्ता धनी ।

यामानक-प्र [4] माननिक शांतिका नाराक कामरेव ।

रामा-भी [व धमध] दीया दीमश्री दीवा।

व्याहार-स्पृष्ट म्पाद्वार~त• [सं•] स्वर, ध्वतिः वालयः वक्षाः वार्ताः रुपाः (पद्मियंद्धाः) कटरदाः समाकः परिवासः (भाः) । म्याइत नि मि दिन दिन विसमें कीई बात कही है। बाया इना । प॰ दोलसाः वार्तानाय करनाः सिर्देशः अस्पष्ट स्वर (पश्चिमी अवशिका) । -श्रीतेया-प्र= स्तिया-बाहरू है स्याद्वति−सी॰ [मं॰] रुक्तिः क्षमनः मृः, मुब° वाटि सप्तरीकारमक मंत्र (विसी-विसीक मत्तरे इसके आरंधिक तीन मंत्र) जिनका क्षप मंच्या करते समय किया काता है। रपुर्दम-५ [मं] तर करना, गोका करना। स्युष्परण-पु॰ [सं॰] शरिक्रमण जलेपय । इयुच्छित्ति-सी [री०] सम्पूक्त विशास । स्पृष्टिग्रस-वि [मंग] सन्त्रक्रियः विन्नः। श्युर्द्धता(त्त)~वि , पु+ [सं] विमाधक । ध्यच्छेर-प [चे] दे० 'च्युव्छिति'। व्यत-वि सिंशी दे 'ब्बल । स्यति -श्री (मं) हममा सामा दुममेश्री मजदूरी । स्तुरक्रम-पु [मे] सन्मार्गका स्वागः अतिकामकाः व्यक्तिस्यः सम्मर्गयः भरतः भरतताः भपराधः सूख्यः। स्प्रक्रमण-प् (सं॰) यामस्थामः अस्य श्रीताः वर्तवत् । स्पटकांस-पि [मं] बलंबित अविकास प्रशिवन गर्मा वर्षावतः भिन्न दिशामें बानवाका । --व्यक्ति-वि निजीव यस ।- धर्म-वि वर्तव्यक्ती क्षेत्रा करनेवाका । परबा(क्स) - दि वतुपरद्वितः निष्यादा वासमाधीन । च्यामां(धर्मम्)−वि जिस्ते सम्बाधका वात कर दिया हो। रपुरक्षांता—स्मी [सं॰] यक शरदकी पहेकी । स्त्रुत्त−दि [सं•] आर्थंतर क्रिया ध्रमा । ब्युट्याम - प्र [मं] सुनेहता समित्ताः निरोपमें प्रमाः नाथा बाक्ना। रवेच्यापुर्वेद कार्य करनाः कर्नम्बद्धी क्रोबाः । ममाविद्धा अंग (वी.); गृत्यका यक प्रकार; वजनेमें अक्स करना (दार्थाका)। बांदन दिरीच करना। वश्यता स्थीकार करमा भीषा देखना दवना। स्पायापिश-वि [सं] कठनेम प्रवृत्त क्रिया हुमाः मगावा हुआ। इपुरिवत-दि [riv] शरिवाद्यवित अस्पवित सुल्या क्र**ीमध्यमे (स्व**लिन ह श्कुरपश्चि−की (मं•) कार्यांश मुख्य कामा शब्दका मूल कथा बाद विकास ब्रह्मपा प्रसाध बीविरवा स्वर भिन्नत्। - रहित-दि विमन्त्र मूक एवं नवात है। sब्रत्यच-नि [ri] प्रशादिता शूण संपी बनावा दुशाह मिसको स्पुल्विति को गयी बी। पूरा किया पुत्रा पूर्ण पश्चिम । इयरपाइक−नि [मं+] बारध करमेशसा शुनाको भ्युत्पत्ति करनेशामा । बयुत्राह्म-मु (ग) भ्युत्पति भूत संबंधी बाल्याः lega (स्पापाच-4 (d) किम्मी वा क्रिमदे सूत्र क्^मकी ब्वाटका 🚮 भा मुद्रे र

म्युप्पार्थ-९ [4+] १९१७, विरक्षित शरीरके गीराबा

रवाध (बै॰) । व्युप्सेक-प्र= [रांच] चारों बोर वस (एक्झा। व्याच व्यादक−ि वि विवासीय। स्पादस्त-वि निश्च केंद्राः बरावा बचार स्पिरा ह्या मस्बोक्त । व्यवस्त-प्र• (सं•) केंद्रशाः परित्रामा भस्तीकारः भिरत कपश्चाः भाषा वच (छत्रका)ः विरामः क्षेत्र । व्यक्ति-विक सिंकी जिसपर विवास, बहस की नवी हो। व्यक्तिक~ि सि ो गंदा दिवा हजा। विलायो । श्यपकार-त [रो॰] कर्नम्बादिका गर्म रुपने पतन बरना । स्युपदेश-५० (सं] बहानाः ३४३ । स्प्रमान-(व॰ (सं॰) बुरियते ब्रह्मांत म दोनेशका में सामाद्रे केटी ल वहे । ध्यपपश्चि–न्दी॰ [सं॰] प्रमर्जन्य । ब्युपरस-विश् [मंग] की स्थ तदा ही भंद ही गया है। व्ययस्म – प्र. [र्स॰] वाषाः विशाम, अंत । व्यवदीत-वि (सं•) मधीवरीतहीय । ब्युपसम-तु (सं०) अझांति। विरामका न शेवाः पूर्वे रूपने विराम । व्यस-वि+ (र्स+) विदेश द्रभा, वितराना द्रमा सीन्य क्या हुआ ।-केश-विश् तिसने शास बढावे शीर जिनके वाल क्यारे हों। जुन्नहरू समित्। "बराक्काय"ि जिल्लो करा निवारी हो। व्यक्ति-वि [40] वरमे अनुदरिवनः बमावा द्रण बाचर । व मरेरा । स्युत्त-पुर (र्वर) तक्का प्रधाना दिना कन परिचात। (वेर जसा परमा समानी मुखा प्रकाशभूचा दश हमस शवरा द्वेषा १ व्यक्ति-की [र्स] परिवास कना मीरवे। समृद्रिः वर् बना मर्गामा रत्ति। स्टर्श प्रमानः दर भावते हिन भीवन करना । श्युक्त−९ [सं∗] एक अभपर : बबुंब-ति [तं] कैमा दूषा। शिश्तिमा का ध्वरन्तिः। माध्यक्क विषया रवाम बरिवर्डिन ही क्या हो। निश्रादिय वर्गा विशास है -ब्रॉबाइ-दिन दियन क्रमब बारण दिया की सम्बद्धा क्युक्टि-श्री [र्तन] विचित्रवृद्ध दशमा सुक्रास्टा रहूर ! व्युद्धारम्ब-नि [शं+] बीते ग्रीनेशका । क्यबीड-वि [गेर] दिसदी बोर्ने शोल्ब हो । स्पूल-विक [में] सुना क्रमा बरावर विश्व दृष् (क्रामंदि) । क्ष्यृति नवी (वं०) १० ध्यानि । क्युक्रही−सी [श•] वर्र धनरात्री मात्र भारि ! व्युष्ट-पु [शंक] वयारवास विविष्यंक श्रामा रिजनीक नुष्टन्थिये क्षत्रुष्ट स्थानपर रामबार असव बरबाः रिवाप करना। व्याप-परिवर्गना आरत भ्यान करना; स्टि स्वात्त्वाः अध्याता रवन्ताः सन्दाः शरीरा वास्त्रपाना श्री शर्द । -वार्टिन -प्रय-प्रे रोजाधा प्रशास ! -र्मम -मेब्-प्र श्रीनकोश बनान्यत व रहता स्टब्स

```
शयाड ३ − शरवस
धार्योदक-प्रश्री विरक्षित्र।
शयानक-पुर्व मि ] विरंगिर- एक प्रकारका सर्व
 भगवर ।
यायास्त-वि [र्त ] निद्रायोक्त सावा द्वमा । सः वश्यारः
 कुत्ताः गोदर ।
सपिस-त [मं+] निहा । वि निदित्त, सावा दुना केश
 हमा ।
द्यापिता(नृ)-पु [मं ] सीनेवाछा ।
शयः शयन-प्रसि । भारी भीप अज्ञात ।
दायवा - सी [मं ] सेन्न पूर्वम, सारा विस्तर । - कास-
 प्र• सानदा समय । - गत-वि
                                  पर्श्नपुर सीवा
 हुआ: अररस्याह कार्य द्यारपर पहा दशा, शीमार ।
 -गृह-पु॰ श्वमानार । -तान-पु॰ मनक्कमें ६ थेन
 र्गन मेत्-पाति है सिम प्रकाशशाद तथा शासशाहकी महा
 बाब या प्रतिकिक्श दिया जानेवाला वर्षक विध्ययन
 मारिका दाल गविवादाम । -पास -पासक-पुरु
 रामाने रायमगृहका प्रशंकत ।
घटपाप्यस-प [मं+] दे> 'स्याचान' ।
```

सर्देड - व [सं•] एद्याः विश्वविद्य चलुप्पनः शनियाः बंदरः यक आभवत । शर-प [म•] बानः धरकन सरवतः नरदंदाः यसः हिंसा। निता: "याँच की अंदका। वशिक्षार, दहीनी मलाई। यतः - क्रांड-५ सर्वतः। - क्रार-५ वाप वनाने बाना । -गुस्स-५ मर-ईटा ! -धास-५ चीरी। मी ! ~ज्ञ∞प मनपना कासिकेव । -जनमा(नमन)-प्र• द्याधिदेव । -बाह्य -वाल्य-पुरः शादीदा समृदः। --सला-पंजर-इ बाय-सम्बाध-पूर्विम-त बानवर्ते। -धि-त तरक्षाः -पंत्र-३ जनामाः -पद्या -प यद शासा - पर्की-सी वद शासा - प्रीय-प तीरम प्रया क्या मिगन वह अधिक वेगन मान्दर धीर बरता है। शरफीका मामद बमीपिश राजममें निर्मा दक वदा-नंता-सो दे 'शर्श्य । -शंग-त रह कर्ष । -भ-पुर कार्तिकेव । -श्रेष-प वणका वरम । -सस्म-५ समनेता ग्रह क्यो । -वंतह-कियात तारपत्रीका माधनेशी दोगे ! - बहाडाव-पुर दे शहन । -बालि-पु श्रामधा बाद बमाबर भौतिका समानेशना स्वर्धिः चार श्रीता च्यानि र =बारका - प्रदान । - पृष्टि-भी वागीकी वर्षा व यह मनलाम् । - जरवा-भी भीरमति प्राप्त बोजाहै किए

निधित नारों की प्रांचा । नर्गकाम-पुरु नाग हारा कदव लावन निद्याला क्रमाना । शार-प [स+] दे शर्र । इराय-मी [लर] होची राष्ट्रा वह भीती हाह जी हैपाने बरायी और पंदीके निय बतायी ही। इसनावी बाँगान द्वरोभत् । ~सुद्वरम्युरे~≥े अस्थारो **६** तुत्र । तारहें-दि प्रश्निके अपूर्ण । -बाड़ी-मीर वक् मुही भेर रो अंतुब मंदी र ने । -वासासा-बुक वह बाबाय-में सामीन केंबा दीत −शारी~को दिया पुरशाय सावेश हा एक श सारा-द्र (व)यह बीता किन्हा राजा अक्षेप्र काराओं)

रंपमा हो । सरवर्षत्र-पुरु [र्गः] शर्र भन्ना धर्मा । शास्त्रविद्यानसी [तं] सार् कतुना नीता। सरम्मपीलना-स्री [सं•] सर् पतुर्ध स्टेरनी । शरह-प्र• [सं] विरंतितः दुर्ममञ्ज्ञ साप । शरण-मी॰ [थं] आगवा परा रहादा स्वाद । उन अधीत व्यक्ति रहड वर : -इ,-वाता(त),-प्रद वि भागपताता रक्षकः। शरणा-न्दो॰ (सं॰) ब्रसस्दी हता । हारणागस-वि [री॰] श्रासमें मापा द्वारा । चरणागति-सी॰ [सं] रशाई निए शरपमें जना । दारणायस−दि वि+ो दे ⁴शरमागत । धरणायीं(चित्र)~वि॰ [सं] शरण वन्त्रेत्रसः सभी रसादा भभिक्षाची । प्रारमार्थक−दि० [मे] शरमारव । शरकि-न्या [सं] यागा पृथ्यी। वंश्वि सत्त्वी: प्रस् क्षिमा । हारकी-मा (र्व) पदा पूर्वा; व्यक्ती एकि। (रहे ५६ बर्वतीः वर्वती सताः प्रभारची सता । १ दि० और प्राप्त हेनेसको । दाक्क्य~ि निर्णे रक्षादे चेत्रक, शरूप देवे बेल्स र^{ामी} था जनहानः श्रार्थ ≷तेशनाः शरपायनशः रर'६। दे बामक स्थामः रक्षाः शिव । शास्त्रा-सी (मंग) दर्गा । शरवपु-त (सं) पालन रशका वाता नारम । हारत-त्यी॰ (सं०) बद ऋतुदा नाम भा वारते कातिक तक रहती है। बन्पर वर्ग । –कामी(मिन्) – इ. कुम्पा −काल−२ प्रश्त कत्यो अर्थ कार और कारित्रस महोसा। −वस-पुरोन सम्सा −पर्व(म्)-५० बार महीनेदी परियम का शक्त प्रतिमा । - प्रणा-3 बाइएक् । - जुलिसा-की वे 'शरदपर' । शर्यत-त [लेंश्री घटर कपुदा क्षेत्र देनेश कपुत्र शाय-धी है दान । शरदा-मी [नं०] शरद पना ग्रान । बार**रिंग-५० रै** शरूप्रेप्न १ शास्त्रि-रि [त] दिल्ली यन्ति शार् महरे ही। शास्त्राच-९ 🚺 🕶 चन्त्र नामस्य साम् १ शासम-व [गं०] शर्यकारीय शर्म । शास्त्राम-९ (ते) चरद ब्रह्म अस्य । शास्त्राय-इ [वं] हे 'धारत । शरक्र∽त [स] दशरे। श्रेष्ट्य स्टी। प्रवासे सन्त त्रतिहा। -वाय-विश् सम्मान समेवासा -(ई) ब्रियमा -माराहिमत-१ पेरका गाम e । मुक् न जामा-दर् थाया ह शासत-मु [सर] देश देश्यों रह भाषा मा एक वपटे ये ही आहा प्रत पुत्र या भीड़ीया भई ही प्रती हा

figelib ste feet niet wer in e mitel eine

meret ne a fest gut ber ent -femif-m.

हरूवण मिलानेदी हरदाहर नेवा -(वे)रीस्प -प हर

क्तवन् (एरवत्र महिन्दे अपूरः कृष्टिन्द्वा १६०) १६०।

क्रिक्तभित्र होता। –सति –पु॰ एक देवपुश। –रचनाः सौ ऐतिकोको वदास्थान रखनः। –राजा–पु सर्वोचन स्पूर्ण एक वैभित्तस्य, एक समावि।

ध्यहरू-पु॰ [सं॰] रूप।

स्पूर्म-पु॰ [मं॰] व्यूहर्यमा, सैनिकोंकी विशेष शिविमें रखनाः छटोरके संगीती वनायटः स्थामयरिवर्तमः विकास (भूवका) : वि॰ करुग करमैवालाः स्थामप्रष्ट करमैवाला (हिन)।

ब्यृदित-वि [सं] व्यूद्वस्यः।

प्युद्ध−ति [मं∗] संपत्तिसे नेशितः बुर्माग्यप्रस्तः निक्रणः सरीवः जपरात्री ।

म्पृद्धि-हो [सं॰] अवनतिः दुर्यान्य संबद्धः स्वीदा(बद्धः)-दि॰ [सं॰] अकग रहनवाकाः

स्पोकार-पु॰ [सं॰] सोहार ।

व्योम(प)-५ [सं] भत्कादाः व्यवकाषाः शरीरस्य वातुः बका अञ्चल सूर्वमंदिर। यह वही संबवा (वी॰): बस्वाण: पक्ष प्रकारः एक प्रवासतिः विष्णु । -केश -केशी हिर । -गंगा-स्रो भाकाशगंगा। (क्तिन)−प -श -शामी(मिन)-दि गगनवारी । प देवता मादि : −रामनीविद्या≔नी आकाशमें उदनेकी दिया। -गुष-प छम्र । -चर-वि+ गगनपारी । पु तारा रत्वादि । -धारी(रिन्)-वि॰ दे व्योधना । प्र पश्चीः देवताः संतः अध्यानः आकाशीनः पितः। -तेब-स शिव। - घारण - प्र पारा (१)। - ध्रम-प्र -- १पनि-भी आकासमें सानेदाओं सावात !-- सासिका —भो मारतो पक्षी । —पंचक-प धरीरके श्रॅव छित्र । ⊶पाद −तः विष्यु । −पुरय −पः अमीमव वस्तु । -संबद-संबद्ध-९ होडा, प्रताहा ! -साय-हि गमनभूरी । - सहर - इ. इराव्या देव. सींव्या ! - यूग-प्र योगादे दस अवीवेरी यह । -याम-प्र वासवास विमान। – रस्त – प्राप्त । – वर्स (भ्) – प्राप्तादा-मार्ग । - बस्की-सी अमरदेन । -बारव्-पु॰ दे॰ भिनेम-भाति'। —संसदा-स्थी वितदवरीयाय । ~सद् — इ. देवताः गंधर्नः प्रेतः । —सरिता—स्रीः क्रिः ी

मी पृथ्वी मृथि। स्वीमक-दु [सं] यह तरहदा आभूषय (वी)। स्वीमालय-दु [सं] बस्नदः मृश द्वारूप।

भारतार्थमा । - मरितः - नी आहाधर्यमा । - स्थसी-

रपोमाधिप-इ [मं] हिन्

स्वोमाम-पु [सं] पुत्र । स्वोमारि-पु [सं] पुत्र (११३१०)

रपोमारि-पु [सं] वह रिश्नेश्व । रपोमी(मिन)-पु [मं] चंडमादे वस अपीर्मेन वह ।

रपामाद्द-पु[र्ग] वर्षादा कर । प्योग्मिद-पु[र्छ•] भावाध-संदेण ।

म्पाप-५ [गं] विषद्व-सींड, पीषम और मिर्चेटा ममाराहार।

मज-पु [मं] मार्ग सरका व्यान अनव नयुह मुंहा गीरवान नीहा विधामस्थना नाहतः अपुरावे वाधवा व्य स्थामा गीरोधी वन्त्री १ -विक्रोह -नाय-पु कृष्य । -प्रया-पु स्ट्रामें से गयना । -आषा-की सपुरा

बादिकी राष्ट्र नोकी बादेनाता एक रोकी की कई सी वर्गोलक हिंदी काम्पको सुरम माना रही है। - मू-दिक प्रवर्ग पुरस्का एक मेर । तीक प्रवर्ग का प्रवर्ग -- नोक्ड-पुरु प्रवक्त थिव । - मोहिल - पास, - चर्र -धरस्क्रम-पुरु कृष्ण (- पुनसी - रामा, - चप् - परिसा, - सुवर्ग, - च्यों - स्थाल-पुरु हिर्ग कृष्ण । असक-पुरु हिर्ग क्रमा असक-पुरु हिर्ग कृष्ण ।

शबक-पु [र्स•] प्रमण करमेवाका सम्म्वासी । वश्रम-पु• [र्स•] गमन, श्रमणः देशस्यायः समामीदका

रकपुत्र। श्रवस्पति~पु[सं]कृष्य।

बर्जागन-पु• (सं•) गोष्ठ । बर्जागना-ची• (सं) बनको रचनेवाको स्तो। गोरी ।

ब्रकाबिर−५ [सं] गोष्ट । ब्रकाबाम−५ [सं०] ग्वाकॉस्ट्रे क्ली ।

वक्रित−वि॰ [सं]गया हुमा प्रसिदा पुगमम, भ्रमण। सर्वी(किन)−वि [सं] सुंबद्दे रूपमें प्रमा सर्वेद सरीया सस्वस्रर-पु[सं]क्रप्यः।

समित्र करीया सम्मर-पु [सं] कृष्यः ससीका(कस्)-पु॰ [सं॰] दीए। वस्य-वि [सं॰] नीष्ट संबंधाः

करवा - की [सं] झमणा मिटा मनवामी-के क्यमें प्रमम बरनाः कृष बाकस्या शेषी, वर्गः वर्गकरका समृदा रंग भृति ।

सर्थे - पुः [सं] कीश पात्र करमा विद्वारिः वर्षुरा छित्र योत्र (मिर्बार पार्थोमे) । - कारी(मिन्न)- मि काब्रक करनेवाला । - कुर्ग्य- मिन्नारोत् प्रकारत । पुः मिलावी । - केतुम्मी- ली॰ पुत्रकेनी नामक सुर । - इस्मि - ली कीहेक्षे गाँउ । - चित्रक- पु वर्षम् काम कोहेक्ष वर्षमार करनेवाला । - जिल्ला- मो गोरकर्षुरी । - द्विद् (प्)- वि जन करणा वरनेवाला ।

तु नास्त्रवाहिका । - पूपन - तु थो हेने तुनी देता वीतेका वाप्योदवार। - पहु - पहुक - पु - पहुक - वीते का वीते का विकास वहीं। - पूत् - दि नाहिक - वीते का विकास वहीं। - पूत् - दि नाहिक विकास विका

वारका भरमा। - सोधान-पु वारधी सकारे। - सोधी (चित्र)-वि चोरक कारण थीण होनेताना। - संराहण -पु पानका भरना। - ह-वि॰ काहा हुर बरनशाका। पु प(व। -हा-सी गुपुनी। -हागू-पु कनिकारी।

श्रणव~षु [सं] भरम छे॰ करता । जनायास-षु० [सं] जनवस्य पीक्षा एक अम्पारम होत (जा०ने०)।

समाहि-मु [सं] योध सामद संपत्रम्या भगगवदा देव । समाच्याच-मु [सं] कोइन मूच आदिका बदला । समित्र-वि [स] विश्व मार्च समा ही भादता विशे

मगदुमा हो। – हृद्य-वि महोता। प्रक्रिय-दि [र्स] ६ तिमान (तृष्त)।

। बनी(बिन्) – रिडिं] दिने का दुशा की भारता

इक्स प्रोका रंग विसमें थोड़ी सुखी भी हो। मकमकसे मिकता-जुकता एंड निहायत वारीक और विन्या कपता पद तरहका कन्तर। अकोतरा नीवृ । ~वॉक्रिं पु छर क्ती रंगका कागन जिसे नगीनेके पीचे रखते हैं। -बीब् - पु मौठा मीन् चक्षोतरा । - क्रासमा-पु फालसेका एक भेद जो हुछ बड़ा और खर मीठा दीता है। शरवान~प जगिवापास । सरभ~त [मं] हाभीका क्यार केंट सिंबसे भी वक्तान् पक करियत रहा विसे 'सहपाद' (आठ पैरॉबाला) कहते है। रिजी: रिजा पक वर्णकृता दोहेका एक भेदा एक व्यपि-यभग्र । शरभा-नी [सं] वह कृता को अंगोंके शुष्क होनेके बारण विशासके संवीस्त हो। एक बाएयंत्र । शरम−सीदै धर्म(फा)। परमाका-विदे 'धरमीका'। भरमाना∽स क्रि∙कक्रितकरना।व क्रिक्जित द्दीमा । श्वरमास्त्र†-वि दे न्नरमीका (शमा<u>र्</u>च)। शर्मित्री-सी दे 'शर्मिश्गी । प्तरमिंदा-वि दे 'शमिदा । भरमीका-वि॰ कवानुर, सम्बाधीस । घरम करम –को • [सं] दे 'सरम् । शरर-प्र 🖣 विनगारी। शरम-दि [मं] दे 'सरकः कृतिकः। शरसक−प्र [सं] बल। शरम्य - प्र (स॰) दौरका निद्यामा नमनेनाका व्यक्तिः गानका करन । शरह−स्त्री [w] ग्रीतव्हर बहनाः वर्गनः व्यास्याः दर, मार । -धंदी-धी मार्नेकी त्रातिका ।-अगान-शी बगानको इर । −सुद्र−न्दी० व्यातको इर । घरापत-मा [स] दिरमेशारी माता । न्यामा-त षद्य पत्र विगमे हिस्मेदारीकी धार्ने निक्ती ही। पासदि पासदिका प्रासदि प्रसाति∽न्ये भिंीयद विश्या को प्राप अनके निकट रहती है डिट्रिल कुररी। प्रारापना॰−त क्रि द्वाददेशा। भराक्रत-मी [ब] प्राप्तेत्र होना मनमनमीः सहताः कुनी ता। - पनाइ - दि छ(। शॉको आधव देशेवाना (मानइत अक्तरोडे निए वर्षानाथे जिल्ला जाना हो। -वेगा-रियय (एक्स) षाराका – पु॰ दें॰ ⁴गराका । प्राची-मो है॰ साधी। मताय-स्ते [श॰] वेदा सव । -द्वाना-चु शतावटी दुसान महिरानद । -एरोए-पु दे 'महानदताह । -प्रोरी-भी दे 'प्रशासकारी । -पृत्रार-प् शरावी सम्पन्नमंत्री । -गुन्नावी-मी॰ शराव दीनेश ष्टाम । - हादा-दि सन्दाशा । ~(वे)तहर्-र^

मु - पिकाना-स्पाइके पहछे या पीछे बरातिबाँकी शर

वद विकास (ण्हा रहम)। -के प्याक्रेपर निकाह कर

षापदाक्षेत्रा−दिनाइन्छ सर्वदिने व्याद कर देना।

भरवती−वि भारवतके रंगका रखवार, सरस । प्र

निहित्तमें मिकनेशकी पश्चित्र दाराव । सुरू –का दीर चलना-पानगोधीर्मे सम्मितित सीगोसा प्रामेगर प्याका द्यासी बरमा, पीनेवाबोंके प्यानीका घरा और जानी किया वासा । शरायी-नि॰, पु॰ छराव पीनेवाना, मयम्बसमा । सराबोर−वि भौगा हुमा, विक्रक्त गौला । शरायुध-पु॰ [र्स] भनुष् । सरारत-ली [न] दारीर (दृष्ट) दोनेका मान पात्रापम, धैतामिषन । शराि शराि, शरािक-सी [एं•] घराटि विदेश पक्षी। -(शी)सुली-न्या पद प्राचीन क्षेत्रमा भौजार । शराष्ट्र-वि [सं] हानिकरः चोट पर्देवानेवाहा । प द्दानिकारक श्रीव । शरारोप−पु[मं] धनुष कमानः। पाराव-g [सं] बडकी रहा दरमंशाला सुरपाता एक मकारका मिट्टीका वरतमा तातरी। भाकः वैधीकी एक रीक भी चीचढ केनेकी होती है। शरावक−द्र [सं]बद्धनः धारावती~ली [मं] बागगंगा पर प्राचीन नगरी अहाँ रूपने अपनी राजवानी बनाबी थी। शराबर-पु॰ [मुं॰] दाका तुमीर । द्यरायरण-५० [मै] दान । शरावाप-द्र [सं] भनुष्। त्सीर । दाराविका-न्यी [एं॰] एक तरहकी शुंधी भी भीगर गहरी होती है। श्राधय−द [सं] त्थीर तरकम । शरास-९ [4] बनुपा दारासम-पु (म) पनुष्। द्यासम्बन्द (म॰) बतुष् शरिष्ठ-दि० दे० शेव । दारो(रिन)-वि [मं] बायदकः। वारी सत्त-त्यी [#] गुपाफे बनाये हुए कानुना सक-हवी कामृतः स्वाव । -(त) मुहरमदी-र्गा सहरमहत्ते यमाथे इर कामून । शांकि-वि [म] शिरदन श्रानशना मिला दुशा शामिकः सातीः जीवीदारः गाव देनवाका । -(के) दासमा−4ि भगामें बदरिवन (वस)। −ऋगै-दि• अपरायमें साब देने महायगा कर नवाता । - दर्य-वि ५०८में गांव देनेवाचा । ─शाय-ति गदमन प्रत्यंत्र । ~हाल-वि दुःशा सुगर्वे शाथ देशवाला। शरीक्र-वि [श्रव] भवा, मैदा कुत्रीन धेने परा दि। प्रतिक्षितः पनिष (अन्य शब्दमे सुन्तः काक्षरं सम्मानका सर्वे वदर बर्ता है- बुरानशरीक "महागरीक") । बु

भना सानम कुलीन अतिदित बना सदं रामस्यी

क्यो। −मानदान∼दि ७३ पराज्या कुणीय।+

ब्राह्म-तु एरीवडा साहकुरीन प्रना - ब्राक्ट-भी

शाबिश-पुरक्षम गीत्रपत (श्मका हिन्दा गीम

कीर बारी द्वर ६,१-सेंट संधेन क्या दाशा दा सम्ब

शरीमधी नहीं मुन्तेना स्ता।

प • पैला स्पर्फि । सभीय-वि [सं•] जय-संबंधी। ग्रक्य-वि सि] यो नेमें कामदावधः। रात-प॰ [सं॰] पाधिक कृत्य, पाधिक अनुपास विशय, संबंध मादि। प्रव्यके विचारशे श्ववास करमाः प्रतिकार मक्तिका विषया बीवन-वापमका देवा आहेता. विधि विवास करों: थो बमा: मधण: एक ही तरहका चरार्थ सामाः दुरभाहार । ज्यहण-५ कीई भामिक कार्य करनेका संकार करनाः सम्म्यास केता । —कर्या-का० मार्निक जनुष्टान वत रखना। - चारी(रिज)-वि वार्मिक अनुप्रान्ती संतरमः जल करनेवाला । -हंडी-(डिम्)∽वि दंट-वर्रणका ग्रह पाकन क्रवेशका। −दास∽प• ततके कफ्टवर्गे दिवा बानेवाला बाल । -घर-वि जद शारण करनेवाका । -धारण-प्र थामिक भगवान पूरा धरना । चयश - प्र भाव-प्रक यक्ष। -पारण-पु+,-पारणा-ली+ त्रन, क्यबासकी सप्ताति । -प्रतिष्टा-तो स्वेष्णासे कोर्र शामिक अनशाब करता। ~संग∽त अट. प्रतिपत्ता संदित हो जाना । -- विश्वा मो वहीपपीट संस्कारके समय माँगी कानेवाची निक्षा ! -शकि~दि॰ प्रतमे मानंद मागनेवान्य ! -स्ट्रह ─बि जिसमें भएना तत संग कर त्या है। —क्कोचं, — कोपन∽प व्रत-संग् । —विमाग∽प समाप्ति । - विमार्जन-प्र• जन समाप्त करना । -विकास -- प्रतकापरा न कीमा। --संग्रह--त• कीर्य जन घटच करमा। दीहा । -श्रीपात्त्र-त वार्मिक अनुवान परा करमा । ⊸र्मरक्षण∸५ । अथका पाधन !⊸समाधन पंत्रतको पर्दि। ⇔रघ−ि जिनने त्रम पारच किया है। प्रश्नेबारी । −थास−ि किमने तर परा करने पर बाल दिया है।-बालक-वि मिनने महापार्यका ब्रन परा कर निवा है। वै भिन संख् । ⇔न्नाम ∽ड त्रदक्षे वारका साम । —हानि —ली त्रदका परिताप । ন্তভ−৫ [г'] খানিক শর্ভাল । प्रमृति प्रतृती-की॰ [तृं॰] (मेप्टनेशक) अवार नैकार विश्तार ।-वसय-५ हंगनको तरह विश्वनेवाकी कता। ग्रताचर्च−द्र [सं+] क्रिनी अवशा करून । यताचारी(रिय)-दि॰ इ (शं॰) जनाभरम करमेशाना । समादाय-द [न] तत्र पार्य करमा । सतारेश-इ [6] बननयम नयोगधाननंत्रार ! प्रसादशन-५० [मं] बरनवन गंस्कारके पार महापारी की दिया जानवामा नेरफा उपरेश । प्रभापश्चिम्नी [मं] धार्मिक कृत्य वा अलका वरित्याग । मविष-पु [। जनावारी । व्यक्तिकी−व्ये (मं•ो गापनी। प्रती(तिन)-२० (गं॰) मन्द्रा अनुदान कर-नाकाः चनीनारी । पुन्नसानारीः सम्याणीः यत्रमानः एक RFI I सर्नेश∽पुर्[]धिर। प्रतापनपन-५ [र्च] करनवन-नेराहर र प्रतेषवास-तु [मंग] अन्दे किय किया जानवामा वय क्षा ।

मतोपायन-पु [सं] शामिक अनुवान शावि कार भगारंग । ष्र**कोपोक्−**पु[सं] यद्व साम ≀ व्यय-वि [में] मनायाती। प्रशक्ते प्रयुक्त । द मी प्यास के व्यवस्थ भाषार। महायारी । मप्प-प्र [सं] के अस्त । असन-वि सि बारनेवाका यो बार महै। व एँटे मारी। सनारींकी धेती। बधका धेरत आवेत करे पश्चमेवाला रसः टिग्म । महा(न)-प सि॰) १० 'तदः(प) । माचढ माचड-ली व्य अपमेश माता थी वहने दिवने गीली बाती भी, पशाविक मारान्य रह भेट । द्याज्ञ∽प थि रेगमम गुरिशक समह (वै•): गम्ध मुगा का कुला। -पशि-प्र वहनावक। काकि - सी (संश) श्रधान, भौती। काजिक-प (सं) सम्म्यानियों हारा क्रिया बानेस्टर एक प्रकारका प्रपश्च जिल्हों में केवल बचवर रहत है। ब्राल-पुर (तं] समूद, रूम, श्लंदा, विवाहीरसबी स्तीव क्षित्र क्षानेवाचे कीया मनुष्या मातिनश्चन मन्नाप मंत्रामः व्यापादि शारीरिक समा बैतिक समा संगरी। -- जीवज -- दि॰ यहरहोते औरिया मनानेशना । - पति -त संबद्धा भव्यथः। वातिष-प्र (सं॰) एक पामिक अनुवास । बालीम-वि (लंब) यवदरी दरके जीवेदा भगानेरणी शंदांशे जीविका चनानेवाना अरावमपेदाः संपतीयी । कारय-प [सं] संस्थानदीय, वादिन्तुत दिया दूर और श्रामिश्रामे करवा वक संबद जाति। मीन भारती। वि वहामन-संबंधी। - यस-५ सानभडीए, प्रया बारी बादि वा वर्ष । -- माथ-प्र वह नी अपने भी मरह दशता दी !-यण-प्राप्त प्रकारका वश्रा -याज्ञक-पुरु वारक्षक निष्या प्राचनाता । - स्ताय-पुरु वद रिधेर को नंत्वार म का के बारव दिन कर परिवर शास करने है निष दिया जाना था) । मीब-५० (०१०) स्था । शीरम-४० भिरो अपरयः सर्वे सामाः मध्या । श्रीदा=मा॰ (सं } लागा स्तीया महता । धीजायतः धीधारियम्-वि (ग्रं॰) मध्यितः विसेत्र । श्रीविश्व-वि वि विभागः विनीय र श्री अपना विगयः) श्रीम्प्य-दि (श्रेश) है 'होहिय' र प्रीहि−पु॰ [मं] मारका चारमका रामा। रामा[‡]रै प्रदेशमा पाना करी अन्ना भानदा सैप । स्वीम न क्षांबन-पुरु प्रशृह । -ब्रास-पुरु रच हील पानि ! -पर्विद्या -पर्वी-भी धात्रको । -धेर्-शर्विद्र-यु नेना । -- मुल्ल-पु नारतके बाते देना वस्त्रम (सार्व्यः) । न्यापन्तः पानादे राभारे । न्यानी (शिम्)~/4 पान पानरफा । -वेबा=भी वार बारनेवा लवत । -बाह्य-प्र यद वर्षका भाग सन्दे WOOD I प्रोडिश: प्रीडिश=दि० [र] पानरचम पान नार बरनेरामा ।

गुरा मीठा तथा सुध्दर और लंबोतरे बाल बीजीरी कियर रहता है): इस प्रस्का दश । सरीर-वि [म] द्रष्ट, नगाद, पात्री । पु [मुं] शरिय

मांगः मध्यः भारिते निर्मितः स्थल्परः अक्षणः, जमपर मोर्शेन्द्रे मेपूर्व बंगीका एमुएय (बढ़ी रुपूछ दारीर कहलागा है। मारतीय दर्गन-प्रेमीम च्युप अवना निग प्रारीहरू भी वर्णन है, जी नुद्धि, कईकार, मन पंच कार्वेद्रिय, पंच कर्में द्रेष तथा पंज दरमायने निर्मित माना जाता हो।~ कता(र्ग),-कृत्-त विवा ।-प्रक्रण-प्र• प्रारीर पारण महता । -ब-प्र- बामरेश बाग-शासनाः प्रवासीता । -स्याय-त मस्त । -वंड-तक धारीरिक वंका धारीर को बह देना । -देश-पु॰ छरोरका कोई मागा छरोरा-वरीय (वस्ता) । -नियात-पुत्रद मर माना । -पत्रव-प्र शरीरका क्रमान शीर्व क्षोमाः सन्त्र । -पाक-प्र छरीरका भीरे-भीरे दर्बल होत जाता । --पाल-प एखा -प्रमय-द विनाा -सघ-द देहबर्ट-ঘং।ংহা হাঁবা। −হঘছ−৭০ ৯৮ মতিল । −হল– प्र• वह बिसने घरीर पारण किया है, धरीरवारी। मारमा। विष्यु । -सेद-प्रश्र द्वारीयका (भारवासे) प्रवट द्रोमा पूरदु। ∼यष्टि∼भौ पत्रका दरतः। ⊸याद्वर−े न्दी जीवन-रक्षणी साधमः जीवन-पर्यनकी बरगरेः भोगतः। "रह्मच-पु आक्रमण भान्ति राजा अमीर यमरा भारिके शरीरकी एका करमेवाना व्यक्ति शंग रसद्र। -पिजान-प्रदेशित धान । -प्रकि-छी शरीर रक्षांके लिए ब्यापार मीकरी १० जीनिया। -धाध-९ ¥)Ou −यकस्य~द भारवरमञ्जा ! बाहरी भीतरी अध्वयाँकी रचना किया mD fi विदेवता करवेतामा शामः शरीर-विद्यान । - सीचव-प्र• शरीरका सन निकासनेशना वरात्रे । -संपत्ति-सी अच्छा स्मारम्य । -संबंध-त विशव-संवंध । -संस्कार-इ धरीरकी परित्र प्राप्त करनेवाल वेड विदिश स्रोक्ष शंदकारा शरीरके शीरमेंके लिए समग्री सकार्व जनका संवास वर्षश्याकि । - साव-५० छगीर भ्ये प्रांति । -स्य-दिश क्षरीरमै १६नेशाला । -स्थान-प्र चर्चर-भंभी क्रिकोड । -हिपति-भी 🐧 एशेर पवि । शारीरफ-इ [लं] धरीरा न्यु चरीरा भागा । बारीरोड-इ [वं] मृत्यु देशक्यामः वान । रवास्थ्यास्वास्थ्यस्य स्थानः दिवे निना क्षणे न्या अपनाः

शारीतर-पुर [धंर] दूमरा शरीरा शरीरडा शंभरी जाप ६ शारीराचय-५० [तंत्र] (याक) लम्बर्चके निषे शरीरके

शन्दार्थके किए श्रीवसार्थम ।

शारीरायरम-त 🚺 अभगा शरीर एडटेकी दन्त dta: ere i

शरीतरिय-माः [तु] ४५.१४ । शारीरी(रिक्)-दि (मं) प्रदेशकरो। केंदिन ! 3 मनश्वा वह जी इस्ट्रेटने रहता ही आस्माद माणी है धाव-तु [मं] बन्दा व ब्यारा देश्या वया अन्या विमान क्षिमा बाद पत्र देश कारणा है। धीमी मुख्या

रपना । पारंज−प [मं]कार्टियेव ।

धारेष्ट-प्र• [मं•] भागवा है। • वि• महा सङ्ग-प्र निशी परम ।

पाकर-त [तं] भीनी। बाह्यप्रकृत देवता इक्रमण का जीव भी प्रहर्में पता शांता है। एक सरहरा दीन विश् कपदार । अवेष-त शहरवेर । -शा-वे farti i

राकरफ-प [मंग] मीठा नीव ।

शकरेंग-मी [सं∘] छटर रशशार थीनी: शहराहा कंडरा रापणा टीक्सा शंग इक्सा: प्रशी रोग ! -धेव-न्त्री बानके किए शक्ष्यक्षी बनी गाव ! अप्रशासके एक नरक (वै)। - प्रमोद्र-५० यपुन्द रोग −सप्तमी−को वैद्यायन्त्रद्रा सन्दर्भको पर≥तवास पर्व (इस दिल रवर्णां भ देवके सम्मरा भीतीभरा बना रराजर प्रवर्ध क्या थी जाती है) ह सर्वराचम-बु [नंग] राजवे तिए पीनीय कृति

शकरार्जन−त [सं∗] रह तरहदा आरंद (भा•ने) । शार्डशास-वि [सं] (भाषी) दिसमें बंदरी गरी ही। शकरामध~त [44] पीमी । यमी शराव । सर्वदिक सर्वदिल-वि [संग] शर्यसम्बद्ध इंदरमस्य । हाकरी-की [वं] गरिना। नेसमी: (वंतरी) हेग्रहा

एक विशिष्ट होता । शक ()(रिन्)-वि [व] प्रशी रीयमे झान । शर्करीय-दि [म] पर्दरा होती । राकरायक−४ (सं] थोनीका श्रापत ।

वार्ती-वि पूर्वाव । बार-को [ंश्रे] बुर्ग नेमा कर्मांगने परनोधा दक निषर हका बस्द वसीन ह

प्रार्थ−भी जि. । प्रतिष्टाः दिभी गरिप-समर्थे देनी भेगः मन प्रतिकार कर पात किरापर दिन्हें पानका होता दिया बाला कारम रहता अवनेदिन हो। बरण बा बार्रिति पदे किए अभिवार्त बाता देश पानीम दी। uift ! -ue-le Diff fut Duit #ferter feit. कर निवय अवधियक काम करनेको वैचा हुमा (बहाएर)-निरमितिया । स -वर्षर मोमा-बहुत हैरली लह्ना वही भेदी भेदर मेना। -बहुबा -बाँचना-वादी भवाना । (किमी बागड़ी)-द्रोमा-विमी गर्रे w feu mfrait wegieres Bei : - er f-in स्तरीयः ।

शर्तिया शर्तिथा-दि अनुष्क भ्यदा (-१यान)। ध <u>धर्म नरक</u>्ष

शार्वी-वि दिशी को विशेषक मानिए। म effett 1 undur-fen [if] a t fire unbemet 3º XB

मरक्की दान का देन र शार्थ-पु [अ] ग्रांका समाप्त काव बाहुदा स्था है

सार्थत-पु [लं] अपन बादुश स्थान बंदरा ! Refr-90 to reen 1

मीही(हिन्)-वि• [तं•] (वह केत) बिलमें बान गीया गवा हैं। सीक्कायूप-पु[मं] चावकका पूमा (प्रा॰)। धीक्यागार-प [सं] चावक भादि रखनेका मोनाम,

भवामार । मी**बा**धमण−पु (सं•) भानका कीर्याया । मीग्रवंश-स्री [संव] पासका सेता।

यक्ति-वि [सं] दृशाद्वशा, नियम्मा भवका हुमा,

स-देवनागरी वर्णमालाका सीसवी और कप्पवर्गका प्रवम ब्देवन दर्भ । बचारण-स्थान वाह्य ।

इक्सिन−पुर्वास् } सब अत्यव करना । श्रीक्रमा के ना कि सरेह करनाः करना ।

इक्निय-दि [सं•] जिसके संबंधी श्रंका करनेकी ग्रंबा

रशको संदायोग्य ।

झकर∽द [सं] क्षित्रा होन्दराचार्यः वक्ष रांदा वक्ष राया मीमधेनी कपूरः * दे नंकर'। दि कल्याणकारी श्रमंदर। -किंकर-प्र शिक्का मका -च्र-प्र पक तरहका निरेता मर्प । −अदा-की एक सेद; सागू; करावारी:। -सास्र-यु एक ताल (संगीत) । -प्रिय-प वीतर पड़ीः वर्त्तकः होचपुष्यी । -मत्त-पु॰ पद्भ दरहरू। लोहा। -श्रव-पु

-संस-प्र केमान पर्वतः। -श्राप्तर-पु दिमानमः। संकरा-सी [सं•] प्यर्वतीः एक रागः मंत्रिष्ठाः समी

पध । दि स्त्री संगक करनेवासी । शीकराचारी-त श्रीकरमधका अनुवामी । इक्तिकाची-प [मं] क्ट्रैतबाइके प्रवर्गक प्रसिद्ध गार्थ-तिकः। विदेशाची माठवी सतीके अंत तथा भवी सतीके कारंबने विद्यमान थे। इ.क्षेत्रे जवल्या होता' तथा 'उर्चनवरों का माध्य किया । बीटॉका संदन इर नेरिक धर्मका प्रमा प्रमार-प्रचार किया। भारवके थारी कीनीपर चार पैठ श्वापित किने जिनके नाम ₹-वदरिकालम, करवीर-पीठ, दारका-पीठ तथा शारवा-

पीड ।) र्शकराभरण-५ [मं] एक राग । शंकराक्य-प्र [मं] केनास वर्गत ।

श्रीकरायाम-५ [मं] यद तरहका कपूर। क्षेत्रास ।

संबराद्धा∸भी [4] ग्रभी क्य । शंकरी-मी [सं] सनीह मंत्रीह संगीह संगी कुछा एक

रागिती। रि. स्पी. भंगल बर्नदानी ह मंदर्येय-५ (से) विष्या रेम्ब्रियोदा प्रथा

शंकव-त्र [सं] सङ्ग्री मछनी।

शंका-सी [से] संग्रदा त्रया एक स्वारी ग्रावा -जनच~ि शंदा शरपन वर्गनामा । -शिवारच-इ. १'ग्रंथका दूर कोना का दूर किया जाना । -निवृत्ति-रोग्न निवारण'। -श्रीषु-चु अवसा बाँटा । ~क्षील्र∽दि क्षेत्र कृत्या निसुद्धा क्ष्माकृता औ माना का दिया करता हो। -समाधान-पु एका-

भका इभा (अंगलर्वे) । हैड-वि (सं•) चावलका बना हुआ। ग्रैडिक-वि॰ (सं॰) चानके साथ उपवाना हुना । ग्रीहेय-वि [सं] बाज बीने बीम्या बानके साब बीया क्षमाः चारकका नगा दशा । प्रभागका रोता । ब्हीत−वि (रं•) कुथका दुशाः गता सेंभाता दुशा । क्षेत्क-पुरु सिर्) बाक पंता, पॅसरी । -इत-विर

धैमरी कगावर मारा दवा ।

का निराकरणा संका सीर समाधान । शंकित∽दि [सं] श्रंकामुक्तः मीतः। पु० चोरकः नामक वैवास्थ्य । - समा(बस्)-वि संग्रवातः टरपोकः।

-वर्षः-वर्णक-पु भोरं। र्मकी(किन्)−वि [मं•} एशवाहा टरपेक्। र्चंड-पु (र्च॰) याच्या कीका भूँदी। बागकी मीका हैंडा पाप अपराधा विका गाँवी। परेकी महीका बाका किया राख्या इंसा विना कामरेवा धान नुख मधी नामक र्गमहत्त्वा यक प्रकारका संसा; एक मछको। 'छंच को संस्थाका मामा नारक अंशुक्षको यह माप। सूर्य दोक्टको द्याचा नापमंके निय काशादिकी निर्मित बाद्द अंगुरुकी पुर्द्धनी मापक वस्तुः मापीन काकका एक गाजा। --कर्ण -श्रयण-वि मोदशार कार्नोशास्त्र । पु॰ ग्रदशाः -कर्बी(र्जिन्)-पु॰ महारेत्र । -तदः,-शृक्ष-पु सान् का पर । - प्रच्छ-पु मीरेका रका - फाली (जिल्)-प्रकार विकास । - मुन्द-पु सूरका माह । - मुसी-

मी॰ बीद । शंकुक-तु[लं] छोदी भृती । इक्तिचन्ता [सं] महची मछली। र्षोक्टर−वि [मं] दरारंना, मदानदः। र्वाकुरुश=स्वी [र्व+] सुचारी काटनका आश्रार सरीना ।

र्याच्य-विश् (सं] शंका, स्तेष्ट करने वाग्य ।

शंकोच-त शंकोचि-री [8] शंतु मस्या महत्त्वा मक्रमी ।

र्शास-९ [मं∗] सञ्जूत्रमे पश दोनेश ने एक अंतुद्धा सोन्ड या घर की क्यर-छा सना और छन्नत होता है (नव इसका भरम बनाबर आवश्रद बाममें शहद है। नीय वहा परित्र और शुभ माना जाता है तथा पूजन, सुद्ध आहि के क्यारीयर वजाया माना दी। भी पश्ची मन्याः कुरेरकी कह निविध शुक्का मनास्था एक बीया धंनामुर (बी विष्यु हारा मारा गवा)। छापप छाच्छ वट भेदा र्वश्व पुरुषा एक मेदा कनाटा दावी दानी बीनी के वीयका भागा मुनरबी एक निधि। एक देखा एक क्वृति-कार (बिध्यतका मार्र)। विराधानका प्रमा विक की क्षा - कर्ज-मु क्षितका स्थः अनुपर । - कारः-कारक —बारक—बु एक अर्थन अ धमाओं धीचे बनाडी है। - बुस्स-पुर्वापुरवीः भेष अवस्तिन। १ - वृष्ट-

तु रहमानः। -धार-तु अनेपर-रातः। -परीः-

वर्षी-क्ष' (कम्प्रका) ६ लग्न देशा - वृष्-पुर

शर्वनी-वि दे 'शरवती'। दार्स-सी॰ [फा] कसा, द्याः दस्तत साम (रामा रहना): स्रवास, निहास ! -शाह-पु गीय क्षेत्र सम । ⊸र्शी−वि० क्रांत्रिका करवानुका। -माक-वि कवानेकावक करवाशनक । -सार-वि समिता, कविवनः कव्यावान्। – (में) <u>धन</u>्छ-इन्ती-सी॰ सामने डीनेका किवान, नंकीय आँखकी साम । मु॰ -सामा-साम स्थान । -करना-स्थित होनाः विदास करना । --की वास-वज्जाजनक कार्य । -रप्रामा-सरवा अनुभव करना। -से गररी हो बाना-(दुलदिनका) कामके मारे सिकुरकर गठरी-सा वस काना कमीलमें एवं जाना। शर्म(मू)-प [मं] सन्तः गृह (वे) अध्ययः भासी र्वयन रक्षा। वि सुद्धी संबद्ध। - दु-वि आनंद शासक । एक विष्यु । शसर-पु[सं] एक तरहकी पोञाक। समो(मेन्)-प [म॰] महावनगेनीपक छपावि। वि मसब सुसी। शर्माक शर्माख्—वि क्रव्याशील शर्मीका ! शर्माना च कि अ कि वे शरमाना। য়নহার্নী−ল ভজাৰত উভীৰণয়। रार्मिवरी-सी [फा] श्रमिवर शना । सु०-उठाना-**एकिन होना** । ছনিঁৱা–ৰি∙ (দা] কনিব ভনাৰা⊈মা। शर्मिष्टा-नो [ग्रं॰] रामा बवातिको छोग रामी, दैल राष्ट्र क्यपर्वाको क्रम्या और देवशानीको स्रयो । ग्रसिमार−वि क्षाीकबित समिदा। सर्मिरी≕सी द्यस्टिगोकाभाव । समी(मिन्)-वि [म] सुयी। भाग्यशामी । शर्मीस्प-विकासीन। शर्वा−स्त्रो [मं] राधिः श्रेष्टसीः वाम (वे)। सर्वाति-पु [गं०] वैषरवन मनुके प्रच । प्तर्र−प को चरारन समका, कनारा दुरारे । **मर्रोक्रसार-**प अगरा-कगार । शव-त [मं•] शिवा विष्णा = पर्वा-मी पार्वती । -पवत-द दैशाम। शर्वर-९ [से] देरदे कामानः संवदारा नंजाकाः ।

रामित-तु (१०) तस्त विशेष राजा काव्याणः। स्तर्भः न्यो (१) प्रताकतारभीः साम-तु (१) पुत्र सामक करः मारोकः वीतः स्तरीः साम-तु (१) पुत्र सामक करः मारोकः वीतः स्तरीः साम-तु (१) पुत्र सामक करः साम्योकः वीतः स्तरीः

शासक-पु• [सं] मक्षणा एक पश्ची। शास्त्रासा-पु• [सा] पक्ष क्षेत्राक विश्वकी जब सत्कारी कवार शारिके क्ष्में और पत्ते शामकी सरद् दाव बाते हैं। शासकास-पु• [का] दें∘ 'श्रक्रमान'।

शास्त्रसम-पु० [का] ≹० 'शास्त्रमम'। शास्त्रसमी-कि शास्त्रसमी मिसता सुस्ता। -व्यॉर्से∽ क्यो वडी-वडी लॉटें। शास्त्रस-पु [4] पतंत वरिता दिद्वी छच्यम छदक। यक मेदा एक ब्रह्मुं। (साहिरवर्षे छच्य(प्रतेग)को प्रेमीका

प्रतिक माना गया है।) प्रतिक माना गया है।) संकर-पु [तं∞] शाही श्रक्तको कोम, साहीका काँदा। —चेंचु-पु॰ साहीक काँटेकी कसमा।

संकर्छी−नी (र्ष+) नात्रोका काँगा; छोगो सावा । सरकारमूर्थ – पु (र्ष) जुल्का भूगे वेर्गमान सेकारो वरेतिया । सरलाका –सी० (र्ष) दिशो बागु, कवडी भारिको बनी सम्मर्थ सीराः सरमाकगानेको सम्मा। काँगे याप भारिको

सारणका न्यों। [सं] किनी चानु, ककारी आदिकी बनी सम्पर्ध सारमकामाने से स्टर्गा क्षारे याप आदिकी गरराई नायमेशानी सन्तरी सन्तरी सार्वा छानेकी दीकी। परास बागा आका। विषकात्वी कुँची तूनी। सार्वा मरून स्टा अनुवा देगकी। सार्वा, सार्विक नामक परी। स्ट्री। —पुष्ट पुं कीनीके सिरसक हेपपुष्ट । काकार पुष्टि किने कर सकर परिमाण से बजार वर्षोका, गाणिका कर कीन।

हासाहु-तु [सं] मूनविरोव व्यवस्था वेता वि अपकः, वर्षा। सस्पाद पुर्विशोदक प्राचीन यनवर विश्वेष प्रसिद्ध वेवाकरण पाणित रहन थे। हासामासि-पुर्व [सं] केंद्र। सस्पासु-तु [सं] क्यांच्यास्था।

हासी-सी [मं] साबी नायक जेतु विगकै सरीरमहमें कोटे कोण है। सासुका-सु कमरणकका एक पदमादा ! इसक-पु [मं] वश्यक कृषकी शामा; मएकोकी चीर्य ; टिप्टका संद द्वारता !

हास्टरमी (सिम्)-५ [मं] महारो । हास्ट्री (स्ट्रम्)-५ [मं] महारो । हास्ट्रच, हास्ट्रपणिश-मो [मं] दे 'हास्ट्रह । हास्ट्रमें ५ हास्ट्रपणिश-मो [मं] शासमी मामद्र पेर मेममना वृक्ष ।

दारण्डार-पुनि दे पान्य ।

सम्बन्धः [म] बीक रहि। होगा गामाका बागा आस्ता छावरबार पोरत्यात बरास्त्रा भीकारा विश्व दुनेगाम् पाम मेहण स्रोत्या सामा छोरादुवित बात रिश्व कर्मा तत्रा छोरावे समय देश दोनों हो मान स्था वित्र कृष्ट सामान्या रही बात मारो आम्बर्स एम वित्र कृष्ट सम्बन्धार हो बात मारो आम्बर्स स्व मार्ग्या छ्यादा व्यक्ति स्था सहेद्य द्वारा बोल्दी तिर्मेष क्ष्री मारी स्व स्वर्णिति न्द्र स्था होने देशिय क्ष्री सारी स्वर्णिति न्द्र स्था होने भीरता हारा निक्रमा सरोमान्या एक निर्मात्या

ण्ड बसर को कृष्ण हारा भारा गया । —ख-पु॰ ईस्स्ये मिकना बना मीठी को क्योंतके अंबिके समान बीता है। - हाय - हात्क-प॰ आयरेटके अनुसार ७६ रस भियमें टोम्ट यस बाता है। एक भीवब विशेष । --धार--पु । विष्णुः कृष्ण । –धरा–सी० हिससीविका । –धरा– पु॰ शंक्षभावसः । --मसा-प॰,-नस्ता --मसी-सी॰ धीरा अंश योपाः नवी गायक नंबद्रव्य ! - माधि -स्री एक तरहका शंदा। --नाशी--सी॰ एक पीपा। ~मास्ती-सी पंखपुषी!ं-मारी-भी यह कर-क्स किसे सीमराकी भी कहते हैं। −पक्षतिश~प िं । एक रेझेटार कतिय प्रदार्थ । ~पाकि ~स्त− विष्य ! - पास्र-प एक शरशका शर्पः गर्व । -परिपद्या -प्रयो-सी॰ यह श्रुप विसे प्रावः ग्रीध्य कत्रमें पाछकर पाते हैं (वह श्रीनल तथा बुद्धि और स्थरपर्वेद हैं) । नशस्त्र-च चंत्रसम्ब क्ष्मेंद्र । -मासिमी-नो धंधपुर्या। -मुख-त बरिवाक। मूना । -युधिका-सी ~गडड~3 -सिरियत-प स्वापी राजाः राज्य और निश्चित नामक वी रष्ट्रतिकार । वि विश्वीत । ~वाल-पु॰ मन्तरपीया । संशिक्षाः । – ब्रासिक्षा – नौ । ानप्रति । ग्रु॰ -बज्रमा-सफ्रमा - 1477-9 मिकना । - बजामा - एक्टला मिननेपर आर्थर करना। (धर्व) असदान होनेपर पद्मकानाः वद्मक बरना मारि । -पंबमा-शहको पोषपा करना। देश व्यक्ति जातिमे मागरन प्रसाद भारिकी मानना भरता । श्रीप्रक-द • [मं] शंता श्रीप्रका बमा कहा। क्षणाहा एक मिथिः वद शिरीरीगः। इंखनद-४ [सं] ग्रेस देख। श्रीलस-१० [मंग] इंध्यवस्य । र्शस्त्रीतर-५ [शं॰] सकार । शकारुप∽द [सं] बृहसमी । र्शकासु रातालुक-दु [मं] सदेर एकत्वर । शंसाबत-पु [मं] शंद्रधारनं, क्लीरर धैमका एक Helt I र्शानासर-५ [सं+] ब्रह्माके वहाँने केर पुराकर महारमें क्रियानेबाचा बढ राज्य (श्मीकी मारतेके लिय विष्युने प्रस्थादनार किया था)। सुर रायमुका दिशा । शंशाह्य-भी० [मंग] शंतपुणी । शंभिका-मोर्श्व [मं] चीरपुची । श्रीलिमिस-मी॰ [र्ग] सेविन्धे । हांशियां - सी [+ +] सामग्राम्यद्व अनुसार सिवीदे पार भेडोतेंगे एकः शैक्षे कारा मामी भाग्यामी यक शक्ति (देश); कब बदारही कप्परा। एक वजीवरि आर<u>व</u>प्पीः मुध्यनादी । --हेकियी-भी अन्यादका वक भेट । - ब्राप्त-पुरु द्विरीय कुछ १ - बाम्य-पु कार्यस पुत्र १ शंकी(रित्न)-इ [तं] दिन्तुः सनुप्र र वि शंक्या काम करनेताका। देश नमानेताकाः जिल्ले बन्त वस धाराध्य जिति हो। हेजहाना ह श्रांत्रेश्वरी-की [मंग] वृष्ट विधेय ह शागरा - पु रह मह'रबा पूछ ह

श्रीमाफ-त कि] रीग्रह शियरका ति दिक्यरे रंगशा कान्त्र । र्षाञ्चरक-५ (दा०) रंगुर १ याँठ-त [मं] मूर्ग व्यक्ति। दिवशा क्षंत-पुर [धंर] छोंका एक दैल्या मर्चस्का पत्र बडीस शंगवा पामक स्थक्ति जंगपादा परिपारका रही । र्घाष्ट्रामक-पुरु (सं] श्रंड और ग्राउँ श्रामक रेक्ट (मंदील-प॰ सि॰) एड करि विनदे मामस 'तारिस' गीत पनता है। वीड-पु॰ (सं॰) रामाद अंत्रपुरमें क्रिकोदा रहाद, मनुमा; र्षभ्य गरमा सींद्र । वि+ क्रांसल । वर्रतन्-प्र. (सं॰) भीष्यके दिना (राहें मंगा और सम्दर्श मामकी दी रानियाँ थीं। शहनीने मीचा चलक पूर हे और दसरीसे रिनिवरीर्द नवा चित्रांगर) । -- स्तु--भीषा । प्रीया−क्षी सिंडियिको, विषयः मेशका । र्द्धापाक संपात-प्रशिव विसम्बन्ध हांच-प मिन्ने बेहका बजा अमरके सिरेश्ट कमी सीहेडी नशारीके दंगको बस्त जिममें क्षेत्र साहि बजबेने सुरिश बीती है। बनरमें पहली जानेवाकी सोदेखा निहती। बंदर्ज की यह बार। ९६ महरा शहबीय वर्षय, दुवारा की गर्भा भोतार्वे । नि॰ भाग्यशानीः सुभीः वरिद्रा भाग्यदीन। श्रीबर-प (सं) जना बाइना निश्चा भगातदा प्रचा बीक्रीका वर्ष विद्येष प्रमाः क्षेत्रविद्येषा एक जिला एक राज्या रक प्रकारकी मधनी। सार्प भूगा निषक हुए। बीध हुई। कार्यक बच्चा एक प्रदासका लागा वि मेश बल्ह्य । -क्षेत्र-तः वाराशीक्षरः। -प्रान्तः। प्रवानः। -ष्यंत्रम-५० रह बंदन १ - हारब -हिंदु -गुह्म-५० सामदेव (प्रकार)। -हा(हम्)-प्रश्रह शंबरारि-५ (सं) प्रयुक्त । र्शवरी-भी व [वं] बासुरती कन्ना माना वाद्वरमी । -रांचा-स्रो॰ स्वनुष्रहो । र्शक्त-१० (गं॰) यह बाबादे निर मोहर पहार्व पारना सम्मर केवा शक्ता शंबम्दी−भी मिशे घटनी। र्शना-पुका प्रिवेशस्य शंचु शंचुक, र्रायुक्त-तु [मेर] वीपा। श्रीवद्यायली-प [ब] मर्बार रील्या एक बरार । बांबक-व [संक] भीषा शंखा वार्ग द बंघदा अंतिय mini greitet fest nies ve fent bit gri रामराज्यमें क्या क्यापुत्र गरूनी (शुद्र ही दे वर्ष उन्हीं तरावांने वस आध्यमुत्र अञ्चल ही भर दर' अपा गामने रामदा वर दिशा और शाहनदा राप्टर बुना बीरिय प्रमा) । - बुन्यी-मी शंबपुरति । ध्रेषुषा-मी [ले॰] गीरी वे पा र श्रीम-पु [लं] प्रमुख व्यक्ति। रेड्या प्रशा सुम्बदी सार्वे i श्रेषणी-मा (वंद) क्रमी। वीश-पू [तं] शिक्ष स्वयुद्ध वरीचे प्रयान बार वर्ष कति। तिनुश पुरा नित्र व्यक्ति स्तेर आस्टर प्रशास

वागनिर्माता । - विया-सी शस्य अवदा शम्य विक्रिसा ग्रस्य निश्चकवेदी किया। -ज्ञान -सज्ज-भन्दशास-संबंधी आवर्षेत्रीय ग्रंथ सत्रत्ये वर्षित भाठ तत्रीमेथे एक नंत्र जिसमें चीर-काइक शुल्पी आहिका वर्गन है। –दा –पर्णिहा –वर्णी–औ॰ अदा आधह भोगि। -पीडिम-वि वासदिने अस्मी। -प्रोत-वि॰ विसद दारीरमें नाम प्रमा हो। -मोम(म)-पु॰ मारोम धारा । -यिया-सी॰ धरीरको बीर-वापकर वने निर्देश, मीराँग करवेदा पंतित्व सर्वरी । -आक्र-प्रश्न धरीरोपमारनिधिकी वह प्रहाति विश्वके हारा धरीरके भीड मारिका भीर-काइंडर चस मीराम किया बाहा है: वह शान्य विसमें शायिविक्षिताका बणन हो। -श्रीमण-प॰ धरीरमे शस्य निकासना । -हन्-पु॰ सर्वेव । शस्यक-प्र [में] भारता काँदा। मदम बुका सादी । शक्या-औ॰ [मं॰] मेदा मामद श्रीवित मागवती कना। विबंदन मामद हुए। एक तरहवा मृत्य । पास्पारि - पु [मं•] इत्यराज्ञको मारमेशम सुविधिर । वास्याहरण-पु [मं] छरीरमें वहे कोटे, वाग आहिको निकालमें द्रा कार्य । शस्याबरम-प मि वेक शास्त्रावरण । शस्त्रीद्वार-प [सं] दे॰ 'घरशहरण' । शाल-पु (मं) लपा। परवल देवको छाल। बदद । दि [स] जो हिलाया उठाया ल सा एके यहा ग्रह्मा । स॰ -क्षा जाना-भय-१८ भर हो जान:, (हाथ-संबद्धा) हिनामें सायद न रहता। राह्य − प्र• [र्ग] समर्थका वेश वेश 'धाः । साधी । शलकी-भी [मेर] सार्थाः धलो । -ब्रच-रम-५० मित्रकः दिश्यासम् । शाली−स्पं∗ [मं] मध्यें; शाबी बावद रंध । मस्व−९ [ri•] शास्त्रदेशः शिक्ष-वु (सं } मान सून् शरीसः वाली । ~कर्मे(न्)-इ बादनो बार । न्याल्य-इ इचा । न्यान्-इ इन्द । - ब्रह्म -ब्रह्म-पु मृत्र श्रीर धनामेशे दिया । - क स्पात - इ स्मशात । - भरम(म्)-इ वने मुरेके रक्षा । -मंदिर-इ समाम । -बान -स्थ-पुरमशाल करण है सामिडे निय गीन, सबदी बादि की बनो नाओं दिक्ये। नश्यम-पुरु श्रमशासा -शिविद्या-मी भरती। -ममाचि-भी ध्वसी भगार्थ सन्दर्भ समये समये सम्बद्धिः सम्बद्धाः । स्मासम् पुर दमशालये प्रावस्त वैदेवत् येत्र क्यानेकी अवधानीतः हिया भाषमा । शबना-को [न] निष्यास्त्र नियेश्या सुरोध्य। शका-पुरु (एंट) है। हास १ -सीध-पुरु भोर लेखा। शक्री-भी हे 'प्रशी । mur-fe g fd 12 mea s ## [#] ff 49 1 सरक्ती-सी (1') है दिल्ली ह शावमात्र-९ । म] चीवच शावी शावी ध्यापात्र व सवाधि-धे । (ग्रेन) विकास अधि। बाजन्यादम-५ [स] देवम ।

दाबाध -पु र (ते) तया वया अला अगाय स्वा द्वारेषु र द्याच्य- विक मिकी दाय-मेरोपी । या प्रवासे संपर्ध हिराने किए क बाते समयका कृष्य । सन्धास-प [बन] विश्वती सनुवा दसनी महोना । रान-५॰ (सं•) राश्व, गर्थेश अरहा *ंउ*रेट चरिका पंचार कीत हुए। वीच मेशहाया बामगाकेप पुरवदे बार् ब्रह्मरीवेंगे एक ब्रह्मा रिप्न पुरव बर् प हारीक कामत अधिरताता शहेश, सहभट्टरानेरप और सरवमानी होना है)। -पातक -धार्ता(तिन)-पुरु वाज पञ्ची ६ —घर —व् - धंडया। ६५८। —व मर्ग्ये -थी॰ येदवरमा । 🗝 मीन्दि-द० दिव । 🗕 परवर पु॰ नराइन। -शृत्-पु चंद्रमा । -सक्रम-पुः चंदमा । -लोटम-९ चंदमाः बद्दा -विरू-५। निकाराका विकासका १४। बंदमा । -विकास र्म्या-मु सन्दाशमूलम मर्मभव बान । -शिविद्यान सी जीवंती। - स्थाडी - सी देवा और दमराहे भेरे का धन। - हा(हमू) - प्रमाश शहा-विश्वति] श्रीन और एक छ । प्र १ की संस्ताः -रशामा-दि ६ हवरीशामा (महाम) । पु हद मानी -वर-व चौनाढे सेवने एक बर वर्श नारं केंद्री बंद का जाती है और शेलनेशमा निक्यान की नाम है। हि (ला) चरित हैराव (११वा होना)। -वंड -(शर्मा)पंड-५० सी 4विधार आयारीए उपन्यम ("रे पनमा) । - वहस्र - पहेन्द्र-कि स कीनीवाना, परकाम । - आसी-दि पर ह महोतेम बीजरणना (स्टेश्न १) श्रमानी । भी । महामेश लगवा - रोहा-प्र हम्ब्यपनि है विधान ह सार राहिको कराविके छ स्थि । -सासा-पि॰ छ बरमीका । द्यसाड-९ [मं] सरदा ≀ -विशाम-९ हाराहि-म [मं] नेरबा बन्द । न्योत-दिः भारा वेना संदर । - भ -दे सधार हुन । - मचुर - ग्रेनर -प शिर्व -बाय-प्र राह्य -स्त-प्र भरमक वृत्र हुद ग्रह ह बाराहित-वि [तं] ब्लास्ट्रे (पदवाबा (प्रवा) । हाराहिश्यम-व [र्ग-) भ बन्द मान । डाशोदुन्दिः सार्शोदुन्दी-न्भे [सं , दएवी प्रवर्श । i un of E-imis बागान् बाशान्त-त [अ०] ९ व लाम्य विदिया । हाहा०-पु हे हामी । शर्वा(विष्)-त [मं] पामा वर्गा वक्त वक्त । वर tant den ett tate fast es xa 1 - ([u]et -द अध्यक्षे दिल्ल । -कमा-भी प्रदेशन भाग का अंद्रा वद वर्षकृतिकार अवन अद सदारा दिना सर्व ent alle gemint nen fin -ufe g hibit सन्दर्भनुत्र - केनु-४ नुदर्श-संक्र-पुर भारत्ये ente-fillen tille meille steet -अ-सम्बन्द पद्मा । निर्मानक्षेत्र्राहरू । न्धान्त्र कि।) न्यर्वन्त्र स्तव। न्द्रशन्त्र

वर्षपुत्त । वि॰ सन्तिकारकः -तमयः-र्गद्व-सूत-पु॰ कार्तिकेना गणेस ।-तेज्ञः(स्);-बीज-पु॰ पारा । -प्रिया-सो• वर्गाः भागस्थे । -सपण-प• पंत्रसा । -छोद-प• देवास शिवकोदा। -वदस्तम-प• येत क्षमक ।

श्रीच - प्र० [मं०] दे० 'शंब' ।

प्रस−प्र•, प्रसा−सी [सं] प्रशंसा रण्डा मेणक काममाः वर्णनः कथनः प्रतिषा । **ससप−प्र•** [सं] प्रशंसा करनाः वर्णन करमाः पाठ

दरना । र्शसित-वि [मं•] भिथिता स्तुता कविता रच्छिता विश्वपर झठा दीन कगाना यदा ही !

संसी(सिन्)-दि [सं] (प्राप समासांतमें) प्रस्ना करमे कहतेवाचाः मविष्यहत्ताः।

र्शस्ता(नृ)-पु [सं∗] चारनः संत्रपाङ्क । प्रस्य-दि सि] शारीफद कावका श्रामकदिश समित । श−प मि । दस्यान सग्रहः सीक्या सम्बद्धाः शाखाः शिवः सन्तः काटमेवाला । दि द्वाम । शुक्रतः - दार-वि सकर-पुद कामका इंग बानमेवाका सक्षीकादार ।

सका शक्त-पु॰ [ब] सरेह संख्वा खंबा; प्रांति (पत्रमा द्वीना)।

सक-त [मं•] प्राचीन कालमें शक्कोप(मध्य पश्चिका)में रश्नेदाली एक ससूद बानि (शसकी करपधि पुरानीमें वर्षित सर्ववद्गी रामा सरिभ्वंतसे मानी चारी है। इस बातिबाके नपनंद्री देवपुत्र कहते थे। देशांने दो शी वर्ष पूर्व भारतक मधुरा और महाराष्ट्र प्रदेखींपर श्ल भातिका धासम १९ वर्षी 🗪 रहा। प्रसिद्ध समाद् व्यक्रिक इसी वानिके थे)। तालार देखके निवासी सामारी: छक्षीका एक राजा। ∸र्मादश्च-पु केलनी सन्के ७८ वर्ष पैठे महाराथ शानिवाहन हारा प्रवृतित व्यः संदन् ।

शक्र−वि भि] फराइमा दशर पहाद्रमा। शकर-पु (मं) नाथी किसे पहा अवना अनुष्य धीने छक्ता सम्मदः बसगादीः माहीका बीजः गावीवर नदाः मीश की की बाजार पत्नीके बरावर बाला है। क्या व्यक्त चरारः विनिष्ठ मामका नका वरका पेश यक राज्य बिसदा वर्ष कुण्यम दिया था। रोहियी मध्य ! -शिक्ष--पु क्षिप्तु। −विक्र-पु यद्भ बहराशी। ∻स्पृष्ट-पु शक के आकारमें रश्नित ब्यूड, श्रीन्यरयज्ञा ।∽द्वा(हम्)--2 Feet 1

शकदार~पु [मं] नेद्रवधीय अंतिम सहा≥ स्रवार्तवका प्रधान मंत्री निस् अपनी और कहते. चाधक्यमे मंदर्जहाता माध किया; यह श्रिकारी पड़ी ।

शकराति-पु [गं॰] सङ्ग्रतुरका वर करमेवान कृष्ण : संबरामुर-तु [मं] शहर नामद राएम (१४ बन्दे) इंप्यती मारनोई किए गोतून नेता था किए बह स्वर्ध हो। इप्न हारा मारा वका) ।

भवदाद्वा-भी [र्ग] रोहिनी बयुव ।

शबदिका शकरी-सी [म] छोटी बैनर'को योका-मारी। रहीद शेननेकी होती वाली ह

शक्त-प्रमचाम ।

हाकर-प कि शिमी धर्करा, बरा। -कंद-प मोटी मुक्षीको श्वरतकाएक क्दर यो काफी मीठा दोता और जिसे बनाक या भूगक्द स्ताते हैं। −फ़्रोस−पु• संग चौचवाला एक पक्षी थी मीठी चीओंकी बड़ी विमित्ते साता है। कि मीठी चीर्जे, तर मास धानेवाना। -स्थाद-प .~स्वाबी-खी॰ मीठी संद सोना ! -जबाम-वि• मपुरभाषी ।-पारा;-पास्ता-तु एक तरहका मीठा (बा नमकीन) परवास ! -बाह्यास - प्रश्नामा । - रंबी --सी यित्रीमें हो कानेवाको मामुको अनवन या विगाए। -सब-वि॰ मीठे डीठाँवाकाः (ता) माधनः। -सफ्रेट -मी शपद क्ही कीनो। सुर -से में**ड** भरना-त्रथवररी गुनानवाहेको मिठाई पिछाना ।

शकरी−वि॰ सकरकाः शकरके रंगका। पुपक तरहका

सक्क-प्र• [र्स•] चमना हिस्त्या, छाता एंड उद्याह (मछक्का) चोरबाँ: मनुरवृद्धिय दक्षियद एक हैश । शकस-मी दे 'शह । -स्रत-मी सुप्राइति, स्व (- संस्था अल्यो आस प्रमा)।

सक्स्पित∽दि निं दिइन्सेट क्रिया दशा । शकसी(सिम्)-पु॰ [म] श्रमकवाला मास्य भारवाँदार सङ्खी 1

शकांतक - पु [मं] सद कोगोंकी देशके बाहर निदास हेमेवासः विक्रमादिस्य । शकास्त्र-पुषि] शहमंत्रम् ।

सकार-त [नं] राजाको अनुदा गरनीका भार अनुदा प्राता (एंग्रेस-नारकीमें इसका वरित्र मर मुमंता अमि

मान क्रमहोनता शलाशि शेवॉमे तुक्त शिखाया गया है)। शकारि-प• मि दे 'शहांत्र । शकीस-वि॰ वि॰] सुंदर् स्परान् । [सी 'छधीन। ।] शक्त-९० [मं] विश्वाः मान् वधीः नीमकंडः एक

क्ष्रेश । शकुंतक-षु [नं] एक छारी विश्विशः पश्ची ।

हाकताला ननी॰ [मं॰] मनदा और दिपामिपढे सहदामधे क्षापत्र तथा कृष्य काचि कारा पानिन-शायिन कृष्या कृष्यंत की बाली तथा समन्द्रे पुत्र भरतकी मानाः कानितासका ण्ड प्रसिद्ध महरू।

शक्ति-प [मं] क्यी । शक्तिया-नी [नं] चिहिषा एड चिहिषा शीग्रर

शाहन-पुनि] शिवह रहा रही ध्वकि सन्त ध्वाशास्त्रे देसने हुनने होने आर्थि सिन्देशानी शुध अनुभक्षी पृष-मूचना सगुना रुप पढ़ी शुन अवगरपर दीनेवाने संगत-कार्यमें वाये कानेवाने गीता वयी। गुध मामक पणी विक्रा −ला−वि राष्ट्रन काननेवाणाः -ता-को॰ (८परनी। -ताव-द्र शहसकी वाम-कारी ।-हार-इ यात्रा आदिदे वदमुरीतर हम अहाम दीनी प्रदारके शणनींदा होना। -शास-पु वह शाम

विसमे हानुमद्ध हुआसुस होने नवा उसके प्रमोदा विवास

हिदा गया का ह मुरु -आमा -जामा-स्वय आहि

1414 तुष प्रद्रा −पोपका−पुश्रुक्कपक्षा −प्रश्न−पि जो चंद्रमान्द्रे सच्छ प्रमासे सच्छ हो । त॰ मोती। कुस्य । --प्रमा∽को॰ वॉदनी । −प्रिय−प्र मोती। −प्रिया − सी॰ सत्तार्वसी नक्षत्र जिन्हें पराजीने चंद्रशासी पत्नियाँ माना है। - भारू, - भूपण - मृत्-प् दिव !- भवक -प्र• चंद्रमंदक, चंद्रमान्द्रा पेरा । -सणि-प्र चंद्रकांत मिन । - मुक्त-वि चंद्रमाके समान मुख्याला । [सी 'ग्रिम्**स्ता** !] -मीकि-पु शिव ! -रस-पु॰ सुवा भगृतः । -हेला-सी चंद्रकृषाः। -केला-पंहरेलाः पक वर्णकृता गुरुवी । ~धद्या ~सी पश्चवर्णकृता। रि को सक्षिमुखो। ~वाटिका~की॰ गदबपुरना_। प्रनर्भवा । - शिखमाचि - सेखर-प्र क्षित्र । - सोपक -पु कृष्य दश्च । -सूत् -पु श्रुव । -हीरा-पु [दि •] भंदकांत मनि । शिक्षित्राका#-बी॰ श्रीश्रमहरू। शरुरीश−५ [सं•]क्षित्र । सभत्रचन [सं] इमेशा यम'-प्रमः। सम्बुक्त−पु[ई•]क्(वा सम्बद्धि, शरकुकी, शरकुकी-ली॰ [सं] बामका छेरा कानको एक बीमारी: एक पदाल परी: मॉब्र सीरी महकी: करंब । शप्प, शस्प-त [सं•] नवत्वः प्रतिमाधवः वद्यम (१)। ससन-प्र [मं] बहुद्दे अवस्थरपर की गयी पश्चातिः इरवाः वस्ति । समा≉⊸दु खरहा। श्रसिः शसी≉−द व्हमाः सस्त-पु॰ [मं] कम्बामा सुद्धा वश्चमताः मांगश्चिताः यरीर: अंगुक्रित्राच । विश् दश्याचयुक्तः विसकी वारीयः मी मनी ही प्रशस्त, प्रश्नेष्ठित; बहा गया, बार-बार बहा मनाः बचमः आहतः। गस्तक-पु॰ [सं॰] अंगुतित्राण । शस्ति-त्यी [सं] मधंसाः स्तुनि, रतीत्र। राख-तु॰ [सं] इथिवार; इत्यमें रखकर मयोगमें कावा पानंबासा इधिवाद, तकवार मातिः शीवारः श्रापः देवनः कविता आदिका पाठा सोहा । -कर्म (न)-प की हे भारिके बीरमे बाइनेका काम । -कार,-कारक-उँ° धमानिर्माता । ⊶केनु-पु रै॰ 'द्यसास्थ । ~कोप-प शल रक्षनेदा सामा व्यान 1 -• तर-इ॰ मदामदम कृष्ट् । -क्रिया-स्त्री प्रोह आदिकी

भीरने-काशमेका काम । -क्षार-<u>प</u> -गृद-प अहाँ भनेक प्रकारके दान्य रूमे जान दौँ गमागर। -प्रद्र-मु पुरः। -बाश-पु तत्रगर दा भागात । -चित्रिंग्सा-मी शस्त्र द्वारा वर्षपार मर्न(ो।~पूर्ण-पुनो¢का पुर।।~आवि(विक्)~ वि शुरू हो विमन्त्रे जीविदा हो। -स्थाग-पु॰ इवि बार राज देना, राज्यम्बाम । –घर –धारी(रिष्) –भून् पीका दिन्द । वि शब्द भारत करनेवाला । -- स्वास-पु श्रुक्तं वरित्वायः। -- वाक्ति-पु वि रे मसभर । -बून-वि शक्त हारा रम्भूमिमें निवृत रीनेदे दारण जो परित्र हो नदा हो। -प्रहार-पु

श्रशिशासा-शर्द युक्तको नोट या नामात । --मार्ज-५ सिक्कोगर । ~बार्च-वि॰ दे 'ग्रसवीनी'! -विद्यानकी शक वनानेका यान कौशक। वनवेद ! - प्रशि-वि जिसकी बीविजा शक पठानेपर ही नाभित हो । –शासा–सी वसगृह, श्रमागार । -शाध-५० है॰ श्रस्तिया। -इत-वि शस द्वारा मारा गया (भारमी, **बान**वर मादि) । −इस्त∽वि हासवारी । शकांगा-सी॰ वि] एक तरहका चुद्र। सन्ताक्य-प्र• [सं] श्रसक्त पूर्वमें बदित होनेवाका एक मकारका बेश विसके दिखाई वैनेपर महाभारी पेतती है। क्रीहा १ शस्त्रागार-प [सं•] दे॰ 'शस्त्रगृह । शस्त्राजीय−वि [सं•] दे 'सस्रजाना'। शस्यस्वास~५ (ते॰) बुद्दरुनका शम्यास । सद्भाषस-५० [सं] क्रोडा इरपात । शसास-पु [र्न॰] राय और सस, हावमें हेसर सीर पेंडकर मारनेक इविचार। शसी-स्रो [सं] होय शक्ष, सरी। सकी(किन्)-रि [सं] शतकारी सम्रते सस्मित्। षु मैनिका शक्षोपळीबी (बिम्)-वि [मं•] दे 'शस्त्रवीती । सस्य-दि॰ [सं•] प्रसंसनीय श्रेष्ट बडिया: बाटकर गिराते बोग्य । पु नदी वासः फलकः शक्र वान्वः इसादिसे विदल हुमा दक कुर आदि। योभवा गुण । -क्षेत्र-पु॰ धमावका क्षेत्र । –ध्मी-स्रो॰ पोरपुष्पी । –धांसी (सिम्)−पु॰ शूनका पेहा वि भान्यका नाता करते-वाका। -पास -रक्षक-9 देनदी स्थवाही करते-वाना ! - अझक-दि अनाव सामेदासा ! - संबरी-सी गेड्रे भारिको सबी बाक कणिय । - मारी(रिक)-प्र पद तरहका वका जुड़ा। - बेच-प्र प्रविशास्त्र। -दाक्की(सिम्) - संबद्ध-वि भाग्यमे दरिप्तः । -संपद्-को पान्यको बहुकता । -संवर-पु शास्का ब्ध सान्द्रा पेर । -इंदा(न) -हा(इन)-दि प्रसम **बर्ट करनेवाचा। पुण्य हैरव।** प्रास्थक-प मि•ी नक्सारा एक रस्म । शस्यागार-पु [रो] अप रगनेदा स्थान रानिदान । दास्याह-प्रसि•ी शमी मुख्या ग्याभेर । बाहदा। बाईबाह-पु था। रामाओं बा रामा, समार । वाहेंबाड़ी-भी पहेंबाइका मार या कार्या शाही एए स शर्दशास्का पर ३ वि॰ शादी देगता राजनी । शह-पु का] (शहका लपु स्प) बान्माहा बहर। हिमानन क्षमाना क्यारमा। धन(त्रमे कारशाहर) दी गयी किरण पर्नमकी पीरेन्धीरे हीर विनानेकी किया होस । -कार-पु दे ग्राहकाए'। -कारा-स्रो वरमण्य वरववाम भी । -चास-मी धनरंप्रध शाहरताहरू जान शक्तिकीर मुद्दश संदद वानेक्ट यशी वाती है। -क्रादा-तु नाहका रेश राजनुमार। -क्राड्री-की काइकी की सम्बद्धमारी । -क्रांट्-दि #ति वर्णा - होती-भी वर-शत् दोना। प्रत्रक्ती । -वस-द्र रे न्यायस ६ न्योर-द्र• पास्त्रदे मोदे

हाम भवतरीपर भवसन्त्वक वस्तुशाका आसा, जासा । -करना-ग्राम अवसरॉपर गंगकके लिए कार्य करना । -देखना -मिकाकमा -विकारणा-की कार्य करनके पूर्व क्योंतिए भादि साधमी द्वारा श्रम तिनि और अहते अवना यस(कार्य)के प्रामाग्रम फल यानमा ।

राक्रमक-ड॰ [मं] पक्षी । वाकना**हरा-नि॰ (से॰)** जिस्की द्वारा कावा द्वजा। पुरू यक वरहका स्थापन र

शकनाइर्य∽द्र+ [सं•] ४४६ तरदका नामक। यह भएसी । शक्ति-प्र (सं) पदी, चित्रिका गिका किल बीका सर्वाः एक नागः एक देखा यांचारराज सुवक्का पुत्र जी इबॉबनका मामा और मक्शमारतके कारणमूत बसुके इक्सीका प्रशास परक था । -प्रश्न-प्र एक शालवाह । —प्रपा−भी चिडिनों के पानी पीसेका स्थान का पाथ ! ~बाद्-प्रपश्चिमो सा सहरका सुनेका धीन देला ।

शक्तिका-सी। [गं] मादा पत्ती स्ट्रिको एक मालुका। दाक्रवी−न्दी [मं•] दशमा विदियाः मत्ता गीरैयाः पुराणीक यह मृतना जा नवीके निथ पहुत हो कहर मानी गयी है। समुद्राह क्लेम्बानुसार शक्त्योंका वह ग्रह । शक्रमी(मिन्)-रि हु (सं) ग्रगुनी सग्रुम रिकारने बाका शक्तनसः

शक्क-प [संश] भौरी महस्रो ।-श्रीद्र-पुरु वद् महन्द्री। शक्तकाक्स−५ [मं] प्रवेत श्वी: शंत्र वृत्योः गाँवर शृव । राकुलाक्षा, शकुलाक्षी-गां (तं) सपेर पूक्ष वॉडर

च्य । हाकुम्बादमी-सी [शं॰] यह आपनि अमागी। सक्सामंब-<u>॥</u> [मं] नश्रं मण्डी । शक्की-मी [स्व] देश शहस । शक्तन-त [मं] दिशा वात्रस्या सम । -करि-त पु शहा ! - विष - विषय-पु शेररका विष !

बरसः वर्षाः ।-करी-मी बरसस्य के बिना । -क्रारे-शाबर-लो रे इस्टेंट्य [र] वेला प्रसद्धरि−५ [सं∗] वै≈ । शास्त्री-वि कि] मीबा कशानुजा शक्तरी-भी [मं+] प्रेम्नणा व्य तुरानी नरी क्रिक

का यह मह अवनित्र मातिकी की। ईगानी । शासी-दि एक बरसेवाना शंकाशील र शास्त्र-वि [म] हातिमानुः धयो। समर्थः वर्धवीतकः

बतरा पद्धा मनुरमार्था ह

शान्य-४ [मं•] सन्। हाल्डि-सी [में] बर्ज सामध्ये क्षत्रमा बीध्यता बाहा प्रमाना एक प्रश्रह बागाः व्योगः शृत्रवाहः श्रवमध्यवितः दिनो पेटको सृष्टि करून सनक नार्थि गामकोस कुछ अधिकाशी देवी। दुर्मी। सक्ती। गीरी। वैगर-प्रस्ति (साव) प्रकृति)। देक्यांच (राज्यी येदी व)। राज्यांच (अन प्रथ बामारा): प्रश्र प्रस्ति (अधिका ज्यूका, अर्थक्रमा) र बनान्यरिक वरिम्बन्यक्तिः यशः राज्यः मा शामा शवः । -पूर्वन-दुः दालिका पुरित्र ही सन्ताः मध्य व्यक्ताः -प्रद-पुर सन्दर्शकाम श्रम्बा अवेशेवह वृधियाँ ! miranti fen gifele : fes e'enten mut einten-g [i] uim!

पारण करनेवाला । --प्राष्टक-वि॰ शुन्दापदा विदर करनेवाला । पुरु कास्त्रिय । -श्रय-पुरु राग्रशे तेव श्रतियाँ (रे 'शकि') । −धर-पु॰ स्वामी श्राप्तिरेश मान्यस्तार । वि॰ शक्ति चारच कामेशला । - स्वय-वि शक्तिभवारी । पुरु स्थामी इतिनेश । - प्य-प्र• सम्रागं कृश । -पाचि-प्र स्थामा कास्त्रित । रिर द्धक्ति अलवारी ? -पूजात-पु॰ शक्तिश बवासर सान. वानिकः। -पुजा-मी शक्तिके प्रयासनाः। -पुर्व-पुः पराधर । --भून्-नु : स्वामी कासिकेव ।-वादी(दिव) नि । प्र शक्तिका क्यालका -चक्रस्य-पुर प्रदिश माद्य । -- श्र-वि इंकिमान् वनवान् । -- संपद्म-पुर शकिशासी नवनात् । -श्रीम-विश् निरंत, मामार्-रदित । -द्वेतिक-तु भागानरहार । हा -देन्द्रश-किमी विषयी किमोडे क्य सामध्ये स्मार्टका धीकर मिलना (- इस्तवा-दिसी काउंडे करनेमें समां होगा) --अगमा--वगामा--वक प्रसार क्षारिका प्रदोग है। ?--बरमा ।

शक्तिमचा−सो॰ शक्तिसक−५ क्षीनेका यात्र । शक्ता−भी पद्धशाविक्र एंद ह शस्त्र-पु [सं•] दे॰ सन्द्र ।

शक्तक-तु [मंग] एक विश्व । शक्त, शक्त-वि० [श्रं०] दिनंबर । शक्य~वि वि] श्रीने शस्य महत्य संघर। −प्रतिकार

-दि॰ बिमका प्रतिकार का सके । क्षक्यार्थ-५ [सं] धन्त्रदी क्रांत्रना क्रांत्रन देव अर्थ । शक्र∽व निर्धारिका स्पेशा मध्या बन्दा भर्जन कुछा कुटन कुछा इह की। श्वादका भीवा भरा भीरहकी संक्या (चारच रह डोमेरे बारण) ! -बार्सब-दुक श्रममुख् । ⊶क्काबा−भी वर्ष शिक्षाः। −केच−पु र्वण्यम । न्याप न्यापक-कु रह्मीक मेर्रहरी । -चाप-द० ६२५मुर्। -प्र-जात-द −का−भी बमार्ग्य मता। −काल−९ रहायमा -क्रिग्-९ वेचवार ! -इंडी(तिम्)-९ ध्रेप्नतः। -दार -ह्रम-पुरु देवशवः -हिक्र(श्)-म पूर्व दिया । - ईयल-पुर अवहा मध्ये । अर्जुन। -चन च-प् कात क्या -पाएप बुर्ब हुए। देवराव । -बुर-व -बुरो-के अवश्यना । -प्रत्या-पुच्चिका -पुक्षी-मा अनि किसा बुए । - प्रस्थ- प्रशास अपनका नद शाचीम नगर। ≔वीक्र−पु ४≾ी। ≔श्रदर्गण भुवन -लोक -वास-पु स्वर्ग । -बिर्-पुर ^{देश} माद्र -भूत्रयाः-वर्ता-भी इद्रशस्योः - मृत्र --ब्रास-पु दुश्य । - माना(न) -- मी पश्ची माना क्टमा । –मुद्रो(ईक्)−क् वाध : -वाहना देव । -शामी(सिन्)-पुर पूर्व । -शामा-भेग वहए "१ । -शिर्(स्)-पु ब'रा। -मार्शकः षु जानन्ति । नज्ञानन्तु वरता राज्या काला mildtunt far t-illenen bing. :

र्या जानेवानी वड़ी इ.डी.। ~ सुल ~पु० एक प्रसिद्ध देव भीर प्रमुख करू को प्रदूतपर काफी बीठा होता है। -मर्जी-सो दे 'गाइनजी'। -पर-पु पर्गाद देने द्या पुरत् वचा पर । (स० - झावना-पर्योद्धः देशेवो फैलाकर भारत दिलाला कि गराम और कमश्रीर पर राप्त भावै।) ∽वाक्र∽प वधा वाधा वशी बाहिका वात । ~यासा-पु॰ विवादकी प्रायः सुनी रश्मीमें बरफे छात्र रहनवाला होटा सबका को बाम शारस वसका होता मार्र दोता है। -शुलबुध्य-स्थी सात देश और बाली गननवाको पुननुष्ट। --मात-सी श्रवांत्रमें नाप्शादका धंनी बगत किएन देशा कि बगन घणने के लिए कोई वर संदश्च आय और बात हो बादा (मा) निरुक्तर सुद वर देनेवाची वातः। (स्व॰ ---•करमा-निरुपर, नुष कर देगा)। -रग-गरी Ро 'शहरप । -ध्यप-मी सत्तेवमें शहशहकी करा (हाथी) भी शह । -स्तरी-सी वाश्यादका है ने पहले रदाका किसमें रगसी दाद पके सामनको चोट। -सवार-इ क्षप्तन थोरचगर । -सवारी-को मण्डी भारतवारी । स॰ -देमा-४३ने रागरनेको उद शाना बमारमाः शतरंत्रमें नारधावको किया देशा पर्नग्रही दार पिलाना दोल हैना।

शहर्-9 [भ] किंदिय् छान्ने स्थि दुत कैर या छार (वहा मोदा औरा या अपुनिश्च भार कुछ करन केरी हारा मंगूबीन गुन्सका क्यांत्र होता है, क्यु। वि स्नित मंगूस्त - च्ये सुनि-मोत्रे गुरीः वतानका सीदा (रिक्त मोदा। - च्ये सक्ती-मुप्तमां। लोगो सार पीपा न पार्टनेस्ता बारमो। सुव्यक्तिने मुक्ता-विद्यापे स्थात। (क्यांत्रे) चोलमा-स्नित मुख्य सुन्स सैन्या। - क्यांत्रक सक्ता हो याना-पारहा काम्बर आप सन्य हो याना पुरी तमाग्रा देवता। - च्यांत्रकर व्यवका-निर्मंक स्नीको सन्ते प्रशे हसा।

सहनार-न्यो (काः) नर्यातः। धु दैन गद्याः । शहनार्द्य-न्यो (काः) तुर्दशे पृदश्यः वज्ञाया वानेतानाः वदः सीनदः यात्रा नदीर्याः दे "शहार्थ"।

सहर पु (कार) मारा। - मार्गा-ि प्रार्ट्सियी पर-स्था तर्द (स्थाना । - मार्ग-निर्द्रियो पर-स्था तर्द (स्थाना स्थाना - नाम्-निर्द्रियो पर-स्था तर्द (स्थाना स्थाना स्थ

श्रद्धमा मध्य । न्यामा नेपन्ता श्रेता हो दिन्दी मध्य । न्यामा नेपन्ता श्रेता हो --परस्त्री-न्दी श्वाधी कामुकता। महादत-दी [ब] गंदादी, सार्वः सुराधे रतने सर्वाद बोनाः वर्गेतुसमें लक्ते दुव मारा बानगःका

यहार होता: कांतुरमें जनने दुध मारा शताः का -नामा-य वह दुशक शिमने दमाम कुन्नेन्द्री हर बन्दा वर्णन हो। बबहेबर फिरा दुभा सहारतहा बन्द शिक्षे मुमलमास सुर्वेके कहनमें रस देते हैं।

ान्य प्राप्तमान श्वरं क करनम रहा दे हैं दे दिस्ता है। दिस्ता है। दिस्ता है। दिस्ता है। दिस्ता है। दिस्ता है। दे दूरहे है रहनता कर वाला जाक थीवा व्यवस्था रह मीता है है। ते स्वार्त है। विश्वर है। वि

मेंहरीः) जहाय-9 [फा] यहरा लाल रंशः सुगुन्धे क्लिक् फिटाला सामेशाला सहर। लाल १०। सहायी-विश्व शहाबंदे रेगहा, लाल । ली. वह सारहे

्टर्ज बद्दशानी । सहायुद्दिनशोरी—प्र मक्त्रीका शासक किसने १९७३ वे में मकाशब वृगीरा नहीं हरण्यर रिद्वरतानने सभी

भवी गुनक्ति सामान्यते में वे वाणी। बाही-भी वाश्यावी। विवादी बाही-कि [भ] भी शुरावी स्वयं पर्वेदे किंद नहीं बुद मारा वाला व" चनन दिना हुआ। भानेदेवे भी नावाल कर वैनेल्ला (क्) करवाना-व देवारी

हुनेवा - मार्च-चु वह श्वेति को सुराधे शादरे वर्षेट सायरत काने हुन वरा वीर मेगा। बाहीपी--दि० सावीर हीनेधी तैयार सावा - काया-पुरु सावीर हानेका निवार बनीध नावा - नारपाव-वु सावुष्टी का बीरा दिखा दिखा दिखा

होते हैं। श्रद्धा-पु (ल.) चीधेशर कारराना समन्द्री स्म सन्दर्भ स्टोराचा !

महार्थ-की वंशेशना शातान्या सामा रहवा चैये-

वाणि । व्यक्तिम् (मं) प्रीत्यानची सन् भ्याप्तका मन् याचा वृत्र नेन, करणा शांदा साम्रा भागा निर्णे क्षित्री श्रीक है। वृद्ध प्राप्त मिं विन्त्रची प्राप्त

काने गंदरी । सोहरि-पुरु [१] व विशेषा कोणा गाव । सोहरी-सी (ने) रिष्टपूर संदर्शकथा जात ।

श्रीहृत्ती-को [म] शहरी बाल्ये र श्रीमान्यु [म] श्रीमार्थात है क्यारिया प्रेम

का इस्त नेता। श्रीनायमध्य (तं) एक फर्नि हिंदे तक का तीत क्षा तथा की दिशी अध्य की द वर्गकार्थ दिल परिवार

शांकारिन्यु शिक् इंबर आएर का^{र्}रणी १६

```
सस्वीकार-प्र* [र्:•] स मानना, इनकारः न केना ।
भस्मीकृत-वि॰ [सं ] म सामा हुना, नार्मसूर; धहन न
 किया बजा।
अरवीक्रति-न्ती [सं ] अरवीकार I
अस्त्रेद, अस्त्रेदन-प्र[सं] प्रतिका न निवस्ता।
अस्त्री-वि• सत्तर और दस । पु ८ की संस्था ।
वर्-'वर्ग्'का समासगत रूप । —कार-पु॰ वनगी
  सत्ताका बोधः गर्वः, मर्गवः शंतःकरणका गाँच वृत्तिवीमेंसे
  एक (वे॰ सां॰)।-कारी(रिन्र)-वि॰ धमनी।-कार्य-
  पु॰ स्वक्तिगत सन्य । —कृत-वि वर्मटी ।—कृति-स्वी
  माराए सर्वर ।-धी-ली० सर्वार । -धव-प् सर्वः
  मन् ।-पूर्व-वि० होइसे वद धानेका रुखुक ।-पूर्विकाः
  -प्रयमिका-सी दीर, प्रतिहरिता।
  पु॰ गर्ने । ⊷सझा—पु कराने व्यक्तित्वको बहुत वहा
  एमझना। ←बादी(विन्)-पु बीन मारनेवाका।
   -भेवस-पु॰ अपनेकी बद्दा था शप्त मानना ।
 सहसा-न्यो [सं] मन", गर्न ।
  अद्या-'अद्यन्'का समासगत क्य । -पति-पु॰ दे
   'सहपंति'। -दोप-पु संस्वा।
  सह—स अयरत दु-सं, वसेछ सादिका स्वस्य स्थार ।
  सह(न्)-पु [e] दिनः दिनका अधिष्ठाता देवताः दिन
   का कार्व। विष्णा रात्रिः एक जिल कानेके किए पुस्तकका
   विनारित अंश (समामांतर्ने बाह-नेसे सच्याह) :-निकि-

 क दे 'अइनिंख'।

  भर्क:-पु साससा, अतृप्त अल्डासा ।
  सहस्रताक-स॰ वि ॰ इक्डा करना, कामना करना ।
   महकास−५ [श ] शाहार्ष, आदेश ('द्वना'का वह )।
   भइद्यमार-म फ़ि॰ माइट मिकमा दुखना। स कि
    पदा कगाना ।
   महत्त−वि [#o] कहत अनाइतः भी पीटा न गवा दी
    (बीरो समय क्रमहा)। विना सका हुना, नवाः वे दाग
    रवच्छ। को इताछ न हो। पु नवा कपड़ा (जी कीना
    न एका हो)।
   महविर्≉−वि है
                    रिघर'।
   महद्र-पु॰ [स ] द 'सहद'।
    मह्दी-दि बालसी। प्रेन्ड सैनिक जिससे असाधारण
```

क्यह ।

महमितिक-की दे 'अहम्मति।

मधी। धर रिवर । पुपरापः ।

भावश्वकताने समय श्री काम क्रिया जाम (अक्तरकी सेमाक्षी एक भेगी) । -श्वामा-प्र अहरियीक रहनेकी भद्दमा । ~ स । मि. वर्तमान रहना, होना । **भह्याय-तु** [बा•] मित्र ('इ-ोव'का वदु)। भइम-वि [अ] श्वत बक्री, महत्त्वपूर्व। भद्रम्%-वि [अ] यहमति, मूर्यं नासमप्त । महम्-सर्वे [स•] में । पु नईशन भईतस्व ।-अधिकाः,-भहमिका-स्री पदाउपरी दीए प्रविशेषिता।-एय-

तु पमट गर्न । -मसि-सी धर्म पर्मण भगगा। म्याम्य−वि अवतेको बहुत वहा गामनवाम्य । **अहरजीय-वि** [म] का दराने या दरण करने शोग्य

अहरम, अहरनि#े-सी० निराई। भाहरना -स प्रि॰ शबदी धीक्यर सडीड करना । आहरा-पु आग सुक्रमानेके किप कगाये गमें कंट मा उपले: इकट्टा किये हप इंडेसे दैवार की गयी मागः स्नोगींके उद्दरनेका स्थानः प्यासः। अहरासं-पु॰ [भ] पुरानी इमारतें: मिसके जगरप्रसिद स्तप, पराभित्र (हरम-पुरानी हमारत-का नहु॰)।

शहरी-सी प्याक हीन, बरही गट्डा। बाहर -- 'बाहर्'का समासगत रूप !-- आह-- म॰ दिन-दिन ! -भागम-प दिनका मागमन । -गण-प मासः परिगणित विनसमृद्धा नद्यनाके विभोका कम । - वस्त-प्र० सच्याह । -निया-नः दिन-रात, नाठा पहर ।-पति,-ग्राणि-प सर्व। -मुख-पु० ध्वकाल, धवेरा भीर। अहस अहसि, सहस्य-वि [सं०] को जीता म गया हो

बाधोतान वासके।

भाइरुकार-पु॰ दे॰ महकारै।

बहसाम~दुदे व्यसान'। अइस्कर, अइस्पति-५ [सं] सर्तः मदार।

अहस्रमा : - अ कि हिस्मा: दहरूना । शहकमन्-पु॰ दे 'असमर्'। **बाहरूया-जी**र्ण] यौतम काषेकी पत्नी की छापसे मस्पर की शिक्स को गयी थी और जिसने रामके भरजरपश्ची प्रम पूर्व रूप प्राप्त कर किया। ≔कार पुर रहे। -अंद्रज्ञ-प् अद्दर्शके पुत्र सतानंद । शहरामण-प दे 'नाडान'। शहबाल-प [ज॰] इचांत समाबार हाल ('हाल'का बहु०) । सहसर-दि [d] दिनके समय अमग करनेवाका !

काहका-वि [d] | इकारदितः विश्वका दान क्य गया दी। शहरू-म (सं•) दुःस्य क्वेस, शाधर्य भीर संशोधन-सम्बद्ध चट्टार । अहाः भहाहा−म वर्षं तथा विस्मव-सूचक वटार । सहाता−त• [थ] दे यहाता ! भहान+-पु भाहान, पुदार I अहार-प दे॰ नादार'। अडारमा−स मि. सम्बर्धाकी शीक-शास्त्रद सुदीक करनाः

निषकामाः 🕈 भाषार करनाः धाना । श्रद्धारी#−विदेशाहारी 1 अद्वार्थ-वि [सं] यो दरा पुरावा न का सके। यो यन था चकमा देकर पश्चमें संदिक्ष वा सन्देश पर, म बद्दनजेबाधा । अक्षिमक−वि [मं] दिसान करनेवासा। अहिंसा-की [सं] किन्धे प्रापीको न महत्ताः मन, बचन कर्ममें किसीका पीटा न बेना। देस मामका पांचा।

-वाही(हिप)-वि अदिमा स्प्रिकेट मामनवाना ।

श्राहिंदा-वि [र्व] अहिमद्र । अदि-पु [सं] स्पेंपा मुदा राष्ट्रा कृमामुरा पश्चिम, जला 'ब्दा शुक्ता नाभिः ग्रीमा। वर्गे वा सम्बर्ध। पथिर्व र्ग-कोप-पु॰ देंपुत एक कृत ।-शक ोका समृद् ।-चक-पु एक

पक । --रप्रम-पु॰ रक्षित गांधाल विशे बार्युनने जीत-कर श्रीमानार्यको गुरूरविकामें है दिवा था। यह बनस्पति-जन्त्र विष । −ध्छप्रक∽षु इकुरमुक्ता । −ध्छप्रा–सी महिन्छत देशकी रावणानी। धर्वरा। मेपर्युगी । --वित्-प्र कृष्ण। - जिद्वा-सी मागपनी। - तुक्कि-पुः गैपरा :-वेष:-वेवत-पु॰ बाखेगा नक्षत्र ।-हिट(प), न्मारा-रिप्रनपु॰ यस्यः लङ्कः मन्दः देह । -जकः किका-सी० सीप और गेंग्सेका सदल वैर । -माया-प्र श्रेपनाग । --नाह#-प्र श्रेपमाग । --मिर्मोक-पु० असः । –पताफ−प्र थक प्रकारका विवदीन सर्वे। ~पति-पु॰ बासुकिः कीर्य क्या खेप। -पुलक-पु॰ धर्पाद्धत नौका । प्यतना-मी॰ एक तरहका रोग। - फेल-पु॰ सॉफ्को कार वा विष: अग्रोम । - **अ**घ्म -झ धन∽प दिनः स्टब्स् स्टा−क्रेस-स्ती० दि∘ो २० 'महिन्ही । -भय-५ रुपेसे क्लब होनेबाला मदा न्वपन्नके विशासपातको आसंद्या । --व्हा-मी अन्वा-मलब्धे । – ग्राफ (ज)–पु । नरहः मोरः मेक्ना।–सत– प्रसिव।-सर्वनी-सी गंधनाइको सामक क्षेत्रविशेष। ~मारक -मेद ~मदक-पु शरिमर भागक कृश । -सारी(सिन्)-पु• धिव। -सेध-पु• सर्पस्त्र भागवद्य । - स्त्रता-की शतक्ती यानः गंपनाकृती । -त्योचन-पु दिवके रक सर्पका माम । -सोक्रिका-स्रो॰ भूम्बामसस्रो : ~ब्रह्मी-मी भागवस्रो, वाम । --वियापदा-औः गंधनाकको । --साव±-व • सॉक्स मधाः संपोका । महिक-पु[मं] पूना मंत्रा छोए। वि० नियत दिनोठक रहतेनामा (संस्थान्यक चम्दके साथ-जैसे 'दशाहिक)। महिका∼सौ [शं•] सेमध्या दुखा कार; हानि: छन्न । दि॰ अहितकाः, अपया विदेशी । -कर-कारी(रिन्)-दि॰ हानि अल्बार करनेवाला।

महित−९ [मं] दिल्हा नमान वा बन्दा हराई. जफ सहिम-दि [सं•] इंदा नहीं, गरम । -कर,-किरण-तेश्रा(बस्),-इीविति -चति -शवन -स्वम-प्रदर्भ।

अदिमाञ्च∽तु[न]स्त्री भद्रिमान-पु भारका वह गउदा मिनके वल पाट क्रीक बर रसा पाता 🗷 🛭

भहिवर-पुदीदेश एक भेर ।

भटिबास-प सुदाय।

महिषातिम सहिषाती--दि॰ मी॰ सीमाग्यवती सपना । महीर-पु॰ [4] वीरोंके मनुसार एक प्रकारका है छ । भारीम-ि नि•ी अधुन्य, समय समुपा; बदुश रिमेरिकः दिस्टेनाला; यो वादिष्युत म हो: नीम मही अंड । प्र नशा सोंपा नातुकि। बहुत दिमींतक चलनेवाला नय-विशेष ।-श-पु एक गूर्ववंदी शका । -वादी(दिव्)--प्र नद मबाद जो गराबी देनेड बीम्ब म 🛍 🛚 सर्हार-पु (२१०) भागीर, म्याना १

भडीरजि-पु [सं] हिमुश सर्व । सर्दारी-मो॰ एक रागः (रां॰) न्यातिन । भटीश~पु॰ [मं•] सर्वराष्ट्रः सर्वनाः वन्दावः महार्जी विक्रा का नीएके साथ एक्से क्या वा हमा पासका अहुटनाक-अ कि॰ इटना, शस्य होना ! भट्टराना≠-स॰ कि दराना, दूर करमा ! माइठव-वि साउँ तीन। अ<u>डे</u>त-वि [र्थ•] जिसको आपुरि म को गयी हो। क्रिने मैंबेच म मिका ही । प्र• स्तुद्धिः च्यामः बेताध्यवत । अहरमाह-पु॰ [पह॰] पारशी वर्मातुसार पर्म, मेख्ने और

अद्वर-प सि•ी बहराधि । मकाधका वेबता। भहरुनी−पु चारा कारनेका श्रद्धाः । अहरय-वि सिं•ो हरवहीना विस्मरणशीक । अहरा-वि॰ [सं] अप्रियः असमिरुवितः। महें म [रं•] मिरा, छोड़, पार्थरद जारिया पीछ सम्बद्धीय क्षाबिशेष। भडेलु-वि [मं•] इतुरहित ! पु देतुद्ध समायः सर्थः कंडारका एक भेद बड़ी बई बारमोंके विचमान रहते हुए भी कार्यका स कोना वर्षित किया जाव । ∺सम-प्र+ बातिका एक भेर (न्या)।

मदेतुरु, महितुरू∼िर [र्व] देतुरदित समारम । अक्षेर-प्र आसर, विकार। बहेरी-दि॰ दिकारी । प्र_ दिकार करनेवाका मामेरक ! बहेद-प (सं•] घरमकी।

महो-म [थं] दिसमा, प्रशंसा रीप, दिवाद, विचार सबद स्पारः संशेषमधे भी भ्यवत् ।-सप्पप्तकाष्ट्रीने'-परसर प्रजंशा (की॰) ।

शहो-'नहन्'दा सगासगत रूप !~रस-पु॰ गर्हे ।~राम~ प्र दिन और राक्षा दो स्ट्रॉप्टबॉन्डे ग्रेफ्का छम्य । शहोरा-बहोरा--दु॰ ध्वाह वा गीनेमें बुकहिमका स्मुरान क्रमार एसी दिन वापस भाना । सः नार नार । ब्रह्रह−५ (थ॰) प्रतिकाः दाकः राजस्य।∽नामा∽५४ प्रतिद्वापन, रक्टारनामा ।-शिकमी-सी॰ प्रविद्वामा ।

-(वे)द्वष्ट्रमत-९ राज्यकाकः। अक्टिय-वि [पं•] नित्रवे करना या प्रवट वानेवाटा । अक्षय-वि [नः+] निर्वेद्याः शीटा पर्मरी । महिमान-पु॰ (पर०१) पारको पर्मा<u>न</u>मार पाप और संप

कारका देशवा धीतान । आदीक्र−4ि [सं] निर्णमा पुशेद मिस्। शक्र−वि [ल] योग्य अभिकारी पात्र। प्र कुर्दुगी। ~कार-पु॰ कर्मपारी। राजकमनारी 1-सव-3 अरी

ततका एक रिरोध वर्षपारी !-(हे)क्रमम-५० रेमक हेमन व्यवसायीः शिक्षित व्यक्ति।-किताय-५ 🗗 भर्मेरी माननेवाका जी रिसी इसदामी विज्ञानवर आर्थित हो।-र्जामा-न्यी गृहस्यामिनी, पत्ती !- प्रवॉ-पु॰ वर व्यक्ति जिसकी बादमाश कीर्र ग्राम भाग हो। वह भारबी विसकी बोल-पान टकमाठी मानी बाद । -- बतन-प्रे^व रेबाबासी बेदामाई।

श्रद्धिया−मी [ब] नमी, परवानी । अर्द्धीचत्—स्मै॰ (ब } वास्त्रता पात्रता । श्रष्टम∽ि मि] ६३ (सर। शहरा-हो॰ [र्न•] अहलद **रु**ग्न ।

प्तरिक−वि िमं] द्रोद्धनिर्धितः द्रोल संगंधी । प्र शांसारि बातिः श्रवनाददः । सॉटव−विसीवे 'शाल'।

सीमधा−की सि•ी संवाः।

सौदी−स्तो• [सं] बास्का एक भेत । प्रोद्याकी –स्त्री सि•ीपक जानवर ।

सौडिक−पु॰ [सं] पिरपिट जैसा २६ जंतु साँदा । साविस्प−प सि । एक योज्ञावर्तक ऋषि कि दोंने पक रमुतिग्रंबका निर्माण किया। एक गोत्रका नामः सन्द नीत्रमें एरवड व्यक्तिः वेदका पेटः जन्निका एक कप

वा प्रकार ।

गोत−वि• (चं•) श्रोतिवचः मीतः चषः निम्बन्दः द्वतः सामः भीर, स्विर्मना, बर्धयक बनुद्देगशीलः बांत बदा हुआ। रिश्वत स्का हुजा: शमित मिरा हुजा: मैतुहा बीवनके कश्रवींसे दीन युदा सासारिकनासे निष्ट्रा र्रहिबोंकी दमित करने या जीतनेवाका। पूनः शुमः बन्साइहीन अप्रयत्नशील शिक्तिश बन्नमें किया हुआ। बिद्य शीम्य प्रकृतिशका विनया समाप्त तता हुना। कीरादिसे निवन्त मनीविकारद्दीन स्वन्धमनाः किसी करना दिसी बाद, किसी मंबीसाह आदिमें प्रसादित म होनेबाका । प्र साहित्यदाल-बर्णित भी रसामेंमे वह रस (सम्बा स्थायी माल 'शिनेंद' है)। क्रितेंद्रिय योगी निरामी।त्रधेदरमः। – क्रोच∽वि क्लिकामोप छति र्षी क्वा ई.। −गुश−कि दृत्।−चेता(तस्)−िक रिवरमना। -सना(मस)-रि जिल्ला मन छोत हो।

~रस~प पर काम्बरस दे 'शोत । भौतनव∽पु•[सं] द्यांतनुके पुत्र भीष्म ।

शांतनु~प [सं] प्रतीपहे पुत्र सीध्मठे विना वि संब वंदी वं भीर द्वापर असमें हुए थे); कर्दरी करवी: एक

भौता−स्रो [मं•] दसर्थस्य कृत्या विमे अंगराज कीम पारने गोद किया और की 1यी काविको श्वादी गयी थी। सीति−सी (श्रं•) शिद्धश्रमा धुनारमः चीरता समझी निष्ता अनुद्रेमश्रीकताः सांस्थना तस्त्रो। बाम बीध धेय, पीड़ा भरिन ताच आरिका श्रमना आराम अन स्या मृत्युः विनेद्रियताः शिवता सीम्बनाः कीमादि मबोनिकारीम तिकृत्ति मनकी स्वरवना, श्रीमारिकतार्थ रिरामा दिरामा दीवने वटी दीमा। श्रवा पृक्षिः श्रद्धाः 👫 मौनाम्बर मुद्रादिका रह जाना का न हाला। अभिटः भवेगन भारिका पुत्रा मन यह भारि हारा शमन (जैमे घर-गांति आदि)। -कर -कारी(दिम्)-वि शांति दरने मानेशासा । -कर्म(म्) -कार्य-पु दे मानिक । -क्षमदा-प्र शांतिकै निय श्वापित कश्या । -बाम-वि शांतिका रस्तुक । पु शांतिकी रक्ता । "ग्र=९ यददे अवमें शांति करने साम करनेवा परः विभागनुद्दा-घर-पुद्दै पानिकन्दाः – अस्य – सरिम-तु यह पूजा आदिने श्रुपः शांतिहायस सन र्म मनशिव जन । -इ -दासा(मृ) -नायक -दायी (पित)-वि धानि देनेशना । -विश्वतन-पु शांति

पुण पानिपादक गृह स्थाना दिश्वहति द्वीहनां हाकुर

द्वारा बंगाक प्रांतके बोकपुर नामक स्वाममें स्थापित एक भेतरराष्ट्रीय स्वातिप्राप्त विदार्शस्त्रा ! - पर्य(म)-प• 'गढामारत का बारवबी पर्व (इसमें सब की बिमीबिकास तप्त मुविधिरक्ष मनकी क्षांतिके किए धाम, सपरेदा बारिके असंगंबर्वित है)। —पाश्र−पु• यद्य पूजा आदिके अन्य सरीपर गर, अमंगर आदिकी दांतिक हिए बहुपक्त पात्र । -प्रद-वि॰ स्रांतिदायकः । -प्रिय-वि॰ (बह म्बरिक) विसे फांति त्रिव हो। प्रांतिका समिकापी । - प्रांत -प• श्रांति मान्र चपद्रवद्या दोनाः श्रासम अनुशासन काविका न माना जाना विद्नीत्पादन । **−रक्षक्र**−पु• समम कायम रखनेवाका । -रक्षा-छी॰ उपह्रव-निवा रण। —कार्यम-पु भेतवाथा, रोग मादिकी शांतिके किए यद्य प्रवा आदिकै जवसरीयर मंत्र पाठ। —श्रक्त (स)-पु देश स्रोतिगृह । -स्थापन-प कावम करना । —होस —व अमंग्रह आर्टिके निवारपार्थ द्रोम, वद्य भारि ।

मोतिक−वि० [सं] द्यांति-संबंधाः स्रांतिकर । प विषदः कर्मणक ब्रष्ट प्रशादिके निवारणार्थ श्रीनेवाका प्रवापाठः यद शरवादि को श्रांतिको ।

वांतिमय-वि [तं] शांतिमुक्त, शांतिपूर्ण; भांतिगुण भुक्तः निर्विप्तः।

शांखति −त्री [र्ड•] बादलदहिका।

पारिय−प्र. (सं∗) वांश्वतीसे उरवञ्च क्रप्यदा वज्ञा सांबर-बि॰ (सं) द्वार स्म-संबंधी। संबर राष्ट्रस-संबंधी। य॰ कोशका पेड ह

शांबरिक-प्र [०] ग्रेंड वाठिक वादगर । शांबरी-की [तं] रहवाल मायानिया, बादू (इरिस्ट दैत्यमे इसका निर्माण किया था, जतः इसे आंदरी' बहुछ

ह)। पेहबालिका, पाइयरमी । क्षांबरी(रिस)-पु (सं॰) पंरमका वक प्रकार; श्रोषः

ममाकानी चता ।

शांबविक−दु (सं] शांधिक, गंधान्यदमायी ।

दार्डक, भार्क-दु [मं] योपा । शांसर-प्रवि दे 'मॉनर ।

शामिब-वि [मं॰] शंमु-गंबंधो । पु॰ शंमुका पुषः शंमुका क्यामक, नेवा कपूरा गुरगुमा विवक्ता एक प्रकार। निव माधेका पीनाः देनदार वृश् ।

स्रोमधी-स्री [मं] पार्वती दुर्माः नीनी दूना अद्यर्शना साहस्त्यी-भी दिश्या सभ्वताः वित्रश्च सम्मानम्।। दाहरता-वि [पा] शिष्ट मध्य, विजीत सुरीता मीथा घरारत ल करनवाना (-योग)। -गाँ-प वृद्धियका मृत्रार विमने कार्यव्यवकी आशाम खिलाबीवर

चर्नार की आह तनके हात्री यादन होतर जान गया। शास्ट~पु[सं] यथमा।

शार्कमरी-सी [वं] दुना श्रोधरी (म नर) मामक नगर ।

शार्कम(य-वि [सं] शॉसर्डी ने बत्तका दुस्तिर ममधः १

शाक−दु [में] साथ जह दहन वधी दूस सन आदि घो प्राय उराम, एक्स्फ्रन साथे जात है साम

का विद्यास । -धर-प्र॰ प्रशीके बैनेका सबसे बढ़ा पर-शहपर । -पर्रात्-पु एक तरहकी वाका पत नहा पक्षी । -वंदर्वपु॰ देशविशेषका प्रवास वंदरसाह । -बस्तत-प वस्ततका पढ़े मेर की बदुत मीठा दीता है। - बाज-प्यानाम निससे वादशाह विविनीका शिकार करते थे। वि शामशी शाबाधित । **~वाका** ~ पु०दे० 'शहनाला' । -- यस-न्त्री कसीदे या शबकका स्वस्थं संबद्धाः होर । -मात-सी॰ दै 'शहमात'। -सदरा-प साँपका समि । -रग-स्रो गडेसे डोकर बानेवाको वडी रग । ∽रतह−की राजमार्गे चीका भीर माम रास्ता । -बार-वि वागरावीके कापका बहुत विद्या वहुमूस्य । −सम्बार्-पु• दे॰ श्वहसवार'। -साहच-पु है 'शाहजी । --(हे)अहाँ-पु अपक बंग्रका एक समार जक्तरका पीता (१५९३ १९६६ ई.) जिसमे ताजमहरू बनवाया था। बुनियाका नायधाह निबसमार । -(द्वो)गदा-9 राजा और रंक, बारसाय भीर फद्मेर । दाहामा−िद (का] वादशाहक कावक, रावसी, रावी-विदा बहुत बहिया । प्र शहानी वृदियोंका कोहा । -बोदा-पु दृश्द्रकी पदनाया जानेवाचा सर्व बीवाः सर्व पोलाद । -सिहार - पुरुष्ति, मानुद मिनाव। शाहिर-पु [ध+] प्रदारत वेथेनाका ननादः देखने बाका । वि संदर, ध्यारा, माध्यः । शाही-प्र• कि] एक विकास विकास हि] वरामुखे ឌីពិ រ द्याद्वी-वि (फा॰) वस्त्रधादकाः ग्राह्याना । स्त्री शद शाहत, रास्य । ∽ज्ञमाना-धः नारतीय शनहासका मधिसम राज्यकाक । विभारक-प्र- १ श्वर । पिंगरकी-वि धार नेहा सात । शियभ−९ [मं] नारका मका वारी। शियाण-प्र [म] स्रीय शीरोसा पात्रा प्रम गात्रा सीदमन जीवेका मुर्वा जेपा नाशिकामनः इ.फ. व्हेच्याः दियाणक-पुनि] मासिकामका कवः वस्ताम । विभागी(धिन)-५ (६) नाकः। सिंधित−नि [न•] ग्राइका। सिमंत्रिका-स्रो [संग] कटिरंच करचनी । मित्र-पु [मं] शनकार (गरमीकी)। रिजन-तु [मं] कनन करवारी सुबूर आति आभूवर्गी की पहन नेरामीके असने, फिरन आहिमें समझ रामबाहा चातुरांडी तबा दनमें नमी वस्तुओं है हिनमें हुन्ते चृदित श्रीने भारिमे उरपन्म प्रति आशामा होतार । शित्रा-भी [ते] सित्रना प्रातंता बनुत्रशे होती। --

गता-को ४३५६ो होते।

निजिय-दि [में॰] दोहत हानजनाता दुना व्यक्ति बहता |

वे दाकामके अंदर बना हुआ छोटे दरींबाका केंबा

क्षान । -- मासा-पु फिरदौसीर वित फारसी आवाका प्रसिक्ष वीररसप्रशाम महाकान्य विसमें केरामठे पुराने

बादशाहीका वृत्त और धनके सुक्षीका वर्णन है। बादशाही

तुमाः बनता हुमा । र्विक्रिनी−सी॰ (सं०) प्रत्यंचा चसुवृक्त क्षेरीः नुपुर । र्षिजी(जिन्)-वि [सं] वर्ल्यारीको प्वतिसे मुक्त मपुर ध्वनि करमेवाला । शिष-तु [सं•] पक्षमर्थ चक्क्षन्ता पीताः दे सिना' ६ र्दिषा-सी [र्स] छीमी। सेम । सिंधि-जी सिंधि शिवा । -बा-बी॰ छीमीर्मे बत्पन्न क्षोनेवाका वी दलवृक्त वज्ञ । ~पर्विका,~पर्जी~ की मुहूपणी। किंथिक−पु[नं]कृष्य मुद्र काली मृँग। र्दिस्पिका-का॰ [सं] छामो। सेम । पिंचिमी-नार मिंगी ध्वामा पष्टी। सेम । र्विची-सी॰ (सं) छीमी। सेम[्] मुहपनी। देशीय करि कक्षाः - धाम्य-प्र दिश्वमनः । - एछ-प्र भाइस्यः। शिश-पु॰ [सं•] एक क्षत्रसः । र्शिशया~स्त्री [सं] शिशु कृष शीशमका देश अशोक कृक्ष । क्तिंद्रपा≠−मी दे शिद्याया । **चिंत्रसमार – त॰ (सं०) दे॰ '**क्षिशमार । शि−९ [तं] मंगलः श्रमुक्तिः शातिः शिव। िासार-पु+[अ] शीरः त(सा चान श्रीत (श्रमासर्वे)। दिक्कंजा-प [का] वंत्रका देनेका दंश जिसमें प्रराने जमानिमें जपराधिवींके द्वाध-पूर्व देकर दवा दिये चाहे थे: वक्ष येथ विश्वमें विम्दलाव किया ने बनाबर पन्ते बारत है। वर्ष बवानेकी कमा कारहा (का) वत्रणाः परापः बवाद । स् -(के)में पर्विता-वंत्रता देना कठोर श्रंद देना। शिक्र-सी मि] परतका मर्द माया वेड आदिका पद भीरका नीशा एक भीरका भाग जानिन। रांडा देशका विमाय की ९६ वहसीलशारक मानवत थी। - लार-प वहमीसदार 1 िकन∽सी [का] सिच्यर भिक्रकन । वि (समास्त्रे) शोइनेशका (दुवशिक्षमः (रस्तशिक्षमः) । शिकमञ्द्र (फा) पे । --परवर-वि पेट पासनेवाना वेट्टा -सर-वि जिलका वेट मरा हुआ की। दूस । मुख -सेर क्षोकर शामा-पेट मरकर शामा । शिकमी-वि [फा] पेरबार पेपारशी; शीवरी (जिक्की शरीक) । पु वह कारनकार की भगत कारनकारम जमीन सेवर जीत-वाय । शिकरा-त [का] एक शिकारी क्या यो बाबमें नुस धोटा बाता है। सु॰ -पासमा-बात अपने दिर भना। शिकवा-दु [१३०] (८६।यद्र । शिकस्त-व्याः का देश मान (याना दना, वाना); हर पुर (निवरतन=हरमा) १ -मी-की हर-पूर । -फ्राप्ता-भी पदी वा गहरी हार । -संद−तु दढ सरहका सक्ता भी हरता और चंद की जाना है। शिकरमा-वि॰ [का॰] हुस हुआ भग्न; बग्नीर (निरसंबर) । -- तातिर -- दिल-विक शिक्ष अग्रहरूव । -- नर्पास-ति । य यमोध किमनेवाला । - यर - वाहा-वि

अपुरू अमहाय ३ —हाल-दि क्टेंशच गरीर;

भौग्राम ।

शरकारी। एक वया सामीनका पेश शिरीय बुद्धा शास शीपा सन्दराज धानिनाहम हारा प्रवनित संबद्ध एक राजाः थन यक्ति औषट । विश् याद्य पातिमे संबद्धः यद्य रामा मनेपी । न्यम्पेयग्र-पुरु व्यात्रः स्वतुन् । -व्यातः ~पु॰ मह संबद् ।-पुक्तिका-म्वी॰ इयथी ।-बरु,-ब्रम च्छ मागोनका देर ।-बीका-औ• केवन साक साकर रहमा। -श्रीप-प रे एम होए। -प्रज-प्र- मुद्रीगर माग मुद्रोभरका चरिमाण। -पश्च-प क्षिप्र क्ष्म गरिवनका पर । —यानेय-५० ब्रह्मयति । -अस्य-५० बद स्वक्ति भो शाह्र दी साता हो। मंस श्राह्मा ही। वि धेवत शास खानेवामा । --धोम्य-व वान्वधः थनिया। ∼राज्ञ∽पुरु गारगृक, मनुभा। ~शहरी~सी व्या करेत्र । च्यारा-चारक-पर -धारिका-मी मध्योक्री शारी । -विद्यक्त-पुरु बनदा बेट । -विदय -बिक्यक-कार्याक भेरा क्याना -वीर-क कारतक शास, बच्चा। जीवशासा गणदपुरमा । प्रशास-प् सागीनका पर ।-शास्ट -शास्त्रिय-प्रदासका सेन । -भेष-प वै शिक्तीर । -भक्त-मी॰ जीवतीः शोदी शरू चंगला पेटा । माक्ट-वि• [सं] शहर-मेश्वी। गारीवर लग्ना हुमा वा आना हजा । प॰ गारीमें जाता पड़ा: गाशीमें जाती हो बरदा स्थामांत्र पुरा पर पुरा धन । -पोनिका-सी शेवदा प्रेथा । शाकरायन-प भिन्ने शाकरायमः बाद प्राचीम नेथा-करणोंभेरी एक जिसका अहरा वाशिति तथा बास्वने आवा क्षिया है। शास्त्रीक-वि वि वि शास्त्र । गाक्टीन-प सि वे बेख तलाही एक शैना गारीने लती हुई परत । वि देश शास्त्र ?) शाकरी-स्रो [मं•] हे॰ शाकारी । माहत्त-[व [सं+] शहल मा दुक्तवेमे संबद्ध । पुरु बार्गर की एक छाए।। इस धानाके अनुवानी (बाब अनुवनम)। **४६ डोएडा माधा इवन गामधी** । शाक्ति शाक्त्री (क्रम्)-५ [र्नः] बदयो। शास्त्रिक-वि [मंग] शास्त्र नारंगी इस्ते वा अंद्रने भीष दक्षीयाना छाएल है साक्षम्य - प्र. [मं] पानिति हारः व्यक्तिन यस वैवा-बरण (बड़ा आता है कि प्राहीने की बहन बहुस कम्पादक परनात्र स्वर्शन्यर हिया था) । शाक्षांग-पुति | बच्छा विथे । काल्या-भीव वि ने देशीनकी वह १ शासाम्बन्द्रक (६) विकास व्यवहे १ काव्य-द्रक भुद्र वा भुद्र र बाल्यारी-भी प्राप्त बालका वह निम्ने कर बवार । श्राकाद्या जाकादमी∽भी ।^ती वास्त्रवर कृता दल्हें प्रामेशको भएती (१५ जिन्दी विश्वति संपूर्व निय 2"16774 [64" How ?] (शास्त्राम-दि ति विजयमारी । शासाहार-पू (त) पर पूर कप, सब सन्दर्भ र

चार्च करवा रज्या भीजन १

वाकाहारी(रिन)-दि॰, १० (नृं०) १० 'एम्रन्य'। याकित-पु [सं] शेन, प्राचा । शाकिमी~मी॰ [मं] श्रावतुक मृति, शाव रेशी हो अमीमा स्थापी वक शतुक्ती । साकित-पि [तर्थ] शुक्ष करनेशमा इनद्या एरेच करनेवामा । भाकी-रि॰ [म] छिडायत करनेवाना। करिवार करने वार्क्टस्ट, वार्क्टरकेय~वि० (ग्रे॰) शहंबनाचेत्र । ग्र धर्नतनाने मंदद काडिरासस्य (क्रिकाप राप्तर्थ) बाटकः "स्त्रेनमाद्या पत्र भान । शाकृतिक-पु शिश्वे विशेषार वहेरिया । शास्त्र-वि [नंग] प्रश्चिमेनंत्रीः प्रियोधा एउट (मग्रम) मंनेवी । प्र 'पश्री भारिके रूप, अवस मारि देखका मनप्तके रामाशासका निश्वत बराजशना हाना समय बनानेबालाः एडी परस्तेबाला । सावक्रिक्र−५० सिंश्री विशेषारः परेनिया स्नारः क्रान बनानेवाला धावनकः धावन-विवाद । बाष्ट्रनय-प्र [नं॰] होश करता दुवाहर। रि॰ पी HART I द्यावानिक-पुलि] सम्बाद, महुदार मार्टकदीना है? ! दिए महाभी-वृत्ती । शाक्ता-प्र [बंक] रेगस्य एक प्रकार ! सामाध-पुर (rio) दह सता। सासर-पु [त] देव धावर । साल्ड-विश् वि] छन्ति मंदेशी । इत वर जी छन्छि बराताबा दरवा दी दुर्गा, कानी मादि दैनिवीदा उत्तानकः क्य-श्वरायमें बीशिय (शाक्षीक मीद श्रीताय है। के बाबा बाग्रमानी बीन है और अपने संप्राध्नमें शिक्ष शक मांग कारियो भागाच नदी मानतः धारीहा है एकिया अगोद मामन है भार अनदी प्रभा भीर पन्धे मेरलमे रह रहन है)। कामाराज-५० (गं) चान्त तर नंद्र धान्त । ब्रान्टिक-प [ने] राज्य श्रीपदा प्रशासका श्रीय भागा नावक द्विचार रक्षते। धनावेशामा व्यक्ति। रि क्राफ शंदवी है शालीक-वर्ग (तंत्र) शन्ति भाषा वास्य करनेत्रमा मिनिष्ट आवानस्थार् । हि. सन्धाननेनी । भागीत भाषाय-५० [त] एतिको प्राप्ता वारे-बन्धा व्यक्तिः सावय-पु [तं] एस वानीय एरिवपूच दिवसे में न्य मुद्र प्रभाव पुत्र का अपनेता पहरे दिना प्रवेशक दि तिश्व । - कम् -पुंत्रप-म प्रश्व - पुर्याप-मार्थः निष्ठ । -विश्व -विश्वय-४ केंद्र सम्बद्धाः -- समि - सिए-प प्रदेश mm-fe [ete] um etm eb i Sier \$ १८देखें किए रिया मधा प्रति असी। और। समय र mill-ale [do] traft re-gu wmare Cay & mier-g freige feres fift er eren !

राज्यधासन्त्रणाको रीति प्रवर्ति । —सूच्युक्र-वि राज्यधान वर्टवन करनेवाका। —धर-चु है 'श्रास्त्र-वि राज्यधान वर्टवन करनेवाका। —धर-चु है 'श्रास्त्र-वि द्वारामामा करमाना वालवनाविषय सुनी पृथिनामादि संवर्षा (रामाबा। —प्रणास्त्री-की शासनक्ष्यों दिवि वा प्रवर्ति। —द्वारक्षा-को॰ श्रासनक्ष्यों प्रथं, शासन-प्रवार्ति। —द्वारक-बुरारि(रिन्)-पु॰ राजवृत्त राजाधानाव्या

सासमोदर्गेत शासमाधीन-दि [र्ल॰] वी शासमर्थे, शासनेदे भीतर दो; सचित्रनः नद्योम्सूतः। सासनादिष्यिक्तः [र्ल॰] राजाया व्यविका धर्त्तवनः। सासनी-सो [र्लः] वर्मोण्या वरनेवाको सो।

शास्त्रपति (सं∘) शासन वा निवंत्रणके शीम्बः देवनीय। शासिस-वि (सं) विश्वका शासन किया गवा को

वैदित । शासिता(म)-वि [सं] शासन करनेवाका दं केसे बाका।

शासी (सिन्)-पु॰ [मं॰] शासक (यह बौगिक शन्दके उत्तरपद्दे रूपमें अला है)।

प्रतिस्ति कर्तन जाती हो। प्रतिस्ति (स्तु) नु सिक्ष राजा विवक्त ग्रहा निमा तुद्ध विना वैद्धी और जेमोंका वेचनुक्त फ्लेटा। प्रास्ति नक्षी [संग] शासभा आजा। वेच, सास्माना विस् राज्यना

हास्त्र-५० (सं०) भारेका धर्म बर्धन विद्यान साहित्य कमा आदि-संबंधी प्रेथ जिलके हारा मानव समाज तवा बोधनके विभिन्न धेबीको स्थिति और रक्षाकी आवस वा परीश्वक्रमे शिक्ष मिलती है। बागा तिकांक बानकी द्राक्ष निर्माताः -arr -ar-3 बदेर्प कारता । द्याखरतां करि । -क्षोविश-दि सार्वोका विश्वप द्यान रक्षनेपाका । -गाँव-प्र साधारण कपमै पर्नेपाका। -पञ्च(म्)-५ व्याधान को शामीके मध्यमपूर्व (सप मेन (पर्य मान्द्रक मरत्) है । -सर्थां नहीं श्राप्तका अध्यक्त सनन, मनुगीलनः शास्त्रक् विचार-विमर्श । - चारण-प्र प्रभारक, जालकाता जासकार्थ । -ज-वि द्यासद्यानाः द्यापन्या नामनेगानाः । -सस्य-पण शालीक तरर सत्य। पामिक शंबीमै बॉवन बाबार श्यक्तार शावि संपर्धी सारिवक तिथम । - ० सा-मि० शास्त्रतस्य वानदार !- जाम-प्र भारत्ये जानदारी। ∽दर्शी(शिन)−दि थिसने जाल देखा सना है शासका बामकार, शासक। -शक्ति-नि जिसकी श्रीह हात्यपर निजन रक्षती की, यो भाग्याञ्चमार जो व्यवहार ६१ता हो: प्राप्तरेशा । भी वाम्बोद शीः विचार ।~ प्रवक्ता(क) -वक्ता(क)-प्र॰ शालोगोशका आवारः न्यवहार आर्थि संस्थमें पासवर वहि रखन हुए किर्नव ≼नेवाला बीवणा बरनेवाका व्यक्ति । —प्रसीय-प्रश शासका निवयः किसी पार्मिक ग्रंथ या पार्मिक शबीके विषयपर दोनेशमा विवाद । -मसि-वि −पर्जित−नि को धारमसम्बद्ध न हो।−वित −विव−

वि आसव। -विधाम-पुर,-विधि-सीर शावर व्यवहार संबंधी जान्योक आहेश अनुशासन ।-विस्त वि॰ वी धाखाध्यवन म दरता हो। सालॉन विते दि -विस्ता-वि० जिसका विकास सामग्री क*रे*। शान्त्राविदित अक्षालीया अवैच !-विदित-वि॰ ग्रामा मुमोरित ज्ञास-सम्मत् । -स्यूत्यसि-सौ॰ वर्गहरेस परिवास धान्यनपण्य । - हिस्सी(हिस्स)-पण शत्र यान बारा नीविका नकामेशका क्रमोरा क्रमोरिनाही मूमि। -संगत -सम्मश्न-वि वे 'वास-विदिश् -सिक-वि शास द्वारा प्रमाणितः शास्त्रभक्त । शास्त्राचरण~प (तं•ी शाता²शस प्रतम: ध्रमाप अध्यक्त मनन अनुस्रोहत । शास्त्रातिग~वि+ (श्रं•) शास्त्र न माननेशस्त्र ! शास्त्रानुसाविक-दि॰ सि] है। शास-विदेव³। शास्त्रोत्रशिक्षण-प [मं] शास्त्रका सम्पदन मनप शाकातुहाम-१ (सं+) शासके भारेशोका पायन। शासार्थ-प्र [सं॰] धातका वर्ष तासर्व अध्यान बाद-विकास (की सासके कर्म सामके सहारे दीता है)। चाक्रिक−ि (तं•ी घानक । द्याची(चिन्)-वि॰ [सं॰] शालका भारकार चालवा पु बहुम्बक्ति किसने शासका बहा यात कर लिया है शासका वर्ष अविकारी निशाम पंतिम परीकार्य क्लीचं बानक्र जात बीनेवासी एक छपानि । शास्त्रीय-वि [र्न•] साल-नंबंधीः शास-सम्पर्ध शासा तमीरिता वैदानिक । शास्त्रोकः−वि [सं] शास्त्र दारा कथिना सासविधिक हास्य-विश् (र्श) प्राप्तम-भाष्यः शिक्षमीयः देशनेव । शाहीमाह-५ नाहीमा शाह, समार् रावापिराव । शाहरताही-स्था चार्यसाव राजाविरावदा पर या करे। साह-पु (सा॰) स्वामी। राजा बादमाद सुनावाब क्कीरीकी बरबी। ताल और रांबीकेला वक बचार गंडी रंजका एक मोक्स । (क्रमेशस्य समानमे वहा प्रधान श्रेष्टवा अर्थ देशा है- जाइकार 'शावदग' द ।) -कार -9+ विश्वी बनाबारकी सबने अच्छी कृति। -मर्च-विक शार्वीकी शरह, बहुन अधिक, सर्व बरमेशाना । -गाम-प योपको यह सक्की थान । -हादा-उ वारशाहका पेटा राजकुमार !- प्रापी-सी वारशासी वटी राजकुमारी । −वी-पु मुस्तमाय कमेरेकी पत्रमी । ~तरा~पु क्तित्तपता । नतीर~तु है 'धश्तीर । -सूत-पु दे प्रस्तृत'। -दरा-पु गाँव वा वरती की धारी महत्र वा किपेड़े और वा सामने दी। दिस्तीके पान वसुनाके यम पर पता हुवा एक कमना। -व्रिया-५ (युस्तवयान) विशे कारा करिना एक जिल वा रिधाय । --धाना--मीयका बीजा बड़ा मीती। -बास-इ पर (शरानको जमग्रीहरू दिया दुशा माग्र अर्थ-सीहर-राष्ट्र) । - स्वर्ती-न्त्री पारशावदे वेडलेशी जपशावदे भूम्य भारता राजमस्ट हारीगढे अप्टा वह स्थान मही बेडकर सुगल बारशाह प्रवासे दर्शन दिवा दर्शन

शास्त−प+ सि ेशासिकेश करेंग !

प्राप्त-स्त्री [फा॰] साम्रा बाबी। पीवेसी करूमा सीगः नदी वा सहरको सुक्त भारासे निकली हुई छोटी भारा प्रवृक्षा पर्देका अंदार (का) बंदार कमानकी अवसीर पक परुवान को मंदेके रामीरमें शहर मिल्यकर बगाबा बाहा दे। —चा−प छोटो छल्छः तुद्यत् विश्वारोप। ---वंदी--श्रो॰ पेडमें दलम कथानाः तदमत कगाना ! -दरशास्त्र-वि परतक फैका प्रमा शासा प्रशासाओं-बाका। –सार-प्रे शासाप्रचर कृतीका सरमुद। वि० वश्वनी झाकाभावासा । -(छो) चरिया-सी मदीबी होती बारा को मुख्य बारासे अकग बीकर वसरी भीर बहरी बाय । स. - निकस्त्रजा-दहनी निकलनाः सींग पैशा द्रोलाः ऐंद निकलनाः लगी पात पेता द्रोला । 🖚 निकासना-टर्नी निकासनाः पेत निकासना ग्रका पीनी करनाः सभी बात पेदा करना । - खनाना-दहनी स्तासाः का स्तासाः देव होता । शास्त्रसाना∽प [फा• 'द्रास्त्रपामा] सगदा बदसः पक्ष दोष: वातका रहतः । ईरानमें प्रकीरोंका एक फिरका बी जपने आपनी वायस कर लेजेची पत्रकी देकर मीगींने पेसे लेता है। शाखा-सी॰ [सं] बिटय, येक्की बास्ता नाहा शरीरान ननः प्रंथपरिक्केरः अध्यायः पश्चातरः प्रतिपद्यः किमी बस्त साविका संग, प्राय सेटा किसी वर्शन सास्त सावि का मंद संप्रदाद (रहक); वेदकी संविधाओंका प्रयाठ भीर स्वरको धनिसे अधनस्थित कानेवाने किसी कविके मामपर वसके बदाकों कथवा दिएथीं द्वारा पर्यपराने क्समें चक्रमा जानवाका संप्रदाध । 🗝 🚉 – पुरु 👣 वृहरूका रेप । ~ चौक्रमण ~ पुरुष टाक्स्से बूसरी डाक्सर कुइनाः दावमें किये एक कामको पूरा किये निना दी दूसरा काम बरने समता, क्षेत्रं कार्य अन्यवरिशत रूपसे करना । -चेत्रन्याय-पु अवास्त्रविक वरतु घटना आदिकी शाय मान क्षेत्रेक अवसरपर वही जानैवाली एक बक्ति (किमी विशेष स्थानसे देखनेपर यात होता है कि चंद्र पूछकी कायापर हो है, मनर स्थिति यंनी होती नहीं । इसी निवति के व्याकारपर वह दक्ति वसी है)। —हंड-पु अवशी धारमंद्रे प्रति विभाग्नपात करमशाना जाद्राग । —शगरु--नगरक-षु वपवगर। --पित्त-पु द्वात-परमें वकन पेश करनेवाला सक् होग । -पुर-पु॰ -पुरी-मी॰ है 'पारानवर । - भूत्-पु कृष । - सूरा-पु वातरः निवद्या ।—('ड-पु अवदासक वरकी अपनी धारा-की शाहकर बुसरेकी शासाका अध्येता। -श्रूपा-सी वर्ग सब्बमें निक्नो दुर्र होटी सब्क । -बाल-पु वक मनारका बातरीम । -सिन्द्रा-स्री॰ पेरकी डालसे िनन कर वयोनको और बहुवेवाली करा (यह वयोनमें पेंसकर क्यी स्वतंत्र पेशका कप भी भारण कर लेती हा जैसे कर प्राची क्या वर्तात्। साहार-पु (का) दहनी प्राष्ट्रांत सीगा सीगकी राष्ट्रका

(दंबज्ञाका) ।

शास-बात शास्त्राम्सा−स्ता सिीशमसी। सारतास-प• (सं•] बानीर पुध, अकमे रुत्पन्न होनेदाका शास्त्री(सिम्)∽वि [मं•] हासाऑनाका । पु नृक्षः वदः नेरकी किसी धायाका मनिकारी, जनवायी । शास्त्रोद्धार~प सिं•ो विवाह सहपर्ने पाणि सहमद अव सरपर वर तथा कन्या-पक्षके प्रशेक्षिते द्वारा अपने-अपने यवमानको क्रुक्रीनताच यापमार्थ छन्। वंशावसीका SWITE I पाप्तीर, पा**कोटक**-प्र**्रिश** सिरीइका पेर । शास्य-वि [सं] शासा संबंधी; शासाबे सदस । शागिर्व−प्र• कि } ग्रस्स विद्या वा शिक्षा पाप्त करने वाका, विषावाँ, श्रिप्य । −पेन्ना −प किसी वच्छर वा विमागके (मात्रव्य) कर्मधारियोंकी समष्टि अमला भीकर बाक्स मीवर-बाकरक रहमेडे अद्यान की बंगरूँ। आदिमें पक किनारे वा पास बी बना क्षित्रे जात है। शागिर्दाना−विकाी शिष्कोबित शागिर्दको तरका प्र शक्दक्षिणा । शामिर्दी-स्रो शामिर्दशोना शिष्यमा । स॰ -करना-धारिए बनकर सीखना शिष्य होना ! शाखि−त [मं] जोकी दलिया । दि प्रदन्त प्रसिद्ध । दारल-दि [अ] वर्णम कनवादः भनीया। -(जी) माविश-अ कमी-कमी पदा-कदा। शाट शाटक~पु [र्स•] क्यांका द्ववता अल पोहाकः सावा । शाविका, शादी-मी (सं•) साही: बन्द । पाक्यायन−प [मं] यक सनिः यक्षश्रं≰ दोपश्र शांतिके लिम किया गया यक दीम । द्याक्ष्य-प मि शेशक्याः छनः छन्। शा**हपछ**−९० [मं] दे० ¹शाइनः । शाण-प [तं•] शाम एक प्रशारका कृतिम परवर विस पर रगशकर दक्षिमार भीजार आधिकी मार तेल की वादी है। सन(शक)का बना बन कमीया चार माधे दे वक शीला करवय आरा । वि. सलका बमा हुआ । द्यालक-पु॰ [मं] समका बना बना । शाणाळीच-पुनि+} शाणपरकाम करक भागी भीविद्या धनामेशाना व्यक्ति, प्रविवारी श्रीकारी भारिकी मधाई वर्षे तत्र करनशासाध्यक्ति, सम्प मार्थकः । शाणाइमा(इमन्)-प्र[मे] सान परनेका पपरा बसीध । शाणि-नी [र्थ•] पट्टब्स यद्रशा ह क्षाणित−वि [मं•] भें तब या तीश्ण किया गवा दा, साम रहा। हुआ। बड़ीरीपर कसा हुआ। द्याणी-न्यी॰ [मं] समझ रेडॉम्ब बना बन्सा दार सेवा टिइमन बन्न करी प्रशास्त्र बदमयन में कार्य अनगरदर अधावारीका पहलन ६ किए दिवा जानेकाला सनका बना बन्ध मामः बज़ीटीः जन्हाः चार मारोधी श्रीण दावो भीर प्ताचा। वह रूदरी विसुधे अपरायोका तिर भीर दाव कॅर्नेपी रिया जानशका रहारा ६ देवर बन इंट देत है। वि (समामने) शासीशासा शाकोपस−पु[ली]सलापा टापप्पर। शास-(व [त] निवित्त तथ क्यि हुमा प्रता

में। दाकामके अंदर मना बजा छोटे बरोंबाका कैंगा राष्ट्रान । - मामा -प्र फिरदीसीर पित फारसी भागका मिस्य बोररसम्बान महाकाम्य विसमें बैरानके पुराने महद्माहीका पूर्व और वनके नुक्षीका नजन है। बादशाही-का दिवहास : −पर−प पक्षीके देशेका सबसे बढावर-शहपर । -पर्संद्-पु यक तरहकी दानः यक्त गड़ा पद्मी । - वंबर-पु: देशविदीवका प्रयास वंबरवाह । −वस्तर-प्र• वस्तरका पद्में मेर की बहुत मीडा हीता है। चवात-पुरु नवा नाम मिससे नादणाव विविवीका शिकार करते थे। वि॰ राजसी, राजीचित । -बाछा-प्र• है 'शहराता'। −वैस-नी• इसे? या गवकका सरसं भरता केर ! -माल-स्त्री है॰ 'शहमात्त्र'। -सहरा-प र्डांक्स मणि । -रग-स्ता गरेने डोकर बानेवाको वही रग । ∽राह्र−को राजधार्य चौका भीर भाग रास्ता । -धार-वि वादछाबॉक कावका वहत वहिना वहमूक्य । -शकार-पु दे 'शहसवार' । -साहब-प दे 'साहबी'। -(हे)सहाँ-प मगस नेमका एक एकार अकदरका गीता (१५९१ १९६९ ई.) भिप्तमे वाजमहरू ननवाना थाः बुनिधाका आदछाइ निथसमार् । −(हो)रादा-चुराबा और रंक, बादशाह भीर फक्दर । साहाना-वि [पा] वादशाहत कायक राजमी, राजी विका बहुत बहिया । पु छहात्री चुहित्रीका ओड़ा । -बोदा-पु दृश्दको पदमाया आनेगाला सुर्ध ओहाः एवं पासकः। - सिजाज-पुराक्ती नासुकः निजाय। शाहित-पु॰ [अ] प्रदारत देनेवाला गगाहा देखने वाला । विश् संदर, प्यारा, मासूक । चाहीं-पु [फा॰] एक शिकारी विविवाः 🙍] कराक्की शाही−4ि [फा] नादशाहकाः श्लाहामा । मी+ शर ग्राहन राभ्य । -क्रमाना-पु भारतीय रविदासका सुम्हिम राज्यकाक ।

वितरक पुर्वेद्धरः ।
वितरक पुर्वेद्धरः ।
वितरक पुर्वेद्धरः ।
वितरक पुर्वेद्धः विद्यालकः ।
वितरक पुर्वेदः विद्यालकः ।
वितरक पुर्वेदः ।
विद्याल पुर्वेदः ।

तिविज्ञिक्त-स्ते- (ते) बरिश्व करवयो । तिव- तु [मंग] सत्यस्त (त्वरोके) । तिवत- तु [मंग] सत्यस्त (त्वरोके) । ती सत्यस्त्री ते चार करवी तुम्द व्यक्ति सामुच्यो की सत्यमेशामीके वक्ति विज्ञते आधिन वस्त्रम तत्वारः भागुर्धो तथा तत्व स्त्री वस्त्रोश होत्य है करवा व्यक्ति सोने व्यक्ति स्त्रीम स्त्रीम स्त्रीम होत्यस्त्र

विज्ञानसी [मंग] शिज्ञमा प्रालंबा बमुबदी होती। — शतानसी पतुष्दी होती। सिज्जितनदि [मंग] संदृष दानसनाता द्वसा वर्षन बरता हुमाः वनता हुमा । शिक्षिमी-सी॰ (सं॰) प्रत्यंचा चनुमुख्ये डोरीः सूपुर ।

विंडी(जिन्)-विं सि] बर्छकारीकी व्यक्ति सुद्धः सपुर व्यति करनेवाका। विंद्या-व्या सिंगे जक्तमर्थः, वक्तम्बद्धः सीवाः वे 'शिवा' । दिश्या-व्या सिंगे श्रीताः स्मा। दिश्या-व्या सिंगे दिश्या । न्या-व्या सोनीसे करम्ब सोनेवाका वो दक्षमुख क्या। न्याणिका, न्याणी-

कराय वात्रवान वा दे देवपुत्र सन्ता - पाणका, -पणी-की मुक्तपूर्ण । दिविक-पु [संग्] कृष्ण मुद्र काली मूँग । दिविका-की [सं] होमी। सेम । दिविका-की [सं] होमी। सेम मुक्तपी। केबीच करि कष्पु ! -पाम्य-पुन विकास्य !-फल-पु आहुस्य । विवास पुनि विकास !-फल-पुन् आहुस्य ।

हिंगाया-नी [६०] शिशु क्य श्रीशमहा देह; अशोक कृष्टा विश्वापाण-ती दे॰ 'डिश्यपा । विश्वपाण-ती दे॰ 'डिश्यपा । विश्वपाद-पु [६] } दे शिश्यपाद । शिश्यपाद-पु॰ [स] विश्वपाद देनेता क्षेत्र कि (सासमें)। विश्वपाद-पु॰ [स] विश्वपाद देनेता क्षेत्र कि सिंग कि से बसानेमें अपराधिकी के सभ्योग देनेता क्षेत्र कि सारत दे से बसानेसे अपराधिकी के सभ्योग देनेता क्षेत्र कि सारत दे से बसानेसे अपराधिकी के सभ्योग देन स्वत्य (से सामें के स्वत्य के स्वत्य हैं से बसानेसे अपराधिकी के सभ्योग देन स्वत्य । सु॰ -(बे)में लेकिया-वंत्रणा देना; कोर दंट देना। शिक्र-नी [स] वर्षाश वर्ष मागा के आहिता पर कोराता सेशा एक कोराता माग सामिना गंदः देशकी

तहसीत्रदार ।

फीशाव १

वीक्नेनामा (वृत्तिक्रक रिक्तिक्रम)।

पित्रमान्य [का] पेटा । न्यस्य निश् पेट पान्नेनामा

पेट्टा । न्येर निश् निक्रम पेटा प्रमा द्वारा पेटा प्राप्त ।

पेट्टा । न्येर निश्च निक्रम प्रमुख्य ।

पित्रमीनि [का] पेटका पेटावरी; मीतरी (शिक्सी
प्रसिक्त)। यु वह वास्तिकार वो समस्य व्याप्तकारी समीत

केटर नीत्रमान ।

पित्रमान्य [का] न्य रिकारी पर्धा यो नाममे कुछ

हांस होता है। यु न न्यस्ममान्यस्म समस्य प्रमुख्य ।

पित्रमान्य [का] न्यस्म ।

पित्रमन-मी [का] क्यार मान (राजा देमा पाना)।

शिक्य-सी [का] सिन्धः सिकुत्रमः वि (समासमे)

- क्रांग-स्वी यशे या ग्यांशि शर् । - स्वंत्र-पु यस्त तरस्का एक्षा जो हरणा जी(धंर या जाता दं। विस्तरणा वि (चार्च) हरा द्वारा भागा स्वीर (विचारर)। - तार्गित - दिल-वि (श्वर भाग्यया। - नयसिन-ति पु परीए विम्नवेशका। - पर - याक्र-वि भागा जनसाय। - हाल-वि स्टेशंण स्वीरा

हर कृट (शिवन्त्रन = हरना) । -वी-मी हर-पूर ।

तान्धरी। इक इस मागीमका वैश जिरीप कुछ हात्व भीतः चन्द्राम धानिताहम शारा अन्तित संबद्ध एक राजा। वन, शक्ति, जीवर । वि सद जातिने लंबस्। सद रामा संपरी । "सर्गबन्ध-पु प्लामः सद्दान । "स्टास ~षु शक् मंदर्।~षुविका~मी १मक्री।~तक~हम ~ष्ठ• मामीनका देव ।-सीक्षा-मी केवम शाक गाहर रहना। -श्रीप-पु॰ दे॰ दस होए। -पण-पु॰ सुद्दीयर सागः मुन्तिमस्या परिमान । -पदा-तु । शिमु पूर् सहिबनका पेर । -बान्य-पु॰ ब्रह्मबह्नि । -अक्ष-पु वह व्यक्ति त्री शांक बी शांवा हो। मांस म खाला ही । वि केमण साम्र सानेवान्य। अधेरव-पुर भागक, पनिष्यः । – राज-प्यः वान्यः, वनुष्यः । – धानी-सी तता बर्व । न्यार नबारकन्युक,न्यारिकान्त्रीव मन्त्रीकी बादी । - विश्वक-श्रा अन्या पेड़ा - विवयः-बिस्पक-बागाकुः भेरा अगुल । ज्बीर-पुरु बालुक शाकः रमुनाः जीवशासः नग्रहपूरमा । -युक्त-प मागीनका देव ।-शास्त्र -शाबिम-पु शाबका येन । ~धोष्ट-पु+ दे+ आस्मार'। —धोष्टा-लो जीवनीः कोसी भूषा बंगवा देवा ह शासद-(४० [मंग] सम्द्र-भेरेगी। गात्रीपर करा दुवा वा

बाता हुआ। हु॰ नारीमें जुना बध्ध गारीमें बानी हुई बरन्तर रहेप्यांतह बुधा वह बुधा शेन । -पोलिका-क्री॰ धीयका धीषा ।

भाषदायम-५ [मेर] शस्त्रायमः आह वार्यम भेदा-करणींमेंने एक जिलका नातरा वाणिनि तथा बास्कने प्राना क्रिया है ह

गार.टिक-वि [मंग] देव 'शास्त्र । शाक्टीम∽द्र [मे•] बास शुरूतको २६ भीवा वाबीये शरी हुई बरतु । वि• दे॰ शास्त्र । शाकरी-भी में देश शाकरी ।

शाकार-वि [र] शक्त वा द्वतेमे शंबक । प्र कानेश-की यह शासा। इस शामाहै अञ्चलको (अका वह काल)। एक डोवडा मामः इवन-मामधी ह गावमि शायमी(सिम्)-इ०(४०) वर्ग्यो।

शासन्तिह - कि] छहण नंति हुद द वा अंग्रन शेर्वच रक्षतेवामा जाकन है शाहरूप-पुरु [में] पारिति हार। व्योत्पर्धन यह वैदा-बरण (बक्षा आता है कि व बीने ही चवन-वक्षत कारोणका

क्ष पात्र ध्वर्गन्तन दिना या) । दासीत-पुति विद्यानी निर्वत

बारका-भा [मंग] बरामक वह ह

साम्रायस-तु [बीर] बुल्लामा वसरी । व्योष्ट्रम-पुरु भुद्र का भुद्र है

ब्राह्मारी-भी पाइन ब्राह्मा वड निव्य वन अवार् व इत्त्वाहका बादाएसी-भी (ते) पान्ति हुना पन्ति परवेताची बारती रिम निविधी विश्वीची अधिहे निवर mitra feri em ê) i

भारतम्बद्धान-दि (ते) सन्दर्भति। शाकाहार-तु [मं] वर पून प्रम सम महियाना । बराब मदश क्यदा में बस ।

साकादारी (सिन्)-विक, पुर (संव) देव 'पास्त्य'। माकिम-द [र्थ] रोत, शापर । शाकिमी-स्मे [मंग] छाहनुष्क भूमि साम देते हो जमीमा दुगाची यह अनुभरी ।

साकिर-वि (थ०) श्रव करनेराना, हन्छ प्रनेष करनेशका । शासी-वि [भ०] शिकायन करनेनाता; ऋरियार करने-

बासा । भाषुरेत्तसः शार्षुत्रप्रेय-वि+ [मे] शर्वकान्यरंशे। पुर सक्तवामे संबद्ध सानिशासहत अनिशास सार्वा

मारका पार्यक्रमाका प्रम भारत । शास्त्रीवर-व [मं क्रिशमार, बहेरिया । बारकम-वि भि । पश्चिमीनविधाः पश्चिमानः एउट (तृतुन) नेरंगी। पुरुष्टा बार्रिड ६४ न्या मार् रेखकर ममुम्ब हे शामाश्चारता निश्वत करानेराना राज्य राञ्चन बनानेबान्या बन्नी बद्धप्रनेबान्य । हारक्षत्रिक-म (र्थ) विशेषार परेर्दिश स्थल।सन्

बनानेशाना शहनका छक्म-विपार। बाक्जिय-पुरु (नंग) धीध वरक्षा वृद्धशार । विश्वीर क्रमा ।

शाकुनिक-पु [सं] सस्याद शहरा। सप्तनिर्वेश हेरे । वि वरण्येन्वंशी।

शाकेश-४ [तं:] रेवका रक्षमधार ! शाक्रील-१० [में] यह क्या र शासर-पु [लंक] है 'शाहर ह

शान्द्र-वि [न] यकि भंदंगी । ज पर को एकिट क्टमसा बरता हो। हुयाँ। काम्प्रे आदि नैतिहाँका कटप्परा तंत्र-शंत्रदावमे बीडिम (द्याचीने मनेद नेतराव है। हे प्राप वाष्ट्रपादी होते हैं और अच्ने स्थानकी विधित वय वाम आरिकी बदाद्य मेरी यानन्। यागेदी दे शांतिका संगद्ध मामन वे और जनको पुत्रा और प्रभवे

मेशमञ्जूष्य बहुन है)। शास्त्रसम्बद्धः (से) चान्द्रतेत्रः तेत्र शासः । द्यान्तिक्र-२० (नं०) हान्य चन्तिका प्रशासका हाँग्र थाना जायह हरियार रथने नमामेरामा आहा। रि

भागः मंदेशे र शामोध-९० (do) शक्ति माना प्रश्ति सारेशा वैक्षित्र, बाबाहरशह । दिन बला नर्यो ।

शाम्ब शास्त्र-पु (ले॰) द्धीनके उपना क्रि शाया व्यक्ति ।

ब्राक्य-पुरु [तीर] यह शाबील श्राविष्ठ हे किए मित्रक नुक्र प्रतास द्वार का सुबक्ति। पुरुष वित्रा द्वारीयका केर भिन्न । -केनु -पूर्तव-प्र पुत्र र -पुत्रव-पुर रेड विषु : -विश्व -विश्वप्र-१ सेंड रणकी

-मुक्ति -सिए-पु पुररेव र mu-ft [sio] an erneer er fert ! हरोडट क्षि दिया गया वा कारा करेर करेर আমৌ-খাঁও (গও) হয়বাটা হাত পৰ ক্ষান্ত ক

44.1 mintens fe ler feren er einemet पिकायस-सौ [न] दोनकन, शिका, विदा दुराहे। दुराबा रोग पीका (१२को विकायत)। दोन मानगेदा कारण, निरामककी नक्ष । मुक-करमा-शिका करण दुमका राजा दुराहे करना: अकाहजा देना। पीका नताना (विरुदर्शकी निकायन करणा)।

शिकायती~ि जिकायत करमेशालाः शिसमें विकासत सः (सिद्धीः)।

शिकार~पु [भ] भाक्षेरः। पश्च-पश्चिमोंकी (ऋषा या भादारक (सप) मारमा। मारा द्वामा पञ्च-पद्मी था क्सका मीं। स्टबा माण; दलाण, बेस्या, बाह गाविके पंदेमें सामा इसा जादसी। च्याहरूप ब्ली दिखार धंकरेको पराह, संगच, रमनाः संगच्छे दना बना बन मंज बिसपर वैडक्ट क्षेट, बनेक सुबर आदिका शिकार किया बाता है। -वंद-पु॰ वह तसमा को योहेकी इनदे पास चारवामंद्र शैक्षे शिकार वा दूसरी बक्सी भीन गाँव होरेके किए कगा होता है। -बडी टडी-छोबी-मी दड़ी जिसपर कास निझकर नहेकिये अपने साथ रायते हैं। स -करना-भाकेर धरना। परिमें कॉसवा महोमें **दरमा । −रोहना~मावेट करना । (किसीका)** -डोना-द्विमें ग्रेंसनाः दिशी रोग वर्षत्ना भाविते मरना या पंगवित जोना। किमीके रोशाविकी पनि होना । शिकारी-वि , प॰ शिकार करतेवाचा स्वाव । -कता-शिकार पदार्शनाला शिकारमें सहायक हुन्छा। -सामयर-प वह सामवर की आहारके किए वसरे

पशुभोका शिकार करता है। विकास-प (स्रो यक वा तील सचेद डॉलीवाका चीवा

की पेनी सामा बाहा है।

शिक्येह-तु [का] दर अवः दे॰ 'शुक्रीह'।

शिवञ्च-वि [सं०] तिरुष्टा वेद्यार/असम्मी। शिवञ्च-पु [मं] सप्तमक्कीते छन्तेवा नीम सप्तमेनकः

श्विम – पु. [स.] सपुस्तकात छण्डा नान न्युःसनः सपुरोवः शिक्स – पु. शिक्सा – सो. [सं॰] छोच्छः सिक्सरः

(याचम — पुः) शास्त्रमा — लाः (शुः) अगस्यः । गण्यः। ररसीको वासीम दोमा व्यातेशासा वोतः ररसीको वासीमें रखा समानः गुरुको बोरीः।

सिवियत-दि [मं] हिस्सरपर स्टा हुन्। विकास का स्टिंग क्रिका क्रिकामा स्टाप्स

शिक्षक-इ [गं] शिक्षा धेनेशका भव्यावकः शका क्षेत्रनेशका ।

रिक्षण-पु (तंत्र) शिहा वैनेका काम शिहा सनेका काम दिखामाप्ति शानमाति । त्यका-स्ती आनेकी कुना।

शिक्षणीय-वि (सं॰) शिक्षाके बीध्य शिक्षा देने कामकः कराने बीध्य १

शिक्षमाय-५ [तं] विपाशी छात्र ।

शिक्षा-सी (सं॰) व्यवस्थित कवने दिशी दिवा संस्थाने वा दिएकः, पुत्र कार्रित पात्र या विश्वादी वार्षितः वार्षितंक तथा सम्बद्धिकः संविद्धाः विश्वाद्धाः विश्वादे दृश्यः (२५-'व्यावस-दिश्या')ः वर्ष्यस्यः सम्बद्धः दंवः (व्ये)ः दिया दिवातः कृषा (२५- क्योवस्थाः)ः देवः पद्धाः विश्वाद्धाः विश्वादः विश्वादः विश्वादे नरमंत्रीये व्यवस्थादः विश्वादः देश व्यवस्थादे विश्वादः विश्वादे नरमंत्रीये

(बेश-'पानिमीय शिक्षा')। विनयताः स्वीताः प्रश -कर-पु॰ विश्वका व्यास मनि । वि॰ सिरा वेदेशना ~गड्-प्र• शिक्स पानगता गुरः शैक्षग्रहेस विक्रीम । -ईक-पुर समझ्के शीरण शिवा प्रमारत। च्डीका-चौ शिक्षा सस्टेश चारि दारा स्थित वीडिक वारिविक मानस्कि भादि विद्वास । **--**शर-प्रशंदा - पञ्चति - की शिक्षा देनेशा दन । - परि पर-खी बैदिक मिन्नाई मध्यसन-सप्पासको लि तरकाणीन शिक्षक्रम कर्रो पराहे अभिकार दिय विद्योग कविद्यी शिक्षा-प्रवृत्ति चकती वी और शे क्सोके नामसं प्रसिद्ध होता का दिसी हिपाईड (विश्वविद्यालय 🗯 अध्यापनी दवा 🖛 प्रिया-विधेपी-की वह परिषद को पाउक्यम विस्तानीति मारिस निर्मव करती है। ~प्रकाफी~सी है प्रवर्ति'। ~प्रज्ञ~ विश् स्विदादायकः। ~संबो(बिम)~ क्रिधा-विमातका सर्वोच मविकारी। -विमारा-शिक्षाको स्वपरमा तथा इसके सँमाक्रमेचे निविध वना विमास । - अस- १० गार्डरम्य पर्मद्रा एक मध्य र्थन (चै∗)। ~प्रक्रि~नो शिका-प्रश्रप्ते ग्रहि-प्रमेदा मादा !

शिक्साक्षेप-पु• [सं] केशबरास द्वारा वर्षित रह अकहार !

शिक्षाची(चिन्)-वृ (सं) शिक्षमासिके किर शमुक क्वाफि, रिवासी छात्र ।

शिकाकय-प्रश्न (मं) नियानय रहत, क्रांत्र व । शिक्षित-विश् (सं) नियानयः अभोगः नेवानीः नियुक्तः विनोता पालपाः विश्वान् विश्वः आधुनिक शिक्षानीयाः संरक्त (का)।

विक्षितास्तर-तु (सं॰) शिद्धका स्रापः रूबकः, सुवरिर। शिक्षितासुब-ति (सं॰) सम्बादक संभावनमें निदुषः। सिर्लेक शिर्यक्क-पु (सं) वार्शः कर्व्याः, स्रिप

सर्रपुष्पाः काउरस्य काकुनः। शिलोडिक-पु. (तं) सुनौ कुपहुतः।

शिक्षिका-सा [सं] शिहा।

शिलंडियो-नि लोर्श्डरे शिर्गस्तुका। नी मोर्ग वृक्तिः, जारीः श्रीत पुरुषोः राजा हुपरके करना।

शिलोबी (बिल्)- 40 (१०) छिसायुक्त । द्वा और जीरको पूंका सुनीत स्वतंत्रीक्या प्रीपको सम्बन्ध १९७ विश्व ब्हर्सकीत ब्रूपस्य पुत्र को जीरक्षी सम्बन्ध इन या मानद राज्या हारा वह स्वती करते और स्वी वहन्द्वर पुत्र हा माना या (साहायार पुत्रको जाईनी १८ बीमानी बहते देविष सामते प्राप्त बनको जारी बहु पुत्रके साहते जिन स्वरम दर्श वा या अर्थ करवामा हारा प्राप्त ।

शिक्ष = नर्गा शिक्षा ('क्स्येशियाँ में म्युक्ष) ।

शिकर-पु (हं) वर्षताम वराह्या सन्ते सैना नार्तः शेर कुटा महामहा सन्ते सैना दिग्या तुरा मीरका सन्ते साम कमर वेदारा दुरस सन्ते कार्री हार्त निराग कहार्यो मीरा दिग्ये भी बरहुष्य हिरा सम्मान कहारी चोरी, नोड मारित प्रिया दे समारानेट हाल-दु [6-] डास्पिटेना करेंग ।
साल-को (का) द्वारा, बाकी; पोनेकी कथम सीवा
साल-को (का) द्वारा, बाकी; पोनेकी कथम सीवा
सो बावराओ सुबर परांते निकली हुई छोटी भारा।
इस्ता-चोन सेंद्र रामीर में ध्वतः (मिकाकर बनाया जाता
है। -चा-दु छोटी हाम्बा ग्रुहमात मिकाकर कामा।
-दरशान्न सेंग्रेड कम कामा। ग्रुहमात कमामा।
-दरशान्न में दूरतक फैका हुआ। साखा-मशाखार्में
साम। -सार-दु शाखाम्न क्ष्मेंक ग्रुएए। वि
सुनती शासामीवाका। (में) यूरिया-को नमीवी
हैटी परांचे ग्रुहम भारति कथा होकर दूसरी कोर्र मार्च कामा।
सार प्राप्त कथा। वहनी विकल्पा। सीवा
सीवा। यह निकल्पा-वहनी विकल्पा। सीवा
सीवा। यह निकल्पा-वहनी विकल्पा। सीवा
सीवा। यह निकल्पा। वहनी विकल्पा। स्वतः

क्नता कर कमना देव होना। साम्रसमा~द्र [का 'श्वासपाना] सगका, वक्छा एवं रोग मान्सा परस्य; रेतानमें कओरॉका एक किरका वो नगवे नामने वायक कर केनेको मानको देकर कोगोंछे रेते केता है।

शाला-को [मं] विटयः पेक्की काक वाहः श्वरीराव वदा ग्रेवपरिचछेर सम्बामा पहांतर प्रतिपक्षा किली वरत भारिका संब माम मक्त किसी वर्शन शास्त्र भारि स्र मद संप्रदाय (स्कूल); वेदकी संविधाओंका करपाठ भीर स्वरको रहिते स्ववस्थित करनेवाले किसी काविक मानगर क्साई बदावी जबका शिप्ती बारा पर्यवराजे इतमें बकावा वानेदाका संप्रदाव । "कंट-पु शृहरका रेड़ । - चंक्रमण-पु॰ एक डाक्से दूस0 डाक्सर कृतका; द्दावमें किये एक कामकी पूरा किये दिना दी दूनरा काम करने कामा कोई कार्य अन्यवरिक्त कपन्ने करमा। --चॅत्रयाय-प अवास्त्रविक वरनु वटमा आरिकी सस्य मान केमेडे अनसरवर कही बानेवाकी एक वरित (किसी निजेप स्थासन हैप्पनेक्ट ग्रांत बीता है कि मंत्र पुछुकी शानापर हो है मगर स्थिति यैमी होती नहीं । उसी न्थिति के नामारकर यह बक्ति बनी है)। -वंब-पु नवनी शरा है प्रति विश्वासम्बद्ध बदमैवाका ब्राह्मण । - नगाव -नगरक−पु वदनगर। —पित्त−पु दाव-पैरी जक्रम वैशाकरनेशका एक रोग । -पुर-पु -पुरी-की है धारातगर । -भूत्-दु ब्रुग् । -भूग-दु बागरः निवद्शी ।-एड-प्र अध्यक्षास्त्रकः वेदकी अपनी प्रास्ता-की धोरकर वृक्षरेकी शाम्त्राका कावेता । -रथ्या-सी वर्ग सरकमें निकनी दुर्ग होती सरक । -बाल-बु एक मदारका बातरीम । - शिका-स्यी चेत्रको शास्त्री निवन नर बमीनकी और बढ़नेवाली जहा (बढ़ बमीनमें पैमकर बभी रानंत्र देशका रूप भी जारण कर सेनी था जैसे बर पर्यो वत व(स)। शाहरा-पु (पा) दहती शासात शीमा भीमधी शाहरा

ारा - प्रदेश हिम्मी अवरावीका निर्देश होता नेद को १८ हेरे हैं। हि (नवानने) शार्थ क्षम (पंत्रतारा)।

शास्त्राम्सा−सी [सं] रमणी। शास्त्रास्त्र-पु•[सं] वामीर वृक्ष, जरमें उत्पन्न दनिवासा

शासी(शिम्)-वि॰ [सं॰] शासामीनाका । पु वृक्षः नेदः वेदकी किसी शासाका मधिकारी, मनुगायी ।

शास्त्रोचार-पु [सं] विवाद मटपमें पाणि-प्रवणके भव सरपर वर तथा कन्या-पक्षके पुरोदियों द्वारा अपन-अपने वसमानको कुळीमताके द्वापमार्थ छनकी बंद्यानकीका स्थान।

सास्त्रीतः सास्त्रीतक्र च्यु [सं] सिरीइका पंत्र ।

धानस्य – वि [शं शादार संबंधी शासाक स्वस्य । सारियाँ – यु [का] गुक्से विचा मा दिस्हा प्राप्त करने बाका, विचानी, दिख्या । – पेसा – यु क्रिसी दस्तर या विचामके (मात्तक्य) कर्मचारियोंकी प्राप्त कमका, नीकर स्वस्तर जीकर-क्षमक्तके रहनके महान की बंगकों आदिनें एक किनारे या पास सो बना दिने कहा है।

्या स्थार या पादा वा या । यत्र वाटा व । शागिव्यंता लिंब [का॰] शिष्योयित शागिरंको तरव । य सक्तरिया ।

्षु गुक्तक्षिणा। शागिर्वी—की भागिर्वक्षेत्रा शिष्यता। सुरू —करमा— शामिर्वक्षकर शिक्षमा, शिष्य क्षेत्रा।

कारि-पुनि विकी तकिया। विश्व प्रवक्तः मिट्ट । साह्य-पुनि विकी तकिया। विश्व प्रवक्तः मिट्ट । साह्य-पि श्रि वुर्वमः कार्यस्य कर्मास्य। – (क्रो) नादिर-क कर्मान्त्रमी, वरान्त्रदा।

भार्यः च कमाकमा, वशक्याः साट, साटक-पु [मं] कपनेका द्वक्ताः वस्र, पीदाका सावाः

बाटिकाः वाटि-स्त्रेः [सं] साद्रीः वस्त्रः । साक्यायम-पु [सं] एक मुस्तिः यवकर्मके बावको स्रोतिके क्षित्रः एक्षित्रः । साक्य-पु [संन्] सरुवाः करुः छतः ।

शाव्यक-द्व [तं] है 'शहर ।

काण-पुति | साल, यक प्रकारका कृषिय परवर शिव पर राष्ट्रकर वरिवार, जोजार आहिकी बार तेज की बाती है। स्वत्याणीका दका वक्ता करीती जार सारीकी यक शिला करपण आरा। वि स्वतका पत्रा हुस्सा। सारायक-पुति (अन्या कार वस)

सालाबीय-पु [तं] प्राणपर काम करके अपनी मीरिका मकानेशका व्यक्ति वृद्धिवारी श्रीजारी आदिको छकारे कर्ष तत करनेशका व्यक्ति असन्मार्गक । शालाक्सा (इसम्)-पु [तं] शाल भरनेका सम्बर

क्सीय। साजि—मी [सं] पहच्छ बद्दशा।

कालित-वि [नं] बी तम या तीर्ग किया गया है। जान रका द्वमा करीरीवर क्षमा दुला !

वार्यी—को [मं] समदे रहीं। बना बन्दा इस्स छेतू। विद्रमण कर कर्म खाला छन्दन संस्कारे जनसङ्ख्य अध्यारीशे प्रकार है दिल दिला जानेवाना नान्दा सम्मान नका साम्या क्लेसिंड जाहा चार सांदेशी नाण्य होनी के कर्मी।। दिला जानवाल हक्तरा।

शास्त्रपत्त-मु [तंत्र] शान परनेश वाबर है। शास-वि [ब] निशित त्रव दिया

भामानाका माभिनय या एक रहा पुरुका शुध्क सूध, सबा दिनका रुक्ष, रुक्ति, भरीरमें रूपेके मीचेकी साठी मगदः क्रंबक्ताः प्रदे। −वासिनी−सौ दुर्गः पार्वतो । शिकरन-प दर्शमें श्रीमी, केझर बादि मिनाकर तैवार किया गया पेश बा केटा पटार्थ ।

धिसरा–की सिंग्सर्ग।

सिप्तरिणी-सौ॰ सि] नारोर**सः स्त्**यम वर्गस्य नारीः एक स्मादिश केश वा पेय पदार्थ औरसंह- रीमावकी जो नदाःस्वष्टमे चक्रकर मामितक बाती है। मासिकाः सथ मिठिका नेपाबी। ब्राइसविद्योच किद्यधिका गर्ना एक वर्ण-पत्तः। विश्व मी क्षित्रदेशको जिल्लस्यका।

तिसरी(रिन)-वि•[सं] श्रियरकुक्त । पु॰ वर्षशः पदाशै क्रियाः प्रशा अपामार्गं चित्रकाः बंदाकाः बंदकाः सर्वेट

र्थमी बक्तवार्षिगी पाननाक क्यारा सिक्स्स । য়িলভীহিল−র [ਜ਼] হুকুরেল।

शिक्षोडक-प्र• [सं] बाबप्स । शिला-सो [सं] पुत्रा, चोरी, पुरिया; वद्रिज्याका भागको सब्द। दीपेकी की। प्रकाशकी किरणा मीर सुगाँ मारिके सिरपटको कर्सेगीः वस पोशाकका सिराः किसी वरतुकी मींक वा मुद्रीका मिरा। पैरके पंत्रका जयका हिरमा। पेरकी बटायुक्त बढा पेड़ (विश्वेष रूपने जड़ पर्याते 📢 भी छारताः रवामी नेता प्रवामा पुरुवरकः कामध्वरः यक्ष वर्णकृता है क्षित्रर'! – क्षेत्र – प्रकार का का गृजन । -तर-प दीवाबार, दीवर । -धर-प मन्रा मन्र पीप । **दि॰ मध्येष्ठाः पोटीबाका । —धार —चारक**—प मीर । वि अपूराधारी ।--पाश-पु योटी। नदी सुटिया । -पिस-प प्राप्त तथा पैरकी वैगक्तियोंने स्वन और बनत पेश करनेवाला एक रोग । ~क्य−प्र नामका ग्रथम १ – वंदान – पुथ्या वॉपना । − सणि – पु प्रिरम्र पद्दनवेद्धा रतन । −शस्त्र∽पु नावरः शक्तवमः ^{हे}टा क्षेत्र क्रिसके क्रमर पश्चिकों का समृत को । **−वर**−प्र पनम इस काइकमा देह। -पूक्त-पु दे 'शिया-वर । – युद्धि — स्त्री प्रति दिन वढ़नैवासा व्याव । "स्प्र−प पुरिया और बनेज को दिजें|के निद्ध इ । तिगामर**ज−**प्र[#•] शिरीम्बन।

चित्रासु-प [मं] मन्दर्किया श्रीरही क्**र्ड**गी। मिगगवसी-स्रो [मंग] मुर्या ।

शितापर्त-पु [तं] पद यश ।

मिग्रावम-वु [सं•] सपूर 1 दि शियानुष्ट । शिग्रापद्या-सी [तं•] मेगूरदिया पृथ ।

गिगाबमी-स्री [सं] मर्री भोरनी। मिगापान्(दर्)-दि [में] किसानुकः श्वान्युकः।

उ पीषका भाषा विशव पृथा वेतु सका पुष्ठण तारा । सिन्दि-दु [मं] मदूरा सामग मन्देनएके देश काये ना পরি 1

मिनिमी-मी [सं] मोरमी मुर्गीः बरावारीका श्रेषाः। li wi ferment i

रिमाबि-पु [मं] तिरुक क्य तेंद्वा वेषा आवन्तवा सिमी(सिन्द)-दि [मं] हिसानुक शिसानामा मुकीलाः अभिमानी । प्र• मोरः, मगरः क्वकरः वेदः नीका लिखा दीपक, दीयाः नामा पर्वतः कथा नित्रक इक्षः अजमीताः सताबरः मंत्रिका मेत्रीः केत् प्रदक्षा नामः जावाणः भागिक मिक्षा मिक्षापर श्रीवन-निर्वाद करने वाका साम तीनकी संक्या (वर्षेकि वर्षि तीन प्रकारकी होती है)। --(रित्र)कंट,-धील-वि॰ मनूरके कंट भैसा । प्र तुत्व, तृतिवा । -कण-पु॰ लागकी विम-गारी । -ध्यज्ञ-पु भूम, पुनौ। समूरकाम राजा। कार्तिकेश । -पिक्छ,-पुक्छ-पु मोरको पूँछ, दुम । -प्रिय~पु वनवेरु क्रमुक्दर । -भू-पु स्कंद। ~संडल~त वस्य वृथ । ~सोदा~सी मीरको मार्गर दैनेदाको वस्त अवसीरा । -धूप-पु० श्रीकारी स्म । –सद्ध-पु कुष्मांद्रा गोल कोस्ते । −धाइम∽ प्र• कार्विक्य । - शिका-ग्री॰ अग्नि-स्वाहा, जाएकी कदः मोरके शिरकी दर्जनो । - म्हंग-५० एक हिरन क्रिमंडे छरीरपर विश्वे होते हैं। -होसर-प्र मारकी कर्पेयो ।

सिम्बीबर-प्र [सं] स्वामी काचिद्रेव । -भास-प्र कारिक गाम (

शिगाफ=पु+ [फा] पीरा। दरार: झरी: मरकुन आहिकी केमगोद रोवोशेच दिवा वानेवामा चौरा। -तार-वि क्षिमें शिगाफ, दरार हो । सु -देमा-दक्षमधी धीरनाः नश्तर समामा ।

सिगार शिगास शिगास-५ (फा] गीरह, श्यात । त्रिगुश्वगी-मी विगुश्वा होना, प्रपुतना, प्रमञ्जा

इरामरा दोना । दित्यक्तर-वि [का] किका दुवा प्रदृत्त प्रसुद्ध। हरा गरा ।−पशानी−वि॰ देंसमुस प्रस्कृतिचा।

शिगका~९ फि.] कमी भनेत्री वानः मुददुका। अ॰ -रिस्ताना-कोई अनीती वात करना अगदा बढामा !-छोड्मा-इत्वडा-फसाइ सड़ा करामेवासी वाद **बद्द**ना **बर्गा**।

शिम-१ [मं] सामा सहिमनदा पर । - ज-प सदिश्वत ।

शित−4 [शं•] तेत्र किया दुशा साम वरा हुआ। दुवना-पतना धीण इद्यादमशीरः दुवनः । सर्पेरः । पु विभागितका यह शुध । -धार-वि सम भारतामा ।

∽शुक्र-पुत्रम थीः गर्हा ित्तद्व−भी [मं] शतद मन्दव नदी भोरहा

निवाम-९ [म] दॉस ।

शितापळ-५ [म] मीशास्त्र श्रीपा ।

शिताब-अ [का] जरू शहरू । वि प्रश्रहात्रः तेत्र। −कार्-वि अस्त्वाय, प्रशासन्।।

िलावी-मी जल्मी वजारणे वसाहर ! शिति−दि [मं] सरेपः दामा । पुर्व कृता – क्रुन मारा दामपूद पर्याः चानदा मिता -क्रफ-दि

वनाम चंद्ररामा । -- मुध्य-पुरु वरवीर बुद्ध । -- क्रेप्र--गाँखा व्ह अनुवर्। -चेर्म-पु

-चार-त शास्ति र। -चार-पश्च-त ४०। -मोम-द वर्गे। -श्य-द मोन्म। -बामा

दुवन्य कमश्रारः पश्चितः सुंदरः सुगीः दीतिहानी । पुरु पन्ता सूच भानंत शतकता । नशीर-तु श्रीकारा बुष्परा वह भर । -सा-भी पर्मस्था मामद क्या है। 'साहता'।

मातपणि-५ (१)०) एक करि । शासकंभ-पु (रो॰) कंपना नपुरा क्रवीर क्या । शासकाम-वि [मेर] व्यणनिमित् । पुरु व्यथे ।

बातहरूतच-तु [म] इंड्रबन्द । पातत~पु [मं•] वीश्य सम्र बरमा। गिरवामाः करवानाः पानना कारमा बच्छेरम विमात्रका क्षेत्र होता। सर

शामा नह होना ।

शावपथा - पु शावपथा श्री नभी भि । वशासनाः र्गत्रमस्यस् । झासभिष−वि [गं] *शर्मा*येचा मध्यमें हाएछ ।

मानभीर-पु [संग] ग्रह तरहती महिल्हा भरमयाती । शानपादन−५ [मं]दे० शानिबादन'। शासातप-५ [गं॰] १वृति निर्माता वद् पर्धात ।

शांतिर-१० [म०] बालाक कारयो । पुरु थोर, गढ सहराः परश्चः भारः ज्ञानस्य शक्तनेवासाः । मालोदरी-नी [riv] श्रीण वशिवामी बीरण र शास्त्रय - प्रतिके शक्ता बुदमनीः शत्ममहः यहमञ्जातः

विराद । वि शतु छंत्यी । शास्त्−पु [१] अयो, दरी वास दण दुवा की वह । दि (का॰) प्रमुख इर्पमुक्ता पूर्ण भरा दशा। -साम-वि॰

मक्ता मगुद्ध । -बासी-मा नपण्या गुरुवा सुधी। -बाग-(पर) सुध रकी । -साब-वि शुग अगम्म । माहा∽सी० (तं ∫ १८३ शान्त्रम-दि (था॰) शीया दुआ शुनिताः हरान्त्रता ।

शास्त्रकी-की [काक] सुनिष्य, बरान्यस दीना ह शादिवाला=पुर (का] म्यावसे बभावी सानेवाली धीरण रातीक्षा पामाध्याच वा मुरगेढे भीकीपर वादा वानवावा नीता ब्याया दिमानी द्वारा शारी है अवसायर का रार को दी बाने तनी रहम ह

कार्यान्त्री का विश्वविद्यालया व्यक्तिक (Mr) । - सर्ग-भी वर्णान(क्षेत्र नीनेवाणी कृत्य । दि क्या शेक्ष्ये हरतेशामा । सुरु -श्वामा-भारत.

भाषात, वादीवन दरना ह शाहरू-रि [स्] असी हरी बन्मने मुख्य अवयु ०६०

अवन्त्रा छन्। दश । युक बालका मेराम बरित लेकि, बेश्वास्टम्बर

काल्याच-द्र (] दह हरा क्षेत्र ।

शाल-दु (तर) राणा निवय वर्णती । न्याय-दु नद्त राष्ट्रीका स्थार प्रशिवास पर्देश ।

शास−श्री (कः }शास वहातमा द्वरपा नावण अप रत (सराहर ६ म)। मनेबा (धाम बान ५ डागा उत्तर wa ntinina itti mant i -titim-do f. भिन्नाग्यास । - नार-वि सावश्रमा भारतेना स्रम र तानशी-श्री विश्वी स्टब्ट कर्रावरी सावन स.प. में रंद ६ ० दरिद्रजुल ३९ अग्राया ६ ल (के) सम्राज्ञ लाई

र कही हिली ब्रान्डन चतर हेट अराग्ट । ब्रु -ब्रह र

सम्बद्धान में १४ - १९११ मध्य बीना । (विमार्गका) नमें नमें विभावत्व मु े । मानवा करे १८ वा बनक व में रा

विषयमें (की शासमें गुग्गाम) करना)। ~में बड़ा अरज्ञ —प्रनिद्धा परमा हैतो दोना । बाना-१० (याः) मान ४४० मा³से १५५ १९

जुलादीका संगा। सुर -कालेमे झाला विलया-४० भीग चन्न-चन्दा दीना । पाप-पु (तं॰) 'भनुस्था तुग हो (तो पुरू रूपर

व्यक्त करमा, मासीश मार्गा शुरी दसम रिग्य दुष्परियाम गापदा सा हो। सभी को भूनावा । न्द्राम-वि अविशय । "उपर्"तु गुरुवरीहे बर्दरानहे कारण भाषा हुमा स्वर (इस स्वर्दे विश्वरे मेना मन भाग है कि रमधी सारमा मुख्योती ही प्रयत्नी पर

स्वर है) । -मिनृश्चि-मो+ नाइन <u>श्</u>रुटि । -मर्-विश् शांत देनेशांगा। *-- शन्द-वि* अभिना हे*स* बाइवें भी किसी कारण्यत बसम धुन्द ही दया है। ~मक्टि~ली ,~माझ~ड॰ पाक्षे हाद होरा।

सापरिक-५ (०) मोर ५दी । शापना:•-म• डि• 🐧 ^परापना । दारपति –५० (स॰) द रख्य मधार्म । रण प्रवेदिकार संको तक प्रव ् } ह-प्रोपाप दिया आब आशाहक (घानीन कानने राष रे'क

महा प्रकृति निवरी है) ह शावाबसाय-५ (ते)१० राजा । स पाम्प्र-इ. [में] यह जिमका शाय दी माम ही, माने। सावित-वि (र्गन) जिल शाव दिया पत्रा दी, स्निम्म

विने दाइप दिनावी गरी हो । हारपोत्मर्ग-५ (मंद) एतर देनेश्ने हिन्छ शारदा दनर । सापीदार-पु॰ सापी एसा आफे अभापी **॥॥ अ**भा こい ほうドミ

सामाविक-पु [सं] संत्यो सार्धेशमा शान्ति समुक्त शास्त्र - पुरु [का] कोंदी बच्छे जी दशमें किये। unqu wire eeft mun mint nur em marmi प्रदेशक बा राजनहीं बरोजी बारा ना में के दि शहाने क्ष्मी वाणी है ह

aung-fe fm ffine, mifte gyeinli ibien, देनेशमध ।

क्षाची-वि (स. शारील) क्षत्रांतन ब्रह्मेश्याधीरका रिश्च बरनेशाला १ ब्राहर-डि [मं] एपर-अंदरी अंगरी क्रम केया

कु कारताच रूपणी वाष्ट्राव्हणा व्यवस्था रूपणी LAS GUAL PHATI IQUE DE MEST HAN MILL -आस्त-तु ३ मानाम्पर विकासपारका सार्थ का भारत है --भेषाता,-भेषात्रप-पूर्व मेरा है

शास्त्रिया-कि [त] एवं बडामधी क्षेत्र कर्त क्षेत्र नेह कारण में प्रतीर कारण है यार्गहरण औप सरगी 5.4 5

का रूप कि अ क्षान्त्री करात कर परवर्ग क्षान्ते mer Set a et al.

(सस्)-पु वकरात । -सार -सारक-पु किंदु वस् विद्वा वेद ।

शिधिय-वि [संग्] बीका। विन वेंचा सुका प्रमा
सरत वस्री-वस्री बाम म बरनेवाला, काक्यो। मामे
पका प्रमा (बाम्बे) विरा, तृता प्रमा विना पूरे वसकत्र,
विवे इत सुर नी पनी बी। विना पूरे पार्थरीके विशव पासम वो पूरे साम्बानीते विस्ता पूरे पार्थरीके विशव वीका मेना काक्यन, प्रारो । -मामाल-वि विस्ता प्रमा मगरम बीला पन माम वो । -मामाल-वि विस्ता वसक्य कम पद गयी वो । -मामाल-वि विश्वा वन बीमा वो पना वो । -साकित वे विविवाद । -सामाचि-विक विस्त्री समावि स्ता वो विविवाद । -सामाचि-विक विस्त्री समावि स्ता वो वा वो ।

शिसिकता-को (छ) श्रीकावनः प्राती काकरनः श्रांतः पृट देना पूरा दवाव न बाकना, नियमका पाकन करानेपर पूरा व्यान न देवाः काक्य-एवना, वाक्य-एवना कारिमें दोवने कारण सुरतीका न श्रोमाः सके बादिकी

सपुरता। सिमिनाई ३ – स्रो सिन्निता।

न्यायन्यहरूमा । श्वारूपा । सिथितामा १० - अ. कि. दीका पश्ना भेर पश्ना यक्ता । सिथितिम् - (१० [सं.] को रक्तव हो नया हो, वो डीका ही गर्ना हो ।

हो गया हो। शिषिकीकरण-पु [सं] शिक्षि करनेको दिला, बीका करनेका काम।

सिथिकोक्स-ति (सं) सिविक किया ह्रमा, डीका दिना हुना ।

चिषिकी सूद्ध-वि• [सं] है 'शिविकतः। विकास-को स्थित स्थितिक स्थान

शिह्म-ची [बंब] बहिलाई; बड़ा तीवना; कहोरताः मधिकता, प्रकता (शरिहको बालेको छिरछ)। -का-भीरका तील (शिहकक दुकार)।

शिलाक्य-को कि। देश प्रजारतः। शिलि-पुर्वि शरवीके प्रदेश वक्र वीरा गर्वके पक् प्रवक्त नाम। -वाङ्क-पुरुक नदी। -वास-पुरुपक पर्वतः।

চিথেবিছ-বি [ජ] है 'বিগেনির। চিথে-বু [ජ॰] সময়েন্ট কিংসা কর। না॰ বদরা বের প্রদা। -বিভ-বি কিংসাল্যাবিত কিংনীর করা বুলা। নানী নাথবালয়ে, ক্রম্বা / বু ক্টাটো নানী শ্রীদ্যাবার। কর্মটা বিধা বিশ্বা বিহনামধ্যেস্ট্র-বিটার

तुरसः। रिप्रय−दः [सं] दिमानन वर्तेतके वक्त सरीवरका बामः। रिप्रया−मी [सं] रिप्रम सरीवरते विकली यक्त नदीका जाम जिसके तदकर करणायिनी समरः वसा श्रुवा है। सिरः

स्ताय । शिक्ष-पु (तंश्री है 'दिका । रिकासकार विकासका

दिक्का-की॰ [ब॰] स्वस्थ्व, आरोग्ब, रीवने मुद्धि (रा. पामा)। - जालर-पु॰ विक्रिस्तव्य, बरसासः। पिकाव-पु॰ [वं] वें 'रिकारर'। विक्रीय-पु॰ [वं] 'रिकार'। पिकावा-को॰ (रा.) ३० रीजियाः।

्रीवाबिका-को॰ (चं॰) २० 'शिविका'। तिस्वती-की (चं॰) बंगुलहारिको। शिरम्बपासी-पु (चं॰) अर-बपान्यारी सम्मार्ट

कापाकिक सन्वासी। सिरम्हृत्वन-पु श्रि] प्रिरस्ट्रेर। विरम्बृत्व-पु श्रि] श्रारस्ट्रेर। विरम्बृह-पु श्रि] वत्रो।

वित्यविज्ञानकी॰ (सं॰] शिरदर्श शिरदर्गका रोव! विरायक-पु॰ (सं डे नारियक! विरायक-पु (सं॰] से 'शिरायीका! विरायक-पु (सं॰] मुख्या नेवा क्यो। विरायक (सं डे शिरा शिरकीमुका सम्मा बदका

।धर-पु॰ १७ । १६६ । न्यालश्नुका सम्बाद्धाः -ज्ञ-पु॰ नाष, देशः। न्यालश-पु॰ दे 'शिरसान'। -वृज्ञ-पु॰ [हि॰] दे 'शिरवेन'। -कुज्ञ-पु॰ [हि]

चीलपूर वायक भागूरण। चित्र(स्)-द्व [मंग] शितः बीरहीः गॉटकी चोटे विकार देवचा विता शुद्धाता क्रिये वरहुका वर्षेत्र सन्त्र विज्ञाना करूका माना भागक, प्रतिवार, प्रधाना विचारी

धनाका जनका वाला नावकः प्राच्यात्र प्रवासात्रियाः मृक्षा विरास्त्रज्ञ विद्याता स्टम्पा स्वत्यरः। सिरक्षेत्र-स्वा वि । धार्मकः, स्रोधः दोनाः सक्रम चीताः -नामा-पुरु वह दस्तवित विसमी सस्त्रीको पर्वे

िक्सी ही । चिरक्सी-वि सामका संयुक्त । विस्तिक सिरमिदद्-पुरु (संर) वे 'क्रिप्त'।

| विश्ववाद्य | विश्ववाद्य | विश्ववाद्य | विश्ववाद्य | विश्ववादय |

विरस्का-ली [मंग] पालको । विरस्तापी(पिन्न)-पुरु दानी । दिलस्का विरस्काण-पु [सं] कोरेका वीर, ची पुरुष

हारस्य शरकाण-पुष्ठि । बोरंबा श्रेष, बीरुवर्ष करतारित कल-शक्तरे सिर्फे रहार्ष प्रता बाता है। निरस्य-पुष्ठिको है 'सिर्फ्य'।

वित्रस्य-वि [र्सक] शिरका शिरकर विवत । द्वा स्थान वेशा ।

विरह्मण्ड-पु सिरहाबा गरीका।
विरान-को [तं-] मुनकी जाड़ी राजका जाड़ी। नार पु मुक्की राक-मोदिनों काना कर देवेताय रह महारहा बातरीय। नायक-पु स्वर्ग्य महोदा कार। बीयका रह रिया। नयम-पु दिवान कारिय मुग्नी मिन्नी पुतानीक राष्ट्र पूर्वा निवस्त नारों दे पर्वृत्व दे विर्वाधि विराजकेशाओं बायक पुंत्री किर नारों दे पर्वृत्व दे विर्वाधि विराजकेशाओं बायक पुंत्री महत्त्व नार्यों हा नार्याच-पुं अस्तिहा वह रिया। नार्याच-पु मार्गि। नार्याच-पु सोहा। नार्याच-पु विराद, मार्गिया स्वतास्तावस रह

मेत्र-रोग ! विशिक्त-स्रो दे "विश्वन" । —बासा-पु• दे पृष्टाः शाससी-सौ॰ सि॰ो एक प्राचीन नगर ! साबास-म॰ (फा॰ 'छाइबाह्य का क्य रूप) लुख रही। बादगाः सामु-सामु । स्त्री॰ शानुवाय (देना) । शाबाशी-स्त्री सरावना सामवाश । द्यादन-वि [से] द्यान्य-संबंधीः शब्दमनः सम्बन्ध सी बामित ('लाई का बनटा)। छन्दाहेररसे मुक्त (न्यादशान, धेको): मौक्षिकः। प्र• वैशाहरूणः। --कोश्य-प्र वानगर्मे प्रमुक्त श्रम्पेंडे धर्मका श्राम (स्थान शासके अनुसार वसे बानवर्गे प्रयुक्त एर(श्वय्य)के कार्वके बानसे कराण थान कारते हैं। इसका करण परवान है और इसका कारण परश्चकित्राम । इस प्रकार वास्त्रगत गोग्गता आकाश्चा, भारति हारा तालपंडान झान्द्रशेष है)। -व्यंक्रमा-भी बादवर्ने प्रदुक्त स्रव्यदिशेषके भाषारपर हुई स्पेतना (eff+) I द्यास्त्रिक−वि∙,दु•[सं]दे 'श्रास्त्र'।

प्राप्ती~सो॰ [मं•] सरस्वतो आरतो। वि ,की दे 'शस्त्र'। – स्वंजना – तो है । शस्त्र-श्वना' ! साम~पु• भरवदे एक्स्में कवस्थित एक देख जिसकी राज्यानी दक्षिमक है सौरिकाः कदबान । विक्सिको धम, घाति-भवेगी। ली॰ [का] स्त्रांरक्टा समय संप्याः (ना) अंतकाक (शासे अवानी द्यामे विदर्गः)। (से) भवध-की कखनकड़ी ग्राम (वर्षकी शामकी पश्क-पश्क प्रक्रिय है)। शुरू −का पुरक्षमा नग्नीस्त माक्रमें पश्चिमी स्थितिजयर क्षानीना क्षिटकुमा। शयक भूवमा । नदी <u>स</u>बद्द करना-सारी राव वागकर विकाना, शरेरा कर देंना ! - सुबद्द करबा था बनामा-यक्-मधेक करता ।

भामत∽त्यो [व] हुर्माम्ब ऋगवस्थो। शुक्षीवत । -- ब्रदा-वि सुसीवतका मारा क्ष्मा । -- (ते)-- आसाळ -इ॰ क्मेंप्रक, क्रिकी सजा। सूक -आजा-हरे दिन भाना, दुर्रवद्धी प्रेरणा क्षीला कमवस्ती जाला। --का मारा-विसन्धे धानत भागी हो, नमागा, बुर्वधायस्त । ृकी मार—हर्माम्ब, कमक्ता । (किसीपर)—समार होषा-दे॰ 'द्यामत माना ।

भामती-विश्वामतका मारा अमागा।

श्रामन-पु [मं] धमनः श्रांतिः मारणः वक्षः दरवाः भेदः यम । भामनी-स्री [सं] बह्मिल रिछा (बस जिसके देवसा

था रशमी है)।

शासिय-५ [र्म•] वृत्तिके निर्मिण पशुक्को बूचमें बॉबनाः वरमें पर्विक, दिसा; विल-पत्तका मांसा वकानेकी अधि। वह मान प्रकारिका स्थाना वद्या यक्षपात्रा यातक मार-भीर । 🖟 वन्ति यहानेवानेनं संबद्धः ।

शामियाना-पुद्धि] वदा और सापार्थनः यारी और शुक्त प्रमा संयू ।

शासिक−दि [⊌] निकातुआ। त्रदृष्टा −सिनिक− वि सुरुपोर्द कानवानके साथ नत्वी किया दुआ। न्दाल-दि दुश्य गुराका साथी वारीके बाल । शामिकाम-को मासको वादशार अनेह हिस्मेशारीकी संदुष्य संपत्तिः दिरमेदार्छ (यह महास धारिकात है) ।

सामिखाती-वि॰ संयक्त । शासी-वि॰ शाम बेशके वारेमें, धाम देश-संबंधी या

द्याम वैद्यका। प्रश्याम कर देनेशाच्या। स्रो॰ छत्री वा की बार कारिकी रखाई किए समयर पहलाचा भाने शहा कोडे. पोतक बारिका धक्ता । —कवाय~प एक तरहका क्ष्माम ।

कामीम-प [सं॰] मरमा बद्धमें प्रमुक्त क्षोनेबानी करही, हाबा । धासीक-प सि वरगः

शामीकी-स्रो॰ [सं] माका।

शास्प~त [सं] समता, समला श्रांतिः प्रादलः

मार्रपन । वि द्यांतिन्तंनंशी । शाय-प सि•ो स्टनाः सीना ।

सायक-प्र (सं•) गणः तकवार ।

शायक्र-वि अ] श्रीद करनेवालाः रण्युदः, भारनेवाला । शायव - अ (फा०) करावित्। संमवत ।

शायर-प्र [म] शेर कहनेवाका कनि ।

दाायरा−की [ल] स्तीकृति कृतियो। शायरामा - वि कविसक्तमः कविकान्ताः कविस्वनवः अवि-

रंकित । शायरी−की धेर कहनाः दिकमेः कविशा अदि-

रंगमा । शार्यों−दि [फा]योग्य अनुरूपः।

शाया-वि (अ) प्रकटा विद्यापितः प्रकाशितः (पुस्तक

थादि) । मृ॰ -करना-प्रकाशित करना । द्यायिक−प सि॰ो धम्प∺रवतस्य जानकारः गुरुवा

रचना द्वारा अपनी चौतिका चढानेवाका ।

शायिका−सी [धं] श्वनः निद्रा। प्राथित-वि [चं] चीवा, बटा हुआ। सुकावा केटावा

हुनाः गिरा पश हुना, पतितः। सायी(यिम्)-वि [सं] सोने केटनेवारा !

धार्शन-प [et] 🐧 सारंग (समस्त धर्डोडे

(क्षप भी)। द्मारंगी**−को** सि**ोरे '**सारंगी ।

शार्वपर−प्र [व] जनपर-विदेश ।

शार-वि [र्व] क्यूरवर्ण, जिनकररा, विभिन्न वर्णपुरुह पीका । प्र चित्रवादरा रंगा घरा रंगा बाधा पालाः

धन(बदा मोहरा। हिसनजिया भोट पर्देशाना ।

शार**निक−नि॰**सि] शस्त्र चारनेमाना । प्र_शस्त्रागतकः

रश्रद्ध म्यन्ति (१) । द्यारव-वि [सं] शरव्याक्षे बत्तकः शर्ववाकन संत्राः

वार्षिक, वर्ष-संबंधीः मनीमः अभिमयः साक्षाः दिमश्र कब्बाधील । यु धारत्यासा वर्षः वनेत कमनः बाल पृताः बाम हरी, पीली मूँपा धरनुदानमें संस्था होनेशना सन्ता द्वरत्यासम् अधिवतद बानेनाना एक होता शहतकाम्य भूष !— चौद्रा~ प्रारश् चतुका संद्रमा की वर्षाके बाद इन क्यूमें आबादाके मान्य १४नेक कारण विश्व कारवन

जीर जाहरश्रासक होता है। -प्रमान्तर-को+ धरम अनुकी योंदर्भी जो काम्यमना और क्षीत्रमनाम लिक प्रक्रिक है। −विज्ञा∼की धरत्क⊴धेरात भी औं क

द्दवसामा । शिराक्सी−दि साप्रेका संयक्त ! −कारवार~प साप्ते का कारबार ।

मिरास-वि मि विदार संदेशीः शिरायकः विशायकः। तुः समरखः कर्मरंग ।

भिरा**सक-**न् [सं] अस्त्रियंग वृद्ध । शिरि-१ सिं•ो तकवारः नाम विशव, सामसे मार

बाबनेबाका स्वक्तिः शसम फर्तिगा दिशी।

विरोप, विरोपक-प• [सं] शति क्षेत्रक कुठाँगका एक

बद्ध सिरिश । शिरागद∽प [सं•] शिरका रोग ।

शिरोगृह, शिरोगेह-पु [मं] सबसे कपरका बढ़ चंद्र धाला ! -शीरच-प सिरका भारीपन ।

शिशेम**इ−**प्र• [सं०] (अरहर्द । शिरोब-पु[सं] दास ।

शिरीदाम(म्) - द्र [सं] पगड़ी सुरेठा, साफा !

सिरोदःख−प #िश्री सिरद**र** ।

शिरोचरा~खो [चं] ब्रोबा।

सिरोधाम(मृ)-प [मं•] विरदाना ! सिरोधार्य-दि [मंग] गिरवर धरण करने बोग्ब सहर

स्वीकार करने योग्य सतिप्रय सध्य ।

चिरोचि−सो [स•] गरदन विसक्ते अपनारमर सिर

रिका हा।

शिरोपाब∽प दे शिरीपाव । सिरीसूपण-प [सं] शिरवर वहननेका आध्वण (जैसे-

स्मेंगी टीका सीसकूत मादि)। मेह व्यक्ति। मिरोम्पंग-पु[मं] मिरमें तह माहिश दरना ।

मिरोमणि-अ [मं] मश्तकपर भारण करनका रस्तक शिरोरल, चुनामणि। मेप्र पुरुष ।

सिरोममां(मैन)-५ [तं] शुक्र, स्वर।

सिरोमासी(किन्)-इ [मं] मुहशाक्षा() हिला धिरोरतन-पु [मं•] दे 'श्विरोमणि ।

शिशोदाया-स्रो [मं] सप्तपर्व इका सिरवर्ष मरतक केंगा।

शिरोन्इ-पु[सं∗] सिरके दान ।

तिरारीम-पु (म) छिएदर्व मरनक्षीका ।

सिरीवर्ती(र्तिन्)-दि [ग] प्रचान, मुखिया नायकके रुपमे रहनेवासा । प्र प्रधान मुखिया नायकः किमी मेखा विभाग सेमा मादिका प्रधान ।

निरोबक्सी-मी [मं] मन्रधिमा मन्रखे हिरको ध्येत ।

शिरापरित-भी [मं] निरवर्दका यक प्रकारका तैली

शिराकृत-दु[ं∗] मरिच। -० कछ-दुरक अश मार्ग नात विवदा। शिराषष्ट शिरोबष्टन-पु [नं॰] ग्रिरीशम बण्डी

HIE !

मिशहर्य-५ [सं] एक मैत्र रीम । िरोहारी(रिम्)-इ [म] मुख्यालवारी दिव ।

सिक-पु [स] सुदादे साथ दिली औरकी जरीक 47-E

वाननाः र्वथरमे हैतमादना रक्षमा । शिसंय-पुर्शिकेश ज्ञाहा। दिस्क – सी॰ क्रिका दे सिकायु [सं] चेछ सिका

सिल्डारी धेत कर नानेके पश्चात उसमेंसे दीप नव मा अक्रवाकी वीगनंदी क्रियाः भीवनीपामविद्येष । - रति-वंछ वृत्तिसे संतर । -पृत्ति-वि पंतसे निर्वाद

श्रतमेवाचा । शिसक शिलक-स्त्री नकर, रोकर ।

शिस्त्राभव-पुर्मि•ो पाचाचभेत्रत् । विकासमी-लो॰ [सं] काकांत्रनी मामस देव: कालो

सिरुति – दुर्सि] अस्मेत्र कृद्धः शिका∽माँ [सं•] प्रथरा प्रश्नरको परिया पद्मा मीटा

बहाना पद्मीका मीचेका पारा द्वारके नीपेका काठा दंभेका सिरा किरीमागा मन दिका, मैनसिक कपुरा धिकाबीतः येकः वंश कृतिः श्रितः। —कुर्णी-स्रो० सक्त्यंका पेड़ । —कुहु—कुहुक−पु पत्थर काटने वीक्नेक्षे छैनी । - कुसुम-पु॰ एक ग्रथह्रका श्रीसेत्र । -छार-पु चना। -धन-वि पत्वर वैसा कठिन। -चक-पु परवरवर बनाइक्षा यह । ~चय-प्र• पर्वत । -ब-पु शिनाबीता कोहाः पेटीम । -सन-प्र शिकाशीना वेस् । - जिल्-प्र स्वेदे तापसे तथा विकामीने निक्का काला रख जो वैवक्ट भनुसार प्रहि-कारक माना गया है (इसका सेवन प्राय' बाहके दिनोंमें क्रिया बाता है)। −बीत−3 [हि] दे 'शिकाबित्'। -तड-१ परधरका कररी भाग शिका पानार-पृष्ठ। -बड-पु शैकेव र्गधद्रक्य ! -बास-पु० पुराकोस्त यह दान विसमें बाह्मणकी शासमामधी बरिया दी बाती इ । -चातु-स्रो॰ सहिवा। ग्रेने रंसदा शह । -निर्यास-प दे 'शिकाशित् । -पष्ट-पष्टक-प बीर बीम पीममेडे दिए शिका रोह, सिका बैडमेडे तिर शिकानीर पत्थरको चौथी। पत्थरका द्वस्ता बहात । -पुछ -पुछक-पु किमी बस्तुको पीमने

वाला थाना लंबा और गोका क्यर कीना। -पुरम् --प्रसन-पु दे 'शिकानुसूत्र । - वस-पु पदी। -प्रतिकृति-को प्रत्तरमूर्वि । -प्रमोध-इ सुक्षे पाका चेंद्रने वा मुख्याने श्रीक्षिया : - फालक-मु शिक्षा बहरू, राज्यकी परिता ! -वंब-प्र पत्यका बाहा यरकीय किनकी पदारदीनारी । -भय-म निना बीना हिन्द । -अद्-दु पथरश सारन साहनेसा भीवार दिनी बॉस्टेस पात्रामधे^{री} पात्रा । -ससल्य

िलातीत । ~रस-प्र धनेय नामक संपद्रका। −लिपि−मी इला-पुसमार्थमार्थमार् विशिष्ट व्यक्तियों हारा विश्वी प्रश्नुके प्रवार प्रमाण

रवाधिक मार्टिके निम् बाबरपर सीप्रवादा अनुगामुझ मारेश दान मारि। -य इल-पु -वरहरू।-बस्हा-सी अपनिवेश -वृष्टि-सी प्रवर्गादन

पृष्टी वर पृष्टि। -बहस(न्)-पु गुरु। रागार परता बना निवास। च्यापि≕मी जिल्लामु जिल्लामेन।

-मार-पु॰ श्रीदा ६ -स्पेर-पु॰ (न्यामान I-हरि-

भीर भाषावरायद हाती है। -वृर्णिमा-स्त्री क्षेत्रायर श्रानिनपृतिमा सरदप्ता। -श्रध-पु॰ शास् अनुदा बारम भी जरहीय भीर नेव डीना है। -यासिनी -राग्नि:-प्रावंश-स्री॰ दे॰ 'शारवनिया' :-वार्गा(गिन्) -पु॰ दे 'नास्त्रपंत । शारद्रक-पु [मं] स्कृतरहका दर्म । शास्त्रीया−स्री+ मि ो सरव्यती। शास्त्रा-सी॰ (र्न॰) मरस्वती। दुर्गा। यह महारही बीया-माधी सा(शः, रवामा स्ता। सारिव्य-प्र [4] अन्य कनुकी पूप-श्व कनुके होने बाना रोगः हम मनुषै दिवा जागेवामा साहः वादित शारशी-सी [मं] क्रीमावर पूर्विमा। शारपर्नं; तीय-विष्युमी, बनवीयम १ दि० स्वी० श्राप्त् ऋतुन्धेनेही । शारवी(दिम)-वि [मं] शरहान्यविधी ह शास्त्रीय-दि [तं] शस्त् ऋतु-संदेशी । बारच-दि॰ [मं] शारदीय, शाहक्यु-मंदेवी । प्र शरतमें हीते शका भन्न । मारहत−दु[मं∘] हपायावै (म॰ भा); बीतम । मारि∽द्र[मं] त्रश्रा शेक्रनेका लामान पाक्षेक्रो ।धा शन(नदी गरी: होटा ग्रेंट। औ घारिस, मैराः दार्थानी सुन्। क्षत्रा निहा। एक गान । ~यह ~कृत -宝宝省一名 रिमान विसपर भागरेश श्रीनर शारिके મુક્દે વિદાહર હેત્રસ દેં ક∼લુજ્ઞ∽લુ ગૌવમદે દેકવવાત્ર शिक्षीमेमे वदा -श्रीम-पु वक तरहका वरशा राहिका-मा नि विकासकोः बीमा भारिक बाह्य काशिक (मारंगी भारि) मायोंकी बमासेकी बनुष्की सरह की इमानी। श्रारंत्रकी गाँदी। एत्रांत्र अपी शिल्ला दुर्यो । - इद्यक्ष-पुरु सामन्त्र गंभाख दुर्गोसा यह स्थल । शारित-वि [मं] रंगीना रंप-विराह झारिका-भी [मं] है ^{कारी}रा । सारी-मी॰ (मं॰) बैना कुता सन्(ऋरी में १३ में १ शासीर-दि [मं] छरीर-नरेका हरीरने गंग्डा करीर रे बार्क देवजा है जरीहरियन जीवाचा आधार प्रसाक्ष रेन मंद्रा हरिस्टन्स्टामा हरीरहा दोना । -सारा-त शारीरिक गानी, सन्वती दवता, भेनत्वी दिया अन्ति दिवयम व शेर्यान्य विदाय १-विद्या-की -विचान-१० प्रारोधि जीवियोच क्य सर्वाती शासा श्रीतरामा किया करितानी निक्रण करीर शास्त्र -शास्त्र द्वन्द्र शाहीशास्त्र मारीहर्द्वश १ शामीत्यानी (१०) देवणवरी देवता के बाह्या -सार्य-५ ६६४(वर्ष) इ.स.प्रदेश वाध्य ।-स्या-

A geneinka get Tan शाहीरबीय-रि [ले-] रे शाहरक ।

क्षांत्र करि ।

millim-fe ! 38 miten .

ला बनारे हरने हरू हैंगा है।

titen-fe [i] fere, ilt pfurbereit fe.

शाक-वृद्धि] इन्हरमृश्चि] वह वही वर्तानी जिल्हा

सकाई । शार्फर-दि॰ (५०) धर्रशनिदित चौनीस सा चार्नरे बना हुबाः धर्रेराषुरुः रशेना एउरारः चंत्रीय । ४ न्छो। पुरवरेमा बंदरीमा श्वामा भौतवा देत। शार्करक शार्करिक, शाकरीप~रि [में] देश्तेना बाई-नि [र्ग] शंकनंत्री; मीटवा स्था (श थमुर्पर १ पुरु बनुष्। विगुद्धा धनुष । सार्थ । - बाह्यः (न्यन्)-पारी(रिन्),-पानि -मृग्-प् रिन्। धनर्थर एक्टिस । साह क, साहिक-पुर [तं] एक शाका एने ! शार्द्धश∽स्थै [शं+] मशक्र(त्र । शाहोन्य-५० (ते) देश 'ध्यापना' । बार्टी(दिन)-९० (तं०) 'मार्रवाना । शाहरू १ १ मार्थ शाहील-पुरु [40] भारत रामा थोता दश्य महाना राष्ट्रमा विधि विभेषा निवर्द बद्धा होता क्षेत्रक यह भए। वि श्रेष्ठ (बीनिक छान्दरे यक्तरहारी, रेने-मर हार्ना) ! ~मसित =समित =विक्रीदित=तः वादशीरेशः भाव-विश् (गेर) निक्स भी। वार्षर-दि [मं] न्तरी रहिन्तरी नि नमधा वातम वक्तावर्ष । श्रानमान मान्यिम मेन्द्रार । शाबीक-रि (सं रिग्रीश्नीरेपी १ शार्वरी-भी (ते] शार शावशे(रिष्)-५० निन् वीतीएसे लंशनर । बार्व्यद्यवन-पुरु [र्सर्ग] रियानियदे एवं पुषा नदी। -ऋा∽की शाध्यायबद्धे दुवी सम्पर्ताः स्थान शाता ह वार्त्रकिन्द्र (५) वर्षित । शास−५ (वं∗) मानः सत्त्रमधा देश द्वा यानः विधेका बेरा, भशाररीकारीः राजा राजिकका । -शामा त गंदरी महीद हिनारे बचा दंद शाव वैकारेट हीर्वेद क्षण-प्रशासने दिन्ही क्षेत्री विद्वार्ग स्वापनी क्यारको वरीवा विसंपंद श्रष्टका विश्व दश्या है (मिने जररित करते हैं। और नी दिलावे क्यूमें मूनी माने है। - सिरि-पु वद भर्र व अप्य (पुर्र) । स्थिता कानगरके शीबां । - प्र-रि कान सुनी कारक हे पू अन्य १६६१ रूप मीट का राजा अन्य शाबदा -वियोग,-स्म-९ गर्दरम ग्रामदानेया रा- ब्रह्म । −व्यक्ता–क्षे क्रिय देखें वर्त सम्बद्धें कुनेदे सहाय हो रूपिश्य पुष्ट । अपूर्णिशालकी र रूप तंत्राच्याः प्रकारी कोपन्ति । अपनी-श्री है वका । न्धीप्रकानकी अपूर्ण क हेर्या । - अंत्री-को कर्मन्यो । - बेह पुर शहर रम रूच केर ३ ज्यार पुरुषता देश बीमा याजक 2 2 1 शास्त्र-ओ॰ (बा॰) इजी का रेइनी वाद्या क्षापी है बन्द्रांनी रेड्ड बल्हे संतर १ -ब्रीकेन्टेर क्रतम रेक्ष्ये वस्त्रेराध्या नसम्बन्धः प्रान्तरः राज्यः के बर लहार देवें हरत बाता र-बार्श के श्रांक क्षेत्र करा हिन्दा सम्पत्ना । 11.8 E-2 feet figligtt lage fer bat unne-le fit ture interietnis

प्र शास्त्रामकी बहिया, मृति । पिछाटक-प मि निर्मा कारी। छिद्र- विका कारतीकारी-शिकारमञ्ज-प्र सि किशा शिक्षात्मका - नो • [सं] किशो बरहा, विद्यवतः चाहकी प्रमानका पात्र, गकामेकी वरिका । शिमात्म~प [र्स•] शिकाका मान वा वर्ग गत्वापन। विकादिस्य-पु (से) समाद दर्ववर्षम् । विकास-पु [र्श•] ग्रहेको एक व्यापि (१) । शिसार्गा-को [गुं•] कालकाकी। मिसाकी(छिन्)-पु॰ [सं] व्ह माचीन नावकासी। मिलासन-प्र [सं] पाश्रका आसन समस्की बनी चौद्धे माहिः सैहेय नंबहस्य । दि।साहारी(रिम्)-दि ।प्र (चं॰) च्छ बृत्तिवाटाः शिका-के सहारे धीवनवापन करमेवाका। য়িকা⊑ রিভাছৰ−ব (রং•ী হিভাবর। शिकिय-पर भिर्म दंगक्रिय प्रपस्तित चाँदीका यह सिका जिसका मध्य कगभग बारड आसे डोका है। शिखिर-पु॰ [सं] यह प्रकारको भएछो । शिक्षि-प्र• [मं•] मूर्वपत वृक्ष । छी दरवानेने नी वेदा काठ, हेडली । सिलींग्र-पर्श में विश्वली-प्रसम, देवेका करू दरका, माना, पत्तरा यद प्रदारकी मशको जिलित नक्ष्मी। क्रकरमचा । सिस्किक-पु (मं) गीमवच्छत्रिक गीवरछत्ताः कदर शिर्मीधी-सा (ग्रं॰) युष्टिका मिद्री। ईसुभा एक सरबंधे जिन्हिया । तिली-सो॰ [सं] दरवानके चौसराधे गोचेको *क*वती देवरी। स्तंमश्रीर्णः मासाः वागः मैदक्का विज्ञाः । नसुधान ५० भगरः वदः नामः सूर्यः । सिक्षीपथ-पुरु [सं] इलोवर, वादस्कीति, क्रीलक्षंद रोग । शिख्य-५० [मं] एक जानीन नाज्यशास्त्रीः नेनका पेत्र । रिसेप-वि [मं] दिका संबंधा श्वरीका। प्र शैवेय गवद्रभ्यः शिकात्रीत । शिलीछ-इ [सं] हिन दमा प्रवृद्धि । शिक्षीपी(फ्रिन्)-दि (र्थ॰) वंध वृधिये निर्वाह करने-*181 I रिलीश्चय-प [सं] पहार वर्गता वही बहान । शिकारम-इ [मं] शैरेन गण्डम्का शिकानीत । शिकोज्ञध-प्र सिंगो हो नेय अंबडम्बा यह प्रशासन **थंदन** पीका पत्रना सीना ! िल्लाहरद−व [६०] वचार भरम ३ शिक्षीका (कम्)-५ [सं] धनत्। द्विप्य-त [मृ] कमा शादि कर्म (बारकावनने श्रीमुक कमार्पे निवादी है), हचर, कारीवरी। शुवा। वस्ता दस्त कर्मा रूप कालतिः निर्मातः नहिः वाधिक कृत्य वन प्रात । − फर−९ दे• 'शिवशार । ∽क्का~ली हरनदारीमा काशकः हनरही दछता ! --कार --

कारक,-कारी(रिन्)-प्र• रिस्पी कारीयः । -कौसस-पु डिस्प्डला, हिस्प्बलाई । -सूड--रोड-प कारीमरोद काम करनेका स्थान कारास्था। -बाबि (विम्)-प् असीमरीका काम करके पीरम-वापन करमेंबाओं व्यक्तिः शिक्ती हं "प्रजापति-पु विश्वकर्मा की समी शिरपीके अधिकाता देवना माने राते है। - यंध-त शिक्तके काममें आतेकने भीता, हत. मधीन । – सिपि-मी प्रश्वर मारिक्र म्यार सीरता । −विद्या−सी वस्त निर्माण क्वारिका बान, श्रीवीकी वनामेकै बंगकी बानकारी !-विद्यासय-प्र क्रिश्र-दिश्रावे किय स्थान शिक्ष-शिक्षाका स्कूळ । नशास्त्र-श्री दिल्ल नियासना शिल्प संबंधी काम सरवेदा स्वान वा वर, शिक्षण्य कार**वा**ना । -धारा-वर वर शाव विचा प्रांच विसमें जिल्हा संबंधी विद्यालका बात विदेश हो। शिहर-दिया विकर-दियान । विस्पन्न-१ (सं•ी एक प्रकारका मारक विसमें ईप्रवर्त तवा अध्यारम-संबंधी बार्गेका वर्षन रहता है। शिस्याजीवी (बिस)-१ सिंशे देश 'सिमाग्रीदी'। शिल्पाक्य-इ [सं•] किरनगृह । शिक्षिक-प्र [सं•] शिली। बलकारी। बंक्को बना शिक्यक मामक मध्यक । वि वाच एवंचीः नंत्र मंत्री । शिक्षी(क्षिक्)-५ (सं•) शिरुकार कारीगर। रि॰ विस्त्र संबंधीः कमाकश्चमः (शरक्यो । -(दिय)शासा-सी क्षिश्रहामा। शिक्षंकर-वि मि विशेष किवकत । प्र पक्ष वालगर। विश्वतिका-स्ते (सं <u>। श</u>नदावदी । शिष-५ [सं] महारेष महेछ हिंदुओंके तीम मधान देवनाओं(धिमनि)मेंस यह जिनका कार्य राहिनेहार है (इसी कार्यके कारण इन्हें यह भी बजा माता दी जिल्ली मतिका 'नह'ने रूपमें नेरोमें भी मिल्ली हैं। मंतर कश्याना हारत बेदा तिमा स्थेत जाना मोना जना सेवा पमका विदेशीत नवामात समझ्यक्त वना ममदा वाल्या पारव पार्ता ग्रह्मुम, ग्रह्मा दाला वत्राः वंदरीक क्याः क्षेत्र प्रदः संगरकारी ग्रहाः विश्व बादि क्रवार्यन बोगोमेंसे बोमबॉर यस बॉबनेक सेंसा रवारः मीतन्देव च्योः वस ग्रेम । वि शुभावकः समो। -कर्-रि अंतमकारोः समकरः त पद जिला -कर्जी-भी रदीकी एद मानुधा। -कांबी-लो॰ दक्षिण भारतरिशम शर्गीका एक मनिष सीर्वरवाम (कांबी कुम्बुरिवॉर्मरी एक बुरा है मिर तमा विष्मुद्धांची विसुद्धे हो रांव है)। -कांना-या यार्वेगी दुर्या । -कारिकी--थी दुर्या ।-बारी(रिंद्र)-वि १० विश्वर । —कार्तन-त विश्वी ध्रांता शिवका स्तुनिकता थैसा विष्णुः शिवका स्तुतिकता भूती। - असर-पुर रह शुन्ता - गति-पु बद अरेत् । वि सुधी। मनुष । -गिरि-प र्वतः। -प्रमेश-च अग्न गरः। -चतुर्वशी भी सिक्तविका प्रथ औ क्रमणुक क्रूप्या पतुर्देशीकी पाता टे। ≃आ∽सी धिर्शायो स्था। −अ−ि ध्रया बान रखनेवाणा विकाम कुमा बरनेवामा । - छा-

1540 शास्त्रम-दि [सं] यसम-संबंधी। शासम-प॰ [मं] स्रोत प्रश्न । भाकांकी~सी [मं•] प्रवर्धा । शास्त्रीचे-प॰ सि॰ो पद शाह । प्राप्ता-थी॰ [सं॰] गृहः स्थामः मकामका पक हिस्साः ग्रहोता पेहची वही प्रयान शाल । -कार्रे(स)-प॰ ग्रह-निर्माण। -स्राप्त-च नरका शरा एक तरहका भाषक । —शूरा−पु•ारगल, सियारः कुत्ता !≔सूक--प्र क्रचाः विक्कीः नेदरः हिरमः गीवह । सालाक-प [सं•] पाणिति । सामानी(किन्)-पु॰ [मं] सस्य विकित्सक, शक्ष तेवा नार्द। नरहा चारण करनेवाला । शासाक्य-५ (सं) आधुर्वेदोक्त श्रव्य-चिकिन्छा-संबंधी एक साम्या जिल्लामें नर्रमके कपरकी विदिशीको विदिश्या का विवेचन है। बक्त इंडिबॉका शक्कविक्तिसक । -- संग्र च्याका-प्रारंतके कवरकी विकासा-संबंध विचा। शास्त्रविर-५ [सं•] मिहोका प्यासा क्यारा । शाकात्त्र(ोप-पु॰ [सं] पाणिनि (दे शाकात् सामक माममें बत्पन्न इय वे इसी कारण इसका वह माम पहा)। शाकामी~की • [मं] विदारी शाकका। । सामार-त• (रं•) इस्तिनयः दोबारमें गरी सूँदीः सोदीः, धारानः पति-पंतरः विविधाका वित्रशाः। शास्त्रि−पु[सं]चावकः वददन चावकः क्रिसका गीमा धेपा बाला है वह देनंत ऋतुमें द्वीता है। नंबमामीर, मुस्कविकान जिएको नामिले एक प्रकारको करन्ती निक भरो है। --कम-तु शावस्था दामा। -गोपी--को॰ ऐत विशेषतः पानक ऐतको रखवानी करनेवानी मी। – रार्य-पुपमक्का आया। – याप-पु [हि] बासमेरी यावक अगहनी चावन । --पर्शिका-स्रो क्यांगी मामक व्यवभाषि । -पर्यो-श्री श्राप पर्यो । ⊶विष्ट-तु+ पारकका भारा; स्पर्टिक निस्सीर । -पाइम-द्र शक्षशंतत्का अवर्गक शक कातीय वक मसिद् राजा। -होस-प योगाः अवशास-प्रवर्षेद पद राजा अवशासके रेसक्का नाय ! न्हाची(विज्)-प्र बोहोदा निकित्सका पोहा। भारिक-५ [4•] मुकाहाः कारीवरीका गाँवा एक श्रदका बर देशन ! वि धारम-संबंधी। शास संबंधी । शाक्रिका-भी मि । शारिका विशरिका वंदा शाक वर्गाः भाषासः स्थामः ग्रहः । भाकिमी-सं [म] एक वर्णवृक्तः गृहिमी गृह श्रामिनी। दिन्दी दे हाकी (निन्)। शासी–सी॰ [सं] ग्रामा ओहा; मेंची । पासी(बिन्)-६ [मं] युक्त सदिन (नमास्रो); शानासंगी। शास्त्रीम−दि [मं] शासा मंदशी। अपृष्ट विशेषा साहा भीनः सुधीतः समान तुरुवः भगी । श. शहरवागी । भागीनता-मो• [६] दिनव्याः स्टार । शासीना-भी [मं] दिमेया। शासीय-वि [मं] शामा विशेष शालु-९ [में] इग्रुर भार्ति वह अमीहा वार्तीहरू

क्यान बच्या चारक ओवधिः मेंद्रक । शासुक-पु (सं•] क्रमक मारिको धर । हास्टक-प्र [सं•] मसीहा वातीफरू मेंटफ ! शासर-प॰ सि॰] मेंदर । बाक्रिय-प्र [सं•] वह सेत बिसमें झाछि बान पैरा हो। सीफ्रामि चाला समा चाल हम संगेपी । सास्रोत्तरीय-प्र• [सं•] दे• 'श्राकातुरीय'। द्यादमस्त-प मि । शावमत्त्री, सेमतका पेषः शारमकी वसका गोंत: प्रकोद सात राहों मेंसे एक संद्र । शास्मक्रि-पु॰, सी [शं॰] नरकविश्वव (पु)। दे 'शास्त्रकः । – पञ्चकः – प्राच्याः कृतः। – स्थ-प्र• गुरुष । शासमाखिक-प् [सं] रोदितक मुझः बहिबा किरमका शास्त्रकारि श्रद्ध । शासमस्त्रिणी - स्त्री [सं] सेमळका पेड़ा शास्त्रम**की**−जी सि । शास्त्रमित समकका पेका पाताल को एक मही। एक शरक। - फरस्क-प समहीख कारको पररी किसपर रगणकर धीर फाएके भीकारीकी बार तेज 🕊 जानी थी। −बेस −पेसक − प्रसन्ध शिर्यास । शास्त्रकी(लिन्)-पु[गं] नददः। शास्त-त [सं] यह प्रदेशक राजा; बचर मारतका ण्ड प्राचीम प्रश्च । वास-पुर्व िशृह्य विशेषत बशुपदीका शिद्य द्यानक, नद्याः भूरा रंग ! वि श्रव-संत्रभी मृत्युके द्यारण बरफा(शञीचर); भूरे रंगका। शावफ-प्र [सं] पशुक्की का बचा। दावर−4 द्र [गं] दे धानर । −भेदाक्र−प्र दे 'शावरमराधः। शायरी-म्ये [म्] दर्शन, शुरुशियो । दाश्यात-वि [मं] निध्य निरहरः सहप्रश्यानीः स्व । प्र बदण्यासः शिकः सर्वः स्वर्गः निरयतः मे(तर्वः। शास्त्रतिक−वि• वि वि दे 'दायद'। शाश्रती~मी मि•ोप्रची। शाष्ट्रक-वि [मं] मांगमध्य मस्यभश्चा । शाप्युक्तिक-तुर्मि । धो दूर्र शान्त्रीका देर् । शासक-१ [मं] राभ शामन दरनशामा प्यक्ति शामनदनी शास्त्राह शास्त्र शासनदा ग्रंजानदा, व्यवस्था वक बारिमा देव के 'वाका व्यक्ति वह कारिम क्रिन वंश हैनेका अधिकार था । - मंश्रमी-मी : - यर्ग-प राज्यके विशिष्ठ विद्यागढ संचालको हाविसीका भय समह । शासन~पु [मं] दिनी मरदार द्वारा दिनी स्पन्ति कार्ति समह प्रांत देशके निवंत्रय संधालन प्रकृतिनहा कार्य आहा हुनम राज्यारेश शरहारी हुनमा किमे दे व कोरिकी हैगरेस निर्देशन निर्देशन क्युशसना विभागिक नियंत्रया दिलीकी बराये रहाता। काराज साम बहु महिबर निवित राम भारित निनित राने अतिगा मसंभीता का । दर्शना द्वारा दी गरा मृत्यि रगृति प्राप्तः 2-24- 13-13 E-(4) 124- 12, 13112

शिवोपाष्टिका। द्वाम चक्कन जाननेवाली भारी ! -ज्ञाम-प• धुभाग्लमका बोबक शास्त्र । -साति -स्रौ बस्वाण श्राम । वि जिसका भीत बहशायमय हो। -तीर्य-प शिवका प्रमुख तीर्थ काशीपरी ! -क्षेत्र(स)∽प पारद, पारा । ~दश्त~प क्षारा विष्णुक्षे दिया गया सुदर्शनम्बद्धः। -हारू-पु देश्राव कृष्ण । - विक् (स्) - विद्या - की विद्यान मामक कीम (सप्दिद्या) किसक दैवता शिव है। चतिका-सी॰ मात्का-विशेष । चत्रती-सी दुर्गाः योक्सि-विशेष। -देश-पु० कार्या नक्षत्र किएके अभिग्रान्देव शिव इ । -हम-पु वेसका पेइ । -ब्रिप्टा-मी बेरुद्रो (बेरुद्रोद्यो शिवडिशा हमक्रिए दवा गया कि हमे शिक्यर प्रदाना निविश्व है)। **–धान**−स्तौ पारा। गोरंत मणि । -मास्मि-व शिवकिंगविशेष को समी शिवकिरों में विशिष्ट माना चाता है। -नारायणी-(शिक्)-प्र• हिंदू धर्मग्द एक संप्रशय । -निर्मास्य-५ शिवापित वस्त शिवप्रवानको सामग्री शिवमीग नारिः भवाद्यं बस्दुः। -पुर-पु यैनोके महानुसार पनका स्वर्थ-स्थकः काञ्चीपुरी । ~पुराज−प् छेनपुराण निसमें शिवमादारम्यका वर्णन है (अपने मत्तरे प्रवास्के किए यह शिक्रियोन कहा बाला है)। -प्रही-मी धारीपुरी नत्त्वमी ननारछ। —प्रथ्यक्र-प्र मदार। −प्रिय−वि वी शिवको शिय की। पु॰ क्याधः रहारिका चनुराः विस्वपन्नः क्यः कृष्यः। -त्रियाः-मी दुर्गा। − प्रीति − छोः विस्व वृद्धाः − बीज − पुण्यारा । -मन्द-पु द्वैदा-मन्द्र-न्यो दिवन्द्रे पूजा अर्थना। -मागबत-९० धेर । -मस्यक-५ अर्धन रूग्र । -मस्तिक्या-सी वस्त इष्ठा-स**स्त्री**-सी का **१व । −**भीकिसता−को मंगा। −१स−५ उक् षादनका चनीं। –हान्त्रि−ली• दे शिववसर्गशी । ~समी−िं हो चार्रतः। – मिंग−प विशे श्वरको शिवको क्रियमूर्ति थिनो । -सिंगी (यिन)-प्र दिवर्तिमधी पूत्रा करनेवाका। -छोक-पु॰ वह कोक वहाँ दिव निवास करते हैं, दीकास । -परस्कर-अभ वृद्धाः —बद्धामा—स्वी दावपणी सेवतीः प्रकेर गुनार: इता पार्वती । -बल्किका:-बली-सी भिनिना। -बाइन-ए मंदी नेत्र । -बीर्य-प् पारा । "द्वम-पुनशी (ता । -होत्पर-पुनह क्षु पन्ताः शिर मरतका शिवका शिरीभूषम प्रदेशा । -सायुग्य-उँ भे श्विषता : मोछा - स्व्ती-मी बुगा । शिरक-तु [मंग] क्षीमा गाम आदि पशुओं दे शरीरवी मुबनानदे निय गता भूँदाः शिवमृति । शिवना-श्री शियरव-पु [4] शिवपः शिवमायुम्बः भगरताः मोतः। शिक्षोड-पु [मं०] वद क्षु अगरत्व वृश्च । सिया-मो [मं] शिक्को स्तो सानगी दुगा। श्वारिम श्राणीः मुक्ति कश्याणी मारी, वाव्यवाहिनी सी:

इक्टिशिसिविधेषा हर्रे इरीनकी। आमण्डी अन्तरा

दरिया वर्गी। सभी बुधः वसमा लताः बूरा भीत बुधः

थना इमा पद प्रकारका थी । ∸क्रिय−प वस्ता ससी विसक्ते वक्षियानसे दुर्गा संतुष्ट तथा प्रमुख घोटी है। ~फसा-सो॰ यमी वस ! ~बसि-लो॰ दर्गाको दो बानेवाको विक (र्वत्रशासानुसार दुर्गाको हो। बानेवाको मसिर्दिकी विके । -इस-पु॰ शुगास ध्यति, गौदवकी भावास (वसकी बीली शारा यात्रा भाविका प्रकार विचारा जाता है) । −विद्या-सी शीरहकी दोकीसे शकनका विचार करमेडी विचा । --स्सति - मी वर्गतीका पेट । विकास-प स्ति कटल्या दिवाजी-त एक मधिक महाराष्ट्र विभेता (ये महाराष्ट्र राज्यके संस्थापक तथा मुगकसामान्यके परम शत थे। अपने प्रताप और अब-कीशरूके बहुपर दे सामास्य सैनिक्ने राजा ही गर्वे । भी और ब्राह्म्य-सेवाटा से अपना परम व्येष मानते थे। राज्यस्थापमाके बाद रम्बीन छत्रपतिकी सपापि भ्रवम की । इसके विवाद्य साम बादनी मॉसका था और ग्रहका माम समर्थ गुरु शास दास । इनका जन्म सन् १६१७ में हुआ और स्थ्य सन १६८ हो। शिवारसरू – प्र. [ग्रं॰] सेंबा नमद्र । शिवादेशक∽५ [सं] मन्पिदस्या। शिवामी-सी [सं] विवदी पत्नी, पार्वती दर्गाः प्रवंती का देश । ियापीष्ठ-पुर्वि | बद्धा व शिवायसन-५ (सं•) शिवास्य । दिवाराखि-पु॰ (पं॰) कुचा (दिवा-गृगान); बामदेव । शिकास्त्रय-प्र [मं] वह मंदिर विसमें शिवमति शिव निय श्वादित हो। एक ग्रुडसी नात तुनमी। रमधान । शिधासा-प्र धिवानव। सिवासु∽दु [सं] स्वार शताकः। सिवाद्वार्−९ (सं) वक्रस्यः। दिशाहरय∽तः [सं] पाराः नरकृषा आकः। शियाद्वा-सी [मं] बहब्राः। दिक्ति-प [सं॰] एक प्रसिद्ध धर्मारमा राजा वि उद्योगरके पुत्र के पुराणींमें ये जीव-दवा और दान-दीनहाऊ हिए प्रशिक्ष है। बाबस्य देह हारा क्योनस्य अधिका बसदे मांस्थ्यपुणार्व पीटा बराबर देवलाओंन वनदी वानगीयता की परीचा भी थी जिसमें वे अपने मारे शरारका मान बाजकी देनेके निए बयत बाबर यार कमरे नो। हिना पहा शिकारी भानवरः भूषं दूध । निविका-नी [मं] दोशी नामसी। मर्थी प्रश्ति **ए देश्या एक अस्त ।** क्षिविषष्ट-त [मं] शेरर, यहा रेद । निविश-प [मं] मेनाके निय विशासम्बद्ध, समानिशाः तद् समाह्यै दिया। निबीरय-९ [तं] विशिधः । शिवेतर-वि [मं] अमंत्र अहाम । निवेश-९ [र्न•] रदार I शिषष्ट-पु [शं०] यह बुश नेन्द । सिबेश-मा [मं] दुर्श । गोरीयन । - पृत-द औषवढे वासने कानेढे लिए | गिबोधविषपू-मी [मे] वह तसनिपर् ।

वि शास्त्र । -विवास-य -विश्व-शे करा

स्ववदार संदेशी ग्रास्पोक्त अपोतः अमुरासन ।-विस्तर-

-बिरञ्च-वि॰ क्षिप्श विधन सम्बद्धे करो

वि को शामाध्यदन स बरता हो। शाम ने विमे र

शास्त्रविदिन, अद्यान्योदा अर्थेप १-विदिन-प्रेर राजा

मुक्षीरित शास सम्मत् । न्ययुन्तिस्तर्भः इर रेश

परिष्टान दालनेपुरव । -दिस्सी(दिवस्)-पुर इ.स

राम द्वारा धीरिका धनानेशनाः स्थानेतः स्राप्ताः स्थान

भृति। -सगत -सम्मत-ति हे '-अस्ति।

−सिक्द−दि० द्वाहर हाहा प्रमाणिन द्वासान्यम र

राम्पणसनप्रात्मी, रीति, पश्चति । --वृषक्र-दिः रामाणका उप्तन करमेवासा । –धार-पु॰ देश पासन ६८ । -पन्न-५० राज्यारनायम, राजारायम शरकारी दुरमनामा फरमाना ताशरकान्यिर सुरी भूमि रामानि मे(भी रा वाहा । -प्रशासी-सी० हात्मसदी विभिया पदि ! -रपशम्या-स्ते शासन-संबंधी वर्ष शासन मनाभी । −हर −हारक −हारी(रिमृ)-g राजाधाराहरू ।

द्यासनीतर्गत सामनाधीन-दि॰ [मं] की शामनमें, ग्राममद्भे भौतर ही: श्रारहतः व"त्रृत ।

द्मासनातियुत्ति-भी [नं•] राजाहाँ मारिका उर्रथन । शासमी-सी [म] प्रशेषरेण बरवेवाही भी । शामनीय-दि [पं•] गागुन वा नियंत्रपदे दीरबा दंदनीय । मासित-वि [मं] विमन्ता शासन विया य**वा दी**। र्थाटन । शासिता(न)-१६ [मं] शामम करनेपानाः ईट दने दाया ।

शामी(मिम्)-५ [मं+] शामद (वर वीगद्र शब्द दे उपरदे स्वमें भावा है)। द्यानसा(रम्)-पु [स्] शाम्बद्ध (जा। निरुद्ध शुद्धः पिना। नहा बिमा बीही और जैमीका देवनुक्य पक्षेत्र। शास्त्रि-भो [म] शासनः भाषाः दंदः राममशा विष्क 214771

शास्त−पु [मं•] भारेशा धर्म धर्मन शिशन लाहिन्य

द्भना आदि मेर्स्टी एवं शिक्षके हाता जानव समाज तथा जीवमद विभिन्न श्रेषेची विवति और ११एमी प्रावर्ध मा बराध्यम लिक्षा विननी है। बाल निहांक दानकी शास निर्मागाः कीर राभग । - वार - इत्- - त बालीस स्थित-गामदर्भ अपि । -शौवित्र-नि यान रसन्तर्भा । -यदि-पुत्र शासास्य स्वी पानेशना। -चपुर्(ग्)-इ म्बाइस्य का र जोडे भागवनके निय तेथ (शरब आश्वरक थान्) है । -यर्मा-भी शासका कायका मनन अनुहर्मतनः

गामका विकास विकर्त । - व्याच-इ MINER CASE I -T-ft द्यासद्भागः सामका नामनेवामा ह -707~9 गारु छ न्तर अन्या बनीरड शरीये ब^{रे}टन आधार स्तरपार अपितानी संग्रिक निवस : - = स-वि प्राप्त गरवदा प्राप्तद र १० क्षाम् -पुरु गामधी प्राप्तद हो।

~क्सी(र्मिन)-4 शिमने प्रत्य देश सहा है। शामर जानरण शामर । व्हरिवार शिल्यो स्थ प्राथमार विकास रहती ही जी प्राप्यानमार की व्यवस्थ ates de rentent per rente eft feure son ! प्रदश्तः(नः) - बन्दाः(नः) - दः । ११% हेरे १६। ११ पर पर्दर कार्निक लेक्के हा अवह वृद्धि हतात हर है का दा। है>१ भा केपण करश्चिका स्वीत । —प्रार्थेश-पू⇒ी

राम्म दिवर हिंगे पानव प्रश्न का विदेश दें हैं।

freiet garm jest -#fg-G gmert

- e⁵eq (1

सामाचरण-५ (गं०) शामारेटका शरम प्रचर

भष्ययम् समन्, सन्दरीहन् । शास्त्रातिम=4ि [नं] शास म शत्रदेशला । शास्त्रानुमाहित-वि+ (तं] दे । साम विदेशो। प्रामानुरक्षित-५ [में] शास्त्रध मध्यप मन्द्रश शासानुहान-१० (तुं०) शासके मारेए^सश शमन । शास्त्राची-पु [मं] शास्त्रा अमे नगर्र कर्यान बार-विवाद (की शामदे कर्न इन्मदे महारे हें ता है। लाशिक-दि॰ विनी प्रान्तव । दााची(दिम्)-६ [:] शनध नारश्य शमा[‡] हु वह श्वक्ति जिसने शामका नहां शांव वर निर्म

हें शासका पूर्व कविकारी विकास परिया परिया इसीर्च हानेस्र अन्य होनेशाणी वद वंशपि । शासीबन्दि सि दिलास भेदबी; शांच समान हाना प्रश्न दला ब्रह्मीमा । शाब्दीच-रि [र्ग] राख दारा करिया रामध्येर 241 शास्त्र-हि [सं] शासन-देश्य शिक्ष रिक्ष रिक्ष हार्हताह-च शहीका बाह नमार् राज्यिशय ! शाह्यसङ्ग्रे−म्यो ज्यर्थलप् स्त्रप्राचिसम्बद्धाः वा वा वर्षस् हाहि—मु [मा] स्थापी साथा बार्राणका हामसाय करीरोडी पार्टी मान और मेर्ड पंड एक रामा में

१ क्रमा बढ बीपरा । (बर्वचारच ग्रामामे वरा प्राप्त अक्ट अने देशा है - जाहकार जान्दर है भी नक्षर -पु विशेषकारको १९३ मधी १८३३ **-सर्व**fe erfitt gen age mie. mit urbereit

-गाम-६० वात्री वह सब्दी च न । -हाराणी क्षाराज्यक्ष के। ज्ञान्यक्ष रूप्ताची भीत वार्यपर्व रेते शामुक्ता ६ -बी-५ प्रमध्य प्रदेशी 414 1 -## -3 | Prettet 1 -#lt 3" ?!

ham a tacting lift, how pares

agfåter gen mite ben trettereit

क्षारेत् । ज्यून-पुरे कारा। ज्यून यु र देश दानों की द्वारी प्रदेश का के कि ती है el ered & food we sire that you दुशासक्ष कारण : -वृश्वित-पु (अन्तवस्त्र) विशे girt ufter en fan er fine -eren d or an abs an upon -dia-do as रियास्त्र क्राहेरक हिंद दक क्या को बीचा

राजो र न्यारीनको सर्राप्त है। देश सर्व प्

चितिहर-प+ सि+ो छ कत्रवेसिंस यह कत्र क्रो माथ और फार गर्ने पश्ती है। जीस हिसा जीत जीतकाका यक भरतः। प्रश्न हो वर्षा एक वर्षा मिं झौतल ।~कर −किरफः -ग्र-शीधिति-तु चेहमा । -कास -समय-त आहेको कता. क्षिद्धिर कता । ~क्स~प्र वृत्रि !~स्वत्रुः -रिम-प चंहमा। शिक्षिरका - को [सं] शिक्षिरका मान, शीवका मान । शिक्तिरांस-त [धं] क्षिक्ति कत समाप्त होनेवर आवे बाली कता, बसंग कता है शिक्षिरांद्य-पु [एं॰] चंद्रमा । शिक्तिराक्षी~म सि । यक वर्गतः। क्षिप्रिराख्य**य** – प्र• सि े बसेव । डिप्रिक्ति-वि मिश्री प्रेंडा किया हमा ! शिक्र-प (रं•) नववात्तरे केंद्रर क्यांग बाठ वर्गतक्की यम हा पायकः शासकः, पद्मा जानवर्गेः, पश्चिमी आदिका नभा शासका सामा स्टंड । एक्टब्यू-पुरु किमुनांबावन-ब्रत विसमें बार पिंड (ग्रास) ब्राप्त[,] और बार पिंड सार्य काक लाकर हत रखा काता है हिसे स्वरूप चौडावक हो। कहते हैं)। ~र्राक्षा~स्त्री यक्ष प्रकारकी मन्त्रिका । -चौद्रावण-प्र है। 'विश्वहरूक्ष'। -माग-प्र+ दार्था-का बका। साँगका नेवार गन्न सम्रारका राग्यतः सम्बद्धा एक मामीन राजा। -नासा(समृ)-पु 💤। -पाल-प • पेदि(बर्तमाम बहैलसंड)का यक मसिक राजा (रक्षके विद्याला नाम दमयोप था। इसे क्रुप्पने माना था। । - सिपुद्दन~प्रकृष्ण । - अध-पु॰ महादृषि माप रशित के समानान्य विसमें क्रफ बारा सिहापानके मारे वातेको क्या नरित है। - हा(हन)-इ विश्वीते शिश्चपालको मारा था। -पाळक-९ थिहा पाका बेर्डिकारंड, मीमका पेड ! हि० वच्चोंको पाणमै-वाका । - प्रिय-४ असरः धीशः बीटा । - भार-३ र्चेन मामका बक्रभीया संस्थित माकृतिका तारा-संदन विशेष ! - व पक-प्र भीर मंद्रक !- बाहक -वाहाक -प्र बरीसा जेक्पी बस्सा । रिकास-प+ सि+े सेम मामसा समग्रीतः सँगद्धी माकृति की पंत्र महाती। दिन करुमाई की विचडीन होता है। रह

शिशता च्यो [सं] सब्धमा वयसा। शिवाताहै = न्या है शिश्ला । शिकारब-इ [न] है जिलुका । शिक्षायम-द रयपन करकपन !

विञ्चल-इ [वं]रे दिशा। क्रिक्य~पु॰ [ele] पुरुषको जमनेशिव पुरुषका अवस्य i -देव-प् क्रमुक स्वरितः। शास्त्रोदरपर-वि [शं•] वे शिक्ष्मीरश्वशावण । क्षित्रमोदरपरायम-वि [सं] कामुक और कार्रमिति संबद और बेट ।

शिक्षमोदरपाय् चतुः [सं] वद वहदः, सन विमक्त शेर्वव जननिक्षिय और बारमे हो। प्रापतका बाग निवांत तका भावतीया समायवार (वर्) । . नोरोः ।

तिस्व - पुरुष्टि । स्वी स्वेश सिस्

मरिया । शिपरी - प्रविवद्या वि विपारसंग्रह सिपरस्था । शिपा॰ जी शिका।

गिपि≉~प शिष्ट।

द्याची = -प • मीर । शिष्ट-वि [एं॰] सम्ब शिक्षा दीक्षा दारा संस्टा हम समावमें रहमें योग्यः अस्तिक कोकाबार स्पन्नार स्पी में बढ़ा सहीकः सांतः बढ़िमाचः धीरः विमीतः गोर्टः मार्चः मनामः एक्ष क्षेत्रिका सेवा वशीन्त, बादारीमः व्यक्तिह शेष वया हुआ। आहित। ए संप्रताता तत्त्व कारा किसी समाने सनस्य सम्य पार्थरा श्रेष्ट मानिस बद्धर मनुष्य । -प्रयोग-त क्षिप्टें हारा भारती काना वाला ! -श्रीष्टळ-च दिलो संस्थाः रास्य गाँदि

हारा चना नवा अविद्यापात हार अधिक्रीश स्पष्ट से ब्रुप्तरी संरथा, इसरे राज्यमें किसी आईडे के स्वमे बार-'नियम । ∽सम्रा∽ती विश्व-शीन राज्य गरेंगरी -समाज-५ सम्बस्मातः -सम्मत-विश्वि हारा असुमीदित । बिहता-को , जिहरत-५० (ई) हिन्न होनेका नार

व्यां सारिता सिष्टाचार-४ (सं०) शिष्ट व्यक्तियोग नाचार, व्यस्तार सराचारः विनयश किसी समाज मरबा बारोस्य मार्थ हारा निर्वारित निवसोंके अमुसार वापरण 'कारदैन्धि । वि+ विक्रतापर्वेद आपरण करनेगामा । विकासारी(रिम)-रि॰ (र्न॰) शिष्ट आयरण करतेशसा

सरावारी: विज्ञा किसी समाज संरम, बार्यांगय आहे. हारा निर्पारित निवर्मोहे असुभार सावरत स्टमेराहा। दिल्लाविष्ट-वि॰ कि] या दिल्लीको मान्य शे । तिहि-नी [सं+] काशना नाता नातेचा रंटा परिन्हार शासन संचारः सहानंता । जिल्ला-वि सि विक्रिकारिक करतरका शासनकी व 1 3 र धात्र रिवाची। (शिक्षको शिक्षा प्राप्त करनेवामा ग

मी दिसी गुरुमंत्रराज्यक्ष बरंबारन शिष्टामंत्रसी !~शिहि -भी टाइस्टे मार्गमा। शिष्यता भी शिष्यता पुर्वि विषय होते म यात सनै आहि । शिस्त-की बिर ो धीच निशासार जन्मी वस्त्रेनेश क्षौडा वह अंगुलिनाम का अंगुड्याना क्रिन बर्दनी में

वार्थिक शब्दी अंब केनेवाला) भेला। शबर्जने १६६१

विया प्रदेश करनेशका व्यक्ति होना हिंगा !-परंपरा-

तीर्दश्य जैवनीमें शहमन ह । विद्व विद्वय-प्र (वंद) विवस्ता । शी-मी [र्नर] निप्राः श्रीतः। सीला-प [अ] मुफ्तमानी देशी को संप्रधारी मेंने वर्ष भी मुहन्मर्= शार मनोध्ध 🗗 सिनाप्रक्रा बढारा मीर कार्क वरते हे तीन धनीशाजेंती बरशाय मानवा है।

शीकर-पु॰ [लं] बायुपेरिय जन्मन पुशास जनस्मा प्रशास मात्रः शरक मागव इस वा समका भीर ह शीप्र-व [सं] क्रिय बाह्य क्रियंत साहर सर्वेट कार शुरु सामा है सु मंत्री मानव पुष्ट शरदीन का-देवनागरी वर्णमाकाका दूसरा (स्वर) वर्ण और 'ज'का व वीर्ष रूप ।

सॉॅं~ भ विस्मवस्यक छन्।

सा-न (वस्तवस्तक सन्तः) साँह-पु॰ महाभरतः विद्यालसरः भेरनारः भोगः सिर्मातः निम्मनः संद्यः किसीके मामपर पका दुवा वंद्यः नी मानाजीके संदः परिवेको पुरी बाक्सेका बीचा ।

साँकशा-पु कंटा हुका पशुर्मिका एक रोग। साँकमा-स॰ कि॰ क्रमा, संदाया करमा अनुमानकरमाः

ं निष्ठान क्याता । **मॉक्टर***-वि गहराः महँगाः व**हत** क्यादा ।

साँकुदा~पु॰ सँकुदा । सांकुदित्स—पु॰ (सं०) सकुछ मारनेवाका, मदावय ।

भौकुस#-पु दे 'श्रेष्ठश्च'। भौकु-पु॰ बॉक्सेबाकाः कृतनेवाकाः।

आँब-सा देखते-स्मरीय करनेकी शहर, मदन वशुः नियाह, रहि: क्रपार्चींटः परस्त, यहबानः ईसकी गाँठपरकी पीक किएले केंसूमा निकल्ता है। लंसला; शॉक्की एउका विश्व (मोरपंकपरका); छित्र (म्हेंका); व्यामः चेताम !-मिचीनी.-मिचीब्री त्यीचब्री-जो संबंधिक पर भेक। -भूँदाई - मुचाई-सी ऑस्टिमेनी। मु॰ - भामा;-डठना-गाँखाँमें ठाकिमा मादर जनमें पीशा और स्थन होना।—तराकर स देकमा-ध्वान न देसा, रुप्का करनाः कता बादिके कारण सामने न देखना ।- उठाया--निगाइ सामने करके देखना हुरी निगाइ वा अनुमावसे देखना ।- इस्ट काना-मरनेक समय ऑकॉका पकरा वानाः वर्मत होना । - द्वीची न होना - कवाके कारण शामने स देखना नजर कराकर न करना। ~कपर न बठामा-रूका वा भवते सामने म देखना।-स्रोट पहाद सीट-सामने न दोनेपर दूर नजदीक पक्रमा दीना ।-- इ. प्रधासा-काश्च गड़ाबर देखने या देरतक वाकनेके कारण मौक्रमें भीका द्वीला ।-क्य मेंबा गाँउका पूरा-वेदेशका पर मुर्ज ।-का भौचानाम नयनभूख-मामश्चममें विरोध काकेको गोरा काला ।-का करिय-मिसे देराकर बट हो। शह कार्बमें गांगक ।~का काजक पुराना-साममे वा पासको वस्त घरा केला सफाईसेशान मारमा।-का कीया -का बेखा-नाग्रहा रमरा धना सपेद भाग विसपर पुराको रहती है :-का आका-अस्ति। पक रीग विसमें पुतकीपर सफद सिक्कों का बाती है।—का वारा,-का विश्व-कशीमिका प्रिय व्यक्ति 🖟-का तेल निकासना-ऑसीपर कीर पानेवाका काम करना । ^{--कान} लका रहना~साववान रहना (-का परवा-व्यंपने गीतरको शिस्को । ~का परवा श्रहणा~अम वृर दौना। –का पानी इक श्रामा – निबंदव द्वा जाना। ~की किरकिरी−ऑसका कॉटा । ~की तकक~शिव थ्यकि या वरतु । —की पुतकी – गौराजे श्रीतरक परदेका बद माग को बादरधे काका विशाद देता है। अतिथिय व्यक्ति । -की प्रसंसी फिरमा-भाँग्रका पश्रामा । -की बदी भी के सारी-रिज़ीका दीन वसके वित्र का संबंधीक

सामने कामा । --साटकाना-ओस किर्दिशना । -**सद्धमा**∽पस्क सुकना जागनाः प्रम ६र दोनाः विमानपर वरी तामगी पर्देचना । - सखनाना-भास वनवाना । –सोळमा-मास वनानाः सावपान करनाः बीखरें जाना। −शक्ना∸गाँख दुखना दृष्टि समना। -गवामा-स्टब्से कगश्चर देशना । ⇒चमकाना~ शॉंधोंसे संकेत करमाः शॉंध महकाना । —चरमे आजा~ समर गायन होना । ~ चीर-बीरकर देखना-माँध फाव कर रेखना। - जुराकर कुछ करमा-छिपकर कुछ करना ! - जरामा, - किपामा - कतरां आना, सामना क्षामाः कानासे सामने म देखनाः वे सुरीवत हो भाना । ~चुक्कवा-गाफिल होना । ~छत्तसे रुगना-मर्नेके पमये कोंख टैंग वाना। ~कामना ≁दक्षि स्विट रहना। -आमा~नॉस फुटना । -शपकमा-पस्क गिरमा, नींद जाना । ~क्षपकाना—ऑद्धरे एकेट करना। −क्रॅपना-कव्यत होगा। -टॅगना-पुरसीया स्तय्थ दोनाः बक्टको देवना । - टेबी करना- व गरीवर्ता दिख कामा। -डाक्का-प्यात देता। -दबामा-प्रकृष सिकोशमा जांख मश्काना । -विकाना-रीप या जवधा-स्पन परिते देखना। ~न चीक्रना-(स्वर आदिके कार्ज) गापिक वेसव दीला। - न ठद्रामा-चमक आदिके कारण वरिका न न्याना । -- म पसीजना -- बॉस में भाँस् न नावा । -नाकसे दरना-ईस्तरने दरना । - निकासमा-माध्यके देवेको निकामना स्रोधपूर्ण रहिन्छे रयमा । -मीची करना या श्रोमा-पञ्चित श्रोना । - नीकी पीकी,- खास-पीकी करना-ग्ररसा दिखामा; भमकाना । −पटपटा जाना−भग्न पुत्रमा । −पक्रमा~ वहिगत दोसाः पानेका बच्छा होता । -पचरामा-मरनदे समय पुरुषोका परिद्रान होना । --पसारमा --फेसामा--दुरतक नगर वीकामा । - फदकमा- पस्त्रका कार-बाट दिखना (रसर काभारपर शुमालुसका अनुमान किया बाता हो। - फाइ-फाइकर देखना-भार्यका भोरतक के साथ देखना। - पृह्यना- अवा दानाः तरा सास्त्रस धीना देसका बढना। -फेरना-पदमेकाना प्रेम स रखना, तिगाद बदरमा । -फादमा-मांद्र नह दरमा वारतपर जीर महत्त्रभावा काम करना । -वदकर (सँव कर) कोई काम करना - विना छोने-समने बोर्च काम करनाः जीर किसी वालको परवा म कर व्यपना काम बरने जाना। -वंद होना -भेंदना-कांग्र शास्त्रनाः मृश्च दोना । -वचाना-नाग्न नुरामा । -वनाना--मोतियाबिय आदिका अवदीपवार करना । -बराबर करना-धामये साक्षमाः व्यक्त शत करना ।-पिशहना-कांग्र सराव दीनाः कांग्र हेगना । -विद्यामा-शाहर पर्वक स्वागत करना । - बैटमा-चोर जारिके कारण अंशका नट हो जाना ! −भर भामा−ऑसका अमुक्त शीना । - भर देशमा- अच्छी तरह देशना । - भी देश करना-नाराज दोना ! - मचकाला-दार-दार पन्धे थिरानाः चंदन करमा । "सारना-भागीने प्रशास

करमा । --सिस्ताना-वरावरीकै मावरी देखना । --सँव समा-न देखना च्यान न देना ! --में ऑस बालना-गाँस मिलानाः बृष्टवापूण दक्षिते देखना । -कें सटकना-दुरा मासूम दोना । --में गटमा-सन्दर्भाः गम मना हेना । -में भुमना-पर्श्व बाजा। पुरा भगना । -में बसना-ध्वान पर बनना । -मोबना-बाँस फेरना । -- सगना-नीर मामा: दिक स्यमा । -- खडना-गडर मिष्टना मन-वरिसे देशना । - स्वताना-वास मिस्राना **पूरमा । —सर्वाना—देखनेकी क्का हामा । —लास** करना−कोषपूर्व धटिसे देखगा। ~न्यासने व करना~ कम्मा मार्टिके कारक शामनं म ताकना । ~सँकना-सीदर्य दर्शनका सुख सेना, इसोगोंको वृश्या । –स आँख मिसाना-सभर बराबर करना। भौत स्वाना । -से भी म देखना-द्वन्ध समझमा । - होना-परा होना, बान होना । -(म) घुरमा-बार और्ये होना और मिलाना ! - बहुमा - याद कादिके कारण प्रकारिका यह बाना । भवार करना या होना-वैदाहेतो होना । -र्दवी होना-वी भरना एस होना ! ~दवडवाना-भौदाँमें आस. मर आना। -तरेरना-कोशको रहिसे वैदासा । −दावाना-नजर वीकामा शवर-उवर वैद्याता । -फिर सामा-ने-प्ररीवत दोनाः, नगर वरक जावा । —श्रद्धसं आता – नगर नगर नगर वाना क्रपार्थः स रहना। --(सीँ)की उंटक-प्रिय व्यक्ति वा बस्तु । --की सहयाँ निकासमा-दिसीके कार्य काम करमण पूरा कर केमेपर बीश करके छाए जैंब स्तिका प्रवान करना । - क आगे **भैंदेरा छाना**∽मुर्विटत होना निवतता मारिक कारण क्ष्यमात्रके किय कुछ न देख पड़ना । -के बाल अँपेरा होना-विपत्ति आदिमें अपनेदो अनदाव पत्तर निराश होनाः मुस्कित होना । —के बागे बिनगारी सरमा— भीर आदिस स्टारम चकाभाभ दीना । -के आगे माचना या फिरमा-सामने द्दव मीजूद रहनाः रसूर्तिमें क्ना रहता। -के आगे रखना-सामनं रखना। -क डोरे-ऑटॉब्डे एपेड भागपर काल रंगकी गारीक मर्गे। ~के तारै छुटमा-चीर भारिके कारण क्लामीन दीना । -के सामने भाषमा-स्वृतिमें वनारहनाः व्यवनामने रहना। ⊷को से बैटना∽वर्खि हो देना। ~तले न लामा∽ कुछ म समञ्जा, इस्पेर समञ्जा। -वेरन हवा-स्वर्ग देखा सभा। -पर टिक्सी इस केला-भगनान अननाः रपार रिप्रशाना । -पर पट्टी शॉंघ सेमा-ध्यान म देना। -पर परदा पदमा-सम दोना समझमें न बाता । -पर पसर्वीका बोझ म हामा-वपने नोर्गेया भार न मानूम दाना । -पर पिटाना -पर बटाना-भादर-सत्कार करना आवरके साथ स्थामा । ~पर रत्यमा-सातिरशरीके सत्य रहामा । -में-सबरी सरसमे । -में बाजल सुकना-काश्यका श्व करता। -में राम इतरमा-मोर्बेर मॉर्गीका तान दीना । -में चरमा - करेर सामा अधिमा । – में चरवी छाना -बर्ग या प्रमाहरी दिनी वरणुधी और प्यान म देशा ।—में सुमभा (लरजना)—मध्या न क्यना ।—में चौष मामा-भीर आरिके कारम मीरीका छन्त दोगा ।

नमें साई पदना-भीतीका परना । नमें देस् तीसी या सरसी कुलना-जानमें रहतेरामी शह सर्वेद रिगर्ट वैनाः मधौ बाना।-में तकता पुमाना-मेरे धौरना। -में पूछ शॉकमा, डाकमा देना-भोग्रा देना। -में भाषना-स्थान नमा रहना। धर्य सामने स्हमा। -में नीन वना-नार्थे भोषमा । –में फिरवा-माम स्ट रदनाः –में बसशा–? ठमे पर दर देना। –में बटना⊸पर्संद भागा। —में भंग बुटना∽भंगरे नहेंपे शीना !--में रखना-प्यारसे रक्षमा, हिन्हायदन रसना ! ~में रात काटमा-जामध्य रात शिवाना ! ~में शीक बोमा-सरीक्ती बोना । --में समाना-ध्वावरर पण्याः सरण बना एइना। -छत्तना-कपर भागा प्रतेरपर बीतना । —सुरक्त कक्षत्रे दंशक-पूरो असम्बद्धाः —से उत्तरमा−नवरीते कार जाता ! —स मोशस होगा− शायने न रहवा, धटिये परे हाना । -से काम करवा-वधारेस काम निकालमा १ -से गिरमा-व्यंधीये वन रना ।~से छगाकर रत्नना~प्यारके सब रगना । **ऑक्सडी॰-मी** शाना भेगती ! र्भोन्ता~न एक तरहर्ध यहनी। आंग्र−नि॰ वि ो शारोरिक अंगवारोः अंग देउने क्लार निन्न वर्गके पात्रांस संबंध रखनेवाला (जा)। ५० केंगड र्भोग+-प अंगः शरीरः लन । क्षांगळ—पु॰ सिं॰] भेगमे वसनेवानाः अनतात्रः। वि सेव देशमें परपप्त । व्यागिम−पु॰ भीत अतिर, घरके भीतरका स**र**न । **क्षोतविच**िष [मं•] श्रांतविचा, सामुद्रिक विचा जानन श्रांगार-त वि] भंगारीका देर । आंगारिक~वि [मं] अंगार-संश्वी; अंबार अनानेवाना ! कांगिक-ति॰ [राँ॰] जंग वा दारीए-नंदंबी। अंगपेदा हारा र्व्यवित या कृत (साथ अभिनय आदि)। ५० क्टेनरारण धारीरिक पद्याः काविक मनमार । -अमिनय-<u>प</u>र व्यक्तिनयके चार क्लोमेंसे एक-शारीरिक वेदाओं ह्या किया सानैवाला अभिनय । अहेगिरस−वि•[नं•] अंगिरा ऋभिन संस्त् या छर**रव** । \$° अंगिराके पुत्र कृष्ट्रपति आहि अंगिरस गीत्रमें अवस उना अधनिष्या एक गुण्ड । व्योगिक-न्योक प्रधाया क्षेत्री; धसनी । भागर भागम-१ अंगुनः। आंगुरिवाण-री दे 'आंगुर'। भौगुरी १ - गी जगम । व्यक्ति। न्याः यदीन जारोमे यदी दणनी । ऑस-स्पे+ रहमी: फ्ल्जा संपट, भान नावा तम भी" शति, शनि अहिना संदर्भ प्रेमाकामनाव । सुरु नश्रामान हानि होनाः वह अति नायान वर्नेयना (-आमा-प्रीयः पर प्रयोगा पाना। (प्रतियो प्रानेशानी भीजध्ये) स^{र्मा}क क्षेत्र हाइ साना स्थल हाएगा । श्रीचनः भोटन-पु [गं०] श्रीगर्नय मीन वर्णः र*६

करमाः शरीरम कथा, वाग् बादि निकाममा ।

1110 (प्र्यो•); शञ्च । --कारी(रिम्)-वि तुरत काम करमे बाह्याः तुर्व असर करनेवाता (भोजन, कौदव आवि) । पु सक्रिपात क्वरका एक भेद । −कृत्र्−वि+ तेशीसे काम करनेवाका ! -कीपी(पिन्) -वि वस्त्र कुछ को छठतेवामा विद्विद्धा ।--श-वि द्वतगामी । प्र• वासुः चर्वः बरगोधः । -शसम -गस्मी(सिम्)-वि 'सीमग'। -चेसम-प्र क्रम्कर, क्रचा । वि ह्रव पेदनायकः । – सम्मा (स्मभ्) – प्र॰ यक्ष प्रकारका कर्रज कॉटा-करंड । -सीर्ण-पु भीकारका साग । --पशन--प्र पारीसंगोन करते समय नीर्वका क्षीप्र स्पन्तन पिरजा। ~प्रध्य~प अगरतका पेश। **~प्रकि**~ि कुग्रामनुद्धि तीस्त नुद्धिनाता । -बोध-नि जो बस्र समझमें भाजाव। −दान-पुतेब गति। वितेब बामेशका: -बेघी(धिम्)-वि निद्यानेपर तुरत तीर पहाबेदाला अञ्चल राज प्रजानेदाला कपुरस्ता । सीप्रता-स्रो , सीप्रत्य-तु [से] शविसंवस्य अस्त्री क्षिपता, कृती । शीधा−मी [सं•] दंती द्रखः शीधिव−4ि• [मं] तत तीन । पु निष्णुः शिवा वितिबाँका करना । शीधी(प्रिम्)-वि [सं] सीवदारीः सीवगानीः तुरत बचारम श्रमेबाला । वीग्रीय-वि [मं] तेत्र तीन। शीइय-प [मं] शीमना बन्दी सेनी। क्रीस-वि [सं] दोक्का आकरवक्षका निवास । प्र भीत्यां को अगदन पूस माय चीम मदीमीका दीता दे बाधा उदक, शीतकताः सरवी अकामः जला तुवारः नेतस कृतः बहुबारक कृतः महामवर्गाः गीमका पेशः कृपुरः पर्परः पिश्ववाषदा । - करियंख-प् भूमेटनः के बच्चे तथा रक्षियी अंडीके की करिका विमाय जो मुमध्य रेसाके १६ है अंश क्षचर तथा वतने की अंश विश्वन-में हाक बोक्ट अन्यदेशक केने हैं (शीनप्रवान देख হ'হাহাংহৈৰীই হ' বহা বৰণ কলুই লুভ কল লীং अन्य प्रतानीमें भारपवित्र सरदी पत्रशी है)। ~कण~प्र थीरा । - कर-१ दिमकर, चंद्रमाः सपूर । वि शीनक श्रामीतृत्याः श्रीतम करनेवामा । -क्याय-प्र- प्रया ह्रभा हम्बद्धम काशीवन आदिका क्याय जी अनके छ गुप्ते बनमें रातभर मीगे रहनेसे प्रश्तुत होता है।-काछ ··धु काहेबा भीतिम की अगहन भूस और नावमें परना है देगत और शिक्षित कता अगहन और पुन महोतीमें पश्नेशको दर्मत अनु । -कामील-वि शोतकाल-मंदेशीः शोतकालमें क्षेत्रेशका । -किर्ज-पु प्रमा । नक्षंम न द्रा करवीर, कनेर । नविश्ववा --वीमी -सो गोरडी बन्दुंनी मामह वन्छता ।-कृचिहा-भी बरिवारा मामद्र पौदा जो दिला बीचे ही हैंसके रिटों में पैश दाना दें (शमधी वर्तियों और अब कीवपद बायमें भागी है)। −कृष्णु कृष्णुक्र÷दु दक्ष त्रा। −भार−पु ५१ रॅंडच, शाक दिया दुणा मीहाना। ~र्गघ-द्र भेरमधा –शाय-द्र सक्तिश क्सर् रिध्या-गु-पु देह्या। - चेरक-पु वर्षेय आहेता

बीपक । –च्छाय –प॰ बैंग्वय शिसकी छावा गीतरू बीती दें। −प्रचर−पु जाहा देश्वर जानेवाचा स्वर स्ती। **जर्नेथा पुरारा, अवरिना पुरार मी कुछ दिनोंके अंतरपर** भाता है मर्पेरिया बुकार । - इत-पु श्रीतरू बाबुवा बक्का बॉलींके कमग्रीर बीमेपर रूपना (वर्ष उत्पन्न करना)ः यक बंधरीय (भा वे॰) उ-वंतिका-सी नाग देती लता । —दीधिति –पु॰ चंद्रमा । –दुर्वा –सी॰ श्रीतकाचीन पूर्वा, वनत पूर्वा, शकेव पूर्व । - वीप्य-पु शकेर औरा। −शति−पु चंद्रमा। −पक्र−पु॰ सुरा शार, रिपरिट । —पद्मा−सी वनेन कावनंती पीथा। –पर्धी−सी॰ अर्थपुध्यका। −पश्रक्षमा—सी॰ भृति अंतु । -पाकिनी-सी॰ काकोनी सामग्री सहवरीय कोषणिः सहासर्गया । —याकी—स्त्री ग्रंथा, र्यपनीः है० 'शितपाकिमी'। -पिच-प नात और पिच है कपित होनेसे एरवच शुक्रा वक अर्थरीय (इसमें शरीरमें चक्की निवक आतं है और अस्पिध्य पीक्षा और जकत होती है) रक्तविक, जुड़विक्ती। --पाब्य-वि ठंड दावी था किरचोंशस्त । 🗝 पुष्प – पुष् क्षिरीय **वृश्व । 👚 पुष्पक्य –** यु मदारका पेश क्षेत्रेय छरीका । --पुष्पा -पुष्पी--नी शनिवतः। - पृत्तना - नी एक वालग्रहः। - प्रधान (बढ रकान) वहाँ गीतका प्राचान्य हो। (बढ करतु) विस्तर्वे गीतगुलका साथितव प्राधानव हो। -प्रम-पु॰ कपूर। - ब्रिय-प् पर्वर क्तियापना। - प्राधा-प्र गुनरा करगुनर । --बमा-मी छीतपुष्पा, महासमेना । -भाग-त दिसदर, बंदमा । -भीर-ली॰ महिना । वि शोवसे टरनेवाला !−भीराक्र−वि देश शीवमीव । व एक तरकका भागः कान्यं निग्रदो । —श्रंकरी—धो । शेकाको इरस्मिंगर । "मयुग्र -मरीथि-प्र चंद्रमाः कपुर । - सुलक-पुबसीर रासा विश्वेदी वह बाना। - सह- प्रमेद रागविशेर। - मेही(हिन्)-वि शोनमेद्दशे मरन । -रम्प-पु दोपक । -रहिस-प्रयोक्षाः कपूर । − इस − प्र∘ विदेशको उत्तरी प्रस्तुत मयविशेश - बेस्(च्) - दक्ति-पु बंदमा । - इह-पुरदेन कमका −स्र−वि दे क्रममें। −बस्क्र-पुरु गूनरका वेड । व्यक्तमन्त्र विश्ववादश । न्यहरीन मीनी हुन । ल्यीर्येलनि क्रिक्टा प्रमान टंबर नानेशना हो । पु पात्रामनेशना पाहरा विचवायक्षाः यमनाकः स्थाः सीन्ते हुर । -वीर्यकः-पुर वाकरका पेड़ ।-दिश्व-पु क्षत्रा ममका मोहागा। धैनेड गंगण्या सामा गमी पृथा -शिया-सी शमी पृथा शीक।-द्युक-पुत्रव भी। -सद्द-पुरु पीम् सामक देश विधीन महस्य वर्नेपाला । स्मद्रास्त्री एक कृतः मील सिंधुवार, गीनिका, रोशानिका। काली लना । - स्पन्न - विश् जो सुनेमें देश ही देशक पर्देशानेशामा । शीतक-रि [मॅ॰] दंदा । दु दंदी पर्युः शीतहास भारती बीर्पन्ती व्यक्तिः विदेश सनुस्या रिस्त । व्यक्तिम-वि [में] शीनगुणपुत्त देशा शीम्ब नृद्वा र्रात ४० स्थितसम्बद्धानम् अन्तर्भात् । ह धन्ता र वेदा पु पदार्थन कर्ममा क्यम वयः बीरा-मूना करान्स्वीत अंदबर वक प्रकारका कपूरा राना माने।

र्वज्ञे अनुसार पुरुषमें न्योके साथ और स्त्रीमें पुरुषके माथ संयोगकी रतिकोदा सादि मुक्क स्पदाकी श्रीगार करत है); सुरत संयोग, सहशासः सौदर्वके प्रसादनी हारा स्त्री था पुरुष-धरीरका बनाव-समानः किसी बस्तका सप्रापः शोमानी बस्तुः हाशीके शरीरफ(बनाये गये सेंदरके निम्नानः कीमा जदरका काकागुका सिद्दरः जुर्ण । –गर्च-प॰ प्रेमका गर्न । –चेशा–की --चेशित-प कामचेटा संगोपचेटा, बनुरिक मक्ट करना। - अस्मा(स्मृत्)-पु द्वामदेव। - धारी(रिक्)--कि असंबत (हाथी)। -आयित-व कामवार्का श्रेमा-कापा प्रभव दवा । - सूचण-पु सिंक्र । -यामि -पु॰ कामरेव । -रस-पु॰ साहित्यञ्चान्यमे वर्णित भी रसोमेंसे ग्रहतम । – सञ्चा−कौ प्रेसमे स्टब्स क्या । – देश− प रमशीय भारतपैक, संदर बेशसूचा जिल बारण कर प्रेमी भपने प्रिक्से मिलनेके लिए जाता है। -सहाथ-प प्रेम-व्यापारमें सदाबद व्यक्तिः नर्मसन्ति । - हार-मो• [द्रि॰] बदबाओंक वैठनेका वाकारः वेदवाओंके ठहरसेका स्थान । र्श्यगरक~पु [मं] प्रेमा सिंदर । वि मीगवान्य । श्रीगारब-प [मं•] समानेको क्रिया श्रीगारचेटा। प्रेम प्रदर्भ । श्रीताविक-वि [तं] श्रेगारमे संबंध रखनेशकाः

शंगारका। शंगारिकी-को (मं) सूत्र वनाव-सवाद करनेवाणी नारी। शंगारिक-दि (मं) सवावा दुष्णा सवा दुष्णा हिन्दुरहे

रैवा हुमा मुख्य देगावित्तृत्व। श्र्येतारी (रिट्र))-(६ (र्स्च) श्रंगाराची वृद्धिने युद्धः श्रंगा (रिट्ठा स्टिट्स) हेना हुमा। यु कामुक, ब्रेगो व्यक्ति। दुरारीका पत्र आधितव, मानिका श्लेर वैग्रावाचा या नमान्या व्यक्ति। बनावनावान। यानके बीह कमाना। हात्री।

र्धसारहा-स्ते [सं] हिवाबा । र्थसारहा- र्थसास्त्र-सी० [सं] विप्रारीकंद । र्थसारहा- र्थसाद्धा-सी [सं) बीवद वासद शेववि व्या: सिधात ।

र्शित-स्वी [सं] भिन्ने महस्त्रीः आमृष्यम् बनानेका स्रोताः क भौगीपाना स्तु । स्वीत्र-पु [सं] एट प्रकारका क्षिप् मिथिया क्षिप् । स्वीत्र-स्वी [सं] क्षिप् मिथिया विष्या

भर्तम् । श्रीयण-पु [+] पंतरी श्रेष्ट सेना । दि स्रोपनान्तः । ग्रीमणी-स्रो [म] ने वाद्यः स्टेम्पणी पृद्धः सर्वित्रदाद्यः पीत्रा; दशेषिभागी लगा ।

र्श्यो - ग्री [में] सिपी जायक सहबो। यहना बनाने के रिप भोना। दिवा भॉर्निका अभीता कदाय भावका वर्त्यर १मी काक्यातियो। प्राप्त बच्छा वटा --वज्रक-नु महना बनाने दे निष्य सुवर्णे।

श्रीगी(तिम्)-वि [मं] यागपुषा श्रीगंशाना (हार्य)। पुत्र वर्षण कृत्या होती स्था कृत्य स्थानुका स्थानुको पुत्र प्रकार

कवि (स्त्रीके शामसे परीक्षिको सक्तने वेसा वा किस्से स्त्रको सुरा हुएँ। विश्व पा बाता। दिला दिलका एक गय। —(मि) गिहिन्दु कर पहार निस्त्रर श्रेगी क्यैकि स्त्रवा की मी। श्रीरि-पुर [संन] एक स्वान को मैश्र राज्यमें है (क्रप्प श्रामका कल्म नहीं हुना था। श्रीकरावाने हार। मारतवाँ के स्त्रापित हैं।

श्रंबोष्णीस-पु[चं] विद्र। श्रद्धास-पु[चं] गृगास। श्राव-पु॰ गृगास।

श्यास्त्र-पु [संग्री सिवार) कृष्णः वरसारा एक राह्यस्य स्रत्येक, पुरं वा तिर्देव व्यक्ति (विरोगारे इंदर्ज के स्रत्यो वर्ष क्ष्युरिक्त हैं)। -वंद्रक-पुः सावातासी वर्षावर्ष वर्षेयार योवा। -वंद्रिक-पु हृद्धकेति वृद्धा, कर्षु । -वंद्री-ची॰ लाकमदाना। -वंद्य्-ची सर् वृत्रा वर्षका पक। -वोतिन-पु॰ ग्यास्त्रको योतिने कमा केता। -व्य-पु दिव। -विद्या-ची ग्रितिनोच्यो। श्रमास्त्रिका-ची [सं] स्राव्य स्थितार, विवारी, कोमशे, पृत्रकुष्मांद्र। ऐना विवारा, त्रसमे प्यास्त्र । श्रमास्त्र-ची० [सं) विवारा, त्रसमे प्यास्त्र स्थाप स्थापना।

स्र्विम् भी [नं] बंड्या प्रदोग नैता। प्रमानि (तं) सीवा इसा, पदा हुमा। पुतास, बीका तुवा दूर्वा - पाक-ति भराठी तरह पत्रपा इसा - कोति-ति वशास्त्रद ठवा दिया दुमा। स्रद्ध-ति [नं] बोरेको और स्ररीरते निकामिन (तेने

श्रद्धकार (म.) कावका वार् छरारछ ।तक्यामा अक्यत वार्षु): वार्द्ध । अक्षु∽दु [सं]दुक्तिः वमहाः सक्यार । दोराक∽दि वार्ष्योः समझ । दुः समानिः वार्त्यः ।

हाराज-पर वास्ता प्रधान में प्रधान वास्ता हाराज-पर वास्ता प्रधान होर ने पित । मुख्य-मानी भार मातियो(ऐसा सेवर, मुख्य कोर रसन) में एक । नहा वास्ता-प्रधान खरीक सामर वास्ति दिया बानेवाम बदरा ! - विद्युत्ति - वु ण्या ब्रिक्श मूर्ग सिख्यों मूर्ग नहार करानियां बनसावादणमें प्रक्रिय है। वागे-वी वार्ति केवानीय बनातेवादण व्यक्ति ! - क सामस्या-वार्ति शोजना ! - वीष्ट्रिय हैं है - व्यक्ति सेटरेबा व्यक्ति सेवर में विद्युत्ति करानियां साम स्वाद्या करानेयां कारानियां केवानीय स्वाद्या करानेयां स्वाद्या स्वाद्या करानेयां स्वाद्या करानेयां स्वाद्या करानेयां स्वाद्या करानेयां स्वाद्या करानेयां स्वाद्या स्वाद्या करानेयां स्वाद्या स्वाद्य स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या

क्षारहा-च क्षांस्थ देश (शिराकराते)। तीलद-चु [गं] शिरोज्या निरिट मुद्दर लाहि। सिरस् क्षेत्री दूर्व लाला प्रतानिक्षार त्या, भोती क्षेत्रका शुव विशेषा लाहे वर्ग सन्द्रस्य कह व्यक्ति सा वरतु (समानद्वे क्षेत्रहे) रागण्या पौनार्ग स्था स्वरंहत लोहा हिम्मून् । सीरस्था स्थापन क्षेत्रहें सा स्वरंहत लोहा हिम्मून् । सामार्गिक्ष दिला (यह भागद क्याबोनेने एक बना नानो गारी है)।

शनसिन-रि [र्व] वो शिरान्याना बाम रे: दिरोन्यम

युष्य,

निर्मित-पुर (हं॰) छ कतुर्गिर्मित यह कनु थी मान और कार्युगरे पहती है। शेरा, दिन डीता, ओत्साश एक सक्ता प्रस्त होता यह वर्ग । वि डीताश -क्या क्रिया यह वर्ग । वि डीताश -क्या क्रिया -पुत-वृत्तिविति-पु वेदमा । -क्याय,-समय-पुर साहेक्य कहु विश्वित कानु । -यम-पुर कावि ।-सम्बुक्त

~रदिम−पु चेहमा । विविधस्ता−सी॰ [सं] विशिधस्ता मान्। दीतना मान्।

सिधिराता प्राप्त (सं) विशिक्षर कत् समाग्न होनेपर भागे नानो क्रम्य वर्तन कत् ।

चान क्यु चला क्यु । शिरितांश्च-च [तं+] चंद्रमा । विदिताक्षी-च• [तं] यक वर्षत । विदितास्या-च• [तं] वर्तत । विदित्ति-वि [तं+] टंडा क्या कुमा ।

शिषा-प्र= [मं+] मचनात्से लेकर क्यामध आठ वर्षतक्की सम्बद्धा नामका नासक नया। चामवरी, पश्चिमी धारिका नया, सामकः धानः रहेर । —क्रथ्यः—पु । शिद्धानौदाननः त्रत जिसमें पार पिंड (प्राप्त) प्राप्ता और पान विंड सार्व काक रतकर मेत रक्षा जाता है (हसे स्वश्य) जोडावण थी कहते हैं)। -गंधा-ली॰ एक प्रकारको मस्तिका। ~चित्रसम्प∽पु के शिरुद्धन्य । – भाग-पु॰ कावी का बचा। सर्पका बचा। यक प्रकारका राधासः मगवका एक प्राचीन राजा। −नामा(भन्)~प केंट। −पाछ~ चैदि(वर्तमान व्रदेणसंट)का एक प्रसिद्ध राजा (इसके निग्रका नाम क्रमपीय बाः इते क्रणाने मारा था)। — निप्रदेश—इ. कृष्ण ! — क्राय्य-पुरु सञ्चाद्मित साथ-रनित एक महत्वाभा किसमें कृष्य बारा विद्यागणके जारे वानेको क्या वर्गित है। - हा(हजू)-प्र जिन्होंने शिमुपाकको मारा था। -पाक्रक-इ शिशुः मान्यः मेहिनकर्मनः नीसका पेट । वि : क्वजीकी पाक्रमे-वासा। −मिम−९ असरा शीरा कोरा। −मार−९ पीन नामका क्षत्रजीका प्रमुख्य बाह्यतिका हारा-मेरल विशेष । 🗝 चन्न-इ. सीर मंदक ।—बाह्यक,—वाह्यक –९ वनेषाः संतनी वस्ता ।

सिद्धक-द्र (सं॰) ग्रॅन मामका कलजीवा ग्रॅनको अन्तरिः को एक महलो। टिम, ककसर्वे जी विश्वीम श्रोता है। वर्क

वेद १

सिम्बान जी॰ [सं॰] सहस्त्रमा वस्त्रमा । सिम्बान्द्रेश्च न्यां २ देश्यां । सिम्बान्द्रेश्च विद्यारा । सिम्बान्द्रेश्च विद्यारा । सिम्बान्द्रेश्च वस्त्रमा वस्त्रमा । सिम्बान्द्रेश्च (संग्रीहर्ष्ट युवस्त्रमा स्वरूप । -क्षेत्र-पुरुष्टाहरू (संश्रीहरू युवस्त्रमा स्वरूप । सिम्बान्द्रमान्द्र (संश्रीहरू सिम्बीहरस्यायमा ।

सिरकोन्दरंशन-दि [संग] देश किस्मीरतकातमः । सिरकोन्दरकातम-दि [लं] कामुक और वस्तिरिः अस्त और देशः।

सिर्मोन्द्रवाद्—पु [मंग] वह बाप मन विमया सेर्थ जनमेदिन और घरटने ही कामप्रका काम विश्वास समा मान्द्रवा मुमानकार (मंग) ह

शिष - व शिष्ट । की शीरा, शिक्षा में इतवादा कोडी

पुरिया ।

शिपरी॰-पु विषक्ता । वि॰ हिम्मरनंत्रव, निसंदर्गना । शिपान-सी शिक्ता ।

विषिश-पु शिषा। शिषीश-पु मोर्।

विष्टता-बी॰ विष्टत्व-पु (सं) किह बारेका कर

ष्ट्री बारि ।

विश्वाचार-६ [मं] शिष्ट व्यक्तियोका वाचार, व्यक्तार सरावारा किमवाा किसी समाग संस्था, वार्वास्य वारि इत्ता निवंदित निवर्मेक मुसार वायरण वार्दिन्धीः

वि क्षिष्टगापूर्वश्व भाषरण करनेवामा ।

जिल्लामी(मिन)-रि॰ (तं) दिन भावरण करमेगातः सरावारी। विवास किमी समाम, संग्या कार्याच्या नहीं हारा विवीरित निवासी असुसार व्यावरण कर्ममाना । विकासिक-वि (तं] वो सिनोधे मान्य री।

हिति न्ता (सं) शासना माया मादेश पंदा परिभेष

बार्वेश प्रचारा स्वानका ।

शिष्य-वि [र्च] डिक्क्योश क्योरमा ग्रास्त्रमाम । ३ छात्र तिपाली (डिक्क्यो ग्रिया साम स्टेनराम अं स्राहित पुरुषे में ह कैनेताम) भागा पुरुष्कृते दर्शर विद्या प्रदेश स्टेनराम स्टेलिस स्टेला (स्था । न्यर वर्षा-स्त्री क्रियो प्रवर्गायसम्बद्ध स्टेला डिक्यमंग्ले । निर्माट न्यीक सामस्त्री स्टेलार

शिव्यक्षा-मी , शिव्याच-५० [मंग] शिव्य क्षेत्रेय

मान अभै शादि ।

िस्त-ली॰ (या) सीच निष्ठांना तक्षणी कर्मनेय भौगा वह अंगुलियाच या अंगुरनामा विमे दर्शनेया सीरेशन नैमानीमें परमन है।

शिद्ध शिद्धक-पु (मं) विकारम ।

की−नो [नं] निया छोति।

प्रीक्रा— [ल] सुगवमानीदे ही वह अधारायेथे कर भी सुवनमध्ये बाद सब्दों हो हिजबातस्य बदराद करें, बनादे बदरेके तील संगोदानेकी बदरास्य नामना है। बाहिकर— है नि बादेगित अन्यम् पुक्ताः बन्दरा मुख्यान बाहु। स्टाल सामव वृत्त वा बनाता थीर ?

द्वीम् न [बे॰] दिव जारा अर्रिश, सन्त स्रित अस्य तुरह, सार्वर । है वंशी जामक पूरा स्वयोग पोक्सी-स्रो (मेर्ग क्या) शैकावत-प राजपतीका एक क्यारेन।

भोज़ी-सी पर्मदाशीग। -हतोर-विश्वे 'होसीवात'। -बाह्र-वि शीय मारमेवाका दमकी केमेवाचा। -प्राम-सा॰ ग्रेसी और शान, वर्षक्र ऍठ। मु०~ किरकिरी डोना -झबना-वर्गड वर बोनाः डककाः कम्बद्ध दीना। -यदास्ता-दींग मारमा अपने ग्रॅंड

श्वनी वदाई झरना । दीप-पर् [मेर] किंगा दीना पैछ दुश।

दोपाक-प॰ सि॰। सेबार ।

शक-त सिर्वेदे होय'।

शेफाकि शेकाकिका, शेकासी-की॰ (सं] रिर्लाटी, मीनिका, शेक सिधवारका पीपा।

क्षेत्रपी-स्री [सं] नुहि ।

श्रीयर-प अ माना किना श्रीमित (किमिट्रेंब) व्यापा-रिक मोबामें खगी प्रेंबी के निर्मारित दिरमें क्रिममेंसे का सन्दें सरीएने पश्ते हैं का वसमें शम्मन्ति होना बाह । —होस्डर─प्र अलक व्यक्तिकों स्थाकित यन वा पुँगीमे संचालित किसी श्रंपनी। बतराताने जेक व्यक्ति (चेबरर) दिरसदार ।

भौर-प [स] गत्रकरे की भरणः एव (का॰) कार न्यामः सिद्धः (बार) बीर प्रवयः निटर श्वसिः । जिल् सेरनी । - अप्रसान-वि धीरको निराने, पछाइने-बाका। बीट, साहसी । 🖚 सर्थें-श मृहबादि वर्ववित मन्द्रीकृती वेयको सक्तरारी सिक्की हुई पत्रको । –वरबाजाः– प्रदेश का प्राप्त किसके बोली ओर खेखी मित्रमा वनी क्षेत्र भिक्ष्यार । ~क्क्स्निव वोस्केने श्रीवयाना (कड़ा)। (सकान) जो सामने कविक और पीछे क्य भीड़ा हो। उ ग्रेरको ग्रन्ड को धीको परनानी मारिकर बना देते है। एक एरहका अला। ली नक तरहकी भेड्छ । -- क्रमा-द वह क्या निस्की पुरिनोदी धरत देशके संबंधनी दोती है। -विक-वि (नक्ट । -मुसा-वि शेरवी शक्तकामा ! -पैजा-दु वय इतियार वदवसा । - वक्ती-नी एक दोन । -यथा-प्रातिष्य नेवध एक तरहकी दीती भंदूद । वि बीट शावमी । -ववर-9 शिह । - मर्थ-वि बाद विषय प्रश्वसिंह । -साम्रा-स्ती -का शाम-मंग धानमेदो सागी। -का नाराज-क्यममा, बापका मरा जा वची है गण्मी कर्षे नुर्राहने वक्तिके निष्ट परमाचा जाता है। न्या बाध्य शिल्पी में ए-का बाम भी विष है (क्षत्र माना है कि देने गानने संवैजा बरबर (१९ परना है) । "वरी दुसमा-रिन्स । हा॰ --करमा-बीसमा बना देना जिल्ह बना देना । -का मेंद्र शहमना-धेरके मारमेके बाद बनको गुँगीको जन्म देता (शिकारी एमा किया करत है) । -की मनर पुरमा-कीरगरी शहिमे देधना । - वही बोल्डी बोल्डमा-(मे)) है करना ! -के शुँकमें जाना-भाग जैविसनाने रक्षात्रमे प्राता । 🗝 मुद्दें में शिकार क्षेत्रा-तरराग्य-बोर्र बीक होन रेगा। -यक्तीका अक बाद पानी पीका-इन्ह स्वायका शाक्ष काला शांधि वहे अवदे आव

व्यत्ना व्यवहार होना । —होना—होसका काला अन बोना अधिक बोमा (ममक घेर बोना-('ग्रे)। शरकामी-सी यक तरहका लागुनिक बंग्झ अँगरदा। वीस-प्र॰ (ग्रं॰) बदुवार वृक्षा बनमेशी । वीस्क प्र [मं] किसीबा वनमेवी कीया शसका−सी ही वसमेगाः संब-प्र [मं] किया सर्च, मागा केंबाई। किए, नंदीर संपद्मा माल्लीर सका करिन । -चि-५० निवा हरे(ही भी निविधीयेसे यक । बोक्छ-प्रव सि विशेषक मेबार । बोपकिनी-न्या । [सं] पदा (विशेषक सेपारवाली नदी)। क्षेवा−की [मं•] हिगका क्व का किन। पर किन तीर-तरीका, बंध । भी**वास्त्र~त•** सि॰ी सेवार । श्रांचाफ़ी−मां सि॰ी एक तराब्दी बरामको । दीप∽नि॰ [में] पचा हुआ शको अवस्थित। होता हुण विकास समाप्त । युक्त स्वीतन बन्द्रसे व्यक्तिक बाग कामको पीत्रक सकार। वर्धी घोत्रा मामधी वाद्यी (बर)र विसी वही संस्थापेंसे दिनी होते संस्थाको ना³े प्रताप वर्षी संस्था अवस्थान-यून (ग्र०): अवस्था होता क्रमा क्षेत्रा वचा मता, रवंदा मरण और। क्रप्ता कर्णी नामक सर्पराय मिने रावस पान है और जी निष्टुण श्वनरक्त शब्दा है। (पु): अवसमा शंदर्वण वनश्राना हाथी। धमनाह विष्मुकी हमरी वृद्धि जिन्हे 'काल' करने ि हेबर, अर्थना श्रेषशायक प्रदार। दसपात प्रोबर्ग केम हत्त्वका पर्यामर्थं मह।∽कारिश∽ि अपूरा (-कार्य -द्र मरणकाल, वृत्तुक्षणः **-बाति-भी शेल्धे** मिनाने तकता करनेका कार्य (त)! - घर-पुर शिव ।-नारा-प्र- गर्पराथ भेष । -सुक(भ)-रि जुडा सानेवाला । —अच्छा-ब्रु विम्यु (१) । -सोडब-पुरु करियद महाय ।-शाम-पु यद वर्गपूर्व । विगीता । ─शक्ति~नी रातिका चेतिम प्रदर रिटारी राष्ट्र¹ -शयम -शापी(विम)-५+ निगा। शाप इ-५० [मंग] रोपनांग । शक्त-त देव दीसर ।

दापन-व [मं•] जनमायका रह भेट कार्व हाटा बारफ

दापा-मी [मं] विभी ज्यारम देवनात्री अधिन समा

बा भीग जिल बुशादे बाद द्वामको पृत्रको अस्टैर

क्षेत्रील:-[ा [०] सबके बर मन कुछ वह केनेटे पार

दार्थारा – इ. [मं] क्या माग अभिय भाष ।

मंद्रने बहा बुधाः गरहे अंद्रवे निया दुवा ।

क्ष्पान्ति वि विशेष देने बा करण करने कीम ह

दा—सी [ल] थीव वरपुरमणस्थानी शक्त ।

श्रीकत-दिन (३,) श्री दुसर कर्रबाद्या हैका। संसूच्या । gin-Jo [de] finamia (reiginia) abjant

निकार दिवार का बाज बा अन्तेरर नशाप्तक किश

का निधय (ग्या)।

बॉस्त के प्रमाद ।

शेपा**वस्था**∽शा [शं] पु∗ाया । क्षेपादि-त [र्व] रोपमाप ।

(प्रदो•); वास । --कारी(रिन्)-वि तुरत काम करने बाह्यः तुरत जसर करनेवाचा (योजन, औपव आदि)। पु सक्रिपल उत्तरका एक भेदा ~कृत्र्−िक सेत्रीसे काम करनेवाका । -कोपी(पिम्)-वि वस्त सुद्ध वा प्रस्तेवात्रा, विद्विद्वा । ~श−वि हृतगामी । प्र• वायुः स्कं प्रतोश । -गमन -गामी(मिन)-वि दे 'शोप्रय'। -चेतन-पु कुन्कुर, कुता । वि॰ पूर्व भेतनायुक्त । - जन्मा (श्मन्)-पु एक प्रकारका करन चाँदा-करंब । -जीर्ग-पु भीकारंका साम ! -पसम-म मारीसंगोत करते समय पीर्यका श्रीप्र रशकम, विरना । —पुष्प-प् अगस्तका पेड़ । —**युद्धि**—वि कुमामनुद्धि, तोश्य नुदिश्यासः । -बोध-वि वी वस्र समझमें आयादा – याज – पुतेब लति। दिश्तेब वानेवाका । -वेधी(बिन्)-वि निछानेपर द्वरत तीर बसानेबाडा, बुधस बाब बडानेबाडा सपुदरत। सीव्रता-सी शीव्रस्य-५ [सं] शक्षितस्य बस्री विभवा पूर्वी। शीमा−न्दी सि•ोदंती दक्षः इरोबिद−दि [मं]तेत्र तीत्र। पु विष्णुः शिवः विक्रियोक्त करना । क्षीमी(मिन्)-दि [सं] सीप्रकारीः शीमगामीः तुरव बचारथ हरनेवाला । सीब्रीय-वि[मं] तेज धीन। शीक्रय−पु[मं•] छोजना बक्री संगी। शीत-वि [सं] श्रीतका मासरवयुक्ता निहास । पु शोतकात को भगरन पूम माथ तीन अदीनीका दौना है। जाना ठटक, शीवकता। सरवी जुकामा जला द्वपार। येनस बुछ। बहुबारक बुछ। आग्रनपणी मीमका पेडा कपरः वर्षेट, विचयापता । -कटिबंध-प्र मृगंटक कं कत्तरी तथा दक्षिणी अंग्रीके दी करिया विमाग जी मूमप्त रेखाने ६६ है अंस बचर तथा शतने शो मंग्र दक्षिण-से शुरू बोक्ट अवप्रदेशक पेने हैं (क्रीनप्रधान देश रही बरिस्वीमें हैं जहाँ बनेत क्लुमें ब्रुप्ट कम और भग्य प्रमुक्तिम अस्पविक सरही पहती है)। **"क्य-**पु भोराः – इत्−पु दिमदर चंद्रमाः दप्रानि यौनल हावीवानाः शीतन करतेशका । -कपाव-प् प्रया प्रभा मृत्यप्रस बाहीचर भारिका संशाय जी। समन्ते छ-ग्रुने यनमें रातमर भीग रहनेने प्रम्तुत होता है।—काल —पु कारेका मीशिज को अगदन पूरा और मायमें पहता है देवंत और शिक्षित कता अगहन और पूस महोतीमै दश्नेदासी देनेत ऋतु । -कामीब-वि शांतराम-भंदेपीः शीत्रसम्भे होनेशमः। -शित्रम-पु पॅरमा । – कुम – पु वरशेर कनेर । – कुमिका – कुमी -- स्रो शीपको प्रणादुनी मानक जनपता !-- वृत्तिका--भी बरिबारा मामद पीवा जो विमा वीचे वी रैसादे रीतीचे देश होता है (रमधी वर्तिकों भीट जब औषबंदे बायमें भागे हैं)। - कृष्या कृष्युव-१ वद लग्न। −धार-पु॰ भेत ८६व्य साथ दिया प्रमा शोधाता। --गंध-पु थेर भश्म १ -गाध-पु सविवात प्रवर निरोप १-गू-पु ५१मा १ - चेनक-पु वर्गन आईना बीपका - च्छाय-पुर्वन्त्यु विश्वकी छाया भीतक दीती दे।~क्वर−पु बाहा देवर जानेवाला स्वर ज्हाँ, वर्षेया पुरवार, अँतरिया युसार को कुछ रिनोंके बंतरपर भाता दे, भनेरिया बुकार ! ~ईत∽वु श्रीतव बाबु पा बलका शॉरोंके कमओर शोनेपर रुपमा (दर्व सरफा करना): एक रंतरोग (शा॰वे) ।-वंतिका -की भाग बंती ल्ता। ∽दीधिति−पु॰ चंद्रमा। −दूर्वा−स्त्री शीतकालीम दुर्वा दरेत दुर्वा सफर दूव । —शीप्य-पु सफेर बोरा । -श्रवि-पु चंद्रमा । -पंक्र-पु॰ सुरा-सार, रिपरिट । -पद्मा-की प्रवत्त काववंती पौथा। –वर्णी−नौ अर्थपुश्चिताः −पश्चवा−नौ• मृति अंद । -पाकिमी-सी काकोनी नामकी सहस्रीय ओपशि: महासर्मया । --पाकी-सी ग्रंबा, ध्रेयकी: दे 'शिवपाकिनी । -पिच-प बात और दिवाद कृदित क्षेत्रस करक्त द्वारा एक व्यर्गरीय (इसमें सरीरमें चक्से निकल जान दे भीर भरवश्विक पीड़ा और जलन होटी दै), रखपित जुद्दिती । ~पाचि-दि ठडे दानी या किरमोनामा । –पुष्य-पु शिरान कृष्ठ । –पुष्पक-य मदारका पेश धेनैव छरीसा। -पुच्या -पुच्यी-मी अतिरक्ता ।—पृतना—सी÷ यद राकप्रद । —प्रधान वि (वह स्थान) वहाँ शीतका प्राचान्य हो। (वह बरत) क्रिसमें शीरत्यगदा आधिषय प्राधान्य हो । -प्रम-प कपुर । - ब्रिय-पु वर्षेट विचयपता । - चून्य-पु गुनरा कडगुनर । -बसर-म्बे सीववुष्या महासमेगा । ~धालु−पु ६मध्र चंद्रमा। −भीर−सी महिसा। शिवसं बरमेशला !—भीरुक्क=(व दे 'शोवमोद । पु रक दरहका पानः कासी निगुधी । -श्रंत्र(ी-सी रोकाको इर्राप्तगार । -सयुग्य -सरीचि-प्र भेदमाः कपूर । -सूलक-तु वर्धीर, सम्र । वि दशी बह-बाना। -शेड-९ मनेड रेशाविशेष। -शेडी(डिम्)-वि श्रीवमेदमे घरन । - स्वय-प् श्रीपक । - स्क्रिम-पुरु बहुमा: कपुर १ - इस - प्र ईम के क्ये रमभ प्रस्तन मगनिशेष। - यक् (क्) - रक्ति-पुर्वहमा। - रङ्ग-पु इतेत दमक । -स-दि देश समेरे । -वस्क्र-पु गूचरका पेड़ । −बहरम−पु दिसरापड़ा ३ −बहरी− मीश्री ६४ १ -थीये-दि क्रिमदा प्रशास बॅडक कानेशस्य की है यु पात्राणनहमः बाक्या विश्वपापनाः पानावा बनाः शीशी दूर । --वीर्येक-पु बाबरका पेर !-दिश्व-पु मेंबा ममेक छोशामा: दी-र गपडव्या मध्या "मी वृक्ष । -शिवा-मी समी वृक्षः शका-शक-त दर वी। ~सह-पु पीस्_{मासक} देव १ दि शीन गदन बहबेदाना । —सद्दा—सी एक पुण, जीन निपुषार जीनिका, शंकानिका वसनी मना । -रपस-वि को छु-स्ने रहा वा रहक पर्देशनेवामा । व्यक्तिक-वि [वि] देना। पुरशि वानुः रोपदासः अभाग बीरियो व्यक्ति, त्रिवित मनुष्यः विष्णु । शीतमः-वि [में] श्रीतशुरत्यः दशाः भीवते सूद्रः यात हो दिमायसमाह गंतुक मान रहत है सीव र्यानाः नेवा पुष्यमान कामाकमन, प्राथीसम mei munte"i das es uerest Efet itel nicht

भाग है); मासिसुमा आदमी (का॰)। वि जो शिक्षा या नियमके जनुसार हो। साहिक - पु॰ (डि॰) 'सिक्षा - सालमें प्रयोग, शिक्षासान्त्रका समस्त्रार (वि॰ शिक्षा-संबंधी। साह्य-पु॰ (डि॰) पोडिस्ट नेपुण्य, पदेवा।

धाह्य--पु• [सं•] पश्चिरतः नपुण्यः, पञ्चता । धाला-पु [सं•] गोथ जादराकी संवान (रहः) ।

शाला-पु (सण्) नाव सावताका ठावान (रहा) । रामा-पु सि है पुरा पुस्तका वर्गसाका, भागिक साहिरणका पंटितः सामकाद वा वरमावका सकीका महोत करण करीकोंका सरकार। असकमानीकी भार बाठियोस एका । (भे) सक्त-दि सपने समयका सस्य वस्त विदाय।

शास्त्रीकः, श्रीस्तरय-दुः [सं॰] स्रशासार्गः विवतः । शास्त्रिम-दिः [सं॰] सदर संदर्शः ।

साराम−ाव (सुरु) मबूर भववा। ही सुक्द्रसकाम−पु (स] मुस्तिम-व्याग्का सवस वजा वर्मावार्य या वासिक मेठा।

शैत्य~वि [सं∘] सुद्धकाः। सिद्रव~पुर्ति] सुद्धकाः।

रीम रीम्प−पु[मं] रोप्रका तेशी। रीमान−र [स]करानके सनसार कर

श्रीतान-तु [श] कुरानदे अनुसार अवाधीक जिन की यका पहिताबा और फिरिइटोंकी पढ़ाया करता वा पर भारमधी सिवदा करनेकी सुराकी भाषाका अर्थकारकस बाकन न बरमेन्द्र कारण स्थाने निकाला गया और तबसे वह बादमधी संगान मनुष्य वातिको सन्मार्गसे वहकाने-का काम करने कगा इच्छोसः प्रेष्ठ विभागः। वि बह्मानेबालाः नटस्रः हुष्टः वसूद्व खडा करानेबाका । रीतामध्ये धवस्याः विद्यायस्य । −सरत−वि च्या वचा-भारी दृष्ट गुराफाती भावमा । ─का स्ट्राह्-सरधार सहस्रोका समृद् । -की स्मृत-नहुत मेंनी चीजा वह चीज जिसका मिनसिका बद्रत दृश्तक मना बाद: सभी क्या । नकी हुगस्त-दृष्ट करूद करमंबाकी स्था । - व्हा कोर-मदशेके मानेका तार श्री मासुर शुरुनेसे उद्दना रहता ओर ऑक्समें पर माता है। मु - बसरमा-मीप शंत दीना। तर्ग मा व्यवस्थ प्रवृत्ति या ब्रह्मा हूर दीमा । – के काम कारमा – धैनामी में भगामने रू जाना । -(सिरपर) बहुमा या सधार द्दीना-गुरमा बन्ताः ग्ररारन तराविर अपाना दीनाः

शिष्यपना। योतामी=ति शैनानका । श्री शीवाका कामः धरारण पुरुषाः ==लक्कर=थु दे ीवामका कदकर ।

न्दरकत−सी तुक्ष्मा घरारन। कारपन्द्र [ग] ग्रोनकमा सर्वाः

वारव=६ (मं) द्वानकता सद्दाः दीचिकिक=दि (मं) दीलाः भारती । लीकिमा=१० (सं) विकास स्वर्धः स

वीयस्य-पु॰ [मी] शिवितता शुश्तीः बीलायन । सदा-वि [का॰] प्रसमे पागन को आने सुखतुष गी। देनवाना ।

समय-पु (मं] कृपाका सार्थि मात्वकि । सम्य-पु (मं) दिनिक वज्ञक । सरीयक् सेर्यक-पु (मं) सोव्यति ।

सम्पन्ति [त] निमालंदेवी प्रवर्शना पत्थर अमा । स्प्रीर त्युरु पति पद्मादा बना बन्बर वा शिला शैल्य ।

41-E

र्गबराच्याः शिकावताः वाँवाः बंडलेका एक प्रेयाः सावकी संबंधा। — कपी(पिन) – प्रसंदत्ता एक अनुभर। -कटक-थ पहाडकी शक या बसका पार्थ ।~कश्या.↔ कसारी-की गिरिका, पावली, शिव-परनी ।-कर-प पहाचकी कोशी ।-शंगा-की० योवर्धन पर्वतको एक सरी । –र्राध-पु॰ शादर भंदन । –शमाञ्चा–मा एक भीवन इब्य, शिकानस्का। −गुद्द−पु॰ दिमास्त्र। −ज,− जात−प दीलेगा - अस∽प प्रादी नाउमी !-का-की पार्वती, दुर्गा संबद्धी; सम्रपिपको । -जाता-सी० वप्रविष्यकोः काली मिर्थ । -सटी -सी॰ पशावकी भादी । -तनमा -तुद्दिता(तु) -सी॰ पार्वती । =धम्ता (न्यम्)~प शिष्। ~धर~प नीवर्धनपारी हका। −धातत्र−व शिकाबत् । −नंदिनी−की गिरिधाः पर्वती । -निर्वास-पु शिकाशेष । -पति-पु• पदाशीका स्वामी विमवान पर्वत सवीच पर्वत दिमालय। --पश्च-पु निस्त कुश वसका पेड़। --प्रद्मी-त्मी+ पार्वतीः गंगा मिसका चत्रम हिमालम पहाड़ है । -पुष्प- धिकावतः । —प्रतिमा — भी । मस्तरमृदि । - बासा — की निक्ष्यो। -थीज-पुधिकार्थी। -सिचि-स्थ परधरकी चराशने चीहन आदिका भीत्रार, ग्रेमी, शॅकी । -भेद-प पात्राजभेदन कथरफोइ। खी॰ कीरैबा। ~सप्प∽प्र यंगकी बक्सा। ~र्ह्य-प्र गुफा, गक्षर ! - सम्बन्ध दिमानव ! - अस्ता-स्ती पार्वेदी दुगीः गंगा नरी। -राड(क्र)-प हिमानव । -- वदक्का -- की - क्रिनावस्थ्या । - श्रीध --यतातक क्य मिकावाँ । - सिराह--श्र हा -शकर-प पराप्ता करते । -सिवर-प (रंड दारा पर्वतीके भाकांत्र दीनेपर कुछ वर्रत-विचन मादि-समुद्रमें किए गर्वे इक्षीन यह शुष्ट समहदा योत्रक ह्या-९०)। -सचि-स्रो बारी इर्रा -संभव-५ धेरुका विकासन् । -संसन्त-५ ग्रह्मा

-संसद-पु शरुत्र। विश्वजा । -संसूत-पु गरू। -सार-वि शेषके समान जनतः १३ । -सुदा-सी० विदेशाः क्वांतिप्यती । इतकद-पु० [सं] यद गंपदस्य, शैनत गृगुत्र। दिका-यत्।

शासीय-द्र (सं) परीतका पार्ख ।

शकास्त्र—पु. (सं.) किनामपुः ग्रे-व नामक गंधहरूपः। शकास—पु. (सं.) पर्वत-क्षित्रत् । शकार—पु. (सं.) पर्वन निवासी क्रियातः सिकः देवक

दाकार−पु [म] पर्वन निवामी स्थितः सिद्दः वे सुद्र काय शादिकः। धामादि—पु [म] प्रेरीः।

शसाय-पु: [सं] पृथ्याः। शसायास-सा [सं] पृथ्याः। शसाय-पु: [सं] पृथ्याः।

बामास-बु [६०] वद्य शिरादेश। बामासा(सित्त्र)-बु० [तं] नदः समिनेत्राः सर्वद्यः

दानामा-स्रो [सं] पादती । दीनाह-तु [सं] शिजानतु । दानिक-तु० [सं] तिकानतु ।

धन्त्रद्व=तुः [सं] त्रिषात्रतुः। शन्त्रिक=तुः [सं] त्रिषात्रतुः। शस्त्रिकव=तुः [सं] वदः धर्माद्रः जित्रद्वा द्वीतः आदारः

गरिय निरियं शा अमंदी। देना स्मृत अस्ति सन

चॅद्रमाः ताइपीनः टंडड, शेरव शीतलनाः अत्रविशेष ! -चीमी-स्री [हि] यह प्रकारका मसाका कराव-थीनी। - चार्य-पु भोगक वृक्ष । - अस्-पुर क्षमक । -पादी-ली [क्रि] नेंटकी जाटिके यक देखके छिक्केसी निर्मित एक प्रकारको प्रथम और किन्नी चटाई। --प्रद-प्र पंरम । वि श्वेषक पर्देशानेवाका । --बास--प्रशिष्ठ सुमीर्ष । ~बावक-प्रश्नानकी । प्रतिक्रक-प सि निर्मेत क्रमकः मदनकः मदना । शीतरुता-सी॰ [मं] ग्रेग्व ठंडापन, ठंडक ग्रीवरु होनेका याद ग्रम भादिः बहुता । प्रतियताई≉-को॰ वे 'धोननता । द्गीतसस्य-गी॰ सि वे 'चीतकता'। द्मीतना~मी• (र्ध] ण्डः (४१फोरक रीग वो नर्सत और ग्रीप्म क्युओं में भविक दोना है (वह ग्रुवसी बीमारी है। इसे चेवक या बसंतरीय भी कहते हैं)। इस रोगकी मार्थिशास्त्र देवियाँ जो सात है और संग्रंभ बहिनें हैं। धीतको उद्या कुर्नुदिनी कृषा नारागदीतकाः शास्त्रा -क्या-मी शीतका देशेकी पृत्रा । -बाइज-यु गवा। -वधी-न्यो माय-ग्रक्त वद्यी, इस तिकिही मोतनाको पुत्रा होती है। दातिमाहसी-त्ये [मं] भैत्र कृत्या अहमी (दस दिन शीनलाकी पुत्रा दोनों है और नाशी पकाल भारत बाता 🖒 रस दिनकी बस्ता, बसिमीश मा बक्ते हैं)। इरिएकरे~को॰ [सं•] वक्तमें पैदा डीनेवाका व्यक्र पीना धीन्डंमीः चेस्क रीम। श्रीवांग−९ [सं] श्रीव छक्तिशव ! शीलोगी-ली [मं•] बंसपरी। सीतांत्र-प्र [सं] दुवी बास । स्रीतोधः~त्र [मं]चेहमाः **३.५**९ । सीताइक-वि॰ (मं॰) ३८६ ब्वाइक बारेने डिट्रस हका र शीतातप-पु [मं॰] बाहा और गर्मी । - स-पु छाना । सीताइ-द [मं] सन्तिके एक बाने शाहनमें जम श्री कामेका दीय पावदिवा ! शीतामि-पु (सं) दिस्यान् व्यत, विमासम् पर्यतः। शीताबारा-न्ये (सं-) महात्रमंगा। शीताम-५ [नं] न्याम सपूर । श्रीताल-वि [लं•] रे बीवाइस' । क्रीताज्ञ – स (अ॰) क्रोलमे गोनाः ग्रीनार्गं । [नं•] कीवार्त धीनचे शिहवा शीनछे श्रीताम् -नि alant gat ! शीनातमा(शमक्)~५ [मं] बंद्रकांत धरि । शीतिका शीतिमा(मन्)-भी [म] इंटह ! शीलीबाय-पु [बं] दंशायन जीनन्त्या मीछ सुर TICE 1 शीतनर~ि (र्श-) क्या दीतोचम−५ [००] व∉। शीतोच्य-वि [मं] इहा और यरम । श्रीरकार-पु [मं] एरिक्टकमें मंत्रीप्त मी हारा की तथी अध्यक्त अनुद्र ध्वति शतिकान्ये की कार्य की-

सी करनेकी दिवा। शीरथ-वि सिंग्] डेबा बरने बीम्पा कीने वाने बीमा दर्शितु—पु॰ [सं॰] देखके परे रस दारा मस्तर स्थ किर्म्। -गंध-पु॰ सिर्म् शरास्य महस्र स्त बुछ । ~प~वि , पु॰ मबरा। शीन-वि [सं] जना हमा, धनीन्त । स नामा वड़ भूगी। [त्रण] बररी प्रार्शी वर्षमानाका रह वर्ष को देवनागरिके वाकन्य 'छ का काम दरवा है। मुख ~काफ वृदस्त न होना~क्वारम हार, अस्पतित न होता। - के सरक्के-'ब'दा सुब बदारम म दर सकता । श्रीफर−वि [मं] जानंदप्रदः मनोशर । शीफाकिया-औ॰ [सं] शेकारिका । सीमर−७ (सं•ों बोबर, कामो क्यार। वि धेप भागेददावस । शीम्ब−७ [सं] हिसारैल ! श्रीर-पु (र्त•} अवस्ता (श्रा) हुन, दोर । ~हिरद~ की॰ एक रेवड दश । -सीर-रि वे 'श्रीरम्पर'। ~क्रवार-वि ट्वरीलः (वघा)। ~शर्मे~वि॰ वोत गरम कुनकुना । -निर्देश-को॰ घोर । -मार्स-ह भी देखर पडायी हुई समीधे रोडी मिसे बडाने बमब इबका धीश हेते हैं। -(१) भारत-५० मॉक रूप। वि॰ इकास यायक (का)। –शुर्ग-पु वसकारा। -(ते)शकर-इ पूप और क्यारा देव रेशमी बनाग (ना) इय-बोबीको तरह फ्रस्स्ट प्रनामित मानेशामी चीने प्रस्तर अविद्यय रमेह रक्षनेत्रके (मिय-प्रेमी)। श॰ −० हो जाना-पुत्त मिठ जाना। श्रांतश्य स्मेर् क्षामा । इरिरों-४० [का] चाधनी कियाया दियी भीतको धीर छानपर मन्तुन किया हुआ नेव (शहासका ग्रीसी) ! शीश-९० है होरों । शीराज्ञ-९ (का) रेटामका एक प्रसिद्ध मगद र शीराज्ञा~त• [का] किशायको ऋजनंतीके नंद जी तुरहेके बीनों कोर लगा दिवे वाले हैं। प्रश्य और प्रशीम वी बाबेशको क्षितारी (बा॰) प्रशंध श्रेममा । 🗝 इ-शि॰ (क्लक) विनयी निवारी विन्तरेश वी गुरी को मु -बैंचमा-दिमारद अबोदी तिनाई होता, दिएरी हुरे बीवेंका रवदा शंशक्षित दिया जामा । -विकरमान विक्रितित हो सामा क्षिप माना । क्षीराज्ञी-दि॰ (का॰) धौरावदा । ५ धौरावस रहे वान्या स्वत्राह्य वह थेर । क्षीरी-दि (बार) गोटा मपुरा धारा जिन् । सी धरकारको जैनमी । -कत्यास -प्रधान-नि मंत्र वाची तुर्द साचा शेक्रनेशका। -वपान-ति स्पूर वाची (-वयाती-स्वी अपुरमाप्य मोहा देशना ! शीरी(रिक)-तु [1] शरियमे । शोशियी-भी [बा] विश्वासा दिश्वी (बराभा, दिला)? बारिय-वि [मं] बुम्बन्यवा इत्राप्त सरानावा मदा हराः बुद्दा, निवदेनिवर्ष बुक्ता दिहाराला हुना विद्यान विदेश शुन्द । प्र व वंश्वरण वर्गनेतृतः। न्याय-वि

भीर वागीमें एकता न हो। सर्वेक्रियो । संबी-सी॰ [सं•] दिली कामके करमेका हंग, सरीका. रीति पश्चतिः साहित्य कुळा आधिकी रचनाः जान म्मक्ति रोतिः इनको रचनाः कविष्यक्तिका कीशकः सदाबार, सम्बरिकः परवरकी अधिः काठिम्ब । -कार--म साहित्य कका जातिको मिनियत सावर्गक राजीका निमाप करमेवाका व्यक्ति ।

सेट्रप−प [रं•] मदः अभिनेताः नर्तदः ताक्रपारदः संगीतमंडकोका प्रवासः गंववीका मेताः वृत्ते, धैतानः

वैक्का पेर ।

दीखपिक-पु र [सं] मामिनव हारा जीवनमिर्वाह करने माचा ध्यक्ति, सर ।

शील विकी नहीं [एं॰] श्रेष्ट्य बाविकी की श्रील्यवाली। सरी ।

दी**र्जेड** - च (सं०) दिमास्त्र । - चा-सी० शंपा । -प्रहिता(त) -सता-सी पार्वतीः गंगा। -स्व⊷

द्व मुश्रम् ।

शस्त्रेय−वि (सं•) श्रीक संबंधीः श्रीकर्म करपना पवरीकाः पहान सरम जनमः धरधरक समान कठिल । य शीसन मामक यंत्रहरूका शिकाजनाः शाकपर्याः शेवन, सेवा नमद्र। सिंहः महस्र । सकेपक-द (सं) रोधेव।

प्रीसमी−स्रो [ti] पार्वता ।

शंकीञ्जवा-की • [सं] ग्रह प्रवादमेशी ।

[संव] शिका-संत्रश्रीः पनरीकाः पावर-सा

क्या । य क्यापन कठीरता । शीय-वि० [मं•] शिका का शिवते संबंध राजीवाका । शिव-संबंधी संबद्धार जन वर्शनका अनुवासी। श्चिरोपासकः शिव मक्ताः विष्टु भगेके तील प्रमुखः लेश दानों-देणान सेन धारत-मेस तक लंगनाम (श्तम शिवकी सर देववालीमें प्रयान माना बाता है और सृष्टिकर्गा पालक और संदारकका स्थितार कर वनकी पूजा की बाती है। बूजा छिए-क्रिक्मी दोती है। धर समावर निर्देष शरीरमें भाग और गन्मे बहाएकी माना बारम बरन है। सेवारा शिवतुराणः कम्याणः बहुद मामक पीवा। बाह्यप्रतासः बाह्याः माकार मा पुत्राका रक्ष मेर । -यज - इ. देकदा है। ! -शदिसका-श्री किविनी। रीयम-प् [तं] प्रवाहा छेवार ।

रीपन्स्सी-सी॰ (ते) मरी सरिता।

र्शवाल-५ [मंग] सेवार् !

बीरब-पुर [मं] कुलके चार बोहोमेरे एका पीता पांत्रपे की मेमान। एक पूजर । दि० शिव-वंदेशी ।

शीव्या~मी [मं] राजा हरिश्रेदकी क्षणी ! शीराय~व [गं+] दिहाकी अवस्था वर्णका शिहा वृत्ति ।

रि ग्रिश्चनंती। रांशिर-दि [तं] फिदिर क्यु-नंश्वी शिव्ह क्युने

बररक । हु देशाम बरहा शाली देरीवा नामक विशिधा ववाय पंचद ।

शामुमाग-रि॰ [तं] राजा शिह्यमानदे नंशन संबद्ध

पा बसमें बत्पन्न ।

शोक-प्र• सि] वह वस्त अथवा प्रिय व्यक्ति(श्व-वांचवोके वियोग कासंसे मलमें बार-बार कारीरान्द न्यशः भगवीश (साहित्यशासमें श्रीड दस्य स्था रवायी मात्र 🖒। -कर्षित-वि॰ श्रीकी मानुत्र।

-बारक-वि योगसावत रोश देनेशला। -ध्र-नाश-प्र• नशीवका पेड । - माशन-वि धोद वर करमेगाला । -परायण-वि धोवसे प्रशा दीरवि मृत । -परिष्युत-वि॰ द्वांकाविष्त । -विदय-विद्याल-दि० शोकाकृष्ट । -संतप्त-दि वस्ते का बना, चोक गेरित । -सचक-रि॰ धोरधे दरग

वैनेनका, शोक-मदाद्यक्ष । -श्यान-प्रशासका कारा।

च्डर-वि यीक्षवर्ता । प्र॰ एक गाविक संस्था नाय । ~कारी~सी० वसवर्षरका ।

सोकाकस-वि+ (रां+) शोदने निवन, म्वादन । क्षीकातर-वि वि वि श्राह्म भाषामेशका श्रीरहे रिश्रक ।

सोकायमीत्-५ [मं•] धोदका निरारण i घोकासिश्रम-नि [सं] सीमने परत पहिन वनते

बरबवास । शोकारि-१ (र्स॰) करन क्ल । शोकात-विर [ti] शोक्के कारण शानशान समा इक्क

क्षोक्षके कारण जिल्लाहे जनस्या कानगिकन्दी यथी ही र शोकाकिय-वि (संग्) घोडवरन शोक्का मानंद विः पर शा वका दो ।

शोकावेग-प्र [नंग] नमहा शह, बार-नार छोडधे

तीय मनुष्ठिका दीना । श्रोकी-छो• सि ी शदिः रवनी । श्रीकी(कियू)-वि [शंश्र] श्रीकरूचे रंथीगमने भरा

दभा मर्खन वदान । वीकोपडल∽दि लिंी समझा सारा।

कीरा-दि कि] दीका चेंचना महताहा तक नहरी

धोर्गी-मो० विवर्षः चंपसमाः मरगरावा (रस्ध)

धाररायल । होत्य-त सि विनाः श्रीका दृश्य पीता ।

शीचम-प्र [सं] शोष प्रशोदी दिया। रंनीगम विगा शोधनीय-रि [गुं॰] भिरब भितमीव शोधना विरे देशहर पोश रंग थी, यम रंग बारने सायब !

शोबि(स) – श्री [एं] श्रीत प्रवासदायाणी। शोधिप्येश-त [र] अधिः विषद् श्वा

शोध्य-वि ति विशेषनीयः वित्तीयः स्वर्भयः शोदीयें-प [त] बारवा प्रश्नार्थ पर्रिप्रम र शीद-वि [मं] मुर्था तीय पुर बन्माता पूर्वा पटी

आवनी अहणे । मु जुर्ध व्यक्ति सम्बद्धाना अपनी । शीव-दि [तं] कामा कार्यवापुता देशाना । इ कम रंगा माबिता सामेश परित रच्य बहा मितूरा शंतन गरा कांग्रा कांन हैका रूप प्रश्नाता दोलना

निषया के दिसारमा जीम मह की सारवामारी विश्ववत भरताके पत्त संगाम विकादी एक मनुद्रता नाम अप हुप्र प्रारोप्ताका । — द्रंत- वि किसके बाँत थिए यथे हों। — एक- पुनीस । — काला-की र॰ प्रीप्ते साका । — एक- पुन करिकार कुप किनिवारिक पेने परिकालिक पकानी लोगा नोगा। — पूर्ण-पु- कुम्ब काला हुमा कहा। नीमका येव !— पाल-पु॰ यम (पुरानों में किया है कि वसकी दिमालाके शामस कमके पर इस हो से येथे)। — पुणिस्तालाक शामस कमके पर स्वासा-की प्रदिन्दर्भी, पिठनमा। — बूँच-पु दिव बाना तरम्ब कुरहोक। स्रिजेता-की , हार्लिख-पु- (सं॰) दीर्ग दोनका साव वा पर्न।

शीर्जिकिन्यु [सं] बयः शीर्जिक्ष शीर्तिन्स्यो [सं] नश्नम्बर करमेक्ये किया। शीर्तिन्दि [सं] शनि करनेवस्था दिसाकारी जगली।

सापि चु [सं] मिरा सरहात साथा कराडा फिटी बरहुका सिरा, परवे करते हिस्सा क्रूप्यापुक एक बासा पर पर्यन ! – चाती (तिज्) – वि (सर कारतवाला ! पु बकार ! – चाते - च्योदन – पु सिरकारने थे किया

मংगक्रभोगन। –च्छेदिक –च्छद्य−वि वस्य दालने

बोम्ब । - ध्राज-पु शिरमान । - वड - वड क-पु

शिरमें चौनमेश करका पगकी साका मार्कि। — एक्स रहाण — पु हिस्साण। — सर्ति म — पु असियुक बा स्वाकित दोक्के निर्देश दिख होनेस्स स्वीवती प्रकारित वार्ट हारा टक मोर्सन्देश स्वीद्धि बेमा। — स्वितु — पु सिक्स पुनमें कस्ती राजान, मोरिकानिक। — सेयूना — स्वया। — सो — सु सिक्स मार्किता । — स्वयानिय — स्थान — पु माना (दिर, प्रसेख राजा। — स्थानिय

वि सूर्यम्य, सर्वोद्य सवात अप । प्रतिबेह-यु [न] दिस्त सल्लकः सिराः सिरकी रक्षा करनेवाले वरणु (असे-शिरस्याण स्वेशका वर्ष आशि)ः सिरकी बहुँ शिरोरियः निर्मय स्त्रेतमाः वनशै दीवी सामा कारि सिरप्र वेनेकी वरणः विश्लेष स्वेणनेकी सामा

दिमी निर्देष प्रव आदिह विद्यवदा परिचायक शब्द स रसपूर जो स्न(निरंथ अब आदि)के कदर रखा जाना है हिस्सा साहु प्रदेश स्थितक।

वीर्षिण्य-तु [म] शिरस्ताचा साङ सुङ्ग् मिरहे शकः धनशे साका आदि सिरमै वीचनेको वस्तु गिरको भीरका दिरमा । दि नेत्र ।

। इत्याप्त कड़ा द्वीपीइय-पु [म] मिश्रम सिंह कम्या नुता पृथिड पुभ मीनका दिवा नया लाग : द्वीरम-पु [म] विदिन्न पाण्यसम्बद्धा समझी बाटी वर्ति

सींग्र-पु [म] चाँत्म धान्यमना सनकी वादी वृत्ति ।
१६वमा सर्वति द्वाद्य विश्वित सरक्षान्य रागदेव
१६वेनमा, तरदश स्वदर्गाः संभागी सहन्ति हुरावनः
अवगरः छारते । ६ स्ट्रुपः, बानुसा स्वभाग्यावा
(मधान्त्रे) । न्यामान्यु सर्द्रशिक्षा स्वगान् चार्गाः
(स्वि) - ति सीन चार्या बर्द्यशान्य हु द्विव ।
- चैचना-की हिमोद कायुग्ये शिर्यो स्वायः
स्वारा - चर्चिन-दि दुर्पण । चृद्धन्ति स्वायानीय
श्वान्य स्वारा (ख्रान्द्रीम) - व्यवना-ने

सुरीवत होना, मृत्ताका व्यवहार बरना। - निमामा-दिसीते हारा वरना व्यति होनेयर मी पूर्वध्य मीठि दी वर्षके साथ कार्याच्यके व्यवहार हरना; सरस्वारको न छोडना। - मर बाना-स्कीप सङ्गाद, सर्द्वाप व्यतिक किसी व्यक्तित निकड माना पुष्ठ होना। वेसुरीवत होना। - इस्तना-सुरीवत न छाडना सर्व्यव हार रसना करना।

शीकक-पु [मं] कर्णमूल । • शीकम-पु [मं] बन्यामः विश्वमाः प्रवर्तनः भारण करना प्रश्न करना । स्तीकवाम्(बन्)-वि [मं] अवग्र तील यो बाबरण-वामः, तुर्वील वीक्रवलमः।

सीखित-वि [सं] अभ्यस्तः गरम किया हुमा। रहाः युक्तः वरितः विभिन्नः यु अभ्यासः। शीखी (किम्)-वि [सं] शोक्तान् सरावारीः

अध्यस्य । शोबस-पु॰ [मं॰] सैन्या सैनाक, संबार । शोबा (बन्)-पु [मं॰] अप्रगर ।

क्षीशा - चुं सिर । - कूल - चुं यक ग्रिशाम्यन । स्वीता - चुं ग्रीमा का बैश्वर समासने व्यवस्त कर । - म्यू बिल- चुं कीसे त्रीमा मात्रहुक बरानी टेसस टूट बानेशामा दिला । - मुद्दाहुत - चुं देतवही। - सार-चुं क्षीरिक्ष की बेनानिशामा । - माहरू - चुं शह कारा या ममन विजये १९ सफ् कीस वह हो । - क्या

कुचा-पु वीराकामा हुमा कुचा। बाबना आध्यो। वीराम-पु॰ पद पेड़ जिल्ही कद्दा येत्र कुची साहि बाराम-पु॰ पद पेड़ जिल्ही कद्दा येत्र कुची साहि बनामेडे बाम मानी है सिद्याना।

शीसा-पु (या) बाँवा आरंगा; बाँवां सुरारी नोपल । -आसाल-पु राधनीका साम ममानः सार-कान्य । -बाह्य-पु श्रीक्षको विशेष अनीपर रगकर नावतेवानाः वाजीपर । -बाह्य-दि अति तुरुप्तर ।

सु -(रा)में उतारबा-भृत प्रदश्च घोधे-बेननमें ठनार संना। नग्नमें दर बना। सीर्वा-न्या ग्रीनांस्थ शस्त्र जिसमें दवा बार्विः

सीर्सा−मी शीर्यका शास विमने देशा आहे रही कर्षा

शीस-डु [ब] जाश्मका तीमरा ४श क्रिमे शुमनमान अपना पयश्र मानड ६ । शुम-पुरु [में] बरह्या अपनानक हुए अपनका देह-

शुक्त क्यावस हुँह साथीय सारतवा एक बाद्धाः राजवेत्। (रत्त बंदामें पुत्रमित्र नामक मन्त्रिय मेनावति द्वारा स्टे अपने वीवत्रते मार्ववेदास राजता मत्यवर रवदे तिहासन पर बेश तथा सुरस्तासकी रवापना की।

धुंगा-ची॰ मिं] रक्षी वृत्त पदिक्य केत धर्म के नरीन क्तुरियोद्य रक्षड दश दृष्टमा ध्रम महिदा सूद, दृष्ट -कर्म (मृ)-पु० पुनरत मृद्धोर । धुंगी (मिम्)-पु (मृ] प्राप्त स्टस्प्र ।

श्चीर्ति सिन्दे }=द्व (स.) द्वा स्थान स्टब्स्ट सिंद्र । श्चीर्ति सुन्दि=स्थी (सं=) शुभ्यार्थक, स्टब्स्ट सिंद्र । साह्य-द्व (स.) क्षान सावीद राष्ट्रस्था स्टब्स्ट्रिय स्टब्स्ट्रिय

वाना व राजा वार्यक्षी गुंब र न्याह-मु भूगा। बुवक-मु वि] एराव बगरनामा ६ रहा स्वमरी

रक्त सरेय ! - ब्रिंग्टी - की करवड़ा इंटड़िनी ! -पद्म-प रक्त पनर्तवा ।--पद्म-पद्म-काल क्षमक, रक्ष पन्न । −पुष्पक्र−प् कोक्शिएका पेड़ । वि स्राह्म कुक्से सुक्षः । – पुष्पी – स्तौ सिंदरपुष्पौ । – सङ्ग – पु सोन मद । -सणि -रक्ष-५० एकश्य मणि, ठाक मानिक। -संभव-पु॰ विष्यक्षीमृतः। स्रोणठ~प• सिंो शोबाद बस्र । भोगाँच-पु [सं] एक दरहका नारक को प्रकरके समय दिखाई देता है। सोना-ची॰ [सं] स्रोत मदीः काक रंगकी वस्ताः स्वोताक ब्रह्म । सीमात्र-पु [मं] श्रीमा, शुक्तास, श्वीनाश्च कृत्र । शीपाइमा(इसन्)-पु [चं] दे 'होनोपड'। सोपित-वि [ti] कान रक्त वर्नवाका। पु॰ रक्त न्त सहः बंद्धमा बाफरान । **∸र्थहम**−द् पंतम । -प~दि इभिर पीनेशका । -पुर-षु वामा-धरकी राजधानी। -मेडी(डिल्)-वि॰ जिसे मूलके साव रस्त भावा हो। -व्यक्तर-स्रो॰ मध्यार्दरा । शोणितार्श-पु[सं] क्ल्ब्ब्बा व्यक्र रोग। शोजिताद्वय−५ [र्थ•] श्रृंकुमः देशर, काफरान । शोणितोपस−पु•[मं०] मादिश्य मातिक डारू ! सानिमा(मन्)-नो • [सं] काडिमा। धीनी-सी [सं] आब कमकडे रंगके समान रंगवाडी की (शीकोपक−प [सं] दे 'सोनितोपक'। सोम-५ सिं स्वतः बाट विश्व क्टबेंसे किनो यक **के कृपित होतेका हारीरके दिली अवववके सम्बद्धा रीग ।** −भ−दि॰ दे शोधवित । −भी−सी मददपुरनाः छाक्रपथी । —जिल्—प्र मिलाबी, मस्ता-क्दावि सोभ इर करनेव×रा। − जिल्ला−पुपननैवा। ─रोग-प दाव-वॉद भादिमें त्वन दोनेका रील। ~ **ह**न्-प्र• मरलावद निकार्ताः वि दे 'द्योषप्र'। गोयक-९ (सं] द्योषा मरणसंग । भोवारि-द [र्म•] गरहपुरना । भोदम्य-वि [मं] शुरू इसने बीग्य। शीब-दु [मं] शुद्धि, स्टकार। वनतको सदी शुद

सागर । -- गिरि-पु • मगवदा पद पशक । -- सिंहिका-

भावपान [म] पुद्र करन बाग्य ।

करनेये किया संस्कार, पुद्रामा बया करना (येमे—
करनेये किया संस्कार, पुद्रामा बया करना (येमे—
करनेये क्यारेश बारिश, प्रतिकार मीय असुसंबान ।
—पत्र—पु गुडिक्य ।

पोध्य—पु शुडिक्य ।

पीध्य—पु शुडिक्य ।

पिश्य करनेवाला व्यक्तिय गोश, अन्तेवाला व्यक्तिय ।

किया यानेसे बांसून निक्क वाय (१००)। एक सरका

विशे स्ट्रानेसे बांसून निक्क वाय (१००)। एक सरका

पिश्य करनेवाला ।

पोध्यन—वि [से] गुडिक्याक, माम करनेवा करनेवे किया

परिवास मानेत करने गाम करनेवा करनेवा कर्यों

थै निया प्रतिजोश करना सीयोग करनेवा वार्षे।

प्रतिनिरंगिकरण वार्यों अन्त्यस्थ्य विश्वीन किया

उसै शुद्ध करनेकी किया (मा≗वे•)। किसी शुम कार्यके किए विवित-अविवित्त मास- दिन आविके विचार करमेकी क्रिया (क्वो॰); पाप, अपराच आरिऐ शक्ति, प्राविक्ता भावरण, चरित्र-शक्ति किए एंड देनेका कार्यः शरीर प्राविके किए निरेपना सफाई मारिके किए नरहांगीका इटाना जपनयना भारतमें से भायक्की बटाना (ग): र्न्ड्य मह, विद्याः क्सीसः निषदः मीव । घोधन**क−**प सि.ी प्राचीन-काठीन *देश-स*रामालकरा एक अधिकारी । शीधमा-स॰ कि॰ शब करना। गलतको सही करना। साफ करना, परिष्कार करना। स्रोत करमा: पातकी भीववरूपमें प्रवोगके किए शुद्ध करना (बा•वे•); किसी प्राम कार्यके किए मास, तिथि मारिका विचार करना (बबी)। द्रोचमी-मी॰ (रं॰) मार्वती हाह**ः तालक्त्वीः मोकी**। ~बी**ठ**−९ बमावगोटा। शोधनीय-वि॰ [सं] श्रीवनहे बीम्य शोध्य । शोधवाना-स कि शोबदा कार्य कराना। साम कराना। शैक कराना। धीव कराना। शोधार् -प्र धोमा चाँदी सुरू दूरनेवाका व्यक्ति। शोधित-दि॰ [एं॰] शुरू दिया हुना, शुरुहेरूता सरी किया हुआ सुपारा हुआ। मार्थित साफ दिया हुआ। चकावा हजाः अम्बेबितः अपनीतः। शोर्थया - प्र शोषक, शुरू करनेवाला । शोध्य-दि॰ [सं] शोधनीय । पु अपनेपर क्यादे गर्दे अधियोगके विषयमें सफाई देनेदाका व्यक्ति, अधियक्त । शोफ-द [र्थ•] शोध प्**तनः अर्थरः। −धनी**-तौ द्यासपर्याः एक पुनर्मना कारु गदहपूरमा । - जिलू -हन-पु॰ भतातक कुछ भिकाबाँका पेड़ । -मादान-पु॰ बीड क्या रक पुनर्मेश । दिश गुप्तम पुर करनेवाला । -क्वारी(रिच्)-च वनवर्षरोः सोकारि-त॰ [सं] शस्त्रदर ! शोफिल− वि.सि. विसे द्वन हो। शोधना-प [स•] बाटू या इंद्रबाटका बामा शास्त्री सदार्देका काम करनर शामीमरी। एक भीगा। -।।र-बाज्र-वि धोषश करनेशका, शाबीगर। एकिया । शीबा-प [ब॰] इदश, रिममा शासा दिमान्ध श्रासा । शाम-वि [र्न•] संदर दीतिमान् । तु कांति (सुमानमें): एक देववर्षः व श्रीमा । -शृत्र्-विश सुरद बनानेवासा । प यस मेरुकार । शीमक-वि [मं॰] सुररा क्षांनियान्। शोमन-वि॰ [मं] शीतिमान्। सुंदर मनीदरः मंगन,

शुमा सम्बद्ध । पु॰ दीति। मीरदी शुमा पम कमस महा विभवन कादि सर्सास कोनीमिने पाँचा सीना

शोधनक-प्रविदेशी होमांबन पूर्व शहबनका देहत

शामीजन-९ [मं] शोजनह पुर सहितनहा देश ।

शोधना-की [मैं] दरिया दक्षी। तीरीयना संनद

क्ती। • व दि॰ महना सीमा देना धर्मनप्रदेशा।

रिया मिरिया मामक याविक श्रेर ।

ह्र्या-मा [मं॰] इस्तिह्यं वृत्तः शंविकी सूतम । इंडि (डिन्)-पु॰ [म] श्रीहिक, मध वेशमेवाला। हाभी । -(हि)सृपिका-सी॰ छनुँदर । द्धीम-पु (र्थ) एक बासन को मनेप्रीका पुत्र और प्रकार का भीत था (तद दुर्मा द्वारा मारा नवा था)। ~पुरी ~ली. यह सगुरु आधुनिक लेककपुर I र्षोद्यमार−पु [मं•] ह्रेन कायड बलबंदा । शुकर~तु [म] धाना तुमित होग सलोका (⊸दार-वि जिमे कामका तथ बाला हो समीजदार । श्रक-पु॰ [मं] सुन्या तीताः वस, पोशावः वस्त्रोकप रव सहा । -तंबी-लां हे 'शुक्रविद्वा'। -देव-इ भागा है कि इन्होंने 'भागवत प्रशान'के बच्छे महाराज परीक्षित्को जनको सुरुक्षे पूर्व प्रजीवदेश दिवा गा व परमधामा भीर विरक्त थ। ये रंगा दे शांवरेने भी नशी मधाबित हुए और बने प्रशेश दिवा । - हाम-५० दे इत्यन्तः । ∽द्यक्तिका स्थायं~पु॰ लोगवंग वॅनमेका रीति (प्यी प्रेंग्रामेनी कामा क्यों वित्यी अविद्या वया कर क्लारे वाल बारा राव देते हैं। सुम्मा (वा प्यो) बारेंद्रे कोमने बनिसीशर बैडना है और बगध की कामेंथे हैंन जात है। ब्रोधवा देसुवैधी वभी क्रिया है व्यवप्रदेश यह बाय बसा) । -मामा(सब्)-५० वेश वृश्वविद्याः । -नाराम-यु बहुध्य प्यत्रेशका वीचा । -मास-पु रवीनाच मुद्दा बालबहुद्धी 'बहाईवरी में बाले तादाबीह के मंत्रीका साथ । जि. सीत्रकी धीच जैमी ल कश्या । --वासिका-को समोदी केरकी ही यन्त । -पुरक्ष-इ० तुमारो पूँछा संबद्ध । – बुच्छक्क-तु० श्रांबिगर्न । – पुष्य -त श्रीदेश दिर्दात हम । -विय-त विद्यात देश !

न्यातिनी नगसिनी:-मधनी -मर्दिना -इनसी-स्री दुर्ता। -निर्मुम-दु शुन और निगृत। -पुर-बनका होर। गिरम्बाका हिरमें बॉबनेदी वर्गा सकत भाविः भ्यास सुनिके प्रथ इत्यदेश शिरीय वृक्षः प्रविषयी सीमद बुद्धा क्षेत्रा व्यक्त बीरालिक अस्य । ~कर्मो~स्पे एक पीपेका नाम । ~कीड~पु **क**रे रगवाका यद करिया को वर्ष और अरत ऋतुओं में भविक दिखाई पश्चा है। -शूद-पु वी रोमेंके बीच सरकारी हर्र माना । -चप्रद्-पुं प्रशिक्षणे सागका परः तेमपत्ताः । –जिहाः –सी । हानाग्रेग्रीशा श्रीवाः । –तदः – पु सिरोसका पेक्री −मुँक्र-पु सुमोको भोषा बार्वीकी कुष्पर्देशयम नेदरबागुके पुत्र-शुरीके अत्रमें वृत्तीयर असम बरही रर्गको अध्यक्ष प्रयाची तथा व्यासके सहवागरी इसका जरम हुमा इसीनिक्ष वे 'शुद्ध क्रवलाये। क्रव

पुक्रवेशुः एक रणगानः। र्खुडा-सी॰ (र्ध॰) दाथी की स्रेश मंदिरा शुरात संवपात गृष्टा नेश्वाः कुरलीः कुमसतानः। -श्रीह-पु॰ हानीकी म्ब । -पाम-पुभवशासा । द्यांडार-पु• [मं] शुंतकः मय दाभीकी खुँका साठ साक का दाशी ! **शुकाल−पु॰** [सं] काथी।

इरेडिका∼मी॰ (शं॰) छल्ही समेका सीमा एंशी

पर्दिश मंत्रिकी स्वतः 🖹 'शुद्धा'।

शुडा-शुक

बंद यह शुरुशा समादरा एका क्रिब (बह इन्हें प्रदेश भीग्य दिन बाना आना है)। शुक्रानार्वे भारत रूपक सामा निषद कुछा एक नेप्ररोप पूर्वी शुद्ध भीमा बद्ध बीत (वर्षी)। प्रवत्न तीन व्यविदर्शन भूत अवा रका व्यक्तिका दश्र प्रशासी है अन्दादक पुषा भवधीनावमा संग्यक्षेत्र सीमा र वि । समक्षेत्रार प्रवेग जनप्रताहित्यः। - वर्षः - प्रभागः (१मीने वर्षे वर्षे री। वि बोर्वश्रद्ध ।-क्रायू-मु समाह स्वाप्त्य -3-3 Est en \$444 (3)1-4-2 171 -माय-त बारी रीवरे बाद पूरे मानवा । -मसह-3 बोर्वपेचना (बद रीन माना दश है) १ -

शक्तिक-९ (सं] वह मेत्रधार । शुक्तिका न्यो [मं] नोप सुक्रिया, पुरुषा गाय । व्यक्तवज्ञव∽ष्ट [में] धोती ३ शुक्रा−तु [सं•] बीर्ड बीध रंशा लाह सरका वन शक्ति

हो। शिरका। बाडाई। शुरुवरिधेषा सञ्जापना पनिषका एड तुषा कठीए राज्य । शका-मो [सं] प्रक्रिका शकि-मी (वं] मीर्ग शुप्रते मानक मतबोरः हुद्रते गायक बक्रवंतका कहा सील (नैय श्लका अस्म भनावर कोरवरे कार्को भी कार्त है)। संसा संगतमा भीता राँउ ताती गंपहम्य क्यामगढा मधावर्ग बीवेफी छाठी(शरपन) बर वालीको भीरी। एक नेमरीया नई रीय पराधीरा दी क्ष्मं का चार शीनेके बराबर बढ़ मील ! - क्या -रिन शीप भेरी काजीवाचा । मु एक मलारेश्य । - श्यमति-विक क्तिकृत्त संभा। --भ-पुरः मार्थः। --पन्न --वर्णः-प्र राजवर्ष कृष एक्सिमा वेड । -पुरा-त -वेमी-सी॰ सीवना शील, सुपुरी १-बीज -समिन्<u>य</u> श्रीपी । -वध्-मी॰ सोके सोवेड मोगर रहनेवला दोवा? -श्यमं-९ मोत्तावरद्य पच्ना ।

क्रमरधः। ~प्रिया~मी वेद् असुम। -प्रसः पुः मधारका पेड़, वर्ष बुद्धा लेमल ! -यह -पुर रहा र विशेष। - सम्कम-४ शहिम भनार। - सक्(प्) ─विश् शोवेकोन्श श्रीकोशला । ─वाइ ─बाइव-५ कामरेव विसका बाहम शुद्ध माना सदा है। -सिवा;-सिमी-सी धेर्रोप क्रियेक्ट्र। क्रक्रप्या⊸सी॰ सि ी समाठींबीका वीचा। शुकादम-तु [सं] दान्मि धनार । शुकामना-सी० [सं०] दे 'सुराज्या । शुक्रायन-त (संग्रीतहा नर्दन । हरकी-जी॰ (सं॰) तस्यो । क्षकेष्ट-प्र• वि विशिष्ठका पेष । अपुकीवर~पु[र्लण] सम्पोशपत्र । श्राक्रीह-पुरुष्टा विकास अञ्चल (सरामुद्दीर)। शुक्तप्रप∽पु (are] शाहो करमान राजवा। वह निर्मा भाषा वा बहे संभिद्धारी हारा होतं अस्तिहारीक्षे यो वर्त वह कप्ता को अक्तममें बॉवट है। द्राव्य*ेब* [र्ग] सुरक्षा भगवदारा प्रतिका संग्रुका सन् ध्यक्षा निष्ट्रस कठोरा निर्मेत । हु॰ सामा कॉबिर क्रीरी बह बरत को कुछ दिस रही रहनेडे बारण राही हो दर्प

1111

शोमा –शीन्द जोभा-सी [सं] प्रसद्ध करिंत, चमक। (शारीरिक तथा प्राकृतिक) सीर्व्य स्तरि काम्बन्त इस नवीप्रैंस एकः एक साम्यालंकार (यह अलंकार तन होता है जन कान्य गुपकी बढि स बर किसी मन्य गुपके भर्गम हो जाता रे)। एठ वर्णक्या दरिहा, इस्तोः गीरोचना । -कर-वि सींदर्प सरपद धरनेवाका । ~धर~वि शोधा वारण बरमेशना, सुंदर । -श्चम्ध -श्वीन-वि॰ समुंदर, भीत्रपरदित । द्योभाकर-प्र• [मं] शार्थ समृद्ध सम्दंत सुंदर व्यक्ति। वि वै 'क्षोमा'र्म । शोभाम्यित-नि॰ [स॰] सार्वपूर्ण, छवियव । शोमामय-वि [ग्रै॰] श्रीत्रपेशके। शोमायमान-वि [मं•] से देशमेंमें सुंदर सगता हो। प्रोभित−वि सि ो ग्रोमायकः श्रीमानिकः सजिताः बिराजमान । मोमिनी∽विसी [सं] शोबादैनेवाली संदरी । शोमी(मिन्)-वि [सं॰] शोतिमान् कारियामा छोमा देतेगाना, संदर् । शोर-प्र॰ प्रा] रहा क्षेत्राहम (दरना यवना-मचाना)। चून, प्रसिद्धिः शारी नगदः कसर चन्नीना कम्मार । दि• सारीऽतरा अञ्चल । ⇔ गुम्ब−प्र इक्षा । --बस्त−वि अभागा। --बह्नी-स्री दुर्वान्द वद मधीरी। -(१)क्रमासत-प्रक्रमका क्रोकाहरू। -(री) सर-५ को ठाइन, वंगा इयामा । मोरमा भोरवा−५ [फा] तस्त्रारी, बॉल आदिका रम्राः। −(वे)दार−नि रहेरारः। मोरा-प्र क्षा पद धार वो नाक्ष्य नगमे नामी इंडा करने आर्थि बागमें जाता है। -प्रस्त-ति श(र, सरक्या करावा । -प्रकृती-को क(दना सन शक्त । -(१)की प्रतासी-अति शैरवर्ग पुरुणे । सुरु -(१) में झामना-पानीको सराबोधी नमक और धीरा मिन इर वानीय रहाकर दवा करना । शोरिश-सी [का] शोर-तुम कीमाइन्य बन्द्रव रि2ना मसकीत्रका ३ शीमा - पु [स] भागनी तरहः श्रीवः। शोली-मा निर्शेषनदिहा। शोधा-पु॰ [था] दीमा इतका रेजा सीनेका प्रतः पार्मा बर्ग सप्रतिहै भीचे सगावा जा नत्ता निहा गारधी-भरबीके मा स सारिके शिरेश निकाण दर्व बीद वा दति। (मा) समीयी दान हानदा बहानेदानी मान । मुण् -छीइना-भनाती या अपना शरा वरने बाधी शत बहमा । क्षीप-द [सं] हाप्यमा नगानमा नगनेवा भागना क्रिया। श्रीम हीने हुक³न्दान हीने मुरशानेका बाद। बहमा रीगढा एक प्रकार जिसमें आपनी शीण कार बीका होना प्राप्ता है। तमश्री होगा -प्राप्त सम्बाधाः

क्षिप्रशिक्ष ।

सुनामेशमा जुल-शका ध्रीत बारनेशमा ।

ब्रायक-विश्व (१) धेन्यवश्यक्ता सीमनेबासाः

-मंगव-इ

अवस्थानं ।

शोषण-प्र [र्स] स्पेरनेक क्रिया समानेक क्रिक चुसमेडी किया। रस, रनेवसे रहित करका होन हरने की किया। किमीके असरी वा क्यापार खारिन बर्णारा काय बढामा:सोंडः इदोनाक कुछ। मुन्स्य: ex रूप वरिपणीय-वि [सं०] श्रीपनश्चे बीग्व । शीपवित्रक्य~ि (सं शिक्षण मीम्ब। द्योपयिता(त)-वि॰ पु॰ शोरप इरनेशहा। शीपापडा-को [सं॰] दोतनक सनेदो। द्योपित-वि [सं] नोमा बुबा। सुनाव। बुबा। रेप बिना दुमा: साम दिया दुमा: मध दिना दुमा। शोपी(पिम)-वि [मं] श्रोपण करमेवाचा ! शोप-त हि विश्वास शोहबा-द दे 'शुद्दा' !-पम-दे 'सहरात्र'! झोडरत-सी मि मिनिंड स्वादिः वस कोसा 1711 इतिहरा−प अिं•ोंदे• 'शीहाम'। द्यींग्रेय−५ [मं] सक्त द्वेन वाजपः/।। शींड-वि [तंब] यथा यनश्या मय गीरेवा शरी-धरानी; रथ, इश्वल यहर । औडसा⊸सी विविधासादधक⊾ समस्या पाप्तर्ग जीबा-मी सिंशे महिसा शीडिक-व (सं) प्रापीय काच्यी व्यारिविधव में यथ बरतन कर इसका स्नापार करनी भी (पराधारकी हे चीडियक्क बावनि वाधिक माना और देशने हैंड मानी ६) (र्घोडिकी, ग्रीडिमी-श्रोर (ग्रंश) ग्राहिड माडिसी भी । वींदी-पु [लंब] वश्यपनी यमा कामी संपर्धतः । शीद्धं(दिन्)-द्र [शं] द्यारिकः सपरिकंता ! बोडिर-वि नि विश्वदेशरी प्रवेशी गर्गा रिका करें। वाशिये-५ भिर्णया वर्षता प्रीक्षास प्रीकाल-तु (स } हमनमार्गका दयरों पर मान विनक्षी पहणी तारीमधी है। यसाबी मानी है। शीक-पु (में] शुक्रमा सुम्में का रामुद्र। एक रहिनी शीद प्रभवा । झी≰~<u>६</u> [#] श्रश्त श्च्या चादा यांचा समाव" व्यवना बालावा युव । मु -बर्बा-भीता क्रमा (१६) सिग्रह कार हैने समय बीड प्रेरिटे दरत शेर -- चर्रांना - १९५१६१ तीन हीना १-११-४(४) रेंग ही मे। जिस्मेधेय । शीक्स-और [बार] वय, ग्रांता प्रनार दशसा शीक दाना र द र शास्त्र बीकरच-दुरु [सं] हे 'एदरप्रेष । शीररी-भी 🗗 रेपारोप १८३ शीक्रिया−**च टे** दौरोगा । शीत्रील-नि शीद-नाह ३पि स्थानेशन्याकान लिया श्र होद्र स्थानका ऐना नमार्थन । क्षीकार्या - शो को धेन काम १ शीप्रीया-अन दे बेरे इन्हें से में तेरे हिए बर्जम हे निर्व शील:-हि [यं] अञ्च, नश्रारी शरीचा वना दुल ह

भुक्(भू)-पु सबूर, मोर। -भू-पु सम्बाः -मेइ-पु दे॰ 'शुक्रमभद' । -स-नि॰ शुक्र-संबंधी। बीर्य पृद्धि करनेवाका । —का-न्यो॰ सथटा । —बार ∽बासर —पु सप्तादका एठा दिन । —िकाय्य —पु• झुकायार्वके शिष्य, देख, राष्ट्रस । --म्लंम-पु॰ बहुत विजीतक अश-पर्व रखनेके कारण शरपक एक होगा, मधुसक्याका एक मेद ब्बब्धना शु.क-पु [म] कृतद्रदाप्रकाश सपकार मानगाः रैयरक ष्ट्यारॅस्प्रि वहार्द ! –गुज़ार –वि पदसान माननेवाका शुक्र बरा बरनेशका । "शुक्राशी-सी॰ स्टब्स्टा प्रदट बरमा। मु॰ --करमा-(सुदाका) ण्हसान यानमाः मयनान्द्रे क्रियेपर संतुष्ट प्रसन्न रहमा । - वका लाना-क्रमध्या प्रवास करना । -हे-सुराका जुक है भगवान् का परम अनुबद्ध है। धुकांग-पु॰ [मं॰] मोर पक्षी। गुका-सी [सं] वंशकोयन ! मुक्ताचार्य-पुर [सं] एक ऋषि की भृशुद्ध पुत्र और रावसीके ग्रह ने (पुरायोंने कहा गया है कि देखराज वकि की बामनको पृथ्यो दान देमेरे रोक्सेके किए वे कमंदलुकी यैयोमें वा बैठे: इन्डॉने शोका कि ऐना करनेते न वह निचनेगा और न दासदा सदस्य दोगा समर बड निका **हने के किए श्रीकृते टींदी श**रफ करने में इनकी एक जॉन द्वित मनी वे काने ही गये। (इसीकिए दानेकी शुकावार्व कारते हैं)। सुकाना−पु [दा] वह रहम जो वटील या पेशकारको कुरमा जीवनेदे बाह महनवानेदे जविरिक्त 🛍 बाय । शुक्रिय∽वि (स्∙) ३० 'शुक्रकः । पु क्यकः । शुक्रिया शुक्रीया-पु [पा] कृतक्वात्रकाश कपकार मानवा (करमा अदा करना)। शुरु-वि [सं] ६वेत समेत्रः सुक्रा सुद्ध। पुरुवत पाँदी बाबा सबनीत सबसना द्वेश वर्ग हाभ वर्ण युद्ध प्य उदावा पादा हाम नामक बीग विसमें द्वान कार्य करमेका विवास है (स्थी)। चका वैद्यारा मानः एक र्परत्तर। इ.र. प्रप्यः १रेट लोकः वद इटा अध्यक्षे सफेर मेंग्रमें श्रीनेशका यक्ष रीया श्रेन वर्षट ब्रुग्ना शिकः विष्या माप्रमीको एक प्रपाप । -कंट -कंटक-पु दाल्यूट ष्यी पनतुरनी विदिया करुबाढ ! —क्षत्रु—पु अदिव चैरा स्रेतरहर: अतिविद्या : - अर्जा-की अविविद्या पदर मधीस । —कर्षर – पुस्तेर वक्ता। —कर्मा (मैंब)-दि सुदर्मग्रीत । -बुध-पु नहेद बीहा -श्रीरा-सौ काक्षेत्री । -तुरच-पु विपादा मानक वतनातः - पानु-भी । सर्वेदा निर्हे । -पश्-यु महीनेंद्र ही मानीयेंने वह जान जिनमें चंडमारी बना र्मीदिन बातो देशीर राग अनेको दानी जानी है। -पुरंप-प्र छत्रका पुरा मन्बद सरआ।-पुरंपा-स्रो मागर्दी। शीवनुभी। कुण । —शुष्पी—मी सागर्जी । "रहर-मु मिपुर नृद्ध - अस-मु सरार ! - कामा -भी मतारा छ रे । -केन-इ समुद्रिन नावध केपर। -बल-पुरक्ष किम देर। -मॅक्सी-की चरेर निप्रते । – मंदक-पु कामी पुनती दे महिरिष्ट

मॉक्टरा सफेद मंदा ! - मोड-पु: प्रमेड रोगका पक प्रकार । ~षञ्चस्~पु बजुर्वेदके की मार्गीमेंसे एक । -शेड्रित-पु सपीर और काछ रंगा दरेत शेड्रित पुका दवेत रोहित मछको । —बायस—पु वनका पद्मी; दवेत कार । -- श्रूष-वि॰ सन्धवारी । -- शास्त्र-पु दर्गशान षुष्ठा गिरिनित । शुक्कक−पु[सं] शुक्कप्यः स्वेन वर्ण। वि स्वेन । ह्युक्टम्य-वि [र्गः] द्वेत । श्चक्तरंग−पु[र्स•]मोर्≀ द्माह्मांगा−स्पे [सं} ग्रेफालिका। प्रक्रांगी−स्थै (सं} देफालिका। भुद्धा-लो॰ [सं] सरसको। उर्दरा काग्रेको। निगरी। रतही, चेंद्रकः दरेत वर्णकाको स्ती । शुक्राचार−वि• [सं•] शुरू आवरणवाका । शक्तापीग-५० (५०) महर । हाहास्क−दु [तं] सम्ब पुश्चिका सम्ब द्यक्कार्थं-५ (र्स•) स्वयं मदार । शुक्रनर्म(न्)-प [मं] व्ययीके सपेर अंग्रमें हीनेनाग एक रोव। शक्रिमा(मन्)−सौ [सं] ६२े४ता। शास्त्रेपक्षा-मी [मं] रशादार भीनी। हाहरीद्म-दु• [सं] शरवा वावस्र । शुद्धि – न्दौ [मं•] बाबुः तेत्र, प्रकाराः भरिन । ह्यगल-पु [स] दे 'शयत'। श्चाम-पुदे 'शक्ता'। द्राचा-सी [मं] शांक साव दुःधा द्याचि-दि [मं] पविष शुद्धा अनुपहत निर्दोष निरपराची। निर्मेक साफा निष्यपः निरक्षरः, शुबद्धरकः इरेन प्रकाश यमद्वार, देशोप्यमान । हु समिन शारानित मूर्वेदी करिन नूर्या वेडा शुद्धा वसक्रा आशान प्रोप्य कता देन वर्षः संगारः शिवः दास्टिस्यः माद्रायः जिल्ल ब्रुष्टा अर्थ ब्रुष्ट मदारका देश शबाबरमा सहा बारा प्रदाश रशिय गया मंत्री रैमानशर सनादकारा सुधा मित्रा अच्छाराज्ञ नमनका होम । न्या प्रतिहता, शुक्रारे । -क्यां(संग्)-वि परित्र कर्म करनेवाता अच्छे काम करनेशका । -हम-पु परणना केर अक्षय कृष्ठ । -प्रणी-सी आपमन । -प्रीरिका-क्षी सबमस्टिका मैवादीका पूजा १ -- होकि(सर)--वु चंद्र। -बाब्(प्)-वु वद द्यो। -ग्रा-दि० परित्र संस्प्य सरनेवाना अवने सामका बीहा बसाने बाना। -अवा(वस्)-मु तिन्तुः एद प्रवार्णनः। -श्मिन-वि शुभ शायतुत्ता निराम्त हेवी हेवने सुचि(म्)−स्ते [तं]रोप्ति प्रदारा। शुविकापुरा-पु [मं] बन्ती ४वना। द्युचिता-व्यो , ज्युचित्य-पुरु (संग्) शुन्तिका माना परि हाविष्मान्(पान्)-ि (सं)देशप्रवान प्रशस्त्रकः। शुर्व (चिन्)-वि [दे] रे मानि । श्रुष्टा-वि [क] बीर वशाहर !

प मोली। मीकिकेम मोद्धेय-प (सं•) सका। भाक-दि [में] हाक प्रदर्शनेथी; नीवेंसंनेथी । धाप्रिकेष-प्र सि । एक तरबका विव । शीरवय-४० मि॰ो शहता सरस्वता, सपेटी । भीष-प [र्स] श्रुब्धि पवित्रता आविताः किसी निकट संबंधीकी मृत्यु शोनेपर होक व्यवसारके अनुमार निश्चित समयपर औरकमें कादि कराकर दाक होनाः प्रातन्कामीन मेमिचित दमें द्वारा अदिः मकल्याग द्वारा शरीर शक्टि पासाने पाना। मन् अभित इमें इस अक्षों में से पाँचना कक्षमः बीग-शासीन्त वंच निवर्मोमेंसे (शीच संवीप तप स्वाच्याव और ईश्वर प्रमिशास) पहला । नक्सी(न)- काद-स्ववदार और सालानसार गुबिको किया। -कृप-पु॰ संशास । -गृह-पु॰ पासानेकी कीक्सी नारि। - विधि - औ सब दोने सुदि कियाकी पद्धति रोति । गीपक∽दि [सं] सुद्ध, परित्र । यु सुद्धवा । शीचागार-३ [सं] श्रीपगृद्ध । शीचाचार−प्रसि∃दे शोव≪ी। सीचित्र-५ [मं] परित्र, पुद्ध करनेवाला व्यक्ति एक बर्पमंद्रद बाहि । सीचेय−५ [सं]भोग रजका भीदीर-वि (एं) गर्वप्रक, वर्वाला बदार । प्र बीर-बोद्धाः स्थानी सन्त्वासी । शीटीरता∽स्थे शीटीयैं∽प (सं] भीरताः पराक्रमः रवागः गर्व । ਜੀਰ≠−ਕੀ ਦੀਰ। भीक्रोदमि-प्र[सं] मुद्धोरमके पुत्र मीतम दुद्ध । भीड़-वि [सं] शह जाति मंत्रेची ३ प्र नाग्राग, श्रविय पा बेहद वर्में इ पुरुष तथा छह बच्छी सीने उत्पन्न पुत्र । मीप = - विश्वास निर्मेत, पूर्वपनित्र । भीधिका-मां (मं) रख इत्, कान बहुनी। भीन-९ [मं] इप १५७ इम्राईन्यानेमें रगा मांछ । गीनड-दु [सं] यह करि को कश्वमातिग्रास्य तवा भग्द धर्र प्रवेशिः रचदिता माने जान है (वे प्रशिवारण्य मैं रहत थे और एक बार इन्हाने बारह वर्षोतक याना बाला बद्ध किया था) । भौमिक-पु [नं] मांनविक्रेता क्यारी बहेरिका विक्र तिहारी। कृपयाः शिकार । वि - दशम या अधीर र्गरंका । शीम-प [मं] देवताः शुवास, शुपारीः हरियंदपुर म्भोमपारिष्टर (पु)। शीमनेष-दु[सं] शुन्द सीका पुत्र ! वि सूरर बस्तु-मंदरी । शीमोञ्जन-द्र[सं]दे 'शोमोजन । शामिक-पु [तं] ४ हवान्ति, बातूनरः वरिक निर्धे मारः वदग्नंतः । साध्य−नि [सं∗} द्वाप्त दण्युवा व्यक्तितरंथीत्यु

यह सहाह माति ।

सीकिक-वि सि॰ सीपीमें सरक मोती संवंधीः अस्छ ।

शीरसेन-प सि । शरधेनका रास्त्र, माधनिक व्रव-मंदल (इसकी राजधानी धरसेन-मन्तरा भी) । शौरसेसिका-श्री सि कि श्रीरमेनी'! शौरसेनी—ली सिंो प्राचीन काण्में शौरसेन प्रदेशमें (मनुराके आस-वास) दोशी जानेवाओं प्राप्तत मानाः प्राचीन बारूमें एक भरेशमें स्वबद्ध अपनेश माना (खर्श बोक्री डिंदीके निर्माणमें रुक्त प्राकृत तथा मपर्मदाका बहुत शाथ है)। शौरि-प सि॰] बगुरेव कृष्णः वक्र⁹व, शनि श्रद्ध। —विय~प दौरा। ─श्रम=प नौक्रम। शीर्षं शीर्षिक-वि सि निय-नंत्रंचीः न्यसे नामा बना। शीर्थ-पु • [मं] शुरका शीरका। पराक्रमः मारमदी नामक मान्यक्रचि विसका चपवान बीर और अरमत रहींके मिनयमें प्राता है। धील-पुसि दिक्का व्यवसाय । सीस्क-दि मिं द्वारक-भंगी। ए० है 'होडियक'। शीदिकक-वि सि । प्राप्त-संबंधाः सांस साइकी साते वाका। पुरुष वर्गन करनेवालाः हास्य कर सहसूत्र टैक्स वहारमधी व्यवस्था करनेवासा अफसर हारग्राध्यक्ष द्यान्काधिकारी । द्रीक्षिककेय-१ [मं] शिक्का एक मेद्र। शीस्फ-प॰ वि ी तककेश सामः शकः। श्रीदिवक शोक्तिक-प थि ो तीनेका काम शरमे बाका तीन्द्रा वर्षम बमानवासा समेराः एक बाहि । झीय-वि• मिं] क्रचार्नवंशीः भागामी **यन** संबंधी । ४० क्चोंका शंदा क्रफेक्स स्वमान । सीयम-वि [मं] कुत्ता-मंदेशीः कुछेडे ग्राम स्वमादमे नंबछ । प इचीका शुंक इसकी भीनातः इसेका रहसाव ह शौवश्विकः-वि [सं] आगामी कन-नं-थोः भागामी कन्तक रिक्तेरान्य सराय न होनेवाला । क्षीबाएन-वि॰ [र्स] श्वापन धंरंभी वत-वहा-संरंभीः संतर्भी । द्वीरकव−4 [मं] मांनमधी। महसीश मांस साने शका । पु. शांसका मृश्यः मांगुका वित्र ना । शीहर-त कि | पति सामी, मानिद्र ! इन्हि-मी [सं] गडा नारनदा एक हारा परिमान। इस(म्)-प [सं•] मुखा झरीरा पन पून देह । इसशाम-प्र [मं] धनप्रह-न्यान मधान मर्गर। -बाब्दिश -बामी-मी श्याग्राम-निवासिती शामी बिनकी **भ**र्नमा **यथ** मासका प्रयोग कर और लंग शरीर को बारी है (रं०)। न्योचर-वि दयपानमें पूमने बानाः - निकथ-तु रियः - निपामी(सिन्)--व शिका भूता वेता। वि त्यागानमें रहनेवाना। −पनि−पुटिव। –पान-पुचौदान दोस भौतरी। -भाष(म्)-५ िषः -भाषी-स्रो रमगायने रहनेवाली देशियों (वं) : -पनीं(निंब्)-प हे द्यानमञ्जू । -बार-पु रमागनमा है। । -वासिनी-की वर्णनदा काली। -वासी(सिन्)-अन्य केट निष्क शाम भीपते चांदान । - पनास -

ध्र**म्**या−की [र्ष] हेना-रहतः (नध्नेका) पालन-पोनगाः । रिक्सम्बर्गारीः स्वास्थ्यको देखारेखः परिवर्णाः कथनः ग्रननदी इच्छा । ∽प्रशासी−की रोगीकी बबोबित संबाद्धा दग निवम ।

द्रभृषिता(तृ) द्राभृषी(षितृ)-वि [संव] नाग्राकारी। हाभयु-वि॰ [से॰] सेवा करनेको छलाङ्का अधानवसीह

समनेका समिलाको ।

ध्रप−पु , इएपी~स्टो॰ [बं॰] स्टाबाः विवदः विव । शुपि – स्मी [सं] शांच स्क्रमाः निवर, निक, सराराः

र्घोपठं बहरीन राँतका मुहाला कर । शुपिर−दि [मं•] दिवरमुक्त, सुराग्रोंसे अरा द्वशा। प्र• निवर छेरा नंदी भारि मुँब्से पुरस्का बनाये जाने

वार्त वाजः वासुमेदक काबाधा कश्चिः ल्हा । द्यपिरा-सी [मं] नदीः नबी नामक गंपडस्य ।

इरियल - चु [मं•] बाखु ।

ग्रुपक−नि [स] श्रूमा अनाई शिसमें गोलापन म क्षो छोर्गः मीरस कठिल विमानको यहामेवाला (बैन्ट —शुम्द कार्य)ः समाजके सुस-दुम्प्रपर श्वाम न रधने बाला इरवर्शन (बैहे-सुष्ट व्यक्ति)। निपायोजन, निस्सारः रिक्तः विसन्ता कोई बारण न हो। बकीर । -कसड-प एसा बसड विसदा कोई कारण व का । -कास-इ स्पी गोंसो। -शर्म-९ पद की-रीग विसमें बात दोत्रवस गर्भ था। जाता है। ∽गोसय~ पुरक्षी। –थचन∽पुनिरर्वक्ष बाख। –सर्व्य-पु वेकार बहस । —श्रोब—(४० (तालाव, नाला आर्थि) विभक्त अरु एए वदा ही । [मी शास्त्रवाका' ।] -इदित-पुर्वमा रोला विधम आँस् व शिवसने हों। -रेबली-स्त्री दक वाकसद*े -हस-उ* वह क्छ। ⇔प्रज∽तु दहमान जो त्रास्यादी अच्छा दी गवा 🗓 मध प्रवासम

गुरुकक-दि [सं] मेरा हुआ क्षोण। गुष्कता-ली (हं) बीरतवा युमायना वश्यिका दरक

दोनताः व्यर्थसः । हुरकस-दि [मं॰] मानमकी । तु ग्रा माँका नाँत ।

भुष्कसी-को [मं] स्था योश वास । शुरुक्षीत-दिक [तं] दिसका सरीह बरा वया वा बुदला-

प्रसाद्य सरक्षा सरक्षांगी-की [d] माबिका गील वर्गकी जानिकी

दह चितिदा ।

मुष्कात् । सुष्कार्त् ब~दुः (तं) नोडः शुरो । इर्ण्य~पु० [सं] सूर्व सूरका आया शक्ति । शुष्पान्य [मं] सूर्वेत भीता बागुत की लबरा दीति,

सभः पराक्षमः अधीः शन्ति ३ द्युप्पा(सन्) - दुर्श] कीया वीक्षित तथा श्र का निवस

183 द्यद्रश्-त [भ०] 'श्रुशेश दा बहुआ होगाः व"माध श्रूपनम् । -पम -पमा-मु श्रूरी वरवायी । शहरत-मी [#] स्वार्ति समिति चर्पाः मेहनामीः

प*नाभी (रैना चमा होना) ह

| DEST | [40] & -15813

धक~त [र्श•] किसी वरतका विकास सुद्रीमा श्रद्र भागा की बादिकी शकता पुढ़ीता हिस्सा हुंस की पि लुकीका रीमी। राही। छिन्ना। रशाः धोत क्यः रम मक्रमें पदा डीमेनला जहरीला धीशा पद शहा हिक वर्षेक श्रवप्रधान कीपपीके प्रयोगन क्षेत्रेशका (हः। ~कीट;~कीटक−तु शुकीले रीलॉलाका एक मीहा। -ज-तु वशसार । -तृत-तु: स्वशे नामधे रत को निर्दे**ण** बदाओंद्र किए क्ष्मपूर्ण्य होता है। --प्रान्य-पु॰ ट्रॅडवाके अनाम (बेरे भी भारि)। -पत्र-पु॰ विषयीम सर्वे । --पास्य-नु अवादार । -विवि --विंडी - सिंचा,- सिंबिका,- शिंधी-ओ देशेंच गी-कथ्ह। - श्रंत-प्रथक विप्रशासीका। धूकक-पु [र्नन] हैंका वर्णकाला रखा एक प्रकरका सै

वैशाशकादवाः

क्ष्यर−प्र∙िमं] बारादः समर मामदः रग्ना = द्वर-पुर बाराही क्षेत्र । -क्षेत्र-प्र शुक्र रोठः क्षेत्री स्वयः तीर्वरवान् । -वृंह -वृंहक-पुः ग्रहमंस द्रपराः मामक रीग । -पाहिका-मी कीनरिनीः सेमधे

चर्चा। धकराष्ट्रीता-सी (सं•) परादर्काता । प्रकरी-मी (रं•) शत्रधे भाराष्ट्रीः वरावक्रीहर । युक्टेप्ट-व (तं•) तुत्ता भोबाः बमेसः। धक्क-तु [d] अनिवत बीहा भवदमेवाला बोहा। श्रद्धती-भी (तं] देशोप वरिवास द्यका-मी मि दि श्रहती । धकास-त [वंक] मिरिस र द्धात्रय-पु॰ [मं] स्वत्न । शुक्री (किम्)-वि [मं] हें बदार ।

হাতুল-বু+ (ধ) বন্ধ নচন্দা বন্ধ মুখবির কুম। द्राची -श्री सर्दे। द्याति-भी [र्तुभ] पृद्धि बहुनो। -पण-प्र आरमप

कुछ अञ्चलतामका पेड़ । द्मन-त [मेर] वैदिक जावी हारा निर्वारित वर्णमनाया में चलुर्व कर सबस विस्त वर्ग विसदा वर्गमा अन्य वीय बच्चेको सेवा 🖩 दिया का की प्रश्नित अक्षांके रुपेते मानी गयी है)। बहुन हरिजन। निष्य बोरिका मानि। ~कस्त्र-वि श्रूमं मिलना सुनवा र ~कृत्य ~यमै~ इ सहस्र क्ष्मंबर । - अस्मा(सम्ब)-विश् स्टि ङक्ता –द्रिय−g पश्चेत्र प्यातः –प्रेथा−5 शहरो परिचर्त, श्रेश करनेशमा आग्नम हतिन गी वैरत । ~भोजी(जिम्) - वि॰ श्रूरे वर सामेशाना -पाजक-तु शहरे निर वट बरानेवाना । नवीविन नी श्राक्ष कीय। -वृत्ति-मी० श्राका देवा। ~संवन-पुर -सेवा-ओं सूत्रकी श्रीवर्श वा श्रीकी EFRI I

शुक्रफ-तु [मं] मृत्यवरिक बाल्क्टेरवरिना सन्ति कृति भार राजा ।

श्वा-की [4] श्रूर वर्षेशे लेश -परिवर्गः वेरम-तु ग्राम स्मित्र कता। -मार्च-तु ६६ शिलये वही दशा हो। न्यस्ट(दिव)-5 प्रतान

पुरु पद्म मकारकी भ्रतयोगि जिसमें पहन्कर बीव क्रमशाय-में रहते और वहाँके मुद्रे आदि खाते है। --बेडमा-(दमम्)-पु॰ शिकः मृतः प्रेतः । -धैरास्य-पु॰ रमशासमें बानेपर संपारको अतिस्पता देखनसे कराब समिक वा भरवादी वैशावता -- द्रास-पुरु प्राचीन काक्में दमधान स्थित खदिरको कवनी वा लोडेबी शबी विसपर वैज्ञान्तर अपरायांको शृख-तंब देते थे। -साधन-प्र वांत्रिकोके अनुसार वसशासमें मुजेकी छातीपर बैठ कर किसी सिद्धिके किए अर्थ रात्रिमें मंत्र-सावना करना (बद सावना विश्वेषकः भागतः भागतः भारपद और आविनमें की वाती हैं)। इसरामाखय~पु (सं+) मरबर प्रेवधिम । इमग्रामिक-दि [सं] इमञ्राप्तमें रहदेशाला (स्थी भारि)। इसस्-प्र [मं] शही-भूछ । - सर-प्र टक्को बनाने-नासा बार्र । -कर्म(स्)-प्र हीर कर्म । -घरा-धारी(रिन्)-रि दल्ली रक्षनेवाना । - मुखी-ब्री वाही-मेंडवानी औरत । -वर्षक-पु नार्वे नावित । -शेकर-पु मारिकेच कुछ जारिजलका पेड़ । इससस-वि [सं] शही-मुँद्ध्याका वसववारी। इमीखम-५ [स] ऑब सुब्धानाः, प्रथन-नियोधम । इमीलिल-उ (सं) परुष मारता परुषा गिरवा नवननिमीकम मिमेर । वि प्रकृष गारा हुना । इमाम−वि [सं•] यदः जो जसकर जना हो यया ही সমাটেরসারশা ভ্রমাত ভ্রমী स्याम−वि [सं] काला, शॉरका: काला और योजा मिनिता गहा इरा । पु कुळा (इश्वासनं होनेके कारण हमका वह बाम पहा): बाका रंग: गावा हरा हमा करना भीर सीका मिसिल रंगा शेव बलका कोवल कोविका प्रवागका प्रसिद्ध वरद्श की बसुमाने किमारे हैं। इस दारका बोख बक्षा दीलेका पीवार गंपल्या स्वामक सीवाँ भागसः धतुराः काको मिन्दे समझी पसके। नक्टे-ड सिया मीक्बंठ पढी। समुद्ध मोर । -कंबा-की अधि विया जतीस। -कर्ण-वि काके कार्वीयाका । प्र पद मीरा विश्वका सारा घरोर स्तेत और डेंग्ड कान करे हीं (वह मुसक्षय और बन्दमेगडे बच्युष्ट भाना बाहा है)। -व्योधा -र्राधि -सी॰ नंदरवी । ~वटक -प ः-वदा −सो दरामा स्थी । −श्रीरा-तु [दि] यस प्रकारका श्रातानिया पाना काला जीरा । ~बीका~प [हिं•] दिश्रीना । -सीटर-प्र [दि] यक पत्री में प्राप्तः पहाडी औसीमें मिलता है। -वध-पु चमारु पृक्षा -पदा-सी वंतृ दुव जासुलका देह ! --पर्य-दु शिरीय क्य शिरिसका पेत् । -पूरवी-त क्य संदर र्मा। - भूपण-पुदाकी मिर्च। - श्रीकरी - स्री प्रकारको काको मिट्टी जिसका उपयोग कैन्सन तिकक बगानेके किए करते हैं (यह प्रशेक्षे भास नात पानी माती १)। - स्टा-मी सारिका। - वस्को - सो काली मिर्च। -मार्म(न)-पु पढ प्रकारका नेक्शोग।-शार-प स्मामनेश । --शामक-पु चमके शारपर करा देभेवासे को असे। -कालि-युक्तका वान रमकत्ररवा

वानः दक्षिनद्ववाँ वान । --सार-प्रश्नावे बैर्ग्या रेतः -संवर-प कृष्या यह कृष्ट । त्यासक-प्र [सं•] साँगाँ चानका शोहित एक इएके स प्रमा नसदेवके मार्व (मा) । वि काला । इयामता-स्रो [र्र] इनाम कामा होनेका वान कर-इयासल – वि॰ [सं॰] दवास वर्षवाका । तु बाकारेद असरः पीरतका पेहा काको मिनी पुनिदा । - बहा-सी-शंका वेंगची। इमासकता-स्तो सि दिवासता। ह्यासका-को वि । धर्मती अवस्थाः स्टब्से के नामना करवरी । हपामकिका-बाँ॰ सि॰ी मोडी । इवामसिख-दि (सं॰) काळा, वृभिक दिवा हवा। इपामकिमा(सन)-स्रो [सं=] बाक्य स्वास्त्र । क्यासबेश-व (सं रे बाले क्रिक बकरवा क्रिय इयामांग∽व सिं•ो वथ ग्रह । वि• काने ग्रहारतका । ट्यासा−को सिं°े इदास, **क्रम्म**दी पत्नी राजा करें। कातिका देवी। पार्वती। स्वाम वर्णको ली। धोडक्तरींच यक्तीः संपरी मारीः स्टब्सी स्ती जिसे संपान न हर्र है। श्रप्रसार्थिकाः सर्वे इप सीनेके रंगको तकते के सर्वे शीवमें संबोध्य और उपानें सकतीतक होती है। शास्य बामको विविद्याः ऋष्य शारिकाः यावः करनाः (बेक्सरः मबी) राषिः क्षमाः सन्य शारिषाः प्रियंगः बाग्रविः हम्प विश्वविका। मीक्षिका राष्ट्रका स्रोमकता ग्रंडा ग्रहकी करत्रोः करपत्रीः क्या मीठ प्रगर्नेतः पिपक्या प्रसीत प्ररिक्षाः लीक वर्षाः तकसीः रक्षणीयः विश्वपर (इयामाक-९ (से॰) साँगी नारक। क्यासिका-मी (सं•ी क्राक्षापन दरायताः मध्येपकाः बोधारना महिन्ताः मैक (शरहम मारिका) । क्यामिल-वि॰ भि॰] बाक्षा क्रिया द्वमा । स्यामेलु-४ (ते॰) काठे रंगकी **रंग** स्वामके**स** । इनाक−प्र [मं•] शाका, परणेका मार्थः *व स्थान*ः क्षिपर १ इयासकण्ड (र्तं**ः)** स्थास साला । इयाककी स्वाकिका स्थाकी-की [सं•] सामी, स्वाकी श्रातिकी । इयाथ~नि [सं] ऋषिय श्राका और ग्रीका मिला हुनी। प कविश रेय। -सिक-प्रश्नाम वृक्ष भावका पेर[‡] -ईत-प शक्तिमा बाके रंगराडे श्रीत । वि बाने रंग के बॉर्थीबाला। --वंतक--वि काने रंगडे बॉर्धीबाला! ~बर्स्स(क)~प व्यवस्थारकरोता। वयाबास्य-नि॰ [मं] श्रापेश्व रंगके असनाता । इयेल−नि सिंो वरेत सरोह शह । प्र शह नर्थ। −कोलक-पुरक्ष सहनी शहर नासक् सङ्गी ! इसेर्नपाता-को [धं] नाम नदी हारा नश्चिमीका विकास बराताः यगमा । इसेन~त [सं] बाज क्योः दिसाः पंदुर वर्ष केना रंगः रोडेका एक मेर । वि. पीने रंगका । --फारा-प्. पान की भाँति शक्तकर किसी काममें करना नामके माँति

विवाह करनेवान्य उच्च वर्षका व्यक्ति । —सुन्त —पु किसी भी वर्षके सदवास द्वारा दाहाके गमसे स्वत्य पुत्र । सुद्वाणी —सी॰ (सं॰) सदवार्ध क्षी शही । सुद्वाच —पु॰ (सं॰) सूद वर्षके व्यक्ति क्षा स्वत्य वर्षके व्यापील मात वीविका । सुद्वाणी —की (सं] प्रियंत व्यव । सुद्वाणी —की (सं] प्रियंत व्यव ।

स्त्रीहरू - पु॰ (सं] वह बह को स्वृत्ये वर्षाचि वर्षाच्य हो गया हो। स्त्र-हि (सं] स्था हुका हुआ, रीयके कारण स्वा हुका; विदेश रहा हुआ।

हुमा, नहीं (है) येरी क्योजिक्का; प्राणिववरवान गृहस्थोके व स्वान वा वरतुर्वे कहाँ या जिससे छोटे-छोटे कोरोके इस्ता होतेको संमादका दहती है (व स्वान का वरतुर्वे वे हूं-श्रीमस्थक (पूर्वा), पक्षी साह उसक काराव्ये

प्रकार । पृथ्व असंपूर्ण रिक, एउकी, निर्वेमा प्रकार । दिव (वि) न्यानस्था अवश्वीन निर्वाहर । इस । य रिक्ता अस्ति स्थान निर्वाहर । उ रिक्ता आहा असाव एक विव विद्व निर्वाहर । उ रिक्ता आहा असाव प्रकार कर विव विद्व निर्वाहर । कार्य प्रकार । विश्व निर्वाहर । विव विद्व निर्वाहर । विव विद्व निर्वाहर । विव विद्व निर्वाहर । विद्व निर्व निर्वाहर । विद्व निर्व निर्वाहर । विद्व निर्व निर

बर्धनः नास्तिवना ।-बाद्यं (दिन्तु)-तु श्रीका नारित्यः। -ब्दर-तु द्याना । -द्वरत्य-वि विलयः बाग्यासी वो । -ब्दर्य-वि द्यानमनस्यः शुने विकातमः विलयः सनमे किमो सन्दर्भ संदेश व हो। द्यानमा-सी॰ द्यान्यय-तु द्यान्य होनेव्य साव ।

क्नाचे रक्षनेपाका । "सक्ष-नि जिल्ला भाषार वर

स्नि दो (सेना) । **∽वाद−**ुवद् वार्शनक सिकांत

भी जीव देशर आरिको संचा रवीकार मही करता शेळ

सूच्यता-सार्व सूच्याय-चु एत्य शानका वाव । सूच्या-त्यी [म] मन्य महिन्दा, पाना वरका यहा-वर्षात्मी स्तुशे चुक्र केंट्रिश बेच्या बॉल स्वी।

वर्धनी रहारी वृहर कें³दा बंध्या बाँझ जी। द्राप-पु दे 'सूर्य । "सम-दि [ब] मनदृशा देवस सुसा -कब्रुस-दि

म्म-दि वि]मनर्शः संबुधः गुषः -कद्म-् भारत्यः मन्द्रः।

द्ममी-भी मनहूमी समायाग्य । द्युरंगम-द्र [सं] एक ममार्थित वक्ष वीविसस्य ।

ग्रार-वि [म] छीरंगाणे बीरा शस्त्रिका । पुर श्रीदेशन् वा बीर व्यक्ति गर्दे निकाशकराः पुरशा हुन्छै। विषक स्थानात स्थान्न वर्षे महात्वा वेका निवृत्तन्तुरमा स्थान सन्दे दिशासक । चीरू-पुरस्ता स्थान सन्दे दिशासक । चीर्मक्ता

एक करना । -सामी(तिन्)-मि॰ भरनी बीरतापर पर्यंड करनेवाला भपनी बीरताके विषयमें कंपी-भीगे इंकिनवाला । -बागेब्दर-पु॰ विजा । -विद्या-की युद्ध-विषा ! -बीर-पु॰ वीर करिल, घोदा ! -इस्लोक -पु॰ वीरॉल्ड डीवेपूर्ण बामोकी रनुति, प्रशंसा कहानी । -सिन-पु मनुसा और उसके बाह्य समझ्या प्रदेश कृष्णक विद्यासक्का नाम की भूरतेन प्रदेशके राज्य थे । -सीनप-पु० धूर्विक्ष सेनाके पालक, रसक, काविदेव । -सीनप-पु० धूर्विक्ष सेनाके पालक, रसक, काविदेव ।

ब्रार्ज-प्रांतिक स्थाप्ति स्राप्ति स्रोकः स्थीनाहः स्रोणास्त्रका पेट् । ब्रार्जोस्मुब-पु० (सं] दक्षियं पद्मो ।

झरलोब्सुच~पु॰ (सं] दिस्तिय पद्मी । झरता-स्वी॰, झूररव-पु॰ (सं॰) द्युर दोनेस्त्रः भाव, बीरता। झरताई॰-स्वो दे 'सूरता ।

द्भूरम्मण्य-वि॰ [मं॰] धूर म होत हुए मी की भ्यश्न हो अपनेकी धूर माधता हो धुरमानी । द्भूरा-प्री॰ [६] आपदिविश्वच । ७ पु॰ घुर, पासा। सुर्प

सूरा-ती० [क] अवशिविधं वं । ॰ पु॰ यद, पात्रा व्हर्ष रि ।

पूरिकृत्र — पु॰ [सं] वन्त्रपृष्ठ ।

पूरिकृत्र — पु॰ [सं] वन्त्रपृष्ठ ।

पुर्वे — पु [सं] वक्ष साम्म स्टब्स्, प्रमेवनेके क्षिप्र सीद्यः

सीद्य रिक्त । व्याप्त विश्व क्षा पात्र पद्म रो हो हैयः

स्वाद परिताय । — क्षा — पुण्य — नारती — सी रावणकी

विश्व क्षित्र विश्व । — प्रमान — पार्री — सी रावणकी

विश्व क्षित्र विश्व हे परिताय । मार्गिक सी रावणकी स्वाद सीविधः

वति विश्व क्षा परिताय विश्व और व्यवस्तिम्य रासने

स्वार सिंगिक कर विश्व स्वार क्षेत्र विश्व क्षा निक्त सान-विश्वीय करते

दिया। — स्वार — सी [हि॰] है प्रदेशस्त्र । — प्रमान — सी सीविधं वस्त्र सीविधं वस्त्रम्य स्वार में । वाल — पुर्व — सुर्व क्षा विश्व क्षा सीविधं सुर्व सुर्व सुर्व स्वार — सुर्व — पुर्व — पुर्व सुर्व सुर्व सुर्व । — सुर्व — पुर्व —

-न्ता थितीविषेव वनत्या वनदर्। न्यात्न तु त्यः विश्वविषेव वरस्य वदा। न्यात्न तु एत्यां दायो।
प्राप्त-तु (मं) काम्येवका एत्या प्रत्या दायो।
प्राप्त-तु (मं) काम्येवका एत्या प्रत्या दायो।
प्राप्त-त्यां (मं) प्रोप्ता प्राप्ता प्रत्या प्रत्या प्राप्ता प्राप्त

रहा हो। नेस्मा व्यक्त दीहाः गरिवाः गृह मुझैता शेट् का क्षेमा विष्णाधिवरा विष्णास्त क्ष्मा वरसा क्षाक्ता साधेन कास्त्री पृत्युवर है हो। एक भागार पृत्योः सांग भूननेवा वर्षाः शीरावाः केनतः स्वतः सत्याः गृह्यः क्षीरिकः क्षमुक्तः विष्येम क्षित्रं स्वति स्वति होरी-सेने मार्गे देशः । न्याव-इ दिव्यः - म्रीसि-सी० सम्मा नायक हुंव। न्याद - म्याविस्तित्रे)-इ स्टर। -

यातन-पुण्ड आयुरेनेद भेवर मेरर दोराहरू। -म्य-च तुष्ट क्षणाहि रोगका साम स्टब्स्मा नेपाकर।-म्या-के सरमार नेपायक रोवाहम मिद्रों ()।-हिट(ब्)-पुर्वाहरू नेपार -प्यमा (म्यद्र)-म्यर-च दिवा-म्या-मारिकी-मो हर्नुः

रोजना और निश्चनतापर्वक क्षेत्रे काम करनाः चतावका पन । - घंटा-सी देती इस । - चित−पु अन्ति-विशेष । -चित्-पु॰ बाबदी रक्षा करने, पाकनेवाला मक्ति, स्रोनजीती । -जीवी(विक्)-प भौर वस वेशका बौबग-निर्वाह कानेशका व्यक्ति। -स्पद्र-प श्रंदम्पद्यका एक प्रकार किसमें पश्च तथा कार एतिकाँको रिक्ट रखकर छरस्को (सामनैके) धैनिकोंको सारो बहाया जाता है। स्पेनिका~ स्री सि] एक वर्षकत्त जिसका नाग 'स्पेनी' भी है। मादा नाम । इवेनी-को [सं•] दे 'हवेनिका'। इमेर्नपास-वि+ [सं+] बाज उड़ानेके बोम्ब (स्वान) । स्पर्नपासा−सो॰ [सं•] बाकके डारा पश्चिमोदा स्टिकार करनाः यगवा । स्यम−वि मिं वाक-संबंधी। इसविक-प्र [सं] एक एका है। स्येवेय~षु [सं•] जटाषु । स्योजाक स्थोभाक−द [सं•] एक कुछ सोमा शहा । स्पीरा-पु॰ [क्य] होहेका छक्का आर मुद्रीका कोहा ह्मा तंत्र सामन हरानेका गाँस । र्मम−पु (सं•ी डीका करना शिश्विक करनाः मुख्य करनाः धीकापन हिविकताः वीवनाः (मुक्त ब्रश्नवाका) विप्तु । भैयन-प सि विका करनाः शोकनाः मक्त करनाः रुक्साम पर्देकामा मार्थाकमा गष्ट कर देनाः गीवना । श्रीवेत−वि [सं] दोकाः प्रचः। संवदः यदः साय गाँगः 🖫 भीः प्रकृतास पर्देचावा इत्याः वयं किया क्षमाः निमक्तः इस्ति प्रसन्न । स्यम-प्रमि] बोला वा शिविक करनेकी किया। धिविकोक्तकः वीचनाः ग्रोक्तमः मुख्य करनाः वार-वार प्रेष्ठ करनाः प्रवत्न, प्रवामः वर्व । मह्यान-वि [मे] अदा<u>त्र</u>कः। मेंद्र−वि [सं] विश्वासं करनेवाका अकावान्। <u>व</u> 881 L भिदा−सी• [सं] प्रेम और मसियुक्त पुरयनाया निश्वात्तः मादरः शुक्ति पविश्वताः स्त्रहा धामना। दोइद, वर्मदनी श्लोको रच्छा। किनी वर्म, गप्र दाव राज्य, दर्शम भारिमें भारवा पूर्व विश्वासः यनिष्ठताः भग गांति मनको मसबता। सवापतिको पुणीः भारित्यः र्पेदी क्ष्या। दक्ष्य पुत्री और धर्मकी वसी (स. मा.): दामदी माना (माक वपुराण)। कर्यमदी करना और बैशररन अनुको पश्ची (जा) ।

भदासु-दि [मं] सदायुक्तः कामनायुक्तः। सी दिनी

पदारपर-रि [मं] महाहा पात्र अहा करने वीज

भद्रेय-रि [सं] हेम और शस्त्रिके काग्य, पूत्रजीय

भ्रापित-दि [ग] दिसावी तक डान्ने प्रदेशा दुशा

भपूत्र-५ अपन्त-भी [मं] व्यक्तनेशी किया ।

वन्तुकी कामना करमेवाली गर्भियी स्ती, बीहदवती ।

भवावान्(बत्)-(२ [त] अकातुकः।

विश्वमनीय सक्षान्मात्रमः।

मदेव ।

रुगेशिका−धावण धवाका **इजा ।** पु॰ उवासा धुजा माँस । भपिता-सी [मं] मॉइ कॉंगी। अस-तु [री•] परिशम, मेहनता प्रयत्न, प्रवास, शीक-पुण श्रोति वकानः स्थः स्वायाम क्यावदः तपः शास्ता न्यासः सेदः साहित्वज्ञासांक यह संचारी भाव ! -क्रज्-पु॰ खारीरिक अस, परिश्रम मेहनत करनेसे निकली पसीमेकी वृँदें। -कर-वि ग्रांतिकारक। -क्रांत-वि+ ममसे बका दवा। -श-वि बदान दर करने बाधा। --बल-प्रसंद, परीमा। -सित-वि [हिं] अमसे न अफनेवाडा । ~बीवी(चिन्)-हि शारीरिक तथा शैकिक परिसम कर सीविका चळानेशाचा। पेहमतकस मबद्र। -मंद्रिमी-चौ॰ मागवस्त्री कता। –सोडिल-वि समठ कारण जिसकी स्वि क्षिकामे न दी। —चारि,-विदु-पु प्रस्वर स्वेद, पशीना । -विशयम-विश् होति दर सरनेवाका । -विमाग-पु॰ कामका वेंडवारा, किसी कामकी पर्ण करमेके किए उसके विभिन्न अंगीको विभिन्न व्यक्तियोक्ते जिम्म कर, बाँट देगा (सर्वछाल) अभिवासि हितारि र्छंभी मामकीकी देख रेख करमेवाका सरकारी महकूमा। −शीकर सीकर-पुथमबक, प्रतीमा, प्रस्तेद विद्रा -चीरु-वि परिश्रमी। -साध्य-वि को (काम) परिज्ञम, दीइ-बूप सबससे पूर्व, प्राप्त, रहम दी सुद्रे, परिममधे दीने सथनवाका । –सद्दिष्णु-दि मह मती । ~स्थान~पु अम करनेदा स्थानः कारदाना । अमण-पु [सं] अमा शह सम्म्यासी, शह मिधा । वि श्रम करनेशकाः भीष जंगा। श्रमणक~पुर्नी थाइ वा त्रीम सम्म्यासी । असवा की [मैंच] बडायाती। संदों सुंदरी सी। सदर्शमा भीषभाः निधुणीः मेहनती सी । भ्रमणी-सी [न] दी**द्र** सम्मवानी । असित्त−दि परिशम करक वका गुजा। थमी(सिन्)−पु[मं] परिभमी म्यस्ति। (व० मेश्नदी। श्रय श्रयज-९० [मे] कामर। श्रम-९ [में] काना श्रम्या तिमुक्ता वर्मा साव श्वरपः दश । श्चव(स्)-दु [मं] कामा वद्या पना रतुनिः रमुस्द्यार्थ । श्रवण-पु [4] अवन्दित कर्ण काना मुननेशी हिया। क्ट्रीहरूपाम कालमे सुमक्द इभा पाल; मा प्रशासी व्यक्तिवीमें एक जिसक अनुमार मक अगरान्य नाम क्ष शुभ कीना आदिका अवस करना दे। अध्यवन त्तनकर प्राप्त किया गया पाना परा, कोर्नि। धना क्षेत्रश वतका बुक्र भी माना वितासा अनस्य मक्त था (समीर बर्ग ममय अनकानमें इध्यक्ते इमस्य वयं दिशा वा इनवर अंबने करे पुत्र विशेषमें महत्रेडा शाव दिया था। सधारेस मध्योपेन बारेसका नक्षत्र (रममै नीम नार क्षेत्र है)। बहना टब्हमा ६२६८ रहना। -कात्रहा-तुननेदी बन्तुदता । -शोषर-१। ने तुनां पहनेदी धीमाने हो सरायायस्य । -- हारूनी-सी बासन हान्दी का बारी समझे हुत रहते राठी है (१४

-बारी(रिन)-इ क्षित्र । -धक्र(य)-प्रक्रिया -माशन-प सीनर्पत स्वया दर्व औववियोंको मिलाहर वना दुभा एक चूर्ण जो शुरू रोगर्ये छ।वा बाता है (आ ग)। नादित्ती ना दोग। – प्रती – भी सूनी नामक वासः -पाणि-पु किनः -पाविक-पुरुदे 'शुक्रपावि'। ∽प्रोत−पुण्यः नरकः। –शृत्-पु० धिवः –सर्वेम~ पु• राक्सधामा । – सञ्ज-धुः एरंड वृक्ष । – हुँजी–सी पनानीः नवदास्त्रः। –दुर-पु॰ पुष्प्रस्कृः। –हस्त-वि॰ शुरु पारव करनेवाका। पु छिवा - हत्-पु षीत ! सु॰ ~उठका~द्वन भुमानेको-तौ पीकृत्वा होना । ~रेना−धेत्र व्यथ तत्त्व दरणः।

द्युएक-पु [मं] दुर्विनीत बीवा अदक्षनंबाका अधिवक बोबा !

द्यसनार• म कि॰ शुरुषी भौति गडनाः पीडा उत्पन्त करना ।

श्रास्त्रक-वि [सं] बिसपर शिवके विश्वक्यी छाप हो। द्यका−ती (सं•) तृती। बस्या।

ध्यसाइक-प्र (सं) संभेदी सहायपर मृता गया गीस । धुनारि-इ [र्स•] स्प्रते।

द्मासि−नि∘[मं]∉ंद्रपारी।युद्धिनाश्री हानीः श्रुक्तिक-पु (सं] क्याना श्रमक, शरहाः मुन्ता स्थी-पर चनानेबाकाः जाद्यम और श्रूपाले क्लाक संताय ।

वि॰ शृत बारम करतेवाका सीखबेबर भूना <u>ब</u>जा । चिक्तिक-भी॰ [el] स्कार विसमें मोध गोरकर भगत है।

द्वाक्षिम−तु [सं] वरसरका देव ।

श्चिमिनी~की [सं]दुर्माः

द्वारी-सीर [मेर] यह प्रकारको कास स्वरको। स्व, तीम बंदनाः है सन्। ।

द्म्यो (सिन्)-वि (शे) धून कारण करमेवाका धून रीयमे बीदित । पु शिवः मालावरवारः। सरवा । शुक्तोत्का खूकारवा~मी [मं] वह सता, सीमराबी ! ह्मस्य-वि [धं] सूनमें गाँछका बमाबा हुना सूने देने भीग्य । द्व कश्य । -- याक -- मौस-दु कश्य । म्हेलस-५ [मं] शामाः क्षित्रक, विक्रकीर वाधीका चैर बॉबनेदी सीहदी अंबीर, निगना पादर्वनमा शहेंदी निकार वेशी वंत्रमा कमरमें प्रमानिक एक ग्रहमा सरवती। तापनेकी अंशीरा परंपरा शिकसिमा । -वर्ज-वि अधीर या वेशीमें बहरा प्रशा

लेगर = [वं] का त्रा शामी शस्त्र जानवर्तिहै देशीको बॉबरेंके किए काइडी वर्गी एक प्रकारको वेही जिसमु वे भाग म गर्जे। है अंगल ।

र्भागतता नो [मं] प्रमिक्ता श्रीनावहता ।

र्मायला-शी॰ [मं] प्राप्ता, असः श्रीतिका लेगी। क्रमरको पेटी किमने बुवन अपनी नेतनी आदि चाँचन है। कमर्बदा दे 'शुराध । ∽वद्र−रि० इमनुस প্রাদিশ ।

ऑकक्रित−(र (ते) शिष्ट्रशीने कडवा दुव्याः देवा दुव्याः ध्यन्तः ।

मंगरी-भा । शिष्टे कीर्यस्था शास्त्रभागा ।

र्म्या-पु [मं•] पर्वतिश्वसः परानको क्षेत्रे सनु मकाम मंदिर बादिका कक्ती दिश्सा देवरा क्रारी मागा कोटि सिरा। चेंद्रमाओ मीक, शक्तिकाणा नरांध न सकी मोका सीया शीवधा या जन्म दरदुष्टेश स्त सीएके आकारका कुँकमेंने वजनेवाका बाजा, तिरा नियाया श्री कवि कानशेन का दशरूके बायला के ममुख अधिकार कासन प्रधानता बद्धर्व सन्तरहा कामीहेक विद्वा रतना पिचवारी। कामा कुमराहर ष्ट्रका कारता एक प्रकारका स्पृष्टा और व मामक भीपने मुखा वि मुक्कीकाः तीर्थ । - स्रेप्-पुर श्रीराहः सिपाका । - ब्रुट-पु वक्ष वर्षत । - गिरि-पु॰ श्रेन्स्र । -प्राहितान्याय-पु॰ यरबहे शहेका एवं शहेन १३४ केनेपर इसरा सीग भी बासानीसे परना वा सरता है। दशी तस्त्रके माधारकर यह स्थाब क्या है। उत्तर शास्तर्व बढ है कि किसी शुप्पत् बार्वका कुछ रिस्सा है। व्यानेवर उसका दोव बाग मी मंद्रव हो। बाना है। - अ-प्र अग्रह स्टिम अगरा दामा 🕅 ोयसं भारताः। −घर−पु॰ पर्वतः। −पुर−पु॰ दे -प्रहारी(रिन्)-रि॰ शानम मारमेशमा सी वसामेवाका । -प्रिय-५० शिव । सस्त-५० सिवारा । -मोडी(डिन्ड)-५ वंशक पंता। -पाय-५० वकानेका क्षेत्र । - प्रिय-५० इत्यः -वैर-५० यह माना धररका यह नगर, श्वनस<u>र</u>र । ~बेरक~1 भारी। सींक्र । -बेरपुर-तु प्राचीन उत्तर क्षातत्रक्री सीमान्द्रे बाहरः आधुनिक शमाहाशश निमेका मंगातार रिवा निगरीर नायक श्यान (यह निगारराज ग्रहकी राजधानी बीर राम वहींन समेनकी निराक्त वस धने वरे हे) । -बेराभम्डरू- प्रशुप्तम् । -बेरिका-श्री गोपी। -सुस-र्मिपाशामा।

अहंगक-प [र्न•] सिया बाजा; श्रीन जैमी मुद्धेमी श्रीश विषदारी: बंदर्शन सहित्रोरि, श्रीहरियाम, भीवड वृत्र ।

श्रीतावरा-सी [पं•] सर्वभूगी ।

श्रीगरान्(बत्)-वि (मेर) श्रीतुला । प्र

एक दौराजिक वर्गन । श्रीतार-त [तं] निवाता निवाहरा श्रीवा। वनुभव औररनाः चौराराः कानास्या भागुनिक काराध

रह श्रीत ।

श्रेंगारक-९ (मं•) मियाचा रिपारका पीपा। प्रामीन मसब्दा निवाहक आकारका मांग आह. बारि उसा प्रस्मुण इक रहाच दशर्व चाद ग्रंभीमाहतील ६ग दी बाला वर्षेत्रः धीरस्ताः दरवाशा ।

र्शनार-पु [त] शाहरमधानदे शानीरेते रह परान रह (श्रम रामहाज वहत है जिसका कारण रामधी मान वकता है अक्षा भीवमद ही प्रधान हों। संदोप तहा विवील बीमीनक समझ परेंच है। इस ३ शादे दी देर माने गरे है-सर्गनर्शनर और दिशेस का सिम्^तन नेंगार । हमके रणराम कर्षे भानेदा वह कारण कर में है कि बसमें रलके सभी अववय-विकास अनुष्ठात और

क्षाची बाबा सुबी यही करित प्राप्त होत है। बणका बर्द बसाब और शुक्ते देशता क्रान्य माने सदे है। गारित्य

वासमानतारका रिन मातत है-पु)। -पय-पु॰
सुमनेकी घरिप्रो पुफ सवनेवित्व, काला । -पद्य-पु॰
वो कार्नोके किए करोर हो कर्मकड़ । -पाकि -पाकि
कार्नोके किए करोर हो कर्मकड़ । -पाकि -पाकि
गो कारको कहरी। -पुरक-पु॰ कपर्रत्त । -पुरक
मूपण-पु॰ कर्मकुक कारि कामके करो। -मरपञ्चदि सवन-पीपर। -विद्या-की वह विचा वे काम्ये
सुमकर प्रदन्त के वार्गो हो। -विवर-पु कारका करा।
-विपय-पु अवर्गोदिवकी छोगामें मानेवाला विचय
सवन नामर नद्या, स्थापर आसि। -हार्गिका-को
मानार वृद्ध । -हार्गी(विज्ञ)-वि कार्गोको विव

स्रवया-चौ [सं] एक सक्षत्र हैं 'अवनः श्रृंद्रशिका शुंधा। स्राप्तास्य स्वाप्त [सं] स्वत्यप्त । स्राप्ताह्यपा-चौ [सं] तिर्विधीः शक्त बीकार्षः। स्राप्ताह्यपा-चौ [सं] स्वाप्ताह्य शुंधान्य । स्राप्ताप-चि [सं] स्वाप्त बोल्ड, श्लुले बोल्ड।

श्रवर्षेद्रिय−सौ [सं] सुननेदी सक्तिः कान । श्रवजीदर−पु [सं] कान ।

भवन १- पु कानः धननः । भवना - १ - व कि नद्दमा उपक्रमः, यूनाः स कि पद्दाना गिराना उपकानः, युभानः । भवस्य - पु (सं॰) वद्य नामः भागवरीका कामः।

प्रतिस−ि इत्ति, त्यका हुआ वका बुआ। अविद्वा−नी [सं] प्रतिका लागक तक्ष्य । −क −सू~ प्रतिकारका

तु प्रतिकृति हो । मुत्ते दोखा । —काव्य-वंदिवयरवर्षः की दिश्चे मारतीय साहित्यसाल हारा विर्यारित कान्यके हो भंदी-द्रम्य मन्य मेरी एक (अध्य कान्य तुमा बावा

है, वस्का निम्नव नहीं होता)। मांव-मि [तं] अमनुष्क, मांतितुष्क, व्यवा हुन्या घोषा। अपनी देत्रिवेसी वर्धी ब्रह्मेशका विवेद्ध । पु उपनी: —चित्र —मना(सस्) —हव्य-मि शिक्र, विकन्य! —संवाह —संवाहन—यु वडे हुन्को आसन

नारि देवर भाराम पर्तुचाना । माति:-को सि विश्वामः समः केट ।

आर्थ−कि [तं] कर्यक्त देशों स्टब्स् अर्थक्त कि [तं] कर्यक्त देशों स्टब्स् अर्थकारिमें निर्माक्ति प्रकारा हुआ । तर् व

हुमा मीत ।

साध्य-ली [में] चराय व्यंत्री।
साञ्च-पि [में] महापुत्तः पु जासनिवित पितृन्तर्यः
साञ्च-पि [में] महापुत्तः पु जासनिवित पितृन्तर्यः
साञ्च-पि महाप्ताः चर्चा प्रतिप्तितः दिना नामेनास्यः
साञ्च-पि सामेनाद्या दाना दिन्तरातः । नक्तर्या(मृ)-कृत्पु भावत्यमे करनेपाला ! नक्तर्यं (मू)-पु निक्षणः
स्रो सामान्ये करनेपाला ! नक्तर्यं (मू)-पु निक्षणः
स्रो मावदे रिक्तिको सोनेपके सास्याः किल,
किली स्वपित्ते सामान्ये व्यापित भावत्यः किल,
किली स्वपित्ते सामान्ये वित्ते सामान्ये स

हैनता। वमा संबाध प्रमेष्ठ करण निरस्ताम्हे पुत्र, केरता मामु विश्वस्तमानुके दिना निरस्ताम् । माम् । न्यम- ॥ कारका कृष्ण नव विश्वे निष्युत्तक श्री क्ष्य है । न्युक् (म्) अमेक्स(क्यू)-पु विन्दा । न्यास- प्रमुख्य साह। न्युतक-पु मास्ति विकास-निकासि कि मासुत साल प्रमुख्य ।

मस्तुत साथ परार्थ । आदिक-वि [सं•] सादःसंदेधी । दु॰ सादसोच्हा, सपरें की यदी वन्तुका तथयीग करनेवाका; साद-संदेधी वस्तु । आदि(दिन्)—पु [सं] सादस्योद्धा !

आर्यो(बिन्)-पुर्ति] साम्रामीकाः। भारतीय-विश्वति | साम्रामीकाः। भारतभ-प्रश्वापः।

मापी(पिन्)-इ (छ॰) पायन, स्थ्वार। भाग-दु॰ (छ॰) समधा महोना, मासा मंदर, अरवारो

्छात्रम् । भारतगेरः भारतगरक-च्रासि) नवः मिश्रा(०१०) ।

आय-पु (तं॰) बाधव शरण; मकान । आर्यती-की॰ (तं) वर्मपुरोः कालीमिकं। आय-पु (तं) सुननेओं क्रिया जवण; बरुमको क्रिया।

आवच्य (च) धुननेशामाः । पुनेप्रस्थितः हैरै सावच्यातीः शिष्याः दूरणितः सेदाः। सम्पातीः शिष्याः दूरणितः सेदाः।

श्चाचग≉−दुदे• भारक¹ । साचगी−प्र• चैन ।

आक्षा-पुरुष्ण-। आक्षा-पुरुष्ण-। पांत्र वर्षके वारद 'महोमीसिंगे गोर्क्य को वर्षाक्रावमें भावतक्षेत्र वाद पहला है। अवसेद्रिकास्य क्षामा वर्षाक्र अवया जासस्य भावत्य विद्यास्य सम्बन्धः। वि अवस्थितिक्यकेशी अवया सम्बन्धां वर्षाक्षा अवस्थानी

प्राप्त श्वानः। अध्यक्ष्यः—मी (सं॰) दश्यको दृष्टः। आध्यक्षिक—पु (सं॰) चोत्र अस्यम् मासः। वि अस्य-अस्य-संभीः।

आविष्यका-नी [र्गः] जीपनि विशेषः। आवष्य-जीः [र्गः] वीप्रभावन सास्त्री पृत्रिकाः स्था वैवयका स्त्रोदार स्त्रोति। वस्त्राकीः सुरी।

ववसका स्वाहार सकाना । वस्याका सुदा। श्राह्मम्बद्धान्तु गिराने बहानेको क्रिया। श्राह्मस्त−प्र [सं] राजा आक्के पुत्र (स्टॉने दो अक्सी

नगरी रसायी थी र

आवस्ति आवस्ति - की [मं] वचर कोस्मारिका वर्ष की पुरि राजासकार्य एते फिराकरी करा पत्ता है। ते में मेरिका में प्रियुक्त में बहुत है। (सम वर्ष पिहेट-महेट में की बचरी महत्त्व में राज्य में मेरिके दिन गोर्थाकम है क्वीकि कुछ दिनीतक जुद्दिन वहाँ निर्धान किया था।

क्षाबा-की [+] ग्रांश ब्रापिता-(द [d]) सुगाश पाया घर्षका । ब्रापिता-(द) -चु [क) सुननवाकः । क्षाविद्य-(द [-d]) कार्तिश व्यक्त संस्थे । ब्राविद्य-(-चु [-d]) स्वादे । दि सुनेदेशका । क्षाव्य-वि [-d] सुनेदे शीव्या शीवेत करने बीवा

सुचित्र दिने जाने नीन्य ।

144 ऑचमा-बॉवस र्धोचना=~ए• कि॰ बकाना, तपाना। व्यतिरिक्ष व्यतिरीक्ष-वि० (सं०) जंतरिक्ष-संर्था, भारत-**र्वोचर*~प्र• दे० 'व्यायक'**। शीय । पु• दे॰ 'बंतरिश्व' । भारतरेशिक~वि॰ [सं०] जात पुरमें उत्पन्न वा उसमें होने व्यक्तिम पुराक दुपट्टे मादिका छोरा शाकी, योगी भाविका सामने रहनेवाका छोर, सँचका स्तम (का॰) । भारविदेशम्ब-मि॰ [सं] दे॰ 'भारतिहरू । म• -बासमा-विवादकी पक रोति (मुसक) ।-व्याना-कुब पीना । --वेमा--वच्येकी युव पिकामाः विवादकी एक भौतिका-∹सी० सि] पडी बद्दन । रोदिः भाँचस्से इवा करता । —में बाँधना –गाँठ गाँवनाः भाषि–वि सि] भाँतसे संबंध स्क्रोनाटा। प्र *वां*त । शब्दी तरह नाद कर केना। (किटी वस्तुको) सर्वदा साथ **माजिक-**वि० सि०] अंत्र-संबंध । रखना ।--क्षेत्रा--भौजकसे पैर छक्त प्रणाम करना । र्मोद्धक-पुसीक्तक वेशी। भाषोळ-प्र॰ [सं] शुक्रना कपनः शुक्रा । **बांबर-**पु० [सं०] बांबतः अंवतीके पुत्र क्रुमान् । वि **व्यादोलक**~पु (सं०) भूषा दिकाने, सुलानेवाका । अंत्रम संस्थी । भौतोरून-पु॰ [सं] दबरसे उत्तर जाना आना, शक्ता भाँद्यम∽पुश्रीवन । **साँबना**~स द्वि॰ संदन **क**राना। दिसनाः इष्टपरः फिसी पातके स्मिद्र स्थापक सामक्रिक्ष **शां**जनी-सो॰ [सं] अंजन । -कारी-सो॰ संबन दैवार मयकः तब्द्धीकः । भविष्ठित-वि [सं] कंपितः सुकाना हुमाः इस्वस्ते बरनेशकी की। वाकनेय-पु [सं] इन्मान्। भाँट-पु, सी अंगूटे और तर्वनीके वीचकी अगसा वाँका ऑप-स्ता अभिराः रतीनाः नापतः। पूकाः काग-कार गाँउ। -साँउ-सी साथिश वंदिशः আঁঘলাঞ্চলত দিয় হলা খাজনা, চুট দহলা। र्शु॰ -पर क्यमा-दॉबपर कडना । र्मीबर्ग , भाँधराध-वि० वंदा । **व्याँदनात्र-अ** क्रि. अँटना पृरापत्रना पार पानाः पर्दे भौबस-५० सि॰) मॉड । चनाः सिक्तमाः, द्वाथ कगनाः । छ कि॰ मॅटानाः । कोषस्मिक−पु [मै∘] पाचक रहोईदार ⊩ वि० प्रकाते-**भारी~को** शती-टंडा केक्नेकी शतीः पूकाः चतका वाका । **भाषारंश**−पु अवेर मनमाना कार्व ! सम्बाः कस्तीका पदः वयः देर । भाँठी-सो॰ दहा वसगम काविका भक्ता। गाँठः गुठकी आँची-सा॰ बुरुवरी कोरको इवा, त्याम, प्रसंबन। मारी चळवा हुना स्तन । वस्त्रकतः। वि " ऑपी-जैसा नेगवान्) नद्वतः तेता। प्रुक भौड नदि [सं] कहेते करन्छ । पु हिरम्मगमा मेल्कीसः -डरमा-इस्वक मचनाः तुकान वरुना । भेगा महीका देर । - ज-वि अंदेसे उत्पन्न दोनवाछा । कर्षि≉−सा दे'औषी'। ब्रोध्य-पु॰ (सं॰) बंदापतः अवद्वार । प्रभागि सर्वमाति। **ऑड**-पु॰ अंटकोछ । भौध-पु॰ [सं] दक्षिण मारतका तेकग-मापी प्रदेशः माँदी-सा गाँठ, बंद: सिटा: पहिनेकी सामी: र अंबकीय । भागमासी । भाँडू∽विण्लो विषयात हो श्रृंद्ला (वैरू)। आधि-पु॰ [सं॰] एक तरहका अश्व । भौत-वि [सं] अविम अंवका। আবি†−৭ লম। **चाँत∵का** पाचन-संस्थानका शामाश्चनके बादले सकदार श्रांश्रध्र∽प्र [मं] अंदष्ट देखका रहतेदाका। व्यक्ती माग किसमेंसे होन्द्रर भाहार, रसप्रशासे बाद **साँवाइकरी** न्या नामाइल्याः। मक्कपमें वाहर निरम्भक्षा है, संग सँतही । नकहू-पु व्यक्तिकेय-प्रसि] कारिकेमः प्रताह । चीपानीका एक रोग । सुर्व -असरना - बात बतरेनेकी श्रॉब-बॉय-प् अंडपट, मिर्जब प्रसाप, स्थायक । बीमारी, अंबबृद्धि 'हासिबा । -एँडमा-बॉलीसे वेंडन ऑवि−पु यक तरदका विक्तासकेद मक। काँबर-प किनारा। कंपने वा बरवमका किनारा। होना मरीह होना। ~(स) जखट कामा-के हाना। शॉवसमाक-अ फि॰ उमट्मा, वर निकल्मा । ∽गसेमें या मुँड्में भाषा~मौतींमें वरू पश्ना तंग होगा। **साँगदा**#--विश् गहरा । सर्विम-पु पदिवेके छेत्पर सनावी जानेवाली सीहेको -समेरना-मृद्य सहना !-सूदामा-बहुत मृत्या होना । ~(सों)का वस शुक्रना नष्टकर साना । सामी। एव वहानेका भी बार । व्यक्तिर-वि [सं•] भीतरी भेतरंगः ग्रुप्तः। स् अंतरंग सर्विरा-पु सरिका। मिनः इरवः मांतरिक स्वभाव । ऑबस-न्या वह शिक्षा जिलमें गर्नस्य शिश किएस भौतर-पु नंतरः ऐत्तरम वह माग को एक बार बीतनेके रहता दे ह किए पेरा बाता है। पानीकी बयारिबेंकि बीच छोड़ा जाने-सर्विसगद्दा-पु म्**रा**ग औषका । बाका राष्ट्रा । ऑबसा-पुपक्ष पेड़ या बधका फल की मुरम्ना अधार सांतरागारिक-Re [मं] भंगरीके कर्मकोंग संबंध श्माकर शाने वा दवाठे काममें जाना है। -पत्ता-भी रप्रतेशहा । मिलाइका एक प्रदार : ~सार शंधक ~सी॰ साफ की हुई **व्या**वरास∽दि [मं•] जांवरिक स्वयायका द्यान रराजवाका । गेपक १

जॉर्वॉ-पु॰ दे० 'शावॉ' ! भौतिक-वि [सं•] मंद्र-संबंधीः कुछ, भोता। भौगुर सस-पुर [मंर] पूर दिसमाना तुशा पानी । भौर्य-वि• [मं] अञ्चलीयी । वास - प भीत् । बरमा, बद्ध । ली । बोरी, रेहा।

भाँसी - सी वायन, भें: 1 र्मीस्-पु नेत्रथल संज ! ~ढाए~पु॰ चौपार्थोका एक

रोग निसमें ऑसोंसे बहुत पानी गिरता है। सुरू -गिरानाः-बाह्मना-रोना ।-पीक्षर रह साना-मन मधीएकर रह बाजा ! -पीँछना-हात्रस वैदाना ! भाँसुभाँसे सुँद् घोना-न्छव रोना।

महिश्र-५० शरहत ।

साँहाँ-व॰ निपेषस्वद श्रम्द, नहीं I

भा-रप॰ सि॰ो तरः (बासेत) से (बाबन्म), यर (आयी-वन), सहित (बावाककृष्क) बादिका ग्रयक ।

सार्थवा-दि (फा॰) आनेवाला, मनिष्य । अ॰ आनी । −भ्रमानः(−पु॰ मिश्वत्कारु (व्वा) ।

भाड+ −दौ अत्त, बीवत । आइना! -पु॰ आईमा।

भाइस॰-पु, सं:• दें• 'भावस'। माइसकीम-ना । [मं] दुव भाविके नवीगते तैवार की

प्रदे करन्ये ।

आहे • - सी आया मीन ।

मार्हन-र कि विवास कामून निवम।-(से)अकदारी प पारसीका एक प्रसिद्ध ग्रंग जिसमें अक्तरके शास्त्र प्रशंकका वर्ष व है। —सस्तुनत ⇔इक्स्मत—प ≂शासन विवास ।

भाइमा-पु॰ [फा] दर्वण, श्रीशाः दिवादका विकडाः (का भारतं मेंसा साफ रणाः) र नदार नवि शुल-वीव प्रकर करनेवाला । पु॰ ताई ।-बडी-खी॰ कमरेमें आह नारि समानाः फर्ममें पत्थर भारिकी जनारे रोधनी करने है किए राउँवों सन्ते करना । "साज -त॰ नार्वता बनान-

वाका । सु॰ −(वे)में सुँद वेलमा∽भवती थान्यता समज हेगा। **कार्ड्मी-रि** [श्रण] तथ निपानसंगना निवमक्द ।

भाउस-प्रदेशीस ह साउ॰-सा दे॰ भात i

भाउत्र, शाउपा॰-पु॰ व्ह नामा ताशा (साउ-बाउ+-५० बाई-वार्षे (१६ना); प्रकाप I

भाउत-५ (फा॰) सामरका प्रच्याः (बारिटाये) शोजस्य लाया बानेवाठा माव, द्विष्ट वश्यता ।

साउर्वा-वि॰ प्रा॰ हिमा दुनाः ह्वाचात्र । भाड≠-सा दे 'मारु'।

बार्बप, बार्बपन-पु: [मंग] दिकमा बांपमा। आकंपित-विश् [र्मुश] हिसा बाँधा दुआः दिवाना ना

बेपाशा हुआ। शुरूप दिया हुना ? भाष-तु मदार ।—की शुद्रिया-भरवनश्च वृशाः वर्द्रव

र्गसी। ब्राकरि-ज॰ [नं॰] कमरतद । दिः कमरतक पर्देवनेव काः भाक्रवस−स्मै भि } भूष्य का शब्यके बाल्का दशका ।

निवार करनवामा । मु॰~विगवना-परकोढ विगवा । -में विया विद्याला-बरलेक्ट्रों साम आसा ! भाइत्यसी क्षेत्रर-पु एक छएड्डा संगर को संबद्धे भग्नव दाश वाता है। साख्याक्+-प् रे॰ श्वद्यः ।

परकोक । -अंदेश-वि अमसीबी, इस्रेश, वर्तानेश

आकर्-प्• (सं•) साना करपश्चित्वामा मोदारा भरा तलबारका एक दाय । वि॰ दक्षा श्रेष्ठा सरिकाशमा (बस आकर)। -श्रीय-पु॰ सम्पर्शेश, विश्वोध वर्गा ऐसे अंब बिनमें सन्दी, देशों स्वकियों, बरमाओं रन्तरिः का विकरण दिया रहता है और जिनते ग्रंशदिके प्रशानकों सहस्वता को जाती है (वृत्स ऑब रेफरेंस)।

आक्ररकरहा-प॰ शि॰ो यह प्रसिद्ध श्रीवृत्ति अकरवरा । भावतराज्ञात्र -स कि वास्ट दरमा, शीपना । **बाकरिक-१० (५०)** सामके कामको मिक्सनो करभेराकाः साम स्रोतनेवाणा ।

माकरी – मी॰ सि॰ो साम सीरमदा भंग: ० माप्नकः शास्त्री । बाबरी(रिस)—नि॰ [सं] छामसे बनक, सनिनः मस्प्री

मरक्या। प्र॰ दे 'नार्चार । भारक - अ॰ सि॰ दानन्छ । वि स्तानत्त पर्देश हका. धानका छता धना ।

आकर्णम-प्र[गं] नुनमा। काकर्णित−वि रिं•ीतनाद्रभाः

जाकर्प−५ (सं•) धीवनाः धिवादः संस्कः रामाः राते-क्षा रोम्य प्रमेकी विद्यातः वर्ताये ।

आकर्षक-वि [र्ग+] सीयनेवाकाः वृत्तरीता मन स्वान **अपनी और शीयनेशमा, शेयर, सुदर ।** क्शकर्पण-पु॰ [एं॰] (बच्चो आर) सोबनाः रिपानः हव श्रीचकर हररथ व्यक्तिको असा क्रेमेबा ताबिक मबीग । ~बाक्ति∽नी दिसो मीतिय पराचंद्रो अन्य पराचंद्री

भवनी और गांधनेको प्राकृतिक दक्षि चुँरक धन्ति। आऊर्चेनी-न्यो निश्री यह शारि ताब्वेदी क्षमी बॅड्मी। द्यारीरपर अंतिम की शानेशानी नक तरहकी तहा। वह प्राचीम मिद्दा ।

साइर्पन>-<u>व</u> ६० 'वादर्ग । भा**क्ष्यमा**ण−स०कि मांचना।

भाष्ट्रपिक:-[४० [मै**०] जारार्यन कर**गेराला सॉ.४मेराली । माक्रपित−4ि [त] दे 'शाहक।

आयर्ची(पिंगू)-वि० [ग्रं॰] दे॰ आएनश आक्सन-प्रान्धि प्रदेश स्वतना समजना रही।

करनाः दिनमाः धीव इरना अमुस्थाना रप्पा मार्चाटा (आकृतिस्त-वि०[वे०] गृहीत अंगृहीत अपका ह्या हुनी

वंदित दिशा हमाः समझा तुमा।परिगान । आकर्ता = नी वेनेमा व्यक्तिया धीरेश भारत वरी। आडस्य−दु [र्त•] वेट्रत्यमा वर्गानाः वाभूवाः वर्ग

रबनारीय। अ व्हरत्येत। मात्रकाक−पु॰ [तं] शेवदारः योदः ग्रोटः सर्पदाः स्पै मृष्याः दुःरापुरे रम्ति ।

सित-वि॰ (रं॰) भामिता सेविता पक, पका तुमार दिता। सितपान(बन्द)-वि (रं) कासवदाताः सेवक। सिति-की (रं॰) भामव सवारा।

भिय-की श्रह्मान, सम्युद्ध ।

श्चियसम्ब-दि [सं] अपनेदी शोग्य भाननेशाकाः वर्मशे।

भिवा-सी सि॰] भीवर, विष्णुकी पत्नी।

मी-सी । सं] शोमा सीवर्षः संपदः संपत्तिः विमृति द्यान-बीकता राबोधित गौरवः वेश-विन्यासः वैश-रचनाः सभावतः प्रमाः नौति यद्यः इतिहः मिकिः विध्वाकी पत्नी कश्मीः सरस्वती, वाणीः त्रिवर्ग-वर्गे अर्थः, कामा प्रकारः प्रपद्भा साथना व्यविकारः कवि नामक ओपविः सर्वनः सरक प्रशा कमका विश्व प्रशा श्वेत चंद्रमा प्रकामा। एक त्तरहरूत तिक्रका देंती। पंडमाकी बारवणी क्ष्मा । प्र रामविश्वेषः वैन्तरोका मिनार्ट संप्रदावः आदर-मूचक छन्द भो प्रावः व्यक्तियों के सामके पूर्व क्याबा जाना है। एक ण्याचर कृतः। वि सिमितः योग्वः संदर । ~कंठ~पु॰ क्षिया महाकवि भवमतिका भागांतरः एक रागा क्रव बांगल नामक भूभाग । - यहकांग्रज-पु॰ सबस्ति । - सला-५ अरेर । -क्वा-को क्वा कर्नेस्की । -कर-प विषा रकोत्रत शक क्रमक । वि कश्यान-बारक । -करण-प केरानी कक्षम कोसक्की प्राचीम राज्यानी । -क्षीत-इ कमकापति विष्यु । -काम-वि॰ वद्म जाहनेवाका । -कारी(रिश)-पु एक मदार का बूगा: -कीर्ति-सी साकका एक मेन (मंगीत)। −ऋष्य-प्रज्ञतिधेरः। −क्रणा-प्र• "क्षेत्र-पु॰ जनबावपुरी । —क्षश्र-पु चौदना शिलरन ण्क देव पदार्थ। — शास्त्र – पु शक्कवाचलः । −गणेशा – ष्ट्रारंग। ~गवित-प्रभागत् वयस्यक्रीमस्य प्रका च्यामें च्यु विष्याः त्तवारः राज्यकः श्रवमागार । -प्रद्-पु॰ पश्चिमोके पानी पौनेका श्वान पश्चिपानीय रवाल। –धन-प तदः दवि ददी। ~चक-प्र निष्ठरसंदरीकी पुजाके किए एक वंध-विद्रीय (त.)। पृथ्वी का क्षा ((स्रोर्थका चक्का। −क्षेत्रन−द पंत्रनका पद भर । - श्र-प कामरेना शांत । - वंक-प्र राग-विदेया – तर-पुरस्का देहा – तन-पुरस मरका -शाक-त (स्वास । नशेका(जस्)-त इर । - इ-पु दुनेर । वि शोमाशयदा शोवर्डका "र्वित-१० विभा । -शामा(मन्)-१ वृष्णके एक धारा सुरामा। - हुम-पुशी वृक्ष। - घर-पु बिग्नुः श्रीमद्भागवन आदि वैच्यव पुरालींका प्रसिद्ध येक्सारा यह तीर्थंडर । वि शोशायुक्त । --शाम(न्)--प्रसादि रहनेदा स्थान दसल ।—सँदल --पु॰ लक्ष्मा प्रव कामरेवा संयोगमें एक नाम । - नगर-पु कश्मीर को रावधानी। ~ताच-तु विध्तुः ⇔निकेत्र-पु क्षमः सरक्षियांना भोनाः नेनंद्र । --निकेनन-पु म्पद-निदाम: सदमीदा वासरवाना वेश्वेदा विष्यु । "निर्मवा-भी रावा।-नियि-मु निम्यु !-निवास "उ निम्तुः मन्त्रीका निराणश्यामा विश्वभोकः वैमृद्धः। ~पंचमी~को वर्धनपंचमी जो साथ शुक्र पंचमीको ।

पहती है। -पति-पु॰ कक्सीपति, विष्णुः राजा, नुपति । -पथ-पु राजधार्ग । -पशी-सी महिका । -पदा-प॰ क्रणा । -पर्ण-प क्रमक अनिनेध इस । -पणिका-को॰ बदफण कृष्ठ । -पर्यो-को येमारो बुक्ता कटपाल बार्स प्राचिमकी बुक्ता इस बद्धा श्रापितसंध बुध । —पा –वि सस्थिकी रक्षा करनेवाला । ~पिए-पु॰ सरक कृषका रस गाँद गंगाविरोजा। -पुन्न-पु॰ कामरेवा बहुका बीहार कोहार चंहमा । -पुथ्य-पु॰ -कर्मगा प्रचकाक्षा प्रवेत क्रमण । ∽प्रत्⊸वि क्रस्याप-कारक। --प्रसम-प्रकर्गा --प्रिय-प्रकर्शक। ~फछ-प विस्व वृक्ष वेकका देश राजारनी वृक्ष् शिरनीका पेड़ा रूक्मीकी कुपाका करू वस प्रस्य मारियक। ⊸फ्छा∸मी मीनी। शुद्र कारनेही। ~फस्थिका-स्त्री प्राट कारवेलीः सहाजीनी वश्र ।-फस्री को॰ भागनको, भौबसाः नौती। -क्षपु-पु॰ असृतः। मनुपर्व । ~भन्ना-भी महमुरतक । ~मस-9 ~ जाता(न)-प चंत्रमाः चीवा (समह-संधनक समय भी ∸न्थ्रीके साथ करपत्र की नैके द्वारण ये तलके आ ता **रु**हराते हैं) । ~र्मसरी~की <u>त</u>रुक्षो। ~सद~प भमका वर्मटा −श्रकापद्या−सी तंत्राकृ, पूप्रपत्राः। −शस्त्रक-९ रसीनः स्टसन्। −सारु-५ विधासी यालाः यनेका एक जाम्बन । - मुग्र-पु॰ श्रीमायुक्त भागन सुद्धाः काल्यक्रका साहवी वर्षः पत्रमे लिखिन रवस्ति आति वायक भी शब्दा रवि, गर्व (केंद्राव)। -मर्ति-मी॰ विका वा कश्मीको प्रतिमाः प्रतिमा। -युक्त-शुत-दि क्यमीयात्। सीर्वपूर्णः भारर सूचनार्थ (बीबित) दुवरों के नामके पूर लगाया जानेवाला विभोषण ।–१ग∽धु विभ्युः तासका एक मेद (संगीत) । यहन-प्रमेग्र राष्पांतर्गंत यह तीर्थस्थान बढ़ी श्यास्थामी का मंदि९ है। −श्मण-प्र सिन्ता एक संबद राग ।-रचन+-पु निष्पु !-रम-पु श्वारपीनः (जन मंबाविरोक्षा ।-राग-तु रायविशेष । -राम-तु दश-रव प्रव तवा भीनापति राम !- श्वयमी-मी भेत्र शका मनमी (बह रामधी जन्म-दिबि मामी बादी है) ।-स्ट्रसा-न्दी महाप्रवेतित्मती। पदी माल-ईगनी। ज्यास-५० विष्णुः विष्णुके वधन्यन्तपर शाहिमी और सफ्टेर बाबीडी मेंबरी यह अगुटेमरकी मानी जाती है। मृतुक द्वारा विष्यक्त वभवर लाल मार्रमानेश यह विद्वार आईतीया वस ध्वत्र। स्ता भेषता एक मेर । - ० पारी (तिन्) -• मृत्-• महमा(इसन्);-• श्रीयन-इ दिन्। -बागक,-बागबी(किन)-पु कर प्रदारका भीता जिल्हा छानीवर मगड वामीबी मेरग हाना है। --वन्यां इ-च विश्व १ - चर-५ विश्व १ -- चराइ--पु वराक्षतमार भारण कर्ज्यान शिल् । - बाज मृत्य वर्षन-पु शिव ६ - वस्माम-पु विष्णा का स्वर्धिः करमोधा निवाद धनी स्वभिता चवारी-स्त्री एड प्रधारकी बा.बारवान मना मितवादा कहा भए । न्हासी-क्षी॰ घड प्रदार्शी सागवानी । --वाहक-मु (कमावर मानक शक । जनाम-पु निर्मुः शिका काला महत बुण्या रम, लब्देनसाटक र नेवामा(सम्)-5

रवान । संक्रेप्रमान - एक कि एंक्ट्र, विश्विमें बाबमा । बन्न कि क एंक्ट्रिया दोना - 'व्यंत्रक रुक्टेशा कुमुविधि कुको'-ए । संक्रेतिया - विश्व विद्यास हुआ निश्चित्रक सामित्रय । संक्रेप्रमाना - स्व स्थितना, क्लेप्सा खोक्कर सक्ट्रा करमा !

करना : इंक्रीच-पु: [छ-] छिन्नुसा। वंग दोना, श्रुँदना (नेक्सा)। करमा। मन्। स्ट्रीपा प्यतना (क्लाछपका)। वंपमा पक सप्रमो। बनी। केसरा दिक्का एक कर्षकार स्थिमें किसी वरणुक्त प्रक्रियन संस्तान वाता देश। एक बहुर ।

-कारी(रिन्)-(१० धुक्तेवाला, विनधा धारमाने वाल्। -पदक्-पु॰ पौरीका यक रेमा विश्वमें बनके परे सिकुत बाते हैं। -पिछ्यन-पु केसर। -रेका-स्रो सरी सिक्वर।

का सुरा (उक्ताः । मेक्सेच्यक∽वि॰ [सं] संकुष्टित करनेवाका । सेक्सेचन—तु [सं] मिक्सेवनाः यक प्रवादः । वि. संकीय करनेवाकाः सिम्बोदनेवाका ।

करणशास्त्र (राज्यक्रणशास्त्र र सॅंक्रोचनाश्र~स• कि शंकुचित करणा। स• कि संदोचनी∽सा सि केबालः।

संबोबित-पु॰ (ते] बुदका यह दंग । संबोबी(बिस्)-वि [स॰] छंडुविन दोनेनाण (बुप्पाटि)। छितुष्तेनाका। कत्रानेनाका ।

संबेदमार्श-म कि कीथ बरना। संबंद-पु (संशेष्ट करना: रोमाधिहानाः पुत्र। संबंदन-पु (सं) देशः अनुनीसका एक पुत्र: समक करना दुद्र। - नंदन-पुरु बर्दनः सन्।

संब्रम-९ [मं] काब बाना। गमना अमणा अगीत।
मंद्रस्या, यूर्व या नवज्ञको बोजी। तंब रामा। बुर्गन आगी।
बदिनारिक सामे र कस्ता। दुन विश्व रामा। बुर्गन आगी।
बदिनारिक सामे र कस्ता। दुन विश्व रामा वर्देश्यपि
का शावना तारेका दूरमा। स्टंडका वक मधुनर।
संब्रमण-९ [मं] गमना समन्त्र मिनना मंग्रेण। ब्रवेश।

सारमा रास्त्रमें सुर्देश प्रदेश संत्रीतः न्हेंबे कारमा रास्त्रमें सुर्देश प्रदेशकात्रा वृत्युः वार करायण रोमेश रिनः एरलेक्यात्रा वृत्युः वार करमेशा स्थला । संस्माणका न्यों (सं प्रदोड़, सेलरी ।

सैक्सिल-(२ (मं॰) पर्नेषाया प्रवेश करावा दुआः परिवर्तित क्रिया दुवा । सप्रमिता (नृ)-वि पु [व] संप्रमण करनेवायाः

वानेशाना, समन वरमेशाना; प्रदा वरनशाना । संबोत-दि [से] यत गुजारा हुआ प्रदिष्टः रवाजांत रिता भागा सुदीना मत्त्रमन्त्र, प्रनिदेशितः दिवित, अदिता संबंदितुष्टः हु० वतिने बाग सोदी संवीता

स्थात्त कर।
मंत्रीत-कोर्श [] नाथ गयवा विन्मा यस हिर्दे पूर्व दिहत्त्वा मार्थ वर्ष वा दिन्दी घरका कह राधि : पूर्व (किम्प्रेस) वर्षाया क्लोक्स्य मुश्लिक्षक्रमा पुर्व किम्प्रेस। विकासक : -क्कट-कु रह स्ट्रम्बिक कह लिगे सुकानुत्र कर वाला जना दे लिगे] । विकास-इ [व]] प्रदर्शा कृषिमार्थ क्ला वर्षा

बुगैय मार्ग । संकासक-वि [सं॰] यकते दूसरेमें संकामन करनेवाका। सूत्र आदिसे फैक्मेवाका (रैमा)।

सूत भारिते फैक्सेमाका (रैग)। संकामित-वि॰ [तं] दस्तांतरित किया हुमा; दूसरेको यतलाया हुमा। -{ संकामी(सिम्)-वि॰ [तं॰] संकाम करमेवाला, फैक्से

संक्रांसी सिन् , निष्ण सिन । एक करनेवाला, प्रकार सामा से एक हारा पैकानेवाला इस्तांतरित होनेवाला स्वांसिक स्वाःस्य संक्रीड-पुण्णिने क्षीता के प्रतिशास प्रकार । संक्रीडल-पुण्णिक स्वाःस्य स्वाःस्य स्वाःस्य स्वाःस्य स्वाःस्य साम्ब्रीडल-पित्ता । संक्रीडल-पित्ता । संक्रीडल-पित्ता ।

सक्तुक-वि [सं] बहुत स्थादा शाराज । संदेशेल-पु संक्रांति, संक्रमय-काहु पुत्र स पारयत वैत्रसंवि संक्रील'-विश । संक्रीदा-पु [सं] साव-साथ विकाला, बोरने सस्य

करना औरवें निरामा ।
संक्षित्र-वि (चे] दिश्वरूक गीका, तर-वदर ।
संक्षित्र-वि (चे] दिश्वरूक गीका, तर-वदर ।
संक्षित्र-वि (चे] कुमका हक्या कितर प्रभा आदि
पर गया वो (देशे अंचा आदाना)। बिकारवाची पूर्य ।
-क्याँ(सँग्)-वि विचे दर एक क्रायमें बदिनारं
सोदो वी ।
सोदिन्य (चं-) अरवविक आहेता। गर्मामानदे नाट

सच्ये यांगर्ने यांग्य होनेशाना रह क्षिष्ठश्च प्रृग्ध आरं किंद्र स्पन्ना निर्माण होता है। संक्रिय-पु [वं] बट पोशा। "निर्माण-पु० पोश्यो पुरक्षरा। संक्रियन-पु [वं०] बट देना।

संझ्य-व [र्स-] विमाशः नरवादीः अंतः कोरः प्रत्यः यद्य मदस्ताम् । सक्षर-व• [र्स] साथ विकटर यदनाः दो नदिबोदा सोगमः।

र्सक्षाचन-पु॰ [मैं] यह जब मोधीने सदानेकेकाम व्यापी:धीयाः र्सक्षास्त्रमा−की [सैं] पानाःश्यामः सीक्षास-मिं [मैं] पेका द्वाराः राजीहनः सोटादिना

हुआ करान हुआ। सुलासा गृहीतः तंता छोता संवतः
- नीर्य-दिक जिससी संतर्ग स्था है। - हिस्प-को नियमिसी एक मानाश जिसमें तिता स्वतिकार्य को नियमिसी एक मानाश जिसमें तिता स्वतिकार्य विश्वा-की भिन्ने हुक महसी मान गाँउक्सिन एक (कोक) । संक्षिति-की भी जिस्ताः दीम बहनाः प्राना कांत्र

नवाना वह प्रवादधी नात्यते भावता व्यक्त वरि वर्षत्र (ता)। संक्षेप-द्र (ते] चैकता अवता दला सर वस्ता देण बरवा प्रशास शेष्ट क्या तुनते देवांचे स्ता-दमा देवा केन वरिवा गावता नेतामी । स्त्रीप-

इंदेड ब्रह्माञ्च (का ५३

प विश्वासी बहना अवस्यव धीनेवर १०वमे बहदर

भीमंत∽भुव वारपोन ! --विद्या --सी पन्न मदाविवा त्रिपुरसंदरी भृताच्ययम्-प्र• (सं) वेशका अध्यदम्) (सं)। - मृक्ष-पु० अधान कृष्यः विस्त कृष्यः पीहेकी श्रुतास्मित-वि [सं] वैदद्या, वेदका प्रता, पाम्कर छातीपरको सफ्रेट शब्दोंको एक प्रकारको सँगरी । पास्य । -बंधक-पु॰ भोरेडो छातीपरको सुपेद बा**डी**डी एक भुताञ्च-प्र [सं] यह एईनेहीय गरेम। मकारको भेकरो । - कुछि-छो । नेशिक्षको पत्र देवी । भूतार्थ-५ सि] छना हर्र या बयानी यहा हर्र एत। -वेष्टा-वेष्टक-पु तारपीना रंजन ! ~शैकाव -पु• अति चौ॰ सिं] सुगनेदी किया कानः धन्द, माँक रामानुज, विशिष्टादेत संप्रशावके वैकास । -संशा-प्र . नेदा वानः गार्गा पात्रमीतः किंगरंती कम्मृति। सर कांग, तर्वग । ~संपदा-तो भावि बास्क बोवि । मक्षमा चारकी संबंधा मनुपालका रह प्रकार। स [हिं0] राषि । ~समाध~ष -सदा-स्रो रवरसे बसरे स्वरवर जाते समबदा बतात सरम सर्पत रागः। -सद्दोदर-पु (समुद्र गंवनमें कहमीके साथ (संगीत): समकोण विभवन्य कर्नरेका, साममेन्द्र रेका। छन्पन होनेवाका) चंद्रमा। -स्क-पु एक वैदिक --कद्र~पु॰ शॉयः वयस्या । -कट्ट -पुष्ट-दि॰ वर्ग प्तका नाम । - इट्-पु सिकाट मामक एक नगर। बद्ध कार्नोको सरक्ते कडीर अगनेशका। <u>४</u>० स -दत-वि सार्ववीम क्षांतिबीन । -क्वरि-व विष्णा कारन दोन भी क्यंकड नवी, 'ट'नमें माहिके प्रवेतनी --इर्थ-पु॰ संहतके प्रशिक्ष महाकारण भीवशेषपरि था बाला है। —कवित्त∼वि वेदों में दबायना ना तम् के रंथविता । ~हस्सियी-की मानरंशी मानर वतामा गमा । —ब्रीतिं – तौ। दे॰ 'शक्कीति'। –सन्द इया प्रमुखीका पोना । -गोचर-वि॰ सी सुबा वा छक्ने, मनवेंद्रिनप्राक्ता मुक मीर्मस−वि मनी, स्थापान्; सांदर्व-छाली। पुरक लुनाइका। −काविका−सो कॉशस्ताः −पर−पि श्चिरोम्बन । देवक शतकर रमस्य स्वयंत्राका स्वयंत्राप्तरे जन्मत श्रीमती-नो [सं∗] राभिकाः किवेंकि नामके पूर्व कोश क्ट्रवेराकाः नरका सासका धनवेराका । "निवरी वानेवाका महरस्यब छन्दा पुत्रवीके भामके पूर्व (विष्)-वि है 'अवनिकाः । -मिहर्सव-३ हैर मान्द्र-पूस्तार्थं स्तापै धानेवानं श्रीमाष् ' श्रम्बद्ध बी-का बारेश देखा ध्यांत। नपयन्त सर्वन्त किंग कर बिसरी बनकी पत्नीका बीच बोगा है; पत्नी । अवर्गेतिकका मार्गः वेद-मार्गः, वेद-विदिश्च नव ! "प्ररूप भीमान्(सन्)-वि [तं] शोमानुकः वनी तंपवि पु कार्शन । −शसाम~पु॰ देखा प्रवाद, देखी मान्ये संस्थ गीरमशान्ये । यु विष्णुः विशः क्रवेरः रबोक्रित ।-प्रसावम-वि है 'श्रतिसहर'।-प्रासान्य-तिकत बुद्धः पीएलका पेक्षः पुक्रमें के मामके पूर्व कादर प्रश्निक्ष मामाभिक्षा केरीको स्वीकृति । -भाक्ष-मूचमार्व समावा बानेवाला शब्द । प्र= बतुरातव, जसा । -संबक-द्र धानका घारणे वेरा । ~अप्रर-वि कानको मीठा समनेवासा कर्न ग्रीस-वि [मं] सरमोबान : श्रोमाबकः श्रो अवशोज म की । शुरुद्र । -सुक्र-पु॰ तक्षा -सूक-पु॰ कर्मसूक कानकी वहा देरका मूल शाठ, देर-संदिता । -- मुक्क **श्रावित्र – विशी**मंत्र भीमात्र । भीश-प्र [में] स्थमीपति विख्या। वि वेदके बाद्यरपर स्थित, वेदावृत । -रंजक -रंजन-वि कावोको बासररामक कर्णम<u>न</u>र। *-वर्कित*-मान्याब∽प्र॰ सि } निसंबट कुछ । विश्वविदा विदाः को वैद शता विविध मंदी। ^{की} **म्फिका−ना** [सं] सम्बद्धार सम्बद्धार । भुत-दि [सं॰] सुवा हमा अऋषित विभव, प्रतिकः वेदक न की। - विवर-धु कर्यक्रदर। - विवर-अवर्गेहिनका निषय धान्य व्यक्ति। वेदमत निर्म विकात प्रात । पु परंपराधे सम्बद रक्ति नेवा प्राता शपणका दिषय । ~कास−विः वंशदिकै शासका श्रन्तक। देश्वित वर**ा। -वेध**-पु क्वनित्र होतार स्ट्री —क्षीर्ति∽को जनको गार्र <u>क्</u>रमध्यमको कन्या विस्का केरन ! —सारार-पु विग्यु ! - सुम्य-वि क्षानी विशास शाक्षमधे हुआ वा । नि अमेरियुक्तः जिल्लाने किए शुक्र । पु॰ जवनेदिन दारा माप्त आतन सेनी कीरि सभी गयी दी। इ. अर्जुनका एक पुत्र । - केवली आदि हारा मिथी कर्च वृति । - • कर,- • व्-वि वर्ष (किन्)-द वैत वर्षतीक वक वर्ग। -वेवी-सी मभुर अववार्वश्रायक ।- एकोट- अ छाविपार्टक वर्गः गोपादी पुकारके जंतमें बावधा जरमें होनेनामा फीरा की बानी शहरनती। ~कर-यु काना वि समकर रमस्य रखनेवाला । --निगवी(विम्)-विश् किमी ग्राथः माध्यकात्म कीता है।कालको यर वा रतने कीतावा बारा अवसूत भारिको वक बार शुनकर ज्वाँका को दश कीश ! - एकीश-ची कर्ने स्क्रीत तता ! - स्पृति हेनेशमा। –तिष्कय-यु शिक्षाह्यस्त्र।--पूर्व-वि ली वेंद और वर्गशास ! -इर --इररी(रिन्)--वि॰ जवनेंद्रियकी कारूज करनेगाका (जैश-क्यात बारि)।

पत्रमे सुना दुना पूर्वभूत । - बिज्ञ-नि वेद शासका अरुव-नि [सं] अन्तीन द्वना वाने नीरना विस्कृ पंटित । --विश्व-पि वैदिक बालका नमी केरका पंतितः। - इन्द्र-वि रिद्याम् । - इतिक-वि विसन्ध विक्शात । श्र. नामवरीका काम र शीक सदाबार निवृत प्रसिक्त हो। यु निवा कान और भूत्वमुत्रास-इ (र्र॰) बतुत्रसन्ध १६ भेर जिसमें सुनः के वक बी स्थानसे कश्चरित बोरेवाचे व्यवनोंकी वर्र वार एकाचाम । -धवा(बस्)-बी किसुवालके किता । −भ्रषातुक्र−५ स्रनिसह। −स्रोकी−को स्वेती। आवृत्ति दी ! ग्रव−दु [तं•] वद्य नीमा सुवा) भवादाम-पु [तं] त्रक्रवाद।

संभीपक "संगतरा संक्षेपक, संक्षेष्ठा(प्यू)-वि॰, प्र [मं] सँक्ष्मेशकाः बट करमेवाका । संक्षेपण-प सिंधी ग्रेंचनाः क्यो(माः संक्षेत्र करनाः धीरा बरनाः केवर एक देना । मंश्रेपवः(वस्)-न [सं] संशेपमं, बोडेमें। संद्रोपतया-म सि॰] वे "संशेपक-१ ।। संझीम∽ड [सं] तेव पद्याः क्रतेवमः कृपम अस्त व्यस्तताः सम्रद्धसम्बद्धः तर्वः सर्वतः । संस-प्रवे 'एंस'। -मारी-स्रो यह संद। संसहसी-को॰ दे॰ 'श्रहतारे'। संसा - ५० पद्यादा दत्या । संसारां - प्रयुक्त प्रश्ली। संनिया-त एक बहुत हैज विष को एक सपवात है: इस क्पनातका मस्म । संक्य−प [सं•] सुद्धः संवर्ष । वि• द्वे• 'तक्केव' । संक्यक-वि (र्ध•) ग्रेस्टावाका (क्राप्तांतमें)। संक्या नहीं [सं] गणनाः, गिमडी समारा संका समाहाः बोगा विचारमा। प्रवा त्रविः सरीकाः माक्याः नामाः यस विश्वेष संस्था (वी)। -पश्च-पु॰ क्षेद्ध।-परि स्मर्फ-वि॰ असंस्व अन्तिमतः। -संस्कृतीय-खी॰ गरसगाँउका सत्सव । ∽िक्रपि~को विकालको सक प्रमानी भिरामें महरीकी भगद संद रखते हैं। -वासक-विश् संक्रमाना स्कृता । अंक । -शक्य-पश्चिता ~समापन-द क्षित्र। संबंधाक-वि [सं] वैश संबंध । संत्रमास-वि [सं] शिना इका श्रमार विना इकाः विवारित ! प्र गिनती संक्याः राश्चि समय । संक्याता∽ची (सं॰) संक्याके स्तारे क्या प्रशं दक. तरहकी खेकी ! संक्वातिग्∽वि॰ [सं] वे संक्वातीत । संक्यातील-वि॰ [सं] क्यनित, वेश्वमार । संक्यान-द (सं•] राजनाः, शुमारा शाक्षि संक्या। मानः देखा बाता नवर बाना !

हिंदिमान्। पुर्व शिहार प्यतिक ।
सबसेय नहिं (ईन) पानमान को किना का सके व नियत नहीं शिनारमित्र ।
स्ति। पुर्व शिनारमित्र ।
स्ति। पुर्व शिना सान दोना दोगा दो निर्देखा प्रिक्ता साना सिन्दा राज्य हुए माना कि सिन्दा सम्हित्र हिंदिन स्ति नियति । सुर्व माना कि सिन्दा स्ति । न्द्र नित्त नियति । स्ति स्ति । स्ति । नियस्ति ची रिक्तामुग्नसि क्यू दोना। न्याय-पुर्व (दिन) मेनी, दोस्सी। मुल्य स्तिना। न्याय-पुर्व (दिन) मेनी, दोस्सी। मुल्य स्तिना। न्याय-पाव पाना सम्हित्त होना। न्यायेना। न्यायेना दोनी दिसा। न्यायेना-पान ग्रीका। न्यायेना। न्यायेना स्ति स्ति। न्यायेना स्ति होना। न्यायेना। न्यायेना स्त्री स्ति। स्ति होना। न्यायेना चेहन स्त्रा शिना-पान दो

र्मक्यावाम्(बत्)-वि [मंग] श्रेक्नावाकाः समस्यारः

बाँसा क्रिकेकी दीवारमें शहबर प्रकर क्रिकेके किर क्षे अप क्षेत्र वन क्षेत्रींने शत्रपर प्रवर वेंग्रीनामा। ~भासिया~प्र **नवी**का सवर् । ~सारा±प्र• एक तरहका कहा परवर । ~ स्वार-५ सतरहर्ते। न्दर साक्र-पु॰ पक्त ग्रहका प्रथर विश्वपर बीट क्योरी नाग निकक्ता है। —चीनी-प्र एक तरहक्र स्तर। -व्यसहस-प्र पर्क तरहदा सदेश विकास स्वर। -वराज्ञ-प्र वरानुका बार! -वराज्ञ-प्र• क्साब काम करनेवाका । --शामा--शामा--प्र॰ वरिष्य पोटा। -विस-वि॰ निर्देश रेएइम। -विसी-ची वेरवमी मिर्दवता*। -पुस्त-दुः ब*हुवा। -प्रसं-ड॰ गरकरका कर्स । ~पसरी~प क्सराये पाना करे-बाका व्यक्त तरहका बरबार । - बार-वि बरबा हेर्स-वाका । ए : चवरीको समीत । ∼काशस∽द० क्ष्यरेखे वौकार । –सरमरु–सर्गर–तु॰ व्य शरहदा शहर क्रवर वी इमारलॉमें क्याचा वाता है।: - मरहार-व सरक्षास्त्र । – ससा – व पत्र तरबन्द्र कावा सरह । ~बद्यव~प॰ एक तरहका क्षेत्रतो शलरा −रेमा-य प्रस्तरको विद्यो । -काळा-प्रश्न करहका सम को बिकामेसे काँचता है। -बास-४० प्रशीकी बगीव। कतिमः सहितक । -साज-त क्रांपेका प्रश् बक्त करनेवाका। -स्टार-ड एक सरहको पय-पत्थर मारक्षर मार बाबता। वि पत्थर बारतेतलाः -धारी-सी है॰ 'संतमार'। -मक-त **फ** तरहरू काक परभर । - मुखसानी-प्र एक तरहरू प्रवर को काला और शबेर बीटा है। −(गे) अस बय-त वह काका रत्या जो काराओं कीवार में क्या है। -वाविस-प क्याक । -पा-प्रः हैरब मैक साल करमेका परबंद ग्राँवाँ। -मनार-३ कार्य क्या ब्रमा वह शब्द विश्वत वृक्त व्यक्तिया नाम बादि लेक्ति हो। - मसाबा - इ पवधे !- साही-पुरु वक सकेर नरबर की पहलीके सिरसे निकटता है। ~यहर्य-४ एक तरहका सभर थे। दबाके क्राम शांता है।-हाह-पु॰ रास्तेतर पड़ा हुआ पायर क्लिंछ आरे वानेवाकीको कब हो। -सितारा-पु एक स्टाप परबर विसमें छोटे-झेडे सितारे बमकने हैं। -सामान प्र यक करवका काका करवर विश्वते श्वरणा नगाते हैं।

सीरतन्तु है सेपा ।
सीरियन हि है सेपारिय ।
सीरियन नि है सेपारिय ।
सीरियन नि हि है सेपारिय ।
सीरियन नि हि हो हि हमा पुरा राज्येष्ठा हिस्से ।
सीरियन नि हि हमा पुरा राज्येष्ठा हिस्से ।
सीरियन मेथुला हमा पुरा राज्येष्ठा हिस्से ।
सीरिय राज्ये नि हमा निया राज्येष्ठा हो ।
सारिय राज्ये नि हमा निया राज्येष्ठा ।
सारिय राज्ये नि हमा निया राज्येष्ठा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा हि । नाहम निर राज्येष्ठा हमा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा हि हमा नहा ।
सीरिय राज्येष्ठा हमा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा ।
सारियाण हमा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा ।
सारिय राज्येष्ठा हमा ।

्र-इत्मा-सार कार्याः वर्तार कार्याः । सीग-पु (मा॰) तत्तर, वहात्र (-श्रीताह्म-पु केल- सीगतारा-पु (का]सेन्छ। श्रवा-को॰ [सं] स्वाः स्वां। – वृक्ष-पु विसंवत वृक्षाः श्रममाच-वि• (सं) भी सभा चावा समा नाता हुनाः प्रसिद्ध । भेटी भेडी~सी • मि• भिन्न बाहीब हुम्बोंको भिकानेके

एए रचनांगमेर (श्रीसारही); एंड्या बादिकी नियमित इदि वा रसका हास (ग॰)। −फक्र−पु॰ अधीका योग भीड़। - व्यवहार-पु॰ श्रेडी-गणनाका यक्ष र्टग (क्षीका-वर्ता) :

श्रोणि – सौ॰ सं॰] दिच्छेद रहित यक्ति, श्रश्लकाः रेकाः समृद्द, श्रंप, श्रंप, वर्ग। एक हो व्यापार शिल्पकार्य जाति बरनेवाकीका हंपरम संबद्ध कर पात्र वाक्टी ! -वज्--ৰি বভিৰত।

भोषिक-पु॰ [सं॰] सामनेका दाँत । में जिस्र∼सो∙[सं] तंत् ; एक कृतः।

भोजी-सो [सं] दे भेजि'। -धर्म-प्र किसी संप्र दाव, वर्ग, इस आदिक निधमः व्यापादिकाँकी रोति १४६६ नियम । ∼पाद−९ श्रेकी-प्रवान राष्ट्र वनपर । "प्रमाण-प किसी भगेके नियमोंकी मानकर पड़ने नका म्यापारी धिस्यी। न्यध-पु पश्चितमाना। =बड्र−दि • यह पंक्तिमै शिक्षतः पदः 1समामे नेथा हुमा; इस्त्रह् । – प्रस्तु-दि शेथोक नीच सामा, मिका इना भेजीरद्र।

मेजिकरण-पु [सु] इसमे सवान स्थानेका कार्य

वर्गीकरण । भैषीकृत−वि [मं] क्रममे क्रमावा तुवा वर्गीहरा। भव(स्)-पु[मं] भर्मः सक्ति (वर्गकां काम मोध नवीत् पतुर्वतको सी सेव कहा सवा है); हाम संगठ; शुन मेंबस्टा बंद्या संबा पृष्य (बेबान्) । वि अवधाकृत मण्डा बहुतरा मेड्डा उपयुक्ता हितदरा संस्कारण । भवसी-मा (धं) इरोहको, हरी पाठाः गमविष्यको। रास्मा । दि की मंगनमधी । ध्यस्कर-दि [गं] सग्रहकारी कर्म्याशकर १ [स्री 'भेवस्क्रो ।]

भेड-दि [मं] सबसे अच्छा अति बचन अस्ट्रकः सर्व प्रशास वनमें स्वत् वदा अवेदा भरवंत प्रिन्। प्रायका र्ष मामाना राजाः निष्ताः निषा कुनरः नकाष्ट्र-मु शास बुझ सागीनदा देह ।

भेदा-मी [मेर] (शदर्व द्मीत बादिये) इत्तम नारी। रवनद्यानी। सदा ओवनि ।

भ्रष्टाम्ड-व [मं] ब्रह्मामः शमभी ।

भेषाभम-दु [4] गृहरशासम (इस आशम्ब) श्रेष्ठ इम न्दि कहा गया कि इसमें रहरूर ठीनीं आध्योक्त वासम-भीगा ही सबता ही; गृहरब ।

भर्षः(प्रिन्)-दुः [मं] क्यापारिको स्ववनावियो वनिके दा प्रभावः सदा अस्तृत धनी व्यक्ति ।

भाग-दि [में] रीतु सेतहा। यु वद् हीत- कशाय

भाषा भी [र्ग] माद्य वाजिक कोजी। अवध न्यूज । भोकि∼भो [मं] कटि, वसरा नित्रकासागै । —तह—

3 निर्मेश्वी दान । —स्टा~पु निर्मदशाण श्रेष ।

-५२७,-फक्क-पु॰ क्टिप्रदेश । -विंब-प गोक निर्तेशः कमर-पड्डा 1 -सूत्र-पु॰ मश्रकाः कमरसे कट क्ष्मी हुई तहबार धारिका बंधन । श्रोणिका, श्रोणीका – मी [रां] निर्शर । भोणित#-पु॰ द 'म्राणित'।

भोजि-सौ [र्न०] दं शोणि : मध्यमाग । ~फस-प

निर्तय । -भार-पु निर्नर्शेका भार ! -सप्र-प करमनी । श्रोतः-आपश्चि~को॰ सिंो साथक्या निर्शयके मोत्रमे

यह जाना निर्वाणेष्युक शायक्त्री प्रवसावस्था जिसमें वसके मांधारिक माबा-मोध-अपन कम होन सगत है (बी•) I

श्रोत(स्)~प॰ सि॰] दर्व कान शर्वोद्रयः वंदिय (बिनके मार्यंश शरीरक मरू तथा भारमा निकलती है); हाबीकी मुँहा (नदीक्ष) बारा क्षांत्र ।

क्रोतच्य−दि [सं] शर्मीय सम्य वासुका बाद,

प्रमने थोग्य । श्रोष्ठा(नृ)−वि , दु [नं] श्रवणस्त्रां सुननेवाला । श्रोज – पु॰ [धुं•] कर्व काम अवसेंद्रिया केद अति। धेद विषयक नेपुण्या -कोता-स्रो एक पीपा जा क्लाके काम माता है। -पद्यी-सी अवस्थात्र। -पदानुग -वि अविधिव । -पास्ति-स्ती कान्सी सक्षरी । -पेय-वि कार्नी हारा घटण करन थोग्य, अवनीय । -मार्ग -वरमं(म्)-व अपनप्त । -मुख-प् कर्ण

शुरू । – सम्ब∽वि पुदे∘ अतिस्य । – श्रीन−वि श्रोदिय-विश् [में] वेदए बलाव्यवसदर्जा । पुरु बेदध जाग्रय नेराध्ययन करमेगाला आग्रामा जाग्रामीकी एक धारता ।

धोषियता-सा॰ [मं] श्रीनियमा भर्मे । श्रोणी-पुदे शक्तिव¹। भोन - पुरे चीप । श्रामित•−९ द 'शाीन ।

श्रीत−वि मि] अवय कर्य-संरंपीः वद मनि-संरंपाः वेदीकः बदसम्मना यद संदेशी । पु यदानिव (भी तीम प्रकारकी बीनी ६-मार्ट्याय आइवमीय तथा दनिको। -कर्म(म)-प वैदिक कृष्य । - जन्म(म)-प पन सबस गरपार् । - सारा - पु • कर्रे एप । **७**व्य भागक नदीयदा कर्महोट गरेपी मिर्देशसंब ।

भीतभव-५ [मं•] युवप्रवादा पुत्र ("हापाठ । भीत्र-पुनि देश काला ओवियस्में।

श्रीमण-पु ६० सक्- ।

श्वाह-पु [4] बमन १

श्रहण-वि [मं] अल या महीमा विद्यम विद्रला। क्षीमल, महमा मधुर- मजाइर कुदरा भणा। -त्यह (थ्)-त अन्यत्र हरू होत् शतका -प्राप्त-ष्ट्रावन्य । -बार्श(दिल्)-विक सपुरवार्थ ।

क्षत्रवाह-वि [१-] रमध्य । तु पूर्णम शुक्रति। अप-वि कि निवित्र क्षेत्रमा होना दिया हवा-

हारा दुवा, रिवाश दुवा (अ १-शाव), दर्शत

(to) 1

दबानेशहा। संगय−९ सिंशीसंदर्भ स्टा

BERRE I

मैगतार्थ-रि [सं•] चप्युष्ट कर्यवाला । पु॰ उत्पुष्ट

संगति-मा• [सं] मिनन बोगा ध्या साथा नंपर्व संगर्धा मेनुमा मिलनेके नियं बाला। मार्गनस्था वय-

तुष्टमा मौर्वे होमा। संयोग, रशिकाकः योगा शामकृदि व किए प्रथ बरलाः अधिकाकोः वीध अवस्थोतेने एक

र्मगतिया, मंगठी-प्र• शाबी: बाने बादिक साथ साव

सामी में नवा मरिबीका मिकना कामुखता। बुद्ध सुका-

बना (प्रदोका) दोग । -साध्वस-५ मेधुमदे समदकी

मेराबा~सी [सं] दो महिबोदा सगम। संगम-पु [सं•] मिकन स्योग साथ नंगतिः संपर्क

र्मगमक-वि [सं] मार्ग दिमलायेवाका ।

मंगमन-दुर्धि मेह मिनमः यम्।

संगमर-प बैरवीकी एक बरवाति ।

सगमित-वि [सं] मिकावा संबुद्ध दिवा हुआ ! मंगर-प• (का•) रोद था बागडे बारी और बनायी बानेवासी कोटींकी बादः दीवार वो सदारंके मीद्रेपर ननानी बाती है। मारवा। छाई। [तं] तंबर्व, बुदा रवामंदी उद्दराव बादाः अंगीकारः सीदाः शाम अध्याः विका जापन्, संकरः समीका पाल । —क्षास-वि सुक में भिक्ते बोस्त । -स्य-वि बुद्धने संहस्त । संगरण-व [सं•] सीटा करारः रजानंती। सँगरा-९ वॉसका इक्स जिमसे पेशराज पत्थर चढाते है। इ.व्हें बहनका बह देद क्सिमें पंप क्या रहता हूं। मंगरास•-५ दे संज्ञान'। र्षेगरामित्त~प्र वस्त्रिः। मैल विस्ते श्रिवार बनाते है। संगर्धा-पुरक्त तरहका रेशम। सँगव-पु [सं] भाव'स्नानके दीन सुदूर्व नादका समय भी दिनके पाँच मार्गीमेंसे इसरा है और जन गार्ने इहते के चार करने के किए के आयो काती है। -काख-ब -वेका-स्ता दोइनके किए गार्थोंके एकत दोनेका समय । र्सगदिनी-सी [सं∗] वह न्थान वहाँ गावें बुदनेके किए यक्ष की बाती है। संपत्ती-की दे 'संबत्ती । सँयाती-प्र साथ रहनेवाका साथी संगी। बोस्त । संगादन-दु [सं] साथ साम गामा वा स्तुदि करमा । संगाब-प (सं] बार्ताकाना बाद । संगिमी-सी [सं] साम रहनेवाली साविना पत्नी। संगिम्हान-पुक्ति] पश्रीका प्रदेश । संगी-वि (का) पत्थरका संगीत । पुण्य तरहका रेशमा करना ! संगी(गिम)-वि [सं] विषयमे साम अगनेवाकाः एंपर्दमें मानेवाका। भागी। जासका कामुकः व्यविश्वतः। ५० ताबी बोस्त । संगीत-वि [सं] साथ मिल्कार नाया कुछा। प्र क्ष माना मिसे कई भारमी मिककर गार्पेः नायीके साथ ।

गाया बानेशका गाना। मृत्य, बाध और गीडका समा-बारः शृत्य और नायके साथ वानेके कना ! - येश्म(न) -पु॰:-शास्त-की॰ संगीत-भवत । -स्यापत-वि संगोतरत । ~विद्या-सी॰ यह दिया जिसमें संगोत संबंधी विषयोंका निरुपण हो ।—शास्त्र-पुरु संगीतविद्या । -सहाविनी-मी॰ साथ गानेवासी सी । संगीतक-प [संग] वायमेक, 'कम्परं'। गान, मृत्य और बाच द्वारा कागीबा रंजन । र्मगीति-की [तं] वार्षकाया संगीतः संगीतक्षाः वार्था एट भेर । र्मगीम∽वि [फा॰] सवरका, पत्परका बना द्वभा। सहन कोरः सबब्ध । सी , पुण्यः शरहका मोकरार प्रति-यार को बंदकपर चढ़ावा काता है। −क्रमी~प+ ऐसा अवराध जी कठिन वंशके बोम्ब हो। -दिल-बि दे 'संगरिक'। -विश्वी-सी+ नेरदमी। संगीती-ली समस्ती होसप्त । संगीर्ज-वि [सं] इकरार किया तथा। यहा किया संगुल-वि (शे॰) गुविद (समासमें)। संगप्त-वि [d] मकी मौति छिपावा हजा। सुरक्षित । 3 पक् तक्र । मंगुडि-सी (सं] सरशाः दिमार । संगड-वि [सं] सुरक्षिता किपाना हुमा; संविता संवकः न्हन राधीक्षन (अब को रेखानींसे पेर दिना पाता है)। संग्रहीत-वि (सं) संग्रह किया हवा पक्रम किया हमाः वदश हमाः संदग दिना हमा, शासितः प्राप्त श्रीकार किया हुना। संबिध किया हुआ। ~राष्ट्र-वि (बह राजा) बिसका राज्य सदासित हो। सग्रहीता-इ दे 'संप्रदोगा । संग्रहीति-सी [सं] वामक्रों वादिको निकासने। सिक्कामेको क्रिया । संगोत्तरा-५० संवरा । संगोपन-९ [सं] क्रिपाना । वि क्रिपानेवाका । मंगोपनीय-वि (ए॰) (छपाने छावदः । संग्रंबम-९ (६०) यह साथ श्रावता । संग्रहम-९ [सं] यह साथ बॉबमा। यह साथ बॉबसर सरम्मत करणा । संप्रसम-प [सं] का जाना, पर कर बाना। अधिक श्रामाः वनीचमा । संबद्ध-पु (सं•) पष्प्रचाः सुद्धौ शौषमाः रक्षणः (सीवन जीवन आहे) प्रहण करवाः समर्थन करना जननानाः वमा करना एकवःकरनाः श्वासनः विशेषक करनाः राम्रीकरणः संयोगः संतर्धासः (मंगादिका) संकल्पनः संक्षिप्त छोटा रूपा जोना स्पी। मोबार-गृहः मनत्ता बस्तेषः गौरथः बस्यान (कोससंप्रद)ः बञ्चना । वेगः भंत नकरी प्रक्रिप्त कान्य कीटा सेवा; क्षेप्रणबस्ता; निवाद; समार ग्रे<u>भ</u>नः शिव संस्कृतः पारचा। **−कार**−पु संस्कृत-कर्ता । - महणी-की संग्रहनी : - वस्तु-की संग्रह के बीरत कोकप्रिय वस्तु। —इक्कोक-पुनश्रकोक विसमें पूर्वकशनका सपसंदार किया गया हो।

अपर्याग-वि [सं] जिसके भंग रोहे वा क्षिकित हो। गच और । माधन-प [मं] (भएनी) मधेसा सारोफ करनाः पापस्मी बरमा । वि । जासमधीती । **श्वामनीय**-वि [सं] काम, प्रसंशनीय : सामा-सी (है) प्रशंसाः चापससी भारत-प्रशंसाः बारमगुण-कथनः अभिकाशः परिचया । ¥क्षाचित्र∽वि मि•ो प्रशंसित्। श्रास्य - वि [t] दशायमीक, अञ्चस्य । क्रिक-प्र• सि ो नंदर: वास: आभित व्यक्तिः क्योतिप । सिया ~**वा** ॰ [सं] आस्मितः संदोग । क्रिप्ट-वि [र्न] व्यक्तिंगत परिरंभितः सम्मिकत संबुक्तः स्टेबबुक्त, इयर्थक कनेकार्थक ।--क्षप्रक-प्र- वह अलेकार वहीं किए शुरूर हारा क्याउका विधान किया मदा हो । −वर्त्स (मू)−प्र पत्रक्षीका विपक्ता । हिरुष्टि−सा [मं•] शासिगन शराव छगाव। टिक्स्टोक्ति−स्मा [सं] ∉वर्षक् वातः। इस्तीपद∽द्र [सं] पेर कुक्लका रीग कीकपॉप, हाबीपॉव । - प्रश्नव-प्रकाश क्या ! इस्रीपदापद्द-पु [सं] प्रजनीयका पेड़ । इस्रीपदी(दिन्)-वि [सं०] कोकपाँवका शेगी। इत्तीक्ष-वि॰ [म] जो सहतील सही। श्रेष्ठा शोमा**उ**च्य क्शमीबात । इस्रेप-प् [नं] आक्रिकाः संयोगः स्थानः यदः खण्यः। संबार जिसमें एक छन्दके वर्ष अभी धारा कान्यमें जन रदार उत्पन्न दोताः क्षिमा काला है । इसेपोक्ति-स्रा (छ॰) दे 'रिक्शकि'। इक्केपोपसा—सी (सं] पद्ध काम्पालंकार । इसंपी(पिन्)-वि [ते] आर्किनन करनेपाला। इक्षेप्स-'इक्षेप्सा(प्सन) का समासगढ रूप ! - चन-ड केंद्रभे। जुद्दी। --प्रमा-की मक्तिया केंद्रभी। वि स्त्री कप्तका माध्य करनेवाकी ? -वनी-स्त्री अविक्रकाः क्योतिमातीः त्रिकड्-सीकि, वीपर और मिर्व । - स-वि वसेश्मासे बलवा। -शू-पु इत्युख। -इ-पु कर्तक इद्या दि कत्र-नायको लहर−वि वक्ष नय करनेवाला । इ**डे**प्सक्र≃ड [मं] हे 'श्लेम्मा'। इस्टेप्सथ −वि [सं] शतःसंबंधीः शतवाका । इक्षेप्रस्थ-सी [तंत्र] एक गीवा । स्क्रेप्सक-विण् [मं] स्केप्सातुष्क । तः किसीवेका पेषः । इसेप्सांतक-इ [लंग] किसोडेका पेड़ नहुनार वृक्ष ह इमेट्सा (दास्)-पुर् (सं०) सपः, शहराम । इसैप्सात इक्रेप्सातक-पु [d] बहुवार इस्र । इस्रह्मिक-वि [स] इतेच्या, सक्त-संबंधी। इतेच्या सर्वत्र करमेनाका कप पैश करमनाका। इसेप्सी(प्सन्)-५ [ई] गंवानिरीया। इस्टोक-मु [सं-] वह कीमि (वैसे-पुल्लपकोक)। प्रशंसा या महोसाका विवया श्रीसहस्यका (महोसारमक) वया संस्कृतका अनुष्ठप् धरः। -कार-पु व्सीक नगामे-वाका । -यज्ञ-वि छंदीवद्र।

इस्टोज-१ (सं॰] कॅंगहा बादमी। इ**वः(श्वसः)**—प्र (सं॰) बागामी क्षणः। श्र-'शा(क्रम)'का समस्त पर्रोमें म्बबस्त कर । -बंदड-पुरु मारव और श्रद्धांसे बल्ल्ब श्रेताव । -नीरी (विम्)-५ (देवाश) क्योंको शक्तरेशल सकि। --शाणिक-पु: रिकारी: प्रचा पाक्रनेताम माक्रि। ~ब्राह्—पु॰ कुत्ते पश्चन्नेवाकाः वर्षोको त्राप्त देनेकम १६ असर। -व्यविका-को स्थानी राजधा ~र्व्हक्-नु गोहार, गोसुक्त गोहारका पौरा !~र्वहा* बी॰ क्रुचेडी शहर पोतुका योगुरका पौरा । "पूर्वन तु श्रुगाळ, स्वार । -नर-तु क्रमीना **बार**मी श्रेर व्यक्ति। -पक्(च्)-पच,-पक-तु संसम वभिक्ष, काँसी देनेनाका कुचेत्रा मांस प्रवास आनेनाम। −पति−प कुर्चीका मास्कि, इसे शक्तनेताम≀ -पद-पु क्रचेका देश क्रचेके परिवृद्ध मेला निवाद। -पासन-पु पपरी बासक देवा। **-प्रच्छ-५**१ कुलेकी पूँछ। विष्णू १ ∼पुष्णा−को विस्तर । – वस्र त् नीमपूर नामक सीप्र नीमपुर द्या । --परक-पुर महरू दे पिता। -शीव-पु (कुचेते डरनेवाका) स्वाध श्वाक । -बृत्ति -सा (इतके समाम) काबीन इदि सेवा मीकराः इत्तेको माँति बहुन बामे बाटनेवाले वृति, परामित रहतेकी भावत । -स्याम-तु हिस वस् नीवा। शप । -सुर्व -सुन-इ क्रवरीना ! -हा (इस्)-प्रशिक्षारी । शक-पु॰ [सं] भेरिया । बाज-इ [सं] केर बरार। श्वयं श्रापनं≕प्र [मं] श्वामः वृतिः, समेति । श्रवसु-द्र [मं] स्वतः ग्रीव । **बचीची-द्या [संग] रोग** । बह्यर बह्यरक∽पु [सं] सहर=पति वा स्त्रोका स्विः। सञ्जर्थ-पु [सं∗] अञ्चरका प्रत पति वा पत्रीका वार्रन देवर; सासा । अस्थ – स्टी [सं] पति भा पत्नीकी माता – सास ! श्रमण-पु (र्व•) शाँत केनाः द्रौक्षमाः भाद नामा नि-बाह्य एवन बाह्य महम ब्रह्म एक देख जिसे छाउँ मारा था। -र्द्धा-तु मानुद्रा ऐर । असमाराग-प [सं] (दवा ही माहार है किस्को ब्रामेबर-प [म] वर्त्रम १६ । श्रसनीरमुक-पु [सं] सर्व । अवसास-वि सि॰] जीवित ^६ कसित्त−पु [मं+] मासः माद्र। वि सास विकास ग्रहण करनेपाकाः पालकुक्तः बीनितः साह यरनेपाकाः श्वरराथ-वि [सं॰] आगामी करु संबंधीः भविष्य संबंधी। [की अस्तर्गा ।] ज आनामी क्रम्प मनिष्म । बारस्य-वि [मै] वे अस्तमं । बा(बन्)-पु [सं] क्या। श्रागणिक−५ [सं] कृत्या पातनेताला व्यक्ति कृता शक्कर जीवन-विश्वीत करनेवाका स्वरित बाम-पु [सेन्] क्रवेडी हम।

शर करनेवाडा । संक्षेपण-प्र [र्लण] फॅब्रबार वरीहमा संक्षिप्त करनाः भेरा करना। डेकर चढ़ देना । मंक्षेपवः(तस्)-वः [सं] संक्षेपमें, बोड्रेमें । संसोपसया-व [सं•] दे 'संधेपसा'।. संझोम~न [एं॰] तेन वका। वरोजनः इंपनः अस्त व्यस्तता बढ्ट-पट्टः वर्षे. वर्श्वः । संबा-प्र• वे 'दंबा । -भारी-सो॰ एक संदा संबद्धी~वी॰ है॰ 'चंबपनी । संख्या – प्रश्न चडीन्द्र दरना ।

संस्तारां - प्र• यक्ष पक्षी । संक्षिया-प्र• एक यहत तेन निय मो एक अपनात है। इस चप्पतिका मस्म । सीक्य-प (सं+) प्रया संकर्ष । वि+ है 'dage । संक्यक-वि [सं] संस्कानाका (समाशीतके) ।

संक्यां न्यो [सं∗] गमना यिनती द्वायार। कंट, तादादः मोगः विचारणाः प्रशः शुनिः शरीकाः भावनाः सामाः पद्म विशेष संस्था (ती॰)। −पत−त अंठ। −पति स्पद्ध-वित्र असंस्त्र, अस्तितः। -संसक्तरंशि-को नरसगाँठका वरधव । −क्रिपि~को विकारेकी एक प्रयामी जिल्हों नक्षरीको चनव संद रखते हैं। -बाचक-वि संस्थाना स्वका प्र अका -सस्य-प्र अंदा −ससायप=-द श्रिव ।

संबंधाक-वि (छे॰) वे 'संबंबद ।

संक्यास-वि [संग] गिना हमा शुमार किया हमा। निवारित । तु गिनती संक्वाः राश्चि समृद्ध । : संक्याता-स्रो [र्स+] संक्रान्डे शहारे नेनी हुई रक

परवंदी खेकी। संबद्यातिग-दि (सं॰) दे 'संबदातीत'।

श्रंक्यात(त-वि॰ [सं॰] अवनित्र, वेश्वमार । संरुपान - प्र [सं] गणका, शुमारा राशि संस्थाः मारः

देखा बाना नवर माना । संक्याचान्(कर्)-मि (तंग) संस्थावानाः समस्या८

मुद्रिमान् । प्र+ सिक्षान् स्वरिक्षः

संबंधेय-वि [६/०] रावनीय, वो विवा वा तके व समित साहिः विचारणीय ह

र्सरा−प्र [सं] मिक्या साथ बोमा। बोमा दी मनिवास विकास संस्था संस्था राजी संदर्भ में मी। साथा कामरिका विषयवासमा। अका भागा । व्य [दि] साथः श्रीत । -कर-दि आसंस्थितक। -स्पारा-प भिरक्षि । ~शक्रितः~वर्शित-वि नासकितक्षित्र । -विष्यवि-वी विषयामुरागरी १४% होगा। -साथ-प्र• [दि॰] मैत्रो, शोखी । शु॰ -करमा-साथ शीना। दौरती करना । अधीवना-साथ धीवना । अज्ञाना-साथ जाना इमराइ होना ! -क्य क्रेमा-शाव हो हेनाः स्वादमस्वाद साव ही बाला क्रेज़ सरनाः। -बेना-सब के परुना । -सोमा-सब्बाध करना । --होना--छाव दीनाः **दगराद दोना** ।

सीर-पु (का) सन्दर, नहान ! -अन्ताल-पु केक सीरातरर-पु (का] सीररा ।

संक्षेपकः संक्षेप्ता(प्र)-वि , प [संव] वैक्रनेताकार बाँसः किलेका बीबारमें शहरर एकर केंद्रके किर से इप छेरा वन छेरोंसे घडमर मध्य वेंडनेशना। ~भासिया-प वक्तका एकर । -प्रास-५ ए करहका बड़ा परवर् । -स्वार-५ जतरमर्ग !-वप्र माळ-प्र॰ यह तरहदा प्रचर विसंदर चीर क्लीते वान निकक्ती है। —चीनी-प्रश्यक दरहका स्तर। ~बराइत~प॰ यह तरहवा सकेर विश्वमा पारा। क्षेत्रक पर-क्षेत्रक । अस्य क्रमान्य ए-क्षाक-काम करेमेशका । अवानः-दाना-त॰ वरिस्य पीटा। - विस्त-वि निर्देव वेरवम। - विसी-की नेरहमी गिर्दनता। --प्रस्त-तुरु दक्षा। --क्रा-प्रवरका पर्छ । ~एसरी~प्र वसरामें भावा वाने-बाका पक तरहका परवट ! ~बार-विश् परवर केंग्रेने बाका । य पश्रतेकी बमीन । -बाराम-४ श्रासीधे वीध्मर । -सरसर--प्रसंद-प क्य एरहवा तरे⁷ वस्थर को इमारतीमें क्यांका बाता है। -अरहार-प्र अरहार्रस । -ससा-प्र एक तरहका कामा सरी। -यसय-त॰ व्या तरहका क्रोसती स्टबर / -रिक्रा-तु परपरको गिद्दी । "साम्रा-पु एक तरहका गाँग को हिकानेसे कॉयटा है। -छाछा-तु॰ मक्रीमी नरीन। वि बढिम मुस्किन। -साम्र-५ ग्रापेश समे इचरतः करनेशका । ~सार~<u>तः</u> वसः तरहस्री स^{म्रा}र वस्थर सारकर सार काकता । विश् पत्थर नारतेताका -सारी-सी दे 'संवसार । -सर्ल-४° वर तरबंका साक प्रचर । - ससेमामी~प्र॰ वेक तरबंध शबद की करून और सुबैद होता है। -(रो) सस वर्-पु॰ वह काला गलर भी कलाकी दीवारमें क्या है। -बाविय-प स्वमकः। न्या-प मैक छाफ करकेका परकर, छाँथा। -सकार-ड ब्रज्ञमें कमा ब्रुका वह संस्था मिसना वृत्त व्यक्तिका वान बादि बंदित हो !-ससामा-उ पनरो !-साही-ह रम छड़ेर शबर की महकोड़े सिरसे मिस्ता है। -यहुद्-पु १व दरहता सम्ह नी स्वाके काव शादा है।-राह-य दास्तेवर पहा हुआ परवर जिल्ले नावे कानेवाकीको कर हो। -सितारा-पु एक स्टब्स परबर क्रिसमें कोटे-होटे सिवारे चमक्त है। "सामा" य एक तरहका काका परवर विश्वते सरमा बनात है।

श्चीगतम-त है 'संबद्ध'। संगरित-वि• वे 'संवरित ।

र्सगनिका-सी॰ (सं॰) संदर बाती समाप्र युनिवा । संगत-वि [री॰] पिका बना, तथा पदवीवृता संबोध काना निवादिता कपनुष्ठा, नी हैं। क्रिका हुआ, संद्रानत । सी॰ मेका मिकता मेनुका साथा मेनी। वर्वसंबद बाकी अग्राप्तकिकः गामे चारिके ग्राम पामा प्रशास (वि)। बदासी साधुओंका मड (हि)। *न्यान्त-*वि+ त्रिएका बरम सिकुता हो। "सॉफि-स्त्रों मेंबीके बाद होसेवारी शुक्रवा मेजीके भाषारपर हुई संचित समय-इसमय कर सी रहनेवाकी संवि । पुण-करना-गानैवान्त्रे साव गीर्र बाध दशसा ।

श्राप्तिक-पु[म] शिकारीः कृता पाकनेवाला व्यक्ति।

भाष-उ•[मं] दे श्वपकः ।

श्वान-पु• [मं] कुनकुर, कुछाः वीदेका एक मकारः सम्पर्का एक प्रकार । - चिक्रिका-की वश्रुणा साग । -निद्रा∹सी कुङ्गर-निंटिया, शुचेकी मौद कुचेकी माँति तरत सुरू जानेवाकी माँव गाड़ी नहीं, ६७की मी हा-चन्दरी-सी अतेषा गुरीना। मानी−सौ [सं]कुनिया।

सापद-वि [सं] येयकी वर्तरः टरावमा सर्वेडर । पु हिस्त प्रमु (बैसे-स्याप, पीता वादि)। श्वाबित् श्वाबित् श्वावित् पु [मं] शस्त्र साही। श्राश्च-पु [तं] मैरन (जिसका बाइन कुत्ता है)। श्वास−पु[न•] नाकने प्राजवानु ताजी इवा शरीरके मौतर के जाने तथा भीतरमें इपित बायु निकासनेका कार्य सीम, मस्ति। आहा दाँकतेकी क्रिया बाद्या मास दमानामक रोग। —कष्ट−पु छॉछ बन भीर निका क्रमेको एककोफ (शाम-क्षत्र का प्रयोग प्रमंगतः 'दमा रोयके लिए मी हीता हो। -काम-प्र-शामनुष्क कास रीय श्रामण्डनित सांधी दगा। – क्रिया – स्पो॰ श्राध-प्रदश्न और स्वागक्षा कार्य :-कुद्रार-पु: श्रम्प रोगकी पक भीषप (मा व)।-धारण-प्रतम रोसनका काम सुनक प्राणायाम । —प्रयास—५ - ग्रॉस तमा भीर विकासमा । धारण-प्रमाणायासः – रोध-प्रसाम सेनकी निवाक्षा वद रदानाः सामदा रद्य द्वाना दम पुरना । -क्रिका-स्त्री एक प्रकारको हिस्तको ।-द्वील-वि सूख । ~इसि~न्दो नादो सीँद (बिसमें अपन दसा भीड़

शासाः । नौस ।

समयके लिए वद बाता हो। भामारि-पु (सं } पुण्यस्मूकः

इदासी(सिम्)-पु सि) बायु। बाम हेनेवाणा प्राणी । इवासीरकास-तु [सं॰] यगपूर्वक शांस लगा और बाहर विदानना ।

दिवत−दि [मं] दोत सपोदायु दोनना सफेती। क्रिवति~मी मि दिश्वता एकेरी।

विचन्य श्विक्य-वि [मै] ६३४ त्रेमा सारमी निवे हुए। दिवश्र-पु [मं] दरेन पुष्ठ सकेद कार । -ध्यी-सी

पीनको वृद्धिकानी। सद्दश्यनी वृद्धनाशकः। दिपश्ची(जिम्)-वि+ [1] इतन मुख-मेरपीत गर्पेत की-

बाला । प्राप्तेन मुख्या शती ।

इपत−वि [मॅं] मर्पेट डाव्यव श्रवना वेपभोदा निद•स गौर धोग (उँशे~दोन जानि)। पुसुद्व को राहर रम (पैदानिकोका भन्न इ.सि. ४४वन में सानो को भर्त है। गुर्देश दिश्य होन है जिन हमसे सानी (ग मिनन है); योगी बचा बीती वस्त्रीक रणा ६१९ मन गरण बणन द्वार शहा एक होया पर्रनिकोचा मीरक सामक भारता लगेंद्र धीरा। दिनका कक बाद ष्ठपा वद राजा। — कटकाही-स्टी दरेन का दे यु स्टे पुल स्पेक्ती। +कद्-च्राव्यात्र । -कद्रा−स्पे +तिरिया शतास । —क्योत-त १६ तरहरा जुहा- रे

एक सर्प । -करम-प्र करपनिश्चय । -कोडा-सी॰ सफेद रंगकी हुन। -काफ-पु॰ सफेद कीजा-कोर्द भगदोनी शी बात । -कापोती-स्री यद प्रेपा। −किलिइरी−सी उत्तपत्रा!<u>~कुंबर</u>~पु**र्वाद**ाऐरा-वत दाभी। सफेद दाभी। −कुक्ति,−पु पत्र महसी। —कुछ–पु सपंद कोइं। ∼कृष्णा⊸को एक विपैका कीका । —केता—प्र तका केता प्रका एक काकि। -कंश-पु॰ रक्त शिमा प्रज्ञ वाल सफेद वाल। -काछ-पु चफर नामद्र मस्य । -क्र्<u>रणा</u>-खी• यक विषेका की दा। — कार-पुद्रीरा। - सज्ज-पु हे॰ व्वन-क्षेत्रर । —ग्रह्स –ग्रह्म्-पु (सफेर पंटी-बाठा) इस । -शुंबा-की सफेर रंगकी पुँपनी। - ब्रीडा - क्षी मामलंती । - क्षीत्म-पु स्रपेद संन्म । -- चरण-प् यद पश्ची । -- चिक्रिका -- चित्री-स्पी यक्त सागा च्याजन=पु सफोद छाता। वि सफोद क्षत्रका । - ब्रह्म-पु॰ इसः वनतुक्ती । -बीरक-पु॰ सफर कौरा । -र्टकक,-र्टकथ-पु साहा सोहागा । ~क्वॉ~की सपेद कृषा ~सति~प धंद्रमा। −द्रम−प्र वस्त्र वृक्षका एक भेर । −द्विप−प्र दे 'स्वत-क्'वर । −द्वीप-त धंद्रहीयः वैव'ठ सामक विभ्युश्रीमा मूरोपका 'हाहर भारसहंद'। --धानु-सी छक्कि निक्री। सफेर रंगकी बाहा। −प्रासा(सन्)− षु भेद्रमाः कपूरः शमुद्रकेनः अपामानैः अपराशिता । –मीक्र−पु पादक। −पटल−पु अरदाः। –पन्न-व इसः किमी वार्ताः संविन्ययो आदिके क्षेत्रमें समये तम हर्द मानोंकी (किश्वित) बीयमा (राजनीति)। रथ-त नमा (व्येनपत्र इंस विसदा स्थ-बाहन है)। -पर्णा-न्या बारिपणी। -पर्णास-पु॰ स्वन शुल्खो। -पाद-पुधिनका रका गरा। -विंग-पु सिद्द : - विगल-पु सिद्दा महादेव । - चिंगलक-बु क्षिद्र। −धुष्य−धु क्षिपुदार दृक्षः मपद दृत्ता। –पुरुषक्र–पु करवीर वृध्याः वि दरेन पुष्पमान्ता। -पुष्पा-ली - बोबानकी मागदती। मृगशह । नपुष्पिका≁ मी पुत्राधी लगा महाराणपुरियम । -प्रदर्-प प्रदरका यक भाग जिल्ली जननदिवार स्पीद रेनरा साव दीना दे (नारी रोग)। ~प्रस्तुर~यु दश्त सर्मर सप्रण संगयभेर । −यर्थर∽तु एक प्रकारका सन्त । -विज्ञा-सी सटै॰ पश्लीशनी (अन रिवारके अयोग्य) संबंधी १ —पुद्धा-स्था । यहतिसा । —स्रोता-भो होन अपराविना। –भासु–९ पौर चेद्रसा। -शिशु-पु ११न बनपारी मुनवाभी। -श्राजा- महत्वा व्य अवशार । - संबाद-पु वय नरवदा सर्वः -- मंदारक-पुनश्यः स्टा -- मरप-प मोबा। -सगुन्द-पु चंद्रमा। -सर्विच-पु सृद्धि भनवा गोगा नेपेट मिर्ने । −साल – पुप्प पुणी वारम शेष । -सूम-पु -सूला-वर्ग पुनर्गाका वसभटा --(अव-पु शेमके तेनामामक बानु। -रक-द पंटन वर्ग शुन दो (स । ~रम-द सुद्य नामक सह १ - सम-पु महा १ - समा-को वरेस विश्वा। -रं।वि(म)-५ थर्, ६८। -सदित-

संगतार्थ-(व॰ (व॰) वयुक्त कर्षवाला। यु यस्युक्त

संगति—मा (स॰) मिनम, बीगः संघा साथा संवर्षे संग्रं मेनुमा मिलने हे किय वामा। सार्वेत्ररण वर्ष-पुरुवा, वोर्ने होनाः संबोग रिफ्ताका यानः बानग्रिः के किय प्रभावत्वाः अविकरणकः योष अववयोगिये यक (ते)।

संगतिया, संगती-पु॰ साथी। गांगे आदिके साथ सात्र वस्तियातः।

संगय-पु (सं॰) संबर्ग सुद्ध । संगया-सा॰ सिं॰) दो महिबीका संगम ।

सगम-षु (सं॰) विकस संबोगः छात्र संगतिः संपर्कः रच्छं: मेपुमः मरिदीका मिलना वपबुकताः हृदः हृदा क्लाः (प्रदोक्ष) योग । —साध्यस-षु मेथुनदे समयकी

वरहाइट : संगमक-(व॰ (सं॰) मार्ग (दराजानेवाणः । संगमय-वु (सं॰) मेळ, सिरुका वस । संगमर-पु वैदर्शोध्ये एक उपयाति ।

संगमित-वि [सं] प्रिकाश संयुक्त किया हुआ। संगर-पु [का] धेठ था वागके पारों ओर बनायी बानेशको कोटेंको बादा बीवार को कदार्थके मी-देवर

ननाथी बाती है। मारचा राग्नें। मि] संबर्ध सुद्ध रवामंत्री, बहराप, बाता। अंगीकार। सात्रा। साम्। मध्या विषा आपर, संबर। स्वतीका पत्न । —सम-वि सुद्ध मैं मिड्ने योग्य । —स्य-वि सुद्धमैं संकर्ण।

संगरन-पु [सं] सीरा करारा रवामेरी । संगरा-पु नॉस्का इक्का निससे पेक्षान पर्यर एकारे

है। कुरेंब बहमका बंद छेर किसमें पंत बना रहता है। मॅगराम == पुरे 'संमाम । संगरासिक =पुर तंतिका मैक जिससे स्वाम वनाये हैं।

संग्रह्ण - प्रश्न द्वारका रेखना

सराको - पु यह तरहका रक्षमः। संगम-पु [सं] ग्रावः त्वानक तीन शुरू वै वातका समय मे रिनके पाँच भागों मेंसे बुसरा है और जब गाउँ तुस्ती-के वात परनेके किए के बाजी जाती हैं। —कास-पु ,

च्येका-की दीइनके किए गार्वीके व्यत्र श्रीमेका समय । संगवित्ती-की [सं] वह स्थान वहाँ गार्वे दुदनेके किए

प्यत्र की वादी है। संग्रही-की दें 'संदर्श ।

संगासी-द्वा द 'संइसा । सँगासी-द्वा साथ रहमेशाला लागी संगी। दोस्त । सँगायन-द्वा [सं] साथ साथ गाना था स्त्रुति ऋरता ।

संगाव−दु (सं] वार्ताकाश वाद । संगिवी~सी (सं•) साव रहनेवाकी साविना पती ।

सागवा-चा [स्त्र] साव रहनवाका सावना पका संगिरताम-पु [का] पवरीका प्रदेश ।

संगी-(व [का] पत्थरका संगीत। पुणक तरहका रेकमी कपता।

संगी(शिष्ट) - वि [तं] विश्वको, साथ करनेवाकाः संग्रहेमें मानेवाकाः भाषीः वासकाः कासुकः स्विधिकः । उ साथीः बोस्टः ।

र्खेगीत-वि [सं] साथ मिक्क्सर गाना श्वमा । पु वह गाना निसे कई भावमी मिक्क्सर गाने वाघोंकै साथ

गावा कानेनावा गाया। गृरव, वाय कीर गीठका समा-बार: गृरव कीर वायकै साथ गामेकी कमा। - येहम(न) - पु. - बारका-की संगीत मनन। - स्यागृत-वि॰ संगीवरत। - विचया-की॰ वह विचा किसमें संगीत संगी विश्वीका विश्वन हो। - साम्न-पुट संगीवनिया। - साहायिभी-न्यो॰ साथ गामेवानों की।

संगीतक-पु॰ (ते] बायमेल, 'कसारे'; गान, मृत्य और बाय द्वारा कोगींका रंजन ! कारोति-स्त्री सिंश्री बालांकाया संगीतः संगीतकसार

सर्गति—स्रो [र्ग॰] बार्गकःपः संगोतः संगोतकः। भाषा संदक्षः एकः भंद ।

भागा ध्याना भागा भागा स्वर्गा स्वर्या स्वर्या

संगीजी~सी॰ मजबूरी। ठोसपन । संगीज-पि [सं∘] स्करार दिवा दुधा, गया किया दुसा।

संगुल-वि॰ [सं] गुणित (समासमें) । संगुल-वि॰ [सं] मणी-जोति क्रिपामा हुआ। सुरक्ति ।

स्त्युस्नाव (च) वक्त्यतात क्रियाचा हुना; धुराब्दा । यु व्यक्ट्रस्न । संगुष्टिननी [चं] द्वरता; विश्वव । संगुष्ट्रन्व (चं) द्वरतिका विश्वव । इस्ता । संस्थित ; संस्थ त्वर पाडीकृत (क्या व) रेताओं है पेर दिवा बाता हूँ। । संग्राहित-वि (चं) चेत्रस्न क्रिया हुना प्रकृत क्रिया

हुना। जक्दा हुना। संगठ किया हुना। सास्ति। प्राप्त लोकार किया हुना। संग्रित किया हुना। लराह∽दि (वह राजा) विस्का राज्य सुस्रास्ति हो।

संगृहीता~पु॰ दे 'संग्रहोगा । संग्रहीति~ची सिं] बात्त्रसें मादिको निकाकते.

िख्यकानेकी किया। संगोतस−पु पंकरा। संगोपल−पु (सं•) विपासाः वि विपासेबाका।

संगोपकीय-दि (सं) क्रियामे कावक ।

संप्रधम-पु [सं] श्रह साथ बॉबना । संप्रधम-पु [सं] यह साथ बॉबना; एक साथ बॉबस्टर

मरम्मत करना । संग्रसम−पु [सं] का काना, महंकर वाना। अस्कि

सम्मसन∸६ । ७ उ.चा वानाः भाकर वानाः बाक्क स्थामाः वरोपनाः । संग्रह−६ [र्स] पदन्याः सुद्दी वॉपमाः रक्षणः (मीवमः

कीवन कारि) प्रदण करता। समर्थन करता अपनामा। बमा करा। एकष करता। सासन, विरोमन करता राजीकरणः संवीमा अंपर्योशः (संवादिकः) स्टरना संवीकरणः संवीमा अंपर्योशः (संवादिकः) स्टरना संवीक्षः कीटा करा। बीवः स्थाने। मोकार गृहः प्रदश्ता सम्बोधः गौरना कराण (लोकस्तावः) स्वन्ताः नेता। संव वच्छे प्रशिक्षः कवा कीटा केमा। कोष्टणकरा। स्वित्ता समा।

त्रेचुना विका संस्कृत भारता। न्यार-पु संकृत विचुना विका संस्कृत भारता। न्यार-पु संकृत कर्ता।-प्राहृती-सी संप्रहृत्ती स्वरूत्त से संब्र् के योग्य कोस्प्रिय यस्यु। –इसोक्र-पु वह स्कृत्त

विसर्भ पूर्वकवनका उपस्वार क्लिंग गया हो।

पुर गरमा पर प्रकारका गीना विसका भूक स्नेत और पन साथ दीवा दें। --स्रोध-प्र पश्चिम क्रोज, पठासी सोप । -वक्त-पु॰ रहेरका यह अनुचर । -बसा--सी॰ शुक्त वया, सपद वया अतीस अतिविधाः -धरकक - पु गृहरका पेड़। -बाजी(जिल्)-पुरु चेहमा। सफेर थोरा। कर्मुनः कपूर । -बारा**६**~पुर एक करन । - बासा(सस्)-इ श्नेत बस्रवारी सन्त्यामी ! -बाइ-पु॰ इंडा अर्जन ! -साइन-प॰ मर्श्वमा रहे प्रियका एक क्या चीरा कर्वरा सकता -वाही(हिम्)-पु अर्जुन। ~ब्रहा-पु॰ वरन कृता। - होरा - श्टेंग - यु वद् वी १ - सूरण-दु • वनस्राम एक प्रकारको तरकारी । -सर्प-प्र करण कृक्षा सफेर सर्ग । – सार-प्र चनिर्द्धार । – सरसा-श्री श्रव शेकाकिका । -स्पंदा-सी अपराशिता । -श्व-प्र चंद्रका रूप्येथ्यका योहा। छप्तेव बोहा। बर्जुवा बंद्र । −इस्ती(स्तिन्)−५ धंद्रका येतवत वानो । इमेतक-प्र* [सं] रवत चौरी। बराटक, बौकी एक सर्पराजका नाम । वि वरेत ग्रुपकुक, सफेद सा । इपेशांबर-प [सं•] स्वेत सपेत बसा धैवांके यह

प्रशुक्ष इंप्रदावका नाम (कुछे प्रमुख मंद्रवाकका नाम | हमेतीवार-पु [मंग] कुनेरा एक छ। (दर्गकर हैं)। इमेठांस-पु (इंग्) देग भेरु प्रमुख । इमेठांस-पु को में हुआ, नेत कर्ण एडेंद्र रंग- हमें य-पु (संग्) हुआ। सेठा प्रमुख क्योंस्ट (संग्) हमा प्रदेवका, भाषों। को छरीरका सुगीव तक छरीरके क्योंस्ट स्थाप-पु [संग] नेत हुआ।

वीसरी वेदा बरादिका, बीही काहदारमा प्रक्रिय व्यविविधा अतीसः सिवापराभिता। व्येव ब्रेटबारी। प्रतार मेदिनीः व्येष्ठ दुर्गः बंधकोचनः मिनोः शिकाक्यरः व्येत पुरतीः एक्ये क्रियक्तिः भारतको एक विद्या । श्र्वेताका-प्र (सं॰) सीम स्टाब्स यह मेर । क्षेताम-वि धि । येव क्षेत्रे ब्रांतिमें संबद्ध । व्येतास्किः इवेतास्की-की [सं] इनका। व्वेतार्क-पु॰ [d] मुहर्म्स वृक्ष । क्षेताचि(स)-पुंछि•] चेत्रमा। इबेटाबर-ध• [सं] सितापर शाका। व्यवेतास्त्र-५० (ध] महिष्यंत्र । श्वेतास्य – प्र [ए॰] अर्जन । क्बेताञ्चतर-त (सं॰) एक उपनिषरका नामा क्रम वक्षवेदकी दक्ष शासाका माम ! इवेताहा-सी (संगी स्वत करना। स्वेतिका-का॰ [सं] संप्ता इबेतित−वि [र्च] सफेद किया प्रमा । क्वेतिमा(मन्)-को [सं•] स्रेतताः समता स्टानः हर्देशी । इबेसोदर-पुनिर्शे क्रुबेरा एक सर्पः एक वर्षत्र । क्वेतीश्री-श्री [संग] द्वारपत्नी बंद्रामी जमी (क्षेत्र-प [र्थ वित प्रका क्षे य-इ (de) सम्रता व्येतता, एकेरी। मेत कुर 1

4

प-मागरी वर्णमाणका इक्तीश्रमी और कम्पावर्गका हुएरा व्यंत्रम वर्ष ! इस्ता क्यारम्बान सूर्य है इस्तिम स् मूर्टेन्स व करोदे हैं हिसी मानारी संस्त्रमाणके क्यिरेत इस्ता क्यारमस्त्राम सूर्यों म इडकर गाह एवटा है ज्या स्तारी पंका बाम हांची व्यक्ति है होती है। जब और स्वारी में का स्तार के किस्ता स्वीति हो गयी है। पंतान पुर लाखिया निक्सा (!)।

पंड-पु (सं) देव स्रोतः मर्नुस्कः, दिवसः हेट राशिः समूद श्रुद्धः मेर्गं आदिकः श्रुद्धः यक मानः दय-सब्द्धः । पंडकः-पु (सं) मर्नुसकः, दिवसः ।

पैहासी-सी॰ (सं॰) सामाय दाका क्रम्बम औरतः व्यक्तियारियो। तेलवा यह मान क्रम्ब।

पंड-पु [सं] बपुंतकः होना होना किंग हिमा नुतराष्ट्र-का एक पुन । -- रिक्स-पुन नम्प्य रिक्त (का) निक्रमा भारती । -- योजि-न्नी हैं चित्रोगीय । -- येच-दि सप्तक्षक हैनों रहनेताला ।

र्पटा-श्री [र्स॰] पुरुष जैली मन्नाचिवाकी श्री सरदानी भीरतः।

पंदिता—को [सं•] दे 'संदोगोनि'।

र्यंडीयोनि−की (ઇ॰) वह को विश्वर्गेगारीलयडी मधो रठनींका निकास इकाडी और ग रज्ञाला रोदादी।

पु-पु[मंग] सम क्षेत्र शाका रवर्गा श्रवियाम् निदान्

व्यक्ति निहा श्रंतः चैत्र, वयी वरद्वः डान-दानिः दानै-व्यक्तः कुकुकः कर्माः मेक्का मर्मनिनीयनः गर्मसास भृष्यः सरिध्युता येते १ वि. निहः, दिहान्। दुविसार्गः मेक

क्चम । पद्(प्)∽रि[सं] क्र: गॉप और एकः ∺क्रमें~निग छः बानीपाकाः छः कामी हारा समा नवा पिसे पाने संबंधमें अनुष्क विसे कहने सननवाले के मनिरिक्त योगरे ने भी धना दो)। प्र यक्ष तर्दक्⊈ रोवा किसमें में जायमंदि 🕏 कॅटियाँ होती है। -कर्म(क)-5 करोब्द (अध्ययम अध्यापम समय मात्रम दास मीर मिरियह)। मादानोंके निर्वाह-संबंधी हम कर्मे (बेट) महि मह मिद्या वाणिका इति भीर पश्चवाकत)। छ गाँवि कर्म (मारण ज्वाहरू, स्तंमन वशीकरण, झाँदै और विश्वनको। योग-संबंधी छः धर्म (बीडी बल्धि येती। प्रमार्थ नीकिंड और इपाडमली) (-क्रमॉ(र्मन)-पु सक्त विदेश वर्द्धमें करमेशका नाग्नमः ग्रापित । न्यसन वि धः क्या रिक्रमेशका। -क्रका-सी प्रकृतका क्ष क्षेत्र (संगीत) । -कुटा-सी वीरवीका वह स्त्र । -कोच-वि (वह धव) क्रिसमें हा बीग की सपहणा। प्र होत्का दका होता क्षणाते प्रका रवाका दक्ष कर (तं) १ — सोंड~ वि जिसमें इस बाग वी 1 ~ वाक-ड शरीरके मीतर सुपूरना नाहीके मध्यरिका नति दूरन कमकाकार छः चक्क (शृष्णपारः विशेषान ननिवृर ननाः

सीमहण-पु [6] प्रदल करनेको किया। प्राप्त करना। भेकमन करमा, पक्षण करमा। (राजाधि) जहना। पूर्णो-सेच्या किर्यज्ञण करमा। अपनी और कर केमा। येचुन। स्मित्रार क्षोके वर्षित अर्थोका स्पर्ध, गारीका अपहरण। भागा करमा।

सीमहमी-की [र्ट] महीसारका एक रूप किसमें शामा दिना परे दी मुख्के रूपमें मिक्क बाता है ?

सीमहमीय-वि [धं] शहम करने बोन्नः (शीवनके कपमें) सेक्प करने वोग्नः निवंत्रमके बोग्नः एकप करने

बोग्य । संप्रद्रमा॰-ए॰ कि मंत्रव संपन करनाः अपनामा । मंप्रद्राम्य-उ [सं] यद स्थानं वक्षाँ विशेष प्रकारकी बस्द्रामीका संपद्द किया भवा हो ।

संग्रही(हिम्)-पु [एं॰] संग्रह बमा करनेवाकाः गाः करनेवाला ।

सीमहीता(त)-वि [मं] ज्वच, संग्रह करनेवाका; यहम करनेवाका; सरनातेवाका । पुरु सार्थि । संग्रास-पु [मं] दुव, बदावे । अकस्पि,-पुरु पुर क्षमें मिनंत । अस्ति-वि सुदर्मे विकय ग्राप्त करने-

वाशा ! - सुसा-की पुरके कर्मों शनिवरीया ! - सुबै - पु पुरुषर ! - पटह-पु॰ बुदर्वे वनामा बावेगका नगावा ! - सुमि-को शनरम्मि, युक्टेन ! - सुखु-

की॰ बीर-गठि ।

संप्रामागाय-पु [सं] हुरक्षेत्र, कर्गास्य मैदान । संप्रामागी(चित्र)-वि• [सं] हुरेन्छ ।

संप्रामी(सिन्)−वि॰ [नं] पुबरत । संप्राह~पु (सं॰) एकमा श्रृष्ट करनाः नकार पहननाः

मुद्री गोंचनाः मुक्ताः बाक्काः बस्ताः। सीमाहक-द्र [सं] एकत्र स्रोताः समा करनेवाकाः संक

संप्राह्यक—पु [सं] पक्षण शंग्रह लगा करनेनाला। एक सम्प्रकार्गाः सार्गा। वि: एक्षण करनेनाला। कण्ण करने याला कर्मनमा अनुसी और श्रीमनेनाला।

संप्राही (हिंगू) - वि [년] एकत कानेवाला क्या करने बाबा। अपने शाद करने, अवनानेवाला । दु॰ कृत्य दृष्ठ । संप्राह्म - वि [ई॰] संप्रहम करने बीच्या रोकने सोग्या (किसी प्रदप्र) निषुष्ठ करने बीच्या अवनाने बीच्या

इदर्गाम करने बीम्ब !

संब-पु [सं] समूद द्वार वक मंत्रकों। विशेष बहेबनी यह साथ रहतेनाहे व्यक्तिया समूद्र स्थामा विशेष वहरूपते पृष्ठिक किय नमा प्रमाश क्यार प्रमाश किय वहरूपते प्रमाश क्यार स्थापित स्थापित स्थापित प्रमाश क्यार स्थापित स्थाप स्थाप स्थाप स्थापित स्थाप स्थाप स्थाप स्थापित स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्था

संघक-चुानं] सन्दर्ध

संबद-वि [सं] राष्ट्रीकृत, वेर क्यावा हुना। पुःरामा * सगदाः संवीग । विदीमें संबद्धके वर्षमें सो स्वृद्ध दौता है।)

संबदन-पुरु [संग्] संबोधा मेळा [हि] निर्माण स्वयः व्यवनित वरतेका कार्यः, गढमा संबंधता कार्यस्टेस्टी सिविके किय निर्मित कोर्ड संस्था ।

संघटमाः—सी॰ [सं] मिकाना, संबुक्त बर्गा। सर्वे स खर्णीका संबोग ।

संबटित-वि [सं॰] यहत्रीमृतः वारित (संग्रेश)ः[[१॰] कार्वविश्वेषके किय परस्यर संबद्धाः स्वत्रीयतः।

संबद्ध-पु (सं] संबर्धः सुरुमेन, निवंदाः स्वर्धाः व्यवस्य कोडाः संबीधः आस्थियन । —काद्य-पु॰ पद्ध कार्यसर्धे सहारे सुबर्धः किए कप्युक्तः सम्बद्धाः निवस्य निवा बाधः है (क्यो)। —पश्चित—पु बाबी, सर्वे ।

स्वाहन-पु , संबहमा-को [सं] संबर्गना स्वर वनिष्ठ संबर्धन सो पहन्यामाँको विश्व प्रत्यमगुरुवा ।

र्सबहा-सी (रं॰) कता, रेक । संबद्धित-रि॰ (रं) परिता मोटा, मूँबा हुमा। रहतेहरी परिवारित ।

संबत्ती!-पुरामी।

संबादगा॰-छ॰ कि॰ हंदाए, नाय कर्या। वर करना। संबर्ष-चृ (संन) वे गोर्बेद्य स्वरुद्ध राज्य प्राप्त देश रह्यां देश कारोपितमा। परिनेशी इस्कृत, (स्कृ रुप्त । --स्वाक्ति(किन्दु)-दि॰ स्वर्द्ध देन क्षरीसाम। संबर्धन-चु (संन) राज्य सारो वा राग्यनेक्ष क्षित्रा। राज्ये स्वनोर्क साम सारोपित स्वारुप्त सारोपित क्षरा। राज्ये

संबर्धा-सी॰ (सं॰) तरह कारा । संबर्धी(विन्)-वि (सं॰) रक्तनेशासा रक्तो, देर

करनेशना । संबद्ध-प्रस्तिको साम्रपदार्थः।

संबाद-3 [सं] काइ-बोर्गका बीह निकास। यर इस्य वार्यका कामा पाता सकते रहनेताका (१)। संबादि संबादी-जी॰ (स॰) नीय निष्ठजीका वर्ष चैतर।

वानर । संघाटिकर-बी॰ (चं] तुरम, जोता सिनीधे रह पुरानी पांचाकः तुरनी। जाना वननंदयः विधाता ।

सीयाल—पुक् (क्षेण) जासकी रिक्कनेराका कर । संस्थाल—पुक्त (क्षेण) जासका कर । यह स्वरंग (स्तरी) तुक्त और क्षेण्य करका क्षेणा स्वरंग कुंग राशि साथ बावा करतेवालीका यह, करवा, सेणा लिख स्थाल (ब्या) चलनेत्व एक दियेव दंग (ता) द रव सरका । च्यांत्रिन (वे वो) रिकटर देल हो सर्वा हो। च्यांत्रि (रिस्)—दि दक्षी रहमेताचा । न्यांनि व्याव विच्न कीर करवे रहमेताचा । न्यांनि प्रकृत-वृत्त काराया सामित्रीतिक रोग । न्यांनि सङ्गान—पुक्त वृत्त काराया सामित्रीतिक रोग । न्यांनि सङ्गान—पुक्त वृत्त । न्यांनियालन । स्वरंग रीवाली

प्रार्थः बहुत कहा स्तर । संज्ञातक-तु (लंग) ताथ रहवेशलीका इक्यू दीमा? इत, विशुद्ध और भाषा): पंदर्वत्र । —धरणं-वि पैरोनाका । पुन्नमरः ज्याँ । रिद्वी । -श्विति -श्वितिक-मिसमें छ- परतें हों। -शंबी-सा पटवर्जन। –ताड-पु• पद ताड (संगीत)। –तिसा−सी माप इच्या पद्मारसी । −पग्न−वि सः पर्वोगाना । −पव्− वि छः पैरोनल्हा। प्र ष्टः पैरोनाका प्राणीः समरः निक्ती। छः १देशिका क्षेत्र । **−**०३व*−*पु षतुर। - प्रिय~पु नागकेशरः क्षमक। -पदाः-परिका-की माइत छंदीका एक वर्ग । -पदी-वि स्रो॰ छः पैरोंबाली। स्त्री प्रमरीः किक्सीः छ चरणी बाका छंद। −पाद् − वि धः पैरीवाका। पुञ्चनर। -प्रज्ञ-(दे॰ चारी पुरुवार्थ (वर्ग अर्थ काम भीर मोछ) कोकार्य और तत्त्वार्यका शांता । यु कंपर, कासुका नेक पक्षोसी । -रस-पु॰ दे 'पहरस । -राग-पु दे 'बहराग'। -रिपु-पु॰ दे॰ बट्रिपु । -झाखा-पु बंदको प्रमाण मानकार जकनेवान छ- विवृ-दर्शन (स्वाय सांस्य पाय पूर्व मोमांसा उत्तर मोगांसा और वैशे पित्र)। —बास्त्री(किन्)—पु• वह मी सः हिंद् रसंबीका धाता हो।

दछनाक्ष प्राता का प्रदक्षनाक्ष प्राप्त हुना। एकी व्ययक्षन हि [से] उप्पाना। उपने प्राप्त हुना। एकी क्षार क्षेत्र पा दिया जानेकाना। यु उपकी संस्था। उपका समाहरा काम महाना हि उपकारिक माम वारा। नामिकानिक उपना मामके किन ठेके नादिकर किया हुना। नासिकानिक प्राप्त कम वपदि निविद्या सका कार समाधानानिक उपने प्राप्त कम वपदि निविद्या सका कार समाधानानिक उपन प्राप्तिक ।

पद्पदाविधि-पु [सन] आप वृक्ष (कहाँ भ्रमर अविधि के रुपमे रहमहणार्थ बाता हो। जंगका पह । पद्पदानंद्रवर्धन-पु [सं] (प्रमरके किय आसंदर्धक) अधीक पुरा वा क्षिकरात ।

पद्-'वर्'का समासगत रूप । -क्यंग-वि छ अंगी वांसा। हु छठा भागा धरीरके छ अववय (शिर, मन, दी द्वान भीर दी पैर); नेरफे छः अंग (शिक्षा करन (नरक, छंर, अनकरण बनोतिन)। गायसे प्राप्त ए: पदार्थ (सूत्र गोमन क्षीर सर्वि दनि भीर (रेक्स)। स्टिबी छ। बर्खुजीस्त समासारः छोटा वोखकः। — जिल्*-*पि एही अंगोंको जोतनेवामा। यु विष्यु । - **व्यूप**--प्र भीनी गोपन मन् गुम्युल अग्रद काष्ट्र भार परेत धंरमदे भिन्नाने वशीदे समाज बनादर शुन्ताया प्रभा **प्**ष। ~•समन्त्रागत−९ नुद्ध। ~धंतिशी~न्त्री सारे भंगीने पूर्ण नेवा। − भंगि − पु सन्दर। − अक्षरी-की रामानुव संप्रशासका सुरूप संच । -आश्रीण-पु॰ सारव। – वारित्र – नौ क्रमेबाह-रायंची छः प्रकारकी अधि (गार्वाय भारतमीय वश्चिमानित सन्तानित, अन्तरस्य भीर भीरामनाम्ति) । ~अभिन्-पु॰ दुक्र । -अर्थ-पुरः वर्धीका सन्दर्भ भाष्टर-पुरुक कोम (उसा)।

-भद्र-इ ए रिमीरा समय । -भारमा(सम्)-

वि ए महार्थ स्थम वाना (अधिके विव अपूत्र) ।

देनियोदे छ व्याम । दि दिशान हिन्दे अरू यावस

-भाग्याप-दुष्टः तंदा +भाषतत्र-दु

मुसीरामा । प्र

ৰাতিবৰ ।

C

−भानन-वि

गगन भौर समीर 👣 छ- भाषतनीसे तुक्त । 🗝 भेदक 🗝 पु॰ बुद्ध । −ब्सार्−िव छ- कोर्मोबाका । →द्धपण− पुं• पीपक काकी मिर्थ, सीठ, विपरान्त अस्य और चीता −थे छः कडु असाके ः −क्तु −स्तो• छ' ऋतुर्ये । -रामा-स्रो गवा गयापुर, गावत्री, गयागत्र गवा दिरम और गरावर की मुक्तिरावक माने गमे है। ~गवीय∽वि 🖪 वैकॅसे स्रोबा जानेवाका। –गुण~ 🖪 चगुनाः छः गुणीं से सुद्धः। पु परराष्ट्रनीविकी सफ कताके किए राजा द्वारा व्यवदार्व छः उपाय-संवि, विमन्त वान (वडार्र) कासन (विराम) देशीमाद भीर संजया छ शुन्नीका समादार । −ध्रीय−५० २ऋ तरहदा कर्षत्रः मोठी वय (१) -प्रधा-स्त्री वयाः इनेत वका स्तरीः महाकर्षत्र । -श्रीकि-मी । दिप्पशीमृतः । -व्यथिका सी॰ शरी।-अ-द भारतीय संगीतके सतक का प्रथम और इन्नचे अनुसार चतुर्थ स्वर (यह नाम परनेका कारण रसका विद्वा, वंत तातु आदि छः अंगोंसे उरपण होना है। वह मगुरके छन्दरे मिकता है और इसका संबेश सार दें)। महाका शोलदर्श दश्य ।- इसीम-पु पर्मास संस्य भोग भारि हिंदुशीके सारसंस। ी दन दर्शनोका वाताः — दर्शनी—[क्षि] <u>पु</u>री 'बटचान्ती'। -सिंदु-दे 'बदबिंदु ।: -पुरक्ष-वि छा भुवाबीराका । पुंछ भुवाभीरा शेष । −भुवा−ती दुर्गाः गरवृद्धः। -र्यद्ध-पु दुरमिर्मदि किसी व्यक्तिके अनवानमें वसके अविद्यापनके द्वाप दरन। सामिश । -योग-प॰ बीगाम्बासमें प्रवृक्त छ- वरीके। ~धीति~ प्र विकासत् । -रस-वि ध्याप्रकारके रवाशीवासा । प्र छः प्रकारके स्वार-मीठा समग्रीन कृत्वा, तीता, क्ष्मेका भीर खद्दा । –रसासच−g क्खीदा । –राग-चु भेरव, मन्तर सी, दिशेष मानवोग भीर दोवद्र− वे छः रागा संतर वधेना। -रियु-त बामा स्रोध, कोम मद मीद और मासर-ये बद्विदार ! - रेसा-की सरकृषा। -सचग-पु रावय, सामुद्र आदि ए-प्रदारके मनक । - वक्स - बक्म - वि छ मुनीवाका । थ स्क्रीर ।−वर्गे−पु छः वरावी मादिका समाहारः वटरियुः पाँच धार्मेदियाँ भीर मन। - बद्य-वि जो वद्रिपुओं हे बगमें हो ।-बिंबु-पु शिगु रह प्रहारहा कीका जिसकी पीडपर धा निरियों रहती है। एक मनिक तन (बा॰ दे) । —बिसार—इ. छरीरपारी(बीर)के छ विद्यार-संपत्ति वृक्षि नामवावरमा शौरम वार्पस्य भार मृत्यु। ~विष-वि स स्वार्द्धाः पश्चा-म [गं०] सः प्रदन्ते । पर्य- प्रमुका गमामगत्र रूप । - भारीक्ट-पु तरहरू कृताकार यक्त (३६१)। -बाभि -बाभिक-

विश्व वर्षवास्ति । न्याच्य-चु छ यामध्य भवत् । वि छः वन्तवः। - मुख्य-वि छः गुरीवादाः। चु १८ । वर वेश्ववत्व । - मुख्य-की वरत्याः। ययप्य-की वि] सामध्ये मानिसंस्त ए मे विदिधाः।

वि । पानिक्षेत्रामा (परिया) । - सन्तरभावक-पु

शंदरायार्थं । -मास-पु॰ एः माम । -मासिष्ट-

1241 वि पातकः नाग्रह । संयातन-५ [मं•] वर बरमाः माद्य बरना । संगातिका-सो॰ रि] अर्श्विद्धी रुद्धश्री विशे रमण्डर मान करपत्र बरते हैं। संपाती-त साथ देनेबाटा शाधीः दीस्त । सपाती(तिन्)-दि [एं॰] पाठक माणवारी । मेपासी - न है 'संपाती । समाधिय-४० सि । शेवडा प्रधान (वे)। संधार=-पु॰ है॰ 'संदार । संघारना -स कि संदार, माश्र करना वथ करना । संपारास-प (सं०) दीक जिल्लानेके रहमेका रचानः Arrie I सपावशेष-प्र• [4] वे पाप जिसके किय संबंधे कर रिमोर्च्य निकालनेका दश निका जाना था (वी.)। सद्भवित-दि भी । प्रतिकः योवित । प प्रवित शीर विहाहर ।

संप्रप्र-वि [सं•] ध्वनित श्रुंबावमाना गीविता विक्रवार्य মতার। দুখনি পাবার। सम्प्र-दि॰ [मं॰] रगह खाबा हुमा। रगहा हुमा। संबेरना - स॰ कि रस्तीते वह गावडे बाने पैरकी इसरी गायके बार्वे पैरके साथ बॉबना । संघेता - व हो गायोंके पैताको वक्षा वांक्रीको रस्सी।

संबेका निष्क सामीः मित्र । संघोष-प [संब] जीरका शब्द। बीव अवलॉको वस्ती। संघोषिजी – स्रो [न] यक देतवर्ग। संब-५ [मं] ग्रंब सेपालक साम भागेवाले पर्वेका

मंत्रदा + एक्ट करना। रक्षण: क्रप्तक: घोति । -कर+-वि॰ संबद करमेवाला, कंत्रस । संचक-पु [सं] स्रोजा।

संचिक्त-दि [सं] अयंगेरे वदा ब्रमाः मीतः, बंदिय । सच्छ-प्र सिंशी ऋषिः आवार्यः प्ररोहित । संचत्-प्र सि | प्रवारक उदा दश उगी बीया। संचयात्र-म कि॰ बारा करवा, सीरताः रक्षाः देश-

मत्क दुरता । संचय-प (सं•) एकम करनाः आंटारः राधि हैरा मही शाक्षि का परिमाणः बोक संबि। र्धाचयम-प्र (सं•ो रुद्धभ करतेओ किया हैर कगामा। वके हुए शरकी अरिक्वों पक्षत्र करना !

संचियक-वि [सं] संग्रह करमेवाका। संचयी(विम्)-वि [तं] शंचन कामेवाका कंत्या,

क्रमा धनवान । संबर-५ [सं] शस्ता मार्गा संग रास्ताः यममा यह राजिसे इसरी राधिमें संबद्धमाना प्रका मनेख्यारा संस्था

नमः निकासः प्रयक्तिः सानीः। संबरण-पु [सं] गमना विता अभवा पार अर्नाः गविमान करनाः प्रयोगमे कामाः छैकानाः । संचरना - व कि॰ चलमा, फिरमा फैलमा पहुँचमा ।

स• कि अकामा । संचर्यण∽ु [सं] वगदेकी किया।

संचय-वि: [सं] बॉस्त, हिस्ता हवा शूमता हवा । संचिता-की [सं] वक बनरपति ।

पुरुष्टिनगढा-नाडी-न्या॰ धमनी। संप्रक्षम-प सिंशे दिल्ला कॉपनाः प्रमता । संचाम-प्र (सं•) इयेन, नाभ शिरुत । संचारप-प॰ मिं । एक यह क्रिसमें सीम परुप किया अस्ताथा। मि रेगमनः भ्रमणः धर्वका दसरी राशिमे सचार∽प प्रदेश रीय संक्रमणः भार्यः शारताः (॥।०) देगः जीवन व्यागारः ४ दिन बाजाः गत्रपरीका एक शहर कहा करि मार्थः मेतरबा बहावा बेनाः सर्पमात्र । -श्रीबी(विन)-धानवतीयाः शास्त्रावत्र । -पथ-प स्वतनेका रथाम । ~हवाधि-म्पौ॰ यह एकामङ रोत् । संचारक-वि॰ [सं] है बाबे, बकाने, देकानेवाका । पुर मायका बडावा देमेवाकाः बच्चा रहरका एक सन

र्सचारण-पु॰ [नं॰] नजरीक काना या 🛩 अला। बिन्नाना ओइमाः संवाद कहमा । र्सचारणी-न्मो॰ सि ी एक देवो (री॰) ।

चर ।

संचारमा*-ध॰ कि फैनानाः प्रश्व करानाः अपन बरमाः प्रवीवमें सामा । मंचारिका(ल)-प सि] मायक मैता। : र्सचारिका−सी [मं•] <u>क</u>टमीः वह दासी विसके पास

क्यवे-परेका दिसार रहता है। माकः प्राचः वगक ओका । व्यक्तरिकी-सो॰ सि वेसपरी सहा कारू कताक । संचारित-वि (शं॰) यदिमान किया हवा च्छाया इजा: कक्षमाना हजा जिसे क्यांचा टिवा गया हो। संक्रमित किया क्ष्मा (रीय) । प्र अपने स्वामीके विचारी-की कार्याध्यत इतमेशका व्यक्ति।

संचारी(रिच)-दि [सं] गतिसीक चका भगनकारीः यक्त इसरेमें संक्रमण करनेवाका मंत्रामक (रीग)। च्यान वकरमेवाका (स्वर्)। प्रवेश करमेवाकाः साथ आसे विक्रमेशकाः संक्रम्तः समस्थानीः अस्थिरः गतिसार क्रुरशेषाच्याः दुर्गमः जानुवंशिकः। पु गंबहम्ब भूप बा कुल्के बक्ष्मेरी वटा हुमा पुत्री बाहा यह प्रकारके भार को वैद्यान वा श्रीदान माने बादे हैं और स्वादी मानकी प्रह कर विकीय थी जाते हैं, वे 'स्पश्चित्र' भाव' (सा)।

गीतके बार वरनीमेंसे तासरा। नरिवरता अवस्वावित्व ।

श्रांचाकक-पु (श्रे॰) श्रंवाकम करनेवाचा यदि प्रकार करमेवासा ।

संचाकम-प्र [सं] बकामा गति रनाः निर्वत्रमः। सचाकी~की [सं] गुंगा।

सर्वितन-<u>प</u>र्ति] विद्यासिनारमा ।

शंकाक्र−व [सं]र्थपनः पक्रना।

संवितित-वि [सं] स्विवारितः वसिमेतः निश्चितः। संचित−वि॰ [सं] श्व∑ा किया इया वसा किया इथा। हेर स्मावा हुवा; बसा (बैसे बंगक); "से मुक्ता दिया इसाः जिसमें वावा पड़ी हो। सम्बास किया हवा। -कर्म(म्)-तु प्रवेतनके वे दर्म विवस फलसोग बडी हुआ है। वहारिय संवित दरने के बाद दिवा

कामेगका वर्म ।

पष्टि-की [र्स•] साइकी संक्या । वि साठ । --मारा-पु शिव ।--भक्त-पु साठकी व्यवस्थार्थे सुवा क्षीनेवाला दानी (जन पसन्द गंहरभरूसे मध् स्नान दोता है) ।-खता -वा॰ अमरमारी भागको सता। -वर्षी(र्थिम्)-वि साठ वरसकी अवस्थाका । -बासरख-पु शाठी बाग । न्द्रास्टि-द्र साठी थान । ~हायम-वि० साठ वर्षका। पु॰ साट नर्पेका काकः साठ वर्पेका पक्षा काबीः साठी भागः । – हृद्य – पु यक्ष तीर्थः । पष्टिक-वि [तं] साठ(रपवे आहि)में धरीरा प्रवा ! प्र साठ दिनोंमें तैवार क्षोतेबाका एक बाम साही। साउद्यो संख्या । परिका-स्रो [सं] साठी पान। पश्चिम - वि [सं] विसमें साठी वान नीवा नवा हो। साठी वान की में मोरव हु बद खेल जिसमें यह बान वोदा गया हो। पप्यूर्पशक-प्र [सं॰] एक वंत्र जिससे सक्षश्रीके सकार महामक्ती रिवर्ति निर्वारित की बाती है। पष्ट-वि [tio] एका। -काक-पुछका वीवन-काल। -काकोपवास-९० एक तत विश्वमें दर शीसरे दिन शामको मोजन करते हैं। -सक्त-विश् तीसरे दिस श्वामक्षे पानेवाका । प्राच्छा भीत्रम । पष्टक~वि [मं•] छठा । पष्टीरा∽प्र [र्थ] छठा माग विशेषकर अक्षका वह धडा माग की राजस्कते कवर्मे दिशा जाता था । -बक्ति-प॰ नह रामा जो करके कममें मिछे हुए अधके प्रश्नाय से अपना काम च्छाता है। पष्टिका~ सी [सं] पश्चीत क्योंके जन्मने छका दिन ! पद्मी-सी [सं+] सबसी छडी तिथा स्वामीत्पविके दिनशे क्रठा दिशः क्रष्टी। कात्वायशी (बुर्गाका एक माम) जिनकी क्षेत्रे दश्यामके किय क्रमुंको पूजा बोतो है। संबंध-कारककी विमक्ति इंडरीया । अवाय-वि किसने करा विवाह किया हो। -तत्प्रवप-पु जलुबन समासका एक मंद किसमें पूर्वपद संवंधकारकारी विमक्ति परीमें होता है (जैसे-दियासक)। -पूजन-इ ;-पूजा-सी प्रसबने हुटै दिन होनेवाची वडी देवीकी पूजा । - प्रिय-प्र रक्त ।- व्रत-प्र अविधित । -समास-प्र वे 'बग्नी-सर्धवन । पष्टय-दु [स॰] छडा धान । पहसानु-५ (सं] बद्धा मीर नन्त्र। पोड-५ [तं] छिर। पोट्य-९ [सं] मर्पस्या श्रीनता। पारकीशिक-वि [सं] सः तहीये कियर हुना । पारवीरुपिक-वि [र्थ] किएका छः गीविनीते संबंध हो। पाडन-९ [सं] गाना रक्षा रायकी एक कावि विसर्वे क्षेत्रक हाः स्वरं कात है। मिळाई । पान्नवय-पु (तं) वश्युयसमुख्य छः ग्रन्तेका समूक्त राजनीतिमें व्यवहार्व प्रः संग कर्ण है 'बरगुण । विसी संबंदाको छन्ते गुमा करनेपर नाह गुननक्क । —प्रकीय +प्रश्नमीठिके छा अंगोका प्रथोग । —वंदी (दिम्) — रि राजमीतिके का अंगोंका धाता। —संयुत्त—पि

राजगीतिके छः अंगींचे जुक्त । पाब्रसिक∽वि॰ [सं] विसमें द्रः मकारके रतत हो। पाब्यगिक-वि॰ [सं॰] पाँची शहरों और मनसे संस रसानेगाका । पाणमातुर−पु [सं] कार्तिकेन (जिनका पाकन हा गाठामोंने किया का)। पःष्यासिक-वि [सं] क्रमाक्षाः स्टम्बोरीका 🕫 स्टबुके छ- महीने पश्चात दानेवाका मृतक्रमाह । पाइतर-प्रामंदरी नीचेका एक बनावडी साह (सेपेड)। पाष्ट्रिक-वि॰ [सं॰] साढ बरसकी अवस्थाता। पाय-विसिशी वय कहा (भाग)। पाडिक-वि [सं] छठा संबंधी। मिलको छड(बन्नाम)नै न्याक्या की गर्धा हो । यह पार मासका यह जब जिस्ने दुवके शाब केवल वर छठे विज मोजन दिया वाशा है। पिज्ञ−प [तं] कासक व्यक्तिः नियः वेदमा राजनेतला प्रथम । धु−दु पू−सी॰[सं]बसर। पोर्वत−विं [सं] धः वॉर्टोवानः। योडव्(त्)-वि [सं] छः रॉवॅनिका। तुः छः रॉवी वाका वैका योक्स-विश् सिंशी सीमवर्गी । पीडस(स)-वि॰ [र्थ•] सोकश । 5 सीकश्च संस्था। --कक-वि॰ शोकह कडीशका ! --कमा-मी वहमा को लीकह कवार्ष (अंद्र) – लखता सामदाः प्राप्त ग्रीध पुष्टि इति इति प्रश्चिमी पंत्रिका, स्रोति क्योलरमा की ग्रीति, संस्त्रा पूर्वा सीर पूर्वाच्छा नती सवातिति वस्तीः नकती रहती है। -शया-तु पण सामेंद्रियाँ पंच कर तियाँ पंचयत और यक मनका समृद्द । – दाम – 5° माद बारिक अवसरवर देश सीवह वस्तुर्ग-मृति आसन्। नाय सीना भाँदी पानी कपड़ा दीएक सन्न पान क्रम सुर्गाच फूक्साका फूक सेम और बाराकी। न्यासे शाची(चिन्)-वि सीतह पर निर्मेश रहनेवामा । E मेरका --पूजन-पुद 'शब्दोपचार। --भ्रजा-न्ती दुर्था। -शेदिल-दि सील्ड बर्गीमें विमन्ता -सालुका-की गीरी बचा खबी मेंबा⊾ सारीमी विश्ववा, बचा देवलेला स्वधा रनावा स्रांति प्रति पृष्टि हारिः भावरः जीर आस्मद्रेग्दा-वे स्ट्रेक्ट देखिं। —विधि-वि सोक्व प्रदारका । −श गार-त सम समाने सेकह भेग संपूर्व श्रीयार (शब्दन क्याना स्थान करमाः बस्य पारण करना वास सर्वारवाः श्रेमम क्यामाः सिंहर अरुवा सङ्गापर कगाना साकार तिकृत ननाता डोडीवर तिरू बनाया गेंदरी रनाना सुर्यपित हन्त्रेस प्रयोग करमा, कलकार पार्य करना अन्यक्त वस्त्रम पान खाला. ओढ़ रैंचना और मिरसी समाना) ।-संस्कार नेत शान्तविदिश गर्नावामधे केटर प्रश्नवहरू सीअह संन्कार (हे. संन्कार) । पौदसक-दि [सं] सोरद अंशीनम्य । पु स्टेन्दरी संबंधा १६ । योक्सीय-वि [सं] सोवह बंदी वार्ती प्रश्नातिका ! प्र सोक्य प्रवास्त्र गंधनम्बंधि वैशार क्या हुमा पूर ।

संचिति-को (सं) एकत्र करने, बसा करनेडी किया बाह्य होते। वह स्थामा। श्वप्यज्ञातलका नवी सह । सीमान-प्रकाि नेक्स्फो मादिका एक जातरा वा संविद्या-सी [सं•] मूचक्यों नामक कता। 'ससकी पाक किसी मोस्तोत बनाते हैं। * इक सरस्य सञ्ज-त सि कारिका व्यावका । कोशा । संबर्णन-प्र [सं] इक्के इक्के करना, बुर करना। संबाचन-प्रसि•ोगरम दबमें बामन दाक्रना। संपूर्णित-वि [सं॰] इकते दकते किया प्रमा, घटकिया सक्री∽स्रों [फा] वक्त कर्ता (समासमें)। संबोदगी-को संबोध होता गांगोर्व स्वतारी संचैय-वि [गुं•] मंचव करने पक्रव करने वोच्य । शिष्टता । 0.1 संबोदक-प्र• [सं] एक देवपुथ (वी०) । संबीदा-वि॰ (का॰) तुका श्रमाः गांगीनंतुका किरा संबोदन-प्र [शं] कावा देना, वरोक्ति करणा । समञ्ज्ञार । संबोदना-सी [रं•] प्रशेष्ट वा वरोतित करनेवाका सँसीव-त॰ (र्थ•) साव प्रमहत्त्वीरितं धरनाः तवः चीका पदार्थः चरुवित ब्रुसाः देशना । करमेशाच्या (समासमें)। एक नरका वि कीना। संचोदित-वि [सं] मेरिता नारिक्ष। -करण-प्र• प्रमा बीरित करमा । ÷करकी-ती॰ संक्रम-दि [तं] पूर्णत क्का हमा। क्षिपा हुमा। सहात ! पुनर्वातित करनेकी विकाश एक कविपत नदी ? संखर्गन-प्र= [मं=] वगलमा (महनके मौक्के दम सेटी-संजीवक-वि सिंशी साथ बोबे, रवनेवाकाः रवसीरेव मेंसे एक) १ करनेवाका । संधादन-प्र[संक] दिपाना । सर्जीबन-प सिंशी साथ घोडाः समाः तस्मीतिः संधारमी नहीं [मं•] त्रचा, काछ । करनाः एक नरकः देश 'शंबक्य'; बाहररः एक न्री । संविदा-सी॰ [सं॰] बाछ, वर्गदी। संजीवसी-को सिंधी मतको बोरित करनेगमी एउ संक्रिय-दि॰ [मं॰] बातकर द्ववते द्ववते दिया द्वारा । करियत बोपभि: एक बोपभि: सर्वती । विश् सीर बोस्न संक्रेद-प [सं•] काटना, विमायन करना। इराजा, दर देनेबाकी। -विद्या-सी॰ युत व्यक्तिको विकामेरी करना। यक करियत विद्या । सींब∽प्र[सं] क्षिपः ज्ञचादि (या] तींकनेपाला संबोधित-वि॰ (र्स॰) प्रनशीनेत किया द्वमा । संबीबी(विज्)-वि [मं] युत्तको मीनित करमेनामा । (समासमें)। संक्रमा-विदे संस्क्र । सजन-द्र [तु] बंधनः संबद्धनः। संब्राक-पुर दुक्, संघाम ! संजनम-वि (सं•) करुक कानेवाका । प॰ करपावनाः संप्रतः - वि॰ सिका हमा शहित । रचनाः प्रभवि । र्सभ्रमित−दि (सं+) तत्त्वाभ्रिकः रवितः । ः मंत्रता−की वक्ष छर। संग्रह-वि [एं] "- है भरा इना नागर। संख्वी-सी सिंगी पक्ष प्राचीन विनार निस्ते वर्ग मैंबत=-विश् वैशत सबदा समयाव । करते थे । सँबोड॰-म संग सावमें। पु कि॰ स्वड्डा बर्ध संबस=-त है 'संवय'। संसमी-वि है 'संबगी'। संसद्ध है संक्षय-को [सं] विजय । प्र मधारका व्यूषा मैंबोडक•-नि श्वहः क्रिया हुमाः शक्ति । चृतराष्ट्रका यक सारवि को कर्न्य सुकता समाचार सुनाया सँजोड - इ संबोगः तैवारो - अवहाँ नेपहि करी सँबोर्ड'-म । सामग्री । करता बा। प्रतराहका यह द्वन । संज्ञोरा≠-प वे 'संवान'। संबर-इ [का] करवाह समाद्। संबद्ध-पु [सं•] गार्वाकामा गरवस्य कोरपुरु बोदता । र्मकोशिता~सी जबर्थरही क्ष्मा विस्ता पूर्णरामी संजयस~नु [सं∗] सांगम वनानेवाके बार सकानीका हरण दिया था । संज्ञोगिकी =-सी है 'संशोगिता । समादारा मार्गदर्शेष रहेम । संज्ञां~की [नं] छायी क्करी । द्वा किता के र्मजोबी-† प्रतीहर रहनेके किर साथ अने हर रिशी वह बुक्त की अपनी शिवाके साथ हो।
 ० दि वजनः कर्सनः। संबात-वि [सं] कावकः स्थात्तः स्थातीतः (समय बाहि)। 'संबोयो । -कोप-पुहुद्दां-कीतुक-वि चकित। ∽निहाः सैंबोमा-स कि संगामा दक्ष्य करना। पूरा करना। प्रक्रय - विश् क्रिक्यी मीर समाप्त हो वनी हो ।- निर्वेद~ मेबित करता । ति विरक्षा - सजा-वि कजिला - येपशु-वि में जोबपार--स॰ कि दे 'सें मेना । सँजोक्स॰-वि समा द्वनाः समहा सैन्यादिनिधिष्ट । धरित । संज्ञाक-पु [का॰] दाशिया, वीतः एत वरहका कपदा र्मेंबोद्यां-दुस्थाकाः वयावाः सैंबोड़ां-इ नाग क्सनेका शला क्रिसस राष्ट्र स्था विसक्षी गीर कमाते हैं। संबाफ्री-वि हादिवादार, (हरका) विसुप्त किमारी रशता है। हनो हो : -र्राज्ञा-पु वह गंजा विसको वैदिवागर हो संज्ञ-वि॰ (सं॰) जिसके हरवे ६वर भारतने

पीबस्यक्रिक-नि [सं] सील्ड् बंगुरु वर्धनाका । पोक्सिकि-पुर्सि•] कर्चट, केवना । पाडराह्य-५० (सं•) शुरू यह । पीडशारमञ्ज-प [र्थ•] स्रोतः गुर्गोनाकी कारमा !

योदशाद~दि [सं•] सोकड् कारोबाला (पहिया); सीकड् पैक्डिबोबासा । यु एक तरहका कमक। पोडवार्षि(म्)-५० [सं॰] शुक्र शह । पोडसावर्त-प्र [सं] संबा

योडशाधि-पु [री॰] मोसह धोमॉनका पर (रू०री॰) । थोडशाह-प्र [सं] सीकड् दिस अकमेबाका क्यबास मारि हत । पोश्चरिक-वि॰ [तं॰] सांतर भंगों प्र**क**रीवाका। सोक्रस् संबंध रखनेवाका । पोष्टिशका-सौ [शं+] यह ती**छ**।

योबधिकास-पु[म] पकतील एक। पाइसी-ली [एं॰] इस का कारह महाविधाओं मैसे एका क्षेत्रह वर्षकी स्त्री तक्ती। प्रेत्स्मेनियेव । पीडशी(शिक्)-वि• [मं•] सोक्ड मार्गोवाला (रतोवारि)।

स-रेवनागरी वर्णमानाका वश्रीतको भीर कम्म वर्गका

श्रीसरा व्यंत्रनवर्ण । इसका क्षत्रार्गरवाल दंत है । इसकिय १मे बंत्य स बहतं है। **सं-ड**प+ [सं] 'सन्'का संशित्त क्य । सँहतना - स कि बोहना वदीरना। सुरक्षित रखना। शहेबमाः हीपमाः पोनमाः

सेंद्रपना≉−स मि दै 'छैरिना । सक् • – सी शंका बर; प्रम। संबद-दि [मं] बनीमृत संबद्धिनं तंगः बनाः दुर्मशः रानरनाका में पूर्व, मरा हुआ। पु॰ तम शाला। वशी कठिनार्दः रानराः रिप्तिः समीवनः भीतः। ~चतर्थां -भी माप-प्रभा पतुर्थी। ∼नाशन− दि कट दूर करने

वाहा। - प्रस्त-दि हिसका में इ संग हो। - मीचन-धनमानकी एक बाधीरथ गर्नि । वि० दे शेस्ट माधन । –श्थ-वि• विपदधस्त । संबद्धा-मां (गं) यनारलमें प्रसिद्ध वक देवी। लाढ बीगितियोगिसे बद्ध (रोष मात वे ६-मंगता दिगका, भग्या प्रमरी मदिका छस्का और निश्चि-उदो०) ।

संकटाक्ष-५ [मं] ४व १५ । हि बतायमहिन (१) । संस्थापस-वि [मं+] विषद्यान वश्में बहा हुआ। मंबरी(रिव)-वि [में] थे। संबरमें वहा हो। गंबरोत्तीर्ध-६ [गं] भी गंबरमें बार ही गया ही । र्गक्तक-प देश भारत । मंद्रपम-पुरु [ग] वर्णम द्रहमाः वार्था ।

संबंधा-भी [मं] कमा कन्योत। मेंपधित-दि [if] विति वृदित ह संबन्धा - भ दि दृश्या देश गरिष्ट ब्राया । संबर-त [4] मिलमा बेगा, दढमें मिलबा। की मानिबंबा मिलपा अंत्रश्रीतीय संबंधी कारक शंत्राता । 41-E

प्र• एक सरहका सीमपात्र ! पोडशीबिदव-प॰ (सं॰) यह प्राचीन ग्रीस ! पोडशोपचार-पु॰ [र्नु॰] देवपूजनके सोजह भंग (आसम, स्वागत, वर्ष्यं आयमन मनुष्कं स्नाम, बतामरण वधी पबीत, ब्रंदन पुष्प, भूष, गोप मेंचेच, त्रांबुक, परिक्रमा

भीर बंदना)। योबा-म [सं•] छः प्रदारते । -श्यास-प्र• मंत्र पत्रते हर छरीर-रपर्छंडे छा मकार (तं)। −मूख-पु• स्कंद । ~चिहित=नि॰ छ- मार्गोनासा । योद्म्(त्)-वि०, धु (सं०) दे० 'दोष्टम्'। प्टीबम-बु [elo] बुक्सेकी किया; बुक्, कार ! प्टीवित-वि• [तं] श्रृहा दुमा ।

प्रीवी-की॰ [सं] शुक्रनेकी किया। च्टब−पु (रं•) पुक्रमा। प्टेबन-व [संगोदे प्रीवन । थ्देविसा(तृ)-वि [र्शः) भूकनेवासा । पञ्चल-वि [सं] प्रीदितं। प्टाति ची [सं] शुक्रनेकी किया।

एक **हो बावबर्गे ही या अपिक मलंकारीका मिश्रम** (मा): वह बस्त की रपर्छमें गंदी ही कावा मीवरा कहा। कागके बक्तनेका सन्द । -स-दि मित्र बादिसे बरुग्र । वात -बाति -बातीय-वि॰ दे 'संप्रता । संकर ० - ५० दे ० 'संकर' । [सी 'संकरी 1] - घरनी -

ब्दी पार्वती। शंकरक-वि [र्त] विकाने मित्रम करनेवाला । मेक्स-५ व्हर्मा सँबरा - विक् नेप अंदोर्ग । प्रकार । स्पान निवरी, वबीर । अ॰ -(र)सेंपदना-स्टम परमा ।

सँकरामा-स॰ कि॰ तंग मंद्रपित मंदीर्म करमा।

र्धकरित−दि सि दिलाइ भा मिनिता

र्यंक्षपें ~पु॰ [र्ग] पानुधे शीव शाबा ।

श्रीकराचा -पु (मे॰) राचर ।

संबरिधा-१ व्याप्रस्टा शार्था। संकरी(रिष)-वि मि वे शेमना। मिमा मरेव संबंध ररानेबाला । मंबरीकरण-पु [मेर] मिलामा। बाहिना करेव विश्वपा भी प्रशास्त्र वाचे मेंने थक (वी अने आदि वसने शीना है) इ

संबर्धन-पु [मं] श्रीवदर निदासनाः संवास्ता गुन्दमा चल कानाः कातनाः छोता करनाः वहरामः वस का निवाक द्वारा मधीन वद बेच्या गंतराव ! -विद्या-की बद मीरे देखें क्या निवास्त्र पुसरी मीच केसे रसनेधी विषा । मंदर्शी(र्विश)-वि [+] श्रीवदर विमानेवामा ग्रीस वश्नेवाटा ।

संबद्ध-पु [सं] बदन बरमा साहित देश दोगा होत (१०) । ई की॰ छोरक, नेबेरा बानस्तिश स्पेतिश

दहराते हों। मामबाला: पूरा जानकार: बीडामें आया द्रमा । प्र एक तरहका पीला सुपंशित काछ । संज्ञक-दि॰ सि॰ो मामवाद्या (समासमे) । संज्ञपम~पु+ [मं] बक्षियशुद्धा (यना दवायर) वप करनाः एक करमा, भोदा देनाः मुख्ति बरमा । संनम-दि [धे] मृदित दिवा द्रशा विक वरावा द्रशा। मंजप्ति-भा । [शं] वप दरनाः राधित दरमा । संना-सी मि नाम पाला क्षोत्ता प्रचार सवतः विविद्य मामा यह ग्रथ्र जो किसी व्यक्ति, वस्तु आदिका नाम बी (भ्या)। गावत्रीमंत्रः एक क्षेत्र संख्या (वी)। सूर्वेद्ध शी बी विश्वसर्गानी प्रयो बी । - करण-प्र माम रसमा । -पुत्री-स्त्री वसुना। -सुत्त~पु शनि। -हीन-वि विक्रोण ।

सँज्ञात~ वि [मं] भराधे तरहवामा समञ्जातुमा । संग्राम-९ [म] बोप, दानः सम्बद्ध अनुमतिः स्वरु (१)। संज्ञापन-प [सं] स वित करमाः बतकाना सिद्यनामाः

W I संज्ञानाम्(बल्)-वि [मं•] होग्रवारः। नामयुक्तः। र्वक्रिका−स्को • स्ति । नाम, आह्या । र्यक्रिस−वि [सं] स्वित स्वेत हारा जनकामा हुना मभिक्षित । संशी(दिन्द)-वि [सं] चेतन सद्याना नामवारी।

प्रभीव (वे)। संज-वि [मं] विसदे पुरने बक्दे समय रहराते हैं ।

संस्वर-तु [सं] तीज ताप का स्वरः जीवादिका कार्यसः संग्वरी(रिन्)-वि [म] अवायुक्तः। संक्वछन-पु [मं•] वह को कहे १थन। में प्रकार-वि संस्था-सं-बी: मैंशहेरी छोटा (आहे) । सँग्रवाती-को दिवादादिमें शामको गावा जानेवाका मीवा शामको सकावा जामेशका दौष । वि श्रंप्या-

संबंधी । मंशाक-की संख्या। र्से हिया से ह्या ! - ८ संब्बाधालका मोदन, व्यास् । सँमोकाञ्च संव्यक्तातः।

सेंसोक-म संस्थासमें।

सँडा-९ दे छठः चुणी । सु -मारना-मीन प्रमा भूषी क्याना।

संब~पु साँदा [सं] दे 'बंड'। ~सुसब-वि [हि] मोय ताता।

सँद्सा-९ दो छोडे छन्देश बना हुमा एक क्वीनुमा भौगर को परम श्रीवें भादि १६४मेडे स्त्रम आहा है। में इसी-श्री पक तरहका छोटा सेंडसा विससे गरम व्यक्षेत्रं भादि प्रकृष्ट प्रवारते हैं, संदेशिका ।

संदा-दि मोरा-तावा सबदूतः।

सेंदाई। - औ॰ महत्र जैसा चमडेका बना दुला एक वहा भैटा बिसमें इना भरकर नाककी तरह दरतेमान करते हैं। संदास-पु कुएँ वैसा नना हुआ पास्ताना जिल अद्यार साद मही करता सक बमा होनेपर शोका बादि काक देते है। रूपरकी मविकपर इसी तरहका क्या हुआ पाचाना क्रिसमें मुख्यांचे शिरता और मेहतरसे साफ

करावा जाता है । संदिश-प्र• [सं•] गैरसा पेरसा । संद्रीच-प्र• (चे॰) पश्चित्रंद्री यह तरहरी स्रप्ताः। मधिका−सी॰ [थं•] धँउनी। सैत-पु॰ [सं] अंशकि शंदत्ततक। ('सन् दा प्रथममा बहु वधनांत रूप) माध धर्मात्मा, विरक्त, महारमा। गृहरथा-भगमें प्रदेश करनेवाका साधुः एक हुन । --समागम-व संत्रीका सरुपि । -क्षाम-न् साभुमीका स्थाम, मठ । मंतक्षण~प्र• [ग्रं] दाना श्रांमा क्रगनेशको शत । मंत्रत-वि [र्] फैकाना हमा। सविधित्वा बदता बराबर रहनेबाला । स्न अमेशा क्यातार, सिरंतर । • स्ती• संतित, संतान । – वतर-पु• वरावर ८६नेवासा क्दर विश्वम क्दर। -हुम-वि (प्रेगक) जिलमें बुध

बद्द यने हो । −वर्षी(पिन)--रि बरममंबाहा । सकति – सी र्मिको क्रीकाच विस्तादा सिरेसकी अपि विष्ठवाता अविविद्यम पंकि, भारा आदि। राज्ञ समुद्रा कुछः सेनामः यनवाः अमुमृति । भीरोध-पुर प्राकृतिक (संबम भारि) बादवा कृतिम तपावों दारा गर्भापान म दोने देशा - पथ-पुदोनि । - होस-पुप्रमेक्ति

संत्रतिक−द्र [सं] संदान ।

मेत्रपन-प [मं] १९६ तपनाः देश दरमाः दश हेनाः वश्योदन ।

संतप्त-दि [सं] तम बकता हुना। बला हुना शुलसा हुआ। विवक्त हुआ। बहुमका पीडिता होता व हुआ। शोकः इत्या - चामीकर-प विवता इमा सीना । ~बसा(सम)-वि शिक्षके धोनेमें वा साँध सेनेमें सब हो। - इत्य-वि मनस्ताम्यच ।

सत्तम् (म)~५ (र्ष) क्ष्म्भाषा अंथकारः महामोतः। संतमक-५ [सं] यासका ।

संतमस−५० [सं] दे 'स्तम'। वि तसमान्छक। संतरण-वि [सं] पार करनवाकाः बदारकः। प्र• पार करनेकी किया।

र्मतरा - प्र व्यवका भीव नही मारंगी। संतरी-प [थ 'छंद्रो'] प्रहरी, पहरेदार; हारपाक । मंतर्जय-प [सं] पर्यकाला। बॉट इपट करमा: सत्यंता

करनाः क्रासिक्षका एक जनुपर् ।

मेंशर्जना – स्रो [सं] दमद्भा टॉट टपर । संतर्पक-वि [न] तुस करनेवाना, तामगी आनेवाका ।

संवर्षण-प [सं] तुत करना दावनी काना तावनी कामेका सामन, शकिनमें प्रार्थः एक मुर्च को शह केला क्षमूर, भनार चीनी, लार्र भारिके बीगसे सैवार किया आता या १ संतर्पित−वि [सं•] तुस किया द्वजा।

स्तान-पु [सं॰] अविकित क्रम, पंकि, बारा मादिर विस्तार, फैकावः शासा प्रशासाः स्नामः विचार प्रवासः करवनुष्य या कसका पुष्पा एक गौराधिक कसा। बी संतति कीकार । -कर्म(तृ)-पु संनामोरपारना हक मन । -कर्ता(र्च)-पु स्तानीत्पारकः। -राव्यपति-

```
संबद्धम~संबेदन
   सिक्द ।
  संकलम-प [से ] पक्रवीकरका संबर्ध, संबंधा योगा
   मिलना जीव (ग )। अच्छे निवर्गेकी पुगवर एकत
   करमाः रस रंगसे दना हुआ और।
  संबद्धना~ची • [सं•] प्रतत्र करनाः मिलामा जीवना ।
  संकल्प+~प• दे॰ 'सहस्य'।
  संबस्पमार-स॰ कि संबस्प करना, निश्च बरना।
   धासादि वार्मिक इत्व करनेका निश्चय या प्रतिश करसा ।
   थ॰ कि॰ इरादा करना ।
 संबद्धा-प छन्द्रीय । श्री सिंधी बीहना मिकामाः
   प्रकृष करेना ।
  संक्रिस-वि• [सं•] राद्योक्कत, एकवीकृतः बीग विशा
   इमा निकाश इमा; गुरीहः श्रीकः इका (व ) ( प्र
   नोद (ग)।
 संबद्धप~प [धं॰] सरोपताः बहादता ।
 संकरप-प [सं॰] इच्छाः नियमः प्रवेजन करेरसः
  मीबवा विभार क्वपना। यनः कीर्व शासिक इत्व करहे
  की मिरिकाः शामिक कुरवरी धकको आहा। सर्वी बीजेकी
   इंच्छाः मेत्रोबारमञ्जे साथ पानिक क्रूटन करनेको महिका
  धरना। −जन्मा(न्मन्)−नि इच्छाने धरपहा। प्र•
  कामदेव। −श्रुति~वि इच्छा शादा नैरिका −श्रव−
  विक् प्र वे 'संकरपकामा'। --वोबि-विक इच्छा
  विस्ताशुक्र हो । पु प्रचया क्रोमदेव । ~क्यप − वि
  नो रण्डाके नतुरुव हो। ~संपत्ति~नो इण्डापृति।
  ─संभव─वि क्ष्माविस्ता नावार हो। प्रथमा
  श्रासरेतः।' ~सिब्दि∽ली॰ वन्द्राशक्ति दारा व्हेदव
  भी पृष्टि ।
 संबद्ध्यक् -ति (सं०) संदर्भ बरहेशाचाः विचार वर्गन-
  वाका ।
 संकल्पमा-स कि, व कि दे 'लेक्टमना । ~
 संकरमा—सी॰ सि ] दहादी यह दश्या, धर्मदी स्त्री !
 संबद्धपारमञ्ज्ञ-विक (र्धक) बिहार्वे संदर्भ वा प्रतिका हो ।
संकरियश-वि [सं] विस्ता संकर विशव किया
  गमा हो। जिसको श्रद्धमा को क्यों हो, क्रविका 🗀
संबद्ध-५ वे 'संबद्ध' १
संबद्धक-वि (सं ) करियदः चंत्रकः अविश्वितः संदिग्यः
 तुरा बुधः निर्देश ।
संबाध-सी शंदा वर !
सँबासान-व कि संदित दोगा दरवा।
र्सकार-इ [सं ] क्याः गागडे जनमेका शब्दा रं स्थेत ।
 ~क्टर-पुक्षका देर ३
संबारमा १० मा कि स्केव बतारा बरना ।
संकारी-भी॰ [सं ] वह अवन्ते विल्ला श्रीमार्थ अमे
 भन्नी मन हुमा ही, सबी हुम्रहित ।
संकाश-वि [सं ] तुस्य सरक्ष (स्थानमें)ः विकल्पता ।
 भ निकार, पास । पु वनीसा क्वरिवाता क्रांति, मुक्ति ।
संकास+-वि , प्र॰ दे 'संकाश'।
```

संक्रिक-प्रसि] ब्रह्मा

संबद्धीर्य-वि (से०) मिलावा हुव्याः मिविताः संबुक्ताः

क्यिरा हुआ। शरपका दान बहाता हुआ। सन्त (हासी)। उ॰ लंकर कातिका व्यक्ति, मिम रामा मस्य हाकी लंक्या ण्यः प्रकारको शयक्षेको । -स्राति -योति-विश्व वर्ष संकर । - सेरि-प्रभाषका एक प्रकार । -पुद-प्र विभिन्न प्रकारके अस-प्रकॉसे क्या मानेवाका हुई। संक्रीणंता-को॰ [सं] तिथे। शहरता महिका (धन्द्रोंका)। संबर्धणां-की [मं] यह प्रकारको गोकी। संक्रीर्शन-इ [सं] सन्वक वर्णमा प्रश्नेताः रहति। रेगाः के नामका चरः शचगाम आहि। संकोर्तित-नि (र्र॰) सम्बद्ध ६५से शनितः प्रप्रस्ति। ,स्तुव । संक्रिकित−नि [सं॰] शुक्य हमा। यह कुटिक । संक्र-५ (संग्) किए (१) + मर्चा । संक्रचन-५० (सं•) दिश्वनम्। संक्रपित रोताः स बाक-रोग । सॅंक्रुचना−श कि दे• सकुचना'। सॅंडम्बाना-स फि॰ स॰ कि 'संडपाना'। संक्रिया-वि [सं] सिकुना हुमा। तेगा वंदा मत संख्यित-वि॰ [सं] धरा वरोतित। संक्रक-दि॰ (धे॰) बनाः प्रवंशः वरवाना श्रमाः वारिका सरायका संबोधी अस्तिता सर्वेष । सः भीव सम्बन्ध र्श्वरा हुद्धा व्यक्तंगत नावयः परस्पर निरीवी कन्ना क्ट दुम्हा संक्रकता-की॰ (ते॰) परिपूर्णता गणनम व्यक्तिका। क्टाएक । संकृतिय-वि [सं] मरा हुना, पृति (समासमें)। नया **ब्बल्डा बदडावा बुध्या** । श्रीक्रधा∽तः [सं] एक मछकी श्रीकृत संकृतिश~षु (रं•) वक्तवस्त्रक्षे गेली । र्सकृति∽ि (सं•) यक्षण करमेनाकाः स्पन्तिण करते वालाः तैवार करवेवाकाः। स्रो क्य-विधेवः उ दक साम । संक्रच-दि [र्थ] कारकर इक्ट्रे-प्रकृ , किया हुन्या विंचा हमा ११ संक्रष्ट-वि+ (सं) खाँचकर चन्नरोक काना हुआ। पा साम किया प्रणा १ स्कित-पु [नं] अनिप्रावत्का क्षेत्रेश रंगित रहती विका उदरावा में मी में निकाका जापसका अवस्ता में में प्रीमिकाके विक्रमेका विदिध स्थाना धर्न । -केसना-पूर्व। -विकेश -विकेशन-प्रश्र प्रेगी प्रेमिकाके निकर्मका रवान । -भूमि-को -स्थल -स्थाप-पु॰ रे॰ 'संकेत केतन'। -सिकित-दि बारक स्टरावरी शिकाटुशा। −काक्य∸पु यह विश्वय श्रन्य को सं वस्था बरियावक विद्व हो। -हेनु-पु विवर्वका धबीजम ! मैंबेसं-विदे 'वेंबरा'। संबेदक-पु [सं] ठवराया मिसन-स्थामा संबद करने-ৰাজ্য ইনিয় । मिकानयी निक्रण गरा हुना। तथः संबुधिका प्रैलानाः | संबेतन-प्र [सं॰] जानसका उदरानः विमना मिकन-

संभाषे-संपश्र संधार्य-विश् [मं] बारण वा बहुन करमे बान्का निवा-रणकै धीरका (भीकर) रखन मास्य । संधि-न्या (र्थ) संबोग अरु, संबंध समझीवा; दौली। सनदा सरीरका क्षेत्रा सत्य क्षेत्र कराता सेवा निमाग पार्थक्या समा संबद्धमा एक शरहका वर्ध-विकारः संदिताः व्यक्तासः निरामः परिवर्शनकारुः ह्या अव सरः युगात-कासः कमालीः भारतकी पाँची आस्वानींकी मिकानेबाब स्वक मुख्यमधि बादिः तास्का केलीर भादि सपरभागीता वात । —ह्याध्य-वि मेनी-स्थापनी पद्धर । ~कुसुसा~को एक फुक्क्यार पीवा विसंधि । -गाम-त शहरर छापा मारमेचे किय शैनिकोंके छिप-कर रेडमेका स्थाम (१)। -गृष्ट-पु सपुस्थकीका छचा ! - प्रीय-खाँ । वह मेनि यो वो अंगींकै जीवपर रिश्य थी। -चोर -चीर-सस्पर-पु सेंब छवाबर भारी करनेवाका । ~च्छेड् ~च्छड्क ~पु सेंग आरमा-संविद्धी धर्ते वोक्सेबाका (१) । -ब्योन्ड-प् दर्श संविद मीर'। - अ-प्र-प्र- महिरा: गाँउका फोड़ा । विश् खसायेस प्राप्तः संविन्द्रारा जस्यकः (व्या॰) । —श्रीक्यः-वि सिबाँको पुरुषीस मिकाकर योक्का वर्तन करनेवाका । —व्यथ-प्र• मधि, सल्ब तीव देला । —प्रच्छापुल-इ. रगरमावसकी एक रोति (मंगोत) !—प्रश्रंबन—प्र. दे सिनिनपन । -वध-पु॰ मुस्बंधा मस सिराः चुना सीमेंद्र। - बंधम-पु॰ नम सिरा, बंधनी । - संग-पु , -<u>स</u>च्छि-स्री किसी वीदका संत्व द्वार जामा । -माग्म-प्रविश्व किसमें बीचोंमें पीका शाली है। -सल्ह--वि भी धरक गया थी (बीक)। ए हे 'संकित्यत'। -र्श्नका-को॰ सुरंग 5व । -राग∽पु सिक्रा संस्था-की साहिता। "स्रा~नी भेंग बरार। प्रत्या गहका मदिरा। सदी। ∼विश्वद्यक ∽विश्वद्यक-पुश्री और पुरुष्का निर्णादक मंत्री । - जिल्हाल-विश् मंत्रिकी वार्गे करनेमें कुछक । - चिक्-म यक राग (शसर्ग शाव पैरके बोहोंमें सूत्रन और पोड़ा रहती है)। ~बेका~ली मंग्याः वह समय जिसमें थे। समयीका नेस हो !-शुक्र-एक वेशरीम । पु भाषमध्यः –सितासित–प **⊏हारक**∽प्र दे संभिन्धीर³। संधिक-पुर्मिशे शेहा व्यावस्था स्वर । संधिका-को [र्त•] श्ररार कुमाना । संचित्र-४ मि] एक तरहका अवर । संचित-वि [र्सण] हुन्ता नावक निकाना हुना। रहा। हुना (बैदे-बनुब्धर वाग) विममे छुक्द की है। पु अवारः मरिरा। शोर्मात्री कारण अक्रम पुष वालीकी वॉबना । संधिती-सी [र्ग] शक शानी हुई वा पाण धारी हुई बादा हुन हैरीबानी शक्ती ही नामित्र गावा नेपनव बमरे दिल इच देनेवाकी याद ! संबी(चिन्न)-मु [मं] वह मनी की सींप ब्रावादिका

कार्य बरता है ! संत्रक्षम-दि [मं] वर्षावदः, वर्षेत्रकः। पु वर्षात करता उचेवित करना ! संबक्षित-रि [नं] क्रांत वरोतिया। संबेद-वि [riv] बीडिन मिलाने बीस्या शांत करने

1104 यीग्य राजी करने बीग्य । संध्यंग-पु॰ [मं॰] सुद्रमंत्रि आदि संविशीके क्षेत्र (गा॰)। संबंध-वि [र्यः) संवित्रांबंधीः संवितापर् भाष्ट्र विषये संभि क्षेत्रेगको हो। विचारमें प्रकृत । संध्यक्षें-द्र [सं] वी राक्षित्रीया मध्यवर्ती मध्य । संच्यांश संच्यांशक-त [सं] हुब-संवि । संख्या-सी [सं] बीम मेन्। तुरह दुरहरी रा बारध वह समय अब दिनके मार्गोका मेल बोना है। इन सम्बर्ध पर फिले मामेवाले वार्गिक इत्या को जुर्गीक गेक्स समया सीता वादा अवराजा सोमाः विवासका रह कुला पद्म नगी। दिनका बोर्ड भाग अधायो प्रयो: मुक्ती मीः धंवान । -कार्य-प् संप्योपासम । -कासिक-संध्यकाष-संबंधी । -बाशी(रिम्)-प्र -पुरुषी-को बनेही; बाबक्कः - वस-पु निधा बर् ! -राग-५॰ भागमें सामित प्रामधे नान कालेकाका राग (दास-करपाय) शिक्ट । वि॰ जिल्ह काकिया संभावतको सो हो। -वंदन-५० रोगी र्माच्याचस-५ सि १९६ प्रश्नः नरहायन । संभारास-५ (सं) नमा। र्सच्यासन-दु (d) पारसारिक चंबरंस शहकास हुर्गत धी जाना । संव्योपासम्-त [सं] संव्याके समय को बानगरी पमा भारि । श्रीकाल-वि [न] स्वर अवश्र ऋरतेवाका (दान) र र्श्वपक्ष-वि [सं] अवही तरह क्याका प्रकाश हुन्छ पद्म हुआ। विस्रक्षी मरमेन्द्री व्यवस्या 🗓 समी ही 🖡 श्रीपति≉-सी ४ 'संश्रीच'। र्मपर्-'शंपर्'का समस्रात स्म । **-क्वमार-ड**्षि**ल्** एक मृति ।- प्रका-को मेरबोडो दक मृतिः एक बीट देवी। र्मपत्ति की [सं] बस्तुरथ समृद्रित नेवर्ग पर कारपारा शकनता सिवैश बद्रवासतः प्राप्ता राम मस्तित्व। अवती अवस्थाः शामेनस्य मनुबूतनाः वर्षे सर्गाः यदः कया । श्रृंपरमोध~द्र [मे॰] सर्वय-विमेव ? क्षेपल−कि॰ मिं] शंरका प्र पेरोको नरानर या सार रमधर श्वरा दोना । र्श्यदा—को धन-संपध्य हैनर्य । र्मवदी(दिस्)-पु [मं+] कशोबक्र एक वीव i र्मावय्-मी [में] सफलवा स्वितः सफलवाध्री स्थिति त्र्वेदम-प्राप्तिः शामेत्रस्याः भेवति वता सङ्ख्या अन्तु टमा सीमान्या पूर्वनाः बाह्यया क्रीसः स्टबामाः मर्ज्योः की कृति। मन्द्ररूपा नहीं देवा मुखादारः गीरवा तीरकी क्षांतिः वक्ष भौवपि वृद्धिः। --वर्-प् राजाः। --मनु-षु शर्वकी मान धनुषा रहिनदीवेन रहा संपद्म-वि [संग] कानिसीमा धनी। यान्यान् । इनकान। माधित पूरा किया दुश्या बूची: बूर्मन विश्वतिका शाह. कर्मा सही। -- में जुक्त बानकारा में बना दी। बर्टित ह पु दिवायम स्विधि शुस्तादु मीवन । - मन- द

वद समावि । - शारा-वि की अच्छा दूव देवेवाकी।

111 धाकस्य-पु [र्च•] रीग, नीमारी ! भाक्य-पु• [सं०] करीरी । बाकस्मात्•∽अ०दे 'अक्समात्'। शाकरिमक-नि [रं॰] भपानक दोनेवाका दक्षिफाकीः कारणहीस । -ब्राष्ट्री-सी॰ [६०] अन्यानक सावदवकता वा पश्मेपर की जानेवाकी छड़ी। आफर्रोशा-सी [र्स०] चाह, इच्छा; अपेया: वानवर्से अर्थ पृक्तिके किए प्रविश्वेषकी बायस्यकताः स्रोब-पूछ । भाक्षीसत-वि• [सं] चाहा हुआ: अपेक्षित ! साकांशि(सिन्)-वि [एं०] रच्छा, अपन्ना रसनेवाकाः धोबी। साक्रा-प [बर्श मास्कि, स्वामी । आक्षाय च्यु [सं] चितारिनः विताः निवासस्थानः। **आहार**-पु० (र्¦०) रूप, शहः गतनः बनावनः संवादे नीवारं, फैकाव (क्षीदा-वड़ा मावि); मनका आव नताने नाजी देश-चेटा, स्थारा; पढस्मता मा स्वर ।-गुहि-सी॰, गृहन-,-गोपम-पुमनके मार्चेको कियामा। बाह्यरच-पु [सं०] दुकामा आहान पुनौती। भाकारवान्(वत्)-वि [तं] सन्कारः सुरूपः सुगठितः। शाकारोस-वि [मं] (वह राज्य) जिसके अंतर्ने 'ला' हो । बाद्धारित—वि• [सं•] बाहुतः गाँगा हुआ । आकारी≉-वि तुकानेपाका । **बाकाछ** -पु [सं०] छप्तुषः समकः बनुष्युषः काङ । भाकासिक-वि [सं॰] द्वणिका असामविक वे मीसिमा अप्रत्याचित । माकाकिकी−सी [सं] विवती। वाकाश-पु॰ [eˈ] पंथ महाभृतीमेंसे मबम की शन्द गुन-बाला माना जाता है, कासमाना ईवरा खून्य (म.)। चून्य स्थानः व्यवसायाः छित्रः ऐवा महाः वजनः । —क्ष्याः –सीव सितियः। ~कस्प-पु॰ नद्यः। **-इस्**मः,**-पुप्**प-पु॰ बासमामका फूक अन्दीनी नात !-गैगा-को॰ माकाश में उत्परने दशियदक फैश हुना और छोटे तारीका समक्षा बाल्यक्षवाधिना गंगा संदादिनी । -ग-पु पद्मा । -गा —सी भाषाधर्गगा। ~चमसु−म बंहमा। ~चारी (रिन्)-वि नाकाशमें चक्टने-फिरनेवाका (क्यी ग्रह भारि)। −अननी-ची॰ दाण चनानेऊँ सिम प्राचीरमें वने द्वर छिद्रा ∽अन्तर-पुनेदाओन्। --शीव ~प्रदीव —प्र वस्ति सिरेपर वॉवकर बकाया जानेवाका दीवा वा कारुदेन । -दश-पुरु सुस्री यगद् । -बुरी-न्मीरु -ध्र्य →पु रायोक्त्या भुव । — लादी — ल्वी व्यावस्थाना । ~निव−पु॰ अकासनीम । ~निवा~सी ,~धायन-पु॰ शुली कराइमें सीना। -पथिक-पु सर्व। -पक्र-पु संदान । - मापित,- वचन-प् अभिनवमें निसी पान शा बाद्धाणको स्मोर देसकर कीई मध्य दरना और दिस क्सका उत्तर देना ।-संदर्भ-पु सगीन ।-सौमी-सी बरामीसी। -मुर्का(किन्)-प्र बाग्धासकी और मुख करके तप करनंबल्या साधु (शैपनंगराय) । -मून्यी-ली॰ जनकृती ।-याम-पु निमान इनार्र सहात्र । -सीवी (चिन्)-त किमी बैचे रवान दीमें, निमान कादिवरसे |

भाकस्य-मार्ग्यद भुद्ध करनेवाका योग्डा I-एझी(क्रिम्)-पु॰प्राचीरके कपरी विश्लेपर**ते भ्दरा देनेवाला । - क्रोचन - प्र॰** भागमंदिर । —बह्वी—की॰ जमर्बेक । —वाणी—की॰ जासमानसे जानेवाको आवास, अमीठिक वामी, देववागी । **--वृत्ति--**की॰ पेही बोविका विस्का कुछ ठीक-विकाना म बेंक् अनिश्चित्त परिता वि पेदी परिवासा।─सछिछ∽प मेडः कोसः।—स्फटिकः—स्≉यकः तरहकः परवर निसका निर्माण जाकाश्चर्मे दौना माना जाता है; जोरू। स० -**ब्राह्मश**ा–भारतान साद श्रोना, बाइड ब्रुटना !--**स्ट्रना** --बहुत केंचा होना ।-पातास पुक करमा-मारी प्रयास करमा, इक्रवह मचामा । ~पातारूका श्रीतर-बहुत दश र्जतर । ~से वार्त करना~न्द्रत केंचा होना । भाकाशास्त्रिकाय-प्र• [el] ६ प्रदारके हस्यों मेंसे एक (वै•)। भाकाक्षी-कौ॰ [सं] भूपसे क्यमैके स्टिप ताना गया नैयोगा । भाकादिय−वि [रं•] भाकाद्य-संबंधी शाकाद्यमें स्थित व। उत्पन्न । माकाक्षेम−वि [सं] वसहाय, निरामस । पु• ग्रंह । काकिचन, कार्किचन्द−पु० [सं०] निर्वेनता, क्षंपाकी। व्यक्तिवस−की [ब+]दे 'शक्तवस्य । **भाक्रिक−वि [**ब] **बह्न** रसनेवाटा समझदार। भाकि**स्टक्शा**भी~पुष्ट करहका करधर्र रंग। भाकीर्णे∽वि [सं]फेकापा,विसेराहुमा;शराहुमा व्याप्तः। बाबु चन-पु (एं॰) शिमहना, शिकुक्ता। देवा होता वैद्येक्टि नतके बनुसार पाँच कर्नों मेंसे एक। भाकुंचित्र-वि [र्च॰] सिकुदा हुमा; दुटिक: ग्रॅंपराके (केस) । शा**र्क्डन**-पु॰ (सं] ककाः भोभरा शोना । कार्क्टरा-वि० (सं०) जक्त कव्यितः हेत्, भीक्ता । भाक्कस-वि॰ (चं॰) उद्दिश परेशाना वेबेमा भए। हुआ। कम्पवरिचतः दवा कसिमृत (श्रोक्षाकुनः)। पु सावाद चगरा प्रचर । भाकुन्नता-सो० (सं•) ४मेनी दशिप्रताः परेद्यानी । आक्रकिस-वि० (सं०) आक्रुक कोता हुआ। पंदिक किया हुमा । आकृत-प्र (सं•) वामिमाना आग्रवा श्याः प्रेरणाः अनुमृतिः बाधर्व । आकृति-सी॰ [सं] रुप्याः भौगमान, दरायाः स्वानंत्रन मनुष्पे तीम धन्मामीमेंसे पढ़। व्याकृषार्-पु० [मं•] सपुत्र । भाकृति-सी [री॰] स्प गरना पेहरा। जाति। स्क वनवृत्त ।- च्छन्ना~न्त्री धीवातकी सामक कता । आक्रप्र∽ि सिं°ोसीमाहका। बाकुकि-सी [न] प्रिनावः ग्रालाक्रमेश प्रमुखी मकाना । माकेकर-वि [मं] अवनिमीकित भाषा ग्रेर। भाक्षेकेर-५ [ए॰] सक्र राधि। थाकोप-प्रसि•ी थोपा क्रोप । आक्रय-पु॰ [सं] रीनाः विद्यानाः पुरारना आवात्रः सहार्रका मारा। धीर मुद्ध-धिराधनेका रवानः मित्र सहावकः भित्र राजापर दोनेवाले भारतमण्डी राज्येवाना राजा ।

सार्क्ष**िक-भा**ग्योर भावतिक-वि+ [सं] हेस स्थानवर आकर विद्यानेतामा वहाँमे बसना विद्याना सनाई है। भाक्त दिल-वि॰ मि॰। सोरस रोमे, विद्यानेवालाः प्रकारा गमाः भाइतः। प्राचाः विद्यासः। मार्जादी(दिन्)-वि•[र्ध•] रोने, जिल्लामे व प्रकारनेवाटा। भाव्यम-पु•[एं॰] निक्ट बानाः प्राप्तकर्गाः पराभूव कर्मा । भाकसण-पुर्धि । पास भागा। इट क्षमा। चीट दरनाः दमला, चढाई। धीनना। कम्बा करना। परानृत करनाः भाग्नेपः (ठा) चोटः श्रक्तिः भादार । जाक्रमित-दि॰ सि विस्पर आक्रमण किया गवा का. भारतंत । आक्रमिता-वि॰ जी॰ वि रे (वह भाविका) वो समसा-बाचा-कर्मणा जानककी अपने बज़में करे 1 साक्षय-प [मं] स्वापारः स्वापारेः फेरीशवा ! आफ्रोल-दि॰ (एं॰) जिसपर क्रमण किया गया कीः प्राप्तः । पराभुत्तः जिसपर ऋग्वा दिवा गया हो: ब्रह्मस्त ह भाकांति~सी [सं] धप्या दरमाः भारोदणः पर बाताः बराभत करनाः मार बाकनाः शक्ति वह 1 भाकामक-वि॰ [र्थ•] भाकामा करमेवासा । भाक्तीब ~त्र [सं०] क्रीकारधान विवादस्थक, व्यवसंभानिः भोवा । विश् मोवाशीक ।-शिरिः-पवत-प्र अवेशमा पदाद !−भसि−चो स्प्रेडारक्त । आक्रीदन-पु॰ [ध॰] क्रोदा दरना । श्रामिदो(किन)−िक (सं] क्षीदादोस । (सी≉ 'भागोदिनो' ।] भाष्ट्रप्र∸िष [सं] यो कोसा गया दो: मनियस । प्र• <u>र्</u>वजना पर्य मानना डॉट-परकार । भाक्येश-प [र्छ•] दीसनाः थापः निदाः त्रासा क्यक्तिः सप्य । भारतेशक-वि वि वे क्षेत्रमे, साप देनेवाना । भाकीशन-५ [सं]दीसना। शापरेना। इरा-मधा शहना। भाकोशित-वि [तं] दे नार्षः। मामोश (प्)-रि (र्रा॰) भागीएक । आक्रिय-वि॰ (सं॰) वर भीवा हुना। द्ववितः क्वणाई। भारकेष्-पु [सं] भागनाः नाई होता । भास-वि [सं] मयन्त्रंश्यी !-पाटिक-प ववनियी श्रमः न्यायाभीयः। शाक्षकी⊶मी (र्श•) एक **तराको** शरान । श्राक्षपार्-पुर्मि] सङ्गाद—गीनम−का मनुवावी । आशारण-५ [र्र-] व्यमियार भारिका दीवाराय । आक्षिक-पि [मं•] जुमानीः जुपने संन्य रसनेवाहाः जुएमें बीचा हुआ ! हु यह कृष्ट महिक जुल्में बीचा का शारा श्रभा पन । आधिस-वि थि दिया विस्ता हुना धीना हुना भिसपर माध्य किया गया हो। कांद्रिया अभिनृता परि रमफा निर्देश क्रिये जुर्नाती की गरी की है भाशीप-वि• (शं•) वर्ष ! पु सहित्रम, अगीद । भाक्त प-त [रो॰] प्रेंब्रनाः यदारुगाः शीवनाः भरवारः भोटना मार्चात्, मतरायः संदेश, निर्देशः ध्वनिः एक मरंबार, निधमें स्विभिन्न बरनुको कुछ विधेषता प्रतिषतित 🖠

बरनेके लिए निश्वसा दिवा नाता है (सार) एक बातरीग । आसीपक-वि॰ (do) आक्षेप करनेवाका शिकारी। वर यक बासरीत । बाहरेपण-प॰ मि॰ निप्टेप बरना । भाष्ट्रीपी(पिन)-वि सि०) भारत्यः। **बाझोर~प॰ सि॰ी बरारोट ।** बाधीदम-प [र्स•] नहोर । आकसाहब-५ [बं] आरिसबन और पानुदे स्थमे स्ना परार्थ, जंग, मीरपा । माविसजन-प [शं∗ो पद गैस जो प्रान्धिके केपनके किए बरवायप्रयक्त है, अम्बजन ओवजन ! भामंडल-५० (सं०) धर। मास~प्र [संग्री रांदी। कुदान । काक्कप्र−दि सिं∘े बता (प्रोरोगा अ पा सदे-1ेने आखत−प॰ अयतः विचाद आदिमें नार्र आदिके निर तिकाला आजेवासा अबा केसर आहिमें रेगा प्रजा पावक को उन्हें वा देवताने यसकार संगामा जाता है। आखता-रि (का) गीपगा। बासध−४ रासारकः बुद्धनदी भाषामः विद्यार-सुक्त क्तार । आव्यम−प॰ [मं] दे 'बारा । ♦ अ० प्रतिस्र । आरामा - स कि कहता। वैरामाः माहबाः प्रस्तिन बरमाः धनमाप्ते धानमा १ शास्त्रविक−६ [मं•] योरमेनामाः यान मोप्नेयानाः बहा। ध्रदरा थीए इरात । वाकर-४ (वंश) कुल्हाकी। प्रशाह शास मस्त्रका शहरः वर्ग । आस्त-त॰ सीन चपश्मे मही छननी सरही। ० मि पुरा सम्बाधिसगद्गाः बाम्बास-तुः [र्न॰] करानमा तुन्नान्य सेनीर बप्सामर l आरियर-त (का] अंग, समाप्ति सीमा; परिचाम ! रि अंतका विक्रमा । अ अतमे साधिरधे। अवस्य मना समर । -कार-अ॰ अंतमें संगत'। आर्डिस्स न्या 🙀] श्रमोक (बनमा, निगरना) । क्रारिक्तै-वि॰ श्रंतिम सर्थे पोऽन्त ! सास-पु॰ [म] जुहा। चीरा मूलरा कराना क्षेत्रम देव ताह । -करीच-पु वस्मेक । -कर्मपणिका,-कर्मी -पणिका:-पर्धी-गी मृतास्त्रती मासक करा । नम् -रच -बाइन-चु काश । -धात-चु स्तार**७** थुदरा । -पाचाण-इ पुरदा श्रीवा । - अद(ब)-वु विद्याल । -विषद्दा-पु देवनात मुख । - मानि--शो॰ बागुस्मी । आराट-पु॰ [शं॰] शिकार शृगया । ६ ब्रायस्य - पुर्वि । विषयोः विकास आरोटिक-पु॰ [१:०] शियांश पिकाप इंचा । वि शिकार करनमें रहा मनकर । भागीर-५ [मं:] बगरीर। आगुरोर-पु॰ (का] पानो पीन्यो अगदः भीतार्थ के चारा

संपराय-पु॰ [सं॰] सुरमुः अनादिकालागत अस्तित्वः संपर्वः पुषः संबद्धः मनिष्य । मंपरायक, संपरायिक-प्र [तं] युद्ध, मिन्त, मुरुभंद ! सपरेव-वि (रा॰) मरपशील सुत । संपर्क-प [संक] विश्वका संवीत विक्रमाः स्वर्धः मैथुनः मोह, योगः संयति ।

सीपवम-५ [से] शिशुदीकरण । र्मपा~सी [से] विजनीः साथ पान करना ।

संपाद-वि [मे] अवशे तरद तर दरनेवाका, तरेड भृते। संपटः। अस्य । पु परियाक श्रीनाः। अध्यी तरह पक्रमाः भारम्बर बुध ।

सेपायन-पु [सं] पदानाः वशकदर मुकायम करनाः कीश (मैठकर) मुहायम बरना ।

संपार-पु॰ [मं॰] त्रिमुककी वनी हुई मुकासे किमी रेखा का मिलनाः चक्रवा ।

सेपाट~प्र• [मं•] क्रम-बद्ध पाठ । र्मपारूप~दि (सं•) बी साथ पढ़ा बाव ।

संपात-पु [०) एक साथ गिरवा या निस्ताः निश्त हक्तरः पत्तमः पश्चित्रोको बहानका यक दंगः विविधीका कारना (रामका) पक्रमाः यमना इटाया जानाः एकः 92) संगमः मिकन स्थाना मुख्डा एक बंगः पश्चि दीनाः

मरहदा पुत्र । ⇔पाटय-पु कृतनेओ कुछअता । संपादि-प्र [सं] यह पीराणिक वही मो गरक्का स्पेड पुत्र भीर अद्यक्तका बढ़ा मार्च मा; मक राख्यसका माम;

रद वंडरका साम ।

संपालिक-पु॰ [सु॰] यह पौराविक पश्ची संपानि । संपाती(तिन)-वि (शं०) एक मंध कृतने अपरनेवाकाः पढ साथ सहतेवासाः अवतेम होत करनेवाका । प्र एक पौराणिक पक्षी संपादिः यक राश्चस ।

संपाद-प्र [सं] कार्यशायनः प्राप्ति ।

संपादक-वि [एं॰] पूरा करनेवाला अश्तुन करनेवालाः ब्लब इरनेबाना। प्राप्त करनवाका । पु वह स्पत्ति वो इसरेक्ष रथमा छूड और प्रशासनके बीम्य बनाता वा सामिवक, दैनिक भारि क्वका धंवादन संवाकन करता है। र्मपात्कीय~वि [सं] संपादक-संबंधीः संपादकका । प्र संपादकका किया केय का रिध्यको ।

सीपाचन~५ [सं॰] पूरा करनाः प्रस्तुत करनाः क्रम मारि अन्य करना। प्रवादि ग्राह्म कर प्रकाशनके योग्य बमाना। सामविक वा बैनिक एक विवय आहिकी दक्षिते श्रेष बरना भीर बसता संवाहल करना । -क्का∽ती

पत्र पुस्तकें सादि संपादित करनेकी विशेष कहा । संपादिवता(तु)-वि दु (तं॰) पूरा करबेवालाः मरतुत षरभेगासाः उत्पन्न कर्नेगामा ।

मंपादित-वि [सं] निष्पत्र पूरा किया हुना मस्तुत तैवार किया हुमा। ठीक कर प्रकाशनके बीध्य वशावा **इ**भा (प्रेशदि) ।

संपादी(दिन)-वि [सं॰] अप्युक्तः पूरा करनेवाकाः मस्तत बरनेवाका ।

संविदित-वि [सं] राष्ट्रीकृत विवीकृत ।

संपिष्ट-दि [सं-] क्षत्रका हथा पूर किया हुमा, पोसा संग्रकीण-दि [सं] मिनित विका हुमा।, न

द्वभाः मह दिवा द्ववा । संवोध-प सि देशानाः निधोरमाः ६८ देगाः प्रम करजाः वार्ग बदासाः चकाना ! संपोद्धन-पु॰ [सं] दवानाः नियापनाः प्रेपणः पंदा शुम्य

करमा। कट देगा। एक उद्यारण शेष ।

संपीबा-सी [धं] ६९, दःसः। संपीबिस−वि॰ सिं] दवाया प्रभाः मिमोदा हमाः

संवीति-की वि ी छाप वीमा, गीडीमें वान करना । मेंपुर-प [सं] करोरे बेधी कोई वर्षा दोना। धंत्रकिः रतादि प्रेंदनेका निष्ठीका बना हुमा पात्रा रस्त मंत्र्याः

गोठाही इत्यह पुष्या यह तरहका रविषेषा बाही वधारा पुण्यकीया क पुँचलः। कवि सदा र्सपुरक-प् [सं•] भाषरयाः गीक्र मंजूनाः यक रतिर्वय ।

मंपुरका, संपुरिका-श्री । (सं) माभूवपपूर्ण मंजूबा। र्मप्ररी-सी॰ प्यासी छोडी बडोरी वा तहतरी (जिसमें पंत्रम, मध्य भारि रस्तर हैं)।

मंपूजन-पु [र्स•] रहत स्थित सम्माम हरना । र्मपुरुष-वि [सं] बहुत अल्टरमीय । संध्यम-पु [सं] पूर्णवः शुद्ध होनेको किया, पूर्व शुद्धि । स्पूरक-वि [सं] अच्छी तरह (पेट) भर केसेवाका । र्मपुरवा--पुर्वातं ने नृष्या केता; अच्छी तरह पेर भर

ह्या । संवर्ण-दि॰ सि] पूरे तीरते यहा हुन। बुक्त महान्यहा साराः मत्यविक अविद्यवः पूरा किवा हमा संपान । ए रागकी एक बाढि विसमें सातों रबर कगदे 🖥 पक संबन विसर्ध शहुबका काम केते हैं। बाखाश रास्त, ईबर । ~कास-वि दण्डाचे भरा हुना। विश्वको दण्डा पूरी दी

गयो हो। -काकील-विपूर वा स्थित समदपर होने बाका । -पुरुष्ठ-वि वृष्ठ पैकामेबाका (मोर)। -मुक्जी-को उद्दक्षा पद्धेतग। - छक्षण-वि पूर्ण संस्वतः। -विश्व-वि विवासे पूर्वः। -स्पृक्क-वि

बिसकी इच्छा परी हो गयी हो। संदर्जतः(तम्), संदर्जतवा-म [भ] पूर्व क्रपंते अच्छी सरहा ।

संबुधों-नी [मुं] पर्य क्यारको ।

र्खप्रक-नि (सं) मिभित मिका हुमाः संबुक्ता संबद्धाः शंपर्की भाषा हुनाः पूर्व मरा हुनाः खदित । संपूष्ट-वि [सं] विससे प्रवस दिने वने 🗊 वक्ष-काछ की गबी हो।

खेंपेरा-प साँव पश्चमे पालने वा साँवका समामा दिया-कानेपाका ।

संपेपण∽पु[सं] पीसनेकी किया।

संपैत-को दे 'संपरित - 'संपै देशि व प्रतिने निपति देखि वा शेष -क्योर । र्येपोधा−३ शॉफ्टाक्याः।

सँपोक्टिया-पु साँप पद्रक्रेशका । सपोपित-वि [र्थ] बोदम किया हुमा पासित । र्श्वपीष्य∽वि• [तं] पाकन पोदनके बोग्द । ~

संदेशकारी । संस्थान-दि॰ [सं॰] दे 'संद्यवात । संद्रायापच - वि मि दिहेदपर्यं अभिश्रित । संश्वास-नि॰ [सं] स्रेडजीक । संवायावश्च-वि [र्व •] रातरमाह । संशक्ति-दि सि देशयम पहा ब्रमाः संवित्वा ओ निरापक म हो। सदायिता(त)-प [सं] मनिवासी, संशव करमेवाका । संप्रापी(पिन)-वि [सं] संशय, स्तेव करमेवाला, सकी । संगयारधरी(तिम)-वि [तं] स्वैद दूर करनेवाला । संसयोपमा-को [सं•] बच्नाका एक प्रकार विसमें हरिष्ठके कपमें सारहपदा क्यम हो। संशयोपेत-वि [मं•] सरेहमुक्त । संदार-व सि | तोक्या विदारण करनाः चर करना । संसरण-प्र• [6] सरणमें बाना (१)। तुबारेम आरू भया मेंग करनाः चर करना । संशाहक-वि [सं] मर्नन रहन करमेवाकाः मंय करने-संशासन-द• [सं] सङासना आहेश भाषा । संशित-वि (सं०) तेत्र दिना हमा साव-वरावा हनाः देवा मुखीका तैयार, क्यतः व्हर्मच्याः काम परा बरनेमें तेजः संगरितः रुडोर। -वाक (च)-वि कठीर माना श्रेकनेवाका । - प्रत-विक कवारेके साथ बच्चा प्रत परा क्रुरनेशका। संशिक्तरमा(रम्ब)-दि मि•ो विसने व्ह संकरप कर किया है। संशिति – स्रो सिं देवत देव करना शाम व्यवसा। संक्षिप्र−वि [सं] दचाहमा। संब्रीत−दि सिंी बीवसे बना द्वभाः की उंदा हो। पद्म हो। मोसीति−को सि सिदेड मनिश्रद । संभोधम -प्र सि ी विवसित रूपते अभ्यास दश्याः फिसी कामको बारायन करनाः ससर्ग । संद्राज्ञ-वि सि॰ प्रशेषक प्रशेष किया द्रजा विद्यवः चमकाया गाकिस किया हुआ। जुर्मेरी वरी किया हुआ। विश्वम प्राथित मादिके द्वारा अपनेकी निर्दोध बना किया है। परीक्षिता मुक्ता किया प्रमा । -किटिबय-वि भी नापमुक्त ही पुका हो। संसुद्धि-की [सं] पूरी सफाई। शुद्धीकरण। मार्वकः सुवारः कव परिस्रोगः विश्वस्ता पृत्रिवता । संबद्ध-वि [मं] दिक्कुल सूखा हुना; मुख्यावा हुना; मीरसा सुन्द हरववामा नरसिन्द । मेद्रन−वि [सं]व≰द स्वाद्रमा। संदर्श-की [सं-] वह यान विसके शांग एक दसरेकी भीर सबे हो। संशोधक-वि [सं] प्रवारनेवाकाः वरिकार करवेवाकाः अकामेगामा । संयोधन-वि [सं] विद्युद करमेवाका विकार मह करनेवाका (बाट विकारिका)। पु॰ शुक्रीकरणः शुद्ध | संविक्ष्यः—वि [सं] आर्किमितः मिका हुणाः स्वा हुणाः

बरनेका साधनः नदावगीः सधारमाः संस्कार बरना । संसोधनीय-वि+ सि+ो हे+ 'संहोस्य'। संशोधित-विश् सिंशी द्वाब विवा हथा: सपास हथा: मदा दिया इसा । मंद्रीधी(घिन)-वि॰ (सं॰) सवारमे, साफ करनेवाका । संशोध्य-वि॰ [रो] सुवारने साफ करने मीरवा विसे सुभारा साफ किया बाबा प्रकाने बीग्य । संघोतित-वि (सं•) असंग्राः " से दोत्र। संदारिय-म सि॰ । अच्छी तरह सद्या हैना। सोस्पत्ता । संशोपन-प [एं॰] सोबनाः सपाना । वि॰ सवाने. सोधनेशका । संशोधकीय-वि [नं•] सासने योग्य। मंद्योपित-रि [d+] श्रीया द्रमाः सुसादा द्रमा । संघोषी(विष्)-वि॰ [सं] सोसनेवालाः समा क्षे बाक्टो (प्रवर) । संशोध्य-वि॰ [सं] सामने सदासे योग्य। संबद-उ वि कि 'संबद'। संख्यान-दि॰ [यं] संक्रवित सिक्रवा प्रमा। विद्वरा हमाः वसः हता । संबद-इ [रं] संबोग मेका संबद्ध, संबंदा सहारा केना/श्ररममें बाजा बामय प्रदम करमा। परत्वर सका-यताचे किय की बानेवाली संविः आश्रवसास, प्रताहा दिमागरंबकः निवासस्थान, वरा संसक्तिः नासक्ति। अव-यवः प्रदेश्या एक प्रकारित । संभवण-त [नं॰] छरण केना, सहारा सेमा। संसर् र्ममिक । संबद्धवीय-वि [मं•] एदारा, शर्थ हेने दीस्य । संबंधी(विश्)-दि [पं•] सदारा शरण केमेवाला। प्रजीवस्थ संभव-प [सं] धननाः वंगोकारः महिद्याः नि समार्थ परमेदाका १ संभव(स्)-दु [तं] गौरव स्वादि। संभवण-पु [तुं] काम देना, प्रमना; अवगद्वेश; कामः प्रतिशा करार करनाः भेगीकार करमा । संब्रांत-निश्मि वृद्धत वद्याह्या। संब्राव-पु (सं॰) प्यानते समनाः स्वोदार करता । संभावक-५ [मृं] सुनवेवाचाः शिष्यः। संबादिता(नृ)-पु [र्थ•] हुनानेवासा, बीवणा करने वाका । संभावितः नवि॰ [सं॰] बोरसे नोटकर (वा परकर) सनाया शुना । संधावद-वि [सं] सुनारं पानेशकाः सुनाने सावधः। संविद्यतः विक [सं] संयुक्तः किसीके सवारे दिका हुआ परामकंगी। किपरा, विपना हुना। शरणामधा किसी रवाममें उद्दरा हुआ। कामिता भाषी। निहिना गुडीता कप्तुष्ट, कथिता अंबोद्धता संबंधी, विषवक । यु मीकरा परावसंगित व्यक्ति । संख्रत−वि [सं]सुनाहकाः एका हुमाः वादा सिना हुमाः भंगीहरत् ।

संमन्धिर्तिस-वि [से] वितः अभिदिसः। संप्रकास-वि [एं॰] दिविपूर्वेक स्तान करववाका। य॰ एक प्रकारका सम्न्यामी । संप्रश्नासन-प्र [सं] भी-पदा के जाना, बक्रमकन्। मसी माँवि बोना सान करना। पूरी शुक्राई पूर्व झबि: । संप्रभाष्ट्रमी - व्यो॰ [छं॰] श्रीविकाविधेव (वी)। संप्रदासित-वि [सं] विदेश इत्यरे प्रथ्य । -मानस-वि न्याकुछ, यवदावा दुशा । संप्रगतित-पु [सं॰] कोरकी विकाधर (वी)। संप्रज्ञात-वि [र्श-] कच्छी रहा बाना हुवा ।-योगी-(रिज़)-प वह बोगी विस्ता विवय-शेव बनाहवा हो।-समाचि-की समाकिका एक गेंद जिसमें विकर्श-का भीव बसारक्षता है। संप्रश्वकित-वि+ [सं+] सूप करता हजा। सप्रणाइ-पु [सं] स्वति, जानाव । संप्रणादित-वि (धं) व्यक्तित किया हवा, श्रीमावा संप्रजेता(त)-दु॰ [धं] नावक, मैदा। शासका विचारपति । संप्रतर्दन-वि [धं] मेरन, छेदम करनेवाका विदारक । र्मप्रतापन~प् (सं•) तत करना, जकानाः क्ट देनाः, बरपोक्तः एक नरकः । र्धप्रति~न (र्स•] सुकानकेमें सामने। ठोड बंगसे। ठोड समयपरः डोक-डोकः अव, इस काळ, वर्तमान समयमे । प्र एक बैन अर्थात (५१वां करलवियोधे भीवास्त्रे)। -विद-वि केंन्स वर्तमान समञ्जीवाका, को आगोकी गात मेविष्य त समझ सके। संप्रतिनंदित-वि+ [ti+] विस्का क्षव स्वायत आव-भवत हुई हो। संप्रतिपत्ति – सी [सं] वृति पहुँचः प्राप्तिः कामः स्वी बान ठीक समझा मह्यरप्रमातिका स्वीहतिः मनैक्या परिविद्या निरोप प्रकारका उत्तर—श्लोकार का अल्लीकार (मुक्टमेर्ने)। अकामगा सहयोगा पूरा करना । संप्रतिपद्म-वि [सं] पहुँका हुआ। स्वीकार किया हुआ। संबद्ध पुरा किया हुआ ! संप्रतिपादन-प्र [6] माम करामाः देनाः " पर निवक्त करना । संप्रतिमाश-५ (सं) प्राप्त वासु । संबतिरीयक-प्र [सं] पूरी रीका कैया नाना । संप्रतीत-रि (सं॰) कीरा हुमा मिसे पूरा निशास हो गना हो। हनसंबरपा दाता मसिक। निमन । स्प्रतीति – सी [सं] पूर्ण विवासः पूर्ण कामा विनव विवजना । संप्रति-सा [सं] पूर्व रूपते है हेना, इरवांतरित करना । संप्रत्यय-५० [सं] स्लोकृति अंशोकरथा १३ विचासा यवार्व क्षेत्रः भारमा भारमा । संप्रदासन-दु (छ॰) श्वीष्ठ नरकोमेंसे रक। संबद्यान-तु [सं•] देना प्रदान करपा, दरवांवरिय करना। बीचा शिवना देशाः व्याह देशाः वातः गेंटा संप्रवर्तन-तुः [सं] बाबः बरना जारी करना। राजवानै

यंशा चतुर्थं कारक (व्या) । सप्रवामीय-पु [सं] मेंट, नवरः चेरा । र्धमत्त्व-पु. [र्स.] देनेवाका मजर करमेवाकम दुस-परपरांचे माम मंत्र सिवांत भारिः परंतरावत विशव या मबा। विश्लेष वार्मिक मतः।—प्राप्त-वि० परंपरामकः। -विशम-वि वर्रपराका अमेल । -विश्व-विश्वर परागत विकासी वा मधाओका बालकार । समदायी(विम्)-वि [र्थ+] पूरा करनेवाका संकार करमेवालाः देनेवाला । पु॰ किसी विश्वेष पानिक यत्ता मामनेषाका किसी संगराचका सदस्य । र्सप्रकिप्ट−नि [र्स] स्पन्न क्ष्मरे लिएँश क्रिया द्वाप निधेष कराने बात अधिकत । र्राप्रचान-प्र सिंशी विचारा निश्चव । र्यप्रचारण-पु॰ [सं॰] विवास निर्मेष सविद्यसनुनिर **गोनेका निश्वय करमा** । संप्रपद-पुर्श (सं } भ्रमण प्रदेश । र्समपत्र−वि [सं•] वर्षेचा हवा; से बुक्तः प्रतिह। संप्रमध−वि॰ सिं॰ो क्रियमित्र की तिहानितर 🗓 गबा हो (सैन्य) । संप्रक्रिश्च-वि [चं] क्या इथा विदीर्ग वरत राव वदासा क्रमा (हाथी) । र्सप्रमच-वि [र्श-] क्रचेबिस, मरत (दानी)। गा कायरकार । संग्रमापण-९ (सं•) वप । संप्रमार्ग-पु (स॰) भार्त्रव । संग्रहकित-वि [संग] ग्रीर्वस्थानीय प्रधान। सोग्रमीद्र~तु [सं] अतिस्य नार्गर। संप्रमीप−त सि•ी शानिः नासः। सीममोद्द-पु (सं) विमृद्दाः, स्थामोदः । सीमवाच-प्र (सं) भरवात, गमन कृत । संप्रमुख-वि [र्न•] बोला इका संबद्ध। इका संबद्ध बारा हुमा: मेनुनरकः भित्रा हुमा मुद्रापना करका हुआ। एंकमा व्यक्तिया मानका निर्मरः प्रेरिका वर्गावर्गे शाबा बनाः भारते । संप्रयक्तक−वि [सं] सदयोगः ७१मेवामाः । श्रीय**णक**-वि (चे॰) श्रकत्तः। स्प्रयोग-पु [सं] योजना, मायना। संदेध बीम, बेडा संबक्षी समानमा मैनुन राता चंद्रमा और राजिका ^{मोता} क्रमचक्र व्यवस्थाः आपसका संबंध रखेमात्र प्रवीधः भाइ (र्मप्रयोगी(गिन्)-दि [र्थ] बीवने, मिबायेशांगा कामी ! प्र जापुगरा जीवनेवाकाः संपर । क्षप्रयोजन-पु (रां०) बीरवा मिलाना रहत दरना ! संप्रयोशित-वि॰ [ले॰] बीवा द्ववा शंवद दिना दुना प्रवीगमें कादा हुमा। प्ररक्त किया हुमा। वर्षुक्त ! संग्रहतन-पु [र्छ] वार्षानाप करता, वानचीता धनी-पद्ममन । संग्रवर्तक-तु [मं] चाल्, कारी करनेवाना। आमे क्रानेवाकाः मिसील करनेवाका ।

मिमिता संकरना संदक्ष भरवह जिसके विवयस स्वष्ट रूपसे इन्छ निश्वद न दो सके। "से अका प प्रक वरहवा मंद्रपा राष्ट्रि समूद्र ! -क्सै(मू)-प पेशा कर्म भिएन्ड मध्य-तरा होनका निवाय न हो सके। ~कर्मा (मैन)-वि को सके बरेका विवेक म कर सके। ~शरीरकारी (रिन्)~वि० साथ साथ रहनेवाछै ।

संबद्धेप-प्र• [मं] संबोधा संबंधा संबंध आकृ आकृतना र्वपन तसमा।

मेंस्संपण-पु• [सं•] सुरामा मिलानाः संबन्म करनाः मनागाः संबद्ध हरसाः वीवनेः जीवनवासी बीव । संदर्भणगा-को [छं॰] वे॰ 'संब्रेबल ।

र्संड्सेपित-दि [रं∗] बोडा, गिलाया हवा। संदर्भ

किया हुआ: मार्किगित । संश्केपी(पिन्)-वि [मं] बीवने, मिकामेनाकाः

भाकिंगम ब्रुप्तेशका । र्संभान्-पु॰ [तं] काङ्गर वाजीवरः बाङ्गरीः वीधाः सम्बद्ध ।

संयंग-पु[मं] स्वीगः संबंधः

संसंगी(गिन्)-वि [र्शः) साथ कगनेवाकाः निद्ध संपद्धमें कालेबाका ।

सीस−#प्र दे संशय'ा वरकता

संसङ्ग-प देश 'संसब'। संसक्त-विरु [मं] सगा हजा निका हजा संबद्ध निश्चितः मिए। हुआ (शब्दे रूपमें); जिक्कमेवासाः अस्पर (वाल्ये)। महत्त्व संचयन कोना विकासका अनुरक्त " से जन्म भारत निकटनतीं बनाः होसः क्यातारः अविरामः डाम्य । -चता(तस्) -मना(मस्)-वि विस्का मब किसी निपदपर बना हजा हो । —बाग−वि अदुसी बीवा हुआ। -सामंब-पु वह सामन विसकी बमीन पारी और हो।

संसक्ति−लो • [सं] बनिष्ठ संबंधः साथ बाँधनाः वनिष्ठता मेक भोगः भाग्नका प्रश्विः

संसगरो – वि. वपत्राका भागताचकः शकतवाका । संसळमाम-वि॰ (हं॰) शाद क्यनेवाका। विचयनेवाकाः

इड्डानेबाकाः तैवार शमेदाना । मंसन् संसद-सी [तं] छनाः व्याचारना व्यापः पर्मेकी समा। चीपीस दिन बक्रवेशासा एक वड़ा समुद्र,

शाशि । वि साथ बढनेवालाः यसमे भाग केनेवाला । संसम्बन्धः [मं] सिक्या, विक्याता ।

संसनन-प्र[म] प्राप्ति।

संसन्तामा-भ कि॰ इवा वहने मा पानी श्रीक्रमेने सन-सन श्रन्थ होना ।

संस्य = - व देश मध्य ।

संसरब-५ [मं॰] यमन भयत्र। अन्य और दुवर्जन शादिक बीकार शैनाकी अवाक बाबार शुक्रारंमा राज्यार्गः सगर-दारके काएका पविद्राक्य ।

संसर्ग-५ (एंक) मंदान सन्दर्भ सम्बद्ध संबद्ध साबा मैधुना पनिश्वताः अस्तम्परगताः सरीरकी दी भारतीका रोगकारम बोगा सामीच्या बस्तुओं सादिका सामस्य क्यमीया वह बिदु वहाँ ही रेखार्व करती ही।

अविश समबाव । ~ ज - वि संस्कृति इत्स्व : - होत ५० इरे शावका इस कका --विद्या-मी॰ निर्मे जुरूनेकी बका। समाव विदाय । संसर्गामाच-पु॰ [सं] सेपंपका शताना अवारो पे

मेर्बोमेरी एक-किसी वरहरी संबंध रखनेगरिक स्था (म्बार)। मंसर्थी-जी [रंग] हाप्रिः, स्पारं (भाग्नेग)।

म्येसर्गी(र्गिन्)-वि॰ [तं] निषा हुवा तुता स्ता

से शुक्ता बेंडवाटा बीनेपर भी संस्थिबीके साथ रहरे वाका। परिवित्त हेकी मेंकी । यु साथी निष्

संसर्जन-दु [सं•] मिक्सा; संबोग होमा; बस्मी औ करना। राजी था तुष्ट करना। परिचया निकलना। गार करनाः श्रुक्तिः शक्तर्यः।

संसर्प~ड [र्स•] रिकाः धीरेशीरे बहताः *प*र्व निर्ण बाठे वर्षमें होनेवाका अभिक्र मास । संसर्वण~प [सं] रॅवमा पीरेपीर परमा मगरा

व्यक्तमय करवा । संसर्वी(पिंसू)-वि॰ [सं॰] रेवनेवाङा। बोरे वीरे का विश्वचरित्रकाः दिरमे वहरामेशकाः सुँदमे १४ने

शामा । र्ससा्र−वि• (सं] समान सुदावनेदा । संसा-७९ है॰ 'संसव'। † सेंबसा।

मसाद−द (र्त•) याही, समा। संमादन-पु॰ [सं] साथ रखना। सरदोसनं रखना । संसादिश-दि [सं∗] स्कट्टा दिवा हथाः सत्तावाहणीः क्रमस्क तरतीरसे रखा हथा !

मंसाचक∽वि [सं•] पूरा विक करवेवाचा बीमी **दश्रमें करनेशका** ।

स्तिवन-इ [तं॰] पूरा करमाः शमाः तरा दरमाः वैवारी वडीभूव बरमा । संसाचनीय-वि [सं०] पूरा इस्ते वीमा वर्ग्ने झरे

शीमा। संसाप्य-वि [र्शः] वृतः बरने बोध्यः प्राप्तं बाने बीमा

श्रीनमे बोस्य ।

मौसार-पु (d) आवागमना मेस्ति छड्डारमा दुनियाः मानामाण लीव्यि प्रदेश प्राचीश दूराती विद्वादिर (f): समूह (सा)। -शमम-उ कम मर्ग नार्गागमन । -गुरु-त कामरेग कर्ताव । -काम-पु अवचम् मंस्ति । -तिकम-पु वह तरहका भावक । -- एथ- मु भग विकीमी सन्तिति । -- प्रवृत्ती --सर्व्य-की संनारका यार्थः भग। -वंबक यु नांसारिक बंबय । -शायम-पु भेगारकी दुनी मन बानना । -आर्थ-पु संगारका मार्था प्रिवेधी बमर्नेदिव । -माझ-पु संस्तिते गुरसारा । -मोशन-प्र शताविष्ठ प्रस्कारा । वि अवस्थान प्रशासकारा

-वजित-वि भीतिक सदाने मुखा -वार्म(व)-र 'संनारवार्ग' । -मंग-इ । सर्दे र^{क्}र जामन्दि ! -सार्थि-पु रंतार-यामेदा हाएँदा दीव ! ~स्स∽तु भौतिक दुप रे

संसारण-तु [सं] श्रष्टामा, मति प्रधान करना

1104 इतस्तत गमन करवा ! संपत्तर्ती(तिंत)-वि•[र्त] दीक, व्यवस्थित क्रेमेवाका । संमुबाइ-पु॰ [स॰] धवरा पारा। अविन्धिय हाम । संप्रवास-वि [तृं] प्ररिवत, आगे बदा हुआ। वर्तमान, क्षपरिवतः प्रस्तुतः, की बिलकुक वास की कारच्या गतः, भारीया शंकपन । संप्रवृत्ति-स्तो (सं०) प्रषट बीला, वरित बीला। वप रिवर्ति विद्यमानदा। सहस्मता, आसच्छि । संप्रशांत-वि॰ (से॰) मृतः हुस । संप्रकर-पु॰ [शु॰] चाँथ, प्रस्तास । संप्रभय-प्र [र्थ] विनवताः विकता। संप्रक्षित-दि [सं] शिव नज विजयी। संग्रसचि~ची॰ [चं॰] दे॰ 'संप्रसाद'। संप्रसाद-५ (सं) पूर्ण सांदि (विद्रावस्थाक्षे मानसिक शांति)। अमुध्यः चीरवा, नंगीरवाः विकासः मारमा । संप्रसादम-वि [सं] यांत करनेवासा । संप्रसाचन-प्र• (एं॰) बानूनन, ह्नारका सामना पूरा करनाः संपन्न करना । र्मप्रसारण~९ (सं] निस्तार करना। व् व् र्, क्या इ. ज 🖛 समें परिवर्तन (व्या)। सप्रसिद्ध-वि [सं] अच्छी तरह पकावा हुआ । संप्रसिद्धि-क्षी [सं] स्वत्रवतः श्रीमाग्य । संप्रस्थान-प्र (ए॰) जाने सहना कृष । संप्रक्रपण-दि (सं दिस्मोचेषदः। य योखादन (वै)। संप्रशाद-व (सं) इनमा प्रारक्षाट, मिर्वतः श्रकः यमन, मिर्दि । संबद्धास-इ सिंशे बोरकी इंसी: किसीपर इंसना क्सिना। संप्रहित-वि (सं) ऍक्स वरेश हुआ। संप्राप्त-वि वि । सन्त्रभे तरह प्राप्ता विसने पास किया है, पर्देशा प्रसार मस्त्रत (काल)। स्त्यका बटित ? -ग्रीबय-वि वाकिन, प्रका। -विद्य-वि जिसने परी विचा माप्त कर की है। सीमाशि - की॰ [सं॰] पहुँचा बदया सम्बक्त माहि, काम । संप्रीकिश्च-वि [सं] तुत्र प्रसन्ध किया हुना। संगीत-वि॰ (सं॰) पर्व कपने ग्रप्ट मसका संप्रीति-भी [सं] दुर्भ तृष्टि प्रमधताः प्रेमः सञ्जाननाः मैक्षा । संप्रेबक∽त (सं}दर्शका संप्रेडण-प्र• [सं] भको भौति देखनाः निरोक्षण जीन करना । संघेष-प्र• (सं॰) है 'संग्रैंब' । संप्रेपण-पु [सं•] सेबनाः कामसे इबाना अलग करता । संप्रेपणी-भी [सं] एक सतकदर्ग (वो सुखुकी कारहर्वे विन दोता है। संप्रेप-पु (तं॰) भाइत मानंबनः आरेश (सारिवहस्रे दिया चानेवारा)। भवनाः वक्षांस्तनी । संप्रीच्य-वि [संग] संगीवितः क्षत्रितः बीवितः। संप्रोधन-१ [सं] अभित्रक, सिन्तः वंदिराविकी गीना । संद्रब-पु [सं] ग्रावनः वातः वागे शक्तिः पुंजीभवनः । संब्रह्म-पु वीवाः

शीरगरू, दोदस्का (यद भारिका); बसमें दुवा रहना। मध्य शीमाः संस् । संपन्त~रि (सं•) में रनातः बरुधादित । र्श्यक-नि॰ [सं॰] यसपूर्वः ग्रेप्रपूर्वः। पु॰ वे 'संदास'। संफास-पु [सं] महा स्कुरुख-वि [सं] यूर्वत विक्रतित ! संग्रेड-पु• (र्श•) इन्ह व्यक्तिज्ञोदा नापसमें भित्र भागा। बढ़ासनी विमर्शके तेरह भेदींमेंसे यह (वी पार्वीमें बहा सुमी-मा)। आर्मरीके चार मेरीमेरी एक (मा)। सीर्वच~त॰ सि] बोयः मेरुः सातः रिस्ता, माताः विवाहः येत्रीः छप्यस्ताः, श्रीविष्यः मञ्जूरमः, सन्नतः रिक्तेशारा मित्रा प्रेथा यह प्रकारकी विश्वति या वरहवा रिकोतका दशलाः कठा कार्**क (म्या) । वि**॰ समर्थः क्ष्मकः। -वर्जित-अभ्यक्ष एकमादोक्ष्मकः अस्पत्। संबंधक-विक सिंकी संबंधि निश्यका क्यमका नोस्ता। पुरु रक्ष या विवादका संबंधः मेनी। मित्रः विवनेतारः विनाइके कारा दोनेशाली संधि। र्मर्थचयिता(स्)-वि [सं] संबंध रवापित करनेवाका । संबंधातिसयोकि-की [सं•] व्यवस्थिति व्यवस्थाति घेदविद्वेष वर्षा असंबंधते संबंध दिवसासर अविद्यवीकि की याद ! र्संबंधी(थिए)-वि [एं॰] " से एंगडा एंगं॰ रहने-शका प्रसंग अकरण, विषयका विसक्षा विवाह मादिके कारण संबंध की। सर्ग्यमसंबद्ध । प्रश्न वह विस्रदे साथ विवाहके कारण संबंध हो। समधी। रिश्तेशार नातेशार । -(चि)मिच-वि रिश्तरारीमें विमक्त : -शुक्त-प सेवंब प्रकट करनेवाका शब्द । श्रंब-ए (तं०) दे 'रंव'; वक्र (संबद्धः सबत्य-पुरुषे 'संबद्'। संबद्ध-वि (सं) साय द्वारा वा वैद्या हुआ। संक्रमन संस्था विषयक। अर्थ-संबंध रखनेपालाः सन्तः विक्रिप्त संबद्धा क्या - वर्ष-विश् विस्थ गर्नेका मात्र क्ये वर्षत्रकः । संबर-प्र॰ [सं] तेता प्रकासक तरहका हिरना एक बेल्ब क्रिसे प्रयम्भने मारा था। यह पर्वता निवंत्रण रोकः बका यह गारिक अनुशना है 'धेरर'। सीवरकार-प है र संसरका संबरमान-स कि॰ रीवनाः निर्वतम करना । संबद्ध-५ [सं] घडा दे॰ 'शंस्त्र । संबाय--पुरे संबाय-संवाय-वि [सं] तंगः संकुत्त, मरा हुनाः उसा हुनाः। पु नावाः मीका तेन अगहः भगः गर्द्ध-पदा कृष्टा कृष्टि नार्थः खतराः भन । खेबाधक-वि [सं] वावा, कह देनेवासा; दवानेवाका; र्तंत करनेवालाः गीव बगायेवाला । र्मवाधव-पु [सं] वसासाः अवस्त्रः स्ट्रनाः वामा बाह्यसाः रोकः कारकः भवा पीरिवाः शून वा शून-पंरकी मीकः। संवाधना~की सिं]वर्गना संबी-को कको।

संसारी(विश)-वि (संव) दर-दर वानेवाका, दरतक व्यास दोनेवाला (असे नुदि); भावागमम करनेवाका; कोकियः मीतिकः दनिवादारः दुनिवामे रहमेवालाः

म्पवद्वार-कुछल । व जीववारीः भीवारमा । संसिक्त∽वि [सं] तर किया द्वथा, सीवा द्वणाः टिक्-

कार किया हुआ।

संसिद्ध-दि [सं] जच्छी तरह निष्पन्न किया हुनाः ग्राप्तः पद्धकर तैवार (भोजन)। किया इन्याः व्यच्या किया प्रमा (रोगावि); क्यत, तैयारः इक्त-संस्थाः संतक्षः स्वतः

कुशका जिसे सिन्दि प्राप्त हो गयी हो। अच्छ । मंसिकि-को [मं] चार्वका सम्बद्ध संपादम प्रफ

लवाः मौद्रा अंतिम फलः निश्चित मता प्रस्कर तैवार होना (भोजन): स्थमन, वर्गः मच श्रीः मसरा । मंसी।-वा दे संबंधी।

संसप्त-दि [सं] गाडी बीडमें सीवा हुना।

संसच्छ-दि [सं] रपष्ट इत्यमें दिख्लाने बतुकानेवाकाः भेद प्रोकनेवालाः मरर्चना बरनेवाला ।

संसचन-प्र- [मं] ऋहर करनाः दिवकानाः कदनाः मार्चना करनाः संदेव करनाः मेद कोलमा ।

संसचित-वि॰ (सं॰) प्रदेश किया हुआ। दिखलाया हुआ। बाँध-बद्धारा हमाः धनित धरावा हमा जनावा हमा । संस्की(चिन्)-दि [सं] दे 'संन्वक'।

संसच्य-दि [सं] बदाने प्रबद्ध करने योग्या दिस्तलाने बीच्या अस्तंता दरने यीम्यः भेत्र प्रस्ट दरने बोग्ब ।

संस्ति-श्रो॰ [सं॰] वावागमम, बन्म-मरमद्री परंदाः मातस्य प्रवन्तः संगतिः संसार ।

संसप्र-वि [सं] सहबात यक साथ प्रत्यक्ष (जैसे पद्म-मावद्)। (मेका दुवा मंदुका मिनिका शंवर्गृत सम्मिकिक। महत परिचित्त, जिसके साथ पतिहता हो। (रीगातिसे) मास्रोतः विभिन्न प्रकारका (भका-तरा)ः पुरा किया हुणा र्मपश्च बमन भाविके दारा द्वाद किया हुनाः स्वच्छ वल बारच किया बच्चा मिर्मित रचिता प्रवृक्ष किया इसा बेंडवारे के बाद भाषसमें मिले इस (मार्च आहि)। प्र पद्म प्रराजीक पर्वतः निकट संबंधः मेश्री । —कर्मा-(र्मंच)-वि विस्मे कर्म विभिन्न प्रकार-प्रकेश दोली मकार-केशों। -माक-प्र निक≥-प्रेमंग, वशिप्रता। -क्रप-वि मिलक्यो। -क्षोस-प (व्यक्ष और सर्व भ्ये । एकमें बी बी बामैशाली आवति ।

संस्थता चो , सस्यत्व - तु [र्व] स्वीमः मित्रणः वैंटवारेके बाब फिर एक्सें मिक बालाः।

संस्कृत-की [मं] साव-साव होनेवाकी करवरित संदोग. मेका मेक बीका पदावीकरणा विभाग रचना। सामोदारीः पक परिवारमें रहना। राधि समूहा पक ही बारवर्ने ती वा व्यक्ति धर्मकारीकी वीवना (सा)।

संसद्वी(दिन)-प [सं•] वैदनारेके नार दिस आपसमें मिके 🗗 संबंबी। सारोदार ।

धंसेफ-पु [सं] क्रिकार निवत ।

संसेषन-पु [सं•] सेवा करनाः व्यवहारवे सानाः संदर्ध रचना ।

भंसेवा-को [सं=] सेवा; व्यवहार, वपबोग; वाकिए; | संस्काराधिकारी(रिण्)-वि [सं] विसे संस्कार करने

पुणा-सरकारः प्रवृति शुक्राव । संसेविस-वि [सं] जिल्ही मुखी माँति सेवा की गयी हो। भक्ती तरह न्यवहारमें छावा हुआ।

ससेविता(न)-वि॰ [सं] व्यवहार, उपयोगमें काने WING 1

ससेबी(विम)-वि॰ [री॰] शेवा टक्क बरनेवाका। प्रजा-सरकार करनेपाका ।

संमेष्य-वि सिंगी सेवा, पत्ना करने योखा व्यवसार श्वपद्येगार्थे काल धीरश्व ।

संस्करण-त [सं] साथ रसानाः तैयार करनाः ऋमस्य करमाः शुद्ध करमा परिष्कृत करमाः श्रव-मंस्कार करमाः दिवावियोंके निवित्त शंरकार करना। प्रत्यकारिका एक वारका महम् ।

[सं] व्यवशिक्त, तैवार करने योखा संस्कर्णस्य-वि परिष्डार ६रने योग्य ।

संस्कर्ता(र्नु)-वि॰, तु॰ [र्नु॰] हाद करमेनालाः संस्कार करनेवाकाः भोजम तैवार करनेवाकाः छाप टाकनेवामा (**4**) i

संस्कार-प [सं] साथ रखनाः व्यवस्थित करमाः स्त्रामा। पूरा करना। भुवारनाः सुब्धि स्वार्थः भीवम वैदार करनाः वाधका चीन मॉनकर चमकानाः पीची वानवरीं श्रादिका पावच-वोदनः स्नान करशाः मानसिक विकार करों नारने आदिको सुद्रताः नविशेकरका प्रपादिका प्रशासन करनेवाने यहादि करवः हिमादियोके शासविद्य इत्य (को मनुके बनुसार गरह और उन्न कोगों अससार सोटह है। बारह संस्कार के है-- मर्श-भाग पंस्ता सीमंदीहरूम, बातकर्म मामकर्म विपक मन, अवमाधन प्राध्मं बपनवन केशांत समावर्धन मीर विवाद। सन्य पार संस्कार ये ई-कर्ममेट निवारम वेदारंग दवा गरेवेडि । इस कोगोंने बालपरंग दवा धनवासावमकी सी संस्कारोंमें गिनाया है को ठीक नहीं काम पहता); अंत्वेदि क्रिया; शुन्द करनेवाका क्षेत्रे प्रश्वा श्मरण-प्रक्तिः मनपर पत्री द्वरं छापः पूर्वजन्मके इस्वीकी वासनाः वास वयत-विकास करपना आंति मुख्य विश्वासः वारचाः मौत्रकर चमकानेके काम चानेवाका रत्वर वा शींची। -कर्ता(र्स)-प संस्कार करानेवाका जाकमा। ~ब~वि संस्कारसे क्लम्स । ~नाम(स्)-पु संस्कार के समय रक्षा हुना भाग। ~पूत-विं संस्कार द्वारा विद्यास किया हुमा। शिक्षा भारिके हारा परिपृष्ट । -रहित -बर्जिस-वि दे 'संस्कार होन । -विदिश्च-वि पाक-किया शारा विदेशा बनाया श्रमा । -संपश्र-वि सुधिमिता । - इतिन-वि विसन्ते संस्कार म इस हों। पुदिवारिका वह व्यक्ति जिल्ला संबोदनीय संस्कार न इचादीं ज्ञासा।

संस्कारक-वि॰ [सं] सुवारनेवाकाः देवार बरनेवाकाः हाद करनेशकाः मनपर छार बासनेशकाः आवदे कप्रो या राहके काम मानेशका ।

संस्कारवान्(बन्)-वि [सं] क्रिस्का सुवार किया गया को। सुंबर। जिसके मनवर स्त्रप पहाँ हो।

संबद्ध-वि [से] पूर्वतः भागतः श्रामी, पतुर सुविः मान् , पर्नतः पात । प्र• दका मिन । संबद्धि-की॰ [संग] पूर्व-बीच वा द्याना पूरी बेतना दुराहातः नदमी बात सुनानाः संवीधन कारक वा उसकी विमक्ति (ब्यार): प्रशक्ति । संग्रफ-पु देश धारक । संबोध-प (सं॰) पूर्ण यात, सम्बद्ध बीवा समझाता नवकामाः बाद्धाः भैजनाः पूँकमाः नामः वरदावी । संबोधम-पु [सं] जगानाः बतकाना समझानाः संबो-विद करना। संबोधन करनमें प्रवक्त की पानेवाची संबोधिः नाटमाँ ऋरक (व्या)। जानना-समग्रना। वाकाश-मासिव (गा॰) । संबोधनाक-स कि सांखना देगाः सम्झाना । संबोधि-सी॰ [सं] पूर्व भाग (बी॰)। संबोधित-वि [सं] विवादा हुनाः विस्कृत कान अस्त्रह किया गया हो। बोब करावा हवा । संवोद्य-वि॰ [सं॰] क्रिमे वतकावा, समझावा आवः विसे संबोधित क्रिया काय। संबोसा~द [फा•] ≹• 'छमोधा'। संमक्त-वि॰ [सं॰] विमध्द वैदा हुना। प्रवसीय करने शकाः धाम सेनेदाकाः भक्तिमात एकनेदाकाः अकातः । संमक्ति~तो [मुं•] विभागः हिस्सा क्षेत्राः कर्यायकरनाः भक्ति करनाः पूजा करना। सैमश-प [एं॰] साथ कामा। खाप-पदार्थ। वि भीवी। स्रानेवासा (समाममें)। संभागन निर्व (संग्) क्रिय-मिल टुडा-मुदा; वरामुदा अस-फ्लाप सिवा सेमर-वि• [सं] यरण पोपन करनेवाका। य सॉमर शील और निकरवर्ती बूजान । संभरण-प (संश) पाकन योगना शाग रखना रचना वैदारीः समूद्र । सीमरणी-लो [सं] एक बद्यपत्र, सीय-पान । समामा अन्य के हैं समझ्या । संसक- 🖫 [र्थ+] बरका कुरलाः विवाधार्थः पुरुषः रवान-विद्येष बडाँ बारिय अवदार होनेवाका है। सँगसना-भ कि॰ अपनी नियश्ती हुई रिनवि ठीस सर केता। स्थानाः वसनाः कार्यो रहताः धारापान होता: दिका रहना: स्वरथ होना: बीट आदिसे नवान करना । सँगकरा - इ. शियक्कर हुएए। हर्र कराज । संगली~ली (तंर) दृती कुट्यी। सीमब-पु [ई॰] बन्न परपश्चिः अस्तित्वः दीना परित बीमा। जलाचि भीर भोषमा बारण, बेता, मुखा मिनना, संबोधा मैचुना समता बीध्यताः बैदनाः संबाधनाः संवेतः भवादा संगति उल्लाहता समानता (यह तरहता प्रभाग)। परिचया माध्य श्रद्ध श्रीव्ह (वी.)। वर्तमान अव सर्विनोधे तीसरे धर्मतः । वि जिसको सत्ता क्षा को हो । -प्राय-५ वर्गमान अवस्थिती है सीसरे वर्षत । संभवता (तस)- व [मं] संबंध है, हो सकता है। संभवन-पुर (सं) जरपा चीनेंशे किया भूत दीमाः ।

परिव होना । संभवना=-स॰ कि पैरा करनाः करना करना। व॰ ति • पैदा द्वीमाः ही सकता, संसव द्वीना । संसवपीय~वि (छ०) समित्रमः दो सक्तेवाला । संगविष्यु-पु॰ सि] वनक, बरफर्क, प्रशा र्ममधी(बिस्)-वि [छ॰] हो स्वनेवला अपनिव। संसम्य-प्र• वि विश्वासन केन। नि हो एक्ट्रेक्टर बरयम् । संयार~प्र• (सं•) रक्ट्रा एक्ट्र ६२मा। देशती धान-सामान अपकरणा धंवतिः पूर्णताः सन्दः परिवास भविधनवा, आधिकवा वासन-वीपन । -- श्रीस-विध विसमें जानश्वक वरतयें रखनेका ग्रम हो। सँमार#-प्र• शेष्ट्रनामा देश-माक-'मुरहास प्रम असे अवसी काहे न करत सेमार --मूरा पाकमनीवना होडा वैवारी-'मकी विचार कियो भरवायक करह वर समारा –रपराच । सँगारमा*-स है 'सँगक्ता'। बरफ करना-'दह समि बीकी जारि बैकनी अपनी बबन सैमारी '--सर ! र्समाराचिप-व (सं) राजकोब स्थानी, रोहासावेध शक्कर । र्ममारी(रिक्)~वि॰ [र्स॰] **से पूर्ण मरा दुना। संसार्य-वि (संको विश्वित सागीते विभिन्न वा उनकी किया बाजवाकाः क्यानेगकै बीग्य बनावा बानैपामा । पाकतके बीच्य आसित । सँमाळ-व्या देख-गावा स्वपरमा प्रापंत भेत हो।। वीचनात्रिका भार । र्वेशस्त्रका-स॰ क्षेत्र शेव वान करनाः देवना स्वास वैसार रक्षा करनार पाकल करनार महत्त करनार कार्म रक्षमाः सद्दश्यता देनाः प्रदेश करनाः सदेशमाः गर क्षत्रामाः अपनेको क्षत्र क्षरमाः स्पन्न करमा । र्वेजासन-४० यरलेके १४केको चेदनागरमा । सँमाछ्~ इ स्तेत्र विभूगर । र्शभाषप-वि [सं] दिलोके मृदि भारतमा रहते बाका । शु नक्क करमा। निक्रमा पूजा-साकार बारर माना करपना, अञ्चलका वपनुष्ठका। वीस्तवस मन्द्रिक क्वादि। निपारमा। श्रमीत्रम बानग सरेशा मेमा पर बाम्बालंबार वर्शे किहा एक शतके होनेपर हुमाँके हीरीको संभावमा वर्षिण को जान र श्रीजाणना-स्पा [पी] के 'मंगवस'। संभावणीय-वि (सं] पूत्रव चन्त्रात्मा श्रृत्यनाने बोग्या शिक्षको संमालना हा शुमक्तिमः भाग नेने बीम्य । संभावित-१० (से) सम्बातिन भारतः स्वाधिवासी प्रसास किया हुआ। गृहीया विवाहिन। बहिरता वरवुष्प लुक्तिमा वरशादित जाता हुइ । दु० श्रूरपना । संभावित्रम-वि छि] वे 'मंत्रवयीय । संभावन-वि [एं०] कायरकीय सन्यमना दिवारणीया सुमक्तिमः कप्युक्तः बोध्य । इ. मनुका एक द्वयः वर्षः जुक्ताः बीम्यता । सीमाच-प्र [में] वातपीका बराय, बारार प्रशीदा संदेश-राज्या अभिनादमा बीम-पंदेष ।

या ऋरानेका अभिकार प्राप्त हो। मंसकारी(रिम्)-वि॰ [सं] बच्छे संस्कारवाका । सस्कार्य-नि [सं] तैयार पुराकरमें वीम्बा विसन्ती शुद्धि सफार्र की नावा निसक्ते मनपर छाप बाला बाब । संस्कृत-वि॰ [सं] सुर्वित, सुनिर्मिता पूरा किया हुना। पकारत वैवार किया हुमा (मोजन)। सुपारा हुना परि-म्हर्त किया हुआ। संस्कार दारा शक्क पनित्र किया हुआ। विनाहितः कत्तमः कर्तकृत किया द्वजाः समाया हुवा । पु दिमातिका वद् न्यांच विस्का शुद्धि-संस्कार को शुका की। विद्यानः तिनमानुसार मना बजा क्रम्यः पाविक प्रथा। की॰ मारदीय भागें की प्राचीम भावित्यक माना (बो बैदिक भागके बार प्रचीतमें भागी थी।

संस्कृति न्ह्री [सं] पूरा करनाः श्रुतिः ह्रपारः चरि म्कारः निर्माणः पवित्रीकरणः सत्रापरः निव्यवः क्वीयः माश्ररम गत परंपरा, सम्बद्धाः २४ अधरोदै वर्जवसः। सस्क्रिया-स्रो (सं॰) तैकार करना। निर्माण सुद्धि

संस्कारः श्रम संस्कार ।

संस्थलम-दु (सं•) भिरनाः गृष्ठ-पृत्र करता । सहस्रक्षित नि [सं] गिरा हुआ। मूका-बुदा हुआ।

पु भूड-चुका

र्खस्तम-त [मं•] इठ, ध्रकापूर्व विरोधा सहारा देखा बनाता व्य करना। स्कामा विशामः निरमेश्वाः स्वना । संस्रोधम-विश् (संश्री रोक्षयेवाकाः कृष्य करनेवाका । प्र रोक्जिमाओ दवाः एक बाला रोक देशाः सदारा

देना। संस्तंत्रमीय-दि [सं] महारा देने नीव्यः स्ट करने मोम्बः मोस्साहिस धरते योज्यः रोडे वाने बीव्य । संस्तंत्रित:-वि [सं] विशे सहारा दिवा वया हो। को

निष्पेष्ठ हो मना हो। प्रधामाध्यस्य ।

संस्तंत्री(निस्)-वि•सि] रोक्रमेनाकाः (यत्तरेका) निषा-

रम करमेशाका ।

संस्तब्ध~दि [एं॰] जिसे कहारा विधा गवा दी। वका

हमार नहीम्त निश्मेट।

संस्तर-पु. [सं-] तर परता तमझम्या। विस्तरः पर्वना (कृषी मारिक्री) कैमाबी हुई शक्ति। विशेरता कैनाताः मान्यालया प्रयाद (दिशांग आदिका)। यद या गरका आयोजन ।

संस्तराज-प [री•] (वर्श मादिका) तक परतः प्रैकानाः शिरानाः भाष्यादिश करमा ।

संस्थानन [नं] प्रक्रीत रमुति। प्रक्रीरा मेश-बीक विष्यता । -प्रीति - स्मेन परिवद अन्य प्रेम ।

संस्तवन-द [नं•] प्रशंसा करना रत्नति करना । म्बेश्तवाम-वि [मंग] मन्यक क्यमें रततियाह बहतेशासाः

बान्सी । प्र यापका क्षत्रामध जमन्यता । र्शस्तार−९ [मं] तदानिस्तर क्वेगा वदायोनाव र

∽पंतिक=सी ण्डाइका संस्काय-त [मृं•] प्रश्नेमा स्तुतिः सम्बन्धिः स्नुति-पात्रः बट्डे रगनि पाउदाने रहतेका स्थाय र

स्रेंग्लीमें-वि सिंधी चैकाना हुना विरोश हुना आहेत

बारधारित ।

संरत्तव-वि॰ सिं] महीस्व, बिसको स्तुति हो बंदे है वरिश्वविद्या स्त्यक्ष, मिसता-अक्षणाः सार्ववस्तुकः गी बितः वनिष्ठ। व्यक्तिप्रेतः अमीर।

संसातक∽वि॰ सिं•ी क्षिष्ट, गहः (वी)। संस्तृति – सी॰ (सं॰) प्रद्रांसा, स्तृतिः मानानिम्परिसा स नामकारियः श्रीको ।

संस्तुप~प (सं∘े] कोका बेर ≀

संस्तत-नि॰ सि॰] निधाना फैनमा बना। कससे हर EWI !

र्सरपाय-५० [नंग] बयना ब्रोस, दश होना (प्रयक्ति मा) । विश् भमा हुमा, जमकर होस क्या पत्र हुमा। संस्त्याथ~ड़॰ [सं] राहि, सर्द्रा, देख कैनक उत्तर निवासस्वायः, मनानः वनिष्ठताः सित्री 🔐 परिविधि नार्शकाय ।

संस्थ-वि सि॰ो "में स्थित स्वरा द्वारा राष्ट्रा सिए " पर व्यवस्थितः "से हुन्तः इस हो शास्त्रक निर्मे नाका। महा कुछ। शमास, पूर्वः व्यक्त । पुर निराती

पहोसीः अपने बैक्का रहमेवाकाः नेदिया । सखा-बी॰ (वं] उद्दलक रहना समा सपूर बेल्के रिवति अवरक्षाः पेक्षाः रहम-सहसमा वैदा इषा वरीनाः रुदि, विथि मिनमा सराकारा अंत, वृद्धि उद्यक्त विरामा माध अलगा सारहता रामधीर आयो वह प्रकारका सीमवदा प्रत्यः विमन्तिः वाष्ट्रिः एरा पर्नः स्वमाना वका श्रव-संस्कारा शुप्तकरवर्ता "हतानी" मिर्वारित निभित्त । -अय-पुर वहदै अंतर्ने होनेवारा

पठि । संस्थागार-पु [सं+] सनामग्ना विधान स्नानेशाय समाका स्थान ।

र्श्वरणका-पु॰ (सं॰) व्यासारक प्रसन अस्ति।

व्यापाराष्ट्रक (की॰) ।

संस्थान-वि [सं] कर्रनेवाकाः स्टस्स, आविर । इ उपरका रहका स्थिति। (श्रुप्तमें) स्थिर रहना। क्या अरिवाण जीवमा गळण (बाक्षा मादिका)। जिवाहरगर्न-बस्ती। सार्वेजनिक स्थान (बगरस्थ) बाइति सीर्यं कांकि विका निर्मेशक जिला रोपस्य क्यम लगान अवस्थाः समूक्षः वरः अतः समातिः वर्ताः निर्माना सामीप्या परिता बतुम्पन भीराहा। श्रीमा ।

संन्यापक-पु [सं] स्थापित करमेशका (संन्यक्र क्रेप भाक्य मारि): एप, जाहति प्रशास कामेराणाः चीती आदिकी मूर्तियों वकालेगाका। सह आदिका प्रवर्ति ।

संस्थापन-५० [सं] रहत करमा। निधित करनन राशा करनाः निर्माण करनाः श्वापित वरमा। इत वरान करणा कार्र मधी नात थारी करणा जिल्लीक करणा नियम विभागः।

संस्थापना-मो॰ [मं] रोडमा, निवंदिव दरका प्रेत्नार हित करमा। शांत करनेका सावन ।

संस्थापणीय-वि (संन) स्थापित वस्ये दीला । संस्थापित-दि [ले॰] स्टम दिया दुन्य, देर अनावी तुमाः समापा बुमाः स्वापित दिवा बुमाः बदा दिया guis anien Zuit nallen feit gut, faciler !

संभाषण-पु॰ [सं॰] बातबीतः महरोका सेनेतराब्दः मेथुन रति। –िषपुण-वि बातीताव करवेते कुशतः। संभाषणीय-वि॰ [सं.] बातबीत करवे बोगवः।

संसापा-छो॰ [सं] दे॰ संपादम ।

सीमापित-(द [सं•] यदी मोति कहा हुआ। विसरी कार की जा चुकी हो। पु॰ वाशकाय।

संसापी(पिन्)-वि [सं] वात कहनेवाकाः वार्ता-साम कार्यकारीवासाः।

संमाध्य-वि [संव] बात करमे योग्य।

सिमिय-वि [तं] [त्रव-पित्र विकाल हुटा हुना। ग्राण्यः परित्रका विक्रण हुना हुना। स्वत्र हुना। ग्राण्यः परित्रका विकाल हुना। त्र व्याप्त क्ष्मा। त्र व्याप्त क्ष्मा व्याप्त क्षमा विकाल व्याप्त क्ष्मा विकाल व्याप्त क्ष्मा विकाल व्याप्त क्ष्मा विकाल व्याप्त क्षमा विकाल व्याप्त विकाल वि

सभीत-वि [स॰] बहुत दरा द्वामा ।

संभातामा (सर्) युव वर्षाक्रमा संसु–ि [सं] से बल्पमा में निर्मित । यु जनकः,

भिता; यस बूक्ता व है। शहा । इमिक्क-वि [सं] धाना बूका अवनीन भिना हुना; प्रवीत-

में कावा द्वसाः सर्विकांतः

संमुक्त-दि [मं] पूरे तारवे मुखा दुवा। संग्रत-दि [सं] कलाना —वे निमिन रवितः —वे

सस्त~ाव [७] चल्म्ला ल्याना स्वया । मिका हुमा भुक्त सम्माव्ययुक्ता स्वया समाना "स वरिमत । ⊶विकाय—पु शुक्तेवकी मासके वीजा ।

संस्थि को [स] कसा बराचित गढ़ वृक्ति विस्थि शक्ति वर्षक्ता संवीत रहकी यह करना ! -विश्वय-

पु दे 'संगत-विकय'।

संभूत-ल (६) दाव दोकर वा कायवर्त मिकतर। साहेशे ! -कार्री (रिन्) -वि सावकोगी साहेशे कारकार करनेवाला ! -कब-पु बेक माकके प्रति-विक्रो (दी)! -समन -पान-पु सका मिकतर जाकरण करमा; साव मिकतर जाना! -समुख्यान-पु॰ साहेका बारवार, कारदारी साहेशारी

संमूचासन-प्र [सं॰] धडसे नेनकर और वसे बदासीन

समाहर के बाना।

संभूत- ((व) यक्त किया हुआ संक्षित विवार किया हुआ पुछ, विविद्ध रहा कमा किया हुआ मासा पूर्व, कारा माने विवार क्या मासा पूर्व, कारा मोन वादिव पालिगं न प्राप्त माना सम्मान्तिक पृथित क्या (व्यान)। पु भीकानेकी आवाद। —वस्त- वि विद्यो सेता प्रक्रम की है। —क्ष्मुस- वि विद्यो सिक्स कर की है। —क्ष्मुस- वि विद्यो किया कार्य की कार्य के किया सम्मान्तिक क्या की कार्य के किया सम्मान्तिक की की की कार्य के किया सम्मान्तिक की की किया के किया सम्मान्तिक की की किया की किया की किया की किया की किया की किया की की किया की की किया किया की किया किया की किया किया की किया

मंबुरायं-वि [र्थ] क्रिसने काको जन एकन कर किया है। संस्कृति-को [र्थण] संस्कृति सन्दर्भ साथ-सामान

वैशारीः आधिक्यः पूर्णताः पाकन-पोषणः रक्ता ।

संस्कृष्ट-वि [सं] अवती तरह मूना हुआ। श्रदावा हुआ। जनका बरारा !

प्रश्नि - हिन्ती हुरताः तिरमाः बीता बोमाः करण बोक्ट विरमाः विशेष पार्थवयः पूर्व पैरा करमा (सक् प्रश्नी) प्रकार, किरमः एकस्तवाः योगः विकास संसर्थः मरिबोका निक्ताः संगमः नरीका समुद्र भादिने विरमाः विकासिक वीनाः सिक्ताः

संमेदन~पु [धं॰] छेरनाः तीदनाः विदारमः श्रुरानाः,

संत्रोच-वि• [सं] मेदन करने थोग्या छेदने घोग्या संपर्क में काले, मिकाने थीग्या।

्य कानः । मशान पान । संभोक्त (क्नु)-पु [सं] खानेवास्मः वनमोग क्रस्मेवाकाः,

भाष्ट्रा(कर्मु) ~ पुंचित्र । भोगनेवाका ।

संसीत-पु॰ [तं] जनमार किन्नी चीजर्स आनंद हैना। रित मैचुना क्यार एक्का एक मेद संबोग नागाद जन्मोज कम्मा। क्यार गन्नीक्ष्मा एक निदेश मारा। —काय-पु॰ इनके तीन ग्रारोरोमेंते एक। —क्सम-वि जनमार्थे जप्तुका। —वेदमा (मृ) —पु॰ वेदणा या रहेको का वर।

का वर । मंत्रोगी(गिन्)-वि॰ (सै॰) बाहुका वपमीन करनेवाकाः सम्बद्धाः कार्येक्सर (१ वार कार्याः प्रदर्भा

व्यवद्यारमं कानेवाका । पुत्र क्यार कामी पुत्र । संसीरय-वि॰ [सं] भीय करने योग्यः क्यमने काने योग्यः

व्यवदार्थ ।

संभोब∽दु (छ॰) योवत । संभोवक-दु (छ॰) वामैनाका, स्वाद केमैनाका; स्रामा

परस्वेदास्ता। समित्रेक्त-९ [सं] बहुवीकं साव कालाः मोत्र दादतः

शोवन। संमोकती∽ची भिीकाथ साला।

भंजीवतीय~वि॰ [सं] (ब्रहान बोग्ब) द्वामे बोग्य । भंजीवय=वि [सं] बाते बोग्बा दिकाने सोम्ब विकारे

साध आसाचा वा छ%।

स्तिम्म न्यु (६०) वन्दर द्याताः वदावणीः सन्दान्धाः स्वत्यस्य स्थलकाः वरस्यतः स्वायुक्ताः वरस्यतः स्थायः स्थलकाः प्रत्यः स्वत्यस्य स्थलकाः प्रत्यः स्थलकाः प्रत्यः स्थलकाः प्रत्यः स्थलकाः प्रत्यः स्थलकाः प्रत्यः स्थलकाः स्यायस्थलकाः स्थलकाः स्थलका

पनवास हुआ ज्याकुरु । सीमील-वि सी] चकर स्वास हुआ; दरवास हुआ; हुज्य क्योत्रिता तंत्र स्वरासक रक्तियुक्त; स्थारत । -क्याप-वि विश्वके स्वासी वदशमेहुर दरें। पु शादर-शीव व्यक्ति। -सामा(सस्)-वि विश्वक समस्ववस्

्यमा हो । संझाति – यो. [सं] परशादरा सतानसीः वसप्रतादर ।

संभाजनार- व कि सीमित सीमानमान होना। संबंधा(न)-पु सिंगी रोजने नियंत्रण करवेशाकाः

संबंधित-वि [रो] वैया हुना वदा रोका दवाया हुनार

संस्थाप्य −वि∗ सि र स्थापि भागे योग्या पूरा करते सोम्ब (बीसे मुद्य): भाराम पहुँकामेवाकी वशितके क्षारा कपमार करने बीय्य (आ वे)।

संस्थित-वि [सं] प्रकाः उदरा प्रभाः अद्यो दया हुआ। "पर बैठा देश हुआ। रका हुआ। पढ़ा हुआ। भी पना रहन दिया गया हो (भीजन)। विकास भागी। समान, स्टक्षः प्रत्य किया प्रभा, राशीवृतः समायाः रवापित किया ग्रमाः प्रवृत्तः आवृतः 🗱 हुत्तः प्रस्थितः समाप्त, पूरा किया हुन। नहा मृतः स्विरः रूप प्रशास दिया हुआ; रूमा हुआ, बास्त्व । पु आवरण; बाह्रति। स्रस्थिति-स्रो । [सं] साथ दोनाः उद्दरमाः खदा दिका

रहमा। रहताः "क्ट बैठमा केटनाः सामीच्य संविद्धाताः विवास-स्वाना राशि हेरा एक **दी अवस्था**ने रहनाः शदरबा, रिवर्तिः रोफ मिर्वत्रणः सूख्यः व्येतः प्रकटः आकृतिः स्वमाय वर्म वैथी स्ववस्था कृष्य कोष्ठवस्ता । संस्पदाः संस्पदा -वि (सं) प्रतिकाशिता बोकः वैर्जा। मंस्पर्दी(दिन्), संस्पर्वी(धिन्)-वि• [सं] प्रतिबीगी

होड करमें बाकाः रंप्या करनेवाका ।

संस्पर्श – प्र [सं•] स बानाः संपर्धः संसगः संबोगः, मेकः मिश्रणः प्रभावित होना विववके संबोगसे विविका

सरेदन ।

संस्पर्धन-५ [सं] छनाः संपर्धः मित्रनः।

सस्पर्धी-स्तो [सं] एक प्रतंतित पीवा बनो। संस्पर्शी(शिम्)-दि [सं] श्वर्ण करने सुनेवालाः संबंधी सानेवाका ।

संस्पृष्ट-वि (स) पुत्रा हुआ। संबद्धी कावा हुआ। संबुद्धा मिला हुआ। मिलिटा आसका मनाविदा पहुँचा हुँका प्राप्त । -मैकुमा-स्त्री जननीत वास्त्रिका (विवादके सकोरको ।

संस्कास-प्र [स] मेका शहक (१)।

संस्कृद-वि [सं] चुका हुआ, फूटा हुआ। विकसित क्षिका इना ।

संस्थेट संस्थोद-५ [तं] तुक क्यारे।

संस्मरण-तु [स] स्मरण बाद करनेकी कियाः नाम केमा सपमाः संस्थारसं बापस दानः स्पृतिके सामारपर किसी विषय या व्यक्तिके संबंधने किस्तित केख या ग्रंथ ।

संस्मरणीय-वि [सं] बाद करमे वोम्या भाग अवने बीरमा मिलकी देशक याद रह वनी ही यह मुता

महस्तपुर्व ।

संस्मारक-पु (सं॰) स्मरण करामेवाकाः विसी व्यक्तिको स्वतिमें निश्चित भवन स्तंग संस्था आदि। वि याद दिकारेग्य !

संस्मारण-पु [सं] याद दिकामाः विनमा (चीवावाँको)। संस्मारित-दि [मं] स्भरण कराना हुआ। नाद किया

र्मस्यृत-वि [सं] बाद किया हुआ। आविष्ट विद्वितः ममिदितः !

संस्यृति~क्षा [सं]पूर्वस्यृति वादः।

सस्यत-वि सि सिव सिका ह्याः भोतपीतः अनेव रूपमें संबद्धा

संख्य-प॰ (सं॰) नहान श्रदण रिसना। पारा मनादा बहता हुआ पानी; किसी बस्तुका बचा हुआ अंका पक तरहका पिडदान ।

संस्रवन-पुनि] बहनाः चुना (गर्भ-संस्रवन-गर्मपात)। संस्रष्टा(प्दु)-पु [सं] तुक्रम प्रवृत्त होनेवालाः माम छेनेबाकाः वायोजस करनेवाकाः निर्माण करनेवालाः शिश्रण करमेशाका । संख्राच−प [सं] वहाव प्रवाहा पूत्र भारिका भमा

होता (था व): किसी प्रवदा अवसिष्टांश, तकस्या एक प्रकारका विन्दान ।

र्श्वचावण-[र्स•] बहामाः बहना अवस्मा चुना । संद्राविश-वि (सं+) वदा हजाः वदामा हमाः दपकाः

संद्याच्या−वि [मं] बद्दान योग्या थी बद्दाया उपकाया

वाव । संस्थार−५ [रं•] साथ साथ सम्प्र करना । संस्थेव-प (सं॰) वतीता। -ब-दि॰ पद्योतसे बत्पन

(ई मारि)। संस्वेदी(दिम्)-वि सिं किसके करनसे पसीबा

विक्रम रहा थी। सहैता(तू)-वि , प्र [तं] वद करनेवाकाः जीवम

प्रिकानेपाका । **अंद्रत−ि सि] अका तथा एंत्रकः मिकिता साथ**

रहतेबाका। ठीस कहा। पनाः च्या दहा कहा। निम (स्वर, रांव शादि)। बाहतः वंदः यक्तमतः यक्तमः। 🗕 🖼 🗗 🗝 📭 संबन्ध परिवारका। येसे परिवारका विसन्ने साम निवट संबंध हो । -बाल -बालुक-दि विस्के ब्रहने भागसमें इकराते ही करन बालुका -तक-पु श्रेमकिके क्यमें मिने इए दोनों दाव । -पश्चिका-सी सीमा।-वस-शंपरित सेना (को)। -अ;-वि विसन्धे मीहें प्तिकदी दों। −सर्ति−वि॰ दशःवशः सबद्वा ⊢स्त्रनी≃ को बढ़ को बिसके स्तत एक इस्तेने बढ़द नजदीन हो। -इस्त-वि वो परस्पर दाव मिछामे हो।

संद्रतस्त्र-पुरु (सं] अवकि ।

संब्रतीय-वि [र्थ] ध्वकाय इट-पुटा यह दूसरेले बगा सभा (असे पर्वत) ।

संहतांबिक-वि [मं] वदांबिक करवद । संहताक्य-प सि । एक निध प्रमान ।

र्मप्रति−को सि]ध्य संबंध एका मेका संवित् संबोगा

यनत्व ठोसपना सामंत्रस्या समूद्र, राश्चि, हेरा किंगा वरू याच्या घरीरा सम्मिक्त प्रवस्ता-बाली (किस)-विवना।

संहतन-वि [र्थ•] ठीस छ। ठीस करनेवाका, वव करनेवाकाः नष्ट करनेवाका । ए संचार करमा बीवनाः वना ठोस करनाः वय करनाः खताः वक्रवताः अस कुलता मेला सार्यवस्या देवा बनया मालिया।

संहरण-प्र सि] सेपह स्टरना वरीरमाः एकसाव गाँवना गाँवना (केस); शहन करना पक्रवनाः कीया हेना (र्मंत्रसे बान आदि)। संक्रुपित करमा। रोक्रमा। नामः र्घात करनाः प्रस्य ।

45 1 संघ-प्र• [सं•] संकारू, अस्थिपंतर ।

संयस-वि॰ [सं॰] रोका हुमा, वशिता संबगों, जिलेंद्रिका नक, केंद्र किया हुणाः बंद किया हुणाः व्यवस्थित किया इमाः समतः सीमितः । मृतिः वितः । −चेता(तस्),

-मना(नम्)-वि जिल्हा मन, विश्वपृत्ति निवंतित हो ! -प्राण-विश् जिसका जास नियंत्रकर्मे हो। माना-वाम करनेवाका ।-मुखा,-वाक (च)-वि विद्याची बद्दत क्रम बोकनेवाका ।

संयद्योककि-वि+ [र्छ+] वहांजकि । संगताञ्च-वि [सं] बिसको बाँधे हैंगी हो। संबत्तारमा(रमञ्)-वि [सं] वे संबत्तवेता ।

संगताहार-वि॰ (ए॰) मिताहारी । संमति-की [एं॰] तपमर्गा, निरीय, एंवमन । संयतिक्य-विश् [सं] विनेक्षिय ।

र्रायत-वि [सं•] संबदा सविश्वित सविश्व । स्री॰ करार, ठइराव, मिकाने, धीवनेका सावना निवत स्थावः कवारे, श्रवा एक तरक्ष्मा हैंट !

संबद्ध-दि॰ (सं॰) ज्यत सम्बद्धः साववानः सत्तर्थः। संयत्वर-वि सि•] मीन। संबद्धर-प्र [सं•] राजा ।

संबद्धस~प [सं•] ए.बंबी सात रविमवॉमेंसे एक! वि• थमों ।

स्यद्वास−वि [सं] जो शिव है क्लको आपसर्ग शिकाते बका। सैयस-पु [सं] रोड, निमद निवंधनः देविननिमदः मॉयनाः वंद करना (नेम)ः च्यानः भारवा और समाधि (बी)। प्रवतन, संघीताः समतः साम्रः प्रकवः शामिक चता-द्वान का प्रदा तपस्वा अनुभाव, बूछर्राके प्रति छन्नाका

तपस्ता भारंम करमेके पूर्व किया कामेवाला वासिक करवा मरी बरतकींसे परवेश । संबगक-वि [मं+] धंवय, त्रिशह क्रमेवाका । संयसन-प्र[सं] तिश्रह दशव आत्मनिशदः गीवना वक्षणाः स्रोबनाः कैर करनाः वसपुराः धंगमनीः वार

मकानींसे बननेवाका प्रांतका आरमविषय करनेवाका व्यक्ति। विवे प्रवासका संबन्नसी∽सी संदे 'संदक्षिती ।

संपमित-नि॰ (हो॰) निवंतिन रीका ब्रमा रमन किना ब्रमात स्था ब्रभात कारास्टा एकता ब्रमात रोक एवा प्रभार चार्मिक प्रशृतिवाकाः एकम किया प्रभा ! हु: (स्वरका) तिर्वत्रम । संपमिनी-की [सं] काहीः नमपुरी।

संबद्धी(सिम)-वि [चं] निधव, निरोध करवेगानाः भारमनिवारी, विनिधिया वैदा बुका । बु शासका विशेष

क्रवि । संयक्य-दि [गं॰] निषंत्रक दसन करने वोल्हा संयात-वि (तं) ताव गवा हमा। पर्देशा द्वभाः नापा

हमा । स्रेपाति −प्र स्थि] बद्दवस्य स्कल्लामः

सैपान्ना – स्ते ॰ [सं॰] साथ-शाय यात्रा करमा। समुद्रवात्रा । वि

सेवाम-पु॰ हि॰] सीवार साव बालार यात्रार बस्ताव गावी वाष्ट्रभा सम्बद्ध । संबास-पु• (सं•) स्वम ।

र्सवाथ--पु॰ [सं॰] दुव भीर बीक्रे बीवने बारेबा स्वा ह्रमा एक शरहका प्रकान, शाशिका ।

संग्रम् (म्)-वि॰ (सं) संग्रकः संवतः संवतः प्रवतः। 🗷 संबंधः संबोग ।

संयुक्त-वि॰ [d] अुवा मिका हुव्या संबंध स्तरी 'से विवादिता रक्षा अवा प्रभाः संपद्म सन्वित सर्दित। संमुक्ता−की [सं] रक्ष ईरा एक करा मार्लाक व्यवस्था करूपी संबोधिता ।

संबंध-त (र्धन) हुका भिष्ठा संदोग मेक ! –गोव्यदन पु॰ मामुक्षी संबर्ष । —सूर्घा(र्चान)—व वदका बनका भोरचा । श्रीयतः−वि० सि०] है 'स्टिक्ट । प० दक वर्त्त । संबोध-प्र-प्र- सिन्। क्रिक्स मेला प्रक्रिय संबद्धी मिलना

संबंध वैश्रेषिकीके बीबास ग्रामीयेसे बका मेलना निगर करन संबंधा संबदना हुन्छ, मामित होगा। वह संबि में सामान्य प्रदेशको पुर्तिके किए हो राजानीमें होतो है। गरीवका किसी कार्योपे अंबाध क्षेत्रम क्येक्स क्येक्स मेला दी श्राकाशीय पिडीका मेरर (ज्यो)। बीका मेरर कका श्लपाका क्षित्र। श्रंपार रक्ष्या एक मेर, संबोत (छा) । — ह्वाबस्य — द्व अनित्व क्षेत्रपेका गर्मन्य (न्या) । - संग्र-प्र विवाद-संबंध सव । - विकट- वि को शाक्ष-साथ न पाने मा सकें साथ-साथ पानेसे होग बरुवा सहत्रेवाले (दाय-प्रश्नां) । -शंधि-ठी अञ्चयनके बाद सामान्य बदेवनसे की कामेबाकी संबि ! संबोशिमी~ला॰ (सं॰) वह की वो अपने पति या मिर

समन्द्रे साथ हो। विशेशियों न हो । संघोगी(विश्व)-दि [सं] विक्रनेशनाः भी प्रेक्न संसर्वमें बोर विसका बनिश्व संबंध बार निवास हैंक निवादितः । संबोजक-दि [सं] बाइने विकासकार पनित करने

बाजाः सन्दी वा वारवीकी बीवनेवाना (सन्दे)। उ सन्ना, समिति आदिको नैजनका आधोजन अरनेमाना । श्रंबीकन-प [सं•] बोबना, बोबने मिलानेके किया शांसारिक वंत्रमधे वीचनेवाका संस्थिता कारणा मेडले **र्मिश्रमा-मी (तः) १० संने**श्रम् । र्मगोतिशः—वि वि] गोडा मिकावा द्वणा। संयोजय-वि॰ [मं] चीडमे क्लिके बोध्य । संयोध-व [सं] शब, तवार्र !- ब्रेटब-व वद वद !

संयोदा०−स क्रि. दे 'दंशीमा'≀ संर्यक्षण-वि [एं०] भागरदाषद् । पु मनदा (तन

करशा १ सर्वेश-प [लं] शहका प्रणावसी आतुरनाः सप्रणा करेजना ओसा वास्तर इच्छा। सीच गुम्सा। नीर्नस

शीम और सलमा वर्षत वर्षा मगहता वनता बास शक्ती प्रवेदशा बुद्धभेगा का(मा यह अस । -ताम-श्रीवरो आस । —इयह (स्)—वि क्रिन्सी व्यंत्रे क्रोबरी काल ही गणी हों। -पहल-वि की ग्राउंडी संहरमा*-व • कि॰ यह विनव होता। स कि स SER! 1

सहर्षम्प-वि [सं] एकम करने वाग्यः पूर्व अवस्थाने काने पांग्या सह बरने बोरब ।

संदर्शा (र्ष) - वि पु । [र्ष] संग्रह करनेवाका, पद्भव करनेवाकाः मात्रा करमेवाकाः वथ करमेवाकाः।

संहर्प-प [सं•] रोगोच (बानंद आदिसे)। मसम्बदा इर्वः कामीचेत्रना प्रतिबोगिताः ईप्योः वासा संपर्वणः

संहर्पेश-प [सं] पुक्षित शाना (इवें जाविस) अनुव बोमाः मतिबोगिता रपना । वि पुक्कित करमेवाका । संदर्पित-दि [सं•] रीमांचित प्रकृषित ।

संदर्गी(पिन)-दि [सं] पुरुषित मस्य दोनैवाकाः रपर्वा ईभ्यो करनेवासाः प्रसन्न करनेवासा ।

संहयन-प्र [रो] साथ-शाव हवन करमा। चार मकाबी-का बगोकार समझ ।

संद्वात~पु [मं] समूद तीयातः एक शरकः विकास एक सनुबर ।

संद्रास्य – ५ मि मिनिकी शतीका मंग दरवा ।

संहार-प मि निवदीक लावाः बद्येगना वक्तव करनाः सार सक्षेपा संकीचा (हाथीका) ब्रीड कंपरकी और ले बानाः गॅवना गॅथना (शह)ः (प्रेवनक्षे) छोडा हुवा बाग श्रीरामाः माद्या प्रथमः मास करनेवाकाः (बारक या मारक्षे किमी अंदका) क्षेत्र एक मरका रोक केमा समृद्धा मेडलाः एक क्यारम दांदा बजलगाः सम्यासः यह असर । -कारी(रिम्)-दि प्रश्व करमैक्काः नाग्र करमैवाका । -कास-प प्रस्तदक्षात । -भीरब-प नीरवी नाठ रपॅमिसे एक। - अहा-को॰ तांकिक पूनाकी वक सुदा निमर्जन महा।

ह [मं] एकत्र करनेशकाः संक्रियतः मंद्रारक~वि संदेश अरमेशकाः नाग्न अरनेशला ।

संद्वारनारून कि नाशकरनाः वय करना । संदारिक-दि (र्स॰) सनका माछ करनेवाला ।

संहारी(रिन्)-वि [मं] बाह्य दरमेवाला । संद्वार्य-वि [लंग] स्टोरने स्ताह करने शेन्यः हटाने है बाने बोरबा की मीयमान वी से बाबा जाना निवा-

र्याय रोक्स बीरवा बहरूमि जान बीस्य। निस्का संक्रित-(। [सं] ताब एसा हुमा मिनाया हुमा संबद्ध

बिया प्रमा रखन किया प्रमा नरीरा द्वमा सक्तिका संश्व रसमेवाकाः सुक्तः अधिकाः वमावा हुवाः रचितः विसदा क्रममंग न इमादी (ग्रन्य-समूद); अनुकृत सवाधिका विद्यासे मेची हो, मेची । -पुरिपका-सी शोकाः वसिया ।

संदिता-स्वी [मंद] संदोग, मैनः संदि (स्वा): ध्वाड संस्थान गर्पी भारिका वह अंग्रमम जिल्हा कम आहि बीय विदा गया हो। मनु नादि हारा रक्ति वर्ष-प्राचा वेरीका संबक्षामा विश्वकी संबंधित रधमेवानी शक्ति। -कार-त मंदिताची रचना करनेवाला । -पाट-त नेत्रका समस्य मंत्र ।

मंहिति-की॰ सि] एक साथ रखना। संरंप । संडति नती (र्स•ी साथ-साथ प्रश्नारमा। श्रीर-गुन। मेंद्रत-वि [सं] संक्रवित वा संवित क्रिया द्वार रहर किया हमा। शहय किया हुमा पक्षा हुमा। रोसा हुमा

निवारिया वह किया हुआ। इरण क्रिया हुआ। संद्रति-न्या॰ [सं] संदोध संदोध सारा गाया तस्य

र्थतः समाप्तिः रोका परकता महका मृहदः संदरः एकप्रीवरणः हरण् । संहरित-नि [र्नुः] प्रस्ता वह महिदान निमेदा

संबद्ध-विक सिकी रोगांचकर (बार्सर बारिसे): प्रमुद खदा (रीम)। स्वर्ण भावते स्टीप्तः प्रश्नकित ! - मनः (सन्य)-वि अनुकारित । -वजन-विश् जिस्सा सप प्रमचतारी चमक रहा हो।

सहरी(हिन्)-म [हं•] क्षण, ब्रह्मीन (द्वारा)। र्राष्ट्राच-प्र• (र्र•) क्रोबाइक इता-ग्रता; स्ट रारम् । संद्राचम-त [र्थ•] दोलाइल, घोर करना, विस्ताना र्महीय−दि [सं•] कब्रिट समिश्र यम् (संद्वाह-प सिन्ने एक प्रचारका सामेर ।

संद्वादी(दिन्)~[व॰ [ग्रं॰] प्रस्त्रवितः । स-प्र+ [र्त] विष्या स्त्री हिवा स्त्री। वाडा बंदगा वीबारमाः बित्तमः बाना दीक्षिः नाशेक्षे सरका नाम बेराः वक्ष स्वरका शुक्क अक्षर (संगीत)। सम्बद्धा संग्रेड रूप। बप॰ वह सम्बोंके जारंबमें बाबर तह (स्रीए) समान (समानि सगोप), वही (सरिंद) मारि नरेंस वीतम धरता है।

ससाइत−सी [बर] सीमारवः तेक्री महारे । नर्मरें वि यकाः नावस्थारी (वहाँन्ये) सेवा करनेवाना (रेट अर्थामा भारि); सीमारवसायो । -संबी-नी वर्गे। ब्राप्ता-पालक होता शब्द्रत मंदित।

सङ्ग्र∽म साथ, से । य करण और अपरामधे

विषक्ति । सहसरी -त॰ दे सिटिंबस ।

सहयो न्यो शास्त्र नाहोका प्रम सहमार-सी भेगा दीय। सक्रमोध-या सरका सर्वा । सद्भरां - व नेवार ।

साई-ची काती, वृद्धि वरकता व सरराती शही; संबी। [स] दीर-पूरा कोशिश यस। -सिक्रारिस-व बीड-पूरा करमा सनमा बीविश्व विकारिय !

सईअंसा - चु एक रेप्टा सईद−4ि [ल] हाम शका जांगविकः। सईस~पु सार्थन ।

सर्वेश-प्रधीके। श्वातां −3 विकार, सावत !

सक्तां-मी शीन। सब्तेका! ⊶दि छी थमा।

सद्धरा–५ दे 'शक्रर । सक्छर-ड नीह बैसा रह भीर र

सर्वटक-वि [संब] क्षेटेसर वेरीमा ब्रह्मापर ग्रहरी बाद्धा मुक्त मुखा शिवार र

ग्रीट, बस । −श्रवा~नि॰ श्रिमुद्धा बाद मर गया हो । बबद्धे बहुत कड़ीर ही गया ही। -शस-वि ब्रीया संरोहव-५० [सं०] बहु भारकर रोमा । न्वित । - बेग-प कीपका बीर । संरोध-पु॰ [सं] बाबा रीका अवरोब, भेरा बंपन, संरमी(सिम्)-वि॰ [सं॰] बकन और शोबनुक (कीडा): श्रंदाका काश्चि वंद करमा बैता प्रतिनेत्रा धति, प्रशरी सन्दर बर्मची । दमना माद्या क्षेपण, पॅक्स्सा । संरक्त-दि [र्थ] रेंगा हमा। काका क्रोबानिभृता शतरका संरोधक-पुरु [र्थुरु] बाबा बाकनाः रोक्षमाः दसन करनाः संदर, मतोहर । हैत कामा । सौरधा–प सि दिशादेख मारू। संरोधनीय-वि॰ [एं॰] एरीयम, रोक्स्प्रेंक करने बोम्ब । संरक्षक-वि , प्रव [संव] रक्षा करमेवाका। देख भात संरोध्य-वि॰ सि॰) रोकने-छेंद्रमे बीग्य। केर करने बीग्य। निरीक्षण करनेवाकाः वास्त्रः शामयदाता । संरक्षकता-को [एं॰] संरक्षक होनेका भाव संरक्षका संहोपक-प॰ सि॰ो योगा, येड क्याजाः वान भरता । संत्रोपिल∽वि सिं∘ी समाया हमा. शेपा हमा. सगावा मरक्षण-प्र [सं] रहा करनेकी किया, विकायक मिरी-प्रमा । शंशेष्य-वि॰ सिं॰ो बमाने, क्याने शेयने सावक । शक्ष- प्रतिनेत्र । संरक्षणीय-वि+ [सं] रक्षा करने बोध्य। अरक्षित रसने र्महोपिस∽वि॰ (सं∘ी किस. केंप किसा द्वसा ! यंशेष्ट-य [र्थ] बमना नहबर रूपर छाना। बाबका बोग्य । गरमाः फुटबर निकुष्टमाः व्यक्त होया । संरक्षित-वि [सं] सरहितः बन्द्रमे तरह वशाया हुमाः संशेष्टल-प [सं] (पीका) स्नाता, रीपता, बमानाः गणावर रखा <u>प्रभा</u> । क्टबर कपर हाना। वावका घरना । विक मरने समाने मंश्रीतरम~दि॰ सि रिश्वन करने योग्य । संरक्षिती (तिम्)-वि [एं॰] बिसमे रक्ष्म किया है। वाका । संरक्षी(शिन्)~ि [सं•] देख मात्र संरक्षन करने संखंबन – प्र. [सं॰] (समय) ध्वतीत दोमा । संसंधित-वि (चं॰) व्यतीयः गत (समय) । श्रीसञ्जल-पुर [सं] विश्वेष विक्रों द्वारा भेद रपद्र करनाः संरक्ष्य-वि [सं] रक्षणके बोग्ध देख-आक करने बोग्ध। संख्य-विश् सिंशी वरेबितः ऋतः वृद्धिता एता हुनाः शहकारता । अभिमृतः परस्पर गृहीत भी परस्पर हाथ मिकाने ही । ध्यंसक्रित−वि+ र्सि 1 प्रदयाना दक्षाः अक्षकेंमे बाला में (सी ६ – स्रो । महत्री देशानेकी केंद्रिया नंसी । डमा १ संराग-प् [सं•] काकिमाः क्रोपः प्रमताः अ<u>न</u>रस्टि । संकक्ष-वि [र्ष] परपाने बामे बीग्यः छक्षित होते बोध्य । - स्टमर्क्यस्य - प्रज्ञास्य एक मेर क्षिप्तमें संराख-वि [सं•] पूरा किया हुआ, संरक्षा मास । संराचक-वि , पु [मं] ध्वान, पृत्रा क्रानेनाका । बाध्यावंते ज्यंग्वारंके निक्छमेका क्षत कक्षित हो जाता सराधन-प्र* [सं] प्रसन्न करनाः पृत्रा नाविके हारा चै (सा)। प्रद करवाः ध्वासः नाराः क्रीं वानाव । संसरम्~दि॰ [सं॰] सरा, दिक्कक बंगा प्रवा विपका संराधित-वि [सं] पूजा जारिके दारा तुक किना हुआ। हवा। संबद्ध गर्फ, कीना वो दस्त-बदस्त कर रहे हों । संकपम-द (सं) यपश्चमा प्रकाप । संराज्य-दि [सं] तह करने बीखा व्यान द्वारा प्राप्त संख्याक~वि (र्शः) वात करने वोस्यः ग्रिष्टः यह । बरवे बोरव । र्मराव संशयग-त (एं॰) क्रेकारण दोवका बदुरीका संख्या−दि [र्व] ग्रदीतः प्राप्तः। मिक्कर शोर मचाना । संख्य-५० (सं] बैठनाः विक्रियोदा गाँचे वदस्याः स्टेन्सः संरावी (बिन्)-वि [चं] शोर मवानेवाका कीकाइक निशाः विकीत शोताः प्रश्नयः। करनेवाला । संख्यान~प [र्स•] विविवेद्या सीचे वदरनाः बेटसाः संविद्याण-प [सं] व्यारसे बातमा (जैसे गाव बालनेको निहाः विकीस दौनाः मरुवः विपद्मनाः साव सवसाः । चारती है)। संकाय-प [सं] बार्वाकार मनद्वपः कारसका वा श्रप्त संस्थान-वि [संग] को इक्केन्द्रको हो गया हो। क्रिक-वार्ताकायः भानेयरदितं क्योपक्षवम् (सा) । सिचा संकारक-पु (स॰) वद तरहवा क्योपवयनः वपस्यक्ता संद्रवन-४ (सं•) पोका दर्र । क्क सेट (संस्थ-वि [एं॰] रोका हुमा, वावितः मरा हुमाः क्या संकापिश-वि [सं] विससे वात की गयी हो। प्रणा नेतिय विशा स्थात नेता सनका, जिलका पेटा संसापी(पित्र्)-वि॰ [सं॰] वार्तालाय करनेवाका । बाका पत्रा हो। बद्धा हुमा भावतः। जलीहतः। --तेष्ट्-संकाकित-वि [र्तन] काकित काक-ध्वार किया हुना । वि किसकी चैंद्रात गति रोच दी गवी हो। -प्राजनस-मीक्रिस-वि [संग] वर्षः, बीनः मसस्य बनाः प्रकाः। वि की संगाम बरवब करनेते रोख विवा गया हो। संब्धीड∽वि (सं∘) यादा हुना थला हुना; मीग विज्ञा र्मदिशन-वि[सं] विदाद्वभाग्नाहर। EWI ! संबद-वि (तं) अंकृरितः मरा हवा (शव)। कुटकर संकीय-वि [सं] अच्छी क्षर क्षेप, क्षिप्त क्या दुवार मिकका हुमा, प्रकट म्बल्स जिल्ही जह वह ही वनी ही। नावृत वका हुना। स्टिका हुना, संक्षित । -का- - - सहंपन-वि॰ [सं॰] ईफायुक्त, को मुबंपके साथ थे। सक-सी दक्ति, वक, सामको। † पु॰ सक, सरेदा • सादा बादा मर्वादा स्थापित करना।

सक्द-०पु शक्द, समाह, समाहा । वि॰ (से॰) नुसा। जीवा पु॰ साधीर वसा।

सक्टाच-प्र [सं] नहार मण्

सक्बी -सी॰ सिक्दी।

सक्त - भी छकि सामर्थे वैगर। व वशायकि

सरहा । सकता-मी द्वारित वह तकत, तायकी। दु [कर] मूर्यते तेता किती सम्बद्धे स्टब्ह जानेते सेस्का वकत रिगह जाना। - (त)का शास्त्रस-विरम्ब विस्तृता। सकती-कत कि तम सामग्री एक शका सिक। सकता-मा कि एस से बीचा शोष वीवा। सुंचव

होसा, ग्रुमस्ति होना । सक्षतक-स्त्री॰ दिक्क, बरशहर ।

सक्षपकानाः—भ कि॰ दिवस्ता आया-प्रैष्ठा करनाः विश्वद होताः कमा आविके सारण अवसास्त्री वस

वाना दिल्ला।

भागा (२०४१) । स्वाद्धान (चे] इस्तपुष्ठः श्रृंबनामा (दाणो)ः विरावी वाका कर बगाने योग्या । को एकर। —कंब्र्-पु —कंब्री—को स्वादकर। —कमा-पु सकरकर। —कंब्री—को स्वीद रुकर। —पाना—पुरु पर तरह को बोहार सिकार या गमकोण दश सम्बन्धी रिकारीः

एक कामुकी सीनू। सकरकाक-विक [संक] (झरोरके किसी) अंग दारा

संवाहित ।

स्ताहत। सफरना−न•कि स्थेकार किया कामा,क्रम्का नामा। सफरा−वि यंग मंत्रीयी यदा। यु सुद्धन।

सकरिया-को लाक शक्रकंद, रताछ ।

सक्रवंड-प्रश्न यह इस्र ।

सक्ष्म-वि [स] कोसकवित करणात्रीक, वयाशुक्त । सक्ष्म-वि [सं] कार्तीवाका। श्रुमनेवाका । -प्रावृक्ष-

नि कानीवक बका हुना ।

सकर्यक-वि [सं] सापमनुद्धाः

सन्दर्भक-वि [सं॰] प्रभावकारीः कोर्यं काम करनेवाकाः को कर्मके साथ दी (वह फ्रिका) निस्तका प्रभाव कर्तापर न पक्कर दूसरेपर वहें (व्या)। -फिया-की कह

किया विसक्ता प्रभाव कर्मपुर वहें (व्या) । किया विसक्ता प्रभाव कर्मपुर वहें (व्या) । क्षावार्म (र्मान)—वि (र्मान के स्वाप्त क्षाव क्षाव

सकर्मा(मैन्)-वि [र्षण] वे सकर्मका एक की वा एक वैशा काम करनेवाला ।

एक बैटा काम करनेवाल।
सक्क नि [र्ट] एन समस्य एवं बंगींथे जुला मोरिक
बनवी ममादित (बीड) मंद्र और खुद रवस्ताला
म्माद देनेवाला। सारी कलानीथे पूर्व (बीदगा)। पु
सर्वेक दरदा पुरव और महरित रह्या होरित त्या।
-काराचुम नि सारी स्वामी पूर्व करियाला।
-काराचुम नि सारी स्वामी पूर्व करियाला।
-काराचुम नि सारी स्वामी मादित नि मो हराता
सर्वाटी न्या स्वामी
सर्वाटी स्वामी प्रकार ।
-सित्ताला स्वामी
सर्वाटी स्वामी स्वामी
सर्वे स्वामी
सर्वे । पु स्वमा। -बार्यों
सर्वाटी । विक्रि पूर्व सित्ताला स्वामी

- = द्या-की एक भैरवी (तं॰) : सककरतेरा-पु॰ वे 'स्वस्टरोरा' ! सककात-पु॰ रवारै, दुवार्ग; सेंट, धपदार : सककाती-वि॰ शिंद क्यम बदिया। मबमकका ! सककातार-पु [सं] विषय : सककेंद्र-पु सं] पुणे चेंद्र ! - मस-वि॰ पूर्ण चेंद्र

सरुकेंद्र-प्रात्ति | वृत्ते चेद्र। -मुल-दि॰ पूर्वे चेद्र वैधे तुक्काला। सफ्डकेयर-पु॰ [तं] विजा। सफ्कर-दि [तं] विजा

सकपाय-वि॰ सि॰] बासनामिम्स वि) । सकस्रकामा%-व कि॰ बहुत बरना । सकस्रकामा%-व कि ययसीत होना। विश्वना ।

सकस्तान - व श्रेष्योष होता हर्मातना । सं किः संकसाना - व श्रेष्योष होता हर्मातना । सं किः

सका! -प्र• है • 'सका! ।

सकानुक - पुषक की जंबरः शतानरका एक मेदः पक तरको भिस्ताः । - सिसरी-सी॰ अंबरसे बनी हुई मिसरीः।

ामसरा । सक्तकोक−३ [सं] एक नरक (१)। विकासक नामक

मरक्ते मुक्त

सक्तमा । कि श्रेका करमा, वरना। दिवकना । सक्तम नि (वे) काममाञ्चलः स्पृष्टकः कम्पकान, यह बामा कामी अमनाधनाञ्चलः क्षाक्रकाने क्षावै करते बाला। प्रेमी श्रेम करनेनालाः । निर्वादा—की श्रावि सम् वेकर मी खडुको कमा कर देनेको बुन्ध (वे०) । सक्तमा नि की (वे) बामगरिता।

सक्तमारि-दुर्शि] कामिनोने सङ्गशिव । सकार-दुर्शि) 'स' शहर वा असकी प्रतिः समय ।

वि चिकिया प्रतिका बरसारी ।

सकारमा-स कि स्वीकार करना मंगूर करना, मान केना: इंडीपर दस्तावर कर वसे स्वीकार कर केना। सकारा-पु इंडी स्कारने और समय नदानेक रिम्म सिमा

बानेवाका बना करियेता। सकारे, सकार्यक-माणवके, सपेरे-'वॉग देव नित साँझ सकारे, ⊶ध्वप्रकाका ठीक समयवर ।

सकार-वि [d] सम्बोबित । भ ठीक समयपरः

तक्के। सकाक्क −को [श•] भारोपन नोशः क्रिस्ता।

सकाश−पु [सं] सामीप्य निकटगाः प्रशेसः वपरिवति । वि स्रो विकारियाति सामीप्यती, वपरिवत । व• पास समीप । समिक्समा== व क्रि. संक्षित क्षेत्राः विकासनाः स्टे

सक्तिमाण-न कि चंकुचित दोवाः क्रिएकना। दो सकताः श्रृकुत दोवा वहरता ।

सकीक-पु (सं॰) वह पुरुष यो बीम निर्वकताके कारण अपनी कीको रूपर्व संमीय करनेके पर्वके परपुरुषके पास भेजता है।

सङ्गीक-वि [श्र] मारी वोहलः दुष्पाच्यः क्षिष्ट (सन्द मारा) ।

सकुक्षि-वि [सं] एक दो बोबारे बत्तव, सर्वोत्रर । सकुष्य-की संदोष कक्षा ।

वि॰ जिसके बाग नीचे सरके ही । -सामस-वि॰ विका संस्कृत-पि हि । भव्य जरत-स्वरतः संवरीते बाका 重年(1 संबेध-पु [रा•] पूरा वरहेव, संबम (वी)। समेप-पु॰ [सं] पंड, क्रीचर । संकोकी(किन्)-वि॰ [ti॰] वो वौरों दारा देखें वामेदी स्तितिमें हो। संकादम-प [र्ष] अव्य करना दिखाना-प्रकाना शक्त्रीरमा । संबद-पु [संब] सन् वर्ष, साक (संबरसरका क्या करा):

विक्रम-संवरसरः वर्षययनाका कोई वर्ष । संबदसर-५० सि] एए वर्षः विक्रम संबदः पंचवर्षाः लुगका प्रवस्थ पर्दा ∼कर −9 क्षित्। −विशेष −०० एक सामग्री केट । —क्ष्म-पु॰ एक सामग्रा धुमाधुम फ़रू ।- मुक्ति-की पह वर्षका मार्ग (सूर्वका) ।- सुस-विश्यक सालके किए रका हुना। -भ्रमि-वि व्यक साकमें परिक्रमा पूरी करनेवाका (वैशे सूर्य)। -मुखी~ की क्येप्रश्रद्धादलगी। – १य – पुण्ड वर्गका मार्गः। र्सवरसरीय−दि [र्स•] हर साठ होनेवाका, वार्षिक। र्मवदम-प्र (रं•) बार्वाकायः संदेशः विचारः परीक्षकः मंत्र मंत्रसे वसमें करना, वहांकरण: बाद् ।

संबद्धा-स्ते (सं) बडीबरण मंत्र भादिसे किसीकी मधीभृत ऋता । स्वित्तन च संबन्धा च्या सि विश्व नंशनी वध्ये

करनाः प्राप्ता प्रेम । संबपन −प्रसि•िक्षिरदाः कें⊊ना।

संबर-प्र [सं] रोक्ता; बाँबः पुकः शामानः वादा वगत् की सपनेते अलग रखना (मै)। शैक्षीका एक मना संसम सहित्युका ममीनिमदा पर्नंद जुनावा वृति सुपनाः बक्ताः संदोषतः एक तरहका हिरमा यह दैत्या नका क्षिपादः अनुमृदि ।

सँबर=-वी स्मरम् स्वृति। वाङ !

संबरण-पु [सं] रीकमाः निप्रवः वक्ना वरदा करनाः थिपानाः रहाना करनाः वंद करनाः ग्रप्त मेदः आगरन बद्धमा पेराः बाँधा क्रियामा शुगमा, पर्छत् करमाः पति भूनमा (- श्रीक्ष-वि त्रिसमै रीक्सेकी क्रकि हैं। संबरकीय-इ॰ [सं॰] हिनाने इक्ते योग्या ग्राप्त रताने थीरमः विवाहकै किए वरण करने बोरन है

सेंबरलार-भाग कि जीव बीमा~ विश्व अप श्रेपरी बात रिगारी -रामा । सम्बद्ध दीना । छ कि स्मरण करका-'बीकदि बिजी शानि दिन सेंगरी जीविकर m³'~€ 1

स्वता: - वि श्वामक ।

सैवरियान-दि० दे० 'सॉबला । हु कुणा मंबर्ग-व [संब] बचने किए (एीन-शहरकर) क्टोरवाः अधन करना चर कर जागा। वक परार्थका एसरेवे विश्वीत श्रीमाः मित्रया गुम्म वा गुम्बदन्त । स्तर्राय-पु॰ [गु॰] आह्नष्ट करना अपनाना (गैत्री

mitr) i संबर्ग-दि [सं॰] क्रिने गुनिन करना हो। र्थवर्जन-प [संन] धीनना, दरण करवा: छ। बाला । संबत-पु॰ [सं॰] मोड पुमानः नायः, मनना नित समयपर दीनेवाका अक्का सन्पूर्व वादका प्रकार प्रकार प्रकार बल्डकोमिसे व्यक्त वर्गः बना सनूह (मनुष्यांका)- सन्त राज्ञिः मुद्धावका करनाः विष, मीकाः क्षेत्रे का सबे पत्तीः एक दिव्याका एक बमचेता विमीतक सोता। ~कस्प~पु+ प्रस्वका एक विद्येष काक (वी)। -केन-पुरु पद्ध नेत् भी राजाभीके माधका सूपद्ध है।

र्मवर्धक-वि [र्स] करेटमेशाङाः वष्ट गरवेराचा ! उ प्रक्रवाध्निः वाद्यानकः प्रक्रवदारी वाद्यंका स्व क्ष प्रकाश वकरामः एक मानः वक मानि। एक सौठा गर्भ रामका इक स्वदेश स

संवर्तकी(किए)-प्र [वं] कारेव। संवर्षत्र-पुर्व (वंश) वह दिश्वामा दिशा मोर ते वादा मबच करमा। करेनमाः केरा देना। बात बीनाः बनाय । र्सवर्तनी~क्षा सिंगिनवा **श्रंबर्तनीय-विश् (संश्) क्रफेटने, फेरने बोरद**ा

श्रीवर्ति संवर्तिका∽लो॰ [सं] क्रम**ब्द्रो** देंशी **इते** रही (बो लगी क्लो न हो); किएटी हुई वस्ता का वेसरहे पासका क्ला। दीवदिकाः वसी । र्शवर्तित-वि [र्शः] कपेटा प्रभा। फेरा: प्रवाना इचा । भं**वर्तक, संवर्षक-**वि [मं•] बरानेबाबा। अनुपदा

बर्नेशका, बर्तिभिरतंत्रब ! संबद्धम संबर्धन-वि॰ [सं] वहातेवाचा। पु॰ वाना पासन पोक्स करनाः (शाम भारि) गानेका सार्यः अवत दीमाः प्रचन घरना ।

संदर्शनीय संवर्धनीय-वि [तं] शते, सामे वीला वाक्रमीय । संबर्दित भेवर्षित-वि [सं•] कार कार्य हुमा शर्म

बीसा द्रमा । शबसिंख-वि (छं॰) पूरी तरह हथिवारीचे कैत बन

सम्ब संबद्ध-व (रांग) दे 'संबस १

संबद्धन-इ [सं] विशंत (धृह्योंक्रे)। विश्वन मेण मंदीग । संबक्षित-वि [तं] मिन्ता मिमिता संप्रता रचे

मुक्त अन्तिनः गरिन्दिशः मिशः हमाः चुनिनः नंदर श्वर किया हुआ। र्मबस्तम-५ (सं) शुक्षी दे मारे उटलमा ।

संबद्धितत-वि [संक] रोश प्रभा । संबम्पति~की सिंो एक साथ रहनाः। र्व्यसम्बन्धः [सं॰] क्सीः भाकताः प्रापः नदावः । र्माचराज-५ [ते] एक 🕅 जैन करते रहमना । संबद्द-पु [मं॰] के वानेवाकाः साम्राप्तदे नाग माने प्रेमे रीसरेमें चण्येशको वाषुः मधिको साम विद्यानोमेंने एक । संबद्धन-पु [तं •] के बाना। पेतृष्य बर्ता। दिरामाना

धरधिस करमा १ मैंचॉ॰-नि॰ समान सरध- हमी भारा द्या में सामा संबं सरीर -इशेर 1

र्मवाच्य-पुरु [सं] बाग बरनवर सरीया ।

सङ्ख्या । न मि रुखा करना, विश्वत होता संक (नव दोना, गुँदना, संप्रदिव दोना । सक्ताई + नो संदोध धर्मित्रकी, हवा । सकुषामा । न न न कि संदोष करना । स कि । सिके बनाः संक्रवित स्टिबत करणा । सक्ची-की संगे और क्षत्री वृष्ट्यांकी चलोडे गरकी शनकारी एक महस्री । सक्चीकरां∽नि संकोची समीका। सक्ष्मीकी-की कावरंती कवातः। सक्वीडाँ०-वि एकीवटीक। सकदमा !- ल कि॰ है 'सिकपता'। सकुन•-पु 🐧 'शकुंत । शकुम । सङ्गी।-५। दुर्वोषमदा मामा, क्कृति। सी पती। चीस । सङ्ग्रमा ३ - भ कि क्रोब करना । सङ्ग्रदंद~पु (सं॰) हे 'साकुभ्ह'। सक्क-वि [सं] भगरिवारः कत्त्व कुककाः क्रकीनः वक थी परिवारका । ए लेक्काः रिक्तवारः कक शक्रकी भौरी ! −वा−वि एक श्री परिवारमें करनक। सङ्ख्या~प्र मिध्रवं का नेता। सकुसादमी−मा॰ [सं] कुउचीः बदाराही कता । सक्ती नहीं [सं•] होये महको। सकस्य~वि [मं] स्योत्र (तीसरीमे नाढवी पीडीतक-का) । पुरक्षी कुलका पर शुरका संवेषी । सक्तरा-पु॰ क्योकाने पूर्वातरके पासका पक टापू । सक्तत∼सो ६ 'सक्ततः । सक्नती-वि वे 'सक्नती'। सकृत्∽ल• [सं] यद बारा किशा समना फीरन उत्कारना सामा सर्वदा । स्त्री निष्ठा । ~ प्रज्ञ-पु॰ काका सिंद । −प्रजा~सी बंध्यात्या होरगी । −प्रस्ताः,∼प्रसक्तिका -त्यी यह बार बचा जलतेवाची यावा वह की बिछने केनक एक बच्चा करवज किया है। ~कका~की केला? −स्–विश्ली यह बार वा तत्काच वका देनेदाकी। -स्नाबी(विन्)-वि॰ सिर्फ वक वारश्नाम करमेवाला । सहरू-॥ [सं] सङ्ग्रंका समासमा रूप ।-भागामी (सिन्)-प शीक्षेत्री चार सेचिनीमेंने इसरी सेनी (किममें एक बार पुनर्करम बीने हे बाद मीक माम बी बाता है)। -आरिग्रंच-नि को एक ही शारमें कटकर शक्रम हो गया हो। ∽भाहतः नवि विस्ता भूर किलीमें म बुक्राइर परमुरा पुकाबा गवादी। ∽शति –सी मंबाबना मात्र ! ~गम-इ ययर ! -शमी-सी दद दी नार धर्मनकी दोनेनारी श्री ! -चीर-न वीर नामक पृत्त । सक्रपंदा-सी [मंग] यह प्रापीय गरी । मक्रपण-दि [4] इपनी दीवा।

सामक पृष्ठ ।
सहस्या-मी [4-] पक माणीय सवी ।
सहस्या-दि [4-] दुम्मी दोव ।
सहस्या-दि [4-] दुम्मी दोव ।
सदेव-पैद मेनेन दवारा मिन्नी मुस्सिक मिननस्था
सदेव-पैद मेनेन दवारा मिन्नी मुस्सिक सिननस्था
सदेवा-पद्म के स्वाप्त । १ हि स्देशी सेना ।
सदेवान-स्थ कि स्वाप्त सीना संद्र्यात होना ।
सदेवान-सु कि स्वाप्त स्वाप्त सीना ।
सदेवान-सु कि स्वाप्त स्वाप्त सीना ।

सकेसमाध-सा दिश इस्ट्रा चरा करना । सकेका-पु॰ यक तरहका कीहा ! सी॰ इस कारेके हरी शस्त्रवार । सकेश~वि॰ (सं॰) नाकींबाट्या शहरीका । सकैतय−वि [सं•] एको, इप्यो । पु तल दरवेताच व्यक्तिः, भूर्यः। सक्त्रेच=-पु वे 'संबोव'। सकीवना-स॰ कि॰ दे॰ 'सिकोपना । सकोतरा-प्र• दै 'चडोतरा । सकोवनाव-वर्ग हि॰ स्रोम दश्ता। सकोपितक--विकटः नाराज। सकोरना#-ध+ किं+ विकेशना । सकोश-पु क्टीरी जैद्या विद्वीशा वह गरहन, बहारा। सक्तरी~को यमध्रः। सङ्ग्रज्ञा—तु [का] क्वामराभ विश्लोग एक क्लो १~(१३) की बावसाडी -दी-बार दिनको हुकूमत (निवाब नामके शिक्षीने हमार्नेकी कुवनेसे क्षाकर स्नाममें दश रिन्धे नारहाही नावी और इस नीच राज्यमें चनतेश्र तिथा श्वकारा था) । सक्त-नि॰ [तं] महत्त्व, कीना मातका पंत्रम न्य हुआ। जहा हुआ। शीवा हुआ। संबंध रखनेवाला सारवाल नाधितः। −चमा−तु शक्तिशामी राष्ट्रीते विराजमा राष्ट्र ।-द्विद (व्),-द्वर-दि ग्रनुनामें प्रश्च ।-सूब-वि+ विसे बाकिनाईके साथ बोडाभाडा देशा बारे ! -सामैत-s वामस्यूरका सम्बरेगार ! सक्कव्य-वि॰ [र्व॰] की पीछा बान मन बनावा बार

साक्षरय-वि॰ वि॰ वो पीसा बान नत बनावा वार (बाव)। साक्षि- क की दे॰ श्रांक्षरं [मं] तिपाना विरोधी पंपर्दे सीचा बाह्यकि। सम्ब्रा- पु [सं] मृत्रे पुर बाह्य स्थित तथु (विक्रेप

सम्बन्ध (व) मुझे बुद बराब स्थान स्थान स्थान कर भोत्र । । न्यार, ज्यारक पुत्र भन्न कारे देवेन बागा। न्यामी न्या वृत्य राज्य प्राप्त कार्य। न्यामी न्या वृत्य राज्य कार्य। न्यामी न्या वृत्य राज्य कार्य। न्यामी व्याप्त क्षा व्यापत व्यापत क्षा व्यापत व्यापत व्यापत क्षा व्यापत व

सम्बद्धक-पु (सं) सम्बद्धक विश्व स्थानस्थित विशेष सम्बद्धक-विश्व (सं) बेद्या स्ट्रीय स्थानस्थित विशेष विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विषय विष्य व

सरायुन-पिक [दं] प्रकार । स्त्रातिक-पुन रंजका राजु वेपनार । स्त्रिय-वि [वि] विस्तृत्वा पुनाना। अस्तरीय । सहस्य-विक [वि] वास्काय अनुस्त्या विक्रती । सहस्य-विक [वि] क्ष्मत्रा-पुन्क, राज्यिकी । स्त्रानुष्का ।

सञ्चार-पि [सं] सम्प्रमुक्त (सरा-पुरु [संर] सरा (नसामांत्री)) परिदर्श पद वेद (सम्बद्धां-पि वे 'सरक (संवादिका-सी॰ (सं॰) सिवाहा । संयात्-पु [सं] बार्तान्यया बदसा बाद विवादा संदेश: स्वरः एडमदि स्वीइदिः ठडरावः दावाः भागसा । -- दाता(तृ)-प समापार सेवनेशका।

मंबादक-नि पु [तं] राजी दोमेवाला सदमत दीने बालाः वात करनेवाकाः वाय वजानेवाला ।

संबादम-पु [सं] राजी दोनाः वार्ताकार करनाः एक

राव दोनाः वजामा ।

संवादिका-को [सं] को हा। चीवी । संवादित-दि [सं] वालंकापमें मक्त किया हुआ। राजी किया हुआ।

संवादिता-शी॰ (सं॰) समामता तुस्नता। संवादी(दिन्)-वि [तं] वात करनेवाकाः वजाने बाकाः सहमत होनेवालाः भरमः, समाम । पु संगीतमे बह स्वर क्रिएका बादीने मेल हो और वो राग-विश्लेषमें बारीसे कम वर अन्य स्वरीसे अविक मदश्व रखता हो। संबार-पु [मं] शक्तमा छिपाना वंद करमाः स्थारण-में कंटका मंद्राबनः वाचाः संरक्षणः व्यवस्थित करणाः

हासः = रवनाः समापार । सबारण-प [सं] रीकमा दरामाः मना करमाः

डिपाना । संबारणीय-वि [सं] बक्रने क्रिपाने वोस्या विवारण करने बीग्व !

सँबारमा-स कि मुसरिक्त करना, समानाः ठीक करना, तरतीयसे रखनाः सँगाकना ।

संवारित-वि [सं] इदावा हुमा: वारितः वका, शिपाया

wer i श्रीकार्थ-वि (सं] इसने दर रक्षने वीग्वा मना करने बोम्बः इक्तने क्रियाने योग्य ।

संवासतृक-वि [सं] सहमत श्रोनेवाका शाबी डीनेवाका। संबास-५ (६) साथ वसनाः मैश्रमः मिकना अकनाः समाजा गस्ती। रहनेका स्थामा समा, क्षेत्र आदिका सार्व वनिक स्वाम ।

संबासित-(व [सं] सुरोवसे वासा हुना सुरोपित वनावा इभा श्रांबद्धक (बैसे साँस)।

मंबासी(सिन्)-वि [सं] साव रहने नसनेनाका। बसने रहनेवाका।

संवाइ-५ [सं॰] बीना के बाना; करन दवाना सखी सगानाः क्यम दनानेशकः मौदरः पण्य-स्थानः वस्पीवनः मनोरंबन भारिके काम मानेपाका प्रवचन 'पार्क स्सात भावनीमेरी एक ।

संबाहक-पु [सं] प्रकी कमानेवाका भदन दवानेवाका मीबर: के बानेवाका । वि गति अवास करनेवाका वकानेशका ।

संबाहन-प (सं) कं बाना दोना। ध्वन द्याना। (बादसीका) गमन ।

संवाहित-वि [सं] कावा प्रशाः पर्देणावा प्रमाः यकाशा इनाः विश्वभा नदन दनाना गना थी। जिसे सची करानी गमी हो। संवाही(हिन)-वि शि॰ के बावेगाता बकानेगाता।

बदन दवानेवाका । संबाह्य--वि॰ [र्स] बीमें बामे बोम्पा दिलासे, मस्य करने बोध्या मालिश करते सुद्धी समाने मीम्य ।

संविक्त−नि [लं•] छोंन्कर जरूप किया दशाः मनेद किया प्रभा । संवित्स-वि [सं] करा बुधाः प्रतिन्न, स्वाकुक, शुक्या

इवर-सवर वदर समाता इमा । — मानस – वि. इतः मधिर । संविज-वि॰ सि॰] बन्छी जानकारी रक्षमेवाला, अभिष्ठ ।

मंविज्ञात-वि [सं•] सर्वहात सर्वसम्मत । संविज्ञान-प [सं] सम्बद्ध याना स्वीकृति सहमति।

~भत−वि वी संबंधित कात को नवा की। श्रीवितिकाफम⊶⊈ [सं] सेव (१) ।

संवित-की [तं] दे 'तंदि'। -पन्न-प संविपन प्रकदनामा ।

संविक्ति−को [सं] बुक्ति, प्रका चैतनाः प्रतिपक्तिः मतैक्य सहमति। रन्ति । मंबिद-दि (d) येतन सद्यान । प्र करार ठदरान ।

संविद्या – सा [सं] इक्टार ठ्वरावा माँग वा गाँजेका पीवा । - मंबरी-की॰ गाँकेश ५७ ।

मंबिदात-वि (रा॰) बाननेवाला, समग्रदारः सामग्रद

पूर्व । मंबिवित-वि [सं] बाना समझा हमा। स्वीकार किया हुना, माना हुभा। प्रसिद्धः हुँड्कर निकाण हुनाः महैनव से निश्चित किया अना। उपरेश या परामर्श्न दिया हजा: करार किया हुआ।

संविद्य−को [सं•] प्रशा भेतनाः अनुमृतिः गोप सानः कराच्य ब्यराया स्रीष्ट्रति। अथाः सुद्धः कार्यः श्रवको क्षकार। महरीका संवेदश्रम्या माम संबाध संवेका क्षेत्रणः सहामुमुक्तिः वार्वाकाषः भाँगः समाधिः संदेतस्क भिक्नरबाबः पोबनाः इर्चात हानः प्राप्तिः संपत्ति । ब्रोक्का एक सिर्कात चैतन्यवाद । -वाद-५

—क्यतिकस∽ प्रविद्याधनशीतेका पाकन न दोना। संविधा-की [सं] योजमाः प्रमंत्र तैवारीः बोबल पापनका चंग ।

संविद्याता(ल)−व [सं] प्रयंत्रका सहा।

संविधान-पु चि] व्यवस्था प्रवंद आयोजना संवादनाः रथमाः योगनाः वरीकाः कथा-वस्त्रमें परमार्जेकी स्थवस्था था विचान करमा । संविधासक-तु [सं०] कार्य करतेको विशेष विकिः बौबक-

वापनको विश्वेत विविश्वका नरतुको । धटलालीका विवासः नारक्षी कथानस्तुः कोर्र विवित्र कार्यः समापारण बरमा ।

संविधि-सी [सं॰] स्वश्रमा हैशारी।

संविधीय-वि [सं•] क्रिसको व्यवस्था को जादा करणीया प्रचंय मोस्य ।

संविभक्त-नि [सं] नौरा पूत्रकृ किया हुआ। दिया हुआ। सरीक । संविभक्ता(पत्)-वि [तं] बूतरेके साथ दिस्सा वैद्यने-

WIND I

3494 मदाती! - सी दे 'सन्ती । सक्तर-पु॰ [सं॰] एक राक्ष्स । मसाच, सन्तरतः - वि॰ गुरुप्तः भगोरीकी तरह पर्प करनेवाधाः छाइसर्व । सम्बर्धा-पु रै 'क्षिप्रस्म'। समारस~प मनहर । सपरा-वि पाराः निसरातः बस्या । पु कवी रहोई । सक्तरी-की कदी रहीई (दाल-भात भारि)। सप्रसा-पुदे 'छएस । सक्सावनां - पु बारामकुर्धीः क्ष्याः पाक्की । सका(कि)-द [सं] साबी, संगी। मित्र सहबर, नह बीगी। मायकका सहबर (मा)। साह । -(कि)पूर्व- वो पहले मित्र वा! - साच-प् मेत्रो पनिष्ठता। -विमद्र-५० बायसदा सहाई। सखा सधावत∽सी [थ] सत्ती दोना वशरता दान-सोकता। स्विता∽ची स्वित्व∽दु[धं]मैशी, दोरती। सस्तिष्ठ−वि [सं] मैत्रीवृर्णः। सक्ती−को [मं]सहबरों सहेको। नाविद्यस्थे सहेको (भा) एक ग्रंद । —भाष-पु अपनेको उपास्य देवको पत्नी मानमेका माद । -श्रीप्रदाय-पु वैन्यवांका यक संप्रदान विस्तर्में मध्य अपनेको उपारंग देवकी की मानना है। सन्त्री∼वि [स] दाता, दानग्रीङ खदार । सल्लामा-पुदे चान्। सञ्जन-प्रदे 'स्वाने'। ससीछ-पुनिश्रेण्य प्राचीन स्थान। सद्भव-वि [म] क्या कडोरा का कठिया वीका तेब (सक्त पूर); मारी (सक्त मुदिसक); सक्ती करने वाका कठारहरूव ! -ककासी-जी वदववानी, शहर र्दाखे बचन बहुमा ! -शीर-नि सामान्य वीवपर मी भवी समा देनेवाका। बाकिस । नगीरी-सी क्रजेरता सक्तो ।−घडी∽को कड श्रुठिमाईका काछ ।∽श्रवाव~ वि बद्धमारी रदवरात । **−हामीन~सी** सरिक्ड रहीफ, क्याफिमेवाली तरह !—आम-वि निर्देव। जिसकी बान महिक्क्ष निक्का (का) वेहवाईसे बीनेवाला। -तिस-वि कठीरहर्य निर्वय ।~र्यद्या-वि कीमी । ~वाजू~वि वच्यान् । ~सिक्राअ∽वि क्रोपी। —मुद्दिकल—सी भारा चढिनाई। वि विदिधित। -खगाम-वि सहैंबीर सरकश (वीवा)। -सस्त-पु पुरा-भका, शिक्की, मर्लना (क्षत्रका सुकता) ।

सप्तती-को व कापमः क्रवेरताः चताः वश्च कठिनार्वः वर्षकृष्ठ वंगीः सुरम कठोर न्यवदार । मुण् सम्रितयाँ बढानाः सप्रती बढाना-लुक्त नरहाश्त करनाः मुसीवत संबना । —से~कड बाठिनाईमे (सक्तीरी विभ ग्रभारमा) -से पेक्ष व्यामा-क्यारै करमा कठोर. निर्देषहाका व्यवहार करना । समय-५ [मं॰] समापना मेना बोस्ता श्रीवर्मा देवसको स्ता भानदर चपासना बर्गेका मान (वैध्वव): समा-नवाः भित्रः। – विसर्जन – तु भैनी शंगः।

सब्यता-की मैत्री दोस्ती (बसाप) । सर्गच-वि॰ [सं॰] गेबस्का सम्बद्धारः उसा गेबसाः भिमानी । पु॰ द्वादिः संयंभी । सय-'साग'दा समासगत अपु रूप । -पहती -पहिती, --पैटी-स्री साथ मिकाबर रकायो हुई दारु !~भत्ता÷ प॰ साग शिकाफर पकाना तथा मात ! सग−पु [का॰] कुचा। −क्रावा−पु॰ क्रचेका पद्या (गाडी)। -वधा-प्रश् विद्याः -वान-प्र क्रचेदा रयबाठा । -बामी-ची॰ इचेद्धे रक्षमधी । -(ते)-वाज्ञारी~प समारिस क्रचा । सगरी-को होस समार । सराण-वि [र्स•] दक वा छेनासे बुक्त। पु हिना **छेर शासका पक्ष गय विसमें क्षेत्र क्षेत्रके बाद एक ग्र**त याचा होती है। सगतां सगती-सी । एडि समर्थ। सगन•-पु• सगन (पियक); सकुम । सगमीसी-की एकुन विभारमा। सगपम-१ रे॰ छगापम । सगबग - वि बार्श तर, सराक्षेत्र द्रविता मीत । ब बस्तीरे । सगवगवा = - व कि शामन श्रीता वर्ष्य श्रीमा । सगवगाना-न कि सक्तमकाना पनवा बानाः दिवना-बुक्नाः चर श्रीमा सरावोर श्रोना ! सगमक्ता -पु॰ साग मिकाकर वदावा डुमा मात । सगर-वि [र्स+] विवशुक्त । यु पक्त वर्षत् ; एक सर्थ-वंद्या राजा जिनके साठ इजार पुत्र थे (क्या जाता है दि वे सभी करके असमेव बफ्के बोक्टी दकाश्चमें पाताक पर्दे वे वहाँ वे कपिलपर बोरीका लोकन छगाने है कारण व्यवे कोचानकमें भरम हो गने और कई पीतियोंके बाद मगीरवने गंगका प्रवाद नदी कह्यर दमका स्कार क्षिया)। सगरा-वि• स्व समस्य । यु वाकामा सीक । सगर्भ-वि [मं•] स्था सरीदर (मार्र): जिसके क्से नग्री सुकेन दीं (ग्रीशा)। प्रस्तामारी। सरामाँ – सी सि । गर्मनदी सी सगी बहुन । सराम्प्रै∽वि सिंोसदोदर । प्रसोदर मार्थ।

सरास•-वि॰ सक्क सव : सगरुगी।-श्री सगापम वक्तापन दिखानाः सुधा-नद आपक्रमी। सगबदी-श्री व सगीती । सराबारगी-पु गाँवडे शक्ष्यी दक्षते संबद्ध भूमि । सन्। -वि एक भी बाबसे उत्पन्न सहोदरा निकर संबंधी। ~पश~पु आत्मीवतापूर्यं संदंव सगा दोनेका माव I समाई-सी॰ मैंयनी विवादका उदरावा नाता रिक्ता

विवया का परित्वकाका कक तरहका विवाह था विवाह

धेसा संबंध । सर्गावी –कौ॰ एक धरवदा मेक्टा; कर्नियान । समारव~सी समापम।

सर्गर-वि [स] डीटाः कमत्रप्र। अत्रगा। --सिम-वि छोटी उनका। ~(रो) कशीर-ए० होरे-वरे।

बराने बोम्ब ।

संविभवन~संशयासा संविभवन-प्र सिंग्री गाँदा हिरसा हेना। हुना, बतावा हुआ । संविभाग-५० [मुं] शेंट, बैंटवाराः हिस्सा । संवेध-वि [र्स] समझमे बीम्बा अञ्चलसम्ब अनुसा सविमागी(गिन्)-पु॰ (सं॰) साहौदारः माग हेमेनाका । करने बोम्बा बतामे, प्रस्त सत्मे दोम्ब । प्र बरिरेग्र संविमास्य - वि॰ [सं] समझ बाने योग्व । संगमा एक तीर्थ । संविमार -पु (से) गोवन हुत, नह संवर्ग जिसमें नहुत स्विश-पु॰ (छ॰) मिक्ट कानाः मनेषाः बसमः स्टब्स रक्षराव हो। धीनाः स्वमः धननागारः माधन करती बादैः वेदुन संविधा-साः [सं] मतिविधाः अतीसः। रक रतिरंग। संविष्ट-वि [सं] पहुँचा, प्रवेश किया हुआ। हेटा हुआ, संबेधक-प्र• [सं] बमा करने बढोरमे व्यक्ति अरे-धीया हमा; नेढा हमा; बकाच्छादित । बाका (सामाम बादि)। धोनैमें सहादक बरनेवाता। संविद्धित-वि॰ (सं) जिसको न्यवस्था या देश माछ को स्विश्य-प (र्ट+) वैद्याः बेटवाः सोनाः शस्या प्रोप्त गवी हो। करनाः रति संगोप । वि॰ हेटमेर्वे प्रश्च बरनेवामा । संबीधज-प्र सि ने पारी तरह देखनाः तहाप्र करणाः संवेशी(शिष्)-वि॰ [र्स॰] संबंध, सोबेशहा । भौरसे देखना । संबेदव~बि॰ [सं॰] बैठने, हेटने बोम्बः प्रवेश बीन । संबीत-नि [सं] दक्षा हमा। क्षिपावा हमा। बदाएका संबेद्ध∽य सिं∘ि 'से आवत बोला आप्कारन, रेन्ट ! विद्या सर्वेहता क्षत्र चुन्तः परिनेतिदा स्वाः नवहना क्षता र्स्बिप्टन-प्र (सं०) बक्ताः क्रफेलाः धरवाः क्लेलेस मनदेसा दिया इमाः क्येता इसाः मिमतः। प॰ दस्यः क्ष्मचा, बेस्स । बमेका श्रेत स्वया । र्शम्यश्रहरण-प (र्रः) कारशारमें हरही करना । संबीधी(विच)-वि हि] चप्रीतवारी । र्सव्यवहार-प्र. (सं॰) नारसका व्यवहार। गाँपर व्यापार। कारवार। कर्तन्या संपूर्व बायका प्रकेष सक्क-वि [सं•] छोता हवा: खावा, सर्व किया हवा: मध किया हुना । श्रतेमाना प्रचलित श्रन्य । संबद्ध-वि सि देवा हमा क्षिपा हमा। शक्षा बंदा विरा र्सव्याध-पु (सं•) 🗗 पुरा वर्गरी संब्दान-पु॰ (रं॰) क्षत्रा क्षत्रीय एका साम्बार हुमा; रहितः " से बुक्तः अध्य रक्षा बुमाः दवादा हुमाः स्था भरपटा गेर दिया हुआ। को तटस्क, अकन ही पना काशरम है शस्त्राथ−<u>प</u> (तं] वका मीदना। क्षीः करम दिना इना । प्र**ाप्तति ना शास्त्रामा क्या** संबाध-इ (सं•) सपूर संद। रक्ता एक प्रकार। एक तरहका नेतः नक्ष्मदेन । लक्कोहल वि निसे कृष्य हो। − संज्ञ−वि को अपनी बीजना संबंधा-को [सं] प्रसंस खिता तरीक। ग्रस रचता हो । पुरस्तनना । —संवार्थे – विकितने मंद्रस-वि (सं॰) शास्त्रास्त्रा ववनस्त्र ! संसप्तक-पु (तं॰) अंतवस द्वय स्ते जीर दूनाँची बीभ्य पाठकी प्रकट स करसेशका है याननेते रीचनेको सन्त्र सामेनाचा नोसा हुना हुन संबृति~सी [मं•] वंद करना ब्लना, विजाना शुप्त वीकाः सहवीकाः दिलीकी मारनेकी प्रदर्व सावेतना रक्षताः होतः वाकाः ग्रह्म कवित्राय अमिनंदि । संबुत्त-वि [सं] पाल बावा हुआ; परित, बी हुवा हो; **बदर्बक्दारी** । र्मद्यदन्तु [र्त्तः] समग्रातः वचनः दरोगः, क्रि को पूर्व हमा हो (शतिकाल मादि)। एकव किया हजा राम्बोह्दा पव, बोता हुनाः दक्ष हुनाः से हुक्र । दु हबामाः प्रसंसा । व्यंत्रस्थ्य - पु॰ [र्स॰] व्यक्ति या सन्द सरवह सरवार वांचा **पर्या एक नाम ।** संबृत्ति-को [र्:•] दोना वटित दोनाः पृतिः विका करबाः चुकारमाः इपामा देशा । सौराम-पु [नं] पूरो शांतिः महाहि राज्ञीस व समिमकित अधिकार व संबुद्ध-दि [सं] पूरा बढ़ा हुआ। क्यति करता हुआ। रहना । संशासन-९ [सं] रिवर करना। मांव करना। नर्व-रूर मी बरधर बढ़ा, जेंबा जैया ही क्या ही ह संबुद्धि-ली [र्थ•] नाती सम्भुत्रका शकि । करनाः निवृत्त करमाः श्रांतिकारक भीवन । संसय-पु [सं] सोमे था भाराम करने है हिए हैंदबन संबेश-पु [रां॰] तीत्र क्रचेत्रता श्रीमा भवा तीत्र वेगा जनियान दिनका छरिका प्रावस्त संबद्ध कविकास स्था-होजताः जीसः बचता प्रवेदता भीतताः जातरताः वेथेन बरमेगकी चीहा । स्विज्ञन-त [(10] स्वशं व्यक्तिन करणा दरामा सहमा देनाः वचेत्रित शुन्द करमा । संबोद्र−प [मं•] थोथ माना जन्मति । संबद्ध-पु संबद्धा-नी [सं॰] बानः अनुभृति। शंदिग्नावरवार्वे श्री संदिशकुक र बतामा सुवित करमा; प्रकट करमा । संबेदनीय-दि [र्ग] अनुगद भागे वोष्पा दीव, बान

क्या । -कर-वि कतरमाकः -गत-विश्वादि वता द्वारा - च्छेन्-प्रश्निदिन्तिवारम । न्ध्नेरी (विक)-वि सरेट दूर करतेशना -सम-1 न्वावद्यो भौरीत साविवीमेंने वद्य । -स्व-दिश्वी संबाषाक्षेप-पु [सं•] सरिवका निवारणा दक काम्या संश्वासमञ्ज्ञाति [मं•] श्रीरपूर्व क्रिक्रिया मंबेदिश-वि [6] अमुचन किया हुमा: नीन कराना | संश्वासमा(ध्यम्)-विन, इ [8] प्रकी: अधिनारी

श्चगुण−वि• [सं•] स्वा<u>त्रकः गुचवान्, सर्गुवसी</u>पकः सचारवा +- स कि फैकामा, संवारित करका । भीतिकः साहित्यिक ग्रजेंसे अक्त (रचना)। प्र सत्त्व, संचाठ-वि [र्ग•] बहुत संदर । रजा तमसे बन्द ब्रह्म ईश्वरके सगुन कपकी उपासना सचावर्श-की॰ शबार्र । सर्वित-वि॰ [सं॰] निहासक, विदेश। करनेवाका संप्रदान विशेष । सग्बी(बिन्)-वि (ते॰) सर्गुशीते मुक्त, वार्मिक । सचि-प्र॰ सि] मिना मैची, वनिप्रता ! भी अंद्रनदी। सगुजीपासना-नी [सं] सम्बद्ध महाश्री उपासना । सचिक्रण−वि सि•ीवस्त विस्ता। सचित्रन-विदेशिकारी मरान−९ सक्तावि ,प०दे० सग्राजी सगुनामा-भ॰ कि॰ गुकुन निवारना छक्कन बतकाना । सचित-विश् सि विद्यात चेतनस्यस्य । सग्निवा-प्र• शतुनका विचार करनेवाला । सचिक-प सिंगी विकत्र सत्त्व । संविध-वि [मं•] दुविसाम् , प्रधाविदिहा सारक्या मगुनीती-सी शङ्कम विचारमे निकासनेकी किया । सग्रह-वि॰ [सं॰] सपरिवार, वर-ग्रहरशीवाका । जिसका ध्यान किसी एक विषयपर हो। सगोव-वि+, प्र• है 'सगोत्र'। सचित्र-वि [सं] विशेषे वक्ता विविद्य। सगोती-वि पह दी गोतका। पुरु व्यक्षी नीतके कोग सन्तितक-वि॰ सि । क्रिय-वशः श्रीन-रहि । सारेंग्रे । सचिव-प (सं॰) साबी, मिना मंत्री, समास्य वर्नरा सरोध−ति [सं] रक्दो गोत्रका । पु•यद्व दी गोत्रका काका कररा । व्यक्ति सर्वेष विश्वतान आदि साथ करनेवाका स्वतिः सचिवस्य - प्र [सं•] मेत्रिल, दशासा सचिवता-सी एक ही कुक्का स्मक्तिः हरका संवेशीः वेस्त, बानवान । सचिवासय-पु (सं॰) एक छर्दका काम जैस सगोनीमर−पु धायीन, साथ इस । क्रिमर्च । सगौती-सी॰ सानेका गोरत कडिया। सची-बी॰ [तं॰] हे॰ 'छयो ; अगर ! --मंदन -धुने-सन्धि सन्धिति की [मं] क्ष शाव मीवन करनाः प्रशासनाः चैतन्यदेव । शहभीकर । सञ्च=-त्र= सञ्च जार्महा प्रसद्धता ! सप्रइ∽िं सचेत-दि चेतनादिशिक्ष चन्द्रसारा सम्बन्ध स्टब्रं [र्स•] पश्चिमानीसे पूर्व (नदी); प्रदादिसे सचेतम-दि॰ [सं] चेतनातुका समहदार, म्हाना प्रस्तः प्रस्त (चंद्रमा) । संचत-वि [नं•] वता गतिना ठीस मेवाच्छ्य । शाववास (दुसदाव प्राची । सचेता(सस्)-वि [तं] समहदास वक्तत ! सधनवा−स्रो• [सं] निविद्यता। सर्चद्रक-वि [सं•] बिसदर बोहमा बैस हरे ही। मचेती-ची सदर्शता समगती। सचेळ सचेळ-दि+ [सं+] बसान्धादित बनाइतः। सच-५ सवी बाउ। (१ सरव, व्योदी त्वी (क्शी सचेश-वि [र्स] थेशशीला चेशा क्रोनेशना 🗗 देखी सुनी बात्); [मं॰] संबद्धा द्वानसम्बाद करनेवामा । -मच-म [हि] बराहः, बनार्वमे, निस्त्रीह । व्यामका पेश । संबंधित संबंधिय-दि [त] अपने भीका हरी सच्चित्र-दि [र्र] भाश्चर्य का हमा, निरिमतः बारी । पु बच्छा बायरमा सराबारिबीका रूप । भवसे व्यपता हुआ ? सञ्चर्या-सी [र्ग॰] बच्चम नावरम, सरावार। सचळ~नि [से] बहिबोनाकाः मंदकश्रकः सरीन्य । सचा-वि सब रोकनेराकाः रंजानशास्त्र रजासे रिहरी सचकी(फिन्)-५ [सं] शार्यः। डोक ! - ह्रॅ-सी॰ -पश-पु॰ सरवता र्यान्यसी ! सचन-त [सं] मेबा बहुक । वि वी छहावता सेवा -इट-स्रो समापन सपार (स॰) ! इरमेक्षे स्वतः रहे । सचाक−त [र्स] अश्रवका पना। सचना॰-ए॰ कि पूरा करना~ नबु कुंड बीनित सीं सबार-व [सं] जन्म गुप्तवरः मंब्रह्मा रहता भरे विल-सर्वमादि किया छवी -शमबंदिकाः समामाः सकता-ची॰ [सं] एकरी। समाकरना वधेरमा । स कि मसक दीना। सचा-त [सं] सफोर करभरेगा। व वि सविकन•∽दि दै॰ 'सचिवस्य । सचित्-पु [सं] त्रस की तत् और विग्ने हुन है। यसम्बद्धाः वंगमः। सचिवार्णव्-प्र+ [सं] सन् विष्, जार्गरराज्य प्रमा सचरभाग-म हि पीननाः प्रचलित होताः ग्रहिन संविज्याय-वि [शं॰] सम् और चैनम्बरूप स्टब्स् होसः। प्रनेष बहना ! सचराचर-वि [मं•] विश्वमें स्थावर बंधम श्रमी हो। पैतरवरे गुक्त १ संच्यंद्र4-वि दे संच्यंद्र'। प्र विषा सचस्र-नि [र्न] परुनेको शक्तिने स्ट जीनमा प राष्ठ्रत#-वि॰ वाथत ३ सच्चाय-नि [र्न॰] शासन्तरः शुंरद रंगेंनामा वसद जेगम क्यार्थे । सबसता−की [मं] गनिसी≉ता। बार; एक ही रंतका । सरप्राध्य-त [सं] बच्या विद्यांत्र देव ! सचस सम्बद-पुर्शीव(तस्का सन्ताई-सी सायनार ईमामदारीर बारहविकता । सरिक्रम-नि [नं•] श्रेरशस स्रोप ! सम्जी॰-पु॰ सी दै॰ शकी है समान-पुत्राज्ञ १६४।

कावया-भागमावती

188 खानका स्थान, सार, चरनी, उनके भागकी थास उनके कानेसे क्या चारा; रही, निकम्मी बीम क्वा । वि निकम्मा, श्रेरानः मुनानका गेटा । -की मर्ती-रदी भोगोका दर । आक्या-की० सि ो मामः विवरणः व्यावसाः नम्र । भावपात-वि [तं] कहा हुमा-समावा हुमा; प्रसिद्ध । प्र॰ किसाफ्ट । बारमाता(त)-पु• [तं] कहने वतानेवालाः छिक्तः। बाह्याति -सी० [सं०] दश्ना, वतामा- मामा मसिदि । भारुपाम-पु० [तं] शहना, नर्जनः वृत्तोतः कथा कहानीः पौराकिक कथा। मेरक वर्गः महाकाव्यका सर्गे । बाएपानक-प्र• [तं] बायवानः छोरा बास्यानः कवासक है शाक्यामकी−सी सिं•ीथ⊊ क्रुः। भावसामक्र-ति पु॰ [सं] का्र्ने, श्वानेशाकाः स्टेस वादक । बाक्यामिका-सी॰ [र्च] सिक्छिडेबार फदानी या इर्चांकः यह बारत्यान किएमैं पात्र भी अपना चरित्र अपने मुँदसे कुछ-कुछ स्वतं द । भारुयेय-वि सि विश्वते रहान योग्य। बार्गता(त)-वि [सं०] आलेओ इच्छा करनवाला । भाग<u>त</u>—वि [सं•] भानेवाकाः बाहरसं भानेवालाः भटका इथा; भारतिमद्ध । पु अञ्चलको सेह्माल व्यविधि ।। **कारांतुक**∼वि• [सं] विना बुकाये आनेवाका अन्यानक बाने या शतिवालाः अजननीः प्रश्लिप्तः मूका मन्द्राः (जान बर्)। शास्त्रिस्क । पु० क्षेप्क अञ्चलको मतिब । ~ज्वर-पु बीट, भव बादिसे द्वानेवाका क्वर । - व्याखि-सी किसी नीमारीयं वीच आकारिमक हेतुस होनेवाना गीण रीग । आग−4ि [मं•] अन्तरिस्का स्रो हिं। अधिनः क्ष्ममारिकः बार्त्यस्य प्रेमः बरुकः टाहाः संतापः संतर्भाता । पु॰ कपका भगीरा। इरसेकी मोक्के पास बना हुआ छहा। विश्व बहुदा हुआ। गरम (हा) बहुदुरू । अञ्चल वागे 1 स॰ ~स्टाना-शगदा व्यामाः दशे नेटनाकी जगाना ! —का प्रससा—कोषी विश्वधर्मा । —का बाग—धमार का बैगोठाः भाष्ट्यश्याः। 🗝 सोख-व्हुत महैगाः। —पामा संगार हगमा~बैछा करना वैछा गरमा । -माइमा-पदमदमे भाग पेश करना ! - दिखामा-भाग क्यानाः तौपमें बत्ती देला । –हेना–दाइक्में शरनाः नावस्थानीमें भाग लगामाः जलानाः नष्ट करणाः होपमें वर्ता देमा । -घोना-अंगारेयरही राख झाइमा । --पर भाग द्वारमा~जरेदो अक्षाता । ⊷पर पानी दालमा~ मुख्यो यात स्ट्ना अइनेवालीको समझाना नुभामा । -पर सोरना-तहपना वरीन हीनाः हैप्या करना । -पानीका केर-महत्र वंर । -क्ट्रॅंक्ना-टॉन मारमा ।

"र्यमा-श्रद करमा । -कुमका सेर-सदत वैर ।

- वर्षा सभूका दोना~गुरतने छात्र दोना अति हरू

दोना । - बरमना-धस्त गरमी परना या हि चहना

गौर-मोटियोंको दौछार दोना । -बरस्माना-दुरननपर

गे गेतियाँको वर्षा करना । - बुझा छेमा- वसर मिका-

हता। -बोमा-धरपात श्वरा हरनाः शगश स्नाना । -- अ**इकाल:-- इक**न्छ मपाना; ड्यार्ट बढाना; याद्य काना । –भी म छसामा–ग्रन्छ समस्ता । –मूनना– अति करना। −में कृष्मा-अपने अपर विपत्ति हेना। −में घी छोड़मा या डाइआ न्होन महकानाः झगहा काना । -में झेंकिमा-(किसोको) माफ्ट, यहरे, श्चतिल्में ब्रेड देसा। −से पानी बाबना∽कोव र्यात करमा श्वनहां मिशना । - स्वनाना-कोष मक्क उठनाः ग्रस्टेस बाब हो बागा; बाहरे घठने बगना: दिसी दस्तु का बहुत महींगा हो थाना नह होना।-सगाकर तमाशा हेक्सना-भगका कहा करके एसमें वार्तर केना । -स्रमा कर पाणीको दौबना-पर्च शगका कगाकर फिर उसकी श्रांत करनेका यह करना। -समाना-प्रोप वा र्रभ्यां मक्कानाः चुगको श्वामाः माध करना । 🗝 गोपर कुर्भौ खोदना-पहछेसे करनेके कामको पेन बक्तपर करने च्छमा । —क्षमेपर पामी कडाँ—ग्रत्सेम भुरीवत नहीं रवती । जोते भागा-करुरे भाँव कीर बाना । जसे पानी होना-क्रीप करनेके बाद छांत होना। -होना-क्रक माग्र(स)~द्र [सं०] भपराच, दोवा पापा दंट । कागका-पु क्वार कारिकी वह बाक विसक्ते दाने मर गये 🐮 । भागत−वि [र्स•] भाषा हुना, परुँषा हुमा। परिता प्राप्तः बाहरसे काया हुआ (माक)। पु॰ क्षामामन अविधि। परना ।~परिका −भर्तका ~सी वह नाविका जिसका यति परदेशसे कीय हो।-स्वागत-पु० व्यतिनि, निमंत्रितः का स्वागत-सन्दार, आव-भगतः। कागदि~सो [मं॰] आगमन प्राप्ति वाफा माला; मृह बरसर । भाग**-पीछ#**-५ शागा-पेछा । आगम~पु (रं•) वाना अवार्रः समागमा प्राप्ति जन्म, करपत्ति वृद्धिः संबद (बलायम) आमदमीः प्रवादः, पाराः वान बेदा सामा दर्जना क्षेत्रसान्ता न्यायमे मान इप चार प्रमाचींमेंसे एक, सम्द-प्रमाण सिक्रांता साहिएक। खब्दशायममें दिशी वर्षेदी दृष्टिः हीनहारः भानेनाका समयः वयद्भगः। वि॰ जागामीः। -आमी-वि॰ [हि॰] होनहार-मदिध्यकी भूमसनेवाका । -ज्ञानी(जिन)-वि दोनदार समझनेपाला ।- निरुपेश-दि साक्षिपप्रकी अपेक्षा न रहासेराका। -सीत-दि अभीतः। -रहित-नि जिसके पास साक्षिपण म हो। शालाँसि रहित। ─वकः(कः)─ि , यु सदिप्य वत्रवासेवासः।—गृद्ध~ विष् यामवृद्धा संस्थायार्थका वक विभेवन । ~क्षारक्रमी-खी अतिबिकै आसेपर मेंट की जानवाडी पूरी !-शस्त-रमे रिनाब प्रथा। ∽सोची-वि दिं विजागेठी बान सोयनेवाला आवश्य-विदेश मु॰ -फरना-उपाम बौबना ।-लनामा-दीमदार्की स्त्रना देना । -बाँधना मानेवामी वातका निश्चव बरमा । **बागमन−पु॰** [मै] भानाः श्रीटमाः प्राप्तिः दापि । आगमापाया(यिन)-वि [वं]क्रम मरप-शीक, अनित्य । भागमावर्ता-सी॰ [मं] वृधिदारी नामद पीपा।

भागमित-भाषद्वा भागमित-वि॰ [सं॰] भपीन, पठित । भागमी(मिन)-वि॰ पु मिठी क्योतिको सामदिक भाननेवासाः शास्त्रपः सानेवानाः भावा । भागर-पु॰ भाकर, जान देश खनानाः परा छप्परा ममक बमानेका गइदा: • अगरी, ब्योंका सि] अमा-बास्या । दि० दहरूर, अविकः कुश्रुक, पतुर । आगरी-प• नमद बनानेबाका । आगफ•-पु• सग्ही ∤दि सगका। स॰ आसं प्रापने। साराखा+~दि० अगहा । आगसित−वि० मि•ो क्रिप्र, स्टाम I **आरावन=**-प दे॰ 'आयमन' । भागकी-सो॰ (सं॰) सगरस्यको दिला, दक्षिण । बागस्त्र-वि सि॰] चयराव-संबंधीः दक्षिणेः अगस्त्व बर्लमे एत्पन्न । प० अगस्त्यके बंदाका सम गोषके श्यक्ति । आगोल-प्र [सं•] अदियि महमान ध शासा−प वस्तुरा भागनी भोरका माना खेनरपै आश्चिम आरोबा बना वा एक्स समासद आयेका सक्त बरावाराः सनाम्य अप भागा जिनेदियः चेहराः माथा नकहीः यदिन्यः भागम ।-पीसा~प्र भागे-पीछे दोनंदाको दानें (दार्ददा) परिणाम, महीबा। दियम परीपक्षा देशका अभवानिकता माग विग्नेक्ट' गोपनीय अंग । सुरू -काटमा-दिन्ध अपञ्चल-सारक व्यक्ति या प्राणीका आगरी निवड जाता । -तारा। सेमा-भारर सत्यार करणः। -भारी होमा-गर्मनदी होता । --सारम(-शबक होना । --शेकना-इसका शेवला: विसी परे कामधे संमादनाः कार वरला: धापक दोजा । —क्षेत्रर≔दमका रीवना । —सँमासना— इषमनका इसका शकता गुर्वे दिवको हत्रमा । भारा-पर तिर्शे वहा भार्यः मानिककान्यका रहनेवाला। शासाम् –पु (फा॰) शा(म शुरू, बढान । भागाता(४)-वि॰ [में] गानदे हारा शाम करनेवासा । शासाध~वि॰ (सं] बहुत सहरा, अनाहः हुप्पाप्त । सागान-पु॰ प्रमंगा दाङ कृषांता [d] गाम*र* दारा प्राप्त करना । भागामि-नि वे अगामी । भागामिक-वि [मंग] भविष्यत् काकश नंदंत्र रणनेवाकाः भानेवाला । **धारामी(मिन्)~दि [मं+] आनेवाळाः मावी ।** भागाम्भ-वि॰ (वे॰) अनिवासाः भागी । भागार-प: [म] पर रशमः भागर (अन्यायार); ग्रदासा । –शीधिका−सी क्षिप्रकी । –प्रस–प् मकानसे निवयनेवाला पुत्रों एक पीपा । भागाह-विश्वा विसम्बद्धाः स्वर् स्वनवाना अनिहः। • प• होनहार, भविद्रम्य । भागादी-मा (फा॰) बातकारी, गुपना ह भागि = न्मी भागा - वर्त - पुरु पद तरहवा मेव । भागिसः, भागिनाः-(४० भगसः)। भागी*-सौ देश साप^र ह आग्रु-स्पे [स्•] इक्शर वयन, प्रतिशा । व वर कार्य । पुरु परिचाम ।

भारी-म सामनेः लामनेश भीर बुछ बूरका करने शीहे.

वार्टी अधिका सार्थरा गीड्रोर्ड । -आरो-स॰ समग्रा-कुछ दिन बादा व्याने जसकर । -पीछे-स॰ एक प्राप्त शान पका मेंबनर और पीठ पीटे: सम्पन्तिक क्यमें। पान-पान बीहा बागे या पीछे; बंध स्टानदायमें (उसके अधानीते कीर्र नहीं हैं)। अ॰ -आना-सामना करनाः क्रमेश कन मिलना परित होना । —हरमा-सामने रसना द्वारी करमाः अगुभा बमामा बहरे भारिके सामने बहरे देशा. आहं केमा ! -का ठठा-बुडम !-की डालेह-हहत्रेरा यह पेंच। -को-भागते भाषरा। -हालना-धामरे किए सामन रदाना । - डोकमा - अमे फिल्मा अपसेता सामन दीना । -देना-सामने रचना । -दीह वीचे चौद्र-भागे काम करते जाना भीर पीछेका संपाल म रचना । −धरमाः−रसमा−हात्रिर करमाः भेंद्र करमाः बादर्भ बनाना । - विकल्पा-साविधी, प्रतिस्वरिधीमे कार्गे कर जाना १ - खना - भगवामी करवा, साग जासर मिलना । -से-पहलेसेः यहिष्यमेः सामनम । नर समा-सायन दरना । -होहर सेना-समे ४५४ सारत करना । -होना-भग्नर होना यह बाना सामना इरमाः सरहा इरनाः स्वानन इरमा । आसीन≠∽१ भागपर। भाग्निक-वि [1] अबि वा बद्याविते मंदंप रसनेवाता। भाग्नीप्र-पु॰ (मं॰) भग्नीधः भग्नीधस्य क्रमेयः वद्यति बजामेका स्थान । वि भारतीशन्तियो । **आफोय−वि** [मं•] कमिन-संबंधाः जमिनको प्रविद्या प्रक्रि से जरका अध्ययमा अभ्यतीयमा अध्य जैसा (**ग**ीग) [‡] पुरु स्वतः अवस्यः द्विपित्रशाहे वागुद्धाः सदः प्राचीन समः पदा अधीन कुलकः अभिनको आपित हाने आहि। कुर्रिको नदाया साना रक्ता सारा। बाहदा बाग्नेवासः वद बीहा बिमुके कारमेमे जनम हो (बिह मार्टि): प्रशासक्ती परेत । -प्रशास-प अस्तिपराच । आसीपाद्य-१ (ग्रे॰) कथियंत्रित नाम विश्वन भाग निष्के तीप-वंदक आदि । आम्बेयी-स्वे [मं•] अस्तिकते स्वाहाः पर्वन्यक्षामे दिशाः प्रतिकाः अग्नि उरीत करनेवाना भीवत् । आप्रयम-पु॰ (मं॰) वर्षा शरत वा वर्मनमे पत्र कप्नमे हिया जानेशका भीत यदा अग्निदा ग्रह स्थ । आग्रह-दु [नं•] ग्रहण ऐना प्रदन्ता किमी नानुदी दब्ताने वहवजाः भारतमाः अनुप्रशः नैदिद रूपः निभवः भोर ^{हे}मा बसराय बढ़ा सुम्नैगी। आग्रहायणः आग्रहायण्ड-प्रशीको अगृहसदा प्रदेशि । आग्रहाचणी-सा [एं॰] अवहमस्त पूर्णमासीः सुगाँहरा मधारा वस पन्तरह ! भाग्रहारिक-वि जि] भगवार भूमिका दरम धर सेमेबाटा र **आग्रहिका-न्दो** [से] अनुबाद भूताः सदापता । बाग्रही(हिन्)-१० [ग्रं॰] भाग्रह करनेराना । धाध-नः अर्थ, मृद्य १ शापक्रक-५० [१३] भार विषयी ।

आधारमा-थी॰ वि] हिल्मा वा श्रीत्मा रता भेपरीय

1450 सच्छीळ-पु [सं•] सत्राचार ! वि शोकवान्, बदारा श्चय । सच्छक्कोक-नि [सं] क्रिएका अच्छा नाम दो। सच्युति-दि [सं] स्तकतबुक्त । स्ती॰ सदक वात्रा (१) । सर्वकार-वि [सं] पंदमय, क्रीक्षवार । सज-की सबमा सजाबर: ६प, भाकृति: शोगा: रै रह इस । – तार-वि सदील, अध्यो जाकृतिका श्रीपर। -धक्त,-यज-स्त्री सवावट वनल-श्रंगरः ठाऱवाट । सज्ञरा-दि सहस्तं सावधान, दोशिवार । समदारे-पु ६ 'सदिवन । सजन-पु [सं] एक हो परिवारके आवसी, संबंधीः पिंठ प्रियतमा सम्बन्धः वि अभवुष्यः बनुष्यीसे यसा हमा । सञ्जनपद्र−वि [तं] यक दी देशक (व्यक्ति)।

सञ्जा-भ कि बसाम्बयते अबंहत दोनाः उत्तन करता फरना सका बान परमा। प्रकारिके किए तैवार होता। स कि भारण करनाः समानाः व्यवस्थितः इस्ता। दुसंदिबनः † शिनतम।

सञ्जा-की स्की, सहेकी। सळनीय⊸वि [सं] प्रसिद्ध स्वातः (१)। सञ्जल-वि [सं] यह साथ अस्पत्र।

सक्रप∽द्र [सं] दिवशेंका एक नेद। सञ्च-दि [सं] करुपुत्त, भीगा हुमा। अभपूर्ण। जान बार, बनक्तार : - सयन-वि शिसके नव असुपूर्ण हो। सम्बद्धा-वि संज्ञहेसे होता सैंबका। वि॰ की सि]

बन्धे द्वस्त । सञ्जना 🗝 🖳 समायट चैदारी – बहुचन अस गढ की गढ

सञ्जनता'-व । सम्बाई-को सम्बानेकी फिना था पारिशमिक।

सब्बामा-स कि किसीको सबनेके काममें प्रकृत बरना । सङ्गा-श्री [का] नदका अपरायका नदका दंदा ब्रमीना। −ए सीत∽को प्राप्तरंक फॉसीको समा। -वाप्रता-वि इंडप्राप्त इंडितः। -वाश-वि समा षानेशका दंध्या अभिकारी । ~बार-वि योग्य समि कारीः समा सुप्रक दनवाला (दीमा) । सु॰ -का मजा

शिलमा-क्षिका क्षत्र मिलना ।

समाद्र∜−की सबादंद। सवाई-की समानेकी किया समानेकी मनदरी। सळागर-वि [स•] जागस्कः सावधान सत्तर्है। समात-वि [र्ष] साव करपक यक्ष की समय करपका र्ध-विवासे प्रका -काम-वि संविवापर शासन

करवेदा रुष्पुद्ध । सजाति – वि [सं] एक दी कांति या वर्षका; एक जैसा । पु पक्त की जातिके पुरुष और कीसे वस्त्रक पुत्र ह

सबादीय-वि [नं•] दे 'सबाति'। समास्य-पु [सं] भावत्यः संबंधः विका। 🕼 समावीव ।

सकाम•--विसदान वातकार।

समाना−सः कि सैनारना सुसम्बद करना। व्यवस्थित । सम्बा∼की [सं] ग्रेसक समावरः साम-सामानः सौथी

करमा । सजानि−ि [गं•] सप्राक्तिः।

सम्राय−वि॰ [सं] सप्तोक, विवादित। ≉ स्रो• दे•

समारः सनारु-पु॰ शस्यकः सार्धा । सजास-नि [तं] भवास्त्रार, देशरमुक्त ।

समाय-पु वहीका एक प्रकार (यह दूव भूव सीकाकर निमा गढाई मिकासे बमाया बाता है); सवाबट । सञावट-सी अलंदरण, सच्चाः शोमाः वैवारी । सभावन#-प्र भरंकरणः वैदारः ग्रसक्षित करमा ।

सज़ावल-५ [तु] माण्युत्रारी था शरकारी क्यवा वस्क करनेवाकाः दारीमा । सञ्जयकी-का समानकका पर वा काम।

समिना - पु॰ दे 'सहितन । समीउ=-वि दे॰ 'स्थाव'।

सजीका-वि धनपनवाला, धनवनसे रहनेदाका, धैका; सबीक संबर । सम्रीव−वि [सं] समाच, मान्युक्त जीनिया स्वायुक्ताः

ब माणी। सखीवता - सी [सं] सबीव दोनेका माथ। सञ्जीवन-पु॰ संबीवनी बूटी। चहुटी-स्री॰ सहबंदी। -मूर-मूख*-५ संबोदनी दूधे ।

संबोधनी-की दे 'संबोधन । -अंग्र-पु मृतकको शिकानेबाका करिपत मंत्र; कार्यसाभक्र उपाद ।

सम्बद्धि - प्र. कि] शहरी, स्वमादः मिनान । सम्बर्ण प्राप्त)-वि [सं] शिवः साथ रहवेशका । प्र यिषः सामी ।

सलग॰-विदे 'सबय'। सज्ञता-मा॰ एक ग्रंद ।

सज्री−ची•एक मिठावै।

क्वरित ।

सम्बोद्यां − ७० कि शंगार करणा सच्चित करमाः वैदारी करमा सामान मादि क्षेट्र करमा।

सजीयक+−वि दे 'मॅशेरक'। सक्रोप-वि [सं] समान प्रीतिवाके। मेक्से काम करने वाहे।

समोपण-त [सं] साथ-साथ कार्नदोपभीग करनाः प्रसमी मीवि ।

सम्ब−वि सि] समाध्रमाः तैवारः छसादिसे बुक्ता दे 'सन्य । -कमं(भू)-प सबने दैवार शोनेकी किया।

षशुक् पहाला । सम्बन~पु [र्व] करकामा वीववाः सवानाः द्वानी नारिको वसारिसे समित करनाः सैवारी बरनाः व्यविवारींसे कैस दोना। बाट, विश्वेषकर सीडीयार। एवरे बारः वैवारीः कुलीन व्यक्तिः मला बादमीः प्रिव

सम्बन्धाः स्वा । [सं] सीवन्य यक्तांसी । सज्ञनताई = सी वै॰ 'सम्बन्दा'। सम्बना-को [सं] समाबदः सैवारीः राजा मादिकी

सवारीके किय शाधीको समाना ।

44-W

समामक, सनामा(भन्)-वि निः। समान, एक श्री सामका । समाय-सी एक पैया जिसकी पश्चिम होती है. सोगामुद्धी ।

समासन-ब॰ 'छन-यन अब्दर्धे साथ- तथीसे । सनाह~प दनक वस्तर !

सनि-प [म] पूजा दाना प्रार्थमा विमवा । दे 'श्रमि'। स्ती प्राप्तिः दिशा। स्तिकार-वि सि॰ विषयानवनक (बैसे दंब) ।

समिप्रह-नि [सं] मृहदार ।

सनित-वि सामा विकाश प्रमा, मिकिता (से] रवीकतः प्राप्तः कम्ब ।

सनिइ-वि [र्स॰] धोवा इकाः निइायुक्त । सनियम-४० [म] शिव्यविः को धर्मानुष्टान कर

समिर्धेन-वि मि निष्ठर कठोठ वेखन। सनिविद्योप−दि [मं] बदासीम ।

सबिद्रियः समिद्रीय-वि [म] बुद्ध मिका हुआ हुए। बद्द श्रम्द निस्ता श्रमारम दरते समय बृद निद्रमा हो। समी-सी सि नियमिन प्रार्थना। विद्याः हाशीका कान

फरपरानाः स्रोति शीप्तः मीरी । सप्तीचा+−प दे 'छनेसर'। सवीचरी-ली॰ छनिकी दका।

सनीड सनीक∽नि [सं॰] वो एक दो वीसुकेमें रहते श्री साथ रहनवाकेः संबंदी समीपी। अ सक्षिकः: प्रसामीप्य नैकटका पहीस ।

समेम, सबेसा•−५ दे 'स्टेघ। सनेद्र≉−पुद्रे स्तेद्र ।

समेडिया*~प है 'सनही' !

सनेक्की - विस्तेकी प्रेमी । प्रीम करनेवाका ।

समेन्यतेश-स दे 'घनै-घनै । समोबर-प [ल] चौड़का पेड़।

सन-प्र (स्र) सार संबद् । -ईसबी-प्र रंगावरीका मंत्रत थे। रेसाके करमदिवसे करा है। -हाक-पु वर्त मान संबद्।-हिक्सी-५ सुध्वमानीका संबद विश्वका मार्ग्स सहस्मारके मध्येमें हिमारत करनेकी विश्विमें बना है : ~(मे)म्सूस-पु+ किमी राजाके राज्यामिकेटकी

विविधे चक्रनेवाका संक्त्र । सच्च−वि सव आदिने शतव्य श्रतितः [नं] सिक्तका हुमा मंद्रा प्रतिद्याना नि'सक्ता बैठा हुमा। श्लीणा नहः

विकास निकारकः गत मस्थित । पु विवाध बुद्धा नाम शानिः करप परिमान । - क्रंड-नि जिसका गरु। क्रंच पराहो। - बिह्न-दि मीन। - भी-वि दिवस्तः -बारीर-वि विस्का छरीर वक गवा हो। -हर्य-दि किसा

सम्बद्ध-वि [मं] धर्म नाटा छोटे कृत्का। यु पिताक वधः – हु – हुस–धु विशक्त बुद्धः सवत–दि [नं•] सुदाहुमा सिक्काहुमा क्षिका।

सक्षति-को [सं] सुकताः काररपूर्वेक प्रवास करना। वित्तनताः एक वहा व्यक्ति सम्बद्धा गमको प्रकृषि। क्षमा | सन्निम्स-वि॰ [सं॰] समाम स्वद्धाः

यहिः वश्चकी एक प्रभी । सम्बद्ध-वि॰ [री॰] क्लकर वैंवा हुमा; बरिवका व्यवस्वतः शक्के लिए तैवार। व्यासः से संपन्न, ग्रक्ता वातकः र्गन्यः वासवर्ताः विकासीन्यसः मोहकः ।

सम्बद-पु॰ [सं] समूद, राशिः परिमाणः सारावः प्रय भागः रोमाका प्रश्नागः। सम्बन-१ [सं] पाम कामाः संबद्ध हत्या ।

सम्बद्धम-प्र [सं] तैयार दोना, समय दोना। सुबन्धे किए प्रस्तुत होनाः तैयारी करमाः कसकर गाँपमाः क्योतः प्रवासं करना ।

सम्राटा-पु॰ मिरवण्यता, मीरपताः मिर्जनताः स्तम्पताः चुप्पी; इवा चक्कनका शुरूर; सममुनाइट । वि निर्मम; नीरव । सुरु --सर्विमा -मारना-विक्कुक चुप हो नाना । -बीतमा -उदासीमें बन्ड करना । -(१)का-सनसन मानाबके मान बहनदाना । -के साथा-से-तेवीसं। -- में आवा -- स्वसित ही बामा खप रह बामा। सचाम(भ)-प्र• [सं] संदर नाम।

सम्बाह-पु [सं] इधिनारसे सैस होना, पुरुषे किए तैवार होनाः शुक्र नैमा तैवारीः कृतव । सचाका-पु॰ [सं॰] हुकका दावी।

सकि-की॰ [सं] पशासी विवण्नता मेराह्य । सम्बद्ध-न [सं] पास लबदीका मन्निकर्प-प्• [d] निका काना सामीप्प; वर्गस्वितिः

संबंधा दक्षियका विषयसे संबंध (स्था)। मनिकर्पण-पु [सं•] दे॰ 'सविक्रम ।

सम्बद्धाः - वि॰ [सं] " वैसे स्थवाना, मिक्दा अवता, समान । सम्मिकीर्य−वि [सं] पूरा-पूराकैका द्वजा।

सम्बद्ध-वि [तं] पास कावा द्वमा। निकट पासका । म सामीप्य। सम्मिक्षेक्षा(फ्यू)-इ [सं॰]संघ संबोद्धा स्त्रेदाध्यक्ष ।

सन्निचय-९ [सं] राशि करना देर बगाना। संबादः रमहा ।

सम्बद्धास-प् [र्व] यह ताक (संगीत)। सम्बद-तु [सं] साविष्य सामीप्य। सन्निधाता(मृ)-तु [मं] पाछ कानेवाकाः बमा करत

वालाः चीरीका माळ केनेवाकाः अवाकतमे कीगीकी के वानेवाका अप्रसरः पास रखनेवाका । सन्नियाम-पुसक्तिकि-की [सं] साथ पात रक्षणा

सामीच्या गीचरताः आवारः अपने पास रखनाः यीगः कमा करनाः देतिय-विकतः।

सम्निपात-पु [सं•] विरनाः करणाः मिश्रमा संबमः टकर मिहता मेक योगा समूद्ध राग्निः पर्वेषा गात विश्व और कक्षकन्य क्यर का मीपण दोवा है। एक साङ (संगीत) ।

सम्मिक्य-४ [सं] व्हतापूर्वक वॉवनाः संबंध संग, क्यावः प्रयावशारितः । सन्निवद्य-वि [मं] व्यक्तपूर्वक वेंपा हुआ। संबद्ध

(किरन) **जनस्**तिहा कावृत ।

सञ्जाद-सङ्गासङ् सामान, करण जारिः (दि॰) शब्दा । सम्बाद-वि [ल] सिमदा करनेवाका पुत्रक, बवासक । सकाता-पर (य) समात्र पटनेका जासन, जाममात्रः किसी साम-मंत्रकी यही । - नव्यि-वि गरीवर (ककीर, मइंद)। सञ्ज्ञ-वि [तं] स्वा हुना अवहृतः सामाव आदिते मस्य सेवारा वश्विमीरे हेस । सम्बो-मी॰ एक प्रकारको शारत्यः मिट्टी । न्यार-प्र सम्बंदी । -ब्रास्टी-स्त्री एक प्रश्न किसरी सम्मीधार ननाचे ŧ١ सम्बा-का रक्षका सम्रष्ट−दि [एं+] बच्छे कोवीको प्रिया सम्बद्धर । सजान-वि सि॰] पापत्रका श्रुविमान, समहादार । सम्य-वि [सं] बदासुक (भस्य)। सञ्चा+-त्यी+ स्टवा । सक्योरखा-स्रो [धं] श्रांदमी रात । सक्तिकार! - प्र विश्वेदार। स्वक्रिकारी - की साजाः सामीकारी ! सक्षिया। -पु • हिस्सेदारः सामा। सटकार−वि [म] प्रसिद्ध स्थात । सह-पु [सं] है "सहा"; बाह्मण विद्या और महि माता" से स्रवंत्र व्यक्ति ।

सहस्र-सी सन्तेवाडी पतको छड़ी। वंता अपनेवाका नेवाः व्यवदेशे वक देनेकी किया ।

सरकता-भ कि भीरते दिलक्ष माना। स कि नाव मिकाकतेष किए बाँठ पीटना । सरकामा-स दि धरी नारिश गारना। प्रान्थान ध्वमि बस्रम् बरतं हर हका पीना ।

सरकार-सी सरकानेकी फिना। शरकारना। यो नारिकी र्वादना । सटकराना-स कि छहा भारति गरनाः सरकारमा ।

सरकारा - विश्ववा भी द लेगा । मदकारी -सं १ पत्रकी, क्रमीनी छत्री ।

सरका-प्रश्रापर पीर् । सु० -मारमा-वेशीने बाना । सरमान्य कि दो बर्लभीका यह साथ कम बालाः विषयमाः साथ दीनाः मैश्रम दीनाः 🕆 काठी-वीडे जारिसे मार-पीट शीना ।

सद्यद्ध-क्षी । दिषक्षिवाहर संकीयः दिविता । सद्यटामा-नर कि संबोध करना दिपदिणागाः

भी बद्धा होगा। दव पात्राः स्थवर शब्द करना । सदर-पटर-वि॰ हुण्छा बहुत मामूल्ये । स्त्री होशद वर्धेशाः अइसी चीत्र ह

सद-सद-म सर-सर श्रम्ब करते द्वया अध्य, भीरम । मरोड-५ (ते) विदा

सदा-सी [एं॰] साधुनीकी जटा। धेरका कवाला स्वरका शाला कवरी अनुध धर्तनी शिमा । सराध-५० 'सुर'की ध्वनि । शहाकी-सा॰ पैनेडे मिरेबर वेथी हुई चमहबी वही ।

राटाम-श्री॰ सरनेरी किया थी।

सटाना-स कि अहमा भिन्यामा विश्वतमा ।

सदास-वि [संग] जवाहवाबाः "से तुष्वपा रूपे । रूप सिंह ।

सरासु−पु[से]कवा फण। सटि-सी [सं•] धरी सप्र। धारिकाः सदी-स्वीः सिन्ने बेगकी क्या । सदिवस-विश्वपिता ।

सुटिया-सी सान-वारीकी पूक्ता सिंदूर मानेबी बोरीबे धकारताः क छत्ताः सौरी ।

सदीक-वि [र्स•] टीका न्यास्त्राते त्रका क्तिक के (ft) 1

सटोरिया-पु कै॰ 'सट्टेंबारा । सङ-त [सं] बरवानेको चीराटमें दीनों वानीने हवाये वानेशको सक्रश्रिमाँ ।

सङ्ग्रक-तुः (र्तः) प्राप्तम भाषामे एकि रहे बरहस्य बीरा मिका हुआ ठऊ।

सद्या-पु॰ वक्टरस्वामाः वामार ! -बद्वा-पु वेक्टीण छल्पूर्ण वराव (क्वाना) : -(ई) बाप्र-प बहेर कामकी बाशासे कीश्विम घठाते हुए भी कीशीबा हैय क्रशेवाला । -वाज्ञी-लो सहैवाजस काम ! सङ्गी-स्त्री॰ किमी एक चीमका वामार । सं "सचाना"

जीत्मुल **क**रमा । —सगामा—चीमें अस्त व्याट सत्य। सद्बा-सी (वं॰) यह तरहड़ा पद्मारह रचर्र (संयोध) ।

सट॰-वि , पु॰रै 'श्रुठ (-ता॰-भो॰ रास्ता पूर्वता) सर्द्धी-नी दें 'शस्ता । सरि-सी [र्] कपुर!

सटियामा-न कि साह वर्षकी अनरवाका दीना पूर दोसा। बार्यक्वके कारण मार्गामक शक्किम गाउँ होता। सहरा-इ सनका विका छालका देवन, तर्वा छर्छ। महोरा-इ दै 'सो श्रीरा ।

सक्क-मी ममुश्री, संशादिमी माहिके समग्रवहरे बोरव बना हवा चीहा वार्या मार्ग रास्ता ।

श्वका∽द सरका। सक्त-का शहनेका किया । सक्ता-म कि दिथी मीक्सा राजनी स्थापन हारी का अकर अच्छा थी जाना। हुरी शासतमें रहता । सबस्यक-वि साउसे मात शविक ! इ. हाउ हीर मंत्रे की गुक्का ६०।

सबसी-मी है भिश्मी । सम्रा - पुरु वदा देनेपर गानोको वितानो क्रवेपनी मा

शरदकी दशा । सवाहेब-को हे 'सरावव' ।

सब्दाक-शी बनको एनी साहि सरवार्तिकी बाहाजा द्यामता ।

सवाम-की मश्मेदी हिया। सब्दामा-स कि॰ विशी भीवदी शहते हैं हरू दानी

त्रदी हाण्यमें स्थामा (सर्वीयध-न्यो सडी हुई बीहरी विवन्तेवाली पुर्दर ह

सङ्गय-पु भरनेकी किया वा रिवर्टि । सबासब्-अ॰ 'सब्ना दी व्यक्ति छाव ।

सविभूत-मण्ध सम्निधत-वि [सं] पूर्वत ग्रहारचा इनाः छिपादा हुमाः चतुरः श्रिष्ट । सन्निमन्ब-वि [संग] पूरे जीरसे दूवा बुधा। सम । सम्नितिच-प (६०) अच्छा कारणा अच्छे कोवींदा विवाशम शक्य । सम्मियंता(त)-वि , प [एं॰] शासन विनंत्रण दरने बाना बॉटने-सप्टनेबासा । सम्तियोग-प मि॰) संबंधः संयोगः आसक्तिः निवृत्तिः मारेश। सम्बद्ध-वि [मं] रोका बुधाः बनावा बुधाः बद्धाः दिमा हुना एक जगह क्टोरा हुआ (बैरे) अधि): धरा हमा ! -राव-प्• क्षेप्रस्त्ता । मन्त्रिक्ष-प मि है कि बाबाः क्षत्रकः वंती सक्षेत्रीयं मार्ग । सन्बिमान्स-५० (सं०) साथ रहनाः वसनाः बॉसला । सम्निष्य-वि (सं•) साव देठा दक्षाः व्यक्तीपतः क्षात्रः समाया हुआ, प्रभिष्ठः आहचपती शिवदरमा विससे पहान हाला हो। सम्बद्धत्त−दि [म] शीरा हुमाः क्ता हुमाः इरा 重明 1 सम्मिष्टि नहीं (स॰) बीडमा इटमा क्वमा रेट भाम । सम्निवेग-इ [सं] प्रश्च करनाः साथ वैद्रमाः यक्त्र द्रीनाः श्रासनः वैठने, रहवेका स्वानः श्रावारः **सन्**€ मंदकी। संवाता सामीच्या कप माइति। इटीट बाल-रमामः क्षत्रित रक्षामध्य वैद्वालाः स्मानाः नगरः भारिके बामध्य बढ मैटान वहाँ नवीरंजन व्यापाय भारिक किए लोग एउच होत है। छाप। रचमा निर्माण । धारित बेदान-व [न] वैदानाः रक्षमाः वजानाः अवनाः। मृति रथापित करनाः नासरवामा व्यवस्था । समिनवेशित-रि (ए॰) प्रविध कराया ब्रमाः वैद्यावा-ममाना द्वभाः बहराना हमाः भीपा द्वभाः स्वानित क्या इमा । सन्निमर्ग-४ [मं] अपन्न स्थमात बदाराध्यस्ता । समिनक्ति-वि [मं] पान रखा इथा। निवस्त्र भासका बरश्विमा रमा जगाया हुआ उहराबा हुआ। बबन तैबार: ठड्डा ब्रमा: दिवत । त सामीप्य: बळ विनोध साहित । मन्त्री-सो सन्त्रो शांतका एक पीपा। मर्स्वादन-पु [मं] क्युओं भारिकी ध्रयाबा होंबनाः मेरिय करना । मान्यम्ब-९ [र्न•] स्वामा अन्य दश्याः छांनारिक विषयीका स्वापः बना बरमाः भौतवाः रखना अस्ता । सम्मन्त्र-(६ ।सं०) सम्बद्धाः द्वशः होता द्वलाः रिरक्तः स्था दमाः समा दिना इनाः भीषा बनाः उत राया इका । सम्बास-पु [श्रेन] धाइना परिस्थाम विश्वति विद्रश्ली-का भतुनीत्रमः परोहरः पर बार्वे बाधी हारीशस्त्रक मृत्यः भरामानीः इत्याव रातेः वह शरक्षा नव्यारीम ह -प्रदेश-५ अनुयोगस्य प्रश्च करना ३ -ब्ह्यी-स्थे

सम्न्बासीको कुरिया । सम्म्यासी(सिम्)-दि॰ सि] स्वान इरनेताकः स्व करमेवालाः भीवनका स्वाप करनेवाका सक्तातः प्रश्न वर्षार्थाममर्गे अविद्य माद्यवा क्रितीके प्रत का कानेवासः । सन्मीयक~पुर्शि] भन्ता भीर शुन कुल । सन्मणि-५० (सं०) दिशह रत्न । सम्माध-वि [र्ड•] जिसका भरितल मना ना बन्। प्र भारमा । सम्मान-पुरु 🕻 रहण्यान । [र्मर] समर्गदा शरर HITCH! सन्मानमाक~स॰ कि हे सनमानवा[†]। सम्मार्गं – ९० (ले.) हमाग, हस्त्र । – योपी(१४४)– वि धर्मवर्षक बक्त करनेवामा । -स्व-विश् प्रवर्षः पर पड़नैशेला । सन्मार्गाक्षोक्ष=-१० (ई०) प्रमार्गद्य भ<u>न</u>्हरू । सम्मन्न-भ हे॰ 'सम्बर्'। सन्याम-पु॰ है॰ 'सन्धाम'। सम्बामी∽५ है 'छन्वाछी ≀ स्पर्को -ली वेरमें होतेशमा देंचता हैनेस हुए। सपश्च-वि [तं] हेजाँशक्षा पंचार (शर)। भारत निसका की पर्योमेंसे कोई एक क्या की वक में स्टब्स्ट प्यकाः मित्रीं, सदावहींने तुक्ता प्रवाहीया त्राना सरग्र (का॰); विसमें साध्य मा अनुमानक रिश्र ही। प्र भिष्क सदाबका संवर्षका समाग्रीय भक्ति 🖽 ध्योग जिसमें साध्य हैं। । मक्सक-रि वि विदेशसः। सप्रधी-वि १० मण्ड । सपच्छ ०-वि . ५ रे॰ सम्र । सपद्यां न्यु चारेर कथनारा यक तरहवा दाह १६ मार **ब्द्र** वेदारी । मपद्दी-मी [र्न०] थीग की शार्वरत दोनी क्की हों। सपन ० - भ है 'सपरि'। सपराष-(व [व] हाँदेवे दुन्त । मप्रा-वि (सं-) धनुनाम्य मान स्वरेगकः वैदेश इ यो दुरमन। -जिलू-रि एतुनेशे बोहरेरचार -तृपम-दि अपुर्वोदी नव कानेरावा ! -वारा-यु शबुडा वाश्च । - बलस्युव - वि ए३ हा वच हो कर्तेवाला। -पृद्धि-क्या यत्रलीके वृद्धि। नही श्री शहरी विश्व । सपदारि-3 [तं] वद शरददा दोल दीम र सपक्षी-भी [ग•] शीरा सपयीक-वि [त] पत्रीके साथ । रावस-वि विशेषपरार । स्पन्नाकरण-तु [सं] शतमे रम प्रदार अप्रा दशका कि पंश संदर चना जावा बहुत सर्विद वह देशा । सपत्राकृत-नि [तंन] जो रतना बारत द्रमा है दि नहमयें बाद प्रमान्द्र बुध नदा हैं। हे बू जाएत प्रपादि ह संप्रधावृतिन्त्री (१०) वपुत्र अन्ति दश्र । श्यम-को है। मार ।

संवियस-वि एहा, गक्षा हुआ। खराव, रदी। नीम, पुष्प । सच-पु[सं•]दे 'शुन । –तुस्र∽पु• समके रेग्रे।

-सच-प सनकी रस्यो ^३

सर्वत्र-वि [धं•] तहापुक होत ।

सत्त-श्री स्टिय वयार्थ । पु समार्थ, वथार्थताः सस्य किसी प्रार्थका सार, मूछ वरवा बीवशकि। -कार-यु भारत-सम्माम । - गुरु-पु भन्छ। गुरु: परमातमा । ∽कीत∽पु• सत्यवित् । ~ज्ञग~पु सत्यमुग । ~भाषः, -भाव+-प्रस्तान्। -प्रश-प्रस्तन्य सत्त्रम्य। -वंती-सी॰ सती परिवरा । —संग-पु -संगति-सी क्रमप्रे संगति । -पांगी-वि॰ सरसग करने वा सरस्यमें रहमेनाका । मुक् -पर बदना-सती होना । -पर रद्वाना-वाविवस्यका वाक्रम करना ।

सप्तर-पि सी । -इसर-पु शतरस, कम्ब । -परवा'-प्रवॉसः। -सक्त≉-पु॰ रहा ≃सूब्यी∽

स्त्री सदम्की सदावर।

सत-वि 'सात का समासगत कप्र एव । -कोन-वि सार की नोंगका। - गेंडिया - की व्यव वनावति थी दरश्चरी वनानेके काम जायी दें। −वंदाा−वि साठ बॉवोनाका (पद्म) । इ. साव वॉवोनाक। पहा ।-पविचा-सां एक तरहकी तरोई। सात पनि करनेवाकी सां, पुंशकी । -प्रतिचा~सी एक तरवद्भी तरीर्थ । -पदी, -- भौरी-को दे 'सक्केरा'। -- फेरा-पु स्त्रको नामक वैवादिक कृत्य । -- महत्यार्ग -- की थक तरवकी मैना। − मामा−वाँसा∽वि शात गास्थे करका होनेवाका (वका)। प्र• वद वचा निसकी पैराइस साव महोनेपर इवं हो । -रश-वि छात व्यवाला । -रंगा-वि सात रंगोंबाका । प्र बंद्रभनुष् । -कदा-वि सात करियाँनाका (दार) । -कदी -करी-की सात कदिनोंका दार । ~स.दै ~की सात सी वर्षीनाका

मंद । सत्तकारमा - स कि आवर-सम्मान करमा।

सतत्त−वि [सं•] जविष्टित्र (त्तमासमें)। ज• वसेता पर्वदा। ∼ग,—गति−५ वाधु। −अवर~५ इमेशा नना रहतेशाचा स्थर । ~बुगँछ नि हमेश्रा कटीं रहनेशाचा । ~एति नि की हमेश्रा खनंदश्य हो । -मानस-वि दमेसा किसी और मन प्रकृत करने-वाका । —पायी(चिन्)~वि सतत्विधीकः स्व शीक। -शासी(सिम्)-वि दमेशा अध्ययम करने-वाका । --समितामियुक्त-पुण्क वीविस्तन । ~स्पंदम-वि इमेद्या रण्डन करनेवाला ।

सत्तत्तक-वि [र्च] दिनमें दी बार होनेवाका (अवर)। भवतामियोग-पु (सं॰) इमेश किसी काममें क्या रवना ।

सतित∼नि [सं•] सनिज्ञिटा

सतस्य-पु [सं•] स्वमान महति। नि शन्यका जान

सत्ववा∽पु सात् तर्दके सनावींका मिशल। भतनी - स्रो सम्बद्धाः स्वतिवना एक क्रिया पेड़ा सत्तन्-वि॰ [सं] सरीरवाकाः प्ररीरमुकः। सत्तवरचा! -पु॰ एक नेपाली बुध क्रिप्तते कागम पनावा बाता दे ।

सरामसा-स्त्री [मं] एक पन्ती। मतसस्य-वि॰ (सं॰) वंबकाराच्छत्र १

ससर्वा–९, स्त्री देश सत्तरंत्र'। सत्तरंजी-सा॰ दे॰ 'घतरंगी'।

सत्तर-- विश् वस देवा, कुटिका सद्भाः सी [ला] पंचित्र ककीर। --वंदी-ची इस तरह कियाना कि क्षपर मीने क्योर स्वीयमेश क्यूरॉकी मात्रार्थ, मरहत्र आधि करें नहीं । सत्तर∽पु [अ] छिपाना। स्त्री दा पुरुषका गौपनीय

रवाम गुवामः वरदा। –योश-वि॰ (वद चीज) क्षिप्तने तन वाँकें, करवा-निवारण करें। -पोद्यी-सा तम बाँबमाः काम-निवारक । सत्तरकी-मी पतरहर्वे दिन किया मानेवाका शृहक

सतरइ-वि , पु दे 'चलरइ'। सतरामाध-स कि कोप, ग्रत्सा करना, द्वदमा, विमद्यमा ।

शतराहरां −सी कीय, रोप। न्यसरी-को सर्पर्यहा नामकी औपवि ।

सत्तरींहाँ -- वि की बहुका की बस्वक - स्तराही मीहति भड़ी हुरे हुरावे मेह -मितराम I

सतक - वि [सं] वर्वतुक्त, वर्वपूर्णः वर्वकुश्चक विवेद-धीका स्पेतः सामनाम । सतकेता नवी [सं] समभानी, शेक्षियारी।

सत्तर्पना = - छ कि अच्छा तरह संतुष्ट एत स्ट्रा । सत्तर्प-वि• [सं] तृषित प्यासा।

सतक-वि [धं] तक्यकः वेदेवाका । सत्तकन-की॰ पंतारको यह स्वी, स्रुतह ।

सतह-की [म] बस्तुका क्यरी मार्गा तका वह वस्त विसमें बंगार-वीक्षरंभर हो, गहराई म हो (ग)। बक्का क्यरी मागा कर्छ। कत । -(हे) साव-सी मदी सादि के वक्का करते सता । ~ज़सीन =सी पूर्वातक। सतहचर-वि सचरसे सात विषक्त । प्र सचरसे सात

अभिक्रकी संस्था ७०। सतही-वि सतहका करता क्रिसी गहराई म हो।

सत्तांग॰-पुरन-फीड प्ररंग चढ़ि कोठ मर्थग चढ़ि क्रीड सर्वाग चढ़ि वाचे -रपुराध ।

सतार्वद-पु [वं] पीतमके पुत्र को राजा अनकके पुरीषित थे, ऋवानंद । खतामा−स कि गोक्ति करना कड दैना। परेश्वान

करना । सतार-५ [सं] म्यारक्ष्यों स्वर्ग (जै)। वि साराजोंसे

सतासक-पु [सं] कुछ रोगका वक्त सेर् । सवार-पु है सवास्त्र ।

मसास्त्र है 'सफतास् । सताबना=-स कि है 'सतामा'। 1809 सपदि – म॰ [सं] श्रीप्र वल्डाल, तुर्रव । सपन -पु - दे० 'स्दर' । सपना-प्र• दे• 'स्वप्न'। सु• -होना-वपाध्य होना, सिक्त सम्बना। सपर-प सि । एक वही संक्या । सपरदा सपरदाई-पु॰ नापनेवाकी वेदराके साथ साज वज्ञानेवाचा । सपरमा—अ क्रि॰ पार कगवा, पूरा दीना दो सकता। सपरामा-स कि पूरा करना, सत्तम करना, पार क्यामा । सपरिकर, सपरिक्रम-वि [तं] अगुवरींते द्रफ, सरकरक । सपरिच्छन्न-वि [सं] रीवारीके साथा वस्त्रकके साव । सपरिश्रन-वि [सं] दे 'सपरिकर'। सपरिवार-वि (छ॰) परिवारके सदस्बों है साथ। सपरिवाह-वि [मं] बक्तकर नवता हुनाः कपरतक मरा इमा । सपरिध्यय-दि [सं] समास्टरार (बना हुवा भीवन) । सपर्य-विश् सि ने पश्चिमीरे बुद्ध । सपर्यो-सी [सं] पूजाः सस्बारः सेवान्यकः। सपदा-वि [सं] पशुनोंके साथः पशु-वक्ति संबद्धः। समाद-वि चौरस समबर, को कबद-सावक न ही। सपादा-प तेत्री श्रीका शपटा बीहा सपाद-वि [तं] बरम-सहितः बतुर्वोत्त व्हाया हुआः चतुर्वारुपुत्त, मना (समासांतर्मे-बेसे सपल्ड्य-स्वा हास)।-पीठ-वि पैर रक्षनेको श्रीकोके सान।-सरस्य —प्रकृतरहकी मछकी । सर्पिड-पु [सं•] सामान्य पितरीकी पिंड देनेदाकाः कः पुस्त करासे सः पुरुत मीचेतकका संबंधी । सपिंडीकरण-प [मं] मारुविक्षेत्र विसमें मुस्कतो पिंडदान द्वारा फिर्सेन्द्रे साथ मिलाते हैं निसीन्द्रों सर्पेड दीनेका अधिकार प्रदान करना । सपीड-वि [मं] पीडायुक्त । सपीतक-प्र[मं•] नेनुवा । सपीति - स्रो (सं•) सहपानः सहमोत्र । सपीत्रिका−को [सं•]कदः कौकी। सपुष्क-वि [मं] रीमांच्युका सपूत्र-त अच्छा कुळ्या नाग बहानेवाचा तुन । सपती-की सपूत शेनेका भाषा जच्छे पुत्रकी भावा । सपैत•-नि एउर खेत। सपैती - की वै 'सडेडी । सपेद-वि का दे 'छात्र'। सपैरा-प्र १ 'सेपेरा । सपैका सपीका-पु पोना सॉपका छोटा क्या। सस(च्)-वि [सं] छम्से यह अविदा प्रसातको संस्था। - ऋषि - पु॰ दे 'सहदि । - कृत्-पु पक विश्वेदेव । --क्रोण-पु॰ शात रंखाओंसे विरा हुना द्येत्र । वि. सान क्येणीवाका (क्षेत्र) । −शीग−यु यक रवान वहीं गंमा सात बाराओंमें बहती है। -गुब्ब-वि॰

43

स्त्रो सात अहींको एक शक्षिमें स्थिति। - यहाव-पु• विज्ञानसम्बद्ध मायक ग्रह्म । - सिद्ध-वि सात विद्यार्थी-बाका। पु अग्रि । - अथास-पु मधि । - तैति --र्तम्म-वि सात तारोंदाला। -दश-वि• सक्तरहा ─वश्रकः—वि॰ विसमें सत्तरह सम्मिक्षित हों । —दिन — विवस-प्र• सप्ताइ ! -वीधिति-प्र• अधि ! -वीप-प प्रव्यक्ति साली श्रंडा वि सप्त द्रीपमय (प्रव्यी)। -चातु-वि सात वातुवीवाका (सरीर)। पु∙ बंदमा के इस मधीर्षेते एक । स्ती॰ शरीरके साठ तस्त-पित रक, गांस वसा अस्ति मध्या और शुक्रा −धातक − वि सात तत्वींसे **दुन्त। —घान्य**—पु साद **भगोंना** गिशण (पुत्रादिके गिमित्त)। -नसी-को+ विक्रिया पेंसानेका क्या ! -शाहिका-सी सिंपाड़ा ! -शाही-चक- पु॰ वर्ष-सूचक रह चक्र को छात देशी रेखामींसे बनका है। ∽नामा∽सी आवित्वमका, इसहुट नामक शैवा । -वक-वि शाद क्लॉबालाः साद धोकोंसे खींचा वानेशका। पुरुष्टिं मोहिया (फूक); ग्रहियदा। - प्रद-वि सात परीवाका ! -पदी-मी विवाहकी एक विकि बिसमें सम्बद्ध सात नार परिक्रमा की बातो है। संदि पक्को करनेके किए अभिकी सात गर गरिकमा करना। -•वृज्ञा~ली दिवादको एक रश जिसमें कोहा पूक्तेको कहा जाता है। −धराक−ु परु मकारकी तपथर्या। −पर्यौ,−पखाञ्च−वि शाद पर्दोबाङा । पु छटिबन । -पर्णंक-प छतिवन ! -पर्जी-की कथान : छति-बनका फुका थक मिठाई । —पातास —प्र• सात अवी• ब्रोह--अत्व दिवक सुतक, रसातम तकातक महातक और पाताकः −पुत्री−की यक तरहस्रो द्वर्राः सत-पतिवा। -प्ररी-की चात परिवॉ-क्कोच्या महरा भारा काही कोची अवेतिका और हारका-को मोख देनेवाकी मानी काठी है। -प्रकृप-वि सात प्रस्ता बेना। -प्रकृति-की राज्यके सात संग~राजा, मंत्री_र मित्र कोश राष्ट्र दुर्ग और ऐना ! -बाह्य-प्र नाहीब राज्य । -वीय्वराकुसुमाका-५ ५६ । -संशिनव-प्र स्वाहत्यके वर्धके साव अंग (मे)। - मंगी(गिन)-पु स्वाहारके मामनेवाके भेता - सह-पु दिशीक गुंशाः नेवारी : -सुबन-पु कपरके सात स्रोकः, देश 'सप्तकोक' । -सम-वि॰ सात संविद्योवासा । -ससि-त्रो रसतकः ∽भूमिसय∽वि दे 'सप्तभूम'। -मुसिक -भौस-वि सत्तविका !- मंश्र-पु क्रीय । ~मरीचि−वि सात फिरमॉनाका। पु भग्नि। ~महा माग-पु विष्णु। -भातृका-स्रो विवाद भारिमें पुत्री बानेवाकी शांत सावाकींका वर्षे । -सास्य-दिक सात मासका (वचा)। -सृत्तिका-को कुछ कौ-इरबॉब्ड अवसरपर पदन की बागेगाली सात स्वानीकी मिद्दी। −वस−विसाद स्वरीताहा। ⊷रक्त,−पु० क्षारु रंगगाठे शरीरके साथ धंग-इनेकी तकवा मध क्यांस्था कोण बीध ओठ और वाहु। -राग्न-पु सात रावीका कारु, सप्ताइ । –शासक-विस्तात रातीलक करुमेशका । -ताथ-पु गरुवका यह पुत्र ।- राश्चिक-पु नैराशिक सात गुना। ~गोदावरी~सी वक्त गरी। ~ग्रही~ बैसी यणिसकी पत्र किया विसमें साथ राशियों होता है। सतावर-सी॰ एक नेरु जो शाक्शर होती है और ववादे काम भागी है शताहर। सवासी-वि अरही है सात कविष्ट । इ॰ सवाहीकी संक्ष्या ८७ । सिति−सी॰ इत्तः सेत साधा । ल वि . पु॰ दें॰ 'सर्थ'। मतिकान - प॰ सप्तपर्णदातिका । सर्वी-सी॰ सि॰] साध्यो, पतित्रवा श्रीः पविषे धयके साथ वस जानेवाको स्थीः मादा पद्याः सम्म्यासिमीः पद वरबंदी सुर्वनित मिड़ी विश्वामित्रकी सीह दुर्गाह लेगिराकी पक्र की। दक्षकी एक कन्याः यक कत्ता −सीरा~प्र• [हि] किसी सहीके स्मारफके रूपमें बना बना चनवरा । च्होपोप्रसाव-प स्वीके प्रति बृद्ध मान प्रवक्षित करने-के कारण सिनीकी दोनेशका कन्याद रीय ! - प्रश्न-प्र॰ सत्यो भीका पुत्र ! - शत-पु+ पारिकत्य ! - वता-की शिक्षता की । ~सर(स्)~पु॰ करगीरकी पक शीस । मृ • - शीमा - पविके शुक्के शाव नक मरनाः क्रिमीके पीछे परेझान श्रोमाः वर मिटना । सतीक−५० [सं] वका [मं] सती होनेका मात्र प्रतिमस्य। −हरण-५ सतील नट करना । सदीन-वि [सं] यवार्च, वास्तविक । प्र• मध्स्का वक भैर, क्रकावा वॉसा वस । सप्तीनक-मु (सं॰) सररका एक सेर क्रवाय । सर्वीपम्-पु॰ दे 'सर्वात्म'। सर्वीय-वि॰ [सं] सोर्वशुक्त । श्र सहाध्याची साथ **मध्यमन करनेवारे प्रश्नमारीः शिव**ः सर्वीर्ध्यं-पु॰ [सं] सहाध्यानी साथ पहनेशके त्रसमारी। सर्वीष्ठ-त [सं] शीसः वातुः वकानः सर्वीकक-पु [संग] क्लाव । सर्वीका-की [संग] क्रमानका एक भेद । सतुभा पु भुवे हुए नक्षका चृत्रे शक्तु छए। ⊸संकीति ल्ह्या संबद्धी संबद्धीत (मिस दिल सन्दर्के दाल और भीवनका विचान है)। -सींठ-की एक शरहकी शीठ। सतुमान-सी पुदे 'शतुमा-संकाति'। राज्य-वि [सं] भूमीशका । यु जुन्युक क्या । सद्म-इ॰ (का) क्षेत्रा, लीम। सत्ता-प्र वाबके शपरतेका वक बंग ! सर्द(प्) समूप राम्प्य-वि (संग्) भाषा सरीमा(यस्)-वि [सं] श्रांतिमुक्ता भीव शक्ति संबंध । समेर-पु[मं•] मुनी। सरोरक-पु॰ [मं॰] क्यु भौतिम । सलीन्यमा - च कि संतीप देगा। चार्म रिकामा संतर करना । मतीगुण!-इ है 'सस्याम'। सतोगुणी -- विस्थानमे सुन्ता मतोहर-५ दे श्लीवर । शतीसां - इ प्रमश्के सार्वे दिन दिना जानेनाका **東京門第1 曜 貞 !**

सतीगर~इ साउ व्हिथेंका बार ।

सर्व-नि॰ [सं॰] सत्तासकः वर्तमानः रिषधानः वरार्थः शत्याः रवायीः मलाः वार्मिकः वित्रः उदा उत्तर प्रसा सम्मानका विद्याल् अद्भरः संदरः भीरः । ५० संतः राजनः भागिक स्वरित वह जिसका भरितर हो। वबार्वहा सरा मधा !-क्या-सी० अभग्ने वार्त्त वा क्या । -कर्रव-पुरु कर्पवका एक भए, केकिकप्र । -करम-र् सामार करणाः संस्पेतिः किया । नक्तेप्पनिः विश्वा सम्मान करना हो । -कर्ता(र्नु)-विश् बन्त्र धन करनेवाकाः दिवेशः सत्कार करनेवाना । प्राप्तिया -कर्म(सू)-पु शेष काम, पुण्य कमें: वेपविदित करे सत्कारः अतिहि। प्राथमित । -कर्मा(मैंव)-वि॰ नगः काम करनेशका।-क्षका-स्रो अक्टिक्सा।-क्षि पु । क्षत्र व क्षत्रि, शुक्रति । -क्षत्रिमार-पु । रक्योपन वृक्ष । –कोश्र−पु वात्रः चीक्र । –कावरहि≕सीः मृत्युके बाद भारमा घरीर भारिकी सराह्य प्रोड रिकांत (वी+) । -कार-प्रश्नादर-सम्मान आहमना आतिच्या देखमाणः पर्व चल्लामा दावतः। -कार्य-तिः एन्मानके बील्या बिसकी संगोति की बाय । ह बारदर्म कार्यका निवित्त रहना (सी); बच्छा काम । - स्याप्-पु - कारणके अमावमें अव्यक्ति कररति स मानदेश शिकांत । --किन्छ-पु: चार <u>प्र</u>टक्के यक प्राचीम नार्षः −क्षीर्ति−थी॰ प्रवशः अध्यो द्योदे । दि जिल्हा अच्छानाम कैना दो। —कुल −पु उत्तय दुला निः कुकोन, सर्वश्रमातः। —कुकीन-वि० नगरे बंगधः। -कृत-वि॰ क्याने तरह निमा हुआ। पृथ्यि सम्मानिसः जिसकी आनमनत को यदी ही। जिस्सा अच्छा रवायत किया गया हो। द्व॰ शिवा सम्बद्धा आतित्वा पुण्य कार्य । —कृति—की प्रण्या वर्ष करना पुण्या सरम्बद्धारा भारतसम्बद्धार । अहर-वि अच्छा कर्म करमेवाला । -क्रिया-मी॰ वेड वर्णः पुष्यः भवरियतं करमाः स्थारमाः बातिसा श्रीस्पा शंकारः वृतकसर्गः। न्यत्र-५ इतुर आरिक्षः वरा पत्ता। -पथ-इ समार्ग अरही शरह। इस्परि द्याकविदेव सिक्षांत । -प्रमीन-नि॰ प्रकर्मस शर्ने बाका १ -परिमाद-तु सम्देश बीग्य स्पर्कते दान शहन करना। -पशु-द नहिंदे बसुट न्तुं। -पास-पु बीग्व व्यक्ति वह व्यक्ति मी बोरे बीन शामेके योग्य थी। -०वर्ष-पुरु बोम्ब व्यक्ति प्रति बदारताका नतीन । - धर्नी(चिन्)-दि सनताका विचार कर बाल आदि देनेवाला । -- पुत्र-पु बील अभागह अन की विश्वतिके निमित्त विहित की करें। -पुरुष-५ त्रवा वास्त्री समत्र। -दुप्र-ई अच्छा पुष्पा विकासित पुष्प । - वालिमह-पु 'सरपरिमद' । -मितपरा-ति जिस्के विषये विषये देश भी दी है है दिसामापुद साँच-प्रदारिकि वह (म्बाक) । -प्रमृदिता-छो० आह शिविदोरेने वर (भी) १ -क्ट्रस-विक संपत्ते कृष्णवाना । इ समार । -लंबस्य-दि अप्ते अदिशायगाना, हेइ-दिन्त -लंब-पु -संस्थि-को कारी बार्शनीया हात्र है न्मीसर्गे−५ दे 'सल्ल'। नमक्रियाम नसमाममन

~रुचि-दि॰ सात दिरधौनाका । प्रजमिन । ~सा~ सी॰ सातवाः चप्रेकी, सबमहित्रकाः रीक्षाः गंबाः प्रेंबकी । -होद-५० धानी छोद-महोदः, भूवकोटः, लकोटः, शब कॉन, बसकोक नपोकोक और सत्पत्तेक !∽खोकसथ~ मि सार्वेकोन बारच बरनेवाहे (विग्य) !-सोबी-सीव प्रक्री है सात होड़ संपर्ज प्रजी । - बरुप-विश्वात रक्त्यों-बाबा (१४) 1-वर्ग-५० साथका समाहतः !-वर्ध-दि० सात वर्षेक्री अवस्थाका !-वादी (विम्) -पु॰ दे॰ 'सप्तमंगी'। -बिजा-वि सत्तारेम !-वित्रास ५० पद वस !-विच-बि+ सात प्रकारका !~इस्त−ि मात सी !~हाती~सी सात सीवा समुद्दा सात भी पर्धीका मंधव ।~ सकाबः~ व विवाहका ग्राम सहर्गमञ्जू एक चन्न ।-शिया-स्ती० बागरही ।-इरिपं-दि॰ सात् सिरीनाका । पु॰ विष्य । -सप्ति-वि सात बोड़ोंसे बुक्त रक्ष्याका। पु॰ सूर्वं।-समाधिपरिकाररायक-५ तकः। -समुद्रांत-वि बिसका विरवार साम समुब्रांतक हो (कृषी)।-सागर-व० पड़ किंग ।-- • दान-पु व्यक्त अकारका दान जिसमें साव पार्वीमें मात तरहकी चीजें घरकर तेत हैं। -साराजक-प दे० रिप्तम्सामरदान । – सिरा—की पान वांद्रक । ~स~की • साह वर्षोक्षी माँ ।~स्पर्धां~सी वर्ष सतो । -स्वर-प• संगीतका समक ।-बच-प है∙ 'समस्य । ससक∽वि [र्च] धातः जिसमें शाव हो। शावहाँ। प्र• मातका संग्रहासंगीतके मात स्वरॉ-वट्ड ऋपम्, गांपार, मध्यम, र्थय भैवत, निवाद-का समाहार । सप्तकी-धी॰ [मं॰] (सिनोंद्य) शरीवन कोनी । सप्तति−दि [सं]सचर। मप्तम-दि सि | मार्खी । सप्तमी-स्रो [सं॰] ब्रह्मको भावता विभिन्न अविकरण कारकको विमस्ति (स्था)।

सप्तचि-प् [सं] सत्त कवियों-एतक्वनाद्रमक अनुमार -गीतम भरहात, दिवामित्र समरम्नि, वतिष्ठ, करवर भीर भाषा महाभारतके अ<u>म</u>नार-मरीजि जनि अंतिश बुक्क अन्त पुकरत्व और विशिष्ठ-का मंदकः नात वारामीका एक मेहम ।~स~तुर बहरपति । सप्तांग-वि (मं) गाव भंगींबाला । मुन्देन 'मृप्त प्रहर्ति । सप्तांहा-वि [मं] गान किएबीवाका । व कारित । -पंतब-द शमि प्रदा

सप्ताच्या(सम्)-इ (र्श-) मध्य सप्तार्थि (म्)-वि॰ [मं] गात निवाभीवत्याः विमधी नशर या ग्रंबन प्रति हो। पुरु करिया शति ग्रहा विश्वक सप्तार्भय-५० [मं•] मानो शबुद्ध । वि वाल समुद्रीमे

दिश द्वमा । समाञ्ज-५ [तं•] शस्त्राग्र, क्लाम् । सहाध-पु [पं•] हानभुभ श्वन ।

सप्ताच-पुर (संर) बूर्व (गात बोरोवर्त एवडे बारग) । मप्ताइ-९ [मंग] मात रिनशी भवति, इपना। गात रिन नश्च चयमेरामा नशकि ह मसाद्धा-को [सं] १६ शेवा, सध्यक्ष ।

सप्रकारण-वि [तं] विरामें क्योरेंचा विश्वत ही।

समज-वि [सं] वाक वयोंसे उत्तर। समज-वि [र्शः] प्रदाशन मुक्रियार । समितिभय-वि॰ (सं॰) सत्तरमास भनिरिष्ण। समम-वि॰ [सं॰] समान बांतिवासा। बांतिउस। सप्रमाण-वि (सं•) प्रमायकत प्राप्राचिक हो है है। र

जिसके कार्में बीर वी बेच महिकारी ही। समस्य-वि [में] यह हो मृतमे हरसन्। सप्रसमा-वि॰ की॰ (मं॰) वर्षोवामी। दर्मरत्री। सन्दाई-न्ता (र्थ•) वहनामा (स्ववहार, हरोस भारि बीब): प्राप्ति पृष्टि, स्मर । - अप्रिस-१० रहिएके स्य। -विपार्टमेंट-५ वृधिवन्नाः। सक-प हैं। 'प्रक्र'। मक्क−औ॰ [बर] चूँत वता नमात्र पानेवाकीओ पी वाँठ वाँवमेकी बगवा कर्मा बोरिया, वर्मा 🛏 भगाः वि शुक्के किय सैनिक्षेंको वृद्धित्वक करवेगाला हुरहे बरकर करनेवाका। व्यार्थ करनेवाका ।-इर-नि एउँछै तीवनेवाकाः बीटः बीटा प्र अवस्थि रहती ।-वेरी स्ती परा बनाना, पाँउ वाँचना 1-बन्ता-वि वाँचार । -बिक्स-वि पाँच होडमेशका होरा (बस्टेड्स) -(क्रे)मालम-सी वह वर्श क्रिमस मावस्क्री वर किमुमै बातम करनेवाने वेदे (मुस्तवः) । सुर न्यूनर हेला-वैभिक्तेंक्र गाँतको विश्वनित्र या अस्तन्त्रा स देवा । सर्फे माफ कर देवा-कैनपेश्वरीश हक्ता कर देशा ।

सक्तोस-प्रश्रेष स्प्रशीम । संबक्षास्- इ यह कन्न्य आर् सफर-पु॰ [तं] है 'सडरो । सकर-९ [ब] दिवरी छन्दा बूमरा बडीमा रिटे शुगकमात्र निवाँ मतहूस मधाती है। कारने वहा वाला। बाबाः स्वामग्रीः 👣 १-धर्षे-५ धर्म मार्वस्पर (-मासा-द्र भ्रमभर्यो^{त्र}) सफरतस-५ (म) रिहो !

स्करत्रही-वि जिसमें सदरज्ञा दीन ही। सकरवाई-५ दे उपरदारे । सफरमेमा-पु (अं॰ ग्रैपरमेन) गुनादे देवने को

शीमके भाग बाक्टर सार्थ। रास्ता मादि वदार करने हैं। शक्ररा-४ [४०] विश्व । सफ़राबी-वि वेशिक रिचर्ट ।-बिहाई-५० रिच

प्रचान प्राप्ति । सकरी-सी [मं] १६ तरहकी होते चमधेनी जहनी मक्तरी-दि० स्परकार वात्रानंदची वादाव पाउँ त्र सुनावित वात्री। नयसर-'सहते शेव प्रदान किन में तरबूमा नाम"-तर । भी राहार्थ ।-नाम-5

MET I शक्क-दि॰ [तं] बस्तावा करूपित का सन्द करनेवाला। कुलक्ष के बावबावा मार्चका अंटबुक्त, बरिया

सर्वा । अवबद्ध-रि [त] राज्ये तथा सफ्तमा-भी [तं] बाबवारीः पूरा होदेश बांध कुरेनाः सार्थदशाः

'सर्सन'। -सहाय-पु अवद्या गित्र। वि० त है बिएके मित्र मेक हो। -सार-नि को अच्छा रशरार द्यो । पुपक बृक्षः कविः विषयात् । सच-प्रश्चल सारमाग रहा तला व सला सतीला सत्तम-वि• [सं•] स्वैत्रेष्ठः परम पुरुव । सत्तर-दि॰ साउसे यस अविक ! पु सत्तरकी संबंध 🕬 । सत्तरह-वि दएवे सात नविक । ह सत्तरको र्शस्या, १७। सत्ता−पु सत्त बृदिबीबाका रात्त्रका पत्ता । सी॰ [सी॰] अस्तित्व। वनार्भताः जातिका एक प्रकार (ने)। कत्तमताः भभिदार, प्रमुख (दि)। -चारी(रिध्)-वि विसक्ते हाधमें छाएनसूब हो।-झाब्द-पु॰ वह खाक विसमें मूरू सत्ताका विवेषन हो (पाधारव वर्धन) । —मामान्यस्य-पु अनेह क्योंने किसी सामा व प्रव्यक्षा अश्विश । सचाइसः मचाईम-दि बीएसे साठ अविद ! पु प्रचारिक्ये संस्था २७। सत्ताभये-दि॰ मन्नेसे सात जविक। पु सत्तामवेश्वी संबद्धा ७। सत्तार-पु [भ] परदा डालनेशका दीव बॉबनेशकाः र्देश्वर । सत्तावद−वि प्वासस् सात अभिका मु सत्तावनकी र्शस्या ५७ । सत्तासी-वि वस्तीसे छात व्यविका हु ਰਾਗ**ਦੀ** ਅੱਗੇ र्सम्भा ८७। सच्−पु सक्तु मुने हुए कच (की चने)का आटा। मु॰ −वॉचकर पीछे पवना∽किछोके विवय गिरंतर केश-श्रीक रहना; पूरी वैदारीसे किसी काममें कगना । सस्त-प्र [सं] सीमबद की माबारणवः वेरहरी सी दिनीतन बकता था। यहा दीम वामाविः क्यारताः प्रण्यः धर्मः सदासः जान्छादनः वक्षः संपत्तिः जैनकः ताकानः प्रव बीखाः प्रवर्षसः मानगरवान पनादः वह स्वाम वहाँ दरिहोंको धाना चाँय काता है जंगरा दी नहे भवकार्योक्ते बीच किसी संस्वाच्या कगातार चक्रमेवाका कार्यकालः। –शृह्-पु वक्ष-भवनः जामय-स्थानः निकट समय का रक्षान । -परिषेपण-त वसके जनसरगर मीवनादिका विदरमः - फल-पु सोग-वक्का फकः। -•द-वि एत्त्र वश्रमा फक्र देनेदाका । ~चारा-प्र स्रोम-वड ! ←वसति;--साका--स्रो॰ है *'स्तन-*गृह'। −सम्बद्धाः – सम्बद्धाः । सत्त्रागार-प्र [र्स] वै॰ चितन-भारत । सरकापक्रय−५ [धं] शास्य-स्थान। सरदायग−पु [र्स•] वर्षोका करातार वक्तनेशका हरा । सत्त्राक्षा(इन्)-५ [सं] संद्र। सत्ति-प [र्च] यह की भाषा वश्व करता हो। हानी। पायक । सत्त्री(तिन्)-३ [सं] वश्वतः। शिरशस्य राज्यतः नधका विरोधना करनेनाका जन्मा नव थी क्यानेश्वरी हो। वि चयशीक।

[सं•] मस्तित्वः सहयात प्रकृति स्वमानः

सत्त-सत्य पदार्थं। धनः मूस तरम, मानु भादिः सारः मागी, औष पारी। मेवा बार्मिकवा। सत्व, वशार्थता। शक्ति, बीवस्रक्तिः पुक्ति, समञ्जदारी। विद्येषता। प्रकृतिके तीम गुजॉमेंसे एक भी सर्वोच है (सां∘); संद्रा।। –कर्ठा(तृ)–पु∙ मानिर्वोद्धा सहा । --गुण-पु॰ मङ्गतिके तीन गुणीमेंसे यक, विद्युबताका शुग । —गुणी(जिन्)—वि+ सत्त्व गुणवाका। -घास(भ्)-पु॰ विष्णुः -पति-पु॰ व्योववारियोका स्वामी । −प्रधान−वि सत्त्वगुणी। ~भारस~प्• व्यास । –सक्षणा~मी गर्मके कक्षणींसे प्रक स्त्री। −कोक-पु॰ सीवकोक। −विद्रय-पु चंतनाको दानि। -विद्वित-नि प्राकृतिका सरवरानी। -शा**की**(किम्)-वि शसादी साइसी। -शीक-सत्तराणी । --संप**न्न-**वि सत्त्वगुणबुक्त भीर, शांतविच। ∽संद्रय−पुप्रक्षम, प्रक्रिया नाश्चा ~संद्युद्धि-को स्वभावको विश्वकता सरावन। -सार-सकिका सारा असावारण साइस। -स्थ-वि ब्दा समाना समका बारमस्य अपनी प्रकृतिमें स्थितः सक्तगुणविश्विष्ट सत्तम्। सफ्बक-पु[सं] प्रेतास्मा। सरवमेजय-वि (सं] जीवधारियोंको बंदिर करनेवाका । सख्यधान् (वर्)-वि [सं॰] जीवित विसका वस्तित्व बोः सम्बद्धकः पुन्यास्माः साहमी । मरबाप्मा (सम्)–वि [सं] संबगुणवाका । मरवाधिक-वि [सं] अध्ये स्त्रमानका साइसी। सत्त्वोज्ञेक-पु॰ [सं] सत्त्रकृतिका भतिरेक होता; बत्साह, सावस । सर्त्यकार-तु [मं] सस्य करनाः बादा पूरा करना समझीतेका सर्वे पूरी करमा गाँदे ठेकेका काम पूरा करनेके किए अमानंतन्त स्मर्गे पेशमी थी आनेवाली रक्म ६ सर्त्वमरा-की [चं] यह नदी। सस्य-वि॰ [र्व] स्वय यथार्थः वदातम्बः ईमानदारः निवयस्यः सिद्धः पुण्यास्माः सर्छः सन्ता । पु अक्तकोन्द्रः वीपक्का पेका राजवंदा विच्छा नांबीमुखनायका देवताः स्वी वातः स्वारं ययार्थताः क्रमनः विद्ववताः सरापनः अवस्थारी पारमाधिक संचा। शतका नावा। स्टब्स्य साथ लुगः ममाणित विकातः बच्छा मका मधा करता एक विकरे देवा यक व्यासा मर्ग्यस्के सात कविवासिसे पंका यक विष्याकाः सात व्याद्वतियोगेसे एक । -कास-वि सत्व कार्मिमी ! — अर्थिति – पु अस्तक्त परा भानेवाका एक मंत्रा मंत्रसे कलाया जानेवाका एक लका। - कृत्-विक रुवित कार्व करवेवाला । ∽केतु – पुण्य पुरु । – किया −की अपका प्रतिका, नावा (वी)। नझंबी(यिन्) -- गाँठ देकर ठीक शरवसे नॉयनेनाका । --ध्य-वि मतिया संगद्भरनेशका। - बिति - स्रो प्रच्यो विवव। −कित्-प्र चीसरे मन्वतंत्कारंह; एक वानव; एक वृक्ष । -श्च-वि सस्यक्षा वासकार। -तपा(पस्)-प्र एक कावि ! - वर्षी (विंग्स) - वि सन्वासायका विनेक कारी-वाका। पु तेरवर्वे गर्मतरका यक कवि। - एक (का) वर्ष गुका भारमदाल भैदन्या प्राण बाधु जीवनः प्रजा −वि वे 'सत्ववक्षा । ~धन-वि॰ सत्वक्षा दी सर्वत्व

1911 सक्का∽की सि] पीक्क्षणा प्रकारकी । सफ्कित-विश् देश 'सम्बोग्त'। सफरीकरण-पु॰ [र्न॰] सफ्ड करनाः सिकः, पूर्व करना। सफसीमृत-वि॰ [सं॰] कामवावः वो मिकः, पूर्व को । सकमोवय-पु॰ [सं॰] क्षित्र । सफ्छोत्कं-वि [सं•] विसमें सविष्यमें सफक्ताकी भाषा हो । सफ्रहा-पु•[ल] एमी वा वरवका रक पार्थ प्रश (का॰) चीवारै: विस्तार । -(इय्) इस्ती-पु॰ (का॰) दुनिया १इडोफ । सु ∽०से ठठ आजा-गर बागा। सफा-सा॰ [श] सफारै निर्मेत्वाः चमकः मकाकै पासकी एक पदाडी । वि दे 'साफ'। -ई-न्दी॰ दे क्रममें । -चर-दि विक्कृक साफ मेदान विसपर कोई रेक्ट्पीबा न हो। बरछी तरह सुँका हमा (सिर)। - मैदाम-प बरेल मैदान मिसमें कोई देव-पीवा न हो। सु — कर देना — साफ कर देना इत्र रहने न देना, पूरी तरह मूँह देना। बार-बीछ बाना । -कह्ना-सरी वेकाय कहना । सफ्राई-स्रो सफ होना, स्वच्छताः शाव-पाँछः मेक-गृंदगीका दूर किया जाना। चमका विकासदर। क्रारंदरा-पनका म रहनाः सरकताः हरव शुक्तिः नेकनीयती सवार यरापनः हिसानका चुकता हो जानाः मेक, प्रसद (स्प्रा ही जामा)। समाक्षि। तमाही, बरवादी। वीवसे मुख्य व्यमित्रसम्बादभाव क्सकी निवीवता सिख करमेके क्रिय पेश की बानेवाली गवादी है , अभिशुक्तका (-का गनाइ, नक्केक); कुरती चतुरानै (−का दाव); (का) मिर्कक्षता। -का गवाइ-वद गवाद की जमियुक्ती स्पार्टमें पेस किया जान । -का वकीक-जमित्रकपञ्जा कांग्रेस । स्का हाध-दक्तारको वह बीट की विस अंग वा बीजपर वहे बसकी साफ दी हुकते कर है। मु॰ नकर देना-साथ कर देना युक्ता कर देना। कर कर वानाः समाप्त दर देना । -हो काना-मेरू पुक्ताः सफावा ही बाना । सफ्राया-पु समाप्ति। माधा संदार । सु - वस देमा-बरम कर देना मिटा देना। सबको मार काकना। सफ्रीमा-त किताया वही। भीरतका समभ । सकीर-को विदिवीकी भागमा सीमी भागाव । सक्रीर−9 [थ] बृत राभदृत। सफीड-को दे 'सजीर' (सिया, काबाब)। सफ्छ-पु [स] चूर्यः। चूर्वरम जीवन, चूरम । सफ्रीय-विश्वाि डबला स्वेतः गीराः कीरा सावा (क्यपन) । भी गंजीफेंकी भाउ वानिवॉमेरी यह ।-कोड -प्र अक्टबामिस्तामका एक पदारू । चताा-प्र ध्वेत क्कां~पक्का⇔पु वह कवृत्तर विस्ता रंग लखेद, रोट काका और दुस तथा देने हुक काले कुछ सप्टेंद थी। -पोस-वि सप्रैय कवड़े पहमतेवालाः सजा जन्दमी: को जमीर न दोते इप भी भक्के अन्तमिबीकी परद रदे शिष्ट किंद्र अस्पविच (जन)। -सिही-सी यक्षित्र मिट्टी । ~मुद्दरा~तु यक तरहकी सीप। --रेश-निविध्धे बहा एफेंट ही गनी हो पूढ़ा।

मभिकार, सर्वाभिकार । स्व -पद जाना-(सब, रीग आदिसे) थेइरेका (ग धड़ बाना पीका पर मामा ! सफ़ोबा-पु एक तरहका नाम; एक पेर भिसका वह शकेर दीता है। एक तरहका सरनुमाः सुरहका जनामाः जरतेसे बनावा जानेवाका एक सप्रेय रंग विससे मोहै, कक्तो मादिको रँगाई को बातो 🖟 सफेद पमना । सक्रीदी-को॰ सफेद होना, स्नेतताः ग्रॅहपर बगानेका **छकेर पाढवरः समेद रंगका सामः गोराईः मुनेदी प्रताई** (करना श्रीना)। धवेरेका उजाका । स -भाना-स्थापा बाना, वार्डीका सपेद दीमा । मफेप-वि॰ [सं] फेन्ड्फा - पुत्र-वि॰ वने फेनसे मान्स्रवित (वेसे समुद्र)। सक्ताल्ड-पु॰ दै 'सफ्ताल्ड । सफ्डाक-वि [ब॰] ब्रुक्यां, वाकिम, निर्देव। सफ्डाकी-की क्रता, निर्दवता, शुरम । सर्वक, सक्ष्यक−दि [सं] क्षितके किए कोई जगासत दी गबी हो। मर्चप्र-पि [र्स] विशवे साथ निकट-संबंध हो। मिश्रयक्ता यक्त बीर्वसका। ५ संत्री रिस्तेदार । सब-वि कुला समस्ता सारा संपूर्णा [बं] स्मेदा गौध (समासमें) ।-ईस्पेक्टर-दु॰ धोटा र्रस्क्टर । स्कोधर सीयर-पु नावन भीवरसीनर !- अज-पु॰ छोटा बद, सदरकाका ।—दिक्वीसम—प्र सिसेका पद साम दिसास. वहरीक ।~डिबोक्सक∽वि॰ एवं विवीयतदा । ≔पोध माफिस~प सुफरिस्स्का शककाना । ⊶रबिस्टार⇔ य नावव स्विस्टार। सबक - प्राचित्र व्यवस्था व्यवस्था अंद्र भित्र स एक दिनमें ग्रक्ते एका कावा किया सीवा वह बंद की चेतावर्गाका काम दै (दैना, मिकना) । सुरु –पदाना– विका देनाः सही स्थानाः सदकामाः —क्षेमा—परनाः शिक्षा केना ।-सिकाना-थिका देना । सब्द्रस-वा॰ [ब] दूसरेते वाने वहनाः वहकर होताः बरतरी । अ॰ -करमा -जमो का जानाः वहक करमा । ~के क्रामा-मापे पड़ जामा (मपनी) शेष्टवा स्थापित **इर**मा । सवज-वि वै 'सम्य'। समद्र• पु शब्दा किसी महारमाकी गानी सवन बादि। भवत-पु वि•] बारमा प्रपातान कारन, हेता दसीस । की अनवसी ** के कारम। सबर~प रे 'सन'। + वि+ दे 'सबक'। सबराञ्-वि धर, कुछ शारा ।

सवरी-सी जमीन दीवार आदि बोदगेका एक भीवार।

सबक्र−वि [र्स] सम्रकः, वक्षात्ः सेनातुषः । पु वसिष्ठका एक तुत्र (सार कवियोगिने एक)।[स्र]मोतिवा-

सविकि-वि॰ [सं] राजकरसे तुष्टा रक्षिके साथ। पुरु

गीवृष्टिनेका सार्वदाक (वद दक्षि चदानी बाता है)।

≠वै 'शवरो।

विद्रा करावदी वाक ।

~(वो) सिवाइ-पु॰ भका-दुरा,

- का इष्टिक्यार-बनाने निगाइने सब कुछ करनेका

मामनेवाका परम सरववारी । -धर्म-पु॰ धावन सरवा तेरहर्वे मनुकाएक पुत्र । वि धिसके आदेश सत्य ही। -- ध्यार प्रारम्त सरवद्या यार्ग । - ध्रति-वि धरम सरवर्गायी । पु यह ऋषि ।- नामा(सन्)-- विसद्धा माम सही हो । - भारायण-पु पत्र देवता (वी बंदाकरी सरवर्गर कट्टे जला ई)। ∽निष्ट∽विश् सरवर्गर निष्ठा रसनेवाका सरवद्य प्रेमी । - मेग्र-पुरु एक कवि (अपि-पुत्र) ! - पर्-वि ईमानवार, सच्या । - पारमिता-स्री॰ सरवकी सिक्ति (व))। −पास्त्र⊸पु॰ पक्त सनि। --पृत्त--वि• सरव द्वारा विश्वकः किया द्वागा । --प्रतिश - वि बारेका एका, बचनका पालन करनवाला । ~प्रति धाय-विश् वचनका संस्था । -प्रतिप्राम -सख-वि सरबद्ध आवृत्त । -फल-पुरु वेक शीप्रक । -बंध-वि॰ सरववारो ! ~भामा~सी संघावितकी एक कवा भीर कृष्यक्षे काठ पश्चिमेंमेसे एक । -मारत-ब ब्यास । -भेदी(दिश)-वि वयन मंग करनवाका । -संधा(धम्)-वि सक्ते प्रशासक (विष्कु) I-युग -g बार बुर्तोमेंने वहका कुत्रबुग । -बुर्गाचा -खो॰ मैद्याद्य-दृष्टा शतीया (जिस दिन इत्युक्का भारेम माना भावा है) । -प्रारी-वि [हि] सस्बदुगकाः बहुत मेका बहुत पुराना । न्दीबल-पु विधायर । -रत-वि सत्वपरावध । प्र व्याष्ट । - क्य न्यु वक विवर्ध गरेख। **−१था**−स्त्री विश्वंद्वकी पानी। −रूप−वि विश्वम मीन । ⇔सोक्-इ शरते कररका ओक, मझनोक। -श्रम्मा(मृत्)-वि॰ स्ट्रावशती । -वचन-तु सत्व मानमः रादा प्रविद्धा । वि सावनाती । -वचा (चम्) -प मापि । दि० शस्त्रकारी । -**लवन**-पु साप भावण । -वदा-विश् रात्व वीवतेवाना । वः साव वातः। -धम्-पु॰ विश्वरेवींका एक वर्ग । -बाक-पु मार्य बोक्सा। -वाक्(च्)~की शत वयम। पुरु कविः एक अस मंदा की मार मानु चालुएका वक पुत्र। मानु साव विका एक प्रमा दि॰ मानवादी। "धाक्य" पु साव बम्त । -बाबक-वि झाववारी । -बाव-९ बहा प्रतिका । -बादिमी-नी बासावनीकी वड पृतिः वाचि बुधारी एक देवी । -बादी(दिम्)-वि॰ रफावका । प्र काशिक । अबाहम-वि मायका बहम करनेकावा (स्वप्त) । -विकास-वि जिसमें शक्यों बीरता हो। -यूस-दु गदापार। वि+ मदाभारी। ∻युक्ति-मी सरबद्धा भाषरण । ~वपवस्था-नी भावदा निधव। ─मत-वि० शत्पका त्रत रमनेवाधा । वु मस्वपात्रका त्रका एक ध्रानीम सरेशा मनु नैनस्वता प्रतरहता एक पुत्र । -शायम-दि शिपनी प्रथम का शाप पुरा हो। -शीक -शीनो(तिम्)-वि नावपरायम ! -शावण-प= श्चप्रसम् । -संबद्ध्य-ति धन्तेष्ठम् । -संब्राधा-वि बी सम्ब जाम पड़े ? -सँगद-नि अकी व्यापका बाबम इरवेबावा । ५ क्ररर ! - संघ-ति बनन पुरा इरमेशाना सांवमध्य । -गंधा-मी० शीर्या । -मंह धार-पु क्यम शहम क्रमा । -संध्य-पु क्यम प्रतिदा ।-संदित्-नि व नेता वदा !-साझी (हिन्)-3 विद्युश्य प्रशास :-मार-वि वृद्धेश नाम !--रथ- | त्राचाविती-भी [शृंत] त्राचावितरा पूर्व शास्त्र वार

वि॰ अपने वयनपर टिक्रनेवाका । - स्वयन-दि॰ मिन्ने सम्बन्धारम दीवे ही । सस्यक-नि [मं॰] वै॰ 'सल्'। दु॰ मर्दु रेशस्य स्ट पुत्रा कृष्णका सहारी बरवक वक पुत्रा शान्दा रहरार ! सत्यतः(तम्)--व० (तं०) शबतुष, दरमाप रहतः। सत्यता-ली॰ [तं] समार्थः बारतनिष्ठम निलदा। सस्यवर्ती – मी॰[शं] पराग्रस्थे पत्नी और मानुग्रे पत्र मरस्वर्गमाः यारक्षीः परनीः ऋबीदादी प्रामीः १६ मही। -सुत-पु॰ ध्वास । सस्यवाम्(वत्)-नि॰ (तं] स्थते तनः स्थ्वा । इ यक जल-मंत्रा मन रेवतका एक तुवा मन चन्नाच्या एर प्रशासानित्रीके परि । सस्या-जी॰ [र्ध] सम्बार्ध रह धनिता सेका मन क्लमी सरवरतीः सस्यमामाः धर्मश्री रह कृता । सरथाकृति~ची॰ [ti] शीरेबा इक्सर बरमा क्ये देमा । सस्यागिन-पु [सं] कामस्य ऋषि । सत्वाग्रह-५ [4] सत्वदे क्षित्र माग्रह तित्व पर्दे किए कह आहि होकते हुए कर्वको गामिक करने करशा)। सलाग्रही (हिन्)-वि॰ [र्थ॰] बरेदब-पृतिके किर समा धरका सहारा हैमेशना । सरपसम्ब-नि [सं•] मस्य विगुद्धा सार हो। मस्यारमञ्ज−प्र• [सं] सामा मा सत्यमामामा पुत्र। सरवारधा (सम्)-दि० [मं•] शास्त्ररावच । १ एकः बानी स्थरिंग । सत्यानास-इ धर्वमाष्ट शरवारी शरकानमः, सर्वनाम करनेशना सत्यागसी~ि अमामा, माध्यदीन । स्त्री • महर्मोह स्वीप ! शांचामरकः−िर मि•ो सत्त्वारी, सत्त्वारी सत्यामुख-वि [नं] जिसमें त्र और खड़्या मेन है बी कपरते शस्य चान रहे पर अमध्ये शुरा हो। 3 सब और सठा म्बादार । सरवापय-५० (सं॰) सन्दर्ध योब-परशका सम्बन्धन या शत्यका पाणमा मीरेका श्वरार । सरवापशानको [सं] गीरेका श्वरार । मत्याभिषाम-वि [तं०] तत्वभाषी । मस्याक्कावी(विन्)~(४० (सं•) सत्वपःरी [।] सत्याबाही-सी (१०) हम बजुरेंदरो एड प्रणा। सारवेतर-पु (०) वह को सन्वत शिव ही। करावता । सम्बोत्तर-पु [मं] सथा भाष्ट्री सीक्षीत क्षशान अवराच श्रीकार बरमा । सम्बोध-दि र्शि । एन्दरारी । सम्बोपनाथन-प्र[सं»] व्ह क्लार देश सञ्च – १ देशका मक्कप्र-वि [ग्रेन] काराधील, संबोधी दिश्का HAK-U I F HOLK ! संपर्दी-भी कृत्युद्ध बाद रेकी दिवदा कृत्य है सन्नाजिन-इ [मं] गावयामाध्य विना ।

समा-सी॰ मि ने पर्वो प्रवनः प्रवसे समित्राका बहत-बाको इना ६ - एतराम - इस-वि वासकेपी बाजेबाकाः बद्दर सेज बीडमेंबल्या (योबा) । स्रवात-स्रो॰ मि ोरिवरता स्वावित्वः दाता ।

स्रवाध-वि सि॰] बहरावदः हानिकारकः। समार, समारिक-भ० बरुप, शीध ह सवारप-वि॰ [सं॰] अमृतुक्तः शहन दश्ता हवा ।

सवारपष-वि [सं] विसर्वेशे बाफ निक्कती हो । सर्विद-प्र सि॰ दि पर्वत । वि॰ विश्वसः। समीज-विश् सिनी बीजवर्का जिसमें बीज हो।

संवीक्र-सी॰ [म] रारताः चनान-'नवे न नही शरीक्ष ह चौक भीगुभा मांग - दिश वसीलाः वह स्थान वहाँ कोशोंकी पानी, शर्वत मादि विकादा जाव व्याकः वृंगः

सरीका । समीइ-ली॰ दे 'छनीइ । वि [स] गोरा-विद्या। सन्- इ देश 'सद (काश)।

संबत-प्र हे 'स्वत । संबर-वि [न] सन करनेवाला क्ष्याद्योक । समरा-प नेनः (समज्यान) शिक्षेत्री काम नासमा वस करनेका साधन-कर काछ या पर्नेका श्रंत है

सबस-त प्राीभसी योकर सिरवर असनेशकी €सी। सम्बद्ध-रदी॰ कि ो बह शराब को सबह पी बाव ! मध्यो-स्रो स्टेर के वानेवाको शरामा सरामही

रीतसः । मनेरा-इ देश धरेरा । सङ्ग्र--वि+ [फा+] इरा कवाः वरा-मरा ! - क्रद्म-

वि जिसके करम पीरा, अमंगळकर माने जात 🗊 मनहरू । - इत्यो - स्वः वर्मान्तिक होना, समहमी । - योदा-पु(मा) मंग। - परी-की 'अमानत हिसिष्ट इंद्र(रंदर)समादी नायिका की गुककामसर आर्थित हुई थी। (ला॰) ग्रहामा ग्रेसर हरी मीत। च्या-दि॰ असागा सनहम । च्यूल-दु॰ साहमान । -पोस-विकायण्य रंपनी प्रेमा परने ही। -क्रीबा-म स्ट सरबंबा ब्यूनर जिनके वरे वरीके बायमें सकेर वर बीव है। -बहुत-वि सीमान्बधानी। -पर्मी-सो नुसमक्षेरी भीवान्य । -सहसी-क्षी इरी मनगी। "मुन्दी-पु इरेरीनक सनुपर। -बार-तु वह तुरवी जिनके मिरवर कोडी बीती है। स्॰ ~बारा दिग्याना-बगनेके तिव शुक्री आधारे (taini भोता देश ! -हाना-हरा-घरा होना कठना-

राष्ट्रा-पु (का) हरी काम हरियाची। तका। मीन क्षेत्र वह बोहा जिल्ला महोतीमें स्वाह (नही शहब हैं। । वारी-मूटके बगनमें अबरेश्र प्रवत बोलेशची बरिवाणी। कामका क्य महमा। एक न्याका भागा एक तरवया कर बशा जेव । -- भार--पुरु वह रेवान वर्षा दरी दरी वाभी बत्रस्व त्रवीका बाद्रस्य हो। -(ए)वेताका-पुरु अपने भार का अस्थानमें वागीराका रेका । शुरु - बाका-क्षरीगीपुर बाही दे बाल कराने नगमा है

mit संब्द्री-को॰ इस रंगः इरिगामी सामनात, रहे स कारी। येग । - प्रशेष्ठ- प॰ मागुन्तरकारी रेकोराता। ~सडी~मी वह बगह जहाँ सागतरकारो और दय पष्ट निष्ठते हों ।

सब्जेक्ट-पुरु [अंत्र] प्रजार विषय १ -(बरम)श्रीर्ट की॰ विषयसमितिः विषवित्रशीवित्री समिति । सम्ब∽्ड वि देश। स॰ −करना~रियन। सम-पु [ल] सहम, बर्दारता रेदी प्रतिकार नरा असर को क्लीइक्सर वहें। वसती ! मुर्व - मामा-पर बरमा, इक पहना । -करना-महन दरना प्राप्त चुरचार सह केवा: बहरता चैवे स्थाता बाहा रूप

रंगा । -डी सिस्ट काली या दिकवा रेलडा-पारप पैर्मपर्वस सङ्घ नेन्स । —क्षेत्रा ~(रेश्वरका) स्वापेश्री द्विष हेमा बीरम बेबामा । - एक्मा-धेरित वा राउएसे बाइडा बगुर होना, सबडे वरहेमें आवाचारीये (गरे इंड विस्ता । समझारू-वि॰ (ले॰) महा(दरोहित)हे सावा प्रसानिता

दै साथः मधलीददे साथ । महाराष्ट्रपै-१० (सं०) सराध्यवम । सब्बाचारी(रिम्)-व॰ (तं॰) शहाध्वाचे। रेडमे स (स्थान) श्राधा पहनेवाने। स्थान दुनाने द्वार व्यक्ति। साथी। वस वीने व्यक्ति। सर्वत-वि॰ [तं] संस्कृतः - हमंत्र-इ शतकारर

प्रकार को शब्दका क्षेत्र करनेपर बनना है। समझ~दि॰ वि॰ विश्वी सहमोरी । समय-वि॰ [सं] हरा हुना, मयनुका राज्यका । समर्गुका-नी [र्च+] नह सी बिगना नर्त बीति है

सबदा (समस्मा(स्मन्)-वि [लं•] वो मन्य बनादे हो। -(स्म)हित-५ पाद्यपत वा धव मम्बामी। समा-को॰ [नं] गोडी सबकिमा शरेरर ग्रीसीप

श्वतारकम् स्थाप्तका स्वापालका क्रस्ता कृत्यका विकालम् व्यविद्यालाः मीवनात्रवादाः स्टब्स् कोग जाना आहे-जात क्यां कार्व-विशेषके दिश लगीत भ्या । -कार-पु॰ समा असाधा विमोता गया दरने बाच्या । ~श्र~वि समाये जाअशस्या देश द्वारे ! ~शम्~वि वी स्थायात्वमें क्यावित हो। नर्हें " g सन्ना भरत । —चानुचे -पुण गसः गुनाको हैं परे व्यवहार बरनेकी बद्धाता । -बायका-पति-इ मन का अध्यक्षा शुरुका अष्टा चनानेवाण। -वरिवरि की समिति मारिया अविश्वत । न्यारे(र)-1 अहानारणका कुमरा लंड जिसमें युगारिका कांगरे। -पाम-द्र सेर्वनिक मन्त्र वा नेशानका ₽0-इ.स. १ -पूजा-भी (श्वास्त्रामे) शर्माने प्र^{दे} लामानपदर्मेष (गा॰) । -प्रदेशम-५ नारपदर्

हरीय बरमा १ - संबंध-पुरु महामानदी सक्ता

-बोरब-दिश मधानदे प्रपृष्ट र अवसदर-तिर समा

की समारित करनेशना । न्यां(विश)-11 3 ना

बहुा बलातेशवा । -सन्-सर्-५ भागाम्हरू

शहरद अञ्चलको ६ नामगढी ल्यांदे ।

सचाजित्-पु॰ [सं] सरमगामस्य विवाह एक प्रकार । सन्-पु रे भूदु । -धना -हम-पु रे॰ शहुम । सत्व-प दे॰ 'सत्त'। भत्तार−वि [मं•] तेब इतिहा। स सीम, कीरश। सथर्=-पु= स्वकः, भूमिः, पृथ्वी । मधरी। -स्रो॰ रे 'संबरी'। सबिया = - पु • दीवार बच्च आदिपर अफ़ित किया बानेवाका एक मांगरिक थिए; स्वस्तिक [क्ष]। समृस्कार-वि [सं] विसक्षे मुँदसे पोटत समय पृष निक्ते । पु वातके माथ पृद्ध निक्तना । सदजन-पु॰ [सं] एक भेजन को पोतलके भरमसे तैवार किया बाता है, कुसुमोत्रन । सर्दभ-वि [सं] अभ्ये बसवास्ताः रंगीः, वर्गदी । सर्वद्य-दि [मं] तेव कीववाका। पु केदशा ! -वदम-प्रभागका एक मेर्ड सह पड़ी। सर्वशक-प (सं॰) इन्हरा। सद-प्र• [सं] ह्यका पत्तः एक यकाका पूत्रराष्ट्रका यक पुच। कसी अभदत टेका कथ छया तुर्ददा≄ दि ताका-'एक माक्यम सात्रो दनि मोठो म्युमका परमान - सरा भवा क्लकाः (का) भी शवा बहुव सी-सी। -- आफ्रार्टी -- बंदर-उत्तमधुराद वस्य पस्य। —चा%−वि वदुद बगइते यटा हुआ। –चितारा− प कक्षों या इसेंका संमा किसपर बहुत से दीपक ककावे वादे हो । ∽पा∽पु कनवास्ता । −पारा∽वि श्रद्धवा विमक्त, श्रंड-प्रंड । ल्यगंल्यु मॅरेका फूक । ल्लाकल ईक्र्यु बहुत-बहुत बन्दवार है। –सास्र−पु सी साङ ग्रतो । −साका−वि॰ सी साक्ता । −हा−वि सैकरी बर्द सी । सद्(स्)-दु [तं] निवाल-रथानः समाः सर्वाहेक-अ द 'सदा'। धतक-पुदे 'शरका ; [सं॰] पूर्वाक वह बल किसकी भूमी च विकाको गयी हो। सव्का-पु [स] वह चीव की सुशक शामपर फर्दारी को दो भाग चरातः वह जीन को किमीपर नारकर दान की बाद या भीराहेक्ट रख वी बात कनुबह मनुष्ट् (यह सुद ~ ~ स्त्र सदका है)। – (क्रे) इदा– सदक्त किया द्वमा, शरा दुमा ("का श्रीमा विराग हुक्नुच ६)। −का क्रीमा−व६ क्रीमा वो किसीपर बारकर घोड दिवा बावा (का) काका-बजुडा वाहगी। -का गुड़ा~दे 'धरकेका पुतका । ~का भीराडा-वद भीरादा नदाँ सरकेकी पीवें रधी नामें। -कर पुरुका-वर पुरुका की सबस्की बीजोंके साथ कीराई

निहानर बीना । -में छोबना-बारकर छोड़ना (क्सि) विविवाकी) । —होमा-निछावर होना, वारी वाना । शतक्ष−वि [ग़ं•] विवेकसीसः ध थवक्षिण-बि॰ [सं] मिस भेंट थी गयी हो' दक्षिमाञ्चक्त । सन्म−५ [सं] निवासरवाम, यु मकामा श्रीग शीनाः gic दोना, शिथिल धाना; जल: यधमनमः यमधा मिनासर्वानः नैक्ना आसन्। एक भक्त कमार्र । सदना -- भ कि श्समाः गलके छेदोंसे पानी भागा । सदमि−पु[सं•] वसः। सव्तुप्रह्र~पु॰ सिं] अच्छे कीमीपर कृषा करना । सक्फ−श्री [व]सोपी। सदमा−९ [म] थका, बाबातः चोटा दिसपर सगने बाकी चाट दुन्छ सोक्टा भाषातः शनि मुक्साम् । सु॰ –ढढाना–दुम्प इरवपर द्वप मापातको सह केना । --पहुँचमा-चोट छगना। तुक्मान पहुँचमा । सव्य-वि॰ [सं] दवास रहमदिस । -हृद्य-वि॰ रहमदिल कामकविशा सदर−4ि [मं] टराइआ । बुगद्ध अञ्चर। सदर-५ दे 'छह। -अमीम-५ वह मविकारी को कबकै मातहत हो। ~काछा-पु मातहत बन्न 'सरकव'। ∼आहर्रें~ धु शुसक्षमान विक्रोंका माना इमा पढ़ वित । −दीकाच−५ छाडी खजानेका प्रवास अधिकारी । -शियानी-अदास्त-को॰ हाईकोर । -वाहार-पु अवनीका दश वाहार।-बोर्ड-पु भाकका सर्वेष विमान । -मासगुद्धार-पु॰ वह भारमी वी गीव गरकारको मालग्रवारी सङ्ग करे । सवरी~की विना बास्तीमध्ये मिरको प्रतहो । सदर्ध-दु [सं] बस्ट साध्य मुक्त विषय, प्रकृत्य । वि भगी, मारम्यार्। सदर्यना १~ छ॰ कि॰ समर्थन पुष्टि करना। सदर्प-वि [त] बगंदी । अ दर्ग-पूर्वकः। सदस-वि [सं] किमारीरार । सङ्गत्-वि [तं] यवार्व और शववार्व प्रका और बरा । पु वह किसका अस्तिस्य हो और वह विसका सही। सबी और शुठी वात सबाई शुठाई। अभ्याई शराई । सदसदिवेक∽पु[सं] यहे दुरेदी पदवान । सदसि-व [सं] धमाम । अ यु गृहा समा। सन्स्य-४ [म] विविधशे धएका विचान देखनेवाका किसी समा समावसे संबंध रदानेवाका व्यक्ति सम्ब समानद, पंच । सबस्यता∽की॰ [सं॰] सशस्त्रको रिश्वि वा माव । सदा-व [सं] नित्व धमेशा नितंतर । -कांता-कां पर रक दिना वाता है। नकी गुविधा-सदसेका पुतका। पक नहीं। —कारी(रिश्) —वि॰ वो इमेश्वा सकिव रही (हा) हरूप सो विस्त्री इस्त्रता श्रीवार्स भी न दै कसमें। ∼कासमाह−वि हमेशा मनादित रहने वाव । −में ∽प्रसाद अनुमदसेः सरका करके बारकर नाका। – कुसुस – ९ नातको । – गति∽ नि भी ४सेम्रा (सदस्में धोदना)। सु॰ -(क्रे) उत्पारना-कार्य चीन मनिकुक्त रहे। पु वाह्य स्देश प्रकाश निर्वाण सीखा क्रिप्तोके सिरके भारों और शुमाकर किमीकी बेना या शतु~तु परंड।~तीया−स्रो प्राप्ती। क्रतीया चौरादेगर रख जाना । <u>"करना</u>"निहानर दूरना नदी। वह नदी जिसमें बरावर वह वा बारा रहे। - दाम बारका। (कि) बुक्ट्रेमें बालमा ('कन दावीके सन्दर्क च दान वहानेवाका दावीः ऐरावतः गणेला दान-दर्भ भी मेरे वक्केवर कर्मे)। - आजा-वारी श्वाना धीरुताः वि इमेधा दाम देभेनाता। इमेघा दाम

समाग-वि [सं] विसदा दिस्सा हो। सामान्यः सार्व विकादै • 'समा'में। समागा=–वि= भाग्यशाकोः संदर । समाग्य-वि॰ [सं] माम्बशाकी । सभाचार-ए॰ (सं॰) मुगाजका शीत रिवाजः अदाकतका

तरीका १ स्प्रभाजन-प मि•ो भादर-सत्बार करनाः स्थापत करनाः शिष्टता, मध्रता रियकामा (मिक्से-क्रूकनेमें), मिक्स

सारी । वि॰ पाष्ट्रकः । समाजित-वि [मे॰] सम्मानित, बाच्छा तुर मस्यः प्रदक्षित ।

समावय-वि (सं•) सम्मान करने वर्शसा करने थोग्व। सभारता - जी [सं] पूर्वताः आधिकवः जन्युद्य ।

समार्थ, समार्थक-वि चिः । चप्रशेख। समावन−प्र• [सं] धिव।

समिक, समीक-प्र [धं] जुना केवावेवाका सुरका महा चलानेवाका ।

समीति नदि [मं] मनपुक, बरपेका। समेप-दि [सं] समोक्तिः विद्रान् । सिट । समोचिस-विश् सिं] समादे थोला। प्र विदान नासनाः

ग्रिक्टि व्यक्ति। सम्ब-वि सि] समाकाः समासे संबद्धः समाके वोज्यः

शिष्ट संस्कृतः तहः विकस्त । पु सुमालवः पंच, स्वाद क्रातेबाकाः ज्ञाना ध्रेकानेबाकाः क्रशीन व्यक्तिः ज्ञाना क्षेत्रानेबाका भूत्वा वंचाय्नियों मेरे यक ।

सम्बद्धा - ची सम्बद्ध - पु [से] सम्ब होनेका मानः सदस्यताः शिक्षताः सम्रताः सहताः क्रमीनता ।

सम्योतर-दि [मं] प्रवृत्त वंशकर । समंद्र-वि [सं•] समान विद्य पारण करनेवाका। प्र

प्रसद्ध नष्ट करनेवाका एव बाजवर । समग-वि [सं॰] समी भगों हे ब्रुच- वर्णापु एक

केंग्र । मर्मग्रह-वि [र्श्त•] मंगरुमव मगरुकारक, श्रुप्त । मि प्रविद्याः क्रम्भातः वरावक्रांताः सभंगा−को

वाका । सर्मातानी-की [सं] नोवि तक्की पक देनी।

सर्मगी(शिन्)-वि [सं] विसन्ते सभी अंग पूर्ण हो। धमी भावस्थक साथनींसे सुक्त i

समीवस~वि [सं] विवत वश्युका ठीक, समीवीना छंगतः रपक्षः निकः सम्बद्धाः अगुभवीः स्थरभः बन्धम् । बीजित्य अपनुष्ठताः संचार्यः संपतिः वक्षार्थताः হীৰ সমাল।

समेठ-५ [एं॰] गंदीर शेथा तरकारीनाले फक (१)। सर्मत-वि [सं] संपूर्ण समया मानंतिक। प्र सीमा दर। -इसम-तु एक देवनुष्ठ। -श्रीध-न्य एक पुष्पा रख देवपुत्र ! -चारिप्रमति-प्र एक वीविसत्त्व । -वर्षी(पीन्)-इ यह इद। -हुग्या-बी स्तुरी इस्। – मेरा–पुपक दोविसत्त्वा – पश्चक्र−तुकुर-धेत्र। कुरधेत्रस्य एक सीर्थः । —प्रम-पु एक पुष्पा एक वीविस्ताव । -प्रमास-पुष्ट पुर पुर ।-प्रसादिक-पु

यद्भ नौनिसन्त । -प्रासाविक-वि• वी सर्वन सदानता करमेके किए प्रस्तुत हो ि-शङ्ग-वि भी पूर्णतः <u>श</u>म हो। बु एक क्षेत्र वा बिना व्यव नीविसला। -- सुद्ध (ज)-प अधि। -रहिम-पुपक गैथिसत्त। −क्रिसोकिता−ना एक ग्रीड क्रीका सम्रोतर−प्र [सं•] एक देश। वस देशके निवासी । समंताकोक-प्र सि ी समाधिका एक प्रकार ! सर्मतावसोबिस-प॰ सि॰] एक बोधिमुख ।) सर्मन्न-वि (र्ध॰) वैदिक मंत्रीसे सुक्त। सर्मचक−वि॰ [सै] वैदिक मंत्रति सका जाइ जामने वाका ।

सर्मेत्रिक-विसी में विदेश है तक। सर्जंद-९ [फा] शहामी रंगका बोहा किएका अवास इस और कींप वा पॉप और बॉफ्के काफ स्याह हो। (अच्छी नरस्का) बोबा।

समबद्धे अनुसार वारिन्छंडमें बरुब होता और सससे नाहर निककर तरंत मर बाता है। • समुद्र ।

समदर-ए (का) यह करियत जेतु जी भारती करि-सर्माचकार-प॰ सि॰ो सर्वाधिक श्रेषकार । सम-वि [एं॰] एक ही अभिन्नः एक्स प्रसाः वरावरः **बीरस दमवारः कुछ को दोसे पूरा-पूरा वेंट कान** विषय नहीं। प्रमुपावरहित निन्त्रका हैमानदार, संबाह साथ बेक मामुकी शाकारका कमीना। शोका उपग्रसः सुनिवायनकः वदासीन निरुद्धः सदः समाग्री प्रकृतः आदि सम संस्थापर पहनेशको राश्चिवाँः चौरस मैदानः **एक काम्याज्**कार (१) वहाँ दो *पर*तुर्मीमें क्या नोम्ब संबंधका दोना दिखाना जान मा (१) कडी कारबढ़े शाब कार्यका शासम्ब हो मबबा (१) जिसके किए प्रवरन किया काम करायों सिविद विना अनिष्टने ही होना वर्षित किया बाद। तासका यह जंग संगीतमें वह स्वान बहाँ क्युक्षे समाप्ति और दाक्या भारम होता है। को मुख विकास नेकी फिरामें राष्ट्रिके क्या दी जानेवाकी रेखाः वद विर विश्वयः मध्याद्यरेखा विषयः रेखासे भिकती है। युवास्मिः बिनः धर्मका एक प्रमः वृत्तराहका यक प्रमा शारदम समानता। मण्डी रहा। क दे "हम"। भी समक्षा परापरी। '—बक्ष'-वि समान बक्षत का वरावरीका। -कम्या-को उपनुक्त कन्याः विवाह के योग्य करना। ~कर-विश् तकित कर्नों कर क्रमार्थ-थाकाः दे ऋगर्गे। ⊷कर्णै--पु शिवा ह्या समान क्योंबाका क्षेत्र (स्वा) ! -कर्सा (संब्)-वि॰ समाय वेद्या करनेवाका । --काक-पुरुक ही समय वा स्वयः। -काक्षीन-वि॰ एक समर्वे रहने था होनेशाला। —कोज-वि वरागर कोणींबाका (क्षेत्र) । पु वह कीज बो ९ अंग्रका हो। —कोक्र-४ सर्ग। -क्रम-वि विसक्ते कत्रम नरावर कूरीयर पहें। -क्रिय-विश्यक वैसा कार्व करनेवाका। —क्षेत्र-पु मस्त्रीकी एक विश्वेष रिवति। —स्त्रास-तु वनके रूपमें की गयी सुराई। –गंध-वि समान गंववाला। स्त्री क्तावर -रहनेवाकी संव। -शंबक-पुण्यक्षी श्रेष्ठे पराशीसे

दना हुआ बूप । —ग्रीधिक-वि॰ समान गोबवास्त्र । ब

नहारीयाला (हाथी) । -मर्त-वि हयदा भायतेयाला । पु॰ संबन्ध पद्यो । —मिरासचा –श्लो॰ यह श्ली ।—शीर पद्दा - मीरा - स्वी करवीया सदी वह शरी क्रियुमें बराबर सक या बारा रहे । -परिधात-प्रश्न यह बोबि-सस्य ।-पर्ण-वि निस्तर्मे बमेशा पश्चिमों रहें ।-पुष्प-वि• इसेशा फूलनेवाका । पुनारिक्तः कुंगः संशार । -पुरपी-सी रकार्यः एक वरवदो वमेको। -ममुद्रिस -पु नाठ सिक्शियें पर (प्रा•)। ~प्रस्म~वि इमधा इकनवामा । पु इदा रोहितका मदार । -करा —वि दै 'सुदापक ।—कस्र--वि• वसेशा क्षक्रमेवाता। पु वेहा कार्यका मारियका गुनरा एक मौनू ि न्याका न फेसी-सी॰ बपाइसमा एठ तरहडा बनत । -बरल-प्र [दि] दे 'मदावर्त । -श्वहार-प्र• [दि] एक पूस ! वि इमेरा पूक्रवेशकाः विश्वमें इमेरा परिवाँ रदें। - भड़ा - न्हें यंश्री बृधा - सब-वि निर्देश्वर विदेशिक ।~भ्रम्य=वि को इमेग्रा विकास का साथ थान । - सम - वि इमेशा भ्रमध करनेवाला । - श्रीवास -पद्मरु प्रदेश पुनर्नदा। - सक्त-दि॰ दमेशा मी वर्षे मदबामा रहनेवासाः हतेया वान ववानेवाला (बाबी)। -सर्-विश् को मारे खसीके पागक हा तथा हो। इसेशा मध्में रहनेवाकाः हमेछा वर्गत बारिये जुर रहनेवाकाः रमशा दान कानेवाला (हाथी) । इ गणेश ा-मृदित-पु पड मिन्रि ।-पोती (रिन्)-वि॰ वमेशा पोनान्वाम करनेवाका । पु विष्यु !-स्ट्र-व वेक !-बरदायक-प्रमाधिका एक महा -यस-प्र कि । हमशा मध सानेका प्रदा हैमा मह ! - सर्ती-वि , इ [दि] इमेशा वय दिनस्य करमेशांचा तामी। - इद-दिन धमेशा बच्चति बरमेवाका । -शिक्-वि का श्रश दयल रहे: जो हमेदा प्रमुख वा क्लमहोक रहे। तु दिव। --सहारित~नि , न्यो [वि] को हमेशा ग्रहानित वनी रहे । को मिन्द्राचीर यह छोटी चिडियार की केशमें रहतेवाने एक दश्की प्रचीत वेदवा । सदा-सी [भ] प्यति काराजः प्रतिम्यति। भाष्टः। फडोर्ड मॉर्थनंधी मानाव। सु --देना -छगाना-श्रदीरक्षा वाषात्र वनानाः बुद्धारमा । -बुलेन् करना-भागाव बढामा मारा संयाना !

सदाकत-भो• (स] मयार्थ। यराचनः वनशेकः। सदाकारी(रिम्)-वि [सं] अच्छाः आकृतिवालाः। वे सदाभिः। सदामिः

सद् शाम । रह्मचरम-१ (रं॰) शर्यप्रहार, मध्या बोम-बन्द । सङ्ग्रहार-पु (रं॰) मध्या याह्यस्य स्था । स्परहार

मरता तीर वर्षाचा । सन्दावारी(दिम्) -वि [मं], मन्द्री चाक-प्रक्रमवाका

स्वत्रमः । सराजनः (सं) श्री व्येषाः व्याः रहे । वृ विष्णु । सरामा(सम्)-रि॰ (सं) अस्ते व्यापदाः श्रेवः । सरामं(निव (सं) वस्ता वात्रस्य वस्त्रमण्याः वयेषाः आसं, देनामा । यु वृषेषाः वस्त्रसणः व्यासं । विषाः

विष्णु । सदाप~नि 'र्स•] जरते बहवाहा । सदासर्थ-वि॰ [सं॰] स्थारः बर्गातः बन्द्रेसः। सवार-नि॰ (र्ध•) सपानीक । सदारस-छो॰ [म॰] शहका पर समापील । सब्धासय-वि॰ [एं॰] उद्याराज्य हैंने विनारता। सबाबित−वि॰ (सं॰) धमेशा वसरें ब्रामवर्वे रहते बाला, परायमंत्री ह सदिया - छी + मरे रंग मे मनियाँ। सदी-मी (पा॰) ही शाबका क्षाब प्रवामी शैक्ता। सहकि~ठा॰(सं] बच्छे द्यार । (४० बच्छे दमोर्ने सञ्जूपवैद्या-पु॰ [र्व] बचन शिक्षा भवते समाद। सक्र•-९॰ घारक, हिंद्र । सरक-पु (प) एक मिशार्थ। मरह(श्)-वि [वं] दे 'स्रवः सद्ध-दि [एं] समान सरहा हमा मरतनेमा हर मुख बाग्द ! भारता-वि [सं०] समान, एक जैमा; प्रवित्र वर्ष्ट्य थोग्य ।**−श्रम−वि**॰ समाच स्रविक्तासाः। −विके सय-पु॰ समान बरमुद्धे बहुपानमें प्रव होना । -वृधि -विश् यक्त हो जैसी वृत्तिवासा। -स्री-सी॰ वयन बाविक्र राजी ।-स्पंहम-उ निवद समबदा होनेसरी THER ! मदशसा-की [मं] समामता दश्रूपा। सहेबिक-रि सिंगी रानी देनाथ। सर्वेश-वि+ [सं] वेश्वताना विसक्षे पाछ देश की। हर श्री हैसामा परीमी । प्राप्तीन । सर्वेद-वि [तं] देशका अ शरीरदे गाम विश शरीर झीहे। सर्देकास-वि [नंग] विमग्ने हमेशा रह है। इच्छा छ सरा यह रस रहमेरामा ! सर्य-अ [तं } स्वेश प्रमेशा हो। सन्तित्त -ति [र्नुः] छनामै वदा हुआ समामै क्ट्रीन्त्र शक्तेग्रह-नु [नं•] शकाप्तरना रावररधर। सर्वोष-वि [र्थ] देशबुक्त आर्याच-प्रवद्या दीवे भार राची। राजिसकः । मनोपड्र-वि॰ [सं] श्रीषयक, देवरार । सङ्-सद्का समाचमव रूप। - यति-धीर अधी वद्याः माद्य प्रार्थाः अच्छे आरमिवीस्य श्रीरवर्गः -गुल-वि ~शव~पु अरठा सोंह ह ग्रमेथे बुक्ता हु अध्या गुरा कमनता। -गुर-इर् अवता गुर वर्षपुर। - ग्रंथ-पु अत्रद मेर स्वर्वि मोर अवृत्त करनेवामा संव र नमह-पुरु हुन हर। वि साम और रैमामदारीकी और महत्त्व । न्यन न्य मध्या नेतीच अध्या पन । -धर्मे-९० अध्या विषय

क्षणा त्वाचा बीज का जीन वर्गने क्रिय जन्म क्रम ।

~ची-दि॰ पुरिवान् । -श्वावी(दिव्)-दि नन्दर

वितम सत्तेत्राका र -मासम्बन्द द्वर्गान माध्या र

-भाग्य-इ अच्छा भाग्य स्थान्य । -भाव-४°

सवा-समा
सवा-सा [ल] पूर्वा परम ब्रूप्टरें पश्किमको बहरेवाली हवा ! - प्रदास - वस-विश् वासुवेग्छे पानेवाला,
बहुत देव सेहेन्सल (विश्व)
सवाय-वि [ले] स्किरण रवावित्तः कृषा !
सवाय-वि [ले] स्किरण रवावितः कृषा !
सवाय-वि [ले] स्क्रमका सानिकारक !
सवाय-वि [ले] स्क्रमका सानिकारक !
सवाय-वि [ले] स्क्रमका स्वानिकारक !
सवाय-वि [ले] स्क्रमका स्वानिकारक !
सवाय-वि [ले] स्वप्तिका स्वन्त करात हुवा !
सवाय-वि [ले] प्रदास्क स्वन्त करात हुवा !
सविद्य-च [लं] प्रदास्क विश्वी वीव हो !
सवीज-लि [लं] राष्ट्रा। स्वाम विश्वी नेव हो !
सवीज-लि [लं] राष्ट्रा। स्वाम व्यक्त स्वाम स

तरीका। सर्वोद्द-की दे 'धनीव'।वि [ल]गीरा-विद्वा। सञ्च-त्र दे 'धनु [का]।

सब्द्र-पुरे धर्दा

सबूर-वि॰ [स] सम करनेवालाः समाधीक । सबूरा-पु॰ वेवा (मुख्यमान) क्षित्रोको काम वासमा शुर करनेका सावमन्त्रम काष्ट्र वा वर्गका रेव । सबूरा-पु [स] मूडी चीकर, छिरपर जमनेवाकी कृती।

समुद्र-च्यो (ल॰) नद्द कराव को सुबद पी बाव। समुद्री-च्यो धनेरे यो आवेदाको स्टरावा स्टरावकी वीटकः

नश्कः स्वदेश-तु दे 'सुवेरः । सम्झान्दे० [चा॰] इरा, कथा। इरा गरा । ∼ऋदस∼ दि विसक्ते करम, शेरा अमंगरकार माने वाते दीं

ि दिएके करम, रीप कार्यस्कर माने कार्य का समझ्या ।

- बोदा-पुः (बार) मंत्रा । - प्रतिक्वा बीमा म्लाइसी ।

- बोदा-पुः (बार) मंत्रा । - प्रति-को निमानवर्ष ।

कार्यस्य कर्म (स्वार के प्रतिक्वा को सुक्कामण्ड कार्यस्य ।

- प्राप्तिः इर्ष सी (सार) कार्यस्य प्राप्त इर्ष स्वार ।

- प्राप्तिः क्षा मान्य रंगको नैपाल बार्यस्य ।

- प्रोप्ता-पिर को मान्य रंगको नैपाल बार्यस्य ।

- प्रोप्ता-पिर को मान्य रंगको नैपाल बार्यस्य ।

- प्राप्ती-पुः एक सरका कन्नतः निमानव्यक्ती।

- प्राप्ती-की सुस्तमारीयै मीमानव । - मानवर्षि- को स्वार ।

- प्राप्ती-की सुस्तमारीयै मीमानव । - मानवर्षि- को स्वर भागा ।

- व्याप्ती-की सुस्तमारी मिनके सिनस्य क्षेत्री सेत्री से ।

- व्याप्ति विकासा-मानेक विकास सुर्ता ।

- व्याप्ति विकास सुर्ता ।

- व

सक्ती-की॰ इरा रंगः इतिवाकीः समयक रहे स-कारीः मंगः - क्रारोक्तं-पु॰ सन्तरकारी देकरणः। -- संबी-की॰ वह काह वहीं सम्वत्कारी थीर तथ एक किसे हों।

फ्रम तकत हा । सरुजवस्य-पुर्विणी प्रजाह विषय । --(पर्स)यसियी को विषयसमिति, विषयमिर्वाविमी समिति ।

सब्द — पुरु [बरु] हेखा । सुरु — करामा — किरामा । सम — पु [बरु] सार, नर्राह्म भेषी, योहरूके बाध बार में करविष्ठपर परेश एक्ता । सुरु — बारा — देर बराग कुरू परमा ! — क्याना—स्वान माणा अस्मी धुपवाप सह केमा। करामा, भेर्न (बना) बाधा तम नेता ! — की शिक्ष कासी या विकार (कमा—सुपरा भेर्वपृष्ठ सह केमा। — होना — (स्वान — परिकार) केमा बीरस केंगा। — यहमा — परिकार

आहका अपूर होता छत्रके नदकेमें आपापारेको देशहें इक मिछना । समझाक-विश् [संश] त्रमा(दरोहित)के छात्र त्रमा(दराप्र)

के शावा महत्त्रोक्ते शाव। समझावर्षे पु (कं) रहात्त्रका। समझावारी(रिम्) -पुत्र (कं) श्वराचार्याः देखे स् व। (शामा) शावाः स्परेशस्त्र श्रमात हुन्यत्रे स्त व्यक्तिः शाची। एक वेते व्यक्तिः।

सारीयान्त्रि [सं०] बांबनुष्टः । स्ट्रेसेयन्तुः व्येक्झ स्त्र अकारः भी क्षम्यका योव करनेपर वरता है । साम्बन्धनि० (सं०) प्रसानी । साम्बन्धनि० (सं०) करा हुआ सम्बन्धना सहरवार । सामवर्षकान्यो (सं०) वस स्त्री विकास विर्धासित रोज

सम्मात्का – जा [छ॰] वह चा ।वछक वह करा स्वया | चम्मस्मा(स्मम्) –(व॰ [छ॰] बो मरत त्वामे हो । –(स्स)द्विज−षु० राह्यस्य वा छैव सम्बाधी ।

समा-को [तं] गोडी महक्ति। गरेकर, संबंध शनात्तक श्रमामन्त्रा स्थापका हरता श्रमाणा श्विकाक्य अतिविद्याकाः भीजनाक्यः। वह रक्ष्य वर्ष कीन आवः व्याते-वाते क्या दार्व-विश्वेषके विद प्रवाहित संस्था । -कार-पु समा मनमका निर्माता सर्वा कार्य-वाका । -श-वि समार्थे आगिवालाः है। क्रामें (~शत−ति जी त्वाबाववर्षे क्रशीवः हो। -प्र-दु समा-भवन । -थातुमै-दु समा, समाजने केन्द्री व्यवदार करवेकी बहुरवा। -शायक,-पति प्रः संबं का जलसा शुरका भड्डा क्यानेशमा - वरिया औ॰ समिति आर्दका अधिकन । -पर्व(व)-3° मदामारतका दूसरा संद कितमें मृतारिका कार्य है। —पाल-तु शार्वविषद्ध मनत् ना समामनवा निधै क्य । —कृतां≕सी (तत्त्राचनामें) दर्शकीदे करि सम्यानप्रदर्शन (बा) । -प्रवेसन-इ स्वारक्षमे वर्ग्य करनाः - महम-३ समावरनके स्थासः।

∽थोव्य−वि समावदे प्रपुद्धः । ∽बक्कर-विश्वसमा

की प्रमानित करनरावा ! --वी(विम)-5 तुन्दा

अपूर कलानेवाका । —सङ् —सङ् —तु सरस्य) ब्रुरीका

सरर्थ, अराकतची वं वायतका सहरथ ।

भारतस्य, सत्ताः पदार्थादिको वास्तविक रिवतिः मेक-मिनानीः सम्बमताः दवातुता। - व्यी-ती एक देवी। – भूत-वि को दरतुत सस्य या अच्छा ही। –मूह्य−पु जच्छा मीहर । –धुक्ति~की अध्छा वर्कः भच्छा प्रपाद। -पुत्रसी-भी साम्भी सी। –बदा−प अच्छा बाँछ; अच्छा कुका वि कुकील। --शास-वि अच्छे कुरुमें चलवा। ~बासस-वि सम्बनीपर अनुबद करनेवाला। −वसय⊸पु ─बस्त्-ली अच्छी पीतः अच्छा काम। अच्छा कथा-मकः। --वाजी(जिन्)-तु अच्छा वीशाः। --वावी-(दिन्)-दि सत्यदारी। - याची-सी वार्ताः अवद्या समापार । —विराहित—वि॰ सम्बनो हारा निरितः। -विद्य-वि वद्ववतः। -कृत्त-पु वर्तुकाश्चर आकृति। सदाचार । वि॰ सदाचारशुक्ता वच्छे ग्रेबोसाः - कृति-क्षा सर्व्यवदार स्वायार । सद−+ म शीप्र द्वरंता • पुष्ठम्द म्थनिः (का] रोकमा। को रीका बीबार। -(१)-शह-वि रीक प्रतिबंध कंगनेवाका (बनाना, दोना)। –(है)–रोप्टें, -सिकंदर-को काँसेकी शेवार को कहा काता है कि सिकंदरने तातार और चीनके नीच ककरको ससभ्य बारिकों हा इसका रोक्ते के किए कानावी की। (छा) नावि रह और दिकाळ वस्तु । सद्य(नृ)-प्र [धु] मकान, विवास स्थानः उदरवेका रवामः नेपछाताः देवाकवः नेदीः कामनः पुत्रः छन्त्रीः बसः पृथ्वी और शास्त्रसः । सद्या(ग्रम्)-वि [सं] रहनेवाका वसनेवाका। सचिती-की [सं] इनेशी महक। सदार (बस)-म [सं॰] नाव दी। वसी दिना तत्स्व भौरनः तेत्रोते। दाकरें दी कुछ दी काक पूर्व अमी-मगी। -(चा) कृत-वि की तुरंत, वसी संगय किया मगादी। −कृच−दि को तुरंत काटा गया दी। -कृत्तीस-दिको इसी दिन काता नीर तुना नवा हो। −ऋदि−दि रुपोदिन करोदाहुना। पुषक पकाइ। −क्कत−पुतामामागं −पर्पुषित∼वियक दिन पहलेका। –पाश्व–दि जिल्लका प्रश्न शुरंत देख पत्ने। -पासी(तिन्)-वि वस्य गिरनेवाका। -प्रक्रा-**सम्ब**−पु वद व्यक्तिको तुरंठ कामने सामेके किय भवशी सफाई करे बमा म कर सके। ~प्रज्ञाकर⊸नि द्वरंत समञ्ज पैदा करनेपालः। ∽प्रसृता−को वद (सी) बिसमे भभी-सभी प्रस्थ किया है। --प्राचकर--वि प्रशंत प्रक्ति बहामेवाशा। -प्राप्तहर-वि प्रशंत यक्तिया माध करभेशका । - प्रस्न-नि जिसका प्रस प्रशंध देख पत्रे । -- शक्तिकर-नि अस्य सामत नहांने-बाका। - मुद्धि-की ४ - सीच-पु ग्रारंत की बातेबाकी छिक्र । −क्षोथ−वि व्यक्त स्वत देश अर्गेशका। -सोबा-सी देवाँव। -बाद्धी(दिव्)-वि०-विनते समी-समी मात्र किया है। —स्राय-वि प्रशंतका मदावा द्वना । - स्तेद्वन-पुत्रस्य रिनम्ब दूरमा । सर्घ-भ दे 'स्ताः पु [सं] धिमका यक क्षः

मर्-मधर्मी कतम दिया हुआ। भवारक-वि॰ [र्व] वर्षेमान कावका एसी मनवका यया सामा। सचस्तम-वि [मै] वाजा नवाः छमी समयका । सधीबात-वि[सं] वी नभी उत्पन्न हुशा हो। पु धिवका एक रूपः शक्षका शत्यक्ष बद्धका । सचीजाता−की [सं∘] वह की जिसे हाकमें ही बदा पेश द्वभा हो। सद्योबस-वि [सं] तुरंत क्ल बदानेवाला । ~कर्⇔ नि॰ क्षीत्र शक्ति बहानेवाका । सचीमाधी(विन्)-वि (सं) बाबका बल्पनः। प्र क्षाचका पेदा तुका बच्छा । सचीमस्य-वि [सं] सीम क्रीव कराव करनेवाका । मधोयतं-वि (र्श•) को शमी मरा हो। सघोड्य-५ [सं] ताबा काव ! सचोइत−वि[रं•] को भग्नी भाइत का इत हुमा हो ≀ सब्र−द (व•) हाती शीमा। स्वीच रवान। शीर्पमायः **उच्चप्**रस्थ जमके बैठनेका स्थानः प्रवास अविकारीके रवनेका रवामा सदर मुकामा सभापति। सकामका सहमा सामवेका रखः। थः स्पर (मुदरका सार)। -अवास्त-की सर्वोच न्यायाकवा --(हे) शाह्रस-पुत्रवीरे नावन प्रचार मंत्रीः प्रचान जत्र । –श्रास्त-पु हे 'छदर-वाका' ! - नवामि - वि गरीपर वैडनेवाका । प्र समार्थाः - सक्रक्तिस - पुसमापि मीर सक्रिसः। -मुक्राम-५ राववानीः विमामविश्वेषके प्रधान अधि-कारीके रहनेका स्वाव । सम्बन्धि (सं॰) हस्यपुद्धः समहकाः। सक्रि-प (ए॰) शभी। वर्गता श्रेशाः सजी-को दे 'छररा। सह-वि [र्ध] वैक्रने या भाराम करनेवाकाः वानेवाकाः। सर्वेद्य-वि [र्थ] क्रमशब्द मुक्टरमंत्राज्ञ । सङ्सी-की [d] पुकरूपको यह करवा और कवि-गरी पश्री । सवन-वि (सं•) वतीः वनपुष्टः। पुनिमकित् वतः सामान्य चन । समना-म कि काम पूरा दोमा। कार्य छितः दोना। रीतकमाः अपने अनुकूल दीनाः वोद्री आरिका सीयकर कासके जानक दीना निकल्या। जम्बस्त दीना। सावा

समाग-वि [सं•] विसका दिस्सा हो। सामान्या सार्व सक्तिकः है • 'समा'में । समागा#-वि॰ माग्वहारी। ध्रेवर । समाग्य-वि॰ (सं॰) साम्बंदाकी ।

सभाषार-प्र• [सं•] समावका रोति रिवामः अदाकतमा त्तीका १

स्यभाजन-प [मुं•] भारर शस्त्रार करवा। स्वायत करमाः विश्वता नग्नता दिश्वलामा (ग्रिक्ने-श्रुक्तेमें), ग्रिकन सारी । वि॰ पाचतकः।

समाक्ति~दि [में] समानित, बार्का तुर मसकः प्रशंसित । समाज्य-वि [सं•] सम्मान इतन, प्रशंसा इतने योग्य ।

सभारता - भी [पं•] पूर्वताः वाधिकाः अम्बुदव । समार्थः सभार्थक-वि विशे सप्तीकः।

समावम-५० (सं) सिवः।

समिक, समीक-दु [सं] जुबा देकानेवाका, जुएका सङ्घा चलामेवाका ।

समीति-वि मि नवस्तः दरपीतः।

समेय-वि [सं] समोपितः विदानः सिष्टः । ससोचित−वि∗िसंी समादे दोग्य । प्र• दिहान् नादाणः

विपक्ति भारित। सहय-वि [ए॰] समाकाः समारी संबद्धा सभाके बोग्वः

क्षिष्ठ, संस्कृतः समः विवस्त । प्रस्तानस्यः पंच न्याव इस्तेबाकाः सुधा दाकानवाकाः कृतीन व्यक्तिः समा बेडामेबाडा भूत्वः पंत्राध्मिमॉमेंसे एक ।

सम्पता-को सम्पत्त-५ [सं] सम्प होनेक भावः सदस्यताः भिष्टता, नमता भद्रताः ऋगीनता ।

सम्बेतर−दि [सं] वन्द्र, देशकर ।

सर्मक-वि (सं) समान विद्य वारण करमेवाका । प्र क्सक तह करमेवाका एक बातवर ।

सर्मग-वि॰ [सं] समी बंगीरे मुक्त, पूर्व । पु॰ यह

सर्मराष्ट्र-वि (सं•) संतक्ष्यव मंतक्कार्य, शाम । सम्बंदा-की सि | श्रीबद्धाः कमातः बराबक्रीयाः

वासा । सारिशाबी-को सि विशेष दरकी पक देवी।

सर्मगी(गिन्)-वि (एं) विस्त धरी नंग पूर्व को। समा भावस्थन साथनीसे बुक्त ।

सर्मवस~वि [एं॰] ववित व्यवुक्त और, समीबीना संगता रपक्षः मेकः अध्यक्षः अनुमनीः रगरथः बन्तमः। सीबितन, बर्बुस्त्रकाः सनार्थः संगतिः यनार्थकाः ठीक प्रभाग।

समोद-प [सं•] बंदीर, यीवा तरकारीवाले फरू (१) । सर्मत-वि [र्ध] संपूर्व समग्र सार्वकिक। प्र सीमा दर । - इसुस~ड १६ देवपुत्र । -श्रीध~प एक

पुष्पा एक देवपुत्र । —चारिक्रमति –प्रा वक्र वोविसत्त्व । -दर्सी(बिन्)-पु पक इस। -ब्रुग्धा-सौ स्तुदी इस । - नेत-पुषक वीविस्तव । - यथक-पुकुर-रोत्रः कुरक्षेत्रस्य एक सीर्थ । −प्रम-प् एक पुष्पा एक थोविसला। −प्रमास−पु यक्ष दुवा −प्रसादिक−पु

एक गोविसत्त्व । -प्रास्ताविक-वि॰ वी सर्वेत्र सदासवा करमेके किए प्रस्तृत हो। -- भन्न-वि सी पूर्णतः शाम हो। पुरु यक बुद्ध या जिला एक मोभिसला । -- अक (ब्)-प्र अधि। -रहिम-प्र यक गोनिसस्त। —क्रियोकिमा−सौ० एक श्रीट सौद्ध I सम्बद्ध-प्र• सि ने पद्ध देशा वस देशके निवासी ।

सर्वताको छ-प्र मि ी समाधिका एक मकार । समंतावस्मेक्षिय-प्र• (सं•) यद् गोभिमुत्त । सर्भव-वि [सं] वैदिक मंत्रीते तक। शर्मध्रक-वि [से] वैदिक मंत्रीते प्रका बाद बामने-

बाका । सर्मत्रिक−वि [सं] मत्रियोस तका

सर्मद-५ फि.] शहामी रंगका पीड़ा क्लिका अवाक बय और बॉय का चॉब और जॉमडे वाल स्वाह हों। (भच्छी नस्थमा) बोधा ।

मसदर-ए कि। एक ब्रह्मित जेत वी फारसी कवि-

समबद्धे अनुसार अग्निसंदर्ने तत्त्व होता और उससे गहर निचक्कर तरंत भर बाता है। क समुद्र । समिषकार-व [सं] सर्वविद्य जेक्सार ।

सम-वि (सं•) एक दी, अभिका एक्स प्रसाः परावरः चौरस क्षमवारः वस को होते परा-पूरा वेंट जान विषम नहीं। प्रश्नपाधरहित निन्तम्। रैमानदार, संबा सुधु नेक, मामूकी शायारमा क्रमीना। श्रीमा। स्प्युक्त, सुविधायनका क्यासीन विरक्ता सवासमा। प्र कृष क्दं भाति सम संस्थापर पहलेगाको राधियाँ: भौरस मैदानः **एक काञ्चाकंकार (१) अहाँ हो वस्तमों** में बबा बोम्ब संबंधका दोना विखाना जाम वा (१) कहाँ कारण के साथ कार्यका साकन्य हो अथवा (१) जिसके क्रिय प्रवरत किया जाव जसको सिक्रि: विना अनिष्टचं दी होना वर्णित किया जानः ताकका यद्ध अंग संगीतमें वह स्थान बर्हों क्यको समाप्ति कीर साक्का ब्यारम दीता है। क्यें मूळ निकाकनेकी कियामें शाक्षिके करार 🛱 बानेवाली रेका। वह विंदु जिएका मध्याहरेका विप्रवद रेकासे मिकती है। चुकारिया जिला असेका यक पुत्रा मृतराहका यक पत्रः शारम्य समानताः सन्ती दशाः 📲 प्रमा को समका वरावरी। --कक्क-वि समान वक्क-का नरापरीका। -कम्पा-की रुपमुक्त कन्या विवाह के बोग्य कम्बा । ~कर~वि डवित रूपमें कर समामे-शाकाः दे ऋसमें । ∽कर्ण-पु शिका तुदा समान क्नोंगका क्षेत्र (स्वा)। —क्सो(सेन्)−दि समाद पेद्धा करनेवतका। —कास्त्र-पुषक्र की समद्रागास्त्र । -काकीम-वि॰ यक समर्थे रहने वा होतेबाला। -कोण-वि वरावर कोचीवाका (क्षेत्र) । पु∙ वह कोच भी९ अरेक्फादो! –क्टोक−पु सर्प। –क्टम−वि विसर्क करम बरावर दूरीपर पर्वे। -क्रिय-वि एक जैसा कार्व करमेवाका। -क्षेत्र-पु सक्षवीक्षे एक विशेष स्वितिः —सात्त-प् यनके रूपमें की गमी सदारें। -र्राच-वि रामान गंववाता। सी वरावर रहमेवाली गंव। -शंबक-पु वक्क ही बेसे प्राचीसे

वता द्वभा पूर । ~गींधक-विसगान गंभवाका । व

सभवा-को (सं•) सदायन सीमाञ्चनतो।

समाव(-पु॰ सात्र महोनेमें गर्भवती मीको दिया बाने बाला क्यहार । सचि-पु [से] अस्ति। सधि(स)-इ [सं] पूर्वम, बैल। सपम-वि [ते] पुरेते भरा या बद्धा हुना।-वर्णा-श्री अग्निकी मात बिहाओं मेंसे वह । मधूसक-वि० [मं०] धुगरेदार । सप्रा-रि [सं] कृष्य वर्गका । --थर्का-सी० दे० 'सब्मक्जा। सपोरं, मधीरां -- पु॰ वे 'शुवावर'। सधीची-सोश्सि । सधीः तहेसी । माधीचीम-वि [सं•] माथ रहनेवालाः समान क्रदेश-गामा । सध्यस-द [सं] काल करि। सनेको – प्र• एकारा । सर्वद-पु[मं•] दे॰ 'सनेदन'। सर्मदम-५ [मं] अद्यक्ति चार बायस पुत्रीयेने यक्त। सम-वि रतस्य । । स॰ करणको विसन्ति । प॰ यह रीपा बिसको छारुस रहसी भादि बनाते हैं। वे 'नम् । [र्न॰] प्रदासे चार प्रात्म पुत्रोंसेंग्रे एका काम, प्राप्ता नाहार। द्याधीका काम परवस्तामाः वंशपात्रन्ति हस् । -पर्वा-न्या समयप्रया । सम-तो दिनो चीवदे हवामें तेत्रोधे चनमेंचे उत्पन्न द्याप्ट ।-सस्-मी इवासी कावात्र, समस्यवादशः दिशी बीवडे इवार्य धननेकी कनातार भागाता तसकार थमनेको सामात्र । सम्बद्ध-मी [सं•] कारीगरीः दुगरा वैद्याः अल्द्रार (सा॰) ।-गर्-पु॰ बारीगरः वैज्ञावर । सबई-सी सनका रह भेर । समक-पु [तं] मदाने चार मानस प्रशेमिन दक्त । स्वीक [k] अस शीका सञ्ज कीवामगी यागकपम । शक -भाना-राग्य दीना । -श्वतना -सवार होना-प्रम सरार होता। - छना-शनप्रशाहा कोई काल करना । सभक्रमा-म कि एमच नागन, ब्रब्ध होता । समस्ताना न मि दिनीकी कागन कमाना। समकारमा १~स॰ कि॰ श्यारा करना। वशारेने जनाना 'सम्बद्धारे शिक्द सहन याँ स्वामि क्षा बाह'-रामा । विनी कामके निष मेक्टेन करवा । सम्बद्धियाना~स कि संदेग करना। वागल वजाना। अ कि पायन दोना । समन्-द (4+) अग्रा !-कुमार-द अग्र-दे चार मामस पूर्वामेंने हका विमेदि शारह प्रकर्शवंशीमेने एक बीरनको सी अवस्था बमाने स्थानेशाना कोई संगा तोमरा कार्ग (३) ३ − ज्य∽पु वढ≷श्वर्ग (४) ३ −स्त्रात्−५ अमादेशात मन्तर दुरोसैत हह। सब्सा-पुरिश्तमे बीद बान्नेस पेर । रामपु-सी [६०] वह जिमवा वीड देवी आव सदिमान बादा मयाणा प्रशास्त्रक सरिक्षित्रेश अनुपरित्यका सम

रहक किवाका काओ या सुपतीकी सुदूर । वि: प्रायतिक सचाना-स॰ कि साथनंधे काममें दूसरेबी प्रकृत बर्गा। प्रमाणक्या महीसा करने योग्य ।-पाप्रसा-निः विन्त वास समय या प्रमाधपव हो । सुक -शाहाबना-याँका करना प्रमाणमें शामने रखना।-जापना-मा इस षिक मामना। समदी-विश्वामापिका समन्दारता। । स्रो ४४ बचांत । सनवा - व कि बच्छे योगमें धर्मा(स्था रहरें मिन्न-क्रथपथ बोजा। किंग्त होना १यना। समनी~सी शनीमें शना हुआ बूगा सामी। समम-५ [ब॰] कुन मृद्धिः (बा) प्रेमशाच, बाह्दा -कदा -धामा-त मंदिर तुरुगाना । सनमान=-९ है भग्राम । सबमावना 🗝 🖟 बारर, मुख्या दरना । सनमञ्जन-४० है। समाप्र । सनमाना-च कि विद्योग परार्थमें इस हरने इवा अकने वा पानी उपनमें आहिमें सबनान वर्ष मनमनाहर-सी हवा यनमे कोरे पहेते सन्धे राने बबढ परवने बारिने बरफन 'सश-सर'डी बाराव ! समयनी-को बुत्रपुत्री। यह बाइन्हें बड़ी है देप क्तपन्न राज्यकाः मधायाः सत्तवमीः सनमनास्यः। सनहरूरी-की शुक्रमानींदे दायमें मानेदान सी वदवरी जैमा मिडीका यक बरतन । समझामार्ग - इ. राटार्र आरे इ बाबी में मार्ग इसा बरन विस्ति वही परदान मॉबनेके पहने बाने जाते हैं। सना-च (लं॰) तिस्व सर्वशा प्र[ब॰) प्रपंपाः स्तु^{ति ह} -- गुजा-वि शहांमद, शतुनि दश्मेनामा । समाद्य-५ शहरोंक्षे व्ह वरशति। समात्तम−वि [मं•] निर्दा संवाधि द्वविष्य स्परी मानीम । द्व अक्या रिन्या सिवादिवरीमा व वीम मही क्स यक मानेश पुत्र t-घर्स-इ प्राचीन प्रदी र(श)मा भर्म (बी भाषारम हिंदू जनतामें प्रबंधन है)। -पुरुष-पुरु बिप्पुर भादि पुरुष । सवातवतम~९ (मं॰) विन्धु । समावनी-वि ग्रमाननवर्भका अञ्चलको धार प्राप्ता न्दी [र्शन] स्थापी दर्गी गरम्थी। शमान्-व [सं] निग्व भनेश। समाय-वि [र्ग+] रवामिमुक्त, विश्वदा दीई रहा दे meier alekeimmit नमाधीर्थ (समा भारि); वुला : सक्त-'वर्रे सांग सेव स्वान स्थारं -वारं श -धरमा-भाषव रेमा र मनाया-त्री [लं] वह सी दिलका चीर वीरिश्वी-यीवप्रपूर्वेका ह शनाम-दुर्शि] सथा धारी गया नंतेशी ? समाधि-वि [र्गः] सावित्रका भगत वहरूने (उते वहिनेके कारे)। सहीरत नगां। महिदा अवान सम्प्री व अमा माद्री लागरी वेदीनव्या भरेती । समावय-त [नं] बद वी बयुवा मान्ती देरिनुस्था नंदर ३

वि॰ जिसके चारों कीण गरावर हो । ए वर्गक्षेत्र (क्या) - चतुर्मुस-५ वह क्षेत्र जिसको चारी सुत्राय नरावर हो। (वना)। ~चलच्छोण-वि० जिसके चारी क्रोण नरानर की (करा)। - चर-- वि० पहल्ला व्यवसार वा बाचरण रहारेशका। -शिश्व-वि चीर, श्रांतः षशासीमा निस्के विचार एक हो विचलपर बॅडिस हो। -चेता(तस)-वि वे 'समधित'। -च्छेड-च्छेत्व-वि॰ जिनके हर शमान हो (ग॰)। -काति। ~कार्त्यय~नि समान काति वा वर्गका । ~क्षा~सी० क्नाति धनश्च। ~लड−वि फ्रह्नदी तटपर वसे इय (रिश) ! - तस-विश्वीरस वसवार ! - तथिक-वि कपरतक किनारेतक मरा तुआ : -तुका-की शमान मुक्तः - न्युक्तिय-वि वर्तवर वजनका। - तोस्र-मि समान तोक, सदस्यका। ~सोकन~थ समान करमाः तरासूके पक्षत्रीको बरावर करना ।- शय-छ वीन हर्न्यों-धर्मरा, सायरमोशा और हरेंका सम परि माम ।−फ्रिसक−दि० किस्की तीली भवार्थे समान हों। प्र• पेसा क्षेत्र (अना) ≀-सिद्ध (प)-वि समान चमकोका वा संबर ।-संस−वि शिसके बाँच बरावर ¶ !- दर्भन-वि+ प्रकार, यह वीतो प्रान्तवाकाः एक समरते देखनेवाका ।-त्यार्थि(विंत)-दि शक्यो पक-सा वंखने-समझनेवाका ।--द्वाचा-वि क्रवाहा काव भिक्र ।—इन्हर्(श्व.)—वि० हे ["]सग्रहारी" ।—इन्हि—वि० दै 'समदर्शी । स्त्रो॰ सब्बो एक समरसे देखनेको किया । ~हेच-प• इसवार मैदान ।~दाति-वि• समाम कांति-पुक्त । -हाबसामा,-हावसामा-पुर नमद समान मुकामॉनाका क्षेत्र (स्वा)!-द्विद्विस्त्रल−३ वह चतुर्जुव विसकी भागने सामनेको अजाएँ वरावर की I-ब्रिअज-दि॰ विसक्षे की मुजार बराकर ही । पु. पेसा चतुर्भव । ~चर्मा(र्सन्)-वि॰ यह चैते रवमावका ।~च्छ~ विक जिल्लामा बजान भरावर किया गया बीर ** के मरावर । -नाम(न्)-पु॰ वशे था समान गाम, पर्नाव। -निर्मानवन-वि मानापमानके प्रति क्यासीन । --पर्-तु शाग चकामेके समय खड़े दीनका दक बेपा एक रतिर्वत !-पाद-प्र॰ वे 'समपर'। चस्वकी एक गृदि। समाम करमेनिका स्था ।-प्रम-वि समान कातिबाका । --वादि-- वि. श्रुत-पु:'वादि वक-सा समझने बाका, बदासीन । स्ती वद पुनिः भी किसी बाकतमें विचलिक न वी।-भारा-प्र वरावर विरक्षा । वि बरावर हिस्सा वानेवाला ।~भूमि-सी० अमेत !⊶सति=पि भीर, धांत !~साध~वि० वरा-बर बरिमाणकाः वरावर माधाओंशका (रीप) ।-शेतिल-वि जिसका रंग सर्वत्र पक्षन्ता हो।--रज्जन्ती महा रार्र भारि नावनेकी रंधा (ग॰)।-रस-प्र वस रतियंप। -रम-तुर एक रतिर्वद !--१सा-वि दक ही श्रमान भावते युक्ता यह रसवाका; एक सा ।- इत्य-वि समान क्तका !-सेपनी-न्यो शतीका सत्तव नरानर करनेका इक श्रीबार !-कोप्टकांचल-वि विश्वकी राधिमें देना भीर शीमा बरावर ही । -वयरक-वि वरावर वशवा

बर्सा न्संबर्धारू-प्रश्नुत्री न्यतरका-चतरका-

पक्ष ही बमका, इसकम !-वर्ण-वि एक हो त्यापत भी जातिका !-वर्ती(लिंम)-वि॰ क्रिकेट वर्त छ पाठ न विकासियाकाः यक्त-सा स्थवहार करनेरातकशस्य दृरीपर स्थित । पुरु वम ।-विभाग-पुरु बरान् वैस्त्रे में श्रेणिका मेंटवारा ! -- विषयम-पुर वह बर्गन है कमश्र-ब्रावह हो । वि. कमहन्धावश्र !-बीर्य-रिश्सरस प्रकाश । – क्षत्र – प्रमास प्रतिशास क्षेत्र। से वरावर गोकर्शवाका ।~बसि~सी॰ बीरधा स्त्रके रिवरता । वि । वीरः वंपीरः !-ब्रेप्र-पु । मध्य वा मैता नदरार्थ ।--वेध--प॰ यह वौधी वीशक ।--रघर-5०स प्रकारका न्यूड । —क्षंक्र-प्र मध्याह । —शर्खी(शिव)-व व्यवस्था में बीबाका बंदमा !--ब्रीसीच्य-वि॰ (स्वयं) वहाँ सर्थी-गर्भीको मात्रा बराबर रहे। म अवित्र इप्तय हो सहीता --० इटिसंघ-प प्रथमि ने मान्ये क्करमें कई रेपारे क्कर क्कक और रक्षियें स्ट्र रेपासे रक्षिण क्लक क्रम है (वहाँ स्टेन्पर्मी स्थम कम्पूर्म रकती हैं) !-इसेक-वि एक ही बेसे स्वार आपरमदा । -अति-वि॰ समाव अस्त्रक नाचा !−श्रेजी−सी सोचा रेपा !-संस्थात-विश नराक्ट, शंचनताका !~संधि~खी॰ नरानरधे प्रांत्र श्रीनेवाली ग्रामका वृत्ती सहावता बदनेकी घर्तके साथ होते. बाकी संबि (बी॰) (नसंस्थान-५० यत गोनानमी -समयवर्ती(तिन्)-वि॰ प्रगर होनेवाका स्रवे शांच डोनेवाका ।-सिखीत-विश् शमान व्यहेरव हैका चलनेवाला !--प्राप्ति-को समान वा सामान विश (क्रमका बंग और विस्कत प्रकत)।-सन्न,-सृषस्य-वि॰ एक ही व्यक्तिपर रिक्त !-स्य-रि विश्वास स्वय भीरसः वद्यतिश्रीलः !-स्थल-प्र॰ भीरसः समीतः ! -स्थको-को गंगा वसनाके नोक्स मृताक संदर्भ दीमान ।-एवाम-५ वीगका एव मासने । सम सम्म-3•[थ] रिच वहर।-(मो)हातिन"]* नासक विच । संसक्ष-पु (मन) काम ।-।वराभी-सी वह वह करके धीपारी चारणा (बनता विगवरम साने करने भिवेदसके किए कदशा है प्रान्तार्थ-काम दोलगा)। समध्य-नि॰ (र्थ॰) समुद्री जनुजाते पूर्व दे 'तत्र' । समक्त∽ि [मं] एक ही तमर वा तम बानेग्रणा गममस्त्री। हाका द्वारा । समस-वि॰ [सं॰] को बाँदीडे सम्बद्ध हो। बीवर बपरिशत । अ तानुने र-वदान-पु आसिम देसनाः **कॉंकों देशा जमाण 'परमरीज गनाहका प्रवास** । समग्रता-नी॰ [मं] गोवरता, रहत दीवेडा मार ! समग्र-पुरु [अ] गोंद !-मरबी-पुरु वर्षका गोर ! समय-वि (सं•) सद, बूरा ।-व्यी-वि -सञ्चलक्षीस-वि तर इए भइन स्टेन्सा । -वास्ति-दिश् मारी सक्तिपोने शक्त । -सपर्-रिश्य मधारके शायसे जन्म । समग्रेष्ट-तुरु [तर] चूर्य चेह्र (

ससम्ब-तु [मं॰] बंबठा पहाँबी, ब्रीवर्ष-का गुरा गुरी

मंदणीः र्रज्ञः ।

184	साघर [†] ∽आ ण्हा ड्व
बायर्प, शायर ज-पु॰ [सं०] रगह, संधर्षण ।	आचौरा-नि॰ [र्स•] विसने काचमन कर किया हो; इसी
आवर्षेणी~खौ [सं] ब्रह्धः रवर ।	करके पेंका हुमा या नाचमनक योग्य (अक्र)।
भाषार-पु॰ [सं॰] सरहर, सिवाना भपामार्गः मृत्यके साथ	आवांसि-सो॰ सि॰ वि॰ 'आवमन' ।
वज्ञाना जातेवाका एक दाय ।	भाषाम-पु• (रे॰) भाषमनः गाँउ ।
भाषात-पु॰ [सं] चेट, प्रहार; धाव: वका ववः बूचह	शाचामक-पु_र्स्•] शाचमन करनेवाला ।
सानाः विपत्तिः पेद्यावदा स्कलाः, सूत्राधाताः चीर करने	भाषार-पु॰ सि॰] भरित्र, बाङः भक्ता भाव-महमा
वस्था।−स्थास−पु॰ ववस्त्वः।	न्यवदारः श्राचीक भाषारः रिवाभी या स्ट न्यवदार
मायासन~पु [र्श•] भाषात करनाः नगरभाम ।	(लेकापार कुलावार) लापारविभि व्यवहारका सरीकाः
बायार-५ [सं] किक्डलाः यदाग्निमे धीकी बाद्यति	जाहारः वावरणसंगी नियम । -तंत्र-पु तंत्रका एक
देनाः भी ।	मेद (वी)। —वीप-पु॰ नारती वतारनेका दीप।
वाची - चा व्यावदे इपरे मिक्रनेवाका अतः व्यावके	-परिस−षि दे 'भाषारमध । -पूस-वि∘ शुका
इपर्ने अब भित्रनेकी सर्तपर बीनेवाका केन-देन।	भारी ।धेव्-पु भाषरम-धंत्रभी नियमीका शंतर ।
बाह्य-पु॰ दे॰ 'बाद'।	—क्षष्ट—दि जिएका जाजार-ध्यवदार विगइ गया हो परितर । —काजा—पु० रामा भादिपर फेंका मानेवाका
कायूर्य-वि॰ [सं] चक्कर बाता हुआ, जूमता हुआ।	कावा । —वर्जित-वि जातिन्युद्धः निवसविस्तः । —
भाष्णित~पु [सं॰] बूमना, वक्षर याना । भाष्णित~वि॰ [सं] पुमाना ना वक्षर कामा दुआ।	विचार-पुर माचार और ग्रीभारिका च्यान । -वेदी
आयुप्ति—पुरु [सं] सूर्य । वि तेत्रते चमकनेवाका ।	श्री आर्थावर्षे पुष्यभूमि । — हीम ~ वि हाक्कोल्ड क्षर्मेन
भाषोप-पु [सं] बोरसे पुदारमा, क्रेंबी मानावर्गे	वरनेवाका आचारभ्रष्ट ।
ष्ट्रनाः भ्रमारी ।	शाचारव•−प दे 'मानामं ।
-मामोपज-पु, सामोपका-सी [धं] बोक्या सुनाया ।	आचारमी-सी॰ पौरोहित्यः माचार्य होनेका भाव । वि
भाजाण∽पु [सं∗] देवना मृति । वि• सेंवा प्रमाः एस ।	दे 'भाषार्या'।
भाग्रास-वि [सं•] सूमा हुआ। युसा स्प्रह । पु• ग्रहणका	भाचारवान्(वच)-वि* [d] शासोख कर्न करनेवाका,
फ्ट मेर (क्यों)।	क्रमेतिस सराचारी ।
भाध्यपम−९ [सं] सुँपाना, सुर्गव-दान ।	बाचारी-सी॰ [सं॰] हुरदुर, हिक्मोसिका ।
आग्नेम − [र्स•] की सँमा जावः सँमनेके योग्यः।	शाचारी(रिज्)−वि० [सं] शाचारवात् हुवः वाचरव-
भाषञ्च(म्)-पु [सं॰] निदान्।	शका । पु॰ रामासुन संप्रदायका बसुयायी और्वेष्णव ।
मासमन-पु [सं] प्रत नारिके पहले श्रुविके छिए	आवार्षे-पु॰ सि॰] गुरु, शिक्षका उपनयन करने और वैद
इंबर्डीपर बंध सेनर पीना; इस प्रकार पीनका बंदा गर	कानेवाका गुरु। महाविषास्थका प्रधानप्राध्यापक (किन्नी
गर छन्दके साथ क्षत्री करनाः क्षत्रिकाका। भाषसम्बद्ध-पु (सं॰) बुक्ते कृष्टी प्रकल्का पात्र, शेकः	विषयका) मछावारण पेटिया पूरम पुरमा महमवर्चका मह
शाना भाषान करनेका यह ।	में कर्मका स्वरोग करसेवाला पोरची जादिके ग्रुव होसका स्वराम । —क्रमण—पु जन्मापकका कार्व करना। ⊷
बाचमनी-सी क्लग्रेडी शुरुक्ता कम्मच विसमें कर	विश्व-वि की भाजलंकी भएता जाराच्य देव मानता है।
बैकर भावमन करते हैं ।	-भोगीन-वि वापार्वको संच्छा छननेवाछ। साधार्वके
भाजमनीय-वि•[सं•] माचमन करने थोग्य । पु॰ आव-	डप्रका
मनके काममें लाया हुआ जक्षा पीकरान ।	आवार्यक-वि [सं] मावार्वसे मिकनेवाका। पु पाठ,
साथमनीयक−पु [सं] शावमन करनेका व र ु ।	विका।
भाषमित्र⊶दि [मं] पिना हुआ। भाषमन दिना हुआ।	शाचार्यां-न्यो [सं] स्रो गुरः मंत्रको भ्यातवा करनेवास्य।
भाचय~पु [सं•] भुनना, श्वहा करना। हेर ।	भाषायानी-छी [से] नाषानेपता।
शाचयक्र−वि [सं] श्वन-कुछस्र ।	भाषार्थीवि अप्पार्व-छे५वी; बाबार्वद्रा ।
भाषरवाश-पु दे० भगरव ।	चार्तिस्त•-वि्वो विधनमें म आ सके । पु• रहनर ।
পাব্যস্থিত – বি বি পান্ধবিত ।	आखिल-वि [मे] भरततुमा करा क्षमा वैवाद्ववाः
साचरण-पु [d] बरनाः शतनाः अनुसरणः शुद्धिः	रतष्ट्रा किया द्वामा केम्परा द्वामा ज्वास । प्र एक गार्थ-
क्यनः चरित्र चारु-चकतः बागमनः नियमः १वः गार्गः । आपरशीय-विश्टि] बायरच करने वोज्य अनुसरणीय ।	का नीतः एक परिमाण ओ दश भार वा < इकार तीला वीलाचा ।
भाषरमञ्जूष विश्वपादन करने नान्त्र अनुसर्वादा	शासूषण-पुरिते] प्रमात् द्वेती भगामा ।
भाषरमा १ – स. मि स्मनहार करना ।	आच्छ्रच-वि [र्वः] छिपा हुमा स्टा हुमा ।
भाषरित-वि [सं॰] किया हुआ अनुसतः निर्दिष्ट निवन	आच्छाक-म् मि] व्यः मृथः भाष्टिकः।
दारा विक्षित । 🚆 ऋषीकी स्वी-पुत्रादि सेक्टर या उसके	आच्छार-पु॰ [तं] बस्य परमावा ।
परनावेषर भरना देकर अधना पानमा भूगुण करना ।	आच्छादक-वि॰ [र्थ] दक्ते छिपानवामा ।
भाषप – वि [नं•] आवर्धीय ।	आच्छावन-तु [सं] दरमा, छिपानाः रहन सीकः

रमण करनेवाहा । भारमार्पण-प+ मि॰ो भारमनिवेदन अपनदी अर्थन धर भारमावर्मवी(विन्)-वि [सं॰] अपने अरांगे सव काम कार्तवास्त्र । भारमाद्यी(दिवन)-प भिंगे बस्स्य । भारमाश्रय-पि [तं] केंबक अपना वा अपनी श्रविका मरीमा करनेवासा । प्र॰ भारमनिर्मरणाः शृहव द्यान । मारिसक-वि सि० साम-संबंधी । भाष्मीमा**व**−प॰ [र्थ•] परमारमामे एक्टमाव मारमान्त्र परभारमामें छव हो आना ! भाष्मीय-वि० सि | अपता । प० स्वजन । भारसीयता—स्तो (सं•ी अवनायन, हैवी । भारसोद्धरं – प॰ [सं] भएना अस्यन्त्रः आस्मोत्रनि । भारमी सर्ग -पु॰[धं॰] इसरेंद्रे हितके किए अपनेद्री संबद्धी दालताः अपना श्रीवत श्रावित का हेना । ध्यामोद्य~पु० [गं] अदता अन्तुत्व । मारमोद्धार~प्र• नि] नपना ब्यार, मुक्ति थपने हो प्रयक्तमे अपना स्टब्सरा । भागमाञ्चष-प॰ [मं॰] पत्रः कामदेवः शोदः पोहा । सारमाज्ञवा न्या (मृंश) पुत्रोः दुविश माववर्षा नामक योषा । मा मोग्रसि-ती [सं] अपनी वा अपनी धारमाध्ये ज्वानि । आस्रोपजीबी(बिन्)-पु॰ [मं॰] बपन अमसे जीतिका बहानेब्रह्मः संबद्धः व्यक्तिनशाः । श्रादमापस−दि [में] अपने थैसा। **बाध्मीयस्थ-५**० [सं] सब्द्रा व्यमे जैसा मानना । भारचंतिक-वि [मं] अविश्विष्टः अवाधिनः सार्वकालिकः वर्षः जिस्त्री भविश्ववता, रफरातः हो ।-बुम्बरनियुक्ति-स्त्री भीश्व (-प्रस्य-५० महाप्रस्य) सारायिक~वि (तंश्री विश्वंतकः करकारकः अञ्चलः विश्वकी प्रस्तो हो। अध्यानस्यक् ह आध्रय-वि [मं•] अवि-संबंधीः सविमे वा उसके गांत्रमें बरपद्म । प्र अविका प्रया शक्तिका बंदाय । श्राप्रेयायम-पु॰ [सं॰] मा⁹रमका वरात्र । भारतिका-मी [मं] रत्रसत्ता भी। भाग्रेपी-लो॰ [गं॰] महिन्दती। महिमीदवी ली। १व वहां भी। साधनारे-अ कि शता। क्षाचर्यल-१ [हंग्] अन्त्रेष्ट् वा अवर्तन कविने संबर्ध हमानेबाला अथवा यसमे उत्पन्न । पु॰ अथवीदवा शाला शासना अववंदेरीक कर्न करानेवाटा पुरीहिता अववंदेश भवर्षम् ऋषिका पुत्र या वश्चन । भागवंणिक-वि [सं] अवस्थित मेर्सन रसनेताला । **पुरु अवस्थेन्द्रा द्वाना आदान ।** भाषी ।- स्वा वृत्ती । भार्त्रा-पु (में] दॉन्स कारमेरा जनमा दॉन ह भार-वि [हं] (समानांत्री) सेनेशना (गवाद)। e মৌe ge ৰে 'মা । आव्त-२१ (स०) सम्बाध वान टेंक कर व्यवन trait 1

भावसन्- व श्वमावतः, रवमावानरीयसे । मादत्त-वि [मं•] दे• 'भारा'। अवदम~पु [म] यहुरी इमुलाम आदि अमेर्डि अनुमार रैंगरसङ प्रथम मनुष्य आदि मानवा मनुष्य । -कर-वि ममुष्यके आस्त्रारका ।-एशेर-दिक, तु नरमांसम्बर्धः चदम~प मनुष्यकीसी कारी मॉसीयाना पीता । ~हाद्~पु॰ व्याग्म-संनात ममुख्य । भावसियत-मी हे 'भारमीवत I आवमी-४ अ । मनश्यः व्यक्तिः नीररः धीः (केन-थारु, । अ०-वनमा-वनष्यता बागा सम्बता जिल्हा सीरानाः मंद्रश्च होता, पैसा पत्रा कर हेना । आदमीयत-औ मनुभवा इत्तमानियहा भन्मममी। आहर-पु॰ [र्थ॰] सम्मानः शामः पुत्रवासः क्षत जरहरूनाः प्रवातः आरंभः प्रेम ! - साव-प्र अपर-शतकार कालकार **आव्रल-५**० (वं•) बारर इरना । भावरणीय, भादत श्य-दि [र्र] मात्ररम् दीग्व सम्मान्त। भाररता - स कि सम्मान करना। शाहरस≠~प दे 'अहमं'। बाइच-वि नि दि॰ जलरचीय । भादर्स-पु॰ [मं•] भारेताः मृत्र छेराः अनुसः सभूताः अनुसरमीय वस्ता धेवा। अवस्था। -विश्व-पुर येन आहेना (~सडक~ड ११० भारता: भारता) प्राप्ता वक तरहका तांप । -मंदिर-प्र छोष्टमहत । -वाइ-पु॰ वह बाद या मन जिसके अनुसार रचनामें भागी चरित्र मादिकी श्वापना की वाठी है। "बाती(दिन)" **दि अपनी रचरार्थे भारवंशाका भनुसरच करनास्ना** केने निष्ठति है अनुमरनदर और दनराहा। भाइसें ६ –५० (स०) भारता । भावश्वन ते [हो] व्यिकामा प्रश्चित दरमाः भारता ह ब्याइसित−रि [मंग] रिगकास ≝मा प्र≃िद्यानिर्देग दिया दुशा । आल्डन-प॰ र्गि॰ो बकानाः अख्य दरमा भारमाः वेना **रर्मा। निश्च करना। इमदान ।** आशात−को (थ॰) अस्दान समापा तौरनरीय ('आदन न्या वपु०) । भाषाता(न)-(व (मेर्) तन, शरीवाना । भाराम-५० (sto) केला, हाहणा रीग-सन्ता; श्रीवरी व्यवस्था ।-प्रदान-१ नेनानेना भरत-दश्त । भावाणी-भी मि] इरिग्गेल मामद्र शेषा । आराम-५ (का) व्यवसार-नियमः महत्र-बायप्रासीयोः चारु नगन्दार ('अत्रव सा व्)। - सर्ग-पुर सर स्तार । ~अन्यप्राच~पुत्र (ग्रेनेप्यका) परनी विरेचा कि: ~तमकीवान-५० मनस्यार प्रधान ! मृष् ~सत करमा:-स्वाम बरनाः विशे हेना। ∼वशी कामा-विरुवपूर्वे या वर्षेत्रीया प्रशासी अभिवासी करमा । आत्राय-द् [1] लग बन्धा । -- वर-रिश् पुरानेवर अनेरका । आहार्वा(विनु)−रि॰ [गं०] ४८६ पानेशलाः केनस

1894 समस्या नहीं सिंगी मिकन स्थान, समा भादिका स्थाना समा, गोबीः नामवरी, बदाति । समझ-लो• ५६, प्रदाः स्रवाकः विकार !-बार-वि बुद्धिमान् । समझवा-अ कि. जान केला विचारमा । स॰ कि किसी शतको जाम केमा । समझ-बन्नका-बान का कर । स. समझ रक्तना - कनाव करना, बान केना (चेतावनी) ।-धेना-धरका सेनाः समग्रीता करमाः व्याम सेना। समझाना-स॰ कि भौष कान करानाः अवकानाः। समझान, समझाना-पु॰ समझने, समझानेका यात् । समझीता-प दोनों पहीं हारा संविधी शरोंकी स्वीकृति. राजीनाया मेख। समदा-स्वी॰ समस्व-पु [में] चीरम दोनेका माना साध्या, वरावरी अनुकापताः निभ्यक्ताः वीरताः कता-रताः जमिश्रताः पूर्णताः साचारणता । समितिकस-५ (सं) वहांत्रमः वरेषा । मसरब=-वि वे 'समर्व'! संसद-वि [मं] मदबाका; भरत (हानी); प्रसृष्ट । समदन-प्र [सं] पुद्रा • मेंट, शबर, वपहार । वि मेमोग्मकः बत्रेके पीवाँसे पक्त । समदना - न कि भेंदना सिक्रमा। स कि मनर करना। सीपना। ध्वाइमें दैना-'दुविता समग्री सद पार भवे -रामचंद्रिकाः भानवसं मनाना । समदामा 🗝 प 🌣 श्रोपना सपूर्व करनाः रखना वरमा । समिष्य-नि [सं] बहुत अविक्, अतिश्वतः सावारक्षे बहुत क्वादा असाबारया। ममधिगत−वि [सं] पास क्या इका। समिधाम-इ [र्] मको माँठि समञ्जा, अलगव करना । समिवरासव 🗝 [सं] यह बाना जाने निवस बाला । धमधिवान समियामा∽दु पुत्र वा पुत्रोको सप्तराक। समधी-प्र• प्रका वा प्रवेदा शसर । समधीत-ति [सं] अच्छा तरह पहा हुना अध्यवन किया हवा। समधर∽दि॰ सि ी सीका । समस्रा-की [सं•] बंग्रा समगीरा - पु निवाहको एक ररम विश्वन सुमनी वर स्पर मिळते हैं। समध्य-वि [र्स•] साव वाषा करनेवासा । समर्गतर-पि॰ [नं] सरा प्रभाः विरुद्धक वगुक्रका । समन- • पु • यमा [म 'समम्ब'] मतिवाती वा यवाहकी मदाकतमें दाजिर दोनेके किए प्रस्की कीरते सेजी जाने नाकी किर्द्धित सूचमा; [ल] शाम, मीक वेजीकी कीमत । को [का] क्रमेको। -क्षेत्रामा,-पिकर्-नि समितीको कताको तरह संदर, तक्षमार वेहवाका । समनीक−दु[सं∗]सुद्र। समनुकार्तन-पु [नं•] भूव नक्कर गर्शसा करना । समञ्जा-सो (सं) मनुमति।

दिशा गया की। मिसे बालेकी काफा दी गया की: मनगरीत । समनुकान-पु॰ (धं॰) पूर्व स्वीकृति, अनुमति । ससन्सय-वि सि॰ । नासस्य प्रणवाबित । समन्त्रम-पु [सं•] निवर्मित क्रमा संबद्ध फूल, कार्प कारण संवेधका निर्वाहः संवेशः मेळ, बहरी । समन्दित-वि॰ [र्स] संबुक्तः स्वामाविक स्वमें अन्यवस् अनुगतः " से युक्तः " हारा श्रमाभितः जिसका मेह वैठाया गवा शो। समग्रिप्तत-वि• 1[सं] परिश्वविद्यः समिभृतः प्रस्तः मदण्युक्त (बेरी चंह)। समिष्याद्वार-प [सं] साथ वर्णन करनाः साथ संगति मसिक कर्षणके सम्बद्ध शाहिएत। समिक्सान-वि (सं०) पूर्णतः समा समा। ममभिसरम−प्र॰ [र्च॰] किसे और क्टना। गारिके किय प्रवरन करना है मममिहरण-पु+ [सं] इरथ करना है हेना। आपरिः गार-पार करना वा शोका। समसिद्वारं~पु [र्व] घटण इरमः आविषयः आवृत्तिः। समन्याहार-पु॰ [र्च॰] साथ काना। साव, साविध्य । समय-प्र॰ [र्व] काल नकः नवतरः प्रत्सतः वर्वकः काका जीव समया जीवा ठहराना प्रमात विविद्यानारा कवि समवः समझीताः निवमः भादेशः सन्देशः संबद्धाः रिवतिः छपका प्रतिकाः संकेता सीमा, वबः सिकांता सफकताः का-अवया कक्की समाहि (मा)। संपन्नी माक्या न्याक्याम । -काम-वि प्रतिक्षा, ठक्राक्का इच्युक । -कार-त समय नियस करनेवालाः संदेश । -किसा-की समय निपत्त करनाः विस्त परीक्षाको तैनारी। भारत में व्यवहारके किय नियम बनामा ! - व्यक्ति - की मीखा भूष बाना अवसर दावसे निकक बाना। -हा-वि समयका कान एकमेवाका । —घर्म-पुरु प्रतिकान्त्रंकी कर्तव्य । -पब्-प्र समझीतेका निवय । -परिरक्षण-समधीतेका शाचन। -वंद्यम-वि प्रतिशासकः। प्र प्रतिकासा कंपन । -भेक्-पु॰ प्रतिका संग करसा । -विचा-सा॰ फक्कित क्योतिए। -विपरीत-वि वादेके विकाफा वादा पूरा न करमेवाका। -वेट्य-की काक-परिमाण नवीत । --इपरिस्वार--पुरु प्रतिका-भंग । - व्यक्तिकारी(रिन्) - वि प्रतिका भेग करके-मास्त्रा । समयाचार-पु॰ [तं] प्रथकित व्यवहार। समयाष्युचित−तु [सं] यद समय अव म सूर्व स्कि-गीकर हो और म तारे दिखाई देते ही संध्या। समयामंद-प [सं रिष्क भैरव (सं)। समयानुवर्ती(तिंक)-वि [चं॰] प्रवक्ति रोतिके बनु-पार पक्रमेशका । ममयोचित्र−वि+ [र्त•] अवत्तरके उरयुक्त । समर-पु [अ] फूक मेशा सरक्रमेशा सफला अ श्मर

मनीयाः [मं] सुब्रः क्यारं । -कर्मा(भू)-प्र सुब्

का करनेका कार्य । -क्रिवि -मृ -मृमि।-वसुमा-

समज्ञास-वि॰ सि॰] पूर्णक स्वीकृतः मिसे अधिकार

1270 सम्मूष्ट-वि [सं] भूव द्वादा-वदारा, साप-किया हुआ। छाना दमा । सम्मेष-इ [सं•] पात्रक-वर्गका मीसिम। सम्मेत, सम्मेर-पु॰ [सं] ण्ड पर्वत । सम्मेसम-पु [एं•] बापसमें मिखना, प्रत्य होना। समा बादिः शिमनः मेळ । सम्मोचित-वि [ते] मुक्त किया हुना। सम्मोद-पु॰ [सं॰] प्रीतिः प्रसन्नता सुद्धीः गंव । सम्मोड-प [सं] परहादर, व्याकुरुता; मूर्च्छा, संबा-शानताः अदास मुर्खताः विमोदन वशीकरणः दो दहाः श्रीमा एक निशेष प्रदेशीय (क्यो) । सम्मोडक-वि॰ [सं] देशेश, संबादीय करनेवाला माथ बद्धमें करनेवाका । बहरानाः कामरेक्का एक शया यह भीराणिक अस्य । सम्मोइनी-स्रो [ए॰] एक वरहको मादा।

सरमोडन-वि [सं] दे सम्मोदक । पु सुम्ब हरमाः सम्मोहित-वि [मं•] मुन्द, वसमें किया हुआ; वेदीस किया हुनाः वयसङ्ख्ये टाला हुना । सम्मास = - प्राप्ता वया । सम्बद्ध् (स् स्पंत्) - वि [संग] साथ कानेवाचाः ठीकः सही वपन का विभिन्न मनीनुकृत प्रिया सकरपा की पक पंक्तिमें हो (असे एउकिह)। संपूर्व समग्र। म के शाक्षा संच्छी तरहा कवित रूपमें। ठीव-ठीवा सम्मानपूर्वकः पूर्वतः, रपश्तः। ~(क्)कर्मात-पु एस्द्रमं (वी)। −चारिय=य स्वाचार, रखववमेंसे यक् (वे)। -पाठ-दुधुक् ब्लारमः -प्रणिवाम-

प्रमाद समावि। -प्रयोग-तु अवित प्रकोग। -प्रवृत्ति-स्तो (रहिवाँका) वश्चित कार्य । -प्रदाय-कवित प्रवद्याः −भ्रद्धान−पु सदी विस्तास (वे)। – सं**बद**-वि विषेपूरा कान प्राप्त को गया हो (तुड)। -संयुद्धि-को -संबोध-पु पूर्ने दान पूर्व प्रकाश । -समाचि-वी औड समाचि।-स्थिति-को सावरदना। –स्थृति – की सदीवार। सम्मगवकोध-दु [सं] क्रेन्ड समझ। सम्बगाबीव-पु[मं•] चप्युक्त रहन सहम । सम्बग्- धन्यभृ'का समासकत रूप । -वात-वि परिवारमा । -रामय-पु साव बामा : -शोप्ता (प्तु)-पुरुषास्काः ~ आसन-पुरुशीकानः।

-र्डम-५ अवित या वैत्र देव देना। -श्रद्यांत-

पु सवी क्षान रक्षत्रयमें से सक (वे)। वि व्यक्ति हिसे

सन्नाञ्ची-मी [सं] समावद्ये पन्नी; सामाञ्जक्षे द्वासम

पुका-पूर्वी(वित्)-इक(वा)-विश्वे 'सम्बद्ध र्धनः −कोघ∼दुस्ताकाने। --वर्तमान–दि थो अपना कर्मध्य करता जाता है। ~बाक(च)— की वित्र भागगाः –विजयी(यिन्)–वि विसे पूर्व निक्य प्राप्त थे। – बृत्ति – को वर्धव्यका समुक्ति शक्त । सम्यामाण-पु है 'श्रामिनामा'। सम्योची – स्रो [सं] प्रशंसा स्तुतिः कृतीः। सम्रद•-वि समर्थ।

सुत्रद्धा शंपासन करनेवारी स्त्री । सम्राद्ध(क)-पु॰ [सं॰] वह ब्रिएका शासन और राजानी पर हो। राजेशर (जिसमे राजग्य यह किया है) । सम्बद्धना-म कि ६० 'सम्बना' ।

स्यत-प [सं] वंधमः विवासित्रका पक्ष प्रथा + बेटमे की किया सोनेकी किया शिक्स । सयाम 🖛 🖰 भग्नदारारी उदिस्मामी । वि अनुर । -पः-पन-प• चत्रसर्दे । सयामा∽वि प्राप्त-वयन्त्र, प्रीड वयस्थाकाः दुविभागः चारुक्त, वर्ते । पुरु पुन्न, बना, बहा-पुन्ना नारमी। नेपरदार,

सक्षियाः बीझा आकर्जेक करनेवालाः स्कीम । –चारी– की॰ गरैको <u>मुख्यिकाका रह</u>म । स्यय्य−दि [सं] एक दो वर्गवासेभीका। प्रवद थो समाम समृद्द या वर्गद्धा हो । सबोनि -वि॰ [ते॰] एक ही क्षेत्रसे छरका, तिकटलंबी। प्रसमामार्थः इंदर सरीताः शयीनीयपय∽प स्ति विदेशियामर्गः सर्गन-त [वं] चतुरम्यः यक तरहवा हिरमः पद्मी। वि र्यव्यारा साम्रमासिकः सर्वकाम⊸द्र [फा] कामका नदीवाः पूर्तिः प्रवेच वैदारी (करना, दोना) । सर्वंड−प॰ सिं] पक्षीः तिरंगितः संपदः दधः व्यक्तिः पक जाम्यव । सरा- सरमुका समासगत २५ । -बाक-प इस । —काकी –को इंसो । – निय∽ पुणक वसीय पश्ची । सर-वि [सं॰] चकतेवाका गतिमीकः रेमका ए॰ वसत गतिः वाणा दर्शका बच्चतः समका हारः १रस्पे। सक्रप्रपातः वकः ताकः, ताकावः कश्च मात्रा (छेर)ः शासः। —श्च-प ताजा सरदान । -पश्चिका-सी कमकका नदा पत्ताः कमकिनी। −संप्रत−प्र तिवारा, वदर।

सर-प का किए मोध दोर्च मागः नादि बार्रमः शीर्षका सरदार (शरपंच)। किनाराः राष्ट्र गायेच्छेका कीर्यवर पत्ता (रका बादचाद र)। इरादा: प्रेम भोतः क्रपतिस्वात । **– भं**तास-प —अफ़राझ−वि कैंबे फ़रपर जाग्रीन, महियान्कितः वर्मरी । - काफराज़ी-की वदप्यनः वर्मरः ! - क्षतमा-वि शरवाद, मुखिया । -कदारी-की सरवारी । —कवा−नि वर्षटा को किसीसे स पने। नामी। -कवी-सी वर्ददशः विहोदः। - धार्-सी दे क्रममें । –कोच-वि सिर कुक्त नेवाका; श्रंड हैमे वाका । पुरोपकामा । —कावा−पु मारी गरा । -कोबी-की सिर कुपलगाः वंड गोग्रमाली ।-सुन्त-पु किरावानामाः वह कामब विसपर मोकरीको तारीक की वाददास्त किसी वाथ। -ताना-वि॰ सरदारः मुखिया ।-शरौँ--वि ६६, बुद्धः पर्मश्रेः परन ।-गरासी--नी सिरका मारी बोनाः सुमारः रोष । -शरीह-प सरवार, नेता, मुखिया । -गर्म-वि मुस्तेय, बस्मादीः वरसाइ और वरिजनसे कान करनेवाला । -गर्मी-औ

मुरतेशः बासाहः विकसे और पूर्वः शक्तिः साथ प्रवान

करना ।- गुक्कत-की ग्रहरा हुना हाम वृत्त, बरना ।

समाचीर्ण-वि [सं] व्यवहत, शायरित-पूरा क्रिया हका । समाचेहित-वि [र्ने] त्रिशके किय चेहा की गरी हो। स्मवहतः भाषारितः। पुरु शंगर्भगो। स्मवहारः जावरमः। समाच-प्र• सि] मिलना यक्षत्र होताः समहः संब रहा समा समितिः वाशिश्वः समान कार्वं करमेवालीका समूदः निसंप उपवेषस्था प्रतिके किए संपरित संस्था। महीका एक योगा हाथी। -बाब-प्र• वह सिग्रांत कि बरचदराके समस्त मावलीयर समाजका अधिकार ही और द्यामे बस्यव दोनंगाकी संपत्तिका वदासंगर, समाज रूपसे विदर्ण हो। ~वाडी (विम)-वि बादबा मिडाँत माननवाडा। -क्षास्ट-पु॰ मगुष्यको सामाजिक प्राणी पालका समाजके प्रति संसक्षे वर्तन्त्रों भारिका विवेचन करतेवासा शास ! -शक्तिशास~प+ समाचे वरमुक्त न्याम समान्यवम । -सेवक-त समानके दिएके किए कार्य करनवासा । -सेवा-सी समाजका दिव-साथन । - सेबी(यित) - वि प्र समाव संबा करतेवाता । ममानव-नी [४०] सन्नायः बन्नव (निच्छ-समाबद)। समाजी-५ सरस्ता। समाज्ञान-वि [री॰] क्रिसे बाधा की रावी हो बादिहा समाज्ञर~क्टो सिंडिक्वावि, प्रसिद्धिः जाम संद्रा । समाज्ञात-दिश् [मंश्र] जाता प्रया: माना प्रमा ! समाहत-वि [सं] पैकावा ह्याः वाना ह्या (बहुद्): मिरंदरः अविनिद्धः । समाता(त)-की भि वाताके समान मान्य सी। विमादा । समातक-वि [र्शः] शतक्षाः। मसाक्ष-दि [सं] युदीका मास। समावर-प [मं] विदेव बादर प्रतिका, सत्कार। समादरशीय-वि [तं] विशेष भारत करने बोध्य. सम्बद्धाः । समाशान-पु [सं] पुत्र रूपते ब्रह्म इस्ताः अपनेतर केना। बारंग बरवा। मिरचन, संक्रमा क्यमुक्त दान भादि माप्त बरमा। वैशेषा नित्यवर्गः और 'शमसाम । ममाबापन-इ (सं॰) क्यकामा काला हैना। समारत-नि [तं] एक्त धम्मानिन। भ्रमाहेब-बिर [सं] ग्रहम करने नीम्बा श्वामा करने होत्व आदर बरने बोम्ब। समावेश-५० [मं] नाग्रा आरेश, निरेश । समाप्रिय#-वि वे भगतने। ममापा-सी [मं] दे समापान । समाधान-पु (हे) विकास साथ बहनाः मेळ वैदासा शाबनात्रताः भीत्पुरमः ध्वामः गमाचिः संदेशनिकारण निराहरका प्रमाहता। भौरता रिवरनाः प्रनिपादनः सह

मन होना अनीकार करनाः मुखनांविका एक अंग वीक-

स्थापन (बह महना जिसमें कवानका काएति होती

समाधाननार-ना कि संबोध समाधान करना। सांत्रमा

2 (-मा) ।

वेगा । समाधि-सी [र्स•] साथ रखना विकाना स्टान्य कोड़ वा तमकी एक विशेष रिवतिः वस कमा क्रम्य योगका अंतिम जंग~समकी जहारर बेंद्रित करना को नीनः तपस्ताः सदमेर वर करनाः मीनः वंदीस्त स्वीकृति। मतिकाः परिशोषः पूरा करनाः वामसासः असंभव वातके किए प्रवृक्त करमा। (वृधिक्रमें) नव क्य करमाः वर प्रकाम शाहिजो क्षम-स्वत्वर नगमा यहा है सक धर्मानेकार जिसमें सम्ब कारमेंद्रि बीमन कर्षे सिर्द वर्षित होती है। वर्ति सेतो का बढ़ ग्रमा स्हार निवयः इंद्रिवमिरीयः सत्तरद्वर्थं बस्य । - शेष - स्पष्ट-प्रकारवान वहाँ सालुकों भारिको गास्य है।-पर्यं॰ व॰ यह वीविस्तव)--चन्ना-की॰ च्वाबरे प्रकातः स्कारको अवस्था !-विग्र-वि समाविस्य !-प्रेमा-प्र बाबा पहलेखे कारण समापि ध्यावका जेन होता। -सूत्र-वि समाविमें कीम ।~सेड-५० दे० 'तसीर मंग ।-सोझ-ड॰ सबि मंप बरना (धे) ।-समा वता-की समाविका वक मकार (वी॰) (-स-नि॰ समाधिमें रिश्त (समाधित-वि॰ (सं॰) तह मांत दिना हुनाः विस्ने समाधि बनाबी वा की हो (१) (समाबी(चिम्)-वि॰ [मं] समाविरव।

समाजूत-वि॰ (सं] मनाया ह्या, निगर-सिर विश कुमा ह समाधैय-वि [तं] स्थानाव बरने बोग्स मसीरा करने बोच्चः निर्देश करने बोम्या अंगोकार करने बोच । समाध्यात-दि (छ॰) हॅब्बर इक्ता इत्रा बीटी समान-नि॰ (र्थ॰) हस्य सरस, रह सा शासर, बाहर, बल १६ आरियाः नेक मलाः सामारमा सम्मानेक कीर कुकः समान वरिमायकाः वक ही स्वानसे सम्बाद हैना बानेवाका (स्वर अग्रुर्छ) वीक्या । पुरु वरावरीमा सची श्रुरीरस्य गाँच प्रागमाञ्जामिते एक की बाविडे कार्ज रवती है और पाचनके किए आवस्तक है। एक ही स्वान री बोले बानेवाने अक्ट ।-अरख-दिश् रह हो कावारण रवानवाचा (स्वर्) !-कर्तक-वि विनदा वर्ध रह श्री (समान) श्री (व्याः)।-सम्(प)-इः १६ श्री कामा एक वी कर्ने (म्था) ।-क्षमीक-वि (शामा वर्ष यक भी (नगाम) थी (ब्ला)। यक वी तरहरा वाथ वरते नाके ! -कारक-वि सबको एक मेशा वर देनेनाम (दास) । -काल -कालीम-वि ग्रामनाविक वर्द ही समय होमेशने। -गति-रि॰ वास्त्रमें दरम शीमेक्ट । -सोम-वि स्तोत, रह ही बंदसः -ब्रामीय-वि वक्ष हो मानमें रहतेगांडे !-जन-३" समान परवाला व्यक्ति एक हो नेशका व्यक्ति । - सग्मा (मान)-वि जिनका तरशीयाचाम एक दी। वह क्ष ही वर्तका कार्डे, इम्रडम् ।-बार्ताच-वि -संज-नि विवश काव समाम हो, एक हो काम बरनेशने ।-सेबा(बस्)-वि समाव बारि या गीरवराका ।-बुग्ल-विं त्रशासुक्ति निवासेशका । -देवत -देवल-वि एक ही देवता-संबंध -प्रमी

−गोंदी-को कारापूसीः पुगरोः नुराई । - कहमा~ पु॰ महनेका उद्गम ।~क्रमीक्-की॰ देश सुरूक शत्य । ~गोर-वि॰ सर्वश्च अवदाकारी ! -श्रोदा-प स्वताब पामा हमा घोरना शरान सादि । वि (wie) बहिया, सारक्षप !-सराझ-प्र• गार्थः सिर मुँक्तेशका !-ताळ-प्र है। सिरतान'। -चप्रसर-प्र नप्पश्चः देवहाई। ~वरप्रती~की पेशेपर समाना जानेवाला कर । ~दर्व -पु शिरका दर्श व्यथा, कक्ष । -हार-पु मुखिया, मेताः सेमापिता सिक्षांन्ध्रे पश्नी । -बारमी-सी॰ सरदारकी परनीः प्रतिद्वित सिख महिका । -शारी-बी सरदारका पर । -मबिइत-ओ क्यान-सेप भाग्य। -मास-वि॰ नामी, गछत्र । -मासा-पु॰ विद्वी पानेबालेका रहा को बिट्टांके कपर वा बारंगर्ने किया बाता है। मशरित । -निर्में-वि नतिशः और र्मेदराका; स्रामित ? -पांच-प्र प्रवास वंच, वंचीका संविचा । ~परस्त-वि+ संस्कृत संवानका बली। -परस्ती-ओ• संरक्षणः सदावता । -पॅच,~पेच~ प्र पनशीने अपर सयानेका रक नहना। यस तरहका गोरा ! -पोश-ए वक्ताः क्यामपोधः (छ।) ग्रप्त बाठ, मेद ।-फ्रराज -कि किसका सिर कॅबा की। विसे वर्षार्थं मिक्की हो। सन्मानितः वर्महो । (म् - क्ल्बा -करमाना - पहार्थ हैना सम्मानित करमाः क्रवार्थ करमाः) -फराजी-सी दरनेडी कॅबर्ल; बर्गा !-फरोग्र-नि यान देतेको तैवारा बालपर रोक्रवेपाका, विषर। -फ़रोघी-को पान हेनेको तैबार होमा: बारता ! च्य<u>सद</u>्द-वि सदर किया हुया शुदरवंद । −वरक्र− वि भी जान प्रवेदीयर किने ही महतेकी तैवार ! - बर इमा-वि भी मंग मिर हो। ~बराबुर्वा-वि सुधिया ममुद्रा !-यराष्ट्र-वि प्रशंपकर्तो कारिका । - कार-प्रशेषक मिनेदारींका अफार । 🗠 कारी-सी धरनराहकारका चर । - वराबी~सी॰ प्रनेत । - वसर-परायदा शीलको आमे छरासर । -बाझ-वि भातपर सेक्रमेशका। निरुद् ! ~बार-प्र छोडी यस्टी बी मोशके कपर रही जाद ! -पुक्रेयू-वि शिलका तिर श्वा दी। कवापररमा प्रतिष्ठित सम्मानित । —क्ष्यंत्री— स्त्री केंद्रा स्थान । - अस्त-वि सववाणा शराबदे मधेनै पर्। नजस्ती-को नचता भरती। ~मापा-प्र∗रे 'कम'म। -व(श)पा-म सिरसे रेता नचारिमा ! व नवीय ! (मु॰ - व्ही हाबह म होना-देशुप, परहवास श्रीमा ।) -वरझ-पु सन्दर्भ परतक्षा पहरा पता । ~व(रो)मामाम~ड॰ सामान बत्तवाव।-द्युमारी-नी कि ŧ -सब्दा-दिन दरानरा नदने त्युष्ता ! (मृ० -०इोना-सक्त होना) शुसुकत रीविका होता। - हंग-चु सेनानार्ट् बोद्धाः वि वर्षः क्रियोगे ग की सरदेग्रन भी वह स विक बीमा मरी इपहर्र

124 की कोडी । -ब्रकार-मन् सुस्क्रममुहा, भरे ररस में। -दस्त-न नयो, फिक्क् । -श्रीकार-प दीवारका अवसी माम । -मा-मा हो निते। -वाजार-अ॰ सके सवाते शब्दे तायदे। -वा--प्र क्रोका क्यरी। -यासी-प्र शिराना। नत वर शरतेके सिरेक्ट शरतेमें। ~सहकर-क हेग: वि । –दाम–म॰ घामके ग्रस्में, हंपा रोतेश। -शीर-पु॰ मकार्र । <u>मु</u>॰ -करमा-शारंत कर (कः); (किका, शहिम) बीवना प्रतर स्ताः स्टमाः दवाना, काबूमें कर स्था। द्वागमा क्रीहमा (बीक्स्प्र) वास, संजीपेसे विकासका हैता रवा राजना निवन वसरे श्रिष्टावियोंको वदा क्ला टाइना ५५। न्याना मार्थ होना (६०)। एतह होना हाक होना कर (बीय-बंदक) । सरकर्प वाषा किता-'कर्द वेशि वैश मरशाय "१ सरकड़ा- बिस खुडी सायर बल मीर, पर श्री बादि में -बुर । श्री माका । -बर-पु॰ तरबए । -रंगर पुण्याओंका विषया । — शंबी – पुनानेतः। सर(स्)-पु॰ (र्छ॰) होस, ताल वलाश्वरा वन। सर्गं - औ॰ धरपतका एक मेर । सरबंडा 🗝 🔫 सरका जिसमें गाउँ होती हैं। सरक-प्र॰ [र्स॰] पविद्यंदी क्यातार पेंचा क्रांचिन कारको) शांक शोंका रत्या सरक्या भाषाया कीर्र श्चरापाणः पानपाणा श्वरा-दितरमः एक दीवे । देव की

सरकार-ती [का] राज्यरवारा राज्य इत्या प्राप्त जनेवा शासक-बंदका अविकारी। रिवासत । ॥ हरिस्र वक विमागः जिला (मुगकराज्यार्थ्य)। मार्किम वस्त्र मालिक। मर्वकर्तीः वहंका संशोधन हुन्। - संग्रेजी-ली॰ बंगेबी हर्मत निरित्त राज। -बंदबी की॰ हेरदर्शिका क्षेपनी ।-ब्रुकार-प् रावश्रतम, क्ष्कर्री सु - - कर्मा - - चरुमा - कपहरीमें मान्य करेबार करमा । -दिन्यामा-(ж») मासिश करना ! सरकारी-वि जरकारका राजकीया व्यवस्था कविक स्त्र । -अहरूकार -मुनाब्रिम-द्र॰ राज्यदेवारी । -मामदुवी-ची राजको भाग रावला -कार्म-ह राव्या काणका प्राप्तिनहीं बीट। -कास-इ एक्तरका काय । -मांब-30 बल 歌^ ai भोरते रखा बानेशला वर्षा **व्या** ।

। -शिष-लो॰ सपरा ।

शरकमा−अ कि॰ वर्माग्रहे धरे हर वामे शुवा रे^{कार}

विकटना। दर काना। काम मकता। मनमका रव बारा

सरका-पु॰ (श॰) चोरी । -विस्त्रम-पु॰ दास !

श्रीका कशी श्रेतार ।

मध्ये मर्

स्पूत्रको ।

नारीक्-सन्तिका अस्य (वंगीत) ।

न्यांच ६ (मा ।

¥। परिणासकाचे । -प्रेंग्ना(सन्)-वि∗ पकत्ता शेव करमेशका !-शाम-वि॰ शिर्ध गरावरीका सम्मान आप्त ही !-मम-पु॰ स्वरका वही छच्च जान (गुंगीत)। -योति-वि यक्त को बोधि क्यानसं सरवता ।-सचि-वि एक-सी रुविवाला !- कृप-वि एक वी रंग, शक्क-नाके।−वयस्क-दि॰ इसउन ५-वर्धस-दि वैसी ही कांतिकासा । -- लर्ज-वि एक-से रंगवाकेः एक की स्वर वर्गनाके।~शसम~वि समान वन पार्थ करनेवाके। —सिद्या−वि समस्य विद्यात । चावदा च्ली तरदश्ची पदेशो ।—श्रीक्ष∽दि एक सेसे स्वशायवाले । --संस्म-(व - धरावर संस्थावाका ।—माक्रिक-वि 'समानोत्रक ।-स्यात-प्रान्तक सम्बन्धान । वि को वह बैमे स्थानपर हो। समानता – नी समानत्व – पु (से+) प्रस्वता, प्रायस्य, मराचरी । समानवन-पुर्निः एकत्र करनाः वादर-पूर्वक के भागा । समामर्पि-वि• [सं] यद ही ऋषिद वंश या मोत्रयें क्षरंख । समाभा-न कि॰ मीवर भागाः स्थानाः स्थ भग्रता भरजा । समावाधिकरण-वि सि । समान कारक विमक्तिसे सुच्छः एक ही जेलीकार जिलका भाषार एक ही पदार्थ हो। (वैद्य) को लगान स्थानधर हो। ए यक हो कारक की विमक्तिने प्रका दोना। समान अनी। समान आवार भाक्षा समानाधिकार-पुर्मि वानीय ग्रनः धरानरीका अविकार । समामार्थ−वि [मं॰] विनका वश्य यक हो। यह कर्षवाहे (शब्द)। समामार्थक-वि [सं] एक ही भर्व रखनेवाले (चन्ह) । समानिका-की [एं॰] यह वर्षकृत । समानीवक-वि [म] साथ तर्गन करनेवाने (व्यारहशीसे चीरहरों पोडीतक पक हो पूर्वजवाने~सावशेक्कके सर्वनी समानीयक होनेके साथ सर्पिक मी होते हैं)। समामोदर्व-वि [सं॰] व्या गर्मछे ज्लान सहोत्रर । य स्या मार्ग । समानोपमा~कौ (तं] क्यमका यह प्रकार क्रिसरें तथारमध्ये व्यवसे रक हो सन्द मित्र प्रकारने बाह अस्ते पर भित्र भवें का घोतक होता है। समाप-५ [सं] देनवाओं भेरेच बादि चढाना हेन ससापक~वि [सं॰] समाप्त पूर्व करनेवाळा । समापतित-वि [सं] भावा हुआ। वृतितः। समापत्ति—सी [सं] मिक्ना संबंधते भेंद की वानाः छेनोय मीनाः मूल स्य प्रदल करणाः पूर्वः समाप्तिः नष्टमें दोनाः प्यामका एक अंग !-दप्ट-वि जो संयोगसे नवर का गया हो।

(र्मम्)-वि॰ एक दी जैते गुनवाला(है)।-मामा(सन्)-समापन-पु॰ [सं] पूर्ण, समाप्त करमा। माप्ति। वन वि रामान नामवाका पामरासी !−निकल-वि पक बरमाः प्रथका और वा अध्यायः समाचि । समापनीय-वि सिं•ो समाप्त करने थीग्या वह करने नोग्यः भवनः। थमापश्च−वि [री•] प्राप्तः वटितः भावा ह्रमाः पूरा किया हुमा। सुविष बाता। " से बुक्ता फडमस्त। निवत । पु समाप्ति, पूर्ति; ईत मृत्यु । समापादम-पु [सं] पूरा करना। मुक्त कप प्रदान षरमा । लमापिका-सी [सं॰] बावय-पृतिके निमित्त आमेबाकी फ़िला (ब्बर)। समापित∽दि [सं•] समाप्त पूज फिवा द्वभा । समापी(पिन्)-वि [सं] समाप्त करनेवासा । लमापूर्व-दि [सं] पूर्वतः घरा हुआ समग्र संपूर्व (समास-वि [सं] पूरा किया द्वभाग बहुर, हर्विसान । -प्राथ-वि क्रममग समाप्त । -भूबिए-वि क्रममग पूरा किया द्वारा । – वर्षम – पुण्यक वही संस्था (दी)। -सिश्च-वि विस्का अध्ययन पूरा दी शवा दी। -सम्ब-पु यह ही इंगमें करनेवाको सेना । समाप्ताक-५ [मं] स्वामी परि । समासि – चौ [सं•] वंत पृति पूर्व द्वीसाः पूर्व प्राप्ति (विधारिका)। छरीरका पंजरव-भागि विभिन्न तस्तीमें मिक बामा। विवासका श्रेष्ठ करना अंतर दूर दश्मा। समाप्तिक-वि [चं॰] वंदिम विससे बंद हो। विससे कीरै काम पूरा किया है। प्र समाप्त करमेवाका। वह भिसमे वंदाच्यवन समाप्त दिवा है। समाप्य-दि [र्थ] समाप्त पूरा करने योग्य। समाप्याचित-वि [र्पण] देवित बनुमागित । समाद्रव, समाद्राव-५ (सं॰) गीता स्थामा बहुना । समाप्तुच-वि [सं] प्राविदः से मराह्रमाः सात्। समामापण-१ सि] बार्लाकाप । समाधात-दि [सं] गार-गार क्या प्रमाः (गात) वो पर्रमराके कथमें चका आती हो। वर्षित । पु वर्षम, धार्मन । समाम्नाम~ १ [मं] श्वृद्धिके जावारपर जावृत्ति करनाः वर्णन । समाद्वाच-त [सं] वर्षशासे प्राप्त कीनाः वर्रपटानत वनमें जादिका संग्रह, सासा वर्णना समूद संग्रहा क्रिया संबार जसम्। समाञ्चाविक-तु [सं] श्वासदः शासदिपवदः। समाप्र∽पु[री] भागमन। समायत−वि [सं०] फैकावा द्वसा ≀ समायच−वि [मं•] जवकवित, विशोके सदारे दिवा **हमा** ≀ समायात-वि[म] निवद बादा हुमा। कीता हुमा। उ समायी(यिष्)-वि [सं] साम होनेवाका । समाञ्चक−मि [सं•] बीवा धनाः तैवार किया धनाः नियुक्ता संपर्दमें काया हुआ। "से पुक्ता दश्रमिस । समायतः नि (रं∘) यहत्र किया हवाः संयुक्त किया

इमाः " से तुक्तः।

```
1244
सरकमा सरवस्का सरबा( अस् )-मी॰ [सं॰] कतु
 मदी सी ।
सरजा-प्र• सिंदा सरवारा शिवाजीको क्यांचि
सरजीवक-दि॰ सजीव, शीववाका-'सरबीव काटहि
 मिश्रीय बयदि अंतकार की भारी -वर्षीर !
सरबीवर्ता - दि॰ सोवित करनेवालाः करा गराः करसेव ।
सरह-५ [सं ] मिरनिया बाजा।
भगति-प सि॰ वासः बादकः।
सरद-प्र [सं=] मिरमित्र ।
सरद्र-पु॰ [सं०] बाह्य बादका विरमिदा मनुसंबंधी ।
सर्भ-प्र* [सं ] गमन सरकता विसकता कीहरिक ।
 वि सुद्धते संबद्ध । - भागी- पु शमन करनेवाका मार्ग ।
सरवा-भी [सं ] सताः प्रसार्गाः विवृताः गमन ।
सर्थि, धरणी-सी [सं] मार्ग, रास्ता मसारकः
  व्यवस्थाः तरीकाः सीभी वा कगातार पंकित पग<sup>न्</sup>वीः
  गकेका एक रोता।
सरबद्ध-पु र (सं ) बाह्य बाहरू बका बसेता वरिना बम ।
सरकाल-४० कि विकास कर्रताचा ब्रह्म का विवर ।
 सरता-करता—व वैदार्गः हिस्सा-वीदः। सण् —करमा—
  एक इसरेकी सदावतासे काम क्लामा ।
 सरवारा १-वि निविच बच्चन्यत सावकाश-वैद सर्वे
  इरगोदिरकी तबसे बमहत फिरे सरतारे'-ग्रकान।
 सरस-विश् सि ] गमसङ्गोल । पुश्चाल वाता ।
 मरकि-की [सं] ए६ दाक्की मार् ।
 सरध-वि॰ [सं॰] रक्ष्य । ५ रवारोची छैनिक।
 सरड−वि देश 'छर्व'। ≉ ली शरव कता।
 सरबर्षे-वि देश 'सर्वर्ष' ।
 सरबर-म भीस्त्रका एक सिरेसे ।
 सरक्षां - प्र वरवाजेका बान्। म दे॰ 'छरवर'।
 सरवा-प दे 'सरो'।
 सरहाम्(इत्)-पु [स॰] थीवन सनि ।
 सरधन: - वि भनी अमीर-'वी निर्धन सरवन के बार्व
   बाने बैठा पीड फिराई -बनीर ।
  सरधा+-को अबा। छक्ति।
  सरमञ्ज्ञा है। परम ।
  सरमधीप=-प्र स्वर्णदीप सिंदक संख्या।
  सरना-व कि शरकता। काम वसका पूरा वक्रमाः

    सहना। वीष वाला पूरा हो बाला-'शुक्त बंध तेरो

   भागु छन्। -त्रा भरता ।
  सरमी • - की रास्ता मार्थे।
  सरपर-की बोहेकी सबसे तेत्र बाक जिसमें बीहा अबसे
   पैरोंको एक साथ फेंक्स हुआ श्रीक्सा है। वि० सपार।
   व सरपर पाकरे।
  सरपत-प्र कुशको कातिका वस एक।
  सरफरामा+-म कि व्यवस्थाना प्रशासा ।
  सरफा~प्र• दे 'सर्का।
   सरकोका-द्र भरबंदा।
  सरक--वि• दे 'सर्व । -कियापी-वि सर्वेश्वापक।
   सरवचिर = - व सर्वत्र - -सी मुख्या सरवचरि वाता
    -पनीर ।
                                                  सरवरी-की संरात ।
```

```
ध्रावाचाचे--वा० शर्मश्रा बमेशा।
श्चाबस्य -प सर्वस्य, सन् कछ !
शरपोर+-विश् दे 'सरावीर'।
सरमद्भ-पु॰ [सं ] अध्यक्ष यद्य कीर १
सरसास-वि॰ सिं॰] तेवा बना प्रसन्तः मानाविष्ट ।
धारमञ्ज्ञा ।
शरमाय~नि (७०) सदा रहनेवाका नित्य, कावमः मस्त।
सरसा-प्र• [दा•] नावेका मौतिम, चीतकाल। ची॰
 [र्थ•] देवतावींकी कृतिया, देवलगी (क्वा बाता है, यह
 चार औंदोंबाके यमके कुदेशी बनमी थी)। कठिया।
 करवप शमिको एक स्पा: जंबनेराज शैक्षपद्धी शक करवा
 और विभीषयकी सी ।—प्रच —सत्र~प्र• क्या ।
शहसाई-वि आवेका । सी आवेके कपर, बढायर ।
सरमाय्यम= इ. [सं॰] कुत्ता ।
सरमाया-प्र• [का ] पूँची मृहकन ।-दार-पु पूँची
 विश्व वारी ।-बारी-ची॰ सरमावन्दार श्रोमा ।
सरवार्ग - 9 कह मीरा क्रमारी भागा छारी।
सरप-प्र• (सं•) बाजु । स्ती देश 'सरम्' ।
शरयू-सी [सं] यह प्रक्षित सरी निसंत्रे तदपर अनीच्या
 रिवर है जानरा !
अरर्ग - प्राप्ता और करमेके किय हमाबो जानेवाली
  चीस या सरकंटिकी वसकी सभी ह
सरराजा॰-- के एकाके देव चढ़ने या किसी वस्तकी
  धीन परिसे 'सरश्वर' सन्य बल्बन सीमा ।
 सरक-वि॰ [सं॰] सीवा को वक न दी। प्रसारिकः सदी
  क्षेत्रः बाराः वैभागवारः निवदःसः सीवे स्वभावसाः स्वतार्वे
  क्छकी। कासान सक्दर । प्र क्षेत्रका पेक्ष क्रिका पक
  पुका यंगाविरोजाः एक वना संस्था (वी॰) ।—कन्न-पु०
  विरोधी !-काष्ठ-द्र वीवको कक्को ।~तुल-द्र•
  नृतृत्र ।- ज़ब -- निर्यास-पु मंगाविरोका ।- पुंठी--
  की पश्चिमा सङ्ग्री।-पामिनी-सी वह पीवा क्रिसका
  वमा सीवा हो। -यायी (विम्र) - वि सीवे बानेवाहा।
  ~रम-प वे 'सरकार !-स्टंड-प्र•दे 'सामहब'।
 सरकदा-की॰ [र्थ ] सीपापनः बरापन बेमासदाऐ,
  विष्करदेशा सिषाप्री भाषाचीः सादवी ।
 सरक्रारा−त [र्स•] हे सरकद्रव'।
सरका-को [सं•] धीएका वेश जिनुदा, मोतिशा एक
  नदीर काफी शक्सीर निस्तेव ।
 सरस्पित-निश् [सं ] सीवा किया हुआ; सीवा।
सरब~वि० [सं०] शाध्यायवाम । ७ पु० दे 'सराव ।
 सरबत की [न ] मानदारी, बनाञ्चता।
सरवरी-सी [सं] विवस्ता मही।
सरकार-पु है 'समय'; 'सरका
 सरवनी कन्नी सुमरनी ।
 शरबर⊸पु [फा ] शरवार, अफलरा + सरीवट । + खॉ•
  बराबरी ।
 सरवरिंण~सी वरावरी, स्पर्ध ।
 शरबरिया-वि शरपूरार, शरबारका । पु बद्द महत्त्व
  वो सरपूरारका हो।
```

समायोग-प्र• सि•ो संयोग संबंधः तैवारीः यक्त करना (चलपसे नाग)। निधाना डोक करना। पाधि समूदा हेता। प्रदेशका बहुत आदिमिनीका एकम बीना । समार्भ-प्र• [मं] भार्भः बचम सावसपूर्वे कार्वः साइसिक कार्यको भारमाः अंगराय । समारंभण-पु [। प्राप करनाः आरंग करनाः भाकियनः जंगराय क्रमाबा । समारक्य-दि॰ [सं॰] बार्म किया बुगा। जिसने कार्या-रम किया है। परित । ममारम्ब-वि सि] बारंध करने वीग्व । समाराधन-पु [री॰] तुह, प्रश्ना करनाः प्रसन्न करनेवा शामगः सेवा इदक कारायमा । समास्य-वि [सं॰] वी पहा हो। वी पता गवा हो। बिसमें अंगोदार किया है। वहा हजा; मरा इजा (बाब) र समारोप-इ [स] अपर रहानाः चराना (धन्य)ः स्थानांतरम् । समारोपक-वि [मं] उपश्रमेशालाः क्टानेशालाः। सभारोपम-त॰ [मं॰] आरोप करनाः स्थानांतरमः ऋराता (धत्रप्र) ३ समारो/पेत∽(र [र्थ•] क्याना प्रमा: शाला प्रजा (बलुक्); रखा हुआ; स्वानांतरित । समारोह-प (एं॰) बारोब, 'नवना। (किसा नासपर) राजी शोजाः चमवाम । समारोहण -प्रें[सं] चड़में, सवार बीवंबी फ्रिका बहना (शाम्बा) बद्धानिका स्थानपरिवर्तन करना । समार्थे−वि [सं] सप्तान यक वर्षका । ससार्थंक−दि (सं } समाग पद्ध थी अर्थवाला । समार्थी(थिन)-दि॰ (र्रा॰) बरावरी करनेकी एच्छा रक्षनवासा । समा≋न−त सि ीरोदिन यगः समार्ज्यन-प्र [मं] (दिमीका) सहारा केंगा । समासंबित-वि [गं] कितीके सहारेण विका हुआ मदर्सवितः संस्था । सभाकंबिमी-की [रो] तथ-निशेष। समामंत्री(बिम्)-नि [तं] प्रारेके सहारे विकते माना परावर्तनी सामग्र शहन करनेगाला । यु मृत्य । समाक्ष्म-५ [मं] प्रदय करना। वक्षिनक्ष्ये (वयके किए) प्रदय करमा। भेगराग । समार्कभय-प्र [मंग] अंगराय क्याना ग्रहण करना धुनाः वक्रिपद्भक्षी वश्रक्षे लिय शक्य वरणा *।* समासक्व-वि [र्स] गोषर । समान्यद्य-दि [मं] गृशीता संपद्ये भावा द्वथा । ममास्मन-प्र• [तं] संगराग । संसाक्षाप−दु [मं॰] वार्ताकाप वानवीतः। समासिगम-५ [र्च] प्रगाठ भावितन । समासिम-वि मि॰] धर्मा जॉन किस प्रना हजा । सदासी-सी [तं] दुर्गका गुन्छ। गुन्द्रस्ता । सम्राह्मेक-पु [मंग] रेजमा निरीयण करना ! समारीकव-५ (र्थः) निर्देशना स्टब्सः मधम बर्गाः १रीवर दश्या ।

समाक्रीकी(किम्)-वि॰ [छ॰] अच्छी छर् देवनेएस मनग बरनवाका । समास्रोष-पु॰ (सं॰) क्योक्स्पन, गर्दाबार। समाक्षेत्रक-प्र. [हं॰] किन्री वस्तुक्षे समह स्टेश करनैवाकाः किसी पदार्थके ग्रामन्त्रीय आदिका समय निनेचन करनेपाकाः किसी प्रति, स्वया प्रेन क्याँदे गुन, बीप महस्त आदिका प्रतिपारम करदेनाता। समाधीयन-४ (त्र) हमानीयमा । समाक्षीचना—की॰ [सं॰] अध्यो तरह देखमा, क्रिक करमार किसी परता प्रति म्यक्ति मारिके सम्परीपा शन्त्रक विकार करना। ग्राम-बीचका विचार प्रश्ता करने वाका विशेष औष शादि आसीशना । समाक्षीची(चित्र)-व भि । ग्रम-रेनके स्तेर विचार करनेवाला समालीवक । समाधर्मन-१ [सं॰] लाह्य करमा अपनी केर करन चपने बदामें बरमा । समावर्वित-वि॰ [र्स] शुक्रवा इथा। -केंद्र-वि॰ जिसने अपना बांडा <u>श</u>का दिया है ! समावर्त -प्र॰ [सं॰] बावत होता औरवार रिप्तु ! मसावर्तम – प्र [सं] कीरनाः वाक्स होसाः अप्तरंत पूर्ण करनेके बाद बद्धापारीका वर कीरबा। १५ बस्परस वीनेपाला संस्कार । -संस्कार-त बायस्य सम्ब होने विवाशीके श्वातक वन बानेपर दिशा जानेसना बरसपादि । समाचर्तनीय-वि॰ [तं॰] समावर्तन-तंतीः समावर्तन के बोरव । समाववमानः समावर्ती(तिन्)−(र॰ [र्र॰] इस्क्ष्पे क्षीरनेवाकर । समाबद्द-वि॰ [र्थ] बलब, प्रस्तुत क्रावेशकाः कार्य नगरेशका (मार्थ)। समाधाय-ड॰ [मं॰] नंश्य साथा अभेव नंशास्त्र शासित । समापास-५० (सं] विवास-स्थाना विविध स्वाना ब्रिनिरः एशव १ समाचारित-वि॰ [गं॰] श्लाबाः काराना हुम र -बरफ-विश् विमने सेनाका पत्राप प्रवस रिया है। व्यसाविद्य-वि॰ (सं) द्वाच्या योगा वंशित्र । समाविद्य-वि [चं०] सम्बा इंपितः होन रंपरित (1) समापिष्ट-वि [लं] पूर्णन प्रविद्ध स्वाहः गृहीत शत्का प्रवाविद्य ---गे तुका बच्छा तस्य विकास दुवाः भागीम, वर्शनेहः बनामनियः। समाबी-नि [भ] बासवामी। रेरिक (2ने सवापे ब्यक्त्र) । समायुक्त-वि [ई॰] पिरा इमा बदा इका निप्रत हुआ। रक्षिता रीका हुआ। जनव प्रशेषा हुला। जाकेरे । मसायूत्र∽वि॰ [तं] क्रीस हत्नाः अध्ययक मध्यक्रस गुरकुकते मीता हुमा। कुछ दिना हुमा । पु वह दिवादी वी क्यानम नगत कर कीरा है। समाकृतक-तु [तु] जरवदव नमात्र दर कीम दुवा मदावारी, स्मायक १

-गोशी-मी कामाकृतीः पुगकी, शुराई । -च्छमा-षु वस्मेदा रहम ।-इसीव-सी॰ देश, सस्दा राज्य । -होर-वि सरदशः अवदाकारी ! -बोझ-प चवाल सावा हमा घोरवा ग्रराव आदि । दि० (ला) विदेश साररूप I-सराधा-प॰ मार्डः सिर सँपमेगाना I-साज-पुरु है 'शिरताज । -क्षप्रसूर-जुरु कावका हेरहाई। -वरप्रती-स्रो देशेयर क्याना बानेनाका कर । -वर्ड -पु मित्का दशः व्यथा कहा -शार-पु: मुखिना, मेता। समापतिः सिक्षीकी पश्की । -वास्मी-की॰ सरवारको परनीः प्रतिद्वित शिक महिका । -वारी-सी सरकारका पर । -मनिक्त-औ॰ क्याक हेरा आग्य । च्यास-वि वासी मधारर । -वासा-प विद्वी पानेवालेका पता जो बिटीके कपर या जारंगरें जिला भत्तश्चिरः भौषे बाता है, मशरित । - निर्मे - वि हिंदशकाः कञ्चित् । ∽पश्च—त प्रवास पंच, वंचीका संस्थित । -परस्त-वि संस्थला सहावद्धा वटी। -परस्ती-सी संख्याः सदावतः । -वेंचः-पेच-प ध्याद्रीके कपर करातिका एक शहनाः यक तरहका गोदा । -पोदा-त डकनाः स्वावपीतः (सा॰) गुप्त बात मेर !−प्रसञ्च=ति जिल्हा सिर कैया की। निग्ने नवार मिक्री हो। सरमामिता वर्मती । (म - • करणा - • क्ररमामा = वहार्र देना, सम्माबित करवाः स्वार्थ करमा ।) -फराजी-सी दरबेडी केंगाई। वहाई।-क्ररोधा-नि वान हेनेचे तैदारा बातपर क्रेमनेवाका, निहर। ~फ़रोची~नो बाद देतेको हैवार दोगाः वीरठा। -पसद-विश्वद किया द्वारा सदरवेद । -वरक्र-वि जो जान प्रभेडीवर किये हो। जरमेकी वैवार ! - बर हमा-विश्वो मंदे हिर ही ! - बराबर्श-वि श्वरिया, ममसः।-बराह्न-दि॰ प्रशंबदनौ कारिया। - कार-प्रश्वका जिनेदारोंका अवसर । ~ कारी~ली सर्वराह्यास्या वर् । न्यराही नसी प्रवेष । न्यसर= भ वरावरा धोलडो भाने सरासर। -बाह्न-वि+ थानपर सेवनेशकाः नियर । =धार-प॰ कीरी मकरी की गेलके करर एवं बाद। ~हुई द्∹नि क्रिस्का सिर **ढेवा हो। क्षप्रदरमा प्रतिक्रियः सम्मानितः। ∽बुर्वजी**∽ को सँचा पदा सन्मात । -मरत-वि मतपाना प्रशास्त्रे सदीमें पर । -सरखी-सी॰ मचना, मरती। -शाया-प्रश्रे कम में। -ब(रो)पा-म सिरमे पैश्तक सरा-शिम । पुरु सर्वाय । (मुरु - १६६) राजर न होमा-देस्य, वरहवात होमा ।) -बरह-पु॰ मुस्त्रप्र परतस्ता पर्वा पता । -व(रो)मामाम-प्र॰ सामान बमवाव। - शुमारी - न्दी शिरीकी विजनी, मर्बद्धारी। -सक्त-नि इरा-मरा वहत्वहाताः कवता-प्रनता । (सूर - रहोबा-सप्टन दोता ।) सदशी-सी भरतम्ब द्रोमा । -इंग-पु॰ शेवानानका परव्याना धैनिका योद्धाः वि प्रदेश दिन्तीमे म दक्तेवाला । -हवी-की गरदंग दीमा बर्दना कहलावत । - इन् - इन्-भी बा रवाम बढ़ों बोर्ट देश समाप्त होना ही। -हुदी-सीमा धेर्पी। गुरबद्धा । ~(१) हमसास-म॰ अर्थ क्ष्यदरीमें बादिम इंगामने । -कोइ-प्र॰ स्टाइ

की बोडी । -व्रवार-४० सुरूपमुत्ता, मरेराक में। -वस्त-व वर्गाः विकास । -शेरप्र ए बीवारका खबरी माना। -मी-म मरे हिति। -बाह्यर-म सबै खबाते छरडे सामनै।-सम-प कोठा, व्यारी । -बार्सी-प सिरस्मा ! -स्य ज॰ रास्तेके सिरेपरः शस्त्रमें। **−क्राक्रर**-र• स्य-पवि । –हास-४० भागके शहरी, संभा शेरे हैं। -इहि-पु॰ भलाई। सु॰ -इरमा-समेन सम (कः)। (किका, सहिम) बीतना, क्षत्र दरना राज्य द्वामा, कार्में कर हैमा। दागना, शोरना (गेर गेर) वाश, गंबीकी रिकाशेया देश रचा शत्य किस क्ष्मरे खिकादिवोंकी नवा बचा बामना वर्ते । ~हांगा॰ आरंग क्षेत्रा (क्.): चतक बीमा। दाया धीरा वन्न (तीप-चंदक) । सर्व-त बाधा विता-'बन्ध् ऐसि वैस गरधावा - म सरका-'मसि भूदी सागर यन भीते सर ही टान कर -स्रा की गावा। -बर-प सरका। -पंगा प नावीका विज्ञका । ∽र्वाची −प्रश्न कर्मनेत । सर(स्)-इ [मं॰] शील, ताक, बनायवा वर्ष ! सर्हे-सी सरपतका एक मंद्री नरकडा−पु॰ वह सरका विसमें नार्दे होती है। सरक-पु॰ [र्त॰] धरिकोंको समातार रहित क्राहिता, कारवीं वान तील राजः वरदनाः आस्रशः सीराम श्चरात्रामः पानवात्रः श्वरान्तिहरूकः वक्र तीर्थ । रि॰ दीर श्रीक्र । * स्री॰ समार । सरकता - श कि वारीन से सर बारे बाब है दिना क्रिस्त्रमाः हर जानाः स्थय यक्तमाः सन्दर्भ हर शहरे सरझा-१० [व०] पोरो । -विस्त्रव-१० शघ । मरकार-को (का) शक्र रवास्तराम इत्रवा प्रति प्रदेश सामय-संदर्भ कविकारी। दिवसत । दुः मांत्रस क्क विमाग दिका (मुगकराज्यप्रगंत)। नारिका वर्षा माक्कि प्रश्ववद्या वरेका मंगायन पुत्र । - संहोती-की अंग्रेजी हुनुस्ताः जितिय राषः। न्यंपत्री-मी देखर्गीटेका कंपनी !-बरबार-इ शाहरताए बकारी! शु॰ - करना -०वरमा-इवस्तेत्रं शन्तिकरिक करना । -दिलाना-(a+) मारिए दरना । सरकारी-वि॰ सरकारका, राषसीया राजाका वार्टिक का। -बहकदार -समाविम-इ० एम्प्रेसिए। -आसर्गी-सी॰ राज्यशे बाच रात्रावः) -पाएतः तु रहांक्टा कागणा प्राधिमारी मोर । -काम-पु स्रे बारका काम। बनगरका काम । नर्सीवृण्युन बान स्वारके किए राज्यको ओरने रक्षा आनेराना गाँ। (ला॰) व्यक्षित्रादी क्षेत्र । शर्ग ? - पुण रहर्य । - निय-मी ? अन्तरा । सरगम-प्र रवरिक्रे मारीव-सरशिहका क्रम (मेरीप) । सरगदी-मी हे 'नहरगरी । मरगुष -- वि है । 'इएएव' । सरगुनिया॰-पु॰ वह को मगुनीरानद हो। मरघा-को [तं] मपुमरधी। बत्ती बारिनी मपुमस्के । सरजनाण-म॰ कि महि बरना। बनाना विमीन बरवा।

समाबृत्ति-सी॰ [सं] दे॰ 'समावर्तन'ः समाप्ति । समावेत-५ [सं] प्रदेश: शाथ रहना: मिकना व्यक्त द्दीनाः अंतर्गन, शामिक दोमाः वेतानेतः स्वास दीनाः साव साव दौना या वदित दोनाः मानावेषः सरीवनः मनोतिबेध । समाबेशम-पु [सं•] प्रवेदाः अधिकार्ते करमाः विवाद

का मेरब दोवा । समाचेदित-वि सि विस्ता प्रवेश दराया यथा हो। साथ किया हुआ। रहा। अहा हुआ। स्वात करावा हुआ।

गर्भ कराया प्रभा । समाग्र-प॰ सि ी भोवन !

समाध्य-प [सं] भानव चाहनाः सहारा, घरन, धनाष्ट्रः भामवरथानः निवासरथान, सकाय ।

समाधिस-दि [धं] सम्पक् क्यमें आमित, विसने भामय प्रदेश किया है। धरनेरितः एकत्रीमृतः अविधितः मता हुमाः त्रकारेपर दिका हुमा। यु सेवकः वह स्वक्ति को भरत-पीषणके किय दूसरेयर अवसंवित हो। समाक्षिप्र-वि [सं] सम्बद्ध स्मामें भाकितितः संबद्ध ।

समाञ्चेप-इ [सं•] प्रयाद बार्किंगन ।

समाधस्य−वि [सं•] विसे की में भी जावा हो उसकी हो मधी हो। बाहस वेंच गया हो। ओस्साहितः किवाशपणी। समाधाम-५ (से) बीमें वो बाजा शरहको होना बाबस वैषमाः विष्यासः मरोसाः होत्सावनः।

समाभासन-५ [सं] इतस वैंगनाः वसाव वहानाः ! समार्सग=५ [नं] मिक्ना क्याया किसको कोईकाम धीपमा ।

समासंबन-३ [एं] संबुक्त करना निकानाः किसीपर बरवा वा रखनाः संपद्धं संबंध संयोग ।

समास−५ [सं] दोग नेकः समर्थनः बंदर दर दर विवादका शिपदारा करनाः सेवेकः साथ रक्षनाः समक्रः पूर्वाञ्च। संबेध संबंध करमाः वो वा व्यविश्व पर्देश्यो मिकाकर एक पत्रका क्षत्र वेता (क्या)। समस्याः श्रेषका चरन (बिसको पूर्ति करमी हो)। -प्राय -बहक-वि क्रिसमें समासीची बहुक्दा हो।

समासक्त-वि॰ [सं] संबंध प्रकृता संबंधा बनुरका पर्वेचा बच्चा प्राप्तः "इत्या प्रवानित ।

समासिक-ली (एं) बीग मेळा धंवंत्रा अनुराया समावेद्य जंतर्गाद।

समामति-भी [एं] नैक्क, शामीवा। समामन-५ [सं] समतक मुनिवर वैद्वनाः साथ वैद्वनाः। समासच-वि (ए०) पहुँचा हुना शासः निकानशीः पासका ।

समासम-१६ (सं॰) समान और असमाभ । समासर्जन-पु [सं] परित्याग करनाः दे हैना । समासवाप्(धत्)-वि [सं] समासवाप्रां प्रतासवा

समासादन~५ (सं•) बास बहुँबनाः मिक्रमाः पूरा

समासादिष-दि [सं] माह्या प्राप्तः स्विटस्य । समासार्य-पु[मं] हमस्या (छंदकी पृश्लि किय दी

आनेवाकी) । समामीन-वि॰ सि ी सम्बद्ध महारही वैठा हवा। साथ समामाकि-सी सिंगे एक वर्षानंकार वहाँ विशेष श्रम्य-रचनाके कारण प्रस्तुत्तरो अप्रस्तुतका माग हो ।

श्रमास्था−की [सं] साथ वैठनाः सकाकात में≾ ! समाहरण-५० (धं) संबुक्त करनाः एकत्र करनाः राधीकरण ।

समाहतां(र्र)-वि [र्र] मिकाने, चमा करमेवाका । प्र• (सर भादिका) संपादक ।-(र्न)प्रस्य-प समान हर्ताका कर्मकारी, कारकुम।

समाद्वार-प [सं] भएनः बोकः मिणनाः सम्रहः, राश्चि। छर्ची का बावर्गका बोगा इंड समासका एक भेद (जिसमें दी पर आपसमें मिलकर वर्गके वीवक होते हैं): संक्षेपः

विक्वीसे इंद्रियोंको प्रवह करना । समाहित-वि [सं] साव किया हुमा, एक्ट्र किया हुमा। निष्टारा किया हुआ है किया हुआ। छांत: प्रकृत कीत: पूरा किया इजाः व्यवस्थितः सूप्र किया हमाः दवाबा इका (स्वर)ः स्वापित मित्रपादितः स्वीकृतः स्वयः अनुरूपः सार्मनस्वतुक्तः। यु पुष्पात्मा अपक्रि, साहः पकामविच्छा विमिनिवस ।-ची-वि कीन ।-सिंत-वि विस्का सब किसी विषयपा प्रधान

रहे।~सना(नस्)−4ि विस्कासन दिशी विद्वसँ कीन हो। श्रमाइत−दि (सं॰) स्कारा वा एक्षम दिया दशाः सम्बद्धारा हामा ।

समाञ्च-५ [सं] जुनीती, कक्दार १ वि इसराम नामराभी। समाह्य-५ (६०) प्रवीतीः हर एवर्षः बंदपदः होशके

किर जानवरींकी जनाना। वानवरीकी कवर्षपर मात्री क्रमानाः नाम संवा।

समाक्का−की [सं] गीकिकाः नाम।

समाद्वाता(त)-वि [सं]बाहान इरनेवाका कडकारते भूनौदी देशेनका । समाद्यान-पु [सं] सम्बद् प्रकारते बाहान करना।

श्रुनीती देगाः भागवरासी क्यादेशर गामी रखना । सरियन-पु [सं] (अग्ति) बहाना मुख्याना (बन

करवी । समिष-१० (सं] माका, शरका । समित-वि [सं] मिका हुआ। प्रदर्शम्या संवका निरंतरा समानांतरा अंगोक्त स्वीकृता पूरा किया हुना।

मापा हुनाः "के समाव। समिता-की [सं] येईका नाटा । समिविकय-वि [सं] मुक्तिनेताः समावितेता । म

यमः विष्यु। समिति की [री॰] मिकना यक्त होना समा। प्रदेश

त्रका साम्य सावस्यः आभारपद्यति (ने); इक्कारम कामा, मरम क्याना ।-मर्चन-वि दुवमें इनके ।भूषानेवाका ।—सास्त्री(सिन्)~दि पीर, नसपुर । -शांमन-दि सुद्रमें विश्वकी प्रमुक्ता थी।

```
सरवसा सरबस्का सरबा( बस् )-सी [सं ] ऋत
 मती सी।
सरका-प सिंदा सरदार। शिवाजीकी वपापि ।
                      धोवनाका-'सरशीन कारहि
सरसीव=-वि॰ समीव
 मिन्नीर पुनिह शंदकार की भारी -क्नीर !
सरजीवमा - वि श्रीवित करमेवाकाः वरा-भरा, वरधेव ।
सरट-प [सं ] विर्विदः बास् ।
सरिट-पु [सं•] बायुः बादकः।
सरद्र-५ [र्थ•] विराधित ।
सरह - पु र [सं ] बाहु। बाहुका गिरगिर। मधुमन्छी ।
सरण-प्र• [सं] गमन सरकता ग्रिसकृता कोहकिट्ट।
 वि अवस् संबद्धः -सार्गे -पु गमम करनेवाका मार्गे।
सरका-सो॰ [सं ] स्ताः प्रसारको निवृताः गमन ।
सरिंग घरणी-सी सि । मार्ग, रास्ता प्रसारची।
  म्यवस्था तरीन्धाः सीधी मा सगातार पंक्तिः पगर्नकीः
  राष्ट्रेका यक रोग ।
सरण्यु-प्र [स ] बाक्षा बारकः शका वर्तनः अध्यः सम ।
सरवाम-प [न ] केवना करंगिश बुद मन 'देसर'।
 सरता-बरता−५ वैंटाई; हिस्सा-वाँट। सु॰ −करना~
  पद दसरेकी सहाबतासे काम श्रकामा ।
सरतारा=-वि निश्चित वापुरस्त सावकाश-विर भवे
  इरगोविन्त्री तबसे समबूत फिरे सरतारे -शुकाब।
 सरत-दि [मं] गमभदीक । प्र पत्र पागा ।
 सरक्रि-की सि ] एक दाक्की माए।
 सरम-वि भि॰ रददक्त। इ रवारोडी सैनिक।
 सरव-विदे 'सर्व। + की शरव कत।
 सरदा-वि दे 'सर्दरे'।
 सरदर-म भौतवनः यह विरेमे ।
 सरदक्षां – प दरवानेका दावः। न दे॰ 'सरदर ।
 सरवा-प्र है 'सरी'।
 सरद्वान्(इत्)−९ [सं] गौतम गुनि ।
  सरघन । - वि भनी समीर - 'बी निर्वत सरवब कै वर्त
   भागे वैठा पीठ फिराई -क्वीर ।
  मरधा = नशी महा; श्रव्धि ।
  सरगण-की वै 'धरज'।
  सरमहीप=-प्र न्वर्नेदीय, सिंहक, संदा।
  सरमा-न कि शरकनाः काम चलमा पूरा पश्चाः

    सहनाः शैष काका नृरा हो काना—'सुनतः औस देशे

   मानु सन्दी'-सद्भाक्ष्यमा ।
  सरमी≉−ची रान्धा, मार्ग।
  सरपर-की बोइकी छवछे तेब पाक विसमें बीहा अगरे
    पैरोंको एक साव केंकता हुआ दीवता है। वि सपाट।
   म सरपर चालभै।
   सरपद-पु कुछको बाविका एक तुल।
  सरफराना - म क्रि॰ व्याप्र दीया, यशराना ।
   मरफा-प रे धर्म ।
   सरकीका-५ सरकेता।
   सरव=-वि• दे॰ 'सर्व'। -विद्यापी-वि सर्वव्यापका
```

-क्सेर।

```
सरववा -- अ सर्वदा, इमेदा ।
                                              सरवस»-पु॰ सर्वस्य, सर्व कुछ ।
                                              सरबोर=-वि दे॰ 'सरागीर' ।
                                              सरमङ-तु [सं] अबका एक कीर ।
                                              सरभस-वि सि॰] तेवा सम्राम्मः भावाविष्ट ।
                                              धारमा ० -- ब्री॰ क्या ।
                                              सरसव-वि॰ वि ] सदा रहनेवाका, नित्य, कावमा मस्त ।
                                              सरमा-प (दा ) बाहेका भौतिम, छीतकार । सी
                                               [एं॰] देवताओंको कृतिया, देवश्रमी (कहा बाला हर पह
                                               बार जॉकोंबाट बमके करोड़ी बमनी थी); कृषियाः
                                               कारयप मनिकी एक स्त्रीः वंश्वरंशाच्या श्रीस्टबाई, एक सम्पा
                                               और विमोक्को सी ।~पुत्त,~सूत~पु॰ कुचा ।
                                              सरमाई-वि॰ बाहेका । सी बाहेके ६५६े, बहाबर ।
                                              सरमायमञ्जू [सं ] कुछा।
                                              सरमाया-त का ] पूँची, सृष्ट्यन ।-दार-त पूँची
                                               परिः वर्गे ।- बारी-की सरमावादार दोना ।
                                              सरवार्ग - पु॰ यह मोटा कुनारी भाग; सारी ।
                                              सरप-प्र• [सं] बाह्य । स्री दे 'सरप्'।
                                              सरय-सी [र्ध] एक प्रसिद्ध मदी विसक्षे स्टपर अवीप्या
                                               रिवत वे बाबरा (
                                              सररां - प्र वाना और करमेडे किए क्याबी वामेवाली
                                                र्वोत्त वा सरकंदेकी पतको छत्रो ।
                                               सरराना≎⊷म कि इयाने देन चकने वा किसी वस्तकी
                                                तीह गतिसे 'सर-सर' सध्य अयन होना ।
                                              सरक−दि [सं] सोवा को कान हो। प्रसारित। सही
                                                क्रेकः बरा, ईमानवार, निव्छक्ष, सीधे स्वमावकाः वधार्थः
                                                असकी। आसाम, सुकर । पुरु चीवका पेड़ा अस्मि। प्रक
                                                तुका गंवाविरीयाः एक वही संस्था (वी ) ।-कद्ध--पुर
                                                निरीयो ।-काष्ट-प्र चीतको सक्दो ।-तम-प्
                                                प्रव ।~ज्ञच −निर्यास-प्र
                                                                          गंगाविरीमा ।- प्रंही-
                                                को पहिना सष्टक्षी। - बाबिसी - स्वी वह पौषा जिसका
                                                तमा सीमा दो ।-बाबी (चिन्)-वि सीमे कानेवाका ।
                                                -रस-प्र ६ 'सरकारन'।-र्पद-प्र ६ 'सरकारन'।
                                               सरस्था-धी [तं ] छावामना धरापन रैमामवारी
                                                निष्कपरका, सिथाई; भासानी; सार्यो ।
                                               सरकौग-द [सं ] दे 'धरनद्रव'।
                                               सरका-सी [सं] श्रीहफा देश विपुदा मीतिया। एक
                                                मदी। काकी ग्रूक्सी। निस्रोध ।
                                               सरकित-वि [सं] सीवा किया हवा; सीवा।
                                               सरव-वि [सं ] उच्यावमान । + पु॰ दे 'सराव ।
                                               सरवत-सी [अ] यस्टारी, पनाज्यता।
                                               सरवती-की [सं] विवस्ता नहीं।
                                               शरवन÷−पु 🖡 समण्। 'सदण'।
                                               सरवनी *~सी हुमरनी ।
                                               सरवर-इ [का ] सरदार, अफसरा + सरीवर । + सी
                                                बरावरी ।
                                               सरवरिश्नको वरावरी रपर्दा :
                                               सरवरिया-वि सरवूनार, सरवारका । पु वह ब्राह्मन
सरपचरि॰-ध सर्वत्र-'--सी गुण्ना सरक्वरि वाक्षा
                                                वो सरबूपारका हो।
                                               सरवरी−को सरकरो।
```

```
समित्-सौ• [सं ] अधः दे॰ 'समिन्'।~कसाप-प्
 सब्दर्शका मदा !-काइ-प्र- स्वत्री
 -पश्च-पु अनिमा-पूछ-पु॰ स्थानीका सहा।
समिय-पु [सं•] युद्धा शन्ति। बाहुति।
समिदाधान-पु (से॰) शरिमकुण्डमें देवन बाकना ।
ससिब-वि• [री•] बधावा बुधा, अञ्चलितः क्लेतितः
```

-इर्च-वि गर्नेते उत्तेतित ।-इोस-प॰ बाहति । स्रसिष-प (संक) सम्बद्ध वयन । समित्रा, समिथि-की वहीब छवडी। समिय-ची॰ मि] इचना यशीव नवती ।

समिर-प्र[मं] बाद्या शिव। समिश्र-वि [मं] मिक्नेवाका, मिश्रिय होनेवाका।

समीक-प्र [पं] पुरू । समीकरण-प (ते) समानः वरावर करमा समावी करमा बाव राधिको सदावतासे बढाव राधि निकाक्षेकी एक किया (म॰)। जमीन बरावर करनेका वडा वेकम

समीकार-प [मं] याद राधिके बहारे क्यांत राधि

तिकाकतेकी किया (ग०)। मसीकृत-वि॰ [सं] समाम बरावर किया हुआ। अस क्ला पीम किया हजा ।

समीकति-सी (सं) बराबर करनाः वौकना । समीकिया-मी [में] समान करमेकी कियाः शत राशिसे नदान राजि निदाकनेको किया (न)। समीक्ष-इ॰ [रा] विचाद विवेचना पूरा दावा वृद्धे

बॉव पूर्ण परीक्षा; शंस्त्र शासा। समीक्षक-वि प सि । सम्बद्ध करने देखनेकाकाः मभाको वद्

ममीक्षण~५ [सं] देशमाः वन्तेत्रमः व्यापः गरीकाः समानोचना । स्त्रमीका -सो॰ (धं॰) सन्यक परीक्षाः समाजीवनाः वैक्रमे-को इच्छा रहिराहा राय सन्मति। प्रकाः अञ्चेतनः जन मंश्रामः प्रवामः मोमांसा धान्तः तकः प्रकृति आदि तस्यः।

समीक्ष्य-वि [सं] समीका करने बोग्य । ५० सांस्य इर्मन ।-बारी(रिन) -वाची(विन)-नि अच्छी त्तरह समञ्जूशहर काम हरनेवाला । सभीय-द [मं] एवर।

ममीचक-५ (सं] मैगुन मंगोग।

ध्यमीची-मी [र्] प्रचंश खुनि। बूनी हिरली। स्प्रमीचीन-नि [मैं] मेगन, वनितः क्रीक, बनार्थः

उद्याध्य । समीचीनहा-न्य समीचीनस्य-५० (सं) मंत्रति संगत द्वीजा भीषित्वः वधार्यकाः।

मसीवि≠~सी दे समिवि : समापाम । समीक्र~प॰ (सं] मैदा ।

समीन-वि [सं] बार्विका एक शासके किए किरानेपर

लिया सभा । ससीतिका नां [मं+] हर शान वथा देवेवाणे नाव । समीप-दि॰ म [सं] निष्य, त्राराः पु निष्यताः। –श∽दि भाष कानेदाकाः भी नगनमें ऋश हो ।

-भाक(स्)-वि वहोसका। -वहाँ(तिंत्)-प्रि निषट रहमेवाना, पाछका । -सहकार-पु: १का मामका पेड़। -खा-नि० दे० समीदनती'।

समीपक-पु [सं•] सामीव्य मैक्ट्य। समीपरा-सी॰ [र्र॰] निद्भारा शामीण । समीमाच~पु (सं•] सागात्म अवस्वामे होना । समीय-वि (ए॰) सुरक्ष, समानः विवका वृत्र राज्य क्षीः समाज समजे वामे गीन्यः सम-संरंगे ! समीर~प॰ (र्श•) हवा, वाया प्राच वावा सरोप द्यमी पृद्ध ।

व्यसीरण-विक [संक] मतिश्लोक करमेशकाः वरोग्दः। बाह्य। प्रवादितः छरीरस्य बाह्यः बेंक्की संस्था विका सक्का शिवप्रीत करनाः देखा वैपन। -सद्वाय-दि विसे बहुदधी सदावता तिथी है (बमारिन)। समीरित-वि (६०) चाक्ति बेन्डि स्वारित (रूप)। समीहन-वि [र्थ] हैप्यांहा असूत्र (रिच्नो नि

मनुष्क)। समीडा-वा [र्स•] पेश बबोगा रचमा बीन, हमान अम्बेरण । समीहित-वि [सं०] शक्ति, अभिवस्ति, वेटिन

नारन्त । व इच्छाः प्रपत्तः नेद्यः । समुद्ध-पु समुद्र। मसुंद्व∽ु (सं∘) काई होता, तर हो बासा। मार्रक्र र समुदर-पु॰ हे समुद्र । - फक्क-पु हे॰ 'समुरक्क'। ~फुछ~पु एक औरथि, विचारका रह भर । "मोस"

त दे 'समहद्योग'। समुख-दि॰ (र्स॰) दिसे इछ दश ना है। क्लिप भरतंता की वनी था। सप्तक्षण~९ [थं] वि'स्तरम सामा किंका ! समुक-वि॰[सं॰] बावचंड्र बाग्मी। बालुमी। जिले ह्रय है।

समुचित-वि• [चं] पतंत्र आमेराकाः क्ष्युचा हेरः विका विका समुच-वि॰ [सं] बबुत कैंचा। समुख्य-५ (र्व) समृद राधिः स्मातारा प्रनी रा नानपोंका योगा यक कान्नालंकार वहाँ की वानीता रह गान ही प्रकट दीना दिलनांचा जान वा की रेस ही कार्यके निष्ण वर्ष कार्गीका विषमाम रश्या बीला किस जाया वह आपश्चि जिसमें प्रश्तुत क्यांकों अंग्रीत और

वश्ववीसे मी काम हो सद (की) ! समुक्ट-पु [से] कर्र क्रमा कराबो और वस्मी शसुकार∽५ [र्र] समक् वशाका सम्बद्ध कार्यः

विसर्थन । समुखित-विव विव) धेर भगावा हुमा। नेपूरीना अने वस दिया हथा ।

समुख्यान्य-वि [तं] वयानुतः प्रस्तः विन्यु दिना ENT!

समुरिप्रक्रिन्मी [र्तन] इष्टेन्ड्रफ्टे करमा सर्वार्तः

सरवाक-पुर संपुट: प्याका करोरा: बीवा । सरधानी-प्र• खेला तेषु । सरधार-प्र सरवपारका भग्नेह । सरब्दा-पर्व मिंत्री शरब्द, लक्ष्म । सरसक-३ (फा) वरसी। सर्वेव । बारस-दि सि] रसत्तक, रसीका। स्वाविष्कः, बाववेदारः भाइ . भीताः क्योगेसे दरवदरः प्रेमासकः नयाः सामाः संदर भीषका रक्षपूर्ण (कान्य) । ज सरीवर । सरसर्व-स्रो चरमी वैसे फर्का दाने: # सरस्वती (क्ली. हेकी): मरमता, सामग्री । हरसाठ-विवसाठ और सात । प्रवस्तको संबंध विवा शास्त्रमा≠-म• क्रि॰ १७३क घोनाः पनप्ताः दरा-घरा श्रीना कडकडामाः शामा देनाः मावावित्र श्रीमाः ककवनः होसा । शर पार पर इशके करूने या गाँप बादि रेननेका क्षणा। अ॰ सर सर व्यक्तिके साथ । ति शि] श्वस्तव अवण बरनेपाका । स्ती : (स] सेव दवा: आंची । सरमरामा-वर्षा 'सर सर' आवाज दीमा दवाजा श्रामि अस्ता। साँच शारिका रेंगमा । सरसराहर-थी॰ दवा, शाँप भाविषे चक्रतेका शका सरसराहर । सरस्र(!-वि नवर) का रकारबोका कापरवादीचे किया बातेशका धरुना (शाम) । ज जलामें, विवा अधिक बोबे-वियारे, यसने तौरवर, विमा बारीकोसे वेदी समरी। सी माधेक पश्चमतेका यक यहनाः श्राकीका नदासकाः प्राचेन शब्द का कांन्से बहते 'स' सगस्य धांका सांक तिक भाषा (शि॰) ।~ब्रद्धिसमार~मः विमा समक्रीकालके इस्स देनेदा अधिकार !- तहक्रीकाश-का॰ वह कांच का शहरीकार जिल्हें पूरी शहरत म किसी जाय ह -मकर-सी दे॰ शरसरी निमाद ।-नामिश-छी धपोपा अदावधमें की जानेवाली नातिश !- शिशाह-ला॰ चनता निगाइ :- लीरपर-योथे वीरपर । झरमर∽मी [र्च] श्रेष्ठ विवृत्ता । श्रास्त्रवार्टे≠−स्ते* सरसदाः व्यक्तियः संदरता । सरमामा १ - स मि इरा मरा करेगा। रसपूर्व करेगा। म व्हर दे 'सासमा । स्परिक मरसीक~प्र° (र)) सारम वक्षी र भरसिका~ारी (सं∗) पानकी। होता शाक खरीकरः हिंगुदशी । सररितज-५० (८०) समल । वि० शास्त्री बरवज अक्षरी रहरीयासा ।-बोलि-पु॰ मधा । महसिद्ध-प्र[म] क्यक । वि० सरोवरमे बल्हा । -बंज-ड॰ गुर्थ । सदमी-सी [मं] ग्रीटा लाल, क्ष्म्या वावकी। व्य पुष्त !- **वा**-पु> क्षमल !- स्वा-पु क्षमकः शारस वधी । मरस्ति-मी मरस्की ह क्रि परवार वसमाना सीटी-वारा मरसदना-स समावा । मरमी-सी॰ इक तलहम सुरुष । सरमहिर्देश-वि स्टल्स बनावा हुआ। शतवन्त्रः।

सरस्वती-भी विशे दह प्रसिद्ध मही विशेष कि न रत्ती नदीका वर्णन है जनका विश्वन क्यी है। इस है कि वह कीलन्ती लड़ी है । बाहके माहित्वर्वे प्रतिहरू सरस्वती नहीं गीवमें द्वार बीकर नीचे-नीचे संबस्धित करी जाती है)। विधारेंगी को अझान्छे पत्नी बाबी वार्ड 🖹 रक्ताणीः मानी आन्द्रः स्वरः विका स्त्री क्वा वीक्षी वह वेबीर महीर शोम बतार उपीठिएमी कन आसी कवा जीएला, क्लम जी: श्रद एंटा दब निस्तय बदानामी सम्मामिनीरेंसे एक्को प्रशासि समझनी। स्ट सबोरी वर्ण समाग । ~बंदाभावा~ए मलग्दा रह ग्रामिक क्लंब्यरशंबर एक ताक (मेथीत)। ~पत्रन प्रन -वाधा-सी० सारवतीचे क्रमहितके वक्तरवर्षे होनेशनी वजा को माधन्द्राक्षा चंचमीकी होती है। -प्रचीग-पुर लांकिकोंका एक प्रदोग । --बिलशान-प्रण् वह रहत क्यों सरस्वता नदी सम दोसी है। सरस्याम् (स्पत्)-वि॰ [मं] अवस्याः रहोताः सन विका संबद्धा माध्यक रख मात करमेशका । इ॰ रहाः नदा यह नदी। मेंशा । सरहरू~पु॰ शक्षम, पर्दन । सरहज~सी साकेको सी। सरक्षत्री∽सी एक पौधा, नकुमकंद है सरहमा 🗠 प्राचीकी पीर्री सरक्रर-प्रभरका । सरहरा-वि॰ कपत्की छीवे वडा क्रमा (देर), वंदीयत किन्ना विसपर दाथ-पर म जमे। सरक्षरी−की॰ सरका दीता स्व चुना सर्पती ! सर्विष-१ यमना और सतक्रमके गायक नृजन ! सराँगा - की कोइका मीम पर विश्वपर पेल्स केरेब बरतम कावि वकाते हैं। सरा-की [सं•] निर्मात प्रसारकी रुगा ह दिसा । केंच [श्रा॰] परा शुक्तक्तिरकामा अमेदाका ! सराई-नी॰ बसीए। बोगा रे सकार। महिन्दी दानी संदी दशीः पाणामाः + 276 । सराग-० प्र नीगका शकाका-'तिरह स्राप्टी हैं मॉल् -व । कुआवेके बीपाने सक्ती । [#4] (** बाला रेमहारा काराने हेंगा हजार वेबारिश हुंदर है **मराजार्धा -- ५० लागान शामधी ।** सराघ०-इ रे 'नाव'। भरामाण-स कि संपरित क्शामा वृशा कामा। सराय-त है 'बाव । सरापना १~० कि यात्र देना पुरा नता करनी १ सराया-म [का॰] शिरो नेराक केन्द्रे मुरु मार्च नश-शिरा वह इय जिनमें मध-शिक्सी वर्ष ही। -नाह-वि क्लिपे नाव बढ़रे घरे ही। -वासाउ-वि धरारतके भरा द्वारा । थराज्ञ-त [स 'सर्वाच"] वच्चे महत्रे प्रमाण्या हैन देन करनेवाका। शीतेन्य राखे नवते । बर्गत प्रगीर देवरे बामा। मांत हेवर मोर मधी मारिके बर²त्रे गीरै निध्ये देवेगाचा । ~द्रासा~पु* वद, बीडी । सराका-इ शराबी। सराबीका बाबत्रा वंद, बीटी !

श्रमा ।

समुत्पचि - सी [सं] मैरावछः बूकः वहित होना ।

समुत्परिवर्षिम-पु [संग] विक्रीत वरतुर्ने चारतकोसे

समुत्पन्त-वि [सं] कर्मतः वरित ।

```
समिकिन-विश् सिंश्री क्या हुना। सम्मृतिसः सह
 विमश्र । - बसम--विश् विस्के कपने विकास पार गरे
 ब्रीं। (क:०) मिसका प्रम दूर दी थवा हो।
समुच्छेन्-पुर्व [स्रुव] व्यस्, दिनासः बन्युसम् ।
समुष्ठदम-५० (हे॰) कहते बसावनाः यातः विमाध
 करना ।
समुच्यम-पु [सं ] कैंपारी विरोध प्रमुखा करर
 बठना सरवारा तथ करा करिय बन्धि तशीपमा शामित
 चन्म (वी )।
समुष्याय~पु॰ [सं॰] कॅबारें। वृद्धिः बच्चति ।
समुच्छित-वि (ए॰) बहुत कैया, बन्नता केंचे बठावा
 हुआ। श्रामित्रशासी। -मुख-वि जिसने अपने दाव
 क्रवर चठाने हों।
समुच्यिति – स्रो • [सं ] प्रवतिः इति ।
समुद्धसित-वि (चं॰) किएने क्ष्मी सांच छात्रा है।
 प्र वहरी क्वी साँस।
समुद्धाम-प्र• [र्न•] वीव प्रशास ।
समुक्तभास-वि [मं ] अत्यक्त प्रशासकः प्रमुख्याता,
 कांदिवकः ।
समुज्ञित-नि [चं ] परित्यकः 'से मुक्तः। प्र॰ वह
 की छीद दिया गया है। छोड़ा हुआ श्रेष्ठ ( बैसे कुठन
समुच्च•∽की दे 'समझ'।
सम्रह्ममा≑−म कि दे 'समहना ।
समझनि = च्या समझने की किया।
समुद्धकित-वि [सं] रोमांक्यकः।
सम्बद्धा की [सं•] गहरी इन्छ।
समुद्रबद्द-वि+ [सं+] केवा। गौरवानिका " से सप्रव ।
समस्कर्प-प्र• [सं ] कारमीकति। प्राचान्यः वतार देशाः
 (करियंव भारि)।
समस्त्रीयें-वि (रं॰) अच्छी शरह सीता हुना। पूरे
 धीरते जेश हुना ।
समुख्यम 🗝 [सं•] बत्धाना श्रोमोश्लेमन ।
समुक्तिया - प्र (सं ) यह पत्री कुररा विश्वावट ।
समुचेत्रन-वि [र्थ ] बहास क्लेबित करना ।
समुख-वि [सं] वटा ह्या समुख्याः " से बल्काः
समुत्वाम-३ [ते॰] अपर घडमा। शुल्कमा प्रमशीकेत
  धीकर कठना। क्रोकन (व्यनका)। रवारका काम करना।
  मानका भरता। रोगका कक्षमा वृक्तिः सञ्चलः (मासिका)
  फुलनाः परिमम् सम्म ।
 समृत्यापक-वि [सं] बडामेशका जनानेशका (वी )।
 समुरिधत-वि॰ (सं ) बच्छी ठरह वटा हुमा। जो प्रकट
  हमा दी। बहुत बर्गम; बिरा हमा (बानक); प्रस्तात
  जी बारीम्य काम कर खुबा की। कुका हुआ। (विरोधिकी-
  कै) सुकारतेमें तहा हुना ।
```

```
समुत्पात-पु॰ [सं ] संबरसूच्य प्रयाद ।
                                                  सम्मित्य, समुख्यिक-वि+ [तं+] बहुद परहावा हुवा,
                                                    बासकि । पुरु यह सेना की वनकावरमें अस्त-स्मरत हो
                                                    गयी श्रीः ववकाद्यः ।
                                                  सम्बद्धम्य-वि० [तं ] मक्ष-विभव्द व्यस्त ।
                                                  समुग्सर्ग-पु (सं॰) परिस्थान इटाना, छात्रना। सक-
                                                  समुख्तारम∽षु [सं•] मगाना। वीछा करना। क्रिकार
                                                    क(रा) ।
                                                  समुक्त्रक-वि॰ [सं॰] सबीर, विशेष रचतुक वर्त्सदिशः
                                                   शोकान्त्रित ।
                                                  समुष्येर्ध-पु [सं॰] कॅबाई मीटायना बसता ।
                                                  समुर्वत-वि॰ [र्व॰] दिनारेंद्रै कपर वडा प्रभाः को प्रपः
                                                   कर बढनेकी अवस्थामें हो ।
                                                  ससुद-वि॰ [मं] मसबदावुक्तः व मसबदापूर्वकः।

    ड सप्तर। ~कदर्व-इ एक क्यका।

                                                  सञ्ज्ञानी [सं] सीपन्त कर कारा हुना (बेस
                                                   क्रपेंसे पानी) कपर कठावा वा चेंद्रा हुना ।
                                                  समृत्य-पु [सं॰] (सर्वका) अपर आवा कवित होना।
                                                   विकास क्रमान अम्बुर्यः राश्चि समूदः समुदानः
                                                   संबोध कर सगामा चेशा दुवा दिना किमी प्रदश
                                                   बन्दा सन्दा पूर्णांचा सरीरके तत्वीका समाहार (दी )।
                                                   श्क तस्य (वी )। चल्यास्य हेता।
                                                  समृदस्त∽वि [र्स॰] गहराईसे बोक्कर कपर साम्रा
                                                   हुमा (
                                                  मसुदागम−५० [सं ] पूर्व बान (सै )।
                                                  समुदाबार-४ [६] स्वानक-सकारः सट्यवेगः सरा-
                                                   चारः संपद्धः अधिकारमा अभिमान भनीयन् सीवसः।
                                                  समुदाय-पु [एं॰] एंबोन छन्ड राशिः पूर्णांश सरीर
                                                   के वस्तीका समावारः यक मक्षकः सुद्धः सेमाका पृष्ठ मागाः
                                                   रक्षित रीना ।
                                                  समुदाविक-पु समूद श्वंद ।
                                                  समुनाय॰-इ॰ समृद् श्रुष, रासि ।
                                                  समुद्दित—वि+ [सं] कपर वटा दुनाः कॅमाः वरपशः
                                                   परिता रकशीग्वा संयुक्त से मुक्त अन्तिता जिससे
                                                   वात की गर्नी की। की किसी विश्वपर सहस्त की। प्रय-
                                                   fact I
                                                  समुद्रीरण-पु॰ [सं ] मापनः बचारणः पाठ ।
                                                  समुद्र-वि [सं ] छन्द घठनेवाका। पूर्वतः प्राप्त होनेवाकाः
                                                   ध्यानवारः अवसीरबार । पुरु ध्रेस्का एक प्रकार
                                                   वसकता यक मेदा कवीकी सीवा गीक मन्त्रा बक्षनदार
                                                   संबंध, संबंधक ।
                                                 समुद्रक-पु॰ सि ] वीक संबुक्त, संपुरक एक प्रकारका
समुत्पतम-पु॰ [र्स ] खून अवर उक्ता। आरीका जनान
```

र्धर ।

ससुद्रत∽वि [सं] चलका प्रदेश ।

वहुए क्वादा के बीता ।

समुद्रम-पु (पं॰) कपर बाना बलाना करप्रेत ।

समुद्रार-पु (सं॰) सम्बद्ध सथना वर्षोक्तम, बठानाः

इसरी चीम मिला देशा (दी)।

समुस्पाद-पु (सं) दामुक्ता पूर्वस दूरमा ।

सराफ्री-सी सराफका पंता गाँव, गुनार्व, क्रीडीवाकी किपि । -पारचा-पु॰ दंशी, चेक । H -करमा-दव्ये पैसे परवासाः सराधका काम करना । सराफ्रीक-पु[म] दे॰ 'श्वराफीस' । स्प्राध-प बिन् रेतीले मैदानपर सर्वनी फिरणे पहनेसे बोजेबाको जरूको प्रांति सरासरी विकार पीचाः आंति । † स्त्री दे 'द्राराव' । सराबोर-वि तरवतर, अवशी तरव मौगा बना ! सराव-को [फा] दे 'शरा'। ~प-फ्रानी-की दनिवा.। – ऋा ऋत्ता∽(का) शति कीमी। सराब--प॰ सि । दकता बाली। सरावा यक विवेका कीशा वि सन्दानमान । 🛡 पु ध्वाका मधुपाता बसीरा। बीबा। वासठ होसेबी श्रीष । -संपट-प्र इवा फुँकतेके सिए दी क्सीरोंकी मिलाकर बनाचा जाने বাকা বাম । सराबग-५ दे 'सरावगी । बैनमतानुवाबी, बैन-वर्गेपर विस्तात सरावगी-प करलेशाचा । सरावनां - प्र परेका, हेगा । सराविका-सी॰ एक प्रश्वा फीहा ! सरास#-4 भूसी-'क्सो बीन पे कडी बार कम बढ़त सरास पद्मीरी -सर । सरासन+-द पत्र क्यान । मरासर-न रह सिरेंहे वह सिरेंडक होत्रवी नाने, पर्वतवा । वि [र्स॰] इतरतत अभन करनेवाला । सरासरी−वि न दे 'गरसरी। की जन्ती। श्रातीः मनुमान । सराह+-की प्रसंता स्तुति, वहाई । सराहत – को [भ] ग्रीतकर कदमा, वाक्या। – से – बोक्कर, निस्तारपर्वक (काना) । सराह्म्य:- स फि॰ प्रशंसा, स्तरि, नगार्दे करना । खी सारीक वहाई। सराइनीय−वि॰ अश्रंसभीय बच्छा । सराह-वि [सं] महमध्या हुना राहुमस्व (चेर)। मरि-की [एं] क्षाता जनमगता विका = मही। का माका। नरामधे समदा। # वि तुरव सन्छ। # व तक, पर्वेद∽ वा≄ सरि राजा पर्वे रहा'−व । सरिक-दि (सं] बानेवाला। सरिका-सी [म] यसन प्रत्यानः विशुपत्रीः वानेवाकी की। मीविवेंकी कही। मरिगम-प्र• दे• 'सरमम । मरित-वि [सं] पारावादिक (भावम) । कसी नहीं । सरिवायवि-इ (सं॰) समुद्रा भारको संस्था । सरितांबरा-स्रो॰ [सं] येगा । सरिवा-ची नदी। पारा। सरित्-सी [सं] नदी। यह बोरी। बुर्गा। -क्रकु-प्र नशस्त्र पेत्र । -पति-प्र शमुद्र । -सुत्र-प्र मोप्म । - सुरंगा-की अक्रप्रणासी । मरिरवान्(रवत्)-५ [सं] समुद्र। सरिद्धिपति-पु [सं] समुद्र।

सरिविद्यी - लो॰ धर फसलपर बर्मोडारको हो बानेगाली सरिवसय-प॰ सि॰ो मरोके होमी वट । मारिक्-'सरिक् का समासगढ करा । -श्लीप-प्र• गरहका पक्र प्रचा −सर्वा(र्ति) न्य समद्राचारको संस्पा। -बरा-सी गंगा। सरिष्माथ –५० (सं॰) समन्त्र । सरिन्मुच-पु [सं] गरोका श्रवाना । सरिमा(मन्), सरीमा(मन)-प [सं] पाप । स्रो गतिः प्रशन् । सरिया!-- प्रस्थाः पत्रम छन्। सरियाना−७ कि॰ तरतीवसै रक्षना व्यवश्वित करनाः परीरकर कीक शरवसे श्वाना । सरिख−पु सिंकिक, सक्रिका मरिधय−पुपक्र जीववि, शास्त्रपर्यं। सरिवरः मरिवरिश-की बरावरी समता। सरिशक-पु (का] विद्यालमधिद आहि। सरिवत-जी [का] सहि। बनाबरा प्रकृति स्वमान । सरिक्ता-प्र का] दक्तर, महसमा अवद्या राति। क्याव । - बार-पु बक्तरका प्रधाना मान और दोवानी दप्तरॉक्त एक विधेष क्ष्मंत्रारी । ~हारी~ती सरिस्ता॰ दारका पद वा कार्य । सरियप-द (सं•) स्वरंग सरही। सरिस+−दि समान चस्य करादरः सरी-ची [सं] क्षेत्र सरीवरा सीता, शरना । सरीको−ि वे शरीक। सरीकवी-वी दे 'शिरकत । सरीकता चन्द्री सामा जिस्कत । सरीका-वि समान सरसा सरीफा-प रे 'सरीफा । सरीर-+ प्र वे चरीर'। [ब] तक्त रामनदी। स्त्री कुलम्हे कापवपर पक्रनेसे (किबनेमें) हीनेवाकी जाबाब। -आरा−वि+ तक्तपर वैठनेवाका शिवासनासीन । सरीक्षप-वि [सं] रॅगनेवाका । व रॅगवेवाका क्षेत्राः साँप बादिः विष्णु । सरीइ-वि [च] प्रस्ट सुक्ता हुआ। स्पष्ट । सरीहरू-न॰ सुक्षे धीरपर । मद-वि [तं] पतकाः धीटा । यु तक्कारकी मुका माण । सदक्(भू)-वि [सं॰] शौमाधमान श्रांतिकुछ। सरक (ज)-वि [सं] समान काले प्रस्ता कामारत, रोगी । सहज-वि [सं०] रागवुक्त, रीगी। भवद्(प्)-वि [संग] बुक, कुविन । सरहवार-म फि॰ सुप्रता अच्छा ठीक दोना। सदहाना - स कि अच्छा चंदा बर्ता। सक्य-वि [वं] साधार रूपशानाः एक हो रूपका-समाम हस्य पदमाः ध्रारः समाम स्वर्धाका । * प्र दि 'स्वरूप'। सरूपता - स्रो सरूपस्य-५ [तुं+] तुस्पर का सहरहा

समुद्रिरण-प [सं•] बमना वर्गित पदार्थं। कवर जठाना। समुद्रीत-वि [मं] भण्डी तरह गावा हुनाः कॅंचे स्वरसे गांवा हुआ । पु कींचे स्वर्तने गांवा हुआ गीत । ससहीय-वि [सं•] विश्व बत्तांक्ता क्रवित । समिरिप्ट-दि [सं∗] जिसका अध्यो तरह निर्देश किया गना दो: प्रदक्षिता जिसकी स्वादमा की गनी हो। मिक्ति। ममुरेश∽प [सं] प्रशं व्यावना वा विवरणा सिक्रांता विभिन्नामः निरेशः। समुद्स-वि [मं] कपर बठा वा वठावा हुआ; वर्ष-निया सर्गरमें पूना हुआ। कशहा केंगा: परिवर्कित । समञ्जल-प्र• सि] कपर बठामा। बॉपकर मिकालना प्रकार करनाः बटाना, इर करनाः सम्मूकना (अपना (इस्सा) असग कर लेना। वांताब अमनमें निकला हुआ समुद्धर्ता(नी)~दि सि । बढानेबाका प्रधार षरनेवाकाः वस्मकत बरमेवाकः । ममुद्रार-५ [सं•] दे• 'समुद्ररण'। समुब्द्वनि [सं] कठावा हुमाः क्थावा ख्वार क्षित्रा प्रजाह गरिया प्रदाश प्रजाह अक्य क्रिया प्रजा विभक्तः राहीतः स्वतनः स्वतः । समुद्रोधम-प्र॰ [सं॰] पूर्वतः बाग्रत् क्रान्ता बीक्षमें कानाः प्रतबस्थीरित करनाः। समञ्जय-प [सं] छापछिः पुनक्यीवमः कपनवयके समय श्रामक (केप बलावी जानेवाली नांग्र । समद्रभत−दि (सं•) स्त्य । समुद्रमृति – सा [मं] उरपणि, पैराहज । समुद्रभेद-दु॰ [स] फोक्सर निकतनाः मक्ट होनाः नाइ, मगाद्वा विकास । समयत-वि [मं] कपर उठावा हमा। प्रश्चः वैदास क्या इमा मध्य ! समयम-९ [सं॰] कश वडामाः प्रवस वदीयः वार्रमः तैरारीः आक्रमम । समुचीग-द [र्र] पूर्व वैदारी बैदा वयीना (ब्युलने कार्जन्य) रह शाप हो जाना । ससब्दानि (से) सुद्रायक सुद्रावित । इ. सागरः धिया पारकी संस्था। (सा) शुच बादिका बहुन बहा बरियाण (समासमें)। ~करक~तु ग्रेट। ~कक~तु समुद्रका प्रम ! -कांची-मी समुद्रको मदाला पृथ्ती । ~कांता−सी नदीः प्रका! ~\$कि −सी समाका तर १ ~श~रिव समुद्रकी ओर बानेवाला। समुदीव द्वार्व अरमेशालाः पु॰ नाविका समुद्री न्याशारी । ~यमच~ इ समुद्रवात्रा। -गा-सी नदी। -गामी(मिन्)-वि मसूर्वे बाने वा समुद्रो व्यापार करनेवाला। -गम-५० ग्रासंग्रह्म इक स्टाइमी राजा। -ग्रह-व गरमोडे रितीकै किय जकरें बना बना महाना स्मामागार । **-बुलुङ्-**यु अगसेय ऋषि । तन्श्र-वि समुद्रक्षे प्राप्त या कममै बलाग । कु भूगा मोगी मारि । —झाग-५ [हि] एमुरवा क्षेत्र । —सह -तीर-इ एन्ट्रा किमारा। -तीरीब-वि एस्ट्र

वरवासी । -वृत्रिताः-प्रसी-सी॰ नदी।-वर्षाद ~नवनीतक-पु॰ चंद्रसाः शब्तः। -मैसि -केसै की प्रयोग-पास-पुरु [हिरु] एक क्या । - फ्रा-पुरु एक बुख वा समुद्रा फन। -देन-पुरु प्रमुख शाग । – शब – वि. सप्तरमें उत्तर । – मेंडुकी – हैं। सीपो । -सथन-प्रसुद्धा विशेषका रहतेन। -मडिवी-त्रौः शंगः ! ~माध्यमी −मे**वसा**-संश पृथ्वी । —बाझा∽की शुम्रदी सफर ! −बाव~प्र सम्बद्धांत्राः पोत । -धार्यो (वित)-विन र रे 'समुत्रय । न्थीपित-यो॰ नहो । नस्मत्रान्मीः पृथ्वी । --सन्ध्य-पु शमुद्रकसे तिक्तनैराका वरत। −बक्रमा −बसमा−को॰ प्रमो । −बद्रि~उ॰ गप्त न**रू । – बासी(सिन्)**–िव समुद्रहे नाम रहमैराना। -बेस्र-सा॰ एस्ट्रड्रो वर्ष्य ! -श्ववद्वारी(रिव)-विर समुद्री शाणिका करमेवाका । - मन्ति-सी हंड्री सारी। --क्षोप-पु॰ व्ह धीवा। --सार-पु सेजी। -समगा-स्रो॰ र्यमा । समृद्रात-प्र (५०) समुद्रवरः नामप्रत । १० समुन्त पर्वेषमेवाकाः समुद्रमे थिरौवासा । समुत्रविध~की॰ [मं] दुम्बी। नदासा। दृष्टी। ६०० दुराक्या (समुद्रांबरा-सी (मे) पृत्री ! समझा-स्री (६०) श्रये। धनी रूप । समुद्रामिसारिजी-को (एं॰) एहरको एरवरे 📆 द्धारेनत देवनाका) (समुद्रायव्या-सी॰ (५०) मदी । समुद्राद-पु॰ [d] वेतुनेश एक बहुत का बसर विभिक्षिक ब्रांमीर, मगर । ममहार्था-स्त (छ॰) नरी (समृद्रापरका−नी (र्र•) पृथ्वी । समुद्रावरोह्न-५ (सं•) समाधिका रह मध्यर समुद्रिय-वि [मं] समुद्रका तमुद्रनवंथीः एउएते क्लाका व प्रकृति। समुद्रीय-वि (तं॰) सनुद्रकाः रामुङ तंश्यी । समुद्रोनमाव्य-प्र॰ (तु॰) स्ट्राका रह नतुवर। समुद्राय-वि [वंग] है 'समुद्राय । समुद्रद्र-वि [र्ग०] कपर बढामेवालाः इस बीचे वार्तः बाजा । समुद्राह्न-९ [मे] दिवादा बपर बदाना । समुद्रेश-पु [मं] पश्हाहरा भव, बास । समुष्य-वि [सं] आहं कर गीमा । समुस्तत-वि [तं] कत् प्रदाना हुना हैना थी।पा

समुन्तरान्ति [म] बेक्स जडावा हुना क्या नार्यः मिता वर्षात्रो भागे तिक्या हुना चरा वेदेन । इन यह प्रकारका श्रीमा समुन्त्रितिन्त्री [मेन] कार कामाज वेदारे कथा। मेराव वच पात्र प्रवासना कर्षत्र मुद्दीय वरेट । समुन्त्रसुन्ति [स्मृ] क्या दूर्मा यूर्मा वर्षात्र अपन्तरा समुक्त्र वेदनकुक म्यान । समुन्त्रम्यसन्त्र [स्मृ] वहाना, व्यन्त इरमा ।

सस्या-सर्वर अस्तिका एक प्रकार, ब्रह्मकर ही जाता । सस्या-सी॰ सि॰। भतन्त्रे सी और क्ट्रॉब्ट्रे माता । सक्त्री(पिन)-दि॰ सि॰ो सप्तास काला सन्बरूप। सका-प है 'सुकर'। सरेका - वि • वर्ग में दश और चाकाका स्थान - वेंसि वेंसि पटिंब सदी सरेबी - व । सरेक्स - भ कि॰ सहैयनाः सँप्राक्तेकै क्रिए प्रकृत द्धरता । सरेका+-वि+ दै+ 'सरेख' । सरेदा-प्र• (६१०) यद असदार पतार्व को पत्रजैंके चमड़े आदिसे ठैबार किया जाता है। दि॰ कसपार, निष्कने-वाचा । सरेस-प॰ रे॰ 'सरेख'। सर्रोद्र⊁−सी दवर्रोधी शिल्पट सिकरन । मरी-प बनहाक, एक संबद्ध स्टीक पेश को सीपा बहता और अपरकी और गावसुम दोता है (यह कर् फारसी कविदामें कर का संदर देश-बर्टिका जनमान माना धवाडी) । सरोई-पुरु एक केंद्रा देश । सरोकार-पुदा•] क्यान वास्ताः प्रयोजनः । मरोकारी−वि+ फि:े सरोकार रसमेवाला । सरोज−दि [सं] ठारु शादिमें सरश्या । पु॰ क्षमस्य प्रकृत्य । ~रांड~पु० का-समृद्दा -- मुक्ती-सी क्षमण्ड समान संबंदाओं भी । -हारा-त यह रहन, पचराग । सरोबन(*-स कि पाना। सरोज्ञल − प्रसिद्ध । वाक्या वस । सरोजिबी-सी [6] कमलीने घरा हालाना कमन समुद्रा समस्दा भीषा । सरोजिनी नामक्र-को अंग्रेगोको प्रसिद्ध क्रमीवर्ग । देख सेवामें कई बार जेक गढ़ी । १९२५में ब्रांग्रेस अधिवेशनकी भागवा रही । सर्वत्र आहतकी प्रवत्न महिला हास्वरात (अभ-१८७०) मृत्य-१९४९) । सराजी(जिम)-वि (एं०) बगलगच्या वर्श बगक्के फन की। प्रज्ञास्य क्रिक्टा मरोशा - इ औआ सरीया । मरोग्मब-५ [ti] दनहा। सरोद-५० (का) यह गाजा । सरोधा-९ दशस है भागारवर मनिष्य वतनानेदी निवा । मरोरक्ष सरीरक्षक-प्र+ [र्ग] तानाव जारिका रश्चन। मरोदद−५ [4] दमक। हररीवर-पुर्मि विद्यादः सान्, ग्रीक । सराधित-त [र्ग] एक मेरिक गीन । सरोहा-५ [का] देवसका स्ट्रेश मानेनामा, दिश्वताः रकदाम ! स्तीय-दि॰ [तं॰] मुद्र मुद्रिम । सराही-सी है जिरोदी सरी-इ ब्हेसा दरम सरीता-उ॰ सुनारी इत्री सरीती-में • होत है KITE I

सर्वे – प्र• सि] बाह्य मना पद प्रवासीत । सर्वस-प्र• वि । वह स्वाम बहाँ तल, धी की मन्द्रीतके साथ सियापे हुए जावनरोंके केत रिक्टर गर् मटों और पश्चमोंके सेलोंका प्रदर्शन बरावेचारी गाउँ। सहाँ-१० वि] वोरीः इसरेश स्य ना देशार्ग रचनार्मे सम्मिलित करनाः मानादेका अल्हरर । सक्तं-की दे॰ 'सरदार'। सकारी−ि वे 'सरकारी'। सर्किटहारुस-प [बं] विश्वते मुख्य पन्तमे स्याप मताम जिल्ला दौरा करनेवाल राज-दर्गवारी गरते है। सर्विख-प्र• [नं] बुक्त इसका, गाँव, सरानी प्रौत समह ! सक्येलर-१० (बं०) गरही विहो, परिश्न ! राहाँ—दि० भि•ो प्रश्नमे मन्त्र । वर्ग-पुर (र्थर) स्वागः महत्यागः स्वतः, निर्मयके स्ति। प्रकृति। प्रवृत्तिः श्वमावा निश्चवः संबद्धः स्टिप्रे र्मक्त अध्यानः कृषः आक्रमयः तिका रहक संहि मीद, मुच्छी। मूल, खद्रमा प्रवसना संनाम उन्हरी तुक्रीवक्ररणा (किसी सरल परार्थका) प्रवाहा वर्ष होत मुक्त बायवरोंका श्रंड । -कतां(र्ल)-पर हरा^{ले}। -कासीम-दि• सदि रचना३ समददा। =≅र-इ सुविका क्रम ! -वच-प्र स्त्रॉमें शिमक महाक्रम ! सर्ग=- द १ सर्ग ! -पतासी-इ व्याजनाय रैक शिवका एक क्षांग कपर यना हो और रूमा हैरे सका हो । सर्गक-दि॰ [सं॰] काराहक । सर्गनश-दि देश 'सगुम' । सर्चनाइट-सी (लं॰) विकासी तब रोपने नि मकादापरामतीक दारा बहुत हरतक क्षेत्राचा बाच है बलोक्ड प्रकास, प्रकाश-प्रदेशक (वी जान वर्ष क्रमाका बाता 🜓 ह सज−ली [लं] यक ग्राइका विवासित करा द्र [र्थ] याक्त्र्या सर्वत्म पूनाः स्टर्रेश देश ह्य वृद्ध । —नियांस**र,**—मण्डि-रसं-५ वृत्ता । सर्वेक-१० (र्च०) पीत छात्र मृत्या मरस रूप्य र वर हि प्रत्मा । सर्जन-९ [एं॰] स्वाग छोत्रमा। निर्माय रवना र्यं मनत्वामः वर्षेषा सेमाका पृष्ठ माना पूनाः (१) शक्षीकपारक और-काक बरनेवामा बाहरर ! सर्जना-ची॰ सि) रचना निर्मात । व्यज्ञैंबी-की [तं] शुराधी तीम बनिबोदेंने वह रे सर्जेंशी—स्थेत्र [अं] कत्त्व विदिशाः र सर्जि−सी (से] शयो ३ ~ **धार**=यु सर्वास¥ी सर्विका-को [रो] मनीसार । -अस-उ १^{.१}॰ मार । यक्रीं−की (नै•ोदे 'नधि । रुत्र-पुरु [तं] स्वापारी, बनिवा । स्ते दिशमे । -प्र [क्रें] ब्हास्ता । औ गतेश हारा विश्वी

1884 समुग्नय-पु॰ [सं॰] प्राप्तिः निष्कर्षेः अगुमासः वदमा । समुन्नपन-पु [सं॰] उत्तत करमा। प्राप्ति काम (१) । समुभ्याद-पु• [सं] एक साथ बीनेवाका गर्वन था निहादर । समञ्जीत-वि॰ [एं॰] उधर किया हुमा । समुम्मीस्टिन् नि [सं] बोका हुमाः फैनाना हुमाः प्रवर्शितः। समुन्यूसप~g [मं] बर्धे वदाव देना, निर्मूचन । समुपकरब-इ (सं॰) सामग्री सामान । समप्रक्रम-प्र [सं] भारंगः बचपारः, विकित्सकाः मार्ग । समुपगम-पु [पुं] निष्क थानाः संपर्के । समुपचार~पु [सं] घ्यान देनाः भावरः सम्मान । समुपद्रत-वि (सं०) नाबात रौदा प्रमा। ससुपनयन−तु [सं•] शबरीक के वाना । समुपन्यस्त-वि [सं] पूर्वतः वर्षितः। समयभोग-५ [सं] भाग दरनाः ग्रानाः मैतुन । [सं•] चपनोगर्ने काथा हुनाः साथा समप्रयक्त−ि हुमाः विशेष कपसे कपनुष्ट । स्ट्रापबेदा−पु (सं•) जन्म तरह वेडमाः सम्बर्धना । समुबेशम−५ [सं•] विवास-स्थान मकामः वैठानाः भासन । समुपस्या - सो , समुपस्यान - पु (सं) निकट कानाः पहेंचः सामीप्यः वरित होताः वरता । सम्बद्धित−दि [सं•] त्रदस्यित आवा इशाः आसीमः प्रकृत की भार्त्म की मदा की सामिका सैवार। निमान किया द्वमाः प्राप्त । समुपस्थिति - बी [सं] दे 'समुप्रधान'। सम्पद्धय-५ (सं॰) बहुर्तेको एक साथ दिया भागेशका विमंत्रका दोम यह जादिमै दैवदाजाँका कावाहन करना। समुपद्वर-पु [सं] ग्रुप्त स्थानः क्रियनका स्थान । समयागत−दि सि रिप्तस्य क्या द्वमाः पर्वेचा द्वभा समुपार्जन-तु [सं] निसेन कमसे मात्र करना। एक साथ प्राप्त शोगा । समुपेत−वि [सं] पास जावा द्वमा। एकतीमृतः पर्देवा हुनाः " से प्रका बागत किया हुआ। समुपोड-वि [सं] चढा हुना क्यर गथा हुना: क्या हुनाः पास काया तुनाः भारम्भः प्रदश्तः रोका हुना । समुपोपक-वि [सं] क्यास करनेवाला । समृक्तसिव-वि [सं] द्वंदर, नमस्त्रारः होशरत । समुहास-इ [र्व] सम्बद् कांक्षा विश्वेष आगंदः चर्ममा क्रीका। शंधका परिच्छेद । समुस्केया-५ [मं] बारों जोर बगीन खोरमा (पैर नादिसे); उत्सन्दन कम्बूकन् । समुद्दा - वि भाग, सामनेदा । भ भाग, सामने । सम्बद्धामा क-अ किल सामने जाना होना। समृद्धि-म धामने। सम्बा-नि संपूर्व समझ पूरा।

म्पनरिनतः शोनितः क्रटिकः निनादितः नीतः समाजातः, की हुरंत पैना हुना बीर वसिवर सहितर मुक्तर संगत । समार-पु [र्च] दे॰ 'सग्र'। * दि , भ दे 'सग्रून'। समृद्ध समृद्ध-पु॰ [सं॰] सावर दिरन । सम्ब∽दि [सं॰] वदवाका, मृत्युक्त; सकारण । ध• बद्धे, मूक्सदित । समृद्द-पु [सं] केर, राक्षिः श्रुंब- समुदायः समाव वर्ग। ~कार्य~ ब समाव वा वर्गविशेषका कार्य। ⊶ क्षारक,-गंध-पु॰ गंवनिकात । -विश्ववादी(दिन्)-श्रीक, जनकरवाणमें निरत्त । सस्दर्भ-वि॰ [सं] बदारमेनाकाः एकत करनेवाका । पु वदारनेकी किया। गरीरनेकी किया। शर-संगाम: राश्चि, हेर । समृद्दमी-भी [सं] सम्मार्वनी हाह। समुद्ध-पु॰ [सं] वक्षारिता बद्यारित रक्षामेके किए बता हुआ स्वान । वि॰ सम्बद्ध क्रमंत्रे क्षत्रे बोरवा बहारने बीम्ब । सस्द्र-वि [सं] कार्तिश्रीक, माग्यशाकी। प्रसन्न, वर्गा, माकरारा विश्वेव कपते शुक्त वा संबन्ता बहुता समग्र। फलनाम्। सून क्या प्रभा। सम्बद्धि की [संक] कारी कारिशमभ्युरवाधना बाहुस्या सामर्थं सक्ति प्रापास्य।-क्यूल-पु बन्तरिका सावत। ~काम−वि शस्तुरवका रुम्ध्रकः।--समय−पु जम्मुरय था संपन्नता समब । सम्बर्ग(दिन)-५ [धं] मराभूरा संक्रमाध्यमतिश्रीक। समेवना-ध कि स्टोरना, इक्ट्रा करना (विकरी चौड़ी) तह करके रचना (वानिम भारि); अंगोकार करना। समेधी−सी [सं] स्वंदको एक मालका। समेत−व साथ। वि० [सं] मिका हुआ एकत्र संख्या। जनवीक जाना हुमा; "से हुक्क; मिश्र हुमा; सहमत ! पु दै॰ 'सम्मेख ।-माय-वि मोदमस्त । समेबित-वि [री॰] बहुत का हुमा। घकियाकी। रहुक । समै समिया#—पु समदा समो+−५ समर। समोक्कना≉∽स कि वाक्षेत्रसे कहना। समोद्ध-वि॰ [र्ष] विश्वमें भाषा पानी हो। पु॰ महा, भोज । समोना•-स कि• मिणानाः समोसा~ध सिवानेकी शक्कका यक नमकीन पहलान । समोइ−५ [सं] क्यारं, हुद्ध। समी•-पुधमयः समौरिया। -वि॰ समबबन्द, इमद्रश्न । सम्-४१ [सं] यह श्रव्येंकि पूर्व आकर साथ पूर्वता, माधिनम, शामीष्म अच्छा मादिया घोतम करता है। सम्मचण-तु [सं] राव हेना मंत्रवा धरना। सम्मंत्रणीय-वि [सं] राव केने वोग्यः नमस्कार करने भोग्य । सम्मंत्रक्य-वि [सं] मंत्रका करमे नोम्पा निकार करने बीग्य । सम्मंत्रिय-नि [नं] सुनिवर्गरेत । समृद-वि (६०) एकव किना हुआ। राग्रीहरतः बाहतः ! सरमान-वि (६०) बच्छी तरह दूवा हुमा, निमन्त

सर्जेंड-पु (कं) इवस्तार, जमादार (सेमा, पुक्रिस)ः माजिर। उच्च कोटिया वकीकः। सर्ज्य-पु सिंशे पुजरस्य जुना।

सर्बिक्रिकेट-पु [बं] प्रमानपत्र (जच्छे चालनसम् घोमनता नादिका)। परीदानि वचीने दोनेका प्रमानपत्र समद ।

सर्व = सी दे 'शर्व'।

सर्वा(म्)-पु (तं) योहा। सर्वा-कि (का) ठेवा। सर्वा-कि (का) ठेवा। स्रोता । स्वापा-पु वेरीनका (का) किरासाव। क्षिया । स्वापा-पु ठेवा पाणी या वर्ष एवनेकी वनह । न्यामे-विक ठीव नीवा काक या दक्षां छक्ट-कर । (सुक -क क्षेत्रका-पुनिवाक अने पुरे, वहाले परिवर्धनीका व्यवस्था प्राप्त करना। - के देखे हुए दोना-जमाना देखे हुए दोना अनुस्थी होना। अन्याई-कांक वारियोधी दोनेवाका पक्ष रोग। -वाह्म-कांक वारियोधी दोनेवाका पक्ष रोग। वाह्म-कांक वाहमा-ठेवा वो काना। गरमी दूर हो जाना। मर बाता।

सर्देश-वि सर्देठे रंगका, इरायम किने ग्रुप पीका । सर्दा-त सरद्वेक्टा यक मेद की विदेश और अनिक

मोठा होता है।

सर्वाच-पु [का] दंश वाली वा वरफ रखनेकी अगह, सब काला; तहकाला !

सर्वाता पुष्पा । वह कम को कोई अवने वीवनकारूमें हो योदना रखे।

सर्वार-इ दे 'सरदार'।

सर्वी-की देश, बाबा धानेका मीरिया सुकामः ब्रही। -सरमी-की बाझ-गरमी । सुक -काझ-दंव कामा। देहते कह पाना । -शरमीसे बचाया-दंव वर्ष मीरिया या इवारे बचाया।

सर्व-प [सं] रेंगना चरकमा कुळि गाँउ। प्रशाहा यममः साँगः नायकेसरः सरकेश सद्यकः म्हेच्छीकी शक् वादि। यह बहा यह राइस । "क्वालिका "क्वाकी" सी विश्वापदा नामक पीना । नकाक-प यदह । -कोटर-ए सीपक्ष विरू । -गंधा-की गंग भाकुको ।- गति-सी बाद गति । -- गृह्-पु लॉपका विक १ ~ धातिबी – सी सर्पादी । ~ चक्क - च्छातक-पु कुकुरमुत्ता सत्रकः -तमु-पु सर्वकशकीका प्रक मेर ।- तुल-पुश्नकुत्संद ।-वृंडा-श्री सिंहती गीवक सदको। -इंडी-की गोरधीः मागनला। -इंडी-की नागरेती। - इंड्र-पु खेंक्का विश्वतः बंती। ~र्षद्वा∽सी वृश्चिकालीः वंदी । ~र्षद्विका~सी शवर्गपी। -दमनी-सी वंग्या वर्धीरही।-वर-पु सर्वदेशः - द्विद्(पू)-पु सन्तः - भारकः-प्र साँप पद्भनेगाला धेषेरा। -मामा-स्री सर्व बंदालीका एक मेद । -निर्मोचन-तु बेंजुडी ।-नेता-को गंबमाकुकी सर्वाक्षी । -यशि-ध क्षेत्रनाय । −पुष्पी−को वागरंती। −प्रिय~पुष्पंदश कुछ। ~क्षण~पुरुषेकारीलाह्यामलका – ज−व

साँक्या मधि । - छेवा-प अफीम ! - क्य-प्र• वेबीदा काछ । —शक्ति—स्त्री सर्पोक्षे दिवा जानेवाटा नैने षादि । -बेलि-सी [कि॰] मागवदी पान 1-भक्षक-पु॰ मनुरः मकुकक्रंर । - सुक् (ख)-पु॰ मनुरः सारसः एक वहा साँगः मकुकदेर । - सता-स्री -मणि-प्• सर्वे सिर्पर पापा आनेवाका मनि। -माका-सी पत्र वरहकी सर्परंकाकी। -भज्ञ,--थारा−प सपेंके नाइका वड (को जनमेवयनै किया था) ः ~राज-पु॰ वाह्यकिः ~सता -वाह्मी-की मामवस्ता । −विंद् −वि विसे सर्पेका धाम हो । प्र• चें परा । —विच्या—सी॰ सर्प-संगी विचाः सॉर्फेको क्य-को काविको विद्या । --विद्यर-पुरुष्टिका विका -वेद-प धर्वविद्या। -ध्यापा**रम**-प साँपमारमा। सर्वे द्वारा मारा जाना। -श्यह-प्रश्न यद सरहका सेनाका थ्यूट। – शीर्थ-प्र कोनको एक सहा। एक त्तरहकी हेंट । विश् सर्वकेनी सिरवाका ! -मस्त्र-प वर्षकः । —सल्ही(तिमन्)-प्र जनमेत्रकः। -सहा-सी सर्ववंद्याशीका यक मेर I-सारी**स्पड**-प्र एक विशेष प्रकारका व्यव (धी)। —सर्गधी --सुगंबिका-बी॰ सर्पांचा । - हा(हुन्)-प नेपका गरह ।- इत्ययंत्रल-प चंदनका एक सेट । सर्पंय-प्र [सं•] रॅवनेको फिया। भीरेसे क्षिपकता। देवा चकताः वाषका बमीनके पाससे वसके समानांतर फरूना। सर्पांगी~को॰ [सं•] सेंहकोः महत्को । सर्पात-१ सि । परस्का एक प्रचा सर्पा-वी सि] श्रीविना ऋणिकता । सर्वोद्धा∽प सिं•ी स्टा⊴। सर्वाद्धी । सर्पाक्षी∽सी [सं] गंधवाकुको गंदिनोः शंकिसीः सर्विणी: सरबद्धीः क्वेत अपराजितः । सर्वांक्य-पु (एं॰) बागकेशरा महिपकृद । सर्पादणी-श्री (सं•) रारनाः नकुरुन्द्रः । सर्पाम-वि॰ [र्च] धाँपसे मिन्दा हुन। साँप वैद्या। सर्पाराति-प [सं•] दे॰ 'सर्पार । भवारि-प सि] गरहा नेवडाः मीर । सर्पांचास∽त [सं] साँको रहनेका रवातः वासीः चंद्रल। सर्पांचान-पु॰ [मे] मोरः गरह । सर्पास्य-पि [सं] साँप वैते सुद्धपाला । प्र एक राखस । मर्पोस्पा∽की सि॰ी पद बोरिनी। सर्विष्समुद्र-पु (से) चवसमुद्र । सर्पि-पुर्निः] यो। एक ऋषि । – संद्य-पुरु के परि र्मंद' । सर्पि(स्)-प्र[सं•] वी ।-(स्)मसूब्र-पु है 'सर्वि' सम्बद्ध' । सर्पिका-न्यी [सं॰] छोटा सौंपा एक सरी। सर्विकी-आसो [सं]म्बॅबिन; यक्क कना मुद्रगी। सर्पित-पु॰ [सं] बारतबिक संपर्वस्न, बह सर्परंश्च किसमें

वसका चित्र हो ।

सर्पिरक्षिण-इ. [सं] प्रतमागर ।

सर्पिमश्र-पु[म] पिपकाये हुए बीका फेला।

```
mé t
```

स्रक्रमा ~ वि . [र्स] एक ही शेवका, शहमतः माना हुनाः विचारितः प्रसिद्धः सम्यानितः प्रियः विसे जनसति का अभिकार दिना गया हो ! प्राम्य सामर्गका रक्ष प्रशः

राव सम्मतिः वारचाः बस्मतिः स्वौक्रति । सम्मति - सी भि•ी सहमति। स्वीकृतिः राज सतः

भारत, सम्मामः श्वातः भारमदानः प्रेमः स्थानः नारेशः पदः नदी। मि एक की रावका शबस्ता। सम्मत्त-वि [सं•] र मत्त्र, गसेमें पूरा आनंदसे विद्वयः

मर्स, दान बहाता हुआ (दाशी) । सम्मद-वि• [सं•] कायविक प्रसन्त । वु• प्रसन्तता

सधी। एक नहां मत्स्यः एक श्रावि । सम्मदी(दिन्)-दि॰ [सं] इस्कृतितः मसम्ब ।

सम्मन-द (अं॰ 'सम्मन्स) बदातवदी बोरसे प्रतिवादी वा गवाहको नियत तिथिपर छपरिवत होतेके किए सेओ वानेवाली किस्तित सुबना या आहेस ।

सरमर्द-प [मं•] रगक्ष्मा संवर्षया विवाद अगकाः दवानः शीदमाः, कुलकमाः मुद्रावकाः कुळ, जीव ।

सम्मर्दम-प्र• सि॰) रगक्तेको किया संबर्धयः मर्दभ बरमा रीरमा । ५ वासडेक्डा एक प्रका विधापरीका एक राजा ।

सम्मर्थी(विंत)-विश्वी । सर्वत् कानेवाकाः वदान राष्ट्रतेवासाः स्वादनेवासाः।

मस्मर्शन-५ (सं) सहस्राता।

भग्मवीं(शिंख)−वि (छं॰) विचार करनेवाला ।

सम्मर्प-त [संग] पैतः सहिष्णता । मम्मा-सो॰ [सं] समामता (संबवा आसार आविन्धे)।

मध्यतः । सम्माता(त)-वि (एं) नाव-बीटा करनेवाच्या एगाः

विसन्धी माता साम्बी **वा** (१) ।

सम्मातर-वि॰ मि किसकी माता शाणी थी। इ. सती मावाका प्रता

सम्माद्-पु (सं•) बन्मादः बन्मच्छा सर्। सम्मान-प्र* [सं] इक्त, भारद, प्रतिष्ठाः माध्याः

तुष्मा स्रताः मान । सम्मामन-पु [वं] पूत्रमः भारर दरमाः क्रियमाना

वतकाता ।

सरमामना-स्री (छ) दे॰ 'हम्मानम' । ० स् 🕏 WILL STALL

सम्मानमीय-वि [मं] देश शुस्यास्य ।

सम्मानित-वि [सं•] पृत्रित आरत । सम्मानी(मित्)-वि [मं] विसमें सम्मानक भाव ही।

सन्मान्य-दि [मं॰] शहरतीय आदरके बीम्ब । सक्तारों-४ (५६) क्यापना शास करनाः (तस्त्री

आदिका बील बॉपनेके जिए बनाबी जानेवाली) गुण-ही राजी वजहा सम्मानंब-पु॰ [एं॰] महतरा शार् । वि साद करने

काना । सम्मार्थन-पुर्नि हो। शाहमा-वहारमा मान्द्र बरनाः

रमानादि (मूजिना)। तुना साक करमेके काम जामेनाका | सरमान-वि [सं] विश्वजन तिथीन घरा द्वारा ।

बर्मका सहा। यसक्याः बाक्षी साथ करते समय मिनदा ह्रमा सभित्रकः आहा

सम्मार्जमी-सी॰ (सं॰) क्षाप्रा सम्मार्जित-दि सिंगी सन्द्री दरह शारा तुरस्य द

शाक किया हुआ। बटाया प्रभात सक दिया हुआ। सम्माष्टि-सी [सं•] सकारे मार्थन ।

सम्मित-वि॰ वि॰] मापा हजाः समान बाप, भौरात वारिका सर्छ, एक बीता अनुरुष "से तथा "दे निमित्त । श्रु एक पौराचिक मानिः वसिप्रका एक द्वा octorer 1

सम्मिति~सी [र्व•] परावर्षः तुसवा करनाः मरन

सम्मियात-सी [ब॰] 'सम्म'दा बढु , बहर्तनी धेरे विषद्भा ।

समिक्क - पूर्विशे मिकना एक्स होना। सम्मिक्तिय-दि [सं] साथ मिका हुना, तुका रदव । सस्मिश्र-वि॰ [सं॰] आरम्पे मिका प्रमा, विभिन्न तेरि इन्द्र संपन्न।

सरिमधळ-प॰ (सं] भिनामेकी किया; मिकारर । सन्मिक्टि-नि॰ (सं॰) विकास इस्रा, वह सामिश

हमा, मिकावरी । सम्मिक्क-प्र [व] १६१

सम्मीवत-सी॰ बि॰] जहरीनापन, विवासता ! सम्मीकश-प्र [सं॰] (पुष्तारिका) मंत्रिका हैन हिरनाः स्टब्स् सनाः पूर्व सहय प्रमासः सहरतास

श्रंत होगा । सम्माखिष-(१० (११०) जिसने गाँसे वेर वर में है

श्चना −द्वरा−९ १७७ धनर्मणा सम्मुद्ध-दि [सं] की सामने में जी क्षेत्रीहे समे मीक्ष का सिक्तेबाका धाममुख न ही और प्राप्त अनुकुकः किसी बानपर नृत्या हुआ। पश्चकः। ४० सप्यी

समा । सम्मुद्री(किन्)-पु॰ (तुं॰) मार्रमा; वह मो शावने ही। सब्मुक्षीय-वि॰ [सं॰] वामनेका अनुक्ता ध्रम र

सन्मुख-वि [सं•] संख्या द्रमा। यरश्या द्रम इत मुक्ति संदर । सम्मूड-वि [सं] ववडाया द्वमा इतर्हींडा संदारीना

मूर्यं बानदीया राशीकृतः अन्तम्बर्धाः तेत्रेन्न बारस भग्म दूस दुवा । -बेता(तम्)-नि वितर्ध वितर दिकारी म ही इत्त्रक्ति। -पीडिका-सी वह विस्त रीग । - इष्य-वि+ व्यापुण, उद्रियमना ।

सम्मुदा-सी॰ [तं०] एक तरहकी प्रती । सम्बद्ध-९ (सं•) पमा दोना। शना। देवमा। - ज-पुण वास ।

सम्बूच्छीन-इ [मं] बना होने च-दे, चैकसी दिना मुख्यां नेबोदी। बीबारे: पूर्ण माति । सम्मूच्यं बाज्ञव-पु॰ (सं॰) महत्त्रो वा बाब प्रवस्त्र प्री

सम्मू विवत-वि [तं] यहीमूना देहीए। प्रशिद्धिन (जैमे दिरग); विकास हुमा (स्रा) र

सर्वितेही-सर्वे सर्पिमेंडी (डिम)-५ [सं•] वेसे प्रमेडसे प्रस्त स्वकि विसर्ने पेशाय यो जेता होता है। सर्पिम-वि छि॰) छोपकान्सा । सर्विष्ड-प सिंशोपतः। सर्विदर्शक्का-वि (सं०) वीका मरदनान। सर्पी =- प थी। सर्पी(र्पिन)-वि॰ सि॰ो रेंवने और भीरे चक्रनेवासा । मपीए-प्र [सं•] हे 'सपेंद्र ! सर्वेशर-प्र• [सं•] शासकः। सर्पेष्ट-प भिशे चंत्रतः। सर्पोन्माद-प् [पुं] जन्मादका यक प्रकार विसमें ममुष्य साँप थैसा बापरण करता है है मक्र-प्रश्कित] भूपूच सर्च, शक्यकः [अ] छर्च करनाः नसर बरमा नितासा । स्त्री॰ व्यादश्यदा वह निमाग बिसमें सम्बोद्धे भेर क्यांतर, व्यूतपत्ति कारिका विषयण रहता है। भौगोंकी गरहात ।—सहरे -(प्रती)वहरे-सी स्वाप्तरमन्त्रातः । प्रश्नदोना-सर्वे होताः वीतना । सफ्रां-प्रश्वि] नर्वः नरभवशः धनुमी समर्मे देवी करमा (का+)। सर्फ़ी~वि॰ क्याद्ररण बानमेदाला वैदाहरण । सर्वस॰-५ दे॰ 'सर्वत्य । सम - १ (र्स) तमन गतिः भाषात्र। स्वर्धे । व सी दे 'सर्गा

सरी-प गराबीको प्रती । सर्गक्र-त (भ) सीना-चौरी नादि परसनेशकाः

RETE ! सर्राका-पुदे नराका । सर्गाठी - ह्ये हैं। 'नराही ।

सर्वकथ-वि [सं] मुक्को पीतित करनेवाला, निर्देश ।

पु बुद्ध व्यक्तिः पात्र । सबदम सबदमन-१ [र्थः] सर्वजनका पुत्र, मरवा सबसरि-वि [सं•] सरका अरण नीनग करनेनामा । सर्वसह - वि र हि । सर इक्ष सहस्र करनेवाला ।

भवसदा-की [गं] प्रशेष स्पष्टर-नि॰ [सं] स्प कुछ के जारेवाका।

सक्-दि [सं] सर्व समस्य समग्र दुर्जाद्र शिका निष्का एक सुनि। वक्ष मनपश अस ।~कर्~व शिव । -कर्ता(ते) ९ असा !-कर्म(त्)-पु॰ शर प्रशाद के काम । -कर्मा(संनु)-६ शिव ! ~कर्मीण-वि सर बाब धरमेराना !-बोपम-वि सारिय गीनेका ! ■साम=रि गुर्व इच्छार्चे स्कृतेकालाः सव तरहवी इच्छा पर्य करमेराका । प्र धिवा वस अर्थत्। - गम-वि० इच्छानुसार समय करमेशाला !- ०५-वि नाती अस मार्ने कुर्व दरनशामा । पु शिव । 🗝 बुच-विश् मारी समिनाशाँ पूरी करनेशना ।- व्यार-प्र शिव । -काशिक-दि शारी प्रथा^{हे} पूरी करनेपाणा जिनकी नारा इच्छा पूर्व ही ।-कामी(मिन्)-वि॰ नारी इन्छार पूरी कामेनाला। व्हेन्ठायुक्ट काम कामेनाला। क्रिपुद्धी मारी इच्छापें पूर्व ही ।-बाउद-विश् नर्वेडिया रिमुद्धे पूर यह अपनि हमा करे !-कारी(रिम्)-

वि॰ सन क्रम करवेगका वा करमेत्र मन्द्र । व स्था निर्मातः !-काळ--म॰ सर्वदाः इमेशा !-००मार-श्चिष !--कास्टीम:-विश् मन बाल्का !-बन-पि सर्वोत्पायकः ।-कृष्ण-दि बहत हाला । -हेर्जी-(शिन्)-च समिनेहा भर ।- क्षेमर-१० १८६ मीकसिरी !−क्षम~ए संस्था नाम प्रश्व ।~क्षार~ प्र• वक शार, महासार ।-शिल-दि॰ शर्म रारे वाका।-श्रीध-विश्व विश्वमें इर सरहको स्थ ही।इर कपूर, बनकीय अगुरः बुंक्रम, सर्वत और चपुर्याय (माग्बेशर, बलावची, तेडपल और राप्तश्रीतीयां गर) बार ।-शंधिक-दि० है० 'सर्वमंत्र' ।-ग-दि० ग वयद जानेवाला, सर्वम्यायद्व । वर अद्युः बारमाः विर बहा मीमरोमका एड वब 1-राध-वर रेड 1-यति नि॰ सर्वेष्मापक ।~राज-को - वित्रंग ।-राजनी(बित्र)-वि है 'सर्वय' । – संदिध – संदिध= - व किलाभाग -सह-नि सर इड वह हो बार या वानेरण। च्याद्वापद्वा-स्त्री° शास्त्रपत्री । च्यास-दि नरहा वानेशका । यु स्थान प्राप्त । – एका – मी एर स्रोतिक देशी (श्रेष)। -बार्मील-दि १ वंगः पर्शेरा नना प्रमात श्रव तरहच्च समहोदा तमा प्रमात - मारी (रिन्)-वि स्पापका ह शिवा -धारक रिव धरकी बद्धमें **करबेशका। -ज-विश्** विकेतगर (मार्थे) ।-अय-पुर प्रत्येद व्यक्ति । -- श्रीपा-शौर बक्र औषनि परिता - अवीत-नि सबसे संग्रेश बालाः सार्वजनिकः। -जनीय-रि मन्त्रे शिक्षाः। −खव-सी॰ वृथ दिवद । –ज्ञया~तो॰ द४ रेंगी देवकणी। त्विवीका एक वर्ष की मार्नशीर्वमें दीता वा -बिल्-वि छरको बीटनैवाला अनेवा छन्छे वस हुमा। वीजी पात्रचाँकी परामें करनेपाया (मा रे)! त्र कृत्युः वक वकाशः एक संत्रसार । -श्रीवी(विष्)-वि॰ विसक्ते विता विजानक और प्रविजानक श्रीरित ही। -श-वि॰ सर प्रक कानमेशाधा । पुर हैरनरा देवना हुद्धा मर्दरा दिए। -शा-लो॰ शुनी रह देहिनी। -शाता(भू)-वि सर्वहा -ज्याविन्ही स्टेंग्रा -तंत्र-पु॰ सर दिशांका नह बिसने सर हंदीश मान वय दिवा है। १० सर्पशाससम्बद्धः। -समोनुर्-नि सारा जंबकार दूर करनेताना (वृत्ती) । नहारवनी सब्दो तम बरमेशाना । प्रमारेश वर्त (१) ।-तिना मी+ काडमाधीः जॅसक्ष । -तुर्पतिनाही(दिव)-5° थित। -स्वाय-५० सर क्याका स्थाप वर्तनारी -ब्रियर-दि भी मन्दी तंत है ((१४) ! - वि नायक-तु यक भैतिक विश्वती ! -व-शिः गर देमेबाना हे पु शिका -श्रम -हमन-वि भरध दमन कर्मेशाना । पुर सर्गनाका प्रम -वृद्यंत्र-ति सप देशनेतामा । -वार्ति(र्तित्)-ति शव कृष्ठ हेराजेवाना रे पुरु देरवरा पुत्रा करें है। स्वाता (तु)-वि सम्बुक्त देवेशाया । -शाम-पुर miret दान । - दिवियमय-मा विस्तियम । - १६ (११)-रि लर्पश्यीत --देवायय-दि दिनाने सरदेव दीत पु सियो — देशमूल – दु जब्रिश — देशीय शि रर

'मादि-माधार 121 भारेय-वि॰ [र्स॰] ग्रहण करने मोन्य । पु॰ वह साम रमुद्ध । यो बिना कठिमार्दके प्राप्त हो अच्छी तरह रखा बाद भादि-वि [तं] प्रवमः मूकः प्रवान । पु॰ वारंगः मूक कारणः परमेश्वरः सामीप्त । श० वगैरकः वस्ताति । -करः बीर छन्न विसे धीन न सके। ~कर्म(न) −प नाकसिक्ट कर्ता(र्स)-पु॰ स्तरा । -कवि-पु नारमीकिः मधा । प्रदान करनेवाका कर्म (बै॰)। -कौड-पु रामायणका प्रथम कोड वाककोड !-कारण व्यादेशक−वि [सं∘] अतेश करनेवाका। -पु॰ सृष्टिका मूक कारण, सपादान (शांक्यमतसे मूल बाबेचन-पु [सं] वृक्षा पासा क्षेत्रनेका स्वान पा प्रकृति, वैक्षेत्रिक्तम्त्रसे परमानु, वेदांत्रमत्तरी तक्षा ।-काच्य विसात । —पु शहनोकीय रामावच। —साफ्र─पु॰ पक् नाक आवेश-प [र्स•] बाह्या, ह्रमाः हिराबतः सरुष्य, विवरमा (संगीत)। -देव-पु॰ यरमेश्वरः नारावनः विश्वा। मनिष्यक्रमनः एक अक्षरके स्थानपर दूसरे सम्बरका भाना -पर्व (म्)-पु महामारतका पहका पर्व ।-पुराण-पु० (व्या): शह-नद्यशैको स्थितिका फल (क्यो •) • प्रणाम । प्रसापुराण । -पुरुष -पुरुष-पु: परमेषरा नारावणः आदेशक−वि० [सं] आदेश्व~माद्या करनेवासा । थावेदाप~पु [सं] आरेख करना । हिच्छा । -- स्टा-वि चारंसमें उत्पव । पु॰ जकाः विन्धु । आहेशी(शिन)-वि॰ [सं] आहेच करनेवाकाः क्योतियो, -रस-पु॰ नेगार्रस (सा) : -राश्च-पु॰ पृष्: मनु ! -शक्ति-चौ॰ महामादाः दुगां । -सर्ग-प्र वादिः मिष्यश्वका। **भावेद्या−(८५)−वि [छ•] दे 'मारेदाफ'** । प्रवस सदि । बादिम#-पु• दे 'शहरेश । **भाविक** – म [सं०] वयेर**ड**, इत्यादि ! मार्चत-म [सं] बादिसे मंतरका प्रभादि-मंत्र। आवित्रेय-प्र• [सं] अवितिका पुत्रः वेका सूर्व । जाच-वि [र्स] भाविकाः पद्दकाः प्रथमः प्रवानः अदि आदित्य −प [मं] सुमा देवा कदितिके दन नारह पुत्रोंमेंसे बोई बी सभी सूब माने जाते इं-वाता, मित्र नर्वमा, तीयः " के ठीक पहलेकाः धाने योग्य । "कवि—पु अकाः वास्मीकि। -वीज-पु वगत्का मुक्त कारम; प्रधान। कद्व, बक्षण, धर्म भग क्षित्रस्तान्, पूचा, धविता त्यप्रा -मायक-१ एक तीक (५ रची) I-क्राब्र-१ स्टब्स्ट और विकास विकास बामम अवतारः १५ की संबंधाः मदार । वि जरितिसे करपन्न भावित्व-संबंधी वा जादित्व प्यारहर्वे दिन होनेवाले बाद्धीमें पहका ! से उत्तन ।-केन्-पु॰ वृतराहुका यक पुत्रः स्वैकासारियः। **भाषा-सी॰ [मं॰] दुर्गाः** प्रतिपदा । भाचम-वि [र्ष] पेट्ट भूखाः साठयोः बादिहोत । - पञ्च-पु॰ एकं पीथा; बाद्यस्त्र पद्या । - पर्णिनी - सी थाचीत−प (do) महत्व, चमक, कांति। बहाछबँके किनारे उत्पन्न होनेवाली एक छन्। – पुराज माचोपात−ष• [सं] मादिसे बंदत्कः। –पुण्ड उप्पुराव । –पुष्पिका−स्रो काक पूकवाका बाहा-ली दे॰ 'बाहाँ'। सदार । ∽शक्ता ~की वदमका नामक पोवा । −संदक्त -पु स्वेंके पारी भोरका प्रमान्तंत्रक । -बार-प माद्रिसार-वि॰ [धं] क्रीवेसे पमा हुमा ! आरथ−निदे'मापा'। रविवार ।- वत-प्र॰ सर्वका जत ।- सम् -प्र सर्वप्रक-सुग्रीव बम श्रामि और कर्ण । माधमर्थ्न [सं] कर्षदार होना । भादिम-वि (सं॰) बादिमें चल्पका पहला। सर्वप्रवस । भावर्मिक-वि (एं॰) बन्दादीः भसास । जावचन-प्र॰ (रं॰) दिलाना वैपानाः शुरूष करना । भाविस-दि [म] बदल-र्शक्तक करनेवाका न्यायो । आया−वि वस्तुके यो समान मार्गोमेंसे म्क, वर्ब, बीम, भाविष्ट−वि [मं•] बारेच-प्राप्तः मिन्ने (कार्यका) बारेच किया गवा हो, कविता पुआकाः सम्मतिः कुनाः निरफ । −साझा−पु वरावरका दिस्सा । −सीसी → भी आने सिरका दर्ग। स्- - वितर, भाषा *बटेर-*--संचि-की प्रवस्त शहुको कोई शृमिगांड देकर की बाने कुछ एक तरहका, कुछ दूसरी तरहका बमेक ।-होना-गाकी संवि । भाविद्वी(ਇन्)-वि [हं] शहेश देनेवाका । पु॰ हक्क दुवका होनाः, स्थाना ।-(घी) यात म पूछना-करा न चारीः विचार्शीः प्रावक्षित्तं करनेवाला । करना । आधे आध-नी बराबर वा सर्व माथ । भावी−नि [म] सम्बरतः निमे किसी पीककी सारतः मधासारा∽पु विचया। भाषाता(तृ)-वि [सं] भाषान बरमेवाकाः वेदद क्त क्य गयी हो, व्यमुनी । 🧇 श्रानिपटा तनिक भी । निसी भरतक। - एक-पुण्ड प्रकारका सन्दर्भ। रस्रभगका । भाषाम-प्र [सं] रखना, स्थापनः महत्त केनाः सक्रि-मार्चानथ~पु॰ [मं] ह्रोडा पोडा वेनीनीः अपराया जरपो-दौनके लिप अधिका रवापना भारण करना। (कोई कार्ब) भावीपम-पु[मं] आग सगानाः प्रशेषित दरमाः पूरा करना। उल्लंब करना। मयस कोई बरद्व रहने था दोनारको सफेरी करना । बमा करनेका रवान। वेरा। यसाधानके पढके किया जाने-मादीपित मादीस−दि [००] प्रस्तरित किया हुआ बाका व्या भंत्यारा गर्मा वंत्रक, परोहर । परुवा दुआ। भाषाविक-पु॰ [सं॰] वर्माधानक निमित्त किया आनेवाका भारत-दि [मं] बारर-प्राप्त सम्मानिता साववान । पक्र विशेष शंस्कार । भारत्व-दि [सं] सम्मान्य भारत्योव । आधायक−4ि [मं•]दे 'आवाता । भारति—सी [मं] मत्रर, देखना। आधार-पु [मं] सदारा, भानंदन दह मी दिसी वरतुदी

भारम करे: बरतनः तत्कातः नहरः परिकाः बीध सभिग्राना पात्र (ना)- बाखाः संबंधः अविकाधः कारकः। --स्पा-मो• गोका एड आश्वम । -दाक्ति-सो• महावि मावा।~स्तुम-पु॰ किसी कार्य वा बस्तुका मस्य बाबार । भाषारक-प॰ सि ी गीई। **माचारण−**प [सं•] बारच करमाः सदारा देना । नाधाराधेपसाब-प सि॰ । नामवानविभाव। माधारित-नि॰ रे॰ शब्तु । भाषि नयी [मं] मानसिक योदार अभिद्याया विपश्चिः र्थमकः वरीवरः स्थामः भावत्यः त्रश्रपः धर्मनिताः भाशाः । --पास-प= परीदरकी रक्षाका गर्वन बरनेवाका राज्यकी-चारी । -भोग-प परोहरकी थीवका सपयोग । -अम्य-पु॰ क्यरका ताद।-ओवत-पु॰ वंबन भाषाता। −स्माधि−भी• यस और धरीरकी ग्रेश ! –स्तेन–४० मनिकारीसे पंछ निमा परीवरकी रखम लर्भ करमेनाका ष्यस्य । माधिकः - दि साकः वा आर्थके शनमग । अ॰ कम्पन भाषाः सिवितः। माधिकरविक-५०[शं•]म्बाबाबीकासरकारीकारिकारी। माधिष्टारिक-विश् मि] अभिकार वा अधिकारीमें शंबरः साविदारः सरकारी आक्रियकः । पु जून दवावरनुः मधान झालदः परमात्मा । भाधिक्य-५ (do) मधिक्या, बदुतावरा प्रापान्थ ! भाषिदेविक-वि छि देहिबाँ र अविश्वला देवलाओंने मंबंध रखनेवालाः दैवज्ञत या मक्तनेतप्रत (बल्यावि) । माथिपत्य-५० [मं•] मनुत्तः राज्य । भाषिमीतिक-वि॰ [मे॰] प्राणियों या पंपभूगींस संबद्ध बा बनसे सत्त्व माधिराज्य−त [सं] अधिरामका पर वा अधिकारः सबोपरि प्रमुख । भाधिवैवृत्रिक-पु [तं] दूसरा विशव कानेपर पहली प्रमोद्धी संगोबार्थ दिया जानेवाला प्रम । माधीन!-वि दे 'वर्शन'। साधीमसाध-सी १० जगीनता । भाष्यत∽दि [गं]दे॰ आपृत्ः आपुनिष्क्र-दि [ते] आवश्कदा वर्गमान कानदाः वर्गे नगरिस । साप्त-दि॰ [र्त-] देशमा द्वमा दिलावा हुआ। वान्तिः शस्य क्रिया हुआ । आपूपम-५० [र्व॰] वृम्युक बरनाः युवैशं अल्लान करना । भाषमित्-(वर्ण [तर) पुरेने सावृत्त । आपम-रि॰ [मं॰] मुहद्दे (नमा । मापत-वि [तं] दिनीदे एटारे दिवा द्वमा अवन्दित । साधेड+-रिश्म है आविक 1 भाषीय-वि [मं] को एका वा स्थापित विवा जावा वी भारत दिया सागः जो इंच्ड रंगा आग दिनी जानार पर रिना गुमा; टहराने वा स्मनवाम १ ग्रु विशी मापार सर रमी या रिकारी की बखा एवर्निकी किया ह भाषीरम-पुर्व (गुरु) महादन वीलनान र

माध्यात~वि [र्स•] कुछा हुमाः महिना दल्बः द्रास्तिः ध्वनिता पेरकी बाजुने शहत । पु • पेरका बायुरीना सुद्र । माध्यान-पु॰ [सं॰] यर्न ब्रह्मा देट पुरुता महरा शीम' बढोरर' वीदनी । भाष्मामी~सी० (र्श•) त्रक्षित्र भागद्व गंधद्रष्य । बाप्यातिमक-वि॰ (सं) परपारमा पा अप्रमासे स्थेर रसनेशस्यः मनसे संबंध स्मिनेशस्य । क्याच्यास-पु॰ [मं] शिताः इ"राजुर्म स्तुनिः नितन भनत्। बाप्यायक-५ (तं॰) शिवह, ग्रह । आध्यायिक-वि (तं•) वेगाध्यवनमें तंग्ध्य । भाष्यासिक-वि० (सं०) अप्वास-प्रदित । जाध्वतिक-निश् (संश) बाबा करनेवाना । आनस्य -५० (५०) व्यवकानसम्बद्धाः । आर्जस्य -प्र• (सं•) क्रसंप्रदाः समस्य । आर्जेट-पर्श्तिरों मोन इसे राजी मीता त्रजा मीरार ४८वाँ संबरहर: शिवा दिव्या दुवका एक शिव्यः वक दुरा। -कानम-पुरु काशी । -धम-दि मानंदर्भे सरपुर्। -अस-बाध्य-पर वाजेरबाय सम् । -पर-प्र वर्ग-दाश्र क्या। -श्रमय -श्रमय-५ वीर्व, गुरू निर्म। -बचाई-सी -बचावा-प हिंदी उग्रह-स्राया क्षामा अंदर । - औरब - विश्व वी वर्ष और अब रीजेंग्स जनव हो । प्र॰ दिया मानुबँदोक्त एक रम । - भैरवी-छ। भैरद रागक्षे एक रागिनी ।~मंगल~द∙ हुग:भैन इंसानाधी। -मचा-सी दे 'अनंतसमीईहना'। -सहरी-मी॰ धंकराधार्य-विरविध पार्वती-स्नोत । -वन-१ क्यो । -समोहिस-भी क्षानंत्रमें सम्भ रहमेके बारच सम्ब हुई श्रीदा नारिया t थानंदक∽नि (र्थ•) भानंद मनानेताला। आगेदभ-दि [सं] अस्त्र । दु असमाना दर्ग । मार्गहरू-विक (मेंक) भागेद्रप्रद । पुरु प्रमान बरनार महतार मित्रों आरिमे फिलने और रिण बीगेंदे समबदा सीम व्यवहारः मानंद प्रदान करनेवारी वरनु । भाजेदमार-च दि० मानंति होना। वार्जदमय-वि (सं) कार्जरमे भरा दुआ। -श्रीस- नर्रातमें भाग द्वर भारतां है चीन होशी का भारतीं सेने थेनिय । भाजेदविशा(७)~रि० (र्ग०) थरसेर र्यनसम्प्र । अराजिया-न्यी [ते] भीय। आविष्टाधा-प [मंग] आवंदके व्यविदेशी निवयनेपाने MIT ! आर्मिक्-पु॰ [सं] प्रमण्या प्रपी; भीत्युपर र ब्राप्तित्ति–शि० (सै०) प्रमुख गुरा र आयंशी-सी० (से] दुर्शावरीय । कार्जनी(न्ति)-वि॰ [ते] यमक मुरिया यमक दर?

आज-सी अवारा गीरन गरी टनमा दुर्शा धाना

हैश पार्ने। सहा साम रियामा मीलगा हरू। करिन

कार पुण्या । –ताम् न्या धाना नामा भागमा रेण्यी

शाः। -बान्-पु स्वरवादभदः। + -सोदमागु-

बाला र्व

देशीमें संबक्ष सब देशीमें पाया जानेवाला ! - देश्य-वि को सद स्थानीमें हो। -अव्या(च्यू)-वि॰ सर्वदर्शाः -द्वारिक-दि॰ दिग्विवदीः स्व दिखार्मीने पुद्र-पात्रा करनेके बर्युक्ता -धम्बी(स्वित्र्)-पु॰ कामरेव । --धातुक-दु ताँवा । --धारी(रिन्)-वि स्र इस बारण करनेवाका। यु शिवा एक संवरसर। भुराबद्व-वि स्व तरहका मार बद्दन करनेवाला । प गांधीमें बोता बानेशका बानवर ! - भुरीण-पु दे 'मर्बपुराषद् । विक सन तरहकी वाक्तिमाँ कीते बाने थोम्य !: - माभ - पु एड अलः ! - वाम (सव्) -पु संदाके स्वानमें प्रयुक्त दोनेवाका शब्द (व्या)। -नामा(मन्)-वि सर मामौराका। -नाम-धु विष्यंत्र बरवादी तवादी। -नाशी(दिन्)-वि सर्वनाष्ट इरन्दाला। −निद्यन पु॰ सदका दवः यह पकाइ। -नियता(त)-पु सरको अपने नशमें रखने-वाका। - नियोजक-वि संबद्धा नियोजन करनेवाका (विष्य)। - निसय-विश्व जिल्ला सर्वेत्र निवास हो। -पति-पु सबका स्वामी। -पथीन-वि को सारे मार्गपर फैका हो हर दिशामें जानवाका। -पा-वि सव कुछ पीनेवाकाः सवकी रक्षा करमेवाका। स्त्री वक्रिको पत्नी। --परचक्र-तु श्रुदस्या। --परदश्य--वि क्षिकुक कोहेका वना हुआ। -पादवँ सुका-पुर शिदा –पारुक्र−दि सदकापाठन रक्षण करवेदाका। −पावन−दि सक्को प्रदेव करनेवाका । पुछिद । -पृक्तित∹वि सबके द्वारा पृथित । पु• शिव ! ~पृत− वि पूर्वत शुक्रः -पूर्ण-वि विसक्ते पास नस्व कुछ हो। -पृद्धा-सी॰ वस्तिकेव। -प्रत्यक्ष-वि को स्वके सामने हो। - प्रद्-वि सव कुछ देनेवाकाः −प्रशन्द सम्बास्तामा । −प्राप्ति−को सन कुक्को प्राप्ति। - प्रिय-नि को सबको प्रिव को। जिसे सब पिय कों। **- संभविसो क्**न−वि समी वंथवोंसे <u>स</u>क करनेवाचा। दुद्दिन । −वस्त−दुपक नही संस्या (वी)। – बाहु – पुत्र करनेका एक दंग। – बीज – चु सनकाशीय वासूका −सभ्र−वि सर्वकुछ म्रानेनाका । − मशा−सी वक्तरी । ~मशी(भ्रिन्)− वि॰ सब कुछ सानेवाका। पु अग्वि। -सवकर्-वि सन्दो मीत बरजवाना। -भवोज्ञब-पु सूर्व। -भाव-९ पूरी शकाः पूरी भारमाः पूर्व शंकीव। ~•कर−पु शिव। –माथन−वि श्वनेत्रारक। <u>प</u> धिव। − मूरा−दि की सवजगद हो । पुसारे जोद । −•गुद्दासय−4ि को सदते इदयमें रहे। ⊸ पिता सह~तु ह्या। ~ हर~तु दिव। ~ हित~तु सर नीर्वेश्वी मकार्द। -मूमिक-प दारपीनी। -मृत्-वि सवका पोवण करमैवाका। -भोग-प यन सेना भारित सहायना वेनेवाला मित्र (की)। - भ्यह्-वि सद कार्योमें समर्थ अपयोधी। -भोगी-(गिन्)−वि समझ मोग करमेवाका सद <u>क</u>छ बानेदावा। -भोगीन -भीग्य-दि सददे किए सामदाबद, सबढे मौगले कोव्या । - मांगछ-वि सब्दे किप शुष । - संग्रहा-की पुर्गीः कश्मी । - सक्का-

पगत-पु• पद्भ समावि । ~सहान्(हत्)-वि सवसे वहा। – म्रांसाद् – वि सर तरहवा मोस वानेवाला। -सृक्य-पु कोई छोटा क्षित्रा कीही। -मृपक-पु सब इक भुरामे, इरण करनेवाक, समय। -सेघ-पुण् सार्वजनिक वदः यक शोमसङ् जी इस दिन वस्ता बा। मध्येक चढ़ा एक वपनिवर्। -र्यश्री (त्रिम्)-वि सब यंत्री, बीबारींसे बुका -योगी(गिन्)-प शिव । -रक्षण-वि स्वये रका करमेवाला । --रक्षी (क्रिष्)-वि॰ धवकी रक्षा करनेवारा। -रश्तक-पु॰ मी सिथियों मेंसे एक (अं)। -- रहमा-सी शृति (संगीत)। -रस-पु सन प्रकारका रसः **का**णः बुमाः सव तरहके स्वादिष्ट भीवनः। एक संगीतवाध । विं सन रसोंसे <u>सक्त</u>ः विदान्। −रसा-सी नानकी रामाना गाँद। ∽रसीत्तमं~तु नगद। –रामा– पु॰ चूना। एक बाध (ग्रंगीत) । — इत्य-वि॰ श्वव क्रय बहुन करनेवाला। पुरुष समावि । – इसी (पिन्)-वि दे 'सर्वेरूप'। - स्वारण-प्र सारे हाम विष्ठा - कश्चित-यु थिन। -- स्राक्त-पु थिन। -सिंग-वि को छव किंगोंमें वी (विशेषम)। -सिंगी (गिन्)-वि वाहरी कक्षण रखनेवाका श्रीमी । -क्रोक ~व• सारा संसमः सभी कोग । -• इत्।- भृत्-पु हिद । -• गुद-पु विष्यु । -० पितास**इ**-प्र त्रका । -- प्रकापति - पु शिव । - सहैदधर - पु शिव विप्यु । –क्षोकेश–५० विभ्युः शिव । –स्रोकेशर–प विष्णुः वद्याः । −कोचना−नौ ांधनाकुको । −कोह− 🕅 पूर्वक्यते कारू। दुकी देका शामा समानार्थे। --सोहित-वि विष्कुत शरू। - झीह-पु कोहेका बला वरेंगा । ≔वर्ष्यका−की संमारी कुछ । ≔वर्षी (जिंम्)-वि विशिष प्रकारकाः --वस्क्रम-वि जो सक्यो प्रिय हो। - बस्कमा - की अस्त्री नारी ध्वसि बारियो । -बागीश्वरेत्पर-तु विभ्तु । -बाससङ्च-सक तरहकी हवा क्यांतत करनेवाना (पीत)। ∽वादी(दिन)~५ थिर । - (दि)सम्मस-दि विसे सकते मान किया दी। -बाम -बासी(सिम्)-पु शिषः। –बासस्य-वि पूर्वत वसाम्यातितः। – विकयी(यिम्)-वि सर तरहकी वस्तुर वेचनेवाका। -विस्मात-विमद्द-पु दिव। -।वज्ञान-पु हर वस्य विश्वका कान्य । वि स्था विषयोंका बाता । — विज्ञाबी(मिन)-मि वे 'सर्वविद्यान'।-विद्य-वि सर्वता पुरेक्तर । सी जोए। -विध-वि सारी विधाएँ जानसेवाका सर्वद्य । -विचास-मु सर्ववास । -विश्वमी(मिम्)-दि संबद्धा दिश्वस दूरनेवासा । -विषय-वि सर्वविक्रोंसे संबंद रखनेवाळा सावारण। ~वीर−नि व्युत्तसे पुर्वोनाका। --० जित्-नि सर बीरोंको बीवनंबाका । -वीर्य-वि सारी ग्रुटियोंसे तकः। −वेद्या(सू)−वि सर्वदः। −वेद्र−दि पूर्व बानवान्। सब वेदोंका दाता । व बारी वेदोंकी बागस बाका जाहाय । -बेद्स-वि (यह) जिसमें सारी संपत्ति वान कर वी बावा सारी संपत्ति वान करने-वाका । पु॰ सारी सपति । -वेदसी(सिन)- सहरा-पु॰ [ब] जेगल, शैदक बना रेशिस्तान ।-यू-ब्राह्मस-पु अक्षेत्रका विशास रेशिस्ताम, सम्राम स-मृप्त ।-मर्थ,-मसिय्-वि जेगलोंने किरने, प्रयक्ते ब्राला सुशाकिर । -मर्थी-पुविदी-को जेगलोंने किरना, वनमें विसरमा ।-मर्थी-पु वनवासी। सप्रयो। सहराष्ट्रिक जेगले वन्न । सहरामा-स किरने दे सब्बामा । अ॰ कि सिव्य रना बरना।

सदरि-पु॰ [सं] स्या साँव।

सहरिया-पु॰ एक तरहका गहें।

सहरी-को राकरी मधकीः विषरीः [ल] दे 'सहर गरी । वि प्राप्त कालीन ।

सङ्ख्य-पु [सं•] न्द्रमाका यह भोगा ।

सहरू-दि॰ [श] शरमा सहयमें दोनेवाका, कासाम । -प्रमुखार-दि सुस्त दोका भारती ।-प्रमुखारी-

को प्रसी दिकाई बाकस्य।

सङ्काला-स कि बोरे-बोरे सकता या दाव केला, सुदराजा: गुरगुराला । ज कि गुरगुरी मासूय दोला । सङ्क्रतां-पुरक्त तकदत ।

सहस-वि [सं] दावयुक्त दैवता हुमा; • दे 'सहस्र'। -किरम,-गो•-पु स्वं। -बीम -फम,-फम -बदन -मुक्त -बदन -सीस-पु क्षेत्रनाम। -दम्म,-

पन्न-पुक्रम्छ।

सहसान्ध्र (सं] क्यानक, प्रकाणका गर्नक नेससे। इकार्: मुस्करावरके साथ।-वह-पु भीत क्या हुमा पुत्र रूपक पुत्र। वि अयानक, वकार देस पक्षा हुमा।

सहसाक्षि सहसाधी*-इ सहलाङ्ग वंद्रः। सहसान-इ [सं] मनुरा वह । वि॰ सहमधीकः।

सहसानन॰-९ शेरनाम।

सङ्साजु—पु [सं] मीर मन्तः वदः। विश्वस्वतीकः

समानुक्त ।

सहस्त-(र [सं] इस्तपुक्त इविहार भवानेमें कुछन। सहस्य-पु [संग] पीप मासः।-चंद्र-पु श्रीतकालीन

चेत्रमा ।

सक्षरम-नि [सं] इस सी इकार 1 प्र इकारकी संस्था ।-कर -किरण-१ - सर्व ।: -कोश-सी० मेंत पूर्वा :-केत्-दि इमार शंडीवाला !-श्-दि इशार गानीवाकाः हमार किरमीवाकाः हमार नेत्रीवासाः। पु स्पी शंद्र । – गुज−विण्डनार गुना । – धाती – (तिम्)-वि एक इवारकी मारमेशाला । मु शक गुरू र्यत्र।-चार्च (प)-वि वकार वेशीशका। पुरंद्र। -चरण-विदेशर वरवॉवाला । पुदिचा-विश्व-पु विष्तु।-वासधार्-तु यक् क्वंतः।-वित्-वि इनार बोझानोंको बीदनेवाला । चु विष्या क्रूप्लका पद पुषा करन्ती।-क्रिह्न-नि इवार बीगॉनाका। प्र धेरमाग (!)।--जी-नि इवार व्यक्तिका नेतृत्व करनेवाका। पु सीध्या - र्युष्ट- पु वाठीन सहकी। चंड्री(द्विन्)−पु यक तरहकी सक्रकी वोटाक मत्त्य । --इ-वि इकार शीर्षे देनेवाकाः बहुत वहा दानी।पुरिव।-वृद्धिम-पु॰ वद्यविद्येष ।-वृद्ध-

पुरुक्तर्रुः। −दीधिति −पु०स्पं। ⊷रकु(स) –पु बाह्य किन्यु । -धामा(मन्)-प्र सूर्व । -धार-वि इवार भाराओवालाः हवार भाराओं में वहमेवालाः हवार थारोबाला । प्राविष्यका वक्ता ⊢घारा – छो• देव शाओं आदिके रनावके किए बना हमा हवार (एडॉमाका पात्र यक तरहका इनारा। - भी-वि वहत चतर। -धीत-वि इकार कार कोवा हुना । -मयन,-मेब-प्र विष्णुः ग्रंद । -भाम(म्)-प्र विष्णु वा किसी देवताके इबार मामॉनाका स्वीत ! -मासा(सम्) —वि वकार मार्मीवाका । प्र• विच्या शिवा काम्ब वेत । -पति-पु॰ इकार गाँवीका शासक वा स्वामी । -पन-पु क्षमका एक पर्वत । -परम-वि बजारमें सबसे ब्लाइमा। -पर्य-पुताय एक इस्र। -पर्या -को द्वेत दुवा । ~पात्(द)-प प्रवश्विष्णः क्षिया नद्याः यह कवि । - पाव-पु सुर्वः विष्णः एक उरस्का बरूपक्षी कार्रड । −बाहु-पु कार्तनीर्व वाना<u>सरः</u> शिवः स्टंग्डा एक बनुवर । -ब्रुह्यि--वि बहुत चतुर । -सन्द्र-प्र एक स्वोद्यार विसमें इवारों बादमी खिकाये बादे हैं। -भागवती-सी देवीकी एक मूर्ति । - माशु-दि हवार किर्जीवाका । पु पूर्व । - भित्(द्) - पु बस्तूरी; मान्नेत । - भुवा —प्र विष्युः यह गंपर्व। वि इजार <u>भुजार्वीवाका</u>। - मुझा-सी दुर्गा महास्थ्यो (महिवासरका वह करने-बार्च) । -बरीबि-पु॰ द्वं। -मूर्ति-पु विम्तु। -मूर्य-५ विष्णु। -सूर्घा(र्यन्)-५ विष्णुः शिव। -मृक्तिका,-सूखी-स्री कांडपत्री। सुद्रप्णी। सृदिक्षा। वही शताबर । -सौक्षि-प्र विष्यु । -बाकी(जिन)-वि इवार(गावी)की प्राप्तिके किए यह करानेवाका । -- खरा-पु इवार धुरोंका कारू । - रहिम-पु सूर्व । -एक(व)-प स्रं। -शेम(व)-प -क्रोचम-पु॰ दंद विष्यु । - वक्त्र-वि इसार संबो-वाशा । -वद्म-पु विभु । -वाक-वि इवार इक्टोबीयका । -बाक् (च्)-पु दूतराहका एक पुत्र । ∽वीर्यं नदि बहुत बहा दशी !-बीर्या नता र हवी। महा श्रष्ठावरी । - वैथ-पु कॉमी युद्ध । - वेथि-पु ब्रोग । -वेबी(धिन्)-वि हवारोडी मेदनेवाका। पु अंक-वेतमा कन्त्री। शीग !-शाख:-वि स्वार शाधानीवासा (क्द)। - हिर्म्यर-वि वजार चोरिबॅनिका । प विस्त अंगी । - सीर्पा(पेनु)-दि हमार सिरोंबाका । पु विष्णु। -श्रवण-पु विष्णु! -सम-वि इभार साक वक्रमेवाका। -सारव-पु यक अयन । -स्तृति-को एक नदी। ≕जोत−पु एक पर्यत्। – द्वर्यस्त,– हर्याच-पुरीकारथ। - इस्त-पु शिवा सहस्रक-वि [सं] एक स्वारः एक स्वारतका एक हमा(वाला । सहस्रतय~वि [छै॰] इवार शुना । पु एक इवारकी

सहस्रधा-व [सं] स्वार मार्गोमें स्वार गुना। स्वार

िरिन ।--वृक्षिण-पु॰ वस्तिरोप ।--वृक्ष- | सङ्ख्या (दास्) - व्य [सं॰] दजारहा । ९१--क

मेरुवा ।

तरहरी।

वि॰ सारी संपध्य वान करमेवाका। -बेदा(दम्)-पु बड़ांतमें शारी संश्रीत दान कर देनेवाका व्यक्ति। —चेदी(विन्द्र)−वि सर्वद्धाः ⊶वेदी(शिम्)−पुर भमिमेता भट । - बैनाशिक-विश् सब्दो शयर मान्ने वाका। पु॰ वीद्धः। —ध्यायकः – वि॰ सवमें रहतेवाकाः। ∽व्यापी(पिम्)∽वि दे 'सर्वव्यापक्ष'। पु ईवारा ण्ड सह । ~शका~सी+ प्रत्येड व्यक्तिके प्रति संदेख। -सक् -वाकिमान्(मरा)~वि॰ तव कुछ *ब*र्मकी छक्तिमें बुक्ता पु• रेस्वर । −श्रद्धी(श्विम्)−िर सारे यसीम बुक्त !-वरिप्र-वि सबसे तेव ! -ध्यन्य-वि विषक्त रिका सबको अस्तित्वरहित माननेवाका। - मावी(दिम्)-पु॰ श्रृम्बगरका अनुवाधी । -श्रृह-म पद ने विश्वत्त ! - आह्य-वि० सक्के सनने योग्य ! −भोप्र−वि सर्वोत्तम। −व्वेता∽का एक विवेका कीशायक भोवन्ति । –संगत्त-प्र यक तरहका जस्त र्तमार दोनवाला पान शाको । -संज्ञा-स्ती यक वड़ी सेस्वा! –सपद्म-विस्ववस्त्राओं से क्रका –संभव-पु सम्बा मृत्र !~सस्य−वि॰ सर्वेष्यावद्व !~संस्थान~ वि सब स्पानाका । - सहार-वि सर्वनाथा करवेवाका । प्र काम: माञ्च, प्रक्रम । -संदारी(रिम्)-विश् सरका माद्य करमेवाहा । --सम्बद्धमः,-सम्माद्य-५ पुरी संगा पदन इरनाः पूर्व शकीदरण । -समसा-को॰ सक्दे साथ समामता, निध्यक्षता। -समाहर-विश्सका माद्य करमेवासा । -- भार-पुर श्रीहर्म दीनेवाला दक्ष तरहरू। जल । −सहार-वि ध्व कुछ धरन करनेवाका, सदनश्रीतः प्रशुक्षः -महा-सी -मान्नस-प्र• सर्वस्थापकमा । -साध्नी(श्रिष्ठ)-वि० सर कुछ देखनगरमा । प्रारंभितः गलाः भन्नि । –साय--वि शिक्षमें सुब कुछ कीन को । "माचन-वि॰ सब कुछ सिद्ध करनेवासा । १ । शिषः चनः शुवर्गः । – साधारण – प्र साथारम कीन जलता । विश् सामान्य । –सामान्य ं—दि ओ सबमें पावा जाव ! – सार्वग∽द्र पद्य गाग ! -सार-प सबका सार भाग । -साह-वि॰ सर क्रुप्त महत्त्र बरमेशनह । - सिद्धा-श्री श्रीधी, तथी श्रीर भीशको निभिन्नं । निस्तार्थननि विशवदी मार्ग इच्छार्ड पूरी हो नधी हो ।-सिद्धि-स्त्री नारी इच्छाओ- श्री पृति पूर्व प्रमाणा पूर्व परिणामा बेल्प्स देह । -मुक्स-वि की सबकी भाषाशीये धाम की नके! -मीबर्ग-वि पूर्णन गोनेका। -श्लीम-पु० वक दक्षाद । -हव-द्र सन द्वार साहा संबंधि समीध । - ईड - इरल - व्हार-प्र शारी गंगीचका प्रश्म : - • दक्षिण-वि जिल्में सारी मंग्री वाम कर वी बाव (बद्ध)। - राधि-मी॰ एव कुछ दैवर की आवैवाणी संदि ।- क्यामी(मिन्) - वि शक्या मान्यि ।~श्वार-बुक दक्ष एकाहा - न्यो(तिवान)-- म एक वर्तन्द्रहरू आदि (जापित विता और श्वानित मानास करवंक) । ~हर-रि॰ तर द्वा प्रश्न वर क्षेत्रेशनाः श'री संदर्शका बचरप्रशासि सर मुख नव बरनेराना । बु नाना वका भरेश । -इरका-इरर-इ तारी श्विटिश दरम ।

वर्गे (मा)। -हारी(रिन्)-वि॰ हव कुछ दरव करे-वाका । पुरु यह येत । -हास्य-वि सरदे इशा दा-शास्य देश । -क्रिय-विश् धवके किए शामदादक । इन शास्त्रमनि शहर मिर्घ । - श्वर्म (म)- प्रश्रादेग बस्यव (की)। सर्व-प्र• (का॰) दे 'सरो । -अंशम-नि• एरेमेची सुबीक देववाला । -आलाब्-इ सरोधा ४६ मर वे विक्कुक श्रीमा श्रीता है ।-क्रइ,-कामद-वि स्त्रीवेडे कदबाला । सु॰-० इटमा-किसीके सम्मान्द्रे सर यवा की जाना । भवंक-वि॰ सि देश हमम । सवतः(तम्)-व [नं•] यारी भीट मध्य स प्रकारसः सब सर्फसेः पूर्वतः । -वाक्रिपाद्य-विश् विन्ते बाध-पेर सर्वत्र हों। - सुमा-न्या विरोध देव! सर्वतत्त्वद्व(प)-वि+ [सं] विस्त्रो र्राष्ट्र म्नीव हो। मर्बेसी-'सर्वतं का समास्त्रत कर । नगस्य (सिन्)-विश् सभी दिसामीमें वालेवाला। "हिंहा वि राव ओर गैना हुआ ! - भार-वि क्रियोज्य सरक सेव बार दा ! - श्वर-दि श्री सर्वत्र सोर्प स्वर्थर ही। -शह-दि॰ मी सब प्रकारते क्रमायका है। यु वह वर्गों कार मंदिर वा मानतर मिसमें चारी तरह हार हो। यक तरहका स्मूहा शिलुकारमा रोतानीस एक शरक्ता विवकान्य। (पूजाके समय) देरी है। दे बलपर प्रमाया जानेवाका रहे विद्या रह वसकी भेगी विसमें शब्दों और रांटीने स्कान-बंबम अर्थ प्रदर्भ हैं कारी है। एक वर्षता यक अरण्या एक संपर्गना क्षेत्रक यक बासना वड अकान जिसमें बार्धे और ग्रांता है दे॰ 'सर्वतीयश्चक'। वह देवसमन। - वह-5 दक्ष वर्गोक्तर राम की शुमाशम कन कामीडे रिए थमावर काना है। -अमुख्यमेर्-पुर मर्गराई क्या हुआ श्रीकीर चौरा। क्यू निरीप संदर्भ गीरर ! "महरू को॰ अभिनेत्री, नहीं। नर्तको। नंपारी। "महिका" स्त्री॰ गंबारी । -- साथ-इ सर्वत्र हाना । -मावेव-अ- सन अकारते पूर्णत । -मीमी(विन्)-प् व्यक्ति वहीतियो बारिते रहा बरमेराना व्यक्ती विष । - मुक्त-दि० जिल्हा मेर बारी केट हैं हैं। Melle 1 3 es oces ser let lett ser sei भारताः वादायाः मन्त्रिः भारताः। रक्तः प्रको "हुष" वि० शर्मध्यापद्य । ररसम्र--म॰ [सं] शत अगदा दर बक्त, वतेमा । "में" ि सब जनव जातेवाचा सर्वभ्याप्त । प्र मण्डा मन् का बक्क प्रवाद भीवरीनका यक प्रवाद लगत-रिक्ति क्यब प्रत्या हुवा पूर्ण । -गामी(मिन)-निः प्र असर वामेनाला । प्र बायु । -शरप-प्र शांब्यांत्र । मध्यापि-दि [गुन] सर मदद वर्दिनेरणा। सक्या-म [लें) बर तरहते। कृतना निकृता मार्चरा ERRIT 6 शर्यदा-स॰ [मं] बदेशा लग दर गवद। मर्बरी-का > प्रवंत ।

शर्वशिस•-प्रवर्ध फारीय !

यहस्रकि~पु [मे] तुर्वे । सहस्रोती-भी • [मे] मग्र-दिशा। बीस् वृश् । महस्रोहर-प्र [रां+] स्यं। -श्र-पु+ श्रीन, श्रनेश्वर सके । महस्रा-सी [सं] अंश्वा प्रयुर् शिसा। सहसाक्ष-प्र• [मं] इदा पुरुषा दिवा विष्णुा एक पीठ रबाम । वि॰ द्वार और्तीशकाः सत्तरे । सहस्राज्य-प मि विकासीता सद्दस्रारमा(सम्)–५० (ग०) ज्ञात । सद्दर्शाधिपति~पु [मं] एक दबार गाँवीका सामक राजमतिनिधि दक्ष द्वार मास्त्रमेका भाषक । सहस्राम्य – प्र• सि•ो विष्याः दीवमारा । सहस्राम् (स)-वि (एं॰) इकार वर्ष बीवेवाला । सङ्गार-प [सं] सहस्र बरुका एक करियत काल (यह मन्त्र्यके मरतक्षमें प्रकटा करका जाना काता है-यो) बारश्रम् स्वयं (जे)। - अ-व वस श्रेयमा (Se) : महमार्चि (स)-वि+ ति] श्री दिखोतला । प्र॰ सर्वे। सहस्रायर-प [4] पाँच शीरी यह बन्नार प्रापकता सर्भेरं छ । महस्रावर्ता – लो . मि । एक श्रेष्ट हेरी । सङ्खास्य 🗝 [गं॰] विष्युः क्षमंत्र नामद साग । महरगी(लिस्)-वि॰ (शुं॰) यह बजार वरनएँ काटि रदानेवालाः एक प्रवार धेनिक्षीवालाः एक प्रवार एए र्देश देनेनामाः एक बजारस्यका (सर्वरंश) । प॰ बजार भारमियोंका रमा एक इसर रेजिबीका सावक । सहस्रेक्षण-५ [मं•] रहा सहस्यान् (स्यत्) - वि [सं] बनवान : शांतिशानी । महोपति-इ [सं॰] मद्याः वह शाशिमस्यः यह नाम । सहा-की [मं•] दूरशी यह बीह (ते): येन दंदी रेपकाः रारमाः धन्द्रमारीः शहरणीः रदेव शिधेः सर्व बुक्रामी। रवर्गकीशीः तरशीपुष्यः मग्रामेचत्र । सहा(हम)-इ॰ (सं] देगंड कडा भगवन । महाइब-पुर सदावक ! सी महायता ! सङ्ग्रहेग-पुर सङ्ग्रद सहायना बरनेशामा । सी S\$1431 I सहाठ-दु॰ दे॰ तहाव । महाचर-४० (मं) महपरः दीनी दिशी, बालीबा । सहाज्ञय-५ [मं] बमर्नृद । सप्टाच्याची(यिम) - प्र [सं] शहबादी। यह श्री भयान निष्वका अध्ययन करनेशाणा । मद्राना-५० एक राय । ७ दि 🔻 १ एकामा 🖰 सदानी-दि बीकावन किये बहु लाल (ग्रहा) जु हैना **(41** सहाजुगमन-५ [4] है स्टबर्य'। सहामुख्या-प्र• [व] रे 'शहरायत' । महानुम्ति-की [छै॰] विगीदे दुव्यादिते दुव्या है वा इमरही ! महाज्य-५० (से] प्राप्त । सम्बाध-पुरुषे 'शहार : [धर) गारण मेप ।

सहाबत-भी बि] वित्रता संग, साथ। सङ्घायी-प [म] यह भारमी की इसलाम स्वीहर कर महत्रमहरू माथ रहा हो भीर अन्यवस्य मुससमान एका की । स्थित 'सकारिका' ।। सहाय-५० वि. साबी अनुवादी। मेत्री गात गर-यका सहावता सहारा, मरीगा। भागवा प्रदशका शिवा एक गंबद्रव्य । -- कर्या - पु अदद करना !- पृत् प्र मित्र, साथी। - करव-प॰ हे 'वरावार र सहायक-प शि विशासना करमेशाना सहस्राती अधीनवार्वे काम करमेवाका । ~मदी-स्ती वह नही की किसी वही बड़ीयें किसली को । - संवाहरू-व वह व्यक्ति की दिसी संपादकती गंतातक दार्वने सहा-बसा हैला हो। लक्षायता – ली । [र्स] नाथ मैती; बार। दिव में नी । मद्रायस्य – ५० मि॰ । साथ वैदी। यात्र १ सद्रायम-५० विंगी साथ देवा। साथ जावा । सहायबाम(बस)-(व॰ वि०) विमद्रे विथ हो। विमे राहायता मास हो । सद्वाची(बिन्न)-वि र्शिनो शांच बातेशामाः नतुरायन का सेपाला । सङ्खार-५ शहना, बरदायन धरना। महनशीवना। (मं॰) वायदा पेटा गरामलय । महारमा १-स कि नश्य करना-भूस मेर ध्याम शक्षारी -शनाबन्ध विकासती रेगा भेदालमा। स्वास **427RLE** महारा-५ मरीलाः घरडा भागमा देश । सद्दर्शाच-विश् विश्वे मोरीन, रोगरदिन १ महार्थ-५ [मं] अतुर्विद्ध विषयः ग्रह्मीयः मार्थासम विषय । ति नाताम अर्थेशकाः मधान वरश्यामा । -बारा-वि हानिकाम, समन्दारामे वद सा रहते-वाना १ महार्थ-वि मि निवेदयुद्ध । महालग-प्र• हाम वर्ष (भी): ग्रारी (रिवाहरे दिन । महाबस-त [का 'काइन] काइम न इस (धेशर थी (नेपारे नापनेश सामन) । शर्दिका सहित्रम-९ एक पूछ शीमांबन । शहिजामी#-भी हे 'महिरामी ! सहित-वि [ते] गहत दिया दुवा विका दुवा हिनदरा मुख्य । अ० साथ मदेश । - ब्रुंशक-पु मानत यायका एक बकार । सहित्रक्य-वि [त]] नदने बीव्द १ सदिना(न)-वि [बंग] व्यव बह्मेवया महनगीम : सहित्र-पु [त] महित्तुत सहबरे बना पर । महिची -- भी ४१ ग्रेंट महिन्तमः - पुरियम विदेश सहिरातिक-क्षे कियान, परिवास परिवर्गपर - रोडिस साम क्षत्रकर सहिताओं - गाया - १ mfemmi-go to factive + महिर-५ [त] वर्तेत्र र शक्तिमा-विक वि विकासिशमा करवर व । इ रिका

सबका-स्री [सं•] दीगर १ सर्वकी-की [प्रं+] क्यु होमर। सर्वश (शस्)-व [सं०] पूर्वतः सव तरफ्केः सव प्रकारसेः सर्वत्र । मर्बस*-पु सर्वस्य संय कुछ। सर्वाग-प्र [सं] सारा शरीर। सन नेपांगः संपून लंश, भवपकः शिव। — स्वय-प शिव। -संवर-वि विसक्षे सब भंग संदर ही बहुत संदर। सर्वागिक-वि॰ [सं] जी सुप अंगोंके किए ही (आपू वणी । सर्वागीण-वि॰ [सं] एव अंगोर्थ क्याप्त बोनेवाकाः सब नेदर्गिसि संबंध रखनेवाका । सर्वोत-पु (सं) इर पदका वत । - कृत्-वि सवका वंत करमेवाका । सर्वासक-वि [मं] सरका शंत करवेवाला । मर्वाहरस्थ-वि [सं] को सबद्धे भेदर हो। सर्वोत्तरात्मा(स्मन्)-५ [सं] १वर । सर्वांतवांमी(मिन्)-पु [सं] रंबर। सर्वास्य-प (सं०) चारी चरधोमें समान अस्वाधारवाका पच । सर्वाध-प्र [सं] बाराद्य । नि सबको देखनेवाका । सर्वाक्षी-को॰ [मं] हुद्री पास । सर्वादय-प्र (सं) पारा । सर्वाजीव-वि (सं] सब्बो नोविका वेनेवाका । सर्वाभी-बी [सं] पार्वती दुर्गा। सर्वोतिय-वि [सं] सब्दा आविष्य करनेवाका, नेद मानदार । सर्वातिशायी(विन्)-वि [सं] सबसे का वानेवाका। सर्वातीचपरिवर-प [सं] शिव । सर्वातमा(ध्मन्)-५ (सं] समस्त, संपूर्ण विश्वक्षा भारमा जन्म दिवा क्रिय जर्दत । सर्वोदश-वि॰ [सं] बीरॉके स्टस्स । सर्वाधिक-वि [सं] स्वते क्या हमा । सर्वाधिकार-पु [सं] पूरा अधितपारा शक्ता शिरी-क्षण करनेका अधिकार । सवाधिकारी(रिम्)-इ [सं] सारे अविकार रखने-नामा। शासका गिरीक्षका व्यथस । सर्वाचिपच्य~द [नं] वह क्षानिपत्व वा प्रमुखा की सनपर हो। सर्वोप्पक्ष-५ [सं] सम्बा द्वासन निरीक्षण करते **9797 3** सर्वानुकारियी-को [मं] शाकपणी। सर्पोतुकारी(रिम्)-रि [सं] सनका जनुकान, शकुक करमेवाका । सर्वोतुम्-वि [सं] सबक्षे अनुमृति करनेवासा । सर्वानुभृति - वी [सं] ब्यापक मनुभृति। इवेश विवृता । 🖫 रस नामके दो वर्षतः। सर्वोच-द्र [सं] सर तरहवा काण प्रार्थे। -अञ्चरः -मोबी(बिय)-वि दे 'सर्वातीम'। सर्वाचीन-वि [सं•] दर तरदका साथ-परार्व आये

गता । सर्वोत्य−वि॰ [सं] वर्णतः शिक्षः। सर्वावरख-पु॰ [सं] मोध । सर्वाभिम-५ [सं] एक दुशः। सर्वामियांकी(किन्)-वि [सं] सनपर एक करने-मुख्या । सर्वामिसंघक-वि , पु [मं०] सब्दो बोचा हैनेवाका । सर्वामिसंधी(चिन्)-वि [सं•] सक्ती वीका देनवाका बोंगीः परनिवक । प सनकी मिदा करनेवाका । सर्वामिसार-पु [तं] पूरी हेनादे साथ बाह्यमन वा संदर्भाषा । सर्वोमाख-पु [सं] पढ परिवार, घरमें रहनेवाने मौकर मादि सब स्रोग। सर्वायनी-सी [सं•] सके मिसेश। सर्वावस-वि [चं] पूर्वतः श्रीदेका बना प्रभा । सर्वोपुष−दु[सं] द्विद। सर्वारच्यक~दि [र्स] सिर्फ वंगकी भीने साकर रहते सर्वार्थ- दु (सं॰) सारे एक मारे विवया एक सबसे। ─क्टा(र्ग्य)-प्र सद की बोका निर्माण करनेवाला । - क्रमक-वि धमी विषयोंमें दह ! - वितक-तु सवका निरीक्षण करनेवाका । -साधक-वि हे 'सर्वार्थमावन । ≕साचन∽वि सरकुछ पूरा करनेदाका। पुश्वकुछ धिक करनेका साथन ।-साधिका-सो÷ दगा । -सिद्ध-वि॰ विसक्ते सारे प्रदेश पूर्ण हो गर्ने हों। प्र गीतम इक ।-सिक्टि-की छारे वहेरमाँकी पृष्टि । प्र एक देववर्ग (बै०)। सर्वार्धानुसाधियी नहीं [एं॰] बुर्ता। सर्वाकोककर-पुर्धि] यह तरहरी समावि। मर्वावसर−५ (संीमर्कराजि। मर्वोबस्न-१ (सं) सूर्वेदी एक दिएए। सर्वादास सर्वादासी(मिन्)-वि [मृं॰] त्रिमुद्धा सुव क्गद निवास हो। सर्वोद्यय−९० [र्ग] सक्दा वासप नागछ शिव। सर्वोद्यी(शिक्)-वि [सं•] सर्वमहो । सर्वोद्य-९ [तं] सर तरहकी योजे बाला। सर्वोद्यय-वि [सं] सम्बद्धे आमन टेमेनाका। प्रक्रिय। सर्वास्तिवाद-इ [र्च] समस्य वस्तुओंकी सर्वाची वास्तव मानमा (वैमाविक वीक चिक्रतिके चार महोसेसे यक जो गीनमपुत्र राहरू द्वारा मदर्शित माना जाता है)। सर्वारिसवादी(दिन्)-वि 9 [4] Beiftagnat भनुवासी । सर्वोद्ध-वि [मे] सव इविवारींमें छैन । सर्वोद्धाः न्सो [सं॰] सील्ड क्या? विवोमें रक (त्री)। सर्विम-की [बं] नीस्री। सेवा। सर्वीय-वि+ [सं-] सबसे सर्वत रखनेवाकाः सबक्रे क्रिय क्यशंका । सर्वे - इ [थं] जमीनकी पैनाइका चैनाइकहा महक्ता। सर्वेयर-इ [अ] अमीनकी पैगारस करनेवाका अमीन। मर्वेश सर्वेश्वर~प [सं•] सब्दा स्थानी, माक्रिका

सहोटस-प सि । सनिवाँकी वर्णन्या (वो दमी-दमी

एक भावि। सहिष्णता - सी , सहिष्णुःव - पु॰ (सं॰) सहमधीक्या, तितिकाः। समा 1 सदी-वि•वे 'मुडोड'। सी इस्ताझरा ≉ सती। व• निश्चपर्वद ! -सद्धामत-वि नीरीम, स्वस्थः दीव-रक्षिकः निराक्तः। सहीका-पु॰ [ब] पुरवकः मासिकादि पत्र रिशाकाः वर्ममंत्रा पत्र, विद्वी । -(क्षय)मासमानी-प १०-दामी कितान रैक्टफरच चर्मधेन। सक्षीक्ष-वि [ल] स्वरवः वीपरवितः ठीकः, बुरस्तः पूराः भनंत्र । स्त्री बरतकत निद्धामः क्षत्रीकः वद वदीस बिसका प्रमाण पर्यतः मान्य हो। वह पुस्तक जिसमें सही इदीसें किसी थें। ~सकामत−कि दे 'सदीस्कामत'। -सास्तिम्-वि पूरा क्वोंका त्यो। सकी-सकामत । सद्दीहरू अञ्चल-वि े[ल] विस्त्यी नक दुवस्त हो ! सहीइधनसब-वि [अ] विस्का नसव (इक) नियोंच की। सङ्गीहकसिजाल-वि (अ) श्वरवः विस्ता निवाय क्षवस्त की । सर्वे -- व सामने, सम्मद्धः तरफ कोर । सहरि-५ (सं०) स्वं । सी० १व्वोः अम्ब । सहस्रत−स्रो [थ+] नरमीः आसानी । सहस्थियत – स्रो [ब] हे 'छहक्त'। सहरव-वि [चं] कोमकविष्ठः वयाका समाः समाः बारः प्रसम्भनाः रसिकः च विद्वानः स्वक्तिः नव को ग्रंथ पहचारीः रसका अनुसर करनेवाका व्यक्ति । सद्भवस्ता—को सिंदिवातता करणाः भिच्छी कोस क्ताः रसङ्गा । [सं] संदिग्य आपश्चित्रनका प्रक सबस्थेच-वि नापश्चित्रनक धाव नरावं। মইতা−য় বানৰ ঘাৰণা सहेबना - स कि॰ सैमाकनाः बॉननाः कोई चीन सचतः द्यावमान करके सीमना । सहेदक-प वे 'सहेद'। सहेत १ - प्रमान्त्रेमिकाके मिलनेका मिश्रिय स्वाम संबेतस्थक । सदेत-नि [सं] कार्यनुष्य मुख्यिनुष्य । व देतुसदित । महेतक-वि सि स्वारत गीरदेश्य। सदस-वि [यं+] शीहानुस्त्र कापरवाद । † प्र अग्री-वारको अधामीछै नेगार आदिके रूपमें मिलनेक्ली सदावता (सहेकरी+-की सबी सहेकी। सहेकी-सी साथ संग रहनेगाओं बी: सजी लाकिनः बासी, सेनिका। सदैपा~प सहते बरवारत दरमेशालाः * सहाबद मददवार (सद्दोक्ति-की [सं] साथ गोकना। यह नर्गाकंद्रस

वंगसे वनित दिया बाय।

बनके साथ बला दी जाती है)। साहोब-वि सि जो बोरीके शब्दे साथ पहला गया हो । च मेना चीरा नारक प्रकारके पत्रीमेंसे एक (बी विवाहके पर्वके गर्रसे करपत हुआ हो) । श्रात्रीरख~वि० सि०ी सहया । महौतक−वि [सं•] दे॰ 'समामीदक'। क्षाक्रीबर-पि॰ सि] समा, यक मातासे करवदा पक बैसा। प्रसमा मार्दे। सारोपसा -की॰ सि ी अपनाका एक प्रकार (सा)। सहोर-व सथ चंदा विहोर, शक्ति । रि सि॰। च्चम वडिवा। सक्रोधक~व सि ी विष्ठरता शैरातकः। सळ-वि सिंशी की सदा जा सके। सहन करनेमें समर्थाः सदानका करनेमें समर्था खरिक्याओः प्रिय समयर । **च्याहिकोगीः अस्टोग्दः स्हादताः स्पन्नस्ता।** -क्मै(क)-प्रस्थता। -धास्मिनी-को॰ वर्गा। सद्यारमञ्ज-न्दी (सं•) कावेरी नदी। साक्षाक्रि-प सि । बंबई प्रांतकी एक प्रवेतनीयी की समुद्रवरके समीप रिषद है। सक-प्री चि] पर्वतः। सञ्च-पु कि] प्र-प्रसामनहा सहस्-म [ध] भूकते, पकतीते । सार्वे पुर स्वामी, माठिका ईमरा पतिः सरक्रमान पञ्चेर । साँकड-सा संबोद सीका पैरका एट गहना साँका। सर्विता-त वैरका यह गहना । सांकविक-वि [सं] कार करवेमें कुछल। सोक्यम-पुर्मि] बार्ताकाप १ साँबर=-प्र संब्द कड़ । सी पंत्रीर, होक्छ । वि **ऐक्**रा तंगा क**रपुष्ट** । साँकरा-+<u>१</u> कट-'साँकरेकी शौकरन सम्मन होत वोरै '−रामचंद्रिकाः । संबद्धाः । दि तंगा -सोकरिक-वि सि] वर्षस्कर । सांक्ये-प [मं] मिलम मिलावर संबरता। सांक्स-वि [तं] चोइनेते वहा हुना । सर्वेदसी-मी श्रेषका नेनीए। मांकदियक-वि [र्स] करानाप्रपूर्ण करवतापर आवृत । सांकाइय-प [सं] (बनक्के मार्र) असम्बद्धी राज सांकास्या−की [सं•] दे 'संकारक'। साँकाङ्की-सी यंबाइमी। सब्दिक-वि [धं] स्मित एरंकी स्टेतकामाः स्वकार सिक्ट । सोकेस-प [सं] उदराय, निमय (प्रेमिका भारिके साथ) । सांक्रमिक-वि [सं] संक्रमच करतेवाका संसामक। वहाँ मंग सहित जादि परीका मनीय करते हुए एक ही सांबोपिक-वि [सं] लेक्स संदुष्टित छोटा किया कामठे साथ अध्य कितनी की मार्तीका दीना गर्गीरकर धवा । सांदय-वि [र्थ] संस्वा-संस्थाः गतना बरनेवासाः सर्वोत्तम-सम्हाम बक्रवर्ती राजाः समादः शिवः वैदयर । सर्वोत्तम-वि॰ [सं॰] सब्धे बच्छा, सर्वेश्रह । सर्वापकारी(रिम्)-विकृ [संक] सबका वयकारः शहावना करनेवास । सर्वोदाधि-मी॰ (एं॰) सर्वमामाम ग्रम । सर्वीच-प [मंग] सर्वागपूर्ण सेवाइ देश 'सर्वाभिसार'इ क्ट सरहका सम् । सर्वोपध-वि [मं॰] जिसमें सब सरहकी बोववियों हों। स्त्री सन्द शरहकी औषशिक्षीं। मर्वीयधि-मी० मि०) दम बदी-परिवेका एक वर्षः सर तरहको ओएनियाँ। सहायः -प॰ दे॰ 'सर्पप'। मर्चय-प [मं] भरमों। एक बहुत कारी शील (शरसींके मरापर): एक दिया ≔कोट~य यस विभेका दशा ~क्ष्य~पु॰ सरमोका काना । -तेन -स्मह-प् **छरमीदा नेत ।- नाल-भी धरसीदा साग :- शाक-**प्र एक स्थाना जामेशका साग । सर्वपक-प्रश्नि] एक क्रव्यका नाव । मर्पपदी-भी [सं] यह विपन्न। बीका यह तरहड़ा वर्षशेष । मप्पान्ती [तं] सपर मर्सी। सर्पपारम-५ (सं) एक मतुर की बानग्रह माना मवा है। स्प विक-५० [मं] यक मार्गतक विपेका कीना (समत)। स्परिका-तो [मं] एक क्रियरीन (रसर्गे बाने क्रियन बाद है)। एक विचला बोड़ा सर्वविका मनुरिका शेवका एक भंद । सपयी-नी [तं] रांशनिकाः वद भीवविः छप्नेर सरवीः पक तरहका वर्मरीय **।** सम्बोनमा १० धरमा । सर्जधा भोग-प्रकाय सम्बद्धाः सक-कि सिहुक्त शिवका तह । प्र शि] वाती बना कृता। सरन दश !-पन्न-पुरु दारपीनी ! महर्द-सा॰ बोहा बोहदा गाँद । सम्बद्धां - वि [से] सामाम विश्वीतामा । रस्तर्≉=िंद समग्र पुरा, कर्यादेन-'न्यन दपना मेना कारी हवी जात है। सम्बाध-४० हे अन्तम्। सलगार्ग-लो सबर्द धीवदा वैषा समस्बद्ध-रि [मं] जाविम देशह निया हुमा (क.री) । सहज्ञ-५ पत्राती संपद्धा गानी । ह वि संव्यालकः । सलामा-दुर्दे शक्यम' ह समज्ञ-वि [ले॰] प्रपादम कवासीमा विशव । शमटक-पुर [मं] भावतिका नाग । सरसामन-सी दे मतना । समारार-म कि मरना किया गामा नामा विमी क्षिपे (महरी लाहि) वैद्रापा कना रह वरवा र सम्बद्ध=ि [⊭] सनीय सावका वापीस । द्रांशीय समाकेदे भोग, दुर्ग १-मे-पुराने समानेसे ।

सन्दर्भ प्रिकृतिहरूना। कीच प्रत्या धीन विकार

इनकार (करना)। सुरू -हो आमा-हम हो कमारीय भागा । ससम०-१० दे० 'सक्य' ! सममा-पु॰ सीने-पॉरीका गोलारेने कोटा इच हा बादका । सक्रवट-सा॰ दे॰ 'हिन्दर'। सस्चम-पुण स्ररिषम् । समञ्जाल-स्वी [बन] शुराब्धे श्रमतः दिनी भोतने पर आता, किसी पातको छोए देसा। माना 1-सुव-(व) मुमाना-गठियाँ दशा हरा महा दश्या। संसमार-पुर पह सास दरहदी बारहा शंभागा। सक्सकामा-म कि मरसराहर, सुबनी होता हारते द्दीमा। बीव्रीका रेंगला, देउने वक क्यबध्रयीय शिप्त कमशीर वा दीका पत्र वाला। स॰ कि॰ प्रश्नावा श्वकासाः विशी काममें कली करना । **भक्तमकाहट~न्दी 'स≠**न्तव' भारतम् सन्तन्त्रदेश द्याः सुबसी। गुरगुरी । सक्ष्मी-सी॰ एड १४, रूप । म्लद्रज-माँ॰ सक्तेमे पत्ती । सका-ली॰ [ल] भीवनके नियं हवाबी वसार नियंबय ।-(व) भाग-सी॰ बाम शावत वह नीह शिसमें हर कारमी निर्मावत समन्त नान ! सब्दाई-सी॰ भातुनिधित पटनी और धेरी हो में। दिन गुरुकों। साममेदी किया या अपद्रशः मुक्ते । मुक् फेरमा-(बोमर्ने) सरमा दश क्यामा बीस वेडिन **एसार्व गरम करके मॉ**लमें क्यांका ! श्रकाक≠−ती श्रक्तका ग्रनर्मः तीरा नाम र सरगण्यां-अरु कि समारे वा समारे देखे चेले मिद्यान मनाना । समामीत-को दे शिकामीत है ससाव-को [स] सवान। ससातीन-द [ल॰] 'तुसवल'दा वर्ड• f शमाद−त [शं 'मेनेश'] दर्भ दूस दर सार्विश ते' मिरके बादिके योगमे देवार किया बाहेर हा हुए सार्थ बक्र भीषा जिलके पश्च जराईक रूपमें दाने जारे हैं। सकाबत-सी [ब] बढीरता। जनुनित विश्वा बीरताः शराव । -वंश-५ समक्तान रणानीय ओर्गे श्रीश अप्रगरीको हो जानेवान्त एह का^{न्द्र}ी समाम-पु [ल] समस्यार त्रणाम पंतीर प्रवाहरे अन्य कानेवानेका मिरको काबे बाबिने किए बारे केरहे हुद गुकाम करियम करणा। वह भाग जिल्ली कारवाहै शुक्रका परित्र हो । - जर्मक-मी ग्रामर म्लप्त है सू मकामन रहे। नावप सनामन परिचय । -क्रम्बम् तुम गणामत रही, तुमक्त समामनी को (मुन्तकम यक बूलरेको जानः यदी बहबर अबस्थार काने है। दूनरा व्यक्ति अनायो वालेनुक रशकाम ग्रुवस्य भी समादरी थी बहता है) र -बराई-की वर शहा का करता नै बम्बाड्याने दिस्हि सम्बद्धि देन है हिमा है। -वयास-तु नात्रभीतः मैंबसी वा स्पत्री क्राप्टरी -कानवामा-सम्बद्धारः श्राप्ताः ॥ (दिनारो)

सास्यायन-मॉपरी विचारः विशेष बरनेवाला । पु॰ छ वर्द्धनीमैन वस जिल के कर्ता बारिस करि में (शममें मकति ही सारे दिशका मुख और पुरुष हुशमात्र माना गया है। यह ईश्वरहो सहिका रमयिया और संयोक्त न रनीकार कर आस्याके दीप भी शेस सरवींसे पार्यव्यक्षे सम्बक्त प्रानकी ही मीखका सामन यानता है)। इस वर्शनको अनुवादी। शिव । -प्रसाद -सुएय-९ शिव। सौत्यायन-पु [र्थ•] एक मापार्व (इ र्थाने सोबनावस कामगुत्र और कानेदर्दे एक्सियायन जाहानदी रचना हो)। सीग-वि [सं] अंगबुध्धः प्रत्येक व्यवस्थे पुत्रः १३३ भंगीसे तुष्त । -स्क्रानि-वि॰ इति, व्या इशा । -ख-वि॰ वाजीसे बदा प्रजा, देशपूर्ण । साँग-सी बरधी। कुर्वेमें बामीका शीता श्रासनेका एक भी मारा भारी बीग्र उठानेबा बंदा। सांगतिष्ठ-दि॰ [सं] संगठि-संबंधीः सामाविष्ठ । ५० मविश्वा मजनशा वह वी किमी कारवारक सिकसिक्यें भाषा हो । स्रोगम-पु॰ [सं] मक, बोग, ग्रेहव । साँगरीर्ग-स्रो का रंग। साँगी-मो॰ वरफ्री-'यते निसायर भावस गाँगी। वहि सर भिविषाक वर साँगी -शमा ; जुरशर वाहीशमक नेटमेका स्थानः चीडें स्टानके किए द∉में मीचे कवी हर्दे आधी । संग्रिश-स्त्री [सं] ग्रेमः, बुँक्भी । सार्तीयार-वि [सं] भंगी, वर्शमाँ और वर्शनवरीं है ब्रक्त अंगॉमे उक्त, पूर्व । सांग्रहिक-(२० [सं०] संघर करवेगाना, मंत्रहरुशक । सांग्रामिक-दि॰ [मं] प्रदर्शकी शीविक। इ हैना-बन । -गुम-प्रशासक श्रीकेक ग्रुप ! -परिच्छक-प्र शब्दे वपदरण। स्तीमाटिका-नी [रं] बूटी, हरमी। मंगीम, मैहना क्षीकाः शक् पेत्र । शोपाल-५ [त्रं•] रक वृथ समृद्ध (१) । सोपादिक-वि [मं] दल-पंदी। माराय्वक दमन कारक । यु अस्ममदावति शीवहर्ग महान । स्रोधिक-दि [त] (मिष्ठमी बार्टिक) शंव-नंश्वी । साविश-विश्वदेश तत्त्व । त मधी वात । सींचर ममक- द शीवर्यन हवस । स्वित्रार-विश् मानवारी । साँचा-पुबर दीना बिगमें बोर्र वीली बीब बरवर रात प्रकारी चीत दानने हैं। धीरा मनूना करते नारि पुर गम साहि छापनेवा सदबीया हम्या रे व दिन स्था रे -(चे)में बना-हरीब तंतर। सांबारिक-दि [म] अंपम । सामिया-५ गाँवा क्यानेवाच्या शरीनेमें कर्ष थीव दाहरेशना । सांचितान-ति सवा-देश सनेही क्षिकी देशक बीहरू नाम - दिनद । सर्विधी—पु बद्ध तरहदा पात्र ३ भी० छल्लेका एव बकार ह जिसमें बन्धियों केंद्रे श्मी बाली है है

सामित-पुर सि निर्देशका दिन रेक्शना की निराह म हो । साम १ - औ॰ मेप्पा, सार्थकात्र । सामिलारे-पुरु वक इतने दिनमामें मह वानेशनी महिता र्मोद्या−५० १० भारा । साँदरी-न्यी॰ मंदिरमें देवमृतिके सामने धीक बरने भेनी की वानेवाली कुलोबी संवादर (वह संवादर दिनेदार विनुपद्यमें दासकी हो को कानी है)। साँद-का॰ एकी कीका एकीची चीतक राजा रख पुसर्मेना १ मॉरा-प पंता कि। माँटिया = - पु । त्रामी चीरने बच्चा । साँग्री-या काडी गरी: बीमरी काची देश । देश बोहा काला, प्रतिदार । साँट-व साँधा देखा अब वीरनेका बंद्या गरबंदा मेन बीग । -गाँठ-ली हेक-बेका गुत्र संबंध द्राविनीय, सार्थिया । साँटवार -श॰ कि॰ वढरे रहना (साँडि माँडी=-बी वृंबी, यह 'बारब सर्घे नेरध माहि माहि शहि बोर - व । सांह-विश् मि] कटलक, त्री वरिया न दिया गया है)। मार-१ वतकार रचतिने दागकर होता द्रव्य करना कर प्रकार या गोधा भी दर्शिया संबद्ध प्राप्त निवाने है निव पाना गया हो । दिन शक्तिशानी ओटा-वाजा नामारा र्थरः । ग॰~की सरद्व प्रमत्ता-कावाणे और नेक्सीन यमन विरमा । -वी शरह स्वरमा-थोरमे शिहाना । सार्विती-की (तेव पातराही) केंगी। साँबा-४ निर्नियसे बानिया १६ जेत विश्वध हैन दवादे दाम भागा है। साँविया-इ हेर रुपाररामा बैटा श्रीवर्गका सवार । शांत-व्यक्ति देश 'दानि' सि] संत्रका प्रसन्त । व्यक्तिक-दि० (वे०) नंतरि प्रशास बरमेशामा । श्रीनप्रम-प्र• [तं] एड एएइडा एव वा तप्र ! न्यू पर्याः व है 'लांतपत' । क्षतीलक-वि विशे संबद या समय पानसा गीना । श्रोताबिक-दि [र्ग•] चैन्मेनाचा (ऐन मुक्क); संगाम-गरेकी। संशास ब्रध्य-वर्शनी १ स्रोताविक-दि (शे॰) शह पर्देशनेशाया तम शमीदे सम्बंध बह देनेशवा ह विधिये को सिक्काली अरोप्य-पुर [बोर] देर 'लोस्थ १ -बाद-पु दारम इंपानेवानी वान ह सर्विष्य-पु (अ०) दारण नेपाला दगाया द्वर दरनेया कालका शह बहतेरा है धारत क्षीरतास तरा प्रथम शांभिमा-बी० [त] १० कांस्वर । सारियम-दिन दिन्। तर दिश देगा दाल देवता हमा, भाषांत्र । सांबरी-क्षी+ रे नवार ।

भीदित रहमा। सकामती-को

होता। -है-शव भावा छोत्रः सफ कीविये।

नित्य होने सुर्वकालमें निथमान होनको बात कही वनी हो। -स-मगबत्हपासं सुदान्हे फन्कसे (मुस्बमान सियाँ अध्या बाद कहनेके पहले मंगळकी जावनासे कहती ई- सकामतीसे बसके चार क्ये हैं।") सकामी-ली कि] स्लाम इस्मेदी रस्मः इविवारीकी क्काकर सकाम करना। क्षापी या बंबुक्टीकी बाद की राजाओं वह अविकारियों जाविक सम्मानार्थ दायी बाब (देना हे-मा) वह वन की बुल्हे वा दुरुदिनकी सकामकी रस्ममें दिवा जावा मजरामा। मेंट बाक ! मि मुक्तनेवाका दालवाँ ('कार्रानसकी सकानी कर वी')। प्राथी सकाम करनेवाका । सुरु -उतादना-किसीके सम्मानार्व रोपों वर वंद कीकी बाद दायना । सस्रारी∽पुष्कविदिवाः सकासत-को [म] भाषाका सत्त प्रवाहतुक, हिट धन्दावनीसे रहित होनाः सृदुताः साहमीः सफाई । सस्ताह्य-सी [म] सच्छार, महार्थः मंत्रणः महावराः रामा + सुनद मेक-'सिशस्त्री एकाइ राधिये ती शत मको है - मूक्य । -कार-विश्वकाध देनेवाका मंत्रजा-में सरिमक्ति दोनेवासा । सम्राहियत-स्रो [म] यहाई। धीम्बताः गरमी । ससाही-पु सकार परामग्री देमेनाका (क.) । सम्माद्वीयत~सी [भ] दे 'सलाहिबट'। सर्किंग-वि [सं॰] समान विद्वति युद्ध । सर्कियी(गिन्)-वि [सं] वेदल विद्व भारण करने बाला भाडेंबरी डॉमी ! सक्ति≉−सी विद्याः सक्ति। • न्यो सरिता नदी। सकित-पु [र्न-] बका वर्षाका बका वर्षाः अनु एक तरहरी बाहुर एक बड़ी संस्थान एक बूका ककरावान नयत्र। -क्रमे(म्)-पु दिनृतर्यम् । -क्रुंतक-पु+ रीनाक। —कुक्कुक्र-पुषक् अकीव पक्षी सुर्यादी। -किया-सी पिनृतर्पनः धन-सान । -शर्गरी-सी पत्या वरा । नगुरु-दि असुपूर्वः। – सर्-पु॰ बस्रवरः।

—श्र⊸वि सक्यें प्रत्यक्ष । पु क्यतः जकीय जीदः थींचा । ∽क्रन्म (नृ) ~ पुक्रमक । − सन्मा (न्मन्) ~ विदा बोमाः (किसीब्धे) उस्तादी वहाई वादि मान केना । वि• वस्त्री उत्पन्न । -व्-धर-पुनादसः। -वासी (किसीको)-देना-विदा करनाः विसी वन्ने, विशेषकर (यिन्)-वि वनी बरमानेवासा। −मिघि-पु समुद्रः भेद्रेव सदसुरका मिकनेद्र किए शेदर धुनामा । -क्षेत्रा-सकामका बबाव देना मिकना नैद कर देना। विदा एक वृत्त । - नियाल-पु॰ वानी धरसना । - नियेक-पु॰ बक्का सिंवन !-पति-पु॰ वश्य ! -प्रिय-पु श्यूर । ससामत-स्री [भ] रचान रक्षाः कुशुक्रः वि सुरक्षितः -सब-पु वह या वहप्राधनका भया -भर-पु इतिक तारू । − सुक्(च्)−पुनारक । ∽धानि−वि स्वरभाषीक्तः असंब, सावितः। अ सकुत्रक सदी-बरुसे कराज । पुत्रह्मा बरूसे कराज परार्व । -रय-सन्नामतः - रवी-की बीचके रास्तं मध्यमा वृत्तिका सामयया विकायतमे गुवर करना । --शै-वि॰ बीचके वु अधकी पारा प्रवाह । ~राज्ञ च्यु दे 'सक्तिकपति'। रास्तपर बसमे अतिने बचनेवाला क्रियायतसे गुजर ~राधि−पु समुद्रः जकाशवः –वाल्ल-पु• सक्तिस मामक बास ! -स्तंभी(भिन्)-वि जकका स्तंमन करनेवाता । भूक -रहुमा-कादम रहना, वर्गा रहनाः करनेवाका । ~स्यक्षचर-वि चक्त और स्वत दोनों रक्षाः अग्रकः तंतुक्तीः चीविध अगद रहनेवाला, कमयवारी । पु थेला भीव । सक्तिकोडिकि –सी [मं] बस्रोधिक, तर्पम । होना विदर्गा (मुसक कि) । मुक् -का काम पीमा-सक्किकाकर-प्र [सं] वर्ग बक्याश्चिः समद्र । स्वारम्बद्धामनका प्याचा पीना । -बाइमा-हुन्छल सक्किकाचिप−दु[सं] दरून। ममानाः। ∽पदमा−वद् बुवा पदना विसये लुदाके सक्किकार्णेब−पु॰ [सं] समुद्र । सिक्सर्थी(चिन्)-वि [तं] विपारित प्यासा । सलिकाकच-द्र [सं•] सहर । सक्किशासन-वि [श्रं] बकमानपर रहमेवाना । सिक्काहाय~५ (चं॰) ताकावः ताक। सक्रिकाद्वार-वि [सं] वक प्रेक्ट रहनेशका। प्र श्रक पीकर रहना। सस्सिद्ध – पु [सं+] वस्य । सक्किपन-पु [सं] नवनामित्र । सक्रिकेकर−दि[सं]सक्षर। पुत्रकोन बीदा सक्रिकेश-व (संग्री बस्त्र । सक्तिकेशम-वि [सं] अवने सोवेदका ! सक्तिक्रकर-पु (एं॰) बरम । सक्किकोज्ञन-प [मं॰] रूमकः सकर्मे उत्पन्न वस्तु, बॉबा शादि। अधि बक्रमें उत्पद्ध । सक्तिकोपनीनी(चिन्)-वि [छं] पानीसे नीविद्य श्राप्त करनेवासा । प्र यत्रवा । शक्तिकोपञ्च-पु [शं] बल्द्वावन । सक्तिका(कम्)-वि [मं] अत्रमें रहनेवाला। प्र श्री जींका स**क्षिकीद्**न−पु• [तुं] मात्र । सम्बोद्ध्य-पु [म] इर भोवको धंगछे और वशस्त्राम रखनेकी दुक्ति हंग धकरा ग्रमा बीम्पता सम्बद्धाः पित्रता । -दार -मंद-वि शिममें सकीका हो, सकर सस्तीपर-पु [बं 'स्किपर'] निर्फ पेडेको बक्नवाला इकत जुला रेककी परिवेदि नाचे क्रियामा जानेवाका श्रक्तशीका परशाः पश्चिमेशी हाकः ।

सकीव∼शी० [ल] नृती∤

मानोमें दुई खंदी कहादवाँ ।

ससीबी-वि सकोक्दा। पुरसारे। -श्रीप-सी

वस्त्राक्रमवर कशिकार करनेके किए वैसारयों और सुसक

सर्वाम-वि [ब] सरक विनोधा सेक, दुवस्या सरवा

1994 साँधा!-पु॰ चमहा कुरतेका एक की बार । साँधी-को करपेने बगनेवाकी एक स्थानी तामेके सतीका नीचे उत्पर होगा । र्मीतः साँदा! −५ दे॰ 'ठेंग्ररः सारीपनि-प [सं] पद मुनि को कृष्ण और वकरामके गुरु में (बहा बाता है कि इनके प्रबद्धी पंत्रजन नामक एक दानवने पद्धवद्भ प्रकटे अंतर रखा वा भीट कव्यने गुक्दविजाने क्यमें क्स बाजनकी मारकर जनके पत्रकी कीयमा मा) । सार्राष्ट्रक-नि [सं] तत्काक प्रत्यक्ष बोनेवाकाः प्रत्यक्षः त्तास्कासिकाः −व्याय−पु यकम्बाध विस्कापनीय पहले भीमा दश्व देखानेसे समुद्री स्मृति होनेपर विशा काता है। सांत-दि [मं] बना ठम शब्दा सोटाः एकमें सिका हुआ। इष्ट-पुष्टः व्यविद्ययः व्यव्यविद्यः प्रचंदः स्मिन्यः विकसाः क्रोमकः संदरः प्रियः। प्रारीतः अंक, अंगकः। -क्रतहस्य-वि क्रतहरूमें पश प्रभा पक्षित । -त्वस-दि मोटे जास्त्व छाडवाका। –पुष्प−पु॰ श्हेंबा। - प्रसादमेह-५० मध्मेह रीमका पर्छ भेद । - मणि-पु एक ऋदिः — सूच्र−दि जिस्का पेशाव गाडा सौर विपविषा हो। -सेंड-पुत्रमेडका पक्ष मेदः सांह मसारमेह । -स्निरब-दि गाहा और कसदार । -स्पर्श-वि वो छनेमें विपर्दिया हो। साध-वि सिंशी संवि बोक्संबंधी। वी बोक्स को । মছে≯⊸৭ বিয়াৰা ড¥ৰ ∤ साधमा •- स कि । निश्वाना स्थाना - करतक वाप क्षिर सर स्रापा '-रामा । स्थि करमाः सामनाः साममा मिकाना गुँचना- तेडिसैंड विप्रमांस सक साँचा -रामा । सोचिक-पु [सं] संधि करनेवाकाः सीविक, कुकात । सांविनिप्रहिक-पु [सं] संवि और प्रशस्त्र निवयन बरनेशका मंत्री । सांधिवेसी-क्षा [सं+] संध्वाकाकमें कुकनेवाको वेन । सांच्य-वि [सं] प्रातन्त्रारू वा संध्या-संबंधी । -<u>कसमा</u>-को धामको दुक्नेवाका वीवा वा केक। ~भोजन~प म्यासः। साँप-इ पेरके वक रेंगरेबाका यक प्रतिक विवेका बीवा सर्प । - भारण*-प्र क्षित्र । सुरु - क्रतारमा - सॉक्स वश्र पूर करना। -क्छेबे या छात्रीपर खोश्ना--वर्त व्यानुक दोनाः भारी सरमा पहुँचना । –का पाँच देखना-असंबद वातके किय प्रवतन करना। -का यचा−रह, जाकिस । ∽की ठरद्र ससीय पक्रदसा— बरा भी म हिकना ! --ब्री तरह फन आह या मार्ड्स रह सामा--वस म चत्रमा अवस्तरी विश्वक होना। -क्रीसमा-मंत्र द्वारा श्रीपक्षी कारनेशे रोकना । -सी सी केंचुकी झादमा या बाठवा∽शाक्रशाक्षा दोनाः भारोम-काम दरमा । -के मुँदर्मे- खतरेमें ।-क्षेत्रामा-मंत्रके रक्ते धाँप एकदमा । - छत्त्रहाशति था वसा-दिशिवाकी रिवर्ति । -कहराना-सॉक्ट्री सरह

-शा स्रोटमा-वहत स्थानक दोना । -सँघ सामां-साँच्या बारमा था बारमेसे मर जामा । -से बेसमा-बतरमारु धावमीसे मैक-मिकाप करना । सांचिक-दि सि । संपश्चित्संधी, नार्थिक। सौपव-वि॰ [सं] संपश्चिमीनीः के समस्यानीनी। सांपश्चिक-वि [एं॰] विकासमन बोरन स्थातीत करने ATMIT 1 सोपराय-वि॰ (सं॰) बढ-संबंधाः पारकीक्षकः । प्र॰ र्शनर्गः परकोकः परकोकको प्राप्तिका साचमः परनशी भीवनके संबंधमें पहलाड करणाः व्यक्तिसया संबद्धा संबद्ध-में शाब बैनेवाका व्यक्ति। सांपरायण−प्र• [सं•] वह औ परकोक के बाद (शुख्र) । श्रोपराविक-वि (सं] सुद-संबंध, बीदिका पार विका संकर्षे सदावता करनेवाका । प्र• तका तक रका – कर्य−७ यक प्रकारका व्यूचा साँपा!-प्र• सिवापा। सौपादिक-वि [सं] प्रयाबीत्कदकः। साँचिम-की सर्विमी साँदकी मादा। बीडे, बैकके दारीर परकी एक तरहकी मीरी की ब्रुटी मानी काली है 🕆 वह गाव की बरावर जीम निकास करती हो। सौंपिया-प॰ सॉक्डे रंगसे मिक्ता इका रंग। सांप्रत−नि [र्ष] बन्दुका समिता सामनिका द्रीका वर्तमामका#-छंपी। अ अनः रुख्यानः अमीः प्रवस्त रूपमें । - काक-पु वर्तमान काक। सोप्रतिक~षि (ए॰) धार्श्वनेक, वर्तमासकाक संबंदी। वप्यक्त, ठीक । स्रोप्रदायिक-वि [सं•] पर्यरा-संगी: संप्रदाय-संगी। किसी संप्रदायसे स्पन्न रखनेवाना । शांबंधिक-वि [र्स•] संवंध-विषयक, संबंध बन्द । प्र विचाइ-जम्ब धेर्वचा ऐसी बाद जी निवाह हारा धेवड कोनोंमें **होती है**: साका (१) । सांब-द्र [सं] बांबरतीसे उत्सव कृष्यका एक प्रदा धित । <u>-पुर-प्र</u> चंद्रभागान्धं तरपर रिवत एक प्राचीन नगर। –पुराष-पु एक क्यपुराम। –पुरी-सी रे 'संबद्धर'। सोबर-प संबद, वाचेवा (सं•) सौमर दिरना सीमर नमका सांबरी-सी [सं] माना जन्तरहा बाह्यरनी। सौकाधिक-धु [सं] रात्रका कुसरा नाम । सामर-पु [सं] संगर झीकसे प्राप्त करना सॉमर-पुरावपूराधेकी एक शीका है 'सांगर'। एक तरबका दिरम * संबक, पाथेव-'सॉमर सीर गाँठि को दीई'-पा सॉमकी~की [सं] रक्त क्रोत्र। सुमावना । सौमाध्य-पु (छ॰) बार्ताकाप समायन । मॉमहो - ४० सामने । सायमम-वि (सं) संवमन-संबंधी। सांबाबिक-पु [सं॰] समुद्री स्थापार करनेवाला पीत-विषयुः बागः तक्षा, सवेरा । भावरण बरना। बहुत स्थाङ्क श्रीना। ईंप्यसि बहुना । [सोतुग-वि (ए॰) प्रदन्तवी।

त्र अद्योगीरका पुषराजकात्रका जाम । - विक्रती-प० भरूपरके सम्बद्धे एक प्रतिक संस्कृतान श्रंत का कतवपर सिक्टोमें रहत है। जहाँगीरका अन्य इसके आधीर्शाहका क्रम मामकर भद्रवरमे बसका प्रकारनेका नाम कलाके सामपर ससीम रखा था। ~simil~को० तिसीमें धमनेवाकी एक तरहकी संदर्भ मुखावय जाती। संसीस-नि [ते] बोडाडीक । ल टीकापुर्वेक ।-शब गामी (मित्र)~प पक तक। सकीय-वि [भ] भागाना बनती क्रिक्ष सम्भावनीते रहित(मारा); समतन । - नामान-स्री सर्त, सुनीप मापा। --गोड्ड-न्वी॰ द्विष्ठ शुध्यावक्षीते रहित शेर **ब**हुना । सस्य-प्रदेशसम्बद्धाः ससून-९ [मं•] छोटे क्रोपश्री बीट, में बादि। सक्तमा∽वि दे 'सम्बोता'। सस्मी-मी मुक्तिका गामक साग । सस्मो-पुरे गर्भानी । सलक-1 सि] यद नारित्य। समय-वि [मं] वैलीय पशाबीस अक्त । सक्षेमधाद्वी-मी दे 'स्कीमधादी । सबेश-वि सि विशेषी, शंहीरे वक्त, संबर्ध । सहना -स॰ कि॰ बारकर बीक करना, सावना ! सरपा – मो॰ सक्रे । सस्ता १-वि विभिन्न दिस्य नगाना विद्या। सक्षोत्र-दि मिं] द साव वा पढ हो, समान क्षोत्र में रहनेवाका। लोगोंसे मुक्त । पुरु शगर। स्पर्मिवासी मागरिक । स्टक्षांद्रशा~सी [त] (रेवना माटि) के माद वती क्रीकः में रहताः मुख्या रव अकार साणेतव । ममार -भी दे 'तिसदर ! सस्रोतर 🗝 पहुनी निर्धेकाः नशीका निकितागाना । म्बलातरी-इ पहानी विशेषतः नरपीका चिकिरमक । स्कोन॰ - रि. दे ¹सभीमा । क्षामा करि नव्यवस्थाः समग्रीतः शावण्यस्यः संदर्धः चपत्र-५० सायाव सार्व । मारण पूर्विमाधी शीनेशका वस्र स्वीहार मसोतो ~९ द्यारंबन । सकादिल-वि [में] यह ही समान इक्ताः माण कान र्गा इचा । शकीमार-पर हे भगोगा । स्प्रतमत्र∽सी [अ] राज्य नाधालयः द्वरूषण अमनदारीः प्रश्च । मु - अमना - बेहना-अभिकार ब्बारिन दीनार मर्बन डॉन्ड होना ह श्वात-पुरु वृद्ध वृक्ष व्यत्स । सलक्षी-सी [री] गर्नाका हैए। सलकामनीयें-पुरु [सं] एक गीर्च । सहरूप-५ [मंग] अच्छा निशामा- बन्छा बरेश्य । सलम'-इ भी एक मैदा क्षरा वर्ग गणा। सहाद-भी दे छनात । मही-भी सर्वाद्य देश

सस्ता - प॰ नगरको कोरा । भारतिमका-स्ती॰ (अम्बद्धार) बाहराह, स्ता दार समानभक्तार (सम्बर्ध) (सहोक-प्र• (सं•) भर प्रश्न, सथन । सस्य-त देश शक्त । सर्वशा-स्रो मिन्ने रह पीता। सप-प्र॰ [सं॰] शामरस निबोध्हर निहल्या वट हार्पणा सर्वः चंद्रमाः संतनिः प्रप्तरशः बरशासा भाग्यः बकः । श्रद्धाः समगतां -का॰ है 'शीयान'। समज्ञा-सी॰ सि वे अवर्षका । सबतः सबति = न्यो हे 'सीत् । सम्बन्ध-वि [सं] श्री वछने हे साथ हो। संतरप्रवा सबध्य-वि सिंगी मरलीहा सबन-प [रं॰] सोनरप निवोद्दर निवास्त्रम स सीमरमुका पान तथा तर्पना बद्द-रनामा बत्तप रेर सीनापाताः अधिः भगुका स्व दुषः (शेरिष प्रमंतरे वशिकका एक प्रदा १४वेत्व असुका एक प्रवा शिक्त युक्त । -कर्म (क्)-त वहस्रकं तांग । न्यून-त वर्षम्याल । -क्रम-पुर यहत्त्वीमा सन्। -मुक् पु बहारम ! -संस्था-नाः वर्धतः सवनीय-वि॰ (सं॰) सीमवर्गम-संगी। -गम्-उ विवक्ता - याच- प्राप्तनात । सक्तप-ति [सं] नहरीर मृते। सवयस श्रवपरक-वि [संव] समस्वास, हमार्थः लववा(यस्)-सी [मंग] महेती नती। साता थ अवस्य राज्या वि समस्बरका सबर-प॰ हिं विकाशिय है न्यपर्ण-निक [मं] समान रंगसाः नवाम स्वसा ^{सर्वस} व्यविकाः सनाम वर्गका (भा) ह तक्त्र (शा क्ष यत्रिव माताको संवाम। माहिन्य (म्बेरिक्ने टेक्स चन्यनेवानां) । सवर्णम-त्रु [रो] विक्रोनी समाप्त शरा है (क्षेत्रे क्यें कासा (ग)। संबन्धि की [सं] नुर्देश कीर ग्रांश हिन्ती हैन सर्ग । शबर्ध-नि॰ [र्ग] बच्छे गुर्गाते तुन्त । सयहा-श्री [ले॰] विष्युत्ता निर्मोध ! मयाँग=- द र स्वांव' ! सवा-वि चतुर्वीछन्ने तुष्क (१६ वा क्ष्मी ३४)। समाई-वि अपूर्वशतुष्य एक नगा वान्यवर । म त्र शेवेदा वह बदार दिसमें मूक पत कारे वार्टर गुणा की माना की मनपुर मरेगीओ कारीत क्रांस का एक रिग । सवागी−५ श्रवणाः। मबाद्र-पु दै 'स्वाद' । सचादिकः सवादिकः -- वि रशार देनेशकः सानितः। सवामदि-द्र , मी॰ (का) 'बर्टम्स' दा मा , बार्ट वृत्त । -- उसरी-न्यी सीवनपरित सीवनपूर्ण -निगार-पुरु कृष्णेस्टः क्षत्रराज्ञांभ ।

सामगीन-वि॰ (मै॰) ग्रह-संबंधीः रूप्तुच्छतः। तु वर्त नहां माद्या रमन्यत व्यक्ति। माराधिण-पु॰ [सं॰] चीर गुरू, वा बहा। साँपक-पु॰ रह शक्ष, कोंही। मॉबरा-१ एक्स्स व्यक्ता। सवित्सर-वि [सं] दाविका मुक्त गणक व्यक्तियी पंचांय बनानेबाहाः चांद्रमास । - इस-ध सूर्य । सोबासरफ-वि॰ [सुंब] एक वर्षेपर दिवा कामैबाना (बाम) । पुरु समुद्ध, स्थोतिका । स्रोबरसरिक-दि॰ (सं॰) वार्षिकः वार्षिक वक्षनांवंशी । ह मध्यः । -धाञ्च-पुर हर मात दिवा बावेदाता बाहः । सोबस्मरी-सा॰ [मं॰] पुरुष एक शाब बाद हीनेवहरा ana i सावग्मरीय−4 [मं•] दे भांबरसर ३ साँबर! - वि साँवना । सर्विष्यताई ! – ह्यो + सर्वेशताया । साँधमा-वि द्याम वर्णका । यु क्रापः वति वेशी । -- यन - इ. इयामदा । साँविभिना-विश्व स्थाम रंगदा । पु कुश्ता पतिः भगी । साँबाँ-पुचेना वैशा रह करण । मांवारिक-दि (मं॰) (शेक्रपाक्रमें) प्रथतित व्यवहारमें मानेवाकाः विवाहमस्त । ए मैकाविक । साविध-५ (ते) ४६मन्द्र । सोपत्तिह-विश् (सं) शासद, शिष्टा हे सांबपबद्वारिक-वि [मं] प्रथकित यी व्यवद्वारमें जाता हो । इ. मार्सने स्वापार करनर ना व्यक्ति । सोश-विश् [मं] विन्नीवास्त । मोग्नविश्व-वि भि । मंदिरका शनरनाय, मंदेव यहने-बाबा । प्र संदिग्द मा राज्यमान काम ! सॉस-भी नह या मेहने भेरर खीपी और पाहर तिकामी वानेवामी हवा। ग्रंबाहरा प्रतस्ता दनाः हवा निवनमेदा घेर । स॰ ~श्रेंद्राकी भेतर बाहरकी बाहर इद्र ज्याना न्यवंशे श्राप्य श्रह काता ३ ~उरम्बसा-होदमा माँस पुरुषा । - उद्दरा-रम रक्ता । - उसरी चलमा-अभावशृष्ट्य देखा । -- क्षणरुको चहना-नामत्र-एल दीना । - कपर-मीचे हीमा - बरून व्यान दीना। सोम् रहता। च्या सुमार् होना-६ गन्न शित्रमः। -श्रीबदा-शासे सॉम हेशा दम सावना !-शिनवा-भागप्रमानुकी गा.म रेगावर बाल्ल्या निध्य बरमा । - बरवा - होस्या मॉम १ सता ! - बहाबा - रम मार्था मधी दस सामा । ─राभवा-तिवा वीना । ≃छीदना-शीम बाहर निकासमा । -इडमा-म नवा निकीत व पदना । – इद्वार म हेना– वार्ष पक्ष जाना भी इपनास रुग्ने देना ६ −तक्रम सेना−रित्तुक धीन रहता ५७ म रोजना । --देशना-दीमारीकी कारणी मीम देशका महत्रामक काहि क्षेत्रेका निध्य बहना। −म निकासमा−भुद रदशा १ −म क्षेत्रा∽पटेशम वर वाना । -कृत्रना-देन ५३ जाना डॉक्सा । - व्यक्षा-क्षत्रदा रम नेना श्रीकना। कहा करना। - रहत-की। सी । -रक्षणा-दमस्य बीजा र्यात नेत्रे तथ्येष्ट

दोना । -क्षेमा-सम प्रेपतीमें से बाता और बना निकालमाः भाद मरमाः दम भेना १६ धाना सराः हेमा । (बल्टी)-समा-वर्ग नश्बीक्री होना । -श्रेन की पुरस्ता-थोड़ी-सी पुरस्त । -मीवर्मे भड़ता-गंध स्त्रना, मरपासप्र होता । सामत-सी॰ माँग रहने वैग्री तहनीहा दर्ग वरा दश वंत्रमाः वरीहा । अधर-तुक कामकीररी चेनदे कंपर वह हारी सी दीहरी जिलमें केंद्र तमहाईडी तमाताना नाइमी नदेले एका जाना है (इसमें इस और प्रकाश बद्दन चय अला है और देशेका कियेने संपर्ध मही रहता) (मॉमतिक-औ० है 'तांबर । र्मोनमा 🖛 🕒 🏖 धापन करता एंड देशा होता देशा है। र्मीमा-च फिट, भिता भैता एंडा सा शक विचारा शींका बीरा। म - चामा-दिस शीना। -पदमा-शोद दीनाः शिक दरना । -रहता-भीका रहना (मामारिक-वि विशे भंगार मंदरी बीटिक रेडिक । सांसिदिक-दि विशे जाश्रदेश स्तार्यादश स्त मन्द्र । मामिक्य-प [नं•] श्रीम स्टब्र प्राप दर है हो व्यवस्था निक्षित प्रतिश सारकारिक-दि॰ [सं] संस्थार-नंर्रग्रे: आंनेटि वा अन्य नंत्कारीके सिद भावश्वक (सार्क्रक्रिक-वि [मे] संस्कृतिनांकी। मार्गानक-रि॰ इ [मं] गयाम देशोश वदशी रेगरे शिवामी ! सांक्रावित्र-इ [नं] दारा, मराहर सोहरब-१० वि | दर्श योग । मोहननिक-वि मि । शरीरनोरंगेः शरीरिक रेडिया। सा—त सम्बद्धे जबम न्दर् नर्जना म रेन्डि वर । #+ सरा: समान, वैसा: ६६ मानग्**र**क श्रमः (रास्ती में बह निर्में और जिल्ला यह रोटिस वय है और पुरुष आदि सर्वेश दी बेच्छ है) । मी०[तं] मध्योशाति। बासम-औ॰ वि] शहे पहिश्व बान परा। धन पन प्रशीप निवास काण ह शार्थम-भी व शिष्ठों निश्तार श्रमण्यम अपूर्वेद बारि रिशन । strange and a heracite आहम-आ॰ बि लाभन देख राजा है ने रियम देवना रिक्टमा है है साइनवार्ड-पुर (वर) व्यक्ति दुव.२ ।'न्या स्वीटे बाब और उत्था भूमक पर गण्या मामापूर साष्ट्रपाय-पुरु देश गामगान शाहम-दिन [बा] देन धन्यम । माहर्यो ०- प्र के व्यक्ति । enfet-i f hat, t mit-s f telt : बराई-क्षेत्र यह यह ही गाठे दशके दर हो। गर्दरे बन्न बर्जेशकोडी विकासमास काम मानेदे । र स्थाप

सवाय-पु [अ॰] दरताः सुद्धनः साद्धर्गेदा (दरकारुमें मिलनेवाला) पत्र । मु॰ -कमाना-पुष्प संत्रप करनाः सरक्रमं करना ।-बग्रहाना-इसरेडी पुण्यकत हैना ।

सवाया-वि संवायना वहवर, कविक ।

सवार-प [फा] यो इ हानो, कैंड भाविषर चड़ा हुआ म्बर्फि मारीही; अप्रवारीही; अप्रवारीही सैनिकः पुक्तिका सिपादी भी मौतंपर सवार दोकर काम करें। वि सवारी (गावी मादर भारि) पर वैठा हुना। (हा) मस्त असेमें

मूर। कथ सने दे बरश संबारमा-स॰ कि संबानाः सुवारना 1

सवारा•-पुत्रातम्बाह सरेरा।

सवारी-सी छवार होनेकी फ़िया। वह बीज विसपर सवार हो (बोहा गाडी पालको व)। सवारः अंदाप (निकरूना); कुरतीसा एक रेप ।-का पायसामा-वर पात्रामा जिसकी काढ जॉकोडे ग्राएसे मेहरावदार हो। मु॰-भाना-(सवारोपर) कारना ।-इसमा -गाँउना-निपक्षीकी सवारी(वेंच)में बीवनाः आसनतके दवाना । -दना-स्वारोका काम देना । -स्रगना-स्वारीका क्गाचा बाना । —स्याना—डोटी पाठकी शस्त्रातिकी स्वार होनेक किए क्योडीमे रखना ।--स्नेना-स्वारीका

काम बना सवार होना। सवारे सवार्रे +- म बस्द शीम-'तुरव वली जनही फिर भाने मोरस नेनि सनार -सूर: सनेरे।

सवास-पु [भ 'सुवात] मीगनाः मौग पृथमाः प्रस्तः मानना, सिद्धान्ती बाचना (फन्दीरका संशक्त) प्रार्थमा, बिनेदमः भग्नाः बाकिस प्रतिबन्धः शनितका अस्तः मसका।−स्रामी−सी दे 'सराककारी ।−स्त्रामी∽ को भरावतमे दर्बारतीको पहला ।~जवाब~<u>प</u> प्रस्तो-चरः वदसः विरद्धः। ग्रा॰--करना-प्रथमाः जॉवके लिप कोई शत पूछना। गाँपना काचना करना १-कुछ अवाव कुछ-प्रश्ने बर्तस्य एत्तर् देना पूछा कुछ और बाव वताना ५७ और । - बाह्मदा-प्राचेना पावना करना । च्दीगरः खदाव दीगर—दे 'स्वारु कुछ, क्वाव कुछ । —देशा—सभी वा दखास्त देना। इक करनके किए गणित-

का प्रश्न वा कोई मसका देशा। —शमाया—प(कार्ने पूछनेके किए महन दैवार ऋरका।

सवाकार-पुक्षि] सवाक का बहुव ।

सवाकिया-वि विग्रमें स्वार को विग्रमें कोई वात पूडी गणी हो (सुमका)।

सवाकी-वि मँगानेदाका । पु भरशिया पत्रनेदासा । सविकार सविकारपक-वि॰ [ई] १७१३वीन विकार मुका संदिग्धा (द्वाता भीर होयहा) शंतर माननेवाला:

निर्मय म कर पामेंके दारण दोगोंको माननेवाला संख्य बादी । पु समाधिका एक गरारः बाता और खेबहे भेतरका शान (वे)।

समिकार-वि [सं] बरिवर्तनपुक्तः प्रिसके आवॉर्ने वरि वर्तन हो गया हो वो भाषोंका कम्पन दुना हो। जी सक-गक रहा ही (बाथ पदार्थ आहे)।

सविकास-वि [सं] विकसित अपुटः कोतितुका भिस्तृत ।

सविवाह-वि [मं] दारीरक्षक मूर्तः वर्शनुक, बमानीः र्मवर्षरतः अद्यमे संकरम ।

सविचार∽वि [सं] शिसका विवार किया जातादो । न निभारपूर्वेक । यु स्विकस्य समाधिका एक मदः। सविज्ञान∽वि॰ [सं॰] विवेदग्रीक, समक्षदार । भ• विद्यान संदित ।

सविज्ञासंभ-प [सं] इंसी बलक करनंशका एक प्रकारका मबाद (सा)।

सवितर्के-वि [सं] विवारवाम्। यु सविद्यस्य समाविद्या पक भद्र ।

सविता(तृ)-पु॰ [सं] न्मंः शक्तनः कोकसद्याः शिवः र्देश अहार्रस व्यासोंनेसे एक, बारक्की संक्या । वि उत्तव करनेशका।-(तृ)तमय -प्रम -मृत-प्र•शनि थमादि ।-हेवत -दैवत-९ इस्त मध्य ।-फस-५

यक पुराणीक वर्षत । सवितृक्त-वि॰ [सं] सूर्व-ग्रंपनी, ग्रीर । सबिन-५ [सं] उत्पत्तिका साथन या कारम । सचित्रिष−वि [सं] दे 'स्रोत्रृक्र'।

सबिद्धी-सी [सं] गारतः पात्रीः गायः। सविद्य∼वि धि | एक क्षी समान विश्वका धाववन 'करनेवालाः विद्यान् विद्यानविद्।

स**बिध−**वि [सं•] समान, यह हो वर्गकाः नासक निकट यु सामीय्य । अ० विविष्यंक मियमानुसार । सविधि-वि मि] विविश्वक्त । भ विविश्वे मनसार ।

सविषय-वि [सं] विषयञ्चक, शिष्टतापूर्ण; विरुद्ध । स विनवपूर्वकः (- अवज्ञा-सी (अन्यावपूर्व) मुख्यो कानून-की अपमामना ।

सविभास-९ [मं] नती नामक मंबद्रव्य । सिकमास-प (सं॰) सात्र स्पॅमिसे एक ! सविक्रम-रि [यं] क्रीरायुक्ता विकासयुक्ता प्रणय

थेद्यवुद्धः। सविमर्ख-वि [सं] दे॰ 'स्वित्रई ।

सविसास-वि सि वि 'सविप्रय'। सविशंक-वि [तं] शंकायुक्तः।

सबिरोप~वि [र्न•] विदेष गुणेंसे नुका भराषारणः अंग्रा स्ट्रा करनेशका ।

सबिशेषक-वि [सं] विशेषता ठावेबाडे गुमने पुक्त । प्र विशेष ग्राम ।

सविक्रम-वि [मं•] शंतरंग वनिष्ठ (मित्र)। सविष-वि [मं॰] विषयुक्तः विशासः। पुरकानस्यः।

सविस्तर-अ [र्ड•] व्योरेडे साव तप्रसीहवार । सविस्मय-वि [सं] बाधर्वपुक्त, चक्रिन स्ट्रीहपूर्व।

म विस्मवके साथ ।

सवीर~वि [स] अनुयावियोसे पुक्त।

सबीयै-वि [तं] समाव शक्ति पुका शक्तिशाकी। सर्वार्यां न्हीं [मं] धनानरी ।

सब्दिक-वि [सं] सहके साथ, जिल्हा मूर मिले। सबृष्टिक-वि [सं] वर्षासे पुरुत।

सबेग-वि [सं] समान-वेगवालाः वेपशील सम । अ० वेगपूर्वसः।

साकोटक-पु॰ वे॰ 'द्वाचीट । तिया बाता है, दयाना। है किसानोंकी वापसकी सहा-वता। वि [स] सर्व (क्षेक्सिस) करनेवालाः दीव-वृप सावतक−प [सं] भूना हमा की। बीका सद्रा"पक विष । वि सक्त संविधी । करतेवासा । साईस-प् वीकेश देखभाक करनेवाका गीकर । ~ साम-वि॰ सि । भेजबन्धः वपमासासे उन्हा। साधार-पि [सं•] पहा-किया, शिक्षित ! साईसी-सी साईसका काम। साबी-प द 'साब'। साक्षात्—म [सं•] मह्योंके सामने प्रत्यक्षः स्पद्यः : साउग्र≯-प वे जानवर जिमका शिकार किया वाव-वस्त्रतः, सोध । ∽कर,−कारी(रिम)−वि॰ मस्यस्र, गोचर करनेगाकाः शिकनेगालाः - करण-प व्यक्तिके 'बीनोमि माउत्र आरम रहर्ष -व । भागने रसनेकी किया अनमित किसी बातका शास्त्र-मारुय−प भि देशिय दिशा। ष्टिक कारण । ~कर्ता(र्ति) −वि सव क्रम्म देखनेवाका । माक्रमरी-को है 'शार्दमरी'। -कार-प॰ बान, असमतिः मिकन, देखलेकी (-कत-साध-प्र 'सि] तरकारीके रूपमें कावा बानेवाका पीवेका पर्चाः सागः सागीन । * श्री साखः भारः । वि॰ प्रत्यक्षा गोषर कराया द्वामा । साफ्र-सी॰ जि॰ो पिँदकीः पेश्का तमाः पीपेका बंडल । सरकावृष्ट – वि॰ [सं] (भवनी) भौकों देखा हुम्हा । शाक्तिता-सौ साक्षित्व-प [सं•] गनाही प्रशाम । साकचेरि!-स्त्री मेंहरी। साकदश-पु श्राचमत माननेनलाः मन मास भाविका साधिमान बाधि-सी० (सं०) यनहीं के सामने, दिना क्यिन्तिके गिरधी रक्षा इजा साम्र । 🗕 संबत करमंबाका, निग्रसः सक । साकतः - प्रदेशस्य । शासी−की गवादीयवादकावधान। साझी(किन)-वि [सं](अवनी) भाँखी देखनेवाका साक्रम-की साम्ह्रेकी की; हुका शराव मादि विकाम-नरमदीर । पु॰ नदमः नदमदीर गमाद । ←(क्रि)हैध-वाकी स्त्री । प्र परस्पर निरोधी धयान (न्यबहार) ! -परीक्षण-प्र : साकर⊶†वि∘सैंदरा इंगानी सौदक। साबर-९ स्वास्कीरका प्रस्ता माम । † सी॰ दे॰ —परीक्षाः −की गनतक्षे परीक्षा निरद्यः –प्रकाय –प्र चरमदीर गयाहका बनाग । -प्रहम-<u>प</u> 'सॉक्क' । -भावित-वि चयमदीय गमाहम वयानते सावित । साकरम-तु दे॰ 'हादश्य : [सं] समयता संपूर्णता। –शत−वि विसने स्वयं देखा हो । प॰ विच्यः ।–साक - बचन~पुप्रापाठ । — व अदम्। = सम्बद्धाः = वि प्रमाणसंसिद्धः। माकवरां-पु वेस । साक्षेप--वि॰ [सं] भापत्तिवनक, आक्षेपारमका विसर्ते मा**कोश−दि** सिं•ो इच्छायुक्त इच्छका विस्के किय पुरक भावस्वक हो । व्यक्ति ताना क्षी । साका-प्र प्राका संबद्ध रोग वयवनाः नामवरीः कीर्ति साक्य-वि (सं] "की योजर । त सवाकी प्रमान । " स्मारकः। 🕶 प्र , स्रो इच्छा, चाइ- मासु भार पृत्री वर साका-प गनाही गनाह । की रीथ दनदना केल-देश-साका -प्रा मुरु -चक्रमा-रोग माना वाना। संबंधी परावार का मरिका: * बाकी: बार्ति का मंद्रका - चळाचा-दवदवा कावम करना । भागभा भंग। साकार-वि [सं] भाकारपुक्त, करविशिष्ट मूर्व स्यूकः साच्चना≉∽स कि ग्वासी सही देना। बक्छ भाषारका संदर । प्र रेमरका सगुन रूप । सासार#-वि वे 'साह्यर । माधारीपासवा-को [चं] ईश्वरके समुद्र करकी साधा - की भारत, बाकी। बाति वा वंदका संगः द्वपासमा । चक्षीका पुरा । साकित-वि [म] सुपः निश्मेटः वरिद्रीम । साविष्य - १ (सै॰) वित्रताः दोस्ती । साकित-वि [ल] गिरानेगामाः गिरा ह्रभाः त्वच्छः साक्षी-त पनाद-'त्रम छछ दोड तराइन साक्षी -पन्ड मष्ट सप्त (दीना) । पंपा * कुछ । सी गगावी: (करीर आदिके) बाम-विराध-साकिम-वि [भ] गतिशीन । प्र वक वर्णः रहनवाका विषयक प्रद्र। निवासी । - हाल-वर्तमान निवासी (वर्तमान निवास साक्-पुत्राक्यायेश समुमाः बनानेके किए कहते हैं) । साखेय-वि [रो] विश्व-संबंधीः विस्त्रवसार । साकी-प्र [ब॰] पागी पिकानेशाकाः दाराव पिकानेशाकाः साबोचार, सालोचारन#-पु॰ गोपोचार । हुद्धा पिकानैवाका (वर्ष) । साकोर-५ दे 'घायोट । माकुच-द्र [सं] सकुची मछनी। [का] बनावड, डील, शक्य, बनायी साग्रत-सी साक्रदंद-पु [सं॰] बृह्यविशंध, प्रेषिक्रस । ह्ये भात । सामत-वि सि सार्थव वर्धवर्गः साधिमावः अप्रैदा-साप्रता-वि [फा] बमाबा दुव्याः सदसी। --पर उत्तः।-स्मित् -इसित-त सामिमाय मेर शासा प्रवद-बाग्रतार्वा विभाग संवादा हुनाः दिवा हुशा । स्वर दास और कितदम। सायम-५ (तं॰) मैची बोस्ती। साकेत साकेतन-५ [सं] जनोध्या। साग-पु माओबे रूपमें दानी बानेवाली परिवा, शाह:

वरकारी । च्यास-पु साय-मात्री रूपा-सूला मीत्रम ।

साकेतक-पु [मं•] वदीच्या-नियासी ।

सर्वेताक-वि [सं•] वेताह द्वारा सविद्वत (श्रव) । संसाक-पु [में] भारी भरतह। सबेध-नि [सं•] भाषक निकट । त सामीव्य । संशाहरू-वि॰ [सं] चासरे भरा वा हवा हुवा। मवेरा~प यहाँस्ट-कान प्रातःहान । सहरक~नि॰ [सं] चमदरामा । सवी-भ प्रात काल, तक्के। सञ्ज्ञ-वि [र्थ•] हैंबबाला । पु॰ हैंबरमें निधन धरे-सबैदा-नि॰ [रो] कर्तकृत, बिमृषिण; निकट, पानका । बाह्य आस्ति है। सबेद्यीय-पु० [से] वक साम । सबीप-वि [सं•] विस्ति श्रेष वा बादी हो में ए सर्वेष-वि [धं] क्लाम्प्रणसे समाधना। रिक्त व हुआ हो। अपूरा । राबष्टम-वि सिंगी एतरीके साथ (सिर)। सशीय-वि (संब) सूत्रा हुआ। -पाई-इ रहारा स्पेदेशा−प्र• संगतिरका गाउँ। संगत्ता वशायाः पद्ध होता का मैत्ररोप। सदमञ्जू-वि॰ [सं॰] बझीबामा । श्री॰ बाहोरानी भी । रामार्थ । सर्वज्ञय-वि [र्ग•] अस्वामाविक, वनावटी: क्रांबन्त । सम्बद्ध-वि॰ (सं॰) क्यित्य प्रश्ना । --स्मित-पु॰ बनाबरो हँसी । संधम-वि [र्रः] एदा द्वथा, द्वौदा सम्बद्धः । वः हर मक्य-नि [सं॰] वाको बहियो। प्रतिकृतः बाहिया। पूर्वमा । प्र विश्वा जरेका बहगढे दस बहारीयेसे वका दिसी सक्रीक-वि [र्स+] सक्षियामी, भाषवादः होर्रः सभीकृष-वि॰ [तुं] (बह बोहा) विसर्वे होते? व्यक्तिकी मृत्युक्ते समय अलायी खानेवाकी अस्मि । -चारी(रिन्)-१ अर्थुन। अर्जुन १६। - सानु-५० वेंबरी हो। तुरुका पद प्रता !-धाइ-म बार्वे हाथमे कहमेडा रू व्यक्तिय-वि (do) इनेबबुक्त, बोहरे सर्वेशाः। दम। -माची(चिम्)-यु अर्जुन (रोनी वाजीते वह यक्षाय-वि॰ [सं॰] शास्त्रस, प्रीनित । सम्बित-वि॰ [सं॰] तिसबै क्षाप बीरे दुन एकी जैमे देगमे नाम चटामेडे कारणो। हजा बर्धन ब्रह्म । सम्बद्ध-वि [संग] स्थवारी प्रस्ता ग्राह्मनियत । तुवा हो । मस्यपद्म-वि सि वे संबद्ध पर अवस्थित। सर्वत−वि विशे संबद्ध संबद्ध । मध्यमिचार-इ [सं] इत्वाधासके पाँच भेदोंमेंसे रह मर्गतिक-वि॰ सि॰) एंडाम्ट्रक ! सर्सदेश-वि॰ [सं॰] हरेबदुक्त । दु॰ रह कन्नतं ५ (म्बा) । स्विद्यानकार । मध्यति~५ [सं•] करनेका व्यक्ष्य । सर्मच्य-वि (सं०) संध्वा-संशी। सम्बाह्म-दि [एं] दश्टी। पर्त ! सर्मपद् सर्मपद्-दि॰ (सं॰) सहयः हुस्रो । मदशापार-विश् [सं] कार्यकान नाहार, वेहार नहीं ! सर्रोधास-वि [मं+] श्रुपन, पन्त्राचा हुमा । सर क्षेत्री सम्येतर-वि मि] शाहना । में परशाहरने। सादर ! मध्येष्ट, सम्बद्धाः(प्रृ)-५ [सं] सार्वि । सम्मान-दिन [सं] हाज्वासाः वावतः सर्वि । -सुधः-मसंदेश-वि [तं] सूत्र, तुरितः मसंपाद-दि [र्म] एइमर । प जॉगडी मदेरीये होनेवामा वस रीग । लमंबिब्-नि॰ मि] त्रिएके माप की इशाव इस है। सनती(तिम्)-वि [sio] शमान इंदमे काम करने समंश्रव-वि॰ (वं) महिर्युक्त अनिधिव करा । इ बाला। एक ही रीति रिवाजवाका । संदिशना' मायद बाध्यदीन । सर्वोड=दि॰ (गं॰) कामानुष्य नित्र । मस्य-त भेरमा। क्यात शरन, भाग । न्दा न्द्री सर्वाक-वि [मं] शंकानुष्ठा, प्रक्रिया मीन वरशैक ! सर्वादमा !- स कि दरमा। शंदित होना । इ॰ थेर्मा। मशक्तिक-विश् [गं] बनगामी । गग६०-५ छए८ धारा । संस्थान अस्ति दिल पर्यमा, पराचा, निज्ञा महारष्ट्र-वि (वं) बध्यपुत्रा शन्तिता शीरपुत्रते भरा समाय-वि (वंत) शक्ति वा सावस्तुप्त वर्षे हे वृत्ते। ह्रमा। बीदित । समाधा-भी [अं०] गर्मरमी गरियो भी ! सजायम-वि [मी] श्री क्षत्रमें रिवर की वहीगड़ा भागवर्गी । ममन-१० (४०) पश्चरहादा वर्ष । सम्बा समाबार-अ० कि है। 'सबदेश alma's सवारीर-रि [र्थ] छरीरमूण सूनी वरितमुका सन थिने स्व जुल समाध - बर्नन में बंधे। श्रातिरहे साथ र महारक्ष-पि [मे] शिवनेत्रारा चीर्वहार । व दक शगरमा!-म दिन शरकता । शमद्वाप-वि० [में] साविषी भारिके शांव ह तरहकी महली । मराक्य-दि (यं) देंशिया दि शय का अपने लिया श्यान प्रकल्या है सीरा ह समाध्यम-विश्वति । सरद्वत्र क्या द्वारा अभ्यत प्रशाः (वा) दश्याना करशर शत्र मान्द्र । - सन-पुरु को दे सार्थित संख् । र्वाज्य ह शमार्थ-भ (नं॰) कारणेंद्रे समादि समाहित सम्बो-४ भाग गेरा (१) । संप्राप्त-वि वि किथा शाहित्या मान्या हो। (6.4) 1 स्मित्र-पु चेत्रप्रकातः न्यां नश्तन्तु चेर्याः मग्रहणा~से • [सं] महाशी ।

स• ~•समझना~इदोर सब्धना। साराम-वि॰ [सं॰] ईमानदारीते महा दिया हुना, वैव विधिसे प्राप्त । सागरंगम~दि [शं] दं सागरगं । मागर-पु॰ [मं॰] महुद्र (क्या बाता है कि शुप्ता सगरक मामपर रमका माम सागर पत्रा) सरोजरा-बार मा सातकी शंत्रया प्रक नवुण नको संस्का (दस क्या)। सम्म्यासियीका वर्गनिरीया गतः बलाविगोके तीरारे वर्षतः (में)। एक नामा समर राजाके प्रया एक सुमा (सार) षद्रन वही राश्चि वा पुंच । वि० समुद्र-संबंधी ।-र्जामीर-दु॰ समाधिका एक प्रधार । -गा,-गाम -गामी(मिन्) ─बि समुद्रमें बानेबाला । —हा —सी॰ मधी। येथा । -•ध्रत-पु• भीध्य ! -अ-पु• समुद्र सबन ! - मल च्य° समुद्रफन । ~धरा-मो धरवी । ~धीर बेला-(तस्)-वि॰ जिसका यम सागरको तरह क्षांत और गंमीर हो । −वर्षस −सेसी −सीश प्रजी । −वर्षस − **एम्डरन्दः भारतद्र । ~द्रवन~** प्रमेदानवना **स्पृद्ध स्थापना । − मति –पु• व्यु बोविसक्त । − महा –** की • समाधिका दक्ष प्रकार । – शेलला – स्ती 🔞 🕬 । −किपि−सी रह प्रधार≰ो श्राधीन तिथि। ~सरपर~ षु महामागर। -बासी(सिन्)-वि॰ समुहतरवर रहनेपाला । - बयुह्यार्थ-तु वह वीक्यित्व । - बाय-वि नमुहर्मे होनेबाना। प्र विष्या −श्रक्ति −का ममुद्री सीर । -सन्-५० चंद्रमा । मारार-प्र (पा॰) व्याना धराका व्यापा। -क्य-वि शहार प्रेमेशमा ह स्रातरक-५ [सं] एक अनगर । ररागरांत-४० [मे] महद्दनः। सामरोत्रमेत-६ [यं] समुत्रमें रवनेवाका । सागरीता-खो+ [मं] प्रमी ह सागरीक्स-मा (वंगीपको । सागरामुक्ट-दि [में] समुरताबर विकास स्तारायाग-वि [मंग] ममुद्रवित । सागराज्य - दि॰ [ले॰] शमुद्रमें रहनेवाना । 🖫 ववस् । स्तगराचर्त-पुरु [मं] दाशी वचनानर । रातरेषा-५० मि विद्य होने । सामग्रीम्ब-५० (स) समुद्रसदम् । सागरीज्ञार-५ [म] बनार १ सागरीयम-पु (शं) क्ट वही क्षेत्रा (देन) हि सागर के संयात । साग्यम सारापाम-९०३ विश्वानीतः। सारा-पुर (सं भीता | तारकी आर्तिका एक देश किंगते | तमेके संदर्ध पदार्थी मानुदाने मनाव जान है। -शामा-पु सागूदे सनेदे ले रदा मान चीलदर बनावा कुमा बाया । सागा-५ दे 'लागू ! सारामि-पुरु बक देश विश्ववी अपनी मेंच कुरुनी माहि ! बकान इ. बाम भागी है ह साप्रि-नि॰ (६.) वर्गनपुष्पः वद्यानिन सुर्रात्तन सम्रोत

वाङा ।

माजिक-वि॰ (ती॰) प्रकृतिन रमनशकाः भौगाने स्थान करिम द्वारा सावीहर । पुरु बद्यान्त रसनेक्स गुद्दाव भरिनहोश्री (साध-वि॰ (सं] समय - से मिरिड, कार्रिक र साधक-सी॰ [तु॰] व्यास्थ्री यह एस क्रिक्षे व्यास्त्रे पक दिन पहल बाढ़े पाते कन्या s निए करते, में इरी मने मिकारणे भारि धन्तर है (जसल)। साधरी-मी [र्ग०] यह रागिनी । सायि-स [मं०] तिरुष्ठे हे । -बाहिबा-मो०३१५ प्रमर्गेशः । -विक्रोजित-५० (तर्ह्या ज्लितः । साविषय-पुरु [सुरु] मेशिला शासना मेशी भ्यापना है साविष्याहोय-व (मंग) माद्यमंत्रं सीमंत्र (मार्ग)। साची बुज्यका-पुर भन्नमा, रेस्स । माचीकृत - वि॰ (सं॰) बहाउन, निर्धा र म्याचीम-वि० सि०) चयत्तमे ब्रामेशमा । साळ-प्र है॰ 'शाव । हि॰ [सं॰] पुर्शनप्रसाप्ता सद्य । बाल-५० कि ो सामग्री, सामामा समावस्थी स'मधी। सहेगडा लाका मानेके छाव प्रक्रांत्र आनेशने बाब (गार्नी: शक्ता १०): बीहडी शकारीडे हिय तैकार करने का शब्दोस्य सामान (श्रीच कार्डी, बमान १०)। प्रदेशामधी बाबुधा मैसजीका बनुकृषणा सुरोका मेगा साजिए शॉड-गॉड । वि. (केवल समाममें) बमानेशक। (कारण्यक इगताक)। बनावा हुना (स्ट्रालाका दशासाय-हानका वमाचा प्रका)। -शार-वि MARK THERE! -बाह्न-प्र नाहिश नोंदशांदर -सामाय:-(द्री) सामाम-त (बाद्य या कार्वविद्यपदे निक) भारत्वक सामग्री। नामान श्रीक परद्वा - वा बरदा-नार्गः निवार आहिया वह प्रदश्च जिलाने की विदेश स्थर वजावा जावा शुरू-करका-मैक्न करमा साविज काना । -धेबमा-गाव वमाना । स्राज्यक-इ. [स्] बाबरा (१) । माप्रविशे-को अपूर्व बारिया एक राट। साधव नामर्?-५ १वर्गसेष र माजन-पु मेनो। वृति चना। स्थान सुपना देशा है साजवार-ना कि शक्तार श्वाधित करमा। हैराट क्रमा १ क मुनाम है शामान-दिक होरद- में शुष्ट कानड क्षेत्रदि मान न्दाय विद्वार सरकार भाग र सामान्य-पुरु [लं] बाति या प्रश्नी रामान्याः लंड बर्धीयमा । रात्रींबरा-त क्रांको शाथ वज्ञानेवामा (पार्थियाः एश्याची इकी । साजिए-वि [80] विशा करनेक्चा ब्रह्म करवे माजिया-मो० (वं०) देव-रोगः वर्षः रतः वः व्यापनित बन्धेर तुम गरवीमा देने बन्धेद किए की मार्च गणी देन र्द्रदश वदा । साहित्री-रि मधीम बानेग्य असी।

therew \$ 2-events

ससिक्-पु॰ [सं॰] सारू, सर्वका पेड़ (१)। ससीर-५ बहमा। सञ्चर-पु॰ रे॰ मग्नुर'ः वि [सं] देवताओंके सावः मदिराके शाव नशेमें चूर, क्यमस्त । सञ्चरा-प सञ्चरः एक गानाः † (कश्योक्ष) सञ्चराकः। समुरार, समुरारि - वो दे 'समुराक । ससुराष्ट्र-ची पवि था परमीके विवाहा वर । ससेय, ससेन्य-विष् [सं] सेनाके साव । सस्तर∽नि [सं] पर्चोके विस्तरके साव। मस्ता∽दि अस्य मृश्यकाः विशवा मृत्य पर गया हो मेदाः को बालागीसे मिक एके। परिवा । −मास-प्र वटिया मात्र । -समय-९ सस्तीका जमाना । सुरु -छुटमा, सस्ते छुटमा नवादा वर्ष आविका बगइ बोरे-में हो काम पर बाता ! - स्थार देवा-सरहा देवना ! सस्ताना!-व कि स्ताको वाना।स किथान कम करना । सस्ती – स्रो सस्यापन, मंदी मेंदगीना न दोना । सस्तीक-नि [सं] की पश्नीसहितः निनाहितः। सस्मेड-वि॰ (सं) तैक्युका मेमपूर्ण । सरपृष्ट्-वि [मं॰] रच्युकः ववाविधर्मर । सस्कर-वि [एं+] स्करण स्पेदनबुक्तः वीवितः। सस्मय-वि [सं] पर्मशी। सस्मित-वि [मं] की मुस्करा रहा हो, कस्पहास-夏を「 सस्य−प्र [सं] बान्या किसी पीथेका कमा शका सब्दाुनाः पद कोमती पत्थर। — होमी—को गरनेको स्र**ोर**। **~क्षेत्र~**पु मनाव दोनेका क्षेत्र । **~पाक ~रक्षक**−पु सेतकारस्वरका।—प्रद−वि वयत्रकः।—संजरी—सी भनावकी शकः। --भारी(रिम्)--पु यक तरदका वका **पृशा - मास्री(सिन्)-वि शम्बपूर्ण (वैसे पृज्यी)**। −वेद−पुकृतिशासाः – शासी(क्रिन्)−वि भान्य॰ पूर्व ।-शीर्यक-पु दे 'स्त्वर्गमरी'। -शुक्र-पु थी बारिका हॅंव !—संवर=पु: शक वृद्ध । —शकरण-यु सम्बद्धमं द्वयः। - इता(तृ)-- यु कृति मध करमे बाका एक दैश्य । -हा(हम्)-वि वाग्य नष्ट करने-बाक्ता। प्र वे 'सरवहता । सस्यक-वि [सं] सन्तुगर्भवतः। यु सक्ष्यारः द्विवारः एक नहुमूरक परवर् । सस्या-की [छं] गनिवारी भरनी।

सर्वेता॰-वि सरता 'सरेगा का करता । सर्वेश्व - 3 (के) मोध्या एस, स्रोरणा । सर्व - व (के) माध्या एस, स्रोरणा । वि सर्व - व (वे) साम स्रोरणा एसका प्राप्त करने-वाका । 3 मार्गोधीं एक बन्निय प्रक्षित, सामर्थी एस स्पूचा एक प्रवृत्त । व्यक्त मार्गोधी एस स्पूचा एक प्रवृत्त । व्यक्त मार्गोधी एस स्पूचा एक प्रवृत्त । व्यक्त विश्व । - व्यक्त -तु साम कार्य । - कर्सा (प्री) - तु साम कार्य

सस्बेदा - की [र्स] वह श्रम्या विस्त्रा दावर्गे ही कीमार्व

मंग हुमा हो। दूपिता कृत्या ।

करनेवालाः सहायकः। -कार-पु साथ काम करना, सहायता देना। एक दरहका सुर्वनित मामः भामकः गंत्र(); वामका रस । → शंक्षिका-सो॰ वक् क्षेत्र । −फारी(रिश्)−वि शांभ काम करनेवाका । पु सदायक कार्यकर्ता । - कुरत्-वि सदावता देनेवाना । -गमन-पु॰ साथ बानाः धती होना । -गबन+-पु वै 'सहगमम' । -शामिमी-श्री शती होनेवाकी की। परनी ! ~शामी(सिम्)~वि• साव वानेवाला ! ~ गीन • - प्र दे • 'सहगमन । - चर-वि साथ वलमे बा रवनेवाकाः सब्धः । पु॰ साधाः मित्रः प्रतिः अनुवर्, सेवदः प्रतिर्वका सिटी; वाधिन ! -चरण-पु॰ साथ कामा साथ रहना। **~चरा~को शोक** क्रियो। −चरित्र−दि पात्र रहमेनाकाः एक कातीयः संगतः। - चरी-की पीत किंदी: सबी: पत्नी ! -चार-पु सामंबरन, संगति: सलका सहकरा हेतुके साथ साध्यका रहमा ।- उपाधि क्षक्रणा-ची क्रहणाका यह प्रकार जिसमें साथ रहने नाकी वरतुरी व्यक्ति बारिका योग हो जाता है (स्वा) : -चारिजी-की सबी। क्ली। -क-वि साथसाय या यक 👣 समय चल्पकः जन्मवातः प्राकृतिकः मार्चत क्य-सारहनेवाकाः सावारकः कासाम । पु सगा माईः रवभाषा वरमकरमसे डीसरा स्थामा श्रीवन्युक्ति ।-- श्रुति −पु छोना । −० हीव −पु जन्मवात मपुस्स्ता । --- अस्मा(स्मम्)-वि वसवा स्वोदर ।-- श्वासिक- श्री स्वसायमें दी सचा वा ईमानदार हो । → वर्ष्य → ग्रीकीय वैभ्यय संप्रदावका एक वर्ग !-- ०मकिन वि को स्वमायसे ही गंदा हो। — सिम्न-पु स्वभावसे दी नित्र (सांका जादि)। — वल्लाक्र−विकोसकवित्तः। -•सञ्च-पु दे 'सहकारि'≀ -•सुहृद्-पु दह वो प्रकृत्या मित्र हो । -श्रन्मा(स्मन्)-दि बन्मना प्राप्तः खुक्वाँ। सदीदर् । तु वसव । ~जातः~वि० एक साथ सरपन: यक ही समय बत्पन समयपरकः मान्त्रतिकः भुववाँ (वच्चे): सदासर । "ज्ञामि-वि सपत्नीकः। -वीवी(विम्)-वि साव रहनेवाका । -वंड-वि सरीम्य ।—इसम—पु साम-मान वर्षगावि करनाः वष्ट्रवसे देवतालीके किय साथ-साथ किया जानेवाका होमादि। -वार-वि सनीका विवादित । -वीकिसी(तिन्)-वि साव दीमा कैनवार्थ । - नेच-पु माहीने बरपम पश्चिके चौकर्वे पुत्रः धरासंबद्धा यक ग्रुता एक अपिः शुरासका एक पुत्र । - वृद्या - सी दंदोत्पकः वद्याः सद वैत्रें धारियाः सर्वादीः मिर्चग्रः सीकः देवराती प्रती भीर वसुरेक्की वर्षी । - देवी - की सर्पाकीः चैत दंटीरक्काः वकाका एक भेदा सारिकाः सबदेवे। निर्वेशः सबदेवकी पत्ती। — धर्मे ~ पु॰ सामान्य वर्गमा वर्तव्यः। **~ ० चर**~ स्थान कर्तकाँका शसन करनेशका । — भारण— प्र परिके साथ कर्तव्योंका पाकन करना। -- सरी--की पत्नी। — चारिणी-व्यी क्यो। - • धारी (रिव्)−वि साथसाव कर्तस्थोका पाठन करनेवामा । -वर्मियी-की को। -वर्मी(मिन्)-वि धमान कर्तम्भीवासा । – धाम्य-वि भाग्ययुक्तः । – मर्तन -- मृत्य-पु॰ साथ नाथना । - निर्वाप-पु साथ साथ

1843 सामा-प्र• शिरकतः हिस्तेत्रारीः प्रची । -(मे)वार-प रे॰ 'साझी' । -बारी-सी॰ सादेशर बोगा, दिस्से-द्वारी । साझी-प्र• हिस्सेदारः विसन्धे प्रशी हो । सार-की॰ छवी। छत्रीकी घोटका वाग । -मार-प हाविवाँको कहानेवाला । साटक-पु॰ यह छेया + भूसी शिक्तका। तुम्छ वस्त । सारम-व 🛋 'सैरिन' एक वहिया रेजमी इपका। साटना−स कि सिकामा कोवनाः विपकासा। साटा - प्रविका । माधी-मी हवी इसबी। पत्रमंगा सामाना र्र गरहपूर्णी। वदका । साधोप-वि [मं] यमंदरी फूका दुवा गरवता हुवा (बैसे नारक) । साठ-वि॰ पवाससे इस श्रविक । पु शास्त्री संक्वा ६ ! कसी पेंडी: - साठ-विश् विस्की पेंडी गट हो गरी हो जनहोना रसहीत कथा छिच भिन्न । सारमाती-सी है 'सादेशाती । साठा-वि साठ वर्षकी कवरवाका । प्र साठी वान-कदा स्वान्धीया स्रतः यद महमवस्रो । साठी-पुरु पद बान जो बहुत बस्त तैवार होता है। साह-वि [सं] नोद वा श्वाना । माबी-की कियोदी योदी सादी। साइसावी = नो • दे • 'साईसावी । सादी-चौ असादमें बोबी जानेवाकी प्रमक सकाई: साबदा मिर्यासः † सादी । साब - पु पश्नीकी बहनका वि । सादे-वि वानेके साव ! -साती-को कनि प्रदशी पद अभिकार रिवर्ति । स्र० -साती भागा या चढना--विपक्तिन्यस्य दोना । साव-विष्ठ और एकः सिंी प्रकाशिनद्र व्यस्तः। पु भानंदः यसक्याः [हिं] शास्त्री संस्था 🐠। -पॉय-५० पालाको चाक्याबी: वर्गाः व्यानाः तक रार । (भ −०म जानका∼मोकामाका दोना । साना-इमद वक्सर करना) । -प्रती-सा दे [']सत्तपुरिदा। −फेरी−की सप्तपरी। −भाई− की है सनभरवा । मुक् न्द्री शाक करना-सारे परिवारका वदनाम दीना । -घर भीका माँगमा-बर दर मॉयना । -धार द्वीकर निकसमा-श्वाच प्रार्थेका विना पर्वे दश्त दोसर निक्रमा। -पर्दे समना-परदेने रहमा (उस भीदे किए प्रयुक्त को अमीर हीने पर परदेमें रहने क्यी हो)। -परद्रमिं रखना-छिपा-कर रखनाः नहीं सानवागीसे रखना। -राजार्धीकी साक्षी देना-किसी नानकी संवाईपर बोर देना। -सर्मुद्दर पार-नदुत दूर । -शक्तिवनाना-एडीदी एक रहम ! -(तीं) मूख जाना-होग्रहवास को दैना । सातरय-पु [सं] मै(तर्वः भनिष्यवताः स्वाभित्व । सातका-ना [सं] प्रस्का एक गेर। सासवाहन-दु [सं] ग्रालिशहन बागद राजा। सावि-ची (सं•) देनाः भेटः दानः माप्तिः महावदाः

नाख च्यंता वंत, समाति। तीव बेरना विराम संपत्ति। 🕈 वंड, शास्ति । साविक, साविग#-वि वे 'साविक्द'। सातीन-पु (सं॰) मदरका एक प्रकार । सातीनक सातीसक-प्र [मं] वे 'सावीन । सारव∽वि [यं] सरवगुष-संबंधी। सारिवक-वि॰ [र्छ] ववार्थः सत्य, प्राकृतिकः सरवगुण-पुक, ईमामदार मेकः शक्तिशाकीः सरवगुण-संबंधाः सरक्युणप्रकासः सावसम्ब । पुरु इक माथ (जनुमाव) बिसमें रतंन, स्वेद, रोमांच स्वर्धन क्य बैक्प क्या और प्रकर-वे भाठ प्रकारके अंगनिकार होते हैं (सा) इन संग-विकारीका प्रदर्शन करनेवाला समिनयः ब्रह्मा मदा माक्या प्रवापविश्वे बाटवी सहि । साव्यिकी-सौ [र्स॰] दुर्गाः दुर्गाको पक दरहकी पूजा। मास्म(म्)-वि [तं] अपनेने प्रका सायमक-वि [र्स] बारमासे मुद्धा सारमीकृत−ि [सं] को किमी नातका भस्वस्त आही को गवा को । सारव्य-वि [सं] प्रकृतिके बतुक्त स्वारव्यकर । प्र प्रइतिके जनुकृष दोनेका साव सारच्या अनुकृत भावार गादि। सम्बास । सासकि-पु [सं] यह बारव वीका जी क्रमका सारवि था और महाभारतमें शंहबोंकी ओरसे हवा था। सात्वकी-इ दे 'ग्रात्वकि'। सात्पत्रस-द [d+] सरस्वती तथा सन्य देवताओंके निमित्त किया बानेवाका होम । सात्यवत साक्सवतेष∽५ [सं] मास्वतीके प्रवाचेर-व्यास । साम्रच∽प्र गंपका सामाजित-५० [सं] समाजितका बंदकः राजा सता-साचाविदी-स्रो [सं] सरवमामा । सारव-विदेशास्त्रा साम्बद-वि [सं] सालव्यंती । प्र सल्तीका राजा (हम्म, नक्तरेंव जादि)। पादव। हमाता मन्ता एक वर्ण-सेकर वादि (बादिण्युन वैदव और ऐसी बोसे बरस्प्र र्शवान की पहके श्रविवदी पत्नी रही हो)। सारवसी-जी [र्च] समहाः किन्।पानको मी है। 'सारवतीवृत्ति'। ~पुश्र-पु हिञ्चपाक । --सृत्ति-स्ती पार मारबीव वृक्तिगेरेंगे एक विसका बीठ महत् रीट मारि रसॉर्में प्रवीग दीवा है। सारवत्-प्र [तं] हुप्तका वनुपानीः बादव । सात्विक-वि पुढे 'सात्विक । साथ-पुर्तन देक-संबद्धांथी। व सहिता में। विस्त-प्रतिः = हारा । —साथ-अ एक सान (चनमा रहना शादि)। <u>सु०</u> —करना−संदर्भे रहवा पास रहमा। —का रोसा-कॅगोरिया बार, वयपनका साथी ! —को-वह किससे राटी कपाकर सारी जान (तरकारी भारि)। -सीमा-सावमे वॅनिन दीना । -- घसीटमा-बदर दरडी घरीड करना । -सुरमा-साथियोंने कमग रीना

संह-सहरमा क्रिया जानेवाका क्षेत्रगरि । - जिवासी (सिम्)-विक साम रक्षेत्रका । -पंका -पजी (मिन्)-पु॰ साथ बाजा करनेवाका, इसरावी ! -पवि-प

~पदिश्र~ि॰ संशनीकः सनीश्र । **~पॉडाकिस** --पांसकीकी(दिल्)-पु॰ संगीरिका दौरत । -पार्श

(हिम्)-प्र धार प्यनेवाका । - पान,-पानक-

प्र ताब पान करना । -पिककिया-की साथ माथ विदरान करना । -प्रयाणी(यिम्),-प्रस्थाणी(यिन्)-

प्र र 'सवर्षका १ -मार्थ-विक सजीका -भावी-(विन्)-वि संका । प्रश्नितः सहसरः सहस्वः।

—<u>स</u>ृक्(ज्)−वि॰ साथ धानेवाका। ⊸स्र−वि॰ शहर, माङ्गिकः। -भूत-वि संबद्धः संक्रकः।

-भोजप-पु मिथी आर्थित साथ योजन करना। ∽भोबी(बिन्)−९ साथ धोत्रम बरनवाका।

- सत-वि विषक्षा यह वृत्यरेशे विकता हो। - सना वृद्धिमचापूर्ण। -मरव-पुर शती (इस्)−वि होता सहगमन । -मानुक-वि॰ मातक्षे साथ।

−सान-वि परंदी। –शाना⇒सी बढादी त्री सती को गयी को। -वाबी(विष्)-प् 'सहर्गना । ~थोग~g साथ विकास काम करनाः

सदायता। -बोती (शिम्)-वि॰ पु॰ सदबीय करमे बाका। मददगारा साब बाम बर्मनाका वा राज प्रवासित **६। नेवामा । —हसा—मी॰ सुइएली, वार्म्**य । **—संगी॰**—

त्र• सानीः समराहो । -स्रोक्तपातु-तु• वृस्ती । -वर्ती-(सिंग्)-नि साम रहतेनामा । - अमारि-मी॰ साय वसमा रक्षमा - भागम-नि भी छान ग्रानित हो। -वाइ-५ इपोपकमनः वाद्यविदारः। -वाद्य-

🙎 साथ रहना। भंगोग मैनुन । —वान्तिक,-बासी-(सिम्)~५० साव वर्धनंत्रात्राः वशसीः सामी। ∽वीर्थ~ड नाश सरम्म । ~:तत-ि कर्पस्पवाका (-- प्रता-नी॰ वसी । -- दाय-वि शाव

रोनेबाना । -सच्चा-मी साथ मीमा । -शिष्ट-वि विसे माथ-साथ दिखा दी नदी था। -संज्ञान-दिक साधन्याच करपद्व । नर्ममयन्ति साधन्ताव उरपद सहस्र । -संबाद-पु वाटोकार । -संयास-पु॰ लाव

रहमा । -संबग-वि बद्दन वर्शनन । -धासरी-व शारोदिक संबर्ध । —सिका—नि मास्थिक, गहरा -इय-वि साथ रहनेशाना । इ॰ वित्र सावी । -स्थित-विश् भी साथ थी।

सह(म्)-९ (गं) शक्ति वना विषया प्रजेशका कांतिः असः मार्गशीर्षे ३ **सदय-**दि (संग्) भीर शरिष्णाः श्रमानीतः ।

सङ्ग्राम-१ देश महिल्ला ह महजांबरक(श्)-हि [म] च-मांच ह सहजाधिनाय-त• [गं•] भागग्रली दे होगरे क्यान्या

मा पडि प्रथ (क्वेर)। सहस्रारि-पुर्वारी वह जो सहन्ता सम्बंधिकिये मंत्रि भारिके गरकी शगहर श्रीनेकी रागावस्त श्री की ६}तेला वा घ**ंदर नार्द**) ।

सहस्रात-१ (में) वान्तिता पढ प्रवाद (शिक्षे मुँह | शहरता!-अक दिक है ("एश्वर")

अंदरको और शोवा है)। सहिमया~प्र• सहत्र पंत्रश्च मनुवादी । सहर्वेद-५० (र्ध०) बग्मद्रशिक्षे तीहरे श्वान्या बॉर्फ मह (उयो०)।

सहजेतर-वि [से] वी शहर्यन्त्र जन्मजन वरो। सङ्बी=-भ= सरक्षापुरुद्ध, अभानीते अवादम् । सङ्जीवासीम-वि (से] वा प्रशुप्त विश्व नाव्युव को सामारण रूपी परिचित्र ।

महरा~ण्ड दे॰ 'छदर' । देनि सरा। सदतरा-प्र (de) विचयवता। गहरा-की॰ (सं] दें॰ 'सहरू' । रे वि॰ स्टना । राहतामा – ७४७ कि॰ संस्तामा, धदान भिराना है ^{हार} होमा (महत्तुत-तु है 'तहत्ता । सङ्ख्य-पु॰ [सं०] साथ हीनेदा भाग देसदेत ।

सहबृह्या−क्षाँ दे॰ 'छररेई । सहवानी • न्ही विद्यानी । सहदूस-पु दे 'बाईब । सहदेई--वा॰ एक बनोनवि। सङ्ग-नि॰ [सं] सङ्ग्या चौरा यमाशीका र्यान्यामी यु व्यक्तियानाः सहतेनी जिला। समा । -मीन रि

समिष्या भीरा मेहोपी । सहस∽पु (वर्) ऑगना सुनो दूरे तमत्र वृक्ति वर्ग वाका एक बहिया देशमी क्षत्र। (-बी-मी) प्राचीनी बनचमें बनाबा हुआ होता. महान या सरम र नहर रि॰ (महास) विसमें सीमन ही। राहनक~भी० [श } तहन'(वड़ा घाव)दा सार्वं रिकारी धाली। कातिमात्री निवासी मैद्यार (मुस्पर)। सुरूम इट आमान्मर्गपरे पूर्व है आमा भतिवासी बेगोने गाहर ही बामा ।

शहमनंहार+~९+ धनरामि राजामा ! सहमा=स कि शेलना सहस बरवा वर्रात केरनी क्रम भीवनाः सार ध्रवम परमा र सदमार्थ-न्या है 'प्रदनाई' । सहसायम्-मी राष्ट्राई वजनेरामी। सञ्जीय-दि॰ (नं०) नदने योध्य अस्तर वस्त्रे कारध शवाहे बीच । महबारा-पु रे 'बर्गना ।

सहस-पु (का॰) वर भवा -- माक वि शर्पन **मर्वदर् ।** सहसमा भ॰ क्रि॰ बर्मा। पंका मानना। परण क्रांटा है शहसामा-ग० हिन वरामा वशाहरे दानम र सहरूप माइ शामा रिलीस कडक्स (०) पद शानका [अ] मीत स्पीरकी परतेका शाना सरीन भी वह संप्रता धीवम को उपनानरे हि । देश ब्यानेक्त्रे हुगुण्माम ग्रुज गत्त १६वे ४१ क्षेत्रे सिवां का बरिनार्यनका कीर चीरापुर्वका प्रमें नार्व श्वदनशे (ग्राही) धारी है ।-साह -वृद्य-सर सरहे,

with a

विक्र होता: बीस्त्री सुक्ता । -वेमा-विवादना: सहा-वता देमा। छरीक दोना। साथ वावा करवा । - मिव इमा∽निवाद दोना ः --रहना-संग रहना । --क्सा समा-धरीक हो बाता। -सना बहना-पीछा श क्रीरमा । **⊢क्षेकर हयना**-अपने साथ वृक्षरेका वी पुक्तान करमा । -सुकामा:-सोमा-किरीका यह विस्तरेपर पुसरेके निकट सीना। हमविस्तर होगा, सह वास धरमा । -सोकर मेंड खिपाना-धनिवता होने पर भी संकोच करना । -ही-सिना, सकावा । -ही साध-यह साथ । -होना-शरीक होना । साधराक-पुर है 'सावरी'।

साथरी • ~सी कुछ नादिको भटाई। सामी-प्रवह भी सावरहता हो मित्र बोळा सदावका साद-पु [मं] विचादा अति: श्रीमता: बच: वास: मोका सम्बद्धताः निग्नुबताः शरमः गतिः [म] अरगी वर्णमाकाका एक वर्णे किसी शासको और माममे एईन करने वा स्वीकार करनेका किया। वि वका मतः समा मांगकिक । स -करना-सवी माननाः स्वीकृति सुविध करमा (सादगी-को। कि } सादावन वनावका बनाव। सर

क्या। मीकापम । सादम⊸प [से] होत बीना। क्रोतिः नावः। क्रांत करनाः व्यवस्थित बरना (पांचादि)ः पात्रः भाषीः सकानः सदन ।

सावजी-को [संग] होति। दना महकी । सादर-दि [र्थ•] भारर महस्ति करवेगाला आररज्जा

अ॰ अव्यरके साथ ।

शाखा~वि [पा+] दिसा समाध्य निना काम निना चौडे, किनारीका। जिसमें नवाबद श दी। बीरा विना किसा बना (काराज)। मरकप्रदय मोकाः साक्तिः वेमेकः विश्वतर क्रिट का स्तीप ज करा हो।~कपका~न वह वस जिल्लार काम न हो ना निस्ता रंग धीव न ही।-कागज -प भीरा कार्गता वह समय विस्तर रहीर म अगाना यथा 🗓 । --कार-इ छोने-बाँडीपर वरिवा काम ववाने-शका (सुनार) । "बारी-श्री॰ श्रादाकारका काम । -दिक-दि स्टब्सिच सीना। -पन-त सातगी। -सिहास-वि विसर्वे मिनाम में बनावर में ही। सरवता सारगा । -श्रोड-विक ∽मित्रावी-वी सीया भीता। इस ।

साबास-५० 🛍 े सैवर चाति वा बंदा ।

सावाशिय-वि (धे) स्ता धिव-प्रेरंशी । सादि-रि [सं•] मारंमनुष्य । इ शार्रवा पीडाः

दिव्यक्त स्वस्थि। गानु ।

साविश्व-दि॰ [स] संचाक्षीक दुमरन (-ग्रू॰-काना-सिद्ध होता. परिव होता १

सादित-नि [मं] नैकामा हुना। विवादिता शत्न प्राप्त कराना हुआ। समाप्त किया हुआ। शील किया हुआ। ह्रांत किया हुआ।

सादिर-रि [अ] बाहर जिल्लानेवामाः वारी किया हवा (करवा, दोना)।

साबी-मा पद पिहिवा (वह साक वातिकी, मूरे रंगकी,

कोटी सी बोबी हैं)। विना गीडीवाकी पूरी। वर्तमको वीर: विसपर माँदा म कीं। † दें॰ 'सारी'। प॰ पारमीधा यधरवी कवि भीर ग्रिकेस्टॉनोर्स्स भारिका स्कृतिहा थैय बस्तिक्षरीन बीरामी। स्तो वे 'सारा'। विक -शराक-की॰ विना मिर्न-मशामे, करवी-क्कारकी सराक (-क्रवान-मी नद माना विसमें बनावर शा बनावटी हिस्तता म हो। धार्थी(विष्य)∽वि [र्स+] वैठा द्वभाः क्षांन करनेवाकाः

मह करमेनाका । स अपनारीक्षी गणारीकी रनारीकी सारकि ।

साशीनब-वि॰ [सं] वीवाप्रस्त । सावरण-प्र. सिंदा विसद बोब ।

सारदय-५ [सं] समायता, तस्वता, परानरी तक्ता। प्रतिमर्ति ।

साध्यत-वि (धं॰) परा संपर्ध। सामहरू-वि [एं॰] योग होनेशका विसमें निर्मंत य ही

सार्थत−५ सि•ोमिलक।

नाम-विक्षाम्या सका क्लम (कंपूर महास्मा, हानुः सम्बन्धः बोपी । स्त्री॰ ब्यासनाः रच्याः गर्भवे सानवे ग्रासचे होनेवाला एक शतस्त्र ।

साथक−वि [नं] सिद्ध करनेवाकाः संपत्र वृत्ता करन-नामाः समर्थे बीम्बा अध्याः संत्रवक्षते निक्र करनेवाणाः स्वायका देतेशाकाः स्वयोगी । प्र स्वायका साधना कुलक न्यांकि (विशेषकर नाव्यो)। बाराबक तपसी। थोगो ।-शर्ति-धी आवद्यो वसी प्रवासा ।

साधकता-नी [र्व] बच्दुन्तताः वरवीयिता । साधकत्व~प (र्व•) बाद नाओगरी सिक्रिः।

सायका-की॰ (ते॰) वर्गा।

सायम-नि (रा•) सिकः परा करमेनाता । त॰ परा करनाः सिक्तिः वरेश्ययासिः वरिता वसीकाः कारणः करणकारक (न्या॰): जीवार: शामग्री: परार्थे हरून: सेमाः श्रहाबहार श्रमाना चपाना हैतः (न्या)। बीहनः वक्षीकरमः नीरीय करनाः मारगः प्रदेशकरमः नमनः प्रस्थाना अनुसमया तपरवर्षी। नेपादि सिक्ष करना। श्रीक्षप्राप्तिः वातु-सोचम जीवन-निर्माण ऋष मादिकी प्राप्तिके निव कारेज विकालना (स्वरदार)। घरीरका कीर्र सन्बन्ध क्षित्रक बना संबंधा मेवी। सामा बुवक्रधारकार । --शास-वि+ विश्वये किय प्रवास हो ।--चलुहय-चु बार प्रकारके प्रमाण ! -- निर्देश-त प्रमास प्रस्तुष बरमा (ज्यवहार) ।-पग्र-प्र किथित प्रवास ।-हार-विक निक्क करमेवाका। दिश बीन बीम्य ।

सामगढ-पु [से] मरिया कश्करण र

साधनता-सी॰, साधनाव-पु [तं॰] बरेदवपृतिका सरिया दीवा छिक् करमेकी विकास निविधी अवस्था । साधना-मी [र्थ] कार्य-विकित जारावना क्यासमार सहीकरण । स॰ कि॰ निश्व करना पूरा करना। नम्बान करना। शहर करना। डीक करना। वक्ट्रा करना। निधाना क्रमासाः क्यारें करमा- अव कवि तुमदि म बाह् सावा -रामा । क्षांच करना। चापनाः प्रमानित करना। • सक्न करवा-'साथे भूराव विमानन है। मारवडे निरने -म्रथ

भागमें-शतकी गतमें।

```
-इंड्सि-पु० कृष्णके विदा बहुदेव । अहुंडुमी असी
 मगाश ।
भानदृष्ट्-वि [सं०] बहसे संबंध रखनेवाहा।
भागत-वि [सं ] शुका तुशाः नमः, विनीतः समस्कार
 क्र्रमेबाला । पु॰ एक् जैन देवता।
आमृति—सौ [धं ] सुद्धमाः प्रणाम दूरमाः सत्त्रारः
 र्धकृष्टि ।
सानस-वि [do] वैदा वा गड़ा हुआ कोडकर । पु०
 महा हुआ बाबा-होल सूर्यंग बादिः बनाव-सिंगा८ सवा
 बर । ~वस्तिता~क्षी देशक थामकका स्कमा।
भागम - पु [सं ] मुँहा चेहरा। ग्रंक्डा वहा खंड, कच्याव !
भावनफानन-थ तुरतः नदि श्रीत्र ।
थानना*-स कि काना।
आनमन−पु[सं•]दे 'शननि'।
सामसित-वि० [A+] झकावा हुना, नवाया हुना 1
भामयत-प [में ] काना पास स नानाः छपनयन
 संस्कार ।
भागरेरी-वि [भ ] सम्मानार्थक (िमो); अवैत्रमिक
  (कर्मधारी)ः निवेदन ।
 भागस-प [र्स+] सौराह देश वा वहाँका निव सी। रंग-
  शासाः नृत्वशासाः नृत्यः सुद्धः वशः एक स्पैर्वशीय गरेशः।
  -मगरी-त्यै ~पुर-पु शास्त्रापुरी ।
 भागतक-दि [री] भागत दहेंने संबद या बहाँ स्टब्ह
  सावतेवाका ।
 ब्यानर्तन-पु[मं•]नाचनाः
 भानर्षक्य~पु [सं•] उपयोग-राहित्व निरर्वकता; अनुष-
  मकता ।
 भागा∽भ कि एक बगइते चरुक्त, दूसरी बसद (वडने
   षा सननेवार्कके पास या उसके स्थानपर) पर्वेषनाः वहाँके
  किए रवाना द्दीना। कीरमा। शुक्र द्दोना। यत-पूक रचनाः
   मिलना; मोज्य बस्तुद्धा पदमा; स्प्रकित होना; द्वान वा
   बस्यास दोनाः बेंटनाः बैठमाः बदना (पान कमरहाः बा
   मने है); अंतर्मान दोना- (क्षीवादिका) शरपन्न बोना । प
   रूपमेका सोकदर्श माग जार पैसे सोकहवाँ माग।
   भारा व्यक्ता−भाने प्रानेशका । आशा ज्ञामा⊸भागर
   रक्त मिठना बुढका। शामी आसी~भाने जामे वनसे
   निगइनैनाकी अस्थिर नहतर । आया गया - मेहमान,
   वर्षिति । आयेदिम-नित्वप्रति । मुण -आ धमकमा-
   अभातपः भाजाताः सानिक्रकता-अवानकः पर्देश
   जाना। आ पद्म~द्दावद का जाना हुट पत्रनाः
   संदर निपद् भागा । इस क्षमना-अवसर टाथ कवना ।
   भारद्वमः-गिर पहना। आ स्थाना-भारंभ दीना
   साव करानाः दिकान पर्देवना । आ ऐका-एका हैना
   पर्देष जाना ।
  भानाकानी-भौ रात्रमर्क बद्र एतरावः कानाष्ट्यो ।
```

प्रतिषा मंग बरना। इठ छोषमा । --रखना--अपनी नात

माम-पु, सौ∙(१) [ध] धूण, ठइका। मु॰ −की

भागक~पु॰ [सं] टंका, तयात्राः गश्यकृताः तुव्या नादल ।

```
आनाह−पु० [र्स•] वंपनः मकावरोदः सक मूत्रके सवरोद
 सं पेटका फुछना संबाई (क्यूडे बादिकी)।
आनाहिक-दि॰ [र्स॰] कम्बमें इस्तेमाण किया भागेगाण ।
शामिक−भी दे'बान'।
वानिस-वि॰ [र्स•] वानु संबंधी । पु॰ इनुमान् । मीमा
 स्वाति मध्य ।
श्रामिकि−पु [सं०] दे• 'नानिक'।
भाषीत-वि [एं०] काया हुआ। पास कावा हुआ।
कानीति—सी सि॰ो मासदन 1
माणीछ-वि [एं०] इक्के शीसे वा स्वाद शंका। ए०
 रवाद धोड़ा।
बालुकुछिक−वि० [सं ] अनुकृतः ।
भागुकृत्य-५० (छै०) जनुकृत्वा ।
भाजुनतिक−षि॰ [एं०] बनुवाबीसे एंबंब रखनेवासा ।
भाष्ट्रगरय-प्र [मं ] अनुगत शोषाः अनुगमना परिषया
 यनिष्ठता ।
भानुप्रहिक−वि० [मं ] भनुप्रह-प्रेरित । —कर-नीति-
 सी॰ कुछ चीबॉपर रिवाबती कर हेनेकी नीति ।
 -वारोव्यह्मक्क-९ 50 विशिष्ट वरतुओं पर कम किया
 भानका सुरू वा शुगी।
भाजुबासिक−वि [ध्री] बास-धेर्वकीः बामीग ।
आनुपविक-वि• [सं ] पीछा करनेवाला अनुसरम करने-
 बालाः अध्ययन धरनेवासा ।
बानुपूर्व−प , बानुपूर्वी−सो , बामुपूर्व−प [तं ]
 पतक बाद पत बोना, छिकछिका असः नर्गम्बनस्या वा
 बसका समा
बातुमानिक-वि [सं ] अनुमान अन्यस्पर बाजित,
 क्षामी ।
आलुपाद्मिक−पु० [गं•} अनुवर नेवक।
मामुरक्ति-सी [सं] वे अनुरक्ति'।
आमुखोसिक-वि० [मं ] क्रमद्द्र, सिक्मिनदार अमुकूकः
 खप्युच्छ ।
मानविशिक-वि (सं॰) केमपरंपरासे मास पुरतेनी।
आमुद्रेह्य~पु [र्छ•] वह परोग्री विसन्ता पर अपने वरस
 दुसरा (प्रतिबंदीके बुद्ध) हो ।
जामुश्रविक, आनुशाविक-वि [मे ] अनुमृति, सृति-
 पर्यसम्बद्ध आभित्त ।
आनुर्पशिक्र−दि० [में ] संदशः संयुक्तः व्यनिवादेः गीमः
 सरका जानपानिक ।
आनूप-वि [सं ] दहरह, वेंसाववाला गीला (मृत्तंट);
 अन्य देशमें जलका। पु अकते विरोध संबंध रसनवाका
 जानंबर (भेम यक्ता)।
आम्पक-वि [गुं॰] यतदर आदिमें रहत्रेवासा ।
भागृब्य-प [र्व ] ऋग-परिग्रोव अनुमन्ता।
मानुष-वि [मं ] इम्या भूठ बोलनेवाला ।
आमृतीय आमृतीय-वि (सं०) दवातु क्षेम्क स्वयान
 का । पु॰ धीमकता, दयातुना; इक्रा ।
```

भानाध्य−पु[सं०] जसहानावस्था । जामाय−पु[सं०] जारू ।

भागाची(पिन्)-प [सं] महुआः

भानेता(१)-वि+ [मं+] छानवासा । भानेपुण भानेपुण्य~पु• [सं] भरापनः अवसना । भानवार्य-प [मं+] ^{हेन्स्पे} वा अभिकारका असाव । साच-दि॰ सि] विसके पास अग्र या साय-सामग्री प्रस्तत हो। जिसे साथ परार्थ पिछते हो। साम-संबंधी । साम्बद्धिक-वि» [मुं०] करोमा व्यवस्थित । मान्यद्विक−दि० मि॰ो प्रतिदिस होनेवाका । साम्बीसकी−लाँ० मि ो तर्वदात्वः सध्यात्मन्त्रामः । आप-५० मि रेपाली प्राप्तिः एक बताः आकाश । वि प्राप्य ।-रा।-या-नौ नदी । -निधि-न समह । --श्र**िमरी--श्रो॰** किंगिनी भागक कता । आप-सर्व ग्राद, स्वयं: तम, वे येका जादरार्वक कथ। पु क्रमारमा । – काश्च-पु भवना काम । – काजी--

भपना मतनर देखनेवाला। -धाप-ली• दे भाषाचार्या ! -धीसी-भी भपन रूपर बीती वह बात भपने जीवन वा तर्तर्गत वटमानिशीपकी बहानी। ~क्य-वि सर्वः सम्राट् । ~म्बार्क् -वि राज्यके मत्तवर्थे । स॰ न्याप करना-लग्रामद करना। -आपकी प्रका-काने-काने कामी व्यक्त रहना! ~आपको - अहग अक्ता, अवने अवने; अवनको । —से शाय-सर्वराद अपने आप ।-डी आप-स्वतः, अपने मनसे। यन श्री मन ।

भाषक−वि [नं] प्राप्त करनेवासाः।

भाषकर-दि (सं०) अमेशेषुणेः वानिकारकः अनिष्टकरः

त्रराई श्रदनेवाका ।

श्राचळ −वि सिंबिम पदा द्वारा । बापरीय∽पु• [मं•] भीष्म ।

सापज-प [मं•] पाकारा बुकान । क्राप्रजिक्र−वि [रं!•] वाबार-ग्रेवंपीः वाजारछे नात (कर

भारि) । पु बुकानरारा माजारा बुकानक कर । भापतम-पुर्वि पूर्वेचना पूर पहनाः परिन शीमा बतरनाः प्राप्तिः ग्रानः स्वामानिक परिणामः।

भाषतिज्ञ−(५ [तं] भावारिमदः वैगीः वरवा । छ० वाज । सायत् - नापर् का समासगढ रंग ! -कस्य-प नापरः कासके किए विक्रित विकास ।—कास-त मुसीवन वड ब्रहिनारेंद्रे तिन ।-ब्रासिक-वि आएकालमें देनिशता आवर्ष्यास्त्रे सिय प्रस्ति । नश्चन अस्यान्त्रः शेष्ट्यानमें टिया द्वामा ऋष ।

सापसि-मा॰ [र] दिवद्य संस्था दोवः वस वनसमा

व्यनिष्ट प्रथ्याः प्राप्ति । भाषरा-वि+ [मृं+] अपाय-मृरंथीः अप याधिकारमै विद्यित

(प्रस्वय-स्याः) १ भापन्यं –पु [rj+] जिसरी ग्रहम करमरी धविष्यमें अनिष्ट

दी यह चन-अंपरि । भागवा-भी [मंग] विराह

सापन्-सी [मं] दिश्य शुगीरतः श्रष्ट वर्डस्मार्वे । रान - प्रमन-१ सुमीश्तमें चैंगा प्रभाः भागवदीन । -पर्म-द वह भाषरण, वृत्ति आहि जिल्ही दत्तारा देशम धारानामध्ये (तद हो।

आपन -पु. [तं»] चना। वर्षेषमा। मैंरमा। मिर्ने । + गर्व

दै 'अपना' । -पो,-पी+-प+ दे॰ अपनचे'। भापनाः भापनोश-सर्वे हे॰ 'अपना' । आपनिक-प निर्ण बेहमोरूममि। हिरात या अपन

व्यक्ति । भाषच−ि• (तं•) प्राप्तः तंत्रकी पश्या दशाः शास्त्रातः

(संबद्धापक)।-सरवा:-स्पं: गर्मवती। आपमित्यक-वि [मं] विनिधय हारा प्राप्त । वर्ग विनि

मन हारा मात बस्य । मापयिता(म)-वि [मं । पाने, जरानेशवा । आपराहिक-वि॰ (सं॰) तीसरे पहर होनाका ।

व्यापर्तक-वि॰ (तं॰) किसा विशेष समय या बतुन अर्थ म रद्मिनेबाला । कापय –पु॰ सि॰] वशिषका यक नाम ।

कापवर्य-विश् मि] भीक्ष देनेवाला । मापम-पुर्शन हेक वेक, नाता परत्रत्य संस्था च्चारी-स्ना परस्पर निष्ठ संस्थ मार्रपारा । -का-रवजनों संबंधियों निजीति बीचका (-का मानना-की कर) ।-म्री-बरस्पर, वक दसरेके भाव ।-बाय-स्वयद

र्वार्थाः मेक्ट । आपमी-दि साप्सदा।

भाषस्कार−त [थं] ४४ वः धरीरका छोर । भागस्त्रंब-प्र [र्ग+] न्य शासाप्रवस्य श्राव ।

भाषा –पु॰ ध्यना स्वस्य सत्ता, बातः भवनी सत्तानाशानः भदमान मुद्दीर महंदार गर्नः सुचनुत्र । मी॰ दही बहन (शुन्तक) । मुक -रशना-प्रमंद छोतना। नतनेसी वर-बाद करमाः मरमा !-बालन:-बर्मर छात्रमा !-सप्रमध-मेटमा-वैत भारका स्वागः बमद छोड्ना ।- दिलकामा-बर्टन देशा । -बिसराबा-अपनेदो भूस जाना हुव दुर द्यो देना ।−सँमालमा− पतना धत्रगदोना । −(द)में भाना या क्षोमा-होस इयाममें होनाः मनीभारीश हार् दोना। −में गरहना−से निकरना−स वादर होमा-बोपारिके अनिरक्षने यनगर कानू म रहना, वर्षे कतामें विदेश भी हैवा पैर्वध्यन हाता।

आयाक∽पुर्शिशे और्थी मधी।

आपाल-प मिश्री रिरालाः पिरायः अवातद भा वसक्ताः दूर वहनाः वर्गमान ध्रम या बाधः अवस वर्शन वहनी नियाद । -हुरमद-वि जिल्हा प्रथम लाक्ष्मप सम् ही। -१मर्णीय-दि॰ (देवन) शब्दान पुरा देनेवाना। आपातम (तम्)-अ [धं] पर्ना निवाहमे अराने देशनेमें: राष्ट्राः, तरतः महस्यात् ।

आपासी(निन्)-१ (तं») धिरमेशासा वत्ररवेशाणा

भाकामक, वन्ति है ने राता । आयात्र-तु [मं] प्रातिः तुरस्दार् । अन् वैरमे ४वरा वैर तह। - समय- भ रीरो पैरतहर

आपाधापी—मी इर १६०३ भगना वा भन्ने बामडी विश होमाः चौपत्री ।

आपान-पु [गं०] का जीनीया विश्वय प्रशासीत श्रुवरोत्ती प्रस्तुत्र क्षेत्रस्य प्रसार केल्या स्थान । न्योगीन क्रो॰ एड साथ मथ पीने बच्ची शणी । - मुमि-भी व सर जनान प्रशं को सालगी बेडका मचचन करें र नद्यालान साधनी-सी॰ बमीन बरावर करनेका सोहे वा ककरोका भौत्रार ।

साधवीय-वि॰ [सं॰] सिक् करने भोग्या निर्माण करने बोध्व (छन्द)। प्राप्त करने थीग्व (बैसे बाम)। प्रमाणित दरमे योग्य ।

साधवती-भी [सं] उपासना करनेवाकी।

साधियतस्य - वि [सं] शावने सिक् करने वीम्य । साधियता(त)-त [सं] क्षित्र, पूरा करनेवाका सावक।

साधर्मिक-प [री•] समान पर्मका अनुवायी। साधार्य-पु [सं] वर्म, स्वमान पर, कर्तेम्ब आदिक

एइ वा समाम **होने**का भाव । साधसण-पुढे 'साजस'।

साबार-पि॰ [सं] विस्का भाषार हो भो किसीपर

निका हो।

साधारण-वि [सं] सिविशेष, मामूरी: सरक, समान: सामान्य की किया आसाम सरका मिला-ज़ुका। यकाविक दिवबोंसे संबद्ध धतेबाहिन्द्ध (नदा)। बीचन्द्रा । प्र एक संबरसर। बद्ध को सबसे हो। बद्ध नियम की धर्वत्र काग्र हो। बाठि वा वर्गका सामान्य वर्म । – शांचार – ध्र विकृत स्वर (संगीत)।—हेका—प्र॰ मासूकी देखा अंगक, रकरक मादिराका देख ।~धर्म -प्र धर्मे पाया वाने-बाक्षा वर्गः सार्वजनिक कर्नव्य (अदिसा सस्य जावि)ः

प्रजनन-कार्यः! ∽इती – अर्था वेड्याः। साधारभदार्थकम्) – अ [र्ट•] बाम तीरपरः प्राव ।

साबारणतया-म (सं•) दे 'शाबारणत । साधरणस्ब-प्र (सं•) सामान्ब साबारमतः-सी

सार्वबनिक होतेका सावः सम्मिक्त हित्। साधारणी-को [सं] सरको। वाँसकी करन (टबनी) ।

साधारणीकरण-पु [सं] है + 'निमानन' (सा)। साधारञ्ज~प (से) हे 'साबारणता ।

साधारित्र∸वि [सं•] विसे धवारा दिवा गवा दी समर्थित ।

साधिका-वि न्ता [न] सिक्द करनेवासी । स्ता गक्दीनीय।

साधित-वि [सं] सिक्ष पूरा किया हुआ। वसमें किया प्रमाः प्रमाणितः वासः दंवितः वानितः श्रीनितः (क्रणावि)ः

धीवा हुमा चाकित (वान) । साधिवास∽वि [सं] सुर्गवयुक्त।

साबी(बिन्)-वि [तं] सिक् करनेवाका (समासमें) । साम्र-वि [सं] वहिवा सत्तमा पूर्णः वपयुक्तः ठीकः थार्निक वर्नेपरावकः स्वानुः शुक्तः प्रिवः कुक्रोनः शिक्षः। पु सवायानक अल्पनी। संता मुनि। जिना बीहरी। मदावनी करवेदासा असीदका व्यापारी। दमक्का वरण पृक्षः । ~कारी(रिन्) −िव क्रीक शरपनी कास करमेवाका, वस चतुर; उत्तम कार्व करनेवाका । -कृत्-वि वक्षित क्यमें किया हुआ। −कृतव∽नु श्रुतिपृतिः काम। —श्र−वि सहस्रवातः। —जासः⊸वि सुंदरः। ~क्संब-वि संदर: विवारक्षीक !-क्सीं(शिन्)-वि विवेदी ! - देवी - स्ती सास ! - घी - खी सामुद्धि अच्छा स्वमावः सास । वि अच्छे स्वमावकाः चतुर । −ध्यमि−सौ शानुसाद । –पद−पु• सन्मार्ग । –पुष्प शुंदर पुष्टा स्वक्षपथ । ~पास्ट~वि अवशा पास देनेवाचा। ∼भवन~पुडुटी। ∽भाव−पुथच्छा स्वमान वयाकुता । - सन्त-वि० सुविचारित । - वाद-पु॰ छानाशी देना । ~बादी(दिम्) − वि प्रपित करने बाकाः प्रशंसा बरनेवाका। -बाह्य-प्र अन्धा शिक्ष जाबा हुआ थोड़ा। ~बाही(हिन्)~वि अच्छी दरह (गाडी) श्रीचमेनाकाः जच्छे घोत्रेवाकाः । प्र अच्छा बीहा। ~ ब्रह्म −पु॰ कर्त्वावकण वृक्षा (-- ब्रुप्त − वि अध्य गीकाः सराधारीः नन्त्रे स्वमानकः । प्र स्वाचारः रेमानदारी । ~क्षणि~को • अका पेदाः अन्ती कारिकाः वर्मानपात वादि । वि॰ दे 'सायुक्त्य'। ~तेप−वि वक्तामृतित । -शब्द-पु शापुबाद प्रश्नंश ।-श्लीक-वि वर्मारमा। -ब्राह्म-विश्ववत संदेद ! -संसर्ग-प सरस्यति । -सस्मत-वि अव्याञ्चलिकोद्ये मान्य । ⇔माश्च-॥० द्यानाद्यः पम्बन्धन्य ।

साधक-प (सं] यह नीच कातिः करंश करण कृष्ट । साप्रता—सी साधत्व-प्र [सं•] सम्मताः मेद्धाः सरकताः विद्यादता पवित्रताः समार्थः। साजुमती-को [सं] एक द्यांत्रिक देवी। वोशिसलॉको

एक शेणी । साञ्चयम्य-वि+ (सं] अपनको पर्यातमा मानमेवाका ।

साध्-द्र दे 'संख् ।

सामुक्त-वि [सं] छल्दक्षी द्वारा कवितः। सास्त-पु॰ (सं॰) हकाना मन्तीका श्रंका छाता। क्रम गीधी ।

साबो - प्र वे साप्त (संबोधनमें) ।

साध्य-वि वि किस होने पोन्या पूरा किने बान बोग्या प्रवीपमें कापे जाने बोग्या सरका प्राप्ता प्रमानित करने थोग्या निष्याचा वस्रमें करने भोग्या अच्छा इस्ते बीध्व (रोग): बच्चा धोवमीम । पु पक देववर्गः देवताः पक मंत्रा सिक्षिः पृतिः वद विसे प्रमास्ति करमा हो। सचाईस वीगोमिसे एक (क्यो)। जनुमय प्रमा - प्रधा-प्र वह पक्ष विसे प्रमानित करना हो (स्ववहार)। -सम-पुपक तरहका देख जिसे प्रमाणित करना प्रश्ना -साधन-१ देतु (म्वा) । -सिविइ-श्री विसे बरना है वसका संचारना निष्पत्ति ।

साध्यता∽सी [सं] ध्रमनताः (री-एका) जव्या दिले गानेकी रिष्शियें बीता ।

साध्यर्षि=५ [सं] सिव ।

साध्यवसानाः साध्यवसानिका-को॰ [हं॰] पृत्रास विषयका अन्य(विषयी)के साथ अमेरधान करामेवाकी क्खपा(सः)।

साध्यवसाय~वि [सं] बिलका भर्व कपरने प्रवन किया मध्य (सा)।

साध्यवाम्(वत्)-त [सं] वद पछ जिसपर अपना बाद प्रमाणित करमेका भार वा (स्थवदार)। वह जिसमें मनुदेव हो।

साध्यस-पु॰ [t] दीम मन त्राप्त परहाहर; बनाबदी भव (ना)। ∽विप्तुत−वि सवानिमृत।

1884 माबरक-पु॰ (सं॰) सुदेर सीव । सावरण-दि [सं] बढा हुना, वंद दिवा हुना; नर्गत या ताका भगाया हमा । साथरणी-जी॰ जैन परिवॉकी दुवारी। सावरिका-को [सं] एक तरहको बीका सावण-दि॰ सि] समान रंग वा आदिवाकेसे संबंध रकानेवाका। पु॰ आठवें सन्। एक भावि ! - ब्हबाय-प्रचर्नी। सावर्णक-पुर्धि । एक मनु । सावर्शि-प्र [मं] एक नावि- यक मनु वो सवर्णासे करपत्र स्पैदे पुत्र थे। मावर्जिङ-वि॰ [सं] हसी बातिमे संबव रखनेवालाः मत् सामर्ग-संबंधी । माधर्म्प-प सि रेय वा चाठिको समानताः बाठवें ममुका चुन या मन्त्रीवर । सावसेय−वि [धं] वर्नदी गर्वोका। साबसेय-दि (ए॰) बिएका कुछ नंश नाकी नना ही। मपूर्व, अवृरा । पुधेर क्या इता बोध । ∽श्रीविक्र− वि विस्त्या बीवन मनी समाप्त ल बजा हो विसन्धी मात्र वधी हो। - बंधन-वि जिसका वंदन सती वता हमा हो। सावर्ष स~वि [र्थ] वर्मकीः रीवदारः सावसीः व्यः सामनेनी । प्र वह मकान विसके क्यर-वश्चित्र सहसे हो । सावदिव-दि [सं] सनवान । सावहेक~वि [सं] डफेहा या चंत्रा करनेवाला । सार्वी−त दे 'साँगै। साविका-सी [मं•] पात्री। सावित्र-दि [सं] स्वं संगंभीः स्वंते करपता स्वंबंध-संबंध कर्न संबंधाः गावनीते सुन्छ। पु॰ सुर्वाः भूम गर्मे। बाद्यका शिवा कर्ना: वता एक करिना तसवाँ क्रया: मेरको एक भोटी। यह द्दीमा बद्दीपनीतर्सस्कारः बद्दीप-बीतः इस्त नक्षत्र । साविधिका-की [सं] एक शक्ति। मावित्री-की [सं] एई-संबी एक वेटर्सन सामग्रीः वयनपन्छरकारः ज्ञासी पत्नीः पार्वतीः अववतिकी पूत्री भीर सत्त्वभानको परनी (विग्रने अपने सर्वात्वके करते

वपने पतिको समस्यबद्धे हाथसे सुवामा वा)। दक्की प्रभी और वर्षको पत्नीः करवपको पत्नीः वारामरेश मोजको पत्नी। महाकाको एक पुत्री। वसुता मही। गर स्वती मदी। प्रकाशको किरमा स्वेरदिया जनामिका (रॅयक्री) : --सीर्थ-पुरुक्त तीर्थ : -पवित -परिश्रष्ट-वि विसवा समित समयपर स्थानवस्पैन्द्रार न ह्या हो।पुरेमाम्बक्ति। –पुत्र–पुश्वविवेदीस्क वरवाति । ~ अस - अस्तक ~ पु परिन्धे दीर्गानुके किय क्षेत्रको भगावरवाको रखा जानेवाका हिंदू सिकोका एक मन । ∼सम्र∽प्र वहोपदीत । साविश्रेय-दु[सं] यम। साविष्कार-वि [सं॰] प्रकाशकाली गुण श्राण्डिकारि

का मर्द्धन करनेवाका वर्मडी ।

सावरी–की [र्स] एक राधिनी।

सावरब-साहनी सार्शक-वि॰ [सं॰] बार्शकानुक दरा हुमा। व बार्शका-पर्वेकः । सार्वास-दि॰ (र्स॰) वन्त्रकः नाशानित । साप्तयंदक-पु॰ [र्ष] (धेक्टर) ज्येपी । साध्यक्र−प्र∘सि विश्वला सामर्थ-वि॰ [सं॰] जामर्वत्रपक्ष चक्रित । ज मामर्थके साथ । -धर्य-वि० विविध आधारमहाका । साम्ब सामा-वि [र्स•] जिसमें क्रीज हों; समपुर्ज । साम-वि॰ [सं०] बग्रपूर्व, रोठा हुआ। सामधी-खे॰ सि । साम । साम्बद-वि॰ दे॰ 'शायव'। साष्टीग-वि [एं॰] बाँठ बंगोंसे पुस्त । —प्रवास-पु बाठ बंगों(छिर, हाथ पैर, माँब बाँग हरव वसन और यन) है बोपर्स किया नानेग्रका प्रमास ! -धोरा-पु कम निक्म, आसन प्राणादाम, प्रस्काहार, वारणा भ्यान और समाथि-इन आठों अंगोंदाका क्षेत्र । सास-स्त्री पठिया परनीकी मत्ता। वि [सं] विसन्ते वास कमान हो। सासत-की साँगत, कहा साँसिति - ची दंद, सन्ना शासन - प्राप्ति करि पुनि कर्राह एमाक¹~रामा । सासनां-पुदे 'धासन'। सासमस्टेट-इ यह मध्य बाकीदार कपना । सासमा॰-सी दै 'शायुन'। सासराक-पु सञ्चराध। मासा॰-की संस्था स्त्रेडा स्वास । सासान-पु रैरामके शासानी राजनंत्रका मूक पुरुष । सासानी-पु का] देरामका एक राववंश्व सासु−वि [सं] प्राण्युक्ता ≉ स्रो सास्। सामुरा - इ समुराक्त समर । साम्रस-वि [सं] बावहरू। सासूय-दि॰ [सं] ईम्पांसु । ज ईम्बीपूर्वेद्ध । सास्थि-वि [थे] जरिवयुक्त । -ताक्राय-पु करेंसा । ~क्य-पु+ धरिधना**डे** बोक्सा वस । सास्ता-बी [सं] गाय-वैतका ग्रहदेश्ह । मास्मित्त-पु [सं•] हुद सत्तको दिवसीमृत मावता । सास्वादन~पु [सं] निर्धामप्राप्तिकी कीयद शवस्थाओं र्मेंसे दूसरी (ब्रे)। साइ-यु सुबन साहकार। महात्रनः देवकीवदा नागुः चौरारके जाबारवर कगनेवाले आमशे सामनेके रहेमर ों है 'शाह'। वि [सं] सकलतापूर्वस्य प्रतिरोव दर्मे नाकाः दमम करमेदाका । - युस्युक-त्यी [हिं] एक तरहरी संगी पूँछनाकी शक्य मुक्कुल । साहचर्य-पु [सं] सहसमन सहचरता साव रहना साथ संगति।

माइब्रिक-वि (से] सहकार स्वामानिक। **– धन**−

साइनी = न्त्री साथीः पारिषरः सेवा- 'कारे निसायर

साहन-पु [सं] सहन दरनेमें प्रशुच दरमाः महन ।

पु बेतन विजय आदिशे प्राप्त भन ।

शहनी शाबि -रहराव प्रशास ।

साध्याचार-त [सं॰] सातुर्वीका बाचारः शिक्षाबारः महोचित कार्य। साध्यी-सी॰ [सं॰] परित्रता सीः वर्तपरावणा सीः वस मक्त, मेदा। सार्नेद-वि [मे] बार्मद्रपुक्तः प्रसन्तः । पु॰ सोक्रइ मकारके अवस्थिति एका गुच्छकर्गका समाधिका एक प्रकार । ज॰ बास्टरपूर्वेच, सुद्धीके शाव i सामंदाभु-पु [मं] आमंदर्ड ब्रोक्से निक्ते हुए जाँसू । सानंदर-प्र• [सं] एक होषं । सान-प्र परवरको वह पद्यो जिसपर कसारा, बेंधा बाहि की भार तंत्र की जाती है (क्हाना, देना परना)। 🕆 सी छाम ! -गुमाम-द्र सुरागः निद्यानः स्वाकः वसारा । सानमा-म कि गुँबमा, माँबमा श्रीक करना, आगी दनालाः कपरला । सानस−वि [सं] भम्बियुक्तः इतिका नसबद्कतः । व शान बसका निर्वास । सानमि~द्र [सं] होना, द्ववर्षः सानास्य – प्र. [सं] सहावदाः मध्यः। सानिका सानेविका सानेवी-कौ [सं] वंदी। सानिया−द्र[स] पत्र इन । सानी-स्रो पश्चमेंद्रा दानीमें सावा हुना चाराः शाहीके पहिचेमें क्याबा बासेबाका मिट्टा नंतरीके मिकाने हुए करं तरहके साधपदार्थ (व्यंग्य)। † सनर्द। वि [वा] दूसराः बोस्काः समना ऋरनेवाका । सानु-दु [सं] पहारकी चीडी श्रेगः वहारकं क्यरकी भौरस मृत्रि। मेंसुना' पहना संगन्। सन्दा सनदा कराराः कार, सिरा। सुनि। विद्रान्। प्रमंत्रमा सूर्व । ~क-स प्रपोदरीका तंत्रक रखा - मस्य-प प्रशैवरोद्ध । -स्ड-वि पद्मावपर ~सामह−प क्षप्रजेशाला (वैसे जंगक) । सानुकृप-दि॰ [सं॰] दबानु कीमकवित्तः। सानुक-वि [तंत्र] को कराकी और वहा हो; गवित । मानुक्स-वि [सं॰] वे अनुक्र । सानुकूरम-५ [र्व] क्याः वहादता । सामुकोश-दि (एं॰) दयातुः ऋदयात्रील । सालुझ-वि॰ [र्म] अनुव, छीडे बार्रस कुछ । पु॰ वे 'सात में । मामनय-वि [मं•] विसदशील, श्रिष्ट : अ• विनय पूर्वकः । सामुनामिक-नि [सं] विश्व(अदार्)के ककारवर्गे माकका बीम बी। माकके बीमने माने वा बीकनेवाला । सानुपास-वि॰ [मं] अनुपासपुर । मानुप्रय-वि [सं] भी अनुगाविभीत साव हो। सामुर्वध-दि [तं] जिल्हा संबंध विधिद्ध म हुना हो क्षमनकः परिचाममुक्तः जो भवनी बल्तुओने सुक्त हो । सानुमान् (मत्)-५ [सं॰] धर्वतः। सामृष्टि-प (सं॰) एक गोवप्रवर्तक कवि । सानेरमा∽ि [म] बनामेबका विभानेबका सका। साधत-प्र[मं] एड साम । साबस्य-वि [सं] प्राप्तिक प्रवृत्ति संविधी।

साम्रहनिक--वि॰ [सं॰] कनम-नारण करमेशासाः सदावं मस्तुत शनके किए मोत्साहित करनेशाता। पुरु काथ-थारी सैभिन्छ। शासाय~पु• [र्स] इत्यके काममें आनेशाला मशिमतित पत बीमक किए विशेष प्रकारते दैवार क्या हवा थी। -क्टंसी-सी उक्त थी रखनेका मरतवात । -एाद्र-पु सामाय रचनेका पात्र । सामाहिक-वि [मं] वे 'सामहनिक । साक्रिप्य-प्र• [सं•] सामीच्या एतिप्रदशा मुकिपा एक STATE 1 साधिपासिक-वि [सं] बरिक, पंबीपा विषया विर्मेश बन्ब (बिचम रीम)। साजिपातिकी-सी [सं] यह निरोधन वानि रोता। साम्म्यासिष्ठ-५ (र्छ) सम्म्यासी। वर्षि । साम्मातुर-४ [र्व] शाशी सीमा प्रद । सान्वय−वि [रं•] भातुर्वधिका वंश्ववेति साथा सक्का भर्वपर्वः समाव कार्य बरनेवाला ! साप=-व हे 'शाव । सापरब-वि [र्स] शीन-नंत्री वा शीवसे प्रतयः। ह ਚੀਰਾਹ ਚੰਗਬ । सायत्तक-प्र• [र्म•] शीटोंनी बारक्षी शोर वा हरवनी। ঘরণা । मापलेय-(१ (६०) होतंका। सायरम्य – दु [र्थ•] संपत्नीमान, सीवपवः सीवभाषमः सीतका पुत्रः सीतला मार्शः श्रेषुताः प्रतिक्की शक्षः। सापरम्बद्ध-५० (सं) प्रतिद्वंतिया घष्ट्या । मापत्रप−ि (सं•) कमित संदर्भतः। सायन-१ पढ़ रीम जिसमें सिर्फ नाम गिर जात है। सापना १ - स । कि चाप हैनाः श्रीसमा । सापनावक-वि [मं] अक्तरायधः विसमें अवनार को सर्दे । मापाय-वि [र्न•] शबुर्व विव्यवेशालाः प्रश्रेते मरा सार्विच्य-पु [र्म•] मर्विटवा स्मिष्ट होनेहा भार । सरपेश-नि॰ [सं॰] बिसमें दिशोडी अरेबा ही। वो इनरे पर अवसंवित हो। माप्तर्ततव∽प सिंो पद प्रत्येन पानिक संग्राव । शासपम्-वि [मं] मारको संदेश समग्रीमर बार्ड । ५ सम्बद्धाः येशा वनिहता। सालपदीन-वि ५ (चं) दे 'सालपर' ! सामगुरूप सामग्रीदय-दि (ते) गांव गोरियोगक सामग्रीक-वि मि] सामो शिव धंनेका साम बारक रोपंधा । साक्षाहिक-वि मि । स्वाह-संरंपीः न्याहमस्का हर सप्ताह एक सम्राहकै अंतरने हीने वा निकल्पेनामा । पुर विवत दिवपर हर रुपते विकासेनामा समा-साफ्र-वि [ब] बिसमें भगमं दो स्वर्णः सिर्वनः करायका नेवाया वेटेश निशीषा धाक्तित शहरा परित्रा

साहय-प [स.] वित्र, शाबीः गालिक, रवामी हाकिय, सरकारः केंगर (संत करि)ः भावरणीयः व्यक्तिका सेवीधनः नाम या परशीके साथ व्यवहत जीका समामार्थक धाप्तः मरोधिवल- अंग्रेण का अंग्रेजी श्रेष्टमे रहानेवाला दिनुस्तानी अप्रसर । वि. वाका, रखनेवाका (शाहवे इस्म, साहरे जावहाद) । ~क्कशम~प्र॰ नगीर तैमरकी प्रभी । -- जादा-- पु वहें भारमीका कैया संबोध्य अनका मेंद्राः (बा) कावड अनुभवदीम मन्धुवद्धाः -- वन--त्र भासमही । -- प्रहात्र (-पु• क्या क्यस्य साहबी बंगरे रक्तरेशका विद्रश्यानी अपन्यर । -सम्बा मान-मी परस्पर जमिनावन, स्वाम-वंदगी: सामाम्ब -वरिश्वत १ -सामी-पु॰ शादवहाँकी प्राची । **-(वे)**-श्राहम-प्र• मुगक गाउधादीको प्रामी । --ईसाफ--विक स्थायशीक । - इदस-वि विद्याल । - कसाख--विश् सिक, भारमद्वा ! - कियाय-अ वह पैनवर क्रिस पर शकदानी कितार अवरी हो। - खादा-पु॰ घरका माकिन नेजवान ! -शरक़ -वि+ गरवार्गद क्षशी । भाषा विश्लेषका पंडितः जवामदास । −चवान−वि ~डायदा**द**−वि जगद वयोवशका संपत्तिज्ञाली । -- तवपीर-वि॰ पगुरः वरावरुशकः नीतिकः। --सास्र ~तामोत्तपुन−प नारधाद। ~विसास~दि वर्महो। —विक−ि इकिमानः धानौ नदासमानः ।

साहबान-५ (घ०) 'संबव'का बढ्ट । माह्याना-वि॰ साहवका। साहवी।

माहबी-वि सादवद्याः साहव मैमा (सा॰ ठाठ) । जी साध्यपन, व्यथस्योः (संस्थाः) प्रकृतकः मारिन्धाः देश्वरत्व कैया पक्षा वक तरहका अंगुरा वक पारीकार कपश । स॰-करमा-नप्रसरी कान विधाना ।

सादवीयत-रोश सादवी भारत-राजः अंगेशीकी नवनः। साहच~वि (सं०) सहतेमें प्रकृत करतेवाका । साहस-वि [संव] धतावनी करनेवाका बन्दवाम । पु उप्रदा, प्रचंदता। निष्ठुरमा, वासीवन। हिस्सदः किसी बसाबारम कार्यमें बहुदापुर्वक महुख बीनेकी वृच्छि। धीवटा अस्त्रवात्री। श्रीमत्त्रा चॅका सुर्गानाः बनात्रातः **१९८ अपहरणः** परकौगममा सञ्जनाः पाकवशको अपिन ।

-करण-ड धर्परताः श्रष्ठमशेग । -कारी (रिच)-वि बीव स्थपनेक बार्व करनेनामा। दिश्मत करनेनामा। -- ब्रांकन-वि ब्रिस्त्री सावस परिवायक विद्यक्ते रूपमें हो।

साहमां छ-पु । [मं] राजा विक्रमादितवका व्यव माम । साहसारमध्यमाची (पिन्)-वि॰ [र्ग] अतिरेक प्रवेक

श्चा सनावनीमें नाम करमेराना । सावसिक-दि [तं] दिग्यतवर, दिवेदा विवर्षात बकता

श्रीवनकीः निष्पुर, श्रायामारीः मन्त्रभारीः विव्यानारीः बहुत स्थित कोर क्यामियात्या बेटास्यक । प्र विस्मृत-बर बादमी। बाकू हिरा। सन्तरमान्य भारमी। परसी-मामी, लंपर ।

साइसिक्य-दुर्मिन् भीवत्यः प्रवंशताः । साहसी(मिन्)-वि॰ [मं॰] मर्नवः पराक्रमीः विस्मतः बरा शिद्धरा बस्य ।

साहर्सकानिक-वि॰ [गं॰] स्वतः निष्टरः नलावार करनेपर तुका क्षमा । माक्क-वि [सं•] इवार-संशीः एक इवारताराः एक इवारमें खरीदा दुका; इजार पीछे दिया -जागेबाका (पद आगि)। प्रमारमाना । प यह प्रमार नेकिसेन्द्रो 'इक्सी। एक दमारका समृद् । - चढिक-पु छोक विशेष (गी•) ।

साहरुक-वि॰ [सं॰] विसम बीर्र भीत्र एक हत्रार हो। पुरु पक इमारका समृत्र; एक तीर्थ । साहक्रवेची (चित्र)-प्र [सं] कान्ता ।

साहस्रांत्य-प्रश्री वेष एकार । साइनाच-५ [सं] वद एकार ।

साइसिक-वि [र्शः] सहस्र संनी। म इत्रावी

न्याहासक-तु (सं∗) सरावता, मरदा मेदी। मित्र-संस्की। सदायक मेना । साहरूय-५० (र्स०) सहस्वता महदः येत्री, समः संदर्भ

धाथ वेना (बा॰)। - कर-वि॰ छडावता देनेवाचा मदस्यार (साहित-पुरागा मना बलमी ।

साहिती-ची चिंचाहित्व।

साहित्य~प (र्थ•) ग्राव संबोध, मेला वानवर्मे वरोहा शापक-संबंध- गणारमक था क्यारमक रचमा। किविश्वर विचार, याग आदि। यंत्रीका समूच, बाहमवा काव्य शासः दितलुक्त दीनेका भाग । - इपण-१ विश्वनाथ कविशास-कृत साहित्य ग्रामन्द्रा एक प्रशिक्त प्रांप । च्याचा−त माहित्यके विविध भंगी-रम, क्रकंशर भादि-का विवेषम वा विवेषसास्त्रक प्रेष ।

साबिरियक-वि सिंगी नावित्य संबंधी । व माहिरव धेवी साहित्यकार (मसाच) ।

साद्विणी-न्ती देव गाइनी ।

मादिष-५० (भ) दे सादन । साहियी-त्यों है 'साहबी'- ते त्रिक्रोडडी सहियों है पनुरको कुल -मदिराम।

सादियाँ १-५ देश 'सरि"। साहिर-५० [बा] मेर-जाइ बरमेशका ।

सर्गाद्वरी-मौ॰ बाधुमरी ।

साहिक-१ भि विशह वा नदीका किनारा । विशे दे 'सादी ।

साहिकी-स्थे एक बाल रंगकी विदिया।

शाही-मा एक छोटा (रिश्नोरी कुछ बड़ा) जानवर जिसका मारा चारीर क्षेत्र क्षेत्र कोर्रीने भरा रक्ष्या है। भीर को बगोनमें गाँद ननावर रहता है। दि हैं 'शादी'। साह--पुर भना भारमी सामनः महामनः वनिवीक्ष

भाररपूर्व संदोषम । साहाम-पु शामारिशेंदा क्य भागा किम्मे दीवारकी मीच आँवी चाली है ?

माइ-५ दे शाह ।

शाहकार-५ वता स्वापारी, प्रमान्य महायन ।

माहकारा-पु॰ वस्त्रीड रेम-रेजवा कामा माहकारीकी

स्वदः सुका हुआः पहने सुनने समञ्जेष मासान (किसाबट, भावात्र); विसमें मैठ बुराई न हो विमा क्क-सप्तकाः पक्षा दोट्टका समत्तकः वरावरः विसमें कोई पेच पाच म हो (बात मामका); बिसमें सफाई वा (सँभाद्रभा)ः स इन्हर्भे गौरपर (साफ कहना); पूरे वीरपर (शाफ डिपना)। सफारेंसे कुसकवापूर्वक (बवाना निकास कामा ६); स्पष्ट रूपसे (साफ देखना)! --इसकार-पु स्वत्र दोट्टक स्थकारः −गो−वि स्पद्यमानी । −गोई −सी स्पद्यमधिता। ~क्याय~पु दोटुक कदान । वि बोडक जनाव देनेबाका। - दिख-वि जिसके विकर्मे कक-कपट, वैर-पुरार्थ न हो। −वीदा−वि बीठः निर्मन्त । ∽वातः∽ स्तो॰ दोह्य वात । –साफ्र--म॰ सुके तीरवट, स्पष्टतः। मु • - बरना - एफार बरना। बीचा गाँवना। मक ब्र करना। किरते कियना बडी-इडी किखाबरको ठीक करके क्षित्रमा समतक मैदान दनामा (वेथक)ः विम्न-वाचा हुर करना क्रोकना (रास्ता); भुकाना निष्टाना (दिसार); इक गाडी न छोडना सन स्टा के सामा (कोरीने घर साथ कर दिवा); सब स्थानी बालमा। मार बाधना। सक्छी बादम धर देवा विसीकी चीवित म छोदना (देवेने परके पर शक कर विषे)। अभ्यास पनका करना (श्राथ साफ करना)। -- **कड्ना-व**री बेकाग कड़मा सम्भी बात बिना कुछ बढाये छिपापै क्ट्ना; लुक्क्टु १५ड क्यमें क्ट्ना। **~छ्टना**~ देशम छत्रमा मिथींव क्षित्र होन्छर रिवार्ष पाना ! —व्यमा—शक्ष-वाक दवना ततिक मी भाँच न वाना । -बससा-पास साफ बनमा समाई सामुताबा दौग करमा । —वोक्षना—उच्चारय और कदवा और दोवा ग्लुद्ध प्रशाहद साथ वोस्ता । -श्रीवाण पामा-कार्र वियत-बाधा न होता। यहांच मिकना ! -होना-साफ

किमा माना। साफस्य≁तु [सं] फल्कुक होनेका सामः अस्योगिकाः

सामाः सप्रकता ।

साक्षा-पु यह ठराडी पर्यात वो हुए लिक्क बेंची होता । है सुरक्षा वह बक्ता वो रस काममें गया बार -पानी-पु (प्रस्तवेद साम) तिरवदे प्रमानके क्या हों सहुत क्यास्ट सुबतेदी बाल हैना और फिर नहाना । मुख्य-हैसा-धिकारी मानवरीची सम्बन्धि पुखा रखना सि वे सिकारार मानवरीची सुदें बनुताको लिक्क केंचे व्हानेदे कि सुधा रखना

साफ्रिर-पि [च] एफर करनेवाका । तु बुनव

नारा। साक्षी-क्षी छानमैदा करवा प्रास्त्वर वह करवा विसरी भीर छानी बादा गानको विस्तते डी वे क्वेरनेदा करवाः वह करवा विसरी वावरको वंग बादि एकवकर मृबदेशे बवारते हैं। -मामा-पु॰ राभीनामा।

सावता-वि हाव्ह।

सावम-पु॰ दे॰ 'साबून ।

सापर-दु एक मंत्र की शिक्का बनाया माना बाता है। सोमर दिस्स का बसका कमना हैंद्रका मिट्टी आदि

स्रोदनेका बद्धानी जैसा एक बांधार सक्ते । साबल−धु भाका, नरही: सबरी !

साबस†-भ दे 'शावारः'। साबाध~वि सि | अस्त-यस्तः भरवस्य।

साबाध-ाव [स] अस्त-यस्त अस्ताः । साविक्र-नि• [स] पिष्टका औता हुमा, गत । न्यस्त्र-

च॰ पुराने दस्तुर, रीतिके अनुसार, दशापूर्व । ⊷सं — अतीरकाक्षमें पहके ।

साविका—पु [अ॰] वास्ता छरोकारा काम (पहना होता)।

साबित-वि [ल] रिवर; च्या स्थितः प्रमानितः साबृतः कर्मतः समुचा । चु क्यानः ताराः ! -- क्रयुम-वि दः । वनमः, निश्चवपर धः रवनेवाला ! -- क्रयुमी-काः सावितकरम वीता ।

साबिर-दि [ब] सब करनेवाका, सहन करवेवाका ।

सामुन-पु दे॰ 'साब्न'। साब्दामा-पु दे 'साग्रामा ।

सावृत-वि अर्बंड, समूचा।

साब्द्रण-यु कि निकारिक शोधा, एउपी तेक बारिके बोगरी प्रस्तुव यह प्रशासन बिटे पानीमें राष्ट्रमेंसे केन निक्कारा और को खरीर, करने बारि साल करनेके काम बाता है। —साझी-की साद्रम बनानेका चैता।—का सार-साद्रम कार्यका तारः (स) । बहिश नास्य । साव्यी-की (सं) हाला वाक।

साभिप्राय-वि [सं] अभिप्रायमुक्तः विश्वेष अर्यबुक्तः अपने निश्वेषप्र वदः विश्वेष प्रवीप्रनवाद्याः। ~

जपने निश्वचपर व्या विशेष प्रवीजनवाका। ~ सामिसाम-वि [सं] गर्याका, वर्मकी! ज प्रमं⊤के सामः

सान्यस्य-वि [सं] रंग्वांतः वाह बरनेवाका। श वैन्यां, देवपूर्वतः।

सामितस्य-पु [सं] श्रीक्रियः संगति। अनुसूत्रतः स्य-बुक्ततः विरोध विभवता न होना सत्त ।

वुक्का राज्य प्राचनित्र वार्यभीमा वुक्का राज्य स्थानित वुक्का राज्य स्थानित वुक्का राज्य स्थानित वुक्का व्याप्त स्थानित व्याप्त स्थानित व्याप्त स्थानित व्याप्त स्थानित व्याप्त स्थानित स्थान

सामंतिष-५ [सं] एक प्राचीन कवि। सामंतिषर-५० [मं•] एकार रावेशर।

साम-पु परिवास पत्र देश रवाय ! [त्र] नृह्यः वहा देश (करक पहुदी हिसी काशि रहीकी मंतान माने बाते हैं) ! वि [ते] को कशी तरह एवा न हो। क दवाय, काहे रेनका-'यमुना छाम मर्र तहि सार। -व ! कियो देल हाम ; हानी।

साम (म्) - 9 [तं] भार वेदोमें हे यहः वेदके गेव मंत्रः स्तुविमंत्रः क्षांत करनाः हृष्ट करनाः राजाके चार क्यांते मेरी एक (क्ष-मुनकर अपनी और कर हेमा)। महुर क्यांत कोमकता, नरयीयत। -कारी (रिम्)-(व 1210 सिंधिजी-सा [मं•] नासिका। वस्तीः गावार् । वि॰ साहकारीका । सिंधिनी - सी॰ घेरनी। साहकारी-सी शाहकारका काम महानमी। र्मिधिया−प सिंगिना गामक विचा साइब-प दे 'साइव'। सार्टि - सी । भवार्षे वास । अ सामने, सन्मुख । सिंघी –छी हिंगो मछको; सोंठ। सिंजें +−श• हे॰ स्पेरिं1 सिंधेका>~पु॰ शंरका वचा । सिकसा—स कि॰ सेंदा बाना (ऑवक्र)। एकमा । सिंचन-पु -[सं•] सीचना, रात पेड़ भादिमें पानी सिकोसा-प [बंध] यह वृद्ध विग्रहे रससे कुनग बालनाः छिदकाव करमा । सिंचमा-व कि॰ सीवा बासा १ बनाते हैं। सिंगा-पुरे चिंग। सिँचाई-सी सींचनका काम; सींबमेको स्वाह । सिंगवा-पु वास्त्र भादि रखनेका सींगका बना वर्तन । सिंचामा-स॰ कि किसीको सीधनैमें प्रचन करशा । सिंचिस-वि सिंगी सीवाहमा ! सिंगरफ-५ रंगर। सिंगरफी-वि सिंगरफका बना हमा। सिचिता-सी॰ सि विप्रकी। सिंचीसी!-मी दे 'शिवार । र्सिंगरी ~सी पद मछको। र्सिगरीर-प्रपाचीन मृक्वेखरका बर्तमान माम । सिंगल-प है 'मिगनक । † वि द 'सिंगिस । सिवित-प्र [सं] १० 'सिमा (संदार)। सिंगा-प फैसकर वसाया जानेवाला एक वाबा रांग रक्रस्तिताः । समिति । सिंगार सिंगार-प श्रमार समावदा समयक श्रमार र्मः । – हाम – पु प्रमाधनः रसनका कीटा संदृद्धः । – मेज सिंदन - प्रश्नेत्रम रच। —सो वह बाईमैदार मंत्र किसके सामने बैठकर जांगार सिंदक-पु [मं] सिन्तमार । क्रिया बाता ह**े −द्वाट−को वेश्वाओं**का वालस्वानः सिंबरिया-वि दे 'सिन्दिना'। मक्का । -हार-प दरसिंगम् नायक पुश्वकृष्ट । सिंतारसाक-स कि सूपार करना सँबारना सवाना। सिंगारिया-प्रमुक्तिका श्रेगार करवेवाका । सिंगारी-प हे 'सिंगारिया'। सिंगाक्षां-प्र यक् पहानी कहरा। सिंगासा-वि मॉर्वोबाला ! सिंगासना - प्र ६ 'मिहासन । सिंगिया-पु एक विष की एक बौनेका मूछ है जीर स्टाने-पर सींगक्षी छक्क्का दोवा दें। सिरिक-वि [सं] बढ्डा सविवादित। एक । -पु दे 'सिन्द्रदाम । सिंगी-सी तुँनी बगानेकी नजी। यह तरहकी छीनीवाडी मारको। बाबोका यक देव । य शोगका नमा नाबाः संबी। सिंद्रित-वि [सं•] काक रेवा द्वशा । एक कपका ।-मोइरा-पुरिमिया विव । सिंगीरी-सा उरु मादि रक्षनेष्य सांगद्य पात्रः मिद्रर स्वासदायिन । भादि एक्सेक्ट्रे पिरारी। वैरुक्ते सीयका गहना । सिष्-प है 'तिष । पुष्पी बातकी। काक क्यशा । सिंधण-५ [सं•] शोहका शुरवात नाक्से निक्रता हुवा रहेप्मा रें≰। सिंघक - प रे सिंदत । मरीः एक रागिनी । सिंघसी-दि है 'निहड़ी । सिंधवा-वि प्र देण श्वाप । सिंघा!-प देश सिंगा। सिंधवी-सी एक मिम रागिनी। सिंघाचा-प॰ पानीमें पैदा होनेवाला यक तिबोसा यकः निवाहेके भाषारको एक मिठाई और एक समकीता निक्रीमी सिकारैः एक सरहकी आशिक्षतानीः र सनारीका एक भीवारा एक विदिया ह र्मिघाची - ली. िवादा पदा करनेका शीश ताकाद । मियाब-प (सं•) है मिलप ह सिंघानक-दु [सं] हे निवन'। सिंधासम् - पुषे 'शिहासम्।

सिंबा-को [र्च] गहनोंड हिनने बादिते बत्स्य संसार। सिंडिकेट-पु [6] किसी बरेस्तकी पृतिके किए बनी हर्व व्यावारिक शरवाओंकी समितिः सिनेटकी प्रवेष-सिंहुरी-सी वस्त्रकी भारिका यह छोटा देह ! सिंह्यार-पु [सं] एक इस निधारीः रत वृक्षमा प्रका सिंत्र-पु [सं] यह रूध यह ताल चूर्ण विसमें सियाँ मींग मरती है। -कारच-प्र सीसा बाता । -सिस्क-पु॰ तितृरका विद्वः दावी । -तिस्त्वा-की सवदा को (बिसको माँग सिंदरसे मरी रहती है)। -हाम-प विवादकी एक रस्म मिसमें वर वभूकी मॉममें सिवर अमाना है। -पुष्पी-ली बोस्पुष्पी सिंधरिया। -रस-पु पारेमे बना हुमा यह रम । -बंदमा-धवत सिन्दिका-सी [तं] सिन्द नामक काल हम्य। सिंतरिया-वि मिपूरके (एका । मी । सिंदरपूर्ण सिंवरी-वि मिद्रकरंगका। भी [सं] रोजमी सिंदर सिंदोरा-पु सिंदुर रखनेक्षे कम्हरीक्षे दिनिया । सिंघ-पु पाकिरतानका यह प्रांत । को । यह प्रसिद्ध सिंघी-वि सिंव देशका। पुरुष देशका रहनेवाका पक तरहका पीड़ा। सी इस देखडी भाषा ! सिंधु-पु [सं] सामर, समुद्रा एक प्रसिद्ध नदी। इस नदीन बात-पासका देश: दाबीकी मूँबसे निक्तनेवाला पानी। यज्ञयद दाना दानी। वदमा सर्पेद सोदागा। सिंधु बार वृक्षा एक रागा बोहरडी मार्ट्ठाः मिपुवैशका विवासीः मदः भारको या सातको संस्थाः विष्पुः यक मागः। सी॰ यदीः मात्रशाही वह नदी !-बन्यां-स्नी सहसी ।

बाइस वैवानेवाका, श्रांत करमेवाकाः मधुरवायो । प्रक सामका निर्माताः एक तरहका सामगान । -श-प्र• सामवेदी प्राथमः विष्यु । ~गर्भ-तुः विष्यु । ~गास-धामका गामका सामका गान। - धिश-प सिव ! -गाय:-शीस-पु॰ शासका मान ! -गासक-प्र• सामवरी नाइना । -शायी(बिन्)-वि , प्र• साम मानेबासा । -बा-बाल-विश् सामसे प्रस्ताः साम खपावसे सरम्ब । पु॰ बाबो । -श्रध-पु॰ सीठ, बरे भीर मिक्रीवन्त्र समादार । -ध्वमि-सी॰ सामगानकी व्यवि ! --निभन-पु॰ शामका भेतिम वानव । -बोसि--वि• सामसे उत्पन्न । प्र• दाशीः शक्या । -प्रायोश-प मीटे सम्बोद्ध प्रवीग । न्यावन्य भीटे वयम । -विव-वि॰ सामवंदका द्वावा । -विद्य-प्र॰ सामगाव करनेबाका प्रायस्त्र । -वेद-पुरु शीसरा वेद ! -वेदी (दिन्द्र)-प सामवेद जाननेदाका जानान । -अचा-यायवस्तरका एक शिष्त्र । –साध्य-(वस्)−ड विश् मी मेक्से सिक्ष दिवा का सके। लगाधीक-विश् प्र राजनीतिका —साविकाि~स्तो यकसाविका संगा सामक−पु॰ धाँगाँ; [धं] मूल वनः साम चकावेका परभर । वि. सामचेत्र-संबंधी ।

सामग्री-सी॰ (सं॰) बावस्यक बस्तुलीका सन्दर्भ सामान, माक-लस्त्रावा प्रवीजन-संबंधी बस्तुर्वे वरकरणा सावन । सामान-पु (सं॰) ससुत्रावस्यः संपूर्वताः भीवारः भंजारः

कीया देखवडा साझ-समुदाव । स्राप्तक-की कारण विश्वितः

पूर्वक वर्तीय करना ।

सामत*-को शामन निपत्ति, क्यविश्वती । यु॰ सामंत्र । सामक*-यु॰ समभिजोंका आवसमें मिकमा (यक रस्त) --'सामव देखि देव अनुरामें --रामा ।

सामना-पु मुकानका। भेंटा कहाई, निश्रंत मुक्नेका किसी चीनका स्थाता हिरसा, मोदरा। गुरुवाधी वृहता। सामनी-सी [६०] वशुमोंकी वॉपनेकी रस्ती। सामनी-म कांगे। मुकानमी, क्यका श्रीवरणीये। सीमने।

शुक्त - बारान् मुख्यकेचे असता करक होता। श्रृंह स्थिता। (स्वारं हेता! - करना-मुख्यकेचे कामा हेड स्ट्रारा आये करना! - करना-मुख्यकेचे कामा करना हैचा हुमा! - की लीट-सुकी हुई को ! - की बारा-मीत्र्रोका हुक ! - पहना-फिकर दाना होता। स्वेताने पिक बाता! - से उठ जाना-मीत्र्रोमें म रहना। मर नामा! - होता-हरक होता। हरना कराना मुद्धानक हरना करनेके तेनार होता। एहरा-

सामस्य-पु (छं) कामेरी आह्मा शामापति सुधक व्यक्ति । दिन हामगामि सुधक । नेवीपूर्ण अनुस्क । सामित्र-दिन (वं) सम्मोधित, शमको दिनारों वन् सुस्क । सामित्र-दिन (वं) सम्मोधित, शमको दिनारों वन सुस्क । सामित्र-दिन (वं) सम्मोधित । सम्मोधित होनेसामा वर्गानी। निवत समक्त स्वाचित हो और सममा पु निवत समक्त समक्त समक्त समक्त समक्ति होनेसो दिन वं वा विकास पुरस्कित सामित्र-दिनोहे किए (प्रतिका) दिना वानेसामा वक्तारामा। सामर-व्य समर्था । वि । वे विकास सम्मोधित होनेसोहे सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहे सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहे सम्मोधित होनेसोहे स्वाचित्र । वि । विकास सम्मोधित होनेसोहित सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित सम्मोधित होनेसा सम्मोधित सम्मोधित होनेसा समामित्र सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा समामित्र सम्मोधित होनेसा समामित्र सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधित होनेसा समामित्र सम्मोधित होनेसा होनेसा सम्मोधित होनेसा सम्मोधि

सामस्यां -सी १० सामर्घाः। सामरिक-वि॰ [सं॰] ब्रब-संबंधा समरका । सामरिकता∽को र्षि•ो अञ्चलकोर्ने सम्ब रहता संबर्ध-जिलाई ३ सामरेय-वि [तं•] समर-संबंधा । सामर्थ-प्र सि] सरती। सरतापन । सामग्री-सा है। 'सागर्व'। सामर्थी-वि॰ शक्तिमन् शामर्प्यकः वसवान् ५८%भीः बार्ग करनेका धारित रहात्रेवाला । सामर्प्य-प , जी [सं॰] शक्ति, वह, ध्रम्ताः वरेपक-की समामताः भावकी समानताः वपनकता श्रीकिकः शम्बनी वर्षश्रक्तिः कामः वन ।-शीव-वि॰ शक्तितेतः ftrafar 1 सामगायिक-वि॰ [सं] समूच वक-संबंधीः बास्य संबंध विषयक । प्रश्न मंत्री। इसका प्रवास ।-शास्त्र-चु तुहुः भवते भारवरहाओं मैबी करनेवाका राज्य (क्री॰) । सामस्त-प॰ सि | बाज्यपनस्य सिवांत । क विक दे॰ 'समस्य । भागस्य−प सि•ोसमधार्यपर्यताः सामाई सामाई-अ शामने समझा

सामाँ, सामाध-पु स्विती सामाम । को॰ होक, प्रदेश सामाँग-पु (वे) सामध्यक वेग । सामाँग-पु (वे) सामाँग-पु (वे) सामाँग-पु (वे) सामान्य केशी सामाँग-पु (का) वेशान स्वेती सामाय-पु (का) विस्ता केशिय सामाय-पु (का) विस्ता केशिय केशिय सामाय-पु (का) विस्ता केशिय सामाय-पु (का) सामाय-पु (का) सामाय-पु (वे) केशिय सामाय-पु (वे) केशिय सामाय सामाय

वा ने वारो होता । सामानक्षित्रक-पि॰ [सं] पक गर्वका रहनेनावा । सामानक्षित्रक-पि॰ [सं॰] एक गर्वका संद्र्य । सामानक्षित्रक-प्य-पु [सं] नमान दिस्टिम केदा समान प्रवादक पर्यादक परिवर्ध संदर्भ सेनेक्षा क्षित्र मा एक श्री काएकी होता (स्वा) ।

सामार्यक-वि [७-] का जारी दिन्ही के प्रमान है।
सामार्य-वि [मं] सामार्य, मानूगी, ध्यान भीवन
स्रिक्ता प्रमण, करना महाच्यीना हेरून सम्मान भीवन
स्रिक्ता प्रमण, करना महाच्यीना हेरून सम्मान्
सार्वजीयका सम्मान्य स्त्रिक्ता स्वरं अपन्य प्रमुद्ध स्त्रिक्ता प्रमुद्ध स्त्रिक्ता स्त्रिक

```
TO PET 199
 वासा। चमक कामेराका ।
सिकार-म धीका
सिकइरा =-प्र= दे 'सिक्टर'।
सिकड्डी, सिक्डसी -सी॰ मैंव बादिशी बनी सोती
 क्षकिया ।
सिकार*-प रे 'धिकार'।
सिकारी =-वि , प० वे 'शिकारी ।
सिकडम-मी छिकुत्रमेकी किया, संबोधः शिक्कतेका
 पिष्ट, दिख्या ।
सिकदमा-अ कि एंड्रियेत बीना बढरमा सिमटना
 शंग होनाः जिस्म पहमा ।
सिकरना = अ कि दे 'शिकश्या'।
सिकोचमा-स कि॰ एंक्रवित करमाः क्रोरमाः समेहमाः
 र्तग संदर्भ करना ।
सिकोरना = - स कि 'तिकोरना'।
सिकीरा-प क्टोरा।
मिकोकी-को वेंश वांस वादिको बनी हुई इकिया।
सिकोटी+-दि+ गर्वाकाः पराक्रयोः गीर I
सिकद~प प्रजीरः स्थिती ।
सिकार - पु दे सिका ।
सिका-प [ व ] क्या छावः महा, स्ववा वह क्या
 विश्वमें क्येंबे आदि अंकित करते हैं। एन्स । -जन-व
 सिनके दाक्रमेशासा । सुरु - चक्काना-(अपना) सिदा
 बारी करना । - जसमा - बैठमा - रीक्यन कारम
 होता शक्तिकार स्थापित होना । -समामा -पैटामा-
 रीक्ष्यार कावम करना, निकार स्वाधित करना !
सिज्ञी-को होरा सिकार मदकी। व्यवहा
सिन्ध-प्र गुर नानक्का चलावा ब्रमा यक छेप्रसावः
 इस संप्रदानका अनुवासी ।
सिल-दि॰ [वं ] सीवा हुनाः मीला सेगा हुनाः
 កដែក (វី) i
सिल्ह्या-सी [तं] शीचे वानेकी किया वा माद।
सिक्टि-बी॰ [र्ह ] छीननेको क्रिकाः निग्हारमः नार
सिक्म-इ [तं ] मीम, सशृष्टिश माँड निकाला हुन।
 भारत। मारुका पिंड या आरुः मोनीः मी तेपीका शब्दा
 (बिमुका बन्नव एक काम बी) ।
सिक्यक-प्र [मं•] हे सिक्य ।
सिक्य-पु॰ [तं॰] दे 'शिरव !
सिक्य-प [मं ] क्षेत्रा एकटिक ।
मिलंड-इ मोरडी बूँछ।
सिलंबी-प है शिवंदी।
सिय-प है। जिल्हा जिल्हा व और विश्वा सक
 देश योग ।
मिद्यमा॰-स कि॰ सीयमा।
विस्तर =- प दे 'विराद । मुकुबा निस्तर ।
सिलाम-मी चीनी गरी देशर आदिके बोगसे बना
 ब्रमा वशीका देव !
सिक्तामा-ध कि॰ मिमाना।
सिरद्रवमा • - स कि विश्वकाता ।
```

सिका#-की• दे 'शिया'। सिकामा-भ कि किया हैगा, पराना प्रकाश: ताक्षमा इंड देमा। सिलायम = - प्र क्रिक्षा, करहेश: क्रिप्टम धार्य । सियादम-सी॰ द्विता, दशेस, मसोदत । सिखाबमार-स कि है 'सिसामा । सिवित्र -प्र शियश बैलेंका एक तीर्थ, बारमनाव पदाव । सिली - प समी मेर। सिगसा - नी है 'सिस्ता । सिगमक-प [मं] रेक्नाडोडे आने जानेका एका बिद्ध-विशेष सिर्वेदराः सं**दे**त । सिग़र-पु॰ [म] सुरदन वास्त्र । -सिम-दि॰ कोटी धमदा, क्रमसिन । -सिमी-भी वचपन, सराई। सिगराव-वि संपूर्व सव। सिगरेट-प्रांसी (अं) प्रपानके किए दायवर्गे र्ववाक क्षेत्रकर बनावी हुई वह तरहवी बची । fann), fantis-fes & 'fanti' सिगार-प [अंश] परा । सिगीन-की र राष्ट्र रेत विकी मिड़ी की आकार आप वास शिक्सी है । सिचय-१ (सं) कानाः नतः परा तराना काना । मिचानञ्जूष शाम विशिया । सिचाना-स॰ कि दे॰ 'सिचाना । सिच्छद्र-पुर छिद्या देनेशलाः एट देनेशबा-'साहित के सिच्छक सिपादिमके पावसाह"-म् मिच्छा#-सौ दे 'शिया' ! सिक्का-प [ब] माथा देवना। सुपाद आने निर शकाताः मस्त्रमानीकी प्रयासताका वक्ष अंव विसर्वे माना, महा, गुरनिया, भारते और गाँबीदी वैद्यवियाँ वमीनपर क्यती है। -शाह-पुर, लीर बपानवा-रक्षा मिश्रको नदि संदर्भ भग्ना सपर । सिजिस्तान-९ अप्रयाभिस्तानका रक मदेश को ईरान के परवर्म पत्रना है। मिहाना - न कि • जॉबरर एकना, मिहाना जाना । सिमाना-छ कि अवदर दहाना रॉदना सारिसी कश्याब रिवारीमें रसावार वरतान बनाने ह किए मिटी रीबार करना। (क्यका) पदाना । शिवक्रिजी-की दिनाए अंटरसे वंद घरनेदे किए वसमें क्या हुआ सीरान्त्रा एक भरदामी । मिरुविशामा−भ कि॰ एवं बामार मन राजा। बंद पन जाताः स्टब्स ही वासा । सिरी-प सी [4] वहा छदर । सिही-को ब-ब-बर वार्ते बरना वाबाहता। स॰ -गम क्षोबा-वरराष्ट्र पूर्व 🖟 बाहा विश्वीय माना । सिझी-मी० दे 'सीडी'। मिराई-मी धीधान । सिंड-शी॰ वागकपन, शीवानगी राध्य मनदा मुना -पत्र -पत्रा-प दे मिन १ -विमा,-विमा-मूर्त नेजका शयक, रामको । सु॰ ~सबार द्वाबां~

होनेवाको किवास्त्र साधारण रूप रहता है (व्या)। →मृत−पु मृत श्राक्का एक मेद किसमें मृतकाक्की कियाका भाषारण रूप रहता है और विशेषता नहीं होती (स्वा)।-छक्षण-पु• वह विद्व को बाविमर में पाया वाचा - इस्थाया - स्वी तीव वनीविकीं(सिव इ.वी)मेंसे एक (न्या॰) !-वचन-वि सामान्य वर्गका योतक। पु वस्तुवावक प्रथ्य ।-वनिता-सी वेदया । -वर्तमान-प्रवर्तमानकावकायकभेद विसमें क्रियाका बर्तमान काकमें दीमा दिखकाया जाता है (व्या)। -विश्व-सी॰ नारेशका सापारण स्म विसर्गे कोई विशेष बाद बपबाद आदि म हो।-बासम-त॰ सामान्य मिकारः सामारय राजावा निर्देशः। सामान्यत (तस्) सामान्यतया - म सि॰ । सामा-

रनतः, नाम मामूकी चौरछे। सामान्यतोदप्र-पु [र्ष] यह तरहडा बनुवान की न ती कारमधे कार्यके सपमें निकामा गया की जीर म क्षार्थरी कारगके रूपमें। कार्य-कारण-संश्वरी मित्र सायम्बं । सामाधिक-पु [सं॰] सबपर समाम मान रखते हुए पद्मांत्में मारमधित्त करना (ने) । वि मायामय নাৰাত্ৰক i

सामाभव-द [सं]वह मकान विसके पश्चिम जोर मार्ग हो। सामासिक-वि [धं] सामृदिका संवितः समास-संवंधी

(भा•)। मिभिता । प्र समस्त पर । मासि--सी० [सं•] निदाः व समबसे पहके, अवरी

भवस्थामें; अंग्रदः।∽कृतः नि को अंग्रत किया गर्वा हो।-पीत-वि वाना पिना हुआ । - मुक्त-वि माना साना हुआ।-संस्थित-वि अर्बहुन।

सासिक-प [सं] विकप्तको जनिमंत्रित करनाः कृष । सामित-वि [सं] नेहाँका भारा मिकाका हका। गेहाँके

भाटेका बना बना ! सामित्य-पु [सं] समितिका भाव । वि समिति-संबंधा। सामिधेम~वि [एं॰] यदानिम-एंनंबीः बद्दती जिन्न वकानेसे संभव रखनेशका !

सामिधेनी-को [सं] बहारिन क्छाने वा क्समें समित

काकमेका एक मंत्रा शमित्।

सामियेन्य-दि [सं] दे 'सामिनेन । सामियाना-५ दे श्रामिनाना ।

सामिका-विदेशामिक।

सामिप-दि [सं•] गोसपुक्त। ~शाद्य-पु वह बाह्र बिसमें मांसदा क्यबीन हो।

सामी-रद•दे 'स्वामी । रंखी छत्री वा श्रीबार भारिकी रक्षाने किए बसपर बहमाया जानेवाका बोटे. रीतक भारिका छला है

मामीची-स्तो (सं) बेरना स्तुतिः समता दिवसा । -- करणीय-वि नभता-पूर्वक व्यवस्थन करये वोध्य ।

सामीचीन्य-प [सं] भीवान वपनस्ता। मामीप्य~प [र्च+] बिक्टता समीपताः वशेसा सुविका एक भेदा पहोसी ।

सामीरण सामीर्थ-दि [धं] समीर-संदेश।

सामुद्धि=~को॰ दै 'समझ' ! सामवाविक-वि॰ [सं] समुदाय-संबंधीः सामदिक। ५० बामके समय चंह्या जिस मधनमें 🜓 उससे भठारहरी मझत्र ।

सामुद्र - पु [सं] सारपुरः संभि (वेसे इस मारि)। कानेके पहले और पैछे काबी वानेवाडी दवा !

सामद्र-वि [र्स•] समुद्रवन्त्रः समुद्र-संतेषा ! प्र• माविकः सामुद्धिक स्वापार करनेवाकाः वर्ण और वैदवासे कराच सीतामः एक तरदका अच्छकः समुद्रकवणः समुद्र-फैला देवशिक्षा मारिकका एक निग्नेष समझकी वर्णका वका -श्र-वि के 'सामग्रविद'। -तिपहर-प्रश धमुद्रतटशासी। एक अनपर । -वंशु~पु अंद्रमा ! --विद -वि वैद्यविद्योक्त काला । -स्थलक-पु समुद्रके

पासका मुजाग । शासकर-त [र्ष] समुद्रकरणः देशविद्रोके श्रमाशस शोनेका विभार करनेवाका ग्रंब या व्यक्ति।

सामृद्रिक-वि [र्ष] देहचिह-संरंबीः समहत्वाव । ए सामाहका वह विया जिसके सहारे देह निश्चीका शाम मास किया जाता है। नाविक ।

सामहाँ - म सामने। सामहँ •-- ब॰ सामने ।

सामना-सी [सं] यह दरहका काका हिरम की कामग के बाब संवा बोता है।

सामृहिक-नि [र्थ+] समृह संबंधा समृहमें प्रकार विक्रम्य ।

सास्त्रक्षण-प्र. [सं] जन्मत्व प्रवृक्षिः वैत्रव । सामोद-वि [सं] बानंदकुक, प्रसुद्ध। सुनंदित। ज बामोचपूर्वं हा

सामोजव-१ [धं] दाथा।

धामीपचार, सामीपाप-प [र्थ] नरम नवार काममें हाना ।

सामोपनिषद-चा॰ (सं॰) यह वर्गनदर । साझ-दि॰ [र्व] साम-मंत्रीते संदेश रदानेवाका । साम्बी-को [र्स-] क्रमा एक मेरा पशुनीकी प्रौपनेकी रस्सी ।

साम्मख∽् [र्च•] सदमति सम्मत होनेका भाव ।

सारमुखी-की [सं] सार्वदालक्ष रहमेगावी दिवि। साम्माक्य-प [सं•] स्परिवृति, विक्रमानताः अनगरः कुमार देखभाक 1 साम्य-पु [री॰] सारश्य समानताः सार्धवस्या स्वा-

धीनवा, निष्यवाः धरिकोणकी पदक्षका । -४ स-दु साव्यवादके छिक्तीशानुसार वक्रमेशकी सासम-प्रचाली 1-वाइ~पु॰ मान्ते हारा मनिपादित एक शिक्रांत जिसका सर्देश वेसे वर्गदीन समामधी स्वापना है जिसमें संपरिपर समानका समान अभिकार हो और स्वक्तिंगे चक्तिमर काम हेकर क्सकी सारी मान-बक्रताएँ पूर्ण की बार्वे । -वाशी(दिश)-वि साम्बदाहरू सिक्रांत माननेवासा ।

साम्यावस्था नहीं साम्यावस्थान - इ (सं•) प्रहारिके तीओं गुपों-सत्त्व रत्न और तम-भ्री समावरता।

्सनक क्ष्यार दीना ।

सिडी-वि सबकी पानकः मनमौबी। सितबर-पु [न• 'रेप्टेंबर] देखने छन्दा मनौ मदीमा । सित-वि सि॰ देवत, सकेदा समग्रीका। विश्वास, मिर्मक क्षकः परिवेक्तिकः धातः समाप्तः। च खफेव (या द्वाक पद्धाः शक प्रदा सुकाणांता बागा चाँदी। चंदना मुकी सर्वता रदेरका पढ अनुपर । -श्रेटकारिका -करा-श्री इन्त इंट्रकारी । -इट-वि॰ सुफेद गरदनवाटा । यु चात्रक, दास्युद्ध ≉ दे॰ ऋममें। −कटमी-सी एक बृध्। -क्ष्मक-पुदशकाक्यकः -कर्~पुर्वहमाः कपूर। -वर्षिकाः-कर्णी-सो वासक। -कर्मा (भ्रीम्)-दि श्रिष्ठक् कर्ने पवित्र हो । ~काच-पुर इकानो श्रीक्षाः विहोतः रफरिक । -क्रबर-प्र वंद देवका बाबी पेरावटा एफेर दावी । वि एकेद दावीपर सवारी करनेवासा। ~कुंसी-सी॰ सफ़र वॉबर्। -धार-प यक तरहका सोहानाः -श्रदा-की स्वेत श्रेटकारी । -संश्व-द्र मिसरीका दला । -शुका-को। सफर प्रेंपची : - विद्व-- प्रक दरवकी संस्की धीरा मध्यको बासकागढ । - व्यक्तन - व राजस्था व्येष छप्र। - व्यक्ता, - व्यक्ती - को शतपुष्पा श्रीकासेका। -च्छन्तित-वि ६वेत छत्रमुक्तः राजन्यस्तुकः। -च्छन्-वि सपोद फॉन्सासाः सकेद पं**र्वा**वाकाः <u>प</u>्रदेसः सक्षिवसम्बर्भ पक्त प्रकार । ~क्षप्रता~की० दनेत पूर्वा : ~बा-सो मधुद्धकंता। <u>नहुरग</u>-पु वर्धुन। -दर्भ-पुद्धत दूर्वा - श्रीचिति - पुर्वद्रमा । - वीप्य -प्र स्वेत बोरक, एफेर भोरा। -तृबा-को स्वेत दुर्ग। −ह्र−९ शुद्धवर्ष दुक्तः मोरट-विधेव। −ह्रम− प्र शहरार्थ पृक्षः अर्थनाः भीरट विशेष । - दिख-प् इंस । -बाह्य-की स्नेत सनिव हम्पः खदिना निद्दी। -पश्च-पु तकेश पास रुपेद पंका इस । -प्रयक्त--पुर्वतः शुद्धाः – एका−पुक्षेत कमका – पर्वी− **को अर्थपुश्चिम् । --पारक्रिका-श्वी शुद्ध** पारका स्फेर् पंतर ! - पुंजा - स्रो स्रोत शर्पुण ! -पुंड(कि-पु १४त इ.म.च । -पुच्य-पु केम्बी मीवाः तगर वृक्षः क्षेत रोहितः बाँसः -प्रप्या-सी मस्बिकाः पदाः देवी शामका पीवा । -प्रियक्श-की यह सकारका कुछ बूक। -पुष्पी-की श्लेत नपराजिता। कैनदी मोबाः श्रीसः यागरेतोः नायवरको । -प्रश्न-वि सफेर । अ वाँगी । ~ भागु-पु चंहमा । ~ भनि-नु • रफरिक । -सवा(वस्)-वि॰ पवित्र **ब्**रववाका । -सरिच-स्ती सफ्रेंद मिर्च। −माप∽तु राजमात्र कोविया। ~पासिनी~को कौंदमी राक्ष कदिका। **~रैश**~प कपूर।-रंज्यम-विपीला)पुपीकारंग।-रहिस-प्रचारमा । – राग−प्रचारी । – रक्ति∽वि सपोट रंगका । पुरु चंहमा । अस्ता-वीश अयुत्तरस्थी । −सन्नान−पुरुद्धनाः ∽वराष्ट्र∸पुश्चेत वराता। - • परनी-को पृथ्वो । - बर्णा-सा संपरियो । -वर्षाम्-पु पुनर्नना । -वस्करी-की कडवासन । -वस्भीत-पुश्वेष मरिष्। ~वाडी(जिन्)-पु भर्तुन ! -- मार -- बारक-पु दे सिठतार । -- बारक-

प दे॰ 'शित-कंबर' ! ~शायका - लो॰ व्वेत छर्त्या । -दिर्शिक-प गेइँका एक मेर । -शिव-प सेंग समकः समी वृक्षा - स्वक-पु औ। - भूरण-पु वससरम सपेत औष । -ग्रंगी-बी॰ व्यविदा। -सप्ति−५ अर्जुन। −सपप−५ छपेत छर्हो। -सायका-सी श्रेत छर्पसा। -सार-सारक-अधिभ जाक । -सिंध-प्र॰ श्रीरसागर । सी॰ वंगा नहीं। -सिंही-की स्वेत इंटकारी। -सिदार्थ, -सिदार्थंक-पु एक्टेर एरहीं। -सूर्यां-स्रो **इरहर**। शितकरु॰-प्रशिक्ष वै॰ सिवाम । सित्रबाद्रक-पु (संग्) क्रमभी माम। सितता-जी॰ [र्स॰] स्वेतता, राफेरी । सितम-पु [का॰] सुरव, भन्नाव, छलोडमा अतिरा गतर । ~ईंबाइ∽वि जन्यायकी तीर्वे बाकनेदासाः व⊈त वडा वालिम! -कस,-मृदा -एसीदा-वि जुरम सहनवाका, सस्प्रीकृतः -गर्-गार-वि

हँती मजरूरे परदेने बुश्म करना । ग्रु॰-हाना-सुरम भारी अन्याय करना, गजर करना । -तोहमा-अन्याय अन्याचार करना । सितकी-को पीडा आरिको हाकतमें निकलनेवाका

बाकिम, अम्बादी करवाचारी । - हारीक्र-वि बास्य

विमीरके परदेने जुरम अन्याव करनेवाला। जिसके वैसी

मनाकर्मे शोकी-सरास्त मिको हो। -इरीफ्री-को॰

स्त्रीना ।

सिताइ की है 'स्तर'। सिता पू कि दिला प्रकास क्षिता के स्तर स्त्राम बही किसी भीक्स बाधिय हो। विश्व सेनेवाका प्रकान बाका बोधनेवाका।

सिरुक्ति - पु [सं॰] बाहुकागड मामक मास्म । वि कृतेत विक्रवाका ।

सिलांग-पु [र्स॰] वनेत रोविता अपूरः (श्रवः नेका । वि वनेत अंगीनाका । सिलांबर-वि [र्स] दर्वेत वलवारी । पु यक तरहके

बीम सामु, श्वेशांवर ।

सितांतुक सितांभोक-चु [र्स॰] दवेत दव । सितांतु-चु [र्स]कपूरः चेरमा। वि दवेद किरमींनाका । सितांतुक-वि [र्स] ववेद वक्षणारी, स्पेरपीट ।

सिता-की [6] अवेरा मिछि। पीरिका कौरसी-'सर सिवानी बाकी पातवा है सिक्तां' - करावे शु का सेरो छरा। चरेव दूर्गा मिक्का प्रतेष रहेकारो। बकुषी विचारी। कुर्जुनियोः पिया प्राथमानाः वरराधिया। गंगा बाठ देशियों से एक (व) हो करती। बर्बुप्ताः सिक्की पीरका कामाठक। गोरोचनाः वृद्धि करा। एका। प्रतर्गमा सुरा ! -कंड-चु सबुवाद छर्डण। निस्तरेका

वन । --सता-वी॰ सन दुर्ग । सिताइस-की [का॰] सुनि, सतदना प्रदंशा ! --सा-वि॰ प्रदंशा करनेदान । --सी --सी प्रदेश । सिताबय-पु सि । स्वरूपियं !

सिताय्या~सी [सं] स्पेत दुर्गा । सिताय=४० (से०) बंदक ।

भामेशामा गुर्गाका ग्रेमार । मायसाहति-ही (सं॰) सार्यक्षाकीन दीम । सावम्-म [मं]संस्थाने समय शायके बका - मंदन -- पुर्वारता सूर्य । -- संच -- पु सार्वहात प्रयुक्त होने-

सायमधिवास-५ [मै॰] आवित-शृक्षा वंश्रमीकी किया शायमसन सायमारा-५ (सं॰) सार्वहालका बीजव ।

क्या किया गया थी। मायम-पि [भार] रीमा रहनेवाला ।

सायस~सी दे⁴साअना श्रायल-द रे सावण । वि [मं] अवसांश वर्षात् क्रांतरूच और माटोरूचीके संशत्तरे मुख (गूर्वकी शिति)। साययान-प [का] यह एत्पर वा कवहा शादिका परदा को भूप या नवींने पवानके किए जडाश वा शीमेंके आन

—बाद्-पु कादामै सायम शारा प्रवर्तित सन्। सरवर्णीय-वि [सं] सावण-संबंधी। य शायनस्त stu i

क्षित्र विद्याम् किन्दीने नैरीका भाष्य किना वि मामणके हुन और निभ्नु सर्वय तथा संबन्धनंत्रके सिन्न थे)।

-प्रशास्त्री पर्त्यंग स्टर्शका। सावश-पु (सं] रेनामी भीत्रवर्ग स्वाप्तीके यक सम-

द्मायक-दु [सं•] वाणः कत्रः गाँचकी संदर्भा (कामप्रेवके याँच बाजोंसे); आब्रासका किलाए: रामहार: यक क्या सार्वश्चलः । —प्रयानपुरः नामका पंत्रमाणा भागः।

साय-प [सं] भेर, समाप्ति व्यवसानः दिमका लक् साल संख्याः वाचा

सार्यतम-वि [सं] सार्वधात-संबंधी । -प्रतिका-मी क्षामको सिक्नेगरो पर्यको । – समय–५० सार्कनक । सार्यस-द वे 'सारंस ।

─बीस~प्र स्थ्या समय विका जानेवाका बीक !

प्रकाद: शार्वकाकीन प्रपासना। वह देवी जिसकी स्वपासना र्सप्यासमय की बाद । — देवला — की सररकती।

द्योग । −निवास−प -भोजन-पुम्बास् । -संद्या-सि॰ गोबणि, संद

दमाक्रेमे ठइर जानेदाका। − एति − का नार्यकारुका शार्थकारूका विभागगृह। -पोप-प म्बास्। -प्रातः(तस्)-म सुबद्द साम।

सार्य - सावभ का समास्यव द्वा । - काफ - ४ वामका वक्ताम सामग्रेवका - काक्रिका~कालीम-वि संब्याकाम संबंधी । – राष्ट्र – विश् नहीं संख्या ही नहीं पर

साम्बना - प्रदेशमना । सारक्षते!-ध है० 'सामधे'। माम्हरां -पु॰ दे॰ 'छाँमर'।

साझाणिकव् स - पु॰ [गं॰] बदावि गायक गंबहच्य । साझाणिक-पु (तं) महापारेवत ।

-बादी(दिम्)-वि॰ शःशास्त्रवादका अनुवादी ।

माथियस्या प्राथास्यः बाहुस्या द्वालुमाबीच बहुतं । वहा क्षेत्र बिसमें कई देश थीं। "कृत्-वि॰ सामाञ्चका शासन करनेशका !-सहमी-की साधाम्यक्षे व्यविद्या देशी (d)। -बाद-पु पक शहसा बूसरेकी अभिकारमें काकर बसे अपने दिवका सावस मनानेका सिकांत ।

[सं] सार्वमीम सन्ताः पूर्ण प्रमुक्ताः गाका शंत्र । सायर- "प् सागर-'भैन भीर सब सायर मरे'-पना परेका, हैंगा । वि [बा॰] श्रेर करनेवाना, प्रमनशारी।

प्रस्कर सर्वे विविधितः, वसापारण सर्वे । सायम-विन, पु [ल] समान करनेवाला: आवनेवाला; मार्थी, नभी देनेशला बाबवा बरनेवाता ।

साया-पु॰ सार्गाडे नीचे पहननेडी बॉबरे बैसी यह पीक्षाकः [फा] छात्रा, छोँदा परछाईः (ला) बानग्र

संरक्षण सहस्रका असरा जिल, परीकी सवारी प्रेतवानाः

निम या फीनोका छावा दिखामेबाका माना। -हार-

वि॰ छावातुंचा, छाँदवान्ता । सु -बटमा-संस्कृता

मर जाना। - उत्तरमा - छावादा कियरते मीचे आना।

मेठनावा हर दीवा । -पदना-ध्रीह वहनाः सुद्दवस्य

असर शीना । -श्रीमा-त्रित्र, वरीका असर, प्रेत्तरापा

होता । -(पे)डी तरह साथ या साथ-साथ फिरहा

इनेमा∽दर वक्त साथ क्यां रहता क्रममरके किए मी

विकास होता। — में भाषा-क्षित हो। आदिका

असर वह जाना प्रेतवाथा होता । -स बचकर खड़ता-

बद्धकर रहमा असर स रहमे हैना। – से भागमा–

सायक्य-प्र (सं•) ऐसा मंग्रोम क्रिसमें कीई मेर म रहे एक्पे पिक जाता, एकचा शक्तिका एक सेर जिसमें

बीमारमा परमासमामै कीन ही जाता है। यक्करता,

सारग-नि॰ (र्ष] मानावर्णः प्रेरीवाकाः रवितः * संदरा

शरम । प्र विभिन्न वर्णः विषयुक्तः वृत्त-'सारंग मोदि करी वो भारतो सनदुस वान सक्षो -तुरा सिंदा हाकी

भगरा कीवला बीवना क्या पत्नी। मनुदा राजहंता बातका

मनुभवती। यक कुछ। एक रागः शहरकः पृक्षः वायाः

बखा बाका ६८३। शिवा कामरेवा पुग्ना क्रमका करूरा

वतुन्। रिष्णुका वतुन्। बेरमा एक नाम शारंगी। बान्

थणा सार्था पूज्ये। धार्था प्रकारत दीति। शोगाः राना

भद्रश् श्रुरीवरा समुद्राः बन्ता क्योगा रगमा बादमा द्रीया

मक्षणा हकः मेरदा भाषामा अपना निमुत्रा सर्वे। बेहमा ।

-चर-प शोक्षा (१) । - अ-पु हिरम । - श्टमी-

विक स्थी अगन्यस्थी। - नड-प एक सेक्ट्र रायः।

~नाध~्य सार्माथका मनीन साम । ~पाणि - ड

सार्रगा-सी यक हो लक्ष्मोठी वनी पूर्व शीमी। यक

सार्शिक-पु॰ [मं] बरेक्कि विशेषारा एक व पूछ ।

नहन्धिको स्थी।

निष्युः –थाशि≉–पु० विष्युः –स्त्रोचमा∽ि भूजनवसी। --शासम्प-वि॰ थिय-विनित्र (अरव)।

-हार-पु योगिनीदा एक भगा

तरहकी नहीं भाषा एक रानिमी रे

सारगाक्षा-ि यी मिन्ने पुणनवती ।

सार्गिका-की [ने॰] सर्गगढ

सारंगी ।

भक्तनाः सामीप्यमे बरमाः नकरतः करमाः।

साविका-ची॰ (तं॰) ब्रमरिनी। ब्रह्मर ।

साबी (विन्)-५० (सं०) क्यारीही ।

सामाद्र-त [र्स] संका सामा

सारद्व ।

व्यतिवतं अस्थायो । प्र महस्य भूगो । -सर्थ-पु

सिराजाबी-सिक सितासासी-को॰ सिंबी स्वत अस्य । सितासपन्न सिसासप्यारण-पु सि देशेत एक (राज-(and) t सिवादि-पु [मै] शर्बराका पूर्वकृष ग्रह । सिधानन-वि+ [सं-] व्येत संख्याका । व शिवद्धा एक श्रमचर । मिदापीरा-प्र• वि । स्वरः मीर । सिवाय*-न• तरंत सरकः। स्त्री श्रीप्रसा-'तार्ते डीक म होर काम यह है मिताबकी'-सकात । सितावी - म रे 'सिनाव । स्ती : भी अतार व्योतनी । सिसारअर~पुर्सि•} इवस पथा। सिताभ-प्र (सं•) कपर धर्मरा (१) । वि व्येत बाबा-#TR1 1 सितामा-ना [तं] ए६ इत सका। सिसाभ्र-प्र[मं] सकेद नावकः ६५८। सिताभ्रक-पु [सं] कपूर। सितासोघा-सी॰ [सं॰] सित्र्वृंची, स्वेत पारक । सितायध-प सि । एक मएका। सितार-प्र• पद्य प्रसिद्ध नेवनाय । -बाज-नि अ सितार वजानेवाका । - जाफी-को मिसार वजामा । सिवारा-प्र का 'सवारा | वारा महान (का) मान्या चौरी सोनेके पत्तरको टिक्को को होगी जाते नारिपर करायी बाती है। चमकी; भाविद्यशभी; चंत्रकी टेशीका योक और सफंद भागा कुछ बोड़ोंके माधेपर पाना वाने बाका मरोज तिशास भी भेगूडेरे वक बाब (बद विद शहभ माना जाता है); + शिवार 1-चड्म-वि शिवारे भैसी भाँगोंबासा । -शाँ-प क्योर्वियो । -पेद्यामी-वि (भोड़ा) जिसके माध्यर निवारा हो । -शमास -श्रसार-प अहेतिको । -समासी-मी स्वीतिक निया। -(१)हिंद-प्र यक करानि वा अमेन सरकार की भोरते सम्मानार्थ हो काती थी। सु॰ -गर्दिसमें होता-वर्णाग्वदे दिल बीमा । - चमक्रमा-माग्व स्थमा बाती-बहुतांके दिल कीमा । -बुम्बंद क्षीता-भीमाग्बद्धात होता ।-भारी होना-दुर्शनका भाना । मितारिया-५ निवार बबानेबाना । सितार्कक-तु (मंग) ध्वेन मार्क ।

सिसार्जेक-द्र [मं] द्वेन ग्रमधी। सितासक सितासक-इ [गं॰] गकेर बरार। [सं] इकेन पंकितीनाम्य । -कश्मी-विवाधि-वि ली प्रवेत घरमी नग्न र सिसालिका-न्या [सं•] संशी निप्तरी। सिवायां -स्मा यद बरहाती पीवा वर्षेदंश। सिलाबमेर्या -प यक पाया को दशके काम जाना है। सिवापर-५ [मं] एक गाग, सुमना । सितापरी-मी [4] बाह्यी । सिताध-त [मंग] अर्थुना भटना । सिवासित-नि [ले॰] सकेंद्र भीर कला। थवा आर नरा । प वर नेवा बाक और श्रीना अयाम ! -वाग-प्रस्कानवरीय। सितासिता-की [सं] सीवरावी क्युकी। यंगा और

यमना । सिसाह्य-प्र- [संव] शक प्रदः व्हेत देहितः श्रेत विका दर्वेत तक्सी । सिति-वि [र्ं] वावनेवालाः दे॰ 'शिति' (समाम मी) । सिविमा(मण्)-मी [मं] श्रोता गुपैदी। सित्तर्व सित्तवी-मी सन्वर्ध सीपी। सिक्दा-वि [का॰] सरावा बुभा, प्रशास प्रशंसपीया नेक !-कार-वि मेद काम करमेशाला ! सितान-त कि] योगा, स्तंत्र पीलशाबा, मुत्री । सिरोध-४० सि विकास एक भर । सिसंतर-वि [र्स॰] व्येत्रसे भिष काला। प्र एक तरहका करून वाना कुछवी ! -शति-पण शति ! सितोत्पछ-प॰ (सं॰) प्रदेश कम्छ । मितोवर-५० हि । क्वर । सिलोबरा-को सि ने एक सरकार कोता । सिक्षोज्ञय-५ (मं॰) चन्म । वि धोनोकाः बोनोमे दमा हुआ । सितोपस-५० सिंगो विलीत स्पटिक शरिया स्टिको सिकोपस्य – स्रा सिंश्री श्रीनी शहरा विद्या। सिवोध्ववारथ-४० (सं) श्वेद एत । सिविछ#-वि है शिविस । सिवका-इ दे 'छरका । सिवना - स॰ कि॰ कब पर पामा भीतवा - दिवाविकी शिवत दै'-म् । सिवरी-सी शोब दरवाजींजांचा दासाम । सिदामा॰-इ दे 'शीदामा' । मिक्किम्मी दे सिद्द्यादि स्वा≀ सिदीसी - व शास्त्रापूर्वक - 'बबी वह मुरेस हिरीमा शोदियो¹-रात्यमा । सिवक्र-मा [ब] संबंधि निष्कर बाब, रिस्मी सफोई । सिवर्गद्र-व मिंश्री माद्यम दिना और पराजदी मादारी प्रापक संगात । सिरीक-वि (भ) बद्रद मुखा । सिक्-नि॰ [में] पुरा किया प्रमाहमात लब्बा निधिया प्रवादिका थर्ड , वक्षा (निवय): एत्य माना हमा: निवीव शिक्षका कैलना हो लगा हो (अववदार): गरावा प्रमा: पकाया हजा (बीजन): बढ़ा हुआ (क्रकारि): बब्धी तरह

तेवार किया प्रजा-'मरिंद शिव्य करवायी' - मष्टणका मरतन (स्वका): पराधन वधीतन (भवादि सना): दस्र निसंच्या सुद्ध किया हुमा (तपमनी माहिसे)। सुका अन्त्रेडिक शक्तिमें संरक्षा पर्याप्ताः परिका समरः अस्त्रिका क्षीतिमान्। क्रीक बटा क्षमा । पुरु मंत्र वा बीगी निरी शिक्षि प्राप्त को गयी हो। कथि। एक देवदीनिः बाह्य पर मुख्यमा व्यवहारा एक बीग (स्वी)। गुड़ा विमा काला चपुराः भौरीसकी संख्याः रूवा प्रयक्त वाभीन्छ। बन्धीरिक शक्ति काला मिर्वारा पेशी तरसी श्वकार-तु नार् का कामन रे-बास-दि जिसकी रच्छाई पूरी की गरी हो। -कासवारी-की॰ दुर्यादी यंत्र कृतियोमें। यक्त।

सार्रशिया-पु॰ सारंगी वजानेवाचा । सारंगी-ची॰ [सं] एक प्रसिद्ध तंत्रवाचः विवस्गी। एक वृत्तः एक राविनी ।

सार्रड-पु॰ [सं] सॉफ्का लंडा ।

सारंभ-पु॰ [सं॰] क्रोबपूर्ण वार्वाकाय, गरमायसम वहस । सार-वि सि] सुक्दा स्वीत्तमः वास्तविकः वहा शक्ति-द्याकी। पूर्णतः प्रमाणिका बूर करमेवाका, साञका विसमें भारे हो। पु मूक माना सत्ता मक्या गुरा। वकार्थ बातः मधितार्थः निर्मासः गॉदः चकिः वकः धौर्वः साइसः ध्यताः संपत्तिः असृतः तावा समझनः बानुः साहीः रीगः पूरा मेहता। शतरंबका मोहरा। पाँछा। बज्रधारा इश्या कड़ा तप्यक्ता। श्रीभित्वा जंगक। दरपात, श्रोदा-"मुप बामध्ये स्रॉमदे सार मसम हो बाव'। मस्य मखा बादि श्राधेरस्य भाठ (इन्स्टे महते सात) पदार्था मृत्य महरवा गोवछ मोशास्ता मदीबा फका दुवसेके बाद तुरंत जीना हमा पूना चिरीजीका पेश जमारका पुका मुँगः काकाः मीकका पीवाः गमनः, गति विस्तार फैकावः पद्ध बन्धः एक अर्थास्टकार वहाँ श्रीत वस्तुओंका क्य रोचर एक्टर्यमा नवसर्व दिवकाना बानः 🕆 साकाः हैंगाक सेवा-'कारिई शास समुर सम सारा'~रामा : इक्सिएरः छवनः भैमें- करि की पुकारे क्रोक बरत न सार है -भू : श्रव्या: मैना । • स्रो संदेश सवर-'तककत स्रॉडि पन्ने मधुक्तको फिरिडे कर्ष म सार'—स्रः दोश-इनास । ≔कादिर~तु यक तरहका करना। —श्रॉब्य—पु॰ चंदन । ∽श≕नि हटपुट, नक्रपान्। ∽गर्भ -गर्सित-वि क्लापूर्ण। -गाश्र-वि सवक भेगोंबाका १ - गुज-पु सुक्य गुण वा वर्ग । - प्राही (हिन्)−वि किसी वस्तुका सुक्त तत्त महण करने बाका। −श्रीव−प्र िश्चा ⊶ख−पु नवनीस। —तंद्वस-पु॰ भोषा धनाका हुमा धान्त चानक । –तत्-पु केलेका पढ़। -ब्ह्सी(सिन्)-वि अन्छ। वा तस्त्रको नातें देखने समझनेनाका । −का-की सरस्त्रतीः दुर्मा। दिस्ती सार देनेदाकी । — सुंदरी—मी -दुर्गा। −दाद−पु वद ब्लब्दी भी कदी दोँ या जिसमें दीर क्यादा दी। - दूस-पु अभिक दीर या कही क्करीयांका द्वार समिर द्वा ! -धाता(तृ)-प्र शिव । —धारम-<u>प</u> विदेश 'यामक' अच्छा अचा । —पुश्न-वि कवी पश्चिमाका (कुछ)। -पश्-प्र विधिक्तको वारिका एक पत्नी । --पर्की--सी शाक्ष्यवी । --पाक--पुपक विपैका कका ∺पान्प~पु भागनि वृद्धा —फक्क−पु नीगोरी नीन्। ⊷क्षतका−क्षी -मंग-प्र शक्तिका नाधा वि शक्ति-१६त। ~मोद-वु वहुमूस्य स्वापारिक वस्तुर्धेः सङ्ख्यीम पात्र (बैसे मृतनामि)। क्षेष्ठ बाजाना। --शुक् (क्)-वि॰ किसी वरशुका सुक्य थाग का जानेवाला । प्र बस्नि (कीहा या बार्नेक कारण)। -भूस-विक जी सर्वभित्र को सर्वोत्तम । इ शुक्य का सर्वश्रेष्ठ शस्तु । च्यूत्−वि सर्वोत्तम परार्थ केने या जुन हेनेवाका। -मंड्क-पु एक तरहका मेरक । -सहस्-वि गहर म्स्यमान्। —प्रार्मण-पु तस्य हृदनाः मध्याकी

तकाय करमा। -सिवि-पु येत । -सूपिका-को विवस्ता । -योज-वि कच्छे को बालो छे युक्त । -क्रय-वि कच्छे को बालो छे युक्त । -क्रय-वि कच्छे को बालो छे युक्त । -क्रय-वि क्ष्म खेला ने -क्षिट-पु दरस्त । -यार-वु क क्ष्म खेला है । -विव्य-वि किसी को क्षम सुर्व का त्यान का सर्व पूर्व ने क्ष्म का त्यान का स्व का त्यान का का का किसी का सुर्व का त्यान का का किसी किसी का सुर्व का त्यान का त्यान का त्यान का का किसी का किसी का किसी का किसी का का किसी का कि किसी का किसी का किसी का किसी का कि किसी का कि किसी का किसी का कि किसी का कि कि किसी का कि किसी क

सारकारिक स्टब्स समाम ।

स्तारप-5 (र्ध) महा। स्तारपंत-3-(र्ध) पुरस्तार विचारियों का बमादार। स्तारपंत-कि (र्ध) पंजान वा बहातेयाका एटा हुआ। किस्के विरष्ट वस्केट वेंच गुम्के हों। यु एक रांच्यूच्या बारीसार मानाएक वृक्ष वसना स्वरक्षा नेप्रस्तारियों दावार्षका एक मंत्री हु क्ल्यका एक मारी महत्त्व होते है

च्छनाः महुः (विसर्वे चहुर्वोद्य बक्त हो) । सारण्या—की [सं] पारे नारिका पक्ष सरहका संस्कार । सारचि – की [सं] छोटी मदीः वाराः प्रनास्त्राः पात्रीका

नकः प्रसारिणीः पुनर्तवाः सार्वकरुपु स्त्री पश्चिकः, वानीः वि वानाकरने वासाः −क्रमपुरु श्वदेरा दाकः।

सारणी—की (संग) मसारिणीः छत्र नदीः वक-प्रकाशीः वाकिकाः प्रदर्गति ववकानेषाला प्रदः

सारवेस-प्र [सं] एक परंत ।

सारक्षा (शस्)-ण [तं] वनके बनुसारः कोर कवा कर। सारचि-त [तं] रव वकानवाका, सुद्धः नायकः सागर-

समुद्रः सामी, स्वायकः । सारम्य-तु सि॰) रवपाकत रच दक्षिमाः समारीः

साहास्त्र । सारव्य-सी दे शारदा । वि० दे० 'शारदा । सारव्य-सी (सं] अक्रपीयका । कवि सारवीसः ।

सारवी-सी [सं] सक्योपसः। कवि शारदीयः। सारवृक्षक-पुर्वे 'शार्युक्त'।

सारबा॰-ए कि इर करना निकायनाः पंछना, साध करमाः प्रा करना-'पर उपकारी एव बोबसके सारे काय - चंदिशः क्यामाः काइना- बार्गादे राम क्रिक विदि सारा-रामाः । इत्तरत करनाः समाजनाः संपर बनामा प्रकाराः।

सारनाथ-पु नगरसके पत्तर-पूरत चममग तीम मीक-पर श्थित एक स्थान जो नोर्दोका मिक्ट तीर्च है।

सारमादा-पु दे व्यारमादा । सारमेय-पु [सं] सरमादा संगान कुता (विश्ववद्वर यमके चार वाँखोनाके दो कुत्तोतिके एक); वदस्यका यक दुव वक्तुरका सार्थ। -गकाधिय-पु कुदैर।

93-E

-कारी (रिन्)-वि शासा<u>त</u>मार भावरण करनेवाला । -कार्य-वि• इतकार्य, एफक । -क्षेत्र-प सिक्टीका स्थाना वह स्थान खडाँ योग आहिकी बस्त सिक्टि डोती है: बंदक बनका एक माग । -- सीद-पु यक तरहकी क्करा।-गंगा-सी मंदाक्रिये खर्गवंगा। -गति-को सिविदायक कर्म(के)।−सुटिका−सो एक मंश सिक बटिका किसे मैंडमें रखनेपर मनुष्य अध्यव हो सकता है।-प्रह्न-पु उम्मान बस्पद करनेवस्का एक घट वा वेतः कामारका एक भेट । ~कक-प पकाशा सभा पानी। मॉंड । – तापस – प्र अधीरिक शक्तिक साहा। -इश्रांत्र-पु बीवन्सक्त संतीके दर्शन । -वेद-पु वित ।- व्रस्य-प् बादश्चे यीम ।- भातु-सी पारा । - नर-पु देवद वह व्यक्ति विशे सिक्रि मास दो गयी हो :- माध-पु सहातेष !- मासक-पु अवस्तक । ~पका−प किसी प्रतिकाला वह पक्ष की प्रमाणित की थया है।-पश-प अंतरिश्च ।-पात्र-प सहेरका पक्र शतपर ।-पीठ-प्र दे सिकक्षत्र ।-प्रर-प्र उन परी-को यह पीराणिक नगर (को कुछके मक्ती पृथ्वीके **बचरो शिरेपर और कुछके मक्से पादालमें स्थित हैं)।** -प्ररुप-प वह व्यक्ति विशे योगादिमें शिक्ति नाप्त ¶ नवा था।-प्रध्य-प करबीठ कमेर !-प्रयोजन-सकेद वा पेको सरसी। ≔प्राय−वि वो करीय-करीन सिक्ष हो जुका हो।-सूमि-को दै 'सिक्हेन'। ~संब−५ सिकियात संघ ।~सत−५० सिक व्यक्तिशी॰ का विधार ।-सनोरम-ध **क**र्ममास ।−मातृहा− सी पक देवो; एक किपि। ∺सागस −वि विस्का भन वर्षकः संतर हो।—सोदक-५ कवराबोद्धव सर्दश षदासञ्ज्ञीरा । −साविक-प ŧ টিৰিবাসিক' (भसाम)। —दासस्र—ए एक तंत्र ।—सोग—प• क्वोतिक्या यह बोग। —वीगिनी—क्यो मनसा देवी। बाद्वरनो। -योगी (ग्रिन्)-पु शिव ।-शत-विसके पास **बादका रह हो !−१स−**9 पाराः बर बिसने पारा सिद्ध कर किया है। क्येमियागर। -॰वंड-पु चारुको छनी।-रसायम-पु मनामेवाका रस ।~कक्क-नि विश्वने विद्याना डीक डीक क्यावा है। विसदानिसाना न यके।−कक्षसी−की कर्मीकी यह गृति । —स्रोक-प्र सिस्टीका को**द** । "यदी-सी एक देवी।"यर्ति-की बावकी नती। "बस्ति-सी॰ तरू बादिकी पिनकारी (पनिमा)। -विद्या-सौ॰ एक महाविषा !-विनायक-प् गणेश को एक मूर्ति।--सावरतंत्र-पु रांत्रविदीय। --सिला--को करके श्रीक्या एव स्थान (त्री) ।-श्रीकाय-वि विसका क्षेत्रस्य पूरा दो गया दो ।-संचय-वि विसक्ते सेर्पेग प्रसिद्ध हो । ~सरित्=स्वी येगा; आक्राह्ययेगा । -सबिस-पु दे॰ सिद्यस्त ।-साधम-पु सदेव वा बीको सरसो। सिविक्य प्राप्तिक किय साविक कारि कियाभीका साथका दन दूरपोर्ने काम जानेवाके पटावा ममापितको प्रमापित करना ।-साधित-वि जिसके विकित्साका मनुभव अध्ययन हारा ग्राप्त म कर व्यवहार से प्राप्त किया है। – साध्य – वि क्रिसे दिवा वानेव सा

काम पुरा कर किया है। अमाणित । पुरु पद्भ मंत्रः प्रदर्शित प्रमाण !-सारस्वस-वि विसे सरस्वती सिक हो । -सिश्र-प्र मेशकिनी स्वर्गगंगा । -सुसि**र**-वि वहत व्यक्ति शमावकर । पुरु यक संव । - सेम-पुरु कार्त्तिकेन । – सेवित – प्रमेशन या शिवका एक सम वदकरीरव ।-स्थाब्डी-सी॰ सिद्ध परुवकी वर्दर विससे क्कानसार गोजन भार किया वा सकता है।**∽इस्त**− वि जिसका बाध मैजा थी। वस्त, कार्यक्रमल !- हेस (म)-प अपरा शाक सोमा। सिद्धक-प्र• सि] सिंदगार साल इस एक इस्त । सिदाता-वा॰, सिदारव-प [सं] छित्र होनेका मानः चिद्धिः पूर्वताः प्रामानिकता । सिकांगमा-सी र्स । सिक्स वातिके देवोंकी सी: वह चरी विसे सिक्रियाम को गयी को । सिखांत्रम-प [सं] यक शंत्रम (कहा बाता है इसके प्रयोगसे भूगर्मकी श्रीवें दिखाई देने क्यती हैं)। सिकांत-प्र• [सं] अंदिम सदस्य या समित्रायः पूर्व सत्यके रूपमें ब्रहण किया भाग, उद्दूष्ण, पक्षी रागः निर्मा

पक्षके खडनके बाद सिक्ट मतः निश्चित मतः किसका रित मतके जाबारवर किवित शास्त्रीय प्रंथ । ~कोटि~ को ठबंबावर स्थम वा विद्योगिर्णवद हो।-कौसरी महोक्यिक्रिक स्थित संस्कृत स्वाकरणका एक प्रसिद्ध प्रव । – ञ्च∽वि सिन्धांत वाननेवाका, तत्वग्र । -धर्मांगम-प पर्परागत विवस ।-पद्म-प्र संयत पश्च ।-बाच-प्र सददाद ।

सिद्धांताच्यर-प्र• [र्ष] वांत्रिकोंका जानार विश्वेता en आचारका पाकन करमेवाका स्थान्ति ।

सिखी तित-वि [ई॰] सत्व धनाणित विवा इमा वर्क हारा विषीत । सिद्धांकी(तिन्)-3 [सं] बाधतिबीमा निराधरम

बर धनुमानको स्थापना करनेकलाः मोमांसकः वह जो सिद्धांतप्रधीया वानकार श्री ।

सिक्षांतीय-वि सि विकाद-संपंति।

सिक्षां बा—की सिंडे इगीः सिका−ती सि॰ो एक योगिनी। कविः सिक बायक हेववर्गकी स्त्री।

सिदाई-सी सिद्धी नगरथा। सिक्षाल-वि [एं॰] विसन्धे भाषाओंदा पाकन होता हो ।

सिद्धाच-पुरि] पर जब ।

सिकापणा-की वि के 'शिकसिप'। मिखायिका-सी सि | चीरीस देवियोर्देसे यह जो

बहतीका मादेश कार्गानित करती है।

सिकारि-पुर्शिषक वांश्विक मंत्र ।

सिद्धार्थ-वि [सं] विसको कामनार पूरी को गनी हो, सप्रकारवीरवा कर्यतक के बातेशका। जिसका व्यथिपाय प्रात हो। प्र गीतम दुशा एक मार्युत्रा स्कर् का एक अनुकरः सहावीरके पिताः दश्चरकता एक संबोध सफेट वा पीकी सरसीं- प्रसिद्धार्थ। बटी बुद्धा एक संबरमर। वह सकाम विसमें पूरव और विद्यानी भार वहे बामरे हो। -कारी(दिम्)-पु शिवा-सति-पु एक वोविसका। सारमेपादन-साथ - विकित्सा-की कुत्तके बाटनेका सपकार । सारमंबादम-पु॰ (सं॰) ऋतेका योवना यक शतक (निसमें पापियोंको यमके करों का बाते हैं)। मारमेपी-मी [सं] दुविया। सारस्य-५ (सं•) सरकदा। स्वार्थः र्यमानदारी । सारव-वि [सं] सरवू मदी-संबंधी ।

सारवती-सी [सं॰] यह पूचा सामाविका एक प्रकार । वि॰ स्त्री॰ दे॰ 'सारवान' ।

सारबान् (वत्)-वि [से] कठिन, ठीसः या मजबूतः पोनकः मुस्तवान् इ रसदारः जिसमेसे निर्वास निर्वास सप्रशास ।

सारपान सारसम-पु॰ [सं॰] क्षमरवंद, करवनी। परीची कमरपद्गीः चरलाच ।

सारस-वि [सं] वाकाव-संवैधीः विकानवाकाः धारस पदी-संबंधी । प्र इंसकी बारिका एक लंबी डॉबॉबाला पत्रीः हेसः पद्याः चंद्रसाः कमकः कमरर्गद करवनीः गरुक्ता एक पुत्र' छन्पय - छन्का एक मदा श्रीक भारिका चकः एक ताक (संगोत) । −प्रिया नवी॰ सारसा ।

सारमक~त्र [सं] सारस ।

सारसाक्ष-पु [र्र•] यद तरहका काछ (रत्न) । सारमाधी-सी (सं•) परकोषणा। मारसिका~सो॰ सि॰ो सारसा ।

सारसी-को॰ (सं॰) छारस्का माचा भागे संदशा एक मंद्र ।

सारमुता•-सो॰ पश्चना ।

सारसूती = सां दे 'सरस्की। सारस्य-पु [शं] प्रदार, विस्थादर वक्त्राचुके सर सवा । सारस्वत-नि [सं॰] शरस्त्रती(देवी या नदी)-संबंधीः

छारत्वत नावि-संनित्तीः छारत्वन देश संनित्ती वाग्यी, सरस्वनीत्रस्वती वैद्यविश्वेषा एक ऋषि कियान् । प्र (क्रिमदी बरपचि सरस्रती नदीसे भानी आणी है)। सार रवन देशके निवासी। मादानीकी यक क्यमाति। विस्वरंका ब्रह्मका नारदर्शे दिन था करना छरस्वती-पूजा-संदेशी एक विशेष करका बाजी: वान्सिया ! ~कदण-व सर स्वती-प्रवा संबंधी क्रम्य-विश्वय । नवल-त सरस्वतीक

निवित्त क्रिया पानेवाला जल-विशेव ! सारस्वतोत्मय~५० [र्थण] सरस्रती-पूजनका समारीह । सारस्वरय-नि [स॰] सरस्वती-संबंधी ।

सारोम(स्)~! [सं] मीबुद्धा रहा मिनोश्कर निश्वासा द्रमा रस i

सारोश-इ [मं] सार, नियोश मतीया ताल्पके मनि-ताचैः रुपर्गहार ।

सारा-वि पुरा, संपूर्ण, समस्त । + पुर वे 'सामा । स्रो [में] दुर्बात कुछा क्रथ्य निवृत्तात शूकरा बैजात भारत्याः ताब्दिसपत्र ।

सारादान-पु॰ [सं] गर्शेचयकी पुन केना । सारापद्वार-प्र [में+] सारपरार्थ या पनवा अवहरण ! साराज्यः - प् [सं] बामिना नेंगीरी गीव् । सारामी(पिन्)-वि॰ [तं-] विश्वी की वर्ते कान कराने

का रक्षक । सारास-प [सं•] तिकसा पीपा । सारावती, सारायकी-सी॰ (सं] यह छंद ।

सारि-पु, सी [सं] शहरंत्र या पानेश्चे गोरी-'श्राप्ता । फिरि-फिरि मारसी वर्षो श्रीवरको सारि **-करोर** । स्तीर मनाः * सारंगीकी एरेंदी (१); धाँसा-पिक्र संपति सप देवर्दि सारी - क । - फसक-त विस्तात ।

सारसँग-को मैना। सारिक-पु॰ [सं॰] वे 'सारिका'। यक मुनि । सारिका-सा [सं-] मैना पृष्टी। पांडावरीचाः नंत्रवाय-का पुष्ट जेला वह बिएछा जिलपर वार दिने रहते हैं वीरियाः बृधीः —मुक्त-पुरु एक विषेका कीहा । यारिला•-वि दे॰ 'सरीका'।

सारिकी-सी [सं] सहरेशे हुरानमा क्रिक शिक्षपा प्रसारिगी। रक्त पुगर्नवाः ऋषासः सीता अस-वारा अस अवाकी । वि+, खो• दे 'सारो(रिन्) । सारिय-५० सि । साठीको बारिका एक पान । सारिवा—सी॰ [सं] अनंतम्का दाना जनंत्रम्स ।

∽ह्रय~ <u>५</u> अनंत्रमुक कीर इंदोमा छता। सारी-सी॰ सि॰ सारिका शैना सहाया ग्रमीना थायी पाँचाः 🕇 साई८ मचाईः शक्तः * बाही ।-ब्रीहा-थी। यहर्रज बेसा केंद्र । सारी (रिच)-वि [र्स•] यमन करमेराम्याः **रो**ध्य

करमेराका। "का शारमान् पारम करनेशामा । माक्रप्य-प [do] व्यक्त होतेश मान स्व सहरतः वक्षरपताः हासिका एक प्रकारः स्पतारस्यमध्य भागमे

क्षिया वावेबाका वर्ताव (क्षीपावि) । सरही -पु॰ यक अवहतिया पाना राष्ट्रां न नीकी अनुव विष्यको सारी । • न्ता दे• 'सारिका । सारीवक-९० [र्स] कर्मत्रमुख्या रम ।

सारोपा-सी [र्थ] कक्षणका एक मकार विशामें सद पदार्वमे बुसरेका मारीए दिवा जाता है (छा)। शारोष्टिक, नारोक्तिक-पु [नं•] यद रिष् ।

सारी • न्की मेना। सार्गेड सार्गेल-वि॰ (ते॰) शिनुमैं धोर्ड रोष नये हें। रीक्ष्मका ।

मार्गाड-भि॰ (ते॰) समाज-मंत्री । सार्गिक-दु [र्थ+] एता स्वति क्र्रमेगामा !

सार्जंट-प्र है॰ 'सार्जे । मार्जे~४ [र्स] समित संपीत रा# (१) ।

सार्थ-वि॰ [थं] वर्षपुक्त अधिप्रावनुष्ठा वर्श्वपन समामाधी। वपर्वामी। पनी, बाकदार । पु वनी कारमी। कारनों विभिन्तमृत्। अंतुभवः जनसमृदः एवर ग्रीरः तीर्थमात्रीः स्थापारिक माध्य (को)। स्थापारः ।-ध्य- कारवाँकी सह करवेवाचा । व काल् ।—अ-वि कारमोर्थे पत्रा हुआ चारत्यू (हानी भारि) !-घर-

यप्तिनगृहका सायक । -वति-इ मुश्चिमा ।-पास-५ व्यव्सिक रम्द १-मृत्-५ कारवींका नेता ।-बाइ-तु॰ दे 'शार्थन्त् । सारामरा यस गोनिसान ।-याहम-त दे सर्वभूर्र । -संचय-

्मानी (निम्)-वि॰ अवतिको सम्बद्धमनीरम मानसे बाला ।

सिहार्यक-पु॰ [मं] एफेर सरसी। एक मरवम। सिहार्यो-को [सं॰] सफेर सरसी। वही पूछ। साठ संस्ट्रार्योनेसे एकः वतमान अवस्थितेके बीवे वर्णानकी

माता। सिद्धासम-पु॰ छि] एक नोमासन निस्ते नाले पैरका दलना द्वारा भीर छिदनके नीमामें भीर वाहिजा पैर हिस्सके करा रककर माम्यपुर रहि बमात हुए ध्यास

करते हैं। सिद्धि-की (सं) वर्मकी पृतिः सक्तकताः अभ्युद्धः निव्यश्चि जनुमासः शिहणकः (श्राणकः) परिधीशः पाक-कियाः महतका इसः पूर्ण प्रश्निः भणिमा गरिमा लाहि अकीकिक शक्तियाँ दि 'अक्तिकि'): बसला सिक्बला शुपरिमामः मोखः प्रचाः स्रोपः चादकी सहातीः वायका मक मकार: दुर्गाः पर्य द्वाबा कामा कश्चवेशः बारोस्व कामा प्रकोगमें काना (मिक्स)। एवह बीमा। वद बी म्बन्धिमें विभिन्न गुणेंका समावेश (सां०)। कवि नामक भोपभि। एक शति (संगीत)। बश्चकी यक कम्बार क्येजकी पक पत्नी। मंदासिनीः संघा छप्पक्का यक्त मेद्र । प शिव । ~का~वि शक्क वशामैवाकाः भवत कामे बाला । - बारब - वि० करवाग्रामि करानेपाकाः प्रताप बर । -कारध-४ मिकका साधन । ~कारी(रिक्)-वि विसी बातको सिक्रि करानेवाका । -- जान-प्र सिकार्तेश्व प्रायः -इ-वि मोध् देनेवाकाः निवि देनेवाला । च्राव्यक्रीरवः ध्रवनीय वृ**ष**ा −वृद्धी (सिंग)-वि सविष्यमें शिक्षि देखमेगाना आगेती रिवर्दिका प्राम रक्तनेवाका । -दाखा(म)-इ गणेस । ~वाची-जो॰ दुर्गाका यक क्य । -प्रव्-वि॰ सिबि देसेवाका । -सुसि-ची॰ वह रवान वहाँ सिद्ध बन्ध प्रिके । -सार्रा-पु॰ सिक्कोफमें पर्देचानेवाका रारता । -वारिक-पु निविद्ये प्राप्तिक किए वाचा करनेवाला व्यक्ति। -वीम-द्र प्रश्लेका वक्ष हाम बीमा बीग वास्तिका प्रथम । -योगिनी-की बोगिनीका रक भेद । - बाग्य-वि स्तितिके किय भाषत्रवक ! - स्थ-प॰ हे 'शिक्टर । -राज-पु॰ यह वर्गत । -साम-प॰ सिक्रिकी माहि। -वर्ति-श्री जादकी वशी। -पाद-प्र वामगीपी । -विका-प्र शिविवारिके मार्गीये आमेश्रामी नाभा। --विमानक-पु गर्भेराकी युक्त जुरि । -सायक-पु॰ सुदेश सरसी। दमनद । --स्थाल-पु॰ तीर्वस्थामा मीश्रमाहिका स्वामा विकित्सा-धेवका सरवारतीत ।

संप्रका वरवारतात । सिविद्यन पु (१०) तिवि अकीशिक स्रोतः । सिविद्यन स्रो (१०) हाद्र विसीतका स्रोतं वर्षाः । सिविद्यन पु (१) अस्तरेत स्व सर्वे । सिविद्यन पु (१) अगितामः शिवा शुक्तरेते वर्षाः । स्रोतः ।

भारत सिद्धीयक-पु [सं०] देशे केशे । सिद्धीयक-पु [सं०] कांशा एक तोर्थं । सिद्धीय-पु• [सं०] (वांशिक) शुववर्गविशेष (नारव कारवर, शंभु भागंत और कुलकीशिक्त)। सिख#-वि॰ वै॰ 'सिख ।

निषरीं =ची यक्ष मद्रश्री। सिषाई =सी॰ सरक्ष्मा शेषाप्राः।

सिधाना । सिंध यहा जाना, प्रश्नाय करमा। समा - पाप कर जोरि वजी कोशकपनि दे प्रमु महे सिपायों -पप्रस्ता ।

सिधारमा∸ण कि॰ भाना, प्रशाम करना। रिद्या रथामा भीमा। मर जाना । ♦ छ कि॰ द्वधारमा ।

धीनाः मर जानाः + छः तिश्रद्धधारमाः। सिधिय-चीश्यै सिदि'। -गुरका-मु दै 'सिद गरिकाः।

जन्म । सिम्म-वि (र्स॰) एकेद दार्थनाकाः वदेत कुत्रते प्रस्तः सीथ जनिवाका । पु॰ कुत्रके अधारद म्मीमेसं एक सदा-करा दर्शत करा ।

का, राय क्रबः सिच्म(स्)-पु [सं] कुछके स्टारह पर्नेमेरे १६, हार कुछः -पुष्पिका-को किमस मेहेगा।

सिप्तस्य-वि [एं-] हेंद्रेण्डा रोगी। सिप्तस्य-वी (तं] स्त्री मण्डी। वह तरहा हुत्र। सिप्तस्य-वी (तं] स्त्री विते हेंद्रेश हुवा ही। सिप्ता-वी (तं] इत्रव दान हुए रोग।

सिच्य - पु [सं] पुष्प नदम्म । मिन्न - (व) सामुद्र मनावसारी, सफ्तमा रहा स्टेस बाजा । पुष्प ।

सिन्नक-पु सिंग्] ब्रह्मिन्नेव । सिन्नका-को सिं] ब्रप्निनेव । न्यम-पु वक्त देवी

वान । सिव-इ [लं॰] शरीरा शीवान वीशाला माना कुंती ।

दि॰ संदर्भ काना पत्ताय। सिना सिक्ष-इ [ब॰] उन वव। -दसीदा-६ वृक्षा-(ने) सद्ध-इ समझ लोक्डा उम वीव्या-वि। स॰ -को पर्टक्या-स्वामा दीवा। -स उत्तर

काता-व्यवाधी क्याने समन्। जिल्ला-व्याभी जावका सम्बद्धाः

सिन्द्रमा नारका यह १६०० सिन्द्रमा न्यु कि मॉन्डे क्रेडिन नामका नव निका कर्माः क्रिक्टमाः

सिमान-तु (कार्श्व मान्या मान्या पर तीरकी मीक । सिन्नि-तु अभिपीसी यक माधीग शासाः यक वाश्यीर, साम्बद्धिमा पिता !

सिमी-भी [मं] भीर वर्तकी सी।

गिबीवगि−९ वक बारवगैर ।

सिर्मावाली-को [मं] एक बैरिक देशे (गर्म-प्रमय वा प्रतित्वसम्प्रो मधिवाबी देशी)। शुद्ध स्टब्सी वरिश्या। दुर्म, यक ब्रांसी संवित्तकी एक करना ।

নিন্তু-মাত [ঝ] বিধাৰজান্ত্ৰী কৰি দানিব। বিধানত-পুত [ঝ] অপৰিক চাৰাৰিব। বহু ধৰাৰ কহা অপনিক মুখুনিব হিন আই। সহাত্ৰ-পু

विशेषायर। विशेषायर। विश्वानिक्षां विश्वानं प्राप्ति देवताकी वहावर मनाह

के क्यों नहीं शानेताची शिक्षारें । सिपर-मी० [बा०] कन, नहीं। (ति:(मा) कनवा :वि मास्त्रार ।-इा(इम्)-वि दारवाँकी सट करने गाका । प्र बाकू ।-श्रीमं-वि० जिसका कारवासे साथ स्व गया हो । सार्धक-वि [तं] कर्वपूर्णः उपयोगीः **कामदानकः**

महस्तपूर्व ।

सार्यकता – स्रो [स्रं॰] महरूना पपनीयता ।

सार्यशाम्(बद्)-वि॰ [सं॰] मर्वेनुकः सामिप्रायः वहे दक्रमाका ।

सार्यातियाद्य - प्र [सं] माक्की रवानगी (धी)। सार्थिक-वि [र्थ] कारबँकि साथ भाषा करनेवाका ।

पु॰ सफरका साबीः सीदागर ।

साधीं-पुरव संक्रिनेगामा मार्गि । सार्वक-प दे शार्वक'।

सार्वसार्थ-वि[सं] आवेके साथ पूर्ण(संक्या)। ल सहित, साथ।

मार्ज-वि [सं] नम गीका भीगा हुना । सार्च साव्य -दि [सं] सर्प-संबंध पुरु भवनेना महन। सार्पिय सार्पिरक-वि [सं] इत-संबंधीः योगे बनावा

इमाः इत्यक्तः।

सार्वसद्-पु [सं] एक तरहका नमक। साव-वि [स] सबसे संबंध रायमेवाका, जामा सबके

किथ छप्तुक्तः। पुन्नीई दुरु का विम । मार्डिसेड-वि सि । सर बागोंके किय अपनुष्त । सावकासिक-वि [मं] सारे मनोरव पूर्ण करनेवाका । माबकास्य-प [सं] शारी अभिकावाजीकी पूर्ति। साबैकार्मिक-दि [सं] सबसे प्रमानकारी।

सार्वकास-वि+ [सं] समी समर्वीमें दीनेवाका (जैसे निवाद) ।

साब बाक्रिक-वि [सं] सब समबीके किय बपनुका

सर काळ-सर्वेश । सार्वराय-प्र• [सं] नोमलाकी जमीन ।

सार्वगुणिक-वि [सं] सर बच्छे गुर्वीचे युक्त । सार्वजनिक सार्वजनीत-वि [6] धरते संबंधित

बाकाः सबद्धे किए उपसन्तः।

सार्वश्रम्य-वि (ए॰) काम सबसे स्वयं रखनेवाका । सावज्ञ सार्वत्रव-दु (सं) सर्वत्रसा ।

सार्वक्रिक-वि सि । सन स्थानीते संबंध रहानेवाचा सद स्थानी वा सदस्थाओं में कागू होनेवाका ।

सार्वदेशिक-दि सि । सन्देशीने संस्काः। साब नामिक-वि॰ सि) सर्वनाम संबंधी (व्या) ।

सार्वमीतिक-पि [सं] संग मूर्तो, जीवाँहे संपंत रसनेवाला । साधमीम-नि मिं । शारी भूमिन्संगी। सारी बब्दीका

ग्रापन करनेवाला विश्वविद्यातः ममधी सारी व्यवस्थानी-से स्त∕प रजनेदाका । प्र चळदवर्धी शावा⊾ सन्नाटः क्षेरका दानी (ठचरका दिग्गत): दिन्का सामान्त ! -

सार्वमीमिक-दि [सं] सारी पृज्योक्ट प्रेन्य द्वारा। सार्वपश्चिक-वि [सं] सब प्रकारके बहाँसे संबंध रधनेवामा ।

गृह -भवन-पु॰ संश्रारका बासाद। होकर दूमरा जारंग होना । - भारी होना - वर्षदा जन्म

साधराज्ञिक-वि॰ सिं॰] शारी शत टिक्नेबाका (शेक्ट भारित) । सार्वराहियः—सार्वराष्ट्रीय—वि (र्ध•) सर राष्ट्रीसे संतंप

रसनेवाका ।

सार्वस्य-प्र॰ (सं॰) धीरा ।

सार्वरोगिक सार्वरोगिक−वि [धं•] धर दरहके रोगेंमिं सामग्रवस ।

मार्चकीकिक∽नि [रं•] शब्दोबात सारे संसारमें स्थाप सार्ववनिक ।

नार्ववर्णिक-पि [धं] प्रत्येक प्रकारकम प्रत्येक जातिसे शंबंध रदातेबाका । सार्ववेदस-वि [सं] यहमें सब अस दान कर देनेदाका !

सार्ववेश-प्र• [सं•] वेर-बहुद्दश सब वेशीको बानने যাড়া সাহৰে চ मार्शनिविष-वि [सं] सन केरीका प्राता ।

सार्वसेन-प्र• धि] एक पंचरात्र ।

सार्चय-वि [सं] सरसों संबंदी । यु सरसोंका शाक तेक मादि । सार्ट-वि [र्स] धुमास पर अधिकार मात्रियमा ।

बार्ष्टि−वि सि॰ोशमाम परः वक्किन वादिल वकः। सार्ष्टिता-की [सं] पर अविकार कारिको समानता

भुक्तिका पक्र प्रकार । साप्त्रवें~प्र [सं] मुक्तिका एक प्रकार।

सार्छकार-वि [र्च] मान्यम्बद्धः सर्वद्वरः । सार्ख्य - प्रसि । रागका प्रकारविधेव को धारिस होते इर मी वृत्तरे राफ्के बामास्त श्रुक्त होता है।

सार्श्य-वि [र्स•] विसे किसीका सदारा हो (समासमें)। सास्र−≑नी धाला । प्र बक्स कानः पीका−'सीतिकके साक मो निवाक नंदकाल मो -रसरावा हेदा गाँदा। वह जो दुःश वैद्या हो। +शन । [एं॰] वृक्षविशेष निर्वासः बढा प्रद्याः

साम्बर्धः साजका प्रास्कारः शीवारः यक तरककी मछकी। (सुप्रासक्षे क्रिय 'शर्क' मी देखिये ।) -प्रध्य-प्रास्थकका । -रस-प्र राक । ~बाइन न्यु शाक्षिताइन वरेश । न्बेप्ट-प्र वृता । ~र्श्वरा−पु मत्त्रीरका सममानः।

साक-द्र कि] रस, १२ महीनेदा का का ⊨भाइंदा-प्रभानेवाका वर्ष । —इक्साडी—प्रभावतरका चलावा हुआ संबन् जिसका आरंग प्रसक्ती राज्यारोहण-विशिधे हमा । ~ सर्वां-वि प्रशास अनुमन्ते । -शिरक्र-को वार्विक व मधिवि, नव वर्षेने प्रवेशका बरसव वरसगाँउ । ~गुज्ञहता~४ शीवा दना साह, गनवर्ष । ~तसास~

प्र• वर्षका अंत । −तमामी−मी वार्षिठ विश्रवा। ~शामा~प कियी पत्र-पत्रिकाका विधानांक जो सरो वर्षेने प्रवेशक अवसरवर मिकाका बाद । -फ्रससी-इक प्रतमी सन्। -बसाक-ल हा साक साकाता। -हा**छ**-पु वर्तवान वर्ष चलना साछ । −हा-साक-अ अनेक वर्षोत्रक, बरसों । मु - पस्रत्वा - वरम पुरा

वनिष्टस्य दोना । सामग्री-सी दे॰ 'सहरे'। मरहरार । - न्यारी - की॰ रक्षण, दिकानत करना, रसं वाको । मु - बास्त मा फर्क देना-विकार बाल देना, बार मान भेमा । - मुँदूपर सेना-दिफाक्तके किए बास स्थाता ।

सिपरा-को दे 'स्ति।

सियद्द-'शियाद'का कपु क्य । --वारी-को शियादोका काम भा पेछा शैनिकद्वि । --वार--द्व॰ सेमानावक। --सामार-प्य शेनापवि ।

सिपाई+-पु है 'सिपादी'।

सिपारसी - ची १० 'शिकारिय'। सिपारसी - वि दे 'शिकारियो'।

सिपारिश-सी [का] दे विकारिय'।

सिपाव-पु वाँस आदिका बना हुना वह बाँचा या सावन श्रिसे सकानेके किए गाशीमें वाने कगाते हैं। सिपास-पु [का] सरावना, वहर्ष, इसकताप्रकास ।

-नामा-पुर कमिनेरमपत्र । सिराम् -पु फा | ऐना कीव (विदोमें की मी-'मेरमेर कानत मकिरकी पिगा के -राजा)। नगरी-की शिमावोका काम या पेका, धीनकक् ए । नसकार-

दे 'सिपद्याकार ।

सिपाडियाना-वि [फार्न] सिवादियोकाना सैनिको-

चित्र (-अस)।

सिपादी-पु [का] ऐतिका पोजा कांग्रेरिका चरासी। सिपुर्व-ति [का] सामा हुला द्वाके किया हुजा। -गी-को सिपुर्व करतेका मान स्वाके किया हुजा। (-ते केना)!-बासा-पु सिपुर्व करतेका क्षेत्र, सम् पंतरह । सुक -बरना-सीपना दशके करना। दिस स्वति हुन

विष्णाक-को दे॰ 'सिपर ।

१६ अप्टर-का वर १०६६ । सिप्पा-चु दीपडा कर्षाणु वदा निशामाः एक तरहकी क्रेडी तीपा सतहनः क्षाम निकामनेका त्यान, बीक दिप्पडा पाट: ग्रु — क्षामा-भृमिका वर्षेत्रमा बीक दशा करना । — निरक्षाणः — क्षामा-भिष्य क्षाम कर्षा वदागः । — सिरक्षाणः — क्षामा-भिष्य क्षामा तदशैर करान। — सारका — क्षामा-भिष्यान कमाता दशेर करान। सारका — क्षामा-भिष्यान

सिम-पु [सं] चंद्रमाः पर्शना स्वेदः एक होत्रः। सिमा-चौ [सं] सिवोका करिवेचा मेंसः यह होत्रः

धरदेनदे पासकी एक नदी ।

सिक्कत्र-सी॰ [अ] गुम विशेषका रक्षत्रः विशेषकादः । वि (समाममें) तुस्य सम्म (गुर्गसिकत-मेक्षि वैसे स्वनाववातः) ।

सिफ्रर-पु [न] विदुः स्ट्रव । वि मृत्यस्थित । सिफ्रमसी-न्यो कमीनापन भीवता ।

सिक्रका-वि [स] क्योगा गीव शुर, क्रिकेसा। — स् -सिक्राय-वि बीक्सकृति। -नवाक्र -प्रवह-वि क्योगोंको क्योने क्योगोक्स जलसङ् करनेवाला।

-पन-पु ओछारव मीनवा। सिक्टरी-रि [स॰] गीनेवा निवला -श्रमस-पु नद्द मेत्र बित्तमें ग्रीतान वा प्रेतारमानीस सद्दायता ही पीय 1

सिफा−सौ दे॰ किका ।

सिक्रात – सी॰ [थ] 'सिफत'का वहु॰ । – (ते) ज्ञासी – स्री सदय गुण ।

सिफाती-वि॰ [म] गुणसे संबद्धः सिद्धाः सम्बास बादिसे प्राप्तः वपाविद्यवः वो सहस्र म हो ।

सिकारत नेता [ख] सम्बेर(वृत)का पर या काम, वृत्तरत पक राज्यसे दृष्ठरेको मेळा हुमा प्रतिनिविधक ! —खामा—प॰ क्वापस राज्यसम् वृत्तर ।

सिक्रारिया-की कि] किसीके विषयों मध्यक्ती वात करना किसीका बोर्र काम करनेके किय युवरेसे करना किसीमें किसी जन, कार्य रायादिको योग्यदा यानामा सुरामणः वरीवा (क॰) !-मामान्य क्रियोरिय की गयी वेशादियों-वि नियमें किसीको विषयोरिय को गयी वेश क्षित्रादियों-विश्व करनेक्षित्रा नियमें। वो क्षित्रादिय करनेवाका। -टरटू-यु वह कारमी वो बोम्बनके दिना, महत्व कर्य-क्षित्रारिय वा बायसुसीसे

कोई पर पा भाए। सिफाक∽प फिाी मिडीका परतना डोकरा।

सिकाका - पु कि] सिट्टोका वरतना अकराः स्वयदः। - योश-वि वर्षसम्बद्धाः अवस्थाः।

सिविकाण-को दे 'शिक्सि'।

सिमंत्र•-५ है 'सीमंत्र । सिम-वि (सं•) मत्येका सवा समग्र संपूर्ण ।

सिमई-की छिक्।

सिसट-की सिमब्बेकी किया ! सिसटना-न कि सिकुक्ता संकृतित क्षोता; सिकुक्त

पहला। पदल होना पहरना। कमित हो नाना सहमना। जनाम होता।

सिमर•-पु सेनर-पर्वत मरम शिमर वार्किंगम साकि रहक दिव काँड -विचा ।

सिमस्यार्थ-प कि दे रमरम, वाद करवा। सिमस-पु दक्का जुना; ब्रुपक्षे बूँगे। सिमस्योका-पु यह तरदको मेहराव।

सिमरम॰-पु स्मरण याद करनेको किया। सिमसिमानार - क॰ कि दंश मासून होना। सक्करा

ासमास्थापाः चित्रका क्षा चार्यस्थानाः कुक्कुछ नमीका दोनाः सिमानाचोषु दद सीवासाः वस क्रि. दे सिसानाः

सिमाना−ापुद्दशायाः व्याद्धाः सिमारनाव-व्याद्धिः देशिस्याः। सिम्पतिव-व्यादेव-प्यति'।

सिम्रोते॰-मा दे॰ 'स्पृति'। सिमेटनार-स कि॰ दे 'समेटना'। सिम्द-की॰ [ब] दिशा और, बातिप।

सम्त−का॰ [च] १२छा आर, बात्रका सिय॰−की शौता।

सियना-व्य कि सर्वन करमा बनाना उत्पन्न करना।

ांसीनाः सिवस∽∙वि शीतक देशाः क्या । प्र धानाः

† भिवार । भियराई—सी श्रीतकता, उंदस ।

सियराना-म कि द्वांत्रक देश होता। सियह-वि+ दिः। है • 'शिवाह ! -मार,-क्षवान -फ्राम,-बग्रुत-वि+ दे • शिवाह में ! -फ्रामा-प

साम्बर-सापर सासक~व्दिव सामने, हुन्या वैनेवाला। [सं] अल्ब्होंसे भृषितः अवस्यसः । सासक्षम्य-पु [सं•] विद्वी गुर्वीकी संगानता । मारुग-पु [ई] रागविधेत । -सुबद्ध-पु वक्त ताल (संगीत) । सारुमामः साबिधाम-१ है 'खारुमाम'। मास्प्रासी-सी गंदक नहीं (शाक्यामधी प्राप्ति होनेके कारण)। माकन-पु मांछः शोरवादार तरकारीः (सं०) साक निर्वास सर्वरसः गाँद । सास्त्रा-स कि का देशः चुनानाः चारपार्थके पारी क्षेत्र करवा । यन कि अपनाः क्ष्टकर होनाः एक्क्ना । सारूपाभ-पुरु एक झर, वॉक्ट । सासमसिसी-सौ ध्युविधेव सवामकी। साखम-वि॰ (सं॰) साकस्पनुष्ठ, हाति। सासमा~प्र यक्ष रक्तशोषक भीवव । साकडव∽को दे॰ 'सम्बद्ध'। साका−प परगीका मार्ड। क शारिका मैगा। वि∗ (समासमें व्यवहर्त) शासकाः "शास्त्रवर श्रीमेबास्ता (पंज-सामा बंदीबरत) । स्त्री [सं०] बर, मन्द्रामा दीबाए है। 'शाका । —क्दरी—सी॰ कुक्षमें साम या पराजित सी । ~ब्रक~९ क्रचाः श्वामा मंदिवा । ~ब्रकेप~ड भेदिने, गौदह मादिका पदा ? माकात्तरीय-५ [सं] दे॰ धाषात्ररीव'। सासामा-वि फा] साधना वार्विका साध्यरपर दीनै-बाका। श्रंदरशास साक्ष्यसाङ । धु स्तीवाइति बी साक्षमें एक बाट, वर्षतमें दो बाब ! स्ताकार~य [सं+] शीवारमें गानी धर्म सीटी 'लेकड । [फा] लावक, मेवा सरवार । -(र)शांक्रिका-प्र° काफिकेका नेवा । --जेग-पु सेनारिश मैनिकीको की चानवाली एक चपाचि । सासि-पुदे साहि । की साल, बीहा। साक्षिक-वि [थ] राष्ट्र वरुवेशका यात्रा करनेवाका। व यह लावक वी मगबरसाधात्कारकी सावमाके शाव साब गृहवर्गका भी पाकन करता रहे ? मासिका साक्षविका, साक्षेपी-को [सं] शीरति। सास्प्रिती-क्षी है शाकिमी । सासियमियी-सी १ 'सामगीमधी। साकिस-वि [अ०] सहीसकामण सरक्षिणा अयोह बरा, सावित । साकिमाना-पु वार्विक वृद्धि। वि सालाशाः। साब्धिस-मि॰ (बन) दीसरा । प्र पंच रिपरेत । -मामा-९ पंत्रतामा। साहित्सिटर-पुर [बं] दक शरदका नववीदेट जो वार्र कोर्रके सुद्रश्मेके कागमात तैनार करके नैरिकारको टेवा है। सासिमी-नि पंचका । भी १ पंचावत । साकिश-दि [स] सेक शाहयरित । साबिद्दोत्री-इ॰ दे 'छातिदोत्री । साछी-हो। अमीन या रेंची हुई रहन की काई, मार्डी

आर्थिको बनके कामके बरके ही बाह्य है। परनीत्य बहुत । **अप्रकार** सासुर∸पु[र्स] मेरका साक्षेत्र-पु [सं॰] सन्दिका अंत्रप्राः शाकि भावका देश। साक्षेया-ली॰ [मं॰] श्रीफ । साम्रे गुगाम-प्र- गुगानका गीर, राह । साछीवय-पु [६०] भगवान्दे छात्र मखस्य समी सोहर्षे रदनाः ग्रुष्टिका यस प्रश्नार । सास्रोहित∽प्र• [सं•] रफ हारा संबद्ध व्यक्ति । मास्मर्की~पु शास्त्रकी, सेम्ब । मास्य-प्र• [सं] एक देश: वस देशका निवासी: एक दैला मिसे विन्तुने मारा वा । वि सावन देश-संबंधाः **∽हा(हन)**-द्र विष्तु। सादिवक−9० [सं] मैना पर्धाः यास्त्रेत्र−ि (सं] साम्ब-संत्री । तु० समय देव-निवासी । नार्धेकरमां – वु एक तरस्था योशः स्वामकर्षः। सार्थस-पु॰ है 'सार्यस'। साथ-प्र• है शाहु"; [सं] होमवर्गन । सावक-प्रभीव या वैश सम्बन्धाः [सं] प्रापदः, वान-बरका क्या । वि अस्पारकः अन्य देनेवाशा । माक्काश−नि (र्र•) विमे नक्काश इत्सार हो। वापासना । अ अपसन्ति, मीबेने । य अवसारा । सावचेत=-वि सत्तर्कं मारवाम । माबचेतीर्ग-मार्थ स्तर्पना दोक्सिए। साबज्ञ =- प्र दे॰ 'सावन' । साचल-वि (त्र) प्रचा करमंगला । **दाविक-**प्रभागमामः शाक्तर=~प॰ सीविवाटाहा हैम्बा I सायदा-वि (संग) नियः, भावतित्रमदः। इ. तीन वीतः शक्तिवामित एक (श्रेष की निरमय और स्कार है)। शाचधान−वि [रं•] सचेत, सतर्व चनरदार । सावधायता~का (d+) सनदंगा वेदियारी ! माथबि−ि [सं] मिस्को अववि सोमा निमित्त कर दी गरी दी। -काचि-ली॰ निवस समब्दे नंगर प्रशा की जानेवानी निर्मा । सावन-वि [सं०] स्वय-वद-संबंधी । यु वहमाना धोमवधकी धमापिः वष्णा तीस धीर दिमीका महीना। पुरा दिन और राग सूबीएवमे स्वास्ततस्या समया वंद्र प्रकारका वर्षः [हि] आचाउके पादका महीमा आवशः लावमंत्रं शावा वानेवाका एक तरहका क्रोपमीठ कवली। 🛡 समृद्दः प्राप्त्ये आदितव ! —सामा-पु तीम विशीका शीर मान । -वर्च-त कममन १६ दिने का वर्षे । सावनी-पु॰ मारीवें दोनेवाला पढ वात्र। स्त्री - दर बक्षते बब्के बढाँ छात्रवर्षे भेनी जानेवाणी सीगाठा सावनीं गांवा कानेवाता लोक्तीत । साबर-५० [ले॰] होत अवराया वाया कीम वृक्ता [वि] शिवपृत्त वस योगा वस श्वा लुरदेशी बार औन सर्वेश वक भी बार ।

करहा हुमा घरः चैत्रकाना । सिया*~ची॰ सीवा, जानकी ।

स्मित्र - को॰ [म] सरवारी, बहार; राज्य; सैयर व्यक्तिः

सिमाना†-वि• दे॰ 'स्याना' । स॰ क्रि॰ ४० 'सिकामा'। सियापा-पु॰ स्रियोका ण्डल देखर क्रुध दिनीतह मासम ममामा (र्यजाव शारिका एक विवाद)। यादात ।

स्वार पार्यक प्रार्थक प्रकार शास्त्र शास्त्र । स्वार - पुर गारक, श्राक ।-साठी-सौ० कमकतास। सियारा! - पुष्क तरको क्कोश्च फावश जिस्से चुती यह क्योग वरस्य करते सं है क्षिताका ।

सियालक-पुन्याल गीतक।

सियाकरा - प्र जाहेका मीशिम ।

स्त्याकायोका-दुकानी मिहीबाली बीनारमें पाना बाजेनाका एक स्रोता कीता।

सियास्त्री - वि जानेके मीसियका आहेर्से होनेनाही (इसले । स्त्री एक तरहका विदारी बंद ।

सियायम्=प्र सियायमी - स्तो धानिमानमें सायुओं भारिके क्यि निकाका हुना नवका कहा।

स्मियासल् – स्रो [स] देश्यत्काः शास्त्रमध्यः राजकाव दंबः श्रारितः दवदवाः मकः मारपीतः – वृश्-विक शास-मीतिकः शासनवदः।

सियासी-वि रास्त्रम्भ वा राजकावते श्रेन्द्रः राज-

सिबाह्र~वि [का] काणा, व्यामा अद्यम ।-कार्−िव स्त्रकार ब्रह्मचारीः भरनाचारी । –कारी−को नदकारीः पाश अस्म । - योश - इ. यह हिल बंद जिसके काम काने होते हैं, बनविकार । -चहरा-विश् काको अधिनामा। देगरीयत देवना !-- **क्षाम-नि** यहत्रवामः जिल्हा साप बस्टी पढे । ज्ञाब-वि विस्त्री सिवासीमें बमय हो । प्रतीका चौकाद । - वामा - प्रकार किया पनिवास श्रीकृषा कुछ ।-विद्यानिव वेसुरीवनः निर्वय ।-प्रदेश-य एक तरकता कर्तर । -योश-ति आहे (नदे करने प्रधानेबाकाः श्री व मार्गम मनानेबाका । शिक-होता-मातम मनाना ।] -फ्राम-वि काला क्रूप्स-बाय । -बस्त-दिर समागा ! -बस्मी-सार हर्मानः बरमसीरी । -बातिम-विश् कीरे दिवका । -शरत-बदमस्त भरावत्र मधमे पूर । "सस्ती-छी। विवाहनस्य होता । ~क्ष-दि कालाः जलीवा ~ सकोद-पु समारे-दूराई ! (सु = करणा-को नावणा श दर्मा । - का मास्कि होया-सर्गविदारोहीमा ।] म (क्यान)-करना-विमना बहुत किसना । सियादल-ती [M] भ्रमगा वर्षेत्रम शैर बहना।

सियाहर-५ (का) वह रीजमालया जिनले रीजका आयरती-सर्व निया जाया वह पदी नियमि नगाव न सायपुत्रांची वदनी नियमि जाया - नविस्त-५ सिरास (क्राटेमाना रिवस्सी जाया किस्तेवन्या। मु -चरमा-पिवादेव किस्तेवन्या। दिया जावा रिवस्सी वर्षेचेमा।

शिवादी-सी काणापना स्वामना। काकिमा काकिमा अंक्कारा रीजनार्व मन्ति दोत्र १ - वटा नगोरा-प्र स्पादी सींपामेवाका कागज, कोरता, 'स्कारिंग पेपर'। मु॰ -बीबमा-(सेंहवर) सिवाही छा बामा।

सिर-पु [सं] विपक्तीमृष्यः [हि] समुध्य तथा सम्य वामवरीका गरवमके कपरका दिस्साः सीवरी कमना किसी शीवका कपरका दिरसा। चोरी: बार्रमा किसारा। सरवारः दिमाग । -कटा-ति त्रिन्दा किर क्या हो। वसरीका सिर कारमेवारा अवदारी । -राप-विश् सिर खवानेवाका, मेहनगो; वहापुर दिनेर । ~रापी~सी• सिरवीष क्रीशिश बान समाबर मैहमत बरमा। ~िदास्त−प वनास्यक्ता । -तिही-मी॰ मदेश किराः परिवेकी किया । -र्यंत्र-५० वाकीदे मरपद्मा वक कार्यमहासार मुक्त । - चहा-वि में रक्तपा बार । -सा**क्र**-पण सरवारः मासिकः शियोंना एक मिरका गरमाः एक सरस्का महारा पति । शीहर । - प्राचन-दे॰ 'शिरमान' । -दार#-प् देश 'हरदार' । -वारी॰-वा॰ रै॰ 'स्रवारी'। **-इमासी-**स्रो क्यामके सावज्ञा एक साव ! -मामा-पुर्व रवसर विका वामेबाका पता। बेखारिका शोर्बक। -मैस-प सिरक्षे कारी- रे नेशी मठ सगममें बॉपि मीति-मिरनर -रहब बनाराः श्रविकांकी वक्त जनवाति वा शासा । -पाँव -पायश-त 🐧 'सिरोबाब' ! - येख - येख-वर पमनी। बगडीके अवरका छीटा कपना बगतीका बॉबमैका यक गढना । -पोश-प्रश्निरका मानरथ । -पाछ-प्र किमोदा वक शिरीमुक्त । -व्हेरा -बंद-पुर मारी। -वंदी-सी वानेपरका एक तहना। -वीद्यी-भी। बारम दे काममें कातेबाहा यहका श्रंथ । ∽द्रागज्ञत∽ प्रभावक्ष्मा । —सिक्•−५ किरोमाँव । —म्बा-वि शिसके शिरक बाज मेंडे बी: निसीश (सि०)। -मीर-प दे॰ विस्तात । -रप्र०-प दे॰ पीरी क्षे । ∽द्वामा∽प धारका वद्य दिस्सा निपर निर रवदा है। अ॰-अक्षर करना-विर कारमा। -शॉर्सी वर-श्रांबासि-स्रोदार है शोदने। -श्रांबादर विश्वामा वा वैश्वामा-नद्दन शब्द करना । - अस्तिपुर बद्यमा-वडी आवस्पत दरमा। -ऑर्रोपर द्वोना-शारी से स्वीकार दोशा । - भाना-शिरपर बार नरमा। प्रेताविक होत्याः क्रिमीन्द्रे बीधः बढवाः सगदनाः। 🗝 मा यक्षमा-इक्ष्याय लगनाः सुगीरत कानाः - सक्स्पानाः-निर केंबा बरनार बंगा-क्रमार करना। बगावत करना। ~उदाबर कलम्(~दनस्ताता, गरूर दरना । ~दवाना -पुर्नेत, साँग अवस्थात पामा। विशेष सुद्धावका करना। क्यार कारान करमा। नक्षित म होना वरावर ताक्ता। अक्ष दिलामा वर्षत करना प्रतिश्वा, आसमान्यामधे रहना। - बसमेकी प्रश्मेश मही-बरा मी मरकाप मही । -अवान मही देखा-अरा भी प्रश्वत नहीं हैंगा-हर एस बालमें जीत रहता वं १ - उन जाना - उन्ता-सिर प्रश्नामा । - जनामाः-उतारमा-निर सप्तमा । -जैंचा करमा-भारमणेग्वामपूर्वत रहना । (विमीश) -अँचा करना-महिद्या देशा । - ऑपामा-निर शेषा बर्जा : -कटना-तिरमें यन क्रीना जामने जारा जामा । --बाह्मापुर इस्तमा-चाँवपुर गिए दशमा विभाग

184	भापार्पयीमाफ्रिस
কী॰ স্বয়ৰ্কা বুদ্ধান ।	वैदादि ।
मापापथी-वि॰ गाँगहीवाज, अपने मनदी करनेवाका,	भासा—सी॰ [सं॰] वाकॉब्डो जटा !
स्वार	बासागम-पु सि] दे 'भासमृति ।
भाषास्त्रि-पु [तं] में।	आसाधीन-वि॰ [र्स॰] विश्वस्त व्यक्तियों पर निमर रहने
मापियर−वि [रं∘] कुछ कुछ छ। यु सोना।	थाका ।
धार्की-वि सिंशी मोटाः बद्धवास् । स्त्री पूर्वावादा सक्षत्र ।	बाह्मि-सी॰ [मं•] प्राप्तिः पर्दुंचनाः संबंधः संगायः स्प-
सापीय-वि [सं] पीड़ा दैनेवालाः दवानेवाला। पु	थुकताः पूर्णताः मनिष्यद् का रु !
सिरपर पहनतेकी चीज किरीटा माका सुक्रमधि। एक	माप्रोकि-सौ [सं•] सिकांत नारय ।
विभग्न बन्त ।	श्राप्य-नि [मं] शक-संबंधीः प्राप्य । पु सक देवसर्गः
आपीडन-पु• [सं०] दहाना' मसकताः निवोक्नाः पौका	क्कविकार, फेन ।
देना।	आप्यायम-पु॰ [सं॰] बाड, वर्मन तृप्तिः दूस सरना
सापीत-वि [सं] इसका पौसा, अर्थी मायस । पुण	मसनताः मौदा करना वदाशाः वृद्धिकारक या वक्कारक
सोनामाची ।	भौषदा
शापीम−वि [सं] क्रम्बान्। मोद्याः युक्तः वन या	आप्यायित~वि॰ [मं•] सुप्तः प्रसन्तः वर्डितः वस्त्रात्
स्रोमी ।	मोटा-शाबा।
शाप्तक−सर्व•दे आप ।	भाप्रच्छन~पु [सं•] स्रादन करना वा विश देनाः निकन
सापुन भापुनो÷—सर्व० है अपना ३ न्वर्थ ।	के समयका कुश्चक-प्रथ ।
भा <u>पस</u> = -पु दे॰ 'भागस'।	बाप्रच्यच−वि [सं] छिपा इमा, ग्रुप्त ।
आपूरिक-दि [सं] अच्छा पुत्रा नमानेवाकाः पुत्रा	माप्रपद~दु [सं] परॉटक पहुँचनेवाला कसा वि
क्यादा पर्भद्र सरनवासा वा वेचनेवासा । पु पुन्ना बनाने	'नाप्रकरीन'} ।
बा नेचनेवाला व्यक्तिः इतवार्द ।	आह्न-पु॰ [र्म] स्नामः पानीसे तर कर देनाः सिंचन ।
भापूप्य−५ [म] बाटा; मैदा; सच वेसन ।	्वती(तिन्)-पु॰ नक्षक्यं समाप्त कर गृहस्थाममर्ने
भापूर-पु [सं•] बस्थाराः वतः गरना ।	मनेश करनेवालाः सातकः।
आपूरव-पु [मं] सरना, तवातव बीमा।	काप्सवम-पु॰ [सुं॰] दे॰ भाग्नद् ।
आपूरमा∗−न क्रिसर वाना।	बाष्क्राव—पु• (सं•) सानः शदः।
मापूरित, भापूर्ण-विश् [संश] पूरी ठरह मरा हुमा ।	आप्कावन-पु॰ [र्प॰] सानः सिंवन पानासे तर करनाः
सापूर्ति-सी॰ [सं] मरमाः यरा होगाः स्ट्रहि ।	ह्रवामा, बोरना ।
आपूप−पु [सं] सेन्। राँगा।	भाष्क्राचित्र-वि [र्स] साता रिका हुनारा हुमा ।
भाष्ट्रच्छा~ली [मं] शतकीतः निम्नाता वीत्सुक्यः विदा	अप्युत्त-वि [र्स॰] बाद्धावित । यु स्तातक । आप्य(सृ)-यु (र्स॰) बाद्धा गरहन ।
ष्ट्रना । बारेशिक−दि [म॰] बस्था राजनेवासा; विसदा महित्र	आक्रत-की॰[अ॰] विषद् असीवता द्वारा क्लेस संबद्ध
इसरी वस्तुपर भाषित हो। तुकनारमकः निस्तती।	विका: क्यम । सुरु-इटामा-क्यम मदामा। नहा
भूतरा ने जुनर भारता वरा ग्रहमारामक निरंति। स्युक्तच – पु दो वस्तुक्रीका तुलनारमक मनता।	दुकदा,-का परकास-वृत्त तंत्र, परुता, वृतं सारमी
मापो, आपो = - प्र भाषाः सर्वनावः स्थ दोख ।	वृक्षाने । —का मारा—विषद्मस्त, दुवैव-पादिव ।—कामा
भाषोक्षिम-प्र[मंग] कप्रते चीसरा, ग्रस्त, नवां और	
गरहर्वे स्थान ।	वात बद्दा ।-सचामा-उपद्रव सवाना, श्रीरन्त्रव करनाः
नापाओसम-पु [4/+] पार्टमें? वा व्यवस्थापिका समाओं	(किसी काममें) नतुत उतावकी करमा । -शोस संमा -
के सहस्तीका वह क्ष्म या ग्रह की विरोधी बसका काम	
करता है।	को ग्योता देना ।
सास−वि [मं] पाप्त पाना गिला हुनाः पर्देश हुनाः	 मफ्रताव─पु पित] स्पाः पूपः ~कृदा~वि० भूपका
निसुक्त मामाणिक विश्वसमीयः बनार्वे शान रक्षनेवानाः	वहा हुआ। -इ:-वि विसक्ता मुद्द गर्दकी और ही।
कुपन- पूर्णः नवार्थः पनिष्कः समियुक्तः सुक्ति-समद । यु	आफ्रसाबा-पु फा] दाय-पुँद पुकानेका गरुमा दौरी
विभाग व्यक्तिः भिषा संबंधीः अहत्। शब्दप्रमाप (वो)।	दार वचना ।
च्यास~दि निसदो दामना पूरी हो गयी हो संतुष्ट	भाक्रताची−वि सूर्यन्त्रभीः भूपमें बनावा वा सिनावा
विसने संसादिक कामनाए और आसक्तियाँ स्वाय दी हो।	हुमा । स्त्री प्रकृतरहरी भावस्त्रामी; अरोटे हामसा
उ परमारमा ।-कार्शा(रिन्)-वि विश्वत देवने या ग्राप्त	पंता विसपत सर्वेका विश्व कहा दोना दे। सीप ।
स्पर्ने कार्य वरनेवाला । पु किवरण अनुबर । —ग्रामी	भाक्ररी-भ• (फा] साराह्य, भम्य !
रते यमंत्रते।-गर्य-दि धर्मटी।-वचन;-वाक्य- पु सुदि स्पृति शतिहास पुरान शान्तिः प्रमाशिक्षित्व	भाक्ररीनिश−सी [फा] सबि जगर्दी परर्नात ।
वचन । वर्ग-पु: पित्रभण्डी । खुति-स्वी स्वृति	माफ़ियत – सी [म] हुएक सैरियक श्वाप ।
ी राज्याच्या स्थान का स्मृतिस्था स्मृति	ी आगर-ज ते कि 1 वंतपत कातान्तर देहें।
,	

वाकिसर-मामीर साफ्रिसर-प• भि ो राजकर्मवारीः अधिकारीः अक्रमर 1 माफ-भी॰ दे॰ 'बापक'। भाषाक-प॰ [मे॰] अफीम । मार्यघ, भाषधस~पु॰ [मुं॰] बंधन इस आदिके ज्ञण्हा वं वतः प्रेमः कर्यवाः । साथ-पुर प्रार**े** पानी पानाः स्रोतः सर्वे प्रारागः मनावः कुलोंका प्राकृतिक रख । ग्यो॰ चमऊ, कांतिः श्रीमाः वाबगी बार। प्रविद्वाः बस्क्ये ।-क्ष्मर-प्र ध्रदाद बनाने वैष्यनेवाला कताल । -कारी-स्त्री सराव वर्गाने देखने-का स्वान, शराबद्धानाः मध वा मान्य बस्तर्भीका व्यव साय । - • कान्य-प • भावकारीसे संबंध रखनेवाका कामून 1 - महकसा-पु मधीकी भौजीके उत्पादन, विकार भारिका नियमन करनेवाला विभाग, प्रसाधक दिया^{/सिर्ध} । ~लुद्दां--वि यानी वासील राज्या हुआ। । - न्वीरा−इ मर्बे तरहका गिलाम को मेहपर कुछ सहरा होता है। −गीमा−पुरु होशाः स्वश्य । ⊸गीर-पु गता। वाकार: सकादोंकी केंद्री जिसमें वाजीपर पामी छित्र कृत है। -गुरु-पुरु गुनासद्य धर्व।-जोदा-पुरु सात मनदा ! - इस्त-प॰ शोचनाः पानी छनाः भारतस्तका पानी । -वार-दिश समझ्दारः भारदार । प्र॰ पानी क्लिबेबाला मौद्धरा होत्रमें शंबा और पामीक प्रवारा हेनेवाला । -हीदा-दि जिस्ती अस्ति सान् मर सादे क्षे रोता हवा । —क्षेत्र-वि पानीमें श्वकट क्लोके भीतर भारत शक्तेवानी (नाव) 'सबमेरीन'। -पादी-न्या ग्रेमको सिमाई।-वारी-त्या वेकपार्थेको छापना। -स-ली॰ मानः प्रतिष्ठाः राजवः : "वार-व सरना निर्देश । - शिकास-५० पानीको नहराई भापनेपाछा बहाबी क्रमेशरो ! --(बे) अञ्चल-पु॰ फोनेमें नामी ना बाना, बंदर्दि । -रबॉ-प बाग बारीय मरुमन । -स्राहे-पुरु ग्रहार । -इयात-पुरु अनुन । -देवाँ-पु॰ समृतः -(को) ताब - सी वसारमधा ग्रीमा रे -दाना-पु भग्न-वट । -हवा-सी यस-वायु । श• -शमा उद्या-स्वामविशेषमें जीविकाका प्रपाद (मीप्रराभारि) म रह जाना। भावश्र~वि॰ [तं] वैदा हुआ; वादिषा; जदबाहुजा; निर्मिता प्राप्त । ५० १८ वंचना प्रेमा अन्त्र्यारा ज्लाहा । भाषन्स~पु तेषु भागद व्यवनाया प्रहा

भावनसी-रि भारतमदा या भारतमुक्ते रंग थैमा वहरा कामा १ भावसा~प [पा] छाता प्रयोका । भाषस्य-पु॰ [मं] विश्वताः, क्रमशेरी । आचाइ-वि प्रा] बना हुना वर्तीपाणाः र्मपत्र सुरा-हात, क्षत्रताकृतता । -बार-पु जैयन, वंजर समीत्रवे शाबाद हीनेनाने कुरुक्त। मुरु -करणा-प्रवाद देश वर्मामधी बसामा था हरि बाग्य बमाना है भाषादाम--विश्वगा दुमा- नरा पूरा। ध्येतः सम्दर्भः भाषावानी-सी भावार मण्ड-सम्बना संस्कृति मन्तु दया कृष्या मानानीः नपुतायता शरकृतिः आमीप्तप्रमीरः । भावार्रा-सी १९९१। वमध्या गुराह नीः कृष्टिम्म र

भाषाय~तु[मं∗] दोहा, वदा एकि, देशापा ।

व्यावाचा-ती [मं•] पीता विता देवेनी। माबाख-म [मंग] बाहरोंने हेन्स । काबिल-वि॰ मि॰ो पॅरिका गॅरा: मंग क्रवेशकाः बाह बरनेवाला। -कन्-पु॰ मानाईह। **थायी** नवि॰ जस्तेषा जसवरा इतका मोना । बारव-वि॰ [सं] बारकमें सरस्य का संबंध रखनेताना । आविद्रक-वि [र्स] प्रतिवर्ष होनेक्त्र्या वाविक, साराना। वाभव-ली • है • 'बामा । पु • पानी । भामय-त [मं] काला भगरा कट मामस भोता । मामरूष-पु॰ (री॰) शामुषम्, गर्ना। पीषप्र I भागरनः - ५० वागस्य । अत्मरिष्ठ-वि (सं•) यरा ह्या संवारा गुना मृदिन । मामा-ली॰ [र्ग॰] पमद्र, पुतिः शनदः। हाशाः प्राधिः मायव (सर्वात-सोने जैमी यहरूदहरामा): हरफा शामालक−पु॰ [सं] शहाबय, सोबीसि । भामात-वि [र्ग] बांतिनुष्ठा पमाना दुना ११व । भाषाति-शा [रं॰] चमद मृतिः प्रतिरेश। भाभार-९ [र्न•] दोश धरको दम-बालका शेगा मर सामः एक वर्णपृत्त । कामारी(रिच)-4 [र्न+] प्रशासमंद, सभी। आमाप~१ मि॰] गरीपमा भूमिया । सामापळ-go [लंक] बीलमा बामबीतः मंदापम । आधास-५० नि•ी यति यमदः सनदः सावा शरामे। नाव्यवा प्रकारि (निशासाम)। मिन्या (रियाउ) प्रतीरि (रेलाभार)ः गरेत अभियाय । भागासन-५ [मं•] साक्षेत्रित करनाः १९४ करनाः। भागासर भागास्वर-विश् रि] यम्होना परिमात्। त एक देवनमें। शामिचारिक-वि [मं] श्रामचार-भंदंपीः श्रामचारामध् पुर व्यविपारके मंत्रादि । आमिजन-वि [गं] क्ष्य वा हल्ये संबंद राउनका कुन्तमन (शाथ) । पु॰ कुरोनना । आभिज्ञान्य-पुर्∘ (मंर) कृदीयना कॅथे अनमें कार्यक्र र्शांत्रके चरित्र । आभिजित-(० (do) धर्ति'त्रम् महत्रमे उत्पन्न । श्राधिया-मी॰ [र्न॰] सरा धप्रा नाम सम्य । श्राभिचातक~g॰ [मं] १ शामिशा'। आभियानिक-नि [म] श्रीनपान-श्रीप्रमे निर्मित प॰ बीसधार । व्यक्तिप्राविक-वि वि वे चे चे च आमिमुल्य-पुर्व [मं] ((अग्रेडी भोर) व्या होपा, अमने सामने द्वाना । वाधिरामिक-वि वि देतर विदेश आसिकपुर आसिकपुर-पुरु [गीप] शीर्ष १ श्रामिणश्रमिक-डि [सं] राजीनन्द गर्नेनी । क्षाधिद्यारिक-१६ (र्लंग्) एल वा यनपुरेब रिया दुव्या में हे क्ष्मी विदा क्ष्मीकाता प्र मेंद्र प्रवाह बहरा। आर्तार-पुरु [तं] अरीदा दक प्रमार शा गरा है निराणा दह दल । −वट-पु+ ६६ दश्य । ~पहिर न्दहिता न

करवाः स्थतं करना। -कामा-श्रिम्यवार वनामाः कदामा-भिनामाः बनरंती देगाः बोडी गूँभगः ताध मारिकी पात्री भीतना । - इसम करमा-सिर काटना । -कहाँ फोड़ें -कहाँ तकाश करें ? -काइमा-मग्रहर होना । -का न पाँचका-वसिर-पैरका, कई बद्ध । -का प्रसीना पाँवको सामा या पाँवपर वहमा-बहुत स्वादा महतत करता। —का बोझ उत्तरमा~ किसी कामसे अरसत पाना :-का बोझ उत्तारमा दाकना -- था श्रासमा-कापरवाशीसे कोई काम करना । -- का यवास्त द्वीना∽दूमर दीना वीका थंजाल दीमा। --की बाक्रस टक्सा-मुसीवत दूर दोना । -की क्रसम बार्सी-सपक्का यद प्रदार (देना खावा)। −की ट्रसी ज्ञानपर सामी-एक तरफ संकट रका बूसरी दरफ़ले सला । −की सुध न पाँचकी सुध−इछ दोश मही जापरवाह । -के झरेर-पूरी क्रीशिक्षते । -के बस्र-सिरके सदारं करवके साव (बलना बामा)। मके साथ है-बानके साथ है। −कोरे अस्तरेसे मुँदता-हरार करनाः जनान करनाः ६४ ५७ ६८ समा । -- खपामा-किसी कायमें नवत मानापनी करना । -सामा-व्यक्ति गर्तास रहेशन करनाः श्रीर मवाना । -साम्बी क्ष्ममा-वंदार माधापत्री करनाः वद्यास करनाः - वर्षिना-एक परावनाः सरकती करमाः सिर एक दरफ बर केमा! - खबकामा - सुआमा-शामद बाना, भार खानेको को भाइना (व्यंग्य)। -सबसाने या खडानेकी फ्रायत या सहस्रत नहीं सरा मी सन्धाय मही । -खोकना-सिर टपाइमा। गार प्रेमानाः किसी क्यी श्रीवसे मारकर सिर फोशमा । ~रांका करमा-श्तना भारना कि शिरपर नाक न रह भावा बगान कर देना । −गाची पर पडिना करना∽ बहुत कड़िन परिसम करना। -गाका सुँह बाला-सिर सफेद, पर बहरेपर बनामीको शुक्कः बहापेमें वदातीको स्पर्धा करना । -शिस्ना-सिर करनाः मिर सक्ता । -शिरामा-सिर दशसे अकृत करना । -गॅबमा-चेद्री करना नाक कलगा(औरतीके) । -प्रदेशीमें देशा-धित्र दोनाः कव्यित दोना ।-बुसना - बकरामा-सिट्में दर्व दीनाः यहार भागाः वेद्योशी दीगाः गमक दा बामा । - व्यवस्य - निवद दीव्यतः सद धेरमामी बरके । =+ बोसमा-जपमे माप सेद शक्साः भव-भेत वादिके भानेशमें रीमीका वक्काक करना। - मरमा-बिसी इ कपर प्राण देशा विसीची अपनी सुरुका कारण वनाना । - • स्वृता-क्वाई केता पाइमपाइ छैन्द्रामी करना १ - चड्छा-बाद, मुसाइब वनना । - चड़ाकर पटकना-- भागर देकर अवसानित करना । - चड़ामा-बादरका भाग दिखानाः समग्र ग्रस्ताच बनाताः देवी-देवतायी वर्ति देता। --चका जाना-मीत दीमा मरना। -चिक्रद्रमा-सिस्के कारो-मा भिष्ठ बागा । -विकटाना-गिरक वार्वोकी किय टमेक्ट्री रिवर्तिमें करना । -चीरमा-सिर बढगी करना। सबगाः विद करमाः जन्ददरशौ करमा । --जामा-सिर करनाः किरोजे किम्स एक्ना । -जोक्कर केंद्रमा-मंत्र- परामर्जके किए पास-पास बैठना ! -कोबना-सिर गिकासाः प्रकृत क्षेत्राः सेक क्षेत्राः राय करनाः पटयेत्र करमा । -झाव मेंड पड्डाव-मंगकी, वदक्षिमाना । - सकता-सिर नीचा दाना (स्था, पराधन भारिसे) । - हाकामा-नगरकार करनाः कथाने गर्दम नीची करनाः जुपपाप स्वीकार कर केशा। - इकराकर गर सामा-इच्छा परी व शीलेकी रिवतिमें की बायमन जीत होनाः न्वर्थ हैरान होना । -एक्टामा-सिर्मे रहर रुगानाः वहुत अविक सम बरमा। सिर फोइसा ! -शिका होना-कामका किसीपर समहसर क्षेत्रा । - हडका-सिर गाउँक होनाः सिर पट बाना । -डारूमा-दिशे दे दपर थोपना मध्ये महना। -श्राविमा-सिरपर कपड़ा दाव केना । -वनसे उतारना ~सराधना~सर धारना । -तोइकर केमा-वरुपुर्वद कोई चीव व केमा । -तोद कोविश करना-वेदद कोशिश करना! -तोदमा-सिर कोक्सा। कहत सारमा-पीटनाः कश्चम करना । ~थकाचा-दिसीकी क्यांसे क्यांसा समझासाः किसी काममें बहुत स्वादा हिमान बनामा। अधामकर वैठ चामा वा बैठमा~शोब, बोम, नापाठ माविके रेगमे सिर परुष्टर वैठ जाना। -धाम खेना-कोई हरी खबर सनकर था बोर्ड बोट पर्हेंचामेशको नात होनेपर सिर क्रक हेशा। -श्रूप बाहा-जिम्मे पहला स्क्लाम बगना । -योपमा-किमोके विम्मे करनाः श्रम्बाम क्रमाना । - दबाबा - दावना - सिरस्थे माकिश करनाः परावित करना । -विकामा-पेर्ट निकल्पामा । ~वीबारींसे टकराना-वडुठ क्वादा ववड़ा बाना ३ -द्रक्तना-सिरमें दर्व दोना। -द्रक्ताना-सिरमें दर्द वैदा करना। सिर फिरामाः वरेशाम करना । - हे दे मारमाः-दे मारमा-सिर पाउना (सोसारिमें) । -देना -प्राच शिक्षकर करना, बान देना । -धरना-भारर शुम्मानपूर्वेक स्वीकार करनाः जिम्म कराताः इकवाम लगाना ! - क्रमना-शब्द परचाराप भारिके वंगसे सिर पीरमा। मातम कामा धोष करना। पर्स्वामा । -धीना-सिरके वालांको सकी मिट्टी बगरह बानकर पामीसे साफ करना (कि) ! - मंगा करना ~ सिर बीक्साः बंद्रज्जतः करना । नम उद्यमे हेमा न्द्रममस्क सब्बंद न देना काममें श्रमाये रखना शरदशी म करने वैसाः केल्पेको प्रसन्त न देना । -न पाँच -म पेर-वेत्रका, वेतरतीय कमदीम ! - नदाना -- मसरकार करमाः दीम वनना । --मार्डि उटा सकता-कप्रशस्त भारते काँग नहीं सिका सद्धाः - मिकालमा-वामी वा किसी चीवमेंसे सिर पाइर करना, प्रस्ट होना। तरही करना । - मिहरामा-क्यांसे सिर भीषा करना। सनह रहमा । - भीचा करमा- कथित करमा। बदास दीमा । ─नीचा होना-पराभित होनाः शक्तित होनाः मर्वे धीरत होना । --पक्तकर बेरमा-सोकारगरे भीन होकर बंदमाः सेंद और वधात्तापदे जिट प्रदट दरमा । -पक्षकर रह बाला-बार्वत हुम्य भीर माधर्वधी रिवर्तिमें द्वीना । -पकडकर रोना-सिरपर दाव मरके पैना । -पचाना-शेच-दिचार करनेमें हैराम होता।

1860 सीहरोस-प है • 'सिवाहरीस' ! सीइय-पुष्टि] भूदरु स्तुकी। म् - म दे 'सी'। संसदा-प्रयक्तरहरू सञ्ज स्रोगबंश-प अंतिम मीर्थ सम्राट ब्रह्मको सेनापति पुष्प मित्र दारा संस्थापित राजवंश ! सँधनी-की सँगनको चीना शंबाहक वरोका वारीक पूर्व नास । सुँघामा – स कि॰ किसीकी नाकक पास कोई कीव इस धरेश्यसे छनामा कि वह ससका गंध ग्रहण करे, आमाण बताया । र्सुँडि-सी दे श्रुडि'। संब-पु दे 'शुंड ।-सुर्सुंड०-पु दश्या। स्था-को स्व। † पु सर्दू गथेकी पीठपर रखनेका गदा । सुदास-पुदावी। सुडाछी − सी यह तरहकी मधकी। मुंद-पु [सं] रामप्रकार यह वानरा यह देख, निर्मुपका पुत्र और वपसंस्का मार्थः विष्णु । संदर-वि [सं] जो भौडोंको भच्छा समे सुक्य ज्व सुरत शोमन; शका संच्छा । पुरु कामदेव; एक वेदा पक्ष मागः क्षेत्रस्था एक पर्नतः। —कौक−पुः रामानगका पद कांडा संदर बंडक । - वम-पु॰ नेगाक्के विकासमें समुद्रद्वा पर फैका बनसंब । सुंदरता-को , सुंदरत्य-५ [७] सीरवं, क्रस्ति। सुंदरताई • −शो है संदरता'। संदरवती-सी (सं] एक नदी : सुंदरम्मस्य-वि [सं] अपनेत्ये सुंदर मामनेवाका । सुदराई - को श्वरता- शहन श्वरतांपर रार्व कीन नारती -दास । **मृंदरापा-द** संदरता । सुद्री-की विवाद-श्वराजमें को हुए लोहेक एस्ते की विभिन्न सप्तजीने अंतर्गत विशेष स्वरीके स्थान होते हैं। वि की सिंशे करपार्ती ! की सेंदर की। विवर संदरी देवी। ब्रह्मविश्वेषा बयालाकी यक कम्याः वैद्यानरकी पस कम्बाः मास्यवान्की वसीः पक्ष बोधिनीः सर्वेशा रहेतः वक वर्ण इक्षा इक्षा । - संविर-पु वंत पुर । श्चेतरेबर-५ (सं) फिल्को एक नृति । सेवीपर्सव-४ (स॰) विसंद दैत्वक वी वेट जी विकोशमा भप्तराको पत्नी ननामेके किए भापतमें ही तक गरे। सुंदरीदन−इ (स•) सम्छा मात । सुँपाई-को सावादन। मुँधायर-स्री दे हेंगारे। सुधिया-की एक तरहकी स्वार । मुपलुट-५ [मं] क्र्युरका सुवा-पु परवर तोइनेका एक भारी औशारः तीपका यया भूँदी । सुची - लो. सोहेमें द्वेद करनेकी होता। संपुक्त-तु [का] यह शुरोषित वास की कारसी-वर्ष

वाकश्रवः। --(के)क्सी-प्रवासम्बद्धारकं मेर्। ~िहिती~पु० वाक्शव । संबुका-प्र [फा॰] गेई वा जीकी शकः। सूँग-पु (तं] एक वैद्या कस देशके निवासी। • वे 'सूम'। भुमा-पुदे 'श्रेग'। स-क्ष [सं•] सन्देकि साथ जुककर वह सुंदर (सुदर्शन), एत्तम (सुगंव), अविक, अविद्यव (सुबोग्व) सहस्र सना बास (सबर, सक्रम), मक्रीमाँति परे शीरपर (समीर्ण, मुसेबित, मुशासित) आदि अवींका योतन करता है। प्र पुनाः जनुमतिः कृष्यः सस्मितः कष्टः संदरताः जानेदः वि अच्छाः प्रकाः सम्मानार्थं । सर्व + दे 'सा' । ज त्तीया पंचमी और नहीं विमक्ति । सक्त-प्रजा भुष्यसम्-पु॰ श्लुष्ट वीदा । सुज्ञम−पु देश पुत्र । सुमानवर्द+−पु पक्ष पूक् सोनवर्द। भुमना॰-पु॰ शुरु रीता। ≉ व कि चलव दीना बममनाः क्यूब होना । सुमर-पु॰ दे 'स्मर'।-वृंता-वि विस्के दाँउ स्मर केसे हो । प्र• वह हाथी जिसके बाँच जमीनको ओर सके हर हो। सुधवसर-५ अभ्या वरसर, मौका। सुना-प्रवीक्षा शुक्रां प्रवासिक स्वा। सुमारु -- वि वही वास्त्रवाका श्रीवांतु । सभाव*-५ स्वाद। सुभान+-तु दै 'दशम । सुआमी॰-इ दे 'स्वामी । श्वकारक-पु॰ दे व्यकार' - काने परसम मिपुन सुनारा'। −रामा । सुभारव॰-वि सपुर व्यनि करनेवाका सुरीका। श्राभासन-१ संदर्ध विषय भा**छन** । सुवासिम सुकासिमी - जी सुदागिन की। पहीछिन । शुक्राहित-पु तकवारका वक्त दाव । सर्द∽सी वे 'स्रं। सुबंदवान्(धत्)-पु (सं] एद पर्नन । सुर्कंडका-चौ॰ (र्रः) ध्रतकुमारी। विश्वबन्त । सुकद-वि [सं] अच्छे व्लेबाचा सुरीठा। पु सुप्रीव। सुकंडू-९ [री॰] सुबकी बंडुरीन। सक्तंत∽अ [धं]क्ष्मेस्त प्यात्र । सुकंदक-पु॰ [ले॰] व्यात्र- वाराहोदंदा वरणीवंदा यद सुकंदा—की [सं] बंध्यानकोरको; बद्दानादंद । सुकंदी(दिन)-प्र सि॰] सरन क्रोक । शुक्र-पु दे शुक्र।-त्व-पु दे 'शुक्रेव'।-नासा--वि विसकी बाक बोजकी कार बैसी मुक्तीकी हो। सुक्छ~तु [सं] एक मंत्रकार कारि। सुकवाना १ - व कि दे चितुवाना । सुकडु-प्र [सं] सिरसका पेर । वि॰ बहुत कहु । करिनामें हुंदर भुँचराते केछका कपमान भागी बयी है, | शुक्रद्वा-व कि सिमटना फैठाक्का घटना। ठिट्टाला।

-पटकमा-बदुत परिश्रम करनाः सिर कीस्माः विरुमिसनाः सिर भुनमाः, वहतानाः नाराव कीमाः यश्वाता । -पश्चमा-विग्मे पश्चाः हिस्सैमें आयाः मनवृरीका सीटा बीना ! -पबेका सीवा-विमी परेका मामना मजबूरीका छीता। -पर- बहुत मिक्ट पास । -पर अवस्य या मातका दोस्सा धा इसिमा-मृत्युके समय दिखाई देना । −पर खड साम करमा-भइमावर्गद वमाना । -पर श्रहमान **पर जाना था रहाना-किनीको कृतप बनामा । -पर** सङ्ग्यान द्वीना-दिसीका वरकार काना। -- धर अस्ति म द्वीमा-अक म द्वीमा । -पर शा श्रद्धमा-पीछे पर भाना, छातीपर का मीन्द्र होना । -यह का सामा-बहुत समीय भा जाना थोड़े ही हिम और रह जामा। -परं मामा-बहुत पाध मा माना । -पर श्रा पडमा-जिन्में महना। अपने कपर वरित दौना । -पर का पहे-चना-सक्रिय भागा । -पर भाकत भागा या पदमा -विपत्ति भाना १ -पर भारे चस्रमा-अलंड संस्टब्रे रिवर्ति होला । –धर भाग्यमाथ उहामा–वदत होर गुरू मकाना । नपर भागसान द्वरमानवद्य क्यो विवर्ति मानाः देवो और होना । - पर उठासाः - पर उठा छेमा -नइत कथम और गुरू बरमा (भरबी छिरवर वडा सेवा)। -पर उठा छ जामा-धिरक्र रफ्टर हे बागा। मरहर साथ हे जाना। -दर कक्रन कॉॅंपमा-मरमेद्रे हिए वैदार रक्ष्मा । ∸पर क्रमामत हदमा−मुखेक दिएति भागा ! - पर क्यामत वरपा करमा-मधीरत कानाः द्योर, इंगामा करना । ∽पर काकी क्षा हिंदी रत्वना-शर मिदा होना (शि*)। -पर इशम उठामा-इएनसे क्षमम काना । -पर शुराम रचना-बुरानके क्षम देना। -पर कोई स होमा-दीई भरवगर या छरबड़ न शोना । ~पर कोहीं इसमा~इसरेडी जवानेने शिए कीई काम करमा। दक परमी है रहते हुमरी शाली करमा । -पर राक्त होना-सामने रहनाः मश्चित होनाः वेत्रदशीते यश दोमा । -- पर शाक दबामा वा दावना-धी६ करता । - पर १५ व घड़ना - पर १३ न सपार होता-किमी इस्वारेक्ट इस्वाका बानक बाला, शरना बरमेका कश्चन इक्टरोना ।-पर ध्यन क्षेत्रा -पर ग्यन होता-कश्वक विग्मेशर श्रामा ।-पर श्रममा-प्रेतका मिरशर आवश शार्त करबा, तिबर होमा शिरपर भागा। बाग वाधिममें हाक्सा । -पर गठरी रूपमा-सिरंगर बीज रखनाः विमोदारी हालना ।-पर चविष्ठमाँ चलमा-सिरहाने वर्षस्त्रे आशाम, शोरपुत्र दोना ।-पर खडुमा-श्रेष सतमा १ -पर चहामा-स्थात करमाः मनशः करमा बहाबा देना हिहला करमा।-पर चड़ा रहना-कैंग्रे नमा रहता ।-पर विलामा-पता आबर शीर करना ! -पर एत उठा सेना -रदुत इताशुक्ता इरमा विद्यामा !-पर छप्पर श्लामा-न्या जार सिर्पर ररामा बीम शक्षका विग्मे देनाः दवाद शक्षकाः इक्रमाम लगामा ।-पर अनुव चतुना-रामक्षण सर्वार होता। प्रम, बिर होता ।- यह खहानमरका बेहा बस लेला-बंश प्रगद्ध मोझ हेला। ब्रुपने बाहर काम ले

वैदना ।~पर जिन सेसना~अनुमाना, प्रेवदे अलक्ष्म भगीका व्यत्यांमाविक ग्रीरपाक्षम मीत प्रकार करना। ~पर जिन वहना~मृत्रभेठका तिरपर आसा।-पर जिन सवार होना-भूत प्रेक्टा सिरफ्ट माना दिर दठ होना ।- यर मैं म हैंगता-चेन म होना, हाछ ब होना ।-पर टीका होना-दिशी दामधे शहनता किसीपर निर्मर दोना। किसी दरहकी मामवरीका ताब द्यांनाः प्रतिष्ठाः, सम्माव पाना ।-पर हृदना-शिरशः मारकर होना जाना।।~पर शासना-मिर शास्त्रा मत्ये महमा ।-पर ढाग्र सज्जामा-शोर गुक्ष ४एमा विकास ! -पर यासी फिरमा-मध्या और-पार होना !-पर धरमा -मार्च महमा क्लादावी उदराका Bरदर दहनाना !-वर नक्झारा ब्रह्ममा~ईमामा होए ग्रुक बीना !-पर घ रहुमा-किमी ४०५६, मरिमावह, मददयारका मर भाना !-पर पदमा-माथ होना किमी हीला। -पर परधर होता-न्त्री नक्ष्मोद्रम बिहती विकास अस्परिक क्षत्र शहमाः वहत महत्तर करना । - पर पद्माद शिरमा - मुसीश्य का परना। -पर पहाड गिराना-हुक्षेत्रत हाल्या।-पर पाँडका खुना ट्रहना-जुनोंग किमोका शनगा पीय बाना कि बता हर बाव !-पर पाँच श्लबर तक जाना-नदत बन्द भाग बाला !-पर पाँच स्थाना-व<u>र्</u>ड बन्द माग थानाः शर्रावताकः स्थशाः करनः । ~पर प्रसी उद्यमा-बहत बापात करमा: बहत परिश्रमद्य काम €रमा ।—यर पैच पदमा – मसीवन आला । – पर चमना-मसीरवर्षे कैसना । -पर बना आमा-मंदर कावा ।-पर बस्य कामा-सिरंगर नियींच कामा ।-यर बाल होना-बोक्नेको इस्ता धीनाः समाध दोना । - पर बिहाना या वैद्याना-सन्मानपूर्वेद पान वैद्यानाः बद्रसः इद्यान दरमा । ~यर क्षेत्र पहला-महलावर्गर होताः चितित होताः बिग्मेशरी पहला !-यर योग सला-विम्मेशरी बैना मार हैना !-पर बोसमार-मंत्रवली सांद्रारे रीमीका वृष्ट्रि भोरते दीवता, शत बरवा !- पर भार ममा-क्फरदादिस्य केंगा । ~पर भून राचार द्वोना~ परश्वास होना। धापन होना। किही बाहकी श्रम श्रीना हिरवर मृत-प्रश्वदा कामा । −पर मिही **शा**ठमा~धीक दरना ।-पर सीतचा शहना-भीग भागा सवार बीमा ! -- यर श्रममा -- मादरार्थ बीदे पीम निर वर प्रशास आहर हैमा प्रतिष्ठित करनार परिवर्ति करना ।-वर रख होबा-सिरम पदाना ।-पर महना-याम रहमाः प्रतिद्वित होता धन्यर स्वामान्निरहर थील या जना मारमा !-पर लाइफर के आमा-मरन समय निरंपर पापका भार के जाना।-पर गापना-बिगोड क्रिमो शन्तमा ।-यर सिथे विद्यान/वास रमाहर मुखबा। बहुत शीक पुर परिमाम करना । "पर से आकर न्यंदा कर देना-स्थ्यः शामने शांबर कर देना सदा कर देना !- यर के बाना-धी भार दाना। की पीत अपनी देल रेसमें के बागा !-पा केना-ग्रिरपर कहाता रखनाह लच्चे वि में रसना १-वर बारमा-कार्रे थीत्र दिसोद स्पिद्र पारी अप प्रमा

प्र सीमापरका बाँव बाहि । सीमा(मन्)-श्री [सं] है। 'सीमा' (करा) ! -(म) किंग-म सीमापरका विश्व दशका निशान । मीमाविक्रमण-प॰ सि॰ शिमीक्ररेकत । सीमाविश्वसचीत्सच-प्र• (सं•) सीमा पार प्ररते समन का बरसर (सदवाया कारियें)। सीमाभिप-प॰ सि॰ सिमा रक्षकः वहीसी राजा । सीमापडारी(रिक्र)-दि [सं॰] सीमाका निदान गावन स्र हैनेशका । सीमाब~१ फिल् पारा। सीमाबी-वि॰ पारेके रंबका। सीमावरोध-पु (एं॰) ध्दर्थताः सामा रिश्वर करता वा होना (कौ॰)। सीमिक-प [र्ष] चीरी या चीरी सेता कीचा बीमका एक पछ: विमीटा। सीमिका-ची॰ [६०] शेमका चौरी । सीमिया-प पा रेडवावविद्याः परकाश्वरवैद्यविद्याः । सीमी-वि वाँगोका रवत-निर्मित । सीमीक-प्र (पं•) इक्ष-विशेष । स्रीसरा - प फा॰ । एक ब्रुटियत विद्यालकाच पक्षी । श्रीर्मेट~प्र [क्षं∗] एक पत्थरका निरोध प्रकारते तैनार किया हुआ जूनें की पकरतर नानि धरनेके काम माता है। सीमोक्संघन-५ (सं•) भोगा पार करना । सीप*-ओ शेता! धीयमां - सी शिकार्यः तिकार्यका क्षेत्र । सीपरा*-वि दे सिवरा । स्तरि-प सि । प्रकारको जीता वालेवाका वैका खरी। बाह्य। -धर-पुनकरामा -ध्यक्ष-पुरु राजा सनस (वे बन पुत्रको कामगाने पृत्रके किय श्राधिको बीच १वे थे ती इक्के ईंडसे शीवाकी बलाचि हुई। वकराम । -पाकि-मूद-पु॰ वक्राम । -बाँग-प्र वैल्क् इसमें बीवमा, जुलाठमा। जुलाडे हुए रेकॉसी बीसी। -बाडा-शाहक-द एक बीधतेवाला बलवाहा ! स्रीर-की वह बनीन विसे बनीरार क्षत्र जीतवा ही और जिसमें पसे कुछ द्वास बन्द बालिक हो। हा रखा-क्रक्टिया । 4 वि श्रेदा शीराज । सूक -करणा-मार्ग बारका किमी जमीनकी सुध जीतमा कारत करना। -सम्बद्धामा∽कस्य शुक्रवाना । ∽र्में-वस्त्र साथ बक्ते । -में हीवा-बमीयस्थी अवनी जीए, कारतमें क्षीमा । सीरक-प्र• [सं] दका स्ता ग्रेश ग्रेश सीरफा सीरप॰-पु॰ दे 'शोर्थ । सीरत-ली [वर] ग्रंथ स्वमानः श्रीतः, चरितः सीवन-नरित्र । सीरहम्-वर (अ] सीतरकी यहि विभारसे। मीरमी-ली॰ दे॰ 'घीरीमी । सीरा-त दे गीरों': शिरदाना ! ली॰ [री॰] एक प्रामीक मरी । अति अवश् सांध । सीरायथ-प [सं॰] रकराम । स्टोरियस−प् [बं] कवामी, क्रेस, पुरतक में। मिसी Ì

पविकासे कई अंदोंमें वा कई किरशीमें महित दो सिमेमा-थे कर भागीमें विकास वालेवाला केल । सीरी(रिन्)-प॰ [सं॰] एडवर, वनराम। सीरीज-सी॰ [बं॰] भेनी, माना क्रमा छक्छिना। मोकंच-पुरु [संर] यह तरहकी महकी। सीख=-प पे॰ 'शीक' । -वंद्यः-वान-वि प्रशीक । सीस-की • वगीनको समी सीह। मुँछ निकक्ते समक्के छोडे-छोडे बाक मसे । पु जुबियों सुटील करनेका रक भागा। -का कुँवा-ससकमानीकी एक रस्म दिसमें किसीकी मर्से भीनमेपर सिवाँ पृष्टि हैवेंहें रखकर विवास विकारी है। सीछ-तु [सं] इका [बंध] सथर, काशा सक समुद्री चेत्र । स॰ -सहर होया-विसी चीत्रका महरचेत्र किया भागा । सीका-ड वॉटरो क्ले हर दाने थी बसक कानेबे नह क्षेत्रमें पड़े रह बाते हैं, ब्रिका देते बार्मीकी जनकर विवाह बरनेकी वर्षि वंश्व वर्षि । वि लग्न, विसर्मे मौक हो । सीवें 6-की है 'सीमा'। सीवक-प्र (में) सोमेकका । सीवम-मा । सि । शिकार्यः तमोक्रमें। श्रीका शिकार्रका बोग संवि । सीवनी-को॰ सि विद्यार कियमानिते ग्रीबोनीय ग्रहतक वामेवाकी रेखाः वीडेका उदाने पीचेका पाप ! सीबी-की दे 'सीबी' ! सोध्य-वि [र्न•] सीवे बोग्द । सीस-प्र (सं•) सीसा। - स~प्र सिवर।-पन्न -वशक-सीमा । सीस १-५० सिर्ध शीर्ष । -वाज -४ वह धेरी विश्वे क्रिकारके किए राजे इप शाम आदिका छिए, मॉब रॅक्सर एका वाली है और शिकारके एक बोली वाली है कुलहर -ब्राच॰-प **वे** 'शिरखाय'। -फक्र∺पु॰ मिरवर प्रामिका एक गहना । सीसमझ्या~ड वह कमरा वा मध्यम निस्तक्षे वीवारीवर **एर जनर श्रीशा वहा ही ।** सीसक-दर्श (सं.) सोसा । सीसम-प्र॰ एक प्रसिद्ध देव जिसको स्वती दरवाया रेतुक, कुरशी वादि नवामेके काम भागी है। सीसर-प (र्थ•) एक पौरानिक बान की घरनाका पति था । स्तीसर⊶प वक्ष वसिक संच पात विसकी चाररें, गीकियाँ आही वसती और जिसका भरम औषपस्पर्ने भी कामने कामा माता है। क सीसा १ सीसी-को 'सी-सो'को मानावा 🕈 ग्रीगी। सीसी, सीसी - इ धीपन (सीसोपधातु-का (त) रंगुर । सीसोविका सीसीविका-त है सिसोविका । सीरतान-त का विरामक विश्वपे अवस्थित पद देश क्षेत्र वस्त्रप्रका वस्परशाम भीर मापीर वा 1 सीरमोगाय-चु [बं] मूद्रन-स्वद वंत्र । सीड-जी मेगा > इ 'हिंद !

1804

सवार होना-दुरामदः दर होनाः श्रीव व्हनाः पापभी प्रवृत्ति दोना ६ −पर सभीचर सवार दोना − मसीवत भाना !-पर सक्रोदी भाना-कुतापा माना । -पर सवार करना-पृष्ट करना, भनवद करना । -पर सबार रहमा-वट होनाः साथ रहमाः साव न छोवनाः क्वारी निवरामी करना ।-पर शवार होना-भव मैतका साना, प्रभाव दोवाः किसी नातकी श्रम दीना । -पर सहमा-नरदास्त हरना 1-पर साथा रजमा-किसीका श्रीमानकात करनाः कृपा रवना ।-पर सावा रहमा-अभिभाक्त, पुरुपरस्त्का दोना । -पर साया होना-श्रमिमास्क्रका श्रीवित रहना ।-पर सींग होना-कोई विशेषता अूरी दोना ।--परसे निककता-सिर हानेसे मिक्कमा पासरे निकलना !-परसे बारमा-कोई कीय प्रंतक-कामनामें किसीके सिरके कारों और पेरबर बॉट नेता ।-पर सीटा घटवा-किसी भीककी धम होता. बध्त होता ।-पर हाथ धरके रोना-पष्ट-ताना, अफसोस करना। शोधाकुक दोना !-पर हाम घरना-विभावकः सरपरस्त होना । -पर हाथ फेरमा-बोरन दिकासा देनाः च्वार करना । -पर होना-सहायक, समर्थक होताः जिल्लं पहनाः शेवे दिल-को जबकि रह जाता म<u>द्रत मिक</u>ट शापतनाः ∸पाँच ज **होना−**सिनसिका भ दोना वेदशा दोना 1-पॉवपर धरमा-पेरी पत्रमा दोनवा मका करना ।-पीरके शोना-रोते समय वःबादिरेक्टे सिर पीटना !-पीटना -क्रोथ क्रोक, दुःखके वालेगमें सिरपर प्रदार करना। ~पैर म होना−भादि और अंतका न होना।−पैर होना-बादि-अंत होमा ।-फर ब्रामा-सिर फरमा सिरपर यहरी चेट करना (काठी नाविसे) I-कटा साता है –फटा पदता है-सिर और वॉबॉमें अखदिक पीदा होतेको रिवरि ।-फिर जामा-दिमाग परेखाम होमाः चकर कासा । −फिन्मा−ककक न रहनाः तिमानमें फितर होनाः पागक होना ।-फिराना-क्काससे स्रोता के सिरमें वर्ष पैदा करना ।-पुद्रमा-सिरका नायक दीना (परभर, र्वेड काठी भादिकी चीरसे) । —फेरना-व्हा श माबना धरबद्धी करना ! -फोबना-सिर है मारना परवर रूट भारिसे सिरको स्टीका करना। रेंग्यांना घोक के आरोगमें अपने आएकी व्यक्ति रहता। -कीहे श्राक्रमा - सिर चौचनेचे किए तैनार को बातरा-सक-सक कर का जामा ~ काने काते छिए सा माना का तकते वरेशाम कर देना। -यॉंधमा-सिन्दा निशाना वॉंबमा (पटेनाव); सिरके नाल गुँधमा (कि); नाय इस तरह केना कि चकते समय बीरेका सिर सीवा रहे. वार्वे का कार्वे म दो । (किमीके)-बीतना-सिरपर पहना । -बेगार होना-दिशादे विग्मे नेश काम होना वी तसे मागवार हो।-येचमा-बान रातरेमें शबना (धीवधी मीदरी करनेके विषयमें)। -भारी होला-सिरमें योहा होजा ज़दाम मारिके कारण सिरका मारी जाम पहला। —सिम्रामा-गिर् भक्राता । ~साज्ञन करना-दिसी काममे तरवक्त करकाः वक्षवास करता। -सटकासा-

ताने या व्यंग्वसे सिर विकामा । - सदना-वत्रपूर्वक किसीके क्रिमी क्रमामा । --आरसे फिरमा-सिर टकराते फिरमाः अठिमाध्योसे बान वृह्यस्य प्रकट्सना ।-मारना-समझाते समझाते हैराम होनाः सोचने विचारनेमें हरान बीनाः भरवविक परिशम करमाः विद्याना । --मैंदवा देश:-विवश सीका सिर मुँहा वैना (महाराष्ट्र): एक सवा। -मेंबाते ही ओक्ने प्रका-कार्रभमें ही निम वाचा पहना । -ग्रॅबाना-वाक प्रधानाः साम् हो बाना । -मुँदश-सिर्के शङ एत\रना । -मुँदा जाना-पद सर्वो । -में भाग छमना तसवीमें ब्रमना-भविक क्रीयः क्रीयक्षे वावेशमें माना !-से साक्ष शक्रमा-मात्रम करना । −में खकास समामा∽गकर क्षोना सिर्पी कर्र एठना । *−सें रोस पदना−श्रं*गार, देश-दिग्नासदे किए बाक्रोंमें तेल काका काना । -में बर्ब उदमा या होना-सिरमें पीका दोना ।- में धमक होमा-सिर मारी होमा. यरम दौना दर्द दोना । -में बाझ होना-मार आते. होक्नेकी ताकत होना । - में सप्तेची सामा-नाव सफेर द्याना, द्वदाशा आमा । -में सीदा होना-वन अन्त हीना । -में इन्हा भरना--धुन नमाना । _-र्रेशमा-शिर फोक्सा, **कटलुदान करना ३ ~रहना**−किसीके पीछे पहना: रात दिन परिमम करना: विदा रहना: किस्तं रक्षमा । – स्त्याना – रक्षमाम वाना । – क्षमामा – किनीके जिम्मे करवा। - बहना-सिरसे सिरका स्करा बाना । -सदाना-सिरसे सिर टकराना । -सेना-श्चिम्मे केना !:-व तनकी और होना-वदरदार होना । -सक्रेड द्रोमा-वडा द्रोमा शिरकेवार प्रकार !-सस्रा सत रहे-विदा रहे, बोबिट रहे।-सम्रासत है-बोबित है, है । --सहरा रहना-प्रतिश होना चरवारी माप्त क्षोमा !-सहरा होमा-दिसीपर किसी कामका निर्मट होता । - सहस्रामा - सिरपर हाद फेरना, प्यार, सक्षामर करना ! -सहस्राये भेमा साये-दोल दनकर दानि वहैंचाना ।-सन्ताबा-शरुविधे ममी इर घरना (वि) । −से आसेव उत्तरमा−क्रोप, भर, भ्रम न रहना। से आसोच उत्तरका नगर प्रम कीय दर करना। -मे बतारमा-सिरहे बारना ।-से क्रदमतक वसाउँ-क्षेत्रा-सारे प्ररीरक्ष क्याएँ क्षेत्रा ।-से बक्रन बॉबना-मरनेके किए तैवार दोना ! ~से किनारा करना ज्यान देशाः मरना ।-से कुर्जा प्रोत्रवा-शहत परिभ्रमसे काम करनाः बरसाध्य सन्तम काम करमा । -- म रोक्ष व्यामा-मरनेके किय तैयार हो कानाः वडी दिक्षेरीका काम करमा। —से खेळचा—सिरक्ट भवन्त्रव सामा। -से गुजर जाना -से गुजरमा-पामीका प्रसम दोना मर जाना कीवम समाप्त होना। -से श्रमना-वहत भारर सम्भाग बरनाः सिरबे रह यहना । नये जाना-सिरके वस जाना बहुत आदर भावने किसीके क्रिय वाना ! -से जिस उत्तारमा -कोच भीमा करमा। मन दर धरना । – से कोबमा – सिर पितानाः एक प्रदेश होता मिककर बैठमा। पदा करनाः पष्टर्यम करनाः -स रखना-पीण दृरमा। ~से शक्तमा-पैदा स्वामा। −से तिमका उतारमा−शरभा वपरार करना । ⊸से

1840 सीहगोस-५० रे 'सिनाइगोध'। सीहंब-प्र• [सं] ब्दर खुरी। संभाष दे सी। भे बाद्यां ~प्रयुक्त तरहके साजु। संगर्भग - प्र अंतिम मीर्न सभाद ब्रह्मको सेमापति पुष्प मिश्र कारा संस्थापित राजवंद्ध ह सीमती-स्ता सेंबमेकी भीता धंबाकुके परोका वारीक भूने, माध । र्मुमाना-स॰ कि॰ किरोको मनक पास कोई बीब इस छोदन्ते बगाना कि वह छसका शंव ग्रहण करे, बालान कराजा । र्मेंडि~को दे**॰ सु**ठि'। मुंद-पु दे 'धुंद'।-असुंदश-पु दावी। संबा-को स्वा । इ कर्ड गवडी फैठफ रक्तेका गदा । संबाध-पुदानी। सु बाली - सी यह तरहकी महकी। संब-वर् [सं] रामदलका एक बानरा एक दैस्य निर्मुदका पुत्र और वपसंदक्षा माद्री विन्तु । संदर-वि [सं] की भोडोंकी भक्ता करें। सदय अद्य पात भीगमा मना अच्छा। पु कामरेका एक पंका एक नामः समान्या एक पर्वतः। -कोब-प्राधानगरा यद्भ क्रांड; सुंदर बंठल । --बम-पु॰ नेगाल्के व्यवस्थनमें समुद्रहर पर फैका बनग्रोड । संदरता-भी , संदरस्य-पु [र्रं] सीवर्ग, स्वस्तो । संदरताई - सी॰ दे संदरता : सुदरवती भी [सं] एक नदी। सुंदरभान्य-वि [सं] भरतको सुंदर माननेवाका । स्विदाई÷-सी संदरता-'सहत्र संदरारंपर रार्र कीन नारती -दास । संदरापा−५ संदरका। स्रेक्री-ची सिनार-इसरावर्में को हुए काहेके छक्के की विभिन्न सम्बन्धि संवर्णत विक्षेत्र स्वरीके स्वान कोते हैं। वि की सिं कपनती । तो संदर शीः विषय र्द्धरो देनी। दश्चनिशेषा अक्रस्टको यह वश्या। नैयामरको एक कम्पाः मास्ववान्त्री पत्नीः एक बीविनीः खबैवा छन्। रक वर्गक्षकः इकशे । -संविर-यु अंतःपुर । भंदरेबर-९ [सं•] शिक्यो एक मृति। मुंबोपसंद-५ [एं॰] भिर्मद बैलके दी की की विलोत्तमा अप्तरको पत्नी बनानेके किए जापसमें ही कह मरे। **सेंदरीद**म−५ सिीअक्टामात । सुँधाई-खी सीवापन। र्में पावड−सी द ∄पार्द। मुधिया-नी एक तरहकी स्थार । स्पेत्रसंक-प्र [सं] कर्रकः। सुंचा-प पत्थर तीवनेका एक मारी जीवारा तीपका गत्र भूति। संबी-को छोड़ेमें छेर बरनेदो छेनी। संदुम-पु कि] एक धुर्गपित वास की फारसी-वर्ष् कविनामें सुंदर चुँपराने केशका अपमान मानी गयी हैं।

गुक्कप्रदा ~(से)ह्मानिषु शास्त्रकृषा यह मेदा -हिंदी-पु वाक्छक्। सुंबुख्या~पु फा] गेई वाचौकी वाछ । संस-पु॰ [सं] एक देखा यस देखके निवासी। * दे भ्रम'। सुँभा-पु॰ बे॰ 'श्रुंषा' । स-क्य [सं] क्रव्योंके साथ जुलकर वह संदर (सुदर्शन), रुत्तम् (सुनंत्र), अविद्र, अविद्यव (सुनोग्य) सहन, अना बास (सुबर सुक्य), मकीमाँति पूरे तौरपर (सुनीर्ण, स्थिवित स्थाधित) बादि वर्गोका योतन करता है। पु॰ पुजा; अनुमति। इच्छा समुद्धिः वहः संदरताः नानंदः दि अच्छाः मकाः सम्मामाई । सर्वे ६ दी'। स॰ सुतीया पंचमी और पड़ी विमस्ति । सम्बद्ध-पुपुष् सुमरा•−५ शुरू वीवा। सुअन-पु॰ वेटा, पुत्र । सुधनवर्ष-पुरद्रमूक शोनकरी सुअमा - पु॰ शुक्र, वीवा। • अ कि बत्पन्न बीना वनमनाः धर्व होना । सुकर-तु दे 'च्कर'!-इंता-वि विस्के दाँत स्कर केसे हों । यु वह दानी विसक्ते बाँत जमोनको भीए सुके हय हों। सुअवसर-पु अच्छा भरसर मौद्रा । भूजा−९ तीता, भूका ५ वही धुरै स्वा। भुआड०-वि वरी जातुवाका दीर्पांड । स्रभाद्•-३ स्वार । समाम•-पु दै 'स्वाम' । भुभामी = - पु रे 'स्वायी । सुकार*-पु दे 'सफ़्कार'-'कार्गपरसन निपुन सुकारा'। -रामा । सुकारव≠−वि मनुर व्यक्ति करनेवाका, सुरीका । समासम - व श्रंथर, वर्तवा बासन । सुधासिन सुधासिनी । नहीं सुद्दागिन की। पशेसिन । सुआहित-पु॰ तस्मारका एक हान । भूष-को दे 'स्ते'। सुकंबवान्(वर्)-9 (सं॰) एक पर्नत । सक्टेका-भी [र्व] एउक्रमारी। विन्यादर । सुबंद-वि॰ [र्थ] बच्छे गलेवाका सुरीका । पु॰ सुप्रीय । मुकंट्र-५ [सं] सुबक्ता बहुरोव। सक्र - प्र [धं॰] क्ष्मेका प्राप्त । सर्कत्क-पु [ते॰] प्यावः वाराहोदेशः वरमीदेशः एक सुर्वदा~की [सं] बेप्यास्कोरकोः समुधारंद । मुख्यी(विम)-पु (धं) प्रन ओह । सुक-पु दे सुका-देव-पु है शुक्रदेव ।-नासा-वि॰ विसकी मत्क सोटकी होर बैसी हुकीको हो। सुक्क्ष-चु [र्थ•] एक संबद्धार ऋषि। सुक्कानाः - अ कि है । 'सुक्कामा । सुकट्ट-इ [सं] मिरसका केह (वि नदुन कट्ट । सुक्युमा-म कि सिमरमा, रैजारका पटमा। किटुरमा।

तिनका उसारमेका बहुसाम मानना-बोहेरे एएडाएडे क्रिप कृतव होना ।-से दोवमा-सिरपर मारकर होवना। नपमा छिर मारकर किसी चीवको इक्केडक्के करना । -से पटक जामा-वापन कर बाना; बवरदरती किनोके बिम्मे बाक्ता । -से पहाड़ डासमा-शिरते असीवत राक्रना । ∽मे पाँबतफ्र∽बादिसे अंतरफः कपरसे शीधे तक तमाम । -से पानी उत्पर होगा या गुजरना-किसी गायका दरवक पहुँच जाना। बस्छ ही जामा। -से पैदा होना-सिरको ओरसे क्**दे**का पैदा होना। से परतक मनादिसे मंत्रतकः अपरशे भीचेतक । — आग खगना-बारवदिश क्रोथ चतना। -से फिश्मा∽ सिरपर निसार **होना,** सिरके निर्द फिल्मा। **-स** वका रसना-दिपति दूर दोना । -से वसा शसमा-मन कगान्द्र काम न करनाः किसी अधिव प्रसेगसे जान छवामा । –से वेरार टाम्बमा−वेडिकीसे काम बरसा । ~से योझ बतरमा~निधितवा वेष्टिकी होना संसर दूर होना । - से बोझ उत्तरशा-शेल शक्ताः किसी मार और रामित्रसे मुक्ति ग्राप्त करना। -से बोझ र्योधना - नाइक एर्च अपने जिन्मे केना । - से भारमा -नाग्रज्ञ होकर बोई चीज किमीको कौरामाः वेदिलीसे बोई चीत्र देशाः सिर्पर मारमाः प्रेंक देनाः शिरसे टकराना । -से सगाना-ेभादर, प्यार करना। -से वचास बसरना-किमी कश्चरते रिकारै बोना ! -स वारवा-सिरपरसे निसार करना निमानर करना। —से सामा अठमा - नामभारक, ग्रह्मका देशवसान शोना । ~से साया उत्तरमा - बिन परी भाविका नसर वर दीना । (किसीके) -मे सेइस बँधना-औराँसे लक्कि एक्का या वस प्राप्त करना ।-से हाजिर होना-(किस क्यमके किये सहर्षे तैयार होगा। -स होश माना-अङ न रहना, पनदा बाना। -हत्रेक्षीपर धरना स्तामा क्षिये फिरवा सेना-व्यावरीये बान देनेके किव तैवार रहता वान-इसकर विवेरीते मीठका सामना करना ! -हथसीपर रहमा होना-बान देनेको वैयार रहना। -हाहिर है-(किसी कामके लिप) सहवें तैवार दोना। -हायपर श्रामा-मरनेके किय तैवार दीवा I-हिस्सा सिर कॉपना (इक्कोंके कारण वा स्वीकार-अरवीकारके मान्ति)। -हिहामा-सिरको क्यर गीचे वा अगस-बमक दिकामा (प्रश्नेमा स्पीइप्ति, भस्पीइप्ति धाविब्री सकराके रूप)। (किसीका किसीके)-प्रोजा-पीता स लोक्सा पीका करना। नार-नार किसी जीवका जाग्रह करके परेशम करमाः एकदा यहना समका करमा। (बिस्सीके)-होना-रूपर वड़मा विग्मे होना (दीव नादि)। (किसी बातके)-हामा-समज देशा ताइ केमा।

सिर-पु• [अ निर्दे⁷] भेद, रहस्य राश। मु॰-की बात कडुमा-मेर प्रकृत करमा । -होमा-रहस्य शैना । सिरई-सी सिरदानेकी दावी।

सिरका-पु का] पूर्ण सहाकर समीर बढावा हुआ रंघ भग्र मारिका रस । -कश-त वर्ष बीवनेस acc atm ! -- पेलामी-वि विस्ता स्वोरी वही रहें !

सिरकी-को सरदंश, सरदरी। सरबंधि वनी दुई दही। सिरवाक-पुर बीहोंकी पद वाठि । सिर्धक - पु॰ सहिरती, दमामेशका।

सिरवान#-पु निर्माण सुक्ति करना ! - हार-पु वर्शात मिर्माता, प्रदा।

सिरजमा=-स कि शरपत्र करना, रचना, ननानाः संघय करमा। भी सृष्टि, रचवा।

सिर्वित्र - वि॰ रचा प्रभा, स्थ सिरवाम-५ कारक्कार। माक्युबार ।

सिरशी न्या क्याम बसा। सिरवार् प्रभोसावे धमन हवा करके मूसी वहादेवा

ऋपश्री । सिरवारां -- प्र वर्गारास्त्री शीरका प्रश्न करनेशाना

कारिकाः मिकार । सिरम-प्र•**दे॰** भिरीत ।

सिरसा-प॰ दे 'शिरस' । सिरडामा∼प वे 'सिर में ।

मिरांषु-पुरु [ईरु] रस्त । खिरा-पु॰ वंद्य भाग और; शुरुका मागा जगरका माग व्यवका भागा मोला ! -(रे)का-परके हरकेया ।

निरा−श्री [नं] रजनिका धननो माधा गांधी मैसा बक्का तंत्र शोखः बरूको लंकीर्य प्रवासीः मसीकी तरह एक-दसरीको कारनेवाको रेखाई। बीका - **अस**-ए० नादियाँका पाका शाँखकी केहिनाओं(स्रम अमियाँ)का थीन १ - पश्च-तः चीपनमा ब्रह्मा एक शरकता करा। -प्रकृष्-े दे सिरावर्षः -सूक्र-द् मामि। न्मोश्च-प्र° रखमेखन, प्रश्चर क्षेत्रकामा । । −क्स-यु सीसा । −वैव −वेथन −ध्यथ,−ध्यथन−पु दे•

सिरामील' । -इर्प-प नाहिबोंका बढक अधिके

बीरीची काकीका पत्र कासा ह मिराज-९ [व] रोक्झ स्की।

सिराबी-प्र शिशका नेता। सिरात-की॰ 😉 🕽 रास्ता, सनका मुस्कमार्थीकै दिवासा शक्तार बनामक्षे दिन शेमस्व(गरक)भर ग्नाना धामे-बाका बुक (वो बाह्मी अभिक बारीक और तत्वारहे अविद्ध तीहण होगा और जिसपरसे समीकी ग्रवरना होगा-पुरुवारमा अस्तानामे पार हो बार्वेये पर पापी श्रद करकर वीजधार्ग (बरत भागी)।

सिरामा - व कि उँचा दीया शतना समाप्त दीवा-'बरबढ़ि सिगरी रैन सिरामी -प्रायित हर होना। मताह बीका पहला बांच बीला बार मान हेना: र जनकाब गिक्या । स॰ कि उक्ष करमाः पानीमें तुवाना – <u>त</u>रमी भावरके वरे स्त्री सिरावत भीर -क्षक्तीश स्त्रतम करनार विद्यामा १

सिरायत-सी [न] बुस्ता प्रदेश कन बरना! सिराल-वि॰ [सं॰] जविद वा वही मर्सी वा रेगीवामा !

पु वस अन्तर्भा कमस्थाका सम । सिरासक-५० (सं] १६ अगूर ।

सिराका-सी [मं] एक पीवा। सिराकी-की भीरकी कर्नेगी।

ইম্ফ হল THE PERSON OF THE PRINCES. ELECTRIC SERVICE SERVICES र^{्य} स्टब्स स्टब्स्ट स्टर्स्ट्रेन्स्य स्ट्रेंट्रेस्ट्रेन्ट्र स्ट्रेस्ट्रेन्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रे

marie - to to go to the सम्बद्धाः के कि के के कार्या के किया का करा, साम-मुख्या काल के क्रमार्थ के दुख्यों देखा का कुछ केता. सम्बद्धाः जीवस्त्राच्ये हेल स्क्रिक के क्षेत्रक नुस्ति हुए कि प्राप्त स्तान हर्तीन ही करून

न्त्र -जेटेस हु**न** द FER - PER SE SECTION सर्वेत्र-क्रिक्ट क्या प्रकेत्र्य न्योद्धा न्यु व्यक्ता प्रा

ন্তিক-চু-জু-চুন্ত জিন্ত চুন্তিত PERSONAL PROPERTY OF THE मुंद्रार्ग कर कर दशका

मेंबर-पुरुष कर क्राहेसका देखाँ की - कि कि सक्त क्रिकेट कुकारी र् राज्यत स्थापिकाल सुरक्त सहिता स्थाप न्यों निर्मे का संस्थान कर

स्पर्जीनीय अन्य सम्पर्जेयका अन्ते स्टेनिक, पुरुष्मा, स्टाबरी मुख्या-कि कि है में इसे समूद्र इस और जेंग्से . अस्तुत स्वारोग को ४ में १ मृह्यों

andres - in the interpretation : सुर्देशका अने केंद्र बाँक हैं है है संबद्ध-कि क्या स्वत्र शह

स्वयुक्तिक कि हिन्दु **स्वयुक्ति अस्वयुक्त क**िय महीता के कि कुछ बाद की या के बाब (कु €निद्र 🕶

দুহাতিহালমান দৈল্লী হাটো কল জকা महोती हिन् नीम कि वह का सम्मान स्मानि स्वरूप एक द्वानी and the second

स्वादान्त्र बनाइ बार्स कुछ يعلقن دي دي مصملات कुराम प्रदानी-पुर प्रमाद प्रीप कि कुरक-

Total मुख्यान्तर्वतः हिन् बन्द्रं द्वारान्त्रेशः -कुन्धः

पुष्पार्थिक किंद्र स्टाप्त

मुक्ताननुष (कि) कार समय काकी या श्रूप किया अर का दाज दें कुँग्या

work that we are the second स्वयुक्त-बार्ग वर्ष हो। सम्बन्धः। museum Bair gear"

स्ट्रियानको पार्क वर्ष कार्केटको अनुन देविकास संदर्भ-केर्नुभा सन्ते सम्बन्धाः कु सद्धानः

HEIR THE PARTY IN THE WATER EUE-ALE CO BE GOL WHEN THE Targe of the first party.

The state of the s Sally profit of the sale with the sale of できまった。 **マロ**に マガル

क्रिकेट के किए कुछा केंद्रा है है कि क्र

मुद्राप-पुर्व कि हा मुस्साद्वा । The Tax Tay and सुरिक्त का कि स्टाह मुक्तान कुल किल किल कार में ता कर मुन्ते । THE PERSON OF · できる 一本 一本 マイマイン !! PROPERTY OF THE PROPERTY AND PARTY. THE THE PARTY OF THE PERSON

TOTAL PARTY पुष्पार-विक्र (कर्षे बेट्टर व्यूक्ट बेटर करें) र्ज्याच्या १०५ हेन्य सहस्र संवेदा निकास विद्यालयो स्थापन स्थापन स्थापन स र्टन्टनास्य -का-्व आहरिक छात्रे ह्या Children gover

grane-grane surre surrental arts TREE AREA BUREAU AND AREA विदेशका कि होक्कर । THE PARTY OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PARTY ADDRESS OF THE PARTY ADDRESS OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PARTY AND AD TOTAL PROPERTY.

BEAR TO END OF PARTY BELLIAND ज्यानी जा नहीं। कुपुरस्थित किल्लाहरू हैं के पुत्रकर्ता कुपुरस्थित करने हैं के पुत्रकर्ता

Appelling at a few glover and about عليد عستري स्कृतकार के दिल है। जिल्ला स्वर्धेन हर्ग कर्ण स्वर्धात

ब्राम् न्यू क्रोक्ट के स्टब्स स्ट्रा न्यून Sent man) - Sent and a - Sente (In म हर

कुपूर्व के कि कि के जुला? स्कूर्योग सुक्रवाग-कि के सुधार्थ कुरुक्ता-सर्व अने बाग्रहे का राज्य ANTE TO BE THE METER

स्कृतक कि स्वाह विकास करिए प्रशास ATE MATERIAL ENGINEERS स्रामक्त्रिक क्या क्या जिसक प्रमास म्बद्धारी-के राज्या ग्रामी कुर आस

स्पृष्टरे~्र किंु सार र जाउ क्ष्म के कि हम क्ष्मी हमा हर माँ देनिय रीमकः किन्द्र-दुर्वेदेत क्षणाम् प्रमानको

बिर पुरा कु बार्ज किर पूरा दुर्जन्य जिल्ल

सिरास-वि [सं•] दे 'शिराक'। सिरायन-पुर्वेगा पारा परेका। सिराबमा = - स कि दे 'सिरामा'। सिरिका - पुरे 'सिएस'। सिरिवारी-चौ॰ संसमान्य साग । सिरिक्सा-पु दे 'सरिक्ता' (समास मी) । सिरिस-प दिरीव पृथ जिलका पूक करवंत कोमल होता है-'सिरिस समन कठ वैनिय धौरा'-रामा॰ ! सिरी-सी [सं] बरसीः करवा (१): क्रीनकीः * क्रश्मीः पेल्क्ये शोमा सीर्या रोकी शिरका एक गहना। – र्यथमी – सी बसंत पंचमी । सिरीस-प्र वे 'सिरस । सिरोत्पात-प्र[सं] मॉबबी एक बीमारी विसमें बीरींकी क्षाली व⊈त वद चाती है। सिरीना-प भन्न रचनेका रस्तीका मेंबरा, रेंडरी, विद्या। सिरोपाड १ - पु दे सिरोपाव । मिरोपाय-प सिरसे पैरतकका परनामा जो मारखाह वा राज्ञको औरने सुरमानार्थ निकता था क्रिकनता सिरोमनि*-प हे 'प्रिरोमण'। सिरोक्ड • - ५ दे छिरोब्ड ! [सरोड़ी-पु • तक्कारके किए प्रसिद्ध (राजपूतायाका) एक स्थान । सी तसवारा † पक्र विविधा । सिकां-प्रदे सिरका सिफ्ट-वि [अ०] साकिए। अवेसा। केवस । व वेदस सकता । सिरीं - वि• दे विकी । सिख-की दिला पश्चनः मशका भारि पीसनेकी बन्बरकी चौकीर परिवा; इमारतमें समानकी गरी हुई पटियाः पूनी वनामेकी काइकी पटरी। पु बंध वृत्तिः बद्धतन्द्री जातिका एक पेड़ । −काकी,−कारी−की पक विकता परवर की बरतन बनानेके काम जाता है। बारिया मिद्री । -पोद्रमी-श्री विगवकी एक रहन ।-फोदा-पु पत्थरभूत नामका पीना। -वडा-पु॰ सिक्र बीर सोदिया। - वह-पु सिका सिक कीर बड़ा। की दे क्रमम् । –हार-हारा–९ वंड वृधिवासा । सिक-पु [भ] धनराग श्वेशिक। सिरुक−प्र वावा । श्री वशासकी । सिक्कीश-प्र नेस शीकल। सिक्गना 🗝 कि वे शिलगया। सिक्य क-पु • हे - फ़िल्प 1 सिक्सपची ~ हो है 'किरमधी। सिकपट-वि भीरत बराबरा साफ, भीपटा विसा हुआ। त पारक पड़ी। सिक्करूपी-स्त्री वे 'विकसपी। सिक्रवर-की शिक्रम सिक्रव । प्र वे सिक्र'में। सिरुपाना-ए॰ कि सीनेका काम बराना। सिकसिमा- । वि बाई, फिरमा सिम्बिका- देशी सिक्तिको कीप शुदर क्योकनको दिक्तिक दिक्तिस धी

बीकि जिस परतें -हंदर। हु [भ] क्यो अंखकाः

विधेश पंक्ति कम चरंचीका विद्या कुरसीनामाः स्नाव, संबंध (बोइना, दोइना निकायना इ) । -प-क्रोड--प्रविकास । — प्रशास्त्रीम — प्रशासन । — वंदी — को कतारवंदी; तरतीय । −(के)बार−वि क्रामभुकः, त्तरतीववार । स॰ --मिक्समा-भारंम दीना रास्ता कुकमा । ~सिकासमा-संबंध बीवना । सिकड-प्र [म] दशियार, आयुष । -भ्रामा-पु• असागार । -पोश-वि॰ इविवारोंसे कैस ससम्बद्धात । सिसहरू-पु॰ बासामका यह नगरा एक बगहरी बाना शिकदरमें दोनेवाकी नारंगी । सिस्बह्नटिया~वि सिक्ब्टका । विद्या एक सरहाओ नाव । सिछडिछा-वि पंत्र वादिने कारण विकास, किछपर पैर फिसके विच्छा । सिखडी!-सी यह विदेश। मिला−पु (म॰) इनामा स्थला। ७ फसल क्रानेदे नाइ धेतमें गिरे हुए बामें। एंछ वृत्तिः एटब्रमेंबे क्रिए रखा दुशा गक्क केर। कसी दे 'क्रिका ! - जीत-प्रक दे 'शिकाबत्त'। --वाक-पुदे क्रममें। --इस-पुतिसदक इन्यु। प्रसका निर्वास । −थर −पुदे ऋम में । --सार-पुकोशाः -इर-पुदे स्किशार'। निकाई-की शीनेका काम वा सबद्री। श्रीवन र्यकाः गुनिका देव । सिखाला-स कि वे 'सिलवाना: वे दे 'सिराबा । निकावाक−पु पनरकृष श्रीकश्र । सिस्ताबी−वि सैका-ौः योका नम । सिकाबद-प्राप्तवर काटनेशासा संगतराञ्च। सिकाइ-५० [ल] पविवादः मानुव । —खामा-प शकागार ! -पोस -बंब-वि विवारवंद !-साध-प्र चल पनामेक्सा । सिकाही-पु सैनिक सिपादी। सिक्षिप 🖛 🗓 विश्व श्वारीनरी । सिकियर, सिकीयर-पु [अ 'रठीपर'] क्यूडी आदि की वह परिया जिसपर रेक किरावी बाती है। शिक्षिया−की मकान वसाने-के काम बाहेबका वक तरक्का परवर । शिक्षियार सिस्पियारा-पु दे॰ 'सिकाहर । शिकमिकिक-पु [सं] निर्शाम गाँउ कामा। सिक्षीय-प्र है 'शिक्षीय । सिसीमुक-पु रे ज़िबीमुस्र'। सिसेषर कमिद्यी की [अंग] जुने हुए कुछ सुदस्योंकी समिति (विसन्ता काम किसी विकास दिवार दरना और मिर्णेय देवा है) प्रवर स्प्रीमंति । सिस्ट-की दे 'स्मेद । सिस्तीवा - प्र पह वर्गत की रामको जमकपुरको बाजा-

में मार्थमें मिला था।

सिमीह सिमीहा-पु सिमा एक और बहु।

सिकौरी-न्धे भाँप कादि चैसुनेको छोटी दिकः।

सिस्क-पु [भं] रेशमा रेशमी बला। स्त्री [भ]

भागाः क्योः वंश्वि । ~बंबी-को मालगुवाराको दैनिक

नायका दिसाय जिसको मधीनेके शेनमें कोइने है।

साव सत्तव व्यवहार किया सवा थो। -क्सी(जू)-९ पुरुषको।-साक्(क्)-वि॰ गुणवान्।-सत्त-९ प्रतिवेशेन।

चु ज्ञतावस्य । सुकृतात्मा(रसन्)-वि॰ [सं॰] सहिचारत्नोकः, वर्यारमा । सुकृतार्य-वि॰ [सं॰] सफ्कमनोरव ।

सुद्धति सी [तं] सत्वर्म, युष्य मंगक । वि वर्मात्या । यु ममु स्वारीविषका एक युष्य वसर्वे मन्तेतरके सात

सामिनोमेंसे एकः प्रश्ना एकः प्रम । सुक्ती(तिम्)-नि [सं] नामिकः, प्रण्यनाम्। साम्य वाकोः कुविसान्। पु यसमें सन्तरकः पक माणिकः साम।

सुक्रत्-वि [सं] पुष्यवान् वाधिक सुक्रतीः इविसान्। विदान्: मान्वसानीः बहुष्ठ यह करनेवाका । पु कुछक कार्यकर्ताः लडा ।

सुकृत्य−पु [सं•]सत्क्रमे पुरूष ।

सुकेत~द [d] एक मानित्त । वि॰ ज्वारास्त्र ।

धुकेतु पु [च] कित्रकेतु राज्ञाका नामः छपरका यक प्रजा तामका राह्यसमा नाग । —श्रुता —की ताका राह्मसी

द्वकेदा-नि [सं] धंदर नाजीवाका। पुण्कराद्यसः। द्वकेसर, द्वकेसर-पु [सं] विरोजा नीव् जीअपूरा डॉ

प्रकारके बुका सिंह।

सुकेशा-वि॰ को [छे॰] सुंदर वाकोवाको (को॰)। सुकेशि-पु॰ सि] एक राक्ष्य विश्वक मालववान् कारि पुकेशि राक्षसिका वंश चकना माना कासा है।

सुकेशी-वि [सं]की संदर केसवाको (तो)।जी यक अन्यराः एक सुरांगता। −भावै-वि विस्ती कोके गुरु बहुत संदर हो।

बीर्ज वारु बुदर दोर हो। कुकेरी(चित्र)—कि [बंध) है 'ग्रुडेक्ट'। मुकोक्री—को [सं] द्वीरकारोजा। मुकोक्राक—यु [संयोजन केरियान केरियान करियान मुकोक्रा—को [सं] 'क्य कार्यका नगरी। मुकोक्रा—को [सं] क्य तरका नगरी। मुकोक्या—को [सं] क्य करना। मुकान—यु [सं] पदमारा नगरा 'शाकिन'का बहु,

्रहरेनको। सुक्तरु-् है 'सुष्य'। सुक्तरु-् है 'सुष्य'। सुक्तरु-् है 'सुष्टे। सुक्त-ु है 'सुष्टे। सुक्त-ु है 'सुष्टे। सुक्त-ु है 'सुष्टे। सुक्तरुप्पा-और (स्टे) मण सुक्ति। स्थात।

सुक्रम-दु [सं] अच्छा सीता। सुक्रिय=-दु दे 'दृहुत । सुक्रीदा-सी [सं] पद अपस्ता।

सुद्धः - वि वे 'सुष्ठ' । सुष्टाम - वि॰ (ति॰) विरम्दः राज्यवालाः अवदा द्यासम बरनेवालाः वस्त्रमम्, द्वास्त्रद्यानाः ।

सुसर-इ [सं] क्टम बहुदाला।

मुख्यस्थ--वि॰ दे 'ध्यस्य' । सुक्षिति--खो॰ [सं] निवास, आववका स्त्रम, मुरक्षित स्वान ।

सुद्धेत-पु (संव) क्या शेवा वह सदान निसमें धीम और (विद्या, पश्चिम और उत्तर) दाकान हों। दसवें सतुद्धा एक पुत्र। वि उत्तरम श्वेत्रोंबाका कल्यो केंग्रिसे सतुद्धा एक पुत्र। वि

न्तरकाः — स्मुक्तिम् प्र्यु – प्रमुक्तिम् प्र्यु – प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् प्रमुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् । स्मुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् । स्मुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् । स्मुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् । स्मुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् । स्मुक्तिम् विभिन्ने प्रमुक्तिम् ।

सुर्खंद +- वि श्व देनेपाण श्वर । १ मुख-प [सं] वह अनुमृति को तन मनको भागे, अनु कुछ क्री कामनाकी पूर्विसे क्रीमैबाका भागदा भारामा जासानीः चैमः आमीदः जन्मदयः क्रमामः स्विताः एको। सका मारीस्वा वृद्धि मामक भोपवि । वि॰ प्रसन्धः सुशः भनुष्ट्रक, मिथा चप्युच्छ । -ब्रासन~पु [हि] पाककी । - कंद-वि सक देनेवाका । - कंदन+-वि दे 'सुक्करंद'। लक्कंदरण-वि वोसुक्कका नाम प्रकार भारत है। −कर-वि भानेदरावक सकर, सरका पुरामा —करण−वि॰ सक्तोरपारका। ~करम≠−वि दे '<u>श</u>यक्रम । ~कारा–कारकः~ कारी(रिस्),−कृत्−रि सुध्यानक। −क्रिया−को पुक्त देना। सरक कार्यः समाराजक कार्यः। -शंध-दिक शुगंभित । न्यान्ति भुक्यपूर्वक वानेवाका । न्याम न शस्य−वि श्रुपम, विश्वपर आसानीसे यमन किना था एके । −प्राधा−वि जो बाहानीचे प्रदण क्रिया का सके। सरीय ! - बास्य - वि विस्ता आसानीसे इसन किया वा एकं। -चर-वि॰ भारामधे बामवाका। —चार-पु दक्षिया वीका । −चिच-पु• मानाहिक इति। ~च्छाय−दि सुबक्द छावा देनेदाका। - च्छेच - वि जासानीसे देवने वा नड करने बोम्ब । -क्षमक−वि शुक्ष देने, प्रयमनेवाका । -समनी-वि , की सुरा देने क्यमानेशकी । -बात-विश्वस्थी श्चपपूर्वक करका। यु आर्थरदावक पदार्थ। 🖃 🗕 वि॰ सुखका काता । -वर्मक-वि सुख्यामा सुख देनेशका। -तका-पु: [हि] अमरेका वह द्वत्रा विसे ब्रोके भरर रख्य है। -धरण-पु सुस्ररपक, प्रयक्ष स्थान । -इ-वि सुध देनेवाका आनंतदावक । विष्णुः एक पिष्वगां वह ताल (संगीत); विश्वास मिनास-स्थामः प्रद्यारीक्य यक वर्षे । —श्राति—दि॰ मरांसगीय। -इतियाँ०-वि सुदारायक। -ता-वि० स्ती सुख देनेवाको । की अप्युराः गगा नदीः दामी इका रक इस । −दाइत०~दि सी दे 'सुख वाविको'। -वाई-विश्वे 'सुकराया । -वासः-वि दे 'सुकराता । - स्ता(मृ)-वि सुरारावक, जार्गरदावसः। -दाम#-वि दुखराता। -दानी-वि [दि] सुख दैनेवाका । तरी एक बूच । - हाप

-(६के)गीहरः-मरेवारीव-शी॰ गीतिबाँको करो। मिस्प-पुरे 'शिख'। सिस-पु [भ] दे 'शिक' [म]। सिलकी-सी॰ [सं] शहबी, सर्कांका पेड । सिस्का-इ॰ क्टनीके बाद सेतमें गिरे इय दामे। श्राक भारतमें गिरा हुन। जब भोसानेके बाद समा हुना मूसे-का वह बंद मिलमें कुछ दाने भी हों। सिली-को॰ क्सारा कान्रि केन करनेका परकार † क्सड़ीका नद गोटा जीर कुछ संग्रह्मा विशे चीरफ़र तक्त भाषि निकावने हैं। परवरकी पटिवाः फटके बाने माने समाव वा मुसेका देर । सिक्ट-प्र [सं] यह संबद्धका शिकारस क्षा । -मृमिका-ना॰ सिकारस कृष । -सार-प्र॰ सिका-रम मामक गंबहरू । सिस्ट्रक-पु॰ [सं] सिलारस नामक गंबडम्ब। सिम्बकी-की॰ [सं॰] वह इस विसरे सिकारस विद बाता है है सिथ+-प्र• वे 'शिव'। -स्मिन-पु वे 'शिवकिय'। - किंगी-मी एक बता जिसके पत्र बीर पत्र दवाके काम असे है। सिवर्षे –सो माटेवा सैरेके सकाये इए कच्छे किन्हें बीम तकनेके बार पीमीके शाथ दुवमें एकाकर खाते हैं। सिवड-प [र्स•] श्राबीः श्रीमेवाका । सिवर-प्र [सं] वाणी । सिवस-प्र (पं॰) वस कपना शेक। सिचा-म [म•] अलावा भोत्यतः अतिरिकाः वि• श्रविकः वदा प्रमा । ह सी वार्वतीः श्रवाती । सियाड-मार्ग्ड सिना'। सिवाडां-वो रे 'सिवाई'। सिवान-इ सीमांत सरदर्ध गाँक्ये सीमावता गृपि । सिवाय-म दि है 'सिवा'। † व निवत वस्डोड़े क्रम्एकी माभदनी। सिवार-इ यह बढ़ाव शैवा धैवाछ। सिवाछ-त के हिवार'। सिवाक्य-प्र शिवाकन, शिवका मंदिर। सिवाकी-इ इस्टरंगका क्या । सिविश्-प दे 'विवि'। सिविकाण-सी वे शिविका। सिविरण-प वै शिविर'। विश्विक-वि [अं] जागरिक मुख्यी। सम्ब महा। ~ विस्रकोवीविध्य-१ छदिनव अवद्या । - मोसीवर कार-५ बाग्ततीयामी, न्यान विधान । -न्यार-५ गृहसुद्धा -सर्जन-दु क्लिका सबसे वहा सरकारी बारवर । -सर्विस-सी देश-धारतनसंबधी का । सिविधियम-इ [सं॰] शासन और प्रवंक विमाणका क्रमंत्रारी । सिवैयाँ-मी दे॰ 'सिनरैं"। मिप सिप्द•-तु दे 'शिष्द[†]। सिक्-नी सीको रोगे। वि हैं 'विह'। सिमा - प र किसा'- करनपंत्र क्यानको सिस वर्गी मिहोहा-पु पूरु, सेर्डेह ।

विरक्षव मैव²-रवनदजार: । सिसकना∽न कि॰ मीवर ही भीवर रोना शुक्रकर न रीमा। सिसकी भरमा। कस्त्री सींच क्रेमा। माहुक होगाः तरस्याः । सिसकारना−न कि॰ र्मुहरो सोटीको सी नामात्र सिका बना। श्रीस्कार करना । स कि (इसोंक्रे) अक्रमण ऋरनेके लिए शहाका देना, सहकारना : सिसकारी नहीं मुँहते निष्कों हुई सीटीकी सी मानावः कहकारनेकी जिलाह शीखार । सिसकी-सी सिसकीकी साधावः प्रीस्कार । सिसिझा-औ॰ [तं॰] विधनकी इच्छा । सिसिका-वि वि वि विचनका रूपका । सिसिसँव-चौ॰ महकोधी एवं, विमानैव । सिसिर•-प्र• दे 'धिष्ठर'। सिम् =- प्रदे 'शिस्त । -ता-सी॰ स्थान, श्रीवन । ~पाछ-प॰ दे॰ शिक्षपरू'। -भार-त दे पिना-बार । - • - चक- पु रे 'शिशुमार-पक्त'। मिसबा~थी॰ सि ोस्टि निर्माणके श्रूपन । सिस्छ-नि॰ सि॰ सिः निर्माण करमेखा श्पास्क वहानेका स्मारक । सिसीदिया-प धीरोर निवासी ग्रहकीत राजपूर्वीकी विशेष शासा (राषा क्रमा सीग्रा भवाष मादि शरिरास प्रक्रिक पुरुष इसी झालामें 🕊 वे) । सिस्टिंग-को दे 'सहि। सिस्म-प दे 'शिय'। सिस्प०-पु दे 'शिष'। सिद्वदा~प वीत्र सरदरीका मिरुन-१४७ । सिहपर्यं~ड [र्व] ब.इसा १ सिद्धप्ता~न कि क्रोंपनाः इंडसे क्रोंपनाः मनगीत होता, बदल जानाः रीमांच होता । सिहरा-इ दे हेहरा ! सिहरामा - स॰ कि॰ दैपानाः सरवीते वेपानाः भवनीत करनाः सहकाता । अ कि सहकाताः वै 'शिहकाता । सिद्दश्यम्, सिद्दक्षपय-पु॰ बाहा ४६। सिहरी-सी केंद्रकी ग्रीतमम संग मन रोमांचा व्याका नुसार । सिहकाना-मन् हि उँवा दोनाः सरदी सामा जेत पंचता । सिहसी-सी॰ श्रीतकी क्रा 1 सिद्यान-१० कीरमक मंदर । सिद्दाता == थ कि रेप्पी इसर बरना शक्यमा। दैसकर मसम दीमा। सन्य दोना । सन् कि ईप्नी था तम्बादी दक्षित्र देखना - चैद सदब मुरप्तिदि निहादी'-रामा । मर्छता करना । सिद्दारना == स दिवा। द्रेंबदर काना ! सिद्विक्या-न कि॰ गुलगा (यसन शारिका)। सिब्दिश-को सक्ति-की बेदि मीठि छिदिरि उत्तानी 1 op-सिक्षंत्र-प [सं] स्त्रवी सेद्रेंप।

-दायोर-वि दे भुक्ताता ३ -दायक्र-वि देश 'समराता'। -दायिमी-वि की सम देवेवानी। सा रोहिनी स्था । -बार्या(यिन्)-वि प्रस्त दमे-बारुरा। -दाबक-विक सुन्द देवेबाका। -दार्मा-पुदिक परिया वान । ⊷दुम्त्रा∽पु आराम और क्टा मानंद्र और फीम । -रडय-वि विश्ववर्धन । -सेनी -हैनी॰-विकी सुद्ध देनवादी। -टेन०-वि सुस दैनेवाचा । --होहा --होझा-कौ॰ वह धाव को बासानीसे दुरी वा सके। -धाम(त्)-प्र कुलका बर, हेर्ड हि [रि] शुद्धवावक सुबी। -पर-नि॰ चारामतकनः। —पाल्चमः विशे पित तरहसी शतको । =पप~दि रेनेमें वान्दरथक सामाम। -प्रयाद-वि॰ यहर सन्द स्थानका। -प्रतीस-वि॰ इसको पर्यक्ता काशा ऋरमेनाका । –प्रसासी-(पिन)-दि॰ सनका विरोधी । -प्रद-वि सन्तः म नरदायर । -प्रकीचक-विश्व सुरोद । -प्रकेप-वि॰ भारतानीने देरित दोनेवाला (वेमे वर) । -महन-इ. इ.स्ड-प्रश्न ! - प्रमाद - प्रसावन - प्रसावने दोन-वत्ता प्रमुव ! -प्रसुवा-वि» की आराज्ये विना करके तथा वनस्राको (सो. गण इ.)। -प्राप्त-विक सुनी आसारीमें मिना दुवा । -प्राच्य-विक कासानीमें प्राप्त दानेवाटा। -वंद्यन-दि दिसास-प्रिवा - बद्ध-वि प्रेवर F - वृद्धि-की सरक दाव। च्याच-प्र• सुचक्षी अनुकृतिः सरव दान । -श्रेष्ट-पु॰ "स्टेर मिर्च । "महिल्हाकार-पु॰ हरूपाई । -साव(ज्) -धार्गा(गिन्)-वि सबी सब भोगनेवीला । - सुक्(स्)-वि सुकी शामवाव । —मेश्र—वि॰ दिल्हा घरन नाठ शासनीमे दिया का सके। -भोग-५ तक बेरवा। -भागी (गिन्)-दि सुद्धारा मीग करनेशका। -सीम्ब-(१० विस्ता नामानीमें भीम किया का नहें (देने वन)। -भोजम-पुरु स्वर्धाः भोजनः "-मद्द-वि *कान*द हायक यह वालकता । -मार्ना(नित्र)-वि सुख मामनेशन्त्राः क्रिपी भीवमै तुम्र सम्यत्नेशकाः हर हालकः में हुद्ध माननेशकाः - मोश-की घटकी क्या -राम्रि-राविका-को किंदानीकी दाश सदागराश द्यांत और बार्सन्दायक राज । −राशि~नि को स्थानी रातिः भंदार है। –शस −शमी०–वि दे० 'नक राधि । - स्वरूप-दि की भागानीने नांचन हो नहे बरबाटा वा सदे। ~सम्म⊸िश वी आसामीने स्टि सोरा - क्रिया - न्यं हक्की श्वरा । - वद्य (स), -वर्षंद्र-प सुजीखार । -वड्र-वि कासुनीसे वहन बरने ने मा ∽बाइ~५ (दिश्लुच धरीरहस्र ही अञ्चलको सार्वकता ई-वद एउ । −बादी(दिव)− वि एक मठ**री** मामस्थाकाः –बाय-पु अप्रद बाबद स्थानः करवृत्र । -वासन-५ मुख्यसन। -विद्वार-द अप्यामधी किस्सी ! वि अप्यामसे क्रियो दिशनेरात्या -बद्व-९ इसकी बनुपृति। —स्वन-पु॰ अल्पामें रीमा : -शवित-वि -- दर । कररावने सेवा दुष्ण । ~शब्या~के अधानदेश वर्षण

मादिः कारामधी नीत । -शांति-मा वस कीर शींत सकर्वन । -शायी(पिन)-वि अलावन सेनवन्य । –श्रव –श्रास्य –श्रति-वि० वृतिहरू कार्मीको प्रिया ज्यानेवासी (व्यति वाक) र न्योरा-पुर एक मुख्य । -सर्गा(गिन्)-वि भूगमें बार्य च स्पर्ने वका। −स्रद्धाः ∸यदोद्धां−स्रो 🐉 'हरहोद्या'। -अवत -संपश्चि-मी सम अस् देवरं, दन दल्या छक और वन-संप्रतिः -सहिक्य-प प्रवण्या वा गरम पानी । -सागर-प्रश्न सक्दा सनदा एक देश को मागवतके बद्धम स्थंथका हिया सन्तराह है।-साधम-प सन्त प्राप्त करनेका कारेका। -साध्य-वि जी माशामीस ही या किया 'का शहू, शहूम' आहामीसे दर बीनेवाटा (रीग) । न्यार-पुनेखा । न्युप्ति-रु ~स्थाप−पंतकाधी भीत्र (−सेचक-प्रश्वकास) -सदा-वि सुसम् देश्य भीग दरमै शामा तुस्य। −सीमाग्य−९ सुन्द्र और शोमान्य सक्रमीय और धनवात। -सर्थ-वि क्रिका रार्ध सका हो। -स्ट्राइना-की सुर कीर कावाडी देखिए। -इस्त-दि॰ विसदा दाव हुस्तरम हो। ~का मीर्-बह और विसर्वे सक्क न एक काराज्यी गीर । सुध --इल्बा-बाराम पनाः । -प्रतमाना-भराम बरदाः। -आवना-विनी परिस्तितिये अप्तम यान्या । -सरमा-श्योपमीय करना *!* मुगक्य-विदे पूर्ण ।

सुन्तरा-का॰ सुन्तर्व−द्व [र्व] बारामः देश मार्गर सम्बद्ध ।

सुरक्त~प (स) शत यदन शतकात्र क्रिकेटा **की**ना क्षविता प्रधानना । -वी-नि दिशाननी रहायो इक्ट दर्गानेशहा !-वीमी~सी (एउम्पेरन रेंगरेज ! -सकिया-प वर स्था क्षारमंत्र या क्षारमय वी बार्षक दान दर निर्देश दोशा है और जिन कुछ कीय बाल्ली बारदा बारदी बोबमें, अस्पूर मानही बाउ हर सोच म महनेपर बहा बरत है (निंदा भाग है। निंदी शो' ३०) क्यपंत्र ।-शै-रि वर्ति सुबटा सुन्यका -शर्बा-को बरानशको शर**े । -परबर-**वि बस्ती बान्धा राजन दरनेवाना। -प्रकृम-विक हिंदियान्। काम्पर्राप्तकः १-क्ट्रमी-की हिंदियानी। हास्पर्वाहता । –श्रमास–दि॰ सम्बो दहत्व र्युवने-बत्ता ।-साम्रा-वि चात्र वस्त्र वरणा प्रेसराय । सम्बता≉∽व क्रिदे 'सूरुल ।

म्बर्गाच-दि [मृं०] बाधेरण्यक्र 1 भूकमन्द्र-के हे भूपमा । श्रामा-नी एड वर्ष्ट्रा ० देव स्तरमा । सुक्षिपिता(न)-वि [८] उत्तक बरनेवणा। सुव्यवंत॰-वि तुषी प्रश्वासुम्रदा सुन्वकृती-क" [5] हुद्र अविकासका स्वत् । विश् सीक

दे "तुन्द्रवाम्" १ मुलक्त'-पुर स्रायेडे विर क्रमें राजा हुवा क्रमारः गुरुनेन बोबबी ने पर्ने होनेसली बसी, येथी हिलाबर समाजके किए शाली बानेनाची रत है

1842 सिक्तर*-प दे 'विकाद' 1 सिद्ध सिद्धक-पु॰ [चं] दे 'सिक्द', सिक्दक'। सिक्की, सिक्की-की (से] दे । सिन्दकी । सींक-सी॰ मूँबकी आठिके एक तुशकी तीकी जिसकी बार बनाते हैं। दिसी पासका भेगा पतका टेंडका मार्की वहमनेकी कीछ । सीकर∽प सीस्कायुका। सर्विदा-पुषेद-पीयोक्षी पहत पतनी टहनी । दं धर्मिका । सींकिया-दि० सीकी-सा पतका । पु यक वारीवार करवा। -पहस्रवान-पु बहुत दुवका पतका भावनी को अपने मापकी बढ़ी समझे (व्यंख्य) I सीरा-प गाम के मेंसे मेहे दिश्म मादिके सिश्के बीलों और मिश्रमी हुई दुवी तुक्तेणी शाका बैसी जीव किससे वे इसर प्रानियोंपर भाषात करते हैं श्र व, विपाय: सीगका बना हुआ बाबा सीगी । सूरु -कटा या तुवा कर वधकीं सिक्षमा-पूढा वा वहा बमदा होकर मी वर्षोंके से काम करता, अमको सहयत करना।~निकलना~ (का) समझ आमा ।~पुँछ गिरा देना~श्रविदीन दन नाता !-सारधा -(सीमनाके पशुका) शीगसे मारना ! -समामा-स्थान मीका मिकना ठिकामा दि**वादे दे**मा (बड़ाँ सींग समाये वड़ाँ करे बाबो)। (मिरपर वा सिरमें)-होता-कार्र विशेषका कोर्र विशेष विश्व दौना (क्या वेबकूमा है छिरमें छीय बीडे हैं १) व सीराबा-प शांगका बना हुआ जीया जिसमें बास्य रकते 🕯 बास्टदानः श्रीगी । सीरामा-स कि सागढ़े वरिये भोरोके बहुदी पहचान सीतिरी−सी पक तरकक्षे कको। सींगी-को हिरमके सामका बना बना बाजाः स्राध्यक्तर शींग विसे छरोरपर बगावर कराव बून निकाबते हैं। यह दरहकी महको । मं -खगाना-सींग कगाकर रख चसना । सींच-की धीवनेको किया निवादै। सींचना-म कि पेड़ पौत्रोंकी पानी देना, सिंचाई नरनाः चर करनाः व्यक्ताः । सीबी - भी श्रीवनेका समय। सीर्वे सीर्व•-को शोमा **१**द । -मु•-कॉइना -श्वरमा-बीर जनस्वरती करता क्षत्र गर्हेचाका । मी-भ सिका सोसिय इत्र सदस सुमान। श्री पैक्सी वा आसंदकी अस्पंतिक अनुमृति होमें वा सरवी कगनेपर मेंदरे निवक्तैवाधी भावात्र शील्हार । सी आई॰ ही -५॰ [बे] क्रिशिवक इमनेरिट्यंशन जिपारंमेंर गुप्तवर-विमागः गुप्तवर (किं∗) राष्ट्रवा पश्चिम । सीड रू-पुरु दे शीत । सीक्षा-१ है सीतका। सीकर-पु. [सं] पानीका धीवा जरुक्या, शीकरा स्वेध विद्वा = मी = म सी चर स्वान कामका भोजन तलकी यदे वदार्थ --वीजका + स्त्री सिक्की जेजीर ।

सीवल-१ रे छेड्न, छिबनी। † शासका वृद्धा

ह्या जाम I सीकस*~५ छमर वंबर गृपि ! सीका-प सिरपर पहननेका सोनका यक गहना दे 'छीन्द्राः। सीकाक्षाई-की एक वृक्ष निस्त्री फिल्मीका शांग वाक मक्दे ने काम भावा है 1 सीकर†−प्र•दे 'धका सीक्रा∽को सिम्रावन दिक्षाः सकादः सु∙∽क्षेता∽ शिधा उन्हेश प्रदय करना । सीख्र−की [फा] कोहेकी सकास वा धव मिसपर करान भूनतं है। स्नाः छन्के भाकारको अक्षे विससे वीरिवॉका ग्रेंद वॉक्ते दें ।-बा-प छोटी होसा ।-पा-विक विक्रके पौधापर अपना बीनेबाका (धीका)। कवाब-वह कवाद को कीमंक्री पीछकर छीसपर बनावा वाव । अरु –पा होगा –वोकेटा सक्या होता, बहत माराच द्वीमा । सीलवर-पुर सिकादन शीका। सीसना-ध कि किसी निवनका बान माप्त करना फानाः किसी **इनर वा क्षणको किसा**नास करना अम्बास करना (सिठार सीधना): शिक्षा ध्रद्या करना अनुमन प्राप्त करना (बादमी कुछ सोकर सोसता ह)। सीक्षा-थदा−वि क्षित्रिय जानकारः चतुर । सीका सिकाया-वि शिक्षित इन्छकः किसी कवा या इनरका जानकार। सीशा−पु [म] साँचाः विमागः क्रियाका इत (काक, पुरुष प्रकोग भारिको यहिसे)। सीऑक्ट निकार । सीच॰ ~की डाक (१) ~'पट्टेचेंगे तब कईंग बड़ी देसको सीच : अवदी कहा सदायिये वेडी बावल बीच -साची । सीत−की दै 'सीप्त । श्रीक्रमा−क कि दे 'सीअवा' । सीक्ष-सी पीजन प्रश्लेश किया प्रश्ला । श्रीक्षता-अ कि आप और पानीकी महायहाते पहनाः पदकर तरम बोलाः पकना-'रविमन मोर प्र**वा**म मीबै पे शोरी नदीं - रदीमः जमदेका सिजाबसे जरम निक्रमा दोगाः पानाः इड पानाः उत्तरमा दरमाः इंद बालाः परेष निष्क्रमाः रिसनाः प्राप्तः कोनदीः स्थितिप्रे बीबा (शैरी व्याव कारि); क्षक्य भुवताया बाना । सीड-को [बं] बैडक वासनः एक वादमीके बैठनेको बयहा रेड कारी बादिमें बतना रशम को पक भारमीकी वैडनेके किय मिलता है। दिशे सुमा, मेंडक इत्वादिके सदरमका रभान (इरिजनीको मंद्रियंडलमें हो सीर्डे मिकी है); भीड़, टीन ।-पर्टोंग-श्री सॉन श्रह । सीटमा-म॰ कि चीर सेंद्रमा दीव मारना । सीडी-भी धोनों दोढोंको सिकं।इस्त्र गोवसे इस निका-कवेरी पेता चीनेवाकी धरीकी कानावा होता शावा विश्वे मैंडसे पुँक्तेसे इस तरहकी आवाज निक्रमती है। वाज र्वजन भारिते निक्का हुना सीटी दीस शब्द ।-बाज्र-सीटी बबानेशका । शु॰ ~हेमा-सीरी बजाना

सीटी पत्राकर कीई संबेध करना। रेलका शुक्रतेके पहले

र्वतमें रूपे द्वर वंत्रसे सीशिक्षी सी भाषाय निकासना ।

```
सुलवा*-दु सुखाः
सस्तवान्(वत्) -वि [रं ] स्वी ।
सस्तवार-विश् सुबी, प्रश्च ।
सुकात-वि [सं] विस्तवा अंत परिणाम सुदामय हो।
 गेत्रीपूर्वः सुसका नाथ इरनेवारः ।-साटक-पु॰ नाटक
 का पक प्रकार विसका केंद्र सुखमय दोता है, 'कामेडी' ।
स्वांत-प्र [सं•] रे 'सुससकित'।
संसा-सी [र्व ] वरवपुरी पुण्वः एक मूर्ण्यना (संगीत)ः
 शिवको नी स्रिक्टोंमेंसे एक ।
सम्बादर-पु [सं] यह कोक (वी)।
सुखागत-५ [सं•] स्वागत ।
                                                    स्वामी ।
सुकाजास-५ [सं] शिव।
सुकाधार-पु॰ [सं ] स्वर्ग । वि॰ सुख्का कावार, बासव
  रूप ।
सुकाना – सं कि॰ तरी। गीकायन दूर करनाः गीकी चीक
 को सुरु करना। श कि है 'स्क्रमा'।
सुकानुमव-५ [सं॰] सुबक्षे बनुसृति।
सुलाप-वि [सं ] सुस्पूर्वं प्राप्त ।
                                                   बी सके!
सुच्यापस-वि [सं] विसे सुख शास दो।
सुकायतः सुकायन-पु [सं•] बासानीसे कार्ये वाने
  बाका सिकामा सवादा हुआ बीहा।
मुकारा मुकारी÷-वि॰ मुबी, मुसमद।
 सुद्धार्थी(चिन्)-वि [तं] सुख पाइमेदाका।
 सत्ताका#-वि साधवदावक।
 सुचासुका-सी [मं ] श्रीवंडीका एक मकार ।
 सुन्नाकोक-वि [सं] सुंदर, मनोदर ।
 सम्बाबती-को [सं] बौद नागममें माना हुवा पढ
  स्वर्गं।--वैच--प्रश्नमितामः।
 सुद्राचतीस्थर-५ [सं] एक नुब्ध अभिवास ।
 मुलाबह-वि [सं] प्रसम्बन्धः स्ट्रारः।
 सकावा-प [सं] स्वादिष्ठ मोजनः वस्य- तर्वृत्र ।
 सुकाशक-५ [सं] तरदूत।
  प्रकाशा-की [सं] दुस्की समीद।
  सकाभय-वि वि वि प्रदार
  सम्बासन्द्र-वि [सं] सुधार्ने कीन । प्र विव ।
  सर्गासव-द [सं ] सुबद भारत वह नासन विसपर
   नैक्रमेर्स बाराम मिकेः प्रधासनः पाबकी ।
  ससामिका-सी [मं॰] भाराम चैन-स्वारम्ब ।
  सुकासीन-वि [सं ] सुत्तरे वैदा हवा।
  स्थिमा - विदेशिया।
  सुचित्र-पु[सं] वानेऽ, सूजा वि०≉ सुवी प्रमुख
    क्रिया हुआ। स्ट्रा हुआ शुम्ह ।
  मुखिवा-को सुकित्व-५ [सं] रै 'सुसवा'।
  मुख्यिया-विदे 'सुबी ।
  सुविरश-पु सॉपका विक ।
  सुन्नी(दिवन)-वि [हं ] सुक्युक, जिसे सुख प्राप्त
    री जिसकी किरमी कारामसे कर रही दी। प्रस्ता जिमे
    साने पीने क्पवे-देशेका सुख प्राप्त की सुप्रकात । पु
    वित ।
   मुक्तीनां – पुषक्ष विदिया।
```

सल्लान-प्रमि] दे 'सलन'। संस्तेतर~प्र• [सं] वह की सुबसे निष हो, रुह । वि• बो स्थान को भागकीन। प्रस्रेन~+पु• 'सुगव'। स [सं] सुस्रपूर्वक। सुद्धेष्ट-पु [सं] शिवा सुक्षीधस-वि [सं] सुक्षमें पका हुआ। मुक्तेना*−वि सुसराथी। सुसीपी(पिन)-वि [सं०] सुस पाइनेवाका । _ सकोचित-वि सि॰] ससका नादी । सुद्रोत्मव~पु• [सं] भानेदोत्सद, स्त्राद-वशादा पति, सुकोद्क-पु• [सं] दे• 'सुत्त-सक्रिक'। सुकोव्य−ु (सं•) सुबका स्टब्स सुकपातिः एक मारक पंपा वर्ष(भूदाह)विश्वेष । वि विस्ता परिणाम सुबार हो। सकोव्कं-वि [र्थं] विसका परिणाम सुबद हो। सुबोच-दि [सं॰] विस्का स्वारण भारानीसे, सुबसे सुकोपाय-पु [सं] सरक सावन । वि॰ सुक्रम । मुकोर्बिक−५ (रं•) सम्बद्धार। सुम्बोध्य-वि (ए॰) क्ष्मकुना । तु कुमकुना वह । सदस्य-पुसुखा सक्य-वि (सं) स्य-संस्थाः सुनवात-दि॰ [र्ड] सुपश्चिद्ध । सुक्याति - सी [d] मिसक, नामवरी। सुर्गध-दि (र्ध॰) सुछब्दार, श्रंदर वंदवाका । स्त्री॰ अच्छी गंब शुरास **सु**द्धशू । शु तुंदुदा एक पर्नता व्यापारी बनिद्धा नीक कमका नेवना प्रशिवर्णा करत्या पत्रांगा गंपत्या हाइ बोरका चना। मृत्या गंपगेकुका राका काक सहिवता पासमधी चावता करीका यह कीवा; यक तीर्व ! -केसर-प्र काक शहिनम ! ~कोकिका-ची एक नंतरमा । -गोधक~ प्र गंदक । −र्गधा⊸को॰ दारहरिहा । −राज∽पु॰ कपुर, करत्री जगर शादि सुगंबित इन्बॉका गय या वर्ग। --चौही-चौ॰ गंपपकादी । --तूल-पुरुशा वास । -तैसनियाँस-पु अवादि नामक गंगहरूमा - त्रय-पु चंदन दका और नागदेसर। - त्रिफसा-की बावप्रक कीन और इक्तपनी। ~शकुमी-सी। शासाका एक अंद । -पन्ना-सी व्यवसाः शतासीः बृहतीः हार दुरासमाः अपराजिताः वकाः विचारा। ~पद्मी-स्रो वादित्री। स्टब्स । --प्रियंगु-स्रो० संद-वियंगुः --प्रस्त-पु युद्धीकः । --वाका-सी० एउ सुयबंधक बनीवनि जो बन्द वानिसार, रक्तनिसार आदि की दवा है।-मृत्य~पुरुमा वास गंवतून।-मुख-तु यक वीविसस्य । - सुक्या-त्री । करपूरी । - सूत्र-पतम-पु भुरक्षिकानः -मृस्ट-पु सम्बो प्रका −मृद्धा—सी रथण्डमका रास्ता। धौबका। अपूरकचरी। इरफोरेकी। -मृत्री-भी कपूरककरी। -मृतिका-की छहेंदर ।-शेदिय-पुरोदित दग। -बल्हस-इ.स.चीनी ।-बेर्जाल-इ.सेस्ट्रिया-साहि-

सीठ-स्रो॰ है॰ सोठी । सीठमा । प्याद भादिमें सिवी शारा गावा वानेवाका भक्कोछ गीत, गाखी।

सीठमी !~ सो॰ दे॰ 'सीठना'।

सीटा-वि कीका वेमवा ! -एन-पु नीरसदा, प्रीका-पम नेमजा होना । सीटी∽सी रस वृक्ष या निशाक किये अतिपर वचा हुमा फोड वा कुत्रका सारश्रक वस्तु । वि॰ ब्ही

दे 'शीठा।

सीद-सो दे 'संस्क'। सीड़ी-कौ॰ कैंचे स्थानपर पर्नेचनेके किए बना हुआ बद्दरी, प्रत्यर, लीहे आदिके दर्शी या पानीका सिक्सिका भीना निसेनी। क्वति-क्रम । -का कहा-स्वाही या वॉसको सीनिका हर एक पावा छोपान । अ० न्सीकी च्छना∸क्रमद्याकदर ठठना पञ्चति करना। सीत#-पु॰ दे॰ 'बीत । -कर-पु॰ बंदमा। -एकड्-प्र शांविवीकी होनेवाका एक श्रीतवन्य रीज ।

सीतस्य-वि दे 'शीतक'।-चीनी-बो॰ दे 'शीतक-चीनो⁷!-पाटी-स्री यक तरहकी चटाई को बहत मंदिना भीर निकनी होतो है। यक तरहका कारीनार कपना। -बुक्ती-औ॰ सच्।

सीतका~सी॰ दे॰ होतला'।~साई~मा शोतकहेंदी। -मेंडचगा-वि क्रिक्ते मेंडपर चंचरके दाग दी ने बदर ।-का खाशा-दभ-शता तथा (जिसके ने बस की विक दोनेका पहले नहुत कर रहता का)।

सीता-सी मि इन्हे प्राप्त परतीमें नतनेवाको रेखा कैंदा बोटी हुई बमोना कदिवनी फाका क्रक्सि मनिष्ठात्री देवी; शीरकात्र कनकां क्रम्या जी रामको स्यादी गरी। स्वयनाकी सार बाराजीमेंछे यकः कमाः क्शमीः सदिराः बस्त्रो पीषाः कलालगावणाः एक इत्तः सीवाष्ट्रम् दारा रक्त्र नवा निरेदकी वक्त नदी (वै)। -कुंड∽पु मध्युवली पहामे(विध्याचनपर)का दक शरना विस्ता वर्ष बारीमक्ट माना जाता है दिस नामके सरने कीर कुंड हुँमेर मायकपुरः चंपारम आदिमें मी है)। -शोसा(क्)-इ जुडाईसे रहा करनेवाका। -कामि -मामा-पति-पुरामका । -अस्म-पु सेशांके श्रीबार ! ~धर-प्र वक्रशम ! नवस्तीमत-प्र जलविशेव । -फक्ष-पु शरीकाः कृत्वका । -यक्य- अक्षांकि नवसरवर किया कामेशका वड । -१सण-प रामबंद । -स्वन -रीनक-नु देव 'सीतलमन'। -बीप्र -सोध-पु अते हर रोतका देशा। -बर-पु प्रवास और विश्वकृतके बीच यक स्थान कहीं वरवृद्धके बोचे शास समयात्रामें ठडरे थे। ∽जन∽तु यक धीर्थ रमास । -बर -बलभ-५ रामचंद्र ! -सती-की॰ सीता बेमी सती । -स्वयवर-पु धीताका स्वयंदर चतुन्दश्च । —हुरण −पु सीताका राजन हारा अक्टरन । सीतारपय-प्र [तृं•] कृषि संबंधी ब्राहमाना किसामपर होनेवामा ऋरमाना (को)।

सीताध्यक्त-पु [तं] राजाकी शीरका मध्य करमेवाका

क्रमेशस ।

सीताहार-पु॰ [सं] एक पीवा। सीतीनक, सीसीसक-त [सं] मटरा दात । सीतोदा-सी॰ (सं॰) विदेशको एक नदी (वै)। सीव्यर-पु, सीकृति-छो [एं॰] 'सीसी'श्रे प्रतिः सिसकी । सीरय-वि॰ [सं॰] जुड़ा हुआ (सेंद)। पु वास्व, वास । सीधक-प्र जिन्द भारत, एके हुए चारकका दाना । सीविव-पुदे 'सीव'। सीद~पु[सं•] ६ 'बुनोर'। सीवना≠−म क्रि॰ क्रम् पाता । सीदी-प्र• सीदियाका रहमेवाका छह । सीच-प्र• [सं•] शास्त्र, मुखी। सीघ-सा धीषा दोनेका भाष, होद सामनंदी रिसा क्र<u>त्रु</u>काः विद्याना शिस्त । सु०—वॉधना-मित्रामा बॉबना। बागबेस बासमा । - में - टीब मामने । सीधा-प्र योजनको व्यक्तिक कृष्टी सामग्री (बारक बाम नारा मादि) को किरोको प्रवाहर बानेके किर वा दानकार्में ही बाद। विश्वो धीव सामनेकी बीर हा किसी एक की दियाने गया हो। जिसमें देशपन का बयाव न दी शरक, कहा खगा वो सरीर परादी, बरहा ब हो। यक्षाः क्रिसमें पेंड अवद्यः, यनकट सादि न हो। भोका बाकाः दिशा इन्द्र-पंत्रेद्धाः सकाः शाफः दिशा वॅच-वॅचका (श्रीका स्थाप), बाशाम (काम); वो करहा: अरकदान का (केंद्र, पीड़ा) नम विशेषा दादिया (शिया दाव)। व अन्त शामनेः निवा सुद्रेः विमा भीर करो गर्ने वा रखे (छोवा बरका दारता किया)। ~उच्छा-म **६ '**क्करासीय। ! - दिम-पु॰ अन्त्रा दिन द्वदिन । −पन-प्र• दिवार्दः मोकायन । −सादा -सामा-वि भौला-याक्र धरकलमाव। +तीर-सा-व विक्कम सीवा, देख सामने (सोवा सीर-सा नवा)। मुण-आचा-सामनेसे भागा सामग्र करमा शिक्ना (रिक्को) । --करणा-चलतः हारिकता पेंड नदश्कर करना धीशी राष्ट्रपर काला: डॉक-शेरकर टीक करना: निशामा बाँधनेके किए श्रीट मंद्रको छ६वके साममे करता । -बबतमें बाबा-दिना शब्दशमदा दिवार इए दीवे स्वर्ग जाना। -क्षोमा-छेवा क्षेत्रा माना, के करिक्ता आदि इर होगाः भागाता होना। मेहर वाम श्रोना । सीबी-वि सी है 'सीवा । -माँग्र-को राहमी अस्ति। कुपारकि । -शरह-म मक्रममधीसे विवारिते ।

-वजर -नियाह-को इपार्टी, प्रमुवतास्पद रहि। ⊶बात-सौ सुकी साफ बात भारतानीसे समधरी बामवानी बात । -बाह-की॰ भकारका रास्ता, छत्त्व । -सकीर-को शरक रेया। मु॰-र्टेंगहिनों थी नहीं निकसता—घरमीसे काम मही चनता। **−**सुमाना~ रारी-करी बहुना। लुकी शास्त्रियों देना । सीत-पु [मं] मधा देखके प्रश्ने हुए रस्ते स्वाकी हुए

सराना (का) अनुत । -शेष-पु मीकसिरो । -प-विक स्थप । -पर्की-को शेवारी । -पान-बु स्प वान । -पुष्प-कर्षकः भीकतिरो । -पुष्पी-स्री वर

प्र गासमती भागल ! -धटक-प्र भागपक, स्रोतक चीनी, कींग दकावयी, कपूर और सुपारी-दन छ सुने विव इच्योंका धनाहार !~सार-प्र+ सावीनका पेड़ ! सर्गपक-प॰ सि॰] साठी जावका भारंगीः काक तससी। र्गमकः नागर मकः कर्कोरकः वरणीयरः होजपुष्पी । सर्गधन-५० (६०) मोरा ।

मुर्गघरा~षु एक कुछ । सर्गया-लो॰ [सं॰] रास्याः कपूरकचरीः कालताः पीकी

बही प्रवसी। सर्व्या शाफा स्वाब औरा। बहुबी। बेप्बा कर्कोरकीः जनमहिन्ता माणनीः रन्पेमुनिकाः माकुकीः रप्रकाः मंत्रकोकिताः धक्यातकः गंगापत्रीः विश्रीरा गीवः

वासमधी

वर्गतम्बा मीक सिंबवारः सेवती । सुर्यभाष्ट्रा--(वे० [सं०] किसुर्गे काष्ट्रो धुर्गव हो । सर्गपाक्या-को० (ते॰) विश्वस्मितिकाः

STREET 1

सुर्गघार−९० [सं•] धिव । सुर्वाचि-वि [सं] श्रेष्टर गंधवाकाः श्रश्चकृतारः पुण्यासमा वर्मपराज्ञन । स्त्री • कन्स्री योग स्रवास । पु • परमारमार पक तरहका जामा सिंहा करोका चंदना प्रकाशका गंधरानः किमकोसकः वतियाः गोधा । -- अस्तरः-५० सुधन्तार फुकः पात करकार । - असुमा -की एका ! —क्रव−त विभारतः। –केजन–त रोदिव दल। —विकसा−सो० मायपक, सवारी और कीम्बर समा-दार ।-पुष्प-पु असुद्दार जुन्न बेनिकरंग !-फक-पु॰ श्रीतकपीमा । "माता(त) - को पूजा । "मुस्तक" प्रश्न तरहका मीथा । —सूत्रपतक्ष—प्र मंत्रगर्थार । -मुक-प् मुकी, उद्योर । -मृपिका-सी॰ छाँदर ।

मोबाः महासाहि, वासमदी खावकः गेवकः पुत्रायः इत्य भीरका दक्षमाञ्चक्त गीरसम्बन्धः श्वरपर्णः शिकारसः कवित्वः सिंहा हवेत पथ । सर्राधिका-को [सं] करत्रीः वनकाः श्रेष सारिवा ।

सर्गधित-वि [र्व] द्वर्गवञ्चक सम्बद्धार । सर्गिकत-की [एं॰] शीरम सुध्यू। कुर्गिकिन्? –को (र्च•) कारामग्रीतका शकः पीली :

केवकी ।

सर्गधी(भिन्)-वि [सं] सर्गव्युक्त, सुधवन्तर। प्र হক্তৰাজৰ ।

मुश-वि [सं] संदर गरिवाका सुगावका सुगम शुक्रमः सरीय । पु विकास समार्थ । सुराठम⇔को संदर मञ्च, गहनः भंगरीधव। सगदित-वि पुंदर गरून गण्यवाका बसा इका। शंग

सीप्रवृत्त्व । सुगणक-वि [सं] सन्ता क्वोतिनी ।

भुगवा-सौ [तं•] स्टेरको यक माएका। सुराष्ट्र-वि [सं•] जन्छा गणक, दिसारी। श्री आसामीसे पिनां नाषा

सुरात-वि॰ [सं॰] धर्मतिमासः संबर गति या जाकवाकाः सरकः भासान-भेरे आध जकाको निवारिको शुगत है'-वेनो । प्रजुक्त ध्यवाका वीका ≔दासन-प्र

गौकसिकांत । सुगतायंत्रम, सुगतासय-५ [तं•] ग्रीहर्मीस्ट ग्रीह

मिहार ! सुगति~की॰ [र्स॰] सप्रति। कम्मानः सुका सुरक्षित आअवस्थामा एक पूछ । विश् श्रुप्रसति वा रिवरिवासा

(बेरी दारा) । प्र॰ क्यू वर्णत् । सुगमार्ग –पु॰ शोताः संदिक्त । सगमस्ति-वि [र्व] बीविमान्। इषक दार्थनाका (शका) ।

प्रायम-वि॰ (एँ॰) सहजर्मे जान वा पाने जोम्बः बाह्यज्ञ मुनीवा! प्रदश्चकात्र । सगमता न्या॰ (ई॰) श्रुगम बीमा, अमानी ।

सगम्य~वि• वि वि 'सगम'। सगर-प्र• [सं] सिंदर । • वि सहस्य सबर। बतुर ! सुगर्मक~त [प्रे] प्रोतः।

सुगस्र४-५ सुमीर । सरगद्दन-वि सि विश्वति कता, निवित्र । श्चग्रहणा-स्रो (सं॰) वहरवानको अल्प्रवादिकी भवरते वचामेके किए खड़ी को नयी बाद वा पैरा ।

श्रवहणावृत्ति~खी॰ [तं॰] दे॰ 'सगदना'। श्चगाच−पि॰ [सं∘] फिलको बाद सदममें मिक स्के कम गहरा, अगायका प्रकटा। वी आसामीसे पार किया का सके ।

सगामाञ्ज्य के इ.स. होता दिल होता। स॰ कि॰ श्चन करमा । श्चगीतः – प्र दे॰ 'श्चगीतिकाः [शं•] संदरग्रव । वि• बच्छी तरह गावा हथा।

श्रमीति−ता (सं•) अच्छा मानः आर्था धेरका एक नेर ! सर्राधिक~दि (सं∘) द्वर्गपहका उ राक्षः उच्चरम्कः सगीविका-की [चं] एक प्रच । श्रामीय-३ [सं] एक मानि ।

सर्गहा-सा (सं॰) समपत्री । धागुस-वि+ (चे+) अन्यक्षे तरह द्विपाचा क्रमा को बहुत ग्राप्त एका गया थी। -भोश-दि बरके वरहर्गीकी अच्छी देराबाक करनेवाला । —सेख-प्र• अत्यंत ग्रह पनः देशे अक्षरी ना विश्वीमें किया हवा पन जिस गरी-

बा≹के दिवा और कीई न तमञ्ज सके। म्पुसा-सी (धं॰) देवाँच १ संगुरा-वि क्रिस्टा ग्रुव अच्छा ही।

मुगुद्ध-वि [ति•] सन्ध्य । संयह-इ (ते) शेन्ट युवा बना बदी।

भग्रही-सी [सं•] मतुर बाविदा यह एसी। सुराही(हिन्)-वि [ते] संबद बरवाला संदर बीक

वाका 1 सगृष्टीत~वि [सं] अच्छी तरह प्रका द्वमा अस्मी तरह समहा हुना। मानःस्वरनीव । -नामा(मम्)-वि जिल्ला लाज सवेरे बन्धालको कामनाने किया जाव

प्रातःस्मर्जीव । मुशेष्णा-सा॰ (रं॰) निवारी ।

सुरीवार-की कीना।

सुगीतम-पु [शे॰] गीवम इस ।

इध, शतको । -रस-पु॰ जामका पैशः । -शुधी-पु॰ यहर, रतुहो । -संश-पु सीलसिरो ।

स्रीचे-नः श्रीद सामने, विना शुक्तेमुक्षः विना जीर करीं गर्ने पा रुकेः सिवारंसे। नरमी भवननसीसे ! नर्गुंद्-श शिवता, मक्तनसीसे (सीवेगुंद् बात न करना) ! --से--भवननसीसे, सिवारंसे !

सीध-प॰ [थे॰] प्रशा मक्दार ।

सीन-पु चि] दरन नदस्तरः। नाटकता कोई पर्याः नार्माकः। नाटक या कहानीमें वर्षित परनामोके पटित होनेका स्थान परनास्थकः। नहींबरी-की रंग मंक्की सकारटका सामानः।

सीनरी-बी [श•] स्वामविश्वेवके प्राकृतिक व्यवः रंग-

संचकी समान्यका सामान ।

सीमा-ध कि ध्रै वा ध्एते किमे हुए क्रेबोंसे लागा विकासकर कपने, बार, धमने आदिके हुकारोंको ओवना बाँका मारता, सिकार्ष करना । -पिरोना-ध कि॰ सिकार्र-सुनार्वका काम करना । पु॰ सिकार्यका काम ।

सीमा-त [फा] छाती । ⊶चाक-वि अञ्जहरव किद्र : – हास – वि छाती धेटलेवाका । – क्रामी – की छाती पैरना । –कोर−विका, वदस्वस्त । –कोरी− स्रो बनरदस्ती भीगा-भीगी। ~शोब−५ कस्तीका एक वेंच । -- बंद-पु भैगिकाः वीक्रेकी पेटी को संगक्ति क्ष्यर कमी जाती है। वह क्षयका की नवींकी छातीपर इस्रक्रिय गाँव देते हैं कि राष्ट्र ट्यक्नेसे और अपने खरान मधी। वर्षशर फत्रही वर वास्त्रद्र ! - वसीमा-वि (विद्या संद्र ह) को गायले बेटे. गुरुसे शिष्त्रको गीडी दर देवी ग्राप्त करवे सिक्का आजा हो । ज कला कम या रीविसे: भुकानकैमें सामने। –साक्र-नि साक दिक्का, करा !: ~सिपर~वि हुक्में कटा रहनेवाका ! (स॰- रहमा:- होना-बत्तरेको बगवर्ग टकर बादा रहमा। भारती आपार्वीको छातापर केमा ।) -सियाह -वि स्रोटे दिक्का, विवाहदिल । -(वे)का अभार-श्चातियों या स्तमका यगर जाता। **ंकी** तैयारी = ष्ठावीका मराव, रावीवर काफी गांछ द्दीना। *सुव*न पर शब्द खाना-पैनधीके इस्केटी गरम करके छातीकी दागना। −पर पत्थर रक्षमा−दे 'छाती के शाव। ~पर साँप कोरबा~र 'क्राती के साथ। ~पर हाथ मारमा-छाती पीटना । -में ब्रगष्ट देमा-पार करमा। सन्मान करना। −में भारत समाना-बॉक्श वंद दोमा अधि मिलता।

सीपियर-वि [वं] यस या परमें वक्षा, 'ब्रुविवर'का षक्या।

चकराः सीनी−सी [का•] सीने, पोतक वा किसी और पातुकाः - थालीसी पानकका नवा नरतमः।

सीनेर-को [सं॰] दे 'सिनेर'।

सीप-पु सी॰ टोच पीपे मानिकी बातिका वक बावपर प्राप्त शिक्का घरीर कियोद्धमा बीवरे खोजके सीतर दिया दोवा है और किस्के समुद्रमें गाने बातेवाले पेरले भेरर मेती पेरा दोता है द्वादित वस बोटेका किसी मुगा कम बीठ सिस्के स्वया मादिवगारी है और सिस्का मस्य दबाके काम जाता है। -जरू,-सुत्त -पु मोती। सीप-[र्थ-] तर्पण जातिये व्यवहत्त अंतोतरा जक्यात्र। सीपति -पु है 'शीपति। सीपर -जी है 'सिपर'।

सीपारा-यु [का॰] पुरामके तीध मार्गीमेंसे एक।

सीपिका - पुरु मोती। सीपी - को है 'शीप'। सुरु - सा सुँद मिकक सामा- दवन। दुवना हो जाना कि पेदरेकी हर्जुनी (मिका बार्स)। सी-सी-का साम्स सी-साम्स

सीबी॰ – सी॰ 'ची-ची'का खण्द, चीत्कार। सीमील – पु [चे] सिरमें निकादी हुई माँगा इट, चीमा-रेखा। धीमेठीखनन सेस्कारा इश्विबोक्ता कोड, जस्ति-चंबार। – करण – पु॰ माँग काइना। – माजि –पु॰ चवामि।

्र्वास्तार । सीमवर्ष-पु॰ वि] मॉग कादमाः सिंद्राः रंगुरा नरका बासा धाव मर्कोर्वेसे प्रका अविपति (से)। कास रत्मका पक्ष मेद्र ।

सीमंतिष्ठ-वि [स्॰] विसके गाँग निकाकी गनी हो ।

सीमंतिनी-की [सं•] नाएँ।

सीमीतोस्वयम पु [सं] दिवाँचे किए विदेश सारव संस्कारीमेंसे एक, जो गर्मगतीको सर्मक चीने, छठे या जाठने महीने करना दोता है।

सीम-की [का] जोती ! -कंदाम -तम-वि गोरा-पिछा क्षेत्र ! -कस-य शासकः भोर ! -गर-य छुनार ! -गूँ-वि जोती हो जोता ! -गर-सीसक-की वे 'शीमा'। युक्काँदुना,-जरना-वे 'शीं' के शाम ! -क्युंपा-वद दवाना क्लोके

इत्में पुलकर क्लको समीनपर कम्बा करता। सीमक-पु (सं) सीमा।

सीमाहर - पु है। स्व धीमाः विकास विमासनी सिमाहर - वि वि व्य धीमाः विकास विकास विकास विकास क्षामाः व्याप्त से सीमास्य क्षामेयः की व्यविकास क्षाम्य क्षाम क्षाम्य क्षाम क्ष

सीमा-की छिन्। दवा सिवानाः देव पाँव कारिक्षे सीमाप्यका नौर पा पैनः सीमाप्रिक्षः बौधः किरासः वृद्धः विविद्यः बौधः भिर्मार्विकः वौद्धः निर्मार्विकः विविद्यः बौधः भिर्मार्विकः । -क्यक्रियु नौरकी सीमाप्यः सेत्री वरनेवालाः । -क्यक्रियु नौरकी सीमाप्यः सेत्री वरनेवालाः । -क्यक्रियु सीमाप्रविक्षः विव्यत्य व्यवद्यातः । निरित्यः
यु सीमाप्रविक्षः विद्याः । -विव्यत्य-यु प्रवद्यतः वाराः सीमान्ताः नवालः । -पाक्ष-यु सीमाक्षः रदाः करतेवाकः । -वेव-यु जावदर्यालः । व्यव्य-विक्रियः सीमा वौद्याः भिर्मा वेद्याः । सिमान्ययः सीमार्थिकः सीमार्थेकः सी

मुमार्ग -पु• ६० 'सुक'। -पंकी-पु एक तरस्का वान । -सॉप-पु॰ सॉपडा एक शेव । मुर्पयि - वि [सं] सुंदर गाँठीवाला । पु चोरक मासक र्शवहरूका पिप्पतीमुख । सम्रह-वि [सं•] वहिया मुख्याकाः सुख्याः सुवीव । पु भक्ता ग्रह। सुग्रीय-पु [सं] किस्थिताका नामर राजा जी नाकिका द्योटा गार्र वा और बिमने राक्यसे अवनेमें अपनी सेना सहित रामको सहायता की। विश्व वा कृष्यके बार बोडी मेंसे एक। इंसा किन इंदा वर्तमान अनस्पिणोके नर्ने बर्दत्के पिताः शेरः ककाश्चयः एक पर्वतः पाताकका एक नागः यह प्रकारका संबद्ध एक श्रकः श्रेकः श्रुम-निर्श्यका इत की मामतीके पास व्याहका स्टिसा अकर गवा था। वि क्षेत्रर गरबनवाका। सुग्रीबा−स्रो [से] एक अप्सरा। सुप्रीवरमञ्ज-पुरु [मं] वाकि । समीधी-को [सं] रक्षको एक कम्या और करवरकी स्रो किस्से बोडों केंद्रों बादिको स्त्रपति हुई। सुप्रीवेश-प् [सं] रामचंद्र । धुरक्र−दि॰ [सं] बहुत बक्रा हुना। सुमर-वि [सं] सुबद सुदीका सुषदित-वि [सं] किसका बीक वनावड गठम सुंदर हो सहीक सबोबित ! सुमहित-वि [सं] दशकर या गीरकर भूव औरसः समतक किया हमा । सुधव-नि विश्वको बनावट शुंग्र को सुबीका किसी कार्वमें कुशक चतुर हुनरमंत् । –शा–सी । –पन– प्र संदरताः क्षयमना । सम्बद्धे-सी॰ सम्बदन संदरताः नियुगता । सुधकाई-को , सुबकाया-त अवक्पन सुररवाः कुशक्या दर । .सम्बद्धी-लो अच्छी शुप्त नही। श्चार-वि रे 'गुवर । -ता-को , -पम-पु रे 'सप्रधमन । सघरई-स्रो स्वद्यमः सुमराई-को दे 'सन्दर्ध । -कान्ह्दा-पु यक राग। - धोबी - श्री एव राविमी। मुघरी+-को दे 'सुनको'। वि सी दे सुवक्'। सुषीप-पु [सं] मपुर ध्वति। मकुक्का छोद्या यक तुक्का वि विसकी भावान मीठी की कैंची भावान करनेवांका। सुघोषक-९ [सं] एक वाच (संगोत)। सुर्वश्चका-सी [सं] महापेतु नामक साक्र । सुचेदम-पु [सं•] वक्षम रक्षमार । सर्वत्र-प (र्व॰) यक दश्याकुर्वदीय राजाः एक देव नेथर्व। एक वानिसरव । सुर्चेद्वा-स्री [मं] समधिका रक प्रकार । सुबद-वि दे 'श्रवि । सुचम्र(स्)-वि [सं] संदर ऑसोवासा (दिव्य)।

पेका इक्सिमान न्यक्ति।

**--

भ्राचना*-स॰ कि अीक्ना, संचय करमा-'कार रदीम परकान दिश संपति सन्दि सनान'-एरीम। सम्बरित-वि [र्थ] एतम रूपमें फिना हुनाः स्टा बारी । यु. सदाचारा बच्छा पाष्ट्रबसना ग्रम । सुचरिता-स्रो [सं॰] परित्रता स्रो । सुवरिष्ठ-वि [सं] सवाचारी नेक्चकन । पु॰ सदाधार । सुचरिका-की [ti] परिजवा खो; पश्चिमा ! सुधर्मा (मैन्)-प [सं] भीवपव । वि संदर वश्यक ना पर्मनाका । सुचा≉ – स्रो द्यान, चेतवाः विभार । वि निर्मेस (१) । चुचामा-स कि सोवनेको किया बूसरेसे कराना। ध्वान भाक्ट करमाः वितानाः, समझानाः। सचार+-सी दे 'धुनाक । वि दे 'धुनाक'। सुचारा-को [सं] धरफस्यको एक कन्ना। सुचाद−दि [सं] अति चाक्त सुंदर मनोदर। प्र र्वतमणीसे करपक कृष्णका थक पुत्र । **−व्**दामा−सी संदर दाँगोंगाधी सी ! - क्य-वि संदर दमनाका। -स्वन-विश् शंदर स्वरवाका ! -क्यमें शंदर रोतिसे । भूचास-सी बच्छी चाह सराचार 'तुचारु'क्षा प्रस्या । सुचाकी−वि भच्छे वाक-वसनवाता, नेकवकत । <u>भ</u>ुकाष-५ सुनानाः ध्वनाः सुझार । झर्चितन-तु [सं] बंभीर चिंतन नहरा स्रोच-निवार । सुर्वितित-वि॰ [र्ध] सकी भौति सीका विकास हुआ। सुर्वितिसार्वे पु [सं] मारका व्यक्त प्रवा (मी)। सुविक-वि दें "सुवि"। सी वहाँ। -क्सी-वि दे श्चिकमाँ'। −मंत−दि सुद्ध व्यावरणवाका, पावः-साफ । मुचित−वि दे 'सुविच । सुचित्रई-सी सुचित्रता। सुविती+−वि• 🕴 शुवित्तं । स्थित-वि [सं] रिवरिक्त वितामिक्ता वन्ते-पैतेहे सुश्री संपन्न । सुचित्तता-क्षी [सं] सुचित होना स्तमीनान निबिखवा । सुचित्र-वि [मै] विभिन्न प्रकारकाः विभिन्न रंगीका । पु पक्त गाग । - शीजा - सी पानविदेश । शुक्तिग्रक−वि [सं] विविश्व रंगीवानः। पु सुर्गावीः चीवक साँपा ए**क अ**सुर । सुविद्या-सी [सं] विभिन्न पूर मामको करुको। सुविर-नि [सं] पुरावाः निरस्तायो । प्र वीवैदासः । श्चिराषु(स्)-प्र [सं] देवतः। सुची • – स्रो है 'छवी'। सुचीरा−सी [सं•] ६० 'श्वचारा । सुचुकिका-सी [सं] श्मती। भुजुटी-का॰ [सं] विमदाः सँवताः वैद्याः वैद्याः (१) । सुचंत∽ि साम्बामः स्पेतः। भुवेता(तस्)-वि [तं] संदर विश्ववाद्याः करारा-अपटी निगादशासाः सुक्रिमाण् विवेधी । पु गूल्एका शका नुविसान् । पुरु प्रभेताका एक पुत्र ।

सुचेक-वि॰ सि] मनी मीठि बसाप्छातित ।

```
प्र सीमापरका गाँव वाति ।
सीमा(मन)-बा॰ [सं॰] दे 'सीमा' (कपर) । -(म)-
  किंग-पु॰ सीमापरका विष्ठ, प्रवृक्ता निष्ठाम ।
सीमातिकमण∽पु• (र्र•) श्रीमीख्यम ।
सीमातिक्रमकोरमब-९ (र्थ+) सीमा पार करते समक
 मा एरसम् (मुद्रमाना काहिने)।
सीमाधिय-पु [सं•] सीमा-रक्षक पहोसी राजा ।
सीमापद्वारी(रिम्)-वि [सं॰] सीमाका निदान गावन
 कर देनेवाका ।
सीमाच-पु॰ (का ] पारा।
सीमाची--वि॰ पारेके रंगका ।
सीमावरोध-प्र• [सं ] इदर्शी, सीमा श्विर करना वा
 होना (ही )।
सीमिक-प्र॰ (सं॰) पारी या बीटी बैसा कीका बीमका
 एक कुछा विमीता ।
सीमिका-जी [संग] दीक्छ। चीटी।
सीक्षिया-प्र [का ] रहेबासविधाः परकायमनेशविधा ।
सीर्भी-नि चाँधीका, रमत-निर्मित ।
सीमीक-प्र• (सं•) प्रक्ष-विद्येव ।
सीसुर्गे~ 🖫 [फा ] एक दरियत विद्यानकान पद्या ।
सीर्वेड-प (लंग्) एक पानरका विधेष प्रकारसे हैगार
 किया हुना चुर्न थी पकरतर आदि करनेके काम आता है।
सीमोस्कंपन-प्र सि॰ सिमा पार करना ।
सियग-को सीवा।
स्थिमां - स्नै शिकारैं। शिलार्वका बीक्र ह
सीवराक-वि वैक 'सिवरा' ।
सीर-पु [सं०] इका इक्षमें बोता वानेनाका वैका स्वी
 सन्दर्भ - भारता - प्राप्त - प्राप्त न का समाव
 (नै जन प्रकार कामजारी क्षण किर मुनिकी मीत रहें
 ने तो इक्ष्में हैंपसे सीवाकी करवरित हुई।। क्ष्मराम ।
 -पाणि-मृत्-पु नकराम । -वाग-पुः वैक्यो
 इक्सें बीदना जुलाइनाः जुलाई हुए नैसीकी बोदी ।
 -बाह्य-बाह्य-प्र एत बीवनेवाका दक्ष्यादा ।
स्रीर-को॰ वह अमीन विसे वर्मागर शहर बोतता ही
 और जिसमें वसे कुछ बास बक्त शामिक हों। हा रका
 नक्षिता। । वि वेदा शीतक। सुक -क्शना-वर्गी
 दारका फिली बमीनको सूच भीतना कारत करना।
 -शक्तामा-दस्य सुक्तामा । -में-एकम, शाव
 एकरें। -से श्रीबर-वर्धीशरकी अपनी जीत, कारतमें
 द्रीसः ।
सीरक-पु॰ [में ] एका स्पीत सेंस ।
सीरका सीरप>-५ दे 'शोर'।
सीरत-को [ब ] गुण स्थमानः शीक, वरिक बीवन-
 चरित्र रे
सीरतन्-बा॰ (अ ] सीधरबी वृष्टि, विचारसे ।
सीरमी-का वे 'होरोमी ।
सीरा-प रे 'बीरी'। सिरमामा । औ॰ (सं॰) एक
 पुराचीक बदी । अदि प्रवाह शांत ।
सीरायुच-पु (सं•) वकराम ।
सीरियक-त [थ ] कहानी केस प्रशतक की किसी सीह-की संग । व प निष्य ।
```

विकासे कई क्लीमें वा कई किसीमें मुद्रित दी। विजेमा र्थं कई वागीमें दिखावा बानेशका सैक। सीरी(रिन्)-प्रे॰ [सं] इक्कर सकराम । सीरीज्ञ-औ॰ [बं॰] श्रेणी, माका, कमा सिक्ष्तिका । सोकंध-पु॰ [री॰] एक तरहकी सहसी। सीकण्यात है। 'श्रीक' । नव'ठ नवान-निश् हुदीक । सीस-जी॰ जगीमकी गर्मी, सीडा मुँछें निवस्ते समबद्रे छोटे-छोटे नाक, मसें । पु॰ व्यक्तियाँ सुबील करनेका वक बाला । -का कुँका-गुत्तकमानीकी यक रहम किसमै किसीकी मर्से मीनमेपर शियाँ क्षेत्रेम सेवेई रक्कर निवास विकासी है। सीक-पु॰ [सं॰] इका [सं] सहर, क्या। एक समुद्री वंद्र ! सः - सहर होना-विसी बोबका सहरवंद किया वामा । सीका-प्र बॉक्से हने हुए बारी जो कराब बटनेके शह खेवमें परे रह बाते के हिना ऐंधे शामीको जनकर सिर्वाह करनेकी कृषि बंड वृष्टि । दि॰ बाग, बिसमें सीक हो । सीर्थं - को वे 'सीमा'। सीवक-प्र= [प्रे॰] सोनेबाका र सीवम-ची (सं•) रिकारे: ध्योकमे: ग्रेका: रिकरेक बीश देवि । सीवर्गी-की॰ [सं] सहै। किंगमधिने वीचीभीच प्रशस्त्र बानेगाओं रेजा: बोडेका उत्तरसे लोचेका मात ! सीबो~लो• दे 'सीबी'। शीष्य-वि+ भि+े सोमे बीग्द । सीम्प-प्र• (ते॰) सीला । -क-प्र• सिंदर i-पन्न:-पश्चक नशीसा । सीस+-प्र किए पीर्व ! -ताक-प्र वह धेरी विक्ते क्रिकरके किए गाँके हुए बाज आदिका सिंद्र आँख वैक्रकर रबार जाता है और सिकारके वक्त सोको बाता है अबदा -प्राप्त≉-त वे 'विरकाय (-प्रम्र-तर सिरवर व्याननेका एक पहला । सीसमहरू-पुर वह कमरा वा मदाम विस्ता दोवारीहर प्रद भगव श्रीका भवा हो। शीसक−द (र्द•) सीसाः मीक्षाम-प्र• एक प्रसिद्ध हेर किसको क्यानी बरवायाः हेनुन कुरसी बादि बनानेके काम बाती है। सीसर-प्र• (सं•) यक पीरप्रिक बाब की सरमाका पति था। सीमा-प्र वक्र मिक्स बुक्त बाह्य विश्वकी भावरें, मीकियाँ आही बसतो और जिल्हा भरम औरबक्पमें भी काममें कामा जाता है। 🕈 धीया 🛚 सीसी-सी 'सी-सी'की कावायः व शीशी। सीसी सीसी। - प्रशासन । सीसोपधानु-का [सं] रेप्टर । सीसोविया, सीसीविया-पुर रेर 'निछोरिया । सीरसाम-पु॰ का] देशनके वाद्यभाने अमरिवत यक देश बी बरतमका प्रध्यस्थाय कीर मामीर मा I शीरमोप्राफ−प [वं•] मृदंग-४,पद वंद ।

भूगंबक-सुगीतम पु वासमधी भावत ! -- पर्क-पु बावफर, शीवर भीनी, कीन, रकावणी, कपूर और शुपारी-दम छ सर्व-वित इम्पेंका समादार ।-सार-यु॰ सानीमका वेद । सुर्गाचक-प (से] साठी चारका गार्थी। काल ग्रहसी। गंबका नागर्रक्का क्योंटक वरणीक्या होणपथी। सुगंधन-पु॰ [सं•] बोरा । सुर्गधरा-पु॰ एद दृष्ठ । सुर्गधा-स्रो [सं•] रास्त्रा; ऋपूरकपरी; ऋष्या; ग्रेकी नही। ग्रक्ती। सक्दें। सीफा स्याप जीरा। बक्त्यी। बंग्या क्कॉरकीः जनमहिकाः सामग्रीः स्वर्गम्कितः भागुणीः रपुषाः गंनकोनिकाः यसवासुषाः गंगापत्रीः वित्रीरा सीवः मर्गतम्कः मौक सिपुनारः संबती । सुराधाक्य-वि [एं॰] क्रिस्में काफी सुर्गय हो। सुरामाध्या −की [सं] विदुरमस्किः ৰাৰভ | सुर्गचार~५० [सं] क्षित्र । सर्गाधि-वि [र्थ] संदर गंपवाकाः सध्यवाराः प्रध्यासमा वर्गपरायण । स्तो अन्त्रभे र्गव श्चवस्य । पुरु परमहत्ताः यक तरहका आमा सिंहा क्रुडेका चौरमा एकनासुका यंबत्का पिप्पडीस्टा वतियाः मोधा । - इसस-५ भ्रमगुरार फूलः वीत करबीर । - असुमा-की पृष्टा । −कत−प किलारसः −तेजम−ए रोविप द्रमः -बिक्का-मा बावक, प्रवास और कौन्हा समा-शर ।~पुष्प∽प्रसुद्धार कृत्रा देक्तिवर्दन ।~पास~ प्र प्रोतक्षीमी ।-माता(त)-लो प्रम्यो ।-मुस्तक- इ. १६ दरहका मोधा । - मृग्नप्रक - प्रवासीर । ~स्क्र~द्र मृश्री; बसोर । ~सृषिका ~सो+ छपूँबर । साधिक-दि (सं॰) स्रवंशकः । यः सरा उत्परम्का मीबाः महाञ्चाकि बासमती पावकः गंबकः प्रवासः हृत्या बीरका श्रमवातका मीरहरूका हरक्यें। श्रिकारकः कवित्वः सिंदा स्वैत पम । सुराधिका-ची [सं•] करतूरीः देवका श्रीत सारिया । सर्गधित-वि [सं•] द्वर्गवश्चक स्वधवृत्रार । सर्गधिता-छी॰ [सं॰] सीरम लक्ष्य । सर्गियनी-सी॰ [र्ट] कारामग्रीवका शका पीकी केवची । सर्गची(चिम्)-वि [सं] सर्गव्युच्यः स्वयप्तार । इ दक्षशास्त्र । समा-वि [रो॰] हेरर विवासाः सुगावकः सुगम सुक्रमः त्त्रीय । पुनिष्ठाः तुसः सुमार्थः । संबद्धन-सी॰ पुंदर गठन गदनः जेगसीयन । सगरित-वि हेपर गठन गर्नवास्य क्या हुआ। अंग-सीहरनुक । स्गणक-वि॰ [सं] अच्छा क्योतियी । सराणा-सी [र्न॰] स्टेरको यह माएका । स्रमण्-वि [सं] अच्छा गवन, विसानी; वी आसानीसे (शमा चाप। सगात-दि॰ [मे॰] सर्मिटयामा संदर यति वा चाकवाकाः सरक आसान—पेरे कान अध्यक्षे विचारिनी सुपत " है'-नेती । तुत्रुक्त भगवान्। वीका "शासन~तु [[]

थीकसिकांत । सुगतावतमः सुगतासय-५ (सं•) बीदमदिर बीदः विदार (सुगसि-को [सं•] सप्रति। क्षत्रामा सुना सुरक्ति माअवस्थामा एक कृत । वि संशरगति वा रिविनाता (बेसे सारा) । पु॰ एक वर्षत् । भूगना निपु• वोताः संदित्रम । सुरामस्ति-वि॰ [मं॰] दोप्तिमाम्। इग्रष्ट दानेतिहा (श्वधः) । सगस−वि [धं•] सहवमें जान वा पाने मोम्बा नासना सरीवाध एक दास्य। सगमरा - स्री [र्ष+] सगम द्रीताः, धासानी । सुराम्ब-बि (र्धण) देश सुपर्म'। सुगर-पु॰ (वं) सिंदूर । ब वि सुद्धेश सुपर। ब्सुर । संगर्मक~9 (ई॰) पीरा। संगक्तक-प्रसमीव। सुराइम-वि॰ [र्स] वित बना मिनि४। सुग्रहमा~सी॰ (सं॰) वहत्थामध्ये सत्प्रवारिको भवरते दचानेके किए दादी की गयी बाद वा थेरा ! सुगइनाकृषि-सी (सं•) दे 'सुगइमा'। सरााच-वि [र्थ] निरुद्ध भार सहवर्षे मिन रहे. कम नहरा अनाचका बकरा; यो जासानीसे पार निमा का सब्दे । सुगामार-व कि शुक्र दोनाः दित्र दोना । स॰ कि॰ ध्य बरना । समीत-प रे 'समीविका'। (से) संबरणान । वि बच्छी तरह याचा हुआ । सगीति नहीं हि] अच्छा माना नार्वा ६ इका एक मेर । सुगीतिका-को (हे] यह इत । सुर्गीच-इ (तं•) एक मार्ग । सुगुंदा-की (सं•) त्यपकी। शुगुस्र−वि (से॰) अच्छो तरह डिवाबा द्वमा, वी स्ट्रुट ग्रास रखा गवा हो। -भोड-नि परके वरवर्गीकी मच्छा देखनाक करनेवाका । -द्वेदा-पु मार्चेत प्रस पत्रः ऐसे लक्षरों वा विद्यों में किया द्वारा पत्र मिने पाने: नाकेके सिंवा और कोर्र व समझ सके। मुपुसा-सी [वं] देवीय । सुग्रा-वि क्षिका ग्रद मध्या हो। गुरु-वि [सं•] सर्व्य । सुगृह-पु [सं•] श्रीरर गृहा यथा गयी। स्याही-स्रो [सं] प्रतुष वातिका रक्ष पद्मे । सुपूरी(हिन्)-वि [सं-] हंपर बरवाना हंपर नीक-वामा र सुगृहीत-वि [do] अध्यो तरह प्रशा दुशा भाषा वरद्व सम्या दुवाः प्रावन्त्रमरमीतः। -नामा(सन्)-वि॰ विसम्रा मान स्नेरे कावायक बामनास किया नाय-प्राप्त (सरबीय । सुरीप्या-सी॰ [र्न•] दिश्ररी । स्रीयाण-स्री भोनी। शुपीतम-५ [तं•] यीवम ५इ।

मामीरक-मामाविसार 180 पु० इत्त्वे अन्नन्ता चूर्ण ! – सृष्टु--वि० बोद्रा पद्मया हुमा । पक्की-सी० भद्दीरोंका पुरवा या गाँव ! आभीरक, श्रामीरिक-वि (चं॰) गोप-ग्रेवंची । पु० ~रक्त~पु॰ रक्त अविसार ।~रस~पु आहारके पचनेपर क्समे बननेवाका एस !~वात्र-पु॰ कोप्रकाता करणः महीर जाति । मामीरी-स्रो [र्ष] महोरिनः महोरोन्धे नोलाः भारतको भाँव पहलेका रोग ।—श्चास-प्रजनीर्णके कारण दोनेवाकी एक प्राचीन भाषा (१); एक रागिनी । मर्वकरपीड़ा; व्यविके कारण पेर मरोइनेका रोग । बाासू-प प्रक्र शाह भी करो सकते किया जाता है। मामीस-वि॰ (सं॰) भवानकः से गैबित। पु॰ शारीरिक

कका क्षतिः दु का दुर्मास्य । भाभृत्र∽वि [सं] स्त्यकः अदित्यमयः। धामपण-प्र [र्थ•] यहना, अनंकारः समाबट, शृंगार । बाम्पन≉−पुदेश बाम्पन । भाग पित-वि [सं] अबेह्त, सवावा हुआ। श्रीमित । भारत-वि [रं•] निकट कावा हुआ। छलादित भरा हुआ। प्रकृत हुआ। भाभेरी-खाँ• (एं०) यह रागिना । मामोग-५ [सं] रूपः विस्तारः परिपूर्वताः धुमावः मोगः मीवनः तृतिः वरपदा छत्रः धाँका प्रेका बुका प्रवः साँपः प्रवत्तः प्रवर्मे कविता मामोक्टेस वस्तुके परिचायक

विद्वेदिये विद्यमानता । बासोगी(गिद)-दि [सं] भोगनेवाकाः भ बन करनेवाका । **बासो**य्य-दि [मं] भोगने दोग्य । पु भोरूद पदार्थ । भामोबी(बिन्)-वि [सं०] एानेवाका। भारमंतर-वि॰ [सं॰]भीतरका,अंदश्मी आंतर !-कोप-पु॰ मंत्री पुरीहित सैनापित कारिका किहोब ।—प्रवत्त-रष्ट प्रचारगढे किय किया जानेवाका आंतरिक (मुखबे भीवरी भएका) प्रवह । भार्म्यतरातिभ्य−पु (सं•) अपने देशमें भाषा <u>द</u>या विरोधी माक । शास्त्रंतरिक−ि [तं] दे॰ 'माध्वंतर'। भारत्यद्विक नवि [सं॰] भन्तुदव-मंदंबी; बाग्यदव-सावकः सम्रक्ष । पुत्रज्ञाम निवाह कार्यके अवस्थरपट किया

बानेवाका धंद माद्र । मार्मस-वि [सं] संन्य, मनोरम। मार्मह, सामैय-४ [ए॰] प्रदेश देह । मार्मश्रम-पु [सं] संगेषन, बुहाना पुकारनाः स्थोता निर्मत्रमः स्वागतः स्टा बनाः अनुमतिः विचारः, सराद मरिक्स । मार्मप्रणा∸सी [मं] दे० 'आर्मचल'। मार्मचिता(त)-पु [सं•] निमंत्रण वेभेवाला । भाम चित्र-(४० (सं) निर्मतित नुकाया हुआ । पु बावाबायः भुकानाः संबोधन कारक । बार्मह्-पु॰ [मं] भाषा गंभीर स्वर । माम-दि॰ [मं॰] दबा, मनपदाः न पषा द्वमा । पु क्या दोनेकी भवरथा। अपक्र आहार-एसः टंडकरी अकरा निया <u>द्वथा भद्यः रीगः अजीर्थः। – स्त्रंग्र – पु</u>क्ष्या वडाः। ~गंधि,~गंधिक;~गंबी(धिम्)~वि० कथे मांस या बन्दे हुए सबस्य गंदवाका । – गर्म – दुः भूम । – उत्तर –

पु सरकारक भे⊤। ⊶राक-पु॰ ग्रीच या ककीन्र

मामक रोगका मार्गिङ स्वः अर्थुंदवी पढानेका वदः

बास−पु॰ व्यक्त प्रसिद्ध फुक कोर उसका पेड़, जाल, रसा**छ ।** ~रस-पुर बमारर । भुर -के साम, गुरुकीके दाम~ दोहरा काम । भास-वि॰ [अ] पैका दुवा, ब्वापक; प्रसिद्ध सावारण, शामान्य । - ज़ास-पु॰ रावमहरूका वह भीवरी भाग बहाँ राबाशादशह की करते हैं। −ब्रस्सा−पु सार्वजनिक समा। ∽दरबार-पुञ्चना दरवार जिसमें स्व कोग चा स**हं। −फडम −वि** को सक्की समझने मा बान, सुनीव । --राय-स्रो कोन्द्रमत । - स्रोग-पु जनसाबारण I भागदा-पुषक सहा एक भीर उसका पेहा कासव्⊸नो [फा] माना जबाई; मानः (कविदादिसे) सद्दव प्रवाहते बानेवाका, स्वामादिक माव-अक्रुतिम,

महिड-करियद शाव । --(द)ग्रार्च-पु आय्-स्यय ।

-रपत-पु भागा-वागा। सु० -भागद्शीमा-विसीके व्यासच्च व्यागमनकी चर्चा वा पूम होना । भागवनी-सी [का] नाया प्राप्ति। मका निकास देस्रावरसे बानेशसा भाक बायात । सामन-प्र वनहरी बान (रंगारु): एडप्रसना सेतु । भामनस्य-पु [सं•] रंब, दुःसः पैशः। मामाय-पु॰ है॰ 'शान्ताय'। **भामना-सामना-५ सामनाः** भेंद्र। भागनी – सी वट धत विसमें बागन नौवा बाबा शासन की खेती। भामने सामने −२० एक दृशरेके सामने; मुकारकेमें । भामय-पुर्नि रोग,शेमारी; वृतिः भविमांच, भनीर्यः

कृद मामनः बीदवि । आसवाची(विन्)-वि॰ [सं॰] रोगो; अग्निमांच रोगसे ग्रस्त । बामरसर-५० कोषः बमर्र । भामरक्षमा = कि कीव, करना। भागरण-भ [सं•] मरणप्यत चीवलदे श्रेततृह ।

बाक्य 1 थामवं भागवस-प सि । मस्त्रमा रणक्षाः स्वानाः निचौरना । बामपें−पु (सं∘) दे॰ अमर्प।

सामसङ्-पु [मं॰] औरमा। भामसकी-सी [र्म•] छोटा भौरता। प्रास्तुन-सडा

ण्डादरी ।

आसमा-पु॰ व्यवहा ।

बुद्धाना ।

आमाँ-पु यस कीदा पीरनंदे निष्कृतरे कीदारकी

भामरणांत भामरणांतिक-दि० [तं] मृत्युपर्गत रहने

वताय :-पाची(चिय)-वि पाचनमें सहायद :-देव- | जामातिसार-दु॰ [स] माँव देविशकी वीमारी क्रिसी

मण्डे साथ सरेट ऑड काता है। भागारय-प्र [मं •] दे 'अमारव'। आसायगी-त्ये आमादा-तैयार होमा, तत्परता । मामावा-विश्व प्रा विवार, सस्पर, उपत । मामामस्य-प्र॰ [सं॰] दे॰ 'आमनस्व' । मामानाइ-५० [सं•] श्रीबढ़े कारण पेग्हा फ़लना । आसाय−५० (सं•) दश लघः दश यावत । भामायास्य-दि॰ [र्स] अमाष्य या उस दिन होनेवाहे प्रवसे संबंध रखनेबास्य । भामाधाप-पु॰ (सं॰) पापन-संश्वानका वह भैनीमुना भाग विसमें भाहार हरुट्टा होकर प्रका है। गरा । अस्माहस्त्री-साँ० एड ओपि । मामिसा-सा॰ [मुं॰] करे पृषद्य होस मान, ऐना । मासिएत = पु है 'मामिव'। भामिर-वि॰ [भ] हुवन वृत्तेवासा । पु॰ हाकिम श्रवि कार्ध । भामिस-वि , पु॰ [ध] जगड-द्वागदरनेवाडा, सावद भविकारीः शाष्ट्र-गुँख करमेवाना । वि+ स्वदः + सङ्गा भामिश्र−दि [सं] एक साथ मिलावा द्वशा । भामिमा-सी [र्च] वह राज्य वा मरेंग्र वहाँ राज्यक भीर राजधेश होनें समान रुपते बहते 🗓 । मामिप-द• (सं•) मांसः शिकारः बोग्व बरतुः तुमावनी बरम्, बाराः पूनः बामना मीनेच्छाः रूपः आकृतिः पत्रः जैंगीरी मार्। -प्रिय - सुक्(व)-दि जिसे गांत मिन हो। इ मांसमधी पर्का (गिक नाम नारि)। भोडी(जिन्)-वि मांछमधी बीरतगीर। भामिपासी(शिन्)-वि* [छं॰] मांसाहारी। भार्मी~ व [घ] दे 'नामान'। भामी-मी छोटा भाग भेरिया भी बादिकी मूनी हुई वास । शामीका - सी मि॰] दे॰ 'शामिदा । आग्रीम-अ [स] ईपर ²सा करे स्थाला । भामीसम-दुर्मि] वर्शि वंद करना । भारतन्त्र-वि॰ (सं॰) सन्द्र किया प्रजाः देखा वा छोहा हुआ। धारण निया हुआ। भामन्द्र-त्या [भं•] मोक्षा भारत दश्ना पहनना। अ॰ मुक्ति मिननेके समबतक । भागरा-५० [मं] भार्षा (नागर्या) वस्तारना । भागुप्तिक-दि॰ [मे] परलोड-मेश्पी। भामन-अ॰ [एं] मनपूर्वत बहतकः अवने । भागम-विव [मंत्र] श्री पर्यमोनाताः समुपादरमेवासाः। भामेत्र∽दि (का॰) निकादुवा शुक्त (शमलावे व्यव इत रंगामे द∼रंत मरा पत्रा}। भागेजना १ - ए० कि । विश्वासः । भामेतिया-छो [या] दिवायर दिशद । भामोतुमा-५ (चा]या ५८ शब्दो दीदराना वदरपी। भागापम-५ [५] एशनाः सम्बद्धनाः १ भामोद-पु॰ [सं॰] हर्ष प्रगतना शुरो। विसरन धन्नी-बाली सुर्गंब, सुर्गाम, संत्रावर । - प्रमीय-तु भीत्र-धैव (क्रान्दिनी ।

आमोदम-१० सि । इर्च, प्रसंप्रता देनाः रमाना रणना। मामादित-वि॰ [मं॰] प्रसुध मान्द्रीता श्वासित । आमोदी(दिन्)-वि॰ वि॰ सरासित गतारहार इसन रहमेगाचा । भामोप-<u>ष</u> [सं•] अप्रदरम, चोरा । आसोपी(पिन्)−िव [मं] श्रोरी इरनेनानाः पार। भारमास-वि॰ सि॰) उरप्रतः प्रतिस्तिः विमारतः मर्पनः बार किया गुना: पूर्वन अंशा के स्पूर्न प्राराम अल (4) i मास्माष-त• नि] वेर, स्तिः प(शामात्र कारेसा र्संबा कुलः बुरुक्तस्य । आग्र-प• र्ति•ी आग्र । —क्ट-प• अग्रावटेफ परेप ! −र्गायक-पु॰ समहित नामर पीपा। –दम-पु॰ नाम-का वायः अमरार्धः। भाग्नत बाह्यतुष्ट-पु (मे) भामता । ब्दान्छ~तु• [र्म•] इमसीना देश राष्ट्रादम ! भाग्या-सं • [नं] श्यतीः सहारत । आस्मिका, आस्टीका-स्त्री [में] श्मनी। हरका गरा स्वान था दखार । भावें ती पार्वे ती —स्यो सिरहामा प्रवहाना । भार्यदा-ल॰ है शारा । **बाय-सी** [सं•] धनायम भामन्त्री साम । पु जन्म बंडकीमें व्हारहर्वे रचानः अंतापुररशुकः भाषमम् । -व्यय-प् नामन्श्रमे ! - श्रा चिद्वा-११३ ! -हथाल-पुरु समान क्या करनेकी बगह ! सावत-विश् [सं] संबा: शिनृत: विशास: अपूर । 📭 सबरोग धनुर्वत्र (स्पा॰)। -सप्रता-भी देश। --तेष्ट --सोधन--दि० वर्श-वर्श या लंबी मोगीरणा । श्रापत न्हों [म] तुरातका वास्या किए निरात ! आयन्त-पुर्व [ते] स्थाना परा आश्रय। देशभाग परा श्वामः श्राहः शेवदा बार्यः मराम यमानदा स्थान । आवति−सो [सं] लंबारादि गरा भरिमग बन्हा धना प्रवाद: अग्रस, विभन्न, गीर्म: मस्मिम दोनेपानी आतं ! आयत्त-(१+ [ग्रं] क्योगः स्राप्तितः स्रत्यंतितः। आयशि-मी॰ (शं॰) चरीनगा दुसरेका मार्गरीय बीमा प्रेया सीमा बचावा दमाता गामको महत्ता विश साजरण्या रण्याः व्यारेः मरिष्यप् शाम । आयधानव्य-पुरु [मं] पेशा होना भारिय रेगा म होना संबंधार्वज्ञः समीनियः। आयय्—दि [भ] भीग्नेशनाः व⁰न होनेशमाः सम्दे श्रामा । सुरू न्हामा-सगरा। स्यापा अस्त (पुर्व रका भारि)। आयसम्- ९ [रो०] नेवारें। चैनायः चित्रयः सीवन तामना (बनुष् भारी) । आपयम-द [तंर] स्तान्द । भावम-पु॰ [वं] होता रोत्यी रही योग स्टिस्स बगरा रक्ष है है। मीर्सनीया मेरदे रगदा है स्था ₹ 'erry' l आसमी-+ १^०० [s]) × देश वसके बरण । आवर्गीय-दि [गं=] में न्दा के एशिक्ति ह

भुगगा -पु दे 'स्रक्'। -पंद्री-पु एक ठएका भान । -साप-पु॰ सापका एक मेव । सर्ग्राय-वि [सं•] संदर् गाँठीवाका । मु चोरक मामक

ग्यह्म्यः पिप्पडीमूडः ।

सम्बद्ध-वि (सं) विदेश मूठवाकाः सुरुगः सुवीव । पु० अपना ग्रह ।

सुग्रीव∽पु [सं•] किष्किपादा वासर राजा को शक्किका सोटा माई था और विसने राववसे कदनेमें अपनी सेना सुदित रामधी सदावता की। विश्व वा ऋष्यके पार बीवी मेंसे एका इसा किन, इंद्रा बर्तमान अवसर्पिणोके नर्ने सर्देत्हे पिताः बीटः भकाधयः एक पर्वतः पातासका एक मागः एक प्रकारका संबंध एक जन्मः संन्यः शुंग-निश्चीनका इत को भगवतीके पाछ व्याहका छरेखा कंकर गया था।

वि क्षेत्रर गरदमकाकाः सुद्रीवा∹को [सं•]ण्ड अप्सरा।

सुप्रीवाग्रक−पु[सं•] वाकि।

सप्रीदी-को [सं] दक्क्षे एक कृत्वा और कश्यपक्षे की विसंसे बोडी कैंटी कारिको क्लांच हुई।

सुप्रीवेस-पु[सं] रामवंद्र। सुन्छ-दि [सं] बहुत बहा हुना।

सभर-वि [तं] सुपद सुत्रीक ।

सुधित:-वि [सं] जिसका बीक बनावर गढन सुंदर ही सुबीक सुबोबित।

सुमहित-दि [सं] दशकर वा गैटकर **स्**व भीरस

समतक किया हुआ।

सुभव-ति किन्नभी बनावट सुंदर हो। सुबीका किसी कार्यमें कुछक, पतुर हुनरमंत् । -ता-ची॰ -यम-

प्र श्रीवरताः क्रम्मकाः।

सुषक्षं – सी • सुबदपन, श्रेपरताः निपुणता । सुधकाई−को , सुधकापा−पु सुघकपन सुंबरवाः

बुश्रस्ता हर ।

सुभवी −को अवधी, शुप्त पत्री । सुधर-वि दे 'सुबका -ता-लो -पम-बु दे

स्वक्षम ।

सुधरर्श-को सुवहपम ।

समराई-को रे 'सपडारे । -कान्द्रवा-पु स्क राग। -होड़ी-को यह रागिनी।

सुमरी॰--को दे 'तुनको । वि सी दे 'सुनद । सुधीय-पु [सं] मभुर ध्वनि। मकुक्का श्रीया एक भुद्र ।

वि निसन्धे भावाय मोठी हो। कैनी बावाय करनेवाका । सुघोपक-पु [सं] एक दाघ (संगीत)।

सुर्वपुका-मी (सं॰) महार्यपुकामक साक ।

सुर्चदम-पु॰ [मं] नक्षम रक्षमार ।

सुर्वज्ञ-प्र [मे] एक दस्ताकुर्वशीय शामाः एक देव-गंबर्व। एक बोबिसस्य ।

सूर्चदा-स्री [सं] समाधिका एक प्रकार। सुव-वि दे श्वीव ।

सुवस्य (स्)-वि [सं] संदर ऑटॉनला (पित्र)। लपटो निमादवाकाः तुनिस्मान् विनेद्यो । पु गृतरका वेगः पुढिमान व्यक्ति ।

सचनाक-सक कि बोक्सा, शंपव करना-कि रहीम परकाश दित संपति सुनिर्दे सुनान'-रदीम। भूचरित-वि॰ [सं] बचन क्पमें किया हुआ; सरा पारी । पु॰ सदापारः शक्षा बाहयहर्मः शुन । सचरिता-सी॰ [सं•] पवित्रता सी। सुचरित्र-वि॰ [सं] सदाचारी नेक्षकत । पु॰ स्टाबार ।

सचरिचा-को [सं] परित्रता को; धनिया। सुचर्सा (र्मन्)-पु॰ [र्च] मोनपत्र । वि॰ सुंदर् बल्क वा चर्मवाका । सुचा÷-स्त्री कान चेतनाः विचार् । वि॰ निर्मेत (१) ।

भुषाना-स॰ कि॰ सोचनको किया इसरेसे कराना। ध्यान बाह्य करनाः विवानाः समझाना । भूचार*-की॰ दे 'सुवाक'। वि दे 'सुवार'। सुचारा-मी [सं] श्राधकको एक कृत्रा ।

सुचाद-वि [पं] निव पाक शुंदर, मनोदर। पुर दक्षिमगीसे उरपञ्च कृष्णका एक पुत्र । −द्दामा – स्रो हुंदर दाँवींबाकी स्त्री ! --क्स्म-वि हुंदर समबाका । -स्वम-वि शुंदर स्वरवस्था। - सम्म शुंदर रीतिसे। মুখাক−ঝা ধৰ্মা খাত, ভাষাৰাত, 'ভুগাক'রা

उड्या । सुचाकी−वि॰ जच्छे चाक-वक्तवाका, देवचकत ।

सुचाव-पु सुवावाः ध्वमा, सुश्लाव। सुर्चितम-पु (सं॰) शंगीर वितन यहरा सीव-विवार ।

सर्वितित-वि [र्स•] भक्षी मौति सीचा विचारा हुमा। सुर्चितितार्थं - पु॰ (सं] मारका एक पुश्र (शै॰)। सुचि०-वि दे शिविं। की ध्रौ। -कर्मा-दि दे०

चिक्क्यों । -सेत-वि सुद जावरणवाका पाकः सन्द्र ।

स्वित-दि दे भूषित । सुचिता —की समित्रता।

मुचिती -- वि दे 'सुचित्र ।

सुचिच−वि [र्च+] रिवर्रावचा विद्यानिवृत्तः वस्ते-पैहेरी सुबी, संपन्न । सुचित्रता-सी [सं] सुचित्र होना स्त्रमीनान,

निश्चितवा । शुचित्र-वि+ [सं] विभिन्न प्रकारका। विभिन्न रंगीका।

पु पक्र भाग। - बीका-की दावदिदेव। सुचित्रक-वि [री॰] विभिन्न रंगीनाका । पु॰ सुर्गानीः

चीनत सॉप[,] य**ड श**सर । सुचित्रा-सी [ती•] विभिन्न पूज नामधी कक्षी। सुचिर-वि [संग] पुरानाः विरस्वायी । पु दोर्वकाल ।

मुचिरायु(स्)-पु• [सं] रेशवा । भूची -- भी दे सर्वा

सुबीरा-मी [र्स] है 'सुबारा । सुचुकिका-सी [सं] स्मनी।

सुजुटी-स्रो [सं] विमरा। सँप्रसे। रेबी (१)। सुचैत-वि॰ समबामा स्पेत ।

सुचेता(तम्)-वि [सं] सून्य विश्वतामाः वदारा-शया वृद्धिमान् । पु प्रयेशका प्रकृति । मुचेड-वि [में] मही मीति बन्नाच्छारित ।

38-15

```
9409
 प ऐसा बाहारा बच्छा मार्गः नाम (१)।
सपध्या-सौ [सं] नकाना सफेद वसुभा क्रोटाना
 कार बनुसा ।
सुपद-पु संबक्ष पर, खन्द। वि सुन्तर पैरीनालाः
 श्रीनगामीः 🕇 वाजिव ।
सपद-वि सि ] सुंदर वैरीवाका।
सुपद्मा-की [ई•] दया।
सूपम, सूपना •-- पु० दे 'स्वय्त'।
सुपवाना रूप कि । सपना विकाना । श कि श्रपन
 रेखना ।
म्रपरण, सुपरच*-≷ 'सुवर्ण'।
सपरमञ्जीता-को [धं] एक नौद्ध देशी।
सुपररायक-पु॰ [अं॰] कायबढे काबको एक बाप
  (११X२९ ४४) I
सुपरवाइतर−५ [शं] गिरोशन करनेवाका ।
भूपरस+-५ दे 'स्वर्छ।
सुपरिटेंडेर-पु व [ ब ] बनाइड, मिक्सनी करनेवाका ।
  ∽पुस्तिस−प्र पुक्तिस कप्तान विकेका प्रवान पुक्तिस
  मफसर ।
 सूपर्य-वि (तं•) सुंग्र क्वींबाकाः सुंग्र पंवींबाका । तु•
  हुंदर पत्ता देवगंवर्वः गरकः कीर्देवका शिकारी पद्यीः
  किरमः समः ग्रुगाः एक तरहकी व्यवस्थानाः नायकेतरः
  ममकतासः अंतरिक्षा एक प्रतः एक प्रवेतः एक सांचीन
  वैदिक मंत्रोंकी एक छ।सा। ≕कुमार−पु यक्क वेन
  दैनता। – केत्–पु॰ गरकानश्च निष्णु। –यात् – पु
  पक्रदेशका,−राज्ञ−पुगरका ∽वात−पुगरक्के
  पंश्लीमें हुम्ब बादु। -सब्द-वि शुपर्णपर वैठने वा
  आपनेवासा। पुविष्युः
 स्पर्णक-वि [सं ] संदर पर्चोशकाः संदर पेसीवाका।
   पु बदद या कोर दिव्य पक्षीः भारत्वत बुद्धः अमकतासः
   सप्तच्छत्र वृक्षः सप्तपर्वः।
 सुपर्णांड-प्र• [सं ] सुतसे करपञ्च सहस्रत पुत्र ।
 सूपर्या-नी [सं ] कमिनीः गरवकी माताः यह नदी।
 सुपर्णाक्य-५ [सं] नागकेशर।
  सुपनिका-स्रो [सं ] सर्गनीवंतीः प्रवाशीः हाकप्ती
   शरियना रेगका ।
  सुपर्जी-वी [धं ] कमक्षिमीः वरक्की माताः मादा
   पिक्षिमा अस्मिकी सात विद्यार्थीमेंसे एका राषित प्रकाशीत
   रेपुका कर्के साथ वरिधित एक देवी वी इंट्रॉकी माता
   मामो वादी है। −तनय⊸द्र गरह।
  मुपर्णी(निन्)-५ [नं] गस्का
  सूपर्णेष-पु [सं] गर्हा
  सुपर्वा-ना [छ॰] स्रेत दुर्ग।
  सुपर्वा(र्वम्)-वि [तं ] सुँदर गाँठो वा पोरीवाला।
   गुरर गर्ने अध्यादीयका (ग्रंथ); बहुमग्रंशित । पु
    शुम कारत बेंदा गाँछा नाया चूम भुजी। देवदा ।
  सुपवित्र-दु (सं ] एक रूप।
   पुपमान्-म [सं]को राज नवे।
  मुपाकिनी-सो॰ [सं ] व्यंता इस्ती।
   सुपाक्य∽पु[सं]शोधर शसदा
```

```
सुपाठव-वि [तं] वे सुपर्छ'।
सुपान्न-पु [सं•] सुंदर पात्रः योग्य स्वक्ति (वो दानादि
 का अभिकारी हो)। वि योग्य, अभिकारी।
सपाद-वि रिं•ो संदर पेरोंबाला ।
सपाम-वि॰ [सं] जो सुबसे विवा जा सके पान
 मोम्ब ।
सपार−वि [सं]को कासानीसे पार किया वा सके।
 नो बरद गुजर जान (बैसे नर्पा)। सफकताकी मौर के
 बानेवाका। -क्षत्र-वि अपने राज्यको करद पार
 करनेवाका (वस्ण)। -वा-वि अच्छो तरह पार जाते-
 वास्त्र । पु शास्त्र मुनि ।
शुपारण~वि॰ [र्स ] क्रिस्का पाठ या अध्ययम क्ररना
 बासान हो।
सुपारा - की [र्च ] भी प्रकारकी द्वष्टिवॉमेंसे एक (सां॰)।
सुपारी-को नारियकको बाविका एक पेड़ा इस पेड़का
  कुछ जो पानके शाव दा अकारी मुख्यमुद्दिके किए शावा
 बाता है, क्रांक्रिया, क्ली; ब्रिइमाय मार्ग ! सुरू-संगता
  -सपारीके इक्केका एकेमें बटक बाना वा बटकने बैसा
  प्रतीत होना (रसमें कमी-कमी वही देनैनी और गर्मी सह
  क्स होती हैं)।
सुपास्य - ९ [सं ] ग्रीहर पार्चः वर्तमान अवसर्पिकीके
  चात्रवें तीर्वेक्ट वा अर्देत्(वे )। पाक्कका पेड़ा संपाति(गिक्ट)
  का पुत्रा एक वर्षतः वक्तंत्र (गर्दमांड)का पेड़ा एक पीरा
  निक पद्मी (भी संपातिका पुत्र था)। एक राक्ष्मा रक्षम
  रक्का एक पुत्रः मुतालुका थक पुत्रः रहनेमिका एक पुत्र ।
  वि शुंदर पार्स्वका।
सुपाइर्वक−यु [सं•] गर्नमांट इसा विजनमा पट पुत्रा
  मतायुक्त यक पुत्रः मानी चरप्रतिनीके तीप्रदे नहेत् (मे )।
 सुपास−५ ≈।राम सुमीदा।
धुपासी-वि स्थ नाराम देनैवालाः मुझी-'ह्रक्सी विस
  दरपुरी राम चपु को मनो चन्दे शुपानी'-नितन ।
सुर्विगका-की [र्व ] बीवंतीः व्योतिग्मता।
सुपीडन-पु [सं] माकिए। बोरसे दवाना।
भूपीत-पु॰ [सं ] गाजरः पाँचवाँ मुहूर्त (स्वी )। पीत
  चंदन । वि जच्छी तरह पिवा हुमा। गहरा पीका ।
सुपीम-वि [सं ] बहुत मोरा !
सुपीचा( वन् )-वि [र्तः) अथ्डी तरह पान करनेशाता।
 सुर्युक्त-वि [सं] अच्छी तरह पंछ क्यावा दुआ (वाच)।
 सुर्युसी – जी [सं] वह की जिल्ला परि सुपुरत हो।
 सुपुर-त [सं] कोमबारः निष्पुर्वद । वि सुंदर सवनी
  ৰাভা 1
 सुपुरा-स्री [ए॰] सेवगी।
 सुपुत्य−पु [सं] नावक नेस सपूरा जीवक कृष् । वि•
  भक्ते दुर्भोताका ।
 सुपुतितका−4ि,श्री [मं∘] करछे पुत्रीताकी।स्ती
  अनुका प्रशी।
 221-1 [4] et 241
 स्पुरुष-इ [सं॰] महा भारमी। मुंरर पुरुष ।
 सापर-विदे 'सिप्र' ।
 सुपुरक्ता-सी [सं] स्थमपृथियो ।
```

```
स<del>ुचेड्ड</del> न्सुर्वंबर
   सुचेकक-पु [सं] प्रदेश वक्त वृदिया कपका दिन
    बो बहुना कपना क्यने हो।
   सुचेप्रस्य-५० (संग) का ५६ ।
  सुचांद्र - वि देश 'स्वच्छंद'।
  सुर्वात-वि है 'सन्छ ।
  सुरक्त-पु (सं∗) हिन्।
  सुरक्रमा, सुरक्रमी-सी॰ [सं ] सतस्य नदी।
  संच्छत्-वि [से ] संबर पर्वीवाका ।
  सुरक्षम - वि दे 'स्ट्म'।
  सुच्छाय-रि [सं] अध्यो चमक्तका (रत्न)। अध्यो
   क्रम्बानस्था (ब्रह्म) ।
 सर्वेद#-दि सम्प्रेद।
 सम्बंध-वित्र [संक] मुंदर व्यायीनाका ।
 सम्बद्धन-वि॰ (सं॰) सुरर क्यमीं (चूत्रभी)वाका। विस्ता
   नंद कच्छा 📢 ।
 सुजन~प्र [सं] सुजन मका नाहमी; ≉ स्थवन ≀
 सुजनता – की [मं•] भक्षता, वसमनसी।
 सुवामी-सी (दा 'शोक्नी') को वह क्यकेश छाटकर
  और कपर सुरेंसे बारीक काम करके बनाया हुआ विक्रीना।
  वर्षनपर विकानेकी यक तरहकी मार्ग रंगीम चादर ह
 सुबन्सा(न्सन्)-वि [सं ] अनुबर्वे स्त्या, कुणीवः
  विवादित स्ती-पुरवसे करपन्न विदित्यन्या ।
 मुख्य-सी॰ [सं॰] बहुत वड़ी विशव । वि॰ आसानीसे
  बोदे बाने वोस्व।
 सुजस-वि [संग] सूरर वक्याका । यु सुरर वक्
  क्ष्मस ।
 सुरामा-दि॰ सी (रं॰) वहाँ वणको खुवानत हो।
  मदी-पडुका ।
सबस्य-पु [तं ] रक्षणा, गांमीर्व, अल्बेटा आदित
  पूर्व सक्ता
सुबंस*−5 दे <sup>4</sup>तुबस ।
सुवाकां-इ रे स्ताब'।
सुजागर-वि संदर्ध मनीहर ।
सुबाव-नि [सं ] अच्छा वहा हुनाः सुकामा इलीमा
 संस्त । प्र प्रवराहका एक प्रमा मरतका एक प्रमा
 -रियु-४ सुविधिर।
सुरातक-उ [सं•] सीतर्व क्रांति।
समातका-सी [सं•] शान्ति भाग्य ।
समाता-विसी [तं] कुशेनाः हेररी । सी वह
 क्तिन वातिका क्रिसे भगवाम् इदको पुरुष्पप्राप्तिके
 पाद स्वीर सिकाबी भी। शुक्री। गोपीकंदन ।
सुबाति – सो [सं∗] बच्छी बाठि। वि अवधी बाति,
 भन्मदाका कुनीन कुत्राविका क्करा।
समादिया-नि है 'सुशादि । * अपनी नाविका,
 समाताय ।
सुवातीय-दि [मं] लब्ही वातिका।
समान-वि॰ बदुरा ग्रामी सुविदा मबीण। पु॰ प्रेमी।
 प्रमु। – हा – सी सुत्रात दीना।
सुजानी#-वि दे 'सुवान'।
सुनामि-वि [सं ] क्रिप्तके बहुतारी मार्थः वहने था | शुर्वताव-वि वे स्वतंत्र ।
```

रिष्ठेशर श्री। सुबिह्व−वि [छं॰] सुंबद बीमवाकाः मधुरभाषो । पु भिना सुर्जीर्ण−वि [सं∘] धवडी तरह पना हुमा (अग्न); बीर्च-सीर्च श्लीग । सुनीवती-को [मं] सर्ववीवंती। सुबीवित−५ [सं] सुगी बीवन । वि मुद्रपूर्वं≰ बीनेवाधा । सुज्ञेष-वि [सं] आसामीसे बीहर्म मीरव। सुबीग - पु हे सुक्षीय । सुबाधन -- पु है स्थीयन । सुबोर#-वि॰ ग्रहकीर वस्त्राम् । यह पानदार । सुक्र-वि [सं] सुविदा पंक्रिता सञाप-वि (धं॰) दानीः गुरोप । पु सच्छा द्वाय । सुअवेष्ट-पु [मंग] मुंतर्वसी महाराज अग्निमित्रका पुत्र । स्रक्षामा- । कि दिसामा बताना स्थमा देना। मिरु दियाई देशा सम प्रमा। सकाय-त ग्रहानेकी किया। ग्रहानी हुई शता, वन्नीमा HOTE ! सुर्देष-वि॰ [सं] तक, बर्धेय (शम्रः) । मुरकुनी−श्री शॅस्की देन। सुदुक्ता−रिश• कि॰ जुम्हेले निक्रम वामा। शिक्रमा। स कि चाइक कगामस विकल आगा। मुद्र - वि दे 'गुढि'। सद्धर्-पु अच्छा और, स्थान । म्दारण−वि सुदीका सुठि॰-वि सुंदर अच्छा। अ अति बद्दत अनारा-ना सुठि कॉरी या सुढि छोटी - १०। बूरा बूरा । लुद्धेना*−वि **भ**ष्णा नृंदरः **मुक्क−सी॰ ग्रह्कवेदी फ्रिया वा भाग**ा सुबुक्ता-स कि बिसी तरभ पराभंकी माहती राह शॉमके माथ मीनर शीयमा। मध्य सेनाः माढाँ सक्सी अपरकी ओर सीयना यहाना से जाना, बहररथ बरशा । सुब्रस्व~को हुका येजने निवन्त्रेशको भारात्र । शुक्तकामा-स कि (द्वा आदि) हा। तरह पीना कि 'गुर-गुर की भागाय निवने । सुडीन सुडीनड-9 [सं] वक्षिपादा ग्रहन नित्री क्दमा। शुकुकनां−स किंदै सुप्रदना। सुबीस-वि सुदर दीन, बनावरवाका, ग्रुपक !-यम-तु सुक्षीक क्षामा सुन्दवा। सुर्वया-पु अच्छा गृंदर देव । वि० सुतर सुवश भग्ध स्बमानका । सुद्धर=−दि प्रस्त अनुकृत अनुप्र(र्द भारते हुता मुडीका मुबारम-वि तुथान, शुंपर-तेरि पेछे मिन्तिए एव कम्या मर्र गुकार' – राम छ।। मुक्तत्र - वि दे स्काप ।

हुक्षियोमें एक । विस्तो • संदर मैथीं वाली । सर्वया-पु॰ सुननेवासा । सुमोची - पु पढ हरहवा भीवा । सुनी∽की [सं∗] बच्छी मैका। वि भण्डी मौदार्गीः दाका। प चला हुच्च−पु॰ सून्य, तुका। वि तिजॉन, वननत् । स्निर्यः सुष्पत-की [भ] राषः रीति रस्तूरः वह रास्ता वा भाषारका जिल्लार प्रदेशमार और दनके प्रमुख मानी-पहलेके बार क्रलीफा-क्ये हों; सनता, मुस्तवामी। (ते)भाषाई-छो॰ नापन्सत्रका शाला सीति । सबसाम-वि है 'ग्रनग्रन'। मुद्या-५० शुम्ब सिद्धर । सची-प [ल] सरुलमानीका एक फिरका। सर्वक्र-दि [मं] शंदर वंसीनाकाः संदर सीरीनाकाः। मुर्चभ-प (सं शर्वशाः") बचन मामी छामार्य । सपक्र-विदेशपद्रा समियत-दि [सं] भण्डो तरह साथ रक्षा ह्रवाह संवत । सुपक्र−वि [र्ग•] भरधो तरह स्त्रा धुना । धु एक तुर्गबबुक्त भाग । समिहत्वम-पु॰ [सं] मच्छा रेक्ड कुनावः दब तरह-मुपक्ष-वि [सं] तुरर वंधीवाना । सुपद्मा(सप्)-दि [तं] शुंशर धनदीशका । मुपच०-पु दे 'शाव । सुपट-९ [र्थ] शुंदर वस । वि सुंदर वस्रोंनामा । झूपड∽वि [मं•] थो भागानीधे परा ता सकें। स्निधित-वि॰ [मं] मन्ने भौति विधित पदा। पु शापतः =-वि विमश्ची अध्यो प्रतिशा हो, प्रतिष्ठित । सुपत्ध-तु [मं•] तेबवचा हिंदीरा भारित्ववता प्रति सुनिपण्य सुनिक्तमक-९ [मंग] एक साम सुगुन। नाव नुना एक गीरानिक पत्री । वि सुंदर वर्षीवाकाः सुनिष्टस-वि [तं] बहुन तवाया यठावा हुआ। अच्छी गुरर पंत्रीवालाः शुरर वरते युद्ध (वाव): गुरर वाय-वासा । सुपस्तक-पु (सं] श्रिषु महिषन। सुनीच-वि [मंग] मीत मीचा किमी शक्षिके विदेव सुपरवा-सी [मं] शहबराह शनावरो: नाबक धनी। मारुपभी 1 समीत-वि [सं] शिष्ट विनीत । शु भद्रताः बुद्धिमधाः सुपश्चिद्धा-न्मी॰ [र्शन] अनुदा । सुपश्चित−वि [र्र] अच्छे पंगत तुन्त (वाप) । सुनीति-न्दी [मं] मुंदर मौति। भूवकी माता। वि स्पर्धा-सी [से] नगरपत्री । शुपरत्री(विम्)-वि [गं॰] रे॰ 'तुत्तरियन र सुपाम•−५ दे 'शुर्थ । स्त्रीध+दि [मं] वर्षशील । पु अहस्या शिशुवाकः सुपय-दु [सं] अन्छा रारवाः सन्मार्गे सरावार। पर मुत्ताका एक तुवा सुरेशका एक तुवा सुवसका वक तुवा बुछ । दि॰ ग'रर मर्जवाना * भीरम ! सुपधी(धिष)-वि [वं] शमार्गनुषः । पु भमार्ग । [सं] गररा गीका । यु अनारका पेड | मुपम्ब-दि [सं] बदुव दिवस्टा बदुव स्वाध्यक्त ।

स्वामा(मन्)-वि [सं॰] सुरर नामवाकाः कीर्ति द्याओं । पु अंतरहा एक माद्देश रहेएका एक पार्पेद्ध एक वैत्यः वैनतंबका एक प्रज्ञ । सनाम्मी-सो॰ (सं॰) देशकडी एक पुत्री और बसुरेकडी पत्नी । सुनार-तु सोने-चाँदीक गहने महनेवाका स्वर्गकारः [सं] कृतियाका दृष्य सारिका क्षेत्राः गौरका क्यी । सुनारी-सी शुनारका कामा सुनारकी सी। सुमास-वि [सं] सुरर माल्याका । युकाक कुमल । सुमासक-पु [सं] बद्धप्य बृक्ष अवस्त । सुमाननी-को । परवेदारे किसी स्वयन-संवंभीकी मूलका समाचार जामाः ऐसा समाचार शिक्मेवर दिवा सामै-बास्ता स्नाम भावि । सुमाधीर-पु [र्थ] दे 'सुमासीर । म्नाम-वि[सं] दे सुनसः। सुनासा∸ची॰ [र्ट] सुंदर गढा बाबनासा । झुनासिक∽वि [स्र•] सुंदर जल्दवाला । सुनासिका-स्रो [मं•] धुंदर नाद्य धीमाठीळ । मुनासीर-प [मं+] रंड एक देवक्यं । सुनाइक-न दे नाइक। सुनिम्रह-नि [सं॰] अक्ट्री तरह निर्वाचितः विसपर भारामीसे नियंत्रत्र किया वा सके। समित्र-दि [सं] यादी मीदमें सोशा धुना । सुनिनद-वि [नंश] प्रस्तरः नंदर श्रम्य करमेवाका । सुनिमय-वि [मं] त्रिष्डा आधानीष्ठे विनिधव हो জাব ৷

सुनियम-तु [तं] संदर नियमः द्वाप्यवस्था ।

समिमय-इ [मं] पत्रा मिथव। मुंदर निशव।

श्रमिर्वासा-स्त्री [मं] विवती द्रश्रा

समिद्यस-वि [मंग] भवका पुष्ठिय।

सुतिरिद्धम-पु [मं] विदेश तक्षार ।

भवडी मीतिः दश्र गौराधिक राजा (मुरक्का पुत्र) ।

सर्नाया - भी (वं) मृत्युरी दुवी जंगवरनी ।

का वस्तिकर्म ।

कीर तक ।

वद राज्य ।

नुपीड-4ि

त्तरह पश्चवा हुआ !

अञ्जी पर्देश हुना (प्रह) ।

सुरर मोनिसिबिट। इ. बिन्।

कामध्यक्र । सुमीसक-पु [र्श•] मीकमा काला मैंगरा। नीलागुन, भसन इस । सुनीका-सी [सं] भक्ती। मोडी निम्युप्रांता। प्रती र्वण । समु-पु (चं॰) वतः। सुनेध−दि [सं] हंदर भॉस्तोंबाका। पु॰ मारका एक पुत्र (वी॰): भूतराष्ट्रका एक पुत्रः स्ट्रास्त्रः।

सनेधा-न्यो [र्ग] सांस्वमें माना हुई नी प्रधासी

1884 सुससु–पु [मंग] विभ्यु। भूरांच-वि [d] सिकांच्या अच्छी सेनाबाकाः • वे• रवर्तत्र । 🕈 धः स्वर्तत्रतापूर्वेदः काबाधीसं । समृद्धि-दि [सं] को बीना है गेकरें हो (गान) मुस्बर ताककपसे पुक्तः तंत्रवत्यमें श्रद्धक । सुसंसर्∽पु [मं] एक ऋषि कात्रेय ! सुस−वि [सं•] तरपद्म पदा किया हुआ। नियोज्कर निकाकादुना(नै)। पुनंदा पुनः राजा जन्म करनसे पानदौ स्वामः वसर्वे मनुकायक पुत्रः सोमरस (वै) । ∽क्षीवक-पु पुत्र-बीवक वृक्षा।—दा—वि की पुत्र देनेशासी । मौ पुत्रदाकताः यक्त देशी !-पादिका -पातुका-सौ इंसपरी कता।-पेय-पु सोमपान। —याग्−पु पुत्रकी कामनासं किया जानेवाका वष्ट पुत्रहि । – श्रत्मक – विकास सम्बद्ध में मसे जुक्त । पुरेसा पिता।-वस्करा-सौ सात प्रशंकी माता ।-क्षेणी-मृताकानी । - सुत्त-पु पोत्रा−सोम−पु धोमका तर्पत्र करनेवाकाः भीमसेनका पक पुत्र ।-सोमा-की भूम्पकी एक पक्षी।-स्थान-प्र पाचनाँ स्थान ।-हिद्यक्षयोग-५ यक विवाद संबंधी योगः । मृत्या-पु नास्त्यी वगकर्ते निदक्तनेवाका धमदेशा पदका छोटा द्वकरा। सुतवार+-५ न्त्रवार, निवता। सृतनय सुसनुव−वि [शं•] सुदर लेतानींवाका ! मुखना! - पुन्न । स कि शोना । नि बहुत शोने सुत्तरी-स्वी मुक्ती किमोंका बोका पावनामा । सुत्तजु−वि [स] सुंदर श्वरीरकाकाः वहत ही माञ्चक हुनका पत्तना । प्र यक्ष र्गभनैः कारीमका यक्ष प्रमः पंदानंदर। सी है 'सनन्त'। सुरुप्-को सि । संदर की कीमकांगी। अक्दरकी प्रशीत बाग्रेमकी एक करना वसुरेककी एक प्रकाशी। भूतप(म्)-दु [र्र•] दवश्वर्ग । भूतपा (पम्)-वि [धं] मदा तपत्वीः शतिस्व ताप हका। प्रवद्या चपस्या करता ही मुनिः सूर्व। **सुतर+−५ रे** 'शुदुर ।–माळ–को दे 'शुदुर नाम ।-समार-पु दै 'धतुरसवार । द्भवरच-वि [सं] किने नामानीसे पार विदा वा मढ (मदी) । सुतरां(राम्)~= [नं] भीर मी। अतिश्रया सत इसकिए। किष्डुना । सुतरार-पुदे 'सुतका । मुक्ती−रमी तुर्दो । दि 'शुननी । सुनारी । मृतकरि-नी [न] देवरानी कता। मतदम~प (ए॰) क्रीवका स्तर - इ [मं] मी पेके सान लोकों मेरे बका वकी प्रमारत-का जाशार १ मुक्तरी-की सन या पश्चनके रेशीने शरकर बनायी दुर रोश जिल्ला सार कुमते भार बूमरे बाम हेते हो। मुत्रवाना!-स कि सीनेमें प्रवृत्त करना।

सुतहर, सुतहार#-पु• शिली वर्हा । सुतहर-पु सीनीः स्तका व्यापार करमेनामा । वि• स्त्र-संबंधी । सुत्तद्दी−सी॰ सोपी । भृता-सी [सं] कन्धी नेदीः दुराकमा।-दान-पु कम्बादास ।∼पति≁प्र दामाद ।−पुत्र,−सुव−पु नाती !~साथ-ची पुत्रीका मात्र । भुतारमञ्ज_प्र [धं•] पीत्रः नाठी । भुतान-वि॰ [सं] सुस्तर सुरीका । सुसामा 🗝 🏗 🗫 शुरुामा । सुवार-पु कार्य, शिक्षा र सुनीवा बानुकुक समसरा [सं] एक गंबहरका एक भाषार्थ। दि [संश] बहुत सम कीका' अस्तुका निसकी ऑप्टकी पुतकियों सुंदर हों। * बद्धत अच्छा । सुतारका-की [सं] वीबोंकी तम जीवीस देवियों मेंसे एक को भौरीस वर्षतीके मादेशोंको कार्यान्तित करती है। सतारा-की [र्व] नी दृष्टिनोमेंसे एक (र्वा); नष्ट-सिविवॉर्नेसे एक (स्रा)। एक भएसरा; व्यक्तककी एक क्रम्या १ मुतारी-की बुता धीनेका स्वाः करंगिरी। सुरार्थी(विन्)-वि (सं•) संदानका अभिकासी। सुताख−पु [चं] ताकका एक मेद (संगीत)। सत्ताकी –श्वा मोश्विनीका सन्ना। सर्वितिका, सूर्वितिकी-की [सं] इनसी। मुखिष्ट−वि॰ (सं) बहुत तीता। पु पितपापका। सुविकक-इ [मं] पु भिरायवाः पितपापनाः शारिमहः। पुतिका-सा (सं) कीशतको द्वररी सटको। प्रतिम•-वी हंदर की । सुतिगी-की (चं+) वेटेवाकी की प्रवची। सुतिया - स्री प्रकी स्त्री। † को में प्रवनेका एक यह सा रिमुकी । मुतिहार - प्रमुक्त किश्री। भूती(तिण)-वि [रं∘] विशवे केरा में पुत्रवाल् । सुतीक्षण = प्रतासमा भारत वि के 'सुतीरम'। भुतीहल-वि [र्व] व्यति तीर्प । पु अगरस्य मुनिके धार्र थी वनवासमें रामसे मिने थे। सदिवन । - दशन-प्र सुरुविश्वक-पु (सं॰) सुष्कक श्वय मोरवा। अुसीक्ष्णका∽की० [सं] सरसी । सुवीक्तन सुवीच्छन=-वि पु वे भूतीव्य । सुसीय-वि [चं] को कालानीमें बार दिया का सके। पु अन्यता मार्गः परित्र स्नातस्थलः भूम्य बस्तुः अच्छा कामार्थः शिव । -राट्(ज्)-पु एकं पर्वतः। सर्नुग−वि [मं] बहुने कैया वरनुषा। तु नारितकका पेशः महस्य स्वयंश्च । सुनुहीं - सी सीपी। वह फीपी विसस पीरतने अधीम शुरवते 🕻 ।

शुक्त्च−पु[फा]दे सिन्धाः

शुक्षवाम्(वक्)−वि॰ [सं] प्रश्नीकाका । पु वक्रकेका

सुपालप-वि [सं] दे॰ सुपर'। पु॰ ऐसा बाहारा अच्छा मार्गः आम (१) । सुपात्र-पु [सं] सुंदर पात्रः नीम्न व्यक्तिः (जो धानादि सपथ्या-सी॰ [सं] बहा वा सपेट बशुका। छोटा पा का जविकारी हो)। वि॰ योज्य, जविकारी। काक बनुमा । सुपायु-वि [सं] सुंदर पेरॉवास्ता। सुपद-पु अच्छा पर, शब्द । वि सुंदर पैरीवाकाः सुपान-वि॰ सिं] जी सुखसे विना जा सके, पान श्रीधनामी। † शामित्र । सूपद्-वि [सं] सुंदर परीवाका। सुपार-वि [सं•] को बासामीसे पार किया था सकेत सुपद्यो−की [सं] दपा। बो बस्द गुबर जान (वैसे वर्षा) सफलताको मोर के सुपन, सुपना - पु दे "स्वया"। वानेवाका : - सन्त-वि अपने राज्यको सस्त पार सुपनामां • -- छ॰ कि॰ सपना दिखाना । अ॰ कि॰ स्वप्न करनेवाका (वश्य)। -श-दि॰ अवसी तरह पार आने-देखना । सुपरणः सुपरम*—रे 'सुपर्य'। पाटा । तु सामय मुनि । सुपरमतुरिता-सी [मं] एक गैर देवी। सुपारण-वि [सं॰] क्रिसका पाठ वा अध्यक्षन करना सुपररायस-५ [बी] कानको सक्की एक नाप मासान हो। चुपारा ∽सी [सं] भी प्रकारकी दृक्तिंगेंमेंसे एक (सां)। (२२X२९ ईच्ह) । सुपारी-चौ॰ नारिकक्के बाविका एक पेक्ष इस पेक्का सुपरवाङ्बर-पु [#•] निरोक्तण करवेदाका । फरू की पानके साथ या सकताते. मुख-दुर्जिके किए खाया सुपरस्र € पु दे 'स्पर्श्न । बाता है, छाड़िया 🛛 रकी; शिरमाय मान । सु 🗕 स्वरामा सुपरिरोहेंट-पु [मं] अश्रीकृत, निगरानी करनेवाना। - सवारोके द्रकड़ेका गडेमें बटक बाना या बटकने सीमा -प्रक्रिस्-प्र प्रक्रिस क्यान विकेका प्रधाय प्रक्रिस-मतीत दोना (स्तमें कमी-कमी वड़ी वेचेशी और गर्मी सद मफ्सुर । सुपर्य-वि [सं] सुरर पर्योबाकाः शुरर पंथांबाका । यु बस होती 🗓 । सपारवं - पु [सं॰] सुंदर पारवं: वर्तमान अवसरिवीके मुंदर पद्याः देवगंवनैः गरुकः कोर्त वका शिकारी पद्यी। धाववें तीक्कर का अर्थत (वे)। पाकका देवा संपादि (गिक्र) दिरमा अथ- सुगी। एक तरहकी व्यूहरपना। भागकेसरा का पुत्रा पक वर्षतः गवर्षत (कर्रमांट)का पेड एक पीरा-अमकतासः अंतरिक्षका एक प्रकः एक पर्यंतः यक सी तीन विक पद्मी (थी संपादिका पुत्र था)⁻ एक राक्षसः रहम मैदिक संबोद्धे एक द्वारता। –कुमार−पु यक देश देवता। –केन्द्र-पुगरङभव विम्लु। –धानु-पु रथका एक पुत्रः मुक्षाञ्चका एक पुत्रः स्ट्रनेमिका एक पुत्र । ण्ड देखाः -शाय-प्रायम् । -वात-प्रायसके वि मुद्दर पादर्वशाका। सपाइर्वक-पु (do) गर्नमांट बृक्षः विश्वदक्षा एक प्रश पेसोंस हान्य बातु। -सद्-वि सुपर्वपर वैठने वा अतायुका यक पुत्र भावी क्रसरिंगीके तीसरे अईए (में)। च्छनेवाका। पुविष्णुः स्पर्णक-दि [सं] सुंदर पर्चोदाकाः सुंदर पंबीदाकाः। सुपास-पु॰ नाराम सुमीवा। प्र गवन या कोर्र दिन्य पत्नी। मारम्बर बुक्, अमलतासः मुपासी-वि सुख बाराम देनेवाकाः सुबी- तुल्सी वसि इरपुरी राम कपु की मदो बहै सुपानी -विनद् । सप्तच्छा बाब सप्तपर्ग । सुपर्भाड−५ [सं] स्तमे व्यक्त श्हाका पुत्र । मृर्षियछा-स्रो [सं] बीवंदी। स्वोदिपानी । सुपर्या नती [सं] क्मबिनी। गवन्त्री माता। एक नदी। सुपीडम-इ [मं] माडिछः बोरसं दशना । सुपर्णाक्य-पु [सं] नागकेशर। सुपीत-पु [सं] गावरः ग्रंथमं सुद्दं (स्वी:); गीत सुपर्बिका-सी [सं] स्तर्जनीवंतीः प्रवासीः ग्रावपनी चंदन । वि अध्यो तरह पिवा हुमा; गहरा ग्रीका । सरिवनः रेणका । स्पीन-दि [सं] गहुन मोहा। सपर्णी-को [धं] कमिलनी। वन्त्रकी माताः मादा सुपीबा(वन्)-वि [वं] अध्ही हरद पान बरमेशहा। चितिबार अग्निमी सात विद्वानींमेंसे यक रात्रिः प्रसारीः स्युका-वि [मं॰] अच्छी तरह पंत कगाया हुना (वाथ)। रेणुका। कर्नु हे साथ सरिक्षिण एक देनी को संदर्भिक्ष माता सुर्युसी-बी [सं] वह ली बिसका पति सुपूरव हो। मानी बाती है। -तमब-दु गरह। सपुट-पु• [मं] कीक्ष्मरः विष्णुवंश । वि सुंदर मवनी भूपणीं (जिन्)-प [ले॰] गर्ह । बाका । सुवर्धय-दु [सं] गरहा सुपुदा−सी [र्व] शंबनी। स्पर्वा-सी [तं] दरेत द्वां। सुपुन्य-पु [मं•] सायक नेटा सपूर जीवक कृत । दि• सुपर्वा (र्वन्)-दि [थं] संदर बाँडी वा पोरीवाकाः अच्छे दुर्वोसका । मुरर परी, नम्मानीयाचा (ग्रंथ); नदुमग्रीसच । पु॰ सुपुल्प्रिका−ि स्ता [शं•] बच्छे पुत्रीवानी । स्ती श्रम काठा बैंदा बाँसा बाना बूग धुओं देवता । बतुका पश्ची। मुपवित्र−पु[सं] एक क्छ। सुप्र-इ [र] य हुई। सुरधात्-म [मं•ी बहाँ रात गरे। स्युरुष-पु॰ [र्ग॰] मना आरमी। सुरर पुरुष । सुपाकिमी-सी [मं•] धाँवा इस्ती । मुपुरं-वि दे भीनपूर्र । सुपारय-तु [सं] साम्य ममद्रा

मुप्रकरा-स्री [सं] रभनप्रधिनी ।

सुचक्र-पु॰ [मं] संदर वक वहिना कपता। वि॰ बी बहिया बराश पहने ही। सुबेश्सप-प (तंत्र) वक शह । मुच्छेत्र-नि॰ दे 'सन्छंद'। मुद्रान्ति है 'सन्छ'। सुरक्ष-इ [सं] शिरा सुरक्षत्राः सुरक्षत्री-सो॰ [सं] सतक्षत्र गरी । मुच्छद्-वि [सं] श्रेरर पर्शीवाका । स्याम - दि १ 'मृद्य'। स्रप्राय-वि [५०] बच्ही पमस्राज्ञ (११व); अच्छी क्रानामामा (ग्रम्)। मुर्दद्र-वि स्वर्धर । मुत्रंघ-वि [सं] शुरर जीपोनाका । सुबद्यम-वि [सं•] सुंग्र बयनी(बृत्रका)वाष्ट्राः विश्वका मंत्र संप्रदा हो । सुखन~ पु[सं•] सञ्जय भना शहसी; ≉ स्ववन । सुभनता-ली (र्यः) भद्रता अक्यनसी । मुख्यी-डो॰ कि 'होरनी' के तर करका सास्कर और कपर मुर्रेसे बारीक बाम करके बनावा हुना विद्रीता पर्वमपर विद्वानेकी एक तरहको मोधी रंगीन बादर । सुबन्सा(ब्सन्)-वि॰ (धं॰) छत्तुक्में सर्वत्र शुक्रीया निवादित सी-पुद्रस्य बत्रक विदिवनमा । मुजय-सी॰ [सं॰] बहुत बड़ी विजय । 🕅 आसामीसे मीत बाने बोग्य । मुक्तक−नि [सं] सुंदर बक्षमाना। पु सुं"र कक्ष स्वका-वि॰ सी॰ (सं॰) वहाँ वस्त्वी बहुतावत हो मही-बहुका । स्वस्य-दु॰ (सं॰) रक्षणा गोमोर्व कार्डका भारित पूर्ण बावन । सुबंस+-५ दे 'हरण । समामा-पार प्राप्त । मुजागर-विश् संदर मनीहर । सुबात-दि [सं] भन्ता बढ़ा हुआ। सुकामा कुलीम। लेरर । पु भूतराहुदा यह पुत्रा मरतका यह पुत्र । -रियु-य सुविधिर । सुमातक-इ (ग्रं॰) चौदर्व क्रांति। स्वातका-मी [4] शानि याग्य । सुजाता-दि भी [तं] कुकीमा। शुररी। मी ९६ क्षिणान बाजिका जिसने सन्तान् बुकका बुद्धाल प्राप्तिके बाद सीर श्रिकामी मी। तुबरी। गावीर्यदम । स्क्राति-की [तं•] बध्धे वाति। वि वयो वाति बरमश्रका कुनीन चुनाविका करवा। स्कातिया-वि दे शुकारिक अवनी वातिका, मशनीय । मुजातीय-रि [र्न•] बच्छी वातिहा। समान-नि चनुरा हानी सुविदा प्रकीत । पु प्रैसीः प्रमु≀∽ता∽की नुबान दौना। सुवानीव-वि दे 'तुवाम । स्यामि-वि [तं] विश्वके बहुतने वार्ष वार्ते वा व्यूनंतरण-वि हे व्यवका

रिष्ट्रशाह हो । भुजिद्व-वि [में] गंदर बोमबानाः स्पूरमाधी (दु मुखीर्गं−िव [मं•] संबटी शरह एवा हुमा (स्व); बीर्न-भोगंद शील १ सुबीबरी-सा [मं•] सर्पशेरांशी। सुर्आवित-पु [र्ग॰] मुनी श्रीवम । दि॰ मुसपूर्व भीनेशका । सुबय-वि [मंग] बासानीमें बीनने शाखा सुत्रीग#-पुदे नुदीन । मुजीधन - पु॰ है 'मुवीरम'। मुजार#-वि शहबीर, बहबाग् ; १० पावशार । स्य-वि॰ [मं•] सुविधः परित्र । सुनाम-वि [40] दानी। सुवीव। तु सभय दाव। स्टब्रह-तु [संग] स्वरंधी महाराज भविष्वका पुत्र । । सुत्राजा-ए॰ कि िसाबाः श्वामा श्वमा देवा। अर्कि दिग्नवं त्ना सूत्र पश्मा। मुझाब-पु गुरानेश्री किया। गुरावी हुई बात समीय शुर्दक-वि [मुं०] तब कर्रम (ग्रम्ह)। सुरकुव - की धीमधी कैन। सुटुक्या-थि कि चुपहरे विकन बागा छिडुरना । • म जिल् अधुक क्यानम् नियम बाना । मुद्र-रि दे 'मुढि'। मुख्दर॰-पु अच्छा शेर, स्वाम ! मुदार#-शि मुदान । मुडिन-वि सुंबर अच्छा। घर भवि, बहुन बहाहा-'ना मुद्रि कॉरी वा सुद्धि छाटी - वन्। वृत्। बृता । मधीना=-वि संद्याः गुरह । सुपुक्र-मी शुक्रनेदी विवादा भागा मुक्कमा-न कि दिनी तरू रामोदी ताइको शह श्रीमके सम बीडर धांचनाः मास नेताः शास्त्रे मध्यो कररकी और सीचना चड़ानम से जना बदरस्व सुद्भुव-मी ह्या पीनम निवन्नेवाधी धानाव । मुक्युशामा-स मि (द्वरा भारि) तत सरव रीना कि 'तुइ-शुक्ष की आवाध निरूप । मुझीन मुझीनक-पु [में] पश्चिपेका स्टून गाँउने प्रदशा । मुक्कमार-प्रति है 'मुस्स्मा'। मुद्दीय-वि सुन्द दोल, बनावरवाला, अपन ।-पन-तु मुद्दीन होना शुररता । सुद्देश-पु अवटा स्ट्र्र देश कि २ गढ २ दश अप्छे व्यक्षावसः । भुडर॰-रि प्राप्त अनुकृष अनुवादि मारम हुणा सुद्रीन । मुद्वारण्यनि सुधाय संबर्ग हि देखे मिनिया गुष **रमार्थ्य सुरार −रा**यमा । स्तुष्ट०-विश् हैक स्वर्गप् ।

सपुष्प-पु॰ (सं॰) कांगा आयुर्वना प्रयोजितका परास-पीपका मुक्तुंदा भृहत्ता शिरिसा देवदारा वारिमहा तुमः हरित्र। राजत्वभयोः स्वेत अर्फः जतुनारः सी-एव । वि संदर फर्कोबाहा !

सम्बद्ध हरिहा सम्बद्ध ।

सपुरप्रक-प्र[मं•] सिरिसा गर्रमांटा राजतक्यी। वनेत

सप्पा-वी॰ (र्ध॰) गुमाः तुर्दः सौफा सेश्ती।

मपुरिपदा-दी (तं) संदा सोवाः पारता बॉर्णदानः

,विवासका एक थेर ।

सर्व्या-या (d.) श्रीफा सोगा केशा गुमाः विवासा व्येत सर्गानिता ।

मपूत-पु रे॰ 'सपूत' ! वि [सं] अतिवृत, पनित्र ।

मुप्ती-ची रे 'छप्ती'।

सपर-वि [fio] जामानीसे भरा बानेवाका शका तरह

सरतेवाला । व विश्वीरा सीव ।

सप्तक-पु । छि] नकपुष्य हुद्या बीवपूर, विशीरा नीवृ । सुपेत, सुपेदा - दि० सहेद ।

सपेती १ - छो १ वे 'सन्देशे ।

सपेडी रं∽को दोजकारवार्थः देश 'सक्रेरी'। मुपेकी-सा होग स्पृ

सुपेश-त [एं॰] नारीक हुना हुना कपना ।

भुपंदार्ग - पु॰ दे॰ 'छछेदा' ।

सपोप-वि [सं] जिसके पाधन पीनणमें बोर्ड कठिनाई न हो।

सप्त-वि॰ (सं॰) निदित्तः सोवा ब्रमाः सोनेके क्रिय केरा द्रवा (दर सोनान दो)। सका ग्रेंदा द्रभा संक्षित (वैसे पुष्प)। निष्क्रिय नेकारा सरवः अनिक्रमित (शक्ति)। प्रश गानी नोंदा काने सोनेबाका शंतन । - घासक-वि मीथे प्रदक्षे दस्ता करनेवाका दावार। !- ध्व-पु: यक राधस । वि देश ग्रिसमातक ।-बस्त-विश् तिसे तीर का गया हो। - अन-तु सीया हुना व्यक्तिः मामी रात ।-ज्ञान -विज्ञान-पु॰ स्वय्न देखना स्वय्न । -रवक (प्)-वि सङ निवयेका -प्रशुक्त-विश सोक्र जागा हुमा । -प्रक्रपित-५ (स्वय्मावस्वामें) बरांना । -मांग-वि॰ सुत्र संवादीन, निर्वेष्ट । ~माडी(छिन्)-इ तरसर्वे दश्य !~सस्य~इ स्वध्नावत्थामे तिकते हुए छथ्द ।-विधाइ-वि शाया

क्षमा यो नित्रको तरह देश पहे (हप्म) ।-धिनिह्नक-वि बामद होनेवाला । -स्य -स्थित- वि सीया Eatl 1

सुसक-पु॰ [मं॰] निहा। मुसरा नी सुसन्द-पु [सं] निदिन दोनेदा आवा

मादा निरंपेश्ता (अंगरी) । सप्तांग-इ [सं•] वह अंग जो सुख, निरूपष्ट हो गया ही।

सुप्ति-त्यी (मं) भीद वैदा सपनाः ग्रह हो आनाः विश्वासः सापरवादी ! मुसोरियत-वि [बं] भोदर बढा हुन।

स्प्रकेत-रि [सं] बहुत शारवामः विवास्त्राम् नुद्धिमान् ।

सुप्रचार-रि [मं] ब्रीक राग्नेपर जानेनाला; जन्या देश

समधेता(सम्)-वि॰ [सं॰] वर्ति पुरिमान । सुमञ्जानि [से॰] अधिक वा अच्छी मंत्रानीवाला । मुप्रका(कम्)-वि [मं॰] दे॰ 'मुप्रक' (वे॰)। सुप्रजात-भि॰ (सं॰) बहुतसी संगानीबाला ।

प्रसेषास्य ।

समज्ञ-वि [सं] बतुत्त बुद्धिमान् ।

समजाम-वि॰ [र्थ॰] जिल्ला भारतीरी श्रान हो सव र सुमतर-वि [र्थ•] बाहानीसे पार करने योग्द (नर्श) ।

सुमसकं-पु॰ (सं॰) अच्छी समस्। मीह रिवार समतर्वन-पु॰ (सं) यक राजा।

समतार-नि॰ [र्स॰] आसामीते पार् ह यानेशस्य

(पीत्र)।

सुमतिकर-वि॰ [री॰] विषका भासानीसे प्रविकार दिना बासके।

समितिक-वि॰ [र्सं॰] अपनी प्रतिवासर दा रहनेवाका।

पु॰ एक दामव। सुप्रतिपञ्च−दि [सं] दार्मिक वीवन व्यक्तीत बरमेवाकाः

क्याबारी ।

सुप्रतिम−वि [सं•] सुंशर वा बायर प्रतिमानाना।

सुप्रतिमा-न्या [सं] द्वरर प्रतियाः महिरा। सुमविद्य-नि [र्स] व्यहापूर्वेद्व रिश्य रहतेपाताः सप्ती

मविद्यानामाः सुमस्त्रिकः संदर् पैरीनासा । य प्रक वरहाने **प्रत्यमाः यह शरहरी** समापि । समितिया - मी॰ (तं] तंदर मित्रयाः मसित्राः मृति मारिया

रवापना। सन्धी दिकाक रिचति। अभिनका एक वर्षत्रा स्टरब्धे श्व मात्रका।

सुमविहित-वि [सं•] शुंदर प्रतिष्ठासुक्ता श्वप्रतिका रहवा-पूर्वक रियमा अध्यो तरह स्थादित किया हमा। मण्डी हाक्नी रहमेबाला शुंदर देशेबाला। हु यह समाचि

गुक्तः वद्दरेश्यमः ।—चरवा-पुरुषक समावि ।—चरिम्र= इ वह शीर्थसम्ब । सप्रतिविद्यासम्- प्र (सं) समाविद्या १६ वदार । सुप्रतिच्यात-वि [सं] अच्छी गरह रनान दिया हुआ।

किमी विषयका अच्छा जानकार। निप्तको शूब छाननीन की यदी हो, सुनिहिचत । सुमतीक-दि [बं॰] सुंदर अंगीराजा, स्परानः रमाम-

बार । पुरु शिक्षा बायरेका वैशान बोलका दिग्यका पढ

सुप्रशक्तिनी-को [धं] देवान कोमके (रामव प्रश्नीक-

की श्रमी I

मुधवर्षां नि [सं•] देशनेमें ग्रेश स्वतान्। मुबदोहा-वि सी [मं] असानीरी पूरी बानेवारी (वाय) ।

सुप्रपूच्य-वि॰ [सं] आभागीत धतिप्रतर था पराप्त क्रमें बोम्ब ।

सम्बद्ध-(व. [सं.] जिसे बहुत लस्कि वेदि हो यदा में} पुरु एक शास्त्र-मरेश र

मुप्रम-नि [तं=] शुरर मगानुष्का रोनियानी। शुरर । 5 शास्त्रमण होत्रहे अंतर्गत श्रह वर्गा एक देवपुता पह दामका अभिकादि भी क्योर(प्रमा) मेने एक ।

प्रसंद-प्र [सं•] विष्यु । सर्वत-वि• [सं] सिडोतवः अध्यो सेनावाकाः ● दे 'स्वर्तन । * अ॰ स्वतंत्रतापूर्वक, सामादीसे । सर्तकि-वि [सं] को बीगांके मेलमें ही (गाम)। शुस्वर दाकक्यसे युक्तः संत्रनायमें कुछक । सुर्तसर-पुमि] एक ऋषि थात्रेय। सुस-वि [सं] शरपन्न, पैरा किया हुमाः निचोक्कर निकाका हुआ (वै) । पु॰ वेटा पुत्र राजाः जन्म कम्मसे पाधवीं स्वानः इसवें मनुकायक पुत्रः सोमरस (वै) । −श्रीवक−पु पुत्र बीवक बृक्ष् । – दा−वि की पुत्र देनेवाकी :स्वी पुत्रशास्त्राः एक देवी :~पाविका,~ पाहुका-स्ती इसपदी कथा !- वेच-पु सोमपान । —भाग-पु॰ पुत्रकी कासभासं किया वानेवाका यद्य पुत्रहि । - बस्सस्त-वि कासस्य प्रेमधे पुक्त । पु पेसा पिता।-वरकरा-व्या सात पुत्रीको माता ।-श्रोणी-सृताकामी । -सुत्त-पु पीत्र । -स्रोस-पु सोमका दर्गन करनेवाकाः मीमछैनका पद्ध पुत्र ।-सोमा-न्द्रो कृष्णकी ग्रह पत्नी !- स्थास-पु **भ**ाग-क्यनसे पानवाँ स्थास ।-हिनुक्योग-९ यक विनाद-धेर्वशी योग । सुद्रहा-५ नासूमको रगहमें मिक्कनंबाका चमहेका दक्का छोटा हुद्रमा। **मुतयार•**−५ स्त्रवाट, निवता । सुतनय सुतनुज-वि [सं] सुंदर संवानीवाका ! सुवना!-पु स्थन। अ कि शोना। वि बहुत शोने-वाका । सुदनी-स्वी सुधनी खियोंका बीका पावनाया । सुत्तमु-वि [म] सुंदर छरीरवालाः बहुत ही माञ्चरः, हुबका प्रतक्षा । पु. एक गंधवें: क्रममेनका एक पुत्रः पक नदर। स्त्री दे 'हदनू'। सुतम्-सी सि , सुंदर की कोमलांगीः अकृश्की पत्नीः रुप्रसेमकी दक्ष कन्याः वसुरेक्की एक रुप्पती । स्तप(स)-इ [सं] वपरवर्गाः सुतपा (पम्)-वि [स] महा तपरवी अविद्यव ताप हुक्त । पुबद की चपस्वा करता की मुनिः क्वें। सुवर+-पु वे 'शुद्धर ।-माश्र-की वे 'शुद्धर नाम ।-समार-पु दै 'मृत्रुरमगार'। सुतरण-वि [सं] विसे भारतानीने पार विथा बा सके (मरी)। सुतरां(राम्)-व [मं] और मीः व्यविधयः वत इसनियः किंदनुमा । मुखरार-प वे सनका'। सुतरी-क्सी द्वरदो । ते P 'शुनमी । शुनारी । सुतकरि-न्त्री (सं } देवदाकी छना। मुत्तम्य-प [सं•] कीवळ । मुतस-तु [सं] मीचेडे सावलीओमेंसे यहा वही इमारत डा भारार । मुक्तणी-की मन वा परसक्त देशोंने वरकर बनायी दुइ टोरी जिस्म सार दुनश भार दूसरे बाम नेश है। मुतपामां - स॰ कि शाने में मक्त करवा।

सुतवान्(वत्)−वि [र्त•] पुर्वोदासा। पु• कदरैका नाप । सुतहर सुतहार*-५ शिली। वहरी। सुसङ्गा-धु शोपीः स्तका व्यापार करनेवाका । वि स्त्र-संबंधी । सतद्वी−की सौगी। सुसा−को (सं॰) कश्की, वेदी: दुराकमा !-- हाम-पु कन्यादान !-पति−पु दामाद ।-पुदा,-सुत-पु नारी :-भाव-की पुत्रीका माद। भुखारसञ्ज-पुर्धि] पौत्रः माठी । सुतान-वि [सं] सुखर, सुरीका । सुतामा!-ध कि दे 'स्थामा'। सुतार-पु वहर्ष, भिरुषेः । सुगीता, अनुकृत अवसरः [सं] एक गंगरूका एक जाचार्य । वि [सं] बहुत अस बीला मलुका मिसको भाँदकी पुरक्षियाँ सुंदर हों। * बहुत सच्छा । सुवारका-को [मं] शैडोंकी वन चौबीस देवियोंमेंसे यक को कीशीस कार्योंके कार्यसिको कार्यान्तित करती है। सुतारा-की [संग] मी द्वाहिमॉमेंसे एक (सं); बह-सिविवॉमेंसे एक (सां)। एक अप्सराः अफरकार्ध एक कृत्याः । सुतारी-सी अहा सीनेका स्वाः क्रांगिरी । सुवार्की(विन्)-वि [संव] नंदानका जमिलावी। स्वाल-पु (स्व) वासका एक मेद (स्वीत)। सुताकी-की मीक्पिका स्वा। सुविविधा सुविविधी-श्री [ti] इमरी। भ्रतिकः-वि [चं] बहुत तीवा। प्र विवयापका। भुविकक-ध [र्व] दु॰ विरायवाः पितपापकाः पारिमद्र । सुविका-की [र्व] कीशतको प्ररोह शहको। सुविन•−की सुंदर का। सुविमी-की (चं•) वेटेवाकी सी पुचवती। छतिया – की मनी ची। † क्लेमें पहनमेका एक महना €सकी । मुविद्वार*-इ सुवाद शिश्यो । सुर्ती(तिन)-वि [संग] क्रिस्के वेटा की, प्रभान्। मुतीक्रण=-पु अयरस्यके मार्र । वि दे 'सुतार्च'। पुतिक्ण-वि [सं•] वति तीक्ष्य । पु नगरस्य मुनिके भाई जी वनवासमें रामसे भिने थे। छदियन । -- श्राम-प्र सुरविश्वक-पु (सं•) सुप्यक बुध मोरका । शुरुविश्वणका च्ली [त] सरुवी । **मुतीकत सुतीच्छन≠−वि पु दे 'मुनीस्न ।** शुर्तीर्थ−वि [मं] को कासानीसे पार किया जा सके। प्र अच्छा मार्गः परिच रजानस्थनः पृत्रय बस्तुः अध्या व्यानार्येः शिव । - राट्(ज्)-पु सके पर्वत । सुर्गुग∽वि [सं] बहुत ऊँमा अन्युच । दु मारिकका पेश भएका बच्चांश । सुतुद्धी - नो॰ मोपी। यद मीपी विमर्त दौरतने असीम शुरुषने 🕻 । सुत्त−५ [फा]रे सिन्हा

यु कच्छा तीरेबाब । सुप्रयोगा-यु (से) बच्छा देवसे कामा बाताः सुप्रकार रहताः परित्र संस्ते । ते को ठीक ठाव चकावा यवा दो विस्का कनित्य बरता आसात हो (तस्स्त्र) । -विशिक्ष-यु कच्छा तीरेक्स्य ।

मुप्रयोगा∽की [सं] एक नदी।

सुप्रयोगा-स्था [स] एक सद्दा । सुप्रसंग-वि [स] सुक्रम को सद्देशमें मिक कावा विसे - भारानीसे भीग्रा (देवा सके)

भारतात्वा भारता (वस सकः)
सुप्रकार-पु (सं) अच्छा साववा वार्यस्ता।
सुप्रकीरत-वि (सं) अच्छा तरह जनावा हुणाः।
सुप्रकारत-वि (सं) वहुमसंस्तितः वहुत प्रस्तिः।
सुप्रकारत-पु (सं) कुष्णकंत्रस्य बृह्णताः।

ह्मग्रम-पु (सं∘) कुष्णकश्चय मूळना । सुप्रसम्ब−ति (सं) महत्त सुद्धाः नहत्त सारकः (असे मण्ड)ः नहत्त सम्बद्धाः (असे चंदर))ः नहत्त सनुद्धकः या हपालः । पु क्षरेरः।

सुप्रसम्बद्ध-पु॰ [सं] कृष्णार्वक, पएक अंत्रकी वर्षरी । सुप्रसरा-स्रो [सं] गंधमशारियो क्या । सुप्रसद-पु [सं] काराजीसे विधा करके दोनेवाका

प्रसर। सुप्रसाद-पु [मं] इत्यप्तका शुवसकताः शिवः विश्वः स्टेरका एक क्युवरः एक क्युरः वि शुप्रसक्तः की

भारानाति प्रकार किया वा स्त्री । सुमसायक-दि [स] है 'तुमसाय'। सुमसाया-की [स] रहेरले एक मालुका। सुमसाया-की [स] है 'तुमसार'। सुमदिय-दि [स] होदि महिक अब यहहूर। सुमस्-की [स] वह की किये प्रस्तर सासामी हो। सुमाहक-दि० [स] मामीण अधिक।

सुमाप सुप्राप्य-विश् [सं] तुम्बर। सुमिय--विश् [सं] शिविप्रिया शु यक्त वंत्रवं। सुमिया-विश्वी [सं] वट्टल प्यापी। स्त्री एक जन्मरा। एक ऐपा प्रिय पत्ती।

सुप्रीम-वि (श्रे॰) सबसे केंचा वका।-कोट-चु क्ये सबोध म्बायाकमा पैस्ट वॅटिना खेतनीके राज्यकारुमें कल क्यामें स्थापित प्रवास स्वायालय ।

सुप्तक-पु [सं] संदर कना सनारा ग्रीरा असलतासा वरा देवा मूँग वीकपूर । वि संदर फलीने सुकाईदर

फबनला (सहावि); सफक (हिं॰)। सुफ्छक=-पु दे॰ 'दनफरक'!-सुस-पु सक्त्र। सुफ्छा-वि॰ स्त्री [सं] सुर फटनाटी; फडनती। स्त्री इंद्रवादमी; सुनका; देवा रांगारी; कुम्दना।

सुकुत-वि [सं] सुदर पूर्वोवाका। सुकद-वि॰ वे 'सकेद'।

सुकेरी-सी दे 'सप्टेदी'। सुकेर-पु [सं] समुद्रकेर।

सुर्वत-वि [सं] सुप् विमन्तितुष्तः, प्रथमासे सप्तमीतन्त्री विमक्तिवीसे शुक्त (सम्य)। --पद्-पु कारक विमक्ति

चुक ग्रन्थ। सुर्वाबर्ण्य [सं] तिका वि॰ सन्द्री तरह वैंगा हुमा।

सुर्वधन-विमोधन-पु [#] छित्र। सुर्वधु-पु॰ (तं॰) मच्छा मार्गः एक शैक साटककार भीर

कर्षि । वि वनिष्ठ कर्पने संबद्ध । सुबक्षु-वि [मं] गवरा मृता भूसर ।

सुवर्ग ०-पु॰ सोना सुवर्ग सम्कारंग संहर अक्टर। सुवरु-दि [सं] वित वर्गा पु शिवा सुवृतिका पिता कृष्णका पक स्वता एक दिवन पत्री (देनतपका प्रशो सुम्तिका एक पुत्रा मह भी पत्र पत्र पुत्र। -पुत्र-पु

प्रकृति । - पुर-पु कीक्ट राज्यका एक संगर । प्रकृति । - पुर-पु कीक्ट राज्यका एक संगर । सुवस्त≉-वि अच्छी तरह यहा दुक्ता; स्वाचीन । ≉ झ स्वेच्छावृर्वक वावारीसीः ---के कारण ।

सुबह की [व 'सुक्य'] स्वेरा भीर प्राप्तकाल।
- प्रेम्न-वि तक्षे करनेनाका। प्रा-पाठ करनेनाका।
प्राप्त । - प्रेम्मा केनेनाका। प्राप्त पाठ करनेनाका
प्राप्त । - प्रेम्मा केनेनाका। प्राप्त केना किना है।
- प्राप्त का प्रवर्ग सुद्देश्वरी । - - स्वर्ग-क
स्वार्ग । - सुप्त प्राप्तकाल करने । - का तारा
- का निवारा- हुक प्रव । - का सहिद्दान प्राप्तकाल ।
- स्वार्ग | - स्वारामकाल - मार्ग होता। प्राप्तकाल - स्वार्ग | - स्वारामकाल - मार्ग होता।

समस्य स्वाका । न्य सामस्यक पान देव । मु -उटकर द्वाय देवाम - एवरे मोद्य पुत्र हे धे नपने दोनों हाथोदी रेपार देवान ' मिक्से दियो मनदृष्टका हुँद देवानत अनिक दोनेका दर य रहे ! -कर देना-रात गुकार देवा ! -का निकका सामको स्वान-स्वाराभरी बरता ! -की पूर्ण सामको कहान-वरवास वीता ! -साम करना-राज्योदक आक्ष्यक

करना । —धाम द्वीमा~टाल मटील किया जाना

शाव-क दोना ! -(दो)गास करमा;-दोमा-दे भुवद-दाम करना दोना ! भुवदान*-अ है भुक्तन ।

सुर्वाषक – पु. [सं∘] अवदा (मित्र) (श्रेष । सुर्वाक – वि. [सं] वालको जैमा । पु. अवदा सहका;

्यक देवताः एक कश्चीपर् । सुवास्तिस-वि [र्गण] दिलकुण वधी धमा सूर्त ।

सुवास-स्ते है 'सुनंब'। सुवास-स्ते है 'सुनंब'। सुवासनार-स्ते सुनंद'। स कि सुवासित बरन्ता।

लुवानिक, सुवानित-(द द 'सुवानित । सुवाहु-पु॰ (त) वक राहाम वा मारोचका भार्य या कोर वतके साव विधानिकटे यहमें दिस करत दुरु हास सुत्र पु [का] चीयावा, विशेषकर ठाइनेके काम भारतेशका चीयावा (बोबा, गया, सम्पर, वैक)। सुरोकर पु (है) होस्को वैवारीके समय मंत्रपट करने-

वाका, मालिक् (वै॰) । सुरोजन-प्राधिको तेव वोकायका गांधा मामिनका पेड़ ।

नि॰ तीस्य, मुख्येका । सुतेमा(जस्)-वि [सं॰] तेमसे गुक्त। पु॰ अतीत करद-

सुतजार प्रस् / - १४ (१४) वनस युका युक् के इसमें महत् (शै॰); मारित्यमक्ता, हुरतुर । सुतेकित-वि॰ [सं] दे॰ 'सुतेबम ।

सुरीका-स्री [सं॰] महास्थोतिष्मती। सुर्तोतपत्ति-स्री॰ [सं] पुत्रवस्य ।

शुक्तोप, सुतीपल −दि॰ [सं॰] को जन्द दी हुट, मसक दो जाय।

सुरवना-पु• भुवना।

द्भुत्य∽पु॰ [सं] सोमनिष्पीडन-दिवस।

ञ्चरपा−भी॰ [सं] सीमनिष्पीटका क्षेत्रतर्पका प्रसद । सुप्तामा−भीः [सं] पृथ्यो ।

सुन्नामा(सम्)-तु [छ॰] हेद्रः तेरहर्वे सम्बंतरका यक देवनर्गः रफ्कः, भास्तः ।

सुधना-पु॰ पानामा ।

सुयनिया*−सी सुनती डीका प्रशासा ।

सुमती-सी॰ सिमोके पहनतेश क्षेत्रा शामागाः एक करः

पिंद्रास् ।

हुयरा-वि साक, स्वरण ग्रीफुटा निरोत (सुवरा महाक)। -पम-डु स्वरक्रमा, सम्रात शिष्टार। -(र) साही-उ मानकके सिप्त सुवराशाहका

चकारा हुआ १व। इस पंतका अनुवादी । सुधराई-सी. सुदरायन ।

सुचरी-वि सी॰ दे शिवरा । - प्रयाम-सी साफ जनाम परिम्हत भाषा ।

सर्वश्च-प्रश्चि विवा

सुर्विका-को [सं] गोरक्षी नामक क्रेश ।

सुर्तत-वि [सं•] सुर्दर दीसीनाका। यु अच्छा वीतः सदा वर्तकः पक्ष समावि ।

सर्वता-स्रो [मं] यह अन्तरा।

सुदती-चो (छं॰) प्रधिमीचर (नावम्म) दिसाग्री दिस्र(नी।

सुर्द्रभ −दि॰ [सं॰] वा भारानीथे पराभृत किया वा सके। सुर्द्रशित−वि [सं॰] भण्डी तरह वंस्र किया हुणाः

सुर्वशित−दि [सं•] भन्धी तरह देश किया हुणाः स्टब्स्ट्रेस पहुत बना।

सुर्वह-वि [चं] व्य या शुरूर वीशीवाला । यु श्रूच्यका एक पुत्रा एक राज्ञश धीररका एक पुत्र ।

सुब्हिय-दिश् छित्र । वहुत क्रूपण नमा समा खराः बहुत करार, बधिया दैनेशका । तु वस बंजीयनरेकः पश्चिका एक तुत्र ।

सुद्क्षिणा-स्था (सं] दिशेषकी क्यो। इच्या एक प्रमी।

श्चरियका-भी॰ [श्रं॰] दग्या मामक यीवा । शुरुरिग्रन॰-पु दे 'शुरक्षिय । शुरुरी-वि [श्रं] श्चरर वॉर्डीयाची (की) । सुदम्(स्)-वि [सं] संदर दोंगीनाका । सुदम-वि॰ [सं॰] दे 'सुनंम' । सुदमम-सु [सं॰] आत्म दुध (१) ।

सुवरसम-पु॰ दे 'सुरर्जम'। -पानि-पु॰ दे 'तुर

स्वमा-ना [सं] स्वर्माः

शुक्त -विश्व मिं] की देखनेमें मुंदर को; वो वासामीने देखा जा सके।

सुब्हर्ममा~वि ची [तं॰] ग्रंगरी रमधीय क्यान्ती। जी ग्रंगर मारी। शांका। शीमवक्त्री कता। चरंगी राता यक तरको शरिरा। प्यसरीवर। दुवीवमधी एक प्रती। बाञ्चनका देश अमरावती।

खुनका पराचनरात्त्वाः खुन्दांनी-ली [र्स] अथरानतोः दंहपुरीः वि सी

हेररी। सुब्द्ध-दु [सं•] सीरक सुबर्दक अध्यो सना। वि अध्ये पर्णोबाका।

सुद्का-को (छंग्) छाज्यभी तक्ष्मी मानक गीथा। सुद्कि-वि (छं) अविद्युव छोगा गूप छपावा हुआ (वैद्ये योगा)। पु छापय सुनिका यका हिष्या रक्ष

समादि । सुदाम−3 [गं] कुणका एक स्था। वक बनसर ।

शुद्धारमण्यु [रंग] इत्याचारच प्रतास वर्णका एक मंत्री; रह दिक्साम

शुक्ताला नकी [र्स•] स्वत्की रक नायुक्ताः वच्यर मारणस्ये यक नरी ।

सुद्धामा(मध्)-पु० [वं] वादमः वक वर्षतः देशनतः समुद्रा क्रूपका एक स्वापादी यो वनको क्रूपमे द्वापादी स्वीत विद्वार वेदवर्षद्वाची वी स्वार्गः क्रूपका एक गौर स्वारा एक गोर्था वंभवा एक मार्थाः एक समस्दरः वि स्व दास दरीवाकाः

शुद्धाय-तु (स) वक्तम वाला बाह्यभीके महिन्यास्तरूर रिका जानेवाचा वका वदमवनकाकन महावारीकी वी जानेवाकी निद्धाः वस्थायस्त्रकार्ये जानाता नारिकी रिवा जानेवाका वाला राग महारबाह्य राम करनेवाचा

(माना वित्रा आदि)। सुबार-पु [में] अवता बाधः देनरारा दिम्बनेनीका कर्ममसे पराश्वित हुआ। यह नावासुर। स्टंडका वह पार्वेदा पृत्तराष्ट्रका एक प्रशासका एक प्रशासका ण्यः प्रमः एकः वीविसस्यः एकः वानरः। विकर्दश्ररः या रक्ष्मान् वॉवॉमाला । + सी॰ सेमा, फीब । →सञ्च~ड्र

सुविस्ता! – पु॰ तुनीवा तुनिषा।

सुयोज-पु [सं•] नच्छा गीम। श्रासससः दिव । वि• र्सन्द्र या भव्छे नोजीनाना ।

सर्वीता-५ देश भागता ।

सञ्ज्ञ-वि [फा॰] इसकाः नामुका तेत्र भूरतः व गुरुरः। फरतीसे काम करनेवाटा, अधुहस्त । −दस्त−वि -वस्ती-सी दावधी पुरती, इत्य कामव !-दोश-वि जिसके क्षेत्रस मोझ बत्तर नवा क्षेत्र आरक्षकः कथ कर्तव्य नार बाहिसे मुख, निश्चित । -दोसी-सी॰ हक्क-पुरुषा, भारमुक्त शामा । -१ता-पुर यह श्रीवार बिसमे परतमाँभी कोर धीमत ह । -रहतार-वि॰ सब पक्रमेवाला इत्यामी । सुरु -होमा-हरूका होमा_र रुखित होता: देही होना ।

सुद्धकी-न्यो॰ हरकापमा वर्गाः हेडी अमतिशा । मृत्रदि~सी (सं) अवही, सुंदर तुद्धि। दि अरही इक्टियाका इक्टियान् ३

सुय-सी॰ दे 'सुबद् । सु [का] वड़ा मरकाः घराव-का नरका। ~ चा- प्राचेश मरका। सुब्द-५ [भ॰] प्रमाणः सार्यसे सिबि ।

सबोध-दि [सं] को नहबर्ने समझमें ना बाब, भासाम । पु॰ सुंदर श्रम । सुमञ्ज्ञच-९ (मे॰) कास्त्रिया शिषा विश्वा काराये

क्षेत्र सहावदीनेने एका विद्या मारतका यक जिला। ~सद्र ~शीर्थ~ड दक्षिण क्रमाण जिलेमें अवश्वित सक तीर्व ।

सुमहायासुदेव-५ (में) तक्षरप वसुरेव-५७ रूपा। स्टब्-लो॰ [अ॰] गुरद सरेदा, भोर । -वाइ -इम-म तक महत सर्दे । -(इह)कातिय-स्ता भेर का बद्द प्रजासन जिसके बार कुछ देरके किए, फिर भेपरा ही बाना है। -पीरी-मी॰ ह्यापदा आरंग। -चनारस-धौ वनारमधः सरेरा (काशीय भरेरे धरी-पर, रामक्र कियों हे स्मानार्थ जानेने अधिक बहरू परक शानी है) ! -साहिक्र-क्षी मुर्थोदवन परले बुधीब स्थितिनगर कदित कीनेवाला महाद्या क्य बाक । सब्दाम-न [भ] सुराको पाधीने बाद करनाह पाक परमेश्र । -सस्काइ-वाच है अस्ताहा वालीने बाद करता है बरलाइकी। चन्य दे देवर । (दिले अरस्त सन्दर्भ वा भति सुरत वरनुद्धे वैद्यवत सरावनाके नाववे बीसते हैं । बाल-भागमें अविकतर 'तुमान' और 'शुनान भस्ता मानन है)। -तरी अन्तर-भम्य है वरी दुइन-को (शांतरको दीबोका अनुकरणा बारवर्ष प्रका करनेके (सद या ध्यंग्वमें बेक्त है)। मुबद्दाती-वि ईपरीय।

मुर्मग-वि (०) भी भासानीसे हुर वाय, तुनुक । उन

मारियलका पेत्र ।

श्स-प्र [सं•] शूम प्रद । • दि• दे• 'दाम'। शुमक्य~प्र सि । शरिवा भीवम ।

सुमग-वि॰ [में] माग्यवाव्। संदर्भ विवा मानक पतमा कर्युकः। पु॰ धिना श्रोतामा पंता गणीतः काक अवसरेगा। शिकापुण्या संपत्तानामा सरक्या रह उना शीमान्या सीमान्यजनक कर्ज (वे)। -मानी-(तिम्)-वि वपनेको सुंदर वामान्वशाली जानमे

बाह्य । सुसरास्प्रस्य−वि॰ (तं] दे॰ 'शुक्रमानी । समगा-वि सी मि] शंदरीः महागित । की र ची-पिया पतिकी व्यारी शी: (दुर्गके प्रशीक के क्षमें पूरी बानेवाली) पंववपाँचा कुमारी। यह रायिनी। इस्ती। करत्री। बनमध्यकाः श्वेरको एक मानुकाः धैनताः श्रव पण्डाः भीक दर्भाः त्रक्षमीः प्रियंगः शर्मान्यस्ति । -तन्त्रनः ~सुत्त∽पु विवधे जारी सोधे बलप दुष्र। समगार्गहमाध-४० (सं) यह भेरब (d)।

सुमगाह्या-की [सं] बैनहीं; इरिहा; ग्रन्धे; बीठ हुनां शुक्षंद्रवली। सरिवन । मुसरगढ-दि॰ दे 'समग ।

सुसट-५ (ele) रवकुधक बोदा। समारवंश - प रे॰ 'सुमा' । सुअह-तु नामी बोद्धाः [मं] बहुत बड़ा रित ।

समझ-वि [मंग] नति शयः वति मांतरिकः इत विन्तु। सताकुवार। वसुरेक्डा एक प्रथा कृष्णका वह दुवा रुप्यविश्वका यस प्रथा यस पर्नेदा समझ हारा आहित इत्द्रोक्षा यह वर्गः सम्बन्धा ग्रीमाग्द । सुमाहक-पु॰ [मं॰] देशस (शिमश्र मृतिका सुद्रम

विकासस है); बैसका पुरा एक पूछ ! समझा-मी (एं) फूप्दरी पहिन विधे अर्जनने इरन करके व्याद किया और जिसमें अभियग्युकी कार्याच हुई। संगीतको एक मुख्या एक पोटरवा देवी। वक्तियो यह पुत्री। सनिम्हको पानी। यह दुराघीक यी। गरिवमा

र्यमारीः एसमेटा । - पृत्र अ-तु रूपन । मुसद्राधी−की [6+] नावमारा तथा ह

सुमक्रिका-सी (वं॰) कुण्यही धोदी गहिम। एक व॰

बुश्च बेरवा। बादमाण हना र मुसद्दश-९० [मंग्] बर्नन ।

सुमर-वि [40] वनक्ष प्रयुक्त विमद्य आमानीस पर्म मा प्रयाप किया था छो। अवधी तरह अस्परना सुरीता अच्छी तरह बरा इक्षा तुरूह-'सिर की शर्वे तुमर वित्र छोरी -वण्ड • शुक्र-'बाममरीवर सुबर बतः, वंना वेशि बसाहि -बनार ।

सुमय-व [सं॰] ६ संबलारोंमने अंतिमा दश्तांक बंदाका एक राजा । दिन क्रमयम्मा ।

सुध्यंत्रम−दु[सं•] स€बस १ सुमा-मी अनुतः धीमा धनि। १६। रहा रानी। सुमाहण~पु दे 'स्पनात । व तर दे 'स्त्रमारण । मुमाठ०-पु० दे 'रदथाव ।

सुमाग-वि॰ (वं॰) भाव्यप्रभु भग (वे॰)। • उ

सुदादण-सुदी शुदुर्विद सुदुर्वेद-वि [र्र] वो बस्त समझमें म माने, एक पर्वत पारिवात पर्वतः। सुव्हारम-विश्वि] बहुत भीवन । पुषक विव्याता । दुर्गीय । सुदावभ•~पु दे॰ 'सुदामन'। सुबुबर-वि॰ [सं] को वक्ष कडिमाईते किया था सके। सवास-५ [सं] दिनोदासका पुत्र और त्रित्सुका राजा दर्गम । निसका जारवेदमें योजाने रूपमें शब्देश हुआ है। जातु सङ्ख्या-वि [सं] अति बहसाध्य, बहुत ही क्रकिम । पर्यका पुत्रः भवननका पुत्रः दृष्ट्रप्रका यक्त पुत्रः यक अन-सद्भाप-वि [सं] किसे प्राप्त करमा बहुत कठिन हो। पदः स्वामिभक्तः सेवापरावण दास । सुदुस्तरः सुदुस्तार-वि [तं] विसे पार दरना बहुत सबि-की॰ [सं] शह पछ। कठिन हो। सुविद्(४)-वि [सं] कमकीकाः अनकाया प्रमाः [र्थ] विश्वका स्वाग करना बहुद सुदुस्यय-वि ਰੇਕ (ਕੈਜ਼ੇ ਵਾਰ)। कठिन हो। सुविय-पु [सं•] वच्छा दिच शुम दिना सुबन्धे दिना <u>भक्र—५ [म] यारी होना निरुक्ता पहुँचना।</u> सीमाग्वकाल । म [सं•] मति दूर गहुत दूर । वि बहुत दूर अन्दिमाइ ~ पुंचिं•ों प्रसक्त दिन; पुण्व दिन । का । -पराइत-वि चिरभरतः विसका निराक्रस सुदिवस-पु [सं] प्रशस्त्र दिन । परके दी दी जुका दो। ~पूर्व −पु शति पूर्वके देश, सुदिब्-वि [सं] बहुत चमक्रीका अति वीसिमान् । चीन जापान इत्यादि। मुदी−सी ग्रुष्टपद्या सुष्क(स्)−वि॰ [नं] सुंदर मौको वातीहम दक्षि बाका सुरेर । पु एक देवक्यं (वी) । स्त्री सुंग्र कॉस्स्र। मुचीक्का-स्त्री [सं] कदमी। भ्रदीति-५ [से] आंगरिस-गोत्रीय एक कवि। वि सुरद्ध∽वि [मं] बहुत मञ्जूतः सुरक्षितः। ~त्वाचा-महत्र चमद्रीका (वै)। को सुदीप्ति (वै)। की यंगारी। सर्वीपतिक-को॰ वे सरीपिं। सुद्धि-वि [सं•] बन्द्री निगाइवाला । यु मिद्र । भ्रदीस−वि [सं] विदिशीतमान्, स्वयनकता हुना। खी पैश दक्षिः। स्वरोसि−सी॰ [सं] तेव रोशनी था थमक। सुदेस्छ~५ [चं] सुरेषा पर्वत । सुद्रीर्घ-वि [tl] बहुत कंवा (देश काक)। सुविस्तृत । सुर्वेष−५० [सं] अच्छा वास्त्रवा देवता क्रीहाडील --धर्मा-क्षा मसनप्या । --क्षीवप्रका-की एक मायका वह माक्षण विसने दमवंगीके कहनेसे मरुका तरहरूभे करती । ∽शक्का नफलिका~सी यक तरह पता कराया वा कामीका यक राजा को इर्वथका उस नाः एक कारयमः एक विदर्मनरेखः विभ्युका एक पुत्रः काभेश। - एका - स्त्री रुक्ती। सुर्विर्म-वि की [सं] बहुत क्षेत्र। की भीमा-देवकका एक प्रश्न । कर्दर । सवेबा-स्री (सं•) वरिष्को स्रतीः समोधी। सुदुम्ल – पु (सं•) बहुत व्यक्ति कष्टया श्लोक । वि सुदेवी की [सं•] नामिको पतनी भीर व्यवस्थी माता। भुवेष्य~९ (री॰) यहे या और देवोंका समुदाय (वे)। महत्त करहरः बहुत कठिम । सुपुरिवात-वि [सं] बहुत स्वभित या श्लोकामित । सरोग−पु (सं•) वर्षुका स्थान। भव्छा सुरर देश। सुदुम्झव-वि [मं•] को सुमनेमें बहुत बुरा वा अप्रिय + वि<u>सं</u>दर । सदेशिक-पु [सं] अच्छा पर-प्रदर्शकः। सदामद्र-वि [सं] जिसका सहम करना कठिन हो । सरोप्या-प [सं] वृद्धिमधीमे सत्त्व कृष्णका एक पुत्रः स्वकृत्र-वि [सं] बहुत गहिवा कपवेका वमा हुआ। असर्गवसका एक इसक पुत्र एक प्राचीय जनपदा एक सहया-सी [र्श+] हुवार, अधिक दूव देशवाली गाव ! अरागोधः पर्वतः। सहराचार-वि [तं] बहुत हुष्ट, हुरे भाक-बतनका । सुदेप्पा-न्दी [शं+] वरिको पत्थी। विरास्की पत्थी। सुदुर्जय-वि [सं] जिसे विजित्त करना बहुत कृष्टिन सुरेण्यु-सी [मं] रे तरेप्या । दी। प्र॰ एक तरहकी ब्यूट एकता। सर्वेस॰─इ अच्छा स्थाना स्वरेख। वि अच्छा सुंदर। सबुक्षया-की [सं] सिकिको वस अवस्थानीयेने एक सुबेसी!-वि वे 'स्वदेशी'। (4) सुरोह-मी [सं॰] संतर देश। वि॰ संतर। सुदुर्जर-वि [सं] जिसे पकाला बहुत कठिल हो। सुदेव-पु [मं] सुंदर करत श्रीमान्दर अवशा श्रवीम । सद्देश सदुरेश-वि [थं] किने रेखकर शहन करना सुदोगधी सुदोधा-का [तं] अविक दूव देनेदाती बढिन हो। अधिव दर्शन १ याव । मुद्भग~दि [सं] भाग्यदीन । सुदोहना सुदोहा-वि श्री [सं] वो भागानीम दुदी सदर्मिय-वि [सं] विसे तोवना बहुत वृद्धिन हो। चासप्रे। सुदुर्मर्थ-दि [सं] बिसे सहन करना बहुत कठिल हो। सुबौसी०-व योजना-पूर्वेस । सुदुष्म-वि [सं=] अदि दुलग विसे प्राप्त करना बहुत सुदा-पु [बा] बहा मन का आंतीय विषय जाता है कार्डम क्षेत्र बहुत माबाव। और महावरीचका बारम होना है। सुदुवच-वि [सं] क्रिसका बत्तर देना बहुत कहिल हो। मधी-मी है भए।

1240

---सुमागी∽वि माग्ववाम् । सुमागीन । विश्वीमाम्बद्धाकी। सुमाम्म-वि व्यविमान्दशको । अपु दे चौभाग्व । सुमान-ब॰ रे 'सुप्तान'। -शस्ता-रे॰ 'सुन्दान मस्ताइ'। मुभाना - व कि सुदावा सोमित दोना ! समान-वि [सं] संदर बीवित्रका प्रकारक पुत्रः सतरदवी संवरसर । समाय=-पु दे 'स्वभाव' । सुगायक = - वि दे 'स्वामाविक 1 सुमाव≠~पुदे स्वमाथ । समाबित-वि [रं] अच्छी तरह निक, मावित किया ENT ! मुभापचंत्र मेसु∽ड 'नेवाबी बन्न र३ बनवरी १८९क; १९१ ें भारे सी॰ यस के पदसे दस्तीफा देखर जाप असहयोग कादोकनमें सम्मिक्त हो गये। मिटिछ सरकार भागसे बहुत मय काती थी। इसीसे भापकी ११ मार बेलकी बचा शाली पढ़ी। बितीय नदा-समरके समय जाप नश्च भएककर वैश्वके पाहर करे गरे भीर वहाँ भागन मारसकी स्वतंत्रताके लिय आजाद दिद सना का रूपरण किया । 'दिक्की थर्डे व्यापका मारा था । बापायकं पतनके वार छन् १९४५ में विमान-हर्षद्वामें भाषको सस्य हर्द । सुभायम-५ [६] संदर माननः बुबुवानका एक वृत्र । सुमापित-वि [सं] संदर क्यसे कविता नाग्मी संदर मानम करनेवाका। पु शंबर, कवित्वमय प्रक्रि, स्क्रिः समापी(पिन्)-वि [सं] संदर मारण करनेवाका सक्या । समास-नि [मं] संबद मासः दीक्षिकाका । प्र एक दानवः समन्त्रका एक श्रुष्ट । समास्वर-वि [सं] कृष चमकनेवाका, बीहिमान्। प्र पित्ररोका एक वर्ग । सुभिद्ध-इ [सं] मिशा वा लक्क्ष्मे तुक्रमताः वह काळ क्य देशमें अक्रको बहुतायत हो। निद्धा शुन्दम हो, शुक्ताकः। मुभिद्धा – स्रो [ए॰] पातुपुन्यिका, वीका पूका। मुमीश-विज धुमकारिको। सुभीता~६ भाषानीः तुवीमः भाराम । सुभीस-वि[र्व] स्रति बरावना । [श्री 'शुगीमा ।] पु॰ एक देश्य । समीमा-स्त्री (ए॰) कुणकी एक पत्नी। सुभीरकः सुभीरय-इ [सं] पकाशका पेह । समीएक-४ वि रे पारा । सुमुज-दि [सं] संदर मुनाभोनासा । सुमृति-सा [मं] भगका समृद्धि । सुमृतिक-प्र [तं] वेलका वेल । सुमूम-५ [ई] जैनोडे बाहर्षे बहनती कर्लनीय । सुमूमि-सी [सं] संप्रा स्वान । वु सम्मेववा एक पुत्र १-प-पु सम्धनका वक पुत्र । मुम्मिक-इ मुम्मिका-नी (सं०) सरलती गरीके

, सुभागी−सुम किमारे अवस्थित एक प्राचीम समप्त । सुभूवल−वि [सं] अच्छने तरद जल्लेहरा। पुदे• 'समिविष'। सुमृपित-वि (सं॰) सुंदर कवसे भृषित, व्या समाना सैंगारा हुआ । सुख्त-वि [र्थ•] सुरक्षितः अच्छी तरह दिवा हुमाः जिसपर अभिक भार कदा शी। : शृश्चान्य [मं∗] अस्यविक, बहुत स्यादा । सुमैश-प्र [सं] भव्यभिष्ठाः। सुमीन्य-वि [र्श•] जच्छी तरह भोगन बीम्ब । ; सुमीख∽धु [मं] श्चका घर खाना ।ः समीधिश-की शीमा। सुभीस−पु (रं+) वक्ष वैत चक्रवर्ता, कार्तवीर्वका तुत्र। सम्बद्ध-वि देश द्वामा । सुझ् सुझ-वि [सं] इंदर मीवामा। स्रो इंदरी मारी। रक्षेत्रको एक मालुका । " सुर्मग्रक−वि (सं॰) विदे संगक्कारी अदि शुमः वर्धीसे पूर्व। सनावारी । तु० ह्यस वस्तुः एक विष । भूमंगळा-वी॰ (तं॰) एक वीराधिक नदी। रकंदको एक मात्काः एक अप्तराः सक्ता वास । लुसंग्रही-सी॰ कम्बापकडे पुरोदिसको दी जानेवाको सिंद्रवानको दक्षिणा । सूर्मगा-सी (सं॰) एक पुराभीक नदी 🕒 सुमंध-पु है। सुमंद्र'। सुर्मतु-पु [मं] वेरम्पातका एक शिम्पा कहका एक प्रमः मेश्रीमान । सर्माच-१ (एँ०) बचरभदा मंत्री और शार्राव को बसकी बादे समय रामको रबपर बैजाबर नगरते बाहर है गया: वासन गीतम पानक भाषानी संतरीयका यह पुत्रः अर्थ मंत्री। होरर मंत्र अपन्छा सकादः दे॰ द्विमंत्रकः । वि अच्छी छकाइ माननेवाका । - हा-वि धर्मग्रंथेका अच्छा बान रखनेपाटा । सुर्मद्रक-पु [सं] कव्यक्ता पश मार्र । (समितित-वि [सं] विसे अच्छी समाह वी गरी हो। त्रिसुकी बोबमा पुत्रियशापूर्वक बनायो गयो हो। पु **अच्छी सहाद ।** सुर्मग्री(चिन्)-वि [चं] बच्छे मंशोशाचा। सुमधन-पु भारायसः। सुर्मद्र-वि (ए) बहुत सुरत ।-बुद्धि-वि० सेर सुदिर-नाकाः श्रतीस्तादः । सुमंदरां-पु 🖟 'सुबंद'। सुमंदा-सी [ध] शक्तिश्व । सुमंत्र-त [रा] वर्णक्तिकार । सम-प्र [शं] पून- ध्रव समीप सुम बीन बीब बरि पर कियो प्रमाम - रपुरावः चंद्रमाः भाकासः करूरः (का) वीहे वा गरेका सुर को बीक्स फरा मही हाता।-साहा-पुरु यह बोहा विसन्धे एक बीएको प्रश्नी घरान 🛍 गनी थो ।-सराध-प पीवके सुर कारनेका श्रीकार । -फरा-प बीवोंके शुरमें बीनेवाला एक रीम । -शुराहा-वि शिवका सुर स्था गवा हो (पोना) । go

मुद्र∽मुधारक मुद्र-वि दे 'सूद्र'। सुद्र्यी−भ•सात्र समत्। सुब्दि॰ – सा दे॰ 'शुक्षिः हे 'शुज'। सुपुत्-वि॰ (सं॰) जून वयकीका। सुधुमन-पु [एं •] बैबरवत मनुका पर पुत्र वह (सापवछ कुछ बालके लिए की हैं। जानेपर इसके गर्मेश पुरुद्वाकी **उत्पत्ति ह**ई) । सुद्रष्टा(प्ट्र)-वि [सं॰] अवधी पैनी पश्चिमका। सुद्धिम-वि+ [सं+] अप्छे वहेतीवाका। मुद्रिजामय-वि॰ [छं] विसके मुँदमें अच्छे बाँत हों। सुर्धरा ७ - पु संस्छा दग । सुध-मी वादः शोध चेन-धारर । 🖈 वि+ शुद्धः ।- बुध-की शहन्दवास चैत (-म रहना) ।-प्रामा=-वि॰

- न रहना - याद होस श रहता। - विसरमा - याद म रहमा, होश म रहना।-लेमा-सीव-स्वर केना। चार कश्मा। मुचन-वि॰ [सं] बार्त धनो बहुत वैशेवाका (वे) । हु

होक्ष्याकाः समेश । मु -विकाना-वाद विकाना ।

हिरण्याद्यका एक पुत्र । सुचनु(स्)~पु• [सं•] सूर्वतमया तातीके वर्षसे तरवस

इरका पढ़ पुत्रः गीतम इक्के पढ पुर्वत । मुधन्या(न्त्रस्)-वि [सं] जिलका बतुष् बहुत बहुवा बी। पशुक्तिमार्ने कुछक । पु वक वर्णसंबर जानि (वैश्व)। निष्मुः यस मागरिसः वैराजका यक पुत्र और पूर्वरियाका दिक्रोकः कुरका एक पुत्रा होचनागः विभक्ताः बिहर। सुचन्दाश्वाये~द्र [सं] एक वर्गसंबर वादि सुधन्ता। सम्बर−पु• [सं] एक अर्रत् (श्री)।

संघरमा-स कि॰ दुबस्त दीना दीव या ना निहति वृश श्रीलाः दिगहे दुषका बमला । सुधरवाना-नः कि सुपार कराना । सुबराई-स्त्री शुवारा सुवारनेकी कशरत । सुधर्म-द्र [संग] सुंदर बन्दम धर्म स्वाय क्लीब्या चीबासुर्वे श्रीवदर महाबारके वस शिष्मीयेथे बका किनरी-का दक्त अविपति। एक देववर्ग ।

सुबर्मी-हो। (मं) देवसमा। सुधर्मा(मेन्)-वि [सं] स्ववमंत्राचक वर्मनिष्ट । ह कुर्दुनपालक गृहरवा द्वतिया एक दशार्थ-गरेशा देश-समा। एक निश्नेरेग एक जैन । सुधर्मी-वि वर्गनिष्ठ (व्यी [मं] वेवसमा । म्बनामार्ग-छ कि दे 'सुनरमाता ।

सूर्योक-अब साथ, समन । मुचीग-पुरु [मे] बेह्मा । सुचांश-द (मं) चारवार कपूर !- म -श्य-प्र

सुचा-सी [मं:] अध्ना महरेदा रका रशा दूधा वता

शहरा गंगा। रिप्रकी। प्रथी। निमा नामना। वहाँ नूबका मरिवनः तिलीवः मूर्वाः यूमाः स्वेतीः वैदा परः पदः रह्मी प्रमी। एक कुछ। समृत्युत्री ।-व्हेंड-पुकीवल । -कार-त भूता सकेरी करमेशाना राव 1-धार-मुनेका कार ।—झास्टिस्न-वि० सकेटी दिवा द्वथा ।

-गेइ-५ धारमा ।-घट-५ चंद्रमा १-जीबी-(विष्) -प्र सकेरी करनेवामा राज ।-दीबिति-अ कामा ।- हव-पु असुतीयम पदा चुनैका गीन, कर्न्द्र ।∽धर−मु चंडमा दे० ग्रममे ।~धनस− वि॰ सप्रेशे दिवा हुजाः चूनेसा सफेर ।-पद्मसिस-नि सप्रेमी किया हुमा।-धाम-५ [प्रि] भंदमा। —धामा(सम्)-वु चेत्रमा ।-श्री+-वि॰ मुनावानाः समाञ्चन ।-चीत-वि सप्रेशे किया प्रका !-तिबि-५० वंहमाः समुद्रा एक कृत्त ।- पक् (य)-५ अहस्का दूष ।-पाणि-पुरु बम्बहरि ।-पापाण-पु एकेर् सनी, खदिमा !~पूर−पुर जन्दको धारा !~भवन−पु ज्ना पुना इना मन्त्रमा पंचम सुरुते।-मिन्ति-सी सप्देशी की इर्द बीबार !~सुक्(ध्रु) -मोभी(बिम्)-इ समृतपान करवेवाका, देवता ।-भूगसे-पु॰ क्रिया वदः कपूर। -सयुन्द-९ वंद्रमा । -सूनी-सी॰ सामगिसरी । न्मीत्क-प्र॰ कप्रः वशास्त्रवर्गः र्वसकोषनः । -- स-पु॰ तपरात्रीज्ञनः स्रोहः । -- योसि - पुः र्वहमा !- रहिस-पु वहमा !- रम-पु अवृता रूप ! वि सुपा-तारवाविद्या-वर्षे-तु -वृष्टि-सी महासे वर्ग ।-वर्जी(पिन्)-वि जनुन शरमानेवाना । ३ नकाः चंद्रमाः **रक इकः ।**–शक्करा–स्त्री॰ रश्रियाः संप्रेर खकी (∽[सुझा~वि सप्देरी दिवा द्वता) – झमा∽भी श्रीवास्त्रवा' (असायु) । • यु अस्त वरसानेवाण । -सदन-पु॰ पंदमा ।~सागर -सिपु-पु॰ तुनाहा प्रमुद्दा≔सिका≔नि सुवामे सीमा∦का सुवासे हर्। -मित-वि अपूर्व वा भूने वैसा सुपेद ।~स-इ वेहमा !-शृति-पु॰ वेहमाः कमनः वदः !-सफ-पु महत्तवे खाबना ।-स्पर्धा(चिम्)-नि॰ मन्तवे स्पर्ध करनेवाका वक्क मधुर (वयन) ।-साव(-ारी छारी नीम कीना। सहबंधी वृत्ती।-हर -इर्ता(न) -हार-द्र गण्डा-द्रष्ट्-प् सुवा-मरीवर । मुखाई।-सी १० शिपाई'। मुधाकर-१ (सं] नहमा। स्थाता(म्)-वि [नं] सम्पर्धातन करमेशना । स्थानु-सी०[मी] गीवा। दि० भनी ।-इशिण-वि विसे वयारे पहुन अभिक दिएका मिन्डे पहुन मधिक **द्रा**धाणा देनेबान्य (१) । शुक्राचर−वि [नं•] विनद्वै घपरमें अनृत री । पु• # ध्यामें । मुचाबार-बु (रॉ॰) ब्रष्टनपाय- ५२मा ।

सुधाना≠−स कि गुप फराना याद दिलामा

ठीक कराना। शीन कराना । सुवासय-वि [वे] अगृतपूर्वः भूनेका वना हुना।

त प्राप्तार ।

सुधामा(मन्)-पु ् [सं] चीतमा एक ऋषि एक देवनगी। एक वस्त ।

स्थाय-पु (लं•) भाराम सूना ।

स्थार-इ शेष दूर करने वा दीनेदा भाषा संस्थार इमकाद । दि अपनी भार या नीक्षामा (राम मारि) । सुधारक-५० शुवार अस्मेवाच्या शुवारका कारीचन

सुममस्क-वि [मं] प्रसक्षवित । सुमना-श्री [सं] बमेकी। सेवनी। बक्री नारा वर्गसी प्रमाः केवन मरेसको एक कन्ना । समना(नस्)-५ (तं॰) देवता नेक आरमी। गेट्रा बरअक्षा एक मेर पुरिवर्शना अहायारी। जिला एक दानका बर्वेदवदा बन्ध प्रवा एक वर्षता मुखा कि बदारासाया संग्रह । सुमनामुग्र-रि [मं•] प्रनादश्य । सुमनास्य-तु [मे॰] एक नागतस्य । सुसमित्र•−रि हंदर मगिया म"।दोनै युक्त । सुमनीकस सुमनीकस-५ (सं॰) स्वर्ग । मुमनोज्ञपोप-पुर [मं] एक पुत्र । श्ममाहाम(म्)-५० (वं) दुणहार । रुसमोमर-वि (तिः) प्रशासंहतः।

-TIMP-5 EX! स्मनस-५० देवताः ५५४ । वि० तुर्र यनवानः असम्।

इसे एका एक नागरैस्य । वि अमीवरु शहर । समन् (स्)-इ॰ [मं] इषा ॰ देशा । -बाय-इ॰ [दि] कामरेद । ~माक~प्रे [दि] प्रश्वार ।

मानपुरमा कैनका पैत ह स्मन-प्र (संग) गहुँ। पनुसा बाचि इसके बार देववाओं-

शुस्तरा − 'तुमनस्'का समास्थत रूप। − पत्र −५ , − पश्चिका -श्री बाद्योपनिका, बारिजी । -क्षक-पु॰ बातीकत,

वाका । स. जीवशाका मंत्रर वजन । लुसप्यसा, लुसप्या-वि सी (सं+) मतको समरवाकी (क्षी)।

शुसद्भ−दु [सं] नामका पंका समयम-वि रव्लकाय, वॉववाका मोटा। समग्रर~वि [सं•] अति महुरा बहुत माञ्चका श्रंदर गान-

शुमद्-वि॰ (रं॰) यतवाका । धु रामध्ये वानरो सेनाका एक जानक ।

सुमति-विश्व (संश्वी बहुत बहुर। सी जच्छी हुकि वा स्वमान, क्याराश्चवताः देवानुसदः देवः अनुसदः सुद्धिः रपुति। रच्छा। सगरकी चरनी को साठ बजार पुत्रीकी जनमा करो जाता है। विभ्युवधानी परमा और करिएकी माता अनुकी एक करवा गेक एका मैना । पुर यक देखा पक मार्गका मानु शाकाकि शंतरीत एक काकि एक मानदा एतका एक प्रम या शिष्या गरतका रुक्त तुना शोमदर्चका एक प्रवा स्वाह्यक्षा एक प्रवा सममजनका यस प्रभा मृगका यस प्रभा व्यक्तियका यस प्रमा विवृश्यका यक प्रमा गत अवस्थितिको तरहर्वे या वर्तमानके प्रीकर्वे महत्।−संतु−पु इतका यक्ष शागा-लेलु∽पु एक

सर समनेका रीग । सुमक्ष-वि॰ [एं॰] भच्छे वर्षोवासा । पु॰ बार्वदारस्व । समग्रधा-खी॰ मि । अनावपितिकश्ची यक क्षत्र्या । सुमणि-वि [सं] रत्माचंत्रता धु स्वतंत्रका एक अनुबर। सुमव-नि॰ [र्थ] संदर पानसे सुख । ह सी॰ है 'मम्बि'। समितिजय~९ (सं•) विज्या

मुमन-मुमुज

सुमिरनियान-की वे 'नुमरनी । मुगिराती-स्री है दियानी । सुमुख-दि [मं] शुंत्र मुखक्त शुंहर, बनीव मनवा

सुमिरमा-नश्कि वे 'समस्या ।

मुम्मिष्य-वि [वं] अच्छे विशेशाना (वे) व मुमिरमी−५ रे 'स्मस्य ।

मुसिया-नी [र्थ] बसरवारी मैलनी रामी के प्रथम और शतुष्मकी माना थी। मार्चेडक्की मात्रप्र एक मिल्टी ह -शक्य -जंदन -भ-नु सद्यम भार शर्मन ।

प्रका श्रीराष्ट्रका यक राजा विस्तेग टाइके क्यागुनार मेनाइन के राष्ट्रान्यंत्राची बरपणि हुई। बहुनाकुन्यसके मंत्रिमः राजा शरबंदा चत्रा वद विक्ति। बरेश एक मनव-मरेशा गरका एक तुना का बावन । नि अन्ते नित्रीनामा । - भू-प्र वर्गमान अवमधिना ६ २ वे अहेत् (हे)। सगरका यह लाम (बळवनाके स्वमें) ।

देख्यो व गर्मने राजम कुमकर्म आदिन्य क्लांच हुई। एक वागर । मुमादयक-५ [सं] १६ पुराकोश्व वर्गत । मुमापलि-नो (सं] पूर्नेका दार । सुमिध-पु (सं०) करता दीरत, मनिमन कृष्यदा १६

सुमाकिमी−सी (तं) एक वर्षहत्ता वक्ष गंनशे । मुसाली-म अफीमाने नुवी किमारेक्ट वसनेवानी वह वारव वार्ति । -सिंड-पु॰ शकीबादे पूर्वी विमारेशर (अरीतिमाने पूर्य) अमरियम यस देश । सुमासी(सिन्)-3 [र्व] यह राक्त क्रिनंदी क्रम्बा

शुमार-†४० दे० 'धुमार' । + दि० जुना हुआ । श्रमार्ग-त (d+) अप्ती राष्ट्र ग्र**प्**र सुमारस्त्र-वि [र्थ] बहुत छोद्या वारीक । मुमाळ~१ (र्स•) प्राचीन काल्या एक बनएर । ५

। स्वामिमानी । लुमाय-वि [र्म•] बहुद कटुरा मानायुक्त । द्व अगुरीका थक राजा। यक विधायर १

भुमहाकपि--प्र॰ (स॰) यद देखा। सुमहाक्षय-वि (र्तः) बहुत बवादा परवादी दश्येगामा। सुमाञ्चा-पुरु सकबदीपपुंत्रके अंतर्गत रह दोव । सुमानस-वि (५०) अन्छे मनवातः नेद्रशिकातः। मुमानिका-सी॰ (प्रे॰) यह वर्षहर्स । सुमानी(मिन्)-दि॰ [तं॰] बहुत अभिमान करनेवाला

सुमरीविका-की • (सं) संस्वमें मानो हो पंच ग्रह प्रक्रियोगेरे एक । समग्रीय-वि [गं•] मर्मागतक प्रस जानेवाला (ग्राप्त)! सुमध्यक-पुर्व [नंग] यह प्राचीम बनपद ।

शुसरमा*−स॰ वि॰ रमस्य करमा, ध्वान दरना वपना । सुमरनी-सी॰ २७ दामीद्री चरनाना ।

सुमनोगुरा−५० (स } ण्ड मागरील । सुमनोरज(स)-सी॰ [धु॰] पराय । सुमन्यू-वि॰ [सं॰] वातिकोची । पु॰ एक देवर्गको । सुगर-पु [र्न•] बाह्य। सरक्ष पृत्तु । सुसरन≠~प्र॰ दे॰ 'हमरच': त्यो सगरनी।

1849 **करनेवाका** । सुधारना-स कि॰ दोर हुटि दूर करना, बुकरत करना मेस्कार करना । सधारा#-वि॰ सीवा, मोका 1 सुचाबतात-नि [सं] वे 'सुवाबबक । पु एक वर्षत । स्यावास-५ [तं•] क्या । सुषावासा-स्रो [तं] सोरा । सुधि-को ६ 'सुन। सुधित-दि [सं] हुन्यवरिधतः ठीक तरवसे वैयार किया दुमा (मोजन): शुनागुस्यः सद्यपर खावा हुनाः तुका हुमा। क्दार दवाह (वै)। झ्थिति∽सी [सं]कुमारी। स्पी-पु [म] पंदित दुविमाम् स्पत्ति। सी॰ सुंदर अभि: सुबुद्धि । वि नुशर तुन्दिवाला सुबुधि बुद्ध । सुधीर-वि [सं] या वैश्वान्। शुपुणक∽पु [स] एक पंतरूप श्रीवेष्ट । सुभूत्य-दु [सं] स्वादु मानक वेषद्रव्य । संभूजवर्णां न्द्री [मं] अम्बिकी सात विद्वार्थों मेरे प्रका सुयोज्ञब-पु [मं] धम्बति । सुचोज्ञवा-सी [40] हरीतको हर । सुचीत-वि [म] मन्द्री तरह तुका साफ किना हुना; चमकाया हवा। सुर्युपास्य − पु [सं] परमेव्यः शक्त्रासायका पक्रवकारः कृष्णका एक अनुबरः वस्त्रेवका सृक्षकः। मुख्यपाल्या-सी (सं) सी। समा समाकी यह सहेकी। यह रंग। मुनंद-वि [सं] मध्धी तरह प्रसन्न करनेवाका । पु कुम्पाता एक पार्वदः बकदेक्का जूमका बारह प्रकारके

राजभवनोमेसे एक एक देवपुत्र। विश्वकर्मा निर्मित मूसल मायदाः एक भीड सामकः। सुमंद्रक−9ु[स] सिक्का एक गण। स्मंदम-दु [६] हृष्यका रह दुव। सुर्वश्-न्या (सं) बमाः बमान्धे एक सदी। गारी। कुर्यनके पुत्र मरतको पत्नी। मार्वमीत्रको परनाः बाह्यको मालाः प्रतीपक्षे परमीः यक शकीः चेदिके राजा सवाहको बंदिना गीरीचना। कृष्यकी यक बरनी। अर्द्धाती। एक विश्विः सन्देत गाय । सुमंदिमी−सा [म•] यक पत्रशाक, बाराय-छोतका; एक वर्षकृत्त । सुनां∽वि सुत्र। ~बहुरी~सी एक तरहका कुछ रीग

बिसमें रग्य-रक्त मुख ही बाता है (विक्रोटी कारमें बा रस तरक्षा कोई इरकत करनेपर तसमें कोई सक्क्षीफ मही होती। मुनकातर-वु पक'तरहका छी।। सुनकिरवा-प एक बीश विसक्ते पर बन्देके हंगके होने है जुगुन्। • एक पौधा (f) । सुनस्त्र-पु [मं] बत्तम मध्या एक मरेश (मररेनका उत्र)। निरमित्रका एक पुत्र ।

भुनसमा-मी [सं] कर्ममासकी कुमरी राजिः १६१६) एक मात्रा ।

सुनगुन-सी शक्की, अस्पष्ट वर्जा कानाफुसी। यहती हुई खबर। शेष्ट (पाना मिलना) । सुनत−वि [मं] बहुत सुका हुमा। + स्ती दे सकत् । सुनति⊸वि॰ [सं] एक दैस्व १ ककी दे 'सुभत'। सुनना~स कि वनगेंद्रियसे सुभ्दका प्रदण करना, कानोंसे जानाव मासूम करनाः च्यान देनाः तुरा-मका

सहमा फटकारा बाना (एक कहोग इस सुनींग) सुक दमा नुनना। मु॰ सुना सुगाया-इसराँद र्नुहरे सुना हुना को भाँको देखा ग हो। सुनी अनसुनी करना --बात शुनकर भी बसपर ब्यान न देना। सुनका-सी॰ क्वोतिक्का यक बोग (किसमें स्पंड सरि रिश्व और कोई शह चंत्रमको सुकारकोर्ने मीण स्वानपर रहे)। भुनवहरा-वि को बात सुनकर मी न सुनतेका बहाना

करे धरव दे जाब (किंदगी)। सुनवहरी-सी दे 'सुन'के छात्र। सुनय-पु [मं] सुमीति सदाबार कनका एक पुनः परिद्ववका एक पुत्र सानिजका मार्च एक समपद । सुनयन-वि [सं] संदर याँधीनाका सुकीयन। प रिस्म ।

सुनयना-वि सी [सं] मुहोबना। भी नारी। रावा वनस्त्री परशी। सुमरिया सुमरी!-की संश्ते। सुमर्-वि [मं] बहुत गर्बन करमेवाका ! भुनवाई-की अन्य मुक्त्म ना फरियादका मुना वाना ।

सुनवैया-९ सुननेवाकाः • सुवानेवानाः। सुमस-वि [सं] शुरर मास्यामा । भुनसाम-दि निर्वत बनश्न्व। वीराम । चु सन्नारा । सुनहरा सुनहरा-वि धोनके (यहा।

सुनदा •- इ स्वान कृषा-'सुनदा ये हं तर मसवार। ⊶क्षवीर ।

समाई-ली दे 'सुनवार । सुनाकृत भुनाकृत~पु [नं∘] कर्नरक।

सुनाद-वि॰ [सं] सुर्द श्वनिवासा सुस्वर । पु॰ श्रीहा सुरर ध्वमि ।

सुनारक-दु [सं] श्रीया

सुनामा-स कि किसेक सामने किसोकी संशोधित करके मुख्य बहमा पूर्मोकी शहम कराताः अधानाः सरी धीटी करना फटकारना।

सुनाबी-नी वे सुनावसी। सुनाम-वि॰ मिं] गुंदर वामिवानाः विना मृहवाना । प्र चक्र मेनाक पर्वता पर्वता प्रतराष्ट्रका एक पुत्रः कन्न नामका एक मार्र ।

वय ।

मुनामक-पु [में] है 'मुनाव । सुनामा-नी [सं] करमी।

सुनामि−दि [तं•] तुरर मानिकामा (दे) । सुवाम(म्)-प्र [स] नेदनामी अहि -इरद्शी-सी॰ मामशीवटी शुद्रा दाइशी !

कुपातः मध्यम मोद्धवासा (बैसे वान)ः अध्ये द्वारवाका । पु सुंदर मुक्ता शिका यणेका गरुक्ता एक पुत्रा होजका एक पुत्रः विद्वान् व्यक्तिः एक भागतीस्यः एक ऋषिः एक वानरः एक पद्माः एक श्राकः वनवर्नराः सपेतः ग्रकसीः रार्वे । नसद्वातः भवतकः एकः प्रकारः । —शः —शः गरुवः । सम्बानि की सिं] संदर सक्वाकी। औ॰ संतरी खी।

सुमुक्ती-विकी [सं] सुंदर सुकानानी। की सुंदरी की। भारता: एक मुच्छेना (संगीत)- एक क्या एक कप्सरा: र्धसप्याः गीक अपरावितः।

सुसुष्टि, सुसुष्टिका-की [सं] विश्वतृष्टि नामक अप क्कायस ।

सुमृत्ति−९ (चं•) क्षित्रकारक गण। समूच-पु [सं] अच्छा मूच्य सफेद सविकन। वि

जन्मी सबबुद अववाका। सम्बद्ध-प्र• [सं] गाजर ।

सुम्का-की [सं] शाकपणीः प्रीप्तपनी । सदान-प्र• [र्ष•] वह रशाम वहाँ ग्रिकारवाने वाजवरीकी मधिकता हो।

सुस्त स्मृति - सी व स्मृति । मुमेकस-५ [सं] मूँगावि सुंदर मेळकायुक्ता।

भ्रमेघ−५ मि Iएक पर्वत । सुमेध+-विदि समेवा।

समेबा-बा [सं] क्योदिय्मती, मालक्रामी । सुमेधा(धम्)-वि [सं] श्रेयर मेवा अधिवाका,

स्ट्राह । प्र पितरींका यह गण। यासूच सम्बंतरहे यह मारि। पाँचमें मन्नेतरका एक देववर्ग ।

प्रमेर-प्रायक रक्षमेदा राज्य है 'शुप्रेद'। सुमेद-तु [सं] एक पर्वत को प्रराचीके बनुसार श्रवतात वर्षमें अवस्थित है और छोनेका बना हुना है, स्वर्गगिरिः क्षर प्रवा ववमाकाके वीचका वहा शामा। एक वर्णवृत्ता शिना पंद निवादर । वि अस्तुवा क्लम । ~आ −की श्रमेक्से निकल्मेक्लो एक नदी । ~यूक्त−९ उत्तरी जून में १३॥ मझाधार स्वित रेका। -समुद्र-इ क्टर

समार । मुम्-द्र दे 'सुद्ध'।

भुम्मी (-मी भुनारोंक एक भौतार ।

सुर्य १ - भ रे 'स्वदम् । - बर्श-पुरु देश स्ववंदर'। सुर्वाचित-वि [थं] शुक्का संवता आत्मनिमारी वितिहर ।

सुमज्ञ-४ [सं] स्थि प्रवापतिका एक बुधः भूतका पक त्रवा शहर, बचन यदा विभएका एक पुत्रा वधीनराका वक राजा। वि सुंदर, सकल वस करनेवाका। सुयक्ता-की [सं] प्रतेनविकके एक वंशव सहासीमधी

सुवस-वि [मं] गुनिवंत्रितः शंवनः बारमनिमही । सुयम-५० [म] देवताओं द्वा यक गुण ।

नुषमा-स्ये [सं] विदंगु कका । सुववम-९० [सं] अच्छी बासा अच्छा भरागाह ।

सुवस(म)-इ [न] तुरस्या श्वरीति।

सुयबा-सी [र्र] दिवोदासको बल्नी; परीक्षितको यक परमी । सुषशा(शस्)-दि॰ [सं॰] सुंदर वद्मवाका ।

सुबष्टक्व-पु [सं] मनु रैक्तका एक पुत्र ! सुबाति~पु• [तं] नहुषका एक पुष । सुयास-पु [सं•] पक्ष देवपुत्रः एक देवगम् । सुवामुम-पु [सं॰] रावपातातः एक तरहका बाहकः विच्या एक परेशा एक पर्वत ।

सुयक्ति~नी [सं] संदर मुक्ति, नव्डी दडीक अच्छा

सुपुद्ध-पु [र्थ॰] अच्छी तरह कहा हुआ मुद्राः धर्मसुद्धः ! सयोग-त [डि] शुंदर बीगा बहिबा मीका।

सुयोग्य-वि [सं] अति वोग्य वश्य कामक । सुपोधन-दु (छ॰) दुवीवन।

सर्ग-वि॰ (सं॰) सुरत रंगनामा, सुभ्ररंग। सुरत्। प्र संदर रंगः शिगरकः नारंगीः बद्धमः पर्तगः सी॰ सेंधः मकानके नीचे कीवकर बनाया हुआ ग्राप्त मार्गः कमीनके नीचे क्रीवरूर बनाबी हुई साबी जिसमें शास्त्र विकासर किनेकी दीवार, बहुत्व आदि प्रकृति है (आ)। -च-त पर्वय वस्त्रम ! -भात-की गेस् । -पृक्षि-

ना(गीका वराग । -पुक्(ज्)-प्र संब मारने**वाका ।** सुर्रग-की॰ वरीन वा छन्द्रमें रका बामेशका बास्ट बादिसे मरा गीका बिसका एका होनेपर विस्कीत होता है भीर बहाब जाहि वह हो बाते हैं। वि काक रंगका

— तुरंग गुसास कदम भी कृषा'-य ३ क सरसा साक्छ । पु॰ काळ या काखी रंगका मीका । सुरंगा-की [वं] कैवरिका सेंच। सुर्रियका −सी [सं] गोर्रका सागा सफेर मधीना मूर्या।

सुर्देशी-चौ॰ (सं॰) क्रीमाठोठी। गुनवामा चंपा। भारत्या पेरः काम सारियमः। सर्वन~द (रं•) सपारीका पेर ।

भूरंपक सुरंब-५ (सं॰) एक प्राचीन बनक्त । सुर-प [शे॰] देवता। देवमृतिः ध्वैः सुनिः पंतितः ११ को संस्था। —कंत० – पुरहा – करीव वर्षापक्षा – नी यंगा ! -करी(रिम्)-प्र॰ देवतानीका दावी वेरावतः। -कामन-पु॰ देवीधानः। -कामिनी-सी अपन्ता । -कार-पु वैद्याओं हे शिस्ती निकासो । -कार्मुक-यु रहवनुष्। -कार्य-तुः देवताओंके निमित्त किया बानेवाडा कार्व । -काष्ट-पु॰ देवराव । -कुक-त देवगंदिर । -कुल-दि० देवगाओंका क्रिया हुआ !-कृता-सी गुडुची । -कृत्-नु विवासित्रका

यक पुत्र । --केतु-पु रह्नदी व्यक्ताः रहे ।--संद्वित्रहा-नी१ एक सरहरी मीमा !=गॅड-हु० एक बरहरा फोड़ा ! -शक-पु वेशवत । -शवा-पु• देवसमृद । -शति--की देवनाचे स्वमें बस्य देना। (वीगति (१)। -राम-तुक देवन्यंतात । -गाय-न्त्री [हि] काम्पेन । −गाधका-गावव-पु संबर्ग। −गिरि-पु मेह। -सुर-त वहरवतिः बहरवति मह । -•हितम-प

ब्रहरपदिशार : -गृह-पु दे शुरकुत । -शैवा -

सुनामा−मुपष्प सुवामा(मन्)−वि॰ [धं॰] सुंबर जामवाका। क्रीति सान्त्र । पु कंपना यक्ष मार्थः स्टेरका एक पार्वशः एक देत्वः वैमधेवका एक पुत्र । समारमी-को [सं] देशका एक पुत्री और वसुरेवकी परनी । सुभार-पु धोने-बाँदोसे यदने यहनवासा, स्वर्णकारः [सं•] कुतियाका दूषः शॉरका भेगाः गौरका पश्ची । समारी-चौ॰ सुनारका कामा समारको ली। मुनारु−वि [सं] शुंदर माक्वाका । पु लाक कमल । सुनात्रक-पु [सं] बद्धपुष्प बृक्क अगरन । **सुमायनी** न्त्री परदेशसे किसी स्वयम-संशंकीको सुत्यका ग्रमानार भागाः ऐसा समाचार मिळनेषर क्षिया बाने-बाका रतान मादि। भूनाचीर-५ [सं] हे सुनामीर्'। सुनाम-वि[सं] द 'सुबस । मुयासा-लो [सं] सुंदर नकः। कादगासा । सुनासिक-वि॰ [स] संदर भाकराका। सुनासिका-सौ॰ [मं॰] संदर नाकः श्रीत्राठोठी । सुनासीर-पु [मं•] रहा यक दंववर्ग । मुनाइक≠−अ दं⁴नाइक । सुनिप्रह्—वि [सं•] अच्छी तरच निर्वचितः विश्वपर नासानीसे निर्यंत्रन किया वा ठउँ। द्मिनिद्र−ित [सं] गादी नौदर्में सोवा हुआ। सुनिनद्-वि [सं] सुन्वरा श्रेपर शब्द करवेवाका । समिमन-दि [मं] किएका मालागीछे विनियन हो बाद । सुनिवत−दि [सं] अच्छी एरद साथ रखा हुमाः संबत्त। भूमियम-पु॰ [4] सुदर निवमः शुम्बनस्था । मुनिक्क्षण-पु [मं] अध्या रेचक, श्रुकानः यक तरक-का बस्तिकमें। सुनिर्धामा नहीं [में] बिननो **१ए** ! सुनिश्चय−५ (मं•) फ्या तिश्वका संदर मिश्वक ! स्तिमस-वि [मे] अथका धु किया सुमिश्चित-वि [मं] सको भौति निश्चित पदा। पुरु कोई दुइ । सुनियण्य सुनियण्यक-पु [ध] व्यः सान शुमन । सुनिष्टस-वि [ti] बहुत हवाया गणाया हुआ: अच्छी तरह पक्षा हुआ ! स्तिस्मिन प्राति । विशेषा सम्वार । समीच-वि [मंग] शति मीया किनी शांतिकै विशेष संदामें पर्देचा द्वला (प्रद्र) ! सुनीत-वि [से] श्रिष्ठ रिमीन । पु भारता-वृक्तिमचाः भगता मीति। एक पीराणिक रामा (सुनक्षका पुत्र) । सुनीति∽न्यो [मं] सुंदर मीनिप्र मुक्की माना। दि संदर मोतिरिशिष्ट । पु जिला सनीय-वि [ध] धर्मजीन । प्र जालामः शिशुपासः

कृत्तका यह प्रवा सामदा वक प्रवा शुक्तका वक प्रवा

स्मीया-सी (१००) यून्युडी पुत्री शैनक्ती ।

म्ब दान्य ।

समम्बद्धः। सुनीसक—पु॰ [मै॰] नीसमा कामा मैगरा। मोडामन असम बुद्धाः सुनीका-ची [सं॰] भरुसी; मीली विभुक्तीता; बरबी तुष । मुनु-५ [सं] बस्रा सुनेप्र−वि [र्थ•] शुंदर ऑस्ट्रॉवाला। पु॰ मारदा रह पुत्र (नी॰); धृतराष्ट्रका एक पुत्रा वक्काका । सुनेत्रा-स्रो [मं] सांस्थांय मानी ह्यं सी प्रधारधी ग्रुटियोमिने एक । वि॰ स्त्री शुरूर मैत्रोंबाली । सुनिया-पु सुभनेपाका। सुमीची ब-- वु एक तरहका बीका । सुनी-न्यो [तं] अप्यो शहा । वि॰ मण्यो मौद्रार्थ-वाका। पु॰ बस्रा सुख-इ स्ट्रेंब, शुना। वि निर्वति वश्वत्, मीर्बर सुभव∽को [म] राष्ट्रा रीति वस्त्राः नद्द रास्ता हा भाषारपथ क्रिप्तर मुद्दम्बद और बनके प्रमुख साथी-पहलेके बाए श्रामीफा—क्षेत्र हों। बातना, हानकनानी ह ─(ते) आवार्ध – स्रो अपन्दानेका राला रीति । स्वसाम-वि दे 'ग्रनसन्। सुचा-५ स्टब विदर। लुची~पु [ल] शुस्तमानीका एक फिरका । शुप्रेय-दि [र्थ] होदर वंसीवा#ा होदर क्षेत्रीवाला । सुर्पय-दु (सं सुर्पमाः") बच्च मार्गा सन्मार्ग । सुपक्र∗−विद 'तुक्रते। सुपक्क-दि [मंग] अध्यात्तरह प्रश्न हुमा। पुर पक् सुर्वपञ्चक साम । **मुपश्च−वि** [नं•] शुंबर पदींबाना । सपदमा(मन्)-दि शि] गुरु प्रश्रहीतका । शुपवा-पु (बाव । शुपद्र-पु [नं•] शुंदर यक्ष । वि शुंदर वक्षीनाका । भूपड−कि [शं∘] की भारतानोंने पण का सका। सुपत्त=-वि शिक्षाधे भरधी प्रतिश्रा ही, मविश्रित । सुपत्ता−पु [सं] तश्रकाः हितीरा नारित्यका की बाह तुग एक भीराणिक पत्नी । दि संदर पर्चीवालाः शुंदर पंगीयालाः शुदर पर्श्ने सुन्तः (बान्)। शुंदर बान-श्रृपास**क−**प्र [मं] दिवयु महित्रनं । सुपत्त्रा-सी [श्रेष] ब्युब्रह्मा श्रनावधी पात्रका धर्मी। सुपत्तिका-सी [मे] अनुदार सुपत्तित-बि [र्थ] बच्छे पंतरे तुन्ह (बाप) । म्पादी-धी [र] गपापशी। शुपरवी(शिम्)−वि [मं•]दे शाप्तिका । मुपाय = - पु रे 'गुरुव । सुपम-तु [ग्रं] अच्छा शासाः सन्यानं नरानारा एक कृषा। वि श्रीन्द्र धार्गवालाः = श्रीरस ! मुवधी(चिन्)-दि [सं] नग्यादेव्छ । ५० लगार्थ । सुनीछ-नि [तं] यहरा मीला । तु मनारका पेश | सुचम्य-वि [क] बद्दल विलव्दा बद्दल स्वारम्बद ।

स्री • कामपेतु । - प्रासम्मी-पु • देवतानीके नेता, इंस् । —चाप-पु दंदवनुद्। —जस-पु∘देववर्गःदे सप्तरी। ~ज्येष्ठ~पुत्रद्धाः −श्वरविष्णी~की शेना सदी। -तर-पु• दम्प पुर !-तात-पु• कर्मपः ग्रेह १-लीग-पु॰ सुरपुषान । नशोपक-पु॰ धीरतभ मन्। वि॰ देव वाभोंको प्रसन्न करनेवाला । -श्राप्त -न्नाता(न)-प्र• विष्मु देह । -दाय-पु॰ देवशाव । -दीर्शिका-बी॰ भाकाभगंगा ।- बुंबुमी-सी देवपटदा गुरुगी।-देवी--ली योगमाया । - कोपीश-पु० दे 'सुरदिड । -सू--पु सारका । -दूम-पु कत्रपृक्षा देशनक गृहा भरसका देवराव। -हिट्(प)-पु: शुरहेकी, अगुरा राष्ट्र ! -हिप-पु देवहरतीः ऐरावतः एक दिमात्र ! ~घनु(स्)~नु दंदवनुष । ~बाम(म्)−पु० रश्गे । (मु॰ - सिधारमा-मर जामा)। -सुनी-मी॰ यंगा । - घूप - पु॰ राष्ट्र । - घेल् - सी कामधेल् । —च्यान−पु• इंद्रपत्र। –संत्रा–सी एक नदी। -- नगर-पुस्तर्ग। -- सक्ती-को गंगा। -- नाय मायक−तु रहा −भारी~ली॰ रेवांगमा। −भाछ− पु क्य तरहका दश मरसक । - माहक-मु देक भूर माथ । - निस्तरा-चौ शंना । - निर्मेश-पु॰ तेव पत्र ! - निर्मारिणी-प्रो॰ अक्षाप्तयंगः । - निस्तव-पु मेर क्षेत्। -प+-पु दे॰ 'सुरवि । -पशि-पु॰ देश शिव । - गुद-त इदलति । - वाप-त रंहरतुर । ≔श्वनय−पु अर्थुम; वर्षत । –यम−पु मान्द्रास्य स्प्रमापन! −पन−५ [वि] मुर्द्रकान। -पर्ण-पु. यह शाप, माधीपर्ण देववर्ग ! -पर्णिक-पु शुरपुद्धाग । -पर्णिका-को पुद्धाग । -पर्णी-को॰ पनाद्यो । -पर्वत-प्रभेर पर्वत । -प्राप्तना-को भन्दरा ! -पाइप-५ वस्त इध ! -पास -पासक-प्र रहे । -प्रश्नारा-प्र वस तरवदा प्रश्नार । -प्रर-पुरु समरावतीः स्वर्म । -क्केन्च-पुरु संह । -पुरी-स्व भमरावती । -प्रतेषा(यस)-प्र• प्रदरवि । -पुरच-त स्वर्गीय पुष्प । -प्रतिद्धा-की देशातिमा-को रभावना । --प्रजीर--पु॰ वक्त भगित । --प्रिय-<u>-प</u>॰ र्गता प्रवस्त्रति। भगरत्य पृथा शक्य पद्मी। यक्य पर्वतः। वि वो देवताचों की सिव को 1 – प्रिया – की जाती जमेनी। स्वांक्रकी।अञ्चरः।-बाक्षा-स्रो० देवांगनः।-श्रवक्ष-प्र देश 'सुरक्ष ।-वेश-मी [विश्] कन्य सता । -भवन-पुरु देवमीरि ! -भागर-पु वैद्या मूर्त । -भिषक्(अ)-5 अधिनीतुमार I-भी-सी देश्या-का मना रे अपनी।-शृष-पुर [वि] रहा विष्णु। --भूय-तु देशर प्राप्त दीमा 1--भूगद्द-तु० देशराग करर कुछ :-- भूपया-पु र० ८ वागी का चार दाव संशा मुक्तादार।-भोग-९ देवनामे'का मोन्द, जन्छ। -मीय - - दे तुर-सवस । - मंद्रस-पु॰ देवगंडकः वक बाजा !--मंद्रशिका--र" हे मुस्येवनिका" : -मंत्री(विष)-इ दृश्यकि !-संदिश-इ देवता-का मंदिर देवाल्य । -श्राचि-म चिनामर्गि । -श्चिका-स्रो बोरोपंत्रम ।-सेदा-स्री नदानेता। -मीर+-५ निम् !-वान-५ देगर**४ !**-सुपति

~योपिन्—सो० बण्डरा !-राह्+-५० रहः सिप्त । -राज-तु रह । --०गुरु,-०र्मग्री(ग्रिन)-५० ११ रवि १- • सूक्ष-पु पारियात १ - • वारासन-पु • ई.र भनुष् ।-राद्(ज)-पु॰ दे॰'तुरराव' ।-राय -रायः-प्र दे सरराम'।-रिप्र-प्र• देश्यत्र रायम सम्बन् ~क्रा+-पु॰ स्थर वृक्त ।~स्ता-म्यो महारवी:3०मही वदा !-सा-सी गंगाः यद मरी !-स्प्रसिद्धा-सीः वंदी !-छोक-पु॰ स्वर्ग देवलोड ।-०११७४-पु॰ देव-क्षेत्रका राज्य ।---वसुब्रही-न्योक क्ष्म्रसा दुर्मा ।--बन्-ग्री॰ वैर्मागना !-वन-पु॰ देवीयान !-वर-पु॰ ४४ ! ~बरम (म्)∽ड अस्तारा । ~बस्छमा−भौ स्टेर हुर (-वस्ती-सी हुन्छो (-बाधी-सी॰ देवरारी) संस्कृत ।-बाय-पुरुषये ।-वाद्विमी-स्रो बाहास-वंगा ।-विरूप,-बुश-बु करप कुछ ।-बिद्दिर(प), -बरी(रिम)-पु (रेन्डाऑके राष्ट्र) असुर । -पिना सिनी-सी॰ अपरत।-योथी-सो॰ मन्त्रदोदी न्यूपीय मार्थः −वीर≠−षु इंहः (∽देम्या−स्य क्या नरीः। ∽वेदम(प्)−g रवर्गः नेवलव ।~र्धेच-दु० अक्विन कुमार।-शालु-प्र अतुर !- हा(हन्)-प्र शिव। -धयनी-ली॰ विष्यु-शवर्ता पदानदी । -सासी-(धिन्)-पु॰ वस्य नृक्ष ।-शिक्ष्यी(दिवन्)-पु॰ विश्वकर्या । - श्रेष्ठ-पुषद्यो देवतालीने श्रेष्ठ दीर विष्मुः शिवः वरीशः रहा धर्मः ।-ध्रेशः-सी बास्ते। ~व्येता~की एक तरहदी सकेद धोरी जिस्सी मभगी (!) ।-संघ-प्र देवमंदक्ष ।-संस्था-धीर आरिरयमधा प्ररह्मर।-सम्म-पु रक्षः संपर्वः।-सत्तम-पु देवताओंमें केंग्र दिश्यु।—सदम −सप्ता(म्)−पु रको। देशलय !-समिति-त्सः देशबंदतः !-समिय-भी वैवशव ! –सर-प्र मानसरीवर । e भी e हैंe शुरुपरि'।- मुता-को चरपूनदो।-मरि -सरी≠-को गंगा गोधवरी ।-मरिता-को [हि] है। 'हरगरिष्'। -सरिष्-भी भंगा। - सुत-प्र॰ मोन्म । -सपयक-तु देवस्तर्यर ।-मार्रेश-तु देहा निष्णुः दिव ।-साक्ष+-निः देवनामीको सामने बाला सुरपीएक १-साहबर-पुर रेरताओं कामा विष्णुः र्गद्र ।-सिथु-स्रो चेता चंदाविनी ।-सुंदर-मुंदर देवना । वि देवना धीता गुंदर 1-मृंदरी-क्षी अप्लद्धा दुवीं। यह क्षेत्रियो । - मुहर्मा-सी कामपेनु !- मेनप्-पुर दरताओडे नेनार्शन व्यक्ति है -समा-मा॰ देवताबीधा भेता। -सर्वी॰-५ ४ 'तुरसारे' ।-सभी०-मी दे 'तुरश्रदमी ।-स्कपन वर्क शामर 1—द्वी—स्वी॰ अपनरा !—श्याम—इ देवतीय !-श्रावंती-स्ती० आशासना !-गोतस्थिती-म्योक नेता (- स्थासी(शिन्) - पुर र्वत रिण्या शिन् ! सुर-पु॰ रशर आवास ।-बाबी-श्री पद रातिमी ! -बुन्तम -पुरु दनर वरिवर्तन बारा थीता देता। —हीच−को स्थरानाव !-शाम=की० स्वरदा काणास दे अध्यो ।-मास-पु १४१ और नाथ ।-दार-रि सुरीजा (~पर्वेषसास्त्र∽पु शतक्या वद बदार ।-बदार-त्र जिल्ला मेना एक पाना ।--भंग-तु है स्वर्धन ।

आय**सु−भार**ग्वघ 185 शासुर्वेदिक-वि॰ [सं॰] जानुरेद-संबंधी । पु॰ जासुरेदका भागसु•-सी०, पु• नारेश भाषा I सार्या—सी [पूर्तर] वजेकी वृथ पिकानेवाठी की भाग । वाता । बायुप-पु॰ [सं॰] बीवनकार । च [फा•] क्याः या। बाबुप्-'वाबुस्'का समस्तगत करा। →कर-वि वाबु भाषाचित-वि [e] प्रावित । पु प्रार्थना । क्यानेवाका ! -काम-वि दीर्घायु वा स्वाब्मकी कामना भाषात-वि [सं०] भाषा हुआ, जागतः वैसानरसे आया करनेवाका । —कौमारमृत्य—पु वाकरोगीका चप्त्वार । हमा (मारू)। पु॰ देखानरसं मास्र भाना या मैंगाना, भागदमी, विश्ववता पहेंचा। होस-५० दे॰ 'बासुद्दोम' : आयुष्माम् (प्रात्) – वि [तं॰] श्रीवितः संबी समबाहा। सामाप्ति-सौ [मं] माना, पास आना। भाषाम-पु [सं] काना स्वभान, प्रकृति । पु॰ क्वोतिक्का एक वीगः कृष्टिका नक्षत्र । साञ्चरम्—वि० [तं] वीर्षामु देनेवाका । पु जन्नः जीवन कायास-पु॰ (सु॰) क्वार्रः फैलाव सानना, कीयनाः निवमन रोक (शाक्तायाम)। प्रसिद्ध ।

संपादनः संबंब ।

प्रवंशः सेवारी ।

वक वर्गसंदर जाति ।

र्चग्रहीतः संबद्ध किया हुना ।

थाका न्यन (की)।

फ्रक दरताल ।

कारु चेत्रस ।

अभिनतास् ।

कायासक-वि [सं] अकान्त्रका स्कारक। भाषास्त्र(सिन्द्)-वि [संग्रेण] कायास करनेवाका अका इमा । ब्रामु । ब्रामु । ब्रामु । ब्रामु । ब्रामु । अतुक्त स्वय भागा । -श्रेम्य-पु० बीर्यापु७ रिक्ष (क्रिया नेवाका पविशेष) ब्रामु(स)-को [सं] बीवन-बीवनकाल बीवन-प्रक्रित ब्रामु(स) । ब्रामु । सु० -सुरामा०-आयु इम होना ।

धायास-प्र (एं॰) वहा कड़ी क्रेशिया समा वकावरा

भाषामित्-नि॰ [एं] खाँचा, फैलाना हुना। भाषामी(मिन्)-वि [एं॰] नियमन करनेवाका कंवा।

भानसिक्ष पौदा।

सायुक्त-वि [सं] संयुक्त (मृत्युक्त । पुरु नंत्री कारिता । सायुक्त-वि (सं) सिकारण हुक्या (स्वरूप हुक्या । पुरु सार्था (स्वरूप हुक्या सन्दरन । सायुक्तिक-पुरु (सं) वस बनार विचारियोच्या मानुक् मनायुक्ते कमार्थ सार्यवाला द्यारा । न्यार्थीयि (यिष्टु)-विर क्यार्थ कमार्थ सार्यवाला द्यारा । न्यार्थिति नतीर सर्वेश नामक हुक्य । न्यार्थान्य पुरु वसके पढ़के साक्ष प्रविक्ता विभाग (विपाय) । न्यारुन्य प्रकारण हुक्या

आयुध्धारार-पु (छं॰) इरके-इक्तिशास्त्र गौराम एकद्याता। आयुधिक-ि [स] आयुक्तध्ये। पु शैनिकः। आयुधीक-ि [स] इक्तिग्रार वौकतेशका। पु शैनिकः। -(धि)काय-पु वह राज्य वस्तं तेशाने काम करनेवा क्यिक हों (की)। आयुध्यान-िकः [छं॰] के 'आयुधी'। आयुर- आयुधिक स्तामगण कर। -हाय-पु वस्स करके अन्तारमर आयुक्त शिक्षं करमा। -मूम्य-पु भीरत थी। -मूस-पु० आयु किस्ता। न्योग-मा मरोका योग विच्छे आभारमर क्योरिया स्युक्त आयी भीरत नत्साहे हैं। -मूसि-न्यों जब कृता। -चेक्स-

उ रवास्थ्य-ग्रान्य विकित्सा-ग्रान्य भारतीय विक्रिसा

शान्य ।-वेदो(दिन)-पु बाधुर्वेदका हाताः निकित्सरः।

भक्तर। – मृस्∽पु कोद्या ईनिक। – शाला – स्रो

धमागार । -सङ्ग्य-वि श्रक्षविश्रह ।

कारसक−पु॰ (सं] प्रदरो, पारेन्तरा पुलिस । कारहात−सौ (सं] दें आरहा । कारहात−तु (सं∘] दें आरहा हो। कारहारी(क्रिज)−दि० (सं] रदा करनेदाला । कारण्या पु [सं] दवाके काममें मानेदाला एक बुध

आयोग-पु॰ [सं॰] निमुक्तिः कोई काम देना या हिसी

आयोगब-पु [सं०] वैदन माता भीर सह पितासे जलक

आयोजिस−वि [सं] विस्का वाशीनन किया गया वी

बार्टभ-प्र• (५०) धरू, शम्तदा, भीगणेखः कर्मः प्रवद्यः

वक्रमः श्रुक्का हिस्सः उत्पत्तिः तीनताः भमिमानः वषः।

-किप्पक्ति-साँ० उपक्रिया सामग्रे विद्यती साँग हो

क्सकी परा करनाः बस्त क्रव्य करने वा बमानेपर क्षीने

आर्थना॰−स कि॰ शुरू करना।∺ कि॰ शुरू दोना।

भारंसी(सित्)-वि॰ [सं॰] नवे स्ये संस्वे बॉपनेवाला ।

भार−सी॰ दावताः भणाः सत्राः भनोः संटिया पद्दियेमै

कर्गा क्षीक; 🗢 बढ़, विदा [श॰] सुनै, कस्ता । पु [सं॰]

मनोशित टोहा: पीतकः कोमा: मंगरू शक्तिः गममा वरीः

गर्वः निस्तवा। दक्षः क्रिमाराः सीमा छोरः मनुरास्त

आरकारी∽तु शर्तवंदकुष्टिशींको मरती करनेवामा व्यक्ति।

भारकेस्ट्रा-पु॰[बं॰] नाट्यञ्चानार्धे वह स्थान वहाँ श्वासिक

जारक-वि॰ (पे॰) इंडका काम, सुद्धी मापछ। पु

आरक्ष−पु [सं॰] रक्षाः सेनाः सत्रद्रंगसंथिः रस संथिके

नामा नमानेनाले बैठते हैं। यहाँ बैठकर नामा नमानेनाके:

भाषीजक−वि [र्स•] जावाजन करनेवाका । भाषीजन~थ॰ [र्स•] जोवना स्कट्टाकरमा।अवगः।स्वीगः;

बायोजन-पु (त्रं॰) पुद्धः बुद्धभृमि नव ।

आर्थक−वि [सं] जारंगकरमेवामाः।

आरमण-प्र[सं•] फ्टइना। मृठ।

सिनैमार्मे सबने बागरी सीर्दे ।

नीचका भाग । वि रक्षित ।

कार्यये क्यामाः प्रचादि भेंट करनाः कुल, क्य कामः सर्व-

वि॰ सिकिन्तान्त्रात्यन्त्रेवेशे । १०-क

भारियन-भारी भारचित-वि० [मं॰] स्पर्वासित क्रिया दुआ। तैवार क्रिया भारतभ-दिश्दे 'वार्थ । मारका-पु॰ दे॰ वारिष्टा । भारज्ञ -सी॰[पा॰] रच्छा कामनाः निमग्री !-संत्-नि॰ रम्हर । सुर -यर माना-रच्छा पूरी होना ।-सिरामा -इन्छा पूरी करना । आरद-वि [मं•] निकाने वा श्रीरपुत्र बदनेवाला । पु• बिट्टबरः । भारह-पु॰ [र्न•] उत्तर-पूर्व एंशावका एक जनपद। बहाँका निवासी वा पोका। मार्गण-पु॰ [मं•] बादनं, सेंदर् । मारयेय-विश्[सं+] अरमिसे उत्पन्न ना असमे संबंध रहात बाखा। प्र इत्हरेब मुनि । भारक्य-वित्र [मंत्र] क्लको, बनला, जयसको । पु जनकः निमा बीच उत्पन्न होनेवाला एक सन्तः जेनली पहुत सिंह भारि इछ राधियाँ । --कांड--पु॰ रामानगका तीसरा कोणा जनुसद-पु वनसूर्याः । नशाम-पु सामोरके चार गानीमेंसे पद । -वर्ष (ल)-प॰ महामारनटा एक पर्व । -प्रस्न-प्र वर्गका बालवर । -राशि-मी० सिंह भादि इस राजिबाँ। शारपम्ब⊊-वि+ [मं] क्ष्या वनमें प्रत्यक्ष । प्रा प्रवासी: वेदीका एक भाग जिल्ली बानप्रत्योंके कृत्योंका विवरण है। भारत−वि॰[मे॰] रका हुआ। होता धीरवा ७ दे॰ आर्थ । भारति~गी॰ दे॰ 'आरती ; ७ दे 'आर्ति : [शं•] (दराम, रोहा आरमी~म्यं पुत्रम समिनेदन आदियें देवना या जसि नेदनीय स्वरिक्त हुरदर्श सन् और कपूर-द्रावक पुमाना। वह पात्र जिल्लमें कपूर या वीपठ रहा जाका उस लगन का वानेपाला स्तीव । स्व = उत्तरहार लाभनंतम दरमा । भारभ-५० [मं] एक पेंड या र्नेस वाटा बाहिन गोरी ह सारमञ्जू देश भारत्य । आरमाक, आरमासक-प्र• [मे॰] होनी । **भारभार-ए मर्गान्डे दीनों किनार । मा शर पारर्गमें ब**ह बादर्वनद्य । भारबसन्-प्र दे 'बाह्यर्रन । भारत्य-दि॰ [मे] शुर्म किया हुआ । तु आधि । भारविध-भी॰ [मं॰] सारंस । आहमद-पु (वे) सादमा गादमी प्राप्त । आहमदी-हो । [गृंश] राष्ट्रमः वष्ट्र मृति ही होत्, मधानव बीट बोट रहीके वर्णमंत्रे महत्त्व दोती है (बाव)। मृत्यका श्वारमण~प॰ [मं] आर्म? हेजाः विरावः विश्वाम वर्ने-का श्वाम । भारत-५० [ग] अक्षरः निताहरः असात्र । भारपी≠-दि शी दे० 'बार्ष ह आरमन्त्र अन्यवाभीनदे आरमे ह भारमी-भी॰ भारेमाः असंग तरा रत्या तिने निर्वा बादने बादके अगुडेमें बहुमगी है। भारस्य-पु+ [1•] सीरगुना विरसना स्वाददीमना र

भारा-पु॰ [मुं॰] लवनी चीरमेंद्रा वेक बाहीदार की आर धनका सीनेका गुणा पृथिको गुक्तरो और पुढ़ादे शेन्छ पररी। पारिया वैज्ञान ६ किए दौबारपर रसी बारेशनी रूक्षी वा परश्रको वर्गीः 🗸 भाठाः सामा । 🗝 मान पु॰ दिन्ने भारा रहेक्सेशसा । आराष्ट्रश्-मी॰ [फा॰] स्थानाः शेवारः कावतः कृष परी कुणवारी। भाराज्ञी-ना॰ (अ०) दे॰ 'अराजा' । भाराति –५० [मं•] रातु । बारातीय-वि॰ [ने॰] तिफटरती; दूरवर्गी । भाराचिक-तु॰ (तुं॰) बारही प्रतारनेय क्षेत्र था रेन्स दीर रसन्या क्षा आरायक्र−ि [र्न•]बाराधना क्रतेताला पृशक्तिवला। आराधन-पु॰ सि॰] पत्रा उपामना करमा। तुर जनक करनाः सेवा करनाः सम्मान करनाः शक्ताना माना तर्राच्याणका शालम । धाराधमा-भी (तं) पुत्रा उदाममा भेरा । १ स दि । पत्रा उपायका करना महरापन दाना। शाराधर्मा - व्याप (वं) पुत्रा, उपादना । भाराधनीय-वि॰ [तं] लाराधनके बीग्म पूरम ! भारायिता(त)−रि [त] भाराप€। आराधित-दि [मे•] पुत्रियः मैनियः बाराध्य-वि॰ [र्ग] जाराधन करने बीरद । काराम-५० वि•्रे सुग प्रमधनाः वदीचा उदानः उतानः क्य प्रश्त ! -वरिष्ठारा-म्ये आनंत्री मामक वीपा ! आराम-५ कि] शुरा नग रिश्रामा मारीम् । रिश चेना भोगेग। - पुरस्ति-सी लेशे तुरुगी जिल्हा ?श भी जा सरना दें। —साक्ष−पुन्ती सानका कमरा-शक्तावस । -शुम्बय-विश् सुम् भादभवनाः भानमी । -काम-प॰ पामरानः (क्षिप्तरनाम । स॰ -करमा-श्रीजा। भेगा बर देना १-से-पीर-पीरे पुरम्परी । अस गुज्जहमा--नेनमे दिम काना !--हामा-भंग शना। भारतामाधिपति-प [40] बागनपे पीक्षा अक्रमर । भारासिक-पु॰ (में॰) शास्त्राम याटी ! भाराक्षिक-तुः [मंच] नृपद्मार, पाच्य, रमीरपा र आरम्ब-प (तः) है आर्व । भारायी(विम्)-दि [त-]श्विमीमान गीर मक्तेशसा। आशामा-वि (दा] नश वा गशवा हुमा । आदिव-मी इस निरामधीता मारिश्र−त [स] यान, करोत । ६० मान्सक (रीगा)। शयह (त्यारी मार्ग्स होता) ह सारिकार-पु॰ (ब] रेंच बंधारी। कोट ! आहिली-वि चावनियक भाषाची धरहीया । बारितिक-(र [अंत] जन्दरे रोहमे सं च रगरेरामा । शाहियतं~री (शर्क) प्रश्रेष मेण्डी । अनिवसन्तर (व) वधार वा दीली देवन है। आहिया-ली॰ करती देता एक प्रम आही-मीक होता बारा वैनेद्राभेग्दन श्री द्वारा हुगाहै सन्दर्शन श्वकार, बहुता करिल्ला केर है दि [सर] बंबार रिफ्ट ह्य का प्रधा अना दुक्त)

14 4 -सिंगार-प पक्ष बाजा । सु०-सिकाना-काबाव मिकामा। स्वर्रीका मेक करना । सुरक्षत-सी॰ [ब] तेवी फुरती; बस्री। सुरक-पु॰ नाकपर वनावा हुवा मानेकी खहका विस्का। स्ती 🖁 'शुक्क'। भुरकना-स•कि दे सुरकना³। सूरकः-वि [मं] यादा रैंगा क्षमाः गाहा कामः बहुत ममाबिनः अनुरक्तः बहुत मुंदर । सुरक्तक पु [सं] सोनगेस्न कोशम पक प्रकारका आम। मुरहा−पु [धं] एक मुनि। एक पर्वतः ≀ सुरक्षण-पु [सं•] सम्बद्ध रक्षत्र । सुरक्षा-की [मं] सम्बक् समुनित रहा। सुरक्कित-वि [मं] मधी मोति अच्छी तरह रक्कित । सरको(क्षित)-पु॰ [सं] अच्छा रक्षक वा अधियावक । सरस्य निव [सं] विस्तां आसामीसे रखाको का सके। मुरका≯−वि दे मृतं'। –स्रां−वि० दे सुर्वास'। मुरका-वि॰ पु है 'मुका । सुरस्राय-पु दे 'सर्वार'। सरविद्या-की एक विदिया जिसका सिर्फ गरवन और पीठ बारु रंगकी होती है । प्रस्ती−सो दे 'तुर्जी। सुरग•-पु दे 'स्वर्ग । मुरच्छन+-५ ६ 'मुरद्वन । सुरबायस-पु• [सं] स्ट**रक** । भुरक•−५ स्कं। मुरतान - पुनम नेक नायगे। देश सुर्थे । नि पतुर । सुरका-तो [मं] एक नदी। एक अध्या। सुरवा(बस्)-वि [सं] परागस गरा हुना। सरद्यतं - की दे सुबशन'। सुरह्मना रूप कि दे सुरुवना । मुरशामा - स कि दे 'गुण्हना । मुरसाबना - स कि दे 'सुख्छाना'। सुरत-+को ध्वान बाद । पु (सं] संगोग कामकोका । क्षीवाशीक सदि असुरकः। ~केळि,~क्षीका-कामग्रीका । –शुक्ता –गोपमा–मो॰ रतिबिद्ध धिवामेवाना नायिका । - ग्छानि - को सुरत-वनित शिक्तिया वजानतः। -सास्त्री-न्नी॰ बृती। सिर्में सपे क्ष्मेची माला। ~प्रसंग~तु कामग्रीवार्थ जासकि। -वंध-पु एक शरहका रनिश्व । -शेव्-पु वक तरहरू रतिरंथ। -सृद्धि-वि रतिसीशर्मे ससका इमा । -रंगी(गिन्)-वि कायकोशमें आसक्ता। -वारराग्नि-रमी संसीगरर्धत्र । -विश्राच-पु• एक

रतिषेष । – स्य – वि+ संभोगमें संबद्ध ।

44-4

मुस्तान-पु रे 'सुलतान । दे॰ 'सुर' [हि] में।

सुरती-को तंबाकृका शुक्रामा हुमा पत्ता । स्रह्म-वि॰ [एं॰] अच्छे शत्नींवरणाः एवंब्रेड । पु॰ सुवर्णः काळ बादि अच्छे राम । सुरव∽पु [सं] संबर रका पक चंद्रवंशीय राजा जिसने कक्षपकि हारा हुमाँकी भाराधना की थी। कुछदीपके नंत र्यंत यक वर्षः एक पर्यतः हुपरका एक पुत्रः अनमेश्रमका यक प्रमा अभिरमका यक प्रमा नि अन्तरे रमग्रका सुदर रचनिश्चिष्ठ । सरवा−**को** (सं•) यह अप्सरा। यह पुराणवर्गित नदी । शुरवाकार−पु॰ [सं] यक वर्ष मृद्धेष्ट देश । मुर्युकी-की यह पीवा किसको बक्की छाक्से रंग बमाते हैं। सुरक्षि-दि॰ [धं॰] सुर्वदित सुञ्जूदारः प्रिय, मनीरमः मिस्का प्रक्रिमान् विद्यान्। नेक पार्मिका शकावपूर्ण। पु॰ शुर्गवित इच्या भावफका शासनिर्वास, बुना। चेपक बुधा समी बुधा कर्रव बुधा एक सुर्वितत तुर्गः शीहर चुणा वर्संत कता नैव आसः महस्तूप स्थापित करनेके समय बकायी बानेबाकी बरिना मौकसियी; शंपन: सोना; र्वपक्षकः कुमगुरमुकः। स्त्रीः सुर्वावः स्वासः सन्स्रकीः रहंदकी यक मायुका। यह पीराजिक गांव जो गोजानिको माता मानी वाती है। वावा दृष्टी। तुक्सी। वनमरिक्षका। महिरा। शुरा। रहत्वधा, पक्ताहुकः। -कंदर-पुरु एक पर्वतः ! -कौता-की नेवारी । -र्राध-स्त्री गुश्रव्। स्थन्दार । प्रतिवास । – ग्रीया – सी अमेडी । -गंबि-वि सुधन्तर।~गंबी(धिन्)-को सुसर् रार । -चूल- द्र सुद्धरू मिकायां हुमा भूरा 'पाड बर'। -च्छद्र-प्र कैशः शुर्गशित बासुस् । -तस्य – बुल – पु वैक । – तजया ⊶सो॰ गाय । – बिक्टला – स्रो बायफल सुपारी और काम। −स्वर्फ्(चु)− प्र बृहरेका वही इक्षायथी । -दारु-बारुक-प्र सरक बुध । -पद्मा-सी अंतु बुधा राजर्जन् । न्याय-प्र कामरेव । -र्मचरी-की व्येत प्रुवनी । -सास-द्र वर्तत कतुः पेथ मास्र । —मुक्त-द्र वर्तनका आरंग ! - वस्कक-पु गुटलक् बारफीनी ।-समय-पु वसंत ऋतु। --ध्यम्घर--वि सुर्गभित हार बहनने थका । −स्तवा−सी स्थबदी । सुरमिका-नी [एं॰] स्वर्णस्त्रकी सोनादका। सुरभित-वि [मं] तुर्गविष विद्या हुआ वासा हुआ। प्रशिद्ध किया हुना । सुरभिमाम्(मन्)-वि॰ (सं) सुर्ववियुक्ता पु सम्मि । मुरता-सी [सं] देवस्वः सरसमूबः एकः अवसराः पत्नीः सुरभी-ब्यो॰ [सं] शुस्तवूर पायः गोमात्राः सब्दंर कीवा ध्यामः दोद्ध । द्व समादि लगानेवाला च्यान काने-नगतुम्ममीः रहमदाः शुरामसिः रारनाः पहचाः पाय बाला भोगा-¹रुवना वकता सुरमा भोर्द- -क्वीर । सामाः सुर्गवित वास । —गंध-तु तत्रपत्र । —गोन्न — स्त-पु वैताशाँव। -पद्दन-पु एक महामारतीसः सुरति-की [ले॰] रति कामकीश निवार। "गोपना" शगर। −पत्रा⊸की शबरंगूः −पुर−तु गालकः। न्ते दे 'सरन-गोपना' । - स्थ-तु रिकारिकाके समय -मूच-इ योग्ध : -रमा-सो शस्त्रको पुत्र ।

गइनोंके वजनेकी जानाज ! -विषित्रा-सी

बाह्यधीवना, प्रादुर्गृहमनोमवा अगरम।पना)।

सुरतिर्वतः - विकासनिहरः।

गाविकाके चार भेवोंमेंस एक (अन्य तीम मेर वे रि--

एक प्राचीन बसपरः वस जनपत्रका निवासीः एक धनन

स्ं-- ध दे 'हो '।

र्सेड्स-पुदे 'स्नि। रोपण-पुटिश्मा

स्मिमा-स क्रिक मल्क्से गेर ब्रह्म करना नास केना। (का) बहुत क्रम खाना; (सॉफ्डा) वैसना।

सुँघा-पु मिट्टे स्वाहर बमीलके कररकी चीवें बतलाश-बाका सुंबदर छिकारकी श्रीह कमालेवाला; मेरिबा, बाह्यम् !

सुँद-स्रो दानीको स्तंताकार लक्त की गीचे क्यस्ती रहती है, संब

स्वाद-पु॰ शुंबात दानी।

स्रॅंकिं -सो॰ दे द्रंगः स्र्यं-चो फलकॉर्ने अगनेवाका एक द्रोशा । युक्काकॉ-

कारकभ्यः। सर्विशी−की सम्बो।

स्वा। पा उमा । स्र्मिन्यु चार प्रव दाथ अंता एक असर्वेछ वो नगी-धे भारामें कमी-कमी कलैंवा लेवा हुमान्ता देस पहला है ।

र्मुँड्*⊷अस्त्रमने। सू—वि[सं] वरतभाकरनेवाका (समासीवरी)। की प्रस्कानाताः कि] दिसा वरफ वानिव।

स्थार-पु यह बानवर शिक्षके वाक्त् और जंगको वो मेद दोते हैं पाक्त् मंत्राच्येर और जंगको बहुत वक्ताल् तथा हिस दाता है। - दिवाल-को प्रतिवर्ध क्या बननेदाड़ी जो। बहुत वसे बनना। - मुझ्लिको प्र त्यको स्थार। - का बक्ला-बरासमादा (क्यान)

स्वरती-की श्करोः (का) बहुत वसीकी माँ । स्था-प्रवास प्रं * तोता शुक्र ।

सुद्दे-जो कोहेबा नारोक, गोकतर तर निरुद्धे पक छिरारके छेरमें जागा शककर करना छोते हैं युक्त पुरके माकारका छिरारित काँग विछि तुमके छाने नाने जारिका काम करत हैं। तराम्यका कांग्र आसी कुनुस्ताम जारिका कांग्र क्याम करात आरिका जीकुमा - कोरा - यु सम्बद्धेमको एक करतत ! - का काम-पहंछे नताये क्षार कुन् हैं। - का माका-पहांका छेर ! सुन - का कारका मामंत्र जाने होंगा-कांग्र छा नात्र तुन तुम के रेसा ! - के माकिसे और निका कमा-मनदोग वाद कर रिधाना ! - पिरोमा-सुक्ति छेरमें वामा टकना ! सुद्धी सात्र पिरोना-सहुत कन्ती करता (कि) !

सूक-पु (र्स॰) बाया बाद्यः कमलः हदका एक पुत्राः ॥ देश 'शुक्र'-'वजा स्ट अस सक्षतःह मादौ -प ।

स्कनार-म कि दे 'स्रामा ।

स्कर-5 [६] प्रथं प्रकार एक तरका दिला कुण्याः क्याण्यां त्येर चारका एक तरका - क्यूं-2 बरतीयः । -क्यूं-3 क्युंपाना तीर्थयाना । -स्तत-3 दे 'युवर्येका - न्यूड-3 एक्यूं रहसेश राजा स्त्रोम । -प्यूं-3 एक्यूंप्येक्ट-3 क्य ग्रा-रेगा - स्यव-5 क्युंपियं क्या बानेयावा क्यार-रेगा - स्यव-5 क्युंपियं क्यां

-प्रेयसी-कां॰ पूर्णका एक नान (वराहावदार हारा यदार होनेके कारण)। -भुद्ध-पु एक गरक। सुकरक-पु॰ [र्स] एक दराहत वान। सुकराकोता-को [र्स] वराहकोवा। सुकराकोता-को [र्स] कॉकुका पक रोज।

स्करास्या-न्यो॰ [सं] एक बीक देवा । स्कराक्कय-पु [सं] ग्रंतिपणी ।

स्करिक-पु सि॰] एक रोवा । स्करिका-की सि] एक पही ।

सुकरी-की [रं॰] मादा स्मरः स्मरोः बरावा देगीः बरावा कंदः बरावाकांताः एक पक्षीः शवतीरपरका छोटी

- बॅमिना। सुक्तरेष्ट∽पुर्सि] कसेक्ट एक चितिया।

स्का'-पु स्पर्धका चतुर्भक्ष या गतको स्थित करने-वाको स्वो रेसा व्यक्तीहस्ता, जवर्षमाविक स्ताहस्ता ।

सुक्री - सी रियतः

चुक्त-वि॰ चि॰] ग्रेपर रीतिस क्षत्रियः सुंदर वर्ष्याविश्वस्त्रियः (वाण्य)। द्व वेदका संत्र या स्त्रीयः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः वास्त्रः स्वस्त्रः वास्त्रः स्वस्त्रः वास्त्रः । न्यस्त्रः वास्त्रः विद्याप्तेष्ठाः वास्त्रः विद्याप्तेष्ठाः । न्यस्त्रः विद्याप्तेष्ठाः । न्यस्त्रः विद्यापत्तिः । न्यस्त्रः विद्यापतिः । न्यस्त्रः वास्त्रः विद्यापतिः । न्यस्त्रः वास्त्रः विद्यापतिः । न्यस्त्रः वास्त्रः विद्यापतिः । न्यस्त्रः विद्यापतिः विद्यापतिः । न्यस्त्रः व्यवस्त्रियोगः रोजवादः । न्यस्त्रः नृत्रः वृत्तिः ।

स्का-बी॰ (सं] सारका मैना। सकि-बी (सं] संदर ककि समस्कारपूर्व काव्य, एस।

सृचिक-दु [सं] साँहका एक मकार।

स्कोकि-को [सं]मंत्रराष्ट्र।

सद्यमः -वि देः 'सूर्म'। सबस-दि र्स । बहुत बारीबा बहुत छीटा। बहुद्दपा रहरक पर्देशनेवाली, वारीक वार्तीकी देखने समझनेमें समर्थ (रहि तुक्ति); (रिमकुपने प्रवेश करनेवाली (बीवव); कडिनारंसे समयमें जाने बहुन करने योग्यः विकास ठीका पूर्वा सदस्तदीम तुप्छ । प्र अना परमान्सा श्चिमा अध्यारमा अपट, बैतका एक अमेरिकार अहाँ दुम्हरू शिया ब्रमा कीई सुरम इत्य देखकर संदेशने क्या । क्या बेमा वा धमावाम कर देमादिग्याचा बायः रोडाः निर्मेतीः सुपारी। सुब्रममा। तीय चीम शक्तिवीमेंसे एक (क्षेत्र हो। गिरक्य और सावय है)। वार्/क नामा; दाँतका श्रोधकाः भव्याः तुमा द्वान रेखमः एक दानद ।-क्रशायका --कृष्णकता – स्वी मध्यम ईनु पृष्ठ कठवासून । – क्रीय – पु म्यून कीन ⊢पॅरिका−सी सन्दी - च±-पु• दद तरहका चक्र ।--तंहक-तु अस्प्राप्त वीरतेका दाना । -र्शह्रमा-मी चुनार विश्वकी !- सूंच-पु वह हैनन वाका क्षीवा !- वस कर्यक्र-तु सुरवीम सम्बाहत्त्र-रंव ! -दर्शी(शिन) -रहि-दि बहुत मुख्यात् ।-इस-तु सरसी।-इसा-स्पी दुरावया।-हाद-तु बाठ का पतला तकता (~देह-की सूदम स्रीत ।−हरी--(हिन्-)-दि नृक्षम धरीरवाका । तु वरमानु ।-नाम-विश्वा । अपन्न-पु॰ धनियाः वनशीरका देवसर्वयः

क्षुप्रदेश श्रुरवर्ती अनवर्गेशी वक काल हैना अवसीता

मरमाष्ट-५ [सं] तुरशा विश्वयोः वृष्योः ग्रुवमीः

बला दे १ हाक्षी बंदकरी वुसर्भेशन सुनिध-रत भार भीधरिशीकर

सुरसादिवर्ग-पु॰ [4] अशुर्वेदवे वधीवविशेषा वढ रिहोच वर्ष को १दाछ रहेगी। दृष्टि कार्रका नागक माना

अन्धा शाप । सुराग्र-तु (४०) धो हा निग्रामा १८-विष्ठ । -एमॉ--पु॰ बदा करानेरामा सोगा बाधप । -समामी-को

मुराकर-पु [मंग] ग्ररावधी मद्गी। मारिवनदा देत । Attet-3 & fette i ficht ! सुराय-पु॰ दे॰ 'तुराध ; (र्थ॰) प्रयान जेवा मध्या (ना

मुराई०-मी श्रुना रहादुरी र

-मेही(हिन्)-वि शुरामेरका राग्रे : -पारि-इ वरिता गुरान्ति । -वृत-पु॰ न्त्रं । -संपान-पु बराव भुकामा ! -सगुद्र-पु है तुरान्ति ! नसार-पुरु समझ लार, रिशरिंड 'सम्बीरक' ।

सुप्त । पु॰ बोका गुडरबाई बार्थीमी। यंक्यूका सुमसी। के काम आनेवामा एक परार्थः समझेतः । अर्थाप्तनः ९ दे 'सराचन'। -भाय -मंद-५ 'ग्रमोर देश हीमपर) शराबके कपर वक मानेनला पेन मपर्यन । -शाज्य-दु वरिराश्यने वा देनेचा रातः ≃मत्त वि वहमारन करावदे अधेमें पूर ! - सद-तु : शहाव का मधा। -शुक्त-वि विषक्षे सुसमे प्रराप थी। पु यस जागगुर । -मेह-पु प्रमेश रोजका श्रद भर ।

समय खाबी मानेशभी पार गतक। पूर्वी मारतका निवानी (शुरादानके कारय)। -पी(पिन्)-विश दे शिराप । घरप्रियोक्षे रमनेशसा । -पीत-दि विसमे मध्यान किया है। -पीध-५० मध्यान। -प्रिय~वि निर्मे यद प्रिय हो। -- मसि-वि विश महिराका तर्रम दिया बाद ! -बीम - पु शहाब दवाने-

सी महिराक्का शराच रखनेका चर्पपान । - घर-पुर एक सञ्चरा −ध्यक्र−त श्रयपात्रदा विद्वासी सनुदे अनुसार मधक्के मरनकपर गर्ने लोइस बाप दिवा माना नादिये। महिरालमके दारंपर छयादा जानेपाला अंडा । -प-वि+ तरापान करमेवाका धरावी। चन्नस तंतर ! त्र मरिशा-रहका ~पाछ-त घरल श्ममे शा सेनेबा वात्र । -वाचा -वात्र-तु शराय श्रीना। भवशानके

सुरा-सी [सं•] मच, शराबा बका बानवाडा शीम। -कर्म(मृ)-पु सुरा हारा दिवा जामेदाला रह संस्कार । -कार-पु॰ शरान मुलानेनाता, बसला -कुंम:-धर-दु॰ शराव रक्षमेका सरका वा पहा, अप-वाच ! - शृष्ट् - यु महिराहम ! - प्रष्ट्-यु समयाग

यवशव । -श्रीवी(विम्)-इ॰ क्लान । -रति-

सुरदिव-सी॰ दे॰ 'सरहो । सुरही-न्दी गावः वपरी गामः वद प्रामः देश 'सोरहो' । अरहीनी~ड॰ प्रवासको जातिका यक देह । सुरांगमा - सी॰ (सं॰) देवसमी। मप्तरा ।

सुरहमा=-न= कि॰ (बाब नादिका) भर भागा, स्त वाना~ सुरक्षी पार देहदल भागी -- हत्रप्रकारा । भुरहरा॰-वि निसरे 'सुर-सुर'को कानाव निकन्ता हो।

सुरसुरी−कौ॰ सुरसुराइटा छाईंदर नामको साविधनानी काक रंगका रख कीवा जो अजाजर्वे क्रमता है। एक बीता विसक्षे कारनसे वक्षन होती है।

समादार । सुरसुराना-व कि कोहोंका रेंगनाः राजनी दोना। सुरसुराइष्ट-को॰ सुबकी; सुरतुरावेका मार्व !

सुरमई~सुराग - सह-पु॰ देवशाव ।

मगानेको सलाई ।

बैठ वाती है) र

सूरमे =- वि , पु र दे 'शुरमई'।

सुरर्पभ-इ [सं•] बंदा धिव । मुरपिं-इ [सं•] देववि ।

सुरस्य-वि [सं०] शति रमधीन, मनीवर ।

सुरक्का-सी॰ (सं] एक मरी। मंगा नदी। मुरस्री*~सी शुंरर स्रोहा !

मुरबम्गं −पु॰ १८का शेंछ वा धरकेंग हे सुरवार-को दे 'अथा । पु दे 'शास्त्र'।

सुरवादी ना स्मरीके रहमेका नागा

मुरस-वि॰ [सं] तुंत्रर रसङ्ग्रह, रसोमा। मुलाहा मधुरा

सिंप्रवारः मीबरसः तबका वह मामातुरः यह वर्गाः

मुरमा-सी (सं] सपुद्र कॉयबर रंका बान समय

इभूमान्द्रा राला रीवनेवाकी एक मागमानाः एड

राशक्ता द्वकती। रारना। मिमेवा। श्रीका मही। मही-

धानावरी। विभुवादा बार्याकी। बंधकारी। एकद खुदी। द्वेत

तिबृताः रोता पद बृत्ता यक रातिमीत बत्तकी यक करवा।

रद्वारबद्धी यह कृत्या। यह मणाराः पुनीः वह मरी ! मुरमाम-इ॰ [तं॰] सिपुरारके मंत्रहे ।

सुरवाक-द्र पावमामाः सेवरा ।

सुरमती - नी के 'सरस्ती'।

सुरसामय-५ [मं] दरेन हुस्सी। सुरमाप्रणी-मी [4] सुरेर हुरसी।

मुरमाध्याद-५ [मं] ६४न हरमीका पण र

मृता ।

सुरमच्च⊈ शुरमा क्याने**ड**ी संबाई।

मुरमाई−ि सरमके रंगका, इकका जीता । पु॰ सुरमके

रंगसं मिक्ता-लुक्सा रंगः इस रंगका कृत्सर । सी॰

इसके काने रंगकी एक चितिया। ∽इकाम-सी सुरमा

मुरमा-पु [का॰] वह लतिज पदार्थ जिलका वारीक

पूर्व मॉर्पीमें अवनक रूपमें अनावा भाता है। अंबन ।

वि॰ बद्वत वारीक (क्रांबा होलाके साथ)। -क्रश-वि

सुरमा छमानेपाका । पुरु सुरमा क्याकेकी सलाई।

च्यान-प्र•,--वासी-को+ सरमा रखनेको विनिया।

~सफ्रोद~पु॰ एक श्रमित्र इच्य को भौंग्रीकी जन्म

भादिमें काम भारत है। -(प्रय) सुरीमान वा सुरी

मामी-पु॰ वद गुरमा विशे व्यवनेते (मुसक्मागीके

निरवासासुसार) भृत-देव एका वन भावि दिकार्व 👫 सगते है। -(मे) का श्रोरा-ऑसीके अंदर सिपी दुई

गुरमेको ककीर । नकी इन्छम-विश्वत । सुरू नकरना,

~बनाना − ब्हुत वारीक करना, मुख्येन्सा कर देना।

—सामा—(हा) बुद को बाना (सुरमा खानेसे अवान

बबुक्त दुराकका। मादा अध्यत्र !-पन्नकः-पु वर्षस्कः बनवर्षरी ।-पद्मा-छी॰ बृहती। दुराक्षमा। वन्ता रक्त नपराजिताः वनमासमा शतमधो ।-पश्चिका-सौ॰ सौदः रातानरीः कमनाद्भीः द्येये पीना दुराकमाः आन्द्रासर्गासी । धराहरः बाह्यधार्मासे ।-पर्या-सी॰ −पन्नी−स्री शतपुर्वी समर्थः विवादाः इदती ।-वर्णी-सी राजदती रामत्रकरी । -पाद-वि नवत होते पैरीवाला । -पिप्पक्षी-स्रो अमस्तिएको ।-पुरवा-स्रो सन्है। -प्रयो-मी॰ वर्गविकाः श्रीतमी !-फस-प्र विशोधाः गृहमंदर ।-पासा-सी० मृग्दामध्यो ।-वदर-पुः ~वकरी-स्रो झदनेरी भूनदरी।-बीज-बु पीरना दाना :-- वृद्धि -- सवि -- स्री॰ नारीक नारीकी समार सक्तेराको सहस्रो पर्देशनैवाको नक्ति । वि॰ ऐसी नक्ति वाका तीर्वनुदि ।-भृत-पु हुन्द, अर्ववीहन भृत (महादादि) ।-सिहरू-१ मध्य, मच्छर ।-मान-प्रश्यम कील नाव वा गयना, वह बान क्रिससे सक्य र्मतर भी माधूप दिवा का शके। - शुरुत - सी॰ वर्तती। मह्यो ।-स्रोमक-प्रश्नास्तिको भीरह सपरवाशीयेन र स्वी !-बस्की-औं ताप्रवसी। बतका स्थाः कारवंतः करका ।-शारीर-प्रकीवका मोगजरीर पंच प्राच पंच धानिदिय, पंच तम्मात्र सीर मम-बुद्धि-इन १७ जनवर्षीहा समह ।-शब्दा-सी रेठ, रातुका । -शान्त-प्र जात्रवर्षर ।-शासि-५ क्षेत्री वान ।-पद्चरण-५ पणकों में रहनेवाली भी वहमयक !- स्कार- व वक प्ररह्म कुछ रीय ! स्रमा-सी [मं•] वृशिषा, बुद्दी। ग्रीधे वनावधी। मुनानीः रेतः करमी। स्ट्य जरामानीः विष्तुकी भी शक्तिवीमेंने एक । दिल्पी देश शहन । सबमास-नि॰ [सं] धीनपी । श्वक्रमारमा(सम्)-४ [छ॰] शिव । स्वसिक्षका-स्रो [मं] नूश्य दीमधीः। संबमत्य-नौ॰ (हं॰) होये रक्ष्मची। संस्थ-दि एवा हुना, गुन्ह। सुराभा-भ कि जनहीन होता। तरी का गीलापनका न रेड जामा रमहीन होना दुरण हाना दरना। नह श्रीनाः दश पर नाता । पुरु सुन्दत्तर् काँद्रा श्री बाना-बद्ध दरका है। आगा । सूर्य जाना-ग्रह स्थल हो बाधा (**शमद्भर मुग यवा) । सस्ता-भि गुरा द्रथा, सुरक्त रस्त्रीमा निश्यक क्याभा रमेदरदिता निरात मेमुनियन (स्था ब्लाइमी)। कोशा दी 24 । पु जर्मम शहात (-पत्रना): वर्षीमा एक रीय क्लिमें बनकी देह नुसनी और हर्दियों सामकर रोह्नो बड़ी बरम बीडी मही की नहीं विभारेकी सूची बर्धानः गुरुष वंशकुः न'व !- सवाय-तु शहा दी-हुद रमदार !- (शी) मुखकी-की वह गुत्रनी बित्तमे दाने जिदलर पढ़ा मही देवन गुजनी हीती है। -शबप्राष्ट्र-मी वह देवन विगडे साथ जीवन, बसा या कर्ता सम्मानीन हो १-सरकारी-सी. दिना श्लेबी तरबारी !-(ते)हुर हे-नु रीधेंडे स्थ इस्ते, गरीक्य बीवन । हा॰ -राह्या-कोरा बधार देश !-वहमा- विश्वितव्य-दि वि] रै 'गून्य ४

दीना दुरहा हो बाना ।-धार उत्तरमा-रॉपन स्टब्स -(ली) सुनामा-साफ जनाव देना, श्रीहर स्वयूत बरना ।-(सं) धार्टी उत्तारना-वंदिन साम । −द्रकर्वीपर कीण बदामा-छोटीसी तमस्याहरर बतीक बरमा । -धार्मीपर पानी पहना-नैराहदश्चे शार्ने मनाकामना पुरी होना । सघर>-दि दे॰ 'सदर'। स्व-प्र• [मं•] दर्भाइर, कुमदा भैरावा । स्वक-वि॰ [सं॰] सूत्रमा देनेवाला अनानेवाला, बावध मेर बनानेवाका 🗺 सीमेवाका, बरबीर श्रुपे युगक ब्रीरः थरिया। शिक्षकः वर्णन करनेरालाः मारबद्धा एक बारा ह्या क्षिप पिशाया द्वाचा। भीवा पित्नी। मोरी थानः राष्ट्रः ब्रहः । न्याक्य - प्रश्ने देशे बनावी हो बाल (गुचम~त शि•ी निविध करना बसामाः दावनः छे स्रोधे किया। भेर क्षोलमा। संबैत करना, प्रशारेमे बननास वर्गम करवा। आभूमी करमा। बुष्टमा करवा। कीर पर्देशमा बार दावनाः सर्गशि क्रेशनः (१) । सामार-की सिंशी पताने, बताबेकी क्रियार करा बडाने बहामें के किए कही हिसी गयी बात- शिक्सा गर्देश विद्यापनः अधिनवः इष्टिः ग्रंथसः स्वयसः द्विमा । अर्थ विश बक्द करना स्वक्त करना । -पग्न-प्र• वर् पत्र वा मैंम बिश्वमें कोई जुनमा हो। इच्छामामा शहनशार । रुक्तीय-वि० [र्ग] सनमा करने वशाने महाने बीमा। सुबा-नी (10) ग्रेंगा एक्ता भर केना 10 विश श्रक शाका संदायक, बादा-दबागमे । शक्ति-मा सिन्तेनर्रश ग्रेपकरनेश्च कोर्रशामा दिलो लोक्शार पीजधी श्रीका वर्मोड्टा निरक्षमी। धर-बर्ग सेमाका एक ब्यूटा धंब है विषयोची शामिका। स्मूरा अधिनकः वस तरहका रित्रकः रहि। देश्यामे अस्तर निवादका द्वना त्रव वनावेशामाः वक्ष प्रशंका मृत्या गृहेना देवको । -गृहस-पु॰ यहं रसनेके धोना । –वच−५ दे॰ व्योवह १–वचह∽५ गिरावर शासः यस नरहरू। अध्याः -पुरत्-पुरु देशस पुष्य केनहाः। -क्षिक-दि० सर्वे धर्मी सीबोर्चे विमान (बारीका मिता) । -भेश-दि॰ मूर्नि घेरम करने बोग्या नहुत बना (निमे क्षेत्रकार) । −श्रहिषा−नी नेरारी । −रप्त−५० मेक्ना १ -शेमा(मक्)-दि॰ मूर्व प्रेश मुद्धत रोगी-शाना । पु शूनर् । - वर्त-पु जेवनाः यरगर् । == शानि-पु॰ १६ तरहका थाय । -शिमा-बी॰ श्रीधी शेख। ~ सुच्च− दुधोनेदा समार शुक्तिक्र-पु [त]] निवार्तं बारवेशमा दर्गी । गुलिका-नी॰ [में] एते शारेशी मेंश देतका पक कपारा । 🗝 ४-५० वाची १ – गुगर-६ - भुदीने हर्द शका १९ छोता सुचित्र-(रं+[ग्-] बताबा यत्रसाह्रमा चारिता दश हुमा। इद्यारते बनाया दुवन होर दिया दुवन पूर्वना त्वयुष्ट ।

वानी न नरसमा अकास पड़ना।-धारामा-न्या रेक्ष

श्रीय तकाश्र । भुरागाय-सा एक तरहको बंगकी गान विसकी पूँछके बाइका पैक्ट बनाते ई । सुरागार-पु (d+) शरावस्रामाः देवाकव । मुरागी-पु बोभीः नायसः सुबनिर । सुराम्य-प्र• [सं] (सुरान्द्रे प्रवृत्ते बरपन्न) अनुत् । भुराचार्य-पु॰ [धं] ब्रह्स्यति । सुराज-पु॰ जच्छा राज्या स्वराज्य । सुराबक-पु [संक] सँगरा । सुराजा(कर्)-पु॰ [सं॰] अच्छा राजा। मुराविका-नी॰ [र्] छिक्डमे । सुराजी-पु स्वराज्य पावनेवाका, स्वतंत्रताके बांदीकार्ने भाव केमेवाका। सुराजीव−पु [सं•] विप्युः सकारू । सुराबीवी(विन्)-दु [चं]क्लाक। सराज्य-प्र• [सं] सुरु प्रवारंपक राज्या रेंदे 'स्वराज्य'। मुराधी --बा॰ भनावकी शकें पैटनेका ढंटा । सुरादि-पु॰ [सं॰] सुमद पार्वेत । सराधम-प्र [सं] अवम, निक्ट देवता। सुराधानी - स्रो [सं] प्रराद रखनेका छोटा बदा। मुराधिप, सुराधीश्च−५ [सं]शंद्र। सुराष्ट्रक् - दु [रं•] त्रद्धाः विष्णु (हृष्ण)ः शिव। मुरामक-पु॰ [सं] देवपटइ। मुग्रनीक-द [मं] देवसेना । भुरापगा-की [एं] गंगा। पुराविध-इ [सं] प्रशास समुद्रः प्रराणीक समुद्र विश्वेष ! मुराप≠−पु भण्छा, जेप्र राजा। धुरायुष-५ [सं] देवास । भुरारणि-सी [सं] देवमाता, अदिति। धुरारि-पु [सं] (देवतानीका शत्रु) वसुर, राक्ष्सः एक रोगबारक देखा शीगुरको शतकार । 🖙 –ईता(शु)– पु॰ असुराबा नास करनेवाले, विष्णु । -शा(हम्)-पु श्चिम्। मुरारी - सी एक वरसाती पास । मुराचन-४ [म] देवपूजा। सुरार्वन-इ [सं] देवताओंकी सतानेवाना जसुर । भुराई-इ [सं] दरियंदना भुवकी क्ष्मर्। सुराईक-पु [सं] वैजनतीः वर्गस्क । सुराम-इ [सं] राज। मुरारूय-पु॰ [सं॰] रवर्गः मेश देवाकवः मदिराकव । मुरासिका-की ? [सं] सातका भागकी कता । मुराब-पु [री॰] सुरर महि। मुराबट-बी॰ स्वरका आरोह-ववरीहा सुरीकायम । मुरावती-भी रै 'ग्रुरावनि । भ्राविम-भी [तं] जरितिः पृथिते। सुरापास-इ (संब) मुभेकः स्वर्गः देवाच्यः । सुराग्रय-पु [एं॰] मेर पर्वत । सुराइ-इ [सं] स्थिम मारतका एक प्रदेश आयुनिक

सुरुतः दशरभका एक मेदी । वि अध्ये राज्यवाजा । . - अ - वि सुराहुमें करका। धु गोबी वंदना काकी मूँगा कांच कुक्यीः एक विष ! --बा-की । गोपीनंदन । सुराष्ट्रीञ्चया-की० [सं] फिरकरी ! सुरासच~षु [र्थ•] एक तरहबा ती६ग मासन । भूराम्रर-पु॰ [तं] सुर और वहर । −गुद्र-पु॰ शिवा करनप !-विमार्च-पु देवताओं शीर अपुरीका संपर्व । सुरास्पव्~पु [सं] देवऋषः। सुराही-सी [ब॰] संगी धरदन और तंग मुँहका बरतम असमें पहले छराव रकते ने पर भव मधिकतर पानी रक्ती-के काम जाता है। सुराहीकी श्रष्टका कपना, किसे मेंगर से भारि की बीनों वयकोंके मीचे संदरताके किय बगाते हैं। नैचेका क्षित्रमके नीचे रहनेवाका हिस्सा। वाज् बादि गहमोंने मीचे करकनेवाके धृतमें खगाया जानेवाका (मुराहीकी छक्का) द्वस्ता। वि अना भीर लुधनुमा, मुराबोदार । -दार-वि॰ सुराधीकी शक्**षका । -•गरदम**-की **वंगी और सुंदर वरदम। −•र्बुधक्-**तु सुराद्योसुमा हुँबरू को बहुधा पानेक्म स्थाने जात है। −सुमाः−वि सुरादीकी छन्तका । भुरा**ड्र**-५ [र्च] वेश्याका मस्त्रका शरित वृक्ष ! सुराष्ट्रप−पु (सं] देवदावः कताविशेषः सुरि-दु [सं] बहुत बहा बना । सुरियाकारा −५ सौरा। सुरी-की [सं] वेबांगना- नरी किष्यरी मासरी सरी रहत सिरमाय नक्षिक्रिया। मुरीस्म∽वि मधुर स्वरवाका। सुर्दग-५० (सं॰) शोमांबनः १ 'सुर्व'। -बुक्(इ)-पु॰ रॉव ब्यामेवाका चोर । सुरुंगा-की [सं] सुरंग सेंब काहि। सुरंगाहि-पु॰ [री•] दे 'स्रांग्युक्'। सुर्दका-की [धं] यह प्राचीन नदी। सुक्त-नि जिसका स्य बच्छा हो। मस्त्रा है। सूर्य । -कश-विदेशसर्वर। सुस्वि-सी [र्थ•] इंदर, ध्यून वींथ हंदर मधान श्चरीतिः राजा बचानपारकी यामी, मुक्की धीतेकी माँ। नि॰ श्रेंदर विवाका। पुरुद्ध वधा एक गंधर्व राजा। सुरुव−वि [चं] बदुत बीमार। ≉ पु दे 'हर्वे'। –शुक्ती≉–श्री• दे• म्वंसुधी । सुरुष्ट्रि-ली॰ [सं] सतक्त्र मदी ! मुख्या -पु॰ दे छोरवा'। सुरूप-वि॰ [सं॰] जन्दी छहवाला, संरत विहान्। प्र धिवा त्वा वक अधुरः तामस मन्तरका वक देव वर्गः प्रकासपीयमः 🗢 स्वकृषः । सुद्धपक-वि [र्श•] अच्छी आहातिका सुंरर । सुरुपा-दि की [सं] स्परती सूररी। श्री जागी। सरिवनः सेवदीः वकाः एक अप्मराः एक नावकम्याः एक पौराणिक गी। सुक्त-पु [व] आमंदा दक्का, सुबद नग्रा, सुमारा

मारकता । -अंगिह-दि मदा पेश करनेवाका,

मार्क । मु॰ -गटना,-जसमा-इनका नपा शीमा,

सचिती−की सिंदिरं।रापि । स्चिवाम्(बत्)-वि [तं•] नुक्षेता । पु गवण । स्ची-नी [सं] दे 'स्वि'। मात्रिक क्षेत्रीकी खूबता, संस्था सादि सॉबनेकी एक रीति। -कराइ स्थाय-पु एक स्वाद जिसका प्रवीग सरक कीर कठिल की अकारके कार्मों मेरे पड़ है सरक काम करने के संबंध में किया जाता है। -कर्म(न)-पु धोमेकाकाम सिकाई। -तुंब--पु भव्छर । - स्क-पु शितावर । - पन्न-पु वह पत्र बा पुस्तक जिसमें पुस्तकों या और किसी भीजकी मामा-वकी विषय दाम भादि चताते हुए दी गर्ना दी। यह तरहका कमा सिताबर । -पश्रक-पु वै॰ 'स्विपनक । -पदा-सी गंददर्गा। -पदा-पु एक प्रकारकी व्यूद रयमा। -पादा-पु: सर्दका छैर। -पुष्प-पु: हैं: 'स्बिपुन्य'। -प्रोत्त-विक (स्र्रे) क्षित्रमें सागा काका यवाही। - मेश-वि दे 'पृथियेव। - मुक्त-प्र सुरेकी लोका एक नरका विवक्तका बीचा पत्री मन्कर का बार सरकता टॅसनेबाला और और: बाबॉसी एक सहा ! वि सूर्व जैसी कीच कारियाकाः सूत्र जैसा सीक्ष्यः तंगः संबोर्ग । -शेमा(मन्)-दि पु, दे 'स्विरोमा'।-बक्य-वि सूर्व जैसे मुखनाकाः बहुत तंग संबोर्ण । प्र स्वेतका पढ अनुकरः एक समुर । - पक्ता-को वहुत संदोर्ग बोहि को मैसकड़े बोग्य म बी। -वानकर्म (व्) – पुसीने और दुसतेकी कका। ∽क्ष्यूह्र–पुष्ट तरह क्षी स्पृहरचना। – सुत्र – पु सीनेका तोगा। स्वी(चिन्)-वि [सं] छरवेराकाः जवानेनाकाः भेर प्रकृत करनेवाकाः भेद हेनेवाका । पु भेदिना । सुचीक-पु [सं] बेंस्तेवाका क्षोत्रा (मच्छत्र भावि)। स्व्यम - विदेशसम् स्वय-वि [सं] स्वनाने वोग्यः व्याप (१) । स्वयम-पु [सं] स्रीको नीक। (का स्रीकी नीक वटा-नर नद्रत बोनी-सी कोई भीत)। काँटा । − विद्या−नि स्तुर्भ से छेरा इना । -स्तंभ-५ मीनार । -स्यूकक-५ एक तूम कलप । मृच्याकार~वि [मं] स्रैके-से आकारका। स्यार्थ-प [सं•] व्यायार्थः भुष्यास्य~प [सं] भुक्षाः मच्छरः वार्वेश्यो यदः सुद्रा । वि दर्व जैसे मेंद्रवाला । स्ट्नाइ-९ [सं] विवादर शाक । स्तम स्तिम । - वि द स्थम । सुड−० सी मुद्दैः† सूत्रनः स्वान-की प्रतिका भाव का रिवरि वरम शीव। स्वना-भ कि दिशे अंगदा कुरू भाना बरम वा भीप दोमा । सु सुकाकुका-भी में इ प्रकाये हो सन्दर्भ (सुबनी-सी रे 'तुबनी । सुमा-पुनरी मूर्व वादस तरहवा कोरी आजा। म्बाक-पु (का॰) एक रीग विगमें वेशावमें अक्रम और शिश्नमें बीबा बीडी है। सुजी-को मंहॅंका रनेदार आधा जी इसवा आदि बनागेकै थाम नाता दे। न त्र्रे। ⇒ तु दरशी सुनिक।

स्था-की श्रामिका भागा नियादा सपत्र, करपना। कोई नेवी ना इरकी बाद सोभगा। - ब्राप्त-श्री सीचने समजनेको सच्छि, प्रविद् । सुद्धना-म फ्रि॰ दिसाई देनाःदिमाग वा ध्यानमें बानाः • प्रद्वी पत्ना। सूर-पु [बं•] पूरा (बंग्रेगी) पहनावा कीर, बतस्म आदि। -केस-१ पदमनेके कपडे रसनेका वनस। सद−को सँव। स्त-प्र॰ वर्ष रेखम अधिका वारीक तार, कथा थागा, युका बागा, बोरा; कक्की या पत्थरपर मिश्राम काकनेकी कोरी। इस तरह काका हमा निश्चामः एक माप समका १६ वॉ भागः क्यसुनियापरको रेखाः । करणमीः वर्चोके पर्वका गंकाः 🗢 बहुत बीहेर्ने कहा धुव्या बहुकार्यकः बावयः चन। + वि जन्ना भना। - भार-प वहरी - सक्-रहेंद्र । स -घरना -बॉबना-कबड़ी आदिवर गुनसे निज्ञान काकना । स्त−प्र [र्थ•] रव शॅकनेशकाः रथ शॅकनेश काम करने बाकी एक वर्गर्सकर जाति। वंदी माटा दुराजकी कथा कहनेवालाः व्यासके शिष्य सीमहर्यम मुनिः स्याः क्याः पारा व परस्य प्रमुक्त प्रेरित । -कर्म(न)-व रव करानेका काम । – प्रासमी–पुर्वोक्का सुद्धिया । -च-प्र सारथिका पुत्रः कर्त । -सनय-प्र कर्त । -नंत्र-९ वगमवा । -पुश-५० सार्राभक्त पुत्रः सारवित कर्षाः क्षीकक ।-पुत्रक-पु • कर्गः।-शरः (स)-पु पारा !- बशा - सी पक क्या देनेके बाद क्या न देनवाली गाव।-सथ-पुण्क एकाइ दया स्तक-९ [सं] कामा कामधा मधीन वसनाधीना मदीवः पाराः वावा ।−रोइ-द्र प्रस्ति गृह।−मोजन-प्रजन्म-संबंधी मोज। स्तका-को (थं•) दे 'स्तिकाः -गृह-९ १० 'स्विकायृद्य'। **स्टकाच**−५ [र्व] वह मीरव पदार्थ को संदानकी बाराचिके कारण मधुक ही यका हो। सन्होंके परका सायपदार्व । श्तकामीच-पु॰ [मं] संशान-बामके कारण करानेशका बदीब १ स्तकी(किन्)-वि [सं॰] विसे संवामीरपण्डि कारण मधीय क्या हो। स्तता ना [र्थ•] यून सारवीका काम। स्तना!-अ कि P 'सीना । चु दे॰ 'स्वता'। सत्तरी=-की दे 'शनभी । स्ता-पु॰ च्तः एक चरवका रेशम 🕇 असीम काछनेकी सीपी। मी [सं•] क्या, मन्ता। सति –क्षी॰ [सं॰] जनम भसवा संगाना (फ़्लार्यः) स्रोम-निष्पेदनः सीमरमं विकासनेदा स्वातः वस्तमः प्रमुध्यी पैदाबार । चु इंतः विश्वामित्रका एक पुत्र । --कास--पु मनवदातः -गृह-पु सृतिदागृह जयासामा । --मास्त --बात-द्र अस्वबदना। -माम-द्र बह महीना जित्तमें क्या देश हुना दी अनदमान । —दीग्न

प्रकारीय ।

सर्वस~पु॰ दे॰ 'सुबंछ । सुवश्~पु पुदा सुपक्ता(क)-पु॰ (सं] सुंबर बका बाग्गी। सुधक्य-वि॰ [सं॰] सुंदर मुखबाला, तुसुद्धा करहे न्दर्शगींवाता। पु॰ संबर मुखा अध्या बबारण विवा स्क्षेत्रका एक पार्षक वसतुक्रसी, वसवरेरी । सुपद्धा-स्री [सं] विज्ञा और विज्ञीवनकी माता। सुबक्षा(ब्रस्)-वि॰ [सं] एंदर, श्रीवी छातीवाका । सुयच-वि॰ [एं॰] नी बाह्यशीरी कहा जा एके। सुषचम-तु [संव] सुंदर वयव । विव सुबन्धा मनुरमानी। सुवचनी-दि॰ ली मयुरमावियी।सी॰ (तं॰) यह देवी। सुषचा-ची॰ (सं॰) एक नेवशा । स्वपा(पन्)-नि (श्रे) वाग्नी, सबका । सुबद्ध-वि [सं•] सुंदर वजवाका । पु॰ बंद्र । सुबदा - पु दे 'सुबरा'। मुंबरसा नना॰ (मं॰) यह रिवड्रवारी । सुबदन-दि॰ [मं] तुदर सुरत्वाका । तु यह पीवाः सुम्रस वनवर्षरी। सुबद्ना~विश्लीश्मिश्चे सुबुद्धी । ली वक्र पृथा । स्यन-प्र• (रां•) स्दं। अस्ति। चहवा। • पुत्र पुष्प, सुमग देवताः पंत्रितः । अ वि अच्छे सम्बाधाः । सुबना॰-तु होता! सुयनारा १ - पु १ दे श्रीका । मुक्पु(म्)-ती [र्स•] यक अध्यस । वि• सुंदर धरीरवाका । सुषया-मी॰ (मं) वह जिसमें जी-पुरव रोगींके विद हो। प्रीट स्त । सुवरब-५० मोना, तुरर्व । सुन्। (d+) भय्छे साव समाववाणा । सुवर्षक सुवर्षिक-इ [मं] समी। सुक्र्यंत-इ. [मे॰] एक देशा कामा नगका शिव । संबर्धसा-सो॰ [मं] स्पैको कामी। नासी। अक्सी। भावित्यमचा इरहरा वर्शक्रमा कुछ । सुभक्त-त [एं॰] धिर । वि॰ बीडिमान् । मुचर्चनी(मिन्)-इ॰ (सं॰) विका सन्ती । मुक्बेन्द्र-रि (सं) कांतिमान् धीप्तिमान्। राक्सो(धम)-दि [मं] संपर समसे पुळ, तेमरनी। Do Auflätt ge Zat nichtli de Sut sejat de शार्थेद। दम्पे अनुका एक पुष । मुबर्विका-की [री॰] सातीः बतुका कता। मुपर्वी(चित्र)-५ [मेर्न) सधी । स्वितिका न्यो [से॰] अनुका रूपा । स्कृत-वि [तंर] अच्छे रंगका। प्रेका, हमस्या। वय-क्षाना। में।नेहा वना दुभा। अच्छी चातिका। मसिक । प्र अच्छा रंगा भग्छी जातिः भीताः वक्र वक्र शिक्षः कपूर्म हो नेका विकार सोनव मानेकी कीनेकी वस तीका पत बीलना हरिनेदना यह तरबद्धा गर् रशनीगीवितः थागरेमरा एक प्रथा दशरका एक गेबी। एक देवन्त्री। एक दी सुनानिः भेतरिएका वक्ष प्रशः काश्मानायाः एक भेगा गीर तका स्वत्या शुद्ध क्यारणा वस धीना

वस कीइ । -कद्रकी-की॰ पंपानीम । --क्रमक-दु॰ रक्ष-कमल। -करमीश-श्री एक वर्ग।-कर्ना(मृ), -कार-कृत्-पुर सुनार ! -कप-पुर सोनेधे रह वीत को १६ मासेकी दौती थी। -केनकी-सी॰ शाह केतको । --केश--पु॰ एक मामागुर (वा॰) । --क्षीती-की॰ यक वीवा स्वयन्त्रीरी । -गणिल-पु॰ लेक्नार्यपटका वंगविश्वेषा धीनेको शीक और शुद्धिका दिसाव १ -गम-वि॰ विसमें छोना भरा हो । तु एक बोबिसस्य। -गर्मा-वि॰ नो सोनेको सारोगको, स्वर्गप्रस्था (भृषि)। -गिरि-प्र॰ यक पर्वत (वी रावगृहमें है)। -वीरिक-पु॰ काल गरः। -गोम्र-पु एक सार (धे॰)। - प्रीय-ती सीना रचनेकी थेनी। - प्य-पु॰ रीगा। -चपक-पु॰ रोका धेरक। -बक्पर्शी-(तिन्)−३० राजा। ~च्य-४ नस्ट्रा यदपुरा यक वड़ी। ~च्य-४ वस वड़ी। −जीविक-उ थक वर्णमंदर आति वो सोनेका ब्लावार बरनी हो। →उद्योखि(म्)-विश् सुनद्दमा श्लाविधाला । —विश्वद्या-की॰ व्योतिभाती कता। -शुरुबी-भी स्वर्दश्री। −श्रीप-प समामा शकु ! -रोश-स्री दानदे किर विभिन्न सोमधी नाव । "-मकुक्ती-तो । महावरी-तिष्मती । -पश्च-वि मीनेडे वंशींबाना । मु मन्त्र । -पश्च-प्र ९६ करहका पठी। -पश्च-द्र काव कमका -पद्मा-को स्वर्गवा। -पाइव-५० १६ बनएर । -पाक्रिका-ली॰ रक्त सरहका स्वर्गनात्र। ~विमर-विश् होनेको तरह शेला । ~युष्प-पुश्रान वक्ता, वडी धेवती । विश् समान्त्रे इ.हीवाता । -प्रश्वित-ति सुनर्यमे भरा-पूरा । -पुरुषी-भी एक हर्हकी पीका। ~पृक्ष−ि मिछकी संबद्ध सीनेको दी। बिहतर नीनेका पत्तर चहाया गया हो। -प्रक्रिमा-क्षी सीमेदी शृति। −प्रसास-९० एक वश् (गी॰)। ~प्रसर -प्रसद-पु॰ रक्तरानुद्ध र -क्स्या-स्थे । देशदेश । -बिहु-९० विष्टुत सिवकी वस मूर्ति। -मोहः -महिश्र-पुरु रानमेशूना। -श्रू-मो प्रश्नरपुरवदा एक देश । -मूमि-सी॰ शमाता शपू। स्वयंनानी न्मि । –शाक्षिक-९ क्षेत्रामस्यौ । –माक्रिका-नी रहरेगे। न्याप न्यापक 📆 रहशाभीन शान की शहद बाबदा होता था । -सिन्न-पु॰ ग्रहासा । -मुखरी-मा॰ एक गरी रे-मेरियी-भीर स्वर्ध है स्पर्ने कुर्यर : - मोशा-का अंतरेना ! - पृथिका,- मृथी-मा॰ शनप्री । -र्मा-मा॰ पंशरेता । -इप्पेड्न ति श्रे आहों भोने-पोरीकी पश्चिपत हो। पुंदस शहू । -शेखा-को श्रीयोक्ते वहात्रीमे निक्रमकर बंगामध बाबीमें गिरनेवाना यक बदी !--रेता(तर्ग्)--पुधिर! -शमा(मन्)-वि द्वनहरे शर्मवाना । पु देव । -माता-सी॰ व्योदिधानी सना । -क्रमरा-धी (बर्गीदोशको) मोनेबो नदोर । -बलिक (म्)-इ क्द बर्गनंदर जाति नो सोनदा स्वापार करती की र -वर्श-वि सुनश्राः पु स्थि। -वर्गा-की इस्ती । ~कृष्य-तु विश्वतंत्र देहेदे किए स्था दुवा शीतेश वेश । -शिक्षश-पु वद तीर्थ । -शेगर-

मृतिका-सूद सतिका-भी [सं] वह की विसने गुरुत या दाकरें ही वचा बना हो सबप्रता बचा; समाप्रस्ता गी। -सक-प्र• दे 'स्तिकारोग' । -गृह,-ग्रह,-श्रयम-प्र• बचायाना सौरी। -माइत-प्र• है॰ 'सर्विमास्त । -रोग-प्रश्नाको भावार-विदारके दीवते दीनेवाका रीय : -पष्टी-सी छडीके दिन मृतिकागृहमें पूजी भानेराली एक हैनी: शही I प्रतिकासार प्रतिकाषास−प• (सं 1 अभागाना । स्रतिग!- दुदे गृतद्वा सुती-व्ह्तीव्ह्नीयै; [सं] च्तकी पद्मी। दिव्[हिं] स्तका, स्तका बना दुवा। - कप्या-पु: स्तका बना हुआ क्षत्रा । –साछ-पु॰ स्तको बनी हुई चीत्रै । सतीग्रह-पु [प्र•] दे वृतिगृह । सर्वाधर-द नृतिकामार । सतीमास-इ॰ [मं॰] हे यक्तिसः । स्रकार-५ [सं] सिमग्रारी सील्पार। सत्तर-वि॰ [सं] बहुन बण हुमा। सुर कत्तर । सं अनित **उच्छ मानूल बना**न । स्त्याम-प्र• (सं•) जच्छा वश्यामः जच्छा प्रवस्त । (९० स्तर-द [सं] शरार बीक्ना हरासंबान । सत्पराषती - स्रो॰ [सं] एक मही। सुरय - दु (सं॰) स्रोमनिश्तीयनका समय । सान्या नहीं [मं•] बद्योक्त रनानः श्रोमदा रस निदाकवाः धीमरस्याम । सुरवाशीच−दु [सं] बननाधीव । सच-प [तं] तून नेता वाया। भाषीकी राशि। बहमूच, सनेका बरुपत्ती संपानेकी थीरी। रेखा। व्यवस्था निवमः बोजनार घोटा अर्थमनं बादय जिसमें दर्शनारि शासंधी रबना हुई है। हैसे बारवीमें श्वित मूच मंब (क्रारव्य, गवाबश ह ो। बरवती। कारण निमित्ता (हि) अरियाः दिसी शतका गुमाचारके मिनमेका श्वाम (विनश्नवीन स्त्रसे)। मण कुष्ठ १ ~कंड ~ इ. आसमा कर्तरः वेंधुकीः रोबन । - बरबा-दु न्यवस्थवध निर्माय । - कर्ना-(म्)-पुर स्वतंत्रः स्वविता। -कर्म(स्)-पु नारं मेनारका कामा जुनादेका काम । - क्ल्यू-पूर् क्यो राज । -कार-त सूत्र रचनकाता वाकी सूत कावनेशामा सुन्यहा । -कृत्-पु । दे व्हरार । -काश -कोसक-पु ४मर। -कोश-पुर रहासी बंदी । अधीवा-सी मृतका रक रीज जिल्ली गणना इ४ इमाधीये हैं। -मंडिका-मी॰ स्वाहीका वद श्री जैला बरदरण । - प्रंच-पु न्युक्त्यमे रनित (बूस) प्रदा -प्रहु-नि॰ शूप शहम शहनेनावतः। -बाल-पु॰ द्वश यमा द्वश मात । अर्तन्-पु न्त् सारा कानवाना व -सर्देशे-मी॰ संबका । -वृहित्रु--(4. दिलादी दुवाबरमें कन गून समावा गवा की सीना ! -धर-दि॰ मूत्र भएन सर्नेशमा पु॰ ब्युट न्यस्ति हे॰ भूपपार । –धार-मु लावपातकःहा व्यवस्थापह el ante nit ett eig : -fie-de (utter)

स्पराहा मेमार, दिश्ती । -पश्चर,-वजी (बिन्)- ।

वि॰ विसका पाया या भागा वक्षा वसाया वा सहै। ~पत्री-वि॰ की॰ एठ देने वटने वैरॉनावी। -पात-उ कार्यका आरंगः मापशाचे स्तमे मापनमा सार्। --विटक-पु॰ बीहर्मन विविद्यका प्रतम नोह । --पुरव-प्र कपाप १ -प्रोत-दिश्मनमे वस (जैसे पर्यावका)। -बद-वि सप्रस्पर्वे विक्रित, स्वित्। -मिश-वन बर्जा । -शृत्-पु॰ मारबद्दा संत्रकार । -मार्गम्-उ पहलूप भूता । − अंदा∽9 सुतका पना सकः करनाः यरकी। "न्हा"न्हा तक्का। "बाप-५+ तुमनेका कार्य। –विद्-दिश्मप्रदश्-धीधा-सीश बीमाका पढ़ मंद किसमें हारकी अगद मृत बने होत है कारको। —वेशन—य नननेको दिवार दस्को। न्हास्त−ष• वरीर । ~बाक्य-मो• गृत क्षान्त्रे यहत्र करमेका कारणामा (क्षे) । नमंग्रह-५ स्राप्ता नंपदा नामधोर नामनेनाना । -स्थाम-५ सुनदार प्रवम रवान या परिचीत । सूचक-नु॰ (र्न•) नामा भागाः श्रीहरी तारीशा क्षप (क्री॰)। स्वन-प्र- [नं] स्वस्की स्पनः ग्रहरूमें मध्ये करनाः सिक्तिनेसे एजाना । सग्रयी-विश् लच रचनेशमः। संबदामकर्मात−९ [त] करश धाना (६)०) । सबीग-९० हिं | बीरेबा कॉसा । मुखांत-१० (से हे नीम सब १ सर्वातक-वि (संब) बीट ग्रहोद्धा शता । मुत्राच्या(सम्ब)-त• (शं») भीवास्था यह प्रदार्श वदन सभ्य वास ! स्वारपस-५० (सं] क्य-म्बाएर्ट्स समार । राक्रमा(भव)-४ वि दिहा मयाकी-को [र्व] रार । सुविका-की [मं] मेरराशा माना। गुन्निय-वि+ (सं+) मन्द्री दिवा हुन्या गित्रमिन्देमे क्याया द्वता। सूत्रक्षमी श्रदितः । श्रुवी(बिन्द्र)-दि [बंग्) सूत्र-विधिष्ठ । प्र कीमा (PHEAL) PETER (मृत्रीय-वि [मं] स्वर्भर्यी । मुचीन-वि [मं] नुनर्थे सन्वी क्रिया हुआ। मुमन सूधना-५ दे सम्बर्ध मुचनी-की विक्षेड पहसनेक दाशमा। म्याता-द वर्ग विश्ती । सुद-पु [ब्रे॰] दमन, वया ब्रदेशना रा परा। रागा कुमी शहना। गाएविवा काम: मरहकी वाम: एका दीत पाचा बीध क्या कावना अभाना। बरमीरदा एक मू जल । -कार्रे(क)-पु स्थारदेश काम । -शाका-व रहीवर। -शास-त करनिया। श्य-त [या] मात्र अधाः व्यापा अवारि - सोर गुवार-पुर गूर केनेशना अ्वारन शास्त्रिक कमाने बाधा ६ - छोरी-को अर वेजा, न्यामनगरेश रीक गारः -इस्मूर-५ वर व्याद में मूच भेर साव

पु पक प्राचीन सगर। -इसी-की कासामकी पक महो। − शीवी (विन्)−यु संवयका पठ प्रवा -सिद्य-पु॰ वह वो शहबाक वा काहते धीना बना या माप्त कर के। -सूच-पु॰ सोनकी सिक्की। -स्तेय- मोनेक्य कोरा (बॉक महापातकों मेंसे पक्र)। -स्तेयी (बिन्)-पु सोना पुरानेवाका। ~स्याव-पु एक बनपरः समाधाः -इस्टि-पु यह वृक्षः सुवर्णक-वि [सं•] संदर रंगकाः सुनद्दशः। पु गीतकः सुवर्जकर्मः सोनाः सीसाः स्वर्गद्वीरोः बारम्ब । सुवर्णी-की [सं] शक्ति सात विद्वार्थों मेरी एकः इस्ताकुनी पुनी जो सुद्दोत्रकी पत्ती थी। इस्ती। काला भगरः वकाः स्वर्णसीरीः इहायनः विवसीकाः । वि की दे 'सुवर्ष'। सुवर्णाकर∽दु [सं] सोनेकी द्याम । सुचनोक्ष-५ [सं] हिवा सुवर्णाक्य~दु [सं] बागदेशरा क्तूरा। सुक्याम-पु [सं] शंबपरका यक पुत्रा राजावर्त मणि । वि सनद्या। सुबर्जार-५ [सं] क्वनार। भुवणोह्न-पु (सं) एक क्रंप्र। सुवर्णाह्य-सो [ए॰] सीनव्यी। सुवर्णिका-सी [सं] पीली बीवेती । सुवर्णी−की॰ [धं] मूसकाती। सुवर्तिस-वि [सं] जून श्रुगाया वा गोका किया हुजा। सुम्बदस्थित । सवर्तक-वि [मं] सून गोला । यु तरव्य । सुवर्मा (मैन्)-वि [सं] क्लम वर्म(क्ष्वभ)से हुक । पु भूतराहका यक पुत्र । सबर्प-को [सं] अच्छी वर्गाः महिकाः मीनिया । स्वत्ररी-को [धं] पुक्रावी क्ला । सुविक्ति-की [सं] सोमरामी। -ज-पु केश मृँगा। सुविश्वय-को [त] सेमरानीः बनुका। स्वाती-को [सं] रोमराबी। बहुद्दी। पुत्रदानी । सबस्य-वि [छ॰] वी भाषागीये वसमें विवा वा सके। स्वसंत-द्र [सं] नेवपृत्रियाः संबद वर्तत्रकानः वद नोत्सव । सुबर्मतक-५ [सं] महनोतसका नेवारी। मुचम = - वि जी अपने अविदारमें ही। सुबद्धा-स्रो [सं] एक नदी। नि सी सुंदर वस्ती-बाली । मुचह-दि [सं] सुक्रते बहन करने बीग्या भीरा अवधी तरह बहम करनेवाका । तु वासुका एक भेद । -सुवद्दा-स्थ [मं] रीफाक्षिकाः रास्ताः गोभापदीः एका-

मुद्राची। बीक मितुवार। वीया १ सुर्वागी-पु दे स्वीव ।

सुबार-तु तुम्या क्षेत्रा।

सुवास्मी(सिन्)-वि [धं] सुवध्य ! सुवाक्य-वि॰ [सं] जासानीस भी जाने वीग्य। सुवाबी(विम्)-वि [तं] पंक्रते सुरुध्वित (वान)। सुवावित्र -पु॰ [सं॰] सुरर संगीत । भुवामा÷-स• कि दै॰ 'सुकाना' । सुवामा-की [सं०] रामगंगा नदी ! सुबार-प्र [सं] सुंदर दिना # सुक्कार रसोश्या ! सुवार्त्ता-बो॰ [सं] सुंदर बार्वाः श्रुम संबादा इञ्चकी यक पत्नी। सुवास-पु [बा•] दे॰ 'स्थाल'। वि [सं] (वह दाथी) विस्को पूँछपर संदर वाक हो। सवासका-सी (सं॰) एक रुता। समास-ओ• [र्थ•] सुंदर वास, हुर्गवा । पु हुंदर वाबास: छिवः वड वर्णकृतः । −क्षमारु~क्षमारक~प् कश्वनका एक प्रश्न । सुबासक-पु [सं•] तरवृद्ध । सुवासम - पु [सं] शत्र्वे मन्वेतरका एक देवको । सुबासरा-सी॰ [र्ष] दिक्रमी मिना । भ्रवासा(सम्)-वि [सं] संदर वक्षीत हुका संदर पंचीते शुक्र (दाग) । सुवासिका~वि सी [सं∘] सुगंबित करनेवाकी, सुवास हेमेगानी । सवासित-वि (धं॰) सुवासञ्जक, सुवंवित । सुवासिम॰-स्री दे 'सुवासिन'। सुवामिनी –थी [सं] विताने परमें रहनेवाली हुवसी। सुवागिना गद सबवा खोके किए प्रदोगमें भानेशासा व्यक्त **भा**त्रर-स्**यक्** श्रम् । सुबासी(सिन्)-वि [सं॰] बारामसे वा बहुत अध्छे मकाममें रहनेदासा । सुवास्तु-की [सं•] सरहरी प्रेकी एक नदी स्वातः। प्रक नराके नास-पासका प्रदेश: इस प्रदेशके रहने शुकाइ - वि [सं] को कासामीसे यहभ दिया जा सके। क्षण्के बोर्डोगासा । पुनन्या पीड़ाः स्ट्रेयका एक वार्षद् । स्वाहन-तु [सं] एक सुनि। सुविकस-वि [सं] अति शुरु पराक्रमी महावीरा सुंदर गतिवाका । पु अवधी शक्ति, पराक्रम । सुविकात-वि [चं] इं सुविकान'। पु॰ वीवरा चौरः चीर्य बोरता। सुविक्कय-वि [सं] भीक दायरा अभिर्विश्व । सुविज्यात-वि [सं] बहुत प्रक्रिक्र । सुविशुज-नि [सं] सर गुनीन रोमा दुष्ट । भुविग्रह-दि॰ [थे॰] तुरर देववाना क्यवाम् । पथीः यस्तकोः जिल्लाः रहत्रताः दंगवदीः यंत्रवानुकीः सुविचार-पु [मं•] संदर्भ धरम विचारा सुंदर म्याव । सुबिचारित−ि [मं] मनी माँवि सोपानिवारा हुआ। मुविचित-वि॰ [तं] त्रिसको अच्छो नरह स्रोत को गयी सुबात-वि [मं] विसने अपधे तरह बयन दिवा है हो सुपरीधित । (बींद बिसरे चुमा हुआ रक निकाल किया गया दें) । स्विजान-वि [मं] विवेटशीकः यष्ट्ररः विशे कामनाः सम्मना नासान हो । सुवास्य-वि [सं•] प्रशुरमानी बाग्मी।यु सुंदर बानव । | सुविद्यापक-वि [सं] यो आसानीने सिराकावा

दोसँको भोडकर कगावा चाव, पक्षवृद्धि स्वाव । सूद्क-[द [तं] मारी पष्ट करनेवाका । सुद्ध-[द [तं-] इतन वदा पॅक्रमाः अंगीकार करनाः

हिंतीके एक प्रसिद्ध कवि ('सुवान-वरिव'के रचविता)। वि॰ इमन, माद्य करनेवाला (रियुक्टरन, मनुस्त्म)ः

(प्रवा

स्वता ० - सः क्रि. इतन करना, गड करना। स्वाप्यस् - प्रति | पाकास्यक क्ष्यकः। स्वि स्वति (त्रि) - विः । | क्ष्यरश परनेवाला। स्वित - दिः। बाता चतः पर किया हुमा। स्विता (तृ) - दिः। दें चरकः।

सूरी-वि (रक्रम) विश्वपर न्वान निक्शा हो। सुर -

चक्रामा-स्रपर वपवा देना। सर्वा-प्रदेशियः

सूधक−दि दे 'स्वा; शुदाको सोवास सीवने। सुधना≉−स कि सत्व होनाः सफड दोना।

स्थरा । नि दे 'द्रा ।

स्था॰-विश् निकास्त्र, मोला मालाः शीवाः वो वक व हीः वो वलटा व हो। सुरु -सहमारु-सरीकरी सुनना। -स्थी सुमानारु-वरी वात करना।

स्केश्-वन् सोवेशः -स्य-वॉद्ग्रकः। स्तन-दि दे 'शूनः द'स्ता रहितः। -सान--

विदे 'सनसान'।

स्य च सुनक्षान । स्य-दि [तं] बनमा दुव्या, वादा, क्षिका दुव्या रिक, स्राक्षी । सु असना सुकी, फूक, क्षका दुव्य । —सर—सु

कामरेव। स्मा-विद्यासी शुस्य कनशेन।यु यकांत स्थान। -पम-पु स्ना कनमा शुस्ता। सुरु-कामा-

क्वार क्यास स्थाना ।

स्ता-की मि कन्या प्रशी पहानों भारिका वक-स्वाना जोडिंकदा भीर पर्टेमाना वस बरमा। प्रवेक्क क्षेत्राः कमरचंद्रः राक्ष्मीयों डा छोचा म्यानुमाना प्रदान रिमा नरी हार्यके दें हैं। साथेडे अंकुटाक दरना। परकी यन गाँव दराजी(मृत्या ककी ओक्सटी वस भीर हा। मेरे की तिमटी शांचिक्कियो ज्यादना हो। हत्कार दोनेवाली हानु। —शोध-पु॰ सरकी उक्क गाँव करगुभी होनेवाली हिमास दोष।

ध्निक, ध्नी(निन्)-पु [न] व्यापः साँस वेयमे-

स्मृ-प् [म] पेटाः कथा मातीः छोटा भारैः सूर्यः आकः मरका सरमेशकः (वे)ः एक व्हिष्ट करितः करि

हे भूत्। सुन्-सी [श्रेण] सी।

प्यून्त- [[4] साय और प्रिया प्रिया प्रश्नाम्यूनी
प्रत्न । दु अस्य और सिय सारत (वे) "कल्लान्कारिया।
प्रमुखा- की [4] द्वानुत्रा कहाना स्तर और सद्धान
पूर्व बचना वर्धेरी कथा और क्यानगरकी स्त्री। स्तर
की अधिकामी देवी। यह अध्यारा क्यान माना कथा।
साहर।

स्रमद स्रमाद-दि [लं] दे॰ फिल्क्स ।

स्प-पु (सं॰) क्यो हुँ राजा रसा नसः मसाजाः वरतः रसोरवाः स्था । नकां(त) नकार नक्य- पु रसोरवा पाषकः । नकां(त) नक्ष र पुरकारः । नविन्न वि रिवर्ध वहुत कम मसाजाः पहा हो। नधुमक, भूवन-पु होग। नपर्या-का ग्रह्मची वनवेतः । नसाज्ञ-पु पारक्षाकः । नशास्त्र-पु प्रकार । नशास्त्र-पु । नशास्त्य-पु । नशास्त्य-पु । नशास्त्र-पु । नशास्त्र-पु । नशास्त्र-पु । नशास्

स्प-पु भनात पडीरनेका वीसके क्रिक्टे, सीक मादिका बना पात्र छाव ! - नक्का-की स्पूर्णस्या मासकी रक्क्सी को राजवकी बद्दम थी ! - सरता-पु एक सरहका स्प की शरनेका भी काम देता है!

स्पक-धु रहीरमा।

स्पेयक÷-पु ६ 'क्पब'। स्पयक्त∼वि [सं] दवाहः बस्त नोरोग किया द्वामा। स्पयकार−वि [सं] बी आसानोने संग्रह हो बान। स्पर्यायं स्पर्शार्थं∽वि [सं] विसमें नदानेके किए

अच्छी छीटियाँ वनी हों। सुपीग−पु [सं] दींगः

स्पा - पु॰ स्प छात्र ।

स्पिक्र−९ (सं•) यस्कार, रसोहयाः सुपीय−वि [सं] दे 'युष्व'।

स्पोदन-३ [मं] दाक माद।

सुच्य-वि [d] रखा बनानेक बोम्ब । प्र रसादार धाक परार्थं।

स्फ्र-पु [अ॰] कनः स्कनका रेशाः दशसमें दाला बानेनस्का कपकाः बावर्षे यदा बानेनस्क कपकाः गोसा बुनवेका बानः।

स्कार-९० (का] शेरकी पुरकी स्रेका छैर । स्किया-९० (वर) मुख्यमान साधुवीका यक संप्राव ।

सुक्रियाना-वि सुफिनी नैसा सादा।

सूक्षी-वि [का] कभी कपने परनमेवाक। संग्र परिवा 3 संवारकी भावकिने हुन्त पेत्रद रेपस्पाहिकी स्वपना सरोपाला। युक्तिया संप्रदायका अनुसाको। —प्रयास— विक युक्तिकों के विभाग स्वपेत्रका। विस्तर कर्म स्वप-च कि | रागका समाग विस्तर कर्म किंके सामिल दी, मनेस मीठा न्देशर। —(वे) स्रर-च

श्चका शासक गर्गरः कीयका एक छोरा अकतः।
- संबर-पु कीयका एक अकसर। -दारी-को प्रदेशरका पर या कार्य।

समर्≉−ि है 'हास'।

सुम-पि॰ केन्स प्रान । पु [सं] बका द्वा सत्त्रातः । सर्गता-पि सर्गः

स्मदा—विस्तः। स्मीरे—इ यह पेर विसकी सक्दोने मेंब पुनी सादि वनाते हैं।

सूय-पु [मं] भीयनिष्पीदमः धव ।

स्रोजन-तो [का] यह ओरपि। -सम्प-स्रो करवे स्रोजन।-शोरी-तो मोटी स्रजन।

सूर-वि क्या। पु स्ट्रामः। -हास-पु प्रवस्था कीर कृष्यकास्पके सर्वनेड कृषि (गुप्तस्य कृष्णकास्प

95-5

सुविज्ञय−सुत्रत का सके । तेब दा बग्र। सुबिज्ञेव-दि॰ (ते॰) वो भारानीते बाना-स्थला बा सुधिस्सय-वि॰ [सं॰] बहुत परित्र । सके। पु॰ शिव। सुविदिसत-वि॰ [तं] २० 'सुविरमय । बहुत आरंपर्व स्वित-वि [र्ष•] सुगमः क्षतिमीकः। प्र सपबा क्ष्मामा अम्युरह । सुविदित-वि॰ [सं] अच्छी हार दिया दुवाः स्तरी भृतितत-वि [सं] कप्टी तरह फैशा हुआ (वैसे आक्)। तरह रखा हुआ। सम्बद्धिका "से मंद्र । मुबितक-तु [र्स•] विष्णुकी यक मृति। सुपीज-पु, वि॰ [सं॰] हे नुरोप्त'। सुबित्त-वि॰ [र्स॰] रहत भगी: वंश माकदार । पु॰ सुवीयीपथ-पु• [मं] प्रामात्रमें प्रवस बरनेका हार समृद्धि । विशेष । ः । सबिचि-प्र• (रं•) फ देवता । सुचीर-नि [र्न-] बहुत बड़ा बीट, बोद्याः बहुउसे बोरी-स्वित-प्र [सं•] अंतापुरका कर्मवारी वा रशक, सीविदा पुत्री नारिवास्य । पु॰ रद्दा शिवा एक्सीर पुत्रा रेत्स राजा तिलक पृथ्व । वेदा युतिमान्का एक पुत्रा शिविका एक पुत्रा देशस्त्राः सुविष्टन्य-दि॰ [सं] शहुत थाकार काश्याँ। यक प्रशा-म-पु सुरमा। सुविद्य-वि [तं] बहुद साववामः बदार । पुः कुमा, सुबीरक-पु [सं•] वेरा सरमा । बनुमहा परिवास वन संपश्चिः बान । सुबीराम्क-५ (सं] ब्रॉजी । सुविरुप्(त्) - दु [सं•] राजा। सचीर्य-वि (सं•) वित बीर्ववाद् पराक्रमी। इ नेरका सुविदम - पु (सं॰) एक प्राचीन वाति । सुविद्ञ-पु॰ [सं] अंतापुरका रक्षका अंतापुर । सुर्यायाँ - न्यो + [मं+] धनक्यासः वही सनावदा नाही होत। स्विद्ता∽मी [सं] दिवादिता सी। सुब्रच-वि [६०] सचरित्र, मेका सूप गोका अपने ग्राहे भविदा-सा॰ यतर, ग्रुपवदी सी । रवित । तु शुंदर कृत वारिका मुरका कस्थान । सुबिदित-वि (सं) अच्छी तरह विदित्त बात । सुबुचा-सी [सं•] यह अपाराः विश्वमिशः सेशीः सुविद्-५० (सं) विदान् वा बहुर व्यक्ति। विश् विदान्। शक्ती। यह कृत् । मंत्रिय-नि [तं •] वहा निहान् गुपंटित । सुकृष्टि-मी॰ [में॰] सुंदर इति श्रीदिक्षाः सुंदर भावरम सुविद्युत्-पुर्व [सं] वह अगुर् । चराबारः संबमः प्रवित्रतासः भीवनः महावर्ष । सुबिय-वि [सं] बच्दी किरम, प्रदारकाः सीमवान् । सब्द-वि॰ (सं) अति बृद्धा अति प्रापीत । सं दक्ति सुविधा-ली॰ दे॰ 'सुबीता । हिग्पत १ सुविधान-पु (सं) अन्यो न्वरवा। वि शुभवशिवतः। मुबेग-दि॰ [सं] सब गटिशमा । मुक्रिपि-पु [मंग] वर्तमान अवनवित्रोह शर्रे अर्थत् स्येगा-धी॰ (तं) महास्वीतिपानी । (अ.)। श्री भग्छानियम या जले छ। गुबेशा-सी [सं] यक गरी। सविवय-दि [सं] सुधिदिका अनुशासिक । सुबैद-वि [गं] वर्गमंत्रीका निशेषका सुवक्र । सकिनीत-वि [मं] व्यवि विमीता अच्छी तरह निद्धावा सुबेल-पुरु [मेर] लंबाका बिच्न पर्रेत बिस्तर रामग्री सपाना हजा (दोश भारि) । मैताने बताब किया था । वि श्रांता बहुत शुक्रा हुआ। स्विमीता नमी [मंग] नामानीने बुद्दी नानेवाकी नाव ३ सबिमेय-वि [मं+] विते शिक्षित करना भाषाव हो। सुबैध सुबैप-विश् विश्री ग्रीपर वश्युष्टा गुरि कर्ने श्रुविधिन-दि [सं] क्लाओं हे मरा द्रमा। दु लक्षा बहने हुए। सुरदा श्रमेशा। यु दरेनेश नदीर हैया व वा दीशह । मुक्किरीयम-दि [मं•] वहुन वर्यंदर । शुवेशी (शिन्) मुचपी (पिन्)=(s [fi] मंतर सुविमु-१ [सं] एक मरेश भी विमुदा पुष था। वेद्यनुम्म । मुपिरज्ञ-दि [सं] सभी वामशाओं में मुक्त । सुवेचित-वि वे 'तृक्षेत्र । शाबिबिन्द्र-विश् [मंत्र] भी तिलक्ष अक्षय ही अहेता मुबंग•-वि है भूनेछ। पुरु गंदर देग। निर्मात । सुबेमफ-वि ४११। स्पिशास-वि [में] बहुत बचा । द्व अनुह । स्वया-द्रायोतेशनाः। मविशासा-मी [हं] रदेश्ये दढ मात्या। सुष्यन्त्र-वि० [मं] ग्राष्टा वयवतारा बहुन ररश प्रद. । मुविगुद्द-वि (मं॰) पूर्वना रत्त्वा । तु वह होह सुरवयस्था-सीक [लंक] स्ट्रा स्ट्रामा नगरंत हुनी-मुक्तियाच-दि [मं] बहे बीतीनामा (वानी) । मुख्यकरियश-दि० (नै०) गुरर स्टब्स्सामुन्द । स्विष्टमा(भिन्)-रि॰ [मं॰] बन्धी सरह संबाधने, मुख्यम-विक [जं] निजर-रिनर है सम्बंधिन (देंहे कामन करनेवाता । चु दिव । गुंगा) । शाबिस्तर-तुर [र] दहन व्यविद्य चैतावः बन्तावन मुष्पाइन-९ [वं] विश्वविन्यत्रवास्ति । प्रान्ति। दि॰ बर्ज दिररूत वहार वर्डत अविदा बहुत | मुबल-वि [ब्रे] शुंश्य अनवादी। यहमाने अनदा रापन

1111

म्रामागरः रचनिता ने ही थे और अवहरत ह्याहमकानमें वर्तमाम थे)। (हा) अधायनक्षिः। —सागर्-पु ग्राह्मस रचित्र हुग्ग्हीलन्द्रा वर्तम करनेवाका एक बृहत् गीति-काम्मः।

सूर = नि॰ दे 'सूर'। पु स्वा कृष्णक तिलामण स्वरः। मूरं रंगका बीका। च्युमार-पु॰ बतुरेव। च्यु-पु॰ स्राचीरका लक्षा। चीर-पु दे 'स्राचीर'। स्तावत च्यु बीर सरदार: बुदसपिव। चिसन-पु॰ दे॰ 'स्रा

सेग'। - अर-पु- मुद्दा मारी।
स्ट्र-पु- [मं] गर्मा आहा वर्तमाल करावे सक्तर है
स्ट्र-पु- [मं] गर्मा आहा वर्तमाल करावे सक्तर है
स्ट्र-पु- सेहिंदा विद्याल कर्तिक, आवार्त । - क्र्य-पुस्ट्रम औतः । - क्र्य-पु- स्ट्रिस सिम। - क्र्य-पुक्रिसामित्रका यक पुन । - प्रकार क्रिस् । - क्र्य-पुक्रिसामित्रका यक पुन । - प्रकार क्रिस सम्मान करा कर्ता
क्रिस सम्मान - ज्ञान्त्र स्ट्रिस स्ट्रिस । - ज्ञान्त्र अर्थाका अर्था
स्ट्रिस स्ट्रम । - स्ट्रा- स्ट्रिस स्ट्रम। - स्ट्रस-पुन - स्ट्रेस स्ट्रम। - स्ट्रस- स्ट्रस । - स्ट्रस- स्ट्रस- स्ट्रस । - स्ट्रस- स्ट्रस- स्ट्रस । - स्ट्रस । -

स्(-9 मि॰) तुरदी नर्रियाः वह तुरदी विधे मुक्क मानीवे विश्वामुद्धारं क्वामत्वे दिन दशराधीण मामका चिरित्वा वृहिताः चि । काल रेवा हवः क्यान निस्तानका यह नत्रः वह क्याम चानि ।

निर्वातिका यक नवार वह नवार मार्ग ।
पूरव - पु यहं एक तरका गोलमा व्यवान है वर

[मं]में । - लागी - भी मुनेतनवा, बयुना । - मंती पु रे 'न्यूबंदी । - स्वात्त - पु वह तरका गिकरों ।
- सुन्ती- पु हे 'म्यूबंदी । - मुन्त- पु गोलमे
- सुन्ता- भी वहाना । सु - भी विशाल वा वृषिक
दिराला- मति गुम्बान् वा वृष्टिमान्को कुछ नगमा
निरास्ता भाग प्रमित्र दुवस्ता गरियक देवा। - यह
पूक्ता, - पर पूक्ता स्वातिका । निर्मेष समक्त

म्राज-प् [मं+] स्मा, बमोर्डन, जीत । स्रत-विश् (संश) हपाठ महण्या ग्रांत । द्रश्यारतका देव प्रशिद्ध मधर । व स्रोत स्मरण वादा शुवा (वर) हरामका एक सम्बाह्य रूप, प्रयम्। दिया शुंदरशाः भेमा दासम निवासि धवाय दया देग, सीता सम्राप, रंगः रंगा बरपुषा बाह्य अप अपरी वामन । - बाहाना-श्चन प्रयामनेवामा साम्मी भाग-पर्धान-मास् । ∼आसमाई∼सी बान-पर पान करेंच-श्रीप्रम ! -गर-तु चित्रकार मृतिकार !-गरी-श्री+ निषद (१ १-इत्र - दि र्त्य मचवान् । -पर्यन्-दि॰ र परी पूत्रा वरनेशामा। बेनम क्षा देखनेशामा - बारिश-श्रात्त । महाक्रम महाक्रमणी मणा म श्राप्तानिक संदर स्थान्।-बीरत-की उच्छार -हराम-Re at any meet met were were ber et. famel गान्ते पेथा हो। -(हे)हाछ-मी विधन वर्गमान #श्रंथा । ह्या - द्विताबा-धन्म विधाना नान्दे मा रा ।-अनुर भागा-४६१४ गराना १ -विकास भागा ~ क कि होर हो जाना। उपात्र नाम बाना र~कर शाक्ष र

सेत्वा-विशाय पणक कार्य स्त्र त हैपात, बात के सेता (तिक)। -वयुटता-मेस परक्षा हिण्ड एक स्त्रा तिक । स्वर स्त्रा (तिक)। -वयुटता-मेस परक्षा हिण्ड एक स्त्रा हिण्ड एक स्त्रा हिण्ड एक स्त्रा हिण्ड कार्या हिण्ड कार्या हिण्ड कार्या हिण्ड कार्या । -विशाय कार्या हिण्ड कार्या । स्त्रा कार्या कार्या हिण्ड कार्या । स्त्रा कार्या कार्या हिण्ड कार्या । स्त्रा कार्या कार्य कार्या । स्त्रा कार्या कार्य कार्

स्रवान्त्र वहादुर, मौजा, स्रारवेर ! नवन-द्र वीरता ! स्रान्तु अवावदा रह स्रोता । अंका मानुष्या [कर] इरानका कोर्ड अस्त्राद स्राहः । -(१४) द्रस्तास न्य इरावका कार्ड विशेष अलाल किमे मुख्यमात न्य मेनरोक्त मानदर व्यादक्षे सुरक्षे स्वागो है ! स्रागन-द्र [का] देर ! न्यार-दिश किमे देर हो। स्राग-द्र [का] देर ! न्यार-दिश क्यारे देर हो। स्राग-द्र [का] देर ! न्यार-दिश क्यार स्वाव्य इन्या अनावानी के क्यारे (मानाव स्रार) ! इरार्सन

(रवास्थय कार सह सा)। स्पृति—सी (तिन) वृद्देशती। सुंती। राही। विरिताः न स्पृति वर्षाः विरु व्या ति स्थातिका तु आरमका हव सुम्यतिक राजवेश की राहाहमे कमा और जियते १९६० में १९५६ वे वह राज्य दिखा।

स्ति(रिम्)-वि (वं] विदान । पु विदान भ्यांत । मृह्यक-पु दे । एएं । सुरुक्त -पु दे । एरमा । सुर्वाक सुद्रयम-पु । (वं] अनारर ।

न्युक्त नृत्यम=५०(ग) जनारः। सृत्यं=५ (०) व चरा। सृत्यं=५ (०) वे चर्षा। −नमा=भ°० (४) १०

मृति मृत्ति न्ता [संग] शोर प्रतिया (किने सत कार्ये स्मानवारेका समाने थोऽ शूपरनंता क्षीता न्यामा पानीबा मकः

स्पूर्वेण हैं [44] शीरवंत्यका स्टर्स हित्र वा गारा विभवी पूर्वो भार मंदर है पूर्वो वह सारिया दिश संदर्श के दे भी पूर्वोध स्वादा और करणा विश्वेश संप्यत भीर सम्बद्ध स्थानका स्थान है अर्थाय, विश्वेश स्थानका - स्थानम् - श्रूरम्भीका पूर्व - न्वेश्य दुर्वेश्वर - स्थानम् इत्याद्ध स्थानित है व्यव्याव स्थानका - स्थानम् इत्याद्ध स्थानका महित्र प्रदेश स्थानका - स्थानम् इत्याद्ध स्थानका है

श्वरीय वस्तुष्य अधिवयगीत स्कृतिस्थी की

1410 करनेवाका वर्गनिष्ठ, सीवा सवा हुवा (वीवा आवि) । पु॰ ब्रह्मकारीः एक प्रवापतिः स्कंदका एक अनु वरः वर्तमान नवसरिनीके बोस्पें महिद्द भावी जनसरिनीके व्यारहर्वे महत्। प्रश्नीनरका एक प्रका रोज्य मनुका एक प्रका प्रिवृत्रका पद्ध पुत्र । सुन्नता-विस्ति। [सं•] सुंदर जन्माली। साध्यी । सी• इक्षको एक पुत्रीः वर्तमान करुके पेड्डर्ने कर्वतको माताः कप्रकपरीः शीपी गाव परिवता सी। एक अध्यस् । सर्घस-वि सि । प्रश्नेसनीका कीर्तिमान् प्रस्थातः शमास्त्रीक्षी । सूर्यमा(सिन्)-वि [सं] मंगलकांद्वीः मंगळवानी। सुसक-वि [सं] सुमाध्य बासाम सरका सुंसक्ट−वि [स] सम्बन, समर्थ। सम्बद्धि-वि [सं] दे सक्ता सशब्द-वि [र्स] भुरदर अपुर स्वरयुक्त (वैसे वासुरी)। भूशरक्य-वि [सं] द्वरण देनेदाला। यु शिव। मुझरीर-वि [सं] सुंदर ग्ररीरवाका। मुसर्मा(भन्)-वि [सं] बहुत सुखी। पु एक असुरः मद मनुका पुत्र। एक वैश्वाकिः एक काल्यः तेरहर्वे मन्त्र-शरका एक देवदर्ग । स्सस्य~पु [सं] सेरका पेह। सप्तवी-तो [मं] कारवेस्क करेकाः कृष्य बीरका कर्तन 1 सुरादि-वि [सं] विदेशांत, विश्वने वरा भी क्षीम म क्षी (बैसे वक); प्रस्तित । सर्वाता—को [मं] राष्ट्रा इश्चिकको सनी। ^३ सशांति - सी [मं•] पूर्व द्यांति । व तीसरे मन्वंतरके रहा भारिका पुरु पुत्रा भवमीरका पह पुत्र । मसाक-९ [सं] भररका तंत्रुकीय श्रीकारी मंत्रु चैचः मिद्री । सुसाकक−९ [में] तावा सदर≰। सशासन-प्र[मं] सुंदर शासन, बचन राज-प्रवेच, सुधासित-वि [र्च॰] मधी मीठि चासिकः सुनिवंतित । सम्रास्य-दि [एं+] विस्तर बासानीसे शायन या निवं प्रमानिका वासके। सुर्विविका-सी॰ (सं॰) वक शैवा शिक्षेका वक मेह। सुविधित-वि [सं] सुद्धिवात्राप्त, विसने मण्डी शिद्या पानी क्षी अपनी तरह समाना शिकामा हुआ (बोहा भारि)। स्थिल-पुर्सि अमिन । वि श्वंदर शिक्षा चौरीवानाः भग्छी कौंबाका (बैसे बीपड़)। मुक्तिग्रा-सी [सं] मोरनी दिल्ला। मुर्गेडी ब्रह्मी। मुश्रिर(रम्)-५ [धं] तुँदमे दूरकर रजानेका राजा (चैन्नरी बारि)। मुसिरा(म)-वि [मं] श्रेश्र शिरवाका । मुशिष्ट-वि [सं•] सुग्रासित । त्र निवतत्र मंत्री । मुशीत-नि [सं] बहुत हका। यु पीना चरना सकता सुगीतक-वि [सं] अवि शीतक। पु संबत्या सके-

चैदनः नामदममीः इंदर् । सुद्मीतका-सो [र्थ•] वदशेः बोरा । सङ्गीता-स्री॰ [एं॰] छतपत्री भेगतीः स्थवकम्ब । सुद्तीस-वि [र्स] शीतकः तेवने वेदने कायकः। पुरु धीतकता।-कास-विवद्गत वासका सम्रोक-वि [सं•] शंदर भीतवाता, सरस्वमाना सम रिका विनीतः सीचा । धु अध्योत्वका यक पुत्रा भव्या स्बमाव । सभीसता-स्री [एं॰] सम्बर्गकाः विनमताः सौवापन । सुंबीका-की [र्थं॰] सुदामाध्ये परनी। यमधी परनी। कृष्यकी बाढ पटरानियों मेरे एक: राषाकी एक एरेकी। विस्ती है 'सप्तीक । सर्वाविका-की (सं०) वाराहोक्देर। सुक्षम-वि [र्ष] बहुत होतर; मंगकमय (विवस्)। बहुत नेक (काम)। सुर्ख्या-वि [र्छ•] सुंदर सीर्थोदाका। पुर्श्वनी कवि। सर्थगार-दि (एं) बच्छी दरह बदंबत । सदोज-दि सि] भवराकाका सुत्रोमन∽वि [सं]वदिसंदर सदावना। सुद्योमित-वि [सं] अति शोमानुष्यः वो बहुत सम्रहा-% बद्धा को । सुधास−पु[सं] धर्मका एक पुत्र । मुध्य-वि [सं] सुनने बीग्व । सुस्रका(वस्)-पु [सं] एक प्रशापति। एक मागा-ग्रुरा पक कारि । वि असिका मसकतापूर्वक श्रुननेवाका, दवाहाः सुध्राच्य-दि [सं] थो सुनदेने अच्छा सने मृतिम्बुर। सुम्री-वि [मं] वित संदर, क्षोमनः अवि वर्गा। की । सियों के मामके पूर्व बादर-क्षतार्थ कमावा बाते बाला ग्रम्य । सुन्नीक-वि [सं] सुंदर भी-तुन्ता। संबोधर-मा (चे॰) सर्वा । संख्त-वि [र्व] अच्छी तरह धुना हुनाः प्रसन्नतापूर्वद सुना हुमा। बहुत प्रसिद्धा बेरक । पु आयुरेन्द्रे अति प्राचीन और श्रांममृत बायार्थ की विश्वामित्रके प्रश्न करे वाते हैं और विसदा प्रंथ सुमृतसंहिता असुबेहदी वृहरत्रयोक्त अंदर्गंद है। सुनुदर्भादता । -मंहिता-सा सुम्तर्वित प्रसिद्ध विकित्सामंत्र । मुख्यम-पु [र्त्त•] वर्षका पद पुत्र । सुसना १ ना है शहरा। मुख्या-सी॰ है॰ 'हाबरा'। मुखोणा-सी॰ [ब] एक नदी। सुधोजि-वि की [मं] सुंदर निर्दर्शनानी । मी एक देवी। स्दिकश-वि [सं॰] सवक्षीमे जुड़ा मिका हुआ स्ट भावमें संबुक्ता बहुत व्यष्ट वा बोबमस्य । सुद्रमेष-पु [सं] यनिष्ठ संबंधः मगाइ माहियन । सहस्योक-दि [सं] प्रश्यशासीः सुप्रतिकः। सुद्रमोदय-दि॰ [सं॰] बहुत प्रसिद्ध । पु प्रिव सम्पः

को दीप्ति चमका विस्ता पृत्या एक पुष्प !-कास-पुरु दिन ।-बासानसक्क-९ शुनाशुन फरू पानमेश एक पक्त (स्यो)।—क्रांत-पुषक्र ताल (मंगीत); एक असपर ।-धाय-पु सूर्व-शंदल ।~यार्थ-पु एक बोबिएस्व ।-- प्रद्र-पु सूर्यः सूर्यप्रदक्तः राह मीर केतुः मदेका पेंदा । – प्रहृण – धु चौहमादी धावा पहनेसे सर्वे रिक्का छिप बाना (पौराधिक मतसे राष्ट्र या केंग्र द्वारा सूर्वका प्राप्त)।−चद्वा(स्)−पु **रक** राक्षप्त । ~क्र−व दे 'सर्व-तमव' ।--क्या-की दे 'सर्व तनवा ।-समय-प्रथमिः यमः साववि मनाः रेवेधः सेप्रीर कर्ण ।-सनया-सी यसना ।-सपा(पस्)-प पद मनि । ≔तापित्री-सी पद द्वानिवर्। -नीर्ध-प यह तीर्थ।-तेत्र(स)-प सुर्वकातेश पूर । – इक् (श्र) – नि सूर्यको बोर देखनेवाका । -हेथ-पु सूर्व मगदास् ।-हेवत्य-वि विसका देवता स्तं हो। - ध्यक्ष-विश् विस्तारी ध्वताम स्वंदा विद्व हो। - व्यताकी (किन्)-प्र शिवा-मंदन-प्र स्वं-तनवं ।- नश्चम्र-यु वह मध्य विसमें स्वं हो। −लगर-प कस्मीरका पद प्राचीन नगर, कस्मीरकी राजवाजी। - वास-पुष्क दालव । - नारायण-पुर्वस्थवान् । — सेश्न−तु गरकका यक पुत्र । – थकः – वि सूर्वतापने पका द्वाना स्वयं वका-पति-प सूर्व देवताः -पद्धा-का संदाः धायाः -पत्ता-पु बादित्यमक्ताः अर्कः अर्क्षप्रधाः । चर्ण्यः न्ताः अर्क्षप्रधाः मादपकी।-पर्द(स्)-इ. सूर्वके सकी राधिमें अवेध या मुर्वप्रदय भाविका प्रम्यकाल ।-याच-प्र स्पैकी दिरम ।-एप-प वन्य शमिः यमः अधिवनीकुमारः मुप्रीकः कर्त्र । – पुन्नी – स्तो वसुनाः वित्रको । – पुर− प है 'सर्वनगर । -प्रराध-प श्रृतके माद्यारमका क्मेंस करनेवालायंव विशेष । -प्रतीप-प समावि-का एक प्रकार। - प्रम - वि शर्वके समान प्रकाशित प्रमायक । प्र एक समाविः एक बीधिसरवः एक नागा-सरः कृष्यको एक परनी स्थममाका मासानः एक अरेश । -प्रभव-वि मूर्वते करका (-प्रमातेका(बन्)-प्र समाधिका एक प्रकार ≀∼प्रशिष्य − प्र राजा जनेऊ। —ब्हजिचक:−पु फबिन क्योतिक्का यक पक्ष त्रिससे कार्य-दिश्वमे शामाश्रमका यान मान करते हैं ।-विक-द्र सूर्यका मंद्रका ≔भ∹नि सूर्वजीला बोलियान्। -मन्द्र-मक्तक-वि मुजीवागुक। पु गुन्दुगहरिया। -मस्त-भी वादित्वमका हुरदुर ।-भागा-सी वक्ष मधी।-भाज-तु एक बङ्गा एक शामा । -भार (म्)-वि सर्व मेला श्रांतिमान्। - भ्राता(न्)--प्र देशका ।-महत्त-पु गर्यका पेशायक गंधर्व ।-मिन-प्र सर्वदांत मनि। एक फूल । – साक्र – पु थिए। – सुन्ती (ब्रिन)-पु बीने रंगदा एक वहा मूक जी मूर्नेदी गृनिके साब करर करता भीरमीचे सुबता है।-संग्र-पु भूवों पासानामें स्पवदन मूर्यका विश्व का प्रतिमाः मूर्यके क्षेत्रमें काम कानेनामा एक यंत्र १--१दिश-००ी । गुरुकी किर्या यविना।-एक(च)-स्त्री मुर्वका प्रकाश ।-सत्ता-स्त्री मारित्रमका द्वार ।-सोक-तु रहेका कीव सीर

जुबन ।-क्स-पु भारतवर्षके हो प्रमुखनम राजवंशी-मेरी एक जिसकी धरपति शैवस्थत मनुद्धे पुत्र दश्याकरी मानी बाती है इस्वाह्यबंध । -बंद्रशी-वि धर्ववंशका । मु सर्ववंशमें सत्त्व परव । -सहय-वि सर्वेदेशका ।-बन-पु एक पत्र । -धरकोत्तन-पु समाविका एक प्रकार !-वर्चा (चेस्)-वि सूर्वसद्याः तेजीमंद्रित । पु एक कावित एक देवर्गभर्व । --वर्मा (भेषु)-पु त्रिगर्वका यह महामारहदाकीन राजा। प्रधिनीः साहित्वसका ।-वस्ती-–वस्डमा−स्रो सी वर्षपुष्पिकाः श्रीरकाकीशी !- बार-पु रविवार । -विकासी(सिन्)-वि मूर्वके प्रकट शोनेमर दिकने शका।−विष्म∽प्र विष्यु ।∽विक्रोकन~प्र वरुपेके चार महीनका बोनेपर छने पाहर से बाकर मुर्वहर्शन करानेकी रस्म !--बुक्त--च् नाकः संबादकी । --बेक्स--(न)-प स्वर्गण्य ।- यत-प नर्गद्ध प्रस्कृताके किय रविवारको किया जानेवाका प्रदा अवोतिवर्गे एक पक्र। -शक्रु-पु ण्ड राक्ष्म। -शिष्य-पु यात-वस्तव । -िप्यतिवासी(सिन्)-प च्हीमा—को सर्वका मकाना यक कूल ।-क्री-प्र यकः विवरदेव । ~संकम -संब्रमण-उ ,-सक्रांति-सी न्यंका बूसरी राश्चिमें मनेगु ।-सज्ज-पु यक तरहक्षा लाका कसरा ताँगा। बाक !-सद्दरा-१ श्रीमा-क्ज (वी)। –साम(म्) – पु॰ कुछ सामों के नाम। –सार्थि−९ जन्म । –सार्थ्ये−९ प्रकृतन्। -सावित्र-९ रक विश्वेरेव । -सिर्वात-प मास्कराचार्य रथित गमित क्योतिका रक प्रसिक्त ग्रंब । - झत-प्रभाग स्थीक क्या वस । - सक्त-प्र ऋग्वेदकाण्य मृक् । – सृत्य – पु मूर्यका सार्थ वे अक्स । -स्तति-सी ,-स्तोध-म वह स्तृति को गर्यके प्रति हो।-स्तृत्-पुदश्यक्षद्यस्यः।-हृदय-पुर्वद्य **टक श्लीच** । सर्वहाँ-प (सं) पर नक्षत्र विसम वर्ष हो।

सयक-वि [सं] प्रेप्ताः।

स्योध-इ [तं] न्यस्य करण ।

श्यां-सा [सं] श्रंबी कनी स्था। (इवारमा सक-विवादित सी।

सुर्घोकर-१ (सं॰) वस प्राचीन जनदर । स्वांश-वि भिं। पूर्व विश्वकी श्रीक हो। सूर्व देनी भौकींशका । धु विष्णुत्यद्व रावाः यद्व वानरा सर्याची-भी [धे] स्पश्ती धारा !

सर्वोत्तप-पुरिशेषपः। सुवारमञ्ज् [मं] अभि क्या सुवीश वस ! स्योद्रि~पु[मं] यद्य कातः।

भूपोपाय-५ [में] न्दोस्त ।

स्योपीड-पु [मं] परीरिन्दा पद पुत्र । सूर्वाच्य-पु [सं] ब्युको मिटापूर्वक दिया जानेशाना

स्पालोक-पु [में] शुरुको रीछनी। भूर 1 सूर्योकत-तु [सं] दुरद्वाका शाकाः सुवधनाः गुक-रिएको। अर्द्धवाली भावाचीभी; समाविका एक प्रदार ।

सुर्पयि-पु॰ [सं॰] मोबाताबा एक पुत्रा मस्बूतका एक पुत्र । स्पर-प्रशासन्। मुपग्रा(धन)-प्र (धं॰) वह ऋषि। सुपम-दि॰ [सं॰] सति समा गुरदा गुरीका बोपगम्य । पुरु सुदर वर्ष । सुपम बुग्पमा-को॰ [र्च] शासकत्वे वो नारे (वे)। मुपमना - ना ६ 'ग्रनुप्ता । सुपप्तनि•−को• दे 'सुबुव्ना'। सुपमा-तरी॰ [मं॰] पर्म श्रीमा अविश्वव गुंदरवाः पद वर्षमुचा कारुपहता रह जारा (वे॰); एक शुर्रा यनाः वक पीवा । - शासी(विन्) -वि अति संदर । सुपमिष्ठ-दि [स•] सुरमायुक्त । मुपबी-पु (मं) हुन वीरकः औरकः करेनाः शुद कारनेस्थ । सुपा-सी [मं•] इच्न औरह । मुपाद-पु (सं•) शिव । सुपाना - ए कि सुवामा । अ कि म्पना । स्पाता नि• दे 'सुधारा"। भूषि-सी (हिं) हेर । पुरु सस । स्विक-दि॰ [मं॰] दंश । तु ३६व । श्रुविश्क-दि॰ [मं॰] अच्छी तरह मी वा हुआ। स्विम-विन् प्र [मं] दे 'स्वीम । सुचिर-वि [मं+] छेरवासा वदासप्रार, मौनन्मा धावकाका विसंदित (बचारम्)। पु वाँछा वेटा काठा पुष्टाः ऐरा बरिमा वृँसकर बजाबा जानेवामा बाजा (हेंगीत) नागा नायुर्वतका काह । -वसक्-मु एक तरहको बाहरी । -विवर-३ (साँव बारिका) रिका स्विरा-सी (संग) नशी रक ग्रुगंबिन छान्छ। सुचीम-वि॰ [सं] सुंदरः श्रीतक । तु चंत्रस्थेत मणिः यक तरहका साँच रहक । स्पूष्ठ-दि॰ [तं] यहरी नीदमें शीवा हुना । वु सुनुप्ता-बरबा । सुपुष्ठि-सी॰ [मं] नहरी शीदा सम्बन्धान अदान आर्तरमय कीय र मुप्पा, मुप्पा-रि [मं] सोमेडा रुपुड, (वन मीर क्रम रदी दी 1 स्यूप्या नहीं [मं] सीनेकी श्वाता । स्याना, सुनुश-इ [संन] नृपेदी साल मुन्द दिवयी-सुपूर्व्या सुपुष्टा-मी [मैन] इश आर विगना जाहिये दे राजमे रिवन पर गारी। आमुरेटके अनुमार मानिके प्रश्वमें रिवन वक प्रशान भागी ह श्रुपेम~रि [तं+] रिम्हालशाना (कृष्य र्वट्र)। दु० विन्तुर एक गंपने एक वशा नक मानासुरा वक निया-भरा बन्मका बस पुत्रा यह बानर की गुगीरता चिकि लाह बार बुगरे मनुष्टा बक्द पुत्रा कृष्यका वक्द पुत्रा मूर-मेमदा रह बरेताः सर्वित्या रह पुत्रा बुत्रराष्ट्रश रह तुषा ममुदेवका एक तुषा धेररका एक पुषा करीशा बेंछ ह सुविविद्यानधी (शृं) कृष्य विवृत्तः ।

सुष्ट्र-म॰ [मं] भविद्यपा सुरद रीतिसे बीह बीह । मुप्हुता-सी॰ (मे॰) हररता। दश्याम, अम्पुरम । सुष्म-१ [सं] राता । सुष्ममा=-स्री दे॰ 'सुष्मा'। सुर्सकर-वि (रं) द्वारापूर्वक वंद क्या प्रमार निगरी ध्यास्या करना कठिन हो । यु अधिमार्थः अधिन कात । सर्मक्षेप-प्र• (एं•) शिव । मुर्मग-द्र॰ [र्व] अच्छी शुहरत, शानंत । ती॰ विस्ते साथ रहा बाबा विच । सुसंगत- (१० (१०) बहुत श्रीनत, पुण्ह । सुसंगति - को (स्॰) बच्छा सुरश्ता बच्छा देव । सुर्यगम-द्र (मं॰) बच्छो समा। बच्छा समारबन । सुर्सेश्च-दि॰ [र्ग॰] बक्ते वचनका पावन सुरतेशमा ह मुर्लिय-९ [मं] १० (सुर्विष । सुर्त्तपत्(६)-का॰ (ई॰) वर्षि स्वृद्धि, मीमान्द । सुर्मपण-वि॰ (धं॰) अनि धंत्रम, तिसदे वास परेट पर-संपंचि हो। मुर्मामाम्य∽द्र [सं] रेश्व मनुदायदानुषा। शि• मिन्हे दोनेको सनिद्ध संमानमा हो । मुर्वस्कृत-वि (वं•) शुंरर संस्थातुकः भनी संदि संस्कार किया हुन्य। प्रवादि द्वारा जनी जीति प्रशास हुमा । सुम•-सी शक्ता बहिन। म्सद्भा • - ज • कि. वे. 'तिमद्रमा । मुसक्रित-वि [मं] अपने तरह समा का स्थान मुसताबा-भ कि देश प्रशासा। शुमारब-वि [मं] द्या बहादुर । शुस्त्रता – श्री [मंग्] शत्रा वसक्ती १६ वर्गी । मुसब मुमना-५ मुसबी-लो॰ रह सल विच्छाद । शसमय-हि॰ (वं॰) समान्यन । स्यम-वि [र्ग] भूर भीरमा विस्ता। शुर्थ म म्माय-९ [मं] बन्द्रा स्थर, स्थान। शुन्तमा = न्सी है = भूतपा । शुमर-९ वरि वा वस्त्रीका दिना नाहर। मुगरा-५ दे 'मुगर'। मुससा। युगसारि-ब्रो॰ रे श्रहरात । मुत्रसाम-भी दे॰ प्रगुरात । नुमित्नि-मा॰ (से) नवा। शुम्बद्धित-रि [र्थ•] श्रन्धे धनशका। शुंसह-दि [ने] दिनका नतमार्रे शहन दिना पा नदे। लहनशीय । दुव दिवा शुम्पद्वाच-विक (शेक) अच्छे साबी वा मदावद राजा । स्यान-मीन देन परमा र पुन एव स्टिरवार शुमाधन-वि [वं] को अन्ना-गेर्ने जनागित रिपा स REI

सुपेणी-सी॰ [सं॰] तिष्य ! सुपोपति सुपोसिश-मी॰ रे 'तुपुप्ति ।

सुष्ट−विभवानैऽ।

सुपामा-नी॰ (सं॰) माध्यत्रमें हस्मिश्चत बद बरी।

सर्यापर्ता-सी॰ सि विवादित्यमका इरवर । स्वादमा (इसन्)-9 [धं] चुकेंद्रांत मनि । सर्वाहच-प्र मिन्। वृत्रेश्च बीहा । सर्वोत्त-१० (सं०) सरवका बनगाः सरबद्धे धननेका समयः संस्था । सर्वाद्र-वि॰ [सं] सर्वसंदर्भ । पु॰ शॉका कदनमः महेरबादणी । सर्वेडमंगम-५ सि] मर्व-बंडमाका विकास समावास्था। सर्वोड-वि॰ [सं॰] अरव दीवे दुप युवै द्वारा कामा दुधा । पु॰ गुर्शातकाक्षमें कामेरासा अतिथि। सर्वोग्धाल-५० (सं०) सबीहर । सर्वादय-५० [मं०] मुरबदा उगनाः मृरबदे कानेता समय सरेता। -तिरि-त वत्रवासकः सर्वोतयन-५० वि ो तुनेरेखा सर्योद्यान-इ (सं•) न्यंत्रम नामका तीर्थ । सर्वोपमिषद – स्वा॰ [मं॰] एव उपनिवद । सर्वोपस्थान-व भिन्ने संस्थापासको समय की जाने-बाबी सर्वेदी एक विशेष संवासमा । सुर्वे (रासक - ५० वि) वर्षकी व्यासना करनेवाला. सर्वगम्ब । सुर्वोपासना−सी [सं] स्ट्रेंबको पूत्रा बाराधना। स्टब्-३०१ 'धून । नावका पुकरा । -घर-५ दे धनपर । -धारी-त देश शानगरी । -पानि-पुरु देश 'हान्यावि' । सुद्धमा÷=म कि बुगमा, सुममा, स्ववित्र द्वीमा। स मि भारते देशमा इन्य देमा- मधुकर बद्दार्थरेथी 現何者 一程をす सुनी-सी शादेश मुधीमा एव इनावर माण्डंब देनेका एक प्रकार । • प्र• दे॰ 'श्रुमी' । सुबस्। ० - अ० दहना ११वमः । पुरु द्वागाः दीना । स्वरां-पु के सबर्'। संबा-द समा। सुय-५० एक यनबंद्र, दिशुगार । स्री [ल॰] मुन्द्रीर कि। पद बंद बीहर स्ममार-इ स्नाक्ष (का] गोह। समिर-पुरे दन । सहा-पुर यह तरहहा गहरा लाम रंगा कह शहर राज । वि मान ! -काम्ह्या-त यक मंदर राग ! -हीबी-भी १६ समिना । -विमायम-५ १६ लेवर राम । -श्याम-४ एक लंबर राय ! शरी-वि भी है। तुहा । भी सर्वनशा। संग्रहार-सीर दे श्रिंगण । र्मुग+-इ भेटे निश बंगूरा। सीवा श्रंग काशा -क्षा-न अरावाक्षाक्षा -- प्रान्ता श्रीतिहा मंती०-५० १० गुरी १ ग्रीमच-पुरु [मी] यह मनदरा मनुदा एक पुत्र । र्रोक्कशी स्ट्रीयरी-की [तक] बनमामधी की वर्धनकी । शृद्ध - में • [र्ग] बहु दीत, सुत्रगीकी वीमारी । शहर-पु [म] बापु हवार समझ बाग नीवर बाम • भासा ।

संबं(म्), संबं(म्)-इ॰ [स॰] रे॰ 'संबं'। स्ट्रणी सङ्ख्यी, स्ट्रणी, स्ट्रियी-श्री । [र] रेन सकि(म्) सकि(म्)-प [मं•] दे 'सद'। सम्भा-मी॰ हि विकेश स्या-प्र• [सं•] मिन्याल, एक प्रदारका दर्छा, सन्द बार्थाः = साठा । समास-प्र तिंशी गीरका एक पूरा एक देखा दुरु पूर्व हरे रवमावदा वा बदुमावी मनुष्या बायह नारमे। करनीरपुरका शामा मामुदेव । -कश्क-पुर मालागागीका पीपा मण्मॉह। -कोकि-अ एक सहस्र बरा - घॅटी-स्पे वासमयाना ! - अंतु-पुरु तरपृष्ठ रेखा क्व । – स्त्य-प्र विष । – धर्म-पु॰ वह शहूर । -वास्तुक-तुरु रह सरहरू। बन्दा १ -विमा -ईता-ची प्रतिपत्नी विश्वतः। समास्त्रिका-सी [सं] गौरही। क्षेत्रही: हमावशार्थाः विदासी श्रंद । राज्यिमी-की [संग] गीरमी। सगाकी-सी विंशी वीदरीत लीमरीत रवादका रेंदी कोकिनाया विदास दंद । मन्प्रमीण-मी० दे० शरिवची १ ख्तक = - अस्तार्थने वाताः। रहज्ञमण-प्र देश 'सर्थत । -सीमता-भोश १पना शकि । नहार न्य शका सहिद्यां। स्वजार-स कि रनमा मनामा परस्य करना। सम्ब−९ [मं] ४६ प्राी। स्थवा-धी [र्ग] सीन महिन्दा । er Grenmit-9 [4] Influencie erabiene i शाय-वि शिक्षे धोरने बीरका अस्त्र बरने बीरका राजि-त (तेर) हात्राचेरमा । श्री वर्णामा भी छ । श्वतिष्ठ-५ [मं] नेन्छ। क्रक्तिका-स्थे । । दे क्रिका । शुक्ती-न्यो (श्रेण) है लिया। शाबीका में हुछ । लुक्तीक∽तु [सं] बाबुा महित्र बका मच स्थरित । श्वीद्धानमी [सं] बामा मार 1 शासन्ति वि । तथा विश्वविद्या विषय हथा। प्रक यममः प्राप्त । शृता-सी [शंग] गमन पदायन । शृति=ब्दो • [र्ग] विश्वोत्तः प्रयाः गमशा मरदन्याः मार्ग चीर प⁷वाना । स्मार्∽ि शि•] धमनद"च । गुल्बरी-की (ले) शहर दरीर माना र न्त्वा(अन्)-४ (तं) सक्त प्रशासिक विनार शरद्वा वद्दि । ग्रा-प्र (ने) नां । शृक्षक द [मं] बापुर वर्गामा बमहीना दिश्या दिशा बारा गुर्वेत्रस्था कर व्यवस्था निगीतम् आहर्तं भीत सरी। बारा ।

राजास= = दे॰ 'लाल' ।

सक्त सक-प सिंगी भोतका प्रांत प्रसार

```
1419
सुसाबिश-वि॰ [सं॰] जच्छी तरह सिशकाना हुआ:
 नच्छी तरह फाना वा तैयार किया हुआ।
सुसाध्य-वि [सं ] निसका सावन सक्य को, सुक्रसाध्या
 को मासानीसे नियंत्रकों रखा वा सके। भाषान ।
ससाना = च कि सिस्बना सिस्बी भरता।
सुसाबरी-सौ दे 'सोसाबरी'।
मुसार-रि [सं॰] वर्ति सारवुक्त । पु नीकमा बाक
 रीर ।
मुसारवाम्(वत्)-वि• [धं•] वे
                                 सुमर, । व
 रफरिक ।
सुसिकता-सौ [म॰] अच्छी बाह्यकाः ग्रहर ।
सुमिकः-वि [सं] दे॰ 'सुविकः'।
सुसिक्-वि [सं ] लच्छी तरह पका था पकावा हुआ।
 विसे बच्छी सिन्दि मास हो।
सुमिद्धि-सी [एं ] एक अशंबंधार यहाँ एक प्रमुख्य
 परिश्रम करने तथा वसका फरू किसी बूसरेकी मिस्नेका
 वर्णन हो ।
सुसिर-पु॰ [मं ] ण्ड श्वरोग ।
सुसीम-वि [सं ] बच्छी सीमाओवाकाः सुदर सीमंत
 बुध्धात विद्रमस्कापक तक।
सुसीमा - की [सं ] अन्छो सीमार छठे शईक्छी माता ।
सुसुकमा-च कि सिसक्ता।
सुसुबी। –की औषा एक कोहा।
सम्पि - सी दे 'सुप्रीत ।
सुसुरिधवा-स्रो [सं] पमछी।
मुस्रम-वि [सं ] वित स्था नामुका तीर्व (वैसे
 इदि:); वो वस्त समझमें न भाने । पु॰ परमानु । -पना
 ~सी बरागाँसी ध
मुस्हमेश-पु [सं•] विभ्यु ।
मुस्त-वि [सं ] अच्छी तरह श्वाना हुआ; बहुत तस ।
ससेन-प दे 'सदेग'।
सुन्देव्य-वि [चं ] नैवा इरने बीग्या आसानीसे अनु
  पानन करने बीम्ब (मार्थ)।
मुसेंचची-सी [सं] बच्दी विभी वोदी।
सुनीमग−५ [सं] दान्यत्व सुख।
सुम्बद्धन-पु (सं ) एक सुवंधित गीधा ।
शुस्कंग-वि (संग्) जच्छे रहेकवाका । -मार्-प्र
  दे स्क्रमगर ।
 सुरस-वि [फा ] क्षेत्राः क्रमशरः मानसीः भीगाः संद
  पुष्टिः। वदास चतरा दुवा (चेहरा) । –कृत्स-हि
  बीमा पक्रमेदाका। -पॉब-यु स्टीब नायकै जीतका
  प्रकार ।- राय-वि नाराम । -शक-पु पहारीमें
  पावा कानेवाका एक तरहका रीछ ।
 स्रस्तमा, सुस्तनी−वि॰ मी [मं॰] सुरह स्तर्गो
  वाडी (सी)।
 मुस्ताई • – भी मुस्ती ।
 पुस्तामा-अ कि॰ अक्षापर दृष्ट करवा आराय करना ।
 पुस्ती-सी 'कारी कमबीरी; आकरवा पुरवेंद्रियकी
  धिविनता। मु॰ - उतारमा -शोवमा-क्नवार्द सेमा ।
 मुम्तुन-५ [मे॰] मुदादरंश एक प्रव
```

```
भुस्तीन#−पु दे॰ 'स्वस्त्ववन ।
सुस्य-वि [सं ] सुबपूर्वेद्ध स्थितः स्वस्यः सुमीः चत्रति-
 छीड । - कस्प-वि भी करीन करीन नच्छा हो ।
  -विस्त-माभस-वि॰ मस्ववित्तः ससी ।
सस्यसा - सी [रां•] आरोग्य स्वास्थ्या स्वाप्त्रका ।
सुस्य छ-पु [से ] यह प्राचीम अनगर।
सुस्थावती-सी [सं] एक रागिनी।
सुस्थित-वि [र्श•] अच्छी तरह स्थित वहा स्वरंथः
 मुखीः सिर्वीषः माध्यवाम्ः सीवा-सादा । पु॰ वहः हमारत
  बिसके चारों और गीविका बनी क्षेत्र मोहींका एक ग्रह
  (धाक्तिक !)। -मना(नस्)-वि॰ प्रस्वविद्यः प्रयो।
  संद्राह ।
सुस्थितसम्ब-वि [र्ल॰] अपनेको सुग्रहाक मानने-
च्चरियकि—स्रो [मं ] संदर् समझ्ये रिमतिः अम्युद्रम्।
  र्मकः सुद्धः स्वारम्य ।
मुस्थिर-वि [चं] मफिड स्थिए त्र का शांत।
  -वीवन-वि॰ बिस्की बुवाबस्था भरावर नगी रहे ।
सुस्वरम्मन्य-वि [मं ] अपनको सूर स्थिए मामने-
सुरिवश-सी [एं॰] एक थ्रिश था पमनी।
सुस्मदु-दु (सं ] वसमाम ।
सुरमा-स्री [सं॰] पेसारी।
सुस्मात-वि [र्थ•] विश्वमे वद्योपरांत स्नाम दिना ही
 अभा दरह स्नान किया प्रभा ।
मुस्मिग्धा-सी (सं ) यह करा।
सुस्पर्ध-वि [सं ] हुनेमें बहुन अच्छा मात्म हीनेवाका
 मुकायम श्लोमक।
सुरकीत-वि [सं ] <हत वक्तिशोक।
मुस्मित-वि (सं॰) चुंदर, मधुर हारवनुक, मुस्कराता
 हुमा ईसमुद्ध ।
सुस्मिता ना (सं•) हैं एम् छ ना।
मुख्यग्यर-वि [सं ] सुंदर हार पहनमेशासा ।
सुस्रोता-न्त्री (सं॰) पुरागमें वहिद्यान पत्र मदी।
सुस्यध-तु [तं ] एक पिनृवत ।
मुख्या-भी [मं] अम्युर्य क्रयान।
सुस्थन-वि॰ [सं ] सुंदर व्यतिवाधाः सुरोकाः धीरका
 (भ्रष्य) । प्र क्षया संवर स्वर ।
सुस्वपन-दु [सं•] क्षित्र ।
स्रवा-पु [सं ] द्वाय स्थार शिव ।
सुम्बर-वि॰ [मं ] सुमपुर स्वरवानाः सरीकाः कोरका
 (सन्द)। यु सपुर शन्दः श्रीतः नव्हका पक्ष पुत्र ।
सुस्वोत्त∽ि [सं॰] अव्छे वा प्रसन्न मनवाला ।
शुरवाद-वि [वं ] अक्टे स्वत्रका जावकेदारः भीता ।
 पु सम्छा स्वाद् ।
सुरबादु-वि [मं ] दे ग्रन्थाद'। -कोय-वि• मीढे
 वच्याका ।
मुस्याप-बु॰ [मे ] प्रगाद निद्रा ।
सुस्थिक्र−ि [र्न] भूग अच्छे तरह पद्माया दुला।
मुद्दगन-विदि श्वास्ता ।
```

श्राप−प (से] चंद्रमाः एक कसूर । सपाट-प॰ [सं॰] फुक्क गोबेक्ट छोटी पर्छा । मपाटिका-सी सि॰ प्रशेकी चीन। सपारी-मी [र्च] एक माश बुताः काँचा, मिकानरी भातु पुस्तिका । सप्त-वि [सं] सरका ह्रभाः फिसक्कर निस्ता हुमा । सुप्मा(मन्) - प्र [र्ष] हिन्ना एपै। सन्न्यासी । सप्र-वि सि विक्ता विक्ता विकास । प्र चंद्रमाः स्था सपा-सी सिनो सिमा सामद मारतको मसिद समी। स्प्रार-प्र [सं] एक पद्मा बाकसूना पक्र असूर । विश गमगञ्जीक । श्चमस−पु• (त्•) यह अनुर । सार-वि [सं] निर्मितः, बनाया हुमाः सुका लक्क स्थागा हुआ। गुँडा हुआ। सम्बद्ध विमृत्तितः संवक्त, "से मुक्तः तुका हुनाः प्रभुरः निश्चितः । -मायतः−वि॰ व्यर बायु मिकाकनेवाका । ~ मुख्युरीय-वि वेद्याव और इस्त कामेवाका । सक्ति-की [सं] परिस्थानः निर्माण, निर्मितिः अनत्, संसारः प्रकृतिः संसारके करपत्तिः संसारके क्लाकेकी क्रियाः समुद्रः पदार्थेदा भाषामागः नामदीवनाः एक तरहकी हैटा गेमारी । पु अग्र छेनका एक पुत्र । -कर्ता(र्त)-प्रश्नदाः-कर्त-प्रसृद्धिकरनेवाकाः रेपरा मधाः पिच्यापदा । -शा-की एक श्रीपवि गर्भदानो । – पत्तन– प्रस्कानसर्थि । – प्रदा– नौ प्रकरा था गर्भदाकी सामक इत्य । — विद्याल — साध्य— प सहिन्द्रे रचना कारिन्द्रे मीयांसा करनेकका शाला. विद्यात । स्ट्रचंतर-५ [रं॰] अंतर्शतीय विवाहसे वरपद संतास । सँब-को सेंबनेको दिया।

पु सुविको रचना जारिको सीयांता करनेवाका शाला, विद्यात । सुर्वेदा - पुंचे के विद्यांतीय विकाद से स्टब्स स्वाम । सुरू-को सेक्सेको किया । सुरू-ता-त कि मानपर रक्तना। गरम करना । सुरू-त पुरु के प्रीमा प्रकृति होसी। यक वाका राक-पुरोका यक सेर । सुरारा - पु मारी पीज (कक्त), राजर मारि) कटका-

कर के वायेका रहा। सेंट=+की वृषकी पार। पु [अंग्) सुशब्दः सुनंदिपूर्ण प्रस्थाः

सेंटर-पु [मं] बॅडविंदु या स्थान । सेंट्रस-वि [भं] हुक्क, बेंडीय ।

स्मा-इ सर्वदेखा निकल बागा छत्र छातेश एक तुम। सर्वा-प सनारीके काम अन्येताल एक स्थित रहत ।

सॅडॉ-च हुनारोडे कार आनेवाना यह खनित हुन्य। संत-न्यों दिनी बस्तुकी मानित हुन्य रक्षान्यमा व वनना। -मॅबि-व सुक्ती दिना वाम दिने साहक। -का-(माने दिन दुग्ध देना व पता हो। -मॅ-सुक्ती। संतनाव-ए कि मेंमलकर रक्षाम पक्ष बर्गा,

पदोरमाः समेरमा। सिति मिती॰ — भौ दें सेंगाय वरण और अपा-रामधी निर्माहा।

सँगा-इ रे छजा।

सँची=-स्रो॰ शक्ति गरही। सँबुर=-पु॰ सिन्द्र।

सुँदुरा−१ दे 'छें दुरिना'।

संबुदिया—पु काक कुठोंबाला यक योगा। दि सिंद्रके (यका। – आसा—पु यक आम को मक्तेयर कुछ लाक क्षेत्रा दें।

सेंबुरी-वि दें • सेंबुरिवा'। की काल रंगकी पान। सेंब्रिय-वि॰ [सं] बीववपुट, समीवा पुरस्सपुटा । सेंब्रि-जी वह क्रेट को बीर दीवार सेव्हर बजाते हैं,

सूर्यः। सैंबना-स कि॰ सँग क्यानः।

स्विधा-पु सिंजु नदीके पाससे निकन्नेदाका यह सनिव सम्बद्धाः सिंबिया-वि॰ सेंच क्यानेदाका। तु॰ यह मराहा राज-

वंद्या प्रा

सुँबी-सो॰ सब्दुः सब्दर्भ स्टान, कूट ऐर्देश । सब्द्रभारत-तु यह मांसादारी बंद ।

स्मास - पु॰ शास्त्राक, सेमक । संवर्ष-की मैदेसे बमादे हुए एएके-से करते । सु॰ --

प्रमा - बटना - इमेरिकोंसे स्टब्स् मेंबर्र बनाना । स्विरण-पु दे सिम्छ ।

स्वर - पुर्व 'श्रेमक'। संसर - पुर्व (वं) वह सरकारी कर्मबारी जो पत्र पुरस्क, किस्स मानक और ऐना-चंशी रायनाओंका परीक्षम कर नापकि-समक जंग्र निकास देवा है। क्येन्स और

मापरि-जनक वंशीका प्रीकृत । सँसस−पु॰ (मं॰) बनगणका, मर्दमग्रुमारी ।

स्तार-पुर्व भिर्व वनगण्या, मर्बमशुमारी।

महारे-इ र्जुना बोरवेगाना । सिंहुमा-पु यक तरहका चर्मरीय बिसमें समक्षेपर स्टोर

सं थमा हो बाता है। सहस-त रतहो, युहर।

स-प्र करण बारक भीर जगारान बारकमा विक्रा वि 'साफा बहुबबन समान हुन्य । सर्व 'सी या 'बिका जबकी बहुबबन कर, दें। स्त्री [सं] सेवा, सहस्त्र बार्मीय प्रती ।

सेईं।—की काठका एक वरतन जिससे मनाव नापने हैं। संदर्भ-दु सेव नामका एक। सेकंड-दु [सं] काकका एक वहुत छोटा परिमाण

क्कंड−पु [सं] काकका एक वहुट छोटा परिमाण मिनिटका साहनों हिस्सा । वि+ दूमरा ।

सक-पु [एँ॰] सीपनेश्वी किया; विश्वादा आई बरना; क्षिणेकः वर्षणः सावा नवानेवे काम क्षानेताका दुवारा पुरत्याता क्षिणी तरक कार्यश्वी देंश तैनमरंत; वक्ष माणीव कनका। नयात्र नमाज्ञन-पु यानी सीवने का बरतक कोल। निकास-पु॰ वरी मिना हुना साम पहर्मी।

सकड़ार्ग-पुरीना चायुक्षः। सक्तिम-वि [सं] शीचा दुला; यकादर दान्तः दुला (दैने लोदा)। दुल्ला।

सेकुवा!-पु १७वारपीमा श्रीमा !

सेन्द्रम-दि [बं] सोवन बोम्बा ग्रीबा, तर किया

सुद्देगम॰-दि॰ ए(न, सुगम । रेंडे सोइत है। सुद्देगा-दि॰ मृत्ता भईगाबा धकरा । सुदायिनि सुदायिमी, सुदागित--मा दे 'ता-सहरा १-वि संदर्भ शहाबना । सुद्दमी - स्रो दे 'मोदनी'। सुद्वागी-पु भाग्यवाम् पुवव । सुरमु-वि सि॰] संदर दुईमाला । पु॰ यह अगुर । सुद्वाता-वि॰ सहमे कायद । सुइवत-ली॰ [ब॰] शंग, सावः मित्रताः साव बढसा सुद्दामा-अ॰ कि॰ श्रीनित दोना सुंदर स्थमा, द्रस्मा वैदनाः जक्षमा याष्ट्रीः सहवाम मैशुलः। ~याप्रता~ भागा पक्ष काना । वि शहर गुहाबना । वि• भो भच्छी संगतका लाभ वठा मुख्य हो। हिहा। सहायाम-वि॰ सहात्रवा। ~का भसर~संगतिका ग्रुण साथका असर्1 मु॰ **~** मुद्दारी - की सारी पूर्त । उद्यमा-किसीको सहरतमें रहकर कुछ शीधनाः पास सुद्दाल-मु बद समझीन पहलान को मेरेमें मोक्न देश रहमा। -विराहमा-अनदम हो जाना, मित्रता भंग बनावा जाना है। हो बाना । सहासी-नो॰ दे 'तहारी'। सुद्दमती-(व साव ग्रहने-वहनेवालाः) मैद्रीभाव रखने सुद्दायन-वि दे 'तहावबा' । त शहर हान । सहायवा॰-वि सहावेशना । सदर-५ [सं] एक असर । सुद्दायमण-ति दे शुद्रामणा'। मुद्रशय-प [फा॰] इत्त्रमका वेटा जी उसी-दे हाथी सुद्वायना-दि संदर्भ भका कर्गतेवाचा। -पन-स मारा गवा । संरत्वा । सुद्दछ--४५ दे॰ 'सुद्दैक' । दि॰ [छ॰] अच्छे इक्वांका है मुद्वाबस्य+∽वि+ दे शुदावनः'। सुद्दन-पु॰ एक राग सूहा ! सहास-प्र सि । धुरु शह शास । मि चुरर गृह सहिव(म)-दि [सं] संबर विव देमेवाका, वार्मिक । इस्तवक । प्र वह मांगिरसः भूमन्त्रका एक प्रम । सुद्दासिनी-वि॰ की [सं॰] हु र इसी वेंसवेशार्थ सुहयी-ली इ 'सहव'। यभर सन्दाममुख्य (मी)। सुद्दसामन-दि॰ [सं॰] हैमनुम । लुहासी(सिन्)-वि: वि] संतर दास्यक, देना सुद्दरत-(४० [सं०] सुंगर दाबीवालाः कुछलवरना सुक्षि-मुद्दित-वि [थं] निहिता एका अनि करवुका हिराहरा क्षित् । प्र• भ्रतराज्या यद प्रश्न । सुइस्ती(तिन्)-५ [सं] एक जैन भाषार्थ । रनेही । पु॰ शृति। बाजुर्य । सुदृश्य-दु [सं] पद कवि । नि अञ्चवत्ता सुक्कित−की [सं] अध्यक्षीयात क्रिक्रामीदेने एका सुद्दा - द्व छाल मामको मिहिया। बह्र करा । सुद्दाग-तु सुद्दानिम दोनेदी अवस्वा श्रीनाग्य अदिवानः मुद्धम्-वि॰ (सं॰) संबर रनेवनुगा दरववाता। तु**र** भ्याहमें गाया अस्थिताना मांगर्विक गीटा व वहने करहे तिया बंदमीमें लामने धीवा स्वाम । -स्वाम-प्र का सुरानित की रहिनती है। वह अन्या जी स्नाहर्य विषक्ष परिस्थाय । न्यासिननीश मित्रकी प्राप्ति । समय दृश्हा पहिमता है। यह तरहका हन। व्याट मुहन्दत सहसा-धी॰ [सं•] मैधो, बारना । प्रमद पेंडा (अक्ता द्वराम अपने वाछ रखो) ! -धाँवी-सहरव-द (do) दे॰ 'हहसा' र ब्बाइफे तीन भी दश्रे बर्ग दुश्रहिनके रूफ भूतक्-द [र्ग] विशासिय । - हुट्(क्)-शि शपके बसानमें गावे भाग है। -पिटारा-५० -पिटारी शिषधे हानि पर्वानेरका । -ही पहरों और श्रेगारमामधेका दिन्या शाहरहे शक्कदर्थ∽वि+ वि] संदर इरववानाः स्नेदी । भीरभ दम्महिमकी रिवा जाता है। -प्रदा-त :-सहय-वि १ वि दे तित् । -यस-प्रिय पुष्टिया-स्था बीट मादि मगावर कामभदी बनाबी हुई (राश)की नेजार --श्रेष्ट्र-पुरु विषक्ष पुत्रम् दीना। शेरर पुरिवा बिगमें तुर्गित वस्तुरें स्थान बुक्बिके -वाक्य-व सहारम्य गम्पन्। निष् भेती जानी है। -- मही-नि सी शुक्ष-सैनाग्य शुद्रक-द दे शहेत । मुदेकरा -वि वे शुरुता । तुक्त सुग्री । -शत-की पूर्व-दुर्श्वनदे विकासी पहली रात । असम्भानमी वरावधा पर्तव जिल्हार सुदेखा-वि सुदायमा सुराहर पुरु मंग्रहमीण करिया इन्द्रा-द्रमहिन सीत है । मु॰ - उज्रद्या-विषया दीना । -क्रताना-विदे महिना वर्णा विशिष्ट सहामधी महेल-प्र [ब]यह गरा। थीओं(बृदियों निदूर आदि)या बनारा बाना। विका महाता(म)-१ [मं] भागा दीनाः मुहत्तुवा ६६ दोना । -सनावा-शीमान्यः अहिवातकी बालमा करमा । बुध। विशवदा एक बुच १ सुद्दागम सुद्दागिन-न्यी वद सी विगया गर्छ वीता शहोत्र-पु [भ०] वद कति। शहरेवता पुत्रा स्तिकी ही मदर कीबाखकरी। देश अध्यक्ष्य में अध्यक्षित कर देश कि धारा दह देश सुद्दागा-त दद शारहष्य भी शोषा यकान धरेर दशके एड ^{है}ग्या एड बाल्ए । सुद्याः सद्याद-तु [शृंत] वंगान्तदे श्रांन्यामे असीना काम बाता है। हे बद्धरिका भाषा मित्रहे दिगान होत्रह है

सुद्देयम-सुद्दा

बातेबाटा १ भक्त (रह)-वि (र्शः) श्रीयनेवासा । तुः वह को धीपनेका काम करे। पानी कानेनाला: पति । सेरस-प्र• [र्च•] धोवनेदा पात्रः बाकरी ! सेकेटरियर-प (ale) जासम-व्यवस्था बर्गीवाम शेके र्थायोदा रफ्तर सविवासक। सेवेटरी-ड [बंब] मंत्री। दिसी ग्रंशा संबदमंद्रे वार्य-संपाद्यके लिए प्रशासकी ध्यक्ति (जैसे सीशक्तिरवर्धीका सेक्रेररी)। विसीन्द्रे निक्षी कार्य, पत्रकावदार व्यवस्थाप्रै सद्दायता दरमेशाकाः शासम व्यवस्थाके विकी विभागका कथ अधिकारी । संबदाम-तु [अं+] विभाग। सेरा - प्रदेशना रचा दुवा बंदा वंद समामित के भीता । मगरग-त हे थेवर'। सेलाबत-इ राजपूर्वीकी यह उपराक्षा । मसी - हो । दे 'धनी । मेगय-प्र• [सं] स्क्रपेका क्या । सेगा-द॰ दे 'सीवा'। सेग्रन!-प्र• रे 'साधीन'। मेच-प्र[मं] सिनारे जिल्हान । सेपक-प [सं•] बाइल । वि मीवदेशला । सेयम-प [मंग] सिवार क्रिकाना मिलोबा राजा महानेबा प्रहारा। बनारे (कोदे आरियो)। नाकरी। बाबी स्त्रीयमेदा राष्ट्रां −एट~६ तीयतेदा वस्तत्र । स्यम्ब-१ (सं॰) महानेख उदाया व्यक्तिक १ मेक्की-मा॰ मिं देशिय, सन्द्री । स्वमीय-रि [मं] भीवने छिड्डाव दरने बीध्व । शाबित-पि कि ने कीवा तर किया बच्चा दिवयम क्या इमा। सरप-दि [सं•] दे अधनीय । क्रज−को श्रम्भा विरुद्धा !-पाल-प्र शामके श्रमा सारका शहरेहार ह सेमदद-वि , प्र (चा) है शरह । सेप्रपटम-दि (का॰) शरहराँ । शहरियाण-भी देश क्षेत्र । मितां-मी दे मेह । स्प्रमान-की० है 'संद : मेहारादि - पुनदादि अभी। सेशनाम-स दिश्यद्द दीनाः, अनन् दीयाः । रोर-पु (तं) एक पुरामी शेष वा माना (वं) एक ही नरहकी करें थी में दा नवह । सरला॰-म हि बालगा, समझ्याः इष्ट महरूप सममना । सेरिएसेंट-५ (वं) बर्गेटची पैनावय काट लगान तब करना वंदीरत्तं वर्षन्यः ! सदन्यु [मं] एइ यन नान्य वा वेरेटा । सर-पुर बहारत वहा राष्ट्रवागा व्याप्तरी। वनी अल्बी। हमार १ [बरी नेहाभी है] सारमा - न शहर

मद्यां-पु रि॰ से दा'। संदर्भ -प॰ पढ तरदव्य शरीश श्रात । सेश-प दे 'वेश'। । नाटका मेन-'-- म्हिन्दे योटर मारमें शेही'-संदरसार । सतः - वि इनेत्र, सफेर । - कुसी - पु पढ नागश्रम । -वीय-पु॰ अन हीय ! -पुति-पु॰ चेत्रमा । सेतक-व सेन वका-बंध-पक्ट 'मेनरेप'। सेतमा! –स॰ क्रि॰ है॰ 'से तमा । सेतवारित अग्रीम काप्नेकी करही । सेतध्य-वि॰ शि॰ो साव वॉपने बोग्य। सिविका-सी॰ (सं॰) बरोप्या । संती == प्र• से १ सेत-प्र• वि विद्यासीया प्रमा वंपना पहाहपादा ही रास्ताः सर्वादा सीमाः शेषः निधित निश्वतः प्रकर क्षोत्रा बारिका शैका वस्त क्या इसका एक परा बलका यह बुद्धा वह महान निमुद्धी गुरुद्धी घरने बोतीने कर यो गयो हो। व वि योगा -- बर-प्र-प्र-प्र-कारिका निर्माण करनेशनर । -कर्मी(म)-ए एर मारिके निर्मारका काम । -ज-५० वर्ग मात्रका एर बांड ! - पति - व रामस्त्राभप्रमाद्धे शासनीको बंदा यत हवानि !-पथ-पु बदावी, दुर्वम स्वामीने बाते-माना मार्ग ।-अप-पुर कृष्ण । -बंध-पुर गेथ पुर भारिका निर्माणा शामके लंका प्राप्तिके किये महरूपर सक मीलका बनावा हुआ तुवा तुवा महर (से)। -वंगव-१ प्रम्या निर्मात श्रीश तुमः मौनाश्यी में क्यारि ! - मेला(श)-व वॉच तम मारि तीवते-नामा १-धेर-प वार्ष प्रम महिद्दा इतना । -धेरी-(विसे)-वि सीमा मन्न बरनेनामा। नापका इर करने-बाबा १९ दंती बुध १ - बुक्क - पुरु बरम बुध । - सेन्न -व सीवादा बाव देनेशला पर्वत : सनुक-तु (सं•) वींपा तुषा वश्य वृद्ध । ० छ। साम⊅ नाह्य ! शनु**षा > - ५**० शुच्च । सम्बन्ध भि विचना जेतीरा नियष्ट वेती ह मधिया-१ मेर्नाहरू शहर-प्र देश 'रनेद - 'हरि भाष नारे जेन ग्रेपी रहे है हिं -इमम् १-छ-पुर भएउए देर । शहरा-१ तीत्र हारीशया पत्नाव । शक्किश(यम)−दि [೧] देश दुना । सदक-५ वि वेषद्र वापीन राजा । शहरू-वि [ते] दिवारण बरने बीव्य । शब-बिक [मा] शहाते, दूर बहतेवामा । पुक विशव ! stum-la fet | frente ufeiten : सेवा-ओ» [मं] मन्द्री माग्द मं" t होश-६ मि रेसरियण सन्तर्भवेदर पु शरीहर वैक्रमानीय बंगानिकाँकी क्यारिश दिलंबर जेन गरामां म बढ महा व देने, बाज पही- व्ही मून बीव निर्मेट वेश कई शहि आक्ते तसदी -हिन्द्रका और वेदप्र व्यन्त्रवष्ट्र क्या व केशा ३ - कुल - वंश-पु र्वशन्त्राः वह शावशा १-जिल-ति ोजनी विजित्त वहनशासी

काम भाता है।

समी पुत्रः निमताके पुत्र । शास्त्रकर-पु० (रो०) महारुदका प्रक ।

पु पिएक वर्गः देश 'काव'।

कारूक−पु[सं] भावात्रसारा।

भार-प॰ [रं•] स्कूर, केन्द्रश यह वृक्ष वहा ।

भारण-वि॰ [सं] धरणसे संबंध रखनेवासा ।

```
छ । – भीवना – श्री मध्या नाविकाका यक मेर ।
शास्त्रदि−सी॰ [सं ] सदान भारोहण I
भारेक-५ [d ]काकोकरनाःसंकुचनःसीदः अतिस्रवतः।
सारेचित-दि [मं•] शाकी दिया हुआ। विभिन्ता मंदुक्ति ।
भारवत-पु॰ [सं॰] बमिस्तास, आरम्बर
भारेस+−५ ईम्बी टाइ।
आरोक-पु दे० आरव ।
भारोग»-वि॰ मीरोग स्वस्थ।
सारोगमा*-स कि॰ ग्राना, सक्रम करना ।
भारोग्य-पु [मं ] रोगना बमान, ४५ स्रती ।-प्रतिपद्-
  इत-पु एक बत की रनास्थ्य-प्राप्तिके क्रिय किया जाता
  है।-शास्त-ली विकित्सासय भरकाङ।-स्त्रान-
  प रोगमुक्तिके नादका स्नाव ।
 आशीचम−दि [पं] भमधीका ।
 भारोघ−पु० [सं•] वेरा अवरोव।
 आरोधमा*-- स कि॰ रोकना।
 भारोप-५० [सं॰] एक पश्चमि दूसरेके गुज-वर्गको करवाना
  क्यानाः स्वास संस्थापन इक्रमाम ।
 भारोपक−वि॰ [सं॰] भारोप करनेवाका ।
 भारोपण-५ [मृ०]स्पर धरामा। महना। संरवापन रखना।
  रोपनाः चगानाः कमानको दोरी बढामाः क्रियास करनाः
  यक वस्तुमें बुसरीके वर्मकी करवनाः सुद्धी करवनाः सम ।
 भारौपित-वि॰ [र्न-] मारोप दिवा हुन। रोपा कगावा
  gur t
 भारोद्द~पु॰ (d॰) चन्तेशका चश्ना क्रमरक्षे जानाः
  (पीड मादिपर) सवार दीनाः संगीतमें स्वरीका चराव-
  कैंपार्र। सेवा स्थाना धर्मना निर्तेषा पहाडा हेर: संबादी
  एक परिमामः बतरता, नीचे काताः एक प्रकारका अहण ।
 भारोद्दक-वि [तं•] कारोदण करनेवाला । पु॰ सवार।
  सार्यकः पुरु ।
 भाराहण-५ [मं ] बामा संबाद होना। ऊपकी वानाः
   धोरीः भैरामा फूरमाः गृरवादिके निष्ण बना हुआ संघ ।
 भारोही(हिन्)-नि [मं॰] आरोह बरनेशम्या उपएकी
   भीर-बावसे निवादकी भार-जानेवाला अवरोदीका
   क्तरा । पु भानेवाना कदर जानेवाका स्वर था
   म्बरीका सम् ।
  भार्क-वि [मं ] मूर्व वा यहार-सुनंशे ।
```

```
शार्कि-पु॰ [सं॰] छनि, यम, कर्ण शादि स्पॅके पुत्र ।
                                                   भागंछ-पु [सं•] दे 'मर्गरु'।
साठक-वि [सं ] शानिकारका सुकसान पर्दुवानेवाका ।
                                                   क्षावर्षेश्व-प [र्स•] वे० 'आरग्बव'।
 पु पक पौषा जो दिमान्ध्यपर छत्पन्न होता है जौर दबाडे
                                                   आर्था – सी [सं ] एक तरहरी पंके रंगकी मधुमक्यी।
                                                   क्षारथै-वि (स्) जार्था नामक मञ्जूमक्क्षीसे संबंध रकने
                                                     वस्ता। पु अंगकी शहर ।
भारुजि-पु० [सं•] अदलके बंसकः पश्ककः यम आदि
                                                   बार्बय~पु० [सं०] ऋजुता, सीमापन सरह व्यवहारा
                                                     नम्रता ।
                                                   मार्त्तन-प [सं•] अर्जुनका पुत्र अमिमन्तु।
धारह-वि [सं०] व्यनेवाका कमर वामेवाका। पु० वहाव।
                                                   बार्ट-पु• [बं•] कला (६१प, दन्तकारी: विकास मृति
शाक-वि [मं•] पिंगस वर्षका भूरापन किये हुए काक।
                                                     कुछाः विद्यागका व्यावद्यारिक अपनीगा (आद स) कालेज
                                                     का साहित्कका वा साधारण पाठककम । -- गैकरी--सी
                                                     बह क्रोड वहाँ प्रदर्शन आदिके लिए मूर्तिकला आदिकी
आकर-वि+ [सं ] सवारः नासीमः चमकर वैठा हुना
                                                     इतियाँ संयुक्तीत की गयी को । -पेपर-पु तसवीर सारि
                                                     छापनेके काम भानेकाका किकना, जमग्रीका कागवा
                                                     ~स्कृक:−तु क्रणविद्याक्षमः चित्रकमाविद्यालयः।
                                                   शार्डर-पु [अ ] आधा कारोद्या मान भेजने, बनानेका
                                                     मारेष्ठ, एरमारशः प्रंसकः। ∽हुक्र∽तः ॰ यह यहाँ वा
                                                     रविस्टर विसमें भाषायें या करमार्थे कियी गायें।
                                                   आर्डिनींस-प [थं ] शासक्ते आरोध या फरमानके रूपमें
                                                     कास बरूरवर्षे किय निकासा गया भरवायी कामून ।
                                                   बार्त-वि० [सं०] पेटित, किसी कट-पोशासे वेचैन, दुःस
                                                     कातर बीमार: नवर । -गछ-पु॰ नीकर्तिडी नामक
                                                     पौदा, मीका कटसरैया । −ध्वनि न्सी ०, न्साद् −स्वर्-
                                                     पु दुखिबाची पुकार। दर्गमधे अंनी जावामा बस्य सरमें
                                                     हुन्छका धापन था सक्षायताको पुकार । –बञ्चन-साधुन-
                                                     पु॰ पीडिलीकी सहायसा करनेवासा व्यक्ति ।
                                                    आर्तव~वि [र्ड ] कतु-संबंधीः ऋतुमें छत्पका मास्कि
                                                     साक्तर्वकी। पु विवर्षेत्री मासिक वर्षके समय श्रीनेवासा
                                                     रवकार, खोरव, पुग्य। –दीप-पु मासिक वर्मेदी
                                                     गद्ददः ऋतुरीप ः च्यान् पु ऋगद्धप्रदान् (वै०) ।
                                                    अर्थवेदी−सी [मं•] रबस्तका ऋषुमतो सी।
                                                    मार्ति-सी (ते॰) होश पीटा: रोगः महोस्यभाः तरार्थः
                                                     वर्णती। बमुक्त छोर्।
                                                    आर्थिक-वि० [मं ] कारिक संबंधी।
                                                    आर्थं - वि॰ [सं॰] वस्तु-संबंधीः शास्प्यं-संबंधीः महस्वद्धाः ।
                                                    आर्थिक-वि [र्श•] अर्थ-रांश्या माला, स्पर्व-पेतेसे संबंध
                                                     रसनेबाकाः महत्त्वपृथः चतुरः वनीः वारतविकः राध्यावंसे
                                                     निकमनेवाचा । —अवस्था—सी मानी शामन ।~सदा
                                                     बता−का• पेंस्की सदावता।
                                                    बार्थी-सो• [सं ] दे• 'देतवापद्मृति ।
                                                    भार्य-वि [र्त•] भाषा (समामुद्धे भार्रममें आर्यमासिक)।
                                                    शादिक-द [त ] दे 'आधिक ।
                                                    आज्ञ-वि [सं•] गोन्य तर, नमा रसयुक्ता प्रवित, विपत्ता
                                                     हुआ (रनेहार्ड करणाई) । -काष्ट-पु इरी कम्मी।
                                                      -नवन-ि रोजा हुमा !-पग्नक-पु० बॉम ! -मापा
                                                      --नी माथपत्री । --शाक-पु देश शहरहा।
```

आईंड~पु•[सं•] अदरका कि गौना तरा भाई। सध्य

बार्झ्-न्यो॰ [सं॰] एक भएत्र में प्राय' ग्रुक भाकारमें

में अस्पद्ध ।

आर्षिक-आसमानक पहता है भीर क्रिप्तमें बर्च स्था रोनासा आरंग होना मच्छा माना जाता है। यह वर्णहुन्छ। बाही, कहरफ़: भर्तास । -सुरधक-पु॰ केषु । आधिक-प्र•[सं•] अधिवापर शत औतनेवासा अस आदि के बदने बाबी पैदाबार रेकर क्षेत्र बोतने वीनवानाः स्य विबोक्ते अनुसार बैदना माता और जादाण दिशा हार। पानित स्पर्धिः। भार्य-पु॰ [सं॰] बनावों और शुद्रोंने निव भारतके एक प्राचीन सम्य बाति (१स क्रांतिके सीग आवती दिवानि नामन प्रसिद्ध है जार बरीपके वर्ष बेटोंोंमें भी बहन बढ़ी भंदवार्न है)। बारने यमें और निवधींके प्रति आस्वा रसने बाह्य प्यक्ति दिवादिषी सम्मान्य और सवाधारी व्यक्ति भागामा निषा भागर। वद तका तकके सिकासीका पातन करनेवालाः यतः सावर्णका एक प्रतः विश् भागः वानिकाः मार्वेश्व योग्यः मादरगीनः धर्, श्रेष्ठ । -वेदा-प् आयो की निवासमूमि । – धर्म –५० सदाबार, उत्तव बायरव । प्रच=त• भावरणीय व्यक्तिस पत्रः भाजार्थता पत्रः

राबकुमार, पति भारिका संरोषम (मा॰)। -प्राय-दि॰ भाषों द्वारा अभिनक्षित्त । --सक्र-४० एक प्रसिद्ध धारतीय क्यातिकी जिन्होंने नीजगणितका जानिष्कार दिया था (बहा जाता है कि ये ईमान्द्री पौषकी श्रदाये पहले उप थे)। −भाष−प सदाबार, भद्रोकिन व्यवदार। −सिस्र− विश् गौरवान्त्रितः आदरणीयः । प्रश् आदरणीयः व्यक्तिः (मा॰) । ~हत्प-वि कोंगो । -बारा-विश्यमेत्याः सराचारी ! -वेश--वि विश्वक बख बब्धे भरोतिन हों; शीगी । —हवेल-विश् कादर-सम्मानके नीम्प र प्र मद्र पुरुष । - सत्य-धु मद्दाश् शत्य (बी-६ धर्मी धेमे भार सुरूप साम गाने गुन है)। -समाज-५० रवामी

दवानेर हारा प्रवर्तित एक पामिक शमान । -समाजी-प आर्थममाज्ये (स्वानीकी मामनेवाला । -हर्च-विव मनोजीधे प्रिय हमनेशला । सार्यक्र-प• र्स 1 मात्रसीय मासिः विज्ञानाः वितरीक

सामानार्वे दिया जानेवाला दर भार । भार्चना भार्यिका-१रो॰ [मं] शह ग्याः एक शक्षत्र । भाषकन्द्रः [मं] सम्पनीधिन व्यवसारा रंगामशरी । आयं-सी (मं) पार्वती एक पूरा निरादे सबस तथा मुनाय चरमाप्ते २२ १२ तथा दशरे-पीवेमें १५-१५ मानार्व दोना दे साम्रा भेड को। -तीति-स्म आयो संस्था ण्ड देश । भाषांचरा -पु॰ [मं॰] दिप्यायसमे दिशासम और पश्चिमी

मुमुद्रश पूर्वी समुद्रलाह विराह्न भागीकी विशासभूमि (मध्य और उत्तर भारत)। भाषांहोतमारी-पुर्व (से] मुद्द हारा अस्तिनित पुत्रत निवृश्चित मार्ड मार्ग-क्लब वर्ग यथम बयम, ज्याम

निचार मादि । आप-दिव्हिते ऋषित्रा अवित्रमुखा नैदिक रेपुर निवाद में द प्रशासिम एका बेद र - प्रंच-तु नराहि र-प्रचीम -पुर क्षांची वा वह निप्रामी क्षारा क्षिता नवा चर्च्याका ब्याद्याप विश्वद्व प्रवेण । - विवाद - प्र- १द भिने ने वेश माने हुद भाउ प्रचारके विशाहीये हैं एक जिनमें बज्याध है

विना कामें दी केन पुस्तक यमें हे दूर करवा देना था। आर्पम-नि॰ [सं॰] मॉहसे सरहा । पु॰ क्षपना बद्दा । आर्थिम-प॰ [र्ग॰] ऋषमहा बंदाय भारतसा प्रवस् बता गरेश ।

भागमी-ना॰ [मं•] धर्माय । कार्षेय-पि॰ मि॰) कवियोग संबंध रमनेराना मेर. म--रमीय । प्रश्नाविद्या भेत्रा करियाँका बर्म बंदास nelle i

आहरा-विवर्शिको बर्दन्य या प्रैन-मिर्वापना संबद रसने-बारम । प्र॰ बीन गिक्रांशः बीन मिक्रांशे रः कनधारी । भागकारिक-वि॰ वि] मन्जारनंती। बर्ननायुक्त असंदार-काल्य-वेशा । भार्समा∸नि [सं] संकल्प, क्रिया हमा हमा हमा।

धार्मध−4ि [संग्] त्राधितः सहाति त्रद्राता हवा। प्रश सद्वारा चापारा व्यविद्याना कराम 'दिलम'। आलंबन-त॰ [र्थ•] महारा; सहारा हेना; आपारा रसकी जलातिका कामार (सा के कारण तापन) क्षेत्रीकी हारा क्रिया पार्नेपाचा एक महारका मामसिक व्यक्तास चंच प्रयास (बीक) ह

भामंत्रित-दि॰ मि ो श्राधिनः सहारेपर दिया हमा ! धास्त्रविकित)-वि सि विवाद हैनेवारा । मार्खेच, मार्थभम-१ (वं॰) पहनता छुना। प्रयाहमश क्य (विशेषन चयमें पशका-अधानम नपानन १०) र भार्यमी(थिम)-वि [गंग] रत्यं बरनरानाः १३४न बान्ध ह क्षाप्र-की॰ वद यीना वा क्समें बता रेमा रे मद कीसा † कर्द्र । वि वि विशासिरका अभिक्र । प्र करवामा

एका विषेत अंतुनींच छरोरने दोनगमा विरुद्ध सारा श्रीपटः गीलावनः सन्द्रित स्तान [त्र] रोपाति देशियो संदाना बंगान ।- सीलाब-मी शास र 1 मानी रोते । भागसमा - पुभारम । आस्ट्राय-पु [नं] देशमा गमाता । आस्टिश-ति [म] देशान-समहन राष्ट्रा अनुनष वरन-बाका ।

भाग्वदित्त-वि [र्श] देशा दुधा गमाग गमा। अनुभूत । भारतार्थ-दुर [j] एद घरणां । भासपाद्य -पुर कापाति, कम् अपूर्ण ।

कामधी-पामधी-को पारिने दर्श नावे और रावे यसे बाहिनी व्हेंपार सम्बर नेहमा ! आसम्-पुरु निर्देश्वियारं व रत्तरमें या पत्तरे वाको सम्ब

दीवर्धे मिनाया भानवाना मुगा मही । भानने हि आवा चानवाणा नेपन **!** शास्त्रजा-पुर्वेशमा

ब्रास्त्रपादा-पुरुष्टे प्रवर्गन । आक्रपीत्र-को नहें के ये पण्या बंदिया विका

minutes & strade t भाषप्रमृत्यु [र्स] हुन्तु प्रश्चन मारा प्रश भागम-३ (स) दुरिना वक्त प्रत्य भे रा स्थार

हाल्या दह आहरा आव । सन्त्रान्द्र-पु [पुत्र] विद्वार १५०३

पु॰ कुण्यका एक पुत्र। इस्रायका एक पुत्र। विश्वदका एक प्रवासी पद्र अप्तरा। -प्रकृ-पतिक-पु∙ सेमा माथक । – स्कथ-प क्षेत्रका एक प्रव । – हा(हन) – प्र श्रीवरका एक प्रज । सेनक-पु [मं•] इंबरका एक पुत्रा एक वैवाकरण ! सेनांग-पु [सं] सेनाका-पेरक, हावी थी। और रव मेरे कोई संगः रेमाका कोई माग इनहीं । "पति-प इक्डीका मान्छ। सेना-को [सं] रवश्रिया-प्राप्त और सक्क व्यक्तिबीका वक, बाहिनी फीब; शक्ति, भाषा बंदानी: बंदका नजा की बच्ची पढ बहुत छोटी द्वसही जिसमें ने बाधी ने रव ९ बीड़े और १५ पैदक ऐनिक होते के वेदपाओंकी

प्राचीन उपाधिः वर्तमान जनस्पिनोके तीसरे नर्दत् श्रेमकी माता । - कक्ष−पु सेनाका पार्श । - कर्म (स्)--सेनाका प्रवेष या मेतृत्य । —कस्य – पुछिन । -शोप-प एक तरहवा सैनिक अधिकारी। -चर-पु मैक्सि, सिपादी । –हार-पु [दि] सेमानाबकः सैनिकः। −नायकः−पु हेनापठि। −शी−पु सेना मावदा कार्तिकेया एक बदा अंतरका एक पुत्रा बृतराष्ट्रका एक पुत्रा एक सरहका पाँसा । -पति-पु सिपहसाकारा कार्तिक्या शिवा भूतराष्ट्रका यक प्रका विक्रीके यक प्रशिव कृषि । - • पश्चि-प्र प्रवान क्षेत्रावनि । -परिच्छव-वि सेबाने विशा हुआ। -पाक-पु सेनानायके। ~पूछ-त सेनाका वृष्टमान । -शनेता(त्)-प् ऐमानावक । - भंग~दु ऐमाका विवर-विवर को बामा। -अन्त-प फीबी रसद और बंगार (की)। ~सन्त-प सेमाचा अग्रमागः फीवको एक हकते। क्रिप्ते हे बार दाभी है बार इस देशा देश बीहे और १५ वा ४५ सैनिक होने के जगरहारतक जानेवाका क्का हुआ रारता' मगर-इस्के सामने बना बुका बींच। -योग-५ पीमको दैवारी फीमो शामान । -श्झ-प्र प्रदर्श संतर्भ - बास-प्र शिवरा फीनकी छावनी । -बाह्र-पु छेमामाब**ड** । ~ब्यृह्र-पु॰ सैविक्षोको विश्वय स्थानीयर स्थापना । —सञ्जवय-<u>प</u>

सैनिकीका एक बगद एकत्र शामाः एकत्र सेमा । -स्थ-पु र्शितकः। –स्वान-पु धिनिरः धानमो। –हा-(इम्)-पु संबरक्य एक पुत्र शेमहा। संगाम-प [मं] पेत्राका भगका हिरशा । समाजीक व्यवाजीकी(विज्)-पु [नं॰] भैनिक कार्बीसे

बोविका प्राप्त करनेवाला । सनाधिकारी(रिन्)-पु [सं] सेमानाबद्ध कीजी अदमर ।

सेनाधिय सेनाधियति-द [सं] सेनापनि । सनाचीश-५ [सं] सेनावित । सेनाध्यक्ष-पु [मं] मेनापितः भेनामियोसा(पन)-पु सिंगी नेनाका रशकः। सनिग-स्री भेगी पत्ति।

सेमाधिनाध-५ [नंग] सेनाधा प्रवान ।

सनिका - भी मारा बाबा एक होइ। सनी-प सहरेवका बदातवागकाशीम साम । औ० रकानी। मकाशीदार छीटा नाकी। + मेनी सीही। + मात्रा याज ।

सेनुरां - पुरिदूर।

सफ−प्र सि] दिश्वा

सेफ्र-पु [बं] एक तरहका कोईका भववृत संदूष विसमें बपन दबा बहुमुक्य पदार्व रही आह है हिजोरी।

सेकाकिका-का दे॰ शेकाकिका'।

सेव-प्रकारिक प्रकार कर और एक्का देहा सस्य−प [सं•] उंदक, शीवस्ता । वि उंदा शीर्वक । समितिका सैमीडी - सी [सं] सफेर ग्रहान, सेवती। सेम-श्री व्यक्त पत्नी भी तरहारी है काम जाती है.

शियो । सेमई~दि इक्के सम्बर्गकाः पुदेसारंग। ≄ सो

सेमर~≄पुञास्मनि, ऐमध;† इस्द्रका

सेमक-पुषक रहा हुछ जिल्हे कुछ बाह्र होते है और फर्नेंसे व्हें निकल्सी है। ~सुसका = दु सेमक्टी बहा −सळेद−९ समझ्या रक्ष भेद्र।

समा−ष व¶ सेम ।

सेमिरिक-ए॰ मृर्थस-सासके बतुसार एक मामक-वर्ग विसमें भरप, बहुदी मिल्री और सीरियन वार्तिवींकी गणना है। वि+ दीमसे डलम्म (शादिवाँ)।

सेमीकोछन-प [भं]एक विराम-चिद्र भर्य विराम (ı) । सेवन-प [सं] विश्वामित्रका एक पुत्र । सर-प्र• [सं] सोवह क्याँदको एक तीकः क श्रेर. व्याकाः (एक वास । क्रिये क्रिया मध्ये । – साक्रियं – 💆 छेरछाइ विसमें इमार्चेंदा परास्त दर रिलीदा शासन

प्राप्त किया था।

सर−वि किता]मरा द्वमाः तुप्त संतद्धः विश्व विश्वी योजको पाइ स दाः बहुत प्रमुर (सेर दासिस)। -चश्म-वि संबद्द, सम्पारविता बदार, बामशीक। ~चञ्ची~की चंतुहता। यह, तुप्तका भगावा सेरवार्ग-पु ओसावे समय भूसा प्रशानका सपदा; दे०

सिरा'। दीवाकीके मातम्काक भूव पीरमेकी प्रथा ।

सेश्वाचरा -स कि दै॰ 'सेरामा'। सेरही-की क्सक्त्री तपवपर क्यनेवाका यद्ध दर ।

सेरा-पु॰ घारकी सिरकी औरकी पाँछ। वह बागीन जिसकी विपार्र हा पुत्री हो। सेराना-स कि॰ इंटा करनाः तुप्त करनाः बहा देना ।

म कि उदा दीनाः गृप्त होनाः समाप्त दीनाः मरना । र् पुरु हिरहाना ।

सराय-दि कि। । अच्छी तरह सीना हुमा, तर। हरा-थरा, श्रद्रतः -हासिस-दि बिगुने बहुत काम हो। वषताञ्च, अरुलेज (जमीत)। सु०-होला-पुप्त हानाः मन भर बामा: कर बामा ।

मेशवी-मी सुनिक दोना निवारी दराभग दोमा। सराध-पु [सं] इक्टा पीतापन । वि इत्या पीता । सेराह-इ [मं] कूपके रंगका बोहा ।

सेरी−स्ते [का] हिंदिओं भर जानाः कर सामाः · रारता, मार्ग- बा सेरी सापू यथा सी ती रासी मृद् प्र चंद्रमञ्ज । -चमस-प्र धीमंपानका पात्र ।-ख-वि चौहमा हारा बलादित । पु तुव महा धूव । -बाबी+-पु सोमयाजी । -सीर्थ-पु॰ इस मामका पद तीर्थ प्रमास तीर्थ । -व्हान-पु॰ यद नागासुर । -दा-भी एक गंदशे । -दिल-पु सोमवार, चंद्र वार् । —देव-पु चंद्रदेवः कथासरित्सागरके रचनिता (जो कश्मीरमें स्वारहवी रातान्दीमें हुए वे) । -वेबत: -देवरय,-देवत्य-दि॰ स्रोम जिसका देवता ही। —धारा-सी बाढासः छायापन। —धेय-पु यक प्राचीम बाति। -नंदी(दिन्)-पु॰ धिक्का एक बतुपर । --मंदीइवर-पु॰ एक शिवकिंग । --माध-पु॰ बारक सुपरित्र बारव क्योंकिकिगोंमेरी एक बिसे मदमूद राजनवीते १०२४ ईसवीमें स्टाकीर मूर्विमंग किया था। काठिवाबाषका पढ प्रचीन नगर नहीं देखका मंदिर है। −क्षेत्र−ि सोम क्रिसका नामक दो। सोम चैसे मैबी-वाडा। -प-वि॰ सीमरस रीनेवाडा। यु सोमवड क्रुतिवासाः एक विस्तेतेवा स्क्रंपका यक बसुचरा एक सप्तरः एक विकृतर्गः एक श्राविषेद्धः एक जनसरः । --पश्चि--प्र इंद्र । -पन्न-पुर तुलविशेष, दर्भ । -पत्-प्र पह क्षोका यह तीर्थ । -परिश्रयण -पर्याणहम-प्र सोमरस मिनोवनेका कपवा। -पर्व (स्)-प्र• सोमोलसका समद। −पा∽वि सोमरस पीनेवाका। प्र सोमनकः वक् करनेवास्ताः एक पित्वर्गं (विशेषकर हाक्षणेंका); हक्तन । −पात्र−पु सोमरस रखनेका दात्र। -पाम-द सोमरस पीना। -पाधी(विन्)-वि सीमरस पीमेनाका। -पाक-बु सोमरसका सीम शिक्षेताः गंवर्वं (रद्धनः होनेके कारण)। —पिशी—सी॰ [हि] पिशा चंदन रखनेका पानः -पीति-को सीमका पाना सीमनद ! -पीती(विन्)-वि सीमपान करमेवाका ।-पीध-पु शोमपान ।-पीधी(मिन्)-वि स्रोमपान करमेवाका । –प्रथ्न-पु॰ शुव शह । –पुर-पु धीमनवरः प्रदक्षिपुणका एक प्राचीन माम । -प्रकृप-प्रशासका सेवका सोमवाक । —प्रष्ठ~वि सोम वारण बरनेशका (एर्वत)। -पेय-पु सीमवद्यः सीमतर्पनः ─प्रदीप=पु॰ सीमवारको किवा वानेवाका विदेश प्रशेव त्रतः। — प्रभ−वि चंद्रमा वैद्या कौतिमान्। — प्रवाद्यः — प्रशासकारी वीवना करमैवाला। न्वांयु-प्र कुमुनः स्कै। प्रव ।- बेस-की [दि] गुलवॉनजी ।- शक्त-प्र धीमपान । - सवा - छी नर्मशा नशी । - शू - पुण पुण एक विनदात चीने कुन्त नासुदेव । वि अंत्रवंशीः श्रीमधे बरक्दा-भूत्−वि शीम ठानेवाकाः –शोजन-पु गरहका वक प्रमा शीमकन ! - मका-प्र शोमयक ! -सद-५ सोमपानमें दोनेराण नशा : -यक्त-द ण्ड तरहका दश जिसमें सीमधान दिना जाता था। -पाग-पु सीमयदा एक मैशाविक वह जिसमें सीमवान दोता ना। -नाजी(जिन्)-वि , तु सोमतर्गय दरनेनाना। -दोगी(गिन्)-वि को नहमादै योशसे दा । -योपि-पु देशका माध्यमा यक सुनंतित नेरम । ~रक्ष−पु सोमपान। −रस−पु सोमकतस्य रखा। -रमोजव-पुर्थ।-शाग-पुराय-विशेष (तंतीत) ।

--राज-पु॰ बेहमा । -- सुत-पु॰ दुव प्रद । -राजिका-सी सोमरामी ! -राजी-सी॰ गरुपीः चंद्ररोगः एक प्रश्चा −राजी(जिन्)-पु॰ राकुणी। -राज्य-पु॰ चंड्रकीक । -राष्ट्र-पु एक प्राचीत बनकर । -शेग-पुत्रमेश्च वैद्या सिवीका वक रोग। -सता-ची॰ सीम मामधी कता, सोमवसी; गीदावरी नदी। - इतिका~की गुकूपी: धीमकता। --सिस-वि सीम प्रता हुना । प्र यक सोमपात्र । -कोक-प्र बोहबोक । −बंश-प्र बोहबेका सुविधिर । −बंशीय, -बंदय-वि॰ चंद्रवंद्य संबंधीः चंद्रवंशीत्पन्न । -धत्त-वि अंद्रमा जैसा । -वर्षा (श्रेस्)-पु । एक निरमेरेवा एक गंपन । वि सोम नेसी क्रांतिनामा । **- वस्क-प्र**+ हरेत बदिर। कटफ्क कावफका करेवा रीठाकरेका नर्वर । -बसुरि-बहुरी-की क्षेत्रक्याः नाहो ।-वस्क्रिका∽ को सोमकताः सोमराबा । -ब्रह्मी-सा॰ ग्रहुचीः चीमक्याः **छीमराजीः वावाक्यावदीः जासीः सुदर्शनः** कताक(व) गवदिप्पकीः वनकार्यास । -बामी(मिन्)-वि॰ सोम वमन करनेवाका। पु॰ वह महिवह बिसने बहुत सीमपान कर किया है। -बायक्य-पु स्क किन्छ । – बार,-बासर-९ रविवारके नादका दिन, चंद्रबार । -थारी-की [हिं] सोमन्ती जमावस्या । वि धोमबार-संबंधी । -- बिक्कपी (चिन्) - वि॰ पु धोम वेषनेवाला। −वीधी−वडी चंद्रमाकापव। −वीधै− वि सोम वैसा शक्तिशको । — वृक्ष-पु **ब**र्फक वृक्ष। वनेत सनिर । - ब्राया-नि छोमपानसे जिसकी सस्ति भ्यो हो। -वेश-इ व्यव सुनि। -प्रद-तु सोन-प्रशेष ततः एक साम । -शकका-स्तो एक तरहकी क्यरी, प्रसाहको । -संख-४ कपूर । -संस्था-खो । शोनवधका वार्रमिक कन । -सस्मिक-प्र शीमरस । -सद-त १६ वहहरू श्रीमृतिपीटन । -सदन-पु कर विससे सोमरस नियोश वाप । −सार−पु• श्वेत बरिरा वर्ष्र । -सिंग्र-पु विम्यु । -सिद्धांत-उ एक कुका दीवीका एक तामिक मतः −सिद्धांती (तिन्)-पु शोम-विद्यांतका मनुवासी । -सुद्द-दि॰ बंदमा बैसा सुंदर। ∽सुख−इ दुर प्रदा-स्ता-सो० नर्मशानदी। −सृति,∽सुत्यां नती सीम-निप्पादन। -सुत्-त यहमें सोमरस निकक्तनेशकाः सीमरस थड़ानेवाका कारिवर्। -मुत्त्वा(रवन्)-वि , धु वहरै शोगरम पहानेशका । -सुन्द्र-पु शोग संत्री श्रवार । -स्य-तु शिवविगदै स्तानका बठ निक्कनेद्री माठी। प्रवृक्षिणा−की दिवन्तिगसी इस तरह परिक्रमा करना कि माली कॉपनी न पहें। -सेन-पु॰ श्रेनरका वक प्रण : - हार - हारी (रिम्) - वि॰ सीमका निप्पी टन वा दरण करमेवाला। सीसक-तु॰ [सं] एक क्षत्रि कृष्णका एक पुत्रः एक देश वा बादिः इवर-वैद्धा सहरेवका एक प्रवा दिवीका श्रीम मामक रीग । सोमकेश्वर-५० (सं) सोम देशका राजाः रक राजाः । सोमन≉⊷पुरदक्ता। सीमनस्-नु रे 'सीननस्य ।

सर-ान [स] जडहन वायमवाका। सरसाह-पु [सं] मानेपर वागवाका सफर पीडा। सम्रो-प किमोडेका पेड. कडीलाः

सम्मान्य क्रिमेरिका पेड, बहरीरा । सर्प-१० (५०) रेपाने भरा हुष्ण । जा पैपापूर्वक । सस-पुरु सीण, सन्ताः । पानी प्रयोगनेका कारका पर तना हुस्में तथी पुरे बीव विदानेकी मही। । लीव महान बही।

माता बदा। संस्टलड़ी-स्रो दै॰ 'हिन्छड़ी । सेकग-पु॰ [मं] सुटेस।

संस्थाना — अ हि॰ संस्था। संस्था — पु॰ रहायी चाइर वा साफा (वर शादिका) वसमा

चारणः। सेस्पियार∽तु योरेडो एड वाति । स्पीः विद्रीः। सक्षिस~तु [सं०] रक सफट दिरणः।

नाक्षस—पु (सुरु) वक सक्त (हरून । सेम्बी—मीरु वरही); छोडी बाहर, युव जानिकी योगिकीकी बढी। मियोका युक्त गहना। युक्त मध्यो ।

सालु-पु [म॰] विमाशः यह बड़ी सक्या (वी)। सालु साला, सारह्र॰-पु माला वरछा। सारह्मार्श-म॰ क्रि. यह बसमा मर जाना।

संस्कृता - मंगासः यह बसमा सर्वामा । संस्कृत-पुण्तसः संस्कृत-पण्ड अगडीनया पामा गरिनमी पादर वा

संस्ता-पुण्ड अगदानया वास्ता रचमा वाररः साका। सम्द्री-सीरक्षेत्रे वार्रः गुण्डम् आदिकी मानाः

सेर्दें (-पु॰ एड केंबा देश विश्वकी सकतीने आक्रमारी आदि बतार्द है। सर्वें हैं -स्त्री देशीन बहें (चारेंद्रे काम आवशीन काल)

मंबद्धी - भी । यह बान ।

सर्वत-पु॰ एड राग । सर्वे १०-पु॰ वि मेमन । सर्व-पु वनमने बतनेवाना मृत वा वोरी नेटा पनका

बाहुए मेटा प्रशास थे। सम्बोत या मोडा होता है। १० क्षेत्र'[सं] है। क्षेत्र । सम्बद्ध-वि [सं] रीता पूजा सम्मान करनेगानाः

संबद्ध-वि सि) सर्व पूर्वा सम्बाद करवराणाः सम्बाम सर्वेशासाः प्रदागमे सावेशासाः सावितः। पूर्व सोहर, परिवारकः सावित स्वतिः। सन्तः सारायकः

सीनगना गरा। सेपकाई-भी सेश ट्रांस परिनयों।

मेंबबासु-पु [र्तुः) दह ५'वा पुण्येबा ३ संबद्धीर-भी बाहाओं वामी ३

ntalia-d g sige g ntalia-d g sige g

संबद्धा-पुर नंग संपूर्णीका एक जेटा घटेका बना एक असकीम प्रकारन

सर्वत्र-भा दे स्वर्ति

रोबती-स • [सं] दक दश सकेर दुनार । रोबती-स • [सं] दक दश सकेर दुनार ।

सेवदाना-पुरोपादीनदे शने। संपंधि-पुरिच्हित्से प्रस्ति।

सेपन-पुर (त) हैना रहता पूरत बरणना शींका

सम्वासा व्यवसारा वाम करना। मीनुना व पना। होन् देवा करणमाः वारतः है पारिके दाम भानेताको दर पत्र। सबमा-कन दिक सेवा बरना। स्वी (है) अरास्ता। सेवजी-सोक सि । तरे। सोवजा सीवजी-सोक रेवा स्वीत

सेवनी-सी॰ [मं] ग्रांश छोडना छोडना सेमा प्रश्तिरे किमी बंगसा योग (यलकर्षे याँन, क्षेत्रमें रह बंग शित्रममें एक-कुछ साक्षीर ज्हीर व्हामी। सेवनी(बिन्)-पु॰ [सं] इक्ष्मात (!)।

सवना(प्रकृत)-पुरु (छ) इत्सात (१) । सेवनीय-पिरु (छ) आराध्य पूर्वा अवसामी हेन्स, सवा वीन्या होने बोल्य । सेवर-पुरु रेंश 'छसर'। श्रीमक्त- वितु मुत्र अन सेसरर

संगर-चु॰ दे॰ 'शहर । संगर-चु॰ दे॰ 'शहर । भेगल- वितु मत्र अन्न सेहरर मुम्मा न्या है। विशेष वस वहा हुमा (बिट्टोबा दर्रामा) सेमराण-पु॰ दे॰ सेहड़ा । संगरिण-ची॰ दे॰ शहरी ।

सेवकां - पु व्यादधी एक १२म विगमें दृष्ण भारते के भारती है जिए सुभावा है। सम्बाहित-की हो में बहितों कीर वृत्य सावर दिये को महिलाईक करिया प्रस्तान के महिलाह करण करिय

सवाज्ञास-ना [स] ध्वांतम कोर वृत्त राज्य हार्य स्था को सक्तिपूर्वक स्थित स्थास संशोधन हार्य प्रीय सूर्वक प्रयास करता। स्वा-न्यो [संश्] परिवर्ष शिल्मा प्रमाणि स्थानस्य प्रवीणा प्रयोगा ध्वांतम ध्वांतम्य भ्रमाणि स्थानस्य

रक्षणः बाहकारिया !-काकु-पुरु मेशक गमर स्स्म

वरिवर्गन करणा (कमी बोर्स) कर्मा योगे क्यों कोणे भीर क्यों कारमोलने कार वेण्यामा |--वान-कुट मोर्सर रोवक |--व्यक्त-क्षी (है] दिरामण प्राप्ता |--क्ष्य-कुट मि मेगा वरनेमें पुरुष । --व्यक्त-कुट मेश-मेरने कर्मण |--वेदगी-नमी (है] पूरा कपायना मागा वया |--व्यक्त-कि सेशा प्रारंभनी (मेगा) |--विकास

मिनी-को शेरका वाधी है -वृत्ति-स्ते श्राहारा प्राप्त वीदिया कोडरी है -व्यवहार-पुरोदाकार्य है शहरताव-को देव स्वारि है

सत्राधिरस=ि (ले॰) सैनावें सीमा शेनावे आर्थर पामदेनाना।

सत्रायो—॥• अल्ला प्रिया । ति अविद्याः सवार—९ दे० निरारः ।

सवारा≠-पु दे नरदा । सवास+-पु+दे• पिदार ।

सवासन-पुर देर पितार । सवासमय-वि [॥] भारूमीची देशार मध्येवित ही।

सीवित्रत बेंक-पू (बंद) होते. रुद्धे स्वाज्ञार जैनेदाम! १९६ (शहरारोजे हैं। वेंद्ध रोत है) वे सब्दि-पू [त] देश हैं। (शहर बारगीदें १४४) !

ole den mitiget alege gitelle is

मिंबश-मी [म] बामे परिवारिका मही ! सेविम-वि [4] किस्सी रेश की वर्ध की पुल्सि

संदिश=दि (०) [क्रान्धे सेता की नदी दी है। वर्तुस्त प्रकृत्तः कर्तृत्वः 'गते वृत्तः स्वत्रा द्व देव 'नेदि ० —क्रान्यक्व-दि० व्यवसी कारी ।

गवित्राष्ट्र-दि० (त०) वन्त्रे, १६४ दीम्पः वर्षेत्रमें त ने वीत्र्या एका करने बीच्या गाने नीत्र्य ।

संवित्रां-क्षे [त] हैना अवदा सरायः

में बेशा(श) दि [40] पूज्या अनुस्त्य कार्नेसन्ता।

सोसवाम्(यव)-वि॰ सि | सोप्रयक्तः चंद्रमायकः। सोमांग-प [सं•] शोमयप्रका अन्। सोमांशक-प्र• सि॰ो चंत्रमाका बंधा। सोमोध-प पिने सोमहताका बंदल वा शंकरः चंत्र किरमः सीमवत्रका श्रेत । सीमा-को॰ सि ी सोमकताः यह कपाराः यह नही ! सोमा(मन्)-५• सि] सोमगत्र ऋरमेगानाः पीरमाः वद्योग्फरणः धीमका निष्पीक्षम करनेवाका (वै०) । श्रीमास्य-पर्काशको १५५ वर्ष । सोमार-वि सि शिम धानेशकै। सोमाधार-पु (सं•) यह तरहके कितर। मीमापि - प्र [सं-] सहरेक्टा एक प्रश्न । सीमाम-दि [सं•] चंद्रमा वैसा स्रोतिमान्। सीमाभा-सी॰ [सं] बंद्रक्रिया, बंद्रावसी । सीमामिषय-५० (ए॰) सोमका रस खुकाना । सीमायन-दु[मं] २० दिनीका पक अतः। सोमार्चि(म्)-दु [तं] यक देवजातलः। सोमार्थी(थिन)-वि विशे दोवका दणाक । सोमार्बंधारी(रिन्) सोमार्वंधारी(रिन्)-ड॰ [७] दिखा। सोमार्बहारी(रिन्), सोमार्थहारी(रिन्)-ड॰ [सं॰] दे 'सोमार्गभारी । सीमार्ड-वि सि] सीम गामेका अधिकारी । सीमाध-विश् [मं] ध्रोतकः रिनमाः विद्यमा । मोमासक~त [सं]त्रसराव। मोमावती-लो॰ (सं॰) बंदगार्थ भावा । मोमाम्म-प्र (थ्रं) एक प्राचीय वीर्थं । सोमाध्यसम्बन्द (सं॰) वह क्षेत्रीयान । सीमाष्ट्रमी-सी [मं] शीमनारको वन्नेवानी नष्ट्रमी । मोसास-ब [सं] हद अस निस्दा संबंध सोम, बंहमसे माना चाता है। मोमाइ-५ [सं]चंद्रवार, सीमवार। सामाहवि-की (सं] सीनवर । मोसाहा-नी [60] श्रेष्ठ शता मोमी(मिम्)-दि॰ [सं) शीववाका सीमवड करवे-बाला: सोम द्वारा अमग्राणित । स्पोमीब-वि॰ [सं॰] शोम-संबंधी । सोमेक्स-मी [तं] गुप्तका । सीमेचर-प (रांग) है 'सोमनाय ; शोम बारा काशी-ही स्वापित पक शिवनिया कृष्या वक वेबला । सोमोज्ञव-वि [सं] चंद्रमाने जापन । पु पूर्ण । सोमोजवा-सी [तं] भगेरा नदी। सोम्य-वि [सं] सीम-सर्वभी। सीमक्षे बोग्या सोमधी

बादनि देनेवाबा सीम जैला अलावन, बीमक, पुरुष ।

सोप॰-सर्व वही वि बैठा।

सीरंबामां ~ इ. देश 'नर्रमाण ।

सीयम-रि॰ (का॰) वीतरा ।

मापा-त है 'धीमा ।

सोमधर्ती भमाषास्या-सी॰ सि॰] सोमवारको पदनेवाकी सोर-प्र• सि॰] वक गति। • सोराक, बोलार-स्वाति। र सी॰ यस वदा # शीरी। सीरह-प वे 'सोरह'। सोरट-प्र• मारवका एक प्रांत, छीराहा एक राविनी। -सब्सार-५० एक राग I सीरठा-प पढ मात्रिक छेर । सोरडी-जी यह शामिता। सीरब-वि॰ [मं॰] बडीबा, मीडा, घटा और नमग्रना प्र• देशा स्वाद । सौरमां-पश्चरम कोला सीरका-४० के 'मोरवा । सोरहर-विन, पुर दे 'होबब ! सीरक्षी-जी शीच्छ दिली की दिवासि रोका बानेनाम एक अकारका अन्याः एक प्रकारका सभा क्षेत्रमें के निरिष्ठ मक्षत्र सीवह किसी ब्रीहियाँ। सोरा॰-प॰ दे 'शोरा'। सीराबास-प्र= [सं] गांसका श्रीरश शिसमें मध्यम पशा भी । सोराहिक-नि पु है 'शीराहिक'। सीर्णक्य-विश् [सं] क्रिक्ट मर्गेड ग्रीवर्ने मेंदरी ही! सोर्मि, सोर्मिक-वि (सं०) वरगज्ञ । सोसंबी-५० धकिनेका एक राजवंश विसका राग्य श्रमरात काक्ष्मिमार, राजपूताना आहिमे था । सोक-दि॰ (सं॰) धोतक, देशा बसेना, राहा और वीवा । प्र ठंडका क्रीका, यहा और तोता स्वादा [बंग] वानंबर तक्का ! शोक्रयोध-वि शिरर्थक, वेकार । सीसह-वि पहर भीर वस । पु सीकरकी संस्था १६। -महर्ति-वि सोकर मधीनाका (हानी)। -सिगार-त्र है 'बोडक्ट-शंगार' १ -(ही)माने-रिकडक, पूर्वतः । सोलही-मा वे 'डीरवी'। शोक्षा - इ. इस्ट्रेस पृतिये वयतेवासा रख शांव जिस्सी शीपी और सबबन बहुक्योंके क्रिक्टेंसे सीला हैर नमता है। सीम्पाना-स कि॰ है 'शहाना । सीक्षिक-विश् (थेर) इटा । पुर टंडफ । सांद्रकास-दि॰ [र्गु॰] बहासमुद्धः जानेश्वरा ! ज॰ वरनामने साथ ३ सीस्तुंड-९ [मं=] व्यंग, समा, शुरक्षे र ति व्यंतपूर्व । ~भापन ~भागित ~बचन ~प्र न्यंगपूर्व नास्य I सोक्संद्रम-प्राविक सि दि दि 'सीम्बंद'। क्योक्स्प्रीतिक-स्त्री स्त्री व्यापार्थ मत्त्रव । शीयम् ०-व शिकारका भागवर भारि । सोवब-पुन्युनिगृद्ध धीरी। राोधमण-त मोनेको किना। सीबमार-म वि दे 'शोगः । सोबकारण-भी श्रीनेका करना प्रवसानार । सोबरी=-मी धीरी। सीषा-५ र भीमा ।

सेवी(विम्)-वि॰ [छै॰] छैवा करनेवाकाः बारावकः, बपासकः (समासावमें) संभोग, वसमीग करवेवाकाः भाषी । सेबुम-वि॰ दें 'सेबुम'।

संस्य-वि (६७) ऐसा करने मोग्या जाराच्या पूरमा म्बदारमें काने योग्या रहणीया ज्यामार्थक योग्या प्रदेश करने योग्या । इ. स्वामीः शेरारम्यक, क्यां कम्बर्य पृत्र मोग्या (इ. स्वामीः शेरारम्यक, क्यां कम्बर्य का माना रक्ष पंत्रा समुद्री नमका व्यक्ति स्वामी मोर हुआ योग्या रिएसा; जका । स्टेबक-च्यु स्वामी मोर स्वेदन । स्वामी-च्या स्वासी स्वामी मानकर सेवक

के समान भवना भागरण रखना । सेस्या-सा [सं] वृसरे पेड़ोंपर कमनेवाका यक पीवा,

वाँचा भीनका एक बाँकी बाल ।
सेस्तन = [अं] प्रास्त्रीय, ज्याताक्व बादि संस्थानोधी
सिंधत अपित कुछ स्वत्रक निर्देश वाद एकोवाणी
देशका स्कूल, क बेक्सी बगातार जार्रकी अपनि वादेश
सदावत ! —कोड — दु च्रुरी जरीका कार्यका साम जराम द्या आदि मारी असिवांगीयर विवाद करनेवाणी
सदावत ! —काज — दुन चीरा का मुक्त — सुन करामत ! —काज — दुन चीरा का मुक्त — सिद्धानी कराम — सिद्धानी का सिवांगीयर विवाद के साम मेकना ! —सिद्धानी होना असिवांगका विवादके किय वीरा अब के मास मेवा आता !

कृषासम्बद्धानाः। सेस्ट-वि [सं] ईश्वरको सत्तामाननेशका (वर्धन-

वे म्यान भीर योग है); रैमरतुकः। सेप॰-पु है॰ श्रेव'। रे शैकः।

सेपु सेपुट-(व [सं॰] वानपुक्त । संसंश-तु दे 'ग्रेव' । -साग-प्र ग्रेवनाव । -रंग-

यु सुद्धेत् र्रत्। वेका-स्ट कारका एक सेका काहा।

सेसर-पुताशका यह वेसः काक। रेजनिया-कि साम सरोगाहर काविया ।

सैसरिया-दि शाक करनेवाका, वाकिया।
सेह-पु दे शेंदा'। वि का] तीन (धनाधारिमें)।
-काता-पु रिश्नेविका मकाम । —हाता-पु रिश्नेविका मकाम । —हातारी-की
सुस्कामोके प्राप्त-कातमे दरशारियोको वो बानेवाको
सक्कामि (शेवे कोम तीन हमार धिमेक रच एकवे थे)।
सेहत-को [क शिक्टक] रचास्था कारोम्बा रीम-स्रोक्त ग्राह्मि श्राह्मि एक्टो स्वास्थ्य कारोम्बा रीम-स्वास्य प्राप्ता धीवालव। —स्वासा-पु स्वास्थ्य कारोम्बा छीवालव।
पु स्वासा धीवालव। —स्वासा-पु श्राह्मि श्राह्मि ।

—पान-वि हेदद गानेराका गीमारीहे करनेनाका। स्त्री आरोपनकाम ! शु॰ -पाना-कारोप्यकाम बरना रोमशुक्त दोना। मेक्समार्ग-न कि प्राव्यक्षार, क्षेप-रोजकर सार्यः

सेह्यमार्ग-न कि शाव बुवार, कीय-पीतकर साक सुबरा बनाना।

सुपरा चनाना है हिर्दा निवास के महिन्दी कहिनों की बुद्दे कीर बुद्दि कीर बुद्द

बाना ! - (र) सकवेकी-विवादिता (को) ! - के कूछ विक्रमा-विवादका समय बाना ! : सहरी-बी एक तरकके मककी, सहरी ! संदर्गन-पु गेहुँका करोप ! सेद्दान-पु-दे 'री हा !

सेहिमान-पु किमान साफ करनेकी दुहारी। सेही-की दे॰ 'साबी'।

सेही-की दे॰ 'साबी'। सेब्रुंशा-पुदे सेंड्रियां।

सोर्बुब-पु दे॰ सिंडुइ'। सोर्बुड-पु सेर्बुडा-की [सं॰] स्तुदी ब्हर। सोर्ड-ए० कि बाहू दीना मंगा देदवाल। -वसान-दि॰ विस्ति वाणीन नीतमी को संदर, कव्यित परावकी कोकनेवाल। -साझ-वि॰ बाहुगर। -साझी-सी॰

बाव्गरी। सँगर−पु वव्यक्षे प्रश्री।

र्सेंबना—च कि दे चेँवना। र्सिबास्तीस−दि चार्णाच और सात।यु सैवाकोसकी

संस्का ४७। सिंतीस-वि वीस और साता पुस्तिसको संस्था, २०। सिंपीण-की भाका शक्त-विद्यात कीमी वन सेंथी देवन दश कमी –सुर।

सेंबूर-वि [र्थ-] छिबूरी छिबूरके रंगवाका। छिबूरके रंगा हुना। सेंबन-वि [र्स] छिबु अरेडका। छिबु छन्नुत्र-धंनेगी। छितुरी वारका। छन्नुरमें करना। छु छिअनरेड। छिबु अरेछके निवासी। वक प्रकारका करना हैवा गमका छिब्

प्रश्चिम निवासी एक प्रकारका करने सेवा नगका छिन्न प्रश्चिम वीता सिवी वीता। -द्विस्य -यस-यु सेवा सरकता बीका। -व्यूपे-युक् पूर्य क्रिया द्वसा सेवा सरका। -पश्चि-यु सिवनरिन्न; वदहरू।

सिंघवक-वि [सं] रियन्तिवासिवाँसे संबंध रखनंबास्ता । इ. सिवका कोई तुष्का निवासी ।

सिंबवायम-पु (तं] एक कवि। वनके नंदाधः। मिंबवारण्य-पु (तं] सिंबका अंगको मृतागः।

र्दिचर्या-को [सं] एक रायिनो । र्दिको-को [सं•] ताद आरिका मारक रस, तादी । र्सिक्-को• वे• 'सेन्दो ।

संयुक्त-पु॰ विं•] दिक्की वाली भी वेदा नवृत्युः। सिकारो -पु॰ शासमक्षि सेवकः।

स्वा-पुर शेला ।

सॅबर॰-चु १० 'सॉबर ! सेंह-वि० [गं॰] सिंह-संश्रीश सिंहबा; सिंह जैसा। •

च दे 'सी ह'। सेंद्रयी – की वधी छोटा नर्छाः

मेंहरू-दि [d] सिंहरू दीवन्तंत्री; निरस्का सिंहरू दीवमें सरका

र्मेह्फी-स्वी (सं०) सिंद्रविषयो । मेह्हिक-पु (सं०) एक प्राधीन वाति ।

नक्राज़क-पुराके एक माधान बाति। संदिक-वि [सं] सिंदबी जॉनि छिद्युस्य। पुर किदिबाका पुत्र राष्ट्र।

राम बाना। बुन्दा बनावा बाता: कामका श्रेय दिवा शिद्दिन्य-वि [लंग] सिंदिकाने शतका । पु निरिद्दार्थ

सोवाक-प्र• [र्ध] सोहागा । सावामा = - स कि दे 'त्रकामा । सोबारी-प पंतर मात्राचीका एक ताक (संगीत) । सोवास-वि सि॰ो वज्ञ नर्येके रंगका। प्र प्रयंका रंग। सोवियत-प [स्तो] स्मन्ने किया विकेश वह समा थो मबदरों और सिपाहिनोंके जने हर महिनिधिनोंसे बनी हो। कसका जापनिक प्रवार्तन । सोवैया 🖛 🖳 सोनेवाका । सीवाक-वि [थे] सामाधिकः मिलनसार । सोमिकिया-पु [अं•] दे॰ 'समावदाद'। सोदाकिस्ट-वि [अं] समाववादी । प्रश्न वह वी समाव-बारका अनुवानी हो। मोप-विश् मि] ग्रारी मिझी मिका हवा । सोपक•-वि प•दे 'शोपक I सौपण=-५ दै॰ 'द्योदन'। सोपमा≉−स कि दे 'सोधमा। मीय सौस-वि सदा शक्नेशका। सोध्बीप-वि [सं] प्यक्ताका । पुत्रक्तान विस्ते सामने बरामदा हो। सोद्मा(द्मान)~नि [र्थ•] रुष्ण गरमा कप्नात्रक (वर्ष)। प्र कप्स वर्ष । सोर्ध्यती-मी [सं•] बचा प्रस्ता। ~कर्मे(म्)-प्र मद्दा-संनेती क्रव । -सवम-प्र पक संस्कार । -श्रोम-प प्रस्ताको औरसे किया वानेवाका ध्वन । सोसन-का दे 'शीएन'। सोसनी-दि शीसमद्रे एकडे रंग्का कल्डी किये हुए शील रंगका । सोमाइटी मोसाबडी-सो+[नं+] समाना नंदकी संग। सौरिम = -दे सोऽदमरिम । सोई~न दे 'सी ह' सोबं ०-दे 'सेऽवस'। सोहंग = -दे 'सोऽहर । सोर्हगम=-दे 'शेऽहन्'। सीइक्रि-प [में] क्रितमीलका एक पत्र । सोडगी-न्ये दिष्यके बादकी पक रश्म क्रिसमें क्रमाने किय बच्चामुबान, विकीने जादि मेने बात है। सहासकी मोइगैका!-इ अगुरेशद संश विभीता। मोइवा!-प्र दे 'हादधा'। सोडम-धन शीमम संग्रह, श्रीहक, सहानना । पु शुंदर व्यक्तिः नावकः † एक ब्रह्मः देश 'सीहाम' । स्त्री एक वधी भिष्ठका दिकार करत है। ~पपक्री~की एक रेरोदार मिकार को मैदा और चौजी एको मिसासर बनायी जाती है।-इसबा-पु॰ भवे थी, बीजी नारिके मेलसे बनी यह स्वादिष्ठ क्या मसिक्ष मिठाई जी अल्लोके क्षमें बमी और पीने तर रहती है। सीइमा-ए कि (गेव) मिरामा। • अ कि सुरोधिव दोना मका मासूस दीना गुंदर कराना । † कि शुंच्यु, मोदका 1 प्रविशेदा यक भौतार।

90-6

कियाः निरार्थ । सोडवत−सी॰ वि ो संबकी, संबद्धिः संमोग । सोहबसी-वि दे 'सुदस्ती'। सोग्रमस्मिश-दे 'सोऽग्रमस्मि'। सीवर-५ संवानीस्पचिके अवसरपर माथा भागेनाका यक मंग्रकगीत । सोबरत=-की वै॰ 'होदरत'। सोजरामा=-स॰ फि॰ दे॰ 'सहकामा' । सोहछा-प्र• सीहरा गंगकगीता प्रवापे अवसरपर यावा कारीबाका पीत १ साहाञ्चम • - वि॰ सुद्दावना एमणीक। सोहाई-सौ निरानेका कामः निरामेको स**ब**हरी । सोहारा - प्रदासाः सहाराः सीमारमः अहिदातः सदायका गीता - 'जी गावहिं सव शकत सोदाग'-पः एक सदावदार देव । सोज्ञागा – प्र• वे 'सदागा': देंगा, परेका । सोहागिष सोहागिनी सोहागिक-की दे 'सहा गिन'। सोक्षाता-वि दे 'सवाता'। ७ संदर्ध सदावना । सौद्यान-प्र (का॰) रेगी। -(मे)स्प्र-वि बानकी रेत्रने अराध क्षेत्र देनवाका । सोहाना = - वि सहावना । अ कि अध्यक्ष करामा मनोनुकुक दीना। सुद्धीमित दीना । शोद्यामा÷−दि+ संदर, मनीहर, सश्चीमत । सोद्वारदण-पु ६ 'सीदार्व । सोद्वारी-की पूरी। सोद्वाल-पु देश प्रदास । सीहाकी -सी क्लरका मद्दशा पूरी। सोडाचन-वि दे शहाबना । सोद्वादना १- विश् संदर । वश् किश् वयम समना, महा मास्या दानाः श्रीमित होना । साहासित्र – वि मनीतुनून, ग्रहायना, ग्रमायित, अच्छा कर्तनेवाका संबद्धेका । सोडिं∽म दे 'सीह। सोदिनी-सी पत्र राविनी। सोडिस॰-पु॰ दे 'गुरैक 1 सोडिसार-पु है छोड़का। बायव, सुद्धी। सोही सोहैं -- म॰ सामने। सीं-ली शीद, श्रव वसम । अ सुमान सरम माति । स. बरण और अपरशामकी विश्वरिद्ध । र्मीकारा, संकिशा-पु शरेरा एका। र्शिक्री = भ तबके। समयसे कुछ पर्के । सींचा १-वि मता अच्छा। अविद्रा र्मीचाई-भी भाष्त्रस प्रभुत्वा बहुवाबत । र्सीचनां न्या म्हरदामः वादरस्य । शींबना -- अ॰ कि॰ मकत्याम करमा आवर्रत केना । सींबर नमक~पु॰ काला नमक । ् श्रीचामार्था-स कि शीच वाधाना कराना। माददरन रिकाना । सोइनी-भी॰ वृंभी हारहः एक रागिनी निरानेकी सिजिय-की सामग्री, ग्रामान-भागु दवन सुनि मैक्सि

र्शवान (एक गानववर्ग); वाबु । समिक-दि॰ [र्न॰] सेमानांथा, श्रीताः पुर्शान्ताः सहिद-पु• सहस्र । बीम्याः महरीः संदर्शः व्यवस्यः सेमाः प्रार्थन्तवोः निर 11-0 a प• रे॰ 'सी'। ली॰ चक्ति तादमः सारा नियुक्त व्यक्ति शंदरका एकं पुत्र । -वाद-पुत्र पुरुषा क्कि भागी। समर्थम ऋरवेशाचा सिक्रोम १ मैनिकसा-स्रो [संश] मैनिक भीरमः सुद्ध । संबद-पुर वरसकी वातिका एक वेट । संक्षा-प सी। र्मनिका-मो॰ एक ग्रंद । मेक्य-म॰ प्रतिशत धीतुगी, ती ग्रीहे। र्मे नेटरी∽वि॰ (त्रं∗) मार्नशक्ति सावदे रहन और सकत-वि॰ [एं॰] सिक्टामय, बाह्यभी यहा रेतीलम अभिवृद्धिने संरंग रक्षत्रेयाता।। बाप्तकानं बना । पु॰ बातुकामय स्ताः रेतीसा किनाराः सैनिटेशम~५० [ब०] स्वास्थ्वरध्यविदान । सैनी॰-सी॰ दे॰ सेना । बु॰ मापिन, बाई। यह परिषदा । मक्रतिक-वि [मं•] सिक्तायय तह संवंधाः व्यवहानुः र्मनेटोरियम-पु॰ (अं॰) स्वान्यन्त्रपार्के क्य प्रपुष संग्रह में बार में का मान स्वाप्त का कि मान मार्थिक मार्थि रबाल, स्वारवद मिदाम । र्सनप॰-वि॰ बह्न बरने वास्य । संबद्धी(तिन)-दि॰ (मं॰) वालकायब तरवराः वालकाः सेवेण सेवेय • - व • रोमापि विशेषमाहार । मैक्सेप्ट-५ [स] नररहा स्थित-वि [र्गण] वेशा-संपंती । 🕱 होबार स्टेनिक मञ्चल−५ [सं+] रक्ष प्रापीत बनदर । निवादी। रथन महरी छंडरी। ब्रिटिर । --वश्च-प्र मक्रम-५• 🛍 🕽 एफार्र, जिल्ला दविवारीको गॉनकर गेमाका प्रपर्व । -ध्योम-व॰ सेमाका विद्रोह । -धान-यमकाना -गर∽ड॰ जिला करनेवालाः विकर्णगरः गाम कर-वि मैनाका ग्रांस करमेशाला । -माक्क-९ छेमापति । −मिबेशासूमि-माँ+ मेशादे दशने, पराप **परनेवाला** । हालनेका रदान। -पदि -पास-प्र मैक्सां -पुर क्षेप्रदुने कृतेका एस निकायनका यहे वैसा —प्रक्र∽द्रः शेवाका विद्यागा सान् । —प्रकालद्रश सैनासः यद पात्रा करकर भागे तुई कमलमो राश्चिः वकसी पुने र व्यक्त प्रायः । -वाम-प्र श्रिविर सेनाका परावः। मक्य-विश् मि] सिवातका निर्मेश क्यान-विधिष्ट । प्रश सीतरीतक । -म्बदश्य-पुरु सेनामा प्रनाता । -शिर(ग)-प्रशिवका कामग दिशमा, नेमाका क्रम भाग । न्सळा-सम्बद-दि [में] प्रबंशहरू थीनी निचादा हुना है रीयमन प [४०] बचरी अभेगोधी यह बारि भी ईसाची की॰ सेना वा बुबको तैशारे । 🗝 ता(छ)-प्र॰ धेराः 42 CS 44 I व्यंचनी-एडी सरीमें रंग्लंडचर क्षण्या कर वही वस नावी है. म्बल-पु देश महित्रमा । र्मस्याधियति मैन्याच्यस-पु [मं] समाध्यत्, मेनन र्मतव∽पि [मं] मेह-संश्वी । पुण्य माचार्य । साबद्ध । सम्योपवेशम−९ (सं] नेशका बराव शतका । सीलकादिनी~न्दी [गं] वाट्या मामधी नदी। र्मची-भा छेश बरण, माना। र्राज्ञ-स्रो (स.) तस्त्रारः —प्रवास-विश् क्रिज़री मीर-१९ देश भीवर : [#+] विशास शिक्षास्था लाग व गाँमें बनर हो। विशवा बाद्य शेर साथ हो । अबाव-बर । -शाह-पुर भीर शिकारवाद । -(१)दाम-ब्रा वद बर्दका विक्रमे तनशर ब्राह्मान है। रीक्रा-५० (या) विश्वसावीया यद मीमार जिससे दे एक इरमदे जानवर मिनका शिकार वरना दराम है ! कामभ कारने हैं। संकारी-सी है भिरशमी। स्यानिक-विश् [मं] विश्वीकर्णको। भिक्षांत्रव ह दुरु मची+-दि+ विस्ता देश ह ग्राजी-को जिन्हेमगरीहा एड एका (ग्र.) ३ क्रिप्रोप्त प्राप्तनेशना व्यक्ति । मैप्रक-ति [ते] निषद्धी क्यतीका बना बुचा । रिमंतिक-तु [मं] निवृत (त्यांन क्षांन भारे दे बण्या)। मिनिया-पुर [भेर] युष्टिशेष । र्शयपु-पु [अ०] नेपा, शरदत्या प्रवास। कलमणे काम र्यस्नानी गरेत रचारा। निशान परिचानक निक्र क्रमीया नेता देश पीरादा अन्। - म्राया-पूर्व नेपारदा देश । -प्राप्ति-धीर ध्यदकी देश । -क्षी गाय-# शेजा । स्थाप प्रथमा बाय क्यो । -वित-स्थापना स्ति। -धाग-पुर शक्यकान्या स्रोग नेतन। मैक्ट सामारके मामार बना की जानेनाकी यात I मैनका-पुरु है 'गुन्तको । र्वियम्त-मोर शैवद मो। भैदाकी पानी : र्मबन्तमी-गो॰ रेपर भी। अरबी पनी र समा-पुर [स] दायदा वस पर्रत निवतर गुनाको स्वर्द्धम्हरून [w] स्थाप होन (प्रशारे हेबर-नाशास्त्रार होनेक्ट बात वही अली है है अ बी क्षेत्र मेनाइच रूदेप्त --यनि-व नेमानावसः merte) t (तंक) विन्यमुख गरंगी नेकारे अगरे | सैबर्रे - ५ वर्ष माजिदा स्थामी ह समार्थी इ.न.वि क्षार्टीर भेडेच समनेवाणा । र्मशान-भी राधा विल्लाह समान्द-५ [१] नेजन्तीन्त्र। रियाहरू किं। वरेकिया विशेषाथ कि है। के दिन

तिवाद-दि० (व०) अक्तप्राणी (पूर ग्रह) तैयाश-५० (व) श्रदेश परिचल वानेशवा वारी

र्ममापन्द्र-शिक्ष (वं) संभागी-वर्तनी । पुण नेवापनियाः

बार्वे किस्पर्देशन ।

एकक सीम से साथ ! भाग शकित शुरु पृथिकै विरम्धि नायो मान -रामरधारमः सर्वज्ञाम। सींब सींबर!-य ओस्सेका भारी कपश-रवाहै, क्षेत्रक भारि । सींबी-सी॰ सिं देपियसी पीएक। सींतना-ए॰ कि॰ (तलवार) स्वानमें बाहर निकासना वा प्रमानाः ककावासा । स्तितः -- म॰ सम्मुख, सामने । पु॰ प्रस्तव्य बात वा नश्ता। सर्विम-सी॰ भीरियाँका गर्द करने रेड्म सामना । सीवना-स कि सामना, किस करना । सावर्थ=-प॰ हे॰ 'सीहवें'। सींदर्य-त॰ [सं] संदरता कृष्युरती। बदाराधानता । सीवर्षता = न्यो • हे 'सीवर्ष' (असाध) । सींच - की सुर्वक, सुधवू। पु नव्छ, प्रासाद, बहुा-किसा। सींच्या - प्र कि मुनवनुष्ठ करना, सगंदित करना, सुसन्दार बमानाः सामनाः किः। करवाः । सर्विता - वि सर्गवितः वस्थितः। पुः सुद्यवः बार्जीने क्ष्मानेका एक सर्वश्रित ससाला । सीनप्रकती "-की दे 'शाना मनकी' ! सीमी 🖛 प्रसोनी समार । सीपना-स फि॰ (डोई वस्त आदि) विसोध विग्मै। सिवर्व करनाः सहैजना । सींच-को सोए जैसायक प्रेमा जिसका कह दना और मधाने हैं हाम भाता है. ग्रहण्या । सी फिया। सीफी-वि (बायक्सर्व वा देव) विश्वमें शीफ का कोग हैं। जो • शीयने बीयसे बनी हुई दारापा वह मीशी विसन्धे सरशीये शीकका कर्द दश दी। सर्मिरिक-प एक प्राचीन आदि सीमरि (किन्दोंने मांत्राताची बचास कमाओंसे निवाह किया वा) । मॉर-को यादर- तेते पार्व रसारिव वेता कांश सीर ! † पु संगाबीरपण्डि वसर्वे दिन फ्रिकेवा तीने बालेवाले सिड़ी के बाब ! सर्विष्ट्रक-करी स्वामलताः शॉवकायम । सीरमान-स॰ कि॰ रमरम करना, याद करना-'लरि हारों है शीरिवट और मिडियमी मेर - मटिरामा समिरम करना। स॰ कि॰ है॰ सेंबरना। श्रीराध-दि० श्वामक सौबना । सीरो -वि इस रामरा बहुत बढ़ा । सींहर-सी अमन शपन। म शामने स्वरः। सींद्रमण-पुबक्त भी बार ह सीटी-सी वह प्रदारका अला । अ शामने । सी-वि मध्ये भीरशम, एका ब्रुका मु सीक्षा संस्था १ ०।० थः मा । श्र∙भकी एक बारा–वर्ध ही वन्ति बातः स्थमान्य शतः -के सवाये करशा-वदीम प्रतिश्वन साम बर्गा । - के सवाये होमा-रवील प्रक्रि इत साम दोना ः —कोम सायवा≔दुर रक्षमाः अवग रहता ।-विवार्य-भार दिनो तरह भौतीप्य श्री। परबंद क्रियार्थे । - प्रतान करना - बहुत प्रवान करमा, अबूत क्रोशिश बरना! - जानसे-पूरे दिल्से पूर्ण । | सीकीय-दि [में] एखन्दियो बान्देरशबद्धा

-- अरक्षिक होमा-अर्खेत साथ होता ! -- व्रवास क्षोमा,- = फिदा होना-कर्नत मुख दीता। -सह का-मिच मिच देगका, विनिष्ठ प्रसाद्य । -शे शीरी-बहत्त्र्य (से इक-स्टेनिके सर्वत्र)। ~पणास-स्टे अमेक ! -पर सी-कृत-प्रतिकृत, श्री प्रमे सरी ! -क्य समामा-तराभका कहना सामर्कभकावत करवा। -समका-नवृत्त भारो । -में एक-वटत क्स । -में कश्चना-विना दिवविचाइध्ये मुझे शीरत दिमी बाली क्षमा ! -शमामा-बहुत याहिशों हेना, बहुत सा-मका बहुता। -सी क्रोस (इर) मागना-सीप निकट न बाना बहुत हुए भागना । –सी क्रोस बहुए न आना-दशी दिखाई म देना, वहीं पहा व कप्या। ~सी बढ़े पानी पड़ना-बहुत अधित होना। -सी बाम धर्मा-बनेड हरियों निडाडमा बहुत मुस्ता-चौमी करमा ! -सी पस्टे छना,-सी केरे करवा-किसी जगहका चार-वार बाहर क्यांगा। --सी वत सामा-बहत वेंच आमा ! -सी समझे पाँच होना-बर, बरबाहरके बारम यथ स सदमा ! -हायदा क्याजा हो जाना-मस्त्रनाचे बारन मार्चन वासाहित होता । -हाबकी जवान होता-स्टेर दीना । सीक्र-व4िव वक्ष सी (सी सदली) सीत । 1.5 दे 'धीर' । सीबरः सीबरब-मि॰ हि॰रे सबर-हेरेपीः वारावानकारः (विश्वोसंबंधी । इ इस नामका तोथे। -तीथे-इ दक तीर्च वहाँ विष्युक्षी (बाराशनतारमें) पूत्रा होती है। सीकरायच-पु [र्थ] विकारी। एक मानार्थ ! बीक्रिक-प वि ी गुनरका क्षिकार करनेगावा म्बाह्म शिकारी, वहेरिन्दा स्वापः स्करका स्वापारी ह बीजरीय-वि वि विषयः संरेपी । सीऊर्थ-९॰ (सं] स्वरदना द्वदरका भारतमा राध्यकाः रक्षमा १ सीओमां-दि देश धीओन । सीक्षीची। नवा दे कीराना । सीडवारक~ड [बं] रे 'डीकमार्व । सीक्रमार्थ-व [सं•] सुक्रमारका कावकता, सुनावनिवन। भीवत । वि कीम्छ । सीब्राज्य-- व श्रि । पार्थिक इस्त करनेका आव, सुद्रति । सीकिस-वि [तेन] व्यत्संपरी। सीवसक-त (सं) नूस्य क्षेत्र । सीवस्थ-प्र (सं॰) मुश्यत्रा, वारोधी । सील-पु॰ [तं] शुमदा भारा + शीद ! -यानिक-च बामाबी एकण्डाबी कामना बरधेवाला वेदियम । -शाकिक~व दावि शामधे व्यतीत होतेहा हान वसने शका । -शारिवद -शायनियः-शाविद-प्र तथ-पूर्वं क्ष क्षोनेका बाक पूछ्येशमा । - मुसिक-इ है 'सीथशाविक (रत्ननि शढ बारा बमामेशला पंरी । सीधिक-वि॰ वि । संयानी तथ भारदेशमा सुग-संबंधीः भागंत सामकः। सीखीनां - दि॰ दे॰ ^रыधेमः

प्रद । : सेपास्क - दि० (ल) वहनेवाका, तरक । पु तरक स्थार्थ । सेपाह- पु [ल] सिमाहत करनेवाका पुमस्का पर्यक्र । सेपाही-को प्रमुख हैर-सुपाटा ।

सैर्रप्र-पु (सं) एक तरहका निग्न मेणीका वा वरका काम करमेशका मौकर। दस्यु और वजोगशीये तरबब एक संबर वाति।

सं/प्रिका-सी॰ [तं॰] वाती शीवरानी। सर्व्री-की [तं] अंतापुरकी वाती। क्यातवातमें विराद-नरेक्क अतापुरमें काम करतेतमय बीक्शीका मामा

सुरहेरे परने काकर सिरम्बार्व परनेवाको को।

संर-को कि अप किया जाने

सामा प्रथम हिन्दी राजीय रवालमें काकर खाता-रीवा

सामा प्रथम हिन्दी राजीय रवालमें काकर खाता-रीवा

सामा प्रथम हिन्दी राजीय रवालमें काकर खाता-रीवा

सामा-वामा। द्रश्य तमा छा हान्यकर देखना। -साह
हु की सेट्सी बना राजीय रवालमें कुछ सेटिक दिस्मी सामा स्वी स्वापी-पीड़िकी छावा चकती हुई दिखाई

हैती है। -सरपारा-पुण सनक्ष्य वा सिर्ट द्रश्य

हैकारी हैकारमा। -(१) विकार-पुण सन

सिकारमें काल बापन करना । सर्दिय-४ (सं•) पक प्राचीन बाति ।

सीरिंध्र-पु[सं] दे 'पैरंधः यक जावि । सरिंध्री-चो [सं] दे फैरंधा ।

सीरे-पु [सं] कार्चिक मास्त एक माधीन जाति । सारिक-दि [सं] इक संबंधी । पुरु इकमें अतनेवाका

वैकः स्क्रवादाः भावास्य । संदिश-पु॰ [सं॰] महित्र मैसाः स्वयंः नावासः ।

संरिम-पु॰ (ते॰) महित मेताः लगाः नावास मरीय संरीयक-पु (ते) स्थि।

सरिय, सरियक-पु [सं] सियी; शिवीका पुण्य । सूर्य-पु [सं] एक तृण अस्पनाक (वे)।

सिक्ष-मार्व पु [स] रामीशा वदान, वक्षणाराः सह । • पु २ 'शैक । स्रो दै 'मिर'; छोग-'ववदि छमर महै नेम बद्धानै - छनप्रकाछ । - कुमारी - स्वाः-

तनया -सुवा-स्रो पार्वदी । राज्यानम् (स्रो हरेगाः)

संस्था-पु [सं॰] तुरेरा । संक्रवेशाय आर्मी-चो॰ (शं॰) प्रसिकीय एक सामाविक संदर्ग जिसका सर्वय सनताकी वार्गिक और मैतिक

कारि है। सेवा-४ अवशेका और। इसा श्रहण

सैका-पु कड़ीका बीरा हुना उन्हाः छेट आहिये मरमेवा पपड़ा सुरके शिरेपर कनावी जानेवाली सूँदीः टंडकरे बाने जावरोदा बंदाः प्रभारका बन्ता ।

र्थंडक्से दाने ज्ञादमेका बंदाः प्रत्यारका दस्ता । सम्बादमञ्जान-स्ती पार्वती ।

सकारमञ्ज्ञा । पात्रवा । सम्बामी −ि सेर करनेश श्रीकोन पुनदक्क समगीती ।

सैस्टाय~दु (का] नाइ कामोका बहाय । —की—की० | दिस्सकी । | सैस्टाय=क कामोपे इ.से. दुई फस्ट ।

स्रताचा-चु॰ पामाभ दृशा दुर फछल । मैकापी-पि॰ माम्भर्तश्री । की दिदक, तरी; यह बमील की मरीकी पानेसे सीची जानी हो । ससी-की सीस भैका पेकी ।

मेंलूग - पु दे शेलूब !

सीक्ष्म−पु [वं] ववे व्यवसारी जारिके सकरक किए पास ग्रीरिंग सवा हुआ रेक्का बन्या व्यवस्था हुस्य क्यरा; पायवर; साईकी हुकाम; संग्रेगी सरावकी हुकाम। सीवक−पु दे 'शैव'।

सेवड=-पुदे क्षेत्रक'। संबक्षिती*--भा दे॰ 'डीदक्षिमी।

सबाधनी*-भा ६० 'शेर्राक्रमा । सुंबाख-पु [सं] ६ 'शेर्राक' ।

सैंबुस−4ि (का] तीसरा≀पु शृत जनका तीकाः सैंब्य॰−पु दे॰ 'दीस्व'।

सब्द•−षुः १० 'शब्द' । सैसः, सैसक~वि॰ (सं] सीस:संबंधीः सोसेका बना ।

सेस**व॰-पु॰ ६ '**शेशन'। सेसवता॰-ची॰ **१**० शैशन'।

सैसिकत-यु॰ [सं॰] यक प्राचीम जनपद । ससिनिध-यु॰ [सं] दे 'छस्कित'।

सेह- कि कि] बीन । - कर्र र - क कियार कीसरी बार । - मूमा- कि बिद्यना । - मोधा- कि कियोगा । - - चंद- कि बिद्यमा । - प्रश्न- पुरा- पुरा- कि बीन बाजना, मेहरावचार बीन दरका के । - च्यु र - की बीन बरका कीमा क्रिया करता । - प्यहु - पुरा बीवर करता का । - क्यु र - क्यु र की स्वाप्त करता ।

वकः। -पहरी-को विजयरो, तीसरा कर (कि)। -पहरू-वि विवयमः। -पहरू-वि विवयमः। पुः यक नरका तीर। -पार्ष्-कोः,-पाया-पु विपार। -कसस्रा-वि (देव) विधमें तीम कस्कं वर्मे, शास्त्री

तीन वार प्रकरिवाका। —वदी—3 वह शिराही को हर साक रावदर वस्कृ करने के किए रक्षा बाता था। की किरत वा तकपाह को हर कोसरे नदीने कहा की बाव।—बारा—व तीसरी वार।—संस्थितन कि नोत

बाद र न्यारा न्या तीसरी बार ! न्यांक्रस्य निव तीस प्रीडकेशका (मदान) ! न्यादी निव तीसरे मदीने वा दर तीस मदीनेपर दोनेपका! की तीस मदीनेबा ताल परस्का भीगांद्र। तीस मदीनेपर मिकम्यानी दुनि तमसाद स्वादि ! न्योंक्रान्दि तीस दिस नवा एक

वाकाः ग्रीपरे रिन निष्कण्येनाता (पत्र)। --हांबा-पुः र्मनत्वार । --साक्य-दि तीम शालका त्रीवाक्तिः। --ब्रधा-प्र तीन वीवाँकी स्टर्स्ट मिलमेके स्वामस्ट

्वनाया हुना ववृत्ता था योगा। सहसी−सी शक्ति, माका वराने, सेंबी।

सहरा - इ शनी आदि शक्तमेका मिद्दीका पात्र ।

र्मही - ची॰ ग्रीय मेहा।

सीं - प्र करण तथा जगाराज कारबंका विद्यु 'है'। वि सारव तुस्या ज समृत्य सामने साथ सहित

संगाली सीइ शतकासर्वसो दहा सर्वितं−दुदे 'सोद'।

सींचर नगड-पु॰ सीपकंत, बाला नगद। सींबां-को दे 'सींब'।

सींहा-पु काही टंडा। जॉन बीहरेडे कामधे आनेवासा देवा धेनबीहना रुक बीचन कोविना। - बरदार-पु॰ बरूप्यवरही, अग्रावरहार की राजा, सरहार, अग्रीर आदिकी सरारिके बान-बार्ग पकार है। ग्रा-काह्य-

नारिकी स्वारीके जाग-नार्य चन्ना है। मु - चसना-स्वर्धी सीटिये मारपीत होता ! - चस्तवा- क्यामा-सीटिये कवडीसे मारणा ! सीक्य-प्र [सं] सुख, जार्मदः क्रस्याण । -वः-सायी (यिन्)-वि सुख देनेवाका, जानंदरायक।-सायक-विश्वसंबद्धाप मेंगा सीरांच - सी. बसस, अवव ।

सीर्गय-वा श्रुप्ता वि [सं] सुनंदितः सुसन्दार। प• अन्तराः सर्वनिः सनासः स्टबन् । यदः त्या कृत्यः ।

सीर्गाचक-पु॰ [सं] भीत कमण ।

सौर्गाधिक-वि० सि] सर्गवनुष्ठः, स्वयनुष्ठारः । पु. सर्गवः, दत्र तेक आदिका व्यवसायी, मंत्रीः नीकोलकः व्येत क्षप्रका क्यराना प्रणित शेवका यक प्रकारको सर्गनित बासा एक अंबर्डिम; यक पर्वतः एक तृष्क कपुणः एक तरहका कंगरागः यक तरहका नर्पसक किन्ने योगिकी गंवने वदी-वन दोता दें। ⊶वन-तु एमोंकी वनी राद्या यक सीर्थ। सौराधिका-सो सि । करेर-मगरको नदी। एक तरहकी

परिक्री। सीराधिपश्रक-पर (छेर) स्वेत वर्गरी । सीर्गच्य-प (संशो सरास असम्।

सीरात-वि [मं] धुपत-संबंध सुगतमक्की मानमे-बाल्यः। प बीक्रः सन्दर्शनीः बहराष्ट्रका पक्ष पुत्र । सीगविक-प (सं•) बीदा बीद विक्रा बनीस्वरवादी

नारितकः मारितकता अनीहरूपाद । सीगम्प−५ [सं] सुगमताः सुविधाः। सौगरिया-पु वित्रवाद्य एक शासा ।

सौगात-की फि:} में श्वाहार ब्रह्मा। सीताली-वि उपहारमें देने वोग्यः वदिया उत्तम । सीचा = - वि • सरता, सर्वेगाया ७कवा ।

सीस+-पुदे शीय।

सीचि सीचिक-प्र (सं॰) स्था श्रांका काम करके निर्वात करवेवाका व्यक्ति दरवी। सीचित्रय-ए सि] दरश्रीका काम ।

सीचीछ-दु (सं•) यह तरहन्द्रे यहान्त्रि । सीब॰-सी॰ दे 'सींबि।

सीजवा≐−ल कि सोमादेना सवना।

मीक्षम्य-५ (एं॰) सुबन दीनेका भाग सुबनता. सम्ब

नतः, महमन्धाः दशराश्यतः । सीजम्पता-नी है 'सीवम्ब (शराव)।

सीजस्क, माजा(जम्) – वि [सं] ओजकाना ग्रस्थि धानी ।

सीच्यां - प्रभारीय बोच्य बदा-पद्या । सीड़ा-इ दे 'चीड़'।

सीत-की॰ पतिकी दूसरी पतनी श्वरती। दि॰ [गं॰] पूरा शारति-संत्रेणी।

र्सातव सीतनिश—भी शीत।

मीति-न्मी सीत । प्र+ [सं] (श्रमशानित) वर्षे ।

मीतिम>∸सी सीता मीतिया बाह-नी दी भीतोंने होनेवानी ईंप्यां हव

मादि । सीतुक सीतुन, सीतुप - भ पु है 'श्री तुम - भीतक ही भएनी भवी सबनी सीयुक्त कर -मतिराम !

सीतवा-वि छाउ संबंधी, जिसका संबंध भीतमे क्षेत्री

शीवते प्रत्यन्न (शीवेना मार्र) ! सील-वि॰ (र्रं॰) च्या, सारवि-संबंधीः सीम निम्पीयव

संबंधी । श्र. सार्विका कार्य ।

सीक-वि॰ [र्स] एक-संबंधाः सहका बना हमाः सूत्रमें कविनं । प्रजासमा । सीश्रातिक-प सिंगो बौद्ध मतको चार प्रमुख प्राकाओं मेंसे

पक (वद्य 'अनुसान'-प्रभाग सास्ता हैं)।

सोबासण-वि सि विश्व-संबंधी । प यक तरबका यकाव यस । -धनुस्-पु॰ रहस्तुन् ।

सीधामणिक-विस्ति । सीधामधीने व्यक्तित वा प्रवक्ता सीधासणी-को सि विकास को देहको प्रसन्न करनेके किय किया जाता थाः पूर्व दिशा ।

सीप्रि-त [सं] जुलाहा।

सीबिक-प्र (सं॰) अकादाः वनी द्वरं वस्त् । सीडपै-वि॰ सिंशी स्वोदर आई वा वहिन-संबंधी। व॰

मादल ।

सीदा−प्र• फा] खरीय-वेचीः वाध्यस्या वह चीव को वाजारसे करोदी बाबः ऋष विक्रयद्ये वस्तुः साम्र ।-गर-प्र व्यापारी विकारत करमेवाका। - वरका-प स्वापारीका वेटा, वश्विकुपुत्र ! -- बच्ची-सी स्वापारी-को देशे ।—गरी—को `चीपागरका काम, स्वापार, दिया रत । वि तिवारती । ⊶० साछ−पु तिवारती माक विक्रोके किन रकट्टा किया हुमा माल । --वही-की बरोधनेची किंबनेकी वही। -सस्क्रा-सहक्र-प बाबारते खरीबी बानैवाकी श्रीवें। मुरु -पदमा-सरीव वेचीका सामकारी दीयाः बाद वादास ठीक दीनाः। ~पटाला -- मोक भाव बरके दाम तै करना । -- होना --

सीदा पर भागा। सीवा-प्र• [बर] प्रवामी विकित्ताशासमें माने हर पार शिस्ती(दीचें)मेंसे एक विस्का रंग स्वाह माना गया है। बन्नाव, सनका मेम १९६ । मु॰ -उपक्रमा-सनक सवार दोना । —श्रोना—यन्त्र कन्नार दोनाः प्रेम दोना । सीबाई-वि॰ पापक, सनकी सन्तो। प्रेमी, वाश्वित ।

सीहरमधी-सा (सं॰) विषयः मानकार विषयः ऐरा-बस (गम)की परनी। यक शामिनीका लामा कश्यप और विज्ञताकी यक प्रणीत यक जम्मरात हाता. जामक संवर्षकी एक कम्बाः एक पविषीः सदाया पर्वत्रका एक ग्रंड ।

सीटासमीय∽वि [धं] विवर्धाचे समानः विवर्धा-संबंधी। सीक्रामिनी⊶सी सीदे 'सीदायनी'।

सीहामिनीय-(40 [धं0] दे 'शीरामगीव । सीबाम्नी-सी॰ [स॰] दे 'शीरामनी ।

सीवायिक-प [शेव] विवादके अवसरपर माना-रिशा तथा संविक्ति बन्दाकी विश्वनेवाला वन विसप्त विवानतः कम्याका अविकार दोता है। यदेश । वि वदंश संस्था । सौदाबी∽4ि छीराका, छीर∺कृत (~सर्व); दिनुर्वे

मीराकी प्रशानता ही (-मिकान) । मीहास-५ [पं] पद मुर्गबंदीय मरेश जो समरने तरवर्गी थी नीमें हुए थे।

मीदय-इ [सं] राग दिनोशस को सुरेक्के पुत्र कार बाधी है सासद ने ।

सींठ-मी॰ मुमा अदरह, शंडी। -मिडी-को॰ एक तरहकी काकी मिडी ह सींबीरा-पु॰ बबाबी दिया जानेशका गुरु वा चीनी है योगस सेंड मेना मादि मिसाबर बनाया हुना एक पश्चिमस्य मोनयः।

सींघ-ब्यु हे 'सिभिः १ देश संच्या १ १ कि हे। લો પા र्मीघा-नि॰ सुर्गारत सुवासित सुधाबुदार । पु वास, देश साफ करने, भीनेदे काम आनेवाला एक सर्वधित हम्भ मनाकाः तथी बमीम, मिट्टी, भूकपर बामी व्यनेसे चठी गंधा भन्न गुमने समय बठी सुगंधा महित सगंधा सींधिया-पुरु वक तुन, रोहिन।

सींबी-प एक महिना काम । सींप्र=-विश् सोंचा ।

सॅपिमा-छ कि देश मी बना (दिछी मेरठके आध्यक्त वस कपका मयोग अधिक होता है)।

सींबनिया - पुना बका एक बहुमा। सींड॰-औ+ है+ मी हो। ब+ सामने।

सींद्री :- अव दे सी हैं। सा €+- u+ १ '% g' :

सो-सर्व वदा + वि समान मॉनि । ज इसकिर अनः । स्त्रीः [तंशी प्रार्थनी ।

सीउइस-[40] मैं वह (वही) हैं (दलका सायवें वह है कि में जहां है। यह देशत दर्शनका बानव है जिनमें वर माना जाता है कि रूप महादिवसी महा व्यक्त है। भीर भी मध दी सप बद्ध दी दी जीव की बद्ध दी दी पर जाएतिक मानाके अल्परणके कारण अवने (sec) मध्यी प्रकार संवी पातार जन वन्द्र मानरण हर संचा

है नद यह जन्म हो हो भाना है) ह सीअप्रसरिम-(गं] दे॰ 'हाञ्चन' १

सामना १-थ मि रे शीना १ सीबा-त एक नाग जिल्ही पश्चिम बहुत महीन होती है और शृष्ट ग्रन्थार होत है । मोई-कार्य बहार अक्शतिका रिकी वह जीपी

अमीम जहाँ बाबी वढा रह जाय है सीब - ५० दे० 'छीक ।

रराष्ट्रम-वर बालावम निषे दुए सबीह रेगका वैक्र है रक्ष तरहेबा पान भी मुत्री है हिमारे रुपीनी समीनमें बीया बामा है है

शीप्रमाप-मार्गा के काद महामा ! ल कि माध्यम ! क्षाबित्त++वि श्रीदित शादान्त्रित अश्रत्याः

मोशक - विश् पुर शंचक, मार्ग्स करनेवागा वस चन केनेरान्य शत्य दश्य करनेपाना । सीनता-५ स्थ्यो नेया।

शीनाम-द रे भी इस ।

हरीराजा-मन्द्रि की राज पराचे वा दिन्ते पराचेदा रम प्रदान का जान कर लेगा ह

सीमा'-पु शाहनुंद करनेवालगु वह श्वर्थि विगया वि ने देवन बा मानेग बीमा है ह

शासाई-भीर प्रापनीका रोपानिकी जिल्ला किये बालुकी है स्रोहरण-विश् तक , वेरहण और 1

शीसाने या सोसनेको मजरूरी । मोरत-मा॰ [पा॰] तकत् । स॰ -हाबा-बल, न

वेकार दीना। सोग्रहमी-वि॰ (बा॰) धनने वा बनानेडे दोख i

मीसता-विक पाक अन्य प्रभा, राजा विक स्वित्रपर मेमी माजिक र हु दुशा हुआ क्षेत्रका क्रिमी करते आग सम वाती है। [हि] बाबिन, स्वाहीमीया शहर में रेंगा दवा बनश किसमें बदयरसे प्रश्ती अन्त हर met 🛊 j

स्रोगंड-सी० है० 'सीतंड' ह

सोग=-९० धोक, किसोके मार्भवा बन्धको झाँबमाँछ. विसाम १

सीतिमीव-वि सीव छोत्र सरमेशानी, शोद्यन्तित (बी)। क्रीसी-विश्वास क्रमेवाना । १ अश्वित होवनेश क्रे दात काला प्रदास क्षेत्रत ।

सोच-१० मोक्नेधी किया विचारवेका शहर होट-किती विवद्धे महत्तेपर द्वाराका अपनीयहरू। विता पर्या चाप, धीर्र हरा चाम बर माननेका परमावा । -विचार व किशी विषयका विशेषम सीर !

सोपना-स॰ द्रि॰ विकार करमा विक्री विषय गाउ आदिको विजयमा बरमा । अ कि श्रीया काम दरमा बिना दशमाः शानामा ।

सोचाबा-स॰ कि किमीको शोपनेमे प्रश्न ६१मा **दियार देशांबा** शिमलाबा ।

सीपशास-वि० मि 📗 प्रमुखा दोनाः कप्यान्यकः द्वीवरः क्षमा । अ चन्द्राराष्ट्रके, भारामधी गत्म हेने हुन । सीम-श्री व्हेरिक, गृहमा भी व माहदी, साहाव । सील-प (का) जलना मनरनात बेरबार बर्शनका रकामीका रख प्रया व घोर जिन्हे मानिवास्त्रों सक्के

मान यान दे । -श्रयाँ-पुर बस्य स्ट्रिये ब्राह्मिया वहनेकारा । - इकावी-सीव क्ष्म देवने बर्गाका करता। -(श्रो) गुराश-१० कश्म रसके काराइक प्राप्त करत रमधी भीतमा ।

ब्लोक्स-ब्ली (का) वर्ष- नेति दिन श्वनन नंतरे ते उत्तत को बन जान - दतन । - कारी-को+ श्रोकारी। गोप्रशी~म्ये (ग.) दे 'हा≥नी ।

मीहा-वि (या) बकारेशमा द्रामरा कामायमत । सोजाद-५ देश श्या ।

शासिका-कोक (या) प्रवास नवता नेवना गवन र संभाव-विक की देश स हो, मश्य मीया व सो है है माजा-वर्षि गोपा सर्पाशकारी में में गामने र

मोरा व देश शासा ३ थोता ३ मोह-भी हे और ।

सीका-त [बं] मारोश दनापनिक विशा व ना नैपत fant gint en gitt mifetigit ! - met-16 मुक्तिमारके बोमने बनावा बानेवन्ता यह सदस्या याक्य शाहा क्षेत्र किये तेनुकी सहावतारी क्षेत्रकी सर

बर स्था है। ऑह-दिन [र्ग] लहन दिना दुला सरिष्ट्र और ह

सौग्रस्ति-प्र [सं] प्रवस्त्रके वंशव (मरत-बीर्जात)। सीघ-वि (सं०) श्रवान्संबंधी। स्वायकः चूना (स्वा) प्रता हुमा, पक्कार विमा हुआ। पुर चुमा प्रता निवास, परा महरू मासाहा चनाः वर्षिया परवर, इत्यपाताचा भाँदीः पद रहेम ! - कार-पर शौधनिर्माण करनेशाना भ्वति, राज, राजगीर, ममार ! -सक-प॰ महकका मीधेका तका । -मीछि:-क्षिका-प॰ प्रासाव था स्नारेका सिरा १ सीचक-त• (सं•) परावस गंपर्वका एक प्रव । सीधम्बम-प्रविधे वे एक शंकर वातिः सममाने पत्र वस । सौधर्म-५० (सं•) एक देश-निवास (वे)! - अ-५ एक देववर्ग (से) : सीचरवें -पु [धं+] सुबर्ग श्रीनेका मान, साबुता, सखनता, वक्रमसदीः सपर्वपरायणता । सीपाकर-वि (सं) बंद्रमा-संबंधी, बांद्र । सीवात~प [सं•] मधान भीर सम्बद्धीरे बरपव संवास ह सीकार-पर सि । तारको श्रीवर मार्गीमेसे वह । सीबाछ-प्र• [सं] दिवयंटिर । सीनंत-प॰ (सं॰) बक्ररामका नसक। सीर्वशी(विस्)-४ [सं] स्करान। सीम-वि मि । प्रश्रियाकम-श्रेणी । प्रश्रिय वयह हारा धरतत विक्रपार्थ ताला शांख । • अ सामने । -धर्म-प बाधी बदमतो। ~पाछ~नि विसर्वे वहाँ नुवन रक्षक हो । सीनक+-तु एक भार, शीनक। सौतन∽की दे संदिगा सीना १- व दे । 'छोना । सीनाग-५ (सं) सनावदे कन्नवादी नेवाबरकीकी **एक साम्या** । सीतिक-प्र* [सं] एशुक्रीह्बोका मांस देवनेवासा क्ष(छ-क्सने नृष्णा स्वाव । मीनीतेप-५ [मं] सुमंदिवे ५व अव । सीवनाव-स क्रि• र र्विश्वा'। सीवर्श-दि॰ [र्ग] सुरर्ध-गरह-संबंधीः सुपर्व वैसा। ष एक वेश्मेंका मरकता श्रीका गरवपुराचा गरवका यह सम् । - केत्रय-वि विश्वानीकी । - मत-प्र सम्बद्धारिकोन्द्रा अत्तरिक्षंत्र । श्रीवर्ती-भी भि देश कर का पातास्था करा पातास्था की सीवर्भेय-५ [मं+] प्रवर्गाके ग्रम यन्त्र। गावनी आहि 1 737 सीववर्ष-१० सि । है 'शीवर्थ ! व तपर्ग(गरह वा बाजीकी सन्दर्श या रहमान । सीपन्तंति - पु ॰ [रो॰] रह योज्यवर्गे कवि ३ मीपाक-१ [सं] एक कमंदर माति । सीविक-ति [तं] रहा मिलावा हुना शुरूनंत्यी ।

सीमिक-वि॰ [तं] शदन-संरथी ! त राजियक सोते

हर पर दिया बानेवाला आजमन ! -पर्च (मू)-इ॰

महामारतका दलको वर्ग (विनुधे अधरनामा नारिके

राष्ट्रिमें बोहरीके चिक्तियर आक्रमण बरमेदा बर्चन है। सीमबास्त्व-इ [सं॰] अच्छी संग्रामित होना। सीयकोक-वि [सं•] सक्तीक नामक विश्वकर्तरी प्राथी-संबंधी । मीफ-खी॰ है॰ 'भी फ'। सांक्रिया-सी॰ प्रशासी इसा धास । सीकियाना-वि अफ्रियामाः मीक्रियाना । सीवार, भीवारक-प्र• [छ॰] सुरवका पुत्र शहरी ! सीयसी-सो॰ सि । सुबहरी तुनी तथा बुनरहरी सी गोषारी । सीबसेब-१० (सं०) सब्दन । सीबक्षेत्री~सी॰ [हं॰] सुबतको पुत्री गांपारी । सीबस्य-प्र+ सि 1 ९६ प्राचीन मनगर । सीविगा '~सी॰ एक तरहको हुनदुछ । सीवीर-प्र• दे॰ 'सीबीर'। सीय-ब॰ [र्ल•] हरिशंदका दवाई मगरा यह गरी श्रीमीका राजाः चारनीका एक भगर सीमकि-४० (ई०) इएर ! सीमग~ [र्स] शुनग दोनेबा माद, शीरका अचा मान्त्र, शीमान्त्रः आसंद्र, प्रसन्ताः दश्यामा सर्वे थन शैक्त । विश् भूमन मुझ्छे बत्त्व था बना हुना । सीमक्र∽वि [र्स] सक्ता-संबंधी≀ इ. सम्प्राप्ट 💵 अभियम्भः एक शीर्थ । सोमक्रेब-९ सि ी सम्बरू-वर्ष अभिगन्या विज्ञीक्ष क्य बरेका । सीमर--(१० (सं) होगरि कार्य संबंधा । यु यह बेरिक करि । सीमरि-द (मं॰) एक शन विद्वाने मांचाताको प्रकार द्रम्याचीते विवाद दिवा था। सीमांजव∽७ (मि•) संदेशन । सीमारिकी~सी श्रीकान्वदद्ये भी, मध्या । मीमाधिनेय-५० [सं] स्पेदा (सक्ते प्रिक) कार्यका बुक्त नग्याभित मानादा बुद्ध । सीमारय~५० (ते॰) अच्छा माग्य शरा-दिरमगैः बस्याया छएकि। सुक्षणताः शीरपैः मेमा भागेतः हाम-कामनाः श्रदायः चरित्राता छित्रः सुरामाः रक्ष वीवाः क्योतिकटा यद कोमायद प्रता — किए—पश्मापि साम्बद्धा विद्वा अदिवानका चिद्व (बैमे मिटर आहि) ह -र्तन्त-पुनद मूथ भो विवाहमें वर प्रांग कन्याके गरेमें बांध जाना है। -अनीया-सी॰ हरिनाहिका शीय । - पूछ-वि विसुद्धा कल आधारशय हो ! -ग्रेजरी-स्रो १६ तरांगना । ~ग्रेडन~१ ४रतानः। -सड-प जानेर वा शीरपंत्रन्य म^न। -पिकोपी-(यित्र)-वि शीनाव सीदये मह बरनेवाका। - मतः -दायमञ्जल-५ शास्त्रन हाहा दुनीबानी दानवामा रह सीभारपवती-सी [तं] भववा, गुवानितः। सीमाग्यवान्(यत्)-वि [वं]याग्वशाची शुक्र-दिग्यतः सीमामिक-रि [ग्रं•] कॉनिमान् १ सीमानिविष्(रय)~९ [न] देव तरद्य राज ।

सोबस्य-वि [सं] सहत करने वोध्व, सम्ब सोदा(इ)-दि [सं॰] सदिष्यु, समाधीकः शक्तिशाली, प्रश्नम ।

सोडी(डिन्)-दि॰ [तं] जिसमें सदन फिना है। सोधक-वि हाल, रखनर्गका।

सोत=-प्रदेशवा।

सोता-द नदी, माके हारने बादिका क्ष्म स्वामः इरना। नदी नाहे वादिकी साम्रा मूक मूक स्थान (हा)।

सीता(त)-वि [मं] वचे छरपन्न करमेवाछा।

सोतिया - औ॰ छोटा सावा ।

स्रोतिक्यां--दि॰ विसमें स्रोत वा धोतंका पानी काता

को (कृप) ।

सोसी-सी॰ स्रोतः शराः बर्ड्सः शस्तः + स्वातः नक्षत्र । सोरकट-वि [धं] प्रवह रूप्पासे हुक, काकसामर।

पद्मानापनुकः शोकाम्बदः। सोरकप-नि [सं•] इं.पित ।

सोस्क-वि [मं•] इच्छुक, कामावित सर्व्हेटन ।

सोत्कर्प-दि [ग्रं॰] क्वत ब्वतिशीकः क्तम ।

सीत्तरपणव्यवहार-पु [सं] बाद विवादमें विजेताको विकित्तरे मिलनेवाको उदरावी दर्द रक्त ।

सोक्षास-वि॰ [सं] अति जविकः अतिस्वीक्षिपूर्वः, बरा-बराबर दशा गयाः स्रोत्यतस्य स्रोत्यपूर्ण । ह

सञ्चन्द देंशी अदृहासः प्रिय वातनः व्यंग्यवाननं व्रतेत-गमनः स्वानरत्ति ।

सोध्संग-वि [सं०] सिक, विकण ।

सोरसब-दि [सं] बासन्तुकः, प्रधादनदाः। भानदिव ।

भ• शस्त्रवः, शस्त्राहपूर्वकः ।

सोरमञ्जनि मि । इसस्कापनी विद्यासायकः शेका मित्। भ उत्प्रस्तापूर्वक।

सीरसेळ नदि चि वसवी अभिमानी।

मोरमेच-दि मि | कैंचा। सीय-५ क्षोत्र स्क्रम ।

सोवक्स-प सि] पिटरीके चरेयमते किया वानेवाका एक वर्ष ।

मोरप-दि [धं] सूर सहित व्यावके साथः (अकाशीय पिडोंडे) करवन संबंध रक्षमेवाकाः जिसका सिकामिका

वारी रहे। सीदर-वि [र्थ] समा वक बदरहे बरपन । प्र• समा

मार्द 1

सोदरा, सोदरी-लो र्श्ही स्वा बहिन। सोन्सीय-वि [मं] सोर्फ सहोत्ररः सोन्रर-मंदशी। सोदर्क-दि॰ [सं] इंग्रेंबालाः वरिपामयुक्तः यानके

ब्रद्भ पुत्र । पु गामका संविध पृश्य । सोवर्ष-वि , प्र [सं•] सहोदर । सोचम-दि [मं] जो पुढ़दे निम तैयार हो। सपेह ।

सीचोग-दि [सं] डघोगयुक्त, वर्षांगधीन, प्रवान करनेवाचाः धतरमाद्ध (रीय) । मोद्देग-रि [सं+] करताया दुआ, बहेगग्रीका व्याकुत ।

अ व[े]गपूर्वक।

सीध-प [सं•] एक प्राचीन माति। • अनुसंबास अनु शीकन क्रोतः शकनाम, क्रोत-बनरा सनारा होश इवास, श्रव-प्र- भागेंद मगन भवे सब डोल्स करू म सोग सरीर' - सूर; किसी व्यक्तिसे कम आदि हेकर वसे पकानेकी किया।

सोधक>-पुदे• 'छोषद् ।

सोधन - पु अनुसंवास करनेश्चे क्रिया, धीत श्ररनेश्च कामः स्वारमे ठीक करनेका कामः जवा स्तमे, धकामे

का काम 1

सोधमा≑−स कि जगसंगम, जमसीकम करमा। टॅंडना धोवनाः हाटे दर करना गन्धी दक्त बरनाः संशोधन करमा। ऋण भारि युकामा करा करना। किसी वस्तुकी गॅदगी इर करना सफाई करमा गणना करना विकार देना (बन्मपत्री आदि) औपक्के किए

पार्ल(पारा सीना नावि)को सफाई करना । सोचवाना - च कि ईंडवाना धोत्र बराना होस

करानाः साफ करवाना ।

सोधानाक-स कि है 'सोधवाना'। स्रोम-प पंगाकी एक मस्टिट सहायक सरी ओ हामापर के पास वसमें मिलकी है। शोणा क सोमा: 'सोना'का समास्यत रूपः वद बरुपद्यो । + वि काक । - किरवा --पुरु है सनकिरवा'। लक्किर-पु एक वहा कुछ । -केका-प्र पंपादेखा। -गेक्र-प्र सोनागेक।-**सं**पा -प पीका, सोमेफे रंक्डा चंता। - सिरीक-सी मर्थको. नद्ये । - बरव - बर्ड - जिरव + - सी सीन मही स्वर्णवृतिका। - जुद्दी-स्वी जुद्दीका एक प्रकार जी पीका दीवा दे, रक्ष्यंपृथिका । -विद्वाही-सी॰ एक तरहकी विक्ति । -मह -तुरु क्षेत्र नहीं । -शसरू-प्र पका हुआ। पान । ~ कार = - प्र पक्ष समझी पत्नी ।

सोमबामा*-वि सोचका समस्या।

सोनड−९ [मं] क्रहत्यः सोमहका-वि सोनेक रंग और वमकका, स्वसिम । सीमहा-प्र- हुचकी वाविका यह बंगली पटा की बापडी

मी मार बाबता है।

सीना-पु॰ पीटे रंगकी यह बहुमूस्य पातु भी विशेष स्पने नाभवन नावि वनाने दे दान नाती है और मरम करके बबाके कृपमें बस्तेमात 🛍 आती है; (सा॰) वृदिया भीर बद्रमुक्त वस्तु, श्रेष्ठ व्यक्ति भारित एक तरहका हमा यक मुख्या - शीक्ष-प्रायक मार्थित प्राया महार्थित । - चाँची - भी माठ, वन, दोकत ।-पाटा-पु एट सेंचा वृद्धा ।-पट-प्र सीनेकी साम । --पूज्य-प्र वस्तु प्रकार-सक्ती --~भाकी −सी यह स्वित हम्य विसर्ने सोमेदा कुछ वंग्र क्षाता है और जो वीरपके काममें भी वाता है। थक तरहका रेक्षमका कोहा। -मुस्ती-पु सनाय। स् - इसमा-सोना गाँथमा परराना । - इसाना-शोनेकी परश्चनामा । - चडमा - किशी भीवपर शोनेका सुनम्मा होना। ~क्यामा-दिमी चीत्रवर मोनेसा मुन्त्रमा करवामा । - चदामा - रिमी चीवपर मीनका सुनन्मा दरना । - छेकर मिट्टी (तक) न इमा-स्थामी करना ना^{के}दंदा दीना। -(में)का घर मिही हा जामा

1484 सौमिक-प [सं•] वाशागर, बादगर। सीमिश्न-दि [सं] सदाक, समिश्च कानैवाला । प्र भोजीको होनेवाका एक तरहका सहरक्षक । सीमिक्ष्य-५० [सं] सुकाक, समिछ । सीभेय-पृष्टि | सीगके निवासी । सीभेपज-वि [तं] विस्तर्ने अच्छी ओवशियाँ हो। सीम्राज-प [सं•] भारबाँकी मापसकी गीठि समापत्य सीर्मगस्य-प [संब] बस्याय, समृद्धिः मांगरिक परार्थं । सीसंत्रिण-वि [सं] जच्छे मंत्रीवाका। सीम-प [थ] रीजा। वि [चे] सीम(चंद्रमा वा क्षता)संबंधाः + दे 'सीम्ब' । -- शत्तव -- प्र पक साम । --यौप-प य**रु** साम । सौमद्त्रि-प्र [सं] सोमश्चका पुत्र, वयहव । भीमन∽प (सं•) एक रि**म्यान्त** । सीमनस-दि [सं॰] समन, पुन्य-संबंधा अमुकूत वेर मीव मन तथा भन्द वाद्य इहियोंकी अच्छा कमनेवाका विकार । ॥ आनंदा संतीया क्रमा, दया। यह जशका नामः कर्ममानः सावनमासकी बाढशी विका पश्चिमका दिभावः एक पर्वतः बालफकः एक सक्षतंत्रार । सीमनमा - की [सं] बातीयनी वाविनीः एक नदी । सौसनसायमी-५ [सं] बावित्री, बावीएकी । सीयन्त्रयी-स्रो सि । इ.मैमासः सावनमासको पॉक्की रात । सीमनस्य-वि+ (सं+) आहारकारक, आनंदरावक । पु तकि प्रस्तानाः विवेदः प्रश्रदीपदा एक वर्गः शाद नार्थिने प्रशेषितकी अंबकिमें फूक देना । सीमनस्यायनी जो [सं॰] मालटी फुलकी ककी । सीमना-सी [सं] पृका रक रिश्वाल । सीमायब-५ [सं] शोमप्रम, दुव। सीमिक-दि [सं•] सीमरत-तंत्री। सीमरस धारा दिना बाबेबाका (यद्य): सीमनदा-संबंधी: चंद्र-संबंधी: चाँद्रावण त्रव करमेशाना । इ. सोमरसका पात्र । र्याधिकी-स्वा (सं) सीमनिष्यीदनका प्रस्का एक बहा। सीमिश्र-पु॰ [सं॰] मेत्री मित्रता दीरती। समित्राके पत्र सहस्रमा शहरना इस मामके दर्व साम । सीमिका॰-सी दे 'समिता। मीमिचि-त [सं] तमित्राके तत्र कदनयः यत्रकाः वक धापमं । मीमियीय-वि (सं०) साधिय-संबंधी । सीमिकिक-तु [तु] एक वदार्थः विश्वजीका एक तरह कारंट (वी)। सीमी-सं वॉस्मी। सीमय्य-५ [नं•] हम्बता हर्धस्थः प्रस्वता । सीमचक-९ [4] होता। सीमधिक-वि सि] दिन्य वाश्वविद्याप्टः शीयन मेवा-मेरेची । प्र दिव्य बागमंत्रत्र व्यक्तिः सिद्धः कवि । सीमेरष-वि [सं] सुमेर वर्गत-संत्री। दु॰ एनापुन्तः

सीमरफ-दि [सं] सुनक्संत्रीः सुनद्धे याता । प्र

साना ।

भी**जा** t सीस्य~वि० सि०] सोम(चंदमा या सोमकता)-संबंधीः सीमके प्रशीसे अस्तः संदर, रमशीक प्रिया सदक, क्रीमला रिसरका स्रोता एकरी। मांगकिक द्वाम (नस्रकापक्षी भादि)। कांतिमानः प्रसन्त । पुरु नुषः त्राह्मणके संवीवनकी स्पाधिः आधारा जीवंबर बक्षा बद्ध एस जो अभी एकके रूपमें काक म इजा हो। जग्निरसा पृथ्वीके नी संबंगिसे एका वास बाहा शीमपायी शामका एक क्रमा शीमयता नारावक. क्रवासकः वय सम्बद्ध वैदिक करिः वार्वी श्रापः वद्यस्तपका शीचेसे पंद्रवर्गे शामा मार्गशीर्थ मासा सेताकीसर्वी संबत्सरः एक पितवर्गः क्योतिबद्धाः साहबाँ यना सीवन्यः संगक्षिरा संद्रज्ञः वाली श्रीकाः पौचर्च सहयं करका संदर जान: एक विश्वाचा: आकाशमें होनेवाला एक तरहका লক্ষন ।—ক্ষমের—ব প্রিক্রিটিয়া থকা লল রিমের্টী पड़के पाँच दिम ऋगदाः राजी, गाँड, तक, बक्त और सन्त साने वे और छठे दिन चवनास करते ने । -गंबा:-शंधी-सी सेवती।-सिरि-प्र• एक प्रबंत ।-सोख-प् क्लरी गीलाई !-धड-प दान ग्रद !-उत्तर-प क्यरका एक प्रकार विसमें कमी कमी बबर को भारत है। -वर्शन-दि देखनेमें मला (-धाल-मी इक्रेप्सा) -नासा(सन्)-वि॰ विसदा नाम भूतनेमें भवता मास्य हो।-प्रभाव-वि सदक स्वमादका।-प्रश्न-वि श्रीवर मुखवाला । - स्व्य - वि " के प्रति अध्या क्यांव करनेवारू ।- वप्प(स)-वि जिमकी भाइति सकी माक्स हो।-बार -बासर-प्र व्यवार।-शिका-की वृत्तविद्येत । -क्यी-वि आनंदरायक सीदर्यवासा । सीम्यता-लो॰ सीम्बरब-पु (मे॰) रिजयताः सन्देशः बडारताः सीदर्य । शीम्या-सी [सं] बुर्गा मोती। जार्था छंदका एक सेदा महेंद्रवाक्षीः वहम्याः महाक्योदिष्मधीः महिवक्कीः शंबार शाकपणीः मासीः सदीः मस्तिकाः प्रविशः स्थकः इस्तका नामका खेंच वारीका समय । सीम्याक्रति-सि (सं॰) संदर मान्यदेवाका । मास्यी-ली (ए॰) पंत्रका, बाँदनी। सीयवस-प्र• [सं] पाएको बहुवाबद, त्यप्राबर्ध। सीर-को चाररा धोध महला। दि मि । सर्व संबंधीः सर्वेसे परपका स्वांविता द्वीपासका सर्वेदी गतिका अनुसरम करनेवालाः देवशान्संबंधीः महिरान्संबंधी । पुरु सर्वेडी पूजा करनेवाका व्यक्ति शनि ग्रहा बोसवॉ क्रक्ट शीर दिना सीर मासा विनयाः संबुद वृक्षा बमा सूव मंदेश वेश्वित मंत्रोंका समुद्रा काहिनी आँगा एक साम 1 ~मरव-द• शुरापाम≼ विव ठिवा दुआ क्य ।--प्रीव-प यक प्राथीन देश !-ज-त ग्रंतुर दृष्टा वनिवाह दे• क्षममे ।-सीर्य-त सीर्वविशेष । -दिम -दिपस-प एक प्रोत्वमे इनरे न्दोरवदस्या समय ।-होजि-स्रो छोटा ताल । - औ-की यक तरस्का वारमध्य नामा । -नक्द-पु॰ रनियासी किया जानवासा एक अनु । -पत-पु व्यंका क्यातक । -परिकर-तु शीर बगर् ।-भूबब-पु है॰ 'गूर्वकोड । --मास-प ध्वंतंत्रंद्रिक अनुपार द्वीनेवाण महाना ।- छोछ-प

सींद-मादर माँद-मा॰ ग्ला बररब, होगे। -प्रिही-को॰ एक नरवकी काली सिद्धी । सीरीशन्य वयाची या जानेवाचा गुरुया चीनीहै योगम मोद सेवा मादि सिटावर बनावा द्वमा बद पुष्टिकारक मोल्क । स्पि-व्युव्दे भीषः १३० शिषा । १ वि ३० লৰি ট र्सीया-वि॰ सुर्गात्त सुवानिश सुधवृशार । श्रु बाल बेण माफ करने, चीमेके काम जानेवाना वक सुर्गवित इष्य समाला; तरी अभीम मिट्टी, भूकवर वाली पहलेथे पठी गाँपा बाब मूनने समय बढ़ी सुगंधा महेंड, सुगंद । मीथिया-दश्यक्षं तुरा शेदित्र। सींघी-पुरुष प्राथीया वास । मॉपुर-दि होंदा : सीपना-स कि•दे• भी पना (दिटी मेरढडे आमुपल इस रूपदा प्रदीग अधिक दोना है)। सींबनिवाण-पुत्राबका गढ गहना । मीहरू-मा है। मी इ र म मामने र मीर्शक-मध्य के हो। सीर्हें +-ध । १० भी ह । मी−मर्व•वद्रः ० वि० लगान भौति। व० इस्तिरः सर्वासी [सं] पार्वती। म्बोडहम्-[५०] मैं बह (१४१) हूं (रसका तारको वह है 🚺 में अधारी बह बेरांत साम्या बानव है जिसमे मद भागा आगा है कि दश बहादेगरमें बद्ध म्लाब है और भी सार्वे लग क्या की है और भी प्रसानी है। शा जनातिक सामान्ते काशास्त्रवे कारण काले (ast) क्षती पहणान मही माताः अव कक्त नावरण हर बातः है भर यह जन्म ही हो माना है) ह सीउद्गमनिम~[मं] देन फाञ्चम् । सोजनार-स कि है 'मीना'। मीजा-प रक मान विराध्ये पविश्वी बहुए महील हीती हे और एम गुरु दार हीत है। स्रोहे-क्लर्य बर्गा । अरु बल्टिय । विशेष वह अपने सतीन जहाँ चानी मध्य दह काम ह मीह -पु हे 'दीव' ह शीवम-मु बामारन तिथे दूर गर्वेद रंगसा देश है यक तरहका बान की नदीके दिस दे रेंगीनी अधीमने भीषा जाना है। शीवमाण्यम दि काव बरम्। स दिव स्थासा हरीवित -वि शार्यक राक्षान्त्रत चीवनुधा। स्रोत्तहरू नि पु चेंचर, कार्रतापूर करवेदाना रण ब्रम् क्षेत्रेराच्या शन्द इरण शहरेराका व सीरामा - ५० रहारी शया ह uitern-4 & 5 a-r 1 effenni-no fu all neu neid er fent neinfat en wer er une ut fent ! मीमां-प्र प्राप्त वरवेगणाया वर्ष विगय हरत देशन व. सारेल क्रीना केन्त्र है।

मीमामे वा सीक्षमेधी मजदूरी । सीक्षा-स्थ (का॰) बक्रमें। सु॰ न्हाता-राज स वैदार होना । सोरमधी~दि० (पा॰) यसवे वा बनानेदे दोस्य : मीप्रता~वि० (का०) वका दुवा शका होत (स्पापुत: भेमी माशिक । पु तुला दुना की बना किन्ने बन्धे आम लग आशी है। [हि] बाजिक व्याहीशीमा क्यर-मैं रेंगा बुजा करहा निमने चन्नकने करते बाद बन भागी है। सोगंब-मी है 'मीर्गर'। सोग॰--पु॰ धोष क्यिके महर्मश बुन्यको स्टब्वेन विष्यप् । सोगिमी॰-वित्र की भोड़ करमेरानी शोफ़[नन (को)। सीगी-विक शोक करनेवाला हो स कि सीवनेने से शाम दाना, प्रशाम दोना । मीच-पु॰ भावनेदी क्रिया रिवारमेका माना दीक कियी विषक्षे भरतेषर कत्मका प्रस्टीक्रमा विगय प्रका कार कीर्र नरा काम कर बावमेका एउटाना । -विकार-यन दियो विषयदा विस्थान सीर । मोचाना-च दि रिकार वर्गाः रिभी रिवरः एत वारियो विदेशमा बदमा ह अन् दिन् छोन्ड एम्स यान विद्या बरमा। शहनामा । सीकामा-स कि दिगीरी भाषनेमें प्राप्त करना निवार करवाना दियाणाता । माप्तास-वि [वं] प्रशुप्तः दोलाः कप्रासद्भा होवश इसा र अर क्यालायर्थक, अपरास्थी सुध्य केने एवं । माज-सी॰ द्वाच श्वमा धीव मायदी साहत्व । mim-g fei] man murete, denti nefenngiftet un ber fe gir fait nefrejent unb लाब पान है। -प्रमा-त बन्त न्यूरे बर्गेन्स बहुनक्षमा । नहुबालीनभाग रभ नंदमे बरांगुना बहुना र -(११) गुराष्ट्र-पुरु करव रसके काराप्त माना करन श्मधी भ्वत्रहा । मीहम-की (या) गरे- केंद्र दिन श्रमण तेन्द्र ने इंतर भारत यात्र नश्चन । न्यारी भी शांधारा । मोल्मी-भे कि दि हानी । शोहिं-दि० (क्षा) धवानेताचा ब्रूपार बेहणात्रवद । माज्ञक-१ हे 'लश'६ ६ मीतिमा - भी (बा) अध्यास्थर, बेरनप एयन । मीतार-विश्वी देश मही सरम रोपा । म नीवे। अनुमा-नावक गोपा, सरवा सन्तर र म. सामारे र सीश-१ रे = १६६० मीतः र PERMIT मोहा-पु वि देशको स्थापनिक विका ह राजेगर किया द्वारा कक्ष क्षारा अधिकाला । अवाहालाई गतिबाक्षपुढे बीमने बनावा कावेशमा ४४ प्रथमका dine millien feit buit nemmit abeat nie कर रखन है। min-fe fei-] men fagt gutt effent abe e मामान्त्रमा हार्नुवा क्षेत्रको प्रकारिक बाहुको । मोदरव-विक प्रद्वा वेरहव वेरह

रे॰ 'सर्वसीक ।-वर्षः-संवासर-प सर्वसंक्राहिके भत्तसार बोनेवाला वर्ष । -संब्रिया - सी -सिखांत-पनोतिवडे सिकांतरांच !-सन्द्र-पुरु स्थ-संबंधी एक !-सेंघप-प्र सर्वत्र । सीर-पुरु वि । देल: पुनरामि । सीरम•-प• दे• बीर्ब : दे॰ भीर है। सीरण--वि० मि । मरण-संबंधी । सीरत-नि [सं] सरव-मंत्रीह केकिकीहारी संस्क । प्र० सरत रतिः मंद्र समीर । सीरस्य-प्रसि•ी रहिसका " में सका। सीरध-प्र• (र्र•) वादा चार । सीरम~(१ (र्स•) सर्गापेत राधनदारः सर्गात वान)से स्तप्य । प्र सुर्गान, लुधनः केसरः प्रमिनाः बीक पामक नेवात्माः मदर्गेशः सामा संबद्धः एक साम ।-वाह्य-प्रश पदम । सीरमञ्जन (ई॰) एक वर्णकृत्त । सौरमित-दि [मं•] गीरमपुक्त, सुनंबयुक्त, सञ्जवार । सीरसी-ना (सं॰) गायः तरिम मामध्ये गायश्ये पत्री । सौरमय-वि [सं•] सुरवि-संबंधी । प्र• सुरवि नावसे धरपद्म वृत्त, वैक्त। बहाओंका होट । सीरमेयक-४० सि 🛚 🖘 सौंद्र । मीरभवी-त्ये [सं•] मी, नावः एक जप्सत । सीरम्य-इ [र्स+] ह्वास, क्षत्रमः अयोक्ताः सौरमें: सदाबरका प्रतिबद्धि क्रवेर ।-व-प्रायक गंधास्थ । सीरम−4ि [सं] सुरष्टा नामक बीभेसे बना हुना। दु भमधीन रसाः शक्का कीता औं। शरसाधी संवान ह सीरसा-ना [सं] पदाना नेर । सीरम्पेन-५ [सं] है 'श्रुरमैन'। 'श्रीरसेम'। सीरसेय-प [मं] साक्तिकेय, स्टंब । सीरसीयद-दि [श] सर्वितः गंबा-संबंध । इ० दे भीर में। सीरस्य - इ. [सं] द्वारत हीनेका मात्र शरसता । सीराज्य-इ [मं] द्वराज्य सच्छा शहात । मीराधी-सी [मं•] यह रागिती ! सीराब-प [मंग] नमकीन छीरका । सीतह-दि॰ [वं] तराह बातकांथी । १० वराह देश बाहियाना । स्था गुजरायका प्रशास नामा शराह देशका निवामी। इंदर मामक गंगाम्या काँसा। यक वर्षे क्ष । - जगर-पु चरत ।~ स्तिहा-स्मे जराह रेशको यह तरहकी मिट्टी भी सुर्गिश्व बीडी हैं, बीडी-र्थात्य । मीराइक-पु॰ [सं॰] तीराहर्के निवासी। पंजनीका यक ntert fie t [H Herricht ! मीराका-मा [मं] प्रवरी। गोपीचंडव । सीराष्ट्रिक-दि [नं•] न्यैतार प्रदेशमें संबद । इ दिया सुरात निवाली। बाँमा व सीराही-सी [शंग] बोदिनंदन । सीराक्षेत्र-वि [सं] शुराष्ट्र-संवीत सराव्या । सीराध-इ [सं] रह रिम्द अस । मोरिय-व [संर] एक प्राचीन अनपर ।

सीहि-प [र्स•] शनिः असन पृष्ठः बाहित्यमपाः रह रमामा बाँग्रेणकी एक बाति। + दे "शोरि" !-।य-वन मीक्स । स्मीविक-विक सि] स्वर्ग-संवेधीः महिराधाः महिरा-संवेध । प॰ शनिः स्वर्गे । सीरी-की चलिएक एकरी महसी। [तं] स्वंतको करकी माताः वैवस्वतीः गाया भातिस्वयस्य । सौरीय-वि [सं] धर्व-संबंधी। य एक वस विस्तर निर्यास विपेका क्षीता है। सीरेप सीरेपफ-५० (सं] हरेवसिय । सीर्य-नि [सं] हर्ष-संबंधी । म स्लंब्स पत्र प्रतिवर्ता दिमाक्यके इस मामके दो जिल्हा एक मगर । -प्रच-प्रकाशका सीर्पेप्रसानिक सि विशेषी प्रवासे संबंध रहानेशका । सीवीं(विन)-प [सं] दिमालया सीर्योदयिक-वि॰ [मं॰] सर्वोदव-संरथी। सीबंध-वि प्रदेश 'सीवर्यक'। सीर्वधी-पण्डे भीत्रवी । भीस सीक्रां-पर राज्योरोंका रक भागा साहन। धीयकारम - ४० वि वे शब्दाच होतेका पान, सर्व्यामा । धीकम्य-इ (वं॰) सम्बद्ध शरीका मार्च सन्धना । शौरियक-५ (सं०) संदेश काम क्रामेशका माहित उदेश शासकरक । सीच-वि॰ मि विश्वने वा चपनी संचारित में बंध रमनै-काकाः स्वर्य-संबंधी । च आरोडाः धामत । धीवर-विश् तिशे खर मंदेवी । सीवर्षक-वि [सं] सुरवेत देश संबंधी वा वहाँ दास बोनेवाका । ए सीक्र नमकः सर्विकासार । सीवर्षेत्र:-को [सं] सहको श्ली। सीक्ष्येम-वि शि] वमदत्तार, क्रांतियाम । सीक्यं-वि वि वे मुक्तंबर क्योंनिवितः यह स्वर्ण क्षरं वशकरा । ५० थक कर्षभर छोना। सोनेकी वाली। भोजा । –यथ – विष् सप्ताने पंद्योगका ! – महिन्नी – को किरोग । -हरपै-प॰ चौरी(Dका सेटर) सीवर्जिक-५० (सं०) ह्यार । दि॰ यक गुरमेंका ना यक मर्थ्यस । सीबर्णिका-को [र्न] यद विशेश कोशा। सीतक्ये-व (de) संदर लावा रंगा गोमा शेनेश भाग स्वरीका श्रुक बधारण । मीबस्य-१ (संग्रेपुस्तीक (ने) । सीवरितक-वि॰ [तं] स्वश्चिनांश्ची आधीर्यातमा । प॰ प्रीवित । माबरकाविक-वि॰ (वे॰) रशाधानी । शीबास-पु॰ [र्न्॰] तुनगोदा रक भेर को सुपंदित होता है। सीकासिकी-भी • [पं •] दे 'शुराभिनी । सीबास्तब-40 (रां) जच्छे स्वायपर निमित्र वा भारत संबंधी विदेशसामें सम्ब (ग्रह) र शीविष् मीविष्म भीविष्णक-पुर [तर] भेगाप रेखंड रनिवालंडी राजवाणी करनेवाला व्यक्ति, अंपुद्धी रे

सोडब्य-वि [सं•] सहम करने बोग्य, क्षम्ब । सोबा(द)-वि [सं॰] सबिना, बभाशीका सक्तिवाकी, सञ्जय ।

सोडी(डिन)-विश् सि । जिसमे सहम किया है। सीणक-वि• काष्ठ रक्तर्यका।

सोतः-पुदे 'सोवा'।

सोता-प भदी नाके, झरने मादिका काम स्थाना शरना। नदी बाले बादिकी भारता मुख मुक्त स्थान (छा)।

सौता(त)-रि मि विचे उत्पन्न करनेवाका ।

सोतिया * - श्री छोडा साठा ।

सोतिहा -- दि॰ बिसमें स्रोत का सोतेका पानी जाता षी (क्य)।

सोदी-सी॰ सोदा गरा। बर्ड्स शासा। * स्वादी नक्षत्र । सोक्ट-वि [सं] प्रश्व रूकाले प्रकः काकसामराः पश्चापनुकः श्रीकामितः।

सोरकप-वि [सं] देवित ।

सोस्ड-वि॰ [सं] रज्युक काकावित, वरसंदित । मोत्कर्प-वि [सं] स्वतं वविश्लोकः वस्तमः।

सीचरपजन्मबद्धार-५ [सं] बाद विवादमें विवेताकी विवित्तसे मिक्रमेवाकी ठडरावी धर्व रक्तम ।

सोकास-विश् [संश] बढि अविकः अविश्वशेकिपूर्णः सरा-कराकर कथा गयाः स्पंत्यासक व्यंव्यपूर्व। पु सञ्च्य हैंसी, अहहासा प्रिय बावका व्यंत्रवावन हरेक-गारवः स्यावस्तुति ।

सोध्संग-वि (सं•) दिख विकला।

सीस्तव-वि॰ [सं] बत्सवदुक्त, प्रजादमराः। मानंदितः। **भ० उत्सव बत्सादपूर्वक ।**

सोरमुक-वि [मं] बस्तुकतापूर्वः विद्यासायुक्तः श्लोका न्दिस् । अ बरसुक्तापूर्वद्र ।

सांस्तेक-वि [चं] बमडी अभिमानी !

सोप्सेच-वि [सं] ऊँचा।

सोध−प झोव सबता। सोदकुंम-१ [सं॰] वितरीके तदेश्यमे किया जामेशला

एक वस्त्र । सोदय-वि॰ [मं] सूर सदिव व्यावदे साथः (जाकाशीव पिकाँके) करवारे संबंध स्थानेवालाः जिल्ला विकासका मारी रहे ।

सोत्र-वि [d] फ़्ता एक बर्राने बस्तव। यु स्ता भाई।

सोबरा सीदरी-सी [सं] समी विश्व ।

सोदरीय-दि [मं] सोदर् सदीवरः सोवर-मंबधी। सीव्य-वि [धं] इन्देशका। वरिपाममुका गानके पुरवस पुष्क । व गामका नेविस कुरक्ष ।

मोर्ग-रि 1 प्र [स] स्वीदर ।

सीचम-वि [4] जो मुद्रह निय तैवार हो। सपेश ! सोचोग-दि [तं] क्योगपुक्त, क्योगग्रीक वपान वरनेवाकाः रातरतादः (रोग) ।

सोद्भग-दि [सं] वदशया दुवा अईनहीला स्वाकुल । ल वेशपूर्व ।

۹.

सीध~प्र॰ (सं॰) एक प्राचीन वातिः + बनुसंवानः अस शीकन स्रोदा शक्त्राक स्रोत सरह सुवार: होश इवास सुवन्तव- आर्मेंद्र समन ममे सब टोहरा इस म शोष मरीर'-सरः किसी व्यक्तिसे कण आदि हेकर स्ते चकानेको किया।

सोधक#-पुरे 'छोपक।

सोधव - पु अनुसंबात करनेकी किया सीध करनेका काम; सुवारने ठीक करनेका काम। लदा करने, जुकामे का काम ।

सोधमाक-स॰ कि अनुसंवान अनुसीवन करनाः वैंबना कोजना। हरि दूर करना गरूदी दुस्त करमा। र्चंडोबन करनाः रूप भारि युकानाः सदा करनाः किसी बस्तुकी संदगी पूर करना सफाई करना। गणना करना विचार देना (जन्मपत्र) जादि); जीववरी विच बात्(पारा सोना बावि)की सन्तर्व करना।

सोयवामा - स कि हुँद्वाना, खोन कराना; अंक करामाः साथ करवामा ।

सोधाना - स कि है 'सोधवाना ।

सोष-पुर्गमुद्धी पढ प्रसिद्ध सहायत्र नहीं की दानापुर के पास क्समें मिलती है श्रीमा क्सोमा। सीना का समासगत रूपः यह बक्रपही । • वि॰ काक्ष ।-किरवा-प दे 'सनकिरवा । ≔कीकर-प नव नवाइस। -केका-प् चंपारेला । -शस्-पु॰ सीनागेस ।-संपा -प पीका छोनेके रंगका चंपा।-सिरीक-को वसंबी: लडी : - करब - सर्व - जिरब ! - की सीनअ्डी, स्वर्तनृतिका। -शही-सी जहीका एव प्रकार की पीका दीता दे, स्वर्णवृश्विका । -पेंडकी-स्त्री एक तरहकी विदिवा । -भद्र -पु॰ शीम नदी । -रास --त पदा हुआ पान । -हारक-पु यक समुदी पृथी ।

सीमबामा=-दि॰ सोनेका सनदशा।

सोबद्द-प [सं] बदसम्।

सोबहुमा-वि स्रोनेचे (ग और चमदका श्वरिम ! सीमहा-प कुरेक्स बाविका एक बंगती पहा सी वासकी

मी मार डाकता है।

सोना-इ शीके रंसकी यह बहुसूख्य वालु को विशेष रूपते नायुक्त कादि बनानेके काम भागी है और भरम करके दबाके क्वमें इस्तेमाक की बाती है। (ला) बरिया और बहुमूक्य वरण श्रेष्ठ व्यक्ति सादिः कक्क सरदका इसः यक बृत्त । - शेरू-व शमका यह भेर । - वाँची-सी भाक यन दीकत। -पासा-पु एक दिवा वृहा। -पेट--त्र सीनेकी छात्र। -यूक्त-पुण्क छुन।-सक्तरी --आकी-सी एक शनिव इच्च बिसमें सोनका हुछ अंग्र होता है और जो औरवरे कामने भी आता है। व्यक्त तरहका रेशमका कोता। ⊷सुन्ती-मु समानः। म् ॰ - बसवा-सोना अधिका परगता। - कमाना-सीमेकी परखवाना। -चदमा-दिनी चीतपर सोमेका भुतन्त्रा दोना । - चनुवाना-दिनी पीत्रपर गोनेदा मुक्तमा वर्षामा । - बहाना-किमी भीत्रपर मानेवा तुनम्या बरना । -सेंबर मिर्श(तक) न देना-र मानी करना नारेहंदा होता । -(मे)का घर मिही हा जाना

पक्षतंत्रका ।

द्दरव माहिता ।

सीक्षां−प्र दे 'धीदर ।

सौस्वर्ष-पु [मं] सुरवरता सुरीतापन।

मैत्रीमारको छिया स एस एकनेशका ।

मीद्वार्थ-दु [मं] मैना दोरशी।

सीर्देश-स्थ इसम् श्रुप्त । श्र सम्मुख समझ सामने ।

सीहार्य-५ [मं] इत्यक्ष सरक्षाः संब्राणः वैश्रीः

निवस पुत्र । - निधि-पुराम । - व्यंत्रक-वि

सीदिरय-९ [सं•] एति संनुष्टिः पूर्णताः मनीदर्गाः

सीदीं-•भ सामने सम्बुधाः 🔭 एक तरहको रेतीः ।

सीवीर-प्र• [सं] क्यरोफक, वेर-क्ट्रॅंबीविशेष को भीसे बमायी बाती है। सिंख मदीके पासका एक प्रदेशा इस प्रदेशके निवासी। इस देशका राजाः सुरमा । -पाण-प्र वाहीक देशका सिवासी (शीकी कॉनी पीनके कारण)। -भक्त-वि सीवोरोंसे बसा द्वमा । -वाजा-अ सीबारनरेश । -सार-ए होतीयम सरमा । सीबीरक-प्र [सं•] सीबोर सामक रथान वा वश्रका निवासी। कार्र अवना सीबोर। चनहवा वेरका पेड़ा जीकी क्रींशी । सीवीरोजन-पुसि सिरमा। सीवीश-को • [सं•] यह तरहकी मुक्तेना (संगीत) । मीवीरास्ड-५ [सं•] बीक्स क्रॅंशी ! सीबीरिका-जी॰ सि॰ो देखा देश। सीवीरी नवी [मं] है 'श्लीमीरा'। श्लीमीरकी राज्युमारी। सीबीमें-प [सं०] वहत वहा बीरताः धीवीर-मरेख । सीबीयाँ-जो [सं] सीशरही राजकुमारी। सीवस्य-प सि निज्ञा मक्ति जाधास्मरिता। सीशस्य – पु. [सं.] एक प्राचीम बनपर । सीशास्य – प्र. [मं•] अच्छो छांति वा तृष्टि ! सीशीय्य-पु [सं] सुक्षीक्ता स्वाचार। सीमबस-प सि ! सकीति क्यातिः दीवकी होतः दी सामः समयाने वश्यः । वि वश्यमी । सीक्रिय-प्र[सं] सीमाग्वः समृद्धिः। सीक्षत—दि सि] समत रचित । पुसन्तका वैश्वय । सीविर~प सि] यह देवरीमः स्वरक्षमः। सीपिये-५ [तं] पोकापन कोप्रकापन। सीपुरून−पु [सं•] एक मूर्वरहिम । सीयब-प [सं॰] बत्तमताः सीदर्वः, सुडीकपनः दक्षता चात्रया तेत्री। प्रधीर वा नत्वकी एक सहा। अलगविश्वासः मारक्का एक अंगः आधिवतः सीसन-सा [पा॰] साबी किमे मोले रंगका यह कुछ को पर्द-प्रारसी कविनामें जवानका कवमान है। सीसनीं-वि सीमनद रंगका काठी किने नीका। प काकी किये नीका रंगा जासमानी रंगका बोडा । सीसराच-त [न] १६ दरहचा मलकीट । सीरियल्य-पु (सं] भरधी खिति या स्थानका दीनाः घडीका शुभ स्थानपर होना । सीरयप-पु [सं] करवाण । सीस्मातिक-वि [सं] स्नाम मंगककारी क्षानेक संबंधन

सौद्धत-वि॰ [सं॰] मित्र-संबंधीः मित्रका । प्र॰ मित्रः एक प्राचीन चारिः प्रेमः मैत्री (समस्पर्मे)ः रूपि (समस्पर्मे)। श्रीक्रतस−प•सिंो प्रयाद मेशो । सीहरूप्य, सीहरा-पर (सं] मेत्री, दोस्ती । स्कंशा(श)-वि [र्स+] क्रानेवाला, छन्नाँन मारनेवाला । स्कंत−त॰ सि विश्वरण, ग्रहमाः माद्य, ध्यंषः पाराः प्रध-कनाः एक्कमेगाकी शीवः कार्शियेमा शिवः शरीरः राजाः नदौतरः भग्नर न्यक्तिः एक नाकरीमः -गस-प्र• राप्तर्वसम्बद्धाः एकः मसिकः सम्राद्धः । –शरु–प क्रियः । -ब्रह्म-पुष्ठ वाक्ष्मद्र। -अमनी-सी प्रवंती। -वित−त विष्यु। -प्रज्ञ-प्र• कोरके किए प्रयुक्त किंद्र नाम । -पुर-पु एक प्रशाना नगर । -प्रशान-पु॰ बढारइ पुराणीमेंसे यह । — माधा(त) – स्रो पुर्गा पार्वती । -विसास्त-प्र• शिव । -प्रधी-सी भाषा पत्री। इस दिन होनेपाका प्रतः कास्त्रिक वा सगहम सरी पत्री । स्वांत्रक -प्र• सिं•ी कृदने बद्यक्षनेवाका व्यक्तिः सैतिकः एक क्या । स्कंदम-प (रं•) धरण, वश्माः रखनम, पानः रेजनः गमना शीचमा रक्तका जनना या उंदक वर्तेपाकर जमाना। स्कदोसक−ड (र्थ•) परा। स्कंतापस्मार-त वि] एक शास्त्राह विसमें मुख्यां स्बंदापस्मारी (विष्)-वि [छं] न्वंदापरमार रीयसे स्कंवित-दि [सं] धरित वहा हुनाः पतितः गमन-श्रीच । रक्वी (दिन)-दि (चं] बरित दीनेवामा पहमेवालाः प्राथित व्यक्ति कृदनेशाला सममेशाला रप्रतिव होनेशका । स्क्रीयरतीर्थं -प्र [र्थ] वन प्राचीन तीर्थ । स्कंबोपनियद्-सा॰ (रा॰) एक क्युनिवर् । स्बंदीक-वि (सं•) सोदल, ठ्या । पु ४४६ । रक्षेत्र-त [में] क्षेत्रा चीरका कपरी माना चेरका समार मीटी बाका विश्वान जारिका कोई विमागः गंबका अध्याकः सेनाका कोई अंग था भाग' सेनाका स्पृद्ध समूद्ध, झंद्र वॉबी बार्नेविवोकै विषयः जीवमके गाँच तत्त्व-कप, वेदमा संद्याः गंस्कार और विद्यान (भी)। विण (भी)। आयो छेरका एक भन्न राजा। जमिनक्के सबसरपर काम जाने बाके राज, करुपूर्व करूरा आदि वपदरणा मुनि । आवादी। मुक्त समझीता। कक पछी। मारवाहक वेली ६ दमुक्त केवारेकी समानता। यह मानासुरः सुद्द मार्गः। -चाप-तु वर्रेगी । -- अ-वि क्यमे छल्ला होनेवामा । प्र• ऐसा वृक्ष-दासकी; बरवृक्ष । -तर-पु नार्रवत का पेड़ । -देश-पु विषक्त मागः तनाः हाशीके वरिके वासका वह मान कही महावत वंडता है। -प्रथ-ब थगर्रटो । -पश्मित्रांच-पु श्रारे स्थेपी(पाची तस्त्री)डा पूर्व कीप या आग्र (श्री)। −पाइ~ प्र पर्वत । -परिव-तु अंतरकक, क्षत्रशी वट्टी । -मनेदा-

क्क भीजर ।

-बना-बनाया घर मिट जाता वनी गृहस्यो विवह जानाः −का पामी - संतिका सुक्रम्मा । -की विविधा-मान बार भारमी। भगीर भारमी । 🗝 दब जामा हाथसे उद्देश गिक्छ जाना~माकदार बाहमीका पंगुक्ते निक्रम मानाः नामगुरका निक्रम भागा । - शिक्षमाः हाथ सामा या व्यतमा-किमी बहुमूरव बरनुका विक्रमाः किसी मानदार कादमीका कानूम काना । —क यहावद वीकना-कार्र मानुकी बीमतकी भी बीज शीकमें बब्दम बीद देशा जैमा सामा श्रीवनेमें दिया जाता है, दम कीमतकी भीत्र भी अधिक बीमतको भीतकी मौतिशीहरता। -के सहस उदाशा-४९७ बनवाम् दावा ।—के मोछ∽ बदुम्भ्य । "में युक्त सराया-स्मीयव बानका दीना । ~में सर्गय हाना-विग्री वस्तु वा व्यक्तिमें वह बद्धारेड साथ दूनरी बच्छारेडे जिल जानेन उन्हों धीया या प्रतिप्राद्धा दर जाना । -में सुद्दाशा-गन्त शीनेमें ग्रहामा मिना देनेसे बसका रंग निराद बाता है। दिभी बन्तु मधरा व्यक्तिका उचनर बेहतर होता। -सं खरे रहमा या होमा~बहुत गहने परने रहना। सोमा-भ कि निहासरन होया, श्रवब करणा न्यना । मास्यागने – इरवद्यः इमेचा । सानार∽५ दे•'तुबार । सोनिजस्द ० - श्रो० दे 'श्रोतका'। सोमित्र≠−वि•ाच के 'शोगित । सीमी == 3 र स्वर्गदार श्रोनार ।

सोम्पर्~रि [मं] शागन । सीप-१०(म) मानुबा म्रापकरभ-वि [भं+] कारश्यत्कः। सीपकार-विश् (मेर) माधनी वा वपहरतीन जुळा (बंबड) किसरी गुर मिल्डा बँग जामरावदा विशे मदायता ही तदी हो। - आधि-भी साबदेशिय क्रमानी दुर्व परीक्षर ३ सोबबार-वि (सं) शिषतापूर्वं बनोव करनेशकः।

भोपल - १ हरिया हमीता। सीवध-विश्वति व दरहार्न । सीपधि-वि [वं] दशबुक, छनी। -प्रश्न-पुरु भाष दिशा सुदारे निर्दार्थ बीव दिग्रं बहाने शीर रेगा । – धाप-ति विस्ते धन-दश देव १६ गया हो। सीवप्रय-ति (ते०) धान्त्रधारम क्या द्वमा (चन्त्र

मीपाद्ध-त [१+] पांत्रासने करता पुरश्रादिन स्थान (बिस्पे रहारदा रूपः विवा मात्रा या)। वरी वरिवीदा

fermt : मोरापि मीराधिक-दि॰ वि । वर्षाण्यक्ति दिनो

बिद्देपता । सुबंद विदेश । मीप म-पुर (सं) निक्रण वो में। बेंड्यापिक बराव (३)। - मूच-न भीतिम तुन्नी शावनी १० वृत्ति --पर्वप्रा-स्पेत क्ष्मिक्षेत्रा विश्वतीया । - व्या - मार्ग-पु क्रोत कोडी -शहति-को है। गीवामयह ह -मामा-बीर पुरस्तार में दिये व و علاية علم (وأو) ويستماعي ع علاية لزي ويرمور إ

की माना । -पर्रपरा-मो॰ है॰ 'होइन-र्राट । सीपानित-विश्व (शृंश) शोपानवस्त । सोपारी-मी॰ दें॰ 'शक्तरी । सीपामय-दि॰ (हं॰) अस्पेरपुद्ध। प्र एक पेटपुटा सोपासम-वि॰ (लं॰) परिष होमानितसः । सोपि॰-मीर्जा गर भा । सीचना~पु॰ देना स्थान जहाँ कीई म हो। दहाँप स्थाप सीजा-ब [बंब] बहारार प्राप्त बार रिग्तरेशका बच्च को बढ़ने वा रिप्मेड बाम बाता है 'बीव । साधियामा-वि० र वर्तियामा । सारा देख परने १९ मी भन्ना सग्नेशसा । सीफ़ी~(4 पु• दें • 'नुग्रे' । सोमन!- व शवर सोना । सोम-पुर्व (मं) नंपर्वत्रदर । रूपोर ग्रीमा । सोमन०-(४, पुर देर 'रोजन') मोमना०-च दि शुंह समग्र, श्रामाद्रत हैंगा भीरना । मीमगीइ॰-वि॰ शोमानुष, शुंरर । मोमर-५० मृतिगृह मी(१ । मीमरि-९० [सं०] एक मेश्रहा परि । सोमोप्रय-५ [थे] दे 'दोमांगर । मोना॰-का॰ हे 'श्रीमा । -बारी-दि॰ धीवपुत्र-श्रीवर म मोमाषमाम-ि है 'होमारमान'। न्त्राभार~वि सभारहार् ! सन् श्रमारके नाच ! मोमित्रण-वि है (प्रीयित्र)। मोरा-५० (सं०) यह सना बिनाहा रहा वश्मे तर्रव दार यात करने हे काम भागर यार हम मग्राहा रता भेरमार नेदवारा भोगवद्या अबुवा सपूरा बादा बना ४६ विम्ही पनिश्यक्त पर्वत पार िनुत्रती क्रेरेश क्रिया प्रश्ना श्रुक्तीश बाजर नेजारा वक्त मध्यक्ष करता स्वर्गः आक्रमा प्रकाशन क्षे हिरणः (स्थापतिषे) प्रश्न (स्थ म); एक मण्डा वक रच्या दिशादित पति। यक भौतिया वहीस्थाय ह वि वसापुष्यः। स्वयम् स्तीरः शेवदी पुषीः। स्वरः धंरदित्य। -क्षर्म(म्) इ शेवार्ग देशपं र -क्कश-पु+ शहरम स्पारेश महा । -क्का-पु+ शक्षणपी कम १ -कोच-वि भेरबा नेना गुरश भरबा र्वेशादिक । पु चान्यांत्र सन्ति । नदास-पुर रोजा प्रमधी रच्छा । दि॰ लेजक्या रम्पूर । न्योनिन्यु॰ Altinel de la ! - Atal-n, ce uti ! -अञ्चीय-४ वद साम १ -अनु-१ केयर्थि । -ब्रायश-पुरु क्षेत्रहे तुस्तहे अपने क व व्रतिकार ! -अपको-भी। वेषके ब्वर के क्यों बन्द में । नग्रवन पुरु चहुबाडा लीच, अकारणवा ३ - छीत्त-की नीवन वर्ग । -धूर्गा-मी जीवन्ता । -संग्रानकी स्रोति बन्दे। - अपूर्व-पु नेपायदे वद न्यदर्शन मापूर्व -अंबर-वृह्द १८ १८ । नार्य-पुर शिलु १ नहान को व वे क्या व -शिव-दुव देव प्रति । -श्विम " क्षीववेश हे न्याहर्त्य मेचान्य प्रवास प्रविदान

वह सरशाह रे नहरूम^{्द्}र शेवान प्रतार संदेशका

'श्रा' हेल' ! -बस-प शारिकरा गणरा बक्का देत । --वंबसा-स्त्री । मधुरिका शाफ --वीज--प बर जैसे क्य किन्छे लांबसे सावा निकल्कर प्रथका क्या भारत कर केरी है। -मणि-पु॰ एक तरहका रक्षा-क्षत्र, तारीज । -साहक-प्र श्रेष्ठ प्रधी । -साध-पु बार मारोमेंस एक (बी॰)। -रस-पु॰ वरवका -बहा-बाह -बाहक-पुर विभेद आहे बहम करमे-बाला (देव बारि) । -वाद्वा-दिश थी अनेपर दीया बाव । -दाखा-सी॰ पेडकी मुख्य दाधा । -डिस (भ)-प अंतफक्का - श्रीग्र-प केता। क्रदेशक-पश्ची । एक तरहका भागी रोप । स्बंधा-को [सं•] शाला, बाबः बता । मध्यास-प्रमि] रहेवदा वह अभूपर । व्यक्तिमान्ति-स्रो [तंशी करेको भाष। मध्यामल-प• सि | दे स्देशस्थि[†]। क्रद्रेपाचार −प सिं•ो राजाका विविधः शाक्रशालीः सेवाः ध्य्यरिवतिः स्थापारियोदः क्षरमेका श्थाम । श्कर्रीक्षण=प [सं•] वृंधेपर मार शेमेबासा वैस । स्कंबी(बिच)-वि र्शन) स्वत्यस्य, विसमें तमा हो। रुक्केंब्रमुरन−वि० [सं०} बिएका सुँद कथपर दी। <u>ज</u>० रक्षेत्रका यक अनुवर । स्क्रेंबोझीबी-भी [ti+] बुबती छंदका यक सेवा स्कंदोपसेय-त सि ो सांति नमाने रहाते किर की कारेबाकी क्य तरहकी संचि। वि की व्यक्ति कीवा काय । स्कंद्य-ति [र्स•] इपिका वर्षिते संग्रह । स्बंध-पु [मं] रांबा देव, सवारा प्रका परमेश्वर । स्क्रीमन-इ [सं] रांमा। अवस्था रेक्षा हक्क-दि [सं] च्लुत थिरा हमा। शरिमा येणा विक्रमा हाक्द्र । -मारा-वि जिल्हा हिरला नष्ट हो गया ही । स्कट्य-वि [तं+] महारा दिया हुन्मा रोमा हुन्मा । स्क्रास-५ सि] सन्दर हक्कोड-वि० [सं•] रक्षर-संशो । तु॰ रक्षेत्रसाम । स्कारहर-५० (सं०) ग्राहमसः निरीदणीका संपः नाकचर । स्कासर-पु [ब्रें | धाव, विचानी। विश्वान परिश्व। -शिय-सी धाववृत्तिः वृतिस्य ! स्क्रीस-पुरः सीर [अंग] बीजनाः मंत्रणाः वदानाः । स्पाल ज्यु [धे] बाहद्याला धारमाकावा स्थाना वह रशाम वर्श शासमिक वा माध्यमिक शिक्षा दी जाती हो। विक्रिष्ट विवादकारा । -शिकर,-मास्टर-प EPPE Breis, t क्ष्मारी-वि स्पूर्णका । स्क्रीडिका-मी (तं) यक नहीं। रक-त [क] एक तरहकी कील मिनमें शिरेनर 'पहियाँ बता होता है बेंब। रकाइम −५ [बं] संपारीशी मैन्यदमः अंगी देशेश एक रहायर रक्ष्यर-५ (वे) वर्षा यह वीसीर स्थान क्रिएके चनुरिक नदास थी।

स्कार्य-पु (सं) बीरता काइमा, विशास स्थास बेगा, सर्वाचमा रहेर्ज, १५०० । स्तक-प्रसिक्तिकारी शिक्स स्तक्षक्षास्य-विश् (र्शश्र) शोक्षतेते मूल क्रामेताकाः १६ कानेवाका । स्वास्त्रम-प्र• सि•ो पतमा भार्यक्षे विश्वतिन होनाः वर-खहानाः वरवराष्ट्राः भक्त बरनाः मध्नीः विषय्या बक्तमादरः चुना शास्त्र आमा शब्दा पर्वतः संबंध वंदिय प्रीला । रफासम्माति-नि [सं] व्यक्तिमाति कममीर दिमानका। स्तिष्ठिता-विक शिकी शतका प्रमा, विशा बना प्रमित्र कहराहाना प्रभा विश्वविक्ता मरिवरा शामा यहा वह काता हुन। मूक करमेवालाः शरितः वयद्य हुमाः रिश्ना रीका प्रमा, वाधितः यथशया ग्रमाः गतः सन्तः सन्तं। त साला माना करसहाधाः मुक्ता विश्वनदाः विश्वनदा बीपा पापा एक करता अबमें इक्त्या सहारा सेवा। हारिन सति ! -गति-दि की चलमें स्वादाता हो। -बीर्य-वि विसनी बीरता काम म दे सनी हो ! स्टोच-प+ भि ी पनको किसापटी करने वा अभीतार क्यिनेका काणका बाक्यानेका दिवस साथ, मीहर ! रहात्रक-मा॰ भि । प्रतिः रोगी । स्टाक-त विशे रिक्रोडा माला सामेडे बारशार्वे लगाबी हार्रे चैंगी। सरकारी कायजर्जे स्थातपर क्रयाचा इका वन सरकारी कामबी हंदी। रसरा गोरान ! -पक्सचीय-त स्टाब्स प्रोवर बारीवरी वेधनेबा ब्रह्मन बाहा रवामा दलाओदी समा । -मोकर-१० दसरीके मिप व्यक्तिशिका काम करनेशामा दकाल । स्टाक-९ [बं] एक दो छपडम अंत्यामें कान करने बाकीका समृद्ध (मैं॰ शुक्त स्त्राफ्र); कीओ अक्रम्सीका समय । -अज्ञसर-प भेगा भेगाचे अफ्रासीका क्समर (स्टास-पु (वं) धीरी पुदान (मार्गनी नानिमें बनानी बानेवासी): रंबारच्या रथामरिशेष र स्टासिम(जोसफ)~५० (१८७- १९५१) सादिवर कमरा राजनेताः बन्धुनिरस्याधीक्यं कार्यममिनिके मदासंत्री १. १९ शे। कसबी शोबियन शरकारके ममग्र शहरत । स्टिबिंग-मा (अ) सिनाई। -महीन-मा• किया धीनेशी मधीम । करीता-च अंशो मात्र । -इंग्रिय-म भारके कीरी यकनेवाका रंजिन । जुरु - भरता-भीध देना कामा-(क्षेत्र कश्मा ३ स्तीवर-व अिंगी भावने भननेवाना छोटा बहाता। स्ट्रॉर-पु• (थं }धात्र विवाली । स्टल-प भि ोतीन या चार धर्योद्ध कुभीनुमा होते। भीको निवारे। स्टब्र-पु (४०) रेनयेना संच १ -सिनवर-पुर रेपपंच का श्वराधारक । स्टेंड-प [में] स्वर्गय राष्ट्र अजनमाधः धानव ग्रन्थि श्यराम्य या कमका बोर्ड ऐमा जांग वा बरेश निमन्ते अवनी विवासमाम और मेत्रियंटन ही देखी राज्य

```
143
बासमारी-की० हे 'सहमारी'।
भाष्ट्रय-पु॰ [सं०] घर, महातः भाषार, अविद्वार्ग आध्य-
 स्थान संदर्भ, संबंध । ७० क्यपर्यतः । -विज्ञास-प्र॰
 मदकारका आबार (बी॰)।
भासकं-वि [सं०] सकदं-संवंबी; पागल कुत्तेका (विव) 1
भासवस्य-पु॰ [सं ] विरक्षताः स्वाददीनताः मदापनः
  अस्मता ।
भाक्षवाक-पु [र्श•] घाकाः मध ।
 शास्त्र-वि [सं०] शास्ती १ व पु बाकरव ।
 माक्सी(सिन्)-वि (सं•) नाकस्य-दोश्<u>य</u>कः, सुरह
  कार्डिक र
 बाळस्य-पु [सं∗] बाम करनेकी अनिश्वा, सस्ती,
  दिलाई । वि सर्व काहिक !
 आस्त्रार्च्य ताक्त, ताक्ताः पत्रावाः कवि गोकाः ताकाः
   १रा । प्र्वा की बारा उपस्तका सावन । वि बहुत
   कॅमाः बहिया श्रेष्ठ । - इरखेका - बहुत बहिया, उत्तम ।
  शासाद्या-सौ (फा॰) मक, गंदगी। साँतों भादिमें
   विपन्धे हुई गरमी दोष पूत आहें बादि ।
  माछात-प [रो ] भंगाराः बक्तां हुरै रूउने हुन ।
   -बह-पु अक्ते श्रूप छक्को श्रुमानेसे बननेवाका संबक।
  आसात-पु॰ [स॰] भीवारः ध्यक्तम ('काला'का वडु०) 1
   – (ते) तंत−प्र क्यसममोः मानुष ।
  श्राकान-प [मं•] हाथी वीवनंका सेमा भूँटा वा रस्ताः
   वही जंबीर: वॉपना !
  कासाप-पु॰ [र्ष ] कमनः शतचीत संगीतके सावी स्वयः
   स्वरीक्य भाषन गानेक्य तान जैसा एक अंग विसर्ने रवर
    तामको तरह इत म दोकर विवेदित दीते हैं। प्रदन्त पाठ
    (वै )।—चारी—सो॰ स्वरान्ध्रे साथमा।
   मासापस-वि सि । गानेवालाः वातथीत करमेवाला ।
   भास्तपम-प्र• [धं ] बादबीत करनाः आकाप केताः
    रमस्तिवायन ।
   भारतपत्रा-स फि॰ शास्त्रप सेना। गाना।
   भारतिय-वि [मं ] बहा हुआः गावा हुआ ।
   भाषापित्री−सी [सं•] हुमकी, बाँसुरी बादि।
   भाषापी(पित)-वि॰ सि । बातबीत कानेवालाः
    यानेवाचा ।
   भाषायु, बालायू-पु॰ [सं॰] तुंबा कीदा, बहातु ।
   मासारासी-वि निर्देश, वेपिका वर्षो किसी वातकी पर
     बाइ न 🕅 ।
   भारतावर्त-पु (सं }क्षपदेशा पंदा।
   षाम्यस्य-त [सं ] मगर ।
    आसिंग-पु [मं ] एक तरहका बीका आसिंगन ।
    भास्त्रिमन~पु [मं ] क्रिप्शनाः ग<sup>क्षे</sup> क्रमानाः अंकमैं भर
     सेना।
    मानियमा≠-स+ क्रि. २२ क्रमाना, वेंटना ।
    भासितित-वि [ti ] भी क्रिपटावा गरेकतावा गवा हो।
    मासिगी(गिव)-वि॰ [मं॰] मादिगन वर्तनासा।
     उ एक वरहका बहुत छोटा होना।
    वासिम्म∽वि [मं] क्रालिगन करने वोग्य । पु॰ क्क
     हरत्या भूरत ।
```

```
बार्किकर्~पु [सं ] वहा पदाः संश्वर ।
बाहिंद् साहिद्छ-पु॰ [सं॰] दे॰ 'अस्तिः'।
आर्कियम~प [सं०] (कर्षा,वीबार आदि) सोपना,पोतनाः
 किपार्रं, पुवार्षः सफेदाँ ।
भाक्ति-वि [ei ] निकम्मा सुरतः निरर्येकः रेमानदार ।
  पु० विच्छा भ्रमर । सी॰ दे 'भाडी' ।
आस्त्रिकास-वि• [सं०] किसित, वितित, संदित !
साक्षिप्त-वि॰ [सं०] किया द्वसा, प्रता द्वसा ।
आस्टिस-वि॰ [अ ] बाननेवासा विद्वान् पंटित ।
भारती—स्वी सिं∘ीससी सदेकी पंक्ति रेखाः गाँभः प्रशः
  सेहा बंदा । वि॰ [वि] शाकके रंगका; [बा०] केंचा; बढ़ा ।
  ~क्षामदाम~वि॰ उँजे परामेशा, कुशीन। −क्षमादा,
  -बाह-वि• धेवे पर, महिवाका। -क्रफ्र-वि वहे
  हीलम्बानाः ज्याराखनः -विमास-विश्वंचे दिमाग-
  वाका नुविमान्। -शास-वि वदी शानवासा, शान
  दार, गीरबमब ।
 आसीड-वि•[र्स ] चाटा द्रमाः मस्ति । प्राप्त भकाने-
  के समयका एक विधेष भवन्यास ।
 कासीहरू-पु [सं ] व्हचेको सहस्र-कृत्।
 भाकीन-वि [र्स॰] शार्किगितः विपरा हुमा पिपका
  🚛 । पु संपर्कः दीना सीसा ।
 भासीनक−पु॰ [वं ] दे॰ 'शाकीस'।
 भारतंत्रम−प्र्तिश्री भीरनाः भीरक्त द्ववते-द्ववते कृत्मा ।
 आर्सुटस-पु॰ (तं॰) स्टना, नकात् होन हेना, नाम्बरग
 भासु-पु० (र्व०) सस्दा कावनूसः वेदा एक सूक्षः एक
 बाह्यक्र−पु [र्स•] धेपनागः बाब्द् इंद्र' यद तरहत्रा आर्थ-
  भारतुळ-१६० [सं ] ग्रॉफ्ता या दिनता हुआ, अरिवर ।
 मासुरिक्त∽वि० [सं] हुष्य ।
  वास्ट्-पुरे (पं॰) एक प्रसिद्ध क्रियाकः। -व्य-पु हे
   'वस भारत'।
 भारत्या-५० एक पेर वा उसका दक्ष।
 भारत्त-वि॰ (र्थ•) काटकर भक्ष्म दिवा प्रमा t
 भाख्याख्-पुण्य वृद्ध विसद्य प्रज नाम्बेटे समाम
   शका है।
  भास्बुसारी−९ बाक्षेका सुरीवा हुना ५.७ ।
  आखेल-पु [सं•] सिकाबर, किसा<sup>द</sup>, पता केस सहरीर ।
  आखेक्स-पु॰ [सं ] कितामाः उसवीर बनाना, विज्ञासन ।
   —विद्या∽सी नित्रकृष्ण तस्त्री(कृत्री)।
  भाकेलगी-स्री [गं॰] कृषो अञ्च वॅसिन ।
  आहेक्य-वि [ते ] किएने चितित करने दीग्य ! पुरु
   रेशः वित्र । -वेबसा-पुरु विश्वादिन देवता । -पुरुष-
   पु॰ ममुध्यका चित्र । - विद्या-ग्री चित्रकारी । -होप-
   वि विस्ता निवमात्र संसारमें रह गवादा मृतः।
   ~समर्पित~ि विविष्ठ ।
  माक्षेप्र-९ [र्थ ] मेप उपन माहिः प्रतरहर ।
  आद्धेपम-तु [मं] सेप करनाः प्रश्नार करमाः प्रम
   दम, लेव।
```

भासाक-पुर (लेक) प्रदाश, बदाला वर्षास दक्षिमा-प्रणेमाः अप्याय । -कर-वि० प्रकाश धरमकता । -पम्-मार्ग-वर्श्वरूपः। भारतेहन-पु॰ [मं] दगना, दर्शन दिशार हरना । भासाकमीय-वि [मं•] देराने बीग्य t

भारतक्ति⊸वि॰ [सं॰] वैदा द्रशा प्रशक्ति । सासीसक-वि [यु.) Pमनवाता समीस्ट ! भारतेचन-पु॰ आहोधना~सा॰ (सं॰) देमनाः गुग

दोपस विवयम, परम शर्माछ। 1

भारतेचनीयः आसीच्य-विक सिकी आसावना बरस मासीचित-वि॰ सि॰ विस्ते आसीवजा को गवी हो:

विवेचित्र । आसाइम-प मिश्री सथना, विनाना कर्मन ग्रामशीन क्ष्यानीष्ट दशना ।

भारतोइना•∽म• कि सथनाः उद्यानाः काता ! भारगदित-दि+ [गुं] अस्ति (इतीरा प्रशास विवारित ! भारतील-पि॰ (tie) बोहा दिनता हुआ देशबंपका शर्राहीत ।

भाकोनित−ि• सि ी (स्थाया द्वभा सम्प । श्रारहा~प प्रशासको समग्राठीन स्वाकानरेश परमहिः देवक रोतापति क। अपने समयके घटन ग्रांटा और शेर भे। वह धीरमाबा जिसमें भारता आर उन्द्र अधून करण के कार्योका वर्णन हा सन्त बीरगासका रोहः चीरगंदः शिस्तर्मे १६ । १५ मानार्थे कोती है। वहस ≓वा वर्णमा महामी । -का पँचारा-निर्वंक संवा कांग । अरु -

ग्रामा-भाषशेती समाना (१) । आवंत-प भिन्ने अवंति-वरेश ।

भावताक, मार्वतिक-दि० [शं०] वर्वतीमे संदेप रखने-

नामा । भावेश्य-दि शिक्षे अवेदीकाः अनिविध कलका <u>प</u> भवंतीका राजा या निवासी। प्रीत जावराखे संवान ।

धार्थवन-१० [संब] समस्वार, प्रमाम । आवन-सी भागा

भागत भाषशां-५+ १६ गांश शांशा । शाबरमाड-म• कि औरना धीनाना १ व॰ इंडरू वपरुषुष्ठाः संघन ।

भावम-त , आपनिश-मी भाग्यन । भावनेय-१० [मेर] श्वान पुष भंगत १ आव्यम-पु॰ [मं] बेह्या नीमारी स्थिरमा शर्रे शिरका

मंदमा धुमताः बाद, धं श १ शास-पारत-भी श्रामत-स्वार, माजिएनान र

काच भाष-५ कार-मंगड ।

आवप-पु॰ [र्थ+] आलाः वानेवन्ता ह शाबरब-रि॰ (र्ग॰) असरण शाने दिशानेवणा । दु॰

परसा १ भाषाम-५ [तं] एइतः िपाना। पेरसा एकम वैध्या करात वकाका सामा बकारणीतारी। शाला कोता

-पय-४० मुक्तादे रहा दे प्रकार बनारा हुमा सामम निगान प्रमान अपन दाम जो रहता है कथा रेन्द्रान्टि है श्री अधान।

कामरिका-सी॰ वि ी छोडी स्कान । बावरित-पि॰ दे॰ 'बावत' i

वावरिताः भाषरीता(म)-रि॰[सं॰] भारद बर्नेराका बावजड-वि॰ मि॰ वाहर करनेवाला प्रमुख करनेवाला भाषतीन-प्रश्र विशे आहेत करना द्वर करना पाना करमाः शकासाः देशा ।

भावर्जना-सी सि दि॰ 'जावर्रम' ।

नायजिल-विक [मं] सदावा दुआ। वेदेश हुजा; बहुता बनाः परापतः, भीवा दिखाना दुशाः परिवक्तः। प चारमान्य यह विशेष रिचरित्र ।

बायस-व॰ (सं॰) प्रभाव बान्सर: भेंदर: (शांदर) प्रेस्त वनी आपारी कावनरी सादिक पाना एक मैपारिक भादे सप्तका ज्वारदा थेला हुआ हिम्मा: बारका विव लमा निगी भागओं गारचार धामना विभारमा विभा मेनारः मंत्रय । -मान-४० सः उस्र ।

आवर्षेड-वि॰ [६॰] पृथने चारर शानेवाना। पुर क्ट विवेता बीहा। यह जेशांचिता चीहे करावा पता हता मामा र्थनरा भरती थरतरा जिल्ला पोस्के पांच प्रचारके

क्रिकोंक्रिये एक ह अन्तर्भक्षी नशीव विशे विश्वारिका मामक सन्तर ।

कालकत-प्रदिशी धमनाः चढ्र सानाः ग्रंबर आगीः दना (बानु) क्यामा, दिवलामा। हुइरामा, फिरफिर करता हीएटर हराहे बाद परायोधे छावा स्टीवर्ड र हे पर्वती और पहरी लगती हैं) ।-मणि-प्र राशपर्न वर्ति। कावर्तनी-सीव [मेव] बानु गनामारे मुस्स्मा मरियाः

भागप **रहा**ते (भावर्तित-वि॰ वि॰ दुसाबा हुमा। स्था हुमा।

आर्चातमी~र्गा (गं•) भेरत अत्र श्री । आयर्नी(विंद्)-वि॰ (वि॰) गूमने चहर सारिवागा श्लादाला । प्र वह वाहा जिलके प्ररीरवर भैगरियां ही । भावनं श्रावशी-दि पुर्वतं श्रावतं श्रावतं ।

आवर् - ९ (में) वर्ग शृक्ष आवर्डित-दि [में] प्रमृतित परपारित ।

बाबहि बायमा-मो (व] पंत मेंगी विजनिना 2/9711

धात्रक्ति~(६ (मे॰) दुछ पुरा दुनी । वावदिवस-रि [वंग] पीरे-पीरे दिवना द्वा । आसप्त्य-तुक शि विजन्दरकताः अनिवादे वार्व वा प्रश्न । आपायक-रि [तर] बगते सरान्धाति।

अ(पद्मवस्ता-मी॰ [मं] प्रवस्त्र । भावायकीय-विश्व प्रश्री।

भावमति-स्टेक [ते] राविदायमें नियान देशीया स्थान शर्मि १

कासमय-पुरु [में] पर। ध्रेंग छात्री वा राध्यं हे हर नेका प्रवास जाममा वह प्रवृत्त

भावमध्य-ति (तंत्र) पानै रिका १ द वहने स्वराप ए व अर्थापेनेन एड, कीर्वश्रादा शर्ववसाय रिकार बालहा स्वयन्त्रभाः

आस्यान-रि वर्त किस्टिशीयान्द्रवर्द्धनार्थायाः

1488 (ब्रिटिस मारतका); वड़ी वर्गीदारी ! स्तेसन-प [सं] रेलगाविगोंके ठवरनेका स्थान वर्षों बात्री बतरत और ऋते हैं। रिक्री मोरर आदि सवा-रियंषि ठइरमेका स्थाम। कार्वविश्वेषके किए कोर्गोकी निविधः और निवासका स्थान (बैसे-पुक्तिस स्टेशन) ! -मास्टर-प्रदेखने स्टेशनका प्रवान नविकारी । स्टैंडर-५० [बं] मिदा संप्रतात्का मिनत माम । व बाददीः अध्वाके नियव मानका । र्स्टेंडिंग∽वि [शे] स्वायी । –कसिटी−सी० दे० स्थाबी समिति'। -ब्बॅसिस-प सरकारकी औरसे बकारे जानेवाके मुद्रदूरोगें पेडवीलेड नगरककी सदायता देनेवाला पेडवोदेट । -मेटर-पु द्योव दिया हुना वह क्रेस्ट कादि जो एक बार छाप केनेके बाद समिष्यमें फिर कमी प्रावनेके किए रोक रहा। गवा हो। स्टब्यू-पु [सं] मृ6ि प्रतिमा। स्टोड्क-पु• (शं•) दिपदिरागी व्यक्तिः यूनायका यक दार्द्धनिक संप्रदाय । स्ट्राह्म् - प्र [मं] ध्वताङ । स्टीट-की [बं] छहरके बंदरकी छोगे सक्स । स्ट्रेट-पु [अ] वक्कमसम्बद्धाः स्तेष्ट-प्र [सं•] एक प्राचीन वाजा जी जमका महा हजा कोता था। स्तंब-प्र• [सं] धुरम अकांब-रहित पीपा-हिटी सारिः तुनादिका गुच्छा द्वारसुटा शानी वॉनमेका भूँता अना स्तंमा बहता स्तंमा पर्वता हुछ । नकरिनवि ग्रुक्ता दमानेवासा। द्राक्षका पान। ∽कार−वि ग्रुप्टा बनानेबाका : -धम-प्र वासका गुच्छ वट करनेके काम जानेशासा एक भौजार-प्रारण या कुरास्त्र हैंसिया। विची गाम पद्धत्र करनेकी धीकरो । ~ भारत~प्र गास या नाव काटना। ~धन~नि वास भादिका ग्रम्मा मह करनेशका। पु वे स्तेश्वन । −q(ह)-स्त्री यक्ष प्रधी सामक्रित । -यस (स्)-प्र वास निकासनेपर किया आनेपाला एक पार्थिक हुएए । -इमन-पु -इमनी-को दे 'रर्गवयन'। स्तंबक-प्र [सं] गुन्छाः नवधिकमा बामक पीपा । स्तवी(विम्)-वि• [सं] गुण्डेवार । वु• सुरवा : स्तंबेरम-प् सिंशे दानी । म्त्रवेरमास्य-प्र [मं] यह जसुर, मजसूर । स्तेम-१ [सं] मविद्यानकाः संदादीननाः अवसा (ओ वा धनुमृतिका दमना मरनाः एक ऋषि। - कर-वि

यक सारियक माथ दें): रोक, वाबाः धमन, निर्वत्रणः योगाः पेरका समाः सद्दारा टेका मंत्रवन्तमे किसी शास्त्र नाथा बालबेवाना रीकनेवाकाः अवता सानेवाका । प्र भेरा बद्दी। यध्य र नकारण-पु वावाया कारण र -सीय~पु एक माधीन सीवी। -पुक्रा-न्वी० विदाह भारिके अवगरवर मंद्रपके शर्मभीकी पूजा। ~शिश-पु पद कृषि । - पूचि - भी बोगका एक अंग जिसमें मान निरोध दिया जाता है। स्रोमक-दि [तं] रीक्नेवामा कृष्य करनेवाचा वीर्य रीरनेराधा । दुः संमाः शिवका एक कनुषर ।

स्टेशने−स्तम स्तंतकी-की [सं] यह देगी। स्तंसकी(किन्)-पु [सं] चर्ममंदिव एक प्राचीम वासा । स्रोधन-वि [सं•] वड़ वश देनेवाला रोकनेवाकाः कुरज करनेवास्ता पुकामदेवका एक वाषा स्टीमका कम वेनाः सहारा वेना, मजबूत करनाः कहा पदनाः अशेकरणः कवा करनेका सामना (मंत्रादिके द्वारा) किसी-की शक्ति इंडिश करना रक्त गीर्थ मारिका साम मारि रोक्या। बीर्य रोक्येबाकी ववा: श्रोत करमा । स्त्रीमणी~सी [सं] यक तरहका मादृः साँसनीय-विश् [रांश] रोचे या या किये जाने योग्या नारक या रोजक औपन प्रमुक्त करने नीम्य । स्तंभि-दु [सं] सगर। स्तंशिका-की [सं•] छोटा स्तंमः इसी भाविका पाया । स्तंतिस-वि [सं] रिशर किया हुमा, यह किया हुमा। बड़ीभूत, राज्या वड़ीहरा रोका हुमा: दराया हुमा। मरा द्वला । —बाध्यकृत्ति—वि अस्पात रोकनेवासा । स्त्रीमताञ्च-वि (तं] विश्वतं भाँगुभाँदा वहना रोक शिवादी। सर्वभिनी – की [सं] एक उल्ल श्रिति। स्तंभी(मिन)-वि [र्स•] द्रांभीते प्रका सदारा दैनेनाकाः वर्मक्रमे कुला हुआ। रीकनेवरका रीवक । यु. समुद्र । स्तंभोरकीर्ण-वि॰ [सं] संशोमें कीएकर बनाया हुआ (चित्र, परिमा भारि)। स्त्रमध-(व [सं] दे 'रसमंचव'। स्तर्भवय-वि [सं] कान-पान करनेवाका। ५ शिहा बछका । [सी 'स्तर्भववा , 'स्तर्भववी ।] क्राम−पु [सं] क्षित्रोका अंगविद्येष 5 का मादा पहाँका बना चुमुक, देवनी। स्तम बैस नामके कपरको छोरी म्द्री।-बद्धसा-कुंस-तु इत्हर वेशा स्तन।-इहिस-पु॰ कालका वक रोग, वनेकी । 🗕 हुँ द – पु॰ यह प्राचीन तीर्थ। ∼कुद्रसक्र−पुक्षीका कृष । −कोडि−क्षी पुन्त । −कोरक-पुरको वैहा सन । −प्रह~पु रतनपान । -पूजुक-तु क्षेपमी ! -सड-पु॰ रतनका वागे मिक्का हुआ मापा -स्याग-पु॰ रतनपानका स्थाग ! –शाधी--स्त्री॰ स्त्रजपान करानेवाधी । –हेपी-(चिन्)-वि रशन स्वीकार स करमेवाना। -प-दिक रतम पा बरनेशनाः षु दुवर्नुदावस्याः ∽पतन~ श्रामका क्षेत्रा पश्ना सरकता । -पाता(तृ)-वि रणनव ।--पाश्र-पुरु व्यक्तरा वृत्र पीमा ।--पायक्र--वि देश रतमव । -पायी(यिन्)-वि दे स्तमप । ~पोषिक−षु पक्र प्राप्तेन बनपद्र । – दासः – पु रह यमक्र । - मर-वु पीन क्योक्स की प्रति रहनींबाला पुरुष । --सथ-पु यक तरहका रविश्य । --संबक्त-पु स्तमका परा । -मध्य-जुनुका रनगोदे बीक्क्षो जगह ! - मुख-पु दवनी ! - सून्य-पु रतनदा अरहा भाग । - योधिक, - योविक - 3 दे 'स्तम श्रीहर । -रोग-प स्वन-प्रंभी रोग । -राहिल-प स्वबद कपरका यक विदेश साय । ~किन्नपि~सो अने⊬ो। -एंत-पु च्युव देवनी । -बंदम्-पु स्तुनदा

अवैद संबंध रखनेवाका । स्तदा, स्तदि, स्तदी-भी [सं•] बृदव !-क्षीर-प्र• मदक्का दथ । ∸चीख – पु॰ मृदक्का नीज । स्त्रेय−दि स्त्री तदकाने वोस्त्र । स्त्रेड−प सि•ी प्रेस, सहस्त्रतः क्षीमकताः व्यासताः तेक, मकाई बादि चित्रने परार्थ। वसा मेवा बादि धारीरके रसवाके प्रवार्थः आर्थताः एक राग !-कर-प्र• शाब वृद्ध । -- कर्रा (मुँ)-- वि॰ प्रेम, ध्वार करनेवाका । -कंग -बद-५० तेव रकनेका गाँका आहे ।-केसरी-(रिम)-प परंद ।-राम-पु क्षिक :-गणित-वि प्रेसविधिष्ट ।-गुद्य-वि॰ प्रेसके कारण विसका दिल मारी हो।--हो--हो यह यीका।--च्छेत-प प्रेममें अंतर गड़मा।∽द्विद्(प)−वि तेल म पसंदक्रमे-वाला । -पक्क-विक तेकम तका प्रका ।-पाच-प प्रेमका पात्र, प्यारा व्यक्तिः तेकका नरतन ।-पान-प इवाके क्यमें हेक पोना।~दिंडीलक−पु नेनफ्रणा -पर-प किका-प्रवृत्ति-की मेना-प्रसर-प्रकार-पु• प्रेमका प्रवाह ।-प्रिय~पु शेवक। सि मिसे तेक अधिक प्रिय हो ।--एक-पु॰ तिक । --वीध-पु प्रेमका वंबन ।- बद्धा-नि प्रेमस्पर्म वेंबा इका। -वीज-प विरीवी ।~मंश-व ग्रेमका भंग हो। बाना।-मांड-पु तेल रखनेका वरतन ।-शू-पु इक्रेप्सा ।- अग्रि-सी : तेक. यसा आदि देनेवाके पदार्थः में मन्द्री बरहु । - मुख्य - प्र तेल । - रंग - प्र तिक । −रसम−प सुरा⊶रेकस−प मंद्रमा ।−वर−प वसा।-वर्ति-सी पीशेंका एक रीम।-वरित-सी वेक्का प्रतिमा । – विद्यान प्रतिकार । – विमर्वित – वि बिसके सरारमें देख नका गवा थे। - व्यक्ति - जी मैम मक्द करना ।-संसाय-५० प्रेमालाव ।-संस्कृत-वि केच्या पीमें बनाया द्वामा । – सार −प्रामा । विश निसन्ता सुरूप भंग तंछ हो । स्तेहक-वि [सं•] मैम क्रतिवाका प्रेमी: बवाहा। स्तेइम-प्र [सं] तैकपर्यना तैकप्रक होना। बन्दना विकनाहरः शरेपमाः मक्यमः प्रेमाविक श्रीमाः शिकः। विक वैकमर्रम करमेशकाः विक्रमापम कानेशकाः सह करते वासा । समेडनीय-वि सिं हे तेल कवाने बीस्वा ग्रेस बरने स्नेहक-वि [सं] प्रेमपूर्णः क्षीमकट्टन्य । रनेहबती-थी [मं] मेरा मामक औष्षि। स्मेडोक्प-इ [में] प्रेमका पिटा स्मेदा(इन)-पु । [र्न] मित्रा बोहमा। यक्ष रीम । स्मेहाकुल-वि [मं] प्रेमसे विश्वल । स्नेदाक्ट∽पु॰ [मं] प्रमदा माथ वा ललुकृति । स्मेदाक-वि [मै] तैनतिहा विकाश द्वारा द्वारा स्तेदारा स्तेदाराय-पु॰ [मं] शोकः। स्मेहित-वि [र्तन] क्रिमने क्रेम दिवा गया की दवाना मेमी। प्यार दिवा हुमा। तल क्रमाया हुना। पु विश्व पिय स्वक्ति। रनेदी(दिव)-दि [लं] प्रेमयुका तैनयुक्त । वु भित्रा

तेक मकनेवाकाः विश्वकार । स्त्रेड-प्र सि॰ो यक शरकका रीमः चंद्रमा १ स्नेहीत्तम-पु॰ [सं] तिकका तेल । स्नेशा-वि सिंशी स्तेष प्रेम करने बोस्या टेक बगाने. किमाने योग्य । स्केरप्य−पु॰ [सं॰] विकलायन, तैलसुस्रताः कीमकरााः भनराविता । स्मैडिक−वि+ सि•ी विकलाः रीयमदार । र्पांज−तु [लं∘] पद्भवसे क्षेदों और रेखोंबाला यक सुका यम पदार्व की पानी भ्रष्टण कर हेता और दवानेकर निकाक देवा है। मुखानादक । स्पंद-द [सं] कंपनः प्रस्तुरमः, प्रश्वकमाः पति । स्पदन−तु [ग्रं॰] कंपनः दिक्ताः विस्प्रतन प्रवसनाः वर्धक्रमें बीवका स्ट्ररणा तीज गति। एक वृक्ष । रुपंतिल−नि सिं•ोक्यमान कॉपता बकाः गतिशोक किया धुना। गया धुना । पुरु रर्परमः, भूतकतः संदन । स्पंतिनी-की [सं] शतुमती सी: बराबर वन देवे-वाकी गाव । स्पंती(विक)-वि (एं॰) श्रंपन खुरमञ्जूक, हिसने वा क्रॉपनेवाका । र्व्यक्रोकिका-सी॰ [सं॰] सुक्ते इय माने पीछे जानेकी किया (बैसे शकेपर) । स्पर−प्र• [सं] एक साम । स्परिता(त)-नि (तं+) इट, दुःख दैनेशना (सुद्र, रीमारि) । स्तर्श्व, स्तर्थ - वि [सं] श्रोड करनेवाकाः ईप्यां करने-वाका व स्वर्द्धन स्वर्धन-५ [तं•] शोश रैप्यां। स्पर्वेषीय स्पर्वेगीय-वि (सं•) स्पर्ध करने योग्का श्रमिक्यपीय । स्पर्का स्पर्धा-सी॰ सि] दीहर प्रतियोगिताः इंच्याः दीसका अभिकासाः को बरावरीः पुनीतो । स्पर्शी (दिन्), स्पर्शी (पिन्)-वि॰ [मं] होए, प्रक्ति-बीरिता धरमेवाकाः रंभ्योतः वर्मती । स्पर्श~प्र• [सं•] स्वता, शंतर्र, संपर्व, ह्यापना; संदर्ध बाना रापाका विश्वा छुमेरी शोनेवाका द्वान (हाप आदिका)। प्रमाना रीगा 'ब्'ले 'म् तकते वर्गा दाना सेंटा वायः जानादाः एकः रशित्रशः वायमः प्रवयनी शायकः भारंग : -कोण-पु परिविधे विसी विद्वार किसी शीधी रेखाका संवर्त होनेसे वननेवाका कीय । - क्रिष्ट-वि॰ विसन्धा रपर्धे कष्टरायक हो । - श्रम-दि विसन्धा रवर्श किया का सके, रवर्शिय : - अ-वि+ स्वर्शि तरपत्र होनेवाचा I--सभ्य-वि दे १५र्शन I--सम्मान -पु॰ वह तथ्य विश्वका स्वरांति वान वी। -दिशा-को महत्त्रमें सावादे ११रोदी दिसा । -हेप-पु रवरी-से धीम मनावित्र होनेका गुण ! -मणि-त बारस परभर १-- भ्यासव-पु भीमा ६ -- रमिक-वि कामुक् । -रेम्बा-मी परिविधे हिनी विद्वे पूनेवाची रखा। -समा-भी श्रमातु । -श्रमा-भी एक शेद देशे । -वर्ग-त क् श 'म् तकके नर्ग !- विद्वार-प् • स्विष्ट-

विशेषतामें के कारण जियेंके चार भेर ये है-परिसी, वित्रियो, इंग्सिमी, इरिवनी)। परनी। मादा प्रश्ना सफेर वाँदी, दीमका धिर्दशुः एक कृतः। -कृत्वा-पु॰ भीत-संबंध मेथुना -कास-वि स्तीका दवसुका काया संतासका विश्वारो । पुरुषे या पालीकी इच्छा । -कार्य-पु॰ सीक्षी उद्देश -किसब-पु॰ सिवीक्षी वहसाने वा छलनेवाका आदमी। -कृत-पु॰ बीन संबंध मेहन । विकासिक हिमा हमा। –हुनुस–पु॰ रब साव । –कोश-पु शंबर कटार । –क्षीर-पु० भौरवका श्वः माताका दृशः -क्षेत्र∽यु नारी अर्थात् समसंस्यक (दूसरी, भीशी बादि) राधियाँ । -रा-विश र्छभीग करनेवाला परस्रीयामी। -वामम-पु रतिकिया । "-राबी-सी॰ बुधार गाव ! -गुरु-सी॰ बीखा वा मंत्र देनेवाली की या प्रदीविकाली ! -शह-पु दे सीधेत । -प्राष्ट्री (हिम्)-वि सीका संर द्धक रमनेशका (म्बर्दार) । −धासकः –रम –वि+ दिसी स्री वा परमोक्षी इत्या करमेशाला । ज्योप-पु॰ शक्या सन्ता प्रत्यूव । - चंचछ - वि क्षिपोके पीछे अवगैवाका संबद्ध । -चरिस्र-व स्थितिक कार्य । -चित्रहारी-(रिन्)-वि सिनोंका मन दरण करनेवाका। पु शामीजन, सहिजन : - किल्ल- प्राप्तीन सी सी सी शी क्षेत्रं विद्या -श्रीह-पुरु व्यक्तियारी । -ऋत-पु स्तीजाति । - जमनी - स्ती निकं बम्धार्वे करफ करने-बानी स्त्री। -आहि-ग्री॰ कीवर्ग। -तिहा-वि मी के बार में रहमे बास्त विकास के माने के बार करोगा – ह एक तरहका रोग । —देहार्थ-पुर शिव । −तिर्(प्) -- ड्रेपी(पिन)- दुलिबीसे देप करमेशका रमणी ≩क्षे । —धम-तु वह वन वा संपत्ति विसपर स्वीका हो अधिकार हो (जैसे ब्हेज आदि)। --धर्म-प्र रियमीका कर्नव्या स्ती-एंडपी वियास। मैनून संगीमा राजा राव । ∽धर्मिकी−श्री॰ कतुमती श्री । −धव−५० विश्व पुरुष । - पूर्व - पु है सी बितन । - व्यक्त-प्र हानी। मादा पर्छ । वि॰ न्योक्रे विद्वीमे सुक्ता-नाथ-वि सी विस्का स्वामिनी था। -वामा(सन्)-वि सोबायह मामबाता। - निवधन-अ कार्यः −निश्चितः दि वै कोशिनः। −पच्योपअधि-(विस्)-इ वेश्वार्ट स्टब्स् ओविका स्कानेशका। -पर-पि॰ क्रामी अंपर । -पुंचाग-पु स्ता और बुक्यका संयोगा - लूंस-पुर की की पुरुष बीमों है। - इक्षणा-भी मरीमी भारत । - अझिमी(निज्)- की-प्राप बीमी दे थिकीमें गुक्त । -पुर-पुर किसी के रहनेका स्वास अंगापुर । - पूछ - दिन देन 'शास्तिन'। हे 'सा-पर्वद । - वर्षक - वृती(विम्)-वि० थी पूर्व क्षमाम की था। -प्रशन्दि की नेकी मुद्रियका। -प्रसंग-तु संगीय । -प्रसू-स्तो है भी-क्षत्रकी । -चिय-वि निवीरी भारत है अन्य अञ्चल विक्रीकी रियानेका रीव-समाना। ~मेमा−नी -बंध-प रिकार्य मैतुन। -बाध्य-विश् सीम परेशान दिना मानेवाला । - गुक्ति - की नौबी गुडि । ~शब-पुनार्शस्य सीरवः "मूपम"तु वैनदाः |

--भोग-पु॰ मैनुन। --भंध-पु॰ सोधे रामा ^ररराहा से र्भत दोनेवाका संघ। — सध्य – पु सिवोदा सन्तव। -मार्मा(निष्)-वि॰ सपनकी भी यानवेताका। मीरव मनुका धक्र प्रकार न्यायान्हीर क्रियोंका एक-दश्र । —<u>म</u>ुम्बए-पु॰ अवस्त्रुत्तस पानः बहुतः अधीकः। -यंत्र-पु पुरुष्धे बंदरः मामी जानेशाची शी । -१ अय-५ ~रब(स्)-पु॰ रवराव। -रान-पु॰ उपन की। करमी । --राज्य-प निर्वी दारा शासिन रह मबामारतीक प्रदेश । -शहि। -सा के 'सी-धत्र'। -शाग-प्रक सिवीके विशेष रीय। -संबद-दिक न्तीका प्रकृतक, कामी । - स्वाहाय-पुर भी-तंतीम धीरे षिछ। -सिंग-तु अममेंदिव, वीनि; की-वीन्त किंग (ब्या॰) । –क्रोस-दि॰ दे सी-बंदर ।-सीस्प न्योत्रधी मारिक्धी चाह । - सदा-दिश औ इसा खासितः <u>व</u> स्त्रीको क्योमताः -पश्य-(र॰ रे॰ 'लीवछ'। -वार-पु+ सीम पुष और शुक्रवार। -वास-पु॰ विभीध । -यास(स)-पु॰ रहिक्सिने समय प्रमानेका वस्त । -बाह्य-पुरु वक्त प्राचीन वन पद। –विजित-वि दे॰ सी-जिन्। –विच-प्र॰ परमीने प्राप्त वातेपाला भन्न । -विद्येश-विक स्पेने वस्रमे रहतेवाला। -वियोग-९ परमीने पुत्रकृशेना। ~विषय−५ मे<u>भून।</u>~श्चर-वि सिवोंसे विशाह#ा क्षित्रीते सेवित । —व्यंजन—च न्यो दोनेदे विद्य−स्तम चादि। - कुला-विको (बहबन्या) था तश्य हो गयी का । − ग्राम−तु वर्धन । − ग्रास−तु अवसी करनी के शिया बुशारी कीको कामना न करनेका प्रत एकरातीमा । ~दीप-दि विश्वमें क्वल लियाँ गण रही ही ।-श्रीह-वि कामी।-संध-<u>ध</u> क्षिकीडे स्थव ६४वी मंत्रीस ! ~सीप्रहण−पु॰ दिसी सीधा बनाय भारियत वा भीन करमा । -संज्ञ-वि॰ ऐंगे घामबाभा विस्त्रस अंड न्दी-वायक शब्दने दीना हो । -संभोग-५० मैधुम। -संसरो - वु व्यवस्थितः संपदी भेतुम । - या ग्याम - विश सीध्ये बाप्रविवासः । नसन्त-वि सीगे तुन्तः। नगमन ५० सिवोधे स्वा ।-समायम-५ मेपूने । -सून-९० संभोगः शोपांधनः । नमेत्रन-५० भगेतः भेतुनः। -शिक्षा-श्री० सिवो६ प्रति कामणि । -स्वमाव~<u>प</u> शिवीकी प्रकृतिः शीवा । - इत्व-पुर वसाय सीवा हरण हर छ जामा । -हारी(रिन्)-दुः मोदा १नार् **१रण करनेवाला व्यप्** । [क्| की बीवेदा आध धीता−भी वरिष∽त भागीत्वा क्ष्मीरका मारीसुलस काममना, दुर्वसप्ता भादि **!** क्षीरमञ्चल-(वर्षः (भेरू) है। विश्वसम्बर्धः क्प्रैल−कि [सं∗] की संश्वी; सिवोदे योज्य बारीस्प्रमा की शारत शासित र तु व्यक्ति कारीत्वा की-स्वाधीय जारीवर्तेः भारीशुभम क्षेत्रमधा वा बीर्रस्य । स्त्रीराजक −नु [सं+] श्री-रश्यवदा निवामी । कप्यकार-पु(ती}र्भगपुर र रामध्यश—पुरु [मं] का पुरस्य निरीपक । रम्यमुज-वि [यं॰] बहमके बाद वेदा वीमेशका !

बनक स्थार करितक। -बेश-विक रपार्टि शारा विसका बान वा । - शका - ली॰ ग्रहमूली । - संकोच-⊷संकोको(चित्र)−च विशासः। STATE I -मंदारी(रिन)-वि संद्रामक। पु श्रव रीगका एक मेर । -सूरर-वि शिलका ११ई आनंदशक्त हो। -स्थाम-प्र प्रदेश भारत होनेके समक्ता साल । -स्पंत-पु॰ मेडक । -हानि-सी॰ स्प्याधी श्यामे संबेरन ग्रहण 4रमेंकी शक्तिका गह हो जामा ! स्पर्शाब - वि [संग] छ मेगाका। अनुमन बरमेगाका । स्परान-नि [धे] सुनेवालाः दाव स्पानवालाः प्रवादित करनेशामा । ए छनेको क्रिया स्वर्शकरत स्विच्छा रवर्गेतिका बानः वास । स्पर्णम्ड-प [एं॰] नइ वो छन्छा दाव दरे लाखा। स्पर्धमा~यो• [छ] रश्कं शक्ति । स्वर्धमीय-वि [मं] छने बोग्व। स्थानेंब्रिय~सी (सं }स्वर्गको शहेव सावा। स्पर्शपान(बत)-र्व [र्च+] विस्ता रवर्ष हो सदे: कीमणा छुमेमें भानंदरावड । स्यक्तौ-की [मं] कुटरा, बंधकी । स्पद्योकामक-दि [ई] नेकान्छ। म्यराजि-वि॰ [सं] स्पर्धवानमे रहित संवेदनशस्य । स्पर्गातका−सः (सं•ो अप्सरा। स्पर्शासन-५ मि रेक्ट रेक्टरें। स्पर्धानहः, स्पर्धापदिष्ण-वि [सं॰] को स्वर्ध सहज भ कर महै। स्पर्धारपर्ध−ड॰ [धं] इत्रहाट इने वा व इनेस्ट विवार । क्वरिंड-4 सिंगी विसदा स्पर्धने वान हो। इ. बाह्य । स्पर्मिता(न)-दि [ई] स्पर्ध करमेकाण । रपर्शी(शिक्)-वि [सं॰] छुनेशमा वरेछ क्रिमेशका। (समार्चादमे) । रक्तें हिय-की [मंग्र] रश्यंदा शाम वा वह धाम माप्त बरमेवाको इंदिय । स्पर्शीपक-दु [शं] शारत कवर । रपष्टी(प्र')-इ [मं] ग्रहेर्डी अतम्बरनका, रीव । वि॰ रपार्थ करमेशाला । स्पद्म-९ [सं] ग्रास्पर, कान्ताः शुक्ष- पुरस्कारके वर्रश्य में प्रांतरी मानवर्गे सबनेवाकाः गा शुक्र । स्पष्ट-वि [ग] यो ग्राह शाहर देगा या सरी कहत बाबमा बीचमन्या शहर, गीवा (बबका बसरा); बाहन-बिर, शाबा सही विकासिक साफ-माफ देशनेवाका ह -स्पन-पुर कुबतका एक प्रकार क्रिम्पे कृतिय बारव क्वीबा ल्वी बडा बाहा है। - गर्मा - नी श्वर मी दिखंडे गांदी विश्व लाट देम पड़ें। -तारक-वि गांद रियार्ग देशको सारीवाना (काकाश) । -प्रतियक्ति-वर्गे व्यव शाम वा निधव ! -भावी (विक्) -वता (वन) -वादी(दिव)-वि भाटनातः दश्येदामाः स्वकारा-(रे [त] जिल्हा कट्टा क्य बंबारन दिया समा ही ! स्वार्थ-[4 [मं] जिल्ला कर्न गण पूर्वच क्षेत्र मुक | ब्युद्धा-दि [मंक] बालनीय र पुर दिवासा जीपूर

स्पष्टीकत-विश् नि र्वे रेयद किया दशा ! स्पार्डे-म [अंत] शाबर महिपाः सुविश प्रतिम । स्यार्शन-वि॰ (तं॰) वित्रका स्पर्धते वान हो । स्पिबिट-स्प्रो॰ (अं) भारमध मेतारमध मूहम इसी शाहसः जीवक्रक्तिः सरसार, बम सरा । क्वीकर-प्र- भि ने क्लार महेंदकी, क्रमिनका स्थार व्यवस्था समाद्या कावाका साई-समाद्या वावक (दिरेप) व्योध-सी॰ धि देशन भाषमः शब्धान्ति। स्पीड-सी भि निति चान ! श्यक्षा-सी थिंगोरे पदा'। क्यस~दि० मि १ रहिता प्राप्ता विक्ति । स्पून-दि॰ [सं] अपनेको किसी चीत्रस प्रस्त दरवैतास इरानिशनाः बास करतेशना । की एक तरहकी रेट। स्प्रत-दि॰ वि । छनेवाकाः सर्वेपनेनाका । ५० सा स्प्रधा-सी॰ वि । सर्थवपरिजी र श्यानिका विविद्यारी। स्प्रदय-वि॰ [सं] सुन हाबका अभिष्टत बरने बीगा। श्रृप्या−श्री [सं∗] शी समिवानीमेंने यह । रब्रष्ट-वि [गं०] हुआ हुआ।" म प्रयावितः हुइर माराष्ट्र दिला दुक्ता क्वारमांगांदे पूर्व रकांसे बना दुवा। थ के में जितके बच्ची है बचार पर्मे बान शता आमंतर व्यवस्य ।-सियम-वि मीत्रमार कारण विश्वको परित्रण नष्ट वी गयी की। -शेक्निका-मी० लगाम्। रपुष्टक−पु॰ [सं] आहित्रनदा वह प्रदार । रपृष्टाम्पृष-५०, श्वृष्टाग्पृष्टि-की [म] एआएन रपारिया परस्य वदांत । क्युक्टिनक्षा (सं०) श्वर्शः संबद्धः। म्युष्टिका-की (तं) शरीरके विविध अंतींका एवर्ड (शक्यप्रक्रम्हरूही) (स्पृष्टी(द्विम्)-वि० (वं०) रचर्च बरनेपाका विश्वने रश्र दिवा है। रपुरक-द्र [मं•] दिनी ररपुरी प्रापिदे टिप्ट ररप्प या प्रदश्य ब्रह्मा । श्युद्रशीय=ि [र्ग] जिन्हे निर स्पृश की बार अभि-क्षणीया है वो बर्ज वान्या श्मणीय, मीरक । -शीम-वि जिल्हा वीरवे रंथीय ६ रण हो। रपुरवानु-वि [a] १ छ। करनेशमा अविनाधी रंप्योत् । अपटर-नो [र्ग०] ध अधाराः पर्श-तुर्त परार्वश्रे गारिः की कायमा (म्या)। देप्यो । श्यक्तास-वि [4] दे न्याबाठ । न्यहिल्-विक [#] किसकी अधिकी अधिकांका की एके ही जो ईप्यादा विश्व शा श्यक्षी(दिन्)-दि (सं) र पुर अतिमानीः देणी बररीराज्य ।

साय अर्थ ।

शामाः रक्ष धरमा (

स्पष्टीकरण-पुर्व (संर्व) कियो पाठकी प्रयोग करके स्व

1441 स्म्यमिगमन-दु [सं•] संगोगः वकास्वार । र्त्याप्या-सी॰ [सं] प्रियंगु स्ता । रम्याजीब-पु॰ [तं] अवनी या दूसरी किनेंसि नेरना-वृध्य कराकर रोजी कमानेवाका । स्वंडिस-पु॰ [सं॰] जनावृत भूमि। यहके किय साफ और चीरस की हुई पीकोर बगीवा सीमा। देवींका देश एक मानि। भंजर भूमि। - इा-नि॰ निवा निस्तर सूमिपर सोनेशासा ! - शब्दा-सो॰ समावृत भूमिपर सोमा (ज्ञाने कारम) । -शायिका - सी दे॰ 'स्वंडिकछस्मा' । -शायी(यिन्)-दि पु÷ विना विस्तरके कमीनपर धोनेनाता । -संबेदान-प्र• है• 'स्वंडिकस्थ्या'। ~सितक−५ वदवेरी। स्यंडिसेय-५ [स] रीहरूका एक दुन । स्वविद्रेसप-वि पु (सं) वै 'रुवंदिनसायी । स्थ-वि [सं] (समाधमें) उदरा हुआ रिक्षा अपस्वितः शंकप्र रदा रहनेवाला । तु रक्त रधान । -पति-पु• राजाः शासकः किस्पैः पर्दः मेगार राजः सारविः बृहस्पति वय करनेवाकाः जंधानुर-रक्षकः कुनेर-बृहस्पति । वि सक्य प्रवासः। स्वकर−दु[सं•]दे 'रववर'। स्थकित-वि वका हुआ इति। स्थान-वि [सं] छकी वृत्ती वेर्तमाना निर्करका छापर बाइ । पु॰ कुछ दुष्ट म्बक्ति । स्यराणा - सी [र्स•] पृश्की । स्थराम-५॰ [सं] छदन आहर करना करना छिपानाः अपवारमः समिति आहिको काररवारै स्वरित करमा (site) f स्यगर−वि [धं•] एक रांधद्रभ्य, तगर । स्थगळ-५ वे स्वगर'। स्यगिका-की [सं+] पामदाम पनदच्या। अंगृहे जादिके सिरेवर बॉपनेकी वक तरहकी पट्टी। वैश्वाः पान वनाकर देनका मौकरा । स्थितित-वि [सं] दका हुना भावतः क्षिपावा हुनाः नंद किया हुमा (वैसे दरमामा)। जनरब, रोका हुना। कुछ समयके किए मुक्तवी किया हुना । स्थागी-की [सं] पत्रहस्या । स्यगुस्यह्व−दु[सं] ५ूव४ । स्थपनी-न्यो [मं] बीहों के गेपका श्वान । स्पपुर-वि [र्छ॰] क्वरवाकाः विवश ऋवह सावहः संबद्धारत विषक्त पीड़ासे मत । पु क्वड़ा विषम स्थाना भारमा !-शत-दि विषम स्थानमें रहमेवालाः पृत्य संबंधी । र्यपुरित-रि [सं] कनद-प्रारथ किया हुआ विषय बनाया दुवा । स्पष्ट-पु [मं] रू और मूखी मूचि। फिनारा, क्छारा बरगी। स्वासः मैदानः सूत्राय उद्दर्भेका न्यामा इसः विषय (विचार आदिका)ः प्रशासका अध्यापाः (मंबरा) बाह्य संबुद्ध मानावकी राष्ट्रा परिनिवति । सबसहरः

मस्रवतः। - कर्-पु वक ग्रीवा अंग्रही तुर्व वन

20

भोतः। - कमक- पु - कमस्त्रियी - स्वी० श्वक्रवर हो ने-

वाका एक पुष्प, स्वकवच । —काकी—को धुर्गाकी एक अनुपरी : ्-कुसुद्∽पु॰ करणीर । −श−वि सृमिपर रहमेवाका (बीव) स्वकचर !-गत-वि सन्नी वरतीपर गया वा छोता हुआ । —चर, –चारी (रिन्) –िव बमीनमः रहमेशका (प्राची) ! - रपुत-विश् किसी रवान वा परसे गिरा वा इटाया हुया ।-ब-वि॰ जमीन पर पैदा बीनेवाकाः स्वकं मार्गसे जानेवाके मारूपर कगमेवाका (कर)। -बा-की मुस्की। -दुर्ग-प मैदानका किया। -बेघला-प स्वानीय देवता। -मध्यथी-सी॰ दे 'रवककमकिमी'। -नीरख-प॰ स्वरूपसः। --पत्तन-पुद्भाष्यः भूमिपर रिश्व नगरः। -पथ-प सुरधे रास्ता ∺श्मीग~पु प्रतम मार्गकुक भूमान । —पद्म-पुर मानकण्युः स्वक्रकानः छत्रपत्रः श्याकक । -पश्चिमी-श्री वे स्वकक्षमानियाः। -विद्या-सी विकस्तुर । -प्रम्या-सी शंदूत नामक सुवः -- भंदा - सी वनभंदाः -- भंदारी -- सी व भया-मार्ग ।-- सर्वंड-- प्र- कर्र(शर !-- मार्ग-प्र- सरको रारता । -पुद्ध-तु भूगायपर चक्रमेशासी कहाई। -योबी-(बिम्)-पु॰ रवक्षर उद्गतेगाना योद्धा। ∼रुद्धा~ रवलकातिनी । -वरर्म(मू)-पु॰ दे 'रवस मार्ग' । −विम्रह्-पु॰ है 'रम्बदुद्र' । −विह्रंग,− विद्याम-प्र रवकपर रहतेवाके पद्मी । - बेतस-प्र रवकदर दोनेवाला वेंत । -हाबि-सी॰ भृमिकी सन्नार्द । -म्हंबाह-५॰ बोधर । -म्हंबाहक-५ को बोध रका -सीमा(मन्)-की देख या मृगालको इदा -स्थ−वि शूमिवर रिक्त । स्थकोतर−५ (स॰) दूसरा स्वान । स्थला-थी [थं] सूनी बमीन केंबी की हुई सूची वर्गान । क्यकारविंद्-पु [मं॰] रवकक्रमतः । स्थलारूड−वि (लं•) वो भूमिपर चतरकर राहा हो (रवास्ड भारिका दणरा) । स्बद्धी-श्री [सं] शुष्क मृनिः प्राष्ट्रिक मृनि (श्रीक्षे बनक्षे); बपरवद्याः धरीरद्या कोरं निकला हुना प्रमुख भाग । -तेवता-पु स्थानीय देवता, प्राम⁹वना । -शावी(विम्)-दि , तु दे 'श्र्वदिकशामी । स्थकीय-वि [मे] स्थक, मूमि-संबंधीः स्थातीक विदेव रिवर्ति वा विषय संवेधी । स्थलेजास−पि [गं•] परशोपर वरपत्र क्रोनेवाका ! पु• मुन्देश । श्यक्षेरद्वा−सी [मं] वीकुचारा दग्या बृधा स्यकेश्चय∽वि [र्थ] भृतिषर सोनेवाका। पु॰ वेसा नीव (वाराष्ट्र वादि) । श्यक्रीका(कस्)~प्र• [तं] रमण्यारी बोप १ स्थव-वु [मंग] एता (१) र रमवि-पु [न] बोरा धनाः सर्ग लुखाहाः अक्षिः की ने केरीया सरीस यह बरता पता व्यविका~न्योः [मं] एक तरहकी मन्त्रो (१) । स्यविर-विश् [मं] रू रिसर अपना नृदा माचीम

काररशीय । तु तुस न्यक्ति नद्याः पुर विद्याः एक

1481 स्पेशक-वि [बं०] विशेष खान्छ। अनुवारण की विशेष स्वतिक का अवसरके निमित्त हो। जी विशेष व्यक्ति का कार्बके किए चक्रनेवाली देन ! स्पेसकिस्ट−पु [अं] विशेषका हप्रष्टरप-वि [रो] छने दाव कगाने वोग्या किसका स्पर्शसे बान प्राप्त किया बाय । ५० रपर्श । स्प्रशा (द)-वि [तं] सुनेवाका । प्र दोग । स्थित-को [बं॰] रिविट स्थापक गुणसे मुक्त कोहेकी कमानी । - वार - वि कमानीदार । रिप्रसामा कि प्रेस - प 📢 े प्रतिबंधाः भव्यारमनियाः । र्मिकर-प [अ] बारिश्रमंत्र या संविभंग ठीव करनेके किय समयर बाँची जानवासी सक्षशेकी वहीं। इफ्ट−प (सं ो 'फ्ट' 'फर की ध्वनिः सॉफ्डा फनः रवा। स्फ्टा-श्री • [सं] सॉक्स फला फिरक्रिरी । क्फदिक-प्र [सं] विसीरा सूर्यकांत वाना कपुरा फिट किरो । -ऋक्य-प विस्कोरको बीपार । -पाम-प विस्कोरका पात्र । -प्रम-विश् रफदिक जेसा असक्तिका पारदर्शी। – भिक्ति – स्रो दे 'रफक्तिकुल्य । – समिन ष् ∽िक्का-मी विक्कीर पत्कर ! -विप-प वाक-मोब नामक निव ! - शिकारी(रिन)- इ बैडाए क्षंत । -स्कंम-प्र विक्शिएका क्षेता । -बर्ग्य-प्र **विक्लीरका बना हुना प्राप्तन्त** । स्फब्रिका – स्रो िस े फिटकिरो। कपर । स्कटिकाक्या-को [सं•] क्रियंकरी । स्प्रदिकाचस-पु[मं] सैनास पर्वत । स्कृतिकारमा(ध्यम्)-५ [मं] विकीर । स्कटिकादि-पु• [सं] केनास पर्वतः -शिव-पु कपर । स्फटिकाम्र−पु [मं]कपूर । स्परिकारि, स्परिकारिका, स्परिकारी-को॰ [सं] किरमिरी । क्टिकास्स(स्मन्)-५ [मं॰] विकीर परवर । स्राटिकी नदी [सं] फिनकिरी। स्कृतिकोपम-प्र [सं] कपरः वरता पातः चंद्रशांव मिष । स्क्रटिकोपक-प्र [सं] निन्तीर (१) । एफरिश्च-नि [मं•] विशेर्ष । एक्टी-मी [मं] क्टिक्टी। रकरण-५ [र्थ+] बॉपनाः कश्वनाः ग्रन्थ करना । स्सारक-मु [सं] शिल्हीरा जनकी वेंद्र । रकारकी~ली (रं) फिल्करी। -प्राप्तिक-प्र [सं] रक्तरिक । वि विश्वीरका । -सीय-प्र रिस्मीर-निर्मित बासाद । स्कादिकोपल-पुरु [मंर] दिस्हीर । स्पादित−दि [मं] काश हुआ निशेर्ण निमा दुशा । रकारीक-५ [सं•] रिस्टीर । स्कात−वि [शं+] नहा दुला परिवृक्षा पूला दुला है एकाति-मा [सं] पृक्षि बहुती। रफार-दि॰ [मं॰] यहाः वण दुशाः निकन बनाः सँचाः (लर)। क्षेत्रा हुला; बहुत प्रमुद्द । प्र वृद्धिः वहा;

आधातः (धीमेमें पनी हुई) कुटब्री; इंपन, फरक्ता; प्राजुन व्यक्त दीनाः टंकीरा वर्षेद वा इस तरह निक्की हर्ष कोर्र पीत्र । स्फारण-प॰ [सं॰] स्फरण, बॅपन । स्फारित-वि [सं] फैकावा हुना । रफाछ-५ [सं] अपन स्टरण। क्कासम-प सि किमान क्रियानाः फरफरानाः वर-थपानाः वर्षण । रिफक्(च)-सी॰ [सं॰] मितंब, बुनइ। -साब-प्रचेद्धरीगा न्द्रियात्रकः स्प्रियात्रमक~प् (सं•) कटफ्रतः । रिकादध्य-वि भि निववद्य वर्षेत्रमेवासा । स्फिर-वि चि विद्याला वहत प्रकर । स्फीत−वि (र्र•) यहा हुआ। यहा। मोटा। कुका दुमा। सफला सस्का बहुत अबिका प्रसन्ना प्रका पेरुक रोगसे भस्त । - निरुचा - की निर्देशिनी । स्कीति−सी [सं] वृमेदा प्राप्तर्यः समृदिः सम्बुदव । स्कर-वि [र्स] फरा हुना। दिला हुना विकरितः न्यसः, प्रस्टा स्पष्टः स्थमः। चमकीकाः प्रक्रितः प्रका हजाः। बारत्य (स्वर); प्रत्यक्ष सत्या जसावारण; " से मुक्त वा पूर्वः एंश्रोवितः प्रस्करः त सोपदा कतः -चेत शारक−ि चंद्रमा और शाराचीमे प्रकाशित । −सार− वि मिलने तारे रपष्ट दिखाई देते हो। -रबचा-स्रो महास्वोतिष्मती । - प्यति - प्र सप्रेय पंतुका - पुंक रीक-प (हरवका) विकाहका क्रमका -पीरव-वि विसवे अपनी शक्ति मच्च को है। - मन्त-प्र र्जुनः त्रिमुक्तमः क्षेत्रफणः किसीः गणितमा पतः। -पेज राजि-वि की पेनराशिने कमडीका देख परवा हो। -वंबनी-सी दे 'स्प्रदश्यको । -शंगिकी-सी कवाविद्येत ! -बका(क्तु)-वि स्पष्टकका !-पश्कक्ति-सी क्वोतिष्मती । -धूर्पेगति-स्रो गुर्वेद्री स्पष्ट स्पुरुव-त [सं] करमा विशेष होता। विकसित होता। (बोर्शका) चरकता । श्कुका−ली॰ [सं] सॉबबा प्रम । रफुरि स्पुत्री-मी [मंग] विवादी यह बाब, पूर । स्कृतिकान्ती [त] ग्रीम इक्सा। रफुरित−वि [सं] कटा दुवा। सिना दुवा। रतह किया इकाः मह क्या दुवाः परिवृत्तितः। -कांडमरम्-प व्यक्तिमंत्रका एक प्रकार । -चरण-वि विमक्ष पैर चैने ही। रपुतीकरण-पु [सं] अक्ट रवह करनाः ग्रीक करनाः सुवारमा । पुरकर−पु[सं]भाग। स्पुरकार-पु॰ [थुं॰] प्रस्कार । र्म्यत−त्र (र्स•) शहरण, दशका सुद्रित साम्रा पूत्र नेपूर्* करमा । रपुत्रण-पु∙ (सं•] वॉपना दिसमा घटकना (कंग)। पृरंबर व्यक्त होनाः चयकनाः मनमे पदापक भाना ।

रपुत्रचा-व्यी [मं०] अंगोंका कुरवता ।

स्पविरमा-म्यापस्य वीक संप्रवादा शिकेया विकास । - वाक-पु विवास । स्थिपिता-स्ती॰ [मं] पृद्धापरना । स्थविरा-लो॰ [मे॰] सहाधवणी। बृही लो । स्थमिरास् (स)-वि [मं] जी बहुत बदा ही गवा हो। स्थियग्र-वि [सं•] बहुत स्थूका बहुत वकी। स्थांबिल-वि॰ सिं] जनकं कारण भनावृत्त भूमियर भोनवासा । स्थाई-वि देश 'रवानी'। स्थाग-पु [सं] शवः शिवका एक अनुपर । स्थागर-नि॰ [सं] स्थगर, तगरका गमा प्रमा । स्थाप्पच-वि [सं॰] पूर्शके तमेश बना वा बरपन्न । ह्यामधीय−वि [रं•] रबागु शिव-संबंधी। स्थाणु-वि• [से] रह रिवर, अवसा । यु क्रियः स्ट्रीय, ग्रोमाः सेंदीः चपपदीका काँगाः एक तरहवा मालाः श्रीमक्का निका भीवक नामक ग्रंबहच्या देशका हैंडा इकका एक भागा स्वारह क्योंमेंसे एका एक प्रवासति। पक नामातुरः एक राधानः कोई अवस बलाः वक तरक का भेटनेका ६४ ! --कर्मी-की महेंद्रवारची कता। —च्छोद—पु+ पुछका समा कारकर अक्षम करनगढा व्यक्ति ! - तीर्थं-पुरु धानेश्रदः। प्राचीन मान ! - विक (श्)−स्रो वद्यर-पूर्वदिशा। −शृह∽ि पंत्रके ठूँठको तरह गाँवहील हो नवा हो। -भ्राम-प्र॰ भ्रमनम् रभागुको भीर क्रष्ठ समास कैसा। –शेस-त थो इका एक रोग ! −घट−ड वक प्राधीन तीर्थ ! स्यापनीश्वर∽षु [मुं•] धानेश्वरका एक दिवकिया भाने-श्रद मामबा नगर । स्यासम्बन्धि [मं] उद्दरते शान्य १४ने योग्य । इम्राह्म(ल)−ि [मं] रिवन या रिवर दहनेवालाः रू, भपन । स्थान-पु [सं] रिश्त होने कहरने रहनेकी विद्या टिकार प्रदर्शन निवर दोला। रिवर्ति अवस्त्राः समझः बर, भोहदा: संबंध: रहनेकी जनव बराबैदा, मुनाया श्रवरा अरसरा विषया कारया उपयुक्त अनमरा वर्गके क्यारमधी नगरा पनित्र जनतः मंदिर जातिः नेदीः मगर्रर प्रोगनः मृत्युके नार कर्यानुसार मास क्षीनेवाला क्षीका नुद्धमें काळमणका सामका करमेत्री रहना करा सीमनाः राज्यके सुद्धव सेव-धेमा आदिः सारव्या प्रापका अध्याबः सम्बद्धाः मोदामा एकमा शांतिको रिवर्ति। हर्गा श्रानेदिया स्वरके स्पंतनको माथा (शंगीत)। कथः बाहरि अभिनवपत वरित्रा गंपनीका एक राजा। -चंचला-ली वर्षरी । -वितक-धु श्रेमारे शिविर के जिए स्वासको व्यवस्था करनेशका व्यविकारी । न्यक्श-दि रभानभर अपने स्वामश्र गिरा हुआम् अस्न पर्ने द्राया द्रमा परच्युम । —स्याम-च निशास-स्थानका स्यामा बरकी दानि । - बाला (तृ) - दि० किमी के निय रिटीय स्थानपर इहमका निन्दा बस्मेशका । -बीस-दिक स्वाम विशेषकर रहनेके कारण अञ्चल । -पश्चि-रथामका अभिकारीत विकार आदिका अध्यक्त त

-दाम-द (इम्(+) स्वातन्द क्षमा क्रमा । -बाल-

म रवानविशेषका श्रम्य का अवाम निरोधका ग्रहति।

भागीका अच्छा एल हो। -विभाग-५० स्थामीका वैदवाराः विदीप-विदेश स्थानपर रामा आसा । -वीरा-सन्-प आसनका यक शकार । ~स्थ∽ि स्तरी रथानपर रिश्वत अवस्य । ज्यानक−पु (र्स+) बनद, डीरा पर भोहरा, मरहरा शाय पकारे समबद्धा स्तरीरही सुदाः मुख्यके रह हराः बारबीय ब्यापारका एक विद्येष स्थल: मानमान, मानद श्ररावस्थे सन्दर्भर वटा ह्रमा केन । स्थानौरा-धु [एं॰] जैन पर्यक्षारूका तीसरा अंग। स्थामोतर-४० [नंश] शिम्ब बूमरा रबान । न्यत-रिश बी जन्मच चढा गया हो। क्यानांतरिक-वि विशे एक रवामधे इनरे स्वानस किया हजा। क्रिसका सराहका की गया था। न्यानाधिकार-इ. [र्ग] देशस्य मारिका निरोक्त । श्यामाधिपति-प्र[म] दे 'रथामशिव'। रबामाध्यक्र−पु (ग्रं॰) रशानविरोषका रखक वा ग्रामक। व्यानापशि-ली [र्शर्भ] दिसी व्यक्ति या वरद्यका रथाप श्रद्धण करलाः क्यमनै साम करमा र श्यातापञ्च-वि (भ०) इगरेकी जनद भरवारी मर्ग काम करमेळ किर विमुक्त । स्वात्वाध्यय−व सि ो राहे होनेकी बगह आधार । स्थामासघ---पुरु [सं] दिशी व्यक्तिको किमी स्थानसर देश दशमा वा शेद रसमा। क्यानिक-वि [तं] स्थानविद्येषमे संबद्धः स्थानीव । प्र रबागविश्वपदा रक्षक या शासका देशकवडा व्यवस्थानकः रा भरव-संप्राप्तकः । श्यामी(मिन्)-वि [नं०] स्वातनामा, (उथ) परस्य रवाबी। यो कप्तुष्टः स्वामपर हो, कप्तुष्टः मीत् । क्याणीय-वि [मे] स्वानविशेषार्थर स्थामविशयः किए वरदुल । द्व नगरा क्ष्मचा आई सी मॉनोडे बीच विश्वन दुवे ।

क्ष्यानप्रपर-प्र [तं] एक प्रशिष्ट कीर्च वानप्रतरा स्वावी

क्ष्यापक्र−ि [तं+] स्थापित क्रतिवामा। खडा करने शका

रिश्वर बहमेशाला । पुरु मृतिकी स्वापना बहनेशाला। कर्री

4-स्था श्वापित बार्नेशासा दिशोदे शाग कुछ समा बरा^{हे}-

द्यातका परः सरव-निर्माण बाग्यनिमः (-कसा-धी

-बागा गूबबारटा न्यावत्र (सः) । स्थापम्य-पु: [तं०] अंत्रपुरका स्थारः क्रिमीः सूत्राच्टे

श्वास ।

चीक्रीवार । ~प्रच्युत्त−विः दे॰ 'स्वामस्तुतः । ~प्राप्ति-

मी॰ दिही स्थान वा चरका विक्रमा। -प्रीय-ड

किसी रवालको वर्षाता वा क्लम । - मसि-सी निरम

रमाम, महल, इनेकी मकाम । - प्रांध-प्र• रहार

या परकी दानि। -क्षप्ट-विश् देश रेबप्तरवृत्तः।

~माहास्थ्य~त॰ दिसी स्थानका मीरव का रेन±

शादिके कारण प्राप्त न**ारल**ा ~स्रग~प् कच्छक्त मध्र

जादि चक्रजेनु का रशाम-विशेषपर वार-वार भाव रहते

र्षे । ~योग~प वरतकोस्थ सरकादे किए **परा**ष्ट

श्याम व्यापपाय काममें काना। –११३फ-पु॰ रै॰

'रवान-पान । --विद्--विश् निधे श्यामविशेष, रवजीष

श्रवा-स्य -प्रमद्दण-प सारा अपने निय राग हेना !-हस्त-पु शिव।-होम-ए सम्बंधि हो हुई बाहति। भवा-हो [रो•] पीकी **भा**षति साक्ष्मेकी अस्ति। (नदरीको नर्गा)- श्रष्टरको; मुर्वा ।-श्रक्ष-प विदे दन क्या म्ब - मी॰ [र्स॰] सवाः निर्दारः शरमा। समी = न्यो = दे । अयो । गास-पु॰ [सं] पारा सोवा !--नवीमस-पु॰ (वमुना नरीमें करपन्न) सुरमा का अंकन । स्रोत (स्)-पु॰ [सं] अलप्रकार, पाराः मरीः तीव मंगः शरीरम्थ पीषत्र पर्नेतानेबाने मार्गः शरीरके रंध (मी प्रश्नीम भी और लियोमें स्वारह होत है); नर्रमः बकः बानेदिनः दाधीदी र्युनः वंश्वपरेनरा । कोत्रभावत्ति, भोतावत्ति—सो॰ वि ो (निर्वातको) अडी-में मरेश करना-मिर्वागके परपर आग्रमर होना (वी)। श्रोतमापम्र−ि [मं] वो (निर्वाणक्र) मरीमें प्रवेश कर सका है-जो निशानके कापर आग्रस ही खड़ा है। म्बोतद्वेश-५ [सं] समूह। स्रोतस्य - प्रसि विकाधर । स्रोतस्वती धासस्विती∽सौ० मि ी बदी। स्रोता•∽प∙ ८ ग्रोतः । सोवींजन (सोवींऽत्रम)−त• [र्ष] शरमा । चीचोज∽द मिं निरमा । फोतोज्ञय∽द [मं] भाराका देन । गोतोस्रय-५ [मंग] है लोनीस । ह्योत्तीमचीमद पु॰ [नं॰] देवेनीयव । मोठोनुगत (धोगोञ्जुगत) - दु भि] यह बहारही समाधि । क्षोद्येतंत्र – इ. [सं•] हानीकी मुँहका दिए । श्रीनोपडा - श्री [मंग] नदी । शीलक-व देव अवस् । द्योनिन•~दु दे सीतित । शीरमत-५० [ग] रद्र नाम । शीरिनदा-भी [मंग] मामी 1 सीन-इ [मं] दद साम ! शांतिक-इ [र्गण] शीप ह रतिताबद्द-दि [मं] मडी संस्थि। शील-दि [ते] ध्वानांशी। यह मंशी । स्मिप्-भी (२०) चित्र प्रत्या कामप्रका मेंता क्या द्रमा प्रदश्न (श्री नध्य आहि निमनेके लिए तैयार दिशा जाना हो। इसीवर-म [बं निनवर] बतीकी कार सुक्षी हुई उनीह सदरीका भी होर लंबा दुवशा (श रेलबी पारियोक्ट माने रिधात है)। स्क्षानभी [बं] रेप्रक रिमानी हुई यन्द्रोतनी एड नरहरी मधी। स्त्रहरूको [u] एवं नावडे केन्द्रे कावाबी भीडीर भारती क्यों दिस के बाब अ ती है। स्मो-रि (Ms) सान स्तर्यात यण्नेशामा ।

वर्तत-दि [] अच्छे भ्नीवाश्वत । व्यक्तिन ।

स्यः-प्र• [मे॰] 'स्वर् का समामगढ स्व । -पति-व १शर्पेपति । -पय-५ मृत्य । -वाल-१० सर्पे देखमाल करनेवाका । -पूछ-त वर्ष सामोदे शाव । -सब-प्र देश्ता।-सरिता-सो ि। ोर पट-सरित् ।-सरिग् -सिन्न-स्रो॰ स्कांवा ।-संदर्ध-श्री-सी॰ बपारा।-स्पंडन-प॰ द्वार रथ ।-सहती-रती ॰ गंपा ३ स्प−प [नं•] प्रदेश, भारतीय कम संस्था भागा विष्णुः भन नंपविः भन राद्यि (ग॰)। वि अपभीत कारनाः सक्तमानः रवासाविदः अपनी वानि वा वर्षक्षे । -कपन-१० वास (-क्षेत्रहा-मी) १६ मरी।-दर्ग ष्ट्र विमी सीसे विशव करमा स्वत्व प्रवासा ।~ भाव~ प॰ स्तरन प्रमाणित धिवे दिला दिली बस्तरत बारगण करना !- विज्ञास-दि॰ विश्वपर निश्नोका स्पर्धिः। अधिकार स दा।-क्रम (सू)-५ अपने दर्म, देश कर्तव्य आदि ।- शहरत्-प्रारंशनिय सक्ते काम दरने बाका कारीगर !-कमी (मिन्)-दि म्याधी सुर गरम । -कामी(मिन)-रि अपने मनदे सर्वान यक्रीवालाः स्वाधी । -काय-ए॰ सक्ता कार स क्ष्मंब्र ।-काल-तु उपयुक्त समय ।-कुल-तु । क्ष्मा वंद्य । वि अपने वंद्यपा !- व्हाय-प्रव महानी । -कद्भप~विश् अवने क्षत्रहा !- क्रष्ट्र−विश् अपना विश इक्षा है अना दर्भ !- अब-दिश दिसमें बामगा शक्ति कोः स्वापीय !-शत-वि भारतीयः अपने गरि कवित । स॰ आर ही साप (दश्मा) :- ध्याय-पुर किनी पालका बोलकर अपका विकार रस प्रचार मार्थ करमा नी इमरे का शबने म हो (मा) !-शनि-घीर इक इच 1-शम-दि आश्यरकित १ - गमा-भी। श्वशिती देशेका संशान !- राष्ट्र-पुर बरमा परा वष वरी !-वाच-दि० अस्ति रहा का देशमा !-प्रष्ट-प् यक शामग्रहा - चर-रि अपने मात्र वननेशामाः। -विस्तराप्त-तु व्यन्ति क्षिक्ष्य १-वर्षत्-तु अपनी इच्छा मा श्रमेरा स्टार्शन महती रुग्छाडे मनुगर बळनेवानाः अभिवंधितः न्याभीनाः मापने माप तमा प्रमा बंदची १-०वर -०वर्गा (रिम्)-रिश अपनी रम्छाने धननेशमा अप्रदार हे - भ्यारियाँ - न्या **बदनी इध्यमें सदम्यी प्रति ।** - सरधा-१ -वार्डक्ता-की व्यर्डका बाधारी I-m-(१० मी अनुमेरी बार्क दुश्री को व मुन्ना प्रत्येत हैं में राज्यान व कामीव जना गंदंगी ।-वर्मवी (चित्र)-दिव जिन्दे गावकृत्या गर्दन हो।-प्रजी-भी मधी। महेनी। -प्रत्या(त्रम्य)-६ औ व्यव ही भारत प्रश्व हुना दी।-जा~ली पुत्री।-जान~रि कारी स्थार पुण्युत्र ।- प्राति - स्वीक् अपनी नामि का मरी। हि अपने वर्गहा:- तिरु(प)-प मृत्या । - प्राप्तीय -आत्य-वि अवनी पार्त वर वर्गदा ।- जिन-वि अन्यतिग्रही वि^{दे}टक ।-प्रातिनकी असी पर्नी बावर्ग । पुरु संबंध १-संघ -संघी (विष्)-रि

र्यंद्रन-५ सि जिल्लाम बरहा ।

स्वंत-वि [संवीतिसका अंत भवता हो। हाम मेदनाती।

भारतुमिका ।-सेद्-पु॰ यह बदनेद, नासुद्धास । स्थापन-पु [सं•] सना करमा रिशत करमाः रिशर करना; बमाना; रबापित करना (ग्रंस्वा माति)। निर्नेश्वन रंगमंत्रको स्वयस्थाः स्थामः भारत्याः निवासस्यानः गमा-भान संस्थारः पंसदना प्रतिपादना करकानाः जेगीको सशक्त बरमाः जीवनवृद्धिः या धसका चपाया रक्तसान रोक्नेका स्थानः परिभागाः गरेकी एक क्रिना ।-निक्षेप-पुरु अईत्की प्रतिमादा पुरुष ।-बृत्ति-विरु वी श्रुक्ति बढाबी जानेकी अवस्थामें म रह गया हो।

'स्पापना-को सि रिदाना बमानाः स्थापित करनाः **ऍमाक्नाः एकत्र करमाः धंरक्षण करमाः निवियत निधम** नियमित क्रमः प्रतिपादमः रनमेक्की व्यवस्था निर्देशनः। स्टस्थ−प प्रतिमारमें स्पष्टि काविका सारोप (वै)। स्थापनिक-वि [सं] गोदाममें बना किया हुआ।

स्थापनी-सी सिंोपाका।

स्वापनीय-नि॰ [सं] स्थापित करमे थोन्यः रखने पाधन बरने बोरव (कथा आहि)। प्रक्रियर्डंड औरवसे अपवार करते बीम्ब १

स्यापयितस्य-वि [सं] किसी रवानमर स्वापित करने रखने योग्दा नियंत्रण रखने नोम्द ।

स्थापिता(त)-वि [मं॰] स्वापित करमेवाकाः संस्था-

96 l

स्थापित-वि [सं] जिसकी रवापना की गर्नी बी। भगमा अलाः कायम किया क्रमा प्रतिक्रित किया दशाः सरक्षितः निर्देशितः निविश्वत किया हुना। किसी कार्यक निवक्त दिवाहितः व्यवस्थितः वह रिवर ।

स्थापी(पिस)-प (tiv) मूर्तिका निर्माण का उसकी

रभापना करमेवाका ।

स्थाप्य-वि [धं] रवायित करने बीम्य (मृति भारि): रमे जाने मीम्म। किसी परकर नियुक्त किमे वाने बीम्या दिनी स्थानपर वंद दिने जाने वीग्या पाकने बीग्य (जान वर)। तिबंबित करने मोग्य । प्र वरोहरा दैवप्रतिमा । रधाव्यापद्रस्य स्थाव्याहरय~५ (छ॰) जमानवधी रायानन परीहरकी वस्त इडप कर जाना।

स्याम(त)-इ [सं] एकि, सामर्थ्या स्वाना वीलेकी दिनदिनाहर ।

स्थाय-व सि ीभाषार पात्रा है स्थान । श्याया-श्री [मं] पानी !

म्यापिक-वि [मं] दिकनेशांका बना शहनेशांकाः विश्रता। स्थायिका-भी मिंगी गरे होनेका हिला।

स्थायिता~सी स्थायित्व~तु [मं] **वरे रहनेका**

स्थापी(पिन्)-ति [नं] रिवनित्रका बहरने टिबने बाका बना रहनेबाना विधेव विवक्तिमें वहारेपाकाः विरवरदा " के रूपवान्याः किसी वधानमें रहनेवाला भाष्यसायी । पुनीनका वह भरण जी वार-बार बावा नावा दे देह पुरद्धा-(पि)माल-मु आनदा बढाग्डार नो नममें नमा रहता है और चॉरशब होनेवर रमावरकार्ते परिचन दीना दे (रति दाम झीच, श्रीद, अप्राप्ता विरमव भव, प्रत्माद और निर्देश) :-मजिति-जी॰ खने इय शहरवाँकी यह शमिति थी। अगने अभिनेशनतक सम कार्मीका प्रकल करती है।

स्थायक-वि [र्:•] क रियत की ठहरनेवाला ही वा बिसमें उदरनेकी महर्ति की रहनेवाका (समासमें)। पुरु गाँका मधिका, प्रामाध्यस ।

स्याक-प्र• [सं] बाक, स्टोरा, बरकोई ब्रादि पात्र, कोई भीवनपात्रः बाँदका श्रीवराः मध्येका मोदरी भाग (१) । ─स्प−प पाद-पात्रकी आक्र्यति ।

स्वास्त्रक-प्र [सं] पीठम्हे एक रही।

स्याखपद्य-वि॰ [एं॰] विमहा १५७मार्गरी मायास इथा थी।

भ्याकपधिक-वि [र्च] रवकमार्गमे वावा करनेवाकाः है ॰ 'रथकपथ'।

स्थाधिक-प्र[सं] मक्की पुगव। दि॰ महस्से तरह धइब् करनेवासा ।

स्थाछिका-सी॰ (सं॰) एक तरहब्धे मन्द्री ।

स्थाकी-स्रो [संग] मिट्टोचे वने द्वय पादपाश-इंटी. करावी आदि श्रीमरस सेवार अरनेके काम आवेवाका पक करहेका पात्रा पारका कुछ :- प्रह्न-प्र पाक्रमात्रसे करकीमर निकाश हुआ पदार्थ । - इरण-पु॰ पात्रका र्थंग दीमा । – द्वाम – पु वेकिया पीएक मेदी पुछ । – पाछ – वि स्वाकीमें प्रवास्त हुमा !-पर्की-खो॰ झाक्रिपणी। -पाक-पु दीसके किए दूवमें पदाया हुआ भी या भावत । वि+ वे+ 'रवाकी-पाकीव' । --पाकीय-वि स्थासीपाक नामक अर-धरेथी । -पुरीय-पु नाकपात्रमें जमा ना वका हुमानेक वा तरीष्ठ (—पुस्ताक् — पुरु रक्षकीर्म प्रताया द्वारा चायक । - + म्याय-पु एक चायक्त्री परीयासे सारेका पता सन बानेको तरह अंशके जाबार दर भंदीके संदेवमें अनुमान करना ! - बिक्क-इ पाय-पात्रका मीतरका दिश्या ।-विस्रीय -विस्य-वि पाक पानमें पदाने नाग्न ! - प्रका-त देश '(शाक्रीहम । स्वासी(शिष्)-वि [मं] स्वाब्वाचा पात्रमक्तं।

स्थापर-वि [सं] पतिहीमा अपनः स्थायी। विकिया विविरद्धा वानस्पतिकः समक संपत्तिः स्त्रेथी । प्र पर्वतः कोई गतिक्षीम या नियोच परार्थ (पत्थर क्यू आदि); रबायित्वः जवक संपर्धि वा वस्तुः वनुगुनः बंधागत अरबावर वस्तुएँ (आग्रवम आदि कि र न्यूना श्रीयम मधी दीता) ! -करम-प्रस्तिनंत्री एक विदेश कार (वी)। -ऋषाण्ड-१ एड्डीटी पीर्ने। -गराह-प्र वामरविक विष !- लीर्घ-प् (दिवर अक्रवामा) ण्ड प्राचीन तीर्थ।−राज्ञ−प क्षिमारुय। – क्षत्रया--क्यी पार्वनी।

रमाबराजृति-नि [नंग] प्रश्रदी बाज़निया । ण्यायरादि-प्र [र्स] बत्सनाम नामक विच । स्वाबिर-पु [सं] बृद्धाधन्या (० ने अवस्था)। वि भौता रहा

न्यासक-तु [र्ग] धरोरमें अंगराग सुगंधित हस्त ल्यानाः वानी या विन्ते तरस वदार्थका मुलबुनाः चीएदे शावर्षे सवा दुव्य दुव्यदु÷हे भारतरका गहना चंदस मर्थिने बना हवा वित्र ।

स्वाधीन, भागतः वाकिय !-संबता-स्री स्वाबीमता, मामारी। - म-दि जारमरक्षी। पु अंश व्यक्ति। च्हान-पु॰ अपनी संपत्तिका दान । −हार-पु॰ अपनी फनी । - शासी(सिन्)-वि देवक अपनी परनीसे संबंब रदानेवासा । - सिरत-वि स्रोपरायच । -रक्(दा)-वि+ आरमदधी। -वेदा-पु बन्ममृमि मात्मभि वतन । -- स-पु अपने देशका आज्मी। - बोस-प चन्नम्मिका प्रेस । - बच्च-पु दे 'स्वतेश्रम' ।- •स्मारी(रिक्)-वि वरके सिप वस्तुकः बरसे बविद्य प्रेम रखनेवाला । -वेद्याभिष्यंवय-प देखकी भागती बद्दनंपर दूसरी बनव बसाना । -- देशी--वि [दि] ते 'स्वरेद्यीय'। -वेद्यीय-वि अवन देशमें संबंध रखनेबाकार व्यापे बेस्टका। -धर्म-प अपना कर्नम्यः अपनी विद्यादता। - च्युता-वि अपने अधिकारसे वंश्वितः अपने सर्गव्यका पालम स करनेवाला । - श्याग-प अपन क्वन्यकी व्यक्षा । - वर्ती (र्तिन्) -वि अपने क्रांध्यमें तमा रहनवाला । -श्रस्तकन-पु अपने कर्नस्यको क्षेत्रहाः - स्थ-वि अपने कर्नस्यमें क्या हुन। । -धामा(मन्)-पु तीसी मन्वेतरका यक्त देववम । --प्रर -वि स्वाधीन । --मासक-पु व्ह सकारेष । -नाम(न्)-प्र सरका नाम । -श्यम्य-वि यो अपने नामके कारण बम्ब का : -भामा-(मन)-वि की अपने नामसे विक्वात हो ! -नाहा-पु अपनी वरवादी । -पश्च-पु अपना क्या या दन्य भपने पद्धका ध्वक्ति मित्रः अपनः गतः। -पश्चीय-वि अपने पश्चनः। –विंडा−को यक तरहका स्टब्स विकासर्। -पूर्ण-वि अपने काबीसे पूर्णतः संतुष्ट। -प्रकाश-वि को अपने जाप स्पष्ट हो। स्वयं प्रकाशित । —प्रधान-दि स्वामीन । −प्रतितिक-दि अपना काम स्वयं इ.स्नेबाह्य । -वंद्ध-तु अपना संत्री का मिया - वीस-व बारमा !- भर-व वर बी स्वर्य अपनी रधा करता हो।-महा-न्यी यगारी। -भाड® -प्रस्कान प्रस्ति । -माच-प्रस्तिशः अपनी अवस्थाः सहय प्रदृति । -- व्हात-वि प्राकृतिक ।- ज --- अतिस-दि सहय प्राकृतिक । - सेप-पु० प्राकृतिक हेंग। −०प्रमच−नि दे रनगानवं। --सिळ-६ सहब प्राकृतिह । -माचतः(सस)- स स्वभावन की प्रकृतिन । —भावोक्ति,—की एक काम्बार्णकार प्रश्नों दिमीक शुणी, क्रिया, स्वभावादिका वशस्य वर्णन हो। ∽भू−वि आप ही आप बरस्य दोमेराकाः पुत्रद्धाः विष्णुः तिवा औः स्वदेशाः =भृति=न्दौ+ अदमा करवाथ ।: =भृति=न्दौ+ स्देश व्यम्पर्याः पुरुषेतदायः पुरुषः – सन्। म की अपना मन या निवार। -मर्नापिका-की अपनी रावा करासीयना । -वाजि-स्थे अवना क्ष्मित्रधाना बहिम या निका शृंबंधवाको कोई श्री। वि जिमके माथ एक-मंदंप हो (माताको कारम): आ रवर्ष अपना बराजिस्थाम हो। -हम-पु हिस्तवा अपना (अर्थ प्रिन) रुगः प्रवादिका चीमवर निकासा हजा रमा माकृतिक स्वादा यह विशेष क्यापा आरमानंदा

तैलीव पदार्थ सिकपर पीसनेवर क्यी हुई तरीछ। अपनी मबोद्रश्चिः जपने कोगोंके प्रति कोनवाकी भावनाः जास्म राहाको सहय प्रतिः यह पर्यतः साध्यव । वि निषद अमुक्त !- इसा-सी वृत्रियपत्रदः साम्र !- रसादि-य काम ! -राजी-वि क्षि] स्वरामध्य किय भारते कन करनेवाका। -राज्य-पु स्वाधीम राज्य, अहाँके शासक वहींके कीम हों। एक साम ! - श्मीमी(मिन्)-वि जिने स्वराज्य वा अप्रमश्चामम प्राप्त की। -राट (स)-वि भी स्वयं प्रकाशित हो। पुत्रसाः विभा वक मनुः एक एकादा सूर्यको सात रहिमबोर्नेन पकः कुछ वैदिक छंटा येथे राज्यका राज्य जाहाँ स्वराज्य हो। -शङ्क-पु अपना राज्याः व्यः जनपदः एक गणा (तामस ममुके पिता)। - व्यांधी (त्रिन्)-प देखके आंतरिक शासन संवंधी कार्योधी देख माल करनेवाला मंत्री। -श्सदस्य-९ गृहसदस्य ! -हचि-सी अपनी विन वा पर्छर । वि अपनी रुविस वहनवासा ।-१८(६)-वि आप दी भाप रुगर्न था बद्रनेवाला । -स्ट्रप्र-प अपनी आकृतिः अपनी विशेषता, न्यमायः जारमाः विशेष करें हवा प्रकार। मृति। विमा वह वी देवताका रूप थारण करे। घटना । अर्थ (समास्रातमें) श्रीरवर । वि अपनी विद्येषवासे प्रका समान प्रस्का संदर मनोहरः पंहित बुद्धिमान् । - शाल-वि॰ जपनी ही वैक्षी विद्यपनाओं वासा । - • श्र-वि वत्त्वद्वाची भारमा परमारमाधा क्य धनजनेवाका । - प्रतिप्रा-को अपनी विद्यपनासे यस हीना । - • रूपामाम- प्रभाव होते हुए त्वरपद्मा बायास दोना । --श्रीवध-पु॰ अनुसन्ताद बाधारपर श्वापित संबंद । -श्चपक-त -रुपिका-स्पे --श्चे मृतिः अपनी अवस्था वा विशेषताः स्वमान ।- क्रमान --वि दे 'न्वक्षवाम्'।-कृषयान्(यम्)-वि सुंग्र। —कवी(पिन)−नि वा अपने प्राप्तिक रूपमें धाः · दे रूपमे प्रदेश श्रीमवाकाः मृद्धिमान्। समस्य I- सूची यनियद्-त्वी वद वदनिषद् । -शेचि-श्री अपनी किरम । - स्टब्स्य - प्र विश्ववता विश्वय ग्रम । - व्यक्तिस्त −दि भएनास्थिता दुशाः −धीन−प यद्वदानदः। -बंदी(शिम्)-वि वादवानी पी वेदा । -बंदव-वि अपने परिवारका । -वर्गीय-वि अपने वर्गका । -बदा-विश् नारमनिग्रही। स्थापीत । -बद्दिरजी-सीश यद ब्ला : - बहय - विश् अपने ही वशमें रहतेशका । -बहिस-वि जारमप्रीनः मनर्रन भौरका ।-धार-ध अपना स्थान ।-बाच-पु अपनी अदस्या या भनाई । ~वासिनी-मी विद्यादे पर रहमैवाती बन्या वा विवा-हिता स्वी : -विकाधन-दि श्रीय मरनहाना। -विक्षिप्रमेन्य-इ १०१४म् भाष्ट्र समा।-विमह्-तु अपना छरोर । "विधय" वि को अपने करनेका ति । —विनास—कु अपना नाग्र आस्महरवा । -विषय-तु रारेण अपना विषय वा क्षेत्र। -यूचि-को अपने बीवन-बापनदा देश- अएमनिभाना । वि अण्यनिभर स्वादर्गरी। -इसाधा-सी आग्यवर्शमा। न्मेम्त−ि आत्म्मंग ८ –संपित्-सी मारम द्यान । वि वेदन अपनेका भाननेवासी । -संबत-

वीड-संगदायः संकेषः विकासः। - साह--पु॰ दिवासः। स्यविरद्या-सी॰ [सं॰] बुबाबरवा ह स्यविशानमी [सं] महाअवनीः पृशे औ । स्यविरायु(स)-वि [तं] जी बहुत बढ़ा हो गया हो। स्यविष्य-वि [सं] बहुत स्वका बहुत वकी। स्योबिस-वि [सं•] मनके कारण अनावृत भूमिपर समिवासा । स्थाई-वि देश 'रथावी' । स्थारा-पुदि•] छव शिवका रक्ष अनुवर। स्थागर-विश् (संश) स्वगर चगरका बना प्रभा । स्याजन-वि+ (सं) ब्रह्मं क्रमेरी नहा या सरका । स्यायावीय नवि [मं∗] स्वाजु क्षिक्रसंबंधी । स्थापु-विश् [सं] रत रिश्रा, मचल । तु क्षियः स्तीम, रामा सुँदी। भूपपश्रीका काँदा। एक शरहका मालाः बीमध्या निष्ठा बीरक सामक संबद्धना देवका हैंड। इतका एक भागः स्थारप्त अपूर्णिने एका एक प्रवासतिः यक नागासुर। यक रक्षांसा कोर्र अपक बरता एक तरक-का विज्ञाहर । - कर्जी - तो अदेशवारको कता । -पार्व-त प्रभार तमा बारवर भवन वरनेवाला म्बक्ति । लीर्म-पुधानशरका प्राथीन साम । लीका (इ.)-सी वर्षर-पूर्व दिछा । -शत-वि॰ बी मेक्के ट्रॅंडकी तरह गांतहीन हो अबाहा। -धारा-५० अमनश् रमानुद्धे और ऋग्र ममश् ₹मा । --होरा-प योहेका कर रोग। - बर-१ यक प्राधीन तीर्थ। स्थायवीत्रार – सं [म्] भागेश्वरका यह श्रिवक्या वाने-बर शामका नगर। स्थालस्य – वि. [सं•] उत्तरने धारव १८न बारवा स्थासा(म)-रि [सं] रिथम या रिश्वर रहनेशालाः १४ अपना स्थान-तु [र्श-] रिधत दीमें ठदरमें रवनेदी किया दिकान, दबराया स्थिर शामा। रिपति अवस्थाः अमधा वर ओहदा शंबंधा रहनेकी अगह वरा देश, प्रमाम-जनरा अनुमरा विषया धारणा वर्तक जनगरा नगेडे बचारमधी सगरा परित्र जनह अंदिर कादिः नेपी। समस्तर प्रांगया मृत्युके बाद कर्मायुवार प्राप्त कीनेशका भोका सबसे बाजमगदा रामना करमेक्षे राजा प्रश ध्येमचाः राववके सक्य संग-धेमाः भाविः साध्यकाः ग्रेनकाः मध्यामा भवत्रस्याः मीराया प्रथा शांतिको रिश्रतिः क्ष्मी क्षानिविका स्वरके स्पंत्रनकी आधा (नंगीत)। क्रयः नापृति। निमनगत यरिया गंपनीका एक राजा। -चंबला-सी वर्गरी ! - चित्रक-पुरु शंकारे द्वितिर क्के (तथ रवानको स्वपरवा सरमेशाना अधिकारी ।--स्यात-वि श्वानभर महने स्थामने गिरा द्वामा व्यक्ते वासे इराबाह्मा प्रप्युत्र । —स्वारा~तुरु निवास स्थानका स्वागः परको द्वानि । −दाता(त) −ि किसो द्विरिष दिश्तर स्वानश्तर रहनेका निदेश करमेवाका । ~क्यास~ वि स्पान विशेषकर रहनेके कारण अशाम । —पश्चि— प्र रमामका अधिकारीत निकार आदिका अध्यक्ष ह ~पास~प्र• (इमरे+) श्वामशर ऋष्या ऋष्या । –पाछ-मु॰ रबामनिशेषका रक्षक्र का प्रधान निरोधका प्रकृति

बौक्षीदार । --प्रच्युत-वि है स्थानस्युद्ध । --प्राप्ति-रुपे किसी स्थान वा परका मिल्ला। - मंग-पर किया स्थानकी वर्षांदी वा परत । - मूमि-की विवास रशाम, महल, हवेली मसाम । -भोश-५ स्थार या वदकी शांवि। –अष्ट–वि० दे० रंशानसूत्रः। —माद्यारम्य—¶° विसी स्थानका शीख वा देशा मारिके कारण माप्त महत्त्व । ~ ग्राग-पु॰ कच्छप, दरर आदि असर्जात को श्वाम-विद्येषपर बार-वार भात रहन र्व । -योग-५० वस्तुजीको सुरक्षके किर बराह रवान ना प्रपाध कामने सामा। -१श्वक-द्र॰ है "स्यान-पाक ३ - बिय- वि. जि.में स्थायनिश्चेष स्थायीर वातीका अच्छा याने हो। -विमाग-५ रक्तेय केंद्रबारा विद्यंत्र विद्येष स्थानपर रखा थाना। -बीहर सम-पु॰ आसमका यह जकार। -स्थ-वि॰ स्वरी रवानश्र शिक्त भवतः। स्थानक−पु॰ (सं॰) काइ और। दर, भोहरा मरहरा बाण बळाडे छमवसी श्रारीरकी सुद्रा। सुम्बरी एक सुद्रम नारकाश व्यापारका एक विशेष रवतः आसवात गानह शराबदी संग्रहरूर कहा हुना फन । स्यामांग-पु [सं•] बेन धर्मश्राम्पद्म दीसरा अंद । स्थानांतर-५ [सं] बिन्त हुमरा स्थान । –गांत-विश वी कम्बद यना मेवा हो । न्धानांतरिक=दि [मं] एक स्थानग्रे दुमरे स्वानगर निया हुणाः विस्तर्भ स्थार्का ही गया हो । क्यामाधिकार-५० (र्स्तः) देशमय मारिका विरोदयः। श्यामाधिपति –पु॰ [मं॰] दे॰ 'स्थानपनि । श्याबाच्यद्य−पुर (सं०} श्यानदिरोषद्य रक्षद्र वा शासद्र । श्यामापत्ति-स्ते [मंग] दिशी स्पत्ति या वश्तुका स्वान प्रदेश करनाः दवल्पे स्था सम्मः । स्याबापक्र-विक [लेक] हुगरनी जनह अरबादी अपने काम बरनेड लिए निम्नल । क्यानाक्षय~५० (मं॰) सहं कीनेन्द्रे बगक, आधार ह क्यानासच--पु॰ [मं] दिनी व्यक्तिये विश्वी स्वानवर क्षेत्र करमा ना शेव रमवा । ब्बासिक्ट∽रि [सं] स्थानस्थिपेने संबद्ध स्थाओप । प्र श्वासविद्येषका रक्षक या ग्रानका देवानवद्या स्ववस्वारका शास्त्रक-संग्राहरू । ब्यामी(मिम्)-दि [मं] स्वामशाण (क्य) परस्य व्यानी। जी बस्पुक्त स्थानवर की, बप्यून्य, मीत्र । [म] स्थानिकार गरेप रामनेराणा भ्यामीय ∽ि रमामनिशेषके किए कर्युक्त । यु संगर। क्यारा भार ही न रोड़े बीच न्विप हुये । क्यानेत्रवर-प्र[मं] वक प्रसिक्त तीर्थ पानप्रस्थ स्थानी CHALL क्षापुत्र-वि [तं] स्थापित करनेवामा। यदा करनेवामा रिवर कर्जवाछ। । पुनिका स्वापमा करनेवाला। कार्र करवा रवावित करनेवाला दिलाके वास कुछ असा बरहे

- बान्ता सूचवारसः ल्हावक (तर) । रथायस्य-पु [सं] अन्नपुरक्षा रशकः क्रियोः सूमायक

शामकता वृद्द जनमन्तिर्वाता नाग्युदिया ।- बळा-करे

वि॰ भारमरद्वित । -संवेदन-प भपना प्राप्त किया बभा शास । -श्रीवेश-वि CARRY WIR केतर भवनेको हो सके। -संस्था-को। भारमधीन दीना । -समुख्य-वि अपने मात्र वठनेवालाः प्राकृतिकः भा रवरेरामें प्रस्तुत दुशा हो । -सर्थ-त अवनी छारी संपत्ति। -श-स्त्री पृत्ती। -स्य-विश्वपतिमें रिश्वर को अपनी रवामानिक जनरवामें को। संदर्शत, जीरीयः रिपर विका शैवद्यः सतीः स्थापीतः कारविर्वते । ~ चित्त-दि जिसके ममर्गे किसी तरबका विधार स हो । -- व्यक्त-पु: स्वरंथ व्यक्तिका बच्चारः स्वारंश रहाने निवय । -स्यस-विश् स्थापीन । -स्यथ-पुर यक पितृपर्ग । - इंता(क)-व जात्महरूवा करनेवाला । -हरण-पु+ मंपश्चिका हरण । -हरल-पु अवना हाथा इस्राक्षर । -इश्तिका-म्यो॰ हुवाल । -हिस-वि करमें किए कामदाबक। प॰ अपना दिस। स्वक-ति [सं] भपना, निमी। स अपना भंगी सिमः अवनी संपत्ति । स्वक्रीय-वि मि केशमा निवीत अपने परिवारका । पश्मित्र अपने क्रोता स्वडीय।-स्री (संश) अवनी श्रमी। स्यन्ध-दि मि॰) बच्छी तरह किस । स्तक्का-दि॰ [मुं॰] सुंदर प्ररोबाङ्गा पूर्ण भौगीवाला। सुंदर मेत्रीयाका + दे॰ 'रहण्य'। प्र श्रीरर प्रधीवाका रका सह अपति । इक्टरर-वि मि े निर्मेशः परिषा सक्षेत्रः रथशः निश्चण्यः शंदर। स्वरच । प्रण विहीता मीती। वैरका वेश सील और चाँदीका मिलमा रश्येमाधिका रीप्यमाधिका संदिदा। -ब्रद्य-५ शरीरको सफेर भा**तु ।** -धातुक-५ सीने कोर कारीका विभाग । - यहा-१० मानक । - मार्च-१ शारदर्शिना। -मन्ति-द विधेर। -पासक-द यद वरवात विमन । इयरटक्-विश्र[र्ग] बद्दन शाक्ष वा पमधीका (विशे इक्टल्ला-को॰, स्वय्यस्य-५ (र्स॰) समार्ग निर्मयनाः विध्यक्ता । र्वण्डना॰~स॰ कि साम करना ३ ह्यच्छा-मी [मं+] श्रेत दर्श ! स्वरजीव-निव 'रवष्ठ । इयुन्:(तम्)+म• [de] भाव दी अपनेगे। −श्रमाम -मिया-दि॰ रवर्ष सिक्ष, रवर्ष प्रमाध ह स्वताविरोधी (चित्र)-वि॰ [तं] अपना ही विरोध **4**र ने वास्य । क्यरय-प्र [तं] अवना मादा रवर्गवताः अप्रशाह ह्यामिरच । - निष्टुणि-मो० अविश्वास्था न रहमा । -वीचन-व स्रामित्वका प्रमाय । -हानि-पु अवि बारका म रहना । --ईतु-पु॰ न्याधिनका कार्य या बादार है क्त्रत्वाधिकारी(दिन्)~ड [सं] नामी मानिक र

इक्ट्ब-पु [बं] भा राह्य सामा मा नारना ।

हरूदिन-दि [6] अन्तरित चया हुना शादा हुन।

स्वधा-म [मं] वितरीके बरेश्यी हिंग हैते सर बबारण करनेबा एक श्रम्प । स्वा॰ बानी प्रश्ती, रासर व्यवसी श्याप्त, वृत्तिः विनरीकी ही आवेशको हरिः विवर्धेको दिवा बानेवाका सका सीमन प्राप्त होत अवना गांगः भारः मृतकःकर्मः शानाः। -कर्-रिः वितरीकी हरि हैनेवाला । -कार-वर रखा हन्दर बजारम । - प्रिय-प अप्रिः पितरा पित्रोकः धना विन । - अक(थ),- भीती(जिन्)-प्र रिप्त रेक्टा । स्वधाधिप-४० (सं०) वर्षा । स्वधासम्बद्धाः विशेषितर । स्यक्रिति स्यक्रिती—सी॰ सिं॰ो कस्तानी यज्ञा भारी। -ब्रतिक-४० प्राप्त भारत कामेवाला सैनिक। रमधिग्राम-पि॰ (सं) वा मध्यो विक्री सन्दर्भ शे (पद रथ) । स्याधिक्रिल्ल-विश् मिशी भी उदरने वा रहमेंद्रे किर मध्य की: अच्छी तरह मिराराबा-संबंध हमा (बैंभे हाथै)। स्वाचील-वि (मं) प्रिमन्त्र वन्त्री तरह त्राव विदा नरा थी। मण्डी तरह जच्चवन दिया हुना । पुरु अच्छी तरह परा समा विसय । स्वर्मग्र-सा सि देशी। स्वान-१ (सं) कानि, धान्या यह वाति। ति पूरा शक्त करमेशाला । -- चळ-- व वक तरहका रतिरंद । न्यति−५ लि रेचनि, शभा व्यक्ति । स्वतिक-वि नि । शब्द करमेशामा । स्यवित – दि+ (सं०) शास्त्रन, ध्वनित । पु० ग्राम्यः पर्वनः बाइमोदी वर्तना । स्वभिताद्वय-त [सं•] तंत्रभीव भौजारेका साग। व्यवीतमाह-५० (मं] नेश ह म्बद्ध-पुर्वि] बन्धा ब्राहार् । स्मयप्रश्नम है 'प्रप्रथ । क्यमा-प॰ लि ो बोरा रहार संशाहीनता (लयाक) । रक्षणां ≉−तु स्रक्षाः स्वपन्नीय, व्यसम्य-दि० [मे] सीने बीग्य । श्यम-५ (में) निहार वर्ष गुपारम्यामें बायप, मन्दर क्षाकार निराय क्यान शयना। मानरव ग्रार्गी। कंथी कारमा, बोर्ट महत्त्वपूर्ण कार्य करमेशा निवार । अकार-विक निहा क्लेबाली। न्यस्पनि श्रम नेमा। -बास-विक मीनेवा इभाव ! -मृत्य-विक निया मानेवाका । पुरु सुनिवरमध् मामध् शास- मुसना । -राम-दि॰ हो ही गवा हो । -गुइ-पु शर्माणार ! −श्र−ि शीर्थे सारवर्ष प्रश्वेषा नशावन्द्र व्यक्तने वानेनाकी कल्पनुति । —लेक्सिया –और निदासका ते बल्ल धेर्यस्य । न्यांत्र निर्माय नगरमंबन यु अपूर्ण देखना । -एक (श्रु)-विश् शास्त्र देखने-बाला । अशोष-तु व्यक्तपावामे होनेबना शहरणा -थीताय-वि किहा देनी भाग्याचे अञ्चल कि वाका। -तिहेनव-पुर शहरागर। -प्रांप-5 श्राच्या प्रस्ता क्षोत्रेशामा शंनाहर -साक(अ) वि रक्ष देशता हुवा भीता हुआ। नमामा नमामार-

भारत्विचा ।-बेद-पु एक वपनेद, बारतुधास । स्मापम-प सि । सपा करमा, स्थित करमा। स्थिर करनाः बमानाः स्थापित करना (ग्रंस्था भावि)ः निर्वेश्वन रंगांपकी क्यवस्थाः क्यामः भारणाः निवासस्थानः गर्मा-भान संस्थारः पुंसदनः प्रतिपादनः करकानाः अंगोको सदाक करनाः जीवनवृद्धिः या बसका स्पायः रक्तनाव रोबनेका सवाबः परिमानाः गारेकी एक किना 1-निक्षोप-पु॰ मईत्की प्रतिभावा पुत्रम । - वृत्ति - वि॰ वी श्रक्ति बहादी जानेकी अवस्थाने स रह गया हो। 'स्यापना-सी॰ [र्च] रहना जमाना, स्वापित करना।

र्समाक्रमाः एकत्र करमाः संरक्षण करनाः निदिचत नियम नियमित ऋमः प्रतिपादनः रंवमेक्दी व्यवस्था निर्देशन । सरप ¬प्रतिमामें व्यक्ति आदिका भारोप (वै)। स्थापनिक-वि॰ सि ो गोदायमें जमा किया हुआ। स्यापनी-सी [सं] पाठा।

स्थापनीय-दि [सं] स्वापित करने बोग्यः रहाने पाकन करने योग्य (कुछ। बाहि)। श्रास्त्रमर्वेद्ध भीववसे अपवार करते दीमा ।

स्थापयितव्य-वि (से) किसी स्वाचमर स्वापित करने, रखने योग्या निर्मात्रण रखने नोस्य ।

म्थापपिता(तु)-वि [मं] स्थापित करनेवाका, संस्था-TE I स्थापित-वि (एं॰) जिलको स्थापना की गर्ना को।

बमाबा हुमाः कावम किया हुमा प्रतिहित्त किया हुमाः प्रशिक्ष निर्देशिता निरियत किया प्रमाः किसी कार्यकर निवक्तः विवाहितः स्ववरिषतः वद रिवर । स्थाएं।(पिन्)-५ [सं] मृतिका निर्माण वा इसकी स्थापना बरमेवाका ह

स्थाप्य-वि सि रे रवापित करने बीम्ब (मृति गादि): रसे जाने बोग्बा दिसी भरपर निवुक्त दिने बाने यीग्वा किही स्थानपर बंद किने जाने नीग्यः पाकने नीग्न (नाम बर)। निवंत्रित करने योग्य । प्र वरोहरा दैवप्रदिमा । स्वाप्यापद्रस्य स्थाप्याद्रस्य-५ (धे) अमानवधी स्थानन परीहरकी परत इत्तर कर बामा ।

स्याम(मृ)-इ [सं] छन्जि सामर्थ्यः स्वामः बीरेकी विनदिनाद्य ।

स्थाय~प [नं] बाधार पात्रा दे 'रबाम'। श्याया-भी [सं] घरती। म्यायिक-वि [मं]रिक्नेशमा मना रहनेशाचाः विकरन। स्थापिका-स्री [मंग] महे द्वानेकी किया । म्यायिका−भी स्थायित्य−पु[शं] वने रहमेसा

माना रिकार, ठइराम दन्ता, विवरता ।

स्थायी(विन्)-ति [मं] रियनियुक्त उद्दर्भे टिक्ने बाना बना रहमेशाना विशेष रिवर्तिमें रहनेबाबाः विश्वरतः " के रूपवाणाः विमी श्वाममें रहनेवाहा भाष्यसायी । पुर गीनका वह चरण जी वार-बार नावा बाना दे रह, पुरदा-(मि)माब-त बारवा बदायका वी मनमें बमा रहता है और दर्शनक होनेपर रखावरवामें परिधन दोना दे (रति दान होत दोन्ह, लगुण्हा दिरमय अब करमाह और निर्नेड) :-समिति-को

चने इय सदस्योंकी यह शमिति वो अगने अभिवेद्यनतक सन कार्मीका प्रकन्ध करती है । स्थालुक-वि [र्न•] बह, रिवरः जी ठहरनेवाका हो या

विसमें बदरनेकी प्रवृत्ति हों। रहनेवाका (समासमें)। प्र गाँका सुद्धिना, भामान्यश्च । स्याक-प्र• सि•ी बाज, करोरा, बरको न्यारि पात्र, कोई

भोजनपामः बाँठका भोजराः मस्त्रेका भीतरी भाग (१)। ─स्य-प्रपादकी आकृति।

स्थाकक∽त सिंीपीकको पद पत्री। स्याखपथ--वि [र्श•] बिस्का श्वक्रमार्गसे सामात

इना 🗓 १ स्यास्यपिक-वि [सं] स्थलमार्गसे बाधा करनेवासाः

रथकपूर्व । स्थालिक∽पु∟र्स] सककी दुगवादि सककी तरह **१दन् करमेना**का ।

स्वाक्तिका-स्त्री [र्स•] एक शरहर्क्य नक्ती। स्थास्ती~स्रो [सं•] मिट्टोडे वने हर वाद्यपाध-इंडी क्यादी भारत शोमरश तैवार करनेके काम मानेवाका ण्ड तरहेंचा पात्रा पाठका वृक्ष ।-प्रह−प करकीमर निकासा प्रमा परार्थ । - **प्ररा**ण-प्र० पात्रका संय होना ।-द्वस-पु नेकिया पीएक मंदी पृष्ठ ।-पृष्ठ-दि रदाकीमें चदाका हुआ।-पर्मी-की साहिपवी। ~पाक-पु॰ होसके किए हुवमें प्रतामा द्वामा बीहा बावक! हि द 'रशकी-पाडीव' । —पाडीय—वि रशानीपाड नामक चक्-संबंधी । -प्रशिय-प्र वाक्यांत्रमें बमा या क्यादमामैक या वर्राछ : --पुकाक्र⇔पु श्वनतीमें पदाया द्वाना चानका ⇔० न्याद−पु दक्ष चानककी परीक्षाचे सारेका पता कर बानेकी तरह अंशके आधार पर भौतीके संबंधमें अनुमान करना । −विश्व-प• पार पात्रका भौतरका दिरसा ।-विसीय -विस्य-वि पाद पात्रमें पद्धाने बाग्य । – बुद्ध – पु दे 'श्यानीइ म'। स्थासी(सिन्)−दि [H] स्वास्त्रामा, पाषपुत्तः।

स्यायर निर्वि विश्वीयां मध्या स्थापीः निम्निया विविवतः वातरपतिकः अवन संपक्ति स्वंभी । प्र पर्वतः कोई गतिशीम वा मित्रीर पदार्थ (परवर पूछ शाहि): रवावित्वः अषय संपत्ति वा वरतः वनुगुमा वंशामन अरबावर बरतुएँ (आपवन आदि किन्दें नेवना प्रतिन नहीं दीता)। -कस्प-प सहिमेरंथी गढ़ विशेष दश्य (वी)। -ऋषासक-पु सदरीक्षो पी वे। -गरम-प व्यक्त वानरपतिक विच ।-सीच-प (रिवर अक्रवाला) पक शापीय तीर्थ । − हाज − ⊈्राह्म । → क्रम्या → स्यी पार्वती।

व्यावराष्ट्रति–दि [मं] पृथ्वी बाह्ननिदा । स्थायसरि-प्र [र्च] बल्हमाम मायद्व दिव र स्याविर−दु[र्थ] वृक्षावस्था (० से

अवन्ता)। हि मोद्या १९। व्यासक-पु+ [सं] शहीरमें बंगरान सुगंदित हुन्य ल्यानाः वानी वा दिनी तहल बदार्थदा बुल्बुमाः बीददे नावमें क्या दुवा बुनवुरहे अस्तारका गहनाः येत्रस ગાદિકે વના <u>દુષા</u> નિષ t

पु॰ सप्त पूरा करानवाडा यक यंत्र । — करुव — विश् स्थानमें म्राह, स्थानमें यह । — विकार—पु॰ स्थानक स्थितंत्र । — विकारी (तिन्)— विकार विधार करनेवाला (पु स्थानदाको । — विकार—वि स्थान क्षेम्रा स्थानदाको । — विकार—वि स्थान विमा । — क्षुत—वि॰ स्थानमें प्रति । — स्थानि — वि निप्तान्त । — स्थान—पु स्थानमार । — स्थान्त — स्थान्त । — स्थान्त — स्थानमार । स्थानक (स्थान)— वि । निप्तान निर्मान । स्थानक । — स्थानक । — स्थानक । — स्थानक । — स्थानमार । स्थानक । स्थानक । — स्थानक । स्यानक । स्थानक । स्थानक

श्रेत । स्वमातर-पु[मं] दे 'स्थप्नांत' ! ~गत-दि॰ स्वप्न-

में बटित ! स्वप्रातिक-पु (सं॰) स्वयन्त्राधिक चेतमा । स्वप्रादेश-पु० (सं॰) स्वप्रतादिया पुत्रा कारीस । स्वप्राताश-पु क्रिक स्वप्रदिख्यामा ।

स्वप्राप्तु--वि॰ [मं] निद्राद्धः स्थमावस्था--वो (स] स्थाकी संगरता (बोनसक्षे किय

स्वप्तांवस्था नवा [स] स्थानवा । स्वप्तांत्रस्य नि [स] द्वारा स्वप्तवा । स्वप्तांत्रस्य नि [स] नवप्रदुष्य । स्वयन्त्रस्य न्यु हत्त्वर्ते होता । स्वप्ताविको नि हे स्वाप्ताविक' । स्वप्तेत्रन्त्रम् हत्त्वर्ते हत्त्वर्ते स्वप्तव्यक्ते ।

नपमा किया हुआ। प्राकृतिका गीर किया हुआ ! "कृती-(तिन्)-वि प्रकृत्वा स्थम करनेपाला । -कृष्ट-वि सुर बोता हुआ। -गुप्ता-को स्वदिनिका देनीय। -ब्रह -ब्रहण-प् बसात् महण बर केना । -ब्राह-प्र बसाय प्रदेश कर केना स्वयं जुल केना । वि स्वयं भुन क्षेत्रेवाना। — बान-इ सेना द्वारा स्वतः सदा-बता पहुँचाना (ही)। - जात-वि वी भाषम आप करप्र इमा हो। -स्वोति(स्)-वि का नाव ही भाष प्रकाशित हो । चु परमेश्वर । −वृत्त- नि विसमे अपनेदी रवर्ष है रिवा है। हु वह अनुका की दूसरेका दलक पुत्र वस गवा दे। -दाम-पु स्वच्छामुख्य दान (सम्बद्धा विवाहमें)। न्यस-प स्वयं जनमा पुरान्य करनेवाका शावक । **−दृशी**-स्त्री अपना दृशन भाग दी करनेवाकी नाविका। -रक्त (दा)-वि बी स्वयं प्रस्त हो। -देव-5 प्रत्वश हेवता। -पतित-वि भी भार ही भाग गिरा हो। -पाफी(किम)- रहवं सदना भीजन बनानेशाचा । —पाइ-पु सृष्ः वारः। -प्रकाश-वि भी सुर प्रकाशित हो। -प्रकाश-मान−4ि दे रत्रपेषद्वाधः। –प्रश्चकित्त-दि भा भाष दी भाष बस रहा को। "प्रधानिक आं आप ही सार चमक रहा हो ? है। आशी सरवर्षियों के खांच भरंत्। - प्रमा-सी॰ एक अप्पर्ता यवकी वह कृत्याः। -मम्-दि भी न्दरं प्रतिशाली क्षाः मो लुद अपना मासिक हो। --प्रमाम--वि भाग्वर्वधराणिय हा विस्कृतिक प्रमाणको आवस्यकता स को : - प्रस्तुत- वि स्ववं गर्शसिस । -- कुछ-वि जो आप दो अपना क्क **रो** । −शु−पुत्रका। −शुव−पु भादि सनुः जहाा। क्षित्र । —भूवां —सी वृत्रपत्रा । —भू —वि० को रवर्ष कराज हमा हो। त्रश्च-र्सनी । प्र महा। विभान दिनः उद्ध कादि उद्ध काका कृष्ण नापुरेन (वै॰)। काम देवा व्यासः श्रिक्षेका रहता जंहरिका मावपनी। किंगिनी। स्वार्वम् ६ -अल-वि० को आप की आप स्तपन्त इका हो। - शत-वि बीस्वयं पोदित दमा द्वा सन्म द्वारा नहीं । - अभि - अभी (भिन्) - वि रहरे पहर यानेवाका । - यस-वि॰ विसकी माष्ट्रिक सूख पूर्व हो: वो स्वेच्छासे मरा हो। ~स्छाम∽वि वी माप ही फीका पर चया हो। महला गया हो। - मान-पु स्वयं आजभगका आरोग करना ! --वर-प् वपरिशत विवाहार्थियों में से सम्बाद्धा स्वयं परिका चन सेना। ऐसे बरमध्ये समा वा जल्लव। - • पशि - प्रः स्वयंवर में चना इका प्रति । - • बिलाइ:-पु स्ववंदर& विविधे होनवाका विवाद स्वतिकोंमें बायब माने दूर बाढ प्रकारके स्थाहीयेथे यह । -वर्ण-प्र परिका भूनान । —बरियंत्री – सौ स्वयं पतिका खुनाव करनेवाडी कन्या । -बरा-ची प्रतिका स्वयं परण जनाव करनेपाकी कम्था पर्विवरा। -श्रश-वि श्वामीन। -श्रह-वि रवर्ष श्रकनेवाका (र्वजादि)। स्वयं अपनेकी पारम करने वाका । -बादिदीय-पुर न्वादास्यमें सूठी बाद दुइ रामेका अपराच । -बादी(दिन्)-दि॰ किरहमें सुद्री वात दुवरामका । -विक्रीत-विश् विस्ते गुर अपने को देना हो। --विकास-दिश को आप हो आप (इसरेमें) कीन दा गवा दा। - पिक्सीर्ण-वि की आप ही आप थिरा हो । -शत-वि आप ही आप पदा हुआ। - सेब-वि प्रज्ञाश्वाश्वाशे अच्छा (शिव)। -संवारा−९ आएसे आप होनेदाका (वैदाहिक) संबंध। ─सिळ्ळ्वि विश्वके सिए प्रमानको आवश्यकता म हो। वी रवर्व भवनेमें पूर्व हो (क्षेत्र)। -सेयक-प्र विना बदन विषे स्वेच्छासे सेवा बरनेवाका ! नमविका-स्त्री स्त्री स्वरमंबद्ध । -हारिका -हारी-स्त्री स्थ्यह और निर्माहिकी एक दश्या की विरुक्त तम वैधरका र्थन कादि दश्य बर लेती थी। -हाता(तृ)-पु॰ रवर्ष क्रम कररीवासा ।

श्ययमधिगत-वि [तृं•] तुर मात दिना दुना । श्ययमर्जिन-वि [तृं•] सुरुवाधित दिवा दुना (पत) । श्ययमव्यक्ति-वृ [तृं] पूजीको संतरपर आस्त्र कार कृति वर्षे स्टार ।

स्परमागत−वि [मं] आध्य नार भाषा हुआ। विना वहे विमी नातमें इसल देखेनाता ।

न्यवसाहम-वि [मं] न्यतं कावा दुवा । - भोओ (जिन)-वि अपना दो सावा दुवा सामवाहा। स्वयमिद्रियमोचन-पु [मं] आवन् आव सुद्धा पान

दोनाः। श्वयमीकर−द्र [सं] यह को अपनापूर्णसनुदे। परमेपर।

रवयमीदिकलस्य-वि [मं] स्वयं अपनै मदानसे मास ।

स्थासु-पु॰ [र्स] शारीरिक रक । स्थास्तु-दि [र्स॰] रिवरः अवन्यः स्वायी, रिकारुः सहस-श्रीक । पु॰ क्या ।

स्थिक-पु [सं] करियरेक नितंत।

रिपत- वि [] यकाः करता हुना क्षित हुनाः एरता हुनाः परिता किसी बनानस रका या निशुक्त क्षिता हुनाः किसी निषमः नारेश्च नारिका पानन स्तमेर्ग रका शिका हुना बारिताः वका हुनाः, क्षानक हुनाः हिन्द रक्त कुन् किस्ताः (विदेश कीराः कर्मक्य-स्तावनः स्वताः पुण्यास्याः प्रतिक्रवतः पानन करनेत्रास्थाः प्रस्तुतः व्यक्तितः स्वर्णाः स्वर्षाः । यु जुपनाय न्याः रक्ताः कर्यनाः रस्ताः स्वर्षाः । -प्री- विवयुद्धि कीराः । -पान्न- वु स्रोका स्वर्षे हैन्दि स्वर्षाः करनां (ना०)।-प्रश्च-त्रीका स्वर्षे हैन्द्र पानुकर्ये नात्र सरनाः निष्युद्धि और निक्ताम हो । -प्रसार्थाः भ्रतिकृतः विवयुद्धि और निक्ताम हो । -प्रसार्थाः भ्रतिकृत्वि अधिकास्य पानन स्वर्ववानः ।

स्मिति—न्यं (पं) रहना। उदरता। निवास स्वमाः अप्रयाद राजा रहना। स्वरता। स्वरता प्रवृत्ति र स्वरत्ति। स्वरत

रिश्रतिमान्(मन्)-वि [सं] विसर्वे दाता वा भीरता

क्षी रमानी। पार्निक ।

रियर- दि] दहा नविद्रीमा नवका रुपायी। धाँता भीरा करा हुआ। अभारतरी। निवा निक्या निवाह कर्मा अभारतरी। निवाह क्रिया क्रिया आहेत, तेण हुन्यो क्रिया कर्मा क्रिया कर्मा क्रिया हुन्य क्रिया कर्मा क्रिया हुन्य रूपा क्रिया क्रिया हुन्य क्रिया प्रवाद क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया हुन्य क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रि

व्यति । -वी-वि प्रिसदी प्रदि रिवर हो। -यप-पु विवास । -पद-दि० वडन्स । -पुरप-पु० संसः योगसिरी । -पुरुपी(न्पिन्)-तुः पंत्रत सुक्तानिः पुष्पी । -प्रति न-विश स्वपृतिक, मध्ये वयमहा एकर करमेवास्ता । —प्रतिवश्च-वि+ १इठापूर्वेश्व प्रतिरोष कर्--बाका । -- प्रसिद्धा -- स्त्री विशिद्ध विवासस्यान । -- प्रेमाः (सम्)-वि॰ विसवा मेंग रिवाक हो। -क्सा-मोन कुष्मांद्री । - सुद्धि-शि द्वित । पुरु रह समुहा ~सर्वि~की रिशर दुद्धि । वि» रिशर दुद्धिशाला । -सद ~वि• स्तमा महोका कि बसका भगर क्या रहे। ध्रे ^{हेन्}रे पञ्चेमें को । दु सन्दा ~सना(शस्)-शि॰ रिवरविका -पानि-पुर छापात्तर सशास्त्रार देश -यीवन-इ विवापरः निरस्थावी शारुच्। ∺र्रेगा-की मील। ~रागा-मां॰ दावदरिहा। -सोदन-वि॰ रियर मॉस्ट्रोंशाला: विशे रहरूकी कम बनी ही। —चाक्र(च)−दि॰ विसको बातका विवास किस जाय। -विकास-विश् रहतापूर्वेड करम वन्नवेगाता। ─धी-वि वनीरवसेवाकी समृद्धिवासा । ~संगर-वि बातका बनी । -संस्थार-विश् वर्ण वयमें संस्का । -साधनक-पु॰ सिदुबार वृद्ध । -सार-पु॰ साधेन । ~सी∎द्र−वि विस्को वैद्यो शिंद हो। पु॰ सेरीमें रिवरता: - न्याबी(यिन्)-वि ग्रापापुर्वक इराने रिक्रनेशामा ।

श्यक्तपारणां विश्वास्त्र (क्ष्णे) स्वत्य चार्चे (क्षणे) स्वत्य चार्चे (क्षणे) स्वत्य चार्चे क्षणे क्ष

्रिक्त हो। स्थितापाय-विश् [लंश] सुवर्धानः। स्थितासु(स्)-वि [लंश] दोश्योतो। पु धार्स्सव पुढाः। स्थितिकस्थ-पु लिंशी विद्यास्त्राहा प्रामाना गर्सस्य,

्युक्ति । वि. यद्भारत्मेयामा । नियरीकार-पु. [से] समर्थन पुष्टि । म्युक्त((तित्र)-पुरु (से०) देश रचीरी । म्युक्क-पु. [सं.] यद्भारत्य संबू ।

रमुख्य-तु [तं] यदः तर्पश्यान्या तेत्। रमुख्य-तुरु [तं] विचानिषदा यदः तुषाः एकं यदाः पति। --कण-तुः यदः सति।

स्पृष्ठा-की [व] विभाग स्वरणीया वरता कीरद्रशीमा विद्यापी वेदचा द्वार पट दरहा होता! -कन-5 कर तरहार मुद्दा दर करता एव शिवासा वरू दरदर्श वारा! -कही-चु भेवा मारनेदे दिन वसात हुन्य वरहा! -वहू-चु कर तरहार मुद्दा - मारन-5 वरहा! -वहू-चु स्थान हुन्य स्वरूप मारन

स्यममुक्ति-पु॰ [सं] वह मनाह ची बाप ही-दिना बरे-तवादी है। स्वयम्बरावस-वि [मं॰] भी म्बर्व दीप्तिमान हो। स्वयम्बरित-वि॰ [धे॰] जिलका आपरी आपण्यस्थाही। स्मयमदादिस-वि सिन्ते की आप दी आप शक नया हो (दश्वामा) । स्थयसप्तात-वि बि सिम्हार्क द्यामता स्वीकार कानेगला । स्वयम्परियत-वि॰ [मे॰] वी भाप ही, अपनी द्रणासे भावा हो । रबगमपारात-वि॰ [तं] रवेण्डामे बाबा बुधा । १९ वह करका भी स्वयं गीत किये जानेको कहे । स्ययम्पेत-वि मिश्री अपनी रच्छामे जावा हवा। स्वयमेख-म [सु॰] स्वर्व ही अपने आह । स्ययम् – स॰ [मं] स्२४, आव अपने आप, जपनेतर्र रदमन सरेले । श्चर∽प मि ो भाषातः संदर्शनिः वह बर्जे जिसका चरा बचारन मन्य वर्णकी महायताके विमा ही सके (व्या)। मंगीत ६ सात सुरी-बटम अपन भाडिमेंसे कार्यः मामा मानका भेषया। बळारणी स्पेरलकी आचा (बराल-भमुदाच भीर स्वरित); गरोरा; बलगु: भाषाता विष्यु । -फंप-प स्वरका दिश्वना । -कर-दि आयोग मीतने सरीता बनानेवालाः स्वर बत्तव बरमेवाला । ─धस्य – प्र• १४१६६ हाति । – गुनि – स्वी १४१६६ गोगी-रनः।-ब्रास-५० संनोतके साथो ग्वरीका क्रम ११६ मप्तर सराम । --ध्म-पुर यमेका रक्त रोग ।-- विक्रज्ञ-वांसरीका रवरवाचा छेट । न्हीसन्दि अर्थे विवारमें मध्य । -माही (विम्)-५० शेहने केंडकर बजानेका बाजा। - मासि-त विकार बजानेका एक प्रापीय बाजा । - वृत्तत-पुरु शायपर । - वरिवर्ग-पुरश्रका क्षीरनेत । - एत-पुरु ग्रन्थके जवारनमें दिनी बहरतर हुए ३६ जाना । -पुरंश्वय-प्र शेवका दक्ष प्रमा - प्रयाम-विश् (राग) विगरी शहराधे ही प्रशासका की सामाध्ये सही। -बाज-वि साम्भवसमें वैंचा प्रभा (पाना) ! - सका(न) - इ० वेशादि प्रेन ! -भग-पुर एके या आशासका नेड आसार वर्णक वक शिय ।-भ्रोती(गिन्) -वि न्यामीय शैनन पीरिय । इ बस बदी १ –साम-पु अंतर्गवालनार दिया देवल प्रदर्शि समादे सम्बद्धाः प्रदाहत । ~धेव्-<u>त</u>ः प्रदर श्रीता आश्रासका बैक सालाह कथाएएवं सामा जानेगाला बोनदा संगोतके स्वरका बोनदा । - ब्रॉबन्य-पु मृत्दशा दद प्रदार ।-प्रदेश-९ -मेशक्रिका-मी० एक ११६ को बोर्गा । – माज्रा – सी कथा रणकी गावा ६ – बोरा – व प्रभर ध्यति। नश्रद्वरी नश्यी वनशिक्षी कवर सर्वतः। -मागिया-भी बंदी । -मिवि-भी रपटियो निक्येको जिल्लिका गीति पार्थारवेची शतुक्त रवर मध्य क्षत्र शाचा त्रम्यादि वनानेवाचे विश्वीदा कत्रा मे निहोधी ल्हादतान बागूप कार्य - बाही (दिय)-दि (दाशा) भी बंधन नवर निदाब सके नान अन्दि नदी । अविकारणपु भागावका दिनश

नामा । - विज्ञान-म स्वरीका विवेदत कार्याः विश्वान श्वरतारव । -बाधी(धिन्)-पु रे प् वेथी'। -शासा-पुरु हैरू स्वरशिहाल'। -शास-याचा व्यदिकी वश्मि हास (स्वर) ।-शाम्य-वि क ~संक्रम-तु॰ नुरीके बतार-पहारका क्रम (ccb -मंगति-सी॰ सुरोद्धा मेक 1 -संदर्भ-द< है h ग्रेक्स' ।-संधि-स्री॰ स्वर्षणी ला स्वरांत सीत् स्त वरीमें बोनेवाधी संवि । -संपद्-श्रीण न्वरीवा सर (संगीत) । ~सपश्च-विश्वस्तीमा जिसमें ज्यां मेक हा । —सप्तक-प॰ संतीनके सात प्रदर्शिक स्व ~समुद्र'-प प्राचीन कासका एक वाणा। ~सा पुरु रवरमंग । -साधन-पुरु दिमित्र सहर्थ दे स्त्री बीक ठीव निवासमेडा अभ्यास करता । ~हाहिस) 'रशरमा । स्- - बत्तरमा-रररका ध पत्रता । --बदामा--स्वर होचा बस्सा । --विकासक रनर धरवन करमा । -धरना-पद हो रस्त्की देर निकाशमाः एक हो स्वर समावर समावेशाने हे शा पति बरला । -सिकाला-दिशी हे स्वादे देवते र निकायना ।-साधामा-सप्तकः स्व(का भाषाम धार श्यरक्ष-न्त्री निशेषध्रमहर स्वरगण-प 'स्वर्व । स्वरतिकार-४० [र्ग] स्वर्वदी स्विक्ट बैहर पर्देश्या। रवरचीत-पु॰ [गं] मैंट। स्वरोत-दि (शं) श्वरमे अन होनेवाका निमा विशेष अगर स्वरित हो । स्वर्शातर-त []] की रशीके बचारणके बीवा MERCHANICAL IN रवरांग्र-५ (वं) काला या पांशारे छट (क्रिकेट गप्तमांच । श्वरा-श्री ि । अग्रान्धे करेका पत्नी गावतीन शक्ती । वचरायमा-भी [लेन] रवलमा व स्वतास्त्रच्नीः [ते] व्यत्रेष्ट या। द्वानाः रवरामुच्यु (गं०) धवा । sutier-a [et] ee sier tift i क्षां(त्त्व-पु (स) क्षेत्री ल्यास । श्वातिम्न-वि [संब] अपरमुक्ता ध्वतिना क्यपित । पु प्रशासकारुमध्ये वीवदा सम्बद्ध स्वर क्षक-मु [लेक] बहा बटी एनेम्बा यद कीम मुस्सीन मुदेरिका बन्ना बागाण्य गावका दि ए । नमोश्रम-पुरु ब्रह्मानुबद्धा यो नेथे तीला कहा सम्प्रते पहरूरे हाक बाना भाग । स्वद्ध(स) पुनि विश्वा बलान्य-को [slo] स्वेदी प्रभी श्री श्यारीय-मु रे लटीह र क्यराष्ट्रेय-पु (स) न्दरका जनम चन्नीया मामग्री ब्राबाह्य पान अपन को विधान विभावि है गए

144 C) 1

क्षराययगा<u>-पु(लॅ</u>] स्थाना

वयहरूम् [मुर्ग] रव रे क बन्या तील स्व इन्ति है) बस

पु॰ काशत्मसी बेहरका निकल्ता। स्पूर्णीय, स्पूर्ण्य मि [र्स] रतिम संवेधी। स्पूर्ण्य पु [र्स-] बेहरमा प्रकाश। स्पूर्ण्य [र्स-] बीहर महत्त्व। स्पूर्ण्या न्यां। ही विकास महत्त्व। स्पूर्ण्या न्यां। ही विकास सम्बन्ध। स्पूर्ण्या न्यां। ही विकास सम्बन्ध।

स्परीप्रप्र-प्र [सं] वह मोड़ा की जभी सवारी करमें काम म जावा हो । स्युक्त-वि [र्स] बहा; गीम, मोटा मनाः क्की विषम बी समतक न दी: मूर्च मंत्रद्वित सरतः (ज्यादमा वा विवरण) की वारीकी का क्योरेंके साथ म देकर मोडे चौर पर दिया गया हो। भौतिक। प्र कटहरू। राध्य समूहा त्व : कृद्ध वर्षतिश्वित् शिवका एक अनुवरः मद्याः विष्णुः प्रिनेपा एक तरहका करेना सम्मनकोछ। सरीरकी तालनी स्थानाः गीकर पदार्थः हैया ! -क्रांग-प्र पक अक्ष वरक मान्त्र । —कटक-पु एक तरहका वर्ष आकर्त्रा −क्षेत्रकेका−स्रो सहसकि दशः । −क्षेत्रका−प कर इस । - संद्यात्मको पृष्ठी वन्नभंदा । - संद्य-विश् वर्षे क्रांशका । पु काक कश्चनः ओक स्रामः वनमोकः इस्तिबंद । -बंदक- इ. कम्ब । -क्या-सी. स्वरू बीरक सँगरेहा। -कर्म-पु एक कवि। -काय-वि मोट प्ररोरवाका। -काष्टारित-को स्ट्यान्नि। -कस्तर-त सफेर अनेर । -केश-त एक कारि। −औड −क्वेड−ए वाच। −श्रीय−ए० अलंबन। -द्रीच-दि॰ मोद्रे यरदमनाका । -चेतु-तु॰ महाचेतु मामक प्रान्त । ⇔र्धपन्त-प्र एफेर चेपा । −चाप~प्र प्रमुद्धाः - अक्ट-विश् जिसके सिरवर बाकके वर्त-वर्ते ग्रुक्के हों । प्रिरात । −अंघा लगो भी समिवालीमैसे म्हा -- किह-विश्मीमी सीमवाका। पुणक्रम्य। -बोरक-प्र मैंनरेका। -संद्रक-प्र यक तरदवा मोरा पारक । -साझ-४ दिशक । -सिंदुक-५० बादनसः। −तिच्छ-ची वाददक्दी। –सामरी (रिम्)-ि मोडे नर्टेनाका । -खबा-नाः कादमरीः र्गमारी । -ईड-४ एक दरदका वहा नरसक देशनरू । -इसं-पु मूंव। -इसंक(यंग्र)-पु नृद्धारशैक यंत्र (एशमकी स्थम रूप देनेवाका) ! - लक्का-न्यी : प्रतकुमारी। नदेहीं(दिन्)~वि स्तृक शरीरवाणा। ची-वि मूर्ग मंत्रवृद्धि। −शाख-पु देवमक स्थूक इंड! −नास −नासिक−पु शुक्रर। –शीस−प् बाब पद्मी। -पट-पु मीरा अपना। विच्नीरे अपने भारच करमेवाका। -पष्ट्-पु कवाशः मोटा कपहा। -पदाक-तुमीया बस्त । -यश-पुदीनाः स्टॉबबन । -पर्णी-की एतिका। -पाइ-नि मीरे वा सूने इए पैरीनाला । इ. दानी। दलीपत्र रीगरी अरल व्यक्ति । -पिंदा-स्रो पिन्धवृत्। -पुष्प-तु वक्ष द्या मंद्रक श्रुप गुरुमरामक । -पुरुपा-की वर्गनपात वप-राजिता। ~धुरपी-की पर्वतिका। -मर्पन-प्र यष्टि विषा -प्रियंश-पुरु भेना प्रान्य। -यस-असमिति क्या वहा मीत्र विशे आहिका मोडे छीरपर निकास हुआ क्षत्र । -पास्त्र-स्री शास्त्रपी। ग्रावमिक ।

-शक्ति-वि संस्कृतिः सूर्धः। -सह-प केविकार्विके व्या मंद्रोंसेंसे कह (वे)। -सब-प विकाशर । - भूत-पु आकाशादि पंच तत्व । - संबदी--को अपासर्गा – सध्य-वि वो गीयमें मोटादो । -मरिच-की॰ दरावधीती, दकील। -मान-प मोरामोटी हिसाय। -मळ-प्र एक तरहकी मुखी। -रोमा(मनु)-वि मोदे वार्धोवाषा । - स्टर्स -कक्य-वि चंदार मुक्तिमान्, विद्यान्: काम-दानि दोनीका व्याग रक्षनेवाकाः कापरवाहीसे निष्टामा क्यानेवाका। -स्रक्षिता-की बदारताः पंतिस्य। जासलयक्षिका भारती । - वस्यस्य ~वस्मकृत्⊸<u>प</u> −प॰ रक्षः कोवः । −धालका~सौ यक मतो। -विषय-पुनीतिक परार्थ । -वृक्षप्रस-पु कः । -विदेशी-सी॰ ग्यपिपको । -शंसा-सो॰ वही बोशियाकी स्त्री। नदार नपु एक तरहका नरसक. रामञ्जर । --व्यवीर-वि वंशक्तवनिर्मित धरीर । वि वदे धरीरवाका । —दासक-विश् वदी: योर्डवीयाका (जैस यस्त्य)। −साकिमी−सी॰ पद सारु। −साड − शाटक−त मोटा वल । −शाटिका,−शाधी−की दे॰ 'स्वक्सार । —शाकि-प्र एक मीरा बान । −विंकी−को सकदसेगं ∼सिर(म्)−द्रवदा शिर वा चोडी। - सिरा(रस्)-प्र पन काणा एक राष्ट्रसायक वर्षा वि वहे श्रिरनामा ! ~शीर्पिका~ की । शहरियोक्तिका । अद्भारम-पुष्क तरहका बहा ओक। ∺शोफ्र−वि बहुत स्वाहुमा। −धट्पह्− त परें। -शायक-तु यक दशका मरतक रामधर। -सिक्त-पु॰ ण्यः तीर्थः -स्रम-पु दे धरम'। -एकंच-प्र कड्च बरहरू। -इस्त-प्र हाबीकी शुँक । वि॰ मोटी जुजाबाना । स्थाद्यक्र −पुंचि विकास स्थापित स्थापित स्थापित । स्यस्ट्या-मी [र्व] श्रीशहनरी : स्यूक्ता-मी स्थूक्त्व-पु [सं] मीधवना दश होते का माथ। मुखेता । स्थासोता—प्र [मे•] यदः तरहका चानक । दि० वद द्यंरीरवाका (बैश्र मत्स्व) । स्यकोप्र−g [d] वहा शॉट । स्यूष्टीसा–क्षी (तं॰) गंपनताः स्थाना-सी [शे॰] सम्रहित्यकी। प्रयोक वही इलावची: बसपी । स्यस्यक्षान्य सिं∘ीय≼ कविशयद्वराहाय । न्युकाह्या −श्या [मं] बेश्वति, वासका नदा।

स्यूक्षाध्र−षु [सं] दल्यो भागा

स्यूषी(छिन्)~पु[र्व]फॅट।

रम्बर्दरंड−५ [4] नहार्टरा

रचुर्रमा-सी [में] वही इरायधी।

की गंदीपन्द अनुष्ताताः क्षाना के वॉलका रंग र

स्यूलेच्छ-वि [मे] विस्तुको इच्छा है बहुत वनी हुई हो ।

रथंकाणय~प्र• [र्च] मेंद्रल्याः दायोगी सप्यम सहित

वर्तनगरि को गिरहर कवद-सावद भार प्रेमा बल गया

स्यालास्य-प्रसि] शॉप ।

धुनंके कपरका या सूचे और भूवके बीचका स्थाना करित बोशिः चका शिव । -शंगा-क्षी • गंगाकी स्वर्गी बहनेबाकी बारा संदादिनी । -श-प है कमर्ने। –शक्तिका∽सी अप्यसा । −शत−वि यत । ∽ गति-भी • - रासम-पु भृत्यु स्वर्ग जाना । - शा-मा • दे 'स्वर्गवा' ।- गिरि-प श्रमेर ! - कित -प्र• ण्ड तरहका यदा ! दिक स्वर्वेपर विश्वभ प्राप्त शहरने बाह्य । -क्योसि(भ)-वि॰ व्यर्गकी क्योतिसे चमकनेवाका । पु यक साम । - णवी-की मंदाकिनीः वश्चिकाकीः एक नदी सित्तगेगा। -वीस-वि स्वर्ग पर्देशका नुभा। -इंसी(तिम्)-प स्वर्गदस्ती।-द-वि स्वर्ग देनेवाका।-पुनी-की नेशाकिनी। -धेनु-स्त्री कामनेतु । -तरारी-स्त्री अमरावर्ती । -मबी-दे व्यर्जशे । − सम्बन्- पुरवर्ग¤ भाना। −पशि − पु॰ हेद्र।-भाष्ट्र-पुराष्ट्रा-भागव-पुरक्ष रस्ता ─शासु─पु राष्ट्रा यक कश्चपः इच्यका यक प्रथा। - सदब-पु मुर्वे !~मीके-पु+ मुर्वे । −धात-पु+ गृत। -वाता(त)-विश्वो गर रहा दी। -यान-त मरनः - योपित - सी अध्यराः - सीक-प्रस्थाः मेहादेशका।-वर्ष-क्षा जप्तरा। -वापी-क्षा भंदाकिनी ।-वाकिमी-सी॰ मंदाकिनी ।-वेदया-स्रो अप्सरा ।-सेय-९ अदिवरीक्रमार ।

स्पर्ग-दि [मं] देवकोक बातेशाला । प्र हिंदुकोके माने हुए कदरके लात कोम्प्रेमिंसे चीसरा निसन्ता निरनार सूर्वकोद्धने अवकोद्धतम है और वहाँ पुरुष कर्ष करने-वाने देव-स्वागने वर्गतर बावर बुद्धा करेश-रहित सुन्नका मोग करते हं देवसीका समरावती। नवित्तंतर संचन-रवर्गकी समक्षा करनेवाका श्यानः व्यवसाद (हि)ः ईह्बर् :-क्यास-वि स्वर्वकी अगिकाण करमेवाका । ~शंशा-सी मंदादिनी।-शस-वि स्वर्ग गवा हुवा, बृत !−शति∽सी −गमन−५० स्वर्गकी यात्रा करना मर्ग ।-शासी(मिन्)-वि त्वर्ग गमन करमेवाका । -निरि-पु मेर पेरत !-च्युस∽ि स्वयंधे गिरा हुआ । - जिल् - वि रश्मेंको श्रीतनेशला । - जीली-(बिन्)-वि स्वर्गमें रहनेवाका ।-सर्गीगणी-स्ती० मेराकिनो । -सर-पु कम्पर्य !-सर्-पु स्वर्ग मातिको बत्तर रच्छा ।- इ -व्यवक-नि वर्ग महान बरनेवाका । -- द्वार-पु न्यर्गका दरमामा। यक सीधी। शिव। – धास(मृ) ~ पु स्वर्ग-रोकः। – ध<u>ल</u>-न्ह्यो कामभन् । -मधी-मी॰ आकाशर्गमा । -पति-१इ. १ -पथ-पु छावावश । -पश्-पु प्द रोर्थ । −पर−वि स्थर्गकः मनिकारी । -परी-भी । भमरावती ।-पुष्प-तु सीव ।-प्रस्-वि• रे 'स्वर्गर । - मसां(मूं)-च स्वर्गपति इहा -मृसि-मी एक प्राचीन जनपद र-संवादिनी-सी रदर्गमा । --साम --पु शायापणः एक शीर्थ । −पाण-वि॰ स्वर्ग जान या ले जानवान्य । धु ज्वर्गवा मार्ग । - योति - भी रहर्मदा कार्य वासापन । - व्याध -पु∗ न्वर्गकी मासिः मृत्यु । —क्रीक्-पु देव>)कृ। -छ।देश-५ रंद्रा छरोर ।~बपू-को बजारा। Ì

~वाणी~की आकाञ्चनाथी ! -धास-प्र• स्वर्गरें विवास करमा: भरता ! [मु: - • होता - मरमा !] -बासी(सिन्)-वि स्वर्गमें निवास करनेवाकाः मृत् । -क्षी-ची स्वर्गका कैसन । -संक्रस-प स्वर्गका धोपाग ।-संपादम-प्र॰ स्वर्गको माप्ति ।-सद-प्र देवता। "सरिष्ट्ररा=श्री मंत्रादिनी। -साधम-पु• स्कांप्राप्तिके सावन ।−सार−प्र• रक ताक (संधित)। -सरा-प रवर्गमें प्राप्त दोनेवाका सुख ।-द्वी-सी अप्यरा ।--१था--वि० स्वर्गमें रिशत सत् !-- स्थित--वि दे 'स्वर्गस्थ'। स्वर्गापया-न्या सि नियादिमा स्वर्थमा । स्वर्गामिकास-वि [सं] स्वर्गको अभिकाश अर्थे-स्वर्गाद्य-वि [र्ड] सर्व गवा हुना। म्बर्गारीहण-त [सं] स्वर्गको ओर आरोहण करनाः स्वर्गगमन, भरता । स्थर्गार्ग छ – पु ॰ सि॰) स्थर्गका कारक । स्वर्गावास-पु॰ [सं॰] स्वर्धमें निवास करना । स्वर्शिक-वि स्वर्शीय । स्वर्गी (र्गिन्)-वि [सं] स्वर्ग-६वंबो; श्वर्गीय; रवर्गको बानेवाला स्वर्थगामी मृत्र । हु देवता ।-(गि)तिहि-प्र गेर !~वधु-व्यी-की अपरा। स्वर्गीय-वि [मै॰] स्वर्गधाः असीक्षितः रवर्गवाधाः गृतः। स्वर्गीका(कम्)-प्र• [सं] देशना । स्वाय-विक [रोक] स्वर्ग दिकाने, रवगकी प्राप्ति कराने-षाकाः स्पर्ग संरंभी । म्बर्जिनमी [र्ष] समी। घोरा !-धार-पु मही-धार । म्पर्किक−५० [मं] समी। शोरा । स्वजिका-को॰ (सं } सभी १-झार-५ समीबार । न्वर्जी (जिन्)-५० [तं] मध्यो। घोरा । रवण - व (सं∗) अधिन-विशेषा सीना नामकी पाता

धोनेका पिष्टा। एक तरहका गरा गीरमुक्त मामक

शास्त्र थत्राः मान्देशर !-बंद्र-पु बूमा !-क्ल्-क्षणागुक।-क्षणिका-स्ते क्षोतेका क्य ।-क्ष्पक्षी

-पु॰ धीनदेशा । -समस-पु रचपम । -साय - प्राप्त । वि सीने असी देहवाला ! - आहर --

कारक-इ तुनार ।-कृष्ट-इ दिमानवधी रद थारी ।

~कृत्-पु॰ सुनार । ~केसकी~मी॰ पो⊀ र सको केनकी : -वारिजिका -क्षीरी-भी गुरदानाग्री ।

~ऋोशा~पु यक नद्।~राजपति~पु• गणेशहा पद

क्ष ।- शर्माक्स-पु क्षिमाक्ष्यची एक योथी ।-तिहि-

यु एक पर्वत सुमेन । -शिरक-यु एक तरहका वीचा

यस् !~होय-पु॰ व्हरका वक् अनुबर् ।~हीवा-हो•

मारक धीलके पूर्व मामने निवनी हुई एक मूर्ण ।-ब्युड -

प्रक-प्र मील्डक मुना !- च्य-पु दे अनुरे ।

-ब-ई शैंगा । दि भीनेमें बताब !- जातियां -

जाति-की पीची व्यवधा ।-जीवतिका -जीवती,-

जीवी~की धीत वीं ती ।−जीवी (विन्)-त

द्यनार।-जूदी-की [रि] देले जुत ।-वीर्य-पु

स्मृत्येद्र-स्नुवा स्थुकोद्रर-वि॰ [सं॰] वीदवाका। स्पेमा(सन्)-प्र• [सं•] व्हवा रिक्ता । स्मेप-नि [सं•] रहे स्वापित दिने आर्थ वीच्या निर्णात. निश्चित किये बाने बीग्य । पु॰ निर्णाबक, यंबा पुरीहित । स्मैर्य-प [सं•] रिवरताः कृताः चैर्वः शांतिः वनताः कमोरताः स्वाधिस्य । -कर्-कृत्-वि शिवरता, स्वृता प्रदान करनेवाका । स्थोरा-सी॰ [र्स॰] बहाजपर रुदा हुआ शुरू । स्पोरी(रिम्)-प॰ (ए॰) दे 'स्बोरी । स्थीपेय, स्थीपेपक-बु॰ [सं] प्रश्वितने मामक शेवहच्या गावर । स्पीर-पु (सं•) ध्वतः सन्द्रिः, वकः ग्रीके, गभे भावित्रः कारमेदा पूरा बीझ स्थीरी(रिन्)-पु [सं०] भारवाहक अन वा के अध-बुत बोहा । स्थीसम्बद- १ (सं) दरारता । स्थीस्य – पु ॰ [र्स] स्मूक्ताः भारीयमः तुर्वेदको मेदता । खरम-प (de) तहसामा । विकरतान करामेवासा रमान्द्रे साममें मानेवाका । स्मपित-वि+ (सं+) महकाना हुना रनाम कराया हुना। समय~द•सि दिनानः। स्मय-प्र• [सं] चरण चनाः रिसमा। स्नसा-सी॰ [सं॰] रमखा देशा। स्त-(व (र्स•) (समासमें) स्नात (धेसे प्रतस्त्रा)। स्ताल-दि॰ [सं•] नहावा हुआ। ९० वह जिसका वेश-व्यवन पुरा हो गवा हो स्नातक। -बस्ब-वि श्नान-के बाद पहला जानेवाला। -प्रश्न-विश्वदेश 'स्वायक प्रदी । स्वातक-५ [मं] यह शक्का को वेदाव्यवन समाप्त कर्मेचे अमंतर स्नान कर गृहत्वासममें प्रवेश करे। यह आदाय थी किसी पार्मिक उर्द्रवने मिछ वन वना ही। क्रिमी दिश्वदिवास्त्रको शिया समाप्त कर प्रवर्गन माप्त कावेशमा अस्ति । नमतन्तु रमावक्के क्रीन्त । दि स्थानकाती । न्यती(तिम्)-वि श्वानकडे कर्मभौका पाकन करमेराका ह स्मातव्य-दि [मंग] स्नान कराने मोत्म । रमाम-पु [र्न•] बहमें सारे शरीरको भोगाः पुप नाजु आदिका नेपमा बक्की सहायसाने भीवर शुद्ध करमा। मतिका महकानाः बहामैकेकाम आनेवाना वहार्व (वक्र भारि)। -क्सरा:-क्रम-त वह वहा क्रिसमें बहाने-का पानी हो। - ग्रह-५ वहानेका कमरा। - ग्रह--पु [हि॰] यह बीडरी ना बीडरीमुना स्थान नहीं स्नान क्रामेदी व्यवस्था हो (शबक्य, वैदियानेमा) ! - लीवी-पुरु पद स्थान महा धार्मिक स्माम दिवा बाव । ~तन-पुरु मुद्या --होमी--स्रो नदानेश्य शाय- देशा -बाम्रा-को श्रेष प्रिमादी धेनेवाची विमा(बच-बाप) हो यस-राजा ! ~बड़ा -बास(स्)-ब स्टाव-का प्रमा भीका वार्ष ! -वेश्स(म्)-पुरु रजानग्य । -शासा-से स्नानागार्। -शीक्र-विस्नायप्रेगी स्तुवा-की लिं | तुवाक्। नृत्व ।-य-रि प्रवर् (रिक्षेप्रधर शोर्थमें स्वाम कर्जेका) ह

स्मानचि-५० [चं०] रनाव करनेका वस । स्भानागार-पु॰ [सं॰] ३० 'स्मानगृह'। स्त्रामी(तिम्)-विश [संश] रतात करवेशाचा र स्तामीय-वि॰ [सं] वहाने बोग्या मिससे नवामा क सके। पुरनानमें कान आमेराओ नीवा - क्य-पु॰ महानेका क्षरता । स्नामोदक-पुर्श सं] है र 'स्मानांत्र'। स्मापक-५० (र्स०) श्नान करानेशहा सेरक । रमापथ-द सिंशी सहक्रामा । स्वापित-विश् [प्रंश] महत्तामा हुना। स्नामविक-नि॰ (र्शः) स्नाम-तरेथी । स्मायचीय~पु॰ (सं॰) क्रमेंद्रिय (हाथ ऑस मारि)। रतायी(विश्)-वि [सं०) ग्यान करमेशाला। स्वाय-सार (सं॰) रयः भारतः देशीः प्रमुखी रीते। पुण एक रीम जिसमें अंगोंदे होरपर वर्गरही। रोता है। -पाता,-बंध-प शरवंबा।-सर्म(व)-प्रश्निके का संवित्तन । -श्यात-तु शरीर । -रोग-तु नर बनारीय । –शुष्क-पुरनामुमीमें वायेशको वेश्मा। −सर्वह-इ मण्डदा पटना। स्वायक-दर्श (सं] यद शरहदा क्रोहमीनी सीर लाह शासक रोग । स्नाच्यमं(म्)-इ (सं॰) ब्रांबना एक रोग विशरे छनेर बागपर क्यंद निक्रम माता है। स्वाय-द [नं•] वस, रना देशा । रिमाय-दि॰ [सं॰] तल कमा हुमा। शसरार, विस्की बाकाः विश्वताः जादीः द्वां बरमेवालाः वैकीव परार्थवे प्रवपरिता कनरका स्वाता महन। ग्रेस्ट विका वका रिवर (बैमे दक्षि) । प्र मिथ, प्रेमी। रणः वर्रका सरम इका तला सोमा मधारा क्षांता भवता । --क्रंश-को देश्यी मामद शेश । -च्छर्-त धररष्ठ ि-च्छर्।-सी वेरका पेर । - अन-पु पिन व्यक्ति । - जीरक-९ र्वस्तरोप । नर्नड्क-९० साठी बानम । नरपाश-विष व्यक्तिका स्थल । - ब्रम - प्र प्राप्तक (व) -हाल-प्र• शरण पृक्षा देवराह ।-शक्रि=नि ३६.सी क्यादर देखनेशमा (-तिमेंछ-त स्रीमा !-एकक-शुक्तम्हर्मा काष्ट्रेदीः चत्रद्रमः तमः तमः। -प्या-को वेरा प्रत्या सामरी !-पर्यी-भी सुको पुरित्रका ।-विद्योतक-पुरु एक तरहवा सहस व्या-ब्रह्मा-सी बावबी।-बीश-पुर्व निरदीका -मश्रक-तु॰ शाराम ।~सूद्र~तु॰ यह तरवधी मृष्। −श्रात्रि-द्र दद तरहदा स्त्रा ।-यूर्व-दि व्यद्रे (यदा । विश्वचा नक्षी (तिष्) यात्रात्र वेशाः रिर्देशतः । स्वीड-वि [गं०] बोनच व्यूना अनुरस्तः। स्वीदा∽को श्री ी आवदा यस, रेंट र शत्र-की [में] देव वंत्रापु र स्मृष्ट(ह)-बो॰ [त] स्मृति, म्रहाति सम्म दरने वाका ।- ब्राइन-५ क्टेरबंन्द्री नृष् रम्स-दि [शंक] दारित रिमा प्रमा ।

रक माधीन तीर्थ ।-थ-वि भीता देतैशामा ।-शा-सी व पश्चिमामी ।- वामा-मी पक देवी ।-वीधित-षु भरिन ।-बुरुद्धा -बुरुद्धी-स्त्री सामानासी ।-द्र-तु भारमधा-द्वीप-पु सुमात्रा दीवा-चानु-सी० सीनाः पीने (गुढ़ा येक्।—नाभ-पु॰ एक अन्तर्गताः भावपामका एक प्रकार (-शिक्षा-प फै*न रं*गका गर-। --पश्र-चु गरह !--पश्र-चु सीनेदा बक्द !--पश्री--की सनावा-पदार-को भंशकिनो।-धर्ली-की पीन बीर्वती !-पाटक-प्रदेशम, तहागा ।-पार्वत-पु वस तरहबा प्रमृष्ट् ।-पुरेश-वि० सोनेके पंत्रकामा (बाय) । यु • ऐसा पाज ।-पुरी-मी जैका 1-पुरप-प्र= बारम्बद: चंबर: धीकर: क्षेत्रिश पेठा ।-युप्या-म्बी॰ बलिबारीः रत्रभकीः सारात्माः स्वर्णकेतकीः --परिपद्धा-सौ पोनी पमेनो । -पुच्ची-की सस मधः सर्वदेश्यः । - प्रतिमा - ना सोनेश्यः वर्षः । -प्रस्थ-प्र• संबद्दीपदा यद बखीव (-फ्**म**-प् भरुरा। ~फुला-को पीत रंभा नंतादेशा।-बंदा-र्वश्रक-पु॰ सोना विरयी रखना । -विदु -विदु-पु विष्णा वह तीर्थः पीतेदा वेंद्दा ।-शीश-व बनरेदा नीव। −भाक्(ख्)∽द स्वेतिवेष । -मृमि-सी॰ भीसंपन्न श्वामा दारधीमा । -श्वतिका-छी मदरकः । -अन्यन-तुरु दोना ग्रेष्टः आरग्यसः -मृंगार∽९• पोड भृंगरात्रः स्वर्गेशच । -संदम च्या पीता गेका र नमदान्त्री वक्त नदी र न माक्षिक-तु यह बन्धातु सीनामक्ष्मी । -मावा (तृ)-सो। एक दोशा एक नदी। ~युक्ती-सी सताद! -मुद्रा-श्री भीनेका सिद्या! -मून-१० पद प्रदेश । ~सपिदा~सी यह गोशा । ~सग-प्रश सरा-सर्वाद्वया मनद । -प्रायेका -मुची-मा वीकी बरो । -रंगा-साः धरारेनः। -वर्षशे~सी रिमी हे शहर दिशहित श्रीषय मारिके या किया संस्था-के जीवनदानके दवहा वर्ष पूरे बीमेश्ट मनावा, वाले-बाना प्राप्तव 'विषयसञ्जासनो । –हासा,–हाजा–पु १रेप इयत । -रीविनमी होने बंग येगन राज्ञीनह । –हेररा–भी+ छीनदी सदीर (दर्भीयेश्स्त्रे); बढ ल्ही । -रेगा(सम्)-दि ग्रुन(ने बोधेंशना (न्दे)। -रोमा(सम्)-३ °६ मुर्वे/दो शत्र। । -ब्रहा-क्षी • वर्बप्रक्षिपाणीः वन्त्रीधीवंती । 🕒 म्हामान्यु • १४४ की प्राति। वद अग मंत्र । -वश-पु वद तरहदा शेगदा माम १ न्याप्रन्यु वद शरदवा वन्तान । न्यानिकः (क्र)-प सर्वकाशनेक व्यापारी । -वर्ण-दि भानेके रीता । पु इनकी ब्रह्मका बीना ग्रमा क्य-बाददण्यो । −वर्त्ताद्र-पु Michell 1 सुर्गाकी - कर्म-भा । इतिहास सामस्यती । - कर्ममा-भी जीती। न्यस्थल-दि सुवाने विश्रदेशका। पुर द्वीत ६। – मही-की रहायणा देव जीरंती स्वर्णणी ह -विद्यानको भीना क्यानको विद्या क्रियामधी ह -- चित्र-१० नीकरंद ! - गुलिया-व्यं ७ वर्गःदीवदा सीमा । - भारत-दिक १ के ६ व्याचा । - भारत-(शिष्)-पु ४६ वन्त्र । -श्रेष्ट्रश्चित्रर-श्रे १००

व्यवा चीत चेत्रात्मिक चेना निप्तार । -चीत्र-प वक पर्नेत । -स-वि सीमा उत्तक ४८ नाम (14 वर्षत)। -क्य-वि सीनेये क्या द्रमा। -हासि-प भारम्बर । न्यर्णेक~पु॰ [र्थ] एक प्रशासीना (वि॰ सीनशा संबद्धा) स्वर्णक्षी-पुमि] स्वलपुरता । स्वर्णीत−पु० [र्थ] बाराव्य । स्वर्णोकर-४ (मं०) सोनक्ष साम । स्यर्णाति - प्र. मि] येक क्रीमाना मुक्तेकर गीर्च । स्वर्णाम – प्र• सिं•ी प्रश्ताल । वि सीने ∉ रंबरा । स्वमोरि-प्र• [सं] गंबद्ध सीमा । स्वर्णास-५० [श्रेश] ११र्थको । स्यर्णोहा-स्री [र्नर्श शर्माता स्पर्णिद्या-मी० मि विश्वतिका। म्बर्णिन-दि॰ सि] मोनेसा सनदना । स्वर्णुकी-मी [सं] स्वरंकुणा स्वर्णोवधात्त~यी [वं] श्रीबामश्मी। स्यहण-५ [म] बरश्विक सम्मान । श्वर्यत्न-दि [धि] बहुत कविक राग्याम्ह । स्परुप-वि [में] बहुत बीका आस्परा। बहुत र 🕮 त्रप्रा मंश्रित । व• बसी भागह गंपरस्य (f) । नद्र ६-तु भागका एक भेर । -क्रंब-५० क्रमेका - हेमारी (रिक्)-प कथगर । -क्सी(शिन्)-वि मि नदुष कम बाज की । तुरु भूगरेश नामक बाजा । -बरक-इ गीरेवा १ - जेबुक-द शेमहो १ - संग-दि क्रिस्टिकोड सा अञ्चाम गर्न ओरे ही संगेर" ब्बा हमा। -ग्रह-त रेग्रह। -१४(ध)-रहि-वि अदृरदर्शा । न्यद्वा-भी बद्दव छोरे वर्ष क्रहरी (विहादके क्योग्य) । −तम्य∽तुः गरी मामस् मंत्रास्य ६ -पश्चम-त वदारी महत्रा, शीरमाग्र ६ -वर्णी-स्री मेरा मामध्ये भोत्रितः - क्रमा-भीत्र ना हातिहा १ - वक्क-दि क्यानीर दुरल । - भाषी (विज्)-विश् दय रीयनेशाना, नियमारी । -क्या-श्री॰ द्वानुष्यो । -बनुस-५ - मरा । **-बर**प्रसा-मी व्यवस्य -विदय-प्रवृद्धः -विशामावर-प्र बढ़ ३८१ जो बीच बीचमें बज एक भागा हो । लबियबल पुरु मानुकी शार पटुन शीरा संक्षा - स्पनिशेष-पुरु थ्य लोगीया शामान, अभीवनाकी । - स्वय - पु पहुर स्य शर्ने । दिः कृत्य । – होष्ट्र-दिः बहुत दम सहयाः बाना निर्वात । - शहरश - सी अल्लामी । नारी। -वि वर्ष क्षेत्रे काका दिवसा र न्यागामान्य होता. क्षणः वसरोदा १ –वस्ति~ि वि । वद्रम देव वार १रे ! बश्चरक्र~ि [मुं०] बर्न दका बर्न धे गा। स्वप्रांतिवान्थी [लं] श्रीनिश्वां के में वैवले र इडक्प्रॉन्स-विश् [रोश] बद्दम सम्भाषात्राचा । श्वरराषु(म्)-रि (ग) कश्रीरी। empargie-fu [elo] wat tribajet i Se eif ATCC ! स्थब्दिड≝रूडि [संग] कोडमें नीत्रय आर्थत गापा के मे

भाषद्र-५० [र्स०] बायुद्ध सातः स्क्रवीमेरी पश्का "भूकीत भीर स्वर्शकके मध्यवती जाकाशको वासा अधिनको अ भिज्ञामीं मेंसे एक । बि॰ (समासांत्रमें) जनक, सत्पादक (मवावद्यः वकेशावद्यः) ।

भावद्वन-५ [र्स्-] मन्द्रीक कामा ।

194

भावाँ-पु॰ मिट्टीके नरत्तर फ्कानेका महा¦ र् गरम कोहा पीरमेके किए इसरे कोशाएका कुकावा कामा। मुख -विगइना-शरतमाना ठीक तौरसे न फाना ।-क्रयामा-गरतनीके सथ भीर उपने जुनकर उन्हें कानेके किए शॉन रैला। -(कॅ)का भावाँ विगवमा-धारे कर्दवमें कोई होप होता ।

भावागमन-पु [सं०] भाना बानाः अग्य मरमका कह या ग्यन संस्ति । स्॰ -सुरका-मुक्ति मिलना । भाषारामनी-वि आमे जातेवाका, श्रीमे मरनेवाका । भाषाग्रवन, भाषागीन÷~पु॰ रे॰ 'आवागमन' ।

भाषात्र-स्रो [पा] बोरु व्यति, स्वरः पुदारः श्रोर । मु॰ ∽उठामा,-ऊँची करना-दिशी बावठे पश्च वा विषयमें स्थल। बोक्सा: -लक्सा-ग्रका बैठनेस बाद श्रम्पदा साफ निदमना । -शिरमा-स्वरका मेर होना । -देना-पुकारमा पुकामा । -निकासमा-केकमा । -पदमा-गठा बैटना स्वरमंग द्वीता। -पर कान रत्ममा-भ्यात देना । -पर खगना-(वीतर नटेर भादिका) बोलकी भन, संबद्धपर चलना काम बरना।

-फदम(-भावात्रं मर्रामा !-बिदम(-गन्य वटनाः स्वर मय होता ! - सराँता - भारी होना-नक्त्रेने अस्पष्ट और मोद्ये भावात्र निषक्तना । -सारमा-बोरसे पुद्रारना । -समाना-माराब देनाः ऋषी तान रुगाना ।

भाषाज्ञा-प [फा] प्रसिद्धिः शहरकः व्यंच्यः वाना । -पृत्वरक-पु होरमसिडि होक्क्यमा (f) । मुख

~कसना~शेली शेलना, व्यंग्द **द**रना । आसाञ्चानी∽सी बन्ध गण्य।

भाषा अहीं - को भाना जाना, भागद रक्न।

भाषायानी-सी दे भारायानी'।

भावाप-प [मं•] फ्लिरमा: बीज बामा: व्हेंक्सा: क्रिप्ती मिभगमें कपरसे कुछ मिस्राना। पात्रीको व्यवस्थित करनाः बालाः बान्यपात्रा छतुत्रापूर्व अभिप्रायः एक विशेष अधि

वदा वक पेमा बेहागा विकास भूमि । भावापक~धु [सं•] सर्व-द्रवण।

भाषापन-पु [र्स•] करवा, युननेका वंत्र। स्वयंत्र वह

मीठ रक्ष्मी विसम्द शागा क्षेत्रा वाता है। भावापिक-वि [सं] वयन शुन्म भाविके किय सत्तमा

अतिरिक्त, पृरक्षा भाषाय-पु े[सं∗] ब्यूह रयमामें वयी हुई मेना (की)। मापार-पु [सं] पनार, वशवा रक्षम, वशाना ।

जायस्मी-सी [फा] बाबसायन ।

भाषारज्ञा-पु [का॰] बमासकंबरी। रीजनामणा मनारवा ।

आबारा-वि॰ फा॰] वो केशर भूमता-फिरता, भटकता रके कुमार्गगामी निकन्मा। -गर्व-वि कहार वृत्रने, मटकशा रक्षनेवाका !-रार्थी-की वेकार वमना, भरकमा । भावाळ−५ सिं∘ी थाला, आस्वारु । व्याचास-पुर्व र्शियो बासरवामः घरः कमरा ।

आवासी(सिम्)~वि॰[र्स•] रहनेवाला, वास करनेवाला। भावाह~पु (सं०) मार्गत्रमा निवाह । थाधाहम-प [सं] कुनाना पुदारमाः पूजनमें दिसी

देशताको संत्र हारा बुकानाः शक्तिको होम शर्पत करना । **शावाहमा***−स कि॰ शामंत्रित करना । माधाइमी-सी॰ सि॰ो देवताके भागाइम-सारूमें बतायी बानेबाधी दाथकी एक विशेष मुद्रा !

बाविक-वि [सं] भेइ-संबंधी हनी। पुरुती वस्त क्क । -सीक्रिक-विकती थांगेसे बना हुआ।

व्याविग्न−दि [र्स] उद्विद्ध, परेद्यान । पुथ्य फलवाका बस्रः अविद्यः। भाविङ्—पि॰ [सं] विषा, छेरा हुमा; बोरसे 'संका हुमा; वीश हमा। मुश हमा। कुटिका विवसः इत स मिथ्या मुक्कं। पु॰ तरूवारका यक द्वाथा −कर्ण−वि

श्चम छिरै ¶ । ~कर्जिका ~कर्यी~को॰ गाठा । आविध-५ [सं] स्वाही छेरनेका भौजार, गरमा। आविर्माव−५ (६०) प्रकट होना, भमिम्बक्ति उत्पत्ति **अव**तारः वस्तुपर्यं ।

आविम्स-वि॰ [मै॰] प्रस्टित अभिव्यक्त अवतीर्ग करना है

भाविर्मुं सी~सी [सं•] भींस ! आविम्बर-वि [मं] विस्ता वह धीर दी गयी हो (क्स)।

भाविद्वित∽वि [र्ड] प्रत्वय किवा हुआ। आविष्ठ-वि [र्थण] मका गंटा, इतुबदुका धुंबका

करपह । भाविष्करव्य∽दु॰[सं] प्रस्ट ६१मा, दिसामा; क्षेर्य भगाव

बाद योव निष्णकताः सवी भीव बनाना ईबाद । आविष्कर्ता(र्त)-वि [सं] आविष्कार करनेवाका ।

आविष्कार-पु॰ [सं॰] दे आविष्करण । आविष्कारक-वि [6] दे 'शाविष्यता । आविष्कृत्-वि॰ [र्ऩ॰] मस्ट क्लि इमा देवार हिना

THE ! आविष्किया-नी [मं]वे 'मानिफार'।

आबिष्ट-वि [र्न•] आवेखयुक्ता प्रेवादिष्टे प्ररवा वरपरः मरा हुमा अभिभूत (म्हीपाविष्ट); प्रविष्ट ।

आवी नती॰ [मं] क्तुमती न्हीः गर्भवती न्हीः प्रसुव बेदमा ।

आधीत-वि [र्न•] पहला हुआ: पना हुआ। प्रविष्ट; हन्द्रा हुआ। उपनीत । पु॰ एक विशेष द वसे पहना गया अमेक । आबृत-वि [र्त] दका छिपा ठपेटा हुमा; पेरा हुमा: वाबिना पटा हुआ। पु एक वर्णमंत्रर जाति।

भावति-सी [ग्रं] नापरण। आकृष-वि [ते] प्रमाया, किराया कीटा गीछे हरा

कीराया दुहराका पद्म हुआ।

भावति-सी॰ [सं॰] प्रमनाः कीरनाः श्वतः नगःनाः पकायनः बुद्रानाः चार्-बार् पद्गा सम्बाधः संग्रीतः पुरतकारिका किरसे छपना, संस्करणा बन्न्योग प्रयोग । -वीपक-पु॰ दीपह भरकारका एक भेर विसमें क्रिया-परींको आइति को वाली है।

माबरि-मी॰ सि] नर्स ।

भायेग-पु [म] उद्दोग्न प्रवष्ट धर्नोबगः विभासान नियारे उछ कर बैडनेकी क्षेत्र मेरणा होंका बद्यांतिः बनावसी। एक सेपारी भाव ।

भाषती-मी मि] **बददारक ब**ढ़ा

आवेजा~पु० (पा०) स्टब्से वा सक्तवाकी वर्षा करकी बाला गद्दना (कटबूस) झुलमी, झूमक बादि)। भाषेत्र- वि [सं] बारेरम बरनेवामा । प्र अर्थः

प्राथी ।

आपेदम−५ [सं•] मिन्रम नर्ट प्राथमा करमा मार्किशः । –पग्न-५० भन्नी, प्रार्थनापत्रः । आवेत्त्रीय आसेल-वि सि कितान करने काम्बर

प्रार्थनाका विषय बनाने बोग्ब । मार्देटित-वि मिन्ने बनावा बजान निवेदिका विसन्ने निवे

दन क्रिया गया हो।

आबेटी(दिस्)-वि॰ [सं] आवेटम बरसेवामा । आवेश-पु॰ (सं॰) प्रवेश स्वातिः दवा लेका, दावा दी बाला (मर्रेशनेदा): प्रेताहिका युक्त केला: बीदा: गुस्सा: धर्महा समान मामिनिवेशा संबक्षी श्रामी ।

शायदान-प• [ग•] मृतार्वचः प्रदनाः प्रश्यः स्टेनः निरामस्यामः गर्वे या चेत्रमाका परिनेशः शिक्षशास्त्र ।

शापशनिषः—पु॰ [गं॰] प्रीतिशीत । भावशिक-दि (तं•) निमीः मसापारण भनेनिदितः।

पु अनिवि प्रदश् कातिहर ।

सापष्टक~तु [मं•] यहार्दीशरी पैराः करा भाषपूर्म-तु [मं] लेशसाः इक्षमाः वेस्म सीनः चदार-कीशरी पंस ।

माबहित-वि [मं•] छिपा दश यानिरा दुण।

बायायी(चित्र)-दि [अ] वष्ट देनेवासाः बाद्य करने STATE ! क्षार्शकरीय-नि [ते] होता का शरेह करन बीध्य

संदिग्ध । भार्त्यक्रान्थ्यीक (संक) अस्य स्तर्क असिष्ट्यी संभारमाः

सीप अविदास ह

मार्गिका-वि [तं] विश्वते मार्ग्यत सं मान्यपुत्र ।

do ziet set mis. भार्राजी(किन्)-रि (स्व) बार्ट्य करनेशनः।

भारासम - द्र (भे॰) रच्या भारत अन्तर्भ करमा करमा भागमा-मा [तंत्र] इत्ता अवेग्राज्ञाता दवमा वर्षो । बारांमित-(र [गं+] जिल्ही दण्या, कामा दा चौद्या दी गरी ही बड़ा श्रीवाडमा है

भ्रामिता(तृ) भ्रामितिस्तृ), भ्रामेन्-वि [do]

इसा अन्या भेजा दरशेवाना । सारा-पु (शं) भाषार श्रीवन शियायी प्रमु नना

राग्न)। कमी अप्याः पुरु (का] देवा अपने । न्यी]

-प जीशाजन या करते। भाषाङ−वि॰ [मं] सानेवाता, मील्य । आहास्ट-वि (संक) सत्रम, श्राविद्याको । आधर्ति-स्वी [संश] ग्रमा, सामर्थ मारवना । थाहाम - वि॰ नि॰ छिनानेवाता । प्र मधन मासद्र गुप बक्र, बराति ।

भाशना∽नि विश्व•ो दर्शिंग प्रान साधानसमाः (pub मैत्री हो। पुं, स्पं+ प्रेमी यारा प्रेमपात रोजी। बारामाई-कौ॰ दोन्ती। प्रेमा मरेप संस्थ ।

भाराय-ए सि रे रायमस्यातः विमायस्थानः आक्रम द्ययना रहनेसी वयदा यहा अविद्यान आवारा मर्च अर्थः आव, ततपर्वे बहरा थिए, हुन्दा चर और पुम्य∞भूम दु राषे बारमान्यमंत्रस्य शंरदार (बी॰)। जामवर बेमाने का गरदा करहरू। अध्यादा दगारी। माग्या संहीत कराय ध्वसिद्ध ।

भारायास-५० (वं 🕽 अध्यः । भाषायिता(त)-विश्ति]सिपानेगता शंष्ट्रपदरनेगणः।

आकार~प॰ (शं॰) राष्ट्रसः मन्ति नाम श बाहाल-पु॰ (तं॰) एद रुप्त । बाह्यय-पु॰ [मं॰] बेय, क्षिपताः अस्तर ।

कारत:~ररो॰ सि॰ो दिसी बरनको प्राप्तियो इसता शीर निविद्य विश्वासः वस्थीरः, शासारमः विश्वासः वा अरोहाः बाह्यका आवार। बामरा। दिया। एक दिया। रक्ष्मी १६ कमा १-वज-५ शिनव १-जमक-६ माद्या जनव करमवाना । --संबु-५ शोग माद्या । -- मिर्वेदिसमा-लो॰ इहाइ ध्या । -पाल-इ विवास । -पाध-५० शपुरुपेव बाह्यका रंपन या गंदा ।-विद्यार्थका-सी बड़ी बाहा !-बाहा-नि क्यिये बारा हो ही यदी हो।-क्य-प् भाशासा बंदन रिपन्न। नर्भग-४० आधार रहता आधा परी स दीना। -स्याम-दि रिगंदर अधा-बह-पुर स्री द्रिन ।-विभिन्न-दि• इताथ । ~हाम~दि• दिशाय । स• ~हटमा~ अच्छा धंत दोया ६ -लोदमा - निराध बरना । -ईमा-क्षमोर देशमा । -क्षमा-मारा पूरी होना !- देथना

आगार∽प (तेरोडे आपाः। आसामील-दिश्रीम । ब्राज्यमे सहित्र । आसार~द+ (वं } भावत रहात्रवात । काशासक-पु॰ (गं॰) हिनो नरापी रेन्द्रा बरना या उपने लिए पार्चमा मान्या ।

ब्बाह्मसमिति क्षाप्राध्य-रि (१०) श्रीतमशीय । इ ब्रन्धाः सार्यसेष् ।

कार्तिकत-रि [मंद] हम्सा बन्ता पुण (लाम) र

त क्षामा अभवता ।

काशि-भी व (शेष) सहस्र, काण । आसिप्र-वि [x] श्रद्ध-दश क्रानेशना अनुत्यः

∽माण्य ज्यस्य दाताः ३

अलाल १ व देश बरदेशमाध्यांत ।- मार्ग्य नव वेदे क्ट्रीयरात्र । -शिक्षात्र-विश्ववेद्याराः हे स्टि क्षातिकात्रा- विकास क्षेत्रका मा अगानः बेद्रम्बर्क

स्वायोच्छ-वि [सं०] जिसको इच्छाएँ बहुत कम हो संतीची । स्वबाह-वि [सं॰] विस्का आसामीसे निर्वत्रण किवा बास के बो आसानी से रोका था सके। स्वत्रकृष्ण-वि [मं] अच्छी तरह वैका हुआ। स्ववरन+-पुसुवर्ण। स्बम्पाज-वि [सं] पूर्णत निष्द्रपर बहुत राज्या र्रमानदार १ स्बञ्चर-पु॰ दे 'बशुर । स्वसर-द (से) परः पोंचलाः दिन । स्वसा(छ)-श्री [मंग] वहिम । स्वसित्त−वि [मं] बहुत का**का** । स्वतुर-पु दे 'अञ्चर । स्वप्रशास-नो देश 'स्प्रशास'। स्वस्ति-अ॰ (सं) दस्ताण दो' इस वर्षदा आसीर्वारः बान-स्रोकारका भंग । स्रो॰ दश्यानः मद्यान्धे एक प्रशी । --कर-पु∗ण्डनोत्रदार ऋषिः --कर्म(स्)-पु कस्थाम करना । --कार-पु श्वस्तिका वच्चारण करन वाका वंदी। धरवान करना । -कृत्-नि कस्वान । करमेशका (श्विष) । -ह-दि॰ कस्यान देनेवाका (श्विष) । -हेवी-सी एक देवी (डो शायुक्क) पानी आसी **वा**ठी है)। -पाठ-प्र 'स्वरितन' आदि अंत्रका पाठ। -पुर-पु एक तीर्थ : ~भाव-पु॰ शिव ! -सुरा-वि बिस्म मुदापर रवस्ति शब्द हो । पु पत्र (वे) 'रवरित'से भारंभ दीवा दी: आग्रमः रतुविचारकः। -यचन-प्र ः श्वरित सभ्दक्षा उच्चार्ज । ∽वाचक∽तु नायीर्वादः बाधोर्यात देवेवाला व्यक्ति । —शाधन,−वाचनक-प्रे वह या मंगळकार्प आरंभ करते समय किया जानेवाका एक प्राप्तिक कृत्या पेने अवसर्वर माद्यानको दी बाने-बाकी दक्षिया भारि । "याचनिक"वि भागीबीर देनेवामा बन्धान मनानवामा । पु दे 'स्वरितवायम' । -बादय-पु भाष्टीशद । विश् विधे स्वस्ति-वनत्रके पाडके किए वहा प्राप्त । -शी-वनके आर्थनमें किसा बानेशन्य मंतक-सम्बद्धे शब्द । स्वन्तिक−पु [र्ग] पारणीका एक प्रकार (श्री स्वरित बाट करता हो। कोई मननहच्या वक मंगरबिक्ष को शरीर या किमी पदार्थवर बनावा आना है (क्र)। बावी-की सीनेपर इस भिद्रब रूपमें राजनाः इन विद्वरी शहन की पट्टी। यक विशेष जाकारको बाक्री: एक शरहका पिटकः चीरेडेन बना इमा त्रिमुमासार श्विमा वह महास तिस्रमें पश्चिम एक और पूर्व की दाकान की। सहशस्य निका क्षेत्रका एक माधीन संया निवादर शाक्षा कहतून' अयोग र्रदरा न्दरका एक अमुचरत एक शामालुरत एक दासका रक योगासना मॉपर्ड कनशरकी रेखाः यक नरहकी मानीन मीका शरीरका यक शुम निया विश्वजाकार सम्बम्धि । न्यापा निव विशन्ते कानपर न्यविश्व विद्व वना हो । --पाम-ध्र दावीकी शीनेपर स्वरित्रहर्दे रूपी रराना। ~र्यंग्र~पु मष्टनस्य निकासनेदा एक प्राधीन यंत्र ह

स्वस्तिका-को स्वशिक्ष मामक यंगलविद्या [सं०]

चमेछी । स्वस्तिकाङ्कय~पु• [सं•] चीलार्रका साग । स्वस्तिमती−को [तं] स्वेरको एक मात्रका । वि• स्त्री ग्रस्वाणी। स्वस्तिमाभ्(मत्)-वि [सं•] सुस्री सौमाग्य**भुक** । स्वस्तेन~पुदं 'रवस्त्ववम'। रकस्त्यक्तर-पु [सं] किसी शतके किय कुतप्रता मकर बरना । स्थरस्ययन-पुर्वि] कृत्य निरीपके मारंपमें विष्मश्रांति-की कामनेति किया चानेशका मंत्रीबार वा प्राविधक्त विचानः सस्विद्याधिका साचना किसी मांगडिक प्रत्यमें बाते समय दसके जाने आने हे बाला जानेवाका जरू पूर्व कक्षका दान स्वीदारके बाद महागका भाषीबीद रेना। वि शंगक्यारक। स्वरत्याग्रेय-५० (सं॰) एक मंत्रप्रका ऋषि । स्वसीय स्वस्नेय∽५ [सं] वहिनका देश, भानका। स्थलीया स्थलीयी-की [र्स] नहिलकी नहीं भागजी। स्पद्वाना≠−++० क्रि॰ द० 'शहासा । स्वोक्तिक-पुर्सि । क्षाक्र वजानेवासा । स्वांग~त [सं] वचना हो अन्। −भंग-प• भएने ही अंगडी पहुँचनेवाकी चीर आदि ! -हाति-दि॰ विस**न्दे सारे भंग शीसक ही गमें हों** । स्वाँग नप् इंसी नमाक वा भोदा देनेके किए भनावा हुभा दुसरेका रूपा इँसी-मनाक्षका रीक वनाद्या। होसी आदिपर निकाण जानेवाषा दारपञ्चन वेश्वमूपायाचा ज़क्समः करतवा में। म को वैसा क्षेत्रेका दव अदिवदार करना । स् • - वनामा -- भरना - रूप चरना भेस वनानाः नक्त करना । -क्षाना-दे "स्वाँग भरना । स्यरिका≉∽स कि स्थॉयवनामाः स्वाँगी-प ^नदींगीः स्वाँग करनेशाला अनेड रूप पारण **क्र**्नेबाका व्यक्ति । वि क्रव वसानेबाला स्वाजस्थक-तु सि] दाथ बोहमा (प्रार्थमादै निय) । स्वातिक्षास-(सं^६) देवल सरना मन प्रश्न दरने, की बहुलानेश किए, दिली अन्य सामग्रे तिए नहीं। श्योत-९ [लं] धरना चंत्र शृत्ताः भरमा राज्यः हर्व अंगव्हत्वा वहर् । दि॰ शिन्यन व्यक्तित । - = -पु प्रेम प्रमुखासाम । −रथ−वि द्वापरवा व्यक्ति#-- ध्रानी देश 'सॉस्'। स्वॉमा॰-पुदेशसॉस'। स्वाकार-पुर [सं] स्वधाय । रि मिनका अपना क्ष थी। रवासपाय्-पु [मं] स्वाय दर्शनका अनुदानी । न्यासर-५ [मे] दरवसंत दरवायत सरी। -युक्त- विसंपर दलया दिवा गया थो। श्याद्यरित−4 [र्त] दश्ताद्यर दिवा द्वमा । स्वागत-५ [मं] दिनोदे आगमन११ कुगुर-पर्म आदिके हारा वर्षप्रकाश अगरामीह एक दुद्ध । A व्ययं जाया दुष्णाः नैध खराधीमे प्राप्त (पनादि)। −कारिणीयमितिः-समिति-सौ+ द्विमी समा सम्ब असमें आनेवाने प्रतिनिधियों। दर्शकीकी टिहाने (ग्रामाने

मासम् पदना ।

बोरधे मारना ।

इचका-प रे 'इमक'।

हचकोछा~पुहबद, इवता।

इगोदा-वि नार-नार शीथ बानेवाला।

बगना जीचे अपर, बागे पीछे दिक्रमा टोक्रमा ।

इसकामा-स॰ कि शोडेने दिकाना दुकाना ।

इचकीका-वि॰ झॉकेने तेबीने दिकन दीसनेवाका ।

हुगाम, हुग्गू-वि हुगोद्दा

हचनार-व कि दिसी बामके करनेमें असमंत्रम होनाः श्री नश्री करना शिक्कमा। इत−९ दे इस्र'। हम हन्त्र-पु [м] शुक्त कुरफा साम (स्टाना इतम-५ [स] मोटाई। आकार (किनाशका र)। द्वाम-पु [अ] पाचत-क्रिया तहलोकः खबानत यथनः भोरी । मु॰-कर सामा -करना-पवाना तदकीक इरनाः क्वन ६र हेमा माळ मारना । -होना-पथनाः मदनका प्रकट न दीना । इक्कर−प [थ] पत्थर । −(हे)भमवव−प वद काका पत्थर को कार्रकी श्रीवारमें कवा हुमा है। इक्कर−प विश्व क्यामने रिवति व्यवस्थान सफर का उत्तरा । इक्तरस-५० [म] समीरता हुन्दर दरनार। सम्माम सम्बद्ध संदोधन यमाद महोददा (हा) महस्मद । दि ge क्षोरा; पास्त्राय: शरारत करनेवाका ।-सम्प्रामत्-प्र चारशाह मबार आदिका सरीवमः (का) वादशाह। - • प्रमृत्- वि जो नार्छा दकी पर्वर बाये। ह्याम-पुदे हम्बाम । इ.सामत्र-न्योः [भ] शिर मुँक्ता शीरः स्टाईः हुरशा। म - धनना - भिर मुँदा वाला। उदा सहा साना। -धमाना-सिर मुद्दा। स्पता स्ट्या। हजार-दि [पा] दम सी: भनेक, भननिमत । प्र बबारकी संस्था । अ किशना दी बरवंद । नक्षा-वि सहस्रो। ४<u>६वः ४१दः अनगनतः मु</u>०-कावसे-४३ श्रीहरी । -मॅ-बहुत कोवीके सामने । इज्ञारा-५ [का] प्रीवासा एक्सकडे काम आनेवानी एक बान्दी जिमने बहुतमे छेशेबाचा सम्बन्धा रहता देः ददनमे परमीशानः कृतः यदः मातिशरात्री । हज़ारी-वि इवारमे मंत्रेय रमनैवाका । यु हजार आह मिनोका सरदारः हवार बादमिनोधी पन्यमः नेद्यानुष्ठः शारी बमानेका रक कोहरा । -यञ्चारी-वि नापात्य भौगीमै वैद्वनेशमा दमीना। इज्ञारी-दि रे 'इजारश । सु -यह यानी वह बाना-बहुत रथित होता। -में-बहुतीया सुहम-सुद्धाः

इक्स-प [भ] बनपर, मीहमानः भीत स्रमा। इन्तर -पु वे 'इव्र'। हज्राक्तिना । प्र देश प्रवरी'! हर्यो−सी॰ व्यंगोसिः निया । इयक-सी वहा होंदा हरदा। मु०-साना-सन्दा इका−पु [व] संदर्भ कर्माः निवत दशकभर दश्वेदे इच्छना-श कि कपर-नीचे, जाने पीछे दिक्ता-बीकमा दर्धन भीर धरक्षिणा करमाः महेको याथा। -(उसे)-सक्थर~पु अधिक पुष्पजनक इम, शुमैको किया संदिधे इपर-वपर दोना। स कि सोंदा देना दिकाना जासेवाना इत्र । द्रकामाः (सा) श्रीरसे मारमा । मु॰ इचक देमा-हमास-प्र• मि] पछने कगानैवाला हजामत बनाने बाका नाई। इज्रामी-सी इच्चामका चेपा । इट-पु दे 'इठ'। -पण्णि-पु ;-पर्णी-सो॰ ग्रेवास। इटक १ - की मना करनेकी किया वर्जना वीपायींकी इटाने इक्टिनेशी किया । स् • ∺सामना-रोक्टनेपर किमी कामको न करमा। हरकर्ना नमी दे 'हरक'; धीपायोंको हॉक्मेको शादी। इटकना॰~स कि बरवना, मना बरमा, रीक्सा करों र्से किटीको शिरत करना इटामाः चीशबोको किसी बीए काने से रोक्टर दूसरी और मोदना इन्हिना **म**िक भभावपर दोना हिम्बदियाना। इटका!-पु दरवाने आदिको सुकत इटनैने रोहतेके किए कगानी हुई बीबा अर्गत म्बोदा । इटलार-स्युमानका स्ता । सी इस्तान । हरतास~सी दिसो ६८ भाषान-भारतायार आहि के विरोजमें हुआनोंने वाने कगाकर खरीद वेच काम-बाज भादि भंद कर दैना इस्टास्ट । इडमा−म कि दिसी म्थानरे का दिसद सरहदर इसरी जगह जाना। किसी पहले इट काना पद स्वाग करनाः दिभी रवानमे अवकाराः, दिभाम शहन करनाः पीछे दरना सागना। अन्यभी दाना काम स करना। की शुरामाः विसी कामका भागने किय रस बानाः बादेपर कायम न रहना। # स । 🌊 हटकमा। ग्र॰ -बहुना-मुपदेने मान बाना, दिमह बाना इत्रर उत्रर होता । हटबया-प दार, वाबारमें सामान बगाकर वेयतेशका व्यक्ति दृष्टानदार । इटबाई-क्सी बाबारका काम सामान माधेक्ते-देवते का काम हुकानशरीः विस्तानेकी मबहुरी। हरवामा-स कि दशनेदा दान दूमरेन दरवामा ! इटवार-व्यु दाद वाबारमें ग्रामाम नेवनेवाना व्यक्ति बुद्धानदार । ई दि॰ इटानेवासा । हर्द्यपा~ि इटामे इटवानेराजा। हरामा-म कि दिसी दग्तु व्यक्तियो यद स्थानमे दुसरे स्वानवर रखमा स्थानांवरित वरता, रिरमदामा;

विशी बागपर ध्वान व देना, विशोधी मदश्व स देना

वरेष्ठा करणाः धास करना नंद करणाः निवसिना

वीहनाः घर्रहराः विधी पर भौवरीन शहम बरमा ।

ददुई-मी दुशनरारी।

इटगरा - १ कोरा सामाम माल।

इट्डा - इ हारशता व्यक्ति दुवामशाहा हो अनेवाना ।

पिकानेका प्रश्नं करनेवाली व्यामीय समिति । -कारी (रिम्)-दि॰ रदागण करमेशाला । -धनिका-सी॰ देश 'आगतपतिका' । न्यकान्तुश मिलनेपर स्वास्थ्याति मंद्रवर्षे पूछना । ~आयण~पु॰ श्वाणत श्रमितिदे भव्यञ्चर मार्थ । -बचन-प् किन्ने स् भागेपर रशमत्त्रे शब्दका करन ।

स्वागता-सी॰ शि॰ो एक वश ।

स्वाराशिक-वि , पु (वि) स्वागनक्यों । स्याराम-पु (मं•) स्वागन, शुधानवना व्यक्तिरन ।

स्वाचरण-पु॰ [मृं॰] सध्या वाळवळन । <u>वि</u> वान पनगराना । स्वाचीनु-वि [सं०] जिसमें बन्धी तरह प्रस्ता भाव-

मन किया है। स्यामधेच – १ मि॰) १वपछत्रता निर्वणक्ता समाय. नि(कुश्चना ।

स्वाजन्य-तु [सं] स्वत्रवता, संस्व । ग्बासीयः स्यामीस्य-वि (ते] शासामीस वीविका

मनान बरनेवाका । म्पाइपंदर−ि [सं+] आसाबीसे भनी बनामेबाला ।

रपार्तम्य-प्र (रं•) भागती रवरंशना। -संद्राय-प्र आभारीकी सवावे रमाधीयका प्राप्तिका संप्राप र ~ च्रिय; - प्रेमी (सिन्) - (व॰ स्वनंत्रताका मेथा, बाजादो-फ्टंट १

स्यामण-सार्श्वेर 'रबादि ।

स्तानि−नो सिं∘े २० नध्यीमेंधे १५ में को धार माना गवा इ. (कविन्छमवदे अनुसार भागक दसमें दी द्रीजनाओं नवीका अन्य देशा दे और नदी बन शीनक र्सपट्टी वर्डक्टर भागी आंट वॉसमें वंशनीयम बनना ह)। सूर्वको एक पानी। तण्यार । वि॰ न्यानि मध्यपी बरस्य १-कारी-भाँ। एक कृषिनीयो १-गिरि-भी । एक नामकृतः। -पंच -वघर-५ अकाश्यानः।-विऱ्-प्र १शानि मधानमें बरमनेशांके घलको नृष्ट । ~ मुख्य-प्र वद रावानिः यस विवर ? – मुखा – भी । यस वागतनाः । -बोगा-दर भारत है शह प्रश्ने स्थान मधानका भीडवा-& माद दोन । - भृत - सुवन -- पु शारी ।

स्वाती-भी विक्रि खाँउ। क्याप्र-प्र निर्भे इत गाने प्रोनेमे भोनही हीनेशण हरात्मार कारदा, रूपता संत्राः (बाल्यमः) शीरदेः क चाह, इच्छा । ज्ञुष्ट —चामाना—हेरू ¹नजा प्रधाना । रबायक-तुर [में] रव र व्याजनका। राजा कारियो बादशासामें दल कामदर नितुत्त वर्मपारी ह स्वापन-पु [तं] स्वाप केमा अवासार इस केमा (ब्रांक्स बार्टिक्स)। मापकेशर समाना ।

क्षापत्रीय-विक [त] अमर्देशाश स्वाद देने बाव्य । बवादब-पुरु [सं] व्यव्यव श्याप । बक्तिम्-वि [मंत्र] बता हुमा, जिलका प्रवाह विका न्दा हो। भावदेशार बनाबा इक्ष्या माग्य किया एका ह क्यादिमा(सम्) नशे [शंक] गुरबपुतार मानुई र

enfer-fe to beffen s हक्तरिक-निर्वारिक व्याप्त व्याप्त वर्ष की माल्यस्थात है। न्यादी(दिम्)-वि॰ [मं] रशर सेमेराला र स्पादीका-वि स्वादिष्ठ बादबेराट ग्रावक्ता स्वाबु-विक [मंक] स्वास्तुत आपरेतार; विवशः स्व ब्रीवरा बक्र । ते॰ भंतर दक्षः शक्षा माबका कृत करतः

महमार ६५६ विवास: विंश मगद । सी॰ दमा १-होद-र्कटक-पु॰ विश्वत्या विश्वेदश्च बृग्ना मोसस्र । नर्कर्नुः भुरें कुरवार स्पेद विद्याल । केलक १-कुदक-मू वेहद । -क्या-मी विश्वरीयेश ।-कर-मु एक भेरर मारि। च्चाम=दि॰ मीडा पर्यः करनेशला। =बारनी व्यायकेदार यमानेवाला । —कोचालको-की० सार्ते । -संद-त गुरा मोठी भोदध उद्या । -रोप-सः रफ सीमांबन । ∼र्गधा∼सा १५८ क्षेत्रोक्र≯ परि कुष्मीटः –गीध-छ। १७ होमोतनः –तिष-पुरु चीलु ऋक । —रुक्षान्य-पुरु मीनुद्धा पेट्र । अधानार (स्वतः)-५ याम⁻४। ~पशीतिका~स्र देल । –धर्मी–सी॰ दक्षिता । –धाद्य-दि - दस्ते श वयानेमै मध्या । --प्रका-को मध्य । -यावा-कारवाची। -वादी(क्रियू)-(१० रे 'सर्) वाक । -विद्या-ध्ये वित्याद्य । - तुष्य -तु -तुष्ये ~श्री+ ब्रह्मी ⊱ —कल्ल~तु+ देखा कला को पीर्य

केंग्रा है। प्रमहा। -वीज-५ परान्या में। ~समा(अन्)~५० दर्शक्ष रोख । ~सरतदा~^ध* रामरका पेश । —बासी-स्ता॰ काक्षण । —बापी॰ मी सावपर्धाः –हास्ता–को यत्र ४-वाद सर्धः -मूच-९ वावर !-युन्द्र-विश् मधुरतारूचे !-दादी-(तिम्)-वि॰ श्वारमुख्यः मोठा । -श्या-वि॰ कार्यः बार र - रमा-भी॰ मंदिरा। प्राधा। बन्धनी अप-वका वनावरी। मुर्वा ।—स्तान-स्ते विवाही धर । —श्ली -को॰ मोद्दा बोन् ! -वादि-प्रामीके असवा ग्रामद ! नि मोडे बचवानात -विकेषी (विम्)-नि स्राटका

विरक्ष कर्नवासाः स्वादका भ्यार राष्ट्र क्रान्यसागाः।

-श्रोही-की इनेप करनी। -श्राक्र-प्र गेपा समग

क्षम । -क्षमा-सीर धेरका देश राजस्था है।

मानुद्दमक्त । श्वापका-सी (वं•) मामांगी **३** श्यापुक-पु (ते हेश्रीत्मृते । श्वापश्चिमः-विक 📳 श्रोशकारीया । स्वाधः नदिः [तं] इतार केन वीत्या भागा राष्ट्रार ह इक्कानुका-९ [तीन] श्वादिक्ष काण वृष्ट्याम । व्याज्ञक्य∽ष्ट [यं०] अभानका देश मार्गनीया वर ह क्याप्टी-व्ही [तंब] बाह्य सन्दर्भा देश पूर्व

व्याधिकार-४ [त] | भवना प्रदिश्ता का प्रशः भरम क्रमेटर है क्वाचिक्राम~५० [त] बडर्गणक माने प्रश्चाः वशेटी

कुमरा जिल्हा स्थान दिश्वमूक्त की र वाच परस्पद्रमण ब्रोना सामा है। अहना श्वाम ह क्यायीत-वि (००) को भावे ही सर्पन हो। १मावे

मही स्थल्ब आसाला औं अपने बदमें हो। स्थली flebninger sie u miebliete -affer " अर्जुक्दरमधीय परिन्धी अपने बटाने स्वानेशको बारिस्स । इरोगी-इडी हरीती हडीर्ता! -श्री शरीरका सेना ! द्रह-प (१-०) द्वार क्याहा यथा । -शावक-ए० शानारमें पीरी बरम्भाना व्यक्ति गुँदन्ता, पानेतमार । -वाहिमी-मी नागरमे बनो हुई बानी निष्ट-देशो मानी। -विसासिमी-भी बारविना अध्या पद मदारका गंपदम्यः वरिदाः वन्ते । -क्षेत्रमासी-सी रवामीक्षे पन्ति। दहा-बहा-दि॰ इट पटा मोरा वाजार बन्जाय । इहारयक्ष-५० [मे] नाजारका निरीएक । ge-प [म] बमारकार बमायवाग अवस्टम्मीः जस्वीयमः हिभी नापपर कर रहनेकी प्रपृत्ति ब्राग्नहार प्रतिशा शबुद पुरमागम वर्षेच यामाः ब्रामी । = वर्मे(म्)-पुंत्रमध्यादा साम । −वाश्रक्र~ प्रदानीकामी भी बनप्रशेपका सहस्राते । -धर्म-व क्रयानावका विनय किये निमा दिन्ती बाहको भाव मानवर ब्रह्मार ४३ रहमा। -प्रमी-मी हिंशोद 'हरूपर्व । -पणि-प+,−पर्णी−०ी होबाल । −धारा−प+ घोलका सक घटार जिल्हें होनी वीती, मत्सम आहि दियाचे करत भार घरट पारणा पत्राम आहि बारा विज्ञिति बाद्य विषयोग ब्रह्माब्द अनलेश बश्त है। नयोशी (तित्र)-वश्वद्वदोग बर्धनवाण व्यक्ति। -विद्या-शीक प्रयोगया विया । -शीम-दि हही, जिरी । म् -पश्यमा-तिर् बर्गाः -माइनार-स्ट स्ट

बंगा । -में पश्चा-वड बरनम विशोद वा मंदरप्रध शिकार क्षामा । -रस्पमा-कि गेढि का ध्वाकाडी कृति इत्याः । –शेपना–१८ म.स्नाः। प्रकार - अर्थ कि क्षेत्र करणा किए करमा- किश्वी अ ल्य । यान पट परियो म थाना बाल -म्हा

हराम्-सर् [में] ब्रह्मका नश्चर्यक । -कार-पू euren metreff : हरारेशा(शिक्)-वि [] किमोडे विवह मनवित्वा

श्वाब बन्नमानेशना ह ह्यापान-दि० (५)०) भ न्यांचे ॥ इरामु-पुरु (६] व्यवदा ।

greife-q [u fanglem fra unni Ristered (4] unges प्रति(रिम्)-दिन (श्रेत) दह बारेन्या विदेश

प्रशासनीर इर्ता नुष्ये का बावेदना की बीका endant t

प्रचलको । हरी ग्रह सहत्त्व अवन्त्री स् व का लग्न वन् इन्। बहुन्तु मा व अपद। (तृष् लश्सक्ताल

क्षान्द्रभेत्रताः)-क्षत्र-भे ;-श्राद-पु बद मण थी केन्द्र अन्द्र समर्थ क्रमी है। -दिल -सीया-इ मान्त्री के कुद्ध वह कार्ड - कुरक्र-करी वृद्धि है क्षेत्रका रहे र न्यूरवीर नहीं व्यक्तरत र न्यूर्य-

 १४ मार्थ्य विकास Edding and 205 #1 THE PART WE

THISTORY WEATHER Eddalman fr. 16 j. sent gie magte fin ething t

इंद्रका-पु इंद्रको ल्लानेदायाच लाम। इइहाना-नः कि टर्सानम इनीमा इर्जा पर रेप देनाः तंत्र बरनने रिभीक्षे प्राप्त करना ।

हबबाया विव प्रगायमाः बार्म्स (रक्षा) । इंद्रमास~न्धे • दे॰ 'हान'व ।

इडमा~म हि शामा याना शेमने भोंदा श्रामा । क्षत्रप−तः भरावः निवस्त्रात्याच्या स्वाधी स्वाधी स्वाधी जाना। दिला चहाचे निराण जाना। दिल्ला राज्य पहर

द्रसम्बद्धाः अभ्यः । द्वपना-म दि दिनी प्रश्तुका अनुवित्त मालती रण कभी म हैनेशे इच्छामें अपने अधिनाते वह सेम जनरहरूमी या धारी । दिसी मन्त्रद्धे देवर वडी महैन।

थम्दी (भीर बादा कविक) शामा निमन्ता। इक्करपा∽प॰ दें० दिवपीर शामी को क्रमी कीरमें ही हैं। है। निषया यह रक्षान अही बहुत प्राधीन अनुपार लिए

काधे सरे हैं। ष्ट्रचयक्-न्योः दिश्री अपराप्त्रभः अवशाहरूमे शावतं रूपः बाडी वनानमी ।

ष्ट्रवदावा-च कि दहनती पनशहरों की अप बरना । वा कि बन्दी बार्व बरवेडे क्रि मिन्धे वेदिन न रजा ।

इच्चित्रिया-दि॰ इद्दरी संयानसमा अराराम प्री

इक्क्को-को ४४४४ धरदामे अन्नावधी । सूर्व ल पक्षमा-दिनी कामके किए प्रश्नाती होता प्रस्तित होता । (वेरांश)-पक्तारं-व्युष्ट व्यवस्था । - स्थार क्रोंबर-दिनी बायका धन्दी बरनेकी बन कीमा है हरहरामा-म दि० दिल्दर राज्य द्वासा योज कारे

ur's for fendt bleg uters with ter Es mer einer !

इक्श-दि हास्पर्वता अधिवात (व ल) विगर्द धरीरमें ब्राप्तिकारिक मधी की नपूत्र कुल्का बनका है य अंदर्भ रका दिस के पूर की घर एक्टरेशनर 12711 हुन्। 📉 यद यह एक्ट्री वीहर, यन रूपा बीहर 🕈

है। ने विदेश का प्रशासिक ए है ह्यमानीते हत्रमध्यक-भी वर्ष्युचीमा देश भगवदेवरत

प्रशीरक बाग्य क्षेत्रक के का गा

इहिन्दू मि दि औ स्टिंड दिविह । इडि४-६ (६.) शाल नम नेशानी प्रत्य प्रशानेशानी

ያው ጎልላ፤ श्चर्यामा-स्थि इंडीराचा व्याप्तिमा (भर्ति) स्थिते

द्यारक्षे द्रार्थि हो देह रूती हीं। नर्म पुरना प्रना हे ह्यू-वृहिक्षेत्र हुए इत्तर सम्बद्ध मने। र ere-g lealt tee t

egr-je feitt af it es dit I am b't के ने बुज का होगा है।

श्रीष्ट्र ब्राह्मक ब्राह्मिय-१ (१०) देश विधियो । हुत्री-के शर्माण का बंध मधी का प्रवर्ध में

वेश १४। (०.) कुल सम्बद्ध श मा नामा गाँउ

पाठ करनेवासा । स्थाप्यायार्थी(प्रिन्)-प्र [सं] वह विवाशी की जप्त यजकाकर्में अपनी धीविका लाव कमानका बरन करें। स्थाप्यायी(यिम्)-वि [सं] वेदवाठ अभीवाका। पु वेदपाढ करनेवाका व्यक्तिः सध्यवनधीनः व्यापारी । स्वाम-पु [सं] श्रन्त्र ज्ञामि। यहपकार्ट (रवादिक्षी)। क दे 'श्रान । स्वाना•∽च कि दे 'सुकाना'। स्वालुभव-५ स्वालुस्ति-सी [सं] अवता बलुभव। स्वामुक्य-(द (सं॰) अपने अनुस्य योग्या सदय: रवामाविक । स्वाप-५ (संग) जॉक्स स्वया तंत्राः स्पर्धातान स्वव ही भाना ।-व्यसन-पु॰ निहातुना । स्वापक-दि [सं] निहा लानेवाला। स्वापसेय-पु [सं] वल संपत्तिः व्यवनी संपत्ति । स्वापन्-पु [मं] है आपर । स्थापन-पु [सं] सुकामा मी॰ कामाः मेचवक्से चाहित एक संब विसंदे प्रमापसे स्थापन सी जाता था। भीर कानेवाकी दवा । दि भीर कानेवाका । स्वापराध-पु [मं] अपने प्रति अपराज । स्वापी(पिन्)−वि [मं] सीर कानवाका। स्वाप्त-वि [मं] बहुत अधिकः सुकुरतकः विश्वस्यः स्वयं प्राप्त दिवादमा। स्वास-वि [मं•] स्वतः-संबंधीः विज्ञान्तंधी । स्थासाय-पु [मं] भपना जनस्तित्व। स्याभाविक-वि [सं] श्वमावसे उत्तव, स्वमावनिक माकृतिका पेदाइद्यो । प्र कीक्षीका एक क्षेत्रदाय । -बर्णन-पु मनार्थ बरावट मा जागुस्ति-वृद्धिः वर्णन । -- स्वाधि-स्वा॰ स्वमावने मात्र स्वावि-विशे भरान्यास बरा-मृत्यु दस्वादि । म्बामाविकेतर-वि [र्श] जी स्थामाविक शही भप्राकृति है। स्वासास्य-दि [सं•] जिलका अस्तिस्य कावमे आव ही (विष्यु) । पु स्वामाविक रिवर्ति स्वाधाविक्ष्याः निकी बिरोषमा । श्यामाम-दि [मं] स्टूत शैक्षिमान्। स्वाभिमान-५ [मं] अवनी मित्रहाका अनिमान, व्यास-नग्धान । स्यामील-वि [मं] प्रजंद भीवयः। वकामिक-पुरे 'स्वामी । स्वामितः –९० स्वामित्यः। रवामिता-भी , स्पामित्व-पु [4] मान्यस्य, प्रमु- ज्यारीन-भी है 'सरस्य ।

म -करना-सीपमा दनाने करना। स्वतंत्र करना ।

स्याचीनता-सी॰ [तं] स्वतंत्रता वाजारी 1-प्रेम-प्

स्वाध्याय-पु [तं] जान्तिपूर्वक वंदाष्णयना साम्या-ध्यवना वेदा सध्ययमा वह दिन जन जनव्यावके नाद

स्वाध्यायवान्(यत्)-दि० [सं०] स्वाच्यायविद्धिकः वेदका

स्वातंत्र्यप्रिवता आजश्रीका प्रेम ।

बेडपाठ कार्यम दोता है ।

स्वाचीमी • न्मी • दे 'स्वाभीनता ।

स्वा राजस्य । स्वासिम-को वे 'स्वासिनी । स्वासिमी-ब्री [सं॰] माकिकिमा प्रमुखी पत्ती। राजिकां (बहाम-र्तमश्चाय) । स्वामी(मिन्)-वि [र्श•] मिरो स्वल्प मास सी। प्र• माकिक प्रमुद्ध गरेका पति चीहरः ग्रुव, माचामः वरका सुविकाः विद्यान् नामाणः सम्न्यासीः कार्विकयः वैश्वरः विष्णा शिव- बाल्स्वावमा गवदा सेनामावका मत करत-विश्वीके स्वारहर्वे कर्दत्। देवमृति या देवासम् ।--(मि)-कार्तिक-प्र कार्थिकेन।एक ताक (संगीत)।-कार्य-प्र राजा वा माक्रिकका कार्व । ~कार्यार्थी (धिन्)~वि∗ माजिकका कायदा बाहनेवाला।-हमार-प्र• काधिकैद। -अंधी(भिम्)-प परश्रराम ।-समक-प पविका किता इवहार ।-अक्ट-वि स्वामीमें मिक्क रखनेवाका, बफायार (शीकर)।-शकि-औ श्वामीके प्रति अधि भाव, वफारारी ।-अञ्चारक-पुरु बत्तम स्वामी ।-आव-पु स्वामित्व, स्वामोका भाव। – मूक्त − वि प्राप्ता स्वामी वा पविषद निर्मर ।-वारसस्य-पु वा पतिके प्रति प्रेम !-सञ्चाच-यु स्वामीका भारतस्त्रः न्वामीकी अच्छाई । – सेवा जनी स्वामीकी दशकः पविद्य **अध्यर-सम्मान** । स्वाम्माय-वि [सं] वर्रपरागद्व । स्वाम्य-पु (सं) ममुत्र मानिकी। स्वत्वः शामना-विकार ।—कारण—इ. शतुलका कारन । स्वाम्यपकारक-वि [सं] मानिकडा दिस करनेवाता । श्र योदा । स्वार्यभुष-५ (सं) प्रथम मनु मिनको करपति स्वर्ध जन्मके बाबिने संगर्धे मानो काती है। सन्धि मारदा पद श्रीवर्गम । वि. स्वयंगूमंतंशीः मञ्ज स्वाबंग्रय-मंतंशी । -अमुपिता(त)-व मधा। म्बायम्बी-को [सं] माधी। म्बार्यमू−पु० (सं] श्वारंमुद । स्वासच्च~ति (री•) वो वपने ही अधीन अपने हो अधि कारमें है। विश्वपर दुसरेका ग्रायम-निर्वेषय स हो। ─शासन─९ कोकप्रतिनिधियों दारा दरिवाकित शासनः रवानिक शासम (बिना बीट भारिका)। श्यार-पु [श्री] बोइका वर्राटाः मेपच्यतिः स्वटित स्वटः स्वार । वि स्वर-संविध । वकारहय−वि [सं] जामाभी न रक्षा वरने वोभा। स्यारमण-पुस्तार्थं अपना पानरः अवना बास । दि सिक सफ्त प्रतार्थ। व्यारथी॰−वि व्याधी अपना साम देखनेवाणा सुदश्रवे। म्बारमिक-दि [मं] ग्वारम्बयुक्त, ग्रहत्र माभूपेयुक्त (बाम्बा); ब्राष्ट्रतिह, स्वामाविक । स्वारस्य-१ [तं] महत्र स्थामाविक रण मिटाला म्बुरीः श्वामाविकता । क्याराज्य-पु [मं] स्वापीम राज्या देशका राज्य स्थान कोबा महादे लाव गायलम्ब वा अभेद । म्भारार्(३)−५० [६] ४८ ।

4 तियोंका कोर सुरू जाना । -सद्देशा-दुरी सरद हिना । –गुड़ी सोबमा,–सोबना–पुरी चरव पीडमा । - चवाना - किसी बस्तुका लभाव दोनेपर भी उसे बबर एती प्राप्त करनेका प्रवाल करना। ⊸बोक्तना∽वडी ट्टना । −से इड्डी वजाना-कड़ना अक्षां-सगहा हरता । -इड्डी चूसना-अञ्चल व्यक्तिसे **व**वरवस्ती म्ताकाम कराना जामिरः इक्कियाँ विकाई पदनाया मिक्क आमा-श्वमा दुवला ही वाला कि दक्षियाँ देखाई देने क्यें। त∽दि [तं] सार वाका हुआ। यायक किया हुआ। ताक्रित पीटा द्वमा। फीका द्वमा (जैसे मेल)। संग किया ब्याः दिरद्वितः कतः हुनाः दिपचमयासः इतास मध्न-इरका जिल्ली बाबा काकी सभी घरा झक्त किया हुआ। व्यस्तः, वितासः ग्रामितः ग्रहन (काने)ः संपर्वेषे आवा हुआ (श्वो०); शिक्षम्माः छ्लोष । यु वयः, हमनः शुणा । −क्टरक-वि विसक्ते क्टेंट (शतु) यह कर विवेशये हों।—क्रिक्सिय—दि क्रिसके प्राप्त नदृ हो यदे हों। -वित्तः-चेता(तस्)-क्षि बद्यकः यवकाया दुव्याः। −चेतम∽वि इत्यान। –च्छाय−वि निस्कोकाति धीय हो गयी हो। –अस्पित-पुनिरर्वेद वात। ~बीचन-पु॰ दुःसमय जोवन । ~कीवित्त∽पु॰ दुःस्रो बीबनः बीबनमें नैराहब । दि - ओवनमें निराधः बताशः । −क्राम−दि॰ स्वादीन वस्तव। −साप−ि विस्ति। गरमी दर क्षेत्रको क्षेत्र ठेटा किया डमा। −चप−नि निकरतः। —देव-६ इतमाम्य मान्द्रशेन । —हिट् (च)-वि जिसमे अपन धडुओंका नाश कर दिया है।-धी,-प्रक्रि-वि दे दतवित । -ध्योत-वि श्रेयकारते मुक्तः -पुछ-वि जिमके पुत्रकी प्रस्या को गयो हो। – प्रभा–विदे दतच्छाय। – प्रमाय– वि क्रिसका प्रमाय संग्रं ही सवा वो अधिकारवैथित। ~प्रसाद-वि शिष्टकी कापरवाडी बूर दी सवी डा। ~प्राय-वि की करीर-करीर मार टाला गया हा ! -वांचय-विश् मंदेवियोंने रहित । -भाग -सारय-वि भाग्यदीत पदक्किमन। -मार्गी--वि वै 'इत थाय । –शति–दि दे दर्शनेखा –सान–दि गर्बश्रमा मपमानित । - मानस-वि वे 'वत्रवित । -सर्व-वि बहुन अधिक मृत्री । -श्रेषा(घटा)-वि दे दर्शवित । -रम-पु वह एव जिल्ला सार्वि भार योद्रे मारे नपे दी। -ध्यमण-वि दशमान्द्र। ─पिधि~(४० माम्बद्दीन : -विभय~(४) जिल दिल्ला भाविका बान न दी। ∼धीर्थे ∼वि० जिसको शक्ति अह दो गयी दा। −कृत्त−ति सदीव इ'दवासा। −द्वान वि विसका वर्गसद्द ही गया थी। ~श्रीख-वि निर्रुख । "विष्ट "वाष-वि भी जीवित वय गया दो। -धद-वि महादीम । -धी-वि जिल्ला में सर्व भट को गया क्षी । ⇔र्सच पु~िंक के हमाने । -साध्यस-विश्वदा मय नश्की न्या शा ~स्त्रीक-दि जिसने विसी गीका कर किया है। जिएकी की मार शारी गदी ही । −नमन~ प्रदिव ।

-रपर∽ि विसका रक्त भेग को यना हो। -हन्य- [

वि मध्द्राय इतास्। इतक-वि भि विसे चोट फरेंचामी गयी की। "स ग्रस्त (वृर्धेव आदिसे); वान-वृत्स्ती; पापी-'व्यव सक्सी वृत्री वक्का इतक मनीवर्षि दाप'-मतिराम। पुनीव म्बक्ति भीव वा कायर भावनी । स्ती [ल॰] बेरस्नदी मानदानि दरीः वेश्वतीः भ्रष्टता । —इउज्ञती – धी० मानदानिः वेद्याती । इतना=-स= क्रि= बानसे सारता वर्ष करनाः मारता-पीरमा १ **इतवाना**#−ध॰ क्रि॰ गरवा दलकाः पिरवामा । इता – सी [सं] यद सी जिलका सतील मंग किया गया हो। वह नवी-दीती बन्दा भी विवाहके समीच्या समझी वाय । ♦ व कि होनाका भ्रष्टकाक∽ था । क्षताचर-वि नि] क्षित्रका भारत नष्ट की गया ही. इकाना≉−स कि दे 'इक्तवाशा । इसाराइ-वि [सं] (वह दायी) विसदी जारीही मारे गर्थ की । क्षतावदीप−वि [सं] दे॰ 'इतशिक्ष'। इसाश−वि+ (तं+) विमन्त्री आशा नक्ष हो। गयी हो। मूर्यं। दुन्द्री दीना क्रमदीन। क्षताभय-दि (सं] विसदा सदारा बढ दी गया दी। निरामय । इत्ताबास−4ि [र्व] विसे दिवा इथा वाबासन मक्त म इ.भा दी निरास । इत्ताइत−दि [ंं] मार गरे और यावल ≀ इति-स्ते [तं] वया गाधा आहत करना। आयाना हानि: विश्वलताः दाव ^{हे}वः गवा। इते≉−अ कि श्रेगाका बदुवयस । इत्तेक्षण−वि [तु•] वेशा । इता≉−म कि दे दता। इस्रोज•−नि दे दगीना। इक्षोत्तर-वि [मं] निरत्तर श्री बुछ अवाव स दे सद ! ष्टतोरमाइ∽4 [गं॰] जिमका पत्नाद मंग हो गवा हो । इतोधम-दि (से] दिएनप्रयक्त । इसीजा(अस्)-वि [मं] विश्वका को व नष्ट हो गया बार बोरीएसहसे रदिन । इत्त्समस्दर्−भ [भ] वभाशवि, शक्तिर । हत्त्व = पुरु हाच । हरमा-पु दिमी वरतुका यह मान भी शावमें पदश जाय या जिम्पर हात्र रहा जाव मूट, इस्मा कुरमीकी बॉडी। बंद करन ममन दावक मीर्थ ररानेका क्लार या रटः चूळन आदिवे अवसरीपर ४पन आदिस बीबार या मृश्चितर बनाया कामेबाना हामके देउडा निक्व करका पीरा साम आर शहे वा मटबन उसके निधक्षे बना वक कार्यायम (या ब्रेंबन बुसन समय दमशी परिवा डीनमेबा एक आजारा निवार बुतनेमें गुन को इनके बादमें अपनेताना एक बर्गाम्या औत्रारः वेशमी वस्त सुनन कामने ज्ञानवाचा रककीबार का दल्ल व्यवस्था रहता है। संबद्धी मानीक पानीका पानी

स्यास्त्र-वि [सं] भाषाी सवारी वरनेवाना (वीवा) मिसपर मण्डी तरह सनारी की गनी है। स्वारोखिय-पुरु मिर्ग स्ररोबियके पुरु इसरे मन् । दिव स्वारीजिव ममुन्धेवेधी । स्वाजित−वि [मं] अथना कमाया ⊈मा । स्वार्य-प्र• [सं•] (शप्तका) अपना कर्य बाध्वार्थः अपना भनः अपना महसर गरज प्रयोजनः अपना सामः। वि॰ भवता ही मतस्य देशनेवालाः वाध्यार्थवासाः जिमका कीर निजी करेश्य हो। सुकल ।-स्पाश-पुरु अपने स्वार्ग, अपने लाजका स्वाग आरमस्याग !--ह्यासी (गिन)-वि॰ स्वार्थका स्वाय करनेवाला ।-वंडिस-वि स्वार्भग्रावलपे पतुर । ज्यर -परायण-वि जिले अपने ही स्वार्वक्ष निका हो, जो अपना हो अलग्ब देशे सदगर्भ !-परता -परायक्ता-मी॰ स्वाबीपन शुद्र-गर्मा ।-प्रयय-पुर भएने सामग्रे बोजना वा उवाव । −माक् (ज्)−ि अपना कारवार देशनवामा। - अवा (शिम्)-वि अपने दिलके किए यातका −सिपा−वि त्वाधसाधमारे लिए मालाबित रहते-माना।-पिमाल-प्र• लपने रवार्थ आर्थ प्रयोजनकी दानि !-संपादम-पु दे 'ग्वार्थ-माधन !-साधक-रि॰ अपना महस्य सिकामनेशामा । **⇒साधन**⇒प अपनी गरब महत्त्व निकालना, प्रशेषनको पृष्टि । -•साधर-वि अपना महत्त्व निकालनेपर त्राचा द्वाना र ─सिद्धिः—ची प्रवीत्रम्की पृष्टि काम निकल्ना । स्याधीय-दिश [मंग] को स्वार्थनिता, रवार्थनायनमें भंभा हो गया हो जो केनक भवना मतथब देशे, इसरेबी हानि और लामका शयान सकर। स्वार्यामिमयास-५ [सं] स्वार्थक्षियिकै वरेश्यमे माथ रिया ब्रह्मा भारती । रपार्थिक-वि [तं] बाच्यानेशकः विसदा अनता कोर्वे प्रधानन हो। अपन चनते किया हला ह स्वार्थी(थिन्)-दि [गं॰] का व्यवना ही मात्तव रेगी सरसर्थ । स्वाधीपपश्चि-मो॰ [मं] ब्रधीवनदी गिवि । क्वालब-इ है स्वाल' । इद्यालक्षत रवालस्य-दि [4] शिक्तके गरनगरी पर-पात्र ही शहर ! स्यास्ट्रस्वय-पुरु [र्न] रहमान निम्नवना नामोदन । क्वाक्य-(४० (०४) बहुत क्षीता बहुत चे था, बहुत क्य । त्र धीरावना सभी, ब्यादशा व प्रशासमानन-प्रव, स्वाख्यानना-नीव (ध) क्रण्य-ब्रह्मेगा । रवायानीयम्-पुर [तं] भगना थी अरीमा नामाः दूसाने सदाबंधा स देशा । ह्याबलंदी(विम्)-रि [सं] अपने दी बनक दान कर्मशामक दृश्रदेश अरोतान्त्र रशाचे पुरार के स्थायता है m ADatal 6 द्शासम-पु [से] अपने मराध रहमा र वि विकास्पीत दिचन्त्री संतेष राग्ननेशामा र प्रशासित-वि [6] व्यापनी व

रवासन-पुन, श्वादान-पुन भी दन 'यम्'। रवास्थ्य-तु [तं] स्वत्यता आरी।या स्थीय, विश्वत यांत निकास्य होना । -करा-प्रद-रिश् स्तरम दैनेशना । -मैंग-पु॰ स्वाम्ब्यक्षा विदश काला । ~रह्मा∽वी स्वास्त्य, लंदुरस्तीको स्था । -(रक्षक-प्रशासकते नियम निकास स्वास्थ्य क्षेत्रे क्लाहर सबसा कार विगाया है, यह बनानेवाना प्राप्त । -विभाग-प राज्य म्युनिसियम शर्य मारिका सन रवाम्ध्यकी रक्षाका मर्वत्र करनेशाला महस्त्रा । जहारिक की॰ स्वारम्बद्धा बाद्या संहरूरतीक्षा रिवर शामा । स्वाद्या-नी० [मृं०] अनिवदी पाती। स० इरिहेस्दे समय तथारण विवा बानेशाना यह शुन्द । न्यरक्र-अ न्वादाका क्षयारण करन द्वर दृष्टि देना । ल्बारल्ड 'रशका' ग्रन्टका कवारण । ~क्वाति –क्रमी-म्मे देन 'रवाशायरम १ - इ.स.-५ वटचर्ना १ - पति -प्रिय -याल्या-तर मधि। - भक्ष(अ)-त देवता। -वन-पुरु वह बीवत । हा -करमा-हैंद शानना नदकर देना । - द्वीमा - मह दोना । स्याद्वार-वि [मंग] जो भागामीने आप्त हो बार । इर मध्या साधारार्थ । म्बाहाड - दि [सं] रवाहाई बीम्बा हरि याने हे बाम । स्पाद्धाराम-तर्श (सं] देवता । श्वाद्वेय-५० (मंग्) म्हर् । विषदित-रि [र्गर] बिमें बगीना निक्रमा मा निक्रम रशा शा विषया हुआ । हिवस-विक [मं] प्रभीनेने शहा व्यवसा हुआ सीता Curt faus I विवाह-(श्रेष) वोधिया निवा शावन्तितः शायानानितः । व्यक्तिकान्त्र (वंश) श्रीकार बरमा प्रदेश कामा भए-मामाः बानुकाः वयम देवाः वानीकपनं धर्म वरता । श्त्रीबरबीय व्योद्धनस्य नति [सं] स्तीद रच सीम्य । व्यक्तिस्ति(ने)-वि (से] शीधार करनेशका । रवीहार-पुर्व [मेर] ध्योद्धारा अवसावेदी हिन्दाः अवसा बर केना। प्रकार पा निवसे प्रकार नार्यका बनुव बरमा। वधम दहरार । नग्रद्रनम् वार्केममे सर्वरती में नेता । -पश्च-पु॰ दामाप् । -रहिता-वि निपटे किर शीष्ट्रीय स दी। व्यक्तिकाला न्य कि व्यक्ति ध्रम्मा प्राप्त वर्गा । क्वीचारोजि:-भी [0]) अपना भारत श्रीकार S THEFT क्ष्मीकार्ये-किए भिन्ने श्रीदार कराने कीए । क्वीश्रयहरूपुर [व] बद्ध अप (स्पूर्ण मीन गीन दिसक्त बीमून जीवर कर बीधी नक्षण साधा रहा माता है। श्राहित्रक्र (त्र कि.) व्याहर विशा द्वार माना मान mier emit aitt fart gut t edigin-ele fo jonan kafii mere eta officell Bars अमीच-ता [] बर .. रहतेवा १० सम्देव F437 (वबीया-भाग (६) व प्रते अनुसम्बद्धानेवणी । चीमप्र

ऑस् उड़ीचमेदा एक औशर । इस्सा अवी ∽खी एक गीवा, वश्चित्रुंडा । इस्सा अवी ∽खे वागे ।

हरमा-ची भीभार, दिस्पार नाविका बस्ता। गोसुसीके दंगकी गोहका छरोर पोछनको छन्गी किया पागका इक्का किमे छापतं समय होगी अपने दालमें क्या केने दंगकाहमें रहा देसका रस चलानंकी क्यानी। सुमार्थक

कासका एक भीजार । इत्ये-भ दावमें । मुक -चड्छा-अनवामें अपमें विरोधीन प्रेमें, दावमें भा जाजा। प्रपुक्त अवसरपर बद्यमें भागा। प्रस्ताना-दावमें भागा। शिक्रना।

वधान वाता। "स्वत्यान वावा वाता, प्रक्ता। व इत्या-की हि | वात्रेव प्राचेक काव व्यान, व्याव वा वीमार व्यक्ति कावि। मुठ-दक्षता-स्टेड इर होता। -एक्ट वैद्युता-मात्रक स्थेव राता होता । -स्रोक स्थेता-दत्या पक्ष चैवन। -स्वाद होवा-म्रक्षाकृति काविस इव्यक्ति म्हणि प्रक्रम होता, रात् क्या। - स्थि सहसा-करायों कहाता, व्याव स्वतः । -सिर सहसा-करायों कहाता, व्याव स्वतः । -सिर सहसा-करायों कावा, व्याव स्वतः । -सिर सहसा-करायों कावा, व्याव स्वतः । -सिर सहसा-व्याव

इत्यारा−पुरला इत्यारा ग इत्यारा−पुरला इत्याराण गक्तिः सूनी ।

इत्यारिम् नती इत्था दरनेवाली भी। इत्यारी-ती इत्या दरनेवाली भी दत्यारिना दत्याका

पाव । इथ-प 'हार'का समास्यत रूपा [सं] चोर, माथाना बना युख्या इतास मनुष्टा −उधरा∽त दे॰ विव बबार । - उपार-प्र निना क्लि मिले किलीकी बोर समक्षेत्रिय कथ हैता। -कंडा-ड वर्गमा धर्नेता करतेको पहारिः चतुराईको चाका किसी कामके करवेमें हामध्ये प्रशित इस इंतमे सकाना कि कामध्ये ग्राप्त प्रस्ति की देखनेवाका आँव न सका किनी कामके करनेमें इस्त कामन, हाथको स्ट्राई । (सु० -०व्हमा - हमना-बाक्यांची बारगर दीना ।- विद्याना-हाक्ये सप्तांका प्रदर्शन करमा। बाक्याबीकी क्या दियाया ।) -क्यी-सी अधिका निर्मेश इंक्या नमा करा नी बैदी ला अक राबीको निवश करनेके किय पदमात है। 🖅 🗕 बासना श्ववदश प्रशासाः शैरो करार देशा । -•पवृता-इक्टरोरे हार्गोद्ध गाँवा सामाः अवस्यो माना जामाः रीपी इष्टरावा मामा ।)-क्छ-पुरु गुत्र वा साट पॅडनेका समारीका धक जीवार। पैक्कसा करवेकी हो होरिया शिममेरी एक्स स्मेर इरने के कभी मानमें नेंधा रहना है और इसरेका अग्नमें । त्योदान्त कुलीका वय बॉब। -एट-वि विशे हरत क्लेबित दोकर मार देहमेको बारत हो। -छोदा-वि दे॰ 'हवास्ते'। --कुल-- प्र बादिश्यामी। हानके प्रश्ने करती मान पर बद्दबनेका क्रिबीका वक कामूबमु त हम्प स्त्रारं 💆 ; 🛊 म सेते हेते वाले हैं मिक्स दूसरेग्रं ेवद अस्टि TOTAL

क्षिपर्ध

हाव फेर्सेकी क्रिया। हथाआर। वि हाब्दे छडाते ।
वीशोंकी गावन करतेवाला हथकका - पैदार्ग-त्
पेतमें को पर्मको कारतेवा कर इसका - पैदार्ग-त्
पेतमें को पर्मको कारतेवा कर इसका - प्रदान-ति ।
विशेष वकारत (कुक्टे चौनीकी पारन कर हेसाम।
हथकर । -मपका।,-फपहा।-कि हसकर ।
-की।-की चरताई हीता।-केपा-तु हसकी हथमें केपाला क्यांकि हीताई ।
वार्यों केपाला क्यांकि (नामकेवा क्यांकि) निवाद
क्यांकि एक क्यांका हाथ प्रहम करतेका कुल परिप्राचा।-कींस-पु सल पेतेका सामान।-संकर,पर्मक्व -सर्किर -सर्किर कुल हिस्सा-तु हयकुल

वानक ग्रहणाः इयस्यक्र-की श्राचीपर वहनेवाकी दीप।

इयमी न्त्री॰ दानीको सता। इसवासना॰ न्त्र कि अभिकारमें करना न इन्हेंस् भीरट्ट तरकि की विश्व बाटारीट ' न्यामा॰; कॉक्कर करते दस्यामक करना; पहल पहल प्रदोगमें कामा।

दृषसार-ची दाधियेंकै रहनका रमान, इतिग्राम्य फीक्सामा ! हृशां-पु० वैतन मारिसे क्सामा दृशा पंजेस कि !

इया ∸पुण्यान जाउस प्राथा द्वारा प्रमाशास्त्र । इया इया श्रम्भ द्वार्थी श्रम द्वारा । इसिमी −सी द्वार्थीन्द्र शहा ।

इतिमा~य इत्त महत्र । इतिमा~य इत्त महत्र ।

द्वांबेबा~पु वस्त सद्य । द्वांबियाना~प कि व्यप्तै समिद्धारमें वर छेबा। स्पर दुरवी किसोबी चीत्र के केता। द्वांबरी प्रकरना ।

इविचार-पुरु करा-प्रभा भीमार (-बर-पुरु बल इन रखमें वा पा पर घटायार (-बंद-पिर क्रम-पुन् पारन करमें पार एक्टन (ग्रु -क्ट्रप्या-पुरु के किर परागु दोगा (-बाकमा-बहार पर करा। -बॉपमा -कामा-अक एक्टर प्राग्न होना (

ह्युई रोडी-ची॰ वह रोधे को वंक्रेसे न वक्दर शावकी मैग्रकियोंन दशकर चोड़ो को गया हो।

इधेरा-पु वैवन पानी क्ष्मी नमेका इत्या।

द्विरीश-ना है देश्यी।
व्यक्ति-का कराई कार्यका निकास और भीश मान,
करवल: कराई कार्यका मुख्य-का कराईक:
कराई : - सुब्रक्ताना-रक्षणां करून होता प्रक्र-का कर्योक:
कराई : - सुब्रक्ताना-रक्षणां कराई कराई होता प्रक्र-मानिकी पूर्वक्षणां क्रिका! - प्रक्राक्ताना क्रक्त होता प्रक्रम स्वस्तर देशा !- पर हाल एक्शा वा क्रमा- है प्रिकेट एक्सा होता :- पर वहाँ क्षाना-की काम अन्ति है विष्कृत कराई का !- पर वान क्षमा- दिश्ये का क्षमा-वास होता का माना !- पर सान क्षमा- दिश्ये का क्षमा-वास होते का कामा !- पर सान क्षमा- दिश्ये का क्षमा- दिश्ये का क्षमा- दिश्ये का क्षमा !- क्षमा क्षमा- दिश्ये का क्षमा !- पर सरक्षणा स्वस्ता- दिश्ये का क्षमा !- पर सरक्षणा समा-वास है कि का कामा !- पर सरक्षणा स्वस्ता- विश्वेष्ठ का कामा !- पर सरक्षणा स्वस्ता- दिश्ये का कामा !- पर सरक्षणा स्वस्ता- दिश्ये का कामा !- पर सरक्षणा समा-

हबोदा-पुरे॰ 'दशांग'। दयोरी॰-स्व दशकी।

हमादी-२०१० हरगकीत्रथ काम धरतेका श्रमणा देगा ृद्धि काममें हाल समाधा । सु०- समना -मेंजना - सी; स्वधीया । स्वीयाक्षर-प्र• [सं] दस्ताक्षरः सवी ।

ाउपाशः नण्डारः स्त्रेषद्वाचार-पु [सं•] सनमामा भाषरण यो सनमें भावे वह दरना निर्फ्रस्ता।

भाष च करा। स्विक्रमण अपनी सम-स्विद्धानारिता-की (मे॰) निर्द्धमण अपनी सम-सारी करनेका नाव। स्वेद्धानारि(रिल्) निव (श्रे) अनमाने नावरण करनेवाना निर्द्धम वभेच्यानारीः निवस-कानुसका स्वेदन स मालोकाका (शास्त्र)।

म्बेल+-वि दे 'व्वेत'।

स्त्रेत्क-(र [तं] प्रतीना कानेवाना । पु स्रोतिकीतः । स्त्रेत्व-पु [तं] प्रयोगा सिक्यनाः स्त्रेत्वस्थाः वारेका द्वीवना हरेगमाः वचारा देना । ति प्रतीना कानेवाकः । स्त्रेत्विका-त्री [तं] दवाः देगमी सलक्षाः पादशाला । स्त्रेत्वि-त्री [तं) वचाः कालीः ।

स्येद्र[य-प्र. [स] स्थेरवका

स्मेदायम पुर- (स.) प्रश्लीमा निक्रम्मेका आर्थ शिक्ष्य । स्मित्ति - (व. मि.) विभे प्रश्लीमा बुका को न्येद्युक्त, स्टार्स दिया बुक्ता विष्ठका प्रश्लीमा निकाल स्था हो। स्मेद्री (विज्ञ) - (व. (व.) विश्वयुक्त स्थानीमा स्थिताहा।

स्वेदोद स्वेदोतक-पु [मं] श्वदजन ।

स्त्रेत्रेत्रम-पु [सं] पसीमेका निकलना । स्त्रेत्र-वि [सं॰] स्त्रेत्रीरगत्रक साधनीम वपचार करने श्रोरक ।

स्वोष्ट−वि [सं] अवनेकी धिव । स्वीतः सर्वे को की करी

स्वैश-एवं सो दो, वदी।
क्षेत्र-िवं सो दो, वदी।
क्षेत्र-िवं सि] मनमाना वावरण करनेवाला निर्देक्कमः
क्षेत्र-िवं सि] मनमाना वावरण करनेवाला निर्देक्कमः
स्वर्ण्यः, स्वेच्यावासीः सुरतः, मंदा श्रीकाः वोरितं सुरतः
क्षेत्रास्त्रीय करनेवाला ग्रिक्कमः । सुरामितः वार्तालाय
करवासः। न्यास-विक प्रीक्षमः व्यव्धानः सम्प्रामः करनेवालाः। वृध्येष्णकः मनमः व्यव्धानः मनमानः। न्यासिवि वे देवीर-पतः। जीव स्वव्धान्यकः प्रमण करनाः।
न्यासिणि-िवं व्योव मनमानाः व्यवस्त्रीयाः।
व्यवस्त्रास्त्रीयाः (व्योः)। न्यासि-(रित्)-विव मनमानः
क्षाम करनेवालाः। न्यासि-(रित्)-विव स्व्यानः
सार क्षाम करनेवालाः। न्युस्त-वि वे देवीरवर्ताः।
न्यास्त-वि वे देवीद्वर्ताः। माममानाः, स्वच्यं
व्याः। न्यास-वि व्यवस्ति। रहनेवालाः। स्वच्यं

स्कैरता स्वरिका-की [मं] मनमामी स्वर्धस्ता। स्कैरय-षु [सं] यक राजा क्वोतिस्माम्का बुत्रा स्कैरथ कारा क्रास्तित एक वर्ष ।

स्वराचार-वि (तं॰) स्वेच्छापारी । पु॰ स्वेच्छापार । स्वराचारी(रिश)-वि (तं) सेच्छापारी जिरकुछ । स्वराकाय-पु (तं॰) दे॰ 'स्वराकाय ।

म्बराहार-ध [मं•] यथेग्छ माहार वर्गात शाहार। म्बरिग्री-ची [मं] दे॰ 'छैरंओ ।

र्रोरियी-भी [मं] कुम्प्टा व्यक्तिवारित्री। सम-यारक (१) । स्वरी(रिय)-विक [मं] वर्ष्यसम्पर यूमने ॥ साम

स्वरी(रिक्)∽िरे॰ [सं] वर्ष्यानुसार धूमने शा का करनेवाला सिर्देशः स्वर्धेरः । स्त्रास्य∽ि [सं∘] अपनेसे वरस्या स्वामानिकः।

स्वाद्ध-पु [र्थ] किसी आढादीव पिडका विशेष स्वास यर यदिन होता ।

स्वीपयि-यु [सं] अपन धर।

स्वापाश्चित्त-वि [तं] अपना कमाया हुना, श्वसप्तितः। स्योरस-पु० [तं] तैकीय परार्थ स्टिक्पर पोमने≷ वा॰ क्योरस-पु० [तं] तैकीय परार्थ स्टिक्पर पोमने≷ वा॰

न्यायशीय−इ [सं] हुछ। समृद्धिः (विरोचकर मार्थाः श्रीनन्ये)।

r

इ-सागरी वर्षमाकाका वैद्यायां और कप्पवर्शका श्रीत्रभः श्रीवर वर्षो । इस्त्र । व्यवस्त-व्यात श्रीतः है । इंदर-पाने इति, पुस्ताः करण्यात वर्षायाः । इंदर-पान्य कि इंदरायाः तथा व्यवस्य विद्यायाः श्रीवर भारिया जीरमे श्रीवरणः । इंदरपान्य प्रतिकाराः । इंदरपान्यता नमार वर्षान्य । वर्षान्यते क्षिताः । सु -देवर-मारवा नमारवान्युत् भार श्रीरोकोर् कोद्रकृत

्वार देवनुषाः। ईकरनार•−न कि दे देवनुषाः। सुक्षिः नुस्दासाः भूषा भेजनाः।

देकरानाच-स कि बुधाना पुकारनाः पुक्रवानाः। देवराय देवरावा-पु बुधानाः कार्मप्रमः, निर्मत्रमः पुषारनं बुधानेसे क्रियाः

इंडवा-पु शरदे शिकारमें शोर-गुरु मना नामा आदि

संबना-दाव भूव संव जाना काम करवेदा कीयक

प्राप्त होमा । । इंबोइर-पु॰ बातु वस्वर, गॅंट, कोहा आदि बीटमें ठॉकने

के बाम मानेशका होहेका एक भीवार ! इसीबी-सी होता दशीया !

इमीना! -पु॰ दूबरे और दुकदिनके दावमें मिकार दैनेके रसा।

इय्यामा== स कि दे 'दनिवामा । इथ्यार==9• दे॰ 'इकिवार'।

द्वन्तां वि 'दर'] ित्मारा सीमा; नेता जीपालकी सीमा; स्टन्यां प्ररोधको अनुसार दिना इसा देश मिनत रथान । —यंदी जी इद बाँचना सीमानिर्यालः) मु ज्वर देशा —करनाः—सि वर देना, जीविश्वधी सीमा जीव बामा। —से गुजरनाः सीमाने पार दे। बागा, पद्वतं वर्ष बाना। नति दे। बाना। —से उचादा— सावदिक।

हत्का॰-पु पस्का रूक्का-'अति साथ मध रहका पताका फरफरादि भगर -स्वनारावन ।

हृद्यसा-न कि प्रवसे स्का हो बाना, वर वैठमा। हृद्दीस-की श्रि] बाता नहीं बाता, मुहम्मस्टे कर्मकन्तर और नवर्नेश्च स्प्रद को कुरान्त्रे अनुस्त दिवसी किए प्रमाप माना बाता है। वर्जना, दिवसत् । मु स्रवा-विकक्त एप सम्बाग प्रमाप मानवा।

हर्-ती [भ] है 'इर । -(४) मामाबस न्ती किही दापेडे सुने वानेडी शत्रि । सुरू- हो सामा-सत्ताकी स्वरि सुने वानेडी शत्रि । सुरू- हो सामा-

आदि वशना। इनशीय-वि[सं] वस्य मारकाणने योज्या सारक्षाने वीस्यः

वारनः इत्रफ्री-दि (अंग्)समाः गोनिनः तु सुक्रियोदा ९६ संप्रप्रमः ।

स्त्रराय। इनपाना-वस कि गरवा शलनाः भरवाना विस्ताना

इतिश्वतं - ९ वनुमान् ।

हमील-पु (सं] केनको । हतु-मी (सं] कपरी अवताः हुएवी: श्रीवनको सुनि वर्षेपारिवाणी वरता अस्य प्रक्रियारः सीतः साकः करीः

्यु-रंग (४) करता वक्षा द्वरता आकरका शांत्र कृत्यतिकाणे अराजुभाग दिक्सार रोगा सम्बु आकि पारियो भी; नेरबा। दु यह भेदर आति। -पाह्न -रमेंग-डु भनुस्र्विराचा यक भेद्र किसमें बन्दा भेद बारा दें। -भेद्-डु यन्द्रेश सुकता। -मूक्ट-डु वर्गरे यह। नोमेड-ड वर्गरेश सीवाल्या स्वयोग

यक रोग । न्योद्दि न्यों, न्यांद्रमभ-पु॰ वनश मैठनेका एक मन्द्रार । न्याप-पु वनशेष्टे मिक्कमीदाका स्तर । दुसुका-व्या [संग्] वनदा । दुसुमंत्र-पु॰ वे दुसुमान्' ! न्याद्वी-श्री॰ माकसंमधी यक कमारा ।

इनुमंती-सी॰ मारुकंमधी एक कसरत । इनुमक्तरंती-सी॰ (सं॰) कार्रिक-कृत्या वर्त्रसी या चेत्र

पूर्णमा क्रिसे बनुमान्का अ महिन मामत है। बनुमान्का अ महिन मामत है।

इनुसान-पु दे 'इमुमान्'। -बैठक-को॰ नैठक (इसरव) का एक प्रकार। इनुसान् (सन्द)-पु॰ सि॰) सुपोनके एक मंत्री (वे कंतनासे उरस्य कनके पुत्र वे सीर बीर होनेके साब दो बीरकाक्षित्र भी वहे कुछल है। साब्दे हो वे कानल सक्त

व्हित्वकारीने भी वह कुछल वे। हामके हो वे अनात्व प्राक्त वे और शीहामा पहा कामकर रावणार कार्य दिवस दिलानेमें वहे शहायक शिक्ष हुए। हिंदू दन्ते देवहाके रूपमें पुतार है। वि बवदेशका। —कृषण—पु बहु सामकी प्रश्न करनेका श्रम मंत्र बहुसामुकी एक श्वादि। बचकि—वि (कि) मजबन तमत्रका।

इपुरु=ार (छण्) मनवृत् दाह इपुरु=की॰ (छण्) || 'इपुरे।

हम्पास-प्रश्निष्क इस । हम्मान्(अस्)-प्रश्वि दे 'हमुमान् ।

इन्प-५ मि देख राहम ।

इनोइ-व (का॰) बग्री जगीतक। इनोद-पु॰ एक राग।

इ.स.च्या १९०० विषये मकत्याय किया है। दु सक विकास

इण्यमाण-दि [सं] इननीद वण्या मारा नाता हुआ। इप-ए- प्रमाणी और इतिते दोनों होईकी वानों में वर्षण प्रणा प्रणा-क्रमा ना क्रमा-मुंदर्स वाकस्य हुआ। प्रणा-क्रमा-मुंदर्स वाकस्य हुआ। प्रणा-क्रमा-मुंदर्स वाकस्य हुआ। प्रणा-क्रमा-मुंदर्स वाकसा हुएस प्राप्त वाना। क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्र

व्याधिमधिनी । श्रम्या-९ श्रमविष्य भीवना कीरा पूछ । सु०-देमा-रिरकानाः वस देशाः

इप्यू-पु अप्रीम । ति पेटू जापनिद शामेशना । इप्रस-ति॰ पिर] सान ।

इप्रता-१ [फा॰] नप्ताइ।

इवस्ता निष्क कि किमे वरणु पड़ आरि की सुरसे बॉर्ग्स बारकर रसना परमे कारना किमे व्यक्तिको अपरकर बॉर्ग्स कारना।

इवड़ा-वि वहर्रताः दुस्य।

इवरद्वर, इवरद्वयर-अ जन्ती क्ली। इदवरीके मात्र । इवरावार-अन्द्रि है इददहाना ।

हवस इक्सान्य [ल] हिन्यबोटा देश वृशे कर्यक्र के अंतर्गत कर देश ।

वर्तमे यह ।-सोध-पु सर्वेदा दीना पत्ना वर्वेदा | ह्वाम ह्वाद्मिन-मी हर्गी मी। बारी-कपूरी भी।

ववादर वर्गे मवानर्के निकट साना जिसमें शिकारी समझा विकार कर सके।

हें कपामा-त• कि भीवायोंकी विशीके दारा दटवामा। मगवामाः (रहे, नेन्याही बादिकी दिमीन हारा) चन बामाः विद्योगे विभीको प्रदर्भाना अन्याना ।

हँ रूपिया-पु॰ इस्टिनेशका व्यक्ति ।

र्षका १ - सीव वाँका प्रकार। सकतार । सुरू - हेना -सारना~ष्ट्रकारमाः प्रधारमा ।

हें कार्डे ~सी. श्रीपापीका हॉक्नेब्री किया। वैक्रमाड़ी साहि क बॉक्नेका कामा क्षेत्रनेका पारिज्ञायक ।

देकाना-स कि देवनाः शहनाः। इंकार-सी॰ वह सबकार की श्रद्ध सवाई-सागहें के कामारी-पर शानी जानी है हुंकार। * अदेकार, यमेंड ।

इंकार-तो कसदारा दिमीको पुदारने, गंबापन करने-की रूपी मानात्र, पुदार। सुरु −इना-पुदारमा। -पदमा:-सरामा-तुनानं, संशोधन करमेको कियाबा दीमा, पुद्धार या जिल्लादश मजना ।

इंकारना∽स कि सन्दारमा। कॅथे स्वामे बकामा प्रधारना संबोधित बहमा। याग्र तुकामा, निकट कानेके निय बहुमा। म कि जेंद्रारमा द्वार धरमा। **हें कारा – प्रश्न शुक्तानाः आर्यश्रमः तिर्मत्रणः श्रमारः शुक्रपाने**

की किया है र्धवारीक-वि अर्थश्री वर्षशे ।

इगामा−५ [si] नारचीरः इ.स.५ इसान्यसा इमधल संस्कृत ।

इंजा-स्त [मं] परी मैनिका (मा॰)।

होति-हो (से॰) सेंद्र १

इंजिका-को • (सं] दानी परिवादिका मानी । हॅटर-वु एक शरहका चातुक जा लंगा क्षेत्रा के कोशा । म −जमाना −लगाना-⊀रर भागा।

इंडमा-ल कि पूर्वता दिश्याः वेशपटक्ष्मणः म कि॰ बीबीकी क्वर-बनावर हैंदना ।

इडल-५० दे दक्षिण । होंडा-प्र पानी शनादि रमनेका लॉने मा चैतानका बना वर मैला वहा बाव र भी [40] निदीका बहुत बहर

बाग्र निष्य जातिकी की बागी मारि । Berimeite [rie] atmit Iti migfrant fagint बरनमः, शांदा । -सूख-द्र० विशेषा शीय बरण्य ।

Bigige-off an neiter fufen etem fles & ब्रह्मा शीधका बाच जी क्षेत्रादे निष्ट श्वेशीके सम्बंधि सबरा विकास आहि दे अवाग्योदर ग्राप्त सरकारा वाता दे। इक मुदद्दवी शहाय हो ी जावज आदिने बमादी बाग है। शुरू -चरामा-धारत यह तेदे विवे हाँ हीने कृती अपी है भवर भागक रखना र नदासका-भीवस कत्रामा ।

होती-बोर (बेर) है। इ.१६३ ३ होत-सक [संक] हुने तीर दिवार अनुवेश ब्यासकीत बाद्यक सन्दर -बार-पु देत्र स र अनिदर्श fint a genet and t इन्द्रान्ति (६०) क्य बाजरे सेच्य बार शक्ते हे

यीग्या जन्नीयनीया ग्रीटमीय अप्रदेख : र्वता(त)-प भिश्री मार बाकनेशका, दिनपादा रण्। −(तृ)मुख−पुष्कवास्त्रहः हेत-प्र• सिंग्] हममा प्रश्वा नेक । -काम-रिः

मधेम्यु । -अमा(मम्)-विश् विमधे वर्ष प्रस्थेटे नीवत 🛍 । इंसोन्टि-स्रो॰ [सं] इंब' सम्बद्ध प्रशेस क्रक्स

सहानपति बहुना । **इं**ग्री−दि स्ती० [नं०] वन करमेदासी।

हेमोरी॰-मी॰ हवेला । हॅभीरा-प रे॰ स्थीरः । हॅपीरी-सो॰ दे॰ 'इपीरी'। हैंपानि॰-भी॰ हॉफ्मेश्री दिवा।

र्द्धवा र्द्धवा-न्या [मुं०] बैन माहिका रीधवा । -एव-इ रॉमनेडा शब्द, गीप्तरि ।

इस-४ [मं] बारेनसी शोलीमें स्वयंशामा यह स्वरं जनवरी (न्याम-भारते हमके रंगमें विश्वता औ होते हैं भीर कविग्रमक्के अनुसार वह दूधने वाली अवद कर देना हो। अद्या कारमा। जीनातमा रंग जानशतुक्रीये पका सूर्व। शिका विष्णुत कामरेबा सम्म्यामिक्रोका एक मरा मतीदिन गुणोने बुद्धः यमुग्या सोबारिरहित मराः अका कराय मारवातमा वैन का धेमा। चर्नता नि^तर आसरिका गंदिरा एक बंबा जोडी। देव देखी। देखों हैं को रहिण व्यक्ति है। प्रदारके हता यह ताम (वंगीयी बीक्षापुर भाषाची वह देवनंत्रती प्रदाहा वह दुव ninten en um meidert ba Beinten ba परना पेरमाना एक अभा यक नरहता नृप्या ज्ञानीत निवानी मानुष्या अग्रादी स्वतित वा शतु । -वांचा-की दवी। -बाबीसमय-५ धना। -बीसद-9 वस रतिरंथ । -कृत-पु हिमानवदी शब दीधे। कृत्य विकास – स−प्र॰ अक्षा । – सक्ति– भी इसके-की मीहक की। मध्यपक्षित वह कुछ । -राक्रका-भी जन्दमञ्जनो को । ≁नमन-द्र प्रकार नाथ । ~शप्रवा−भी वय सर्वदना । −शर्थ−थ रा×िधेर । -शामियी-के इंपदी में महिशानी भी। बदानी ह -ब्रह्म-पु वह बग्ना -चीयद-पुर (हि.) दकीन क्षेत्रा प्रावेशन्त्रा एक प्रशासा धन्त । =रहण =प्र गीर्ट र ~अ~्ष्र व्याच्या वस अनुवश् पर्रशास, अमे अमी ३ -बा-बोर ल्बेपुनी यसुनार -बार्याच-दिर देस कोश (रही)। -तूम-५० -तृतिका-भी० हेटके शुनावम पर । -- प्राह्म-पु अन्त । -- हार-पु+ शान्त्र शीयदे दयाची वढ वारी । न्यूनियानुव दब राष्ट्र १ - मार्-प् इमर्थन इंग्स्य वंग्स वंग्य अन्यादिमीन रि भी अपूरकारियों र की निर्वादा कर केर (बानी कता की जिन्द मंत्रदी भाम क्रेंग्र क्षेत्रपरे रशरपरी) ग्रंदर की 1 -माही(दिन्)-दि पंत्र वैले क्ति बर्डेशका । – माधा-पूर्व वस परंग । – मीमधाgod ifinires a matter a trait as lega field - and - a se sent 1 - admits that वेट रिकार कर की के बचे र अवस्थित और दुस्तानी

और प्रकाशनेका एक श्रीतार । इस्मा सदी−श्री श्रक पोत्रा, इस्तिश्रीया । इस्मिश्नमु हानो ।

हरधा—ली॰ श्रीकार, इतियार शादिका दस्ता। योमुलीके दंगकी में इका द्वरीर पोछमेको कनी मैनी। चमकेका दुक्ता विमे प्रायत एमल होगी चपने हानमें क्या सेटे हैं। कहारमें रखा देशका एक चलानेकी ककारी। चुनाईके समझ एक लीकार।

हरमे-जर हाथते । मु - चक्का-असवाने अपन दिरोपोठे पंत्री दावने आ जाना। धप्तुष्ठ अवस्रपर वसमें आता। - छाना-दावने जाना, जिल्ला।

क्टान काला कियानि व्यवस्थ काला, हारूका । इस्ता करनेका पार स्क्षेत्रा इसका स्टूट दुस्का-पठका मा बीमार क्यांकि काहि । गुरु -टुक्का-स्ट्रेड दुर होना ।-परस्य प्रीचना-सगर्थ संबंदा रहागि --प्रोक स्केता-दूष्या एक पर्येगा। -स्राव होना-स्टाइसी काहिते हस्ताकी महित क्ष्मा हरागा। कहाई एगर्डका का स्वीपना। -सिर स्वाना-वेश्व स्वाना-वेश्व हिर सम्मा। -दिर स्वाना-वापका सन्ती होना।

हत्यारां – पु दे 'हत्यारा । हत्यारा – पु क हत्या करनेशाना व्यक्ति, सूनी । इत्यारा – स्रो करनेशानी स्रो ।

हबारिम-को इत्या करनेवाको खी। हजारी-को इत्या करनेवाको खी इत्यारिका इत्याका

इ.स.-५ 'हाब'का समासगत रूता [सं∗] चोट जावाता नवा पृत्तुः इताम मनुष्य । ~अधरा~९ दे 'हव-बबार । - तथार-प दिना किया-पहीड़े किसीकी बोहे समब्दे किर बर्ज देवा। -ब्रेंडा-पु॰ वर्षमा पूर्वता करनेकी पड़िंत। बहुराईकी बान्छ किसी कामके करममें हाथकी प्रतीमें इस दक्त बढ़ाना दि दामकी ग्राप प्रति को हैक्सेक्स साँद स सदै। दिनी कामके करनेमें इस्त सत्थव दावको सकारे। (स. -- श्वक्रमा - श्वमाना-शास्त्रामां कारमर होना ।—•हिसामा-सामग्री एकार्यका प्रदर्शन करनाः चाक्नाजीको कम दिखामा ।) -क्नी-स्रो कोहेक। विशेष इंग्ला बना कवा जो हारी वा जप-राषीकी विषय बरमेके किए पहनात है। (मु - • हासना इक्डरी पहलामा। शेवी करार बेला । -- पड़ना--इयक्रपेरी दार्थेका बाँचा बालाह अवशाची माला बाला बीची उद्दरामा जाना ।) नक्छ न्यु स्त ना तार ऐंडमेका शनारीका एक औत्रारा पेंचकमा करवेची वो बोरियां विममेरी एइन्द्रा छोर इत्पद्धे कक्षी भानमें देश १इता है और दूसरेका अन्तर्मे ! -कोदा-पु कुरतीका एक वार । - मुर-वि विशे पुरन वशकत काकर मार वेडमेडा बारत हो। -छोडां-वि॰ दे 'दक्दट'। -- पूछ-पु पढ जातिक्वात्री। वावके वेजेरे करती आग वर वहमनेका सिवॉका एक शामुक्य । -पार-पुरु हुन्य मेने-नेतेबानेचे बाबबी संदर्भ निससे भीथ या क्य भिद्या दूमरे पक्षके जिस्में पड़ भागा है। दरमधीशक द्वारा किनी बरमधी नायन करमेंथे जिला। प्लारते शरीरशर वाल प्रेरनेकी विजया व्यवसार । वि व्यवकी व्यवसी भीजीकी मात्रव करनेवाला, व्यवस्था - प्रेरान-पु-धैवमें कम मन्त्रेकों कर्मकों एक पुरावों । न्यवस-वि लीट व्यवस्था पुरुष्टी श्रीकोंको मात्रव कर देखाका व्यवस्था । न्यवसार-व्यवसा-विक व्यवस्था -व्यी-ची प्रदिक्ष प्रिता-पु-व्यवसा-पु-व्यवसा-विक्रमाल व्यक्त (नामकेवर) को जोति। विवाद स्वयस्था नेत्रेकाला व्यक्त (नामकेवर) को जोति। विवाद स्वयस्था प्रदूष्णका वाल प्रदूष्ण करनेका व्यवसान स्वयस्था - व्यवसा-पु-पाल देवेबा समान । न्यवसा-व्यवस्था - व्यवसा-पु-पाल देवेबा समान । न्यवसा-व्यवसान - व्यवसान

जानक नद्यार इसनास∽ली दावीपर चदमेदारु होए। इसमी-सी बाबीदो सन्ताः

क्ष्यार्थः ना वाचाकः भारा । इत्यासमार्थः -छ कि अविकारमें करणा-'दवसँसु बोरड छएनि कीक्ष्यं बाटरोह'-रामा अविकार करके इस्तमारू करणाः पहकै-रहस प्रदोगमें स्पमा ।

इयसार−की दाविवीचे १६नेका स्वान दरिउछान्। फॉक्टपाना । इसार्ग = वर्ण देवत कारिने वसभा दशा पंतेका विक्र !

ह्यां-पु॰ देश्व कारिसे स्वाया हुमा पंत्रेका स्विः ! ह्याह्यी>-ल श्रायोशाय स्रोप्त, स्मरः ! ह्यिमी-स्रो क्षायोको साराः !

इतिया—पु इस्त बसुत्र । इतियाना—ए० कि अपने अभिकारमें कर हेमा। वस्र इस्ती क्लिकी चीम से केमा। दावते पद्मना ।

इविचार-- इं थस-उत्पा औशर !- घर-- इं शस-घन राजनेका पड़ा पर, असावार !- बंद-- वि अस-पन पारच वरनेवाला एका ! हु -- बंदाना-- इंडर दिन रामुठ दोला !- बाकाना-- क्यारे पॅर इरला !- क्यांचना -- स्वतावा-- चल क्यारे ए.प्रिट होता !

इशुई रोडी-की यह रोग्ने को वेक्सैस म वेशवर हास्त्री मेग्रानिवेंसि वसकार भीता को गया हो ।

इचेरा-१ लेगमें वाची बस्तेवमेक्स शरधा

होनेरिक-मा है देखेंगे।
होनेरिक कार्यंद्र आगव्य फिक्ता और भीश भाग
होनेरिक कार्यंद्र आगव्य फिक्ता और भीश भाग
कर्षण काम्य वर्ष्ठ दिन्से हुटेक्श यह दर्शनर दर्शन
हरें। — स्तुत्रमाशा—हर्ष्यांत्रिका स्कृत होगा हरू
स्राप्तियी पूर्णप्रमा दिन्सा। —हेशा न्यामा। न्यास्त एवारा देखा। —वर हाग दक्ता या समा—दे देक्शेवर मर दक्षा, हेला। —वर बाह्य हाला-बान मानेशेदिन्तियीय होना। —वर वृद्ध समाना—दी। सम्म स्त्रमेंद्रे
दिव्य कर्षी म्यामा। —वर वृद्ध समाना—दिन्सेसावा कर्षिक क्रिया स्वाप । —वर सर् सम्म स्त्रमेंद्रे
दिव्य कर्षी म्यामा। —वर सर् स्त्रमा वा स्त्रमा— सावा देनेत्र क्रिया रह्मा। —वर सर्मा स्वाप्तिया स्वाप्तिया स्वाप्तिया स्त्रमा—

इयोदी-च दे॰ स्थाना । इयोदी-को स्थली ।

हचीटी-को॰ दश्यक्रीशस काम बरनेदा अध्यादिया किसी काममें हाथ समाना । सु०० जमना नर्मजना ज पहली पत्नी। -पदी-की गीवापती नामको स्ताः णक् बृक्षः एक कप्सरा । —पात् – वु इसका पैरः वैशुरः सिंदुरः पारा । -पादिका-सी॰ ईसपरी नामक स्ता । -पावी-सी॰ इंसप्यी नामक स्वा। -प्रपतन-पु ण्य तीर्थ । —बीज-पु इसका अंदा । *—सँग*खा-भौ एक संदर रानिमी। -साखा-खौ॰ इंसर्पकिस ण्ड तरहरो नतथा; एड क्ल ! -मापा-की मानपर्वी । -मुक्त-वि॰ इंसको धौव जैसा बना हुआ। -धाम-पु इंग्रही सवारी दा यान श्रीवनेते आयर्थे छाना। वि इस विस्ता वान हो। - मुक्त-वि इस हारा सीचा जानेवाका (अद्यादा रथ) । —रथ~पु॰ असा । -श्य-प दंशका समारव । -शाम-पु वका दंशः यक बूटी । - रुल-पु॰ इंस-रव । - शोम-पु वै प्रस्तुच । – क्रिपि∽की यक तरहकी किथि। पद शहर (संगीत) । -क्रीसश-पु॰ द्वासीम । –सोइक–पु पोनक। –वस-पु स्वंबंह। -वबस-धु स्टर्का थक अनुपर। -वाह-वि श्रेमकी स्वारी करनेवाला । ~वाइन-पु नका -विक्रोतगामिता-सी इंस वैसी वाक । - सेणी-की इसर्पक्त :-सुद्धा-को यसुगानदी।

इंसक~पु [नं] इंस पक्षीः परोने पहनमेका भूतकः भूतुर, विदिया भादि । इँसन~को देसनको क्रियाः इँसनेका वंग ।

इसिना-न कि सुते गुँदते देनपूर्वक इपंप्तिन निका-कता। प्रस्त दोनाः प्रश्ली मनामाः मनास करवाः जन्छ। हेक पदना धीनवदार जान व्यवसा । ♦ स. कि. हास करना । हैंसता चेहरा हैसता मुँह-9 अस्व मुखन्। इसितामुन्ती - नि अस्टन्टरन् । सु॰ इसिकर् यात उदाना-स्थि क्लको अमानस्वत समझसर ब्लगर व्यान म रेना । इँसत्त बोकते-मशक करत-करन दिश्वनीसे । इँमते-ईँसत-देश-देसका बहुत इंसत इद। पटमें बस पद जाना-विश्व ईंशनेच दार्ग देशमें एक प्रकारको पेंडल दोने कराना । क छोड बाना-रहत इंगते दुर भीटपीट क्षेत्रे कदवा। ईस देना-ईसने रूगना ! ईसना-बीलना-उल्ला यजाह बरमाः प्रसन्नभापूर्वेषः वार्याकाप करमा । ह्रास्य धवाना-र्वेस देना । इस बोसकर बसर अरुवा-प्रसन्नतापर्वद जीवन-निर्वाद करमा। हैंस-कोस सेवा-प्रसन्नगपर्वक बार्कानाय बरमा हॅगी-गुररोमे बानचीत बरना ।

इसिनि≉⊷मी दे इसन । इसिनी∽सी मदाइस इसी।

इ.स.नी-स्पी मादा इंस्स इंसी । इ.स.सुख-वि प्रसन्न प्रयुक्तवण्य इ.स.न थेहरंबालाः

इसमुखनाव असम्र अधुक्तवन्त्र इसन अहरवानाः _रित्नमीयाम निर्मातः

हॅमसी-स्त्री नारेंद्रे शीयेवी एक बट्टी। निवीस एक गहमा जा गर्नमें पहना जाता है। इ.सबसी-सी [मं] इंतुपरी लगाः दुर्भागवी प्रथम पत्नी। इ.स.सि.-पुरु [कंक] बगुर।

इंसांजु-दि [मे] इत्तः। इसाई-सी ३द्वः इसीः निगः, वन्यामीः उददानः।

इसाइ-सः उद्गा इसाः । तणः, वण्यायाः, उपदानः इसाधिमदा-स्रो [नं] तरस्वतः । इँसाना−स कि किसीकी शालोम्पुख करमा, र्रेसमें प्रश्च करनाः सुध करमा। सु ईँसा मारना-नदृष्ठ र्रेसामा।

हमाधिकप-पु [ti] चौरो १ हैंसाय-धी हैंसी हैंसार। हैंसाक्य-पि [संग्] हैंसपर स्थार। पु मझा। हैंसाक्य-पि [ti] स्टरवरी। हैंसाय-धी- [ti] पढ़ माशिक छेर। हैंसाय-पु [संग] हानेक्षेत्र पढ़ हैंसाय-पु [संग] हानेक्षेत्र पढ़ दिशेष रिवरि। हैंसिका-सी [सं] इंसा।

इंसिका−र्रों [मं] इंसी। इंसिनी-कौ॰ इंसी। [मं॰] करनेका एक निरोप दंम। इंसिका-पु॰ कोइका एक पशुभकार मीमार विससे करक सरकारी बादि कारते हैं।

इसिर-पु (सं] यह सरहरू: पूदा । इसि-सी (सं] माना संस; यह कर्मपुत्त । रूपी-को केंग्रोफी किया स्थाप प्रकृत (कर्मपुत्त ।

ईसी-सी ईंसनेकी किया हाए। महत्त्व, दिस्त्रमी। एक-हासः बदमागीः तक भारतम् काम !- खेळ-५० टिस्सगी और लेक सामान दान।~३३ोडी –सौ० ईसी-मशक दिस्त्रमी । मु॰-उइमा-क्रिका समाक्ष होनाः क्रिसीका बनाबा बाना ।−उदाना−किरोको बनाना किरोको भर् करना !−इटना −तेबोछे हैंने। आजा !−इएत कर क्षेना−ई 61 रोड हेमा। − मामदा − मामूली वा वासान क्षम था बाद समझना । - में उड़ जाना - में उड़ना-किमी कामका समाक का दिल्लगीमें इक बाना।-सें यदा वंगा नमें बदाना-दिसी दामदी निरुत्तीर्मे शह दैना । —सें टासमा-दिसी तुरी बातको यंगीरतापूर्वक धदण न करना किमोदी हुरी दरक्यवर और म दर हैंछ-बर सहन बर नेमा । —में कृत्य शहना –रिसोबा हैमना (ईंसनंदी क्रिया) अच्छा स्थना । - में के खाना-किसी बातको सवाक बना देश। - में स समा-किमी क्षत्रकी संगीरवापूर्वक प्रदेश म करता। -समझमा-शासाम बाव था काम मानना रावान, परवाह स करना ! -सञ्चला-दानव विनीत सक्तक अस्तेको प्रपृत्ति होना ।

र्देमुक्ती†−व्यो ६ 'बंगवी । र्देसीव्र−वि र्देशवेशाचा दिनोर्रायय विमारी (देश्वगी-वाजः

वाजा इसोर्≛−दि है 'इसोर ।

हिंसाइर्षे इंसीइर्डे॰-वि दाग्यपुष्पः मजस्यपरा वर्षः दासपूर्णः देसनेद्यः महतिवास्यः जो रतमावन हो हमने वास्त हो।

ह-पुरु [तं] विषया वस विषय मृत्योशः बना लखाशः रखाँ १९४१ : पुन्तः (महारा व्यानः वास्ताः शुन्तः संगठः स्वा तामः वीस्ताः विष्णः पुन्तः स्वयः सर्वतः विशित्यः रोगांवा स्वायः वशुः चारत्यः प्रक्रीयस्थाः स्वा वस्ताः म्याः स्वानं अत्यः रजवीतः स्वानाः योगादाः स्वरः नियोगः श्राणः विस्ताः विस्ता सर्विद्यः स्वरतेवासः । स्व स्वरोवासः सर्वोवत्याः निस्तायः सरवेवासः । स्व कार सकीवनेका एक औतार । इस्था-अदी --सी० एक पीपा, दक्तिमुंदा ।

इस्थि+-पुर्वानी। इस्थि-प्री भीजार, इश्विगर व्यक्तिः वस्ताः गीलुसीने रंगती थीजाः प्रधीर गोळेजी कभी भीजा व्यक्तिः इत्यानिकी प्रभाग सामा देशी वस्त्री हाल्ये क्या हेशे से कासमें रखा रेजना स्थ चलान्छी क्यांकी र्

कारका पक भीमार । हस्ये-अ वागमं । गु० -चवमा-अनमाने अपन विरोधीये पेनेमें दावमें आ आसा; वपनुष्क अवस्रपर वसमें भागां ! -स्माना-दाधमें आमा; विक्रमा ।

हमा न भी [ं] जान से मारमेखा काम अून वश् प्रस्ता करनेबा गाप वर्धिया स्ववाः वृत्त दुवका-तक्का वा धीमार व्यक्ति कारि। भुक्त - व्यक्ता-तक्का स्वा सीमा ! - पदके वर्धिया - जनकृशे तंश्व स्वार्थित करना ! - सोक क्रेमा - इस्या एक वर्धिया ! - स्ववार होता -स्वाक्ति आदित इस्तको महीत मक्क होना सूर्य जन्मा ! - सिर महमा - जन्मा देशा कार्या धरम्मा काम श्रीपता ! - सिर क्रमान - देशा क्रामा चिर महमा ! - सिर क्रमा-पापका माथी होना !

इबार†-पुदे• 'इखारः । इस्पारा-पुदःबा करनेवाका व्यक्तिः सुगी । इस्पारिम-बी• शवा करनवाको जो ।

क्जारच कार दावा करनगण जा र ह्यारी-की दस्या करमंत्रको सी, दस्यारिया दस्याका वाचा

वाय । इस⇔प 'हाब'का समासगढ कवा [सं] चीर, भागागा बबा मृत्युः इदाश्च ममुम्ब । - द्वापश- पु रे 'वर्थ-स्पार । - क्यार-प्र निमा किका माकि किसीका बोर्ड समयके किए कर्ज देवा ! -क्केब्रा-प वहार्यमा पर्नहा करनेकी पत्रति। यहराईकी चाका किही कामक करनेमें द्दानको प्रतिथे इस देवसे चळावा कि कामको श्रेष्ठ प्रवित हो हैस्तरेशका गाँव प सके दिसी कामके करनेमें बच्च-बायव, बाबके सकारे ! (सुरु -श्वक्रमा -श्वरामा-बाह्यात्री कारपर होता !- विसामा-दावकी संवर्धका महर्चन करता पाक्रमाधीको क्षम विद्यामा ।) -कवी-भी बोदेका विदेश र्थमका बना करा वा केरी वा अप-राधीकी निवध करने किय वहनाते हैं। (म - बाक्सा इभक्ती पहत्रामा। दीवी वदार देवा । -व्यवसा-हमकरीसे हार्थोक्य गाँचा काला। अपराची माना सामा, होनी प्रकाश माना ।)-कस-त गुन वा तार पेंडनेका सजारीका एक भीजारा नेपक्सा करवाने ही यारियाँ विज्ञानी पहला होर इरवेच ककी भागमें वेंचा रहता हे और दुरुरेका क्रमामें । -क्रोबा-पुरु कुश्तीका एक ब्रांद । -एउ-वि ब्रिसे पुरत क्याबित ब्रांक्ट मार पेठनेको भारत हा। –सोबां-पि॰ दे 'हनसर'। -कुम्ब-पु यस भाविश्वनानी। संग्यस वजेके कपर भाव-स्र पहननेका शिक्षेका एक भागूनम ! -फर्-द्र स्थ्य सने-देनेशतेने शाय**ा** समार्थ विक्रते स्रोता या कम भिन्ना दशरे पद्धक विषय पर जाता है। इस्तकी इक द्वारा बिसी सराको पावन करनेकी किना। प्यारक्षे पारीरपर वास केरनकी विवास व्यवसार । वि दासकी व्यवसेन भौजोंकी गावन करनेवाला व्यवक्रक । निर्मान क्षावे कर मन्त्रकों कहाने । न्यान कर बावने करा मन्त्रकों कहानेकों वह कुराओं। न्यान कर देनाका व्यवस्थान पुस्तकी भौजोंकी यातन कर देनाका व्यवसे । न्यानका कुछिया। न्यान व्यवस्थान क्षाविका व्यवसे कर्माका व्यक्ति (नामकेवर्ग) की पालि। स्वित्रके अनवहर पर क्षणाका व्यक्ति (नामकेवर्ग) की पालि। स्वित्रके अनवहर पर क्षणाका व्यक्ति क्षणाका । न्यानका व्यक्तिका न्यानका व्यक्तिका व्यक्

इथमाळ—सी वाभीपर स्वनंताको क्षेप्। इथमी—सी वाभीकी मादा।

ह्यव्यस्थित्वः । स्व व्यक्तिस्य दश्या द्रिक्तंत्रः व्यक्तंत्रः व्यक्तंत्यः व्यक्तंत्रः व्यक्तंत्यः व्यक्तंत्रः व्यक्तंत्यः व्यवक्तंत्रः व्यक्तंत्रः व

इमसार~णी दानिशेष्ठ रहमेका स्थान, दश्चितकः व्यवसाराः

समार्ग — इ. ऐशन बाहित क्यांना हुमा प्रतेस कि । इ.साह्योक्न स. हामादान सीमा क्यां।

इवियी-सी दार्थकी यादा। इथिया-प्रवस्त नदान।

वास्त्र क्रिक्त करने मधिकारमें कर केमा। कर वस्ति क्रिक्त क्रिक्त करने मधिकारमें कर केमा। कर वस्ती क्रिक्तिकी भीव के केना। वावसं क्रुक्ता ।

इविवार-च वस-दान्सः वीवार ।-घर-नु० कस-इस राजवेश वहा वह शहानार !-घइन्नि अस-इस वारण करवेगाला छाया । मु-त्याना-पुढके किर प्रस्तुत होना !-बाडमा-वहार देव हहना !-वॉबना -कामान-वक्ष प्रसंत होता !

श्रभुई रोडी—सी. यह रोटी थी नेसमते छ नक्कर हामधी मंग्राक्निमेर बनाकर चीडी की गर्मा हो !

इचेरा-१ सेवने पाना बनायनेका इत्था।

हथेरी॰-धा दे दश्या ।

ह्मस्त्री-को कार्यारे अध्यक्ष विकास और भीश मान करतन: वर्षाके ग्रिट्स ग्रुप्त-का प्रक्रोका-स्वर्गत अध्यक वर्षा तिस्त द्वार प्रक्रोका न्य रहा - न्युक्साया-ह्प्यातिका स्तृत्व होता, ह्प्य प्रशिक्ष वृत्युक्त विकास रचना या स्मा-दे ह्म्यक् पर सर रक्षा, स्त्रा : -प्य त्वार होता-नाज जनके विश्वित हाता : -प्य वृत्वि स्माना-कार हमा करानद व्य जरते स्थान । -प्य स्त्राह सम्बन्धान्य स्थाति हाता : -प्य स्त्राह जमजा-विश्वित स्थाति हाता : -प्य स्त्राह जमजा-विश्वित स्थाति हाता : -प्य स्तर स्त्राह सम्बन्धान्य कार्य दर्ज विश्व व्याप : -प्य स्तर स्वर ग्रामा-कार्य दर्ज विश्व व्याप हता। -प्य स्तर स्वर ग्रामा-कार्य दर्ज विश्व व्याप हता। -प्य स्तर स्वर ग्रामा-

ह्याका~यु वे स्थानां। ह्यारिक=को स्थाना

हुभारी-को॰ हरमकीशन काम वस्तवः अध्या ५स किसी काममें हुल कमाना । मु॰- जमनाः-मैजनां - बजाकर यस ममानद निकट काला विश्वमें दिखारी उपका

विकार कर सके।

इंडयाना-ध कि चौपायोधी विभीने द्वारा द्वामा, मयनामा (१६), नैन्याधी कारियो विभीने द्वारा) चन् बानाः विधीने विमीका पुरुषाना युग्यानाः।

बानाः विधीने क्रिमेशा पुरस्काना पुणवानाः। इक्कामा-पु इदिनेवाता स्वक्ति।

इंडा॰-को संद्र पुत्रारा तत्त्वार । मु॰ -ब्रेमा;-भारता-कर्वारना। पुत्रारमा ।

मारमा-कर्यस्ता पुरारमा । इ.स.ह्-सी योगशेंसे श्वेनेसे क्रिया वैनगारी मारि के स्टेन्ट्रा काल स्टिनेस सामितिक ।

र्वे बॉबनेबा बामा बॉबनेबा वारित्रमिख । इंकाना-स॰ कि र्वेजनानाः बॉबना ।

हंबार-मी॰ वह नजकार को मुद्र अवार्रशापने दे जवमरी-वर मुनी वाली है हुंबारा ॰ आईबार, वर्तट । हुँबार-मी॰ करुवारा (श्लीको दुवारा) अंश्वास करून

कार-मी॰ कटकार। शिमीको पुरास्य संशयन करम की उभी भाषान पुरास्य सु -देना-पुरास्यः । -पदनाः-सरामा-पुराने संशयम करनेकी किलाका

स्वताः ज्याना-प्रभाव प्रवादन कर्मकः। होता पुदार सा क्लिशहर सम्मा। हेकारमा-म कि सम्मारमा। खेने स्वरंभे पुचाया पुढारमा प्रवादन करमा वाग पुणामा निकर लानेक

दुक्षरता प्रश्नित करला बाध बुधाना जिक्क आनेक तिथ वहना। सर्व द्विश्व प्रकार प्रता। विकार प्रवास आर्थवन, निर्मयस बुकार बुध्वाने की दिना।

क्षा (वना) इंडारी॰-वि क्रडंबरी, यमंदी। इसास-द्व (क्यं) आरपीर द्वारत दशा शहा

हरूपन बन्द्रद । श्वीम-खी [मेर] पेरी भदिका (मार) । श्वीच-ची [मेर] ग्रीक । इंजिकर-सी [मेर] दाशी परिवारिका मार्गे !

स्टर-पु एट एरडा बाहुद भाजना होगा है। कोना। मु॰ -जमाबा -लगाबा-देश मारवा। इंडमा-म कि पुस्ता, विश्वा नेव एक वृक्षाः। गर्का नोति क्षांत्रका होता।

स्व दि भी जिसे देशक स्वयन्त्र हें देशों । इंड्रान्यु पार्टी देशों है सिन्द्र स्वेट सा प्रेशनको पत्र पत्र देशा पद्मात्र स्व क्षिक (सि.) विद्यादन बद्दा पत्र पत्र देशा पार्टिक सिन्द्र सी पार्टी कार्टिक स्व

व्यवा विश्व जान्या का वागा नगर। हिंद्रवान्त्री (विशे वांची रेग्डे आहेतिका विहेन्स वर्तन होति। न्यूचन्द्र विहोना देता व्यवः) हिंद्रवान्त्रीः वर्द्व वरायः निर्देश्य वराणः वृत्विकते द्वारात्रीयः राष्ट्र को प्रोच्छे विद्य रोगोर्ड करोसे करा दिगम् आर्थेड क्ष्यम्पार संस्थानम् अस्ति वराये करा वर्द्धनी प्रदाव की जो वाग्य आर्थित वराये

बानी है। सुर -बहाबा-बोधव बढारे कवित हाहि

स्था सारि शास्त्रा भारतः शतः। । —वाग्यां —भीशः स्थानाः । इति-भीतः [सं] है दिशः ।

हीन-म [6] हो मेर शिक्षा मनुदय, बाहर है त्राम्प्रक राजा है -वाह-मू वन राजार वर्णनी दिसा बातेश्या समार हिस्सा-मि विकी कार प्रश्ने बीच मार्ग राजी वाणा बस्यंबर्गीया संद्रभीय अप्रमंत । इंटा(१)-पुर सिंग) याह बल्पनेवाला, दिशाहर, राजा

हता(त)-पु॰ [४०] मार शलनेशवण, दिवास्टर रूका -(त)मुख्य-पु॰ यह शल्यार । हतु-पु [थं] इतना एरपुः देश । -श्राम-शि॰ वरेष्युः -मना(तरर्)-दि॰ शिग्रो वर्ष १८३८

जीहन हो। ब्लोफिंट-भी [9] 'ईंड' राज्यका प्रशेष शंदरत सहात्रुम्हि बस्पा । इंडोट-स्ट॰ की० [6]] वह बस्तेशमी । इंडोट-स्ट॰-सी० हरेकी । इंडोट-सि॰-सी० हरेकी ।

हैंभीरी-को॰ दें 'दभीती'। हैंबलि॰-की बॉटमेडी दिवा। इंगा, इंमा-की [मं] देन कोदिदा १ मना। नाद॰ बु॰ रॉननेडा घुण्ट कोव्योत।

तुक रामनद्वा पार योजना । हमान्यु (१०) वारीन्त्री हामिने हार्दरामा यह करेर अववद्यी (श्वास्त्रमान्द्र) त्याहे दंगी निकार यो होने हैं और दिश्यास्त्रमान्द्र व्यूत्याने वार्यास्त्रमाने हैं और दिश्यास्त्रमान्द्र वेद्यासाने वेद्यासान्द्रमाने हमान्द्रमाने हमान्द्रमान्द्रमाने हमान्द्रमाने हमान्द्रमाने हमान्द्रमाने हमान्द्रमाने हमान्द्रम

वाहोक्या यह त्रुवा स्थानेत्र्य यह नेवाह्यहर् वह बना प्रेह्मक्ष्म रह नवा यह प्रदेश तृत्या हुगीत त्रियों नाम्य क्योपी व्यक्ति या नाम् । न्यूनेत्र-भी देगी। न्याबीह्यवन्य क्या । न्यूनेत्र-शु वह रिवेश । न्यून्य ह्या। नाहिन्सी इंब्यूने बहुद (देश) - नान्यु बद्धा। नाहिन्सी इंब्यूने मी बेण्ड यीच बय्योधा यह हुगा - नाहुत्यन्त्री स्था । न्याह्यायी से । नाहिन्सी इंब्यूने था । नाहुत्यायी से । नाहिन्सी इंब्यूने था । नाहुत्यायी से इंब्यूने या । नाहिन्सी क्या अस्ति ।

धना अभेरता बद पुराजा शेव र अध्यय-पु प्र^वि

-m-go angan magan e in ad mil i

न्त्रा-न्यीः वर्ष्ट्यां वर्ष्ट्यां न्याप्तिकार् स्थ वर्षद्देश (रही)। न्यूब-यू न्यूब्रिया-को हंग्ले ब्रुप्तक्र वरः न्यूप्टब-यू अग्याः । न्यूर्य-यू-र्वः ह्यूप्टन्यायु-तु वर्ष्टार्थः रास्वाववारः न्याप्तिकार् कि प्रमुक्तिको शेल वर्षाः वर्ष्ट्यः न्याप्तिकार् (रान्ते व्यव वर्षाः न्याप्तिकार्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षेत्रव्यः । न्याप्तिकार्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षेत्रव्यः । न्याप्तिकार्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षेत्रव्यः । न्याप्तिकार्यः वर्षः राष्ट्रवे वर्षः वर्षेत्रव्यः । न्याप्तिकार्यः वर्षः राष्ट्रवे वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः । वर्षः राष्ट्रवे वर्षः वर

क्रमेराकाः कार्येराकाः हे आलेराकाः प्रदृत कर्त्येराकाः

विका~सी एक पीवाः ~कोविद्र~वि∘ पुश्रयः विधा साननेवाला । -गंध-पु॰ कावस्त्रम, कास्त्र तपद्धः । -र्राञ्च - स्रो॰ सबसीयाः धयवंशाः । -गर्वशि -पु दिव । -गृह-पु पुरसार अवसावा । -ग्रीव-पुर विभावा एक इन की मधु बैटमरी वेदींका प्रकार बरनेचे किए ग्रहण दिना गवा था। एक देखा एक तांत्रिक देश्ता । - रियु-प् विष्यु । - • हा(हम्)-प विषया - प्रीया-स्रो० वर्गा। - व्य-प् करणीर । -पर्या-सी वदावदा प्रमम्। -च्छरा-सी॰ सक-इका ~ शु~प पोदेका भ्यापारी। सार्वस । −श्चामा ~ शरा-प्र• वीक्ति द्वाव । -दाश्य-प्र• यह दानद, देशा - वियन (त)- प्रभेशा - माछ-सी मीहे-से बाबा बातेगाडी होए। -निर्धाप-प्रवीवेश्वे अपन्धे क्षाबात्र । -व-प्रसार्वस । -प्रविद्यक्त -प्रवस्ती-स्ती मानपना। -प्रिय-प्र• को। नई। -प्रिया~ को अध्येषाः सर्वरी । -सार-मारक-त करवीरः इ.सर् । - सारण-पुरु इ.सेरः अध्यक्ष पीत्रकः। - शुक्त-पश्च इत्रविशेष (शे)। - सेथ-१ अध्यव। -वाहन-प सर्वपत्र रेवंतः ६वर । -- व्हांबर-१० रख कांपन । -विद्या-इ अध्यतिभी विद्या । - खाझा-को उन सार, अस्तवक । - शास-५ - विका-की योगीको शिया देनेकी दिथा। -शिर् स)-त बोदेका थिर एक दिस्याक ! -दिशा(रस्)-9 विष्णु (इनग्रीवर्डे स्पर्मे ।- व्हर्षि-होर्पार्विष्)-विश् धोहेके सिरवाका । पुरुविध्या । - स्क्रीय-प् अध्यक्त । इपल-प सिंशी वर्ष साकः इक्षेत्र वर्ष गावी पा पालकी. बजीस्थ । इयभाव-स कि <० इनना काटना- म<u>श</u> वह वार पाइ सिर इमें'-रामा । इयोग-१ [सं] भन् राधि । इया–सी (सं] सथनकाशि] ≉स्ता अमे। −शार− वि काय-प्रमेशका क्याक्षीक। -तारी-क्षी **द**वा-बार होता । इपाष्ट-स्री [भ] धोरद विश्वी। प्राम् । इयाच्यक्ष-९ [मं] मध्यक्र बीवीका निरायक । इयानंद-पु [सं] सुत्र मृद्या हयायम-प् [सं] हमग्रीना हमग्रीनके रहमेका जगह। इपायमा-को॰ (सं) एक मोविनी । इपापुर्वे इ-इ [मं] अर्थाविक्सा छेरंभी शास । इपारि-१ [सं] दरशेर, इनर। हपास्त हपारीह~५ सि] भगरोही। इवाक्य~दु हि] अवदाका अस्तरका ह्यारामा-सी [सं] इस्स्मी ब्रह्म इयास्य इयास्यक-९ [र्थ•] विष्म (इवधीवरूपरे)। इपी-भी [सं] श्रेती। इयो(यम्)-पु । [मं] स्थारोहोह पाइराक्षा । इपुरा~को (सं∗) एक योगा भो दबाके दाम आशा हे ६५५ (१) । इयश-५ छि । बर भी।

शास्त्रह करनेवाकाः प्रकृष्टारः निमानमः करनेवाकाः कन्या करवेपाळा । प्र शिका अध्या मधाः मामका भिषका निम्नांका ग्रहण। हरका ग्रहण करनेशालाः एक वानवः ग्रत्ययका यक्ष मे≲ा ∸गिरि−प केकास वर्षत ⊱र्यो(ी~ शिवकी वर्ग नारीकर मृदि । - चुद्रामणि-पुर शिक्का क्रिरोरामा चंद्रमा । -श्रम(स)-प शिक-का बीर्यः पारवः प्रारा । --श्रम्बसर्सि-प॰ कामदेव । -ब्रार-त [कि] वरिदार ! -मलेक-प्र• यक ब्रुच ! -नेच-प॰ धिवनेमा धीनको संस्था । -प्रिय-प॰ करबीर । न्यीजन्य शिलका गीनी पारदा पारा । -कप-प शिव । -धहाश-प्र• तातका यक मेर (संगीत) । -बाहन-५० (सिनका बाहन) वैक । -संकरी-को (वि) पाकर और पीपक्रका संबद्ध क्षत्र को शामिक धीरते पश्चिम माना जाता है :-ग्रांगारा--सी यह रागिनी। -होसरा-सी॰ गंगा। --सस--प्र• क्रोर । -सन्-प्र• कार्तिकेया गर्ना । -शार-पुरु क्षेत्रनायः सर्वे । —इरा—कीरु प्राचा । हर-वि [का] प्रत्येक । - एक-विश् प्रत्यक । -क्टॉ-थ॰ हर काह । - चंह-अ॰ विस कहर, कितना हो । -आई-वि मारा मारा फिरनेवाका कावारापर्वः सव धगइ वार्नेनाका । वि+ खो+ कुमरा (छो) । -तरप्र-व र र राष्ट्रवे ।- रम- व रमधा । - प्रम सीका-वि दर वह इन बाननकाश । -रोश्न-भ प्रतिदिन । इर्-९ दे 'द≢। ~प्रजी−को इककाप्यमधो क्षित्राव कार्विकर्ते करते हैं। न्याहा-पाहर-प बोठनेशका । न्याद्वी-छी इक बोठमेका काम वा सभइरी । इर्पे -- अ थीरे बीरे, श्वाहस्त्त । इरक-पु [र्स्क] घरण दस्ते छ सत्रेवाकाः भीरः उपा भावकः कचनवाधी कंशे दक्षशास्त्र शिव (प्रक्रमेक्ट हार्य)। वि ११व स्थवेशका। श्रकत−थी [ब] हिकनश्रहीकमा, यदि चद्याः स्वरः (भ्या) श्वरस्थक विक्र माना (मेर जबर, पश): काम: दरा बाग धररदा स० -बामा-दिवनाः प्रकता प्रस्थान करना (क्षीक्य हरवंत करना) । -हेबा-वर् अवर पद्म संवासा । प्रशासनार-स॰ कि॰ शेवना, वर्नन करना। † भ कि धाइक्सा । हरकास-की [म॰] 'हरवड़ का बहु , माभारे-जर, भरा, देश । इरकारा इरकाका~पुरुष हादिया बाद दीनेशका । इरकेस~९ एक प्रदारका कगहनी कृत र श्रम•-५ रे ह्ये । हरसमा०-भ कि प्रस्य होना सुद्ध होता। इरपावा•∽थ कि दे 'दरग्रमा'। स∗कि सुद करमा, प्रमुख करमा । हर्गिक्र-म॰ (का॰) क्यां दिना हामतमे (तहोदे साथ १ (अध्य ११-६० (छ) दरण करनेशका, दूर करनेशना नक | हरशिक्षां-५० ८ दश्योवा ।

पहली परनी। ~पदी-स्त्री गोवापदी मामध्ये कताः ण्य कृता एक जप्तरा ! −पाव∽प्र देसका पैरा केंग्ररा सिंद्रः पारा । -पादिका-को चंतपरी नामक क्वा । --पादी-स्रो इंसप्ती सामक कवा। --प्रयक्तम-पु पक्ष तीर्थे ! - चीम-पु॰ इंसमा भंग ! - सगसा-को । एक संकर रागिनो । - माका - को इंसर्गकिन यह तरबन्धे वतदाः यह बच्च ! —साया—की मावपनी । -मुक्त-दि इंस्क्री पींच वैसादना हुवा। -बान-प इंस्फ्री स्वारी वा बान क्यांवनेके काममें लाना। वि इंस विस्का नाम हो। ∽युक्त∽वि॰ इंस दारा सीमा शतेनाका (त्रद्धान्द्रा १४)। ∽रथ−प्र त्रद्धाः। -रब-प देखका करूरका -राज्ञ-प वना वंसा यक पृद्धी : - इन्त-पु इंश-रव : - होस-पु दे 'इंस्त्रक । ∼क्रिपि−को यक तरहकी कियि। —क्रीक-प एक ताक (संगीत) । -क्रोमश-प्र कारोस । −स्रोहक-द• दीतल । −र्यश∽द मुर्दर्गक्षः। −वनमा−पुरक्तरकायकः सनुवरः। −वाद्र− वि इंश्विकी सदारी करनेवाला । —बाह्रम—धु लक्का । −विकासगामिता−स्रो इंस बैसी चाक। −क्रेकी− न्यो इंसपंक्ति। – सुद्या – स्त्री असुना नदी। इसक-पु [मं] इस पड़ी। पैरीमें पहलनका भूवन, नुपुर, विक्रिया कारि ।

इँसद~की इँसनको किया इँसनेका इंग। हुँसना-ध॰ कि लुड़े मुँद्दे नेगपूर्वक इवंध्वति निषा-कना। प्रसन्न होता: लुद्धी भगाताः भगादः हरताः अभ्या वैद्ध पड़मा शैनकदार कान पड़मा । + श कि॰ उप-दास दरना । ईँसता श्रेहरा हँसता सुँद∽पु प्रक्रव मुचदा । इसिवामुन्नी १ – विश् प्रश्चनद्य । म् । इसिकर यात ब्रह्मसा-दिमी शनको सनावश्यक समझहर क्षत्रस प्यान म देना : इँसत-बोक्टते−मक्षक वस्त-वस्त रिक्तमोसे । इमिते-हैंमस-ईए-ईएकर बहुत हेसस हुए। ० पेटमें यस पद जाना −जविद ईंतनके दारण पैरमें एक प्रकारको एँऊन क्षीने क्याना । कस्तीह बामा-बदुत ईमत दुर कोरपार दीने कगना। ईस दैमा-इसमे करना । हैंसना-योक्सा-डिकागी सवाद करमा। प्रसन्तरापूर्वक कार्तालाक करना । इस वक्ता-रैंस रेना । इँस पोलकर यसर काना-प्रमधनापुर्वक नीवन-निर्वाष्ट्र करना । ईस-पोस लना-मनवनापुर्वक बार्तानाय दरमा, वैसी सुधीम बावबीत दरमा ।

ईसिनिक-सी १ ईसन्। इसिनी-सी मात्राइंग्रहंनी।

इ.स.मुख-वि प्रसन्न प्रपुक्तवान इतन वेहरेबालाः दिस्तनीयाम निर्माणे ।

हैंसकी-सी गर्नके मोधकी एक हट्टी। लिबीडा एक गहना था गर्नमें बहना जाना है।

र्षसंयती-को [मं] इंतपदी कताः दुःग्तेको यवत्र पक्षाः इसोप्रि-दु [स्क] ईपुर । इसोप्रि-दि [सं] इति ।

कुरायु-१४ (स.) इतनः इररायु-१८ ३टः वैशीः निष्ठा बदमायीः वत्रकृतः । इमाबिक्दर-नोः (१७) सरस्कीः प्रकृष्ठ करना। कुछ करना। सु॰ ईसा मारना-नदृष्ठ ईसाम। ईसामिक्य-पु [सं] चौरी। ईसाम्य-चौण- इंती, ईसार्थ - चौण्या। इसाम्ब-वि [सं] ईसपर स्वार । पु प्रकृष्ण । इसाम्ब-वि [सं] ईसपर स्वार । पु प्रकृष्ण ।

इंसाना~स॰ कि किसीकी दास्योग्स**ल कर**ना, इंसनेम

देशास्त्रा न्यो॰ [सं] स्टररती । इंसाकि न्यों [सं] एक मानिक संद । इंसाकि न्यों [सं] एक मानिक संद । इंसास्य न्या [सं] इंस्प्रेस न्या निर्मेष्ट के विशेष रिवर्षि । इंसास्य न्या [सं•] इंसो ।

हैसियां-को इंडो। वि] चलनेका एक विशेष हो।
हैसियां-वु कोहेका एक बमुनकार कोबार विशेष कड़क, उरकारों आदि कारते हैं।
कड़क, उरकारों आदि कारते हैं।
हैसिर-वु (४०) एक उरका भूदा।
हैसी-को (१) प्रावा वसा एक वर्णकुत्त ।
हैसी-को (१) प्रावा वसा एक वर्णकुत्त ।
हैसी-को (१) प्रावा वसा ।-कोक-वु दिस्की। वन्ता । इसा वरनायां। इस कारा कारा ।-कोक-वु दिस्की।
कीर रोक, बासाल कारा ।-ठरोसी-को हैसी प्रवास विशेष कमाया कमा। ।-उदाला-किसेके वनाया (करोके वसाया कमा। ।-उदाला-किसेके वनाया ।-कारत कर करा-हैसी हो कारा ।-कारत कर कमा-हैसी हो कारा ।-कारत कर करा-हैसी हो कारा-वा ।-कारत कर

किसी कामका सवाह या दिक्कामें हर बाता । — हैं जया देवा — में उदावा— किसी कामके दिक्कामें हैं शह हैना ! — में दाहवा— किसी हात कामके प्रभावता हैं के प्रवाद व दरवा, किसीके हती दरकार और न कर है। प्रशाद व दरवा । — में पूर्य प्रवाद किसी हैं कामा— किसी वाठके प्रवाद कमा ! — में हर प्रमा— किसी वाठके प्रवाद कमा है जो — में हर प्रमा— किसी वाठके पंगीरतापूर्वक प्रयाद न बदना ! — समस्त्राम— कालाम वाण मा काम समन्त्रा प्रवाद में दरवा में करता ! — सुस्त्रा— वाल्य विमोद, प्रवाद करता ! — स्वर्तिके

काम या बात समझना । -सें उक् जाना -से उक्ता-

र्हमुखी†्न्सी दे 'ईम्प्यी । र्हसीद−वि र्हेसनेवाला विमोर्शाय विनोर्श, दिवसमी--वाज ।

इसोर॰-वि है॰ 'इसोइ ।

हैंसाहीँ हैंभीहाँ - वि दारपयुक्तः प्रशाहनशा, वरि दामपूर्वः हैंननेको प्रहृतिवासा, वा स्वपादन हो हैमन-वासा हो।

ह-तु शि विषया पह विषय, बहुनीश नमः बादाशः व्यंता एका ग्राप्त शिक्ष प्रदेश विषयः प्रता वादम शिक्ष प्रदेश विषयः प्रता श्राप्त शिक्ष प्रदेश विद्याप्त विद्यापत वि

सारी महत्रको चौकोदारी करनेवाकी स्ती ।

इवसी-पु इरक्ष्म रहनेवाकाः इवशी वादिका बादसी । वि बाजा-बन्धरा ! - इस्तवा सोहत-प स्थाद रेक्स दक्षमा भोडम ।

इपान-पु• [न] पानीका प्रकारकाः सीधेका गोका तिसे सभावटके किए सकाममें क्याते है। -मा-वारीक पतकाः बरान्धां । दराम जेसा। -आईपा-प्र इयाची −वि

धीक्षेका थाईना विसमें रक न हो।

हवीय-वि शिश्री प्रेमी: होस्ता प्वारा । इयुव~पु व इंशर्वा श्रि] इथ्यका व्यवचन गोकियाँ। वटिकार्वे ।

इचेक्की-सी० है 'हरेकी'!

इष्य∽प्र भि नेलि परिका पाना, जीव ।

इत्या~९ अनामका दोनाः रचीः; जलका गाताः (का०) पैसा-कोरी। -भर-रचीभर। -इस्सा-पैसा-वैसा-बोर्श-बोर्श ।

इटवा इटबा - प्र क्योंका यक रोग जिसमें बनकी साँस पहल तंबीसे बझ्ती है ।

हरस∽पु• [अ] केर अवरोक कैरधानाः इताहा वंद हो जानाः कमस (हि)। ~(ध्से) हम-प्र॰ शॉस्का स्वजीर प्राचानामा दया ! - बेजा-प्र प्राचानव गेट

कामूनी केंद्र किसीको जनर्गस्ती क्यों नंग कर देशा । इस-धर्व भिका बहुबबम इव । ७ छ अबेक्टर, पर्संद्रा वश्यमध्ये भावता । ∽ताक~की अवस्थार ।

इस-च कि रेमान एकसा संग साथ कापधी। -- असर - वि अब जैसे मनावशका सम्प्रकृति । -- बस-वि समयदस्य । - इमेम-वि यक्ष जाठिका समादीय । -तामा-वि यह हो वर्गे रहमेवाण । -धवाका-ति को साथ सोनेवाकी (पन्नी)। -जिस-वि एक शा का हो पेरीका ! -बोकी-वि यक हो काका: क्षपन्में साथ क्षेत्रा हुना । नद्द्रं निव (कह, पीड़ा, इत्यमें) सहात्रमृति रखनेवाका । - क्वी-सी॰ सहा-मुपुरि, दुर्दमंदी । "विवास्त्र"-वि शाव सामेवाका । -पद्मा-दि नरागरको स्थरका। -पेजा-दि एक ही पेक्षा करनेशाना साथ व्यवसाय करनेवाचा सहस्वय साबो । -बिस्तर-वि यत हो विस्तरपर धोलवामा । -किस्तरि-को एक हो विकास स्थानेकी किया सह धवन संबंध । -सब्बय-वि समान वर्धको मामने-बाबर सहप्रभी । ज्हाह्य-वि साथ चक्रमेनाका । अ० साथमें। (मुरूप करना-दिसीकी कही वानेके किए किरोने साथ कर देवा। - शोमा-साथ आवा ।। –शाक्षी−दि श्रदमामी । −धतम−५ वक्रवी देशका विवासी । -बार-नि क्रांकर, चीरशः वक्षन्शः ।-सफ्रार -कि साथ बावा करनेदाला। ~सपळ~ि साथ परनेवास । -सर-दि वरावरीका । -सरी-की॰ बरावरो । -सामा-पु वहोसो । -सिन-वि० दे०

इसन् = सर्वे हे दभै। इमराा, इमराां - सर्व • दे दवारा (इमरादे-इमहो।

€मका ।

इसरोके-इमकी थी)।

इसक-पु [ब] बोहा वर्षा प्रण । -(हे)इराम-१० दरामका दमक, व्यविचारसे रिश्त वर्म । प्र• - विवास -गर्मशत सरमा ।

इसका-१० (व) आक्रमण भागा, पदारी पीर, रस । -मामर(इससावर)-वि , त इसमा दरदेशनः माक्रमणकारी ।

इसइसी-की॰ दे 'इमाइमी ।

इमाञ्चल वी [श्रं मुर्खेदा, मासम्बरी।

हमाम-५० हे॰ 'हम्माम'। इसायख-था॰ [ब] परतकाः वक्षेत्रे शक्त्रेक्षे पीन डोडे बाह्यरका इरान विशे गढेमें शक सद्धे नकेंगे स

मनेका एक गहना, हमेश । हमारक-सर्व दे 'हमारा'।

हमारा-सर्व हम'दा संबंध कारकटा पर । हसास-पुरु है 'हम्मास'।

हमाख्य-प्र 'कारपदी चोदी' करकामेराका हिरक (अंद्ध)द्धा सर्वोच वर्वत ।

हासाहासी-स्वो॰ धनेकडे स्वार्थमें धपने स्वार्थके विर बीक-पूर करना, स्वार्थनसम्बद्धाः अपने बर्दमान्धे से आगे करवेडा पाल । स॰ -करसा-स्वार्थकरावण दोना स्वाधी होता। अध्ये अहंबारको तक्षिके क्रिय गरन बरक

क्षपनी बाह्य बबरवरही महत्वानेका प्रवरन करमा । इसीर-पु देश हम्मीर'।

इसें-एर्ड 'इस'का को तथा छंत्रशय बारका स्थ हमधी । इसेक्ड−स्ता सोये या व्यॉदीला दोड सिक्टो वा विकेट

क्रक्षें नहे हुए बाह्यदेशेंमें कीश क्याबर बनायों हो हमेक्॰-प्र नर्कार, वर्गर १ हा० ~ट्रामा~नमेर प्र

इमेशा-म [का]सरेदा

इमेस इमेसा१-४ १० इवंश'

हर्म ० - सर्व ० दे हर्मे ।

क्रम-व [ब] सराधी वारीक देशरान्त्रति, देशराक्री महिमान्त्र गाम I

हुत्रमाम~पु (व) स्वानका स्थानः गरम स्वानामार । -की ख़र्शी-नदानेकी तुनी। (का॰) वह भीव की देर आवर्गी के काम में भावे ।

हरमामी-प वहकानेवाणा ।

हमार#-सर्व हे हमारा'।

हरमाछ-पु [म] बोल बढानेवाबा मीरिया हुनी। हरमीर-पु॰ रणवंगोरका एक वीर नरेष्ट (चीरहवी सदी) को अजारशित शिक्षतीचे शुद्ध परवे प्रमुख मारा पना [संक] यस संबद राम । -मद-प्र मन संबद राम ।

इबंकप-पुरु [मंत्र] शार्थित रहेदा सार्थि मार्थि । इसंदर-पु अध्या पोक्षा, दक्षा धोक्षा ।

हच-इ [सं] पीरदः शासा यह निधेष अधिका साहती। माराधी संस्थात एक धंदका जाया हहा पत रहि। -कर्म(भ)-त भोगीस दान । -कासरा,-काट

रहें = हगास बिप प्रयुक्त दाना है। इटें - पु देवी अपराशीकी बुदस्याह ! लीक आर्थर्व, ; सर्वमा । इर्जे-भश्वार हा स्मर्थको की रेस भारवर्ष, शांद धारिके भवमरोपर दश्यके महारा पहन्द प्रदानको जिला, जब है । एका । -- मुक्क-सि चकित निरमत १-व्यक्त-नि धनप्र'ननका । इक, इक्≭-पु॰ [अ] शत्व श्रमार्थः प्रवित्त वर्शा देश्या शुक्री स्वस्थः अधिकारः कावाः धार्मे, कर्मध्याः प्रमा करन्ते। बण्या गुप्रापना (मस्तका इक्ष) । वि मही। न्याय्या प्राप्य १-आमाङ्गरा-५० वहोसीदी समीन पर राग्टा बादि पानेका अनिकार। -गा-विश्वप भीन-न्या स्थायकी बान वहतेताना । -सव्यक्ती-भीव इक मारमा। देश्याकी: गुक्तान १ -शास्त्र-५ व्यक्ति शामी बैंग्बर परभेरवर । -बार-वि ४४वामा अधि-कारी । बु॰ वचर प्रकेलमे कारनकारींबा एक को जिल्ह भपनी भगेतपर भीरती इस दानिव द्वान है। - व्यवसीत्यार-पुर वह अभीत्यार को दिनी चीत्रवा या बगमें दिश्मा धानेका अविद्यारी भी ही।~आहक~ पुर्व हेंद्र भार मिहक स्वाद क्षम्याम स्था मगुन्द हे स मरादानी स्पर्ने ।=यहरूत्र=ि देशारमपुर शस्त्रक सदाः स्वादशीनः –परज्ञी-स्व ४६५१म होनाः -क्यानिय-नि श्रीह दुरस्त स्वाध्य ।-श्रीहर्मा - दु मानवेटिक भविकार ! ~श्यी-को स्वाय पाता स्थाय मिन्ना (- बाहर - पु है। इक्का । - ब्राह्म - पुन भागी कावडाइमें लगी हुई बाग ।३६६ दूमरीने वह रे गरीरचरा ४६ । ∼(क्षप्र) समस्य-५० मनदस्य ६६ दिमोदा सम्ब शानमे क्लब प्रति बीनेवाचा बनैध्य (१६ मरा ६१मा) । "माक्रिकामा-पुर मान्दिकः इक्. ≀ हा (विशी भीहका)∼अदा कामा−६३ geratei Bur wiet an bie aent (Abetat इद्र जाग क्रांता) । नक्षी वर्तुवतान्त्रवाच काम्य शासको या बेशा । अवर सदमान्द्रक्ष रिव स्याबदे किए सहसा । नयर हीमानावादश कालेला अवस्य स क क.रच्ये कापर् करना र-मारना-अव शारि ज्*रे*ना र (बिमीड)-मे-विषदी वक्षमान्ते निका - व्यक्ति बीबा-दुराई हरता ह RECEIPTION OF PROPERTY PARTY AND ASSESSED. इदारदा ही अभा र इक्रमान्दि इतन रेशमा प्रदेशका रीमने वृद्ध ही war en fier of al ergane : - an-a f CER II (क्षप्रमान्य वि नानंत्र विदेशन विक्रम रेगरे ?

क्षांक प्रदेश के ने ने गा

१वसाहर-की इस्त रेश प्राप्त देवनारेश हैं प्र इंब्लाहा और १६वर १३वर्तेशका । द्वा-पू सि ! व से भविष व व व CAliffent, [un] Enticht fatten ! 26-8]

2741

हरका १ -ब्रह्मा-प्रदेश्यान वान ब्रह्मा दा है से है समृत् का विद्यार्थ हेमका-"ध्य शहाना देव दिवामानको द्वांकी कारावदण्य अनुवन के

र्वता भवारे सूच बाता बालता बाला इंटीता सन्दर्भ अन्तरी, अभिश्रवार्थने व्यवदारा हैस्तिन हिम्सा रिक्ट वदा हर्रोजन हो । ज़ुरू-शुम्त साम्रा-समर्भार बारीर द्या जाना स्थापना प्रदर्श काला। नमें-स्टब्स गणस्य वस्त्रनः। इष्टी≱तम्~च [न०] १३३१७३८ वरद्वाः । शक्रीक्वी−निक [बा] संस्थी। संश्वी संश्वी (न्य रे. प्रीकर क्विप्य (सर्व) । इक्सि-पुरु [४०] यामी। पुडिमान्। शृतानी (देशिक्र याम्पदा पंडित सरीह !

हड़ीइस-मी [घ०] राजुरा म्यूर, सामान दर

इक्रीमी-स्रो इन्होमका द्वार विशास दुशानी निक्रिया शास्त्र । नि॰ शहोतदा (न:बाच) । इजीपत रज्जीयत-स्वी [स] १६ मरिया १६ वारी: विक्रविवत बादशा (- प्रयोदारी) ! हरूरि-(व विको होता नका (द्रज्ञान्तु [अ०] च्रिप्त का बहुन वस । **इ.स.-५०** (मं) हाबोदी हुमानेदा राम्ह य**शा**स र

प्रका∽मी (शंको स्वस्य बद्धा र इक्टाइ-५० (४०) मय अहनेशामाः साप्रेममायाः सार् the land Atta इक्ट्रानियस-भी (ल॰) इहानी होना, अभागा truit t इवडामी-वि थि देवन श्रंदर हानेतामा देशर विषयम रेश्यादीवाहरा । ह्वहायक्का-विक वर्गावन वर्गाया प्रशा भीयक, सवित (अवस्यातिय वरमा अहि दे दशम) । इसार-५० (गाः) अन्दान तुकार र

इक्ट व्ह-प्रशिष्ट) स्पृतीरी, सम्बार । इन्नम्महर्गाल-वृक्षि विद्युष्ट की अंतराहरी मान मुद्र हो बहा बहतेके बन्नेके किमार है। इफ्डबरकोम-५ [ब] दिशी राष्ट्री निक्के अनुवर्धाः क्ष्मभा क्ष्मिक्षक द्वान । क्ष्मपर्दी।-१३ ्रता शीव बावे वधावा करेवा *रदा*न श्रीनाचवत हाक∼**मचानाः**≔रपचर क्रीय 要で1 हालान्स हि ६ वस्तरा, राधारा दिला (ग.) ब्रावृद्धि कारापि रेखा (🗸) - माध्रका मंगर, गीवनार

स नेवर के चुरार भाने इस देते)। हैं। इसनवास वर्षेद्ध १८०१।।।। स॰ शास्त्रामा वी सारमा ungift famm falt bien jeftel eife हैक्टा बहुत वर अध्य अर्थ वहत् बहुत नहीं पर देते हैं श्रमनही श्रमणिशिक १ है स्थलही । geini-n gorat fer all un fa eit baielt देशां ह्यूच हुमा अन्यस्थलकृत बद्ध रेज्य कोगम

सम्बद्धा हम बहा है है। रेड फो प्रश्ने पर विश्वपद ये रेड

feet gat fe at dit wat tar tanmen

まつむまりで をおうむ ままるま おりみなはしじょ

जुतार वा पूँव भारम बरना।

इरानत-प्र [एं•] रादम । इरामा -स कि॰ युद्ध, छहाई-छुगडे प्रतिदंदिता आदियें तत, मदिशंदी बारिको परास्त करना, पछादभाः बकाना । हरास-वि॰ [अ॰] निविद्यः वदिक्तिः पर्मग्राखर्गे निविद्या सरम(इसकामी वर्मसाम)क विवयः वकाकका पकराः स्वास्तः नप्राद्यः नप्रविषः । व प्रापद्भर्मः व्यक्ति बार परकारी। -कार-त व्यक्तियारी करकार। व्यक्तिपार, वश्यती । −द्वीर-वि• --कारी-की हराम की बीवें ग्रानेवाकाः हरामका माळ खानेवाकाः पुस-सारः मुश्तकोतः नमकदराम । –स्रोरी-को इरामका मास साना, सुरक्योरीः वृक्तकोरीः नमकदरामी। -- ज्ञादा-पु बारव दीगकाः दुवः, पानी । दि॰ दरामके नमंत्रे उत्पन्न । -ब्रादी-सी॰ दीगकी दरामक पेटते पैदा हुई सी दुध योगे सी। सु०-कर इंना-कडिन, दुःश्रद बना देना नामुमक्ति कर देना (-श्रीना काना, सोना इराम कर देशा)। नका सामा-दिवा महत्रत किने साना, मुक्तसोरी करना । -का अना-जी हराम स्वभिचारक वर्गने बनमा दा दशस्त्रवादा। -का पिस्का -का बचा-शेतकाः इष्ट । -का पेट-म्बमियार अविदित संबंधते रह जानेवाका धर्म। -क्षा साध-अवर्थ, वेदैमालीसे कुमावा हुआ अला मुश्तका माळ । -की कमाई-अपनै वर्रमायीचे कमावा इया पेता पाएकी क्याहे। -की सीत सरवा-बहर, याकर मरना भारमणत करना। −क्रोमा∽क6म हुम्पर, नामुमक्ति होता। स्थान्त होना (रोवा हराय द्याना)।

इरामी-4 इरामका बनाः शुद्ध वाणी ! -पिक्का-पु दे इरामका रिस्का ! इरारध-को [स] पर्नोः इकका ब्लाः (का) बोध

हरारध-स्रो [स] यमी; इस्प्या व्यरा (टा) बीष्ट स्टोध ।

इराबर्≁न्धु दे ्दरानक¹ः

हरायरिश-की दे 'हताबरि ।

हरायक-षु (तु) हेनाका आवागाः व्योक्त मुख्याः । हरास-पु साधः निवादः बुन्धः नेराव्य — 'वज्रुव तारि हरि सक्टर हरेव हराय'—वरवे रामाः। दुर्ववनाता मयः, भारतेका वरः।

Killite-de f taite, i

हराहोर+-श्री पदावर, वकाति - मुडिशंग हराहरि

धीर गरी -इस्स्रामधर्म ।

1 -5

हरिनि (ध) द्वारा हराय किये प्रकार नियम वरिका पीता के मानेशाका पहल बर-नाका (वामाविती)। व तिथा रहे (भये)। धिवा कहा वसा मुद्देव-प्रमार समुच्या मन्द्राची दिवदा सीमा बांडुः किहा गिव परिक स्वरत पीरहा दिवा भीमा नंदरः वनमाश्राच रहेता कोचका मेन्द्रा सीपा मेर्ट-वर्ग वनमाश्राच रहेता कोचका मेन्द्रा सीपा मेर्ट-वर्ग (वासक) पर्वेच सुवि हरि हरि मेन्द्राच हरिश्चम्योने स्वरत सुवि हरि हिक्क हरिने सीर्ट (धीर) विवशे निवक हरि हरिने हिक्क हरिने मनायने हरि बनेका। सीनाः सीना प्रकार हर्य द्वारी सीना क्षमा सामावित सुक्रा सरकार हर्य

यह पर्वतः एक कोव्हा एक वर्ष, भूमागः यह वहा संबवा (वी)ः शामसमम्बद्धाः एक दश्वर्गः। ~क्या-स्रो विष्णुके अवतारोंके परिवास्त वर्णन । -कर्म (मृ)-प्र• यक्षाः -कोत्त-वि इंद्रियः सिंह जेसा संदर्। -कीर्तंब-प दरि-विष्कुढे अवतारी मादि-का ग्रम यान । - केक्टीय-पु ६गाङ, र्यगास्त्रीवासी । वि वंगाक-संबंधीः वंगाकमें १६नेवाका । -देश-वि॰ भरे बाक्रीबाका । पु सूर्वकी शांत रहिमयीमेंसे एका क्रिका यद यद्य । -कांता-सो॰ विष्णुकांता कता । -गीय--पु॰ पीका चंदम १ - गल-पु शारीका हाँड । - गिरि--पु॰ एक पर्वत । -गीता-को एक कुछ। यह सिकांत नारावयन नारदको वतकाया था । –गीतिका– सी यह दूध। -गृह-पु॰ पुरीविशेष यह यह। विष्युमंदिर । -चंदम-पु: वॉच देवतदशॉमेंसे एका एक करना क्षेत्रा करना प्रवपतान केसरा चौरती। --धर्म(न)-९ भ्याप्रथमे । -न्याप-९ ग्रेपनुर । ⊶व−प+ धिविन । →वटा−सो+ पद रास्तो । −धन −९ यगवान्**का सेवका अस्तृत जातिका व्यक्ति (४**।०)। -काम#-पु विधायादन गर्दा -तास-पु इरा-पम क्रिके प्रेक्ष क्ष्मुतरा इरतात । --ताकक-पु र 'हरताक'; वहन रँगना (अभिनवमें)। **⇔तासिका**⇔ खी॰ दुर्बा। भार-ग्रुष्टा दुरीया, विस दिन जियाँ धीमका पर्व मनाती है। −तासी−को तक्नारका कम, सह क्ता। ए॰ 'हरिवाक्कि'। माक्केंगमी। भाकाश रेखा। बाह्य-मंद्रक । -तुर्रगम -तुरग-९ शहस्य पोद्रा । -दर्श-पक तरहका दरा कथा। - तास-प विभागका। −दिख्(म्)−सी॰ रंद्रको दिञ्ज पूरव दिञ्जा। -दिम,-दिवस-५ वक्षत्रको। -दव-५० विष्युः अवना मध्यः। - ज्ञब-पु नागकेसर-पूर्वः दरा रसः। -ह-९ १वा रास्त्रशिक्षाः -हार-९ हरोकेलक पासका एक मसिक संबंधना । -ब्रिट्(प्)-प्र **बहुर। −धनुष्−पु श्रदनुर। −धार्म(मृ)−**पु वैद्वंड । - वश्चय्र-पु श्वया मध्या । - मसु-पु विश्वा बया बावडे नयोंने पुक्त धारीय को रचीकी प्रसादा काला दे। −सय*−५ स्पंत्रीय। −साध∽ यु शतुमान्। -मास(प्)-यु विष्युद्धा ध्यययानः भगवान्दा याम । -मामा(मन)-दु मुद्र । -मध-वि॰ इरी वा भूरी भाँगीवाका। पु॰ इनंत वदा विष्णुस नेत्रा व्यस्ता भूरी वा इरी कॉस्टा - एइ - पु नेदंदा एड कुषा नवस्ता एक प्रक्षिक मंदिर । -एवं-दि० हरो विश्वीकाका । यु सूची १ - पर्वस-पु पद पहाव । -पिंश-की स्वरको एक मार्था। -पुर-पु नेपुरः। -पैदी-सी [दि]दरिदारका यह पार । -प्रदेध-तु रद्रमस्य। -त्रिय-वि॰ विष्णुको निय । पु॰ कर्तवा र्वभृद्ध विष्युक्य ६मा वदीस मुसी पास्त भारती, क्वनः तिका रक्षा या कृष्य नेतन । - निया-कार कर्मीः पृथ्वे। तुक्ती सुरा। मधुः दश्यो ।—प्रीदा—स्ते। यब मुद्दे । -बाज-पु दरशाब !-पाप-पु विस्तुध जावस्य । –बाधिनी–स्थः साधिकशुद्धा प्रधासी । – अच्छ−९ भवरान्दा भए, दरितेरद । -भन्दि-शी•

140

भाशिता(तृ)-वि• [र्श•] पेट्ट । माशिमा(मन्)-छी [सं] तावता तेथी।

भाषित्याँ, भाषित्यामा−पु• [फा] बोस्रकाः वसेराः वर । मासिए(स)-स्रो [सं] असीस, ईयरसे किसीके करवाण-मंगलको प्रार्थनाः सनुग्रहः सर्पका विवरता एकवनीः वृति।

आदरी-सी [र्त•] सॉफ्टा जहरीका वॉटा सर्पनिव-भसीस । - विष-पुसौप । वि० किसके बाँतमें विप हो ।

आफ्ती(बिन्) -वि [०] खामेशका (समासमें प्र<u>ब</u>क्त-परकाओं)। भार्गियम्, मासीर्वात्-पु॰ [सं•] असीस ।

आञ्च∽वि [सं∘] तेब, हुत । स तेवीसे, फौरन । पु० भारोंमें फरनेवाला बाल, जावसः बोशा ! -कवि-पु तरत कविता बनानेम समर्थ कवि ।-कोपी(पिन)-वि हर हुद हो बानेशला चित्रविता।-श−वि० शीप्रगामी. रेवरी। पु बाद्धा सूर्वः सीर। −गामी(भिवः)−वि

देश बक्रतवासा। पुरु सर्व । —साय-विरु सर प्रसन्न होसेबाका। पु शिव। -पद्मी-की शहकी नामक रुदा ।-शोध-वि• वस्त्र सिखनानेवासा : -ग्रीड्-पुण धारम शान । **आशुश्रुधि**-वि• [मं•] श्रुष्टुमीको ताप देने या तेजीसे

चमकतेने कारण पत्रा जानेनाका । पुन्नाः अप्ति । भारतोकेय∽वि [सं] भारतेक बृक्षके पासका (स्थान)।

क्टोब-मंदंबी । भाक्तोब~प [पा] प्रसादा बरा घोर-शका शॉयका हस्रमा । नगाइ-५० फसारकी करह । - चइस-प्र

धाँयका पटना । —कान −स्त्री जानकी आफ्रत साहक । म् ॰ - वटना - प्रस्ट श्रुक्त दोना ।

भाषापण-त [रं•] सीपनकी किया। **व्याक्तीच-पु॰ (सं०) ब**ङ्गाकि अपवित्रता ।

माशीची(चिन्)-वि [सं] अपनित्र, महारू, नापानः ।

भाश्रर्य-प्र [सं] अवरम अनेमा, विश्मवः अव्यास रस-कारवायी मानः विकास सम्बन्धाः अर्म्यः ।

साम्रायेंस-विश् सि | चरित विरिमत ।

भाइम−दि [सं] पत्करका बना द्वभा। प्र पत्थरसे बनी हर्दे बस्त ।

माह्मम-दि [4] दे 'बाहम । प्र० श्वयका शार्यक भरन।

भारमरिक-नि [मं] शदमरी प्रभरी रीमने प्रस्ता । पु

मरमरी रोग । भादिसक−4ि० [सं] अदम-परवरका वनाः पश्चर

धोनेवाला । माह्यान-वि [सं] को जनकर ठोल दी गया थी था भेरानः स्टा सना द्वा ।

माध-पु (से॰) मोगू। **भागपण-पु॰ [तृं] पार्ककिया ।**

बाधम-पु [मं] सापु-एंतकी बुटी, गढ; वरीवन शामक-समुरावके रहनेका स्थानः वर्णायम वर्मी क्रियके

जीवनके चार विमान या खबरबाएँ (ब्रह्मचर्म, गाईरब्म, थानप्रस्थ, सुन्त्वास)ः विधासकः विष्यु ⊢गुद्ध−पु० मान्यार्थ। ~धर्मे~पु भाजगविदित वर्मः ज्ञक्यचरी, गृहस्य नादिके विशेष धर्म । --पवा-सङ्गाः-स्थान-पु॰ वरीयन । ~ग्रष्ट−वि॰ को जामगवर्मसे क्युत हो गवा हो । –वास --प्रण तपोवन-निवासः, वानप्रस्थका जीवन ! --बासिक--वि तपीयन या जाममर्गे निवाससे संबंध एकनवाका। -बासी(सिन्)-वि॰ आश्रममें रहनेवाला ! पु• बामप्रस्य ।

भाग्रमास्य-प् [सं] तपीयनमें निवास करनेवाला । आग्रमिक, आग्रमी(सिन्)-वि [सं॰] आग्रममें रहने-बानाः चार सामगोंमेंसे दिशी बादमका । काभय-५० सि ो वाबारः विवयः शरणः ठियानाः वरः

सदावताः सदाराः संरक्षकः तुनीरः संबंधः बद्दानाः आप-रणके अनुरूप कार्यः साविषया उत्रमा सहेदव (स्वा॰) नम्बासः घदगः पाँच दानेंद्रियाँ और शन (शै०) ।—अद (ज्)−पुथधिः क्षरिकानछत्र । **भाग्रंपण-**प्र[र्ध] सञ्चारा केना ।

भाध्ययास−पु[सं] अधि। आश्रवासिद्ध-पु॰ [र्ध] वह देखामास विसद्धा आमय~ व्याचार यक्त हो।

आध्यमी(विन्)−वि [चं•] जाभय सेनेवाका । भाषाय-त [सं] प्रतिका वधना दीवा द्वीया संगोद्धारा बाराः नदीः वरकते हुए थावस्था फेन ।

श्रामि न्यौ [सं] तक्वारकी वार। भाषित-वि [६] (किसीरे सहारे) इहरा, दिवा हमा व्यवस्थितः अधीमः जन्यास करनेवाकः। प्र वह वो मरण पोषणके किए किसीपर मनसंवित ही जी क्ये मौकर

नारतः मन भीर धार्नेदिनो द्वारा द्वात विषय । शास्त्र-वि+ (मं] बंगोहरू, सोक्ष्यः समाहमा ।

शासति—सी॰ [री॰] सुननाः अंगोङ्खी । शासिए-वि [सं] सगा अवा दुआ संबद्ध शासिमित ।

बार्श्रेप-प [सं] छगाव है। शाहिमन । आस्ट्रेपण-प्र सि] येठ संयोगः सवनेदस ।

आस्रोपा−कौ (सं•) अदस्या नदात्र । आस्ट्रेपित-वि॰ [सं॰] आसिगित ।

आमा-वि॰ (र्पेण) सम्पर्धरंभीः मीश्से स्रीवा चानेवाका । पुर धीरीका समूहा धीरेकी रिवृति या अवस्था। बीजीसे

भीवा जानेगारा रच ।

बारपाय-वि [र्] अवत्य-भंगंभी अधारमें प्रज हमते≩ समयमे संबद्ध । यु भीपरुका पुरुष ।

आञ्चरथा-न्ये [मे] अभरत मध्यपाली राजि ।

आद्यमेथिक-वि [मं•]अपर्यय-सं(वी । पु• महामारतका श्रीप्रवर्शे प्रवा

आदवयुत्र∽पुर्धि} आधिन ससः। आधरण-वि [नं] पीडोंने छीने जानेशने रश्रमे संबंध

रखनेगाना । शाससम्बन्धिक-वि० [सं] पोदेवे प्रयूप पहचाननेवादा । आइयन्ययन-पु [सं] आवन्यवन शात और गुक्सपुत्रीके निर्माण कवि।

आस्वस-दि [सं॰] आधारा-प्राप्त विशवहा कर दूर कर निया मचा हो। विशे दक्ष वैषाया यथा हो। उत्सादित । आद्यास-तु [सं॰] मुक्त्वर सीप्त सेना। यहत्तु विकासा

रहा वा समयका वसतः वरे बुण्या मवनियारणा दिहासः गंभग सम्याय ।

भारतासक-(व॰ (छ॰) काशकत देवेदाना । पु॰ कस । भारतासक-पु॰ (छ॰) काश्यास कायास देगा। अपनिवारक मोत्सादन ।

मान्सारम् । जाहवासी(सिम्)-नि [सं] आध्वासकारका मनक कोनेवाला ।

राज्यस्य-दि॰ [छं॰] भाषासमदे बोम्ब । भारदास्य-दि॰ [छं॰] योहगे नंतंत्र रसम्बाद्धाः योहसे स्वीता वानेपाताः भवसीडी (मनिट) । पुः सबारीडी गरिकः।

प्यत्कः क्षादिवन-पुर्वः सिं] यह मदीमा जिसमें पोत्सा कथिनी नयुन्दे पास एतता है, कार शक्क यस क्षित्रहे कशिक्षणा क्षपिनीकुमार दीने हैं।

क्राहिबनय-पु॰ [मं] अधिनोषुनारः, स्टुल-शहरेव । आपाड-पु॰ [मं॰] अधान्या महोनाः सनिवो हारा पारण दिया जानेवास। पनाधुका बंधः मनविवीरः ।

थापाडक-यु [र्थ•] भाषाः माखः।

कायाहर-न्ये [संग] पृत्तवाहा और उत्तरावाहा सक्त्र । —प्रद -भू-पुण् मेरल प्रद । कायाही-न्ये [मं] कावादकी पृथिमा वस दिव दोने माता प्रप्य । —पारा-पुण् भावादकी पृथिमाधी सक्तरी

तीलभे किया जानेवाला बृहिका निश्चय । भाषादी(दिन्-)--वि॰ [मं] ज्यादार्थ भारत करनेवाला ।

कापादीय-दि॰ [4] कानाजा महत्वमें काषक । आहर्रान्य (19) कामादिक त्यावश्याक्ष मंत्रकताः कर्नुताः निमानः सुन्दानी निर्देश : १ व्यापितः वर्षात्रकः । स्राप्तेरा प-पु॰ (मि॰) पार्वस्थः अन्यावः विवेशः। स्राप्तिराप-प्रभः (मिं) प्रभः अन्यावः विवेशः।

क्षासंतिबी-सो॰ [र्ग] यक्ष्यतः, बारवारकः, बारवीः क्षासंतिम-पु (रंभ] कृत तरहको पट्टी (त्रवानिक्या) । क्षासंत्री(तिब्रू)-वि [शंभ] आसप्ताः शंभवः । क्षासंत्रम-पु [रंभ] वीरबाः धार्य बरहाः वण्या वाताः शंभा कृटः

प्रश्मा नृहः । कार्याद्विम्नान्यः (१०) होते कृततीः स्रीयाः । कार्याद्विम्नान्यः (१०) होते कृततीः स्रीयाः । कार्याद्विम्नान्यः (१०) हित्यः प्रशासकृतकोः वेते । कार्ययाद्य-(१० (१०) हित्यः कृताः अन्तरस्य स्मापेषे । कार्ययाद्यः कार्यसूतिन्यः (१०) सर्वात्योगः विस्टोः ।

कारसमारः नामसूनायानाव हारानु प्रकारता हार क्रा संदार या वर्तवव अतितथ नवे ११नेनदा सारे क्रानिपदाक्षमें ।

स्वार-पु (४) देवनाः स्वत्या भूवतः द्यारः स्यतियाः पतुष् । तीः (१०) स्वताः स्वत्याः द्याराः द्याराः • प्राः सु = दुरुदाः-निराः द्याराः निराः द्याराः स्वीतः दशः मुद्द भवनाः । न्योदसा-निराः द्यारः -देवा-पर्याः (रिल्याः । न्योदसा-न्याराः स्वारः

रोमा समक्तरो बन्द रोमा !-सायसा-नम्मोद करना । -स्माता-नामा केश्वर शोजा !-शास-नामा वा सहारा द्वीनाः यर्थे रहमा । सामस्तां नमी॰ सुसी आल्रह ।

आसकती - ६० भागती । आसकः-६० (तं०) आसक्तित्रकः, मनदा प्रदत्त स्याप स्मनेवाना समुरकः, वैमा दुआ, तित्र (६९४)एकः

रभगवाना वशुःष्कः वसा दुआः ।तत्र (शिवदान्यः स्थानाद्वाः पिरा कृषाः निवास कृष्टिनासा । स्थापितः न्योः श्रि अस्त्रतः स्थादः स्रदूराः, स्टद । स्थापितः न्योः श्रियः सम्प्रदेशः स्थापतः सुद्धि । स्थापतित्र-न्योः दे श्रितातः ।

व्यास्तीय—सी॰ दें 'बास्तीय'। कासती॰—व दें 'बाहिस्ता'। कासतीप॰—दि०, पु॰ दें बाहुनीद । कासवि—सी [में] निज्ञ संदेव, समीचाा' केना बासदें नंदर पुरिक्ष पाणपार स्त्राना तात क्रारि।

बासवान•–पु॰ दै ^{*}बारपान । बासदन–पु (र्त•) समीतवाः संरंश देश्या बनमा

काम दर्ज पुरा कार्या है स्थापन स्थापन करने हैं है से स्थापन करने हैं हो है से स्थापन करने हैं हो है से स्थापन स्थापन करने हैं हो से स्थापन स्यापन स्थापन स्

feffer unter erner Gunt under den Die

वर माध्यमा व वर व्यवस्थाने मशीक्षांने मानी नरारा देरे रहमा (बालका धना)। यरहान्नेगिक व माना कर कर, नेपादी सीवित कमन तथा नोवक व्यक्त सामा करा वर प्रदेश के प्रदेश कमन तथा नोवक व्यक्त माना वर पोर्टी पीकरणे में के सकता के प्रदेश किया हर-माना । - वर्षाना क्योप्या (ए) । - वरणा- दोवक कनुमार स्परित्य (वित्य प्रदेश) | - वरणा- दोवक कनुमार स्परित्य (वित्य प्रित्य । - क्योपणा-- व्यक्त स्पर्ध । - व्यक्त माना - क्योपणा-स्वाम करीकी तीव स्वामा - क्योपणा- क्योपणा-स्वामा करीकी तीव स्वामा - क्यापणा- क्यापणा- क्यापणा-स्वामा करीकी क्यापणा- क्यापणा- क्यापणा- क्यापणा-

जनसर स्थित जारा देशमाः स्वत्ये व्यित् स्थितः हर स्थान्ताः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः स्थान्यः स्थान्यः व्याप्तः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्था

्यस्य पेरता । भागमा~सी [र्श•] भणवः द्वीय स्प्रियमा देशो । *

अश् कि दोना । आसमी~े [संस्] प्रगाः अन्यन, वेश्ने भरदा रिचण्या वैद्यार दशस्ता चोनी वदान ।

आसक्त है [त] देण मना द्वारा उपरेशासना नर सराद्रमा निर्मा स्था हिन्द से रहा साम्रेस से मन्तु प्रमा दुशा सुरेश - काम-हि दिस्मी रही स्था भागो ही। दु मन्द्रमा - न्यरिकास-ति अन्तर्मा तिशे दाम सर्वेश सा में दर्ग रही - न्यूय-मून सुर काम्या सर्वेश रिंगो दिस्मी दुर्गन में पुन्त काम्या सर्वेश रिंगो दिस्मी दुर्गन में सुनकामा हिन्दाम सुरेश हैंगी ही (स्तर्ग) - मार्ग्य

दरव-दराई हरस-पु [न] दानि, श्रतिः देतः समय नाशः काममे शोनेवाको स्टाबर (बरवा, होया) । हरमा-पु॰ नुक्रमान हरवाना वाषाना । संगतराखीका एक भी बार । इरजामा-१० (फा) मुक्सामके करवेमें ही जानवाकी रक्म, श्रदिपति । इरमधरी−स्रो एक छा∉ा। इरह≠∽वि० हक्ष्प्रक, बद्रान्यका । इरिंदर्ग -पुरु रहेंटम रेकोंका श्रोपनवाका व्यक्ति। दरवारां-पु० दरं दक् । हरप-वि [सं] (समासांतर्ग)के क्रमेनाकाः दूर करने बाजाः बारण करनेवाका । प्र कावः मुनाः नह करनाः बूर करना। व हेना धीन बना। जुरा बना। ह बाना ना क नामा; भगा छ जाना। वंधित करना। निमाधनः माय (ग॰) क्यमबन-सिकाः बीह्यकः शुक्कः वीता स्वर्णः कौड़ी। उरकता हुमा पानी पीहेका कारा। हरणि−सी+ [सं] चक्पप्राकीः शूल । इरजीय-वि [सं] इरण करने वीव्या अध्यो प्रीय हेन बास्य। इरता॰-पु दे॰ इर्ता । -भरता-पु बनाथ-विवाधने-बाङ्गा, सर्वेसकोः सर्वसरिकान् । हरसार+-सी+ दे हरदाक'। हरतास्त्र-स्ता नंबस्त बीर शंखियान योगरी बना एक पीका सनिव इप्प । २२० - फेरमाः - सगाधा - विसी की कामको निवाद देना, वह करना । इरसाकी-वि इरवाक्के (गका ! त इरवाक्का सा रंग ! श्वरदान-स्ती है। इस्ती । इरहा~ु प्रसम्बद्ध एक रोगः नेवहै। हरतिया#-वि इस्रीके रंगका, बीका । पु चैक रंगका पोदा । इर्श्वयादेय+−९ दे 'हरदी#। इरवी!-बो॰ इन्हें। इरवीक-यु औसछाड राजा जुलारशिषके छोटे नार्र वी ग्रेरता भीर भ्रायमधिके लिए एवं मस्ति है (शका ल्लार्सिंडने अपनी समीके साथ बनुवित स्तंत क्षेत्रेके स्ट्रेशमें वसको सर्वारम-परीकाके किय असीके शावसे इन्हें रिप (क्षित्रमाष्ट्र श्रमका अंत करा दिया)। हरहान-९ यह स्थानका मात्र वर्शकी शक्कार प्रसिक्त है। हरहाजी-वि इरहानका बना हुआ । हरमा-स॰ कि इरथ कर क्षमा, होन केना। इर करबा: आप्रद करमा । अ कि दार आगाः परास्त दोनाः शिविक्र १६ जाना । 🕈 ५ मूग, दिस्य । हरनाकस॰-५ दे 'हिरम्बनशिक्'। इरहारछ = - द्र (इरम्याप् । इरमीर्ग – श्री • (६२मधी माधा । इरमीरा-५० दिरमका रचा । इरपरेपरी-की एक रीव्या को आरवें वर्ण करानके क्षिप बाती है। इरपरी-प्र नइ धोश रूपा विसमें सुमार तरान् आहे एएस है। सिनोरा ।

इरफारेवची—सी॰ वॉवमेके बरावर सने फ्रम्भेशका वढ वृक्ष वा बसका प्रक, करकी। हरफारपोरी॰-सी॰ है (रफारेक्से') इत्यर्क−सी॰ वे इत्रह । स इत्रवीके साथ, उत्रा-वकीर्ते, जस्य-" वर्षे सुनिवर श्रूरकर, बाबो'-स्वराद। हरवरासार-भ कि 'हरवराना'। हरका-त विको तहस्य साध्य हरियसः बारतः। ~इविवार-५० अथ एखा मु• -(वे) हहिपासे श्रम श्रोना-स्वत्तप्रश्र हो याना । हरवेरिय-वि॰ गुंका, अद्भारीत मूद, मूर्च । पु कुम्बरसा **धीर ! -पर-प• संगेर** संपरी । इरमुखी!-बी भत्रेका एक प्रकार ! हरम-त्र [भ] कार्रेक्स यहास्तीवारी, पेरा शंत प्र विवादिता स्वीः रधेको नमानी अर्द गाँदी । ~शामा-सरा - इ. धनावसामा, भंद पुर । हरमञ्ज्ञवृती-श्री इराममानाका दुखा, स्टारह । इरबाक्र≎-खी 'हरिवाको । हाबेश-थ वे हार्दै'। इरबळ-९ दिना व्यावद इक्ष्मादेको दिना हुआ हमा ⇒ प दे दरावक¹। हरबाजी=-स्त्री - सेनाव्य वेत्तवः नाविववा वदः स्त्राध्नितः। हरवा०-प दे॰ 'हार' । वि हक्का । प्रकाशक-थ कि १० रहाना मारी करवा हम्म बोशा । स कि॰ 'हरामा और 'हरमा का मेरणार्थक स्व। । गिग्रम् स्वाप क्रम १- व्याकाञ्च 1 19 5 E-eps इरपमा, इरसमा -- वि मसम होता। हरपायाः हरसामा -- अ कि अक्ष होया । स कि प्रसार करना ह हरपित--रि ये॰ हर्वित ह इरसिंगार-इ एक इक ररवाता ! errei-fe & erri! इरहा-वि+ देशव, प्रधान दर्धवाटा, भाषा दिस्तेवाटा (पञ्च) । यः इट्टमें ज्ञुतनेशका र्यक्षां मेशिया । हरहाई-वि॰ स्री॰ शरारटी (मान) ! इरोंस•-व , की अस्तेव, धाबारण सद श्रासा STATES प्रशा-विश्व वास पतीके (वका, सरम दरिता व्यवस्था बिजा घरा (पार्य)। तरीचात्रा। सम्बन्धः मामदिनः मञ्जतः। व इरा रंवा धीवानीमा दरा चारा। • दा८ माठा। की [नं•] इट शिषको प्रनी पार्वती। -पब-५ ६ए शानेका भाव । -- मरा-वि इरिवाकी हे मरा इनाम वाजाः प्रसन्धः प्रदन्तः । मु॰-कर्ना-भानंदितः परितः प्रमुख करना । −दिसाई पद्मा −सुझना−सुध, भागा बाहिकी न्वर्थ कररता. बरने सहागढ़े बारण सडी आस र्वांबना । ∽बाहा दिखाई पदना या सुप्तना∽रे 'दध रिसारे पहना'। इसाहैं!-की एक या एक्ट्रे अधिक इक्षोद रक दें।वे जुन जानेग्रही भूमि, गाह । सु०-कॉट्डा,-कानग

१ देश्वे के ए-बाइब

इस्तवान्-इस्थ यामदा राजा किस श्रेणीका संबद्ध । इस्तवान् (वद्)-वि [d] दश्च इरतक्ष्यक्ष । इस्तांत्रकि-की॰ [यं] इल्लेकी वह स्थिति जिल्हा है गहराई बचाते इए मिन्ने हीं, करसंघर । इस्तांतर-१ (सं०) दशरा हाथ । इस्तीतरण-प्र• [एं•] इसरेके बावमें बेना । इस्तांतरित-नि॰ [सं] ब्रहरके बावमें दिवा बजा। इन्द्रा-सा॰ [सं] इस्त नक्षत्र । वस्याध्यर-प्र [सं] दस्यक्षरः सही । इस्टाम-प (सं•) हाथका भगका भाग, श्रीगती । इस्ताचाम-प्र• [सं] बाबते ग्रहण करना । वि० बाबते प्रदम करनेराका । ह्रस्ताभरण∽त् [सं] शक्का गश्माः एक तरहका शाँव । इस्तामकक-९ [सं] शावरेका व्यवका (वो विकास रपट और पोषयम्ब दीनेका स्थक हैं। संकरायार्थ रिवर एक बेजांतका धंभ । हस्तारूड-वि [सं•] की शावपर ही, विकक्क स्पूह । इस्ताक्षेत्र, इस्तापक्षेप-द्र (ए०) बायव, सहारा । इस्टायाप-५० सि । इस्ट्रमान । इस्ताहस्ति-को॰ [छ] दावायार्थ । इस्ताइस्तिमा~ची [धं॰] गुलगगुर4ी, दश्तन्तरस्त इस्तिक−प॰ (सं॰) दावियोगा संश क्षिकीनेका दावी। निस क्षेत्रीका सेक्स । इस्तिमप्रर, इस्तिनीप्रर−प्र [सं] दे॰ वस्तिनापर । इस्तिबापुर-पु [सं•] बंदबंद्धी मरेख बरती द्यारा विभिन्न पक (प्राचीन) मनर जो बर्समान दिस्की से कनमन ५७ मीक प्रवास्तर था। हरितमी-ता (र्थ) नमधनी दनियो हर्शिकारिनी मामक प्रभावता कियोंके बार भवींमंत्रे एका वस्तिया-172 इस्तिपम-पु[मं•]हे हरितव⁸ । इस्ती-को पा] जीवत विवशम हामेदा माद. सरिक्ष । मुक्-श्रीमा - तह होना, (विश्रीहे) नागी-विद्यानका में रहता ! "मिटना" नाश होता वरवार होना । -सिद्धाना-मध्य बरशर करणा । -होना-जीवित विवयान रहनाः महस्त्रका हीना । इस्ती(स्तिन्)-वि [नं] बर-प्रका नंत्रवासा कार्व क्रमण । प्र वाभीः अवसीवाः प्रतराहका यक प्रवा सर्वाण-(इक धर्मधी मर्गाका यह प्रमा क्रमा यह प्रमा -(स्ति)कंप-पु एक तरका नवा चंत्र, वाशीयत्। --क्श-पु- तम विरेशा कीशा -- क्यूप-पु- शिक्षा बाप । -क्या - पु पत्र मानातुर । -वर्शज -कर्शजक - इ. बहादांस १ - करण ह-इ. एक चरहकी बाक्ष १ -कर्ण-त प्रदर्श काश कर्या विकास महा दक्ष तरहके सक्देरता। एक राष्ट्रशा एक नागासुर । — इक्र∽प्र प्रशास्त्र रह भर । —क्रमेक्र~पुर क्षरका क्षित्रका -कर्मिक-इ योगका एक माहबा -क्षांति-भी ॰ ९४ सर्दश ६९ । -क्षेसावकी-भी ॰ बोर्ट । -विदि-पुरु दब पर्नता क्रांनी मधर । -धाव-

पुरु वार्थीका वर्ष । -धोषा-श्री वृहत्त् वीवा वसे तोरवं। - घोषाश्रकी-को॰ दे॰ 'इतिवर्धेश'। - धन-वि शावी भारतेम समर्थ । प्रश्न मनुष्य । -बार-प्रश बाधियोची करानेका एक प्रविदार । -पारिकी-भी मबाबरक । -बारी(दिन्)-पु॰ रोकसन । -बाप-रिक-प बाबीको देख-भाग करनेवामा भारत। -जिल्ला-की यह निर्देश दिशा। -बीवी(किन)-प्रव पीकवाल ! -वंश-प्रव शाबी-वाँदा बावस्थे वर्त हर्द भेंगा मुख्या - ऋका-सार व्याहा -दतह- प्रति−क्षी मूळी। - प्रयक्त-वि दानो विक्ता क्रमा था वहा । −मस्त∽पुरु हान्येदा मागुमा प्राह्मशर वना द्वथा मिद्रीका हुदा । -मासा-को॰ हार्थाको संव -निपत्म-प्र• एक बासन (बीम)। -प-प• पेक बामा बाधीकी देख धाल करवेबाला: हरस्यारोह । -वह पुरु है। इतिकारि । -- पुरु-पुरु हाथीका शामा एक गायासर । -पश्चिक -पश्चिमी-को दोरर। -पर्वी-सी कांग्री मारश बता। -पारिश्न -स्तो यह शोपति । ~पास्त्र,-पास्त्रस-तु चैक्सानः। −विद्य=व वद्य शमासर। −विष्यको-को वद-पिञ्ची । --प्रमह-पु॰ प्रमेहका पद्म प्रकार । -वीव-प्र• हाथी वें सामका रवान । -भग्न-५ एक सम्प्रतर । -सकर-५० वण्डली । -सड-५ हानी हे वेरम्स्न है बहबेशका रक्ष बाज । -महन-पुरु नेरावता परश बातालका भावनी मान, घंदाः शक्यता हेटः महन्ते वदी। पाकाः विम । "साया-सी० एव बार व। मत्र। ~मरा~त वनेसा वस शक्षता −मेड−५० है। दरिकामेड । -यथ-५० द्वानिमोद्य सद । -छन-त बहुत बढ़ा बाधार बानियोंके होस्का सन्धिका। ~रोप्रक –काप्रक−त्र॰ कोध दक । −रोहकक−द महरूद्वा -- वदश-५ - मनेश्वा -- बाह्य-५ - प्रेक्ट कानः लेख्याः -वियाधी-स्रो दश्माः -स्पद्ग-प्र दर्शकोश त्या यह बरहस्त स्टूड विश्वमें दावी मध्य और बढ़ामें रहते हैं। - साका-की वश्यद प्रोक धाना । - श्रंष-५ दाबादा एंड । - श्रंषा - शंधी-क्षी एक शर्प । -श्यामाक-१ कम्मा साथी । -सीमा की एक मही। - इस्त-त हाबीकी गैंड। इस्त-अ ११वे. शास्त्र आर्थतः (सं॰) दावमे । - धरणa minuen feare ! हरस्य-वि• सि] शावन्त्रंतीय शावने दिवा प्रमार सम्बन्धे दिया एमा । इसवयाध-५ (४०) शांवबीस तिराय । इस्त्यराम्-पुरु (संब) बोवानका श्रीपा । इसचाजीय-९ (सं॰) इतिसम्बरसार्वम प्रेष्टवान । हराबायुर्वेष्-प्र॰ (धं॰) परिर्ध अस्ति। संक्षा संक्षा साधाः इसवाहोइ-पु॰ [मु॰] शामापर रेडवशका व्यक्ति असा वत बीकनाम् । इसवारोडी(डिंग)-पुरु [नं] दाबीक्य स्वार । विश बाबीयर संशात बर्जवाका । इसमाञ्चक्र-५ [६] वह देश इस्व-अ० [अ] अनुसार, सुग्रस्कि। -(स्वे)मानिका

ञ्जवारं वा कुँव भारम करना । इरामच-पुरु (संरु) रावण ।

हरामा-स कि पुर कराई-स्परे, प्रविद्दिता अधिरें शतः प्रतिष्ठंशी भारिको परास्त करना, प्रशतका ध धविहिता धर्मशासमे इरास−दि [य] निविद्ध निविद्या सर्भ(इसकामी वर्मसाका)के विक्या वकाकका सकराः त्याच्यः समाद्यः संयक्षितः पु पाएकमै व्यक्ति-चार वरकारी। ∽कार~पु• व्यक्तिकारी, वरकार। -कारी-सी व्यभिचार, सरकारी । ~च्चीर~षि॰ इराम की बीवें सानेशका; इरामका माक कानेशका; पूस-द्रोरा मुक्तबोरः नमकइराम । −द्वोरी नश्री इरामन्त्र मुक्तरहोरीः पृक्तकोरीः नमकारामी। - झावा-पु आरम, दोनकाः दुष्ट पानी । विश् दरासके गर्भमं बरपद्याः ≔क्राची – स्टी॰ दोगकी, इरामके फेटसे पैदा दूर्व सी; दुधा सोबो सी । सु -कर देना-कठिन, हुम्बर बना देना शासुमध्यि का देना (-कोना सामा साना इराम कर देना)। -का सामा-विना महमत किने प्रामा मुक्तकीरी करना । -का कमा-को इराय व्यक्तिचारक तर्मते जनमा हो इरामश्राहा। -का पिस्का -का बचा-रोमका; दुवा -का पेर-म्बसिचार अविदित संबंधसे एक कालेशका वर्ष। -का सा**छ-अ**वभ वर्रमानीसे कमावा द्वा वनः मुश्तका माम । –की कमाई-अवनै वेर्रयानीचे कमावा हुआ पैसा पापका कमाई। -की मीत भरना-नदर ग्राइर मरना भारमपात करना। −होना-ककिन हायद बागुमिक्त होताः स्वास्त्र होना (रीमा हराम होमा)। इरामी-दि इरामका जमाः दुध, पानी। -पिस्सा-

इरामी~दि ररामका जगाः तुष्ट, पान्ये । —पिस्स्था— पु॰ दे इरामका विस्ताः । इरारष्ट~स्वा॰ (स्र.) यसंह दलका व्यटः (ताः) जीवः

क्षीय ।

इरायर०-तु दे इरान#'। इरायरि०-को दे इनार्थर'।

हरायक-पु श्रि] सेवाका अध्यमामा क्योंका मुखिना। हरास-पु मासा विवाद, दुन्या, नेरास्य —'पमुच सारि हरि सक्दर हरेज हरास —करने राम्य । दुर्वस्वाका अब, आदंका हर।

इराइर०-५ दे स्वाह्य'।

हराहोर॰-की॰ थडावट, कांति - सुद्धिशंग हराहरि धार गयो -वसररामधरित ।

हरि-दि॰ सि] हर्रा हरायम किये पीका हिमका वर्षका पीका कामपाका, बहन दर्शनका (वास्त्राचित्र) : प्रतिकार (वास्त्राचित्र) : प्रतिकार (वास्त्राचित्र) : प्रतिकार (वास्त्राचित्र) : प्रतिकार (वास्त्राचित्र) वर्षका प्रतिकार कामप्रतिकार कामप्रतिकार वर्षका पीका वर्षका पीका वर्षका पीका वर्षका पीका वर्षका पीका वर्षका पीका वर्षका प्रतिका पीरा वर्षका प्रतिका परिवार पीका प्रतिका परिवार वर्षका पीका वर्षका प्रतिका परिवार वर्षका परिवार परिवार परिवार वर्षका परिवार परिवार वर्षका परिवार परिवार वर्षका परिवार पर

यक पर्वतः एक कोकः एक वर्षः भूमागः यक वर्षा संस्था (वी)। तामसम्पर्यतस्त्रा यद्ध देववर्ग । -क्सा-सी विष्णुके अवतारोके परिशोध्य वर्षन । -कर्म (मू)-पुरुषा —कोला–वि रहिषयः सिंह जैसा संदर्। -कोर्तन-पु शर-विष्णुके भवतारी मादि-का ग्रय-यान । - बेस्रीय-५० ६गाकः वंगालविवासी । वि० वंगाक-संबंधीः वंगाकर्षे रहनेशाका । ~केश-वि भूरे बार्कीबाटा । यु सुर्वेद्धी साल श्रीसमर्गीमेंसे पदा शिका पक्ष थस्त्र । ~कांका-कौ॰ विष्युकांका क्रवा । ~शेप~ पुरु पीका चेदस । – गावा–पुनीक्षेत्र श्रीव । – गिरि– पुषक्क पर्वतः। ⊸गीटा~को पक क्लानद सिकांत को नारावणने मारदको वतकावा वा । नगीतिका--सी यक्ष कृत। −गृक्ष~तु पुरीवित्रेय यक्ष वका विष्युवंदिर । - चेव्य - पु यांच देवतस्भोमेस एकः पक भंदना पीका चंत्रमा प्रवपरामा बेसरा परिता। -चर्म(न्)-५० व्याधनमे । -चाप-५० द्रपनुष् । --ब-द॰ शिविद । --बदा-की एक् राधको । --सन −पु अनवानुका सेवका अञ्चल बादिका म्यस्ति (आः)। -जान#-प्र+ विष्युवादन वदर । ~तास-प्र इरा-पम किने पैके रंगका कन्तर। इरताक । ~सासक-न् ६ 'इरताङ ; ४१म रॅगना (अभिनयमें)। —सास्त्रिका-को॰ दुवी। चाह-शुद्धा दृतीया निस्न दिन कियाँ दीक्का पर्व भवादी है। -तासी-बी॰ तक्सरका क्रम, सह क्या है। हरियाक्सि मार्क्सनी भाषाय रेखा वास-थंदक। −तुर्रगम −तुरग−९ धंदका भोदा। −दर्भ-पु पक तरहका इरा कुछ । - दास-पु विश्वमका -विक्(स्)-की॰ रहेको रिम्ना पूर्व रिम्ना -विम,-विमस-पुपकारची। -देव-पुविम्यु अववा अक्षत्र । - ज्ञय-९ नामकेस्टर-वृद्धः १रा रस । -त-द क्या वावहरिका। -हार-इ क्योदेश्वद पासका यक प्रशिक तीर्वस्थान । -ब्रिट्(प्)-प्र वस्र। -धनुष्-९ १६५नुर्। -धाम(मृ)-५० वैद्वेद । - बश्चाय-पु अवसा सङ्ग्रम । - सम्ब्र-पु विद्या गए। शर्द वर्षोत्त श्रुष्ट शरीय ने श्रुपेश पदनावा वाता इं। -नग्र*-तु सर्वस्था -नाध-इ इनुमान्। नमास(म्)-प्र विभाषा स्वक्शानः मयबान्द्र बाम। -मामा(मन)-५ मुद्र। -मध- इरी का भूरी ऑडॉवाका। पु॰ इनेत वया विभावत मेपा अस्ता भूरी वा हरी बांधा। -पह-प् नेगंडा पढ क्षा यकास्त यह प्रसिद्ध मंदिर । -पर्ज-दि० प्रशे पश्चिमोनामा। पुरु सूची। -एपँड-पुरु यद पराहा -पिंडा-की एवर्च यह यातुवा। -पुर-पुर बहुद्व। -पर्या-को [वि] दरिकारम रह ग्रह । -मस्य-पु बह्मस्य । - मिय-वि विष्युकी निय । पु कर्तवा वेब्दा विम्युक्त इसा बडीरा मुर्गः बायक बादमी क्लपा शिका रखा या फूल्य नदन । - प्रिया-क्रीक हरूयी। इष्टी। तुष्टती सुराः सद्यः दादशी ।—प्रीता**–क्रा**+ यक सुबूर्त । —धीज-पुहरकाव ।- बाध-पुहिष्णस नागरम । - वाधिमां-री कार्धिय प्रशास्त्रार्था । --भक्क−५ वदशम्बा मतः इतिनदः। -भन्दि-सी०

- अ बाबिते, कानुसदे बनुसार, वशाविषमा । - ब्रैक-भ नीचे क्लिये पूर म्हेरिट्टे बनुसार । इन्मेंसा-ब (किसी दकारे) मंत्रा, समित्राविक सनुसार, क्लार्टे-मासूक-भ० रीति विस्तित्ववर्षे अनुसार, दल्य्दे-मुद्रादिक । - ब्राक-४० (स्तित्वे अनुस्त, दल्य्दो-मुद्रादिक । - ब्राक-४० (स्तित्वे अनुस्त, दल्य्दो-ब्रह्म-१० स्ति | ब्रुट्टेट सुरुद्धरावेषात्वा सुद्धं अब्ता । प्र ॥ येरता, द्वादा करान क्लार्ट्यन । मु

-होना-जनकंतित होना (त्रक्षेपर कवा हक है) ।
इहर-कं वनहत्त्व, यह न वक्तप्रवाहर असलवासिंग इन्तर्ग हैंगईनी, हिन्द त्या न वक्तप्रवाहर असलवासिंग इन्तर्ग हैंगईनी, हिन्द ते (त्रीठ, प्रकारित) ।
इहरमा-अ क्षित्र वरना परिव होना, हिन्दी जनकिक बर्त्य होना- वरित नरित हहरे एवं वाहर 'प्यक्र धीतके वैत्रमा; करीन प्रकारा और क्षमुक्तापूर्वक क्षित्रीत्र मिनना; दिसीको एंग्ला देखकर रंग्यों करवा विहाना । शुक्त इहरफर सिक्या-मानंत्र असलवा कवा असुद्धाराप्त्य किसे हैं 'इहरना । स्व कि धीत करना,

कराता, बदकामा । इहस-ची दं 'इसर' ! पु [सं] दकादक निष्

इंद्रसमा - अ कि देश 'इंद्रसमा । इंद्रसमा - अ कि , संश्वीत है 'इंद्रसमा ।

इहस्याना न ।सः । संग्रहत्य वदशः इहस-पुषकत्य (वी)।

इहा-ची इंग्लेक इन्द्रं निरीती। पु (सं] यक नंबर्व। मु॰ -काला-बहुत विश्वकाला। क्वा-स स्वोद्धति निश्वक आरम्भतीय स्वति आदिका

स्वत स्पा । सी लोड़ित त्योहते दसे हो कालेस स्वां । नहीं न वर्तन दरने किए प्रमुख छम्प । सुक - जी-हाँजी कामा- पावड़ी करमा, सुराध्य करमा। - से हों सिकामा- पावड़ी करमा। तिना छम्पे हिस्सी दोड़ित्ये से मान केमा सुग्रामर, मब सारिके कारण निमा विचार किसे हो हुन्हें हरा प्रशिष्ठ वरस्की औद कहना। - मुँग कामा- शिक्सी देना, रिसी वरसे वहीं होनेसे एक सनना।

हॉक-श्री बोरवे बोक्स्स क्रिग्रेसी पुरूरकेकी किया हुक्स बया, बक्क्सा पुरू प्रविवोधित आर्यक्ष क्रिग्रेसी मान मानेके किय पी माने कक्सा अस्वया क्सा व्याप व्याप मानेके क्षिय किया व्याप क्सा व्याप या प्रवास आहार गुरु - वृत्तां, नारामा -क्सावा-केंद्री काराज के कुराता भीतिक हरा।

देवी काराअधे युकाराता, भीतीरात वराता । इंदिनान्य कि वह निवासी आदि बादानीको पकाना; गासीने जुने पीता नेक आदि चीताओंको बायुक साद्यद वा मुंदि रीक्टर एक स्वानशे दुकारे स्वानक स्थाना चीतावी जाना निश्ची वराजी हिन्द कर्ने दिनी स्वानशे इरानाः दिन सक्ता अर्थपिक वाल क्लानाः वस्ता नद्रा पास्तर वार्व कहना। सरविष्ठ वाल क्लानाः वस्ता नद्रा पास्तर वार्व कहना। सरविष्ठ वाल क्लानाः वस्ता स्वरं चीतकर युकारानां स्वानाः इराजाः दिव्य स्थानाः सम्बद्धानाः । सु व्यक्ति युकारकत् स्वद्रताः स्वरं व्यक्तानाः सु

हाँका-पु॰ दे॰ विकात्ताः ह दे विकातः । हाँगार-पु॰ शिक्ष करी मध्यो । हाँगा-पु॰ राक्षतः स्रोतः स्वारितः वका रकमयोग । मु॰ -करमा-किसोके विकसः वक्षयोग करना। -कुरमा-सारोरिक वक्ष स रहमा। सारोरिक कर्मे सेटर प्रकार।

हॉसी-ची मंबुरी हामी, स्वीकृति । सु॰ -भरता-मंबूर करना, सीकृति देना, हामी भरमा । हॉब्बा-च कि बातारामी करमा । दिश्व भागारामां । हॉब्बा-ची दे हंबी'। सु॰ -दबकना-परशी हुई भोजक वस्त्रमा मारे सुर्धीते सुक्ता । "प्यक्रामा-देश कॅड्रिया बहामां ! -प्यक्रमा-हॉशोमें रही बराज्ञांना कंबके हारण चन्नाम क्रियो बर्डबन्ना रहा बचाना स्व बहना । (क्रिसीके नामपर)-चोन्ना-किसी क्रीय कर्माच्ये कवे नानेपर प्रक्रवा मस्ट बरमा । हॉला॰-दि स्वच्य प्रेस हुना हराया हुमा हर किसा

हुवा। हांत्र-पु (सं) मरनः एक राधसः युक्तः।

होत्-तु [र्स-] सरम। हॉपमा हॉफ्स--अ० कि० किसे प्रकारके साधिरिक सम या रोमके कारण शतका गीतका तीम होना। हॉफ्स-तु बॉफनेसी किया। सु० -एडका-कश सरी-

रिक अम बस्तेवर प्रतंत हॉफने कमना। हॉफी-सी दे 'हॉफा'।

हांबीरी-सी (सं०) यह रायिमी।

श्रीस-वि॰ (सं) वेष्ठ-संबंधी । श्रीमां --भी॰ वेसी ।

इसिया॰-म कि दे 'देसना ।

हॉसक, हॉसुक-इ एक प्रकारका योहा विस्ता (म गर्वशका ता और पार्री पर कुछ कार (मक्रे बाते हैं। हॉसी-जी टेंसपेक्षी किया, हेंसी; मजाक, हिट्टमी,

परिकासः वहनायीः, विद्या करहासः । इतिकृष्टनातीः हैसी। हैसकी ।

हा-नः (तं) आपंत, दोस, तेत, प्रोत्ता, एवा, आधरं, क्रोप आरिका मुक्त सुरु । -हान-ध यहे योक्सी अवस्थाने निकत्रनेवाला एक स्वरू । -हा-पुः, अ दे क्रममें ।

क्रममें। हा(हन)-वि [सं०] मार काळनवाता नष्ट ६२नेवाळा (समास्तेतमें)।

EIKo-a < ,Eld 1

हाइड्रोजन-१० [अं] बाईबन ।

हाइकुक्तिविया-पुर्व (वं) इस्तिये होत्यका यह देश को रस रोगरे प्रश्व इस्ति हारतेश्वर महायो आहिये भी ही बाता है (रहमें तकते यह रोग है) कनतेह। हाइक्तन-पुर्व (वं प्रयोध प्रश्वर सेव रिस्कानरे किय करते थीनरे रसा वानेराका यह निह ()। हाइक-दि० है हाइक'

हार्बू-०क्षी टंब, परति, रवा अवस्था, परि पति । वि [६०] कॅपा। वहा ! -कोर्ब-पु० वदा स्वावास्त्र, प्रदेश वा सामस्त्री श्वत्ते वही अहासदा । -स्यूख-पु वह

भयनामुक्को अस्ति।-अञ्च-प दि॰ वरिवासक।-आधिकी —माविमी~खो॰ मगवान्ध्री भक्ति करनेशको श्री। ~ सक् (स)-पु सर्व (सदक् ग्रावेशका)। -संय-पुर गमिकारिकाः अग्रिमेश मटरा चनाः यद ग्रदेश । -०३-प्र चना। -सधक-पु चना। -संतिर-पु विम्नु-मंदिर । - सम्ब-पु सर्वका समि । - सेध-पु॰ सथसंबा विभुत्र । ~याम्~पुरु यस्य । ⊶योजध~पुरु बीहे वादना। रंद्र । –शेमा (मन्)–वि॰ क्रिएके श्रुरीत्वर श्वर रीरें हो । –छीका–को० यगगानुकी कोका। एक बुच।-सोचन-मि भूरो धरेबॉनाका। पु॰ केबहा: क्सा: यत रोगमह । -क्षोमा (मन्)-वि भूरे वाक्ष्मां ।। -बम-प्र अध्यक्षा बंदा। बंदरीका बंदा यक प्रसिक्त प्रेम को महामारतका चरिश्चिक है। -वर्ष-त जेंद् इीएका एक संव । ~बहुधा नती॰ करगी; गुलगी; कशाः अभिक मासकी कृष्ण एकारको । -शासक-पुरस्मा-सदा - बास-वि पीत वखवारी (विश्व) । प्र अभरत पीपत । न्यासर-पु पद्मावसी। रविवार। -बाह्रक-पु दे 'वरिवाहक । -बाह्रम-पु० गर्दा रंग्रा मूर्व । −बूप −पु इरिवर्व । −श्रयम −पु विश्वका स्वन । -सम्मी-की आवाद-शुद्धा वदावशी (दिप्पुडे धोनेका दिन) । −श्चर~पु• धिव । −श्मश्च~पु• दिरम्बाधका एक पुत्र : वि. भूरी वाहीवाका । —संखा∽ प्र गंदर्भ । - पेया-पुरु दश्वें गलुका दक पुत्रा जैनोद अनुसार भारतके दसर्वे श्रद्धवर्ता । *—संब*र्श्वल∽५० विभ्यका ग्रुपकान । -सिद्धि-को यक देवो । -सुच-धर्जुना प्रमुख्न जैनोंकै धनुसार भारतके दसके पहरती । –सुनु−3 अर्थुन । –सीरम−9 कस्त्री । −४य-त देहमा पीका क्षेत्र स्वीत्वंत्र यथेश !-हर-पुरिभावीर दिवा एक नदी। - श्योक-पुरु तीर्वस्थान को सोनपुर(रिवार)में वे और नवीं कार्रिकी पृष्टिमाको बहुत बहा मेका क्यता है। – क्रुटि–की ध्यम् । –हेवि−को॰ ध्यमुन्। निम्नुका कड़। ~०<u>ष्ट्रति∽पु</u> वस्त्रकः। इति#-म पोरे ! -इरि-म पीर-पीरे माहिसा-व्याहिरत १ श्वरिक्षर्व-दिव इस्त । श्वरिधरामा = वन कि र दरा हीता। शरिक्षारे - को शरिवाको शरे वनस्पतिका वट हरी बास, हरे पर-वीशीकी राधि। इस रंग । श्वरिक्षामा÷~भ+ कि धरे रंगका द्योगा, दरा द्यांनाः नदान का दर दासा। दाना दीमा। भानंदित मसल दोना । हरिश्रासी-ची दें॰ हरिशरी । हरिक-पु+ (ते) पूरे रंगका भीता। भोरा जुलाही ३ इरिकासी-५० हे (स्थस । इरिचंद+-इ दे दरिवर्धाः। इरिकाई - विश्वी देश बरवार्थ । इतिक-१० [तं] यूप, इरंग, दिरमा दिया विष्णुः स्वीत नेवका देशा एक कारत विकास एक सका यक आयासका बोबापन किये सकेर रंग्य पांडुवर्ण । विश् पीकापन किये

- चर्म (न्)-५ सगमका । - धामा (न्)-५ बंहमा । -मयना,-नथनी,-भग्रा-को । इरिप प्रक व्योदीक्षको को । ~ अञ्चल-५० किया । ~ पुरुष -४३० एक वर्ष समवर्ग कृषः। -क्रम्राम,-स्रोप्टन-मु संस्था। -छोचना-सी॰ दे 'हरियनवनी'। -क्रोक्सभी सो• दरिण सेवी चंत्रक आंखोंनाती स्रो । -हर्य-तिः दरिक्के समान भीव हर्यवाका, बुवदिक। हरिणक−प्र• (र्ध•) क्षेत्र विरव । हरिर्व्यक−पु[सं] चंद्रमा≀ इरिवाध-५० (सं०) वहमा । हरिव्यक्षी-सी॰ (सं॰) दे॰ 'हरिजयदमा' । हरिवाभिप-प [छं•] सिंह। इरिकारि-इ [सं•] सिंह ! इरिष्यम-५ (सं०) वास्र। इतिकी~सी [सं∘] मला इतिक सुगी। इतिहास र्वा स्वर्णकृती, श्रीमञ्जूषी मुनिष्ठा, प्रशीक विषेति कर बेटील एक किसे विकिती कहत है। उनमी, हरूमी संबरी की। यह वर्षक्या स्वयंत्रीया ! "स्त्री।" बसमा-सी नयी बंधी वेशींदाशी सी। हरियोज-प्र [सं] हिंद्र । हरिक-वि [सं] बरा। वाजा। भूरा। पीका। गहरा मीला। तुर हरा रेवा भूरा रेपा रव रंगोंका परार्था एक सुमरित पीना, स्वीचेयका सिंहा कानमका यस प्रश्न महस्र ^{६६} प्रमा मुक्तारस्का यक प्रथा रोहितारस्का एक प्रमा सरावे वन्त्रंतरका यह वेक्वर्या सोमा। सब्द्रो आहि। रांड रीम र्यक्षाच्या तथा। ~कपिशा-वि वीसायन क्षिते न्ताः! -शोसव-पुतामा गोपर । -च्छन्-विहरी परियो वाचा । ~चाम्ब~द कथा अब (वी वयी दश म हो)। ─नेमी(मिथ)~ि विसके रवदे परिय स्वपंके ॥ (दिन)। -पश्चिमा-क्सा-क्षी॰ पानी, मरनवर्षा। −प्रभ−वि विश्वचा एंप पीका पश्चमा का भंदा। -भवज-९ सम्मारीक्येदग।-मनि-५० भरदत। -साक-द किया - इरि-द स्वा हरिकळ-प (सं०) भारत इसे वास I इरिसकी-सी वे 'वर्गतके । हरिता-को [लं] दुर्या। नीको पूना हरिता, दक्यी। कविकहासाः नर्वतीः पात्री ह इरिताहम(न्)-१ [सं•] यरस्य यनि, पश्चा सूर्विशा। इरिताइसक-पु॰ (सं) मरका मनि । हरिसाधा-वि [मं] विगक वर्षक थो इवाका (सर्व) । इरितापक-पु (सं०) मर्कत । हरिय-वि [थं] दराइ पीका विवक्त दश विविध योख्या । पु इता रंगा पीका रगा विगव वर्षा सूर्यका एक बोहा। मरहता विश्वा पूर्वा शिक्षा मृशापाछ । और इस्त्री। दिल्ला पून पास । -पति-त दिस्प्रीत । -पर्ण-५० मुखी । इरिहॅबर∽रि [छे॰] रोका था इटा इक्ट पारम करने वाका । इतिकृष-पु [ध॰] स्पी अर्ड इस मरारदा देता सपेट बुरा, बांद्र रंगका हरा। -कर्मक-त -बहमा। हिहिन्ने हरिहने-त [वं] हरे रंगका क्रम ।

भेंगरेभी स्तक जिसमें मैडिक्टककी पहार्व बोती है। हाउस-प• [अं•] परः निवास स्थानः समाः शावरीत । हाऊ-पु छोडे नक्षीको वरवालेके किए एक सलार्थन बरावन श्रीबद्धा लाग भकावें, बीवा । शॉफर-प [अं] फेरी मतके छोटी-धारी वसार्थ वेक्टे बाषा व्यक्तिः मूम-मूमक्त भवागर नेपनेग्राहा ग्वस्ति । हाक्ज-प्रसि∘ी एक माधिक छेता। दावसिदा-सी सि रिक वर्णवत्ता हाकसी-सी॰ (मे॰) यह वर्णका । शाकियी-सी॰ (सं०) शांत्रिकीका एक देशी। शाकिम-पु (w ·) तुरम करनेवाकाः धुकुमत करनेवाकाः चानका राजाः प्रधाम अभिकारी माजिक । -(मे)बाखा-प्रशास अभिकारी वहा अकतार (का) देशवर। =पत्रत=प वर्तमान शासका सम्बाधीन राजा। —के क्रचे-नर अफसरके जीवर-वावर को विना भेंड प्रवादे सरके प्रस स जाने हैं। हाकिशामा −वि शास्त्रिमके जीताः अधिकारीन्द्र धोम्ब । (-वंग क्रद्रजे।) हाकिमी-नी <u>इक्</u>तरा अक्सां । विश्वासम-र्थाः इन्द्री-सी [अ] एवं अंग्रेगी श्रेष्ठ जिस्में देवे श्रेष्ठे सदारे गेंद अल काते दय मौक बरते हैं। हासत-स्रो [अ॰] बाररवरताः मगलः रच्छा वारा शीच माहिका नंद। इनाकात ! - प्रवाह-नि मुद्दाका माथी। - मंद-दि क्रिन्त कामान, जानवरकता की सुद तात. इरहाकः। -इद्या-दिश् शानत पूरी करनेगरणाः। ~स्वाई-की बसरत पूरी करना, विश्वीका काव तिकालमा । स० -१९डा करना-दावत परी ६८मा पायाले पाला । हाजती-सी वह बरदन विसमें नेमार भारपार्थस पढ़े पह वेद्याप कर की शावको अमीरों के प्रथमके वास पेकार करवेके क्रिय रचा वामिशका गरवन । पुरु पन्धेरा मानी । वि दायसवासाः दशकायो । हाजुला - पु [स] हमम बरने, प्रथानेकी ताहरा चयन ह मुक - खराय होमा- विरादशा-गापन-दिवादा क्रीक सरहरी म होना फुलन-प्रक्रिका औक तरहर काम म GOT I शास्त्रिक-दि (स] परिता कुछक नित्रम । शामिम-दि [थ] श्रम बर्ब, प्यानेवाण ! क्षाकिर-वि॰ (स) जी शामने की जन्मरेशत धीजका प्रस्तता देवार । -जवाब-वि यो वातक हरत सवाव है, बिसे बाउका गाँउबा, बनाबीव्य जबाद शरत शह कार ! - जबाबी-की शावित धनान होता, नामका तरत वहिंचा चनाव धीव क्षेत्रेकी शक्ति : - ब्रामिन-प्र वह नी किसी भारमीकी अधावनने बाजिए कर बेनेul क्रिम्बेरली है। -क्रामिशी-की शाबिर वासिन होना शबिर कर देनेके किथाशते । -मामिर-वि भीत्र और देवनसमा। -याग्र-वि मा विशेषे भास दिनीको छेपाने बरानर वर्द शानिसे बनानेशामा । ~पाशी-भी दाहिरराम होना संरव वपरिवर्तिः इत्यारक्षारो । म - से इन्यव नहीं-में इस भीनत है

निमा बीका बुक्तकों बाजिर है। दाविराई-प् ओशाः बादमर । हात्रिरात-की क्रिको अनेक भेतासाधीका वह साव भागादन, जिन भगनीत दावादिनी शाहितीका क्यान (बरमा क्षेत्रा) । शक्रिताली-प शामिरात करनेवाका ! हाजिरी-ओ॰ उपरिपति भी दश्मी। शाजिरशामी। धनी-का साना। अंग्रेजीका नारता। वह साना जो मुद्रेके रहन किये आमेके बाद यह अलबे कर दिवांचे जिए होता उन (सस्छ)। मु॰ -हेना-हाबिर होता क्वरिवरिग्रे स्वमा हैमा । -प्रशास-दिसी वहे भक्तरीचे प्रशासक क्र रहमा, ब्रह्मारहारी करना । —संमा-नाम प्रधारम छात्री सारिक्षी ज्यस्तिति मान्द्रम करना हिसाना । डाहिसीय~वर् (मर्थ) 'शकिर'का बद्द । (सभा धारिते) स्वरिश्त वस मोतवंडको । -(से) अखसा-त समार्थे क्रवरिश्वत समसमास । शाक्षी~प क्रिको इ.स.सल्लेबाक्या वह को इत्र **६**८ पद्म हो । हाट~थी॰ गवारः भाषार कमनेका दिनः <u>रक्षा</u>न । सुरु -करबा-एडाम बरमा, किसी शाबारमें रुकार श्रीत कर वेचना, खरीरमाः वानारमे सामान सरीत्या। -श्रोकमा-दुश्चाय करमाः दुश्चाम क्यामा । -सह्या-बाबारमें दिवनेके किए जाता । —बाजार करवा—धीरा धारीर नेवे सिम ना बार बाला । - खाला-ना पार, १६४ में नेपमें किय ची बीका संवादा नाना है ब्राइफ-वि सि रेश्वविदिश स्थानिया प स्थान सीना। पणुरा। बुकानका निरामा। एक देश ! -विदि-प्र सुपेश । -प्रश्-प्र (स्वयं(तमित) अंदा । -छोचय-त्र विरम्बाधः । हारकी-ची [सं] बगोबीयचे १६ नरो। बारकीय-वि (सं) रवपीमध्ति । शारकेश, शारकेश:-प्र• (सं•] बीशवरी नरीके तरवर पुतिस श्रीनेनामा रक्ष शिवांक्ष्य । हार्यः २-५० वर्षाः स्टमेनदाः । बाबा-१ व्यवित नारिको रह प्राथा। रहा । शाहित्या-धी वि देश दहिना ! शाबी-बी॰ क्याबा रे बर्दे जिल्हा प्र व दहसा नमसा MAXING E प्राप्त∽वि० भिवी धोश दशा, परिश्वस । हातथ्य-दि॰ [तं॰] छोड़ने, लान बरने योग्या पीरी धोबे बाजे बीग्य र बासा-त वे "महाना"। रोक्ष ३ वि० परित्रपम इस #1:3**%** (शांतिस-प० (एं०) भएवडे ते बनोबेदा यह गुरार ने दान्त्रीकता और परोप्तार-परावधतावा भारमंत्रा माना अभा है। वि अपि वानक्षीका क्षति प्राप्तारी। 5 वर्षः बस्ताद । -साई-पु दर्शनमा दर्शतमकारेका विश्वा । स् • • • को क्रमपर काल सारना • रानधीशता वा परेट कारमें शाकिमने पर बाना ह शास-प॰ (सं) धरता सरक्ष ।

इरिहेतावक-पु [सं] इरिहा।

हरिप्रजनी-की [चं] हरिद्रा। इरिज-पु [सं•] पोक्षा पंरन । इरिवर-५० [सं•] प्रेका चेरना वस मागासुर । इरिज्ञांग-प [सं•] इरिताक पश्ची । हरिता-की [सं] इकरी। इकरीका पूर्वी एक नदी। रंगने गणेश । -प्रसेह -सेह-पुष्क प्रकारका प्रमेह, विसमें बढनके साथ प्रेंका पेदान होता है। -शाम-वि किसका मेम इक्टोंके रंगकी तरह जस्वाकी हो। पुरु बस्थाची प्रेम ।--सागक-निरु देर 'दरिहा-राग । हरिमाक-दि [सं] हरिजासे किस, इक्ती पता हथा। इरिहास-दि [सं•] इक्टोके श्वका, पीका इरिब∽द करंग यूग! हरिनाकुस#-पु दे हिरण्यबद्धिपु'। हरिनाधा हरिनाच्छ+-तु दे० हिरम्यात् । हरिनी-को एवी। - हराश-की दरिवनवनी। इरिस्मवि - प्र [सं∗] मरकत मणि, पदा । इरिन्सूत्र-५ [चं] सारर स्त्र । इरिसा(सन्)-सो • [सं] पोलायन, पाँतुता इरायन। त सम्बा हरिय-पु [सं] पिंगक वर्णका बोका । हरियर = - वि दे हरियर 1 इरिपराना≉∽व कि दे दरिश्रराचा'। हरियार्ग -यु॰ हक्ष्मका ! हरियाईक-को दे हरिकाली I इरियायोधा-पु तृतिवा। इरियाचा−भ कि॰ दे इरिश्राना । पु स्वान-विभेव । हरियासी -स्रो दिशेकी एक वोकीका नामः शैंग कः बाड रोको। हरियासी-सी दे हरियानी । स -स्वाना-(प्रानः भूमरे) सुद्ध ही सुद्धा आभाग होता। हरियायी - पु पूछक चाँरनेका एक निवन विसमें बनी दारको ७ भीर दिलामको आव मिकते हा। इतिका-प हारिक प्यी। इरिड−पु [सं] एक नहीं संक्या (नी)। इरिक्चंत्र-इ [सं] धनायुगढ न्यंश्यक्षे १८ वे राजा (वे विश्तंत्र ६ १४ वे वे वेश अपनी बदारता तथा सस्य शारिताके किए प्रक्रिय में जिल्ही रताने किए स्टॉने अपनी धीकी नेना स्वयं दीमको बाग्रशा स्तीकार को भीर पुत्र शाहितायके मरनेपर श्रम्बासे करके रूपमें बस्रका भाषा भाग चहुवाकर ७ (क्या)। वह किंग । हरिय-प (सं•) इतं, प्रस्तवता। इरिस-क्षी इतको बहरूंकी अक्षी विस्ता एक शिरा इक्को फाइनाको मीटी कहतीने संबद्ध होता है और बुमरा बेबोके जुण्हे । इरिमियार-इ इरस्यिर परजाता । इरिहरात्मक-तु [धं] जिस्हा प्रयागस्यातमा । इतिहाई - दि भी दे 'हरहाई । भी बदानांदी परेग्रान स्ट्रनशको प्रशुक्ति ।

हरी-सी [सं•] एक वर्षपुष्तः वंदरीको माताः # नमी दारको दी जानेनाको एकको नेपार । # प दि दरि'। हरीकसीस-प्र १० 'हीराक्टीस' इरीकेन∽पु [बं] वर्षडरा एक तरहकी काकटेन । इरीक्ष्रणा-सी॰ [सं] युक्तवती। हरीचाही - की सुगिवत अक्वाका एक एंग, मंबरुम । हरीत~पु• परेवा ì इरीतकी-सी॰ [रं॰] वह, दर्रका रेड़ इस पेड़का फरू, हरीतिमा—खो॰ हरा रंग, हरियाओ ! हरीक्र-प [ब] हमरेशा प्रतिष्ठी करनेराला, धर । इरीरा-प्र• जि] सूत्री जारिको दूपमें महादर बनावा हजा मीठा पेब । हरीरी-सी १० 'हरीरा । इरीको -पु+ द शारिक'। हरीश-५ [र्थ] बानरीका राका, समीवः बानरीमें भेष्र, इनमाम् । हरीया-सी॰ [युं•] मांस्का रह स्थंतन । हरीस-सी॰ हे 'हरिस'। वि विशे हिर्स करनेशका. कोगी काकबी। पेट । हरूभ, हरूभा, हरूबा#-दि+ हरूझ-'ऐसे हरूपसे पत्थी करा बान गम गाम'-रदनहनारा । हरुधाई इदयाई - सी इक्यान्य हरुशाना १-अ० कि० इंक्स होनाः वसी दरता । इष्ट्रप्रक न भीरे भीरे इक्केन्ट्रक है। इस्टब-प्र [सं] वक्ष वही संक्या (वी)। हरू-वि दे इत्रम'। इक्क-९ [म] हर्षं का बहुबबन । इरॅंक-अ १० 'इस्य ।-इरॅं-बर भीरे-शेट शंकेशीके। हरे÷-म माहिस्ते भी दे ही है।-हरये≠-म भी दे-भी दे बीड बीडे । - बरेब- थ० चारे-मारे। राम ! राम !! देशी नात सहते हैं साप ! प्रोक−ि दे शर पक्र । हरण-ध्यी [तं] बब्दा वोनंदे (गद्यी दरियो, क्षात्रदश युगी। कुलसी। मामदी हर सुवित दरनेराकी बता। रेणुद्धा जामह वंशहम्मा छहा द्वीरधा यह नाम । इरोगुक-प [र्थ] मररका रह भेर कमान । हरेरी !- धी दरिभरी, सम्बी। हरेप=-प्रस्थेष आदिः मंगोक रेख । हरेबा-पु॰ हरे (महा यह एक्की ह इंटिन्म व विदेश - इंटिन्म दे विदेशका -' "इटर्र इट इटिनी व्य रीवे - प्राविकास। इरेमा~ड इसका वह मान बिसमें नीनेदी ओर फाल क्याते हा रेक्यारीका वह भाग या प्रायनेकी बार निवस्त रहता है। इरीया - न दरम इर-नदाकाः दूर दर्शनाकाः। इरास्त्र इरीबार-पु रे इस्तर । हरीती-भी० दे दबदग'ः nu-g te ern i इतंब्य-वि [सं] इरण इरन वाम ।

हाख-प सि] देवन, पारिशमिकः। हाथ-प के इस्त'। बार करनेका बना वास कीवी आदि राक्ष्मवाकाँकी वारी, दाके दस्ता मुठः वर्मवारी । -बंदा-प॰ दे॰ इमस्या । -सोव-प करतीया वक् दार्वे। —पाम-पु॰ पासके आकारका एक आभूगव को हामके पंथब कपी भागपर पहला जाता है। -फुल-प इधेकोडे कपरी मायपर पहलनेका फूक्स बाकारका प्रद्र ग्रहमा। –वॉड−को एक तरहकी दसरत । स• -अस्तिस सरामा-बद्ध बाहर-सम्माम करना (कारी-मरोकी प्रशंसा साविके समस्पर्यः) ।-आगे करमा-किसी क्षातको केन या देगेके लिए हाथ बहाना !--भागमाना--किसी कामके करवेमें अपनी कारीमरी शक्ति आविकी बाबमारय करता। -श्रामा-वसमें दीना वर्षिकारसे रोबाः कावदा शांना ! — बरा उरावर कोसमा— बासमानको ओर दाथ करते धुप बहुत वदसुमार्व देना । -दरा उराकर दक्षा देना~मसक्ताप्रदेक शाकासध्ये भीर शाम वढाकर आशीर्वाद देशा । -तकामार हेमा-स्थेपक्रासे फिलीको अन्त देना। दान देना। (क्सिक्)-जडामा-क्सिका श्रमिवादम क्रमाः प्रमाम करमा नगरकार करना । (किसीपर)-द्वसमा-दिसीको साहित करमा, मारमा । -दरा ग्रीहरू - किमोको सार बैक्साः असहयोग वस हेनाः निसी काममें सहाबता हैना पंद करना। ∽उटा क्रमा~है• क्षात्र एका बैठना । -- जसरका-हाथ क्यावना, हामनी हरीका स्थानभ्रद्ध होता ।-ऊँचा करणा-स्थीला होता। क्रिती के किया पूजा करना क्रितीको आधीर्माय देना। -क्रेंबा रहना-बधीश होना देवेच कारिक रहका। -द्वा होना-राजी होना। रावश्विकी और कमछ होता सचीका होता ! - ओछा पहला-हाध्यी पूर्व हाइतसे बार म दोना । −ओड समा−क्षेत्रों दाग १६दे देशका किसी भोजको जना । -कट जाना-विवध श वामा रेकान् ही वालाः किसीको किमी कामक क्रिय बचन रेवर नव भागा ! -क्या बमा -क्यामा -क्या क्षमान्दे+ दाथ दढ जामा । -क्रमा-ताच आहि सक्में बाबी भीवता :- क्रक्स करणा-पूरा बाध बारला। -क्रसम श्रीमा-पूरा शव *मध्या । -क्रा शदा-वपय* पते के सामक्षेत्रे कम-दैनमें जिल्लार किया स किया आव वरेमाय । "माद्र इमा-विवश कर देना वेकाव कर हैना। क्रिप्री हारा क्रिप्रो के किए एन अथन आहि विश्वासर वर्धे विवय वेकानू कर देना। -का विधा-वाम दिवा इबा। दान ('दापरिवा रूप भी पढ़ता हो)। --फार्मीपर रध्यमा-(दावस कामीकी एकर) बनाव मोनजा किसी कामको न करमा किया कामके करनम शमकार कर देना। दिशी कामक करनेमें अपनेकी विकास अवास दिसा-बाना । -का प्राप्त-पनभवध व्यक्तिके निए अधिक इम्पदा भी नद्दे भाग होता । −या समा⊸वध्येन्यमे के मामलमें छन देनमें विश्वपद विश्वास किया जाय रेमानदार । -को सळाइ-दिश्त, वा विदी आदिये रायमें बारीगर्धा अर्था निर्दार्थ नार बरनेबा अवटा भग्यसः। - के मार्थ आया-दिक हे प्रती हरसाः देशका. किमीके कावमें होता ! -को बाध मजर न आया-बीर बंगबार शीना । -सामा-गरबी परेटमें बालाः वार श्रामा । ~लाकी जामा~सर नादिमें दावें बाजीका न जानाः बार पुरुष्ताः इसका मानामयाव द्योगाः परित पाकाकी जपावका व कमना, न सपन्न होना । -खाळी व झोना-सममें व्यस्त रहना, सामसे असंत थ मिक्या। - प्राक्षी होना-दिना पैसका होना। -श्रीपना-दिश्री कामसे बढ बाना वसमें सबदोग म करनाः उम्य वेभा वंड करमाः शाधिक सहायता रीकना । ~लाबळागा−मध्यप्तातिको पूर्वसूपना मिळना' पपट बमाने, अपन बनामे पीटनेको प्रवृत्ति वाना । - लक्षमा -दानीम्मख दीनाः धार्थेका दीनाः द्वापदा जलनाः साम वेने क्ष्मनाः इक्षाट होया । - खोखमा-रान दरमा अब दार्च करनाः शाबादी देनाः तंनी न रहमे देना।-गरिवार्की बासचा या हेना न्दे नरदपमें हाथ देता'। -गळना-दाप ठिटरना अत्यंत स्पेत्रने दायस सद पर बाना । -गर्थमें शास्त्रा-समस्वस्थ्ये प्रति वेग प्रदेश स्टरवाः छोटेकी प्यार, दरमा। -चिस जावा-बहत परिश्रमधे कोई (हाक्का) काम बहत देश्वक करना। -चहना-द हाथ बाला । - बस काबा-भौरतीको सरह हाथ यहा हिकाकर पार्चे करणाः औरतीका शामको उँगविका देशे कर शाम विकासा एकवारको स्थापने निकासकर क्रिकाला । -- सक्रमा --किमीके बारा बाह्यका श्रदमी साथ किया जाला: किमीका मारनेको भार अधिक प्रदेश होना । - चक्काबा-दिशी क्षामध्ये मधी मोति करमाः मारना । - पुस्रवा-किसीके बाधको बारीमरीसे प्रभावित बोबर वसके बार्थको समझ (बरतुवा ऐसा दावा नदी (सर्व कदन है)। -हिटा होना -श्यक्त मारमध्य भारत होना ! - छटना - भारतेके किए प्रकृत होता मारनेक किए दान बठेगा। देगाहिक संबंधका विकास दोना । -छोदना~मारनाः वैद्याहरू संबंध मेरा करवा । - जक्या-तमामा समामा, बध्यन मारना प्रदार दरना यारना। - जनमा-समामा भव्यक प्राचा सदार दीना। दिली दामद दरनेमें हाबका मध्यस्य दीमा दिली व्यक्तिय दिसी हरतकी प्रश्ने निष्म, मनीत्र दोना ! - समाना - दे हाथ उदया ! विशो इरतकोशकमें शावक बम्बरतः विषय काचा विशी प्रश्वकीशक्ष्में कुशक्ता मान कर्या । शायका किशी स्थापेक्ट क्ट्रेंबमा । -जुदा करमा-वाहात्मा स्थाना । - जोच हता-दार मान हेना धमा मोव तना । "जोड्मा"मार्च प्राधास्त्रर होन्दर होनी बाधीका विकासन अधिवादय करणा समस्कार प्रशास करनाः प्रापंताः, अनुनव शिनय करनाः मारं १८६ किनोको पाच आहकर श्रमानाचमा करमा बरमाः मर्था विष्ठाः कर्ना (ध्यम्ब) । न्द्रासकत लड़ा हो जाना-गांधने यह पैछा भी व होतेन्द्र वान बरना है -शावकर ज्ञाचा-नद आदिमें क्या-वैका बारकर साजी हाथ जाजा । - प्रावृत्ता-दे पाइनर नहां दोना इसवायत अपन्त रहादा माहना प्रदार करना मार्ट्याद सबसे शुक्रार बन्न अस प्रसास

इतां(त)-प्र• [सं] एरण करनेवाकाः ले जानेवाकाः नष्ट करनेवाकाः जानेवाकाः काकुः चोरः व्यवद्वर अकग बरनेवाकाः दर क्यानेवाका (राजा)ः गर्ये । इत् −पु (सं•) मृत्युः प्रवाद पेम । इफ्रॉ−9 [ल∗] अक्षर वर्णः शब्द, बाद (शिकायदका क्कीः धन्यम, प्रत्म (ध्या)। गीवः वेश । -श्वाश्वाना-विश् अधार पद्यामनेवाका, भीतिस्माता। न्यीर-वि बीव निकाकनेवाकाः मुक्ताचीन । --शीरी-को॰ लुक्ता पीनी क्रिहान्वेश्य । -क्ष्प्रते-म असूर-मदारः अक्ष रञ्जः । स्व - मामा-दोष क्यमा । - बढावा- (वर्ष मारू। पहुँमेशाधेका) एक-एक कक्षारको पहुँकान और मोर्डर एतमा। ~पक्कमा~गन्ती प्रकाश शंक्रमा (सि॰)। -बनाना-संदर शहर क्रियनेका अम्यास करना। प्रापंत्रे परभरपर शक्य वा अश्यक्ष क्रिके त्रुप अक्सी-की किरसे डोक करना । -बंदामा-अभेके व्यक्त वोदना क्रेपीय करना । ~क्षाशानदीव कोकन क्याना । हर्ये - द [म] तुरः, संयाय । - नाह-तुः, सी अस रवस, रलभूमि । इयां-प्र• दे• हरना'। हर्म(मू)-द्र [धं] वैभाई। इसिका-सी [सं] स्पूपस्थ श्रीष्म बदम । इसिंछ∽वि [सं∗] देश हमा शिस अका द्वभा। बंशित । इसेंट-प्र• [सं] बन्धवः स्वं। क्षम्ये-५ (से] बहुत बढ़ा मन्त्रम महक प्राताहा अधिबुद्धा मंत्रकारभाग भरको वि सकानमें रहसे पाका । −चर∽दि महक्रमें रहमेवाका । −तछः − प्रध-५० महत्त्वको करस्को संजिक्त वा क्रम । -मान् (ञ्)−वि सदक्षमें रहनेशालाः –शक्रमी−सी॰ वे (म्पेटस') ~स्थळ-५ वे दर्गतक'। इ.स. क्यूबर-नि. [सं] स्पेनसमें सत्तव (विसक्ता निष (te 2) : इयोध-नि [सं] भूरो ऑस्ट्रोनाका। तु सिक्त विद राधिः करेशः नंदरः एक रोगमदः विका एक अञ्चल प्रश्रद्धा वस प्रमान हर्यत-प्र [सं] भीवाः क्यानेवके प्रवृत्तः भीवा । इर्वेश-पु [तं] देहका भूरे रमका श्रीवृत्त देश थिया -पाप-इ रंश्यत्रम्। ह्वांत्मा(रमम्)-पु (सं•) व्यास । इर्र~का॰ इर्रा−9 ; इर्रे~को वर्ततको । सु० = इसे स्था म फिटकिरी और श्या श्रोका होगा-वेंधर्नः । के बाग रम वाना ! हरिया-ध्यी हरें भेते वामीतामा बाधका वक वहमा। कडेडे छोड़ीश्रदा दाना । हुचे-तु [र्शन] मिन पा १३ वाट्रा म्यक्ति अधिके देखने क्षत्रके निषयमें ग्रानने। पाने जानिने बरतम बीनेवाका एक ग्राग्रासम्ब भार, माना, त्रसंबद्धाः रोमीव रोपरीका धना बोमाः रह धंनारी थार (शा)। बामाचेत्रमाः utift famil de nitel denen ale Anige ta वर्षत्र। -कछ-कारक-विश् मसम् वर्शनसम्।

मानाम भानरसे घरांची दुरे ही सहरहंठ। -वर्ण-वि॰ व्यानंत्रमथ । —चरिस-प वस्पनदूरिक सह गमनाव्य विसमें समाद इर्चनर्द्धनका परित वर्षित है। —पद्म-विक मानंदरी कॉफ्टा हुवा। -ज-वि दर्पने अरवात । पु शुक्त, बोर्म । -शह-विक मारे गुक्री है मध्यत् हो जानेवाचा । -शाम-पु शानदपूर्वत रिश इना दान । --दोश्रक-९० क्रमक १५३३ । -धारिका-खी॰ एक ताळ (संगीत) । —क्यति~सी -माद-९० आनंदाविरेक्से की मानेवाको भावाम ! -- किम्पनः-निस्पन-पु दे॰ 'हर्गनार'। -पुरी-सो॰ एक राम। -साक् (क्)-वि॰ प्रत्य। -पर्श्वम -वर्षम-वि• हर्षेकी बहामेगाका, जालंदवर्षह । पुर निकासकी साध्ये श्रवीमें दीनेवाके मारवके श्रेतिम छमान् (पीमी वादी हुमन्सम् सन्दोके राभावकालमें भावा था। वे समंबद्ध में भौर सुप्रसिक्त संस्कृतकानि गामप्रदुकी भगनी शामस्था में रक्षा था)। - विषर्भन-नि शानेद खानेतामा। -विद्यक्त-वि॰ भानंदविभोर् । -संप्रद-द १६ मकारका एडिएन । -श्रमस्थित-निर्म आनंदनक । -स्यम-द शार्शरथनि। हर्ष®-नि [र्स+] जानंददायक, प्रस्ता करनेदाला। रु• यक पर्यंतः विषयप्रका यक प्रथा क्रिञ्चनाम-पंज्ञका सर्व रामा । इर्थक-वि [सं] कानंदरायक प्रसन्नता व्यवह हरने बाका । प्र मध्य दीनाः रीमांच होनाः मानंश कार बेबके पीन वामोमेंसे एका भारतिक्षेत्र आहरा एक देशवाः व्याप्यका रक्ष रोगा रक्ष योग (स्वो)। श्रिरनीः श्रेष्ठम । इत्वीय-दि (छ॰) व्यवस्थायकः। इर्पना १ - मा कि आनंदित होना प्रसन्न होना। इर्चमाण-सि [त] इनेन्छ प्रस्ता हर्वशिलु-विक (तंक) हर्ववाहीक आनेदरायक । प्र धीनाः द्वा इप्पुरिक्य−दि० [र्स] बस्पेदनिद्धसः। इवांतिसव-५ (चं॰) भागराविरेद्ध (ह्यांका-थ कि १० वर्षमा । त कि मानीहरू असध बरमा । इयांत्रियस इवांतिक-निर [मं] मार्नरपुक्त प्रस्थ #र्योक्स∾प्र• (सं•) आनंश्से मिक्ष्णे द्वय धॉम्, आनंशस् । ≅र्विची-ची० [मं] निवना । क्रिया-दिक [मंत्र] कहारित, महत्रा प्रशा क्रिया दुआ। रीमांनिय किया द्वथा । पुत्रसंप्रज्ञा । हर्सी(चिन्)-वि॰ [मे॰] प्रस्तवा प्रभन दरनेवाना । प्रचित्र-भी० (सं०) प्रचविध्य । हर्षेड-वि॰ [मं०] मत्तप बरनेवाना । प्रश्नीक-वि [मं] एवंपद्मीत, प्रमुप करनेवासा । पुरु (इरनः कामुक, मनवी । इचुंग्या-धी [मं] वह बदधी मिसन्दे वाही हो (रेपी कंडब्द्रे विश्वास्त्रे अबोध्य समन्ते जाती 🔯 ह -कीसक-इ एक रतिरंद । -गाइन्-विक मिससी (हुपीरकर्व-प [सं] इवका अप्रेटियम्य, सामेरप्रियक्त ।

-अस्ति भागा-१०'हाथ दिकाते माना ।-अद्धापक्षाः, - मठा होना - राथ सच होना । हाथका काम करनेके योग्ब न रहमा; बार ग्रासी जाना । - ब्रस्ट सामा-हाथ ट्र जामा दाथका दश शरह दर भागा कि वह सकते क्ये ।-देखना-सहारा, सहाबता देशा (प्राय: प्रारोहिक शक्ता) । -रेकामा-मावः सारीतिक (शब्दा) सहारा स्थावता अवस्थ हैमा । -शासमा-कोई काम कामम बरमा। किसी कामने बचक देनाः इच्य आहि सहना । - बोधाये जाना--रश्वर खात वाना । -र्थत बोना--वर्ष-पश्ची दुनी होता ! -सवा-किसीके वरीते रहमा, दिलीपर अवसंवित श्रोना । -तिशामा-शस्त रेखाविषको भव भविष्यक्षे संवेषमें जानकारोक्षे किय शाय-की रेटाएँ विद्यालाः देवडी मानी विद्याला । -क्रेटला-भंत भविष्यक्षी नार्वोकी वक्तानेक क्षिप हस्तरेंका हेकाशः शांधी रचना । -चेमा-स्टाम्सा देवा सहायक दीनाः बयन देना (बारबह होट समय क्रीय आयार्वे हाथ मिका केते हैं)। नामी कमामा। जुना वार्विद्ध देकमें बाबी ब्रारमाः मारवर पीटनाः स्ट्रमेखे किए र्यापा करना । -धरमा-श्रदारा देना सहावता करनाः रहाः कालार विभोद्धां कार्य कारामं शिक्ता शास काला। पामिमहान करना। ~धोका वीद्यं वहना~बी-अवसे किसी काममें (विश्वपदर दिसीका भनित कामेर्से) बार वाना । - घोषा.-घो ग्रेटमा-धा देवा, बो वैदना । (पर उपर) - म घरने, म रखन हमा-शतीर स बाबा किसीकी बात स मानना, स्वयं नातकर का रहना ! -पक्षत पहुँचा पक्षमा-थोगी सोरिभावत वा वानेसे ही पहुत हिरुप्तिक जाना। श्रीता छ। सहारा विक जानेपर भवित्र प्राप्तिका अवसर होदना (वे 'उंगकी के हु में)। हाथ परना । --पक्षकी साव —पक्षवमा-- हे करमा -पददेश साज रचमा-स्थिती वनन वा मानव देशर करका निर्वाह करना । - वष काना-स्नि परिवास, प्रवास मी ही दिली बरहुदा मिल वानाः चोरी हो पाना । -वहमा-दे 'हाय थान। इन्हा काना । -प्रथा तके स्पना-स्टब्से प्रता विक्षेपर विश्वेष था बाबार अस्टाव हा बाजा पुछ दरने कारक व रह यामा। क्रिये प्रत कामको प्रकार रोक देवेके क्रिय राप्त रिश्च होना । न्यर फरामा-यर सैमाजक या गंगामधी रक्ता-किलेको उराव नवाक क्सव विकास । -पर वाता पालमा-मधने धावके माध-कीरे पंतीस अच्छा म होने देगा। अपने हाबस चार्टक नक्ष्मी बरना । -पर चरा रह्मा-बिसी वर्तका विसीके धनेदे क्रिय प्रभार कीमा, तेवार रहमा । -पर घरा तथा होता-दिसी बस्तुना बर वस पास का नेपार रहना : -एर भाग सेकामा-जान ओपी जावसा प्राप्तको संक्रामे दावना । नपर शाध चरकर वट प्राचान विशास हो बाला । -पर हाथ परे बैदना मा बडे रहवा-३० कम य करना निकाय होना, भाषती होता ह -यह हाथ महिमा-बाब्ध हैंचा दरमा नानी अगाना । - वसारमा-मानना नरमा ्रभोदनाः विद्या बोदनाः - वसारं ज्यमा-स्य इत्यासः ।

दिमा इछ किये परहोद्ध जाना, इस बददने खाला हार्द वामा । -वॉव कडवर्से होना-हाव-वंदस सम सन्द बाव-देशका कावूमें १६मा ! --पाँचका प्रवास देश-पाँचका हारमा-नीमारी वा बढावरगढे कारप शक र्थोनका काम न कर एकना। मस्तरप्रधा वा नदावेडे धरत यरीतका काम करनडे वाध्य स रह बाला। -वॉब चसमा-प्रयोगी होनाः प्ररोहते अध्यता स्वता । - वान चलामा-व्याय करना, दर्मश्रोक द्वीना। -पाँउ ओबना-गिरगिरामा । -पॉप सडे पर जावा-शर-पाँचका नेकाम ही जाना काम करनेके बाम्य ज रह जावा । -पाँच रहे होवा-माशास्त्र होना सव होनाः सर जामाः अस्तंत भीत होमाः रतम्य होनाः सर यार जाना । -वर्रेंब शैयार होना-स्वानाम हारा हार-पाँच या घरीएका तंदरस्त, पह होचा । -वाँच प्रवस-रामपेरमें समस्याहर होना। -वाँच निराहवा-क्सीरको सब मीटा ठाव। बनाभा। बचनी श्रीयाद राहर होनाः अधिकारसं अधिक पाइताः धरारदः देशका करणाः -पाँच परस्या-तरप्रशामा -पाँच पीडमा-व्यर्थ प्रयस्त करमा, बदावरे कार्यप करना । -पाँच फर्समा-श्चितिसे पश्चा जाना । -पाँच केमामा-ज्याति करनाः कार्यभेष बहाना । -पाव क्यामा-दिसी बद्ध पार्ट माहिस २०६८ रचया -पाँच सारखा-देश्मेमं हास-पेट हिलाबा, पहासी खर साविश करमा, यह छत्रते हुए भी प्रवस करता। गृह काम करमा। येवा योज मारिते प्रश्नाना, एरपराना । -पाँच रह जाना-हाय प्रेंट्स अस ह काला, शर्क परिका रेकार हो जाना। -पॉप सँमासमा-हतर पश्चि बद्धमें इत्सा रोद्ध्या। -पाँच शीधे बरना-धीषा बट्टर बाय-संबंधे साराम हैना। -वॉब हारमा-निष्मुख दीना। निराय होना। साहग्रहीन शैना । -पाँच दिखाना-दे शनवान याता'। -पोड करमा-विराह दरमा । -ईक्ना-तर मानिके सक्ष्म अपनी पारीपर कोडी जाना आर्थि पत्ना । - चर हवा-दिशे वस्तुको पुरा वहा हेन्। । = हेन्या=पार में किसीकी चीड का किर सहकाना आइन्यार करना। वश देना । -श्रम्यमा-वापमा बरना । -पॅश्नमा-घडायवा देता, घडवाय धरना । -बंद हामा-बें बाब संब ब्रोमा । -क्ष्यामा-भाजान्य रोनमा बार बनाना । -यहामा-कोई नातु क्या पराने महरिके क्रिय हाप भाग परना, चैकामा: अपने अविनार - इस् अपनी सीमारी अभिक्र गरेनमा, बाजा । - माँचे खरा रहमाः-पाँचे रहमा-दार बाद घरा रहमाः सर्वानमुख रहना, सिन्यवदे हिंद दर १४ देशर रहना। (किसांक) -विक्रम या विकास-विक्षेत्र ग्रीत वस होना विवध को दिशी है बहते हैं अनुपार बाम काना। -बेबबा-यश्य बेबर विक्षेत्रे कुछ रेमा । -धरना-हे हाथ प्रयोग^हः —धरका वक्षमा होना-४६४ सुउ क्षेत्राः सक्कोतः विश्वका यह कामा । -भाको प्रवास हामा-बहुबाधी हाना. अताम रीना। याच हात हा काबची होगा। -मामा-हाद ५६ना दान ६८४

इपॅरिकुलु−दि [सं∘] इनंते पूका हुआ । –क्रोचन− वि विस्ति नेत्र भानंदरी खिल दुर हो। इसी - १० हे॰ 'इरिस' ।

इस्त-नि [एं॰] प्रिप्तके शंवरी स्वररहित व्यंत्रन यमंदी।

इक्र−प [सं] श्रेत बोतमेका एक बीजार कांग्रहः मुमिन्धे एक मारा शत्रारका एक देखा वाका, मतिरेका कुरूपता भदापना एक मध्यपुंत्रा एक शका पैरका पक भिद्रा सुनशा, क्लिश्च । -क्ष्मुद्-पु इक्ष्मा नद माग असके भीचेके हिरसेमें पाल बहत है। -गोलक-पु एक तरहका कीशा ।- प्राही (हिन्)-वि॰ इस घडाने शका। -बीबी(बिन्)-वि इक्स सहारे बीविका चनानेवाका। - जुता-दु [वि॰] इक धोतनेवाका क्रियान भाषारण कृतका नेवार जानगी। -वृंश-<u>व</u> इरिस । - घर-प बकराम । -पता-प परिश्व । -पाणि-दु क्टराम । -भृति-दु शंकराषाये । - अप्ति - स्रो प्रशिक्षमं, किसानी । - स्वा-प्र १४वर । -मार्ग-५ अवार्रसे वनी दुर्व स्ट्येस क्रिंग - मुका-पु पाक्ष। -सुक्षी-की शक्क वर्णपुत्त। -रद्-दि इक वैश्व देवींबाका । -राक्ष-प्र भाइस्य । -वंश-पु रारिस । -पाइ-पु (हि) इक बोतनेका काम इरनराक्षा ! - बाह्य - सी शुमिकी एक प्राचीन माप ! प [कि] इन्तरा - इति-की अनारी

इष्ट-पु • [न] सुबना सुबहाबा वहिनाईका हर होना। बुक्ताः ग्रमितको प्रक्रिकाः स्वाक्तः ववार । सु०० करता-सक्याबाः पींदना चीनकर निकामाः सवाक्षाः

वदाव निकासमा पहेकी बुहामा। इस्कंप-पु॰ दे 'हरबंप'।

इस्म-पु [भ इस्त्र'] गक्षा, करः गरवम । शु०-का वरबाज-बाने-पानमें रीड शेक करनेवाकाः बोकनेशे रोक्येबाका बात-धातपर रोक्नेबाका (नि.) । -तक भरमा-इंग्र-इंग्रद धाना । -पर ग्रुशी धरमा-दे मनेपर होरी परवा । ~स कसरमा-गलेसे प्रकरनाः

मनमें देवता । इसक्ट्री-सी॰ इक्कापना धौरायमा अप्रतिष्ठा । ह्रकरम्ब-स्री हिक्ते दुक्ते से किया।

इसक्ता - ध कि दिल्या होल्या पानीका दिलकीरा

मारना (इक्फा-दि इन इक्नशका भी भारी म हो। माशासे भोहा कमा मामुधी कम मृत्यवाला। यतका अधिक बह्न या भन्य शरक दरशु विका दुवा; कम श्रीपातिक, जो (प्रदार) तथ वा अभिक कहर महो। मंद, मानूकी। महोत, स्पन्ना, श्रीनात स्करण याची ग्रेंगा ताजा. पदानरहित मांतिहीन। हमीमा नीय भोगाः निरित अमृतिहिता क्रम शरिभम्भ ही हो जानेशना सहका **मनुरवास्य नो गाण यहरा प्रस्तीना न हो । † ५** नक्षमा हिल्लासा नहस है हकता । - प्रस-प रथ्य रानेस भार भार न दानाः मुब्धवा भोग्रापनः पुराहे क्ष्मीनापना भवमान मु•-क्रमा~अवयानियं करना । −एक्रमा-एक दर्श

भ्यक्तिता दूधरी यस्तु न्यक्तिके सकावकेमें नीवा क्रमशेद, बर्नुश्युक्त वादि हीता। -यनना -होमा-मन्नतिप्रिय बनमा, श्रीमाः कथित होनाः उचा भोद्या, क्रमीना समना बाना ।-मारी होता-१४शाना, क्रमार अफ्नेडो भोष्टा तुष्क दनाना ।

इसका-प्रशिव विदा मंडकः ब्लाश्चार वस्या मंडकाः पर्विताः परिवेका शाकः कोहे वा कवडीका गीक श्रांताः गोंनों आहिका मंडक थी किसी विशेष कर्मवारी मा अपि-बारीका कार्यक्षेत्र को। तुक्तमा । - (क्रे)शार-वि+ पेरा-दारा प्रचादार । सु -वर्षिमा-पेरा हाक्सा ।

इसकामां -वि॰ दे इकादान'।

इककामां – स कि॰ इकका बरमाः किसा धरण मलुको दिकाना-दुकाना एक्टोरमा । अ॰ कि एक्टा दोना । हस्रकारा ७ - पुरु हैर । हरकारा !

इन्डकारी~को करहा रंगलंके पूर्व उसका रग पका करले-के किय फिलकिरी तेजान आदिका पुर देनेकी मिह्ना। यक विशेष प्रकारके रामसे किमारेपरको छपाई ।

शक्कोरार्ग --पु॰ जक्को वर्षय कहर, हिकीरा ३ हक्क - को शिक्षी अभिद्य परना, अवसर बारिके प्रश-रिवत क्षेत्रेवर क्षेत्रेवाला अकार्यन्त्रमका आगन्दी। धीर गुरू, शोक्नारेड बादिर बराजनता, प्रयूत्व, इक्पीए (हरक प्यार्थकी) अधिपरहा हिकने डोकनेकी किया। मु -बास्त्रा-दशक्युष्क यनामा भराबस्याः सम्ब वस्था बलाव करना । -पहुना-वस्तर अरावदशासा हीना । -शक्ता-दे 'इक्क पहना' ! -सकाना-इक्रपक टाकशा

इसदा-१ तरस्य गए-नार क्षमा।

इकर्ग-सी दक्ये। -हाल-सी विवाहकी एवं रशम इच्यी अपना ।

इक्रविया−९॰ यक रीन विसमें ऑस और सारा बरीर प्रेका रह जाता है। प्रेक्सिं। रोगः एक महारका विषः। इक्सी~सी एक महारका गीपा वित्रको शेव रंगको अस मग्राके रंग भीर भीरपके समये भावी है। मुक्-उद्या -तेक उठवा-विशाहके इछ दिन परच वर भोर कृत्या-की इक्दी और देश मित्रा उक्दन समानेकी रूस । -का हाथ होना-दिशह होना । -चरना-दे ^वहकरी वडना । −क्यामा-विश्वद होना । =क्याकर वैदना= कोरे बाम म करमा। अपनको बद्ध कुछ समजना ।

हरायी-ना सि दिस्त इक्टा

इसमार-अ मि हिनना भरिवर होनाः प्रसना प्रविध श्रीमा (

हरूक-पु॰ [ब] ६५४ रहम । -हरोही-सी॰ सुद्री श्चम बंगा।-नामा-पुरु निया हमा इसपी स्थान । म् -डराना -धना-६०म साता दुशन वा गंगावत बबर बहना । -श्वा-बन्धय विकास पुरान या संवा-वह बद्दाना ।

इस्क्रम्-भ इन्ह्रको सने श्रूप्रशृते । इसका-तु वहत दे देव(यावन सांस । मुन-बममा-बहुत हब कॉस नथना (बचोदा हुन्ता र सं रोपने) प्राप्त

होना) । नमारना नर्कप्रैन्केंची वर्रकेंद्रा प्रमाह साला ।

शाबको माहियोंने रक्त व्यक्ति गात्रामें सर बाना । - सदा होया-चनवान्, दोक्तमंद दोनाः दाथ में किसी चीभ(मेहेंनी भादि)का छना रहना !-भजना∽ किसीय द्वारा कोई चीव मेजना । -सँजना-दे॰ 'वाव जमना । -सक्रमा-पछतांना पशाचाप करना।-मौजना-धम्यास करना ।-सारना-दाथ साफ करनाः बाथपर बाथ मारना नाजी कगायाः किसी नरतको सफाई से भूरा केना गावन करना प्रक्रमा। प्राप अच्छा मीवन मिस्नेपर अब सानाः कुप्रकरापुर्वेक किसीपर प्रविवासका बार करमा । (अकटा)-सारमा-मरवाकमण करता, बारका क्यान बारसे देना । -सिखाना-साधा-रकार बानेपर अभिवासनके सपने आपरामें बाज विकास (बह अधेबी प्रथा है)। कुरूनी अवसेके पूर्व अवनेवाकेसे शाथ मिकाबाः रोजगारियोका आपसमे सीता ते करणाः स्रोक-परोक्त करना । -स्रीजना-वे 'हाथ महमा । -मेंडपर रख देवा-शेकने न देना ! -में करना-बकार वा अमपूर्वक किसीको बधाने करनाः अधिकार करमा। -में जामा-किसीके विविद्यारमें जाना किसीके पाल क्ष्रुंक्सा । -में ग्रीकरा देगा-दिलाकी आर्थिक स्थिति स्वराव कर क्षे प्रतीव शिक्षारी वयाचा । - में रीकरा क्रमा−भीय मॉमना १९७ गरीव होना। −में विस्त रसाना-वपने मनको वसमें रसना । -से पदना-दे इाथ जाना'। -में रखना-दे दावने करना । –में स्राता∽रे• हाथमें करवा'।–में खेना∽ किसी कामका विस्ता अपने कपर समा। पक्तमा ! -- में सनीबर आबा-वर्ग गरीन ही जाना। -सें हाथ बासमा-दाव एकपूना । -में द्वाय देना-पाणिमदम कराना भ्याद कराना । —में द्वाय होना—साथ साथ होनाः क्रिडीके सरक्षम सरपराद्यीम होना । - में हमर होना-शब्दो दारोगधेमें दानिल दोना । −में होना∽ वद्यमें शोना, अधिकारमें शोना । −हैंगना-कीई अकर प्रेथ कार्य कर बदनाम होनाः हायमें मंदेशे कगानाः पश केता। -रधमा -४५इफ बनाना। (किसीके सिरपर) -श्यामा-दिसीका रक्क, प्रतिपातक दीवा । -रह जाना-काम करते-करत हान वक बाना । -रोकना-किमी बामबे बरधने शरेगा समाना किमी बामक बरमेगे बाबा जबरियत करला: बाम करना वंद करला: विमीको मारक मारत कदमा: किमी कारणवरा किसीकी मारनेक किर प्रचत होक्ट भी न मारना । -ध्याना-अधिकारमें भागाः मिश्रमाः किसी चीत्रका किसीचे बाधने छ जानाः रपर्ग हो जाना। किसी कामका सुरू, आरंज होना। पवित के प्रश्नोंने दशारेकी सहयाका वागे जोडनक किय वयना । -समाना-कार्र काम भारम करना। किसी धीनकी एना । -क्रमाचे कुम्ह्काना-अस्थेत कीमन, निहाबत मानुर दोना ! - समे मेसा होमा-दिसी वस्तुका दवना पमस्यार और स्वष्ध होना कि वह गुनेमात्रस बैक्षी 👔 अव । ~सपदाना~दाव वटाना । ~सप्रदता~हे दान थी थमा । -साधना-हे दान भावमाना । दे दाव मोनना ३दे हाव छाळ करना । (किमीवर)-माथ करना-धिक्षेको मार शकता। इक्ता। देव हाल |

भारता'। -सिरपर रक्कर होना-बहुत पद्मतानाः परेक्षाय क्षाना । –सिरपर रखना–सिरकोकसम क्षाना। −स काम निकलना −किसीके घरिने कोर्र काम बोनाः किसी कामका असमन कोना ! -से काम मिकासमा-किसीसं कोई काम करानाः किसीको किसो कामका अगमन कराना । - सं स्रोना-भिष्ठते हुई पस्तु म सेना। किसी पीक्का दावस निकल बाना ! -से बाना -स निक क्रमा∽दावसे स्टब्स् विर वानाः विसीपे दाव वसके वाहर होनाः अधिकारमै न रहमा । – से दिख्य खामा 🕶 से विक फिसकना-किशीयर सुग्य, भाशिक होना। —से स्वा वेना — हाथपर थी पुर्व कोई नरत जमीनपर रख देना । - डिकाले माना-पानी हावी भाना। विना पैधा-धौदी हिये आसा ! - क्रिकासे जाता-बरावर खात आमा । -होना-वस, अधितवार होना । –(भी) उथकमा−मनुष्य पा पशुद्धान्त्रत दशकना। -राग्रहमा-जुन दनपनाः भूत करना । -क्रकेटा उपसना-वार्यंत क्लाहित होमा। अखंत प्रसन्न होता । -विक घडाना≔न्त्रत डीसका साहस बदाना । –पक्कवा−दे द्वाथ विकतः । –में रखमा–वरेप्यारमे पाकमा रखना। (शोनी)-समहमा-सर धन एकप करना ! - हाथ-पद दावसे इसरे दावमें तरत होता। -हाथ उद्यक्त से जाना-क्यर की क्यर *के* जाना। −डाथ उद जाना पिक अपना−तरत, रम मारते भागे विकता। −शाध समा−यन्धे स्वासत करमा. सम्मामपुर्वेष्ठ भावमगढ बरना । हाथा-प्र• दक्षिपार आहिका दस्ता महिना धेव

हरभा-पु॰ देशियार आग्रहा दश्या श्राहमा; यस श्रीयमेका यक भीनाद दश्या दीनारपर पंजन वाकी हुई विकास प्राप्त

हाधार्क्ये — की कन्द्रेन आदिमें पूर्वता करता। हाधार्वाह्ये — की कार्यके मित्रे हुए प्रशेष्ठे आहारकी विद्यार्थित पनी हुई सरस्वेशी वष्टाश्रीष्ट्रपद हासने साहे आहार कर रोगा।

हाध्यापाई हाथायाँही-की पंक्षी सामान्य कराई विसमें करनवाने वक रूसकी दाथ परके वकस मारदे परका दं, प्रजानस्थक।

श्रामी-प दश्री एक वृंदरार भीवाना या बदन दश दाता है और पाष्ट्र बनादर सगरी है कामम औ आना बाता है (वह वहुव नुहिसान भार स्वाबिभक्त होता हो। दावर्रबद्धा एक भोदरा । ० भी THE LEFT ~धामा~प् दरिवशका, धीनदाता । −पक्र-प औषपढे काम भानेनाका यक शीपा । -शाँत-न हाथीक मुद्दक बाहर निकने दुद गील आह सब शाँव विवयं आनुषय सवावर& मामान आहि बनाये जान है। - जास-धी देश गवनाक । - पॉब-प् र्धं नामक रागः। -पीच-१ दशक काम आनेराहा एक दोवा । -बच-भी हरकागेक काम भारतामा यक यीवा । -याम-तु सद्दारत । सुरु -यर भद्रमा-बद्द बंश के यान प्राप्त करना। बद्दा बनी दीना। -पर परामा-बद्ध संभाव रवा करना । -बॉपना-बहुत मंत्रशिक्षांनी होना, स्थान्त ह वी अमे बामहर

रंग्द्री-इस इलक्री-वि इक्क केटर दश्र, दिया हुआ (बवान) । इस्रय-९ [भ] शामका एक मगर असँका क्षीशा पुराने धमवर्ने प्रसिद्ध था। इसम्बद्ध = सी इक्ष्यतः, श्रहदृती। इंक्यकाना≉−भ कि वन्ह्रामा । सु∙क्रि व सर्वेदी प्रवाहरमें बादमा । इस्वसी॰-श्री रे॰ इक्वलं । हरूपी-पि॰ इक्न्यक्षा । पु हरूनका माईना, वहिया मोदे रक्क ब्रोजा । इस्टब्सी-प व 'इस्ती'। इस्मस्≉−श्री• दे 'प्रस्तका'। इक्ससी≉-सी॰ इत्रदक्र। हकरा-प्रव देव हक्या । इफरामा-स॰ कि छोटे रण्योंकी शावपर वा गीवमें केवर उन्हें भार करने, घुए कराने, सकाने आदिके किय डिकाता । इक्टम-को दर्वने एइको बार केवने इक के बाने-ध इक्सा⊤पु[स] एक मिश्रक ओ गुजी वा आटेकी वीटें भूनकर पानी वा कुपमें शकरके साथ प्रवानेसे काता है। मोहनभागः (छा) तर भीर मुकायब थीता शहत जासान काम (इक्वा समञ्जाः)। ~सोधन-प भोनमें नतनेवाकी एक मस्कृर मिठाई । स - निकल जामा-क्ष्म्भर निक्ष्म दामाः नत क्ष्म जाना ।- निकास मेना-पारकर यत का देना । (अपने) इक्के माँदेसे माम होना-देश्व अपना भका अदमा मतुक्रव रेखना, इसरेके शामिकामकी परवाह म करमा। इस्त्याई-प्रश्रद्धमा वदान-देवनेवाका निवाद वसाले-वंबनेवालाः मोदबदार । इक्क्वान-इ [भ] भेर या स्क्रतेका बचा जो कुन क्षेत्र हों और पाछ न साता हो। वेसनाः मुख्यस्य बोहत । इसइस-दि सि॰ इक प्रोटनेशका । इस्टइडा-म [सं०] प्रमध्दास्य€ छमा। इक्टबानां-स निः प्रभागा अध्येत दिवाना, सक शास्त्राः वरक पदार्थवरे पात्र वा वरत्रको सकत्रोत्वा हिकासा । भ कि क्षेपका । प्रका-मी • [सं] सभी। प्रमी। वतः मदिशा । भ+ सभी-यो संरोधित करनेका यह शब्द (मा०) t ष्टकाक-त [भ•] भीत, कान्य तवादी नरनारी। वि इप्तर्क पार्टियमेर । मु॰-होना-मरभा। तबाह होना । इसाइस-सी [भ] दे 'दलस्ट । मेदनता वडावर । हसामामा-(४० हैरान परेग्रान। इषाकानी!-सी देखनी सेवानी। व्यव्यक्ति-धी मीता धनाशी । दि भासकः। इक्राफ-नि वधिक, बादक। -लॉ-इ थोग्न छाँदा पीत्र वो वसीके समान निर्देश और ब्रामारा था। इस्राया•~स व्हि• दें• हिलाना । बहाला ।

इकाम-प्रशिधि इलाइ।

इसियोग-9 [सं]रे इक्टर ह

इम्राममा-५ निस्परा वैजनामा मतीना प्रका

इसम्बद्ध-पु (सं) वहराम। इसाक-वि [अ] 'हराम का उत्तरा, विरित्र, सलग शहमके मनुकूका विशवस महत्व, भीन विशित हो। हु-छर्ड रोविसे बद्यानम । -ह्योर-त भंगी मेहत्र। ~कोरी~को॰ इडाइसीरका दाम: इडाइसोर**ो** सी। श•-करके सामा-बेहमत करके, गरवेमें पूरा काम करके काना। -करमा-शतक शरभके मिलि स करना, जनह करना। मन्य कारमा। नंत्रमा देना। रहतेने पुरा काम कर हैता, स्वकृतंत्र्यका शावन करना। -का-नापन नेष (संवाम)। इरामका उक्ता । नकी कमाईन ईमानदारी मेहनक्से कमाना द्वारा ऐसा । इल्लाइ-पु॰ [सं] पितिवादन, चिवदनरा योहा। इष्टाइक−त [सं] स्क तरहका गोलन हिए, कामदुरा समुद्रवंचनसे माप्त पढ मवंदर विका पढ विवेदा वीहार ण्ड सर्प, मद्ममूर्प। एक तरहकी दिपक्की, क्षेत्रना दुव विशेष । इस्टि-दु॰ [एं॰] रहा दका जुवारेंद्रों क्योर, सूँग हुर्रि । इक्टिक-पु॰ (सं॰) दक पनामेवाना, इक्टाब्राः दिससा ₹ वायासर । इक्टिम्य-प्र [सं] शिरका एक भेर । इकिमी-नो [सं] कांगब्बिक्के इसा इक-समूद्र। इकिभ-द [सं] एक वही संबंदा (वी)। इक्टिसा~ची [चं] स्वंदक्षे यक मात्का। इकी~की (do] सक्किसरो क्या इकी(लिय)-पु [सं०] दे 'हक्ति'; रमराम; एक ग्रांग -(कि)प्रिय-प करंद। -प्रिया-श्री महिरा। इस्रीन-इ [मं] पास इक्षा केनको । इक्टीम-प (र्थ•) देवद्रो। (ष•) सराद्रा एक गामा मीवा अनवरः एक तरहस्य सामा (स) । वि सहनशीक, शेर । इसीमक-पु (सं) देवदी। पाँच रोमदा पद प्रदार। पद नामसर । इंब्रीशा इंब्रीया-धी [संब] इरिस इंबर्गहा बलभा बलवार-प्र रे 'दबवा' । इसक् इम्बा - वि दे इनका । इस्रोर=-था॰ दिस्रेट स्वर । इक्रोरमा-स कि॰ वक बचना अन्य सरक परार्थको हाक्ते या दिमी भीवते हिकाला, यंबस दरलाः सूप बा क्षम्य वात्रमें क्षम्य व्यवस वृत्तरी वातुओं हो स्ववस् यन्ते इस मकार वछोड़मा कि चनका बॉस्टका क्षेत्र अक्षय हो वाया बहुत सहक्रियनके साथ अधिक परिवासमें हुस्य प्राप्त बरना (म्यंग्य)। इन्होरा॰-पु॰ दे॰ इतीर् । इक−इ [थं•] स्वरधीन ध्यंत्रन विशुद्ध ध्यंत्रन (रेने व्यविषये भीने पढ़ विशेष निष्क () दिया बाहा है। EES-5 [No] } can t इस्स-वि दे 'इक्स'। इस्तां-भी दे इबद । -इल्ल-भी+ दे 'इस्ट KIT' 1 **इस्थी**−मी० दे० इमडी । इस्प-दि (सं) इक्र-संरोध जीती दुरे। बोदने रीम

भागा ।

शायनक-५ [संग] व्य तरहत्वा शास भारत ।

बाबा, बाबदा क पारेड बाबन्द ।

हायस-(व॰ (घ) रीनमें थानेशका वहारट रामन-

हार-भी जीवस उन्हा शास्त्र अस्त्रकृता। -प्रात्त-

को अन्तराज्ञका मु न्यामा न्यामा ।

हादसा-हारिज्ञ पहानी बहुत वहे भगी स्वतिह ही वपने पास रहा सबसे 👣 –सा होना–बद्दव गाय होना। हावसा-पु॰ दे॰ 'हारिसा'। हाविस-वि [#+] नवा मिसनेवासा। दादिसा−पु• [अ] दुर्पटना, विक्द् । (चे॰) परित्यामः जुक्तामः विषक्ताः वय निश्रकमाः प्रक्तिः समानः विरागः । क्री हार्माः हानस्य-वि [सं•] जो जबदंगे हा (दाँत)। हामि-धी [सं•] परिस्यागः नुबसानः श्रविः विपत्नवाः भमस्तित्व, भोपः श्रापः संपेक्षाः समा समीः प्रतिः वर नानी । -कर-कारक:-कारी(रिम्):-कृत्-रि दर्धन पर्देशनेशका, अपकारी । गु॰ -उद्यामा-मारा सहना नुबसान नर्दास्त बरमा । हामीय-वि[मं•] दे॰ हातम्ब'। इ.स-ड॰ सि } बॉत । शापन-त (do) प्रतिवाग करनेद किए गाप्त करमा। ह्यवा। हास । हापुविका हापुषी-को [६] शंत्रमका एक नंद । इग्फिका∼सी [सं] जुला जमाती। द्राक्रिज्ञ−वि०[स] दिग्राजन करमेवाका, रशक (सवा शाफिय-स्थर रक्षक है)। पु वह भारती विशेषरा करान र्यंक हो। इाफ्रिज़ा−पु [ब] बार रचनेको श्रविक भारणाशकि । हासिय-वि [अ०] तारीफ, इंगरडी स्तुति, मनशानुदा गुष्यान बरनेवाका । प्राप्तिस-वि (स) बीग्र वठानेवाका व मानेवाका बाइक । हासिका-सा॰ [४०] वर्धशो श्री। श्रामी-को स्रोहदि। वि [श] हिमावत करनेवाका पृष्ठचोषना सङ्गानकः । शुरु - भारता - दिनी कामधी करने-की श्रीकृति देशक श्रीकृति करमा ह ब्राय-म॰ मानधिक और प्रारोधिक पोश बोनपर मुखन निक्कनेराका सन्दर्भ सी भ्यम, प्रका तक्ष्मीचा ्रदार⁴ । को ने बावः स्वरतता −डाय−थ दे परेशाली परवाहर । मि॰ - बरमा-वरेशाल होना म्बर्ग रहमा। - व पद्या-परशहरकी रिवनिमें बीना वन्ताना ।] मु॰ नक्षके रक्ष जाना-विनय शोदर धारोदिक का मानविक पेश सह देना । -पक्षमा-बह देनेवाहेको किलीका दिवे पुष काका पुरा परिचाय मिक्ना । - मारवा-घोढादिने बादबान करना। -होना-दिलीके लग्द, बैजन महदिका देखकर पेता होना बाह होना ! हायम-५ [मं•] संस्तर, वर्षः अध्विद्याः पान्य रिशेष, यह प्रकारका काम पानका परित्यामा गुमर

वाकाः (कर) वैकाने, क्याने, क्याएनेवाकाः मोहकः स (शिव)-संवेगी। विष्णु संवेगी। पु॰ हरणा प्राची। ध्वा मांतिः शानिः तुदा सदस, भामक, शर (ग): मास्म युक्तामाकाः ग्रहमात्रा (छंद्र)। विधोन । –गुरिका–धी॰ माकाका मोती वा वाना । ~प्रकः -प्रसक्त-प्र धीर कड़िबोंकी गाका । --वध-पु॰ वड विश्वतामा नी दग्र के कपमें रहा जाय। -भूरा-सी अंगूर। -भूविह-पु यह जाति । —सुका-धी॰ माझाहे मोती । -पहिन की याकाकी करी। -एता-सोश्रेश हा(वर्षिः) -सिंगार-इ (वि) यह दूक, शरमशा। -हाग्र-ची एक दएइडा धंगुर, श्रीक हान्ना। - हम-प् वस जनपर। -हर-पु॰ मारक प्य, भवा -हरा,--हरिका-सी अंग्र। हारफ-वि॰ (र्च॰) दरव । प्रदेश करनेशामाः मुदा वा सुर बनवाका। भाष्ट्रस् ६९नेवाकाः मोहस्, शुरर । उ प्या नुदेशा रुगा बुक्ष चका ल्रांभागा भाषक (प॰)। मीतिको की सही। खासीर बुक्ता नक्का एक भंदा एक विश्वास । **डारणा−धी॰** (र्न०) **डरन द**रामा । शारदान-वि श्रदय संवंधी, शाहित ! **बारना**—व• कि तुन्न क्षंच प्रतिवीतिता सुक्रमे कारि में असक्तक, पहाबित होगा धक्ता । स. वि. ब्रेस्स रेना। स्वायना । शुः द्वारकर रह बामा " ४६६र पुर नंड जासा । हारमानिषम-प्र- (वं•) यह श्रेद्दमुमा वेंगरेजी मान विश्वयें वीनों प्रदारके-मंत्र, मध्य और वार वतस्यार्थ रहर निकासनेके किए प्यरिमी रहती हैं। हारमा-प देश हारिम र द्वारमार्क-की एरपती, ब्रहासभी बरश्तामी । हारा-म वाना न्यूपक एक मध्य । (औ॰ राधे ।) हारायनि हारायबी-श्री (मं) मोदिरीक्षे परी । श्रादि−दि [मं•] शन्तर मनाहर्† पु हारु प्रशास जुरुमें श्रंब दारमा; एविस्ट्रण । ० भी अस्प्रेवर । -६-इ-व क्षेत्रिक । वि मधुरवाची। विस्कृति वेले भातिकोकी माश हो। हारिक-दि [मंग] एरिक समान ! यू एक प्राचीन वनका । श्वारिका-औ॰ [मं॰] यह वृत्त ! हारिज-दि [भ] इरज बरनेशका राग्ड र क्षतिष-दि [मे] दरिष-संत्री । पुरु दरिदर्मात । हारिष्यधा-धी [मं] एड मूर्धाना (मेनीत)। द्वारिकिक-५ [६] इतित्रक्षे मार वासनेराका इतिक बार्स भाग । हास्ति−ि [ऻ] इरण कराया दुआ। धावा दुआ। धीना दुम्था नव दिवा हुना। निना पुरवा प्रशास धर्मीत । 🚽 हरा (बह भागस्य हता (त रहुत त्रम् स रहत नेही। इक बर्द्या क्राप्टा रिमानियका प्रद प्रया दक हैंच ह हारितक-पु॰ [श] दरी गरकारी, प्रान्त !

uten-fe [d] ruchit fen gut, Gett !

वाना । -देना-परावित करना ।

हार-वि [संव] के बानेशनाः हरण करनेशकाः पुराने

(अमीन)। विस्म, मदा बदसदृत । पु॰ ओपने योज्य दोता बोती हुई बनीमा विस्त्रता, संवापन । इस्या-स्री [सं•] इक्सपूइ।

इसक-व [संक] रख क्रांस ।

इसम-प [सं•] सीत समय विखना पुक्रना करवर बर्धना ।

इहा-पु॰ अनेद नारमियोंकी पातथीत क्यार्थ-समर्थ मादिसे द्वारं सम्मिकित स्वरम्पनि श्रीर शुक्त क्रम्बारः भागाः, इसका । –गुह्या–पु॰ ग्रीर-गुकः क्रीकाइक । मु॰ -योक्सर-क्क%ारहर थाना करना । *-*मचना--

धीर होना। -सचाना-धोर करना। इलीस-५ [सं•] वियोंका मंद्रकाकार नृश्व विसर्ने एक पुरुष और कर कियाँ होती है। अठारह चपक्रपकों मेंसे एक विसमें नृत्व-धानकी प्रधानका रहती है।

इन्हीशक-पु [सं] क्विंका मंद्रकादार मृत्य ।

इहीप इस्डोस-५ (सं) रे॰ 'इस्रेस्'। इस्कीपक-पु॰ (सं॰) दे 'इतोशक ।

इस्कीसक-पु [सं] एड तरहका बाबा (संगीत) । हचरा-प्र [से] फूक्स वरतनमें दशी-मात धाना । इद-१ [सं] यह, होम; भाइत्या आहा; अस्ति या

व्यक्तिका पुत्रीतो कक्कार।

हुमम-पु [सं] मंत्र पहत्वर किसी देवतान्त किए अध्यिमें बायुदि देला, होमा बन्ति वा अन्मिदेश हवलकुंका खुवार श्रीम करना ।

इवमायु(स्)-पु[म़ं+] भविन । इपबी-सी [सं] शमद्रश मुवा।

इवसीय-वि [सं] इच्य आहुति है रूपमें दिव जाने

बोम्य । पु शोमा शोमकी वरता

ह्यसङ्ग-वि [शर] शूर्धं, शहमकः भरी शहनवाका । इबस्ट्रार-पु फीबब्ध एउ छोटा अफ्सर विसन्ते मात्रस्य कुछ शिपादी दीत दे। बादशादी बनावका एक दर्मचारी

का बर-संग्रह बाहिका निरीक्षण करता था । इयस-स्रो [म] रुप्ता पादा वर्गगः योदा कारूपः दिकेरीः वध्या स्वा मेम । न्यार-वि श्वशुक्त । स्व

- अहा हेवा-अवसा रूपा धार देना । - निवसमा-दीसमा पूरा दोना । "निकासमा-वर्धन पूर्व दहना । -पकाया-दिसी रच्छाकी वृद्धि क्रिय सम 🛍 सम मंद्र बॉपमा । -शहना-वर्गव छोत होना ।

हवा-धी [अ] एक इस्त जो भूमंडकको पारी ओस्त

पेरंड्रद है और 3ाउँ गैसों~विश्ववंदर आवसीयम और मारहोबन-के मॅक्स बना है समीद बादा सांसा मोनः भूत प्रेक्तिः क्षक्तपः माहिशः अस्मानः भुमा स्पाति। ग्राया संरथनन्य प्रनादा जमाना-भद्रवाहा यहमात्र आरंबरा (का) बहुत इकको वर्ता व −प्रोरी−%ै रहण्या (शतुमेदन) । -हवाह-वि दिवस्त भगरे बार्देनाथा ! - प्रवाही-को धरस्यारी मंगळकामया । -शीर-पु इवाई दान (भारतश्चानी) बनानेशका । —चक्की-की हशाने पत्रभेशभी पश्ची। -दार-वि अहाँ शूव दश आशी क्षीर थैरधाह र पु अमोरोडे काम आनंदाकी एक तरहसी

सवारी निसं कहार कोतं है। -पामी-य भारतया । वासुवानचाककः । -सा-वि• वहुत **−41¥~3** इक्का; नारीक । शु॰ –उश्वदमा∽नावारमें धादा न रहना। -उक्ना-किशी समावारका मसारित होनाः अफ़नाइ फैलना । -उड़ाना हुने शहका प्रचार बरना अपनाह पैकानाः गोव करना । -करमा-पेशा शकनाः किसी वस्तुमे पंदोका काम सेकर इना चरपध करना । --का कारक्रामा-धासपर पष्टनेशमा काम । ~का शुक्रर च होता~विसीकी रसार न होना। −का कृत जामना-परिस्थित समझना ।-का दुख देखना~ अभागेका हाक समहाकर काम करमा। - का सुख थताना - परिकितिका भाभास पहले ही दे देना। परि रिवितक्का वान कराना । -के घोषेपर भाना-बहुत तंज भावा । -के घोड़ेपर सवार होना-बदुत जर्मामें होना । - के बश्के फोइना-धवानी पुनाव पद्माना । – के मुँदपर जाना −क सुन्न जाना – दवस्थे । यरिकी विद्यापे बानाः अधानक मुतादिक प्रकृता । - सामा-लुकी वयदमें टहरूबा। असुप्रक रहना, भारतम्बाग हाना। (कहाँकी)-सामा-दशे अभा । -सिसाना-शिसीयी अरायक बनामाः वहस्रामा चक्रमा देना । (कर्रीका)-सिकाना नकी धेवना । - गरम होबा- स्वामें गरमी थानाः गरमशामारी दानाः । - गाँदमं या मुद्दीमं वाँचमा -असंबद आमडे किए प्रदश्म दरवा। -गिर्मा-तंत्र दबादा मेर हो जाना । -छोदमा-अवानवास छ।त्मा योष करना। - देखमा-वमानको शक्त समझना। –हेमा∽हवा करनार हवार्वे रखनार त्रॅहरी भाग वा और कोई भीव पूँचना। प्रसाद दशना। दबूवरीको बहाना। -पक्रवृता-शक्का इस प्रदेश करना । -पर शिरह सगामा-पालाकी करना ! -पछटना-दशका क्य वरकमाः परिरिषतिका धरिवर्तिय होगा। -पीक्ट या फॉक्डर रहवा-निराहार रहमा (अंध्व)। -पीटमा-व्यर्थ ही कोई बाम करना पता कीर बाम करना निस्का कोर्र महीना न दो । - फिरमा-द 'इवा एक्टमा । -कॅबना-बिधी शराधे तथे व साथ इवाहा बाहर निकलना । - चंदी करना - छन्नी बाउँ मधहर करना वरमाम करना। समाही पुकाव पदाना। -वैद्याना-इवाका कुंक जाना ! -पशाना-राक्रमदाक दरनार रहका वैमा। -यहसमा-हे इवा पटरना'। -वॉपहर वामा-१४१६) उट्टी और नाथ सना । -वॉचना-नाम इरनाः पाळ जमामाः शय मार्गाः शव वनानाः। −विशङ्गा−वायुर्वदकका दृष्टित शानाः परिरिर्धान स्तराव बीमा। विश्वी स्थानस्य रीडि स्थानः विवह जाना। मध्य वष्ट दोशा। --भर जाना-सुर्गाप कुट जागाः वर्षेट शनाः मध्या बदक जानाः । —सरामा – इवादाः गिसना इकारत छरोर्छ रपर्ने हावा: बात्र रामध्य प्रस्त हानाः मेशमिक होता। दिमाग हिरना। प्रचारमें माता। (कहीं को)-क्ष्मना-दिसी स्वावत विजेष सम दीना । (विसीक्षी)-समाग-दिन्धे-इ संगर्वदा प्रमाद पहला एमपे बन्ध रोष भागा । -स पार्छ बरमा-दशको वरह तन दीहना। आतं ही आप रहरहाना । —स सदमा—

पीका रंगा कर्षत्र बुधा एक वासरपतिक विका स्वरका एक प्रकार ! -मेड-पु॰ दे 'हरिज्ञामेड' !

ब्रारिक-प्रकृत्यस्य प्रशेष हारी-सा [सं•] मोदीः क्दनाम कदकी (विवाहके

श्रवीग्व)। हारी(रिन)-दि [तं] दरण करनेशका अवदारकः बहुत कर्तवाका, बाहुक, खोरी करने, खुद्र वर्नेवाकाः माश करनेदाकाः अस्त-स्वस्त धरनेदाका यददद धरमे-बाकाः प्रश्नम् बरनेवाकाः सनवाकाः स्वदाः करने, समा-हनेवाकाः मोहस समीहर वार्नद्वारी प्रश्च करनेवाकाः क्सिसे वह जानेवाका, पछावनवाका। मीवियोका हार

धारक करनेवाका । हारीत-पु [सं] बोरा सका वृत्ती बोरी। क्यी। यह वश्ह का सन्तरा एक जनपरा एक रमृतिकार आपि । -यथ-

t DE GESTS AV P हारातक-प्र [सं] एक तरहका क्वृतर । हाइक-वि [शं•] इरम इरनवाकाः प्रदण करनेदाका । शारीस-प दे करावक ।

हार-वि [मं] हदव-७वंथी । पु प्रेमः दवाः अभिप्राव प्रकोजन । हार्डिक-वि [सं] हरप संबंधी। आंतरिक, दिकी ।

हार्दिक्य-पु [सं=] मैत्री श्रीहार्द । हार्थी(विंम्)-वि [सं] स्तवतुष्ठ, सहस्य । पु॰ वह वो वदत प्रिय हो ।

द्वार्थ-वि सि हरमहोत्या प्रदूष करने वास्यः प्रद गीबः बहत बर्ग बोम्बः इरावं नामं बोम्बा विपन्ति बरने बोस्बः प्रमादित बरने बोस्यः अभिनव बरने नीस्य. अभिनया वो विभानित किया बानेवाका हो। संदर, मोहद । प्र स्वीदा विभीतक हुआ भाषय ।

हार्यां नधी (संग्) एक तरहका चदन।

हार-६ [अ] वरम। वरमी करनेशाला ! हाछ-९ [सं] इब्ध स्वरामः शाक्तिहरू नरकः यह

दरह्वा पथी। - भूत्-प्रवस्थाय। ब्राह्म-स्रोध करतीयै पहिलेपर चहाला जाननाका कार्यका

बद्दाः दिक्या चेत्रः श्रोद्धाः धरका । -गोध्य-3 वेद । -श्रोक-त (स्थ्या-त्रव्याः स्थयः ।

हास-प (स) दर्तमान काका क्या, वदस्ताः इत बद्धान्त्र वर्णना मध्यिमावमरी, रेशस्त्रेयपरक कविता गीत सुबनेसे सहर बढ़ी हीनेवाकी आरम्बरमूर्ति या बानंह रिइक्ता । ≉ च दाक्यें। अभी। तुरत । −दारी−सी यह तरहरा कर भी पहल बंगाक्षमें व्य हर्द श्रद्धारपर देना दीता था। मु-आना-ईश्रदेशपुरक रचना वा गीत समस्य स्पनुष का देना आनीरविष्टक हा जामा। "का-भार रिजीका, रूछ शो दिन प्रत्यका। -की महक्रिक-वह प्रवक्त जिल्हें इ क कानवानी चीने गावी अवें। "रीर श्रामा-दश्चा विवश्या । "समाश्च हामा-इस दाम दोना । -में-थाई दिन पदठ । -ब्राबा-अप्रमानित्यृति जानेदनिङ्गला अरच्या कर्मा । शॉल-५ [भ] ४८७ ४त ६मस । हासक-तु [सं] पेश्व(दिव-पेलास्त्र किन मूर्र शब्दा- बोका !

हास्रत-सी [थ] दशा धदस्थाः वर्तमाम नाधिक दशाः मीबका हैसियत । स -शैर होमा -सबाह होना-दे• 'हाक यर होता', डाक तवाड डामा' ।

अस्तरसा∸#थ कि विस्था-क्षेत्रसार काँपनार प्राप्ता । प पद जातीय उपावि ।

शकरा-प्र• वर्षोको गोदमै केन्द्र दिकानाः सरका श्लोकाः पानीका सरका शहर ।

राजरूक राजराज~त [सं }दे॰ 'रजारूक ।

हाडहरू - जी [सं] सुरा मरिया। शास्त्रस्थ – की श्रीर-गुरू, प्रवर्धनः वहरूपर, ब्रह्म्यस ।

क्रास्टॉबिट-श्र वद्यपि, गांकि । ब्राका-सी सिंशी यथ, घराष ।

हासाबोधा-प दे हाक्दोक'। डाकाद∽द॰ (फा॰) दाक'दा रद ; दशाओंदी समहि, परिस्वितिः इत समापार ।

द्रास्त्रह−त सि दि स्माप्त'।

हाकाइक-पु [सं] एक विरेका चौचा; शतको बक्ते बना हमा पाठक विचा समहसंधानने प्राप्त क्रिया यक तरह की क्षिपक्रमी। यह तरबक्त महदा ।

हास्राहका∽सी (संोधः प्रतिका पुरिवा। हाखाहकी-सी सि] मरिरा ।

हाल्यहास्त्री - श्री॰ श्रीमता अस्त्री । २० श्रीमतारे यस्तीमें ।

हाकिक-मि॰ [पुं॰] इक-पुंत्रों । पु॰ इक्काशा क्रम्ब दिसानः इक धीयनवाका (बंधे देक); ससके क्यमें इक **छेक्ट लक्ष्मेबाका स्वरिद्ध एक इंदक्का मामा क्रमाई वर्षह**ा हास्त्रिमी-की [सं] एक प्रकारकी नहीं निस्पुरमा जी

भरीये रहती है। हास्त्रिम∽त पंतर नायक पीपा विस्का दीव स्वादे साथ भावा है।

इरासी~सी॰ सिं•ो छाधी साहो। वि [ल] वर्तमान कालका सामविक । प्र पक्रवसार सिका । अ असी

वस्थाका - सथाकी - प्र ६नी सुद्रस्ता।

शास-३ [वं] शंद।

हासी-द शहर।

होंस्ट-९ [अं] पक्त समय समा माहिन्ह नायस्ट्रा मारेख पादर भवना दिन्दी कारमस वढ भागा अहरात । हाय-प [र्स•] भाहास प्रकार: खियोद हरवारे leir. मेमका भार वरित्र होनपर वनक हारा की गया रशामान विक महार वा पुरुषेको भारत दरशी है। -भाष-पु ना-क्षप्रधाः चात्रशाः।

हावड-५ [र्स] आहाब इतन पुडारनेशका स्वसित बुकदिनको बुकानः, बुद्धारनेवाठा भारमी (बी इस्हस्र

भन्न वर होता हो। यह बरानहाला । हायम-पु (या] दूरनंदा सरतन राज । -इस्ता-पु सम्बद्धाः

द्वापर्याय – ५. [मं] इतन कराव जान बाध्य । हाषरां-पुरु ८६ शरहा ५६। हाबसा वावला-वि भागक, विदेश ।

समका करनेक किए मौका हुँदमाः अकारण समका दरना≀ – हो द्यामा – बहुद तजीमे भागना यायव हो कामा ।

इवाइ-नि इवास सेवड, बाय संस्थी। इवाको चीरकर चक्रमेवाकाः तीत्र गतिवाकाः चाकादः आवाराः श्रीय मारमेवालाः धरियतः स्वर्थं । स्त्री एक तरहकी आविद्य-वाओं अधिनवासः अपरी बामधनीः बहुवा वात अस बाह्य नक्की वस्तु । -अञ्चा-पुरु वासुवानके क्यरनेश त्याम ! --भाँबा--भो॰ वह बाँदा जी एक जगह स रहे। -क्रिका,-महफ-पु धवाको पुकार संगीताक्य। -- प्रवरु--वात-को॰ भफ़राह । -- ब्रहाङ्ग~पु वाउु-यात ! -हाइ-सी॰ वानुवायसे भानवाकी हाइ ! -फ़ीर-प् रराने साविधे क्षिप शिक्ष वाकद शरकर बा ऊपरको भोर किया मानेबाका फैर । -वंडक-स्रो नदको वदस । --मार्ग --शस्ता-प्र॰ शत्रवाक्षे गयमा यमनका मार्ग । - मुठमेड - ती॰ अक्क विमानोंकी भिनंत । -युद्-पु -स्वार्ष-की श्रामुनानीस करी वानवाको वदाह ! -- इसका - प्र वायवानी हारा होने बाका इमला। भु० ∼उद्दश्न-अपनाह फेब्बा; हुँद प्रक होना । - उदाधा-अध्यक्ष **रे**कामा । - गुस होना-भद्ध वाधव दोना सिरविशमा। -छोदवा-आहिद्यशानी छोदना १ -हीमा-बेहरका रंग वह बाना । (बेहरे, मुँहपर) हवाइयाँ उचना~मुख्या निवर्ग होगाः भेइरके रंबका फीका पहना ।

ह्याकश्-प्रश्न समाचार, स्वरं। अन्त्या, ब्रह्मा प्रज्न परिचाम ।

इबाक्सर-इ वे दरक्रार ।

श्वास्ता-प [सं•] शिद्रदेगी शौवनेको किवार पता मिश्वाना वर्त वा प्रधानके लिव वस्तेस (देवा) । सुरु --देला∸नदा भिशाब देना अभावके किए (पुस्तक दृष्ट भारिका) इसकेर करना । ⇔(स्र)क्राना≔कर्षने हेना,

सीपना । जपद्वा == इध्वेमें बसर्वे आवाः। हवास्तर-मी [म] १६८ वासीमें रचमाः हिरासकः

वह मध्यम जिसमें निवार[धीन कैरी रखे बात है। हवास्तरी-वि को इरास्टिम रखा गया है। दिवाश

थीम हो । पु निवासभीन केरी । इवाछी-९ [स] भारतास्त्रा रवान । -अपाकी-९

शंकी-साभी । ष्ट्रपास-पु॰ [ब॰] हासा का बहु , देखने सतने

यक्षत्र भारिकी एक्सिन पन्यानेदिका मनकी शक्तियाँ (कारना विधार, स्पृति व)। सनवन्ध्री शन्ति होय, सथ । -बादसा-दि अन्द्रबद्दास प्रदाना द्रथा भीनका मुरु -जदमा-हाम्र हिसान न रहवा ।

इपि:सासा-सी॰ [सं] हनि तैशार करनका स्थान । हिपि होप-पु० (सं) हविदायका दुवा कंछ। इविन्धवा(यस्)-इ [ते॰] भूगराहुश एड पुन ह हपि(स्)-पुर्व [सं] इतनीय हम्म, बह, इतनमें

देवताओं है कि व महिमें होती जानेताओं आदुविके हुन्या वी। बहा विष्या किरा यश है

ह्मिक्टी-सी॰ [सं] इदबहुत ।

हथिरह-वि सि । इरि सानेशका। इविरसन−५ (सं } अधि पीका भावनाः विशव १४०। इधिराष्ट्रति –थी॰ [सं॰] दशिका दीम ।

इविर्-'इकिम्'का समासका रूप । -यंग्रा-सा सभी ! -गृह -गर्-पु॰ वष्पनन ! -हान-पु॰ वर्षि देनकी किया। -धानी-सी॰ कामभेन सुर्गत। ~भूस−9 दोमधन्द वृष्ट। ⊬निक्यवयाध−१ दक्षि देनेका पात्र । -भाक् (ज)-वि॰ हरि पहच करने बाका। - सुन् (न्)-5 अस्ति। ध्रतिबोर्ड फिरा किन मादि देवता । -भ-सी । वनसर्वाचा प्रवास पानी ! - मंथ-प्राविकारो ! -धश्च-पुरु पह शाध-रण यह विसमें देशक बीको भारति ही पाती है। -याबी(बिम्)-५ ५१५६व । -वर्ष-५ सर्वापस वह १४ और वसके दारा दासिन दक्ष वर्ष । -हवि-सी इंक्डा दीय दरमा !

इमिप्पाध~ड [सं] इनि रक्षनेका शरकन । इषिधाती−धी [j]कामधनः हविष्मान्(अन्)~नि॰ [tj] इनि देवेशशा । g एक शांतिरसः एक देशविः सक्ते सम्बन्धक सात पार्वनीयेते

एका एक शितवर्ष । इक्टियंद-५ [सं] क्यिप्रियम्स पद प्रश हविष्य-वि [सं] इविदे वरतुष्त्र वा उसके किर देशर किया प्रथम हर्वि पानेके योग्य (जैसे प्रिक) । ए० हरिया इच्या थी। विश्वी। थी मिला हुआ श्वादक र न्याक्षान सुन्ह (व्ह)-दि॰ यद्व-संरंधी पदार्थ (पानमः भी नारि) सानेबाकः। --सभ-तः मध्यो वधीनस्यो वस्तर्रः।

ह्यविष्याञ्च-५० [मं•] वद्यः थादिकै भवसरपर सा∤ अने बाजे श्रीम बार्थ । इविष्यासी(शिष्)-ति [मं] दर्ग इविध्यप्तर्वा ।

ह्यासा-भी दे हक्स । इबेक्टी-श्री [व] नहाररामशीरामा नदाना गरा भीर प्रवास्थाम सर्वा

हरम-वि [सं•] बयमें आधुतिके रूपमें ग्राहे माने मीमा। पुरु वर्षा किसी देवताके किय की अधिकाशी माहति। आहुति। एत । -फश्य-तु समक्षा देववामी तथा विवरीको श्री कानेवाकी भाद्रति । -प-पुर वरहरे मन्तिरहे सात कविवीमेरी रहा -पाक-प्र वया −भृष्क्(न्)-९ अब्रिः −योनि∽९ ~क्टो(हिम्)-९० अवि १ -पाद्-पादन-५०

अधि । इय्याद-रि [र्स] दय्म धानेशका । हथ्यास हब्बासम-५० (४) द्वायन अग्रि। ह्याम-५० भि ी नोदर-भादरा स्टब्सीक्षे भीह । हरामय-को सिंग्रे शोदर-गादरा रहतुमीनी मोध जान-करवरा बहार चीरना छान रनरना । इसरा-पर्व मि] यथीनमें सुराग्न करके रहनेरामा श्रीरा

या अंग्र । इसरात-पु [मं-] इसरा' का बन् , कारेन्सेरे क्षेत्रे के सम्मानने बार्चनके भेररने निवन भान वा रेग छै नाव दे ।

हायहाय-सी किसी परतको यात करनकी कामपमरी भाकुकता, दादी है हामी निर्देशकाः दवा रखनेवाका । हाथी(विन)-वि [el] EPI रेनेशका Kka बरतेशासा । शाहित्या-प [ध+] योश-दिलासा कोस फर्च वा शुक्रो पार्ते बोरका (प्रान सारा) किनारा। शाकी रूमाक. बाजीन बाहिके शासिवपर वने हुए नेक-वृद्धे शाशिवेपर क्रिक्रित श्रेष्टा, पुरसीस वैद्यको श्रेष्टा । —भाराई-स्रो हासिया चराना। --नशीन-पुर मासपास वैद्यमेशके. मधाहर । मु - चहामा - गाँउ रहिमा देशा क्रियनाः अवयो औरसे कुछ बोहना, बहाना, समक्राविध क्रयाना । (य) का गणाड - वह गगाह को किसी वस्तावक्य हादियंपर अपना माम किये या सक्षी क्या है। हास-प [सं॰] इंसनेकी किया, इंसी। असपता सभी। बास्त रसका स्थानी यान (छा)। यपहास अवादः इसी दिल्ली। चिक्रमा विद्यासः चीत्र वैद्या बारामध्या सदेशीः मनंदर -कर-वि बंधी परपत्र करवनाका । -तील-वि इंतर्रा श्रासक-प्र [मं∗] मजाविका विद्ववक वेसी ह हासन-वि [६] हैंसी उत्त्या क्रांग्याका, इसमेगाका । प॰ इसाना । इस्सनिक−५ [धं•] सहकोश्यः साथ सन्त्रवाता । शासपती-को [सं] कांत्रिसेको यह देनी। शासा(सस्)-इ [सं] चेह्रमा हासास्तद-डे [सं] इंतीका विक्य । हासिका-धी [सं•] शास, इसी। मनाह उत्ता । हासिद-वि [म] इसद (बाद) करमवाका अवनेवासाः। हासिल-वि [भ] जो इछ वया हो। जी हुछ हाब स्या हा स्थ्या प्र वस्तुदा अवदेश क्षात्रा स्थ्या नतीयाः निभोदः -क्कास-प्र यावदा भवीमा राकासः, नियोगः । −ज्ञमा⇔ष कागरक और । − ज्ञारव - जाबे-इ ग्रामनक । - शक्तांम-इ भागकः। श्राचि । - व्यवसीब-द्रापशनेत वपनवामी क्यबा ध५कड । - मसद्र-५ कियाने प्रशंताको भाषतायक शहा । म - भागा- माग जारे वा विशे भाजके विश यय रहता, राभ मयना (नारह दना वार्यक रो, शाम क्य दी)। ==६स्ता=धनाः क्याताः देश ६८मा। -बामा-काम बीना। विकना कान सगना। द्वासी(सिम्)-वि [र्स] देसनग्रमा जरहास ६६३-बाबार बीच पैदा करनेवाको सफेदीवाका । हास्त-दि॰ (सं॰) दापरे बना दुशा । -मुकुश-पु क्षेत्रकि । हास्तिक-वि [लं] दान्दे-लंबची । पुरु महावत, बील बाबा दाभीपर पर्नबाबा स्पवित बाबियीका होड बारिक शारितारंत-वि भि विश्वविद्यालना बुधा । हारित्रक-त (संग) दरिजनायुद्द । विश्व हाबी-संबर्धाः हरितः

परिवास महरा (बन पानी)। -प्रह-प पहिन्तापट ।

त्र वेंसी। आनंद, प्रसंबता। मनाब, विक्रमी। एक एक (सा)। -क्या-सी॰ हेरीन्त्रसम्बद्धेशश्री शर्ताः। -- कर,-कार,-कर -जनक-दि शास्त्रोशास्त्र रेखे वरपथ करनेवासा । -कार्य-इ STERT ME! ~कोतक~प वॅसी-सक, वसी-तमाभ्रा । -पद्र्य-दिस्तनी, संबाद । -रस-पुर एक सामान बिसका स्थानी भाग बात है। -रसागमक-वि क्रिये बारवरस का (काम्ब)। -रसिक-ति तिमोरहिक हारमरसका ग्रमी। -हीम-दि॰ की ईसता व हो। विषयमधील । हास्यास्यव्-प्र [सं॰] शास्त्रका भाष्ट्रेनच हॅंग्रीका विषक वह जिसे देखकर हैंसी जलक हो। अपहासका दिवस ! श्चारमोध्यादक-वि [मं] शास्त्र त्राप्य करनेशका। डा इंड∽व [सं∗] शोदम्स्द कर्णार्। eiem mieim-g [de] une fee : बाहब-म [सं] एक बाद्धा बाबा-त [सं] एक गंपना चन नद्रव पत्री सन्नार अ नाभवे धीक भारिना स्वक एक छ र । -कार- अस्मको उच भागि। सङ्क्षा मोगाहरू । —स्प-प्र हारा करने चितानेको भारा*त ।* –हुस्र=-प्र घर*स*न STREET, हाहा-१ सुबदर रेसबंदा भागाया भनवर सिर्द विश्वविदानेको भाषाच ।-हाँही-छो। हंसी-वजान, राष्ट्र परिशास देनी-उद्वा । -हीही-दे रारा मधे (म॰ - बरना-रंधी-बट्टा करना । --श्राचमा_र- हाना-इसी-मनाव होना ।} −हृहू-पु॰ ईसी बट्टा । सु०= करमा -प्राचा-धिइधिहाना । -समना -हामा-धू ईसी क्षाना । दादा(दम्)−५ (सं]यद्र नंधर्व । **हारी**−भी ेतिनी वरद्वकी प्राक्तित क्रिय स्थमता । सु०= पश्चा-दिनी श्रप्तकी माहित किय सद्यंत स्वम होता । ब्राह्म-प्र काम बद्दय कीराम । शाह्मपेर-प्र- नंगकी नर, क्षत्रन्ती । विकामा-अ कि बीरक्ष दिमहिनाना । क्रियार-४ (बेर) हिं धरीन बरनकी दिवार रेवानका यन्यः राषद् रोजनदा स यः समा हिक्तिया – श्री [तु] र्रथाये अर्थरका ७२४ । हिंग-बी॰ शेन । हु [एं॰] एक प्राचीन बनगर । हिंगमबेर-प्र रंग्ररी, दिनार । क्षिमधाची – की कि विश्व विद्यार्थ (श्री)। हिंगकाज-की 🕻 दिशुकाता र हिंगु-पु॰ (से॰) एक पूर्व का सुक्कान तका सारागानने विजय क्षत्रे वाता के। यस मुख्य मुख्या निकीम काना वंद्यक्ती । −माविका−की नार्धारेष्ठ । −निर्मास∽ प्र विद्यापा विद्यासम्बद्धाविद्यास करा। -पन्न-५ हत्ये इंग्रान्त व्यास प्रमा - पश्ची-स्पेश्चे भिन पर्य । -पर्या-था॰ ४३२सा । -विसरिया -तिपारिया-को॰ नेप्रपत्ते । हिनक-४ [स] हिन्द्र प्रश्न शास्त्र-वि [म] बहने कृत्या व्यवस्था वायवस्त । विश्ववी विश्ववी-को [वन] वार्यक रेन्त्र ।

हश्र-पु॰ [अ] प्रकप क्यांगतः कीकाहकः वप्य्यः भाषतः । मु॰-के धादेपर देवा-पेसे बहरमीकी ऋण दना विसर्ने कमी वस्क दोनेकी काछा न हो। −क्षाना∽ भाषत मधाना ।−बरपा करना-उभम, उरद्रव मधाना। -बरपा द्वीसा-कोकारक दाना, प्रयुव मधना !- में बरमा-मुसबमानीके विस्वासामुखार स्वामतके दिन मुद्दीका जिदा होकर छठ वैदना।

इसंतिका-को॰ [सं] वेगोडी ।

इसंती-की [रं•] मैंपीठी। यह प्रकारको सस्टिका श्वादिनी। एक नदी ।

इस-प्र [सं•] हासा व्यवसास सुद्री ।

इसद-पु॰ [ब] दूधरेको अच्छी हाकत देखकर अक्रमा क्षेमा, बाह, इर्प्या ।

इसन-इ [सं] ईसनेको क्रियाः मजाका स्ट्रांका रूढ बतुवर। वि [भ] मड़ा, नेका सुंदर । पु॰ अड़ोके वदं वटेका नाम ! ∼हुस्तव−९ अकीकं दोनों वट बी मुद्दम्मद्दे साही थे।

इसनी-सी [सं] अंगारवानी, अंगोडी । -सवि-

पु अभिवा इसनीय-दि [सं॰] इसने बोम्ब उपहास बोग्य। इसब-भ दे इस'। दु [म] कुम्बद्भ बंदा, बस्छ। -मसद-पु माता-पिताका कुक्कम सांदानी क्रिक-

स्डिटा । इसर-३ दे 'इस'।

इसरत-सी [थ] सेर, दु:श्व- वशुको अप्राप्तिका दु:सा बाह, भरमान, काक्सा । -अरा-वि काक्साओरी मरा तुमा । सु०-करमा-१०धा दरना, चाहना । -इपदमा-इसरत गाईर शेमा । -मिक्समा-काक्सा प्री श्रेता । −विकासना −जरमान निकासमा । ∽वर समा-विदारको भ्यंत्रना दोनाः नैरास्य प्रकट दोनाः। -शक्की रहवा-काक्सा रह अवाः अरमान पूरा न दामा ।

इसिका-सी (सं) देंसी दासा मजाका वपदासा। इसिल-वि [स] देश या इतिहासमा जो ईसाहै। दिकांत्रण भी दशा यथा है । इ शारण परिशास काम देवका धनुष् ।

इसिवा(न)-दि [सं] देवनेवाका।

इसिर-प [धं•] पृदेश यह धर !

इसोन-दि अ] होस इस्तराबाध्यारा हुनायमा । इसीक्रां-दि शोषाः

Eta-2 [ii] BOter et mede fiet de fin-भौरीत भंगुरू-को यह माया हानीको र्गुछ हाथहा दह। विश्वप विम्ताल यो मुद्दा। इस्त किथि इस्ताखर-यक नक्षत्र। पांस्की। एवं शुद्धा ग्राम्य समूह (केंग्रका)। र्टाइका पहणा बाह्यरेवका यह द्वता नि इत्त नक्षत्रम अस्त ।-कमल इ. इ.स.च. पारम किया हुआ क्यक (श्रोमाम्बादिका म्बद्धाः स्थवः नेष्ठा दाव । -कार्ये-तः दावशः दिवा यानेशका काम दरवदाती । -कोहक्कि-को अर-क्रमा वे शक्ते मनक्ष्य रचनेको क्रिया। -वासक-पु शायका साम करनेको उत्पादका । - किया - की॰ इस्त-

कारी। इस्तमेशुन । — क्षोप−शु दूसरोको शत या काम-में दक्षक इंना, इस्तंदानी। -ग-वि ना किसीके दाप या अविकारमें वायेवाका हो। -शस-वि दायमें भावा हुआ, अविकृत, प्राप्त । -वामी(मिन्)-वि॰ दं॰ इस्तग । - गिरि-पु॰ एक पर्वत । -- ग्रह्-पु॰ शायका ग्रहण, पाणिग्रहण, विषाहः हिस्से भीवर्गे शाथ क्यांना । -प्राह=नि हान पहड़ानेशका (पड़ाग्री)।-प्राहक-वि गिइमिडामेशका आध्यद्-पूर्वक बाबमा करमेशका। —बायस्य-प्र इत्तरकोद्धक्ष, होत्रको स्पारः।-बास्य-प् बाब विकास, बाबसे संस्त्र करना । - स्पोब्रि-प्रश क्दरकोहि नामक वृक्ष । -श्रक्ष-पुरु इथेली । -शाक्ष-पु॰ इत्ताकी । – च – चाल – पु अस्तादिसे दापको रक्षा-के किए धारण किया जानेवाका रस्ताना । −दक्षिण-− वि॰ बाहिनो और रिअंडा सद्दो क्रीक । **"दौप:**—पु॰ हाक्की काकरन १ - होप-प्र नाप वा शीकर्ने पोरी करनका दीवा हाथसे हानेवाधी मूल ! -धारण-पु हाथ प्रवृक्त सहारा रथा। आधातका निवारण सरना। पाणिप्रवच । -पर्व-प्र• तारका एक प्रकार । -पार-च काथ पैर । −धुन्छ−च कशारंस नीपेस मार्थ । -प्रध-त रुक्तिका रक्षमाय । -प्रव-वि॰ सद्दारा वेभवाका । -प्राप्त-ति॰ इस्तमव । -प्राप्य-ति । दाव वर्हेचने बीम्य । – विष-पुन्न()रमें तंत्रहरूनोद्धा केपन । -भंग्री(दिन्),-भ्रष्ट-वि दावस क्रिसमा हुआ, वो दप निस्का हो। −मनि−पु॰ सकाइपर पहला अमेराका रख ! −मिधुन-पु॰ शिस्तका द्वापस संया-कन कर नीवचत करना ! -योग-प हाथीका प्रशेष वा अभ्यास । – रंसार – सी १ ५४ मे परको रंदार्प (जिनक व्यापारपर शुनाशुम फर्क (नदाकत है) ।−राधी(धिन्)g कि। -क्**स्व-**द इस्तरदार्थीक्षं सुभाग्नम दक। -बायब-प रायको पुत्रों, राबको उद्यक्षताः रायको सकारे, बाबीगरी !-क्रिकिल-विश् हावका दिया। हवा (पंदारि)। –किंपि–को शब्दी (क्यारा, इस्तस्त्र)। -स्य-९ दावसे क्यावट, विदादि । -सपन-व हाथका केप। - वर्ती(तिम्)-वि जा दावमें हो गृहीत । -बातरका-प इंबलीका वस रोज (इसमें पुरिवर्ग निवक्ती है)। -पाप-तु हामने वान्तेश वर्ष करना । -बाम-वि वायो और रिवतः यसदा -बारब-१० हाथ १६४ तमा आधारका निवारन करबा ! - बिम्पास-पु शबोदी रिवर्डि ! - विकस कारा(रिम्)=ि शायधी कुशब्धारी नानी नीवनेनाला। ~बेश्य-पु दायस समा-संज्ञा-सी दाससा सरवा संवाहन-५० दावस स्वत्मा माक्तिस करवा वा दवाना । -सिद्धि-की॰ शयन दिवा जानेवाका काम। हाथका समा चारिमस्टि श्रीतः -सृत्र -सृत्र -तु विशाहके अवसरपर गाँचा जानवाका मंगक्रमुणा विशाहके पहके पार्ष किया जानन'का शाक्ता महमा, मक्ता। -स्वस्तिष-प्रशासीकी स्वरितकी ग्रस्तव रूपना । ~हार्ये−वि॰ हावन् सहथ दिना जान नोम्य (पिहारि) t इस्तक-पु (मं) दाबा एक दामकी मादा धामका सहारा दाजींकी रिविद्य ताक (स्मीत)। वाली करताक

बिह्मक दिनकि दिनस-५० वि वेशक। हिंगुका-सी [मं] प्रदेशविस्तव की सिंथ तथा वस् भिस्तानके सच्चमें है। -आ-सी॰ देवीकी एक मर्ति को हिएका प्रदेशमें है । क्रिंगसिका – स्ते सि विदेशारी । द्विगुरुवसा-सी॰ (सं॰) एक गंबहरू । विश्वास-पु [सं] सपुगुका दिस्तक। हिंगोट-पु स्थिप स्थारी। विस्मा - अ कि इंग्डा करना कामना करना, पादना । विताक-सी० रच्छा ! क्रिज़ीर-पु. [सं] हाथोका पैर वॉपमेको रख्ती वा सीकड वस्तिपासक्षेत्र । हिंदक-पुरु हे 'माश्रीवर्रव' । वि भगवधीक । (दिवन-पुर्मि] भ्रमका संगोग केयान। हिंडिक-पु [सं] कम्नाचार्य, क्वोतिनी । हिंदिर-9 [संगोरे 'दियर'। हिंदी-को [सं] दुर्गा। -कोस - प्रियतस-द्र॰ दिन। द्वितीर-प्र [सं] समुद्रकानः पुरुष नशः वार्ताकः वयकः काविस । ভিতৰ∽৭ (র] হিবা हिंदोरमा! -पु दे 'हिंदोड़। - हिंदोरमी मार्व सकत वीकुक्षचंर'-सूर।स कि वे विद्येकमा'।

विकोरा#~प दे 'विकाम हिंदोरी :- श्री होता हिंदोका ! हिंदोल−५ दिटीकाः एक राग । हिंदीकमार्ग-पुर हिंदाना । एर कि आलोक्षि दरमा

हिंदीसा-पु सुका; शक्रमा; वीने अन्त परक्रत सानेशका एक तरहकाशका, नरधी ।

क्रिहोली – श्री एक रागिनी ।

हिंसास-५ [सं] धोधी वातिका पक वंगकी सकता। हिंद-इ (का) भारतवर्ष हिंदुस्तान (यह नाम 'सिंध न्ध प्रारक्षी भाद परिवर्धित स्व है) ।

द्विष्यी-सी विद्वस्तानको माना (वद-दारसी और इछ त्ररान हिची~पनी बारा प्रतुष हिशास त्रराना श्राम्)।

किंदी-वि [का]दिश विद्रस्तामधे अंबद्ध । श्र विद निवासी भारतवर्षने स्वनेनाका । सी॰ भारतवर्षनी राष्ट्रनाचा (यो उत्तर मध्य निवार आहिये सुक्य कक्से बोको बादो है)। -हेय इन्द्र एक पीपा बादवाके काम भारत है।

द्वित्रय~पु• दिष्ट्र कोनेका भाग का शुक्षा दिक्षों के आचार विभार। दिनू धर्मका भार ।

विष्णाम-प्राम-प्राव दिएलेका निवास-स्थान भारतवर्गः माराज्यका उत्तरी माय जो गंगा हवा बनुमादे हातके मध्यने बद्दमा है जिसे मानीम समयने क्षेत्रें बा सध्य रेष स्रोधे।

हिंदुस्तानी-दि॰ हिंदुरजन-संन्धी । पु॰ हिंदुरजानने । रहनेरामा ध्वसिक मारतवासी । की विद्रश्यानको भाषाः

क्षश्री नीक्षाका ऐसा स्वाभाविक रूप विसमें नगरी, फाएंगी सर्व संस्कृत और अंगरेओके भी प्रशस्ति दरसम तथा तज्ञर धन्द्र शीः यशी योगी हिंदीका नह मनावटी रूप जिसमें भागी फारसी वर्षके तरसम सन्दोंका बायस्य तथा संस्कृतः बिडी और अँगरेत्री खर्ग्नेस्प्री विश्वकता 🚮 🕽

क्षितस्थाम-प देश 'क्षिपरवान'। हिंद-प [फा] प्रस्वश्चतः ना परीश्चतः वेदोक्तः विवारीके

आधारपर वने आचार-व्यवहार, रोति-नीति भावस्था वर्षे आदिये किमी स किमी क्याँगे विद्यास करने भीर जनपर यक्षनेशका धारतीय । ~पन⇒प दे• fieter :

विवक्तस-त [फा] अफगामिस्तामके उत्तरमें रिक्ट एक पर्वत भेजी जो बिमाकवसे मिकी हुई है। डिंगोरमा-स कि॰ पॅपासमा !

हिंबीक-त [सं] शुक्त दियोगा; सावणके जनक पक्षमें होनेवाका श्रीकारसवा एक रागः सत्पद्रवादाः। द्विंबोस्टक∽प (सं•) खनाः पासना ।

हिंदोका-सा (सं] दे हिंदोक्स । दिवीस्तान-९ दे 'हिन्द्रवान । हिंदोस्ताजी-वि॰ प॰ खो दे॰ हिंदरतानी'।

हिंचाँ -- अ पश्री शियां ~प दिम।

द्विचारी-- 9 विम । ब्रिंस -- श्री । पोडेबे दिशदिनानेकी मानाम दिनदिनाहर, होस ।

दिसक-वि दि] दिसा दश्तेगाकाः पातकः तराहे करमेनाका वानिकर। छत्रता करनेनाका । प्र विस्न पश्च भैदार बानवरः शतः तंत्रिक बाह्ययः ।

हिस्सन-प सि । मारमाः पाट परेपानाः सनामाः **43** I

हिसमा-०४ कि दीवना दिमहिनामा। स कि मार दाकनाः चीर पर्देवानाः सनामाः मुख्यान पर्देवानाः। की सिर्श मारन योह पर्देश नेकी किया।

हिमनीय-वि [मं] दिसा दरन पोग्यः मार दाक्षते वीम्य कम्म (बेमे परा) ।

हिंसा-क्षी [4] पाव मारणा नाश चार या दानि वद्रपानाः धति। <u>प्रश्रोतम् । न्यार्थः । न्यार्थः । न</u>्या नुरक्षान पर्देनानेशाचा काम अधरेका कामर विषयोग हारा भारम उपायन भारि कार्य । -प्राथ्वी (विन्न)-अ नंवधी भृद्धार मानवर ! -प्राच-वि शानिकस्त्राच । ~रखः,−रुपि−वि 4शर्रे ५रनमें भानेर माननवाका । -- विद्वाद-- वि ्यून किरकर तुराई करवंदे मानंद

माननवाका । हिंमारबाड-वि [मं] बिनने दिना हा

पुराई बर्जनाका हाजिकारक । हिंगाइ-५ [बं] दिश क्या वाप । हिमाम्द्र-वि [५०] दिला बरनशन। दिलदा दिमामद

मश्चित प्रशासिका । चु दिशाका न क्या ।

समान परिवार आदिवेशिक्षपर्यानके व्यवहारमे आवेशायो । हिसासुक्र-पुरु (७०) विमाजीक इत्था (जद () इत्या

-- मूस्य-दि भित्तकी मृत्यु पास का गवी हो, कुछ ही देरका मेहमाम । मास-पास-भ० भगक-मगर, बारों भीतः करीव पासमें । भासबंद~पु॰ पटनॉका एक ताना जिसमें जेवर कटकाकर गैंक्दे हैं। भासमा, भासमाम-पुषा] भारतः सर्गे। सू० -के सारे सोबना-दरसाध्य, बनहोनी शत कर बाबना। -समा-रहुत र्केंबा होना गमन्त्रीयो होना ! -शमीनके कुकाने मिकाना-बूनकी हाँकना,रू नी भौड़ी वार्ते करना । -झाँकना -साक्रमा-धर्मट करना I-हटना-स्वानक मारी विपर का पड़मा दैक्कोप दोना। -दिखाना-करतीमें प्रतिवंदीको थित कर बेना । -पर खबना,-पर चन्ना-गर्ने स्तराना मिनाज बहुत का बाना ! - पर चत्रामा-नति प्रश्नंसा करना। नति प्रश्नंसाके दारा मिनाव विगाइ देना । -पर युक्ता-वर्डे बादमीको निदित करतेके प्रवसमें स्वयं निरित्त होना । ~फडमा-अवासक मारी विपद भा पहना देवकीय दोना । - में छद द्वीना-वर्षका न वसना क्यातार जित्रिके दीना। -स यिगकी या धूनी सगाचा-इटिन, जनहोनी वात करना। −सिरपर उठा खेना-बहुन शार, रूपम क्षेत्राहत सवाता । -सिरपर टूट पदमा-देवक्षेप होना जवानक कोई मारी विपर् का पत्रमा। —से तिरसा-से टपकता-(किन्ते पीत्रका) अपने आप पप-रिक्त डा बागा । -से बार्से बरमा-नाधमान छमा । सासमामी −िव भासमानकाः भासमामके रेमकाः विशे पु इक्का नीका गास्त्री॰ वाही। —हाज्ञव-पु॰ हैंबक्धेप। भारतमञ्जनम [मं] एमुत्रसे केवतः एसुत्रस्य । आसम्ब−पु दे 'बाध्य । ध्यसर=-पु दे॰ 'जाशर'। भारारना॰-स कि॰ जानव हेना।

कासरा-पु चहारा अवस्था अरोसाः कामाः अदोहाः स्राप्त प्रसावनः । अस्तव-पु विश्वे अवार्ष्यः प्रमायः अवराव्यतः करु कारिके प्रमारसे देवार किना हुआ शकः स्थापतः असे-बना । नु-पु वार्षः प्रसादः । साधानी (विश्वे)-पित (विश्वे आवारोती स्थाने ।

भाससी(विज्)-वि (६०) भासरवेगी द्वरावी। भासाम-स्त्री दे 'भारत । दु दे० भसा'। -सुपी-वि भित्रीका सुरवाद, रासुधापेकी। भासाहबा-सी० (का] सुस्ता भारतम। भासाह-दु दे० 'भाषाद ।

भारतार १ दर्भ भारताः आक्रमण ब्रह्माः तर एक स्ट एक देमाः प्राप्तिः भारतारित्व-विश्वति । कथ्य प्राप्तः तरा हुमाः चैताना हुमा पूरा दिया हुमाः तम बण्डर एकतः बुमाः आक्रीतः। आसाम-वि [का] सुक्त सुगम भीताः।

कामानी-भी॰ सहर होया सुसमता। भागाम-पुभारतका रक्षणीन में वसकी उत्तर-पूर्वी सीमा है। कामानी-पि॰ कासामका आसाम-संग्री। पु॰ बासाम बासीः दे० 'बसामी' । सी आसामध्ये मापा, कसानेवा। बासार—पु॰ [सं॰] मुस्कार दृष्टि स्टब्रुके पेर केता बाह्मण्य, मित्र राज्यके सेत्रा, राज्यके सेत्र सेत्र राज्यके सेत्र सेत्र

शादिः पुरानी रमारत ।

शादास-वि [र्ण-] पर्यसा करनेवाशा । पु॰ सोमरस
सिवोदनेवाल ।

यासावरी-को भी रामको एक रामिनी ।

शादिक-वि [र्ज] प्रवारी प्रकृष्टे पुर करनेवाशा ।

शादिक-वि [र्ज] प्रवारी प्रकृष्टे पुर करनेवाशा ।

शादिक-वि [र्ज] प्रवारी प्रकृष्टे पुर करनेवाशा ।

शादिक-वि [र्ज] वैद्या मा मारामसे वैद्या हुमा । पु॰
वैद्या शास्त्रा एक्तेक स्वानः वैद्यस्य इंग ।

शासिक-वि [र्ज] दिरम्यत या केन्से रचा हुमा (प्रति

शादिक-वि [र्ज] दिरम्यत या केन्से रचा हुमा (प्रति

शादिक-वि] वा विन कार ।

शादिक्या-वि [र्ज] वा व्यति ।

शादिक्या-वि [र्ज] वा विज विता ।

शादिक्या-वि [र्ज] वार्षित्र ।

कासिस्यवन"-पुरु कारोकार । कासील-वि हैं । केरा हुजा ! —पाट्य — पु कासके एस कंगोरेंस एक (वा) । कासीयन-पु [संग्) डीला और कगाना ! कासीय-जी कारोबीए ! कासीय-जी प्रकार । कारों ! — ग-वि॰ वे 'साहुग — स्तिय-वि , पु वे॰ 'बासुतीय' ! कासुनि-ची [संग] पुक्ता स्टाप्त पुकाता। कारा

प्रस्त !

कामुतीबरू-पु [र्ड] पुरोहित; कठाव कन्यापास्त । कामुर-वि [र्ड] असुरक्षा स्मुर-वंश्यी वयान करते बामार देवरीय देवी । यु वह दिवार विक्रमें दर कनावे पिता माताबो वन देकर क्यानके उत्तरेवता है। बाला मनका राक्ष्मा रकः। कासुरि-पुत्र [र्ख] प्रविक्य दर्शनके प्रवनक क्योन्य प्रतिक्या युक्त विक्रम्य ।

आसुरी-ली [मं] जसुरकी बानमें एवन विकेता।
एर्स कार्ड एर्स्सी (व जोन्दे बासुर'।-विविध्साली॰ एवन विकित्सा।--साया-ली॰ मुर्तिके सावा।
-संप्रत-ली हो दर्सके साव किया हुना चन।
-स्प्रिट-ली बैगे आपिए।
आसुष्रित-मि [मं] माना बनाने या पारण बरनेवका।
ओव-सेन चुना हुना।
आसुष्रित-मि [मं] माना बनाने या पारण बरनेवका।
ओव-सेन चुना हुना।
आसुष्रित-मि [मा] मान्स बोना एति।
आसुष्री-ली [मा] मान्स बोना एति।

बासेक-पु [र्थ] मियाना चर करमा सिवद करना। बासेक्य-पु [र्थ] यक चरका नर्पुसक। बासेक्य-पु [र्थ] देश भारेक । दिश पुरस्त मिया। बासक्यी-की [र्थ] एरेस बाहा।

भासकी-कौ [सं] छेदा वात्र । भासेका(वृष्क)-पु [सं॰] केद करनेवाटा ।

सामे-पौनेसे मुग्री ।

जामेध-प्राप्तारा मामेप-प॰ [सं] देत, रोड प्रतिरंश (का॰) ।

मामबद्भ-वि॰ [मुं॰] ग्रेट करनेवाला, रोक रावनाता । आमोच-प्र• कि:] बाह्य कहा वाचार प्रतवाचा । आसेवम-प॰, आसया-धी॰[सं०] सनत सेवमा वार-वार

दीनका भाषः मंदर् । भासेबित-वि॰ [मं] हिया श्रमा बार-बार दिया तथा ।

जामेर्पा(विन)-१४ [छ०] हगनक साथ बार-बार करने

बालाः संबन् करनेवाला ।

भारोध्य - (१० [मुं०] सेवनक वीग्या बार बार जावर देशने

स्रोध्य ।

साराज सारोजार्ग-प॰ साथिन गास I बार्मीं+−#+ इस शुरू ।

भास्फद्र, भार्कद्रम~प [गं+] आक्रम™ भारीहराः र्रात्मा सुदा पाइन्ध्र सरपर चाना विरस्कारः गानीः भारतागढा शायगाः नष्ट करमा ।

भारकंदिन-६ [मं] भारप्रस्त । पुरु धोहेकी सरपर चान ।

भास्कवितक-पु[मं•] दे॰ 'आर⊾ित ।

भारकंदी(दिन)-वि॰ (वं॰) आज्ञमण कानेपालाः बहाने बालाः दनेवासाः स्यय यस्तवासा अवदश्य करनेवाला ।

शास्त्रर-प॰ मि॰ो भाषप्रादमा शितदा संबमा बालीना गराः फैनागा ।

धारतरण-तु [र्श•] क्षणामाः विद्यामाः दरीः गराः शबः बद्दमें फैलावे तुए बुद्ध ह भास्तरजिक-वि (ग्रं•) कैताया जानेवालाः कालीम करो

भारिषर धानवाना । भारतार-प सिंशी पनानाः शिराना । -पेक्टि-मी॰

यह उत्त । भास्ताय−पु+ (ग्+) रतुदिः यद्यमें नतुप्तिराठका स्थान र आस्तिक-वि+ [तं+] रंथर और परशेवकी मामनेवालाः बेन्द्री सामनेवासाः भर्मविष्ठ । यु ईयर् तथा परलेडिन

विरवास करनेताना स्वति । भास्तिरुमा-सो॰,भारितक'व-पु (सं॰)दे अपीनका । शास्त्रिक्य-पु [तंक] देवर आर्डम दिवाना वामियना ।

ब्रास्टीडा-पुर्व [र]) रुद्ध करि जिसकी चित्रप्रदेशन असमे बयमे अपने सर्वत्रमें सभ्यः गामरी बान बाध हो । सारतीन-न्या (पा॰) सिते कश्तक वाहपत्का नाम शीरी । सुरू -का साँप-मित्र ननदर राष्ट्रता कानेशामाः होस्त्रमा ११मन्। -पदाना-सहन्त्री तरह होता

किंगी सामद सिर नैशर होना। सारते = स ० १ आहिंग्या । आहर-दिव [र्थक] अध्यन्तंत्रीयी ।

आस्था-सी [०] अरहा शिवामा अशा जानेस सरारा। गुना बाहा माहा विद्ता प्रक्षा रहनेदा राध्यम दा स्थान है

भाग्धाता(न)-रि [¹] सना रोजरता अनेप्त बरनेवामा । शास्त्राम −३ (शेव) स्थान समा शामाण्यः दरशास यसेपेयनका काम शहर जाता ।

क्षात्रवासी - १ १० (लेप) गुज्याच्या ह मास्यापम-५ [६] भागते हार व्याप्त वापापार ।

भाषभः रतेत्रद्रतितः । भारपापिका-सी० मि०) राजार । मास्थित−ि [र्स•] रश दुम्या समारा क्रिया दुशा स्ट्रेश हमा। प्राप्त कर चुका हुआ। सच्या देश रहा ।

आस्थिति - भी ° मि ो रियति, हामत । आस्त्राम-प॰ (बं॰) न्यप्तताः प्रेयताः धीने दा (शत करमंद्रा जल ।

आरपष्ट~पु॰ [र्ग] श्लामा स्रविद्यान, आर्थन्तः पण जण कुकारी बनाचि। सामा वृष्टकीमें दशम श्वास । मास्पर्धा-न्यं थि । १९५१ समहार क्षेत्र । बास्पर्धी(चित्र)-दि॰ सि॰) स्पर्ध करनेराहर ।

भारकाल~प्र• वि] मारनाः रगप्तमाः विशासः अप्टेश कान फरफरानाः वावमाः पदा हेना । बारकासन-पु (नं॰) रमानाः हिलानाः काकारा थका देशा पर्या । आरफ्रजिन-प्रार्थी स्थाप्त

आर्फ्सर-पर (गैर) ताली प्याने वा ताम देवनेधे वाशाहारमप्र का भवार दिलमार वॉपनाः सन्धः। आक्ष्योद्रह-वि मिन्ने ताल क्षेत्रनवाला । व अभगेत ।

आरफाटन-पुरु [शंप] मान डोसमा हिमाना पमानध कैनला पुणना। विकास जित्रपत्ता प्रदेश द्वामा दर कताः मंशनाः। शास्त्रादमी--भी [गं+] छे: बरनरो बरमो । खारकोटा-स्वी॰ सि॰] सरमान्तिका वनमाहित्या । भारकोतः स्थापनातक-इ [गं॰] अर्थः श्रारिशासः स् क्याज ।

आरक्षातका आस्कोता-गी (११०) महिनशा अपरा-दिया गारिका । आर्थ्यम्-पु॰ (में) वहना स्राटित होता। आरय-व [मंग्] मुंह धररा । हि॰ मुरा-संस्थी ।-वश्र-प= क्रमंत्र - स्थानर-प् कुरशः शहर । -क्रीम (म्) -१ द्यो। भाग्या-को [वं] रहमा जिल्ला जिल्लामस्यान विश्वप

बरमा ।

आस्यासय-१० [१] लामा । आस्पृत-वि [०] क्षित्रा हुआः साथ क्ष्मिः तथा र आस-१ [अंक] रन्ता नय-दिक रत्न देशेरण । दुव शहरता सन्न सम्बद्ध । आस्त्रच-९ [मं] बक्का प्रशासका यह अर विधेत भागरकाता होत्यस पानी तत और किर वह नह है। है। बढ़त हुन बाबनका केला दोना हो छ। बाग्र (स्पोन्धी केंग द्विता करनवाना शानिहरू का कार्य । आरहत्त्व-५ [त] वदाक याक मुद्रानीता रख्न हिर्देत आरम्बन्धिन-दिः [त] हैरे० 'भारत'त्' ।

आप्योत्-वि (संर) एक विवर हमा परितर । minite-1 [re] in sair, nuritunger eitert minutelle-do fer gan nate fin, anien mag. कारवादिन् र (तं } प्रधा सार (त्या शाद दुना !

अनुवास-दि मि विभाग स्थाप ने ने बीचा सर्वार

बरहा क्या ।

हिसित-वि [सं] मारा दुश्राः बाहता विसे हानि वा

ध्वि पर्देनायो गयी हो । **ब्रु श्व**ि मुक्कान । विसित्तक्य-वि [मे] विशालोग्य, मार दाकने, वीशा

पर्देवारी, बोट पर्देवान बीम्य।

दिसीन−५ [सं•] बंधली, क्रिय पञ्चा

दिसीर-वि॰ [सं] शामिकारक, नुराई करनेवाकाः

मासकः। प्र• स्वाप्तः स्वयः प्रदावे करनेवाकाः स्वरितः। हिंस्प-वि+ [सं+] बच्या शतावे जाने बोम्ब ।

विश्व-वि [सं] कामिकारक, पुरावे करनेवाका वासका निष्टरः विरोधः भयानदः जेवकी भूशार । 🖫 प्रश्राति बरपौरनमें भानंद मानमेबाळा व्यक्ति शिकारी जानवरः। क्षिनः भौमधेनः निष्दुरका, क्रहोरका । -अंनुः-पञ्च-पु

भूकार बानवर । - यंद्र-प ब्रष्ट या छति परेकामेशका भाकाः प्रदेश एक भविजार श्रेत्र ।

विक--प्र• (सं•) दिस पशु, भूँदार बानदर । हिंसा-सी [सं+] अपदार दरनेवाकी भी गांसी: अश-

मातीः पक्षावकोः क्रकादमीः शिराः वशा । हिसिका-की॰ [र्ष] शहर्भी अपना हाइऑडा बीडा ।

द्वि≉−प्र एक विभक्ति जो कई कारको विधेनकर कर्ज

भीर संप्रदानमें प्रमुख दोती थी। अ की ।

हिम हिभार-पुनय, ग्रात्ती; हदन। हिमाव हिमाय»—५ दिग्वत धारत।

हिक्सत−सी [#] <u>श्रीदयानीः पत्तर्गः असिः</u> थाकः इक्ति निक्रिसम्बर्ग इक्सेमो । −असक्ती−को नीति

राधनीति। भनुराहै। भाव, बोइ-वोह ।

हिकाती-विश्वाधाक, ओक्तांत क्यानेवासा ।

द्विकस्पना≔न कि+रे 'दक्रमना ।

हिकायस-सी॰ [अ॰] बहाती, किन्सा नात I

विकारत-छो॰ है 'इस्टरत' ।

विश्वक-द भीड भिष्टभीका हंड। हिक्का-सी [संब] दिनदी। दिवसीका रीगा असक धनीत

अनुद्र । -शासी(सिन्)-वि॰ विसे दिस्सीका रोग हो ।

हिक्किन-सी (संग) दिनकीर छर्पता। हिम्मी(हिन्दू)=वि+ [सं] हिन्दी रोयने पीरित्र । दिषद-भी सफलतामें भटि सामभंदीनता आरिके

बारच दिली बाबडे बरलेमें मनडा स्वनार भागानीश कामा- विश्वविषाहर शिशक्ष । क्रियम्मा-भ कि क्षेत्र काम करनमे प्रान्त रिशी

भारतिक सम्पर्धना भारिके कारण, तुन्ता बनना लागा-शेष्ट्रा इरना हिनको छमा ।

विष्यक्रियामा~ भ कि मनका आना पोधा करना ।

दिवक्षिप हर-यो देश दिनक । दिखकियी-छी दे दिवस्'।

क्टियादी-स्त्री है 'दिनका'। सामाविक रीमेड बाद एक माथ डीन-पार बार जार जीरत छाँग भेजका किया। मु॰ -बँप जामा,-समना-स्वादा रोनेन ६वि १६ने क्षतमा । द्विव्यक्षियों क्षश्या-प्रानांतके क्षमण वायुका संबंधे निर्देशनरे प्रथमने बारण दहर प्रशस्य हिन्द्रोहा । मानाः मृत्यु है निकड होना । –सेना –रोते सम्बर्भाता स्क स्कबर निरूपना ।

हिपर-मिपर, हिचिर मिथिर-५ दियका आक्रमा असमर्थता आदिके कारण दिसी कामको सकते न हरहे-की प्रवृत्ति शक्तमरीका

द्विञ्रद्वा∽पु मधुंस्य स्टोबा।

हिमरी-पु॰ [बा] मुखबमाती संबद्ध वा मुहम्म है पहाने मरीना पकायम बरनेकी तिथि-१५ नुवाई छन् १११-

से बार्य होता है।

दिव्यक्त−पुरु [शः] अर्वक्र एक मानः। हिनाय-प [अ०] परवा, भोरा बच्चा । मू० - उरवा-परवाद रीक न रक्षमाः निर्कंद्ध हो जाना ।

हिम हिम्मछ-<u>५</u> (ते] स्थरियण ।

क्रिज्य – प्र• [अर्थ किन्नी सभ्यमें आवे इस बच्चे दवा माराः व्यक्ति असग-अवय कहता वर्ग-विद्वति 'स्ट्रेनिय'। ह्य -करवा-भथरीको जोतमा दिशो मामतेनेसारक

साह इयार्वे विकासनाः । -विकासना-१६४-१३४ क्षरंगः। यष्टराज करना १ ~एकदना~यक्षते निक्षणना । बिजा-प [ब] विशेश विरह जशहै।

द्विद्रक्रमा 🗝 कि॰ वे व्यवस्थ १

ब्रिक्स प्रतिकाल १८८ १९४५। अन्तिस स्थित यक-परिकट् १ १२ से १९४५ तक ।

ब्रिडिय-पु॰ [एं॰] एक विद्यासक्त व राध्य हिसे धेन्ने

मारा था। - किन् - द्विर (प) - निसदन - भिर -रिप्र∸९ भीम। डिडिया-औ॰ (र्स॰) यह राम्सी जो (संदेशको बहुत से

(શ્લાને અપનેઓ તાંદર સ્તીના સવમે પરિનાંતેજ નાર ચોર્સ્સ ध्याव किया । बसके एक प्रश्न तरम्ब प्रमा विश्वका आम पर्देशक्त था) १-थति -श्मण-५ भीमा इनुवान् (१)। दिवारा, दिक्षीका-इ दिवोका ।

विख-वि॰ वि । रचा प्रमा। यहीमा उरवरा अनित अन्त्रो। भागपानक प्रकारी। अनुप्रक स्थारधारका खञ्चाबपूर्या प्रेरिका प्रतिका प्रतिकता प्रसा द्वारा हाथ, मंगलकारेका निरिष्ट । पुरु मित्रा भेरेपीर भवारे नारन वास्ता कार अनार्थः प्रस्तुन्त वानुः कम्बानः संगन्ध महाव वेसाम हि रे दे विविध के विदा-दर-विक विश्वन्ता व्यवसार करनेवाको दिन 🔃 अपकायी જાયવરા ખાદાય*દદ, રસાદખદર્ચક્ર 1—વશો(સં) – જ*નદાદ बर्देशका । पुरु क्यस्ति स्वति ।-काम-विरु दिनेगुर्द मगळात्रांशी । "साम्या"मी दूमरेक किय मनक शामना । -वार्ड -कारी(रिव),-प्रम-वि॰ दे दिसंबर । –शिलुक्र-वि दिन्नीय नवार्वेड किर

स्रोयनः विकरने विद्यना बरनवाडा । -श्वित्तन-प्र**ः** दिशोको बक्राँ, पदधारको राष्ट्र छोनना, स्मिन्धी नवार्ष पहना। –प्रजी–९ ५४४६। – प्रप्यु-४ रे

दिवसाम । -बुद्धि-धीक नेशीयुर्व मानना वि सहायनावाका । -सिम्र-तु प्रदार विद्या मार्च-र ! वि जिन्द दिन उत्तराद्यम् को ।-यम्म-यावर्ग-

वेक्षपूर्व परावधी । -वाशी(दिन्)-दिक तकारिक धर बारेगाका सररामचे हेनेशका

हुकसामा-॥• कि॰ मानंदित करना । ०थ कि है० श्री क्षा-प सि दिस पर्या ाँ-अ दे० हैं। दे 'g'। अ० कि० क्यम पुस्तकेदक दुक्ताला । इक्सी-की इकास, बत्कास, ममसी प्रदेश गोरशामी वचनके साथ प्रसुक्त होनेवाना 'होना' क्रिवाका वर्तमान तुकसीशासकी मायाचा चाम (इष्ट कीवाँकै मदसे)। काबिक क्या । अ सर्वन हो। में । 802m-3 g. 2(21,1 हुँकता-व कि 'है' श्रथ करना, इंकार करना नरेत इक्ट्रकी-की [सं•] शामेर-पंपकते अनसरपर सन्तरित करनाः मानसिक वा सारोरिक पेडासे जीर-वीरसे रोजा शियोगा अस्त्रा शब्द । पीराके कारण गामका रॅमाला मोकमा, पुरुष्ट्या । हस्रामका-सी [सं] एक समा। **इंकार−**ष्ट [सं•] दे ८/इसर । ह्याना! – स. के. दे 'हकता । ईंटि≉−वि छ⊮ तीवा इस्रस-प उरकास मनको वर्गण, भागवको चठाना देख-इ छाई डोबका पहारा । दम्साइ । † सो • हुँचनो । −इ।मी −सो नस रसनको हैं क-सी॰ सिपाई बादि धराने समिनि क्रिस-वैधे किरिया, मस्टामी । भागस्त्री सहायता । इकासी-वि वस्थासपूर्ण जानंदपुष्टः वरसावपूर्णः। हॅस−को शिक्षे स्थारथ और स्थारण भी द£कि हसिंग-प्र[मं] मच्यरेशका व्यक्त मान । कहते रहनेकी किया अर्लगा हैथ्यों हारा किसे में इंडिया-१ [ब] नेश्राः श्राकः मद्राधिकः सकन्यात मकार विश्वी बरमुक्षी चनेकी रच्छना हुरी जबर । का भोरा। - नामा-प्र प्रकश्चरत भावका विदर्श-हैंसना~च कि शरी गयाने देखना, नशर ध्यासा पत्र । शु • - कराना - किसाना - भने वा कोने अप कि ईंग्यों करना नस्थाः क्षद्रना इराध्या भारमोश्री परवास पुक्तिसमें क्याना । -र्थग हामा-कदमा । ह∽द (सं∗) गोरश्ये शेवनेको व्यक्ति । ≠ व मी । परेक्षाओंने पत्ता । **- यहाना, - यमान क**रवा **- शक्क**-सुरुष्य दान स्टामा । -पिराइमा-पुरा दावत दीवाः -स्प−द्र गोत्रका गत बनना । - बिगाक दना - बिगाक्या - ग्रेंबपर पता हुक−की शास्त्र पोश क्षमध्य मानसिक ग्रेशा सम्बर्ध मारमा कि सुद्ध निवड बाब । हुकमा-अ कि श्रीश हाता वर्ष करनाः छात्रना । ह्रक्किह्रक्री−की [सं] यूक्ताः गर्मनः निवादकं समक श्रुष्टमारू भ मि दिश्य दोना प्रमृद्द होगा निस्प वाना जानेनाका भीता बीना <u>श</u>ेह बाहमा—'काम्पस जंद उ पादि हुक्स'— इस-९ [सं] सवः लुमान । EHET-3 44 SEEL SEE 1 इस−९ भेगुर। हेना । शु −देमा −भेगुरा रिजना । वृष्टिया – धीः वृश्मेश पूर्व माक्ताः वनसमामा । हुन-वि ह्या धनारी, मुद्दी काररकार । **बुक्क-पु** [छ+] नृत्यक्षा एक प्रकार। हुन, हुन-पु (र्स०) एउ भाष्य जाति जिसमे मारमधी शरियमीधर सीमासर क्य तर आसमन क्या मा और इस्तव-प्र और ग्रव, शा-स्वता स्थात कामा देश-SERT AFAF ! क्षि एक बार विकास विस्ता है। सरह बराबा भी बार हुस्कास-९० यह मादिह संद । यक् स्वर्णमुद्धाः । हुन्-भ किसोन्द्रे कहरणीय काय करने या करनेक प्रवस द्वल-पि॰ [में] पुकाबा दुधा आमंत्रित । से निरुष्ट करनेके किया हाटकेसे मेंदश विकासन्त्राच्या एक हति-स्थ [वं•] आइत्य, आमत्रमा कनदारा नाम, श्रम्या पश्च क्यी भाषिको मनाभका श्रम्य । इसियार=-दि दे दीविकार'। द्वरो≠∽म १र द्वति। इसम∽दु (व) धर्वाक्र दूसर वेट थी करनमांक गुरूपे श्री हो भी है। द्वार प्रदेश । द्यदार प्रया - यंद-पुरु भनीरसे अप 📭 वॉरीके को हमान-स॰ 📧 भागमें टाइन्स्ट भूनमा । इस्के बिन्दें मुख्यमान चित्री मुद्दमके दिनीमें बजोदी शुक्रो – भी० करहाद दिग्यत । पहला देवां है। हिंगहर्नांव व्योद्धा त्यो नेवा धरे । इसनी-पुरकतरहवा वर्गपाश एक तरहवा अंगूह हय-५ [म] आहान दुवासा । दक्ष रागिनी । - काम्ह्या-पु दक्ष राग । हर-धी [न] निहरत या स्वर्गकोस्स्त्रे सी जनसा हरन-पु [म] मधार्ट स्री। श्रेररता धारणाः शामाः (ला) परम श्रुंदरी परी अनी होन्द स्वीर • दर पृष्ट[ा]। -परस्त-विधीचको पूजाकरभेकामा सीरनेवेगी। **न्का यशा**च्यद्वध र दर सहस्यो १ -परस्ती-क्षा कोरवं मेंन शीरवंशिक्षना !-शियास- | हुरमा-ए० कि० दक्षना, देशमाः मुनाना, वराना !

हुस्कना~दूरमा

हुस्तमना⇔श• मि• वधन बत्वाः सं करमा । इस्तमी—स्रो वक्टी वसन है ।

इसमा-स जि॰ काटी भाविका डेका जाना।

इक्समा∽भ कि सकतित भानंदित दोनाः स्कृतित

होला क्षमहत्ता + क्षोमित होमा-'हिमे दृष्टते श्रमाक

ह्याई'-स्विवास । वस कि॰ वस्त्रसित कामा ।

1111

वि शास्त्रोत्तासका ।- (६वे) स्वतादाद-पु॰ सहज सार्द।

- इस्-पु॰(क्सिके विषयमें) भवान गुमान, सहासना।

<u>~तस्य−त्र</u> किसी नीजन्द्रे इद्यारसे सँगामा, स्वग्राकेत

मैंगाना । हुस्तका आसम-स्यूर्तीका बमाना ।

इस्पारक-वि है । होशियार ।

इंद्रण-पु॰ [सं] एक नरक ।

14.4 दितक-पुरु [संर] बजार वण्यास्ट । दिववा-धी [10] भटारे । दित्तपना = च कि दिन थिय वेशा जा नश्य करना । हित्तपार = पुर वेस स्तर - नेश्व अंग पर पर सनु नुव VI GER GRANE - TE : दिवा-स्त्री [|] बगाबी भाषी; विद्यविद्यव ! -र्सवा--प• नार्ध क्षा घर 🔰 ओना । हिताई-की पुरुष दिशा । दिवादियो(थिन)-दि॰ (से] भनाई चारनेवाना ! दिवाधापी(यिम)-वि [वेक) विवद्या हिप्तामा ०-॥ 🕰 । नित्र हरण दाना भवारे दरनेनाष्ठा रीना। प्रमुख रीना दिगीको भार प्रवक्त रहि होनाः विष् बर्गना अनुभूव मानुम् १६ना अभा प्रशित होना। - नक्य क्षूक संगर्ने भहिता बाग हिलाति -सविसाम । हितापी(पिन्)-वि [4] मनभाष्ट्रपी हिनव्ह । हिताबद्ध-वि [मं] स्वयादशां । हिताहित-५ [નં] મનારે-વરાર્થ र्थतक सन्तका सानायाचा । हिली-वि हिनेशे भनाई पाइनेशकाः प्र म्बक्तिः नित्र दोश्यः हिनु हित्-न दु हिनश्रु ध्वस्ति वित्र मधा बीश्या मक्पी । हित्यम-भी [4] दिश्यायमा, विशेषी वधार्यका 5 DI I हिसरप्-दि [यं] भक्षारे पाइनेसका संगत-द्वापना बरनेशना। दिसप्रका-सी सिंदिय धार हित्तपिता-सी [मं] दितेशे दानस्य नाव दिसीकी दिवदामनान्धे पूर्वि । हित्रपी(पिन्)-4 [4] हिन्नर रू । पुरु निष्र । हितान्त्र-सी [सं•]सरशमधं अच्छी नेड सनाह ! हितोपहस-१ [1] दिवदारी वपरेक, शासामर्थ, नक समाहा विष्मुद्रमोइत नीविद्यास मंदर्भे एक प्रसिक्ष र्घन । दिशीमा ० – भ 🔏 हे हिवाना । विकायत-की [भ] मार्व-प्रदर्धन शतनारी आह्य । -यामा-इ दिशवनी भादेशी भादिकी दिशाव। बिरस-धी [व] तंत्री तीनताः गर्मी । हिनकामा - ध कि (योदेक) हिनहिनाथा। क्रिमती#-भी विश्विता। दिमवाना-५ तर्ब्य। हिमहिमामा-भ+ कि (पेंंद्रका) श्रीमुना। बिबहिमाइट-५ की॰ (धोन्डे) बीसनेको नामात्र । दिना-धी [अ] मर्देशे। -बंदी-धी॰ मुस्समानीमे दोनेवानी ध्वादकी एक रस्य । -का चोर-दावने वह सप्तर बमह नहीं मेहेंदी न बगी हो (सि.)। दिमाई-वि मर्दशेके (गका। स्त्री पीकाकन किने हप

सर्च रंगा दोनवा। मानदानि । -कासम् - इ एक तरह

का काम ।

हिन्नम्-पुरु [अरु] दिकावत रहा । वि. कहरत, बह बबान (द्दला दोना) । नगरम-१ १४/१५(छा । दिनुष्ट-१० [मं] भीवा वध पानास । हिरदा-५० ४ '६०६१ । सन् नन्। नमामा-५० €1433 F क्षियं चळा - पुरे क्षिमा स्था हिर्मत्र०-५० दे० हिम्दा । हिम-नि• भि वेदा पीठल। पु॰ वर्ष, पामा भीत र्दरका बाह्य देवेत कना दिमालन बरेवा नंदना नंद्रमध नवनीयः, मन्यना कर्या भीती। पदश्या समना स्त रांगा राजि प€ वर्ष, भूनाव । - उपम-प्र आंका पायर। -प्रमु-सी॰ बाइना भीनिम, हर्मन असा । −इथ−पु भागशो र्देश वर्ग ६४ । −इर≕पु नंद्रमाः दपुर । दि० इं इ भानेनामा । -० सन्तय-९४ वर १ - किरण-९० भरमा १ - व्हर-५० धिधिर ऋ ११ दिवाक्ष्य पर्नेता हिमालय हो पारी । स्टेब-पुरु भारता । - शर्म- विरु व हंने घरा इक्षा । - शिक्षि-दु विश∉न पर्रदा∼० सुता−की पार्रधा − गु− पुरु नेहमा । - गुह्- गुहुक-मु यह दमरा नी ३४६ कानेनाको नी बोद्ध यदिव ३३१ नताया गया था १-सीर-वि बढ़ नेसा सद्दर। -धन-विश् दिनदा निवारण करनवाका । —स—पुरु भैनाक पूर्वत । दि 🛮 🕊 स्मे बरपद्यादिमानवर्षे बरपद्या-जा-की पार्वती, गिरि सुना श्च-के। क्षीरिको श्रय निरनीस देह । ∼ज्यर्-प्र आहा-प्रशार । -इंडि -इंडि-सी पाला । -सेस-पुर क्ष्रके याग्रभ वता द्वारा धङः —शीधिति – प्रमा। -बुन्धर-की श्रीरिको, शिरती । -बुर्दिस-५ पाला, अधि देवक पहलके कारण दक्षरायक रिल वा मीसिस। -गुवि-पु र्याः -ब्र्(६)-पु स्था-ब्रस-महानित पुर । -धर-पु । हिमान्य पर्नेत । हिमान्य परंद । -धामा(मम्)-इ -धातु-न बंदमा । ~ध्यस्त-दि मानेसा मारा द्वभा । -धात-नान्धा पतना। भारेका विरना। -प्रस्थ-पुर विमानव । -पासुक,-पासुक-प -पासुका -वालक्ष-क्षी दर्शः। -भानु-पु॰ देहमा। -मूभृत्-पु दिमावद पर्नेत । −शयुग्र−पु पेदमा । −युन्द्र⇒ प वस तरहता सपूर । -रहिमा-कवि-प नेत्रमा । -बारि-पु॰ दंबा पानी। -बृष्टि-स्ती प्रशाददमाः कोने गिरमा । - हार्करा - औ॰ यहदावसे निदयो योजी । -शिधरी(रिय)-५ दियावय । -शीतस-नि बबुव ३४॥ समा दैनेबाका (द्योत) । - ह्युझ-वि नर्फ नेमा सफर । –शस्य–पुरु हिमास्य पर्नत । –० जा-सी पार्वती। –भ्रथ –भ्रथव–पु सम्ब्र विप्रजन्ता। -सवात-पु -महति-सी॰ वर्षदा हेर् । ~सर् (स्)-पुढकायानी। स्ट्रत्-पुपद्गा।-हान कुल्-पु अन्ति। -इत्सक-पु दिवास मूध, सन्त अदायेदा क्रिसक-पुर्धि | विसंक्ष्य वृक्षः। दिकामस-सी [ब] स्था, रधनाकी, निगरानी। ब्याम ।

हिसर्त-की [सं] देवंत ऋतुः वारेका मीसिम ।

– ज्यू इतिश्वारी-को॰ असमस्या ।

हरहण-१ [मंग] यह आहित हरा । हरहण-१ वाही आहिता हरा ।

हुएन-५ [मं] १६ गतिम चननाः । । पाछ चयनाः पूर्वता दहनाः

भूतता करना । इतिहास (तृ)-दि० (तं) ८४ चाक चलनेवाकाः इतिक

पूर्व।
इस्त-भी बाद्येक हुर, नकरूर भाग आदियो नांक
विशेष करो पहान योदन मोदनेको क्रिया प्रीरः,
स्ता पूर्व बस्त देवो महिका होता उक्तर स्वरः
हाण प्राता प्रारंपका बात्याक्त स्वर्थीय हरण
बारावा प्रवाद प्रवे प्रदे भारति हैये अहात, क्ष्म
कारा वर्षकर्मा विद्या प्रीयोनेका काम क्ष्मा चीव।

हुसमा-स॰ दि दे॰ 'ट्र्रना । हुसा-पुहुनने, हुरनको दिया।

हुम-६६ जाहिल नेगली प्रज्युः कावाह, व्यवहार स्माद्यभेषो तास्त्राक्षको प्रज्युः कावाह, व्यवहार स्वरूपियो तास्त्राक्षको अर्थितः अप्रदर्भ अतिहर्भ हुद्ध-स्थात तुद्धको सम्बद्धार प्रज्या

हर्न प्रभागक अवस्था प्रशासी | १० हर् । हर्प्यय-वि (म.) हरवर्थ रहत्वाचा । पुण्यासीय सेमा -पोदिस-वि बामगीवित । नयर्थम्-वि

े प्रवर्धक नामारायक । इस्सुद्ध-पु (मंग) इरवका सुन करवकी वेडन । इस्सुद्ध-पु (मंग) करवका सुन करवकी वेडन ।

हम-(६ (१०) ६१वसं वस्त्रतः । इजियाः हजीया-सी० (सं) निशा कावा ओवा देवा

भन्दंश ।

सुन-(०) (०) इस्त किया हुआ; गृहोछः वहन किया हुआ न सावा नया हुआ; विनाः कुमा न वीहन्ता रिक्षकं पु आत् हिरणा - न्यून्ति - द्वन्ता सर्वक्र (पुत्रः) - न्याय-वि धानतीन ! - वाह-वि वानी-रिक्षा - न्यूच्य - विकास कियो कियो किया न न्याय-(व निवक्ष स्र्वित कियो किया कियो किया न न्याय-वेद्युच भंजावीन !- नाय्य-वि साम्यक्ष-वि (सस्तु)-वि वस्त्रियिका - साम्यव्य-विक निवक्षा स्व कुछ विभाग नायस्य स्थान मानी-

ह्याधिकार-वि [मंग] भविकारवित परच्युत । ह्याच-क्षी [सं] अपहरण ल क्ष्म, सहमकी विवास

भाग्र माध्र।

हुन्-ि (ड) (समायांक्ये) दर्ज कर-नवाला। प्रदण करनेवाला। का निकास लाहुत, प्राण करनेवाला। जा द्वार करनेवाला। जा करनेवाला का निकास लाहुत, प्राण करनेवाला। जा द्वार निकास कर करनेवाला। जा करनेवाला कर करनेवाला कर करनेवाला कर करनेवाला कर करनेवाला कर करनेवाला करने

हर्यतम-१० [1] मनेरवधाः श्वेरत मनाहरः हरव यता माहर्षका वानेरहायका विवादत्वश्च निकलनवात्राः

उपकारा गांधित । यः अस्तुन्त संयम् । श्चरय~प [गुं•] नहाइ नीतर नाया भार रिपन मामका रक्षक्रीय विश्वने भरा शहर रक्ष माहियी हारा सार बरोरमें प्रशादित होता है, दिना छाती, धीना। मन, श्रेक्टब्राचा आस्मार नीरधीरविवक्तिनी प्रसिद्ध भीतरी रहरवा किमी रकानका भीतरी भाग था मारा महस्तरूर्म होता है। सार मध्य, यस्त होता बहुत हो विशापाता अधि । -कप-प दे शक्ष । -क्ष्म-विक हरबंदी शुरूप करनेशका ६ नक्ष्मान्य रिजदी क्षम बारी प्रशासी। -क्षांभ-प्र मनदी मधावि। - यह-दि॰ श्राय-नंदर्भी शाहित, भावदिता श्राप्रश्वित । श्रवको गाँउ रिक्को दशक्तिनाकी ~¤ધિ∽શ્રી मात्र १ - मह-य ५०४६ देस्त । - माह-४० १६१४ जान लना । -प्राइड-विश दिकको विभाग कराज-शका । -प्राष्टी(हिन्)-दि॰ मनोहरः मनोर्टन्स -कोर-पोर-प हरवदा हरव दरवेशका व्यक्ति । -व्यिष्ट्-ति इरवस्। धरन स्टानशमा । - अ-प पुत्र : - श्र-दि दिल-ध पान समतमेशाना १६६व बाननेवाद्या - इत्यर-९ (१४३) बद्धना - साही (डिन्ड)-वि इरव वकानरामा । -इस-पुरु इरव दा उप । – दीवस्य – दु॰ (रस-द्रो कमश्रोदी। – प्रय-तु दिवदा बहुव तमीह साथ प्रवस्ता। -मिक्टेत -विदेशन-प्रमान समरेन। -पीक्षा-औ० है 'हल्पेश । -पुंडरीक-प्र दे हलुश्ररीक'। -पुरुष-९० रिक्टी परसन्। -प्रमाधी(धिन्)-दि० मनस् धन्य कानवाधाः सम्य करनेवाकाः -प्रान्तर-वि मंगदिन विष्कृर । –प्रिय-दि हिसको प्यारप्त स्वारिष्ठ । ~बंधन-वि पुष्य करनवाका। −होरा-५० हरवमे हातशका रोग । —स्टच-४ वानः पिता । —स्टब्ब--वि॰ मानदरावक । -यस्य-५० प्राथमित स्थित प्रियतम । -विदारक-वि॰ इदयको स्टिपं करमे-वाला, धोक, बक्या आदि उत्पन्न क्रामेशका। -क्रिय -वेर्धा(चिन्)-वि मर्माहत कावेशाचा । - विरोध-त हरवदा पोदन । - बांचि - श्री मनको प्रवस्ति । -ध्यधा-प मानसिक पोशा । - व्याधि-स्रो इरव का रोन । – सप्य – प्र. दिक्या कराः दिक्या अवस् । -- सम्य-वि• दे "इरवरीन । -- स्थिस्य-प विश-ज्यता । —सोपच-वि॰ दिक्को सुक्षानेवाका ।—संग्रह-पु इरयकी नविका करूमा । -संसर्ग-पु दरकीका मेंड। -समिस-वि धानेके बरावर खेंचा। -स्थ-वि भी हरवमें रिवत की। छरीरहर (बैस कीरानु)। -स्थव्यो-को -स्थाब-५ वक्षारक्ष । -स्पू**व**् (श्)-वि इत्रवधे पूनेवाधा -स्पर्शी(सिन्)-वि इरवको प्रमावित इरनेवाला। -हारी(रिम्)-वि॰ मसको सुरव करनेशका । - होन-वि निष्पुरा

इत्ययान्(वत्)-वि [सं] क्षेत्रककृत्व, ददासु । इत्याकास-पुरु [सं॰) इत्यका टाट ।

नरशिष्ट ।

क्षरा उचा ।

विसित्त-वि [र्स•] मारा ग्रमा। माध्या विशे वानि वा धृदि पर्देपानी गयी हो। पु॰ श्रृदि जुक्क्यान। दिसित्तक्य-नि [सं] दिला-योग्य मार बाक्ये पीवा

पर्देषाने, योह पर्देशाने बोम्ब ।

हिंसीम~पु[रं•] बंगको हिरापहा। विसीर-नि [सं] पानिकारक, गुराई फरनेपाकार नाशक । पुरु स्थापन शाम नुराई अरमेशका स्थक्ति ।

हिस्य-वि [सं•] बध्या स्तामे जाने बोध्य ।

हिंख-वि [र्छ+] शामिकारक, बुराई करनेवाका; वातकः निष्दुरः निर्देश मयामकः बंगका, भूँकार । ५० कृतरोंके वरपोडममें भानंद माननेवाका म्यक्ति शिकारी जानवरा धिवा भीमतेना निष्ठरता कडोरता । -व्हेंतु-पदा-पुण र्भेपार बातवर । –वंग्र−पु बटवा श्रति पर्देशानेशका भाका प्रदेश यक अधियार मंत्र ।

हिंस्नक∽९ [सं•] रिस्न प<u>छ</u> स्थार जानवर ।

हिंचा-मी॰ (धं॰) अस्तार करनेवाको सी। गांसी: जहा-मासीः प्रकारकोः काकायनीः दिशाः वसा । हिक्किम-की [सं] यहओं बधना शहओं को मौता। हिंग-प्र एक निमक्ति को कई कारको निशेषकर कर्म भीर संप्रदानमें प्रवस्त होती थी। भा हो ।

हिम दिभान-५ वह छाती। हरण।

हिमान हिभाग=- १ हिमान सहस्र हिममव∽सी [भ] इदिमानी, पशुरादेः तुद्धिः वाङ, ग्रक्ति विकित्ताकार्व इस्तेमी ! -- भमकी-सी पीति

राजनोतिः पनगरीः पान जीवनातः। डिक्ससी-विर धाराकः बोर्डान क्यानेनासा ।

हिक्साना-म (६ रे. इस्टाना)। क्रिकायस-स्ती० (ध.) यहात्री (क्रस्ता) शत ।

हिचारत-धा रे 'हडारव' ! दिश्रक-तु श्रीज निश्चमीका देव ।

विका-मी [नं] दिनदी। दिनदीश रीना नश्तर मनि। उस्तुक । -बासी(सिन्)-वि विश्व दिस्सीका रोग हो ।

क्रिक्रिका≃यो [मं] विक्यो। प्रशेम ≀

हिच्ची(क्रिम्)-दि [सं] हिन्सी रोगने पीटिय । हिचड-की संप्रकार संबद सामध्येतीनवा आहि है

बारम दिसी बाब है बरवेमें मनका प्रत्या। आधारीया करना विश्वक्रियावर शिक्षकः। ब्रियक्ता-मा कि कोर्र काम बरनेश पारे, दिशी

भारतहा असमर्थता बादिय कारण गुरा वस्त्रा आसाः पीदा बदसा दिनक्ष बना ।

दिचक्रियाना-म कि मनका भागा वीहा कामा ।

ब्रिक्डियाहर-धी॰ रे दिन्छ । क्रिकियी-सी देश हिन्छ।

दिचारी-की देश दिनहा दु अग्यविक रीनेके बाद दक साब दोन-पार बार और ओटमें श्रीम नेनेकी किया। म • - वैंच प्राचा - कममा- स्वाहा रीनेने शाँस अने क्रमना । द्विष्यक्रियों क्रमना~पार्यांतके ७नव गातुका મુજબે નિયત્વને કે પ્રમાનને મારળ પ્રયુદ ક્રપણપર વિન્યોના (बानाः प्रशुक्ते निकट होता । – होता – सेहे प्रवद प्रश्रा इड स्टब्स विक्रमधा ।

दिया मियर, हिचिर-मिथिर-पु दिनदा अलस्स असमर्थता आदिके कारण किसी कामको सकते, व करने की महरित राजमतीय ।

दिमहा-पुत्रपुत्रक, शोधाः

विश्वरी~५० (च.) मुसक्याओं संबद् जो मुहम्मरहे मह-दे मरीमा प्रकारण करतेकी विधि-१५ जक्षार्व, सन् १११-से भारंभ दोशा है।

दिश्राह्म-पुरु [भ] भर्दस्य एक मान ।

दिजाय-पुरु (सर्) १रशः, श्रारा अमा । मुरु -प्रस्ता-परदा रोज म रहयाः निर्श्न हो जाना ।

क्षिम क्रिमक-५० (सं] वृक्षविदेश। श्चिज्ञी−पु+ (अ+) क्रिमी स्नम्दर्म आहे द्वर वर्षो दवा मात्रः कोंका अवनकारम बहुना वर्ष निवृति पेटेरिय । म -करना-मध्योदी भोदनाः विश्वी मामदेवेसास-साह १ प्रति विकासना १ - विकासना-३६५३६) करनाः रमराज्ञ करनः । —यकष्र सः—गमतः निकासना ।

विद्यान्य भि विशेष विद्यान्य विद्यान्य विरक्तां-स कि वे शरक्ता ।

हिटकर कडीक्फ-पु+ १८८ १९४५। जर्मनीका भन्ति यद-पांसक्ट १ ११ से १९४५ तह ।

हिव्हिंब-४ [मं] यद निशासकाय राधम विशे ग्रेमने मारा था। -जिल् -द्विद(प)-विसुद्ध-निर्द रिप्र-९ थीम।

विकिया-धी (तंर) एक राधभी जी विकिसी शरव भी (रक्षने अपनेको शंहर भी हे रूपमें परिवर्तित कर नीयने म्बाद किया। उसके एक प्रथ सम्बद्ध हुआ। जिस्रहा जाय वरीरुड्य था) १-पति -१मम-५ मोमा इनुमान् (१)।

क्षित्रां क्षिक्षेत्रा-प्रविशेषाः। हिस-वि [सं] रुमा दुभार गृहीना क्वयुक्त यान्त अक्टाः कामरानयः वर्षायोः अनुन्तं स्वास्याकरः सञ्चानपूर्वे केशिया घेरिया घरित्रका गुर्वा दुव्या हाज मंत्रकतारका निरिष्ठ । पुरु मित्रा मंत्री। सन्दर्भ भाइने-बाबार प्राय प्रवाहेर प्रवृह्य बस्ता बस्काम संगुक्त मद्भाव वेम । अ० (दि) - द निवित्त के विदा-दर-नि भित्रन्ता व्यवसार करनेवाका दिनम्या प्रवोगी। कामप्रा भारावरेड, स्थारम्बर्सन् ।-वर्षा(में)-प्रदर्श करनेवाला । पु. चपुकारी ध्वरिकानकामन्ति विश्वध्यु मंगवाबीयी । -बाज्या-धीन दूसरेचे विव नंदन कायना । -बारका-कारी(रिन),-फ्ल-विक वेक 'विवाहर । -पिराह-वि दिशीकी मणांके किर सीचन, दिवार्त, विश्वना वरनेवाथा । -वितम-प्र दिनीच्ये प्रकारे परहारको सन् गोचना विमोक्षे नहारे पाप्रकाः =प्रमी=तु द्वापरः। ~प्रप्यु-सि **रे**

डिप्रसाम । - मुख्या-श्रीक भवापूर्व बारना । सि

सद्भावनावामा । -सिय-१ वदार विका मार्नेनर ।

वि कि इस विश्व बहाराध्य सी १-वयना-बारय-इन

वर्षात्र ब्रावधी -बादी(दिन)-दि भवाकी धा

बार ने वासार भारतराम से बनेव सी ।

हृद्यारमा(मन्)-पु [सं] इंक पक्षी। इत्यानुग-वि [सं] इत्वक्षे तक करनेवाका । हृद्यासप - पु• [ई] इदोन । हरपास-नि॰ [सं] दे॰ 'बदयवान'। हत्यापर्जंक-दि (सं•) हरव शीसनेवाका । हत्विक, हत्यी(यिन)-दिश् सि] दे 'तत्ववान'। इत्येश इत्येश्वर-पु॰ (छ॰) पति। पर्म प्रिय म्यक्ति। ■वयशा हत्रवेद्धशी—की॰ शि॰ो पत्नी । इ.स्योग्माविसी - औ.० [धं०] पद वृति (संयोत) । वि० स्रो॰ मनको सम्मत्त वा मुख्य क्रुरनेवाको । इदासय-पु [धं] इदवबा रीत । इत्रवत - प्र [सं•]पोक्षे सानेपरको सँवरी ।

द्विश्चम∼वि० [मं•] द्वरवर्गे रधनेवाका । इतिस्य-वि [सं] को इत्वयें को प्रिया हाविस्त्रच्र(धा)-वि [सं] इरवद्धे स्पर्श द्वावेवाकाः सम्बद्धारी संदर ।

हरूरकोर हनूरक्केश~तुरु सिं?] इत्तव या पेटका रोगा सतकी बस्त्र ।

अवर~प्र• [सं] दिक, मनः भारमाः शीनाः निसी प्रदार्थः का भीवता माग कीर 1 - ग - वि॰ छोनेतक पर्देचने-बाका (जैस पानी) । ~शह- वि प्रमुखें काका हुआ। हरदरश हरव-संनंदी। वंश्वितः प्रियः आसंद हानका निमित्त । प्र ध्यमिनाय । -तह- प् ह्योग । -गम-वि इदवर्गे प्रवेश करवेदाकाः। −गोछ−५ पद पर्वतः। −श्रथ−५ ह -प्रद-प्र बकेनदी वेंडल ! -भरप-प्र क्षत्रका दक्ष रोग। - हाष्ट्र-विदाइ-६ इस्तको वकता - इस-पुरु हृद्यका क्षेत्र) कक्षारम् । - अस-प् प्रक्रिका तेथा-धे पहसमा । ~हार~पु+ इश्वका दार । ~कक्(स)~ सी इत्यक्ष रीया इत्यक्ष धूळ ! -रीम-प्र॰ इत्यक्त (भा ग्रोका मेना दे ऋगमें। - • वेशी(विन्) - प थर्सन बद्धा -बदफ-प नहरा -वर्ता(तिंस)-वि प्रत्यस्य । - स्यमा - की मनीव्यक्षाः हरपदा

स्तंदन । – इया – यु ६ समेका जनम । ह्य-वि [एं•] हार्विकः भिषः वाधिकः अनुकृषः वार्षव

बाबकः संबदः मनीबदः स्वादिकः शहबसे कारवः। द बारचीनीः यह बद्धीकरण मंत्रः पुन्नि मानक ओपनिः नंत-का देश क्षेत्र बीएका बढ़ी। मध्ये बनी वर्षे छराया मैत । -र्गाय-वि॰ सुर्गविष्ठ, श्रुसन्बार । पु॰ वेण्या पेश प्रद्र भारका सीवर्नक क्यम । —र्गधक-नु सी-वर्षक करण । -रांधि-५ शह भीरक ।

इटरोज-द (तं•] चंद्रसा ।

इत्रोग-५ (सं) इंभ सदिए है इर्में। इस्डास इस्डासक-५ (सं.) इत्वर पट्टमः

(दिवर्गी । इस्केश-9• [सं] विकास्त्रान्त्र, समञ्जा

द्ववि−न्द्रो+ [सं] मसब्रहा, आर्थश संतोश दीक्रि ; द्वार्ति । ९ सक्र बोक्नेबाका कादमी !

हितन-ि। (सं] प्रस्क मानेदित कटलित रोगी निया वान्याः चक्रियः प्रविदयः भीगराम प्रणता वर्षितः | हृष्टायुक्ष-पु कि] वोहना व्यापारी ।

सक्समा ब्राप्ट । इपीक−पु[र्थ•] रंदिव । ∽शक−पु विष्णु वा कृष्। क्षा हिमान प्रकार सामान किया नामा किया नामा मान वंदियोंका संवाहक, मना विष्णु ना कृष्णा वर्षका सार्थ

महीना थैव मासः एक तीबेरबान वा हारहारहे भिन्दद हो । इपीकेस्वर-५० [री०] दिन्तु वा हत्त्व ।

इ.प्र-ति [सं] प्रसन्तः ह्यूक बोकतेवाका । प्रश्न करियः

सर्वः पेत्रमा । इ.ए......वि [र्स] इ.क्ति, प्रसन्नः रोमां विद्यः निरिन्ता कार बिसमें की व न को। मुंदित । - विका-बेसन,-बेसन (तस)-वि मसक्षितः - वनुरुद्ध-वि रोमास्तिः।

~तुर्द्ध~नि॰ मध्य भीर संद्धाः ~प्रश्ननि॰ दक्ताः इहा-इहा । —सवा(शस्),—सावस-ति• प्रकृष्टिक। −रोमा(सन्)−वि रोमांचवर्षः। ९ वद्यः असर। -पद्म-वि प्रश्च सुद्रानाका ! -संबद्ध्य-विश्यतस्य,

एत्रह ः −∎रय−ि० प्रसम्बिच । हारि-की [d•] हर्ष, त्रसंख्या, भामंद; रोमांपा हर्ष यर्व । - योगि-प्र वस दरहस्य अर्थनकोश पुरुष, रंपन्त । हृष्यका~क्षी∙ [सं] एड मृच्येना (संग्रेत) ।

हैंगा-पु बोती हुई बमीन परापर हरनेका पराक्ष भेला हें हैं - इ. बोरे बोरे बंसकेटी ध्वयित विविधाने हैं वक निक्कनेवाका श्रव्य । अ - करमा-निक्षिशया थै **६व**धे स्तना ।

हे-भ (सं•ी संतोषय आश्रायके क्रिय प्रसुख हम्प अवशा प्रमान्त्यक शब्द िक वे कि वे ।

इक्टच−कि वक्टवाक् (दुरे अर्थमें), जनरदस्ताः शक्टिं बाहिक कबाडा सम्बद्ध छत्ताताला, तंत्रकृत ।

इन्हर्नी-सी अन्यवस्त्री, नकात् इन्छ करनेक्री प्रशिक्ष थविष्ठा चन्त्रस्य ।

हेका-का॰ (सं॰) दिका दिनकी।

क्षंच-वि क्या विकासाः प्रमुख्य वेद्यारः महिनम प्रक्र तच्छा निश्वल शारदीम । त भारी-शा धीय l -हॉ-वि ५७ व शानवेशमा मूर्य । -हामी-की नाराची । -पोच-वि मामूधी अदबा परिया **बहायदाः विख्याः । तः शुब्धः व्यक्ति मानुको देशियकः** ह्य नार्माः मामुबी भी ४ ।

हेजाब्र∽द [m] रे 'रिवाव' !

हेर-की बमानीपा दीन । स भीये- इब रावि करि मासु निसावर –रामा । प्र (सं॰) क्रिक चोरा वाका ।

हेरा-बि है हिंहें।

हेडी-सी अप्रतिहा यापदानि, दीसवा । इंड-१ (सं०) होसा जनगतना। -प्र-५० होना

। विद्वास हेंड-५ [अं] सिरा प्रधान स्वतिः, सर्वोधः अधिकारी। -ऑफिस-९ प्रवाग दावीवव । -श्वाटर-९

यकान व्यक्ति या संबोध अभिवारीका अस्तास, सरह सुकान ३ -- सारहर-दु प्रशान मध्याव है।

हित्तक्ष-प [सं] दबार प्रशासका हितना-भार [गंर] भवारे । हित्तपुत्रा - च कि दिन, भित्र देशा भाष्यप करना । हिन्द्रवार +- पु मेम अन्य - नेपत अन ६६१६६ मन् नुम नंद बरह दिवसर – घर । हिवा-ओ (र) प्रमाण पाणी दिस्स्वित्व । - भेस-

વ નાઇ જ્લાપથદી ગાના ! दिलाई-भी संद रिश्धा

हिनावधि(भिन्) - दि [मं] धवारै नाइनेवाना ।

दिसाधायाँ(यिन)-ति [मं] दिनश्र ।

दिशामा: - भ कि मिर ५१ श कार्न अवार्र दरनेवाना होताः भेमवृद्ध होता हिमीकी और प्रवद्धी शह शनाः विद संगना अनुरूप सार्म परना अच्छा प्रपीत दाना। - अन्य बपूर्व मन्त्री श्राहको बात दिनानि -मनिराम । दिनाधी(चिन्) निव [११०] भेदनाबीको दिवादा ।

दिशायह - वि [मं] कम्बादकारा । ् []] नम्मेन्स्स भेदक भनगणा दिवादित-५

सामाहाय । वितेश क्रिजी-वि दिनेशे भनाई पाइनेशका । प्र મ્વસ્તિ મિત્ર દોરવા

हिनु हिन् - पु हित्रध्युध्यक्ति वित्र शक्ता दीला हिलेब्द्य-मी [मं] दिश्यायना विशेषी धलाईबी

Poll I दिसदाइ-दि [मं] अकारै पाइनेपामा मंगन-हामना

atalier i हितपदा∽शी [७] दित धाः।

हिर्देशिया-की [मं] दिनेश होनेका भाव विश्वीकी

दिवदामनाध्ये पूचि १

दिलपी(पित्र) - दि [मं] दिने घर । पु थित्र ।

हिनान्द्रि-सी [सं]सारधमधं असी नंद सवाह ! क्रिकोचपरा-५ (सं) दिनदारी वयस्य सरक्रामधं नद एनाहा वि मुख्याहर भोतिश्रीक्ष धंवंधी एक प्रसिद्ध र्धव १

हितीना 🖛 कि दे दिवाना 🕨 क्रियायत-भी (भ) मार्ग प्रदेशन स्वतुमारी आहेखा -मामा-प दिशवनी आहेवी आहिको दिनाव । दिरस-मी भि देशी वीमवा। मश्मी।

दिनक्रमा!-४ कि (पेट्रेस) दिनदिशाना । क्रिन्ती = भी शैनतः ।

द्विनवामा~५ तर्∢क।

क्रिनक्रिमामा~भ कि (पे)रेका) वीधना । हिनहिनाहर-पुन्नी (पोड़ेडे) शीसनंधी भागाम।

हिमा-की [भ] मेर्डेश । -वंदी-की मुस्कमानीमें दोनेनाओ स्थादकी यद रम्म । -का खोर-शायने वह सक्कर जगह जहाँ मेहँदी न क्यो हो (कि०)।

हिनाई-वि मेर्देशके रमका। स्त्री पीकापन किये हुए द्युपं रंगा शीनता। मानशानि । -काराज्ञ-१ एक तरह का कागत्र ।

विकासद-की [ब] रहा, रहाताकी नियरानी। बचावा

– शूर् इदिवदारी-भी भागस्था। क्षित्रक्ष-पु [wo] क्षिप्राचन, रक्षा । वि. व. ३१४ वर् वर् वर्शन (६(ना रोना) । नसदत्त-पुस्ताम्परधा । हिन्द्र-पु [म] चीना बग्र, प्रातान ।

RIMES 1

क्षित्रवा~प् ४ (स्वाद्यानः नन्द्र। ~नामा-प्र• हिसंबद्धा-पुरे० हिमायवं । दिर्मात्र०-पुरु देश दयन । हिम-दि [लंब] दंश, जीवन । मु बरी, एका जीत દંદરા માલા જર્નન જતા દિવાયન વર્તના નદના નંદમા नवनीतः, सद्याना सपुरा भागी। प्रश्नादा समझः १४, रांना। शांका वस वर्ष, भूनाव । - उदाम-पु कावा પાવદ ક− પરમુ⊷ચી≎ શાહેના મોસિંગ હોર્મમ ભાવા -कथ-प्रभोगको र्^प। यह दे कथा -कर-प्र नंहवार कपूर । वि. ३३६ शानेताला । 🗝 समयन द्वप गरा - किरण-पु नंहमा । - कुद्र-पुर विधिर कन्ता दियायम् परना हिमाध्यक्ते भोदी । -राश्च-यु आन्ता - नार्ज-वि यद्या बसा द्वारा - निहि-पु विद्यालय वर्षत्र - ० सदा - भी पार्वतः। - ग-य नेहमा। नगृह नगृहक्ष-प्र नह दम्यानी दरह कानेवाकी चीओं ६ वरिय ३३। बनावा गया हो १—शीर— नि का नमा सर्पर। - ध्य-नि दिनस निनम्प ररनेशक्षा । −ज्र−प्र• मनाइ प्रतः । वि इंदरने अरवदादियास्वये अरवका-जा-की पार्वती, निर्दि सनाः धनी। धोरिको ब्रथन विस्तिका देव । - प्रवर-व वाक-इसार ६ ∼इस्टि∽झटि∽को पाक्षा । −तव्य−प० कपूरके योगधे बना दुधा शका - ही चिस्ति-प्र नंद्रमा। - बुग्या-भी क्षारियो थिएता। - बुद्धिन-प्रश्र प्रश्रा अवि इंट्रह प्रश्नद कारण स्वशायक दिल वा मीसिन। -गुवि-त पंदमा। -बुर्(६)-९ ग्रा -व्म-यदानित क्या । - धर-द्र दिमाच्य परेताः -धात-५० (साम्य पर्वत । -धामा(मन्)-५० थंदमा । = रचस्त्र=नि पानसामारा द्वभा । = पात== पाठेका पहला। भोसका विस्ता। **-प्रस्थ**-प हिमासन । -वा<u>स</u>कं -वासक-५ -वा<u>स</u>का -वास्त्रकानको कर्षर। नभाजनप्र नद्रमा । नभाजन-पु विभावन पर्वतः। -मयुक्त-पु ५८मा । -पुन्द-पु पक तरहरू। अपूर । ~रहिम -एचि ~पु नेहमा । −पारि−प दंदा पोनी । −पश्चि−को प्रकापत्नाः कोठे विरमा ।-शर्फरा-सी० वरनाक्रसे निककी पीजी । -शिक्तरी(रिन्)-पु (स्माधन । -शीत्रक्र-दि बद्ध बंदा। जमा रेनेपाला (इति)। - झम्र-वि नर्फ चेशा सफेर । – शक – पुदिमाक्य पर्दत । − ० आ – थी पार्वसी। −भ्रथ −भ्रथम्-पु दश्का पित्रकता। ∽समाव−५,−संदति−धी वक्षा देर । −सर (स्)-५ वटा पानी । -सृत्-पु० भेरवा । -हान-कृत्-पु भन्ति। -हासक-पु दिवास गुध, सन्तर क्य पेत्र ।

दिसक-पुर्धि] विश्वकत कुछ । हिसनु⊸धी (सं∘) इसंश ऋतु, वादेका भीशिय। प्रक्रित-को० (वं०) धीर्वद ।

इसीर-की विक्रवार्थ भीताबीका दश । पुरु स्थाप ।

इत्र- इ स्था पीति भेगा

प्रति-क्षी व वि क्षेत्र अवेदिएया भावकी भवा, श्रीर मुद्राष्ट्र हेता बापान, घोटा बनमा बीतारा बेधुवार CE HEE 1

જારતો - ૧૦ પ્રેમી, હિય-ચિયા મંત્રની !

इन-द [तं] दार्मा सर्व, मस्त्रहा देशी वरना, काम भारि विश्व दे दिना दुव दूमरी परना, दूमरा वाश म थी, मूख कारण पदमान कारणा एक अधीनकार वहाँ बार्यको ही बार्नेहरने बितन बरने है। वर्त बलीका वर्त शास्त्र स्वारत कारव देशा कारण जो स्वाहित अध्यक्ति और अनिस्थाति नामक बीचोने पुषित न हो। ग्रेम । -तुक्-दि विस्ती वात प्रदेश्यत न हो। -राष्ट्र-भी बारमध्ये गरेधा। -मस्तिक-वि वस वस्य तरक्ष्मातः। -अह-पुरु प्रहर्मेददा दस भीर (३वी) । ~मात्रसा~धी० धेवण वद्दाना दोना। -ब्रुट-वि वृद्धाय, ग्रांबार । -क्यूक-पु स्वद्धाः एक प्रधार की सकारण होता है। -कक्षण-त हेनुकी विजयन्ये। - वयम-पु वर्द्यक्ष वाव । - वाय-पु विवाद इत्तका क्लाम । -वादी(विन्)-म वर्ष बरनंशका वास्टिम मधीवका-पिवा-ओ -साधा-पुरु तर्दद्यास्तः -- द्युश्य-दिरु वंतुशदिव निरामादः। -द्वाबि-भी तदकांच दिया जाना। −दिख-पु एड वही संस्था (ती)। - इतुसञ्जाब-५ कारण और कार्यका मन्द्र । - इत्तमक्रभूत-१ भूत कामका एक नद जिल्ली बार्यक्ष किया न होनेश्ट कार्वका कियान न होना दिखहाना नाता है।

इतुक−ि [मं]कारवहच होनराधा अलब करनेशका (ममाश्रांतने)। पु कारणा वासिका श्रिका वक गणा

46 5E 1

इतुता-सी हेतुरव-दुः [चं] कारपदा होना । इतमान्(मय)-वि॰ (धे॰) यो सकारण हो। वर्गनका

सामार । इ. कार्य ।

इत्यासा-स्री [र्ष+] स्प्रेदा अध्यास्ता एक मेद यहाँ भोगुको हेत्र मानकर सप्तेक्षा 🕸 जाय ।

इत्यक्षेप इत्यम्याय-इ [सं] कारण देना वर्द क्षरिश्व करमा ।

इत्पमा-धी • [सं] हे दिल्लोहा ।

हेलपरेश-५ (छ॰) हत्या बहुछ ।

इरवपद्भ ति नशी [सं] एक अश्रीकंदार दिसमें प्रकृतके निश्वस हेत्र व्यक्त रहता है।

इत्यामास-१ [सं] वह देश की विसी कार्वका कारण तो न हो परंतु हेतुना भागासित हो अनर्वः हेतुरीव । द्वेमा−दुदे दिला।

हर्मध-५ [सं] एम कतुओं वैसे यह जो मार्गद्वीचे और धीरमें परवी है। -माय-वृद्धिपान, कैन।-मेघ-वृ जादेका बारक । -समय-५ जादेका मीसिस ।

देमंधी – भी [तं] बादेश्व मीतिम।

देस-५ [सं] सुवर्षः क्त्रा काने वा भूरे रंगका योगाः |

दक्ष शर्वमान, माघाः दुव धर । द्वप्र(ज्)-पु [सं] कोनार प्रवासाना, दिमा प्रमुक्त केशास्त्री फला पुर प्रशास - क्षेत्रस-पुर प्रशास, मुखा ! -क्य-त थीनेका समर्थर 1 -कर-त॰ धिन 1 -काळ-च सर्ववात । -क्वॉ(मे)-च धनास **रक्** युरी । -युस्पा-पुर (ब्रह्यर बगानेक्र) धोनेकी बनसी, रक्वेलिम्ब श्रीवश्वात । —कोशि-मो॰ दारदरिहा । । प्रातिश का कांद्रिकाणा।-कारु-कारक-पुर श्वतार। -कारिका-ओ यह श्रीषा । -किंगस्क-द० नाव-देवर । न्यूम-पुरु धानेदा दवस । न्यूर-पुरु विमालबंदे कथरका यह पर्रत । -ब्राइडी-की नव्य-नेत्रको । −केकि-पुधरिन । −केश-पु• छिन। ∽शंधिजी~सी रेण्या नायक गुप्रस्य । –गर्स-५० बल्रस्य वह परंत । विश्व विश्व अंदर शांता हो। −ितारि-प्र• संव पर्नव । −तुष्ट्र−प्र= यस नागसर । -बौर-वि॰ धान वैद्या बीरवस्त्रकः । प्र॰ सिक्सित क्षा भवाद वृक्ष । -म-प्र॰ सीसा । -मी-भी॰ ર⊭ છે : −ર્વાદ્ર −િલ સોને કે પાંદલે મનદ્રત્ર (તેલે દય) દ एक द्रवर्श-नंधीय राजाः एक जैलापार्व !- चळ-दिक धोनके परिवोधका। चयुष्टी(किय्)-विश्वश्रविद्यर त्रका – ज – प्राची राज्या – जट – प्रश्न किरावीको एक जानि । -जीवंती-सी॰ एक पौथा । -उपास-त्र भग्ना - दद-द पन्ता । - तार-त मादिया । ~ताक्र~पु क्षत्रस्थ व्ह प्राक्षे प्रदेश । ~तुका~को धोनेदा तवाशम !-वंदा-थी॰ यह भण्यता !-व्यप -ब्राधका-ब्राची(विश्व)-द्रश् गृहर । -ब्राचा-हरपी-भी प्रणेक्षेत्र । -धन्या (स्वन्)-पु स्वारहरे सनुदा पद पुत्र । —धास्य-पु॰ दिछ । –धास्यक्र-पु॰ रह मानको एक तोल । -धारण-पु भाठ प्रकी यह बीका -मध-पुरु एक बद्धा -पर्यंत-पु समद परंदा (महारामके बिय बना हुआ) छोनेका परंदा -पुष्प-९ चंपा। बदोक्षपुष्पा नाग्रदेशरा अवस्तासः। -पुरवक-पुर वंदर-पुष्पा कार । -पुष्पिका-सीर श्यप्तेपृथिकः। -पुर्णा-की भवित्रा स्वयवीनंतीः हेर बारणीः स्वर्णकीः मुक्कीः बंदबारी । लग्नुम्-विक स्रोजका मुख्यमा किया बुधा। -प्रसिमा-की मीनेकी मृदि। -प्रम-वि धोनेको कांदिवाला । -प्रमा-की १वर्थ-करणा ! - अञ्चा-की सोनेको भेको । -साधिक--प्र वयपाय, धोनायाधी । - मास्य-की बमकी क्सो । -माकिका-सी सीनेका कर । -माकी (किन्)-वि॰ सीनेबा दार भारत करनेवाका। सोनेसे अबंदन । पु॰ ध्वं !-- माशा~की धानदो एक तीब !--युधिका-धी श्वर्णशूधिका । "रागिमी-धी इरिहा । -रेख-य वसरेखु । -स्रंप -स्रमद-यु॰ ११ वा धंवासर । -स-पु श्वनंद्रारा विर्विता क्वीरी । ~सता~सी रार्णनीवंती !~यव ~ि सोनेन रंगका । यु महत्रका यक पुषः एक कु**र**ा **- वसः** -पु मीती। -परसी-को सर्वशेशको । -संदा-५ -सिसा-ची -सीत-पु॰ सक्कीरी । -श्री-पु∙ एक पर्वतः -वीक-पु यक्त प्रवतः। -सागर-पु• रह

दिमवक-प्र- सं] पीति । दिमयान्(धन्)~प [मे] दिमासमा देशात । N नद्रांना । -(यन्)कृष्टि-सो० दिशक्षक्द्रे दरी । -पुर-पु॰ दिमाक्यकी राजधानी क्षोप्रियल । -प्रमय-वि दिमाण्यसे उत्पन्न । -सस-पु॰ मेनान्त । −स्ता~की• पलंदीः गंगा । हिमांक-प्र [धं] इत्रर । हिमांत-प्र [मं•] जादेक मीसिमकी समाप्ति । हिमांचु हिमांम(स्)-पु [६०] उंदा पानी; जोस ! हिमोद्य-५ [मंग] बंहमा। इपर । हिमा-ना (से) इनेता छाटी दलावची। रेपकाः भह ग्रस्थाः नायमस्ताः प्रकाः वर्गाः । हिमाऋत-सी॰ रे॰ 'हमाप्रत'। हिमागम∽५ [चं] का≼हा बार्थ । हिमाचक∽3ु[सं] शियाक्य पर्वतः। हिमाय्यस्य – त्रि (७) त्रवाशकाः हिमारमय-दुर्धि । बाइका अंतः। हिमादि−९ [मं] दिमालय पदाहः ⊸खा∽धी गंगा पार्वी। विरमी । -खनवा-मी • दुगा गंगा । हिमानिक-दुर्मि देशे हवा, वर्षाठी हवा। हिमानी-सी (सं) दिय छन्द, पारेका छन्द ओछ सम्बन्धाः दिसस् देश । - विद्यात्र- वि ६५ जेशा धकेर । हिमापक-द (सं) भग्ना विसादत्र-५० [सं] मीन क्रमण। हिमाभ-वि [धं] कर वेशा। हिमाल-५ [मं] ४५६। हिमामबुस्धा – ५० वे विमामबरता । हिमायल-स्रो [म] तएडवाधा मदव। स्मयन्ता । बिसायती-दि ठरफरारी करनशक, यह महत्र करने TIME! दिमाराति-3 [सं] म्यां भाग्या वर्ष बुक्त विषय दुर्थ । विमारि-प [त] सब्ति । हिमारुव-दि (तंर) ता शानते नूस सा दी भवा दी। हिमार्थ-वि [मं] बानवे हिट्टरा अमा हुआ। विकास-प [मेर] दिवानय । हिमाक्य-त (मं•) मारवर्षकी उच्छी क्षीमाप्ट विका मुक्त पर्वतमाना (शपकी चोरिया बहुत के के केची है चौर क्रम बर्ग बर्ग वर्ग निम्म १६०३ है। प्रमुख हैनी पानी इत्रेश्ट है जिसकी कैनाहे देवत है पुरंह और ल म्यान्य साम् कार स्था निर्मा किस क्षेत्र क्षाप्त -मुवा-स्य वार्याः दिसाखया-भी । (वं] मृत्यावनी । हिमानची-की [सं] मन्योरी। क्रिमाविम-दि॰ (सं) नईम इद्य द्रवा । हिमाध्या-की (छ॰) स्टोरीना । हिमाद्दि-थी थि दिवसता ब्रिमाद्ध-पु [थे] कपूरा नेप्रदोषका एक वर्ष । दिमाद्वय-पु [मेर] स्पूरा सनका fela -y 30 fen b क्रिक्रियानकी (७०) बाबा, धुवार (

विमेल-वि [सं•] दिमानेशिक (त्याने ! हिमस-प्र [सं] हिमानव । डिमोश्रस~धौ (सं•ो ऋरिक शका । बिमोखका-का [तं] वे 'विषयक्ता'। हिमोजवा-स्त [सं] प्रतः शारिया । दिसोस्न∽१ (सं•ी थंद्रमा । दिस्न~पु• [सं•] पुप मद । विकात-की भि विद्याहमा बीला, बहारी। देख पराज्ञम । मु -पष्टना-सारस होना । -हारना-एउ ही जाना मादस छोडमा किमी कावने बरनेने महस्य म रह बाना । हिम्मवी-नि साहसीः पहानुरः नीरः पराध्यो, प्रशासीः ब्रिंग-वि॰ [र्थः) सर्वा बद्धीबा। बद्धेने दब्ध दूधा । हिय॰-प्रश्व हर हरवा बना वष्टारबंबा छानी क्षेत्रा मु॰-हारमा-हिम्बन दारना, बारोदिक वा यार्यहरू धरिते क्या माना । द्विपरा=-ध दे दिवा द्विपॉॅं। च्या यहाँ। व्हिया--च दे॰ दिव । <u>स</u>०-जक्षमा-वहुत पुस्त शाना । -र्दशा क्षाया-वर्कता प्रशा क्षेत्रा, प्रश्न शा होना तुद्ध बानंतका मनुभव होता। ~प्रद्रवा~६नेम प्रमान घोडन हुन्स पोशके अतिरक्षय अनुमर होना । -भर भागा-करणाई होता होक्सावर शता, हम्मर्ग होना । - मह समा-श्रोद्ध दुन्ध वीहा आदिके हारव बंदी श्रीय बनाम क्षेत्रक दुःख चौड़ा माहिको अनिमार्क दरवा। ~धीवस हाता⇔े 'दिश उडा होना। -(४)का धेना-मोहरी मोदीसे होन अहान, बुने, नेनकुछ । -की कुरमा-सह ममुद्दा निनेद भ (दना प्रामच्या न ११मा । -पर पाघर घरना-एव दर तेना । −में साब-सा सराया—६देश कोन क्य_{र्न}ी नाई मनने बहुत चेहा होना। "सगमा"गाने सनमा भेरता भाविषय बरना । हिचाय**०-५ स्वर**स । मु॰-सुसमा-५१का सुप्रमा माहस दावाका भारता । -पदमा-दिम्मन पहला । हिर्देश्व-पुरु [म] राष्ट्र । द्विप-पुरु [मरु] पट्टी। यसवा र हिरक्ता०∽भ• कि स्मिध्यिक वर वस्तुन माना नियहना - --बोट लिएकोवै कोड दिएको विवादि --CSHEETE S दिश्यामा ० – स कि विद्या के जाना सराना सार्थ 439(1 हिरगुनी -की एक प्रकारकी वर्षना दरामा हिरम-पु 🕒 रेक्या संस् हुदा सारक कोगा 🕫 दिस्त ५६। दिरुवाय-विक वि] सानेदा सानेदा बना शुन्दशा पुर बद्यार एक प्रति। अध्योगका एक पुषा स्थापके सी शहीयने वस् । -क्रोच-पु जूरव दशीर अन्बार्ट धर आवरमोनेन एक वा व्या व है। िहरूप-पु कि रे सुरुत क्व^रतका बोधा कर्त कार्य-

हिमित-वि [तंक] वी वर्षी परिवद हो यदा हो।

होंदी - भी • किनारा कोर। हो - भ कि • होना का संधायमास्थक (अस्य पुत्रक, एक्ष्यपनका) कड़ा • होया का सामास्य भूत था। भ• संगेषनमें प्रमुख सम्ब, है।

भाग को निर्माण करते हैं। होटक-दु सि 'होटेक') हम्म देकर मात्रिकों हता सम्म कोनोंके पो जाने रहने मनोर्टकन सादिकों आयुर निक देनकों स्पारकारी सका स्थान।

होड-प [सं•] देश भेला नाथ।

होब-की किसी विश्वमें एक पूचरते वह आनेकी बाह जीर प्रवास, जास-बार पहरुक्तरों, प्रतिस्तर्वा, प्रति-कृषिता प्रतिनोशिताः किसी काममें बार गीत होनेपर पूर्वविश्वमके अनुसार किसीको कुछ देने वा वससे कुछ

केरीको प्रविद्या, नामी, भर्त । होसा(कृ)-पु॰ [स] चोरा स्रवेरा, काह ।

होशा(मृ)-पु॰ [स] भोरा प्रवेरा, काहा। हाशायाची-तो है होशे।

हाबाहोबी-को है बाह । वन होड़ क्याकर । होड-वि (सं) जुराबा हुआ। यु चोरीका माक। होतय, होतस्य-यु होतस्यलाश-को होनेवाको सत, भवितस्यता, होसहार ।

क्षीतस्य - वि [सं] इक्स करने वीस्य ।

होरार्यः नित्ति होराष्ट्रे में स्वयं करवेशाका । यु यं पहरे इयं बक्-पुंटरी हस्य बाकनंत्राका आखि वृद्धका वृद्ध कराम्बाका दुर्शिद्धः शिका व्यक्ति । —(क)कर्स(ब्र्)— यु हेराहा कर्म । न्यस्ति – यु होरा हारा प्रयुक्त क्रिके वानेत्राक स्थल-सुका आदि । —प्रयन- यु होराका सुनाव। —पर्यन- यु होराके बेटलका स्थाव।

होतृक-पु [सं] दे होकः । होश्र पु [सं] दवि दीमः दक्तःश्वामयो यो नादि ।

क्षोध पुं[सं] इति दीमः दवनश्वामधी वी शादि। क्षोबक−पुंसि] दानावा स्टब्स्कः ।

होधा-स्रो (सं) यदा स्प्रति । हाथी-स्रो (स•) वजमानके रूपमें धिनको सृति, धिक

की बाढ मृदिशीयेंचे एक। हान्नी(सिन्) = दु सि] दीवा।

हालः(सिन्) -- द्वास्त्रः । होत्रीयः-वि• [सं] हाताते ६वथ रखनेवाकाः द्वारीताः वास्त्रतं दरहितः हववयुद्धः वयःसंहरः।

बाइस्टा दुरग्रहता स्ववयुक्त वरूमा ब्रोत्सा(त्यन्)-द्र [संन] वस्त्रक्षां ।

हात्पार्यप्र, — ५ (१००) नवस्यां होनवाका। धनिवहरू होनहार-दिन प्रीवेशकाः स्वरूपयेव होनवाका। धनिवहरू किसास, प्रस्कृते, सनुष्ठिः सारिकाः स्वापास इतेवाका। प्र, स्व अविद्यासकाः, स्वरूपयेव स्थित होनेवाको

मध्या, बात आहि ।

होना- अ कि कावन मीन्द्र, विषयान दहना। परि
सिविंद्र, भवरमा आदिये चरियांन आमा 'न्य सिविंद्र्ये सुध्ते सिविंद्र्यः आमा इपने इप होना। सन्द्रुत दौना वनमा, देवार दांसा। क्रिये कर्मका पूरा होना सिमित होना। एएसि क्रियो प्रकारके म्यान्स्य होना। सिमित मन्द्रित हाना, दिन चौतना। क्रियो परनाद्य परित्त दोना उत्तर हामा देश होना। क्रियो परनाद्य परित्त होना हाम्स्य १) नाम। (स्रो) हुआ सी हुक्य- मे परना ना शत् ही पुत्रे पत्तरे लिंद निता स्तरो आपद्य क्या नदी। में प्राणा या गत हो पुत्री २० २० प्रवाद

मविष्यमें न बोने देना पादिने काम हो हरा हका का फिर वसे कवापि ज करमा चाहिये। तो क्या हम्स – वाने थें। कोर्र प्रवाह वहीं (यही करना वाले हो से कोई परवाद नदी) ! हुआ हुआ-विसीने कोई काव व बोनेपर कही वानेवाको एफि (ब्लंग्वस्पर्वे प्रकृत होते) कारण यह विशेषके कममें म होनेपर भी विशेषका सर्वतिहा हैं)। बहुत कुछ कह अक्सेपर क्रिसीको सन्। बरनेके किए क्वी सभी बाध । श्री भारता = क्वी जाकर और शासक किसीसे भेंट सकाकात करने बाना। मिक्ने बाना। होकर-पाससे, समीपर्स, बोबसे, मध्यसे । होहा साना∽थस्य सीमा लबस्य परित क्षेत्रा। शे राज्यकार-यहनाव्य वहित होनाः समाप्र होता । हो चक्रना-समाप्तिके निकट थानाः गहत हो नाना। हो अकान - समाप्त ही जाना, समाम हो जाना: यार्न ध जामाः यर वालाः विसी नातः वस्त वार्यका धीरा-तक पर्नेष जाना, इस हो आना । हो साम्य-बाद गरा वी जाला, काम यह जाना। करी भाकर यहा जाना किसीसे विकक्षर पढ़ा बान्छ यर जाता। यन कान्य किसी भी क्षेत्रमें रिवरिका अपना हो धामा (क्रिमें कामका) करव हो जाना कहाई-अगरा भार-पेर हो अनक 🐠 काशक हो जागा। भूकनेवहाममान वह जाना। शेमन थादिका दैवार को बाजा । शांस इप −र कोकर' । हो म हो—बीय कावे (बनिश्चय संबनार्य)। (क्सिक) श्रीणा-विस्ताका प्रिय प्रेमी विभासनाथ कर्डके हेरके नादि दोना । (स्थलॉर्से एक) प्रोद्या-विकेस अनेक्यें अप्र दोना अर्थत तथ केंद्रिया दोना ! हो निकक्ता-दीक्द भागा रास्त वान्य क्रिके वनव भा जाना । शानका-होनेन।का । श्रोते सरामा-किसी कामका भारम होना । ही पत्रमा-भक्तमार कुछ बरिन हा थाना। अधानक श्रमहा-स्वराद ही यामा । हो पैरमा-दो जामा, गर्न ५४ जाना। हरा हो जावा (बजा भारमी मारि)। वे हो पदमा । हो रद्वमा∸दा जाना दोना। (क्यॉक्ट) हा रद्वमा∽ क्रवांशे कोरनये पहल देर कवानाः क्रांसे च कीरतः । (किसीका) हो रहमा-किशोका निव ना प्रेमी हा जाना । ही खेला-हो प्रदमा समाप्त शामा ११। बाना, कुर्व करमें बीना। बोर्व मार्न प्रदम बर केना। दिशी परंदर ही जागार लाब घडनार पेश दोना अपद बीबाः क्षत्रारं-प्रवश होना । (पीछ) हो छना-धठे-पीछे बागा, पमना। किसीकी पैरवी करता। हो सी डा-वादे जी कुछ हो (तिश्रवार्थक) । हो ह्या एकमा-हो भुक्ता । हो-होकर-४० होस्ट । होविहार--मि , प्र दे- 'शेवदार । शांत्री-धी० श्रीवदार ।

हाना-आक शावार। इतिम-36 चि वसन वदा महत्ये हारा निस्न निम मानेवाल वंच महावरोदेश रह देववा। -कर्म(व)-30 वह संबंध वर्मन्य ना निद्यो। -क्ट्य-5 वम बरतेश्वे निद्या-क्राक-9 वरक स्वया -क्यो-की वहान्ति मनवंद्य वर्मनेश्वे ईन्मी। -कुंब-5 इत्य वर्मनेश्वे ह्य वृत्या चुला हुए। नुर्दाग-5 वर्मन बागुर संबंधिर नीवे हात्रा कीहीर एक माना नित्व बरावी पारास्त्रक महत्र दिर भवदवा ६६ अस्त अस्तीमका एक प्रवा वि वस्तिविधा - कह-वि कावक वेड बाधा । -वस्त-वि मुनदश वयरेका भारण करने बाधा । -इतां(म्)-पु॰ शुन्तर् । -इयथ-दि॰ क्षानद હર-રામાર યુ શિવ ર ∽હાશિયુ~યુ હરવક બીર भौरतिका पुत्र और प्रमिद्ध वन्द्र प्रद्वाहका विशा विशे शियुने मर्ग १६६ ६६न धनस प्रदर शहर मारा था। -हामधेन-भी क्ष्मां हार्नामा काम-न (क्षिमा कान मोबद भहारानीये परिवरित है) ३ -कार →1 सुनार । -हृतपृष्ठ-पु० ६३१ - हृत्यु-पु अनि । -दम-वि भीनेद व धीनावा । पुर विष्तु । - वादि-वि शानेदा कार वा (१८९ हवानंबाडा । -शामै-पुरु बहा (भानके भद्दन प्राप्त होनेड कारण)। विश्वास्त्रम । (रि भारम बरनेशाकी आस्मा गुन्तस्यहा एक नियंत वि ब्रह्मभारको । -सर्थो-स्त्री एक सरी । --व्-पुरु समुद्र दि सुरते देनदाका। —हा-श्लीक पृथ्ती। यस नहीं । -माध-तु मन्द्रक दर्गता विष्णुः ६ क तरहका मसान विमये पूरव परिश्रम और उत्तर वर्त-वह कमरे हो । -पर्यत-मु दक प्राव :-पुर-मु अञ्चरोका एक भारतकोय जनर । -पुरुष-१ स्वयन्तिम पुरुष प्रतिका। -पुर्या-की ६६ शेवा। -याहू-पु विका धान मधा एक मावासुर । -बिब्रु-पु कव्यापक पाता एक दोर्थ । - मासी(सिन्) - (व मोनेधी मामा भारण सरनेशका !—रश्यण=दिः छानको करवनी पहननवाटा । -रता(सम्)-५ भीना गुर्वे दिश निवह रहा बारह आहरवीमेंस वढ । वि श्वर्णती ववाका । -शेमार (अन्)-दुः यह कादपाल (मरीजिन्ड दुव)। भी महः। -क्रोमा(मन्)-इ योचने मनंतर्क यह कृति। -वयस-वि धानकेको संत्रिका । -वर्षा-स्रो नदी । -पाइ-९ भाव वदा छिन । -पीर्य-९ धर्मना गुर्व । - सम्ब-९ धनना छोटा उन्ता । -श्रंग-पु ६६ वर्षतः ।-श्रीय-पु॰ इक वृत्रनः ।-श्रोधी-(विश्)-वि स्रामा वसन करमेवाला (वक पश्ची)। -संग्रास-१४ धानको हरद पमक्ष्यशासा । -सर-(स)-इ यह तीर्थ । -स्थाय-पु॰ कानका बहारा। -एक-शी भीनेकी माठा वा सिक्डी। हिरवपक-द्र [मं] स्वर्णको स्थाप्त । द्रिश्यय-वि [मं] सीनेब्ध (वे)। हिरक्यम-९ [सं] इक्लपणि देवस्यः स्वर्णास्यम् ।

विभाने बराहका कव भारत कर मारा था ।-रिय -हर-पु विभाग । हिरवयास्य-पु [सं॰] सीवह महाराजीमेंने एक जिसमे सीवका पांत दाम किया जाता है। -रथ-तु दानार्थ रवर्षभिविधित भरव और रच (धोजह महादाजीमेंने यक) । दिरदय+-5 दे दरव ।

हिर्द्याझ-द [सं] दिर्द्यकविद्वका यमक मार्व किसे

हिर्द्या - भी [मं] शन्तिकी एक विद्वा ।

बिरवा+~प **दाव**ा

हिरदायम-तु कोहके सीनेपरकी भीरी भी भशुभ है।

हिरच-द द्वारत भूग । -मुरी-श्रीक ५६ मामानी क्षत्र । सु०-हा आभा-पवन हो बाना, एवं ही बाना; नुरत भ नदर पूर का जाना।

दिस्याम्म - ५ १० (१००६६) ३१ । हिरनीश-४ भूत्य वर्ष हिरनका शब्दा ह

दिश्यत-भी । वि । वद्या दुनस नामाधी पूनता। -बाझ-ि बालास, बाह्याय ।

हिरमूनी हिर्रामुनी-की॰ (दा॰) यहताहको शास्त्रिही fang Bitt mit fas et de utem ain En

िमन बन्द रेगड देर एक (व) हिरसा-की॰ रे॰ 'हिने ।

हिरा-नो॰ [मं] थिरा। हिरास-इ अद्यानिस्थानको धामाद वासका यह रथान । feridi-fe feris tieft i go ve atest iist fat

(६८।७वे होता है)। हिरामा-अ कि थी जाना, हुए हा जाना, मापर ही जानाः अस्तित म र€ जाना भनार शनाः सुपन्तप सा ना अपनक्ष भूक जाना रह प रह नाना अवर्षत

आश्चर्यान्वत हाना। नह हाना । सः वा व न रधनाः विषयाच करना भूकता ५६शामा धारको मध्यम भक्ष अर्थार पराभावा धेनम रचना १

हिरायक-पु र॰ दरमन । द्विशास-स्थे [का] दर, भव बद्दाना नरास्य, मायूसी। दि द दिरामा - वी श्रीह सुमन दिव ह दिरासे -

राम(मा । हिरासस-की [बं] निगरानी पहरा। नवरवंदी। एवा-कार । मु॰ -में बरवा:-में साना-दवाधानमें रसभा। हिरासाँ-वि [का] भीव दश द्वभा भरवः निराधः

RIAH I हिसादक यु [मं] रखा हिराज - पु दे हराइक ।

हिन्नेश-की (भ) देश दिश्यत । हिम्--भी [थ]श्राभ काश्रमः तृप्याः इपता सुर --करबा -होना-काकप होना !- छुटना-काकप होना।

-विद्यामा -व्या-क्षाक्य देवा। हिसोहा-वि॰ काक्पी।

हिसाहिसी-अ ब्रहरोदी बरत देखदर, देखानीजी। हिसी-दि काळ्यो । - रह-पु एसा काळ्यो भारमी जिस इसरोंकी रंगा देवी शास्त्र भा जात !

बिसक्सा - अ कि दे दिएकना (देनकना) विश्वका। स कि मिक्रोपना।

हिस्सक्षी≉−क्षी० हिस्सी~'श्वपनमं टाक्स पक्षत सचि रोवे अद्रकात । 'जायस कृ पित दिय संगी दिक्की सक म आय । -मविधामः विस्कृतको क्रिया, विस्कृत क्रम कहर− जा शार्थी का क्षेत्र नाक्ष} रोखे रहति न दिक्की'

-सर । हिसकोर-पुनककी तर्ग, दिस्कोक ।

डिककोरना-स॰ कि॰ नक्यो तर्मित बरमा पानीमें अपरे उद्यामा ।

हिस्कोरा-९ दे॰ दिक्कोर' । सु॰ -देना-पानीको

हामक-पु (सं) दोना होगढ । होमया-मन्द्रि इस्य करना। वृद्धितन करना। नह करना।

होमान्ति-को , हामानव-पु [4] बद्याप्ति । हामार्जुमी-को [4] दे० होम पत्तु । होमिन्यु [4] पुरत्त बढा शन्ति (पत्तद पृद्धः । होमिन्यु (पत्ति) होविश्चपिक-पद्मविके अनुमार (बिकास करमेराका भ्योप्तः)

होसियोपधिक-(४० (अं) होसियाधैकी-धेर्वतः । होसियापधी-औ (अं) हनीयान तारा आविष्टुत वस विक्रियान्यवितिसमें प्रापः विशेषः होरा होस-वितन

रम दरत द । हामी(मिन)-पु॰ (स॰) होमदली । हामीप-वि (स॰) होम-संबंधीः दवनके उपगुष्ट । - जुल्म

हासीय-वि [मंत्र] होम-संवेधीः हवनके उपयुक्त ।---पुरु हवनके काम आनेवाने प्रश्नो प्रत नाहि । होसेयन-पु [सं] वहकार ।

हासपन-६ (सं] दे होधीव । पुपन । होर-वि इंडरा वडाइमा ।

होरसा-तु रोटी रेक्ने वा पंतन आदि विश्वनेदा पायर दा रमा भीका।

होरहारं-पु भनेका कन्यार हरा ग्रेथा। आवपर सूना दुवा जी यमे भारिका दश दाना ।

होरा-पु वे बीवक । की [सं] ज्योतिक ग्रास्तीक काना पार्व पंत्रीत वार्वी रावित होराक्षाक ग्रास्त्र क्रास्त्र क्रास्त्र क्रास्त्र वर्षी (पद रेपा। -विद्-वि नग्यवत्र) दक्षतेने कृषक।-माम्ब-पु- कृष्टिक ज्योतिक।

होरिछ, होरिसवा होरिसा = पु क्षिप्ता नवजात विश्व। होरिहार = पु बोडो ऐंडनेवाला ।

होरी-की दे होणीं जहाजपर मास कारने जीर बस्तरसे प्रतारनेके काम भागेवाकी वही नाव। हाकक-प्रति मध्ये पने आदियो आयपर मुनी

हां कर-पुर्नि । मश्ट पने आदिको आयपर भूमी हुई भरतको प्रक्रियों।

होसा-पुरे 'शक्त'। सी [सं] होजीका खोहार। -सेसन-पुत्राम थेजना।

होसाक-इ [र्थ॰] श्लीमा निकाकमेका यह प्रयुपार (विश्वम नरम रासकी सहावता ठेते थे)।

होस्राज्य-को [मं] वर्धतीत्सव हीजीका स्वीहारा प्राप्तानकी पृथिया। होस्राह्य-पु [सं] होजीके पूर्वके आठ दिल किनी

विवाद नहीं होता ह

होतिका-धी० [4] होनीका खोडारा नकते हैर, पाम-पूर्ण आदिका देर तिमका दहन कार्यनकी पृषिकाको राज्ये हाला दे। दह राष्ट्रणी जो हिरम्बकीयु को अविनी थी।

को अंदर्श था। पह श्लोहार। चपढ़ भारिक देरका बन्ना दिवा बाजा (बाण)। एक प्रकारका गोत जा निजंप एपरा दाणे के अवस्पर पावा जात है। देश होकियाँ। मुख्य एक्समा-प्रधार पर्यक्ता, एक पूर्वरूपर (गावार बाक्ना। होस्ट ऑक, होक्डाक-पु (ब्लाइस्ट काम मानेताका एक तरहका पेला मिनो बसरी कपढ़ रामकर स्टेसने किस विकार साह असे की शिर पन्नते स्माद स्थानके

हास्टर-पुर (शंर) करही भारिता बना संबर्ध के क्या हायते पर्वता आनेता श्री कर्म का सामने निवास भारती है। विश्वती क्षेत्र क्ष्मी हुआ नह

साथन निष्ठने **१६६ मध्या**या जाता है ।

ક્રોશ−૧ (જા] નીવની અપની મંદ્રા, નોવિસ દદતેના शान, भेगना। सभ्यप्त समस्या करण मृद्धि समस्य। ~संद∽दि अदिमान् । मनद्यरार ।~संदी नशी अदि यानी स्वष्ठशरी। न्यास्त्र-वि अनुभनी समहदार। -इवाग-१० सुर्प्य । मु -भागा-भग्ना भागा समज्ञार होना, यहर हाना अरह, युद्धि आया। आहे-में भागा, नेडमायक दोना है स्वरण होना रायाक भागा । - उद् जानां - उद्या - उदादनां - उदारना -बर्दाय हो जाना परश जाना। आध्येनदिव अमा, देखने था नाना। भर# धीना। --काळ्र द्वाना−दे दोग्र वर जाना । – माना−दे होडसे बाहर होना'। ~ग्रम होना-होश उश्मा। – प्राता रहना -बाना−६ होश उद पाना'। – टिकाम रहमा-दोध-दशस ६६२७ १६ना : - दिकाने होना-अह क्षेत्र होना ! "श्रंग होना" है होश करना'। -दिखाना-स्वरण कराना याद दिखाना ।- म रहना-घर न रहना दीव वह नाना देहोस हो बाना। −म होना-दोदा-दशस दुश्स्त म दोना। −पहरसा⇒ बमरमें बहुना स्थाना होना। हार्यप्रपार होना। - प्रकरे होना-दे होश्वय अन्य । -याप्रता होना-हे श्रीश वह जाना । -विस्तरमा-दे दीश वह जाता । −में आया-वान प्राप्त करना वर्त शासिक करनाः क्ष्मीत्र सीधना व्यवहार सीधनाः समहाराख होसियार होनाः जापेमें भागाः सेंमधना । ~रस्रता-पुद्रिमान होना अनत रथना। -रहना-होश हुग्रत रहना। -सँभाक्षमा-सवामा दीना, वहा दोना; भाषार्थ्यव शरः हमीन शीयना । -से बाहर होना-धेवमाहीन शना, नेदोध दीमा, नेसुद दी जाना ! - हमा द्वीमा -हिरम होना-१ 'होस वर माना'। -हाना-भक्र शीनाः स्वर शोनाः शोधन्यवास दुस्त शीनाः विशी प्रकारके मध्ये म दीया। यहा दोना सवाना दोना । क्षेत्रियाक्-वि (का) अद्भवः अविमान्। श्वरदार धारवान, धनपः प्रतीमः अनुभरी । मु - कर्मा- भन्तस्य दिकानाः, वरंगित करमा । -क्रेमा-वरंगित दोना । दिकग-स्रो परचनेका भाग गळगोळा ग्रेम । दिकगना-भ क्रि परचनाः सक्योक दोनाः, विरक्ताः

चम्द्रमा फॅसमाः वास भातः । हिस्माना−स कि॰ फ्लाताः मेण्योक कावम क्लाः

पेष्ठाना, पक्ष्याना; पास क्यां। विक्रमा-मः किन करिनर वोता पंचक दांना; किन्ती स्वानप्त पित्र, विक्रमा-मः किन करिनर वोता पंचक दांना; किन्ती स्वानप्त रिक्रम, विक्रम: केन्ता स्वानमः केंक्रमा किन्नमं स्वानमं स्वानमः केंक्रमा क्ष्या प्रविच होना । प्रवच्ना, परिचव होना । प्रवच्ना परिचव होना । प्रवच्ना स्वानमः चेक्रम होनाः प्रवच्ना स्वानमः चेक्रम होनाः प्रवच्ना स्वानमः प्रवच्ना स्वानमः प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना, प्रवच्ना स्वानमा स्वानमा प्रवच्ना प्रवच्ना स्वानमा स्वानमा प्रवच्ना। प्रवच्ना स्वानमा स्वानमा प्रवच्ना। प्रवच्ना स्वानमा स्वानमा स्वानमा प्रवच्ना। स्वानमा स्वानम

हिष्मोपि हिस्माविका, हिष्मांची-ची+[सं] यह

डिससा-को एक तरहको मध्यो ।

हिकाला- छ कि जंबक करना, अरिकर करना, किसी योगकी इस्टब्बर करना बीकाना; किसी वरतु वा स्थितिक किसी स्वापित हरना किस्टबाबा; कैपाना; स्थापन करना; स्थापा; किसी वस्तुको कपर-पीप वार्ष-सर्वे के काना, बीकाना।

हिस्रोस-पु [अ] नदा चौदा तना कौर शास्त्रिरी चौद । हिस्रोद-प्ती दिस्कीक सकताता

हिकारमा-स कि हिक्कोरमा । ने "दर्शना"। हिकोरा-पु हिकोर । शुरू - अना-दिक्कोरा हेना तरंपित होया।

डिसाल-प (होन, न्यर ।

।क्रांच=्य ।क्रांचा प्रवर्षः क्रिप्तोक्र=पू [सं] कहरा मनकी वर्गमा विकोक रागाः क्रमाधारका रक्तिका धुन, सनका

हिस्यका-की [सं॰] समझरा महानके किरक पासके पाँच डोटे दारे!

हिर्देश-इ वर्त्ते द्वपार पाका।

हिर्मेशको - पु हिमानका प्रका हिमा वरण । हिर्मोर-पु हिम प्रका । सुरु - हाना - व्हत श्रीतक

होता। हिस हिस्स-क्षी॰ [थ] शतुभृतिः किसी वार्नेदिवके वारा नामना धनतना मति वेदा।

हारा नामना उपरान्त नाम प्रशास हिस्सी स्थापिक स्थापिक

। –शुक्ता करना-रेना पुदा (सा। **दर्भ**मा -तस्य कर्या-दिसान मीयना विद्याप स्थापने की कहना १ - इन्।- दिसान समग्रामा १ - य हो श-विद्यान होना, गिनती न होवा । -पर **प**रमा-स्**ध** वा कावमें किया जाना । -पाक करमा-देश सम देशा । ~पूजना~दिसार मॉयना । ~पेपाक करवा~ सारोमें अछ शक्ती व रहने देना। -बैटना-म्योर नैडमा सम्बद्धारों आवस्यक्ताओंका प्रपाद निकर माना येक मिळवा । –साफ्र करना–दिसार शुक्ता करना। —स-अंदाबासे परिमित्त साथामें विश्वाबत्तम (दिसासी कर्ष करो, पहीरे: ऋगरे, म्प्रानार्थ (जिन विसाध्य सर वहेगा"): दिसावके सुनाविक । (किसीके)-से-"बे धक्रितेः के विकारसे । −मे चळवा~नाप धौषकर सम बरमा किकामनसे सर्वे करवा। हिसाबी-वि हिहार बामनेवाकाः दिशारते प्रकरेशमाः बिसार-प [ब] थरा, श्वाताः परकोशः किल। सः —करना−पेरा शङ्गा । –याँघना−पेरा शङ्गा पाउँ और धैनिकीको याँत का कार्र वसरी राज यही वर रेगा। हिसिया - भी ईन्यों - भो नेसहि हिसिया कर्री कर विव≼ अभियास^र−रामा : दिशोसे पता करपी ६८नेप्रे साचनाः श्री ह । ब्रिस्टीरिया-प्र• [sio] एक टरहका युष्कां धेन वी

चीटें व्यया दरवार्त (स्थान)। हिहिनामाञ्च्य कि दें 'दिनदियाना । हींग-की दें॰ दिया। हिप्तिकेन्य कि॰ व्यक्त करना, पावना; कामना करना।

हींग्राड – श्री वच्या कामता। दीवाय- १ (वेन) दिवाव चुड । दीता- चीड भोडेची दिवदिवाद । दीसेंग्रा- च किड चीडेचा दिवदिव ना। दीसेंग्राची देवशेव चांच्य प्रति दुवर। द्वी- च इम्मा प्रयोग विश्वत, ग्रीमा कमी अध्यापन. अनववा स्वरिद्ध करवादीय देशा है। स्वरी करवायोंने

यह फिक्षी भागपर और देमें ग्रंथा निश्चयके निव ही मञ्जूष निक्रण है। पु हिया हरण । ० अ० कि० ही। हीअ०-पु दे० दियाँ। हीख-पेन एक महारकी दुर्गर निर्मास माना मत्रणी आही

है। दिसको । मु - मारना-नार नार तर तरी महह देवनी येवाना । होसिपारी-हार्विनी मरामधानको शानधान करना । -रहना~सानधान रहरा, चौदस रहरा । –हो जाना–साम्पाय हो जासाः मक्क्य दूर दोना । क्षोशियारी-की [फा॰] <u>बुव्हिमानीः सा</u>श्यानीः पाकाओः मन्यव । होस≠-प दे॰ 'होश'। । आशहास ('कर्डाई' के एक एक एक एक प्रमुख हीं - सर्वे असम पुरुष प्रस्तवन सर्वेताम में। ब कि वर्तमानदाकिक किया होता'के क्षणम पुरुष एक बचनका रूप, हैं। श्रीकता- अध्य क्रि • हंकारना गर्बन करनाः श्रीकनाः । पदी मारिकी हवासे भागको रहस्त्रनाः गंधे आदिसे हवा करमा । र्शिस-सो द दीस । इस्सिसारे−प•वे 'होसका। ही -- मर किर होना का मध्यम पुरुष एडक्बनका वर्ष मानकाकिक रूप हो। होना का पुरुवाकिक रूप, था। हीमा~प एक वृश्यित वरता विश्वका मान संबद शिवाँ वच्चेंका दराया करती है महतके। महाबारण और दरावनी बीज। श्री है 'डीवा । शीका-पु॰ सानेको तुप्ता वेहपना काम. बारूप । श्रीज्ञ−प्र• [म] क्षंत्र चहत्रच्याः नॉह । शीमा-प (का) दौरा दाशीकी सन्मारी। हीब≉—क्षी दे 'होड'≀ होते सज्ज−ि सि] अस्ति-सं√भी । प्र प्रशिद्य यहात्र । होतासम-वि [तं] मरिन-संबंधी । -क्रोड-५ वस्नि होइ। -होश-५ अन्तिक्षेत्र। हीसाक्षति-प्र. [सं] स्बंदा मोड मायक वंदर । श्रीतक-दि [एं] होताचे पंत्य। पु होताका कामा होताचा सहायक । हीय-प्र• [सं] होताका कर्मे । वि देश राज्य । हीक्टिय-दिश [सं] होताके कार्यते संबंध स्थानेवाला । होद-प्रशीत हुना माँद। द्रीका−य वे दीवा। वे 'दीव। होसीय-दि सिंगी है होगीय' ! हास्य-पुरु [र्स] भी । -भास्य-पुरु है 'होसनाव्य' । हौरार्ग-इ हुआ श्रीरशक। शारे होरें== व पोरे-पोर्ट हो∹ होडे व्याहिस्तत । बीख−९ [स] भीदि, मद, ६८ दहन्तर। −सीसः − जील-को अस्त्री, बीमताः क्वाबनीः बीधवायनिय प्रतिकतता, ६वराहर । ~तिस~की विककी परवन, maid: तिक परकतेओ एक ग्रेमारी। विक भीत दश बबार स्वार, स्वाक्तकर मिसे दिकती अवदान (की क्षेत्रार्थ) होता हो । -विशा-नि टर्शक । -माक-नि धर्मस्य, स्वीक्षतासः । स्व -पैद्यमाः,-यहमा-भवमें हर पैता बोना शब्धव समाना।

होसाबीकी-स्था वस्ती दरशी ।

होसे होछ-म औरेओर, माहिससे ।

होसी-सी शरार विकासी प्रयह, बल्परिया महिराधवा।

हीस~को॰ दवस, हीसका। सनको द(य, उपना उसका HOW WELL ! हीसका-प 🕼 ने सामर्थन साहस, हिन्यतः हत्यसः काक्या। -संद~दि दीक्षप्रेयाका, बत्ताहो। सुर -निकासमा-भरमान पूरा घरता। इस्त निवासना -पस्त होना-बाध ठंडा पहना, हिरमत दर बाता। क्षण, अवम-त [60 कियाना। **द्वत−ि** [सं•] क्षिणवा द्वा। शहन दिवा द्वार इति नदी सि दशप क्रियस सन्धार। झ-(झस)-अ [do] बीता हुभा कक सा विवा ~क्रतः~वि स्टब्स दिना द्रमा, स्व पदित । ब्रास्तन-दि दि] गत (१वल-संनेरी । −दिन-पु• क्र द्धास्त्र्य−दि॰ सिं॰ो ⊀ धारवन' । धार्डि−म वर्दी। स्त्रोक-व विशास्त्रवार क्षोभव-दि (५०) वो ६० इवा हो। इकिया इक्रीया-स्त्री [संग] देश अस्ति। । हर-त [र्न] यहरा बकाधना गहरी श्रीमा प्रशासकी किरणा व्यक्ति। यम । - प्राप्त-१ - अंभीरः महियाम । द्वतिनी−था सि 1 मरीः विषया इसित-वि [र्स] श्रवित दिया देशा, छोटा दिया दूगा वराशा हुआ। ५१नित । इसिया(मन्)−ओ [मं•] धोयपन #प्रताः स्तरमः। इस्थ-वि॰ [से] धोय, कह (रोपंडा बक्य)। नाम किनमा तप्या मीचा अनुब (बैसे द्वार)। प्र चैनम दक्षमाधिक, क्षप्र स्वर्ध बमाः प्रभक्तशोसः। --कर्म-प्र यक रक्ष्या । -क्रस-४० क्रम्या यम नटः यनेत स्था -शर्य-त इस । -सब्युका-की संगरको नाप वहा । -अंबू-इ ध्रह्मपू । - आवशीय-५० वक्र रीम विसर्ने बीवें होता दिखाई देखा है। - जाबर-वि॰ होता क्रिस्मका । -लेब्रफ-प् एक वरहदा थान राजाप । -वर्म-त दे 'वराङ्ग्य ! -वा-भी नंपद्रश्व दैनेशका रुखः राहश्री । -विश्रीशक-त होये वस बार । -पद्मक-प्र पहरशे मद्दरा ! -पद्मिका-की अंध पीएन, बरसरी। --पर्ण-प्र पाउर। - प्रथ-वर् कार्यका छारा इस । न्यक-वर राज्य । नक्ता-की भृति दू। -बायु-वि स्तेये बाहोबाका। इक शाबा नत्या वह बान । - बाहुक-वि वेव वर्तन बाद । -मिति-वि दिशनाः धोरे दरदा। "मुख्" ष् अक्षाक्र गर्भा र केश्व १ - शास्त्राचित्र - प्र प्राप्त हो। -समा-धी॰ धेर शमान । हस्यक-दिश् शि] रश्य धारा । इस्थांग-विक [६] नायन, श्रीमा दिवना। प्र नीतह माध्य चीपाः मीना काश्मी । हरबाद्य-५ [र्स] अन्ते स्टार्का १९ । हार-प [सं] उन्दर अति। नपमस्ता एक नागःहरा शिक्तमधीवतसा दक्ष तेव । होया-भी [ब] बारमध्ये पर । वसनाव देशमें बहुरी | हादिनी-भी [सं] दिवली। वह श दश नरी। स्टब्ने

षमीके अनुसार मामव जातिको भाता । व है। हो। हो

शीयमा - भ दि विषयि साना, विश्वी वाधके दरनेने भाषा बीधा देखना । श्रोतनार्ग=थ कि॰ दे दी धना^९ ।

दीवार्ग - भी • दे • दी दा रे

श्रीरता-म दि जाना निरुष्ट जाना, पाम प्रदेशना । हीन-दिक सि] भवम जीना निय यदी रहितः वर्तिहा परित्यन्य निम्न कोरिका विक्रमी अत्विक विनीत प्रति हो रीनः दंश्या दुभा समन्त्राः कृत्-तुष्मा पृत् मानः રથાન બારિય વ્યુત પ્રયક હરીયા બપુરાદ શીધા ક पुरु अवोध्य गुनाइ शास्त्राचे साक्षीर व्यवस्थानः प्रशास क्रमी, क्षयावा क्रथम नायक (मा)। -क्रमो(सेन)-दिक शामिक रहिते विदिश्त समी-बात, बदर्गड-को न करवेशालाः नीय काम बहनेशालाः। 🗝 इसान्ति बीच क्षस्ता, बम्बिन बस्टा १० कृष्ठ-पु । धुनुष्ठ (१) । -क्रोस-वि दिलका धुश्राना वाली को १ - क्रमु-वि वश्च न करनेवाला । -कम-पु काम्य मध्यी एक दीप बिसमें बांचेत्र विषयां के समझ नियाह न हुआ हो। -बरित-दि दशनारी दर आनत्वता -ज-दि नी बहुत वे सर्थ । - अहि-दि नी व वार्तिकाः वार्ति रदुर । =मायक=ि (४५३) नामक अथम को (ना॰)। -प्रमुत्य तह हाहा भर्मावत न हानेवाणा का बत्तीवनी रहिने कमनोर पश्च । विक अर्थान । -वितिञ्च-दि प्रतिशास्त्र पात्रन न दरनेशका !-दस्र÷ वि विवस समबीर । -बाबु-पुरु दिवका एक गण । -प्रदि-मति-दि प्रदिश्तेन म् वृद्धे। -मृत्य-ति सम क्षेत्रवडा । प्र अन्य सूच्य । -माम-प् बीड बहुकी दा प्राधाओंनेन यह (दूमरी प्राधाका मात्र महाबाम है-पहल होमबानका ही प्रवर्तन हुआ और रम्द्र अनुवादी कुरू दे बनवडी ही प्रमाम माना है) । न्योरान्ति योवभ्रम । न्याजिन वि वरे सान्यानने करपण नीच नाविद्या। **-**वस-प्र काम्बर्गत यह दीव को रक्षनिराणी भावके प्रकारी निवादनार्थ द्वाना है। -रोमा(मस्)-वि नधरीन नंता। ∼दस ∼दर्भ−द ध⊀ वये औद शतिः दि मीच प्रतिका धूहराका। -पाद-प्र शेषपूर्य वका विरोधी बाव या यशीका समजीर यशीला दोषी प्रभाष साहय । -पादी(दिन्)-वि परश्य विशेषी बार्त बहुनेवाका (पेसा व्यक्ति या यशाह) विसन्धी पूर्व पर कही बार्ते अमैगत की निक्कार्थवादीः शूँमा मू**र्**ड। -वीर्य-वि रक्ष्यीम बमनोर । - सबय-वि नीपीसे

पित्रता ६१नेवाका । -सपा-श्री मीपीकी रह#। इतिन-पु [ध•] काक जमाया । —ह्यात-पु जीवन काष । अ वा बतकारुमें, जीवे ही। जिस्कीमर 1-इयाती-वि जिसका धिरामी वह अविकास रहे जीवनका के के

क्षित्र मृत्र ! - काइएकार-इ यह काएतबार जिसे भएनी जमीभपर जिस्मीभर सम्मा रखनेका अधिकार हो । हीनक-दि [सं]--से निव रहिव।

हीनता-स्रो , हीमध्य-५ [सं] स्वरोध्याः राहित्य भगवः भीचतः दुराई ।

श्रीनांग-वि [सं] अंतरीन विक्रमान ।

होनोती-भी [ग्री प्रारी पाँच । शीनोग्र-दि [में) दिरपर्राद्य, भारत ।

हीनार्येन्दि (सं) निषदा प्रशंबन भिद्रः न दुभा हो ।

होनिस-नि॰ मि] स ननिया ---से वियुक्त पराया €RE I

श्रीमापमा-ब्यो॰ [म] प्रयम भनेबारहा एक भेर बिसमें बहुद्धी प्रदेशा शाद है हो जान है

द्वाय: हीयश हीया -- पु दे दिव 1

हीर-प्रभार क्या गुरा। बीवें, यांवर [५०] एक रान, हीशा रक्षा धिना मिहा छने। एक पूछा भौतियों भी STIGET F

होरक-पुरु [मंरु] होस नायक सना यह पूरा । -प्रयंती-की दिक्षीय प्राप्तत दिसाहित कीवन भारिके साटिने वर्ष का ११ हर दिनी संस्ता मारिको स्थापनाका साहची वारिक

बान्सर, शासमंह नुहिन्ने । हीश-५ ६८ बहुपूरव राज वा भावन सहित और अन बांतिपुष्ड होश है, बोरहा (मा) उधम स्पत्ति या श्रद्धां की [रो] बहनीह रिशोडिका काश्मरीह वैस्रां पुरा (१) । - आयुमी-पुर बहुत नंद आहमी, मना-यान्छ । -कर-वि॰ शीरे वरह वस दमा । -बर्मास-९ १५५६ बीवस सक्ता भोदेश विदार। -वाची-श्री॰ विश्वदशस्त्रका गोरः। ~मधी-प्र ६६

र्वाचा पान । −सच−९ कार्यमावे वर्षित तीत्री वस सन्दित अति। मु• ∽ग्यामा-आस्प्रदस्या सर्वे हे रिचारसंदीरका कम धालनाः देश्याने जाव देना। ~चारमा−दीस पास्तर धर जाना । –(१)को दमी धाना या चारमा-६ होरा धामा ।

डीक-९ [सं] नीर्व शुद्धा [मं] जुतनो वरीत र प्लान का क्षेत्र । क्षी [कार] होती रहामधी । इ।छना−भी [५] इ।डि। ०व कि दे दिसना'।

द्वीक्षा-१ [थ] बहातर, महर भवाबरा वसीका रीजः गार कामा रे की कर । -हमाछा-पुराजमरीका -(छ)गर -पाश्च-साथ्च-दि॰ बदाने बनानेदासा। -गरी,-पान्नी,-सान्नी-की बहानेशनी, परेना स्॰ -विषक्षा-स्पाद विका भागा। -होगा-रहाना होगाः नौदर हानाः द्वीदिश होना ।

हीसका - श्री रंप्यो रपको । डीडी-सी शेरसे रेसनेसे धानि उस हास्य धानि

बीनता महिंदत बरते हुए इंसमा ह हुँ-अ नाम करते समय बात सुनने या उस बायधी

रनीकृतिका स्वक सन्दा हो। ० दे 😘 । हुँक्या हुँकरना-भ कि दे हुँदारमा ।

हंकार-त [तंक] दर्शतक होदर ई शब्द श्रवा यर्जनाः क्रक्कारः स्थरका तुर्धनाः प्रमुक्ते रक्तेर । इकारमा-अ कि दर्पशुक्त होस्त इ शब्दबा उच्चारण

करमाह धर्नेस करनाह विश्वादना । छ कि अब सवार शपने, मवियोगिना आदिमें अपने युप्त, प्रतिहरी आदियी **सम्बद्धारना** ।

हुँकारी-स्थे। हेंन्डें' श्रम्य हारा स्वीहृति सुनिष्ठ करनेथ्रो कियाः विकारीः सु० - भरवा - कशनी सुनदे समय हावी(दिन्)-रि [मंग] हा स्वयः प्रध्य दरनेसायाः गरजनेशका । द्वाय-पु [मं•] यव शोधना भवनतिः भवान, समीः म रू असिर धोरी धुरुषा ।

शामक-वि विकेशिय दरनेताला दम दरनेताला । हासन-९ [मं] धीप करनेको किया क्य करनेका साय, प्राचा । द्वारामाय-वि [धु] दम काने महाने बाध्य ।

दिणिया दिणीया-भी शिशी रे॰ द्रणिया । द्वित-दि (वं) इर्प दिवा अा, कावा द्रमा, नीया क्रमिश निभन्त । यु क्षेत्र । दिश्च-भी । [मं] इति दरमा

ही-भी [1] प्रधा प्रोश स्थेत । -बित-रि सजाके वधीमृत सजाधीन, क्रुधेची । -इव-पुरु यह रीड रेन्ता। -पारी(सिन्)-नि कता अनुधन ब्रानवना द्रायोका। -विशाम-प्र• एकावा शरि

रवाम, निर्ने १४डा १ - निषय-दि० दिनयी बाद १-४४-षु अस्तारा सार्थ । - वस-विश्व अति वस्तु । हो नी । -भय-प कथास दरा -मद-दि कथार पर दावा हुआ। श्रीक−५ [म] नवडाः द्वीदा-भी॰ [मं] सज्याः मंद्रोतः तद ।

होक-दि [र्न] बाजिश सम्बन्ध प्रश्नीक होते स्वाप्त रॉया क्षेत्र । हीक होत-वि (८) कश्चित्र। समुग्र-वि कश्चित्र मध्यक्षा । हीति-स्री [4] ब्रध्यक्त मंद्रीय । हीवर हीवेड हीवड३-९ [थे] यह १९३४व

हेपण-१ (सं) कव्यत करनेकी क्रिया ।

द्वेपा-मी• [स] (पोरेक्ष) दिनदिनादर । इचिय-वि श्रि विद्नदिनामा दुधा । पुरु दिनदिनाहर ।

हेपी(पिन)-दि॰ भि । दिनदिनानेदामा । इपक-प्र थि दिन प्रतिक करान । ह्यचि-न्द्री० सिंग्) भागा प्रस्कृता।

एक-दि [सं०] प्रध्य गंद्रश्च । ह्याद-पुर [मं] नाबकी प्रमुखना आनंदा दिएवस्तित TI CE TA 1 प्राचक-दि [में] प्रष्ठश्र करने बाहा । हार्य-त [र्वण] भानश्वि सहनके दिवा। वि श्रमन SCHEMI I

द्वारिय-दि॰ [मृं] भानदिश्व । દ્રાવિવી-વિલી મિં] માનંદ દેવેનહો ! સી ટે 'वर्धाती । एक प्रस्ति । ह्यवी(दिन्)-रि [र्गण] भानंद्यक्षा प्रमुप्त बर्दनेशनए ere u reier i द्धीबा-भी मि बि ता स्त्रेक-दि प्र∘िंबी दे क्रां 15पा-सी विदेश गरा 1 हुक्य-त [सं] स स्ता धरमाना ।

हैपिल-वि॰ [मृं॰] क्रस्टित दिवा दुमा ।

टॉर्श-म वही। टाम-१ [में] शेरगुनाइकार, निष्टा दुवाना, भाहान। द्यायक-वि (ते) प्रश्वरनशन्तः। द्वायी(यम्)-वि [धं] भाहात दरनेवासा सह कारनेशना । दिस्की-सी॰ [थं] यह प्रदास्त्री संगरेनी सराह नी

भी भारित बनावी जारी है। द्वेष-९ [बे] एक बहुन की बड़ा समुद्री बंद विस्ता

विकार तक शारी बड़ी आदिया किया किया जाता है ।

किसी कामके किए स्नोकृति देशा । इंडस-९ [नं] नुंबारा सुभारको गुर्शाहक संघननेता र्मनः रैमानेका शब्दः।

हुँ हि - की [सं] पिंडित अध्यम ।

रक्षम देवा स्वीकार करना !

मानदे जिस्सी जान महिता

द्रमान्द्र र दुवस ।

बुक्त्या~म कि दे हुँदरना"।

इ∌−स भी।

गे≢मा ।

होता है।

हुँदापन-पु• इंदोक्स वस्त्री: बुंदोक्से वर ।

प्राचीन काक्स विका सामेनाका आवेशपत्र ।

बाका गहा । सी॰ [सं] बायदं व्यक्तेदा सुन्द। हुँदार-पु भेदिया।

हेडिका-ली• (सं∗) वं ह्रंदी : सेमान्डे निर्वाहके किए

हुद्धी-की नद्द पत्र की नापसमें केन देस करनेवांके

महाजन किसोड़ी रुपमा दिणानेने किए मेजते हैं। महा-

बती 'बेक'; कर्न देवेका एक तरीका जिल्हों नदावन

सुरकी रक्तम युक्तमें पहके ही आमिक करके एक बार

या किरत करके केटा है। -बड़ी-ओ॰ इंटिपोका

भ्वीरा रहानेको नहीं। यह नहीं विश्ववेंसे हुँको कारकर ही

पान । मु॰ ~करमा~इंडो कियना । ~कदी श्वामा~

निश्री वजहरी हंबीको मुस्तवी रखवा ! -परमा-हंबी-

के रमनेका भरा रोगा ! - मेजना-इंटी हारा इच्य

लुक्ता करना: श्रदा करना । -सकारमा-ईरीमें क्रिशी

हुँच कुँते-म स्थिके स्टब तथा अग्रशम कारकोध

हेतु नास्त-'तुम ईंत मेंडप मपेड वरहेंशी'-प

हर्षा - प्रामिकों के बोलनेकी जाबाज । ने अरु बहाँ ।

विमालिक से हारा। (बिहारिकी) ओरसे। (बिहारिके) क्रिक्ट

दुमाना-भ कि मीरहका हुमाँ-हुभी श्रम्द करक

इक-पु [शं] एक मीर शुरी कीम वेरिया जिसमें वा

जिससे कोई पीत्र फैसाबी जाती है। किने सईन वा

पीरकी मधीका बनान क्रिसमें क्ष अनवन्त्रे हिन्नाना इक्षामा मुस्स्तिक होता और पेक्षा करनेसे निकक

इक्ता−ध - कि॰ धर खाकी वाता; नियाना पूउता ‡

हुकारवा-भागकि, स कि रेग टुंबारवा ।

इंद्रना-पु [ब] दशक्षी रही वा दिवदारी भी राखाना

इक्टर पुक्त, इक्टर हुक्टर-को॰ शर्मादिक क्यमेरी घर,

शासीया आरिषे कारण हज्जविका तील काना कनेनेका

देवके माध्यको हेक्द्रारछे निवध परिमायमें मिछने

द्वंडमेध∽ु [सं] हिद। हुँडा-प बरकी सीरसे सम्बादी दिवा वानेवाका बना

म्बक्ति एक बमपदा सावकी बाह्य । इंदम-पु॰ [सं॰] क्षित्रका एक गणा अंगका निमेद होना, रूक्वा मार् जाना ।

ब्रेक्सिका-को [सं•] यद राग। हॅब-प [र्व] व्यक्ता गहाः यामस्यदः राष्ट्रकः मूखं

हरू वि~की दे 'दुबार'।

'र्ड-डे' सन्द दारा कदानी सुनते रहमेको सूचना हैना:

वद्यी-बद्यी चन्नुसमा । ष्टक्क-प्र•िय] 'इक्क'का वहा।

बरवारमें। शामनेः सवामें । क्रुज़री-श्री समीवका बाविरीत धारी रस्तर। 3° (रामा भारिका) साथ भीवरः दरवारो ।

दरवार इत्रकाता सम्मान्य चनका पंतेषम, भीमन्, वभागभाक्षी (मातदन कुर्मेश्रारी अद्वाप्तरक्षा तथा वक्षीकः मुख्यार जनकटेकार धारिका एसी मध्यसे संनोपन करते 🗑 । ~तहसीस~धी सार तरगोड !~वाधा~ ३ (धंरोपन) शीमम् जनारकारी । (किसीके)-में-

हुजरा-पु [अ] श्रीवरी। वदासमा दरनदा स्परा । इज्य-५ [भ] बनसम्ह धीर्र दुर्-तु [न] शांबिर होता, धायन भागा वश्रीर्यातः

हुचकी-ती दे दिस्ती ।

थीन जो इत्य पिने वह करनेवाना (- र्रा) । -वेदा-पुरुषका शुक्रास ।

-सरामा-१दी राव देवा देशसा हरना । हुक्ती-विश्ववृद्धः सता स दरनेवासः (-यना)। सामा-

हुक्स-दु (अ] आवा आदेश फैसका शर्र पेसक फतनाः हवात्रतः हुकुवतः विदेशसः ताधकः स्त्र (५ काका शाम १-इस्तई-3 अंतिम निर्मय १ -- ग्रहती-5 वह बाह्य को सब क्यह फिराबी भार । - व्हमियाबी " प्र वह बाहा को बोटिय निर्मय का बर्ध्य प्रकार वह दी नान । ∽मासा∽पु० भाषानत्र । ∽नरहार−वि आयापाक्क । —बरक्षा(ी—खो॰ आयाका पाक्स) प्रस्मीनरकारी ! -राज-वि बुनम चलामेगालाः शासन बरनेवाका । -राजी-को इत्यव धारान । स् -की सामीख-वादापाकन । -वसका-हुनूमद रोनाः श्रविदार होता । ~चस्रतमा~मध्या मनःदिव करनाः <u>उक्तर करवा । ~घटा कामा +मामका शक्त करवा ।</u> -में होना-माश्रपीत होनाः मधिनारमें होना।

इका पीने। मदारी, वाजीनर । स "ताजा करवा" फरशीका पानी वरकता और नेनेको तर करवा। -सहना-चिक्रमधर तंत्रक और भाग रखका हुआ रैशर बरना । इकाम-प्र [भ] 'शक्तिम'का रह ।

वासी । <u>बुक्का</u> – पु [ब] संशाह पीनेका, वरककरी शे मनिये और फरधीके बोमसे प्रश्तुत बंब, गुरुगुरी। बसाहिए एकनेकी हिविया । -पामी-पुरु हका धैनरिकानेक व्यवहार, जाति-विराधरीका संबंध । [म् --धिसामान आवभवत करना । — वंद करना-विराद्योंने क्षारिक कर बेना। काम राम बंद करना ।] -मरबार-पु॰ प्रश केंद्रर साथ चक्रदेशका ८६६६ । -याज्ञ-५ जो गुर

इरमा । इका-दे॰ इक्सं। -समास्-त इक्सं क्रिनंद सरकार (करमा, होगा)। -पाणी-पु॰ १० द्वाप

हुक्सत−की॰ [व॰] द्वासस, रास्त अविदार, प्रसुत मु -चकाना-शक्षिशस्था प्रकोय स्त्याः इत्रोप हुक्य भकामा । - जतामा - अधिकार, प्रमुख्या प्रस्के

1614 इन्यत-भी (भव) दश्रीका दश्रा दिवार। छगवा । हें उसती - दि: दुध्यत करने शक्त, ग्रापनाम, । RR-T. [fie] nat ce Griet at fixet anesat चोरोन्ड निवारकार्व अभीनमं बाबा हुवन कोइना बॉडाइ (१४१८ वना दुधा) मध्य सूचनवासका ववाना ऋगुष्टा [भे] मधर दिक्य आदिको क्यानीबार धात्रन ना दण्या-मुम्रार पहाची बतारी या सकता है। भिरता एकन (बर धाती भारिका । हुदुक्ता-भ कि धार बदेदा अदल विव व्यक्ति (बिछि यह दिना दिका हो) द न विजनपर छैना

हरना धानानीना छोड देना भाडि । इपका-प्र विरद्यमित्र पीका (विधायतः वर्धीका वान

बाना)। द० ४५६ ।

ह्यस्त्रान्य कि तरप्रानाः दु व्यत बरनाः । हेब्द्रश हब्द्रशान्त्र क्थम चयून द्रष्ट्रश

दुर्बय-दु [मं] भूना दुशा निवता । प्रतु-पु (७) सर ।

बुद्रुद्ध-पु देश द स !

इड्छ-दु [मुंग] एक राजा था ध्यमको ध्यमका पर शाकारमें उत्तम दश हाता है। यह यथी समयुद्ध मत बाक्रा का बीर कर्मका कावा अहर दुव्या वंशा कीवर्दरा । -दिक्का-भीव दुबदको भाग ।

द्वतुन्दु (सं) दुषभदा च शापमओ ।

इंड-दि देशकरा मूह ।

Etar-3 354 det! इत-रि [मं] इबन दिया प्रमा। निसंद निमिध दवन

दिवा गया है। पु॰ दिवा इत्य शामग्री । • भ कि होना का भूवकाल था। - अक्ष-१ अधि । - मुक् (जू)-यु भाषा विज्ञहायद्व सारा । - प्रिया-की • ऑद्यमार्था (राहा । ∽भोक्य(ध्द्र) −भोजन∽९ र दुवसभू । नवहन्द्र सम्बद्धानिहरू नशायन्त्र दशकः

को बचा दुवा बंध ।—हास—धु वह शासन विधने हरम दिमा है।

हुता∘−थ कि दे दुइ ।

इताप्ति-वि [सं] इवन करनगाना, व्यक्तिमें इव्य कार्जनवाक्षा। भी इतनकी वस्ति यहारित। प्रवास-इ [मं] भन्नि शीमकी संस्थाः विश्वक कृता

मर प्राप्त :- पृत्ति-की शन्यक सहार वक्षेत्रश्री श्रीविद्य । —द्राका~या शन्त्रप्रका ।

ह्रताशम−५ [सं] अम्ब ।

हतासना-स्रो [म] एक बोविमी। हुतासमी-क्षी [सं] कास्प्रमी बूबिमा (जिस विम

दीक्किन्द्रा-दहन होता है)।

हुति - स्री (सं) दोम दयन। ० प्र करण और अपा बानको विमक्ति।

हुसो = - शक्रिके इत्।

हुव्कामा • ~ स कि समावशा ।

हुदुना - म कि आध्वंत्रकित होगा। इक रह जाना ।

द्वेददुद्-पु [म] स्टब्होश पद्यी ।

हुदूर-३ स्त्री दरका शहरा भारा ओरको सीमा,

बन्नस्मीमाः नाते (स्थापे ।

हम~पु स्व⁴, धानाइ स्थम्पुद्वा, धीनदा विस्ता । मु•

-परसनर-द्रम्पका भाषित्व बाना ३ हुमना-स॰ दि० इप्प-५७, वर्ष अ)दि-मस्तिम बाह्रना

आदि बनाः यद्य करनाः श्राम करना ।

द्वमर्−त् [दा] दम, कांदेगरी। हामधे कांदेशरी। श्रीः निष्धताः वामता। - मंद्र-दि द्वर नानन

बानाः शुद्धाः निवृत्तः कृदान । - संयो-श्री दारीवरीः

उद्यक्ष्या नियुप्तता ।

ष्टम्म, सम्मा०-५० हे दुन'। guiu-g [n] & esie i

वृषायी-विश्वेष इत्रया ।

हृदय-ओ॰ [भ] प्रेम सुद्दश्वतः मित्रवाः चाद्र । दुरपुलयतमः हुरययमन-सीर्शः । १५१४२मः वस्तनी

98441 F

हमकता, हमगमा-४ कि स्वयंति होना, बालंदा विरक्षि प्रवननार्शनाः धाट यथ्नांका सम्बद्धनक

साब पनना, द्रमहनार चार करनद (बद परका द्रशास यहाना, वाबना। पर्व पूर बारम किमी श्लुका टेसना ।

ष्ट्रमसायाः प्रमायमार-स कि मनवे शामना रूखा, विकार भारि प्रशासक इश्यके भारो, धनस निचारीका

क्वतिव दरनाः वदाना धना दरमा । हमा-द्र [पा] दह करिया पदी (बहा जाता है कि वद विष्ठके भिरम शुनर जाव वह राजा हा जाया वह

हमका उन्हारहता है। हर्तियाँ शाहा है और विश्वीकी नहीं प्रशंका) ।

हुमाई-4 द्वासंशोधनामहाना।

हुमछ-सा विवीद गढका यह महता वा भग्नदिकी १९व^र वा १५ भारतर६ सीन-वॉरीन्डे नहासीसर द्वरति ब्रोंश जारूबर और पाई तावीमें गूबकर पहलनेक ब्रोस्व बनाया भाषा है (पद्मभोद्ध वतहा भी दह वहना है)।

हरईन, हरईना-पु रे ६०दन'।

हुरमय-भी [भ] एजव भारकः बहाई प्रतिष्ठा ।

-याका~वि प्रतिष्ठित स्थनशर । -मु•-उत्तारमा -स्रमान्यास्य बना, श्यव (नवाहमा ।

हुरमतिक नक्षी दक दुरमत न दह क्योर पाप राम राम. दुरमविशायद्व मधे न्यूपोर्।

बुरबुर-पु यक बरासाती पीपा विसक्ष कर्म भन्न की से है

भीर जो बचाक नी काम आता है।

हरहरियारं−सा व्यवस्थिताः। हरिजेक∼५ (सं॰) निवाद और कांग्रेसे बराब सक

संबर बादि। श्वरिकारण-प्र कोलीका राग-रंग करनेवाला, बोली

र्धकनेषाका । ह्रच्हक-द्र [मं] (शशोका) श्रेद्रधाः

प्रदेशयी-की मृत्यका एक प्रधार ।

द्वरां—पुर्वि] एक प्रकारको दर्गभानि ।

हुक−९ [सं] कोकारा सुरा । —सात्का—खो• संनी

परिजिष्ट--- १

पारिभाषिक शब्दांकी स्थाक्या

अ

क्षेत्रमी-मी॰ (रशिन) एड प्रदारको क्रानी जो करती या पानके एत रहेन्छ इद्रहमें छोन वा विशेष प्रकारक समानेको सलाई देढ दर तैवार को वानी है, पेसिक । भेक्यम-पु (स्टाप) निकारित मृत्यपर विकर्नदाता aiffagi Sant ab fertige mal mifere meint जाना है नहीं है दिस्ह

श्रेक्षपतिस=ि (स्टांपर) (वह क्रिक्षाचा वह या स्वाविक भा रहतरत्र) बिग्रस्ट भक्षत्र (स्यत्) सदा हो ।

भेकित सुरुप-पु (बात देल्यू) वह सूबव जी विश्वी पुरा अलावर आदिवर अदिन ही पर वो विधाप विश्वविधीन या विशेष कारमोने परता बहता रहे ।

મુંગામ-યુ (તમિત્રણન) લંકર નિસ્ત્રનેની કિરવા હિલો

शांतको बार्शन होना ग्रह होना ।

भेक्षित सरग्र-त (भोहिटेड अक्षाप्र) *रह ने*टा वा हिसाद विश्वके आय व्यवहादिके ऑडवोदी जॉन श्राप्त परीय इ. हारा इ.ट. सी यशी हो।

अंतरप्रेय-प (वेप्यदेशमा) हे मुख्ये।

श्रीरक्षक-पु (बाही-गार्ट) देश मुलमें 1

श्रीवारक-प्र (कार्यम) यह संशासीय युक्त वस्त्र वा किनने हो पराश्रीमें पाना जाना है। कोवला श्लीका प्रशान द्रश्य है।

भंगसांद्र∽प (दिनश्रांत्रः) उगकी वा उँगनिकीदा निधान ।

भराधिम-(द (इन्.वरटड) को सुई हार। भीनर प्रविद्य दशमा गरा हो। अंद्यस्थय, अंद्यक्रपण्य⇔षु (इन्वेश्यन) तुर्दे दार। भौतर |

प्रवद्य बरानेका कार्य ।

भंतर किया अंतर्थि कित-दि (रन्यकारण्ड) (दह प्रशादि) विसदी भीतर कोई माश्रति (विक्रोबादि) बनावी वा भंदित की गयी हो। जिसके भीतर वा जिसके कपर कोई केय, मृति भादि धंदिन की यवी 🚻 ।

भंतरंग सचिव-पु. (प्रार्थंड हेक्टेंडरी) राष्ट्रपति राज्य बाक प्रधान मंत्री आदिका वह स्थिव वो बनने निजी बा परेख मामकॉब्ड देखरेख बरता है ।

भेतरस्थापम-पु॰ ((८१पीज) जबने आपको बोवजे बाइने स्वापित करमेकी किया।

भंतरमाचन-इ (शिक्षेत्रप्रन) वर्ष वस्तुओं मेरी अपनी सनिके अनुसार वर्सर करनार विभिन्न अध्यक्तियोगीसे नीम्पता मारिके अनुसार कुछ कोगोंका जुमान करमा । (विशेषक = इबेक्स्ट) ।

अंतराराय-५ (रवश्वस्थ) प्रस्तुर्वत या जन समृद्या भी १६ भाना ।

र्भवराख राज्य-५ (स्पर (रेर) दा दशोधी क्षीमाभीदे रीयमें परनशाना वह स्वतंत्र शास्त्र जिसड कारण जन राजेंग्रे प्रस्ता भवर्षकी नीरत मही भाने पाती ।

भंतरिक विज्ञान-५ (भीरिमरानानी) भंतरिहाकी रिमर्डि विजेषहर भाविष का विश्वन हरनग्रामा विद्यास ।

अवर्गत क्य अंवयय-१ (१२ एएकिन) किमी कान-भव धवाने वर भवार विभक्त रार्ध करता ही यह

अंत्रप्रस्त-दि (रनद १९४) नो दिसी नियन्ति अपराद का बर्जियाई कारिये किये हैं। पान का नया की है

अंतर्रक्षीय-दि॰ (स्थलेश) दछके नातर होन वा उसके भीतता हिस्सेस संबंध रघनेवामा । -प्रस्थम-प (इनलेट क्षारचया) रेजाने भोतरने नवमार्ग ।-वावित्रय-य है अंदर्शायस्य ।

भीतप्यसः=प (संबद्धव) असत्य बर्मियो शारा **ब.स**-बार छानी, रनवरी, पुत्रों शारिका चान-बृह्यकर किया गया विज्ञाल सीव-कोव ।

श्रीतर्भाय-९ (१२५म.२न) द्यापित या समाविद होया. दिभी बागदा दिभी दशरीई भीतर भा जाना ।

श्रीतर्राष्ट्रीय सञ्जाकोप-त (१११मेशवस सबेशर) संब शेष्ट्र राष्ट्रध्यक्षे दशराजे स्थापित निधि क्रिया कार्य शहरत हेशोंकी महाभोंके विनिययभाष्य रिधर बनावे रशकें महावता देशा तथा विदेशी महाभोंकी कमी पर वानस प्राप्यांवस अभिक महार्च निवादनेको सविधा प्रश्नम करना है।

भंतर्षस्त-भी (क्रॅटेस) किसी परतम प्रक्रेस परतक मारिके भीतर को 50 हो। भीतरको सामग्री कारि ।

श्रीतवाणिज्य-१ ((३२२४ देश) देशके भीवरी भागीन होजबाका वानिस्य आञ्चंतर ध्यापार ।

अंशर्पासित करना-स कि (5 रंद्ये) क्षेत्रविशेषकी सीमाने भीतर रहनेको गाप्त बरना स्वानक्क बरना । अंतर्षांसी रोगी-प (इन दार पेदांट) दे 'प्रविश्व रोगी । अधिमेश्यम्-५ (अधिमेश्य) अविम जैवापनी, अविम

कार यह कह देना कि रस अवविके बाद प्रम स बर्जेस. अविधि भीतर वह बाद न को गयी तो सवाजक परि पाम होगा । अधाक्षय-पु॰ (ध्वेदमाउट) हवाई इमका द्वीमेने समय

वा जसकी बार्डका बोटे दो सार्वजनिक स्थानोकी वरिजी-का बता दिया जाना था कन्ते इस स्टब्स ब्रह्म बेना जिससे गहरसे विशेषकर जासमानसे रोधनी विधारिक को

भाइ-भ क्लेश श्लेक बेरना मादिका सूचक स्टार दाव।

स्रो उन्स गौश प्रयट करनेवाटी व्यक्ति, कटपने, करा-इनेकी भारामः शान, ठंबी साँसः साप। • पु साइसः बोठ रकः होतः स्थ्यार । स्॰-करना-स्थपनाः

-सर्विमा-दंदो ग्रीसक ग्राद कह करना, कलपना। -पदमा-श्राप पहना विश्वोको सतान स्टानेका फट मिकना । --भरना:-वे 'साइ सी भना' । --मारना--

ठंदी साँस स्रापना । -स्रेमा-सवानाः सवामेका फल व्यपने खपर केना।

भाइक-पु॰ [सं॰] मस्टका एक रोग ।

151

आहर-की स्थित पठने दिकन शारिसे दोनेवासी इस्त्रि बाबाब चार किसीकी सर्शिवतिका अनुसान

करानेवाक्षा रवति। टोह । मु॰ -छेनः-भाइट पाने बोह हेनेहें डिए दान छगाने रहना।

साइत-वि [सं०] जिसपर प्रहार आयात किया गया हो। बावका मारा हुमा इता रीटा हुमा। बनाया हुमा। इटाया। निकाला हुना' गुनितः ग्रादः हरकाया हुनाः हुना हुना या नवा (बर्भ); प्ररानाः संवितः स्थानतः दोषपुक्तः असंगत

(बाहर) पु डोकः पुराना कपण नवीन वस्तः किसी सर्तमद वा मिय्या दातपर जोर देना। -स-क्षण-वि॰ गुजीके किए प्रसिक्त ।

भाइति-मी [म्रं॰] नापातः वर्थ गुणन । भावन-पु॰ [पा] होदा । - इना-पु अनेक पत्थर । भाइमम-पु [मं] मत्त्ना, ग्रेटमा टेटा।

भाहमनीय-वि० (रं•) रंका वयकर प्रसिद्ध करनेवाकाः मारने नीवन । भाइनी-दि [फा] कोईचा कोई बैसा कठिन कठोर। भाइर-पु [#•] काना: प्रद्या पूरा करना(वदादि); साँस देना' साँसरे साँधी गर्बा इका वनित्रदानाः ≠ समयः दिमा

য়ুক্ত पर्गभौते भौते मादिके किए बना हुआ बछाबार । भाहरण-प (सं॰) स्ताः श्रीन क्ताः वटा हे बानाः कानाः प्रदृष्तं करनाः इटानाः यदादि पूरा करनाः विवाह के सेमय दुष्टिनको उपहार-स्मर्गे दिवा बानेवाला धन । भाइरम-पुनिशर्ध माइस्र(र्ग)-वि॰ (र्म॰) बाहरण करनेवाका छीनने सेने

पाला; लागेबाला: अनुहाम, बदादि क्रानेबाला: प्रकृत दरनेवाडा । माइव-पु (र्व] यदा शुद्धः माहाना सरुद्धार् । भाइबस-पु[स्ं•] यदः इदि ।

माह्यनीय-नि [में] बाहुति हैमें होन्य । पु॰ वस्ती वीन अग्निवीरेंसे बद्धाः भाइरी-श्रेरी दुराई पुकार, बाहास । ई अ निर्पेश सूचक

भाइर-संदर्भसाधर्वस्थकः करनवना प्रदार अहाहा । भाइतर-पुर्मि । घइप, हेनाः शानाः सामा मीवन यात्रशः वरतु । -पाक-पु वकानेश्री कियाः भौतीर्ने राय पराधना पत्रमा ।-विक्तान-पुवह विद्यान विस्तर्मे साय परावों के ग्रामनीय योग गीवर्गतर वर्गाकरण बादि का निवार किया गरा की । -विरह-पु॰ आहारकी

कमी। द्वस्ता । --विद्वार-पु॰ कीवन शयन अस

11

बादि ! -संभव-पु॰ छरीरका रम, स्पीका ! बाहारक∽वि [सं] पास कानेवाका। आडारिक-पु॰ (री॰) लात्माके पौच प्रकारके शरीरॉनेंसे एक (बै)।

आहारी(रिम्)-वि [सं] ग्रहण क्रतनेशकाः कानेवाकाः एकत्र करनेवाका I आद्वार्य-वि सि॰ो घडण स्तमे हैन, हान धौतने द्याने बोग्या बनावदी अमित्रेत कवरी; स्याप्य; पुत्राके

वीन्द (बेसे मध्नि) । पु॰ मनुभावके चार भकारोंमेंसे एक, नायक नाविकाका एक दूसरेका भेस बनानाः समिनवके चार प्रकारोंमेंसे यक एक तरहकी पड़ी मा वंच (मा० वे); द्यसीयपार**गङा** रोग । भाडार्यांभिनय∽पु [सं] निमाकुत करे मा किने केनक क्य वा मेससे भाव व्यक्त करना वसादि हारा वेश बिन्यास (मा**०**) ।

आहार्योदक सेतु-पु [सं] येसी नहर क्सिमेंका पामी कारि जीकार कावा गया हो। साहाव~प॰ (र्ध] सम्तिः <u>त्र</u>कः कलकारः पद्मसाँके पानी वीमेन्द्रे किए कुपैंने पास बनी हुई दंबी । आदिकिक-पुर [सं] स्पृतिबाँने अनुसार निवार पिता भैप बैद्रहा मातामे उत्पन्न वर्णसंदर् । **माहिक-पु॰ [सं] बैरा**३ पानिनि । भाहित-वि [मं] रखा हुना, रवापितः नमानत वा वंबक रखा हुमा। किया हुमा। – हुमा – विश् मन्त्र हुमा। ─हास-प्र कर्व परानेके किए दासल स्वीकार करन-

वाका व्यक्ति। –छक्षण-वि परिवायक विद्ववाका। -श्वन-वि॰ धोर करनेवाका । भाहितक∽पु [सं] रंक्क रखा इक्षा माछ। भाडितांक-नि सि] मिडित । भाहिताशि−पु (यं) अधिकी स्थापना कर उसे रखनेवाका नविद्यात्री र आहिति-न्या [र्स] स्थापना ।

भाहिस्ता-न (पा॰) धारेसे: धीरे धीरे: धीमी मानावसे ।

-बाहिस्ता-श पौरे-पौरे: क्रमरा: !

बाह्रक−९ (सं•) कृष्णकेशया। बाहुत-वि [सं] देवादिके किए इविक्पर्में अधित, होमा हमा । पु॰ अतिवियस अतिथिका भीवनारिसे सत्ताद पाँच बढ़ाँमैंने एक मृतवद्य । आहुति-सी [र्थ] यह या इवनमें इवनसामग्रीकी अप्रिमें बारुमा। इवनमामग्री। उत्तरी इवनसामग्री जी एक वारमें कशिमें बाठी जाव- वित्र गुवानी कठतार भुनौती। आइती = न्या यदाधिमें इवनमामग्री टाननाः इवस्ये रूपमें टाड़ी बाबेबाड़ी बरत ह आहस्य-पु[मं] यह भुरा

अदह-पु• [पा] दिरम ।-(प)तर-पु वादन ।-(u) फ़लक−पुग्रे। आहत-वि [में] इलावा पुरारा न्यांता हुआ; नाम रिया हुआ।-सीप्यंच-पुप्रस्त्रहान।

आहति-ग्री [मं] नुकाशा पुढारमा । भातन-वि [सं] धाना या किया दुआ। कावा बुआ।

बार्च्य (मा०) । र्वेषमा ~ श्राद्धि विश्वयाः ईचन्द्र-तु [मं] न्यव्धिकः गढ नरवर्धे मण्यो । रेवार्ज-दिव में] जिल्हा दिए वादे के विजानी रेशकण्या कार ही ह

हुंच-९ (अं+) पुरक्ष शाहरती माग लेक औधी लंगारा

हेन्दीरी-सी॰ ६९६ मा म्यून स्थन्ध दिस्सि । इंग्रचा-द दिरास्था कृत का कन्द्रा बला।

देश मामक्गनीः दिगारकी निर्देश 41ft 2 2 6E-eilb.

इत-इ [4] इद्रशेष। ध्यानी (की वर-स्तूष्ट्रे स्थ-(क्षूष्ट्रे, ह-प्रमूष्ट्र

प्रथम प्राप्त क्लानेवाली अंगभेशा दिलमा क्षेत्रमा । वि व्यक्ति अपिशः दिशा या दिल्ता हुना। -काविद -श-हि भेगभश हारा भ तरिक यांचे की जानन का प्रकर बर्नेमें बुसन !

इंगसिस्तान, इंग्लिम्ताम−९ ४०-५३। हुंगक्तिम्तानीः हुंग्सिक्यवी-वि॰ नेदेशीः इंग्लिशः इंग्रॉड, इंग्रेड-पु (में) शंकरतान अंग्रेडीय देश। इतित-तु [में] हुनेत इहारा। मनका भाग, व्यक्तिका

हुरासा-स्रो ११। नामधे नाधे । विषय सहस्यो [ek] इंगनिश इंग्लिश-वि बर्दण दा बसा। भी अभिनी भाषा। -शन-पु॰ अंद्रीय प्रार्तिस्थामी ह

ष्ट्रंगली~सी एक गतित्र हस्य, संगनीत्र ।

−शोलर −५० धपनेवाने मेंटरपर स्वादी देनेका वसन । क्षम=त [मं•] प्रदेश दिक्ष भंगोंक द्वारा याशविष्यक्ति मानः हाथौरति । विश्वनः गतिमानः साधर्वेषण्यः । इंगर-पु [४०] एननाः हिननाः बनानाः हिनामाः रक्षारा करमाः द्रामः बाससः ।

प्रेंड-न्से॰ (र्थ•) स्वादी, रीहानादै । −टबु-द-पु• छात रामे (इंद्रमध)-ध बड मेत्र वा चौदी जिसपर छवनेवाने मैटरपर बेसके लिए स्वादी पुती रहती इ ।-वॉट-पुर बानाद ! - पेंड-पु + रयाही लगी गरी की रवरकी अहर मान्पिर रवाही संगानेके काम आती है। -सैस-व धारेग्रानमें न्याधी देनेका कान करनशामा वर्जवारी।

ह-देवनागरी पम्मासम्बर्ध तीसरा (स्वर) बच । इसका | ईजन-च सावमा दल वंश भावभारिके सहिन्ध पान्य जनारण-स्थान तात है।

बाह्यदिस-दि॰ दि॰ वाहाइवक, असंदित ।

रेनेशला ।

साहा १-५० [मुं•] इपं, सामंद, सुधी। साद्यादन-प मि] इर्ष, भानंद देना । दि॰ इर्ष आनंद

आह्रय∽दि मिं•ी सर्प-शंदर्थी । भाक्र-विश् सिंशी दैतिक रोजवा ! माब्रिक-विश् मिश्री हैनिकः एक दिन वा मतिरिमका। प • तिस्वक्रमें। एक दिसका काम: पात अध्यापक १–वार्स (म)-प॰ निस्दर्भ I

> मालकी बहमताहर शांव करी बानेराने अपने देने क्षताये अहरदे दक का देजों और अदिद समा होगाना र ftru-go (x) fa ? gerak fent' et file शक्रीचे अवागां अया । बने हुई कुने मी मारा ५ ल दे से ने शे अंगोर्ट अनुस्थानका । नवरानका मार्ग बर्द की सूद्धे हिमारे कटका क्षण का स्व संभा आ स्वीत

> हेंब्रो-को हेंब्या-द रेशी किये। \$85-7 [4] E.as" Attlien (diner Shatty)

वन्त्रेशाः । इँबहर-पुरु प्रांदी शालने बना एक मान्य परार्व र होहब्ब~ि ए [अ०] बारने र भारतरेगा । हेरिया-त [में]मार्थर्प रिएमान !

वा बस्टब्ब सेनेहै (न्य जिल्हा (दाना सेना)। हिंग-त [h] हार मरेडमाद मरेडिका (अंधरी)

बीबका दश्या एक्षण दश्या ११८ शाहा ष्ट्रीराय-प् [bl] विषया सुष्याता समावार समे प्रातिविका विशोध किया विकास उपका मन अपने

इटरमीहिचर−ि [थ] रोयदा दरियामी । **न्हाम** पुर बाध्यको द्यारीका स्तमा दरमा हार्रश्य भी से ब्र के बोचको कथा। रेजमें संभारे और ब्रमर दरशे है

हॅररमशालस−रि॰ (श्रं }दी या सपिद्व राहीदे राह्य बा उनमे भवड भंताराहीब । यु गुनुस प्रदेशको इसके में विया यथा अभिश्वतंदा सावंदेशिक गुमीयम । थि इंटरम्बानल-म वक्त प्रचारका तीतामार्गामध्य नी बीमधेनी बम्बी क्षित्रको बन्द १ १८ में मानी हुआ बर्मानसः हेरानेशस्य से

इक्रील-ली॰ (५) रेसारबेस्ट बर्मबुल्बर शार्थिस गधनपरी । हॅरकोइश-५ १रका द्वक्त गिरी।

इंजीवियर-प 🙀 रेशम बमानवापाः वंशीरधर-महर यस मारिके शर ही रमाने और उनके वियोग्धी निगरानी करनेशका । इंजीनिवरिंग-नी [बं] इंजीनिवरका कामा शीरेरे बम-पुर्व बमानका काम ।

धालिमें बरल देनेवामा बंबा रेमा रंबन ।-शाहबा-प ईवम ६भानेबाला । क्रें**डर-५० हे** 'सर्वदरक्रम ।

मनिशासर विवार डीनेस्य दिन । आ<u>द्वाय-प्र• [नं] तहरनामा शुमना</u> नाम । आद्वायक-विश्ति] आहाम धरनेशशा पुरम्देशस्य

भाद्रपन-पुर्व (मेर्) माम् माम सेना । श्राद्धान-पुरु [वं] प्रदारमा तुवावा तुवास, प्रभार देवताचे। मानाहमा अहानतमे शाविर होनेस मोर तलबमामा- लक्षकार भुमीता माम । -पूर्मप-पुर

आद्वारी(दिम्)-वि॰ सि॰) प्रमन्तः सद्यानतः।

आह्य-प॰ सि॰ साम १

विराग्<u>य</u>कः।

भंश-पु (रिप्रो) सम्बोधका ६ वाँ वाग । भंशवान-पु (कंट्रिस्पुल) किसी कोष या सामस्य निधि आदिमें अपना देशकी रहिवासिक, संदर्शक कथित वादिमें अन्य कोगोंकी सद्दर्शका भी विश्व भेद्र यो भाग महास करना। बोमरामा वह एकम या

भेद्र या भाग मदान करना। बोगवामा बह रक्ष्य या महामता वो १६ प्रकार मदत्त को बाग अवदान। भेदापूर्वी – थी (खांक) किसी संस्था वा निमम आदि

में बिनिय व्यक्तियें हारा कमानी गर्वा वृंभोद्धे हिरसे । भीतापर-पु (शैवरहोश्वर) वह व्यक्ति वो किसी प्रमंदक मा व्यापारिक संस्था भारिमें कमायी जानेनाकी वृंजीदें यक मा एकाविक हिस्सोका स्वामी हो, हिस्सेहार ।

भंगांकिस-वि (प्रेडड) वे 'निहांकित ।

सकार सुरायु-विवार व्यान्त (रामक्रस) अहा स्मृत्यु भारिके से पंपमें की जानराकी हानुसी वीक प्रकार । भक्तिया याद-पु (शपर स्त्र) वह नाम या यामका सिसमें वादी या प्रतिकारीकी कोरहे वह कहा जाव कि

लिसम्बद्धाः या माजवादाका कारस्य वाद कहा आवा क सुक्तमंत्रे सर्वेद किस गेरे पास कुछ यो नदी है अहर स्परकारको कीरसे सुद्दे तकी क स्था आवस्यक क्या निया आगः।

भक्तिपतः—वि (शमक्त्य्दिवदेव) को ओगी-दावी व सदी

(भूमि)।

अकुछपूर्वां सूसि-की (शतिम साइक) वह सूर्ति की पहल कर्नी बोर्ता-वानी न सनी हो।

भद्धशी-की (रोजिंग) हिन्ने वर्धनी । भद्रिपारक-वि (फावर मृक्) मन्तिक ममाव रीवन-

याचाः बह् में आगंध संपत्तीं आनंपर भी न वर्त सक कतापूर्व उसर प्रमानका नारण कर सक। अग्निरासक दक्ष-प्र (फानर निरोध) निसी सकत

भारिते वर्षा दुरै भाग उद्यानेक काम बरवडे विद् संवरित मधिकित व्यक्तियोंक रकः। अग्रमासी दक्षण्यः (कारवर्षं व्यक्ति) भारतका एक राज्य

भोडित रह बिहको संस्थापमा मेरानी सामापदा गाउने को थो। सप्रचारिकार-पु (प्राथमनीयर) अपने विशला

(।उद मंद्रित सादि वरास्तरमें प्रमेका ओड प्रयस प्राप्त मंद्रित सादि वरास्तरमें प्रमेका ओड प्रयस प्राप्ताद।

सम्बद्ध-पि॰ (क्टबर) और नामका नम् पुरुदे गायका । सम्बद्धान-पुरु (प्रारव्धित) एक मूलमे ।

स्थासारिस-दि (फारवरेंड) (माववस पत्रावि) जो आय (क्रथ मधिकारी-दे वाहो अने दिया गया वरः-जो आये नदा दिया मुना दो !

भगाहा व्यक्ति-चु (परसाना नाम्पीरा) विभी दशका) यह राष्ट्रहरू, राजपुरण वा भग्य व्यक्ति जी (पाना दिसी भग्न दशक) उद्योशिकारियों नाहिको भगाद्य या नगान्य यान पर ।

भक्तिम वेष-१ (इनेन्ट मनी) विशी कार्यनिश्चन धर्ने बरनेदे किए पहनेशे दिया गया थन निश्चका दिशाव बारने दिया नाव।

अदिम यन-१ (रहवाप) बिक्रोडे पत्रव, कार्येडे पारि

निष्कः वरत् है मृहवाहिका यह श्रेष्ठः श्री उदे तिरत तिश्री पहके ही वा वरत माह हान है पूर्व ही है दिवा नाव। स्थानिक्य-पुर (कारत माहरी मारी विक्रते या क्यारा स्थानिका मृहवा बाहम नवी जानेवाल) बरता स्थानिका क्यावा स्थानिका मृहवा

अध्यक्षक-वि (नान कंप्यरर) (यह स्तु) विषये (र्युन, वाप भारिका परिपालन न हो छडे। अध्यक्षित्स्य-वि (रमस्वीररिक) विक्रिया क्रमेरी विसरी

अन्यत दोते, दूर दांगे, छात दाने, की नाहा दा संस-क्या न दो। अवसनक∽ष्ट (सनीरश्रीक) चैतनादोन, द्वीष्ट स्वा

देमेषाणा परार्थ (जेस स्कोराप्यम्) । अधितमीकरण-इ (एनीस्न्सिस) अचेतव या नहांत्र इर

दिया जाता थेठमा-इ)न हो जाना । अरुपूषी भड़पेजी-(व (अन्तरेषा) (छपे दुरं पुरत्त वा पानीज वह आकार) जिससे पढ़ ही तरक छर्ग हुए समर्थे

कार पुत्र किये गो हो। सञ्जान पुत्र (गोठेश्यूक) प्रदार्वका छक्षे छारा ६२ से भीतिक क्लान्ड गुज्य रहारा है। नयस नपुः (देशस स्य) एक भीतिकारकारी नम।

्ष व व्यविक्षारकार्य । या । आहारोक्षित प्रदम् (अन स्टार्ट वरस्थन) विश्वस्था आहरू व्यविक्षमये प्रश्लोक्षर सम्बर्ध । व्यवस्था विक्षये वारोक क्याबर (वस्ट व विश्ववर्य वा नोर निषक्ष वक्षर भोक्षिक न देनर (ब्रिक्ट विश्ववर्य

अधि-उस्तादम-चु (आतर प्राद्यम) सूपत हा संस्थे अपित प्राप्तामें १९० वस्तुमीता उत्तरहर । अधिकप्रमा-चु (एंड्रान्सिश) अपनी धानि अधिकार

बाराकमध्य पुरस्तिकार सरना श्री सं ध्याप्तर धर्मब्द कादिकी श्रीयाज उत्तरका श्री स्वादिकी श्रीक बत्तवा श्रीकारक्ष्य (व्योधका) श्री कादिकी धरीका बत्तका वा उरुप्यन । अतिकारकण (हामबेदन) श्रीवा वा अधिकार वाहर अतिकारकण (हामबेदन)

वाता । माना । भारतिमानि (शर्माहरू) भारत म्यस्मिते प्रसारियोः प्रसारों आस्ति हुयास है। नायत गुरु यो निर्ह्मा म्यस्टि

प्रश्नित यथ जारिका ग्रीवश्च मा क्ला रहना । अधिवश्चीची न्व (सरवाहर) क्रम्य प्यक्ति प्रश्नितियाँ व्यक्ति निवाह हा अनेके नार भी वर्ना (इनश्रव्हा, वरिक्ती) ।

અસિચિગૃદ્દ−૧ (નવર-દ્રાક્સ) અર્જીવનો અચ્ચાવા હો હદરાવેહ નિવ નિપોરિત મૃદ ત્રહોકાદિ ! અસિચિનવર્ગ અસિચિસદ્તન−૧૦ (મહ દારસ) દે

भतिथिनवन् भतिथिसर्त−५० (मधः शास्त्र) 'भविथिगृह' ।

अतिपिदास्ताः—को (गरर हारम्) हे 'अतिस्मृह'। अदिग्रस्थान-पुन (नाहर समुन्दान) दिग्मी देश वा प्रमे सी भागारोधः स्थान अधिक देश राजा कि उन्हें किट वहाँ एमुन्ति रुपमे विश्वाह बदना बढिन हो गया हो। अतिशिक स्वाप्त-पु (प्रतान प्राप्त होना होना वा निर्मातिन वा निर्मातिन वा निर्मातिन वा निर्मातिन का निर्मातिन वा निर्मातिन का निर्मातिन वा निर्मातिन का नि उपासमयंत्र-पु (देन) रक्ष्मे टब्ब, भारी गोर्टे आहि । क्षर उठानेवाळा, सारधकी भीष जैसा वंदा ।

दरधामक-१० (क्रिक्ट) मजानक मीनेके शहरी कवरक खंडमें पर्देजाने का उठारनेवाका विश्वक्रीका आसमः सप्तरमध्य ।

बरपामुक (तरपादी)क्यथ-पुरु (प्रावित्तव प्रवृत्तपिक्षपर) बरपायम बढानेबाला व्यव सरपायक कार्योके विशिष्त किया जानेबाका स्थय ।

उत्पादनबाधा-छो॰ (स्टिबनक) वह वस्त्र को बापादम-का सार्वे सुवाब इपसे प्रश्नामें बावक 🛍 ।

बस्पादनप्रस्क-प्र (वक्तावन दुपुरी) देशमें बस्पादित कविषय बस्तुओपर कममेबाका कर (भारतमें चीनी र्वनाष्ट्र आदिपर कमनेवाने करको भाव बेंद्रीय सरदारको तमा अप्रोम गाँवा शाहिपरको साम राज्यको सरकारांकी सिक्सी है।

बरापासी-ए॰ (यमीवंश) एक देख होजबर अन्य तंत्रमें जा वसनेवाका ।

उद्योपयक्षेत्र उद्येपणादेश-५• (स्थानीत्रो) स्थान स्वाबाह्यमें विचार किये गये किसी आयलक कामजन्दन मेरिन करनेका सच स्यादःस्वरका आहेच ।

दरसादन-प (रेअमेरान) क्रिया विधि (कानून) अधि निवम मधा मारिको छठा हेना रह कर रैमाः (एव)(क्रम्न) नष्ट दरना थेत दरना विवासन ।

उद्भन-९ (६।६६)जन) दे अक>न'।

बहामीन भागीहरू-५ (स्ट्रीनिंग पार्टनर) देखा सार्टन दार विसने कारफाने का म्बक्साब आप्रिमें कपना हो क्षमाना ही पर की प्रतंशातिमें दिकपरक्ष ल केता 🚮 ।

बहायहण-पु (भगो) वर भारि अधिकारपर्वक नगुरू दर्शना चनाशमाः प्रगानी !

उद्योपका-सी (प्रेक्सनेवन) सर्वजनिक क्षेत्रे और सरकारी और वर भोर्थित करना' सनकी जामकारीक किय क्षेत्र बानेवाकी मुनना ।

बद्धाय-५ (६१मई ६३) दिमी है बिक्त दय या १११६६। क्षेत्र करा प्रदेशत करमा। इस तरह दिया गया अधारीर

अब्याचन∽तु (दिमानिश्चन) मानुश्री वॉश्ववश्रके साथ **छब्द्रामा, नेत्रमनी देना ।**

इज्यबंदम-पुर (शाहित्रतेदिय नैवर) सग्रद वा विधान-संबद्धका वह साम जिसमें कोई मस्ताव पहले पहले उन रबारित किया गया श्रथा स्त्रीकृत तुमा को व

बद्धाव बद्धापन-पुर (इनरेयन) किसी नवी प्रणाधीः ववादिका निर्माण करमा (विभक्त प्रदेश व्यक्तिश्व न रहा हो। अधिनतीयन, अपना ।

प्रधानकर्म-५० (हर्गास्त्रवर) प्रधानने पेर धार कवाने तथा प्रमुद्धी देखनाम माहि करनका काम ।

उद्यानगोद्यी-श्री (बार्डन पारी) विश्लीके स्थानमें मा पूर्वा क्षत्र आदिवर आवोजिन प्रीतिभाग भवता ग्रीतिमध्यकने । अधोगपति-प्र• ((क्रिट्रयक्तिक) किमी वह शबीय पा कारधानेका महिन्ह ह

उद्योगसमीक्श्व-९ (रेजन,नवदन बाद (१९६१)

अमिकीक काम समय तथा सामग्री आदि-संबंधे वरताहै ष्ट्र वट उपीयको स्थिति सुपारमा ।

उद्भग मंत्र-पु (पंप) बानी शब मंदि अबर प्रशास गहर निकासमेगामा विषयाही प्रमा संघ ।

उद्यासित−नि ("सप्केरष्ट) दे निरश्मित । उद्विकासिस−नि॰ (रवधन्तर) थे। आरंबिक बरस्थमे भीरे-भीरे पूर्ण किदासको धनावाको पहुँपासा यदा हो भो अन्यश्च विक्रतित किया यथा हो ।

उधारपद्दा अधिमियम-पु॰ (अब एंड ब्रांब रेस) दियेन महानुद्धके समय अमेरिका द्वारा प्रवृतित अविनिका विस्के अनुसार वह सदक्ति वित्रस्थिके अभ्यक्ति सामग्री का ग्रेनिक ग्रहरबाई अन्त्री क्यार भवता प्रदेशर देश था और बनसे भी हमी प्रदार सहायहा प्राप्त करवा का उसतीवर वहभूज-५ (बायनेस्स) १६ ४<u>६व</u>४ (३५६) कोई भी काण इन्होंस कोण म 🐧 !

उप्रयम्बध-९ (किन्द) है 'दाभावड़'।

जरमक पोसाधय−५० (६) पारं) वह रंशमाह वर्षे व्यापारिक वस्तुओंपर किसी शरहका कर सुनी भारि यही अनावी जाती-में छर राष्ट्रों स्वापार किर समान करने सुका ही।

उम्मुल्डि-सी॰ (समुनिटी) दर देने, दिमा क्लिके चाकत का शमक आक्रयमको धंमानना नारि*ध स*र्कि विमुख्य ।

चन्नाक्रम् – ५ (चप्रधिता प्रशक्तिक) वश्मवर्त वर्ष करमा, अस्तित्व मिर ना पृथ क्या प्रशासिमा, (दिनी प्रभा परेपरा आरिको) परिसमाप्ति

शकाहन । क्रमोक्न-त (क्षित्रकारी (स्वापूरी हा सनेपर) देर

मा बंधमधे प्रश्न कर देवा। प्रमादि संका रेना । बचकर-९ (वेस) एड सरहरू छोटा कर ना विशिष

वश्तुओवर विभिन्न रिवर्तवोंचे क्यावा नावा है। उपकरपुषा – भी (शास्त्र शक्ति) भीरे गात विज्ञ करने हे

सिक्षक्रिने की प्रश्न मान केता अंकार ममानित की आ सबती ही हा जिसके सत्य दीनेकी मंनाशमा ही जम को बरामा १४४में ६८ नेमा ह उप-बारवोरख-त (शंग दारधेरक) दारबेरक के

में ग्रीअधीक कालिस प्रार्थित

उपकुछपशि–९ (वी बारमचीधनर) दिश्री विद्यविद्यानय का नह अविदारी भी कुक्चनिका मानदन दाता है भीर जी व्यवस्थानवंत्रण क्या अन्य कार्योचे जनको प्रशासना 4.001 v 1

अपन्नम भीर अनमिर्देश-पु (रनीधिवेदिव पेट एक रहम) कोई निवि या अधिनियम बनानके बिष अन्य हारा सर्व प्रशास दिया जाना तथा दिशी अदस्तर्श प्रश्निके सम्बद्ध सम्बद्ध बन्नाया मन विकास माना नाम हो।

का व रणीक धन जाननेद थे की प्रशास है प्रकारी-५ (दर्भन्यः) (स्था बाधाने वा वयोवस वा शरिक निर्वेशय कर नेवाना स्मीख !

प्रवासिका-मी (भारतेशन) देश्यको । उपना-का (स्नवान) हे उद्यान र

भरमीय-नि॰ ((दिन्दर) जो निभी विश्व राजने संबद न द्वार पन सीमांने भेवण देशनेवाला जो दिन्ते उन्न दिस्त्री प्राणिक न हो ।

મથાવિપ્ર≅-૧ (મધ ટટ) દિલ્યુલ ચાતાદના, વાલ વહાા ત્રિયુર્ગ દાલવહ લખ્ય તથા ખેદને માર્દિ આ વર્ષે શે! ત્રા લખ્યો અને મૃત્યાપારે, વીદ ત્રાહેરો લાદિન પહિલા શે!

अध्यमन-प (११) इ मृद्ये।

भविक्रकाय-पु (का रवृत्त वी क) एक अमक्रीय है बहा किन दो समग्रीयोंने छाता काय ।

भविक्रमोग त्रिभुत्र-च (बाध्यूस धरिक्ट हाइर्गिक) यह विजय विवदा यह क्षेत्र अधिक्योग हो।

भपि(क) मिति-पिराय-पु (२४०) विश्वी करा स्वयक् भद्रपुर वा वर्षको दिवा अनेवाका धनको महराहर अनु चारते अधिक प्रतिनिधिम्म ।

चारत आपक आराजनावन्त । अधिकर-वु (सुन्द ^{चे}रम) अधिक आवषद वा किमी विश्लेष अवस्थाने कराजनावन्त अधिक्षिक वट ।

्रियंच भरत्याने बगानायाः श्रीतरिष्ठ वरः । भृतिकरण्यः (द्वित्यूनक) स्वायात्रकः राज्यका स्रोह

सुरुव (वधार्य (त्रेम जावेपिकास)। भविकसी-द्र (भ वरातीवर) तुष्ठ लावाचर जिन्दानी स्वत्र द्वर वाचाची दश्यनक करनवाका व्यप्तिवरी। भविकारश्यक-तुष्ट (दृशिकास्त्र) विशो स्वामानीस

भारिक अधिकारेको कामा व। धव । भधिकारका अध्यसम् – ५० (डिबान्युक्त आक पावर) अधिकारका एक व्यक्ति व। भाषाच हावभ वृत्तरेक हाथने

पका प्राना या दे दिवा जानाः अप्रयुक्त अविकारीका अंतिम द्वरारको प्राप्त दो जानाः भक्तिमारकण्यान्यः (पार्टर) अधिकार प्रवास करनेवाका

बद्द विश्वित प्र²स्त्र ती शाम्त्र, रामा वा प्रधान ग्राहक है। प्राप्त रामा वी।

त्रा विश्व स्थापन की (वश वारत) वह विश्वन आहेत्व-वन विश्व हारा विश्वे स्थित वा नियमिन गरेवाले वृक्त वाद विश्व स्थिताहर संवारण वस्त्र आहेत किली वह या समाध्यास्य साथ दिला वा वसा है।

अधिकारिका समा−भी (भारती आंक आ⊈पदान) धीने दुर देवपर तनतक अधिकार बनाय रधनेनाकी वेता जनतक वहाँ निषमित शासनकी अधनश्या कायम न हो

वाब ।

षपिकारिराज्य~इ (भूरोजैधी) वह राज्य जिसकी भ्रासक-व्यवश्या सुदय रूपसे भपिकारिवीकी परपरापर भामित हो। नीकरभादी: कर्मपारितीय।

सिष्ट्रत गणक-पु (पार्ट बकाउँ३) हिमान कियापके याँव राशादिका काम मध्ये साँति जाननेशाका व्यक्ति विते वयपुष्ट परीक्षाके गांव सरकारते एतका प्रमाणपत्र मिका हो।

अधिकोप-प॰ (रेंक) दे नेंक' महाये।

सधिकोपस कार्य(स्थापार) -पु (विक्रिशिक्ति) वृक्षे सारपत समा सरन्त कीर्योको कल देन आदिका सारवार कोदीवासी महाजनी।

मविश्वम-९ (न्हिम्डिनसः) हे 'अविकासक्षेत्र' ।

अधिग्रहण-तु (दविशविद्यन) अधिकार या अधिवाधन हारा विगीओ संत्रीत आहि ल लना ।

अधिष्य-षु (कनार्थम) यापान्यम भाजनान्यम मधानके विदाय आदिक संयंत्रमें मा विशो अतिरिक्त कामके निष्य धर्मपारिको श्री जानेनाको वर्षो दुर्व दसम्

अधिमायक-पु॰ (दिवरेश) दे॰ 'मूक्षमें' नाय-पु॰ (दिवरेशिया) एक प्यक्ति वा प्यक्तिसमूहका रेने छातूने भ्रामन, निगने छातिन वर्षेती स्रोष्ट्रिक प्रने वा इर्क्का भाननेकी भावस्थवना न समझी नाव !

अधिनियम-पु (१९१) विधानमध्य (४५वा शाम वा प्रधान ग्रामक) द्वारा पारित वा स्वीकृत विधि ।

अधिनियमण-यु (रनेसमेर) व निशासन'। अधिनियोच्छि करना-स कि (बेम्मार) रिमी स्टबार्ड विष्यान सरस्वीका अपने अधिकारसे विशी

बाहरी व्यक्तिको भी संस्थाका एउरन निर्मान्त कर सना। अभिवित्यकासमान्द्र (हिस्स्यान) निर्मानिक कार्यशाही हारा विश्वोको भूमि महान आहिसे नाहर निकास रहा। अभिवयमान्द्र (शार्य) नह एवं निवासे विश्वोको सोसेसा सहस्यका स्थासकार अनुसारत वाभावा से वास विश्वित

भारेप्रदार किसीको चक्यने वा उसका मान जन्य करनको न्वायानचकी किसित भागाः अधिपुरुच-९ (सम) किसी करवा भारिका प्रमुख भयिन

कारो। व्यवसारमास व्यक्ति। अभिवार-पुत्र (सरावार) कर वा मुख्यत्रिका वह वार्त-रिक्ष नार न विशेष यरिकातिमें या विशेष कार्यक्र क्रिय क्रिमील्स टाला अल विशोरित परिमाणने अस्ति कर मुख्यक्रिया

अधिमाण-व (विकरेंत) किही वर्ता, देश स्वस्ति सादि को शेरोडी अविक सदश्य या मान देना व€स्वा तरकीक्षा

अधिमान्य-वि (वेदरेक्ण) नो धोरीने अधिक अध्या मध्यकृष या प्रदेश वरिते को भारता वादा जाना । स्वितान्यका-ची (वेदरेक्ण) अभिमान्य होनेका मान, वरीवता (राजध्येत अधिमान्यता -दंधीरक मेक्टिक) । अधिमृद्धस्यपर-अ (बश्च्य वार) निर्धारित या अधित मध्यसे अधिक साम्यर।

न्या भारत वांतर्र । अधियात्रमा पुर्व विश्वविद्यामा विश्वविद्य वांबेर्ज किय निर्माले कोर्र चीत्र अपिकारपुरक मोदाना या कोर्र काल बरनेश्वर (कियात) सांच बरना; विश्वी समाजे सरस्यो हारा समका कविरोधन बरनेश्वर कियात मोत काला।

स्राधियुक्त-वि (एकांबर) दे निदीमितः। अधियोक्ता अधियोजक-पु (एकावर) दे॰ 'नियो

वकः। अधियोक्तन−शु (श्वकॉवमॅट) हे 'निवोदन'।

आध्यासन-पुं(एक्श्विमेट) दे 'निवोबन'। अधियोजनाक्क्य-पुं(एक्श्विमेट स्कृते) दे मियोज नाक्क्य' काम-दिकास दस्तर।

अधिराज्य-पु (डीमिन्यन) स्वराज्य-प्राप्त क्यमिनेष्ठ,

प्रवास्पर्-त (सर धेरर भारता) रिमी धारे ग्रहर वा प्रदानगर भारिका वह छाडा राक्यर जो जिल था। शहरके प्रधान शहरपादे अपीन हो सबा नहींने चुनी चारमंत्री धनी आर्रशे आर्रिके विगरणकी भी व्यवस्था 🛍 । उपराम-प (प्रभारती) रे॰ संकारहार । माननाविक।

उपपास-को (मरनारधन) किमी अविनियम आर्डि नंतर्गत रमका कारे विनाय का उपाय । उपमगर-पु (मन्ते) हे॰ मृत्रे । उपनिदम-पु॰ (म्रा-क) दिश्री निष्म के अंत्रमृत बना

द्रभा भ व छारा निवम । प्रविधायन-प (शारे रन्यान) महा या अन्य बार्य से रिपानसभा अगरवादिका आर्थ दे किमी सरस्वका का

दियो प्रापिकारी अहिका स्थान दिख हा जान पर होन THE THE उरनिवसन-प (कानानि-।धन) भाग देशीने जाकर

भवती क्षती या प्रशतका बलानेकी किया। द्रपत्रीकाध्यक्ष=पु∙ः (कारस ४३(भरक)ः भी भनाद्य पद अभिदास वा प्रशास नीकाप्यधक्र क्रोड नीने साम दरता

क्रपपञ्जीसक्र-प (मुस्र्जिस्ट्रार) पंजीबलका काम करने

बाह्य मातहत अधिकारी ह उपप्रध-दि (६४१३)हिर्देश भरत्ररके उरद्रक खरिया

थन**६ पा अ**ध्यक्षती समस्यक्ति। उपराद्य-त ((दनदाम) किमी प्रार्थको विष्यु सा नुबद्ध शक्तिम युद्ध बस्तुदे शक्तिक म बादह बमर्वे भी विवत् वा भूरक प्रक्रि बराध कर देना ।

(६८८७६१) दिनी प्रमेश(६९)६म)को उपप्रमय-१ सस्बता प्रमाणित हो जानके बाद प्रमध स्वतः सिम्ह होत या अनुमिद की या मध्नेशस्य शह । उपन्नप-पु (६नसरेवद्यन) राजसचा वा मरकारके प्रति राहे देतानेवर दिया गया या आरंभिक अवस्थाका.

विद्रोह । वययध-५ (प्रीवित्रम) विश्वी विवि अधिवियम आहि दे व संद्रवा प्रस्पेष्ट दिसमें विश्वी शतको संवादना માહિનો ધ્યાનમેં દરાતે કર વક્ષ્મેને નાર્ટ મહેલ વા ાગા-रम रवा की बाका वस तरह रही भनी नेबारत का गंभारत राज्येकी किया ।

उपर्याधित-१ (पोनार १६) उपर्यथके अञ्चल उपर्यथमें निर्दिश्व ।

उपमास-हो (मक्साइन) भूमिके कपरी मान वा तबर्क तीनेका स्तर । उपभोग्य बस्तर्पे−धी (कम्बनर्स ⊥दस) सनुष्यके उप नीय वा कामने भानवाकी भाववत्र वस्तुपै-बीरे यहका

कपका आधि । **बपयोगितावाय-**५ (वृश्चिक्टेरियनिस्म) मिक कादि शार्धनिश्चीका यह यह कि अविकत्ती अधिक कोर्योच्या मधिक्से मधिक दिन ही प्रापेक सार्वजनिक कार्वका सक्त शानः चाहिते ।

उपयोजन-इ (ऐद्रोपियदान) (क्षेद्रे वस्तु वा धन) अधि कारमें के बेमा था अपने प्रदोगमें के बाजा विनिवीत ।

उपराजवनः उपराजप्रतिनिधि-५ (निधर) भन्य रेघीरे रहत्त्राक्षा विभी राज्य वा राष्ट्रदा नह क नीतिक मधी या प्रतिनिधि जिल्ला नहीं सुक्य राज्यस्य पर प्राप्त स दशा हो ।

उपराज्यसायाग्य-५ (ब्लियन) ४५ए। ४५वटा निराम वकास व उपराज्ञांसे (अड-१० (बारस सी वेंग्) राज्यंस्थक थे। अस

परिचतिमें असका साम सम्बादनसम्बा। उपराज्यपास-प (अवस्तेर वरत्तर) क्रिकी छारे प्रदेश हा सबोद पदानिकारी या शायह जो नवरनरस छोरा क्षोता है।

जनसङ्घ्यति – १ (बाहस अंसीक्ष्य) सम्पर्तत्रका यह निर्दा-चित्र पशाधिकारी जो राष्ट्रशतिको अनगरिवतिः बीमारी आ दि समय उन्हें दायोदा निवादक बरता है (जारत में बह परेन राउद परिषदका मजापनि होता हो ।

जपसंच्यि-श्री (पर्देशिविधी: स्रातं) विशे पानवान-नी वह संस्था या परिमाल जो शाबारमें स्टरीहरे वा मांगक्षे पर्ति बरनेद किय दिसी साम्य प्राप्य काः (रमा-कार्नेट) दिनी परपर काम कर्नने नदन, परिश्रम आदि हे रूपये भिन्नवर्धका काथः (धनीभावेंट) प्रक्रा को तथी सक्तमता आवीं से भवने दुर्वश्रीकी उपसम्प्रिशीवर गर्व

हा रहा था –भारतका देपानिक दिकास । उपयानिम्यन्त-९ (पाध-८४) दिशी देशदे भ्यापार वानिक्य-संदेशी हिटोंकी नियराजी है किए अन्य देशांत्री निराध वाणिज्यक्षक अधीन बाम बरनेवाका छोरा इत भी प्राय राजधानी है अतिरिक्त अन्य प्रदश्क्ते ब्बायारिक बेडीमें रहकर काम करवा है।

द्वविषि-मी (शई-का) क्रिनी विभिन्ने अंतर्वत बनाया गयी होती विशि किसी नगर शक्किश वा निमम अहि हारा निवित्त विधि । उपवंशन-१ (विधिय) समाधी नेहम होता रहमा, बहस

होती रहबंदी रिवति ।

डपपश्चिका−धी (कार्डब) एक स्ट(इक्स सोका का भारामधे देवने नैडलेको इरसी।

जपशस्क−प• ((३) स्थामीय अभागवस्ताओको ४७के नगरपालिका शादि रवाभीय संस्थाओं दारा ठिया जाते-वाका बर्द संबद्ध ।

उपसंधीय-प (वेव्हाइवर) किही विवरण, हिसाब आहि दा सधिम हवा साराच ।

उपसमापति-प (शास प्रेमी^जर) दिश्री संस्थादा वह अधिकारी में सभावतिको भट्टपरिश्रतिमें प्रसुक्त स्थान प्रदय दरे ।

उपस्क्रस∽वि (कविषक) मेश, इसी वादि सामानीसे समाना हवा ।

उपस्थापक-प (रीक्र) हे विशवार ।

उपकापम-पु (प्रैवेटेग्रन) विवातसभा आविके सामने

कोई मस्तान निवारार्थं प्रपश्चित करनाः किसी अक्रिकारीके सामने कोई विषय उसकी स्नीकृषि मास करनेके किय रकता ।

उपक्यापित करमा−७ कि (द्व प्रकेंद्र) विभान-सभा

मधिरोप-पु (चार्त्र) किराना र्यंड वादिके क्यमें किसी-पर अधिरोपित की आनंत्राको रक्षम ।

भिष्यामोत्र-पु॰ (रोतस) वह बागांश जो किसी बार सानं नभरा व्यापारिक स्टरवाके वार्वकर्तांगें या हिस्से-दारों के वेतन या साधारण सामांखके शतिरिक्त दिवा

भषिषका-पु॰ (श्रण्योदेश) स्वाबाक्य शादिमें विसीके भामकेको परवी करनेवाका ।

स्विचिष्णं हुं (हीपर्ययर) (अधिक दिस या अधिक मास-बाका वर्ष) वह बांज़ वर्ष जिसमें सक्तमास वहता हो। वह देखता सम् जिसमें करवरों २ दिनका हो। वह सीर वर्ष जिसमें क्रास्तुन ११ दिनका हो।

ार वर । वश्य भाष्युन रर । शनकी द्वा । अभियास - पुत्र (वीनिसाशक) यक्त वेद्य प्रांत वा राज्यक्षे स्वत्र किसी पूछरे वेश प्रांताविमें स्थायी रूपसे वस बना ।

श्रीभिष्यास्ति — ५ श्रीमिष्यास्त्व वर्धन् वृद्धरे देश्च वा राज्यादिमें रुपामी करवे ना वहनेशाका। दे वर्गदिक्त में स्मित्रिक्तर्ये — ५ श्रीमिक्तर्ये अस्तिकार्ये अस्तिकार

- २५ व (२४ कर २) इ.स्यानकाता । स्रोधिशासित-वि (भीवरकृष्ट) यो शावस्यकताने शक्क

ठंडा हो गया श्री । सचित्रक=्षु (श्रीमियम) चेकिन वा बाध्यविक मृश्वधे भविक्र को जानेवाको एकम वा शुक्क स्थित सुरुत्थे

नावक का कार्याका एका या शुरुका कथा शुरुका स्थान अधिक सूक्तको शुरुमि वरियत करनेवर अक्सी किया वालेबाका शुरुक।

भभितापम-पु॰ ((छम्नेश्वन) विदुर्गन, हारपंत्र धारि का वैद्यार, स्वास्ति विमा जाना ।

अधिस्चना—खो॰ (नीधिक्सेड्स) प्रवादन व्यवहरू भूनमा, सरकार द्वारा प्रकाशित वा सरकारी वस्त्रमें राज्य पुरं सूचना ।

भाषीसक-पुर (श्वारिटेंबेंबे) किसी कार्याक्य वा विधान-का वह प्रभान व्यक्तिहारी ही अपने अभीन काम करने-नाडे समस्त कर्मनारियोंकी निगरामी करें।

अपीक्षण-पु (तुर्रा(१११) मलक्षण करियारिगोंके काम-धारको रेसरेक करना ।

भाषीन अधिकारी-पु॰ (मर्गोडिनेट आफिसर) दिसी वहै ना मुक्त अधिकारीके जीवे बात करनेवाका लक्ष्यर मानवन सकसर !

भपीन स्पायासम्बन्धः (एगोडिनेट योहे) वह छोटी भराष्ट्रत तो किसी वही भराषा(इस स्वाशस्य माहि)के मानदृत वा भपीन हो।

भयीमीक्त्य-पुरु (त बुगयन) बद्धवे बहन भीतने वा भयोजवान बानेबा कर्ते ।

भरमञ्जू (जन्दीय) कियी स्था संभ्या मा भगर भारताच्या प्रभावः (कीक्टी म्हर् या विभावसमारे भरती हारा पुजा स्थावह हृदव विकास जो वर्णा वेक्कोमें बध्यक्षण कर निवाद सार्विक व होने हे तथा कियो प्रशासके वहा विश्वमें सम्बद्धम्य प्रशास के वीचार बणना निर्मादक यह दें। सुद्ध । न्योद-कु (वैवर) अच्छा मा प्रमुख दे केनले कुरके मा अस्म । -वीर्या-की॰ (योक्स मेंकर) संख्य ना निरामस्यदे व्याद्धके योक्सी वह योची वहाँ नेक्स निर्माद अधिन मा सबवा अव्यक्षित स्मृतिकाल निव्हिट स्विक्त सम्बद्धिक सम्बद्ध कारदवाई सैश्रत तथा वक्काओं आव्यक्षित सम्बद्धिक सम्बद्धक

अञ्चयसम्बद्धा-पु (स्टब्री) वह बमरा जहाँ किसने पने। सञ्चयसम्बद्धा-पु (स्टब्री) वह बमरा जहाँ किसने पने। सञ्चयसाहिका कार्य किया जाता हो।

कारवाहित-यु (कारियर) राज्यके ध्यंपर्यंत हारा नती विवा मना पद भाषिकारिक मारेस भी कियो माध्यीवत वा निरोप रिधितेमें बोले समस्यक काणू हो और से एक रिपितिके व रहान्य पास में किया वाम वा माध्यवक्ष कार्यं वर्गेत्य संस्था व्यापस्था द्वारा आधित्यके कार्यं वर्गेत्य कर किया बात ।

अध्याद्वार-पु॰ (रन्धरेंस) यटनामध्ये मारिते और विश्वरे निकाणना, राज्योके बाधारमर कुछ अनुमान असम्बद्ध अनुमान।

धर्माधिकर करना- छ कि (रिपुटिया) निर्माध एकं, प्रभाव वा भाषा न मानना। कर, दानित भारिते हैं व बार करमा: रिसीके करन, मारीय भारिते में मानना। भारित्रकुल-(श्रेम था।(दान) निरुद्धे गीते व्यक्ति भारित्रकुल-(श्रेम था।(दान) निरुद्धे गीते व्यक्ति भारित्रका विभार । अभिकार वे बार वि (रिसार) नो किसी व्यक्ति (रिकार) निर्माधिक वार्ण विद्या ना नारी व निमाध्या वो (रुक्तम (निरुद्ध र) !

अमनुकापित-वि (विश्व अकाश्य) (वह प्रस्तावारी) मिने समाने वश्यमीय करमेनी अमुबा न वी यभी हो। असमुक्तप-वि० (काम्मेडिविक) नी क्षप स्वमाद अप्रैरकी

र्यक्षेत्रे अनुस्य न श्री मेळ न पाता हो । अन्नर्जिल-दि (अनस्पर्द) निषदा भर्तन म दिशा

सवा वा । अवर्षेता – को (शिव्यन्तामिकिनेग्रम) विश्वी कार्यः वद बाहित नीम्य त होनेका मानः बनीम्यता सम्बादिन्येत्व। अवर्षेक्ष्य – वु (विद्यवधिन्यार्थ विश्वेनो विश्वी कार्यः

यद जारिके अवोग्य हहरामा। असारक्रमान्यस्थि – श्री (भाव धेरीधात्र पसर) हो राष्ट्रोकं पीन को गयी यह सीच विश्वमें एक मुझरेके विश्वस्थ प्रीकृत बक्का प्रयोग या बरने स्था महाभर वा समा व्यवस्थ होनेयर कायप्रकी यात्रनीत्र अवशा वंपास्त्र हारा वसे

निक्सनेको नात स्तीतार को मनी हो। अकाब्द्रकान्यु (दिश कानर) (आगने वा जिलको पनको अकाब्द्रकान्यु (देश कानर) (अते देश पा मानक (दिकोका कपता देनेन सनकार करना।

भवारिवारिक-वि (न्त-क्षरितारः) रे॰ कर्राप्तः। भवारिवारिक-वि (न्त-क्षरितारः) रे॰ कर्राप्तः। भवारिवारिक-विवारिक-वि (दिक्यान्द्र) विवारिक-वार्यार्थः। प्रकारिक-वार्यार्थः। भवारिकः। भवारिकः। भवार्यार्थः। भवारिक-वार्यः। भव

उपाद्धमर्यप्र-पु॰ (हैन) (क्ये कथे, यारी गाँठें शाहि अपर उठानेवाका, सारसकी सीच देसा वंत ।

कर्यामक-पु (क्रिय) महालडे नीचेके संबंध कदरके पंडमें पहुँचान या स्वारनेवाका विवाधका आसन, स्वयनन्त्रिया

उत्पादक(तत्पादी)व्यय~पु (भावतिक प्रतप्तविकार) समादन क्वानेताला व्यय कावारक कार्योक्षे निर्मित्त किया मानवाका व्ययः।

क्षिमा मानवाका स्थ्य । अपमय्तनवाधा –धी (स्थितन्त्र) वह वस्तु वो अस्मवन-की कार समाव स्वते पक्षमेरी सम्बद्धी ।

बरपादनमुस्क-पु (यस्तामम स्पृति) देवने जरपादिक कविषत सर्वभोषर कमनेत्राका कर (भारवने पोभी) तैराह मादिपर कमनेत्राक करकी बाव बेंद्रीय सरकारकी तथा कर्षाम, गाँवा कारिपरकी कात्र राज्यकी सरकारकी मिकती हो।

उप्प्रवासी-पु (वर्गाधरे) यक देश छोड़कर अन्य देशवें वा पश्चेत्राता । उप्प्रप्रकरित वर्गपेपवादेश-पु॰ (धर्शाबीरत) । अधीन नवाबालयों निवार विसे गये किसी गायस्त्रें कामकरण वेतिन करनेका वस न्याबालका बरोड़ा।

वरसार्वन पूर्व (दैनोहाइन) किही (किह (कागून) कदि निवम, प्रवा क्षांदिको कहा देना ११ कह दैना। (एशक्किम) सह करना, श्रेत करना दिनाकृत।

बब्जन-५० (धारकीयन) है 'तकवन ।

दब्तासीन भागीबार-पु (स्क्रीविय पार्वभा) मेखा छाझे-बार निष्टने कारदामि वा न्वन्छान बाहिये २ववा छो कगाना हो पर नी प्रवंशिति विकारक्ष स केवा हो ।

उद्ग्रह्म-पु (जरी) वर आहि अधिकारपूर्वक अगृष्ट करना, जयाहमा, जमाही।

वर्षोक्ष्य-धी (मैस्टनेष्टन) धर्मनिक रूप्ते और सरकारी दौरदर बीदिद करनाः धरकी जानकारीक विष की मानेवाकी एउना !

उत्ताव-पु (शसद्दा) (स्थोध योद्ध क्षेप्र वा पुरास्ता संग्र वर्षा वर्षाय स्थाप ११ तर्व दिवा प्रशः देवादि

का मधा। उष्योधम-दु (रेडमानिछन्) मानूबी शह दयह है छ।व

धमझाना चंत्रपनी देना । अञ्चलपेदम-४० (भोरिजिनेटिन चेंबर) समझ का विधानः

नेश्व कर्या क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क

उद्याप उद्यापन-पुर (स्वेदाव) (क्ष्म्री वशे प्रशासी, मुबारिका विकोष करना (क्षिमुका प्रदेश वरिक्षत न एक्षा हा) व्यक्तियोगन उपकार

उधामकर्म-पुर (दारिकार) प्रधानमें वेह शाचे सवाने तथा बनकी देशनान माहि करनेका काम र

प्रयानगोद्धी-की (बाहम करी) दिशोदे ब्यानमें या दूरो-केंच्र आदेवर भारोदिश प्रीतिनोद स्वत्य ग्रीविक्यांबन १ इ.धामपति-चु (देदरि बुलिस्स) दिस्ते वह उपाय या बारसानेस मार्टिक !

उद्योगममीकाभ-पु॰ (रैप्रश्रक्षभग्नन अस्य दहारी) उत्रहा-औ॰ (दनविन) हे 'बलाह र

अमिक्रीक काम, समय तथा सामग्री आहिन्तेत्थे स्ट्रारी इर कर क्योगध्री स्थिति स्थातना !

बहुद्य यश्र∽पु (र्व) शनी तंत्र शाहि करा सामर नावर निकामनेवामा विषकारी जैसा र्वत ।

उद्दासित—वि॰ (हिस्टर्नेरर) दे॰ विश्वारित'। उद्विकासित—वि (श्वास्तर) को श्वासिद शसकड़े भीरेशीरे पूर्ण विशासको सहरवाको पर्देशांसा पदा हो।

यो कमण विश्वभित किया गता हो।

कपारपद्वा भिभित्रियम- वृ (कर देव कोष ६३३) दिन्दे

कपारपद्वा भिभित्रियम- वृ (कर देव कोष ६३३) दिन्दे

क्षित्रे स्मुक्तर वह पुत्रक्षित्र विश्वप्रे स्मित्रक्षित्र स्मुक्तर वह पुत्रक्षित्र विश्वप्रे सम्पाद्धार कामण वृद्धि हो।

सामणी वा धनिक महरव के अनु क्यार सम्माद्धिर हो।

सामणी उनसे मी इसी महार सहस्यक माम ब्रह्म क्षार क्षार

उद्ययनवंद्य — पुंच (किया) दे 'वंशावक' । वनमुक्त पोताक्षय — पुंच (द्री चारं) वह नंदरणह वर्ध स्थापारिक बस्तुवंपर किसी तरहका कर, मुन्नी वर्ध क्षावी वादी — यो तुन राष्ट्रों के न्यापार्थ विर् स्थापन करणे साथ ही।

समाय करते तुका हो। उत्पुष्ति—की (१२न्दियो) दूर देन किया स्ट्रांस्टे पाडन या ११वडे आदस्यको संभारता आरेटे डेन्टि विस्तातः

विश्वासकः विकास कर्मा कर्मा

ाम्साद्य र बम्मो यम-पुर (दिस्पार्थ) (स्वा पूरी दा नानेर्प) दे। बा पंपनसे मण्ड कर देवा। क्ष्मादि नका देना ।

क्षण्यर-पु (तेश) यह प्रश्वक घोता कर जा विशिष वश्याचेश विभिन्न रिजॉटबोर्च क्षण्या जाता है। क्षण्यस्था-की श्रावकार्यकार के तेता किंद्र करनेके किंद्र श्रावेश भी पुढ़ भाग तेना ये श्राव समावित की जा करती हो या विश्वके साथ वीवेश निमाना ही उस

को दश्त्वा परनेमें कर नेना ! उप कररपोर्क-पु (बीस का(पारन) कारफायने क्रेस

डच कारपारक=3 (अस कारपारण कारपारण कार जीनेदा शनिक भनिदारी । उपकुक्रपति=9 (यो सारमुचीमनर) दिसी दिर्पास्त्रभन

का यह कविकारी को पुनर्यातक मागदन दीया दें भीर जो म्यवस्थानिकारी को पुनर्यातक मागदन दीया दें भीर जो म्यवस्थानिकारी

उपस्य और जनसिर्देश-५० (रनीसिरेरिक पेट एक रेट्स) कार्रे विकि ता अधिनयम नमानक विके नरण दारा रुपये उक्तमण दिया जाना दना निसी महण्यूचे यहनते संस्कृति सम्मान जनभारा गत विका माना-जनक

का बाराविक मन जाननक पै रा प्रधान । जनजमी—3 (५३६०-५१) किये कारमध्ये वा ४६७४३ बाराविक विवज्ञा कार्यवाण स्पत्ति ।

इएकाविका-की (नाक्ष्यन। देन मुक्ती।

क्षमायरण-पु॰ (मनशीक्ष) किशी महापुरवर्की सृति या निवको समावरित करनका करवे वा त्रासंवरी शार्व जनिक समारित र

भनावराक, भनावर्धी-वि (जान रक्षिय) वा वार-वार मृद्यो, वी एक दी वार दिया वाय या किया वाय

(भगुरान, भाग भारि)।

क्षनापासिक-दि (नागरेजिहेर) वर्त्रम्य आदिनांवधी राज्यक धूत्रमे म रहनवाना, अन्वश्र निवा। करने वाहा।

भागवासिकप्राय-पु॰ (३ १६४७) वह प्राय जो दिख दिवालब हे वाहर, दिनी निकटवर्ती नगर वा सामग्रे, १९८४ दुर देख दिवान्सर्वन है जिब वहाँदी वगर्द आर्थि सन्दिन्द होता हो।

भनासीम-दि॰ (प्रम्मीदेश) विश्व दिन्ही द्वारणस्य अपने स्थान, यह भादिने दृष्ट जाना यहा हो, स्थानवन्तिष्ठ ।

भवाहून प्रवार—पु (१३ वन) विना मुख्य क्रियेक भरत प्रविद्व पा चाना क्रियेक छामन जवरन भारन भारक प्रपित्त कर रेना ।

अनियुक्त असिक्ष-पु (अने(६४४ ४४६) किये कारणाने बाह्य काम करना का वह समिक नियम काम काम करनके विशेष वामका पुरास्ता अञ्चल कर हो हो। अञ्चलके अस्तर-प्रोत (क.स.स्टापन) अस्तर-नेवा

भविषायै भरता नहीं (कान्मक्रिया) श्वलनीना जन्माना भारिने संशक्तिय भनिवादै जा परमावस्यक स्वसं भरती कर किया जाना।

स्तुकृत्वन-पु (वण्यक्षम) आवश्वक परिवशन कर स्तुकृत्वन-पु (वण्यक्षम) आवश्वक स्त्राता । सनुकृत्वित-रि (पर्ययक) आवश्वक प्रविक्त करनेके सार वा (रिवर्त स्वारक) सनक्रक वर्गा क्ष्मा नवा वो ।

सनुबृद्धीकरण-दु (२४-२८त) है अनुकृतकर'। अनुकृतिकास्य-दु (रेश्ची) क्षिमे मध्य कविते कवितः का सेशा अनुकरण निर्द्धी द्वार विश्वास पर्व विकार बारसा इस साह बरण मी जाव कि तसके परनीर बारस

मिमित आनंदाई एडि हो।
अनुसङ्गाक-पु (देन भाष प्रश्न) किसे हुंडी वा
नीमामी किरवाई निर्मात समित नीत आने बाद प्रश्ने अथवान हा भरायांकि स्थाप नीत माने नाह प्रश्ने अथवान हा भरायांकि स्थाप मनुबंद दिशा स्था

अनुप्रहचन-पु (प्रपुर्दा) शीर्पकाकील संबादि वहते अनुप्रहचे क्पमें दिवा जानेवाका थम संबोधहार ।

क्षपुरप्रदर-इ (कारिकिक वेदान क) दिश्ली कांत्रियन, विशान निवमाण्डी शनिया कार्रिक वह निर्देश कोन कांत्रिय प्रदेशिय कि विश्व कोन एक्ट मुडिश्ली कार्रिक बन्ने को हो कीए कार्रिक वह की प्रदेश कोर्र पड़ बात की गर्वी हो कीए निवक्त पहली पहल कार्र्य हुछ स्वान ग्रीकर कियी कर्षों है।

अनुव्यक्ति – भी (भारतेंस) कार्य वरता वेवने सरीवर्ध भारिकी भनुमति जो विभिन्न सुरुक देवपर सरकारते प्राप्त भी गरी हो । दे अनुवापत्र ।

अमुक्का - की (शरिमासन) वह अमुमति (वा स्वीकृति) भी कोर्र काम करने के किम किसी अधिकारी का मान्य

व्यक्ति हारा वी गयी हो। —ध्यारी-पु (नाश्मेधी) वह व्यक्ति विश्व कोई बर्गु वर्शन वा कोई कथा बरने के लिए (सरकारों) अनुवादक दिया गया वो प्रायानुक।—पन्न— यु (नार्वेष्ठ) घरकारत प्राप्त वह पत्र निममें किसी व्यक्तिको जिल्हे गुल्क बेलपर कोई बर्गु बंधन गरीरन या तथा हो कार अन्य काम बरने की अनुसद या प्राप्त अन्यान कृषणा पेपा, प्रिट आर्थि देवर क्रियोक्ष अपन अनुसन्त

यताना परितोषण । अमुदेश- व (रमद्वारन) कोर्र काम कर्म के जिस विदेश कर्मी सम्राज्य मा आरंग देना दिवादत ।

अनुम्मुख-दि॰ (अन-दिगःबाग्र्ये) (बह क्य) जिस्का परि चापन म किया गया थी। (बह बंदी) जी कारागृहसे मुख न किया गया थी।

अनुपाती प्रतिनिधिय-पु॰ दे॰ (प्रदासक्तक रिप्रवेदेसन) आनुपातिक प्रतिनिधिय-पु॰

अपुर्वत्व पुरि (विकिये) वह भंग ना सूरी हुई बात या कोई क्षी पुरि बरने हिन्द वार्स ने नेता जाना । दिन (मीनवेदरा) ना क्यी रह नवी हो उन्हें पुरा करने के किय ना वार्स प्रशा जाव, नाता जाव मक्तितित दिना जाव पुरि वाल माम्म पुरु कोई सहन पुरने के वार्स सुरने हैं कर वहीं वात या तमां की कम्म नानकारी मोझ बरने हैं किय वसी तिकिकिन पुरा वाता महना

अनुप्रथ-५ (विश्ववेद) एट क्वा आरे प्रो करनक

जिय गारमं कुछ न्द्राना या मिकाना । आनुस्टिक-वि (श्रव्यिभेटक) को कार्यकर्मा सुर आदि वृद्धे करनक विय वादमें नीवा रस्ता मा मकाशित किया यवा की।

अनुषद् कश्या-स कि (इ एनरस) अंतर्मे बोदमा, सार्वे रसना या मिला देता।

अनुपस-पु (रेपरवार) पीछ रिश्व राइक सेना पुर-राधक सना। अनुसरोक्टिन्सी (वैक्सिम) अनुसरके आधारपर कही

जानेवाली वातः करावद्य भारि । अनुमूर्तिवाद — प्रतिसिद्धिया पूर्ववातः वातां आदिवर वर्षाः कंत्रक अग्रमय तथा परोप्रचादिवर वासित द्वरवादः । अमुमोब्यन — प्रयूचक किसीक सार्वे यत वा प्रस्तावको केक मानते इयः अपनी सामग्रि सम्बद्ध करने का समक्र

समर्थन करमेकी किया। अमुमोबिल-वि० (टेम्बर) (कार्य वा प्रस्ताव) जिसका किसीम अमुमोरन किया वो वा डीक समस्कर स्पीकार

कर किया हो। असुपाधक-तु (कैनवैसर) माक प्रशासनेके किए दूसरांके राजी करनेका मगरन करनेवाकाः मतदाताके पास जाकर एसे जपन पक्षमें मतदान करनेके किए तैवार करनेवाका,

सतप्राची । अधुवाचन-चु (कैनवैधिन) किसोको समझानुसन्तर अपने प्यमें कार्त चुप क्षमधे कोर्य काम क्रमके किय नमतापूर्वक कहना। प्रपण शितुष्क करने मात्र देने मा साक बरीसभकी शोक्षके मात्र करनेका प्रवृत्त करना।

तकके सीचेका रतर । कपदा आदि । वपयोगिताबाब-५ (वृदिस्थितिका) विक आदि रामंतिकोका पर मन जिल्लाभको अधिक आनोका

श्रीमा चाढिये ।

बयमोग्य बस्तुर्वे~श्री (≰अ्यूमर्स गुर्छ) वसुध्यदे वय मान वा बाममें भानेदांकी बादरबुद्ध ब्रुट्यू - जेसे बहुका,

मधिकते मधिक दिन ही प्रत्येक सार्वजनिक कार्वका सक्त

उपयोजन−९ (पेप्रोपिवेशम) (क्रोईवस्त वा धन) अधि

बार्मे के देना वा अवने प्रवोधमें के आमा, विनिवीस ।

वपवधिव-वि (पीतार्ट्य) वप्रवंशक अनुस्य वप्रवंशी **વિધિષ્ટ** 1 बपम्मि−स्तै (सक्सार्क) भृतिके कप्री भाग वा

भारिको प्यानमें राउट वस पहल्ली कोई प्रशंभ या 👊 वा-रव रवादी जाया हम नरह हो। गयी विवाद वा नेपारक रचनेके दिवा ।

विद्रोह । उपर्थंप-१ (दोवियन) दिशो विधि अधिनियम आदि के 4 संदर्भा प्रस्थेष्ट जिनमें किसी नामकी संगानना

प्रस्वता प्रमामित हो जाजे है पार बसले स्वतः सिक्र रोने या अनुमित को या मदनकारा नात । उपद्भप-प (१८६१वद्यन) शामक्षता वा अरकारके प्रति धारे पैमानेपर दिया तका का आरंजिङ धनस्थाका,

मुंबद इतिले बन्द बरद्रोह एप्रिकट ले जाकर रमये भी रियुद्ध वा (१६ शक्ति वराध कर ⁹ना । (धरानर्ग) (स्था प्रनेव(व्यास्म)की

गाणा मातदत श्रविदारी । जवपश्च-दि (११म हिट्दिश) अनमर÷ ४३३७० सुनिधा जनकृषा कामधारी समर्थान । उपराहम-म (१८१2म) दिली प्रशार्थको विषय सा

उपनी द्वारपाध - ५ (१) १९ (४१६४) । ना सनाका ४६ भविद्यारी या प्रयान नी द्राध्य उद्दे हो है। नी ने न्याम नहत्या R1 L उपर्वजीयक-प् (पुरु(दिश्टार) पंतीयनका काम करन

से रियानगुष्मा नगर्यान का आहि के किमी सहस्वकाया हिनी पराधिकारी अहिका स्वान स्थित हो जाने पर होने वाका अनाव । उपनिवरात-१० (काकान स्थान) अय देनीनै अवस भागे राजे का न निरम र शनकी किया।

भेरतेत उसका कार्र दिनाय या असीग । अपनार-४० (५६६) दे मध्ये । प्रपतियम-१ (पुरान्त) किमी नियम के श्रीत बना दशा भ र ए स निवम । प्रपृतिपांचन-१ (को १८४९)। १ वा अन्य कारन-

उपचारा-की (मर-क्राज) दिशी अधिनिक्य आर्ड

प्रवहास्पर-तु (सर घार आक्रिया) स्थित यारे अहर वा परनंतर मारिका बह छारा प्राह्यह नो बिन्द या शहरह प्रवास बादपरके प्रश्रीय का तथा नदीन पत्री पारमनी. प्रती आहेरी आहि है दिवस्त ही भी व्यवस्था का है उपहान-प्र (यंपुरते) इ. संबोध्हार इ. मानुवाविक ।

1611

उपराजन्त उपराजप्रतिनिधि-पुर (निगर) सन्य द 1ने रहतरामा दिली हा ब दा राज्या वह ऋत्तीतिक मंत्री या प्रतिनिधि कि । भनी मुक्य राज्यवद्या पर प्राप्त न बभा को ह प्रकाशकातावास-५ (निवधन) ३५(१४६वटा निवास auta i

प्रवराजनेस्थ्य = १० (सह र रोज्य) राज्यसम्बद्धे अस् परिवर्तिये उससा काम मध्याननगणा ।

जवराज्यवाम्र−१ (४४४मेर ४६६मर) क्रिफे छार प्रदेश का संबंधित ब्रह्मांचे प्राप्ती जा शाहरू और अवस्थान स्वतान utat है।

उपसङ्घति-९ (बारम भेगीरेंश) गमतंत्रदा बह निर्ध निक पराधिकारी जो राष्ट्रपतिको अनुपरिवृत्ति गामारी

आदिन एवव प्रमुद्ध सावीका निवाहन करता है (भारत-

की वह संस्था का परिमाण की बाकारमें प्रशेषक जा

र्योगको पृष्टि बर्जर किय किछी संध्य प्रप्य काः (हमा

कर्मधे बिनी पश्चर काम करनेसे नतन, परिश्रम बाहि है

स्पर्ने मिडनेरामा खावा (भनीभर्मेर) प्राप्त की तकी

महत्रमा भाषीको अपन पूर्वनीको उपक्र प्रवाहर गर्व

प्रपयानिष्यवत्र-प्र• (योक्षे श्रव) किसी देशके व्यापार

वानिभ्य धंरपी दिश्लीकी निगरानीके क्रिए अन्य देखते

निगुष्क नाणिश्वदृष्ठके अधीम काम ब्रह्मेशका रहेश

वन वा प्रायः स्विधामीके अविशिक्त अस्य प्रवस्तके

उपविधि-सी (शर्र-४१) स्प्री रिविधे संवर्गत बनावी

उपबंशन−५ (विश्वि) समाक्षी वैदक्ष होतो रहना, वदक

उपलब्ध-प (रि.) रथाबीन भागमनहताओंको एप्रिसे

प्रशासाबिका साहि रथामीच संस्थाओं हार। बिका आहे

जनसंक्षेप-प (रेन्सइनर) किसी निषरण हिसार आहि

उपसमापति-प (बारस मेचीडेंट) किसी संस्थाना वश

उपस्कृत-वि (फर्नियर) मेन कुर्सी कारि सामामीसे

उपकापम-पु (प्रेवेंदेशक) विवायसमा आदि सामने

कीर्द मस्ताब निचारार्थं उपस्थित करना; किसी अविकारीके

सामने कोई विपय ज्याकी स्तीष्टति प्राप्त करनेके किए

उपस्थापित करना~ध॰ क्रि॰ (उ वेनेंट) विवास-सभा

उपस्थापद्म~५ (धैश्र) हे पिछहार ।

मधिकारी नो सभावतिको धनवस्थितिम उसका स्थान

(कार्यम) यह तरहदा मीचा था

तती क्षेत्र विभिन्न विभी मंगर श्वतिका का निक्रम आहि

💵 रहा था —भारतका वैश्वति ह शिक्षाम ।

व्यापारिक बेहोंमें रहबर बाम करता है।

काश निवित्त विधि ।

हाती रहनेकी रिवर्ति । प्रपथित का−श्री

शाक्षा कर, उपकर ।

प्रदण करे ।

रक्षमा ।

धभावा दशा ।

का सहिता रूपा साराया ।

भारामधे देवने बैहनको पुरसी।

में यह परेन राज्य परिषदका सभावति होता हो । जवस्तरिय÷भी+ (प+६सर्विक्यीः स्राःग्रं) दिली पण्यवस्त्

जनसन्दर्भर-जनस्थावित महमा

मद्रपार्थना ।

भन्तरीयक-पु॰ (सेमीरटम) हिस्तावर्ती, सींगी आहिक स्थारीयक-पु॰ (सेमीरटम) हिस्तावर्ती, सींगी आहिक स्थारी राष्ट्रीकरण करते दुप अधिकारियों के समझ सम स्थित किया गया अनुसाम्भन्त ।

अमुकंब-पु (भाषधेर) बहुमुबक्ष वी शीर्पोको मिलाने-बाको सरक रेखा(भाषाररेखा)पर किसी अन्य ग्रीपंसे गिराया गया क्ये ।

अनुकंप याता—पु॰ (सस्पेस अकाउँ) वह खाता निस्में किसीको दी तथी एमी रक्षम या रक्षमें सरमारी क्षमें बाक में गारी हैं निनको पक्षा यातिभीको बादमें हिसार माम होनेपर को यात कर्यत याता, अमानत साता।

माप्त होनेपर की यान कथेत द्याता, धमानत द्याता । अनुस्तेनन-पु॰ (सर्पेद्यम) दे॰ 'निस्तेनय' । अनुस्तेनत-नि (सर्पेक्ट) दे निस्तित्त', संधातक ।

अनुक्रिपि – मी (फैस्सिमिक) देश चित्र भारिकी कर्नोक्रीरनों प्रतिकृषि वा अनुकृषि।

भनुजाम-दु (१९६८विट) दं दश्किभः । भनुपर्वी प्रस्ताद-दु (एक्टीक्ट्रेंट मोधन) बाह्में बान पाना वा रया जानेवाना प्रसाद ।

अञ्जीवभारत नुष्ठ (विचान) पुरस्कारिके मुक्त क्षारीनेने किसी पक्का कांद्रा विभागः किसी समाध संगरात वा वर्गेश वह स्तर शा हत्यू त्रिएको अहनी अस्त विश्व परा, स्वार्ग रोजिरियान साथि में स्वपंदा क्षिते क्षार्य विश्व स्वपंदरिको विश्वताने कांद्रम कि नियागः किसी विक्रिसालन, निर्माणदाना आदिके स्वस्त् पृथ्म विश्वे विक्रम अस्तर-अस्त सरहा साम होता हो।

भजुषेसरम् - पु (बीजा) पारपम्बा निरीधम बर हेमेंद्र नम् उठदी पीठरर किया जुला यह क्षेत्र कि उठसा निर्माण सर्वे की का चुकी है और बालाओं विधे टेकर

मान वह सकता है।

भनुर्यसा-को (रकामेंडेसक) वे 'कविस्तान' ।

अनुसंसिद्ध-(व (रह्मभेडेट) जिसके संबंधने अनुशसा या अभिरतान क्रिया क्या शा

अनुसंधाम-पु (स्तरक्षितेदान) भाषी तरह राजनुत कर वा भाष पहाल द्वारा नशु-रिवरिका पता स्थाना । -श्वता-पु (सेमारा) स्वरं पता स्थावह का कंपनी वादी सा शामों के सामारण स्थित स्थान स्था स्था

अनुसमर्थन-पु (रिक्टिशन) (प्रविनिध्यो क्या) विमें तये समझीत आदिका जाग्योन-स्थ्यम, स्विश-प्रपुर हरतास्य कारि हारा-समर्थन मा अनिपृत्ति ।

अनुस्थित जाति-की (धर्रून कार) अनुन्धिते परिधित का निर्देश वर्ति !"

अनुसूची की (उदयुक) छात्रावुरी बाह्रक मा स्वर-अनुसूची स्वीक क्वी से यथी वह सामारको जा पावर किंग्री विकरण जियमावको आधिकै परिधिष्टकी उदय

दी जार । अनुसमारक-पु (रिमार्डेटर) रमर्ग दिलामेराका पत्र

(पा म्बलि)। भनुहस्ताक्षात्व-पु (पथ्यकाहरिय) क्रियो प्रत्या कारे इत्तरप्राधिक क्षत्र इत्याह क्ष्मि क्षियो प्राप्त वस्त्र कार्षिके संस्थित क्ष्मिके क्ष्मिके क्ष्मिके बिय इस्ताक्षर बर्गा ।

अनेकवान्-प्र (पहर्तकाय) योगीकी यो एवड चीर वास्त्रविक भणा मानवेशाण वसन अन्द्रये शेत व्हेरह परम स्थाओंने विश्वसम् करनेका विकास ।

अञ्चोपकरिय-की॰ (पासप्रीर) विद्यानी, प्रामीमी मानि मे वनिय मुक्यर स्रायात प्राप्त करूना सन्तर स्तुनी। अन्योज्यसम्बन्धन पु (काशमीरिय) विभिन्न प्रस्ति रहा

पीनोडे पारत्यक्त संस्थे बात क्यादम क्यामा । अन्वेषक महामा-चुः (चनकारा) वर छत्र महाठ थे मेदिये किया मी दिखाने थे तर दुवह दस मान्यवे महिता किया माण कि करते प्रमुख निमानी वा उपयो परिवर्षित बादिका अध्यास मान्ये दुव बा उन्हों कि दुव बाद भाविका प्रमुख करता या चन प्रमुख हुन की

स्राक्ष स्था वा ६वें। अन्यरण-तु (रिस्त्र) अगसार परिमयपुरव एमधीन वरत तुर पतिहासिक वाती तना अन्य तस्मीक्ष स्थ

कमाना, नर्पका, होप । अपर्यंड-पु (कम्पट) दिही कर्तका द्वा दुवादिला, अपूरा वा अपूर्व सामा दिनह वा तुत्र वस्तुका दना दुवी

सद्ध । अपगमम-पु (विम्देरिज) (दिशी वनारिक) मृत्ये अम्बन वज जाना निर्देश व्यक्तिये गत म गुर्निस

कम्ब किनोडे दास थर्क जाना । अपन्यक-तु (विश्वस स्टिब) (रबोस) आसिका) देस दुश्क विश्वी दोष घर पुने ही तथा विश्वसंस पारर में सहना कृतिय हो। विश्वस बता ।

धकना ब्हास्त्र हो। त्यम बृत । अपचरण-पृ (हेलगारिंग) अपनी छीमा वा अधिकरि धम्ये आग पहरद हुनदेकी एका छोमा वा अधिकार धर्म-यते ज्ञाना वहाँ प्रश्च करना असुनित ही अनिस्तिर प्रतिकार

भवकः सपचारकः अपचारीं −९ (हेसपामः) दृशको होमा वां अधिकार-शबमें वर्शकार प्रवाह करनेवाला !

अपसाल-(व ((बनेनरह) भा वर्धन, वंदा व्यक्ति मेड गुप्ती वा विश्वपतार्थाने रहित ही नवा हो। नी कंप वंदा प्रदेशा कारिने स्तरिक होकर शहर वा विश्व अध्येदा वन यवा हो।

अवस्थान-पू (वेदरक्यान) घता न ताना विसी थी। बाबक प्रादियो उससे पति वर याता-दिनाई राहने होन कर अन्यत्र के जाना ।

क्षप्रमानकेश-पु (काश्तक) वह क्षप्त वनस्य भारि जिसमें किये व्यक्तिको अमृतिष्ठाः, बरनामी या भन

वान हो। ध्रवसावययम् पुरः (१०६८) दिसंदो १९नामी ईवावेरे किय वही हुई सुद्री बातु ४८ना वा सुनाना, विरानामे। ध्रवसावीय-इ (दिवीस्त्र) १८ ४८ने विद्रा हैने ग निकाब देनी दिया।

अपमाजिसकरणान्य कि (रिक्षोर) रिस्टा भग्न, नामन शब्द रायादिने कोई अंग्र) (नदान देना, निम्न देना मा रह कर देना ।

भवस्थितम् । (१,४२१छन) यो। तुम या भन्य विश्र

भारिके सामने कोर्रे प्रस्ताव विचारार्थे रकता । उपाध्यक्ष-प (दिन्धे चेदरमैनः दिन्धे स्वाहर) क्रिक्षे सभा संस्था विभाग-सभा भाविका वक प्रशासिकारि जो भव्यक्षके संदायक स्पर्ने या असके अभूपरिवत रक्षतेपर रासके स्थाजक बाद्य करला है।

उपीरपारम-१० (नाश्मादन्य) बह्न गीण अरधारम (अशा-रिय वस्ता) जो किसी अन्य सक्य बस्तका निर्माण करते समय जनायास दैवार हो जान वा की जाय ।

बभवसध्यस्य-वि॰ (स्टरमीहियरी) हो व्हर्फियों वा पश्चीच नीय द्वाम दरनेवाका ।

दर्बरफ-प (प्रटिमारनर) वह राग्रावनिक साथ ओ भूमिको वर्नरता रहानेमे सहायब हा । जबस्मक्म-प (मीरिओराख) दे 'तस्कापानान' ।

उद्माद्धरिबंध-व (शारिष्ठ चील) वध्योदी विवयत रेखांदे बोली ओरबा बह भाग की क्लारमें बर्ख रेखा और बक्किय-में सकत रेखा द्वारा छी मित्र है तथा अहाँ सबसे अधिक गर्मी पश्ती है।

क्रदर्जाक-प (चैन्सी) सापकी वह साथा भी वह साम पानीको यह श्रेष्ठ सेंडीपेश्तक गर्म बनानके किय आय-इक्ट हो (सापमायक प्रमान) ।

उद्भवाति~को (अपस्ट हेंद) अपस्की ओर: इकिकी भोर यहने वा जानेकी प्रश्नि ह क्रम्यंसामापी~व [सं] (क्रेबेडोमीडर) नक्षिकानोम राहे प्रय विभिन्न हम प्रावेशिक केंपाई मापनेका यह माका । उध्ययकार-प (प्रक्रिमधन) स्थूमध प्रक्रम बाबुमें, निमा नीयनी हरक अवस्थानी पार किये, परिवत दीमा । कार्यक्ति-प्र (बेनिय) दिएके डीक कारका छन्ते से नार्दे

का स्वान या निंदु क्षोर्गनिंदु । यस्म धीमा ।

का अभिन्दु (सूर गंगक) यह कोण नो दो समझेपाँ के बद्धार हो।

माधपरिस्तोध-कोप-३ (सिकिम ७३) राज्य वा संस्था-विशेषके अपने अधिक परिधान(क्यानारी)के क्येयसे बिद्येष विश्वि ।

परवपरिसमापन-पु॰ (बिरिस्टशन बाह्र दा) अन पूरा पूरा भुक्ता देवान देशाह कर देना ।

पाणबंधन-पत्र-प्र (प्रोजीय) वस पत्र मा वसा वा अस बेनेशका मुत्री साथ स्मार के छीरपर कियाना है देवनीर ह प्रत्यमुन्द्रिनको (तरेरदान) कथने तुरुकारा पासा अय-

का पुकारत जन्त है पान प्रमुन्त (रहेत्रीन) सम्बिया श्रीक्षे श्रीन भाग्य रहारियम् ने सम में परमामु(देश्यां के अन निवय प्रक्रिक्ट पारी तरक, ग्रेमश्रक प्रदोध तरह

प्रमते है। प्रस्कार्मिष्टम-१ (कोनमाबिकेसन साह दह) बहुबसे

क्लीस विवाहर दह कर देना करती होती-छात रक्ली-को विकास बस बड़े दिन या दर्शको परिका कर देना । दिया नाना।

भागस्थानम-पुर (मा देशांत्वम) नहीं कानि कारा देख न्यायाक्ष्मके या सरकारक आरेशकी) जोगीचा राज्य मा क्या पुराना भागानी इतने नंद रद दिव 20201-1

o पुरुवासीय पुरुव्य-वि (होमोशीनियस) वर्द हो हार्र वर्ष या किरमकाः जिसके सब अंग या अंश रह स्त्य हो। प्रकारता~सी (मानीक्षेत्री) सात्र वा स्थानी जीव Q&ACCENT I

एकप्रधीय सासमर्थव-९० (दोर्टे(स्टिरियरिय) स्वरे देशके किय यह ही दक्षके शासनको प्रयासी तिसके क्षेट्वें भावरिक्रीका साक्ष्यविष्य जीवन ही यही. निज्ञ धीर व्यक्तिसद जीवन भी भा जाता है।

यक्षप्रधीय-वि (बुलिबेटरक) यह वो वध या रकते हैं। रशनेगामाः केवम एक तरकते होने वा किया जानेशमाः पक्क सं-क्रमकीय मठ-५० (सिविध इतिहरेश्व ग्रेप) (बानुवादिक मदिविधिस्य मनामीमें) महराता हारा किये निर्वाचमध्यमे पुने नानशके धर्मक सारवीयेने क्रिप्रे पदमी इस धर्मके पाच दिया गया यन 🗟 परि निर्पारित संबदामें मत प्राप्त वह अंबेचे कारन अमे इसको सारसर बता म रहे तो बह उसके बारके धनियान दिने परे बग्रेशकार के पान्ते संक्रमित को आकार ।

एकविष्ट्रगामी रेग्सर्थे~सी (अंडरेंट लाईस) छा ही विश्वार एक द्वारेकी कारनेवाकी रेपाएँ । प्रसारमारमञ्ज्ञ-(४० (इतिहेम(४) दिस्म देश्य देश

साम विधानमधाः धाः। पुकसरस्य-निर्वाची क्षेत्र-५०(निविक वेंदर कांरिरहरेडी) वह निर्वाचनधेय वहांसे केंग्स एक हो सरस्य पुन भानेकी हो।

युक्रस्य-पुरु (वेडॅर) क्रिके बह्मानित क्षा रचनिष्ठित क्रिके दीनेराकी भावका वकाविकार देनेवाला सरकारी सुद्रां ब्रिज प्रतेख । -पथ-प्र (बेरसं देरेर) ब्रिसी बावस वक्रविकार प्रशान करनेशाचा एवं । —भेषञ्ज—भीर (वेरेंट वेरिटिनिय) यह भवत्र का हवा विने वंपन बनानेका प्याविकार शरकारी संशंदित मनेक हारा यनके बडा-यह वा यक निर्दाशको दी प्राप्त 🛍 । व्यवस्तिर-वि (भागारतर) गोपने एकको धारकर दूमरा ।

कडोलरिक=वि० (काम्स्टनेट) बीचमे एक दिन धीवबर दमरे दिश पाने या ब्यानेशबार ग्रीबने एक्की धाइक्ट रपरेने मंदंप रहानेशाला र व्याप्ताक-पुक्तिकेत आहित देवने दक्के मार्ग

निकारियोंका मन्द (इ³वम्त) ।

वकाविकार-पुर्व (मानोशंका) क्रियो कर्नुके स्थाताधीके दवक एक वी आएमी या वह श्री देवनीका पूर्व ऑबकार CARRY F

ब्द्रानुक्य-वि (दीमानावन) तो दक्ष मध्य ती धमान सार्टेड विवर्द्धियां वा व मुक्ट्रिक्ट्रम्म-पुर (रक्षमधनेयुन) ही या. अहिक फ्रेन्य्री ही

भ्याराहिक गुरुवार्था गाहिका निष्मांकर ४४ कर्र

नीवर्ने दृष्टि अपना परिया वध्यक्षे विकादा बरना ह भववाजन-प (भिन्देशविन्छन) र दुभवकोनन'। भगर म्यायाचीश-पुर (वरीश्वनम नव) व्यविरिधः वा

दवस म्यायाधीश ।

भवर सचिव-१ (१४)धमण ५ करती) धनिवस वरा दवा काम भैनाकन है लिए हथा गया अविशिक्ष सन्ति। भगराज् मरहाया-धी॰ (कादेविक दायिशाहर) मरहाया जो धरराप मानी जाध वया जिसक लिया चंदनी ध्यवस्था हो ।

भवसामस्यान्त्र (हिंगी दीहे) हे॰ इश्वयक । अपरापविद्याम-पुर (जिमिन(को मे) यह विद्यान जिसमें worte mad ben nied gut fante austal (क्षिप्त हो।

भवराध्यांस्ट-(६) (दिनिनन) जो अवरापीकी धोर प्रक्रु हो जा भण्याच दरत रहनका आही हो (जन-अवराव घील वन वार्तियों) र

अपराधस्यीकाल-५ (क्रम्बल) पुगरित शर्याहरू मामन प्रदेश काराज का पाप स्वयं स्वीकार करना। यह बजन जिसमें भएता भएतप स्वीबार सिया गया थी। भपरायतर्माय~(व (कान हासफरवर्ष) €० अहरता

वरमीय । धपद्याभ-प (दंशंदरियरिय) अमनाको या सरकारको

विष्यि । अनुष्यि धाम बहानको पद्य । भएधराज-५ (तर्राटन भाषः) कन वा पाननको रहन दर्भ शानकी आधा म रह जानेपर उसे रह दह देना र पान काम देना ।

अपविदत्ता-श्री ("प्रदर्शेश) बस्ती और भका सामाः क्सि विरस अवग रहने या जानेकी किया !

भपसंद्रह भपसंचय-५ (होर्डन)गायमे अधिक दानप्राप्त दरनेको मरवर्ष बनी संदर्भ या परिमानमै पर्यभोका संबद्ध करना ।

भवसारण-इ (दश्वप्रधन) किही स्थान, श्रेरशा भादित यकपूर्वक या जिनमनेव मादिक काश्य हरा दिया जाला। भपरकीति – को (शंक्यत्रन) र विश्कीति ।

भगद्ररण-स्त्री (द्विष्टनपिम) इपना पेंडने, स्वार्थ शिक्ष बहते आर्दिके प्रदेशमध्ये दिसी बाक्कनाक्षिका या पती व्यक्ति मारिको रकपूर्वक प्रधादर से जामा वा गायत वर होता। अपारदर्शिता-श्री (आपंक्षिती) आस्पार न हैश्र का सक्तेका ग्राम, अपारवद्धी होनेका मान या शाम ।

अपदार-पु (प्रतिकर्षेट) दिशी इसर्द्धा माळ या यम अनुभित रूपसे अपने अधिकार्में कर वसे अपने बाससे कामाः घरतः।

भप्रतिमान्य-वि (मान-वेतिषक) (वह सप्राप) जिससे किसेंके जामिन बनने या जमावत देनका तैवार बीमदर भी अपराधीके अरवानी कपसे रिवा किये जानेकी डांगाइस च हो ।

भागत्वक्ष कर-५ (इटाइरंस्ट दैस्स) वह सर जो प्रत्यक्ष क्यमे न किया जावर विकेष वस्तुओं आदिकी वही हुई भीमतके रूपमें उपमीकाओं से उर्मृद्दीत किया जान। समस्यादेय-नि (इरिड्यहरेनिक) वी फिर मास या वस्त

ज किया जा गर्दे ।

अप्रवर्ता- (४० (१न आयरेदिन्द) जी आग न हो। ने अपनी किया म कर रहा हो अभाव न कान रहा हो।

भवजवध-वर्वजी-भी॰ (भूड बीफ ४४१) वह मांनी नी राज या दिना सिन्ने पश्री करपर्य हो ।

श्रवाध स्थापार-त॰ (को देश) वह व्यापार विसने र्शरधककर आदि कगावर शाना म बाबी नाम रे॰ ⁴मधः वादिशयः ।

अअयपद्ध∽प• (शेष्ट बांदवट) दिशी ४३६ प्राग्यस्था राजापति आि दासा दिया गणा यह एवं बिसमें किया श्वका है कि यह स्वधिद्र विश्वकार म किया जान भीर म हत दिली वरदको छति पर्देषायी जाय ।

शभाव्य संख्या-धी+ (पारम मना) वह संख्या जिसके गुचनशंह म ही सढ़ें (१, १, १, ५, ७ ११ शबादि)। अभाषप्रस्त अय-पु॰ (श्रीयितर परिया) नह जिला या मध्य वहाँ द्यापाय आहिनो हमी हो। दमीशाला क्षेत्र । अभिक्रधम−द (दस्यक्षत) दिसीद संदेशमें पर्धा गास बन्नवा वा ५सा आरोप समाना जिसके किए कार्र निधित प्रमाण व द्या दस प्रकार कही गयी बात का अप्रमाणित

श्रक्तिकाल-द (९०सी) क्रिक्षेक्षे भारत उसके मसिमिष वा अधिकताके करमें काब करमाः अभिकतां(एवेंट)

द्ध बार्व दक्षिक्ष शान ।

अभिकर्ता-५ (परेंश) विशे व्यापारी व्यापारिक संस्था या राज्यको भोरस प्रतिनिधिक्यमें काम करनेवाचा या क्योप्रवर्ध माल रचर्यसस्य व्यक्ति।

अभिगृहीस-वि (पहाधीर) विस्ता अभिग्रहण दिना qui at t

अभिग्रहच−५ (पराध्यन) लन ६१ हेना, (इसर्द प्रवः विषय, यथा णारिका) अपना बना केना या अपना कर क्ट श्रीकार करना, अंगीकार करना ।

श्रभिक्का−ची (<६)मनियन) थिखाव स्वीकृति मान्यदा। अभिजाल-वि॰ (रदगवारण्ड) प्रयामा द्वाः विसदा अस्तिस्य मान किया थया हो। (शरदार द्वारा) किने

साम्यता है ही यदी हो। श्रमित्रान-त (भारवेरिकिवेशन) विश्वीको वेद्यकर या पश्यानकर बराधाया कि बद्द अनुष्क स्वरिद्ध हो है।

अभिकापक~प (पनाउत्तर) एपना देने या वहानेवाकाः रेडियोगर समाचार प्रमाने या कार्यक्रम आदि बताने-बाक्त, प्रदोषक ।

अभिकायन-प (एनाउंधमेंत) दीई वाध बोर्वित करना वा बताया स्वाद आदि सुमाना-शृथित दरमा ।

अभिकाता-पु (सम्प्रकारका) किश्री कामके किए बहुजीते प्राप्त सदावता-कृषमें कुछ भन देनेबाला; पंदा देनेबाला । अभिदान-प (सर्रिक्यान) किमी कामके किए विभिन्न व्यक्तियों दारा दिया बचा थन, पंदा ।

अभिनंदनपश्र−षु (५वृष्ट माफ दकदम) किसी वह अधिकारी नेता भाविक जागमनपर वसके सम्मान एव मधीसमें पहा बानेवाका स्वामक भावता मानका ।

अभिमधीकरण-त (रैप्रतिकितेयम बाप रंदरती) हे 1 1

aî

भीवाविक योजना - भी० (इतिहरूप(न १८)य) स्थानांने पेड रीच समाने तथा उनके रधय भारिको योजना । भीद्योगिक तुष्य-पुर (१शीहबल देश) स्थान पंत्रीन संस्य रहानवाली प्रामानिक बाते । भावागिङ वासध्यवस्था –श्री (इंटरिइयक क्षाप्रसिय) बारपानोमें बाध बरनेशन धमिकोंके थिए रहनके मकान

रमदानेकी ध्यवस्था । भौद्योगिकीरण-च (हंबीहर्शक्त्रधन) भन्द दश मानी बचावी भारिकी रवावना निरतार आदि हारा हेराओ उद्योग प्रधान बंशानी । भीरविर्देश-५ (वेरिक्स्एव) दिनी रोवद शमनार्थ

चिदिश्यक द्वारा द्वामें ६ नाम माथा प्रदीगादिके मंबंबने दिया गया (कि.रिन) निरंश ।

भीवयनियाजगान्त्र-पु (दार्यासोपीया) आवय तेवार बरमध्ये विका का उसको विकि बनानकान होता।

करिक्षा-भी (निन) तार माहिका नदम पत्रमा नुन्धेका प्रका किनने करानी भीर निष्मे पंदी या हारी सी शही है और वा कामजी कपड़ी व्यक्ति सीली जाती है शक्त आवरीन । कंटिकाबार-प (दिनक्रधन) कार गीवक आदिका नह वरोश्राद द्वीवा विस्तव भाकपोर्ने (धरिकार्र) ध्वीसक्ट रखी

मात्री ह धाइपानी । **ष्टंटरप्र(र्रुपुर्वा**~को (क्टांस कारिशेशन) गणा कार

देनशाही अस्पेत महरी प्रतिवाशिया । (नेंद्र शहे) गड़ी यांबदर दमीबद्धे जबर करकाबा जानेवाका रक्षमी वा वर्ता ग्रंबर कोवा शे ।व । फंडमंशीत-तु (बाइक म्युविक) मानव-दंड हारा वद्यरित

योत द्वनि । क्योप्रति-सी (वर्षाप्तर) अपिट जैनी द्या था अपिट र्ज-ते रिश्तिमें पहा दिया पहुँचा दिना भाना ।

क्सीक्षका प्रसातन-५० (का माझन) है। मुक्ते । कठोरलाबाद-१० (प्यूरियेनियम) (प्राहेस्ट व देखाइबीका) बडोर जोपनदी चार्स्स मानवेदा शिक्षांत ।

कणीकरण-प (किस्रैकारवेद्यन) कणी या रहीके क्यमें परिणव करना है । स्प्रतिश्रीकरण ।

कपराचाती फलपाधी-५ (स्तारपर) विपद्दर वा पीये-मैं श्रमुके शिविरपर योक्तियोंकी श्रीप्राप्त करनेशाका का इस तरह किसीकी मार बालने जाहत करमेवाका ।

करकिक-प (रकार्य) है किपिक केलक । कर-निर्धारण-१ (बहैसपेंट) मुश्य या क्रामादिकी यात्रा-के भाषारपर निश्वम करना कि श्रेत पर शारिके स्वासी

पर कितमा कर कगाया भाग । करपास्य सुरूप-वि (रदेविक या देवश्वविक वैस्प) कर क्याबची दक्षि भाँका गया किश्री सद्यान संपत्ति आदिका मुक्त (वा बससे किरावे, सूर आदिके क्यमें हो सकते वाक्षी भाव)।

पालाको करना जिल्हों कर अरा न करना पर । करारोपण-प्र (नर्ग) कर भारि प्रापिष्ठत करम मंग्रह

बरना बन्दन बहना वा प्रवाहमा । क्रज्ञ-पु० (शाहतादेश्युध) ∢० मूसमे ।

कर्णकार समिति—औ॰ (स्टेबरिंग स्थिते) भेग्रस्ट राष्ट् સંજ, અંગ્રેસ બારિનો વર્ષ ગવિતિ નો સપ, સોવસ મારિજ को विभिन्न श्रीयतिकोक्तै कार्वयस्यः निषयस्य भारिका निर्पारण करता है। (कार्य) श्रेयामन-समिति । कर्म हार-द्वानियरण-भविनियम--प्र• (उध्मेश करनशेसन देश्र) देश समिद्ध धति-पृति अधिनिवम'।

अधिकारिराज्य कर्मकारिश्रंबन्य (भरीदेशी) रे नोदधादी र कर्मकारिपूर्वन-पुरु (स्टाफ) किसा प्रश्नाम अभिकारीके मीच काम बहुनवाछ (दिनी मांचा मादिने) कर्ननारिबीका

कर्मराचन-१० (रहाहरू) हिमी धम्याय आहिके विरापने

काम काथ भारि दशकर देवा, शहराक्ष । कर्मशासा-धी (बर्स्स वर्दशार) कार सदरी माहिना था निर्माय संबंधी अन्य काम करनेका स्थान । कमापंत्री-सी (बिनिट इस) यह पंदी या रहिस्टर विसमें दिसी सभा-समिविका संदिश कार्य-निवरण किया

कम्पानकारी राज्य-५ ४ (रक्षचेत्र स्टेर) जनवितेश tiae (

क्षक-९ (रंगस) एवक कुरुत्या। कपश्चित यान-इ (भार्म- बार) गुडमें बान भानेताओ बह गावी विश्ववर वोधी भारिकी मारसे बसे सरक्षित ररानके किर कारदी मीधे परंद पड़ा दी वर्ग ही तथा

वी रवर्ष वाची चीपश्चिमी आदिसं सम्बद्धित हो । **क्रमधन-पाजना−धो (**मस्टेरिये स्क्रेम) हे

थीय गारमा' । करिवयुग-५ (बाद रव) इतिहासका वह सुव बह कांग्रेके पन भी गारी भीर दविवारीका प्रयोग होता था। काम न करो' इपराक-की (स्ट इम स्वारक) इपराक-का वह प्रकार विश्वयं अभिक वा क्यों कारपाने अपनित्रे तो जात है पर कीई काम नहीं करत-अपने स्थानपर

भुषवाप नेठ रहते हैं। कारागारिक-पु (नेकर) नशाग्रह या नहीं के नीरवीकी व्यवस्था देखरंख व्यक्ति करनेवाका सक्य अधिकारी

कारावाक । कारापाक-पु (अबर) है कारावारिक'।

कारारोपम-प (रनकारछरेशन) द्वाराग्रहमें वंड कर देने जेस भव देनेकी किया।

कार्यकारी-वि (देविस्य) किसी पराविकारीके सुद्दी आदिपर जानेके समय असब स्थानपर साम सरमेवासा कानगासकः।

कार्यव्यक्षणकाकः—५ (बार्शनेय राह्य) दिसी संस्था भावि में वा किसी परपर विजुक्त होनेडे वाह कान हारू करसे का समय ।

करापर्यचन-१ (१वेदन भाव दैस्त) वेसी ११७सत या | अपर्यपरिपन्-श्वी (कार्यसिक भाक रेस्सन) किसी कार्य,

चानारजय-बानसम्ब 'उद्योगमग्रीहरू

'बयोगस्थीकरण' । क्रमिनिर्णन – पु (वॉर्डवर) विसी मामकेमें स्वायसम्ब हारा दिवा स्वा निर्णवास्थव मदा किसीके संवेषमें बडो

वित या च्रिय जनता, विनांक्कों आविका सता अंतिम वितंत । अभिनिर्मायक-पु॰ (रेक्सी) वह व्यक्ति किसस दी प्रकृति भीन और दिनार वा प्रमण जरता होनेश्य निर्मय करने-को प्रारंभा वा असुरीप किमा जाया है 'क्रीक-प्रवाहन'। अभिनिर्मय पार्थाम-विन (सन्जुतिसी) की अभिनिर्मयक किम न्यायाकनके पस मेज विका पना हो और जिससर कमी विवाद हो रहा हो, विभागतीक।

नमी विचार हो रहा हो, विचाराचीस । समिनियेच-प्र (रजीगेदान) दे० 'निराहरण' ।

आधानप्रभाय (र्थानाधान) दश्रानदाक्षरणः । अधिन्यासाम्पुरः किंगाच्या विश्वी परिकरमा(स्तेन)के अधुसार गुरुः क्यान मारिका निर्माणः विश्वार मादि कपुसार गुरुः क्यान भारिका निर्मा क्यान, अभिपुष्टिन्दी (कॉलक्मेंग्रन) किसी क्यान क्यान,

संबंद आहिको संस्था पुत्र रहीकार कर एसे व्यक्ति इंद एवं दिसारानीय बनाना। किसी परंपर किसीको बिनुश्चिका रामार्थ भीत एवं बना दिला बाला। --सार्थकुन हिं (इपनेस इंक्स्प्रकॉडन) अधिपृष्टि में। वायपर दी विस्ता स्टेमा निर्मेद हो, अधिपृष्टि के बाद सी वो प्रश्ली

सबसी जान । स्रभिपूर्ति करना-स॰ कि (रंप्लीर) हैडे साहिती धर्ते पूरी करना दिवा हुना नवल पूरा करना।

अभिजापी होना-अ कि (इ विवर) प्रभावपुत्र वा प्रकृषेता मान्य होना वकार न तमहा जाना। अभिजापना-धी (हमांड) बहुना है ताब वा अधिकार

पूर्वक वाचवा करना, जाँव । अभिवान-पुर (क्षेत्र) किसे निधित स्ववं वा किसे विरोद कर्षकों भेर दिन्दे वने सैनिक काळवणीकी शररा। दिसी करवारी सीवेर्ड कथा जनवासी किसी सोविट

पक्षमें प्रवादित करकेड़े किए की जानेशाओं संपरित काररवारें।

करिएकि-की (वार्त) म्वावाक्षको किन्छ व्यक्तिपर करिएव वा विद्यादिरीयो कार्य कर्नका कारीव कनानाः कास्त्रोत ।

भमियोग-५ (१४५वेघन) दे मुक्ते।

सभियोगाधीम-वि (संदर द्वावक) (श्वद व्यक्ति वा वंदी) विस्ता कनियाम भर्मा असास्त्रवेगे चक रहा हो।

स्र्विश्वन - (प्राविश्वरूपन) स्थितर कोबदारी सामना प्रकारम कार्थ (विध्यन्त पुलिस हारा) ।-कार्य - - (प्रविश्वरूप) (पुलिस्स्यो कीरार्थ) - नावाज्यक्ष सामने रहे के कीबरारी सामन्या स्रीवाक्ष रहे किसी मिरारक - पुलिस्से हारायो संदेश किसी वरंग पा व्यक्ति के भावे भरिकार, देशस्य वा भरिक्य में रहनेवाला। दिशो संस्त्रो कार्यक्षी आहिन्हों स्थान्त विशेष क्षणे प्रमूज स्वत्येताला।

भमिरधा-धी (स्पोटी) (हिनी वन्तु वा स्वक्रिस) हिनोदे वास वा क्रिनोदी देश(धने मुर्राह्म स्वस दखा धाना। अभिक्षितित-वि॰ (रेक्सिंड) निविधित रूपने दिस्सर ग्रार्थित रसा ग्रमा अभिकेशने रूपने गांगा तुना। अभिक्षां-तु॰ (रेक्सिंट) दिसी तम्म, विषय सा कारत रे

स्थानस्थान-तुर्व (रेकांट) विस्ती तथा, विश्व दा शरतार्थं स्थादिक संवेश नियमित रूपये क्रिको द्वार रहाः नियमित स्थापित स्थापित स्थापित राज्यान्य स्थापित स्थापित

न्याबाक्य विदे किपि-एंडीपी वा ऐसी ही सन्य मुके

ठीक बरनका अधिकार होता है। --पाछ-पु (देवारे-कोवर) किहो स्वावाक्य कार्यक्र आस्ट्रिके अस्ट्रिकेटी रेखमाळ करमेवाळा कर्यवारी। अस्मिक्कोपण करवा-सु क्रिक (आफिटरर) मिरा देवा

चन्न देवा, नष्ट कर देना, कार्य निष्ठ ना अन्तरेष व छोडना। अभिषक्तरुषु (व्योदर) स्वानास्त्रमें दिशोदी करेपी

युक्तमध्ये वैश्वी वर्शनाका, महीका व्यक्तिव्ययम् पुरः (क्वीवर) स्वान्तवर्गे वर्शना क्रिये नार्गे क्रियो व्यक्त्य विश्वित प्रतिविधि नगस्य रहते हथ-वैत्रये प्रमान, वर्षे क्षारि देत वर प्राप्तन क्रस्य।

अभिद्धांसा-को॰ (क्यांनिस्म) अतानत वा पंशे रार्ध किसी अधिका अपराभी भीतित दिवा जाना, वह सम्म-कि करना कि स्वस्त नी आधीर क्यांना एना सा स्व म्यानित हो गवा है। अभिद्धांसिल-दि (क्यांनिस्म) स्वाणानको क्रिया

भमिष्यंसिष्ठ-वि (स्मितिगरेष) स्वापालवर्धे किन्त्र वोष्ये क्षेत्रा समाधित को गया हो। अभिवास्त्र-वि॰ (सनविगरेष) वै समिग्रास्ति ; वोष्

हिक्कः अभिज्ञास्त्र — उ॰ (दनक्रिय) शिंत, आहर्ति (दिव्ये),
स्त्राव्यस्त्र विचेत कार्रियो १६ कर देवा मंगूत करताः
अभिज्ञास्त्रवेशस्त्र — १६ (दास्त्र) औ रह या भूग्य कर (द्या पणा है। (क्रिये दित कार्ति)। अभिज्ञास्त्र — (द्या पणा है)

क्विसमय-च (कावरेंग्रज) (१) शरास हन। सारे-वार्जे (वाक, वार वार्रि) व्यित्स्य विश्ववेत श्रेस्त्रे (क्रां व्याविक्व सम्बोध्य वास्त्रीत्रात् (१) युद्धिक श्रेस्त्रे स्वीतंत्र्व व्यवस्थित युद्धस्त्रम वार्षि संस्त्री यह तक्त्रेत्रीत्र व्यवस्था विश्ववेत व्यवस्था व्यवस्था विश्ववेत्रात्रीत्र व्यवस्था विश्ववेत्र विश्ववे काररवारं, आंदावच आरिका संवाकतः, निर्मेत्रण आदि करनेके किय गडित परिवत्। स्मायगाकिका-स्रोक्ति-को (एन्डीश्नृटिन पांवर) विकि. आप्रति, स्मायिक स्रोक्तिकेष क्षानिकी कर्णने स्मीयन

भाषति, न्यायिक धार्मिनणंय आविकी कार्यमे परिचत

कार्यवाहरू-पु॰ (पतेंश) वह में किसी देश, कला मादि की भारसे कार्य करनके किए भविकृत दिया यथा ही, एजेंट।

कार्यबाह संक्या-चा॰ (क्रांस) दे॰ 'मणपृति'। कार्यसमिति-ची॰ (नर्जिंग क्रांस्टी) क्रिसी संस्थाक सरस्वीको वह छोटी समिति जो प्रमुक्त कार्योका संबाधन

करमेक किए बताबी गयो हो। कार्यस्थाय-प्रसाय-पु० (ऐयवर्गेवेट मोधन) किसी मस्पन आवस्पक एवं शार्यभविक ग्रहस्पक प्रस्तकर

विचार करमेके लिए विभाग-प्रमा आदिने रहा यदा प्रस्तान निसमें प्रार्थना को जाती है कि अन्य कार्व होंड़-कर पहल रसीपर विचार किया जाय ।

काम बोटरी-सी॰ (मान्टिरी सेम) (बेम दी) वह संय भीर नपरी कोटरी विसमें वर्षहर मगराथ करनेवार्ड वंदी

ततहाईमें रखे बात है।

कासम्रोप-पु॰ (माम्यानियम) किसी वानु, व्यक्ति या प्रधानाक भएने मार्टाभिक या श्रीक सम्बन्ध बहुव मार्के भवता पीठे मोता वर्षित किया मात्र वहमाया साथा। सारकारोस-वि (श्रास-मार्ट) निर्वारिक अवि या समय श्रीक याने पर वरवानेन अभागमादिका विवेदक पिथे

रकार 🗓 बाना । काकार स-पु० (क्षेत्रियर) रेक्नों थोली स्मारका श्वास नापनता बढ़ बाका यो दो बगटे टेड फोकावके इंदरोंका बना होया दे-पे बढ़ आरंधे नींक्सार व बुन्दी औरस

भीवे काल है।

कासायचि∽सी+ (वीरिवर) निर्वारित समब्द्धे सीमा । वीडनासक-पु+ (रनर्सेविस्सार) वीडागुर्वोद्धे नष दर्शन

बाजी दवा (ब्रीडिम्बिशान-पु० (रंडीमाणानी) कीई मनागैनी बापछि, रन्हर दिसंप्तामी कार्दिक विश्वन बर्दनेशका विद्यान । ब्रीप्रसंभ – पु (इनेक स्टेंग) वह राज नेता बाजा जिसमे

की इंद्रावी जाती है।

सीचिमान-१ (रिवॉर्ट) नैराक्षे केल्यूर कार्रेसे वर वित जल्द्रशक्षे रह चरम धीमा वर्दावह रिवी व्यक्ति पर्देयनेहा समित्रय मिळ्डा हो।

मुबबुदारि राक्षन-तु (धवडी नीरिश) नुषद्व, वश्वह सादि पानने, वनने भडे चनने भाविता न्यवमाय १ मुखासक-दि (वेड ब्यवस्थ) (वह बस्ट्रा निमने विवयः)

मुखासार-दि (४४ व्यवस्ता १४९ वर्ग्याम् से हो सके कुछ-साप भारिका परिचानन शुवनतास न हो सके कुछ-बाह्य है

कुरीरियन पुरु (कार्डेन इस्तर्ह) वह आग वर्षेष का प्याची मनने वस्त्र ही नेडकर विश्वास आहः और विश्वदे किए वस्त्रहे वेशी गारिकी भारत्यक्रम न हो। कुरुमोयमा कुरुससा-भी (देनियर्जिकी) स्वकर

दुशायकाः कृद्गस्यान्यः । स्थानध्यानः -देशके सन्देशसम्बद्धाः स्थानध्यानः। कुषयन्यन-पु (मिक्काश्रीन्यन) हो या श्वत शारील क बाता । कुषोपब-पु (मानन्यृहिश्न) उत्तम शेषम् । जमाश्रम कमी स्थानोक्ता

कुष्पति पु (शहस-संगठन) दिवारीड वा दिवारीड कवका प्रधान अधिकारी दिमका वर अधिकारीदिवाराना के राज की माना आधा है।

कुरुसचिष-पु॰ (रजिद्धार) रे॰ 'पीहरवरिर । कुरुमि त्रीय-पु (धासिनेदा) यजकुर व्यक्तिसे हता

कुरुरच तथ-दे (बाक्-रिहिट्ट-इसर) सन्दर्शक स्थादश हो। कुरुरच -देव (बाक्-रिहिट्ट-इसर) सन्दर्शक स्थादश हो। कुरुरच तथ-दे (बाक्-रिहिट-इसर) सर्व कुरुट स्थादश हो।

वानेवाका विदास, कुविवरण । कुछासय-यु (वेयर नेसारका) सोहियोकी देखील और

सदायताओं व्यक्ति वयादा यथा विश्वास्थान । इति ह्यास्य - पु (धीराहर) भीर क्षेत्र पुरश्क बर्रिशः

कारान्तानम् "द्व (धारास्त कार प्रस् दूरतम् काराः व्हानी वादि दुन प्रकाशन हरते, नेपनं कारस् वर्षिकाः । क्वितिकारः ।

क्षाप्रभाविक श्रश्नात्र मुक्ति व स्थापनिकार क्षार्थ भाविक श्रश्य हालाग्य मुक्ति अस्ति व्यवस्य क्षार्थम् मुक्ति व्यवस्य क्षार्थम् क्षार्थम् क्षार्थम् क्षार्थम् क्षार्थम् क्षार्थम् क्षार्थम् व स्थापनिकार्यः क्षार्थम् क्षार्थम् व स्थापनिकार्यः व स्थापनिकार्यः क्षार्थम् व स्थापनिकार्यः स्थापनिकारः स्था

कृषिर्यात्र—तु (इवस्ट) विद्यासामा एक ठावहा सम् विकास स्वराय कृष्टिन्यं धारीक व्यापेति दिस्य स्वर्त से व्याप्त्रास्त्रस्था—की० (एक्डा) धान स्वेप्टनेन्यं ध्या वाच द्वारा क्यानेती स्वराय क्षाप्त्रस्था स्वर्त विकेते स्थाप्त इक स्वाप्त्रस्था स्वराय विकास स्वर्त विकेत स्वर्

स्रावा काहा था (सम) ।

फुष्प-रि॰ (बीतरेदिन) १ मूनने। स्ट्रेन-९ (प्रेर) १५६८ रह मध्य (१९ वर्तने पर्टिन्टे प्रन्य रिट्टो परी एक वी थे।

केंद्रावसारी शक्तिबाँ-की (अंद्रास्त्वन क्राउँव) स्त्रम

हर इसनेशकी शक्ति ।

हें रीय भाषाम संश्वल-१० (०२० दार्शीस नार) अहे भने स्वतानीत्रीपुर्वा किमाय क्यानके किय स्वार्त्तप्र कृतीय सीच्या

क्रिहीयकरण-पुरु (क्रूबार रेशन) १६ स्थान या बहुदर खाना क्रिय करणा नमा करना २६ हावने यह अवहस्तार्थ थाना ।

क्रामुओं केविहा-को (दरिस्तो स्नृत १६४ वी ११४ (देशदे स्तर) गुरावसको नक्ति।

कोडिन्युस-वि ((suce)) अन्ते क्या अर्थ स वामे नीनेका कारि, अर्थ या घरपर अव दिवा नवा वी । कोडिबेंस-यु (प्रेटसन) कारि वा दर रह अनुवार राजना

को नोने विश्वक करनार है जय नाम । काल-१७ (पिन) कहन-महन (पामें) बासर दक्ष विदुष्ट (मनदेशकी डा सरक देवाभ ह वोच्छा दुवान । कोसहोंके पास्त्रम-९ (शरिद्धार) रेसक वोई प्रस्ते मान्य हो ।

भिस्सामिक-१ (६-१४४-१) वा पहन्ते पछी भाग्रे दुरे प्रवरा वा परिषयीक भनुस्य हो। भिम्मुबबा-१० (११३१४-१) वोर्ड काम करनेक विद

रिनेष क्रांते वी नवी दिशायत वा भारेत !

मनिस्ताय-पुर (१६/मेटेशन) दिशोदे स्वयं न्याकृत प्रमादशाद-पुर (१६/मेटेशन) दिशोदे स्वयं न्याकृत

या क्रिप्रना। कोर्र सुराध्य या समाव देश दुव वसके प्रसूधे भएना भार प्रकार करना, शिकारिय ।

सरना बार प्रकट स्टेना, स्टब्स्ट । स्टिय वा पुढ़ावा बाना निर्पाति स्वयित्व सरवा कोई स्टार वा पुढ़ावा बाना निर्पाति स्वयित्व सरवा कोई

भाभरत्यण-दु (हिस्-१३२) वातावर्षव(भार)-दे सहावदार्थ मय वा सर्द युवाने उक्ष सुद्ध करनन्ते दिवा। भागरायुवी-स्त्रे (शिरक्ष्ये) प्रशास वा कर्क युवाने

का यंत्र भट्टी का पर !

का यत भट्टा वर : धरिहण्य-पुत्र (१८४४) च्या दिहामे आदिकी नमुर्गे के क्यि भागावय के भारति दिखीओ जावरात्र वसीन भारि ४०५ वर बना या मोजाम वर देना ।—अधिपद्य-पुत्र अभिद्रस्य (उद जाति दिखा गढ़ा अधिपद्य (नारंशे । अधिद्रस्य क्या (अधानमें) विशो मृति, भाषित्र भारिका विशादर रेथ करने वर्गावरण वरना। विशो के

भारका अस्पेस्ट पर स्टब्स इरवावरण करना। क्यांक तित्र कोर्र दिश्या कार्य भारि नियोशित करना। भूभिक्रित परिकारण-५ (नामिनक बोम) कहने अस्के

क्षिय नामसायका धरिन्यस (सागत) । अभिद्वित पूँजी-भी (सामितक स्थितक) करने भरके

्रियः, मानमावद्मे पूँची । अभुक्त-दि (जनदेरह) विशवः उपनीय वा मुण्यान स

क्या गया हो।

भन्यंश-पु (क्षेश) है वंदिवांग , 'निवतांग्र' । भन्यर्थी-पु (क्षितंत्र) क्षिप्त वरीक्षामें देवने वा शीवरी कारि हे किय आवरत-पण देवताका ।

भम्परित-वि (तर्व र) (वह सरकारी भारेष्ठ, भाषान पत्राति) वो विभोको विभिन्न सर्वित वा संबद्ध कर

निया गया दा वाजील । अम्बुक्ति-धी (रिमानी) आकीयमा या व्यंत्रके दंगपर कही गयी कार्र शवा किसीज क्यायर वा किसी नियमके

र्धर्वमें की नवी पश्चितः भसारदेव प्यय−९ (मॉल-वोटेविक प्रश्नविविवर) वह स्वतः विवयः मोक्से (कारामास्त्रो) सामगोधी सामगोधी

व्यव जिल्हा संविधा (बारासमाने) सरस्योकी मत हैनेका अभिकार म हो।

भमान्यन-पु (डिसमिसक) किसी व्यवदार (मुक्रमे), पुगर्वाय-प्रार्थना, दान आदिका समान्य, स्वामाक्रमी सविपारमीन कदरा दिया याना ।

भवपार्थवाम-पु (क्लिनीनर) दे 'क्लिबानाम'। बयुद्धारस्त्रता भयुद्धार्थिति न्ह्री (नान-देखिबरेग्डी) किमी राष्ट्रस, करनेदे क्षिम पुत्रके पुत्रकृत बुद्ध भी पुत्रकार्युक्त पुत्रकिर राष्ट्रके श्राधना करते रहता। बद्धार्थार्थिते हो देखें प्रशिक्षिते शिक्ष्विसेसे

भवोमार्ग−५ (रेक्ने) कोहेको प्रतिवृद्धि सिकसिकेसे भोडकर बनावा हुआ मार्ग जिसकर वाविवों या सामावको बोनेवाकी रेलगाडी बीइटी है, रेन पर !

भराजपृत्तिश्च-रि॰ (बानगबरेट) (बिपझारी, दर्मगारी) विश्वक्ष नाम या विश्वक्षे प्रश्नृति, रथानांतरण, शुद्रोपर बाने आदिके संपंधर्य कार्य यूपना सरझारी स्थानार प्रथमें म प्रश्तो हो।

अर्थेपतम-९ (स्त्रेष) दे० 'मृस्वावपात'।

भवित गुड़ी निर्मा (बन्दे की) यह गुड़ी जिसे पानंदा यह कर्मचारी भिन्दारी मात्रा जागा है तिसने निर्भारित समयक काम करनेके बाद उपका कर्मन कर किया हो। क्षमांत्रज — (१९४म १४०) कर्म कमाना विश्व इंगसे समक्ष्मना या समझाना। स्थारना।

भद्क-पु (बारवेस्टर) हिन्दी क्षेत्र भारिको हो समान भागोर्वे परिनेशाली रेवा ।

अद्युच-तु (मेमिनर(६०) मृत्रका भाषा माग वो व्यासके रक्त नीर या दूसरी और हो ।

अर्दोचोक्सि ध्यान-तु॰ (हाडमारः १०००) दिशी महान् व्यक्तिके मरनेपर उत्तर प्रमानने आयी-नेनारीय प्रकार

व्याधः करनपर उपक सम्मानन आयो क्यारतक मुद्दाया दुभा राष्ट्रीय संज्ञा अथगुद्धा संद्याः आर्थेसा—धीः (स्वाक्तिकस्य) किसी स्थान या परके

बाग्य पनानेवाडी निविद्यता गुजराद्धिया योगन्ता। अक्षमक्रमोच्य-(४० (साम-४८)क) २ अप्रतिमान्य । अक्षमक्रस जोत-की (अनयसोनामिक शाहिरण) स्व कारकार हारा नाती वांची मानेवाली वर्ष भृति निवस्से वर्षक कर्य के परिवारिक भएक पात्रमें क्रियं प्राप्त न हो।

बयव क्यां प्राप्त भारम्याक्य क्यां क्या नहा। अस्यकाखीन प्राप्त−तु (शार्ट ध्ये कोन) वह क्रम जो बोडे ही समयके क्या क्या गया हो अत- वो द्योग हो (यावा ५ १० वरोडे भीतर) अता दर दिया जावा।

अस्य-जोगयोजना-की (जॉस्टेरिट स्क्रीम) अध्यस्य स्तुत्वीका स्था प्रयोग स्थाने, क्षा यहार्थ दुर थो हुटे स्वाचित्र से साम प्रयाग अनेतर योग सैनेवाणी साजना। सितीपनीय बीजना, ब्रह्म-सुवना।

सदरवारी सदस्य-व (नेक्नेंचर) दे वयनिद्धारी सदरवारी स

करनस्थित प्रश्न-पु (प्रार्ट भारित नरेशन) स्तर् वा विधानसभा भारित पूछा चानेवाका पेसा प्रस्त जिसके किंग सामान्यसे कम स्थाना वी स्था हो।

अस्यायकास-पुर (रिसेश) विवासनी, स्वायाकरी का क्षेत्र आवियें नीवमें थोने समबद्धे किए जनवान वा विसास के किय मिननेवाना अवदास !

अस्पिष्ठ-वि॰ (मिनिसम्) कमछे कमः न्यूनदम ।

वाक्पक्ष—१० (शायमा) क्रम्य क्रम, न्यून्यम । अक्पीकरवा—पु (टेरोगंधन) विश्वार प्रतिष्ठा सद्रम, सक्ति वादिका पट वासा वा उसमें क्रमी हो बाना ।

अवकरपाल-पु अवकरी-पी॰ (इस्टरिन) हाइने-दुवारमेथे निक्का दुवा पृहा रखनेको शकरी (वस्कर-पृहा) ।

अवकासप्रदूष-पु॰ (रिशन्से) मीक्सी, सक्षित्र सेवा सार्वत्रिक बीवम जारिसे विकास क्षेत्रा पृथक् दो जाना निवृधि विवासमञ्जा

अवकास करना-स कि (१९९६) पाने निवुक्त किये इप किसी व्यक्तिके स्थानपर और किसीको निवुक्त करना। 1444

का काम मा स्वाम । को पातु-तुर (५०) व सूर्य मतीर क्य विनर्के यागने विस्ता निर्माण होता है।

कोपविषय-पु (१वरी विस्म) देश समानेको दृष्टिया । कोप्रारंड-पु (विकास) (विकास आवसारी आदिये) कर्मारक दर्दको तरह पह छाने के भीवर बने द्वय छोडे

होरे साने जिनने बायज एवं रून जात है। क्रमस्थापम-प (परिय) भेगी, बोटि वा क्रमडे अनुसार

t tet t क्रवरंजी-भी (११-१३ प्र मंत्र) प्रशिक्षि सरीप्र की गर्वा दरनुजी आदिका दिस्सम् कियनेको वही। असेर-वती र

मन्त्रपत्री-की • (रह्म के वस्तर) वह मर्नेनी या धाता-दर्श विस्तरे समय-समयत्र रारोश दुई विभिन्न वर्गाभोदा दिशाह हर एउटा अलगभगत ऋववंतीने जतारदर

निधा जाता है। मन्यसन्द्रिनन्त्री (११.नविय प्रानश) बाजारमे जपक्रप

बर्गमोस्रे एतेर एक्नेस्रे जनवास्रे सामन्य वा धमता ।

होज्ञाचिरेय-५ (सार्थन) दिमी बामने माथा बरनपर सरकारी या गरसकारी बन्नभारीको भीभीके हिमानस मिक्रनेशका मधाः

चंडदा-मुन्द्रि-स्त (राष्ट्रत) दिनी वनेश, यहिनाई क्रापेड्ड आस्ति गुरस्टारा या जाना ।

क्षविद्रभाषी सदस्य−५ (वढवेंचर) विषावसमा भारिका बहु सरस्य जो भएनी कम बार या कम अनुभवके कारण भवश प्रकृते भरेशाद्वत क्षत्र महस्त रहानके बारण प्रायः चेतको हो एंक्टिबोमें बैटना और विवासिय नाममात्र-

का हो हिरसा प्रदन करता है । क्रममोक-५ (बार्सन्य पार्टर) वह विश्वेष शायतमः जिल्ल पर क्षोर्ड इस बरन प्रबद्धने कथ ।

श्चिक्त म न्थी (परमरे) विदुत्-प्रवाह शे प्रमावित व अरहर दिल्में की दान वा छधरके भन्द किसी भागके आर-पार पर्देशकर इन्त्रियोजे बांनेका छानाविष निशेष बाह्याही काचपहरर अकिन कर हेती है पारवर्शी किरण । श्रासिद्ध-इ (रदार) चीर कमने, यक जाने या चीहे बादिके कारण परा हुआ निद्धान ।

श्रतिपूर्तिं—सी (रिपरेग्रंस) इति वा दानि पूरी करानेश्र

कार्य या दमके पदने की जानेवाली रक्षम ।

धयकारी रोग-५ (रेसिंग दिशीत) क्रमधः धीन वा दुवस बुरदा जानेशका रीय ।

श्चनुरक्षिका-की (फीस्ड म्हासेड) धेत या मैदान मार्दिमें प्रमुक्त होनेशका हुरकी वस्तु देखनेका वंत्र ।

क्षेत्रफल-प (बरिया) क्रिमी खमधेमको पेरमेवाकी रेखा या रेखाओं के मीतर आने इस समतकके मानको जाय। क्षप्रमाप-प्रसिक्त-स्त्री (श्रीस्थनक) धेनों स्वीव साविक्षी मार या पैनारस करते समय काममें आनंदाओं पश्चिम्हा

ध्रपरक्षक-म (प्रोरटर) क्रिकेट नेतुनाक आहिन्दे रोकॉर धेत्ररक्षणका काम करमेवाका श्रेणाही ।

धेंत्ररक्षच−प्र क्षेत्ररक्षा−क्षी (प्रीविष्य) क्रिकेट, वेस-पाक भादिके मेरानमें बादे बोकर परकेषान प्राप्त आवश गैरको रोक्ने, छाढने तथा चैंकनेशनके पास सीध देने भारिन्द्र न्हाय ।

धवाधिकार-४० (परिस्थियन) दिमी निर्जेष धेत्रके बा विश्वेष प्रधारके मुकाब सुनवेदा अधिकार ।

ध्राप्राप्तर्गहण-पुर (देवमेटेशन शहर होस्टिंग्न) नेटवारेके बारण शतका वा जोवका धीरेन्धारे प्रक्रीमें विभक्त शो जाना ।

धात्राभिर**धक-पु (श**पन) नागरिक संगरमका वह अपि कारी भी इकार्र इमब्बेट समय संधानिक्षेत्रके मार्व्याक्रीकी एए। द कामने सहाबता कर । धीरमस्टि धीरामय~प+ (वार्वर्ध सेन्द्रन) पान बनवाने

Ħ

श्री दुखान ।

गंडडालिक-वि (पार्रशास्त्र) पूरे समयतः न यकदर बसुद क्षा अंध में ही किया जानवाना (काम)। जी परे समय दे किए नहीं भाई समय ही दाम करने दे किए नियम्ब दिया यया हो। रामामेकी हुंबियाँ-की (देवरी विन्त) ने भरवाबी दुंदियाँ जा वास्त्राहिक भागरवदशारी पूरी करनेके किए पन प्राप्त बरनडे निविध राध्यके ध्रायानेसे जारी की जार्ने कीक

विषय । ग्रमित्र विद्यान-९० (विनरे-१४४) छनि व पराशीका विव पन दरनेशका विदान ।

ध्यक्ति-वसति-की (बाहनिय सेटिकमेंट) कोदे क्रोबने आदिकी किसी गानके यस वसे इब बोर्गी है बस्ती । सार्विश्च-प्रक (विकेश्यिक काटी) आहारामें रिश्व प्रव

मद्यशादि । पाप समविवरण-१ (इट राधनिय) नागरि**टों** के निर्पारित मानामे खायाओंका समान कप्ते नितरण ।

सारीय-९ (निधमिन) प्राष्ट्रदिक स्माप परावीमें पावा बानेबाका सूरम सस्य को प्राणियों के स्वारध्य पर्व अधि पदिके थिए भागस्यक माना बाता है (१६% दर्श भेर भान बाते हैं) पोषक दश्य, बोबन दश्य, बिटामिन । स्वाक्षंत्र-की (रायनिंग) दे समविद्या ।

श्रकन-प्रतियोगिता-श्री (इमांनेंश) केंद्री क्यान, इंडी क्रशन, गुतरंग, देनिस भारिमें माथ डेलेबाडे क्रशक राकारियों या व्यक्तियोंके नीय बोनेवाको प्रतिबोधिता । राक-पंच-प (नेपापर) धेकॉमें विशेषकर फिल्ट आदिसे विवाद रायक बीनपर अधिनिर्णय करमेवाका व्यक्ति। (एकरी) प्रश्नाक, बाब्री भारिमें पंचका काम करमेनाका । खसमध्यस्थ~प (रेफरी) गैर-यस्ता आहिके क्षेत्रमें धेका-विकेंदे वानी वर्षोंदे क्षेत्रका निरीक्षण करने तथा विवास वा अववेद उस्पन्न होनेपर पंच या तिर्णायकम् काम करने-

रोकाधार-पु (जे-मार्डर) दियात्रय आदिसे संदद वह भैदान वहाँ हाको भेंद-सम्म आदि श्रेष्टनेको स्पदस्या हो।

वाका, अमिनिर्कायकः।

ग

र्गम-पु (दक्षिम) येथी युक-पुरुषी आदिको गृति प्रप्रान करमेशका एक तरहका गांदिक साथव ।

भादेसत्य-वि (पेवरिक इ बाहर) (वह बुंबी आहि) विसदा व्यवा किछोदा देवेंद्य आहिछ गास बीनफर दिवा वाप ।

नाय । भाराध्यर-पु० (रागेध्यस) किसी व्यक्तिक सामके विभिन्न सन्दों या रागेक सार्रमधं महार वो पूरे नामके प्रके (पाव: क्षित्र वस्ताहरके क्यमें) किस दिन वाते हैं।

भाषास्त्रिति - (मीसम्ब) विश्वपर पूरे बस्तास्त्रस्त्र स्वाप नामके आरंबक स्वस् मात्र किए दिवे गये हों। स्वाप्तिस्त्र - पुरानत्त्र केर्र स्वतु वा दिसी व्यक्तिस्त्र किसीक वास परीवर या स्वापत्तक स्वमें रहानेवाका (स्वाप्ति करोड़ राम परीवर)।

साधिकोपिक-तु (र्वकर) किसी अधिकोप(रैक)का माधिक, श्रादांशर संशक्त आर्थ ।

भाभिमाही -पु॰ (वंची) यह जी कीई परीहर या अमा-नवकी वस्त अपने पास रखे।

भागम्य संविधात-पु (क्षिप्तिक क्रांक्रित्यूया) ठिछी राज्यका एता संविधाल जिसमें देख-काक्यी भागस्यक्रा-के अनुमार भागानीस परिवर्तन क्रिया वा सक्र ।

भानुक्रमिक-वि॰ (मैह्परेश) शिक्षमें अंशों विद्यु वर्ग हो। विमर्ने केंपे-वीप व्यक्तिकारकवा स्थितिका विवाहा गवा हो जो अनुस्थाने हो। अस्य व्यवस्था । भारता निकारकारिकारकार । स्थानेका विकासिकारकार

भाजुपातिक प्रशिमिधिस्य-पु प्रियोश्चेनक (ग्रामेडेशन) विभाजसभा भाविके सुतानको नह प्रणाको किछके अनु सार सभा नकोको सम्बन्धात हुए कुक ग्रामेके नजुपातसे प्रतिनिधित्व रिये आनेको स्वतरण को बातो है।

सालुपूर्य-५ (सम्प्रेशन) वरपूर्णी वा श्वाधिकीमा वर्ष ध्यतं, दूसरा वादमें, रम सिक्षिकिंग्रे व्यावात सिक्सिका, सनसम्

आपन्सहायकार्य-पु० (रिशंक वर) पुष्काण वा वाह भूगादि जैन संस्कृत समय कार्य और अस्ताव जनताकी सहायताहै किए धार्थ दिना नवा सार्यज्ञिक निर्माण-पुरुष ।

भागूच्छर-को (रिक्रस्टम) हे ⁴नमनिर्देश <u>।</u>

भापात-पु (इमर्जित) लब्दवात आवी हुई सम्बद्धी रिवति भावतिमद्ध माष्ट्रवस्ताः

भाषातिक भाषासी-दि (सम्बेश) मार्क्षशक भाषाक कतावे कारच वरण, मारूग मा गामने भानेपाला मणवा कतो संरंप रसनेपामा !

बकत एक राजनाका । आरिकिस सार्ग्य हार्गिके किया निश्त सार्विक सार्ग्य हार्गिके किया निश्त सार्विक सार्विक सार्विक सार्विक सार्विक स्वत सार्विक सार्विक

भागवास-पु॰ (विभिन्न) नावरशे भागर रिसी रहाई भीवर रहा जाना।

भाग्रवामी-वि (समिश्रेश) बाहरने शास्त्र किही वैद्यक्ते भौतर वस्त्र जीनेशमा है

मार्चत प्राप्तान्त्र (शहसक देश) है॰ अशहरीयन् । भार्म्यत प्राप्तान्त्र (शहसक देश) है॰ अशहरीयन् । भार्म्यत प्राप्तान्त्र (शहसक देश) है॰ अशहरीयन् । बायत-पु (रेनरेशिक) वह समानांतर बनुनंत क्रिस्सा अप्येक कोच समकीच हो ।

भागराकार-नि॰ (रेन्टगुकर) विसन्ध भागर भागः श्रीराहो।

आयम्बस्यक-पु॰ (४वर) विसी राज्यकी वा दिसी स्ट्रीट अवना संस्थाकी शाक्त्यामें वा किसी निभिन करदाह होनेवाली संसादित वाच पर्व लसी अवदिके संवादित अवदिके स्ट्रीतालक केसा, वयद। आयम्बद्ध-सम्बद्धक-पु (देसे स्ट्रीर) १० विवादिव-स्टर्स,

विद्वा । सामासका-प्र (इपोर्टर) विदेशींते वही मात्रामें मार

र्थमानेबाका व्यवस्था । भाक्षुच-पु (ब्रिमिश्र) किशा विश्वव कार्यक्रे क्रिश निरुष्ट कार्योग'का स्वरुष्ट किसे विश्वव अभिकार दिवा स्था

ষী। বিষ্টপ বাৰ্থক কিব নিজ্ঞা নিস্কৃতি আ ধৰা হয় কিন্সত বা আমিহনটোত্ৰা মুখাৰ স্পিকাটো। পায়ুক্ত অভিক্ৰৱা—ডু (কন্মান্তৰ আভিন্য) ট্ৰা বা বিষ্কৃত্ৰ বাহু পথিকাটো নিম্নত্ৰী নিবুক্তি কন্মান্তৰ বা

भागांन हारा की जान । भागोग-तु॰ (क्सीव्य) कीर्र विश्व कार्य संस्थ करनेटे किय मिलक व्यक्तियोंका संदर्भ ।

क्षण क्षणुक्ष व्यक्ति । स्वयं । व्यवं । व्यवं

भारतिहास कोप-पुरु (रियम्ट पंष) विदेश माध्यस्या भारतिहास कोप-पुरु (रियम्ट पंष) विदेश माध्यस्या नार्थसम्बद्धाः कार्यः

कारक्रिक विषय—पुरु (रिजर्म्ड प्रत्यस्य) व विषय के क्रिकी विशेष परिचेष विश्वयः क्रिकी क्रिक्स अवना रवर्षे अध्य वार्ष्ये, सुरक्षित रक्षा ये हो। सारक्षी—पुरु (एकीस) ४० आरक्षतः।

आरखी-व्यतिवृक्ष-पु॰ (नज्यनसरीह भाक दि वृक्षाः) पुष्टिके निराधिषीत नह निवेष यक वी सेंद्रर वार्तनो, नीदर हार्दिको आदिष्ठे स्रक्षित हो तिस्वे यह स्वरंदन विशेष्ठे भारकपुर्व्या वयदियाता चेटा वर का पुष्टिक कर सुन्दानी व रा दुश्यति भारक्षित क

आशोषकाथ-पु (हानः (मेंग) श्रीमारी मानके शह अन्यक्र रशस्य और क्रांक प्राप्त करना है। टेपीकर स्वास्थ्यकान ।

आहात्वनास्मान्त्रान्त्रान्त्रीक्शीत्वा) वे 'स्तास्म विनातः । आहोत्वर्षः, आहोत्वरक्षकः-तः (वार्वद्रोत) (नाशकतःमा तैवार विवाद द्वारो वतः तत्र विनाते विना स्वस्मितः कनन वतः आहोत्रोद्धाः स्वादः दिवा रहणः वे ।

भाव तामापी-पु (दाश्योतीस्त) दश्ये दिवयान मार्थका (नगी)यो मात्रा वपक्षानेशमा यत्र ।

भाजीयामिति—की (दर्शतामेरी) भीतिक सालका रव भग को शहुभ-ककी लाईग्रामे र रव रशाश है। भाजाय-तु (रिवरेशक) कीरश करना ना रक्ष भव गामचुंबी सबन-पु॰ (स्वारं क्षेत्रप) बहुत उँचा महान वो भावादको गुठा दुवासा जान पुने, कार्यका । गामक-पु॰ (सराजरेंग्र) वे॰ किसाबात ।

पावर्त्रवादाने चु (रिप्रिक्टक) गर्मात्रक विद्यातिक। प्रतिपारतः भग्नवस्य सामर्थन बरनेत्रका।सेनुक राष्ट्रः समिरिकास कर रावनीतिक वस को स्थापिक संस्कृत सर्वे बेदीन प्रक्रिये विद्यारक।सम्पर्क सामा स्था है। रायनक-चु (रिप्रोटर) सुमार्थ्य प्राप्त मती या परीक्षाते प्राप्त भमेन्द्री कमते रक्षकर भोगनेत्राका स्थाकि या

गणमा-पु (अधारेश) है 'देखा । गणमान्यस-पु॰ (असारेटेश) है नेवाबाक'।

रामपूर्वि -धी॰ (कोरम) सरस्योधी वह सम्मतन निर्धारित सम्बद्धा की किमी समाद्धा कार्य संबाधित करमंत्र क्रिय अजनमक मानी गयी हो।

सहिरोधः सस्परोध-पु॰ (१०७००) दिन्ना वाणं आदि में पेती बदिन दिवति या मानावा नरफा हो जाया जिससे माने बद्दन मादिकी सेनावना हो न जान पहे जिन।

गविधिकाम-पु॰ (डायनीयनश) वस्तुओं वा एस्वीके परि-धील डोनेके कारमी भारिका विश्वयन करनेवाडा छाछ । गर्मिश्च-पु (कारवेष्ण) यह तर्षकी धडती विश्वये यरा

्रहुमा पेचा रेस्स निदाला जाता है । गरेपक साम्र−पुर (रिसर्न स्थानर) यरेपका-कार्ववे क्या

मुभा छात्र । ग्रापेपप्र-को (रिवर्च) किसा विश्वका विश्वेष परिभय और सारमानिकेसाथ कथ्यन्य तथा प्रान्नीता अर्थ-का ।-धास्त्र-ची॰ (रिवर्च इरिटन्स) सम्बद्धक सार्थ-

योज आदि करनेका स्थान । शाहरूम्य विज्ञान-५ (शेनशिक खर्य) गृहस्था ह अवो-

(रहारे बनानाः करते होनाः मार्थः) छ विनयन करने तका बनको द्विपा प्रशान करनेवाका साधः ।

बनको विद्या बतान बरननामा साध । गुरुपार्वेद (विश्वबन) - इ. (नेद्वार) विश्वबन्धे याच्य

साबीका निक्रनेनिहैं। सुद्धाकी बादम-धी॰ (भीष माक सीमधी) दे गोपन संपर्ध ।

सर्गे चित्रमा २-मोहिया-श्री (के.स्टरकेट) गुउन्स-विदेयमा १-मोहिया-श्री (के.स्टरकेट) गुउन्स-गुड्यम-दुर्ग (केस्टर) व्यान श्री विद्यान-वर्ग ।

पुरपति-तु (शर्मन) दे तामानिश्युद्ध । गृहपरिभाग-तुर (विविधेन) महान और प्रवर्ध पारी नारको होसाह भौतरहा एक, गृहाचेत परिक्षा । गृहसदी-तु (श्रान विनिस्स) सामके भौति मानको-

(शांतरपा नारि) को व्यवस्था करनेसाथ मंत्री । मृद्दरक्षड-५ (रामगार्थ) गुड वा व्यास्ट मगांतिहे समय नमर भुरते व्यक्तिसे रहा करनव को नार्यास

नेनाम ६६१व । मृह्यास्त्र-५ (बोन्सिकशांस) रे 'गार्वस्त्र विद्यतः । मृह्यास्त्र-५ (नेवर) वेदश्ले विद्वेशक धेक्ये वह व्यक्ति वो वस्त्रेषापदे सम्बन्धे देर वृद्धनेश श्राप्त करे। गेंब्रुयाबी-स्त्री (ताहिया) क्रिकेट केली (स्टेस्ट्रेट सरक) मेंस् वृद्धनेश दिवा।

वीरकरावय—की॰ (श्रेष आद्र सीक्सी) ध्रीकी ग्री इस्स छरकारकी गीरतीय शेष्ठ ग्रह्म न कर्तके भरते वरमक्षके समय भी जानेताकी द्वारा ।

गोकिका-ची॰ (स्टान्यून) इश आदिक्ष द्वेदी द्वारो। गोकिसकार-वि (स्टान्यून) वा ठोटी थोडीहे इसे हा छोटी गोर्श नैसा।

मंबागारिक-पु॰ (मार्गिदिवन) मंबागार(पुरत्याक्ष्यों संगुद्धीत मंबीकी अभिरक्षा तथा यसके भारान प्रस्के संग्रहीतको स्वतरमा करनेनाला स्वर्धित।

प्राह्मकांच प्राह्मकान-पुर (रिसीम्स) देशकोन, होशे चा तारकी वाणी अधवा रहीन प्रश्न करनेशाध्र दश-वह वंत्र या वंत्रका मान निक्को छहावशाचे ब्राधी वाणे व्यवना रहीन सुनाते हैं छहे। सर्व-पुर (निकार) दे देशवेगे।

घ

विविज्ञानुकासले-वर्ग (१००६ शहर) प्रशेष कीत निष तरह पूजना है वत तरह दक्षिणानच रूपने । वहकर-व (केरी वार्क) नाम हारा वा प्रकास नमें

पार करने वा सामान के जाने भारिके कार्य प्रमाप कर्मनेनाका कर ।

वनपर्यनीय-नि॰ (शबिननिष) (धनसे) द्वानेस ने वद्या शब्द दा नाव ।

यमक्पंतीवशा-को॰ (मैडिनरिडियो) दिशो ग्रेस्स वीरतेवर पच्या होस्ट वर्ड मानेस ग्रम । यमामूच साक-पु (सर्वेश्व प्रक) बनासर ग्रीस वासना

िला दुवा धावनसर्थ । कारी कार्य-व (साधि कार्यिक सेका असेरो कार

भारी मार्ग−९ (पाने) पश्किचे च वेचर्न नहीको पाछ - माहि हारा पनावा प्रचा धेकेने प्रच १

वारंका आयण्यक-2॰ (श्रीस्टिर वध) यह आध १९९६ विग्रेसे आस्त्रों अश्री अपर परिव रिशाना वया हो (और रिग्रेसे अनुव्यन्ति परिक सुर्वेह विद वरहार्कि आर्रिटा एकारा न विना मना हो, कोई स्टरंप न हमा यथा हो ।

चिर्त्यीक्त विद्याव-तु (जारोध्नेन) करदी थार वर्धे तूरे विश्विचीचो गरावशम बाध्ययं उठनेराजा रिश्वना चिर्मि—धा (कृषी विद्या सा वीरदा राजा ग्या घीरच विद्या भरा जानेशार होशा है बोर जा तुर्ववश्रापुर्वक रहजाराज यम स्थला है, दिस्सी ।

पुजनशीकता-धीर (धारश्चिति) विधी प्रव १शर्वके किही रहूर (बा अन्त व) १११४के पुरुक्ति करेके .हव १

पूर्य-प्र (सन्दर) वह श्यूक (या दव) वरावें वी दिनों तब वरावें बाक्वेल बसवें विवद्रक पुरुष्टिक जाव केंद्र वपद दश्य वीजे बाक्वेल पुरु व्यक्त है।

धाळ-४ (होश्यम) देश प्रस्त । बाक्य-दिश् (ग्रेश्यम) देश प्रस्त । पत्ना कि सुनक्द तियानेशाना वर्ध निव्य का रख सदस सुनक्द किया गया केथ या दशरता मुजिन्म दशका भाकाक्षयिष्य-५० (दोशायाच्ये) राजावनिक मसानीस वैशाद किन यन विधेष परभवर सकासकी प्रतिक्रमा दोन-स उत्तरनावा निव्य १

सं उत्तरवाण भिषा । भाषत्रम् = (१०११मेश) भृति गृत्तीय आदिश्वा दिग्गोमें वर्ता जाता दिवानका दिशोक किय पृत्ति श्वादिश कोर्य हिरसा निपोरित बदना (मृत्तिका = म्यानामें आद सह। गुरुद्वका = म्यानीहे आद (सन्)।

सद्दर्भ (उद्युक्त — प्रशास आक रचन्तु । भाषळ्य-पु (रकाट) यह निश्च कोई वस्तु आर्थनमें दो परो हो। भाषत्रेक, भाषार्थिनिक (रेडरिय) वार-वार वोने वा

दिया यानेराता (ध्वव, अनुदान १०) । भावनर्विषु-पु (श्विय शहंश) धीरनधे या विद्यास्त्रमर्थे निर्मादद परिवर्चन दर देनेदाकी विनाद रिपर्वत वा द्योरे

महस्त्राचे परना ।

भाषाभिक् भाषामी नि (रेकिटेंट) उसी स्थानहर रहनेराल (भारासी निस्तिक अन्यारक आहि) ह भाषामी प्रतिनिधिन्तुर (रेकिट) विस्ते अर्थ रहांव राज्यों दवादी हस्से रहनेशाल अन्य देशका प्रतिनिधि ।

भाविभाषम-पु (सर्वेद्यः) दे बद्धावन । भाषाबाद-पु॰ (शाधिविश्यः) प्रावद वस्ता और प्रत्यद दश्य रोवचे भाषामधी रहि स्थला असा बच्छी वार्षो

भीर बच्चे परिवामीकी बादा करनेका स्थान । आसाबादी-वि (पाधिविध) छनेता कच्छी यात्रों और

क्रस्तायमय परियामीकी बाह्य करनेताथा । आञ्चपत्र-पुरु (१९१मेस केरर) शीवनापूर्वक भेजा जान-बाह्य पत्र वह पत्र जो पदासम्बद्धाकमर)में वर्तुंचले ही हर

कारे हारा तुर्रत यानेवानके यास भव दिवा वाय । भाक्षकिपिक-पु (ररमोधाकर) आहुकिदि(शीवकिदि)-को सदावतभ्य कोर्र भाषण या वोकासुनावा क्या सवसूत

शोपतापूर्वक विश्व केनेशका कर्मनारी (व्यक्ति)। आसञ्चान-पुर (रेडनेसेंशे ने कीण यो एक श्री निदुषर एक यमवनित्र भुशक्ते रोजीं और को हो।

यक वनवानम् भ्रवाक राजा आहं वन हा । सारापन-पु (विरिटनेग्रव) दे अभिराज्य । आसम्बरी-सी (विरिटनेग्रेट) दे 'अभिराज्य ।

आसियना का (स्थापकरा) है जिससावना । आसिया-वि (अवस्थ) हुने जुनाने आदियी नन्तीके विद विश्वपर हुन्ता कर किना गया हो।

भारोध-पु (मर्थभरेर) कर्न वा सुर्योश आरियो वस्त्रीके किय स्वावाक्ष्मको आधास किसीको संपर्धिपर अभिकार किया जाना, कुठाँ।

भासतान-पु(भरेपेन) कुछ समवके किय रथित कर देना वा कागून करना।

ध्यासारक-पुं (मिमोरिक) वह रथना, कार्य, भवन रावादि किएका कर्य किटीको बाद बनाने रखना हो। कडी हुई बार्चे आदिका रमरण दिशानेके किए किसी अभिकारोके पास मेना एका एकडा।

धाइतोपचारी एक-पु (विवृधेसकोर) मावकीका व्यवसर करनेवाके वापटरी, ईपावंबरी वरिचारको आदिका वक परिचारणवक । आहार विशास, आहार-साख-चु (दार/८४॥) वह विद्यान विशयं साथ वराधी है जुल गोरी यान योप≼ वर्षी, वर्षीदरम आदिका विदस्त हो ।

आहिंद्रम्~पु॰ (नेप्रका) नपर हाएके नमनतव रूपर उपर भरकता नेकार मुखना आनाराग्र(।

भटकता चकार पूचना भागरागरा। आहुत दुर्जी –की (काड मध्य प्रीधाक) क्यो कावरण क्या पुननर संभाकते छार हिरनेड रोते भीण काय। आह्याप्यच-पुन (धर्मण) स्वायावयमे उपरिवत होनेडा कार्ष्य प्रमण !

3

इंद्रियार्थयाष्ट्र-षु (शिद्रार्थक्वः) यह शिद्रांत हि इसे एव तरक्वा वास विदिश्व हारा होनेनाचे अनुसन्धे हो साम होता वे शिक्षनराहा रहियोची तृतिको हो नीरतका सर्वाच कृत्व माननेका शिद्रांत ।

इरणायम - पु (रिक) मृत्यु के पहल किया गया यह पम बा प्रथम विभन्ने और स्वीक यह इरणा प्रकट करता है कि मेरी संपंक्ति एक प्रकार रहा रूप स्वास्त्रीको हो बाय मेरी साहित्वा वर स्वानगर रस उनने की बाव सर्वाह क्षेत्रीवनस्वा।

- 4

उर्चत(उर्चित)चाता∽९ (नर्देश भद्धाः) ३ 'बनुसंद धाता ।

वर्ष स्थापाक्षय-पु (हाईकोर्ग) दिशो प्रदेश या राज्यका प्रधान स्थापाक्षय ।

उच्च सद्य — पु (अपर हाउन) पन, विधा वय आदिही दक्षिते अभिक रोप्य वा अनुभवी माने जानेवाके सदस्योति विभिन्न सदस्य, दिगीय सदस्य।

ज्ञातुक-पु (दार्श कमित्तर) राष्ट्रभंडकचे दिसी एक देशका रामदृष्ठ यो मंडकचे दिसी अन्य देशमें अपने देशका मंत्रिनिय वनकर रहे।

उरस्थम-(एक्शेयम) १वना खेळानाथा भौताना कि बदान भा बादे।

उसमर्थ-९ (हेरिटर) दे मूक्ते।

बच्चम सार्यापम-पु ((पस्त्यक हिन्द्रियेश) व शास्त्र पत्र या मिलपृथियों यो किन्द्रम सुरिधित सानो बाधी वो तथा वितर्के दूव वानेका समित्र कम द्यतरा दो। स्याप्त सार्यिक संस्थारें स्थापारी आदि दनमें स्थाप स्थाम। श्रीक्ष संस्था करते हैं (यसम मेणके सार्यापन)।

बक्तरिविध उक्तरिक्षीय-ि (पीस्ट टरेक) जिस्तर बहरूकी विदि बाकी गयी हो (वह प्रदेश महादेख मादि)। —भागारोहा-वु (पीस्ट टरेटेन देक) वह भागीय विकास वाहरूकी विदि बाक थी गयी हो लगा विवास प्रशासन हो तुर्व ज बीकर ज्या विविधी ही या वसके बाद समय हो होई।

उत्तरभाष्य उत्तरभोष्य-वि ((रवर्धमा)) वो नाइमें प्रभा मानुक कर्मात दिवा वाया वी प्रभव हो बावे पर भी द्वारंत परिया जाकर हो अवित समित हो बाने पर मा मुख्य हो बाने वर हो किया यह द्रक्षप्रार्थ (पानी, ध्रवधार आदि) विध्वे दाक्ष्यथ कार्य रक्ष्य (या द्रवे) प्रार्थ दिक्षकुकु कुछ विक्र जाव । ग्रीचिकस्य न्यु (आरहान) देश नीकार्य ।

ঘ

पद्माम-पु॰ (निहिदेष) एशारी या माळ काने ल नान को कार्र मो ५६ी मानी निममें इतिय छव हो। पद्मसिद्धान-पु॰ (तार्डोग्साक) क्यानीकी मादश्र कवे पुर धोटें। पद्मन किये वने विजेश प्रकारके कावनेते बहुत को प्रदेशों पात्र रनेवाली मंत्रीन।

च्यानुक्रमस्य-स॰ (रन रोध्यान) चत्रकीत्तरह बारीबारीमे, दरके बाद कुछरेके समुचित अनुक्रमम ।

पत्रभूत-पु (शहरता) वह नश्म हो पार सरह रेग्राभीम पिरा में [चया क्रिमचे पार काम भी हो]। सरमारपाइन-पु (शेंक माज्यता) अधिकानम मामाने

दिया गया अस्पादन् ।

चरित्रवंत्रा-भी (केरसर दुन) देश आवश्य वंत्री । चर्मप्रसाधक-दिश (श्वित्रदर्शिक्ष) चतु पश्चित्रके ज्याई या साइन्द्रे पृथ्क कर ज्याने भूषा आरि भरकर स्त्रानं या श्वीद्वरणा क्य देनसे काम करनवाशा । चर्मद्वीपण-पु (श्वित्र) दिश्व हकारक शोक्षीत्र सकसर

समझाप्यन प्रतिका प्रतिका प्रकारक पाकाल राजकर वा अन्य प्रतिका द्वारा प्रमुक्ते विद्याना, मुक्कायस बनाना। प्रमुक्ताप्रनाहसून्य (स्त्री) वह स्थान या स्रारमाचा

वहाँ विश्व प्रक्रिया हारा चमहन्त्रे छिशाने मुकायम वनानका काम किया जाता है। चर्मोदक-पु (छिफ) शरीरके धमहे वा जसम

रायारित निकरचेवाका वक तरक्का क्रमीका प्रार्थ, क्रमीकाः क्षमिकार—प (करेंद्र निपासित) पैकक प्रकृत सातने

चछनिक्ष्य-पु (६८ँड न्यिकिट) पेड-६ चण्डो छात्रने समा को दुर्द रहम । चह्मार्थ-पु (६५छो) यह विद्या या सुन्ना विद्या प्रशेष सा समाधार विरोध होता समा हो, भी यह स्थापीके

या ध्यवदार निरंतर बीता रहता थी, भी यह भारभीके हामने दूसीके हायमें बाता रहता थी - यम-पु (कॉसी मीट) शिवरेकी तरह स्ववद्द होनवाकी कामकी पुद्र। ब्रिकेम पु (कोसीनीटिंग) (रेस्थापी वारिको) यकाने बाका प्रेसन।

नामुक्त मधाह-पु॰ (शर्श-विटमेश) वह बवाह निसम्ने स्वयं किन्नी पटनाको वरित होते हेंग्रा हो। बाएकर्ज-पु है (कार्ब) त्रीवा।

वापकर्म-पु ६ (६१४) वाचा । भारकर्म-पु, वारम्परसा-को (परिवानित्र) वास्त्री सा काम जासूम निद्ध कर कमछे काम केना । चित्रविकृति-को (भाषार्थक्रकेस बाक माहक) विश्व

वा मनका क्किर वा द्वति। मानस्क स्तीवता । विज्ञसाखा-की (स्ट्रियो) विज्ञसार, चीयोमाचर वादि के काम करनेका वाल (१ र्गायाका) ।

क्यापार- व. (यक्षम) वित्र कीरों नावि सुरक्षित कृति राजनेकी कितान वा मोटे प्योक्ति योको । क्याबायन- प. (टेनेविट्य) ठोसके क्योंका परस्पर इस रार (वित्रके राजा कि कर्ने पृथ्कु बहनेके क्षिप वही क्षांक्रिकी मानस्वकृता वही।

चिरमान्य, चिरमन्मानिश-(४११म मःतर) ५६७ दिनीसं बिसकी मान्यम रही हो, बिसको धन्मान होता आया हो ।

चिरारागुळ-पु॰ (०४६ आवर) दे 'क्षेत्रापुण'। चिद्यांकम-पु (वेद्युच्याव) क्रिसी रचना, बारव, प्रस्तर आर्थि विराम-चिद्र क्ष्यांना (बर्धी आवरयक्ष्या हो वहीं उन्हें निव्य क्षारो।

चित्रोक्ति—वि॰ (मे]पदर) (वह गिलास, भादि) विसप्तर नापके क्रिय निष्क कर्म दूर हो ।

नारक एक एक का पुर दो। संस्थान पुर (मार्ट्सभी) यह रथान नहीं सुर्धशाओं आदि संस्थानकों के एवं प्योदकार या परीक्षण द्वारा भूरतुका स्थाप द्वारा करने के उद्दर्शन, कुछ समयद किए भेज दिसे जात है।

शुहरी-श्री (द्विप) कावन मनिका भारिका प्रदश् रसनका भागा, विश्वप ।

चारक-मु (दिन) वह अधिकारी हो समझ वा विधान समझे अपने दक्षक शहरवीं द्वारा 'समानि अनुसासन बाकन कराने, वस्ती वर्षायित होक रखने, उन्हें आवरपक स्वना देन करें बाद देन के विश्व मुखने आदि के स्वत्यस्थाय करता है, समेदक!

चीर्योग्मार्-पु॰ (स्टप्टोमेनिना) पुरा स्मना विपा रखने चो रप्यानि ।

चयवन पु (कोडेन) चूना उपस्ता। - एुट-सी० - मोक-पु किशी हद परार्थकं भू वासे, दह जाने आर्थकं दरवमें दो बानेदाको एट।

Ð

छञ्जनास-पु॰ (स्प्रांतिम) कोई सम्ब या पुरताकारि क्यत धमन क्यत द्वारा गृहीत बनावदी नाम।

छञ्जबुद्-पु (श्रम फारर) नक्षण छन्।हे दिमाक युद्ध। छञ्जायरम एकायरय-पु॰ (देनू-स्व) शतुका प्रोदेने बाजनके किए निवानों त्रापों आदिया नृश्वोत्ती परिवीं, भूमपरक आदिते बढ़ देवा।

छवापग्र-१ (प्रस्तर पेपर) तक भादि छाननेदा मसिछोप जैसा दागन ।

क्ष्म-इ (फिक्ट्रेश) वह इव जो छवादम आदिको सहा-वतास छनकर नीच आ चाता है।

छक्षयांजन-पु॰ (मैभिपुडवन) चतुर्राते अववार्य वा बनाव्या कप दे देनाः देशी थाङ घडमा विस्तत कोई वस्तु ममेनुकुड क्य प्रदण कर छ।

णावमायक-पु (भानिस्ट) वधान्य ममुख विवासी जिसका वर्तन्य वधार्मे अनुसासमध्ये रक्षा आदि करना केंद्रा है।

छात्राभिरश्रक—पु॰ (बार्डन) दिसी विदासन, छात्रावा-सादिका अधिरश्रका छात्रीपर निमरानी रचनेवाका दिशा-विकारी: गृहपति ।

खाप्रायासीय विवाधियाख्य-पु (रेजिबेस्ट मूनिव-छियो) वह विश्वविद्याख्य निष्ठके विश्वाबी प्राप्त समीरस्य धावाबाओं, विश्वविद्याख्यके बातास्त्यमें ही रहते हों। ध्याववि-धी (क्या) हुने, येक बाविको वह प्रतक्षे तक मी और वा बाताबीके करत हा बाता है। इतकासः इतिकास-पु [अ॰] दरका सेमा । इतकाल, इतिकास-पु [म] एकसे इसरी बगह बाना इस्तांतरित होना। (बाक्यारका) दूसरके कथोर्ने बाना। मरना, मृत्यु (करना, फरमाना)। -बाबवाव-प्र संपरिका (रेइन, क्व आरिके अरिके) दूसरेके पास जाना। इंत्रसाब, इतिस्राब-पु [४०] पुनना छ.टनाः चुनावः ससरे प्रतियोनीके किसी कागवकी भागाच्या नक्क । इंतज्ञास इतिज्ञास-पु [अ॰] प्रवेत करमाः व्यवस्थाः चपाव । इंस्क्रासी, इंतिकासी-वि॰ [अ] प्रवंश-संबंधी।

इतकार इतिकार~पु॰[ल] मतीका करना, राष्ट्र देखनाः प्रतिका । इंतकार, इंतिकार-पु [अरु] विदारमाः चितित, प्रविध होनाः चिताः, परेश्वानी । इतहा, इतिहा-सी॰ (अ॰) संत समाप्ति सीमा ।

-पसंद-वि० व्यक्तिकारी, पत्रसहोमिस्ट'। सु० -कर देना-नित करना इत इर देना। इतहाई, इतिहाई-वि [#] सरिषय, इर व्येश्वी।

इतिबर-प्रसिश्वि दिशापर । इन्द−भ [ज•] पास, करोव पर १ + पु दे 'इंद्र'।

इंबर--पु॰ दे॰ इत्र । इत्व-प्र एक इका करे 'र्ड्'।

हिंदारा−४ क्स । हैं तादन – प्राप्त कता और उसका फरू को देखने में संदर पर स्वादम बहुत कक्ष्मा दीता वै (यह वित्र है, पर दबाके काम जाता ई। इंदावन । इदिविर-प [चं] भगर।

इंदिया-पु [अ॰] राय दिवारः रच्छा । इंदिरा-का [सं] स्व्मी; शांति जीमा; मादियन-कुना प्रदारची । -मंदिर-पु० विभ्युः शोक कमक।-रमण-

मु विभाग इंदिराम्प्य~पु सि॰] क्यमेका निवास शेक क्रमक । इंदिवर, इंदीवर इंदीवार-पु॰ सि] मीन कमछ। इंदीवरिणी-ली (सं•) उत्पक्तिमा ।

इंदीवरी-सा (सं•) शतम्सा। इंड-९ (स॰) शहमाः यहको संस्था। इन्छ शृगशिस

नदन। –कसक−तु सितीरपरः। –कर्−पु पह किर्म । - कका-स्ती॰ श्रीमाधी कका। बस्ता श्रीकी। सीमकता। -कस्तिका-सी केंत्रकी पंत्रकी कुना। -कांत-पु भेरकांत मनि । -कांता-को राजिः कतकी। -किरीट-पुदिन। -क-पुतुन ग्रह। ~कनक-पुस्साक्षकिकि। -आ-सी सर्वदा मरी। - मंद्रम - पुत्र-पु पुष शव। - पुरिपका-सी कश्चितारी । -भ-पु॰ वृत्तरिसा मध्य । -भूपण्-भूत् −मीकि,−क्षेपर−९ क्षित्। −मकि−९ नहकीत मनिः मोतो । -रस-पु यातो । -रेम्बा -सेखा-सी भंदमस्थी बस्ताः अवृताः गुटुकीः सीमस्ताः । -सोहकः-मीड-पु भौरो। --वदमा-नी पंत्रमुसी। एक वर्ण क्ष । - बस्त्री - सी सीमनता । - बार-पुज्योतिक का एक घोषा सीमकार । -बास्तर-पु सीमबार ।

इतिकास-इति −वत−५० जोद्रावय वत । इतिमा-पु० दे 'इतिरो'। **इंतुक**—पु• (सं•) भदमंतक मामक **द्**य । इंद्रमती-स्रो [सं०] पृथिमाः सबक्षे पही। इंद्रमान्(मत्)-[सं०] पु॰ अप्रिः इंद्रक्तसम्ब-स॰ [स] गॉगनपर; वद गॉंगा बाद । बंबर-पु (कि) पुदा। इंब्र-पु॰ [सं] देवरावः अंतरिक्षका देवता। वर्षाका देवता (देवताओंका राजा दोनेके कारण दंतको देवराज वा सर-पित भी बहते हैं। यज पाल करनेसे बजी या पजानुष मी इसका नाम है। इसकी पत्नी धनी भीर प्रजान नाम कर्यत है। इसका बाइन गरावत है और रवके बोडेका नाम है उच्चैक्तवा । इसमे बुजासरको मारा था और पर्वतीके पंच काट दिने के, इससे कुकहा और पर्वतारि मी इसका नाम है) मेच राक्षा, अधिपतिः भेष्ठ, प्रधान व्यक्ति बादि (बबांह्र); धाहिना कॉएक्क्रे प्रतकी; रात्रि; एक बोग कुटक बुक्षा एक बमस्पतिजन्त्र विषः छन्पन संदक्षा एक मेदा १४ की संस्था। बाल्मा बंद्रहीयका एक माग । ~कर्मा(सैन्)−पु॰ शिलु । ~कार्मक−पु• दहवतुष् । -कीक-पु॰ मेरर पर्वत । -कुम्बर-पु॰ पेरावत दाओ । -कर-प्∘ एक पर्वत । -क्रप्ट-वि निमा बोदे-बाये अरपेत होनेनाका । —कीशा,—कोपा,—कोपश्र—पु पहनाः मचानः छक्या । -शिरि-प्र महेंद्र पर्वत । -ग्रह-प्र॰ बृहस्पित ।-गोप,-गोपक-पु०वारबहुरी ।-चंदन-पु इरिकेरन । -काप-पु इंद्रवतुष् । -चिर्मिटी-सी कताविश्वेच श्रीवंचना । – छंद(स्) – पु एक इकार माठ कियाँ(मोतियाँ १)का कार ! - आस-पु श्वाद , मबर वंदीके काम, दायको एकाईके काम, वाकीगरी। अर्जुमका पक कका एक रणकीशक। −बास्टिक−पु रहेवाक करनेवाला बाद्यर वाजीयर। -जिल्-वि हेर्द्यी बोवनेवाका। पुरायकका नेटा, मेबनाय। नशी-पु [दि•] दे० 'इडवर ।—तुद्ध-पुरुदे• 'इड्रहम'।—तुपस-पुनावक्रीका गर्वनः एक दानव । —श्रुष्ठ —श्रुमकः —पुन वर्षा देश दवामे उदमेवाना स्त । --दमन-पु॰ बादमें मर्गाके पानीका किसी कर, पीक्त का कुंद्रतक पटुँच आवाः मेपनहरः नागाशुरका एक नेटा । --मृद्य-पु॰ देवदासका वेड । -ह्रम-पु॰ वर्जुनका वेड । -ह्यीय-पु॰ अंतुहीपके ९ घोडोंमेंसे एक। -धनुष्-पु बरसातमें भाकाशमें अवसर दिखाई देनेवाका संतर्गा अर्ज्युच । - व्यक्त-प् र्वत्की पताकाः भादराष्ट्रा हादशीको होनेवाका रहका पुजन

विसमें देहको पताका अदायी जाती है। -नीस-प

मोक्कोत मनि । -- नेप्र-पु॰ इत्रदी मंति एक हमार्सी

र्शस्या (रहेको भौदोंको विनतीरे) ।—वर्णी —पुरपी—सी

क्क वनीवकि, करिवारी । −पुरोद्दितं∽पु दृहरपति ।

−प्रत्य−पु परिवेकी राजधानी को खोटव बन जनादर

वसायी गर्ना वी (वसक्र सैंटबर आजनस्की रिस्पेसे कुछ

दी मॅक्षपर मिक्षप है)। −प्रहरण-पुथन्न । ⊶भेषत्र--

पु सींह्र ।—संहरू-पु व्यविषयित अनुराषात्वरहे सात

मसत्र।-सन्द−पु रंज्यो हृष्टिहे किए किया कानेशसा

एक बढ़ ! - सब्-मु बहरी बबारी महस्त्रिको होने

रंबय-हर बाना एक रोग । "सह-पु वश भग्नु । –० कामुक-पु• हुन्ता। -यम-पु• मुददरता की न वंत्र हो। -समाप्त -सुस**फ-**पु ग्रिस्ट शास हात जानदा रीम गीवायम । नमाकनपुरवर्गः नवंगानमा श्रद्धवनश्चानमाक सी यद्भवर्षश्च । —वपू—सी शेरदद्धे । —वस्ति -वसी-सी पारियात । -वश्ति-सी पैरहा मांसस भाग ।- वार्याणहा,-वार्या-मो॰ इंहायन ।-ब्रह्मा-सी॰ पफ तरहक्षा जा। – प्रत-पुराशका प्रवाद समृदिसायमने इंडका अनुसरण करना औ जरू बरुगाईट मंपूर्ण प्राणियोंका पीपण करता **दें (~शक्ति-मी०** इंडायी। -बाजु-पु ब्वाग्रस प्रहार । -बीम-पु॰ व्यक्त परित । -- सारथि-पु॰ मातन्ति बायु । -- सावर्णि-पु॰ बीन्हर्वे मतु । - सुन - सुनु - पु - प्रवेतः कर्जुनः वान्ति । - सुरुमः, -मुरिम-दुर,-सुरा-रो विद्वार वृद्ध ।-सन-दु राग पनिदा "क गाम ≀ ⇔सनामी – पु कार्चिट्य। -म्सास-पु• ।ह्यी प्रसुप्ताके निव दिया जामेशका ण्य बद्दा इंद्रक्का एक स्थोत र **–का आ**गादा–१४गमाः माब-(मदी न्यूर जमी हुई महदिन । -का परी-अन्तराः मनि र भतो सी। इद्रिक~पु[मं•]समागृदः का कमरा। इंद्रमस्य-पुरु [मंग] देश 'रंउ'मे । इंद्रा−मी [सं] इंद्रको पतो प्रभी इंद्रावस । इहामिथम-पु [सं] दिम। इंड्राजिका-मो॰ [गं॰] रंग्युरिम निर्मुटी । इंद्राणी-म्ने॰ [मं॰] इंद्रशे पत्रीः युगीः वाशी अक्षाद्रो हुतती अही हत्वाबधी। मीत सिंह्यास हं नावस । **हेहामी॰-भी० दे०** रंगारी'। इदिरमुख इदिरायस्य-५० (मे] विष्यु । इद्विश्यम-पुण्य लग्ना जिल्हा एक बत्त्वा द्वारा ये और दबाके दाम भागा है। इंब्राह्मय-तु [स] पत्रः ग्रंशतस्य । इत्राचमात्र-पुरु [मेर] सरस्यन । इम्राम-इ [1] भोग गुपथी। हेश्रासन्न-प्र. [मं] १३वी गरी। १३९१ । इंक्रिय-मो [नं] चरोरने दाम और नमेक शावन वय मेंग के भरवय जिल्मे वहिनेगण्या गोप दीता का शारी रिक कियार क्षण की । है-(दा किय-और काल मार जीम और लगा। वसेंद्रिय-इन्य ब्हर्स कर ग्रान भीर प्राचा बुक्क गान सनको भी शीव सामने हैं)। रंडियरो एक्ति बाँवै लिटेंद्रिया बोबनी रंपना।-साचर्-ति की बीका दिलम काने कोग्य की बाग्या देव। अ इदियोदा स्थित : - प्राप्त - वर्ग - द्वा वी वाली वी बी समाह । - जिल्-नि वर्णाये ने बार में स्थानेवाला विनेदिका -निम्नक्-पु र्वेडिक भीनामाभीकेलाने बा अंत्यमे रसता। -बुद्धि-मी॰ र द्विवे दे हारा बीने-बानी अनुभूति । -बायन-वि १८ वीरी क विश बानसम्बर्ध - बाय-५ इति हा निमन्द होना ह -पृत्ति-भी रविशेश भवरत। -मुख-त विवय हत्तं भेग । नश्चाय-पुरुशं धेनी लेगुण शं धेनी र्दशी दिवस्त्र, प्रांत म हेला। प्रश्नीय प्रपंत १

इंद्रियागीचर-वि [६] अ-५। इंद्रियामीम-विश्वभित्रे शन्दीका विषय स होते क्ष्य Mag I इंद्रियायतम-पु॰ [गं॰] वं पत्रा निवनसः स्टेंहर। इतियासम् - दि] रहिस्तुसः दिश्यकार्ये कामकः। र्च ब्रयार्थ-पुरु [मरु] स्मि रहिदशा स्वय-एक कर्न रूप रम नंबर्धेने जीवे । -साविकाप-द्र० प्रदियेन्द्र अपन विषयके साथ स्वेष (श प्राप्तेक शाहता सावत भाग है)। इंद्रियार्थम-पु मि विश्लब अभाएनि शन्दकर्यन। र्वतिष । -जुलाच-तु अत्यद्व राज्य इ.सी~सी० दे सामेदासी हवा। क्षज्ञक्य−पु० [शं०] **ब्**रञ्जनि । र्द्धय-९ [सं] वेशनः वशासाः वर्धसरः ! ष्ट्रीयम-पुरु [मी] बकानदी रूपही शोवना, उपने क्रान्त वयाना । इंचरीबा-पुञकाबम ररानेदा स्थाम । हॅनारन-९ रंशयम्। द्वचीरियम−रिश् (र्थ) सामाध्यन्तंत्री राक्षान्य भेधे राष्ट्रमे संरक्षः सम्राह्यः करन्ताः शाही । नशक्तेनिहन नी शाधान्यशास्त्राता दशे मरवार । - प्रश्रास्य-पुर गामान्य सरकारको भगने अभीनन्य देशीने मामाभद्री वरतधीचर मायायनियांधकर रहानदी वर नीति विश्वते भन्य देशोदी रपर्धाने अपना मात्र संग्ता ५१। इंपीरियम्बिम्स-पु॰ (अं) सामाध्यक्ताः शामाव्यक्ते बद्दोनियाना विभागः गामान्य विनास्को लेखि । हेर्वारिवक्षिक्ट-दि [६०] राष्ट्रानकारी । र्देशा−सी० (ल•) श्वारतः वद पुरण्य शिप्ने पार्णः टिएनेटे नियम दिये यरे ही। हॅमाछ-पुरु (स.) स्थायः निर्मयः भग्नाः । हुंब्युब्टर-१ (अ) देशवाच यरनेशन्ता, विर्क्षक ह-बु [सं-] बागे दा द्वंदर-स॰ नियम **श**ी । कुछराक−रि वदतरका। दु मर्द्रगारीपर विका द्वभाग-निरु पु दे पद्देश । क्षक-ति है एक । -व्यक्तिनवादिक रेग्द्र मंद्र त -बार्य-म एक गाव । -बाल-वि । पु देश के काम । नमरा-पुर एक दिवद भेतरत आवेषामा भरत -शामाव-दि पंत्रनिष अ⁻⁻ सदि १३०-१०१-दि पद हरा सहारा ३ था. जिल्ला १० सारा ५ तु. देश व्यवस्था । -साम्य-पु हे० ध्वणसा । -सीम-दि र्या वेर इदानु≣ादीा-न्याः न्येयाल्युस्य स्थरप्री कारी ! -माराया-भ है। स्थलाये !-राम "I' देक इंडान्स १-इंग्रंग-वि दे 'व्याग १-सा-वि हे किहेल र जन्महिल्मी एवं बान्या मार्ग दुप्रभूत रोड क्या चेता. अहेलवज र समीपार्लीर क्राप्ते सांबादश अवन्य (देश) । [स्पेन दि फिन है -मह-रिन साट भीर हड़ रह की रहता। मूल नी स्थाप वस मान्य नहारिका प्रदर्भन रम्बर्गाएगी ह

छापामृति~प• (रव्यरिक्षम) यह छाना को भौतिनस कियो पुरुष मा व्यक्ति जेशी प्रतीय हो। अस्प्रक अञ्चरीरी मुनि ।

चित्रक-वि (परफीरवर) जिसमें सनशीक-नगरीक महत्तसे एर प्रत्मीपमै बना दिव गय हो।

ाछ सम्बद्धा - की॰ (धीपते) वह सरक रहा जा बुचको थो विद्योपर कारती है।

ਭ

जेतिविज्ञाल-पु (ज्हानी) नेतुभी-पशु-पश्चिमी माहि-की प्रश्नित विकास, स्वभाव अभावत्व प्रश्नाविका क्रिय धन धरनेवाहा शास्त्र ।

जर्बाज्य परिसंपय-छो॰ (क्रोपन प्रमेशन) वह परिसंपत थिमक रिक्रम, इरडीनरथ आनिको मनाको यह की गर्था का ।

जनकस्याकर्के**ड**−५ (नेक्फेनर छँटर) जनगढ स्वास्थ्यः बच्चति तथा मनाईके क्यि किये जानवाने कार्योका करा। जनजाति – स्त्री (दाइर) नेशको या प्रशनी स्थानी सर्गार्थे रहनवान यस क्षमांका समृह को जिल्ला, सभ्यसा आर्दिय सम्पेपानी स्थानोके कोमोसे 🗫 पिछन इय हो। और जो भवने-अपने मुखियों वा सरदारों ब भारेप्रोट अनुसार चण्यदे आहो हो।

श्रममगति−क्षी (वर्ष रह) भाषाती इ प्रतिसदय व्यक्तियो-

के पीछ हो नगाने द्विज्य-अन्यकी यदि । अमिनिर्देश-५ ((१६१४म) छंछरमें प्रान्थापित किमा महरूबपूर्ण दिवारप्रदेश दिवयको समरह जमहाक सामने प्रदराम द्वारा भरना निर्मय ४३६ किय अधीशत दश्या । जनरस्य अधिनियस−९॰ (धम्बद ५५८) वर्षः । सर्वे सापार्णक्य रक्षाक्य धंकतं ननाना नवा व्यपितवम ।

यमसंवर्षाध्यस्ति-त (चिन्नह (१४वन भावितर) सर शास्त्र अवताने संदर्भ बनावे स्थानेशका अनिकारी । जमहिलारी राज्य-पुर (रेडचयर १८४) वह शाम वहां वसताह स्वास्थ्य द्विष्ठा सुध सुनिया आहिको निरोप

स्वत्रवा हो तथा जीविका दिकान पर्व भग्नपर्वशास्त्रिक भारिका भाषायन हो। जनामियुष्य-५० (हिन्दून) जनशन्द अधिकाराङ विश

कर्तरका तथा बन्धा संपर्वतः। जनापयोती सवा-भी (शन्तद मृशिवदी ग्रानमा देश

काकोपवीची मंबा"।

अम्स्यमाञ्चळ-५ (वर्षे संशीक्षतः) वह प्रमापपव जिसमे दिमोको अन्यविधिमा पानिष्टत स्थादा दिया यहा हा । unted - 2 (tenfatt) 4 , je last 1

अस्त्रमूल-पु (केईस) बरायुका वह कर्रवाना दिश्या शे बनोधरने निष्मा रहण है और ना बच्चेस ज म हो अनेहे बाद बन्दर निकल्या है, पुरश्न अपरा ।

अस्त्रम्-व (हारशास्त्र) एड मध्योतः सम्बोतः सहस्य द्व (बाइम्य) विश्वत पानीय निर्माण हाता है (पानीने tugi it freit nis feunin ten er stan ! अव्यक्तिसासनाजना- में (देवेश स्थीय) र 'जबोने HOUSELAND !

अख्यणाखी~की+ (सदर भेनक) हो समग्रेट रोको पहलबाका लेबान्या जनमार्थ जा जनवस्त्रमानी भरित લોકા હો !

अस्प्रसम्बोद-पु॰ (देप्ययानी पानीमें पूरमेशका प्र(हे) (वम) या किमी पनजुर्शीपर या उसके निस्त दिए ए

जसमांगण-१ (वेरिवेरियस बार्स) ६ 'जमान हेव । अकरगः, अकीय रंग-प्र (शहरकार) शानी (जहर वैवार किया यथा (व ।

अकास क∽प (शहरीकोरिया) दे मुख्ये । अकामेश-वि॰ (शहरम्य) विश्वत शमोका अनुत व शह नकाररोपक ।

जकाम्पंतरवाहियी भीडा-सी (प्रत्ये(ान) १६ वर्दस रणशत वा वामीकी सनहत्वे नीच प्रदक्षे क्यान्त्र से अपना काय बारी एक छन्ने और नो सरवेश दाये वापों भारित छन्दित हो पन् १६३, दुरदती ।

जकाबराधक-ति (बध्दपुष्क) सभीक्ष मध्य मा बस् रीक्नेबाना (हपता हस्ताह्ये) प्रसाधय ।

जक्षीय क्षत्र-व (धेरिशेरियक बारमी) दिखे रेड्डे दिमारेद काछ-पाधका महाद मित्रपर बमधी धरा हो। क्रलोड असि-की (पश्चिवत छात्र) गा बारिके दारा यहन यह आवी वयी भूमि। पूर दाश आलीह पू न शकारी पनि १

जकोचोलमर्थय जलाबहर्मयं प्र-प्र- (नः११ १७ १-वे भी नहीं क्यर बी नदर नाहर निश्च बनकारा बंद ।

जारशरसारकाषी प्रमा−को० (४ नेड १६)म⊁ गांबियों क्रीरे बनावर बवरबा वंदा पानी बाहर निकासनेकी बीक्टी अधिकासकी तथा ।

ब**हाजपाट−९ (५**१४) श्राच क्यारने प्रशन≰ क्रि **छन्द्रधक्ते पाछ ब्लावा ददा बक्ती पादर नारिधा** धार १

जामपद सम्ब-५ (विक्रीजिया) (नुद्रशक्षे) अवन सम्ब बर सम्पन्तारहे रवानीये वपहराहिका प्रमन करने लिए बनाबी पयी नामरिको 🖨 छेना ह

जिक्कापाकिका-भीक (शिक्षा केर) जिन्द विश्ववित अतिविविविधी अब संस्था को कि रहे भमरत निराणिय सी दिया, स्तास्य यातावान भारिकी भ्यम्या करती है बिकाराई ह

जीवज्ञा-पु (वीरिकास्त) सप्तर्व अदेशहरुक्ष दिना रंगहा पराचे जाभाषमन, पर्चन, क रेन हवा नर बनक सबस पनवा है और जा हो बीबी सबा होराजे जीवनका मकापार मं जा जाता है।

वायनमध्य-पुर (विद्यविन) रे 'गाबाक ।

ज्ञायनपापम-दाप-तु (का द आह किर्देश) क्षेत्रर निर्वादश नाय-भावम राम निराम महिन्त्ये स गामाम्ब स्वयं जो जीवनवादनक किर मानरवर्क राज्य है। जीवमरक्षक नाका-भी (करफ चारा बहाब हुत्ते गुन्न प्राप बनानेवाची विश्वय प्रकारको लीका ।

जीवनस्थ**क** पृथीनस्थेत (ब गड ५४८) ७५वे३ ४४०वे किंद्र काली जानेक को देश जिसके इस परी पहती ई स

पीमार म्यक्तिको बाबेन्डे वावेवाको यावी । परिचारण-पु॰ (सर्वकृष्टेसम) सूचनाओं, विवेसकी आदिका सदस्यों या जन्य कोगीमें परिचारित किया वामा ।

परिचारणक्ष-प (एंश्यूबेंश कोर) दे 'बाइतीपकारी

T# 1 परिचारित करना-ध॰ कि (इ सरक्ष्केट) कोई एक विभेयक भावि कोर्गीकी राग जाननक किए भारी तरफ

विवरित करना या प्रमानाः परिपक्ति करना । परिचासक-पु (कश्वर) परिचालम, विर्वेषण आहिका काम करनेवाकाः द्वाम (रथ्यायान) वस् द्वेन आदिर्शे वाविबंद्यि देखरेसका मार सँगामनेवाका कुर्मवारी । वि वाप वा विश्वको क्योंको सहाबवासे एक स्थानसे इसर् रमामतक पर्देशानेवाका। (वह वस्त) जो विधत्की अपनेगैंस होक्र ज्ला जाने है। (ब्रुश परिचालक-हें 'बाचाबक ह

अन्या परिवाधक-हे 'शुक्रक')। परिचाधन-पु (६४१३४) यम्। वा वित्रहोदे प्रैहमेदी वह रीवि जिसमें गर्भों या विज्ञको एक कवस दूसरे कव को मिन्नद्री है भीर कम स्वयं तकी पकते ।

परिक्रीची-वि (सरवाहबर) हे अविजीवी?। परिणामी~वि (रिक्क्टेंट) को दो वा बोले अविद कारणोद्धा संबद्ध परिणाम हो, वा किसीके परिणामस्त्रकृत

बलक हो का सामने कावे ।

परित्रोपण-प (प्रैटिक्टिइन) हे 'अनुतोकन'।

परिश्वस्थानः (र्ववदनमेंद्र) पर्यतः क्रोइ देवा परिस्वागः। परिचल्यां श्री - स्रो (बेंड अब ब्रेफिक) मार्वित प्रीका बह मान की संचानकों हारा गाँगे वानेपर हिरसेदारी

हारा क्रमा कर दिया घटा हो । परिदेशसा-सी (क्ष्वेंश) रहना वा हानि प्रेवारे जानेके विरोधमें किया नवा अभ्यावेदम, शिकावतनामा, पारि

परिधायकथा-५ (केसिय रूम) अनके पहनमेका अमराह

परिशामगृह ।

परिभाषगढ-५० (रीदिन कम) अपने या पात्राक प्रश्मने, बाक सेवारन आदिका कमरा विसर्वे प्राक्ष वहा शोधा भी क्षमा एडवा है।

परिधि न्द्री (धरबंकरेंस) कुछ नगमेनाकी नोक रहा। परिमिर्णय-९ (अशार्व) सतिम निर्मेन, निरायकः पृथ

या पत्रों दारा क्या पत्रा पंचाट । परिपय-प (सरस्पर) इत विभिन्न नाती सञ्चान बारिको सुबना देनक किए यारी शरफ, विभिन्न संस्थाओं ध्यस्तियों मारिक शस्त्र, भंजा धानेवाका एम गरती

परिपाकतिथि - श्री (रिश आक्र मैथ्यू (स्थी) किसी पुरी का बीमाओ पाकिसीचे निवारित अववि (मीआव) समाप्त होमेको दिशि ।

परिप्रद्धा नहीं (रनस्ताररी) कोई वात वासने वा किसी परना सारिका पठा स्मानैडे किय को बानेपाओं मूछ-तारा, परिप्रस्य । −श्रह्र~ड (श्वनवाहरी अक्तिश) वृष्ठ तास बर्धे, पठा क्रगानेन्द्र दश्तर ।

परिमहत्त-प्र= (हनक्वाहरी) है= 'परिपच्या'। परिमाध्यभ्रम-पु (क्षोधन मनी) शहक्क्शात बाहिय निश्चन करानके किए समानतके क्ष्में पहलेते बमा दिना गवा थन ।

परिमापिस-वि॰ (विकार्ष) त्रिसको परिमान को क्ये हो । परिमिति-को (परिमोटर) श्रमुगुत्र (रेक्टोक्टीनरक)

क्षेत्रकी अवार्गोकी बनाइबोंका बीय। परिमोडमः परिक्रोभन-प॰ (रंग्रथसींग) हिसे सम्ब प्रकीतम वा काशासन देखर या हात्र भाषा सरप्रकर बहराया, कमबासा ।

परियोजना-की (मैक्स) मनमें शेषका, अने मार्क वाकी स्वितिका बनुभान कगायर तैशार की वंश बीमरा का परिश्रम्पना।

परिश्वक-पुर (बारेटर) किसी संग्रहानवकी हैयारेस वा व्यवस्था करश्रेताका व्यक्तिहारोः (पेहोक) दे॰ 'दरिस्क्री'। परिरक्षी-प (पेट्रोड) धारी तरफ प्रमन्तमध्य सा स्पर वस्त क्याल हुए, रक्षाका कार्व करनेवाका !

परिकम-५ (बिजायम) मिसी मानी नार्व ना वैनार भी वामगाओं बसाकी पहनसे सोनी हुई स्त्रांसा कार्र इरवादिपर भारी, कुछ वृक्षे वा वेशी बीवें नतानेक विदेव बना किसी कवारमक कृषि वा समाब्द मारिके र्धनेषाने मनावें पहलेखे साची विवास प्रदे परिवासकी

परिकार - प (क्षिताहतर) परिकार बमाजेबाक रूप सम बरधेशका । परिकारिय-सी (पटनिवनिध) विभारित केतद वा प्रतिके कर सक्यां दिया गया गया या शास्त्र अनुकार्य ! परिकास-त (स्थानकुमें) निशी प्रकर बाम करके प क्षेत्रा कारिके कारण नेत्रत पुरस्कार शनाविके कारी

शोनेवाका काम (परिवर्त्य-दि (कांबवरिदिन) यो अन्य रूपमें बदका म शके (कारण कंपनोके हिरते **आ**दि)।

परिवद्यम-प्र॰ (डांसपेट) कीई वस्त यक स्वानसे इसरे स्वानक्ष प्रशब्द या होस्ट हे माना पहेंचाया ! न्थाधानको (शारीकनेक) मात्र श्लादिके वस स्थानध इसरे रवानकड क्ष्मेंबावे बायेमें रेडके डब्नों शरपारिकी क्योंके कारण पहलेशाकी शंभा । नव्यमस्थापक-म (टैफिक मैनेवर) रेक्श्य द्वारा शामिको तथा मावन श्रक्तावके परिषद्भाधी ध्यवस्था करनेवाचा अभिकारी । परिवात-म (कांव्येंट) क्रियर दोवकवन, दराई

बतामा बद्धवा । परिवृत्त-५ (तरबन्दहारध्य कर्तक्य) हे परिनत्तृत्ते। परिकृत्ति - स्रो (बलकाईन) एउ तरहरे माध्यम प्रयासके विरक्षों आदिकी वृश्वरी शरदके समयत्रों मा दिस्होंने बदक्या। वर्ग निश्तास, यस बादिका बदक्या ।

परिवाय-प (कार्य) किसी वस्तुके सरवारन, निमान्मरि में क्यनंशका स्पना या धर्म कायत । परिवादा-वि० (पेवक्रेट) विवक्तक श्रीय, वधार्व ।

परिशुद्धसा-सी (नेस्पुरेसी) निश्चक श्रीक वनार्थ ग सरीक होनेस्य माय ।

पहा सा बान (बाबे) करबना रहता है। सीवमस्तर-पु॰ (स्टेंडर्च भाक्र (करिंग) स्ट्रन-ग्रहनका वह वरीका, मीतिक सुध्य-सुविधा की यह अकारण मात्राः विश्वम कार्र व्यक्ति या वर्ग अदिस्थात रूपम संत्रा रह

H&I जीवा-सी (कार्र) वह रेखा जा चरिवद यह विदूस इसरेड धीनी जाव, दिशानी कामे होस्ट म जाव पाएक्ष्मी ।

जीपाणु-दु (रेश्टेरिया) विद्धारम ग्रन्थ होनेबाट व्यवि ग्रम एक धारीय छाडाण जिलमेंने किवने शी ता रीवीकी बरप्रिक कारण मान जात है और कुछ अरोहके छिए कामरायक मी होत है। -माराफ-वि (वंदी-वावाटिक) यो (रोमाहि उत्तव दरनंशन) जीवागुओंदा नाग्न करनेमें समर्थ । (रवा) । -पिश्वाम-प् (देशीरियालाजी) भीशामभोक्षी प्रापत्ति विकास भाविका विवसन करने बाका निम्नान । -विब्-पु० (देवशीरियाक्षोकिस्ट) जीवा गुओं संबंधी जानकारी वसनेवाला क्षेत्राम् विद्याम GRANGER!

जीपाबशय-पु (ब्राधिक) धरवीक भीवरी स्वरॉमे निकने हुए प्राचीन बालक बीबी बनरपतियो आहि के अर-

क्षित्रोच ।

u

¢Ŕ

ď

जाप-प (मेमी) दे प्रापन रमारे। शापन-तु (मेथार्रं स्प) वह तत्र जिसमें बाद दिकाने-इ हिए आवस्यक बान संपंत्री हिन्छ 🛍 यदी हो। पहलाओं का वह संक्षित अभिनक्ष हो। बादमें प्रयोगः किए हो।

PRINCE ! इबस्बद्धास-दि (दंबरिडविक इववल्टेमेनिक) जो दही बाह्यभीसे भारमें हो अल पड़े, भरक उठा व्यक्तभीय

SELE I (इंबरिश्वित्त) वह उडने या ममह बडने उपस्य-वि कोच्छ ।

ज्**वास्त्र**-पु (स्तर) हे 'वितिश्रह कहा।

(दारनंज) तावे चौरी शारिक सिक्रों में 2-525-5 Bett I

रंडबास रइसाल-औ॰ (मिर) तीने चौदी आदिके सिवदे शास्त्रीका स्थान ।

रोहक विमान-५ (रिकामेसेस क्रेन) शुक्री रिपविका पता बनाने सैनिक भाषदबढता था पुक आदि नवामेकी र्दाप्ति वासन्यास्त्र मुद्धेवका पर्वनेश्वय करनेवाका विमाय ।

र्वेडी सङ्गई-सी (कोश्व बार) दे शीतस्वा ।

बहा-म (रिटार्ट स्टब) कीई-पीज सर्म करने रखने भारिका पीटेकी और सका वा देशासा मान्य । साकीय भारेस-पु (पारटक बार्टर) दे 'प्रजासनिक मारेख'।

बाकीय ममाज्यच-प्र (शेक्षक छटोच्चिट) दे 'पनाक-

दीय प्रमाणपृष⁹।

हिंख-प॰ (भी-हम) शीक्ष वह क्षेत्राण विश्वमें शकालुक प्राद्य बहन और वर्गाद्यवर्भ बहैयनेबर वभागम बीहा है। हिंबा य-त (भाग्हरी) श्री ६ गर्मा एवसी वे ही मनियाँ

जिसमें दिन रहन और परिषद होत है। क्ष्यक्रवी-स्ताः (सन्वरीत) तः समान्यंतरनाहिनी मीस ।

ਰ

इसस्योक्ता-भी॰ (प्रशिक्षित) इक्ष्मधीक हानेस ग्रम यकाबह बाल बानेको शक्ति वा ग्रम ।

त्तरस्थीकरूब-५ (स्पृहेक्निकन) निशी देश वा स्वानको क्षत्रब बना देने चौबित वर देवको किया। प्रतिकृत ग्रम, शक्ति भारि हारा विश्वी है ग्रम वा चिवस प्रक्र भवता प्रयाप नक्षर कर देनेकी किया ।

त्तवर्ध-समिति-%। (१८इ।इ.६/मिटे) दिशी निशेष कार्य-द किए नवी हुई समिति दो बार्क-संपादन के बाद स्वतः

रिपरित हो वाली है। सन्दर्शा - भी (इविट्रिक्टी) तार दे रूपमें धी ने वर सदने-

का होमसा गण। तर न इध्ये-१ (रेश्ट केंग्य) भाकाशमें प्रशारित भिष्ट शिक्र विकृत-बंदकीय कहरोंना क्याई (रेडियोक्ने विभिन्न देहीने प्रायः अक्रम-अक्रम सर्ग-वर्णपर वाद्यं प्रसारित 🛍 वाती दे श्लीशं वसक सुवने समझनमें बाबा नहीं

पड़ने पाती) । तख∽र (सरप्रेप्त) किसी बरतका कपरी पत्र विसमें संबाई

और बीकाई का, पर मोटाई न का। शाप-द (दौर) भाग या निजनो मादिश स्टप्स वह छाजि ब्लिने पर्धुर्वे यरम हा आठी है भीर मात्रा अभिक होतेपर विपक्त वा बाध्यके रूपमें परिश्व होतं कनती है। −कस−पु (रेपरंवर) वर्धभोडे शास्त्र कम वा रिवित स्थित स्टरनेवासी संबया । - तरंग-को (शैरनम्) अर्त्यंत गरम इशास्त्रे कहर वा 🗫 स्थामीचे अन्य श्वाबीको ओर प्रवादित दोती जान पहे। - जियंत्रण-व (पवर दंशीशर्विय) कमरे आहिके भीतरकी प्रवासी कृषिम कृपते समग्रीतीप्त बनावे रखनेको विका। -मियंग्रिस-वि (रयरबंदोर्थर) जिसके मीहरका वापमान क्रिम प्रपानी हारा समरिनविमें रखा गया हो। -विकिश्य-५ (रिटेयशन) तापक्षशिकां क्रिसी एक बेंडरी बारों दिवाओं में मसारित वा विकस्ति किया

बाना । शायक~त (बीटर) (क्रमरं आदिमें) गरमी पर्देणाने मा

बरपब करबेका रांच । तारक-प्रश्नाका-स्री (स्तार, ऐस्टरिस्ट) हे 'तारक-

विद्यु । तारफ-चित्र-प (ध्यारिस्क) पात्रहिष्यकी या अग्रिकिट ग-के किए अवना महत्त्व प्रवृद्धित करनेके किए छापे था किपिमें प्रयुद्ध ताटा जैसा (४) ।

साराजिस-वि+ (ध्यार) (वह सम्ब, वलव, प्रश्न कारि)

परिचर्-की॰ (कार्यक्षक) एकाइ देनेवाने वा विवासारियें दिराम नेनेवाने एरखोडी एक्सा भवर या निलेकी स्वानीव प्रदेशक्या। पुने हुए या मनोनीव किन हुए एरखोडी विधेष समा।

परिसंध-3 (कानकररेयान) श्वरंत राजाओं, राज्यों वा राष्ट्रीका ऐसा ध्वरन की यक दूमरेकी श्वायता करने और सामाय कराई संबंद राजवान देशिक धवनों आदिके संबंध समान नेति नियोशित करनेके परेवर्स माना माता है।

वात है।
परिस्तपत्—सी॰ (बहेटस) विसी महाजन या ज्यापारिक हंश्या सारिको) वह संस्ति तथा पापमा आदि जिससे (असको) देव या कल प्रकारा जा सके।

परिसमापक-पुरु (किनियरर) किया मर्गतक न्यापारिक संग्रा आहिता देनानायमा केन्द्रकर उसका कारनार समाप्त करनेनामा करिकारी !

परिसमायन-वृ (बिनि छन) किमी स्वापारिक संस्वा प्रदेशक कारिके देने प्रवन्तक विद्यान पुकाकर उपका कारतार समाप्त कराया कर शारि पूरी करत पुका वेता! परिसमासि-ओ॰ (१८(बनेसन) किमी पक्षेत्र हुए कान

सुद्दी, रक्ष्य आदिश्री समाप्ति वा अंत को जाना । परिसीमज-दु (दीकिमिटक्षम) किमी रवान, धेन मदेश भारिकी सीमा (यर करना ।

स्पादका शामा रियर करनाः वरिहार- । वरिहार- (वर्शारक) त्याम करने धोक चनकी विवास स्वा वाने वा प्रयोग करनेकी विवास (रेशीहरू) अना-वृष्टि आदि संबदक दारण दी जानेशाकी कर या क्यानकी माफी एउटा अध्य वा वृष्ट आदिये की गयी कमी।

परिश्चित्रहाम-पु (मिरेहान) कोई कर्मचा() कामके योग्य है या मही १९की याँच वा परध कानेका समय। परिश्चमास्क्रिका-मी॰ (देख रुपूर) परिश्चक काम माने

वाको द्वीदे(कॉब)को निक्का परस्यकर्का । परीक्षालयक, परीकास्त्रम-चु (इन्कानियेद्यव दाक) वह नवन वा रभान वहाँ नैक्कर परीक्षाविकोको परीक्षा टैसो परे।

परीक्षार्थी परीक्षित-पु (श्रम्मामिनी) वह व्यक्ति विस्त्री परीक्षा भी बाब वा वी परीक्षार्थे नेता हा।

परीकृपमाण-वि (शैरिक्रवर) (श्वर कर्मशारी) विस्तरी तितुकि ममी पदी व दुई ही शरण् जो भनी परीकृष-कार्य में हो।

परंचक-पु (कॉनपारनर) वह व्यक्ति को रेकगाई। काहिने पारसक्के रूपने करना मारू किसी काम स्वानमें रहनेनाके व्यक्ति पास भेते।

परेपमी-पु (कॉनसामनी) वह म्यक्ति विसक्ते पास कोई माझ रेकपानील द्वारा मेवा जाय ।

परिपत्त-वि (कॉमसाइंट) (वह माण) ओ रेक्टगानी स्टबादिसे पारसकके कपने व्यन्त किसीके पास शेवा मना हो।

परोक्षत्रियांच्या — (स्महारोक्त स्टेम्प्सम्) तीथे जमताके सकतान कारा सदी, वरण् विशेषन-पंत्रकों, सगर पाक्षिकाओं बादि सरा किया वानेसका चुनाव। परोपक्षत्रिन-वि (वेसामार) सम्बोधन स्वापन समझन नीतिन एक्नेबाला। पु॰ वह सबस्यति या नेता नी किमी अस्य विश्व क्षा जेतुके छरीरसे कियरदर उसका रख या एक भूसदर परिपुष्ट हो।

पर्णक-पु॰ (बीपेब्ब) कागभका छपा हुआ उद्दर्श की सीगीर्थ प्राथ विना मुख्य विदर्शको लिय बीवा है।

क्षीनोत्रे मानः निना मुक्त (बदान्क) (क्य होता है। व्यक्तिमान्त्री (इसने) वस्तुमके सीमित विदादकी व्यवस्थाने वह पुरति कामका हुक्ता मानिक निस्ता के व्यवस्थाने वह पुरति कामका हुक्ता मानिक निस्ता के देश सिंदा विदाद मानिक विदाद विदाद

पर्यटक राजनूत-५० (धेमिन प्रेसेटर) किसी विजेश पर्यटक्षे विभिन्न देशोंने परिश्रमण यह कीड आनवासा सुन्दृत्त ।

पर्यवकोकम-पु (सर्ने) किसी कामको वा किसी होत्राहि को आरिसे अंतरक-एक धोरसि दूसरे छोरसक-रभूक कस्से देखना जीवनस्थात्रमा, सर्वेश्वम ।

पर्यवेद्धक-दु॰ (दुरस्वारवर) दिसी काम आरिदी निय रानी करनवामा, पारी तरक मधर रखनेवाला, देखआळ करनवाला।

वर्षपेक्षण-पु (त्यारिक्षम) चारी सरक नगर रहाने, निगरानी करने भारिका काम, देखमान ।

पकायक-पु (पिप्सकोडर) देदित होने या पढ़े जाने कारिके महत्वे साथ कार्ने किए आनंशका व्यक्ति ।

पशुचिकिस्तास्य - पु॰ (बेडिसर) इतिस्तः) वह स्थान वहाँ वोदे गाय-देश सादि परेख, पशुचीकी विकित्साका प्रदेश हो।

पञ्चयम-पु (किनरप्रेंक) अनुष्य गरिवारके साथ रहने कीर वतके काम बानेवाले पशु-माद नेक, बोहे, मेह सादि।

पश्चिमिरोपर्याह्म-पु॰ पश्चिमिरोधिका-ध्या (वैश्वेस पार्चर) वपर-प्यार विचारते हुए किसी तरपकी द्वति करकेताके पश्चिमोंके रोक राजनेकी जगह, आनारा पश्चिमोंको विधान रित शुक्त वैकर सुन्ना के आनेतक रोक रावनेका बाहा बा सर।

पहुपक्षिकासम—९ (अ.) यह वन वा कामम वहाँ विभिन्न प्रकारके पहुत्तका पक्षी प्रदर्धन कारिके किए रहे आर्चर्क विकासर, पहुद्धाका।

पञ्जमक्षेय-पु (क्षिपस्तांक फार्म) गाय, मेह सूबर आदि पर्गुजीको रक्षमे, पाक्षमेका स्थान ।

प्रशासुक्त-वि (वेंशर) यो पानमें कहा सभा को बानवादि में निसका मनीग किसी जस्म (सहर्र) सध्यके बादमें किना गया हो।

पान्यसाख्य-पु (नैकिनो-तैहैनी) काश्रो वर्ष पुराने क्य पेक्पीपोक्ता विवेचम करमेवाचा साख जी अन पानर रामाधिक संपर्ते परिणत हो गर्ने हैं।

परोपजीकी-वि (पैराछावा) बृहारॉपर आधित रवकर पारपक-तु (बास) किसी स्थान, सिनेमा धवन, सभा

तारुग्यागम-नदशस्त्र विसक्ते साथ (संदारे(#)का विश्व दिया गया हो । -धान -पु । विभानसभा भारिके अधिवद्यतमे प्रदनोत्तरके समय

मीरिक उत्तर पानको शक्ति पूछा वया प्रदम ।

हारुम्पागम-पु॰ (प्यवरो) सम्मानस्थाना भागमन भीव-नार्रम, उस स्थितिका भारत पर जी वा प्रवर्ण संवानी-स्वतिको समसाहा आयमन को माता है।

राष्ट्रावंदी-सी॰ (बांक भारत) समैवारियोप्ट इवान

बाक्नेके किए माक्रिकीया कारसानेके कारकार शाका

समास्य बार्ड शहर रहानेका कार्ने ।

तिथिस-वि॰ (देटेर) (बह प्रशाह) जिलपर कोर्रे तिथि वा

मदीनेकी तारीस किसी या शकी गयी हो, दिनांकित । विभिनंद्वामी-वि (विदास्टर), (म्बाबाक्यमें उपरिश्व

शोनं कवडी किरत आदि जमा बरमद्यी तिशंदित विभिन्न समय करनेवाका (बस विभिन्न) प्रपरिवत व

शेर्नेवाका, दिश्य च सुकानेवाका भावि) । तिर्पेगरसा-मो॰ (द्रांत्रवर्तक) वह रहा जो दो या गणिक री हुई रेपाओंचा कारती है।

तुष्टीकरण-पुरु (बर्पाचमेंट) दिसी कुद्ध वा श्रुपदेवर प्रहाक ध्यक्तिको रिमायत हेक्ट महत्त्व विनय हारा संतुष्ट फरना मनशार ।

र्राप्रसिय-४० (भारक पेंडिंग) तक किल वय रंगोंसे बना इभा नित्र जी अधिक स्त्राची द्वारा है। संस्पोत्त-प (भारक रेक्ट) धानित्र तेक रोनेनाका

नदान । हैसचाइक पोठ~ड (रेंडर) वही जानाये छावन सक भएनी दक्षीमें भएकर के जानेवाका जबाज वैक्कोत !

मीपविद्या-औ॰ (वनेश) वही तीर्थे के निर्माण सवा मर्न-भारिका काम ।

ग्रिकम्पान-पु॰ (द्रारविक्तिक) यक तरबकी क्षेत्र पहिनी-बाबी मानी नी माबर नाशिकिककी तरब देवन मारनेसे यक्षे हैं।

विक्रया-सा॰ (श्रिक्स) है॰ सूक्ष्में ।

विषयस्त्रीय-इ (कारपात) यह तरहकी तिकारे वा तीन चौरीशाजा आजा विश्वपर रक्षकर कोर्र वरन गरम की

नाय । विषयक्त्राची - स्त्री (द्वारक ह) है। विषयक्त्री । विभाव-पुर (हाहमनिष) वह समाध्य को बीज अंकांधीने बिरा ही दवा विसर्वे शीन क्षेण हो। विक्षेप ! - अंब-व (भारतिकार) विश्वको प्रीर्वत बाचारका धीनी

नानवाकी वह हरक देशा जी बागारवर बन (वरधीर-म्बूबर) ही (हत जिल्लकी कथारे भी बहत हो ह विक्रिय महिन्द्रार-प (दि व शक्कार) तीन सम्बन्ध या तीन ५ श्रीका वर्षिन्यार (मार्थक अग्रहकोग मंदाकनके

समय रसका वर्ष दिश्यो प्रशासको, विदेशी विद्यालयी तवा विदेशी वर्षोध्य व्हिष्कार विद्या जाना था। ३ रपरासिप-भी (पार देश) वे "श्रीप्रक्रिये" ।

ब्रेडकर-पुर (प्युनिधिर क्ला) देव 'दशमद का । इक्रमामाध्य-५० (विविधम की) विविधिकार्नेका धंग करनेवाधे) अपरापंका विचार, विदेव करनेदन अवासक, देश-व्यवस्था सामेगाला स्थापालम । दे भूदेन

दारी ब्रशानवं । बॅबविज्ञान-पुरु (ग्रेन(ठोडी) अन्दापट अमुहर १८१३ तवा कारामृहसी स्परस्था आदि छन्ते दिया ।

वंदारम्ब-वि॰ (जुनिटिब) (सर्भावनिक प्रशः कार्धि कारण) थेक विश्वको कार्गीका एक देना हो विश्वक प्रदेश बीर यंद्र वैदेशी सरमधे समाया यथा वा नेहाना स्ता ! -- कर-प्र• (प्रानिशिव देस्य) एवं वा समावे करवें समाना गया कर, बहबर, शाबीरी बर ।

र्वकारीया---हिर्म वर दिविताम विकी (वर्षि) म्यायाचीय होरा सुनाया जानगरम भारेश का नियद । वंशायधिस-वि (धरेरर) विसे दिसी बचापदे दार्य म्यामाक्रयने र्वडढा मादेश दिया हो । र्वकाधिकारी-५० (प्रविश्तर) धीवदारी मुख्यमे हरने और यासमाप्रदेशका साथ करनेशका भारतर ।

वंशोपर्यंच-१० (लैंबसन) विस्तो अविनियम वा अंदररातेर संपि आदिके साथ क्या हुमा वह उपरंप कि न्युस पाकन न करनेपर कर्रपनसारीको स्था रंड मिनेपा । र्षक्य प्रद्रमञ्जल (दिसीन क स्टेरियरको) देश १९३१ नी देखनी दिनि व्यवस्थाने अनुसार दंदनीय हो। वर

राज्य प्रसंख ! विश्वाह-व (विश्वर) सार्राक्षण वा क्रिसी द्वर्धका रांक्षेत्रे मुख्य पहिला अवना धीरतीया समह ये 🔄

प्रदान ६६वेषे धशयक शता है। वंतीयभेदकाळ-५ (शैक्ष्यि गीरिवर) वह धमर अ १थके बाँव निकल दद हो।

दश्चन-भगोद्ध-५० (एडियियंत्र) नार) हे॰ १५८३ सर्गंध । बधिष्यवर्ते−(द+ (द्वाट पाइ र) दः मून-३ ।

क्षक्षप्रकान (१४१८यन) किमीको ६७६ (वाद क्रिया द्रभा पुत्र) बनानेका कार्य वायस घटन करने वा श्रीकार बरतेया कार्य । ब्रिह्माबस्रविन्थी (१४म) मरीगेंथे पानी म हजानाम । बर्रावेरेय-दिक (पेनरिक ,ई शाहर) दिलका धनामन

देखते ही शुरुत बहुना पहें। इक्क्ष्रेता-इ (केंद्रत) शक्त्रे मान्दित होनेवाते हो को बादकारन दियो एउटा नेता बपाना नेनाडी प्रदर्श करनी वा हुन) वा नावस र

THE-90 (PLE) TO COINE I श्वमाम-प् (देश माम) रम मामका रजन यह गाने-450 471 इसाम्या⊶द्र+ ('च्यान) वह मार्थाव दि वे ४४

मुनार हो। क्समीरह=५ (रक्समीरा) १७ भीरहरू ४८६ हेरूज

ह्यांसम्बद्ध-इ (वेथीयाय) हड सम्बद्ध दमसे धन र क्यांसमीहर-५ (व्योक्ताः) रह प्रत्या राज्ये व व

13£16 Pupp

बुसारप्-द्रम, दूर्या-को पुरदेश रूप बद्धा स्वय-

गृह भाषिके मीतर वा नाहर धानका किस्तित अधुमित पत्रः रेक मादि द्वारा विना किरावा दिये बाबा करनेका भनमतिका।

पारवृत्तिया की (द्वाववेरेंग) भगभोके भार-पार देखें वा सकतेकी समझा या गुन, पारवद्धी दीनेका गुन । पारवृत्ती किरण-चीन (वक्तो) हे 'कु किरण'। पारपत्र-पु (पारवेर्द) सुमुन्धार नामेका वह अनुसा-पत्र विश्वी यात्रकीकी संस्थाका भी निश्चक प्रविश्वी

रहता है।

पारस्पर्य-९ (रेसंप्रॉसिश) व्यवहारमें एक पूस्तेका स्रवाक रक्षमा; परस्पर रिकायत करने वा श्रुविया हैनेका सिक्षांत ।

पारांच-वि (बोपेड) क्रिक्के आर्पार विसार्थ न दे। अपारक्षी ।

पारांचवा—की (जीपेसिटी) हे 'अपारवर्शिता'। पारिवा—वि (पारक) (यस्तान विभेवक आहे) वी किसी सुमा विवाससमा आदिमें विषयूर्वक खोक्कत हो जुका

पारिभाग्य धन-पु (क्षांक्षण मनी) व्यामल वा प्रतिपृतिकें करने अवता उद्यवद्यार या उत्युवनीयका मिळकराजेंद्रे किय पहकंस करा की वा करानी गर्वा एक्स।
पारिभाग्विक शरकारको-को (क्षांसरी क्षांक देविनकक
वह को शिक्षक करने महुक श्रीक्षण व्यामी सूची।
पारिक्रामिक-पुरु (रेप्यू-देव्य) किसी देवा वा बिड हुए
काम कारिके वहके दिवा कानेवाका वन, नेवनशाना

स्वरतः। पारिचद्र-पु (कार्वशिकर) परिचर्का स्वस्त ।

पार्थिय त्रवीन−की (टेरेस्ट्रिक टेक्स्फ्रोप) प्रणीपर रखी देरे दूरकी कल्लुमोंकी देखनेके काम आनेनाकी कुरपीन्।

पहिन्दिष्यण-इ (माहिनक बीट) पुरतक कापी कारिके पृष्ठपर किनारेकी तरफ क्लिये गर्ने विचाद, कारान्य गर्वे

wift t

पाइसेमायक-पु (दिव क्यांबर) बासुनिमाके बी-तीम बरतीको बनी द्वक्षीका भावक (मूचक्याम तवा स्क्याङ्स कोबरके शेवका वाधिकारी) !

पाहर्ष-प्रसारभ-पु (स्तवंद) आहके कहा देशवे सबव बंदे अनुचीरकी बहाने पिकडे पूर्वेश साधिका (पार्टेश कहा देता सा किसी बदाल आदिको पंचित्रके एक और अन्ता होनों ओएडा सादिया अधिक चीता कर देवा । पाहर शुक्र सेमा-ची (चकेकाार्ड) शासंकी एसा करने-नाकी तिमा।

पाइबंदार्गिक-पू (माधिमक हेरिंग) किशा छने हुए या छन्तेनाके केश पुरवस्के अप्याय बादिमें निक्स आदिकों और संदेश करनेनामा नह श्रीवक यो नीममें म दिना जाकर पाइनेंगे किनारेकी तहफ दिना बान ।

वादरहाय-9 (व्यतिको) हेड आदि वय मानेने वादरे देवारे होनेवाची मुदम (ब्यते चार्यो वा प्रवचीये पीहा होतो है ओर स्वराधिक कथा थी देश पहते थे। पारती-चा (व्यक्त संगचनो बस्स्यामी माहियों महिबोंके एक रक्के किए रेंचा हुआ काम करनेका छमन सिम्दी छमाप्तिपर बुख्छ रक्क काम शुरू करता है। हम्बे क्रिके आदि खेकोंने देकाविनोंने किसी रखका परिवर्ध वा रूपएं नार खेकाना।

पाचतीपस-पु (एकनोडेवनेंट) रुपना वा क्रम्प स्तु मिक वानेका प्रशामरक प्राप्ति-सीकार-पन रहीद। पाचस-पु (मनिस्त्) वर्षान्यक दवार दे गृबनें। पापाव्यसा-पु (सीन पन) देश प्रसादन ।

पिंचरासि - सी (वय सम) किस्त के रूपमें नहीं, बरन् सा

पिस्तंत्र-प्र- (पेट्रिसक्स) समावधी नह प्राचीन स्परात्ता जिसमें बरका कोई नना-नृहा बालपी या गृह-स्ताधी ही समस्य परिवारका प्रशंबक होता था और उसीके बहु-सास्त्रमें बंध या परिवारका दिवार बालाओं वर-साम्बानोंके स्वरूपीयी राज्या परात्ता था।

पितृसचारमञ्ज-वि॰ (पेड्रिशर्सण) (वह प्रधा वा प्रतिप्रे जिसमें पिता वा सह-स्वामीको ही सन्ता सरोपरि माने

बाती रही हो।

पीड-पु॰ (चेवर) समावति मारिका मासना (सीट) त्याना वीड्यका मासन (म्याबदीड); (रेच) विभावस्था स्परिते विशिव बकोके वैड्यके किए निर्पादित स्वासन वा वर्षमाँ (स्वरकारी वीड विद्योधी पीड-वड्ड); (सिट) वेडावि (विचाविड) ।

प्रतिस्थापित-पुन (रिनाइं।) विश्वविद्यास्त्र, विद्यापित प्रास्कृत सारिका वह (इ.स.) द्वारिकारी से स्थिति कारा नात, हार्यो प्रतिस्था विद्यास रावासित रहात और बनाधे विद्यान श्रीस्त्रा वर्षण करता है। कुस्सीवर । पीटासीय-वि (प्रिमाधिय) वो सम्प्रदुत श्रावरा सारीय हो। शुन-होत्य-स-प्रस्था करता, सन्दर्भ श्राव प्रस्त करता।

पीडिकर~की (भेनर) दिशी शाध्नावस्त्रा पर ना सर्ने (विक्रो।

(श्राच्याः यीतार्त्वेज-तु (येशे चेरिक) यह सब कि योज श्राचन श्रादि देशोंकी योको वार्तियों अपनी झक्ति यहांकर करीं श्रादे सेशास्त्र स्थान नार्षे।

र्जुबोल्याङ्गम—पु (शास ग्रॉडनप्रम) कारखाने भारिमें विक्षी वरमुका वही संख्वामें वा रहे पैमानेपर किया नवा

बत्यारम, सम्बोत्यारम । पुरिस-वि (देनस्वर) वो पुरीके सपमें बना हो को

पुरोके रूपमें किसी भाषरपदे भीतर हो। पुमामयणकेंत्र-पु (१४३४८ माधिन) दे दिस्हा

विद्वीपर' । पुत्रहिष्णियसम् – पु. (री-दर्नेनहर्षेद) दे 'दुवित्यानयः । पुत्रहृष्णिकस्थ-पु. (री-धर्मिदेद) पुनः धर्मान्तंत्रस् दहानक

पुन्तको कर्यन्तु (एन्सानक्ष्यु पुन्तक प्रशासन्त भागक त्रेनाको नदनदे वापुन्तिक एकाकोत्ते त्रीयत्र कर्याः क्रिमी देशको काश्विदशेन की यथे त्रेनामोत्ते प्रशा काशायेष्टन्-प्रशासको है पुन्तकोत्तरप्रापंता ।

युक्तपेषुन-पु॰ (भरोक) है। पुनरवीय-प्रार्थनाः । पुक्रपीक्षण-पु॰ (रिवोजन) संकोषन वा भूकसुपार मारि को दक्तिने सकरमेको कारक, केवन पुस्तक सारियो

tue! श्वयद्भ-पु॰ (स्वर(रिंश टेस्स) उधराविद्धारवे प्राप्त धव

था संपत्तिपर क्याचा जानेवाका कर, रिवयकर । बावाधिकारी होता-४० दि (प्रश्तीक) विश्वीकी गृत्युके बाद बसको संपत्ति पानेका अधिकारी बाना, व श्रवाधिकारी

दसना ।

दाहक प्रद्योह (६म)-प्र (१नसेहिश्रदी १म) आस समा देनेवाला मरफोर वा वम !

दिग्दर्शक यंत्र दिग्यासक संघ-पु (क्षास, मीरिवर्स देशस) समुद्रपर बहाब चन्नात समय दिशा जाननेहे किए मानिको हारा प्रमुख येथ जिलमें भूतकोय सहे

क्रको रहती है। शिमा-बस्ताय-पु• (भादर) दिशीकी कोई सहावता,

धन वा अन्य वर्त देनेका वैवार हो जाना, जिले स्तीकार बर्ता व करना वसनी दण्यापर निर्धेर हो।

विजयंत्री-और (शावते) वह रहिस्टर (रंजी) कापी इस्वादि बिसमें प्रतिदिन दिय क्य कार्योदका विवरण

किया जाब देनेदिनी। दिम-विक्वति-विवर्ण-प (स्र रिपोर्ट) दिन-राखमें

बोनेबाडे लाय, शील वर्षाहिन्संबंधी विकासंका विवरण, भीसिमका दश्य र

विमोक-पु (त्र) मनवादे अनुसार किमी वर्षके किसी महीनेका वह दिन यह कार्र पहला हुई हो थी रही ही दा श्रीनंबाक्षी ही अपना कोई पत्र नेसादि किया गया

हा किया वा रहा है। वा किया जानेनाका हो विकि । विवासित-दि (इटेश) दे तिथिए! ।

शीपस्रांभ-प्र• (कारर हाउस) दे 'प्रकाय-सांभ'। वीसियसारमः वीसिविकाल-५ (रेटियेक्टन) मकायको

किरमें बारी बोर प्रसारित करना फैडाना। (श्किप्रिक्ष) अंशेशरे ना श्वाचे शीर्घ वत्ताकार-वि हर. दिन्ने द्वर कुपनी तरह विसक्त भाकार हो। अंशकार । बीर्चसन्नता-स्री (रेट दरिश्य) सार्वप्रक्रिक कार्योके संच्यारे सरकारी कर्मजारियों हारा भारतिक जीपपारि कदाके कारण को जानेगाको हैर, काक्ष्मीतको काररगाई । षीर्या – को (शंडरी) मननके भीतर वर्धकोढ़े देवनेडे (कर

बना हथा वंशन्सा बँगा स्थान । शीर्घाषकारत−९ (वेदेशन) स्वायाधणी वा विधाकनीके

दी सत्रों है नीयन्द्री संनी सही।

(क्षेत्रयेगीरर) यह वंच जिल्ले कुपकी षग्धमापी−9 निश्च बढ़ा व्याची काली है ।

दुग्यराक्टरा-सी॰ (शुक्त बोफ विस्त) कुम्से मास होने-

बाबी श्रद्धरा । क्रुरथोचीग−५ (टेशरी इंटरड्री) दूभ तथा वससे वसने वाने विश्वप्र पदार्थ-मनस्रत यो बादि-तैवार करानेका

क्वीम । दुरभियोजम~पु• (काँट) किसीको द्वानि वर्वेचावे शाप्तिको

धीत्मे की जायेगाओं ग्रप्त काररकाई। पुरुरसाइन-पु (एन्टमॅर) अवराधीको अवराध करनेव

सदायवा वा प्रोत्साहम देना ।

पुक्रविजय-पु (मिल्पेपोरिन्पेग्रम) (दिली शीरी पुढे | देवातेय-फफक-पु (विकेस सीर) दिली स्वावारिक संस्था

बरा, धन आदिका) ब्रवप्रीय करमा, भननित काममे

क्षमा हैना १ वर्छभ मुद्रा-औ॰ (हार्ड बर्सी) वस देवची नहा

जिल्हा माळ अन्य देख धारीयना हा पाइते हो पर म्या-बार लका अबने निषधमें होते हे द्वारण करद सहा वर्षेत्र र्शस्यामें प्राप्त करतेथे कडिनाईका अनभव करें । -अन्न-५० (हार्ड क्रॅसी-परिया) दर्जन महावाने देवीका धन् ।

न्य धारकक-पुर (विद्याशीर) हेर इचकत्त । बुर्य सम्बो-सी॰ (ध्नेट हिरर) यसे व्यक्तिकोंको मुचा

जो किशी भवराय या जिस्लीय कार्य करने दे बाराय जार ક્ષિત્ર દા વહે દીં બીર **એ સાંતિર**શા માહિ**નો** રહિશે

भरेदारपर माने जावे दी। करक्यामर्थय-त (रेक्टोनियम) वह यंत्र विश्वस व्यव-

भान रहते हुए भी बरको बरनपे, परनाएँ बादि स्वष्ट रेक्ट्रा कर करें।

दशमायी दश्यापी-वि॰ (कार रेक्नि) विसदा प्रमान बद्धत दूरवह पहें।

बुरमहारी। बुरमार-शाप∽धी (डांगरेंज गज) ट्रहड

थीला फेंब-नवाकी, बंबा निमाना मारनेवाकी लोप। बरभाष-५ वरबाकी-धी (रेडीफीय) यह बंब

जिसमें माय विमयीको छरायतासे, दूरत धन्य वा दूरको बाबी स्थोधी रवी सवार दे रहायोत ! - मिलावलेड-प (रेकीफोन प्रसुनेंग) विस्ती मनर या जिल्हा प्रसान

दृरवाधी-कार्याक्य नहीं स्थानीय व्यक्तियोश वा बाहर के कीगोंचे इरवाणी वंबी हारा नावबीत करानेके किए दोसी ओर के बंबीने धेरेच स्वापित करनेकी व्यवस्था की वातो है।

ब्रुश्विक्षेपक-पु॰ (द्वीसमिक्र) एक स्थावपर करपद की नवी ध्वति, वृति आरिको विमुश्च(वी प्रकाश-कहरी वादिनी शहावधारी दूर-दूरतक कैठानेवाका बंध ।

न्रविधेषण-प (इोसमियन) मक स्थानपर करवन्न व्यति भारिको पुर-पुरतक प्रेकाने पर्वचानको किया। -चेंड-९ (द्वीप्रसिद्धि ध्देषक) वह स्थान बहाँसे हर विश्वयन्त्रंत्र द्वारा ग्रेड्रं प्यति (नायम सहस्य संगीत आदि) दूर-पूरशक फैकाने, एड्रॅपानेकी व्यवस्था हो।

-वंश-प (द्रांसमिशिंग वर्षे रेटस) हे 'दरविश्लेपक'। बरवीश्रमयत्र-प (टेक्स्बीप) वह वंत्र जिससे देखने गर हरकी वरपूर्व मिक्टरभ जैसी तथा नाम्प्रदर्वे अपेक्षा-करा नहीं पर्व स्प्राध्यत दिखाई पर्दे ।

इविश्लेष-इ (कॉन) किसी गृह, प्रासाद वाविषे सामने पीछे या वयस्त्रका वह सुका मैदान जो दुर्वासे आच्छा-

दिल हो। इक्सामास-पु (रपेसूम) देखी हरें दिसी बरत दिना

दरबंका वह थिया प्रतिविध का आभास को अधि बंद कर अनेके बाध भी सायन विषयायन्सा प्रतीत हो ।

द्धिक्रम-५० (देवसिवेधन) येसी किसी वस्तका आभास होमा निसका बसावा अधेर राग्न अस्वित्व य हो। आबार बीन वा मरितरवडीन वस्तु देखने समझतंका गोसा माहि ।

सामयी आव-वन्द जांदर आदि किरम देशना वा बहुता। पुनर्राष्ट्रिया-दि॰ ((१वाइडा) मेग्रीपन वा गुपारके रहिने

वा किरस देश क्या गया हो। -पाड-पुर (रिवाहस्स वर्तन) वह विवरण, वस्तम्ब आहि वा किरस अली आवि

रेख किया, जीन किया गया हो।

पुनराजीयन-पु॰ ((र्वारवक्र) पुनः नीवन दानं देनाः फिर्स दशक्तिक्री भार क्र जाना ।

पुनदरधान-पु॰ (रिनेसी) कथा और साहिश्यका पुनर्वन्य या नव क्यसे होनेशारी उद्यति नवेश्याम । पुनरेकीकरण-पु (रो-पृनिवन) से वस्तुओं दर्जे आहि

को मिकादर किए एक बार देला । पुत्रसिंपुक्ति-की (री श्रीटेग्से) विकी यह वा कायपर

विरमं नियुक्त कर दिया जाया । युनन्यांपद्मार्थना-की (भयेक) पुनदिवारक स्थि कार्र

मामजा उथतर स्वावाकवर्षे १०ना अवीकः। पुनरमाविमार्थी-पु (१९४२) वह श्रा अपना स्ववहार (माक्षः) पुनर्विशास्त्र तिए क्रिष्ठी क्षेत्रे स्वावाकवर्षे १४३।

पुनर्मृद्धिय-दि (()-१२२३) के फिरमे टाण थवा वो । पुनर्मृद्ध्यत-पु (()-वेल्य्यान) फिरमे सूब्ब व्यक्तमा वा कताना मुद्रा आदिका फिरमे मुख्य निक्षित करनाः

उदराना । पुनर्युष्ट कीण-पु ((१४४वस धनिक) वह कीण जा दी

समधीयीस वहा किनु यार समधायीस ध्रांश हो। पुमर्यास-पु (रोहेविकिटेस्टन) विवक्त वर-वार मह हो मया हो या जो बदासित हो तब हो इन्हें किरसे वसाना।

पुनिवचारम्यापाधिकरण-५ (भरकेट द्विन्यूनण) मामकी मुक्तमीपर पुनः विचार करनेनाची अशानत । पुनिवचारन्यायाख्य-५० (कोर्ट आक अर्थाण) छोटा

वा मातहत वदावतीमें निवीत मामकोवर वुमविवार बरमेवाका न्यावालय ।

द्वनिर्वेशसमार्थी-दु (यपस्य) है 'युक्तनांत्राबी । दुनविज्ञायम-दु (श्व स्तेत्रस्योः) फिरसे कार्र विधान अभिनयम आदि बनाना दुसर्रिनियमन ।

विभाग कार्य नामा व्यवस्थानम्बन्धः विभाग विभागः किरसे विभागः करमा। तीरी हुई धरनाओको सिक्षाः भागेपना । प्रस्तापम-पु पुरस्थापमा-को (रहाण्यम) पुरस्थापमा-पु स्थापित करमधे क्रिया।

स्थापित करमध्ये क्रिया । प्ररास्थापित करमा-च कि (इ रहाज्यूस) (समा

भाविमे) भीपचारिक क्वस रदामा बा सामन कामा। पुराकेदा-पु (भारकार्यण) पुराने सरकारी अधिकेदा। -पार-पु (भारकार्यरदा) राज्यक पुराने अधिकेदा। मादिको सुरक्षित क्यसे रदानेदाका अधिकारी।

पुरोदितरांश-५ (शावरेरक) (रोमम कैशाविकोंमें) पुरो-विशेक्ष सासमन्यवस्थाः कैशाविक यावरियोक कमानुगत मध्यारियोक्य वर्गः

पुरीकरण-पुरिविधिकेष्ठमः) १ 'चनुसम्बन् । किसी धनन वा पुरसको ठीक मानकर उसका समर्थन बरना । पुरसकारवक्ष-पुराकोरियन) हे॰ 'ग्रीवासारिक ।

पुरतक काक-पु (पुरुषास) छत्ती दुर्ग पुरुष्टे, संनादण्य वा उसमें छाननेके किए भन जाननान क्ष्मा, समानार आहि साकनिभाग द्वारा निर्णाटित विजय रिभावती प्रस्स भजनकी देवित।

भवनक्ष तथि । वृँबीयासम्बन्धः (इव्हिट्ट पस्तवेदिकः) उत्पादक कार्ये-के व्हिट-वर्षः रेजो नहरी इत्यादिक निर्माणार्थ-किया वानवाज व्यादः

मूर्योदार - पु (देपिश्वित्रम्) वह आधिक मणानी निसमें बलाइनके तथा विदासक भी सामन प्रायः भी १४ भनी भादियोक से हाले होई हैं, भी अधिकास अधिक सुनाकर पानकी र बसे अपनी इपनाई मनुसार जनका प्रयोद और संयोक्त करत है।

पुँजीवादी-पु॰ (श्रीपार्वस) पूँजीवादक विज्ञांतांका प्रयोग या अनुसर्व कर्मवाका ।

पूषम-षु (प्यूरोफेस्सन) फाई आई में नरार भाजाना। पूरानीत सूमि-भी (नत्रुक्तिसन सार्व) दे 'बकार भूमि।

पूर्विधिकारमास बृत-९ (मिनिरटर प्यनीपेटमिश) वह बृत विश्व स्वविवद्ध द्वाम ४३ 📷 वधावरयद निर्मय अन्तदा पूरा अधिदार रिया यवा हो ।

चुर्वाधिवसल-पु (कीनरी स्टान) किसा समा, संस्य आदिका पूरा अधिश्वन-वह अधिनदम विसमें उसके सभी सरस्व सम्बद्धित हा सकें।

पुन्रियभागः—पु (पश्चिक वन्धं दिपार्दमें) तामीरातकः सुदक्षमा सार्वजनिक विमोक्त-विभागः । बुत्तसंस्था−सी (चैरिटेविक इस्टिक्ट्सच) कुर्धा तासाव

नुप्तसस्या – या (यारध्यक शक्षकपूर्वण) कुथा वाकाव कारि पर्यार्व दमवायवाको छरवा । वृत्ति – यो (सप्कार्य) वरमोस्त्राओको आवस्यकता पूरो

कराने किए कर्दे भीने देना, जुडाना समामेगा। पूर्विभिज्ञारी-पु (स्थ्यार्थ शक्तिसर) नवताकी आहरूर-कताकी कित्रव वरताओं-कोडा, सीनेंट, कर्दाश आदिर-के समुच्छि विश्वपको स्ववस्ता करने बाका अधिकारी।

पूर्वक्रपका अधिकार-पु (रारा आंक प्री-पंपम्ब) कोई संपत्ति आदि शीरोंने पहले सरोद सक्तेका विभिन्न अधि कार इकशुका।

पूर्वता, पूर्वेवविद्या पूर्वस्थानीयता च्या (प्रेतीसंस) समय नास्थान भारिकी संबंधे परके एवे काने, विचार किने काने मारिका मात्र।

पूर्वविधान-वि (र्टीडरड) (वह प्रवेदाहि) विस्ते वारतिक तिथित परकती तिथि दो भरी हो। पूर्वपारव्य-ची (मेस्ट्रिस) किसीक पद्म वा विषक्षेत्र पत्रकेति विश्व की गर्वी भारण, कावम कर को गर्वी रास। पूर्वपारवान्त्रिक पूर्वपारमासुक-वि (मेन्ट्रिस) विस्ते

पबल्से ही दिशीके पक्ष पा विषयमें मह रिशर कर किया हो। (वह कमन) जो पूर्वपारमाके आधारपर दिना गया हो। पूर्वपारमिक-दि (पंदी शहसूदियक) प्रकास समस्ये पाहके पुरुक्ता।

पूजनसम्बन्धः (१६मीरेखन) प्रकृति रिश्विमें का हेना, वहुँवा हेना। फिर पास्तु वह हैना, प्रमानी नमा देना।

भादिका समय समयबर तैवार दिवा जाननामा समरत देवी भीर भारेवी(पावनी तथा संबंध)का संक्षिप समा निसरी बनको भाषिक रिवविका प्रशासने, निस्ता।

देर फीस-मी (बर फी) नियत समयक दी-पार मिनड बाद हाकमें छाड़ी जानेनाकी चिठियोपर समसेकका अविरिधः शासन्यम् ।

बयवाणी-को॰ (ओरसिक) किसी देशी, देशतान्ते श्रेंहरी निक्की समझी जानेशकी गात, माकाद्यराची।

देसरधक सना-भी (पिक्रीश्रवा) है 'जानवर सेन्य'। देशतिरगमम-प्र• (इष्टिमारप्रेधन) गायके देश गा

धमुद्रादि कोषप्र अन्य देशमें यहे जामा। दहांसर-प्रयोज-५० (रासमाग्रहाजन) (जारमाका) एक इह या पोनि त्यागदर दमरो देव वा वानि धारण कर

के भाष इनिक पत्नी ~ सी (शर्नक) हमिक बश्नाओं (या ∉व रेस, ऋब-चिह्न भारिका विश्वय विश्वनेकी गरी,

वैनेविया कायरो । दनिकी-स्त्री (देशो रिपार्य) दिव-प्रतिदिल दोनेशाओ वा मस्दब दिनको महलाकोका दिवरका (शायरी) है-र्वेनरिनी ।

शोगामा∽५ (उच्छ) वह माना जिसका काउ अंध कद न्यक्ति द्वारा और इछ भाग म्यक्ति द्वारा क्रम क्यारे गायां वा क्षांबा भाग ।

बोपप्रमाणित-४० (दानदिश्देष्ट) जिसका बक्सप न्याया-

#वर्ते प्रभाषित वा स्वार का∘ है 'अधिप्रतिश्व । शोपबेचक-ए (५सर) वह सरकारी कर्मपाध जा १७ परतक किन भारिका तथा मेमा धंबंधी शक्ताओं हा

परिधान कर भाषचित्रमक भेळ निकास देवा है। कोषयेचन-४ (मसर्विश) एव प्रश्नकारिते वर्षेत्रव का कार्यात्रसम्ब अंडीटर निरोधकरे कार. इस दिवा

बोचसिञ्च-विश् (कानविस्टेप) जिल्ला वीश वा अवसार

मुमानित ही सना हो। हो ध्रमनावित अनिश्रामित । शोधरितिहरूको । (सन्तिवस्या) शेष वा भन्तापका स्वा-दिय ही जाना है

प्रथमोक-पु (बेरिस्य पार्टा) वापको पह मात्रा निगरह कार्र वस्त विषकते-शीलके प्रकल्पने परिचल क्षेत्रे कर्ण । शाधनस्ता-भी (गांधेन) प्रापा(भागि राग्धे नवी दुई थीना ।

प्राप्य-त (शिल्यन) वानी भववाद आदिनै क्लि रमूल (बा अन्य इस) प्रश्ने । पुत्र निक्र शासन बना हुआ बाह्यको और गुमर व (होभा शेवन) विवय वे च ।

Mitter Z (elentt) t , e. niett, i

द्विपक्षपाम-पुर (बार निकिष्ठ) स्वर्टे सपरीशांधी शी बहरोदी कारी जो पैटक प्रशासने जलती है। सामहिक,

द्विधानुना-को । द्विधानुग्य-५० (शहराविच्य) कोने क्या नारी रीनों ही ४ उमें के मुजाबर समान वित्त प्राच महाद अपने नवदन ।

चौत्री दोनों पासुओं कि सिक्षोंकी निस्ति अनुवार के सह निधियाय सुद्ध मायनेद्ध प्रयासी । विषक्षाय मसंविदा-को॰ (बारकेरक कार्रेस) है करें

के बीप बीनेवाका बकरार या समग्रीता । ब्रिपरनीस्व-पु॰ (शहितीन) दो चरिनदोने (स्टब करना, यक पत्नीके विषयान रहते हुए ही वृष्ठ(से स्टिइ

यरना १ द्विसन्ध्याध्यक−वि० (पाइदेगर्क) दिवानमंदकदे हैं। स्यनॉ(समान्ते)नाहर ह

द्विसन्दरपनिर्माधी क्षत्र-पुर (प्रवस मैंबर कासिकार की वह निर्वापन श्रेष नहीं ही सराय पूजे वानेशे हो। द्वीपांतरण-पुर (हांसपोरेंग्रन) बारी अपराप बर्दराने किसी नंदीको समझके बस बार किसी धरन रचान का हो। में रमानेके किए धेज देजा। (बारतमें एके नंदी अब रहा

नहीं थे हैं जातें)। है चिन्य-प (तेकर आफ व सरकिश) वह शास्ति को सै विज्याओं और अबढे क्षेत्र पहनेशके बारवे सि

रक्षा है। वैशाज्य-५ (दशेमीनिवय) एक ही देखार हो रहीस षज्ञस्य शामा (अधे सहस्मपर मिग्न कहा ब्रिटेन्स रहा है)।

ਬ

चक्यतिमा-श्री (शाको) इत्त शर दिशीन वस ६१ रहिस प्रक्रिका ।

धनपम-९ (अधिक सारक) दिसाव वा धारेका वह पर (पार्थ) विवयं बाहरते भानेताने या दिया काहिने कार्ष अन्य बोधीमें विक्रनेवाल वर्षीका ब्लीश बिला अन्य है। रिकारको आहि के कावा अमानामा (नामी टरफर्स) ferm i

यमधेवकारेस-१० (सनीभार्यः) हार्यक्षेत्रा वस सारस पंद वा प्रमारेश दिएके नहिंदे अन्यव दिया अवस्थिते बास करका बेजा पाता है अनीआहेट ह धन-विधारण-१० (धेरान) प्रकृतिका समित्री वह स्वार्थ

ता परमाणका अच्य दिए मा है अनुद्री है और विश्व द बारों और कफ़िक्सम् यहर बनाने हैं।

ध्वविधयक=१० (वना दिष) भ्यार वा दिवायमध्य भारि में पुरस्थारिक दिया जानेशात्रा यह दिवस्क जिल्ला बहेरत राज्यको भाष बद्दाना अपना नव गत्नी अन्त भीव की इब क्यांना की। देव विश्वविदयकों व

प्रमान्य-५ (नद्य दिनो नेक्टिन्योचीनो निस्तरे दिली व्यक्तिका दिलाई ही दिया यथा एक माम्बद्धी निवित्य आदेश कि गृहक को या नाम-निर्देशित व्यक्तिकी कारेक्रो शरिवांचन एवन जन है हिमारन रे. दे भी गला (मनीबारम) है। यनप्रता रक्षां र

धविक्रमंत्र-पुरु (ध्युराधी) यह मामन ध्युरमा दिवरे धनिक समझ करान्य हो।

धामिक-साक्ष्मण-पुरु (ध्योदिदिय दिवास पे) वह क्रेस वर' दिवने प्रायनमधा नादा पनिकारे ते धीरीन विकोधे हाक्ष्में हो।

द्विभाषां व प्रकारी-को॰ (बार-जिन्ह विराय) शताः । धर्मग्र-१ प्रिकोदम्।) वह भाषतन्त्रसम् (स्टे

मिरिप्रेपण करमा-स कि॰ (रेफर) कोई वानेदमपत्रादि स्वीकृति का आवश्यक कार्रवाईक क्रिय किसी छैंके प्रापिकारीके रास भेजना; कीर्वे विवादारफर या स्टेस्पुक विषय प्रकास हर करमे, संख्य मिठानेके किए दिशी विशेषक या जामकारके पास भवता।

मितिकक्षक – पु (रापकेन्टर) दे 'महाश्वरामर्शक'। प्रतिर्वध−पु (पंतानों) किर्द्धोन्धे कोई निश्चल या# मजने, कम दिने वानिपर कमायी गर्ना रोका बोर्च समा भार आहि निर्वारित समक्से पूर्व प्रकाशित करनेकी यनाची। (प्राविज्ञी) किसी अधिनिज्ञ आदिकी भारानी या किसी प्रकेश भाविमें पहलेकाकी कठिवाईसे वचरेके क्षिप्र बगायी नदी धर्व था बताना गया बगाय, दर्तान्त । प्रतियाधिल-वि (प्रीवसक्रेंब) क्रिसमें पहरेले भी काचा बाज दी गयी हो। जो पहकेरी रीज दिवा वा रीज रखा सका दरे।

प्रतिभाष्य-वि+ (क्षेत्रेक) है+ 'प्रतिभूयोच्य'। प्रतिभू-५ (स्पूद्रा) किलेन्ध्र नथानत करनेवाका, वसकी भौरसे-नदाक्तमें शांबिर होने, रहम मुखाने वा होई

प्रतिका पूरी करते हैं जिय-जपने आपको बच्चदक करते-गक्क जामित्र ।

मिल्मिम् सि न सिस्पृरिटी) प्रतिमृश्चरा की यमी जनानेतः कोई काम का क्या पुरा करने जाविके किय दिया गया निश्चित भाषासम वा बसके वसके बाग क्ष मबी वस्तुमा एतः ऋण बाविके प्रमाध-स्वक्षप कारी किया नया सरकारी शागज साकारण।

मंत्रिभूमोरम-वि॰ (वेडेविड) (वह अपराप) विसर्वे किसी के बामिन पन बाते वा जमानत केनेक्ट भामकुक मायके-का क्रिएटारा बोलेनक रिवा कर विया जाता है. प्रकि-मान्द्र ।

प्रतिमाम-पु (धेंडर्व) भागने वा बोम्पता अधिका निर्धारम करमंत्र किए रिवर किया ग्रमा मामदेश !

प्रतिरक्षा-को (क्षिप) किसीके माज्यवनते वर्गा रक्षा क्षरमेदा कार्य वा व्यवस्था स्नाने वने अधिनीयश अवना क्यांच करने वा अपनी नियोषिता विकालेका प्रयाच सप्रार्द । - ब्यम - पु (क्रिपेंस श्वश्वें विका) विश्वी वेश्व को प्रतिरक्षा कारिके किय किया जानेवाका व्यव ।

प्रतिक्य-प (रोसिमेन) किसी जावि, प्रवर्ग जाविकी बह रहाई जी ग्राम स्वस्त आहिमें समस्त आति वा प्रवर्गका प्रतिविभिन्न कर एके का विश्वये यश कालि का दंगकी अन्य परमुर्थीका शुप्त, स्वकृत आदि जाना बाक्ष किसी बलाबा यह थांडा अंद विसंधे असीचे तुम स्वकृत अर्धात्का वर्षेष्ट परिषय मिक्र बाप, ममुना, शामगी ह प्रतिकारिय-मी (रिकम्परी) निसीको पहले वो पह (वा

बाबी हो। बस्त प्रमा शह हरना ।

प्रतिकिपिक-इ (क्षांगेरस) किसी क्षेत्र, वनादिको प्रति-बिपि या मदक करनेवाका ।

प्रतिक्रिपित-नि (कारोध) निश्वी प्रतिकित कर की स्थी को ।

मितिकेसक-५ (कारीश्स) दे "मितिकिविक"।

प्रतिकसम-५ (इसिक्टिन्डन) दिली पत्र १९७६ मारिते ।

कोई बीज ज्वोंकी स्वी प्रवारना वा फिर बसी सह विम्समा ।

मतिवर्सी-नि (रिवर्धनरी) (कामानिको रहम) नो स्तुरे बार माप्य हो। था वस्तानिकारके क्वने मोन्य हो। -मधिकाभाँध-पु॰ (रिवर्शवरी शैनस) येगः १३३ नाविषर भिक्नेपाका वह अविकासीक्ष (रोनए) से इस् के नाम हो वसके वक्तराविकारियोंको प्राप्त हो सब ।

प्रतिषेदम-प्र• (रिफेर्ड) क्रिके घरचा, कार्व, दोनस भारिके संबंधीं आमरीन, पूछताछ आपि इस्मेके यह वैनार किया गया विनर्ध भी किसी महिनारी ना प्रश अप्रदेके सामने प्रस्तुत करनेको हो। कावना ।

प्रतिस्पत्ति-दत-प (क्षेपिटेश्वन केस) प्रतिवर्शकर विसाससे क्याचा बना घट ।

प्रतिहासक~ड् (कार्यटरनेकिय अनुग्री) भागात मानस इस क्ट्रेक्स कवावा गया कर किएमें वह स्वरेक्क्स प्रस्तुत की यशी बस्तुकाँ से अबिक स्टान दिन एके। निरेश दारा शब्देते क्याने यूने किसी शुरुद्धा मनिस्करी प्रयास स्वर्थ करदेवे किए क्यांचा वाचेवाका मागात कर । प्रतिक्षृतिपन्न−५० (कॉर्वेनेंट) वह पत्र वा प्रश्नेय निसर्वे किसी बातकी प्रतिशा की भनी हो। कीई बात करने ना न करनेके संबंधमें बारसमें किया थवा किसित समझेता। प्रतिचेक्केक-पु (रिट ऑफ प्रोडिशियन) किसी कमने से सकराई पंड कर देनेका क्या न्यायाक्य द्वारा प्रेसी यात

इत भराकतको दिया यथा किश्चित आहेश । शिक्षेपाविकार-इ (पानर ऑफ गीरो) किसे देखें राष्ट्रपति का प्रकास आसम्बद्धाः निकानसमा द्वारा स्पेष्ट्य प्रश्ताको नगरम उदयनेका विकास सरकापरि**ग**र हारा स्वीक्षन किसी अस्तरको व गानमे वा कार्यानिन बोनेसे रोक बैनेका चाँच महान राष्ट्रीयेसे मर्खेक्को आहे विशेषाधिकार ।

प्रतिश्रामपत्र-पु (येमीरैंडम मास अस्प्रेडिकेशम) स्थि व्यापारिक श्रेरवा का प्रमेशक्या नाम करेरव मारिका भ्वीरा देवेबाका वह क्या जो उसको संस्थापमध्ये पर्व लानेजनिक क्याने प्रकाशित किया जान और शिक्स विश्वका पंजीवन किया जान ।

प्रतिसद्धरण-प (रिपेक्षेप्टन) दिश्री भाष्मी, भारेषा अनुवा, वचन आहिको बापछ केमा, रह यह देना । प्रतिसंविष-प्र॰ (किया शेक्टरी) छनिवकी अनुपरिवर्तिमें

कादे स्थानपर दान दरमेशका ।

प्रतिकारकार-बी॰ (रेटक वर्गमें) क्रिती देखमें प्रति-विश्व सरकारकी महिस्पकों ना निरीपमें स्वापित अन्य सरकार भी उथा सरकारके साबन्तान ही कुछ मानांतर प्राप्तम करने आदिका प्रवरन कर, धमक्य धरकार ।

परिसाज्य~प्र∙ (सिमेर्ड) घरारके या किनी रवना अवना फिसी परशुक्त विभिन्न अंगोर्थे आनार प्रकार, नमानः माहिन्सेन्धी यह प्रवित्त मनुपात यो उस ग्रीरर भीर मनीरम बनावेमें सहाबद हो।

प्रतिसारण~पु० (हेस) वावपर मरदमवद्दी करना (तुमुत)। प्रतिसारित-वि (पुरक) मिलको मरहम-पहीको मधी वी। प्रतिस्थापन-तु (गुन्सिक्स्पन) दे 'मित्रस्थापन' (

1

1

H

ı

ŧŧ

राज्यका कार्य देवर वा धर्मक नामपर पुरादिशी, धर्मा प्ताती आदि हारा हो संपालित हो !

भर्म-निरम्ध राज्य-9 (र्टन्यूजर् रद्ध) वह राज्य विस को सरकारी भीति पर्यक्त मामनमें निर्यक्ष या तहस्थ रहनको को भग्नायदाविक राज्यः श्रीकिक राज्यः।

पर्मिष्ठा-1 (ताट फारर) वह स्वीक ना वर्षातरमा क्षेत्र (बड़ी बच्चेबी पर्मेबी विधा देनकी निग्नशारी भर्न कर्र हे (रेप्तारं); दिनुक न्यिका पालन बर्नवाला at fanger safes !

धर्मस्य-पुर (मंदाउमेर्म) किसी मंदिरादिका सने घणान या दिनी वर्धीय इरवादिक निवाहार्थ स्थायी व्यवस्था इत्यद बरेरवस ही यदी संश्वि वयोधरसंश्वि । घानुविद्यान-पु (सरमधी) धानु वैदार करने वन्हें परि हुन वा शुद्ध दूरने भारिका वर्धन दूरनवाका छ।स्त्र र पारिवक मृह्य-पु (१३ विक वेन्द्र) किमी विके आदिका

बारविक मूबद-न्दर मूब्य को बाजारभावड अनुसार यसमें मिक्षी दुई पातुका मुख्य को और जो उसपर अंक्रिय मध्यक्षे सम या अभिक का सक्या है। धारकायधि-छ। (रुन्दर) यह समय था अर्था अर्थक

क्षेत्रं पर स्वर्णि आदि पारण की बाब या असका उपभाव किया शय ।

धारा-को (भेरहन) किसी अभिनियम भादिका यह रवर्तत्र अंग वा भाग विसमें दिशी वह दिवबकी सर बार्ते का आदेश एक साथ सम्बद्धिक हो ।

भायत-प (रम) किरेडमें गेरदर महार दशनेके बाद ब्रह्मनाय स्था प्रसद्ध साथीका एक भारक ब्रह्मियसी द्वस्यी आरके विश्ववदक, दिना पहिनत (आउद) हुए श्रीह ह्मयानको विकास सा प्रकार समायी यथी बीहकी क्षम संबद्धाः - अध्या-की (पिच) दिवेदमें दोनी और ब विश्ववीके रीयको भूमि किछवर मेंद्वर महार कालके बार बस्त्रवाज तथा क्षत्रका सहयोगी पावन करवेका क्षत्र क्रम बरता है।

घाषनमार्ग-द (रत4) ≼ 'भवतरणक्य' ।

प्रशिक्त प्रशिक्त - प्रशिक्ष क्षेत्र में भी में महान त्रको पूर्व बनावा यदा पारधी अर्थनी क्या कातिस्ट रटकोड़ा गुढ़ बिसमें बादमें बादाम भी आमिक ही यका बाध

भूमपर, भूमायरण-१ (स्मीक रहीन) वार्षे देक वना संमाध्ये मतिविधि आदि छिपामेंद्रे किए देखांदे सबे धर्मे शहरू ।

पुर्भाकरण-१ (१व्धिमधन) (रोगड क्रेशनुक्रींसे मुक्त बरनेके किए वा दनाकी गरागी हुए करमंक किए) किसी कमरे मादिमें सुगंपित भूम, संब्दमणनाश्चर येस आहि प्रसारित करना ।

ध्रमेंसायदाय-त (रेक्टम) विमान, पाताविके इटे-फुटे 35# I ध्यक्रपोत-पु (प्रतिश्विष्) बेड्या वह बहाज जिससे नीरकाध्यक्ष (मौसेमापति) बाजा कर रहा ही और जिस वर बसका दाश करता रका हो । स्मजोश्रोकम-९ (श्रास्थ्य आप दि १वेव) छठडी संवे आदियो र्रेनारंत्रय प्रशास्त्र-सान्त्र सार्वेत सान् **दर्**दराजा !

ध्वनिधीयक यंग्र-५० (मारधोदान) एक यंत्र निसनी शहायक्षाने किसी स्थानपर किये गय भाषण आदिकी प्यति नेवण् प्रक्रियासं पारी हरूपः प्रेमापी या सप्तती है। ध्यनिपर्वेक, ध्यमिविस्तारक~९ (बारगरेग्रेस्र) प्रान या भाराज्ये वीपवा रशनेराष्ट्रा पत्र ।

ध्यनिषिक्षपक-पु॰ (हास्त्रीतः) दे॰ 'ब्रुविध्युद्ध'। **५.प्रतिविक्षेपण~पु० (हांश्रीमधन) हे इर्(बधरून'।** ध्यनिसंग्रहरू, ध्यन्यभिष्ठप्रक-५० (साउउ (रेकार्यर)

माधन १

अस्ति ।

ध्यनिका संग्रहण वा अभिनेधन करनेवाचा वंत्र अवदा न

वक्तमाद्य-प्र• (सप्त) राठवें दिशा चानेशका भावन भगस् ।

नगर आयोजन-१ (शहन व्यक्तिंग) सोय-दिवारकर र्ववाद की यदी बोबनाके अनुसाद जोशी सक्को जवामी. क्यानी (पार्श्व), निवास्त्री, संबद्ध मेदानी आदिस सन्द मगर ब्हानेसा आयोजन दरमा भगर निर्माण-योजना । भगरमिगम−९ (म्यनिशिष्ठ कार्यारेशन) राज्यके किसी वहें नगरकी नगरपाहिका विशे समाहि केनका तथा क्या अन्य अधिकार भी प्राप्त होता है। मतार-विग्रामाध्यक्ष-प (विथर) विसी सगर निगमधा

WYTE I वगरपाळ-इ (विशेषाहर) हे 'नगरपिता । नगरपाछिका-भी (भृतिसिपक्षिये) नगरको सद्मार्थः

शिवनी, सहसी, पानी मार्टिको स्वरूपा करनेवाको संस्था जिल्ल सभी था अधिकार सदस्य जनवा शहर निर्मान वित होते हैं। मगरपिता∽9 (सिद्येकार्र) नगरपाकिसम्बा सदस्यः

नगर•दास**६** । भगर भवन-प्र (राजनकृष्ट) मगरका कह सार्ववसिक भवन वहाँ समन्त बोक्ट दिश्रो विषयपट विचार किया बाद वा वहाँ सभाभी भारणी भारका भागोजन किया

मगरभाग-५० (बार्ड) स्थानीय प्रशासनकी महियाकी दक्षिते किने गरी अगरके यागीमेंसे कोई भाग इसका । नगरमुख-प (फारर्येन) मगर निगमका मेनरस छोटा

पदाधिकारी । मगरेवर क्षेत्र-९ (मोक्सिक) ब्रॅडरब नगर 4 बासपासक

शम्बताबाव्⊸प (न्वडियम) पश्चिमधे मश्कित एक सिकांत

निसके अमुकानी पूर और सुकी इवाके समुधित सेवस-की दक्षिते विषया रहते हैं। भवोक्र-वि (कॉन्ब्रेन) विश्वका कपरी माम कारी ओर

से मोतरकी और शका को। नदीयादी योजना - सी (शिवर मोडी स्क्रीम) वह बोजना जिसके अनुसार अपमुक्त स्थानीयर महीका स्थान भादि बनायर नहरीं हारा दिवाईको व्यवस्था हो जाव ।

1 4-5

प्रतिहस्ताकृरित-नि॰ (कार्यरस्त्रहरू) (बह प्रकेश कार्य) निमार पहले कि र यहे हरतायुर के धाने किसी कन्य अधिकार कार्यिक हरतायुर किये को बी। विस्तय किसी के हरतायुरीके सायोद्ध्य करनेक किय हरतायुर किये को हो।

प्रतिहस्सापन-पु (मध्टरव्यूष्टम) कोई काम करने या चलनेके किए एक बादमी या एक वस्तु के वर्षे में स्थान में, स्थार भारती या दसरी दशा रखना !

प्रतीकम्पूनम-पु॰ (शेक्त कर) (धरना विशेष था अर्ध-तीर प्रकट करनेके किया आय प्रयास किसी महमें क्रेस्ट प्रशीकतं रूपमें माममावदी कभी क्रानेका प्रस्ताव काक्ष्मिक स्पूनन ।

प्रतीपगामी-वि (रीहोमेडिए) विश्वानरण करनेवाका धोधी ओर ले सानेपाला।

प्रवीक्याय - पु (पिशिक्य) किसी वश्तु वा विश्वको दिशो क्रेसिक क्योक क्यों वर्ग वर्ग वा वा वा वा विश्वको दिशो क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्यों

प्रस्यकृत-तु (देखिय) भक्ति को हुई किसी लाइति भारिको स्वीको स्वी प्रतिकृति सेवार करना विधेषकर उसके कपर प्रश्रदारी प्रतका कामन ता मसियण मीचे रखकर।

प्रस्यय-तु (दिक्षि) एक्क, (कन मुकानेको ध्यताये) दिनाय प्रतिति । -पप्र-तुः (कर क्षांक हेटिश क्रियो स्वापारी प्रतित्वन क्षांत ध्यात क्षित्रो स्वाक्ष्मी दिना प्रवाद रह दिन्दी क्षित्रा रहता है कि कानस्पक्ता प्रवेदर रहे दहना पन क्षारे (व्यापारी वा सहाजके) प्रातिस्थे वा सम्पन्नकर विश्व जान ।

प्रसार्य म- प्राप्त (प्रसार विकास) किसी देवसी सामकर कारी हुए अपरामीकी पुना क्स देवस वस्तुक अधिकारीके हान सीप देवार (रिक्रंड) पहले की हुई ना नस्क की हुई रहन कींद्राना !

प्रसासयम-पु॰ (रेस्टिक्शक्षम) पुत्रः कीटा दिवा आजा, इतप्रतिदास ।

प्रस्तामृति—की (गार्टी) किसी संवित्रा आदिकी शर्वो के पालनके किय जमानको कपने थी क्यो बस्ता इस बाएकी किसार या अविश्वित निम्मेदारी कि कोई बार बस्ता भारि सभी सावार और विश्वसीय है।

प्रकार-की (रिटर्न) वरकेमें पिछनेवाकी आमध्यी या काम प्रतिपक्तः

प्रत्यायुक्त-वि (देकीनदेव) थी प्रतिनिधि बलाक्ष्य येजा पना दी वा विसे विशेष कामके क्षिण कुछ व्यविकार प्रदान विस्था बना दो।

न्यान क्या वहा हो। प्रस्पायोज्ञय-पु (रेनड ऑफ डेक्कोनेडिन) क्यारे क्यांन्य प्रक्रिमों नाति विश्वी दुस्टे स्वक्तिके शीवना वा है देना। प्रस्पारोप-पु (कार्वेटर मार्च) नह कारोप मो विश्वी नारोपरे क्यारों विभा जान। प्रत्याचेद्रन-पु॰ (काउंटर स्टामेंट) किया वर्फस्य, कथन जारिक मनाव या विरोधमें कही यथी नात ।

वायादार्में न (६न वंधिवरान) क्रिसी बातका होना चहुकेहे हो पूर्व विधिव माम केरेकी रिवर्त वा प्रतीदार्थ। प्रत्याशिव न (वंधिवर्थकेट) विश्वकी बादा या अपेदा पहुकेते की यथी हो विश्वक पहुकेते अनुसान किया पदा हो (अध्य, परी, पुदि आहे)।

भवाशित उत्तर्शिकारी-दु (यस्ट दश्वनेर्ग्सेस) बह् भिस्कं उत्तराधिकारी दश्मेकी भागा हो। भरवाहार-पु (रिवहाम) भागेत, प्रस्तान, दयन,

प्रस्याद्वार-पु ((४वदाक) भारतः, प्रस्तान, वयन, प्रश्नादिका वापस के किया नामा।

प्रायाह्मपत-पुर (रिकाल) किसी स्थान वा परिसे किसी अधिकारी वा विदेश गर्ने हुए प्रतिनिधिको भागस हुआ केला।

प्रस्पुत्तर~पु ((रिवॉर्डर) मिने दुप वत्तरका उत्तर, वह व्यवाद को किसी कत्तरके वत्तरमें दिवा जाय।

प्रथमहरिकः – व (प्रावसानेन्द्री) प्रथम गार देएलेपर । प्रथमहरिक्किः – विश्व (प्रावसाक्षेत्री) पहणे वार देखनेसे व्याप्त वा सिक्का साम पश्चिमाना ।

प्रथमान्तरम-पु॰ (रिमेशन) आक्रममदा शारंग ना प्रका कार्य अहारिकी पहण । -मस्ती -कारी-पु (रिमेश) आक्रममी पहण केनेवाला आक्रममाशमद कार्य आस्म अस्तिवाला।

प्रधानीपपार-पुर (कर्ष रह) विशे पासक वा आहत व्यक्तिमा उपवृक्ष विकित्सकरो सहायता प्राप्त होचेके पूर्व क्रिया स्था कपवार, सामित्र वरकार। —केंद्र— पु (कर्र रह पोत्र) वह स्थान वहाँ प्राथमिक वरकार क्रिया साथ।

प्रवृक्त क्षेत्र-पूँजी-की॰ (वेड अप धेवर केषिरक) हिस्से धीविय प्रमेरक या धरवाके दिस्से खरीदवेमें ब्यानी गयी पूँजीका वह आप जो जुका दिवा यदा हो।

प्रवर्धन न पुनिवर्षिक न जुन कि निवर्धन र मा नारे भारि बनाइर किसे महत्त्व होती समृद्धिक एउसे बारि बनाइर किसे महत्त्व होती समृद्धिक एउसे बनेशीन महत्त्व स्थाना किसी शिवस्था करनाव सारिको और व्यविद्यार्थिका प्यान रिकारे पर्व जनगळे स्था मृत्युवि महा बरनेके किए जुस्स आहि निवर्धना और कि मनीन स्थादिक इसे रिकारकारा।

प्रमायण-पु (स्पेकिन) कची चातुको कैंने शापमें सका-कर शीमा चौंदी, कोश कारि निकाकनेको किया।

प्रभाग सीम्पाधास-स्वयस्थापक-यु (कार्टर मास्टर जनरक) क्षेत्राके किसी विमानका वह प्रवास करिकारी जो सेक्किके जावास सामस्या रस्टर माहिका प्रवंत करता है, प्रयान रस्टर-स्वयस्थापक।

प्रपंजी-ची (केवर) दिसी देव, व्यापारिक संस्ता आर्थर की वह मुस्त्र पंजी (रिसस्टर) किसने व्यापारिक केव हैंग जावन्यप आर्थिक क्षेत्रर क्षित्रा रहता है।-पुक्र-यु (केवर-केविको) प्रपंजीक वह प्रक्ष रस्ताहर आर्मने-सामनेक वृद्यक। क्षिप्तर किसीक वरवा वा माक हत्याहि

ो जमा करने वा निकासनीका स्त्रीरा दिशा रहता है। प्रपण्ण−पु (फार्म) विश्री परीका या श्वास कादिये किय

दिस्सीका दलके बारी किने जातेके समयका मुक्त'। बिगंमित गुँबी-की (शब्द केंग्रिक) वह पूँबी को कार धाने बादिकी बावहनकतार्थ परी करलके किय बाबह निकाकी गयी हो।

सिर्जेमीकरण-प्र• (शेपॉप्केसम) किसी स्थानका आवादी-**छे रहित कर दिया जाना किसी क्षेत्रमें बसे हए बोसेंको** प्रशादिको भागस्यकृताने कारण नहींसे हटा देना ।

निबंधीकरण-प्र*(राहाइदेशक) रासावतिक प्रक्रिया हारा बनस्पतियो भातिमेरी सकका जेन निकास क्षेत्रा या उसे

समादेशाः मिणाँयक मत~४० (कारिंटप बोट) किसी समा आविके समाप्तिका वह मत भी किसी प्रवयने संववने मतवातके समय पद्म-विपन्नमें समान यह आनेपर वह देश है और गिएसे ₩ वसके स्रोफ्त अस्रोद्धत दीनेका निर्णय दोता

21 गिविधि-सी (एकोकेसन, प्रशास्त्रेंट) किसीके किय कोई वस्त का कीर्य दिस्सा निर्पारित (निर्देश) करनेकी क्रिका-निर्वारम भारतन वह वस्तु वा विस्ता वी वस करह निर्दिष्ठ किया गया हो।

मिर्चेशक-प (हाररेक्टर) दे 'भिरोधक'। निर्देश-प्रय-पु , निर्देश-पुरतक-की (रेकॉस इक्) बह मुख्य की साधारमय' सब्दवतके किए म किसी गर्वी हो। बरन जिसका उपनीय विदेश कबसर्शवर कक्र वालीकी बालकारी प्राप्त करनेके किय किया जान ।

निर्देशन-प (रेफरेंस) किसी कम्ब स्थानकर आवी या बारी हो बातबा सरफार वा कलको बोर संबेत करनेकी क्रिया ।

सिर्वे शिका - को (शहरेकारी) वे 'निरेक्षिका' । मियं प~प (रेस्ट्रिक्श्रम) शेक क्काक्ट, नाना । विबंधन-प (रेस्टिन्यन) युष्ठे कगाकर किसी वाद विषय अस्ति भारिको निवंतित वा क्षेत्रनिदेवतक सीवित हरता ।

निर्वधित निर्वद्य-मि (रेरियुग्टेस) की रीका गमा ही बा जिसमें बाभा डाकी गयी हो।

तिर्माधी-द्यो (मिक) वह निर्माणदाका विसमें यंबोद्धी सहायताने सत रच रेग्रम मादि तैयार दिया जाता है. कारबाता। -ब्राधिमियस-प्र (फैसरो पेस्र) बार सामी-संबंध सान्त ।

मिर्यातक-इ (पश्सपीर्टर) व्यापारिक श्रुत्ये विदेखींची भेजनेवाका स्वापारी !

(हंटरपेटेशम) किमी श्रम्य पश्समृह वा निर्ध**चम**−१ बालवादिका अपनी समझके अनुसार कई कगाना म्पारवा करवा I

निर्वाचक्रमणः निर्वाचक्रमर्ग-५ (एक्रेस्टरेट) विर्वाचक्री-कासम्हदार्भाः

निर्माचक मंद्रस-पु (पहेन्येएक कॉब्रेज) जनता हारा चने ग्रंथ प्रतिपितियोंका बह रक वा समूद मी वार्श कोक-समा भारिके निर्देशसंक्षक स्थरतीका अपलय

क्षित्रांचन वरे।

सेरेकी वर्षता (सनेकाडे मतकाताओं साम. देते. अ बादिका प्योरा नकानेवाको सूची।

निर्वाचन बॅड्राध्यक्ष-पु॰ (प्रजाहीरंग श्रीक्सर) क्रि वक निर्वाचन-बेंडमें मतदान बारिको रेखमान स्थ व्यवस्था करनेवाका अधिकारी ।

निर्वाचन-पवाधिकारी-५ (रिटर्निन वॉक्सिर) क्रिय सिर्वायमध्येषके निर्वापतको नियराची भारत्या आहे करनेशका तथा मधाँको गमना कराकर पशका परिवय मध्य करनेवाका मधिकारी धानाव-मधिकारी ।

मिर्चाहरुकि-की (किविय वे ग) वह मति वा नेदम किन पर कर्मचारी और उसका परिवार सकते औका क्रिके

विवाहित्यय-ए (बॉस्ट बॉफ मेनटेवेंस) धौरय-निर्णा का-भीवन स्वाधिका-स्वत्।

निर्द्धन साला-९ (सर्लेस मदास्ट) दे 'सनुबंद सारा'। विश्वयम - प्र (स्ट्येंशम) किसी कर्मपारीचे बक्तामी स बोबी बोलेका संदेश करणा बोलेकर वसे तरमबने कि बक्ते परश्चे प्रशा होता जनतम वस संबंधी नवस्ति द्धामतीम वा बॉप न ही के हीई निवस, व्यक्तिक कार्य जारि उक्र समरके किए पता रखना तक रेम वा सामारी कर देशा, अन्हरत ।

क्रिक्टीकर-वि (सरवेन्द्रि) (बह इर्घ्यंशरी) हो सले किसी वशास्त्रिय अपराय या दोवने कारण, संदेव विर्म बोनेतक, अस्थानी कपटे परभूत कर दिया स्था पे क्र समब्दे किए रोक्स हुना अनुकदित समस्त्र।

मिबारक मिरोध अधिमियस-प्र (प्रिवेदिव विदश्य देवर) यह अविनियम जिसके अनुसार किसी दराष समाज्ञविरीणी कार्य वर कपटवादि कालेवाके व्यक्तिमाँ था त्रिवके संरोपमें येथी बार्चका ही करका निरोध-क्षेत्रं केश करवेसे रोक्केक्ट किय-किस का सकें।

निविद्या÷ची (रेंदर) बाददयद रहम देवर राधित क्लॉर्प ज़रा देने धर्मेचा देनेका किसित बारा !

ARRIVERENT I निवासि-सी (रिप्रायरपेंट) है -कृषं सुद्दी-ली (कीव विद्योत रिस्क्टरॉस्ट) सेवार्से अवदास प्रदेश करनेके ठीक पूर्व को बनी सुद्री । -बेलप-तु (विश्वन) वह बेडम वा द्वियो किसी कर्मकारोकी कामने अस्काध संकाने नार प्रस्ते पूर्व सेवाचे विवारसे बीवन-निर्वादके किए मिके !

विश्वेश-१ (गार्विश्रम) क्रिती विश्व अधिनियम आर्थि बीई बारबर्धन या कामारा भारि रान देवा जोत हैगा। जी किसी विशेष रिवर्ति आविषे काम वे छक्रे-(विकि निर्मेश-प्राचीवन वांत्र कां)।

नियेचात्रा-की (स्नर्जकान) है 'निरोपाया'। नियेवाधिकार-प (नीरी) रे॰ 'प्रतिश्वाधिकार'।

(रदेरिकाइत्रधन) रामानभित्र मनिना निष्कीतम – १ वारिको सदावतासे किसी बस्तुको औरामुक्ती पा कौरा-मुश्रीने रहित कर देगाः (र पंप्योक्तम) ।

निष्द्रीटिस-वि (स्टांकाइका) किमी प्रक्रिया हारा विसक्षे बोराम नह कर रिपे पने शी वंग्नीहरत ।

मितांबक-सुबी-सी (व्येनशेहक रोक) निवांबमर्से मान मिटकृतिसन-प (रेजबन) किसीको हुस्कारा वा मुख

आंदरनपत्र देते, कोई विशरण प्रस्तुत करनाया प्रपक्ष प्रदम करने व्यक्ति-अंत्री प्रश्नेका यह तेया हुमा कर विश्वमें मान्नदप्त जानकारी देनेके किय रिक स्वाप, सीवक माहिकी व्यवस्था रहती है।

धीयक कारियो स्वरवध रहती है। प्रभाव भितिकती न्यू कियो था स्वरूपो निव्ह कियो था स्वरूपो स्वरूपो निव्ह कियो था स्वरूपो स

सर्व कर । प्रबंभर्सपादक-यु (मैभेभिग पविटर) संपादकीय निमान-को व्यवस्था जादिकी देखसाळ करमेशाका संपादक ।

प्रबंधसमिति न्यों (मैनेकिंग कमित्रे) किसी समा वा संस्थाका प्रबंध करजनम्यो समिति ।

ममार-पु (बार्ब) किसी विधानादिक कार्यका भार वा जिल्मदारी।

प्रसारी-वि (रनचार्य) विचेत्रे कपर विसी विभागादिके कर्मका मार वा प्रचरदावित्व हो !

प्रभारी राजवृत-पु (धानदेन फेनर) बरवाची समसे राजवृतका काम प्रैमाकनेनाका न्यक्ति पर राजवृत होटे देशीमें निषुक राजवृत !

प्रभारी सन्दर्भ-पु (मेनर शनकार) वह स्वरंग किसपर किसी काम वा पदका मार (शतरवाशिष्) आका सन्ध सींग सन्ता हो।

मभाषी-वि॰ (इफेनिस्क) विस्तात गंगाम पता हो असर करनेशका।

प्रमु संचा-ची (शब्दरेस्प्री) देश वा राज्यस्य देशी भर्मेड संचा क्षित्रके अन्य श्रीर किसीम्प्री संचा वा मण्डिस न हो, पूर्व संचा।

प्रमंडक-पु (ईपनी) निकंशुक्तर कोर्र काम करने। निदेशकर व्यापाराधिक किय सनाया यथा व्यक्तिका स्थ या सरह।

प्रसस्तिष्क - द्र (सेट्रेंबर) महित्रका धामनेका वहा अस्य, मस्तिकाल ।

प्रमाणक—3॰ (बारुक्ट) विस्ते रकमके जानक्वक स्रोते में यहाने जानेको संयुक्ति वा प्रमाणक कमर्ने साममें नत्वी किंवा यहा विसाधक करिया प्रसामक कमर्ने साममें

समाध्यत-पु (द्याधिष्टिहेस्त) किसी केश, कमा वा वाक का ठोड़ कीर प्राथमिक होना विरावस एवेकार करता । समाधीकरण-पु (वाधिकेस्त्र) दिसी वास्त्र स्थान । प्रमाधिक इत्या, विशेष्ठी विश्वसमीयवाधी पुढि करणा । समाप्रा-ची॰ (शास्त्र) यहेड माना, कमा सामा जित्ती जावस्यक हो। दिस्सा, मान राजि जो खावस्यक, वाधित या रसे हेठ हो।

प्रसाप-को (१८४४) वह दिवर को हुई वर्ग बहुमान्य साथ मा मान विश्वचे आवारवर बन्य मार्थों वा मानीका निश्नच किया बाबा चौरवला कोडला आदि प्रदेशके भावनका प्रसिपादित रहर वा कम।

प्रमुख-इ (स्पेक्र) है॰ अप्रस्'।

प्रमुखसमा-को (क्षिमेश) त्रमुख वा प्रदेशत व्यक्तिको असमा। प्रसीक्षकर-पु॰ (पटरटेनमेंट टेक्स) बाटक, पहरिश्रमें प्रवर्शन रामा प्रमीरंजनके पेंदी सन्य प्रकारीत्र करवेसक कर, मनीरंजनकर ।

मसोव गोधी - बी (रिवनिक वर्ती) विवर्धकरोत कर राधिके बावर बावर किही कुळे स्वान, उद्यान बाहिर्दे खाक बान, मनोरंजन भादिका आयोजम बरता।

प्रभाग-पुरु (पस्पिपिपिपि) क्रिसी दिस्तीक्षी स्वरंग इस्त प्रमान स्वरंग स

प्रयोगपपा-पु (१८६८) नामाङ विच देवन्यस्थ वन्धे गोदरपण आदिका कुछ समयक्त प्रयोग अर्थने अर्थन कार प्रदान करतेवाका पत्र मिस्पर प्राण नंदन्त स्वस्थान मान, ठाएँक, किरामा बादि किस्ता रहता है। - कार्यो क्य-पुत्र (पुन्निय आदिक्ष) देवनाहेश्व वन्धे गोदरस्य मादिने यात्रा करनेवे किस प्रतीवरण चारो करने, नेवने कारिने यात्रा करनेवे किस प्रतीवरण चारो करने, नेवने कार्यक्रम हिन्सपर !

प्रकारी-वि (खुमेरिय) काम देवेपाका, विश्वते क्रवेते विश्वेत काम हो (स्व वा काम) ।

प्रकेश-पुर- (बालवृद्धि) वह बालन वा किकिन का निर्मे किसी वातका मनाल वा कीई मावालिक वार्ट र्घेडी जीर वी विभिन्न स्टिसे किसी यह वा स्ववहार(मन्दिने)

(के सम्बन्धे वपरिक्त किया वा कहें । प्रकेशीय क्राविष्य (विकास किया) पर क्ला निया विश्वेष केंद्री प्रकार प्रचार केंद्री किया हरावर की विश्वेष प्रविधा विश्वेष विश्वेष किया वा से समावाद किया प्रकोशन-पुरु (केब्स्ट्रॉट) काल्य देवा। काल्य देवा वहकारा, प्रकार अपयो आह वह केंद्रा या किये करी दिएक करना ।

कलक (१९७ करणाः प्रवक्त-पु (रगेनसमैग) किसो संस्था मा सरकार मारि की कारने आधिकारिक वर्गने शेकनेनाका महिनियो ।

प्रवरसमिति की (सिनेसर क्षिये) किसी निवक्से शालनीत करने कीर निवार विश्वके मार निविश्व मत प्रकृत करने के किए बनानो गर्ना सुनै इब विश्ववत सरवें-की सिनित ।

प्रकार्य पु. (केटेयरी) कई मायों नगी ना नेलिकोर्नेने एक। प्राथियि-की. (देश्लीक) कोई (कलारमक) कार्य करनक। [बुद्धेय वंग, विदेश दिवि ना विदेश क्षेत्रेस ।

लविर्धय करमा – स. कि. (धेनीन्व) संजानी काररवारे रभगित कर देना या कसने विर्वय करना ।

प्रतिष्ठ रोति—पु॰ (रनवीर पर्धन) वह रोती से थिकिया बनमें ही एकार निकेशन करने से स्टेशनी सरती कर जिना तथा थीं, धंवर्नासी रोती।

प्रशिक्षि – को (भी) साथ, पुस्तक भारिमें (म्प्यने) भड़ाने वर्ज करनेक्से किया; नद्द भीव मी जब महार कियो ना दर्भे की नेची हो।

मधेग-प (रेपी) विकते पत्रन, वास करने स (को

ιt

ŧ

í

दभेदे बर्भ दशाव दाकदर वर्गूल दिवा जानेशाला पन । निष्क्रमपन - प्राक्तिमें देन 'पारवर' । निष्क्रतिकी संपत्ति - भी (दनेदुर्ग सावशी (कान माठ दे मेदस्ये वनभेदे डिक्टो नो भोव अपना पूर्व खान स्वीक्षर भन्तत्र पने वर्गे हो बनके हारा अपने पीछ छोड़ी दूर संपति ।

निरिद्धयम्मित्राय-पु॰ (वैक्षित्र रेक्षित्रेत्व) ग्रास्टब्से घोरसे होनेबाद्ध रूपम अप्रतिकार न कर रूपको अनुनित जाया या विधि(कानुन)का सन्तेयन ।

पा निरंदित नुस्ति बन्द्रपत । निरंदारबा-पु (हिन्द्रोजन) काम पूरा करने वा निव सनेन्द्रोजिया।

विश्वित स्वार्थ-पुर (रेस्टेड इंडरेस्स) ध्यापार ध्यवताय भूवि आह्रिये स्पता धमान्द्र प्राप्त दिया क्या शिवर स्वार्थ

मीतियोपका-थी (वैनिहेर्स्य) दिसी वर्ष्ट नेवा ना राज्यके प्रधान प्राप्तक भारि द्वारा भवनी नीति वा कदन मारिके संबंधने विधित कदने की गयी सार्वजनिक भारता भारतीया।

मीराधिषक भूमि-को (नोभेशन थह) हो देवीची चीमा कोडे रोवमें पड़नेवानी बह भूमि वा दोमेंसे किछीडे भी कदिवारों म हो।दे नियवामिक भूमि ।

नुतनीकास-पु (रिभोश्या) हे 'नुनीकरम । नुबंद्यपिशास-पु (रुन्भायोगोश) सामवर्गठको व्यवीट रिकास बारिका विवेचम करनेवाल। छास्र मानव-रिकास ।

नेत्रपिद्यान-पु॰ (आप्टिस्स) श्रीह और प्रकाशके श्वकप तथा निवसी-सिद्धांती व्यादिका विवेचन करनेसका विद्यान रिटिव्हान।

मिरास्ययाद-दु (दिक्षियाम) मंत्रारको दुग्यमय मानने, प्रतिक वरद्वं वा परनाको नेरारकपूर्वं पश्चिम हो देखनेका

मिजान । मीजापिकास —पु (एविमाका) दे 'नाविकास'। मीतास , नीपरिवहम —पु ॰ (नीविकास) जहाव साविमें देखार कर मार्थते बाला करता ।

भीतरणीय - वि (नैवियविष्) बिसमें नीका जहाब आहि यक समत हो (वह नदी शासाब आहि)। भीतार्थ ।

मीपरिवहनविषयक-वि (शिक्षिक) एमुप्रवाण बहाय हारा ने नाने था बहायी जाविकी आदिने निस्का मंदन हों।

माप्रभार-पु (त्नेज) गैठ का बहाजवर कारे या सकते वाने माधका कुछ भारत बहाजका शुर अपना भार वा वस वकरादिका भार को समुद्रादिमें संतरण किने जाने पर कसके द्वारा इताबी नाय।

मीबसाप्यस्म-पु (बदियरण) नीका वा मीमेनादा प्रवास सेनावदि, मीसेनादा स्वस्ते वदा अधिकारी । मीबिशान-पु (नीदिकण स्वरंस) बहावी माविको वा

मीविशान-पु (नीरिकण सार्थः) बहावी नाविकी व नीका-नयम-सर्वी विवात ।

स्यायक्त - पु (बृशिस्त) स्वाय-खाळका वाता । स्यायपाकिका-को (बृशिक्ष्यते) वैक्के स्थायायोकीका धनुका वेकका स्वाय-विवास वा स्याय-स्वरुखा ।

स्वाचपीढ-पु॰ (वंथ) व्याचपीद्धक्ष भागन, भमोतन । स्वाचमूर्ति-पु॰ (अरिता) वं॰ न्याश्वापित्रति'। स्वाचित्रत्तेत्रा-पु (मिर्फिटेरिट भोड अरिता) न्यायक्ष प्रचित्र मानेत्रे प्रकाश जाना न्यायक्ष स्वस्य विदिश् यहक माना, स्वाचनेत्रत्त्व ।

न्यायसाख-५ (न्रिष्ट्रेंड) स्वाय या विविश्तिरी ग्रामा दे॰ 'निविविद्यान १ दे॰ 'तर्रहाख'।

क्यायश्रह्ण - पुरु (कोर्ट पो) स्थायश्रस्य ने कार्ट आनरम यथ प्रदेशास्त्रित करते पो) स्थायश्रस्य ने कार्ट आनरम यथ प्रदेशास्त्रित करते पान दिया जानेयाका श्रास्त्र नी प्राया स्थाप(केद्यश)के स्पर्ने द्वीता है।

न्यायसम्बन्धः (तृते) चीवत्तरीकः 50 जासन्तरम् सुक्षण्योद्धा विवाद करवे समय वीदा जनको सहावता करलक विवाद मितुकः सम्बन्धः किनकी संक्षणः साधाः १ से भ सक्ष होतो है (तनके न्यायाणीयका सर्वाधः हो संस्था सामका उच्च स्वावाध्ययों भव दिना याता हो।

सामका उत्ते जानाक्ष्य भव (दा शाता ह)। व्यापाधिकरण-पु (द्वाराम्नव) किसी विशासस्य विषय वा विषयीपर विभार कर स्थाविक निश्च करने साध्य अविकारी या दशी पर वसी स्थापित विशेष स्था

याक्य। स्थायाध्यपित-पु (४१८४) (१४४६े सुस्य न्याबाक्य बा देवके सर्वोध स्थायाक्यका स्थायाध्य स्थावपृति (त्य स्थावधोधीये वो प्रथान बोता ई वसे सुक्य स्थाया विचार (नोक स्थाय) कड़ते हैं)

न्यापिक विर्णय-पु (यस्पुटिकेश्वन) न्यायासनपर रेड कर किसी मामदेवे संश्वेष विर्णय दना पा छा तर€ दिका स्वा विर्णय।

ार्या नया । नगर । श्यायिक प्राधिकारी – पु (बुरोग्नक अवॉ(रेरी) स्वाद निभावका प्राधिकारी ।

स्वाधिक मुन्नां क्यां (त्रु मेशक स्वां) श्वासावस्य स्वाधिक मुन्नां क्या । स्वाधावस्य स्

व्यासिता—की (हुग्रीक्षित) किसी संपत्ति मा जानदादका प्रतंत्र हुरिश्वों (व्यासिवों)के द्वाव सांच देवेको किसा । व्यासी—द्व (हुग्री) वद व्यक्ति जिसे किसी पन या स्वतिक

का न्यास (विश्व उर्देक्सी विश्वासमूर्वक समर्पेस) कर दिवा बचा हो। दें 'न्यासभारी ! स्यूनकोण-पु (विश्व व्यक्ति) वह कोण को एक सस-

स्तानकोणान्यम् । स्रोनकोणान्यम् (एवर्ष्यू एत्रक) वह कान या छह्न स्रोन

स्यूनकोव्यक्तिमुख-इ (रेप्रयूट-एरिस्ट द्रारएतिक) वह विश्व विशवे तीजों क्षेत्र स्वूनकोल हो।

न्यूमसायोधक−वि (विन्यूनिदिश) यह ४८छे न्यूम या स्रोटा है, यह नीय करानेदाका (स्रव्य), क्रमदायक, स्रवार्यक्र।

न्यूनम्~पु (पश्चिमेंट) वटा देना कमकर देना, छोटा कर देना संक्षेपया।

त्रमृतयोषध−९ (मैकन्यूद्रोदश) शास-वरहुसीकी सरारी, कमी सारिके कारण पर्याप्त शोरफका न मिकना, कुपीस्था ત્રોગ વહિલ લાગાઓ આદિવા નવદી નવદી અને લેનીસ દોના ! (નગાહિદો) વિશે વધ્યુક્ત ત્રનીસે આગે વદ્યન ત્રીને (પ્રદેશ આદિવો દવસાદ !

प्रवेशपप्र-पु॰ (रिका) किसी सिनेवा, नारन्याका सनीतनाम्बद्धन भारिम प्रशास अधिकार प्रदान करने नाका प्रश

प्रवेशस्त्रम - पुरु (दिक्षीय) व्यविद्यारियों भारिन व्यवी संवे पूर्व क्यांवेह किंद्र हा कोयोदों कोई ब्युनिय काम करनेम रोकनेद किए कार्यांवम बुद्धान भारिक सामने बहुक दें बाना विश्वन उनके प्रोटावे काम पढ़े परना। प्रयावन - पुरु (मारवेशन) किसी एक देख वा अरेसारिते अन्य होता वा प्रदेशारिये वहाँ नम्र आवश्चे गरको

मसंख्यायेष-तु (१८७/८) किया वचार आवय करत समय उसक किया कवन वा मरतावादिक अनुवीदनमें बीडाओं हारा की बनी मर्शनायुक्त व्यक्ति।

साताला हारा का स्वाम प्रमान्यक रचान । महासाक-पु (देहिनिरहूटर) शक्य वा शामनप्रक्ष करनेशां भक्तिशीः भूमन्तिका प्रक्ष करनेशांका कर्मकारीः

प्रसासन-प्रशासितः(कृप्तः) हाश्वक दाण्यं वा परि पाकत्व वर्षः। - प्रज्ञ-पु िक्षः चौत्र परिविद्यः इत्रः) महाकृष्ट हारा सार्थः दिवा प्रवास्त स्वरोधितः है विश्वक स्वतार दश्यान्यवदेशः सर्वद्यतः स्वरोधितः विश्वक स्वतार दश्यान्यवदेशः सर्वद्यतः सर्वद्यते स्वरोधितः विश्वक सरामक्षेत्रः स्वरोधितः हा। - भौता-पुत्रः (कंकाः

भादिक सार्य धानमञ्जवस्थाका उप हो जाना । मसासर्गाम कृत्य-५ (रहमिनिस्ट्रिश फक्सण) राज्यक

प्रवासनमें संत्य रवनंताक काम।
प्रतिक्षणन्तु (ह निय) विभी स्वस्थाय कहा विश्वादिको
सा कृत्वी दो कारिको स्वास्तादिक स्वयं स्वासाद कुछ
समयक दो जानेवाको हिन्दा। — प्रहाविधास्त्रम—
सु (हेन्सिय कांक्रेण) यह महानेवाक्य निस्त्रमें स्वास्त्रमक्षे स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्

प्रशिक्षित्वपर्धिन्यु (हेनी) वह वी प्रक्रियन पारहा हो। प्रशिक्षितन्ति (हेंक) निधने किसी व्यवसाय कवा कारिको कियासक सिया पाना हो।

मधीतक-५ (रीकिशरेटर) दे हिमीस्टर ।

प्रशुस्क-पु (शिरक) भागात-निर्मान नरतुनीपर कमने बाजा कर । — प्रक्रक-पु (शिरकोई) किन वस्तुमोक भागात या निर्माणकर कितमा कर कमाना जाय इस संबंधि सहिति विकास कर सरकारको सजाह देनेनाको विशेषकोदी समिति।

प्रशासकी-को (राजिस्स शासरसारक) गाटा-पुस्तक। में साबोके जन्मासके किए सक्ष्य विते हुए प्रस्ता है। 'प्रशासकी-पुत्रक । -पुत्रक-पु (श्रीक्षतेषर) किसी मनवस्थापरिकी रिपर्टित वा कम्प विश्वकी साजकारी ग्राह

करनेके जिन उससे संदर राजनाम विनिध म्यक्तियों के बास जिल्लिन रूपमें भेगा जानेदाल संदर प्रश्नोंका समूद विगका उसर देनेका उनसे अनुरोध किया आता है।

प्रश्नासारी-सी (६८/६४म) यह पुरवक निसमें कोई विषय प्रश्नी सवा उनक उन्होंके रूपने समझाया गया हो।

मस्यायकाश-पु॰ (मैरानिशे क्षेत्र) किसे स्रोक्ष स्वाव-काव-त समय ही जानशको राही, प्रमुख्यकाञ्च । प्रस्तवाचरकाळ-पु (शेरर-धळ गोरियक) ग्रिहाको सम्म

्ये मुक्तमः बारको यममोको रियति वा समय । प्रसादन-पु॰ (गोविदियेतन) किसी स्पक्तिओ संतुष्ट या

प्रसुध कर भाने मतुक्त बनाना। प्रसादपर्यस्नम (स्मरिंग दि स्टेपर ऑफ) (राष्ट्रपति

प्रसाद्ययक्—भ (उटार्ग १६ क्वर आफ) (राष्ट्रपार्थ भारि) बरवक चार्डे तरवक्त बस्त्रक १५४४ या सुदी हो वरवक्त।

प्रमाधन-पु (हार्ड्स) वाडीको स्त्राने, समुन कमाने, कोड वा वर रिन्ने कारिको दिया। न्यूक्य-पु, -सामग्री-की (हार्ड्स) रंगार वा प्रसावनमें काय कानेवाडी वस्तुरी।

प्रसारक—पु (बाण्कारिया) कोर समाचार, मानम पायन सारि दूर दूरक सार्गोको सुनाने के किए सानाञ्चनाची हारा सार्गो कोर सैकासा !

चारों ओर चैकाया । प्रसारिश-दि (शादकार) क्र-दूरके केमोंको सुनानेक किर शाकाञ्चली द्वारा चारों और चैकाया १४० ।

प्रशासिका-की (निवसारक) मसन कराने, नथा सनान बाको की !

प्रसृति-उत्पाल-कार्य-५० (मैडिटनिटी बेक्पेयर गई) श्रिष्टु जननकी शुक्रित स्था जण्या-रणनाठी मकारेते संबद्ध सार्व जात करनावकार्य ।

प्रमृत्यसकास—पु (५१९निधै कोश) है 'प्रस्वासकास । प्रस्तर भुज्ञस—पु (कियोपाफ) विशेष प्रकारचे प्रकरपर कियकर वा योजकर प्राप्तेका कार्य ।

प्रस्तरयुग-पु (स्थेन पत) वह पेतिहासिक काल वह मनुष्य काल सीकने कारिके किए प्राय' प्रकरक वने बीजारीक ही प्रयोग करते थे, पादाणस्य !

प्रस्तार-पु॰ (परम्पृदेशन) वस्तुमी सहरी, मंत्री भावित्रो भित्र-भित्र प्रसारसे पेसियों या कठारोंमें रखना ।

प्रस्ताय विवाद नियंत्रण-पु (शिकाटिव प मोधन) दिशी विवयह कारित संवयं विरोधियों हारा अनावस्यक्ष वाभा वाके जानेपर अध्यक्षका समय विगीरित कर उस स्य प्रकार निवशित करना निवशित समय नीतनेक पहके वी नसके स्थाहन या अस्तीहन होनेक निवाद हो जाव। प्रस्तावमा-की (शीधिक) किसी विवास प्रदेख आर्रका मार्गिक मागा दिशी याचन क्षेत्र आर्रिक बार्गमका क्षा प्राकृतन।

मस्त्रतीयमृह निर्माणताका की (प्रोप्नेनिक्टेड हाउस प्रास्त्री) वह कारणाना यहाँ महायक अकाम्यक्षम हिस्से पहलेडे तैयार किसे बार्ड वाहरू वाहरू के की किसी भी स्थानपर एकत्र कर पूरी समारत बासामीसे सही की बास्त्री।

(अंडर-नरिश्चमेंद्र) ग्रेक्यकी वा पोक्क तक्षोंकी क्यी । न्यूमधनस्क-वि (ग्राहनर) दे॰ 'नावाकिंग , 'अनवस्क । म्यूनीकरण-पु (अरेटमेंट) क्रम कर देना, बटा देना। म्पूनोबद्ध क्षय-पुर (बंदर-टेनक्प्ड परिना) नह मुनाएको बचीमी सनिज प्रक्षों मानिकी विक्री बहुत विश्वता हुना

हो। विस्त्री पहरा कम कश्रति हुई हो। मर्पविद्यासित धन । पंक्तिस्मृत-वि (टिग्रेटेड) दे॰ क्रोडिस्मृत', जो अपनी पंकि का कोटि(हरमें) से भीचे हटा दिवा गया हो। पंच-प (मार्विनेटर) दो फाँके धीमक प्रापत विपराक्षेत्रे क्षिप, वीमोंकी म्नीकृतिसे निमुक्त कोई सारव व्यक्ति किसका समितिर्पंत माननेके किय दोनों बाध्य हों। −निर्षंय−प (बारिटेश्वन) पंच हारा किया गया निर्धय । - स्यायाधिकरण-५ (जान्द्रिक हिष्यूतक) बह अदाकत बिसमें भागकेका गिपरास पंची हारा किया पंचमांगी-प (फिस्ब कार्डमिख) इसरे देशने ग्रस संबंध रक्षकर स्वरेक्को शानि वहुँकानेवालाः देखहोडीः मेदिया चम्चंद्र (स्पेनक्के राजधानी मैक्टिक्ट अविकार करमें के किए बार की बीको साथ केंद्रर करनेवाले जनश्र प्रेंक्षेत्रे पॉपर्वा सेमाके कपमें रह देशहोतियों वा मेरिकॉसे ही शहाबता मान की वो इसीसे इस सरकड़े कीय पॉन्डी ऐनाके अंग वा पंचर्याची असे जाने क्लो। पंचार-प (अनार्व) वे 'परिनिर्धय'। पंजी-सी (र्राव्हर) वश्चस्त्रक वा वही विक्रमें हिसाव कार्य विवरमः कमा चुलुका केसा गृह, शुप्ति बारिकी भपिकृत निक्की का करवांत्रस्य भागिका अभौरा किसा का दर्व किया बाद । -बदा-वि (रजिसार) को पंकी वा रविखरमें क्या दिवा नवा हो। पंजीयक-प (प्रवित्द्रार) निजी क्षेत्र वन्त्रापण आविक्ष प्रामामिक प्रतिकिपि राजकीय पंजीमें सुरक्षित रखनेका

प्रवंश करतेवाका अभिकारीः किसी विश्वविद्याक्य क्या भागाज्य, सहबीगसमितियों आहिका वह कविकारी की भपनी संस्था का विभागन सन प्रकारके महत्त्वपूर्ण केंद्र। काग अन्तरादि सर्वतित कारसे राजनेकी व्यवस्था करता है। पंजीयम-प (रिवरदेशम) सकाव अमीन आरिकी निकी वा इस्तांतरम बारिका म्बीरा वा किमी वास्तक, विद्री मारिके प्राधित कमसे मेन बानेके किए वानेवाके का मान पता भादि वंत्रीये चड़ाकर व्यक्तिक स्वयं रक्षा जानाः सम्बद्धिं सारिका नाम-स्वीमें नामका दर्ज कर किया जाना ।

प्राक्री-सी (एकार्म) नेक्में क्षेत्रं सतरा वपश्चित होनेपर नवानी जानेगाओं पंदी, स्टारेकी पंदी। पराध-प (देशिक) मेत, देनुका (नोर्ड) कक्षतीका उक्ताः

इस्ती । पदकीरपाक्रव-९ (हेरीसम्बर्) दे॰ 'क्रोक्षकीरथक्रव । पहिल्ला-प (कीवडीड) वह विनंध निर्ध किसी मृति वा संपरिके स्थमीम-संबंधी अधिकार किसीकी तिने जानेको सर्वे, पहेको कर्ते विवरण भावि एएता है।

1146 पठम-पु, पहरा-की (रेटिन) दे॰ 'शावन'। पणकिया-श्री (नेटिंग) गांगी कंगानेका कार्य नमन । प्रथमिन-प्रश्न प्रथमिन-बी । (मार्देर) वसार वदरे खरीयनेका स्थान, वाबार । पण्यवाहक सीका-सी॰ (कारमे शेर) माल होनेशली

पताका-सर्पिष-प्र• (नेशर देशकारन) समावार-कार्द सुकारकपर पत्र सिर्श हुछरे शिरेकक, पहानक्ष-कार्य, विवा गया सर्वप्रधान और्वक प्रश्न (स्थापी)और्वक ।

पताकित-वि (१केप्ट) एताब्यमोंसे स्टब्रिक विपर पताका बगावी यदी हो। पम-बकार्थ-तु (केपर-करेंसी) क्ष्मे द्वप क्रम्यक का गोर्क क्यमें चक्रनेवाकी सदार कामधी सदार। पत्रपाळ-१ (गेरुमासर) शहकानेक प्रशाम मनिकरी,

काक्द्रपति । यश्रपेटिका-स्वी॰ (केटरनास्त) मेडी बादेशको विद्वी रा वैदेह छोवनेका बच्चाः सदालके हाराविश्त स्वास ह्या र्स्ट्र विसमें बाहरसे भावा हुई बिद्वियाँ अभी पर वितरक (धाविया) द्वारा काम की बाती है। पश्चमाइ पश्चिका-सी॰ (धनाइक) नह छोटो पेटी स वही क्सिपर प्रवादिका व्योरा च्या विका शाला है भीर विसे पत्र-बाहब करेशकेरी इस्ताहर करानेके किन भागे

साथ के बाता है। पद्मित्तरफ-इ (पोस्टरीन) बाहरसे आहे हुए परी बारिको पानेनाकॉर्मे गाँउ भाने उनके पाउरक स्वा देनेपाका पत्राध्यका वादमी डाकिमा । पश्चविक्रोक्यक-प (हॉर्टर) थेने शानेनाडे स्थानों दे क्य सार पत्री धारिको प्रवद्ध-प्रकट करनेवाका प्रवासनका कर्मचारी । वप्रसचना-विमाण-५ (देस स्वप्रस्थवन व्यते) समा चार-वर्षे है किर सूचनारें और समाचार वेलेवाका छर कारका सेवा शक्ति या दिसी संस्थाना कार्याक्त

अथवा विधाग ।

वद्यान्तर—५ (कारेरचंडेंस) पवस्पवहार, यस विदानत । प्रशासन-इ (वीएर वासिष्ठ) वह श्वाम वा वार्यासन बहाँसे किटी पारसक, मनीमाहर मादि गहर मेजने तवा बाहरसे बाधेबाडे क्यों पारसकों आहिया सब्बन्ध व्यक्तितिक पर्वेचानेका प्रदेश हो। बाक्स्यामा साम्पर । पद्मधानिक आदेश-५० (रोस्टब आरंर) पत्रकथ (इन्ह धाने) बादा क्या केटर जारी दिया एवा यह तरहया बनारेस (येक) थी नैक्के भेड़की हो दरह रेक्सक्रिय किया जा शक्या के पर जो प्रश्नांकित कर मन्य किमीके याम हरतांतरित नहीं किया या गुप्रता, शाबीब भारेख । पत्राक्षपित-वि (पो(टेड) सन्बद्ध भने वानेके क्रिय प्रा-

क्य वा पत्रवेदिका(शाहबर या केटर शत्रम)में धीरा SWI ! पद्मास्त्रपीय प्रमाणपथ-तु (रीधक क्योंक्रिके) क्येर पण, वैद्धर मादि अन्यथ भवनेदे क्रिय प्रशास्त्रको अपित किया समा बसका प्रयास पत्र नी बनाकस्के संबद्ध करे चारी हारा दिया कार्य शब्दीय मनावरत ।

प्रस्थापक-पु॰ (प्रपोत्तर) (विधानसमा साविमें) कीर्य प्रस्ताद एकते द्वा सामने कालेकका ।

प्रस्यापना की (प्रपोतक) (विश्वानसमा नाहिमें) कोई प्रस्ताव कामा। यह प्रस्ताव की प्रश्वापक द्वारा सभा नाहि में रसा बन्त ।

प्रस्थापित फरना-स फि॰ (इ प्रयोग) (निवानसमा भाग्रिमें) क्षेत्रं प्रस्ताव रखना।

प्रस्कोट-पु॰ (वर) दिस्कोटक प्रामीचे भरा हुन। कोईका गोका भी जहानने मिराना नाता और हानने तथा तीपमें मरकर भी पेंका जाता है।

प्रस्वीकृत-वि (रिकॉफ्साइक्स) जो शविकृत कपते मान किना गया थी। जिसे औपवारिक कपते यान्यसा (संबद दीने वारिको स्थाहरी) वे दी पत्री सी।

प्रस्वीकृषि जो (रिकॉर्यविक्रन) प्रधान या केंद्रीय संस्था हारा भन्न होती संस्था वा संस्थानीका वस्तित्व प्राया भिस्ता भारि पान किया वाना, मानवरा। किसी वस्तु को ववार्षया विशेष्टा दाने व्यक्ति मान केना।

प्रस्वेद्त-पु (फीमॅंड्सच) वर्धामा कामे, गरम जक्ते चेंडले काविकी किया सेंक बाष्य-शायन ।

प्रांतीय व्यरास्य – पु (प्रांतिक व्यंतीनोंग) प्रांती वा किसी संबराज्य सम्मान्य सम्बन्धि प्राप्त स्वराज्य मिस्टड बलुसार क्यां बांतरिक विषयों संबंधी मिर्क्य करने वा नोति निर्धारिक करनेकी स्वरंधका दोती है।

प्राञ्चलन-१३ (पश्चिमेर) संगतित व्यव वा अपरका पहुँचे अनुमान कगावा वा कगावा मना अनुमाद ।

प्रारियमाञ्चन भुगताञ्च (भी-पारीहन देनैर्छ) भारतका विभाजन दोतेके पहले किया गया जान आदिका भुगताम ।

प्रातराख्य~पु (नेबद्धास्ट) तदरे किया जानेवाणे रणका मोजन या नास्ता क्षकेया।

भागन था नाशन करूमा।
प्राम्तिकता ची (प्राम्तिकी प्राचिक होनेका समा
किटीकी क्षेत्रिति वहके रमान था अनवह विकता।
—सुची—दी (प्राम्तिकिकी विकते) निवसी वादिकी दुवी
विकते दस्ते प्रस्कार्य दमा आगस्यक्ष अगोकी स्वतः
साम प्राचिकता देनैका विकेष स्वाम रमान प्राम्ति हमा
प्राम्तिक सेना—को० (देरिकी दिवस सामा) निकता विकर

प्रावेशिक सेना-का॰ (शिरोशिक मार्गा) किसी विसव प्रदेश वा धेनमें स्थानीय सस्थाको स्थिति तैवार की नाले-नाको (नालरिकोको) लेगा।

माधिकरण-पु (वयोरिजराम) किसीकी कार्र काम करने आहेश देने आहिका मधिकार महान करना।

प्राधिकार-प् (नवारिये) कीर्र काम करने आवेदा वेन आदिका अधिकारः रेस संरक्षक वह अधिकार की किसी एर्स्सिकारीको अपने परके कारण गाम थे।

माधिकारी-पु (क्यांदिरी) यह विशे माधिकार मास को । (माधिकारिका - जनारिसीका)

प्राधिकृत-दि (अव्योगास्त्र) विभाविष्यित अविस्त्र प्राप्त प्राप्त ने दिविनिदेश व्यक्तिय स्वार श्रीकृत हो। -स्वतिक्यां-पु (अव्योगास्त्र स्वार्गे) यस अविस्त्री हो। स्वतिविद्यां-पु (अव्योगास्त्र स्वार्गे) स्वार्गित अधिकार प्राप्त हो। -ब्रियी-च्यो। (अव्यागास्त्र विश्वत स्वार्गे भाविमें क्यायिके क्षिप विरक्षतारीते को बानेनको वा वृँगी निस्को स्वोक्ति विदेव ग्राविकारीते वे को मद्रो हो। ग्राम्बायक-पुर विकारतः ग्रीदेसरो वह कावास्त्र से सपने निरमका अच्छा विशाप हो। क्रिसे महर्बरधारव कारिका क्या बेबोका कायास्त्र।

प्रामुस्तिपन्न-पु. (एर्गस्ट) वह एव विश्वमें बोरे हेन मारू, विश्वपर किसी तरहका विशेषण हो, सीपिट बाया में खारिस्सको विशेष अनुसति हो सवी हो। साक प्रसरे बारोनेवहानेबहानेबी विशेष अनुसति प्रराज करवेशम वहाने

भागक-पु॰ (पेबी) विसे क्यबा-पैसा कारि दिया बाद, जुकाना कार्य, पानेबाका ।

मास्त्रधिकार-पु (शिक्षिक) वह निश्चन मन्त्रित थे कुछ थी कीमीकी प्राप्त थे। दिसी व्यक्ति वर्ग, संस्य साहिकी समस्यी विदेश दिवतिके कारण प्राप्त विश्वन मीर कार वा समुक्तिमत ।

माशासुन्त्र-विण (कारसेंक) विशे किसी वरता वंशे वा बोर्ड काम करनेका अनुवादन दिवा गया हो। ३० (कारसेंत्री) वह व्यक्ति विशे इस सरहका बनुवादन विमानका हो।

प्राप्यक-पु (विक) किरोक्ष हाथ वेषे हुई यक श किरोक्ष किए हिल हुए काम मादिया भीरा केर शन मक्त विधानिकाका पत्र ।

प्राप्तिकती—यु (तिविधिक्तं) वह विश्वे कोई वस्तु प्रकारी। प्राप्तिकती—यु (द्याप्ती) वह व्यक्ति पित्ते विक्तं के व्यक्ति वा सरकार्य औरसे प्रार्थितिक इनवें स्वतं सरके विश्वितिक व्यक्तिकर प्राप्त की। वह विश्वे प्रकारये प्राप्तिक विद्याप्ति औरसे देकारण करन आदिका विश्विते

प्राप्तियोक्त-पु (मस्तिक्ष्ट्र) (क्सीक् रिव्ह को प्राप्तक कार्यकाणा - प्रक्र-पु (प्राप्तेक्स्तुत) वर्ष व्याप्तिक्का भोरते क्सिके निवह क्षेत्र प्राप्तका माना-कार्य कार्या प्रया हो। (रावकीय प्राप्तियोक्त-ड॰ (वर्तनेवेंद्र प्राप्तेक्स्ट्र) टाज्यका वर्ष विभिन्न वर्षभक्षी को सर्वक्षिक विवदी बहिते क्रियोवर कोर्र क्षित्रवेंव क्षारते।

प्राभियोजन-पु॰ (पानीस्यूजन) क्रिप्तीके विस्त कार अधिकीय या प्राथका चकाला ।

मामेडकिक-वि॰ (दिवीजनक) प्रभेडकका वा प्रमेडक

भाक्षा वह प्राथमिक कर मां प्रीप्रधार्य वैद्यार कर विका स्थापन पुरुष्टिक कर मां प्रीप्रधार्य वैद्यार कर विका

मारिका वह मार्थिक कर ना धीमाराने देशाद कर दिवा भारत है, किए मिसमें क्षा के मार्थिक मार्थिक की भारतकमा पहली के मंदीरा, सर्व मार्थिक -कार-ड (इन्ह्रस्वेन) पास्त्र का मसीरा देशा

बर्मवाका । प्राधिक पूँजी-श्री (स्टब्स्प्यूट देविटक) किटी कर-साज आदिके किए प्रशिक्त पूँजीका नह स्था हिंदे किए प्रथमित हिस्सेश्रीक प्रार्थनाक्य प्राप्त स्थेर स्थाइन से पहले हों। पश्चाखाय-पुर (नेनोप्रीययान) निष्टी एकी स्वादिकी सहा-यवाने समागीतका रूप निक्रित करने या कार्य वात तब करनेका कार्य ।

प्रकर-दु (श्रव) किसी सहस्या दुव्यस्य आने। माव के जाने वार्ति क्षित्र कमनशका कर ।

darte-2 (diete) je ,diete, i

पर्कारणाग्, पर्वम-भ (६०६ आदिशियो) (प्यक्तिगत कस्य नरी बरन्) क्रियो परपर आस्त्र रहन या काम करत रहनके कारण !

पर्भारत-मुश्का-औ (श्रीशृश्चि आह टन्यूर) विश्वी परम्य नीहरी आदित्तर काम करत रहने या ग्रास्थित करते वन रहनेदी रही भ छा !

परवाधा पररोध(पररोक)-१ (धेन विकार विन्ध) (दिशी स्टब्साब हारा) श्रेव अशब्द अधीत अविवर्गित

रूपते वेंद्दो यहियोको ओर बहनस रोड बंगा । यत्मुण्ड-वि (भावट यादम) अपना यह या रवाम छोड कर अन्यत्र जानवाका ।

कर बस्यम मानवाकः पदमोपन-पु (रिक्रोक) किनी पर वा कर्तन्त्रमे मुख हो माना मुद्दीया नामाः पृथक्षा नामा वा कर

(१वा अन्। । प्रस्माक्या—की (पासिम्) वाश्वमें कार्व इस पहका

राज्यर विव बचन आदि वत्त्रवाचा । पद्मिष्यार्थी-(२०, द्व (पद्मित्र) मेडले प्रवेदी आद्याने दिना बेटन दिन काम भी प्रवेशाण बन्धरवादा किनी बनुभवादा व्यवसायी बन्धार्थर आदियो देवस्पर्ये व्यवसाय व्यवसायी देशस्या प्राप्त करवेशाला

धिवस्तान। प्रस्युक्त चित्रस्तान। स्था वा किशो वहे व्यक्तिका चित्रस्तान आहिके परकी विद्यक्तिका स्थानवाडा विदेश विद्यक्तिका स्थानवाडा विदेश विद्यक्ति स्थानका किशो विद्यक्ति हो स्थानका क्षिण क्ष

पदापधि-को (रेजूर) दिक्षो प्रदश्त काम कात रहन-को सर्वति।

पदायास-९ (धाडिएक रेबीरॅंस) दिसी वराविकारीका सरकारी निवास स्थान ।

पहोद्याति – श्री (प्रमोद्धन) विश्वी कर्मचारीके परमें कीने-बाकी मुद्रिया उच्छति पहतेश्वे अधिक अध्ये प्रदूष विश्वास क्षेत्रा वा भेद्रा भागा प्रदूषि, सरकी ।

पमित्रकी सक्ति की (शब्दो वहेनिहरू पावर) तक-शक्ति संप्रोगसे जलक बीनेवाकी विवक्ति सक्ति जकत्वपुर सक्ति।

परंतुक-तु (तारियो) निशी व्यविध्यम प्रवेश आदिशो भारत्ये साम बरी हुई कोई कर्त मा क्सक पूर्व क्यते पाकन या कार्यन्तिय दिने मानेने प्रवेशको विशी करि मारि क्यतेने किय निकास हुआ दुस्ता। प्रकार-प (विशासनी क्यते प्रति बसाने, स्टाप्टे

परकार-पु (दिवास्तर्छ) कृष्टकी परिणि बनावे, साधने भारिका दो मुनाभीनाका एक जाका।

यरमामण-पु॰ (नवेशिवयम) पुर लिपनारो समेन (नप प्यात) दूसरको स्रतांतरित करनेको किया ! सम्बद्धक-विक निवेशिवयकिको (बह नेक्समारि) नी

परस्कारय-(४० (नेपोधियनिक) (४६ वंशवणाति) ना पूछत्को, समस्य अधिकारी समत इरतांतरित किया ना सक्रो

यराजन्त्र्यी-सी० (देररस्पून) हे 'परीक्षयन्त्रिका'। यरपञ्जमाही-बि० (संबेद्दो) अपना दक वा च्या घोषस्ट बुधरा दक वा च्या महत्र बट अनेवाला। अपने दिवासी वा सिकोर्वोका परिवास बट कुम्दे दिनारी सिकोर्वोका

अनुवाधी रण प्राप्तेशका । वरमम्बाधाकव-पु (सुवीमकीर) दे 'सर्वोद्ध म्याना-

वरसबीरचळ-चु आरतीय वनतंत्रमें ठाउँके सम्मुख अञ्चलात्म कीरका बरीहित करनेवर मारक सेनाक क्रिये बोरको दिया बानेवाका विस्तीदिया कालकं समझ प्रकार समीका वरवार।

वरमधेष्ठ-वि (दिच परसद्धी) दे॰ 'महामहिम , तन भनान्।

स्वान्। परसस्या∽की (वेशसम्बद्ध पादर) अनियपित स्रक्ति या अधिकार, पूर्ण तथा अवाप स्था।

परमाणु-पु (धैम) किने तस्वका सर्वे धीमा दुक्ता।
-बाद्-पु (ध्रमि-म) परमाणुक्षेत्रे वस्तुक्षेत्र निर्माप तथा परमाणुक्षेत्र कावी, प्रभावादिका विवेषण करन-सम्बादिकातः।

परमाधिकार- 3 (मेंधेयदिव) दे 'विश्विद्यपिकार'। वरमाधिकार- के सार्वे -की (रहेडक हरिसंक) सर्वहाबा-रयको पानी विक्री कारि देन तथा सार्वजनिक स्वर्धार कारि-तंत्री कार्ये।

व्यात्मसभानि (वैराखादर) दे क्येपश्रीका । वर्रागाम् पु (श्राव्याक्ष) एरायसे अभिविधिका हो जाना, (वर्षाक्ष पुरे आदिसे) पुपपर एरामका पेक बाना,

छा जाना। वरामसम्बद्धाः, वरामसांख्य-९ (बन्धस्टिम स्म) निसी विश्रितस्त्वः वा स्थ्रीकं श्वादिसं परामसं बरनेदा स्वान,

ाधारतस्य या वक्ष्म वातस्य परामस्य करनदा स्वान, समरा या गृहः परामसंदाजी समिति—की (वेववास्यो समिती) किसी कार्य या विववादिक संदेधने स्वकृत्व वेवेवाको स्विति ।

कार या रिक्शारक स्वरण एक व्हाइ द्वाहा सामार । परार्थवात् - प्रकृष्ट स्वरो इस्टर्सिकी देशा वा सकार्यके किया वो जीवित रहने या कार्यकरनेका सिद्धांत । परिक्रम-प्रकृष (हूर) दौरा, चारों और यूमवा, बाबा करणा।

परिगणना-की (छेन्न्क) है अनुमूची । परिगणित वातियाँ-की (छेन्न्स्क कारर्स) है 'अनु चनित वातियाँ'।

च्याचारमा । परिशतकृत-पु (तरकारकारक तरकिक) वह कृत को त्रिमनक दीवी दीवोंने होकर गना हो।

ात्रभुवक धाना स्वापास क्रम्य गर्ना सा। परिकायका-पु (क्षेट्र काळ (हॉटवसन) क्रिसो शास्त्री का क्रिसी व्यवस्थे परिपव करानेके क्रिय सम्के बाम दिवा स्थापत्र।

परिवार-पावी-सी (र्यस्केंस कार) बायक द्वय या

प्रावेशन-तु (क्षार) है 'प्रास्त्य'।
प्रावश्या-भीत (क्षेत्र) परितांत ॥ निकासकी निजेष
रिवर्तत स्वस्य।
प्राविश्वित-नि (टक्टेन्डक) किमी क्ला खिला आदि
को नियंत्र कार्यविति प्रक्रियां आदि संत्ये। । -आयुचित-कोत (टक्टेन्डक भारत्येशन) नियम, प्रतिति आदिके
मननुशास्त्रके अपरादस्य भी गयो आयुचि।
प्राविश्वितानुत (टक्टेनियान) किसी कक्षा, सिवर आदिके

प्राविषयानु (१४-ताव्यन) विशेष का । एवस बाहर वाहर विशेष समितिक प्रविद्या के भिरा वाहर वाहर । प्राविद्य नुवेष प्रविद्या के भिरा वाहर वाहर । प्राविद्य नुवेष के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य कर निवास के प्रविद्य कर निवास के प्रविद्य के प्रविद के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य के प्रविद्य के

प्रसामान्त्र ((१९४वर) निद्वी पट भार वेजाय पदान्त्र शहर भंजनेत्र काम करनेताका कर्नेनारी कार प्रेष्ठ । प्रपायुक्तक मधी (दिश्वेशक) वह पुश्चक या नहीं जिससे भंजी गयी चिट्टियो पास्त्रको आदिका स्थीरा दिया बाडा है । प्रपायुक्तपप्रच (आटर कार्य) वह पत्र प्रसाद क्यों से स्थाप पामाल क्रिती स्वादेश भानेका आदेश क्रिया हो । प्रपायुक्तपुक्त । स्वाद क्षेत्रका आदेश क्रिया हो । प्रपायुक्ति पुरुष्ठी वह क्षित्रके माम क्षेत्र वस्तु विवित्र क्षी नाम पानेशका ।

प्रेरिप्र- १ (त्रांशिमर) वह यंत्र वा साथन निक्ती सहा-वतासे कोई प्रांति (समापार, भावण, जारक आदि) अस्थम नेवनेका काम क्या सम्बद्धारिक संग्र ।

प्रेरप्यस्तु आस्ट्रेराय-पु (पुनिम) (रेक्ट माकगोदाम आरि) भेरे वानेवाके माक्का विकास कारि एकिएस्पे पहामा और वसकी रहीर कारना । माफि-पो (केट्रियन) स्वरंधी वर्षिक नो कही कारन

को नाव!

प्राव्यप्य = द्र (नाश्येप्य) किसी क्या, दुश्यक आरिये
कोई अंध प्रश्नक सुमाना या वर्ष्य करना उस वरव कोई अंध प्रश्नक सुमाना या वर्ष्य करना उस वरव क्षिया द्रभा अंध ! प्रोद्भात होना — अ कि (३ प्र.) (नीगर प्याव भारि) निक्कना क्यिके स्वायविक परिवास वा गरि काम आरिये क्यों साम वाला तियाने केया। प्रोयोगिक सिमा—की (वित्यक मनुष्येष्य) किसी वियेष क्या या स्वयसाय-संनी किसा !

फ् फर्फेंदविकान-प (मारकोकान) मुक्त्री क्रगतेके कारको

संबंध रखनेवाका ।

निरोचक बपावों भाषिपर सम्पक्त रूपसे विचार करनेकी विचा। ककपरिरक्कण∽पु (शिनवेंशन जॉक श्रृट्स) रासाविक

सापनी वा अस्य क्षावी हारा फर्नोकी यृतिमन्त होने। सङ्बे आदिस बनामा !

किर्तम होग-पु (नेनेरियल क्रिनोट) दे॰ 'रवित्र होग'। फुप्कुसम्बाह-पु (स्पूर्वानिया) रक्ष या दोनों फेफ्नोनें दल्पमार्क नमा हो जानेंसे होनेनाका श्रीच या प्रशाह।

घ

वंदिकोष्ठः वंदीप्राचा-च (काक अव) न्यायासयमें मामकेष्य विचार द्वीनोव वंदियाँचे वालेमें वंद कर या वहरेंगे एवनके उनक दशकार । वंदियारपञ्जीकरण-च (देवियत कांपेस) वंदीको स्थाया चीठके सामने वर्गास्त्र करनेका क्रियंत्र भारेस । स्वयुक्तमान्य (स्वयोग) स्वरूप पर क्षत्र कराया

चंचककर्यां-चु (मधीनश) भाषा पद, ध्वा आदि दिसीके बात रेट्स रहानेबाला। यंधकमूदीला-चु॰ (मारंगसे) बद मदानव भादि क्सिके चात बोर्ड भीन रेडन रही गयी हो रेडमदार।

चार होते जो ने देश रही राजी हो देशवार ।

गंपपण -पुण्येत करिया को हो देशवार ।

गंपपण -पुण्येत कारिया होरा था किसी सार्व निक कराया विकार कारिया किसी तार्व किसा यात्रा वह कराया विकार कारिया किसी तार्व का की जाती है कि निर्मारित कारिया होतार का की जाती हा तार्वा है किसी कुछ दरवा वा दरना भारि देनेका मिला-पा किसी कुछ दरवा वा दरना भारि देनेका मिला-पा किसी कहार किसा वावा वह मिलापण किसी स्वा सार्व वावका विभव दिलाया गया भी कि निर्मेश करिये-पूर्व नियुक्त कार्य करिये न होगा सबता न हराया बाववा।

करनेवाला इसारे बहाव । वर्षे हरवा—१६ (केश्व केश्र) कामकावर्षे नावे हाकका हो (क्षेत्र करने प्रवीत करनेवाला; वावे हाथशे तेर् केळ-वनावा नामहरिक्य । वर्ष्ण—१ (क्षेत्री) वर शक्ष वो (श्वरता अभवा पाककी

वळ- इ. (कार) वह शांक या शिरता भवता पांकस्य इसामोको वह के वा वरकोको मार्गित देश इत्तर है। —यशिक्षण- इ. (दी-बावन) परस्पर-वेगी तथी द्वार (क्षेत्रशिक्ता) यह वृद्धेकी प्रीक्ष वा वक्ष्मी परिक्षा केनेक्क किय किया बानेवाका मन्त्र अंदिस वरिक्षा। —साम्य-इ. (केर्सेच औक पावर) हैं 'श्रीक-क्ष्मिका' वक्षांत् संचापहरण- इ. (क्रूरेसी) है शांविक विपर्वन । वक्षांत्व तराण- इ. (क्षेर्स्ट केरिंग) रंजनको स्वामी साक्षि

के कारण बनार्र बहानका रकार भूमिपर उठार पहला । यकाव्यकरिशानी (कीरह कडेर) ने हमनकी जरायी आरोबें कारण भूमिपर उठार एसमेकी बाय्य दी मना हो (मिमान)। यकाव्यक्षण-प्राप्त (रुप्तेशवन) स्पनान्येश आरि किसीसे

यकार्यक्रकम् (प्रायंत्रक) प्रवानिका कारि किसीने वक्षप्रक के केना। वन्त्रवंती ब्युनिक स्ति। वक्षप्रकृष्ट- पुत्राहंक) नेनाका सर्वोच्च वहारिकारी। वक्षिक्रातिक्षयिक- पुत्रक्षात्रक क्षेत्रक हिन्देस्र) सामानिक क्षेत्र भाष्ट्रकिक वीवन-स्ववंत्रे सुबन्ने क्षेत्रक इक्इस#-वि , पु दें ॰ 'इब्रीस 1 इकट-पु [सं] सर्कटेकी कीएक। इक्ट्रा-विश्यक्षा, एउत्राण्य साथ । इकतर, इक्स+-वि० दे० 'एक्स'। इक्तरा-पुरुदे 'दक् में। इकता-सा दे० व्हता^३। इकताई • − न्ही परु दोनेका भाक पर्वाविभयता । इक्रवास-पु० [स०] इहम रसना आये व्हनाः कुछ इस्ते-का सप्रतमः चेद्य ।- (में) हुमै-पु॰ कोई अपराव करने की चेटा। हुक्की-तो है 'ग्रुकी'! इक्रवास-पु॰ [२०] सीमान्य समृद्धि, प्रताप, सन्त करना, स्रोकार। -दावा-पु॰ मुद्दें वावेकी स्रोकार कर केना । - संद-वि मान्यशासी, प्रवापी । इकराम-पु॰ [म] दान विश्वत्यः बतुम्बः मान वहाई। इक्टरार-पु [स] ध्रौ करना, स्वीकृतिः वचन, प्रतिकाः। ─नामा-प प्रतिदापत्र । इक्काई-ली॰ दे 'रक्'नें। इक्रफीम-पु [त•] भ्वड दुनिवाके भावाद दिखेका स्रातवाँ भागः राज्यः। प्रकार:-(वे पदश्राः एकाकी । इकवाई-सा यद तरहरी निहार्र । इक्सर-दि॰ दे॰ 'सउसर' । इक्सीर-मा॰ [थ] ग्रेसिया सन्ती बाहुओ सीना-बाँदी बमानको दबाः साभदायक श्रीपवः बहुत सामदावक वस्तुः इकट्रा-वि दे वकट्रा'। इक्ट्राईंक-शब्देक रह'में। इकात श्रम्भ , तु देश 'यहांत'। इकाई-श्री गमनामें प्रथम और या जनका स्थानः वह मान या माप नो दूसरो चीबाँन्ध्र भाष-तीलमें मानश्रक्य काम दे: यौमिद एरार्थके मूल अववद । इकार-पुर्शिः) इसरो इकारांत-वि [मं] जिसके अंतर्ने 'व' हो (सन्द)। इकेला - विदेश सहस्रा इकेंड•−दि० स्टट्टा । इकोसर-वि एक संविद्ध, ण्डाचर । -सी-वि एक सी एक ११। इक्रीज-को यह की जिस एक ही संवान हुई हो जान इकोना-पुनिना छोटा चावल आदि । इंबीनी-विनी ने वेबीहर वस्ता। इकीसा७−६ एक्षतः इंडर-पु [सं•] एक तरहरत सरबंदा जिसकी चराई बनदी है। दृष्टवास-पुर्वि•] अभ्युद्धः एक ग्रह्योगः। इका-वि जरुता महिलाय। पु एक पीवृत्धी गादीः अरेडे कहनेवाना योद्धाः यह तरहकी वानी। अपने झुँडसे मत्त्रण रहनवाका पर्यु: तादाका यक वृशिवाका पत्ता । -इक्टा-दि सदना-दुवैना। इक्रायम-वि पु है 'हत्त्यावन'। 11-6

इक्सासी-वि॰ पु० दे० 'बस्यासी' । इच्छी—स्त्री एक नैकाधे गानीः ताश्का रका। इक्कीस-वि वीस और एक । पु० २१ की संस्था। इक्यावन-विपनास और एक । पु ५१ की संस्था। इस्थासी-वि॰ नस्सी और एक । पु॰ ८१ को संस्या । इश्रु-पु [सं] रेखा कोतिका दृशा रूपा । -कांब-पु रेखका बंधका रेखा कासा मूंब । —कुटक-पु॰ रेख एकत्र क्ट्नेबाला ।—ग्रंध-पुटीय गोखरू कास । –ग्रधा--ली॰ गोधका तारुमसानाः कासः शुद्ध भूमिकुम्मांडः सप्रेद विशारीकृष्ट् । --गंभिका-स्त्री भूमिकुम्मांव । -- अ-मि ईखके रक्षरे बननेवाला। प्र ईस्फी रससे बननेवाले परार्थ, ग्रह सावि । --तुस्या--को० कास । --दंब--पु० इंस्का इंडक । −इर्भ-पु॰ −इर्भा−की तुगविक्षेप । −मेत्र−प्र रक्तस्य गॉब्फ्स्को मॉस्सः एक तरस्की रेखा। -पञ्च-पु क्वारः वाबरः ।-पाक्-पु॰ ग्रहः ।-प्र-<u>प</u> शरन्ग। -प्रमेह-पु॰ मपुनेह। -वास्त्रिका-स्ता॰ कार । – माकिनी – की दे 'इध्रमती' । – मुक्त – पुरु एक तरहरी (सः र्मन्द्री वह । -मेह-पु मध मेह। -र्शत्र-पुरिस पेरनेसे कता -यप्टि-स्रो रंखका इंटक । – स्म-त ईयका रक्त शीराः कास । -रसोव-प्र• दशस्युद्ध : --बहुरी,-बहुरी-सी॰ पीले रंगद्ध एक रेख क्षीरविश्तरी । - बाटिका- वाटी-सी पुंकका - विकार-पु गुरु चौनी बादि। - विदारी-की क्रिएरिंदर। -शाकद -शाकिन-पुरिय शन थोम्ब क्षेत्र ।—समुद्र-पु॰ पुरावाँके अनुसार वह समुद्र को रंग्रके रससे भरा है।-सार-पु श्रीरा ग्रह भारि। रसक-द (वं०) रंप। इस्मती-सी॰ [सं] पुरागरनिव एक नदी। इस्रर-go (सेo) रेक्षः गोयसः तारुमयामा । इस्पाकु-त [तं] वैश्तरत मनुष्य प्रम और सूर्वपंश्वय पदका राजा करनी सीद्धा । इस्वाधिका नती॰ (सं] नरहटा शास । इलाद्•-वि•, म ईंपद भोड़ा। इफ़काय-प (व) छिपाना गोपन ।-(पे) वारतात-पु॰ ऐसी बटनाको छिपामा विसको स्वना (पुक्तिस्की) इल्लग्रस-प् [ब•] निप्तासना वाहर दरमा ग्रापं। इफ़राजात-पु॰ [भ॰] सभें स्वय । इतस्यम-पु [नः] पवित्रताः सरसताः सदी, दारिक मित्रमाः भित्रका । 1 Bt, 2 5-462 इत्तियार-इ [म] मदण वर्तन करना या रक्ता अविकास अविकार वदाविवासाविकार ।-(१) समाअत- विचाराधिकारः मुख्यस्य सुननेका व्यक्तितः। इंग्रियारी-वि अपने वस मधेवा वैश्विक अपन इच्छाधीम् १ इस्पितनाफ्र-पु [अ] भद्द, शंतर; विरोष; शामवन् । –(क्रे) शय~ वुमनभइ। इयारइ इग्यारइड--वि॰ दम आए म्छ। तु० ११ हो

र्मस्या ।

इचिक्टि-इनाय इचिकिल-पुर्व [स्] शालावः पंदा दलप्त । इच्छक-वि॰ [मं॰] श्च्या करमंत्राला, चाहमेवाला । बु॰ एक बयुर मार्ग्यो १ इच्छमा -स फि॰ वच्छा दरला। इच्छा-औ॰ [मुं॰] चाह कामना, दबादिशः वनिः यान्यते मॉन, 'रिमांट (की॰)। --दाम-पु॰ इच्छादी वृद्धि करना । -निकृत्ति-मो॰ इत्छाडा हमन दिहाँक। -भर्ग(दिम्)-वि वितने भारे एतम इस मानेवामा (१२६) १-मोजन-प अपने शॉब, परंदबा सीवन। -पस्-वि विशवे पास वितना माहे उतना बन हो। प्र• करेर १ द्वविद्यस--(४० [मं+] चारा हुआ अभिन्तिन । इप्पर्−िर [लं॰] पादनेवामा (प्राय सवासोनमें प्रमुख-दिशक्त ज्ञामकर्)। ७ व रहा। इषाहक्र⇔नि [मं] चाइभरामा । इजमाल-३० (त्र) रुरुष्टा धरनाः गंधेप बरना योहेने **दहमाः** माशा । द्वासालम्-अ (स.) नंधवर्ते सुम्बनुवर्ते । इज्ञमार्का∽िं मधोकाः जिस्की । प्रजरा-ररी - उर्वरना बहामें के लिए परनी छोड़ी बर्वजमीन ह इंबराय-पु• [ल•] जारी दरना धोनाः काममें लगा ना भाषा जाना ।-द्वितारी-५० दिगरीका वारी किया जाना वा अवलमें लाया जाना ! इजलास-पु: [अ०] वैदनाः वैद्यः शक्तिय वा व्यविदारीका (विचारके किए) बैटना। उन्हरे बटनेका श्वान, क्रवहरी। (स) कासिक-पु॰ विचारके निष् सब जडीका एक साब मिनकर बैठना, 'पुन वेंच (१)। ब्रह्महार-पु [ब•] वारित करना, प्रवट करना। नदानपर्ये दिया हुना बवाब या गराही ! - (१) तहरीरी-इ॰ किस्पन्न बनाम वा गराही। इज्राह्मत्र-भो• [म] भगुमनि, परवानयो । प्रजापात - ली॰ (अ॰) समाय अर्थया यह शक्ष्या वालेसे मंत्रंश ममारा (स्या) । हुजाध्य−५ (अ॰) वृद्धि वाती ।~स्वतान∽५ ननानकः बहुमा, बन्दी । इजाबत-मी [ल]सीइतिः प्रार्थना सीकार करना धीय बनायागा। हुबार-पु॰ (स.) पान'ना, गुधना १-बीद-पु॰ पान'मा का सर्वेगा मोबनका मंद्र वा प्रीता ह क्रजारा∽च (स.) देठा पहान्यवर्गपारु विशो वस्तुहे. बनाने बंधन भागने बाहिका क्षीते अविकास होता । -(१) ब्राट-च् देरेशार गंदाविकशी । ह्याहान-स्ती० (अ.) मान प्रतिका वत्राके अपर !—शार— वि अतिकित्। सूरु -जनारमा -विधानमाः-विमा-रेबारम रामः बाद्यासित शरमा।~स्ताबा;-धीवानाः~ सर्वरासीमा ।- देशा-सर्वरा गीनगर्वे १वर्ग वर बरमा हरजन-पुर (वंर) प्रण्याददे वक्त क्षत्र होनेदाया दद है राधक्य दिन≫का दुशिशाच~तु (स.) देशमी स्वाप्त्रभक्ता असेत्सा । हारा-नी [4] पर पूरा ।

इटन्टी−पु॰ प्रमेरदा यह देख । इरासिक, इटलिक-पु= [बं+] मद नरहका हिरहा रहार। इटामियन-४० (ale) रागीस निवामी एक स्थित कपड़ा जो पहले बरलांसे दीआता वा । विश्वाणीनसंबद्धा इट्चर-तु [मं•] स्रब्लंदतापूर्वक्षमध्यान् देन कालुदेश इटमाना-अ• कि॰ गर्नपुतक भेटार बरना टमक है। दिसामा, श्वरामा: मसरा करमा: बनमा : हरसाहर-न्यी॰ बरनामेश्वा मात्र हैंद्र : **इडाई--नी-** मित्रता, ग्रीति क्यि । REEL-4. \$0 feet 1 हटा-मा (तं) भरती वाची: अपूर्व हाँक परासारिक रमुनिः मचा गाया स्वकः एक माद्ये औं होन्द्री हर्दने शोधन मरतकात्र वर्ष करी है। मनुबी क्षरी वी तुर्व्य पर्य और दुमरवाकी माना थी। दुर्या । इष्टाचिका-स्थे [मं] निष्, उपया । इक्का-मी मिनी प्रशी ! इंडिक-पु [मंग] जेल्या बदश र श्वदर-पु [म] है। प्रदेश र इता(तम्) - वर्ग वर्ग वर्गा वर्ग । १ वर्ग अस्ति स्वर् द्वेतण-अ• इथा यश् ।-खल-श्र वश-महो । इतकाद-पृथ्वे (१५४) र हतना-स॰ रम् भाषा सिक्षास्य । (१० इम सन्दर्धः) —(मे)में−श्या ग्रीभ वा मरमेपे नरपद। इनसामण-५० दे० दिइतियास । इतमीन(म-५ मि] नरीला विश्वास: नद्दर्गा स्टर्गा हर-बागः शांति।-(मे) क्रमब-४० मनशा ममाधान। इसमीबाबी-वि (अ०) विश्वामी मरीमेका । इतर-प्र- दे देश । दि [में] इसरा क्रीए निष्ट (ब्राह्मीनर)। माश्रारणः दीम । इतरतः(तम्)-ध+ (म+) भग्दना i इसराजीक-को देव देनराह ह इसराजा-अ जिल्हानी देशना दर्श्य द्वारा वर्ण्या दि बनमा स्वयदारने मदा दोने नया प्रदेशमा । इत्तराष्ट्रर-भी वर्ग, श्वरानेका मात्र । हुनाश्चर−अ [लं] परतरः यद दुनाको वा है।-बीम= क्ष परस्थर मेर्डका इंड स्थलमान्य संबंधित है। क्रमहेसराधाथ∽द्र ी।] कादी प्राथमा द्रमानराक्षय-प (मं) क्य नदरेच दी प्रमुख है किश्चिम एक हुम्मीयर अवनीरम मेरमा र हमुर्वहित्त – वि किल्ली इन्याना प्रदेश हो गाँगुम्ही हुनसम्ब−त (क) वधनदान करना अन्त दरमा आवर्ष प्रदेश समान काहिक प्रारी होते अन्तर्वाहे सामद शानका दिवाद इसमेवामा इत र 1-संबीत 3 रुपवादका रिमान दियान रमकेशामा बर्नपारी र इन्दर्श-न्त्री है देन्द्री ह श्चिमा-प्रमाणिकार । हताना (तय)-म [र] श्रायम मानिर । द्वसाक्षात्र के कि विश्वास्तित कार्यस्ति अन्ति वर्ष शास्त्रिक भी देव विश्ववार्ष । हुनच-दु (स) बन्ध दिए सहस्र ।

वा विक्रीका जीवित वये रहमा।

पस्त्रेवाज-पु (वैद्वरीत) क्रिकेट या ग्रेयनकोड़ केडी वह क्रिकारों की अपनी और आते हुए ग्रेयर प्रहार करता है और जनसर हेस्कर रत्ते वशानेके किए एस विदेश पूरार विकेटको और बीवता है।

यस्क्रमाजी-बा॰ (१८समैनशिव) (गेन्न-वर्शके रीकर्म) वरतेसे गेंबरर प्रदार करमेकी क्रिया ना कका।

यक्षिम्स्पर्सी-वि॰ (स्परफ्रीशियक) भीतरतक न वाने-वाका कपरो, प्रियाक ।

पहिरोति - (बाल्य) (गेर-बहुत आहिके रोकमें वह स्थेकांगे) जो रेरके आवात्तरे नहिकोंके क्यरण्डे गुल्बीके निर कार्ने परवात्र का गंवके कोक लिक आने आहिके कारण कर्यकार्त करते हत्त्वे केलिकारि सेरिय दी क्या हो। जो परमें वा कार्यक्रम आहिये न हो, नाहर ग्या हो। जो परास्तित मा अधिकारास्त्र न एह गया हो। जो प्रस्ता पा क्षातित हो गया हो।

सहिगं समझार-पु॰ (पिन्तः) (विश्वी शिनेपा, माज्यसाधा मादिके) प्रसेष्ठ या मदनसे नाहर निक्कनेका रास्ता। बहिचाँसी रोगी-पु॰ (अध्यकीर वेग्नेट) नह रोग्नी की विक्रियाणुक्ते नाहर रहते हुए समझ कराता हो (अध

र्वासी पा प्रविष्ठ रोगीका चकरा), वासरीयी ।

बहुपतिरव∽षु (राक्षिपेंड्र) वक छात्र वतुतने पतिबॉस्क्री परमी बनकर रहसेक्की प्रथा ।

यङ्केभाषाळ्ळ – पु. (बॉकीम्कॉट) वहुत सी आशार्षे वासने वा वोकनेवाका ।

बहुक्तपद्रीक-पु॰ (कैमोडोस्थीप) एक एंथी गणी निस्में १थीन कॉबके दुक्ते रस सरह बाफ दिने बाते थे कि एवे इपर-पपर विकासी कर तरहकी क्षेत्रर और कमापूर्ण अन्में विकास तेता थे।

पहुसुक्ष-पि॰ (वर्धेशाःक) को जनक विवर्धका जामकार ही। समेक दिशाभीर्थ जानेकाका । (बहुसुक्षी अविमान-वर्धेशाक ओवियस ।)

पहुचिश्च-ति (वर्धेशास्त्र) में भनेक विधार्य जावता यो जी किंगम विवर्गेष्ट भेजादि श्रिक सकता ही वा

मानम कर सकता हो। बद्रमुख ।

बाह्यरोगी-5 (बाह्यहोर देई) वे 'वहिवांसी रीधी'। सीमक्ट्र-3 (स्पृष्टिकम्स) वह सम्बनाय विसक्ते पारी सरफ और सीर्वे वाहमें बढ्डी हो जाती ∰ वह सम्बनाय विस्ति रोज रहता है।

पीमापप्रक-पु (रनहपुरस शक्तिरो) नीमा करवेशका संरवा और बीमा करानेगके व्यक्तिया व्यक्तिकेतीच

🕊 समझीतेका किस्रिय पत्र ।

युद्धियीची धर्मे - दु (१२ किश्वीक्ष्मा) दुविसे ग्रीक्स मास स्ट्रेस के दिमाग्री स्वयं स्ट्रेस के कोवीका समुदान । युद्धिय - धी (१६६ मन) (आरी सरक मूमनेस के)

- तुर्वमें स्थानो गयो कोप । येपताचिद्वीपर-तु (वेब सेटर ऑफिस) दे 'कानता-

(धड्डोपर'। बेकनाजार-वि (विकिष्टिक) निवका व्यक्तर नक्तके चरद्र हो। भ

भंजनदर्शिक-वि+ (त्रिटिक) (ग्रेस) वा गिर बावेस्र हा पीटे जानेक्ट हुट बाग हुकते हुकते हो जाव।

सस्माणुसीका समझीता - पु (वंग्रेडमेंस रेग्रोमें) रह तरका सभीपपारिक समझीता जो देवल वसनी शक् पीत या सामान्य वाकापके सावारपर दिवा दवा ग्रह कोर्र क्ला (क्या-स्ता न को पत्रो हो।

भववजुनात-वि (दुम्सं कोविटिंग्टर्स) बार्ध धरा भागमेवाका आपके धारेशाहशाह क्यानेवाम (दिने भागक कर्मवाही द्वारा अवना पुत्र वा छोटे बार्र हार, व्या कर्मवाही हिता अन्ता पुत्र वा छोटे बार्र हार, व्या कर्मवाही हिता वा बड़े भारते हिन्दे वहे कारत-पत्र कुम्बरणाई केत्रमें, हाताहर करवेडे क्रीन गरंके प्रवृद्ध विदेशको।

सबब्द्रास-वि (पुनरं चिनांत्रवरः) बास्ते स्वेत् मित्रवा वा त्रकृतव रचनवाका (विद्योतित वा समान्य परिवत स्ववित्रो तियो एत एतके अंतर्गे नेयक तरा

रसर्व वरने किए प्रयुक्त विदेशक) । स्थान-विमांच-पिञ्चान-पुर (बार्किटेक्स) मन्त्रम वर्धाः बनानेकी ककास्त्र विनेचन करनेवाका श्रास्त्र ।

जनराका कराका रक्षणा करनावाचा द्वारा । शर्मणापवरणान्द्रण (हाउस द्वारास) क्रिसेके स्थानने वर्गण कर्मो प्रवेश करना ।

न्या रुपय न्या करता । अवस्थित-वि (कुम्स् केन्द्रक्ति) आश्मे विश्वन स्वरंग बाका (बंगेसी इंग्ले स्मापारिक पूर्वो वा सामान्व सर्म किय सहस्र कम परिश्वत व्यक्तिकों जाय क्रिके स्टे स्पे के कार्य, इस्ताप्तरके स्रोक पहले, प्रकुक होनेसम

समस्त्रपर) ।

सविष्यमिभिनाची (मोबिसेंट एक) हिसी एएसरी-सर्व एएसरी या ब्यावरिक एंसा आर्टरें काम प्रते-स्वेन कर्मणारीमी कार्यने अवस्तर प्रदाय कर क्येरर प्रतय-प्रेमपर्य एसाम्बर होनेची प्रतिचे यो जानेवाकी वह मता-बचा यो उपने स्तामेंने इस्तेन्द्रिक उसने अवसे-शाम साम मिनोनोने स्ताम क्येर समा की जानी वी शामित कीन स्वीमत निर्माणारीमिक।

भोक्ररपाक-१ (स्टेरभियः) विविध सन्त्रवीके संगर वा सांवारको रक्षा वैकारत करनेतामा कर्मनारा ।

भोबारिक+९ (ध्यक्तिस) १ रक्षांनिक । भाई-महीजापाद=९ (नीवारिका) मीदर्फ भाविक

सहायता आदि दिकानेमें भएने भाने, भनीन या किसी अन्य सान्त्रनी आदिक साल निसेष पश्चात करना रवजनप्रसात।

भागिता—धी॰ (पार्वनर्रावर्ष) दिखे कारकारचं भावा कामाः साक्षेत्रारे दिख्यारी ।

भारवाया – श्री (क्षरि) पुरशीर भारिका परिवास देसकर सा भिद्धी निकायकर दिका प्रदेशकोने रनाम सीरवेर की प्रवृति ।

भारवज्ञाक-जु (कॉर) वह विद्वी पा कमानदी मोमी भादि सिसे पेंक्सर वा वरान्द्र दिसी माक्टे न्यारे दिसीको नियुक्ति, पुन जाने भारिका विनिधव दियां जाता है। वनकर वह बाबा मरिश्र (का०) ।

कृष्टि, कार्याय, अनुदाय काहि । बाष्पसापम-प (फीमेंटेसक) के॰ 'प्रस्कतन' । वाष्पशीस-वि+ (शाम्याहरू) को शीप्रतापूर्वक नाव्य

बाष्पायम−९ (वैपोरिबेशन) वाष्पमें परिवश कर देना ।

बाप्पिश-प्र• (गॅश्वर) इंजनका भाष तैवार करवेवाका माग । पाप्पीकरण-प (१वेपारेश्रम) क्रिसी प्रार्थका, विश्वक

कर प्रवरशर्भका बाध्यकपूर्वे परिचत होसाः साय वन जासा ।

बासस्यवस्था-को (९बोमावसन) रहने वा इवरनेका स्थान सविधा या प्रवंता

बास्तुकर्मकारः बास्तुकर्मश्च-प्र (भाकितेक) श्वारतः पुरू भादि पनानंदी सका जामनेताका ।

याष्ट्रक चनावेश−प् (रेवरर चेंद्र) वह धवारेस (चेन्द्र) विस्तादक्या किसो भी देसे व्यक्तिको दिवा वासकता हैं भी उसे के जाकर बैंक्के छायने वपश्चित करें ह पाइक मक्किका-सी॰ (बार्विण रवूर) एक पास्ते इसरे

पात्रमें के बाने, प्रदेशनवाका नकिया । वाडिमीपति-प्र (जिमहिन्दर) वह शेमानायक वी

वाहिनी(मियेष)का नेतरब करे ।

विद्य-प (पारंग) रेपामपितमें वह सरवंत छोग सहित्त रधान जिसमें क्षेत्रक स्थिति हो। जिस संवार्थ, श्रीकार्थ, मोदाई व को ।

विवयातक-६ (हॉफ्र) ऑस काम मादिने बना होहते की शोधेकी वह महिका जिसमें कपरकी और रक्त करा रहता है (रसे दशानेस यक यक कुँद अपकामेम आसामी बोसी है)।

विकासन-प्र (बेरिस) विश्लीको अन्यविके कार्यों को गयी रक्षम वा विश्व मन मात्र भाविके मस्त्रकार प्राप्त प्रम बादेमें वसके नाम कियानाः किसोके बाधमें बार्क्यो मोट क्षेत्रे रहम हिन्नता ।

पिच्छीक**ट**~वि (दिसंदिवत) औ विश्वमांत्र (स्थान) रहण आहि) ही बानेडे बारण अपना काम करनेने

श्रमधर्व हो यबा थी।

विकिरय-५ (रेडिवेड्न) यक श्वाज या बेंडरी शाय, प्रचाय साहिता छोपी रेखाओंने प्रकट हमर-प्रपर धेवमा ।

विकास देखा- प्रशिक्ष किया की विका की विका कर शरपास था थी गड़ा ही और विश्वती विश्वास फनेम भी खंडमाई हो।

पिकेंद्रीयकरण-५ (विर्टेट्सिकेवेशन) बेंद्रमें प्रश्वादित सता. अपिदार माहिको वास-पासक क्षेत्री, स्वयोग राज्यो

भारिमें श्रीरमा । विकासधम-५० (र्थभोनर) व्यापारी द्वारा की सबी यह रिन, एव समाद भारिको विक्रीने मान कम पनराधि ।

विक्रमपूर्वी-धी॰ (मुश्त नर्नेड) प्रतिहिन्दी रिमी भाटि-का विकास विकारिको पैती विकारिकारों ।

विक्रयमध्यो - भी (हैस्स भ्यर) वह खाता-वही विसर्वे विभिन्न विविधी हो। वेबी गयी विभिन्न बल्टाओंका स्वीराः । मरनेकका प्रवस्थान , किया रहता है।

विकासकेदा-पु (राज्योव) वह सावत मा हेरान्स जिसमें खेत, वर भारिको विकास पूरा स्वीरा (बार पना: शते, मुख्य आहे) किपिश्य कर दिया गया हो तथा विश्वका विश्विषय पंजीवन करा दिवा सवा की वैनामा ।

विक्रियक-पु॰ (हेस्एवेंब) इकानश्र नेस्कर प्राइसेंडे बाथ भीता वेचनेन्द्र जिए रखा गुवा कर्मकरो ।

विधिष्ठास्य-५ (सनैदिष अधारतम्) पान्त्र स रिदिन ममुक्तिक रहसेका वह स्थान वर्ग बतको केरारेश स्था क्षप्रभाराविको स्वयस्था हो ।

विश्रांकम-५० (रेजोनेयन) दे० 'उत्सादय'।

विचारगोधी-का॰ (सेमिमार) अनेद विहानोंका एव स्वामपर एउम शोकट किसी सहस्मपूर्ण विश्वके सर्वामे अपमे-अपने विचार प्रका कानेका क्रिका तथा उसका अधोजन ।

विचारधारा-को (मारविभॉकॉब्रे) दिसी नार्ट स संप्रसायविधेषक्षः विचाररोक्षाः क्रियो सामनीतिक स भाविक विकास-पर्यक्ति मूक्त्रे रहतेवाको विधार-सर्यो । विद्यायचित्र, विद्यमाध्य-५ (इंच्यार) रिजय रिम्मे वाका अस्त का सावज्ञ है

विश्ववीपहार-पु॰ (हॉक्ट्री) युद्धमें हुई मीत वा रंभे क्रिकेट बाविके धैकमें प्राप्त विजयके रवतिशस्त एकी बानेवाकी बोर्र वरत (श्रीस्ट क्षप्र माहि) ।

विज्ञापमवासा—५० (देववरद्यावनर) पत्री आदिमैं (वहा पन रापवामेवस्का ।

विशा~प (प्राप्तमेंस) किसी राज्य वा संस्था मारिके बाव-व्यवे सारव राज्यको सर्वक्तिक हैनी मा पन राज्यको विश्व-संबंधी भाषरचा ! --प्रबंधक-प्र- (कार्य-(शबर) सरकारी भाग का अजका प्रकंड करवेशन) मध्यारी । -समी-१ (कारनेश (मनिस्टर) राज्यके थनः वायञ्चवके साधनी अर्था संबंधी विज्ञानको देवास करवेशका मंत्री । -विधेषक-प्र (कारवेस (ce) ५६८ का विवासक्षमार्थे पुरारवादित किया जानवाका भाव-व्यवसन्तर्भती विभेवस । -साधन-प्र• (फारनेंग्रेज) राज्य या संस्था भारिके धन मात्र करनके व्यक्ति ।

विशासमिश्र-पुर (इवेन्ड्स वेनेट्ट) विक्मी कराम बरमेदा वंश ।

बिहाइस-प (६७-छान मोरान) है॰ ऋषश्मिरण तवा 'धनविषरभ्'।

विश्वकृत्रात-इ॰ (रकाइसायन) दिनुद्ध क्लई ब्रा कर दिया मानेपाणा प्राणहर। विश्वणीत करानीचे देनि पाकी संस्य ।

विश्व क्रमा के में क्षेत्र (प्रकार १०६०) श्री के वर्ष कर विक्रमम है वा भही, वह ब्यमनेशका वप ।

विश्ववारक-पुर (काररांतव शहरार) विश्वी विक्ते समय देवीबीय, रेडिया वारिय वर्षीकी श्रविमात होनते

बच्चीड किय बगाया जानेवाका सावन र विश्वाम-तु (स्थितस्थ्यम) सामन्द्रे विपाननंदण दास

रशेक्षण कोई मांबन्धियम व्यवस्था वा विचि वैका अमान

भारक-१० (रें) महान या समीयका हिराया हमान । -रागि-भी (रॅटफ) दिरायेमे होनेवाची धमस्त भावः दिशावद स्वमे प्राप्त पनशक्ति ।

भारप्रस्त संवदा-स्त्री (यनदवर्ष परदेश) वह संविध या जावरार जिल्लार कराडा बार हो गया हो।

भारहानि-भी । (शांस कांद्र नेत) भार वा वजनी हाने-बाकी दमी ।

भारिक-पु(शेरंर) द मृखमें।

भूगतामनुद्धा-भी (रेलेंड बोड संबेर) दिसायकी ने वर्षे (भ्वापारको परतरी, वैजी मूर क्षेत्रा-शुक्त, जहानका बिराबा भारि) जिनके मरंभमें यह देखका दुखरे देखीने कुछ भारता हो या पुनर देखीको देना हो।

भूकंपसापक यंत्र भूकपसूचक वश-५ (माहबधी भीश्र सार्विमान्द्र) मृदयक परद, भूरव दे कहकी बुरी

प्रश्न अर्थंद मुचित करनेवाका यंत्र । मुक्रपविद्यान-प (भारवमोकानी) भृदशो**ं द**ारणी

वधाः स्टब्स् भारिका निरंबन बरनशना निशान । म क्यों-प (पाउंडरराष) इसाई अश्टें वे क्येंपारी दिश्व प्रवेतान दिमालक साथ १इकर वही बर्ग भूमि

पर हो काम करना पहला है। भरावा-की (अंडा) वृर्वप्रदेश हा चंड्रभद्दव समय मूर्व अधरा ध्रद्रमान्द्र विरुद्ध वहनवाजी द्राया ।

भूटर्य-प (८४२-देश) भृमिका वह राय नी किसी और र्राष्ट्र शक्तेपर दूर दूरतक दिसाई दे, किसी मुनाममें

श्चित वंदी पहाची महियाँ मादिया दस्य । मुपरिमाप-धी॰ (नंड धरें) भूमिके किमी उद्यह वा

देख राज्यारिकी भृषिकी नाए श्रीय ! मुमापन-पु (सर्वे) सीमा भारि निर्भारित व्यन्तेकी

र्राक्षेत्र किसी सन भूमिके दुवर मा देख गरेख आहिची माप-बोध (वैमाश्य) इरना ।

मसि-अवाधि-अधिनियस-९ (नेंड ऐनिवडियन धार) विसी मार्च विभिन्न कामके विभिन्न का राज्याविकी कार्य विधेव भारतकता पूरी करने दे लिए वसरेकी भूमि धारी-दने से देनेका अभिकार प्रशास करनेवाका अभिनित्रात । (सारक इंसरेजन) क्यान आहिसे मक्रि-संरधव~प

भूमिका बयाव । मूमि-इस्तांतर मधिवियम-९ (तह एक्विनेग्रन रेक्ट) मिक्स स्वरूप वा स्वाधित्व बन्दांतरित बहरोसे संबंध उद्यक्ते-

बाह्य अविनियम । मपाचार-प (कैंद्रन) क्षत्रहे भादि वहनमेका विधिन

बंगः समाजके वय नगीर्थ प्रथलित या बारत रंगः, रीतिः तीर वरोका । भारियोगी-वि (मर्गीनरी) वेतन डेकर अवसर विधेव

पर किसीके किय भी काम करने वा कहनेवाका केवळ इश्वेदे बाबचसे किमीको सेश करचंशका किरामेका बा भावेषा (सैनिक), भावत ।

भपबिक विधासय-५ (मेडिक्ड कोडेब) होगों दे निशान क्यांगर शास्त्रि दिक्षा महान दरवेवाका विवासम् ।

भोगाभिकार-पुर (जाकुरैसी राश्र) खेत भाग भारिके

भीवहा स्थापी अधिकार को प्रायः बसपर निपारित अवशिवक काविण रहनके बाद किशीको प्राप्त दोवा है। (मेंबन्द) हुने हुए या ध्वस्त निन हुम **धंभोबार**−५ ब्रहाबका धमहयनसे बदार करना ।

मंग्रजाकार-प॰ (रहशहत्रा) सन्दर या मंत्रणा दनेशकाः यह विश्वन रहपा सम्राह श्री वाती ही । मंत्रव्य-तरिपर्−धौ (बेहराहदरी कीसिक) हिमी

निवयके मंत्रभमें समाह देनेवाकी परिवर ।

(मिनिन्डी) शास्य दे किसी संबी शबा संग्रासम-प उसके विभागका कार्याच्या भंगी उसके सचित्र तथा अस्य क्री वारियोद्धा समूह (पंधी और उपद्मा निभाग)।

मंचिवरिवर-मी॰ (देविनर श्राप्तिक) राज्यके भविबी-की सभा जिसमें मधासन-संबंधी विविध प्रश्नीपर वास-धीत विचार-विमर्श भारि क्विया जाता है।

मंबिर्महरू-५ (देविवेद) दिया (क्षोप्रतंत्र) राज्यके मात्रवीता समृद वी भारतके दिविध विमानीं धी देख

माक करता है अमास्यमंदक । सञ्चा बहाब-१ (हान्य) यहकीका शिकार करनकी बार या बताय ।

मतवाता-सची--बी॰ (नेप्रमें विस्त) विश्वी नगर विके भारिके पत्र शास्त्र व्यक्तिये छ थे जिला महतानका अभिदार प्राप्त हो।

सर्वशनकक्ष सर्वशनकोष्ट-९ (पेक्षिन पूर्व) विसी मत-दानबेंद्रका वह कपरा पर या घेरा जहाँ किमी विद्रोध महरहे वा महरहोंके यतहाताओं या किसी एक संख्याने दिली अन्य विश्वेष संक्वातक है निर्वापकों या केवल सियों हारा व्हडायको भवस्या हो।

मसदाबक्ट्र-प (शेकिंग स्टेश्रम) वह स्थान वहाँ विधान-शमा बाधियो सरस्वता है किए खर होतेवाबीय संबंधी निवादधी हारा महत्रानदी ध्यवस्था हो ।

सत्तवायपरिका, सत्तपेरिका-म्हो (रेक्ट गॉन्स) वह पेटी क्सिमें मतरराताओं द्वारा मतपत्र होते वा हाने वाते वै।

अतहेय-वि (रोटेरिक) (न्ह रिष्क) वा स्ववसी वह सह बिसपर सदस्योंडा मत किया जा सहै।

मत्त्रपार्थी-प (केनवेशर) दे॰ मतानवायक'। सताधिकार-१ (धनाश्च) कोक्समा, विशाससभा, सार

वाकिका आदिके किए सहस्य जुमनेका मत प्रदान करने-का अधिकार ।

मतानुयाचन-पु (देवनेसर) वह नी दिसी क्षेत्रके मतदाताओं के पास आकर अपने पश्चमें मत देनेका अन रोश करे ।

सवाधीं-वि (शब्देर) यत देने दे किए प्रार्थना इस्ते-बाका समीदबार । -घरक-पु (पीडिब स्बेंर) मतनान बेंडपर मतानीकी ओरसे काम करनेवाका बसके दिशी और अधिकारींकी रहाका व्यान रखनेवाका व्यक्ति। सवनसङ्गी-स्थै (भागेंश्म) संनीयको प्रवस्न बासना

कामीरमाद ।

रधनेराका विनिधव । -परिपद-की क्षितिरनेटिव श्रीतिक) (बारवर्क) विश्व शास्त्रमें विश्वानमंत्रकर्क की सरम हो उसका बह बसरा (अबीय विवानसमान्धे धोश्वर भाग) सरन, जिलके सारव मगरपाकिकाओ विश्वविद्यासको स्थादको तथा शिक्षा संस्थाओंके अध्या-पढ़ीके बने निर्रापनबंदणी हारा और विभानसमान्द्रे ग्रास्यो हारा निर्वाचित किये जार्वे । -अंत्रख-प० (क्षेत्राकेषर) राज्यके क्रिय विशास बनानेपाके व्यक्तियों-का समुद्र-धारतके जिन राज्योमें वो शहन है। यहाँ पन होनी (और दिनमें एक ही सहन है जममें करा सडम) तवा राज्यपातको संगध्य रूपसे यह माम दिवा गया है। -समा-भी (निवरदेदिन भर्नेपदी) जनपतिनिधियोदी वा समा जो राज्यके किए विश्वास बनाती आवस्थ्यक ररीबार बरती तबा धासन-डामोडा नियंत्रम बरती है। विद्यायक-४० (केबिस्टेटर) विभागसभाका विधाम-श्रीताचे निर्माणका कार्य कानेवाका।

पिद्यायम् – पु (के.सिरनेयन) विभाव करना या बनावाः विचानसमा भारि द्वारा विभाव या अविभिवयदा कर्यः । विद्यापी कार्ये – पु (के.सिरनेयिक विश्वनेस) (विचानसमा

भादिमें) विधान-निर्माणका कार्य ।

विधि-भी (डॉ) मनुष्योंके हिताँ अविदारों आदिकी रक्षाके किए राजा मंत्रिमंडक या विधानसभा आदि हारा निर्मित ने निवान या अधिनिवम जिनका पाणन बरना प्रत्येक म्बस्टिके हिए अनिवार्ष होता है और क्षित्रको अबदेवना करनेपर उसे वंध मिक्ता है या मिक करता है। -प्राप्त सुद्धा-भी॰ (बीयक टेंडर मनी) वह महा जिल्हा प्रयोग ऋष ल्हानेके किए स्था विधिविद्य हो । -श-तु (कॉनर) विधि-विधान वाननेवाचा । -परामर्खी-प (भीमक रिमेन्सर) सरकारको निधि (कानूम)-संवधी सकाह देनेनाका पराधिकारी । -पाछक-वि (को अवाहरिय) राज्यकी विविधें(कामूनों)का राजन करते हुए जीवन-वापन करनेवाका (नागरिक) । - अंग्र-९ (शीव आंक का) निवि(कानुम)को क्षेत्रस करनाः निविनिरोधी कार्य हारा विविद्धा उरस्पन । -विज्ञान, शास्त्र-५ (स्परित मबेंस) निषमों, निविनों सिकातों आदिका विवेचन करनेवाका शास्त्र ! -सविष-प (क्षीतक शिहेटरी) विधि-संबंधी प्रधनोंमें सकाह देने वा पश्चनवहाराधि करने-शका सथित । -स्नास**क**-प॰ (नेपकर ऑफ कॉत) नद व्यक्ति क्सिने निवि(कानूय)की परीकार्ने क्सीने होस्ट क्याचि प्राप्त की हो ।

विधिक-नि (शीगक) निथि (काणून)-हांग्यी। वी निभिक्ते अनुकृत वा अनुकृत हो ।

विधेयाः—पु॰ (विक) किसी विशास व्यविभित्तम कारिका वह मादम (मसीया) जी पारित होने के किय कोकसमा, रिवायसमा भाविमें रखा जात।

विध्यमुक्क - (विश्व) विशिध्याम् सं देशे विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

(नेद) वहाँ एक देशकी शहाने बाने दूसरे देशके शहर देने वा बाहर प्रशिष्ठ करने अप्रदेश काम दोता है। विनिर्वाद्यान्त्र (दी-पंद्रीक) गुक्तीवित या व्यवस्थिती क्यो आदिक कारण क्रियी वर्शवर कगावी गती मूल वा निशंदान्त्रीवी निर्वादन-वदाशाहा उठा किया वाला। विविद्यान-वुक (रोशुक्रेकन) वह विशेष निवाम भी क्रियो संबंधा आदिके प्रवेष वा निर्वेषक्ष किए प्रावित्रत आहेता

से या विशेष निश्चवके अनुसार बनाया गया हो । विनियमक-वि॰ (रेगुलेस्ट) (पंधे मारिक्र) यदि या पंगका निर्वत्रम करनेवाका आका ।

प्रविधासन पुरु (रेपुनेशन, रेपुनेशिय) निवसादि वसा-कर निर्विष्ठ करमा मित्र वेग, दिस्तार बादि अधिक च वहने रेगा, भावश्यक्वासुसार घटामा-वहामा या क्रीक करवा।

विभिन्नोग- (रिमेमियरण) है ' उपनोधन'।- विधे-यक-पु॰ (रिमेमियल १०) वह विभवक विसमें इस बातक भी ब्लीरा दिना रहता है कि स्वरायका किश्वा जंस किस समने सर्च किया जानगा।

वार्य क्षय प्रश्न प्रथा अस्ता पालगा । धिनिर्देश-पु (सींसिफिट्डम) निरिषत स्वसे कोर्र बाठ बसना या निर्देश करना। स्व महार करी प्रदे बाठ; विजेशवार्म-संन्ती दिश्य ।

ावद्रवरामान्तरमा (वरस्य । यिनिहचयन्त्र (वेशावन) धेर्र काम बदने आदिकै विश्वावानी दिसी समावस्य विद्यार रूपसे कुछ निस्तर किया बाना दिसी प्रश्नका विद्यार ।

विनिविद् व्यापार-पु (बंट्रावेट ट्रेट) उन सर्हानीका व्यापार विनक्षे आवार था निर्योदको मनाद्यो कर दो नदी हो वा किन्हें चुडपरत देवोंके हाथ नेपमा तरस्य राह्मेके किए अञ्चापक करणना गना हो।

विज्यास-पु॰ (एरॅंबमॅर) सिकस्थिते रखने, ऋष ठीक करने आदिवा काम ।

विषय-पु॰ (अधावर) पंपोके शोव सहसेह होबेसर अधिनिर्णवके विष सामाजिह सम्बन्धिः।

विपन्न — प्रश्निक शिक्ष प्रवास में के, उसाने सादि हारा दिया गया यह पत्र किसने विस्ता हो कि सहसे विश्वित एक महत्त विश्वित जुड़ा दो असमी हुंदी, स्वति या संगाने वसे साम्या मृत्य जुड़ानेके किए सादी किया यथा यह विश्वित यह ना सादम नो क्य सुद्धानेके किय सोनों पढ़ी हारा स्त्रीक्स किया गया हो विश्विय

विपरिवान-पु (प्रोकार्य) छेना पुरिस्त आदिके कर्मेवारियोंके किए निर्वारित विदेश प्रधाना, जो प्राय सक्के किए पक्रसा बोहा है, समग्रीकान, वहाँ ।

विपरीवटः मी-व (वास्त वर्धा) (पहके करे हुएके) वकटे प्रकार वा क्रमते मी विकासते थी।

जकदे मकार्जा अध्यक्षेत्री विक्वेंपरी थी। विषयीयसे सी−क (बारस क्यों) दे∙ विपरी• सन्तरसी।

विषयोंच-पु (र्व्योनिम) किसी सप्तका विष्कुक विरोधी वर्ष मक्त करनेवाका सप्त ।

विशेषक∽पु (रेपिटर) किसी दूर रहनेवाडे स्मक्तिके पास वृष्या-पैसा या अन्य बस्ता मेजनेवाका। मपुरिन-को (भिक्सरीन) विना (क्या व्यक्त शीठा-सा हर परार्थ की प्रायः बबाब्ध कामने आता है। तथा विल्ली-रक्षेंके मिर्माणमें भी प्रमुक्त होता है।

मध्यग−७ (शेक्टर) यह व्यक्ति यो क्रमीजन केंद्रर घरीरनेवाले और वजनेवालके बीचमें प्रकार सीहा परा दैनेका काम करे. वकाळ ।

मध्यज्ञन−९ (मिडिकमैच) दो पर्धी वा दलोंमें संपर्ध ध्वापित हरानेवाका कारमोः वह व्यक्तियो छल्पास्त्री तथा नपयोक्तामंति शेवमें परका माकके वितरण बरीन

निक्री आदिमें सदावता करता है। मध्ययुगीन−दि (मिडीश्रह) इतिहासके मध्यश्राते श्रेनेत्र रखनेवाका, सच्यत्रयद्या ।

सप्यविश्ववर्गे - पु (बूक्र्ग) समाजके कम कोर्गोकी मेजी मों न भगीर कहे का सकते हैं और न गरीक तथा को प्राय बक्तिभोगी होने है।

मध्यस्य - प्र (मीहिनार) वह व्यक्ति को वो पहाँके बीचमें परवर, दोबोको समजा-नुजाकर बसका आवशी प्रापका था विरोध वर करनेका प्रवस्त करे।

मध्यक्षिरदेखा-की (मेरीहिबन) वह धरिक रेखा वो दोनों अबोध दोषा द्वरं किसी स्वानके वासरी प्रध्नीके बारी और गबी हो ।

मञ्चाधकाञ्च -पु (रिलेश) वै ॰ 'अस्पावकाय' । मबीरञ्जन कर-५ (एंडरहेबमेंट हैनन) है। प्रमीरकर'।

मनोशेग**विकासक**∽९ (शहक्षिप्रदिग्द) मानशिक धेमी- | का उपचार क्रमंत्राका । ममोक्रीका−स्रौ (फैनटम्) धनमें ही विषमान करपना

की बरता जिल्ह्य बस्तुवा कोई अस्तित्व म वा सांतिः सस्य-सी प्रतीत होनेशकी कोई ध्रामा । सरकारति – सा॰ (देवरेद) काराबी के मतिसदस व्यक्तिओं के

पीछे हीनेवाची मृत्युक्षीकी संदया । श्राक्तुक्क −g (श्रेषक्षश्री) दिसीकी सामुके कार कराकी धंवांचपर बयतेवाका वह बर जी क्यने क्यांशिकारीये

बगुल किया याव । मक्याद्यनप्रकृति-की (क्षेत्रसर्वेशी सिस्त्रम) नगरका कुश प्रदेशक संस्था मादि जाहर श्रामा देशकी रहति । मक्रिमाचास-५ (सम्ब) मजदूरी वा वधनेकी वंदी

वस्तियाँ ।

ससिपय-प्र+ (कार्ननेपेश्र) वह कामन विशवर कीवन आविको आक्रिस पड़ा (केंगा) की एनी की (इसे ही कागजीके नीयमें स्टाकर क्रियने या शहर करनेथे कप्रदेश किसी या शहर की हुई सामग्री, अनीकी स्नी भी थे भी उत्तर लाही है 🕽 🛭

मस्तिरकाम-५ (धरेत्रम) दे 'प्रमश्चिष ।

सद्वात्रवाध्यक्ष-प (अहारहेव्यवस्क) रे केलायाच ।

महाधिकारपम-४ (मेध्ना कार्यः) वैश्विक तथा राज भौतिक स्वर्रक्षा महाच करचेवाका वह असिक व्यक्तिक क्ष जो जिरेनक स्वा जानसे सन् १२१५ ई. मैं किसामा मधा था ।

सद्यान्यायवासी~प्र• (चेटभा-अनस्य) हे

प्रामिक्तां ।

सहापश्चपास-पुर (पीस्टमास्टर वनरक) राजको राज-भानीमें रहनेवाला बाक-विधानका छवते वहा अविदर्श । अहामस्थळन-प (कानप्रधेयन) विद्यास और प्रदा-वह मन्निकांड विश्वमें भागको कवटें बहुत बूर-बूरफ़ड पहुँचें और किससे मारी शिक्ष होनेकी संमादना है।

सहामासिक्दां-प (पेटमा अन्तक) वह विविश्व व्यवस्था वो शास्त्र-संबंधी मुख्यमाँ-मामकाँमें सरकार को कोरते व्यवस्थावि कर्मेके किए प्राधिकृत किए। यहा हो।

मद्वाबकाधिकृत−५ (फ्रीस्ट्रमार्शक) रक्षप्रकरोंमें सरहे बढ़ा या प्रवास अधिकारी ।

महाभियोग-५ ((गंपमें) राज्यके प्रकार का राज्यके किसी वहे अधिकारीपर किसी अवस्य अपराय वा बहुत ही नमुक्ति नापरमञ्जे ग्रारम, चनाशा यका वसियोग । महासहिम~वि॰ (हिच परदेलेंसी) क्रिसकी बडी गरिया हो (राम्बपाकाशिक सम्माजार्थ प्रबद्ध श्रम्) ।

सङ्गासान्य-नि॰ (दिच चैडेस्ट)) अत्यंत साववीर (देनी स्वतंत्र गरेञ्च वा समाद्के किय प्रकुतः सम्मानदा सम्रो । महायुद्धपीत-५० (कैपिटक क्षिप) भारी रचनोत स्पी नमाथ १

श**हाकेकावाक−**त्र (अद्याक्टॅंट कनरक) सरकारके रे¤ विभागः शक विमाय भारि छार्नश्रमिक विभावीता वसन केसाराकः महात्वसाध्यक्षः ।

महावाणिक्यवृत-इ (क्षीसक सनरक) किसी देशक वह वाणिञ्चवृत्त की किसी करूप देशको राजवाकीये विज्ञास किया क्या को भीर जो उस देखों स्थित शार वाणिक्बक्रचेन्द्रा प्रधान हो।

सहायीर-चळ-प रनवंत्र मारवर्ते छेनाके किसी बीरकी रमभूमिर्ने मसामान्य शेरदा (रेक्सनेपर रिवा जानेगाम बक्र विशेष परक जो बरमबीर-चक्रमे होता याना जाता है।

महिष्याचीर्या-ची॰ विदीय गैठती महिजानेंदे रेटनेंदा अंबोत्तरा स्थाम ।

सामुक्क्यावराष्ट्र-पुर (मैटरविधी अंबच्चेवर मेटर) वह रकाम जार्थ परीय को माता बन्दकानो का पहलाड़े मातारको प्राप्त विक्रोको हैत-भाग, विक्रिया, विक्रान्त कारिका निशेष प्रवेष रहता है।

मालसत्तात्मक-दि० (नेदिशार्दक) (बद प्रेचा वा प्रवृति) विश्ववें माता का गुडश्यामिनीकी ही साचा प्रशेषिर यानी क्रमी सर्वे हो ।

साध्यसिक शिक्षा-थी॰ (प्रेटेंटरी यनुदेशन) भारतिक विधा है बाहकी तथा उच दिव्या है पूर्वकी विधा - मारं वक शिक्षाकी समाप्तिने केवर मैदिक का क्या रेरर)-तक्ये शिक्षा ।

मानक−९ (धेश्यं) दे॰ 'प्रमाप'।

ग्रामहच~तु० (भावारेरियम हानोररियम) किधी सम वा सेवाके किय रवच्छावृर्वक रिया जानेरामा पारिश्रमिक र मानयपूर्ण मानयस्यापार-५ (हेक्सि है। धर्मन बाराया) मनम्बोको नेचनेन्सरीरनं काम ।

वदा शामकविज्ञाम-प (वेन्ध्रीसाँकाँनी) रे पुरविवान !

पित्रेपम∽पु (रेफिटेस) किसी इस्स्य भारतीके पास रपना-पैसा माहि भेजना। वह वस्तु को दूर भेजी जाय। विसागाध्यक्ष-प (विवारमेंटक टेट) किमी विभागका

सध्यक्ष या प्रधान अधिकारी ।

विमाजन-वंदी-की॰ (दिवीवन वक) संसद् वा विधान-समामि किसी परवाद सामि-संनिध निवाद समाप्त हो वानेपर समाधा यद बाननेके किए सरस्वोंकी अपना अपमा स्थाम ग्रहम इत् हो पृष्कुपृथक् समृहोमें विसक्त शीनेके बिए देवार रहनेकी मुचना बेनेवाकी बंधी।

विभवीकरण-प (हिसक्रियिनेश्वन) कराराश्य वा व्यव-बारादिमें एककी तकनामें इसरेसे विशेष करना विशेष वा पार्थनस्या ध्यान रखना (अमुपाकन बरना) ।

विमति-दिप्पणी-की (मिनिड बोफ डिसेंड) किसी विषयकी प्रांच, कार्यवस साविक बाद तैयार किये गर प्रतिवेदनमें परमक्षते जी सम्मति वी हो उसमे अपना मतमेर प्रचय करने दे किए एक वा एकापिक सदस्यों हारा अक्रमसे जोडी गयी दिण्लमी वा बस्तव्य ।

विमानकर्मी-प (दशर क) विवासमें काम करनेवाका क्मंबारी ।

विमानगृहः विमानवर-प्र• (हैगर) वातवान रक्ततेवा 80.1 विसासचासम-पु (धिविधेसन) इवाई नहान वकासेकी

विका का किया कड़कत । विसानवादनविज्ञान-५० (एरोनॉटिन्स) विशास प्रकासे

मारिकी विद्या ।

विमामपरिचारिका-सी॰ (श्वर-क्षास्ट्रेस) विमाय हारा वात्रा करनेवाओं से संय सविवाका च्यान रवानेवाकी नहिका दर्भवारी ।

विमानवाडक पोश-त॰ (१वर काक केरिक्ट) विमानी-की क्षेत्रर ने बानेशना बहात ।

विसामयंथी तोप-को (देश १भरकापः गत) (साजी पर मोके बरखाकर कर्ने सह कर वाकनंताकी तीय !

विमानसेनाचिकारी-इ विय क्यांडरो विमान संवा-की इंक्टोका शास्त्र ।

विमानारमान-इ (इवरचंछ) इवाई महावेंकि उदरने

रक्ष जाने मादिका श्वान था केंद्र । विस्तर्करण-इ (बीमॉनेटारअंधन) किसी विका शीट

मारिका गुहाने कार्ने चकत बंद कर देना असका विधि माना म रह जाना (किसी पाछ कारिका अराके क्षत्रम) व्यवस्थितस्य ।

विमाचम-पु (रिरेंगग्रम) मूक्त सुकाकर शापस बना था वयनारिसे पुरानाः वयन था देवसे सुरमा । विरंजन-त (नकी विम) रत बढ़ाबेका गुण वा कार्य ।

विरामसंधि-स्त्री (इस) किसी विश्लेष रिवर्तिमें बीमी क्योंकी रनीइतिसे इक समब्दे किय अब नंद रसनेकी मधि ।

विश्लेषकारी प्रस्ताय-५ (बार्डेटरी मोश्रव) विवास-समा बाहिके सामने ज्वसित किसी विश्वकी काररवाई समाग्र होनेमें वभिन्नते अधिक विकंत करो, रक्षी क्रोहनसे प्रश्वापित किया बालेबाका प्रस्तात ।

विश्वविद्यास्त - म (टेमरेब) पारसक बारि कवित रेखे ह्यानंपर क्षयनेवाका मार्थका रेक्टा दम्मा वा मारा निर्विष्ठ अवशिक्षे बाद भी रोक रखनेपर इरजानेते समे की जातेगाकी रक्ता (

विसंवित करना-स॰ १६० (धररप्रेन) (धेर्म सर कार्यः विचारावि) किसी मानी विवि वा समवदे किर तक बैना निवियत था अनिहियत काठतक रोक रक्ता। विषय विषयम्-प (मर्जर) किसी धोर शामस पड़ोसके बढ़े राज्यमें मिककर एक हो अला, रह हा संबन्ध हो जाना कि वसकी वसक स्वास्त्र क्लिस है

विकंख-व (बीब) वह क्रिकित वा <u>स</u>दित सरवात निसमें दिसी समझीतं. संविद्याः निकन बारिका निसम दिवा यदा हो और जिसपर जिम्मारको विदिश् इसा-कर किये हों (तथा करते इसरे पहने वास मेज दिया हो) म्ब्रेस ।

बिस्टोप विस्टोपन-<u>प</u> (बोबोइस) हिस्टो शतन्, रज्य मानिसे इछ भंड निकास देवेची किया। हिंसेनेवरो रद कर देना, बाट देना, निवास देवा !

विकोपीकरण-पु॰ (रिपोक) निद्वत कर देवा, रह स थमगावी कर देना। विवरव्यविका-श्री

(मारपेक्टस) किसी नियम्ब प किमी परीक्षा भारिको नियमावको पाजकम तथ भन विवरण देसेवाकी प्रस्तिका ।

विवरची~सी॰ (रिटर्न) बॉस्टों बारिके सार बार से गनी पैशाबार आहिकी (सरकारी) रिपोर्ट के स्था विद्यारियों हे बास भेजी बाद ।

पिवादनिवास्क समिति-की (बोलीक्षित्रम्य सेप्रै श्रीयको तथा कारकामेराची श्रादिके श्रीय करनेको छन्धीको निपदानेका प्रयत्न करनेराची समिति।

यिवावृद्यमस्त्राच-प (शोडव क्रॅच झेक्र) (संस् ना निवाससमा आहि.में) विदाय समात करमें के किय पूर्व समा द्वारा किया समा प्रस्तान प्रमास्कारतान ।

विमेकाविकार-प (किस्त्र्यमवर्ग गार) विनेकप्रविके अत्रसार मिर्णय करनेका कविकार।

विवकाधीय-वि (इव वि विस्कोधन) (विशेष) विनेक-पुक्तिके भाषीम का उत्तरस अवकारत ! विसिष्टकरीन सक्संग्रह-५ (मेकरपार) एवंशायार

काराका प्रतिशिक्ति कर सक्ष्मेशके विद्यार क्रमान्ह हारा किसी विषयपर मक्ट किये पने महाँका एमक किसकी व्यवस्था प्रायः किसी समाचारपत्रादि वा सङ र्समह करानेवाकी संस्थाओं द्वारा की बाती है।

विधिष्टांग-प (प्रीक्स) मिली वस्ता नामक वेन तमाचारपत्र मानिकी सक्व विधेपतार ।

विशिष्टाधिकार-इ (मोरीबेटिव) राजा वा प्रधन witten au felbu nifent fauer fraite. Auf तरहका मृतिर्वध स हो (परमापिकार)। यह निवध वानिकार विशवका और बोर्ड भागीरार स हो। निसीने विश्वेष परः रिवर्षि व्यादिशे उद्भुत होनेदाला निशेष वाविकार ।

मापयी-धा॰ (रहेड) वह आछा जिसमें सेंशिमीवर, वैन सारिक निमान वने वी भीर जिससे भावनेका काम जिला नाव।

सार्गरधक-पु (यरको) वह (ध्याक्ष) व्यक्ति या व्यक्ति एम्ह श्राहिती कन्द्र व्यक्ति रशाह किय मार्गेचे एसके ए।व साथ पत्रे। दिती बहान या जहानी नवकी स्वार्थ

साथ साथ पदा (देशा नदान या नदाना पत्रका रहाण किंद्र साथ साथ पढ़मेदाका दवार्व शहाल विश्लीसङ पात भारि।

साक्षपर-पु॰ (गुड्ज भाषिष्ठ) मानगानी द्वारा मारू भेजने वा भाषा दुभा मारू पुनानेकी स्वरूपा करनेवाका दक्तरः

माखवायू-पुर (गुरुष्टरकार्य) रेड आहिते अर्थ जामेगार्थे ष्यापारिक माखरी रजिस्सस्ये तर्थ कर बाहरश थे अर्थ या भारत्ये आर्थ याक्की राजेगारूक द्वाधश्चीकर आहिका काय करमेशार्श रक्का कर्मपारी ।

मासम्प्रीम् (रसम् मिनिस्टर) दे राजस्यमंत्री । मिन्नोपभागयाजनाम् धी॰ (जारदेश्वि रदीम) दे अस्य मेमवीबना ।

मित्रराष्ट्र-पु मित्रराष्ट्रि-धी (दकारह नावर) निवता पूर्व संबर रहनवाका रेख या राज्य ।

मिष्यानाम-९ (मिछनीयर) जेमा साम वा थया छण्ट जो दिखी व्यक्ति, कार वरतु आहिक किय वरवुक्त न हो। मिष्यारीयम-९ (दिक्तिकान) जानसहीत वा सुकै आहोप क्याकर वहनाम करना।

सिछानकेंद्र-इं (राष्ट्रपंत्र) सगर वा किन्द्र। मुस्य दूरवायो-कार्याक्त भिष्ठते वहाँके सभी बूरवायो-वंत्र संपद्ध होत इं और नहीं स्थानीय कोसीते वा अस्य समरवाकोते बूरपाय कुरुवेके किए परस्यर संपंत्र विका वेयेको स्वयस्था

को जाती है। प्रिक्रमानु-की (रकॉन) दो वा दान्त अधिक भातुओं के दररपर मिका दियं जानेसे बनी बाद्ध दक्षिण शासुके साथ बदिया के प्रिक्र दियं जानेसे दभी भाता।

मुंबकर-पु (पांक टैन्स) प्रस्पेक व्यक्तिपर क्यानवाका करा को भारमा पीछे नमूच किया बानेवाका दूर ।

सुक वाजियतः सुक व्यापात-पु (श्र. हेश) विदेशोके धात्र दोशनामा मानाव-निर्माण-सेत्री नामानी वा वर्गीय सुक स्थापतः । -मीति-ची (श्र. हें व योक्ति) नाहर सं मानेशके सारूपर वायक कर न कमाने दिस्ती यक देशके धात्र विश्वपद व करनेके वायिकनतीति । सुक्तिपुद्ध-पु (पार व्यंक्र किस्तंक्षण) पृश्चर राष्ट्रके क्यो

मता वास्तासे भवने वैद्यको स्वतंत्र करणे, सुरकारा दिकानेके शिप किया जार्थनाका संवर्ष । मुख्यिसना-की (सैक्येक्ट मार्था) एक सामाविक संव या विस्ता वरेस्य मनताकी गांधिक तथा नैतिक प्रशति

करमा है। मुख्यप्रम्-पु (मास्त्र) मेहरेको क्षिमानेके क्षिय पहला मानेवाला कपना मकान।

सुरापण – पु. (भार्मन) किसी वर्ष मा संस्था दारा प्रका-पित वर सामिक एक विसमें असके सिकांनी करेकों मारिकी पूर्वा की वाली है। मुरायाल-पु (श्योत्तक्षमंत्र) सरकार वाकिसी संस्ता भारिको सरको आविकारिक क्ष्यस कार्र क्यन करनेवाला, € प्रवस्ता ।

सुन्यरोधक (सुन्यापरोध ह) श्रविभिषम-धी॰ (गीमव एस्ट) सुद्ध नंद बद इन, भाषण बदवेग्द प्रविक्त स्था वेनेबाल संधिनवृद्ध ।

सुरारोधन-पु॰ (गैमिन) वश्यूर्वक किमोका मुँह वंद कर देना थोकन वा भाषण करनेपर प्रतिवंध क्या इना ।

मुख्य निर्वाचन-आसुक-पु (धीक १८-१६न-ब्रिम्सन) वह प्रधान अधिकारी नित्ते छारे इंडके निर्याचन-ब्रम्भक्त आधीनन तथा प्रधाकन ब्रह्मि और नुवाद संभी नामि ब्राओपर दिवार करनेक किय विरोध न्यायाधिकरण निराक करने आधिका मार छीपा यहां हो।

सुबय न्यायाधिपति – पु (थीफ जडिस) है 'स्थाया विवर्ति के साथ ।

मुक्य व्यायाधील-पु (धीक तत) दिशी लपुनाह स्वायाक्त्य या अस्य स्वायाक्त्यके न्यायाधीकीं जी प्रधान ही यह ।

मुक्य संत्री-९ (थीफ मिनिसर) भारतीय गणवणके दिसी राज्य(पोत)श्च सबस बना संत्री।

विसी राज्य(योग) ६६ स्था वहा संत्री । मुख्यारूप-५ (देव इ.स.र) प्रधान कावाध्य वा सुदय

मुक्याविद्याता—पु (१स्टर्) वे अधिक्रिम् । विदर्श-विद्यालयको व्यवस्था करनवाका मुक्य (निर्वाचित) अधि-कारो प्रधान निवासक।

श्रव — इ. (वार) छपाईके काममें स्वृत्य होत्राके शोके आर्थिके क्ष्मुरः वारा । —हिस्स — इ. (वारपाहरू) कामकर वार्थके क्ष्मुर छपानेची महीता । —हेस्सक-इ. (वार्थास्त) श्रार्टक्यमी छरावताने कायकर टास्स-के क्षमुर छनानेका । —हम्मवर्यस — इ. (वारपाहरू) हे "ग्रुटक्य" ।

श्रुवण-स्वार्थम्य−षु (मीधम बाढ मेरा) सरकारी अधि कारोके विचार्थ रिवा वा उद्यक्ती अनुमति किने दिमा किसी विभागरपत्रमें किसी विषयपर केस किराने टीका करने वा किसी पुस्तकारिये उसकी वर्षो कारोको स्वरोपता।

शुक्रोकिस−वि (ग्रीवक) विस्तर (नाम पर आदिको) मोदर कमादी गवी दो थो मोदर कमाकर वह कर दिया सवा हो।

मुजाबाहुस्यः मुद्दाविस्तार−५० (श्लपकेश्चमः) दे० सुद्रास्त्रीति ।

सुदाधिकाय-पु (स्पृतिसमीटिनस्) सुदाधी-संबंधी विकास पुरामे सिकारिक वाधारपर शतिहासका विवेचन करनेवाका साम्रा

मुद्राबिएकीयि-की (बीएकंडाम) मुद्राखे प्रथमनमें हुई महानारम गुरिको परामा ना सामान्त रिभविमें काना, मुद्राखे वरमविक विरक्षारमें कमी करमा सुद्राक्ष्रोच । मुद्राखेंकीय-द्र (बीएकेडान) दे 'सुद्राविस्क्रीति ।

सुवास्त्रीति—को (१२५केप्टन) कियो राज्यमें कामको सुवास्त्रीति—को (१२५केप्टन) कियो राज्यमें कामको सुवास्त्र चक्कन च्छानास्य कपसे नद्र बाना बिससे वस्त्रकों- विशिश्वेकरण-इ (स्वक्षमार देशन) विशिष्ट कक्षणेके अनुसार किसी बरताने पूत्रक् पा स्वर्धन करमा; विशेषता-सूत्रक (विशिष्ट) रूप देना; विशेष विशेषता विशेष साम साम्र करमा, विशेष अञ्चयम करना, विशेषता माह्र करना।

करना । विद्युद्धियात् - पु (व्यूरिटेनियम) विद्युद्ध या कडीर भाषिक क्षेत्रको प्रवासना देनेशका मोटेस्टर वैसाववीका

विश्वात, बहोरताबाद। बहोर जीवन ।

सिकात करारवादा करूर नाग्या । यिद्योपित स्वीकृति—की (बाल्फास्क येग्सेप्टेंस) किसी प्रश्तात भारिक संयोधी दियेष प्रतिवची के साथ या सीवित रिपतिमें वो प्रयो स्वीकृति स्वप्रतिवच स्वीकृति ।

पिभाविकाल-पु॰ (रिहेस) है॰ अवगहतास । पिभावभाषम विभावासण-पु (रेट राज्य) बाबा वा रोर्टर वादेवाल म्बद्धिशे अथवा छाडे अधिकारियों भादिके टहरने भीतम विभावाहि बरवेके किय बनावा सबा अपन !

441 444 1

पिश्वस्वास्थ्यसंबदन-५ (वस्त्रं हेस्कनारचैनास्वेदन) स्तारक विभिन्न बद्धोने बोकरवास्थ्यक्षे उत्तरिके प्रवर्तीये सद्दावता बदनेवाको अंतरसङ्गीय संस्था । विभासप्रस्ताव-५ (मोधन अन्त्र कोनविटेस) विसी

संविधेक्यं या किया संश्वासं क्षय्यक्षारिमें विधास महत्र करनेने किय स्वयंत्रित किया सानेवाला मस्ताव। यिखोरपचि-विद्यान-पु (कॉरमोनोनी) विकस्त स्वयंति

तथा क्रिस्टका विश्वत कर्मनाका विद्यान, सहिविद्यान । विवयमपूर्य - पु (विद्यास सर्विक) देश अवस्थाः । विक्रियालस्य १ (स्वयस्थाः) (विद्योग सम्बन्धः

विपरिह्यान पु (शक्तिकांश्री) विशेषी जल्लीक प्रभाव कारिका विशेषम करमेनाका शासा ।

विसंबाहन-पु (रमस्यूचेयन) विष्युष् वा वापका प्रवाह रोक्सेके किए किसी वस्तुको कुपानक वदार्ग द्वारा पृत्रक् कर देना।

विसंपाहक-पु (स्तरक्षेत्र) भोनी मिट्टी कार्यका स्वा वह कुपाकक रर्रार्थ या वित्यु या गायका प्रवाह एक्केक किन विश्वमक वह गायका रक्षार्थ गाय वित्युविद्यान गायविद्यान परावक्षे शीचने कमा दिवा थागा है, कररीयी: विस्तरव्यान-बाँग (दृश्य) क्षम्पर्थ रोगी वा हगावत म्वाटको कक्ष्मरेक वार्तका फैका हुमा खेना क्षित हमा संदेश से आसमी वाम एक्षरे हैं। —बाहक-पु (मूचर वेसरर) विश्वस्थीन रोगी वा नावत म्याचको कक्षकर

छ जानेवाका (प्रत्येच) व्यक्तिः। विस्तारी विभेगक−पु (प्रतस्त्रेविय विक) किसी पुराने अविनयम कारिकी अववि वदानेके किय विवाससमा

भाषांत्रम भारको भवाच वहातेन किए विवाससा भारिये दरशापित विभेवक । विस्थापित-वि (विसप्केस्ट) को धरने निवासस्थानसे

विस्थापिस-वि (विसय्वेस्ड) की करने निवासस्थानरे ्वपरम् इस दिया गया हो, बदासिस ।

िनई दरमा पादिये तथा वे किई न दरमा पादिये। योक्स-पु॰ (ऍस) किएमोंकी कॅद्रीभूत दरनेवाका सीजका ताक।

वीर-पाक-पु॰ रवर्षण भारवके कियो सैनिकका रफ्येवर्म विजेष वीरवा विकासेपर दिया जानवाका वृतीय अभीका पतका

परका धीरपूजा-सी॰ (दीरी वरशिप) नीरी, महापुदरीका आख विक सम्माम करना ।

बुंद्याश-पु (भारदेरहा) भारत्यशाला आदिमें विश्लेष स्थानवर समयत वादकों द्वारा सामृदिक रूपसे प्रश्नुत दिना यवा वास ।

मुख-तु (सर्पकेल) वह समक्ष्रण को महा वक्त देशासे विराही विस्तक्त प्राचेक वितु उन्त क्षेत्रके केंद्र वा मध्य विवस समान हरीवर हो।

युक्तरांड-५० (तेरवर) दी विषयाओं (अर्थव्यास रेखाओं) तथा चापडे हारा पिरा क्लबा अंध ।

मुख्यमा-पु॰ (वर्षक) वह वही वा पंजी निसमें प्रतिहित-के कार्य वा धन्मावशीक विषयण भावता विसमें विपान स्था भाविके प्रतिहतनके विनिदनकोंका संद्विप्त अभिकेश विध्या जाता है।

हरूपात्रक−पु (दिस्ट्रोडीश) यह पत्रक या प्रकल क्रिस-यर किसी वंदीके पूर्वप्रसर्वीका इतिहास वा केटा दिवा

रहता है अपराय-छेखा, दर्व श-दहर ।

बुक्ति जुमेर सायप-पु (स्थान्य प्रकृष प्रश्रेष) कोई बात लावित करनेमें स्थानका करनेशाओं ऐसी वार्ट को क्रिकीने अपने बवायमें न क्यों में पर परिश्वित वा बायों पुर परनाओं के साधारण बिनका अनुमान किया बा सके।

चा उक्कर वृक्तिकर-इ (शोकेशव देस्त) इति वा देशेगर कमसे

वाधा कर । वृत्तिमृक्षक प्रतिविधित्त्व पु (इंग्डनक रप्रवेटेश्वम्) हे 'स्वानसाविक प्रतिविधित्तः ।

बुद्धता अधित्य-६ (शुर्द्ध रतुयहन अकार्यस) वृद्धता-के कारण किसी वर्षभारीक काम करनेमें असमर्थ हो वानेपर दी बानेवाकी वर्षि वा मचा।

चानपर वा चानपाका पाच वा नचा। वेशवृद्धि—स्त्री (पेनसेकरेसम) देव या रफ्तार स्वसंद्री

किया। वेतनकस-पु (पेट वॉक रे) वेतसका कम वा दरना। पत्तनवासा-पु (पेमास्टर) सेनिकों, समिकों सारिको

वेतन विवरित करनेवाका । वेतवफ्रकक~प्र (पैन्डीम) कर्मपारिकी, कर्मियोंको मिकने

वार्थ किसी मासके वेशनका पूरा-पूरा स्पीरा देनेवाका कारक वा प्रक्रक ।

्कायम वा प्रक्रम् । वेका सक्त-पु (सरदक वासरी) चंद्रमान्द्रे वान्क्रवेगरी

कमर पठनेवाका समुद्रका सक्ष प्रवादनक । वेक्यपप्रक-पु (प्रान्तेरिक) वे 'समयसारिक्षा । वेक्यपप्रक-पु (ग्रानेक) वेदमा या वस्ताओं के रहनेकी नव्या वक्षका ।

वैकरिपक सबस्य-पु (शाकररवैदिव मेंकर) दोने एक। पक्के सरस्वता स्वीकार न करने शादिको रिवारियो हो के वाम रहत प्य जात है, सुदावाबुक्य, सुदाविक्तार । -रोधक-पि (व्या दनकोशनरो) सुदारकीति रोजन वाम (उपाय १)।

सुष्टिर्द्ध - पु॰ (बोसिस) वह आएसका इंद जिसमें गरी-बार (गुलगुरू) दस्तानोंसे पर बूसरेपर मुद्दोना प्रवार किया जान !

मूक्तपाड-पु (२२६८) किसी असक, विश्वायक या प्रत्या-वकडे र मूक द्वस्य जिलका प्रदास क्रमी स्वतं हो अपने अस, विषेत्रक, प्रस्ताव शाविमें किमा हो।

सूच्यतक सूच्यस्तर-५ (क्षेत्रक बांद्र प्रारश्चेत्र) मूर्जी-की कपरी रेपा या सतह।

सुस्यम सूर्यमिक्पण-पु (बैहुएएव) किही बल्हु, छंपरि यु क्रियोडी संस्थवा नारिका सूर्व निश्चित करना किसी जानकार क्षरा किसी बरगु भाविक सूर्यका न्युसान नगाना याना !

मूटनतिर्वज्ञण-पु॰ (प्रारण क्ष्रोण) वर्ताजीं से मूच्यों भद्यस्थि पृक्षि न दीने देनेकी दृष्टि किया आवेदाला तिसंत्रण दा प्रतिबंदन ।

मून्यस्थानंत्र-५ (१८०० वंदर) दाश्यकः, वक तथा सम्ब १९तुओं के विशिष्ण हमयोका मूच्य पराकामेवाका संकः (सामान्य विशिष्क हमयोका मूच्य पात १० मान किया जारा है। इनसे पहुरो पारत हुए कंक सामिक्ष महोती वा सरसीके परिवर्धक होता हो।)

मूल्यहास-कोप-3 (बेगोक्रियेसन संब) येत, सामान यरकरपी आदिक विस् बान पुराने तथा केदान वो बावेक कारम बनक मूल्यमें कमछ होनेवाओं वधी वृधी करनेके वर्षेद्रसंहे स्वारित कोड वा विधि।

स्तर्यक्रम २६ (सीरपान) में मुख्या । मृत्याक्रम २६ (सीरपान) है मृत्या । पान दारा भन्ने वसी वसी में स्थाप (बार्ट क्रांग मेन क्षे मार्क्ष में) रहीते विस्तरों कारिय का प्रमेशक्के हाथ करूर क्षित्र मृत्य क्रम्प दो कारिय की मा स्वर्ध में। मृत्याप्रियों कर (स्तर्याक्ष्मक) में मुक्तर्यक्ष्म में मृत्याप्रियों कर (स्तर्यक्षम) में मुक्तर्यक्षम में। मिनी पर्याप वस्त्रे मृत्यके क्ष्मणा क्यनेनाका वर मा

सून्यापक्यं-पु (हरोदिवसमा) मुद्रा सरकारी क्या-पत्र! कारणानीमें प्रपुक्त क्षेत्रशिक मूक्षी कमी हो जाया, क्षत्रार भा जाना मृददशस सून्यावराहय !

बतार भा जाना मुस्तरता मुख्यावराध्यः । मुख्यायपात—पुर (४४) नर्गुभीक मुख्ये रकारक तथा त्रभी देश्याओं क्यो व्यक्तित्यो हे मृत्यावन्त्रे । मृद्यायपात्त्रक—तु (व्योधिक्यन) हे मृत्यावन्त्रे । मृद्यायपात्त्रक—तु (व्योधिक्यन) हे मृत्यावन्त्रे । मृद्यायपात्त्रक—तु (व्योधिक्यन) हिस्स

स्तरेता-पुर ("इ शहारेर) (शहारके हिनिय नकत) वह स्या तिहम के अरहारे कोई रहम बना न को वर्षा ही अरहा व तिहाओं गयी हो, और इह कारण नी पान्य न रह पना हो।

मृत्युक्षरा-पु (रेरदेन) वृत्युक्तिसम्ब वा कृतुक्केकुछ वाल्याक्याव्या वृत्युक्त संबुद्धिक रिमानन, शान कारिके करवी व्यक्तिसक-पु

इन्छा प्रश्नद्र करनेते क्यि किया गया क्ष्य वा एवं । सनुकरण-पु॰ (मिटियसन) नरम या वृक्त्या बना देन्य तीक्सता क्रम कर देना। उपन ।

सीधुनिक-नि॰ (विश्वासक) संभोध किया वा संबोद बासनारि संबंध रखनेवाला सो कीर पुरवदे बनके पर स्वरिक व्यवहारादिसे विस्ता संबंध हो।

मौजिक परीक्षा-ची (श्वारम्या कोसी) विवस्त गर्छ। जनामी की मानेनाकी सामी, प्राप्ति कारिकी परीका ! मौजिक-वि (मानटरी) सज्ञानसंबंधी !

ਬ

र्यप्र-९ (मधीन) वह ६०० वा दर्गप्रशीनाना धैप विसन्ध्री सदावतासे बाद समयमें आहानीसे अस्टि क्षत हा भाव । -चासुर्व - ५० (देहमोद) वंशादि स्थाने, कर-पर वे थादि और कानेको विशेष बीम्पटा अगरहा। —आरु −५ (मदीनरी) दिभिय वैषेद्धि समृ€ ! ~प्रश्न क -प्र (श्वाद) मनुष्यक्ष आक्रतिका यह वाकित प्रकार जो विज्ञा भारिको सहायदास विविध स्वयोगी कर्ने कारा है।-यिव-पु॰ (एविनिवर) वृष्टिया बानमेसमा वबसासका याता । -विद्या-सी॰ -धास-५० (पंडिविवरिय) धंव पंडिय शादि ग्यामे, वकाने तम रेक्का पुक्र आदि निर्मित करनेकी विया । -सम (-सक्रित) सेवा-श्री (मिक्साइक्ट आयी) रही क्यक्ति गावियों भारत्यावियों सवा देवीहीय मारि अधिनिक वंशीका प्रशेष करनेवाको दर्व छन्। देश सेना ! -समस्य-५ (फांट) दिसी दारगाने भारिमें नमने भन समस्त्रनंत्री जनस्त्रमा आदिया समुद्दः उद्योजवंत्रावनी ययक पत्रक-प्र (मकानिक) है। यभी ।

वधक पत्रहान्य (नकानक) वर्ण पत्रा । वंद्यीन्य (नेहानिक) यशादिको सहस्रतासे काम करवे वाला कारीमारा यत्र बनान वा सरम्बद्ध करनेरामा स्वस्क वंद्या ।

बबार्वेद्याही-वि (श्वांब्द्र) यवार्वशत्का बनुवादी। वधारिवात-अ (ध्व वि इस व वे) वेभी रिवाद के स्थात-अ (ध्व वि इस व वे) वेभी रिवाद के स्थात-वि बनुवाद। – समझीद्या-वु (स्टहांटक स्थान वेश व्यंतान या विवसाय व्यंतिको स्वांदा को वज वे स्थानेनाला मुझारीया।

बहिल्लय-तु (विदेश) भावनश्वकोडे वानी विधार सङ्ग्रह विशे जानेशास च तीन वंदे दिन्द सामने साम वीचर वन्नेशान वृत्तरी आरों प्रचे दूर नव्यर प्रदार दरने का प्रथम करता है और दिनस केंग्रे विश्वक्र स्थान गोलानवा यान रहता है।

व्यक्तिक्रक-म (विडेटक्क्क्कि) बहिन्न(विडेट्स्प्रेटे

रक्षका स्थान महत्त्व बर् छन्ते । वैधीकरण-पु (वैक्ष्मिसन) विविधे अनुवय वा अनुवृक्ष्म यना देना, वैच स्त्यु दे हेमा ।

येमप्यस्पक-वि (विसक्तांडेंड) असहमति या मित्र मत

स्थित करमेवाका ।

पसानिक-पु॰ (एनएसेन) विभान-बाकन काविका कान करनेवाका, विभानका पाकक या सन्त कार्यपारी । वैसक्तिक बंध-पु (एनेनक वांक) किसी व्यक्ति हारा किसा गया पंता परिवापण निम्नी किसी हुई वार्त पूरी करनेके वह बार्य हो तथा किसी पूरा न करनेक सिंगी रित थन बंकरनकर देनेके किय वह कावेंके लायके

किस्मेदार एमर्टी । स्वप्रतात-वि (वैप्पत) किस्मां वा मुक्ते वर्वित समक-प्रताम न साथ सामेदे स्वरूप से हाथसे निक्रम मना हो या नेकार (रद) हो बना हो ।

स्पराति न कार (१०) वाचन वा । स्पराति न का व्यवस्थान चु (७५५) किसी वाचि कार, प्रविधा आदिका व्यवस्था स्पत्र स्वोधा स वीनेके कारण हाससे निष्का बाता या एवं वास्ता। स्पर्यंत—५ (बिलिकिडेसन) प्रकार किसी कार्यस्य वा

निर्मदाहिको १इ कर न्यर्थ वता देना ।

स्पवसाय-प्रसिद्धान-पु (शेडेब्रानक हेविंग) बिक्षी स्वय-साय वा पेसेने बोल्या प्राप्त करनेके किय विवा जाने बाका प्रसिक्तम ।

सम्बद्धानस्थि पु द्विय्निवनी किही व्यवसाय कार बाने वास्ति इत्तर करवेताके मनिकी तथा कव्य कर्म बारियोंकी संस्था की मानिकी वा निवीवकोंक सामने कर्ममेंके रिस्के संबंधकी वार्त रखने आहिमें काका प्राप्त

निवित्व दरे ।

वपबहार-निरीक्षक-पु (कोर्ट वंशिक्टर) वह कर्मचारी यो सामान्य सुकरमीमैं सरकारको नेरासे पैराने करता है। व्यवहार-न्यापाक्षय-पु (सिरिक कोर्ट) यागरिकोके व्यवहार नाहि-संपंत्री निवासीपर विचार करनेवाका न्यापाक्षय ।

स्वयहारबाद-पु (सिविक वर्) नागरिकेके विकासी भारि-संबंधी विवासका सामका ।

स्यास्मानपीड~पु (रोस्ट्रम) मंचका वह कैया स्वास अहाँ खड़ा डोक्ट कोई क्का स्मास्मान देवा वा धारण करवाडी ।

आपक पुरुषसवाधिकार — 3 (वृत्तिवर्धक मैत्रूब छक्त रेब) देखके वा राज्यके प्राया सर्वेक स्वाप्तवक व्यक्ति की, बी पासक न को तथा सिस्ति किशी को कस्पावर्ध र्यक्त पामा की, विवा स्वा सत प्रदान करमेका अवि-क्षार।

व्यापारिकह्न-पु (हेवमानी निक्धी व्यापारी वा वर्षीन-पर्व हारा वपने मानपुर अभिन्न किया बानेनाका वह नियेन विक्व मिस्टी क्या मान बन्न किसीक्र मानसे सन्न्य वाचाना वा स्वतः

व्यापारमंबक-पु (वेंबर बॉक कामर्स) व्यावसियोका प्रतिनिविद्य क्रिपेशको संस्था । व्यापसाविक प्रतिनिविदय-पु (पंत्रसक्त रेप्रवेडीका) स्वस्थान वा पेग्रेडे बाबारपर विचा गया प्रश्नितिकतः। स्वास-पु (बाइमोटा) देंडले होती हो रोनों केत्र परिविषय छमाछ दोनेवाको रेखा सम्बन वह रूए। स्युरकास-पु (रिवीक्ट, स्पराधिक) राजा वा रास्त

कारमके विकस कर सका होना । वणकारक गैस-की॰ (किस्सर गैस) यह तरहस्र विशव

वणकारक गेस-ची॰ (भिक्तर गेस) यह तरहके रिशंक पैरा, विसका संरार्थ होनीर द्वारीत्तर चकरेंसे पिका आर्थ हैं।

व्यक्तिया—नि॰ (शक्सरेटेव) को वयमें परिकत हो नवा है। विश्वमें वच हो गया हो।

স্ব

र्संडुर-पु (क्षेत्र) एक नामदुस कंशेतरा रेकन वैसारव विसक्ती कपरी लोक औक बीतो हो।

र्षकुरूप-पि (बीनिक्ज) निस्ता मानार वा रून **रंड** (क्षेत्र) वेसर हो ।

र्श्यमाकारमय-५० (कीन) दे 'संदु'।

सक्तिपरस्तात्—न+ (नवहारावर्ध) क्रिप्तेसी क्षकि वा अभिनारके गावर ।

श्चरिक-र्यंतुक्कन-पु (वैकेंस ऑब पॉवर) एरस्स्र निर्धेत करमेवाक वैद्योका पेसा विभावन वा गुरुक्ती विसरे दोनों जोरको शक्ति संसुक्तित रहे, कमसान्त ।

शतक-पु, शति-का॰ (स्पुरा) सी पर्या सी वर्षे ना सी वस्त्रजोंका स्पूरा क्रिकेटचे बेकने किसी रह सस्थान

हारा किने क्षेत्र ही बावनोका समृद् । सर्वाद्य सापमापक-पु (स्ट्रियेड धर्मामीहर) ही क्योंने विमक सापमापक र्थ ।

सप्तमास्य वास्तास्य वन । सप्तमास्य — वु (कोश्योषेत्र) दोई प्रश्नीर प्रदन दर्शे समय निवा पर्व गुस्ता सारिको स्थय केमा ।

श्चरवापत्र-पु (रेफीनेफिट) किही स्वायात्रनमें श्रमपूर्वत दिया पत्रा किश्वित वक्तम्य जी प्रमानक समर्ग प्रदुष्ट किया का लके।

सावर्गेष् - पु (शर् छ वर्ष स्प्रीय) वास्त्रमे प्रमुख स्वर्थोत्ता, व्यासारपञ्जे कनुदार, जनके सावी प्रकीर आदि की परिते किया कवा सद !

समिकरण=3 (रिशिष्टिक्स) दी प्रमेकि गीम पक्से याळ सनवे वा विकासकी पूर करना। श्रीक स्मारित करना। कुन्न या करीवत व्यक्तिनों (सेना मीड़ मारि)-को स्नोत करना।

स्यामसास्त्र-की (होरपित्री) वह वहा स्वन्नक्य निस्म को व्यक्तिकीने सोसेकी व्यवस्था हो।

शस्याग्रय-५ (वस्तीर) रोगोकै वहुत विवीतक प्रस्था-मस्त रहते कारण वसकी रोड वार्टिके क्रिक वानेसे हीन-वाला वात ।

सरणस्थान पु (सेब्द्रकरी) यह स्वान वश्री सरव केरे-से कोई कावनी सवा पाने प्रवाने वाने बादिसे अपने बालकी क्या सकता है।

श्वरणार्थी—वु॰ (रिस्पूरी) वह जो एक देखरे दिखानित बोक्ट कुठी देखरे कामन प्रदान करे। —बस्ती-की (रिस्पूरी प्राथमित) ऐसे कोन वहाँ दस वहें वा दसने गर्दे की वस दस्ती।

ठीस पीए महा रहनेशमा वह धेपरश्रह नी बत्नेवानके महार्छ जात्र स्पे गेंद्रशे होइन अपना पादन करनेवाछे रोजाबोडे अपने स्थानवर म पर्देन यानेनी शावतने नापस मिन दूर वेंदने पनस्र महार करनद्वा मबान करता है। योगिक-प्र-प्रश्नितिस्ट) मधीमी येथेकी प्रकानेशकाः चन्द्र क्षत्र पुरनीका १६१४ जानी सक्षा मधीने नमाने बाका । दि॰ (मैकानिकृष) यपनांरंभीः बंजनत ध्यन्यसम्बद्धाः । यारिया-मी (पिटेशन) आर्रजन्त्र प्राथनाप्यः

यासायात=५० (१/६४) दिन्नी पश्चे हानेनाका माकदा हवा दाशियों अधिका समजायमन व

यामाधिरय-द (नैनस्ति अनार्यस) यात्रा करनेर्ये होनेबाडे सम्बे दरते मिलनेवाला यता। माग्रीवगु-बु (पैसेंबर गाहर) रेसवात्रियोंकी सुस्र सकि-भाजीको व्यवस्था धरनेशाचा दर्भनारी ।

पामांतरमन्द्र (हांशियमेंट) वाकियों अथवा मान्न असरारका एक पीन या एक बाजने जनारकर इसरे पीत या दशरे यात्रमें पर्वजाबा बाया। यानापिदेष-५ (इनरेवेंस भकाउंभ) दिशी दर्भवारीयी

सार्राक्षण रक्षा भादि संवारी रधक्के किए निकनवाका **स्थित (धन्त) ।**

पुष्टिमुख्ड-वि (रैशनट) युद्धि वा कर्द्धेवर आधारित दर्भभव दुव्यमंगन।

मुख्याभास-५० (शोर्फान्ती) देशनेमें नुक्रिमधापूर्व किंतु बारनवर्ने सध्यक्षीन सक्ष । युग्मक-तु (४५स) देनिस वा वैदर्गिण्टनके पेक्रमें बी-दी पुरुष रोकाहियाँ वा दो दी खी खेलाहियाँका नोहा।

युगाम-९ (कर्चन्य) दो पीओ (रेक्स्रे बन्नो आधिको पद्में बीड देना। य बपरिपद-सी (नारकी एक) नुद्रका संवाधन करने के तिर (अधिमहत्कके कतियय सरस्योंसे) विभिन्न

विदेव समिति। युद्धरत युद्धसिप्त-नि (नेल्बिरेट) (बह राष्ट्र या वक्र)

वो मिनमित रूपसे किसोड़े विस्त वहाई ठायदर सुद कार्योमें बगा हुमा हो। मुब्रस्थगन-५० (श्रीष प्रायर) श्रवमे स्थापी वा वस्थापी

साथि होने के पहले कहाई वंत्र कर देमेकी स्थिति ।

मुद्रापराधी-पु (बार्फिमिनक) वह विसने शब्द संवेधी कोर्र मपराथ-शतुके बाथ कोर्र कपनोगी सामग्री समा चार, भेद आदि नेच देना-किया हो।

मुद्रोत्तर भर्य स्मयस्था - को (पोस्टबार पक्षोंगोंगी) नुद समाप्तिके गलको रिशति वेखकर असके जनकम तैवार की नशे भावित समस्वाभीके निष्यारेक्षे भावरवा वा बोक्सा। मुखोचेत्रक-वि (कारयवर) नेशी मीतिका सनुसरण करमंत्रामा विसम् एक व्यानेकी संभावना हो। पुदात्तेत्रम-पु (बारमंपरिंग) अपन मावली, बच्छन्ती नीति नारिसे सुद्को उत्तेवन देवेका कार्य । युद्धोपकरण-पु (बारमेभेंद्रश) गीका-बाह्य कोर्पे बाहि

वरकी सामग्री ह

योगिक-पु॰ (क्याउष) वो या अधिक तस्वीसे पना दुशा पशार्थ (बैस बड जा भोषबन दशा नस्त्रनसे बनता है) । धौनशाम-प (नेनेरियळ डि'बीफ) दं• 'रवित सम ।

हगसास्त-औ॰ (रट्टदिश) उपान, यहाद्मय, प्यम्मनिने रान-वंवादिसे सब्बंड प्रकोड़ तथा भग्य अपकर्षीसे त्रक વદ સંવાન્યીયા શાહા ગશે નિષયત્વે કિપ પશ્ચનિષ્ઠ હૈવાદ किन जाने है। आकाश्याची बहुका यह प्रकाश जहाँसे किसी व्यक्तिश्रक यंत्र हारा भाषण सामित्र नार्सा करदः, क्रिसमीकन आदिका प्रसारम द्वारा अवदा प्रश्नी यनका ध्वन्यभिन्धान दिया जाता है। (अनुबारी साहित्य-प्र• (बाहर बिटरेनर) ऐसी पुस्तु हैं

कशानियाँ भारि जिन्दं कोग मनवहकावद्ध किए पाने ह भौर किम्हें पतन-समरानेमें विश्लेष आवास मही करना रक्तक्षेपण-पु॰ (म्बस्ट्रांशस्त्रुवन) रक्त म्बस्ति वा

शामीकी भगनियोंने एक नियासकर किनो अन्य व्यक्ति या प्राथीकी पमनियोंने पर्देषाना । रक्तवाप-त (५४३पेशर) इत्य हारा प्रदेशित रक्तमा धममी शादिकी श्रीवारपर पत्रनेवाका दवाव की प्रविद्य मावासे कम या अभिक होनेवर रोग था विक्रतिका सम्बद

होता है। रकदान वेंड-९ (कारनेंड) सुबमें पायक होने या अन्य कारणों से बिनकी वमनियों में एक ही निर्वात कमी हो नयी ही बनके छरीएमें रखका निक्षेपय करमेके किय पहडेंसे ही रहरव, व्यक्तियोंकी देवसे किया सवारक्त मेवव करनेवाको हरवा ।

रकांपु-इ (सीरम) रच्छका नवका पारतसी मागा बह रस की अभी रकते कृष्यें शक्त म हुआ हो, चेप, श्रीम्ब ।

रक्षक योख-प (परवर्ध देशक) व्यापारिक देहे आदिकी रहा दे बिय उसके साथ-साथ चरुनेशाका यात ।

रक्षाव्क-पु॰ (क्षामनार्व) युक्तिसके सदावद-क्षममें काम करवेशाण नायरिकीका संबदन ।

रकारकाय-प (अपधीय, मेनदेवेंस) देव-रेख करते द्वर वनापे रखने चात्र रखनकी किया।

रअसजर्यसी-की (सिक्यर जुनिकी) फिसी व्यक्ति वा संस्था आरिके धीवमकाकके १० वर्ष समाप्त होनेपर मनावा जानेवाका बत्सव ।

रजतपर-प (छिक्तर स्त्रीम) वह सकेश परदा विसपर थर्कनिष(छिमेमा)के वित्र विसापे बाते है।

रजोविरति की (येनीपॉन) सीके बीननका नश् परि वर्तन विसमें रज काम अविम क्यसे बंद को जाता है। (बह प्राव" ५ वर्षके भारा-पासकी भवरबामें होता है।)-रणमीति-सौ (रहेटेबो) शाहमण दरने, सुद्ध पकाने वधा रेजाका व्यूहन करने जारिका ६४ वा नेपूच्य ।

रणपीस-प (बार्सक्ष्य) बुदके काम भानेवाला बहाब । रणर्वदी-पु (क्रेप्टिंग) कुरूमें पदका गया शतुका हैनिक

सबवंदी ।

(बिनिस्टर भार एजरेशन) शिधा-

प्रामास-को॰ (रेक्ट) वह छोटी रंगीय गांकी, प्रानी या दिस्त भी मुमानके समय मतराता दारा ग्रम रूपसे

मत-राज-वरीचे टाका काता है। इस प्रकारका गुप्त मत

भीरते-बाहनेथे प्रयुक्त शानेवाले औबार । --कार-पुरु

पारच-पु (शिवस्क इंश्ट्रॉग्रे) फोड़े वा स्तम अंगको (सर्वन) दे 'धस्य-विक्रित्सक'। -क्रिया-धी (सर्वरी)

बरनेक्षे दिया वा शाख ।

स्थान पश्चौ द्यशीचा परीधन किया जाता है।

स्विचिक्तिसा-सी (सर्जरी) दे 'क्रस्न' विद्या ।

सक्षनिर्माणसामा-सी (भार्यनस फीररी) होर्वे, गीडे

ग्रांतिकार-५ (रेसिकिन्म) विक्त्रे छाति वनावे स्यते.

क्रिक्ष भी स्थितिमें पुद्ध न होने देनेपर ओर देनेका सिर्वात

स्रोतिकाकी-विक (वैशिक्तिक) छातिकावके छिकांतका

शासनाविष्ठप्रवेश-५ (मैगारेड देशेर्ट) है विछड़े 💵

प्रदेश का भूपंट विमका शासनभार प्रकम महात्रके

बाद राष्ट्रसंबदे आरे प्रसे मिदेन आहि प्रश्नत विजेता राहीं-

धासभादेश-प (बैनडेट) प्रथम महासद्धे पूर्व वर्मगी

तथा तुकाँके अभिकारमें की अपनिनेश वा क्षेत्र के अनपर

इनके स्वतासमयोग्य दोनेत्य प्राप्तन क्रामेका विदेत

मांस भारिको राष्ट्रसंग हारा विना नवा भारेख । शासमिक पिपर्यंप-५ (क्रहेरा) शासन व्यवस्थामें

स्याचे हे किए की मधी छन्की जीय ।

तथा श्रवादि तैवार बरनेबा कारधामा ।

या रसके किए किया जानेवाका आंदीकन ।

श्रनवायी ।

की तीप दिया गया था है

संचापद्रस्य ।

म्बक्तिदौद्धा समृद्द वा श्रीवकः।

कोरों या रिक्र्य संभवा रूप संगीको चीर-कारदर ठीड

हिष्ट्यार्मप्री−४

इरमेको किया। -चिकिश्सफ-पु (सर्वन) फोड़ो विष्ठत वा सम्म जंबीको चीर-कावकर ठीक करनेवाका

तवा हुत वा स्वायच्युन बडी आर्टिको बोदने-वैदामेशका विक्सिक। -पिनास-प -विद्या-सी॰ (सर्वरी) भीर-बाद दारा कोहे का विक्रत एवं क्रम्य अगादि कीक

शस्योद्योग-द (स्थित्क रंश्ट्रवेशस रंतरही) सस्व विक्रिसामें प्रमुख होनेबाध औजारों हे विमांबद्ध क्योग ।

रावपरीधमासप-त (पोस्टमार्टम क्य) वह दमरा वा सबपरीक्या-छ। (पोस्ट मार्टम) मास्बे कारकहा पहा क्षिमा गाता है।

विष्यस्य-प **E# 1**

कपृक्षिप ।

र्शक्ता खँपा ।

बह बानेसे बसके ममावर्षे आबी द्वर्श इंदरको बहर की अन्य स्थानीमें भी जाशा या ग्रमान सरप्त कर देती है। शीत मुद्ध-प्र• (कोस्थ बार) वह रिश्रति विसमें सेलाओं

प्रधापक वर्ष प्रकार्यक किया समा परिवर्तन। वकाश द्यासिनिकाय-५ (सर्वीन गाँडी) (किसी विचाधनः निकित्सास्त्र अभिका) प्रवंश या निवंत्रण करनेवाडे

धावायिप्रमान-प्र (मॅनाहिये) किसी करव या वर्जावि की पृष्टिमें दिवा जाने का मींगा जानेशका वर्तकासा. विविधास वा किसी अन्य शासका ग्रामाकिक हवाका । शिक्षणशास्त्र-५ (पेडमानी) छात्रीको वहाने, श्रिक्षा

देनेको विचा । सिकामसार-पोजमा-कौ (एज्रुकेसम दमधनसनस्क्रीम) वाक्सी, सिवी मीटी वेवी वादिमें वविद्यापिक विस्तार पर्वेच विका फैलारेको बीवला ।

विधामधी देखरेख करजनाका भंती । चिश्यमाण-५ (धेर्वेदिस) हे • ^६परविद्यार्थी । विवाद-सम्मेखन-प (सनिव दानफरेंस) दिशी गंभीर समस्यापर निपार निमर्श करनेके किए बानी वित निमित्र देशीके घीर्षस्य मेवाभीका सम्मेशन ।

सिरको वहा देमैके निमित्त प्रमुख होनेशका यंत्र ।

शिरमधेनपळ-प॰ (विक्रोदिन) शिरमदेव चर देव, पहसे सिरोधिय-प (प्रेम्स) दिसी त्रिकीण वा संस्थाकार यनका शीर्ष या अपरी विद । शिकाविर्माण-पशान-प (पिट्रोडॉ A) पहानी के रचना,

स्वकार आदिका अध्यवम करतको विचा । शिख्यमञ्जल-वि (किन्समापड) निशेष महारके परभर पर **७६ वा धारक्ट छात्रा £**भा । शिकाविज्ञाम~प (पितीकांती) है 'शिकानिमांश-विधास ।

विश्वकरपाण केंद्र-प (बारव्डनेकफेनर सेंटर) वह रबाम वहाँ वचीके स्वाहत्त्व आहिको देखभाव की जाती और विविध क्यांची हारा बनके हित-साधमका प्रवान

(रेक्टीवेडन) (ब्रेसी संग धरिक्षाती बाहिमें मान कैने हे किए भेड़े वर मध्यात प्रतिनिधियोंका श्रीघ्रक्रिपि−सी∙ (शार्ट डैंड) क्रियनेका वह दंग या प्रवाची विसर्वे बोकनेवाहे-दे संबद्ध आर्यंत्र सीप्रवासे अवके द्वचरित दोनेके साथ साथ किये था सकें, त्वराकियि,

सीतकारी वंत-प (रिप्रोवरेटर) टंडक पहेंचाने, ३डा बनावेबाका बंबा डंबा बनावे रखकर भीवन आदिको शीप्र खरान दोनेसे क्यानवाका भाकनारी या संस्कृत द्यतिकर्रगः द्यतिखद्वरी-सी॰ (कोस्ट देव) दिसी स्थान या क्षेत्रमें ग्रुपारपाध आदि होनने कारण ठंड बहुत श्रीपत

और समाजीके मरवस मदोगकी मीरमता न होते हुए भी राष्ट्रीमें परस्पर अमेग्रीपूर्च मान विधमान हो एक वसरेके विरूप प्रचारकार्य किया था रहा हो तथा आधिक विष्यंसका भी मबस्य हो रहा हो। प्रीक्संबद्द-पु (क्षेत्रव स्टारेव) विशेष स्पते हते बनावे यमें क्रीप्र वा कमरेमें रखी पनी वस्तुओं का संगव किसमें वै सक्ते-निगकने च पार्वे । शीक्षाच-प (शबोरिया) मध्डोंने भून तथा मबाद

वानेका रीग । सीर्प-प (करटेक्स) वह विद् विसपर दी सरक रे**वा**र्प कोई कीए बनावें । क्षीर्थे विद्य−पु (भेतिक) दे कर्मादेव'। क्षुएकार्ट्र−वि (द्वृदिश्विक) श्रुस्कवाकर नैठावे जाने

योग्य जी धन वस्तुओंकी स्पीके अंतर्गत हो जिनमर जन्म प्र**वस्त्र कर देश** दिश्यम प्रवा हो ।

रविज रोग-पु॰ (रेजी(रेयल डिजीप) ध्योगसे करवा वा राज्यमित रोग ।

रम्पायान-प्र॰ (दाम) सक्टोंपर निद्यानी गयी कोहेबी भवती पटरिवीपर विजयो आवियो सहावतामे प्रकतेवासी

वरी सवारी वाले । राजकीय पद्धा-प॰ (ओक्सिएक बार्टी) बह बढ़ विसक्ते

दावमें रेक्क्स जासनस्व हो, वो राज्यका संवाधन कर रदा हो। शरकारी दक्र ।

राभकीय प्रामियोक्ता--प्र• (पवर्नमें प्राम्मेक्परः) है। 'प्राभियोत्तव'हे साथ ह

राजकोपीय नीवि-श्री (फिल्डक पॉक्सि) सरकारी कोष या भाग एंश्री मीति ।

राजिच्छ-प्र• (रमसिभिया) राजाजीके व्यविदारसूच्य विष-वेसे छत्र, दंद कादि, दे॰ 'कासकड विक्र' । राजदपा-सी॰ (डीमेंसी) प्रान्तंत्र श्रादिको समा पारे

इप वंदीके प्रति राजा वा प्रवास शासक कारा, क्रमा-प्रदान, दंधन्त्रम आदिके स्थमें दिखायी पदी दया । राजरत-५ (प्रेक्टर) क्रिके अन्य देशको राजवानीने बदनी शरकारके प्रतिनिदिश्यमधे रहतेशकः प्रतिनिहि । राज्युताबास-५ (१२ेस) राज्युतका विवासकाम ।

राजपश्चित-दि॰ (मेंचेटेब) (बह अविदार)) क्रिसकी निवृद्धिः परकृतिः स्थानांतरमः ग्रहीयर आने शामिन्धे स्वना सरकारी महदमें प्रकारी हो।

राजपदावि - सी (पाजिये) नागरिक दासकका प्रकार

रावश्वासमधी प्रवाही। राजपुरुप-५ (स्टेर्समैन) राज्यके धासन प्रदेश सारियें प्रमुख क्यारे भाग केतेवाका अवदा एसकी क्रमा पा

बीटिका बाबकार, रावनेता राष्ट्रभावका राज्यमुख-४० मैस्ट त्रिगंडर आदि राज्यों वा मध्य-मारत थादि राज्य-संदीते राज्यपानका स्थान शहन

4रपेगाण ममस्य राजा ।

(तक्ष्मीट हाक्ष्म) राजवातीका वह राजमधन-५ सरकारी अवत वहाँ राज्यप्रक का बक्ताक्वप्रक निवास करता है।

(क्रीकिक बाल स्टेर्स) है राजसमा-स्रो परिवार'।

राजसाक्षी-पु (रेप्टर) अवराधिवीयेल वह व्यक्ति जी धमा शायना वर शरकारी गवाद नम जान और अवन पहले सावियोचा भवराय प्रणायित करानेमें उक्तिकी महाबता करे हरूनां । गराह ।

राजस्य-५० (रेनेन्यू) राज्यको या सरकारको मुनिकट भारिसे होनेवाको धाव ।-ज्यायाक्य-प्र• (रेक्न्बर्स्ट) रे ग्राज अदासत । -मंग्री-5 (सम्मुधिनिसर) माह महत्वेदी देखाँच करनेशका मंत्री ।

शाबाक-म (श्विधिनिया) दे 'शाविक । राजाभित्रेय-५ (विशे करे) रामा या शासको निश्वे कार किय सरकारी चारानेश की नानेशाओं वेधी हुई TERI

सामध्येत्रातीत अधिकार-प्रश् (श्रद्धा धेरियोरियक सार) पद राज्यदे क्षेत्रके औहर मान आरिके मामलेमें स्टि क्ष्यक नार्यक्रम-न (धीनर पोमान) मान्यसमानी हार्।

वियोध्ये वपने ही देखने मधिनार मात होना । राज्य परिषद्-लो-(बोधिक बांड स्टेर्स) राज्योंने पने इप मितिनिवियोंकी वह बच्चपरिवद त्री निम्न सरवे निर्वशीपर प्रमविकार करती है। राजसमा ।

राज्यपाळ-प्र (यवर्नेर) किसी धरेडा (बारवर्षे 'क भेगोंके किसी राज्य क्षेत्र सर्वेश एरप्रदेशारा और प्राप्त निस्की निष्कुष्टि मानः राहच्छे अवदा सर्वेश रामास्त्रश्रे स्वीक्रविसे बोता है।

राज्यसन्त्रासन्त्रपर्य-छो॰ (रोनेसी हार्यक्रि) समाध व्यस्पवयस्वता, बंदी नीमाचे आहिके समय चामका संपादन कामेके विभिन्न नियक करिएम व्यक्तिमें पश्चिम ।

राज्यसंरक्षक=५० (९३२) वह व्यक्ति विशे राक्षके मस्पन्यस्कृता, वीर्वकाकीन स्थलता साहिक समय राजधी देख रेख व्यवस्था भारिका मार छोछ। दमा हो । राष्ट्रपति - प्र (मेर्स) देश प्रश्नांका निर्दारित अवस्थिते

क्ष्म क्या यदा प्रधान (स्वोध दशविदारी) । -धवव-त राष्ट्रपविद्या (धारतचे दिश्मीरियत) सरकारी निराम exist (

राष्ट्रमंबळ-५ (बायबरेस्थ ऑफ नेक्स्स) समाव (१३ और समान बाबनासे बाबत सर्वत्र राष्ट्रीक स्वरूत्त राष्ट्रवाद-प (नैधनकिन्स) देशशक्षितीमें एऐस्पर्क धाननाडे धीकरण, राष्ट्रीय परंपरानीका गीरत व्यवस रमाने रखने तथा राजनीतिक रकता रथापित करने मा पराधीनतारी मुख्ति आदिके किए किया गानेग्रहा श्रांदीकन ।

राष्ट्रीयकरण−१ (नैसनै(केरेसन) सभावधा देवर स दिना मुनायनाचे देखने दियेष प्रवीद्यं, शूमि आहिए सरकारका व्यविकार कर हेना और सक्षेत्र राज्ये दिश्ये रहिते उनकी ध्यवस्था करता ।

रासायमिक परीक्षक~५० (केमिक्क प्राथमिनर) मि#ा बर का कताबर कारिका कहा क्यानेको ध्विते हिसा बरतुके राखाबनिक वरवीका विस्थेवण करनेवाका ।

विश्ववरा-की (नेर्देश) किसे पर जीकरी वा स्वाजक बाकी होगा विश्वी कार्यक्य आदिमें कोई जन्द्र (६८) रिश्व दोना ।

रिष्क स्थाम-प्र (रेडेंसी) दो वा अभिक स्थानीके वीषधी आकी समझा है 'रिकि'।

रिकि-की॰ (नेवेंक्षी) शह वह या स्थान निस्तर अभी दिशी व्यक्तिती या कार्यक्तीय निगन्ति न हो है। रिक्ता है 'रिकासाम । -परक-र॰ (फिन्म) रिक श्वानकी भरनेवाची मला ।

विकास-प (बारेट) मार्चप्रीकः भवा (व्रक्षेत्रस) कारवारमें क्यो वह पूँची जो संपत्ति सामान भारिके स्वमें हो ! -पन-प (निक) यह यथ विश्वने दिवस(अर्थाद क्षाराविद्वारचे विक्रतेशके पन) है अमुद्र-अमुद्र प्रदार्श रेखार्ड संरंपरे हच्छा प्रस्ट की नशी हो, हच्छाहम ।

हामदायकारा-१० (मेहिक्स कीर) शेवाधिके कारण मी वर्गी सही १

भूक-पु॰ (पिम) दे 'क्टिका । -धानी-सी॰ (पिन उधन) दे 'क्टिकानार'।

पुष्पियेजन-पु (१नकेश्वरण) युंब्ध सहायताचे दशका प्रमेश कराजा संतरकंपना स्त्रं (तृष्टे सेना,—कमामा) । होम्पपन-पु (पृष्ठ) किसी प्रशंभवाओ नसाका नह समूना जो उसकी प्रशंकी पृष्टे नसूक्षिता के करमेके विष्ट सेनार किया बाता है।

सीचाळय-पु॰ (केनेटर)) ग्रीच आनंकी कोठरी वा स्थानः यद कोठरी वा कथु सित्तमें फानीकी तथा कपुर्वका सरवारिको व्यवस्था हो। दे॰ 'प्रश्लाकनगृह ।

क्रासक्तवाक्त्य-पु (केन्द्र च्यूरी) अधिकांक्र संस्था, रियति जारि-रावंधी जानकारी देनेनाका कानांक्य। अस्मविकान्-पु (केन्द्र विस्तन्त्र) अधिकांक्र वाना जानि-कारास तथा कान प्रशांक्षे संन्या वह वहा हुना विनाद पा सराहा।

ध्यसस्य - पुः (डेरर कृतिकन) कारसाली कारिने काय करनेवाडे अस्मित्रीता संग को कनते रिशति-श्ववार तथा विरुद्धान्त्री और ज्यान वेटा है।

स्तिक-करपाज-कार्य-पु (केयर नेक्सेनर क्ये) स्तिको-स्त्री स्कार्यके किय किया सारोगाणा कार्य (स्वास्कर्याः

छाफ भीर हवादार सक्तमंत्री व्यवस्था भावि)। असिक-कस्पाय-डेंब्र-पु (केवर वेक्केबर छेटर) वह केंद्र वा स्थान कर्या सामकोको चकावेके विशिन्न कार्य क्रिके बारे थे।

ाका वाध व स्परिक क्षित्रिपृष्टि-अधिविषयम-पु (क्टमेंस क्षेत्रस्तेष्ट्रस्त प्रेर्य) मिमंद्री तथा कनेकारोको काम करते स्पर्य कम्पनेन वसमे बोर वा क्लत क्सने होनेवाको द्विके स्पर्य-मार्किको वा म्लास्ट्रासिक संस्कृति ब्रह्माना विकानेके क्रिय स्वामा एका अधिनियम क्रमेकार-बानिपुरक-क्षि-

निक्स ।

अस्तिकविद्यान-पुरु (भैन देव) एक दिवये एक भारती

स्तार (केवे गवे कारको स्वार्ध मानकर व्यवस्थ कार्यो

स्तार (केवे गवे कारको स्वार्ध मानकर व्यवस्थ कार्यो

स्तार्द्य क्षेत्र स्तारको स्तार्थ कमानेसे प्राप्त स्वार्थ क्ष्या ।

स्वार्द्य मुद्र -पुरु (दिवर) ब्रुसीसे झ्रेसी क्ष्य साथ स्वार्थ कार्य स्वार्थ कार्य स्वार्थ कार्य कार्य स्वार्थ कार्य क

भृतिकेश्वन्त (रिवरेश्वन) किसीके बोचे हुए वास्पाँकी सुनकर कियाना वा इस तरह वी कुछ किया वाय बाहेक समाधा !

भावेचा समागः। स्रोतुमार्थ-पु (माहिपीत) वक्षः स्थानमें समवेत दोसर किसी नेता वस्त्रेक्षक स्थावेचाता भावेचा सावण, वप्त्रेस, प्रवचन सुवर्गवाके समस्त्र कीयः।

क्षेत पत्र-पु (ब्हास्ट पेवर) किसी वार्चा संकित्यां कारिके बंतर्गे वसरे तस हुई वार्ती आदिके संबंधों सर कार हारा मकावित विवेदत विवरण वा वक्त्या।

द्वेतसार-पुरस्ति प्राप्ते एके एक वेदा खावतल वी बाह्य पाव स्वादिमें क्षित्र मात्रमें वाव बात है (इस्सेन्ट स्वक्त स्टोनें स्वका म्रोम किया बात है)। इस्तेन्ट-पुरस्ति क्षानके मीतर, वसकी नना नटर्ने वी निश्चेष प्रक्रियामें बनावा हुआ एक्टेन-छा कि

स्वेदांकित-नि (नास्त्यान्ड) क्रिसप्ट स्वेदांत नगा हो।

₹

संकट-संकेत--पुर (एस- भी पस-, 'बसोबस') बुस्ते हर जवाज प्यरत कोते हुए विमान लाविसे जवंबर संबद्ध सरका देगेके किय वेतारके तार हारा मेंदित संदेश।

प्रस्का वनक क्या नगरस तार हारा मार छिंद्र। स्टेंद्र के बान, क्या नो स्टेंद्र के मार के बान, क्या ना स्टेंद्र के स

स्वितिचिद्धः संकेतक्य- पु (हॅगोरिनेधन) नाथः स्र बादिवे शुक्त वे निव्ह वा क्यु क्त वो क्षेत्रको व्यव प्रमुख होते हैं (जैठे व कि - क्युम्क किना)।

संकेतासर न्यु (सारकर) संकेत क्यमें किसे की क्यर पुत्र किये। संकोतसम न्यु (कोस्टेक्स) स्टब्स सन्वस्था किसे सन्दर्भ

संबोधम-पु (कोनोक्स) व्यान वास्मार किसी वर्डकी भागतन कम बरचा ।

स्रोकासम्बद्धाः संक्षांति-काक-पु (द्रांबीसन्व पॅरि-बर) एक स्विति वा दुम्से शिक्ककर पूर्ण कमने दुर्ण स्विति वा दुपर्ण संक्षांत्र (प्रसिक्क) हो वानेके गैयक स्वत्व ।

संबक्तावनासान्यु (विस्तवनसम्बद्धाः) रोजके संबक्तावरं पत्ताव ना द्वाचितः । संबक्तावनासामान्यः (विस्तवनस्वयः) को रोज देकवे-वास्त्रं क्षेत्रापुर्वोच्या वास्त्रं कर सन्ते, रोजका संबक्ताव न

होने दे (दश १) । श्रीक्रमित माक-प्र (पुत्रुत इन होक्टि) यह माक यो किसी स्थानते दशस्य कर दिना गया हो, पर कमी विदेश

रशासत्तव रहेंचा न दो—रोचमैं, वाचामानेमैं दो हो । संस्कृत्य—प्र (कोरोचन) मोरचा जानि क्यमेंचे कारण विक्री प्राप्तका स्टास्टर तम का शोक केले जाजा ।

विक्षे प्रार्थका कम्प्या नह वा दीन होते जाता। संविद्धकिषि –को (सार्व देश) क्षित्रवेकी वक्ष प्रमाणी विक्षेत्र विद्येश व्यक्तियोक्षेत्र किय स्रोटेन्कोर्वे विद्या तिकिय

रवते हैं। संशिक्ष विधिक विचार-पु (समर) द्वापक) न्यामाकन बारर किसी बाद वा सामकेशर विभिन्न सक्किस स्क्रीरें किया गया विचार।

ाक्यर प्यास्त्राच्यारः संश्लेषण-तु (पश्चित्रारेश) संश्लेष करसे, विस्तार कारि कस वेनियी क्रिया ।

संगणता—को (कांप्यूटेशन) गिलकर वा दिसान क्या कर देशमा काँकों वादिके वानास्तर औक और अंदान

प्रसारित मारह, प्रदूषम आदि-संबंधी कार्यक्रम । क्रपमेर्~पु॰ (मारिफिदेशन) अर्थ या स्वस्त्र आदिने शांधिक परिवर्तन करमा, इपर उपर वर# देशा । क्पमदित-दि॰ (मादिकाद्द) विसमे द्या उपर आव-इबद्ध परिवर्णन कर दिवा यका था । रूपोइड-पु॰ (हिटाइनर्) भानी द्वार या वैवार द्वी मानेराक्षी बस्तु आहित्से क्ष्य-रहा बनाग्र-बुनावर भारिका देव निधित करने या धीननेशका । रूपोक्रन-पु॰ (डिजार्जिन) दिली भानी कार्य या तैबार की जानेवाली वरंत आदिकी क्षणरेखा बनावा, मनवें क्सि बोबना धारिका रूप विधित करना, बनावर तुवान्द्र आहिका काहे विजेत होने वा छने सानवा

निर्पारित करना । क्योतर-५ (इंस्फॉरम्यन) क्रिसे शतुका वरका प्रथा कर ।

क्योतरण-५ (इंतिसॉरमधन) क्रिया वस्तु के रूप शास्त्रर आरिका दरक्ष दिवा जामा, वनमें परिवर्तन

ही जामा । क्यांतरित-दि॰ (रांसपार्थ) दिसदा कप, आसार वादि

नरक यदा हो वा नरक दिया नवा हो। रेखा-की (कारन) दिस्की यदि विसमें संगर्ध हो। थीरारं, मोतारं न हो । -गबिल-प (स्थामेटी) वह ममित जिसमें रेखाओं कोकी, पूर्ण आदिका विवेचन द्राता है। −विग्र−द० (१देव) दिशी व्यक्ति वा वसादा केनक रेखाओं से नदा हुआ वित्र । (बार्ट) है। रेखा-पव'। -पद्म-पु (यारं) विदेश सूचमा या जान बारी प्रशान करनेशाचा मुख्य क्ष्पते रेखाओंका बना बह चित्र विसमें सबन सबस वार्टे संशास्त्राम विश्वादी गयो हो। खाने बनाकर ताकिकाओं आहिके कपने दिशा नया निवरणः नार्विक्षेत्रः बहाशके बहाओं जारिके पास रहनेवाका वह समुद्री नवसा जिसमें समहत्त्व, भट्टानें धररेके स्थान जादि दिखाने वये रहते हैं। वस्ताओं दे करपादन पर्व मुख्यादि-संबंधी तथा तापमानके बहने-बहने माहि-संशंभी परिवर्तन कदर मीचे चत्रने-क्टरमेवाकी रेक्का हो । - ब्रियकानेशका एव । - ब्रियकी-सी (निनस्युक्तम) विभिन्नको हो या अविश्व राजियोंको एक साथ गाँवनवासी यह जानी रखा थी वसके करा छोच बी बाधी है।

रेकित धनादेश-५ (कारब पेक) वह अवारेश थिसमें नामा और भीचेसे कनरहरू हो समानांहर रेकाएँ स्रोध **दी गर्गा हो (१सदा दश्या किसोन्डे केंद्रके सा**तेमें जगा दोमेद वाद दो निकाका जा सक्का है)।

रेखवेमंडक-पु (रेक्वे वोर्ड) रेलीको व्यवस्था संयाक्रम, विकास वादिके कारोंका मिर्थत्रम करनेवाकी समिति । रोविनिरोधक ज्ञब्य-प्र (प्रोफिकेवियक कर) रोधोंकी क्लचि तथा प्रसार रोक्नेवाको दवा । रोगप्रतिर्वधनिरोधा-सी (धारैनदीन) है निरोधा ।

रोधीबाइक गावी-को (ध्वृकेंसकार) हे 'वरिचार गारी'।

रोगोचर स्वास्ध्यकाम-५ (इनवंकेर्सेस) रोन अच्छा

🗓 जानेक बाद स्वास्थ्वको पूर्वरिवर्ति तथा पूर्वदक्ष प्राप्त इरने की किया।

शेक्की-औ॰ (स्टाप कार्क) महर्मे क्षना हुआ यह काम या बाँट जो बामोकी शतह निर्पारित श्रीमातक पर्देच धानके बार धानीका भरमा वा नकमेंसे भागा अपने आप शब्द देवा है।

ਲ

खंब-प (परवेदीक्त्रकर) हिसी छटक रेखाक बापार पर बीमी तरफ दढ दढ समढीय ब्लामेशकी रेगा। व्यविश-दि (देशिय) (बह दार्थ, मामका भादि) विस्दे मेर्रथमें अभी कीई निर्णय का अंतिम विश्यव न हुआ हो जो अभिदियत (या अजिश्ययक्र) धररवार्षे हो । क्रतिष्णु-दि॰ (रेनेक्स) दिन्नी दर्भन्ने रहताने सरा रहने

बाकाः दिली सिकांतः नियम आहियर वटा रहनेबाका । खपुष्टिपि-श्री (द्यार्ट देश) देश 'द्योजिकिपि'। कप्रपादन्यायाक्य-प (श्मॉक कांत्र कोर्ड) होने नारी-(मामको, सक्ष्यमें) पर विचार करनेवाकी भशकत । कन्करण-पुरु (इम्बृटिय) यही स्था नरावर इक्त्यी दर

देना, इंडारेखको इछ मुकायम दर देना । क्रमण-पुर (प्रोच्ट) वह शीतिक की किसी मातु सभा भागमधे किया द्वारा वने (शमक, नीवाडीरा, यसीस, भौमादर) ।

कापता विद्वीवर∽प (देश केटर ऑक्सि) हाय-विमाग-का वह कार्याक्य वहाँ हेते एवाहि, विश्वपर रहा कियाना शहर गया ही या कियपर शकत वा अपर्यात क्या किया यवा हो. घोषकर पर बाते और हमीं यथासंगय ग्रेजमे बाकेके बास कीटा बंगेकर प्रयास किया जाता है। कासकर जोल-को॰ (रकॉनॉनिक होस्टिय) कास्तकार

हारा बोदी-पोची बानेवाको वह मृति विस्तृद्धी स्पन्न वार्षिक दक्षिते कामकर वा मरथ-पोषक्के किय पर्शाप्त हो । सामविभावन-पीतना-श्रो॰ (प्रविद सेवरिय स्क्रीप) किसी व्यापारिक संस्था आहियें शोवेदाके कामका निर्धा क्यों तथा विक्रुप्रेमें-माक्ष्म्यें और मस्थिमें-प्रवित इंबरी विशरण करनेकी बीजना । धार्भाग्र−9 (विविटेंड) कारखाने आदिमें छगी प्रश्ने

वैशीपर मिक्रमेवाके व्यास या आधन्त्री रक्षमका वह हिस्सा थो वितरित किने चानेपर हिस्तेवारको मिन्ने । **डिवाद**-प्र (इंस्ट्रॉमेंट) वह किवित्तपत्र विसमें ही

पहाँके बीप इप किसी समझीतको खर्वे जावि दी वक्ष श्री विशेषा क्षिपिक-मु (स्वार्ड) क्षिप्रमेदाश्चाम दरनेमावा दर्मधारी.

मुंबी किरामी । -विद्यम-प (१०(१०० मिस्टेक) किपिन वा कैएक हारा की गयी मूछ।

संधानसामधी-की (स्टेश्वनरी) कागन, कुम्म, स्वादी आदि सामग्री जो किसानेका कार्व करते समय आव श्यक हो।

केवनी कर्मरोधन−पु (फैनडाइन रद्राहक) किसी कार्या क्वते क्रमेवारिनोक्स अविकारिनोके किसी आदेश स्वत शाराविका निरीय करनेके किय कियाने कानेका काम **७गाना** ।

संबद्दाप्यक्ष, संबद्दाख्याप्यक्ष-५० (बन्देस्र) किसी शंव

शासन(म्युविनम)को इस्तरेश या ध्यनरेश करनेशाला मुख्याभिकारी ।

संबन्त- (६)ए नेनसेयन) धना वा डीस बना देशा। संघम्यायाम्य-पुर (के रुव कोर्र) संपराज्यका सर्वाच

म्बायाक्ष्य ।

संघपसमिति-धी (दमिशे भाग वेबशन) स्थापीनता या प्राप्य अधिकारी भागी आदिको पनि ६ किए श्रकान जातेशाचे आंटोकल था शंपर्यया संनाक्ष्य करमेशाशी समिति, आंडोबलसमिति ।

(दिदिकेशियम) यह आविकारी संघसमाञ्चपार-प्र अभिक बांदीकम जी व्यवस्थायस्थी (डेंड वृश्यियनस)-को ही सामाजिक हातिका स्था भागी समाजका आधार मावता है (इंड्डान बराना शतका मुक्य साधम और कस्य है); राज्यसंस्था समाप्त कर व्यवसायसंगीकी संशा श्थापित करमा ।

संघीय संविधान-१ (फेटेएक क्रांस्टिन्छन) वन राक्योंके संपद्धा छविभान जो आंतरिक मामक्रोंने हो प्राय स्वतंत्र हो किंद्र रक्षा वर्ष परराष्ट्र-मीतिके संबंधमें बेंडीय वा संपत्तरकार अभीन भी ।

संचारसाधन-प्र (भीग्स आंग सम्पृतिकेश्वन) दो वा भविक रवानी या व्यक्तिमोंके नीच संनेप स्थापित करनेके साथन-बाब, वार समुद्री वार, रेबियो मादि (शार्चा-बहनके सत्पन) ।

संचाकनश्यय−५ (विश्व यक्तवेंक्षेत्र) विक्री कारयाने संस्थाः प्रमंदक आदिन प्रकानेका स्थव । संच्याप्रतसमिति−सो (स1दिश्य वश्यो) हे *दर्श*शाह

स्रमिति । संचित्रकोप-प (प्रॉबिवेंट एंड) है भविष्यनिधि । मतुराण-पु (कार्षिय) दैवार हो बाबेपर फिसी पोत आदिको पहली बार पानीमें उचारया, वैराना ।

संवरणश्रीक हिसश्चिका−सी (बाइसवर्ष) पानीमें उत्तराती हुई १५४६ भट्टान ।

संबंधिका-की (फारसैप्स) वे 'गर्मशंक' सँवसी। सदिग्धजनसूची-को (भीक किस्त) हे 'वर्ष श्रम् हो।

संबेहबाइ-पु (स्केप्सिसम्म) सरवद्धे संबंधमें किसी रिक्ट विश्वास का सिकांतपर म पहुँक सक्तेकी रिश्वति का प्रकृति संध्यक्तर ।

संबेद्धवादी-वि (स्केप्टिक) वस्तुतः सरव या तरव वया है, इस संरोधी को कोई निवस्त न कर सका है। किसके मबर्ने बराबर धरेड बना रहता हो (यहा बार्स्सिक्ट): **भविश्वाली संख्**यारमा ।

संघाता-प (बेस्टर) कोहे बादिके प्राथी, उद्यक्ति

बोक्नेवस्था । संधिष्क्षेत्रकरना~स कि (डिल्कनैक्ट) जोड़ कासी-ध

कार देशा प्रमक्कर देशा । संपरीक्षण-नु (छ्ह्दिनी) किसी छेछ मनीनश्रमपत्र. कार्य भारिको सूर्य मौच कर वह वैद्याना कि वह डीक भीर मियमानका है वा नहीं।

संपर्कपदाधिकारी-प्र• (किनेशॉ भाषितस्र) देशकी सेनाओंने वा घरकार और प्रजाननीमें परस्पर र्धन्य रवापित कर्नेवाका पदाभिकारी, मधनाधिकारी । संपादक⊸त• (करशेक्षिन) १० 'धानिरधक ।

संपीक्रम-पु• (ऑप्प्रेशन) दशना। दशका निभोदनाः पराबंद छोरा बरना ।

संपृष्टि-सी (बारोगेरेसन) विसीचे सथन, वसम्बद्धी थम्य सर्वासे प्रक्रिया भागा।

संग्रेपण-व (शंशमिधन) एक स्थान वा एक व्यक्तिके थाससे वृत्तर स्थान या व्यक्तिके पास (समाचार, रोगागु, विषारादि) भेजना, पर्देषामा, स्थानविदित करना ।

संयक्षीकाण-प (पद्मिक्षिणम) रिसी एक परिवार का समाजका सदश्य वया किया जामाः किसी विद्यालय का महानियाकवका संरंप विश्वविद्यालम् हे ही बाजा।

संसरणियि – स्रो (प्रोविटेंड प्रेंच) है 'स्विश्वविधि' सनिधायक क्रीव ।

संयुक्त निर्वाचकवर्ग - पु (ऑश्ट श्रहेन्टरेट) निर्वाचकी का यह समूद मिलमें सभी अंगदायोंके कोन हो तथा निष्यं असामराविषयाके भाषात्पर हो मह देनेका अधि-कार थी।

संबद्ध राष्ट्रसंध-प् (पुनाइटेड नेघम्स भारमैभिष सर) अंतरराष्ट्रीय छगरों और समस्याओंबर विचार करसवाओ विषये पद्रसंख्यक वैक्षोंके आधिकारिक प्रतिक्रियिकोक्स

संयुक्त क्षेत्रस≔पुर (वॉरंट एकाउंट) एक्टी व्यक्ति व्यक्तिमोने माम एंगुक्त कासे प्रक्रमेशका क्रिसाय किसम् ।

संयुक्त सरकार-की (क्रीकीशम गर्नमेंट) संबद का विशेष भाषस्यकृताको रिभविमें नगानी गमी दो या व्यक्ति दर्भीके सरस्थांकी सरकार ।

सीयक स्क्रीयप्रसीवक-५ (बॉवेंट ध्रॉक बंपनी) वह प्रसी-बक विसर्पे प्रकाशिक व्यक्तियोंकी सहोदारी हो।

संयोजन करना~न कि (द करनान) सभा कारीका भागोत्रम करना, समाहान करना । (संदोत्रक-क्वपीतर ।) संरक्षणकर-पु (प्रौदेशिय वर्गी) अनुसित प्रतियो-

विवासे बेची वर्धायम्बरधायको रहा करभेके किए बाहरी भाकपर क्यांका जानेवाका कर । र्धरक्षित राज्य-प (मोटेक्टरेट) वह छोटी तथा कम

जोर रियासत जो सरकाको दक्षिते किसी वहे राज्यके वरीन वा मामित हो। सराधन-प (रिकांसिकिनेजन) क्टेवा असंत्र व्यक्तियो

को मसक करमा। शबदेशको दी पद्धीमें पुनः सक्छे र्धवेष स्थापित कराजा ।

संक्रेक-पु (श्रीव) कोई विविद्य करन था उसका प्राप्ता-भिक व्योरा देनेवाका कि क्षित पत्र दे विकेस ।

संगठतारी-को (रनुसक) है 'वर्षशेष । संबरणक्षेप-प (होकिन केंस) दिनका दिसान वंद

करते समय वश्री हुई रक्षम रोष्ट्रम बाग्धी। संबरणस्क्य-प (होर्निय स्टॉक्) दिनका (वा मिर्चा-

स्यगिष कर अपने स्थानपर खुपनाप नैठ शहना । सेरानी जिहा-सी (बिन) अंगेशी हंगकी सक्तीत सिरेपर कोंसी बानेबाकी काहे, तो वें बादिको बसी बह मा**ददार वस्त किस**से किस्ता जाता है।

क्रमा−प (क्रहाचेट) द्विशान काल-व्यवदा विवरणः गणना । - कर्म-प (श्रकावरेंसी) हिसाब-किताब रक्षते का कार्य मुनीमी I - छक्कचोजन-पु (मैनिकुकेशन भाक भद्राचरध) हिसान तैयार करमेमें पात्रवात्री सरना । -परीक्षक-प्र॰ (ऑहिटर) जाम-स्थाधी र्मोष-पहताक करनेशका । -परीक्षण-त शियामकी वॉक-पहताल । -पास्त-प्र+ (समान्टिक) हिसार (बेब्रा) रखने वा क्रियनेशका जो क्रेया श्यानेप्र चत्र ६६ मनीय ।

केकाध्यञ्चन्त (क्षकार्वीत) हे 'ले**का**पाक' ।

क्षेक्य-प (बाइमेंट) दे 'महेख'। कोक~प (पश्चिक) प्रजा सामान्य कोव, भगता। (प्रवेक्ट न्यूचैस) स्वंसाया--बंदक -पीदक-वि रणका चंद करनेवाका श्रुक्षानेवाका, बानि पहुँकाने-ा −कार्य-द (र-िक्रम अयोगरी) सर्वसावारवसे संदेश **रधने श**डे -घापमा -धौ (मेबिकेस्ट्री) वे 'श्रीतिबीयणा । ~तंत्री€रप~प (हिमॉफ्टिनियेशन,) विसी शाया शासनपदि भारिको कोन्द्रवका रूप देना पर्स क्रीक-वात्रिक सिद्धांवाके अनुकृष बनावा ।- विमाय-विमाग-प्र (पश्चिक वर्ष किपार्टमेंट) सार्वजनिक अवन सब्दे इत्यादि तेपार काचेबाका विभाग । -- मस्य-प (६)क दास) सामान्य बच्चार्स प्रचक्कित जला। -प्राहम-ग (पश्चिम प्रीरंगर) जनताका सामान वीनेके किय प्रमुख मारद इस ! - शिक्षण-संचाकक-प् (शबरेनाद श्रांक पश्चिम पञ्चकेत्रत) सार्वजनिक दिशा-विमाधक प्रधान सविद्वारी । –समा−सी (हाटस ऑक पोप्स) साम कुमबारी राज्योंने विभाग भारि बनामबाको जनप्रक्रि निविवेकि सभा मारदोड समराज्यको संसद्धा निम्न प्रथा -स्यक्-५ (र्चन्ड्य पुरेंद) जनतादे सेना संबंधी कार्योमें निवास सरकारी कर्मभारी ! -सथा-स्ती (पनिसंध सनिस) वनतान्त्र वितन्त्री दक्षिते दिना जातेन ना बार्वा राज्यकी वा धरकारी श्रीकरी निष्ठते अक्रमाठी सेवा या बद्ध-निवसम् सा ! -सवा-भाषीय-(ब्रीब्रक्त सरिस क्रमोसन) प्रदासन-कार्य प्रकानेक क्रिय तक्य सेचीके कोस-संबद्धीका परीक्षार हारा भनाव कार्येचे सहाबता देनेनाका आयीत । -स्वास्थ्य-(यु इक्ट १११) जनवाका स्वास्था । -शिक-पुरु (जिन्हरू तार) संभारमध्य (दव या सान र

बाकोपयोगी समा-भी (पन्निक मृटिहिटी सर्विस) बह्न सबा, कार्य मा स्वत्रामा नो अनुवाद निया निर्देश बपरोधी मा कामधी था (अने नगरको अक्सक-व्यवस्था दि बक्षो, समार्थ भारिका काम) ।

सोपपिस्ता-प (स्ट्रां इंड आविद्या) (हिलार) स्ट्रीट भारिने ्री) भूक बार एक भूकपूड

भावरण या प्रतिसंध-स्वर्थ। जिसका मार्थे रीतेशको बातें ब्छर्नेपर प्रवत्न न होन पाप (निश्चनार मार्चनिक क्स या क्सक सिब्देनिमें पह देखकी रिव्यक्ति किए स्टिए)। कौडवीवार्∽को (भावर्न कारेन) रा 'कोइस्र'। कीबमांब-प (शार्विवर) कोहे त्रविक रने पात तथ

। भग्य वस्तर्थे । कीडविडीन कोडवर-वि (शत फेरस) (असर्वे कोरेस मेंस म बो, शदको छोत्कर भग्द (बात) ।

र्वतस~प (पकॉर्नेर) है 'भागरन । वंदियांश-प्र । (कारा) वह अंग्र वा हिस्सा थी क्रिक्री बंदित या किसीके किए नियोरित किया गया हो। विश्वतीय ।

बंध्यीकाण-प (स्टेरिकाररेथम) निशेष प्रक्रिश हारा (श्वमिक्को) अनुस्पादक वा (धीक्क) बच्चा पना देवा। सफ रमध्यता वा परत्ये रहित कर देवा ।

बंशसंबार-वीति-को॰ (वेनोसास्ट) किसी वर्छ अनि वा श्रीवाय-विशेषके छामुद्दिक संदार वा विवाधनी वीर्यक चारिसंदार नीति ।

धक्योद्धा-ता (इन्हें काइन) वह रहा थे छर स शीची व बोबद देवी प्रमानशार हो ।

वस्थापन-इ॰ (मामिम्रा) नार) वह ऋवश्य विविध शरकार प्रजाने कुछ ऋष नकर जह प्रतिशा करते हैं वि अमुक व्यक्तित रचना अन किया बना और उसका गर इस हिसारचे ऋषरातामा दिया जानगा। है 'प्रतिप्रा पनमधी ।

वजवर्षभ-५० (रमधमेंट) किसीस मिक्रवे वा धरिपारै कोर्र काम करने साहिका भाषती निक्षत हा वपन देगा। यधकर्मचारा-स (१२४मेन) कॉस) देवेचा कम कार्न बाह्य कर्नवारी है वयदमंतिकारी ।

वचास्य-१ (सर्वाट बाउस) प्राथ्में हे बच करनहा श्वान । वस-९ (कोरंट) थेवक। -मासम-९ (दोन्हारसे

जले किसी अबसे नंतर या जनसेस रहित कर देना। -वास-इ (विरो स्वक मा बन्धे देश-भाग बर्ध-शका अधिकारी । नशक्षक नसंरक्षक-त (दनसरेंग्रर बाह्न पूर्व (स्त्रत) बनीहा गररण चर्चनाता, घट शानि का विभावास वयानेयाका । ~शेपण-पुरु (एक्ट रेस्ट्रिक्स) दिशी भूमिको कन या जैनकत करन परिषठ करनेका वाम । -विज्ञास-प्र (विषयी क्षप्रत) प्रातिष भारि-सर्थी विदान ।

वयस्क्र-महाधिकार-१० (ऐटस्ट एक्ट्रेन) (भानमन बादिके प्रतिनिधि धननका वह अपिकार ना राज्यक धनी यगरक चत्परिकोती, विना किन्नी भर-नास्थ मह श्रीमा कें।

यरणस्थाकस्य-प्र- (दो स आह नास) सूत्र ६१के -(ममक्षे स्वन्ध्रहा ।

वर्रायता - भी विद्रोस है अस्मान्यमा महनोही सीह-भागरण, सीहपड-१ (आगरन बरनर) पना वसपहरी-की (बालम बन्त) वह शता कि विवे

रित भवभिका) केन-देश समाप्त होनेके बाद गोजामां थवा हमा माळ। संघर्धी संबी-खो॰ (कॉनकरेंड किरड) वह सबी बी एक

साथ वर्ष स्थामंति प्रकाशित की जाय ।

संवादविकोपम-पु॰ (ध्वेद बाख्र) समावारपत्रीयै इद्ध विश्वेष प्रकारके समावारीका बाग-वृक्षकर छोड़ दिवा नानाः विकडक हो प्रकाशित म किया नामा ।

संविद्या -श्री (इंट्रेक्ट) कुछ निश्चित सर्वोदर दी बा दोसे अविक प्रश्नीके नीय डोनवाका समझौता ।

संविधाय-प (कांस्टिक्स्म) वह विभाग तथा गीक्सि सिकांतीका समूद जिसके अनुसार विश्वी देख वा राज्य या संस्वाका संबदम, संबाद्यम आदि होता है। –ससा– क्षी • (क्रांरिरप्रएंट बर्नेक्डी) किसी देशका संविवास तैवार करनेवाकी समा।

संविधि-श्रो (स्टेंद्यूर) विकाससमा हारा स्वीकृत वह किंबित विवास को स्थानों विधि(कामून)के कुमनें हो। संविभाजन-प (पशेर्धनमेंद्र) डोगोंकी देने, बॉटवे मारिको धरिसे किसी वस्तके सक्त शहण बंध वा उक्के करमा। श्रेष या दावित्व जाविका संविध्य स्वक्तिनीते विविध क्ससे विमानम करना ।

संबेदनवाद−प (सेनऐश्चन(क्रम) वह सिकॉस वा मत कि इमें समस्त पामकी प्राप्ति संविद्यनसे ही। होती है। संबेशक-पु (पेस्ट) वह म्बक्ति जो प्रतावें, दवादें वा कर्म माझ कामन दमती बोरे आदिमें क्वेटकर वा

संबद्धमें रक्षकर अन्वज मेजनेचे किय जस्तत करे। संवेधय-स्थय-प (पैकिंग वार्वेक) गाहर सेजसेके किय माक किसी किनों वो दें वैके माविमें कर करनेके कारण

होतेशका व्यव । संबेद्दिका-स्तो (पेस्ट्रेट) किसी गराका क्रोस पंकर, कक्तो रुपती आदिके किन्नों आदियें वंद किना

इमा मास्र । संबेधित-वि॰ (रम्झोरड) यो किसी क्या कायक, प्रवादिके धाव भीवर रस दिवा गया हो ।

र्धशोधी विधेयक-इ (रवेंदिंग निक) किसी अविनिकार जाविमें संघोषन था सवार करमेक किर कारिशत जिला वालेगका विवेककः।

संब्रहेपण-प (सिंपेशिस) संब्रान वा संबद्ध करमाः विमिश्व कारणी वा परिणामीयर विचार कर संबंध विस्तकानाः मिकाम करना ।

संसम्बन-प (ग्रीनिकारचे धन) त्रवहे किए (ग्रेनका) पर्वतः देवार वा घखाखाँचे समित किया जामा। संस्थित-वि (मीविकार्यक) शुक्को किए प्रस्तुत वा

वैकार की गया (छेवा) । संसद-धी (पार्किमेंट) किसी देख वा राज्यकी कनसा हारा जुने गरे प्रतिनिधिनोंकी नह सर्वोध (केंद्रीन) विवाससमा विसका काम सासन संबंधी कानीमें सहायका देशाः श्रामन्त्रम् स्वीकार करशा विशास बतानाः बन्धे र्धशीयन करवा अपनि हो (शायास्मतया इसमें हो सहस बीते हैं. वैसे निर्देशमें कार्यस्तमा नवा सरवारसमा और भारतमें क्षेत्रसभा तथा सम्बद्धिकः)।

संस्तवन-प्र• (६)मेंबिंग) प्रसंसा करनेटा करे है। व्यक्तिको बोध्व बढाकर क्रिसीके सामने बसका सकत करने वा वसको विद्वक्ति बादिमर और दैनेका कर्न । संस्ताब करमा∽न कि (कॉमेंट) बोम्ब एमाका

किसीके प्रथमें अनुकुक सम्मति केमा या उसको विक्रीक मास्पर और दिसा । र्सस्याञ्य~वि (बामेंबेदिक) प्रशंसनीय ।

सक्छ परिसंपत-को (प्रॉस असेटस) वह समस्य ग्री-संपत जिसमेंसे ऋणादिको रकम बाद स की गयी हो। सक्रिय संघा-को (देशिक सरविस) किसी सैनिक प्राप अबसेवाहिमें किया समा बाम का सेवा ।

सचिव-प (सेन्ड टरी) मंत्रीः विसी हंस्या वा संबद्धने र्चपाकमके किए करुरवामी व्यक्तिः विसीने निमी दर्गः पनव्यवदान्तः व्यवस्था आस्मि सहायका करवेशका व्यक्ति जाससम्बद्धको हिसी विभागमा सम्बाधिकारी ।

सचिवाक्य−प (सेक्टेटेरिक्ट) किसी राज्यकी सरकारके समिनी, मंदियों सवा विभिन्न विमानीचे प्रशास नवि कारियों नारिके कार्याक्योंका समुद्रः वह श्वारत वा रधाम वर्षा वे स्थित हों।

सचेतक-प्र॰ (क्रिप) है। 'वेतक'।

सम्बद्धाः न्यो (बेरॉलिस) ऐसे क्रितेंसे बुक होना विनते दोकर पानी एक ओरसे इसपे नोर का वल। सवातीय कर्म-प (कार्यनेट माम्बेस्ट) किसे क्रियान वह कर्य विस्तान वहीं जर्म हो भी क्रियाका हो (वेसे में 'दीइ वीइला हूँ)।

सर्चातरिक प्रदेश-इ (बांदेडदेरिट(१) वह प्रदेश निस्त्र शासन वा प्रचा दूसरेको सीव को सभी हो जो दूसरेको अपित कर दिवा स्था हो ।

सत्यापन−प (वेरिफिकेशन) जॉब-पक्ताकके बाद किसे नातकी शरकता रवादित करनाः मसामानि हेक्द किसी क्रवसकी सरवता विकास ।

सप्रम्बायासम्ब-पु (वेसम्बोर्स) वहाँ भारिको सहस्रवाः से दरना जादि व्यक्तियोगर विवार करमेगांकी अहाकत । समावसान-इ (गोरोमेदाव) विवानसमा बादिका पूर्वतः शंग का करतेकम किम निवा अनिधित काकते विक, मोव' समझ शभवक्की किए, स्वयंत कर दिवा बाना !

संदल-प (हाक्स) वह धनव वा स्वाम बड़ी किसी विधानसभा का संसद्धा अधिवेदान हो। प्रश्न स्थानमें होते-बाको समा वा ४६में कपरिवद स्वरूजीका समृद्द ।-स्याग-प्र (बाह्य बाह्य) दे 'समास्वामा' ।

सहीय सामबहत्या-ची (बस्नेदिक होतीसाहर) ऐसा यानवद्य को दीव वा नवराय यामा बाद।

सविविष्ट करवा∽तः किः (इ. रनसरं) स्टाले हर सन्द, सन्दर्शनुह आहे हैं । साममें सन्द सन्द, सन्दर्शनुह भावि रखना या नैठामा ।

सपरिश्रम फरापास-प (रिकरस वंशियनमें) वह कारावास विश्वमें वंदीसे कृतिम परिममके काम करावे यार्थे।

सप्रतिर्वय स्थीक्षति - सी॰ (दंशीधनक वा काक्षितास बनवेद्दंत) है 'निश्चेषित स्वीकृति'।

द्वय संकेशोके अनुसार राज और 🕶 स्त्रीक रिक यानीमें, जिनको संस्था बीनी औरसे (संबार्यक वर्ष) चाह भौरारेंद्रे यह) बरायर बाती है उपगुध्त अधूर देशकर धभ्य क्लान पहले वे लक्षा नहीं पदले मधिक ग्रम्य बनानको प्रभावस्य हो वहाँ श्वतिनवसे सर्वेशित यध्या प्रनार करना परवा है।

पर्जन्यस्य निर्माण (१९३२म) हे 'बर्जनर' ।

वर्षपर-पु॰ (रवेसहम्) किसी टिब्र वा बरारस भागवा है प्रशासके विवाहनेकाप(प्रियम)यह पहलेखे दिखाई वेले बास साथ रगोंकी पड़ी वर्षण्टरा (ये रंग वही होते हैं वी शंहपञ्चन व बाढे हैं) ।

पर्वायद्वप-पु (इसर प्रजुटिश) (अदनत) वर्ष वा रगढे बारण दिली व्यक्ति का व्यक्तिन्तमहस विदेश

करनेकी प्राचित्र

पर्काप-प्र (क्ष्टर स्टाईड) वह जो कुछ (योक नोपका भेदन पहचाब सके।

वर्णानुक्रमसे-अ० (पढकारशिक्षा) वर्षोक्षे अनुक्रवसः । पत्तन-प्र• (क्रमोराज) एनेंड वा दशासको किसी धीरेपर विकासभी एउ या रहम एसप्री । --अविकर्शा-प्र (क्मी द्रान ए के) क्मी दाव का बकाकी सकर किनी वहें व्यवसायी या व्यापप्रदेख स्टबाढ प्रतिनिधिः भनिकर्ण (रबेर) का काम करने राजा ।

वर्षिप्रहु-प्र (रवंश) किसी शेषक अंत्र आहिका वह भाग विसमें बची पही रहती है तथा जो पराधी भीका नियंत्रम करता है (बाउ क्रीय इसे 'क्शक्क वा 'बम्बक

भी करते हैं)।

बपवीध-त (रंबर तुब) प्रतिवर्ग प्रकाशित होनेशकी बह पुरतक जिसमें वर्षभरको जुहुन परमाओं सामानिक और राजनीतिक रूकपढ़ एवा विशेष जानकारीकी वार्तीका संबद्धन किया गया हो ।

पस्तप्रेपमादेश-५ (१नटेंश) माक भवनेके किए (१४०-

के बाहरमें) दिया गया (किश्रव शारेश ।

बह्न-पु (कॉनवेरसन्) ताप वा विवत्के दक स्थानसे इसरे स्थानको जानेको यह रीति विसमें पदार्थक कप बनावमें अंतर होनेके कारण यक स्वानसे इटकर उसरे स्थानपर पहेंचते हैं और दाप वा विश्वकी बेते हैं।

षाध्याध-५ (सरकमगीवर्धन) सोगी-सावी वासको देहे मंद्र बंबरी कहना धान्य-बाहरशब्दा प्रश्लोग कर असकी बाध

क्षिपा बाला।

वाचन-५ (रोडिय) विभागसभा वा कोक्समाम किसी विषेत्रक्षे रखे जानेवर वसका विचार, बहुछ आदिके किए महणी इसरी ना सीएरी नार पढ़ा जाना जिसक बात दी वह भेतिम क्यमे स्वीकार किया या सकता है। पाणिक्य−प्र• (क्रॉमर्स) ४३ पैमानपर किया बाजेबाका

म्बापार निसमें वैकीका कारवार कंपनिशोंके हिस्सीकी घरीय-विक्री, भीमा संबंधी क्यीम आहि भी सम्मिक्ति र्दा−बृत−पु(≰ीसक) दे सकसे।

बाजित्रयाख्य-पु (पॅनेरिवम) वाधिक्यका सुक्व स्थान, भाषार मही वृक्षाच ।

विशेष करात कियोंकी होता है।

वादकद्ध, वादकर्युद्र−५॰ (आर⊀रङ्गा) मारपश्चाकामे विधाप स्थामपर समन्त्र ग्रीकर बाजा बन्नातवाओंका तक या समुद्र ।

वास्प्रय-प्र• (व्हेंर) बाबी वारा क्रिमीक विश्वत स्थावा क्ष्यमें चपरित्रत किया गया क्रिकेत भारीत ।

थाक्षक्-प्र (श्रष्ट्) स्वायाक्रमके सामने रखा सवा बह विषय जो समय पहीं के वीय के शुवहंका मूळ कारण ही। बारमध-९ (कॉन ऑक ऐस्हम) होई स्वदहार वा मुक्तरमा स्थानाक्रममें जपरिवत किये जानेका कारणा बह अगरा जिसके कारण स्वादाक्यमें सामका राजाबा कार । वाविषयय-व (सेटर फॉर व्हिटकश्चन, सवनका मेटर) वह विषय जिसके सर्वपर्य विवाह वा अर्था की जाब वियारणीय विषय ।

वारक्यय~प (कॉस्टम) भाव या सकरमेका व्यव जो म्यावाधन द्वारा जीवनेवाने १६६) विकास यान ।

बाद-समाधि-सी (अन्दर्मेश ऑफ सूर) मामके बा शुक्रवमका ग्रादिन कर दिया जाना ।

यावहेत-प (६६) शगदका विषय को स्थायाक्रवय सामने क्यरिक्त हो और विसने संबंधमें स्थादाशीक्षकी निर्वय करना हो। दे नारमूक'।

वादासंगीत-पु॰ (वेस्टू-वेस्क स्वृतिक) वाद-वंद्री हारा शायक की गयी गयुर प्यति ।

वाचस्थान-९० (बारपेरड्डा) माठ्यप्राका वा बाध-जनमञ्जा वह स्थान वहाँ सामृहिद रूपसे बाजा बजानेवाले

वानस्पतिक साव~सी (दंशधः) गोबर, मण चैनी आदि(के मिश्रण)से निर्मित साद, कई माहिसे बनी साह। यामपंथी यामपश्ची~प्र* (केरिटस्र) राजनीति बादिमें

दम विचारीका अमुवाबी । धासहस्तिक−ति (केपर ईवर) दे 'पर्वेदरका'।

वामाक्य -वि (पंध क्यानवारक) है मुलमें। वासघर-९ (गैसनार) वेक्सको सरकता धीरोका बंशान्ता विधेष शाम जिल्लमें भोषजन मादि जानम्य ह्रव्य

भरकर विविध प्रवीग किने बाते हा ! वासूपय, बायूमार्ग-पु (पवरवंत्र) आकाश्चर्मे वास्

याबोके बाब-वानेका-विमान-गावाका-मार्थ । बायुभारमापक वंब-पु (वैरोमीटर्) बायुभारकमें श्रुवाका श्रुवाय या भार भारतेका बंद ।

बासभारकेकी-पु॰ (वैरोध फ) इवाका दवाव संक्रित करमेशका यंत्र ।

बारित साहित्य-५० (मीरफारध्य क्रिटरेपर) वह प्रका-दिव प्रतक, केस भारि विशे परने वा पासमें स्थानेकी

सरकार दारा मनावी कर की गंदी हो। षाश्चौवद्यम् मधी~पु॰ (मिमिस्टर् ऑफ झॅम्बसिस्डान्स) शासनाए विभागका मंत्री ।

पार्षिक विश्वविवास~पु॰ (एस्तुशक फार्सनेसक स्टेट मेंट) राज्यकी का किसी संस्वाकी वर्षमरकी विश्वीत रिनरिका निवरण ।

भारतोग्माव्~पु (विस्तोरिया) एक तरहका मुच्छा होन थी | भार्षिकी लखी (यन्तुवरीय्) वार्षिक क्यसे मिकनेवाकी

सर्वयमुक्ति-का॰ (पैरोल) दिशो वंशिका कारामुक्ते १स मंदिर्वयर हुए सम्बद्धे किए छोड़ दिया जाना दि कदि समाप्त होत थी वह पुनः कारामार्थ्य व्यक्तित क्षा जावमा कीर मुक्तिक्क्ष्में कोई क्षत्रीध्मेण वा व्यक्ति कार्य स करेगा सम्बद्धिरमुक्ति साधिमुक्ति । समाप्तकु-मु (कारी) दें 'मधीका । समाप्तकु-मु (कारी) दें 'मधीका ।

सभाक्या-च (कारी) है 'मधेश । समाध्यात सभानेता-चुक (कोवर कार दि वावर) संसर का रिकानसभाक स्टरपों द्वारा चुमा यवा वह नेता नो संसर्प कार्य स्थापका कार्य तिथोरित करता है (कार्य क्या वह प्रचान मंत्री वा सुक्य मंत्रीस किंक को संस्था है)।

विते स्व ध्वर्यके विच नत्त्व भी निकता है। संस्थान स्वाध्यान ।
समस्य सरकार नता (वेरेकक सबसेन्द्र) है 'मिर्ट सरकार । समस्यान निव (देरेगोरी) हे समस्यान निव (देरेगोरी) हे समस्यान निव (देरेगोरी) हे समस्यान निव क्षेत्र है। समस्यान नुक (तार पंतिक) वह कोच जो के संख्ये स्वाप्त हो। निव कुल नुकर्ण स्वाध्यान हो। समस्यान नुकर प्रकाश प्रकाश हो। सिकारी स्वाध्यान हो।

सम्बा वह पान का एक वा भरिक सरक वा वक्र रेपाओं-से पिरा हो। समझासीय-वि (होमो-सेविशस) समाव वाति वा प्रकारका यक्ष से प्रकारका।

प्रकारका एक शा प्रवारका। समझका-पु: (द्वेन स्ट्रप्स) वह तक जियमें बाद कोई भी शो सिंधु के किये जाने ही प्रकार जिकानेवाकी सरक देका सब बजाद करी तकमें रहती है। समक्रियाह विमान-पु: (देकीन्टरफ हावर्गीक) वह

त्रिकृत विश्वक किस हुनार के व्यक्त हो । सिमृतिषाह सिमुळ-५ (नारसंस्थित हुन्द्रिकेश क्रार्ट्सिक) वह विग्रुक विश्वक दो सुवार क्रान्त हो । समहिमाग करवा-छ क्रि (द्व वाश्तेवस्र) से क्रावर मारोव वाहिम।

समग्रिभागन-पु (इस्तेनग्रन) (किशे क्षेत्राहिक) तीम नरानर हिस्त्रोने नीम्मा । समङ्क्रिमानक-पु (नारतेन्टर) वे 'धर्मक'।

समम्बेपण−पु (श्वस्तुद्धोरेप्रक) किसी प्रवेश वा क्षेत्रक्ष मीतर भाष्टर वर्ष पर्द्वेष्ण्वर, चारी तरफको रिवति भारिका प्रताकमाना। समयिवासन–प (वर्गाणॉर्थ) है विपरिचान'।

समपरिभान-पु (बृशीकीर्य) वे विश्वरिकान'। समपद्वरिपा-पु (कालिकानेश्वन) वेक्के कार्य सरकार सारा क्षित्रोके पत्र पारितिका क्षेत्र किया जाना कस-रह कार्य कर केरा। समसद्वसुत्व-पु (स्पूकर पार्कीकोत) वह वहस्त्र को

धमाने मुक्तिक और समान कीलिक, बीली हो ।

बराबर हो। समसिव आकृति—जी॰ (क्षिमेट्स्क कियर) वह आहति विक्रमे बीवर्स टेबाके बक्र कर वर तर रावेद रखाके यह बीव्हा भाग होड होड़ दूसरी चोरके भागको वह छ। समसिवि—ची (विमन्न) स्टोरके वा दिसी बरत है

समभुव(या समापभुविक) बहुभुव-५ (विकेटरक

पॉकीशॉन) वह पद्रभुम विसही सन नुवार बापसमें

विशिष्ट अंग्रीने व्यन्ति अनुसारका होना, सुरीक्ष्यन ! समयक-पु॰ (पार्ट) है अधिकारण ! समयकाम-पु॰ (पंग्रेडार) क्रिसीसे मिक्से बाट करने आदिके क्रिप कोई समय पहन्ती निपारित सा निश्यित कर हेना !

कर देता। समयभिष्ठ-वि (पंत्मुनक) समयको प्रवंदी रणने बाला प्रवंद काम वसवपर करनेबान। समयपत्र-पु (क्षिनेर) दे 'प्रविम्निष्ठन। समयपत्रमाम, समयभिमागपप्र-पु (श्रम्भिक) दे

समस्त्राप्रस्ताथ-पु (भारदेदिकक मोधन) किसी अन्य प्राचारित के के विकास मुक्ता प्रस्ता । समर्पनामुस्प-पु (प्रिंस देवप) स्वाप पूरी छोनेके पढ़ हो पीमाणस समस्त्रिक कर बेचपर सीमा अरानेपाकको सक्के पश्चे दिया यानेपाल भवा।

समयरोध-पु॰ (पनावेड) मिन्नी रवान व्यविद्या सन्तुकी समावी वदावी कारि दारा रस तरह वेर किया बाना विस्तरे आदारामकी गार्ग शिक्युक व्यवस्य ही जातें, नक्षेत्ररों । समयर्थी-वि (कॉवकॉर) साथ साथ दोने रहने जा

वकतेवाका । सम्मिष्टराज-पु (रायनिय) द्यायात्र वा वक्षादिकी कभी दोनेश गम्मिरेचोंचे प्रतिदेन वा प्रविदासके किय निर्वारित स्थाय भावा विकरित करवेका कार्य या स्परधा, सुराकरेखी ।

समबेतव-पु (रेकी) वाक्यती, बजुवावियों आतिका यक श्वायतर बमा दोगा। विवर-विवर हुए सैनिकोका पुनः यक्त दोना स्थायनम । समबेत दोया-म कि (द्विमीत, द्वब्यतेष) दक्का दोना समकेत संदर्भीया समाक क्यमें यक्त दोना।

समस्तिमिक करिकंद १ (२०१८ कोच एवन करि पंत्र वात्र एक्टरो होत करिक्र और उपा करिक्र करि विद्यानों कीच करिक्क तीकी परवेताले एक्टरेक करो करिक्य माग वहीं मात्र समझीठीच वक्तातु वाहा बाहा है। समस्तामिक वि

हुए हो का विध्यान रहे हो। समाक्त्यन-पु (क्रिक्ट) किसोके खातमें पससे प्राप्त कोई रक्त्य वा चया बसाओं और क्रिकटना। क्षति मान [संन्] समाप्ति न्यूकर सम्य । औन समाप्ति अंदा पूर्यद्वार गमन । - क्रय - विन अविश्वसनीयाः दुवतापुर । - क्रप्णिय, - क्षद्व स्थान - व्यत्त स्थान । अविद वा भावरत्व दो कर्तम्य । - क्षद्व स्थान - व्यत्त स्थान । भावरत्व दो कर्तम्य | क्षत्र स्थान - मान्य - वि दनना हो । - सूस- पु प्रमाः क्षतानीः पुरानी (राजाओं, कावेदी भारिक) कहानियाँ। इतिहास- पुन्त [संन] अवतक विद्या पदनाओं वा उससे

प्रकारके वर्णनंताको पुरस्कः ।—कार-पु इतिहास-सेव्यकः। इतेका —वि इतना।

ছুবা, ছুবা•∽ৰি হবনা। ছুবানে, ছুবিক ক্ল-ডু [ল] নৈৰ ফালা; ভাইনটি; ভুবানে, হুবাকু হুবিবাৰী ক্লাইনি বাত। ছুবানাকু ছুবিকাছেন্–ল (ল•) ট্ৰীণবড় ক্ৰান্ত।

संबंध रक्षतेवाले व्यक्तियाँका काकज्ञमानुसार वर्णमा इस

इत्तकाक्रिया, इतिकाक्रिया, इतिकाकी - वि अवासक होतेबामा आकारसक । इत्तका इतिका-जो॰ [स] स्वना खबर जानकारी । इतिहाइ-पु॰ [स॰] एका सक संबोध ।

इत्तिहार्-पु॰ [स॰] यहा सकः स्वायः। इत्तिहास-पु॰ [स॰] तुहसतः, रकतामं दोवः। इत्यंतिघ−वि [सं] रस प्रकारकाः इन गुर्वोते विदिष्टः।

इत्यम् – म [सं] इस मञ्जर की। – मूल-वि इस मकार कटिया इ क्यास-पु [सं] स्वोतिकका यक वेगा।

हत्यादि, ह पादिक-४० (६०) रक्षा सकार और, ४०रहा हय-५ (म.) सुर्गन, सुर्गनसार, थंदनके तेक्यर कतार। हमा पुरस्तार, रवर; छार।-काल-५ रत्न रक्षनेका पात्र या स्ट्रेन्ड ।-क्रारोश-५ इन वेचनेनला, गंथी। —साह-५ इन बनानेदाल।

इत्बर-वि [सं] बाता करनेवाकाः निर्देशः नीमः देवः निर्भन । पु विज्ञाः

इ बरी-सी [र्ष] व्यक्तिकारियो कुळ्या अभिसारिका । इद्दलन, इदार्थीयन-सि [र्ष] रस समय वा स्वका वर्षमामा प्रसिद्धः ।

इदंता−त्वी (सं∗) सारम्य, व्यस्त्रहा।

इदम् - पर्व (स्व) प्रदान्त प्रमुख्यम् - अ व प्रमादी है। इदम् - पर्व (स्व) प्रदान व्यवस्थान अव प्रमादी है। इदम्- त्यां (अ) एक्स वा चित्रको प्रश्युको वास्त्र वह काल विश्वो सुरुक्तमान भी प्रमृतिवाह नहीं बर स्वयो । (कास्त्राको के लिए यह सुरुष्ठ है स्वीने है दिन विषया- के किए में महीने ?» दिन जीर वर्गनती के किय प्रस्त होनेक हैं।

वातक हो।
इस्त- [[ने) प्रावित्ता वसवता दुमा, साथा नारवर्तवतका पाठित (मारेस)। यु तास वृद्य व्यक्तिहामारवर्तः
इस्त- मा मोतावर्दः ।- क्यार- व्यक्तिहामार्वेतरः
साध-पाता समय-वातः स्वर्धः हो। यु — क्यार वस्ताव्याः
रवदः करतः व्यक्ति इस्ताव्याः सावत्यः वस्ता ।
- क्यारवी- नव्यंत्वेत्र स्वरी- सुनायो नामारी अमाभागित (तत्र सर्दः) - क्यारवी इतिया- नव्यंत्र स्वरात्र ।
वस्तात्र नव्यंत्र स्वरीक्ष्यः स्वरी- स्वरात्र ।
वस्ताः वस्तावर्ति। इस्तीये स्वयंत्र होना- स्वर्धाः वस्तावर्ति।
वस्ताः वस्तीवर्ति। इस्तीये स्वयंत्र होना- स्वर्धाः वस्तावर्ति।

हहीं हो जाना उठर-पुत्रट जाना।—की उपार करना,
स्मापा—हागड़ कमाना, पुग्ली खाना।—की दुनिया
उधर हो जाना—कार्यक्रित स्ट्रमें या विष्यूमें कीत मा स्त्र पुनिया
उधर हो जाना—कार्यक्रित स्ट्रमें या विष्यूमें कीत मा हार।
हमा—पु हिं वृष्ट्यत हमित्रा।—किहु—पुर्व्यामें।
हम-पुर्व कीता।—प्राप्त्रकन—पुर्व कृत्वामें।
हम-पुर्व कित्र सहन ।—कोत-पुर्वक्रित मि।—
सम-पुर्व करना ।—कोत-पुर्वक्रित मि।—
सम-पुर्व हस्त सहन ।—कोत-पुर्वक्रित मि।—
हमक्मास—पुर्व विश्व दनाम ।
हमक्मास—पुर्व विश्व विश्व समन्ते सार्य ।—टेक्स—पु

हणका-आ [जन] जागना जाग । "टक्स-पु कार-कर। हनक्रकाय-पु [ज] उध्य-क्न्या गारी वच्य-केरा हाति। —(के) हुक्सव-पु राज्यकांति राज्यज्ञदरवाका वच्य करक जाना । हिमक्रकाय ज्ञित्वात्-कांति जाती रहे | कांक्रियां ज्या |

्व । सार्वाक्त व्यक्त । सुकारा मार्वा करना; अस्योक्कि न मानना; वैदवरका अस्तित्व न मानना । इनकारि-वि (अ) अकारात्वक, अस्तिक्तियन्त्वक । इनकारि-वि (अ) अकारात्वक, अस्तिक्तियन्त्वक । इनकिसार्क-युक्त । अं कुकारा अस्य दोना; पना काना। इनकिसार्क-युक्त (अ) नत्वा, भित्रक, आदिवी । इनकार्यंट-यु (अ) नत्वा, भित्रक, अदिवी होना; वेषक संपर्वक स्व पूटना सुद्धाना। इनकिसारक-युक्त (अ) अस्त्रत्य, सुद्धा दोना; वेषक संपर्वक स्व पूटना सुद्धाना।

इनफ्छपूँहा-पु (कं) क्य संहामक दीताकर। इनसान-पु॰ (कं) महप्य नहसी। इपसानियत इनसानीयत-ची॰ (कं) महप्यता; मह प्योपित ग्रुपा नक्षमुख्य सीकस्य।

इनसामी-वि मानव मानुविकः। इनसिदाद-पु [ब॰] धर दाना म्बनाः -(दे) समै-पु॰ अपराविकी रोकः। इनदिदास-पु [ब] धर गिर जानाः।

हुंसहिस्सर—पुं िव] सम्बन्धित होनाः पेरना । इत्सान—स्मी िव] बाग ज्याम । —पु-सन्दानतः,—पु इत्स्मत्र—स्मी रासनस्त्र । इत्साम—पु तुरस्कार विश्वपाः माप्तो बसीनः।—हक्स्सम

न्यु वरहार-सम्मान मान गन । -हार-पु भारते सहार-

इनायत-की [थ] बजुमह, इसा; मदान । श्रु -करना -करमापा-(इरः पूर्वक) देना मदान करना । इनारा-९ कुण ।

इनाहन – पुंड्रायमका फर्यः इनैनियो – निः निने निमायः कुछः भोदे व्यक्तियः । भूमोदय – पुः [र्गः] स्वोदयः । इसर – पु॰ निरोजी सादि टालकर जमाना द्वामा पेनुषः।

इम्बद्धा-सी॰ [तं] धृगिपरा नहनके कमर रहनेशाने चॅब तारींका समृश रणका ! इन्हमोरेंस-पु॰ [अं] दे नामा !

इक्रतात-की॰ [अ] ब्युतातत अपुरता अतिग्रवता ।

इफ्रमाम-पु•[ब्र]गरीबी मुचनित्ती दरिह्नेता निर्वनता। इप्राप्ता-पु [४०] रोगमुख्यिः आराम बोनाः रोदीवी भवस्थामें रापार । इक्तार-पुभि•ीरीना गीलना । इप्रतार।-स्री रोजा मालमके काम मानेशासी बरतुर्ण । इयरत-गी॰ [अ] पंतावनीः दिखा। -अंगह-वि॰ िञ्चाप्रदः चैताबनी देनेशका । हबरामी-वि॰ बहुरी-धेरभी । यु बहुरी रहसायरी। रूपै० यहरियोंकी पुरानी मात्रा हीरेतकी मापा । इयरायनामा~पु का•ोस्यापरण। इबसीस-पु॰ [ब॰] रीवान, मनुष्यक्षी बदकानेवाला फरिन्दा । इवादन-स्पा [सं•] पृका उपल्ला। वंदना (–हहाजा —प्र बपासनाव्यंदिर । इमारक्ष∽स्य [अ॰] नावयक्षे ननावट रचनाः निसनेका देग । -आराई-छा+ रुप्टेगर आस्कारिक मचा **ब्यामा** । इवारती-दि दशरवर्षे कवित स्थित। ছুটিস্ব্য−নাঁ• [ম] মা(ম আহিঃ তার্থপ্র । ⇒০ ছুহুছ **−श्री अधवाश्म प्**वा<u>श</u>्लमः प्रदम्-पु• (थ] नरा पुत्र । ~प्रक्रारीय−नि क्रिसुड माम-थाम कुल मारिका एता न ही। - उज्यादन-वि (रवार्वतायमध्री लिय) समय, अवसरके मनुबूत स्ववहार **परनेशना अवसरवारी।** हमाहीम-प (म॰) पट्ने गति ६ वारि पुरुष बार बहरी। इमनाम भर्मी ६ अञ्चलार एक वर्गवर । हमाहीमी-५० रशहीय नोरोक्षा विद्या । हुम-पु॰ [मं] हाथी ! - इला-भी वहरियणी ! -युम-पु दानेसा मरतदा -व्हतार-पु सल्हिस्र। -गंधा-मी एक पीधा जिसका कर विकेश हाता है। ∸र्रहा∽मी॰ मर्माता । –हिमीविका–धी त्रिमच्या भाषा । =पीरा-नी अवस्था श्रेसी । -साम-५ नेगरत वादी। इममाचन-पु (म] निह । इभवा-सी [मं] स्तरंशीत प्रकात । श्वभाग्य-५ [मं] नागरेनर मामह रेचा । ह्मानव∽दु[⊬] सथ्य ह हमी-को [ब] इतिना । क्रमापणा-भी [मं] नवरिण्डी। क्षमप-(१० [मं] शारीन'हिना चनी १ ९० शाना। यहारण 27 1 इस्पा≔सीर्थ (म्ं] इथिनीः सम्मर्थे सुनरेटा देह ह इसराम-५० (४०) हंथारता इत्याचा इति नामणे । हमराष्ट्र-को [म॰] मान सहारता बन्द दहना । हमरादी-वि सन्द राने वा कदर्भ कन्नेताला । श्रमरती-त्ये रह प्रणिद्द व्यटने । द्रमाराद-पु 🕼] महीत, बारणह (पर्यक्ष) इमस्पिता, इमिनिया-की आल्या अर्थि कार्ने सगावा आनेवाचा गाँदव देला बह मावन (जी क्षे³में 1 र्रमापर हाना समाह है।

114 इसमी-को एक देशभीर बस्दा क्रम में सने बर्ग दिन पहलेगर कुछ मैका ही याना है और पन्ने अरह आदिके काम काना है। शुक --वॉटाना-भारती रह रहम की वर-वक्षे मामाध्ये करमी पतनी है। इममाक-पु॰ (न॰) रीमना स्त्रमा अवसी। इसाम-पु॰ (ल॰) मेता, अगुभा- पर्यंद कार्यय नेप्य करमेवामा (मुस्तक)। इसन दुमेनदी सर्गर। -हास-अ [दिंश] वह बहाता जिलमें लाजिरे द्रवसान बना है? इमामत न्सी॰ (भ॰) श्मामश परा मे १५ देएपई। हमामद्ग्ता−पु॰ एक तरहर: शर×। इमामा-पु बड़ी कारी। ष्टमाहरू−श्री [व•] यक्षना प्राथधान। इसि॰-४० इस प्रसार् । इस्तनाई, इस्तिमाई-१० [बर] शिराह, रेह स्थी बाला (दुवय दिनतारे ।) इस्तमायः इस्मिनाय-५० (भ) विश बनारे। क्रमहान-प्र रे॰ प्रस्तिहान । इन्तियाह-पुर [ल] भेग कनता रिसेश मेर रिवेड करमा। विश्वेषणा ६ श्चमिद्याम-पुर्व (वर्ष) परीशा, पुरार आप्रमारण। ष्ट्रेयम्-वि भिंश्री इसमा । वा वद्योगसा इबका-कोश इयाच-प्र (सं) दरिमित नितारामा का करियाण। गीमा क्षण करियाण। शेम्या । इरथ-९० (मंग्) मरस्थमः भंबर प्रति। हरम्बह-वि [मंग्] पीनेने आनंद शानभगवा । गाँस यक विधेषण ६ % दिश्लीः बन्नामः बद्दानि र हरवा हरिया॰ न्नी • दे थे। ! हरविन+-ति+ दे देवित । हरा-शी•[मं] भूमि। बार्ग सरक्ता। प्रतः प्रापः नागण बीरे देव (हुप मार्ग) र -प्रतिर-९ शंपमासर (- वर पु अन्दार्थने जनवरा मृष्रा-श्र-पु शामीता इराक्र-मु [ब]बहियो दी-दाना गई है। हैनी-न्येटी इराजी-वि रशस्त्रीयता । व शाक्रीवर्ग राम्य थोश । पुराहतन् === दरादा वर्दे संतरपुर्व भागवृत्र्यति प्रमाश-प (अ०) व्या प्रशासिकार । इसकर्ग-भी [बंध] बंशबरी एड मरी समें वर्ग में प्र जरी बरवरदे गढ बन्दाः मन्परी माहद शेषा ह हरावान्(वन्)-पु [मं] ममुरा प्रथा । ६ वरण अर्देटमें बढ दुव ३ दि । सब बहते रामप सुगा हर ह इतियानमा [] एक पेता दृश्यि-पुरु [दं] सारी वधीना देशा प्रवस्त र कृतिसन् पुत्र (श्रेर) विकारित । इरिक्ति इरिवितिका-भा+ (स) हिस्से के पान 9'04 1 Bill-3 [4-] [44] and HALFAEL E.D. 1 इतिह-तु इश्या-भे दे धर्मन तथा। द्रतिकाच-पु कि विश्व बाला विशेषण मार वशा देरी <u>श्री काम क्रिया है</u> विदेशिये-४० अभवण वर्ग करा

रिष्ठ व्यवस्थितः) स्टेसन्येम समाप्त होनेके बाद गोबामर्गे भवा हवा साळ । संवर्ती सूची-न्द्री० (कॉनकरेंट किस्ट) वह स्वर्णा जो एक

साथ करें रवामीसे प्रकाशित की जात ।

संयादविकोयस-पु॰ (पर्वेक आउट) समावारपनीर्थ कुछ विशेष प्रकारके समावारीका व्यानचुस्कर कोड दिना वाना, विकक्ष वो प्रकाशित च किया बाना। संविधा-को (ब्येक्स) कुछ निक्षित सर्वोधर को वा

सायकः का १०६१मः क्रम्भ शासव सवापर बीसे मिनक प्रदेशिक नीच दीनेनाका समझीता ।

सबिधान-पु (कंक्टिज्यूटम) वह विचान तथा भीकिक चित्रविधिक प्रमुष्ट सिक्के ब्युचार विधी हैक वा राज्य वा पंत्रवा पंत्रदन सेवान नादि वेता है। -समा-बी (कंक्टिज्यूटर कहेंपक) किसी वेकक पंग्वाम देवार करमेनको पता।

संविजि—सा॰ (स्ट्रेन्ट्) विषामध्यम द्वारा स्वीकृत वह क्रियत विषाम वो श्वामी विविक्तमुग्ते करवे हो। संविज्ञासम-पु॰ (परोम्नमंद) कामोको देवे, योगे जादिको प्रित्ते विक्ती नस्तुक कामान्यकण क्षत्र वा द्ववते करमा। शेष वा दावित्व वाविका संविक्त व्यक्तिमाँम प्रविद्य करते विमानम करना।

संबेदनवाब - पु. (से बहे अनिकास का किया वि मा मात कि इसे एमस्त पानकी प्राप्ति प्रवेदन से बीजो है। संबेद इन्- पु. (पेन्स) वह व्यक्ति की पुस्तर , दबार वा काम मात्र कामन बनती में। सामित के केन्य पा पुन्तकी सकद करना मोत्रकी किय प्राप्तित करें।

संवेद्रक सम्बद्ध (पेडिन पानेष) बाहर मनके किय मारू किसी किन्दे, पोर्ट, वेडे बादिमें येद करके कारण क्रीनेताम स्पर्व !

संबोधिका न्यों। (ऐसेंट) किसी वस्तुका क्षेत्रा शंवक कक्ती दमर्थी व्यक्तिक डिच्ची व्यक्तिम वंग किया हुआ सामा

हुणा साल । स्विद्यित-वि (एनझोरक) जो निश्ती अन्त कामक, ध्वारिके साथ मीतर रक्ष दिशा येना हो ।

संशोधी विदेशक-पु (वर्षेक्षिप विक्र) किशी व्यविवय बादिसे श्चीचन वा सुपार करनेके किय क्यांस्क्रिय किया बादेसका विभेवत ।

मुस्तिका न्यूर्ण (विदेशित) छंण्या वा संपद्ध करणाः विशेष संदेशिया न्यूर्ण (विदेशित) छंण्या वा संपद्ध करणाः विशेष विदेशिया विदेशिया चित्रामा विदेशिया विदेशि

प्रसम्बद्धाः विश्वास्त्रं द्वारः विश्वास्त्रं द्वारः विश्वासः । पूर्वतः देवार् वा सकार्योते सम्बद्धाः विश्वा नामा ।

सुंस्तित-वि (मोनिकाइक्क) शुक्क किए प्रस्तुत का

हेबार की यबी (सेना) ।

प्रभाव प्रश्निति किसी हैस्स या राज्यकी जनाया हारा जुपे यहे प्रतिनिधितिक तस स्वीच (क्रिकेट) विसाधित किसी हैस्स स्वीच स्वाचन किसी क्रिकेट किसा किसी स्वाचन क्रिकेट कराया होता किसी स्वाचन क्रिकेट कराया विसाधित क्रिकेट कराया होती से स्वाचन क्रिकेट कराया नामि से सिंग क्रिकेट क्रिकेट कराया क्रिकेट किसी क्रिकेट कराया क्रिकेट क्रिकेट कराया होती से स्वाचन क्रिकेट क

संस्थापन-पु॰ (कॉर्सेशिंग) मध्या करवेका कर्न, मैधे व्यक्तिको बोग्य बदायर किटीके सामने वसका सर्वात करने वा उसकी नियुक्ति बाहिनर नोर देनेका कर्म।

संस्थाय करणा—श कि (कॉर्सेट) बोम्ब सम्बद्धाः किसीके प्रथमें बसुबूक सम्मति देना वा सम्बद्धे स्त्रितिः बादियर बीर होता ।

संस्ताच्य-वि (कामॅबेनिक) प्रश्नेत्रनीय।

सम्बन्ध परिसंपद्—को॰ (मॉस असेटर) वह समस्य की संपद जिसमेंसे कारिको रकन गर न को मनी हो। समिन्न सेवा—की (पेरिटर सर्वास) किमी सेविक अध

हुक्क्षेत्राविमें किया गया कामया सेवा। स्विम न्यु (केक्ट्रेस्ट) मंत्री किसी संस्था या संस्थले संवाहनके किया कार्यायों म्यांका किसीने नियों कर्म-पत्रमणकार, क्ष्यरक्षा मार्टिमें सहायता क्रेनेपाम गांधा प्रात्मसण्यकार्क किसी विभागका प्रथलीकारों!

स्विवास्त्र — पु (होते देशिया) निस्त्री एउनाई स्टबारें स्विनों देशियों स्वा निस्त्रित निवागोंके प्रयान करिः कारियों कारिके कार्यानगोंका समूद, वह स्पास वा स्वान वहाँ में स्थित हों।

खचेतक~तु (हिए) है 'चेतक'। सक्तित्रका~को (चेटॉडिटो) हैत सिर्वोते शुक्र होना

जिलते होकर शाबी एक बोरहे शुक्री कोर त्या जान कर स्थान कर स्था कर स्थान स्थान कर स्थान कर स्थान कर स्थान कर स्थान कर स्थान कर स्थान स्थान कर स्थान

सरवापन-पु (देरिफिकेन) कॉच-परताक है बात दिसें सतको सरवार स्थापित करना। ममानादि देवर विके सथमधी सरवार दिखाना।

सज्ञन्यावाकम-पुर (विधनकोर) बही आदियो छहानगा वे हरना नावि अधियोगोरर निगार करमेनाको सद्याक्य । सक्ताव्याम-पु (वीरोगेछन) निगानकामा आदिका पूर्वता संग्राम प्रार्थनन किना निगानिक स्वक्रके किए, प्रारा सम्बद्ध साम्बद्धके किए, एसीना करिना नागा।

सहस्र — (१८०४) वह सबस या स्थान वहाँ दिसी विवाससभा वा संसद्धा समितिक हो। उत्तर स्थानमें होने-बाबी सभा वा परमें स्थितिक स्टर्समें स्थान स्

्य- रशक मध्यम् च । स्थापनाः । सत्तेष सानवहस्या∽ची॰ (स्टरेनिक होमोसारक) रेहा साजववक यो तीव वा अवस्य माना बाद ।

मानववच जो दीव था जवराय माना बाद । सक्तिविश्व करवार न्थ॰ कि (३ स्मस्ट) धटावे धूर सन्त ज्ञव्यसमृह कारिके स्थानमें करव प्रथस प्रयस्मुह

चादि स्थाना वां नैकाना । श्चपरिकास कारासास-चं (रिगरस देनिजनमें) वह कारानास किसमें भदीते कठिन परिनयके काम कसने जारों।

समितियंत्र स्थीकृति - की (अंग्रीश्रनक वा शाक्रिकारक यस्त्रीयों से 'विसेनित सोकृति । Aqueous water Arbitral tribunal du sarunfeate Arbitration de-fasia Arbitrator 44

Arc with Archaeologist veneves Archaeology परावस्त्रविधान

Archipelago studa

Architect uterate, auragin Architecture भवब-निर्माण-विद्यान, वास्त्वका

Archive unite

Archivist utiles us Asles क्षेत्र राहित

Aristoctacy अभिजात-तंत्र, क्यीनतंत्र

Armaments मुद्रोपकरणा सम्बद्धेना

Armistics around tife

Armoured Car स्वचित यान वक्तरवंड गाडी Armoury signature

Army Head-quarters finnen unter muleu.

बन्ना सैजिक दक्तर Arrangement of files नरिवत पविश्रोद्धा विन्तास

Arrest अवदेश (कामकोश वा कार्याकीशे

Arrenal manuar Amenic dilem Acteur प्रसनी

Article anymen sa

Articles of association संस्था निवम

Anima fired Aspriate बहाबान

Assault unre

Assemble समवेत होना यक्त्र होना। सम्बेद करवा

Assembly विधान सभा समा Assent म्हास्ति, बनमणि

Assessed क्या हमा। अस्य हमा

Assessment sufficien Assets मादेव परिसम्बद् (संप्रीत), माक्रमचा

Assets and liabilities देवा-पानमा, देवारेय

Assign स्थरपार्चम करवा, विश्वत करना चाँरमा, विश्मे werner 1

Assigned specific Assigned अम्बर्विधी

Assignment अधिक्रतिका Assignor अञ्चर्षक अञ्चर्या A ssimulation रवांगीकरण समीकरण

Association by their threat Association Memorandum of मित्रानपत्र

Asterisk mes, ales fee Astronomy क्वोडिक (गामित)

Atheism विधेशस्त्रादः नारिक्या

Atlas मानवित्र-संग्रहः वावनित्रावरो

Atomic analus

Atomism परमाञ्चल Attache HEWR

Attached wifes, (wieifes) Attachment महीच मार्चका, उन्हें

Attested mateur Attestation surfaces

Attorney militard Attorney General appearant, appringed

Auction बोचविक्रम श्रीकाम

Auctioneer जीवास बरनेशावा, बीच-विदेश L Audible sum

Audience बोलकोः वर्चन, साम्रास्तर Andio-visual method grappy guel

Andit kanerase

And ited account abiliar Arm

Anditor General against prime, silves

Anditorium esis euro Austerity scheme सम्पर्धाप या सन्तेपानेन नोतना

न्यनाहार-बोबबा, ब्रह्म-संदर्भा Authentication agretisary

Anthorisation miles Authorised miles

Authorised Agent प्रापिक्त अधिका

Authoritative sufrest, enfeative, sunder Anthority suffects suffects

Autobrography with with

Automobb erart Automatic search

Autonomous स्वान्त्रप्रसारी Automomy स्वास्त्र साधव

Avelanche (EUSEHWEH Award पंचाबर्पंच, पंचाट परिनिर्मंच

Aziom ereinia Axis ust sar

Azis country Stiffer & Otte

Aves of same to cove

Rachelos of law (Afternie Back beaches अधिकारी (अध्ययको अध्यक्त) सरस्य Back door shressies, steet Background quylt, qualita

Bacterla altere Bacteriologist बीनामुबिद

Bacteriology बीबान विकास Bad conductor कुनावक, गुरा परिपादक Badge क्षिका, परिपादक निर्द

Bail nau ned (fich) Ballable प्रतिभूयोच्या, प्रतिभाग्य

Balanco जेक संगुक्त

सर्वधमिक-को॰ (पैरोह) किसी वंदीका कारागृहते इस प्रतिनेश्वर कुछ समयके किय छोड़ दिया माना कि अवधि समाप्त होते ही यह प्रमा कारागार्थे जपरिश्वत हो जावणा और मधिनाक्षमें कोई अनोधनीय या पनित कार्य व करेया. समितिक्पमस्टि, साथिमस्टि ।

सभाकश्च-५० (कारी) १० 'मस्रेष्ठ'।

सभावणी, सभानेता~पु॰ (नीबर भाग वि बाउस) शेशद हा विधानसमाद ध्यस्यो हारा पुना गया वह नेता को संसद्धा सनाका कार्यक्रम आहि निर्धारित करता है (क्यो क्यो यह प्रधान मंत्री वा मुख्य मंत्रीसे भिष्य थी। होता हैं) ।

सभानवात-५ (बॉब भागः) अध्यक्षके किसी व्यवस्था बा सजाबी किमी काररवार्ड आदिये दिरीपमें यक बा भवित सहस्रोद्धा सभा छोडकर बाहर यहे भागा ।

समासचिव-५ (चाकिमेटरी शेकेटरी) विधानसभा या कोकसञ्चादा वह सरस्य को दिसी मधीदे साथ रहकर उसके महात दिवाबीय कामीमें सशावता करता और बिसे इस बार्वके किए नहन भी मिक्सा है। एंसरएन्वि । समकक्ष सरकार-सी (वैरेकक मवर्गमें) देश मिति

सरकार । सस्रकातील-वि (कीरेगोरैरी) वे 'समसामधिक'।

समझोद्य-द् (सहर एंशिक) वह कोल जो ९ अंशके बराबर हो। -चिमुळ-इ (शहर वंशिस्ट ट्राइवरिक) बह विश्वज जिसका यक कोम समकीन हो।

समध्य−९ समस्रधाइति~श्री (भ्रेन फ्रिमर) सम-क्कबा बढ़ भाव जो एक वा अधिक सरक था बक रेगाओं-से पिरा की ।

समझातीय-वि॰ (होमीऔविभर) समान वाति वा प्रकारका, एक ही प्रकारका है

समराख-प (द्वेन संश्केष) वह सक विश्वमें पदि कोई भी दो दिव के किने चार्य हो। इनको मिकाननाकी सरक

रेखा सर बगड वसी तकमें रहती है। समिवाह विभुज-९ (विकेशक दावर्गकि) वह

विश्वय विश्वकी दीनों अवार्य वरावर हो। समद्भिषाह ब्रिमुज-५ (भारसॅक्षिकीय द्वारपेंगिक) वह त्रिमुख किएको को मुखाएँ वराक्ट हो।

समद्विभाग क्रमा- छ जि॰ (ड नास्त्रेन्य) दो नरावर भाषोंमै बॉडना ।

समजिमाज्ञन-५ (४।४१९मधन) (विसी बोजाविकी)

द्योन बराबर बिरसोंने बॉरमा ! समद्विभाजक-५ (शहरेक्टर) दे ¹नवर्षः ।

समन्त्रेपन-पु (रनस्क्रीरेशन) किसी गरेश या क्षेत्रके

मीवर बाकर वहीं पहुँचकर, जारी शरकको रिवरि भाविका करा कगाना ।

समपरिधान-पु (भूनीकॉर्ग) है 'विपरिधान'। समपद्भण-५ (कमफिलकेशन) बंदके कपमें शरकार

दारा किसीके वन वा संपत्तिका धीन किया बाधाः सध-पर कण्या कर केशा । समबद्दमुख-५ (रेगुक्र पांकीवान) वह वहुमूब बो

धमान भूमिक और समान क्षेत्रिक, बीजों हो।

समभूज(या समानभुजिक)पद्मभूज-५ पंकीयांन) यह यहभूत्र जिल्ह्या सर नुत्राई भाषस्मे बरावर ची ।

सम्मित्त आकृति—सी (सिमेट्रिक्ट फिगर) वह भाष्ट्रित जिसको नीपकी रेखाके वक तह करनेपर रेखाके एक औरका चाम डीक डीक इस्टी ओएक भागका बन से ! समग्रिति − की (शिगर्दा) द्वारीरके वा किसी पर्दाके

विभिन्न अंबीमें कवित अनुवातका होना, सुडीअपन । समयक-पु (पार्टर) दे॰ मधिनारपत्र'।

समयबान-पु (बनवमेर) किसीके विक्रमे, बात करमे आदियों किय कोई समय पहनसे निर्भारित या निविचत कर देशा ।

समयमिष्र−ि (पंक्नुक्क) समयको पार्वदी रहावे शका, मध्येक काम समयवर करनेवाका ।

समयपत्र-प (कोनेमेर) दे॰ 'प्रतिमृतिपत्र'।

समयविभागः समयविभागवध-९ (राहमरेश्वि) हे 'समबख्यी'।

समयसारियी, समयस्थी-सी (राहमटेनिक) हेली क पर्देशने तथा छटने वा विशेष विषयोको पडाई, परीक्षा आदि शुरू होनेके किय निर्धारित समयक्षे सूची समय विभागपत्र ।

समकाप्रस्ताब-५ (भारवेंदिस्ट योशन) किया अम्ब

प्रस्तावसे **रिकड्क भिक्रता**-जकता प्रस्तान । समर्पणमूक्य-द (स्टॅबर नैस्यू) बद्धि पूरी होनेज वहके ही वीमायम समर्वित कर देनेपर बीमा करानेबाककी

बसके परके दिया बानेशका बद । समयरोध-त (व्हावेड) किहा स्वान वादिका प्रतक्षी धेनाओं नहानों मादि हारा इस तरह पेर किया बाबा विष्ठते आदागमनके मार्ग विकक्षण अवस्त्र हो जाने भावेतंश ।

समयर्शी-नि (कॉनकरेंट) छान-छान होने रहने ना वसमेराका ।

समिकरण-५ (राष्ट्रविय) सामास या बलादिको क्रमा क्षेत्रेपर नायरिकोको प्रतिदिन वा प्रतिसासके किए विर्पारित समाम माना वितरित करनेका कार्य वा न्यवस्था. सराकश्ची ।

समचेत्रप∽प (रेको) पाकचरी अनवादियो साहित्रा यम स्थापपर भगा शोगाः तिष्ठर-विष्ठ ह्रय सैमिसीका

पुना पुरुष शोशा समायम् । समवेत होना-अ कि॰ (इ.मीट, इ.सर्टेंक्स) शहरा होगा, समझ्डे सरस्वीदा सवाके स्वमें रहत्र होता ।

समगीतोच्य करिवंध-तु (हॅपरेट बोन) उच्य करि नंब तथा उत्तरी शीत करिनंब और सच्य करिनंब तथा बिक्षि शीत सर्टिनेक्के नीक्ष्में वहचेवाले पृथ्वीके वे हो कृष्टिया भाग बहाँ माग समझीठीच्य बक्रमासु पावा जाता है।

समसामविक-वि (कनरेंधेरैंट) को एक धी समक्तें इर वॉ का विक्रमान रहे हो।

समाकसम-प (केंबिर) किसीके पारेम क्ससे प्राप्त कीरै रक्षम वा चन जमान्द्री और क्रियाका ।

1002 Balanced diet संतक्षित भीवन Relance of payment मगदान-ग्रंथा Balance of power शक्तिभौतकन Ralance of trade ब्याबाराभिक्य Balance sheet विद्या, देवारेय फार्क Ball bearing 118 51918 Ballad गापार गीव Ballot box unvillet Ballot paper यदपत्र, शकादा, गृहपत्र Banish Greiften warn Bank wively. 44 Banker अधिकोधिक, क्षेत्रीवास Bankrupt हिवाकिया, बहनिपि Bancrupter दिवादियापय, महनिशिश Banner heading प्रमान-शार्थक, पह शोर्थक Bar ब्यावट, अर्थुन्त अधिवस्ताना पामाक्या - etters इंडा-डेडी Barbed wire औरेदार वार Barograph बागुमारकेसी बंग, बागुराव देखी Barometer बातुभारमार्क येथ Barrack thereast Barrier सीमा-शस्म प्रतिक्षेत्र ककावर Barter बस्तविनिमय Bases War ennits #3 Basic Education आपारभूत विद्या Bataman बहेबाब Battallion ब्यास्टिकन प्रकटन Batting ardard Battlethin और बहाब, महारमशेत Bearer देशा बाह्य - Cheque बाह्य भनादेख Beat गरतः इसका, धेत्र Bed pan stadi Bedsore श्रद्धा त्रण Beleaguer क्षेत्रावरीप करना Belligerency मुद्रस्थिति मुद्रकिति, मुद्रकानता Belligerent unte, Halen, gante, gant Below par util eingener Beach स्वाकाशी सुवर्त, (स्वायपीड) पीड Beneficiary कामाधी विकासिकारी Benefit fem Bequeath अदिनेषक्त हारा देना वसीवत करना Betrothal green write Betting एव अज्ञासा, एकन, पनकिया Bibliography (विक्रिक) शंबस्यी Bicameral दिसदनात्मक द्व्यागारिक Bicycle (इपादवान पैरवारी) Bicanial Astifes Bigamy दिवरनीत्व, दिगामित्व Bilateral contract द्विपक्षीन संनिदा

Bill federa

Bill विषय, प्राप्यक Billiard Day Day - room Hyur Bimetallic (Swisher Blactallian Rynger, Rynger Rinocular (telescope) (1734) Biology and Grant Birth certificate war-cures Rirth control stafe fewer Birthrate अनमवित Bleect लगरियाय हरना Bisector अर्डेड, समहिमायड Black leg gyangalys Black list जीवल्यको, वर्ष धन्यको, संदिग्यकन-सबी Black market site state Blackout विश्वमाङ अंशङ्ख्या संवाद-विकोपन Bladder मनाश्व Blank Cheque fare wante Bleaching विरंबन Blinds deft. freitelt Blister cas मणकारक गीस Blocksding बाकारंशी धमक्रीप Blocked capital समन्दर (श्री Bloodbank ves eine 76 Blood pressure result Blood transfusion (Tile) Blotting peper entitles theyer Blueprint मक्कोबना Blunder with mit Board Here, 120 Board, Arbitration du nas : Board, District विकासिका, विका नीक, मोडिक्स समिति, मंदक गरिवर Board, Municipal समस्परिका Board of Directors Squar-Hew Board of revenue CTETH-WEE Rearding house saware Boblin forst Body Cause, 44 Body corporate निवस निवस Body governing शारी निकास Boiler बाध्यिक Boiling point maris Bomb steaks, an Bomb incendiary शास्त्र वस, वाह्य प्रस्केट Bombast Heartest Bomber क्सवगर, वसवर्गक, वसमार Bonstide क्षिमस्य शासाविकः सन्धानपूर्वः (शा सन्धान-पर्वक) Bonafides विश्वस्तवा, प्रामाधिकता सञ्जान

Bona vacantia स्वाधिशीतल

समागमय-पु॰ (रेडी) दे॰ सम्बेदल । समागम-नेप-प (जन विकेश) समाग्रातीक

समाचार-ग्रेप-पु (न्यूच विश्वेष) समाधारोडा संज्ञा भागा; वद सामग्री वा समाधारक क्यमें संज्ञी बाव, समाचार-सामग्री।

समाचार-स्वता-स्रो (वेश मीर) समाचारवर्गीके

िषय सा स्थापारके सपने प्रकाशित प्रस्ता । समाजवाद-पु- (सीशिक्या) वह सिसांत कि व्यक्तिगत स्वनेत्रात्वे अध्या समावके सामृष्टिक दिवको व्यक्ति महरू दिया जाना जादिये (बराज्ञोका स्वप्तव सह-वेशियातक वापारपर किया जात, सस्ते व्यक्तिगत प्रति-देशिया सी भूगि और देशिया साम्यक्र तिभाव

हीं आदि बातें रहीके जंतर्गत हों।

समाजवादी-3 (शिटकिको समाजवादकः व्यावादों।

समाजवादी-3 (शिटकिको समाजवादकः व्यावादों।

समाजविकरण-3 (शिटकादकेदन) कितो वचीच व्याव समाजविकरण-3 (शिटकादकेदन) कितो वचीच व्याव साजविकरण-3 (शिटकादकेदन) कितो वचीच व्याव साजविको पैता कम देना विश्वसे उत्पर्ध साजविका अभिकार हो बाम और सम्बा जान सब जीग समाज कसी बात वर्षों।

समाधिकेबा-पु (यपिय) विक्री कम या समाधिके परभरवर पात्रदादको रूपमें किया जानेवाला केखा। समाधिय-वि (कंपान्वेदिक) विश्व आएसमें निषदा कर्मे-समाधान करमेका अधिकार दोनों प्रकृषि हों।

(पपराप निवाद)।
समामकीणिक बहुमुज-पु (विश्वपेष्ट्कर पोक्रीयोत)
यह बहुज निरुद्धे एउ को न नापसमें रहावर हो।
समानांतर चातुमुंब-पुरु (देरेक्कोमाम) वह चारुचेव विस्ति समानेतर सामानेतर सामानेतर हो।

नियक मानिय जीत्रकार अवीर प्रमाणित हो। से रेकारें को यक हो धमतकनें भी और जी यक हुस्ताने व किये। समापन-पु (बारविय अक्क क्ष्मीका) कुछ और कहते वा तर्क नादि देवेके तथा कियो प्रशासन विचार का निया समाप्त करना। — प्रस्तान-पु (बीक्श जीव क्षोपर) दे विवादीयस्थानं।

समापनीय पहा-इ (स्रमिनिक कीव) कुछ समनके

माद समाप्त ही बानवाका बहुत है

समायोज्ञव-पुर (सप्तार) बावश्वक वस्तुवाँका बीताह करमा को कुछ बावश्वक को उसे खुटाना बीर मेटी स्ववस्था करमा कि बिटी बाहिये वसे वह मिक बाव्य उसके वास पहुँच बामा!

समाहैता-की (पेरिटी) मृश्य, बीव्यता अपियी समान क्षेत्रा।

समासचिद्व-2 : समासरेखा-वा (शरकन) दो वा दोसे अधिक घन्याँकी मिकाकर संशुक्त अन्य कमाधेकै क्रिर करके नीवमें दो जानेवाकी कपुरेखा, संवीतक विकृत समीकरण-3 (र्श्वतेसन) देश मुक्तें।

समुद्रवटवर्ती प्रदेश-9 (मेरियरम मास्ति) किया हेएका वह मुसला थी समुद्रहे किवार हो । समुद्री तार-9 (क्षिक) समुद्रमें धनीके भीतरसे जाने

वाका तार । समझ्बात—९ (क्वनिव्यक्तिम) वयोग-व्यवसायमें सामू-। विक पूँजीके मनोभक्ता प्रतिपादन करनेशामा विद्यास सूचि तना करपादनके सामजीवर समृदिक मनुष्यक्री भर-व्यवस्था पर और वेनेशामा विकास ।

सम्बोरणक्म-पुर (मान गॉडक्सर) देश पुंशेरस्तर्य। सम्बोरणक्म-पुर (मान गॉडक्सर) एरस्ट सम्बन्ध करनेका कर्याः

करनेका कार्य।

क्रियान वावश्रीका, शिक्षां क्रियान प्रश्लीका व्यक्तिका व्यक्

सम्मुखकोध-पु॰ (वृष्टिक्डो मरोच्डिट रैपिस्स) वो सब रेखामोर्क विक्रो एक विदुष्ट एक दूस्तीकी कारनेते की इप बातने सामनेते केन । सम्मोदय-पु (वैक्ष्मण) किसी विवस, व्यविनय बादिक क्याविकारियों द्वारा पुरि, बादिकारिक स्पेक्षण।

व्यक्तिये ज्यापिकारियों दारा पुढ़ि, व्यक्तियारित क्याप्तं व सम्माहनविद्याः वां (विद्यमादिकां) द्वपित क्याप्तं सम् क्याप्तं की गयी मध्यत्र विद्या वेद्या वर्ष्ट्र सिर्वा मिर्के यश द्वाय व्यक्ति केवल सम्मोहन करनेशाओं क्या स्टेडोंगर दो बोर्ड बार्ड करता है। सर्वाम-विश् (विराद) निक्षत्रं स्व व्यवह रहत केनेश्रे

कर विषयान ही तिनसे होकर पानी (वा अन्य स्टब्स् पदान) धोरे-धोर दिससा रहता हो। सरक् रेका-की (स्ट्रेट कहन) वह रेखा किसमें रिप्र

सर्वेत्र यक्त हो रहतो है ! सरकोकरण-पु (सिद्धिपिटेक्षन) किसी दिएवं मध्यति: को सरक करनेका कार्ने वा भाग !

सर्वक्रमा∽की (रेमनेट्ये) किसी विशेष अवस्पर थी विशेष कारणसे किसी केसिक बहुतसे वरिवाँको समा प्रदान कर कारस्युवसे सुन्क कर देशा।

सर्वेक्षरस्विति—को॰ (स्कॉच् व वर्ष पॉकिस) मुक्कपूर्वि में पीक्षे बर्धनसम्ब देवा द्वारा दमारतो, बेती, मुक्ती देवों स्वादिका श्रेष्ठ्र दिनास मिस्टे स्व वस्त्र मधीन प कर सन्दे वा कस्त्रे काम व तम सक्ते सर्वेदमाराविति।

सर्वतीषुम्रा-नि॰ (मॉक राजंबर) या वहें शर्वी कामी बादियें वक् हीं। (वह खेकारी) वो वस्क्रेमाओं जोसंदायां क्षेत्रसम्ब काठि सर्वमें दस हो।

सर्वे सामान्य-वि (क्रॉमन) जी छन्में धाना भाषा (प्रक्रिक) जो सनके प्रजोसके किए हैं।

सर्वद्ययुद्ध-पु (शिष्ट बार) समस्य साथनीते वया आभेवाका सुद्धः वदः पुद्धः विश्वने श्रमुक्षे विदयः समस्य साथन और सारो स्वत्वि क्या रो बादः सर्वेषिक दुदः। सर्वद्याद्वाभीति-को (स्थापुंक कर्ष पाक्षिते) हैं।

'प्रभागनीति' । जीवाराम्याः (१९३५)का सम्बद्धाः स्टिकाः सर्वे

सर्वद्वारा-पु (पोन्टेटेरिक्ट) समायका वन्तिवन वर्गः विम्नदय अभिक्त वर्षः।

सर्वांगसम् प्रिमुज-पु॰ (नारवेटिक) रेक्का कोपूर्य न होनों विमुख विवर्गेसे रक्के एवी वर्ग (तैसी Bond बंधपत्र (ऋभपत्र): प्रतिकापन Bone of contention surgery Bonus अधिकामांच

Book ए स्त्री करना

Book depot प्रस्तुब किह्याबन, प्रसाद मनन Booking प्रदेशपण (प्रयोगपण) विकास मैम्बरहा

धारोपान Booking office प्रयोगपत्र कार्याक्य, विश्ववंद

Blooklet after Bookpost TRACE

Booty were nim Barrower stend

Borrowings sen nee Boss selvyes

Bota sy बनस्पतिन्शास

Bottleneck उत्पादनकाः परिवदन-वावा, परिवदन-व्य

Bottleneck policy गुजाशीह नीवि

Bottleup विकासावरीय Boundary श्रीमाः श्रीमा-प्रश्लेषण

Boundary Natural प्राकृतिक शीमा

Bounds with

Bracker बोहब (बहुबोहब, गुरुबोहब, सर्गबारकोहक)

Burgeois मध्यविश वर्ग Bowler तेंद्रवास वीकंशाल

Bowing वेंद्रवानी गोलंदानी Boxing मुख्यि, मुक्रेशकी, मुक्की

Boyscout areas Втакса фівня

Breach acts fire #4

Breach of law falleder Breach of Peace stifesing

Breach of trust (sensent

Breakdown of administration प्रशासन विस्थापन

Breitfest umtre sibri

Brengen बेबगम, क्रेरी वेचनार होंप

Bravity क्यूवा करवडा शक्का क्रमन क्यूकि

Bridgebead 1309 Brief n. austala

Brigade वर्षानी

Brigadier वाहिमीपरि Brittle Mr

Renadess प्रशासिक परमा

Broadcast talk महारित बावी Broad gauge वही कार्य

Broker Hours Kutt Bronchites स्वरविका गराच

Bronze age दौरवद्वय Brothel draws

Buck ammunition un

Budget जामभावत

Budget, Deficit गरोका, क्रमोका, बादस्यहरू Budget estimate आवस्यवदा प्राप्तकत Budget, Supplementary aggree surveys Buffer State elected that

Bulletin antworter fault Bullion सोना-चौरी

Bureau mainer, andres Bureau Information gumen

Bureaucracy बीक्टबाडी अधिकारिसम, स्मेकरि

तंत्र. व्यक्तिः(रेवर्ग Burner affine, see, sales

Business कार्य, कार्यार ... seply card कारवारी चवारी कार्ट

Business crasis serviceisa Business, Government uttard art

Businessman erecraft Business-mindedoess व्यावसामित असि

Bust अवस प्रतियाः कशौग प्रतिया Buying and selling applying Brelection क्यक्रियां यह

Brc-law Halle By-pass वचने निक्रम जागा

By-products क्योलमन

Cabbage प्राचयोगी

Cabloot affectes Cablnet Council सविपरिषद

Cabinet Conneilior महिन्दिक Cabinet crisis महिमोदकीय सेव्ह

Cabinet system समिनंडबीन मनानी

Cable, to समुद्री दार मेजमा

Cadet क्षेत्राध्यामा ग्रेम्बग्राम Cadre of service hatest

Calcination विस्तापन

Calculation Rough systems Calcadar (dfava

Called up capital आहृत वृंबी, धामवावित पूँबी

Calling with the

Calory बच्चांका (शेषणकी माना)

Camera meeting नेत्र कमरेमें नेत्रक Camouflage प्रकारका प्रमानरम

Camp (क्रविट संभागाः, निवेशा - equipment

विवेद्यसमा Campaign अभियास जांदोडन

Canal system arrane Cancellation (क्योपना निरहन

Candidate कानवी, कमीरवारा पराची Canned products दिमर्थह शीर्ने

Canvass shoe किरिएका नहा Canvasser मता<u>श</u>याचन, जनुनाचन, पत्रश्राची नुबार्ये न शोनों कोया। यूपरेके एट अंबोके नरानर हो। सर्वोत्प्रक राष्ट्र-तु (त्रेटीकटेरियमस्टेट) नद राष्ट्र या राज्य वहीं देशक यह हो दक (प्राप्तकरक)का आधिपस्य हो निस्की परिधियों नामरिकोका खार्चननिक नीवण की

नहीं व्यक्तिमध्योगन मी भा नामा ही । सर्वेक्षण-९० (स्ते) रे० 'प्रवेशकोगमः ।

सर्वेशवाव-युः (वेशस्म) शर्व अग्द रं सरका प्रतिकत्त हे भीर रेश्वर शर कार्यका, यह स्त्रियोग शर देश्याओका प्रावते, वसकी पूर्वा करनेका स्थिति ।

सर्वोच्य स्वायास्य-द्र (श्रुपोत्र कोरी) रहन्त्र सबसे दश स्वायात्रम्, प्रवत्तम स्वायास्य ।

सर्वोच्छ सचा-की (देशमाज्य प्रेंबर) देशको सबसे वही वा प्रथान सथा (प्रांच) ।

बही वा प्रभाग स्था (आक) । स्याक विद्यान १ (शियो वह सक्षित्र निष्में गात्रोके बार्च दो न (दियोर्ट द वन्द्रा शोकमा गाना, दोना आदि भी हुनाई है—तो भूकन १६६८ शाक्या दुमा-सा बाव पहें, शीकर।

सप्तरि प्रतिमृ-पु (होरहेड) जनावतः कन्मे रखा यदा शहरी भोकः सभम कारावादा-पुरु (रिवर्स शतिकनमेंड) है॰ स्व

रिभम कारावास'। सस्य आरावसेन-चु (क्रीवरोडेड्ड) छेठवें क्रम-कमसे पूर्वरी क्रस्त कर वरवर हैशर करा प्रस्कान-चन्छ। सम्हामान-चु॰ (केरस) कई स्वस्त्रियों हारा यक साथ गाना नानेशका मान। को स्वस्त्रियों का यह साथ

गांना बानेबाका माना कर ब्याख्याका थन छाप १०००० बान समरेत गांन । सङ्ग्रितिवादी-पु (को-दियोंटें) किसी भागकेंगे सुबन मरिवादीके साथ थीय कमसे मान किया गया करन

प्रतिवादी । सहित्तस्तारी-वि॰ (क्षे-वस्टर्डिंग) साम्लाग येता हुआ। सहसाम्बाग्न पर्यू-की (अंक दुन्त) संग्राम वर्गकी वह उक्षी निसे कवानक ऐसा स्वामद आक्रमण करनेकी दिवादी मनी हो स्वित्ती स्वामारण बीरता बीर साहस-के अन्तरकत्वा ही।

की अन्तरका हो। सहसोपचार-5 (ठीक द्वीवती) चरित करवे या इक होर देनेताल वर काय वो सहसा कामरे काला जान वह बच्चार वो सरसा निर्माण मानसिक रिश्वीपर मधाव बाक्यर सेगादिका स्थान करवे किया किया जाना सिहापराची-5 (व्यक्तिका) निर्माण अर्थायो सुबक अस्तावीका साथ वेदेवाला कराले स्वतावा अर्थायां सुबक अस्तावीका साथ वेदेवाला कराले स्वतावा अर्थायां स्वतावा सहायक आर्जीकिया-की (व्यक्तिकारी सुचक व्यक्ति

पर सदावताके स्पर्ने (क्या वानेवाका कोर्रे कम्य कार्व या थेवा ! सदावतामूद-पुर (रेस्क्यू दोन) बादरे या संबद्धी पहे पुर कोर्योके सदावताके किए रकावित ग्रह ।

मिष्यक-पु (श्रीरशीक्षित्रम्) जसन अरब, कराह्न मारि-संबंधे प्राथिक बोडिंग्ड वस्त्र बरनेशका बर्ममारी मध्या विशेषक बोडिंग्ड

सांवितकी-को (स्टेटिस्टिन्स) अन्स महत्र ब्रह्माहम

अवराप आदिन्धंन्यों आँकरे (मंदनायं) प्रामानिक स्त्ये एकत करने, तैवार यहने आदिन्धे नियाः इस सरह तैवार किनं गये ऑक्डोंका समूद ।

सांवियकीय मीयलाकार-पु (रोशिरक्क परवारकाः) जननः, मरपः, जरवारम शारिके श्रीकृति संमद्र कर्य-मनः, विक्ता स्टबारिके संविष्मे पराधरी हैमेबाका (श्रीकृत ग्रंबणाकारः)।

सांपादिक-पु (स्वयोत) सहकार प्रम्यूपकर समा-बार का नेयनंत्राकार समानार मेजनेशका, पत्रकार। सांसद-निक (कांक्सेंटरी) को समत्र वा उसके सरसोंकी सर्वातके अनुकुळ हो।

मयोदाक अनुभूत हा। स्वरियम्बिक-ति (६८२वत) ५२२६/ वा सूत्रध होने कैसनेवाका (रोग)। एटका एतवाका (रोग)।

साक्षरसा भविकन-9० (किरस्से केमन) विश्वराकी साभर व्यक्तिसे वहा दुवा, बनानक किए वकामा यथा व्यक्तिया। साक्षिपरीक्षा-व्यक्त (क्रीक्टक्स) विकास से प्रक्रिक

परिदेश । साम्बंग्डरण-पु॰ (भटेरटेवन) दिसी वासके साम्बंग्डरने सरसम्प्रकरणाः दिसी केच वा प्रमाणनगरिको प्रति किपियर दरतायर कर स्वीकार करना कि वस सभी और यदो प्रतिकृति है सन्तानन ।

साक्षीकृत-वि (अटेस्टेर) विचयर बादिक्यमें इरवाहर दिया यया हो। बस्ताहर हारा विस्ता सबी प्रतिकिर होना स्टेकार किना गना हो। साहयविधि-की० (कॉ ऑक एनिवेंस) साहय-पेन्प्री

विषे या कार्ण । साम्बापम -पु॰ (विक्यूरियोज) साम्बास किने प्रम् मान का ब्युक्त वन कर तर्वने सार्वनिक मानका सुनक प्रम विस्को नामिन प्राचा देसकी सरकार दोशो है और अंग-निनोके विस्को सार्विक स्ट जिसकी सर्वान निक्री अधिक मुक्ति स्था सरकार को जा सकती है। साम्बियिक-वि (क्रिटेरियाक) सनिन या सरके कृतेयों-

से संबंध रक्षतेशाका ।~स्त्रार्थर~वि (ओन सेकेटेरिका

डेनक) (समसीते बॉच आरि-संबंधी बादधीत) वो वी

वा अधिक राज्योके विमानीय शिवानेके दोन को नाम । सार्विष्क परीक्षा-बाँग (देदिसनक राज्यासिनेश्वन) विधा-कर जातिका एक श्वन श्वमाद्व दोनेवर को आनेनाको परीक्षा । साम्बारण निर्धाचन-पुरु (अधारक रहेनश्चन) किसी विचानशमा या शेशर आनिके श्वरातीका शावारण मस-दाशानी हारा निर्वाचन ।

सामुक्तम संस्थाम-पु (शावरैरको) क्रमामुगद अवि-कारिनोंनाको सोर्द संस्था।

सापेक्षसाबाद-पु (ब्योरी बांच रिकेटिकिरी) बाइन्स्यास-वा नव रिकारित कि प्रकारको प्रोत्तार भन्न एव नरहाबोको गति बांचेक्स है और नहीं तरहा हिन्म, काक एका प्रपूर्ण की सावा भी साप्त कोती है। कि तरहाब सावा भी ब्यारी है और रिक् एथा काकका मानन ने निस्न मनाकोर्स भूस रहे हैं, वस प्रणालोको गतियर निर्मेत रहता है।] Canvassing THEFT Capadiy सामध्येः भावतन, समार्थ Capillary affire adla affire a Canillary tube Erreit, Elisi Caplul expenditure व तीगत व्यव Capital goods वैभीवत मान Capital levy देवीहर Capital Issued विगंमित पैनी Capital market fines etatt Capital, Pald efter fall

Capital Ship HEITE VIE Capital Subscribed miles 441 Capitation tax प्रतिव्यक्ति कर Capitulation singuage

Capricorque nex Capsule va

Capsuled gilla

Captain इप्रान, नाबदा दक्नेता (धेक) Caption sites

Captive endit Carbon sings Carbon paper मसिपन Carbuncle aven

Career जीविका Careeriam पहर पृथिकार

Caretaker अक्पायक अक्पाता Cargo boat व्यवचारक नीका, मारवादी पीत

Carriage वरिवदमा गाडी Cartier erret eren

Carrier Public alegres Carrot grac

Carry-out कार्यानिय करमा Cartel सामरिक समझीता

Case क्षांत्र, बाब, मामका Cashbook they ago

Cash Memo विक्रयपथ, नकरी पुरवा, रोकश्यक Cashler shafter

Cush-crop तक्षा क्सके Casting vote निर्मादक मत

Casual vacancy अम्बरिमक (रेक्टि (रिक्टशाम)

Casuality enter (dest) Catament silfranfile

Catchment area जनमाधि क्षेत्र Catechism प्रस्तोचरी

Category part, alik Cathetometer कर्णवामाधी

Cattle-pound पश्चिमरोष-गृह पश्चिमरोषिका, कॉमी

Cauliflower पुक्रवीमी Cause sp

Cause of action बाइम्ब, बाइइंस Caution money परिशास पत Cease-life मुद्रस्थान, शुद्रविराम

Ceded territories welatta siss Ceiling proce बन्दम (अधिकृतम्) मृहद

Celestial body wife Cell क्षेत्राणा क्षेत्रिका

Censor बीवरेयका बीवरेयना, बोबान्यीक्षण, संगद-नियंशक Censorship बोचरपन, स्वाय-सियंत्रण

Census जनगणना

Centralisation Intraces, (Intern) Central Housing Board बेहोन बानासमंत्रस

Centrifugal forces designifi talked Centripetal forces बेंग्रोपसारी (बेंग्रेन्स्स) शक्तियाँ

Century द्वता, श्रद्ध (रेक्स्प्रे या सम्बद्धी)। श्रदान्त्री. मदी (समबद्धी)

Cereals warm

Cerebrum niterung uniterus Ceremonial आसुप्राणिक

(eremony बनुपान

Certificate प्रमाणपथ, (प्रमाणक) Certification survey

Centomey Weit of दारोक्य-देख, राप्नेक्यादेख

Cess uver

Chair कुर्सी, मस्कि: कशिपीठ, पीठिका (वि निया)

Chamber three

Chamber of Commerce sergic-sizes

Chamber of Princes attains Chancellor swift (बर्मसी); वशिपति संबो

(विजयिक्सम्बद्धा)

Chancellor of the exchequer (nites evide) Channel numb

Channel, Through proper इश्वित ऋषते, संबद्ध

अधिकारियोंके पास बोटे बय Character roll energy on

Charge आरोप क्षेत्रारीया प्रमाद्य अविरोपा व्यव

Charge de affairs प्रमारी राजवृत Charge of office quait (tu sai)

Chargeable welther

Charged विकासक

Charge sheet आरोपपण आरोपपण Charitable and religious endowment que trap

वर्गस्त, पूर्च तथा देवोत्तर सम्पत्ति

Charitable institution quiffe ten, ge den

Charity eigen umium

Chart taires

Charter अविकार-वन अविषय, समय Charterd accountant अविकृत एएक

Chemical examiner एसावनिक प्रोक्षक Chemical festiliser thungles and an adda सामीवर्षक, सामीवयाच-पु॰ (१वृटक शिस्टम, १वृक्ष-किन्म) किसी राज्यकी यह छासल-व्यवस्था विसर्गे राज्यको मानि बड़े बड़े शामती तरकारी या अमीदारीके जिम्मे रहती भी और ने क्लके नदके राजाकी आर्थिक वा सैनिक सहाबता देत थे।

सार्मसदेश-५ (प्रिसिपेक्टि) किसी सार्गत का सरवारके अवीन देख वा क्षेत्र ।

सामयिक पन्न-प (पीरिवाहिकक) वे 'शावधिक पन्न । सामिक पार्टी-सी (टॉपिक टॉक) वाकायगांशी द्वारा प्रसारित की कानेशको सामविक श्वताओं का किसी भागविक प्रश्न, विषय काविकी चर्चा ।

सामाविक व्यवस्था-को॰ (सोक्रक काईर) समावके निर्माणादिका इंग ।

सामाजिक सरक्षा-की (शेवक शिक्त्ररिटी) वैकारी भीर बमान तथा योर-राजनी बादिसे परिभावनी व्यवस्था ।

सामाम-भर-पु (क्रोन बॉफ्सि) रेक-स्टेबन, क्स स्टेबन आविका वह कमरा वहाँ मुखाफिरीका सामान श्रीककर मध्यक्त 👫 प्रराधित रक्षते वादिको स्परस्या होती है। सामिप भोजनाकम-४ (भॉन-वेडिटेरियन रिफेसमेंट सम या गॉल-पेडिडेरियन होटक) वह सोजवाक्य प्रश्नें शांस वा मांसके बने पहार्थ मा मोजनार्थ बच्छन्य हो।

शासकाविक कोळना~को (काम्यनियो मोकेस्य) कृति-सवार, जिस्रान्प्रसार, पथ-तिर्माण अक-कुपस्तरन जारी को ऐसी बोधना जिसे देसके किसी मागका अनसमय ही सदन रूपसे, बार्वानित करे ।

साम्राज्यवाब-3 (हंपीरिवक्रिक्म) सैनिक विजव, राज-श्रीतिक प्रकर्ण जभरा मार्थिक माथियांच वारा सामाञ्च

स्वापित करमेकी प्रवृत्ति वा नीति । साहारुपांतर्गत अभिमारुपदा-को (रंगीरियक वेकरेंस) ब्बाबार-वाणिकवन्ने मामनेमें जिन्दिन-सामान्यके मीवरके हेशोंको अन्य देशीको प्रकरामें भरस्पर कम भाषात तिश्रोध-कर कमावत अविमान्यता वैनेकी नीति ।

काषमान-प॰ (दिनर) (इवेतांन वातियोंने) संस्थाको किया बाबेगाका सक्य मीतन ।

सार्वजनिक निर्माणविभाग~ प्रविक्तक वर्श टिवार्ट

र्देट) है 'कीक्शियाँग विमाय'। क्षार्वजनिक स्पवस्था-की (पश्चिम भार्यर) सर्वताया-

रवर्षे सांहि बनाने रक्तमे तथा विकि-विधानीकी समावत्रक का माना चनतामें उपदेव अधांति ना निधिके व्यवस्थान-ध्ये प्रशस्ति न फ्रेक्ने वैभा ।

सावधिक-वि (शैरिनाविकक) तिविचय सविके नाव होते वा शिवकनेनाका । -पण-प (पीरिवाकिकक) बह पत्र का पत्रिका जिसका प्रकाशन एक निष्टिकत

अवि -- पक्ष सराव पक्ष पक्ष, एक माद्र - के बाद होता हो। -प्रस्कोद-इ (सहस नम) वह मरुद्रोद (वम) जी निर्वारित स्थापिने बाद अपने आव पढ पत्रे प्रक्रम-क्षित हो बढ़े 1 सावधि निधेप-प (फिनस्ट विपीजिट) विशेष अवधि

तक्के किय रपना जमा करना। मीनारी खातेमें जमा को सुरखायरियन-सी (शिक्युरिये कार्यक्रिक) संस्थ एड

गयी रहमा। साहित्याचि सहाविधास्त्रय-५ (आर्टन स्केत) साहित्यः वृतिहास आदि विषयोगी क्षित्र प्रदान करते

बाका सहाविद्याक्षय । साहित्यक उपमाम-५० (फैन-नेम) वेबक वा सी

दारा साहितियक रचवाओं से अपने असकी बायदे करे वा वसके साथ-साथ प्रकृष्ट किया बातेवाका स्वास्त्री दाव। नीमांकव-प (विभाई सर्व) (किसी बेच प्रशेष मारिए)

सीमा निविषयं वा निर्वारित करना ।

सीमागुस्म-प्र (गेरियर) होमायर रिवड केसे। सीमाचित्र-प (केंग्राम) फिरी देश, रशम मारिये सीया नतायेवाका पदार्थ: बैप्त, बाबी वा व्यक्ति ही

बासकी कोई शरूब परिवर्तनकारी बरबा । सीमापारक, सीमाप्रक्षेप(क)-पुर (शर्जदा) समेवेदेर

पर इतने जीरका प्रवार करना कि वह बैक्ने मैरान्ध्री बाहरी धीमरान्ध पहेंच बाद वा उसके शर ही बात !

सीमा-श्रुवक-प (कुछन्त कार्य) शहर वानेको ग्र भीतर कानेवाके माकवर देखको सीमाने समीर रक्त किया जानेवाका शुरुका -- अभिकारी-1º (कस्त्र)

बाफिसर) धीमा शुस्य वस्क करमेराका बक्सिसी ! सीस-अंकजी-जी (केडवें(छक) छीसेन्री नदी वेंछिकी सुकाधिकारवाब्−प्र॰ (युद्ध और ईनमेंद्र) वह अभग या माण्यि भी बुधरेकी किसी मृति, पन कारिय वस्ते

आरामके किय प्रयोग करनेसे हो वा बक्से सूर्व व्यक्त का पूछरे दारा दुवपबीत होनेसे रीक्ना ही क्रिका निम को सनिवाविकार-संबंधीयाः ।

सुकोपेक्की-पु (स्टोहरू) विविध सर्वी को निकासिके मणि क्यानीम रहते हम छत्राचारमन, हारित्व संत्र विद्यानकी दी परम कहन मानवेदाका दार्घन्ति।

सुगाय-वि (बोर्वेविक) की आधावीत वा विवा रोसके पार किया का सब्दे ।

(श्रुष्ठ ब्रह्मसरर) (ब्रष्ट वर्ष्या) जिल्ली तुचाच्छ~वि निकृष , वाप भाविका परिचालन प्रकारताचे हो होने सर्वकावक ।

धुधार-प्रश्यास-५० ((प्रवर्तेट इस्त) (क्सी पमरवे सुराध

नवनिर्माण भाविके किय स्थापित संस्था ! शुभाराकम-१ (रिकामेंटर) एक शरदका वंदीगृह नर्छ अक्टाच करमेंके कारण समा पाने हप नाइन रखे नारे हैं और क्षित्र राजादिकी क्षित्रा वेकर कर्ने संवादनका स्वाप

किया चाता है। समाधित और विमीष-५ (विट एंड हुमर) क्योपी बात करने-विकास कतर देने-की धमता तथा हारन

पुर्वग-प्रमारक पोच-त (मारमकेवर) बाह्रमक्सरी अवधि जवाजीकी रोक्तोकि किए समुद्राने राजरकी द्वारि

विद्यानेवाका पीत्र । सुरंगमार्जक (-हारक) योध-प्र (याधनस्वीपर) एसुर्पे विकाशी गयी बाकदशे बदी श्रुरंगीकी दशकी, दूर करने

वास्ता प्रशास ।

Cheque बनावेख, चेब Cheque, Bearer wife william Cheque. Blank fitte units Cheque Crossed रेक्टिव अवारोध Cheque, Order आहित बनारेश Cheque. Postdated उत्तरिकीय बनावेश Chief Election Commissioner सुक्य निर्वायन भागच Chief Judge सक्य स्थानाचीज Chief Justice मुख्य न्यामाभिष्यी Chief minister मुख्य मंत्री Chaef of Protocol इस्मीतिक विद्याचार निमानका **Gris** Chief at stelf सैनिक इन्तरका प्रचान Child welfare centre ferri-average Chord जीवा चापकरे Chorus शहताब समबेत यान Chromometer adapte Chronic Grantes, ale Chronicle active Chronology BIREH C. L D ग्रास्थर विमाश Cinema चक्रवित्रः यक्रयत्र मंदिरः शिनेमा Cipher Harres are Circle श्रंच, मंडक; इकसा; कुछ Circular aften und fent Circulate परिवारित का परिपंत्रित करना Circulation प्रचार परियारणा मचार (धंवना) Circumference uftly Circumiocurion arrang Circumscribed circle often an aften Circumstantial cyldence बुचांबासमेन साइन Citation thates Citizenship नागरिकवा City Connell ART-ERE City father नमस्पेता नगरथण City siums समरको गंदी वस्तिवाँ (मक्सिनासः) Civic and Civic guard aut-tur Civil जागरिक, असैनिक

क्रियाद

Claim stat

Ctell code शेवाची संविद्या

Civil court statet Paraller

Civil liberty भागरिक स्वतंत्रवा

Christian tuber

Civil duobedience gfana seast

civil Service नगरिक भूमा (विमा)

Crvil estatutes प्रशासनीय व्यवासुमान

Classical Economics of after and ones Ciassification uniform Clause she Cleavage संमेन, विभेश, बरार, पार्थकर, मण्डिका Clemency starters Clerical mistake (sine fine Clerk fulte, due, urfte Cimax unames, wenter Client stres aufes Clinic विकासका विकी क्रमाराह Clique gr Cliquish means Clock-tower stour Clock-wise पश्चित्रज्ञसमेः दक्षिमारचे Closing balance रोडक शर्का, संगरम श्रेप Closing entry संबरक मनिष्टि Closing stock statu car Closure motion earer seem, festio start, वशसर्वशेका प्रस्ताव ! Class सकेत. एतः सराम Coach mett menter seet Consulation स्टब्स असक बातंत्रक Coalition government the start Coastal traffic unggzeel einielt Coat annew Cockpit बखाशा संवर्धभि Code संक्षिताः सांदेशिक माना Co-defendant usufaust Codified studies sifes Codification of hw विभिन्नेंबर मंगीकरण Coefficient गुलक, गुर्बोक Coexisting never Coextensive suferori Connete स्वातीया -object स्वातीय स्मे Cognisance अभिशासा वस्त्रभेष Cognition that Cognicable इस्कोब्ब स्थिय, पुक्सिने इस्तक्षेप योध्य Coherence सामंबस्य Civil aviation department apple syes Cohesion elefts Coin de net, fire Coin, spurious बाधी धिवा Coinege Coining 1474 Coincidence state state Cole Industry वारिक्डकरा क्योग Cold भोरा प्रतिस्थाय असाय Cold storage श्रीय संप्रदा स्वानेत करना Cold war "श्रीत ' तुक, राजवीतिक तुक, अमकीवतुक Cold was e sile बहुद श्रीत हु(ये, श्रीत बहु()

Cha she

Clarlon-call surress

संबंध कार्यपालका परिषद् शिक्षों कार्यरिका किटेन, इस, कोस तथा भीन-इन देखीक पाँच रशायी सदस्य और अन्य साहोंके पांच कार्याशी सदस्य किये जात है। (रिकारित संबंध समस्यार्थ मुख्य इनसे इसीके सामने रिपाइसं क्यरिश्त की जाती है।)

सुरश्चित क्षेत्रक - पुन (देशयेशास) विशो व्यक्तिय(स्को के कोशामार्थ कर्वतरके ररनेकी तरब बने हुए कोशक पर वा जाने विवयं प्रावकीश किराया अकर कनकी बहुत्वस्व वस्तुर्य-आगृथ्य, शीना, स्वादि-ग्रायित स्वी बारी है।

सुरासार-पु॰ (सब्दोह्न) वह वारिवह वरण मादह इन्द जिससे प्रदाद वसकी है।

सुक्रम गणक-पु॰ (रेडोरेक्टर) यह पुस्तक विक्रमें दी हुई विविध कारिणियोक्को सहायकांसे व्याप्त, येवल आरिका विवाद क्यामेरी आसामी हो !

सुक्तर प्रमानको । (वांचर करेंडो) किया देशको वह प्राप्त वो सम्ब देखेले सात्र अवस्वस्वकाते व्यक्ति संवकान्ते संवक्ष्म के सात्र क्ष्म करियों के प्रकार के स्वीत् स्वत्र मान स्वादर क्ष्म करियादर क्षा कर्मिक सम्बन्ध हो (यह स्वत्रीय परिलव नहीं को का स्वत्री अन्यवा हमें देवर अन्यान्त देखोंने मान सेंग्ल किया जाता और वह बहुएने म प्राप्त । - अस्म - पु (शोवन करेंडो परिवा) सुक्रम प्रमानके देखेला धन ।

सुकासान-पु (गोरेड स्टेडब) वह सुदा-प्रणाणी किसमें वंदके मोटों(कागमा सुदा)का सुग्यान किसी भी समय निवारित दरके समुसार, सुवर्णके क्यमें किया बा सके।

वा सके। मुविधाधिकार-५ (राहर ऑफ देवार्गर) दे 'सुखा

शुन्यसायकार्-विकारकारः ।

प्रविधायक कोप-पु॰ (पार्विडेंड क्रंड) वै॰ 'संविद्य कार्य'। प्रविधायक कोप-पु॰ (पार्विडेंड क्रंड) वे॰ 'संविद्य कार्य'। प्रविधायक कोप-पु॰ (क्रंबिस) अच्छा शहर वेक कार्ये क्रेक रक्ते चप्पुच्च होनेक्षे क्रिया या प्राप्तः।

सहकारी-की (नी/इक वर्ष) है • 'सपीकार्य ।

सुस्मयरिक्षण-पु (क्ष्मुटिनी) वारीश्वीचे व्याप करणा स्पीरे भारिके एंत्रेसी व्याप्ती तरह कानतीन करणाः वर्षमानी, स्वयात भारिकी एंक्स होत्रवर मतहस्मयमी, क्षमयुक्ति मारिकी पाववानवापूर्वेक किरते की आंधे वाकी वरित्र

सुबसाधिकारी-पु (सम्बदमेकम ऑफिसर) राज्यका वा किसी संस्थाना वह मध्कारी को उसके कावी वा भगति बादि-संबी प्रामाधिक जामकारी कोगोंने मसारित वा किरारित करता है।

स्वनार्मनी-इ (रवजरमध्य मिक्सर) ववहित तन्त्री सरक्तरी कार्योको द्वन्ता वनतार्मे प्रशासित करवे भीर वनताकी संगी, शिकावर्तो कहीं आहि संभी निवरण सरकारक पहुँचानेका काम करनेवाकै विभागका विश्वन करनेवाका मन्त्री।

स्चनाविभाग-पु (रतकरमैश्चन विपार्टम्) बनदित संबंधि सरकारी कार्योकी स्वना चनवार्ये प्रसारित करने और बनवाकी मौगी, शिकासको, कार्यो आधि-संबंधी किस-

रण सरकारतक पर्देशिका साम करनेनाका निमान । स्पनाकथन-पुरु (सनकरमसम भ्यूरी) भावस्यक समा / भार या जानकारी प्रसारित करने, प्रदान करनेनाका कार्यक्रम ।

सूचीकार्यं सूचीसिक्य-पु॰ (नीडिक वर्क) कपर आदि पर सूर्व आदेशेरेले नकन्यु है या कोई आदृति आदि बनानेका काम, यूर्वकारी ।

स्थारं व्यक्षक – पु (रायर पुरुष) यह राजनीतिह सो श्री कपने परनाभीका स्थ-संगाहन करता ही दुर्धन

पार्थक न्या विश्वान न्यु॰ (बारमेसोनी) दे 'विश्वेस्परित विद्यान'। संस्तायच करसा न्या॰ कि॰ (बसाविवर) कोरोंकी सेनामें सरती दोनेक किय विवस करमा सेमाकी जावरवक्ताओं के किय विसीकी संपत्ति जारियर कम्या कर केना।

का विश्व क्यांचे जारिए क्यांचे (क्यां) स्वार सरव्यक्षिणान-पुर्व (क्यांचेश्यर) चेनाने (क्य खाव शासमा कारि जुटाने, पर्वेषानेनाका विभागः । सेवा-नियोजनाक्रय-पुर्व (पंच्युविदे स्वति) दे 'विशे

भग-देह[†]।

सेबायुक्त-वि॰ (रर्ग्गार्थ) वो कोई काम करने या किटी सेवाके किय नियुक्त किया गया हो नियोधित। सेवायोजक-यु (र्ग्गार्थ) कोई काम करने वा किटी सेवाके किया व्यक्तियों वापने कारबाने आदिसर निवाक करने काल निवोधक।

सेवा-पोजनाक्य-पु॰ (वंद्व(वर्मेंट प्यूरी) दे नियीय

भागेपहार-पु (पैड (पु)रधे) यह धन जो किसी सैनिस या कर्मपारीकी स्वकाछ-प्रश्यके समय उसके (करे) सेवाकस्के पपहारत्वका दिया जास !

सीवक सहचारी-पु (मिकिटरी बटेस) किसी राज-कुरके रक्तकमा वह चैनिक कर्मचारी विसे चैनिक विवरी-की विशेष बावकारी हो।

सविकीकरण-पु॰ (मिक्सिरिवेसन) सैनिक श्रक्तिसे संबद्ध बनावा, सेनासे क्षक करना ।

सीम्बाहीस्-पु (म्यूनिन) संवरित राजसत्ताके निक्स, विशेषकर सम्बाधिकारिकोके विकस, सेना द्वारा किया गावर निरोत ।

सैन्य-विभागाप्यक्ष−पु (पहचूरैर वसरक) सेनाके किसी विभागका वस्पक्ष वी सेनायकिके कार्यको सादिका पासन कराता थे।

सिन्यवियोजन-पु॰ (विमोविकारकेस्त्र) पुत्रके आव-वनक्यायस मरसुत किनै यने सैनिकोको सैन्यसेवासे पृत्रक् करमा, सैन्यवियस्य ।

करमा, सम्बद्धिया । सम्बद्धिमार्थी─पु (केंद्रेर) सैक्कि विवाहनमें शिवा

पानेबाका युवस । प्रिन्यसंपान्त्रज्ञान-तु (भोविकिनोद्यम कांग्र वि कार्म) वेकाओंको सकाकोंछे सुसन्तित बर तुकार्य प्रवासक

क्षिप तैवार रखना। सम्मावेशवाहक-पु (एवेकांक) युद्ध-सेवर्मे सेमावरिके

आवेश निधित्र अधिकारियों सीमिकों आदिके पास एई-याने समा बस्तुरिनतिका विवरण सेनापतिको वैभेगाका

Commodity que gag, que een; fatt Collapuble सिमरने या शिक्षतंत्राचा, आईपमधीक, Commodity market quality fatt water मंद्रश्चाती स Common felend warfaw Collateral emaina Common seal employ ner Collection शंधान, प्रशीकान Collection charges संप्रहण स्वय Common sense सामान्य मुक्ति Collection of data suspirators Commonwealth medse Communalist श्रीप्रायकारी Collective सामृद्धि Communicate संबाद करना संयुचित करना Collective responsibility सामृद्धि प्रथानाथित Collective recurity mufte neut Communication dependent descriptions descriptions Collectivism समहत्राहा सामहिन्द्रणाबाद Communication, Means of slagging Collector समाहचीर विकारीय Collector, Deputy ufe unteut Communique Auft Communism साम्बर्गाह Coilege agriculture Communist support Collord afes Community समाज सम्प्रदान Colony and 42 Community project सामदाविक बोधना Colonisation अधीतकात Commute sugges Colour blind swiss Communition of pension पंजनका संराधिशाब Colour prejudice an-fala Coloured races सहरेड जातियाँ Company gales Comparative तुक्रनारमञ् Column seiz Compass प्रदारा दिग्हर्शन वश Columnist (पश्चा) स्तंत्रकेश्वक Compassion were've Combatants and noncombatants as use all Compatible dag हद-विक्थ Combustible दक्ष क्षत्रम्, ज्यक्षनदीक Compendium संक्षेत्रका क्यांक्ष्मा क्युप्रिका Compensate wildyrw Come of age (प्राप्त) बदरह होगा Compensatory allowance Higgs well Comma warderin Compensation श्रावेप नि महिन्द Command समारेका पूर्व अविकार, प्रमुख Competent सम्रम समर्थ Commandant संज्ञानायक Compilation states Commandeer सेमायच करणा Compiled dafes Commander समारेशकः सेमाबावक Complainant अभियोक्ता Commander in-chief प्रशास केमापति Complaint अमियीन, शिकावत ऋदिनाः परिदेववा Commend संस्तान करना वरिवादः परिवादपम Comment श्रीका, मतदिवेचम आक्रीनमा Complement (विशेषार्थ) पुरुष Commentary (tyle, whileway, then Commerce andre Complementary adj que Compliance मान छेना पायन पूरा करना Commercial unfulleus Commercial Crops वाधिविवय क्सकें Compliments हामबाममाः प्रथमा Commisser 440 Component parts बाह्यमुन मान बन्दबम्ब बोह्र Commissariat Berryett faure Compost बावरपविक्र साद, कुरेन्द्र खाद Compound alter-addition finals, fix Commission analys desay-division (haupp-fraction for fire-Commission ur agt ader -interest कहनूदि कात्र;-practice (भूम क्यवहार Commission agent वर्षेत्र अभिक्रो Commission and omission Acts of fifte-गणिता—substruction मिल्लाव्यकत विकित कर्य Compoundable (सम्बद्धीकः समाधेव Compoundable offence समाध्य अपराप राजी-Commissioned officer आधुष्क अधिकारी मामे बोध्य सपराध Commissioner with Commit शिवृद्धे करवा Compounder offine Comprehensive questionaire विस्तृत प्रस्तावकि Committee effety-of action ties ufult Committee Select was usfult Compression eighter

Compressibility eldiand

Committee, Standing स्पानी समिति

'हाँ' इहनेगाडे छरस्य ।

सरीयने, नेपने दशा विकासनेही व्यवस्था । हिंचकपीत-पु (सूबर) तुष्यामी शुरुपेत मक्ती पेत

हारस्यवस्था-सी

तथा नार्नर-भीवमें विदाया बाता है 'प्रमोदकाक' ।

बार्गहमास-प (इमीमून) (एक्सिमर्ग) विवाह हानेके क्रीब गाइका बगमग एक मासका नव समय जी बर-वथ द्वारा प्रायः किसी १मधीय श्वामर्ने जाकर सैटसवाहे थानुब्रहिक करमीति नकी (क्षमतेश्वक देश्वि) आवात-

बाक्य-५ (हॉक्र) वृत्त-फिरकर सीता वसनेवाका पेरोबाका ।

गावचंदी (बहुत केंदा) भवत ।

बार्सकप-पु (स्कार स्केपर) बार्कीको छुनैवाका सम्बाध

केबका कार्य ह

बार्च, प्रजीग रवका माहिके छंदंधमें श्रेका कारक शीमेपर या किसी बढ़ना व्यक्ति मादिशे संश्वरी विशेष मानकारी प्राप्त करनेके किए कोई कीश वा व्यन्त आकरन्यन सीवन कर उसमें दिये हुए किन्द्रण, स्थानमा आदिसे सन्तानता

असीयचारिक-वि (इल्डार्सक) विसमें निर्वारिक निवर्गी रोतियों क्यमारों जाविका अनुवाकन न विना नया है। सिद्धाव न र**धा मना हो**। श्रामितिहाँचा (कृत्सकरेशम, देकरेंस) किसी सम्बद

असुमाय-पु॰ (क्षेक्र) साथनेका साथनः (भागविकादि | वनाचे समन्) निश्चित हरीने किय मानी हर कार्र वैमाना ।

निर्मात कर कगावे समय कुछ वैद्योंक साथ द्यास रिजायत

ममीरकाक-प (इमीनून) दे भागरमास ।

जातिसंबारमीधि-को (वेजोशप्रक) है 'बंधर्सरारमीवि । प्रारताक-प (कोच भावर) दे 'ताकावरी' ! म्युनपदास्क-वि (बाहनर) दे 'सम्बद्ध'।

खाद्यवस्थिका−स्था (पश्चिमेंटरी दैला#) वे 'पश्चिमा'। श्चित्रयम-प (पृथिष) किसी सुद्रीको भोजसे देव बर रेनेका कार्य ।

रवाज-विशेष या श्रंथ-विशेषके भीतर 🗐 भीतित दर देवा. रक्षमानेष ।

पेकांतिक साराचार~त (स्ट्रप न्यूम) दे धमानार⁸ । ঞ্জীয়ার বিদ্যাল—এ (ইফার্নি) হিন্তা স্পতিনা গচি-বিদি

(मेथ असी बाबि), परिवर्ष । क्षण्यांगप्रतिमा-की (नरद) दे भावसम्बन्धिमा । पुकसुत्रीकरण-9 (की-काविबेशन) समाम स्तरपर काने परस्पर समाविध रूपसे संबद बरने कादिका कार्य !

हो कव्यक्तिता। उपस्कर-त (क्रमीचर) बरबी समाब्द श्रादिब्द सामाव

भावसम्मतिमा—की (शर्द) दिन्नी व्यक्तिको वह मदिनी विश्वमें वर्षके सिर्द क्यों तथा दश तक्का पान का वर्ष

अन्य पारिभापिक शब्ब

'पूर्वपदसरम ।

करनेकी नीति ।

इस्टाइस्टिका-सी (ईश्व ह हैंव काश्र) कमर-अपरसर की मानेशकी कहाई। ग्रह्मम ग्रह्मी । हॉक्सरी~प (भाषक) किसी प्रस्ताबके प्रश्न वा संबंधमें

(मारकेरिंग) चल्पातिस वसाबीके

हस्ताधरकराँ-प (शिग्मेश्री) यह विसने विशी संवि-पन, नावेदन-पत्र भाविषद् इस्तावद किने हों 🎼 🕆

इस्वांतरिश्च~वि (डांसपड़) (वह संपत्ति माहि) वी परने हाथसे इसरेडे हाथमें गती या दी यती हो।

दिया वामा । हस्तांतरपञ्च-५ (कानवेवेंश) संपत्ति बाविके पर्सा सर्य संबंधी प्रकेश ।

इस्कोचरण-प्र• (इप्रिक्षरें छ) (धंपष्ठि, प्रक्रिक अधिकार मादिका) एक व्यक्तिके शामने पूछरे शामने जाना मा

से किसायना नह पत्र जिल्लों कि आया रक्ष्ता संकित्रक केनेबाका विश्वंदित अवश्विक मीतर गुक्क रक्षम व्याज समह पुका बेगा, प्रामीत ।

रिक परिमम जात । इस्तोकित परप्पपञ्च-५० (१वमी२) जल केर्त समय दाय-

था किसी दवा, सार्वजनिक सभा बरवाविका वह छोटा विधापम को इक्ट-क्वर हाथसे विधरित किया जाय ! (मैनुषक केनर) दावकी मंद्रनत धारी इस्तभम~९

संमासमा हो। हिसमब पृष्टि-साँ॰ (स्बोद) वह वर्ष विसमें पानीने साथ-साथ बीकी या हिमको सी वर्षा हो है

हिमरेखा-जी (स्तोकाहम) पर्वतीको कैनारेस्र मध्ये

चै, गर्मोंनें भी नदौं पि**ष**≅ती ।

विभविकास्वक्षम – प

यथी यह रेखा मिलके रूपर बरफ निरंतर नमी रहते

प्रथर नारिसे मिककर वही चड्डान बैसाका बारन

डिमांक-प (क्रीविय पास्त्र) वह तापमान वहाँ शब्दे

थामकर वर्स नगर कनता है (फारेन शास्त्रका १२ वह

ब्रिमीकर-वि (रिप्रोवरेटर) विमन्ते तरह (देंग) व्य

हैर्चनाका । प्र (काम प्रदाशीको) इंदा समासर समने ग

इत्रमधिवाप-प (रेध्नेज्यक्रन) छोनी हरे ना मण

की हुए करता संपत्ति बादिका सना कीटा दिना बाना ।

द्याप्रस्थर्पेल−५ (रेट्येरंकन) हरे हर, झेमे हर व्यक्ति था राज्याविकी प्रमा अस्ति कर देना, तीन देना देन

करपेके नाद नेगपूर्वक कीचे (देखक प्रस्ता ।

मध्या संद्रीप्रेष दावसावद वंत्रमें शुन्व अस्। ।

तह होमेरी क्वातेका बंध- प्रश्लीतह ! श्रीरकमधंती—सी॰ (बावमंत्र अभिनो) है। धूनमें I

(परेकांडा) विनराधिका यिक्ति

डिताधिकारी-प (वंत्रीर्फाश्चपरी) वह विशे दिखे नधाः व्यवस्था आहिसे काम हो रहा हो वा हानेश

गरती बद्दाव ।

Compromise - Contlagency fund Compromise भगनीया, नीमका रास्ता Comptroller fadas Compulsory शनिवार्व, बाध्यवायुक्तक, बाववयक -retirement अनिवासे निवर्ति Computation stawar Concave lens महीतर ताझ Concentration Alam Concentration of authority suffrances there Concentration camp निरोधन श्रिवेट, मजरबंदी क्रिक्टर बारा ब्रिक्टर प्रशीधन विक्रि Concentrated efforts प्रशासिक मनास, संविधित Concept संबोध, प्रत्यब Conception strentum Concerned week, tiftue Copper संबोध समारोक Concession हर, दिवाबत Conciliation board शंरावन शतित, विवाद-विवा-रक-मसिति Conclave ग्रम समा Conclusion परिणाम, निष्पणि, निष्कर्ण Conclusive विश्ववासम्बद्धः सम्बद्धाः Concommitant egeti, eneene चक्रवेचाका (तंबावि) अवस्वार्थात् सम्बद्धाते सम्बद्धाते सम्बद्धाते Concut सम्मह होना Сооспитенсе нанів Concurrent समगामी, समन्ती Concurrent int समन्ती सनी Condensation times Condensed food संबन्धित साथ Conditional समितियंग Conditions of service सेकाको छले Condolence suriest Condominium है राज्या जासकात Condonation serving Condone श्रमा ऋसा Conductor states Cone श्रेष्ठ श्रेकाकार पन Confederation with Conference सम्प्रेक्ट्या संयोजना Confession सम्राम-स्पोक्तरणा स्वीकारीतिक Confirmation अभिवृद्धि, प्रश्लीकरण, स्थानीकरण Confiscation समस्यस्य सभी Conflagration विश्वकार, महाप्रश्वम Congenital strate

Congratulation वशाई, प्रतिवदन Congruent सर्वोतसम् (विस्त्र)

Cooled steet, seems

Consunguinity स्पोत्रवा

Consanguine erily

Conscience stateon Conscript अभिवानं शती करवा। वि इस इरह मर्च किया प्रजा । Conscription शक्तिकार्व अच्छा Consecutive क्यानतः क्यानार Consensus एकस्पता, समानता Consensus of opinion dense Соптера отнива отнива Consequential appropria Consequently war, परिवाससका Conservancy system awaren valid Conservation straw Conservator of forests undown Consigned wifter, with Consignment बरेबण परेबिय बरव Consience viruli Consignor etem Consistency daily Consolidated पश्चित, संचित, संचित्र -[mid संबित्त विक्ति - pay प्रक्रीकृत नेत्व Consolidation of debt www.tiffen , of holdings क्षेत्रीको चढारी Conspiner करके Constant cost (श्वर गरिनाव Constellation and Constinution सकारतेय, सकारता, सम्ब Constituency निर्वापन येत्र Constituent Asembly ध्रिकान समा Constitution श्वितामा संबदमा संबद्धपदमा बेहन्छि Constitutional deadlock sifestime alsoy Constitutionalist sift single Constructive programme रचमारमञ्ज कार्यक्रम । Construe we were Consul शाधिनम श्वा शामनिविधि Consul-general महानानिकाहत Consulate बाविश्व इधारास Consulting room worsiers, wirther Consumer's goods बरबोम्ब परत्र है Communition प्रयोग श्रद श्रप्रीय Contagious शास्त्रीकर, शांसपिक Contamination 444 Contemporary समसामित्र, समक्ती, समकाभाषा सामीया (समाचारपण) धनसामनाः भएमाना -०ि Contempt with COULT अशासताची संबद्धाः स्वामास्वद्धाः अवसान Contents sinder, walked Context that Continuity संसद्धिः साक्षियः, संस्थाता Contingency अम्बरिमस्ता, आसरिमस रिसीत । Contingency fund असंबद्ध भ्या आकरियका

वरिशिष्ट---२

पारिभाषिक दान्यावली-अग्रेजी हिन्दी

Abandonment परिस्प बन Abatement हास, दभी, म्यूनी दरमा समाप्ति Abstement of suit बार-समाधि Abhrevistion at talve Abdicate राज्य-स्वाम राज्यप्र-स्वाम

Abduction अवनयन, भगा है जाना

Abetment दुवसाहर Аветапес впляяя Appoisence Alless day

Abide धनुपासन अनुसर्थ करना Abnormal amoutes

Abolition इन्तृतम् समाप्ति Aboriginal आहिंबासी

Abortion migra

Abortive Green Ruse Above par अक्रित मूरवधे अवर, अधिमृत्यवर

Abridge स्वन श्राचा श्रीप श्राचा

Abridged efiza Abridgement म्यूनम संदेशम Abrogate जिहास्त्रका स्टासादमा विधेदन

Absonder प्रशासक, भागोहा Absence अनवरिवति अविषयानता अधान Absolute परमा मिर्डा, अनियंत्रिता पूर्ण Absolute monarchy faces states Absolute power que eui, fage eui

Abatinence अवस विरक्षि नियाचि Abstract entire seriels

Abuse स्वक्योम

Academic discussion main an-Reix Academy विचापरिषद् ज्या विद्यार्थरमा, धारित्य

परिचय विश्वामपरिचयः विद्यापरिचयः Accent EREGIG

Access प्रदेश पर्देश

Accession समिक्स

Accommodation बास-व्यवस्थाः बासस्थाना सविधा-

Accomplice सद्दापदानी अभिनंती Account देखा गममा दिसाना निवरण, प्रचांत Account audited sicher bur

Account book क्षेत्रामहो केसापराज्य Accountancy हेस्टाइवें सुनीती

Accountant सेवाच्यय, गणनास्यक्ष गणव, सेवापान,

Accountant General महामुख्यास्था, महाक्षेत्रापाक Accredited विश्वत ममानित (पविनिधि र)

Accrued प्राप्त, बदाभित Accumulated dan, effen

Accurate and Accusation aftigin

Accused अधितक

Acknowledgment प्राप्तिरशेषारः प्राप्तिपत्र, पानवीपत

Acquired प्राप्त अधिगत अधित Acquisition प्राप्ति अर्थन

Acquittal मुक्ति, रिशारे Act wellagu

Acting wideren

Acting the selected

Acting in his discretion स्वविदेशने बाद करते हर

Action Direct nega antent Active service tiles Hat

Activities uftftiff untunte, unte

Activity arisety Acruals aventus utail

Acuto angle न्यनदोष

Adapt अनुस्य या अनुस्य प्रमामा

Adaptation अनुकृतन

Adaptation of Act अधिनियमका अनुकृषीकरम

Adapted अनुस्कित अनुस्कित Addendum संयोग्यांच अनुवीविद्यांग

Addition बोकः परिवर्कि

Additional whites

Address संबोधका व्यक्तिमाष्या व्यक्तिनंदनपत्रः पता Addressed within

Addressee पायेगावा प्रेपिशी

Adherence अनुपरिद

Ad hoc Committee कर समिति

Adiacent angle आसम्बोध Adjourn स्थमित बरना

Adioumment mouon कार्य-स्थयन प्रस्ताप

Adjudication rapper field Adjustment समाचान समाधोजन

Atlutant general सैनिक कार्यक्यका विनागाच्यक

रीम विभागाप्यक्ष

तिरि, इ.स्ट्रिनिरि Contraband trade विनिविद्य व्यापार, प्रतिपेरित व्यापार

Contradiction संदय, प्रतिवादः असंगठि

Contrary दिहस, प्रतिकृष्ठ Contribution अञ्चल्ला, अवदान, योगदानः पंदा Contributory Provident fund अञ्चलके हिर्द

vies (या संदित) क्षेप Control Room नियंत्रण क्षेप

Controversy राजनमंदन, नारश्विम Convalescence (शिवास) स्वास्वसाध

Convention were Convener tields

Convention प्रस्ताः सभिनमय स्दि Conventional यशासाह, शरंपरिक

Convergent वहद्वानिमुद्ध, वहविद्वामी Converse परिचीय

Conversion परिष्ठित भर्मश्रीयर्चना मतपरिवर्चन Conversion परिष्ठित भर्मश्रीयर्चना मतपरिवर्चन

Convertible परिवर्ते

Convertion क्योतस्य परिवर्तम

Conveyance इस्तीवरपकः सवारी

Convicted भविद्यस्य दोषसिक् Convocation दोषांत समारोह समानर्थन प्रसीहान

समरोह Cooperative Society सहस्राधी समिति Co-opt दिनियुक्त करमा क्रमिनियाँच्य करना

Coopted members समितिगीयित सहस्य Coordinate समाज परमाका समझ्या तस्त्रशीक प

मेह देशवा Coordination रहन्योदस्या समन्यव Co-paracer सहयोगी सामेगार

Copied alalasta Copper age alagn

Copper place वास्त्रम Copper place वास्त्रम Copy मतिकृति मतिकिप

Copyloider केम्बरस्क Copylist महिकेद्यका महिक्कि Copyright कृतिस्वास्य

Corollary जनपमेन Corner अनुमूख् मोगांसक Corporal punishment जारोरिक रंड

Corporate त्रेनम Corporation जिनम भौरतिन

Corps मिहाब रक, छैन्यहरू Corps, Diplomatique राजकृत समृह कृतसमाय Corrected क्षेत्रित

Correspondence पत्र अवसारः पत्राबार

Correspondent समारका

Corresponding शस्त्रानीय तरनुरूपः धंगत (क्रोप) Corredor गुरूकारा, गीनमेंसे होफर मानेवाणा

संद्रीयं पथ Corrigendum शुद्धिपत्र Corroboration अभिन्दि

Corrosion thate Corrupt practice manual Cosmic Rays and that

Cosmogeny विश्वोग्यांचिविद्याम Cosmology मह्मोह विद्यान Cosmopolitan सार्वदेशिक, सार्वमीमा विश्वमागरिक

Cosmopolitanism दिवसंस्कृति Cosmos महादि Cost परिचल, सामा

Cost of living श्रीवत-बापन स्पव Cost of maintenance निर्वाह-वरिस्वय

Cost of production उत्पादन-परिनाम Costs वाद-व्यव

Councillor पारिवर Councillor पारिवर

Councillor पारिषद् Council of action कार्य परिषद् Council of States राज्य-परिषद् Counter प्रवासकका "स्विक्ते ", परक

Counter act विश्वकार करना, प्रभावदीन वा व्यर्थ वद्यामा Counter action प्रक्रिकारण प्रक्रिकारासम्ब कार्य

Counter balance मुख्युक्तमण Counter balance मुख्युक्तमः – ed मृतिसंदुक्तिः Counter charge समारीष

Counterfeit बाजी

Conversibled algest algelia

Counter statement अलादेशन; महिन्दस्य Countervalling daty महिन्दस्य

Countervating duty मादमुल्क Coup d cast श्राम्ब्रीसम्ब्र शासन परिवर्षन, श्रासनिक विक्वन स्वता स्थापहरण

Coupling gray

Courier बाबक, बावन बरकारा Course पात्रकाम मार्गे, क्या प्रवाद, भारा। शीदि

Court fee salation algera files

Court Inspector ब्लब्स-निरोधक

Court martial श्रीकृत विकास सैनिक स्वाकासय Court of appeal पुत्रविकार न्यावास्त्रय

Court of records व्यक्तिक स्वाधानक Court of wards प्रतिपाकक व्यक्तिएम

Court Regional historrature

Administrative function numerica was Administrator womes Admiral श्रीवसाध्यक्षः नीकाप्यस Admiralty श्रीकाविकरण Admissible mas Admissibility mont Admission Card observer Adolescent facile, megages Adoption क्लब्स्याच्या प्रथमः स्वीकरण Adult franchise,-suffrage वयस्य संगापिकार Adulteration squass Ad valorem संस्थानसार Advance अधिमवन समिन Adventure-साइसिक प्रवस्थ Advertiser femygenen femye Advice संबद्धाः स्रामग्रीः सचना HERPEL TOSIVA Advisory Committee परामहोताओं समिति Advocate अधिवस्य Advocate general statistics Aces संस्थान धनकाया Acrial fige suggests weathers Aerial bombardment बनाई नमनको Acrodrome surf was Aeronautical Survey of India भारतीय स्वारं पर्वचकोच्य (सर्वेशक) Aeronautical Wireless Service aufen fun-Aeronautica विमानवाकमं विद्यान Acethetics सौदर्वरोपः सौदर्वविकाम Affectation was unsiden Affected seess प्रमावित क्षेत्र Affectionate gift theirest Affidavit tree-ve Affiliation shades Affinity faus des signi eners Affirmation uftern uft Affirmative स्वीकारातम्भ Afforestation बमरीपण Agency willing Agenda and Hall Agent mittigs, willest was Agent, Polling महावी बहब Apprarian piers, pfeifelt Aggression मनगाहमण Agnosticism wedge Agreement संक्रिय करास सहयदि Agricultural see fores Aid Grant in सहामक जमहान Aldo-de-camp अगरवका धेम्बादेखनाहरू

Air battle spans-na Ale communication was arrange Air conditioned audition Ale conditioning any floren Alternit carrier famourus vin Air-crew flux-soft Alc-graph said fun Air-gunner und diest Air-hostess verificat, विमान-परिचारिका Air man amfort Air navigation विमानलेपावय, विमानपरियन Air-mid-alaem हर्क सर्वोक्त भीप Air raid precautions स्वारं स्पानेने दियाना A.R.P Air Raid Sheltor wark जरमगढ, स्वारं मानव Air Squadron विमानदक, प्रवादित्या Air steep sessen-us Ale tight suring Airways quant, quays Album femour FIBER STREET LOCALA Althi अन्तव अपरिवृति अन्तत्रीपरिवृति युक् Allen westshe Allenate श्वरवारताम्बरण अन्य संकायम Alimentary Canal अञ्चलक्त्र जावमक्त्रि पोक्ति Alimony श्रीत भिरोद-व्यव Alkali sur Alkaloid arrive www. All clear algoal खबरा बर' की दक्ता Allegation without Alleged num/ar Allogiance, Oath of frund was Alllanes future Allied power विश् सर्वि Alliteration warme All round progress stiding and Allocation divite fentage fillife Allot under Allosment निर्दिष्ट निर्पारम भाष्टन Allottee निवसमायी जानेज Allowance wieds went us Allowance, Conveyance बामानियेष Allowance, Superannuation बुश्चा अधिदेव Allowance, Travelling बाजाविरेव Alloy विश्व बाह्या विश्वन, येक संबर Alluvial soil बहाद पृथि पुरानीत मृति, कारो मृ Almanac delte विविधम Alphabetical order क्षत्रम अस्ट्रम Alternate expects expectes

Alternative n. [4494 adj. \$41844

Court Supremo सर्वेख स्याबाह्य Covenant प्रतिमति, प्रतिमतिपत्र प्रतिमापत्रा समझौता Covenanted stawa

Crane मारीकोबान बंब, धारीवरास वंत्र Credentials of warm

Credit प्रस्तव, साद्या समाज्ञकमा उपार

Credit balance समाज्ञान नापिनन Credit bill विश्वसनीय इण्डो

Credit entry सम्राच्छन-प्रशि Credit facilities कश्सविधा

Credit note भगन्ये हंदी, समास्कन-पत्र Creditor इक्सर्व सदावन

Credit sale war-fewe Credit side बचच्छ, बमाकी तरफ

Cremation ground, crematory इवदान Ctrw ताबिक बक्र, सकासी। विमानकर्गी

Cricket Haves Bake

Crime arrang

Cerminal कि वंद्रका अपराषद्योक प अपराष्ट्री Criminal breach of trust stadia festitiant

Criminal conspiracy हंक्य वा सपरास वहर्यम

Criminal court de salates Criminal investigation department appropri-

न्वेदम विभाग, ग्रहकर नियाग Criminal procedure code व्यक्ति संविता Criminal settlement करावसपेका क्षेत्रोंकी वस्ती

Criminal tribes अपरायक्षीक वादिवाँ Criterion तिबयः साम्बद्धः दसीयी

Crop totation श्रद् जान्त्रेत। फतक-स्ट

Cross bar fetters बेबी हवानेकी Cross breeding बम्बोस्य प्रवत्नम श्रीहर प्रवतन

Cross-examination महिन्दीशन निर्व शाक्षि-परीका Crossword puzzle affets

Crusade भगेत्रक

Cruiser गाती जहान हिंदन पीत Crystalization रक्तिकेकाण बणोकरण

Culpable bomicide specie street Cultivable सन्त, इश्विमीन्त

Cultivable land ऋषिकीम्ब मुनि

Culture संस्कृति, संस्कृत पाष्ट्रन (वैसे क्रोधक्रीहपासन) Cumulated समिवित सम्बद्धित

Curable Parter error

Curatos क-नम्र, परिएक्षक (संग्रहाक्य कारिका)

Currency and BEH Hann Cuerent मचक्ति, बाला । म बाश

Current account will tild! Ourye बळता वळ (बळरेखा) ग्रीच

Curved line axian Custodian संगालक असिरक्ष

Custodian of evacues property fresidia

संवित्तका अभिरक्षक

Custody अभित्वा विराधवर्षे केता Custom स्ट्रेंड अध्यास, रोति

Customs शिराध्यम्बद्धः सीमाध्यक Cut motion with years Cut throat competition and level

Cycle शहा विश्वहवान Cyclone quant Cyclostyle orchian

Cylindrical Partiett Cypher code गुरुवेश संविद्या D

Daily reguter fine val Dairy दुश्वश्वाका, गव्यश्वाका

Dala ste Damages श्रतिपृष्ठि Dash surlan fax

Data श्रोदश सामग्री Date fafe. Grain Dated River, Railes

Daybook affect Day dream stateur Day Proceding प्रवेदर्श दिन

Day scholar अलावासिक काम Days of grace anguerie Dead account यह होता शिक्षित मा

Dead language श्रुव माना Dead letter office बेच्डा क्ट्रीक्ट पुर नेमनी

Deap-lock गृतिरोध गांबवरोष Dealer sanger

Dealings व्यवसार हेना-देना Death certificate मर्ग ममानद, कृत मध्य

Death-sate महत्त-पृति Deback क्षप्त निर्मगः पूर्व परामग

Debate and-fasts

Debenture ways

Debit Pater flexus

Debt concilitation board an gustar di Debt redemption wunter

Debtor अवसर्ग अवस

Decagram сырги

Decometer वस्त्रीर

Declgram व्यक्तिमान Declmeter gulunter

Decade इशान, इपन, इसी Decadence stays gire

Decagon and

Deceased प्रमोत पृत Decentralization (withware ((rights)

Deciding vote विविधनकारी मत

Alternative foods lafter unu Alternative member lafera user Altitude समुद्रकी सगहते सी जानवारी कैनाई। विभुव संद (स्वामिति)

Altruism utriens Alum feetett

A. M सम्बाह्यपूर्व (म पू) Amalgamation समित्रक

Ambassador errett m roaming your Clare

Ambiguous effected, gravia, were Ambalance Miga-qRay lawin 1-Car qRait वाही। रोमोबाहद याही । - Corps जाहवायवाचे दक

Amendment visite

Amenitics mugicant

Ammunica तोडायाहर, प्रसाथयो।-dump खेडा बास्तका देए

Amount High

Amphibious operations अध-श्रकीय काररवारे

Amputation sightige Amulate बंतर, हारीब

Amusement ध्यक्त प्रमोद कर

Adjustment of accounts केचा समापोषक Anschronism specie

Anacsthesia(sis) अनेतताबरण, अनेतमता

Amenhetic arders

Analogy erass, execute

Analysis विक्रिक्य Anarchism serrasappre

Ancillary REPER

Angle क्षेत्र (scute-ज्यवद्येषा adjacent-संकार क्षीया alternate-एकांतरकोमा base-आवारकीया common-शामानकाः complementary-कारि मुरक्ष्मेना corresponding-श्रीतृत्वीता exterioralfrein interior-strichm obruse-selessimi opposite-effugueins reflex-specion right - engly straight-washinsupplementary-

संपरक्कीया vertical-कार्यक्रेन) Animal husbandry waven

Ameration संबोधन, शरिकारकरण Annexed संवेशिक, समावेशिक

Amexic संवीवित वस्त

Anniversary utfritten, utfall Annotated HAVE

Announcement अधिवादना वीदवा पेकान Апполние ибинув, педев Annual संबत्सरी वर्षशेष अध्यन्त्रीय

Annual financial statement wifes free-femous Annual review quite fittiquies

Annuities quite gitis quiten

100-

Annulment, Annulling अधिराज्यन \nonymous बनाम, ग्रहनाम Antedated प्रवेशियोय Antediluvial पूर्वकावनिक

Anthropological Survey नृरशिक्षान-परंतकोकन **Annu**

Anthropology मुर्वधनिष्ठान, मानवनिष्ठाम, सुनस्व

Anti alterale guns विमामक्यी तीर्वे Antibiotic श्रीवाज्याद्यक

Anticipated excess प्रसाधित अव-पृथि Anticipation प्रशासाः, पूर्वानुमाना प्रश्वपद्मा

Anti-clockwise-quart

Anti-dote area Anti-inflationary HERWISTON

Anti Rabic awids रोग Anti rabbles Centre negue ar

Anti-septic playing Anti-Venom Serum विश्वविद्येषक एस

Antonym दिवसीय जिस्सार्थक Apartheid policy प्रमापन-नोवि Apathy बर्डि, बीरासीस्व

Apex श्विपेरिंद

Apoplesy werner Apparatus वपश्चल-समृद्दा अपन्यम, प्रयोगपंत्र

Аррассов перания миния Apparation सारापुरदा साराम्बद्धि Appeal प्रमरावेदम प्रमन्धीय-प्रार्थमा Appeasement gelecu

Appellant पुनरावेरकः पुनर्साकपार्थी Appellate tribunal steps; sayer

म्यावाविकाय Appellate authority बरोड सबवेशका अधिकारी,

प्रवर्शियास्त्र अभिद्यारी First activitied Appellation Appended संक्रम्स Appendix q(tfag

Applause utien ele Application आवेदनपत्र प्रयोग Apportionment सनिपायन

Appreciation qualitati, qualitati (unuma) प्रवासाः यथोषित गुवावपारच

Apprentice शिक्षमाणा जन्मद्दार, प्रशिक्षानी

Appropriate समुधित ए दिनियोजन करना Appropriation Bill fefang feder

Approval untiles Approver राजसासी स्क्रपाकी ग्राह

Apropos अनुसार अनुस्था-to प्रसिद्ध Aquarium मास्त्रायाद मास्त्राचन

Aquachus utucifiz

Decimal system ৰ্যানিক-জন, ব্যৱস্ক-প্ৰতি Decision Genar Decision pending the বিনামৰ বীনিবক Decisive বিনিমবাধক Declaration বাবন, গ্ৰহণ Declaration ব্যৱস্থান, হ্বপ্ৰাপন Decomposition বিশ্বন

Decomposition (बंग्रन Decount (प्रधापार शिवता Decree भारेग्र भावति

Dedicate समर्थन Dedicated समर्थन Deduction हाटमा, इसेनी। निगमम Deed स्टेब्स Defaced coin हिन्न रक

Defaced coin (कुन २६ De facto तसदा, तस्वतः Defaication स्वतः इत्या, स्वामत Defamatory सम्बद्धिक्ष Defaulter प्रमासी, तिवि संक्षामी जाविषद, नम्बीयार

Defeatist attitude प्रात्तवमुक्क भावना Defeate bond भृतिरहा क्षण-पन Defeate expenditure प्रतिरहा व्यव Defeate क्षण्या मुन्दा Defeat पहा, मुनदा

Deficit एस्स, म्यूनता
Deficit अरब अस्थायरत क्षेत्र
Deficit अरब अस्थायरत क्षेत्र
Deficit financing म्यूनाथे-व्यवस्था
Deficed बरिसाधिक
Definion विश्वीति
Defiction बुक्क

Deforestation बननाश्चन

Degeneration any any

Demand अधियाचन, गांव

Deformity (4) Radi

Degenerate अपनाव

Degree এয়
Dehmidlifting plant মাইবালাগুৰ বৰ
Dehmidlifting plant মাইবালাগুৰ বৰ
Behydrated vegetable নিষ্ঠাপ্তৱ ভাছ
Dehydration নিষ্ঠাপ্তৰ
Dekm গ্ৰহণ Dehm গ্ৰহণ Debm গ্ৰহণ De-Jure বিখালৱা; কৰিছাতে Delegated মুখ্য সংবাহাত, সংখানীবিত্ত কিলা ছুলা Delegated মুখ্য

Delete बरमार्जन करमा, विकासमा Delimitation परिप्रोमन Delimotency कर्मवादीनता, स्वराय । Deliverence क्यार, गुव्हि Deliver सामानक्य गुम्हान वेना; शायनाः यव वित राम करते। भावनविदि। सम्बन्ध रिवार्षे Deliver ग्राम Demilitarisation असन्तिक्षण Demobilisation अन्तिक्षण स्थिति । Democratisation अन्तिक्षण Democratisation (त्रञ्जीक्षण Demonstration अवस्था वरपारन Demonstration अवस्था वरपारन Demoninator स्ट De novo अमें शिरों

De novo जये हिर्मेश Dentistry दन्यविदेश्या Departmental वैद्यागिक, विद्यागीय Dependency करीय राज्य Depot म्हणीवेदा वेद्याग Depopulation (प्रवेदीक्षण Deposit व्याप कहता विद्याग Deposit व्याप कहता विद्याग

Deposif current क्वांतर्थं Deposition हार्योक्षा करून Deposition हार्योक्षा करून Deposition हित्रपुर, बनास्त्रा Depreciation गृश्यकार, मृश्यास्त्रा प्रभावतीय, व्यवस्था Depreciation गृश्यकार, मृश्यास्त्रा मृश्यास्त्री प्रभावतीय, Depressed class वृक्षित सर्ग Depression सम्बाद, ब्यापादिक सेन्स्य मेरी Depositive सेंग्रिक करमा

Depth charge until dien, wertend
Deputted reference in defreges
Deputted reference
Deputted reference
Deputted reference
Deroused otto were the first frager
Deroused otto were first frager
Decivative until the first frager
Decoration until the first frager
Decoration until frager
Desoration un

Deserter बकरवानी भवीबा प्रकासक

Design परिकारणा कार्यकर प्यानितिक्का परिका Designate (४) नासीरेखन कराना जामाधियान करवा। मिं पायीरिख, मदीनीय Designation पर्यान कीहरा Designation पर्यान कीहरा Despatich-book प्रेयक पुरुष्ठ Despatich-book प्रेयक पुरुष्ठ Despatich-book प्रेयक प्रयाद Despatich-book प्रेयक प्रयाद Despatich पर्याप्ति Designation पर्याप्ति Designation क्षीरेखन

Details विस्तार, विवरण ज्योरा Detention कारारीभ व्यक्तीय, विरोध निरोधन Deterioration of currency क्यार्थकी व्यवदि Determination पद्मा विश्वय, अवदारणा

155 इर्देश-पु [फा] नह मोहरा वो खाहको छहसे क्वामेक क्षिप बीचमें काया चाता है (शतरंब); मीट वचानेवाका, बायमें मानेवाका, रोकनवासा । इवाँद, इवांतु-पु० [सं०] एक तरहकी कक्की। वि दिसका - प्रक्रिका-की एक तरदका सरवूबा, पूट । इर्वाइक-पुर्वे [सं] मॉर्न्से रहनेवाला बानवर । इस्तीर्-पु॰ [म॰] पद्मदर्शनः दिवानत करना आरेशः। इसांस-पु [४०] मेबनाः पत्र मेबनाः समानः माल गुजारीको इक्द्री रहम (शियत समयपर) छदर वस्तरको भेजना । **इस-वि•** [सं] निदास । इस्स्माम−पु [ब] बारोप समियोग, दोप सगामा। इस्सा -पु॰ एक प्रकारका बीस । इस्मास-५ [म॰] दौरा। बुस्रय−दि० [सं•] गतिहोत । इस्ट-पु [सं] रिसानः इक्वादाः निर्धन व्यक्ति। इसहाक्र-पु [म] मिलाना, बोरना' (दिसी मरेसक्डे) राज्यमें मिटा केना। — इंग्रर—वि विसके साथ गरू गुवारी भाग करनेका स्करारनामा हो। इसदास−व [ज•] ईथरका दिख्में कोई बान बारुना ईश्ररीय प्रेरमा वा सरैछ । इस्ट्रहासी-वि॰ इक्डामसे प्राप्त ईन्यरसे प्रेरित ⊢किताब-भी० ईवर-प्रेरवासे रचित ईवरकी मेबा हुई वर्मपुन्तक। इका-सी [मं•] दे• 'रहा ।~घर~पुपर्वत ।~वर्तं•~ प• दे• 'इकावृत । -कुत-अ व्यक्तिपके भी भागींमेंसे इस्राक्त्र-प् [म] क्याप संतेषः क्याँपारीः पूरे गीवकी बमीदारी रिवासत ! -(क्रे)दार-प्र॰ बमीदारा पूरे भौक्का कमीदार । —क्षत्र — प्रशा इस्टज−पु [म॰] निवारक क्पाय वपवार: विक्रिसा । इसाम ॰ – पु॰ कादा, स्पना – 'ढान्यो न सकाम मालो साहिको इलाम'-म् । इक्षायची – द्यो• एक सर्वदित फरू जिसके सरी दाने वा पीज मसके दवा जादिके काम व्यतं ई। −हामा−पु इलामबीका बाना; प्रौतीन पने बुध इकायकी का बीरतेके धाने। इस्राहिचात-पु॰ (स] अध्यास्मविचा । इसाडी-व [म] (रहाइ-परमेक्टका संदीवनदा क्ष) दे देवर, वा सुदा ! वु देवर, सुवा । ∹लर्चे – धु फन्हर यर्थं अपन्यम् । –गञ्ज-पु॰ अस्तरका चलावा हुआ मन यो वद श्मारत भा? नापनैके काम आता है। −तीवा−म॰ देर्थर दया कर मेरा अध्याय क्षमा कर (रिसी चपन्द्रमेशे थीश करश शमवनी प्रार्थना) !-शास-म्पे रतक्रमेदी राज। इष्टिका-मी [मंग] प्रथी। इमी-सी [मं] कगुप; छोटी सकवार करवात ।

मएसी ।

—सा**ब्ट−शा॰ विवर्तको रो**शनी । इहेक्टिमिटी-बी० (७०) विस्की, विवृद्ध । इस्त्रास−पुदे 'ब्रुकाम । प्रक्रितज्ञा-भी [थ] प्रार्थना विनती, निवेदम । इस्तिफाल्-सी॰ [श॰] ध्वान देना; क्या अनुग्रह ! क्रक्तिसास-पु [अ] निवेदन अर्थ। इस्तिया-पु [श] मुस्तवी दोना रक्षना । इस्स-पु[ल] धान, वानकारी विमा सासा। –(मे) शत्य-पु• साहित्यधान्त्र !--इकाही~पु मध्यारमविधा दर्धन दशाहिमात । इक्षत−सी॰ (अ०] दारण। रोगः दोषः शेवटः दुर्मसन बुराई । अ॰ -पाछना-कोई इंझर, बुरा बादत बादि हमा हेना । इस्कछ⊸पु॰ [र्म•] एक तरहका पक्षी। इल्ला-पु अनक्षर विकलनेवाका छोटा कहा सर्वद । इली-ली॰ एवनेवाने बीक्षेक्के दबाँका बंदेस निक्तनेके बारका करा । इस्बल-प् [सं•] यह तरहकी मछकी। एक देखा। इस्बका-सी [सं०] दे 'दसका। इंद∽व [र्थ] समान सच्छ मानिद। इसास-वा [ल] सुप्र-विकास मीत्र-वैन ! --गाइ--खो॰ पु॰ विकासभवन राग-रंगका स्थान। इता−की [थ॰] रात्रिका अंपकारा रात । **−की** नमाञ्ज-रात(पहले पहर)की अमाब । श्रदााधत-सौ [य॰] प्रकट, प्रसिक करना: प्रचार करना, कैलानाः प्रकाश्चित करनाः छापना । इप्तारत−व्यो [थ०] श्यारा करना; संकेत, सेन। इशारा-पु॰ (व•) संदेत सैन; ग्रुप्त प्रेरमा; हिपी अस्प्रह स्पना। -(१)बाजी-सो॰ दशारे करना, श्रीक्षांसे (बिश्चेषता प्रेमी-प्रेमिकका) संदेत करना । क्वदर्शका-न्यी [भं] दे दर्शका¹। श्चरक~प [म] ग्रेम, चाह, मनुरागः भारतिः। -थवा-तु पर देक को शुंररताके लिए स्यादी जाती दै। −याज्ञ−दि॰ मेमी रसिक् दिक्के । पुरेसा व्यक्ति। −शक्राक्री−प सीक्ष्य, मानव प्रेम मीव वासनायुक्त प्रेम । - इक्कीकी-प्र इंश्वरने प्रेमः वारमा-की परमारमाने विष्यतेको तहपा संबा वासनारहित मेम । इक्सहार-प्र [व] दे॰ 'दरिहदार । इत्तहारी−वि [म] रै 'धीनदारी । इरिनमास इरिनपास-पु (४०) महस्ता प्रस्तित होनाः महस्त्रनाः वर्धेवना । -अंगह-दि उत्तरित कर देनेबाकाः ग्रीबीरपादकः। इदितमालक, इधियासक-पु [भ] भवदाना प्रत-कानाः निरागधी वची बसकानाः वची प्रमहानेका भिन्तका । इदिवयाक्र-५ [व] भीड होनाः यह साम्याः। इमीश इमीप इंहिस, इंहिस~तु [सं] दिल्सा इरितराक−द्र [अ॰] दिर्दर भागा। इहिनसकिया-पु [म] समाहवारी व्यवस्थाने उपारम इंबेन्ट्रिक-दि [मं] दिवलीकाः विवसीकी शक्ति होने के सामनींपर शंयक स्वामित्र । बारा बंबुव ।-पाबर-बु विज्ञहोकी वास्त निवुग्छकि। इतिनदा~पु[भ•] मृरा १५८३३

इस्तिहार-पु॰ [स॰] मसिक्ष करनाः प्रसिद्धः विद्यावनः पूजमा । न्योक्तास-पु॰ नितो चौकके गोहामको सर्व चमिक सुक्या । इस्तिहारी-वि [स] प्रिमका परिवहार निकला दो। विधायित । न्युक्तिस-पु॰ वद करार अपरावो तिसको सर्वार करिकार देवार (प्राय' हनामको सुपनाई साव) निरुका दे।

गिराजारिके छिण शरितकार (आयः हजासको स्वयनार्व सार्व) निरुक्ता हो। इपन-पु (१०) जारिकत मास्त्र नकवान् व्यक्तिः। इपाण-क्षाः (१०) मानताः प्रच्याः। इपन्या-क्षाः (१०) मानताः प्रच्याः। इपन्या-क्षाः (१०) मानताः प्रच्याः। इपन्या-क्षाः (१०) मानवानं कृतालः। इपिका इपीका-क्षाः। (१०) सरकः मृत्र व्यक्तिके मीक्षः क्षां स्वयन्ता-क्षाः।

की एरिस; नामा हूँ-में मानको क्रीनका टेका।
इपित-(४० (४०) व्यक्तिय प्रेरिक; उपेत्रिका ताहा।
इपु-पु (से) मान तीरः प्रेषको एरिस्पा जीनके तथा
विद्वते परिविक्त राज्ये गयो सीधी रेखा (क्या)।
-कार-पु० नाम ननानेनका। -घर-पु तीरका स्थान।
सीवा। -चि-पु० प्रारा। -घळ-पु० तीरको सान,
सीरको पर्यक्षी हुरी। -धुव्या-मी एक पीचा, सर
पुष्पा। -साध-पु० भवनको स्वेत्या स्टर्सर एक सार

रै पुट । इपुच्या-को [मं॰] मिहरिदाना, प्रार्थना बदना । इपुमान्(मद)-पु॰ [सं] तीरवाद । इपुपद-पु [सं] किलेक प्राप्तपर रही कानेवाली एक

बना हुमा। न्यामन्तु भीवै रसमा विकासाः। न्यान्तु गैरीने बना हुमा राजा। इष्टापित-मा [भेन] बारीका येक्षा बाज वरमा बाजित सारीके जनुरू दो। रिप्ता पानाका क्षेता। इष्टाप्त-तु [सं] पट और पूर्व कमेली बसना (वृत्ते-

हृद्धात्व द्वारामा स्वीरं नजवान वाल कमकाना कहरता करता भारि। इहि—भी तिने हम्पा चाहा निवेदन निर्मेण्या मात न्यमु—च मस्ति चया चाह । इस्य-च (तेन) दस्या चाह। इस्य-च (तेन) दस्या चाह।

हृदय-तु [सं] बसन कमु ।

वृष्य-पु॰ (सं॰) आध्यातिमद् गुन । वृष्यनीब-पु (सं) वाल्प्ये तीत । वृष्यसम, वृष्यस-पु॰ (सं॰) असुष् । वृष्यास-पु॰ (सं॰) यनव ; सोराज ।

हस-एव वह का विभक्तिक कार्य प्रवेशनी कार्यसम् कृपा इसकेप्र-व शास्त्रक्तिक क्ष्य्युक्टर । इसकेप्रिया-पुरु मिक्का एक प्रभिन्न क्षर और बंदरग्रह। इसपर्यक्त-पुरु सूर्या वास्त्र नर्या । इसपर्यक-पुरु कहा और वश्चित कीहा कीकार।

इसपाल-पु॰ कुष और विश्व और कीकार । इससाहिक-पु एक प्रधापतार राजा वो अर्थमार मारे मीमी दिवा वाला है। इससाहिक-पु॰ [वव॰] रामदोग्डे पुत्र । इससाहिक-पु॰ [वव॰] रामदोग्डे पुत्र । इससाहिक-पु॰ [वव॰] यानुव । इससाहिक-पु॰ [वव॰] यानुव । इससाहिक-पु॰ [वव॰] यानुव । इससाहिक-पु॰ [वव॰] यानुव । इससाहिक-पु॰ विश्व हो। स्वा वो सार्योको राव क्याप्रीके वनावा बाया है।

इसराजिन्द्र पृथ्व वि देशकामके समुतार वह प्रदेशक वो कामकार्यामच्ये देश यह (तुप्दी, मर्राह्मर) देश्य भीर विश्वके प्रकार वर प्रतामेशे चीरित मानी दूर वर्ष स्थार विश्वके प्रकार वामकेशे चीरित मानी दूर वर्ष स्थार विश्वके प्रकार वामकेशे चीरित हो वर्षना क्रमरार पुष्ठ (वि) चीराज हरू कामक क्ष्मरात पुष्ठ (वि) चीराज हरू कामक क्ष्मरात क्षमा हुंचा सिंद हो वर्षना क्षमा हुंचा स्थार क्षमा हुंचा हुंचा हुंचा हुंचा क्षमा हुंचा ह

हनारोक्ष है देश ।
इस्तारक-पु वि] पण्ड राज काना क्रांतार ।
इस्तारक-पु वि] पण्ड राज काना क्रांतार ।
इस्तारक-पु वि] निराज पण्डा गर्भसात ।
इस्ता-पु वि] निराज पण्डा गर्भसात ।
इस्ता-पु वि] प्रानीत प्राना ग्रीवा पण्डा करवेडे
वाद कहारी पृथ्वि | प्रानीत प्राना ग्रीवा पण्डा । (पुश्चि ।
वाद कहारी पृथ्वि | प्रानीत प्राना । पुण्डा ।

श्रीमा ।

ंबरला; रक्तका रहेरियम (देना, लना) । इसहाक्र−य॰ (थ॰) दल्लास आ(८ धर्मो≩ वद वैर्गपर वे

हरिशत्तकाध्य-पुर्वि] कवरामी, रशागतक तिर जाने काशाः स्वारमः हरिशतकाध्य-पुर्वि | रणाः निश्वनः भेदरक्षी रहायाः स्वारोगताः । वरिशतास्यान् (णः) स्वादकी यानेनाः करिशासः

इरिनश्रमाल−पु॰ (थ] रि दरनेमास ।

र्वः बदारी मानिकः । दुरिसम्प्रतारी-पि॰ भि] सम्मान्द्रनशमा न्याची, स्वर्ते ब्राल्कः ।-बेदोबस्य-पु॰ वजीत्रसा प्रदः भीवस्य दिसमें बालुगुनारी सराकः लिए निक्षिण हो जाती है। सन् भेरीन Determinist-Distillation Determinist frafaunt Deterrent sentence निवादक एक, विशोधक एक Detrimental wiveauti Devaluation अवस्थान Development expenses than sur Deviate दिशक्ति श्रीमा Deviation frank Devolution of power aftenness season Devolve बाबक्रमण होना सीपना क्रिया का पहला Diagnosis firms Disgonal fluor Disgram रेलाविश्र Dieletical meterialism dumas alterna-Dialogue क्योपस्थल Diametre wile Diamond jubilee give widt Diarchy है बजासक Diary विनर्पनी, हैमंदिनी Dictation आहेच रमका, मरिकेस Dictator selectors Dictatorabip अधिनाधक्यातः अधिनावक्यंगः अपि-नायसम्ब Didactics Suppres Dichard बहुद हुदावहाँ (श्वमीविक) Dictics some som Differential duty शायेश कर, नेरक कर Diffuse दिस्तारित करणा, प्रसारित करका दिन्दीर्ण वा प्रधेपित करका Digest संक्रिम संबद Dilemma whitee unuties Diluvial carefies Diminishing भावासीः शासमान Diminutive section अपनानीपण Dinnet सामग्रह, संध्य धीवन Diplomacy क्रमीति राजनग Perfere anolaid Direct (bits well Direct election प्राथस वियोगम Direction falls Directive principles (aless fewers Directorate विश्वाय Director अधिकार्क लेपायक विदेशक Director General Commercial Intelligence and Sociation पाणिशिक सम्मांक विधानके प्रपान

संवाहक

संवादक

Directory (Atthen

Duabilite freisen

Director Managing sawdows

Director of Public Education analysis

Disabled (haring Disagreement augusto Disapprobation aftifice, suppose Disapproved विश्वमीरिक Disarmament farefrage Disarmed (treature Disband सेनार्थन Disbursing officer Hughes street Disbursement आवधित वितरण Dachargo बन्मीबनः परिशोधमा पासना साव Discharge of functions प्रशोद्ध निर्वहर Discipline अनुसासम Discounces disple ses Discord महारेद, बैमाब, पन, क्यारा Discordant वैमलसूचक निस्तर Discount, At a niter Discovery appress Discrepancy विश्वता, संतरा समिति Discretion erfere Discretionary विषयापीमा -- power विवेदान्ति Discrimination विमेशकरण निमेद Discussion वर्शकीयन, पर्या Disease, Venereal रहिन रोग, शैन रोग Dishonesty sends Dishopout menter Dishonoured cheque सवास्त भवारेख Disinfectant elega and Disintegration from Page Disinterested with farrie Disloyalty stuffer Damissai परकातिः समान्यम Dispancy असमता असमानवा Dispensary (शराष्ट्र) भीवनामन Disperse (testa Displaced विश्वापित Displacement विस्वापना स्वान-सुवि दशन Disposal जिल्लाहक समापक नियहाना Disposition मनोकृष्ठि, यनोमानः श्रीका विक्रव Disprove असरव प्रमाचित करना, धंडम करमा Dispute fitte Disqualification (नेवोन्पदा, जनरता Discoullfied was Disqualify वियोग्य पता देवा, अनद्देशप Dimection Graduat Dissemination dates Dissent fenfe (werenfe) Dassolution विश्ववत विश्ववेच भीग होना सभापन Dissonant adaret Distillary व्यक्तिसावची आसवती Distillation आमहारण, आहरण

Immersion प्रवाहा ससानः दुवीमा, निमम्बस Immigrant अध्यवासी I labout बामवासी मधिक Immature suffrag Immigration बाग्रहास (आवास) Imminent willia Immoral walker Immovable property अवस संविध, स्वावर संविध Immunity 3-He Impact there I mpartulity निष्यक्षता Impeach प्रामिकीय क्याना Impeschment महाभिक्षेप, बामियोग imperative Mood बाहाशैनियम Imperial सामास्य संबंधी। साही राजकीय I preference साम्रास्थगत अविमान्यता Imperialism सामान्यवाद Impersonation उपन्यक्ति Implement n. svere Implement y अधिपृति करना, अमक करनाः कार्य-न्दित करवा Implicate साहिए दरनाः पँसावा Implication निहितान Implied ध्वनितः अक्षितः ग्राभित Import sileid Import duty बाबाक्युक्ड Importer बाबादस्ती, बाबादस Impose आरोपित करना कगानाः छापते समस टाइएडे पृष्टीका शिक्सीका क्षेत्र करना। 🌣 प्राकृत I restriction निर्देश बनाना Imposition withthe Impost at Impounding रोवन (रोक रखना और रखना) Impregneted वर्मित Impregnation त्रभाषान Imprest अधिम देव; अम्बन L account देशगीका दिसान Imprison world the Imprisonment दारावास व्यरारोध Improved sawa Improvement trust gere mais Impulse अवधीत्या प्रेरका, आहेत Impute अध्यारोवित सरना Impuntion sesigal sesigid Imputed saine anaigiga ded. In abeyance आस्थिय, निर्मारत रिवनिमें In accordance with law leftle seguit landmissible squa Insdrettence ब्रह्मबरमका भनवपायका प्रधाद Inalienable अवस्तांतर्वरक्षेत्र असंबाद्ध

Inalienability of sovereignty **अहरतांतरकर**मीयता In anticipation margiff Impropriate and a Furn noite united In-camera gg Incapacity sensing Incurceration कारारोवन, काएवास Incarnation event Incendiary bomb हाइड प्रस्कोद Incentive नि॰ वर्षेत्रका पु प्रधेवन In-charge quich, siftige Incidence of taxation extrapa Incident seig Incidental प्रासंबिक सानुवृधिक in-circle संवर्षकः संवर्षत क्ल Incition क्लंन करन Incice उत्तीवत करमा Inclement weather अभिन्यामी आहे. महिहर Inclination मुखाब, वरि Inclusion संकर्णन Inclusive france Income, National enter any Гасоте-сах апрак Income-tax officer आक्दर अभिग्रारी Income, uncarned welfag with Incompatible समस्य, संतक्षिक्स Incompetency बबोम्बदा अध्यक्त Incongruent with files Inconsistency weight Inconsistent senter Incontrovertible अपन्तीन निविवाद Inconvertible at (at incorporate (ए) विकासक निगमित स्त्या Incorporated (adj) शमानिक नियमिका अनेमानिक Incorporation company Author ners Incorporation (1994) Increment who Incumbent (avie I, of an office quyell Incumbrance steam Incurable असाच्य, अविदिह्द Incurred क्याह, प्राप्त बढावर, मद Indebted wet Indebtedness ऋगवस्यता Pyfoly nolisadinmahal Indemnify while street Indemnity श्राविष्ट्रिंत - bond श्राविष्ट्र प्रतिशास Indemnay bill afterft fere

1012 Distilled water श्रीशतादित अस, श्रासून अक Distinct fere Distinction विशेष बोग्वता Distress warrant würgengt willige Distribution विद्याल विभावन District बिका, मंच्छा प्रदेश, धन District Board & board District Magistrate familia Ditto atq Divergent weuth, wrenth, walas, falus feut-गाभी Divergence अपसरण, अपनित्रा Diversion feediges fees-Dividend कार्याम् भारत Divisible सास्य सागाई Division भागा विमादन विकास प्रमेरक प्रमाहा पम (शहिमी = जिगह) Divisional griefes, unifes Division bell विमासन वेश Divorce विकास विकास करते हैं स्थान, प्रवास करते हैं एव Dock मीनिनंद्र जहाजी माक्यार नीरी। करवरा Doctrine पामिक विकास मह

Document man Documentary film प्रतेख विश्व प्रकरिय Documentary proof हिस्सित प्रमाम Domestic गृह्य नाहरूव वरेख Domestic science लाईरव्य-विश्वान गृहशास Domicile with Domicile certificate अधिवासी प्रमासक

Domiciled userett Dominion अधिरास्य स्वतंत्र उपनिवेश Donation दान

Donce प्रतिगृहीता हानगृहीता Dogge city

Dormant सुप्त, भनु र्पृत Dormatory Squasier Double हिन्नमा इ प्रतिकृप Double plough gasti 40

Double member constituency fauxen-finish श्रेष

Double shift and und Doubles gruet ladies, - nigel dane Draft nieri utilti gel Draftsman प्रारूपकारा माथवित्रकार Drain निगम; वाकी; बत्नारण Drainage scheme अक्रोत्सारण बीजना Draught cattle भारवाही (आराक्यी) पशु

Datace भाषाची। मुगतानकर्श Drawer बाह्यी दुवीकार

Dressing मरदमरकोः प्रतिसारक, कृष्ट्रे पद्यन्ताः Educationist विश्वाविद्येषत् विद्यानिद्यारम्, विश्वावादाः

-room परिपासस्य Dropper (क्षेत्रपातम

Drought gur sangle Dry cleaning निर्मक पुरुष Doulism atter

Ductility areas Duck the stat (Bake)

Duc प्राप्ता देवा प्रयुक्त, वधारत् Duct दोवाना

Dug out भूयर्थ कोइए Duly Silven

Dummy समृतेका अंह, साँचा Dump, Ammunition dier steam be

Dumping of goods ब्रह्मभोका राधिपातमा विदेखों" में माण भिष्क सस्ता नेपना Duplicate malait

Duplicate copy facte utalete Duress sem unal

Daring the pleasure of guarde

Dustbin wert (wert-gei, grent), ment

पाच करेकी रोक्सी Dutiable greufen greue

Duty शस्त्र क्लंब Duty On staye

Dyarchy av titte Dynamic गविश्रीक

Dynamics वृतिविद्याम Dynamite wolur

r.

Earmarked 1905 tille Earned leave with un

Parmett money saint, trainit, til Essement, Right of मुविवाधिकार, गमन-निर्वमका

क्लिए स्पापिदार Ebullition क्ल्ब्यून

Eccentricity argainst une, per Ecclesiastical wifes, we down Ecolog प्रतिष्यमम

Economic advisor wiffin dwmner Economic blocksdo anfine unadiv

Economic dislocation wifes wearener Economy अर्थन्यवस्थाः भितन्यविद्या

Economy committee ब्बन समिति

Economy Planned पोशनायुध्य अवेशदि Edible urg

Edict रावतेत्र, राववीच्या

Edition Evening ent the (Editorial संस्कृति (दि० सं० दोनोंगे)

Education Expansion scheme दिशामसार-वीयना

Indent (n-) बर्गु-प्रेषणादेश, मॉबपणः पादर्प-वृद्धि, पादर्व प्रसाम

Indent (v) वस्तु मैयाना

Indenture प्रतिदापत्र Indentured labour प्रतिदापस् प्रसिद्धः अनुवद्धः प्रसिद्धः Independent स्त्रीयः अद्रकीयः

Indeterminate अनिपोरित , sentence अनिपोरित वंड

Indexeard निर्देशक पत्र Index Goger प्रदेशिनी, गर्नेनी, देखिनी

Indexing गुनीवस करमा

Index number सुरद सूचसाड Index of production उत्पादन सूचमांड, उत्पादन

निर्देशकोड स

India Act Govt of बारक-धासनियान

India office मार्व मंत्री-दार्शक्य Indian administrative service मारतीय महास्थ-

सेवा, भारतीय प्रशासन विभाग

Indian Arms Act भारतीय अमस्यान Indian Council of Agricultural Research

भारतीय ऋषि-भन्तर्सवान-परिषद्

Indian Penal Code wirdig gedient

Indian Police Service मारतीय भारती थेवा, भार स्वेद पश्चित दिमान

Indians overseas प्रवासी भारतीय

Indianization medicates

Indict with sen

Indigenous देवी। इसक Indirect tax अग्रत्यस्

Induces election प्रश्न मिनोचन

Inducriminate अविवदी; विभेदबीन अंभार्तुव

Indispensable अपरिदार्थ Indisputable निविवास

Individualism व्यक्तियाच्याः Individualist व्यक्तियाच्याः व्यक्तियाची

Individualist व्यक्तितारी व्यक्तितारी Individuality व्यक्तित्व विशिव्यत

rediate pig salges (4)3

Indoor patient म रेड रोगी श्रीवासी रोगी Indoorsement (See Endorsement) सङ्ग्राजा

Induction अनुगमा अपगडम (विषय्का)

Inductive system बाबमन प्रवाही In due course स्थासमय

Industrial भीचोरिङ

Industrial Chemist बीचागिक रसावनय Industrial Court बीचोगिक स्वाबाक्य

Industrial data औद्योगित्र स्टब्स् Industrial depression औद्योगिक मही

Industrial dispute बीचोभिक विवास Industrial efficiency शीचोधिक दछ्या Industrial expansion शीचोधिक प्रसार I housing बीपोपिस वास स्ववस्था I Truce बीचाबिक प्रांतिसम्बद्धीता

Industrialisation शोधीविक्यसम् Industrialist स्थापकी

lugareth Ped श्रावादातांव' समित क्यांच

Inefficiency अर्ध्या Ineligible अपात्र, अपोध्य, अरापीय Ineligibility अपात्रता

Inequality असमानवा Inequitable स्वाव-दिवस

Inequity Ayant
Inevitable sufferio

Inevitable payments भवरिद्वाय प्रगतान Inexpedient शहरदायित अनुपन्त

Infant mortality क्षिष्ठ मर्ब Infanticide (उन्न-दस्या

Infantile paralysis (राष्ट्र-प्रशानात Infantry पेरू सेना, परावि

Infection district

Inference निष्यं, सम्बद्धार, समुविति

Inferior Court शिम्ब न्यायास्य Inferior servant शिम्म क्रमंत्रारी अवर सेयक

Inferiority complex होन मनोभाव, कर्युमन्वदा Infinite कवंदा असीम

Infirmacy क्यांक्य अस्तताक Infirmity मिर्वेकता कमयोरी Inflammable क्यक्तश्लेक

Totlammatory agas

Inflation garesife, garifeent

Inflationary trend सुद्रारकोतिकारी मश्ची सुद्रा-दिनवाम्पि Inflatible सनाम्ब

Inflexible constitution अवास्य समितान

Influence undue segue pare

Informal behavious अमीववादिक स्ववहार

Informal meeting अवशापिक संदर्भ अनीपकारिक

देख Informant सूच्य

Information सूचमाः बानकारी

Information department स्वना-विभाग

Information minister एवना संशो Information On point of सुबनार

Informer मेरिया Infringe सस्बंदन बर्गा

Infringe प्रस्थेषण करला Infringement सक्तरंग व्यापात

Ingenious पद्ध चतुरः पद्भवापूर्व Ingenius पद्भवा चार्व

Ingot fee

Effective, To be प्रमानी होना Effects sigft Efficiency without, ever Efficiency but against Egress वर्षे जाता तिर्यमन, निष्क्रमव Ejectment निष्कासन, बेरखडी Elastic Reference Election विशेषन Election Bye उपनिशीयन Election campaign विशेषन कांद्रोकन Election commissioner तिवांत्रम बाह्यस Election malpractices figure square Election petition शिशंचन प्राथंबायक, विशंचन বাবিতা Election returns finima-laura Election tectics विशेषसकी पास Election-tribunal निर्वाचन-अविकरन Electoral college facing the Electoral roll fraiss munch fraiss and Electorate first warm Electric generator विमृत् विमन Electric mains विश्वत असंबादी विवयक्ति सुबब चार Electrical बैच्छिक Electrified Agray Electron (1919 Electrocution विज्ञानी पाँची विक्रपात Electrometer वियुग्मापी Electroscope विवर शंक वेत्र Element तस्य भृतः संख Elementary बार्शिक, वारिक श्रृक Elevans carries Pliciting opinion सम्मति मास स्रता, राव बानना Eligible tra, arais Eliminating street, güste Hipse and go Elliptical distribut Elocation entress Elocation competition क्यान प्रविद्योगिया Plucidation evaluers femiliars Emencipation स्टार् विमीपन Embackation with stat Embarco चोताविरोक्त प्रविक्ष Embassy दुवाबासः राजवीत्व Embezziement मोधम, यवन, अएमोय, अपहार Embossed उपरा तथा Embryo we Embryology अवश्विकान, गर्भविकान Emergency आर्द्धास्त्रक सेकाकान, नापात Emergency area आपात केन

Emergency commission anythis wisher

Emergency order आस्तिस असेश Emergency meeting arrest afreau Emergency, State of come fteld ٤ Emergency Reserve destroy Hmiguent बरावासी (प्रवासी) Emigration aware Emissory usua Emmension AND WHIT Emoluments प्रकास, उपक्रियाँ Emotional appare Hmpiricism अनुमृद्धिका, अनुमक्तर Employed ange Employee सेवा, सर्मवारी Employees State Insurance Act बर्मचारी येथ कान्म Employer सेवाबोडक नियोक्क Employer's liability Bereine amtenfen Employment सेवानियोयस तियोगम Employment exchange speciate test the वीववाच्या श्रेवाबीवनाच्यः वियोजनाच्य Emporium enference Emulation ent Erect सहितिबस देशाना <u> Hosetment विशायन, व्यथिनियमन</u> Hoblock सामृदिक क्यसे, समृद्याः गुरुका गुर, रक्स Boclave परिषद श्याग, श्रेतर्गत स्थान Boolosed elifer eftiles egile Baclosure स्वेहित वरमः मेरा स्वेहम r [Encumberance stautest, swift Encumbered बारमस्त्र, अवदस्त Encyclopaedia (444) Endomement swift **Fodorsed** variate Endowment बाधन वर्गस Endowment policy बंदोबसी वीमापन Energy swit with Enforcement needs Engagement सम्बद्धानः विवादनिक्षया धेवड् Engine बंग (अम Engineer व्यायका, यत्रविद्, शंत्रीनिवर Engineering यंग्रहास पर्यास्प Engineering, industry बनोदीन Rograve 8249 4741 Buima बरित Enlargement परिवर्तन Enquer aftern Enquiry office afterning, going that Enrolment for AINSTER MES, THER THE Ensign throws

Ingredient siaze, sialaia Ingress जामा, प्रवेश Inhabitant fineli

Inherent सहस्र, जामसावः संवर्तिहित Inherent disease पैत्करोग जन्मव ब्याचि

Inherent power अंदर्शिक क्रक Inherent right बन्धव अधिकार Inherit ere wan

Inheritance are few Inheritance, Law of applete

Inheritance, Right of equipment Inheritance tax every, freest

In his discretion स्वविकेश Inhuman समान्दिक Initialied wreake

Initial pay बार्गिक नेशन Initials संश्विम इस्ताहर, नामके शाक्क्षुर

Initiate समयात का प्रारंभ करणा, उपस्था करवा Initiative पहुन, प्रेरमा। अभिकास पहुनकारी Initiative and referendum सक्तम और समन्दिस

Injection सुचिवेषन सूर्व हेना। सूर्व ('छेला'के साथ): नेपमोपपारः ग्रुपीविक्तिस Infunction निरोपाडा

Injuction Wat of निरोधाक्षा, समावेश Inking das, gare

Inland शंतरें तीय Inland revenue श्रेत्रेशीय काय Inland trade अंतर्वेद्धीय व्यापार Inland waterways अंतर्देशीय अक्रफ्रे

Innermost statest Inchaga पाकी Innocent मिरीह निरक्शम निकास Innocuous जनस्कारी बहानिकर Innovation आमिनक परिकान Innuendo संस्थेति, समझेति, परायोजि Inoculation that wellen

In open court लुकी अव्यक्तिये Inoperative अप्रयुक्त, अपन्त्री Inopportune aguifas In order विवय-संवतः निवयानुकृषः वधारम

Inordinate delay seefer ferr In person see

In partial modification आहिन मंश्रापण करते हुए

In query प्रस्तराच्य विश्वयं Inquest सदाब-पृत्यु-दिवाहया Inquiry जोच चरित्रक्ष वरित्रका

Inquisition स्वातास्थिक अन्यवा Inscribed संबंधिनव मध्यम्ब Inscription नेत्रबंधन अंतर्कन Insecucido श्रेरमायका श्रीरनायन

Insemination कर्न रोड्स Insett effefte aren

Insertion प्रकासमा समित्रेध Insignia राजांक राजांपका परवृत्तक रिव Insoluble with Insolvency दिवासिकाएक कसंदर्धता

Insolvent दिवाकिया श्रीवनासम Insomnia समित्ररीय Inspection (1044

Inspector father Inspector-General of Police steam are निरीक्षक भारती महानिरीक्षक Inspectorate निरोधक कार्याच्य, विरोधकार Inspiration हैवी-मेरणा अंत मेरणा

installation अविधारम, प्रतिधारम Jastalment प्रभाग किस्त, एंक्सि, स्पंत Instinct सहब प्रवृत्ति, बांधरिक मेर्या Instinctive साहित्य Institute बानमंदिर; प्रतिकाम; ४ वानर दरवा है। Institution dons an

Inspired standito, unita

Instruction बन्देस, (निर्देश) दिसा Instrument विकेता क्रियता करण करणात Instrumental (अक्षांट) शावसंगीय Instrument of Accession समिक्स्सिक of divorce शिवलक्षिकोस-सम्बद्ध

Instrument of instructions (1884) Insubordination अविनयः आधा-भंग Insulae लंडुवित संदोवंहरवा होगिड (-कार्स्) Insulation विश्ववाहन, अवरोपन

Insulator (atimes, servish In supersession of HATCH AT CE AND IN Insurance that Insurance, Fire sur-har Insurance, Life भीवम-नीमा

Insurance policy शेमान्यम Insurgency naudia Insurrection way? Intact uften, uffen bielt Integration quarte Integrity अखबताः रेमानदारीः स्वादधीनता

Intellectualism garage Intelligence 3ft Intelligence department शुक्तिन विकास Intelligence test gfrechen Intelligentia ef calai ed

Intensive cultivation and street and

Intercede मध्यस्य बणवा, विवयदं सहया Intercept बीचमें रोड हेना Inter-dependent and parties

Entenic राष्ट्रमेची, गुररंदी Entertainment tax usitue.

Enthralment awas

Enticement परिकाधन, परिमोधन Entomology althura

Entrance fce gir-ties Entrepreneur aumit

Eater Haft

Enumerated प्रमृतिश

Enunciation start Environment states

Envoy 44

Epic natura Epidemic nervit

Epigraph (bution

Epitaph समाधि क्य

Equal protection of laws विविधेहा समान संस्थान

Equation exists Equator भूमध्य रेखा, श्विन्त् रेखा

Bjulangular polygon समामक्षेणिक बहुनुब

Equisteral समानम्बिक Equilibrium साम्य, साम्यावस्था

Equinos araa

Equipment सुखा साब-सुखा साब-सामान Boultable raper (augus)

Equitable tax म्यायसंबद कर Equity न्यादमायनाः साम्ब

Equivalent प्रशंदवाकी श्रमातार्थका वरावरा क पर्याव

Era प्रका संबद्ध

Ecase उद्यर्गमा अवमर्गम

Ensures ages

Erosion sale Erstun Rata

Error Gray

Errors and omissions कोप-विभाग, भूकन्क

Escort एक्टबर्मा मार्ग एक्ट Escort vessel (195 पीव

Espionage चारकां चारव्यवस्था Essential service परमानवनक धेनाप

Establish स्थापित करना

Establishment प्रविधान। स्वापना Establishment charges स्थापना प्रमार, स्थादमञ्जू

Estate दिवस सम्पद्म भूसेपछि

Estimates प्राम्बनन, बनुमान Estimated cost प्राव्यक्ति (अनुवानित) परिव्यन

Eternal भारतक विशंतन Ether wenn gau at Ethnology uniditate

Evacuation (August Evacues Guala

Evacues property निष्मांतीन पंपति Evaporation वाश्रीकरण, उदबाश्यन

Evasion against

Evasion of tax artistics Lyen distribution makes

Eviction अविनिष्कासन

Evidence 1914

Evidence, Circumstantial क्यांगानमेव सार्व

Evidence Heartay अवातुम्ब साह्य

Evolution and the Evolutionary utilities

Evolved at later Exaction saights

Exaggerated statisti

Exaggeration श्रातिम्बोक्ति श्रातिरंबन

Examination Hall एरोझामदन, परीझासप Examinee परीक्षित, परीक्षाची

Excavation गुदार, शस्त्रनम

Except as provided ध्याधिक विदिश्व, रहमें

दिवे क्ये सर्वश्रीकी धोषकर Rixcess profit ध्यह स्रविरिश्त काम-कर

Exchange Bank of वितियम अविकोष

Pachange, Favourable अनुसूक विभिन्न Exchange of opinion विचार-विनिमव

Exchange, Telephone इ रवाची-विकास-देह Exchequet trace wellening fen

Excise duty sturner Excise Commissioner Central बॅट्रीव सरपादम

का भावत

Excise department जानकारी नियान Excise duty states.

Excluded Area अपन्तित क्षेप

Exclusion words Facinaive unifer ware

Exclusive jurisdiction सनम्ब क्षेत्राविकार

Execution विष्यास्य, स्करती, वामीका पूरा करवा।

क्रीसी

Executed सिष्यायिक, निष्यक्त मानगरिक Executive कार्यकारियो, वार्यपाकिका

Executive authority धविद्यासी अविद्यारी Executor निष्पादक, विशंदकः रिवयग्राकः

Recordion #1

Exequatur वाधिक्य बृहको राजमान्वता बेना Exercise of right अधिकारका अपनीय

Exhibit peffee ver Exhibition uguist, nursu

Ent alleinware

Exodus afteina Ex-officio uta

Expanding (university) serti ([44[44]44]

Interest स्वात्र
Interest Compound सूर्रस्य, फड्डिंग स्वात्र
Interest, vested निहित्त सार्वे
Interion केरिस, स्ववद्यी
Interion, Minister of the मृहयंथी, स्वरेशभंगे
Internordiary उपस्थापन क्षात्र कार्याः स्वरंश

Intern श्रेव(विड करला, स्थानकक करला, जनसर्व करला Internal अर्विदेख Internal district स्थाद दिवब Internal district स्थादिक स्थावि Internal regulation सम्बद्धिक स्थितक International अंतरराष्ट्रीय सम्बद्धिक International Conference अंतरराष्ट्रीय सम्बद्धिक International first समझ समुश्चित सम्बद्धिक

स्वानवेष Interpolation प्रस्तोचर Interpose अंतरस्वाचन, शेवने रखना Interpote आदमा करना अर्थ करना Interpretation ब्याइमा (निर्नेयन अर्थापना अर्थ

Interpreter बुमाचिया Inter regaum रावसिद्दासन वन दिन्छ ही Interrex रावमधिनिष Interrorate प्रस्म ब्रह्मा

Interview Stations Resident Interview Stations:

Intimation (किसिन) स्वमा Intimidate बमझे देना, भवनीय बस्बा In toto पूर्वतवा

Introduction appear
Introduction appear
Introduction

Intra wires estrational Intricate estra

Intrigue बुरक्तिनंति Intrinsic क्योग्य वास्तिक मुख्य वास्तविक मुख्य

Introduce प्रस्तुत करना, पुरस्थापित करमा। परिषय करावा

Introduction, Letter of बरियक्य पर Intrusion असाहत प्रवेश Intuition क्षेत्रकोन, संदर्भेष

In unequivocal terms सर्वित्व सन्तीमें

Invalid अमान्यः असमर्थ Invalidity pension असमर्थता निवृधिनेतम Inventory चेत्रीय स्था, समान स्था Inverse order क्षित्रमम Inversion विकोमता प्रतिकोमीकरण Invest यूरी क्याना Invest यूरी क्याना

Investiture क्षमिषेद्ध Investment पूँचा क्षमानाः भनविभिषोग Invidious द्वेषमनद्

Invigilator (निर्देश In vogue प्रचित्र Invoice संग्रह

Involve श्रेष्ठांसम् Involved श्रेष्ठांस्त, श्रेष्ठमंत्र Ipso facto बनार्थतः , सम्बद्धाः

Iron-age कोहसुग Iron cursin कोहपट, कोह-दोगर, कोह-कागरक

Iron ore sell spill

Irrecoverable अप्रस्तादेव Irredeemble अमोचनीय, संशोधन Irrecolar सनिवसित

Irrelevant असंबत अलासीम्ब Irrigation मृश्चित्रम्, सिंबार्वे Isolate एक्स्फोस्ट्रम्, एक्स् करना

Isolationist policy कुन्द्रालाची मीदि Issuo समस्याः निर्देशः वास्तिवयः वास्त्यः, विवासविवय Issuo department निर्देश-विधाग

Issue price विगय-पूज्य Issues (n) वाददेश Isthmus स्वक-वगरमान्य Item सद, विषय

items on the agenda कार्यंत्रज्ञेका विश्वकर्म

Items on the skenes states

Jaggery गुरू Jail कारावार Jailor कारावारिक कारावाक Jammed जवस्त्र (भागे)। कक्ष यदा (दंघ, पुरवा)

Job करना नीकरी Jobbers केंद्रसार

Join कार्य महत्त्व का कारम्य करना Joining time कार्य-महत्त्वकाक

Joint संबुद्ध Joint account संबुद्ध देखा

Joint and several responsibility tiges and

Joint capital संबुद्ध वृंद्धा Joint electorate संबुद्ध निवीचक वर्ष Expansion gent
Expansion of credit gent-gent

Ex-parte quiquit

Expatriation स्वरेश-विरमारण

Expedient जनपद, समगोवित, (बांडनीव) Expedite चीप्रता दश्या

Expedition strape

Expel भिष्यासित करना

Expenditure, Contingent सन्भावा व्यव

Expenditure charge on revenue राजरवपर

निहित (मारित) स्मय

Expenditure Side शास्त्रे आव Expenditure, Recurring शास्त्री ज्या

Expenditure, Recurring बाबचा व्य Experiment प्रयोगः परीक्षण

Experiment सरीना परीक्षण Experimental मानोगिका शंपरीक्ष

p farm संपरीवय मधीय Post office मबीच सम्बद्ध

Post office प्रवीप बस्कवर Expert committee विश्वस्य-समिति, विशेवह समिति

Expert committee (बश्चस्य-श्रामास, स्व Expiration ब्रह्मान

Expiry समाप्ति अवसान

Explanation equals equipmen

Explanation To demand agis que acqu

Explanatory statement भ्यास्त्रप्रसम्बद्धाः स्थल Exploitation श्लोका

Exploited siles

Exploiter श्लोक्स Exploration समन्देशक

Exploration स्थानेका Explosion काला, विस्कीट

Explosive विरक्षीरका विरक्षीरक पदार्थ Export Bank तिर्वास अधिकीय

Export trade निर्वात व्यापार Exporter निर्वातक

Exposition fight
Express equ; sugg; v sees scal; -delivery

श्रीज्ञार्थेण Express letter श्राह्मण

Expressive wine, solvedne Exprepriate defeates

Expulsion अपसारम, विश्वासन । Expunge विश्वास देखा, सम्माबित कर देना अनापुर

Extembora speech salen (stada) sidat

elletta भावन राजाक राजाक (ज Extending bill विरुक्ति विवेदक

Extension विस्तार Extent विस्तार Extern विश्वसिन, नहिंग्डेक्ब

External trade दास आगार External trade दास आगार Extloction निर्माण कारोरा कोय

Extination argus unus

Extract engle, fires

Extertion until anua

Extradite अवराजीको मार्थाय करना Extradition वृद्धि-प्रत्येश कर्यक Extraordinary charge असुरवारण प्रवार

Extraordinary charge aggraph Extra-territorial transparing

Extra-territorial transparing

Extreme structure aggraphs

Extremist ब्रम्बंबी Exuberance भारति Eye withers प्रसम्बद्धी, बाह्युव बवाद

Eye जोशक्त प्रस्तुत्वी, बहाद बदाद F Babileated evidence ग्या द्वार (अव-एक्स) साद

Fabrication प्रस्तवमा F.A O साथ स्था प्रवेदमहन Face value बहित मृख

ति Facility सुविधा, श्रीकर्ष श्रीयम्ब Facalitaile अनुविधि Fact तथा

Facts and figures तस्य और वंद Factory क्योगास्य निर्माण्याला निर्माणे सरकारा Factory Act निर्माणी-क्यिनियम

Factory Acc हिमानी-बरिस्बर Factory system तियांजी-बरिस्बर Factory system तियांजी-बदाद Faculty विचायीच कामापस्त्री निकास

Fair dealing सम्बद्धाः न्यान्य भक्ताः Pair-wages committee त्रित-वेतन समिति Fair Price अंचत मूख Fair accompli सित्र वस्ताः सिक्र कार्य

Faith say, feaths feet wh

Patch and credit feath dai near

Faithfully yours untils

Fallocy (until) beautiful

Fallocy tand segan if it, and if it

Dallow Links कहा है होना रेटा रूप False accounts कही हिमान-कितान, करिनड देखा False charge दिल्ला कार्टीन Pamily allowance निर्मा मन्दिन Pamily doctor नारिनास्टिक चिक्तिसक

Family Pedigree बंधर्थ Pamily Planning चरेबार विवोधन, शारिकारिक भाषोजन Family tradition कुरूपरिया

Family tradition governor.
Familia relief fund glice-unian die, weis unian benedig with material and province with the second control of the second contro

Fanatic वर्षाय, मर्ताया करमुटा Farce प्रस्ताय, दिसाक बस्ता, तमाधा Far East पूर्वी पश्चिमा, "बूर पूर्व

Pace (दिशास Pacewell address प्रशासकातिक मानवन

Total cetate संबद्ध भर्मपुर loint family संबक्त परिवार Joint ownership संयुक्त स्वामित्व loint production सङ्घन बरपादन Joint recretary संबंध धानिक Joint stock company this surers, date स्थाप प्राप्तेकक Jointure when Iournal वैतिक पंनी। इस्पन Journal entry dall ufelle fourchasers j. ऋवपंत्रीः सरीव-वहीः sales | रिफ्रयपेबी, विक्री-पद्यी Journalism पत्रकारी, पमकारता। पनकारकका Journalistic etiquette पत्रहारीका नैतिक मान्धी Judge v निर्मेश करमा Judge n. न्याबास्किरी, स्वायानीश Judge, additional सप्र स्वायाशीस Tudge, Sessions दौरा सर शक्तन्त्रामाधीश Judgement विर्मय स्वाब-निर्मय, (क्वाक्तका) ग्रीसका Judicature स्वावाविकरण, स्वावस्ववस्था Judicusi स्वादिकः =decision स्वादिक विवेदा -- department महाव-विद्यागा -- enquiry म्याविक भौषा =notice म्बाधिक अवशसा म्याबाक्क्य हारा किसी शासको स्वयं विचारमें कामा; --proceedings म्याबाध्यको स्वरत्यारं चराव्यको स्वरत्यारं Judiciary स्वाववाविकाः स्वावाविकारी वर्ग Judicious विभेक्षणी स्वावसम्मव Intradiction अधिकार-संग्रा क्षेत्राधिकार Jurisprudence त्यावद्यातः विविद्यातः]यामेश स्वायब Juy स्वाय-सम्बद्ध **ब्**री lustice स्वासाधिपति। स्वाब Justice of peace wifes serentant Justicialito frie sergié Justifiable व्यापानुबीच, स्वाबतः समर्वेशीय Juvenile delinquency festital suggests Kalcidoscope eggyeste Keener of records अभिनेदाबाड (शब्दावाड)

Accept of records आक्रक्यचार (बक्क्यवार्ग)
Aconed आजावन
Acq iodustry आजारियोज, मनुख बयीय
Kidnapping (प्रध्नप्रदर्भ) अपवृद्धः
Kidd, In बद्ध वा जाव-६ क्यते
Aindred (edj) क्षेत्रेय व्यवत् वासमन्त्रा त. इक्ष्मिर्सर्भ
Kine house वृद्धिनिरोजसावा
Ainship रफ्टर्भव
Kit मावाबा सामान सामानका होका वा धोरा युक्ति।
Aleptomanla वोबोनमार
Aulak प्रस्क (क्षेत्रा-

۲. Lable नामक Labelled नामप्रभित Labial after Labio-dental galess Laboratory प्रयोगसामा Labout arm with Labour bureau signat, susualist Labour dispute अम-विवाद Labout federation afus date Labour organized stella stilla Labour party Milita Labour union affice de une total Labour unrest stille weife Labour Unskilled wans ufter Labour welfare centre auftentit de Labour walfare work after exern and Laciation Period इस देनेको समृद्धि Lactometer grantit Lady-president guidat Ladies-gallery महिका दोषां Laisserfairo बहरतथेप गाँवि Laminated wood vitalit wash Lance Corporal or arctice Land acquisition act भृषि भशापि अविविधन Land alienation set मुपि-इस्ताहरून-अधिनिष्य Landing ground stages with Landlord years Landmark ebeifan Land records of william Land revenue मृतास्त्, मानगुवारी Land route tes and Landed interest pfules, yfags tald Landed property week's Landscape year Land-survey quiture Lapso व्यक्तत होना (कामातीत होना) Large scale industry वह देवाचेडे व्योग Large scale production वह वैद्यानेपुर प्रशासन Late stayed entities for high-news und-धरदेका समाचार Latent and, orga Latitude angin Latter wather Launch (श्रांदोडनाहि) भारम दरना Launching a ship धेव-धंत्रण पीवमा कबादवरण Lavatory श्रीपासक, अग्रावनग्रह Law विका निक्या शिकांत

-abiding Referres

-- and order ग्रानून और व्यवस्था

Far fetched पश्चात संद्र्धित, भागामाविक, दिश Far-reaching दूरप्रमानीः दूरव्यापीः बहुदाक्षव्यापी Fashion मुश्रानारा देशायार

Fatal plutfex

Patalist urrquel, degici Fatherland विश्ववि, विश्वव

Fatigue duty gen

Favourable balance of trade अनुनृक स्थापार धंतबन (तबा)

Favouritism प्राप्त

Feasible tigrag

Festure पटना विवरमाध्यक स्था

Feature programme इत्यु इत्युंह्य

Features derum, feftigin

Federal Assembly title fiventies Federal Constitution संग्रेड संदिशान

Federal Court श्रंप स्वायाक्य Federation dq, ehter

Fee gree

Fellow (महाविदासमझ्य) पारिषद

Permentation श्रेष्टाचीमा क्रियन Fermented Refers

Ferry toll up-ac

Fertiliser wire, une

Feudalism endages

Fendal system सामन्त्रेत

Fictitions account अवास्तविक अधा Fictitious assets अवास्तविक परिसंगत (देग, माल-

मचा)

Field book ध्वमाव-दृश्तिका

Fielder अवरथन

Field-glasses क्षेत्र-इरहिन्द Fleidgun रक्षेत्रीय वीव

Fielding धेनरसम, धनरसा

Field investigation श्रेवानुसंभाव Field-worker धेमदमी

Fifth columnist पंचमांनी

Fighter plane पुरुष विभान

Figurative and affe Figure of speech want, speciality

Figure-bead नामबारी (अगुमा) नाममाभद्धा प्रमुख Pile नश्ती भरती। नश्तित वनसमूद संगृहोत पनादि,

वरिवक्ती। रेवी

Filed नस्तता प्रस्तुत किना या बायर किमा (मामका)

File register बस्ती-पंडी Pillibuster समावस्थक वाचा टाक्नेवाका

Filler ft/6 - 914

Film company कावित्र-प्रगंदक Filteration क्षित्रका वाका Filterred water तिर्वक्ति जब

104-E

Pinal bill अंशिम प्राप्यक Final dividend अधिम आभाश

Finance bill विश्व-विशेषह

Pinances विश्वसाधन, अर्थव्यवस्था Plnancial बेलिक, विश्रीय

Pinancier विच्यपंत्रक, अर्थविनियोक्ता

Financing (4th spir attri Pindung स्वाविक मिर्णव

Pinger print single Fire arms आभीवास

Fire fighting equipment आग प्रशानेक सामान

Fire proof offertes, offerthe, offerthe, MITTER VO

Firm adi ex

Firm म ज्यापशाविक प्रतिष्ठान, क्रेटी

Picst aid प्रथमीक्वार

Piret aid post neutrent-Ex; utifica expentes Fisc trasle

Piscal policy इरहेरंथी मीति राजस्वविषयक मीति

Fiscal year राजकीपीय वर्ष माजी साज Fubctics शोसधेष

Fixation of pay day lavity

Fixed asset equi ultete

Fixed capital हिसर पैंची

Fixed deposit स्थानी जमा, सामान मिद्येप

Fixed deposit account सीमारी साता सामि शिक्षण केया

Pixtures स्थानर संपत्तिः प्रेक प्रतियोगिता आदि संयंश

विकि निधारण

Flacged without

Flag halfmast बाधा सुका श्रंथा, अटॉचोडिन ध्वय

Plag-holiting ध्वयोचीकन Flagship wa do

Flag staff water warde

Flag unfurling } जा काराना

or breaking

Flank goard quirus har

Flash पश्चिम

Plexible नम्य आनम्य शमनीय क्योका कपक्षार Flexible constitution तम्ब (वा क्रपीका) संविवास

Floating capital एक वैश्वी

Floating debt बारवदाकिक ग्रम प्रदमान ग्रम Ploor price विस्ततम (स्वृततम) मृस्व

Florid पुन्पसरिवत, अक्कृत असंबाहमनी (भाषा)

Flotilla freder der Fluctuating market softer quare

Flush latrice स्वद्यांकन भीपाक्षक

Flying boat and that Flying foreress was fast

Flying squad इसनामी रफ, (बारकी) स्वरित रफ.

1

ĭ

1

.1

J

L. follo ud:h-rz -book (4ft-985& Left hander वर्षेद्रश्वा, वामहरितदः वामहरतावाद -क्षेत्राहुटक विश्विक्यव Left side que qued -, International अंतरराष्ट्रीय विधि (या विधाम) -of marginal utility श्रीमांत सप्योगित। नियम Leftist बामपक्षी बामपंत्री Leg before wicker quivi, arthr -of nature प्रस्तिका निकास Lawful दिवित्या, विष्युत्तसाद (वैष) Legacy वरीतीः मृत्यपत्रः बायबाम Lenal du Alu-Alani falus Laulessoess murren, attaggi Legal action के काररवारे, कानूनी काररवारे Law of evidence ensafely Lawn gaign Legal defect duffie will Legal interest ilv fire Lawrer fefes, aufer Legal monopoly de exilent i.ay-man सामान्य उत्तर श्रविश्ववद्य Lay-out अभिम्यास Legal procedure by glass Lead बर्माश, सम्बद्ध Legal process de prosi Legal remembrancer (464-40) HE (414-44) 461 Leader नेता समयोः समझ्य Leader, Floor general Legal Secretary (afterplay Legal tender (Africa) Leader of the House समापनी समानेता Leader of the opposition दिशेश रक्का मेलन Legal tender money (affanta Hit र्थातपद्य-नेता Legate (विदेशस्त्रिक) सप्ताब-प्रतिनित्रि अपराजदृत Leaderette संपादकोय दिप्पको वा छोडा अग्रनेख Legation systiste Legislation from Leading article sugers Lead pencil होए-अंदर्श वेशिक Legislative (awid) Legislauve Assembly (bull-thu Leaflet que, qui, alufatt Legislative Council विवास-परिपर League of Nations (1964 Leakago क्यवना क्यवन-ग्रद, व्यवनमीक, रहस्वका Legislature विवास मंदक इंदर ही बाना Legitmuste न्याच्या वैदा पुष्टिश्चका यदावी औरसः J Lender बबार देवेबाका, महाबन, साहकार ! Lespycar (अधिक दिल्लुक वर्ष) अधिवर्ष, जीवका साक Lesse a. ugi Lens रोस. राख । Lease प पट्टेन्स देवा Lentil HTC Lesse deed महेडा डानव पह विकेस Les fits talk Lesse, permanent स्वामी पहा Leper asylum spres) Lease, terminable समापनीय पहा Lessee प्रदेशार, प्रह्मारी ΙĬ Leave सरकाश प्रदीः अनुमति Lessot पहा देनेपाका Leave, Maternity negraare nefe gel-Lethal weapon que um मगुन्दबद्धाञ्च Letter box प्रमेरिका Leave of absence अनुपरिषविक्ये अनुमवि Letter of administration games va-Leave, privilege (रेवाबडी सुक्री Letter of credit stars-an Leave preparatory to retirement Agfet Letter of introduction परिषय-पत क्षिये प्रशे Letters patent user-15 Leave, quarentine स्वर्धनके मुद्दी Level of prices age aw, year are Leave to withdraw a motion near a set Leviable आरोप्न केनेको अनुमधि Levy आरोपण सदम्बन Lecturer विवक्ता जपमाध्यापक Levy a tax कर क्याना करारोपण Ledger night Lewis gun selent 444 creditors 1 क्लम्बं मर्थनी Lexicon सम्बोध, बोय purchases l अध्य-मध्यी Liabilities de de un me sales 1 विक्रय-प्रपंती Liability Runt giftes suppliers 1. उत्तम्बं मर्वजी Lissison officer इक्काविकारी संपन्ने पराविकारी ~ general 1 सामान्य प्रवंदी Libel अपयानकेस Ledger account मुदेशी हैसा Liberal Federation serves es L. entry प्रवेशी-प्रविद्धि Liberty Civil नागरिक स्वाचीनता

Forlder - From assets (पक्षिका) वदावी बस्ता Fooder पारा पद्ममोनन Folk dance कोब्युख Folk lore the mitter Folk song क्षेत्रगीत Following विम्नलिखित, बबोकिखित, म अनवाबी Pomentation सेंब सेवन मरवहना वहापन, वचेबन Food-control साथ-भिनेत्रण Foodgrams were Food rationing दाय-समस्वित्य निमंत्रित साथ-वितरम Poot-path अनुस्था, पर्शी Pooting बाबार खरिपडि Foot wear visas, visase F O R price रूक माहा उक्त मुक्त भावे सबंग मुख्य Forbestance समाहोसता, पैवे Porce. By seur Forced labour same Forced landing दिवस अवतरेल, बळादबतरूप Forcelanded assistable Fordable Hara Porcust पर्शाममाम Forecast of weather कर-एंड्रेजी अविध्यक्तन Porceps एक तरहको चिमयी, गर्भश्रेक, संबंधक Poregoing पूर्वनामी Poregone conclusion प्रांतित विष्का Poreign bill (क्षेत्र) हरो Foreign exchange बेरेजिक विनियव Foreign minister विदेखनेकी प्रशासनी Poremen अमग्रमुख्य अमनावद्य Forest department un finiu Portal mileer swife Porest Research Institute an Middle State Porestry angent Poreword meen हरण करना Porfeiture अपरतेन हरण बन्ती Formed also ser-quenment all ge Forecty wheelsh Form प्रपत्न कास्तरपत्र कृत्येत्रा कृता करमा Formal भीवचारिक वर्गानयम Formality श्रेषवादिकवा

Postess अवश्यन सहजा शक्तात् सहजा, बन्द बहना Pormally जोवपारिक रूपसे, उपवास्तः विवस्ताः Formula KT Formulated was stires For public purposes को अधी बनार्थ Forthetime being mere freeze tinfaminites Porwarded अग्रभीयत, अग्रहारित Forward delivery whate

Forward exchange applicant Forward market ant, aget mare Forward price aritage Fossil (लियनत) बीबाबदेश, प्रश्वदेश Fossilised agridue Foudstion laying frament Pounder affiniat, under steeres Foundry gurder Four dimensions unferefr Fours चौरे, चौरे Foxbole रच्योवमें पहाची सैक्टि विकेशी Fraces संक्षेत्र, कोकारक, विवास Praction किस समाप कर केश प्रद Fracture अधिकार विभेग Framment avus Fragmentation of holdings an wire Frame बॉवा: श्रीखरा: देश्वदि: प्रधीर Frame a charge, To wytre warn Franchise until art Franchise functional कृतिसूत्रक (वा व्यावसारिक) सता विकार Franciscolity dutes, Minimia Franci क्षेत्रण सक Praudulent कार्य प्रवारक Free competition बराब प्रविद्योगिया Freedom of action and entire Freedom of choics वरण स्वतांध्य Preedom of press महत्र-सार्टम Freedom of speech with the Preedom of worship sawar taides Pecc guft जिसंस्य हैन, स्वेध्या राज Prechold says yullun Ricelance fournaint 1984 1981 Free of charge Grains Prot passage (firster 414) Free part बन्सूफ धेवामर Prec thinker स्वतंत्र मनीपी Prec trade अवाय स्वापाद, मुक्क वाविश्व Freeze काम-बाबनेका मुक्ताम बंध करना रिश्मामधाप Freezing बरीकरण १ मिन Freezing point ([His Preights ann-wist Frequency बार्शिया विश्वय ध्वनिकद्री ध्वनि वसम Fresco विश्विषक १११/४व (१३१ = पक्स्तर) Priction सपर्वः पर्वय Propt मोर्ग Pront benches grant 44 (dead) Front line what the

Frontics their

Proper assets जहांद्र वरिमेश्र

.... Fructose quentin Fruit preservation que-qिर्धान Fuglific udies, quique Fruit suger wunder Full bench पूर्व स्वावशिष्ठ Fully paid shares quite size Fumigation मुधीक्रम प्रभौना भूपन Panction करत कार्या उत्तर, समारीह Function administrative unnerfin gen Functional representation व्यावसाविक प्रति निक्ति, वृधिमुख्य प्रतिनिधित्व Functionary quivarel Fond fife, alle therebe Fund, Depreciation ब्रह्मतास क्षेत्र विसार क्षेत्र Fund Sinking सच्चित्रिय-दोष क्रमहोषक-दोष Pundamental आवारभूतः मोजिक तारिक Fundamental rights मूळ अधिकार Fungus 1944, 444, 455 Furnished 39391 न्यामां। धाट अवस्दरः चरिवदं (बुरामा 🛢 ३) Fuse (१९४ हारका) बहमा बहनवर्षि Posion विक्रम विक्रमनः सागुल्य Porure market que quare G18 मुख वेर करमा बोधने न हैना मुखरोधन मुखा-सोधव Gallery elect Gallery Assembly समान्दीको Gallery Council परिषद शेषो Gallery Dustinguished visitors (1927) रोधं Gallery, Ladies महिका-दीर्था Gallery Press पत्रकार-शीपा Gallery Speaker's क्रम्यक्र दोनी Gallup survey विशिष्टनतील मत्तर्गम्ह Gang समूद दक, (काम करनेवाली बाकुवी जारिका) Garmat सप्तक, त्यरमाम Garrage गराज बानसामा नागीयाना Garrison दुर्ग स्कृत सेमा दुर्ग-मिनेश Gauge बागा रेकोंको कारियोंके बीचका अंतरा मावना । Gazette Clays Gazetted राजपत्रित Gear रेतिका, साँता गीवर। कपवांत्र Gemini मिन्न Genealogy and and General स्थापका सामान्य साविक General good कोवहित General Headquarters प्रभाभ सैशिक केंद्र Generalisation सावारबोकरण व्यापक परिचाम (निध्वत्ति) विकासना

Generation सरपारना पीड़ी Generator अपादन-र्वत्र (गैस आहिका) Genius प्रतिमा। प्रतिमानाम् स्विध Genocide partigant Gentleman s agreement भवेमानुसीका समजीवा Centlemen of the jusy House Genuine बास्तविक, असूविम, विसूध Geologist अवर्ध-विदेवत Geology भगनेविद्यान Geographical भौगोहिन Geometrical बनामितिक, रेप्रामनित संगी Geometry स्वामिति रेद्या-मनित (म्मिति) Germ Azm Germination 43574 Glacier दिमानी दिमनद, दिमप्रवाह Gilt edged securities उत्तम (प्रथम धेमीन) साम्रापत Gist सारमाग Gland etfer freezh Glandular d@ne Glass ware दाच-श्राह क्येंबडे सामान Glider ईबनहोम विमाम Globular morrant Glucose हाइइइंस्स (fructose प्रकारती cane suger सान्यकंत) Glycense मपुरिन Goal-Leeper गोककी, प्रवेशरोपक God-lather unifen Godown श्रांडागार पोराम Going concern वस्तिहोस संस्था Gold currency मुक्प चकार्थ Gold reserve सुवर्ष कोव Gold standard सुनर्ममान Good conductor संशास्त्र अच्छा परियादक !! संबादक Good frith war Goods वरत शामान मारू -office माइकर मारू गीडाम Goods, Consumer's अपसीय्य वस्तर्पे Goods, Contraband विनिधित वस्तर्थे Goodwill शत्रामः सनाम अवाधि Gorge बादीमार्थे Governed by के दारा शास्त्रिय वा निवमित Government सरकार शासन Government house राजमस्त Governor eraurum schrufe Gradation हमस्थापना क्रेटिक्स Grade of pay बेवनक्स बेवन-स्वर Gradding of cags बंदोंका क्रमस्थापत Graduato स्नातका v विश्ववित करना, मापंदित द्धाना

1074

ŧ

: 1

प्रसम् सहस Lower house of legislature fauptness मक्तमार (निम्न सरम, प्रथम सरम)

Loyalty Claufer fills Lubricants रिजालकारी वरता, रजेहरू, जिस्लाई तील

Lugrage office giving ut Lubricating oil the As

Lucrative gentle Lubrication thes Lull tower, wife

Lullaby with Lump sum एक मुद्दा, बाब राविष विज्ञराधि

Lunacy some

Lunstic asylum रिश्वित्राक्य पागकपृह Luxury goods विकास वस्तुरे

Lymph बमॉरड अधीडा Laric बोव, मोदबास्य Lyric poet sheard

Lyncal stance

М

Machine of

Machine gun महीनगन, यंत्र-तीप, यंत्रपासित तीप Machine made वंब-विभिन्न

Machine shop dagger Machine tool वंदीवस्त्र

Machinery बंबबाद, वंबसमूह Machinust alfae

Magazine श्रक्षामारा श्रीवता Magistrate इंडाकीस व्हाविकारी Magna charta nerfeste 48

Magnetic चुंबक्येय

Maguitude परिमाणः मात्राः विद्यानः विस्तारः महरव

Malden speech प्रबम भावन Maintained by the state राज्य दारा संवेदित Maintenance मर्ल-प्रयम दीवी अववाद संपादण

- cost of मरण-पोपनदा स्वयः निर्वाष-ध्यय Maintenance of law and order anger ally

व्यवस्थाका संवाहण Maintenance, suit for filt avest eier

Major शासनगरक नाकिश

Major charge Heat sittle Majority बहुमत भासवबस्कना - party बहुतंत्रवह दक, संस्थावरिष्ठ दक

Majority Absolute पूर्व बहुमत Make up बदान-श्वासः वृष्ट-संस्था

Malarla सुविशासम्बद्ध दिसम्बद, शोधम्बद्ध सूची Maldieribation इर्टन इतिवृश्य

Malatide हुमीवपूर्वका बुमीवपूर्य Mallcability इस्ट्रेफ्टा इद्दुनीवटा धनवक्तीवटा

Malautation क्वीबन, सप्यास पोधन, न्य पोधन 105

Malpractice axture

Valpractitioner squard Mammal स्तनपादी Van at-arms सिनिस

Management charges nivers Managing agents प्रांप अभिक्रती

Managing committee quy gfafa Managing director uty giggenell Mandamus पूरमारेस

Mandate unsertu Mandated territory SHEMILE AST

Man-days ufte ftu Vanifestation ufuuffe

र्भेडिमार्टिडा० जीति बीवया, सोझ-योवया Manipulation गुज्योशन

Manipulation of accounts हेदा एक्सोबन Visuipulation of statuties elegably quality Manoeuvre ब्रह्ममास केनम्हना दुवीवन,

तिदृश्यकाती Man-of war सम्राच्या वीव

Manor स्वाधिम् कागीर Manpower and the

Vanual इस्तपुस्तिका गुरकाः वि॰ हावसे किया जाने

गका गारीरिक (बस) Manual art gegger Manual labout germu

Manual training इस्तदका प्रशिवन Manufacture Aufe

Manufactured goods निर्मित शस्त्रहें Manuscript genfile gizibife March o ह्यप्रयाच प्रयास

March र प्रवास करना कृत करना Margio वार्च, उपाव श्रीमांत मात्रा

Margin of profit कामके मात्रा

Marginal shale

Marginal cost शीमांत परिवास Marginal heading view with

Marginal note quel-Russ Marginal price सोमांत मुख्य

Marginal profit सोमांच काम

Marginal utility सीपांत रूपयोक्ति Marine साम्राह, -hospital साहित विक्सिसास्य

Maritime सामुद्धि —law सामुद्धिक विवि, मीविवि

Mark fam sier der Marked fuller

Marked cheque विद्या पनारेश

Marketable fique Marketable goods (वेपव्य वस्तुर्वे

Marketing the extent Mars ster tie

Graduated-Hero-worship Graduated बान्हिमक निवासित मार्चासित नेशंकित Grammar equator Grant बतुदास Grantee माधीवार Grant in-sid महाबद्ध अनवास Graph paper विदरेसापत्र, डेसापत वर्गकित वत्र Gratification अमृतीयण Gratultous निर्मुच्या सेच्छा-प्रश्चा विश्वासन Gratulty सेरोपहार, मनग्रहभन Gravitation Law of meeting Greater India seem une Grievous hurt दावण शावात Grounded आपारितः थी किमारेफ अब गया ही। ग-अवदरितः को उड़नैसे रोड़ दिया गया हो (निमान) Group leader टोकी नावड Grouping of states रिवासवीका समुद्रोकरण Gross assets स**ब्ब्र प**रिमंच्य Gross income new sile Gross гечелие при эпли Gross value gras spi Gurantee प्रत्यामृति, प्रविश्ववि Heading site Guardian whines, wherea Guerilla warfare छापामार अवार्थ Guest-bouse श्रादिशिगृह अविकिश्मननः अविविधाका Guidance ve gasin Guide प्रश्वदर्शक मार्गवर्शक Guild शिक्षिपसेप समित्र-निकाय Guild socialism निकाय समाधनाह सेपी-समाजनार Hearing Harit Guillotine शिरक्षेत्रचन्नः सन्दर्श G a motion प्रस्ताव-विकास-विकास सम्पर्ध-प्रयोग Gulity To plead अवराज-स्वाहतिका प्रतिपादन Heater area

Gun, Anti air-craft विमामधालक (विमामवेथी) वीप Gus Automatic समाक्रित तीप Gun Long range ब्रम्यारी तीन वंशीमार तीन, इरमार वीच Gun Machine मधीवगम बन्धाम, यंत्रकारिक होप

Ganpowder space Gaasbot mrt Guunes क्षेत्रकी Gunnery distant Gutter येरी नाकी Gynarchy झी-राज्य, खोर्वय

Habeas corpus व्यक्ति स्वातंत्वः वंदी-प्रत्यक्षीकरण Habitual drunkard speed Herri Hableral offender water werell am werell Haemorthage twater

Hail ster, 498 Hall-mark purels

Gyropiano विद्योदार विमाध

Ħ Hallucination श्रष्टमम, विभ्रम, श्रीकेनंथ Halo प्रसानंदक, परिवेश Hand bill wer ferenig faure, wer-femuns Hand cuffed विवस्त स्व Hand-grenade popular Handicraft etglate, etgeti Handloom industry ares will Handmaid asygn Handnote smiles were Hand-out steeper, steeper Hand to-hand fight groutfour, enuga मिश्री शिक्षात्र mages galtirebast Hangas विमानगृष्ट, विमानवर, विमानवाद्य Harbour पोतासव, बंदरताह Hard correscy area दुर्बन-सुद्दाक्षेत्र Hardware shause Haves and have nots बहिन्द तुना नाहिका स्टब द्वा निस्द, स्वन्। स्वन Hawker wurs, Etiami Harardous singless, therete Head प्रीर्थ, महा प्रशास कवाड Headman aftrat Head of the department fempura Head office प्रवास धार्याचन Head quarters छर्ट सुबाम, सुरमान्य, प्रशा निवास, मुक्याबास Hear hear साथ साधा बना भूत ! क्या कहता है! Hears अतामभूत, सुनीसुनाई Heatware aresty Heaven बादाखा एको सुबागरमाना देवदर Heinous ofte H. offence offer water Heir wempeut Helr apparent getra प्राच्छ वा विविद्य वचरान विकारी विकटतय बचरापिकारी H expectance मलाधित क्याधिकारी IL presumptive सम्मादित बचराविसारी Hemp gq Heraid wass Herbaccous will (44 EH) Hereditary design, angelite Heredity बंधवरंपरा भान् विषया Heresy बेबार्व, क्योड्ड, देवरविदा Her Excellency शुक्त्रांश महामहिमानधी

Heritage पैतृह संपत्ति, दान (बाती)

- column sittles anthere

Hero-worship AC-TH

There is a contract of the state of the stat Liberty of conscience विवेध-स्वातंत्रकः श्रीतःकरणकी

Liberty of press सरूप स्वातंत्र्य ग्रेस-स्वातंत्र्य

Liberty of speech super-tenden Libra तका राशि

Librarian ग्रंथायारिक, पुरतकाष्यद्व Licence अनुवापन, अनुवासि

Licence fees againger Licensed प्राप्तानुक दचानुक

Licensee भगदावारी, प्राप्तानक Licensor अनुपाता

Lieutenant Governor unraquis

Life belt क्षेत्रनरस्य पेटी

Life boat when allest Lift ब्रह्मानक, बन्नयम-चन, स्रोपामिका क्रिकट Liteman श्रीपानिकायाच्या, प्रवयनवेषयाच्या

Light sees

Light-house प्रकारतीय वशीविया Light literature रंबनकारी साहित्व

Lightning of at -(electricity free) Lightning arrester dequite

Lightning was fangle-na. Avenu

Limit सीमा

Limitation परिसीचा, परिसीममा म्यूनदा, बुद्धि Limited coinage स्नोमेर वंदन Limited company सोवित प्रमेडक

Lunited legal tender छोमित विभिन्नक Limited liability company स्थापित सेव प्रयोगक ी

Limited monarchy सीवित शक्तंत्र

Limited option silks from Limited partnership सामित बानिता

Lice रेखा, पंचि

Lines नियमित बाबी-पात Linguist spenier

Linguistics तुक्रवासम्ब भागाविद्याम

Liquidete शरिसमापन सरमा

Liquidation of debt ऋष-वरिसमावण Liquidator afternam ferenant

List of business artifall

List of prices quarter

Literacy campaign सामरता बादीकर Lithographed sear Hills, famility

Luigant fauit Litigation सहस्रमेश श

Livertock stress

-- faces प्रशासम

--- manector प्रस्वितीक्षक Living wage निर्वाहमूडि (जीवनमूर्ति) निर्वाहिका

Load stone मुक्स प्रसार

Loan suit, and

Loan and advance my ut with Loan at short notice appropriet an

Loso, Public vor-ees Loaves & fishes suftent une

Lobby engage neity Lobby talk usin and, autesite and

Local administration renaise nurse Local authority smile unitented; reich milian

Local board senses while Local bodies engly spent

Local government confix una Local self-government equity equits

Local staff स्थातीय क्येंबारिय वे Local ध्या स्थानीय वर

Localisation saturding, satula-ace

Localisation of industries क्योकेंद्रा साम संस्थ Localisation of sovereignty NARRAL WATER

Perion

Lockout बारवाक वाकान्यो Lock up स्वाकात करवायो पंदीसूद, ऐशासा, श्रीकारा

Locamotive with Loco workshop क्षेत्री बारधानाः देवनार

Locus विशिः विश्वतम Locus standi मान्य रिश्रवि

Docust are Logic धर्मविश्वाम, स्वानशासा दर्क

Logical स्ट्रांसच, दस्मेरिय Logician नेवानिक, तर्वशासी वार्किक

Longing उत्कर अधिकारा, क्यांका

Longitude traint Longstanding complaint upon fusion

Long term credit girinft ners, giriation sur Loose leaf ledger अस्त्रपत प्रचेशी

Loose tools are ares

Loss mar

Loss gross एकब (तुंपूर्व) शांवि Loss Not undles (et frest) tife

Loss of weight me-mile

Loss sustained मधीय हानि, बहादी दा छर्छ इरे दर्भव Loss Total suga wife

Lost gu को की पना की Lost bill you free

Lost cheque मुद्रा प्रसादेश Lots भाग्यपथडः (मान्य ६)

Lotters shedel and Loud-speaker safa-fattire, tal- 446

Lounge artical

Lower exchange निष्न विनिधन

Lower house MITITIG FIFE HER HER HER

II of lords सरदार-सुभा

Heterogeneous विज्ञातीय विश्व जानीय विश्वमीय Hierarchy प्रोदिवर्गन, प्रोदिव राज्या सानुक्रम संस्थानः अनुद्रमः भानुष्यं Hick command शहरपान चवापिसारी High court an retained High-way राजमार्ग राजपन Hindu law हिन्दूभर्म हिन्दूनिवि His Excellency agique His Majesty ugique History sheet रशिक्ष-१त्रह, दुव च फडक History sheeter quiquell Hoarding अनुभित संबद्ध अस्त्रेयह अस्त्रवय Hoarding and Profiteering Act अवसंवय तथा अवबाध विरोधी अविनिष्य Hold good दाव देवा, शाग होना: दार्यंतम होना Holding ऋषिश्वामित्वः क्षेत्र जीत Holding, uneconomic शकाभ इर जीव Homage springs Home-guard गृहस्मदः रक्षादश Home minister गृहमंत्री Home-sick स्वगृहस्मारी Homicide मानवहरवा, नरदस्या IL by misadventure हुर्रेशात् नरहाया Homicide, Culpable अपराद्ध नरहस्य। H., justifiable स्वास्य स्ट्रिया H , mania सरहायोज्याह Homogeneity एडवावीयवा, सनावीयवा Homogeneous एडप्रातीय महस्य समान Homologous व्हानुहर स्वातीय Honey-moon आनंदनास मनोद्धाक Hoporanum मानदेव Honorary अवैत्रनिक lionour Military वैभिद्ध सम्मान Honour (a bill or draft) सम्बद्धा Honourable सामनीय Honourable ministee मानवीय मंत्री Hooliganism क्रांगिरो Horizon fulta Horizontal हैतिक अमुप्रस्थ, विगंतसम सपार Horse power statistic Horticultural scheme श्रीवानिक बीवना Horticulture suragi Hose मेववान, बाहियेय Hostage सम्मीर-प्रतिम् व्यक्ति-प्रतिम् औड Hourilary क्रम-रिवारिक समुना, देवशाय House सदत सदत H., Lower किन्न सहन अवरायार, प्रथम सहस H., Upper एक स्ट्रन वरागाः हिरीव स्ट्रन H of commons कामन समा, निविध स्नेक समा

If of People was nar II of representatives प्रतिनिधिष्ठमा (अमेरिका) House tax ng-gg High commissioner हारेस्तिवनर, बनायुक्(सारमारी) House-trespass भवतमें अनिविद्धा मनेश भवनावपरण Humanism मानववास Humanitarianısm मानवर्यावार, मामवतावार Humidity under Humour विनोद Hunger strike ut graff Husbandey weren Hydraulic wite Hydrodynamics नशीवनाइ-विद्यान Hydro-electric बक्बिवरीय Hydro-electric power aufquages llydro-electricity बक्कियत , पन्तिकती Hydrogen agaz awan Hydropathy aufaleren Hydrophobia asigs Hygiene स्वास्ट्यविश्वान Hygrometer आर्म्वामापी Hygrometry अस्तिप्रिवि Hyphen समासरेका समास निष Hypnotism संगोदन विदा Hypotenuse and Hypothesis equation, परिकरमा Hypothetic system परिकारित Hysteria बातोममार Ţ Icebarg विमधेक Ideal wresi Idealism आवर्धवादा वेवांत Idealist शास्त्रीवाडी Identical motion समस्य प्रसाम Identification अमिदान पहिचान Identity देखारम्या समामिकाः परिचय I card परिचयपम्, अमिदाश-१७४६ Ideology विवासकारा Ideological सेवारिक, विधारवारा संवेधी Ill-advised क्रमंत्रित, अपमधित Illegal जवेष Illegal practice witness lliegitimate अवैवका विभिविदका बारस Illicit जवैषकातः जवैषकाश अवस्थात Illusion प्रांति याचाः रहतान Illusory ज्ञांतियशक, नायामध Illustrative florell I. election निक्धी शिकांचन

Imaginary applica

Imaginative कूलनारमङ

Lower house of legislature favoritums: बररागार (निम्न सदन, प्रथम सदन) Loyalty राजमध्य निवा

Lubricants रिनाएकारी क्ला, श्लेडक, विक्लाई, संड

Luggige office gigin of Lubricating oil the de

Lucrative quisit Lubrication स्वेहन Lull स्डब्स्डा, संडि Luthby ept

Lump sum रक मुस्त, एक राश्चि विवराधि Lunacy gauge

Lymph प्रमोदक, क्सीका

Machine-made वय-निमित

Machine-shop वंत्रप्राका

Machine tool क्योपकरण

Machinist aifas

Magnetic ब्राक्श्य

व्यवस्थाका संवादम

Major प्राप्तवस्य, वाकिय

Major charge मुक्त नारीप

Majority बहुमत प्राप्तवयस्कता

Majority Absolute पूर्व बहुमत

Machinery बंबबात, वंबसवृद

Magazine श्रवागारः विका

Magistrate इंडाबीश दंडाविकारी

Magna chanta nerivate que

Maiden speech yest with

Lyric तोत, योतकास्य

Lyne poet thank Lyrical दोवतमृद

Machine ##

Lunatic asylum विश्वित्राण्य वागळगृह Luxury goods दिकास दरनुषे

λſ

Mechine gun महीनगन, वंत्र-तोष वंत्रपासित तीव

Magnitude परिमाणः मात्राः विवासः विस्तारः महरव

Maintained by the state राज्य दारा संवेदित

Mantenance मर्म वीक्ना रीडी क्षत्रा संवारण

" cost of मरथ-पीवनका श्वतः निर्वाद-श्वय

Maintenance, suit for this ungen and

-- Party बनुसंस्थक दक संस्थागरिक दल

Maintenance of law and order appe wit

Management charges new-way

विक्रमदावी

Managing agents got aftern Managing committee q ty ufalt Mandamus प्रमारेध

Malpractice क्यायार

Man-at arms Affe

Malpractitioner service Mammal ensurab

Managing director u/u dures Mandate samanka

Mandated territory शासनाहित प्रदेश Man-days समिक् पिन

Manifestation sefusific

Manifesto जीति बीवणा, क्रोक्क बीवजा

Manipulation एक्सोनव Manipulation of accounts क्षेत्रान्यस्योजन Manipulation of statistics elegand confide

Manocuvic बुद्धास्त्राष्ट्र, सैम्बस्यूद्रमः दुवीवन, Man-of war श्रमसम पीव

Manor स्वामिम् वापोर Manpower बमश्री Maqual इरवपुरिक्टा, शुरुका, वि दावसे किया जाने

वाका, घारोरिक (सम) Manual art general Manual labour etgen

Manual training इस्तक्का मरिद्रम Manufacture farin Manufactured goods विभिन्न वस्तुएँ Manuscript genfest vigfest

Массь в вничен ичен March ⊽ प्रवास करना क्ष्म करना Μεικία पार्थ सर्वत सीमांत। माना Margin of profit कामधी माना

Marginal shule Marginal cost सीमांत परिष्यप Marginal heading पार्व भीवक Marginal note qui fluor Marginal price सोमांच सुरुष

Marginal profit सीमांच चाम Marginal utility सामांत उपनोरिता Marine सामग्र, -hospital माविक विकित्सासक Maritime सामुद्रिक, -law सामुद्रिक विवि, मोविवि

Mark fran ster freq Marked fuffer Marked cheque शिक्षित भनारेश

Make up क्लाक-श्वार। पुष्ट-संबद Malaria सविरामञ्चरः विमञ्चरः श्रीतञ्चरः बङ्गी Marketable flywr Marketable goods विकल वस्तुर्दे

Malafide दुर्मावपूर्वका दुर्भावपूर्व

Maldistribution कुनंदन अविश्वरण Malleability कर्या कृद्दमीयता, वयवर्थनीयता

Malnutration क्योरण अस्यांत पीवण स्कूप गोक्स

Mars three me

Marketing mr-squeen

इस्तिरी-ईति 101 **इह−अ**० [तुं•] यहाँ, इस जगह; इस कोकर्मे; सर वस्तपर करायी मही वा सक्ती । इस्तिरी-ली॰ पीतक या छोडेका वह बीबार विसके कालमें । प॰ वह कोका - कारु∽प़॰ यह मीनन । मीतर बक्ते कीनडे रफकर, वा विवसीसे, बुने वा सिडे -श्रीका-सी॰ इस होकता बोदमा - छोक-पुनद कपहोंकी क्षिकन दूर की भीर तह बैठाबी बाती है। कोका यह जीवन । —स्त्रीकिक-वि इस कोक्सा इस इस्तिकाइ-ु [बं•] ग्रष्टका माम किवा द्वजा परिभाषा-कोक-संबंधीः इस सीकर्ते शुख देनेबाका । सिंह भर्ग। किसी कमा, छासा, व्यवसावकी विशेष पारि इडतिमास-पु॰ [ब] प्रश्व भावोत्रन निगरानी । इइतिसाख-पु [बार] संभावना शक, सरेहा भाषिक भाग्यावकी। इहतियाज-प [श•] समानः गरम हाजत । इ रित्तकाही-वि [अ] पारियापिक, काक्षणिक। इहतियात-ना० [भ] नवार परदेव साववानी । इस्तिसमाय-५० (ज) अस्य करनाः (गणनाः दशम इडतियातन्-भ [अ] साम्यानीस्थ धरिमे । धारिमें) ग्रामिक न करमा; वपरायमृत मानना वा द्वीना। इइसियाती काररवाई-की किमी मनिस्की संमानमाकी इस्तीका-पु [श•] मापी मॉनना काम, नौकरीसे सुट रोषके किए किया आमेवाका उपाव । कारेकी पार्वनाः स्थानपत्र ! इरतेमास-प [म] काममें कामा, ध्ववहार, कपवीन । इहतिकास-पुनि] स्वप्नमें बीर्यपान होना स्वप्नदीय ! इस्री+-सी देश सी। इड्साम-पु [ब] नेकी भकाई, सपकार; नेकी, उपकार इस्पंस-पुरु दे इस्पंस'। करना। - क्रामोश्न-वि॰ क्रुट्स ध्यकार न मानमे इस्त-५ [ध] नाम, संदा। -मवीसी-नी मान वाला । – संद्∸वि कृतस चरी। सिरगर्र (यवाही भारिको) माम-सूची । -सिक्रत-पु इहामुख-स [सं] इस लोड सौर परकीक दोनोंमें । पु० विश्ववम-क्य (व्या)। बह लेक और परकोड़। है-देशनागरी न 4 सान्त्रका जीवा (श्वर) धर्ग 'द का दीमें कर। विवेचनः आसोपना । रेक्स-प्र (सं) धक्ता पक्षर काना। ईस्रणिक, ईस्रणीक−पु [सं] भविष्यवस्त्रा, स्थोतियौ । हेंगुर~पु का**क** रंगका शक कमित्र हुन्य (सीमाय्यवती ईसा-ली॰ [सं] दर्शन रहिः पर्वाहोकनः, विवयन । हिंद खिनों मानेपर इसकी विदेश कगाती है)। ईक्किका−को [सं] बॉक्ट परि, निगाद । **र्विमा**≉−स कि देवना धौबना। **र्वक्रित−दि (**चं०) देखा हुमा; दिवेस्ति । भारतासार सार्वेम डाक्सर परावा हुना इंट-लो इंकिता(त)-वि प्रव (च) देवनेवाला मिद्देखा द्वरहा की धीबार बनानेके कामग्रे जाता है। बातु इंक-की वहा क्या। का भीर्युटा दका हुआ दुवहाः तास्रके बार (गॉमेंसे एक । ईक्समा≑∽सः क्रि॰ देखना । कौ॰ घरणा, श्या । ~कारी-लो• इंटका स्त्रम । ~पायर-प् कुछ मही । ईछम≎∽पु॰ दिय, बॉस्स । मु॰ "का छन्ना हैना-क्यो दोनास्त्री मजन्तीते किय **ईउना**®-मु॰ क्रि॰ श्च्या करना । पत्तरे धनकर हरें भुनना । (देव या हाई)-की मस्जित्र **ईंग्रा**व-लो॰ दे 'दच्छा । सक्ता बनाना-अपनी ही बातपर चलना। निराका हंग **ईबति॰-मा॰** रक्त, मदादा । रधमा(म्बं •):- सङ्जा- १टीमी बार-पॉटकर बाहार्वके बाम द्वाना-सी॰ [म] पीड़ा कर । में भाने बोम्ब बताता । -शुनना-ईटॉको जोवकर दीवार ईंबाद्-सी [ब•] दोई मधी पीत्र बनाना, निदाहना, वठाना ।-पायमा -गोसी यिहीको शॉचेमें बालकर शब्दा आविष्धार । माधार देमा । (शुक्ष दिखाका)-मारशा-मलाईश्री ईजाम-वि॰ (सं) वय करनेवाठा । नारा - शन्द्र दुराई इत्हा । – से ईट यजना – महानदा इड - वि , पु॰ श्षः मित्रः ध्वारा । ष्यरत दोमा । -से हैंट बजाभा-मकाम ध्वरत करना । ईंडमा•--अ॰ कि॰ चाइसा । र्षेटा−पु• दे *देर*ा र्देडि॰-को॰ मित्रता ग्रोतिः वसः **धा**ए। र्देवरी इंदेश-को गेंद्ररा विक्री। ईर्डा−सी माहा। ≉ दिसी प्यारी। र्देते~५ साम बदान समय उसके मीचे रागी जानेवाली दर। र्बेडम-पु॰ [मे] प्रमंश **६रना** । र्इंदरल्ड वेश्वकी औरकर धनावीज्ञानवाली एक मिठाई। इंद्रा-सी॰ मिं॰ी स्तरि प्रशंमा । इंपेन-पु बलावन जलानेदी लट्डा, धपला आदि । हेडिस-दि मिंशी स्नन मनीरान । र्द-पु•[सं•] कामरेद। की कद्मी। **ब सर्व यह**। र्क्क्युर्श = न्यो वे दे दुरी । क्य हो। ईक्य~वि [मै] प्रगीश करने वीग्व । **१**कार−५ [में] भी स्वर। ईरा≐-मी इटा इंकारोत-वि [सं] जिसके अंतरे दें ही (छन्द)। ईतर*-वि इत्तरानेवाला दोठा मापारणा नीप । ईसक-दि , पु [#+] देसनेवानाः विचार करनेवासा । इति-मी [मं•] बाबा, बच्टबा रोनीको सुबसाम पर्यान इंसन-पु (de) देखना वर्धन, व्हिन देखनाका गाँका वाहे छ जगरव-शतिवृष्टि अनावृष्टि चूरी शिर्धी और

ईयर-ईचरी पविनोधा फसर दा बाना और इसरे राजाओ पहाई। धेकामक रोगा बरुद्धा प्रवास । ईयर-पु॰ (वं॰) बाकाश अंधरिका एक अस्तंत सूरम परार्थ जो समस्त दिक्(शूम्य रथान)में फ़्रीका कुना है और बादु तवा सन्य प्राविके परमाणुकीके सध्यवती आकादारी मी म्बाप्त हैं; सुरासार(नक्ष्मीहरू)पर गंपरके वा इसरे तंत्रावेंभी कियारी बस्पन्न वर्षहोस हक । इंद-ना॰ (न॰) पुरांदा तिम खोदारः (मुससमानीका) पद त्योदार ! ~गाड़-स्रो॰ पु॰ देखे विन ममक्सानो के एकत्र होकर मगाव पहतेकी काह । मु० -का चाँद्-^{हे}सी बरत विसक्ते बर्शन दुर्शन हो। ईतिया−पु देर वादसरे त्योदारॉफ्ट श्काइसरेदी वडॉ भेडी जानेकली सीवात । ईदी-मा र्दाका स्माम त्यावाती। दंद या दस प्रकारके स्थोद्दारके अवसरपर उसके बस्तानमें किस्तित बचा बह संबर द्यासिनेदार क्रायत्र विस्पर वह पच क्रिया हो। वह पूर स्कार वा श्रीदारी जो ईदी कियमें के किए मीकविबोंका पसके ज्ञानित्रींसे मिक्ती है। ईद्रइन्द्रहा−सी [स] दस्त्री जिल्हियको मनायी जाने-माली हेरा बस्टीय । ईदछक्रितर-स्त्री [म•] रमजानदी समाप्तिपर नशा चौर श्रीमेश्रं इसरे दिन मनावा जानेवाका स्वीदार । ईदश-वि॰[सं] येसा इस तरहका। अथेते, इस तरहा [प्यमन-पु[मं] पानेकी श्रष्टाकरमा । इंप्सा – भी॰ [सं॰] पानेखे १च्छाः भारः इच्छा । र्षु फिरत−वि॰ [मुं•] चादा हुमा; बिसको बाद वो प्रिय। ह्यम् – दि॰ [मं] इच्छा, बा**द रक्ष**नेवारा । ईफाय-पु• [ब] पूरा करना वयनपालन । –(ये)वादा —पु• बाग्य पुरा बरमा प्रतिद्वापलम । हेंबा'सीडी॰--जो॰ शेलाए (रतिकान्में सोका) सी सी करना (ईसन-पुण्य रागिनी ^{हेमन}। -कश्याम~पुश्य मिभित्त राग । ईसा ईसाय−५ [स] इद्यारा लंकेत; व्यति । ईमान-पुर [न] धर्मेरियासः स्पर्पर विवासः पर्मेः छवाई। ग्रहापमः केम-देश बार्टिमें छपाई। दबानका मीवन। ~हार-वि सचा विकामीया वर्षेत्रमेके मामण्ये स**वा** इयानतदार । मु•~का सीदा~राग व्यवहार। ~की बहुना-सब रहेना संधी बात अन्ता । - रिकाने म रहना-धर्मप्र रह म रहमा । -हिरामा-मीयतमे शामी । भाता । - देना - सत्य दीक्ष्मा । - विगद्दमा ~ में क्रक ब्याना-नीवत दिनदमा धर्मनै समी निहास रहना। ~लामा-द्रिमी मन, शिक्षांन या वर्गेको सवारेवर विधान बरनाः जमे पर्य-भपमें स्वीकार वरना । हेर्-- करी• हे॰ हेद्र । तु• [में] बातु । ~श ~तुश्र-द इन्मान्। ~पाइ-दु धन सर्व। र्बरगार-सा देश 'ईप्यो' । हुरण-दि॰ [में] सुध्य या अरियर बरमेताना । ३० वाला क्षमः गममः प्रेषमः करपूर्वं सकत्वामः। इंश्मद•~<u>च</u> दे *श्रमद*'।

ईराम-पु॰ (फा॰) फारस्का देश। हेरानी-वि॰ [फा॰] ईरानका । धु॰ ईरावनाग्री । र्बेरिण-वि॰ (मे॰) बसर १ पु॰ क्सर समीन १ **इं**रित −षि० [सं०] प्रेषिपा कथितः अविता गत्त । ईसें-वि॰ [मं] शुष्णः वरासर चलने वा महबानेतः पुण्याहः कीशा वाद । र्षयाँ-स्रो॰ (र्स॰) बतिबाँदी तरह प्रमन करना। **ईपाँछ-प्र** (सं•) एक क्षरहरी करनी पूर । र्हेर्य**का**%-सी० है० ईप्ता । र्षेर्षा–सी॰ हि दि॰ 'र्दर्व'! र्हेर्विस-वि॰ (सं॰) बिमसे ईर्प्या की को है। र्डेप्यै−िव मि॰ो टाव करनेराठा । ईर्प्यक-वि० (सं०) दे० 'र्प्य'। तु० रह प्रदार्द्ध स्त (वे निर्माको मेलन करते देखकर कामीनेजिंग होने हैं) ईंप्यॉ∽क्षो॰ [गं•] सृष्ठोको नाभी व देश सकता र वक्षमः। –शक्ति-चंद्र-च अर्थनबुंसक पुरशः। इंप्यांस्ट-वि० [ग्रंग] हे र्थमं । ईप्यू-वि (ते॰) बाद करनवासा । खि~शी (अं°) बॉग मफ्डो ! **इंक्टि, इंक्डी−न्वी॰** [मं] झोटी तस्त्रार; कग्रद । **डेंश−ड**ं[र्स] स्थामी मास्तिकः राजाः पतिः देवरा है ण्ड रहा पारा। ११की श्रेनवाः एक वर्गनेपर्। ण्यवंत्रकः समर्थः -कोच-५ प्रश्रर-प्रकाशीन ~नगरी:-पुरी~ली काझी !~बल-पुर पाहुरता -शम-पु॰ कुनेर । हैशता—स्मै (छ॰) प्रमस्य, स्वामिन्य । ईसा−सी [र्ग] देवने अभिकारा देवपनुक्त को। हम् ईशात-वि॰ (ग्रं॰) *वैश्वे*षुक्ता आविपरवर्षका ग्रामक ! ! शिवा एक सुरा विष्युतः दिवस्य सूर्वः उत्तर-पूर्वेश वी मार्ज्ञ सद्या व्य साध्य। म्होति क्रांनि प्रकाश शर्मी हा **है**सानी-स्पे॰ [म्रं] हुर्छ। द्वारमही **हुए।** ईरिशता—स्तर• ईश्विरथ—पु•[मं] देशरसः प्रापाना स शिक्षियोंमें एक (शमके निक्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मुझरीमर मुझ क्षिमा या सम्बन्धा है)। ब्रेंसी(शिन्)-वि [नं] शासन बरनेवाता। ३० देवा पति स्थामी। ष्ट्रबर-पु॰ [मं॰] स्वामी: शजा धनी था वश स्वति प्री जनविर्यता परमेक्स आस्मा एक संबत्सरः पित्र 🕮 देवा वाराः पोशक- रामामुओ वैधावीके अनुसार 🖺 कराबी(ईश्वर, जिन्द् और अस्पित्)येमे रख । दि॰ नेपरित्र इक्तिमानः समर्थः चर्मा । ∽निपेध~प॰ नारितरना −तिञ्च-वि ईपरमें विचान चरमेवाका । −प्रतिपास-पुरु लेपूर्ण बर्म और यस्टे सम्ब प्रेस्ट्स अधित वर वैसा -प्रयाद-पु रेन्स्को १४१३ -भाव-पुरु रेन्से, म मिन्द सामर्थं र 1 −विभृति-धा वरनेदर**दे** तिना क्ष । न्यग्र(न्)-पु रेमर्गार । <u>श्रिश</u>ान्सः [मं] दुर्याः सहयो या शेरे शक्ति । हैचराधीन-दि [दें) देशको रच्छारर अस्टिन है बारी-भी शिं दुनी करमे। अर्च शना शिंगनी बंध्या करोरी सहस्ता, भारती भर्ग पीचे !

Marshal estilent Marshal Field Herrenfurz Marshalling was ween Martial मनिकः यहप्रिव Martial law कोनी कामून संनिक निधि Martyr Botten, weit Masculine वंक्षिया वि प्रविधित प्रविधि वीश्व पश्ची जैसा Mask वर्षद्र जदार मुखाराण मु**द**प्पर Mass contact weeky Mass migration सामृद्धि प्रश्नका सामृद्धि स्थानांतर गमन Mass production व्योतपादम समुहीत्पादन Mass treatment समृद्दोषपार Match बोबा शानुकाया समरः विविधारिता Material n. empth adl wifes Material civilisation white House Materal goods योक्ड बसार्वे Material prosperity श्रीतिक वैयव Material resources भौतिक सागन Material well-being भौतिक दश्याव Materials consumed उपभक्त सामग्री Maternity home nessis Maternity relief प्रमृद्धि सामाध्य Maternity welfare centre मानुक्स्वामग्रह Maternity welfare work auft annu and मात्रदश्याच-दाये Matelarchal पारमधारमञ् Matriarchy मानसत्ता Matricide mure mutater Matron artist Matter of fact assers Mathematically वृतिहानुसार Materation ulture ultum Mature matured efter, ale Maturity uftaum uftaus Maturity Date of परिपाक-विशि Maxim मुद्रा निर्मात विश्वतिवादव वीविवयना वार मनोक्षित सम्बोधि Maximum wivean news Mayor नगरिनगमाध्यक्षः नगरंभी Mean मध्यशीयामा मध्य Means BING -of communication स्वार्ड सामम -of substitutes facility and -of transportaty " Plennte attat # 7 - Mochanic atilas C.

aical cumulit

Mechanical transport qiffix q(qq Mechanically propelled vassels appreces पोठा बंब साहित मीदाएँ Mechanisation of Agriculture Effections Mechanised army चंत्रसमित्र छेना Mechaniam बंबरबना वंशनासर, देवना स्टाट प्रक्रिका, समिकिथि Median माध्यस्य, मध्योत्तर रेसा Mediation neglect Media of publicity unrus mean Medical श्रेणिकः चिक्रिसक्षय, निक्तिसार्धन्य —cortificato वेशविक (विकित्सकोर) प्रमानगर -college भैवदिक विचादक -department Palery feur -equipment (afacel-unt —expenses (श्रीदेशाम्बाद -institution defeat stret --ग्रेंस्टर्यायाच्येचीयद्व सर्वेशस ---practitioner भेर ब्रहरिक चिक्रिशायोग्रे --- science शैशीब्द विद्यान विविद्या विद्यान Medicine there Medicinal प्रेयमेन (मेडिकन = भेगतिक) Medicinal science धेवनविद्यान (भोषधिक्रिक्र) Medleval कव्यवद्यंत सम्बद्धानीन Meditation une face Mediterranesa Ses भूमध्य सम्बद Medium साध्यम शापन Medium gauge महोको कारव Medium of exchange विभिन्न माध्यम Medium of instruction fames much Meeting afthau des - सिराद्रदाहरात आयानी अधिनक्ष - Erendendinary menter with an Miching point series assis Member in charge 1990 8224 Mcmo श्मारः शहर शास्त्र us firego (b) alomald Memorandum talena talata alasinicine संजेव हेया Memorandum of Association Memodal भारमार् Menaco अधियात विनीविध Menopause & Matia क्षत्रने, माहराधे ध्यविश्वि men negigeen मनोधीर्देश्य 16 3/46

Paleo Botany-Pedegogy

Paleo Botony पार्व सामा Pan Islamian सर्व सम्बाधवार

Pan Islamian सन १००१-२०१ Panel कही नारिया चौकीर उडना, दिशा पीकीर स्वास, शक्किं Panel of Chairmen समापति-वाकिका

Panic wide

Pantisciem graceis Papacy tiver, tivin

Paper state वीष-राज्य Paper surrency पत्र-पद्मार्थ Paper Currency reserve पत्र-पद्मार्थ-रक्षिण कीय

Paper-Setter प्राश्मिता Paper weight प्रवासक प्रत्रपान

Papers पत्रवाद Paper प्रवाद

Papers quists
Par Above selegesqui
Par At suppersur

Par, Below agg wangsage Par value gangsa

Parachule हवाई ग्रात्ता अवसरण राजा Paradox विरोधामास

Paragraph दृष्टिका, लनुष्टेच अस्तर Parallel समाजांतरः समस्त्र

Parallel government वति सर्दार् सन्ध्य सरदार Parallelogram स्वानांतर चतुन्त्र

Paralyse इव स्टब्स पतिश्चीन वा संवादस्य नवा देवा Paramount power सार्वभीन सन्ता, स्वीध सन्ता Parapet सन्दर

Paratic प्रति प्रोप्तिक प्राप्तको, प्राप्त Part uled rice मुख्या पावल

Parcel que ques Pardon un

Parity समार्थका, बरावर्ध देशके कपवन संसद्ध (बुराना खब्द) Parking piaco साहिबोंके कहर्यका स्थान ह

Parliament 1977
Parliamentary government 918 Act 1988
Parliamentary hinguise 88 Act 1987
Parliamentary languise 88 Act 1987
Parliamentary languise 88 Act 1987
Parliamentary languises

िएक भाषा Parliamentary secretary संग्रह्मानक स्वतासीनक Parody waste काम्य

Patody अनुक्षति बास्य Patole प्रनातिबद्दमा भन्न तर्वय मुक्तिः सार्व्य मुक्तिः सर्वय मुक्ति

Paralog प्रश्नाक्या Pare paymont साहित्व प्रयान Partially साहित्व स्थान, नेवाया

Partully excluded areas लंदनः अपनीवत ध्रव Particulars विवृद्ध

Parties concerned 14 mg Partition famas Pattnership milan Parts of speech gisquig Part time gisquiss Party ey, ess tillibus Party-caucus द्वाडी बंतशीय Party in power substilles दक

Pass y पास होना या चरमा उद्योगे दोना। शांतिकरचा Pass y पास होना या चरमा उद्योगे दोना। शांतिकरचा Pass y: प्रवेदावश वास्त्रका दरी, दरी Passage देखील

Passage defici Passage money unfact Passed unite, selferi undid Passenges guide undi dy

Passive resistance निष्मित्र महिरोप Passport बारमण निष्मित्रक राहवानी Pasteurised milk कृतिशोधित हुउप

Pasteurised milk कृतिशोषित हुग्य Pastureland गोबरभूमि पञ्चबर भूमि Patent वृक्षस्य

Patent medicine पद्धार भेगूज Patent, letters पद्धारमभ Pathalogist जिल्लामाणी Patriarchal (सरकारणा

Patriarchal fegennum
Patriarchy fegennum meeter fegen
Patricialo fegen
Patrimony femus
Patrimony femus

Patrol n. चरिरामुद्धः बदरावः ४ रह्याचं अभव इत्तार वरिकाय करवा गरत वनानां Patron संस्कृतः Patron हुए संस्कृतः Patron हुए संस्कृति वार

Pawn sife
Pawner sifesol
Pawner sifesol

Pay seulo नंतन माम Payablo देव —as sight दर्जनेदेवा—to beases नाहरूदेवा

ाठ वर्धाटर बारेटारेब रिक्टच प्रावदः प्राविक्षी

Psychalics ebergal Psychology ebergal Psychology epiper

Payacale 414414 Payabeet 414-486 Peace wife

Peace offensive श्रांतित्रशास Peaceful penetration श्रांतिर्गृतं वरेश पा धरि-बार बरना

Peak production standing

Pecuniary we-side Pedagogy faurence Pedagogy faurence 4

Merchangie marine quarque squuite des Merchantman, merchantship aifragig Mercury vice, viets avere Mercy Peution of Egilium Mercel fests (Rufan) Merger fen fenan

Meridian बाम्बोचर रेखा, मध्याह रेखा Merit according to शुकानक्षमन योजना-क्रमने Meucheer neger, anderes

---प्रधाप्तद क्षेत्रहार-व्यवस्था

Memlurgy ungfaura Metapor sas

Metaphor, sustained gin ave Metsorite wester

प्राथकार्याच्या मंत्रीस्थिता Merce gauge छोटी कारन Methodology spinafe

ऑल महरद, मनद

Microphone श्विश्वेषद बंग सुमाबद यंग Microscope स्वत्राचंद्र यंत्र अनुवीक्षण यंत्र Piece Ante sultid

Middle East मध्यपूर्व (परिश्रमी पश्चिमा स्था उत्तर

र्वी वस्त्रेद्ध) Middle man ewise steras

Midwife प्रसारिका, दारे भागी Midwifery बाक्षेत्रिया Mictage spans

Migration REAR Migration certificate विश्वविद्यालवीताण अमायक

Milch breeds gare 414 Mulengo क्रोच संस्था क्रोद्यावित्रेय

Militarisation Highers Miluariam Alfagrig

Multary attache सेनिक शहरारी n Installation diffe noutel

Military tribunal सिनेक न्याबाध्य Milnis देशराहर समा, बानवर सेन्ब Mill विर्मायी मिक कारखानाः वकी [Flour mill with wall]

Millentom सहसान्त्रीः सब्बेयुक् सत्युन Mine-field सरंग क्षेत्र

Mindayer सुरंग-प्रसादक कीत सुरंबकीत Mineral resources बनिब-सावम, धाविब-संबद Minerology सनिवद्यास, सनिवनिद्यान

Mine-sweeper सुरंब-बार्जक पीत, सुरंबदारक बा द्यासम्बद्धाः योज

Ministere #4 64 Minimum म्ब्रुवस, अविस्

Minimum subscription अहित्य अधिकान वम करा

Mining settlement @faufd Minister in-charge प्रमारी मंत्री Minister of State tran-sist

Minister Plenipotentiary पूर्वादिकारी दूर Minister without portfolio frat familia

मधी निविधाम मंधी Ministerial party मंत्रियश मंत्रिपशीय रक्ष

Ministerial service fora magiftan र्वेशियां अध्यास्य स्थापित स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य -- of industry and supply sold silt ter-

मेवास्य Miner अवबस्क, नाराक्षिण न्यूनवयस्का **तपु अ**मुस्य

Minor head og thes og ne

Minority अल्यांस्वड वर्ग सर्वात अववरस्ता party meddans इक संबद्धानिय दन

Mint प्रशेमा रक्ष्माक Minus दिवस, दिश्हितः कल-चिद्व

Minute book कार्व विकास प्रस्तक

Vinute of dissent (aufe fewor himutes of proceeding कार्यशासीका सभीगः

(वैद्वहरू) संक्षित्र कार्यविवरण

Miracle आधर्वकी बात पमत्यार Musappropriation अपनीवन ध्रुपयोजन

Mubehaviour aviait Miscacciage वर्षपातः विषयताः अपगयन

Muscarriage of justice squadurer squaded Miscellaneous प्रशेषं,-account प्रशेषं देशा

PPPPPPP noisessails Misdemeanour errare

Misdirection विमार्त-धर्मन, अपन-नवन

Misnomer किया नाम, अववार्य मान Misrepresentation (मध्या प्रदर्शन आंच क्यम,

सपा सर्पत Musion प्रयास्त दका बद्दय जीवम-कदवा सेवामग

Mis-understanding यक्तप्रद्मी, समझ्की मूड

Migation सृद्धाम (न्यूनीकरम) समझ

Mixture flow

Mob mentality सामृद्धिक मनीवृद्धि सामृद्धिक प्रवृद्धि Mob psychology सामृद्धि मनोविद्यान सामृद्धि प्रश्लीसाव

Mobile बहिन्दा, बद्धता फिरवा

Mobilisation of industry क्षेत्रमंसभाव, धैम्प

Mobilisation of army वर्षाय स्वार

Model प्रतिमान भारार्थ Moderate शंबत संतक्षितः अनुमः अनिभक्त Moderation संबंध नर्मी, मुकार्यायक

Moderator भाग बना वैनेवाका भागात

Pedigree बंद्यावदी, कुषप्(परा Pedigree cattle विश्व संस्कृत पशु Pegging Act स्वासायक्रकारी अविनियम

Penal इंटनिषयका दंबनीय Penal code इंटमेडिया

Penal settlement शृहितीक्षे वस्ती Penalize नहित करमा

Penalty रह, सारित, निमह

Pending दिनाराधीना संदिश लंदमान Pen-down strike केरानीको रोधन

Pendulum siss

Peninsula grafiq Pen-name milefique aganu

Penology te-fema

Penpicture graffag

Pension निवृधिततः पूर्वभवावृधि Pensangular eriket पंपानी क्रिकेट

Penn quest

People in power nation offer.

िया ट्यांटिक प्रतिकारिक पीछे विद्यालकातुल प्रतिकारिक

Per unit मृति इक्क

Percuptory order अनुस्तंभवीय भारेक

Perforated सक्षित्र, दिव्रब Perforator नेपनी

Perimetre affins

Period सन्ति -of service सेनाहाड Periodical सामविक नियवकारिका सामविक नम

रामदिक प्रम्-peyment विरुद्धकारिक अस्तान Permanent settlement शानी व्यवस्था, शानी

न्म (थ

Permanent tenant स्थापी **इनक** Permission अनुमति, प्रानुमति

Permit प्रभुमदिएम

Permutation प्रस्तात कमवन कमविस्तार

Perpendiculas #4

Perpetual succession श्वासत क्यराविकार

Perpetuity attes ultaile

Persona grata মান্ত ব্যক্তি Persona non-grata সমান্ত ব্যক্তি Personal Assistant ইব্ডিক গুৱাৰক, বিখা গুৱাৰক

Personal bond defeat to Personality suffers

Personal law वैशिषक विशि स्तीन विशि Personnel सरस्वपण कर्मधारियण

Pertinent dra

Pervasion squa

Perverse तर्रे विश्वतः विश्वतः, उत्तरा Pessimsm दरस्यातः, नेरास्ववाद

Petit bourgeois तिम्त मध्यवर्ग Petition प्राचीनापण पापिसा। अर्था Petrology शिका विद्यान

Pisatiom महोडोडा, सम्पष्ट्य Pharmacopocia श्रीवर्गनिर्माणद्वास Pharmacy अवग्रह्य, श्रीवर्भाष्ट्र

Pharmaceutical chemistry भेवत हसावन

Phase स्वस्त्र, अवस्था Philology आपाविद्यास

Phonetics स्वर-विश्वान Phoney was नक्को तुद्ध, सुडा सुद

Photo giquan

Phrascology प्र-विन्दासः स्रष्टानको Physical सारोरिकः मोदिकः माञ्चरिक (भूगोन)

Physically fit शरीर है बोम्ब

Physiognomy बाह्यतिवान Picket चौक्के छोटो इस्से

Picketing परना देना मनेश्वरोधन Picnic party बनसोक प्रमोदनोशी

Piecemeal stem.

Pigeon-hole क्षेष्ट्रपंड Pigment (सहस्य, वर्णक

Pilot बाह्य Pin सुद्ध, ब्रीट्सा —cushion सुद्धवानी Pindrop silence वर्ष नीरवस

Ploneer अभगामी Pipetto नशिक्य

Pinte autegal

Puch वावयस्थकी। उच्चतम स्थाव Placed मिश्चिष्णक

Placenta अवृदा बरायुन्छ, पुरस्य

Plaint बाद पण Plaintiff बादी

Plan बोमबा छपावा मापनित्र

Plane figure सम्बोध, समयकाङ्गति

" surfaco समयक Pianning जाबीजनः निवोधन

Plant प्रयोग-पंत्रावको यंत्र-समुख्य Planter रोगक

Planter रोपड Plaster प्रकरतर, स्तरण

Platoon quan

Play सेवा नाटक, वर्गनव —ground सेवका नैदाब, सेवागर

Plea तकी मधिपादमा बदाना Plea Admissible साम्र तक Marshal sanfers Marshal Field ueremifens Marshalling van ster Martial समिका सबविय Mantal law कोश कामून, मेनिक निधि Marter umem tinte Masculine ufen fas gegiffen, genis Giru पश्यो जैमा biosk वषद, नदार, मुखायरूप, मुखप्पर Mass contact arrival Mass migration सामहिक ब्रहान सामृहिक स्थामीला-गमस Mass production वंबोरपादन सम्बोरपादन Mass treatment unsignic Match बीक बातरूक समर, वरियोगिया Material p. erent adi ulfen Material civilisation william usum Material goods मोतिक बर्ताएँ Material prosperity siles the Material resources धौतिक सामन Material well-being मौतिक वस्ताप Materials consumed उपमुख सामग्री Maternity home susmer Maternity relief unfa mura Maternity welfare centre spressione Maternity welfare work nafe aren-and प्रावदश्याम सार्वे Matriarchal monentus Matriarchy mount Matricide most moster Matron maga Matter of fact desirate Mathematically महिलानेसार Misturation affque, affque Mature, matured often, fie Matacity altaunt, aftern Maturity Date of aftere-fele Maxim मुद्रा सिक्रांता क्षित्रांतवालक बीविनवना वित walfer nautier Potes wrash coumized Mayor समर्गनगनाध्यक्षः समरक्षी h(can मध्यविभाषा मध्य Means sive FER Estate autralemman lu----- of subsuscence जिलेह से साथन

Meanice अरामः बारमाना मस्त्रामः काररकारे

Mechanical advantage quique and

Mechanical condition wifes 581

Mechanic वानिक वंशविद : विकी

Mechanical transport wifts where Mechanically propelled variets as we'll धोतः चंत्रपाहित जीकार्प Mechanisation of Agriculture afternary Mechanised army wanters that Mechanism बंबरचलाः येलवाहरा रचना स्थाप प्रक्रियाः विविधि Median माजिला मध्यतंतर रहा Mediation acatas: Media of publicity प्रधायनके सार्थन Moderal Before Reference, Glernietet -certificate define (felannite) games -college states facility -department 'alert leure -englament (After Hat -expenses (alternage ---Institutionalelles size: -- precritioner नवश्वतिष्य, विदेशायीये _science भेजरिक विश्वास, विकिसा-विद्यान Medicine भेरम Medicinal मेक्टीब (मेडिक्स = मेर्निक) Medicinal science भेपत्रविद्यान (भोद्यशिक्रान) Medieval यध्यस्यीन मध्यस्थीय Meditation with 1484 Madaterragean Sea stude HIGE Medium muse alve Medium gauge महोकी कारन Medium of exchange (4) मन्माध्यम Medium of instruction fauret stuff Mercing Meden des -, Emergent आपानी अभिनेशन — Extraordinary सञ्चापारम धार्पपंचन Melting point gards, usule Member in charge suit stee Memo स्वारा शह, श्रापन Memoir संस्थाया बहुनेशन केत Memorandum स्मारकच्या, स्मरणप्या, शावना अन्साभन विकेष केंद्र Memorandum of Association Ωि⊭⊾स्टइ Memorial भारमार ह Menace व्यक्षियातः रिमोरिस Menopause Calletia Menses मासिक्समें, माहबारी Mensuration tistleft Mental deficiency additto weakness बचोरीनेस्न Mentioned aftalas afte ulis Mercenary ad] uferirdi i n. 125 1/46 Merchandise affare sur, 414

Peleo Botany पारप साम Pan Islamism सर्व-इसकासवास

Panel बच्ची बारिका चीकीर उत्तका, रिक्का चीकीर

श्चाच ताक्षिका Panel of Chairmen सभापवि वाकिका

Panic wat a

Pantheism सर्वेगरपार Papacy पोपपद, पीपतंत्र

Papal state que cres Paper currency quequid

Paper Currency reservo पष-पकार्य-पश्चित कोन

Paper Setter griften

Paper weight एडसारक प्राचीन

Рарсез визни Par Above अविमुख्यपर

Par At unqueux

Par Below क्ट्रेस, अक्पूक्ककर Par value समान्य

Parachute इबर्ल छठरी। अवतरण छात्र

Paradox विरोधामास

Paragraph इंडिया अनुष्योग, मस्तर Parallel empires espe

Parallel government प्रति सरकार, समस्य सरकार

Parallelogram समानांतर क्<u>तर्</u>श्व विश्वत्रोपुष्ट उप कर्ता. गतिशीम का संबाधून्य बना वेगा.

Paramount power सार्वश्रीत सत्ता, स्वोद्ध सत्ता Parapet मुद्रेह

Parauto क्रबोबी परीपनीबी परांमक्की प्रशासकी

Parboiled rice मुक्तिया सावड

Parcel the tide

Pardon सम Packy BATEDI SUSO

Park ध्रवन शेवाद (ब्राना सन्त) Parking place पाकिशके अवस्थिक स्थान ।

Parliament des

Parliamentary government पासंग्रेश शासन Parliamentary innguage संसरीय माना, संबंध या

श्चित्र भाषा Pacifiamentary secretary संसद् समित समाधिक

Parody अनुस्रति सान्य

Parole प्रतादिक्यनः सप्रतिनेष मुक्तिः साथि मुक्तिः सर्वक मुख्डि

Parsing stunsers Part payment आदिक मुगतान

Partially wifes will stop: Partially excluded areas बाग्रहा अपवृक्षित श्रंप

Particulars frage Partles concerned that the

Partition firms Partnership unfun Parts of speech खुच्हारें Part time cleayles

Party पक्ष, एका ग्रीविभीय Party-caucus इक्की संवर्गाहरै Party in power affective aw

Pass v पास होना वा करना एखीने होना: परिवक्रमा Pass n. प्रवेशवनः पारवका हरी नर्रा

Passage Rufu

Passage money nuisage Passed पारितः स्वीकृतः बचीर्ण Passenger guide and de

Passive resistance शिफिल प्रतिरोप Passport views (Armayes Citalist) Pasteurised milk इमिश्लोपित रुप

Pasturciand गोचरमूमि, रह्मपर सूमि Patent que

Parent medicine प्रकार धेरम Patent letters varays

Pathalogist fremulat Patriarchal पिरसचारमञ्

Patenarchy विजयसम्बद्ध व्यवस्थाः विवर्षेत्र Patricide (traver)

Petrimony बेल्ड पन

Patrol n oftene outlies v this same श्वरताः परिक्रमण करवा अस्य क्याना

Patron deser Patronage deam

Pauper suit ब्राक्टियम पार Pawa only

Pawace unfeunt Pawaco बाबिसादी Pay scale less row

Payable kg -at sight व्यक्तिया-to bearer बाह्यप्रवा

≁to order आदेशरेव Payco प्रापद, प्राप्तिकर्षा

Payer wan Paymaster deuties

Payment भूनतान श्रोपन

Рауксаю Волин Payabeet 300-985

Peace utfor

Peace offensive श्राविभवाध Peaceful penetration श्रांतिपूर्वेद प्रवेश वा अपि

कार करना

Peak production बरमोत्सारभ Peasantry grand

Pecuniary 44-4140 Pedagogical (प्रशासायीय Pedagony (humana

वम 奪

Merchantile maring काश्वित्रमयोस व्यापारिक नेहा Merchantman, merchantship 41/914916 Mercury que, quen quue Mercy Pention of Tailies Merged विकास (विकायत) Merger Run Gunn Merklien queffer beit menie beit Merit according क गुपानुद्धवसे वोध्यना क्रमने प्रस्कातिक सहवार बाल्यांनाहर -service where-warm Metallurgy angiquia Metapor sequ Metaphor, austained gin E46 Mersorite grants प्रदादकरकोठहरू अंतरियानिकाल Meter gauge tild Bige Methodology article Mica wite, whe Microphone ।वनिश्वेषद वंत्र सुमावह वंत्र Microscope स्कार में इ वंश, अधुनीक्षण यंत्र Micro wave wester Middle East मध्यपूर्व (विश्वमी विश्वना तथा उत्तर र्शें भक्तेका) Middle man guise steams Maiwaic प्रसादिका कार्य, भावी Mudwifery बाबोविया Migrant agua Migration Mass Migration certificate [aufanwaiter sures Milch breeds gyne sted Milesge क्रोध संस्था काशविदेव Minerisation Blacker Minerium Elegen Mainery attache सैनिक सहवारी installation सेनिक प्रतिष्ठाम Military tribunal श्रीनेक स्वायाक्त Militia देशरक सेना बामका सैन्द Mill दिमाची, मिक, कारपानाः वदी [Flour mill engr-qui] Millenium सहसाम्बीः सुनर्भेतुन, सत्तुन Mine field सुरग क्षेत्र Minelayez सु(य-प्रसारक पोत, सु(यक्षेत Mineral resources एनिक-सामा एकिक-सेक्ट् Minerology पनिवस्तक, सनिवरिद्यान Mine-sweeper सुरंग-मार्थक पीत, सुरंगहारक का श्रवनासक पीत Miniature wy 44 Minimum न्यूमतय, वरिश्व Minimum subscription सहित्य अभिवान अव्य

Mining settlement uragela Minister in-charge प्रमारी मंत्री Minister of State craquist Minister Plenipotentiary पृथीपिदारी वृत Minister without portfolio frat feminar मंत्री, निविधाग यंत्री Ministerial party मंत्रियश्च, मंत्रियशीय दक Ministerial service fara unfulltuf Ministry मंत्रिविधान, मनास्य -of industry and supply soly wit the-¥utor अवशस्त, मानाकिम, स्यूधनगरदा कप्र, शहरूव Minor head og slide og ny Minority अल्प्रसंख्यक वर्ग अश्यमतः सम्बद्धता party शस्त्रंडवर रह संदर्शकिय रह Miat प्रशास टब्साफ Minus बिमुक्त, विरहिता क्रम-विद्व Minute-book कार्य विवरण प्रस्तक Minute of dissent faris-firm Minutes of proceeding कार्यगरीका मंत्रेगः (रेडक्टा) संक्षित्र कार्यस्थिरण Miracle बाधवंधी वात धमरदार Misappropriation अपयोजन दुवपयोजन Mabehaviour service Miscernage गर्भपातः विषकताः अपगमन Miscarriage of justice स्वाबवैद्यस स्वामित्रेष्ट Miscellaneous प्रदोर्च -account प्रदोर्च देखा Misconception firmute Misdemeanour gringen Misdirection दिमार्थ-दर्मन ऋप्य-नवन Misnomer शिव्या नाम अववार्थ याम Missepresentation विस्ता प्रश्लेम आंद समन सथा वर्णन Musion प्रवाहक एका बद्दन श्रीवन कर्ना सेवामत Mis-understanding ग्रन्यहमी समझक्षे मृड Mitigation बुरुक्र(ण (न्यूनीक्ररण) श्रमन Mixture विभण Mob mentality सामृदिक मनीवृत्ति सामृदिक प्रवृत्ति Mob psychology सामृदिक मनोदिवास सामृदिक मनोभाव Mobile व्यक्तिका, बक्रमा फिरवा Mobilisation of industry ऐम्ब्रांसमन संबद्धन Mobilisation of army प्रयोग-संपदन Model प्रतिसाज आशर्ष Moderate संबद्ध संबक्षितः बनुमः अवधिक

Moderation संबंध पर्धी सुकारमिक्स

Moderator बर्म बना दैनेवाला, मध्यस्य

Pediziec duiqui, Emyett Pedigree cattle बदिया मरखदे पदा Preging Act काजाबककारी अभिनियम Penal रहिष्यका रहतीय Penal code dellegt Penal settlement effeetich uteit Penalize afen meur Penalty इंड. जारित, निमह Pending विवासचीना छविता बेबमाम Pen-down strike urraten-iben Produlum when Peninsula magia Pen-name साहित्यक एवनाम Penology se fenia Peopletine marian Penson निवधित्तव, प्रवेशवादित Pentangular criket पंचांकी कि देव Peon vans -book exercificat People in power सन्तास्त्र ध्यस्ति Peoples was slage Per capita प्रतिष्यक्ति पीधे Percentage glagges Per unit ufe uss Peremptory order अनुस्तंत्रनीय भारेक Perforated सधिक वित्र Perforator duri Palimetre ultilate Period wafer -of service Baissa Periodical सावधिक निवतकारिका सावधिक पव धामविक पना-peyment नियहकारिक नुपरास Permanent settlement रुपायी अवस्थाः रुपायी मञ्जूष Permanent tenant स्थायी इनक Permission असमिति, प्रानुमति Permit प्रामुम्बिपन Permutation प्रस्तात ऋमथम ऋमनिस्तार Perpendicular #4 Perpetual upen Perpetual succession भाषत उत्तराभिकार Perpetulty HIRTS Perquisite अनुकास परिकरिन

Persona grata प्राद्य व्यक्ति

Personal bond daftes de

Personality safessa

Perdoent the

Persona non-grata अग्राम व्यक्ति

Personal law वेनक्षिक विकि स्वीत विकि

Personnel सदस्यगणः कर्मवादिगण

Pessimism दःस्मातः, नेराद्यकाह Petit bourgeois निम्न मध्यक्त Petition प्रार्थनावश्व, बानिका, अभी Petrology fiber fame Phantom मनीकीका छावापुरूप Pharmacopoela भीक्पनिर्माणदास Pharmacy Availed, Maries Pharmaceutical chemistry भेवन रक्षावन Phase स्त्रस्य अन्दर्श Philology भाषाविश्वान Phonetics स्वर-विद्यान Phoney was need HE, Hai HE Photo manfam Phrascology पर-विन्यासः सभ्दावको Physical द्वारोरिका मीतिका माहतिक (भूगोक) Physically fit titte बोनद Physiognomy आर्रविविद्यान Picket की बढ़ी छोटी उक्की Picketing भरता देना प्रवेशरोपन Picnic party बनमोश प्रभोदयोधी Precement cieux Piers shows Pigeon-hole algue Pigment (ages sels Pilot with Pin sie, eften -cushion uswirit Pindrop stience पूर्व औरववा Propert समयामी Pipette मस्तिका Picacy assettial Picate बकासा Pitch भारतस्थकी। उपावस स्थान Placard fuftieres Placents sittly attitude, 2144 Plaint wat you Plaintiff end Plan बोजना, उपाया माप्यिम Plane figure समध्य, समस्याकृति ... stirface सम्बद्ध Plenning जाबीयन, विवोधन Plant स्थीय वेत्रावकी येत्र-समुख्य Planter रोफ Personal Assistant नेवृद्धिक शहाबक, दिनी शहाबक Plaster quetar, early Platoon very Play केंद्र। मारक, असिन्य —ground बेडका मैदान, सेडापार Ples वर्का प्रतिपादका बहाना Plea Admissible mu ad

Pervasion sum

Perverse nelfent fenn, zent

Marshal seriese Marshal, Field agreetfrees Marshalling van agur Martial स्टेन्स्य गर्माव Martial law की के कानून, सुनिक विवि Marter genen, Sels Masculine पुलिए। वि पुरुशेचित, पुरुशेके बीव्य, पर्वी देमा Mark कर्षक जवार सम्बाधरण संसाध्या Mass contact werden Maes mieration musica un tor untilea. रशामांतर गमन Mass production वृंबोल्साइम, सम्बोरपादन Mass treatment ungique Match बीहा मानुसम्बा सगर, विविधीनिना Marerial is windt adl ulfem Material civilisation althur mores Material noods सीहिन स्कार् Material prosperity भौतिक वैभव Material resources भौतिक मापन Material well-being भौतिक दश्याप Materials consumed बस्तुम्ब सामग्रे Maternity home payment Materalty relief garls manut Maternity welfare centre मानुस्त्रमाणगृष् Maternity welfare work pufe-amprais मात्रक्षमान कार्य Matriarchal मानस्यासम्ब Matriatchy grange Matricide more murrer Materia arrest Matter of fact surnus Mathematically school-sit Maturation ultus ultua प्रीयस्तर क्रमसंदर्भ व्हेक्ट बीड Maturity aftant, ultus Maturity Date of altyra-file Maxim मुद्रा सिक्कोटा विक्रोडगावमः मोनिक्चनः अल श्रवेधिक वस्त्रीकि Maximum Myssu neur Maror सम्राज्यसम्बद्धाः नगरपत्रि Mean मध्यपशिवामा म ब Means HIVE --- of communication संबद्धि सम्बद्ध -of subsistence निर्वाह है सामन —of transportation परिवासके साधन Messure ब्रह्मच बरियाणा प्रस्तामा काररनार्वे Mechanic attac sules, facil

Mechanical advantage unfes win

Mechanical condition sifes ESI

Mechanically propelled variely unages पान, यंत्रचालित भी अर्थ Mechanisation of Apriculture sie there Mechanised army weeklas was Mechanian वेशस्त्रकाः वंश्ववाद्याः स्पनाः स्वत्रक प्रतिस्वा ग्रिकिशिक Median unferen norier fun Medianon acatear Media of publicity named green Medical मेलाबद, चिक्सिसकेंब, विक्सिस संगी —certificato मेपिक (विकित्सकीय) प्रमाणक -college defie ferres -densetment 'aftern-from -equipment (Maigreat --- expenses चिक्रिसान्यय ——ंतासांस्प्रधाना नेपिक संस्था —literature श्रेपनिक साहित्य -pracutioner भेषवर्शात विक्रिसामेधे --- science भेचांबच विचान विकिसा विद्यान Medicine पेपा Medicioni धेरबीय (मेहबूस = वैपनिय) Medicinal science प्रेक्टियाब (श्रोक्टिकियान) Medleval यखायग्रेन, मध्यकाणीन Meditation squa faga Mediterranean Sea unor mot Medium शरबन सापन Medium gauge सञ्चाकी कारण Medium of exchange विविधव-माध्यम Medium of instruction दिखाडा मान्य Meeting wiving des - Emergent आपानी अभिवेधन - Extraordioary समापादन अधिकेश Melting point प्रकाद गम्बाह Member in charge and sites Memo tatet att. 2144 Memoir श्रमस्या भन्नस्थान केन Memorandum enteres, theres, elected middles यंत्रक स्टब्स Memorandum of Association 2/नेशायक Memorial antent® Menace stanty Rulless Menopause chifel's Menses बानिहराने, माहराधे Mensuration unfala Mental deficiency ush-441 weakness amilier Mentwood washes ales, what Mercentry all Moulett I to Mas Line Merchandrie urfaragen, are

Mechanical transport ultra ultura

Plead प्रश्नसमर्थनः बढावत करमाः विमयन करमा Plead guilty 2 guilty # Pleader समितका प्रदेश Pleading अधिक कर Plebian enversas Plebiscite जनमत्त्रीमह Pledge प्रतिषा, नेधन Plenary session पूर्णाभिनेशन Plenipotentiary पूर्णाविकार मास क्व Plentity पास्त्रम् प्रतिवद Pliability of orange Plot बुरमियोबना पृथेता क्यानक Plum eres: -line ereste Plural vote wanters un Plandism situate Plucarchy धनिकांच Platocratic democracy uffering wheels Ply wood week wast Pacumonia gaggiacie Pod wat Point n. विद्वा महना नाता संकेश विषय Point v विविध करना करूब करना Point of order निवमापित, विपानका प्रदश Poise singling Polithuro बेंड्रांव समितिको अंतर्यनीको भौतिनिया-रिणी समिति (क्स भीर अन्य देखाँको कस्तुनिस पादिनीकी) Politic, Body राज्य शंका Police बारको आरक्क, पुक्स -force बारक्क रक −guard दुव्हिस गार्का –station हाना Policy बाबायमा कार्यकरति Polish and Polity russus fir Poll House Pollen tabe verrafter Pollination upper Polyandry बहुपतिस्य (प्रका) Poll tax He st, suffert Polling booth noun-over, northess Polling station महराम केंद्र Polygamy agitale, aguelles Polyglot बहुमानाव बहुमानाविक् Polygon again Ponulf रोमन अमेत्र (रोप) Pool वोक्ष्य Pooling एडबोस्ट्स, तमूदीकरम Popular Assembly कर-मातिविधिक समा Popular front कर मीर्या

Рогода ніч

Post दोवामद, र्यदरगाह

Poner aulta Portfolio ग्रेडोबा कार्य-विभाग संसाव Portrait ufaufe, suftelau Pose क्या ग्रहा Position find, teins utell elient Positive विश्वासम्बद्ध विश्वपासम्बद्ध Positivism statem Possession अधिकार, कृष्ण, समझ Post वहा सामा स्तामा स्थान, अन्तर Postal order व्यास्थित सामेश सामेश सामेश Postdated warfales Posted निवत मिनुधा वतामदित Post-entry quit well Poster मिणिविष्ठापनकः विष्ठापनपत्रक Posterity माबी संवान Post-graduare study स्वासकोत्तर अध्यक्त Posthumous मृत्यूचर बात, मृत्यूचरमाध Posting faufer, earen unming men Post mester quere, amufa Postmaster General महावसपाछ महाहासनी Post-mortem meetins - examination quest सरपरीका 100ळ श्रीरथर, प्रम परीक्षणम Postnatal period spaint are Postman surfecte, effett Post office quite citet Post was gales Post war economy ब्रह्मोच्छ सर्वस्थरमा Posture अविश्वास अंतरिश्रति, जासन Potentiality श्ववता संगानवता ववाकी सचि (प्रमान आरिका) Ponitry keeping separit winn Pound ब्रम्भिरोक-गृह, प्रमुभिरोक-सामा Poundage factor per Pourperler mefile and Power शक्ति शक्तिशामे देश मिदार Power Conferment of wireyr-print Power Exercise of affect with Power politics अधिकाराओं मुहमीकि वह राष्ट्रीकी वदनोति Power of attorney सुदशादनाया, प्रविविधि-धम

Power To assume wifell new again

Practice व्यवहार, अच्यासः वाक्टरी, वदावद वारिका

Precautionary अविक मिन्द्रक, पूर्वास्थानता देवन

Precedence quai, qualitat, questiant

Precodent quela, quique, naic.

Practical प्रावीतिक व्यानशारिक

Precaution galur galaviani

Preamble प्रशासना

Mining settlement urfacult

1981 Merchanile marine वाध्यवयोत स्थापारिक वेदा Merchantman merchantship बाबिअववीत Mercury site, vitti gane Mercy Petition of quilitys Merged विकास (विक्रवित) Meiger legg legga Meridian muster ten, monn ben Merit, according to गुणामुद्धमसे बोध्यक्ष ग्रमसे Mescager Begger undienen --- अदर रहेट भरे द्वाहर-स्पन्नरना Metallurgy ungfaque Metapor sas Metaphor, sustained nig Eye Vessorite assure Mesotology sightlessi Meter gauge छोडी साहन Methodology witheld Mica were, when Microphone ध्वतिहेवह यंत्र सुधावक वंत्र Microscope सुरुवदर्शेष्ट्र बंग अनुरोधन वंत्र Micro wave seggin Middle East मध्यपूर्व (पश्चिमी पश्चिमा तथा उत्तर र्वी शकोदा) Middle man इहाइ, मध्यवन Midwife प्रशादिका बाई, भागी Midwifery पानीविया Migrant prese Migration name Migration certificate विभविषाक्योतरण जनावक Milch breeds gyre stell Mileage सीम्र संस्थाः क्रीशिपेरेय Militariestion tifratere Militarism Elfegere Miluary attache सेतिक सहवारी installation सैनिक महिन्नान Military tribunal श्रीतक स्वायाक्त Milkis देशरहक सेना, जानवर सेन्न Mill निर्माची, मिक कारधानाः पदी [Flour mill apprail] Millenium सहसान्त्री। श्वर्णसुम शतकुम Mine-field H(q-8)4 Minelayer सर्ग-प्रसारक पीत सर्वपीत Mineral resources अनिक-सामग दानिक-संपद Minerology सनिवद्याक सनिवरिवान Mine-sweeper gen-nide ala प्रशंगदारक पा प्ररंगनाश्चम पीत Miniature wy 47 Minimum स्वातम अविश्व Minimum subscription अहित्य अभिदान, अ्थून-हम पंत्रा

Minister in-charge प्रमारी मंत्री Minister of State (124-111) Minister Plenipotentiary पृत्रीविद्यारी इत Minister without portfolio frat farigues मंत्री निविभाग मंत्री Ministerial party त्रिवध मंत्रिपक्षीन दक Ministerial service जिल्ल कर्मपारियर्ग Ministry मधिविनागः अंश्राक्रव --of industry and supply क्योग और रसद Minor अवगरक, जागाकिम व्यूपनगरका सपु, अमुद्दय Minor head कप शीर्बट कपु भर Minority अस्पतिस्था वर्ग अस्पता अववस्था party जन्दसंस्थ इक, संस्थाकविश दक Mint पुरीनाः रक्ष्माक Minus विक्रक, विरक्षितः ऋण विक्र Minute book कार्ब (देवरण-प्रस्तक Minute of dissent (146-614 Minutes of proceeding क्रावंबाहोदा मधेप: (रेज्यका) संक्षित कार्वविवरण Miracle जाश्रावेची वात चमत्वार Missporopusiion अपनीवन, दुवपनीवन Mispepavious agials Miscarriago वर्षपातः विश्वकताः अपगमन Miscarriage of justice न्याववैद्यस स्वावनिर्दास Muscellancous मुद्रीयं -account मुद्रीयं केवा Misconception Runaya Misdemeanour gripty Misdirection विमाने वर्धन अपन नवम Misnomer विध्या वाय अववार्य शाम Misrepresentation (hour nythe wie wee, यवा वर्णन Mission प्रचारक वका बदेश्य जीवन-कश्या छेवाजत Mis-understanding वक्तकृत्यो, समझ्यो भूक, Meigation मृद्यस्य, (न्यूनीकरण) समन Mixture flows Mob mentality सामहिक यमीनृष्टि सामृहिक प्रकृषि Mob psychology शामदिक मनोविश्वान धामदिक मनीमाव Mobile चक्रिप्त, चक्रश फिरवा Mobilisation of industry decision des र्धपरन Mobilisation of army वजीय-संबद्ध Model प्रतिमान भारकं Moderate श्वत संतक्षित अनुमा अनिवेश Moderation श्रंबमः नरमी मुखाविषय

Moderator अस्य बसा बेनेबाका सम्बद्ध

1012 Precept बपोध निवेश Precioded afamfea Precursor actual Predecessor पूर्वाधिकारी, पूर्वम Predominant प्रश्न, सर्वेदेशिक सर्वप्रमय Pre-emment सर्बन्न सर्वेश्वय Pre-emption queq Pre-emption, Right of quasas wivest Prefabricated house factory प्रश्नुवीन गृह **विभाषशाका** Preface प्राध्यम, प्रशासमा Preference अविमास अधिमान्यता, वरीवता तरबीव Preferential treatment पश्चपाणपूर्ण (पा अपि मान्यवापुष्ठ) व्यवहार Pregrant सम्मा गर्भरती: अर्थवर्धः से मुक्त से गरिव Prehistoric प्रामेविदाधिक Prejudice प्रतिकृत प्रमान पूर्व पारणा पूर्वपह Prejudiced प्रविकृत बारणाञ्चल, पूर्व धारणान्तिन Prelade मंग्राचरन Premises गृहपरिमाग गृहीयांका परिसर Premium अभिनुस्टः नीमेश्री किरव Pretogative विद्यासिकार, परमाभिकार, शाधिकार Prescribed प्रदिश निवतः विदित Prescription औरपरिदेश विरमीन विरमीन विनित व्यक्तिकार Present v क्यरिश्य करनाः प्रस्तुत करनाः ।। स्पृष्टार मेंद्र adj चर्चरेयता दिवमान, वर्तमान Preservation ultura Preservation of iruits ५:अ-परिरहाण Preside रोडासीन समापदि होना Presided by अध्यक्षतान, समापतित्वमें Presidency समापतिका पर का पतको कार्याविका महावा, महायांत (क्रिटिश शासमङाकर्मे) President emigles ergule President Deputy square squared President-clect मनोनीत समापति Presiding officer wivers Presidium सोवियत स्थायो कार्य-समिति मेसीविवम Prevntion of crime seque-feets Press मुद्रमाकना समापार्यत्र (सामृहिक रूपसे) Press conference रम-प्रतिनिधि सम्मेकन Press information bureau प्रमुख्या-विभाग Press material प्रशासन सामग्री Press 2000 समाचार-ध्वना मेस विधिश Press and platform समाचार्यक और समापे Presumption अनुमास, पारवा Presumptive आनुमानिक Prevention of Cruelty to Animals Act 49 निर्देवता विवारय-अधिविदम Preventive detention रोवासम्ब कारावास विवास

मिरोप Preventive messures विरोधी म्बब्स्या Previous consent पूर्व सम्मति Previous sanction पूर्व सम्मोदन, पूर्व स्वीकृति Prewar नुद्द-पूर्व Price-control मुस्य निर्मन्त्र Prima facie प्रथम दक्षित:, अलावतः Orime minister gyrania) Prime number engagitati Primer ud@an Primitive society आहिम समाब Primogeniture ananyant Princes chamber मर्देशमण्डक Principal (कम्मूर) मुख्यन Principal adj सुद्य, प्रवास छ आवासे Principality राज शामन्त देश Printer Are Prior claim प्राथमिक या अग्रिम दाना Priority अमाधिकार्। प्राथमिकता Priority list प्राथमिकता सूची Prism विवादवंदाच Prison बाराबासः वंशीगड Prison von बेरी याची शंदीबाज Prisoner thi Privacy पद्मांतताः ग्रप्तताः प्रकातस्थान Private निजा । सामान्य सैनिक Private enterprise first war Private member ग्रेर-सरकारी सहस्य Private secretary अंतरंब सचिव विज्ञी सचिव Privation ag, andwi Privilege विशेषाविकार, प्राप्ताविकार, प्राप्त प्राप्तिकार Privileged classes विश्वेशविकार-प्राप्त वर्ष Privy counsil श्रेष्ट्य श्रीयद् : जिटिश शामान्यका सबीब न्यामास्य Privy purse राजानिरेव राजमचा Prize बारितीविक Probation quipment Probation officer प्रीक्षाकांकीय अविकारी, अस्थापी **अक्सिय** Probationer परीस्थमान Pro bono publico ed sufette Problem समस्या Procedure कार्यप्रकृति कार्यविधि (कार्य प्रक्रिया) Procedure Civil स्ववदार-विवि स्ववदार प्रदिया Procedure, Criminal authr Proceedings किवित विवरण कार्यवासी Process प्रकृता जाहेदिका-surwicer तामोककाने

Process of unlikestion एक्ट्राइएको प्रतिदा

Process-fee समितिका शहर

Modest विजयभीके नद्रा सम्बद्ध क्य Modesty the Billie (outrage the .of Am चार, शांड भंग हरना, स्रवेशनाध्ये Modification सपरिवनन, रूपधेद रूपांतर Modus operandi इत्येषणाको आर्थनिक

Mofussil नगरहर श्रेत्र Mole fra

Molecule wor Momentum प्रवर्तक प्रक्रि नेवनस

Monarchy riads Monetary मुद्दा-संरंधी, मीहिन

Monetary fund strain Monetary unit alika que (suit) Money bill (महाविधेनक) यमविधेनक

Money lending साह्यारी, महाबबी Money order बनावें बादेश भनावेदनावेदाः (पनादेख)

Montam भट्टेसदाद Monitor maries

Monitoring श्रीबंधे क्रिए रेक्कि वा टेक्किकारट

Monogamy रहराजी-विदाय, श्रद्धविष्ठ विदाय, दह

ibility maillatem-onol/ Monopoly existant, units TERRES TROMOROLL **有数数据** वैश्विष्टामायः

धीरसंतर Firs manuacle

Moral and Alla ween-fore

-- हथ्य प्रभाव संस्थित समर्थन Morale नेतिह स्तर, नेतिस्ता बीवना Moratorium सोच-दिवंदकाकः जन्म-स्वयन Morphology शाधार निश्चानः बाद्यारिको

Morphological माहारिया Morrae बार्टर नामक छोटी तीप

Mongage १४६, मारिश-deed १४६१६

Moregages ५४६-महोता Morigager destail

Monuscy Beier Beine deriff Motherland मात्र-पूर्ति मात्रोश Mother magon milwe

Motion of Br stare

1538 Falls Pipsa do notiquel notical -, Adjournment साम होश्री महताक पाने तमान SETTE

-for consideration विश्वासी परवार

Les sie ibite stitole Motive To impute Attal us sett Movable property 44 units

More, to sing sight Movement withtel

Mover states Movies undun

Multifarious quali-suit afanyart

Multimember constituency aggreg निर्दाशी क्षेत्र

Multiple new new Multipoint sales tax qfbvt fortat

Multipurpose society account alles scheme बनमधी बोजना

Mummy प्रशासन छन (श्रामित हन), मध्ये Municipal area antila Municipal committee aurufult, aurufuu Municipal corporation agg-flags

Municipality angulacat Munition प्रद सामग्री

Muscle मांस्पेद्यो Museum dueme americ

Mushroom हरदः सभी Mushroom growth महिश्मित शा भारतिमक ग्रह

Music, Instrumental appelent Music Vocal siz-delte

Musket 444 Muster पहच हरवा:-roll शामितेनी दिशा

Mutation चरिक्तंत्र सामांतर सेसम श्रीचात्रात्र व्यापादवर्तात्र भावस्थय परिवर्तन सहित Mariar dea ils

Mussic मुखर्गनी Mycology weether Mysuic exceesed

Mysticsom (Crestit Mitch पुरायकता कलावा, श्रेटकता

Madic ordifer N B. (see Vota Bene) Vaked debenture वयतिमृत ऋषर्य Naming यार्थस**ेख** Narration and a measur Nasal बननासिड रिअक्टर मनवात वरीवमान

Natal applied Nation tre

National राष्ट्रीय जातीय National Anthem cigity, cigita

National debt (1814 % 4 **%अक्तर्वा Dictary शहीब भी बत-विद्याय**

National bealth eight etited Nationalization englected Nationality entires, anders

the Swize! Natural-both citizen 2005. 414(4 Proclamation carelyst Proclamation of emergency आवातकी बकोबया, संबद्धातीय रिवरिक्टी वोक्या, संबद्ध योक्या Procousul क्य-वाणिक्यकत 1 Procurement बस्की (शबकी) अधीपक्षिप Product शुक्रजाहरू; स्रायादित नस्तु अस्पादन Production weren Production of documents #सन-मस्तवि Productivity अवाहनध्यता व्यक्ति Profession बन्ति स्वबसाय, पेसा Professional Conduct समझाविक आपरण Professor munes Proficiency बिपुणता Profit win Profit Excess with the wild Profit-sharing scheme काम विवासन वीजवा Programme कार्यक्रम (परीयम) Progressive incresse section als. Progressive tax gauge grings at Progressivism प्रयक्तिकार Prohibited follow upfellow Prohibition क्ष्म-जिल्हेश प्रतियंश Prohibition, writ of affine & Q Prohibitory विपेनक, प्रतिवेचक Project परिवोजना Projection under Proletariat सर्वकारा वर्ग Promissory note प्रतिवापवस्त्रता वसलपव Promotion क्षेत्रका अधिकतिः क्ष्मपन j Promoter sade ŧ Prompt fapr Promulaçato कार्त करमा, प्रवर्धन करमा प्रकापन करनाः विवेशिय करना Promulagation प्रवर्तन, वियोगय Propose कन्यंपन-पथ Proof प्रमाण श्रीष्य-पण Proof reader देश्यायक श्रीव्य-क्षीपक Propaganda natemá nate Propagandlat swith Propagate state acat Property श्रेष्टिं। विशेषता, ग्रुव Property movable and immovable us car अवस संपत्ति Property-tax editor. Prophet देवदूत, चेतवर Prophylacife Drug (pafative and Prophiation REHT

किथिरव

Proposal प्रशासना

Proposer negges Proposition piles greatest Proprietorship surface Ргогодие нязышні (Ацья) Proscribe जन्म करमा, प्रतिनिधः करमा, नारित करमा Prosecution गामिबीजवा गामिबीका श्रमः इस्तवास Prosecutor public traste marieu Prosody marrana Prospect manus andic Prospective and Prospectus (। बर्णपृष्ठिका (पाठवक्रमाधि): विवयसणी Prostitution वेदबल्दर्म, वेदबाद्यपिः दूरपरोजन Protection of industries subdist start Protective duty ticus at Protectorate etches tree Protest प्रत्याक्यान Protoplesm alexes Protocol प्रकार , स्वसंधिपता क्रमीविक विद्यागर वियाप Protractor शाँदा, क्रीबमापक Provide विदेशिक स्टारा Provided qua Provided that HE wife we & fa Provident fund ultuffff, Hill fil, Han क्रिकि, शक्षिपायक क्रीक संगरण निर्देश Provident fund Contributory stated tiles Province प्रांत प्रदेश: अधिकारक्षेत्र कार्यक्षत्र Provincial autonomy प्रांतीय सर्वास्त्र समाच Provincial Homeguands प्रांतीन रक्षारण Provincialism states: Provision निवेद्धा रसर, कायसम्बद्धीः प्रापंत Provision of law fafa-facture Provisional government worth start Provisional programme अस्तानी कार्यक्रम Proviso प्रविश्व प्रतिश्वसम्बद्ध बावन शर्व पर्दाक Provose Marshal des unarella Proximity effector, enforce Prosy प्रतिप्रवन, प्रतिकारी Pseudonym (स्वद्रोनिय) छथवाय Paychiatrist watche fallenes Psychology unifound Psycho-analysis uniferent Puberty mayana Public accounts committee diseast-ulufa Public activity of a singury Proportional representation MIZITAN Alb-Public affairs street Public concern matter of shelters 418 Public conscion सूर्वकान आश्रानगा

1011 Natural boundary प्राप्तदिक सीमा Naturalisation हेजीद सर्व Naturalism प्रकृतिबाद \autical नीडाविषयक, नीपरिश्वन विषयक Naval मीधेवा-संबंध नाविक Naval attache मानिक सहनारी Navicest योत-प्रमाणका Navigable श्रीवस्य सीनार्वः साध्य Varigation बीपरिवर्तन, जीवरण Navy मीधेना बदानी देश Nest East "fret qu'i, qu'i util Acctair mare also Acches exte, file Needlework स्वीशित्य, म्नीकार्य स्टेंडाते Negative महारात्मका विकास कव Vegative attribute विशेष गुण Veguived fative Negative number was days Negative quantity ऋषराधि Negative vote नदारासक मध Aegation face Accorable इस्तांतरभीय परमान्य Negotiate समझीता वाची करना Negotiation प्रकामन इस्तांतरमा प्रवासाय Nepotism स्वबन-प्रमुशत कुनवापरस्तो। आई मतीबा-बाह Peterno des Nerve स्वास Nervous system स्नातुमेखान स्नाबुमेटक Net शहा नासाविक -income शुद्ध भाव -loss मुद्द शांनि वास्त्रविक शांनि -profit सूद् डाम -price सूद मृस्व Neuralgia state Neurasthenia met eften Neutral area Neutralisation हटस्तीवरण। अप्रभागीकरण Neutrality dresd! New-deal मध्य अर्थमीति (अमेरिकाकी) News HHIST

News correspondent संबद्धशादा

ree! समाचार-फक्क News relay समाबाद-असारण

News despatch समाबाह-मेह

Newsman सांवादिक

Newspaper समाचार्यक

News sheet समाचार-पणक

1 1-4

Vomenclature umquifa Nominal जाममात्रका, श्रीपदित Nominal capital अभिद्रित वैकी Nominal cost solide ultres Nominal price मामगामध्ये धीमत value अभिद्रित मृहद Nominated ममोनीत Nomination paper जामन्द्रियन पत्र, नामांद्रमपत्र यमीनवध एष Vomines मनीनीत स्वक्ति Non aggression pact अमाद्रमण संचि Non-bailable बहारियाच्य अक्टम्ब मीच्य Non-cognizable सहस्रहोत्र, धनगर्नथर Non-combatant mains Non-cumulative spirate Non-commissioned दे-समर, अरामुख -officer सनावष्ट अभिकारी Non-conductor styles Non-entity and safes Nonferrous बोहेतर, कोहनिहीन (बातु), सकोह Nongagetted अराबधीवत Nonmetallic arenate Non-observance स वरतमा, अपासन Non-official वैर-धरकारी Non-party conference विश्व सम्मेक्ट Non-payment न पद्धा दरना अधोपन (स्वादिदा) अवासस्य कार्यानचा (दशादिक्ये) Nonproductive anywith Non-recurring expenditure agrant was Non-regulation province fault all nic Non-resident manufera Non-sovereign state qui nuragiu qua Non-stop दिना स्के अदिराम Non-transferable अपरावर्तनीय, अवस्तांतरमीय Non-violent resistance with HITHER Right W News agency समाचार-समिति क्ल-संस्था Non-votable expenditure अवस्थि अवस News commentary श्वाह-आक्रीयमा Normal energy Normal, Below सम्मानको भीचे Normal school utury from Note bene प्रस्ता विशेष सूचनार्थ (वि. सू.) इसमापि अववेषं (६ ६६) Notary केवन प्रमाणक Notation स्वर्धकिय, स्वेद प्रचारो Note विष्यवी। कपुरेका संविध अभिनेका पाठवका प्रवाहा

Nib देखनी विश्वा

Nibilism ज्ञानात, निषधकार

Nocs असहमत, 'मा पद्म, माहारी

No-confidence motion अविशासका मस्ताब

Nomad बाबाबद अमनशोक (बाति), श्रानामरोस Vo-man s land नि स्वामिस भूमि, नीरावियस मूमि

1427 Public debt granti se Public demands सार्वप्रविक अधियानचा Public entertainment with milt Public function सार्-बन्डिक पुरव Public good alafer Public health wherenew Public holiday सार्विक सडी Public notification मार्च बनिक अधिमानना Public ouisance ओडबंटड, कोडपोडड: सोडपीडन Public oninion shape Public order milafia squar Public relation officer arrival@aid Public Safety Act जनस्था अधिनियम Public servant राजका नारी, कोक्छेनक Public Service Commussion जनसेवा-आयोग Public utility services को शेषशेयी सेवार्ष वनी-क्योची सेवधी Publicist सार्वप्रतिक विश्वतेषर देखारि विदानेशक। Publishy मिनिक कीकिशालि प्रकास प्रमाद जन महेदन Pube Works Dpr क्षेत्रविश्व विभाग Pouncy Judge प्रोहा सब चप-नावागीय Pulley feren, usid fert

Palsacion edan Pulse हाका बानीः स्पंतन Paiverise 194

Pump स्टब्स संब Pon sex Punching forge Punctual समयनिष Pencruation Gaster Punitive dettes Punitive tax दंशका वानीरी कर

Purchasing power squits Purge परिष्करण वरिष्कार समार्थ Pumanism विश्वविवाद, कडोरवावाद Purport stania Purporting to be done अर्थमिने व Purpose charitable gang Putrefaction que

Pyonbea श्रीतम् (प्राना सम्म)

QED TO BEET Quadrangla बतुष्कीच Quadrilateral agria Quaint flaten

Qualification alrege wege Qualified acceptance विशेषित स्वीकृति, समितिनेष स्रीकृति

Quality marking गुण विद्य अंदरन

Outplum gangr Quarantine post होनम्हिन्स निरोगा, निरोगा Quarter प्रत्नांद्धा विमासः आवास, निवासः आमव

श्रभावामः महरूनः नस्ती Quarterly बेमासिक (विकास ह)। ए जैमासिक पत्र Ouater master-general RVIN-CHE-MARKING.

प्रधान सेम्पवास स्वत्रवादक Quarto चौषेत्री चौषती

Ouasi and Ouell sua arm

Опста мая Questionaire grantal-que ()ulckening with the

Quinquennial danger

Ousling विभीषण अपूर्वर, राष्ट्रपोषी Quittance क्रमोचन

Quorum मनपूर्ति, कार्बनाइ संस्था Opota शिवलीयः बंदिलीयः सभ्देश

Ountation mentu, illus statute see rateamotatlons)

Ouotient भागक्रक, महमपूक Oue wattante sifesit-geni R

Race warfe

Racial discrimination प्रशासिक भेदमार

Rack de Radiation शीक्षिप्रसारणः (तान, मध्यप्र ना निनुत्)

Radical आयुक्त परिवर्शनवादी, जम सुवारवादी

Radicalnm सामुक सुवारवार Radio programme रेडियोगार्ता, मानाधराणी-कार्यक्रम

Radio transmitter dare da

Radina avienen firen

Rand प्राचा कापा Raider आप्रमुख्यारी

Railway रेक्ने, अवोपार्य

Rally एक डोकर खडे डी आमा, समवेतम, उपस्थान,

समाहति धमागमन (राज्यरीका) Rampart prest

Rancour minis auftalle

Range पूर्वकोणी: माका: पंक्ति: विस्तारकेण गतिकेण: विस्तार

Ranger quyer

Rank श्रेणी, पदवी, पदशी

Rank and file समस्य सामान्य सैनिका सामान्य अन Ransom बिन्सतियन (पपदा-मीमप्री)

Ratable कायोग्य

Rate उपशुबद, उपहरा बरा अनुपाठा पति

Rating द्वारक निकाम Ratification सन्तम्पर्यन पुश्करण Noted इक्किसिका स्वादियासा अभिकिश्चित Notice सन्ताः पत्रवापत्र Nouce board हुवजा-पड Notice in writing क्रिक्टिस स्त्रमा Notice of motion प्रशास-धनमा Notice to quit निश्वासन स्वना Notification अभिग्रयना Notified area श्रामितिकत श्राम, स्थित ग्रेम Notless than है अस्पून Nuclear म्पेडिक, माविक्षेष Nucleus देविंदु जानिक्दन नीववेंत्र, स्पष्टि, नाविक Nudam amaiara Nuisance & TE, THE THE Null and void द्वान और व्यर्थ Yollification अभिग्रम्बन Nullify et acar Numbered सक्षात जिल्लार नंबर बाका गया हो Yumerical order decima

hurse र परिचम (वरिचारण) करना Nursery बद्योरा, नीजेक्यान गीपकाका; विश्ववादा; विद्यानगर Nutrition गोरा Nux Vomics कुमश

Numismattes agrifered

े uese s. उपचारिका परिचारिका

Oasis हरित्रभूमि सन्होंए सन्दान श्राप्तक Outh of allegiance fagues 294 Oath of fidelity एडांडमियाओं शपक Oath of office परको सबस Oath of secrety महानानी स्टाय, गोपनधारम Outh to administer use \$41 Obdurate (रामा) Obedient servant Most परम काशस्त्री भेपस Obstate point and stated Object user stituted Object and tesson atta aft en Objection, technical milita mille, milifes Oplective बंध्यस्थः बस्येनमा बाह्य Opposion बाह्यता दाविका स्वयंतन्त्रवीवना वयन, Obligation and right wilete wit wieser Obligatory mianid, wareactilly strengen Oblicate ug करता कविकोषन करना Oppliation Vet of tetalia easted Opoomon assistant Opicianon 21422 Observation post (श्रेश्वा) श्रीक्ष Open noil denial

Discrees ediment due Obtuse angle of a sign Obverse n सीधी तरफक्त दा सामतेका भाग, पहला तम्यका बूसरा पर्य या मान, क्यें) सीपा Occidental quarter Occupancy right simplests, refered? Occupation व्यवसाय, बंधाः व्यवसाय, अधिकार, अधिकृति Occupation Army of suffers activity data भविकारिका सेमा Occupation-franchise serenties amifest Остаров мучи Octavo neggi, neggi Octroi barrier कहारा चुनानी है Octroi-tax differ Off daty हार्यसे लडीपर Offence अवराधा बाक्षेत्रा बाक्यम अस्त्रीयः मास्रीय Offence against law (4f4 f444 with Offence, Capital शुरुदंड बीग्य सरस्य Offensive expression and team and team Offensive expression and team and team of the control of कारी परावधी, बागेतिकर ग्रम्हावकी **О**र्सिटर बरवान शिसा-प्रस्तान Office use weather Officer in charge stand with and artists अधिकारी Official adj सरकारी शासकीया क अवेश्वरी Official pasty राजधीन का सरकारी का Official Reporter राजकीय प्रतिवास संस्थाते करि 485 Official residence sympa unada fatto Official visit हालकान परिश्वान आविकारिक जन्मन WIFIFF BOUNDARY Office wards Official विश्वासी विश्वासम्बद्धिः Oil-tanker de tim Olivarchy whaters write Omission fewer from (co fefe fried) श्रावश्य Omalpotent giglwith Omnipresent gridges Omniscient gig On average pay औसुन रवनपर् On service chagain dayed Onos une, erfate Opecaty पार्टापका अपारपश्चित VOIR TUTPITH SEPRICO Open General Licence warm month wasten Open door policy Heart difa Opening balance surface due

Opening entry melica ultie

Open market eint giatt

—of boundaries सीनासंशोपन

Rational जिल्लाक

Rationalisation of industry क्यान-समोक्ट्ल

प्रचेगाती नैशानिक व्यवस्थाः श्रीमधीकरण

Ranoning समित्रस्य, निर्मायत निवरण, सुराकांची । Reactionary मतिविद्यालस्य मतियामी मतिविद्यासम्ब

iceacionary प्रविद्धितानारी प्रतिमामा प्रविद्धितारम्ब Readcor पाठका वाबका पाठीवाकी पुरसका पैक्कार-बपरवाकक प्राप्तापक

Reading बायम पठन प्रश्ता अनुमान

Ready money was

Ready reckoner सुक्रमण्डस Real estate स्थावर मर्स्ट्रीय

Realist व्यवश्री

Real value बास्तविक शही Rear पृद्रसाम

Rearguard अनुबद्ध Rearguard Action वृष्टरमृद्ध जुद्ध

Re armament युन्दक्षेत्रहरू

Rebate pe, wagie

Recall v बापस तुकाना प्रत्यातृत करना। म प्रत्याह्नस

Receipt प्राप्तिः एसेस्, माविका Receiver आयाताः प्रतिमादक आवकर्गनः मावकांग

Receiving Apparatus शासकात्र Reception Committee स्थापक-स्थिति

Recess अस्पादकाश मध्यापकाश निमातिकास Recession भाषका विरमा

Recipient प्राप्तिकर्धा प्रापक

Reciprocal पारश्यरिका परस्परवीशक (सर्वजान)

Reciprocity पारसके, पारस्वरिक्षण Recital समझाच पाठ

Reclaim (पृथिका) स्वहार करमा। जुनवरी सुनवसर कामा

Recognition प्रशासितः सम्बद्धाः अभिना Recognizance सुक्षम्

Recognized प्रशासना मामिश्वात मान्य

Recollection अनुसम्ब Recommendation अधिरताम विकारिस अनुसंस

Recommended अधिरशाधिक अनुसंस्थि

Recompense प्रविदान देना Reconciliation फिट राजी करवा - समझीता, विकास

समावान, संस्थान Reconnalisance गहत, पर्वनश्चम

Reconnaissance गहर, परंतप्रण Reconnaissance piant शहर, (शह केनेपाना) निमान Reconnaiting सामस्य रहिते औ मानेगाणी जॉबर-

वर्षाक Record व्यक्तिका केवा क्षेत्रा किवित निवरणा

क्षींभमान Recorded बांबाकिकड Recording अभिनेत्रन भाग्यिकेकन Record-keeper बांबिडेडागुळ Records आगान्त्र Recoup शानिवृत्त्र करना

Recovery बद्दानी, प्रस्तावास पविकरिया स्वास्थ्यकाम Recruitment भूती

Rectangle and

Rectanguler आगताबार Rectify संबोधन करवा, डीक करना

Rector affiliate Halland

Recurring expenditure आवर्षक (आवर्ष) ज्वव Redemption काम्मुच्छि विमोचन Redeemable क्रियोच्य

Redemption charges विशोधन-मन

Red letter हुनः स्वस्त्यूचं रमस्येव Red rag सङ्ग्रानेवाणे (क्ट्रेयकारी) वस्तु Redtaplam बोर्ययकाः, अस्त्रीयकारिकाः

Redress प्रतिकार वकेषसुधिः Reductioned absurdum वसंबंधि प्रदर्शन

Reduction कृती पूर, ग्रेटीनी Redundant कर्ज, समामसम्बद्ध

Remacement पुजर्विशिवास, पुवरिवासन Refer निर्देश करना। प्रतियेक्न करना

Referee वंद, बोक्यंच अमिनियाँचक Reference मिर्डेस, व्यक्तिमिर्डेस

Reference book जाइर प्रंथ (संत्रमी-प्रंथ) Referencem विश्वासकोंके मत केलेको स्वर्धि। सर्व

निर्देश बाधुष्णा Reflection प्रविदिध

Reflector प्रकाश-नराष्ट्रक, प्रतिकृषक परामर्थक Reflex angle पुनर्युक्त क्षेत्र

Reformatory guicing
Refresher course graffen sizens (name

पाज्यकर्गः Refrigerator हिमीवर प्रश्लीवक

Refugee arailal

Refugeo township प्रश्नानी नश्ती Refund जीवाना नामक्षी, (नन) मस्त्रीन Refundship प्राचर्तजीन जीवाने नामे गोर्ग्स

Refuting refutation पंचन Regal राजेपिका राजकीय

Regulia राजभिष्ठ Regency Council राज्यशंत्राकक परिवर्

Regent प्रतिपासक, राज्यसम्बद्ध Regiment केन्द्रक

Region प्रश्नु प्रश्नेष Region प्रश्नेष्ठ प्रश्नेष

Regional Council मानेशिक परिषद् Register क्षेत्र ४ वंशिक्ट करमा

Registored पंताबर, रशिस्त्रानुषा, निष्य Registrar बेसकारियदित पंताबर, निष्यब Registrar(of a university) पारश्वीर कुम्सविक

Registration datam, a a uscal factor

Opera येति-नास्य Operate शुक्तिक्या करनाः कार्यक्षेत्रारन करनाः प्रव क्षित्र करनाः

ायत्र करणा Operation श्रश्यक्षिता, श्रश्योपयार भौरखानः न्यापार Operation, military सामरिक कार्य Operator पाळक

Opinion Favourable अनुसूक सब Opportune वसनातुम्ब Opportunium अनस्यादिवा, अस्यायाम Opportunist अस्याद्यादी Opportunist अस्याद्यादी Opposition दिरोली यह, प्रतिचाहा विशेष Opposition bench (स्वकृति स्वकृति स्वकृति स्वकृति

Opposition रिरोभी पर्य, प्रतिपक्षा विरोध Opposition bench (वराणी चीठ विरोधी वस्त्रीक Opposition Leader of the विरोधी पद्धका जेता सर्विपद-वेदा Optics नेवरिद्यान, रहिबेद्वान काश्चिक्ष

वरिष्य-नेवा Optics नेवारियान, रशिशिकान काविको Optimius आधारावार Optimits आधारावारी Options रिक्टर Options निकार काविक

Orack देवनायी, आस्त्रातायो Orac evidence मीतिक साहब Oraco सुरक्त बाग्मी Oracoura बरस्करक, बायस्कृत नापरश्चा देवनाय समुद्दताहरू

Orden जित परीक्षा Orden आहेत आशा क्रमा व्यवस्था Orden, By आशामुखार, की आशामे Orden form मेहचारिस पर Orden in-Council सपरिष्य आहेस

order in-Council स्वरिष्य आहेश Order Law and दिश्वि और अवश्या Order of merit in बोगवताश्वास, बोगवताश्वमसे » of the day (किसी समयमें प्रचि≉त)

Order Order श्रीत । श्रीत । Order, Standing रहानी शरीत । Ordinance श्राव्यति । Ordinance stetory ग्रीकाशस्त्रका कारणाना, श्रक रियोक्शास्त्रका ।

Ordnince Stores शहसवार Ore क्या कीहा अवस्थ Organ क्यावन, संदेश मुख्यम

Organic सेहिक Organisation स्थान Organisation स्थान Organisation स्थान Organisation स्थानकारी Original प्राप्त शैरास्त्र Original प्राप्त शैरास्त्र Original budget estimate बावक्यका प्रथम Original budget estimate

Original jurisdiction तृङ अधिकार-धूप Originating chamber उन्नम नेतम Originator आर्थास्ट (श्रवधः) Orphange अधायाध्य Orthography वर्णादेशार

Orthography वर्ग(श्वार Out-door patient वृद्ध रोगी, वरिपोडी रोगी Outflank कीहो इम्बा करना Outgoing परसुष्ठ Outhouse बाह्यपुष

Outlet निर्मम बार, निश्चम्य
Outline रूपरेपा, रश्च रूप
Out-of date दिनातीत, विष्यतीत
Outpost बादरी चौदी, मारत
Outskirts सगरीबाँ, मारत
Outskirts सगरीबाँ, मारतिवाँ, वर्षक्र परिसर

Overcooled बांधशीतित Overall defict कुक पद्ध Overdraw (वया किने दुर वगबांदे दिशावमेंसे) क्ष्मता-से व्यविक देना या निवासमा Overdraft बांधिकर्ष

Overleaf प नेहे दूसरी ओर
Overloaded अधिवारित
Over lord अधिदात्र
Over lord अधिदात्र
Overpayments अधिक प्रगताम
Overpopulation अधिप्रवासन, अधिसंबन।
Overproduction अधिप्रवासन
Overpuled १९ कर दिवा पत्रा निर्मारता अधिवेदित

Over 322 समुद्रश्वार Overseer कविक्यी कार्य-निरीक्षक Ovum विव Own लामिल कोनाः स्वीकार करना

Pacification शांतिकाण समोकाण

भभगवासिक

Owner स्वामी Ownership Limited शीमित स्वामित Oxidation वप्ययम P

Pacifiam tifthyte Pacifiat tifthyfal Package tifthy Packer tifthy Packer tifthyfal Packing charges tifthywag

Paid वैद्यक्षिक Paid up Capital प्राप्त वृंदोः चुकरा मृद्यप्त Paid employee वैत्तरिक सेवद Paidup share capital प्रश्च क्षामृद्यो

Painting (वश्य (ग क्याना रंजन Palatal ताकम्य

Pact समझौधा

Original draft युक्त प्राकृत

Regressive taxation प्रतिवासी कर Regular निषमित्र, निषमशी Regular army faqfag सेवा Regulate विविधमन करना Regulating Act विविवसन अधिविवस Regulation (बिल्यमः विनियमन Regulator विविषय Rehabilitation प्रवश्त, प्रवश्तन Rebeargal guiffeug Relea of terror and an ever Reimburrement महत्त्वा, अदावधी Reinforcement कुम्ह थेवना Reinforce पुत्रः प्रचित्र करवाः कुमक भवना helmstallation पुत्रहरियक, पुत्रदेशायन Redustate पुत्र' नियुक्त दरना, वहाक दरमा Reinstatement प्रमुखियुद्धि, प्रमुखापन, बहाकी Rejection wethern Rejoinder arges Relative men n. diet ferbere Relay (व्य) प्रसारित करना (आकाञ्चवामीका कार्यक्रम) Release मुक्ति छोड़ दिवा जाना Relevancy Heri's Relevant सुम्बत Reinbuity of data श्रीदृष्टीकी विद्वसनीवता Relic स्वविदेव Relief सहायता, बारामः रहमोबन Rellef map जमाहदार मस्सा पत्रत मानविक Relief work आक्ट्सहान कार्य Relieving officer स्थानग्राही अधिकारी Remand प्रत्यावरित करना कीटा सजना, इवाकात रायस अञ्चल Remark अन्युद्धि शेका Remedial measures प्रतिकारक वपान Remedy अपपार अपान साधन Reminder अनुसमारक, अनुसम्बन्धन Reminiscence descu Remission परिवाद पूरा श्रमानाव Remit धंबमा, विशेषण n a scutence इंडका प्रतिहार करना Remittance विमेचित चनः विमयन Remitter fatte Removal szieni quece Remuneration पारिमानिक Renaissanco पुबस्त्वाम, पुमर्कामरूव Renegade स्वमतस्वामी स्वपद्धस्यामी Renewal नवीकरण भवीकीकरण Reporttion मृतवीकरण, नवीकरण Rent क्रिका मध्य क्यांव मृशिकर Rental भारकसाधि कुछ स्थान Rent controller क्रिसवा-निवयक

Renunciation स्वस्थाया, संन्यास Reorganization पुत्रसंदरन Repairs महम्मत, मुशस्ट शस्कार Reparable सुपार्याच, पूर्वाच Reparations ध्रतिपृति इरवाना Repatriate स्वदेश प्रतिपेषम पुन स्वदेश कीयाना Repayable प्रतिरेय, प्रतिशोध्य Repayment प्रतिशोधन Repeal विक्रीपन करना, विक्रीपीक्तम निरसन १६ करना Repercussion मामसिक प्रक्रिकमा अमस्य प्रमान Repetition वनवृत्तिः प्रवराष्ट्रित सावति Replenishment श्रविपृति इरमा Replete fage aftan Report विषय विषयणी। श्रामा देवा, मिविदेश Reporter संवादवाता, स्वक Represent निवेश्य करमा, प्रतिनिधित करमा Representation प्रतिनिधितः विश्वतन Representative n. sfaffiff - adi प्राविनिधिक, मविनिधिमुकक Repression sur Reprieve प्रशिक्त कर्ता Reprimend भारतीना Reprinted प्रमृद्धिक Reprisal प्रतिपोदमः प्रतिश्रय Reproduction पुनक्तभून प्रवनन Reproductive organ बनवेरिय Republic वयराज्य प्रवार्वय Republican क्यतंत्रात्यकः गमतंत्रवासी Repudiac अनेवीकार सरमा Repugnance विशेष श्रमा Repugnant (444, slass Reputed स्याच प्रसिद्ध Request विवेदन प्रार्थमाः अभिकारन Required अपेशित Requisite standard बरेबित यान Requisition अधिप्रदम कामके किए के क्षेत्रा, अपि वाचन वस्तामीयः धरेक्षण Rescinding निरसम Rescue बचाबा श्रद्धार Rescue-homes समामनापुर Research समेचमा छोच Reservation आरखन, संरक्ष Reserve fund आरशिव क्षेत्र Reserved बारकित संरक्षित Reserved forest within you Reserved subject spelige five Reshuffling १एकेट अमरिवर्चन Resident विद्यासी। जावासिका जावासी प्रतिनिधि Residential अहाँ क्षेत्र रहते हाँ आवासीव (विश्वविधाक्य)

ईप-पु[सं•] काश्विन मासः तीस्रे मनुका एक पुर शिक्का एक अनुचर । ईपण-वि॰ [सं•] जीप्रता करनेवाका । र्देषणा−भी सि विभवस तीवस्ति । ईपत्–दि॰ [सं] थोहा। व० कुछ-कुछ। अंक्षिक रूपने। --कर-वि अंग्रमात्रं या कम करनेवाकाः सरकः आसाम । -पुरुष-पु नीच व्यक्ति । -स्पृष्ट-पु० वर्षस्वर (इ.र च व)। ईपद्-'ईपद'का समासगत रूप। -उच्च-वि० वीहा गरम कुमकुना । - दर्शन - पुरु थितवनः रेपदरहि । ईपदास-प [मं०] मुस्हराहर। ईपना#—खो॰ एक्नाः वस्त्रती इच्छा । ईपन्सा~वि• [सं•] सस्य सूरवर्ते मिछनेवाका । ईपा-सी॰ [सं॰] इरिस । -वंड-यु इबकी सुठिया । -वंत-प स्वि शॉवॉनाका श्रामी। इक्को मुठ। हाथीका दांत । वि शिसदे दांत सने हो। इंग्लिका, इंपीका-त्यो॰ [सं॰] शाबीकी ऑकका गासक शिक्षकारकी केंगी: वामा सीक। ईपिर-द• [सं•] अपि। र्बप्स~प [सं] कामरेवः वसंत ऋतु ।

ईस#—पु० दे० 'ईस्र' । **ब्रंसमञ्**यु बेखाम कीण। ईसबगोरः ईसरगोल--पृ॰ दे॰ 'सम्मोस' । र्द्वसर्=-पु• महारेगः पेशर्य । **ईसरमूछ-पु॰ शहबटा या शहलता मामक पीमा** ! ! ईसची-वि• [ब] ईसासे संबंध रवानेवासा मसी**यां**। –सन्-पु• ईमाके बगाकाससे यसा हुवा सन् । हैसा-प० बिकी दैसाई वर्मके प्रवर्तक, मसीह । इंसाई-पु॰ (ब॰) ईसा-अवर्तित वर्मको मानमेवाकाः क्रिश्चियम् । ईसाम•-पु॰ रेशन **दोन** । ईसार--तु॰ [बा॰] स्वार्थस्वाग, वसरेडे दितके किय अपनी दानि करना । इहा-मी [सं॰] रच्छा चारा उद्यम चेदा। - सूग-पु॰ मेहिबा; रूपकका एक मेद जिसमें चार अन्त होते हैं (मा)।—**शृकः**—पुश्येतिदा। हेंहायीं(विंम्)-वि॰ (ए॰) बमलामने क्रिय सबेहा **धरेस्वपृतिके किय प्रवत्नशील** । इदित−वि [सं•] चाहा हुआ अधिकपितः देशित ।

ईंख-पु॰ [तं] गुरु, भाषार्व !

द-देशनागरी वर्णमालका पॉजना (स्वर) वर्ण। वसका

उदारक्सान और है। र्ज-भ• प्रस्त, प्रोप भारिका सक्त एक सम्बद्ध सन्द्र । र्श्वकुण-पु [सं] ध्रश्मक ।

वेंबारी!-से रे 'ब्यारी'।

र्धेचन−स्त्री भाषात् ∤

विका-॥ कि भारताम क्याना ।

र्वेगनी-सी॰ भौगने भर्गात् वार्शमी हुरीमें तेक कमानेश्री किया। र्खगल-पु॰ दे॰ 'श्रेगुल' । र्वेगसामा - स कि तंत्र दरमा, गरेशास दरमा। र्ष्टरासी-न्द्री हाक्टे प्रक्रोद्ध सावारकाठे बंदिस साव वो छोदी भीजें के एकपने उठाने शारिक शायन दोत है। गॉवके ऐमे **हो** माम । ~सिकाव~पुनावकी एक गत। सुरु -उठमा-दरनामी दीता, वपदास्का पात्र दीता। च्चराना-दीष कांत्रम श्रमाना, बरमाम करना। **ब्**री मिगाइ, दानि पहुँचानदी दृष्टिने देखना ।-करमा-परेशान षर्वा, एतामा । ~चटकामा-वैगक्तियोने पर-वर दान्य बरना ।– चमकामा – उँगक्तिबॉक्टो होन, नदारेस हिछाजा । -पक्षते पहुँचा पक्षता-श्रेश पादर अधिक पानेश मन्सम बरना क्रिसीकी सलयनसीका अनुदित काथ वटानेश वरम १,रमा । - रक्तना-(विसीवी कृतिये) बीव दिसाना। –समाना–(निही काममें) भागमात्र शहायता या सहारा देना, हाब बगाना । --(शियाँ) सचाना--वैमिन्याँ भगराना । -(सिपी)पर मधामा-इच्छा नुसार काम कराना, वदार्शकर नवानाः करान करमा । र्वेभाई। ~ स्री उदिनेकी फिला अपनी।

उँचाद०-दु० ऊँवाई। उंचास-वि चाडीस और नी । पु४ मी संस्था। र्वेच(सभ्-पुर्वपाई। र्वछ-प [पं] सेतमें (हनारके बाद) वा राखेमें वहे हुए वाने जीक्सके किंग जुनना सीका शैतना ! -प्रचि-ती धेवमें छुटे हुए राने भुनकर गुजर करना। दि॰ एस प्रकार निर्वाद करनेवाचा। −दिनस-पु॰ उंछवृत्ति। -श्रीक्र-वि+ वंद्रप्रचिमे बीविद्या दरनेवाला । र्डेंबरिया®−सी पॉरनी;रोधना। दिसो प्रेंबेसी। वैवियारम्-तः प्रकाशः (विश्वप्रश्चमामः स्टब्स्स् । उँविवासी उँउपारी-भी चौरनी, प्रसादा। दि॰ सी॰ সমাহারক। बॅबरा उँजेमा-पु दे॰ 'बनेखा'। चेंटका, खेंदरा-पु याशेका अगला मान अमीनपर टिकाने के किए जुण्के भीचे कगावी बानेवाडी कड़री। र्जेड्ड - पुं [सं] एक सरहका कुछरीत । र्खेडेसना∽स कि वे॰ 'डरेसना'। र्वदम-प सि ीगीका करना भिगीना। र्जीवशी~नी गंबाक्षीना।

उँदरू-पु॰ ववुक्की वानियो वद बाँदेशर शाही।

वंबर वंबर-पुर्व सि] पीक्षाको कपनी सबक्षा

−भी मुमादानी मामयो स्ता।

वंदुर वंदुरू बन्द-इ [शं•] पूरा ।- रुणिया - प्रारी

उँवी-सीर्वार्थः) ऑक्पर पदावी हुई जी-गर्दुद्धा हर्श बाह ।

र्वेचाई - श्री कियापनः केंचेपनको श्रीमाः बहाई ।

र्देचाबार-सर कि कैंदा करना कपर दक्षामा।

उँच/म≉∽प्• कॅमार ।

उह्−उत्म उँइ—स• बस्तीकार, प्रया, बैदना बादिका सुबक शब्द । ठ−प [el] शिव[्] मधाः चंहमेश्क । उसमार--- अ॰ कि॰ एएना, पर्व होना । त्रभाना र-स॰ कि॰ स्थानाः मारनेके किए पाथ वा पकि-पार चढामा । डक्रण∽वि॰ ऋणमुख्य की निसीके प्रति अपने कर्मकाहा बासम कर सुका हो। ठकचन•−५॰ मुक्दुरका कृत । उक्षमा-म॰ क्रि॰ उक्षमा उपस्माः हर साना । बकरना-स कि॰ फिटोएर अपने वफ्डार वा ससके जक-बारको शार-गार बहना, वकामा । उद्धा-वि उद्धरनेवामा। यु उद्धरनेका कार्व ।-पुरास-पुर पुरानी दिस्मवर्तीको उपटमा, यहे सुर्वे प्रखादमा । रकरना-ज॰ कि॰ स्कटर पेंठ बाना । क्रकरा−नि॰ ध्सक्दर पेठा हुआ। क्षक्र -पु • वैठमेदा वह स्य विसमें पुरन (सहेवक) मीहे बाते हैं (बैठना)। उद्धरः−सी दे 'दक्ति'। _ सक्सामा – अ० कि उपना नवीर होना ! अक्रिके च्ला दे 'दकि'। त्रक्रमा-वा कि क्षेत्र वा वेंद्रनका सुक्ता क्षत्रमा। उसका। रुक्क अर्ही −सी॰ एसटी देः विवसी । बक्कामा-म कि कैकाना। उक्केंदिस-पु॰ रेसागमितका आनिफारक गुगानी मनितय बुक्किः रेक्कागनितः। उक्रबंद्य, उक्तवंथ−पु एक पर्यरोग, व्क शरको स्ती का गोकी बाद । कक्समा—अ॰ कि जगरनाः अंकुरित दागाः। उकसमि≉−सौ बमार। कंकमाना – स हि. जमारनाः भन्तानाः वसक दैनाः (दीनेंबी क्लीमी) जान सरकामा, बढ़ामा। व्यक्ति वर जाना-'हादिनके हीया परताने'-मू रुक्ताहर-शी॰ प्रशासिक मानः वर्धवना । उद्धर्मीद्रा≉-दि चठना, बमरदा बुला । क्कॉबर्ग - पु मृमा मिला हुआ वह अब जो अभी औरप्राया भ गया हो । बक्राब्र-पु॰ (भ॰) गुरुश वड़ी बातिका गिक्स । बकार-पु [संग] दिवा 'व' सर । बकारांत-नि॰ [मं॰] जिसडे अंगमें कि हो (सब्द)। बकासमाध-मा कि कप्रकी और कैंकना ! उद्यासी*—सो॰ प्रथह जानाः सुद्दीः बासव । प्रक्रिमगा'−श कि दे॰ विश्ला । बक्रीरमा~स कि॰ प्रशासमा घोरना । बबीछ=-पु है विद्याल ह अभूषा−पु• (हं•) दे उंदुण'। बन्नतिश-मी दे 'त्रस्ति'। बक्रस-पुदे 'उक्ररे'। बक्तमतार-मुरु दि उनेपना जनाएना । सकेतमा~ए कि धोलता, उपाताः ज्वाहता ।

उसीया उद्योगा~पु है॰ 'उद्यवर'। ठकीना!-पुरु वर्मानस्थामें होनेवासी हस्प्रार्थ, बोहर । उक्त~वि॰ [सं॰] कहा हुमा, कवित ।-निवाह-दु॰ क्रारे क्षणका समर्थन या रक्षण । -प्रत्युक्त-तु क्योत्क्षमः कारण के दस अंगों मेरे पक (ना॰) । -बारप-वि॰ से भवना सब स्वक कर भुका हो। प्र निर्मशः उक्तामुद्रासन-वि॰ [सं०] निसे बादेश दिवा बना हो। उच्छि~यो [सं०] कमना गारमा कमिलमम गमन, रहा ग्रन्थके वर्षग्रीतनशक्ति। उत्तय "१० [र्स॰] स्तीत साम-विश्वेषा वह वदा ऋराह नामधी धोषि । उच्या(विधन्) -वि० [ले०] स्तीत्र-वाठ करवेवान्य । बक्रण-पु॰ (सं] वक्र क्रिस्कता, सोवता । उद्या(क्षत्)-प [र्थ+] वैका सर्वा भक्ति स्रोम पर्वा भएनगरि अंतर्गत ऋषम मामक स्रोतनि । उक्साल-वि [र्स॰] दियाः मर्वस्यः वताः उत्तय । तु॰ मेन्रः। बन्नित−वि॰ (एं०) मियोगा इमा । उकारमा-स कि॰ सॉरमाःइतरमा। ध॰कि॰तरमहाना। उत्तवसा-भग्निक जमी, मही वा प्रश्नी हुई चीम्छ कपर मा जाना, अपनी जगहरी हरना। इरना (रक श्रीशा निद्यास पत्रना पपत्रनाः हट्टोका बीत्तरे हर जाना। नेवास वा बैहरा ही बामा। विहर-दिगर होना (गामै भारिका) न भगना । ग्रु० उलाई-उमारी वार्ति करना-वेकीस शीवर नात करना । उन्नदी पुनरी स्नामा-भेटर्ड सुनामा । उल्लंभ-पु॰ ग्रमी । -अ-पु॰ दे 'क्याब'। उपरुष-५० करा गेनिके बाद होनेवाकी हतको पूरा। जरप्रमार्थ-अ मि॰ ६० 'वसदमा । क्रमराज-पुरु ईराकी श्रेमाईका पहला दिन । उररकल-प्र• [सं] एक तरहकी पाछ मरिका। बक्रसी−सी है शोसको । उस्ता−स्ती॰ [मं] बरलोई; हाँकी; ● दें फिना ने श्रमाक्-पु॰ प्रसारमेकी किया। वेच बा इतीरकी कारे। कातीका गर पेंच । -पदाच-मा० वन्द-पुक्त भूकी साना । अल्लाइवा∽स कि सही, जमी रैंशवी दुई भीकी अवनी जगहरी एटा देगा। उत्पर सामा। बद्रीकी बीवने इस देना। तितर-निगर कर देना। रंग प्रमान नारि व अमने देना। भगाना चरवासमा। मष्ट करमा । जनाव_∽वि पदाइनेवासाः। जन्मारना॰-स कि दे परशादना । क्र*सारी*—सी॰ ईशका रीत । जन्मानिया—५ मरगरी जग मार्थ करनेके पूर्व ^{कुछ} रात रहत ग्रहण मिला मानेवाणा मरचहार । बसोय-पुरु दें≉ 'क्याप । अमेरणा-स॰ कि॰ दे 'बराशमा । श्रारेशमाण-गण विद्वारे ^१ विशासना । ब्रधनमाण-स॰ कि संस्थीर बनावा फोड़वा। क्रम्य-नि [ने] इंदी बारम बदारके क्रम्य पानी परावा दुव्या (मानादि) ।

Residential quarters wereave Residue watte Residuary werfaw Residuary powers अनुधिश शक्तिनों Resignation कालागः स्थानपमः केन्द्रेपकानपरिः श्रीक्षेत्रीयका आव Resistance uftere Resolution flower Heavy steet Resolve संबक्ष करवार एक निवास करका Resort store Resourcefulness साथयसंपद्मताः मरक्रपणमतिस्य Resources सावना बना बाब Respectively weren, sens Respite कप (दिराम, प्रत्यंता श्रापिक रथगन Respondent uferial Response was Responsible, severally प्रशान प्रमान करावानी Responsive cooperation प्रतिविद्यालय सहयोग साचेल सहयोग Rest bouse क्षिप्राक्षत्रका, विकासक्रम Restitution प्रशासनाः इत्यक्तिमान प्रत्यर्थेना पूर्व रिवरिस्थापनः अविपृत्ति Restoration पत्रकटारा प्रतियामः बताश्यर्पेनः प्रत्या-सबसः प्रवेतस्करण Restraint day Restrict शीवन करना Restriction क्याब्र निषंश्य (निरोध) Resultant दरिवामी Resume one s seat प्रवा काश्चन प्रश्न करना Resumption दुवर्षहरू, दुवरार्व Retail TERE Retail price प्रदक्ष मुख्य Rotail sale 9294 freit Retaller सुद्दा वेचनेवामा Retains were used exten Retired अवस्थाता अवस्थानाम निवास Retirement farfes were new Retort stand 451 Retreachment dien Reselbution प्रतिकृष, प्रतिकार Retrospective effect, With plump uffer, बानदश्ची प्रमानहारितः यतकाकापेश्ची मधानसारित Return neuer niebum finem neuente, gutt Returning officer विवीधन-व्यविकारी Reunion अमरेक्शक Revaluation पुनर्शसन Revenue राजस्य, आमयब, माक्युकारीः किसी महस्री

Revenue secount आवन केवा

Revenue court um parausa Revenue minister आक्रमंत्री, राजस्मात्री Revenue vest कविषये काली साथ Reverberation व्यक्तिनाइ Reversal urrant firein Royetse y बच्च देशा, विपर्वत करना, निराम का militered ment, uitatut in ale, unn adf. रक्टा, विषयीत Reverse council bill महिपरिषद विषय Reverses wir. quiv Reversion क्षिप्रकृत प्रस्तावर्तन Reversionary प्रतिकृतिः क्षारमीध्य Reversionary bonus situati afternia Reversioner बचरभीया Revest प्रविवर्धन करवा। प्रस्वावर्धित होना Review आयोजन प्रतिकासन Revision प्रस्ताबन, निमरानी। दोवराना Revision of scale देतमहमका सधीपन िटरांग्डी पुलस्कारमः, प्रसंभयकम Revise प्रवाधिक करमा प्रमुखार करना पुनः प्रश क्षित करणा Revocation forms aftered Revolution wift Revolutionary midwid Revolutionist silvent Remards कारिनोविका प्रतिकर Rhetoric सम्बारवास, रीतियास Rhombus विवसकीय समन्त्रमंग Rhythmic areas Right of where the Right adi, sie, wur, sfent eren effen Right angle समझेन Rightist eftersie Riches, Civic aparts sevent Rights Civil charact sufferic Rinderpest walt area Rise बर्गा अलाग प्रचति वस्दर्ग Litual streets Rivalry महिम्मिता, महिलानिया River valley scheme नही-पारी बोचना Loaming ambassedor pire unge Robing room of type-ut Robot वंत्रवृष्ट Roll तथी, दाक्कित विवयस्थी Roller dun Rosteum स्वास्थानपेड Rotation ourseast sele Round कीत कहा यह, यहर, धेर वस्त Round-Table Conference केल्पेक कार्यकर Route मार्च

Tuber says Tultion fee Bus 1245 Tumour arts Turbulent उपस्था Turncoat क्रमामारी Turning point mad 145 Turnover सनस्त ऋष-विक्रमः पूर्ण विकी Turnitude भी बता शहता Turret-gun दुई वीप Tutclage afatted Typed usfalles Type सह, बाहर Typewriter nader da Topist undum bies ein Typographical arror महत्त्रवंकी भूक Typography सुरूपकर सुदूष-धीर्ष

Ubiquity of the King राजाकी सर्वव्यापस्ता U boat अमेन पन इंग्ली Heer we Ulcerated after **Ultimate वंतिम** Ultimatum अंतिम चेतावनी अविनेश्वम् **धिकार भवनास** Ultra vices द्वानुपरशाहा द्वानुष्टे पटे अपैकार सीमाचे शहर Umbia भग्नावा प्रदिक्यां Umplie विपंता सेवर्गन Unanimous sainteen Unattached attent Unauthorized अनुविद्यारिक अनुविद्या Unbecoming अधीमन Unbused fares Uncashed wares Unclaimed document अस्पानिक केमपन Uncultivated water Under developed area सहोत्रत क्षेत्र, न्यूनीवर क्षेत्र Undergesduste level on sansaval entat Underground nu अंतर्भीम भन्भतर्गतः भूमिगत Underhand IH HEER, SEHES

Under secretary सहस्रवित जनस्यक्ति Unearned arafae Undertaking क्यानः स्वीक्षतिः वस्त्रगृहीतः व्यवसाय विभा को बहा Under-trial windred Undischarged warne

Uneconomic holding समामक्ट बोत Unemployment had Unequivocal metity

Under-nourishment म्यमनेष्म, अस्परीयम

Unleameral ve-HEARING Uniform विपरिशास, समग्रिशास Unilateral vacuals

Union #4 Union list stated

Union Public. Service Commission in the मेरा बधीरान, देन्हीय समसेश मानीन Unit auch, ruit, que

PUPPP IS TRUED SINGLE CHRISTS VICINIU United Nations Organization des tites Universal Manhood-suffrage array Sev will

NAME University Court Restaure au University Senste Coultains with the Unlawful assembly salve ever

Unofficial वैरसरकारी, रसरकारी Unopposed failing Unnadiamentary weller

Unproductive warrage Unredeemed balance walled de Ussest स्वानच्युत करना, भनासीन करना श रोन्ड

स्थामचरित होता Umested वि अवसीन स्थानपंतिक Unakilled labout समिएन वा अक्टान श्रीनेड

Hosoundness of mind for first Unspent balance सम्बन्धित होप Uctoward **बाहा, बर्फि**र

Upyell समस्ति करना Unyielding are Upper House उन्न सपत

Upwart सहसोचन व्यक्ति सहस्रवट (क्रिगेस्ट) व्यक्ति Uptodate wareful

Upward wend and offer Urban भवर संबंध

Urgent warmen, (menteral) Usage रोति

Usance we've

Usury परकोरी Trillingianism availmere

Utility क्यबोविता

Utopia रामराध्य कास्पनिक स्वर्ग (स्वप्रक्रेस) Utterance water with

Vacancy Rem. Reta Vacancies (tracere Vacation sheltests Vaccination & Vaccinator केंद्रक, केंद्रा बगानेशका

Vacuum सम्बद्ध सून्य, निर्वात Vagrancy जागारायरी, आहिंदना व्यविधिता Routine विस्त्रम्म
Rowdyism बुस्कदरानी
Royal scal द्रावस्य।
Royal scal द्रावस्य।
Royals अवित्र स्ट्राट्स स्वाधित्व, स्वत्यस्व
Rule विवसा सामन
Rule ou मिन्द्रमिक्स पेरियत करना
Rule ou मिन्द्रमिक्स पेरियत करना
Rule प्रसारक देणक Rulio प्रवर्शः
Rulio प्रवर्शः
Rulio प्रवर्शः
Rulio प्रवर्शः
Rulio प्रवर्शः
Runour जनमृति, क्विनंती प्रवादः
Run व्यतः
Runaur (स्वानकः भवदरस्था पावनमार्गे
Runal प्राम संभी, मास्य
Runal प्राम संभी, मास्य

Rusticate निरमारित करना Rustication निरमारम S Sabotage अंत्राम्म, दोक्कोक

Rust wek

Sacrifice स्वागः वाग यस्य
Safe conduct अस्ययम रक्षावयन
Safe grand सुरक्षण रक्षावयन
Safety प्रत्योग सुरक्षिण बीवन
Safety प्रत्योग सुरक्षिण बीवन
Safety विश्वयोग सुरक्षिण
Safe-deed विश्वयं केया
Safe-deed विश्वयं केया
Safe-tax विश्वयं
Safe-tax deed safe-tax

Salvo रोगंध्ये याह Sanstorium स्वास्थ्यतिवास स्वास्थ्यस्य वासीन्य पाला Sanction स्वास्थ्यति संमोदसः इंशायवंथ Sanction, Military सेतियह व्यस्त्वति

Saccion स्थिति संगोरण इंगरणं Saccion Milisay सेनेट क्याइति Saccionary स्ट्राल्यामः सम्मारण Saccionary स्ट्राल्यामः सम्मारण Saccionary स्ट्रालयामः सम्मारणं Sapplic भीषम Sapplic भीषम Sapplic भीषम Sapplic भीषम Sapplic भीषम Sapplic भीषम Sarcion स्ट्रालयाम् स्ट्रालयाम् Sarcion स्ट्रालयाम् Satirarica Solution संट्रालयाम् Saring स्ट्रालयाम् प्रतिय सामी Sarings Bank रूपल सामा Sarings Compalgo सिक्टब्रियामारोजन Scaffold फॉलोबा वस्ता Scaffolding मचान, चाड़ Scalo पैसाना धनुसापा माधनी। वरान् Scale, large बड़े ऐसानंपर Scale of salary बेतन-क्रम

Savious gates

Scale of salary बेतन-क्रम Scandal परिवाद, कोक्प्पदाद, अपदाद Scat श्रवसिद्ध

Scar श्रुमिष्क Sceptic सरेषमारी संस्पारमा Scepticism सरेषमार, संस्पार Sceptre राज्यंक Schedule परिपणमा अनुस्था

Scheduled castes परिगणित साहियाँ अनुसूचित साहियाँ Scheduled time निर्यारित समय

Scheduled telbes अनुसूचित समगातियाँ Scheme सीवागा

Schism कु

Scientific apparatus वैद्वानिक क्षेत्र
School शाका यह पंजरात क्षत्रकाशावा
School शाका यह पंजरात क्षत्रकाशावा
Scoop news क्षात्र सात्रात्र पंजित्त ध्यापार
Scope विस्तार देव शीमा
Scoreched earth.policy सर्वेद्वार मीदि
Score तीक करना। दन बनाना। विवयी दीना। n.

विषया कारण Scorpio वृक्षिक राज्ञि Scramble छोनाश्चरी Screen पर — Silver रवतपुर

- Silver रवतपर Script किपि Scriptore वर्ममंत्र Scratiny स्वयपरीक्षण संपरीक्षण Scalptore मृश्विका भारकां

Scam झारती Seaborne trade समुद्दी व्यापार Scaled मुद्दाकित सुद्दर किया द्वया

Search-light महाझ-प्रश्नेतक, अन्यवक महास विद र्शनाकीक

Season ticket म्यादी दिखर Seasonal occupations मीएमी वर्षे Seasoned wood शिक्षाणी क्यारी

-worker बनुमनी कार्यकर्षा (समित्र) Seaworthiness of vessels गोर्टीकी बाजान्यमण

Secant क्षेत्रक क्षेत्रक रेखा

Soccasion संबंध विष्क्षेत्र Second, To अनुसीदण करमा Second chamber द्वितीय वेदम अपर स्टब्न

Second chamber द्वितीय बेहम अपर स्वरन Second person मध्यम पुरुष Secondary माध्यमिका गीला परवर्गी

-growth परवर्ती दृद्धि

110

Vague अरवह पश्चिक, अनिश्चित Valid प्राप विष्युत्तक Validation Attaces Validity माम्बता, विष्यश्रकृतता Valuation मृहवादान, मृश्यन, मृह्य निरूपण Valuepayable articles मृस्वादेश वस्तुर्वे Vaporisation apuggan Variable capital बरावर्तनीय पैनी Variation sigter feste weer Variegated [48 [4]44 Vascal क्योम सरकार —अअध्य अभीत राज्य Vehicle andia Vein fatt Yelocity प्रदेश Veneral disease बीम रोग रतिय रोग, फिर्नगरीग **Venture** *ччен* Venue ore Venus His Verbal alteration हाव्यक परिवर्तन Verbatim water. Verdict अतिम निजंब अमिनिर्णंब Verification संस्थापन, संस्थापन Versatile बहुदिय, (बहुमत)। बहुमुखी Versed विष्णाद Version, Anthorized शविकृत विवरण Version Revised पुनराञ्चित पाठ, संशोधित पाठ Versus विस्ताः नमास Vertex stif Vertical sex Vested Interest निहित स्वार्थ Veterinary doctor प्राविक्सिक धाविदीकी Veterinary hospital पशु-पिक्रिशास्य, पीहा **मरस्ता**क Veto 11- मविषेषाविकार, रोष अधिकार Veto v प्रतिवेदाविकारका प्रवोग करना Via media मध्यपन्ते Vice admiral equipment Vice-Chairman equate Vice-Chancellor कुछपवि Vice-regent eq-(120) Vice-president उपराष्ट्रपति। उपरामापवि Vice versa विपर्वेश भी, विपरीततः भी, विक्रीमतः भी विश्रात कमसे मी Victors circle syes gue fieres Vicisaltude चहार उतार, परिवर्तन Victuals मोक्न सामग्री, अञ्च सामग्री View point eftering Vilification विष्यारोस्य

Village Council मामपरिवर्

Village uplift प्रावसभार प्रामीत्वान Vinculum Tendualt Vindictive additurns Violation under Maken Virgin soil अरुकपूर्व मृति Virgo क्रमाराधि Visa अनुनेशवय, इष्टांक, वेदागममका अनुमतिसम \ isit बर्शमार्थ गमम Visitor बर्जब, परिवर्जक: बर्जबाधी: मार्गतक Vitamin द्याचीय, जीवनतत्त्व, पोक्स्टस्य विद्यापित Vitallity alta afternish V142 Voct मौधिक परीक्षा Vocal music eta मेगील Vocation seems Vocational training स्ववसाय-प्रशिक्षण Voice, Active scener -Passive science -Impersonal सहबदाका Void adi यून रिका क रिका Vol. tile वाष्यद्यीकः वरिषदः चंचक Voluntarily संच्छापूर्वक, संच्या Voluntary स्वैच्छिक, स्वेच्छादच, त्वेच्छाप्रेरित, रवेष्या<u>स्</u>त Voluntary association situated tight Volunteer स्वयंसेका Volunteer corps सेच्या-वैनिक-एक Votable मतरेब Vote s⊾ मता र मत देशा Vote, Casting निर्मादक सव Vote, List system of महस्रे सूची मनाकी Vote of censure विदा-मस्ताम Vote of credit मध्यमानुदान Vote on account क्यानुदाय Votes unstail Voice-list सकरावा-पूची Voucher धर्मका पुरवा प्रमाणक Vulnerability बेदता, दुर्वतक, भेषवा Wago सबद्रो, पृति Wage, Living विशंद-एति बीने वोप्य सन्ती Wager वाजी, पदा ठाननेशका Wagon साक्ष्माकीका रूपा Walting-room मतीसायुद्ध, मतीसास्य Waive आग्रह न बरना क्षेत्र देना Walkout maneuri Walk over बनावासिक विवय शरक विवय Wall Street अपूर्वानेने देवरवाशास्त्र स्थान Wanted especiate ? Want of confidence विवासका संभाव War Cold bill weit 'ein ga'

Seconder-Shift Seconder अत्मीरक Secret runn adi 338 Secret Agent प्रविषि, शासकर Secret ballot ग्रम मत्त्राच Secret service राप्तवर-विमाग Secretarist मन्त्रिकालय Secretary infine Secretary Additional वाविरिक सचिव, अपरस्रविव Secretary Assistant समावत संधिय Secretary, Deputy ध्य सचिव मति संविव Secretary Joint श्रेषुण समित Secretary Under अवरस्यिक Secretary of State राज्य मंत्री (विदेन), परराष्ट्र संबी Secretary Private नियो स्थिम (विम-स्थित) स्थ समित्र अंतरंग-सनिव Secretion सामा निस्तारण Sect waterers Secrationism with a swell Section पारा (निवय)। अनुमाना ग्रेस –leader उक्की जायक Sector संबंध बन्हरिक –of a circia ≹®er Secular धर्मसिरपेश, क्रीक्स Secure erries Securities साम्र-एम मतिमृतियाँ Security प्रतिमृति, प्रतिमृ (ब्बक्ति); -- bond प्रति-भवत, जनावतनामा Security Council HUNTING Security measure सरधा-व्यवस्था Security of tenura TENTER BEEN Sediments away, 484 Sedimentation with Sedition trails See धर्माच्यवका क्षेत्र Segment of a circle ways Segregation under guidace Seismograph मृद्धप-मापद येण Sciencology भूगोपनियान Select committee प्रवर समिति Selection (स्वाप) श्रेष्टांचम प्रवरण Self-contained स्वापन Self contradictary स्वक्रीवराधी Self-determination असमिनिर्मय Self-government समासन Self-sufficiency भारममरिववा Self sufficiency plan नारमगरित गोगमा

Schling funct

Semi-circle अर्धपुष Semi-final एपांठ, अविनयाद

Seminar विचारमोधी, विचार-समेकना अध्यक्त-योधी Semi-weekly wimming Semitic सामाधीलका आव-पहरी Sensie प्रमुख्यमाः प्रश्नंसिति Sender ilwa Segior स्थेपा पराना Scalority alger, given Sensation स्ट्रेस्टर स्ट्रामी Sensationalism afternet Sense अधियाय पाल, क्षर्य, सम्बद्धारीर होश संग Sense of the assembly within white at the Sengualism eDenisters Sentence बंबानेचा लगा गमन Sentence, to uphold trait with that Sentry such, dech Scatimentality anger Septic पीतिक Septinial Act सम्बाधिक स्ववस्था Setfdom ऋषि बाससा ऋषि बास प्रस Serientruro क्षेत्रकोर-पारुम Series mer, Ager Serom एकांच्य सीम्ब Served अम्बर्धित (कारोस ६), वासीक Service सेवा, बीक्टो, मुखा-book सेवापरिका Service charge तेवा-अव Service, Civil मागरिक रावशेषा Service, Condition of सेवाकी मर्व Servicemen After Service of notice खबनापत्रका तामीक होना Session सत्र क्षत्रिकेशनः वैक्क Session Court सन्न भाषाच्या शीरा भराज्य Seadon termination of समानसाम Set-back (प्रविद्धक रिश्रवि), मनविरीय Settlement बल्लाः यूपिम्बबस्याः बन्दोनस्याः विचयारा Severence of diplomatic relation tilelise લાંપ-વિપોધ Sexual येशनिका कामजनिता कमिक Sexuality कामकता, कामवासना, ब्रिगिता Shade काना, श्रामा जामानेर Shadow ufaffer ster Sham साविका संवधार्थ Sham fight many Shampoo संबाद्ध संबाहर Share atg भाग, हिस्सा Share-bolder हिस्सेदार, भाषीश्वर Shace-market श्रमर शामार Sheet and were Sheet, Charge unityra Shell गीका (शपका)। क्यूच (क्या क्रिक्स) Shift with

War-criminals garque War-efforts नुद्रोपीम, नुद्रमवस War-monger बुबोचेंबक, (बुब्दिवास) War mongering मुद्रोचेनन War Officialise missing the 3st War of attrition कैंपनाक्षक तक War of aggression साम्बासम्बद्धम् हुई War of Independence suits at War of liberation Heat War of perver singers and suffice of Ward इक्सा, नगरमायः (कारागृह वा निकित्साक्यका) कार्यः, भवतांगः अभिरदेव नाकक वा वाकिकाः, अभिरक्षित Ward-master क्याविवास, छात्रावासाविका नेरस्क Warden काशामिरधका श्रेमामिरधक Warder amount Warfare gand Warrant mfern Waship स्वयोग प्रस्केत Waste land utdl HR Wassac क्रोडन छोड Wasting disease grand fin Watch and ward बहुरा और प्रतिकालन (रहन) -police चीका प्रक्रिस Watch-word प्रश्ती-संदेद: दक्तिकांच Water-channel awaren Water-colour बढीव रंग बढांव Water-fall easyld Water-proof बिसुपर पानीका असर न की का मरावद अक्टारदः असामेव Water-mark stole Water pump बडोचोडक यंग्र, बडोदहन वंग Water tight awas Watertight compartment क्ष्मेश पुनर्द प्रमा Water-works quites Waterways अकतार्थ अक्रम Wavelength of the Ways and means says sile give Weapon gr Weather forecast नतु-अनुमान Weather report बत-इवांव शीक्षमधा शाम दिन-विक्रति-विदरम Wedge extric att Weevil ya Weightage अभिन्न प्रतिनिनित्त, अभिनितिनित्त Welcome address whiteners Welfare centre un serie de Welfare state इस्बानकारी राज्य वनहितेश राज्य

Whale Claims
What agin air

'सओ

Wheedle Suspen Whereas up, dik Whip स्थेवड भेवड Whirlwind were Whitepaper sings White-wash styl-title saute flate dat up राग या बीप क्रिमानेको मेहा Whole-time officer समयकाओं पराविदारी Wholesale बोब्द राधिनत trade खीमक व्यापार, श्रेष व्यापार Wicket बहिबन, यहि। खेकानी; वावत स्वकीकी रिवरि Wicket keeper que tas \VIII बच्छापत्र, क्टीवत रिक्यक Wind-direction series we Winding up समापन Wing Commander वार्शनावक विभाव-छेनाविकार Wireless license facia octa Wireless actwork for any fide-way Wirepullers ex-tinion Wit and humour सुखारेत और विनोद Withdrawsi genere With effect from है बनाबर है हुए बर With retrospective effect विषय अस्पित पूर्व प्रधाद सविच Withhold consent शहमति रीवना Women's Auxiliary Service Right BERT व्यवस्था Woodapple ky Wording numer Wordwar weers Work Contributional signification Working expenses कार्पेश्वासम्बद Working committee spinish Working day apifted Workman's Compensation Act sugile aid-वर्ति अधिमियम Works कार्यसामा प्रतियाँ Workshop where, we com Wreckage मन्नावधेर ध्वतावधेर Writ केंद्र, निर्वेद्यपण अधिय Writ certiorarl miten du echemitt Writing केल, केलन किसाबरा मंत्र-रचना Write off elwid stent Wrong apply, widin Wrongful confinement नारेष कारामास, भारेष **बिदोयन** À-:ny श्रुकिर्म, ग्रासकी किरम

Yanker अमेरिकानिवासी, अमेरिकी

Ship-building industry पोन्तियोज स्वीत

Shock treatment सहसोपपार Shock-troops सहसाहामद्र पम्

Shorthand द्यामिकिन, स्वराकिनि Short-notice question अवन्यनित प्रवन Shorts प्रधान नेकर

Shorts पुरशा मेक्ट् Short term loan अव्यक्तकान नाम, सरपारिक नाम

Short term touri significated and a signi Shortings amounts about after other

Show-down वसप्रीक्षण, श्रीतम प्रीद्या Shrinkage विकृतन, बार्डचन Sigo-board साम-पट्ट, सामप्रक

Signal संद्रकः विदेवरा Signal संद्रकः विदेवरा

Silt पंडरादि। Silver Jubilee एवत वर्षती

-- screen fadds

Silviculture वसविद्यान, वनवर्षन Simile वरमा

Simplification सरकोदरण Simplianeous समझादिक Sinc die अविधित काक्सदिक किस

Single member constituency एक सदस्य-निर्माणी वेष

Single transferable voto ধৰ্ম্ভ ২ন্দ্ৰনদীৰ দল Singular ব্যৱধান। ধনীলা Sinking fund ক্ষপটেষ্টোধন জ্বীৰ নিট্যানিধি

Status बासूर, नाई। ज्ञब्य रिजीयन कीच निर्देशनिधि Status बासूर, नाई। ज्ञब Status बासूर, नाई। ज्ञब

Sixting वर्षोद्धन बैठक Sixtes, sixts प्रमुक्ते प्रोने Sketch कारेबा, रेट्साविय सम्बन्धि

Skilled labouter कुश्चक अभिक Skitmish सिस्पुर संबर्ध Sky-scraper बार्सक्व, समतकुंनी सबम

Shades avanta and, avant Skughter house us avant Skeghter house us avant Skeghter featur

Sleeping parence वशासीन थाणीबार Skiding scale विश्वप अनुमाप Sloven मारा, धीच

Stum दरिदानसकि, मकिनानस Stamp मुस्सावपाठ अर्थपटान, सस्तो Star कार्यक

Small cause Court चपुत्रात ज्यासावन अवस्था चर्ममा

Smelt Aftiam
Smoke screen data datasa

Smuggle करापबार, चुंगीचोरी अनेभ प्रेक्स (अपहरण

Sniper कुछावाती छकावाती Snowline दिमरेखा Social boycott सामाधिक वृद्धिम्बार Social custom सामाधिक करि Social gathering स्त्रेहसमीकन ग्रीविसमीकन

Social छोडप्रिया सामाजिक

Soap stone मोरा परभर, धौबा परभर

Social Insurance सामाबिक बीमा Social order सामाबिक अपवस्था Social accuraty सामाबिक सुरक्षा Social service सामाबिक सेवा

Socialisation समाजीकरण Socialism समाजवाद Society समाज Society for prevention of cru

Society for prevention of cruelty to animals (S P C A) बहु-निर्वेचन निवसम्बद्धिति Soft currency area सुक्त मुद्राधित Soil conservation स्वितिस्थल

Soil erosion भृतिको कान-पेंद्रन भृतिका कराव Soil sandy बहुई भृति, भृष Soil जोद्धित कर्ष्यपूर्व भृति वंबर भृति Solich सामद गार्थना बरना Solich देश पत्र

Solid द्वीर पुत्र Solidification स्थित Solitary cell काल-कोडरी; साँसत बर S. confinement समहाहे केंद्र फांत काराबास

Solubility बुक्तशीक्या विकेशवा Solution वीक द्वारण, विकशना दक Solute युक्त Solvent योक्य Somnambulism निद्वासम्बन्ध निद्वासार

Sophistry दिवांवामास, कुस्त्वामास Sore क्रण वास Sortet प्रवस्तिगेयक Sound स्वस्थ, विशेष

S O S सम्बन्धित Sound recorder श्वतिसंगादक, ध्यन्तमिकेशक Souvenir स्तृति-श्वित, स्तृति-वगसन Sovereign Democratic Republic स्तृत्वे प्रशुक्त

र्धपण कोस्तर्वज्ञारमक यगराव्य Soverelgaty प्रमुख्या पूर्वस्था Soviet पंचायत Speaker क्षयम्, प्रमुख

Specialisation विशिष्टेक्ट्य Specification विशिष्टेख Specimen नमुजा प्रतिक्ष्य Spectrum वर्षेत्रकार, वर्णकर, रक्षानास Specialion क्षांक्रकवाजी। सहा, प्रतक्ष

पहरण Spelling दिक्के वर्णनी कहारी वर्णनिवृत्ति Sphero बोक; कार्यक्षेत्र, ममाक्ष्मेच Spine सेवरंड, पूक्ष्मा रीम; कंटक

Splinter क्यर, व्यापा स्ताप्त पता , मुक्ति हुक है

Year-book वर्षतीय, उसकीय, कार्यप्रक)
Yearly वार्षिक
Yellow peril योग बारिवीडा आर्गेड, ग्रीवार्गेड
Yellow peris स्वर्गेडी वरणायी फैलानेवाडे संवास्पर,
प्रोचेवड समावाराव
Yeomanry स्वरूक अवयक
Younger इतिय
Yours faithfully अवशिष्य
Yours bedilently भवस्मृतव
Yours incorrely अवस्मृतव

Zamindary abolition बमोदारी-कन्युक्म, बमी

बारी-समाप्ति
Zenith श्वानंदिद्, स्टब्लंदिद्
Zero hour सङ्क्षक्ष क्षण, नियुद्ध क्षण, निर्पारित क्षणः
सुपक्षं अधिवात्येका
Zionism बहुवीवाद
Zodake स्थकः, राश्चिनकः
Zone कृद्धवेदा क्षेण, स्थेणक Zone, Demilitarized स्वासुष्कः (सेमाविकान)

मिलते-जलते शब्दोंकी सुची

Abatement स्वीकरण
Mitigation सुदक्षण

2 Abrogation निराकरणः बत्यावनं Annulment बानिस्त्वन Cancellation विकायनः निरसन Deletion बयमार्थनः

Dischurge तिरसारका कामोकक Dispelling ब्रोक्टक निराक्टक Repeal तिरसम विकोधन Rescinding तिरसम

Revoking प्रतिसंदरण विरक्षन 3 Absconder अप-पडानक अपगोसा Deserter दकरवामी

Fugitive प्रजायक, मनोवा Renegatic स्वप्रसूचामा स्वमतस्वामी Torocost सरप्रसामी

4 Abstract शुर्त्वकावर Abdagment स्वादा महोपन Compendium सम्बद्धा कषुवृत्तिका Summers स्थान

Compendium बन्धकृतः कपुन्तः Summary संक्षेत्र Synopals परिचनसम्ब कपुरेबा 5 Acceptance स्वोक्षति

Admission स्वाहरण Assent ब्लूमहि, स्वोह्नहे Consent एमाहि (dissent = हिमहि) Confession बस्ताक स्वोहरण Leave ब्लूमहि License ब्लूमहि Permission बसुमहि, प्राप्तमहि Permis प्राप्तमिक्क

Recognition प्रशासकी

Sanction संबोधन स्थीकवि

6 Accession सुम्मिक्च Amalgamation सुम्मिम्ब Fusion द्वास्त्रम, विकास, गाकस Integration एकोक्स्ब

Merger विक्य विक्यन 7 Accusation समियोप Allegation समिवन

Zone, Neutral frequi sique

Zoo बंतशाका, विस्विवासर

Zoology an Auna

Allegation श्राम्बमन Charge बोगारोग, श्रामिनुषि 8 Act श्रामिनगण Byclaw प्रामिनि

Law (4)4 Regulation (4)44H Rule Gast

Sub-rule क्यनियम 9 Adjourned स्वनित

Abeyanc e, inसारबंधित Deferred बांधरबंधित Postponed विकासित

10 Admission card प्रवेश-रक्ष Pass (प्रवेशनक) पारणक

Passport प्रस्प Visa अनुवेश्वपद

11 Affirmation जुडि प्रतिवान Confirmation जीमपुढि Corroboration स्तुडि Batification बसुसमर्थन, पुडिस्त्म Support समर्थन

Verification सस्यापन सस्याध्यम 12 Agenda कार्यस्था निवासीयिक

Programme क्रायक्त 13 Agitation क्षेत्र Movement आहोकन

14 Allocation विभावन, विशिष्ट

Spokesman मन्द्रा, मुख्यान Sponsor प्रचिद्ध, चंस्थापक Sporadic raids शिरपर समस् Soundron etter Square wit: week Stabilization flucture Staff कर्मचारितंत Stage प्रक्रमा श्रवस्थामा रेमभेषा सेच Stalk goods Stamp #447 Stamped sixufan Standard प्रमाप मान, मानक, कोहि, सार adj प्रामाणिक Standard of living श्रीवनवापनका स्तर Standardization प्रवागिकीकरण प्रमापीकरण मार्न तिर्धारण Standing committee स्थानी समिति Stand still agreement बनारेबाँद समझौता Starch were ent. 400 Started वार्यक्ष्यः वार्यक्षित State and State tunds रास्वनिवि Stately सम्ब मौद Statement away feere, sun Statesman राज्यनेता राज्यविद्येग्य राज्यव्य, राष्ट्र शायक, राजनायक Station अवस्थान श्टेप्सन

Sta Lonery क्रेस्ट्रनसामग्री Station officer at water Statistical Adviser शांक्यकेय अंत्रणकार, वास्ति संबन्धार Statistician nifere, mifers Statistics साहितको आक्रिक्के व्यक्ति

Status quo बबायूर्व रिवरि Statute GRAP Statutory Rationing धनिवित राशन-व्यवस्था Stay-to strike will of will arenis Steering Committee अवशास समितिः संवासन

Stenographer ampfelta Secrilization feedom duffere Storilized निष्धितिक बंध्वीकृत निवानिष्ठ Sterling balance श्रीष्ट पापना Stipend #R Stipulation इसर, क्रुचे भविसंदिश

Stock संभित्र राधित भक्त पूँगीत राजवामा स्वरंग Stock exchange सराक्षा श्रीक्षणस्य Stockist esities, wiente

Stock register संक्षेत्री Stoic संयोगनी

Stone-age प्रस्तर नग Stop cock theat Stop press छपने छपने StoreLeeper wert, with the

Stores wiere Straight angle अञ्चलीय

Strata int Strategern दाव-पात प्रक-पत

Strategic सामरिक महत्त्वनाका Strategy एमभोवि Stratified enther

Stretcher विस्तरण Stretcher bearer ferentimes Stricture लेखाकीयना निहारमङ अन्तरिष्ठ

Strike genie इक्ताक कर्मरीयन Stringency wides Stripes बोहे। पारियाँ

Student & Lodge क्रमनिस्ट्रेस Studio विषयाकाः स्वयाका

Study waren ware-us Study circle seasur-ta

Study group सन्दर्भ महत Stuffy CHUE, o'C COINS Sub-division enfrant settle

Sabject matter विषय-वस्तु, वादनियन Subjects committee (444-9/4/8 Subject to confirmation ways eith Sub-judice (म्बाबाब्यके) विभाराबीन, व्यक्तिनेवाबीन

Subsupation सबोतीकरण पराभव Sublet क्रिक्सो हेना

Sublimation क्याना सम्बद्धा Submatine बढा स्वेतरहारियो मीडा काडभी, दुस्सी Subordinate aviets, wer

Subordinate court wells returned Cabordinate officer अभोग (वासहस्र) अभिकारी Subordination अधीनता परबस्ता

Sub post office average Sub-registrat uvdalina Subscribe चेता देगाः अनुदरशकाः स्था Subscribed capital कारित पूजी, विका हुई पूजी

Subscriber अधिराताः पत्रस्कि मार्क, भारक Subscription श्रीभरान चेरा Subsection www.

Subscaucat भगवर्ती Subsidiary सदापक भीप

Subsidiary occupation grows withfut Subsidy आर्थिक सहायता

Subustence-allowance faste um Subsoil applia

Substitute terenya weles at ser, nichte, nich

Allotment कार्यस्त Apportionment संविधानम

15 Alteration आपरिवर्षन Change परिवर्शन Modification अपभेश संपरिवर्षक Reshuffling हर-केर, विवरिवर्शन Transformation aviet

16 Alternative \$4RTEL (\$484 Optional (making), there Voluntary संन्यास्य, संन्यास्य, संन्यान्त्रं रोधा-प्रेरित

17 Ambassador etwen Charge de affairs ममारी राजपूर Consul कालिस्ववस्य Consul general सक्षान्याधिकपृष् Envoy दृतः यितार्थकृत Rayov extraordinary were Rayo High commissioner waryes Legate average Plenipotentiary वृष्णिकारी इत

18 Amnesty सर्वभ्रमा Condonation समझान

19 Anonym समाम ग्रमनाम Pen-name साहित्यक प्रवसाय Prendonym क्रम्बाम

20 Appeasement galage Conciliation street Gratitication नहरोक्न Pacification श्रमोद्धरण

Propinguon प्रसादन 21 Archive ques Deed gen, fein Document with

Instrument (अवत निवेश Record while

22 Armistice जस्मानी संदि Conselle garana

Truce arradic colorie 23 Association d€

Board सटक समिति Chamber तंत्रक वेदम Committee समिति Company still Concern व्याक्तिक संस्था Convention AUMI Corporation विगम Council uttas Establishment Installation ufeure Pirm बोडी, सार्वे House gan, मनग Institution eter wer Meeting ex

Organisation signat Society HHIM 24 Authentication surebay Attenuation engineers

Certification named Verification margar : 25 Banishment fauner, (finalitie) Diamiasai farmuu, wwiit

Discharge unites Election Electment fausture Eviction अधिविश्वासन Exile fanisar

Expattistion enterfreeren Expulsion अपसारक विष्कासन Externment वहिष्येवय

26 Battalion unifered Beignde माहिनी Division बम्, भनीकिनी Regiment 111 Squad Report Squadron ven

Troops were 27 Battle ship बंधी बहाब, विश्वाण हुबसैत Canital ship ugrillo

War-ship ewite, garde

28 Belligerent sate Combatant Navigo

29 Bonus er Territor Dividend smit

30 Collectivism समस्मित Communism साम्बर्ग Socialism समावनार

31 Conservation situat Preservation of Com Protection Off, GOT Reservation आरमन

32 Consigious election Infectious delug

33 Criticium शाकीयन बाकीयना Examination vity, vity Experiment प्रयोग Observation प्रांपक्ष Secuting earliest Test विश्वय, क्लोटी, गरीका Trial परीक्षाः प्रयोग

34 Coupd cut आधारियक धातवपरिवर्तन, धात-विक विपर्वत

Insurgency unpite Insurrection 3727 Mutley केनहोर, केनदोन Rebellion संपतित सम्रव विश्वन, रक्ष्या विशि

Substitution प्रविद्दशायन प्रविश्वापन Subtenant श्रिक्मी कार्यकार

Subarb agage Subvention to religious association units.

पर्मार्थ सहावता

Subversive (release) Succeed दायाधिकारी दोना, यचराधिकारी (या वचरा-

ध्रेन) होता Succeeding section and add with

Succession प्रशासिकारः आनुपूर्ण्या कार्यव परवरा Succession certificate augifique numa Succes ave stages उत्तरीचर महस

Sue मुख्यमा दायर करना व्यवहार काना Suffragate मताविद्धारका संदेशिक करना

Suffrage, Adult 4446 4019417

Suffragette मवाभिद्यारक बिप सांवीकन करनेवाली सी

Sugar of mik gre said Sut समिदीन नार Suit Civil ध्यवदारवाद रोवानी मुक्त्या

Suit for injunction विरोधकानार Summary trial संक्षिप्त विविक्त विकार

Summarily dealt with संक्षेपत निर्मात Summon बाह्यम्, भाहाया बाह्यसम्बद्धानयम्, आवेद्धपत

Summon a meeting सभा बुकामा Sanbath शावससान

Super annuation pension बुद्धावरवाको (प्रवपस साम) पेशम

Supercede अरक्षम करना अधिकांत करना Superficial विस्तिशी, करते विस्तिक

Superintendence अपीक्षण Superintendent avitue

Superior ARC ALC: ME Superiority complex estimati, gameta

Supernatural attedias Super tax uffrat

Supervise quality Supplement अनुपूरवा; अनुपूरक, स्रोहरण Supplementary sigges

Supplementary examination appres when Supplementary question अनुपूर्ध मध्य Supplemented any (to

Supplier प्रक, समायोजक

Supply रक्तर, संबरण पूर्ति (प्रपक्षिण), समायोजन Supply officer quitant

Supremacy of law विविश्ववीचता Supreme authority स्ट्रीच स्था Supreme command स्वीच क्यान सर्वाच समहर्थ

Supreme Court बन्दम स्थानाक्य (सर्वीच स्थामाक्य) परम व्यामाकव

Surcharge appropr Surcty मुरिम

Surety for appearance and uffin Surface तका पृष्टभाग Surgeon श्रम्भविक्तिसक, सस्पद्मार

Surgery सक्वविषा, सस्य शाला शक्यकिया, शस्य चिक्तिसा Surgical Instruments Industry श्रव्योपीय

Surplus que Surrender value gudq-qua

Surveillance faurum Survey पर्वाकोसना क्षेत्रमाप, सर्वेक्षण Survival वय रहना अधियोजस

Survival of the fittest बक्क्सिटियोबन Survivor श्रीयोगी, गरियोगी

Susceptible squин Suspended निसंबित, अनुस्वित Suspense account अमुख्य साता, वर्षत साता

Suspension विस्तृत, सनुसंदय Sustained metaphor glugge Suzemin सरिराय Suscendity afertian, afertan

Symbol adia Symbolism प्रशासनाद Symmetrical प्रविष्ठमः समित संविद

Symmetry वृदिसान्त्र, सब्दिमिडि Syndicalism संय-समाजवार Synonym पर्याय, समासार्थक सन्द

Synopsis सारांच (परिचयारम्क) स्मरेखा Synthesis संबद्धक, समस्य Synthetic products बनाबरी या रासावनिक क्लाप

Table मेंब, परका वाकिया, सूची, सारिकी Table of contents five well Tableland पण समस्मि

Taboo विषेष, वर्धन Tabulate ताकिकायक करना सारणीय करना

Tabulator श्रमसङ्घ कांक्ट Tack मीन

Tacit acceptance श्रीय स्थीकरण

Tactics sustants Take-effect प्रमाणी बोजा

Take part शुन्मिकत दोना Talk क्वत्ता, भावण, वार्ता

Talkic बोकपर, सवाक् वित्र Tan चमको सिमाना चर्नहोपन

Tangent स्वयं रेखा Tanker Burien unter

Tannery पर्यश्चीवनास्रव Tapioca देविशोक्स, विद्विवी सूख

110-6

Revolt म्यरबान Revolution wife Sedition राजहोह, अभिन्नोह

Treason अभिद्रोप, देखहीह

35 Deadlock north

Relapse प्रतिगति, विवति, पुमःपतन, श्थितिविष्यैव Setback unfftibe 36 Enernachment wieszum

Transgression अविवरण Trespass अर्पर्ण, अन्विकारमनेख

Violation प्रश्नेषम शक्तिमान

37 Expedient समदो पत Opportune समयान इक 38 Extract water

Citation share Quotation अवतरण

39 Incompatible अन्तर्भ Inconsistent union 40 Indispensable अनिवार्ष

Inevitable अपरिवार्थ 41 Inspection निरोधण Superintendence अवोधन Supervision वर्धनेसम

Survey एपंत्रकोद्धन, एवां क्षेत्रनः भूमापन 42 Invention ब्रह्मान ब्रह्मान भानिमान उपका Discovery silfusion

43 Journal, Register 441 Ledger udat 44 Lapsed aques

45 Linguistics तक्यारम्य भागानिधान Philology भाषाविश्वान

46 Loud-speaker ध्वनिवर्श्य वा ध्वनिविस्तासक ਹੀਬ

Microphone ध्वनिविद्येपक वंत्र 47 Manipulation छक्कोबन Manoevic इयो बना सुद्धा-बास

48 Minister and Secretary HI 44 49 Motion sters

Proposal preggar Resolution frau 50 Precedence पूर्वता, पूर्वस्थानीयता

Timeharred spendio

Preference वरीयता अभिमान्यता Priority mailrean 51 Printed महिल

Typed महिक्कितिक 52 Procedure anifere Process affect 53 Race Haife Tribe wante 54 Reactionary महिन्दियानारी

legressive प्रविगामी Retrogressive प्रश्लेकामी 55 Remission परिहार, साभी (छ्ट) Rebate week wa 56 Stockist eather

Store-keeper श्रीबारपाब

Tarret was Tariff प्रशासक, स्टब्स्स संस्कृत-अवस्था प्रशासक-सानी, प्रकार द-पञ्जति

Tariff Board प्रशुस्त्रमंत्रक Tarso we when

Slipp surusT

Tax er Tex. Calling and fear-ar

Tax, Capitation प्रक्रिकासिक कर Tax. Corporation from St.

Tay Entertainment utbrezt, ustenner

Tax free sames

Tax Income engar

Tax Impact of an signi Taxpayer action

Tax, Sales (cel-ex

Tax. Terminal shurest

Tax. Trade sappresse Taxable ar sire

Taxidermist adugress

Tear हक बसरीस

Technical शारियादिका श्रीकोशिका प्राविकिक प्रति-र्मवंबी: विद्याल और जिल्लांबंबी

Technical education क्लिए-जिल्ला ग्रीकॅरिक जिल्ला

Technical objection suffice wrefer Technical point priefers say

Technical training दिस्प-महित्राण, मीचीविष

प्रक्रिसम

Technical words पारिमापिक सम्ब

Technician प्रशिष्ट श्विकी यंत्री

Technique देखा कार्यकरति निक्षेत्र बदानः नंब-बाह्यपे, प्रशिक्षि

Technology शिक्षविश्वान Tectblog इंत्रेक्भेट इति निक्यमा

Telegraph are

Telephone ब्रह्मची ब्रुशाय देवीकीय Telephone exchange इरवाको विकास बेद

Teleprinter TELES, TOK Telescope a taltan da

Televison qualitatic an Temperence against

Temperate xone प्रमानिक स्थित् Temperature शावनाथ

Тепро ями пив Tenselons with eq

Tenner Act बारमदारी कामून कृषिविधाम

Tenant क्षिप्तारा विराधेशार Tender प्रावसन-पत्र, निविष

Tender money treats 44141

Tenet faxla

Tentative admirate, utlustue Tentire unique, airminia

Tenure of land HARTHART Term कार्यकाका अवधि। सका (बह द०) शर्चे

Terms of reference favorable favor

Terminal suffees with Terminal tax शांतिक करा होमाहर

Terminal examination miles when Termination अवसात, परिसमाधि

Terminology aftmar-time, untruffe untell Terrestrial telescope wifer system

Territorial Army unifer dan Territorial waters बढ्यांवन, बढ़ीन धेन

Terrocist anisonit Testament मत्यदेख

Testator रिक्बपत्रका अनुधाता, रिक्क-एंडस्पड Testimony प्रशासित बस्तम्ब का क्यम, साध-र

Testimonial pursus

Test tube क्यांच्य-वर्धकाः परस्मधी

Тек нечы Textile var

Textile industry प्राचीय

Theism sufference Theocracy saids

Thumb impression stre (48

Theorem प्रशेष Theoretical during

Theory wer, fixed Therapeutles shriviture

Thermometer वापमापक वंश Thesis welled a feder Ticket ह्रवेदावनः मधानवन दिस्ट Tidal waters आर बत

Tie thum fier, nate (Anti) ! Time-barred कार्कावरोहित कार्कावित

Timebomb शिवत समवदर प्रविवादा वस साविषद प्रश्रोतः जिल्लाकाकिक प्रश्लोद

Timefuse fauncilles velou Timehonoused विरम्पयामिन, विरमान्य

Time-table समयस्यो, समय-सर्भाषी, वकापवदा समयविधागपत्र

Title प्रश्न स्वरूपः वपर्यपः धीर्थनाम

-page Heye, Heye

Title deed revesion Titular annunger annund

Том मोनिये

Toilet प्रशासना प्रशासन इन्द्र, प्रशासन गृह Token cut प्रकेष करीकी, प्रशेष स्वाप

Tolls quer Tool उपश्रम भीगर

Toningo ब्लाभी बजन दर्शनें, भीवनार Topography स्वात्यर्थन Topography स्वात्यर्थन Torid zone उच्च ब्रह्मिश Toss शिक्षा चडास्कर निर्मेश निर्मेश Toss चेया वर्षस्व सुद्ध सार्वादिक शुद्ध Tonliturnolism एक्ट्सिश साम्राज्येत, सर्वाधिकारवार

संबंधानाह Totalitatian state स्थापिक्सी राज्य, सर्वस्थातम्ब

Totalitation state सर्वाधिकारी राज्य, सर्वेसचा राज्य Tota होरा, पर्वतन Totanament रोजन महिदोधिता

Toxicology (श्वविद्यास Tower बीचार, पुन्ने, स्त्रेबगुद Town planning चर्यस्तियांण-बीजना, जबर बाबीयस

Town-hall सद्भवन Track बर्जवस, मार्च

Trade dispute अवस्थित विवाद Trade dispute अवस्थित विवाद Trade mark ब्लाग्स-चित्र सार्वो

Trade Union व्यवसाय-संग अधिक-संग कार्मिक सग Trade Unionist समिक-संगी Traditionalism स्टेडर सम्बद्धाः

Traditionalism प(१६१ पाककता Traffic बाह्यसात, स्मावार्।—police शाह्यबात पुक्सि Traffic in human beings भागवपक्षन, भागव सक रिक्रव भागव स्थावार

Traffic Manager परिवहन-व्यवस्थापः Traince प्रशिक्षणार्था

Training प्रदिक्षण Training of river courses नदी-मार्ग नियंगण

Transport tract courses नही-मामे निर्मेषण Transport

Tranquillity प्रदांति सम्रोत Transaction केल-देन करना, व्यवहार, दीवा Transactions काल्येकन

Transcription प्रतिकेश्वन Transfer इस्तांतरणः स्वामांतरणः, तवादका Transferable परावस्त्रीः इस्तांतरणीम

Transferable पराष्ट्यां इरवांतरणीय Transformation क्यांतर, क्यांतरण Transformed क्यांवरित Transgression अतिबर्ध

Transhipment बार्लावरण Transit, goods in संक्रमित मार्क Transit pass रक्षण मिकासी

Transition days, dailo Transitional period dailoan days कर Transignation देवांतर-प्रभा देवांतर प्रदेश

Transmission बृद्धियम व्यक्तिक्षेत्रम संवेषय Transmit संवेषिय करणा Transmitter कर-विशेषक विशेष

Transmitter दूर-विद्येषक प्रेरिक Transmitting station दूर-विद्येषक केंद्र Transparent पार्यक्रीक Transplantation स्थानांतर रोपण, अन्यस्थान रोपण Transport परिवद्यम् यादायात

Transportation (भवीसना परिवद्दमः ग्रेपोतस्य Trapesium समझेव चतुर्मुव Travelling allowance बाबाविदेव, सपर मधा

Transversal (वेपेग्रेसा (स्पामित) Trawler महामा भहान Treason रामहोत, समित्रोह स्टाहोह Treasure trove तिसात निषि

Treasurer क्षेत्राच्या, दावांचा Treasury क्षेत्राच्या, स्वांचा Treasury-benches सरकारो गोक, (वेचे); संक्रितनं

Tressury-bills राजकोष विराध, अनुमेन्द्रो हृषियाँ Tressury-bills राजकोष विराध, अनुमेन्द्रो हृषियाँ Tressty सुर्वि Tressy सुर्वि Tressy obligations संविद्यादिस्य

Trend of market बाबारका स्व Treads परना-प्रवाद Trespass वपवरण अनविकार-प्रवेश Trespass, crimical वंडवीय अनविकार-प्रवेश

Trial परीक्षा परीक्षका (न्यायिक) निवार, स्थायिक अन्तीका Triangle विश्वन विकोण

scuteangled स्वस्त्रोन विश्वत
 equilsteral समिवात विश्वत
 isosceles समिवात विश्वत

—, obtuse-angled कविषयोग त्रिपुत — right-angled समझेन विपुत्र — scalene विषयवाद विपुत्र

Tribal areas क्यानको क्षेत्र, जनवाति क्षेत्र Tribe करकाति

Tribucal ल्यापिक्रण Tribuce बनाभिक्ष

Tributory करद राज्य, मोदक्किताज्य, सदावद नदी Tricycle विषक्क ज्ञान Tricycle विषक

Tripartite treaty विद्यान स्थि Triple boycott विद्यान सहित्यार

Tripe boycott (शावन नाहम्बार Triped stand विदायनानी Trisection समविधायन

Trisection समित्रधावन Tropics सच्च ब्रुटिसम्ब

Trooper काशारोको सैनिक Trophy विकरीपशार Truce विराध-सभि

Truce विराध-स्थि Trump card कारका प्रशास अकास विश्वमान

Trust स्थास, प्रत्यास दृद्ध Trustee स्थासी प्रत्यासी

Trusteeship sqा(त्वा Tube well नककृप

परिशिष्ट---३

छटे हुए शन्द और अर्थ

अ

भंतेहरूर, बा॰ भीमराव रामधी-पु प्रक्रिय हरियन वेदा (सम्म १८९३), गोकमेज संमध्यक स्टर्स १९६० ११,१९७ से १९५१ तक मारक विधियोग थे। भारतीय भीवश्यका महाविदा मुख्य क्यंत्रे कहाने वैवार क्या जा।

समाच ।3

ाक्या वा । व्यव्हा अदिवा, आयका छोडा घक । सरकाष्ट्रिक-दि [चं] योहे समयके पूरे समयके कुछ बागते विद्या संस्था वी (जीवरी चंगा) किसी कार्यों पूरा समय म देवर भीडा समय कमानेवाका (पार्ट डास्म) (सर्पक्र)

धिए अंदेश-चा धर्म जिल्ला ।
अस्ती-ची अस्त्रतायाः । स्वेदार (वेदाक-द्वाराः
प्रेमा) नित्र दिल नवस्त्रतेयाः । स्वेदार (वेदाक-द्वाराः
स्पर्के पतिस्त नवस्त्रते क्ष्मी किस्त आदि
स्पर्के पतिस्त नाम पूर्वती है या क्ष्मी अगावस्य किया |
देनेका बामा इस्तो है (त्रेक्ष्मक्रका दिवान)—"तम
स्वान्तार्थ हो इस्ते इस्त माम का क्ष्मी कीले ।
स्वान्त स्वान्त हो इस्ते इस्त माम का क्ष्मी कीले ।
स्वान्त स

चक्तक−म कम्बरमात् (रासो)। मेकासप्रसम्च−पु [सं•] सोको समयसे पहल प्रस्य पोना।

वकासी~की ताई। वे मूर्छने। वकि--व अवदा था छिर--आणि वरी वकियानी परी-वस ।

परिकारिक-स्ता अनुन्य प्रेसिका-कान्य । परं बहुता पानकी अक्रिकेरिको नेदस कानी कहा गुग'-यस । सम्बद्धक-वि [संक] वासिक पुरसकोरी किसी नाठीका

भवरका पाक्षम करनेवाका । भक्तरारंग-पु [सं॰] पश्के पश्क अक्षरोंका बाग कराना

भक्तरारंग-पु [तं-] पष्ट पष्ट अक्षरोंका बाग कराना (पक संरकार) विवारंभ।

अवार#-पु धानार, धर्-'ने ऍन्प्रर-भेषियार अगरमें सबे मानवर -क्रम्थांनको । अवाराईं/-को/ अग्रता भेग्रता-पिरा अग्रतार गुन-

गरियान्यनम् को न्यानः । अगस्य न्यान्य अग्रान्यम् विद्या, अनसर् आर. पाष कहं से कथाँ न द्वार न्यासरः ।

- कद्द प कर्दु ग दार ''-अशादक=चि अगःच ।

स्थात्र्रणाच्याः च्यात्राः स्थाननाच्याः चु एतः सरहकाषम् विस्तं प्रत्येपर्णायः स्थानसाद्येश्रणाच्याः स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य

कार्यकाङ्ग नावराव नाय कार्य-वनश् अस्तर्यक-दि, स. दे अस्तरी

अधितकांक-पु [सं] जाय क्यानेकी परना आमयनी । अभिनवपा-की [सं] जायकी या तोपके मोर्की वर्गी

आदिकी वर्षा । अचक संपत्ति—न्यों [सं] सं इतायों जा सक्तनेवाकी सर्वाति गेर मक्कृत्वा बायवार (यर सेव काशि) ।

श्रचार~पु किरीमिका पेश है मूक्सें। श्रचाह्≉-दि विश्वकी चाह करनेवाला कोर्र न हो-'दाह-सालवाल को अचाहके कल्पतर'-वन०।

अचित्रक−पुशासर्थं वर्षमा । सचीतक−पुदे 'सपवत'।

श्रवद्य•−दि भव्या सुंदर्र-'मानहृ विवि तथ भध्य हृदि स्वच्य राज्ञिने कार्यं –िव १

अध्यार•−पु महर (रासो)। भक्रम•न्दि बढक, मतुन्न। भजोतर÷न्दि सम्बंद।

श्रास्त्र-म भागः। श्रास्त्र-म भागापु पुरतेतकः। श्रास्त्र-पु भाग- वारि दियो दिवेम स्टेपको असनो

अहाबा== प्रणान पार प्रथम प्रयास करण करण कर्या इ −यम । अहाको –को प्रकृतक चीता के अस्य भी त्या है।

अदक्रों—को जरूरत—विस्तिको व्यक भी दवा है। तुम्बारे और भैदाके किए एक हो सछहरो बहुत हैं' —मृत । अद्यक्कांं─यु अष्टारिका, महक।

स्वर्धि - पु सिपाधी पोत्र (राहा)। सर्वेड - वि वर्षका विदे दव न दिया ना छक्ष। सहमा - म कि समवा- 'रीजिन योत्रे सुवादत स्याम सद्या कन सर्वेद देंडू सही ह'-वन।

भवि•िव जो करनेवाकी पुष्कः अवनु—वि [सं] मोटा हैं मुक्ते। भविभावित—वि (ओक्दर-कोडर) विसपर पवितसे

Unicameral ga-resurras

Unllateral ususlar

terets sell notall

Unit zuet, ruit, run

Union de

NEX

Uniform विषरिषान समग्रियान

धेवा बभीधन, नेम्हीय जनसेवा मानीय

University Court विश्वविवास्य समा

Unlawful assembly ally Hur

University Scoate विश्वविद्यास्य प्रशंकतियो

Union Public Service Commission tie tra

Unitary material -state contra at thatter

United Nations Organization the Cuch

Universal Manhood-suffrage sayer av wit-

Tultion (ce faure sies

Tumour wir Turbulent wird Turncoat wrestriel Turning point sind [45] Turnover समस्त ऋष-विक्रमः पूर्व विक्री Turnitude जीवता, प्रदर्श Torret gun qu ein Totalege अभिरक्षण Typed महिश्रित Type HE, 2189 Typewriter मुद्दकेशन वंग Typisi neckare, aley ein. Typographical error महणानंबी मुख Typography सुरूपका, सुरूप धौरवं Ubiquity of the King राजम्बे सर्वन्याक्टरा U-boat सर्वत पत्रवानी Ulcer we Ulcerated when Ultimate at/kg Ultimatum बंदिस चेतानवी मंदिनेत्वम् Ultimo naute Ultra vires श्रुखिपरस्तारा, श्रुचिके परे, अविकार सीमाचे गावर Umbia भृष्टाबा, प्रतिष्यस्था Umpire Adar Gada Unanimous ederad Unarrached anistar Unauthorized बन्धिकारिका अविश्वत Unbecoming walted Unhissed Brogg

Unofficial नैरसरकारी, देसरकारी Unopposed fallette Unpatliamentary weight Unproductive warrant Unredeemed balance अधोरित भेर Uascat स्वाभण्युत करनाः समाधीन करना ना छेन्छ स्थानवंशित श्रीमा Unseated विश्व सतासीतः स्वानवंतिष Unskilled labour शतिपुत्र या अक्रमध्य समिव Unsoundness of mind fre-fresh Unspent belance अव्यक्ति क्षेप Untoward were, wire Unveil अनासरित करना Unrickling was Upper House en nea Upstart सहसीवत व्यक्ति सङ्ग्रहत (दिनीक्य) व्यक्ति Uprodute wereles Upward grond swintly Urban ant divit Uncushed stays Urgent waren, (menters) Unclaimed document अस्तारिक देखागा Usage fift Uncultivated arafte Usance wafe Under developed ares वसीवत क्षेत्र स्थ्तीयव क्षेत्र Usury exalte Undergraduate level, on स्नातकपूर्व सारक्र Utilitarlanlem avaifmment Underground गत अंतर्जीम, भूम्बंशर्जन, भूमिनत Utility अपनीशिवा Underhand nu gwen, want Utopia राजराज्य बास्पतिक स्वर्ग, (स्वतकोष) Under nourishment म्यूनपोक्स, अक्ष्पोक्स Utterance wait, when Under-secretary सङ्ग्रीक अवस्यिक Uncarned water Undertaking क्यानः स्थापनितः दश्यमुद्दीय व्यवसाय Vacancy Russi, Res Vacancies (traverer दिया योजना Under-trial अस्तिवीयाधीन Vacation alphesiza Vaccination fits Unduchanged argung Vaccinator दोस्स, दोस्स क्यानेशका Uneconomic holding warner alle Vacuum शुम्बरभन, सुन्त्र, निर्वात Unemployment देखते Vagrancy आवारावरी, आहिस्सा अनिधिया Unequivocal segion

भविर्रजन-भयोध्यासिङ्क उपाध्याय मनिक मार कार दिया गया हो। भतिरंजम~प सि] पश-भवाकर कहना । अविसंघान-पु [सं] (बोम्बर-दिविंग, बोम्बर-पृतिंग) परित कश्यमें सम्म निश्चामा स्थाना । अभार-विभागग्रहा। भव्यतातिश्ववीचित्र-जी (৩) পরিভাগীতিকা ব্য मेद-वहाँ बारणका भारम होनके पूर्व ही कार्यका हो भाना वर्षित किया आयः। भार्यतासाच-प हि । किही वशाका पूर्व कमाय-वीमां बालोंमें संगव न बीमा (जैस काकास-क्रम्मय)। अस्पाद्वारी(रिम्)-वि (सं)अन्ति नाशार करशनाका । अरयुरपादम~पु [सं] माणका श्रीक माधामें करपादन। अयाद्वीरं --वा॰ दसको जगादी । **अवस्य•**∼पु दे आहाय । भद्रियतमा≔नी [सं] पार्वेती। अधनिया-विज्ञान बानका को दो पैसमें मिके। अधिवासी किसान−त वद विसान वो भूगियर, सीर बार जनना कारतकार करवसुभवनमंत्रे क्यानंतर खेत केवर नीतवा है। बह्न उसे सीमनभर जीवता रह सकता है पर बस्तांचरित नहीं कर सकता। अधीजना≠−व कि वरीर दोना। भघाशी – सी गाम भैंस मादिकी खालका नावा दास की काम फेंक्नेवर प्रमारते किया बाग **।** भगनुष्क्रक−दि [स] जो बनुकुक न दो। गरिकक SECT 1 **भग्नुपाक्रभ−५ (वॉनक्ष्म्कार्वेश) किसी लाक्षा असेश्व** शिक्स पाकन स करमा। **अनवाद+**=प्र फाक्ट् बात्। मनसङ्≠−िव दे बनसङ्गं। भनाकमण−९ [सं] देशादिषः शक्रमन न करना । भवाचरण−प्र [सं] किसी निविध वा निर्वारित कामका न करनाः है। मुख्यं । क्षमाङ्कक-- मार्क व्यर्व-'राह मनी वह आमि वनाइक'-वन । भागिमेसी०-वर निरंतर।

श्रमान बासको देश्यको ।

हो सहै ।

क्षेष्ठ 🏲 शब्द ।

भानेद-रसायय । मानत व्यवस म्यास वैपायय --वम । श्रमुक्तस~पु [तं•] दशके पार एक श्रीमेकी किया। है

भनवयाधिका-स्रौ [तं] उपनेत्या व होना निर

असुर्ववका मसविदा शकाशित किया'-'बाब'। असुमानसः(तस्)∽व (सं] असुमानसे । अञ्चरिक्त−षि [र्छ] महिष्यमितः संहतः। अमेडी = - वि अस्तेशी वे स्त्रेष्ट न करे। अमैविकक∵वि [सं∗] वो स्वच्छास न किया गवा दो। अनितासिक-वि सि जो इतिहासमें म भागा हो या को इतिहाससे प्रमाधित न होता हो। इतिहासहरक। असोड~त पैरके अंगुटेका एक माभूवम, सनवड । बर्निटा#−वि॰ भगता । (स्रो भनौती) । व्यपक्रतीक-व्योध अम्पराः देवीयना । कापळार७-वि देवसे तरहसे इक्तेवाळा-'अस वी अदशार बरैन करें'⊸वन । अपनीय-विश्वासी क्रियका अपनवन किया यहा हो। मिले कोई यया के समा की है। मूक्में। व्यवस्त्रक-वि सक्षिप्त, बनासक्त, दर-अगरस रहत सनेह सगार्वे माहिम मन अनुरागी'-सरा भीरछ । अपरिपक्क−पि [सं]पक्का भवी कवा, अपकस्राः। अपकाय-प [सं] देशतक्त्रकी वद्यास ह सपुनीत-वि [सं] सद्दित, दृष्टि । श्राप्यास#—५० जपान, अपनापम श्राप्तमान । क्षाचनाना-न कि. कर बढ़मा, बरराना, सीस स्क्रे वैशा अञ्चयन होना । शवर≠-वि वए८ यन्त्र। भागित्रीक-पुरु **देश 'अ**मिश्य' । श्रामिरक्ष्य-प [सं] (बार्ड) है 'मपब'। श्वभोरय-वि [सं] वी भौप करमे बोम्ब व हो। क्सि भीयमा वर्षित हो । स्रम्मा०-५ जममं क्रप्य । **समरचा~सी** सि॰ो समर होता । **असरमगिष्ठ०**-५ देववाची । क्रमको−वि दे मूक्में । सु० - क्रामा पहनामा-कार्वकष देशाः कार्वमे परिषय करेगा । श्रमिकताई ४-को जनवता दशारी इपट ११-११ रहनै-का स्वयान-'मिक्स म क्वी हैं घरे एक्से अमिक्सर्व' समिबांध्य-वि [स्र] ब्रिस्का मिर्वाचन न को सके जो **⇔98** 1 श्राविस#~भ व्यमिश्र, क्यातार, शहनिश्र-'हरनक्या असीकश्रम विना इलुके शे-दिस वा दुसनीय समाज मरे -वया **अस्**राज्—अ अनुवानसम् **१६१ ६**१के। अभिक्र - वि सर्वात्तरहित । भनुषरवासी(यिव)-वि [तं] जो अपना उत्तरहा-सर्में क्षे क्रमी घरारत (बिरन म समरी, कर्जन्यपालन और जिम्मेरारीका खनाक अर्सीवार-वि प्रयोदा व मापनेवाका-'शापनी भावन शास्त्र वर्षे ४ − वनः । भनतीर्ज-वि [सं] यो गरीक्षार्थे वचीर्ज (सक्दर) व भवीच्यासि**ड** उपाच्याय 'हरिश्रीच −प (सं १९३९-२ ०२)-दिवेदीसुन्द्रे प्रमुख साहित्वकार । रचमार्थ-महाकाष्य-प्रियमधान वेदेशी-वनवासः १९४ काम संग्रह-पोक्षे पीपरे. रहाउक्षा नोक्षणाच प्रधान्त मनुद्रापित-वि [सं] जिसे जीवन वा स्कृति वी वजी करप्रता व्यक्ति रूप्यास-देह हिंदीका हाह, अपस्तिम कुकः वाकोचनारमध-हिंदी भाषा और साहित्यस

अमुर्वाच-प्र [सं] (पंद्रेक्ट, बंद्रेक्टका फार्च) वंबसपत्र-

यार्वनामा:-'केयांकी और प्रकाशकोंके बीच यह शासन

Vague बरपट, भूमित्त, शनिश्रित Valid प्राप्त, विश्वतुक्क Validation वेगोद्धरूक

Validity सम्बद्धाः, विश्वसुन्त्रता Valuation सूरवादनः, सूरवनः, सूरवनिकापण

Valuepayable articles मृह्यारेष मस्त्र Vaponisation कार्याच्य

Variable capital प्रावर्तनीय पूँजी Variation क्ष्पीतर विकार धारत

America स्थाप संदर्धाः America स्थापः संदर्धाः

—शक्षक अभीच राज्य Valida

Vehicle शहरान Veia हिरा

Velocity प्रदेव Veneral disease बील होल, इतिज होग, फिर्रगरीय

Venture закан

Acting file

Verbal alteration श्वास्त्रिक वृदिवर्तन

Verbatim अक्षरचा Verdict अतिम निर्मन, अभिनिर्मन

Venfication स्थापन स्थाप्तरण Versatile बहुदिय, (बहुद्रस्त); बहुसुसी

Versed निष्णात

Versed निष्णात Version, Authorized अधिकृत विवरण Version Revised पुनरीक्षित पाढ संघोषित पाढ

Versus fixet sain Vertex she

vertex श्वीर्ष Vertical प्रदाम Vested interest बिहित स्वार्थ

Veterinary doctor प्रमुचित्रसक, साविद्योगी Veterinary hospital प्रमुचित्रसक, सोविद्योगी

भरतात्र Veto n. प्रतिकाशिकार, रोच अभिकार Veto y प्रतिकाशिकारन स्वीत स्वया

Veto v प्रतिवेशिवस्त्रम् प्रवीय कर्षा Vla media सम्बद्धसे Vice admiral चपनीकाष्ट्रक

Vice-Chairman equas Vice-Chancellor gaufd Vice-regent eq-traticus

Vice-president बपराष्ट्रपति। जपसमाधित Vice versa विषयेण भी, विषयेततः भी विकासतः भी विषयेत कसते भी

Vicious circle सदक्त हुम्म, विचयक्त Viciositude क्यान-प्रवार, परिवर्तन Victuals सोकम-सामग्री, शक्त-सामग्री

View point रहिकोल Vilification (मध्यारोवल Village Council मामपरिवर् Village uplife मामसुपार, मामोरपान Vinculum रेटान्यनी

Vindictive महिद्दिसारम्ब Violation उच्चंपन, शरिद्धमण Virgin soil अञ्चलूनो मृत्रि

Virgo क्यासाशि Visa अनुवेशवण, हजांक, वेश्वामममका अनुमतिवण Visit दर्शनार्थ समस

Visitor दर्शक, परिवर्शकः वर्शनाभीः भागेतुक Vitamin खायोज, जीवमत्त्रत्व पीवकत्त्रत्व विद्यामिन Vitality भोग श्रीवमशक्ति

Viva voce मीरिक परीक्षा Vocal music इंड-संगीत Vocation serence

Vocational training ब्लबसाद प्रशिक्षण Voice Active कर्तुशब्द

-Passive saletes
-Impersonal apares

Void adj सून रिका व रिक्या Vol. tile बाजपद्योका सरिवर, पंचक

Voluntarily संच्छापूर्वक, संच्छापा Voluntary संच्छिक, संच्छारच संच्छापेरिय,

Voluntary essociation सेन्द्राहत संयोग

Volunteer स्त्रपंते वह Volunteer corps स्वेच्छा-सैनिक-एक

Votable मत्त्रेव Votable मत्त्रेव Votable मत्त्रेव

Vote, Casting निर्णायक मत Vote, List system of मत्त्वी सूत्री मनाकी

Vote of censure निवा-प्रस्तान Vote of credit प्रस्वनातुदान Vote on account केवानुदान

Aote on account califa

Voter-list महत्तता-च्यी Votecher वर्षका पुरशा प्रमाणक Vulnexability शेवता, वुर्वकटा, मेक्टा

Wage nach and

Wage, Living विवाह भूति जाते बाग्य मब्दी Wager बाबी पणा ठावतेवाचा Wagen माधगादीका बच्चा Wating-coom प्रतीकागृह, प्रतीकाव्य

Walve बाग्रह न करना, छोड़ देशा Walkout समास्वाय Walk over बनावासिक विजय भरक वि

Walk over कनावाधिक विषय धरण विश्व Wall Street न्यूवार्वके ध्रेवरणायास्का स्थान Wanted जावनकता है

Want of confidence विश्वासका अभाव War, Cold ठंडी कहाई 'शीत दुक्"

मर्परामि – भागा

विदास सेरीर-वचनावतीकी आक्रीवना आहि। श्रास्त्रामित्र-की० परदाहर, व्हववडी-कोचे वदी मृर्ति सरस्यानि भावरे'-धन ।

भरबीसा -- वि अहियक, अहनेवाका- पूमत पुरत वर

ीने न मुरत'−वन ; दे शूबमें । सरविंद घोप−व (१८७२ से १९५) सन् १९ ८ में

सराबंद घाय-चु (१८०१ स १९५) सन् १९८ भी ननस्य कोनुर पमनेसमें मुक्तमा पका पर ने हिट नये। सरमें ने राजनीतिसे पूरकृदों गये और पांक्रिनरी-स्थिन माने आध्यस रहते तुप आस्थास्मिक अध्यसनमें कमारों

भारत्-त प्रशिक प्रानी बार्गनिक को अफलात्नका स्थित तथा विकार प्रशानका विश्वक वा (१८४ ॥ १२२

रसरी पूर्व) ।

2942

भरीक्षना रूम कि उक्तत्रका वय जाना ।

संस्ट्र - दि इह बी एक गवा हो।

सस्त्रम∽दि [सं] हाक जाभशुष्त, कार्कमा किये इर।

मरेक - विश्व के 'अहिबक्र'।

सर्वरामं-दि+ [सं] अर्थवूर्ण जिल्लों विशिष्ठ सर्व निर्वेश हो।

स्यापी(रिन्)-पु [सं] प्रश्लावातका रीनी वह विसे कब्ना मार गवा हो।

भरे (एक - पुंची कुत व्यक्तिको आधा पानीम आधा गहर रचना।

मक्कामा - दि दे अप्रकारीया ।

वस्याद्ध-(६ शक्य करनेशकाः वो शक्य करनेके मध्ये हो।

बबस्ब॰-इ बोड़ा (राखी)।

मकामाइकां – भ ताहक, व्यर्थ। मकिकित – दि [सं] वी (व्यक्तित न हो केवक वदानी वैदिया पता वा विकासपा।

वडंस ६-पु० अरस्य, निराजार मझ- मृथ्यी सहा त् वडंदर्श केंद्रि से -बन ; देवता- सितासित सकनारे साविषके रास्त्रिकी तीरुको प्रति हं सबेस कथि हारे हैं

−रासः। सस्यज्ञनतंत्र-दु [सं] भोदेशे क्षेत्रों द्वारा छात्रिय राज्यः। सस्योग्र≎-दि० क्षेत्र, पंचकः।

मबस्यकोष-पु (छ॰) (डिजो(छनसन कर) है 'मूब्ब

बास क्षेत्र (विसाई कीय)।

स्वयराङ-वि स्मब्द्रवाका । स्वराधिक वि

मन्यरी≉−वि सी पुदिसती। मन्यद्वा*−स कि बहावा।

सम्प्रतिस−५ [स] है अवशेषा । सम्प्राताच्या कि ले सम्प्री प्रातास

वनपारता—सः क्रि. दे सूकते; मानना—धपत्रे वर्षे वित्र दृष्टता स्र सद्दा सनवार्य—सात्रः । वनस्तिवास राकुर-पु भारतीत्रः वित्रकृता पर्वे सूर्ति-

विश्वमें नवपुगके प्रकृतिक (१८७१-१९५१)। सवरोक्त-वि [धं] (लेटर) जो बादमें कहा सवा वा

किया देशा हो।

भवसव-वि [सं] वसहीम विवस्त्र ।

अवसरवादिता—स्ती॰ [सं] बदसरसे काम उठानेकी प्रदृष्टि ।

अवसर्थं-पु॰ [सं] दंश शादिमें कमी कर देना। दे मूक्में।

अवारा नि॰ **रे॰** जानारा ।

अवञ्चानिक−वि॰ [सं०] वी वैद्यानिक न दो, वो दिद्यानके - दिक्क था प्रतिकृष्क दो ।

अशोमक-पु [सं] माधिक्यका यक दोष है 'कहसून'। असरार-वि वरोश्च-किसो कहि कहि कृतिये वा सीरये

असरार −साथी। असावर*-सर्व इमारा-"शार्वद शेवन क्यांन श्रहाडी श्रमाविया --धन+।

थमार्न् =-सर्व इमद्रो ।

धसार+-पु अस्वाद स्वार ।

क्षस्तप्राय-वि [र्स] इत्ता हुआ; मरता हुआ:- (क्रमार पर पत्ने हुए अस्तप्राय सुकरको देखने कमा'-भूग । अस्थिर=निव स्थिर।

साह्य्यति≉−पु नहिपति ग्रेपनागः। सञ्च्यति≉−पी शनंदश्चे स्थितिः।

महानाव प्रतिक के परछे कहूं छ। गंधा-दिवनवी कहिबानमधी महिमान वहाँ रहुठि खांक्षि विकेकों --यन ।

अधुरामा +− प कि सींच देना इस देना - फिरिफिरि इस तार्ने तक दहुरशी अधुराई - यन ।

अबुरि-पबुरिश-अ अहर-पहरकर, किसी प्रकार नक्कर -'क्रस्पन गीय निर्धे बहार महार नीके -मन ।

वा

क्षकिक-पु [सं] (स्प्रेरिक्षियम) सांस्मिक। ऑसा-सा मुक्तका नारंमिक रूप, रोमानकीकी इक्सी सो रेसा मध-करक दुस्क था। योसे मीम सुकी

यी -तृगः। भाँसना!-मः कि सटकमा यहनाः चुननाः।

श्राँद•−अ भरोसे−'रक्षीन काम करू काद्सा पाकत प्रात्त शत्रशे व्याँद'−यन ।

प्राव रावरा व्यव - वन र आहं स्टाह्म, प्रोक्तेसर व्यववर्ट - प्र वर्गनीके प्रक्तिस्त वैद्याविक (१८०४-१९५०) वी अपने 'छापेस्टासासके स्वितांत के कारण विकास हुए । वे बहुदों ने कोर स्टॉ हिस्कर के करणीवनसे वस्स होकर स्टारश डोइना पड़ा ।

आकाश्यवाणी-की [सं] रेडियो दारा प्रशारित वाली। -केंद्र-पु वद स्थान बर्धांते रेटियो दारा मार्चा, समाचार, संयोज कादि प्रसारित किया वाय।

आक्याव-पु [सं•] यह दश विशे दिने वा वेदान स्तर्थ कदे। दे मूक्तमें।

आक्यायिका-सी॰ [सं] छिया देनेशको करियत स्थाः दे मूक्ये ।

आगजनी - श्री चपद्रवसारियों दारा वर, द्वाम जादिने भाग भग देनेसा कार्य ।

बागपेटी-सी दिवासकारेकी हिनिया।

आयौ=-वि अप्रगण्य, रहा हुआ-'मान बहाय समामनि

--- इ. इ.म १

उग्रश्र-वि० [सं०] बीर; वसवान् । उग्रह-पु श्रहणसे सूरना मोश्र । उग्रा-सी॰ [सं] दुर्गा, महाकाली; उम्र स्वमानवाली; कर्मशासीः भवशयन वज् र १ उच्चरमा-स कि॰ किसीपर अपने उपकारी या उसके अप-कारोंकी सदरणी करना, उक्तरना; बोसना; ताक देना । उधरा-वि॰ उवरनेवाका । -पुरान-पु॰ दे॰ 'उदरा-परान । कथक्ता--थ० कि सुकता। प्रकट शाना। नेवा शोना। मेटा फोड़ होना । सुरु उधड़कर नाचना-मान मर्नाराह्य श्रवाक छोक्कर मनमानी श्रदना । राधरमाण-बार किर देश 'उधक्या' । उधरारा - वि॰ जुला हुवा । पु लुला स्थाम । डबाइना-स कि॰ योष्टनाः धनाइत करनाः वसहरणः पर्शकाश करना । उधारमा*-स• कि॰ दे॰ 'उपावता'। उधेकम ७--सः कि॰ ज्यापना । उच्चल - पुने कोई चीव कैंपी करमेंके किए उसके नीचे दिया जानेनाका वट बादिका द्वकता । उचक्या−श कि॰ पहाँके वरु सहा होना। सिमी चीजकी पाने वा देखनेके किए कपर वडना। उद्यक्ता। ए॰ फ्रि॰ सप्रकृत् के लेना कहा हना। उचका+--त्र॰ सद्सा, अचानक । उचकाना−स• क्रि॰ क्यर वठाना । उचका - प्र चीव छीन-उठाकर साथ जानेवाला, बाई, चठाईगीरा । उचटना - ज॰ कि॰ चवइताः अक्य दीना, विक्रयानाः धूटनाः मनका दृट बानाः म क्रमनाः मक्कमा । उच्याना−स॰ कि असन करना धुशनाः निरक्त करनाः विषकामा भक्कानाः। अवद्गा∽भ फि॰ समै, विपदी दुर्र श्रीवका शक्रम हो बानाः कराइनाः एक देना यह बाना (कीएके उद्दनेके भागारवर सङ्काविचार-न्य) । बचना॰--म॰ कि बच्छना, कपर एठाना। स॰ क्रि॰ कपर प्रकाना । अचित्रिक्-सी॰ उद्यान₄ समार । अच्चरमा∽स क्रि॰ उदारण दरमा शेवना। म∙ क्रि॰ ष्यति भ्रष्य हीना। उचार-पु॰ विरक्ति, उदासी, वी न क्रमता । उषाटम़ =-पु० हैं 'उदारन्। उचारमा-स कि उपार कर देना, प्रदान्न करना । उचारीक-सी उनार, बदासी । उचावमा-स॰ क्रि॰ मधे विषये भीत्रको जुदा करताः उद्यादना । उचामा॰-स॰ क्रि उँचा करना चठाना । उचार+-पुदे• 'उदार । उचारमाण-स कि क्यारण करना, शंकना; बसाइना । उत्तराचा−तु सपनेमें बहबहाना । उचित-वि [मं] डॉब, थोग्ब, मुनासिया स्मृत्या विदिताः दाशः मारा दुवाः विवा प्राप्तः।

उचेबना, उचसमा! – स॰ फि॰ दे॰ 'उषाप्रमा ।

उर्वेहा, उर्वोहार-विश्वमा हुना बढा हुआ।

STREET ! डचंद्र-पु॰ [मं०] रात्रियेक रात्रिका पंद्रदोन का शंक्रिम भाग । उच-वि॰ [सं॰] केंबा, शंबा: वता, श्रेष्ट- कुलीन: सेवा बीरबार। शुम केंचे दूछरोंक्र प्रमान बाकने बीव्य स्थान-पर बैठा हुआ । -शक-प्र+ मारिबल या इस अंबीका केंद्रा परा । - साक्ष-प पासपोडी बोज आहियें होजे-बाह्य माभ-गाना । उद्यक्तित-विश् (संश) मौक्क वदशहरमें कमर-जीवे देखनेवासा । जबयन-प [सं] भन की भन कसमा, वह हैंसी की मन्द्र संसी। उप्तरा-सी॰ [सं] यमेश सम्बासः प्रशाः शुंबाः सृम्बाः मक्दीः नागरमुस्ताः सहसुनदा यह मेरा चुनाला । क्रथ्य-प्रव (स्व) देस राशिः ववन, भूमना (प्रवादि)। मीशीर्वधः सम्बद्धः । उरवपापचय-५ (१०) प्रशास और पत्तन । उपचरण-म भि•ी कपर वठमाः भागाः नाहर जानाः थ्यनि शुभ्दक्रपमें (मेंडसे) नावर भाना । बच्चरमा । – स कि बचारण करना । द्वरसरित-वि [सं] कर्यः बाहर भावा हजा बहा हजाः अस्विद्धापुश्यक्त विद्धाः उच्छ∽दि [सं]गतिप्रीचः प्रमनः समझ। बचलन-पु [सं∗] जाना रनाना दोना। उच्चक्ति-दि॰ सिंशी की जानेवाला की की, प्रश्वान कर रहा हो। बाहर आबा या कपर गया हजा। चटका हजा । उच्चाकांक्या−री [सं] क्यो वरणनकी भाकांका ध उद्याट-प्र॰ [सं•] देरोंकी नह करना नवसे अनको निरक्त कर देना । दबारन-प्र [मं•] इराना निकारमाः स्पाननाः किसीके क्तिको किमी व्यक्ति रवाम, कार्य आदिसे वचरामा र्वष्रके छा सन्तिवारीमेंसे एक । उचाटित−वि+ [मं+] जिसका प्रचारन दिया गया हो । उचार-पु [सं•] (धन्यसी) बीकता बहता। मल, विहा। समारक-वि [धुं] बचारम बरमेनाका, कश्मेनाका ! उचारण-पु॰ हि] श्राप्यको मुहसे निकालना नोकनाः द्यस्य या उसके बर्गोको सहसेका रंगः -स्थान-पुरु मुँदका यह दवान विसक्त प्रयक्ष कीर्र विशेष ध्वति निषक्ते (बंद्र, ताम औष बिका नगरि)। उचारणीय-दि [तं] प्रधारण करवे बोग्द । अवारित-दि॰ शि॰] बहा, वेला हुमा । उचार्य-वि सिन्रे उदस्यीयः उद्यावच-रि [तं] उद्यानीयाः शासन्त्रा विविध, विभिन्नः विवयः। करिकार-नु[मं] मामानित मुक्त व्यक्ति। एक सरहका केमना यह सरक्या औगुर १ अधिकत-दि [तं] त्रेमूदीता एकत्र दिला दुआ, जसन | उच्छेदी(दिन्)-दि० [तं] वस्ट्रेर क्रकेरणा ।

किया हमा- राजीकत । उप्पट उपनस-१० [ई०] प्तता वा शहरा उत्तर उन्नंड-वि सि•] अति कम मन्दा अति मुखा तमा मागा करके शिरेपरको समागर। उपवैः(धर्मस)-म (सं०) सँधी आशासे अपने। -भवा (वस्)-प्र• देखा योहा । वि• देशा मनसेर का सर्वे कार्नीवासा । **उच्छन्न**-वि• [ग्रं•] धमावृतः मद्द, तुस् । जन्महरूताथ-स॰ विद० देश 'बयुनसर' । उच्छक्रम−पुर (सं•] क्टलनाः त्रापित होना । बन्धसम्बद्धाः - अ क्षित्र ध्रावसम्बद्धाः कपा प्रदश्य मिरना । उच्छक्ति-वि [सं∘] उद्यक्त या उद्यक्तमा दुना हर्शन शुक्तः ब्रंदिनः गवा द्वमा । उच्छच०-पु० उरस्य । कच्छायम-५ (सं) यहना। रेपना, प्रस्त रगामा। उच्छाच≠−५ हे॰ 'उछ्रद'। उच्छास≠–द्र दे• 'क्ष्स्यात'। उच्छासन निः [सं•] तियश्यमें म रहनेवाता, निर्देश्या उच्छास्त-दि॰ सि । शास-विरोधीः शासके निम्ब पक्रमेगाठा । उपकार•−१ हे 'उक्काई'। उर्विष्ठवन-पु॰ [शं॰] नाक्से सांस बना। रसंदि मरना ! उप्पारत~वि (एँ०) शिक्षामध्य विस्त्री वाहा कर्तकी भीर का रही ही 'धमधीकाः प्रशासमान । डरिग्रचि∽ली • सि विशास प्रवेस । उरिश्वच−कि [सं] करा उसका बना बट, सियक कुमा। -संधि-मी॰ प्रश्ता वा एतित्र शायीते वृषे मुमि बेकर की वामेवाका संभि । द्वपिष्ठप्र−वि [६०] शाहेगं वचा, साक्षर क्रोन्न द्रमा वरित्यका कर्ताः तिसके शहमें अञ्चल मनी दर्श हो। दे जुरु अल, जुरुना शहर : ~शनेशा-विभावक-3 र्राजीक यक गरायति । --बांडासिमी--सी मार्शये देशे (तंश)। – भाचन (क्त) – वि अर्थन सामेन ना । उर मीच व्यक्तिः -मीजय-पु स्टब्स्सामा देशस्य प्रसाद या पंच महावधने वने हुए काका मीरत। -भोजी(जिन)-वि॰ वरिष्ट सानेवाला ! -मोदन-५० मीम । ज्ञच्छरिपेद्ध∽वि० [सं] तिलुका निर वदा वी । पु० द्वरिका उप्पारक−वि (शं•) विश्(साव)कर चुंगो म की न्यो हों (ही)। अ॰ रिमा यूनी वा महसूत दिने र शक्तकार-दिसि शियादमा । अवर्ष्ट-व्या॰ ग्वेमें बुष्ठ अन्दर्भेने आनेवानी गांगी। क्रवर्ष्टन-वि [तंत्र] मुत्रा दुमाः मेरा स्थूलक्रवा प्रना उद्युश्यक-वि॰ [गे] कमरहिना बंधन म माननरामा शिरिष्ट संच्यावारी। जवाउत्ता(ता)-वि पु [40] प्रसीत वर्नेवामा माध्यम् । क्योर् क्यार्म-५ (ई.) धानाः वर कराप्रा सम्बन्धा मारा ।

मागी'-धन ।

कारत न्यून । आरमेप-वि० [सं] विषसे जाग विक्रके हैं सूक्षी । आरमार्क-स कि विधायान परकस्व संबक्त समाहर

पुरुक आसन आश्रि³—वन 1

भाक्ष स्ति (सं) विसके संवप्ये मात्रा वो गयी हो। आकारफ-दि (सं) आका देवेगाका १ यु पालिक, स्वामी।

भाक्षाफरका-पु• [र्थ•] वह पत्र जिसपर किसी विवयादि की भावा किसी नवी हो।

सारी == स॰ शेल्से ।

आदाक~च० वाचम । आरसत्स~वि [मं•] यो अपने जापमें लंतुक हो । आरसतसि∽को [सं•] अपनी आतरासमामा मंनोक.

जारमसंबोच ।

भारमसंबोप नपु॰ [सं] भारमदृष्ठि भारमतृष्ठि ।

भारतस्यम् अञ्चलके मनुसार सम्बास्तः।

काविश्वरं-पु भावित्व धुर्व । थाविवासी(सिस्ट)-पु [रे] विसी वेसके मुक्र निवासी । बादेप-वि [स्त्र] जिसवर सुरकादि क्रिया था सके दे

मूक्ते। सामवान-सी॰ टस्क, श्रामा प्रविद्या सर्वादा।

भागपात् - सार ८०५५ काण गाउडा भागाः। भागपादनार-- स॰ कि मनमानी करता-- 'कै विसासी भागपादनी'-- धन ।

स्राहतक-प• हे [']शावर्त ।

आसक-पुर्व शावत । आसमक-पुर्वह समझान वडाँ पूर्व व्यक्तिकोंके छरोर कीकी गिक्ती शादिके कानेके किय वो दो केंद्र दिये वारों हैं।

भासुख −३ [सं॰] भूमिका दे मूक्ती।

भारतेव्याज्ञा~का॰ [सं] (तृप) भावस्के किए, सम पहकारिके किए को मही धोटी तो पात्रा । भाषतम~ए [सं] (वैपेस्टि) तिही पात्रारिके अंदरका स्थान विसमें बोर्ड को उन्हें। संगई-कोडार्ड सार्टि

विस्तार। भायति—स्रो [स्ं•] नव सोमा बहाँतक कोर्य नसा

णायाः — का १९७७ वर छाता वरायक कार वर्ष पहुँच सकती हो। दे सूक्ष्मैं १ आदिसिक्कं –वि [र्युंक] आदेमका शहस्त्रै होनेपाला ।

भारति - को॰ वाकसा - मोहन धाँ इ भ वीहनको व्यापि रहे वीदिमके पर भारति - वन । भारति प्राप्त - प्राप्त - विकास का का निवस्त ।

मार्शिवासम-पु [सं] क्टस्यूट्र करणा कुत्र-विश्वस्थ । वि क्यतिवारक।

भार्यक्षमं-पु [सं] दिवृत्तमं दे मृख्ये । भारतमापनाह-पु जारिकादः वात्रशस्य नादिकाः संक्षेत्रमः

भावरा'-पु आरएल, कोल निकासः वसनेवाकी भारर 10 वि दिक्षिक,दोन,व्याकुक ! [की आवरी 1] - मोदर्म आवरी है पुनि वावरी निवस 1

भावतंनी-सा वोडरावेनी किना । भावस - सा कमल श्रीष्ठ (माप री।

भासित्य•-पुश्राहीत मासीतांद। भासनुद्दिमाच्छ-वि [मं] सेतृतंत्र रामेवरमे दिमाः

धासनुद्धिमाचक्ष-१४ १म ३ शतुरुष रामवरसः । चनतक्र तिरतीर्म (मारतः राज्य) । आहि -- अ॰ कि है -- 'जानेकी माहि वसे केहि प्रामा --

Ę

इंदराज-पु (फा॰) वहा था हिस्सपमें पड़ावा वामा। इंडियकोसुप-वि सि] विवयमोमको अफर रक्त करनेवाका।

इंग्रच*-सी• इंदिए। इंसाम~पु दे• इसहान¹।

इस्तार - अ इसहात । इक्त्याकी शवाइ - पु अपराधि साम्रो वा राज-सम्मी । इक्तार - अ समाग वंगते ।

इक्रीसॅं॰~थ॰ करके, एकांटमें । इग्यारी॰~सी॰ करियारी; सम्बाधान; बारती !

बुंधुक−वि ४थहुरू । इतिकामामा−पु किसी नातको सपया देनेनामा क्रान्य, बुजनायम् (नीमिस)।

इर्स्यू॰-म॰ वर्षी । इसरवीचाल, इसरवीदार-वि इसरवीदे रंग्द्री स्वतर-वाका ।

वृंद्रवाचायक-पु० (सं] (प्रयुक्तिका) वे 'द्रीयम श्रीवव'। वृंद्रवाचीय विच्यासारावर-पु वे 'विचासावर'। वृंद्रवाचीय-वि (सं वृंद्रवाद्याः, वेदनर संवेशी) देशवर सहा विच्या तथा विचा तथा वा श्रीमा निवा

-

उक्ताहर-को अभीरता, वस्त्रायी-'वर पायेकी कारत्यां में'-असर । अकारवां -अ कि लहुकाना व्यक्ति होना-'वादन वह गरे वार्युं न जाये दिवहरे व्यति वस्त्राहें'-बीरा। उक्तविक-न्या व्याही वस्त्री मंत्रि ।

क्षणच्यां = व्यक्ताः व्यक्ताः विचारः या भावश्चे अपिः क्षण्यार्• – पु व्यक्ताः व्यक्ताः विचारः या भावश्चे अपिः क्षण्यः।

ज्ञचार वि वक्षा हुका वी किसे काममें न वसे (सब क्षमार है)। दु वे सूचमें। जज्ञासर~का प्रकारकारी सुक्रमाम।

क्रिक्श-सी वयस्त्र - क्रिक्ट व्यक्ति आहे आहे. सनी मधी'-वन । तक्षत्रकारी-ची॰, क्षत्रवाध-दे॰ वन्नेताओं तुरुती

र्वेद्या एक जानुविश्व चुन्नीएकरण । उद्योकस्थ=सः क्रि. प्रशीक्षा करवा ।

उन्तर्यन-विभाग-५ [सं] दशरे वहारी धार्यक्रे स्थवस्था करनेवाका सरकारी विभाग ।

न्यवस्था बदावाका छरकार। विकास । जरहरू-च विक्रुश्च निकासीका श्रीजारः वेकन्याः पुत्रास्य -'बोकी पुत्रास्य भीनी सुर्वे विर होत समागर साम सरके'-चन ।

अरक्षणता—की [d] सुमनेकी क्याक्ता— वास्त्र स्वमेधे पूर्व करक्ष्मता!—साकेत ।

उसम्बद्धाः - प्रच्याः

(सग्र)। दिछदिखाना नं नव कि बोरहे बेंसमा। वेकेबार-प• हे 'ठीकवार । ठोठां - वि रहाः विराका ।

वेंगरा!-प सरदवा (बहेब)। अधिना≉∽स•क्रियेख देना। **बैंडा** = प्रदर्भारे बेंटा पहेंचानि विक्रीक्श — 920 I

हें हरत + न्यां • भांधी ~ का मेली साका चय हिरद सह नेपक नामा ।

बंपना−थ• कि बोरने क्षिकाना वा रोजा । इकरमा-भ कि सन्धर शह होना-विकरी चर्नुहा गोक्लंडाको क्यारेमें ~दाकियास विवेदी। दे॰ मुख्ये ।

श्रमकारिक-भ अवाहर । इरारी≠−वि स्रो इरावनी-'पापिनि दराये भारी'--

क्या मन्त्र भेका (कटोरा १) न विवक्ती जवा है की बहेजकी भौता है⁵-धळ० ।

बॉबरो-प्रदासरः अञ्चलका ।

बाक-ग्रहरू-प (पेस्ट्रेष) विद्यो-पत्री आदिया विश्वटके करमें बगवंबाका महमूक ।

द्धागक•~पु+ करह धारह समि- बावह कर्रार बीक्यी स्य मंद्रशे न सोद - ताकी।

बाडा#−दि गहरा, इस 1

विविमधीप-प [स॰] दुम्यी पिश्वाना, दुवदुवी पिश्वासर बोबित करना ।

डिडकार-थी (माँड आदिय) इकरने जीरमे बीएनबी भागाम बहार- अरलेमे थारको विस्कार स्थापी

ही बंबरा-प्र आवर्रवंडके निहाबी मैठा को देखने स्वतंत्र हीनैपर आयरद्व प्रवास सकी रहे (१९६८ ४८ वक तथा बान १९५१ से समीठका काम १८८२) । इंडिया-प (अमान) दशार देशेका वह मकार विश्वमें

फसकप मुक्का क्योंडा क्यून किया जाता है।

इसकानां~स कि प्रानाः। बरवर्डिंग-वि वरक आमेशका अनुकूत-'दरवर्डिं देखि दिवस विक परी मीर्ग-यन० । हरहरा०-दि अनुकृत, स्पीमूव- क्श वही अपनी बरनि बरहरे ही -थन । बक्रवारि≉~को वेगी बदा ! बासी -स्रो 'ददी'।

विक्कां -- थो । दिस्की नामकी प्राचीम नगरी । -थै-प्र विषयीषति ।

विषक्षेस - ५ दिश्रीया, दिस्तीवित । क्षी - भी (नहीं मालीक) केंबा किमारा ! इक्सर - अ दि है 'ईंबना'। रेका-१ रे 'लॉस' ।

वेक्केबाज-ए देका वेंक्कर मारनेवाका रहेमे विकास भारतेवासा । इंक्रेयाजी-सी॰ इसा फॅब्स्ट यावक करनेको क्रिया । शारना = - छ॰ कि॰ अलना (पंका)। होस्रक्तिया-सी॰ शहा होत्र, बोस्सी । १० हे मस्ते । बीसना -पुरुष वक्षमा है मूसमें। बौरी - बी बंग, दव- मीरी गान बौरी हों बुकारे नौरी

र्तवनाच-प सिंग्रीण सारगी साहि तारबाहे बाहे र्तत्वाच ।

र्धेपारा ७-- प्रदे र्धनारी । सम्बद्धीरं तमस्याने नहीं तरस्य।

तत्त्रीं ~की पैरोंमें तह भूमिके स्तर्ध वा गरम प्रश्न क्य वाने बारव होनेवाकी शाक्ये जनभति-'सनदर छ बीर वतरीयें काम कर रहे वे - सूर्य । (संस्थत वर्तारे = सरिन ()

तमञ्जेष-प हे॰ वंदेर'।

यांबको !-वस्त ।

बीकी०-भी हे 'होत'।

तपस्वी(स्थित)-वि वि वे का कान करनेवाला है?

त्रवक्षाचारक-पुर तरका श्वासेको सभा बाजनेशका त्रविष्या, त्रवस्त्री ।

तबस्तवादन-पुर तरका नवातेदा दार्व वा स्का। तथेसी ०-सी० है० तक्नेसी'।

श्रधमा ♦–छ० कि वयामाः संवत करना ⇒'बारीर दन वद मक्स बाइके पतित पर्याप्त मिपर सं तैन ।

तरक-सी॰ दरार-'भारयनियासमें सदेहकी तरेश साम को¹-जिस्सी ।

अवेरकार-म कि थपेड़ा हैना-'दशाद**ी** नाथ तरेरति नीरति -बन् । लका-प ब्राहीके बचावका साधन भी तवेत आकारका

बोला है-'बोशा शिक्समीय जार धने पशाबे हर 21-मत । जावतीक्री÷∽को वापश्रम् माउँमवा='भाग मान

अवरस वापतीरीके --धनः । आक्रियोॉ - वि कोर्ने मैमा-काव तामगा।

तासकेल-१ सिंदि व त्रवय ।

तारक-प्र [सं•] छपार्थि तारे बैठा थिड (०)। दे मृनमें।

वारा =- प्रवाहा- वर्षे हारै मही वारे कहा सब प्रवाहन मोहन-मोहके तारे - पत्र । है मुख्ये । शावरी ! -- जी + शिर चबराना। हे भूक्षेत्र ।

तिगश्चिया!-पुनद स्वान वहाँ ठीन राश्ने या श्रीव यक्षियों भाषर विकरी 🗓 विराहा।

तिको-विकी-वि॰ अध्य-यस्त विदराया दक्षा । तिमिर्ण-प तेपर-विभिर्ग्नप्तर भग्नदर भागे

સ≢વી ચોર'~મેં≀ विस्टब-प सिंगे दिसी संबार किसी यनी येस ना गमा माकः दे मुख्ये।

मरी छतिया चंदराई'-पन• ।

वयराना • - भ कि दिनित बढना, उपत होना । रदियाना •−भ कि व्याक्तक होना, परेग्राम होना, 45 BIRT I वयोगपशि-प्र सि ी बाक प्रैशार करनेवाने कारधानेका बहुपात्र -पु कर्रपा भा वह व्यक्ति जिल्ले प्रस कररके क्षिमा और कोई बरतज म हो। बनचाकीस−†−वि•, पु द् बनताकीस'। वयताबीस-विश् यदा कम चाकीश । पुरु वे अप्रे एंक्या । दनमनी*=ची+ दे 'बन्मनी । बबारीो−सो+३ 'कमारी । बचाव−पुरुद्ध तरहका सुका नेर भी दशके काम माता है। दन्हारी!-सी चैत्रमें देवार होनेवाओ प्रस्क, पेटी रनी (प्रेडक) । उपरांच-प्र [सं] (स्वरकात) (विधानको) किसी धारा या रुप्पाराके संस्का कोई विमाय । रपजाति – की [सं] प्रातिका कोई अपनेदः दे मूकनें। रपश्चा(व्द्)−पु [सं] हे 'वप≷शक'। बपनत्र =- वि प्रत्यक्त - दोनी जेम-भरम-कहानी चपनेत द्ये −यल । वपयोगिताबाडी(दिम्)-प [८] वपवोगिताबावका नत्रामी । वपस्य-पुर्धिकेता वरेश्या वे मूक्सी। वपवास्य-प्र [सं] (नकांत्र) वहे नावयन्त्रे भीतर भागा इथा छोडा बादव, बादवसङ । वर्णस−पु[सं] शाश्चिताः दे शृक्तें। −६व-वि राधियापर किसा बाचेनाका । दराधि-सी [सं] बोग्यता वा प्रतिहा स्थित करने-गण प्रमः पर्या। ⇒धारी(रिष्र)−वि विसे कीरै ववादि की मधी की। क्यारमा अन्त कि वकाशमा न सावेशि कक अर किय प्रवारे -रामा । बपासीक-वि स्पासक। वपाहारगृह-प [सं] वह स्थान वा तुकान वहाँ वक-पान चान मारिकी न्यनस्था हो होटल । बंधेव~वि [सं] मिका हुना, प्राप्ता शुक्त । प्रवटक्टा - प्रकृति, क्ष्यकृत्वावक रास्ता गकत रास्ता दबदा~† पु रास्तेमें कमड़े हुए और प्रश्नरसे कगनंगकी पाँचको पोट, डीकरा क्वका आवात । बमयपिष्ठ-मि [मं] बोलॉमें विस्त्यो निवा हो। बी रीयमें दोनेंद्रे कारण दोनों और सम्मिक्ति किया था। यूना यूमां-पु गायका थन ।

उत्तरप्रदेश-५० (सं०) दिस्डी-वंत्राय और विद्यारके नीयका

बलाइत-पु [सं•] (माळ) वैवार करनाः वैवार किया

बबराई •-भी बदान-'नैननि बोरति क्यके भीर धर्नने

प्रदेश किसे निविध शासनकाक्ष्म संबद्धपांच कवते ने ।

उत्सर्जित-वि [मे•] छोश दुआ, स्थामा दुआ।

सन्दे। बस्धी = - विषयन, दोनीं। उसदाय−प॰ बमदनेका भाव या किया । तमधै≉−भ सम्मन भावसे (शसो) । उरसेरी≠−धी अववदी म्वाइण्या । उरमंडन - प्रविवास (इरबका मामूनप)-'मारे मुख दंडनके शेष परमंदन की शादि '-धन । उररना#-अ कि॰ वर्गनिव होना। उर्वर-वि॰ विश्वरे बहुत्तरे विचार सहाव मादि निकरी (-मस्तिम्म) । बक्रदर्शीसी-खी॰ ६विदामें पैसी उच्चि विसमें सामान्यसे चकरी बात बजी गर्नी हो । उद्धाह≠-पुच्छाइ वस्त्राप्त, समंग- मिक मग शामि शनेक क्लाह ल्बन । उप्प्रस्व−प्र [सं] उप्प्रतायमी। उस्रवास्तां –पु॰ प्रशेष प्रशृद्धि । उसार- । सी कामर्थमा, सेमा, पहानीका गीवर साहि इराक्ट सफाई करना-'समय कम है। डोरॉक्ट इसार बरमी है'-सम् । उद्दर-सी उथार, धर वानेकी किया-'श्रति रसमयम क्टर नहिं मानत करई होति हावा मनवारी'-थन । बक्री≉−सर्वदे 'सर्वे'। द्धक+-ध+ भागेकी भोर, ग्रॅहके रक ∤ द्धारिक रूपि अथवान, पराना—'ठक्किक स्थी शरके पुष्ठरिममें रे—बन । —खाई - ब्ही परावापन । ऊद्भन ≉−पु भूम− दामकॉक नित कादित पूकन । नित क्षोकाक विद्यालय करन श^{*}−पन । axe−को कठान−'नवरिवारिये भठ वर्मे&'−वन : होति-'मध्यकी कर औरवें कार अंतरको रस वाहिर बक्रमधी'-धन । पर्धय∽ रिस-क्ष्मन कश्चिमी कठ अस-क्रिवे¹-पन । तक्तारां-अ कि संघोषित होना, श्रोमा पाना-गहने पश्चिमे रहो । क्रेंबर शाहन भी ठी देख के, कैसी कन रही क्षो³⊷शा । उद्यक्तीर्र - की (कन्यापक्षके) शारको भोभा कानेको ११म० शारचार (बुरेक्ष) । क्कार•∽वि खदा। कसदना*-अ कि धमदमा-'काको पीकी नदा कमदी वरस्यो एक वरी ~मीरा । अस्तरम•−वि वे 'वरस'। कारीजना+⊷व कि एसमना, शोधना-'र्थय ज्योजे वदेशको भागस'−धन । सत्तरीन रूपु चतुरमण, वर्तत्र-'पावत कोश्रिक रेंगमरे. थानत छनि नतातीन'-काम्मांगकी ।

क्रतवर्ता#-विसी एवरवका शर्**द्रभती।**

प्राप्य-'स्वतंत्र संध यही होनापर होता. तिस्वपर तिस्व. क्षिये या रहे भे"-हवारीय ा

तिक्रोती -- विक स्त्री क प्रकास समीपत- अंग अति कोनी हमें बब्दित विकोती सारी¹—पन |

तिस : - स्रो व प्याः काकसाः श्रेम - 'तिस उपश्रावित प्यासक्ति नामि¹-पन ।

ही -- भ कि भी -- 'रिस्थि विचारि के जाति हुनी ती' --Wat 1

त्वर्वेश-सर्वश्चरस्थे । तपड़ - सी है • 'तपड़ (तीप) । तरकी - की यही वेकी। है॰ मुक्तें। तस्य •-- वि॰ तस्य, बराबर । द्वसार्खी•-सर्व दुग्हारा १ व्य-व्यान-प्रो-दस्का, करपात । इक्ती≉~क्द्री दे त्रिकृती'।

वेजना -- स कि वजना, छोड़ना। वेकी - की पेउसी (दरेक)। र्वेडा - एवं देरा।

सोदमा-स फि॰ प्रसङ्गा बना फोबना। दोन = - प्रत्न, तूनोर ।

बसरेनि । - श्री है 'त्रसरेण ।

विद्वा-स्री [सं] एक कता, निसोध विद्या

U

र्थमा≉−पु० दे० 'र्धम । **पञ्जनुदश—पु** द्विबपुत्र—गभेश तथा कार्जिक्य । परसना≠-अ कि त्रस्त होना थहरना- आवरो शवरी है बरसे ~बन । भौवरा = – पुदे बाँदका (बाका)।

पाकि -- को प्रदायर, क्वांति -- क्वीर हरिश्स की पिया पानी रही म बाडि¹-सासी ।

यापरा≉−प्र वाका ।

पुषराई९-की थोड़ा होना, क्षम पहला- बान महा वरकेशन में पन मार्नेड होरे रही अधराई -वन ! हैंगराना≉∽स क्रि॰ श्रीश होना क्रम पत्ना।

पुनार्ग-प कम्बरोद्धा शमगढ समा देका थेगळी = ना इंशा है 'शिनकी'।

बोबका-यु धोवका दे मूकर्मे ।

र्गहरू-वि इंग करनेवाका, कर्भुष (रासी) । वैविविक्रसम्ब-प्र [सं] (ब्रेडिस्स) वॉवोंकी विक्रिसा करनेवाका तथा दिकते, हुटे बॉव उद्यावने, नककी बॉव क्यानेवाका । रंगिकिस्सा-को [सं] (हेटिस्ट्री) बाँगोकी बना करने-

की विचा या शका ।

र्षेदार-वि (देव द्वारा ज्ञकावा द्ववा) वाभायाः शैवान (बिमें) दारा गालोंके कर्फों प्रतुष्क-'सबरे से दर्दनारी मधीयोंको देखने तिक्की - समर)। रेगावी+~वि दगावाद~'एक वक दृरि वर्डि कातु फारत

कोरि क्याती³-बन ।

वरिद्धनता≠−की दक्षिणताः भएनी सभी नाविकाशीसे . समान प्रेम रखनेका गुण । इड्डासा≑~थ कि इम्ब दोना।

भूष्य≄-पुदर्गभर्मंड।

त्रय≠−धी दान ददान रीप शासन−'क्षा कर्रा कर . विते वर्डिकार्यक्षिति ग्रह्म जनकी दन री — पना

वयानंबः स्थाप्ती—प्रभावेसमाज्ञः संस्थायः । बादने नैतिक वर्गका प्रधार किया और बतकाया कि मान्छ। मर्तिपना आदि वार्ते नेप्रविक्त है, आपने वाक्षविवाहका विरोध किया तथा बाकविषया-विवाहका समर्थस किया (सम १८२४-१८८१) ।

वरकीका-वि आसामीसे ट्रट-फ्रट भानेवाका अरमरा । वरवर+-श्री+ प्रवानशी-'अहो हरि भावे सहा हरवरमा दबा वनि धावै टब्ड दरवर्स'-धन ।

श्रापतामा≠−म कि छटपरामा−शिवमधी रप दर बरात -धन ।

दक्ष−व नदी किनारेका (मटमैके पानीका) क्रिप्तका वडडा-'सबर और भरने भंसे नहीं किनारे किसी इसमें कोर रहे होंगे - सग ।

दही-प दे मुख्में।मु७-(हाथ मुँहमें) -जमा रहना -निष्क्रिय ही बामा वा रहना। परपर नावचीत म होना - '७ ८ दिशक्तक दोनोंके सुँदनें दही जना रहा - प्रेम । बा•-प्र का-'शंदवा सोहना -धन ।

वासजा = - प जरून दाइ- 'बाड पहरका दाझणा सीपै समान बाइ'-क्रशेर।

बासरी० ⊶क्षी दालकी दृषि – 'दानी वहे पैन मीय विन ध्री वात्तरी'~बन ।

शाय-सी [फा] दे भूकमें ।--हेना-न्नावोवित प्रष्टेसा करना १

बास−प फा] स्वानेकी चीव वा पात्र, आधार (श्रमाधर्मे-बैस क्षमदान पानदान पोक्दान)।

हासबीक-की दामिया विकाध- वर्षेदिस चमके दामकी

वरचे पन मारी हो -मीरा ह हासबी०-विश्वार्वे ववसरकी स्रोपने रहतेशका- मम

कार्यों त रोक्टेर्ड दावनी - धनः।

वास्त्रवात-प्रमयः मौरा (सर)।

दावसत्तवामा-५ [व] बान-पान मारर सरकार भावि ।

विस्थोतक वंद्र∽िं] दे 'दिन्दर्गक नंब' 5द्रदन्तना। बीक्षांसभावण-प [सं] प्रपाचि या प्रमाचपत्राहि

देनेके समय समुचीर्व स्मातकोंको संगोपन कर किया गवा किसी विद्वान था सम्मान्य नेवाका मारम । शीय-स≢भ−प च्रुपन्∽ दौप स्कमने विसे मिथीमी

क्षेत्र खेळकर हरूसामा ~गोणा (पंत) । बीबानी-वि प्रा] दस्ये और बावदाद-संबंध (-स्व-

दमा)। -अवाधनती -स्यायास्य-पु ४६ सरावत विसमें बाबबाद-संबंधी मुख्यमीपर विवार हो।

बुंबुर०-यु जुडा- बुदुर राजा संद्र्य देवे'-क्सीर । दुवाबागर - व दु प्रका नाथ करनेवाणा-'पाणागी

हारका रिपारी निर्धातिके इक्षरायर - सर ।

ONS-NS ER DER I

प्या - वि • किरका, इसरी तरफ किया प्रमा (वेंबी आँए)। षे परि = म । फिर भी - 'पे परि यी भरिनेती मसोसनि' -48 P

पेराकश-पुत्रराक देशका पीता। पश्चिकतापरम्ब-वि स्ति विश्वमर) विश्वशासंबंध सीमा-रिक वार्तीसे 🚮 १

ओ

भोराय+-- त नव्युच-- स्टॉर्ने बोगव बचा छे ही प्रस्त्री वे ही सरी से सही - मौदा।

शाद्यवा≐∽स कि पेंद्रमाः साफ कर देना- वक्टि क्रोक्ति आर्थेक पाँछे काकी क्सति सहार्थ है - वस । ओरपाय ♦ ~ प प्रपद्ध = 'बैधे गरी वर्त वे उन बोहराय तकके - वस । भोक्षेत्री~दि शक्षेत्र देख्या।

मोपजन-प्र• 'नाविश्वन' नामक गैस विसदे वोयरी पानी पनवा है।

भर्मिक् – क्षी र्वेशके, अस्की नीव । भौदिता≠~ו 66 अप्रदेश बद्देना धमक्ता। र्थीस≑−सो० स्तम । भीधरमा श-अ कि वृत्यना-'वर कागे श्रीवृरि कुदे सन

क्यों रेपार्व न्यर । भारपाष्ट्र भा दे श्रीउचन । भौठि - म वर्ग- 'न्हाने ही बारी बीब सहाने ने बीडें"

किसाधा −पत्र । भीवरिफ-वि [सं] उदर-संगंधीः दे मूक्ये।

भ्ये**स्**≉−को निरदक्षे रहति। भौपतिक-स्तोक है सौक्षि^क।

क्टेंदरि≉−प बर्धतार सन ३ केवार#-त सोवार, वन जंगक। क्षेत्रियां - स्त्री अव मूच । र्मत्र = - प्रस्ति = कारी नीरने केंद्र विस्ता शारि -सम्बो।

क्षेत्रप•~प इंदर्प कामदेव । कंपोदरां न्यु कंपाबंडर, मकदम-पट्टी कर्पेयाका या

बना तैवार कर देवेवाका कानस्त्वा सहायक ।

क्रमोष्-प अस्य । कंसकहरमां - सी शिरके नाज वस्त्रकर वसीवना - यारी श्रीत पत्रकर अंशब्दशरन करोगी बहुत श्रीह पकारा हो - असर ।

¥गा+−पुदान काद,कीमा। क्षरगदण-पुश्चगदः क्षागकः एव विद्री । क्ष्मक्रां-सी कुपक्र माने दव जानेक्षे भोट।

क्या-दि दे गुजरें । सुक्की गोकियाँ ओस्टना-

संबद्धीमें समय विद्याला !

क्षया≠~स कि पानमा, पारण करना । क्यकी क्रारी, क्रारीशकी ।

कटिस्नान-प्र [सं] उनमें नेडकर किया आनेनाका एक वरहत्वा स्माम विसमें देवक दृष्टि तथा एक्टा शास कारीये जुनामा माशा है, दोन साग "प्रजीको सत्रहसे कहर रहता है (प्राक्षविक विकित्ता) ।

करण - वि॰ कठिम. विका- कामी सी ही बार्च करन क्यां की पीर न्योश ।

कठतार--प दे बहतावा ।

करमेस - प्राप्त किन्द्रे बदासीन रहनेवर भी बससे दिया भागेबाका मेम-'वीह कर्न सरुगार मध्ये हरके कालेवको मेम निवाद¹-पन ।

करक्यास-सी एक तराबो होर। क्तक - व श्विताः दे मूक्ते।

क्तेष - की कितान, धर्मर्यन (क्पीर) । क्विड-को वह कारनेहा दाम करनेदाको सी। कची-प शत कारानेवाका ।

क्यंचित-व (सं] क्यावितः धानदः। क्यकाकी, क्याचाकी-को शरको एवं विदेश सेंगे। कदम - प्रदान - प्रतान कर दिन करा न करिन हरिने

स्त्रवर्धी'-दन १ है बक्टें। क्रवी #~ म क्रमी, क्रवी ह

करप-त करंग कीपर । क्रमगत्र-पुक्ष पुननेश्चे भारत। कनय 🗝 🗨 कतिक जाउस 🗧 मृक्ये ।

क्ष्मसूर्व-की योगरकी गीर केंद्रकर स्थान (रेपारना । धनीष०-५ संदोन। कमीबुनार-सर कि दरना-धाहको सादि समीहर के

को³~वत । कशीया-त कीय शासा देश शुक्रमें ।

कपित्वपन्नक-प्र कपिरवपनी-को [मं] एक छर, भरमा । कपिका-की [तं] सीभी यादा दे मुक्तें।

कपीस-प्र (सं॰) बर्तमान्। ह्यमोन । क्योतमी ॰ न्या क्याती क्यूतरी न करमें निकल क्योतमी

सबरे विकास क्योत'-'बावरी प्रविद्या करबींड-पु एकका सका रंग।

करराकी •-शी केंची कहरमी-'विश्वि वासर मय कर तको किने काक कर नाति । कान्य सम मर नाम तन क्रिकक्रिक इतरत ताहि - प्रवदास ।

कावडी-की यह दिनेश रेह या हाशी। करवीशी!-की दे 'करवरी ! करमक-व (र्थ) करवा दाधीका श्या है सुकर्ते ।

करसंपर-प [सं] दोनी इचेक्नियों के मिकानेश बना गवाचा संशक्ति।

करिक्षा, करिक्षाँचँ ७-- छो। बाहे वसा -- प्रे यसी सामि करेजनिके करारेन्द्रवरे १६६ वृहिर्दानी -प्रमादरा-'महिन श्चाद द्वा तस कारिकों -- पा अंदे।

करिष्ठवाँ ० - स्त्री है करियाँ (पूर्व)। करीक-ता करी, वंदन-दिस्करिक वर्ड करी वर्षे वुक्तहाई -- वि॰ जी॰ इ'खन्धे मारी- न सुधी मुँदी मानि परं क्या ये बुखहाई जयेपर छोवति हैं'-धनः । त्राध•-प्र• रूप रूप। –वर्तास•-प्र रूपसम्बद्धाः धीरसागर- श्रेडको अन्य दरै व्याप नदीसको - भ दुग्धशास्त्र-सी [सं] द देता। दरासभा-सी सि दे दरार्थवा । वंच~की दो पहारोंदे नीजबी जनदः मारी (मगर॰)। परिमोध-५ [सं] नॉस्ट्रेंसि क्रम विकार वैना। देश-यो दे मुक्से। वह उपयोगी वा अनुस्य वस्तु वी किनोको दी जान या दी गयी हो- अगलको औ हम सबसे बना देन दे सकत के वह यदा जावर्श हैं--राजेंग्रा । देपासिनिक-स्ता शाह-पूंच करनेवाडी (निवापरि)।

देवता−द [सं] दे मूक्सें। स् ∽कुथ कर वाना⊸ भरबंद भीद ही बाना होछ गायब हो बाना। देशमञ्जनपुर [सं] देशका हित एवं उवति बाहनेशका

देखानुरामा व्यक्ति । देशमकि-भी [सं•] देशदिलक्ष कामना देशपेय । वेसदा इसडे = -प्र• दे 'देस । बेडचंद्र≠−वि घरीरवाला । प्रश्रीदवारी प्रानी । वेडियाँ 4-की श्ररीर देहा

वीक्ष्या-वि कमी एक तरहका कमी कुछरी तरहका (ध्यवदारादि)। बोनों तरक समान रंग वा वेक-बुटेनाका। दोसच≠−५ दौस्त मित्र (सामी) । दोश्ली - स्त्री सहाई - फिरो वन शबरे का की बीडी'-

र्षीची - स्रो टोइर क्यनेशे वातके वर्षनमें पड़ी हवे

पम्बद्धम निषयापदाः षीराज्ञञ−५ । एव न्यायाध्यका सक्ष्य आवाशीसः। मुप्पम≠-प्र ४९प-'द्रप्पनश्म अक्षाप स्वत वक अधृत

हिमकर -(रासं)। द्याभा-स्त्री छनेरे या संन्यान समब्दा यह मंद्र प्रकाश

वर मुले द्वितिय रहान्द्रे नीच हो (र्वाइनाइर) ।

घक्तार-ध किर एस होता विकाल उसी उसी दुरा-बाक्र पद्मी --धव । भन्याना≠=भ कि वक्ता= विवस कक्ती से केर् विवा व्यवीर दी'-भग । घन्नी • न्या भागी, इक्ता । भगवाद-५ [सं] (मनोन्द्र) वह सुकरमा विवर्ते भनके किए दाना किया गया थी। धरसिक-की है मुक्में। डेक-रिकों अबि वसत परश महि पूरव येखी वर्शने परी -शह । र्थींगनां~स कि क्रवच्या,रोशना।

धावार+−वि भवक, सकेर । भीजना॰-न कि ठराना-¹नाह रङ्का निवासक भागी सो किरै दिव को इस नेक व भी ने न्यन । के मक है।

अनुक•∽न पत्रपः पनुर्यह ।

भुमाई-सी विसर्, मरम्मतः यपभूपक-नि दगदगाः साफः चौद्धा-भिरो सन हेरो ककि, कोयन से वी मुद्दे पुरुष्य'-सर । अप्यम-की बराने वा पीक्षेत्रे बाक्रमेक्के क्रिक दिशा क्या कामः द्वासान्तराः खराधरण-प आधार-'बान व्यीदिमेडे यन आमेर होन भाष को धुराधर'। प्ताहरू-की भूर्वता, जाराको-साँची कर हर है। सबनमि सदा, छोडड जिना करिक वकार्द -सर । पस∙−थ देशीसे। धैप=-क्षी॰ धेन । भौतास=-वि धरारती-'होरोचे दिन भारिकते तुम भवे हो निपट भीताक ही'-धन । भ्रस्त्र≄-प्र दे० पर्म । प्यनिभनत्त्र –प्र [सं॰] (फ्रीकॉसी) प्रति सेदंहमें पत्क्य की जानेवाकी व्यविद्धी भागतंत्रीके जनुसार जानी चाने-बाकी भागिकी धनता।

मंद्रकाक वसु-पु मिलक जिल्लार को भी नवनॉडनाव काकुरके विष्य है। १९१४ में क्रमामध्य, शांविनिये त्तरके भाषान मिश्रक तुप (सम्य १८८३) । पद्यक्तां−५ नक्षाप्रभाः। मराविया-सी यह गरहमा झेटा-धा नवाहा दृश्यी। लस्त्र--व सत्- नम बस्तु परन नम सरम तरि वंत इम्रह दादन सरद ~राक्षे । नमी≉-वि नरीनी लक्षोनविद्यी-की प्रतिष्यवि (विर्द्धिनीममा)। मरम•-प्र नर्ग, परिवास । गरवि≉−प भरशक, राजा (रासा) । मरहक, मरहर-की विकार करते मानके बंदी हुते । बळक्य∽प अमीनमें पेंसाया हुना कोदेका नज (पार्ष) को पानी प्राप्त करनेके किए क्रुपैको तरह काम 🗗। श्रवसर्ग-वि सर्ग व्यक्ता ।

अधियत-की (रेन्प्र) भूमि वा संपत्ति १६८नेकी क्षत्रि और धर्वे । धींबाक-ड मागः गाँसी !- औ मारभेका स्वयान - मा तुख हाँनी नही दन आर्जेंद्र कैसे लहादि वसी तहीं मोसी'-यन । मागमळ-प [सं] पढ वश्र विश्वमें परीक्षित्हे प्रव

बनमेजवने पार्गीका विजाद किया था । नास•-सी मधीशा रहतिगीत (नश्रत) ।

मासी --प्रश्नातेहार, संश्पी (योरा) । माखिक-सी निवा- निरद्या थी वी वमू रही, बड़ी न विश्वे माकि'-सासी !

नासिक#-ची नाधिका, शक्द ! नियाक-- भ नवरक- नियाक जान वक्षरेत निर्वाह

भोर -पन । निसरहर, निम्नाहर-वि विधानेते रहित ।

निगडहरत-वि [मं] (हें १६१३) जिसके शामी शबदरी

ठरको –दरिक्छ । करुभामा, करुपाना−थ कि कञ्जूषा कगमा, शुँरका स्वाद कञ्जूषा दा जाना ।

स्ताः कञ्चभा वा जाना । कस्तर=निक्षः कठोठः निष्युरः ।

कम्प्रस-पु॰ सोनका एक गहना ।

क्यमुँडी।-को बन्देया (इक्सुँडी साकर- श्वभारती')। क्सामुख-पुरु चंद्रमा (रासर)।

कसमुख-४० पेरमा (राष्ट्र०) । कसाही-निर्माण कलाई पर्नेचेका निचला भाग ।

क्कोस-न्धी कहर, तर्ग-'सूर यह सुध्य वाच-गापी विद्यात बक्राक'-सूर् ।

कर्ताह-सी १० सको छ । करर-पु [मं] दरोरको प्रमः नया एवं बीराम करनका

नगर। वस्तियम्-एकः क्ष्मः, पुरम्कः । वस्तियम्-एकः क्ष्मः, पुरम्कः । वस्तियम्-एकः क्ष्मः ।

क्षाक्या-वि धी॰ (से) क्षण कारा करणाया कन्दक प्रति क्रियेशकी- इस प्यारी नदीकी क्लोसियी पारको भवने पास रहनें -शुन ।

क्वनी+−वि क्रमनीय सुंदर।

क्सीसनार-स कि सीचना-'सॉस दिय न समाद समेचन हाथ हते पर वान कसीसर – वन ।

क्सुंस॰-५ इस्ती रंग।

क्रम्रसंद-रि दे 'कुद्रसंद'। कांतिसार-य एक तरहका अन्त्री किरमका कोशा।

कांदी~की एक मकारका पतिचा कोडा अपने मिटीकी मिकावर दोदी है, भी देकिंग कशादी आदि गनानेके कान बाता है।

कॉवरी#-की दे कामरी !

कारवसुय-पु [सं] शतिशासका वह पुग निसमें शिक्त बाद सरवन भारि कॉस्ट्र हो बनस थे।

काई॰—व काक कमी—'शुरुवास पेस अकि वनमें विक्को गति नहिं काई'—सह । कार्ये॰—व हे वासे'।

कामि, कानी = न्यों कड बुग्य - 'स्ट्बास प्रमु ग्रम्बरे रस्य देन क्षेत्र बटन कठिन कामी -स्ट्। कामी द्वार -स्टों के को शहाबस (प्रमु वर्ता गुरु)।

काक्रिर-पुनि] सुरुक्षिम पर्मको न माननेवाकाः वै पृक्षे । कामदारो-पुनायरादका प्रवथ करनेवाला अधिकारी-

कासनारा — यु जायरायका प्रवेश करनेवाला अधिकारी —
कामपारा मूँ काम नही रे, में तो जल कर्क वरवार ?
— मोरा।

कासमुद्रक-दि दे 'बासमुख । कासान्मायू-पु [स] कामबासनाकी प्रवकता कास-बासमा प्रयोज कोलेने काल्य कामक का कार्या !

बात्या पूरी न होनेसे बरस्थ कमान वा न्यापि । क्योकमा-पु [सं] होने या किये बासवाले कार्योका कम वा बनकी सूची।

कार्यभार-पु [सं] किसी कार्य वा घरका वाशित्व । कार्यवाही-व्यो किसी भगा शादिमें हुआ कार्यः कार्यवाही । कार्यवाही (हिन्)-हि पु [सं] कार्यका मार यकार्ये

111-4

मुक्ता ।

कार्यविषयन-पु [सं] समा, संग्या भाविमं पुर कार्यो-का विषयण या शाव । कार्याच्यास-पु [संग] मगरपाक्षिका वद प्रधानप्रिकारी जो प्रशासन-संभी कार्योको वेटनरेस करता है । कार्या-पु ककाक, पुषित्र ।

काका न्यु ककाक पुरासदा । काका वाल्यन प्रि. [सं.] विससे समयका नोव हो । काका काल्यन प्रकार के किया विमास । (विदिस सासनकाकता कार्तिनस) । कासी के न्यु काकिय नाय ।

कार्क्यांचांच्यां दे कालीक्ष्यं। कार्योपयिच्ली [संग्] वर्षाच्या को दवाके कासमें प्रमुक्त को। किकर्यप्यविस्त — विष्युं प्रमुक्त समझमें न आवे क्रिया वर्षा करना चालिये यीचका।

ाक न परा करणा नावम नामका। किंसिशिश-की देश 'कीमत' ! किंसिश-की कीचि क्वारि, यद्य ! किंस्-प्रिमरां-की माक में टिक्रेक्ने दीका-द्याका करमेक याव वा आगि- अब दैनेमें व किंस-प्रिय कर

करमंत्र भाव वा भाव — शत देनेमें वं किनर मिनर व रहे थें — सुग । किक्स — पुत्र नाने नवानेवाओं एक बादि ।

किस्तर-पुर्वालकास्त्राक्ष पत्र नातः क्रिस्तर-पुर्वालः विशेष दिशाः देश मुक्ते । किस्साक-पुर्वालकास्त्राक्ष

किरचार-पु देन किएन । किरचार-पा कि विश्वक दोना-'अन दो देखिने दिन आई प्रीतपके पर्यंत करी किर्दिशे'-नम ; कर एडमा-अन पुरि क्ला वर्षकार एक ग्रुप करहु हुए। क्लिट्ट न किर्दा'-नम ।

किक्कपर्वा! - भ कि विकक्क-विकक्षक रोता विकास करता वायण्वाय करता व्यवस्था कक्का शीवर हो भीवर व्याक्तक दोता (नमर)। किक्कोरण-- व्याक्तिक व्यक्तिक क्षर । किकोरण-- व्याक्तिक व्यक्तिक क्षर । किकोषाय-पु [स] विकास परिमान मी रै

नारके नरानर दोता है। किस्तिवरी(पिन्)−वि [सं•] पापी; दोषयुक्तः। क्री≉∽म नना−'दर्ग् मानत गाहि सुकी तकसीर है'−

यन । क्रीबर॰-पु दे क्रीपर'-मॉफिन स्रीमिनमें क्रीपर प्रमानों हैं'-देनी ।

स्त्रीडाणु-पु [र्थन] वे छोटेन्छाटे कोने वो सनेक रोगीने मुक कारण माने वाले

पूरु कार्य नाम नाम वृद्ध कीरतिवा≎—सी नदीदाः। कार्यस्थितः य समस्या—संगरमनि नदाः

कुबरस्यिक-पु यजमुक्ता- कुंबरमनि कहा क्षेत्रक व्यक्त स्वतिका सक्त'-शीरा ।

वर्त्य तुक्तिका मारु'-मीराः। कुंबा∻-पुकौन पदी-'श्वर कुवाँ कुरक्षियाँ गरज मरे सव ताक'-सावाः।

र्कुबी−की वर्षधोक्ष्मेगको पुलस्क। क्रुब्रा−की पित्र कोच∽'अपनी क्रुंटा बतार रही की।

हुर्वक्रित-वि [सं] चक्रस्य करमें कारा हुमा। कुरुवी≉-सी मुनी (बनीर)। दे मुक्में।

कुचिया! -- सी छोटी दिश्विताः सम बदावी हुई रीती ।

वदी हो। तिगृहवा -- वि है 'निमोडा'।

विश्वीता - वि निर्मित ।

निमन% •- दि • मिर्चन, मीरब ।

निर्पोध :- दि: पंदासे दीना सदायक्स रहित (#10)-निष्रंत करि होरि देड - पन ।

विपेटी -- वि की अक्टब - 'अवादि व आदि निपेटी'-

धन । निवेसितः-पि॰ मि।स्तितः।

निभावां - व निर्वाहः निनाहः प्रवासा ।

नियमायकी-सी सि दिसी सेरबाई संचावन प्रवेष्ठ भारि संबंधी नियमीका समक्ष सहरवी वा कार्यकर्ताबीके

मनुदासन भारि संरंधी निवम ।

विरंड धनाइस-प्र [मं] वह धनारेख बिसपर रहमहा भद्र व दिवा यवा ही बसदा स्वाम इस स्टेश्यम धानी प्राप्त दिया यथा क्षेत्र कि पानेवाला जावस्वकताके अनुसार (क्रम सार्थ भार ले।

निरम ७-- वि । स्वीक्षीन, निर्मेष्ठ । निरवास = - पु दे निरवीस = 'कश्री परम रसकी निर वास । भी बन देशारिविन विकास - धन । बिरवद-पु (सं) तीन बोगशक्तियों मेंसे एक (तेव बी

सारव भीर स्हम है)। दे मुक्से।

निरामा ७ -- अ कि है । 'विश्वरामा । निरामियमोबी(जिन्)-वि [सं] मास म खानेवाका। निराक्षंत्र नारीसन्त-त [ध] (इरिस्ट्यूर-वीमेस होम) मस्हाय नारियोंकी महाबदाके किय स्वापित संस्था ।

विराशाबाद-पु॰ [सं॰] (देक्षिमरम) संसारको गुन्समब मानने तथा मुखेब वस्तुको मिराशामन बहिडोमसे देखने-🖫 मिळांत ।

बिराधावादी(दिम्)-वि [स] (पैसिमिस्र) बीवमके इन्यमय पहसूपर बार देनेवाला, संसारको निरासाकी र्घातं देखवेवाला ।

निरिमिश्नम निक्द-'निरिनि रहत अवसंबन विमक्षे। इरि-हित-सहित मनीरव इनके। -धन 1

विरेक्षे =- विक स्ती + सस्त - काइनि निरेठी मति होकनि इरे इरो¹~दल**ः** ।

निर्मम विपेधाञ्चा-बाँ । [तं] (दर्ववृशार्वर) दंवा करार ना क्यादवादिके समय आरखाविकारियों द्वारा वरसे नादर निक्रमेद्धी मगावी ऋरचंवाकी बाया । ।

मिर्शर केक्सी-की [सं] है 'फाउरेनपेन । निर्देख सम्मोकव-पु [मं] येथे बताओं कार्वकर्ताओं

मारिका सम्मक्रम विसका समय किसी दक-विश्लेगरी म दो । निर्वेशो-वि श्रेंगका जस्पत्र- यक्त बाकार दिखकाई पना ।

ध्यक्रमधी सिर्वरा - सग् । मिमातन-पु [सं•] दे॰ मुक्काँ; हत्पीवन, क्य देना-

वह विवासन अब और म सहेंगे'-'पश्चे दानेदार । विश्वीकरण-प्र [सं] (श्रीफारेस्टेक्टव) है नासन ।

विष्यमाव∼वि [सं] क्रिसकाकोई प्रमाय म रक्ष गवा री, विसक्त प्रभाव मध वा स्वर कर विचा यथा हो। भववाती ।

मिसपाविछ#-वि वे 'शिसवादका'।

निस्तारी-प पेक्षावदे किए या श्रीयके किए जामा-विस चन्ने जिस्तारक वयरांत दोनों बालानमें भा बेठे -

मिस्यींमा¢-अ कि मिथित होना- भनेमधे रंग निस्थी करि'-घम ।

र्नीय-को । हे । गोर्ने । प्रीय-प• दे मुक्ते ! सु• - मसक चरामा-रेंगा दियामा कुछ मो न देनाः निराश करमा कीम जनान देना । - समझ चारमा-निराध होना प्राथ कछ भी

भ पामा । नीक्कॉटा−प पद्मधार।

भीसार==प् (संस्कृत मीशार') भागरण पर्रा (रासो) । सरी ● - व बोड़ा मी - - पत्वादि न नेरी - वन ।

मैस•∽प सभक्तर।

अधिका−वि वि ी नेप्र-संबंधी, ऑसॉका । मैना ३ - प नेत्रास कि नयना सकता।

मनी≉—की तन सबभीड़ किसीकी नेनी से भागे हो िक्तीकी छाछ चैका दी'-केश्वम ।

मैसिक#-वि कि दे नेसक' (बरा योग)-'नैसिक हेरिये ग्रेरिये मधि"-बम । श्रीकता नोबार-स कि गावके पैटमें रस्ती वॉवना-

इक्ट हेत्रकी प्रीति निरंतर लोग चोखाई गाव - पर । भौधारी। - पुविमंत्रिक स्यक्ति।

वीमसदिस-दि [अ] यो दावमें दी गुदवमान द्वा 🗓 । स्यासक-पु दे 'नेवन । इरप्रक−पुनूष, शना।

र्वश्र-पु है सूक्तें। सु --परेवा बना काधना--बातका क्तंगह बना देमा, डीटां सी चीतको तक है हैमा मामुली सी बावकी बहुत क्या देशा (समर)। पैश⁶-प कृतीय नरेश वनचंद (रासी)। -बा-स्रो

सबोगिता । वंश्वराख्य-प [6] अंतरराधीय श्रांतिरशके व पाँच

भिज्ञांत वा औक जिलको बोदया पहल-पहल बंगाहरकाल शेहक तथा चाक पण कार्रके संयुक्त नकम्बमें का यमी थी। पाँचों शीक ये बें-(१) राजवको सविविश्वकता और प्रमुख के किय परस्पर समावरः (२) परस्पर अनाकमणका बाबासना (१) भीवरी वार्तीने सहस्तक्षमा (४) समता

और पारस्परिक कामा (५) श्रांतिमय संव-मस्तित्व । पंचाकी-क्री पांचाकी, द्रीपदी। है सुकर्मे ।

प्रका-वि द+ भूकमें । -पासी-प्रामी प्रामी (प । पराडे =- ज प्रभावमें- 'सवको रैनि आर्नेश्पन वरस्या पगडें महाँ पर काशा (पमका पगरा ≔ संदेरा)।

एचना≉−थ कि परेखान दोना-'दृश स्थि श्रीच पच्चीपरिवर्धे रैं ∼थम । दे सुअसे ।

पश्चासा-प्र संब्रह्मे समय सब क्षिपाहिकाँकी धानेमें

प्रकार्वेक किए प्रजनेपाका यहा ।

कराकर्तनाकय-१० (ते) (हेयर करिय हाज्य) शिरके गाव बहरायंकी दंदान ।

कुरवीजना-धी [से] कुवक, वश्वेत ।

बाय आहे वसंद ऋत अत मिले कुछ जानी जान -सर । चारस−५ भूसो∽'इ.६<u>१% कुटै वर्</u>ष निष्युत कन है² संद ।

अक्र ० - प्रमाद । कुरुक्ताना-- कि बीवक्का रोक्सा, दुक्ता-क्रिक

इस्मा-पु पद्मारक हत्ना दे गृहमें। **कु**मुमसस्मा∽सी [सं] कुलेका विजीता। येसा काय नो मासभीरी और बारामडे साथ डिया वा सके।

कुसर०-क्षी॰ है अस्त । **इसराव∗**−वी 'इसकाव'। कुर्सी • न्थी सुधी भावेद (वीरा) !

थेंमा ≀ इस्स्री!-सी भेरा इस्हाश सँगी।

कुपमा-प्रथम करहको कैंची वा बनेस तुमा शैर्ष (देवर)। इम्हरार्ग = प्रकार कारने आपनेश श्रीवादः इम्हरागः।

क्रिक्स+-प्र वाका बीरा-'मानिक मरकत क्रकिस पिरोबा। चौरि कोरि पनि रच सदीका (काम्बांगर्स)।

बामा-'मबिनी कुछापे दान छगी - गूग । क्रक्षिया निर्माशको कोकिया ।

भूग कुक्य नाती¹-मीरा। क्रमाच-छी क्रीया, सिर बीबे, गाँव कपर कर उच्च

इसरा≠-१ कडंब परिवार-'वो संशार सक्क वग शको।

पमनकर गक्रिया दाहि पह द्वाग कुरुरवेरे'-विचा । क्रवंगां - को धकांगः उत्सन्त - प्र (मेर) सच्छ एवं सेवद वस्तावीदा समृह ।

क्दम कुम्हंदो -सूर । इसकि~सी विरक्षी चित्रकम बटाश्च-'बार बार अवसीकि अविद्यास क्यर नेष्ट्र सन हरत हमारे -तर। कुरुरवा ० न कि पश्चिमी को बोक्सा ∽'सोरे बेंगनवी

क्षपीख+-विर अपन-सावश केंबा-गीबा-'राज पंक्ते शरि बताबत करम इन्तेश कुऐकी'-दर। **डम्पेशः - प्र• डम्हरा - 'सामदास समाद द***र्शे की श***ब्दे**

क्रचा~प्र• स्टब्स (तासका क्रचा) । फ्रपची−५ अपन भवीची।

योददन । **करबास्त्र+-**प काउपाक कोतवास । ऋदिया ० ~ सी ० दोपी ३ इन्ड~को इन्डन, पोछ।

क्षमार्ग – प्रत्याः मिद्रीका प्याक्षाः जसाः पात्रः (क्षपीर) देश मुख्य । क्टमडों −थी॰ कुरतपम, धुटमोका कार्य । क्टवारो-प्र याँक्डा चीडीबाए, (ब्रोड्साल, क्रोडनाक),

क्यी - सी कृषी, प्रयः संग्री- बान सपार कृषी बसु स्रोक्त'-राम+। क्रचीस :- वि मैका, गंदा-'वसन क्रचीक, विद्वर क्रवाये, देव पोर्वावर वरनी'-सर ।

> व्यक्षीजी−सी श्रविदानदादाग°दे दलनें≀ ग्रवरमंबीस-प्र (कार) समापार क्रियमेगाम क्रीवारी । प्रजासकामा-वि (देश्वेंदमारदेश) जिसके होय-दशस हिकाने न बीर विशवस ब्यान दिनी बुग्ररी भार थी।

> राजमसामा~म कि॰ (तरीवरका) क्रम भरत-वरत ता होना अस्परकता देशी प्रवीति होमा ।

सबेगा--स- हि- हे 'राहेरवा'। इत्तरमगी≉−श्री भेंसन।

हो एक्सेन ही। **बॅहरफो**-इ **रे** धॅश्हर[†]। श्रातारियार्ग−की॰ एक नमकीन एक्स्पन जो पापर भीता

बॅरोरिया! - श्री॰ (सरिह प्रायोगीके परनवेकी) श्रीतीकी हिंसकी । र्जेडक-९ पर्यंपर निधानेका सपश आश्रिम । क्रांबर्धां-धी॰ सि विद बनो की सगराहिके यक भावमें

र्वोतार-प्र पश्चाति ।

स

स्य सोर'-सर्गा । सरी-को [तं] स्ररीः स्ररिकाः

अरेत∞-सी कार्ति, नम्र-'सी करा करी छाने मनुकी निषय स्थात सम्बो अधेव"-सर । अधिक्तर**व० कि कीश करना ! क्रीका≠-की क्रीहा-'वा दमने श्रीका करी दालत है

क्षीमार्थ−प्र [सं] क्षीमारः हॅबारास्तः (प्रायः व्यक्तिग्रहेत क्रुकोडे संबंधमें प्रदुक्त) । सु॰-भंग **क**रमा-दिसी क्युकी वर अक्रवंगीन महिकारी प्रथम गर समामय करमा। कदमण्य क्रेंग, कीपना कर, विपाप i

क्रीय-क्षी देश क्रीय । कीविक-विश् (संश) विसमें कोच हो। गुकीमा ।

'निश्रीने रीका मेरा सिर न क्षेत्र साथो'--पूर्ण । कोबंड=-पु॰ कोबंड, धतुन (रासी) ।

प्रशिक्ष माविक क्रिसने १४९८ में इक्षिम क्येरिकाका पता क्ष्मामा (१४४५-१५ ६)। कीक्रमा-स॰ कि क्षेत्र करमा, मुद्राको धीवसे योरना-

कोरी-बी॰ धोड़ी, बीएका समृद्ध ! कोक्कवसः, किस्टापुर-४ विनोधा(स्टक्)का विवासी

कोरवार-नि किनारदारा मुक्केश । कोरियाण-स्ता क्षोपरी-दिन किरे पर कीय न स्ताने रशपच कीरिया जी'-सरा है : मकरें ।

कोमकी+-को कोउरी। **कोमस्ता~का** सिं•ो मरमोः सबयारता। क्रीयक-सर्व क्रीश्रं क्रीन ।

-440 t

कोटा-प [वं] किसीको दमे वा किसीसे केनेब किर विषारित संघा।

मेत्-म क्याकित्। कोकार-१ पंत्रमा।

1+44 के - अ से, दारा~'बंपति सुवान पूक्त के प्रक्रिय स्था' पछिपामा-स कि पीछे-पीछ घलना। छ॰ कि पीछा बरना। पटकमा॰-स कि॰ गरेशाल दोसा-पेशी कीन वावरी

समाग सेन पटके -- पन ।

पटपरागि - पु पहाबक्षे कपरकी समतक भूति । पटमा - पु छक तेप - कादेवी पती पत्रम दश्वत वी मन क्यों मेंब विकास नमें - बचन ।

पटरोष्ट•-पु रहनल रेग्नमी नम्न ।

पटेखा∽पु पृशेका काम वेनेवाका (वदिका) विदश करा।

पर्श्वमी॰-वि स्त्री रंप विरंधा-'वीरे तन प्रविदि पर्त्या सारी समक्रि समक्षि मार्चे गारी'-वन॰। परिक्रमीनश-वि प्रतिकृतिन-'विरक्षीनमको परिक्रीनमकी

रति -वन । पतोको-न्या रातमें बोडमेवाको यह विकिशा।

पत्ती-को दे मूक्में।देश ओका

परमानिक-सो दिनास-'शुडी वृदिवानिको परमानिते सदास इ.के -पम॰।

पप्रचाप-पु (पैपरवेर) इन्स्त्री झीले प्रथर माहिका वह छोला दुवना विश्वका प्रयोग कागजपत्रीको दवाने रखने बताम जब मनिसे रीक्सेके किय किया जाता है, पत्रभारक !

पद्ममारक-पु (पंपरकेर) हे 'पृत्रकाप'।

पटमार॰ = प्रत्यार, विस्तार (राहो) । पद्यविदान समाराह = पु [से] वे 'सुमार्वत संस्थार'। पद्यवनित = सां [सं-] (ग्रीमेंडेडन) केंचे प्रस् हाकर नीचे परप कर दिया बाना, सनक्वती।

पद्र≃पुरे भरः बदका।

पहु— ५ व पर्वत्का। पद्मिन्निमूर्यम् ५ (सं.) किसी अस्तानास्य वा विधिक्र स्वाके किए १४तम् मार्ट स्टब्स्ट सारा विधा वाले॰

वाका गढ सम्मान । एयक-पु यह चर्च-प्यक्रमिन प्रानगति नीनवीं वाह

नद्द सुझ निष्ठ वर्द्व'-रासी ।

पयां - यु रह छैर अनामकी वीजवाण नरवम (भयर)। परती- की कीका पत्रका छंना भाका मिछे स्मूर् भावक मारिको पेरिम पुस्तकर परायके किय मनुसा निकास जाता है।

परगमाधीश-९ र॰ 'परममा हाकिम'।

परचना शक्तिमं दु [म] परनमेश्री वेपारेस करनेशका

प्रधान अभिकारी परगवाबीछ । परमुग्गपेक्षिता नकी [सं] इत्तरका मुँह आहबे दूसरे पर निर्मेट रहमेकी प्रदृष्णिन मनुष्यकी परमुखाविश्वताके

११ (नगर रहसका आहण नाम्युनका परशुकायकास इन्द्रक्त निरक्षाकत सारियका स्वर नहनायेत । परशुकायेको(क्षित्र) नि चि हसरेका श्रीह बोहने-साका ।

परसाद्य-५ (मं] अपने वैद्याचे शावकर कस्य राष्ट्र।
--मंत्री(प्रिन्)-५ विदेशी मामकीभी वेदारक करकेवाना मधी विदेशमंत्री।

्यानासम्य १९६६/५७।। परमाना≔दु वरी भूता व्यादि नायनेका यक वक्षा

रियाला = पुरा भूता ब्याह त्राप्तका यक्ष यक्षा पैमाना को पायर वक्तीका यना क्षांश या । परिमार्थन-पु (कि) मुदियों वा दीव दूर करता, सुवारना; दे मूक्ये। परिमार्जनीय-वित्र (वित्र) विसक्ते मुदियों दूर करना

आवश्यक हो। संशोध्य ।

परिवादिसी-की [मं] पे० मूक्तें तिहा क्रूनेतको हो । परिवारी-पु परिवारमें रक्षतेवका, कुर्दुने । परिव्यस्थ-पुरु [संर] बुरायमाँ वा बीच दर कर श्रीक

करनेता कार्य संशोधन । परी-सी भी तंत्र जादि निवाकमेको एक तर्हको राज्यो

पक्षी। पक्षी। परीक्षणः – संकि परीक्षाक्षण (सहार)।

परीसमा॰-छ कि॰ परीहना-'मानेद वन रिप म्बीर्ट परीद्या प्राप्त परीक्ष हो'-पन । स्पर्ध हरता- स्पुर विमंत्री को ह्वाज परीक्षरे'-पन ।

परीना-पुरु पश्चभोकी शोकनेका एक वश्विमार । परीका-पुरुष वेश 'पराँठा' ।

पर्गसाकिका≠~सी कृतिया। पर्वसारोही इक्ट−५ पदास्था कॅयार्व शादिका फा

प्यताराष्ट्रा दुख-पु उद्दारको करार बारका पर क्यानेके किय अभियान करनेगका दक !

पकायभवात्—इ [तं॰] (दस्केरिक्स) वह सक्षवार क्रिकें जावनकी वाकारिकता बीद कठिनादवींसे मागरेकी मर्गण की प्रमद दिवा पाता है।

पछायमबादी(दिम्)-नि॰, पु [सं॰] पश्चमनसद्धा छत्तारा केनेवाका (कवि केक्स १०) ।

परिवासिरण—पु [संः] परिव वा द्वार करना ! पह्यमेशुम—पु [सं] वसुओंका संभोगः समुभका नवरी वाति वसुके साथ संधीनः वसुको वैसा निर्देश संधीगः।

पहार्वशिग्रह-पुरु दे श्रीशास्त्रस्य । पसर-को दे मुक्तें १ मु -वराना-पदार्थिशे रावतें पुलीने ग्रीश देश्व किर क्लिके सेत्रमें बराना ।

पसाइनि॰∽को अंश्राम (निधा) । पहुचा॰~सी कुर्य कुसुरिनी ।

पीबुरिश-वि [ते] थी पीठा यना (स्था मना दी-सद-चंद्रके कीन रेणुठे गंद्राका यक पीद्ररिश ही जाता या'-दवारीम ।

याः न्यारामः । श्रीतुक्षेत्रक-पुर्श्तरेनो (स्थ्यः वादिको) शोद्रक्रियि वैवारः करनेवानाः।

करनेवाला । याज्ञ∞∽षु वंधन, वॉध-जिन्नांतव दिन-छरदर रसधरे ।

काञ-वाकत्वि अमत्ति दर्गः --वमः । वादण•--पु पत्तमः नवर्गः

पासाससीब्-वि॰ वद्रत नहरा (कुँमा) ।

पाम-सुपारी ! - सी १ किसी द्वाम भवसर पर किया जाने-वाका वह सवारीह जिसमें पाम-सुपारीसे जावत व्यक्तिने-का सम्मान किया जाता है ।

पाणी-इ दे मूक्त्रे । सु -पाणी करवा-विश्वेका क्रीप बाद करना ।

यासुसान-पु वे 'फामूस । यासिक-वि [सं] वे मूक्षेत्र विसी वक्ष पार्वमे होने

नारहनेशकाः पाक्समीं −को दे• पाक्समन ('पादेसाः)। सप्त'।

भविद्वीं'~पनः दे• सक्ती।

नाभारे स्परित्रत करता रहता है और को बुध्यवृक्षियों का मतीक होता है। **धाँदो -**पु पश्यक्क, जानवरके स्तर आदिके निम्नान-'बानवरीके साँद हो। यक्ते हैं, पर दिसकारे प्राटक वडी एडती - भग । चाक्साही•∽भो• काको राग्रा छार (भू) । प्राचनक्रिका-सी [सं] (प्रक्रिमश्र) देनाक) दे 'वीविका' । कानापुरी-स्रो दे 'सामापुरी ('कामा 'से साथ) । चिंद जामा!- म कि फितरा जाना विचर जाना वह चिमाको – दुर्देषी, नवाद, श्विवाक। **विपरानिक-स्त्री** खेरभरी स्थिति। किक्यती = -पु = धनिश्व मित्र । विषया == भंकि यसकता == 'विवरी सी क्षित्र वक्ती इश्डिवों'~वस् । चिसनार-अ क्रि+ इपद पहला। श्रिसक जाना धका-नावा (मृर्)। विसाधा-वि द्योसींशका (जंगको सुभर) । विद्यास्त्रा - अ कि विद्यासमा फिस्मा । सिसंहा:-- वि कश्चित साः श्वितिवादा हुना वा कृद-सा । व्यक्ती - को पानका नीहा। चौसना≠~स कि वड करना- नुबदों जुदीसि परी सेमें देखी पर्लाप्ट क्ष की स्वत की −यम•। मा कि दे इरिसुर-की साँस केंग्रें समय, कन्न मादि रहनेके कारण धीनंगांधी भाषात्रः परवराहरः । व्यस्यक्रमाया। 🗝 🏗 है 'कुलकुशाया'। चेका नक्षी [सं∗] सनगरकाथ (साकेत)। वे मूकने। भेषद्वा - प्रदेशीया । থীৰ - দুলীকা বাঁচ। कोपनि =-सी = प्रत्या- दिय खोपनि चोपनि कीपनि शाकरि'−धन । कौरना=-स कि• छेड्छाड़ करमा—'मोडी सो अन्तरन श्रीरत ही सब मिकि करें चवाव'-वन । चौरी•~वि को कडशांवनी तुरो-'यह वैरिनि बस्ररिया व्यति हो बौरी है - धन । स गद्ध≉−की दे मूक्मी।वि सीधा−'ऐसो यक सरि

पारी एक तुर मानव बामे श बादर पाने -रपुनाथ।

गबकर्ण-पुरहरोग दाद (मराठीते आया) ।

घर-दि घरा, स्वारा विका हुआ (वेंदरका उच्या) !

सरहरी-बि॰ स्ती॰ (ग्राट) बिसपर कोई कपना भावि न

सरी -- दि भी उरस्ट- यरी भनिनावि सवान विव

त्रक्र मापड-पु∙ [मं] (विडेम) मारक वा - छपन्यासके

सहय नावस्ता यह प्रतिदेशी की क्सकी कश्य प्राप्तिमें

श्चिम गया हो ('निखहर')-'नीद न जाने खरहरी

गद्यां-पुनेषगोककः श्रेष्टाः। गरी = चौ = वे = मूक्ती: गठरी = 'अव ओपकी नेरी करी विकरी भिक्रते प्रकृते ग्रह्माम-गरी¹-राम । शरहरी । भी भारा गढास+~भी गवन-मान-मनास यहासम्बे पाटी'→ ਬਕ । गवासी • − वि पु • विद्रोदी, विष्क्रमी − विभि क्रिये दुक-नेम ग्रासी - ध्य । गणतन्त्रविवस-प्र [सं॰] गणवंत्र स्थापित होनेके स्मारक-कपमें माना बानेदाका दिन का उस संबंधमें होनेदाका समारीह (२६ बनवरी) । गणभेश--पु• [सं] बरवी विश्वदिवास । गताचि-वि [सं•] निर्मित चिताविद्योन ('तमक') । शब्क-पु स्वूख्या, मोरापव (रतन)। गरेकी!-सी इभेड़ी-'कासीने दाध्या गरेडी पसार दी' −सग । राजराजाचा−ज कि जापसे क्रोपनाः रोमांच होनाः हे विश्वविज्ञाना । गब्धर−वि यद्वरः सक्ता दे॰ न्हने । रामक#−विविद्यारे यक्की। गमकका ्र में प्रत्यादपूर्व दोशा (मू)। रासमाः समिवार•∽थ कि यम करमाः ध्यान देना । (क्रिया)। गमवागमन−५ [सं] काना जाना वातावात । समिश-सी दे 'गम' (पहुँच)-'समम अगोपर यमि नहीं तहाँ बगमगै बोति --सम्बी राज्या-वि भी [सं] विसन्ते साथ सहवास किया ना सबे संगीम्या । बार्रथ+-प्रमय प्रस्तक (प) । शरबाहीं।-को दे 'गकराहीं ('यक'के साथ')। गरामी≉-की पकावि । गरिंडीक-वि की वेदी-'सोदै समान ग्रमान गरेंडी -**धत** । गलपारी≉−की दे गक्तिवाधै । शक्षदश्व-सायुक्तां नती [सं•] (मॉडक्नि सेंटिमेंटाकिन्स) होती होती बावमें भी भाँच का देनेवाको माइकता। सम्सक−प्र इस्का, छोरा दे भूकमें। राषरिक-की बीरी पार्वदी। सहरू – स्ती टेका ग्रह्मस्≉−प्र निक्रंत्र ग्रहस्थामः दे 'ग्रहर'। शहबारति≉-को व्याकुकता, अफ्लाइट- यहकिन्यहर्कि गइवरनि गरें सबे -बन । गहसह≉−क्षी पहरु-पहरू-गोकुरू गरपारिनमें महा यहमइ मींची - वन । गहसहर्ष्ट्र+-को॰ प्रभुरता भूमवत्रका-'वर वर भूदक चैमाधा रहरे। जिल्ल किंव गोधनकी गहमहर्र। - धन गारक्र•-पुदे 'यास्की'। गारो≉−प वर−'वीवरको वारी स.दी मीर्डिक्ये प्यारो ··· ∽रसमानि ।

गरकीका-वि निवक जानेवाका, सा जानेवाका ।

विरमा-भ• कि पद्मान दिया जाना, वार साना-वस च्यारमें कैपकिक जीग गुरी शरह रिवी? पित्रविसञ्जान-प्र• सि ी आधिन-क्रणा अमाशास्याके दिन

पित्रहोंको विदाय का करन 1 पिवाको-पुदे 'प्रियाक'। पिसम्बर-बिरु पु विहास । पीरक्र क∽कि है के 'पीपक'।

पुणना ० – ६० (प्रजा, पृशा दीना । प्रसाराब-प्राप्त सन्। पुत्ति =-सी । पुत्री सहस्री ।

प्रवामासि-सी [सं] कोई वश्तु फिरस मात होमा । प्रमुख्यार-प्र सि ! फिरसे ठोड करना बनावा मस्मान बादि बहवा ।

पुनर्विभाज्ञम ∸थु [सं] क्षित्रकाथक वार विभावन दो पुढ़ा 🗓 उसका फिरसे विमायन करना ।

प्रक्रिम+−सी पश्चिमः। पुण्यक-पुष्टम कुछ । पुरवान-वि पूर्व कर्मवातः ।- सक्ति राध ब्रंडाश्य विदरम भीतार गन्दी है समोदश-प्रदश - यग ।

प्रपश्चिपि-स्तो [सं] पुराहत काक्से प्रचक्रित शिवि। च्यास-त प्राचीन कियियोंका विवेधन करमेशका धास । पुष्टिम-लो दे॰ मुक्से । -काररवाई-सी किसी स्थानमें क्षांति स्थापित करनेके किए की गयी सबत कार (बार्ड । -राज-प प्रक्रितका कासन व्यवस्था ना

माहरू । 28c4+-3 3rd | पुरुष०-५० मम् स्वामी। प्र--प रे॰ मुक्ती। भारा-'अविकत हो पर्यपूरकी

नियक्त सी तमतीम'। रूपेकाक्षिक-वि [सं] जो पूरे समय काम करे जो पूरे सम्बद्ध किए जिल्ला किया गया हो। पूरे समबसे जिल्ला पंत्रव को ।

प्र**त**्वि [स] मोडा (बसे प्रश्रीक)। द मूक्ते। रेडिका-को [सं] पीछकी मृति वा पीछेका दश्या मत्याके प्रकेशी बाने या परिश्वितियाँ पृष्ठभूमि !

पेरमरा-पु फ्रेके किए मावनेवाका । पेठा-९ सफेर फम्बरस बनी मिठाई (हे. मूक्से)। पेश-की [सं] क्यांत महिरा कादि पंग प्रशानी है

मुक्तमें। पेंचवंदी-सी (का] स्थानकी मुख्ति को पहलेसे की जाना रै मुक्∓ो। पेंडर•-म पोके-वोद्धे !

परदसां~प कस्मीरियोंका कवादा जैसा कवा प्रकाश पसंगी - सी पेशीनगोर्ड अविध्यवाकी ।

पोक्स -पु पक स्वोदार किसमें वैश्वीकी पूजा दोती है और बनकी दौड़ करायी बादी है। पीसरा-व दे 'दोसका । 117

प्रसासका ०-स कि॰ प्रकाशित करनाः प्रश्वकित करना । प्रमिद्ध#∽पुपरिप्रद्ध। प्रकेश - प्रस्तेव, प्रधीना । प्रवर्शत - विश्व प्रश्नावित जनता हुना । ध्रव्यसमार्थ-स• हिश् मणाम करना ।

प्रकारामाधिकार-प्र• सि विद्योगरायः) दे 'कविस्तास्य'।

प्रक्रिक्टि−प सिं विशेष कार्यसे भंग भानेगका दवः शास कपरी काम करभेगाका दल वा पर्नेट (सीक्रेट पर्नेट)। है मुख्ये। प्रतस्याँ≉~को॰ प्रविद्या । प्रतिष्≉−दि प्रत्यक्ष ।

प्रतिसद्धस्कार-पु॰ (सं] समस्कारके अवारमें किया वका समस्कार, मध्यमिनावन । प्रसोव-प्र+ [सं] कीई काम करनेकी दिवस करमाः वे मुक्रमें।

प्रवक्तिस−वि सि । मर्द्यनीने स्वाद्रभादे म्बर्ने। प्रधान कार्याक्रय-५ [सं] किसी स्वापारिक या धन्त स्थाका बेंडीन या मुख्य कार्याक्षय नहींसे आया-कार्या-क्रवॉक्ट मिर्चत्रण किया जाता है। प्रपद्ध-प [सं] (बार्ड) वह व्यस्ति की नावाकिय होनेके कारण अपने श्रीमधायकके श्रुपान हो। समिरहर । शुक्रकचंद्र राय~त रसायनमा**वके क्या**वनामा विद्याल (१८६१ १९४४): बंगाककी बार्थिक उच्चतिके क्रिय माप सत्त प्रवानशीक रहे । जीववितियांच करनेवाले कारधाने नगाक क्रेमिकक यह फारमेसिटिकक वर्सकी स्वापना भागने प्रवंदासंचायक-प्र [सं] किसी स्त्याके प्रवंदादिको देख-

ध्यस्यक्त-पुपर्वतः। प्रमामंद्रक-प [सं] देववाओं महात्माओं भाविके सुद्धके चारों शरफका वह रीहिसंडल की विक्री वा मृतियोमें दिख्छाया बाता है। प्रस±–वि परम । प्रमोधवा°∽स कि प्रदेशना समझाना। प्रयक्तिक-वि [सं] प्रवस्त्री क्या क्ष्मा वो प्रवस्त कर श्या हो ।

रेख दरनेशका संवाकद ।

प्रधोगवाच~प [मं] (पनसंपेरिमेंटकिक्म) भावा विवव शान होता आधि धर्मनी पुरानी पर बरान निरीनी मने भये मुगीम करते रहनेकी साहित्यकों कविबाँकी महत्ति बिसकी तहमें पाठकीको चीका देनेकी काकसा यो। सहाद क्यसे विषमाम रहती है। प्रवेशकार-प्र [सं] मोतर वानेका द्वार वा रास्ता। प्रश्नस्त-वि [सं०] चंदा-चीदा- भीदा (मार्व कथार)। प्रस्तिगृह प्रस्तिसवल-पु [सं] क्वा ववनका कर वांस्वान धौरी। प्रस्तर-पु [सं] अनुच्छेश हे॰ सूक्रम ।

प्रस्कृतिस−वि [तं] कृत्य वा विका द्वभा विकति।

प्रोतपति—प (नगरनर) प्रोतका सर्वोच्य अविकारीः

स्वेदारः राज्यप्रकः। प्रतिय सरकार-को प्रांतका प्राप्तन प्रकानेवाकी

क्कश्चामा, गाँउ शकता !

शाका = - प्रदेश (इक्स) । पुराष्ट्रः गुराउ#--पु॰ तीप होनेकी बारी । गासी~सी दे मुख्में; शबंदा। गु**ब**दप्पार्ग-५ गप्प । गिचर-पिचर-वि दे 'गिवविध'। there were series गिइक-पु #स्त्री कोहे भारिका छोटा और मोटा दुवज़ा । गुष्-वि॰ गुष्टिय, गुहा । गिद्यार*-पु• पक् शका। गुमसा-१५ गोप्टन, हेक्स-ए-'गुपन प्रमान्यमाहर गिरंद•-पदशा। विदिवेदि भवाना'-सप । गिरँदा -- दि॰ पंदा शकतेशका। र्वेडी-सी गॉस्डे हो हंडे जिनमेंसे प्रशंदपर छहाई गिरोही-प रचका भारमा, संगी, साथी - काकी सिंदका चेसा यह यह पाववाश कता रक्षता है~इतपर काहर कोई गिरीडी -अमर कोन चकते-फिरच फुरते-फॉरते ई (अप्रेश) (राम्स्')। तिकाद†-3 गारा कोयह। गींचा!-प मिरीका सामा बना हेर या विष्ट कोंचा ! रिक्रोक्र~सी दे 'गुडेक'। कोदर॰-वि॰ गदराका बकाः वीवनक कारण यरा प्रमा ! गीडां~पु दे 'गीवर'। गामा कर्षु अंकुर्। मान्यूय, अमिमाचि । सी दे श्वमें। गीवर!-पु अस्वका मैठ, बोचव-'जूबद कार भरवो सुख गोराधार+-वि• हे 'वीक्राबार'। दी सत व्याधिनमें गीडर नाक्ष्में सेहो" - सेद । गोकी, मक्सिम-प्रमिद्ध रही एक्सासकार (१८६८ ग्रीसस्थित-सी॰ पेंट विश्वेता-'वह अकारकी तरह उसे १९६६) । मपनी ग्रंबडिकार्ने क्येवनके किय वक्र पड़ी -ग्रवाहोंके गोस्रा - पु एक एरबका बड़ा ग्रंडा- श्रेमोडोके फेट्से योका वाको - विदमी । देवता । र्गुया । — पु (श्रीट स्मानेस बोनेबार्ड)) कडी गोक स्वाम । गोकाधारी १ - की १ तीपने की जानेवाकी खेलींकी पर्यो । गोप॰-प गगांध गोवा विषयी। गुमका । गुष-५० दे भूकमें। सु - गोवर करमा-पीपट करमा, र्बाधागार-त (तं•) वद स्थान वर्धो विविध विवर्धेनी तह करना : नगरेबर होया-वर्गाद होवा नह होबा-पुरवर्षे पंग्रहोत हो पुरनहात्म नाहनेरो। प्रकार-पुरु गर्व, वसंद वर्ष । - हम-वि समान पर्नर तुम्बारी भूक्से ही सन ग्रह गोनह हो गना?। गुक्का - पुनमक टाइक्ट बनावा हुआ गीका मात्। दर करनेवाका वर्षशाया । मिक्ट#-पुगृद्ध भर- तुन देवनाँ दिम कम म पाउँ है गुविया-को प्रारेन्डोरे पॅव-'डोरो-डोरी गुविबॉ अँगुरिबॉ धेये ध्वीको --सर । विद्व बेंगची न सवाई रे -मीरा । गुकी∼की सिक्रमन सिक्कट। गुणिकह-संकत्त-त [सं] (क्वाकिटी मार्किम) की करचे बैंधोना - स॰ कि॰ दे॰ 'वैपोरना' । नं कारे बादिपर वसको बचनताका सुबक्त अंद बाक्सा धृष्ट•-- ब्रो॰ क्या-- सुध्य क्ट यन-पट्ट सम, गरेडि रम्पन नियान बनावा । 2 mg | गुवम-चिद्ध-प्र [सं] गुजन वा ग्रथका स्वयः विश्व बको∽सी गामी, विकडी शादिके सर्चके गरिमाणका बिद्देव (💢 1 सक्क वंग (मीटर) १ धडमा व−छ कि 🖣 भारता । गुण्य-प्र• गमिवमें चोडमेको पक्ष शिक्षत रहित जिल्ले कोई श्रमक्र-सी मुँसा स्थादिके प्रशास्त्र कथा बीट ! संस्था कर बार बीवनेके बनाब एक बार्वे हो छानी शुनी चाँक-पु प्रकार, धरब - कदियों ने किमें सिक्षि भी <u>स</u>मसे बढ़ा की जा सकती है। गुणाकार-भ गुवसके बिह वैसा क्या शरहा एक वसरे -5H 1 को बारकर, सम्में कर बाते ४९- महने वोसीको शमान्तर धासक्षेत्र−ः भिडीका रेक} तुष्य वर्षः । बियराश-प भी । मारका रस्तेकी करका तान किया -बाग 1 वि शामिक भीवा वत्थर-दु गौरा प्रश्रा के विश्व जैशा केबीमुमा। सुमेरी≠-स्ता अतुत्र कोनेको रिवतिः वेदोधी- निस्तिकीस गनकारी • - वि दे शकारी । प्रभारिति भी रिपरको -- यम । राषारित वेशनका बना वस वकाल । प्रश्ता = - म कि कतना - 'मुरि भावको पात करात गुपुत्र-सी गुर बाठ रहस्य-क्या बुश्रति गुपुत गरें जू परी-धन+ । FEETO -SET 1 घटम०-म पुरुगेकै प्रा गमीग-व [सं] की वा प्रवृत्ते ग्रह और व्यवस्थ । घूमरा=−वि मधीला, मदबुक्त∽ देशरि धीरि पुमरे नेवा गुद्दश्रई-सी दै 'गुरवम'। दे मूक्से। विश्वरी वक्ष वस्त रेंग भीमी -भन । गुरझ - सी माँड-'ममता शुरक्ष परहायत प्यारि वैदीर्ग-सी भना वादिका श्रीवा निष्ठके मीतर दाना -वस । रहता है, हेंग्री-'क्षेत्रके धने बर्श-रीको पेंग्रेगोंते कर गराप्रमिक-भी गाँउ-'राव भरे दिवमें निराग-ग्रदानि थवे - अमर । गुरुश्चिमाना •-म कि दे गुरुषियामा । स कि॰

र्श्ववसार-स कि दवामा चौदनाः घर नेस्ना ।

RESIDE!

प्राकृतिक विकिसा-सौ॰ [र्स] मुक्त रूपसे प्राकृतिक वपायीपर आवारित चिक्किसान्यवरि ।

प्राक्षयपर्यत-५ [सं] हिमाङ्ग प्रशाह ('वनामापुर') । प्रामिषक विद्यान-१० छ । गर्भवता नारियोकी प्रस्व करानेको कमाका विशेषन करनेवाका विधान ।

प्रीतिपेय~प (सं] (टेस्ट) किसीक्ष्रे स्वास्थ्य-कामनाते

धश्य क्रिया जानवाका पेत्र I

ग्रेमचंत्र-९ दिरोडे सर्वप्रमुख उपम्यासकार (१८८०-१९३६) किन्होंने विभिन्न मानवीन शेर्वेणी, सामाजिक बर्गीकी वारस्परिक स्थिति और वनके संस्कार तथा श्रीक बिच्य और बेट्डिक्डा मामिक विक्रम करमेशके गोहाम संबागका र्यम्मि क्रमेम्सि और गन्त वैसे एक कोरिके पप्त्याम निम्म है। आपने तब बोरिकी बहानियाँ भी कियो है।

दक्कावस−प सिंो प्रकरकाकीय भारी शहर दे वक्ती।

पारफरियाः पारकरिया—सी (प्रश्नाट आवात करनेवाकी)

मीरर-शार्शकः ।

फ़बीबर्रा-वि जी मैक्के-कुफ्के कपहे पहले ही आहा र्वसम्बा स्ट्रत अस्कवाका- अक्क स्ट्रत फरोचर और माम रख दिया मनीहरदास - वका जीवन ।

फनमाक्री*-पु देशमान-'दाक्रिका कृपात श्रेटमाकोके विश्वल्य है। रामवंद-रान प्रनमाकोके शहरते'-कछिराय । फ्रमाक्री • – की फ्रमॉडा समूह – क्राक्रीक्रो फ्रमाकी वै तक्त

नममाकी ह"-पद्माकर । फरिया – सांकोस्मा (५१७) । हे स्कॉ ।

प्रोक्तर १-५ क्रुवायर कर

फाउंडन पेन-प्र[भं] यह क्षत्रम विग्रही मणिकाने स्वादी भर देनेसे कियात समय उसे बार-बार दावावरी उनना मधी पहला झरमा बक्रम निश्नर क्यांगी।

पिस**काइट-थाः** फिसलनेकः भागाधिसकनः पिष्ककता। फुक्सा–व क्रि॰दे 'क्रुंक्सा।

फ़क्की-औ द दोस्का।

फ्रेनिक−थ•प्रतिप्रनः।

कुम्महिमार्ग - की अन्ता- कामे तो कुमहिमा चीन समाने चक्रते घरम वसे --मोरा ।

वंकिमचंत्र चहोपाच्याच~ १ - रॅगवाव गहान् उपन्यास-क्साब्द (१८१८ १८ ४) किन्होंने 'कामदमठ कपाक बुंदका , द्वेंद्रमंदिमी भादिको एपमा की ।

बैंध-राषाई-की दिवाह है अनमें बंदनवार के एएकी साँड दोक्नेकी रस्प । इसे काब्द्र क्यानको पूर्व कर

टोक्टा है और नेप मॉयना है। बैंधिया-स्रो धारा बांच वा मेंब- शत मर गवा तो पढ आरमे वनिया कारकर फाल्य पानी निकास दिवा?

~स्य । भंधा-सा देशी ध्यवस्या निश्चित या निवनित प्रयंश। यं - स्टा अवदार-"प्या को मे गरि वमा नाहर हुई ल वंद⁹-मास्तो ।

सकां-पुनाक वाणी नातव बीका सु०-पद्धता-सुँदसे भाषाय वा बोक निकलमा- वया करें, यह पश्च फटता'-प्रा० ।

यसरी-पुष्क वरहका दल। थगवीर-सी वान श्रीवर।

वंगत्ना-कि कि कि विर स्वता हुएक प्राप्ताः मुकताः 🕶 कीवनाः च॰ सकते ।

थगरी-पु (पहुऑका) श्रेष समूद-'बोरांका व्या पूरा गगर सामने पंश कर दिया -- धमर ।

यसा समार-पा वाय क्यांग वेसार

यध्यय∽षु० वकानेका मावाद सुक्या।

षदमा ० – २० कि.० वेंड जाता, समाप्त हो जाता –'पमकी परिवे वह भी वरिव'~यन वरना, बहक्ता निच- वर्ट व काह मांति करे'-धम ।

वदिमार्ग-को वँटाई वँटैवा, जमीमको वह स्वयस्या विषय माकिकती कवाबदे करमें पंत्रवासका विवय माप

मिके । बङ्ग-विश्वहा।

वर्षस#-५ विदेशः। बजब - भी मैत्री- वासी भगवन मोहि, वासी वनक

वनी द्वार्थी'-भन । यनर्गिक-- प्र वहा जेवका वहा प्रश्न-'चेरनको हुन्सी

भक्षी मा बद्ध बनरॉब'-क्सीर ह वकारे-प्र नगराः ४वशा ।

क्क्षीं-की क्लप्त क्लक्षिमादे मुक्में। यमेक०~पुरु विवेकाः

बर्टेड रसका-प्र भेमेन रार्शनिक तथा यन्तिक (सन्म

(f05) थरक्सी - भी ॰ चंद्रा (छचीस)

वरवरानार्ग-भ कि दे 'नरवदाना'। यहीसाञ्च - इ. राषाका अध्यस्त्रान वरशाना ।

सर्क प्रकारक-१ अधिक केयक तथा राजमीतिक भी मिटिया पाकिमेटका शहरक था और प्रांतीसी कार्त-अमेरिकम देवसेश्वम, वारन देखियक। मामका आदि विषयीयर किमे शके भागभोद क्रिय महिता है (१७१

1 (020 t बस्रकामिक-स्ती प्रवाद उत्कास, बीदा- रम-वहन्द्रीय

क्रमदि व दहूँ ६६ - ५३० । बहुसी≉—को वे सूचमें छउ− ताको वर दश्≇यो।

विधिध बांडि क्रेंची, बांसी विपर नवीक सामादिकी भगार है' (क्रम्यांयको)।

पस*∸ि स्राधित ।

वस्-पु दे कारीयर्थद्र वतुं सुधारर्थद्र वशुं। बहारमा ७ - मा १६० वीशमा दश्या (भगव) - वहरि पर्दे

र्जाह शमे भये जियरा - पथ । वक्रशामा*−म किं बहुए हो जाना− हुने दिने रहीने

क्षां की बहरायरको -वस । स कि वे मूक्ष्म।

यहँगा-पु शहरा एक महता। बहर्षाता-विक् मा एक साम बहुवस बामांस सप्तक्री

पुँदरमा*-ध॰ कि॰ विकोश कारना-'चेंदरि समार्थ

अवराति श्रीदपार्र श्रामि'-धम**ा**

चढचोडा•∽‼ पदायाग्र∤

बक्षर॰-प॰ घोषर, दोषीके समय माया जानेवाका

```
मुख•−वि• किंबित्।
चर३-पु॰, चरिए॰-छो॰ यशु, भाँछ ।
                                                   ध्यमा−वि व्यनवाकाः दे मूक्रमें।
                                                   चुहर+−को कसक− तरे नैन-सुमर खहर बोर कार्ने नीर'
बराका!-१० घरदक्द इंटनेका घण्डा
पत्रस्य प्रतिस्थ−पु॰ [सं॰] धीमुद्री विद्रशा, पारी
                                                    -धम• ।
                                                   पुँरवर्ग-भ कि चौरोद्दी तरह भिषक जाना।
 रिशाभौने म्बास श्रात ।
पनुर्वेश-दि [सं•] र 'चतुर्'वे साथ मूकमें। ⊸पशी--
                                                   खपरीक-को व्या वर्ग दर्द रोग्रे-दिख निरामी अपरी
     भीरष्ट परीवाका एक छत्र जो अंग्रेमीक सानेट के
                                                    मंतककवारी बीव'।
                                                   चेजारा !- पुनार्शका काम करने गांका राज- 'कोई
 मनुद्रालयर पद्माया गया है।
                                                    वंजारा विकिथका विश्वा न दुवी भार --साक्षी ।
चपरमा • - भ । कि प्रती करना ।
चपरायना ० - छ . कि. वरहाता - वारी हरि चपरावत
                                                   चेत्रक्र≄--दि बाद्यरा--'वात के बन्ठों मरें चेत्रक
                                                    पितीन मुद्धी - पवा
 भी इति काटेबी इतनो फॉफर फॉबर ⊶मन ।
                                                   चाँच−सी॰ दे नक्में। स (दो दो) चौंचें होना−
प्रदर्श-५ कक्ष्री, कास आरिका एपहका छाराइक्स
                                                    कक्षान्सनी होन्स ।
 विसं सताहरू कर्यक्यों क्षेत्र केला करती हैं।
चसक्रमा∽भ क्रि•रहरहक्तर यक शारगी तील पीशका
                                                   चोस≉−पुधोम पर्नड।
                                                   चौरतास्त्र-पु द€ ताका जो सनोधे, रहस्यमद धंगसे
 थतम्ब शायाः पमद्य शोगाः विकक्षमा ।
                                                    টোভা বাৰা ই॰ মূক্দ।
प्रसा−५ प्रतिक्रिय, नदक; दे मुक्से।
                                                   चोरवजारिया - पु नोरवाबारी हारा नपना कमानेनाकी।
पड संपत्ति – सी [सं∗] देशी संपत्ति मो यक स्थानसे
                                                   चीक्रां-पु देहवधि प्ररीरका बाँचा- वापने मी नमा
 हराबर भन्दभ से जाबी जा सके।
पद्मापन≯-पु चंचकता— हे पन भागेंद भीद-चकापन ।
                                                    बिक्का चीयरा पाना है !
                                                   चीसामार्ग-प् भीश्रृंदे खानीमाका कपदा ।
पद्माबी-प विवाहके प्राय समय नार वधूक परिशृहमें
                                                   चार्चेंद्र+-प्र रसकेकि, क्षीश क्षीतक-'के रस कॉनिर
  षानेश्चे रस्म, गीना ।
 षद्धारा==q= पद्स-पद्द=='भीर भवी काग नोकन हुक
                                                    भी-रेंदमै  छतियापर टैक नक्ष्यक छार -धन•; दे
                                                    मक्रमें ।
  सरो है यह वादी −यन ।
                                                   चीबोक≠–पुपाककी।दे मूकर्मे।
 ष्यद्रर•-की वदा विदिवा (मीरा) ।
चाजाध-वि चाँरवा भूवं याकाक (निवंबमाका)।
                                                   श्रीमुब्री-वि चारों भोर दोनेशका जानेशका (-प्रतिमा
                                                    -(बदास) ।
 च्यन ० - प्रमा (विद्या)।
                                                   व्याक कात क्षेक्र-पु कारमीताची भीनी राष्ट्रीय सरकारके
 भानव≉−पुचंदन (निवा)।
                                                    अधिपति (अन्य १८८७)। एइके व जीनकी पूर्ववर्ती
 भार सौ श्रीस-पु॰ पुक्स अविभियमको वह भारा विसमें
  गीबारेबी, पाकनायी, एक प्रदादिका सदारा अनेवालेको
                                                    राष्ट्रीय सरकारके राष्ट्रपति वे ।
  बढ देनेका विधान हो। वि वृद्धं, भीग्रेशम ।
 पार सौ बोसी-को धोदोबाबी छक्प्रपंत्र वृत्तेहा।
                                                   <u>संदर्भ-पु</u> सपाय-'संदर्धा सुरोको छेर सुरिवेको नेकी
 चारिका-सी परश्चप-'डमके कुंड मुखब्धे मार्चेक चारिका'
                                                    सावि'-पन ।
  -दशारीप : मिश्चाके लिए काना I
                                                   शक्रिकारी≉-धी छाक के नानेगाकी।
 विक्रोरी-को है 'पुरकी'।
                                                   कर्जाहरिक−नि की एका वैनेवाकी। संत्रकः मस्त कर
 पितारमा#−स कि ध्वापने काना बाद करना र
                                                    वेभेबाकी-'व्यार शाँ छवी ही बरकी ही यह वानि-वस'
  पपरवा प्वारे कवको नैर विचारपी'-भीरा ।
                                                    --वन 1
 चित्रसारी :-को विश्वदाका ।
                                                   समार्क-पु सम्बद्ध प्रकृत ।
 विद्योत्पद्धा-[सं०] गोदावरी नदी ।
                                                   ख्रमी#-सी महकदी नुधी (राम•) ।
 चिनीशी - सी जुनीशी, करूकार (भूग )।
                                                   क्रनना—न कि धनाहोंके सीम्त्रे में देण भारियें सिक
 विष्यी-स्री कमक्ता छोटा हुक्या जो क्यों विषका दिवा
                                                    श्रीकर पूरी आदिका निकल्ना ।
  नागादे मूक्सी।
                                                   क्षप्रकारि - प्रभोता क्षापा दुसा वहा पूक्र भाषि। वहा-
 विरीक-पु एक पेड़-'(क्ये किरीक इत्यादिके पेड दगर
                                                    शा प्रथा ।
  क्षर क्वे थे - समर ।
                                                   खरत्∞-को छदि, नमम-'वन्तें अक्ट के मन म<u>भप्र</u>ी
 विद्वार-प्र विक्रमार, केशराधि ।
                                                    मार्च विश्वह तथ नाव छरव'-सूर !
 चीवांबर॰-पु विज्ञांबर, विविध वसावाका ।
                                                   कुराय+-पुरे छकाना ।
 चीना •- चु चीनी कपूर-'क्येन्ह्रेडि श्रीमसेन बीचीमा'-
                                                   धक्रमक्षना≠−थ कि
                                                                        ्रक्रकना≔ रेसीयुनि वयकोर
  पाधिकादे मूळमें।
                                                    क्यवक एकमके'--धन ।
 चीनियाकेका−<u>पु</u>दे (यशियाकेका'।
```

र्देशाचे रायता हो । दशपरी विकीकर-त दे अतिपर विकीकर⁸ । वहविवाह-पु॰ [सं॰] (कक्षिमेशी) पक साथ बर्द श्रियोंसे विचार करना । **र्वोदिक** #-दि॰ र्नेश दुआ, दक्ष- तुम दौषिक दोव न द्रोधिये अ्'∽पनः बाइमि०~धी० वदमा । बार्ड-सी क्षित्रोद किए भारत्यवर शब्दा देन मुन्धे । बाइस ० - प्रस्कृत शाक, बादल । वाच - विवाध्यः वर्णनीय । क्यरीक-व बर्श- बाडी आवत देखिकर तबवर क्रोकम हाय'-हरीर ।

बापरवर्श-स॰ द्धिः स्वयदार बरवा सामर्थे काना । **वाबस--पु: नापुक, विद्या, बाबा- बावक देद प्रकार**या दे पदप दिखाओं महारो बांड'-मीरा म

बारस⁹-वि•, दु• दे• नारह -'नारस मास जहाँ भीमासी'-पन्। † औः हाउदी। बारिवाहर-पुराहक। धारेश-वि , प्र नारका

माकर-प वेनको दूमरे सिरेसे इसनेवाका वेपनार एका बाहरशायास-प (से) (इनक्रेनशहरू पंराहितिस) रबाँचे होनेवाका पद्मापात । बास्तमद्यीन-द्र [दा] नेडलेको कनी जनह । वि **धरमे अच्छा, बन्धिया ।** नावनुष्ठा। - भी वारिमता।

बिगसनारं-अ कि दे मुख्में, कूरता, करता, क्रितरा बाबा-'मिट्टीका अवब छातीपर जाकर विगस गया -47 1 बिग्<u>ता</u>क-सि क्वहा द्वभा ।

विद्वेश-क्षा विश्वनाः। विद्योग-पुविद्या वित्रहेश-म विनंबाबाद । क्तिसमाक-स• कि रेशारेशा अक्रम कर देना- वाय मब प्योदार-पति सर्वि मितिहि नितुनति भूम"-पन । विद्वामा!- स दि (देंद्र) टेट्रा-मदा बनाना विद्राना विषक्षण:- शिवी <u>स</u>्ह विद्यालर वेंस पड़ी'-सूगण

रे मुक्से। विसम्बर-पु बीमत्स इस- श्राह वीर करना निमध म्ब म्ब्युत इसंग सम'-रासो। विमानीहरत-वि की मानद्वित किया गया दी। जिसने (फिसीको भपना) विमान बनाया दी-- विमानीक्षय-राज्यस्य'-राम । विरविरामा! - स कि विकानतकी तरह भीरे-भीरे कुछ विकिया!-वी क्टीरी (हुदेक)-'वसकसी विकिया

धेरेकी कामी वॉक दमासकी । विक्रीय-पु विस्कृति नका। विश्वारी — वि स्त्री विषयुक्त— सौषियि निसा विसारी

हत र्ज−पन् । विस्माकः प्रिस-प जर्मनीका प्रक्षिक राजपुरुष को १८६२ में प्रशासा प्रकान संधी बना। उसी के नेतल्बर्मे वर्गन सामाज्य स्वदित दुधा और वही वसका पहका वासकर इथा (१८१५ १८ ८ ई.) ।

विस्वाससँगाती•-वि•, प॰ विश्वासमाती- क्षेत्र गया विरुपाससँगाची प्रमुखे बासी बराब⁷~मीरा । विविद्यः स्वर्ग-'विविध न मरे चाविये क्रिक्रिस+−प बास विद्यारे तहारे∽साक्षी । यीतनि = सी अन्धारता - 'नीतनिको सप ते ठहारे डेरि गये थीतं - वस । बीसबसार-स॰ क्रि॰ विनती करना-'पद करिय प्रानपति

बीशवा' चरासी । बुद्धिकाल-पु [सं]यक दीव या रोग विसमें तकि क्रिकानेसे काम नहीं करती । यर्जधा-त [फा] थनिक मध्यम वर्ग (स्पादारी तथा बका बतन वानेवाले कोग) । वि इसमें संबंध रहानेवाका (-मनोवधि)। बुएलमा≠−स क्रि॰ रोकना∽'स्कुचन दिवक्रिन स्क

वयन मनमाने **त्रव**'-राष्ठी । बची +-विकी का काकरी। खरा#-को राषा-'चंद्रमस्की पुंतको सब्द्रव विदरत आबा। बहाँ बंदा अति शकी विधि रची वतक बनाव। -88 I खुइत्तर∽दि [सं•] और अधिक वका। मूळ पदार्थ देख आहिसे अधिक बाकार पर विस्तारका (किसमें नास-पासके इछ और पशर्थ वा देख सम्मिक्त वी-वेसे बहत्तर

बेसवास-प दे॰ वेन्'। बेबिया!-प यक तरहका नद । बेह-पुदे वेह'। विपार - सी छोटी नैनद (**११क**)। ध्वेतं - स्त्री वसु, पत्ती (गाईबी दो = (मीबी), वेढानी;

भारत)।

रामा-वा इस्यावि)। वोक्षपद-पुनद्द विषयः विसमें पार्थों के रोकने गार्व आदिन्ध्र आवास मी सुनाव दे सवास विश्व। शोडना∽† अ. कि. ≅ कि. (बीब) योना सेतम नीज क्षिटकमा (मनर)। योडमी!-सी नीय योने, क्रिक्टनेकी किया- लुतास्त्री तुई और बोदनी भी"-असर शहाच्य-वि सि] त्राक्षकोदि कोग्या दे मूक्सी। इस्टेश-पु [सं] इत्पातका कीकोर पतका पत्तर का

द्रमुद्दा विश्वसे काही प्रधानेकाकाम किया जाता है। पद्मी ।

शंबारी-प रसोश्याः वे मूक्रमे । मैंभीरी-बी फिरेरी फिरको दे भूकमें। सक्तमूर्ण−वि जबद्व सुद्र−'प्रेय-वीर-दश दर्द ददा मक्षमूर सी"-मन विसास १-व दिनास्पात-'विष ग्रीय विषय-विसास-वास- अकुरवार्ग-अ कि भारात्र दोना, स्टना श्रुप्य दोस्ट

छन्छा-पु॰ धोई संबक्षादार नश्ता करी। वे मूकर्मे । **छाँदा** । -पु॰ परोक्षाः दे॰ मुक्से । छाती-की देशो मूक्में । मु -का काँदा-पु इनशा सारकने वा बुग्त बेनेशको चीत्र । छानी+-वि सी छव थिये हुई- झानी बात उवाई छै~मत∙। खायापाच-प सि] यो या तेक्से भरी बहै यह स्थीती भावि विसमें अपने चरीरको छाना वेली जाता है (अरिक्ट निवारनार्थ) । छायाधान~९ सामनाम (महिस्सा)। क्रिय - विशेषा दे महर्ने। ग्रिक्ता~न कि स्कता क्षेत्र वारा~ कर सक्तेकी स नवेको परी वरी कोर्ये वाकि छाकि गारै अरिश्रार्थ य की किये −क्षम । क्रित≠~वि सित्र व्येत ३ छियना≉∼ष कि सुना∼देखि विशे व क्रियोजन मार्देश । कीवन-सी कीवन सराव दाने शशासिक बारण होने-बाबो करोर देव छोत्र । क्रीजना==स+ कि छूना-'आगेंद धन रसरासि पावश्रे क्यों बगडीक€ छीत्री∤श्राफि हे सक्यों। कीरो ~प क्यांका होरा क्यांका परमा है मुख्ये। **छीरम•**~९ थंडमा; रे मूक्रमें । स्रदीक्षीरं~को सुरानं रिदा करानेका कार्वथा उलके नरके मिना जानंगका भन - 'तन होशा कर परसे सरौठी के पैश्र मेंगवाकर कर्न्द्र निये – अदिका ३ दे॰ मूकर्ष । श्रवहा अस्पताच-प वह अस्पताक वहाँ संकायक होगींसे पी क्रित रोगिकोसा रकाम किया जाता है। **फॅफना!~**प शहर निदक्षा हवा वरी अधिका लंगा रेका अवसा छेक्य-स कि दे छेइला। धेवस्तो - प्रभावदा पेड विस्के प्रतीसे प्रतक और दीने नमाने बात दें। संबरा+-प निरद- क्यों म परत कम रही न श्रव है समीन परव क्रिन क्षेत्र - बन । क्षोत्तिक-को श्वर्ध। र्जतक-पुत्रमु जीव व्यक्षिः चंद्रशास्त्र~को [सं•] दे 'विक्रियापर' (कृ) । र्तपूनव्र-पु दे 'बांबूमव (धीना)।

क्रसीरा-[भ] पेर-कान या दीव विकतिका स्वावा दे

आधाधनास 'समाकर -यु (अम्य ६ १ रहे। मृत्युर्स

१९८९)-अजमानाच लेतिय महासनि । काम्यांय~यना

धरी-विषय राजाकर मंगाबदारण बाह्यशासकः अंबार

बहरी रामास्क बीराज्य भावि ।

महर्षे ।

जाग्रक-पुत्रा

भी-पन्।

रहम सहमदा देग । अनसेबा-भाषोग-प॰ (पष्मिद सरिस दर्शापन) है। 'क्रीक्सेवा भावीय । इयाना-५ पानी सी। जेमार•~प• बमदार I अयसंकरप्रसाव-५ हिरोदे क्यंमान त्रगढे प्रथम धारा-माथी कवि की नारककार, वक्षनासकार, ब्यानीकार और निर्वथकार भी ने । 'बायानती' मासद यहाकान चनको परम बरह्य रचना है। दिवड़ी भीर 'बहाड़' मामब पर-म्बास तथा चित्रप्रसः आदि मध्य रमध्ये सम्बर्धनाएँ हैं। (संबद्ध १९४६ १९ ४)। हरा-सना-म॰ बोका-वहत । क्रमान-निः ग्राधारे देशनाताः अहतत्त्वः स्थान **व्यक्तवरा-पु पानीके पढ़े रक्तेका स्था**म । ककररोई सक्तरई-बा॰ महनी (सक्षनीके माध्र)। अख्यम-१ (डेप्पचार्थ) है। बक्रमरहोर¹ । द्धकालु—द [र्स•] (क्कारमेर) किया स्थानको गर्मी। वाहा वर्षा आदि सुवित करनेवाको वह प्राकृतिक रियर्त विसका प्रभाव वहाँकी बावादी तथा बनश्पति आदिपर परवा है। कानक्षका । चक्रापसस्य−५ [सं] (क्रांचिय) दे दोडमंशरम⁹। क्स०-की॰ बद्धोत्त । बसोब-ची॰ वशीरा। जाजराक∽दि वर्कर हृटा-कुश-'वैश भेंगर जानरी मेंगा' -वन **१** किंद्रण-स्रो विद्गी-'विद् शशाधी स्थारी है'-अन । बिमींवार!-पु वे 'जमेंदार' । शिवरा•~प० द्वरवादै सुन्तमें। विकाशीश-प है विका मनिरहें । जिलापाकिका-ची (शिर्किन नीर) वे विकारीर्व । जिल्ला ३-१ इरव (मीरा) । जिलारी = नि सी विकायेशको - भागो है रिवारी पीते कावति विशारी प्यारी -कन ते सिवाबस्थ-(व विकानेशका ! बीबमदान-प [सं] शह या अस्राभी आरिकी माप न केरका बचन देना। देश था समानकी सेवाबे किए श्रीवत वर्षित करना क्यावा ! ब्रीयमसंघर्ष-प [र्स] कठिन चरिरिवरिवोमें भरितरव **भगःमे रखनेका भारी प्रश्तन ।** र्धा हुञ्जूरी−की ओ-इब्रूट भी-दुब्रूट क्यूस रहतेका भागः सञ्चासद् । प्रस्मिनी*—सी वोगिनीपुरी **दि**रकी। अक्रविकी-की यह धेर विश्वम भरीएम काक-काक बद्धरे निक्षक भाव है वे॰ 'ल्युविधी । प्रकार+-प्र बीवन-- विश दिश काबि अधन परवा वंद वर्तत न पम करत न्हाको । जरमा+-स कि जुर मामा~'वरीत क्दी विव वरम प्रसारता - प्र देश बीशाँदा (बाहा)।

र्वेश = सी नरा ।

अन-जीवस-पु (५०) धनदाका श्रीवन स्वेसावारको

मुँद राज केश-'निश्वीने मनाया, वरी उद्दर थी, वी ही मकुर्त करी' ~सूब । भगरती•-प भग ! भग्नहृदय-रि [सं] विस्त्रा इरनः तुःखारिके कारणः द्वय गमा श्री। विराधा वशस्त । भटमरी *-सी रेपर हुए मी न विवार पाना-"महमधी कारी भी में बीध बास्ती वसें '~धन । महभेर+-पु रे॰ 'मरमेरा'। भठ+-वि प्रध- ग्रापु-महो क्वों माने कुरमधि बाको सर्वे सदान परची मठ - वन । भक्कर - प्रांचा बरतन। भड़ भड़र-प बाद्यजोंकी एक बपनाति को संविध्य बत्तकासेका काम करती है। इस मादिका व्यक्ति-भित्र **यहें सु**न शहरी विन बर्खे मा आव"। भदना!∽प डर (धन)≀ भक्ती-की [सं•] रे मुक्ती। सुक्-अक्तरवा-गर न्मत करना सनावेगा। भवा = - ५ भीवा आई। मर्द्ध~को भरवेकी किया, गराई। वे∗ मुक्रमें। भरका~प नहीं किमारेका काक्यों हिस्सा (१)- वे बीजी नदीके मरकेमें बतर गर्नी - धन । बाहा। भयमश्रीचिका – सी (एं०) वरका मीतरी ताकाव। भॉजी−का धुरस्थादे मूकमें। भाँभी ० - वि की भूमने बाधी। भाषना!∼स कि धुमाना, मधना (मद्रा भागगा), विकोनाः दैश मुख्यें । मॉवरा॰~प भारतं र्मेश्टः परिक्रमा । मस्ता (यहे-६) भागाय स्वर, क्रम्य । माकां∽प मारे। भारम-प भि) नद એહ जिसमें भाग दिवा बावा इ.स्डमे। भाषीतां – वि. भाषंपर काम बरनेवाका पारियोगी है भारतराज्ञ-पु [मुं•] प्रयाद पाहिस्य व्यक्तिम राष्ट्रवेगा क्षिकारिके मनवाधिके किया भारत शरकार हाता दिया बानेवाका शब्दी वहा सम्मातः । शुन् १ ५५ तक वह दन कोमोंकी दिशा जा पुद्धा है-सर्वपटी राषाक्रमण्ड, भी रमण राजवीपाकाचारी बाबहर धमवान्यास भौदी केंग्रव करें जवाहरकाल नैशक। भारती-का [सं] है शुक्रमें पंत्रन मिश्रको परनी। भारतेषु हरिश्रेष्ठ-पु (संबद्ध १९ ७-१९४१) वर्तमान दिशी गमक प्रवर्तक किन्दीने दिशी सावित्यकी संगीत मार्च रिश्वकाया । कन्हीने शुक्त कनसे मारकीकी रपना की किंतु लेगाए रहतक तथा देखायधिका कांच्य वर्ग भग्वाम्य दिवरोंको कोर भी प्यान दिया । भारिक-पु • [मं •] (पोर्टर) (रक्षपाधिशीका) सामान करहे માદિ યોજ દીતેનાના દ भावक•-विश्वेगी। दे सकते । मापना-की [मं•] इच्छा दरावा वे मूख्ये । मायसंधि-को॰ [म] यह रिश्वि वर्ग संगर्ने एक छात्र की प्रश्न भाग बलक हो ।

साधाविय-१ (सं०) भाषा हा माशाभीका अच्छा साह्य : यास•~सी दें• बाबा'। शासाक-सी० दे 'भावा'। सिचिएग्रक-पु [d] (व्हेकार्ट) शेशाएए विपक्रमा गानेगाणा यह सामज जिसका पक्ष हो ओर वहे क्षत्ररोत निधापन स्वया मादि छयी हो हा बाबसे किसी यसी ही। भीवनारं-स कि दवाना कारना वेश्यको। सर्दि!-की धीबार, मिछि (१६४); है मूक्यें! भीजना=- व कि - वहना-'श्रीय स्वयी काय स्वी स्वी मीवद सरव(।'-मन । मीजा=-वि• सरस सुरो-भीने पन मानैर निराजी निषरक हार्य'~पन । मीत्तरिया! - प्र• क्षे मित्तरिका । भीमरा*-वि॰ की धवानक लाकार प्रकारवाकी-पेरि भीगरा ऋष्या याची - सत्र । भैजितिया। – की० भवतिया वर्ता (श्रेष्ट०) । सुधराई*-की घोषरा होता, हुंश्यता- येते क्यावन श्रीव मनीवन्ते वानन वीच निषी <u>मु</u>थराई'-पन । भूधराजा-व कि रै॰ वोधरामा^{*}। मुक्छया॰-छ क्रि॰, ल क्रि॰ भूकना। असमार्थ-श कि देश 'जेसमा (प्रेंचना)-'दाती परि नहिं बीकिये कहर भूसे ज कास -सांधी भैरा•-५• भ्रमर (मसागति॰−चौ भूतकान्सः व्यापारः विसम्बन्धः गातः-बीरि परें न वियोधी थवें बड़ी भुगामाठि है -पन । अद्भाव−ड [सं] पर वशीन श्रेष आदिका दाना भृति होंग वर्षने गृप्तिका विद्याल करनेके किय चकारे स्में वांबीकतमें शहरोग करते हुए देनी नाम बमीची वारिका दान करना । भूमिकर किसाय-3 पद बन्दरहरू ना दश्युमा क्याम गयाकर पृथिका स्थामी यन शमा क्षा और सीपे सर कारको क्यान हैने कथा ही। शक्तां−स मि॰ थिश देश एटा दना बीर्डेगामा - किवाब भेदकर परती चको सभी -मना मद ५५ । श्रेक्षा∗−९ श्रेंप−'भेका सना धन स्रो मनसागरके श्रोह । बी छात्री को सूनिशी नहीं ही किहे नीए - करीर ! भीरबन्धाहरू-- दुः [लं॰] कुरा, स्राम । ऑबर०-प दे० नोहर । भोजास्तर-व भवत्रमः, भवमागरः। भोधराजा-अ+ कि भोवरा प्रोता ! भाग्रक-की भूमि परधी- वित पार्केतिन सक्ते पानी दुवें सब भीस हरी -मीरा । भीडें =-प्र दोका क्यार : ऑरबाई॰-की औरोंका वेंदराला-'व्यप्टस विभावते क्रे द्दीन ऑरहार्य है - यथ । अचार्•-प्र भवीर परि । क्राम-प (मं) भग विम्ना वान ('वधोशरा')। है मक्षे। म्बर्गास्य - वि मध्यस्यो वैद्या द्योगेवाला। दे भूकने ।

ज्यी≉-पु∙ यदरतम(मूप)से नेंभा दुशा पहा नकिपद्ध । भूरता†∽म कि ञुरना, परसम्प दोना। इमेकाछ−५० [⊎•] चंभक नामक शक्त जिलका प्रकोध दरनंश रामको नैभाई आने कनती है, वह शिवक पह बाता है।

क्रोगिमी । - सा • सहारा छेलेकी सकता उक्की १ र्मीतश्चनी बरा।

स्पारा = - वि. जिलानेबाला । स्थि = "क्वारी । । - "भाग **को दुष्टारी** यन भानद ओक्क-स्वारी⁹--यन । म्बी॰-पु बी, जान- मृहत क्वी पन भानंद होनि -**पन∙। भ दे मुल** में ।

र्हेपना−व कि. दे 'शपना⊧दं∘मूकने। **स्रक्षेत्र**सन्त विद∘दे 'ह्यस्थोरमा । श्वक्यां −५० होसे द्यापी । समरी-की हताहा, रार ! विकी दे सूचनं।

श्रमारना-स कि हादर कर देनाः अअसे भर देना-'बानैरको बन रंग शकति शमारवे'- यन ! प्रस्ताकसम=स्त्री है। काउटेन एन । शर्यें॰−इ स्रोजाने पुराजानेकी किया वाधाव∽'सी

पन झर्गें गयी - पन । शराहर+-प स्थाकावर, सूथै। शाँकी-को समाया हुई देवमुधिका वर्छन । साँसां-की (साँगका) नदा- ऐसा न को कि छाँछ की

बादे बरा गहरी'-जिदगी । शाईक−सी+ दे 'लाई^{का} । श्रास्त•~प बश्च- राम सामका प्राप्त चकास्वाँ मव-

शमर दर बास्वी -मीरा । शादमं आह्—पुट्टी प्टी की ने दे मूकरें। श्रादा-पु+श्रीच जानकी एक्टा वा किया व्ही दे

मुक्त्में। शासा+-प्र बढवार- कारेको सामा के मिसवा कीन चार गुम बॉब'-गुर ।

किसरी−की जाडीदार दिक्की । मिनमिनीं - भी दे 'सुनशुनी'। क्रिक्रसिक्ष-तु यह मधीन वस्ता दे मुक्से। श्रीम-सी बनोदे स्परित्का नीइपर काबू पानेके प्रयस्मी **ध्**म जाना क्रीव (दे सूम) शुपक्ती।

शकतां~म कि मरता दे मुक्ते। स्थना -- भ कि दुःखी होना संत्रत होना-'अवनि गमन रक रक मन जोनत तन पती नहि मुखी"--सर् । स्क्रना -- म कि समाप्त हो जाना -- मति वावरी है रदी शास्त्री जू-वन ।

1 5 fe' \$ 2-45 fa

र्टें अना∸स कि याददास्तक किय किवादा देना । रग+-ती स्वरको-स्व काव रही पक पावर के --रकाना†~भ कि 'रबदन' आधान करना ।

टपरा†−पु• पाछ-कुछ, धैन भारिते छापा छाटा पर क्रोपश-'टीजवासे उपरोक्त सामने भीका मैदान वा' -भगर । इपरियार्ग - की॰ आपकी, मेंचैया - 'कित मनी मस् भीरी द्वयी रपरिया शीरा मीती काम ऋसे --मीरा । टाफर#−सी शासनाः इस्ट्रसीः भगना । टाटा सर जमशेदकी~५ प्रसिद्ध स्पनसानी भीर

क्योगपति । 'ढाटा आवर्ग वस्त के भाप ही बास्तविक प्रतिप्राता थ (१८३९-१९०४) । टापा॰-५ थेटा, विकट - राममाम जाने नहीं भागे शपा कीन-'सामी (टिकटघर-पु (पुर्मिंग माफिस) रेक्के स्टेशनका

था सिनेमा, सरकस आविके महास्का वह स्थाम का कसरा बड़ों वाड़ीमें बैठने सरकस आदिमें प्रविष्ट डोनेका सनुमतिपत्र पैसा देकर माछ किया जा सकटा है। दिपटाप-वि बीवनके हर क्षेत्रमें-नंधमृता रहन-धहन आदिये-नियम और स्वरताका कहारेस पाठन करने बाका (मादमी) । रीकी - स्त्री टिकुकी विदी - सामक रोसी दम सन

स्वारया, स्वारयी 🕏 वॉबन जुड़ो'-मीरा । टुंगां-पु पहाइकी योक बोटी-'मदनमहत्रकी धाँहमें हो इंगेंकि शेष । जमा गड़ी कई कास्क्री दी सोनेकी र्देश । इटहार−वि जिसके हिस्से भनग-मक्नग कर पकर्ने मिका हेतेसे प्रमा समूबी बस्तु हैयार ही जाय, मीवदार-फोरिका सफरी (मेन करसी र)। हैं हो - पु है हैं हरें । सु (कार्गाके) - पर सिंदुरकी (ब्रेंड) (द्रेड) -कुरूप कीला नमनी क्रक्पताहर करनेके

क्ष्मचेवासी जीम । ^{মু}≾ি≉−ৰি আ ব্ৰহ (মা)−'নাম বহাৰ্যে ডাচর टठी⊸पन । होद = सी कमी (पृष्टि) = 'प्यासको न दोद है - दम । बीक्रिक•−वि शरारती। हीविक--वि पेहा टीरिया!-क्षी होये पहादी वक्नव प्रभरीवाका थेका । क्ष्यवर्षेख-प्र [मं] दे 'नक्ट्रप'। टाउरकी-प इसकी रोजस्थिक क्रोतिक पक मनुख मंत्र

प्रवत्वमें और अधिक अधेवर वन वाना। और भी भरी

को बावमें क्सरे निर्वाधित कर वित्र गये थे। मेनिसकोमें वनकी इत्ना कर टाकी गयी। (१८७७-१ ३७)। ठ

उद्रवारीक−सी उद्री-भूरकी मनुर अपकर कौंपो मारचंद्र करवारी'-सर । ठठनहां - स कि (कोंड तीर भारिका) पुभकर रह जाना गण जाना है किंदना ।

इतियाँ-की स्वास, काह र ठिक•−पुरथेपै-'जासी वर्धी ठइरै टिक मानको'-

ध्य 1

ठियारं-पु अंगली पद्मशोके रहने, ठहरनेका स्थाप

1041 मंगुली-नि (वह प्रंप्रती) विसक्ते चीन, भाठवें या बारहरें श्वातमें मेयब हो। हे • सबमें । मुक्कर•-पु• संबद्धरः हे • 'मरहर' । स्वत् -- प्रात् मासिय - मंत्रम दे मित साव दे क्ष्म केनोरिंग के बार हारावन कागी'-किंश । मॉबना. रवाना दे मक्से । मेंब्रमा-४० दि० मांबा जाताः अन्यास बाताः अनुभवसे रक्षत्रा प्राप्त क्षेत्रत । मनुपा-सी [म] बद्द वश्वरी आरि निवर्गे रघकर श्रीवनंत्रवस्त्र भेंद्र किया जाता है। है अक्रमें । मधा-सी सरिया देश मुलगे। में क्रियामा - स क्रिं थेंसकर पार करना। पार करना। वार क्षेत्रा । में ब्रोफा-दि॰ है 'मनोडा'। मंबारा मेंबारा-५ नावा शेक्सा वच्छा (प) । मंदील-त कामरार कारेका मुरेठा, मरीक । संबेब्द=-प्रभंत्र बालनेवाला (दशीर) । मंदक*~इ नृदंश (वस)। मंदिखरा •- प सरम-'मंदिखरा बाजे रग छो'-मन । मेंद्रपा-वि देश सहया । मडबी!-खां• दे मीनी । सक्ता-3 दे 'सदमा'। सकरी-सो॰ मछली। । सब्दी। बॉर्डको क्रीक्के कपर क्याबी बानेवाली एक कड्डी 1 सपना •- अ दि दुवना, की ब दोना । मगसर+- मार्गश्चीरं अगहन-'मयसर हंउ वहीवी मर्वे मोहि नेगि सम्बाको को '-मीरा । मयारना !- स कि जकाना - विरद्य अंगारनि मगारि दिव होरो-सो -- पन । मछहरी!-बी॰ दे॰ 'मपहरी' । मदरीमका - सी मददाने हा काम मदद (समासमें, भॉपमस्त्रीत्रको । मदिया-वि मिडीके रंगका सहसेका । मदीका - वि महियाका, मदमैका (पूरा)। सदुको-पु सुकुद । महा-सूखक-प महा (टाइ) और मूसक वीसी नेमक रातें (मठा-मूम्बक्क्क्क्ष्म क्षान्त्रमा क्षेत्रेक वार्ते कर्मा, धवन) । भववाद-९ [e] वह मत जो बादका कर प्रहण कर की सवा संयोक-यु सकाह, प्रकाश सम्माना सुमवि-'निना मदेकी राज गयी राजणकी सार्र'-गिरिवर । मवीर-पु 🕻 'मतीरा । मन्बंतिका - सी दे 'मदवंतिका'। मक्रिया-प दे 'मदारी'। मन्दिमा-वि मदमरा, कम्मादकारी (मदीकी भित्रवम, धमरः)।दे मृक्ते। मधामसांबद्धाका-की [सं] (विशिक्करी) धराव तैवार क्रुतिकी क्यान, व्यक्तिसावणी । मयुक्र-पु [सं] राधिक व्यक्तिः एक तरहका चानलः दे मुख्ये।

संगठी - सहिसंब मञ्जयासिनी-कौ॰ [सं] बर-बभुद्धी प्रथम सिरूनराति । सध्ययम-प्र सि] (मिहिकारेट) वरोपीवाँकी रहिसे पश्चिमाना दक्षिम-पश्चिमी तथा अधिकाका उत्तर-पर्वी mare b राष्यरद्वभोजन-५० (सं०) (कंप) दोपहरमें किया जाने-वाका मुक्त मोजन । ग्रससायस्त्री →प वहक-पहका वि वहाँ वहक-पहल हो । समस्कार-प [सं•] किसी विषयके प्रति सनको मासक्तिः विद्यामागः है मक्रमें। ग्रसीरा⊸प गोपरसे पने थित्र । समीराक्षसक-५ एक गीत । समान समामा-प्र सामादा बर् । मसियाउरां – पु 🕻 • मसियौरा । सरक**त संदर-९० शोक**मका यहाड — 'सरकत-सदरपर धवधी रतमहार, कहरे तर्गदार गंपा-पमुनाको है' -किसाम । सरक्क-सेक•∽प भीकमास प्रशाद—'मानो मरध्या पैक विसास में फैकि चड़ी कर बीर-बहुदी'-तकसी ! मरमराहर-सी दनी भावासमें अपने आप, जर्सतीय प्रकृत करनेकी किया। असंतीय प्रकृत करनेकी किया वशी बाबायमें की गर्ने सन्द-'ब्हरमारके अधने विपादियोंकी प्रत्मराहर बंद कर दी - धम ; बाक भादिके टरनेकी भागात । सरबट#~प शुँदपर रेखाएँ बनाना-'र्धनम साबि मोडि मध्य मश्यद फिरि सच्च हेरी री -यद ग्रहपाल-पु (de) दीन वातेत किर स्ट्रक बादिके मीचे रया जानेवाला चीनी मिद्दीका पात्र कमोच। सकोक्षमा-स कि द्वाचित्र दीना पक्षताना। ससका≉−९ मध्यद्र−ैमसका कहत मेरी संदर्श कीन क -सर् । कि मसक्या-दिवर कान्य जनुनाम याग्रसाक-स महात । मसरच समन साँबरे माद । - वन । असकत-सी मसकवेदी किया, रगद, मर्दन-मी वह इक्की-सी मसकम हूँ की क्नवी कानीकी काकी? ~कामापनी [‡] सहस्याकोक्का-की [सं॰] वहा बननेकी अत्कांका । सहाहीप∽पु॰ [सं] पृथ्लीका यह बढ़ा माथ जिसमें कई देख को जैसे पश्चिमा, पूरीप आवि। दे मूक्से । शहास्त्रीसकन्तिक सदा कीका करनेवाका । महाविधास्थ∽पु [सं] (बॉडेंस) वच स्थि। देनेशका विकासय । सहाचीरप्रसाद हिपेदी−५ (सं. १९२७–१९९५): बापने हिया मानाको व्याहरणपुरमत परिमानित और परि विश्वत वनाने और 'सरत्वता'का स्पादन करते अप विभिन्न विक्तीपर यन केटाबीको बत्यक करनका ऐसा विश्वविश्व महत्त्वका कार्य किया है कि दिया साहित्वके इतिहासका एक पुत्र ही आपडे नामसे दिनेशीपुर कहा वाता है। महिमंद्र•−वि महिमार्गदित-'को वे सिद्ध चारत सनीत सहिसंह है'-पन ।

100 प्रच्योप उच्छेपण-प [में] मनश्चप, वर्षी, सूटा हुना भागः चटन । उच्छोपण-पु (सं] सुकानाः रस कपर श्रीन केमा। वि सस्हानेवासा । टरसूप, उरसूप-पु॰ [सं] उँचाई वृत्रिः विसमान। उपप्रसम−पु• [सं] साँस छेनाः गइरी साँस छेना। उपमुसित-वि [एं॰] पण्डासमुक्तः महत्रः मपुरकः, क्रि सित भाषानुपाणितः मादवासित कहस वेवावा हुआः चित्रसक्तः स्थ्य । उच्छास-पु॰ [सं] कपर सींची वा छोड़ी बानेवाकी सींसः बाह मरनाः मोरसाइन बलसः मरणः शंबदा सन्धायः भीवतः इवा सींचने वा पुँखतेके निमित्त बनी **प्रदे** नक्किना। उच्छासित-वि [र्:•] प्रसद्ध व्हिना हुआः चठावा हुआः बाइस बेंबाया दुभाः मुक्त, डीला वा पूर्वकृ किया हुआ। बका हजा; शस्दविक । उच्छामी(सिम्)-वि [सं] शाँस क्षेत्रसभाः स्पीतः बाह् भरनेदानाः मरता हुवाः मुरह्मानेदानाः ठहरनेदानाः बाये बहनेदास। । अर्थना चे-प्रभीव द्वय । उपक्रमार-वर दिर चलनाः होशमें बाना । उस्का-(व न्द्री स्पनिवारियी, कुकटा ! उप्रस्माण-म कि उप्रक्रमा के ब्रुट्माः उत्तरामाः वय दना । द्रप्रस-कृत्~सी उष्टकना-कृदमा कृदं-फॉनः मसंबत मधीरमा स्टब्स पेटाएँ। उप्रथमा - म फि॰ तेबीहे साब भी मेरे अपर वडमा, उद्ध-कता, कृतनाः खपर उठकर मीचे गिरमाः वर्ष या कोनकी श्रतिखबतासे उज्ञक्ताः उपरताः, क्यर्जाः वतराना । उर्होटना॰∼स कि उपादनाः चुनमा धरेरना उत्पादमा। **दहार#**−धी०दे उदाह । बछारमा =−स । कि दे • 'बछारूमा । वद्याल-चौ उप्रस्तेन्द्रे क्रिया, इदान छन्गैगा उप्रस्त, कपर जडनकी हरा एकदी में ऊँचाई। छीरा। खपर जठता इभादगः −धइस~दिश्लो इक्टा। दक्कासना-स∙ कि क्यर प्रकृताः वाहिर स्त्रागर करना । बस्रासा−पु उत्तरो, कै। उकान । उछाब-पु उत्सव, सुक्षी असाह अर्था । -बदाब-पु भूमपाम, जानीद । उछाइ-पु बत्साक्षः हर्व सुसीके बामधी वृम, उत्मवः भाग दीएला। बर्धाई। =- (१) उत्सादी; यसाइ क्रूनेवाका । विधिय∗-वि दे अधिप्रत्र'। बिष्टि≉−िष पुदे बिष्टिका बर्धीनना॰-स वि उच्छेद माश्र झूरमा। वर्धार - पु सदस्य इरार । इ*प्रेद•* हे ह−*•हिप्र*ड

रुजर*~पु॰ पर्यकुरी, सम्भ । उज्जबना-अ॰ कि॰ जनसूख, बीरान होना, बसनादा पर्याः तबाह्यः वर्गाद होना । उज्जड्व−वि काशिष्ट, असम्य ग्रैंबार; ठद्रतः -पन--व(टता कशिष्टताः वच्युंक्रस्ता । उज़बक-पु [तु] धारागरियोंको एक बारि । वि. मर्स, निर्विदि । उद्यर्थ~वि दे 'ऊबर' । बबरत-सी [ल] मबदूरी, पारिममिक, मेहमतका वदका ! ठाजरा≯−वि• दे 'उवला'। – दूं−भी उपरापन, सफेरीः कांति । उद्धरामा≐–स॰ कि चवाका करमा। सक्त करनाः चमकामा । उक्कत−सो [क॰] बस्री, उत्तवश्री :-पर्संद -बाझ-वि॰ बद्दवान । ⊶बाक्री – और उदानसी । उजका-दि एकेर उक्तवक; साव्छ ! पु॰ वीमी । [सी 'बबलो I] सु॰ -र्सुइ करमा-गीर**र रहा**मा। रुक्त मिहाना । -(का) समझ-निर्मेस मुद्धिः स्वय्य विचार । उज्रमामा - प्रमुख्य, येहा। उचागर-वि दीष्ठिमक प्रसुद्ध प्रकाशितः प्रसिद्ध बीर्नि उजाइ-वि घत्त, व्यक्त हुमा बीरान बमग्रन्य। प उनका हुआ, शीरान श्वाम । उनाइना-स॰ कि॰ वसे ध्रपको निकास वाहर करमा। फने न देना। नहः ननार कर देनाः तीव-फ्रोड अचाना शाहमा । उजान-४० वहाबदी बच्ची दिशामें, च्हाबदी ओर । उजार*-दि ,पु• दे॰ 'उबाइ'। उबारनाक-स कि देव 'उबाइना'। दबारा*-पु॰ दे॰ 'उहासः । दबारी-०ली दे॰ 'ठवाकी'; † कंगकै। उजाकमा-स कि॰ (गइने भारिका) मैल साफ करना, निधारना अमदाना। यदाना। ठबास्ता~ पुत्रदाष्ठ रोधनो कुठवा बातिमें शेष्ट व्यक्ति। वि मकाश्रयक, भैजोरा।-पाम-पु श्रुप्र एइ।-(स) का तारा-प्रक घर । मु॰ -होना-धरेरा भात्र होमा। उजारी-लो॰ बांदगी। वि॰ सी प्रकाशमयी 'बॉरमी-उजाय-पुष्णाला, रोसनी। चमदा - 'कुर हवान भा मस्त समामा -रामरपायन । उज्रासमा = अ कि प्रकाशित होना। उजिपर#-(व उत्रला। उज्जियश्यिष≉—स्वी उत्रासी, पौर्मी । उजियाना-म कि छरपत्र शरनाः प्रकृट दर्मा। उजियार ॰ न्यु उजाका, रोधनी । हि प्रदाशित रोधन बजरारी-पु पश्चिर श्लादिका दरवाने ई लिय क्षेत्री उजियारना ०-सं कि रौतान क्रमा नास्ता। उजियासा -पुत्रकार वजकार मदानी स्वेकि। वि

अवसंस - विशे वारस्तात । कर्मा है ... संस्थायां सद्दी। मेर्च १ I TIN LAU के स्मारत - सिक सिक्र अस्ता है स्मान के स्मान है । TR fire fife diefte spate toftfe all og-weben (Uelli thungs (righter ting then [2] of - Beibere | labye, 3 old h-laber नामको सुना नामक सहस्र स्थान। कियान। । यह का शायका (असम् स्थाप (को <u>कि । कि । कि । कि</u> मन रहेत कीरे स्टब्स करते हैं हैंगरी राज्य देव । प्रमान शमक entern me fertift fen gien e-innes Tanger ... g. [46] weitit engent effig, auch र्वका जिल्ला सर्वा विका देशो । वैक संभा भाग । i the th talk had writed shink 26-26 व्यावस्थान होते [वे] बक्रा देशो जनस्था हैं और क्रांतर the third taxife that third out on-lineau a belle | this issies E-bree AP NIGH EIN Der ge they jaim og-wirde । तब्हु कारी किए [हैं] की-हारी हुकक I high tilean tileanly then blien king tittle । अन्य साम क्षेत्रा । -meis- off i tem His biteritetin otto-the-वस्त्री मा वर्गत मता-ते ? बर्श्व मा-ता थिन विह deide Sig sisker gus albiele र स्रोबी(विस्)-विः [स्] क्षेत्राप्त साप्त करनेवाचा । त है। है । है । है है है है । जा से अपन प्राप्त है । उत्त -१० कश्की वर्त रहिते हैं। यो में के कि s like obs-like t juin fe jire , 6589 330 3419 piptig timis 310-te उन्मात्तवा-ते (दे) संसं अंतंत (संस्था तैत. मंत्र I Use माहित हिला है जिस और स्वीत क्षांत अधि अधिका व्यासस्य-वे स्मि) सर्द्ये बेद। tenft ingen inftite og-ipgen cipse cippes त्रज्ञातर्—हि [नं] हर्ने हिल्हे हीला । I Laborin bj-lendinge । कोरास्त में क । कोंक्सि मंत्रिक्त (को) का-अकट 1 25-28 !htie-15 2 05|-\$216-\$28 AMES Bobl-shine t effen affigin (feinut) Lizs lauk prifeit freif freite [8] sife-ibbire cibpine 45-20 (40) 441 did 44 1-3-20 (44) 4 मिर्म 🐔 । suria-3. [4] fram via al line interior Still-ld & Sud. 1 l gip fepije ipbipije og-bieka I ISRE. र (विक्रिक्त) व्यक्ति (विक्रिक्ति) । वनुसा—३० वसावा नीर्राम । कि भवावयेया | विका वर्श-पि श्री वहमतेस कादी मीनेप्रक स कांड्रे क्रांनांड्रे AND ARILO-TO & GARL! i (girl) ha feiten in feje ohl igit ha feiteli ा प्रिकेशिक अधिक कार्यियो । हेक्स हिन्दे प्रस्क किए वसी स्टब्स केहा स्वास 1 Man an 1962 think of ... in the 1 re, .b .5-1Re then who were fer un grown with the tel उन्ध्रोरक-ते व है । त्रेक्षोर, । I liefte, house on lientine ı шыкв, «ў «Б~ініркі́Б । क्रिके उज्राहर होती विकास करी अन्यानिकार हो र जिनारी न्यां व्यव्याः राज्याः व्यवित्यात् व्या (it the or) on o (it has one of off-it had be s mbren felletiff finische 741 TORRES - INChes

berite freite fiebb eteif bie gerf mitef ment field 136 ban in biter innen if a lan tielt & it die nielts nebele neight Giel (niet Bisil's simili sheat Stanti dud exact (lease Sachter mat gettt up ant gratt gort ein the tree less said of the call and the called

n-ma

I HAND

i blifbi

ARIGHT-No IL Best! |

244-44 [H] 40 3H(H,)

Bike, ob of-obibes

| faire | E-stiller

1 mile apprist by M-marie

(place lineaum times has 'y) is slightly

मानेती हर्रगारने विकास हो नेता हर्रगारत जातित

HIM HE IN This first Chrolin IN-1012-

similated a sel-tip- a existing of

AA-A [m | mialar hills minis fil p-dalikip-

Me AR aidt Kint-enget fidte fint i (diese. Course admired Charles (Course and author)

wirth walfe agen belieft feiten upp bier ifen times (rather eight (size outlet) many minit. Ein eine ab nicht find au glatt un nich file liebe

ad teleti weldt a tryage' at

third tenn teksbitza-thirter I wit on Mill-ce em et emini tenterning

the third by the third to be and the

- juis juit i that an itin ha-itin-(th

महियाँ - प्र में - प्रवरे भृतक महियाँ - सुर् । मनुरभाषी । महीर-को बौडानेपर मध्यनके नीच पैठ जानेशला मीडकी = लो मेरकी । मैक । मीछ-प् रे मुक्ते । -के परमर-रूरी या प्रस्ति सहर=-वि सपुर (शस्त्रे)। बतायेवाके विश्व । महस्तियारे न्यु महुवा । स्ती॰ महुवेशी शराव । भुषित≠−ित मुक्तः सुष्टा। महर्ष+-प मनुद्द, मह्दाः ग्रह्त (कविशि) । मुंबाधिक-वि सी मूमधी। सद्योध--प्रश्रे मधीया । र्मेसां−प्र• पनि, धोहर द्वारा (उदेन•-विरस्धारमें भौरापद्वी-सो॰ गण मैंगरमा इक्करवरा, खेंबबोदी। म्युक्त)-'शुंष पृतकी कोशनमें नहीं बनाती'-धमर । मारास्य-५ [मं] माराधिक द्रभ्य- नदाच्याची शाह्यची-मेंद्रश्रश्रियात!~न ६० मेंद्रश्रेपेर'। क वरिश्वष्ट मांगस्थ्य राजमार्थं भर यक्षा क्षोगा'--सेंब्रहासा-वि• निषका और सक्छ दिवा गया हो हवारोम• । (पद्धमानी) । मॉबना:-स: कि फैल देना रेमा रहाया (वंडाना: मेंडाचडी 4-को नोकपाकः प्रिमी प्रेमिकाक्ष) सरसर प्रचाम)-'चौपरि मौदी चौदटै भरभ करण शासार' सदा देखते रहते, निरंद शांच दन रहनेकी जनस्था--समिति । 'बीवन मुँदापदीको गीकी'-नुद्र (१) है। मुक्ति। माहिन-अ इत्रवंदे थीतर, अपने दी बंदर- धद स**ब्द्राचा – प्र॰ मौना** १ र्जीवमारा भिटि गया जन तीपक देवना मोकि-साक्षी । मुखामीरं नवी मुक्य सी या कार्यक्रमीन हमारे नोसन साम्रक्ष+-वि देश संख्या । ब्रो सुराती है वह¹-सून । साराष्ट्र-प वे भागभ । मुराबंधनी - छो॰ (मनिक) धैवान भोरे, याव बारिध साचार-५ वर्धना स्थाना देश मुख्या। मेंह बॉबनेके किय पहलाबी जामेराकी बाकी, जाया। माचिस-छ। हे दिशासकाई। मुखारी - की मुखाइकि कर वा सामनेक भाग माधा-पुनिष्याः देश सूख्ये। इत्रमंत्र (साधार-वि मदवाका, नहेमें बुर्। मुखिछ-वि यक्क डाक्रनेवाका वापद ('यक्न') । सग्धा-वि॰ दे॰ मूल्य । -तिम-मी सुग्या मानिका माश्रम्भि-वी (संग) बग्ममृति कारेश । - क्या अंगोधति मुगुष तिव पुनि-तुनि पंतन वानि " माव्कक्रव्यविमाग-प [संग](पक्तावक्र विपार्टभेट) वाँवा. भाँग बादि मादब हम्बीनर नियंत्रण रखनेनाका छरकारी मुक्राविया – इ. वहाँ वृक्षेताका, मुद्रेक सुरदर। किमम्ब । माद्री-की [में] कुम्बद्धी एक पत्नीका नाम; दे भूकर्ते । सवन ०-वर्ष सहस्रो। साध्यस-ड [सं] यह भाग विस्तृत हारा शिक्षा ही मदबरिया! - शा॰ सिरवाना । मुतकासी निर्देशनेवाशन नी देखा वह इसा नीक्री বাৰ (লা॰) । मान्यता-सी [मं॰] (दिश्री विद्यांत भाविका) मण्य बा त्रकाक्षी -पूर्व । शामाः विक्षी मस्थाको स्वीकृति देना वा प्रामाणिक महाविक~व कालारा रे मुक्ते। मान छेना । सुद्धा-५ टपना गुण्य। मुलगा-५ श्रीयन श्रीशंबन। मामी-वो स्वीइवित्र मृक्ष्मे । मु०-धहसा-हामी सुरपा०-9 मीर। भरता समर्थन करना-विद भरत ह नामी -वत । मरारं∽त करका, मुरमुरा। एक तरहस्त देश्नार छना। माध-को पर्धा संदेशको बानेवाओ सुन्धा बाधा दे मुक्ते । † पु सक्कद भारपासको क्यो भूमि । है जुक्ये। मुख्यक्ति = नि पुरुष्ति मनमा है मृत्रमे । माध्यंत-प्र यह संभा विश्वपर तरक्तरहरू सहरत महाक्र-हो। ६४ और दोश्योद रोयदा दिस्सा बीहा की बाड़ी है, महर्यम । स् मरहें बाँच धमा-बादोपर रस्ती स्पटर बन्धमें सापना =- म कि दे 'गावना'। मियर-प पराजिशके री वर्षे क्या वह छैवा स्थान जिल-कर केना निरम्तार कर देया । मुमुक्स∽दु दे० जाना । पर राज बीक्ट बमाम भाविक भावन करता है। मुमुक्तं –को॰ सुरद्ध दपने बीहबीनदस्य दिश्या । मिभाग = - प्राम्बी मियाना । वि धीरै श्रीव्रश्ली व्या मुस्टेंबा-वि मोग्रन्तामा वयहग पर्भाश्च । दे 'मियाना । मिग -इ मूग परिषा मुद्दर*-वि मुखरा में दबाक-की सुविका सेंदरी, बेगुरी। सिद्ना -- भ कि निएक बाना- वन आगर देशिन भर्मन मिर्हे । र्मेंबो-पु निर याथा । सु मी-का ही जाना-१६० व्यक्तियांकी और नशरश्य 🗱 बाला I मिच≉~पुदे सि≒ा मिनक्सा - भ कि व्हेड व्हेन का धौरेल कुछ विक्या । मुझायाक-- म कि वृष्टित होना-- धोर्शन बुझ्त मृहर मिलकामा, मुलकामा । 🗝 कि 🗟 'गलकामा । क्यो'-धन०।

मुखी-बी॰ दे मूबन। सु॰ न्याबर समझ्यान्यप

मिश्रभाषी(पित्र)-५ [५] मीढे सध्य शहनेशका

```
इथि।~मूपव
                         Efeno-yo Eldi
                        हमारकाम-दि [का॰]हाकसाथ सवारी करनेवाका-धाव
                         भी होता बीर रक्षक जरीरका, इमस्काव -निराका।
                       हर्मक-को हरूक्यमा- विदेश परिमार पहार वर्षे
                                                                           ब्रॉडमार्ग-स॰ कि॰ वॅश्वेडबर क्सा करता (देश)
                     हराहर - को॰ धीना अपने - दिन होती नेकही हताहर
                                                                         Batter (tria) - [4 , 30 [40] (tric) [42 40]
                    इतिहरू कु भीरवंत- बन्देंब वन प्रा बारि विवासी परि
                                                                          बार्वेह बर्नेकी गढ़ि कर रेनेनाक, प्रति ।
                                                                        इरकनी।-बी॰ रेखा।
                  हर्रातास केना-यु हर्र विकडेनाचा वह वरहहा देश
                                                                       इरिवाई-या बीका खेकनेवाला।
                   ही प्राची हुए। यो हरवामा है। (श्रीनंता हुए सामा
                                                                      हरक-पु॰ शहेर, विशासका
                                                                     बोवर०-वि होने बोल ।
                बहागातिक-स्त्री दुवसा।
                                                                     बीमह-पु भीक भावना पानीन की वित्तने पिन्तां
                हिरीक-को पछेड़ी।
                                                                     वशा 'ओडिसी' मामझ महाक्रामांचे एका थे से
                                                                     (८५ विशे पूर्व)।
                                                                  होरक-पुर सोर यार्थ।
                                                                  बोहरका-यु॰ क्रीएक इत्तर।
                                                                 बीमक-पु भएनापन ।
            वापरिकाणीय-वि [मं] भावाञ्च वानिवार्थ-भीते |
                                                 अन्य छूटे हुए शब्द
             विश्ववादी इस क्यांद्रिश्चाचे बच्चीका व्यादेक क्षेत्रा वार्ग-
          कािरिटपाय-पु॰ (रनोटेब्न) किस) पुस्तक किस
           इन्ह्यूंचा सन्, इसह क्ट्युंचे किस मोडे गई मूता मा द्वारा करण
                                                               माननिकास यगानीनिकास सन्दर्भाव सम्बद्धीयो
         बिविटिपणित-वि
                                                              भारि बाब्यसंबंधि स्थवा की (सं० रेवर से न्याक)।
                                                            परमाञ्च म्बद्धियंत्र-पुर (मुन्तिवर रहिसर) १० सः
         明治61
                           (रमोटेरेड) व्यक्तिरपूर्णासे उक्त
       हेराका वळ-यु॰ (स्कारंग रक्कोट) दुक्तिका वह बस्ता
        विस्ता काम भावतिमङ्ग संस्था वा व्यवस्था सम्म स्था
                                                           परमाख मही (ल्लिकार धेरेमर) वह नहीं दिन्ने करी
       व्हेंबहर क्लानाकी वहायवा करना होता है (विकास)
                                                           वाराधीन उन्हें रकतेते हे रेडिको सकिव हो वारे हैं।
                                                         विस्ताय-पुर (प्रदेश) पुर स्वास बार्ड हम
       प्रानी बहता।
     क्षातिकार-त (बास्टर बोह) वालमें क्या हुना (मसमें
                                                          प्रकाशका अस्त्यक श्रीमुक्त वकारो ।
                                                       मतिप्रविष-वि सि ।।
   नाता इत्या क्रियात ।
उपबाद्यपति - दु (१वर क्रमोदोर) इवाई वेनाका सामान
                                                       मित्रपीतिक-वि कि।
                                                       न बारक वाने है।
  आवकार।
इस्कारिकारी(स्ति) - इ [सं] (देवल आविश्वर) वस्री-
                                                     प्रथमाम्बामक-पु
                                                                                      त्री सहज शासकार
   का है जो ज नारिका काम करनेहाका करिकारी।
                                                      410° 1
 स्व-श्री हे सुक्षा विवा
                                                    सहाबायुपवि-पुर
प्रधाना इत्ता-इ है जनाहा रह ।
                                                                                         HAMMAN
                                                    मना अधिकारो ।
हेत-दे हिर्दाई (प्रिटाइक इस प्रक्रिक करि फिलीन)
                                                   बाजुपश्चि-पु
                                                                                  वास्त्रेमाका सबसे
                                                                                                       9
                                                   विकारी को म
                                                 Add-2 $
                                                                               ) बाजुनेनास क्या
                                                  रक्षपूर्व करिये
                                                                                 #i
                                                 BINE THE
                                                                                की दिखीने बोह-
                                                                                 MININE EN
                                                                                       ) i
```

महरा ०- सर्व भेरा ।

राहो - प ।

मधा-त नेदद्र।

सम्बन्धः (क्सिक्षे) ३७ भी च मिनना ।

रमारन प्रदार करने'-मनी॰ नव ५५। युरमाई -- भी ॰ सुरुवता नर्भी ।

मेपानद-द वह मदूर ! मेरियाँ-श्लो भरी, पर । मेहरबाक-पुरु मेह बादछ-'तमहि-तमहि पुमहि-पुमहि रस राधिको बेह सहरदा ∽दन । महराध-प पृष्टि, बादक-'खमरि-उपरि अब बरसन काम्बो अ**परक्यो यह मेहर।'-**यन । में देव + सर्व नेरा। मेंम्ँ ≁-सर्व सुद्धको । मैबासार-पुरु है। 'मबास'। मोद्यपा−ड॰ पर्मड गर्वा दे सू≢में । मोरपदी-दि॰ मोरके पंसके रंगका दे मुख्यें। माँगां~वि चुव, मीन ! मीव॰-५ मोदन, भौका मेक । म्रयः समार्थ-प् भूगः। यत्रतोए-छो+३ 'मधीबगन । पञ्चितिका-सी [सं] यहकी नेती। प्रभावसर-म [५०] भवनाके अनुसार जेला अवसर र्षे क्सीने अनुस्य । प्यासीय-म [सं] जिल्ली बस्ती संसव ही बदनी वस्तो । पवर्ष - छन् इसकी। उद्पाद-प्• [सं•] (बार्श्विप) बनाईमें काम बादेवाका बहार रक्योत। पुरुपंदी(दिन्)-पु [सं] अनार्थमें पदना गया प्रश्नपक्ष भाषास्य । पुरुषेदी-भी क्यार्ट्या ग्रंड होना। उदमंत्री(ग्रिन्)-पु [सं] पुत्रविधाग वा पुढवार्यका र्पवाकन करमेवाका मंत्री। **हुपराधी** – स्रो [सं] हुपराज्ञकी परशी । पुषराश्ची-की [सं] वह प्रवती (ओड स्टबा) जो पुष रामका पर महल करें (बैसे क्रिकेनमें मिसेन ऑफ नेसर)। पुनराबी+-सी दे 'सुनराकी'। योगिक-वि [सं] योग-संबंदी। दे मूक्रमें। पौक्रिक-नि [सं] पुरुषः तुरू-संत्री। रैंगना~स कि दे मूक्ये। रैंगा सिपार−पु सम्बद बना इभा भाषित शासेटी ।

र्वयासिक-स्त्रीक सुगंपित हम्मकी बनी बस्री (मतिक) । मसकी-सी छोग मुसका सरकर्ते वाक्टर मसाका रबीन−वि० फा ोसुद्धद कुरपनासे तुका दे॰ मुधर्ने । मारि हरनेदा परभर या कोदेका बहा या छोटा दंदा-रंभ-प रेणा देवा (एप॰) । प्तामप्रतेकी मुसली बढा कावा और क्या ठाडेपर वर्षसी-मी भगेरी पनर्सपन्तरा। रक्षोपक-पु [सं] काल जामक राजः मास्तिका दे मुम्बर्धे । वस्त्रीसव≉~प॰ ऋगेश्ट (दशेट) । ੜਲੀਲ∽ਸੀ ਤੇ ਦਪੇਰੀ'। मेंबरामा!-भ॰ क्रि॰ मेंटराना- राज्यंकि नहियर मेंट-रगद्द -पुरस्क विषद (दशीर) । रगमगा०-वि रंबित। मेपपुष्प-पु [मुं] कृष्णदे चार योश्निमे एदक्का नाम । उक्क+-प राजस्य महस्त-"अंबन वहे सम्रह परी। जबरव-सर्म गर्दे रज रहे । -बम० । रजवानी॰-सी राज्य- इसको किवि किपि जोग प्रश्वत आपु करत रजधानी'-स्ट्रा है मुकर्ने। रटमा-की रटनेकी किया, दन रह। रतीको ॰ न्य रचीयर थी। बरा मी - पेट्रें न धाँकत मिय र**तीको −**राम । स्तीडाँ -- दि रागमय, रकाछ- नाहर आप वर्मत मनी वक्केस रतीई किये हिये औपनि'-मन रसकार-प बीहरी-'नारवादी राजकारोंकी खडा'-सा दे विकास । रक्क-मु सुंदर बंग-- फिन्ने अनुराय सदाय मरी रविवेरें स पावित रूप-एके - वस । रसक्रमा च-प दे॰ रामबना' । रमक्ता॰-थ कि॰ परस्वा-'धमकि सर स्व स्मक्ति नित कार्नद पन-भासार । रमत्सा∽द सिया नामक शका प्रकाश रसेना•−थ कि रमना। रमार-प बुरके समय वधाया जानेवाका वाया-वि तरकी रम्मद भीते - सम । रबामी ७-वि की आनंद प्रवाहमें सम्बल् बाद देखी भौति गाँति रावक स्वामी दै'-पन । रसम•-को रहिम दिरण-'सूटी छवि-रसमै परक भोसे क्समें³−वन 1 श्सभ्रसादा≠-व कि रचनचा दोना रस परसना-'स्था स्थामयम इत रसमसे -यन । श्सामाक−छ कि जानंदित करना-'तिम्द वर्च सोव करी रसियानि रसाठैं –थन । श कि दे मुक्ते। रसायनिक-पु कीमिवागरा है मूक्रमें। वसिया!-प एक तरहका मीत (वो ब्रिक्सहमें प्राय-होशीके समय गाना नाता है)। रसोत्र≁-सी रसम्बता-कीय परी रूपके रहोत स्ना-भगीरो १-वन ३ वे मुक्यें । रस्मी-वि रश्म-संबंधीः जो रश्म या मान्य रीविके अन सार हो ! र**ह≉∽पुर्य(राधो)** । रहुकानिक-सी रहनेका स्थान- गाँग चकि धावने बनाई रहडानि है -बन । रहस्यवाद्र~प [मं] चित्रन मनन दारा रंथरमे प्रस्यष्ठ रोपई-क्यापनकी प्रवृत्तिः बारमा-परमारमाके अनेरकी

इस्पिक-पु हाथी।
इसरकाव-विश्व हिंद्या स्थापन स्थापी करवेवाजा-साथ
भी होता बीट एक स्थापन निविद्ये परिवाद कहाट हरे,
बग माँच गर्द विजये हरदे नवन ।
इसरहरू-सी क्षमान नविद्ये परिवाद कहाट हरे,
बग माँच गर्द विजये हरदे नवन ।
इसरहरू-सीक प्रमान्त्रपर्धा दिव होती-सेककी ब्हाइट
मर्थ्या हो ग्रागी-पन ।
इरिटांक-पु सार्थल-कर्युक वन वन भादि निवादी विद शरितंक गुरेस नम्म ।
इरिटांक-पु सार्थल-कर्युक वन वन भादि निवादी विद शरितंक गुरेस नम्म ।
इरिटांक प्रेमा-पु हर्दे प्रिन्यकेश विका पीका होगा केम भी कहनाता है। (विनिवा केका पीका होगा कि न्या दुर्देश। हींबमां ना० हि० देनोक्कर गंदा बरना (नीत्र)।
हुकसा (तृष्टेक) ।
हुतासा (सम्) - नि पु॰ [सं] (पार्टर) किसी नक्ष्मे
कारी कारोदे सर्वेक कर देनेशाला प्रशेद ।
बुरद्भारि - जी वेदना ।
बुरद्भार्य - जी॰ कोस रोकेमेशाला ।
बोसर-- प्रक्षित सम्मान प्रश्ना करि, निमने 'दिनव तमा 'वीविद्धा समक्षक स्वस्तान्दीकी एक्सा की वी (८५ सिसी पूर्व) ।
बोरद-पु॰ नीर मार्ग ।
बोरद-पु॰ नीर मार्ग ।

अन्य छटे हुए शन्द

हीस>~प्र• भवनापन ।

अपरिहाधीय−वि [मं] अश्वाज्य श्रविवार्य⊶'वैवे वरिषयीको दल अपरिवाधीय प्रश्लोका स्परीत किया था --ATTR | अभिटिप्पण-पु (एमोटेशम) विसी पुरवद्दे दक्षित रवर्णीका वर्ष रहा दरनेके किए बोड़े गरे बंध वा दीका। समिटिप्यक्ति-वि॰ (यमोडेटेड) शमिटिप्यनीसे सकः गरीक । उदाका सम-प्र (नगारंग नक्षींड) प्रशिस्त्रा वह हर्गा निष्ठका काम भाकरियद संदर का दुर्भटराज्य समय शहर प्रथमर अनुनाकी सदावता करना होता है। (पश्चिमका) तुष्टामी दश्ता। उत्तरपिचार-पुर (भाष्यर बोद) बाहरी तका हुना (समने भावा द्वारा) विवाद ह उपरामुपति - १ (रक्ष स्थानेश) इनाई रोनाका सामान्य सपिकारी ! करपाधिकारी(रिन्)-पु॰[सं॰] (बैजक आफ्रिसर) भारी-को देगरेस मारिका कान करनेवाका नर्ववारी । प्रवि∽न्दी० है० मुनमें। किन्। गुकामी इस्ता-प्र दे विशास दन ।

देव-९ दिरोदे रातिहारके यह प्रसिद्ध कवि जिल्हीने

भावनिकास भवाबीविकास अध्याम, सुवानविनोह बादि काम्बर्धवेंक्षा रचना को (सं० १७१०में--- तक) I परमाञ् नवध्ययन-प्र+ (म्बिनवर रीनेवरर) वे 'पर-साभुसद्गी। परमाणु मही (म्बनिवनर रीनेपटर) वह मदी विश्वमें मारी बाह्यमाने ब्राइटे रहानेसे वे रेडिया-सामित ही बाते हैं। परिसद्दाय-प (रहेश्चेत) द यहरतर भारिके साथ व्यन्तेपामा अंगरधक्र सैनिय मनिकारी । प्रतिपृथिक−दि० [मं] दे० पितिरी/ठ६ । प्रतिपीतिक-वि [मं] (येगे सेप्टिक) की समय बा मनाव म बरपत्र होते हैं। प्रचमान्यमञ्जन [न] (ध्येनर) है सहाबायुपति—५० (एवर मार्थक) वागुधवादा सरहे वदा कविकारी । बायुपति-इ (श्वर बाश्म माईन) शतुमेसत्धा पद्मा-विकारी की महाबाबुधींगमें छोटा होता है। ज्ञूषण-तु है जुलमें। दिशों हे प्रतिद्वा विन विनदीने वीर रमपूर्व अविशाम महाराज दिशाना तका महाराज धन

सामके बधका करेन दिया है (मंत्र १६७०-१७३१) ।

भनभति और भम्बच्छे प्रति बात्मनिवेदन । रहस्यवादी(क्रिन)-प सि । रहस्यवादका अगुवादी। वि॰ रहरववाद-संबंधीः रहस्वयावसे गयः। र्रोकम+-पि एंड-'रीक्षम श्रीन सरामा हर्ते भाष समान इसे −सर। राँध-वि परिपद्ध दुविवाका (प)। वे मूक्कों। राधारामी—स्रो समिरेट, यहर शाविको राह्य विराजेका तस्तरीनमा पात्र । राधवा -- दि॰ रचनेवाका । खि राधनी । राजर्रप्र-प्र [र्स] वह खासनप्रवासी विसमें राज-(रहेर)का अभिचित राजा हो । राजपंदरी+-प वषा पक्षा वि मेंदराना) । राजसचा∽प्र राजपश्चि-छो+ (मिनोपर्न) दे+ 'राजा भिरेव । राजसाया - सी॰ मिं॰ो हेप्तमी यह बाबा सी राजधारी तमा स्वाबाक्यों आविने प्रयक्त हो । राजसात्करण-प (कानफिरकेशन) वे॰ समप्रस्य'। राज्यस्याग~प्र• सि] राज्य करनेका, शासन करनेका, अभिकार छोड़ देशा । रातना निस् कि स्वीकार करता क्यूकना। रामा 🗝 भारत महरक होता – कौन कहा वो और न राई −प ; दे मूक्में । रामफराका~ड रामार्वदी विक्रक (वीम खरी क्कीरें), स्थ्यं वंद । रामण्ड्रह्—यु व्यात्र (सध्योध्ये माषा) । रायसा~प किसी मीर प्रवय का सती नारी का बादोमीका दे मूजमें। रारि - की दे शर - शरि-सी मधी है विषश्विक **ए देवामें -भूभर ।** राबक = च राबादा ममिबीहा। राष्ट्रभ्या-पुर राष्ट्रपताका-को सिर्श दिशी देशका राहीय शंदा । राष्ट्रभाषा-को [मं] किसो राष्ट्रभी वह अस्य अवस्थित माना विशवा प्रयोग क्स शालो कान मानामानी मान-रिक भी सार्वजनिक कार्योमें करें। राष्ट्रधाबी(विश)-प [सं] (नेबच्छित्र) शब्दे विस्त्रो संशोधिक महरव देने सभा बसकी प्रकार संवक्षण आहिते क्षिप प्रयस्त्र करनेवाका । राष्ट्रमंघ-९ (वे 1 (बीन शंख नदान) विश्वेद राहेका संभ नी प्रथम महाश्रदके शहर राष्ट्री है आएसी हावने सांवि-मुर्वेक इक प्रदान्त कर ध्वरी ननामा भवा था। राष्ट्रीयसा~की [सं] दिनी शहरा जागरिक बोनेका भागा राष्ट्रमेस दिशमन्ति । स्तित्वचा - ए 🍱 दे (स्वाना । रिक्छा-५ देशीरेक्टा । रियानार्ग-ध कि चित्रसा। रिमाना•--वि॰ रीप्तनेराष्टाः। विद्यास#-५ रनिवस्ताः रिजीमा +-स कि दे + 'रिहणना । रियप्रमार्ग - म । कि. एक्सा विकायना जिल्लामना - च्या है

विद्यमा -- अ कि अरमहाबाद यह भीरकी विद प्रवता। वे॰ मुख्ये । रीमना - भ कि विकास । रीक−क्षा भाषारभत अंग या तत्वा दे≉ म∉र्मे । रीतिकाख-प सि । विशे साहित्यका कर काम जर रीतियंत किसामेक्ट्रे किया है कि प्रवर्तन की (१६ वी से १९ वी सक्रीतक) । रीतिग्रंथ-प॰ सिं॰ी माबिदाभेर, वस्तरित, शारह गारा। शहकार बादिया विदेवम बरने दवा वनके प्रशा-हरण प्रस्तत करभेवाकी रचना । क्पता≯−ित है 'कवित'। दहान~द्र धुकार, दिशी और प्रश्च होना। स्टना≠-अ कि॰ छोभित होमा हा आबा~'दस्निब जीतिबाक मोतीमाक-१३ व्ये - एम०। क्सवा#-व॰ वदवामी। दे॰ सकर्ने । अपरेक्स की सिंगी किसी कार्य वा बोजनाका स्पूच क्या वह जिल जो जांगी केंबल रेक्साओंडे रूपों की निसी बाइति वा विश्वका रेखामय रूप । कम=-प्रश्न कोम (मीरा)। कमावी-वि वे 'रोमावी'। कहिर्=-प्रश्निक एस । र्वजा, रवाहा-१ दक देश वी अछ-अछ नवुक्ते देखे मिक्ता है। हेक्कियो-प्र [अं] एक शरहका निपुष्ट्रमंत्र निष्ठको सहाः बढारी विना दारके की बार्चा, संबोद समाचार मारि बद्रत कर करवक मधारित दिवा जा धनता है। वह यंच विस्ति मान्यपानी केंद्र प्रारा प्रसारित ऐसा समाबाद क्षेत्रीय माहि सुना ना सके। र्शीत•~को उपरार्थ । शोचना-धी क्षेत्रक विक्र । शहसक-व [बं] सरबारी मारर वादियों द्वारा नावियों क्ष ममभागमनका निवस्थित स्ववस्था । बोबसी-की (क्षेत्र) प्रयोग स्वर्ग- पूर्वत्र हे भूरि पूरि होतातीके भास पाछ नदाम । शक्तिवीवात-पुरु (सं०) थ्यामा । क्षिण गया रवाम- जगवमे वयान क्योंक्यों है। क्यियो कहाँ नेरमा है, विश्वित हो गया - गूग॰। क्षत्रपात्र-त प्रेमी कामू-कद्रवा मंत्रा फिर्ट दिन-रूपनी रुपुता गीरी नीरीके -वन । सन्त्री ० न्यी दिवसमा (रामी) र

धक्षक्रमाक-म कि कक्कमा-!-गुगन र्नेवरको क्वकि

क्षद्वेदार्ग-१ - शिवार (५²४) । [न्हाभ घर भी गन

सहाने । परम प्रेमस्स पारल पाने । -पन ।

खब्बीयाँ!-मी **अ**श्चाम ।

मानी रिफाली वर शिक्षतिक'-मन ।

रिष्णामती अग्रमत⁵ ।

रियायशी-वि वे 'रियायकी'। नाष्टी-की के



र्पेष-भावस्यकतासे वहे बद्धादि धारण करना, अपने विच वा सामध्येसे बाहर कोई काम करमा। इससे पिक्तो जुक्ती सहाबत है निचेशरके विचनमियाँ छवा रमधे रही है। सदना-वि बोटा श्रोनवाका, सब्बाइ दे॰ मुक्रमें । स्टाय-६३ (याक) कारनेकी किया ।

सपरीका = - वि रपरीका, विश्वतक प्रियसनवाका - र्कवी नीश्री राह कपरीकी चाँव महीं ठहराह -मीरा ।

क्यंग-प प्यती- देसरी रुपेश ग्रेष विविधी क्येडे −पनः देमधने।

समगी-सी॰ है 'सबबी'। स्परिकसस्योति = स्वी । श्रहालीः देश मुक्ये ।

स्रीया+-त दुपटा। प्रस्टुप्राक्र−पु• (मं• १८२०-१८८२) ख≰ी बोकोडे आर्रि

मधनिर्मादाः । इतिहाँ-सिहासुन-बचीसी वैतास-पंचीसी पञ्जाका नारक (अनुवाद) प्रेमसागर, माधवनिकास समारिकास राजनीति। भाषा काववा कतावफ दियो । स्वद्रमा ० – स द्वि • सिप्ट जाना – नवी म सोले विवार

ल्बंदी आसी कविदेशी सर −वनः । **४९ना**४-४ क्रि सम्बना-यस्त्रचीर वरहा हिंद स्थे - एन ।

वहाउद्≉−स्त्री प्रीप्रता—'क्हाधेद दहा भी संभाव रहे मनबोह्य ही हजातीह भरे ही'-यन । वि मुख्यार § अप्रदेशकी (क्यों) । पुदे मूलमें ।

≅ष्टि॰~को॰ अंत्रत दादा। काइ≉~को प्रेमको समनाद मुख्ये। आगृ•-प• प्रेसी-'सॉबकिया घेर ममको कानु मित रत

कारी-कम् । **समाक्षाम**⊸षु [सं] द्वानि∗कात । सास-वि साम्बदादका अमुसरण करनेवाका (वैसे

काकपीत); है। मुक्रमें । -सना-सी साम्यवादी दैराध्ये सेमा बिसके सदेका रंग काल हो। कास कुरतीयाका दुख-3 भारतके क्लाइयोग बांदीकनके

प्रमन सीभागांतका वह राष्ट्रीय दक जिलके नेता शीमांव नानी क्षा बन्द्रस युन्पार क्षा थ और जिसके सदस्य काळ \$र्ल पहला करते है।

क्षेक्रम~पुत्रिय स्पक्ति। देश्कर्ते। ध्यक्ष प्रीता-प (रेडटेपिस्स) (शरकारी) कागवपत्री, पारमें बादिको चौबनेमें काम बामेनाका काक पीताः **एरहारी कावीमें आध्यक्षे बदय अविद्य अनुसरमसे होने**

नामी हैरी दीर्पस्त्रता । स्मक--पु की क्यन प्रीवि काप=-वि कास, सी हवार-'दका पैका ओशवाँ जुटिसी

वार क्रोडि -क्रीस दे मूक्रमें। काबारा - वि भागारा ।

प्रवरो।-सी कोखबी सीमबी (पुरेक)। सुध्यक्-स्त क्षेत्र। स्वा-प नमक-'सुर साह है ब्रोधनी माँहि पर उक्त

सँव -साधी। केवन इन्तास-को (भनवाकत स्तारक) वे 'केसनी वाब-प [सं] दिसी धालके निरेत्वों दारा निश्चित

कर्मगोपन । क्रेक्षपास्र~५ दे॰ 'प्रवारी'।

क्षेत्रांच-क्रेक्यांच-प्रस्ति । (पैसेत्र) किसी क्रेक्सविका खंट-सो॰ हेटमें पौड़मेको किया। भूने-सुरक्षी आदिका विद्यादा हुआ मस्त्रका ।

क्रेंगिक−वि सि•ो (सेक्सभक) क्रिंग-संबंधीः खी-प्रवरकी अमर्जेडियसे संबंध रखनेवाका थीन । क्रोकप्रिय-पि [सं] जो नइत्तरे कोमोंकी प्रियक्त. ≖दे। छोकोतरगमन~५ [र्म•] पश्चोकगमन सर्गवास ।

स्रोकायशिक-पु [स] वार्शकका मनुवायी। दे मकर्ने । कोलस्यां - सा कोयश कोमशे (भरेक) । कोधरेल−१ सिं•ों कोल इसके प्रकार उसकी उसकी जिसका प्रयोग भगरामधी तरह किया बाता था। क्षोडा⊸प धोवीक्धे इस्तरीः है सहमें। क्षाह्रपुरुष-प्र [सं] ६६ निश्चयवाका व्यक्ति, को कृति

नाइवी, वाधाओं या किसीकी धमकिवीसे विचक्रित से हैं। 1 संगीय-वि+ सिं•ो नंगासकाः स्याग संगंधी ।

वंदन-पु[सं]सिंदुरुदे वंदम ;देण मूकमें। बंबीसप-५० वार्थ मार । वजीरे कारिका-प [थ] परराष्ट्रमधी। बयस्य−पु [सं] इसबोको मिन्। नि दे मसमें। बयोत्तर-वि (भोजार एव) विस्की वन भभिके हो गयी हो जो निर्वारित वनसे भविनका हो। #र्चन्द्र-प शकि तेव (प्रेरकृत वर्षस): माश्रव वाबाम्ब-'राववनका करसाह असके सारोरिक वक और सामसिक क्वंस्वते सीमित वा - अमर ।

वह अवर्षे विकियम-९ भनेनोकं एक प्रसिद्ध कवि। क्रोसको राज्यकांतिका स्तपर वशा मनाव पशा था। (P25-005) बर्जभेद∽प [सं] रंग या चातिके कारण दोनेवाला संद∙ शक्षंच∽वि [सं] क्यानेवाका (यवकर्यन) । प्र वे

मृक्तमें । वसकी-सी वस्त करनेकी किया प्रयासी। बस्तस्थिति -सी [सं•] बास्तविश्व स्थिति । वस्तायोक्षा-सी [सं] क्लोक्षा भवन्तरका एक मेर । बह-वि [सं] बहम करनेवाला (जैसे भारवह)। है मुक्सें।

सहै - सर्व वह ही नही। बाक्यकाद-पु [सं] दे 'कपवास्त'। बागीसा = - बाँ इं वानीदा दें वाणी - तवपि हे वि स देव असीसा । सफ्छ दोन दिव निव वामीसा --रामा । वाड-५ [भ] विवक्तीचे प्रकास या नावच प्रक्रिकी यकाई।

बाह्यस्यात-पुर्धि वासुपुत्र इतुमान्।

उदेरना∽वतास उदेरमा≠~स॰ कि दे॰ 'बदकता'। उष्खना-स॰ कि॰ वरक परार्थको एक बर्तनसे इसरे बतन में बारूना या अमीनफ्र विराना । सर्वेगी#-मी सगन्। उर्वोद्दा - नि॰ उपनेवाला । जबयन-प्र [संग] पहनाः इठयोगवा यक वन विसकी सिक्सि बोगोर्ने उइनको छक्तिका का बाना माना बाता है। उद्वासर-वि॰ [मं] नेष्टा सम्मान्य दुर्वगै। प्रनंद । उर्देशन-दि॰ (से॰) दहा हुना- एइता हुआ। पु॰ एहासा पश्चिमोनी एक विशेष प्रकारकी चरान । उद्गीवन-पु [मं•] पदमा। उद्गीयमान-वि॰ [न] उद्योगलाः प्रकृत हुआ । उद्वीस-दु[मं•] शिव। उदक्रम−पु•ेदेक सदारा । उदस्ता−म॰ कि ठोकर पानाः छक्षरा हेनाः नक्ष्या । बढ़काना=स कि॰ सवारा देवर खण बरवा, विशना । उदमान-स कि॰ गहर निद्यालना । उदरमा!-अ॰ कि॰ विवादिता लीका परपुरवर्षे साव निद्ध भागा माग जाना। उदरी-ली मयास्य लायी हुई श्री, स्तेशी। उदाना-ए॰ कि वे 'बादाना । उदारमा -स॰ कि दूसरेकी गीकी भगा काना। वदावनी बदीनी नशी दें भोजी?। उत्तंद्र-तु॰ (सं•) उत्तंद्र मामदे तृति । ७ वि उत्पा। --भग-पु॰ **रक्** प्रदास्त्र नेप । उत्तग≉-ति॰ क्रेंचा, बसु ग । दर्शस॰-दि॰ परा संगाना, भवान । उत्त•−श• वध८ वहाँ। बसम्ब-प्र [सं•] भगिराके प्रत और मृहरवतिके वहे आहे। ~तनय~प्र• भीतम । दस्यानुद्ध−ु [सं•] पृदस्ति।

क्रमम#-ल॰ स्थर । द्धसमा≔ि वस मात्रासः वस क्यर । अः वसमात्री । क्षसंख्या - प्र- बानमें राज्य बहुमनकी शासी। बत्तपछ०-वि० दे उरपञ्च ।

उत्तपात+−५ २ 'उत्पान । बत्तपामना*−स नि वपभाना । श कि॰ उपभना उत्पन्न होना ।

उत्तमग°-५ < उत्तमांग ! उसर्ग-पु॰ दरनानेमें सामके कक्द बेठाया मानवासी कक्यो था पत्थर ।

अतरक-पुर वे उत्तर'। **बत्तरमां -स्रो** उत्तारन पुराने कप्रशे पुरु उत्तरेग! - पुन-रम-सो॰ पहारे दए प्रसने स्पर I

इसामा−त्र कि॰ कप्रदे या विकी सवारीमें मीने जानाः शास दिगाइकी कार कामा। दशमा। परमा। दशक् दीमा, निरम्भा। पीक्ष, इटका पहना। दूर होता (भर सीप श्रारिका); इटना; भीगदान समाप्त होना (मान, मधन भारिका)। बरहेर अनय द्वाना। यह गणीना तीवा अला। (तुर्देने अहरियर पही भीजका) भगवर तैयार शाना। गार

दोनाः टिकना, ठहरमाः सित्र होना, निवन्ता प्रश करनाः वस्त्र होनाः दोठा होनाः नियना अस्ति होनाः सबक बीना। तीलमें श्रीक भागा जन्म केना क्यानि कुरलीके किया भागा व्याहेका कार्र बड़ा मोदरा सम्य (शवरंग)। पक्ती दुर्व श्री बच्चा वैसार ही नार बद्दोद्धा मर व्यानाः भर माना (मधका मादिका)। वधहरा पित होना। बतरणामा~स॰ कि 'बहारना'का प्रेस्पा उत्तरक्षां लिव वचाका, वच्छी।

उत्तराह-सी वतरनेश्चे क्रिया पहार्रश बस्य पतः मरीके पार जतारनेका भारत, होता प्रकता सहगूना नार आदिपरसं उत्तरभिका स्थाम ।

उत्तराना-म कि पानीचे उत्तर रहना बहना वा माना वक्तमा। दर यगह देख बहुना। हा बाना। हो देशहे हरे

उत्तरायछ∽वि॰ उतारा हुना पहना हुना । उत्तराच-५० क्यार । उसरायना॰-स॰ कि॰ 'उनारमा'का प्रे॰ स्४। उत्तराहाण-म एकस्था ओर । वि वक्तका । उत्तरिन⊅−िम मण्मुक। उत्तरकामा •∽ म • कि. उदावकी दरमा । उत्तरसर्व-स॰ दे ^वरतारतः । उत्तहसक्का#-मी॰ बस्तंत्र। उताहरू, उतायक०-४० वतावसं है साथ वस्ती क्सी उताहरू उत्तावसी#-भी श्वाहरी ।

उत्ताम-वि विन पीडके बस हेटा हुआहंगे छाती ताने हुन है। बतार-पु• वत्रभेटी किया। बदाव्या बन्टा, बाबा वी रनेका व्यान पराना भारता वह अगह वहाँनी मंत्री सम्बद्ध पार की जा सके। (विष सलका) प्रभाव दूर दरनेशरी वना, पुक्तिः उतारमा * अतुरा । - चताच-पु केपरे निवार्गः शामिन्गानः । वतारम=९ परना धुना पुराना कपरा भाईर वा मीना

भिद्य बारिको है रिवा जाया स्थाहासरा निरूट गर्द [‡] उत्तरमा – स॰ कि कपरमे नीचे कामा। पदमी दुरे योजसे अस्य करमा। दूर करमा। संशानि चन्कर प्रमान दूर कर^{मा}। जरुग कर लगा निजान सेना (सन्तरे मार्ड); कारकर लुवा बद देसा। क्यांनी ओर लामा, परामा। (छाँचे अर्जर पर चरी बरनको) तैबार बर भेना। पन्ना भगा। सीचर्य-करेबमाः मदम्य करमाः शानः, सुद्यानाः कस रोणः कस्म शुकार में कामा। पार बहुमाना व्या के बणहर बी माइरा बनाना। धीन्मे पूरा कर देना। रिहाना, इंबर्रेस मन्य करनाः भ्योधाषद करमाः सिर् का भेदरेके पार्श बीर पुमाना (भारती भारि); बतारा धरमाः बद्रवीने मान्य रक्षम क्षम करना (धंदा आहि)। अहिना गार शीवनी (नमर्)) शीवमा। निदालनाः ॰ वस्म दैनाः रोहना । जनारा~पु धेव वा धवरावाशी निष्ठविधे निद वीरिश व्यक्तितर कार्र भीन बारकर धाराते कार्र पर देवी तम दिवामें कारतन सामग्रीः व शिक्षा प्रधान मध

जलाकः~वि यत्रथ भागारा । प्रसाखन-अ सीवाशी सीमगा।

बार् क्षम्मा ।

मूचमूद दश्बी या सिकार्तीका समाहाए (प्रविदाह, यर्व करवी वार्त कहता। स्वच्धंदसादाद प्राक्षसंबद्धः शानावादः क्षिप-प्रण-प्र. [t] ben nrent feben wiet, mer रहरवदाद इ , ववारशान देखिन)। नाद । घापी∼न्त्री [सं•] शबकी; दे मूक्की। असनार-च कि बरासा समाप्र क्षेत्रा (रे∗) । बेंगवाल्(यत्)-वि [तं] नेम्बुका तत्र पक्नेनाका पारि**चरमे∤ा**~पुसि] मीअपेदान, कामदेव~ कोपेड तर्वाहे बारियरदेल्'−शमा०। दे प्रस्मे। 414819-4 प्रिवशम वरकम-मीरा करे योपिनकी वेतनभोगी(विष्)-पु (सं॰) देतव बदर काम करके बास्ता इमस् यथी प्रदाबारी न्मीरा । नाष्ट्राः वैद्यतिक कर्मचारी । बामुक्सिया-धौ॰ [सं] सुकोचना । चेथक-वि सि] बाव करनेवाकाः प्रयादित करनेवाकाः विकास-प [सं] उपवध्य समय कील जाजके बातका वे मुख्ये। समय थतिहासा दे मृक्ये। वेका-सी॰ [सं॰] समुद्रकी बहर: दे शृक्षमें । विश्वंबीकरण-पुर्व [सं] (श्रेगमैश्वन) येतीका प्रवर्शने वेश्याकय~पु॰ सिं**ो गरवासा निवासरवा**य । विमाबित दिवा जाना । सेक्पावृत्ति नवी [सं•] क्सर क्याचा धन स्थर पर विकार स्वाक्षण्य~प (सं॰) विकार प्रवट करवेको स्वर्त-प्रकॉसि संबोग करावा । चना । वर्तविष्य-विश् (तंश्र) वितंत्रा-दंश्यीः है भूवर्मे । दुश धिष्थित-वि+ (र्थ) बच्छी तरह पीला हथा । म्पर्भका शयका कर्नेवाका । थिलम्≠−वि•दे 'विद्रम'। वैतसी इस्ति⊸सो॰ [सं] वेंतको दरह शक वानेको विसर्फ ~ पु [सं] किसी वर्षक विकास कही गयी नास मा আব্ত সম্বান্ধী মনুতি। पेश की सबी बढ़ीका दे सकते। वैभिन्न्य-प्र• (सं•) विभिन्नता । विचीय-मि [सं] विच-स्वेधी। विश्वकी व्यवस्थाके विचार धेवा – प्र• म्ह अस्वय=नाका (कोई साथ करनेगाम) । बक्रती>-थी ओज्ती, ओरी-'बानेंद वन किंतर्टे किन से चलनेवाका (विश्वीय वर्ष) । घिरभार÷−५ विस्तार फैकाश । बरसी ये बस्ती बैकतियाँ । बैद्याणी-बी॰ (सं॰ वरसाधी) बराठके जानमञ्जय विनिपातक-वि• [सं] मिरानेवाका। वे ग्रह्में। कम्यादानकी एरम शुरू होतेने मोथ करवातेने बाबर विवोद∽५ [सं] मनोरंबद बातः परिदासः दे सक्पी। वरको देखने और वहें सम्मानित करमेको रोहि । विपरिधाम-प॰ (रं॰) विशेष प्रकारका गरिशान, वासी, गवनेस १ बैद्येपिक-वि [सं] निद्येत नियत-संश्वीत देश मूक्ती। वियोग-अंगार-प [धं] शंकाररखदा वह सेर विश्वन बोहना - ए० कि दे ओहना - वीडे कामा काएका मेमिनोने निरहका पर्यम होता है। विमर्कय-संगार । नीव बरावें मेश - शाफी १ पिकमन-५ [सं] विकीम क्षीनेको क्रिका, विकास देव धोष्ठरमञ्जूष वातिरम प्रशास । क्वांच-त [र्व] विकास, तीवा विद्यान भाविके क्वेंस्वते यक्षमें १ पिछसिस-वि [सं] श्रीभितः। करे वये निवरीक्षार्थ-बोधक श्राह वाला। है सकते। विद्यायत् – स्री [बर्] विदेश्व हे मुक्तं। 🐣 वर्षक्रवतास्त्रिका—स्त्री (सं) (सेन) (होदक राजादिये) विकास-प [मं] दिसी भीवका संदर देवसे दिवनी-वरोत्रे वा सकते बाग्य व्यंत्रमंत्री गुपा व्यक्तिनीः व्यंत्रसिका । ENR! ! व्यक्तिता च्या (एं०) स्वक करनेकी किना। है जूनमें। विस्तिक्सकेसा-वि सी [सं] प्रितके निश्के गाम श्रवंत्रसिका-सी (मेन) दे 'व्यवनशानिका' । विखर हो (मधे)। ध्यंत्रिमी-भा॰ वि] (येन) (शेरकमें तैवार) स्थंबमीदा धिवदिया-की • (सं] रोक्टेकी इच्छा । सम्ब (वसे कप्रक्रिती-कप्रक्रमुक)। ﴿ विवरिष्य-वि नि विश्वनेका स्मृहक । वियर्णिका-की [सं-] किसी बाजा वा संवत ब्यारिकी HIGHT ! untenten unes feete al feulit fee deit व्यवसाय-९ [सं] नीनिकाः पृथ्ति देश् मुख्ये । व्यक्तियाय् – पु. [मं॰] स्पष्टिको स्वतंत्र शक्षा तथा अधिकार क्रिया जाना विश्वाहतिकारेन-ड [सं] पति-वस्त्रीका विश्वाह-संबंध भाननेका विकास । ब्याप्रमुख-वि॰ [५] शाय वैश्व सखरावा (प्रवान) वादमा समाद ! विद्यापो हन्त्र [यं] किसी सामियक प्रथाविका यह अंक विषका सामनका मान औरा और पीएका एक्स हो जा किया निविध भवसरपद निवेश प्रकारकी वपनीयी वासुराका प्रकरा (पेशा मन्त्राम अमेनककारी काना मामग्रीके साथ प्रकाशित किया गया हो। वाद्या 🖒 । विश्वविद्याक्रय-१ (सं) यह महान् विवासिक विश्ववे क्याचम्र≠−की स्थापकता−'सपदरके पढर छ तथा। विविध विषयीकी क्या दिल्ला देनेवाने अनेक महाविद्यालय व्यापद स्थल परी⁹-पूर । ब्यास्त्रय-९ [सं] भो सानेशना सभा। el fa विषयम्ब-१ [4] यहर उपकताः १६७ हो अविष् व्यावहारिक-नि [स०] व्यावहार्षे आने कायका दे

भेवनाः ब्रांगली वानेवाली वस्तुः वसनः परिस्थागं कम प्रीके कपरका सिरका भाग ।

उप्रोपक-१ (वं) केन्द्रमे उछाक्नो अवनेशकाः वस्पारि पुरामेशाका। उद्ययण-५ (वं) वेन्द्रमा छछाक्रमाः अवनाः वसमः पुराभेषात नाज पीटनेश बेटाः १६ पणका एक मानं।

उरस्पत्तित−वि (छे॰) सिकाकर शुवा तुमा हुना; वदा हुना। उरकासन−प स्थितिकार्थ, सीवनेका कामा सीवकर

उल्पमन-पु [तं] सुवार्ष, सीयनेका कामा गौनकर बाहर निकारमा; बाहर करमा ।

हरलहर-की॰ [र्च] युरा नामक मेनहस्य । हरसात-वि [र्च॰] दोशा हुआ; क्याना हुमा- दोशकर निकासा हुमा सष्ट किया हुमा। यु हैय, विका नहाः करव-सावक नमीन। –केसि-मही (बानवरीस) सेन्यें

धीन वा दाँवसे धरवी गोल्या।

उरगासा(न)-वि॰ [सं] पोत्रवेवालाः व्यापनेवालाः । इस्ताती(तिन्)-वि॰ [सं] वीः समनतः म होः उनह पावदः, विषमः मास बदमेवालाः।

डालान∽पु [र्थ•] खोरमाः लीवकर नाहर करना । इरलेद−पु [र्थ•] कारमाः निकलमा ।

उर्चक-पु॰ दे 'वर्वकः। उर्चग>-वि दे 'दस्तृ'।

उत्तर=ार ६ चयुना इसंस, उसंसन-दु [मं॰] शक्ता टेक्ट रोक्सा । उसंस-दु [सं॰] कर्तपूर कर्णमरमा ग्रेस्ट हिरोम्बन

शान्तमः ० दे० भित्तसं । दण-दि [सं] मीटा, श्रीमा दुधा, तरा ७ पु० अवस्यः स्पेट्रा ७ वरु स्परा

ক্ত'ৰ । তৰাত বাংল, কাইনিক । বৰ্তম্বল – বুঁ (হি) মিলাটেট প্ৰব্ৰুত্ব হুলা, কাইনিক । বৰ্তম্বল – বুঁ (হি) মুক্ত বিষয় মন্ত্ৰাটো পাটা । বৰ্তমান – বিংক্তি । বুঁ বুলাৰা বুলানা হুলা বুলানা কাইল আৰুলা কুমানা নিবিলা। বুলানাৰ স্থানা বুলানা বু

मिता करोबित किया हुमा ।

उच्यता-स्री [सं] शिवता नगाएँ। उच्यतार्ड्=सी वत्याः उच्यस्य=द्व [सं] क्षेत्रताः रिज्या के याताः। उत्तमर्गः, उत्तमपिड-पु॰ (छ॰) महाउन ६० देनेतनः । उत्तमांगा-पु॰ (छ॰) छर । उत्तमांस(स्)-पु॰ (छ॰) नी प्रधारदी मुस्लिपेट एड को बहिसाले प्राप्त दोली ४ ।

बस्तानि जी [मं] प्रक्री, नेह । सो नेह भी एक तरहका कीका हुनिका मामक पीचा रीतरी। -वृत्ती-की वह रूती में मामक या मानकात्र माने माने । न्यापिका-मा वह मानिस ने माने प्रविक्त पतिके साव में बनुष्टम बायरण बरे।

যুক্তি যাৰ মা জনুকুক কাৰণে মুই।
তক্ষাবেটা-কাঁও (ব) ইপিনা মামত বাঁকা।
তক্ষাবেটা-কাঁও (ব) ইপিনা মামত বাঁকা।
তক্ষাবে তুল কিঁও সুক্ৰিক কাৰ্য্য কৰিব।
তক্ষাবে তুল (কিঁও সুক্ৰিক)
তক্ষাবে তুল (কিঁও সুক্ৰিক)
তক্ষাবিক তিন্তু (ব) কিলেক কাৰ্য্য কাৰ্যাবিক।
তক্ষাবিক তুল (ব) কিলেক কাৰ্য্য কাৰ্যাবিক।
তক্ষাবিক তুল (ব) কিলেক কাৰ্য্য কাৰ্য্য কাৰ্যাবিক।
তক্ষাবিক কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কৰিব।
ত্বাহাৰী কাৰ্য্য কৰিব।
ত্বাহাৰী কৰ

ममुद्धा यक पुत्र । इन्हर्रग∽पुः [मं] यीम्बर्ध जपरक्षा कारको मेहराव।प्रि• श्रम्भा तर्रमिन। यजनना धुत्रा ।

उत्तरीय-वि॰ [मे॰] हायना हुआ।

डचर−दि॰ वि•ो उत्तर (४६)+वंदश: उपरवासी प्रेपी ਧੀਲੇ ਸਾਸੇਵਾਲਾ, ਧਿਲਲਾ; ਮੇਝ (ਸਾਫ਼ੀਚਾ), ਸਾਹਿ अधिका 'से अधिक (अटीकर द्यान)। बामा द्यक्षिणां यार करने वा किया जानेवाका। प्रश्वादिणको व^{ह्म}ी दिया, शुमान्य अवाया वरका। वादका सवार यमग रामा विरादका पुष्टा मविष्यत् काल विष्युर्गाद्वारा मध्यिन भीचे बाला: बनरको सनह या आवरमा मिक्की ग्रेप व्यक्तिश्चन्यः प्रापान्यः एषः अर्थात्वारः विसमे उत्तर हुन्धर वसद्भाशमुमान सगा हिदा बाए। अर गीरे।^{बाद} -कॉड-पु रामावरका मातशे वा श्रोतम करें। −काव−पु शरीरका कपरका भाग । −कान-पुर भानेशाच छवर - महिश्वद् काळ ! --काशी-^{सी च} क्रदिहासमढे एएनमे पश्चेताला एक स्तान । लप्टर्न पु॰ कुछ बराका कलारे मान अनुहोतका वर संग। ~कोशस्त्रः −कामस-पु अन्य । −कोशपा=न सबीच्या नगरी । -क्रिया-मी० अंधित विश्वामारि । −गुल-तु सून गुण्की रहा करमेशकै ग्रम (३)। " ब्रीय-पु शंबका परिशिष्ट । -- ब्युह्य-पु विशायमध्य बादरा बादरम । - मंग्र-५ गुमन्सा दर्गितः भव। -बाला(क),-बायक-वि स्वाव देनवामा विश्वास भूषः - कृषि व-पु जनारोदी विग्मेराराः - कृषी

(चिन्)-वि अवाव दमेवाला अध्येदार । - मानिन

ली यहमें उत्तर रियामें बना पूरे। - परा-1 वर्ष

बा श्रहमुका जवारः मिहारास्य ।-पर-५ दुवरा व.११।

-वय-पु उत्तरहा राज्यात रेक्यान।-वर्-पु स्वय

का अंतिम पर । -पाय-पु पारका सवार । -प्र पुत्रा

-पु स्वयन् अवाव वहमनुष्यत् । -प्रीहररा-से

वश्चर साप्त्रका सदाव ! -स्त्रा-भी संग्रेन्टे सरा।

रद प्रवार । -मीमांगा-व विश्व दर्गम ।-इ मर्वार

न्हमें । हात जाति - श्री [सं] संब बसाबर चक्रनेवाओं जाति। पंत-प भि वे हरू।

पंदर-सी पंदा सरह । प्रक्रिसंतरम-प्रसि । (वेलेस ऑफ पावर) प्रतिग्रंही राष्ट्रों वा राष्ट्र-समझों है बीच गुटनंदी आदि द्वारा स्थापित को बढ़ी शक्तिको देशी समानता बिसमें कोई भी पर

रपरेते भवित प्रवक्त न होते पाने । सगना -प• हे द्याद्रमः विवाह पद्या क्षानिनी रस्मः

विकास । प्रतम्पु-दु [सं] वह विसन सौ यह किये हों। दे मुल्मो। सन्दर्भ (शस्) - अ [सं] किसीके किसे वा कर गर्ने प्रत्येक प्राप्तके अनुसार, एसके खब्बोका कीक कीक अनु

साम करते हव । सरदावकी-धी [धं] किसी कथन या रचनामें प्रयुक्त धन्द्रभम्ह ।

समञ्जेब-५० (सं०) द्यांतिकोट, स्वर्ग । भ्रय्या-सी [सं] श्रीरगिवशास बोधाने किय निर्मित

रावेंको चन्या ।

चरषा-सी मपमस्त्री (कविमि)। सरबङ्ग बहोपाच्याय – ५ अवने समब्दे सर्वेदेव वगका

भौजनासिक (१८७६-१९१८)। रचनार-देवरास चरित्र होतः भीकांत साहि ।

घरता-सी॰ वाय क्लानको विया, तोर्रवानी (सविमि)। परमाधारमी-भ धर्मको बबदने। सरहसुभइयम-दि [स] त्रिष्ठकी बाक्युवारी सनि

बित हो अतः जिसमे प्रतिको सभावना स हो। सराफ-प्र• हे 'सराफ' ।

धादवा-प स्थान वसून करनेवाका सरकारी कर्मचारी "रास्त्रमा शहता भाषा ध्यमा भग्न के वया -श्य :

श्रीवनस्य । **घाषाकार्याक्रय**−प [सं] किसी व्यापारिक शरका वा

बन्द संरभाका वह छोटा कार्याक्षम जो प्रधान कार्याक्ष्मके यातहर वा बस्क नियमभने हो।

सानीका-दि श्वाभदार, रोदनाका ।

वापना-स कि शाप देना- मारत धारत पंरव

ष्द्रवा । पृत्रनीय द्वित्र गान्तवि सेवा"-रामा । पाध-सी शस्त्र, एक तरहकी नरही (क्षिपि)।

सिविदा-पु (स॰) इन्द्राट ध्वति (सावेत')। विश्ववित्र-पु दे 'विश्ववित्रित्र'।

धिकरम-की एक तरहकी बोहागाड़ी ह सिकारा-प कस्मीरी बगको कवी मान जिसके वीचमें

धायादार नैडनका स्थान होता है (छेबार)। शिक्षासास-त [सं] शिक्षाविधिका विवेचन करनेवाका যাৰ।

सिरमौर−पु सरदार अंड व्यक्ति।

विदोस्ति-दि [सं] सर्वभेडा

विकाम्यास-पु [d] (भवपाविक्ये) बीवका प्रश्वर परदुसक-पु सोक्दो भगार ।

सराबर । डिस्सारोपण-प॰ चि े दे॰ 'धिकान्यास' ।

शिक्षग्रह-प्र, दिक्षासास्त्रा-की [सं] पर समरा प्रवत वा स्थान जहाँ भावियोंकी हैएरेएमें, होट क्यें रदस हो ।

दिश्रमा—सी सिंशी सक्षमनसाहत सीवन्य सम्बताः

हे मकर्मे। शीर्वतां-सी सि कियताः टय-राम शेना । जीर्चस्य-वि सि विशेष्ट्यामीयः पोटीका प्रवान ।

द्यीक्रजंग-प मि । (भारदेशिय हि सॉटस्ट्री कोफ्र) किसी कियारी या जनतीके साथ अनुविध प्रेक्षण । द्यक्रिया—अ फिर्हो बन्बबार दे सक्त्री।

द्याबर क्राध्य-प [सं] (नैट प्रॉफिड) क्रागत या एक सर्वा कारमंद्रे बाज शोनेबाका काय । ज्ञान्य दे 'श्रवहा । र्श्वनारमा≉~स कि सत्रावा, भृषित करना सँगारमा ।

र्श्यारिया-४ श्रीमार करनेवाचाः नप्रकृषिया । होक्सपियरः विकियम-प्र थर्मेनोदे सबसे बहान करि । इ होने १५ बारक किये हैं विवर्तें से कछ ये है-अकियम सीवर मैंबरेब यर्नेट बाफ बेनिस बैमसेट

(868X-8888) I श्रीख ०-प धरन नरही (क्रनिमि)। स्तोध्यक्तीसक-प्र [सं] (मृक्तीबर) श्लोक्यपन (मृक्त) पर

कर वसकी महाज्ञारों कर करनेवामा कर्मपारी 'पैस्प बायक' । शाभन∽प्र भि विश्वसुरु महन्।

होच = न्स्री सुदि (स्ट्)। इयासप्ट-प [सं] विचाक्जोंको प्रत्येक ककामें रहने

बाका वह काणा तस्था विसवर स्नरिवा मिडीसे क्सिकर अस्यापक यांत्रत जादिके प्रश्न विद्यार्थिकोने समझादा है। इयामाप्रसाव मुक्कोपाच्याध-५ वंबाक्के कर्यमंत्री. हिंद महासमाई शब्दश्च तथा स्वतंत्र मारतको बेंगीय

सरकारके छ्योगमणी (१९५ में) । क्यमीरमें नवरवंदीकी हाक्तमें स्त्यु (१९ १ १९५१) I असदान-५ [सं] सरक, नियानन कुओं भादि ननाने तथा सार्वजनिक दिवते अन्य कार्य कारेके किए कोर्र वारिमामित व केंद्रर रहेच्छाने अपने ममद्रा दान करना,

मिर्माणकार्थमें सबयोग बेमा । भ्रमप्रमुख-९ [सं•] दे 'दो(मैन । असिक न्यु [सं] शारीरिक भन कर रोनी कमानेशका, मेडनतक्य सम्बद्धः -संघ-पु दे भगसंगः। भारा-द [तं] कोई काम चीपर कर देना, <u>क</u>रे दगते

बरवा (स्व) । क्राधना≑−स क्रि. यदाशा हपद्मामा । इक्कीक-वि [सं] शिक्ष समावनें दिखाये या भी वाने

योष्य सम्बोधित दे मुख्याँ। इतेतांग−वि [d] विस्के प्ररोरकारंग सकेर हो। गीर वर्षकाः गौरांग ।

मरनाः बल्पा परमाः नगीतः राधि वा उत्तर प्राप्त करमा (T) उग्माची(यिन्)-वि॰ [री॰] एउमे, सभर्ते। महतेशका। उत्मित्त-वि० [मे०] एडा हुआ: एडमा हुआ: कुक्-वैमक्से बदा हुआ। उद्धार (पिका हुआ। बयाव(हुआ। उत्पन्न Bull: प्रक्रियोल: पश्चि प्रानेवाका" क्रेबा: चैलाया प्रमा ! उरिपति-यौ॰ [मं] वठान कपर लहना उन्नत होना । बरपर-५ [सं] पेश्के फिलकेसे निकलनेशका करावार रस गोतः इपरा संपत-प (सं०) पर्या । सरपत्तन-१० सिंश केपर चडना। क्रवर पंटमा: १४ना: बरमाः सहक्रमाः फेंग्साः ब्रह्मक्रमाः सम्बद्धि । उत्पताक्र+वि० [सं] का त्रोहा क्यर किने हुए थी। वहाने इप क्षेत्रिक साथ । उत्पत्ति—सौ॰ [र्स॰] बग्मा उत्पादना आर्थाः बग्मरथानः *चञ्चा प्रतर्वेग्मः मरितल अवण करमाः सरिः वरमः कपर* यहमा। साम । -केतम - बाम(मृ)-तु अम्मरबाम । उरमध-पर (सं.) अभागी, बरा वा गरता रारता भरका द्ववा व्यक्ति। उत्पधिक-प [मं] नगरमें इवर-उधर आहे बार हुए क्षेम । श्चरपञ्च~वि • (सं०) जनमा दुसाः वनमः द्वसा । ~सुवि;~ वि चतुर इस । - मश्री(सिन्)-वि वो छानेमस्की ही फमा सत । -विमाशी(शिम्)-विश्वनमते ही मर बातेशका । उत्पन्त-पु [एं•] कमका मीन कमका बुमुका दिना साक क्ति द्वर अन्नम्ये गाँठीः गाना । वि. श्रीण बुनका-फाला । -राभिक-पुरु बंदनविहीत । -पश्च-पुरु कमनका प्रशा महस्रमः भरमका दिवका ची । प्रवका चाक् । −प्रवक्र∽ भीर फलका करु । ~सारिका~गी+ दशामा तथा । द्राधिक्रमी∸सी० (६०) कम्प्र-प्राप्तित शहरः कमस्या গীখাঃ হয় কবা। क्रपमन-पु॰ (सं०) शुक्रोकरण, संधितवा। मानी छानना। साह करनेका बना हशस भविषर थी विकरणा । उत्पाचित-दि+ [ध+] अप्ते तरह बदाना वा परादा gur I कत्पाद-पु [मं•] बरावनाः जन्मृतनः जन्मे माद्य बरमाः बान है लोकर में शाय थेश होना है दत्पादक~वि [मं•] त्याक्ष्मेवाका । वु कामका एकः रिग । बरपादम-पु॰ (तं॰) क्याहमाः जहन्मुक्ते पादा करना । उत्पारिका-सी [र्र॰] केल्प कर्या एतः। शि॰ सी॰ षराधनेवासी । ज्ञापादित-वि+ [मंत्र] जारी कारावा प्रभार । प्रसापा द्रेणाः रिकामनस्पन । उररादी(टिम)−दि० [न०] क्यारम बरमेमका (नाव समाप्र(नने प्रपुत्तः) । कत्यास-पु [म] अपर कामा, बरममा: मरामा रामानः रिशन्तकः जाद्यागिक धाना। लोको लिए निवर्णना ।

कानका एक रोग । बरपातक-वि मि] करपात-अनुबा कपा उरवेशना। अन्यह करिया बातवर 'द्रास । उत्पातिक-वि विशे अधिप्रत (वैशे) । व पार्ता(तिमु)-दि [मं] अलाह करनेग्रम पर-फाती । उत्पाद−विनि•ो विषये की स्वर कटे हो। प• क्रय-उत्पत्ति । -प्राय∗-सयम -वि॰ शिक्षाः विदेश रही । उत्पादक-वि॰ वि] पैरा दानेगुना । पु॰ मृण दार्च धारम नामश्र बहिस्त पञ । उरपादलें नव (सं•ो परा बरना सदवाता। जरपाविका-सी॰ शि॰ प्रश्नी हिल्मीरिका प्रेनस्रीति पतिकाः धवः मानाः दि श्री उत्तव कानेशस्यै। उत्पावित-वि॰ सि] प्रत्यक्षः उपयाना वैदा दिना क्षमा अध्यानी(विम)−ि। हिं । अध्यक्त करनव का स्थितस्थेते उत्पन्न भाग । **उत्पासी~लां० [र्ध•]** म्यारव्य आरोग्य । अस्पिज्ञ−प (शं•ी स्ट्रीयः प्रथम । वर्तिकह वर्तिक**स**्विश्वस्थानीय सिंगी सुद्धा दिया होगा असा वरिवतः स्वाकुतः । जन्मीक-पु (सं) दशमाः वेरताः स्थलनाः यह गामा पेमा प्रस्म । उत्पीदक~(व (पं+) बनानेवाकाः मतानेवाकाः। उत्पीदन~पु॰ [पं] दरामा शनाना/ मुत्म दरना । ऋषीडिल~दि (सं•] दवाबा सताया द्वना सम्बद्धाः उत्पच्छ-वि [सं] जिमक्री ईष्ट स्पर् वर्ध हा। इत्युद−ि [न] सिकाहमा। ब्रह्मदक्ष−५ (स] कानड शहरो विरममें शेमेरान एक रोग । ढ प्रावक्र≁दि॰ [सं } शेमांदिता यमध । उपाचय-दि [लं] अविराम व्यविष्टिय । क्टमम-वि [में] प्रकाश विगेरमेताला। ममार्चे । उर्र श्वदश्ती हुई माय ! उध्यमच∸पु॰ [मं॰] वर्षक्त । उप्राप्त उध्यासन-५० (गं+) हुन्याना वेंदशा रेंदी। रिश्तमधीः दशहरः भगगः सङ्गत्तिः भाविद्यस्य । तकाक्षक-नि [म॰] देयनश्ममतने निभार करमेशणाः जन्मक्षण-तु [लं] यदर देखना एकारना हुन्हें 40(मा । ब्रख्येसा-मी॰ [म] प्रशासमा, अनुभामा क्रीपा न्या बीजना। अर्जा-न्यारका वय नेर विगर्ध प्राप्तन वर्षारे शन्तायारे बहुएए अस्य बरगुरी करतना की जायी र ! a द्रव+± [में] द्रशन म बल्दबन-पुरु (तर) कृत्या प्रक्रमा प्रको तप, ध भारिका कारका भन निवासमा । क्रवाल-१० [र] है एएएए छ्रमीय परंत ! बुर्गुस्म-विक [६] मिला दुधा बूग्या विक्री हा अनाम दिक्त दुशाम जिन कोवा प्रभा दिल्कारिक (१४) र बुद क्षेत्रिय क्ष रहित्व । मीपिक बरता (मुक्तानी)। गुराबात बयाव बयावा | प्रामीत-पु [शंव] रेन्द्रा शब्दा वावी क्रिनेवद प्रवृत्ति

Ħ

संकीर#~वि संकीय।

संकेदिस−वि [सं•] इहारा किया दुआ; दे मूकों। संबद्धमण-पु [सं] एक स्थिति का अवस्थाते एक्तिस मबद्धा दरतांतरमा देश शक्ये।

संधिष्ठीकरण-प्र• सि । विसी कथा विवय आदिको संक्रिप्त करना संदेशका

संक्षपण-वि+ (सं) संक्षेप करने वा क्षोरा कर वेजवाला दे मुख्ये।

संक्या-का॰ [छ] किसे यन पत्री वा सामविक प्रधादि पर रिया गया ऋगांचा किसी सामयिक प्रवादिकी विश्वित सस्यापा अभाषकाडी प्रतिः वे म्डन्यैः

संक्यामिभाग-पु॰ [सं॰] (स्टेडिक्स किपार्टमेंट) अनय-मरण जरपदम भादि-शंबंधी प्राथाणिक कॉक्ट्रे तैयार बरनेशका विकास ।

संग-को॰ दे॰ 'खेंप --'विषे संग सो कोरि कारै करवा'

सम्प्र- वि (सं) ठोक हरवसे बैठने क्या वानेवाला दे॰ मुख्यें।

संगी**ठक-**पु• [सं] संगीत नियाका काता, यायक वा बादक ।

संप्रद्र∽5 [सं•] पद्ध शाथ श्वश्चो को द्वर्ग कराएँ। संबद्द≁प [सं] दृतीको सदावशासे मावक-नाविकाका सिक्नाद मुख्ये।

समात•-पुरंग साव। म॰ रूप वा सावमे-'मुओ वडे सम्बर्धेष संबन्धा 🗝 ।

संचक∽५० संबद दश्तेवाका ।

संचारिका∼सी [सं] दूसी। दे ग्≉ने। संचासक-प्र [सं] कारपान भारिक डोक्स पनते रहने सायम रहमसा प्रदेश सरमगरका ।

श्रीजममा+-स कि एकत्र करमा, बढीरमा-'पक्री पट संबमत बसनि बहुक क्षेत्र संवादिन'-बन । संबोधन−दि [तं] श्रीवनश्रक्ति देनेशणाः

सेंद्रास+=धी ग्रेंड्सी (१)।

रांताम-नि≲ह~ड [सं] है संवति-निधेष । संतुक्तम-९ [सं] आविद्यात श्रीक वरावर बीमा वा

रखना हो देखी वा प्रशंका नाह नरावर रखना। आन ष्ठवा स्वयंमे, श्राबात निर्वातने सामजस्य रखना ह संतुतिहरू-वि [सं] जिसमें स्तुक्त की। निम (को वैभी। पद्यों राशियों बरतुओं आहि)का नार नक, फैलाव

मादि बराबद रहा। यथा ही है संबास-त्र [मं] व्यक्तिको स्थानवासे जारक यद

(91)1

संबंध-५० (सं) नियम्। हे सबसे। संस्थ-न मुनेद्रम- यहा आधार समझ सुद्ध नदद्धे -94 1

संदर्भे−9 [मं] टेस, पुरतक धारिये भाषा दुवा प्रतंप विद्वा क्षत्रम हो।

संदेख-५ [मं] किसीक बास सेमबाबा गवा महश्वपूर्ण

भादेश या समायार ।

सर्वेद्वारमञ्ज-वि [संक] सर्वेद्वपूर्व, संवित्त्य । संधि-सी॰ [सं] दो ग्रम्बंद्र साथ साथ साथदर २३% अतिम और दूधरेके प्रथम वर्षके मिक्रवैसे होनेश्रका विकास देश मध्ये । -सहीश-सीश संपर्वक-'सीमा-सुमेक्की स्थितमे क्रियो - यम । - भेग-पु सुरुक्ते यते की व बेमा । - बिच्छेब-पु॰ समझौता धोरना बा <u> २ रनाः म्याकरणके सचित्रतः अभ्योको भवत अस्य करनाः ।</u>

सम्बास-पु॰ (सं॰) हे॰ 'सन्वास'। संन्यासी(सिम्)-५ (सं) रे॰ 'सम्बन्धाः ।

संपत्तिबान-पु [सं•] वम-संपत्तिका दायः मृतिहोसीक्षे भूमि दिकानेका आंदीकन एफक बनानेके किर बन्ध धंपरिका बाम देकर सब्बोय करना ।

संपाधा-त (सं•) वह रक्षात्र जवाँ एक रेका इस्रपंते सिष्ठे वा कारकर जाने वह आव ।

र्सपावना - स कि पूरा करना और करना - विविध भव संपति संपादत'-स्य i

संपि≉−क्की श्रंपा दिक्की।देश्मुक्षमें ।

सीप्रकृत्य-प्र [सं•] दिसी सठके अनुवर्धवर्थोका समृदः इंग् मुक्तें। -बाल्-प्र डेनक अपने स्प्रापको से विशेष बहरत देना और कम्प संप्रहायवाकोसे देन दरमा । -बाही(दियू)-पु वह बहुर विधारीनामा श्वकि जो बेबक बार्च संप्रदायको मेहता प्रशान करे तथा सन्द शंक्रपायवाकोको देव समझे (कम्बूम(क्सर) ।

संबोधन-पु [तं] यह सध्य विसर्ध किसी हे प्रकारने वा वसरे कुछ दहनेको बाद स्वित हो। है। सूबने १

संभरके संमरेस=-९ १६मीरामः

संयुक्त-वि (संग्) किसी कामको संयुक्त कपसे बरनेनामा (-श्वादक)। १ मूकमे । - सुद्रम - परिवार-३० वर इद्रंग किसमें भारत विद्या, पाषान्याची, मार्थ-मदीज आहि विकटर साम साथ १६७ हो ।

संबोश-९० [बं] बेबी बेबिबादा विकया देश मुख्ये। -श्रंदार-प श्रमाश्सका वह यह किसमें मैमिबोके मिक्रम भाषि-संश्री पाठीसा वर्णन पीठा है।

संरक्षक-प्र. [स] (प्रोटेश्यम) विदेशी यागदर कर भारि सताबर है है। बदीय-ब्बर्सायका बाहरकी बहुवित मित-वीतिवासे ववाया !

समाप-त [ह] भवने भाग बदवा वा बहददामा (क्योज़रायको एक रक्षाते है। मूक्रमें।

साविधानम् – पु । (व.) (व.) (व.) (व.) (व.) (व.) जानकारी रखनैशामाः हे । महिषानशाधीः ।

संविधानसाखी(दिव)-९ [हं] (वंशिरक इन्दिरर) संविधानका विद्येषक प्रदर्श बारीकिबीको समझदेशका

संविधासम् । संसारपात्रा∽सी [सं०] हसारयं रहना चौरव विदानम विषया ।

र्मसारी(रिज्)~५ [सं] सरारको सरवामे विश्व और वा म्बरिदा दे मुख्ये ।

समी•-१ यस प्रम (४)।

सम्या-की [त] पादिक, देश्वरिक, समाविक वानी-

बर्कन उर्दक्ति-वि [त्रि] अधेदा यहश्रामा ।

तर्दद्वपास~पु• [५०] यह तरदक्षी मडली। सपद्या व्ह अंद । बद्दर्शत-पु (संग) गर, विमारा) उर्दर-पु॰ (सं॰) समामार, नागा, सक्तः सम्बनः न्यापारः उदकाधार-पु॰ [हं] दीय, क्व मारि। यग्र मारिके सदारे जीविना गाप्त करमैवाका । वि॰ सीमा-उदकार्थी(थिंग)-विश् [६] प्यासा यह क्रामेरमा। तद पर्देपनंशासा (समाधार माति)। व त्रिसद (इपदे) उदकेषर-वि [र्गण] बनमर । ट्टे बॉत न जमे हो। उद्देविदार्जि-वि॰ [मं॰] पामीमें सुवाबा पुत्रा अर्थ र उद्देतक-प्र [सं] क्वांत, समामार, सबर । अमृतपूर्व असंभव । उर्वसिका-धी॰ (सं•) संतुष्टि तृति। उदकेशय-विव (संव) बहर्ने सोने या रहनेवाचा । उर्वहम-रि [६] सीमाके बाहर रहमवाला । बदमोर्जचन-५० (सं•) पर्गामा वरः।। उद्(प)-पु॰ [धु॰] यह (शागारणतः धनासमें वा 'उद्द्र' उद्देशेत्र-पु॰ (सं॰) बक्रोरर रोज । के निरम्भपनि स्वबद्धत होता हो। –कीर्ल –कीर्य-पुरु उन्देशम-पु॰ [मं] भात । महास्त्र ।-कुम-पु वानीया वा वानीमें महा पहा । उदक्ष(भ)-वि॰ भि॰] छश्रका। वस्त्री। का --क्रीष्ट--पाध-तु पानीका भन्। -- वाप-तु• वसका कपरा छत्तरको और । गर्वतः।-चमस∽प्र पानी योगैका विकासः। -ब्र-दि० उद्द-ि (धं•) अपर शीया वा उदावा दुमा उस बढ़ीय, ब्रह्ममें उत्पन्न । –धान – यु यहा; शहक । –धि – वहा दुशाः बक्तः। पु॰ दै॰ क्रममें !-प-पु॰ नाव !-पाग्र-पु॰,-पान्री-उत्बद-वि [र्मण] अकरभा वक थाइनेशला। हो। बदा, तक रसनेदा पात्र । -ए।म-पु: कुर्वेद्धे उद्देश-की [र्छ+] रबसका गी। उद्गरमार्ग-भ॰ कि॰ निरुप्ता, प्रदर होना। बनरमा। पासका गराः इ.मीं: कमेंरक्षः पामीका छोरः यदाः तालावक उत्सार•-दु• दे• 'दहार' । निवटको भृमि वा दोला। ∼पुर∽पु द्वीता −प्रद− पुरु असञ्जाबन ।~पहरू-विरु जसमें तैरमेवाका ।~विंद उद्गारमा =-- स् क्यानमा अ श्रिक स्दार क्षेत्राः -बिदु-पु पानीकी देंद । -आर-पु वन दोनेवाला, मक्द्रामा । वारसः। –संय⊤पुरशोधं नादा 'नाद्यानसः। –साम-उद्गारी -- वि उगलने दकार सेनेवासा है उच्यू−'बरक'का समास्यत रूप ।-अद्वि−दु दिमानर र प ,-मेडी(डिस्)-दि॰ बदुमूत्र रीगमे शस्त । -बाप-प्रश्रीकी यह देनेवाला स्मीक ! -बास-पु प्रहरू -अयम-पु॰ -शति-सो वत्तरावय। -द्वार-शि निवासस्थाना समाधनके किमारेका निवासम्बान । -याह तिसका द्वार वचरको भोर हो। -मृम-ह -मृमिन -पु॰ बाइस । **-पाइन्-पु॰** बसवाय । **-बीवध-पु॰** न्दी प्रविद्याक जमीन। पानी दीवेद्धी वेदनी, श्रीवर ।- झराय-पु॰ अक्रपूर्व पर । उद्गा॰-दि॰ ६ 'परम' । उद्य-दि [र्थ•] कपत्की बठा वमरा दुशन गरण -शब्-दि महाया हुमा । -शित्-पुर भाषा पानी मिका तुमा महा ! -इरख-पु वानी शीयनेदा वात । क्योष्ट्रका कैया। उन्नवः प्रवधिवा निद्यालः समग्रा अपने -हार-चुनाना मरका बंगा सर्वेदरा है है। बन्डां-पु दे॰ चर्य । उद्यहनार-म कि यहर होता। तरद−५ [सं•] पानी । -कर्म(म्),-,शार्थ -दाव-क्यूबारमण्यु देव 'उद्यासन । डदचाटना॰-स कि॰ प्रश्न करना सीतना I म देश दिश्यक्रिया । -इत्तु-पुरु एक जन जिएमें क्रक्-'उरब्रेका सम्भातन इत । -मुख-मि प्रशी महोतमर पेक्स औद्रे मन् और पानेपर रहना दौना है। -क्रिया-मी रिनरीकी जरू देना, रिनृनर्दगः -क्रीप्टम मिमुग।-धृतिक-९ दे 'उरागृम । मधु प्रहत्रोहा । ~ताइ-चु साव श्रमा गोना बर्ध•~प• सूर्त । उद्यान्य (अंश्रे समुद्रः यहाः नारमः।-सम्या नत्रम क्ताना ।-तिरि-दु॰ जकाशयोगे दुर्ग प्रांत । - वरण-न्द्री रहमा !-बुसार्-व क्द्रदेशता (2) श्राम पु । नुपुत्राः, पनपुष्पाः। - ए - वृत्ताः(मृ)ः-वृत्तिः --मा-मु देश्र, महिन्द्र : -शम-मु॰ गुनुष्त्र । श्रायी(यिन)-वि॰ पिनरीकी पानी दैनेहण्याः प्रशास ~अभाग ~वस्ता~श्री पृथी ! ~संसव~दुव स्टरी भिक्षारी । -घर-पु वारन । -परीक्षा-सी० वढ अगर !-सुष-च चंदमा अवृत ग्रंस वर्षः !-गुक्त" प्रदास्त्री रिश्व परीधा । -प्रतीकाश-दि० वसीया पन भेमा ।-बिब् -चित्-दुः पानीश्च बृंदः ।-शक्ति-स्पेः भी नश्मी। रोम पूर बरगेडे निय अनिमर्वित वन छित्तन।-साक-उर्ज्य-नि (मेर) व्यामाः ऋरीय । पु बनीयें पैरा शेंद्रेपान शाह । -शुक्-रिंग मान उद्भवा-भी [नं+] धाम ! मशाबा दुना। - स्वर्श-पु शरीरके विजिल अंगेका अन अनुम्यु~िव [तं] व्यासाः वश्मे वश्नेरामा । वर्ग्यात(वर)-५ [क] समूर । स रबारे बारामा" शहब प्रतिका आहिके पुत्र 'उनका श्वा सन्बर्तन-पु दे नदर्गम । भाना ।-हार-पु॰ धनमरा बदार । उत्हम् १-वि जनत हुचा सूचा वहारिता हो हार जन्ममानिक-ते दे , स्थारि । इट्डमा •-प्र कि (असाहातिके) उप्रचल कुरनाः वर्श क्ष्म वर्द्ध स्वमा रहे । उड्बासमा~छ॰ कि दिनी स्थानी हरा ध्वारिता CREMI

उक्तहना ।

1045 को दक्ति स्थापित समा या समिति। विश्वित सिकार्ती. विवयोदे अनुसार स्परित समाय वा भंडका चिरकाक्स पन्नी भागेतानी कोई सामाधिक परंपरा या प्रभा (असे विकार): है मजरें। धस्यान-प [सं] शाहित्यादिकी बन्नतिके किय स्थापित मंख्या है। मध्ये । संदर्जा(न)-प (सं•) स्थान बस्क दरनेवाका दर्भेपारी-'राज्यको जगाहोक किए संदर्श आने -सम् । संब्रिसा-सी॰ (सं॰) (क्रोड) अधिनियमी, विविधी आदिका मनदृष्ट संग्रह । सक्ती - न्ही । है । मूळ में। अवरवरती - विश्व किंपिय मीतर जो असती सकती मही हाँ पर की विदे नां-सकि की । सकारात्मक-वि [सं•] सहयति-सूचक, स्वीकारात्मक । स्करि-- भ+ कुछ बस्दी। देन मुख्ये । सदार - दि परा, भोदाः हेन, अम- धसर सहोयङ र्मब्र'−समा । सब्दर-मी॰ बटिनाई, विश्वति – मुझ पै परी वर सब्द -सवान । सग•-वि सवा, वदसा। सगरां-प सामरः शकाव-'बाबे व बादक समर सोवा-**पगुरा−वि॰ विसने गुक्से दोका को दो** । सगाय-प सामान होनेको गारी या ठेका निसे भारमी

धीयते हैं।

सम्बरीग-वि॰ सी एव, शारी। सप्रंद+-वि सपरिकर ।

सङ्गाबार-वि [का] इंड वाने बोध्व, दंडवीब~'फ्कड सि समाने समादाद है इस । सरिवा~की पडयंत्र रचनाः वे मुक्तें। संट॰-को॰ हे लांकि'- क्रिक्र मी बढ के संड शावि

क्षें - बल सत्तपत्र+−द कुमक १

सवर्षासा-प गर्मरिवतिके छात्रवे मासमें दोनेवाका बरसकादे मूकरी। सविमान-की चीतेनी माँ।

चर्ची ॰ - पु सत्त्रका अमुवाबी - राजा रंकः वर्ता सर्वे

करत सीरे स्थवनार'-रामकलेगा ।

सरोस#—सी फुरती, भीमता। संचर्मी =- की सम्भी।

सिकिक-की शक्ति।

सदा-की [ल] पुकार, दश दे सूकरें।

सदुपयोग-प सि । अच्छा छपन्नेन, अच्छे काममें क्यावा कामा ।

सदो-वि धामा, स्टब्स (शद पानी)। सवाध-वि [सं] कुराकुरव-'जी बहाबि मीडि मारिहै

वो प्रमि दोन समाथ – रामा हदे सूक्ष्ये। संविपा-प रेक्सी परका या छोटी बोबी-'समिया परस्य श्री चौकेमें बाता शा -शुनावें का वेतता।

संपरमार्ग- व कि स्तान करता, बहाना (परेकः)

देश मुक्त्रों । सपरसंक-वि सार्थः छठते तथः- भगरत और दशौ भगास जाइ कीं?-पत्र ।

सपराचार्ग-स कि नहकामा स्तान करासा।

संबार, संबारा=-प्र दे 'खरेरा'।

संयोग-स्त्री सनीह, छनि, चित्र- बहुर क्तिरे हुन सनी क्रियत थ हिन उहराय'-रसनिधि ।

समया-वि धमम, परा, स्वा

समराईं - सी समताः नरावरी । समत्रक=-वि समान, सर्य- समयह प्रेम देस सम-

तका निषा ससय - वि० समर्थ ।

समप्यम=-५ हे 'समर्पन'।

संसदाय-प [सं] निवमानुसार गढिन वह ऋ।पारिक संस्था विश्वमें वर्ष हिस्सेदारीकी पैजी क्रमी की जिल्हें अपने हिस्सेंभी पूँजीके अनुसार कामांस पानेका हक होता है।

समसर+-वी+ नरान्धे- भीतम रूप क्याक्के समसर

कोई माहि'-श्वन । सम्मोर ७ - स्टी ॰ श्रमसे ६ उच्चार ।

समाध्यस्त्रसारण-ए (सं) शकाधवाची द्वारा समा-बारोंका प्रशासित किया बाला ।

समाजी~प धार्वसमाञ्चे सिद्धांतीको माननेवाकाः है मुक्ती ।

समामांतर-वि सि 1 (रेपार भावि) को जिस्स समान श्रंतरपर रहें। साथ-साथ पकते काम करतेयाका (-Hr. 42E) (

समाविद्य-दि [र्थ] विश्वका समावेश कर किया यदा हो. वो मिका किया तका हो: है मकर्मे ।

झमास-प सि । संक्षेप-'करि सब परित समास वसाने - समा हि मुक्ते।

अग्रिति-को [र्थ•] विशेष कार्वके किए ग्रस्ति बोहेसे बादमियोंको समार दे मुक्ये ।

समञ्जन्तंबन-५ [६] बनेद पंदी वा विवर्तेकी झान-बीना दे मूखमें।

समझी-वि अग्रहका अग्रह-अंबी। अग्रहको बीरसे आनेवाकी (हवा)। समुद्रपर की वामेवाकी (माथा)। भीरक-संबंधी ।

समयत-वि [र्र] विश्वेष स्तरे ध्वतः वै भूक्ये ।

समही व वे 'सम्हे'।

समीमा - स कि समन्दरूपा, परदे वा मेक नैडाना - 'कपरके बंबसे इसरे बंबको समीनेके किए'-मूच । अ कि॰ गिक्सा, अनुरुष्ठ दोना । स कि॰ रे

समोच-- व अनुरक्त होना- 'ननमानो नहाँ भी समोच

धके−यर ।

स्यम्ब-सी सैन्द, संगा-'तुर क्राकिसी तर दिमक. कारे शुकास नुपराज । सम्म स्थन सामेत भर, सर स भाषे साव ~एसी ।

स्यम्बद्ध-वि सम्बद्धः स्व।

षनाः समेग्ना (रिस्तर) ।

उदासिस#~वि धरामीन !

बदासी-तो (बोदयो, क्षित्रता ।

प्र• सम्मासी विरागीः नामक्यापी सास्र ।

हरण्य ।

द्यदामस्मर~प मि | संबरधरनिद्येष ।

जवाबन -प [मं•] वर्षा जीतका एक शेग, काँच गुरुशह !

पंच तीसरा स्वस्ति इंट हैने अनुबाद करने आतिनै समर्थ वह शक्तिमानी राजाओं दिली हरत्व राववर्गे रहता हो। −मिग्र-प थला निज राजा जिल्लो कह सदीयता परन या न बरनेड पारमें निश्चय न हो। सदामीतवा-सी॰ मि दिल्ला वराववा निर्वेशिया । बवास्थित-वि नि हे नियक्त । व निरोधका बारवाका कारासः वद सम्म्यासी की अपना जत सारकर समयर भारिका कार्न परता हो । **स्टाहर-की** धरावत। उदाहरण~प्र• [सं∗] दहना, वर्णन दरना। व्हांत मिलाका बानवदे पीच अवधवी मेंसे ही सरा (स्वा०): आरमः एक मर्वासंदार त्रिसमें होई शामान्य कवन दरमेंदे वार बागांग्य धीरपर कोई बात कही बाब 'एक बीब ग्रामहंजर्में हीत निमन्त 'सरार', येथे भार महागर्ने और सम्बद निहार । उदाहार-५० [सं] मिमानः मंचन्द्रां वार्गिक मान । ब्रहाहिल-दि नि क्षि क्षर क्याना दुशा । जनाहरू-नि [५] कथित विश्वत (अम्बत रहांत दिया यवा हो। खकाश्चति∽न्ती (सं•) जदाहरणः गावर्षमुक्त नात्रवहा क्षपम (सा)। अदित-[4 [4] उमा द्वभा परवकाश मदर प्रवर्धातः चत्त्रप्र; रूपा; स्थाउ । पु दश् तरश्रद्धी सुगय ⊢यीवमा~ भी । माना नाविकांदा एक मह । असिति-सी (मं+) प्रवासायण । ब्राह्मीकाण-प्र [क] क्रवरको क्रोर हेलाता । अक्रोची-रा (वं] उत्तर दिया ! अवीचीस-(। [मं•] बच्छी। उत्तराधिहरू । ज्ञवारय-दि [तुंक] नत्तरता प्रताना रहभवता । वृ सरस्वती मही के प्रशासिक्षण वश्नवाचा देश ग्रहरानी माद्यानीकी कह प्रकारि देशालीय श्रेष्टा क्या भा १ वस मेपप्रस्य । अर्थाप-रि. ति शिक्षांत्रिय । इ. मन्त्रांतर गाउ antennen & fatten ! क्योपिष्ठ -शि है भिन्धिक

उदावती-भा• वि । 'खबीबा मासिक काव-संबंधी एक उत्तरिय-वि शिनी दशायमा । रीग जिनमें पोड़ाफे शाब नकर बादिका साब दोता है। उद्योर्ण-वि मिन् उरिवन अस्य दिया दुवा। इसी खदास-त [सं] तरश्ताः सम्बासः • द्वारा वि• छरोजिनः उदाहः महानः सनितः मस्तन (रण सर्गः विस्ता मन उत्परा रहता हो दिला हुन्ही। उदासीना परानेत हिए) । जबुंबर-तु [र्ग]है० जिल्लंस । -वर्षी-मा॰ वीत्ररः। वदासमा—अ• कि बनास शाना । + स• कि॰ सवा उदरास-प्र• [सं] देश 'उद्याल'। जवश-वि विशे ब्रजाया दवा। विवादिता वेश योग रक्षा गारा शारवाच् आवश्वि । जन्छ-पु॰ [eso] हिम्मा श्रीमा उरलंबमा अस्या। बदासी(सिम्)-दि॰ [६ं] तराथ, निर्देश निरक्त। -शरक्त्री-स्री हरूम स मामचा भागका वस्त्रेका । अहेगर-पु हेर चंद्रेग । अवासीम-वि सिं•ो विरक्ता सटरवा निप्पश । प अन ज्ञवेश्वय-दि [मंग] हिलानेवाला, देवामेवाणा सरधर । मनीर हदरथ व्यक्ति वा. मरेबा: अधिबोतने ब्रायंत्र्य कान्द्रिय उदी जबो जबार-वर दे 'उइप'। जलोशक-यक प्रकारतः लोगाः वृद्धिः प्रकृति- वद सम्पर्क बन बोन्नंत । तिन्दी वर्गन, देहि मानि देन । -राहर वि महार्शित, मकता शाम । - कर-वि मकाछ वार्के शालाः चारवानेवालाः । जनोती -- विण्डान करमश्राताः प्रचास करनगणः उन्नेधि-दि॰ विशे संज्ञ गधवासा । बहुल-दि॰ [मं] कदर भाषा धुमाः गंबा हुनाः उत्ताः बाहर विकासाः के दिवा द्वजा । दत्रता∽सी नि•ी बर्सवेधेर । ब्रह्मार्थ-पर्व सिंग्डे एसी बस्त वा परीहर विश्व स्थ रधे रधे रह समा शे । उद्रतास−(वि. (धं•) वन। बहति-नी॰ [बं॰] बारोश करर जाना। प्रस् मूर्न क्षम । बुब्रस-४० (८०) कपर बाला; बढला मोपे सरा होत (बालें बा)। प्रस्थाना ग्रांता अग्म वर्त्याता दार्गातावर निक्षणमाः निकासः बधनः केराजा संसर् । बह्मम्-प्र [सं] परव परत होगा। बहाइ-वि [मेर] गहरा मबदा मदिशय। द्र व्याप शप्य । ब्रहामा(न)-- ९० (४०) वयमें सामगान बरभेगाना व^{र्}र्य ! खन्नाचा-न्योः [मं] आवा धेन्या १६ भर । जकार-६ [तं] मुंदरे पादर भागा। दमना वृद्धः स्वा बकारः शिलमे मधे प्रदे नातका बाहर निष्टमा पर्ने पाम बार्त व वयस शक्त (संस्ट्राटन) बरना शहला। राज्यः बंदयदेना मनिःयति। प्रस्तातम । न्यूर्व पर गय दशकता स्थीत बद्वारा(रिम्)∽िव (०) रकार मेन वा बाल बर≻ कृष्णाः कष्ट् ज्ञानसम्बद्धाः सहर निकामनेपान्। ३ क त्राच-प्र- [र्गः] प्रगमना वत्रमा प्रयत् भौतान गर्ना निद्रणनाः सम्बूष्णमः । कप्रीति-श्री [60] शामा शामगामा अपने शाबा दर्व MY I

प्रश्रीथ-3 [त] शास्त्रका माम्रेटर हुना शा

में आर्थ

उर्वीपमान-रि [सं] उपना प्रस्य होना हमा।

वहरिया-प [मैं] काम प्रचारण, दीवना असपेता।

सरक•-सी गावा-प्रेत सरकसंग्रे वर संबे प्रका हे॰ महने । सरक्रेंद्र सरक्रेंद्र!-सी॰ एक शाहका सरक्रेनला पर्दरा, जिले किसी औजपर शास्त्रकर सीचनेसे वह उसे जब्द है (पॅटेन - सरहर्शसी, ध्रीजवरी) । सरकार, यह (जन)नाथ-प दिशामके प्रक्षित प्राप्ता पह तथा केएक । बारको एरिकास-संबंधी रचनाओं है भौरियोनेर तथा शिवानी विषयक प्राण विशेष प्रक्रमध्ये हैं (## ECEO) 1

सरप=-प्र सर्वे साँव । सरपिक-त संकि वी । सरधर=-स्त्री देश 'सरबर ।

सरपरना !- स कि उपमा देना !

सरस्रीकरण-प॰ पि॰ ब्रह्मि विषयको भाषास पना देशाः क्रिमी अन्ति या बढिल निषको शरक क्यमें परि भग कर हैमा (ग) ।

सरबंग-५० सेनापिः फोटवाकः। सरिच = ची सरिता सती। सराहरक-विक साथ २४॥ ।

सरीद्र≉−औ सिक्टर, दिक्स⇔ गरधे क्रिय वन कर्नद **द्धरीर्धान'−पन**ा

सक्की-वि (मधर्म) बारर गृथित इस्तेवाका एक विशेषध बिरान्य प्रकीरा भानेक स्वर्गात्रमीचा साथ एक. साथ बातपर दल सबद किए सामहित रूपने हैंबब एक बार, आरंबरि, दिया जाता है।

सर्पसम्मय-नि॰ (एं॰) छन सरस्वीची राज जिसके प्रवर्ते को सब भइरवीको की मध्य को।

सदसम्मदि-धी॰ [सं] स्व(स्वरूगे)की शोष्ट्रति वा TIG !

सबतोसह्न-वि [मं] विश्वते हारे सिंद बूछ जानिके बाह मुँद हो। 🛨 हिर, मूक आदिका सैकाना आया। दे मन्द्रा

सर्वागपूर्ण-वि [धं] धर वरहरे वृर्व । सर्वेसची-वि॰ विसे किसी मामकेमें छर कर करनेका

मधिकार हो। नर्थाभिकारी। प्रधान कर्तापर्छ। सर्वोदय-५० [में] सर कोबीडे काबिक नेविक सामा-

जिस प्रशासके किय प्रशास समा कारण प्रशासक गर् श्रांदीक्य १

सर्वोदरि~म॰ सि ी शबसे क्यर या बबकर ।

सकाय-मी भागुनी एर समार्थ।

सम्बोत्त-५० एक तर्दका मारा यारधीन ह सक्तान्त्र पूर्व भारतीयका कमरतकता एक प्रशासक धक्या ।

मारमा•⊸स• कि सावना, द स देना ।

सपाक पिश्र-प (६) इत्रतपद्वत दिलावा नानेशका यह चित्र जिसमें साबोर्ड बोकने माने आधिनी बाराज भी लगारं हे शोकपर ।

सनाती = न्यो १शाती नश्रत्र न सरदाश अन प्रापति FF- PRESE FRIEND सराज-दि [में] इस या भारतीने पुरु, श्रमनाधिकः ।

जिलने प्रसीबा प्रयोग प्रभा हो । शसद्ध - भी विवाद ।

ससिरिय +-प्रश्रीत व्यवस्था मार्गा प्राप्त मार्गा मुक्त श्रद रिय किमे फिरी धाम नमक र

श्रसित्र । - श्री श्रिक्षित कल - बहि जारि चैत्र दिन कामिमी रिति ससिहर किम जीविवद'-रानी।

ससीकर-विश् महोब भोकरंग्य । स**ह अस्तित्वका** सिर्वात-प विशिष्ट कांड को परिवारवेंस्त्रे वह राजनीतिक शिक्षांत वी वह स्वीवार बरता है कि विशिध महारकी प्रवासियोंने धासित और विभिन्न मधारके शिकांतीश अनुवाधित राम एक दमरेके माथ भांतिपर्यंक दर्ज सकते हैं, सहमायका रिजान । सहायसी(सिंग) -वि (सं•]समानवर्गराष्ट्राः हे• मक्से । सञ्चाप-प सिनी (की सीआरत) हेन सहस्रोत्सर

विकास । सबसोज−प [सं•] (विविद्य जातियों, श्रेनियोंके) वश्यसे आरमियोंदा एक साथ बैडकर मोडक करचा। सहस्रकर 🗝 पर्व-'पूर्व दरशे शहरूद मानिया

तोदि, दृशी पाइसी सबसवाद आनियत है'-थ । शहकारव-प , सहकारवी-सी (मेर) प्रशेष वर्तीस AUU I

सर्दिशेकी ॰ न्यो । यदी ।

स्पष्टेनी =- वि की अधिसार्दणी-'दीकि भनी निर्वि देवि नवान व देक्षि बबी शेषि को शेष्टि भटेशे'-पन धिरोद **⇔ संदेतस्यण**ी ।

प्राष्ट्रीकी - स्वी + स्वरी ।

क्षोतकाविक्रमा-बी भि । भाषश्रीक शेवेब मान देवल अपने संतराबचा दिव जाएना और उमरे संप्रदाब के हिलोको वरेका बरनेको वैदार रहमा ।

शाक्ति≠−धो धर्षिः। साधारता-थी॰ (सं] परे-किंगे बोनेदा यात ! -आंदो-ळन-१ कोगीको साधर यमामके किर भारत दिया

±का अभिपाध । ब्राह्म = - श्री = प्रांति - 'कम रूप साना मह कर्ने मिन्रि वदी पेरान्द्रेरी न्योध ।

साधरबैन-९ सस्तरः रुष्टाचन ।

श्चायाक-इ नाम बरध्या-'साभा वन शरिमें'- पश्च । शायबा÷~प श्यान धापनेथे निमरे बरि हेरि बरेड करें हरियोध्य रोवे -भाषति ।

ध्यमार-न [मं] नामार्ड साच बहसा प्राप्त दर्द RQ I

सामानदान-५ (कार्) (भीरर १६वारिमे रीज्यो भीर बनीरे सामान रहानेको प्रवह ।

सामान्या-स्री सिंशी बार्शयमा बहबर ।

मार्रगहरण-पुरु छ। ६वर, विष्यु ।

सार्ग-की॰ वाकत रहादामा कीर वॉपनेदी प्रवद-'बहानोको सार्वे वॉबनेडे बार सम्बोते साध क्योड ह्याचा - मूच । - पुरु वधा ।

साक्षर-पुरु बैरु मृतनी हानु लेवपदे आचारपर दनी एक गानी ।

उद्योतित−दि [शं•] प्रकाशित किया हुमा। प्रश्नित क्षित्र हुनाः चमहोका । उद्वाप-पु [मं•] ज्यरको भोर बानाः भाषना वहावन। उददत−वि [र्|] भागनेवारः । उद्यक्त्र अंश क्यार ! उद्धर-ि [सं•] कपर प्रधाबा हुना; शतिशव; क्ठोर; उनदु भरतह, अदिनीता दिसीका अदय-छिदात म करने बाबाः बमर्टा उत्तेत्रितः शुन्धः प्रचंदः राजसी । पु राज-मस्ड । -मभस्क,-मना(नम्)-वि॰ अभिनानी । उद्गति-ग्री॰ [मं] उटामः वर्गद्रे,दर्ग वशद्रुपन वापात । उद्गा+−भ• कि॰ अपर चठनाः धवनाः विगरमाः। उद्भान्य [मं] बनानाः बारने साँग केना, व्यवस्था । वदरण-५ [मं] प्रतारनाः विश्वमाः श्वारः वदार दीना या हरना। मुक्ति बिनाया छपर चठाना। या हुना दुहरामा। इन्छ भेग सेमा दिशी विद्या वा रेगसा क्यापी पगद् अविदन रखा जाना अवतरण वसना वसनी मिकनो दुई बस्त । उद्दरणी-भी (ei+) परे हुद पाठकी बुहरामा, आमीरना। उद्धरनाथ-स कि वहार करना। दबर्सा(र्स)-वि [र्स] कबर एकानेवाला। नंगरिका दिरसे दारा मंत्रविद्या बद्धार करनेवान्ता । य नाश्च करनेवान्ताः भाता रहका उद्भप-वि [सं•] मसब । प्र भसबता, वर्गन (कार्वनार ग्रहण बरनेकी): जगस्मद । बक्ष्यमन्यु [सं•] उधेवना रोमांथ । उद्यत-पुर [र्नुरु] एक बादव को कृष्णके स्था और सर्वेश था बदाब्रि: बल्स्स । उन्हरम-पु• [स्०] बीडोंचे मतने इस बनेडीवेंसे एक । बक्त-दि [हुं•] जिसके बाध जबर बढ़े वा पैने हुद हीं। उक्तन-वि [सं•] विषय । पुनिमेद दरगी। क्रजान-वि• [मं] प्रशा विशा प्रभातमा । इ. भुन्साः बसम् । उदार-पु [मे] कार एडानाः गहर निकालमा (निर्वाध ब्र्रंश अर्थ (स) भूरकारा, (मन्य शर्यन्ते वंचनसे) हुसिः क्रम या अगरप पर्नस्य हुत्सारा वहे पुत्रको क्रम्स मिननवाना संपत्तिका माना शुक्रमें मान वनका बड़ीय जी राजाना निस्ता है। पहलानः ऋणः घरमानः प्रशासने दिनी भेशका श्रद्धरमः अध्यक्ष । उद्यारक-दि [मं] उदार करनेवाणा । उद्यारण-पु• (मं•) बशरमाः उत्तर बहानाः थाग ≥ेना । उदारतार-प्रकृ दि वदार दस्ता । उद्दारा−मी [∯•] गुरुपी। इतित−रि [मं] अप प्रशासाद्रश वर्षे भन्। उद्भुर-रि [मं] मारमु : स्वतंत्राह" साहमीरिजयीर प्रेना (त्वर): त्रारी घोगा। शसत्र कीम्ब । प्रमुत-वि [त] स्थित विराध क्रिया प्रमा क्रिया करा बदा दवा । रद्भुगत-१ [मं] प्रशंमा ४ वर देवमा दिनाना । दर्भुषम-५ [म] पृथ्वेना सुवासिन वरना । पर्यानमान्त्र (स) कृत वा की पूर्व प्रस्था ।

अव्भूषत्र~५० [छं॰] रोमांव, ५७६ । उद्युत-वि॰ [सं॰] वपर क्राया दुमा क्यारा परचा इना, उम्मृहितः इयम् दिया दुनाः नम्प रक्ताने (प्रतः सरण रूपमें) किया द्वमा। बरबारा दिवा दुमा पुना रक्ष विसेश पुत्राह करावृद्ध गमित । पुर गोवशे प्राप्तेन सः माओं दे जामकार पृद्ध जम । उद्युष्टि-मी॰ [सं॰] निकामनाः हरानाः वागः उत्थ्याम-पु॰ (सं] दुम्हा । उद्भ्यस-द्र [सं] क्ष्रीशना (सरामे)। विनया मरा मारीः बार्यात होना (रोगान्मि)। उत्थास-वि [सं] यहा निराष्ट्रभाः मश्र उद्यंच−िर [र्न•] भवतम्छ । पुर सरदामा धँगना सर्र कासी हमा हेना । डर्ड्यक्र~go [मं] धोरीका शाम बरनेशारी ™ र्रा मंदर काति। उद्घेषन−पुरु [संरु] देर 'उर्दर' । उद्देश-दि॰ [सं] बस्थान्, श्रविशासी। उद्याप्य-वि [मं] अमुच्यं। उद्दाहु−ि [मं∘] जो शहें कदर प्रकार दूर हो । उद्युद्ध−4ि [मं] यगाया वर्गामा द्रमाः सिस्टिंग **ब्रीप्र, वाद भाषा दा दिलावा दुआ i** उद्याच-पु [मं•] चगना रतस्य धर्मम्द नारिका मार्च उद्योधक-वि [र्ग] जगानै, उहाने, बार दिनांचा वरीफ्ट । उद्योजन∼पु• [मं] क्यमा भेतनाः अवामा । बद्दीधिशा-नी [मं] प्रदीश माविदाना रह मेर ! उद्गट-दि॰ [मं] शहः शहाशात्मः वर्गतमः प्र 🖰 🖫 बच्दवः श्रव । उद्ध**र-९** (र्ग) बग्म उत्पत्ति दरम मुटा रिप्ट १^{६३} -कर-नि उत्तक करनेशामा असारक। -#¥-3° उरर्वात्तरबान । ब्रह्माथ-पु (ले॰) ज्ञाबा बारामा। ज्ञाराध्यमा । इज्रायक-नि॰ [मं] जन्म **द**ोनानाः वज्रापना यस्ते शता 1 बद्धावन−९ सि॰] काशांश्याः दश्यमा दरमाः ते ^{स्ट} दहनाः भेगनाः उदेशा शरमा । उज्रावमा∽सी॰ [में] प्रक्रमः कलना । बजापिमा(न)-वि[म] रहास्य । ब्रह्मास-प् [में] यमर, रोमिः प्रदाय । उज्रामिन-वि [मं] ध्वनः वमस्ता दुशा पश^{त्}रा 20 (27) बजामी(सिन्)-वि [८०] ६४३)मा, ४^०३४/वृध्यप क्षीनेवामाः षयस्यनेवामः । इज्रामर-१२ [4] गीरायन घरधेना । इतिम-विश्वति विश्वति कान्तर नाहर नियम विमा प्राप्तेशमा । पु वेशकीय क्यार्पता - साम्राप्ता धरार्च उद्याध । बद्भिद-वि० [मं] उत्रे व्रिक्टेश्या प्रभि करण रामुद्री सम्बद्धाः

साबबानी-पो सारवानता, सतर्देश दोसियारी । सासना-की॰ रे॰ मूल्पें। संस्था, बद्द । सिमान-को धन्या ।

सिद्दी-स्ते दे मूक्ये। ह्य -शूक साना-पनरावटक मरे इस्त शह न सहना सिर्धिश्य जाना।

सिराँद्र - स्वी शीतकता - 'आमेंद्र यम दुखताप मेंस्थि स्रोमे इरा-सिराँद्र - मन० ।

सिरापना १-स कि दे किरापना ।

। छारपना == चाक्या का व्यापना । सिराजन•=पि ठेवा का बूद करमेवाका=⁴बीव-निवादन सावशिक्षक दे रशमक पन आर्थेद छायो ==यन । प्र

रे• स्टम । सिसास • – पु • सहास, प्रणास (मौरा) ।

स्तिहरम-स्ता सिहरनेही दियह होपन ।

सीमंतनी = न्यों दे = सोमंतिनी ! सीरक = नि = क्या - 'सोह करी ज्यों मिटै हरपकी दाव

परे वर श्रीरक'रूथः । शुक्रनारुर्ण कि स्ट्राना, गुरु जानार्णकुरू स्रोवर

ंमपत क्षेत्र १७७५त मीन १न'-राखे । शुक्रसम्भ-पु॰ [सं] सुद्धमन जीवनकी करपना ! सुद्धागर-पि मक्षसमान-दे॰ मुख्ये ।

सुँबना+−भ कि+ सुद्ध होना औक किमा मामा । सबर+−प समर ।

सुँगैत = [व रोधिन। सुमियानंदन पंत-पु (क्रम सं १९५०) पाने वोडोडे विसंत्र कायपनाक्षेत्र पंतरत स्थितनवाले कवि किन्दे महदिके सुरूम क्यावार्टेका अच्छा कान है। एक्टन चैन्द्र गुरूत क्यारिकाभ्य तथा परि क्रोस ज्यारवा

भादि माटक सी कियों है।

पुरसुरी>-को धुरसरी, गगा। पुरसुरी|-को पानी, भात आरिका काव मश्चिकके पंत्राप स्तास वक्षिकामें यह जाना या उससे दौनेपाकी पंत्रका।

सुरी - यो सुरो।

मुक्तिप्#-वि स्वस्य।

सुपर्णक्रेपः सुपर्णनिषय – धु [म] (गस्ड रिक्शे) कामकी सुराने समुभिन अनुपादमें सरकारी श्ववानेमें रखा बाने राका सम्बोधारा

भूषिम-मि [हं•] दे श्राणिम¹।

धुवाधस-ति (स्व) व स्वालभ । मुसारमाध-स भि समझाना समझान्तर बदना-वीको अमरि सुसारि स्टब्सी स्वीच स्थित समझान नस् । मुद्दीक-ति जी बाक-मुद्दी माक दाक क्य सुस व

परे कर'~पन । पुर्हें ≁िम पूरा, ठीक पुरद-'कदिने ती समें कदिने स सहिं –पन ।

स्पना-पट्ट-पु [सं](नोटिस नोर्स) कड़ती कोई आदिका वर्ष पटक जिस्तर कावरहड़ स्वसार्थे किया दी जाय वा क्लिक्स विपक्ष दो जायें।

स्वार-की छैरनेगानी श्ला

प्र-रिपु = - क्षी रात्रि (यू)। प्रमेशत विपादी 'निराका' - पु (कमा सं १९५१) छावावादी कवियोधी श्वरत्यामें नापका स्वान है। काक्ष्में मुख्य छव और संगीयपरवर्ग आपको विदेश देन हैं। स्वानं स्वानं कास्य-विदेश से तर्वे स्वानं स्वानं कास्य-विदेश से तर्वे स्वानं कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्य

सँवार=-पु श्रेमाङ। सँगी=-स्त्री भेगी पर्रितः।

र्सोक्षां -ती अमीनको साहेरारीको व्यवस्ताः साहेदारी । सोर्टेनर-वर्ग्य दे 'सो ब' ।

सींधनाक-स कि॰ संबित करमा।

सीडि॰-को समा-'दरसम मया दयानका स्वक्ति सर्व सुख सीडि'-सासा । सीडि॰-को सर्वकारि-'कानन समान स्विन्संबर्ध

ग्राज्ञ∞न्द्याः, स्वपद्याः विचर्वे मीमि⁷~घ≥० ।

ाज्यव साम -- यन । सीवर० - पु सुवर्ण - राजरको छन्ने गरनी केसे ! सीवर को पर सोवद वीतें । -- यन ।

स्कारः सर वाक्टर-पु अंगेजीके एक मस्कि कवि तथा महाम् वपन्यासकारः वेगरको आश्रन हो 'केविकरवे'

वाहि काकी मुख्य रचनार्षे हा । स्मेह्न – पु (खामी केसम्) तेक देकर या तैकाक पदार्थ क्याकर मधीसके कल-पुरसों जादिमें विकासन

काता। सैन्यक्षमा−५ (६वेट) दे सैन्यक्षिकामाः

सम्बद्धाः स्वीयवः मार्रोकः पुः विकासिकाने प्रभान संगी। वे यकः प्रशिक्षः सेनापवि चना राजनेता नः (१८०० १९५)।

स्याती! - बी कार्यक नपदममें दैनार दोननाको फसक, स्रोक (वरेक)।

द्यराक्ष (दुरक)। स्तीन⊅∽पुदै अवर्षाः

स्वक्षाका-क्रीवाक्य-पुर्ति । (स्वयः क्रेड्निन) वह पेक्षामा निसे सारु करनेके किए सेहसरका आवश्यकता अ हो, जो पानी विरा देमेसे करने आए सान्न हो जाय।

स्वर्णसर्वती—खो [सं] (गोस्त्रम मुनिकी) किसी संस्थाको स्वापमा वा किसीके छासन, विवादित सीवन स्वादिके पकासने वर्णका सरस्य ।

स्वाबमा≠−सः कि सुकाना-वागि-वागि स्यादत हो --वमः ।

--वसः । स्वेच्छीयञ्चार--पुर्सः] (मो गिमर) स्वेच्छाछे दानमें दा प्रशासमें दो गयी वस्तः।

₹

हुँकभी । - जो अधीको दक्षिकेचा एक छएकता संबाधित । एक कील कपी रहती है, पना । हरताएक - सी सिक्तिका। स्वस्थी - पह कपमी रासि कभी तबतें सभी भीकिनके हरतार मर्ग - पना ।

```
उड्योतित∽उदमित्र
उदयोतिस-नि सिंग्री महादित किया दशा. प्राथित
                                                     उद्दूष्पण-पु॰ [मं ] रीमांब, प्रहर ।
 श्चिम दुधाः भगदीता ।
                                                     उद्गत-वि [बं॰] कार उठावा हुना पररा, सक
उदहार-पर भिरो रुपारी और जाना। सामना स्थापन ।
                                                      हुना, बन्युरिना पूरक् किया दुआ। अन्य १६४थे (स
उद इस-रि॰ 🗗 रे भागनवाटा १
                                                      वरणक्ष्मी) निया हुमा: बेंडबारा दिवा हुका बुण हुक
रता - मण्डपा।
                                                      विमेश कुमा: मजावृत्रा विमित्र । वृत्र कुम्मी प्राप्त क
उदत-ति॰ [मं ] ऊपर उठावा द्वना अतिश्रम बठारा
                                                      नाजींके बागबार पद बन ।
 उन्न, मध्यार अविनीयः विश्वीका अवविद्यात्र न करने-
                                                     उद्दर्शत-सं:• [सं ] निशनना इरामाः वन्त्र ।
 माला पर्नरा प्रतिवा शुक्त धनंदा रावती । पुर राव
                                                     उद्यान-प्रश्वि । प्रवा।
 मस्ड ! - मनस्ड : - मना(तय ) - वि अधिमानी ।
                                                    उद्ध्वंस-प्र॰ लि ] क्रंडामा (मर्स्स)। मिन्न सा
बद्धति~गी० भि ] स्टानः नर्महे,दपः सम्बद्धपनः भाषातः ।
                                                      मारीः भारति हीना (रोगार्ट से) ।
दक्षमा - भ कि उप बहनाः चरनाः विसरना ।
                                                     खब्बस्न-वि• [मे ] ४११, विद्य एमा २४ l
तक्स-१ (सं विश्वानाः जीरसे सीम सेना बॉफ्ना ।
                                                     उद्देश∽वि मिंगो ५वनम्छ । वश् सरमाना सँगरमस्स
उद्भाग-प [र्थ•] जनारनाः कालमाः सुवारः बदार
                                                      कींमी रूगा बेंगा ।
 होना वा बरमाः मुक्ति दिनाद्या कपर करानाः वन दुवा
                                                    दर्बचड-५० [र्न-] शीरीया शाम बरतेशानी एउ
 दुइराना। कुछ भंग नेमा। किसी उक्ति वा नेदाका हमरी
                                                      मंदर वाति।
 यगह अविदेश रागा जाना अवतरयः बमन बममधे
                                                    उद्यन-पु [मंग] देश 'उद्यंष'।
 भिरुष्ये हुई बरुष्ट ।
                                                    उद्दल-वि [संग] बसवान् श्राविशानी ।
उदरणी-ना [मं ] पा इप पाठको बुहरामा, बामीन्ता।
                                                    उद्याप्य-वि॰ [गं॰] सम्बर्ग ।
वजरमा १-छ कि बसार करना ।
                                                    उद्दाह-रि [नं ] बी बाई उपर उद्दार हु वा।
                                                    कर्कुद्-रि (ग्रं॰) जमा या यगचा हुन। सिर्फेर
तकर्ता(र्न)−िश् (र्व ) कपर घठानेवान्या नंपत्तिका हिरछे
 बार' मर्वाच्या यहार कानेवामा । व नाग्र करतेवामा
                                                     उरीप्ता बार आया का किया एका ।
  त्राचा, स्वन्ध है
                                                    बद्दीय-द [सं } जमना स्वरूप दर्गम शरीस रा
दक्ष्यं-नि [में ] प्रक्रप्ता प्रमुखा कर्मण (कार्यमार
                                                    बहाधक-दि॰ [मै॰] प्रगान बहाने बार रिहानेवर
 प्रदेश करन्यों): अशोरमंब ।
उद्भाष-पु [मंग] उध्रमा रोमांच।
                                                     वरीषद् ।
उज्ज-५ [सं ] एक बान्य जो कृष्णके सरहा और सर्वशी
                                                    उद्देश्यम्-पुर्व [र्गुरु] क्यता, चेत्रमा अयाना ।
                                                    बद्दोषिता-मा (d ) परबंधना नादिकमा एक है? !
 बेर मपाक्षिः उत्सर ।
उद्भाष-पुर [मंर] श्रावीके मनने इस बन्दिरीयने यह ।
                                                    उद्धर-वि॰ [मं॰] अहा भगाचारमा वर्गामा प्र<sup>न्त्र</sup> १
उद्यस्त-(र [मंग] जिम्मे दान अपर बड़े बा फेरे हर ही।
                                                     दब्दशः मुद्र ।
                                                    बज्रम−५ [सं] अन्य असीधा काम मुमारिण्ड हो।
उद्योत-दि [मं॰] बमित । पु निमेद हरनी ।
                                                     −कर-दि॰ उत्तव क्रमेशमा असार्छ। नक्षेत्र र
उद्यान-दि॰ मि वे बहुता विभाग पुरुष दुवा। पु॰ युन्दा।
                                                     वस्यविन्धान ।
  वसन ।
उदार-द (मं) उपर प्रधानाः नाहर निकालना (विवर्धि
                                                   बदाय-प्र• [में ] बहुवा बर्गमाः प्रशासिका
                                                   बजाबक-वि+[मं ] एन्द्र क्रतेशस्या बजारना क्र<sup>3</sup>
 बुरंशा मान्ति)। पुरवारा, (अमन्यरपदे बेचनम) श्रुविश
 मन या मानरप कर्नम्पे शुरकाराः वर् पुत्रको करासे
                                                    शामा ।
                                                   डद्रायन-पु॰ [लं ] चर्चारमा बहाना कामें। ऐं की
 विन्ने राजा मंधीतहा भागा सबसे मारा भनका बढ़ांच
 जी शर्याचा जिल्ला है। म्बनाया ऋण अरबाया पुरुदक्के
                                                    महनाः नीजनाः प्रदेशा रहता ।
 विगी जेहारा स्ट्रांग अन्याम ।
                                                   ब्रह्मायमा-म्योव भि । प्रदेश द्वारा ।
दक्कारक-विश्व मि ] यहार श्रम्नेशना ।
                                                   बहाबविना(न)-नि [तंक] प्रजारद ।
उद्धारण~४ [मै ] उनारमा। तथर बढानाः वाग नेना ।
                                                   बजास-प्रश्नि विभाग सीमा प्रशास ।
                                                   उद्याधिन-विक्षि ] ब्यक्त व्यवसा दुक्त वस्त्री
क्रमाधाः-स (६० वजार वस्ता ।
                                                    अर्थन ।
इद्यारा-मी [मं] गुण्यी।
                                                   बन्नावी(विम् )-वि॰ (वं ] रमांभा, राष्ट्रवर्गमा
उदिन-(१ [त ] उपर ब्रहाश दुमा, बतीर्तन ।
बरपर-रि [में ] भारमुन स्थल्यादा भावमी। विजयी
                                                    हीतराण चत्रर तरका ह
                                                   बलागुर-दि [में ] रीतिमन पमधेना ।
  प्रथा (रवर)। प्रासी: शीरा: प्रमाण वास्य ह
                                                   वित्य-रिक (मेंक) पर के क्षेत्रर कार वित्रमात्र)
उद्भुत-(१ []) हिलाका दिलाका हुआ। अधा नगर
                                                    प्रगोपान । यु देशकीय स्थानीता -शामार्थ
 नेपा नचा ३
उद्भूतन-पु॰ [:] प्रदाण प्रवर बेंद्रना दिवाना :
                                                    TANTATEDES S
                                                   अव्मित्-िर [लं ] पाने जिल्लानेशया। प्राप्त
पर्भाग-५ [५०] ५७ देवा शुवर्णात वहाता ।
उर्पणन-१ वि रेपून बाब्दी पूर प्रवस्ता ।
                                                  क्षप (ग्युटी समस्र)
```

क्ष्मी दिके नहीं । मु॰-का चुक्का-वेसतका पुमनेशका । चक्रमा-क्सावारण वेगने बागाः सरविक क्रियना,

उठाँगम-पु॰ वहा भौगतः वहाँ घहण । उठाईगीरा-पु॰ वह जो छोटी मोटी भोज वठाकर पक्ता वने, वक्दा । उठाम-स्रो, चटनेस्ट्री हिन्सः वादः आरंग व्यव, स्वयः

क्रियाई। उटाला-स फ्रि॰ नीचेरी कपर के बाना। कटे हुएको नैठाना। चैठे दुपको खड़ा करमा। बगामा कपर बना बहन या बारण करमा। हटा वा निकाल देना। बंगीकार

बहुत या चारण करना। हरा वा निकास देना। वेगीकार करना। छैन्या आरंग करना। ठुछ कास वा छराई किए वेर करना। येनत करना। येन करना। योना। याचेयर वेमा; बनाना निर्माण करना कमम खानेके किए बावर्षे केमा (गंगावक, गुरूष) आहे। छु॰ उठा रखाना— करण कामा प्रोह स्थाना वा वांकी प्रतान।

इसर रहना छोड़ रहना वा वान्ये रहना । इस्त्रान् पु उद्या प्रवार हुमा भाग उद्यान । उद्योग-वि॰ नी उद्यान या छुड़े, से वृत्यरी जनह छं जाया चा छुड़े। --पूर्व्हा-पु वह पृक्त को बमावा न गमा हो बहाँ पादे वहाँ रहा जा छुड़े। --पारकाना-पु वह पास्त्राना विश्वका मैका पठावर वावर केंद्रा बाता है। उद्योगी-नी पठानेको चवरतः पेक्गी दिवा हुमा मून्स, बादनी। पुरद्दा जार हैन-वैना म्बाह पहा करनेके

ण्क तरस्ये भारते घेठ्योः बोठारा प्रवृताको छुन्।। उद्येशान् वि दे ज्योमा । उद्येशान् वि देवेतिका प्रकृते फिरनेवाला। उद्देशान् द दुरतेका स्कृते फिरनेवाला। उद्देशान्त्री स्कृतिका स्वाता । उद्देशान्त्री स्कृतिका स्वाता

सिर्ग कम्बापक्षको दिवा जानेवाका थनः पूजा आदिके

निमित्त सक्य रदा इसा चनः सतद-संबंधी यह रीतिः

'तहपति'। बहतक-पु॰ दे॰ 'तरहरू'। तहत्-पु॰ दे 'तरहर ।

प्रदूष — को श्रेष्ट के किया जहान । — काटोका — पुरु प्रवेतका स्टोका विधान ! — कु — विधान काटन कारता ! — कार्ड — विधान — काटन व्यक्ति प्रक्रिकेशका कहा ! — काटन व्यक्ति कार्यक्र विद्याल किया किया ! — काटन विधानकार

पाँच देनेताल कहा। च्याप्रजान-वि चीधा-प्रशास रेनपुष्ट। अनुसान्त्र कि शंसके छत्तारे ह्वामें प्रसाम-पिरनाः रिमान सारिपर नेटस्ट साम्याध्यमिने बाला बरनाः हवा-के छात्र नेम्मन-पिरना (पद्या भूक सारिका)ः निस्तरातः नेम्माः कहरानाः सहः हात होनाः पौछः मनाः करस्र सकत हो सानाः सर्च होनाः (सार्वपर्यक्र)

प्रशास करूर समा है जाता प्रचे होता स्वास्त प्रवेश हैं। भीता जाता परता समझा (अते नेत रू); इस्तीय सारता धेरस्य धोपास नृपमा; उग्रस्थर सोच आपास प्रवास करता धेरस्य धोपास नृपमा; उग्रस्थर सोच आपास प्रवास करता है। परता धेरस्य धोपास नृपमा; उग्रस्थर सोच सारता धेरस्य भीता प्रवास हैया। बात वेद्यास स्वास निर्माण सारता सारता सारता है। जाता धेरसा प्रवास करता सारता है। जाता सारता सारता है। जाता सारता सारता सारता है। जाता सारता सारता सारता सारता है। जाता सारता सारता सारता है। जाता सारता सारता सारता सारता सारता सारता है।

उद् न्यानाः न्यमिष् कर्यनाः उद्दर्शर कारनाः। उद्दर्

चक्या-क्यावारण नेगरे बागाः सर्विक विश्वनाः कननाः (श्रीमा स्वाद जादिकः) बहुत नद्र कानाः कुमार्गः पर बागाः करामा । उद्ग-पु कराक्वा वास उद्भव । उद्गी-की फ तरका छोटा गरः ।

उद्दर्भ का पेक प्रश्निक कर विषय स्थान कि विसर्ग कोई दो स्वर्ट क्षित होते हैं। स्वर्टक्का एक तरहका राग विसर्ग कोई दो स्वर्ट क्षित होते हैं। स्वर्टक्का एक प्रत्य । उद्दर्शनाक का कि करना, मंग दोना। उद्दर्शक, उद्दर्शक कि वहने साला। विसर्ग धानेकी नोम्यता हो।

डबा-पु रेखम बोलनेका एक तरका परेता। उदाहक, उदायक०-सि पु (गुड्डा मारि) जगनेवाता। उदाक-ति॰ पेशा वर्णार दरनेवाला पुन्तकले। -पन-पु पुन्तकली। -पन-उदाक-ति जगनेवाला; पर्तग जगनेवाला। उदाका-पु अनेवाला दुवारं बदावर जननेवाता;

इसाई बहाजका जालक।
उद्याहरू-वि उद्येशका उद्योग समर्थ।
उद्याहरू-वि उद्येशका उद्योग समर्थ।
उद्याहरू-वि उद्योगको किया उद्योग स्थान उद्याहर व्याहर कालि एक उद्याहर व्याहर कालि एक उद्याहर व्याहर कालि एक उद्याहर कालिका प्रदान कालि । प्याहरू-वि प्रदान प्रदान कालिका कालिका प्रदान कालिका काल

उदामा-स कि॰ उदनेको किनाकराना उदनेवासे प्राची।

बलुक्ते चढानाः ढहरानाः फहरानाः विसेरना, फैडानाः

गावर करनाः सफारेसे शुरानाः शब्द लेनाः मह करना

सिरा देशा। जानम कर देना, काटकर फंक देशा। बाहद योगे जारिते नक पहल कर देना (पुल किका देश) रावं करना। योगवा (बिहावों जारिक्की) मध्य देना मारता। तेवांचे दीवाना। कमाना: कका। मुलावा देगा। पुपदे पुणदे केटिकते कुछ लेख बना। व ब कि॰ वहना। किरा वाला। वकाल-पु कपनारकी छात्र वस्तेचे वनी हुई राखी। वकाल-पुता वासन्वान।

उद्दारमा । कि (शिस्तरा बारि) समेरमा, बराना; अगामा, वर्षासमा। व्यारना । विषया - प्रवेशास्त्र निवासी । की व्हेसक्ष्ये भाषा । वरियामा - प्रवेशास्त्र निवासी । की व्हेसक्ष्ये भाषा । वरियामा - प्रवेशास्त्र क्षित्र कार्यकारे मान्ये ही । वर्षामा - प्रवेशास्त्र प्रवेशास्त्र कार्यकारा । वर्षामा - प्रवासम्बद्ध मान्ये प्रदेश क्ष्यका । वर्षासा - प्रवासम्बद्ध क्ष्यकार । वर्षास्त्र ।

उद्वरण-पुरुष्य प्रशासका श्रीमा विद्या पर वर तेल । न्यूया नवर्षी-सी देती मामक वीचा । वद्व-चु ति] माझा मका । न्यू-चु वंदमा। क्या वद्व-दु ति] माझा पर ठाएका पाननात्र । न्यूय -साज-पु चेत्रमा। क्या । न्यूय-चु कालात्। ।

बद्स-पुध्सम्ह।

```
उदयोतित-वि॰ [छं॰] प्रकाशित दिया हुआ। प्राम्बर्कत ।
                                                     उत्भूषण-पु० मिंशी रीमांच प्रत्या
 िता हमाः चमकेला ।
                                                     उद्देश्य-वि॰ [सं॰] कार उठावा हुमा बररा, ररण
उद्याप-पु॰ [६] क्यरको और बाना मागना ब्लाबन।
                                                      हमा, उम्मृतिमा पूर्व दिया हमा। साथ १९३१ (n.
उद्देशत⊸नि [र्थ] मागनेशासा ।
                                                      तरम रूपमें) निया हुआह वेंटबारा किया हुआह बुता हुन
उद्यप्-भ उपर।
                                                       विधेश हुमा। भनाइता भमित । पुरु स्थित इ. १ इ
उदार-वि॰ [सं॰] कपर उठावा हुआ। अविद्ययः कटोरः
                                                       नानोंके बामकार शुरू बम ।
 र यह अस्तर, अविनीत विशीषा अवश्रक्षिकात म करने
                                                     अवस्थि-सौ (सं ] निकाममा स्रामा वाद।
 बालाः पर्माताः वधेनिकः शुन्यः अपेवः राजसी । पु॰ राज-
                                                     उव्यान-पु॰ (मं॰) सम्हा ।
 मस्त । -सनस्क,-सन्ध(शम )-वि० समिमानी ।
                                                     उद्भेस-प्र• (तं•) करेज्या (सार्थ)। स्टिश क
उस्ति-मा॰ मि ) वठानः पर्मेश, दर्व वसक्तनः भाषास् ।
                                                       यारी। गार्जात दीना (रोगाहिसे)।
उदना = - भ । वि कद च्यमाः चक्रमाः विकरमा ।
                                                     अव्ध्यस्त−नि॰ [सं॰] ४हा, विरा द्रभा। यह।
उद्धर-५ [मं ] पश्याः भोरते त्रोष्ट तेना, हॉफ्या ।
                                                     उद्य - वि॰ (वि॰) संबनमुक्त । प्र॰ सरसम्, र्रदेश सर
डब्रस्य-पु• [मं ] पहारमा; शिक्षमा; सुभार; ब्हार
                                                      धींसी हमा क्षेत्रा ।
 होना ना हरनाः ग्रक्ति विशासः कपर बरानाः पण हुमा
                                                     दर्बधक-पुरु [कंत्र] चीरीना काम क्रामेराको ग्वास
 दहराना। इंग्र नेग्र सेमा' विशे वर्षि वा वैश्वका दशरी
                                                      र्मकर साति ।
 जगह मनिद्रक रहा जाना, भरतरक वसना वसनत
                                                     उद्योग-५० (सं०) देव 'उदर्य ।
 निकमा हुई बरहा।
                                                     বছজ-বি• (सं•) বলবান, হাজিয়ানী।
उद्धरणी-न्या [मं ] परे द्वर पाठको दुइरामा, आमीस्ता।
                                                     उद्याप्य-विश् [मं ] बम्पूर्य ।
उद्धरमा॰~स दि छकार करमा ।
                                                     बहाइ-वि नि ने ने क्षे उस प्रमुद्द हो।
                                                     क्तृत्य-वि [शंक] जवा वा जवावा हमा सिमें"
अञ्चलो(र्य)-नि॰ [सं ] अपर यहानेवाचाः संपत्तिका हिस्से
 बारः मंत्रस्थिता कहार करनेवासा । प्र नाध करनेवानाः
                                                      वर्राप्ता बाद भावा या विस्ताबा द्रम्य ।
 भावा रक्षक ।
                                                     उद्योध-९ [मं ] जगताः सम्बद्धाः स्टब्स् शहरा स्टब्स्
उद्यपं-वित्र (संग) प्रसन्त । पुरु प्रसन्नता, अर्थन (बार्यभार
                                                      होता ।
                                                    उद्यापक-वि [शं॰] क्यामे श्रटाने बाद (हानेशंण)
 घटण करनेकी)। ब्रह्मेस्टन ।
उञ्चयम-दु॰ [भे॰] बसेवन रोमांच।
                                                      उद्दोपक् ।
उदय-ए [मं•] एक याख जी कृष्ण हे सहा और सुर्वधी
                                                    बद्दोधम-९० [र्थ•] स्तना भेतना स्थाना ।
                                                    बद्दोपिता-मा॰ (नं॰) प्रस्था माविका हर हैर है
 भा बद्धाद्धाः उरस्य ।
                                                    बसद−वि [गं•] सह। समाचारका मर्गरणा मर्गर । रू
उद्धारप -प [मं•] बादीं हे महस इस बनेदीं मेरे एहा।
द्रक्रमन-दि॰ (सं॰) दिसरे बाध क्रमर बढ़े वा पेंटे हर हों।
                                                     €च्छमा सप ।
                                                    दलप−९ (मे•) कम क्यांचा कम मुर्ग (न्तु रिं
उद्योत नदि [मं•] बनित । पु॰ निर्मेद हरती ।
                                                     ~कर~रि अलब करनेवाला जातार¤ र लोग ई
उद्याम−4ि [मं•] प्रशासिनः फूला हुना। तु भूनरा
                                                     उत्परिग्वान ।
 बमन।
उद्यार-प [प्रे॰] कपर वजाना। बाहर निकालना (निपधि
                                                    बज्ञाब-पु• (मे ] बहुन: बरन्ता बराराध्ने<sup>स्</sup>
                                                    बद्धायक-दि [मं ] उत्पन्न करभाशाः उद्यासम् का<sup>हे</sup>
 ब्रांशा शारिते)। पुरकारा, (अम मरण्डे नेपनरे) सुनिय
 क्षण वा अपनय कर्ननार्थ हरकाराः वह मुख्यी नवस्ते
                                                     शाचा ।
                                                    उद्भाषम-९ (ते ) बावारम ४ वता रामा केरा
 मिरतवाना संपर्धिका मागा सुक्षे प्राप्त असका बढांश

 श्वासी भिन्ता है। एडमानः भगः प्रश्वासः प्रश्वदे

                                                     दश्याः गीतनाः उदेशा बरमा ।
 दिगां क्षेत्रदा बदरमः अध्यापा ।
                                                    उद्भावना-स्पे॰ (मे ) उद्भादाना ।
बदारक-नि॰ [म ] पदार बरनेवाला ।
                                                    दहाषयिमा(म)-दि [ते ] प्रजापद I
इक्षारम-५० [र्स ] प्रशास्त्राह प्रस् उद्यानाह माग हैना ।
                                                    उज्जान-पु॰ (ने॰) धमर बीमि। मन।॥।
                                                   ब्रहासिन-वि॰ वि॰) व्यय वहरता दुल-४६ रें
बद्धारमा॰~स॰ कि बडार बराग 1
इदास-भी (में ] गुरुवी ।
                                                    maka 1
                                                   बजामी(निम्)-६० (तं ) समग्रेमा ग्रीमान्। मा
उदिन-(। [त•] तथर उठाया दुमा, वशीनित ।
चतुर्द्र-(र [4/a] बारमुकः स्थायः दः साम्भीःविवयीः
                                                    होनेराचा ध्यस्तरेरचा १
                                                   उद्यामुर-नि [मं ]र्राप्तमन यमसीमा ।
 भना (१४१) भारोः भेंद्राः प्रमधः बीग्य ।
                                                   प्रतिमानित [में ] पाणी शास्त्र माहर विकास
उदर्गन-११ [1] दिलाहर निरांता द्वानां क्या कर
                                                    प्रत्येक्ता । द्र हैर-यून सम्बद्धा -शाय-1
 पेना १भा ।
उर्भूनम −५ [मं] प्रश्नामा उत्तर वेंद्रमाः दिवामा ३
                                                    KANTORN I
                                                   क्रमृश्चित्-दि [मं] न्यूने जिन्ननेशना। इ र्यप्त
प्रदेशपान-पू [स ] भूत भ्या सुराणात कामा ।
प्रदर्भागम-पुर [] ] पून बा बार्र पूर्न शुरवना ।
                                                    win tidt dat i
```

उद्योतित - उद्गीत्

161 विपन्न । वतासी•∽सी॰ घीप्रता, पुटी । उध्कपण⊸प्र [सं•] फाइना चोहमा । उसावर १-४० शीप्रतापूर्वक अस्य । उत्का*−धौ उत्दर्धिता मानिका ! प्रतायमा-वि उदावसी अरमेग्रहा, अम्पनाम बसमा उतावसी-सी॰ वस्ती बस्तवाबी वर्षाता वि सी॰ बस्दी मधानवासी अपीर । उताइस, उताहिष्ठ+-- स दे॰ 'ज्यावक' । उत्तूण−वि दन्न भःग्युकः। प्रसें≠-अ॰ वस और । जनेमा•∽वि • स्वावका I दत्त-स्पर्शः] यह शुक्तिके पहले समहर कपर (ध्वमन), अदिकासण (स्टक्रांत), स्टब्स्यं (बडोचन) प्रापस्य (उड्डूक्) प्राथान्य (उदिष्ट), श्रमात्र (उत्कर) विकास (उत्क्रुह्म), शक्ति (जलाइ) मारिका सूथन करता है। हरकट-वि सिंग्] यो गरदन छपर किने इप हो। वक्ष्मीकः रक्त शब्देशपुरा । पुरु रच्छा करनाः रविभिन्नका एक भासन । उत्कांद्रा≔भी [सं•] फिनंब न सद सक्तेवाकी श्वका कामसाः वेचेनीः जिवसं मिकनेकी उन्तकताः रविजियाका **पक शासत** । उस्कंटित-वि [मं] उत्संजायुक्त, बरह्मक, बधीर । उष्करिता नजी [तं] प्रियमिश्रमके किय वेषेम पाविकाः धनेतलकपर प्रियक्ते न मिकनेते चिता करनेवाली नाविका ! छक्कदेक∽पु[एं•]एक प्रकारका रोग। उरकंपर-वि॰ (सं॰) क्सिने गरदन ऊपर घठावाँ हो। **इत्क−दि•[**र्स] रुप्युद्ध, दिन्नाः विरमरणशीक । पु• रुपशाः व्यवसर । उस्कच-वि [सं•] बिसके नाक छने हो। गंजा ३ डप्टर-वि॰ [सं॰] तीम न्या प्रवक विकटा धर्मती। चन्मत्ता श्रेष्ठा विवमः कठिन । प्राप्त महण्या, वह शाबी विसे मद शहता हो। ईसा दारबीजी। चर्मणा श्रद्धाः जूँवा तनः देत्रपताः। श्रक्य∽को [मं] सेंइको बता। अकर-द [मं] राधि हेर। दरकर्षर-तु [सं] एक बाप (शंगीत)। क्रकर्म-नि [मं] वी कान सहे हिने दूर ही: सुननही उत्सद । वस्कतंभ-पु॰ [मं] काश्माः पाश्नाः उम्मूतन् । अरुप-पु [में] कपर प्रांचमा अठाना। कपर चन्ना, क्यतिः अप्रताः सर्वादः स्परानः वर्गं कर्मणः प्रसुकताः। बरकपंक-वि [मंग] उन्दरकार्ड । बल्कपेय-पु [मं] बल्बर्र करना। बाक्यों(पिन्)-वि [मं] बालवनपद्धा बरकस-पु [मं•] वर्गमान वहासाः वहेटियाः ब्राह्मणीका व्य उद्भवः मार्वाह्यः । क्षकाप-वि [मं] बिसने पुँछ कपर पीना रखी ही (मीर) । बरक्किका-मी [सं] कमी। वर्षा कामकीश दक्ता उल्लंबा पदरी दक सेटी किएमें स्थेलंबे समाध होन है। 13-#

राकाका−को [सं०] प्रतिवर्ष कवा देनेवाकी नाब ।∫ त्रश्कार-पु (रां•) मनाथ फरकता यस्त्रेका दर क्याना थेल बानेवासा । जन्कारिका—बो॰ (सं•) दुस्रवित हेप। उत्तकाशन∽पुर्व मि] बारेस देना । उत्काम, बत्कासम अध्वासिका-सो॰ [मं॰] ध्रपारना गन्देको साफ करना १ त्राबीण-नि० [संग] विवराया हा वेर किया हुमा: 'सुद्रा प्रयाप दिया हुना । राष्ट्रीर्शय-प [र्थ] विद्यानाः योगमा करनाः प्रथेसा क्रस्ता ! । उत्प्रद उत्करक−वि [मं] वित लेटा हुमा । उत्कुज−धु (र्¦०) श्रारम्क; औ्। उरकृष-५० [स] कोश्विकरी करकरी । 🗸 र कुट-पु [मं] छवते। क्रत्यक्षेत्र⊸व (र्थ•) उद्यक्षमाः क्ररमा । उतक्क-दि [र्थ+] किमारेपर पर्देशनेवालाः सन्के कपर श्रीप्रत वहनेवाका । क्रफासि−श्री सिं देश वर्णीया स्थाप्ता २९को संस्था । जाक्ट्रप्र−वि० [सं] कपर चठावा हुमाः चत्रतः निकासा बनाः क्षेष्ठः उत्तमः बोहा इसाः। −वेदन-पु॰ पद्यत्रः वातिके प्रवयसे विवाद करना । उल्बेह्य-वि [धं] बेहरी दूर पेंदेनेवाला, विवेहका ~सक्ति~की वस्तुको क्षेत्रसे इर पेंकनेवाकी सक्ति। बाकोच-प्र सि वेषस रिवरत । उल्कोचक∽विव, पुर्व [तु] यूस केने प्रानेवासा । बरकोढि-वि [40] मोजवार भारवार। तरक्रम-प॰ [4] कपर भागा, चडमा: क्रमोष्ट्रति: गाहर कानाः प्रसामः हममेग । डाहरमण-पु [६] कपर जाना चरेवा रह बलाः प्रस्थानः देवसे भीवारमान्द्रा प्रस्थानः मृन्यु । बध्यति-विश् मिश्री प्रक्ति सुरक्षाचा हुमाः वहा हुमाः मृह्य । उरम्भेति-मो [सं] एम्बम्पः इतिह स्वति या निस्तमः उत्काम-पु॰ (सं॰) प्रश्यान विद्यमन। यद जाना। चना अणा विरोप । उच्छोश-व [में] धोर-ग्ररू पापमाः कुररी पद्मा । उत्पाद-पु [मं] १ 'अपनेदम'। उ करेटण-पु [ग्रं•] गोना कर होता। −वक्ति~मी• त्तरी प्रवानके छिए शोवविधोदा काब बरिनमें प्रवाना । ज वस्ता-प [मंक] उत्तेवनाः सीमः वेचनाः धरारका द्रोक हाएतमें न रहना। धरवरवता। नियमी १८वि । क्रावस्त्राक्र−दुर्गि•] एक विश्वा क्षेत्रा । अधिस-वि॰ (सं॰) कार पेंना द्वा -एडावा हुमस्दर चेंका दुआ। ध्वरता अलग किया हुआ। प्रवृत्तरा। बाइटिश-रि [सं] बन्नतिसीना विद्यसिका वनसमुक्ता वासीय-पु [मं] एपर पॅनना उपलब्सा केंद्र देसा

च्याच्या चराया बद्दाहर्स-पु [सं] विशाहके लिए ग्रंग मधन । बहाहिक-वि [मं] दिवाह-संवर्धा, देवाहिक । उद्दाहित-वि• [मं०] सामा दुनाः उदाया दुमाः विवादिन। उद्यक्तिमी-मी॰ [सं] रस्सी शेरी। उद्वादी(दिन्)-वि• [मं] उठामेबाराः विवाद करने बह्या । उद्दिम-नि॰ [सं०] उदेगबुक्त, परेशानः नितिता निका भावदिन । उद्विद्य-वि॰ [सं॰] बरुकता बुका। प्रम्या यहा बुका। **बहोसण-पु** [सं•] कपरको ओर बैसना। विश्वाना। शहर साँग र उद्दीजम∽पु॰ [५०] पंद्रा शक्ता। बद्धंदण-पु [शे॰] पृष्ठिः काती । बद्यु त-नि [र्र-] उहा हुमा कपरम वहा हुआ। बहा हमा। समृद्धा पर्मणी उन्नहुः शुन्ध । उद्देग~पु॰ (पं॰) थोमा परराहरा परशानी। विश्वती मरिश रहा। निर्मा भवा विग्मय। ग्रुवारी । वि वद्रत तेत्र जामे बाका (भावन)। भांत भारा धारीहण करनेवालाः वजार । उद्गरी(तिम्) उद्गरी(तिम्)-दि॰ [तु॰] दुग्री दर अरतः विनायसङ् । बहेबफ-१ [मं] योजधारका बहुँखन –९० [मं•] उद्दशका कारण होला। क्र्स्टा, गीड़ा देना । उद्देजियसा(न)−(४० (म.) अहेजक । बहेप-प रिंशी केपन । बहुछ-दि [मं•] उफ्तमहर्, उत्तराहर बहुनवालाः भगोदा-का अनिक्रमण करमेवाकाः अतिहात । खद्वेसन-पु• [मुं•] उपनमा उपाद्ध बहुमा। उद्वेसिस-वि [सं] कररसे वहाना हमा । बह्रेशित-दि॰ [मै॰] उछकता हुआ। दिनारीने संस्कृता एक्समा हमा । उद्वेदन-पु [लंक] येरमा धरा, बाबा विलंब या रहा भागमें बीतेककी पोड़ा । वि अवसमुक्तः। बहेरिन-वि [हं] बारी अपने विरा हुना । डहोडा(६)-५ [लं] वित । क्रभावना के कि शामना हुदमा (भीवन, हांका) अन्य शीना (राज्य ४)। रिसरमाः प्रश्नमा १ उत्पन्न = पुरेश्वरम् । चचर-म+ यस भए महा; प्रस वक्षमें । नमे-प्रस मोरने। बुस्तरे पनको भीरगै। -हाँ उपर्-वादर की बादर बसादे का म मादर । क्यामारूम कि उद्याद है मा 🤌 धरहमा । स LES SEIT STRIFT क्रमरामा - म कि नितर स्थित बाना, वि गता पह भाना। पादर 🗊 त्राना 🛚 वयाप्-त पुरलीशास्त्र हैन प्रवाह है

क्यार-पु कर्न बेसलेन अज्ञात । -का वस्त्रहार-स र नेनार प्रपार संघ देशना । शरू नव्यावानक ६८ है

किया को को बाद बागरे शहरा **।**

बचारक बचारम॰-दि॰ प्रदार करनेरामा । उधारनाब-म॰ दि॰ प्रधा दाना । उपारीव-वि० हे 'उपार्द्ध'। बधेदना-श् कि बीखना, ग्रीदमा (त'दन ग्रंदा कर्ना)-वधावनाः अन्य वरमाः स्थिता । सः उपेश्वर रण व्या-क्या विट्टा सील देशा मुत्र बीव क्ली श्चार देशा है ठघेषु-पुन-पु छोत्र नियाद विकास स्वास्त्र स्वेतन भीर शुनमाः। उधेरमा≠−स॰ हि० है 'उधारा । वर्नस॰-नि॰ महा श्रमा, निमा । उप−सर्व• 'उम का बह•। उमहराग-निग, सः देश 'वर्धाम' । उनका~द्र [स] एक व्हरियन वृद्धीः अन्तरम् वृत्यु (ना)। मु• −क्रोगा−जनभ्य अध्य 🕅 जामा । उमेचास-विश्वासीन और भी। पु ४१६) सेव्या। उमसीस−4ि० रैल कोर मी । इ. र 42 मेरवा। क्षमदा उमर्रीदार-4 उमीरा। क्रमात, क्रमान्द्र-ि उग्मच, मस्त मनरान्। जनसभा•−िश जनसन्। उदास्। द्रव्यक्षमा≠-स•क्रि मदला। उममायी - विश् मध्नेशला र जनसङ्ब-पु॰ देव ⁽प्रस्ताद । क्रमान्य-पर करमान, क्रामाः भागः गाहः सम्बद्धः वि॰ शच्या, अनुस्य । जनसामना ० – ७० कि. अञ्चयत दरमा धीयमा । जनसीसम्द∽तुरुदे "कमीरम् । बनम्या - वि शुक्त मामोश (मी व व मुनो) । - वर्षे म बोमै प्रमानी चेन्ह मेला भीर '-लागी। जनमूर्मा "- स्री वै अन्त्रमी"। जनमाननाव-म जि. प्रशाहना। मह दश्ना । बनमेरर -तु दे जन्देश । क्रमोगनार-पर दिन निर्मात श्रीता भौग गुमरा t अममेर्-९ प्रथम वर्षांने करण महरोमा रेज, मीटा । बनमाथन -पु नुष्ट बरमा हर बरमा ! अभयमार्ग-म जिल्हे 'उसरना । श्रमामा⁴=अ थि॰ उपानमा प्रकार 4°मा वैन्या **प्रत्य सद दश्याः उटस्याः ।** अभवनात्र-म जिल्लाहरूनाः विरना बद्दासः अर #"H7 1 प्रमाणक-वित्यक्षा प्रमाण भ-५ [#] शिक्तमाः शोपक, प्रस्तानमा ६८ **≜ अन्**यान राष्ट्रणा श्रममञ्जूष प्रयाग कीर नी र प्राप्त के रहे र देश रहा र प्रमाण्याल्य ल्या की शोततु ६ हो करूरा । जनशामि -भी देव जनशीत । श्रमहार--वि व अनुपूर्ण व क्षत्रहार्दिशनकी कनुरूपण समागणता है हमानार-म दि पुरुष्ता कर्मना हरस सुबर करवा । - न्याये बेहका-दिनो ४ प्यार श्रम भागाः है

-पु॰ सबसृति-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध माटक । -- एत्र, जनारके अञ्चल । -शम-सी दुराया । —धयस−पु [दि•] दुराया । ∽बस्सि∽सी ण्यः तरक्षद्रौ क्षोरी पिचकारी ! ⇔बस्न~पु० कपर पदमने का बस्ता बुक्टाः उपरमा । -बादी(दिन्)-प्र प्रति-शारी सुद्दिश नारमें, पीछे फरियान करनेनाका। --साक्षी(किन्)-प्र• समी हुई बात क्रवनेबाका गवादः प्रतिवादिपश्चका गनाइ । -साधक-वि॰ छेगांछको पुरा करनेवाकाः जवाक्यो सावित करनेवाका । प्र. सदायक । उत्तरज−प्र [सं] पार दीमाः स्वरनाः पानीसं निकक्मा। क्ता-सी [सं] उत्तर रिशा एक मध्या अभिमन्सकी पड़ी जिससे परीक्षितका जाम दुआ । -- खंड--पु॰ मारत क्षर्यका जन्मरी क्रियाक्षणके पाएका माग । —फाक्नानी— स्ती एक सद्यत्र ! − भाइपदा − स्ती यक नक्षत्र ! बक्तराधिकार-प [सं] किसीके (मरनेके) बाद उसकी संपत्ति पानेका इन्हर, बरासद ।

उत्तराभिकारी(रिच्)−रि॰ [रं॰] किसोके नाद पसकी संपत्ति पानेका इक्शार नारिस ।

उत्तरामास-५ (सं) शुरा बबावा बद्दानाः राकमञ्जूक । उत्तरायम~पु० [सं•] सुयंद्रा सदररेहासे वत्तर(कारीहा)-ब्द्रे बीर जाना वह छा महोलेका काक जब सूर्वकी गति

पत्तरको और रहतो है। उत्तरामकी −की सिंो म्क मर्छना (संगोत) । उत्तरार्द्ध, उत्तरार्थ−५ [मं] देशका कमरसे कपरका

मागः विक्रमाः शंतको भौरका भाषा माग (पूर्वार्षका रस्य) । उत्तराक्ता~को [सं] उत्तर दिशा। उत्तरापादा∽की [सं•] यह नक्षत्र ।

इत्तरासीग-५ [ॳ] कपरका कम अपरमा। उत्तरीय उत्तरीयक−दि [मं•] एत्राह्मा कपरका। प्र हुपहा, बयरमा, ओदमी। एक अच्छी वातिका सम । वचरेतर−4ि [मं] बचरने मिका वक्षिणी।

उत्तरेतरा-मी [मं] बक्षित्र शिक्षाः। उत्तरेदार(चूल्)~न [मं] सगम दिश द्रून।

उत्तरीत्तर-म [मं] मनिकाशिकः दिश-दिन अभिकः चगातार ।

वर्षभैन-वि [मं] प्रचंदः भक्तर।

कत्तकित-वि [म] कप्रकी और पैका हुआ, बछाता हुमा ।

दक्तान−दि [सं] ताना, पीनावा हुआ। पीठ-६ वस केरा इमा थिया सीमा (सहा)। स्वत्वस्था। उपनेमुदा ।-क्सीक नेटमेको एक छहा। ~थलक⊷पु रुक्त गर्दा । ~पाद्र~वि विसमी दोनें कीमा यो नवी है। पु० रवार्थ-पुत्र मनुका पुत्र भी भुक्का किना था। बरमेश्वर । -- स-पु भूवनारा। भूव । - सय-वि वित केश हुआ। पु दुवर्नुदानयाः - हृद्य-नि मुक्ते वा साफ दिल-बला ।

उचानक-तु [मं] उचरा नामक नृथ ।

बचानित−4ि [सं] क्यर प्रकाश जा दौलावा हुआ (एए)।

उत्ताप~पु [सं०] तेव गरमी वा काँचा दुम्का वरेश पिता। भौगः उत्तेषमाः चक्तिः मबास । बक्तापित-वि॰ [सं०] गरम किया हुमा। पीडिटा उत्तेवित

किया हुआ।

उचापी(पिम)~वि• [र्ष•] उचाप्यक १ अक्तार-वि∗सिं•ी बीरॉसे कर बामेगका, भेष्ट । प्र• स्टारा

मुक्तिः भगनः अरिभरताः प्रणाणः पार सं जानाः तटपर रवारना । उत्तरक−वि (र्थ•) उद्यारक, तारनेवाणा !स् शिवा

उत्तर्यण—पु [री•] पार प्रतारनाः स्थार करना विष्यु । कत्तारी(रिम्)-वि [तं] पार करनेवाकाः अस्पिरः परिवर्तनधीकः वस्वस्थ ।

उत्तार्थ--वि॰ सि॰ पार करने धोग्या शमन करने शोग्य। उत्ताक−वि [सं•] र्वेषाः प्रवकः प्रचंदः सर्वेदरः विद्याकः कठिना अबटा श्रेष्ट । प्राथनमानमा एक विशेष संस्था (बी)।

उत्तीर्व−पि [र्स•] पार पहेंचा द्वशाः विस्का उद्यार किया गवा को कर्तव्यक्ते मुक्तः वरोक्षामें बाहः चतुरः अनुमनी । उन्होंग-वि [सं] बहुत केंबा कानरपर्धी प्रवर्षित (बारा)।

उर्च हित-पु [र्ड•] बाँटेका हिरा (को क्शनमें भुमता है)। उत्तर-पुर्टि] भूसी निकासा हुआ। या भूमा हुआ। शक्र **किया** ।

उच्च-प्र॰ [फा] क्यदेपर देल-पूटे वा चुमटके निशाम बाक्नेका भीवारा बेक-बुटेका काम जो इस बीजारके वरिये किया बाव । वि॰ मच, नशेमें भूर । -क्या,--गर ~पु अपूका काम करनेवाका । मु• -- करमा -- श्राना मारला कि देशपर दाग पर जार्ने ।

उत्तिज्ञक∽वि [सं] यमारमं बहावा देनेवालाः काम, स्रीव भाविको भक्तानंबाला ।

उच्चेंबन−प (रं•) बनारना, भगवासाः वद वा देनाः तेय बरना (बार भादि)।

उक्तेजना⊂सी सिं∘ीक्सनाः प्रेरमाः रोगासोग। – वागळ-वि॰ सङ्ग्रानेशकाः श्लोशास्त्रकः। डक्रोरण-वि+ [सं+] धोरण बादिसे समा हुआ।

बचोक्रम~प॰ (सं] क्पर पठामा, तानमाः तीक्रमा । वस्यक्त∽वि [र्व•] छोश दुमाः बद्याता हुमाः भनासक्त । अध्याग-व• [मं•] छीइमाः चॅन्नमाः उछाक्रमाः सान्दास ।

उल्प्रास~प्रसि•ोयभ भाउदः। उत्थ−ि सिं•ो से उत्पन्न था तिक्षण क्या (समा-

सांतमें व्यवद्व-भागंदीत्व) । उत्तवसार-स॰ कि मार्थकरता।

अस्थान−प्र [मं] पटना; पठाना; ५१ती । मन-नेमब्द्री पुरिक्ष जागमाः अस्त्रवताः सुकः शेनाः भौगनः यद्यग्रेटकः शीमाः पौरवः प्रस्तकः उचमः प्रद्रमः मनारम्पं प्रदेश व्यवस्थाः रोगका कारण । - एकावद्गी-सी कासिर शुद्धा ण्कारशी । -पश्चन-पु उटना विरमा कृदि-लाम । उत्थापक-ि [मैं] बढान अगामै अगारनेवामा ।

जस्थापम−पु॰ [५] यदामाः भगानाः उमारमाः प्रेरित क्षरमाः स्थान कराना (बासस्थान)ः बभन करमाः समाप्र

बरमा । शक किया हुआ ह उस्मदा-नी [सं∗] शापा।

आरेम बाहर (हर्पने) । इस्स्मानम्-पु॰ [सं॰] जन वसान् देना। जन-सूनमे जारा क्रमामित्-(१ [मं॰) उताहा हुआ। मियमा हुआ। बस्मूष्ट-दि॰ [में] श्यक्त श्रवा प्रका प्रशामित्राचा हुआ।

क्षमञ्जा-दि [मे॰] विमा मुद्दरकाः विकसियः अनिवंत्रियः

क्षी; उक्ता : क्षेत्र क्षार भागा पुत्रा (पत्रमान्युत्प); उत्पादितः उन्तुद्धः श्रम्भावमासः । उजमस्यर-वि [तं] नद्दश शाध्य करनेवाच्या श्रीर म बाने बस्तुरथ-दि॰ [सं] पश्शवा इमा। अर्द्धाः ।

तम्मुख-दि॰ [तं] जिमका मुख्य वा पहि उपस्थि और

हामाः अंद्रमः स्वत्त होना । जन्मीस्रमा•−स• कि॰ विस्तित बरनाः खेलना । उम्मीक्रिक्-(१० (सं०) सुका हुमा; बिका हुमा; मंदित । प् पद काम्यानंकार वहाँ दी बलामीमे, बहुत साध्यव शानेके कारण, मेद करना कठिम शीनेपर भी दिसी एक बातने भर बरना संबव हो मड़े, जैमे-दिमशिर ही बद्ध भी जिस्बो हुए परन है जान । करमुन्द्र−वि [मं•] ४पमरदिन आधाद।

दन्मित-वि [मं] नापा वा वाका द्वना । उम्मिति−मा॰ (सं•) माप वीस । उन्मिप-वि॰ [म्] मुका हुआ। शिना हुआ। पु॰ काँस धोलना । द्रनिमपित−दि (रं•) सुका दुआ सिना हुआ। क्रमीसम्-५० [लंक] राधना (भौगका):शिक्षना, विकसित

बन्माजिल-वि [में] मन्दरशाफ किया गुना। नम-

उम्मार्किन − उप#मिता

काया द्वारा

अवाहिक्टिंग वर गर । क्षणमानिका-को [त] दानावमा विवरता ^५३

बर>रमा ।

जपक्रम∽पु [सं] क्रिक्ट माना। भारत्मा देश क्षा प्रपर्न का प्रदान यानुपना। बीवना सभागा हिंगी सामनुष् की बॉबर मायल, बेरार नर्स पूर्व दिया क्रांग्रेसका क्रिक्ट प्रथममण-पुरु [4] भारत बर्नत कारोडा रण

म तिनारवर: दिमारेदे वास र अपकृत-वि [+] क्रिन्दा प्रत्यार विद्या यस देव ^{द्या} सन्दर्भ । उपक्रति-गो [ग] प्रपृष्ट भनारे । जनकृत्री(तिन्)-विक (ता) प्रश्वाद कर विमा न्यावद

जपश्चेता(न)-दि [त] आरम दरमेरामा पर ह

बचरूप−९ (ग॰) धोग इशे । – बनावाप−३॰ ९६° को बाजी रिचाजके लिए पुरस्त पान बना द्वभा हुँ हैं है अपनुष्य-तु [तं] दिशाराः किसोदे बन्धाः मू^{र्या}

प्रशास्त्रकाता, अनेश्विक अद्यवसी । उपस्थानमा [गं] (रापनाः महरः रार्तः । उपकुरा-तु (लंब) मणुद्रका एक रोग, मगुद्रमें वीरेवार न्याध

जनकार्य-रि [44] क्रिजराया का केमादा दुका, का दुभा । उपर्रोप, उपकृषिका-भी । [16] होते शावधी सार भीता । द्धपकुर्याच-तु [मं] पहार्र पूरी होलद रण गृहामध्ये

बानाः सामग्रापकः। उपद्यर्थे–१० (२०) ४९६१ (१४ जाने मोध्य । उपकार्या-सी॰ (मै॰) घारी रीमा राज्यका प्रकार श्रमाभिरवान । वि॰ श्री॰ जरधार घरने धारा (नी)। जपकरण-त [मं] क्षित्रारामा प्रेत्रामाः (विद्वत्री) दश्याः वादनाः ।

उपकारी(रिम्)-वि (मे) उपधारक, उपधा हरे

मानमा, कुत्रद्वना प्रकाश करमा । कपकारक-वि [मं] मधार्य करनेशाला महायक नार्यः यायकः अञ्चलकः । जपकारिका-वि॰ ली॰ वि॰ गहाविका । स्रो॰ वहन गेमा । उपकारी-नी [ब्र] राजमहमः धारी हेया।

समावदा बंदनवार स्टेस्स । सुक -मानना-स्टब्स

उपकर्णिका-मी॰ (र्शः) स्टब्स्ट वयन(५। उपवर्ता (१)-(४० (मे॰) उपराद वदनेदाना। बयकर्षण-पु॰ [मृं] शोवदर मदशद बन्ता । उपकरय-प्र- (र्गः) सामान भागग्री आवरवह कार् उपकरपन-१ [मं] भाषीयमः तेशाः दरना पत्रया। उपकरिपश्च−ि [गं•] नैयार मस्त्रतः अपकार-त• [गुं•] भनारि सद्दावता। साद, वैरारे-

मान्द्रि राज्यके अनुचर ।

उपरुषन−५० [०|•] शुनना ।

बपकरनार∽स॰ कि उपकार करना।

111

माग परका सबसे कररका शीम) दिखर, घोटी; सठबः पर्स्यः बाका विद्यानः बटित नाडीक्यका भीवरी जागः करद राजाओं और प्रवादांति राजकुमारके चेन्मके अव-सरप राजाओं भीर प्रवादांति राजकुमारके चेन्मके अव-सरप राजारकपूरे मिकनेबाका चन ।

इर्स्सीगस∽वि० [सं•] योटमें किया इमा नार्किंगिय

सेपर्दर्भे कावा हुना।

उत्सारिती - बाँ॰ [स॰] पक्कि बंदर दानेवाओं पुंसी । उद्मंति(तित्) - वि [सं] साथ रदनेवाका वाद्यांतक परेवा द्वमा (त्रम) । प्र॰ नाडीवण [

उस्तंबर-पु [सं•] उठानाः च्छाकना ।

उत्स-पु [सं•] स्रोत, रोता बडमय स्वान।

उत्सन्धः (स्प) लात, पाता चन्नन प्यानः उत्सन्धः (देश (से) द्यानः चड प्रियकः, शिस्तः चन उत्पादः दी पदी होः उद्यानः इत्याः क्षित्रस्य विद्यसः व्यव हारमें न कानेवालः पुरा दिना हुवाः।

जध्यर-प [सं] कुचनिशेष।

शस्त्रों – पु. सि.) अक्रम करमाः श्रेष्टकाः स्वागमाः शकनाः दानः व्यवः विके शुद्राः अपान वाषु वा मक्ष्यः स्वागः समापन (अध्यवन सादिवा)ः वैदिक वर्जविश्वेषः सामान्य

निवन (बपवादका उक्य) । उद्यागितः(तुस्)-वर् (स्व) निवमक्यमें भागतीत्से ।

डस्सार् (रित्) - व (६०) लयमकम्य कायदारम् । उत्सार्ग (रित्) - व (६) उत्सर्ग करनेवाका । उत्सर्वम - प्र (६०) उत्सर्ग करनाः त्वागः वान करनाः

पक्ष वैदिस कर्म को साकर्म दो नार किया वाला है नेदा-चनकर स्थित करना।

बरसरी, ब सर्वज्ञ-पु॰[६०] अपर चड्नाः बद्धमाः कृष्टनाः फेबला ।

प्रकरा। उत्सरियी-मो॰ (सं॰) बैनमवानुसार काक्का यह

[बमाग । इस्सर्वी(पिन)→बि॰ [सं] कमर एउने, चडनेवाकाः

अस्युत्तम ।

जारतु प्रन । जारतार्थां – स्त्री [र्त-] गर्म घोग्व अवस्वामें क्षृत्वी हुई गाय, अन्ध्रगर कावी हुई गाव ।

उत्सव पु सिं शानंद, प्रश्वकाः भानद्वनकः कार्य विवाद शादिः कल्लाः उद्यवन्तवा (प्रनाना) कवार्यः गुन्सा कीमः १९६०ः प्रदेशस्य प्रदेशस्य प्रवस्य

करनाः कर्यारमः। कस्तार=१ (सं) मासः श्रवः।

इत्सादक-वि॰ वि॰ विध्यस्थारीः नायकः।

कस्ताबन-दु (ति॰) मारा करणा। वाका शक्तमा। वाका भरता। कपर पहला। वहानाः मासिदा करला। ववस्त स्तानाः रोतकी दूसरी बीताई करला।

कत्मारित-वि [मं॰] मह दिवा हुमा सरह दिया हुमा:

भारदा बढावा हुआ ।

उत्सारक-पु [सं] बहरेदार हारपाछ ।

बलारम-५ (सं॰) इसमा, प्रकरमा; (मवारी आरिस) उन्दर्नेमें समावत देना; बदिनिय स्वागन बहना । बन्माइ-५० (१) दीनुका जनेगा; सबस भेला; सबसि

दम्माद्-पु॰ [१] द्वीमका उमेगा प्रवस भोटा। प्रश्नीय रच्छा। अध्यवसादा ६६ संद्रम्य बोम्पता। प्राप्ता। स्थला दरमामा मुखा मुला बार रहस्या न्याची आसः। —बर्चान— पुः बार रक्षा गरिस्टी बुद्धि बचम बुद्धि। —बुस्थीन—पु होसका बहाने, उत्तेवना बहानेक्ष्ये घोजना ! —हास्ति— जो व्ह्वाः अध्यवसाधा आक्रमण श्रीर पुत्र करलेक्ष्ये छक्ति ! —स्ट्रिट्स्—क्षी उत्ताह-छस्पिती स्मिद्र होनवाका कृष्यं !—हेतुक्क—वि॰ उत्ताहित कर काममें प्रकृत करने वाता !

उच्छाइक−वि [सं•] बच्चक्छायो दर्भठ, फ्रियाडील । उच्छाइक∽पु [सं] उच्चम; अध्यवसुम्भ; उच्चेत्रना देना, उच्छाइ क्याना ।

उत्माहिक-विश्वेश विसादी ।

उत्पादी(दिन्)-वि [सं०] बासाध्युक्तः स्वमीः शस्य वसावी।

विश्वकः-वि [म] क्रिमिकः प्राविकः प्राविकः स्थानः वेष्क्राचिकः। वस्तुकः-विक [च] वस्त्रीटम अस्यविकः स्थानः विक्रीः स्वानः विक्रीः स्थानः विक्रीः स्वानः स्वानः विक्रीः स्वानः स

बरसूर-पु [सं] संप्या ।

क सूर-पु (६) चे अस्पि किया हुआ, परित्यसः चेकेडा इआ: प्रसीपि स्थाद हुआ: -पहु-पु विदेश अवसर पर उसमें किया हुआ सीह ! -पृस्ति-सीश पॅन्हा हुआ सह प्रस्य करना !

उत्तव्यद्भि-सी॰ [सं॰] परिस्वाग ।

बरसक-पु॰ (सं] किक्कना फफनकर पहना; शांकित करना; वर्गद, दर्ग । उससेकी (किन्) --वि॰ (सं॰) प्राप्तित करनेवाका; स्वरसे

बह्दनेवाकाः उक्तरनेवाकाः धर्मद्रीः उप्तेचन-पु [मं] शिवकने या उक्तरनेद्री क्रियाः।

उत्तेष-पु• [सं] कैंपार्यः मोद्याः मेप्रताः वर्षाः शोधः देदः वर । वि कैंपाः वंदाः

बष्टमय-प्राप्ति । सम्बद्धाः ।

उत्स्य-वि [चं] क्ष या धेलेचे निचका हुआ। उत्स्वन-वि॰ [चं॰] कैंची आवात करनेवाला। धोर करने वाला। पुं कैंबी आवात ।

वधपनाः – । कि॰ वडा देशाः वदाः दा वडाः देशाः वधस्ताः – व॰ कि॰ वस्तानाः उद्यानाः मु – पुषकमा – भीषे-कर्षः होनाः स्वरुद्धः उद्यु होनाः।

उपस-पुषस-गी॰ वस्ट क्याः मारी उत्तरनीतः इक्यस (मक्ता)।

उपसा-वि• शिएमा दम गहरा ।

डर्नेक-पु [संव] (तैमारिका) फर्मपात्र कुप्पी । उर्वेचन-पु [संव] यहाः शुरुं में पानी निष्ठावनेपी पास्टी। अपर केंद्रमाः आरोहण देवन । —स्थान-पु पानी

रमनेता रवान । वर्षियम-वि [र्तेण] वधारा दुवाः स्पर् चटाया दुवा। वस्ता प्रतिप्यनिता प्रतितः।

उर्वेशु—वि [मैं] कर्पनंपनगील जिल्ला प्रवृत्ति उत्पर जानदी हो।

उद्दर-दि दे॰ उर्द ।

वर्षस्यान्यः कि साथ वा निवास पत्माः सम्माः क्ष्यः मान्यः कि स्वताहना प्रस्तावा प्रस्ताः सम्माः क्ष्यः मान्यः कि स्वताहना प्रस्तावा प्रस्ताव क्ष्याः स्वताहना कि स्वताहना क्षियं स्वताहना प्रस्ताव क्ष्यः स्वताहना स्वताहना स्वताहना स्वताहना स्वताहना स्वताहना क्ष्यः कि प्रमाणः क्ष्यः स्वताहना स्वताहना स्वताहन्ताः क्ष्यः स्वताहन्ताः क्ष्यः स्वताहन्ताः क्ष्यः स्वताहन्ति कि स्वताहन्ति स्वताहन्ति क्षयः स्वताहन्ति स्वताहन्त

प्रवासः(ज)-रि [वं] हार प्रवित्तारण कर्ण

प्रवस्त-प्र [र] शहर अन्य हान क्षेत्रा होना वस्त

प्रवासन-५ [त] शाह अवदेशा ॥ ११ पेश प्

rei-1

वर्दश्रहे ।

4511

कारा । मु अमानाहार नाव- रूप्ता अपरूप प्रवासीहरूरा

उपनेमर-१ दे उपरेश'। डपबसनार-म दिन प्रपेश थिया देशा । उपवाह-मु [म] नायदी धीभी। इप हर्देश रार ! क्षप्रय-प (म) पानमा एमि मार्थिक संस्थित धार्रात (वर्षश्रंग रिजर मर्गा) दगायमा दाम करेश समेन्या एक शतक गामि होनेशना दुगरा मीन र्ग प्रमर्ग । े उपप्रशी(विन्) रि (शं) उपर दर्भेशकः स्प^{न्त}ः प्रपार्श (१)-(१ (१) मेरेगामा । प्र मिन्यस जगहन-ति [तं] बराय देशित प्रस्तर बात (स्ते)! प्रपञ्चल-पु [र'] धेर भाजरा दरशाणा र क्षप्रीय-इ भिन्ने घे सहस्र । प्रवर्गहरू । दिश् भागमाद्रश्राहरूता देता है ज्ञवस्त्री-१०(१) २०० नर्थ १ उपया-भी + [+] राषा वंश कामा देशकार्य से मेरि क्ष्यपुनशीर [१०] स्थान वा फोरूप जित्रपरी

कान है-शेजामको अवस्था, तुर्वा छ है

क्ष्म ेंपूर कर सिनाबीयोग प्रशासन राम बाहरी

संबंध संवर्तने बाहरे-दृष्ट रह भंग के मार्थ

140 उद्योग≉-पु० दे 'उद्रेग'। खद्भव≠-पु दे 'उद्भव'। उदमीत्र-पुनद्गव परना अनेमेरी बात । जबसद्ता - म॰ फ्रि॰ उत्मत्त होता, सुब-पुत्र की देता। उदमाती-दि॰ सी मस्तीसे भरी हुई, मस्तामी। उद्माद्•--पु• चम्माद्ः मस्तौ । उद्मादी =−वि मस्त्र, मत्रम×ा बम्मच । बबसाम−पु[सं]दे 'उदके साथ। ≉ वि बन्भत्त । उद्याननार-स कि॰ उम्मच होना । ब्रह्म-पु [सं] (स्यांविश्वा) वगना निकसना आकाशमें कपरबंध और घठनाः प्रकार बीनाः वत्रती अवतीः, जरभानः सृष्टि बहुमस्थानः पूर्वपर्वत उदयाबक परिणामः कार्यकी पूचता कामः जावा स्दाकृति क्लोति । -शक्क-पु संदर्भगिरि । -गिरि,-पर्वतः-दीक-पु पूर्वका एक (कस्पित) पर्वत क्रिसके पेडिले सर्वका जगना माना बाता है । −सक्रत्र−पु•वद्दसक्षत्र विशुपर कोर्र शद दिखारं दे । -पुर-पु॰ मेबाइकी राजवानी। -प्रस्थ-पु अन्य गिरिका पठार । -से अस्ततक-चरतीके एक सिरेसे बसरे तक, संपूर्व भूमंडकमें। उद्यन−पु•[मै] कपर ज्ञाना चनना फला समाप्ति। स्प्रमास्वरत्ताका मायक वत्सराकः कुशुमांबधिकार उद यनामार्वः बगलव । वि जिलका चटव द्वीरहा हो जगर चळता दुना । बद्यमाण-अश्कि धदव दोना। उदयाचस−प [सं•] वदयगिरि । उद्या तिथि – औ [मं] स्वॉदवकाक में वर्तमान तिथि। ठद्याद्रि−पु[सं] बददसिरि । उद्याम 🏎 नु उदाम, नाय १ बदबास्त−पु• [सं] सम्बान-प्रनाः बनना विगदनाः। उद्यौ(यिम्)−वि॰ [६ं॰] बनता हुआ जङ्गता हुआ। मबाहित होनेबालाः उन्नतिशील । **उद्रं**भर उद्दर्भरि−वि (धं•ी अपना ¶) पेट पाक्र मे बालाः देहा श्वाधी । उद्दर्भरी-भी॰ फैन्म । उदर-प्र [सं] पेटः बस्तुका भीतनी मान, बांतरः मध्यभागः विवासीय हुन्य गुक्रण होने या अलीवर भारिके कारण देरका बहुना । -शुन्ति-पु पेटर्ने उत्पन्न श्रोनेवाका कीशाः तुष्ण व्यक्ति (छा) । —गुद्धाः— उ॰ =ग्रंबि-न्दी श्लीदान्दश्यी एक रोग। **-क्ला**सा-न्दी पेतको आसः, सूरा। ~ स्नाल-पु वंश्वर वा धरीरके सामनेके भागपर रूपाया जानेवाका कवत्र । - युःस-पु॰ पैनाइनी गुलाम बद्द पास जिलाडे गाँ-बाप भी दास रदे हो। -विशास-पु पेह विद्यासकी तरह गानेवाना स्वति । -रेगा-सी त्रिकी । -बृद्धि-सी रीगर्के बारम पेटका बन्ता । -दाय-वि पेटके वक सानेवाला । -मर्पी(पिंश्)-वि पेटडे वस रॅंगनेताका । -सर्वंश्य -वि पेट्टा -श्य-विश्व पेरक अन्तर पटुँचाया गुआ इनम दिया हुना । पु॰ बहराखि ।

उदरक-वि [मं] करटनांश्यी ।

जवरथि-प्र• [र्श•] सुर्थ। भगुद्र । बयरना - म कि॰ विदोध होना (मह दौबार भादिका) करमर् बरून हो बानाः टूट बानाः मष्ट होनाः गिरना । तवराधि-सौ [सं] कडराधि पाचनशक्ति। अतराब-प [मं] प्रभें रहमेशका एक तरहका कृमि। उत्तराध्माम-प [सं] जफरा, भगीर्थ भारि । बद्रामय-पु [सं] फेटकी नीमारी। उत्तरावर्षं −प्र[सं]नाभि । उदरायेष्ट-प्र [सं] पेन्का कव्य । उदरिक उदरिक-वि० [ग्रं॰] तृंतिकः रमूक-काम । उदरी(रिन्)-वि॰ [सं॰] बधी तीरवाका ! [सी 'ठद-रिणी - गर्मवती सी ।] अन्दर्क-पु [सं] ≓तः समाप्तिः परिणामः भावी फटाः मविष्यतकाला मीमार, शुंबपः यह आनाः मदनदेटक कृष् । उद्धि(म्)-पु [सं] आधि दिव रूपरे । वि कपरकी भोर ज्वांका वा कांति विंधीर्य करनेवाका ! उदर्र~पु[मं] ण्डरोग, कांप्रदाह। उदर्ख उदर्ध-दु॰ [सं] ज्वरका पक्र मेर। उपर्य-वि [4] उरर-संबंधी । प्र घर के क्षेत्रके वंगावि । क्षतवसा#--भ कि उदय दीना। उदवसित−पु• धि] गृद्ध, मधान । उद्याह्य-पु दे 'उद्याह्य'। उष्यु−षि [सं] फूर-फूरकर रीनेवाला । उदम्पण-प [शं•] फेंबना। निकाल देना, निरसनः चठाना । उद्यन्तः •-अ क्रि॰ उज्यनाः प्रवस्त होना । उदरत−वि (सं॰) पेंद्रा हुनाः निकामा हुमा निरस्तः घटाया दुनाः भीचा दिद्याचा दुना । श्रदाच-वि [सं•] कॅमा: महानुः मेश: पदार: प्रसिकः प्रिया केंचे स्वरमें बद्धारित । प्र स्वरके तीन मर्नीमेंसे एकः कैया स्वरः शनः वर्षालंबारका एक मेर वर्षे अविशय श्वनृद्धिका वर्षम किया जाय । नायक्टा एक प्रकार: एक तरहकावहा डोन । - छृति-वि ४२।च स्वरमें टबरित । अदान−५ [नं•] प्राणके पाँच मरोनिसे पक किसका रवान बंठ और गति इरबस बंद-शानुतक है साँगः नामिः बरमी। एक तरहका साँपः इर्षप्रकाश (नी •) । उदास≠-विदे 'बराम'। श्रवार−वि [मं] रामधील ससी। केवे टिस्पालाः र्वमानदार रहता ४६ दशसुः मला सून्दा प्रपितः विस्तृत विज्ञाक दूसरोंमें गुज भनाई देशमेशासाः चीर । प्र योगधार मुखार क्षेत्रका एक भशा सम्मानामञ् पृश्ः । —चरित्र—वि उच वरिवदाना । ~चता(तम्) -मपा(मस्)-वि क्ये विश्वाना । -मुगम-वि• देरानेमें मना सगजवाना । —धी-वि प्रतिमाञ्चासी कैंचे दिलवासा भसा। पु विष्णु। स्री सद्गुण। उदारता−की [मं] वामधीलना सदार स्वभाव । अवारमि-वि [मं] कपर बढनेवारा पा पिवारो प्रधास दैनेवका दिसमेंत भाष निकल रही हो। 🖫 बिन्तु : उदाराशय-वि [र्थ] केंगे दिल्याला ।

उपनेता(त्)-(र॰, पु॰ (ध॰) पाध के मानेताकाः यप-मदाग करानेताका (पुर) नेताका मात्रव या सक्करी । उपन्यस्त-(४॰ (ध॰) (किशोक्के) पास रका हुमा। मधानत रहा हुमा। व्यवतः परिचक्तितः।

ज्या संस्तु वारणावा । वपन्यासं-पूर्व [धर्च भौतात मात्राहमा प्रभावा वात्रका चश्रकमा प्रविका एक प्रकार क्षिका और काकी संभा क्षाणी निवसे प्राप्त बहुतने का वा वा वा व्यविकार विकित वार्तिक विकार है। 'शोनेका । 'कार-पूर्व पर-वास स्विकताता । नसीय-सीन गंगककारी कर्यक इक्सारी की वालेवाओं संवि । वपपक्त पुर्व परिची करिया केवा।

अपपति-पु॰ (रं॰) परत्यीते क्रेम करनेवाका पुरुक्त वाट

उपपद्मी-कौ॰ [र्छ] रहेकी।

जयपत्र-पु॰ [रं॰] राष्ट्रं कहा, आजा हुना छण्दा छगाछ-का परका परं ज्यानि पर्ता । —स्वासस-पु॰ इर्तक दान हुना जान (राहा) का छमाछ (क्रेनकार, पर्देक जारि ज्या॰) उत्तर ज्या॰) प्रोचा पुक्त प्राचित्र किया हुना। पर्वाचा पुक्त प्राचा प्राचा हुना।

सपपर्श्वय-स्त्री॰ (सं॰) मीन परको । सपपात-प्र॰ (सं॰) मानरा। विनासः समानक परित

होतेबाको बदना । उपपातक-पु॰ डि॰) छोवा पाप वनको संक्वा ५० मानी भवी है-पीवथ, परवार गमन बारमध्यत्र, गुस्स्वान,

भवी है-गीवश, परवार गमन आस्त्रिकत, ग्रस्तान, मात्रताम (स्थापन, वार्तिकय अगल्यिकत, वर्षस हास्त्रीका अग्नास, सीवश, श्रीवश, श्रीवश वर्ण आदे । सपपादक-वि॰ (सं॰) अवट करनेवाका। वर्षिय कराने-

वाका। सिक करनेवाका। ध्रविकारित !

कपपादम-इ (ए॰) प्रक्ति वेक्ट सिक्स करना, सम्बद्ध महिपादना संपादन ।

मरिपारना संपादन । स्वपंपादित—वि [संग] ममावितः तिनः मिला हुनाः पूरा विना हुमाः महत्तां विकित्तितः ।

ठपपातुक-मि॰ [र्थ] सर्वया नारमाण्युका साक्ष वैश नाना हुमा । पु॰ रेशर ।

छपपाद्य-वि [सं॰] क्यपन्तम करवे नीत्य ।

अववात-वि [म्] हुं , वतवायस, १५

उपपाइब - पु [र्न॰] कंता। पक्ष नगकः छात्री नसकी। विक्या।

उपयोज्ञम−मु (सं॰) बंगानाः विष्यंस करनाः कड वेनाः पीहा, कडाः

अपनुर−५ [र्स•] बपलगर।

जपपुराण-पुंचि] प्रेम्य वा गीण पुरावा व्यापीक वकारव पुरावीपे शिव क्य मुनिवीके रचे पुराव। जपपुरियका-सी [तंत्र] मैंनाही व्यापा। उपपौरिक-नि॰ [सं॰] त्रपुरका; उपनपत्मे रहनामा। उपमत्ताम-पु॰ [सं॰] देना; व्यक्तीय रिका मेंट, नकर। उपमत्त्र-पु॰ [सं॰] प्रस्तके शरर पैरा होनेनास्य मान वीच प्रस्त ।

जार क्षेत्रण—पु• [सं•] छथवा करना । जयप्रकाष—पु• [सं•] छथवात चग्रहा मीतिक दुवेशस पीचना त्रसा निष्णका निन्ता निर्मणा दक्षक नामस्या राष्ट्रा शिव संदिद (वी॰)।

राष्ट्रा १८व मध्य (वा॰)। उपप्रस्वा(वित्र)-(व॰ [तं] उपस्वत्तरे गीतिष्ठ। वयपसुत-(वं (वं॰) गीतिष्ठा बार्कातः। उपर्वेष-मु (वं॰) त्रेषेण संगोतः स्व रहितंव। वयबरह्माथ-मु वे॰ 'वयवदेषः।

क्पनही, उपनहीन-पु (हंग) बनाताः समिताः। उपनाहु-पुर (हंग) दानाता नाहते जीने(कुरतीते कर्मते एक)का मान, पहुँचा। उपनोद्यान-पुर (हंग) क्याना समस्य करता।

उपमृद्धिण-पुरु [कं] वहाना सम्रक्त करना ! उपमृद्धिल-पिरु [कं] वहांता सम्रक्त करना ! अपनेगा-पुरु [सं] प्रकानन ग्रन्था येत्र माम ! अपनोगा-मी [कं] गीम माना सुक्त मानाम केंग

वपशुक्त पर [संग] तिम्म झेनोसा सामृदत्त । उपशुक्त मुक्त (संग] तिम झेनोसा सामृदत्त । उपसुक्त मिंग [संग] तील सेट, उपनिमान ।

उपमीकम्प−सि॰, यु [हं॰] दे॰ 'पपमीम्प' । उपमीका(क्तु)−दि [हं॰] उपमीम करनेवाला; करवे अस्ता कारिक ।

वयमोगान्यु (6॰) मीक्या। हारा, रवार केमाः स्वराधः करतमा। विषयन्त्रका को-छारवाडा फटमीमा। उपभोगी(गिम्)—वि [सं] दुरमाका। उपभोगी(गिम्)—वि [सं] देश्याका।

उपमोज्य-वि [र्व•] सामे वीम्य । तु भावार । उपमोज्ञय-वु• [र्वः] भागांत्रमः अनुरोग करमा ।

ठएसभी(चिन्) -प्र[सं॰] सदावक संगी। वि वानेवर्ष वा अनुरोष करनेवाला। प्रपर्सवर्गी-सी [स्र] जान सुकेनोकी स्वारी।

अपसम्बद्धाः चित्रं काम् । अपसम्बद्धाः चित्रं काम् ।

कपसम्यु-पु सि॰] एक वीजपनर्तक ऋषि। ति॰ पुन्नैः सामा करवादी। कपसर्व, कपसर्वन-पु॰ वि॰] बनामा। सरकमा, स्यानम

क्षप्रसङ् , जपसङ्ग्र — पुः । तनामा सरक्याः राम्यः रोजना साधः निष्ठाः क्षप्रसाता मुसी निकालना। दिक्या। क्षप्रसा-निक्षं (प्रेणे) सामना द्वाकमा स्थालकारका एक नेर निक्षमं तो नराज्योंमें नेत होते द्वप मी मर्मना सम्ब विकालो मती है।

उपसाता(न)-पु॰ [सं] भृति वा अर्थाट (व्यक्तिय) नवानेवाका । वि॰ त्यमा देनेवाका । स्रो वाया मार तक्य संवित्रो-मीसी वायी आदि ।

ध्यम् प्रसारमा नामा नाम नाम निर्मेश निर्मेश । इसमाति—सी॰ (६०) तुकता मारमा नतुसेव निर्मेश उद्वीरण-पु॰ [सं] बाहर तिकालनाः वसन करमाः बुक्रनाः भुँदमे पानी कामाः, कार निकासमा । उद्गीर्ण-वि (सं०) उगका हुआः निकासः हुआ। उतुगूर्ण-वि• [सं] कपर बठावा हुआ; उत्तेतितः सुव्य । उद्गेय−वि [सं] गाने बीग्य। बद्गोही-सी [सं•] ण्यः तरहकी भीटी। उद्गम्य-वि [सं] वंबनमुक्तः शैका किया हुआ। पुरु

प्रशाहका एक विमान वा सम्पान । उदमीय-दि॰ [सं॰] च वंशा हमा। सांसारिक मंत्रमें से

मक्त बर्धव । उत्प्राह-पु० [सं•] कप उठामा प्रतिदाद, बादका उत्तरः

कररूपमें श्वद्वा किया हुआ करा । उद्याहिस-वि [सं] उपन्यसः श्टाना हुमाः वहः

रमृतः वर्षितः उत्तमः।

उद्ग्रीव उद्ग्रीवी(विन्)-वि [र्ं•] विस्की गर्रन कपर पढ़ी हो, उल्हेंठ र

उद्य-पु•[सं] ब्रेडता, उत्तमता सुख आनंदा मधि नम्ना। उद्धिन पु [सं•] संकेत ।

उद्गृह्य-५ [सं] तालका यह मेर ।

उद्यह्म-५ [सं] बोकनाः संबः स्वर्गः।

अवश्चि-वि० [मं] स्रोता हुमा; सक्रम किया हुना । उद्यम-प्र• [सं] वह सकती विसुप्त रखकर व्यारं कवती गरता है ठीहा।

बद्धपंज-पु• [र्च•] रमधनाः चौरमाः मारमा सीरा ।

उदस−५ सिं•ी मोस। बदार-प (सं०) ग्रीकनाः चंगीको भीको ।

ठ इरदक ~ प्रसि] दुंगी; कुर्वश्चे करसी ।

बद्घाटम-पु [सं] कोकना प्रकट करमा। किसी सम्मेकन था समारोहका दिसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा जारंग दिना बानाः ७ पर उठानाः होत्रोः पानी निकासनेकी करसी । उद्घाटिस-वि [मं] स्रोता, बयाना हुनाः स्पर एडाया

हुना, उत्तीक्षितः आरंग दिना दशा ।

उदास-५ (एं॰) बा(मः उहेनः इनाकाः भागातः टयमगानाः बद्धाः गराः इभियादः प्राचानामः अध्याव । उदातक, उदाती(तिय)−वि सि विभाषात करने **पदा मारनेवाकाः आर्श्म दरनेवाला ।**

बब्ध्रह-वि [सं•] उद्योष दिया द्वथा। प्र पीर, पीष। उदीप−दु [सं] कैंथी भाषात्रमें बहुना; पौषणा, सुमादी करनाः जनतामें पहनेवानी वात ।

बरंड-वि [सं] निस्ट न न्यनवासा वारतक, सर क्स । -पास-प वंद देनेवाका यह तरहकी महनीः ध्यः तरस्या स्टब्स

उर्देदर-वि [सं•] जिसके बॉल संदे वा नियमें हुए दीं। कैंचा सर्वद्भर दशक ।

बर्शन-त्र [सं] सामका व्हा मध्यातः।

उद्तण-वि दे 'उपन ।

बर्म-५॰ [सं] रमन बरानका बशमें काला धाल यनकाना । बरर्शन-इ [सं] देशे आनक्षी स्थितिमें कानाः स्पष्ट दरना ।

क्रहोत--वि+ सि] अस्यन्त दवाया हुमा, विनम्रा वस्सादी । उदास-पु [ई०] वंबनः बज्जमें काना उदमः मध्य भाग, ग्रद्धिः पृस्ताः रुधः ।

उद्यास∸वि [सं•] वंशनरदित निरंकुछ प्रचंदा स्माः धर्महो; विद्याकः बसाबारणः असीमः भवन्तः । पु बमः नरमा पद गुन्त ।

उद्दरस−प [सं] बनकोडन बहुबारफ नामक पीवा; उदाक्क ऋषि।

उक्कक-पु० [सं०] एक ऋषि यक ब्रह्म बनकोरी । उदित-वि [सं] वेंबा ब्रमा करे 'ठरित ; 'स्वत'। 'उच्य 1

उदिन−पु[सं]मध्याद्वा। उदिम#-पुदे 'अवम ।

उदिष्ट−वि स्ति वितावा हुआ। घाटा, सीचा हुआ। अमिप्रेता बादा किया हुआ। तु प्रस्तारके हिसावसे संदक्षा मेद जामनेकी पिरावकी पक किया; काक पंदन: कथि कारीको आधा प्राप्त कर किसी बरहका मीग करना ।

उद्यीप-त [र्स•] प्रस्वकित करनाः उत्तेतित करनाः वर्ते-बित करनेवालाः गींद बसा एक कसदार पदार्थ गुरुगुरू । उद्दीपक्र−वि [तं] बदीपन करनेवाला, क्लेबिट करने

बाकाः प्रस्वकित करमेवाका ।

उद्दीपल~पु॰ (सं॰) बच्चेत्रित करना अदकाना; अगाना; रसका वीषण-वर्धन करनेवाकी वरत (शा); बकानाः चनदाह । वि॰ उदीपन करनेवाला ।

उद्योपित-वि• दे 'उदाप्त'। उद्दीस-दि [सं•] अगावा, महस्रामा हुना; एलेकिए:

प्रकारितः चमक्रीका ।

उद्देशि−का [सं]बदीस दोना। बरीप्र-वि [चं] प्रमहित, चन्नता हुमा। पुरागुरु । उद्देश-५ [सं] अर्थाका विस्य बनाना। संदेत वा एक्ट करना दक्षिमें रखनाः। भनिमाधः, श्राटाः वशाहरणः स्वदी-करण निश्चय निर्वारणः रवानः कैया पर वा रवानः जनुर्धनानः वर्षके किए रखी जानेनासी प्रतिया । ~पाठवः -पृक्ष-पु+ दिसी विसेच प्रवीजनसे क्याया दुवा बुध ।

उद्देशक−नि [चं] प्रांत्रस्य। प्र निष्ठालः दिखलाने. वत्तवानेवासाः प्रस (ग)। उद्देशम-पु [मं] निसमान, शक्काने सक्षित करनेत्री

किया ।

उन्हें च∽वि•[र्ष] रक्क वा श्मित विथे आदे दोम्या सद्य इष्ट । पु॰ जिसके विषयमें कुछ कहा जाव (स्या)। प्रवीचना

उद्देश(प्ट्र)-वि (८) रतनानेवाका देविन करभवासाः कीरं कर्य दक्षिमें रखकर काम करनेवाना ।

उद्देदिका~न्यं [सं] एक बोट दोमद्र। उद्योत॰-वि पु वे 'बब्बीत ।- पुर पठत भीरामके

भवो मित्र बरान --राम । उद्दोतिताहुण-मी शकादाः।

उद्योत−वि [ॳ] प्रशासमान स्वतंता पु वस्यानाः महाशित होना। मधर होनाः प्रवादाः वांतिः सप्याद । -कर -कारी(रिन)-वि अस्त्राधित स्ट्यास्त्र ।

किया तुभाः परेद्यान किया हुआ। पुरु वंदी कैती। - सैन्य-प्र ध्याहारा रोग्ध्र हार सेना (दी)। उपरूद-वि [र्थ•] भरा हुआ (पाव)। परिवर्तित ! उपरूप-प्र• मि•ी नवत वकता या जतला स्टब्स (wie 4) t रुपरूपक-पु॰ (सै॰) निम्न मेगोद्धा वा गीण कप्रक वो १८ मकारका होता है। उपरेना -- पु॰ दे॰ 'बपरना'। उपरेमी+−ला भवनी। उपरोक्त-वि॰ 'उपर्युक्त'का नसाध क्य । द्धपरोध-प सिंगी रोकः बापाः पेरनाः परेखान करनाः शोषानाः प्रवासनाः वयस्याः रक्षाः प्रतः कर्णाः सरमाश । उपरोधक~वि (सं•) वपरोप करनवाका । प्र• मोतरका क्रमरा । उपरोधन-प्र[मं•] उपरोष बरमा। तपरोची(चिम्)-वि [सं] उपराध करनेवाका । उपराहिता -पु॰ वे 'पुरोहित । उपरोहिनी! - को दे 'प्ररोहिना'। उपरीटा-प विसी भी बन्ना कपरका पता। उपरीनाक-पुर है 'खपरना'। उपर्यक्त-वि [र्सर] कार या पहले कहा हथा ! उपसंस, उपसंसन-पु॰ [सं•] काम, माप्तिः बावः क्रनसव । रुपर्श्वसक~वि॰ [सं] हाम वा अनुसव करानवाका । उपक-प्र[सं] प्रत्यस्य रखा श्रीकाः वसक। उपस्क-प्र[सं] एक गरवर । दप्रसम्बद्ध-विश् (शंश) अनुसान करनेवाकाः भौपनेवाकाः बोधरः । प• वरक्यन-धक्तिसक सभ्य । प्रचलकान्य - प्रश्न हिंगी देखाना, क्यानाः नीवक विका विशेष कटाल, पहचारा संबेदा श्रष्टको वह शक्ति विसरी निर्देश बराहि अविरिक्त उस तरहकी और बराजीका मी बीब हो। उपकक्षित-वि॰ सि] करन किया हुनाः अगुप्ताम किया हजाः बद्धारेसे बवकामा हुना । उपक्रक्षय=वि+ [सं] कनुमाग करने बीव्या करन करने कीरम । प्र सङ्गराः रक्षारमानः कनुमान । नर्म-निमित्तरे (निवाहके स्वस्वमा)। उपलिधिप्रिय-५ [4] चमर-६म। अपस्त्रध−वि [सं] निका हुना- मातः वातः। उपस्टबा(ट्यू)-दि॰ [धं] जात करमेवाकाः अनुस्रव करनेवाका । प्र जारमा । उपस्थित-स्रो [सं] मासिः जनुमनानामा मरनश्च काना सहसम्बद्धे श्रीम्बता ! क्रपक्रम्य - वि॰ [सं] मिकने बोम्बः सन्मान्य । इपका-पुनोहरा। सी [सं] इनरा। उपसाभ-तु॰ [सं॰] ग्रहण करमा परहना। उपकाकन-प्र [सं] प्यार करनाः दुरुरसा । उपकाषिका-सी [सं•] तथा, मास । जपस्मि -पु॰ [सं॰] जपहरू अरिष्ठ । कपस्तिम-वि॰ [सं] क्षेत्र किया हुआ ! उपसिप्सा-भी [तं] पानकी रण्डा ।

उपसी-सी गोहरी निपरी। उपल्प-प [संव] कीवमा, हेप्त, हेर-मामग्री; (मट्रिरीहे कार्नमें) नामा परनाः (उनका) अवस्य वा क्रस्ति होना। उपस्पम-पु॰ [सं॰] हेव स्मानाः हेवसे सामग्राः उपछेपी(पिम्)-नि [र्स•] हेर करनरामा। सेरा स्म वैनेपाकाः याचा सामनेवाका । उपस्रोह-पर सिंगी एक गौध बात । उपरक्षा∽त॰ कपरकी पर्तः मितरकाका सबदा । उपर्वंग-प्र॰ सि] वंगावसे सहा पर बनन्त । उपमक्ता क)~प्र [संर] शहरा एक करियन (बस्से नार्तिति) मेर्पा देनेवाका । उपबद-प्र• [र्श•] प्रियाल, विरीमीका पेह। उपबन-पु [र्शः] बगीया, स्वान । उपवना≉−वर किर वह जाना, बध्ध हो बाना। दर हीना । उपवपन~पु [सं] कपर क्रिक्र(मा विवेरमा। उपवर्ण अपवर्णम~व [मं•] बिरक्त म्नोरेनर क्मेंब। उपवर्ण-५० सि | स्वमान, भवर्ष । उपवर्त−९० (सं] यह वहां संस्था । अपन्यसम्-प [सं] निकट कानाः अम्बासस्यानः विक या अवस्थित स्वानः जिलाः पर्गानाः सम्बद्धान्तः। उपवर्ष-प [सं] गोमांसा वर्शको एक माध्यकर । अपवर्शे−त [सं]वे 'अपवर्श'। क्यवस्थितः∽वि [सं] सूत्रा हुना, अनुपूर (नेत्र) । उपवरिसका−स्त्री [सं] अञ्चलभग नामक स्ता। उपबस्तव-४ [मं] धामा बद्दद पर्दक्त रिव (स्त विने धपनास बादि करते हैं)। जयबसन-५० (ए०) पाछ रहना; वनशत करना । उपनस्त-पु (स॰) वपनास । उपवस्ता(स्तु)-वि (सं] बपवास करनेवाका । रुपषरिश्च-को भि । बोबनका सहारा (अहार, स्टि) उपवहन-पु (सं] कॅचे स्वर्ते गाना शुरू करनेके परने भरपद्य भीर मंद श्वरमें जन वॉबना। उपवाक-प॰ (सं•) संशोधना प्रशंसा रहवम ! उपयासम्- प्र [सं•] पंसा। उपवार्-५ [६०] निसा बांचन । उपवादी(विच्)-वि [ध] निवक। अपवास-प्र (रं•) योजनका स्वाग वा नपाहि काकी जत-स्पर्ने श्रीजनका त्यामः जन्यायामा इवनक्रवा मिछे। विश्वारसे रहित निम्म बातिकै प्रामीन । अपनासक-नि [सं] थपनास करनेनाला । पु प्रवास । कपवासी(सिन्)-वि॰ [सं॰] वपवास करमेवासा ! प्र॰ विद्येष अविकारसे रहित निम्न जातीय धामीन ! अपवाद्यन⊸त [सं] पराकेनामा । अपवादा~पु (धं•) राजाको सवारोमें काय न्यानेवाना बाइज्लामी रव अतीर बाबन । वि पास कान बीमा शवारीके काम जानेवाका ह उपविक्रय-पु॰ [तं] जोरीते वा संदित्वानस्वामें दोने-बाधा विश्री वस्तुका क्रम निज्ञव !

उद्मिद्-वि [सं•] परती फोबकर उगने, तिकलनेवाला। पु बेह्रमा पौषा। बत्छ, श्ररना ।

उद्भिष्य-वि॰ [सं] निक्का हुमा; व्यक्ता सम्बद्ध विभक्ता विकस्तिः जिल्हे प्रति विकासपात किया गया हो ।

बद्मृत−वि [तं•] तत्त्र, स्टा दवा व्यक्ता गोवर्।

उदम्ति-सी [सं•] स्तरिः स्तर्वं।

सबसेब-पु॰ [मं] बीमका अंकुरित होना, बरती फोबकर

निकासनाः प्रकार होनाः उत्तः स्वाकामुसीका फुटनाः **विस्फोटः विश्वासवात** ।

उद्मेदन-पु॰ [हं॰] फोइकर बाहर निक्कनाः छगनाः प्रकट दोना।

उद्भ्रम-प [सं] बूमना, यश्वर खानाः प्रमानाः पश्याचाप ।

उत्तममन-पु [सं] धूमला भ्रमन करनाः उदय शोगाः। उद्भौत−वि [सं•]पूमा, चवर सावा हुमा। मौत भ्रमितिवित्तः हैरानः वृद्धिः मो हाव केवा करके तकवार

प्रमाना हो । **उद्यत−नि** [सं] पठाया हुना, ताना हुनाः तैयार, भामात्राः परिश्रमीः तमा वा सिना हुआ (अनुष्) अनु शामित, शिक्षित । पु॰ पुरतक्षमा भव्यात्र या विभागः वाक (संगीव) ।

उद्यक्ति – स्ती॰ [सं•] प्रठानाः मगसः चेदाः।

रुद्यस-पु [सं] एडामा। जम, मेहमत वयोगः वयाः दैवारी। -भंग-प्रश्नसे निरत होना ना निरत बरमाः वरसाहमंग ।

रचमी(मिम्)-दि [सं] महमती वर्षोगी ! उद्यान-पु॰ [रां] स्रोचा, बारिकाः प्रवोजनः टक्कमा। ~पास -पासकः,-रक्षक-प मानी !

डचानक−५ [६०] बारिका । -ब्यूड-५० यक प्रकार का असंब्रु स्पृह् ।

खबापम-पु• [सं] जवारिकी समाप्तिः जवकी समाप्तिपर किया बानेदाका दवनादि ।

उद्यापित-वि [सं] विविषूर्वक पूर्ण किया हुआ। जिसका ध्वापन हो पुद्धा हो।

उचाय−पु॰ [सं] मिकाना, संबोग।

बर्धास-वि [सं] काममें छगा हुआ। वसमी। मरतैर । बचीग-दु [६] अध्यवसाया दवा अमा सममा सामा सामा

कर्मन्य। उत्पादक-बोबनके किए शानदक्क शामधी उत्पन्न करनेका-भंग 'एडस्की'। -धंधा-प [हि] उत्पादक र्ममा । ~शास्त्रा∸नी शरपादकर्ममा सिग्रानेवाची संस्थाः द्वारणाना ।

बचोगी(गिन्)-वि [सं] उथोगशीस, क्रोदिश्वमें कमा रहमेबाकाः मेहबती ।

उद्योगीकरण−पु[म•] की पहले उद्योग% क्यों शही

भा उसे प्रयोगका रूप देना । उद्योत~५ दे॰ 'उद्यात ।

उद्योतम-पुमक्रादिन करमा वा द्वीमा।

वर्षग-त [सं] बर्धना वर्षाका गाँगीने व्यक्त विका गरा वह मह मा राजाका लंदा हो।

बद्र-५ [सं] एक बस्त्रेतु क्युनिसाद ।

राष्ट्रय-पु [एं] रक्के पुरेने कगायी जानेवाकी स्ट्री। मर्गा !

उद्गाय-पु॰ [सं॰] शोर, वस्का ।

उद्यिक्त−वि॰ [सं] यहा हुआ। लविस्तवा प्रमुरः रपट । -विश्व,-चेता(तस्)-वि केंच दिव्यका, हवाराञ्चय । उद्यक्त-वि॰ [सै॰] तोइनेवाका नट करमेवाकाः अद धीयनेवाका ।

अक्रोक-प [र्स•] बदती इफरातः उपक्रम, भारम अर्था लेकारका एक मेद जहाँ कई समातीय वस्तुओं या गुजीकी तकनामें किसी सनातीय ना निजातीय वस्त मा राजकी उत्प्रदत्ता (विश्वदत्ता) दिखाई भाव । -र्मग्-म भारसमें बी बरोत्साइ कर देना।

स्रद्रोका−की [सं∘] मदानियाः

उद्रेचक∽नि [सं] वध्रत करा देनेवासा।

उद्यक्तर−५ [ध] वर्ष, वरशर ।

उद्भपन-प्र [र्थ+] दान उपकनाः विकासर गिराना । उद्वर्त−प [मं] क्क्टमः उक्टमको माक्षित्रः शेषांद्राः अविरिक्त संदाः साविद्ययाः वि फानिकः अव वचा तुसा। उद्वर्तक-दि , पु [सं] उदरन तमानेवाकाः वरानेवाकाः। उद्यतिन-पु (सं) करवानः कार, अभ्यान्यः स्वयन सकान क्यानाः एकामः सुर्गभित केष आक्रिक्षः भीतनाः वारव्यतीः

उबहुपन्। उहर्तित−वि [रं•] विसंधनदन स्माना गना हो विससी माक्षित्र की गर्ना हो" वटा हुमा; निकासा हुमा; सुरासित । उद्दर्भन−तु• [सं] वृत्रिः दवानी तुरं विसी ।

उद्दर्शित−रि (रं•) ग्रांचा हुमा। उन्मृक्षित । उद्यस−वि॰ (र्स॰) वनसिका रिका गता तमा मध निकाका

ह्रमा (एसा) । प्र+ निर्मन स्थान । उद्वर-पु [री•] बेटा: बायु है सात रतरों मेंसे एक तासरे ल्डंबकी बाहु: बिवादा उदान बाहु: अग्निकी सात बिहाओं-मैरी पक्ष । 🕅 🕏 जानेवाछाः जारी रहनेवाका ।

अब्रहम-पु [र्थ•] वठाउर से जानाः उठानाः मॅमास्नाः विवाह करना: (विसी वरतुसे) तुक्त या मंपन्न होना ।

अक्रदा~स्त्री सिंशी प्रशी।

अञ्चादन−पु [सँ•] ओरऐ विश्लानाः उडोव। उद्दरन-वि [नं•] गमिता निकासा हुआ। प्र

क्षमाः वसन व्यव्याः। बहाप−पु [र्व] फेंब्रनाः दयनाः निमाननाः कपर

क्यानाः संदनः गेती फसक्त । उद्वापम-प्र• [सं•] नुहाना (अभा) ।

उद्वाप्य-वि [र'] दे 'उडाप्य ।

उद्वास-प [सं] निष्ठारुमा। घरेष हेमा स्वाम। वप करने के लिए हैं जाना। वधा सन्द्र धरमा। वि जिसन

भपने कपड़े उतार दिये हैं।

बहासम-पु॰ [धं] निकल स्टरेड देना; बबाइना; मार राक्तनाः यद्यः पहले भागुन विद्याना मादि । जहाड-प [थ्री]च्छानाः श्रेमानना विदाह ।

बहाइन-प्र• [सं] पठामाः सेमाधना विवाद करनाः एक बार जीते हुए रीवकी वालनाः दिना १

उद्वादमी-न्दा॰ [वं] श्रीका रखा ।

परकी सकार-समानवके धावना भागूनगरिः श्रीप्ता

उपस्करण-१० (सं०) दिसा करमाः सनामा, सँगरमा

कपस्कार-पु॰ [सं॰] पूरकः रिखस्थानको वृति करनेनामा

उपस्कृत-वि॰ [र्स॰] बनाबा, तेबार विवा प्रका स्वता

निंदा जीवन पारचके किए भाषप्तक सामग्री।

संगाया निकारः निवा समूह।

वैवारनाः आमरकः जापातः सम्बा

चयर्महारी-उपहला नियोग एए बारिके संतर्ने दिया वानेशका सुरूत्ताः पुस्तका शंतिम कथ्यामः माधः शंव ! उपसङ्गरी(रिम्)-नि [एं •] अंतर्शन करनेवासा । चपसंडिस~नि [सं] (निस्तीते) शंनकः वा वक्तः परि alen t चपसक्त-वि [सं०] भाषपद स्थान । उपसत्ति-मी॰ [एं॰] संगंधः संयोगः सेवान्यकः पूजाः धान । उपसद-वि [सं] पास थानेपाना । प्र• निवद जानाः इपसरम~3 [रं+] विश्वर जानाः शिश्वता स्वीहार करनाः पहासः सेवा । बपसद-न्डी॰ [मं॰] भेरा: बामगणः सेवा: बमा करना । उपसना-स॰ दिः स्त्रना करवृतार दीवा । डपसम्ब−िक [सं] सदावता ेसेवा शान्कि शिप भावा हुमा। प्राप्ता निकट रहा हुमा: प्रवृत्त । उपसम्म्यास−पु [सं] परित्याय छोर देशा । उपसमाधाम-५ (सं) यदत दरना राधीकरण। उपसमियम-१ (सं•) भाग बकानाः प्रस्वस्ति करना । उपसमिति का [सं] होता समिति कामनियेक्के किय यता धोमी कमेरी 'सब-कमिरी । अपसर−पु• [सं] वायके निक्≉ गर्माचामचे किय साँक्का भानाः गावका प्रथम कार वर्ग कारण करना । डपसरच−पु [मं] (निसीधी भीर) जामा। इवनकी भीर रक्तका हैजीसे बहना (रीममें) जिसके पास रहा जारिके क्रिय पर्वेचा कान पनाइ है क्रप्रसर्ग-प (सं•) वह अध्यय थी पाछ या पाछसे वने नाम(संद्रा) के पहले कमकर समका नर्थ नवक देता है (म सन, उप, सम् आदि); मीतिक ना दैना अनहना वक रीयदे बोचमें सत्यत दसरा गीन रोगा बनानः शूखधानक विद्य प्रेतनावा। द्यसर्जन पु [संब] घटेकमाः वैथी घरपातः महणः **अवी**मस्य स्थक्ति या वर्ष्यः स्थागः गीन वर्ष्यः । क्ष्वसर्वम−द्र [नं•] पास काना । वयसागर-प्रण [मं] भीने सुंबंधी खारी ! चपमादम-प्र [सं] तेवामें चपरिश्व दोनाः सम्मान क्षरनाः (क्ष्यर) रक्षमः। इपसामा-स॰ कि भारी ऋता संशाना । उपसिक्त-वि॰ [सं] संमोना हुना। ठपमीर-१ (सं•] र=।

भागों ।

ऋगम् ।

मस्य पूर्व वा चोट !

क्यमतिका-स्रो [मे] वानी ।

किया बुना" गरका बुना। कंटिया इस । बपरर्शं मन्बपर्स्तभग~तु॰ [सं॰] सद्दाराः बीवन गासस्य सदारा (बाह्यरादि); नाधारा प्रोतसाहन ! उपस्तरण~प (र्स•) धैनाना विक्रमा निक्रमा बादर । उपक्री∼की (सं∘े प्रपक्री, रखेशी। उपस्य−प्र [र्श•] भरीरका मध्य भागा पेह । सी वा दुस्त वनमेंद्रिका गीवा ग्रहार निर्मंत । विश् विकासकी पत्त वैका बुक्ता । ~ बस्क, – प्रश्न – त्रः पीपकार बुक्का – निम्नदः " प्रश्निम, वेडियहमन । उपस्थासा(म)-वि॰ [र्स॰] तक्ततः समदप्र भाषा प्रया प जीकरा बच-परीहित । उपस्थान~पु॰ (छं॰) पास काना; सामने बाना। छ रिवरि मीजवगी। देवताचे शामने जटा होन्द्र रेखर्द ग बाराचना करनाः वपासनारमकः स्त्रतिः बाहरवामः प्राप्ति डपस्थापक-वि• [सं•] बाध काने वा रखनेवाका वर रियव करनेवाका' सिमाने-धमजानेवाकाः स्वरूप दिशाने नाका । **इपस्थापम~पु॰ (सं.]** पास था सामने रखनाः उपस्थितः सेवा-टक्का श्मरम विकास । उपस्थापी(थिन)-वि (संग्) वास प्रवा वा पास व्यक्ति धाका (कपरिवत-वि॰ [र्स॰] पास वा श्रामने बावा हना, मीन्छ। शामिए बार; निष्टवर्तीः पुनितः सेवितः प्राप्तः बरितः बाराः मार्जितः। उपस्थिति –औ॰ सि] हाजिरी मौब्दमी विवसकी नैकाधा वाद होता। रमरणशक्ति प्राप्तिः सेवाः कर्मे पृष्टि । कपरनेद्व−५ [चं] आई दोना मीका दोना । उपस्पर्धा उपस्पर्धान-इ [शं॰] पूनाः शंकाः लान करनाः हैंद्र भोगा अका करना । अपरसृति−शा [सं•] नीय वर्गशक (अवाकि, मानिः बैठ गारिके रचे घेष) ह उपश्चन-पु सि । सामा किनोदा गाहिक सामा अपर्संद−पु [सं•] मदामःरतमें वर्षित संव दैत्वका क्रीत मारिक सामका बंद । अपस्यव्य−पु॰ (सं] बसीन वा पूँजीसे दोतेवाची ^{आर्थ}ः सुद्ध कगाम । उपस्पैक~तु (शं॰) स्मृंगं॰कः एक तरका भीरा वा द्धपरनेद~पु• [सं] फ्डानाः नामाः मार्(ता । उपर्रता(ग्र)−मि [तं] घण्यातका क्रमसूक्ष्य वि (ते॰) गृहीका मेताबिका भरत । द्रा मेशुना अपहरत-नि [र्श•] बीट सावा हुना, बानका महा दृष्ठि। विक्रता अभिभूता विश्वपर नजपात प्रमा हो। ब्रांटिय । उपदशक-वि [र्ध] दुर्भाग्वमला। तपसन्द्र, तपसनन-प (र्थ•) शीवनाः क्रिन्द्रमाः रसा ! अपस्थान-पु (सं] भीना सेवना प्रथमा भारी श्रोता । उपहरित−मी शि शामातः वया वपगतः। इपस्कर-इ (सं) संस्कार-शायमा सामग्री। मसान्ता वपहरवा-को (री॰) चोटा बति। भौरतो तिकतिकाहरः

त्रद्वसिद् -वि॰ [सं॰] घरती फोइक्ट उगने, निकल्मेवाला। व जैसमाः पीषाः प्रतः, झरना । उद्भिक्त-वि [सं] निकला हुआ। व्यक्तः अत्यक्तः विमक्तः

विक्रसितः बिसके प्रति विश्वासमात किया गया हो।

उद्भूष-दि॰ [सं॰] बत्स्य, सुष्टा स्थाः व्यक्तः गोबर ।

उक्मृति-सी [सं] सल्लिश स्त्रूपी। उत्भेद-पु॰ [र्च] नीमका अंकृतित दोना, वरती परेक्स

निकसनाः प्रकृत होनाः उत्त आणामुखीका फूटनाः विस्पाटः विश्वासमातः ।

उद्मेदन-पु॰ [सं॰] कोश्वर बादर निवक्तमाः उगनाः प्रकट दोगा ।

[चं•] वृत्रमा, अवकर खानाः धुमाना रदम्म-प परमात्ताप । श्चक्कमण-पु [सं] भृमना भ्रमण करना उदय दोना। अबुझांत-वि [सं•] यूमा चकर सावा हुआ। भीनः

अभित्तिन्तः हैरानः उद्दिश्चः वो दाव कॅपा करके तकवार प्रमाना हो ।

उचत-वि [सं] क्ठावा हुआ, ताला हुआ। तैवार, भागदाः परिमरी तमा वा सिंचा हुना (बनुव्) अनु স্তাভিত শিক্ষিণ। যু যুহতক্ষা পদ্মাৰ বা নিমাণ। ताल (संयोत) ।

उचिति – तो सिं•ो क्ठामाः प्रवक्त चेदः ।

उद्यम-पु [सं•] उद्याताः शम शेष्ट्रमता विकास विकास वैवारी। -भंग-त प्रवसने विरत दोनाया विरत करनाः उत्साहभेग ।

डचमी(सिन्)-दि० [स्०] नेदमकी। उचीगी।

द्वद्यान-पु॰ [र्ग] वर्षाचा, बारिका प्रवेशन टब्ह्मा। ~पाक ~पासक ~श्राक~प माली।

बचानक-पु॰ (६०) शान्ता । —श्यृह्म-पु० यह प्रकार का बर्धहत व्यूह ।

उद्यापन-पु• [सं] जतादिको समाति जतको समाविपर क्रिया जानेवाका दवनादि ।

उचापित-वि [मं] विविष्कं पूर्ण किया हुआ विसका श्यापन हो मुका हो।

उद्याद-पु॰ [सं॰] मिसाना, संबाग ।

उद्यिख−वि [सं] काममें लगा हुआ। प्रधमी- सुरतदः। क्योग-५ [६] अध्वयस्याया यहा अमः स्थम-कार्यः वर्गन्यः उत्पाददः—बीधनचे लिए आवश्यक्ष शामग्री उत्पन्न करनेस-अंशा 'इडरट्टी'। −धंधा−५ [हि]जलाहक ५वा । –शास्त्र-स्रो उत्पादकर्भशा निमानेवाही संस्थाः बारपामा ।

बचोगी(गि.म्)-वि [तं] क्वीरदील बोविदानें स्था रहनेशकाः महन्याः ।

उद्योगीकरण-पु [सं] जो पहले उद्यागके कपने सही वा उन्ने उदीगरा रूप इता।

उद्योत-पु दे 'उद्योत'।

उद्योतन-पु प्रकाशित करना वा होना । बर्मग-द्र [सं•] बर्मंश उरमाहा गोंगेंसे व्यक्त विजा गवा वह शब मी राजामा भंश हो।

बद्र−५० [सं] एक बकर्नत कदरिसान।

उज्य-पु [सं] रक्के पुरेने स्मापी सानेवारी मेंदी; भूगों ।

उद्राव−पु[सं] श्रोर, दस्ला ।

उद्विक्त−वि॰ सिं] का द्वमा अविश्वमा प्रचरः रखः। ~चिच,-चेता(सस)-वि॰ ऊँचे दिश्याका बदारास्थ्य। बहुज्ज−वि॰ सि ी तोदनेवालाः यह करनेवालाः यह

कीयनंबाका । उद्रेक-पु॰ [से] बद्रशी, दक्तरात उद्यक्तम आरम; अर्घा कंकारका एक भेद जहाँ कई समातीय वस्तुओं का ग्राप्नोंकी हुक्नामें फिसी समातीय था विज्ञातीय वरत या शुभकी बल्क्टता (अधिकता) दिखाई चाय । -- भँग-पु • आरंभमें

ही हतीरसाह कर देना। उद्रेका−सी (सं∘} महानिया

उद्योजक−दि [सं] बद्द बना देमेबाला ।

रहप्सर-प्र [सं] वर्ष कासर।

उद्वयन-त [सं] शना उदेहमा। हिरुक्तर गिराना । बद्धर्त−प [मं] प्रपटन यपटनकी मास्तिका श्रेपांधाः वितिक्त कहा वादिहास्य। विश्वपात्रिका धव वया हुआ। दक्षर्यंक−वि , प्र [सं] स्वटन सगानेवाका उठानेवासा। उद्वर्तन−पु (सं•) परशामः वाद अन्युदवः सपन सददन क्यानाः उद्यनः सर्वेषित कपः माकिद्यः धीसनाः तारदशीः उक्कापस ।

उद्वर्तित-वि [सं] विस उदरम स्माबा गवा द्वाः विसकी मासिया श्री गयी हो" यहा हमा। तिकासा हमा। सवासित । उद्वर्षन-प् (सं॰) वृद्धिः दवायी हुई वृसी।

उद्वर्धित-दि+ सि] स्रोचा हमा। उम्मक्रित ।

उड्डस-वि [री॰] अवसितः रिका गता हुतः मसु निकाका बुमा (छत्ता) । पु॰ शिर्वन स्थान । बहर-प [रं•] वेटाः वालके सात रतरामेंसे यक, सीसरे

स्तंत्रकी बानुः विवादः बदान बानुः शक्तिकी सात विद्वार्थी-मैसे रुक्त। वि से कानेश्हाः बाद्ये रहमेवाछा । बहरन-९ (सं) वहादर है जानाः बढानाः मैंगालनाः

विवाद करना। (मिसी वरतुस) युक्त या मंपन्न होना । बह्वा-सी [मं] प्रभी।

बद्वादम−९ [सँ•] भारते विस्थानाः उज्जोष ।

अक्रण-वि [में] विभिन्ता निकाला हुमा। पु० निका-हमाः बमनः पस्रा ।

उद्याप-त [सं] फेंब्रमा; इसमा; निसाममा। कपर वठामाः मुंदनः रोगी ऋसम ।

उद्यापन-प्र [स्] प्रसाना (भाग) । उद्वाप्प−ि [७] है 'उड्डाप्प ।

उद्वास-प [मेर] मिदाएना। सदेह हैना। स्थाना वप करमेके लिए स जानाः वयः मुख्यकरना। वि जिससे

अपने कार्य जन्नार दिवे हैं। उद्यासम-म [सं] निकाक राहेड़ देशा: प्रवासना: मार

बावना। यथके पहल भारत विदाना भारि । बहाइ-५ [ई] वठानाः सँमालनाः विवाह ।

बहाइम-प्र• [रं•] उटामा सेंग एना विश्वह दरमा दक बार जीत दूप खेतकी जीतमा। दिना ।

ब्रह्माहर्गि−को सिंदिशीरत्सा।

डसइमा≠~श ति • वे॰ 'डसइना'; स्रमंगर्ने भागाः प्रसुद्ध होना । प्रमहामा~स• कि चमहानाः छमाह्याः। उसा-सी॰ [सं॰] पार्नदी। इर्गा क्रांदिः क्रोंदिः हादिः राणिः इरुदोः मस्सोः चह्कांतगमि ।—कट—पु॰ मस्सी का पराग ! ~शुरु,~समक-पु• हिमाधरः ! ~सव -माथ -पति-सहाय-पु श्विः -श्रीः-पु॰ दे 'बमा-धन । -धन-पु॰ नाणपुर था देवीओर शगर। -सुस-पु कारिक्यः गणेशः उमाकना भ-स कि वे 'वकावता ! समाविमी !- वि की क्राइनेवाडी ! दमाचनः *- सु दि ० दशारनाः भिकारमा । दमादः - पुदै 'करमाद । तमाइ॰−९ रत्साह, वर्गगः वानंत−'प्रगट प्रेरी स्व भातुरो, मसमै विपुत्र तमाद ~थानावितः वसाहना*~भ• क्रि चमङ्ना असाहित होना अश्वेस्तरी भागा।स ६६ उस्थाना। उसाइल≯~िर उत्साद भरा। उमंद्रन-स्रो पेंडन मरीका उमेटमा-प• कि भरोइना वेंडना। समेटबॉॅं- २० धमावदार पेंडमबास्य । दमेदसा≉~स कि दें 'उमेटना'। उमेदां –सो०दे 'बम्सोद'। उमेकना≠~स कि प्रवट करमा, खोलकर वतानाः वर्गन करना । जन्दरी~सी. [#] अच्छारी, सूरी ! क्षस्या-विश्वा अच्छा नहिना वच्छा । पुण स्तीमा वाषार छरदार ! उस्म−सो [अ] भौ वसदोः मृख। ब्रमास्य−स्रो [अ•] समुदाना दिनी शास नैनंदरके वतु-यायीः **इमराव**ा ब्रम्सम्-सी नीहा । श्रममी~सी है 'वंगी। क्सरीय-की (का) नाशाः क्षेत्राः अन्तीयाः रच्छाः गर्म (का)। -बार-दि॰ काशा अपेक्षा रखनेराजाः नीकरी वा वदनिशेषका माधी । श्रु नीकरीकी माकासे बिना बेरान काम करनेवाला। बाम शीखनेवाला। चुनानके मिर सन्ना बीनेवासा । सुर ~बर भामा~वच्छा वृत्ते होना भगेड एक होना । -से होमा-गर्नस्ता होमा। रममुक विताब∼की [अ॰] कुरानः स्रवे कातिश। दरमेद दरमंद्र-धी दे॰ 'उग्मीद । उग्र-सी [बर] स्वस जनस्था आयु। सु 一का -पैसाबा पा प्याका सर कावा∽वातुका क्रेन सा कामा पृख्य निकट द्रीना । न्हेरमा-किसी तरह विवनीके दिन पूरे करता । उर्रेग−५ [सं] सॉपा नाग्लेसर ! र्ज्यम-५ (छ) छीए। दरा-'तरम् ६। समासयत ६५। - ६पाट-पु श्रीहा भीर सबबुत धीमा । -इस्त-वि॰ इसीमधे अस्त ।-क्षय-पु वर्गा रीम १ -स्विका-सी अन्में का हुना | बरसिक-वि [सं] थीने छातीवाना ।

वर(स्)-वि॰ सिं] शेष्ट, बचम । पु॰ कार्ता। इदव, मन। सु॰∽बानमा ≉−काबा~कतीरे कतानाः धोषमा ष्यान करना ।-घरवा÷-शनमें रहना । **उरह्—जी० सस** । 🕠 बरुष्टपा॰~=== कि॰ रफना: उद्दता । उरग~प [सं•] (छाडोके वक रॅनरोबाहा) सौर, मात्र। -सूपण-पु॰ शिव !-राज~तु शसुनिः शेकाल ! नायनही पान।-शञ्च-दु रहा ~स्ता~सी ~सारचंद्न ~पु॰ वंदनका एक मेर्।~स्यात्र~पु॰ प्रश्ना उरगमा≠~स कि॰ सेक्ना नगेकार करमा। **उरगाद−५ (र!•) गरकः** मोर । दरगाय•~-वि॰, धु ौ • 'तरमाय'। उरगारि• उरगासन~पु• (सं•) नररः मोर । उर्गियीक-की सर्विमी। उरगी−सो• [d॰] महा धाँप सर्विनो । उरकः उरकातां – प्र**्रे**ण 'वरोब' । बरक्षमा∜~स कि॰ दें उकतना'। उरसामार्ग-ए कि है जिस्हाना'; व कि कि 'नरणि न काशीं। उर उरकाशी -- राम+। उर**शेर*-**प्र **श**डीरा ! डरण-प्र∘ित्] मेदा मेदा प्रदायक बत्रा बरणक-प्र [संग] मेपः बादकः। उरवाक्षः वरवासकः उरवाक्य उरवाक्यक-पुर्गः (१) बहुष्त मामक पीषा । उर्व्वा∽सी [मं∘] मेह≀ बरव्-पु॰ शक्के वर्तदायक समाज मार । मु॰~से समे की तरह पेंडना-कृद होनाः स्तराना ।-पर सकेनी-बहुत क्रम माश्रा। उरहायनी – सी बहबात र्वचन। उरवीं-सा दे 'उरद; दे॰ 'दररी । तरघ॰-म विश्वदेश प्रमा दरचारमा®-स॰ कि॰ पैकामा (श्वेरमा। प्रभेशमा। उर्गा॰-न कि दे॰ 'उर्गा'। वरप-वरप-पुनुलका यक मेर्। उरवसीश-शी है 'उर्वधी । यह शुक्त । करबीण-सी दे 'वरी । हरअ-पु० (र्व०) धेव यक विशेषा बोबा। रहम्ब धेवा। उरमनार-व कि क्टबना श्रुक्ता। उरमामा ७~स कि कटकुणा शुसाना। ब्रसाक -पुरमाका उरमी?~सी॰ रे 'कांग's सू तो वर् करमी रहित स्त क्ष रस -सुन्दरदेशः । उरकार-वि+ विक्रमा विरक्र निराशा । अर्विज+-पु परतो पुत्र संग**क** । जरहाड**र-५** [सं॰] ध्यतीवर गॉपनेदा धनव । अरस~वि [नं] चौडो छाडीवाका; वत्रीरस सीजा। **उरसमान्स** कि॰ एकामा-निराना कपर-मोचे व्यवा उरसिक उरसिक्द−पु [शं•] रतत प्रधे#!

मुक्ताहार । ~स्त्रम-पु॰ नमा ।

उद्मिद्-वि [र्थ•] घरती फीइबर उगये, मिक्लनेवाला। प्रश्नेम्बनापीया उत्स झरना। उद्शिष्ट-वि॰ [सं॰] निवका हुआ। व्यक्तः उत्पन्नः विभक्तः

विकसितः विसके प्रति विकासपात किया गया वो ।

बद्रमृत−दि० [तं०] बत्तन्न सृष्टा वचा व्यक्ता गोधर्। उद्भृति-का॰ [सं॰] चरपचिः उत्कर्षं ।

उदमेद-पु॰ [सं॰] बीजका अंकृरित होना, बरती फोक्कर निक्रमा। प्रस्ट होना। उत्ता प्याकामुखीका कूरना। बिस्फोटः विकासवात ।

सद्मेदन-पु॰ [सं] फोक्टर बाहर निक्कनाः स्थनाः प्रकट दोना ।

द्वद्वास~पु• [सं•] धूमना, चनकर स्रामाः पुमानाः पद्दात्वाप ।

बद्धमण-पु [सं] पृथना भ्रमच करमाः उदय होना । खबुभोत-वि० [सं] बुमा, यकर खावा हुमा; मीत भ्रमित्रविक्त हैरामः। सहिद्या को दाव केंका करक सकतार प्रमाना हो।

ਰਚਰ-ਸਿ [सं] फाया हुना, ताना हुना तैयार, भामादा परिश्रमी। वना वा सिना हुआ (भनुष्): अनु इतासित दिव्यानि । पुरुपुरतकुका अध्याय का विमायः वाक (संगीत)।

रुद्धति−स्था (सं•] प्रदाना प्रवक्ष वेद्धा।

उद्यम-पु॰ [सं] उठामाः सम, महनतः वयोगः वंशाः तैवारी। -भंग-पु प्रवक्तते विरत दौनाया विरत करनाः बस्धावसेय ।

उद्यमी(मिन्)-वि [सं०] महनवी उद्योगी । उद्याम-त [रा•] वर्गाचा कारिका प्रदोशना टक्टना ।

-पास,-पासक,-१शक-प मानी। **उद्यामक−**पु (६०) बाटिका । —व्यवह−पु० पक् प्रकार का नर्धहत व्यूह ।

उद्यापन-दु• [सं] अवाडिकी समाक्षि अवकी समाक्षिपर किया वानेवाठा इवनादि ।

उचापित-वि [सं] विविधूर्गक पूर्व किया द्वामा; जिल्लका रवापन हो चुका हो।

उदाद-द (हं] मिलाना, हंबीन।

दर्पकः-वि॰ [र्ध] काममें समा हुआ। क्यमी। सुरतेष । दयोग-५ (६) अध्यवसायः दशः अमः सममः कृषेः क्रिका उत्पारक-शैवनके नियं भाववयक सामग्री उत्पन्न करमध्य-भंग '१डस्ही'। ~र्थधा-<u>प</u> [हि॰] उत्पादक भंगा । -- साम्रा-न्यो करपादक पथा सिद्यानेवासी सुरशाः भारताना ।

उद्योगी(तिन्)-वि [सं] उद्योगशील कोरिएमैं सम रहमेरालाः महनता ।

उद्योगीकरण-पु[+] जी पहले उद्योग है क्यमें मही था बन्ने बधोनका रूप देना ।

उद्योत-पुदे 'उर्घोत ।

उद्योतन-तु अकादिन करना या दीमा । बर्मग-तु [सं] बर्मानः उर्मादः गोरीते प्याप किया

गया वह भक्त जो राजाना अंदा हो। दस−५ [म] एड कर्त्रातु, कररिताव । उद्गय-पु [एं] रक्डे पुरेमें कगावी जानेवाकी स्टी; भुगों ।

उद्गाव-पु॰ [छं॰] घोर, बस्सा ।

इतिक्र⊱वि सिं}वता इका भविष्यय प्रभरः रेपह। -बिच,-चेता(तस)-वि॰ कॅचे ठिक्रवाछा, स्दाराश्च । उद्धाब-वि (र्श•] वीश्नेवाकाः सष्ट शरनेवाकाः अव

ग्रीहरनेगाणा । **उद्येक∽प्र∘**[सं]यक्ती, इफरात उपक्रम आरम अर्था लेकारका एक भेद जहाँ कई सजातीय वस्तुओं या गुणोंकी

तुलनामें किसी सवातीय या विजातीय वस्तु का ग्रामकी **एत्प्रक्**ता (अविकता) दिखाई जाय । -मॅग~पु आ(ममें दी दरीत्साद कर देना ।

उच्चेका∽ली॰ [५०] महामिर ।

उद्येशक−वि० [सं] बहुत वहा देनेवाका ।

उद्घष्टर−पुर्सि•ोवर्षे बरसर !

उद्यपन-प्र [मं] बानः चक्रेन्जाः विकासर गिराना । उद्वर्शे∽५॰ मि॰ो सब्दमः प्रबद्मको मार्किञः श्रेषांशः अतिरिक्त अंशः आतिश्चन्य । वि. फाबिकः अव वया हुआ । उद्वर्तक-वि+ त्र [सं] स्वरम समानेवाकाः वठानेवासा । उञ्चर्तन~तु [सं] सत्यानः बादः, अभ्युदवः रूपन सक्टन कगाना उपरनः सुगंपित सेयः माकिशः पीसना तारकशीः सम्बद्धपन्।

उड्डर्तित−वि॰ (सं ी विसे उधन्त समाया गया हो। विसक्षी मास्थ्य की गयो हो। उठा हुमा; निकासा हुमा सुवासित । उद्वर्षेश−प्र [सं] कृष्टिः दशली टर्व केंसी ।

उद्वर्षित−वि+ [सं] सामा हुमाः सन्मृतित । उद्दस-वि (चं॰) अवस्तितः रिका गतः ततः मधु निकासः

हुआ (छन्ता) । पुरू निर्वेत रथाल । उद्दर-पु [र्थ] बेटा। बायुके सात स्तरीमेंसे एक तीसरे र्खनकी बाह्य विवादा खदान बाह्या भविद्यो सात विद्वार्थाः मेरे एक । वि ले जाने शलाः बारी रहनवाका ।

उद्रहम-पु॰ [सं] उदाधर है। बाना। उद्धाना सैमालना विवाह दरना (किसी वस्तुसे) युक्त वा मंदस होना ।

उद्वरा-स्रो [मुं॰] पुत्री ।

उद्यादम-प्र [सॅ॰] जोरसे दिस्तामा। प्रशाप ! अञ्चल∽वि॰ [सं•] वसिता निकाला नुमा। पु

कनाः बमनः भरता । ब्रह्मप∽तु [में] पेंद्रमाः इदामाः निकासमाः कपर

उद्यानाः सुंद्रमः खेशी ऋतुख । उद्यापन~प्र• [र्य•] दशाना (भाग) ।

ब्रह्माप्य−वि [रं•] दे 'उहारप' ।

बहास−पु [मं] निकालमा सर्४ रेना; स्थाय; वय

करमेके किए हे जाना वया मुख्य करना। वि विमुने मपने कपश्च उतार दिथे है ।

ब्रष्टासम−त [सं] निकाल ग्रारंत देना ब्रह्मातना सार शासनाः यएके पर्त बासन विद्याना आदि ।

बहाइ~५ (सं] बठानाः सेमासनाः विवाहः। बहाइम-पु॰ [र्स] कठानाः सँमाधमा दिशाह करनाः एक

बार जेले हुए शतकी बातमा (मना । बहाहमी-मी [सं]कीश रस्ताः

वित करना: नह यरमा। वर्ष देशा कुछका कुछ कर देशा। बात दुवरानाः सब्सनाः है करमाः योशकर पेंक देनाः रटमाः भीने सेतको पिरसे नोनेके किय जातमाः सरसरी वीरपर **देख**ना या परभा । सूरू-व**स्ट**मा-कपरसे नीचै, इस वससे एस वस करमा। भरत-व्यश्त क्राना क्रुएका कुछ दर देगा। इस दल्सी उस दक्ष होना पश्चे द्वाना। उक्तर-प्रसर, उसर-पुसर-पु बदश-बदस परिवर्तन शह बदः अस्तब्यरततः । विक अस्तब्यस्तः परिवर्तितः। अक बन्ध-पुकटकर, पूर्व कपने, अभग्नी तरह-पुकट संबा सर बारी -रामा । ष्ठसर धेर-पु० हस्ट-पुकर, परिवर्तन ! उद्सरा∽वि॰ को स्वामाविक स्वितिमें म बौकर विपरीत रिधतिमें हो जिएका छएरका माग गीचे या वाहिनेका कार्के हो। भाषाः विद्यातकामः असमानः जो होना नाहिये उसके विपरीत, वेठीक, वेदगाः विरुद्ध वर्-मन्छ। (सी॰ पहरी) म॰ बेसे दोना चाहिए अनदे विपरीत अमृदित कर्पी, वेजा गौरपर । यु. एक फरवाम एक तरहवा बेसनका पराठा, चीका ।—जमामा-वह कारू विश्वमें प्रस्टी रीति चलती क्षेत्र भेषेरका जमाना । −त्रवा−वि वदत क्षाला । −वक्रताः -प्रखडा-वि अंदरंड, वेशिर-पैरकाः क्रम-विरद्धाः --पक्षटी - स्त्री पक्ष्य-पक्षर । --सीधा~विश् स्वी-ग्रहाः मध्यानुरा । मु•−(३१) स्तोप**द्योका**~मूर्य नाममस सक्यो बहुवाका । -गैगा बहुवा-गीतिवरव या अनदोनी वातका द्वीजा । –शरार बद्वामा–उनयी रीति वकामाः। रोतिनिन्द्र नात इरला। ~पष्टी पदामा~ नदकामा। -मास्रा केरमा-मारम मान्दिक प्रवोग करनाः <u>व</u>रा मनाना कीसना ! -साँस चसना-दम प्रयक्ताः मर गास्त्र होता। -साँस देना--दश्य-श्रद सीस हेनाः मरमासक्ष होना। -सीबी समामा-धरी-धोदी सनामा फरकारना ।-इवा बहना-एक्झे रीति चक्ना । -(हे) काँटे श्रीक्षमा-सम श्रीकमा । ~ छश्से भ्रीदशा-नेवकुश वनावर पंता पैठना । -पाँच फिरना:-पाँच खौटमा -पुरत जीवना । -श्रृष्ट् शिश्मा-बूसरेक्षा इति करनेके मबलामें अपनी झति कर हेना। असरामार-स कि दे 'उपरणा । उक्षराव-पु वक्षरा प्रकार । दसरी-थी के बमना मारखंगको यक कारत । उक्करे~म जैसा बीमा पादिय उसके निपरीत क्या वीरवर प्रसर-प्रसर्भ∽दे 'क्टर प्रस्त'। श्रष्टना≉-स कि दे 'बक्टना ! असराना#-स कि दे 'जक्कामा'। उष्ण्यमा०-म कि शतरमाः बद्धना 'शहर वटी समुद शसभाता -द । स क्रिश्यक्ट-पक्ट द्रशा ! उक्तमा-पु करवर कालमा। ६३-वैद्व अंगीकी मीवमा- बका-वाजी। यह तरहका माना वे "तक्वा" । सुरू -- मारमा--सत्तावाची बरत हर (पानीमें) दूरमा। करवर वरकमा । अक्टर्≠-सी इत्री, क्यातार वर्षा । द्धसदता~-स॰ द्वि॰ एरेक्टनाः रस्सानाः । रामप--प॰ [मंग] एक तृतः विश्लीर्मा कता । बक्पी(पिन्)−५ (रं∘) रॉध।

रुख्या-पु॰ [हं•] स्रः । उद्यक्तत-सी [ब] प्रेम सुहस्तत पाहा बस्रमार्थ--वर्शक है 'स्रमना'। उद्धरशाङ्क्ष कि: कप्रभीचे होगाः उद्दरमाः प्रचक थाना वरका । उद्धरमा−म क्लार होनेपर मीच वापेसे बारीको रोव™ क्षिप पेड़ेकी ओर क्यांनी जानेशको स्वकी। राक्षकमा ७-४० हि:• हरकमा: बहरमा । उद्दम्बी−सी॰ यह तरहको मदका । उस्समा - अ कि शौमित होना। बस्रहमारू~स दिः प्रताः विद्वनाः-'"तक्राः मवे - स. रिक्टनाः इक्सना । प हे "उकाहता"। सर्ख्यांच-ए॰ सकः यद्य तरहको मात्र । --पत्र-५० प्रे कार्य । उर्खाकी∼पुटाकका इरकारा ⊟ उर्ख्यमार्क-पुर कि॰ क्षेत्रमा। भाषामा उर्श्वेनन ६(व उसार-वि भीड़की बोर (बस्कि बेहरने) सुक्ष 🛍 🛚 उद्धारमा*-छ कि+ उद्यक्षताः नोकारमा ! उक्तारा~प श्रीशरुके बंधमें गावा बातवामा पर ! उक्ताहमा –प्र किसी व्यवद्यार, ११तामकी विकास व कम । ♦ स कि॰ दोव देना दिला दरना। अक्रिय~प सिं∘े क्षित्र देश विशेष । उष्डियमाः उद्याचमा-स्ट कि॰ प्रभी नाहर देवमाः स्रह्मेबा−की सिंशोदेश 'हेनी' ∤ उसुप−५० [सं] दे 'उहम'≀ वसुपी(पिन्), असुपी(पिन्)-पु॰ [६॰] दे॰ वक्षी बस्क-ड [मं] बस्स् पश्चे हुमा हहा महास्त्री व्यक्तियत यह देख यह तुग दर्मा + हुक उस्ता। इर्छान−५ वैद्येक्ट इर्छन। बद्धस्त-प्र [सं] भोधनी सन्। युक्तभे व्यक्ति बंबाः गुच्छलः कालका एक गहता । उत्त्वत्वक् −पु॰ [तं] गुम्पुका क्षारी कीराकी। उस्तर-पु [रं•] बन्दर साँग। उत्पी-मी [ti] एक शास्त्रमा विस्त्र माद गर्डुं क्षमा था । उसेबना उस्थान-स कि संबंगा। उस्तेस•−पु॰ वाहा धारेगा स्वश्न-कृत । वि कार्यगार अल्बोग । करका-स्त्री [सं] सका सी। रातमें भाषाप्रसे स्त्रा गिरनेशका मकाश्रमय पिंड वा तारा। मझक । न्यक-पु ताराओंकी एक विशेष रिवति (स्वे))। - विह-पुण रामायणमें अरिकश्चित यह राहम । - धारी(रिम्)-3 मधाकभा १ -पाश-प्र आकादारी करते विकास्त किरमा । -पायाज-पुवमीमपर गिरा दुई हरम मे क्यरको निक वैधो होती है 'मीटिवर स्तेल । नमती (लिन्)-पु रिलका एक नग। -मूल-पु॰ प्रेतेया एक भेदः अधिया दैताकः यक् तरहका गीरन । उद्दूरपी−सी [तं] बस्काः गदाल। अस्था~षु भाषातर् वर्षुमाः अनुधार् । उस्द~पु॰ [चं] है॰ 'पस्न' ।

٠.

क्षमारमा≉न्स क्रि॰ चठाना चत्रसानाः सम्कानाः स्थानाः।-'वशीयि स्नवद दशा उनारि –रास॰ । उपासी॰∽वि पु॰दे॰ उवासी'।

उर्नीदा−ि मीरसे भरा हुआ कॅमता हुआ। उद्म-वि० [सं०] भीगा दुआ गोला, वर; बवाह हुवित ।

उन्नह्म+-पि॰ पु॰दे॰ 'उन्नीस'। उन्नत-पि [सं॰] पठा हुमा कॅमा मागे का हुमा

ढसरा—ाद [सुरु] थठा हुआ। कथा। जागा जागा ज्या हुआ। श्रेष्ठ; विचा कडा आदिमें आये क्या हुआ। सम्या कड्यूप-कारू। पु अकारर; पटाल, ठॅलाह। —कोकिका—यी मार्थानदेव (मंतीत)।

अस्ति - वी [सं] उँनाई; वाती; वरबी; यरद्की सही। - सीक-दि साते वाने वा यसका वस क्रिनेवाका। उद्भवीदर-पु० [सं] इक्तुरेंग वायका वस क्रिनेवाका

विक्रपाद्र-पुर्वि पृष्टुच्य जारकायका हो। वि जिल्हा बदर वा सम्बद्धी साग बढा हो। जक्कद्र-वि [मे] वैभा हुसा; फूला हुसा; क्या हुसा;

भत्यभिक्षः पमणे । बन्धमन-पु [सं] कपर से बाना, वठाना उन्नति बरना।

श्रान्युर्यः उद्यक्तित्र−पि• सि] उद्यक्त किया हुआः वदावा हुआः।

उच्चल − दि सि किंचा, संग्रा

डच्चमन-(वं [मं] किल्की ऑट कपर कठो हों । पु॰ बठाना, उन्नदिकी ओर हं जाना; निकालमा; खोबना (पानी) नद्द पान किल्के कोर तरह पहाचे किकाल जावा निवार करना; रेपा हा सोमंत बनाना (गर्नवृत्ती खोका); परिवार निकालों।

दश्रम−वि सि विवेश शक्यका।

उम्रहम-विश् [सं] वंधनमुक्त, बारह ।

उपाद-पु [सं] रिस्लाइट शोट, इस्का श्रेयना (पश्चिमी या) बुक्टर ।

उम्माय~ु [म] एक ठरहका सुरावा हुआ वेर की यहा के बाम आता है।

दश्मास-दि [स] बिस्ती मानि उमरी हुई का सीर बाह्या : पु एक स्ट्रेनद्वी राजा । उम्माय-पु [मंग] उठामा कप्र के बाह्या केंदाई,

चठामः निष्पर्थः। जन्नायकः निः [सं] करर उठानेवाका चचत करमवाकाः।

परिमानको और ह जानेवाला ।

वस्तासीर्न्स संसर और ती। पु॰ ७ को स्वया। वस्ताद्वलप्र [में] मारोक्षे और निकटना। माविश्रय

मायुर्पः इपः काँनी। उन्तिहन्ति [सं] निसे नीद स आती ही। पूरत विक सिया प्रकरिता

सिन। पुण्य रोग। उन्मीस−विद्याभीर मी। कम छोडा। पटकर। पुण

की ऐनता । निस्ते - अ अधिकतर, भाव । सु०-धीम द्वाना-इन दंश दीना (एक दूसर्स) बुछ पर-वन्दर दीना कावण दरादर दीना। अक्-बुरा होना। - होना - परना कुछ कम दोना।

बम्नसा(म्)-वि [मं] हे 'ठवायक । 📱 यस कराने बाने १६ मारिक्डोमेंमे एक ।

उन्नना॰~म कि शुक्रमा।

उपमय-पु (सं] कानरा यक रोग; कट देना; विको कना; शुष्य करना; वय करना । अर्थ्यायक-वि (संव) मधनेवाका स्परम करनेवाला । प्र

क्सम्बद्धाः । । कानका शोध । । ।

तम्मकर~पु॰ [सं॰] सकरकी काकृतिका एक कर्माभरण। तम्मकक-भि [सं॰] सकसे वाहर कानेवाका। पु॰ एक तरका तपरकी।

चरका वपरवा। सन्मामन-पु० [सं०] बलसे वाहर मामा, निमञ्जनका

षकप्। इन्स्वान्ति [सं॰] मधेमें पूर, मतबाका पांगक सनको। पु॰ बप्ताः भुक्तंप्र। न्यांति न्यसन्पु सिव।-मकपित-मकाप्य-पु पांगकको बद्दकः मतकोको बद्द साम कार्यकारिक-पित वार्ते। निकारितिस्)-कि

पागल हानेका बहाना करतेवाचा । जन्मक्तक-वि० [तं] पागला नहेमें चूर ।

उच्चमधन-पु (छं॰) विकासः छेक्ताः छुक्य करमाः फेरुनाः विकोहनाः भारणः। अन्यविश्व-वि [सं.] विकोहितः सुध्यः (मित्रितः, निकासः

इन्सचित्र-सि [से] विकोरितः सुष्यः मित्रितः मिकार हुनाः।

उन्सद्-वि (र्स॰) मक्बाका पापल उमन्त कर्नेवासा । पु॰ मछाः पापस्रकः ।

हुण (हायो)। जन्मन-दि जहिया अन्यमनस्क उदाश शस्त्रदेत। उज्यमनस्क-दि॰ [सं] अन्यमनस्क उदिया, स्याम उस्स् ठिए शेस्त्रास्थित।

उम्मना(नस्)−िष [मै] उद्विद्या प्रत्यक्राञ्चका शम्ब मनस्य ।

डन्सनी-की [नं] इड़बोनकी पौत्र मुझाओं संस एक । डन्ससूरर-ति [सं] पनदीका कांतिमान् । डन्सर्व-तुरु [सं] रगपना मकना (सरोर) ।

अन्यार्व - पु॰ [सं] रणहरा सकता (स्तरार)। अञ्चार्वज्ञ —पु [सं] सस्त्रा रणहरा। स्तरीरमें सन्तरेका यक सूर्वाधित इच्या इस इस्सा ।

जन्माथ-तु (तं॰) वट, पीता। मारणः विश्वं इतः वासः। विश्वतः स्वत्का एक मनुषर्।

जम्मात्र—पु सि] पागप्यंत सनका अन्यधिक अनुराग यक संपारी भाव । वि० जमका । —प्रस्तु~वि जम्माल रोगसे पीहित पागक ।

जनमान्क∽ि [मं] सन्मच प्रमादग्रम्ड करनेपाला। चु धनुरा।

दु धनुरा। अन्माब्म-पु [मं] जमार अस्पन्न बरना, जमत बरना; बामरेवके पाँच वालोमेंस एक । वि जमानक।

अस्मान्।(दिन्)-नि॰ [मं] उत्मादप्रस्त उत्मत्त । अस्मान्-दु॰ [मं] वाक्नाः मारनाः वीक मारा मृस्यः

उत्पात-पु[र्ग] कुमान वस्ताधामस्य सार्ग-कुद्रात्रः। (१. कुमार्मनातीः। कुमार्गारिकः }ेकिः (म. किमार्गकः) कुमार्ग

जन्मार्गी(गिन्)-वि [मं]कुमार्गगाभी प्रश्नाप्त । जन्मार्जन-पु॰ [मं] महमा रणवमाः मिदामा ।

~को• क्वाविधेन, मदनमाको ~यात्र-पु० कॅंग्नाहो। उडिका-मो॰ सि॰ो सँगोः घराव रखनेको एक तरवको सराही । उद्दी~की० [सं∘] उँदमी। राष्प्र-वि [सं•] गरमा गरम साधीरवाकाः तीखाः रायान्वित। चतुरा कुरीका । पुरु गरमी। चपा धीध्म कतुः गहरी सीसः प्यातः एक गरक । -कटिक्य-प प्रणीका कर्म भीर मकर रेजाओं के भेषका आधिक गरम, भाग । -कर-किरण-शीधिति-पु ध्र्नं।-कास-ग-पु गरमीका मीसम । -प्रा-प्र- क्रांका ! -मशी-सी वैतरणा नदी :--पाळा:--सा॰ पक पौषा !--रविम:---रुषि -प्र सूर्व ।-धाल-प्र विचाधनका यक रोग ।-बारण -प हाता। -विदरवक-प्रश्रीका एक रोग। ─बीर्य-दि॰ गरम डासीरवाला । प॰ गैंस । उष्णद्र~वि॰ [मं॰] गरमः गरमा पर्द्यानेवाधाः कार्यकः अर्थीकाः श्रद्धाः प्रमाः प्रमतः । यः अवशः ग्रीष्मः ऋताः नकरः कारमाः धोपारी । बण्यता - ली मिशी गरमा । उपयोक-ए सि॰ो विद्यासमें प्रचकित शापको एक इकार्यः 'हेलोरी'। उच्या-सी॰ [मं] गरमी। द्ववः पित्तः । उपव्यक्त-वि• [सं] गरमी म सद सक्रमेवाका। तावपीहित। उप्पासक−५० [ते] शत कारू, वाहेका मीतम ! ত বিজ্ঞা−লা (ઇ+) মাৰ। इप्लिसा(सस्)-का॰ [सं॰] क्सी। बच्चीब-प्र• [सं•] पगही, सामाः सुबद । उपमी (पिछ)-वि डि॰) को प्रसी वृति का सक्त पारम किमे की । प्र॰ किन । **प्रा**च्योध्य-वि [र्स•] बहुत गरम । अध्या~त [सं] गरमी; कमसः पूपः भ्रोप्त ऋता बोधः सरगरमी: होवा क्या वर्ण । -ब-५० क्यांचे वा गैकसे पैशा होनेवाके की हे~की सहसक बादि । वि धरमीसे रुतका - च-प्र पिटरा-स्वेद-प्रश्वान्यकानाः उप्पा(सन्)-को॰[सं॰] तावा बाला ब्राप्स व्हात बीका क्रमा शर्ग । इस−धर्व ॰ 'बह'का विशक्तिक पहके प्रयोजने शानेवाका कप (बसने बसको १०)। असकम-<u>प</u> रत्तन मॉंडनेका ग्रमादिका <u>श</u>हा । असकाशा—ध कि॰ जमाननाः वका देनाः कपर कठानाः। उसकारमार्ग्नस किन्दे 'बसकाथा' । उसम्बद्धा-स्टिक्टिक्टाक्मा प्रताना। उसमाना-स॰ कि॰ एएमनेके कार्नमें प्रमुख करना ! बसनीस*-पु॰ ६ 'बस्तीन' ।

धमरकी छड्छक्के नाव (डीसरे) एकोका भूने नवे। बसमानिया~प्र [म•] वसमानसे वहा इजा नई राव-वेख ।-सब्तनत-पु हुई सावास्य विसम्भ केत् १९१४ १८ ई० वाके महाक्ष्मके बाद हजा। उसरमा = अ० फ्रि॰ इस्ताः धलमहीनाः शेतवः विसरमः मुख्या । उसकता≠−व दि॰ वे॰ 'बसरमा',-'रावत्र्य देव-पैक सैक वसकत है"-मून्। पानीमें कतराना । कससमा -स कि साँच हेना वर्तात बेना किन्ता उसाँस-सी॰ कराकी साँची हार्व वा संग साँस दुन्स राषक शोसः धीस । उसामा∽स॰ कि दे 'बोसामा'। उसारका, उसासमाङ--ध॰ कि॰ उश्वादनाः महन्ते । मकान वा दोबार कारि सब्दे बरना । उसारा-प सावधान बरामदा। उसारि•~सी॰ दे॰ 'इसारा । ब्रह्माख−स्था है • 'वसॉस 1 बसासी - नी व प्रमार सत्ताने वम हेनेसे सर —'बान को केंघन कैतिक गर में सेसके छोतन हैं वसासी'−शम॰ ≀ बसिमगा!-स॰ कि दे॰ 'बसबता' । उसरिक-पु रे 'क्सीर । कसीकार-प वसीकाः सदामध∽'साहत वहाँ व रूग ਹੈਮੇ ਜ ਕਲੋੜੇ'।−ਰਿਸਤ• बसीसः बसीसार्थ-प्रश्न विरद्यानाः वर्ष्ट्या । उस्क-पुर्वावर) निवम, बोबरा। स्थिति ('बस्व'क पुः क्यांकी-वि उसक्ता हैबोरिक । बस्तरा-५० है। 'वस्तरा' । बस्ताच−पु [का] ग्रहा शिक्षको वि प्रसीपानै पूर्व पाकाकः। वस्तावी-का (फा॰) गुरुमारी प्रदेश साध्येता नामके उस्तानी−सी ग्रस्थामी शिक्षिका पूर्व सी । करपुरा-प (का) हुरा, बाल गुँक्तेका भीवार। उस-वि [चं] प्रातानाच-संबंधीः बमधीचा। प्र॰ धीर साँह, बुना देशताः स्वाः दिना व्यक्तिमोक्तमार । न्यान (भागु)-पुश्चर्याः उक्ता−न्त्री [तुं] प्राप्त्व तत्रका प्रकाश नाव पूर्ण मुसान्यनी । अभिक−त [सं•] पछना होरा मैका तदका मैल । **उरवास+-को दे** उन्नीत । अक्ष्या~मु हैं 'श्रीहरा । उद्धरि-- म॰ वर्षा । छहार-पु पालको भारिपर परवेके किय पना हुमा क्सा अक्रे≠-सर्व वर्गा । उसमाज्ञ∽प॰ (ज॰) प्रहम्मरके चार शाविकोंमेंसे एक वो । उह∽प॰ [मं॰] सॉंड ।

उसमा -पु॰ दे 'बरमा'।

त्रप्रकोत-वि॰ मिं। धारीन किया दशाः चिकितिसतः वर्षकश्चित । ज्यारिका - औ० हिं ने जपकार, सम्राई । जपक्रीका-मो० (सं०) खेलतेका स्थान ।

जपकार-विक सिंगी जिसकी निया की सभी बीह कीसा हमा। प्र नीय वातिका व्यक्ति वहर्दे ।

ज्यासील-पर्व शिवी निवा, अपराय ।

उपक्रोधन-प्रसि•ी निवा करनाः क्रीसना ।

उपक्रोहा(प्रु)-वि॰ [तुं०] निवादरनेवाका। प्र॰ गवा। जपक्रिका-वि नि | गीवा, सर। सवा-गरु।। उपक्रोश-प (संी इक्टा क्लेश (बी∘ीः क्लेशका

कारक (क्रीकारि) । उपक्रम, उपक्राय−प सि ी बीवाको स्वनि 1

बपक्षय-प॰ सि॰ । धर, हास ।

द्रपानेप-प सि ी किसीको और फेंकनाः चर्चाः संदेशः भारत्यः सार्रमः अभिनवके मार्रममें कथावरतका संक्षेत्रमें

उपश्चेषण-व [मं] देशनाः सम्बेष करनाः संकेश शहकः जावपरार्थ जावानके घरमें रहना ।

उपसाम#~प हे 'उपाडवास'।

जपरोसा(स)-दि मि∘े पस बाते पाप्ते कालते. स्वीकार करनेवाका ।

रुपगत-दि मिने पाम क्षाया, यदा हमा। परितः कत मतः कामा ह्याः प्राप्तः स्थिताः विद्या स्थाः प्रतिप्रतः गतः वतः।

उपगति न्यो [धं] पाष्ट भानाः बानाः बाननाः प्राप्तिः संगोकार काना ।

उपगम~प्र [सं] पास जानाः भागाः कानताः आप्रि र्थगोन्हारः बचनः बस्रः ।

उपरामन - प िश्री पास जानाः जानाः वानाः अंतीकराः स्ता ।

जपगाता(न)-प्र सि] एड ऋतिक को बस्ती उदानाहे साथ गाता है। बपगामी(मिन्) - वि [सं] उपगमन करनेवासा ।

उपगारण-पुर है 'उपहार । उपगारी+~वि है+ 'तपकारी ।

दपर्गाति~स्री• [सं•] सार्या एंदका वढ मेत्र ।

दपग्स-वि॰ [सं] टिपाना इमा ।

वपगुद-इ [मं] गुस्का सहस्रती, सहायक अध्यापक । -उपगद-दि॰ [d] दिएया हुआ; आसिनिट दबावा इथा। प्रशास्त्रितः

वपगृहत-पु [सं] क्षिणानाः गौपनः बानियमः विस्मव-बनद बरमादा होना ।

क्पमद्-पु [मं] छोटा महा वहे महकी परिक्रमा करते-नात्म छोता सद्दा गिरमदारी। चैदा कैदी। परावना अनुसदा प्रीतमादमः क्रशराणि । –संधि–स्री विज्ञाको सब कुछ देकर की जानेवाकी संधि।

खपग्रहण-पु [सं] परहना निरक्तार या की करणाः र्धमानमाः संस्थारपूर्वेदः नेपाध्यक्त करता ।

उपमाइ-पु [तं] भेर उपहार मेंट अपहार देना।

ज्यासाल−प॰ सिं•ी सामातः साझा धति पर्देचानेदी शरकारे संपर्कतें साराः सास्त्राणः रोगः पाप । ज्यासालक−वि सि॰ो सपदास करतेवाका । अवस्थानी (किस्त) - विक वि देश विकास । अराज-प सि] निकटवर्ती सहारा पनाह । उपचळ-प सिंशी पत्रवाह पशीका यह सेना वपचक्ष (स)-प [शं•] चामा ऐतक। असम्बद्धाः व वि विकास क्षेत्राः इकता कानाः प्रवतः बहती- बंदर संबंधित समुद्धित अपने दौसरा, बाता, दमबाँ का अक्षाउद्दर्शी स्कार १ क्षपचर--प॰ सि॰ो उपबार, शिक्रिसा ।

उपचरण-प० सि॰ यास बाना। सेवा विदित्सा आदि ध्यना । उपचरित्र-वि॰ मिंी जिसकी शाम वा की गयी हो: सेवित.

द्रपासितः क्रस्त्वासे द्वान (सः०) १ उपचर्या न्त्री वि विशेष उपचार दक्षात । उपचार्या(विम)-- ६० (मं०) वृद्धिः वृत्तवि करनेवासा ।

जयकारम-प कि विश्व तरहरी परिचायित चारकी सकि रक्षतेका श्रंष्ट । उपकार∽प सि ी सेवा: इकाज, विकित्सा: विधान: प्रवानधाना प्रवादे लग या हस्य (बोहशोपचार प्रवा): अम्बासः व्यवहारः अपनीगः शिष्टा बारः प्रार्थनाः सापस्रमीः दिकाक, ररमी व्यवहार बहाना। नमस्त्रारका एक देव ।

उपचारक-वि॰ सि॰ इकाव करनेवाकाः सेवा श्रवस करनेवाका । प शिष्टताः विसम्रता । उपचारमा -स कि व्यवधार करनाः विधान करना । उपचारी(रिम)-वि॰ (र्स॰) वे 'दपवारक ।

उपचार्य-वि॰ [सं] सेवा-रहरू इतने बीम्य, पृत्य । प्र छपवारा विक्रिया-दार्वस सम्यास ।

ठपविस∽रि सिं•ी स्कटा किया हमा। का हमा: बिसको शक्ति कर गयी हो। बिसको पास बहुत अधिक हो। सस्बद्धः इस्ताहकाः सिप्तः द्वार्थः।

उपविक्रि-को सिं•ो बक्रिः बसा बरसाः सास∙ राजिः केर 1

उपश्चित्रा-सौ+ सि] विश्वा नष्टनके पासके-इस्त और स्थाती-नक्षमः वती मृक्षः मृभाष्यमीः यक छंद । उपचेतना-स्रो [ध] वत स्या।

उपचेय-वि मि विमा रहता गरमे योग्न प्रशीय। उपचारतम-प मि] होत दिस्हाहर तप्र वरना राजी करना ।

दपर्व्यादितः नि [र्व•] सीम रिसामर रामी दिना इभा। उपवाह-पु॰ [मं॰] दश्या पाररा परदा । उपच्छन्न-नि [सं] स्था शिपाना प्रभा ।

उपज-मी वापधि पैरावारः करपना मुखः मगम(त बातः गानेमें कीई नदीनता पहा हरना जयी ताम संगाता (हेना) । भु॰ –क्षी संना-नवी वृद्धि निदानना ।

अवज्ञाली-की हि देशविधेया उपज्रत•~सी वैदाबार ।

उपजन-पु॰ [सं] जरपति वृद्धिः मूटः भड़यते जोता पताबी **पूर्व-परताः** दारीर ।

अम-प्र• मेर, देने बादिका ब्रोगक पाक जिसका क्रपहा बमता है । वि॰ (सं॰) व्यून बीबार सीटार गरिका । सु॰ मानमा - दिक छोटा करना, बु:बी बीला । क्रमक-वि॰ [सं॰] व्यूम, दी १३ अपनीतः सरीप । अमता - खी॰ सि॰ विभी। क्षेत्राचे। बटियाचन । क्षनाव-विवदेव 'क्रम'। क्रमित-नि॰ [सं] कम किमा हुना, पटावा हुआ। उनी-वि॰ कमका बना पश्चमा । खी॰ बुःहा, स्वानि । खपण-सी० दे॰ 'मोप'। पुरु शक्का कक्के ही क्यमें विवा कानेबाका ध्वास । अध्यनाध-न• कि धपनमा। सपर~न॰ जैंगार्रपरः भारतशको नारः शीपेका बक्दाः बीठे का क्रवपर, कपरकी मेडिकमें। सहारे: सिरपर, जिम्मे: बढ़े वा कैंचे बर्जिमें: (बेस्सविमें) पक्केर शक्ति: शतिरिक्ट बाहिरा, प्रकटमें। किमारेपर । -अपर-बा (बकासे) निना जवाने, नाका-नाका, साहिरा । अ॰ -अपरस-बाहिरा, प्रकटमें । की सामवनी चेतन आदिकी देवी मामद्रतीसे मदिरिक भाग नाटाउँ भागवती । 🗝 दोमों काना#-दोनों मोर्से ५३ शाना । -सकेके-माने-पाँछे होनेवाहे, सरबरिया । -क्रेमा-सिरवर वा बिमी केना। ~बासा~र्रभर् । ∼वाकियाँ~चीकें: भुवैकें; परिवाँ।-से-कॅनर्शसः के अतिरिक्तः अलाकाः वकर व्यवस्तिः बाहिरा । -होसा-पर या अविकारने पहा होताः प्रधान होता । ऊपरी-वि॰ कपरका, नामार्थः नामधेः विश्वाकः। −कसातः कर-प्र मैतराया । **द्ध - भी** अस्तेका भाग, कहतानाः क तांना करताह । क्रबट#--विण करह-शायमः फेडिन । प्र क्षेत्रकशायह रास्ता । अबद-जावद-विश् क्रेश-मोबा करका। क्रवना-मा कि देरक यह ही रिवतिमें रहते यह ही चीक्यो हेक्के-समूठ १६वेसे मनका उपरा बाता १५राना। मत्म द्वीना "मीरी कमरिया गाँच टक्क्सी सग्रे क्लै देव'~श्रीक देशन। क्रवारक-वि क्वास्त्र । क्षप्रमाश्रम्म क्षित्र वे 'क्परमा । क्षमण्यि कैंथा। की कमस्त्र नेपेगीऽक्रसाइ। च्यूम ~सी अवने कतरानेकी फिया ! क्रमर-विक, पुर देश क्रवर । क्ष्ममा :- स॰ कि॰ बड़ा होना, वस्ता। क्ष्ममा। क्रभासाँसी~की दगफूकना क्शनाः क्षमक>~ली॰ सपर, शॉक, देग ! aaरर≉−० क्षत्रियोंका एक मेर । त्रभवाक-भग्नाक कि व्यवना । क्रमर-पुर गुरुरा एक वैश्व शांति । क्रमारि≉−पुगृहर। क्रमस~को इवान कक्रमेशे मात्रम बीनेवाको परमी, क्सितकी गरमी, श्रमा । क्रमहमा • न्य कि वर्मगर्ने भागाः विरमा । क्षमा-न्यो॰ दे विनी ।

क्षमजोरी !--श्लंभ-- एक रोगः प्रांची और रेपेंग जब बाजा । -- स्तंत्रा -- श्री बेक्स देव । क्षरा–भी • एक हैंदोसी बसा बर्की । क्रकाश्रस−वि विं≉ी चाँचरी शरका । प्र∙ वैश्व । उन्हें-वि॰ [सं] वही, सुन्धिशाबी; वस्थारका स्टिराहर पुरु वका उत्साहः चेद्याः क्यमः बोवनः कननस्त्रिः अप नक्का नत्पत्र सारमूच रसः नदा यनः क्राप्ति वसः वर्षाकंकारका एक मेर । -- मेघ-विश्वत क्युर । कर्ष (स)—इ [d+] इन्हिः वत्साद बाह्यर । कर्जीस्वक्त-वि [सं] गलवाया संबन्धीः श्रेष्ठा बन्दर। कर्जस्थान (बरा) – वि० (सं०) बाबसंबक्ष रहीका क्षेत्रस् सक्तिश्राणी ह कर्नेस्थी(रिवन)-नि॰ [तं] दे 'क्रांसक'। १० मन बाव्याबंबार को ऐसे रवबॉक्ट आता है वहाँ रसामस म मानामास स्थानी भानका भंग 🗓 🛭 कर्जा-ची सिंधी बाहारा वका क्लाहर हरिए स्क्ये स्व करवा को वसिष्ठको स्थाही गयी भी र कर्जिल्-वि+ [सं+] बोजरबी (भावन); बक्रमाः धर्मि घाकीः सम्बद्धः गंभीरः देवस्थाः ब्रेषः । कर्जी(बिंगू)-पि [गं॰] वर्षी खानेशानधे महार्थेस नाइस्य हो । डामें −पु॰ (छे) कनः कती क्रपा। −ताम −वानि = पर-वामि-त महता। -पिड-प्रश्नवा सेमा -श्रद्र-वि॰ छन बैसा सकानम । कर्णां की [सं] करा विभरत संपर्वको स्त्री। सीर्वेते नीक्दी भैंतरी । -सुध-तु अलका रागा । अर्जातक-विसि विमा। कर्णायु-नि॰ (ते॰) बनी । पु मेशा महदा। बमीक्स है। कर्णांबान(बच)-वि सि] स्मी। उल्लंब−विसी बकाइमा। कर्षर-पुरु [सेरु] धरका भागतेचा एक पात्रा बीक्पा देखा क्षदर्भा−षि व [स•] वे• 'इप्पे'। क्षयें−निज के कर्जा कर्त्वे~वि॰ [सं] डेंबा३ सोधाः दरावा द्वार पद्माः स्वि राने हुए (बाक); कारर फेंद्रा हुना । स॰ सपरा र प्रामी बीरा कागे। वहर । पु कैवाई। डीक क्यरकी विशा ! " कंड-वि॰ विस्ता नरएम बडी हो । -कंडी-सी नहीं क्षरावरी । −कृष −केस−वि निष्ठके वाक घरे वा विकारे की 1 प्र केंद्र 1 -काम-वि विकास की की -क्रिया-ली अवक्ष वा गतिको माहिमे सहायक दिवा!

उरक-प• बीर, श्रंत !

करबा-प है। कार्र ।

करच्या-प॰ सिंशी देशका

सरम#-विक सक हे 'तहर्म'।

करण्या –की सि•ी वेश्व शी।

कर-प्र• सि] वाँच, रान । नप्राह्व-प्र• वाँच्या क्या

वाना ! - रास्तरि-स्वो । वॉक्से बम्बोरी ! - क.-

बन्मा(म्मन्),-संमव-वि॰ व्यवसे एत्स्व । १ हैस ।

~पर्य (ग)~पुरु घुटमा । ~कसक~पुरु वॉक्स्पे ह्याः।

~संधि-खी॰ बांधका बोट, पहा ! -साद-त॰ बांसी

क्षेत्र और श्रीज । ज्रयकाल-प॰ सि॰ी वह बस्त क्रिसका सहारा क्रिया जावः त्रक्षिमाः यक् विद्यय ज्ञतः प्रमः विद्येपताः बरुकी र्वेट स्वाते समय पटा जातवाका ग्रीक विच । त्रपद्मानी - स्त्री विश्वी तकिया गहाः पैर रखनेको छोटी

क्षेत्र ।

त्रपद्मानीय∽वि सिंी पास रक्षमें कोस्य । पं तकिया ।

रपचार्या(यम्)-दि [सं] सहारा क्षेत्रेणाकाः वक्षिया इस्त्रेयाक करनेवाका । प्रपारण-प्र• [सं] सम्बद्ध वित्रशः विश्वको किसी एक

विकासी बतामा श्रीवामी कारिये केमावर फलादिको नीचे

भ्योक्त । द्रपद्मावन-प्र• [सं] अनुवानी अनुसरमा निमार करना। कपश्चि-ली॰ सि ी एक चौरीनाकी। (मुक्तमेर्ने) सखी वात

की छिपादर कसरी बाद दहना। चमकी। पहिचाः आपार (वी)। -यक्त-दि मिश्रस्यै।

उपधिक-वि [सं] ठग, नोसेरान, छनी।

उपचित-वि कि । वर दिया हमा, भूपले वासिता बार्यंत प्रद्रमारतः मारणासक् । प शस्य ।

उपप्रति−तौ [⊨ी दिश्यः प्रदय ।

उपमान~प (सं विकार केंद्रमा।

दपध्मामीय~प मि । 'प' और 'प' के पाले आगेवाका महाप्राण विसर्वे ।

उपध्यस्त∽वि• सि•ो नद्द किया बजाः मिनिद्य ।

उपमेद – प्रसि•ी मंदके छोटे सार्व।

उपमक्षय-प्रसि । होना या गीन नक्षत्र ।

दमनल-त मि॰ी लखदा एक रोग, गलका ।

ठपनगर-प सिंशी गगरका बाहरी माग भावरसे सकी 👫 या उसके बाबेपरकी बस्ती कादानगर ।

उपनत−दि [सं] पास भावा इमाः उपरिचतः सत्र सुबा द्रभाः सरणाग्दः निज्ञद्रवर्ता (समय स्थाम) ।

उपनित-सी [र्ट॰] पाछ भाना, झक्ना; नमस्कार करना ।

उपनद्ध-वि [सुः] देश वा मना इजा ।

उपनमा ० -- भ० कि उपवता।

अपनय-प॰ (सं॰) माप्तिः निसक्तिः पास हे बानाः गरके पास छे बामा: परनयम संस्कार: वानवके वाँच अववर्षी-मेरे चीत्रा (म्या)।

क्षप्रमाम - प्र•िमी विषय है। आला: गुरुव्य वास के आला: मदोपरीत मंत्यार् ।

उपमहत-पु [गुं•] कावना गैठियानाः वह कपहा विसर्वे कोर्र चीज कांची संदेश जाय ।

उपमाण-अ कि उत्पन्न दोना " सुनि वरि दिय गरव पूट उपनी है -गीता ड

जपनागरिका-मी [मं] कृष्यमुधासकी तीन कृषियोंगेंने एक जिसमें मृतिसपुर को बार-बार वाते हैं और श्रमाम मदा बोने यदि दोने हैं तो छोटे बोने हैं।

वपमाना - एक क्रिक उपवामा पैश करमा ।

जपनाम(म्)-प [मं] भी भाग पुरारनेश नामः पार्थाः देश-व्यदिताभारिमे स्पष्टतशीश मामः तसस्युतः ।

जायात्रात्र, जायात्रात्रात्र-प सिंशी वे 'जपनग्रस') जयसायक∽व= सि ी श्रीण वा अप्रवास नावक साटक कारियें बार पात्र की जाबकरा प्रधान भारावद को (सैने रामाञ्चलों अस्त्राचीः उत्पतिः सार । उपमाविका-सी॰ सिंी नाविकाकी मदान सदाविका ।

इपनासिक-पु० सि ो सन्दर्धे पामका क्रिम्स । उपनाह-पुर्व [सेर] गठरी। बीमा वा सिवारको संदीः

सरवस विश्वनी । उपनाहम-प (रि॰) भरहम या लेप छगाता । जपमिन्नेय-प० सि॰ । परोहरः महरदेव परीहर ।

उपनिवासा(स)-वि दि विशेषद रसनेवासा । उपनिधान-प [सं•] के प्रथम प्रकासक भरीकर

रराजाः शरीधर । अप्रतिकासक-वि० सि | दे 'स्वतिवाता' ।

उपविश्वि-सी सि । बरोबर, बागानतः सबरकेर असा-नतः। -भोक्य (१६)-प इसरेको परीहरको स्पर्व **प्रका**री कार्नवा**का** सन्दर्भ ।

उपनियात-५० सि ने परित होनाः जवानक आ प्रकाः यहाण्क बाह्मण करना राजा चीठ भाग पानी आहि का दिगाना वा तष्ट होता (की) ।

जपनियानन−प॰ पि॰ो असानक महित होता। समानक बाह्यसम्बद्धाः ।

अपनिषय −५ सिंी शीम नियमः स्वतिसिष्ठ बोर्न रेक्ट बंदनी आदिके धनावे हुए नियम शहरको ।

उपमितिष्ट-वि सि ी निशिक्षितः कनमदी (सेना-का)। उपिवेश-प [ए॰] इसरे देशते आये प्रय जोगींकी बरती। बह विकित देश किसमें विकेता राष्ट्रके सीमा आसर क्स वये हो कोकोनी । -पद-प स्थनत उपनिवेदीका बरजाः वस प्रकारका स्वराज्य था स्वर्तप्रदा जो कर्नो प्राप्त

है, 'टोग्निमियम स्टेटस । उपनिवेशित-वि [र्ष] क्पनिवेश बनावा हुमा । अवनिवेजी(शिम्)−ि [सं] इसरे देशमें वस बाने

बाका अधीवेद्यवामी, बाबावदार । उपनियत्त-भी [मं॰] बंदीका दानका माने पानेबार जवाविका-प्रतिपादक श्रंथविद्येष (शतको संस्था १८, १४. भर अथवा १ ८ वर मानी बाती है। इनमें ये १३ मुख्य रै-रंश. येम कठ प्रश्न मंण्ड, मांत्रक्य सेतिरीय

मेतरेन डांगीम्य बृहदारम्बर बीदीलक्षी, मेत्रावणी शैलाधना है। बेनरबस्या ब्रह्मणान निर्मन स्थाना बेन्यानी ब्रह्मचारीके किए ब्रह्मच एक विशेष संस्कारः समीपस्य

अस्तर । उपनिपार्था(बिन्)-वि [धै] गुरुके पाध रहनेवाला

बगर्मे सामा पुन्ना । जपमिरकार~प मिं•ो सरक, रावमाग । उपनिकाण पु सि॰] बाहर निकलनाः महकान शिल-

क पहली बार बाहर है जाना। राजनार्ग । ज्यनिक्रिल-वि॰ [में] अमानद रसा हवा ह

क्यनीत-वि [में] पम कावा दुभा विस्ता उपनयन हमा हो।

उपमाय-द [बं] माचपर, मृप्यशाना ।

11-8

सक्∼क्तु क्रक्(प्)-सो॰ [सं॰] कावा, देशमंत्रा कावेरका संवा कमदः रतात्रः शांतिः रत्तिः पुत्राः। -(क्)तंत्र-पु सामवेदका परिशिष्ट । -सीहिता-ती। अस्वैदके मंत्रीका संघार । मरक्य-वि सिं°ो सत शास्त्र । प्रतथप-पु• [सं•] धना बावदाना सोनाः सूत व्यक्तिको कोरी दुर्व संपत्तिः यक्तराविकारमें मिकनेवाकी संपाक बरसा, बरीती।-प्राह,-भागी(गिथू),-हारी(रिन्)-पु • भन्नथ पानेशका बारिस । भरक्र−पु• [सं] रीधः, भरतुक शाराः नवना राशिः रैपतक पर्यक्षः --ग्रंभा-स्ता श्रीरविदारीः मदाव्येषा । -जि**द्व**-पु॰ रफ तरहका कुछ । ~शाका,~पति,~राजा~ पु चंद्रमाः पोरवाम् । - नेमि-पु विष्णु । - विश्वी (विस्)-पु॰ इनसंदासा स्थोतियो । -विभावन-पु प्रदेशी गठिका निरोक्षण । **म्हार~प्• [स•] क**ंटाः पुरोहित। नर्षा । भरक्षवाम् (वर्) – प्र [सं] कस्र पर्वतः। ऋका~नी॰ [सं∙] एचर दिया ! ऋझी∼मा॰ सि॰ो शता रीछ। अरक्षीक−वि [tj+] भावः वैद्या गोरामक्षी । **मधीका-छो॰** (सं•) एक देवी । इसक्षेश−पु॰ सि] संद्रमा । इरग्−'कन्'का समास्यत कम । ∽वेद−यु वारों वेदोंनेंटे एक को कहता और प्रवान माना वाशा है। −वंदी(दिम्)−दि कम्बेरका द्याता ना स्वतेवालाः विसरे संस्कार ऋग्वेडके लक्ष्मार बीते हीं। भरवा-का (सं] देवमंत्रः क्रमेटका मंत्र ! करचीक-प्र+ [से] एक काँप, कमन्यितक दिना । मस्त्रीप-पु॰ (सं॰) एक मरकः कवादो । इस्फ-९ रोड़। मर्थ्यका-ली [मं] रच्छा। मरप्रशानकी [सं] वैस्वा । क्षजिमा(मन्)-सी सि] शरूणा। ऋबीफ-पु (सं∗) रंडः कुमीः साथनः। वि मिनित हटापा हमा। प्रष्ट दिना प्रमा । क्सअपि~प सि विश्व नरका बजावी। सीमध्ये सीठी। वस । भाग-वि [र्र] होशा शरक, क्ररिकतारविता सकाः जनक दितकर : -काम-नि जिसका क्यार सीवा हो। प॰ करनप सनि। **-वरत**-नि सवाचारी। प॰ इंद्रा ∽ग्∽पु वान} शब्दना है सरक व्यवहार करनगचा। ~मीति~सौ शराचार। ~रोडित∽प रंप्रका सीमा काल बत्तव ! ~खेराा~स्त्री सीमी रसा ! प्रस्ताता~मी॰ [सं॰] शोषावच सिधारैः स्वारेः स्टकता । महत्वा(-हिसी सि) स्टब्स् सीपी (सी)। क्रम्भ-तु [स्] कर्ब, देशः चवार की हुई रक्षमः धइसाम का बोहा फर्जा बराने था नाधीका विक (स); नशानः दुर्गा बक्षः क्रमीक् । विश् क्रयक्ष प्रिगेटिकः भाग काने वास्ताः वीको । -वश्रां(स्)-वि० कर्व केनैवाका। -प्रस्त-वि कर्मने पैसा कथा सक्त्याः -ब्राही (दिन्)-विकार केनेवाला । -ध्येष-पुरु कर्म क्या |

बरना ।-श्रय-पु॰ देव कथा, ऋषिका और रितनका। -क-वावा(त)-वाबी(बिन्)-वि कां प्रकासना। -वृत्त-पु ऋवपरिद्यात । -दास-पु कर बल बे जाका क्षत्र चुकाकर धरोश कान। -निर्मोध-तः विवर्तके क्यमें मुक्ति। -प्रा-पु॰ तमस्तुर, रहा 'नोर'। –सत्कुम्य,–सार्गण–पु॰ क्वरंद्य क्यास्त्रीक् बमानत करनेवाला प्रतिम्। - मुक्त-वि॰ जिसने पर भुका दिवादी अक्स । - सुक्ति-क्ली - सीक्ष-प्रश कर्मध्य करायग्य । --मोश्रिश-पु॰ ऋणदास ।-हेम्ब-पुरु कालवत । - विद्यात् - प्र विश्ववैश करवेशाची विज्ञाते । च्छा**डि** न्यां+ क्यां भदा होमा । ल्ह्योधन-तुः स्व पुकारा। -समुदार-पुर करेंद्री रहती। प्रश-उद्यादमा—कर्मभए। कर्मा: ~च्यमा–कर्मभीमाः -पद्माना-बोरे-बोरे दर्ब बदा दरना । -प्रद्मा-दिन बार धनाना । **ध्रमतिक−पु॰** [नं•] संगक प्रद्रः ऋ**नारसक-वि [सं] काक्य 'वेगेटिव** । क्रकाशाम-५० [सं] कर्मका बसूभ द्रोना ! क्षरणायकरण~९ [र्स] कवडी करावती । करणायमधन –५ [र्स+] सर्जेको भगवनी । क्तव्यपनीदन-पु॰ [न] कर्त्र पुदाना। करवार्ष-५० (सं०) कर्न अकानेके किए किया जानेता क्तिक-वि [सं•] कर्नदार। क्तवी(जिस्)-वि [सं] क्षतंदारः ग्रहसनमंबः वर्गाः क्ष्योब्द्रहरू—दु [सं] किसो प्रकार कर्त्र क्रम क्रमाः क्सर्टमर−वि [मं] सरबका भारव-रोपम करनेवामा (परमेक्र । भरतभरा−वि स्ता [मं•] स्था प्रकार रहनेनामा ^{स्रा} का ही पारम-पोपन करमैवाली । जीव प्रव होसमें र मदी। श्रमाधिकी वह भूमि जिल्में स्टब्स हो परि होता है। बरत∽पु॰ [र्स•] सरका सुरोका जादि और पारक 🗗 र्वेश्वरीय निवमः महा यदः भारित्यः पूर्वः वर्मेष्टमः 🕶 नया रहिष्ट्रिया यनुकृत क्यम । वि. सत्त्र, समानन्त्री कविका प्रथावै। पृष्टिका प्रश्नासिक होता प्रमानिक।" धामा(मन्)-वि॰ सरवर्षे मिवास करमेवाका । 3 विष्यु : - ध्वञ्च-पु शिवा -- पर्य-पुरु वे प्रतुत्व -बादी(दिम्)-वि शत्य बोलीवाता। -मा-नि सरवाती सरव बोकमा विसका प्रव हो। **माराष्य – वि॰** (सं॰) भीसमाः मीसम-संश्री । **अर्तिकर-विश् (**थं) दशपरा भाग्यकीन र मारि -सी [मं] गरि माहामणा माना संगमा भातरण स्कृतिः दुर्भागा दुन्धा रद्यमा सत्या निद्याः रेम्बी रप्यो व्हतीया-सी [तं] इवा मृतुप्मा; कवा; सिंहा i सर्त-सी॰[मं] वर्षके श्रीण्म प्राप्त सरत, हेमंत, हिर्मा वर्शत-चे हर विभाग मीसमा किसी भागते वीतेना दिवर काक रजाना गर्भेगारयके अनुकृत काला जिरियाँ म्बनस्थाः शीसः वदी संस्था ।—बास-तु॰ उपतुष्क कार रजीवर्ध नव नारको १६ राउँ जिनमें स्रोते गर्मनारमध्ये बर्दर

वपसान्-पि॰[सं॰] बानंदरावकः। यु जपसीमः प्रस्तता। वपसान-पु सि] वद वस्तु निससे किसीको ग्रुकमा की बाय। -सुसा-सी वपसा नक्तारका एक मेर।

उपमामा≠-स कि द्वस्ता करमा ।

उपमाकिनी-सौ [सं] एक कृत्त।

वपमित-वि [सं॰] विस्को किसोसे उपमा वी मनी हो । पु कर्मनारन समासका एक मेर, नो सम्पोक्ते नीच पनना नापक सम्बद्धा कोप करके वह नमाना जाता वे (म्बा) । उपसिति-को [सं] सहस्क, पटतर सहस्वते होनेवाला

दान (स्या)। श्रपमित्र-पु [तं] सावारण मित्र अंतरंग नहीं।

बपमेत-पु॰ [सं॰] श्रास रूस ।

उपसेष-वि [सं॰] उपसा देते वीस्व । पु वह वश्च क्रिप्त क्रिकेट कुण्या की वाद वर्ष्य । "पुसा-की । उपसा कर्ष्याच्या एक मेद, जिसमें उपसेव रश्च क्रवंसे विषमान कड़ी।

उपमेशोपमा—सी॰ [सं॰] उपमा अवस्थारका एक सेद विसमें उपमेय हो करमा उपमानसे और उपमानको उप मेमसे सो गया हो।

उपर्यंता(त)-पु [सं०] वृद्धि।

उपमदा(सृ)-पु (सण्) वर्ष मा औनारः चौर-फाइके काम आनेवाका एक विगेष क्षेत्र ।

उपयम-पु [सं] संबमः विवाद।

उपसमन च्यु [सं॰] दवानाः संयम करनाः निवाह करवाः सदाराः।

उपयाचन-पु॰ [सं] मॉनना प्रार्थका करना । उपयाचित-वि [सं] प्राप्तिः निवेदित । पु॰ प्राप्ताः इष्टरिदिके किय वैद्याको अपित को बानेनाको वस्ता ।

खपयान-पु [सं॰] पास वाना। खपयाम-पु [सं॰] विवाह।

उपयायी(यिम्)−वि [सं•] पास जानेवाला ।

ठपयुक्त-वि (सं॰) उपनीतमें कावा हुआ अयुक्तः वितर ठीक मीनुँ। बीत्मा अनुकृष्ट ।

उपयोग-पु॰ [सं॰] व्यवदार, काम केना; कामा धन-पुण्याः सरापरमः संबंध रचा देशा वा सैवार करनाः समीक्यो मारि करनेवाका कार्यः

कमाक्त्य मारि करानेवाका कार्य । उपयोगिता—सी॰ (सं॰) उपवोगी बीना, उपवुक्तना । —बाद—पु भरिक्ती निषक कीर्गीता मनिकती भरिक

दितसाभन पर्म है-यह सत 'बृतिकिटेरिवनिवम । वपयोगी(गिन्)-वि [सं॰] बाममें भानेवाका बाह भागना सामवनका याममें सानेवाकाः संपर्दशका ।

उपरंजक-वि [सं] गिनेवालाः प्रभाव बालनेवाका । उपरंजन-पु॰ (सं॰) रेमनाः पासरो चीजपर अपना रंग

का असर टालना। वपरंजनीय उपरंज्य-दि॰ [सं] रंगने अमानित दिये

जाने शोम्ब । जपरंभ-पु [मंग] लपु छित्रा धोई-६ छरीरका एक विरोध

नाय, पमहिन्यों हे नीघड़ा सात । कपरणः—वि [सं] विषवासका पीड़ियः विपरप्यस्या त्रिये महरा तथा हो। रिनेता त्रिसमें स्थापिके साविष्यसे समक्री शुणकी प्रतिष्ठि दोती हो । यु प्रस्त सर्व ना चंद्र' राहु । उपरक्ष—पु• [सं•] अंगरक्षक, 'नाडोगार्ड' । कपरक्षण—पु [सं] पहरा, जीकी ।

कपरक्षण≔पु, [स] पहरा, भाका । उपरक्त−वि॰ [सं॰] विरक्त, जिसका मन दुनिया वा विषय

भोगसे बढ गया हो, रागरिका निष्का प्रत ! —सोणिया —सो वह जो जिसे वर मासिक लाव न होता हो । उपरक्ति—जो [सं] विराग, विषय मोगसे विराक्त बडा

सीमता; बधादि विदेत कमेंका लागः सूखा इति, समझ । अपरक्त-पु [सं] पटिवा किस्मके रह्न (सीप, मरकतमणि,

स्फटिक भाषि) । अपरमा~पु बुपट्टा, उत्तरीव । • अ• क्रि.• च्याप्ता । अपरक्त, अपरक्तह्र-वि• क्यरी; बाहरी; निष्प्रवेक्त,

उपरफड, उपरफड्=वि॰ कमरी; बाइरी; निष्मवीक्त, वेकस्त निवमितके कवादा । उपरस—पु∘[र्स] कपरींट विक्वसे विराग; उपरति होना;

निवृत्ति क्षित्रंतिः वृत्तु । उपरसम्ब-पु॰ [सं] विक्वेंसि विरक्त दोनाः यदादि कर्मी का लागः दिर्माति ।

उपरवार - की कैंबी बमीस बॉगर । † वि० कप्री । उपरस्र - वु० [तं०] परिके छल्छ गुमवाले प्रार्थ-गंबक, अन्नक, नैनसिक, गेरू बादि। गीण मावः बोड़ा भोड़ा मास्स

्दोनेवाका भगवान स्वाद । उपरोत्त−भ [र्स] कर्नत्र । वाद ।

उपराज-पुर हिं] रंगः काक रंगः काकीः पंत्र-सूर्व-प्रह्माः विश्वापक्तिः ममावा निकटल बस्तुके प्रमावसे रंग-कर बरकमा (स)) दुर्णनहारा निया राष्ट्र । उपराज्यी-की॰ एक इसरेसे का नोत्से कोश्चित्र, प्रति-

स्तर्भं कात-दार। उपराज-पु (र्ध•) राजन्ता नावन राजप्रदिनिधिः

बारसराय' । ६ खी० सपत, पैदाबार । सपदास्त्रताश-स॰ प्रि॰ स्टब्स करमा, स्वयाना; बमाना; स्वार्जन करना ।

उपरामाः - म कि॰ कपर बानाः स्तरना । स॰ किः कपर करना, पठाना ।

उपराम−५ [सं] दे॰ 'उक्तम'।

अपराक्षा==त्र सदानता। वधानः प्रश्नमद्दणः। अपराक्षटा==ति की सिर कपर दिने द्वरः हो, अदहता

धुना। उपराहना॰-स कि मर्थमा करमा।

जपराहीं -- ज॰ रुपर । वि॰ वहचर । -- भावदि बोदिस मन जपराही -- प॰ ।

उपरिन्म [सं] कपरः उक्तंत ! नकर-पु एक प्रकार का करा । नकर-वि उपर वक्तनेशाना । पु पत्नी एक वसु !--विश्व-ि कपर रहा वा सना दुना !--अधिक-वि जवस्थी अंगीका !--सव-वि कपर नैटा वा सेटा

हुआ । पु वद्ध देववर्ग । उपरितम-दि [र्स॰] उपरका देवा । उपरी-प्रपता॰-पु वना-उपरो ।

अपरीतक-पु॰ [रां॰] वस रतिरंद । अपरुक्-पि॰ [रां] रीवा दुवा वावितः पेरा दुधा; देर

पेंद्रा-बेंद्रा-४० प्रवटा-सीया । र्पश्ची-सी॰ एक तरहका रेक्षम वा असका कीहा, बंधी ।

गॅ.सका~प॰ गेंदरी नंदरी।

र्पुपासर-पु (बंध) सामान्य । पंचलेंस-प [अं•] नुकक्षेत्रका नरपशाक थी। भागदवकता-

मुसार एकसे इसरी अगब बढावा का छके, मैनामी करप नाकः बादकी श्रीमारीको कियाकर करणताक के जानेके किए बनी थाडी !-कारं-कों एंथ**ें**सकी कारी !

बादिके संस्थमें इसका प्रयोग किया जाता है। सं विश्य । क सर्वे श्रेष्ट l

युक्ता-वि॰ अदेशा।

शका।−विश्यक्तरमा एक ओरका।

पुर्वनी-सी मुस्यि छगा प्रभा छोटा क्दृह्दार रहा। वि दे 'यकांगी'।

पक्रोंबिया - विश्वमें एक ब्रो मंड वागोंट को । प्र∙ एक भंडीबाकी सहस्रतकी गाँठा एक अन्यदेवशाका कैस वा

थीवा।

पर्कत*—वि प० ४० थकांता युक-निर्णामी) पहले शंक या रेकाईसे स्थित दोका धावाः मकेका जैसा दसराज हो देवीका नहीं। जपरिवर्तिया रिवटः प्रचानः सत्यः वैक्षा बहेरी एक भी। बीर्व वा कार मी (एक स चक्रमा) न धुनना)। जी निककर एक भीज पकरम श्री गया श्री मेदरहित। प्राथका अंध वा देखाई रे। विका परमारमाः + येक्व साम्यं ।—ऑकः—ऑक#--म निश्चव हो। - साधा-वि० हिं। पक वा माधा एक-दो बो-दक। --णक-नि कि किर एक, प्रत्यक। म एकके बाट एक बारी-बारीसे १ -- कड-नि साथ-साब एक स्वरमं तकारण करनंवाते । -कवारम-विश क्टोरेमें कितमा मा सके। —कर-वि सिर्ण एक काम करनेवाकाः एव किरण या एक दाववाचा। **⇒क्रकम**~ वा [विं∗] यक बारगीः निकान परे शीरसे ।~बाकिकः --कासीन-वि एक ही बार डीमेंबाकाः पढ गरकाः धमकाकीन । -ब्राइक-पु क्षत्रेरः येथा वसराम !-ब्राप्ट ~प्र क्रम्म रीगका गया संद । ~क्रम्य-वि वक्त वार शीता इकाः −कोशी(शिन्)−वि विस(प्राणी)को देश एक ही क्षेत्रप्र(सेस)को बनी हो । -शब्ब-प्र परमारमा । -गाफी-मा॰ कि । एक वी नेपने तनेस भनावी गर्भा नायः परता । ।-प्राप्त-नि एक वी गाँवमें वसनवादः । ~च% −ि एक वी गरेश हारा भासिकः अवस्थिति पक परिवेदाता। पुरुषेका १४। सूर्व ।- अपका-भी महा-मार्दमें वर्षित एक माधीन नगरी ! - चक्री-ली एक परिवेक्ट गाना ।-चर-वि अने ने रहने या निजरने बाका प्रवासी: यह शीवरवासा यह शाथ रहतेवाका !

पु॰ गेंद्रा !- भारस-नि [वि] कामा । पु वद तस्त्रीर

विसमें भेकरेका एक को राज और यक्ष ऑपन दिखाई है।

—चामी~वि शि] श्करती ।—चारिची—वि शी

परिज्ञतः (स्रो) । ~चारी(रिम) ~वि वे पद्मचर ।

- विश्व-वि दश ही विषयको सोजनेपाका, एकाम

चर्मनः एक मन विकारके। <u>पु</u>रु विश्वी विकायर मनको ।

ण्डामताः येक्षमस्य !-चेता(तस्)-वि•दे 'स्वन्ति । -- चीका--निक [दिक] एक बोर का संमेपर सहा क्रिया वानेवामा (सेमा) !-च्छत्र-वि॰ विष्टमे इसरेडा वर्ष-कार, मभुरव म वी असपस, एक्ट्रंब (राम्प)। -ध-नः सगा गार्ग । वि अबेडि पैना दान वा कानेवासा। • स्व गानः : - बही - वि [दि] एक ही प्रत्येते स्तरः स कुलके, सर्पेड (पद⊸दाबाद)। ⊢क्रमग्र(सम्ब)⊸क राजा। गुद्धा-अवाज-विधि । यक्षमतः कार्यस्य।

~का~की सगी बहत !~बाल-वि स्व माना-किसे उत्पन्न सदोवर !-आति नाँग एक द्री बार्रित वा देख्या। प्रचारा - चाम - वि [वि] पो प्रक-मिक्कर का हे गमा हो १११कप, म्यादिल, मिश्र हदय । - जीव-शि पकर प: अशिका ! — र्टगा -- वि [कि] एक र्यन्तनाः

सँगता।-टक-वि ,म॰ [हिं] फिरा एक्स मिरेश मिरोसे शनिमप !-काळ-वि (दि) एक हो प्रदक्षित ग्लाइमास ही तरहका । तः वह घरत जिसका प्रक्र और वेर पत्ने डी भने डी !−र्शका−वि विसमें सब प्रक्रिक अधिकार एक व्यावमीचे बावमें हो। एकदश्या (राज्य ब्राह्मनप्राची क व्यक्ति बारा शक्ते प्रवंशसे परिवासित ।-अस्तरसद्भागासी —भी वट शास्त्रप्रचाको जिसमें वन वश्चित राजनी

हाथमें हों और एसके बादेखानकार सब कर्म गरिवालिंद वीतं को ज्वादत्वी प्रकृततः : --सरप्रत-विश् [हिन] स्थ पद्यौतः, विश्वमें दूसरे पश्चका विभार अंकिता स्वा हो। ~•ब्रिझी−स्रो −•र्फसस्रा−५ [fg•] वह शिमी स फैसका को प्रतिकारी काका अवान सुन निहा (सर्फ अनुपरिवृतिको कारण) दी या किया बाव। नधीम-सी [हि] यह श्री क्य शुनश्रद कावम की उरे एत' -सला-वि॰ [दि॰] (वह सकान) जिसम इसरी धीं^क

न दो ! -ताम-वि यस दो विषयका ध्वान बरनेशा श्यापित सकीन। −सार−वि सिंही फास्क रवें क्षका । व समातार । ≔तारा≔त [हि•] स्व हरी कार्तेशूराबिधम ल्कादी बार्द्रोचा दे। ल्वाड-नि जिसमें ताक-सुरका पूरा मेल हो। —साध्य-इ (दि॰) एंगोक्का ०६ तारः : −साधिका −स्त्री वड विभरतं। ─व्यंथीं(थिंग्)=वि यक दोवी स्ताब करनेवाणी

ण्या हो। पंथ का काममस्त्रा । प्र सहपादी प्रस्मा^{ही} −शीस−वि [वि] वीस भीर एक । पु॰ ११ की संस्था -- जिल्लान्-वि पु दे॰ 'दक्षतीस । -वद्धा~पु [दि॰] कुरतीका एक प्रा । -वडी(विम्)-प्र सम्बासिनेक क्य शेव, वंस । --वंश-प्र गयम । विश् पत्र गाँधनाका

—ब्ला∸नि [दि] य्यः बोतनस्य (दानी) । =देई प्र गर्नाम । -- क्या-वर [हि॰] पक्रवारमी हरत विक कुछ । -ब्रा-मि॰ [दि] एक दरका (शकान, केन इ)। -बुरुही-स्ता [दि] क्रस्तीका एक रेप। -विक-वि [दि] एक विवारको स्टब्स सर्वाक

वप्रकार । ∼विकी-की [हि] एकदिन दोना वसी ~हक्(श्) ~हहि-वि काना। द्र विवा तरकानी क्षीमा । -वृद्धी(शिन्) -वृद्धीय-वि एक हो देशका

को दिली निशेष रथक का अवस्थानिका सन, सर्वेद व लगे। — समास—प्र वधी तत्पुरुक्ता एवं भर¹ त्रच**विचार-**प सिंगे प्रकेश ह अपविद्यां नहीं * [सं] गौज निवा सीकिक निवा । तपश्चिप-पु० [सं] कृतिम या इटके विष (मदार, बरारा थारि)। -प्रणिधि-प शह मी स्थि वौरसे मनुष्यीकी विश्व हेकर था येत्र मंत्र सादिके प्रवोग द्वारा मारनेका काम दो। उपविदा-सी॰ सि] महिनियाः वरीस १ कपश्चिप्र-वि [सं] वैठा हुनाः प्रविष्ट (विटी सवस्थामें)। उपविश्वक-वि [सं•] निवत समयके बाद गर्भाक्षवमें विका रहनेवाका (सर्वक) । ठपबीत-पु+ (र्स॰) बनैकः वयमवन संस्कार । उपबीती(तिम्)-वि सिंशे वद्योपनीतवारी । क्षप्रकानम् [#] दे 'वपर्रश्रण'। उपवेद-पु॰ (एं॰) के सि निकला की कि विवार - बाय बॅब, प्रमुबंद, गंपबंदिद जीर स्थापत्यवेद । इपबेधक−प [सं] ग्रंडा क्रमाधा [सं॰] बेडना बिला कार्येमें संकप्त शीनाः ऋषवेश-प प्रसंख्यात । द्वपवेशन-प [सं•] है 'उपवेदा'। बैठामा । ज्यवेशिस -वि॰ सि } वैठावा हमा। दपवेशी(शित्), दपवेद्य(प्ट्र)-वि [सं] वैद्रानेवाका। अपबेट्स-प्र• [सं] रुपेरनको किया । उपवेहित-विश्मिशे क्रिया हुना विराधना। उपबणव-प्र [सं•] दिसके तीन भाग (प्रातःबाक, मध्याह और संस्था। उपयाम-१९ (स॰) भीता १ उपग्रम-प॰ [सं] श्रांत दोनाः तृष्याः, बासमाहाः नादाः इंद्रिय निमदः रीयरी पोहला मटनाः विमातिः निक्तिः उपाया इलाम । उपदासम् -- त॰ [सं•] छोत् करमाः तष्ट करमाः निवारकः दवामाः पदानाः द्वतं शोमाः द्वतः भारतः शीदव । उपन्य-५ [सं] पासमें सोताः शीवन या पम्बनिशेवके प्रमाद हारा रोगका नियाना जनकरू जीवन वा प्रमा हारा रोपमा कपनारः बादमे नैठना। वि पाए केटनेवालाः योक्तिशवक । उपसपा-को [न] इसमें सानेहे किए दैवार गोडी मिट्टी । कपरास्य-प्र+ (सं) भारता गाँव वा नगरका सिवाना. बाँहाः पदावके पासकी समीन । वपशोवि−सी [ध•] उपग्रम। जपपाला-स्ते [रं•] होसे हाताः अराब्धे असा । वपसामक-वि [लंग] प्रयामकारक, श्रांत प्रत्नेशकाः निवहस्य । कपत्राय~पु॰ [मं] वारी-वारी सोमा (पहरे आहिके निषार्धि) ।

कपशायक-नि [सं] नारीसे सोनेवाला ।

चीत करनेशना ।

थी गयी बस्तु । उपशिक्षक-पु॰ [सं॰] सदायक दिश्वक नायन मदरिस । अपदित्य – प्रसि] शिष्यका शिष्य । उपशीपक-प्र [सं] छोटा घोर्षक, मुक्य घोर्षक्रके नीचे वा श्रीकर्में बानेशका श्रीर्थका सिरमें धोरी-छोटी परिमाँ गिरकानेकी बीमारी । उपसोसन-प॰ सिं] अर्थकृत करना सवाना । उपयोभिका-सा॰ सि ी स्वानर मामुक्य । श्रपद्योपण-प सिंशी स**स**नाः ससाना ! उपग्रत-वि॰ सि॰ सना हुआ। स्वीकृतः मिरहात । इपयति नहीं [सं०] सननाः सुमाई देनेकी इत स्वीकृतिः बक्ता राष्ट्रमें सनाई हेनेवाको मनिष्यसक्त देववाणीः शविष्य-कथन । उपभ्रोता(त)-वि सिन्। सननेवाका । क्रपञ्छाधा~खी॰ सि•ी गर्वे सीग । उपहिष्ठप्र~दि [सं] संवर्धमें बावा हुआ आसन्त । उपरक्षेप-प सिंगी निक्ट संपक्षः भाविमान । उपसैकांत-वि॰ सि॰] इसरी भीर यदा वा महा हमा ! उपसंक्यान~पुर्धि विकासीगः। डपसंगत−वि (र्थ•) साम मिला हमाः संबद्ध (रति क्रियाचे किए) । रुपर्संगमम-द्र [सं] पास बानाः पद्भव होना रित उपसगृद्दीत−वि॰ (७०) टिका द्वथाः अभिकारमें किया इमा । डपर्मग्रह-तु [र्व] शहरपर्श्वपुरुक नगरकार करना। असक रखना। धपकरणा स्वीकार करना (स्वीके क्यमें)। विमम्बद्धापूर्वक निवेदस करनाः एकद करना । बपसंचाल-पु (सं] वदन करना । उपर्मचार−त [रं•] प्रवेश पर्देश: दपर्संघाम−५ (र्ध•) बोधनाः बदानाः। जपसंपन्त(व)-को॰ सि | बीट मिछ होनेको होला । उपमंपचि-सी [सं•] प्रदेचना शरपांतरमें प्रदेश बरमा । उपसंपदा-खो (सं∘े मिश्र बनना (सं॰)। बयर्सपन्य-वि॰ [सं॰] मार किया हुनाः पर्देचा हुनाः परिक्तिः वर्षासः वसि बदावा हुमाः मृतः रौपा हुमा। प्र मसना । जयसीपादक-प्र• [सं] सदायक संपादक 'सद-पश्चिर'। उपसंमाय-पु, उपसंभाषा-सी [रं] बातबीवा येपीपूर्व अनुरोप । उपसंपम-प॰ (सं॰) ६४६म लानाः निर्वाधन करमा। शौपमाः प्रस्त । उपसंवाद-पु. [सं.] समहीका पदमद दाना । उत्तरमंतीत∼नि [मं] तोपा द्रभाः हक्यः इक्षाः। उपसप्पान-५० (सं] धंतःसः । उपशायी(विम्)-दि [तं] सीनेवाका पान सीनेवाकाः उपर्यस्कार-पु [मं] पुरक या गाम भन्तार । उपसहरक-पु [र्र] से हिना; मनगद्द मेना भरगीयार अपसास-पु॰ [सं॰] महानदे पासका का कार्यस सदन । करमा। आप्रमय करना । अपर्शियम अपर्शिष्टम-पु [मं] सुँभमाः स्थानेके टिय उपमंदार-१ [सं] समाधि समेदना बढीरमाः साराधः

ण्डमा मानना, म्यनदार धरना । - प्रको शसावस करमा-सन नका कमाना। - वक्के बीकी करबा-दिन काटना । -और एक व्यारक होते हैं -वीके मिछ कर काम करनेसे शक्ति को शना वह जाती है।-बरी च्यर(वस-दस)खगामा-नश-महाकर कदना, क्रिकानत करनाः भपनी जीरसे पार्ते भीदनीकादर कदनाः अव काना !-की दवा को-एकको दवाने. हरानेके किए हो बहुत होते हैं !-के वस समाना-एक करी नातके करते वस को वार्ते सनाना ।-चमा भाव मही फोब सकता -एक बारमीन किये वह बाम नहीं हो सकता जी कई भादमियोंक मिक्कर करनेका हो। - सनेकी ताक--विकक्त पहले, दर बादमें बराबर। भगे मार्थ । -बाम ातो क्राक्रिय−यद्वत यहरे दौस्त व्यमिकद्वय होना।~ जाम हजार राम का ग्रसीवर्ते - एक नावर्याको अगणित विवार, रंप कोफ्त कोना । ~सवकी रोटी, क्या मोटी और बया छाटी-एक कुरू, बरानेके एक जावनी पराधर है दोई बहा-छोटा नहीं ।-धिसीके पहे-बहे-बीनी वह से हैं बीजोंने कोई बास्तविक भेदर नहीं। -न अपन सी हात-एक रका थी हो। इसरी और जा पही, एक कह वा विपक्तिके रहत दसरीका मा चाना !- एवा वो काळ-क्क बहा, जपायसे हो कार्ब सिक्ट होना एक काम करते इप इसरा हो बाला !-वाँच भीतर एक वाँच बाहर-कामकी और था परेशानीसे एक नगर उदर न सकता क्रमी वहाँ क्रमी वहाँ जाते जाते रहना । न्याँच रिकायमें शीमा-वानाके किए वर शमय सेवार रहनाः नाव पर्ही कल वहाँ जाते रहता। ~पाँचसे आका रहना~नाया-पाकनके किय सैवाद स्टब्स आवासी महीकामें यहा रहमाः ताकेशरी मनाना । "छाठीसे सबको हाँकना-सबद्धे साथ एक सा बरताय करमा। मके हरेका विचार न करना।—से वो क्षोना—भ्याद दीना दीवीका दर्में काता। -- प्राथा करला -- फ्लाविकार अवारा कावम बर हेना !

प्रकृति नि दे दस्कृति ।

प्रकृति न्त्र हो कस्त्रीते ननी तुर्व नान, एक गाड्ये ।

पृकृत् न्त्र हो जिल्लाव को इन निरम्भे करीन दोताहै ।

पृकृत् नि न्त्री | प्रकृत्वाच को इन निरम्भे करीन दोताहै ।

पृकृत्वानि न्त्री [वे] प्राञ्चाका नियम्भन नृत्रकृतिद्यान

क्षेत्र अपनित्रे किय स्वाधित तीला ।

प्रकृत्व न्त्र निर्मा स्वाधित तीला ।

प्रकृत्व न्त्र निर्मा स्वाधित तीला ।

प्रकृत्व निर्मा स्वाधित तीला ।

प्रकृत्व निर्मा स्वाधित तीला ।

प्रकृत्व निर्मा स्वाधित स्वाधित ।

प्रकृत्व निर्मा स्वाधित स्वाधित ।

प्रकरा-पु ण्य दिसके बंतरचे वासेशवा कर। प्रकरा-सी [सं] एक दोना एका, सका समेर। प्रकरासिस-पिक पालीस बीर एक। पु ४१ की संख्या। प्रकरा-सह (संब) प्रकट्टा सक्या।

पुक्तित-वि॰ दक्ष्मा किया ग्रुजा, पद्मीहरा । एक्-ब-पु (सं॰) पे॰ 'पक्ता । पुक्रमा-ब॰ (सं) एक बार, एक समय । पुक्रमी-सा॰ एक बानेका मिका।

एक्बाछ-1• [अ•] स्थीकार दायी। मताया श्रीमान्त । एक्सर-1• [अ] स्थीकारा थावा । —मामा-5

महिचापत्र ।

पुक्क-वि [धं] करेका । एक्साक-विव देव 'यदक' ! पुक्कान-को दे 'यदभें ! पुक्कार-का एक सिरोरे दूसरे सिरोत्का एक दो बका ! (१०

जकेलाः यद्भ बहेक्यः । पृक्षकृतर-विक सचर और यक्त, करे । यु को ब्रोसंस्त्रः यक्षकृरा-विक यद्भ वरतका ।

प्रकारी-का॰ इस्तोका ५६ पेंच । प्रकार कहाँजी(किन्)-वि॰ (सं॰) न्द्र अध्याज। (कव कान्य)।

एकपिन-विश् [सं] एक बंग्याकाः विकर्मता । यु क्षेत्र एकपि विष्णु पुत्र वा मगरु प्रदः केत्रमः सिर । नदय-यु एक वंग कारनेका वंश (क्षे) । नवात-यु स्थायक

प्रकृतिस्का-न्त्री॰ (सं] चंदमसे सैवार फिवाहवा पहनेत। पुरुर्विति(सिन्)-नि॰ [सं॰] सक् संस्वाका; पहच्छीर। प्रकृति पुरुष्ठिल स्वतः

ज्यां विच्या है (१९०) के देखा करा क्या कि हो बहुम्से कस्त करनेवाका अन्तेता सिरच्यादा निश्चित एवं हो केर क्या हुका। यु निराका युना क्षामा तन्त्रमें "कैस्स" प्रकार क्षामें १ — बास-पु० व्यक्की व्यक्तमें रहम गोदामात्रीमां। —स्वादुप-मि० निक्किस, निर्माण व्यक्कार्यक्ष में प्रकार काम वा प्रमानका। इ

च्छार नाय हुए । उपक्र गांद काम वा पश्चमाना। उ कीरा करा। प्रकारिक निरु हुं] पहा, निक्षित । एका नुद्र प्रद्रा मेन शरिकक, एक्सर होना। गीं

[सं] हुन्यां ।

क्षापुक-भः भागतः, सद्धाः ।

क्षापुक-भः में 'क्षापुक' । ति यक्षमो ।

क्षापुक्ति-भः है 'क्षापुक' । ति यक्षमो ।

क्षाप्तिन-भः हि । वक्षमा ।

क्षाप्तिन-भः सं (सं) सक्षमा ।

क्षाप्तिन-भः हि । वक्षमा ।

क्षाप्तिन-भः हि । वक्षमा ।

क्षाप्तिन-भः हि । वक्षमा ।

क्षाप्तिन-भः हि । विक्रमा ।

क्षाप्तिन-भः हि । विक्रमा ।

एकाश्चर-वि [सं] ज्य बद्धरवाचा। द्व॰ एक अक्टर संत्र, क्ष्टे ।

युकाक्षरी(रिक्)-वि (सं०) यह अक्टरवाका !-कीय' यु संस्थाचा व्यव कीय जिसमें बस्ता-अरग व्यवस्थित विद्या गर्ने हैं।

प्रकास-वि० (सं) एक यो नोक्याक्षा विकस्य आव स्थ श्री और, एक यी पर्दारी लगा हो। अप्रका प्रकार । विकासी गोष वृत्तिनीयेरी एक (अा०) ।-विकास-वि विक विका । --योहि-वि व्या विद्वार वी क्यामेनास्था !-शूक्ति-को विकसी वह बर्गरा विक्री वाररी वृद्धिने का निरीध योजेयर किसी विकास यह ठाउनारी है

मुकाप्रता—स्त्री [अंश] एकाप्र श्रोतेका मानः शेतके की सार् विश्वकी वर करावा अब उसमें क्रियो प्रकारकी की करा गर्दी रह जाती।

ककाश्—वि [र्थ•] यस श्वरवाका (ग्रन्य) ।

उपहरण-पु• [६ं•] पास कामा शहणः मेंट वा नवर करनाः बामा परसना ।

उपहच-प [सं] नामंत्रका भागावन । उपइसित−वि सि विसदा उपदास किया गया हो ।

पु व्यंग्य-कराक्षमरी हेंसी । उपहरितका-ती [एं॰] पान मादि रखनेका खडमाः

प्रतहरूरा । उपहार-त [र्म•] मेंड, सीगातः पुत्रमद्रव्यः मनेषः मेह

मानीके सामने परसा गवा मीवमा सम्माना श्रृतिपृति, संविद्धे किए दी जानेवाकी रक्तमः भागोद प्रमोद । उपहारी(रिन)-वि० [६ं०] मेंद्र सबर धेनेवाकाः वास

कानेवासा । डपहास-पु [सं] मिशस्यक, बनानेवाकी हैंसी सिकी

स्त्रामाः मिया भवसामीः वमाद्याः। उपहासक-दि० सि । उपहास करनेवाला ।

उपहान्तास्यव-वि० [सं] इसने, खिली प्रवान वीग्व उपदारब ।

उपहासी = ली उपहास !

उपहास्त-वि [सं] उपहासके योग्य।

उपहित~दि [सं] क्यर मीचे वा यक्ष रका हुआ। दुकः प्रहितः दपानितुष्तः कुछ अवछा ।

चपडी - प अनन्त्री नाहरी आवृत्ती, प्रवेशी - वि क्परी क्षेत्र क्रिंदर अहेरी'-गीठा ।

बपङ्कृति-स्रो [सं॰] चुमौती।

उपहरत-वि॰ [सं॰] नवर किया हुआ। निकट कावा हुआ। वि यहावा हुना। परसा हुना (मीजन); यक्त्रीहुन । उपहर-पु [सं•] निर्जन वा यकांत श्वामः वैद्यक । चर्पान-इ [सं] छोटा कंगा बंगका विमाग पूरक, सदा-वक वरता वेदांयके शूरक विषय-पुराय, व्याय, गीमांसा भीर वर्गे हाका देखा मारुपर अंकित पातुका विका क्रोरु

बैसा यह नाता। उपांजन-पु॰ [सं] सीपनाः स्पेट्री करना । वर्षात-पु [मं•] छोर, किनाराः गाँसका कोनाः साकिच्यः विश्वे पालका क्यार । वि अंतके पालका । उपांतिक, उपांतिम-वि [सं] निक्रवती, पासका । वर्षास-वि॰ [एं॰] अंतके वासका आखिरीसे पहनेका । उपांध-पु॰ [सं] मेद स्वरमें मंत्रका सपा मील ।

वपाइ वपाड•~पु॰ है बदाय'। उपाकरल-पु [सं] स्वर्शारम करमेका मिनंत्रणः तैयारी,

वप्रस्थः छपावसे संस्कारके वाद वंदाय्ययनका कारमः नक्षिप्रदान । दपाक्रमें(म्)-प [सं] स्पन्तमः आरंगः वेदपार आरंग

करनेके पहल मानगी पुनिमाको किया जानेवाला यक संस्थार ।

उपाष्ट्रत-वि [सं] पासकाया हुकाः बाह्यः वकि पदाया इना सारंत दिया हुना । जु नरिका पशुः नार्यप्रणः ६नी बपद्रका आर्थम ।

बपान्यान उपाव्यानक−पु [सं] छोरी क्या या महानीः पीरातिक बहानी ।

उपागस-वि•सि॰] बाबा हमा घरित; बाग किया हमा गौक्षित । उपागम-पु• [सं] सिक्द भाना घटना बादा स्वीकृतिः

कष्टानमृति । उपाधइण-पु॰ [सं॰] शंरकारपूर्वक वेदाध्यवनका सारीम

उपाटमा = - स कि समाधना । उपादां - पु एक रीग जिसमें धरीरको सारू सबद जाती है (यह प्राय' तेन दवा भादि छानेके कारण होता है)। बपाइमा•~स मि∞ हे सपारना'।

उपाती - सी प्रत्यत्ति। उपात्त-वि॰ [सं] कम्म, प्राप्ता समिक्ता गृहीत अनुभृत

म्बुका विश्वितः बारम्य । पु॰ निर्मद इस्ता । उपास्थय-पु [सं] विवि विधानका परित्वागः भीवत्य । उपादान-पु [स] शहना स्थीकार कारण वह प्रव्य बिससे कीई बस्तु बनः कार्यक्रप प्राप्त शरनेवाका कारणः मयोगः उस्तेकः कथनः इंद्रियंश्री विषयोस प्रथक करनाः धरीरका मनस ! -कारण-प्र समनायी कारण । -सञ्चला-मी अवहत्स्वावी स्थला (सा)।

उपादि • - सी है 'उपाधि'। उपादेय-वि॰ [सं॰] प्रदय करने वोस्म; प्रशस्तः उत्कृष्ट । उपाधि-सी [सं•] एक बोद्धाः विशेष सदय अवस्थेतस गुन धर्म विद्या प्रवीचनः शहः प्रती । उपाची(चिन्)-वि [नं] उद्धर्या, उत्पाठी; इकी

उपाध्याय-पु (सं) फिल्क अध्यापकः केर-वेदांग प्याने-बाला। जललांको एक वर्गमतिको प्रपापि । उपाध्याया-श्री (श्री अध्याक्ति। दपाध्याचानी-स्री सि । गुरुपती । डपाध्यायी-सी॰ [सं] अध्वापिकाः गुश्तरनी ! बपाच्चा(च्चन्)-पु॰ [सं॰] प्यारंशी श्रीष, मेंड्र । उपामत्(६)−प॰ [सं] ब्हाः धराउँ।

बोधोबात ।

उपानमार-स कि अलब करना। वपाम**इ-५**० वृता। दपामा - स दि॰ दपशमा अल्पन करना। करना। उपाय-प [सं] पाम बाना सापना तुन्ति, त्रवीरा इहाबा बाला श्रापुणर विश्ववमासिकी युक्ति-साम वान मेद और बंटा परना। जारंग । - चतुष्टय-पु अनुपर विजय प्राप्त करने के चार चपाव-साम दाम सद और इह । - चिता-सी कार्वसिक्रिका स्पाव सोबमा । -तरीय-म श्रीमा स्पाय-न्द हिसारमञ्ज्याम । उपायम-१ [र्थ] पास कामाः द्विप्य बननाः मेर उपहार । उपायिक-वि [र्ष] बगनैवासा उचन वरनेवासा ।

निषद बारेशकाः व्यासद्वासद रिप्ट बारेशकाः। बपार्रभ-५ [सं] धारम । त उपार-पु [सं] भृतः दोषः पापा मामीप्य । उपारत−ि [मं] प्रगत्र मुदितः प्रग्दागतः स्तः स ।

उपायी(यिन्)∽वि [मं] धपावन ग्रहः स्रपाय करनेवाकाः

उपार्जंड-वि॰ [मं] समाप्ते पदा वरनेवासा । उपार्जन-प , उपार्जना-सी [मं] समाना

पश्चिममञ्ज्ञपदवाल पृष्टिसमस्र-वि॰ (अं॰) व्यतिरिक्तः वदाया दुवा । -सेश्चम **सत**−पु अविरिक्त दौरा वद । एडिसम-पुर [बंग] समहर्ग भूतीका यह प्रमुख अंग्रेजी कृषि और शाहित्यकार जीवक वृद्धिसन (१६७२-१७१९ हैं। प्रामोक्रीमका नाविष्कारक सुविख्यात नमेरिका विश्वामनित रामस पत्ना पश्चिम जिसने कुछ मिकादर कामग एक इवार विमुर्सनंथी भावित्कार विमे (१८४७-**१९**₹२ ई) ! म्बी-सो॰ तस्त्रेका रहनके गोभेका माग । मु॰ - बारीका पश्नीता एक करमा∽व्युष गंदनत कोशिश करना। -से घोटीतक-सिरसे परतक। एकिमी रगक्या-बहत बह सीयनाः बहुत अस, वीङ्ग्चप श्रदसा । एल-पु[सं] काले रंगके विश्वका एक मेर । ⊸तिसक, - श्रम - श्रोप्रन - प्रमा। - रक्र(शा)-प्रश्ने सकर राधि । म्जी−की [सं•] सक्ताप्ता⊢दाइ-पुश्क तरहका क्दरः −पद्र−पुण्क तरदका सौंप। वि हिरसी वैसे पैरॉनाकाः −पदी−न्था स्कृतरहकाविषेकाकोद्राः प्तकाद-पु• [व] बदा, दिवास प्तवार, वरीसा। पसस−सर्व[सं]बद्दा **एसक्सं−अ** [सं] इस्रक्रियः इस्रक्र किया एतदबधि∽म• [सं] भरतक, इस इक्त्रध। प्रतहास-प्र[म] साम्बावस्था न कम म अधिक दौनाः द्रीपसाम्बः न अधिक दंडाः, न अधिक गर्म द्रोनाः वीषकः रिवति वा रास्ता । -पर्सव-विश् सच्यम सार्गका अध सरण करने बाविसे वचनेवालाः नरम दलका । एसहेसीय-वि• [नं•] इस वेसका । यतम-प्र [मं॰] निःशासः एक मत्त्व । पतवार-प• [ब] क्यिए, गरीला सास । पत्तकारी - विश्वि कि विश्वास करने थीरव भाववर। प्तमाइ-९ [न•] निपास भरीसा ! एतराज-प्र= [ज] विरोध, आपछि। दीव विकालनाः मुक्ताभीनी । प्तवार-पुदै स्तवार'। प्रतार-वि रनमा । ण्तारक्(क्)-वि [सं] ऐसा दस प्रकारका। प्रसादक्षी−नि की [नि•] श्व प्रकारकी नेता ! प्तावत-दि॰ [4] श्वमा । मृतिक•-विश्वी रत्नी। प्य(स्)-पु (ई) ईवनः अम्बुधनः। णधित∽वि [सं]वर्मिता प्य≁–पुदे एन'। पुन(म्)-पु॰ [मं] पात्र। अपराच दीव । एनामस-पु (मं] कोहे भाविक पत्तरक्षा वनी श्रीमीकर चहाया जानशाना एक ठरहका एव जिससे ने देखमेंगें चीनो मिद्रान्धेची क्यमे क्यती हैं, तामधीन । णनीयसेंट-नी (१८४++१९११) 'विजांसाफिनक सीमा परी को कष्ट्या (१ ०७-१६); भारतमें हीमक्रा 'रवराज आंदीकश्की प्रवर्तिका तथा काक्षीके विद्य स्थानेज की संस्थाविका है

एप्रवर-५ [मं] रक्षाची ग्राहः। पुक्रिडेबिट-पु जि े इरुद्धे काल इरुद्धतामा। पुसन-पुरक्तिमित स्ना। प्यर-पु [बं] बना बाखु। -आएर-पु॰ हर्छ वदात्र । --राम्-सी॰ इवार्र संदुव । -राष्ट्र-रि॰ विसमें हवा स जा सक्त । -प्रोसे-पु॰ हवारं धेर, वर्-सेना । -मेस-पु॰ इनाई क्षाक, इवाई न्हाबसे शाने बानेबाबी टक्सा -मेन-पु सम्बद्धाः -रेट-पुः इकार्र हमका । —शिप-पु० इकारी इकटा इकारे बहात। प्रश-प्र[सं] यह तरहकी मद्रजी ! पर्रड−पु [सं] रेंच। ~सरवृज्ञ ~पु• [हि॰]सीळ। −पत्रिका₃-फ्छा-को दंती हुन्। –शीन-५ रेंहै। प्रशेषक-पु (सं•) इ० परंह । पर्रहा-सी (र्न०) पिप्पकी ! एराक-वण वंश 'दराक'। पराकी-वि प दे 'इराक्ये'! पराध्र−प [अ] अहाजका पेंदा । पराच−पुर (बार) चार जवाठ देशको मात्राने वा वनके विश्व । एरे−न अरे है! ग्रोकोस−पु (वं] दवाई भ<u>न</u>ा । धुरोफ्केम-पु [ल] दबास आरी दबार बहाब सिमान! वर्षाक वर्षाक्क-प्र [मं] एक दरहकी क्यारी। ण्डम-प्र [सं] एक तरास्त्रे सङ्ख्या **एस−** प्रक्रिके महानाए। प्रकार-पुर [सं] मेहा मेहा: † यह तर्दर्भ प्रकारी व्छकोङ्ख∽ु [स] व्द तरक मादक द्रम्य वा कर्ण बान् बमानेस काम जाता है। प्रका−पु[तु] दृतः राज्ञृत । वृह्णबालु व्यवसालुक-उ [हं॰] क्रतिवरी प्रव से द्यर्गश्चि होगी है। एक स्थादार हम्ब I ण्डविस−यु[म] दुवरा णका-1 पुण्य दयेही कहा किल्की परिवाँ ^{दर्श} वनानेके काम आसी है। न्यां [मं] श्वास्त्री। स्वानकी का पेक बनरोहाः एक रायः नामीर-प्रमोदा केला -र्शियम-ची दिवस्थि छात । -पश्र-इ[†] व्ह नता। -पर्वी-न्धे एक रोका बुक्तरसा। पुकाल-9 [म•] मार्ग्याः [स] साध्यक्ति मीत्रान समारी । एलामें-पु [न] संबद्धसूच्य शप्त वा स्वत्त । -वा को रक्यातियोमें छगा हुई अंत्रीर को सहरे कारिने समय सीनी जाती है। -सिरामस-9 रिक्रपूर्ण सकेता। पश्चीका-मी [5] अर्थ रकायशी। प्**युक्र~पु॰** [ग्रं॰] एक शुनंत्रित क्रम्बः एक हम्ब वा शेरी की दबादे काम जाता है। म्बदा~नु सुमध्यर्। ण्डहरमेन-तु [अ] म्बुनिशियत बार्वेरिशमश्च वेदर्वे भौधेका शत्रस ।

ण्स्वासु, ण्स्वासुक्-पु [मं∗] दे 'प्रत्यात ।

उरस्क-प [सं] छाती। उरकाम-पु [सं] दे॰ 'उरवाहर'। उरस्य-वि [मुं•] वेथ औरस, बच्चारधन-मंबंधी; जिसमें सीनेका प्रकार अपेक्षित हो। उत्तम । पु पुत्रा सेमाका कएका भाग (क्री)। उरस्थान(वत्)-वि॰ [से] भीक्षे स्रातीवासा । उरहम उरहमा - पु० दे॰ 'बलाइना'। उरा≉∽की बरती। दराठ, उराय≉-पु॰ दे॰ 'उराव'। उरामा+--भ• कि बतम दो बामा शुरू बामा । उराराक-वि प्रशहत फैला हुमा विस्तृत। करामक-पुर उत्सादः वर्गग, दोसलाः आहः। आर्मदः। कराइना*-पु दे 'धकाइना । । स क्रि∗ दे औगारना'। उरिन≠-विदे 'छक्म'। क्षक्र-पु• दे 'करु' । दि० [शं•] विद्यानः विरमूतः प्रचुरः वहुरु; श्रेष्ठ सङ्गान्: मृत्यवान् । - कालः - कालक - व महादात करा । – इट्रम – दि सने टग गरनेवासा। उस मनका। प्र विभाग्नाक्षियः स्थाटन। —साथ − विश् वर्षः प्रशंसितः चक्रने-फिर्मेके कावक विरस्त । यु विष्कुः सीमा इहः प्रशस्त स्थानः रहति ।—बन्माः(ध्मम्) –वि । स्त्रंपः बात ।-विकास-वि पराक्रमीः वस्त्रमा ।-हार-प मुक्तवान् हार । उद्यतार-चर क्रि॰ दे 'उल्लामा । उद्या~प्र रस्यापदी। उरुषु, उरुषुक चरुबुक-पु [७] श्रांट वृक्षा रक्त पांट । अक्रक−प्र• सि] एक तरहका उस्स् । **उद्धा**−पु [अ] कपर उढता, प्रश्नाः ध्रवासः बद्दती। —(क्रो)सवाछ – प्रजान-पत्तन, वृक्ति हास । उरे≉−म परदूर। **डरेराना*-स** क्रि चरहनाः साथमा देखना । दरह-प दिवदारी भित्रः आसरानः नक्ष्मीनिगार । अरेडमा-ए कि तसकीर बनाना विश्व सी६ना । प्रिनि-बनि सिंह तरेहैं सारी -- १० करो−'उरम्. का शमासगढ़ क्य!−गम−५० सर्प !−६६− पु पार्स्यक्, पन्पृश्सि । – ज, – रुद्ध – पु स्तन कुम । -वियंध-पु॰ दमा। वर्जिल-वि [सं] विदेशा श्रुतिशासी। प्रस्थात अमेडी परिस्वक्त । रर्ण-पु॰ [सं] दे 'कर्ष'।~नाभ-पु॰ दे॰ 'कर्मनाम । -पर्णी-सी बन उरही। বল-িকী বি বি 'কলা। उप-प दे 'उरदा वर्ष-प्र* ति] क करा छानती । सी हिंदी वा हिंदुरतानी का वह स्व विग्रमें भरनी-फारसी शब्द अभिक व्यवहरा क्षेत्रे दे और वी पारसी अध्योग किया जाता दे। -ण शुक्का~सी अस वर्ष् रक्षमाकी वर्ष । -बाक्नार्~ पुर करकरका बाजार। यह बाजार खड़ी सब बीजे मिले । बद्र−५ [मं]कश्रीलाह। बर्षे - विश्व है । 'उस्ते ।

कर्क्षण्यु [ल] अभिक्र प्रवक्षित वा प्रस्थित मान, तुकारने

क्रिंगें − लो० व 'कर्मि'। ठर्सिका−सी सिंहिश्मणकी पत्नी। त्रवीर-वि उपवाक। जब रसा-स्त्री सपकारूपन । उर्वरा-दिश्की जवनारु । सी॰ [सं] प्रवन्तुः, बरस्रेष्ट बगीनः बगीनः अर्थेक्टि-स्ती [र्स•] १वकोरको एक प्रसिद्ध अप्सरा जो द्यापक्छ कुछ दिल मूक्केक्ट्रमें पुरुषक्के पत्नी कनकर रही। - श्रीमें - प्रभागारवर्गित एक तीर्थसाम। -रमण,-वदस्त्रभा-स**हाय**-तु पुरस्वा। उम रु, उवादक-त [र्स] सरम्मा दक्ती । जर्बिजा≑-सी दै 'प्रवंखा'। शर्वी-को॰ [सं] पृथ्वीः बमीन । —खा नती पृथ्वीसे उत्तक, थाता। - सस-पु बरायस, पृत्नीकी स्तह। -घर-पु वर्षता श्रेपनाग । -धवा-पश्चि-पु: राजा । ~रुद्र−पुपीषाध्याः उर्वाश, उर्वोद्दर-पु॰ [म] राजा। उर्स-पु [श•] सिसी मुद्दकमानधी निधमविश्रिको मनावा कानेवाका उत्सव (कातिहास्त्रानी और सम्रक्षित)। उच्चंग-वि संगा। उर्बराना, उक्कपनार-स॰ क्रि॰ खाँबना, स्टब्स्यन बर्मा। म मानमा । द्धसमिन्दु दे 'दर#यन । कर्रियमा • - स कि कॉपमा, उश्वेषम बरमा । उसका+-सी दे॰ 'उस्हा । उक्कचना--ध कि दे 'उक्कोचना'। क्षक्रमाध-स कि वसंदिशा दिवराना प्रकाना । उपका~द्र भीव शनेका रक तरीका। उसकारमार-स॰ कि कपको सरपर्वेदना प्रस्टब्रसा। उस्सम-को॰ पैकाषा गुरभोः बढिनाई। पिताः काय । उक्कामा-म कि तामा दीरी भाविका नम, पुंच जाना। कियटमाः क्ष्मका एकशर करमाः आसन्त बीनाः श्रीम मा मधगुरु दोनाः भरकः जाना । ~प्रश्रद्धाना~अस्टी तरद फस बाना । उक्काम्युक्ता-टेब्राशीयाः पुराभका। उक्सां−प्र बक्तान । उक्तमाना-च जि॰ वेंसामाः गिरदे, गुरिवर्यो टाक देनाः भरकामाः क्याब १एमाः देशः बरमाः । 🛊 घ० द्वि अस्त्राच-पु० एकश्चा परीक्षाः प्रतः। उक्त हो बा−पु॰ दे 'उक्ताव । जनवाँद्वा -- वि उठशानेवाकाः पेसामे समावेवासा । जनरकदक-पु॰ एक पात्रा विसुत्री प्राष्ट्र रहनी बनास और बबादे काम भागी है। बसरमा~स कि सीथया भीषा दोनाः एवस दुनो का होताः विपरीत स्थितिम जानाः पत्रमाः पुत्रमा मुश्नाः बगहनाः द्वय पहनाः कृष्या कृष्ट की बाना विस्तृत वरण जाला। अस्त व्यस्त होताः मह होता। दिन होसाः देहीच होमा। महना: गक्षे रत्न वाता: हरना । म हि शीचेका उपर वर देला। व्यामे दूसरे बदा वर्ता प्रतामाः

का नाम उपनाम।

वैक्या-ऐन्य पॅडमा-भ कि पॅठनाः बेंगशासाः शतरासाः शतकर कथा पह जामा । स॰ कि पेंठना, वक बेना: (बदन) तीक्या । पॅंब-चॅंबण-पि वक्त देवा तिरछा। एका-वि वेटा हुनाः वर्षेत्रक-¹⁷को रहे निर्देश साम हाँसी करि डोलें!--वीम । पॅॅंबामा-भ० कि॰ भेंपहाई स्ना; टेंठ दिखकाना शतराना। **प्रेवस−वि [से] हेयु-नेद्रमा-संबंधी । प्र∘ स्वतिहासका** चौद्रावण वदा चौद्र मास । पेंवधी-को० [सं] सीमरामा । चेंद्र--वि० सि०] इंद्रे-संबंधी । पुरु अर्जुना नाका हाका यद्योशः एक संबत्सर। ब्लेका सक्षत्रः वन सदर्क । **र्वेद्रधान्य−**पु [सं] बाद्द्रशी, वामीगरी । प्रेंद्रजाकिक-वि [6•] प्रेंद्रजाक बाहु वा सकरवेदीका (काम): वाजीगरी बातनेवाका । प्र वंद्रजाक करनेवाका माबीगर, बाट्नर । -कर्म (मृ)-त श्रहवाकते काम । वेहत्त्वसिक-वि [शं•] सस्याद । मॅब्रिशिर~प्र• [धं] यह प्रकारका दाशो । म्हें द्विर−पु [सं] रेहका पुत्र वर्गतः सर्ह्नाः वास्त्रिकामा । र्वेहिब-वि [सं] वंदिब-ध्येषीः पंदिबमास । प्र॰ विषये। वॅडियक-वि [सं]वे॰ 'वॅछिव'। वेंडी-स्त्री सिंग्डे इंड्रक्ट शक्ता रहाणी। वर्गाः कलेरसी एक कथा विसमें शेक्ष्मी स्ट्रांत की गयी है। पर्व दिशा क्वेडा सक्षमा स्टोरी इसायबीरहर्माम्बर यह तरहबी क्यारी। र्जें छन−वि [मं] इंथनसे प्रत्यक्ष (शक्कि)। पुसर्व। ग्रे~-अव (सं∗ो संगोपन-के. प! श शिवा केंद्र-वि [सं] एक्ट्रे संबद्ध । पेकपद्ध-प्र [सं] पूर्व प्रशुरनः स्कर्तत्र शासनः। ऐकप्रिक-वि (रं•) यह प्रवासा । प्र वास्प्रके निष्ठका नेगम । प्रक्रमाध्य-५ (सं॰) श्रद्ध मानका दौना, स्वमान या प्रदेशमधी गमता । एकसक्य∽पुर्व [धु] एकराव दीना व्यक्त । पुकराज्य-पु [सं] व्यवस्थाय वा स्वतीत राज्य । -ग्रेक्टोग~प्र [शं∗] बंगरक्षक सेनाका सैनिक। मेक्बोतिक-वि [ही] विना प्रते या अपनारका कर्ताः महारक पहा । प्रकारागरिक लि [सं] जिलके गास एक भी गर हो। पुर बीर । ग्रेफाग्र-नि [सं+] जिसका ध्यान एक ही विषवपर ही। प्रकारम्य-पु• [शे] प्रकारमता, क्षेत्रक्रवता तासारम्य । पेकाधिकरूप-पु [tio] एक हो विषयी संबद्ध दोनेकी **भवरवा** । वेक्तर—पु• (सं] के अक्षर वा क्छको व्यक्ति । **ऐक्प्रच्ये-पु** [तं] ब्रेश्य या प्रयोगनकी ध्याता। सथ सार्धनस्य । णेकादिकादि [हो] एक दिस रदने वा अभिनाका। क्षणस्थावी !

तियमः समियमः नारकारिका औदः।

तरहक्षी भराव । पुत्रवाक-वि॰ [सं॰] त्ररवाकुसे संस्थ रसनेवास्। पुर व्यवस्था वंश्वयः वस वस बारा शासित देश। पे**रुवाक**−प्र सि दि॰ 'रस्वाक'। ग्रेश्नक-पु० है० 'अव्यक्त'। पेकी-सी॰ चेंद्र या मदक पीनेकी नहीं। पेरिकक-विक (संकी जातर्गी बच्चा का महाचर करनेत. अविराजारीः वैक्रक्तिक र्र पेशनर∽ण जि∞े छगर रिम्हेगाको वससार। फिर की यसी तरह किसो सन्त्र या संबद्धी माइतिसे बदमेडे निर बद प्रबंद वा इस्तर विद (") किया बाता है]। पेड~वि (सं•) श्रक्तिवर्डक तत्त्ववाकाः मेश्से करनाच धीपकातु पुरुषात पुरुष्ट-वि [सं+] शेव-संश्यो । प्र॰ मेक्टा एक बेद । भेदामिमिस्टेटर-५० [बं] मध्यक किछा शब्ब वा हैरा **छनका (राजा वा माहिनको नागक्रिया बार्टरे) इरर** करनेगमा । ऐडमिरख−प्र [बं•] वर्गा देश्या प्रधान सेमानद्वि के सेनाचि । पैडचर्डिकॲट~प ब्लं•ी विद्यापन, इश्तहार । वेदबांस-प (वं | देशमी: देशमी देवा । येडविड£येडविस−तु (सं∙] हुनेरा वृक्कोकेर-पुरु [६] क्योक । -- जेमरस-पुरु हार्यनि सरकारी पदकी क्यालत शरमेवाका दक्षीत ! वेडिशमध~दि॰ बि॰। वर्तिरस्त । वैष्य-वि सि॰] व्यान्सक्षाः वेषिक-दि पु॰ [सं॰] यमका हिन्दार करनैवाणा । **बै्बीय-दि** (सं] एकमे प्राप्त वा संबद्ध । दु वक्त दर्व तरहका रतिवयः येत•~- विज्ञतना। वृत्तरेष-प (सं०) कानेरका एक प्राक्षण एक कारमध्ये इतर कालिके वंश्वाच कह तबनिकट् । मि नेतरेनकुन (मस्टन वा धर्मिपर्)। वेतरेवी(विन्)-वि [मं] वेतरेव जावान परनेवाना। मेरिकासिक-नि (do) श्रतिकास-संत्योः श्रीवासक्षेत्रास्ति। प्र पनिषासका पाता। वृतिका-प्र [मं] परवरत मान चपदेश वा ममाना। युग्र∽क्षु है≉ अवस और 'एस'। सी [त्र∗] क्रींडी कहमा सीता। बरहाको असकीवतः वह बीर करही कर माकाका एक कक्ट । वि बीक, महत्त्व बहुता केर ! अ ह्यह, ध्वीकाश्वी ! —इनायश्व—स्रो स्थी हर्यः परम अनुसह । ~इसमास-पु॰ सहस्र रचा वा शामरम । ~बच्च-च डीमा बच्च, दीवा भीवा । तेनक-स्ता [अ] यहमा । -प्रतोश-पु॰ प्रामा वेटवे-शका । -साम्र-पुरु श्रदमा दगानेवासः। वेमस-पुरिशीपापः ऐक्ट-५ [बं] काम किया। बीर्र यास कानूब अधि-ग्रेमा≉~पुदि काईमा । विक-प् [सं] श्र्वंपुत्र स्ट्रवाक् । -बंश-द्र॰ स्ट्रेवंस । येक्य-पुर [सं०] यकता यका एकस्पता समावार, ओह। | यून्य-वि० [र्ग] स्वामी या सर्व-संपंती ।

वेशाय-विश् [तंश] श्रेषाते सरका प्र उस प्रकारक

उपया-दि , पु [तं॰] दे 'बस्तम' । उपस्य-पु० [तं॰] छरीरके तीजी तत्त्री-बात, दिस सर्वेष्या -भेते किसी पटका एदिस हो बाजा विश्वा । दि॰ गर्या

स्वरथ । उस्सुक∽पु॰ (सं॰) तुक, तुकाठी; मलाक ।

उस्मुक-पुण् [सं] कॉयना निस्कानरणः (शाहाः, नियम भाषिको) तोहना ।

उदसंघमा = नतः कि । उत्संघन करणाः । उदसंघित = वि. सि. स्वा हुमाः सीकातः ।

उदसंदन-पु [र्ष] कुरान । उदसंदित-वि [र्ष] धराः पठा हुनाः

उस्डक्सन-पु [म॰] रोमांच।

उस्कर-वि+ [र्व] पर्रेपता, विकता हुआ। रीमछ। पह

रोगपल । बस्बस्टिन-वि (१५०) मारोसिक, कुष्ण चठा पुत्रा । बस्सस-वि [मं] बसरोका प्रश्वा प्रकट दोनेशका । बस्कसन-पु [५०] उस्कप्तित दोना; दर्ग, सुधी रोमांच, पुत्रम ।

उदस्रसित्त−वि [६] इपंशुक्तः, शुवितः भमकता इमाः निकाला हुमा (ब≰)ः हिल्ला हुमा।

उस्लाम-वि॰ (सं॰) रोगसुक वा रोगसे मुक्त बीता हुना। दक्षा हुद्धा दुरः मसव। पु॰ काली मिर्च।

उस्काप-पु॰ [सं] शुँदरेको नाठ क्याना, मीठी वार्तिसे तुद्ध करना। कैंची नावाकमें पुकारना। रीगारिके कारण रवरका परिवर्तन।

रुक्तापन-वि॰ [सं॰] तथर ६णरवाबी । तु॰ व्यापस्ती । उपकार्पा (पिन्)-वि (सं॰) वाह्यकार जुलामदी । उपकाष्य-पु॰ [सं] एक उपकष्क एक सरहका यीत ।

उस्कास-दु (सं) यह माविक संद । उस्कासा-दु॰ (ही यह माविक दंद ।

उस्कार-पुर विन हुएँ। आहार। उनेगा, आरंभ, कांधा, मकाशः परिच्छेर। कर्मान्धारक ग्रह मेर वहाँ विश्वेक ग्रम वा रोक्स क्लिसे सुगरक ग्रम वा शोष दोना रिस्तावा बाद। बस्कारन-पु [4-] वगद, क्लिस प्रकाशः नवाना प्रकास मुद्दा करना।

उस्सासना-न्त्रीः [सं] प्रकृत बर्जन्द्री निया । अस्तर्शक्तिः अक्ट बरमा। प्रमुख बरमा ।

मेक्ट करमा। मसक्ष करमाः। कस्मासिल−कि सि ी घट

4

बस्कासित-वि [मं] चमकाया कुमाः प्रवट किया चुमा । बस्कामी(सिम्)-वि [सं-]भ्रोटा करनेवाकाः नाचनेवासा । बर्दिमगित-वि [मं] प्रसिद्धः बचात ।

वस्मिगित−वि [मं] प्रसिद्धः बनातः। वस्मिगित−वि [मं] तिसा हुवाः वर्षतः सीतः हुवाः परेवा तुमा।

उस्सीद-वि [र्त] मॉना दुशाः रगहा हुनाः चनकावा दुशाः

बस्तुंबन-पु [मं•] उद्याहमा (शास मारि)।

बस्तुंद्रा-मा (मं) श्रामीसि ।

उस्स-मु प्य पद्मी विने दिनमें श्रद्धा दिसाई देना कार जो बहुत मनदूर माना जाना है उन्द्रकः । दि अूर्ग मासमक्ष । सु॰-का गोहन दिस्सामा-देवकृषः बनानाः वसमें कर नेना ! -का पह्ना-निषटं मूर्ग ! -क्शाना-

वेनवृक्त वनानाः कामा । --वोक्तमा--वजव वाना वीरान वीना ।

बहेल - पु [रं] क्यां, किया क्यांत्रं सुदारं क्यां क्यारका एक मेर, विश्वमं एक हो वर्त्यका विकासद बा इद्योगेट कारण, अनेक प्रकारते क्यान किया बाद ! बहोक्सन - पु [रंग] बहेश करना कियाना; खोदना; क्यार क्यार व्याना !

बहोसनीय, उहारेय-वि॰ [सं॰] उपेस दरने बोग्य; कहने, बताने योग्य।

अक्तोच−पु[सं]वेंदीयाः। अक्तोच−विश्[सं]वर्षि वंदलाषु वृद्धीकहरः।

वक्षाक । १० वर्षात वस्त । तु वक्षा क्यूर । वस्त - यु [६०] गर्भस्य वस्त्र प्रतिपटी रहमेवाको प्रित्ती,

তহৰণা-বি॰ [ব্] বৰুত্তা সংক্ৰা গুলাইক। তহৰণাঞ্চল সৈও ইও তিন্তা ।

उपनि -- खी॰ उरव मकट होना । उहाती, उपती -- सी [सं] बद्दारिक मनिहरूर वानय ।

उदाशा(नस्)-पु॰ [सं] श्रुकाचार्व । उदाशा-पु॰ [स॰] एक रच्छोजक भौरवि ।

उद्या-को [संः] यादना रम्छा। उद्यानर-पु [संः] गोवार देश भीर वद्यका निवासी राजा शिविके फिता।

रवारि उत्तरिक, उपीर, उपीरक~पु॰ [सं॰] घस र बद्योरिक, उपीरिक~पि॰ [सं॰] घस वेबनेताला । ं उद्योरि-को॰ [सं॰] क्यू कारा ।

वर्षा(चार् (उ. १५) वर्षा – चु (वं) क्षित्र ।

स्व (चस्)-ची० (६०) मेर, तकता; मोरक तकावा; गोरकी काओ; व्यावाककी मरिवाकी हैंगे। कर्ममा मक्तियोग । नक्कर-पुरु इन्द्र्य ! -कार-पुरु और, व्यवता ! -पान-पुरु क्लोमको यह किया विसमें साहै बारके पानी पॉल्डर हुँ हुँचे निकारत हैं। वय-अ-(४५) मेर वहबा। कार्क पुरुष; गुराकु; सारी

मिट्टी: क्षेत्रा समक्र । सम्द्री: क्षेत्रा समक्र । सम्बन्ध (र्म•) काकी मिन्दी सदस्का सोठा पिपकीमृतः।

द्वयप्-पु [सं॰] कश्चिः स्वैः विश्वसः । समर्केश-कि सिं॰ो सक्ष क्षांत्रदे प्रतिसाता । सं कर्त

उपर्युप्प~षि [सं•] यम कालमे उठनेवाला । पुं अधिः; - विजयः वद्याः।

या लाली। बागासुरकी कन्या किल्का च्वाह करिस्टसे हुवा थाः बीसुक कवणः गायः राशि बद्धको । –कर्स्स्य चहुमा (वे)। –कस्य-पुरु सुर्या । –पश्चिः–रम्राग–पुरु

शनिन्दः। उपिन-वि [५०] वासी; दश्च हुआ; जला हुआ दर्भः पुर्ताला । पुरानती वासादी ।

युराका । यु वन्ता आवारा । सर्पेश-यु॰ [सं॰] धहमा। अनिरद्धः ।

उड़-पु (सं)केंद्र भसा कहरवाण साह देलगाहा रवा -वादिनिन्दी वस पुष्प रचपुषी। नवादाि(शिन्) -वि० केंद्रश्रे सरह आवाज करनेव छ। न्योव निर्मापर पुष्पी। निब्रह्न-पुष्पीका स्क्र अनुकर। न्यांविका

धन्द निकासना ! ~(र्सें) पर-जनामपर, प्रवट होनेके निका ! - में बहुना-पहत पीती जावादती बोलात ! भौडा-विश्वदरा । पुश्वदहाः संध ।

भी-प्रसि•ो ब्रह्मा। स्य प्रकारतेर्मे प्रवस-ते थे। सरेः कोरे निरमूत बात बकायक बाद मानेपर भी बोकते हैं

(भो, भाषने ठीक कहा)। भोड़ (विरमवके वर्शने)। और I भोक-सी॰ मतुष्टी । पु॰ शंबक्षिः सि] धरः पनाहः वर्षाः ध्या नसर्वेदा मेल ।

भीक(स)-पु० [सं•] भर, वासरवामः वाशवः विकास । कोकण, जीवाशि-ए॰ सि । बटनका थें।

मोक्सा—४० हि॰ के बरनाः भैसको तरह विक्वातर ।

श्रीकाई-त्री और मिच्छी। श्रीकार~g• [सं] 'शो' अक्ट या उसकी श्राति।

क्रोकुछ-प्र सि विकासमा क्रमा केर्ड आदि । भोकोदनी-ला॰ (सं॰) ते॰ 'ओकन'।

सोक्रमी−सा संदेश ओक्रव'।

भोक्तद÷—स्तो देश औषध । श्रोवाक्र−पु सोसनी। शती बगीग ।

कोबाकी - लॉ॰ प्रथर या काटका वध नाम जिसमें क्या दि कुरत है, हुँदी । अर नमें सिए बेला-कोई संतर छिए

पर केमा कह शानि सबनेको वैवार दोमा ।

क्षीका+-प्र बद्दाना । वि॰ कठिनाःशीनाः विकासीः रसा-स्था ।

श्रीरा*-पु बगद्दश चंदाः करः गीराः

भौगरमा - म॰ कि टफ्डना रएना। साफ विजा-बाहा (रूप भारिका) ।

भौराक्ष-पु परश्ची जमीमः एक तरहका कुमाँ।

क्षीशारमा!-ए॰ कि॰ कीचड़ वादि निकाणकर क्रवेंकी धकार्दे बरना ।

श्रीघ−त [सं•] द्वापन, बारा नहान; समूह, बेर, राधिः पूर्णामः जविष्टिकताः पर्रपरानतं वक्षेत्रः एक प्रकारका भूरवर इ.स. कब (मंबीव)र कालनुहि (सां॰) ।

भोग्रजा−स कि दे किंद्रगा।

कोळा – वि. यंगोरता रहितः प्रियोगाः श्रुवः सीताः क्षेताः इसका ! -पम-प्र क्रिकीशायन इसकायन, हाइताः

सीयाई । भोधाई-भी दे मोछापन ।

भोज-वि [सं] विश्म (पहला सीसरा भारि) । † तुक

किफावतसारी, बन्धसी ।

क्रोज(स्)-पु [मं] शुक्रको सारमृत भीर चारीरक्षी कांति तेज देशेवाची पाहु। यका पीया तेजा कांता वका माविभावः रचनाका वह गुण जिल्ली एवने शुननेवार्जेके हरवर्ने जलाह या बीध देश ही। शलकीएल ।

जोजना! – स॰ द्रि॰ सदना, शेखना, जैनंत्रना ।

भोजस्थिता−सी [चं] प्रतायः तथः शीरिः प्रमायः वर्णम

का प्रमानीत्पादक देव ! भोजस्वी(स्थिन्)-वि॰ [सं] भीजमराः बीहा पैदा करने-वासाः वक-वीर्य-दासी है

मोहोन-५ [ब] ब्युनिस्यन्(शन्क्यन)मा पनीमृत क्रम

सोश-प पेटा मामाध्य, सँतरी ।

सोशवी-सी॰, शोशव-पु॰, सोशरी-सी॰ का ना-धवः मेश ।

योशस~प॰ और बादा

आक्रा~प॰ साव-प्रेंक करनेवालाः जन्मवीना वद का। - है-की शाय-पूर्वत शायकुर्वती समस्ता बोहाबा दाव। कोट~की आहा रोकः शरण, श्वारा परदेषे कि प्रसद गर्नी बीनार । † प्र• एक वस जिसमें सारकेंग्रे कर रहा है, कसमोदर: शिको पर्छ । असीस-४ । सांद्रा शहा । जीटम~प्• क्यास जोरनेको *चरको* दे दे ।

ओडला-स कि॰ दशससे दिनीहेको भवन दरना दिसे बातकी बार-बार कमना, हैरछक बड़ी बाना कर हैरा.

भोषता । भोडमी-सा वह चरसी विसमें स्वार र दशसमें स्वीते

क्षो बरुय करते हैं। † कमनी । खोटा-पु॰ परदेशे सिम्द बनी हुई दीनारा ओटनेस सम करनेशका छोनारोंका रुक्त औत्रारः बैटकर पंछनेके दिर

यक्षीके पास बना बना भवतरात विन्दरत । भोडी-को ६पाछ भोडनेडी बस्ती।

कोठँगमां –<u>त</u> वाकरः स्वारा । ओर्टेगमार्ग−म कि॰ दिशी श्रीयक्ष सदारा हैकर हैना

सरतानेके किए केंद्रमा । जोडँगाना!-स कि रिकारर एजा संस्क करे

कराचे विना ही कियाहरी कियाह क्या देना।

भोठ−५ भोगाॉठ। श्रीव्-पु॰ यथेपर मिद्रो, खुना श्रादि श्रेनेवल्म !

श्रीष्ठक-पुर्व (सं०) देव 'अहिंदर'।

कोचुन ०-पु॰ वह थीज जिससे बार रोका बाव, बार, करी। कीवृत्ता-स कि रोकना। कार केना। (हाव) स्वारवा ओडच-पु (d+) रागका यक सेर विश्वमें देशक धेर एवर अगते हैं।

भोद्यां – पु. वदा-टीकरा; ऑटा: क्रमें, टीवा रोक्टेस कर अधिका बोडी-सा॰ [सं०] सागर विना गेरे उत्तर

दोनेशना वान । ओक्-पु॰ (सं] वर्षासाः वर्षासासीः सम्हल्ला पूर्वः

कोड-वि [9] पात कामा हुना !

ओइमा—स कि॰ किसी कपड़े, धाक आण्मे शरवर्षे बक्ता क्रियामाः अपने कपर, क्रिमी केना । पु बोहिंग्रे थीय । सु - बचारता-अपमानित करता ।- मोनाम राँव कीचे साथ संगार्व बरना । -विद्वादा वथा सेवा

इर नक काममें कामाः कायरवाहीसे मरवता :- आई हि विद्यार्के हैं-विस कामने काई है दिस बानमें है है ओइनी-सी रिवॉके ओइनेका डीटा दुग्हा ! हैं⁹

-वयुक्तमा-सदेकी वनाना वहनापा अहिना ! व्योदर॰~पु वहामा स्वाब ।

भीतामा~स कि (दसरेदो) दपहेले ददमाः

मोत्त-को भाराम भैगा बाग माहि। विश्वादना करी। वि॰ सि } हुना हुना। श्रीवा हुआ। ह वानेका वर्ग। -मीत-वि सानेशानेकी तरह हुना या गुँबा हुना शरी दुवार विश्वतुक विश्वतुका । दुव शामानावार विश्वतुक 211 कारी भरेड सिरेपर कगाबी जानवाकी सनकी गेंडरी । र्देशन−श्री सफ्ती, इटकी नींद ! क्रमा-म कि नीरमें सुमना, बनीरा दोना। विसारेंसे काम करना। र्द्धेच+−दि+ कॅचा; रहा; हुसीत; कॅभी आदिका । नहींच− वि॰ होरा-वहा; फॅनी-नीची वातिका कुलीन बकुलीन। भेडा स्टा केंचा-वि॰ उपरको शोर अविक वठा हुना गुर्वदा संवार्ष बा बार्जी सोग परंगाः वहा, श्रेष्ठ स्थ स्थापा बीरकाः एर-प्रतिकामें बकाः सम्मानित । **−ई−को ॐवा दो**माः मुखंदीः बहारं । ⇔मीचा-वि कनव सानदः सकानुरा । -बोस-पु॰ गर्दमरी पक्ति । सु॰ -मीचा सुमाना-महानुरा स्थला । -सनता-केनक जोरसे कही हर्र बात ही सुन सकता, सर्वविश होगा । -(ची) बुकाम फीका पक्रवान – नामके अनुरूप काम शुण आदि न र्खेंचे⊸श॰ डॅबर्डफ, कसद्धे भोर । सु॰ ∽नीचे पॉब पदना-च्य-बता दोनाः योका प्रशाह दोना । कॅछ•∽पु॰ एक राग । **र्हें क्रमा =** स • क्रि • **दं**यी करना । क्टॅंट−पु पोझ डोने तथा सवारीके काम आनेवाका यक जानवर को गरम और रेगिस्तामी मदेखोंमें व्यवस्तर पावा जाता है, बहा −कटारा,−कटीरा−पु॰ एक कैंटीकी शाही विसे क्टें वहे चावसे खाते हैं। −वान-पु केंद्र वहातेशका । अ. (हेक्सिये)-किस करवट वैठता है-दैसिये, मामलेका क्वा नतीया दोता है। -ब्ही खोरी भीर मीचे मीचे (इस्केशके) - न छिपनेगाडी नातको Bपानेको क्रीडिया। -के सकेमें बिली-नेमेक, बर्धनत नात ! −के सुँद्में कीरा−मनिक फाननाने था भावश्यकताबादको बोदासा बीज हेगा । -- निगस जार्थे दुमसे दिचकियाँ-नदी-दर्श शर्वे दर जाना और होटीमें भरकारा । - सक्केको ही भागता है~हर चीत नवने भरम प्रमुख भार हा वाली है। -हे ब्रेंट, होरी कीनसी रूक सीधी-नेतुके शादगारी बोर्ड नात ठीक नदी देखी। केंटनी-की मादा केंट। -सवार-पु॰ शॉन्नी सवार, धरकारा । कॅंबा≎~ पुषद वरतन विस्तर्मे रफ्ने का िरसन्दर गांव रिने नानै। तहसाना । केंदरण−५ जुदा। र्केचा~ड॰ बातुवाँ फिनाराः श्रीपावीके पानी पीमेका बाट । केंद्री-व मही। दशाय नहीं। क−पु[सं] धिवाचंद्रमाः रक्षकः का सी। सर्व०

निषार करमा । **क्रम्भा॰−स क्रि॰ प्याद फरमा** ≀ क्रवार-पुटीटा, समाव। बरसी । क्ष्मचचारी । क्रकि−ली (र्स•) शहना विवाह । ठतर*-पुन्दानाः दे 'उत्तर । उत्तरकार−वि उत्तरकात्रेयः ऊर्विम≎−विदे"उत्तमा -पु॰ भगरपान ! कुछ । (ग। – सेम – स्रो केवॉच। क्रमना॰-व॰ कि उदब दीना प्रगमा। कमाबाई १-नि॰ ध्यर्व, देग्निर-पैरका । शी॰ निरुष्क शता रवाम । प्रकाहर । क्रथम्य क्रथस्य-पुरु [मे] दुन्र । सङ्ग्र-पु पुत्र, बस्ता स्ता असना आँवा पृद्र, वक्ती। सम्बना - व कि पृद्या । म कि छीहना भूमना ऊपमी−वि कथम मनामेशका उत्प्रहो । प्रचानाः ज्ञाना− वे अञ्चयद वशी किन का अव छछ | क्रपंच क्रपो+−५० दे 'क्रम् ।

वसंतकी कवन कागी²--व॰ की०। ककार-पु• (सं•) कि अक्षर वा उसको ध्वनि । ऊरमा∸प ⊪शी०वे देख'।⇒वि गरम तप्ता। उत्तर – प्रवादके गीभेकी सुखी मूमि । क्रक्रस≉−प०, श्री॰ दे॰ 'क्रप्स' । उल्लब्ध−प॰ दे॰ 'शोसकी'। एक शरदकी गास । क्रमना==भ० क्रि॰ वै॰ 'उगना'। ऊचर-वि॰ उथानेवाका, भीरस । क्रमण्-पुरुविष्ठि स्वयद्व स्तरपति । ऊबाइ--वि॰ समाइ, बीरात । क्रजना≄—अस्टि०पुराक्षीना। द्धवर्थ-वि॰ १ 'वर्गणा है 'क्जर'। ठ.वरा०-ति है 'उनका। क्रम्बन्माटक-पु सहकरण्, मनिश्चित काम । स्टब(७--ब॰ कि जोघर्में भरता: राखादित होता: सीध-अटपराँ ग−वि वेत्रका, सर्रगत, वेश्विर-पैरका निरर्धका कवी−सी० वनकुमी विदिवाः गीताः रेशम बीकनवार्कीकी उद्य−वि सिं•ो निवाहितः वृत्तः वृहितः। ≔र्यकट्र≕नि० उपमा−भ फि॰ अनुमान करनाः सोचना । कवा-ची [मं] विवादिता की। वह परकीया नाविका को निवादित परिकी छोड़कर करन किसीसे प्रेम करे। क्रय-वि निवृत्ता वैवकृतः। द्र निर्म्दान व्यक्ति। अवि−मी [सं] सिलाई। सीनेकी मनद्री। तुनाई। रखना शहायताः श्रीदाः कृपा अनुग्रहः इच्छा । अव-प्र [स] भगरः दरवत नामध्ये वाबाः कदविसाद । −गरकी~पु॰ एक तरहका कर। –धर्मी−सो॰ एक तरहर्ने बगरवर्ती । −विस्ताय~पु दे ऋममें । −सोज कद्विसाव−प्र नेवकेको दशका वस समयप्र संतु । दि० मूर्ग नुद्ध ।-की करी-कभी समाप्त न हीनेवाला सगवा। **कर्म-५** भारताचे मानक शुप्रसिक्त वीट वदवसिक्ता कर कदा-विश् वैगनी रंगहा । चु वैगनी रंगका मोहा । करी-नि करका कदके रंगका रवादीमायल प्र ठयी क्रम(स्)∽पु[नं] शतन छानोः मित्रोदे मिकनेदा गुप्र अध्यस−प्र• शास्त्रङ दंशामाः बस्तात ।

कोपभीश-प॰ (से॰) चंद्रमाः कपर ।

भोश-प॰ (सं॰) औठ। -कोप -प्रकोप-प॰ ओठका एक रोग । --बाह--१० भोठकी वर ! --पहलव--प

क्षेपछ बोठ । - पुड-प्र ओठके खोकबेसे बधनेवाका गहरा ! --पुरप-पु वंश्व-कृक्ष ! क्षोप्रक-वि भि । बोठाँकी विकासत करमेवाला । प॰ क्रोप्र १ सोष्टी-सा॰ [सं॰] कुँदर, विवाधक । कोधोपसफका-सा॰ (सं॰) विवादक। जी क्य-वि॰ सि॰। भीठसे संबद्ध भीठपर धपरिवाह भीठ से चवरित । --वर्ष-५० छ, छ, प, फ, ग, भ, म, म। क्षोप्य-पि (सं) बोहा गरम, कुमकुना । श्रीस-सी॰ इवाक्ष भाग भी रातमें बहकाके कामें जगीन पर गिरतो है, छहनम । स०-का सोती-अपर्यश्रर । -धाटमेसे प्यास महीं ब्रमली-नोशेसी क्लूसे नहीं कान हबकराकी पृति मही हो सकती ! -पद्मा-देशीनक हो बाना। उदासी क्राना। जसाइ मह हो बामा। उंदा ही जामा । भी-देवभागरा वर्णमाणका जीवदर्ग 🗷 क सको छोड कर श्वारक्तों (स्वर) वर्त । प्रकारण श्वान श्वीह । र्थितना∜∽स कि छवना, व्याय∓ दोना ∤ स कि॰ उसक्ता । ऑॅंड~को कपड़ेको किमारी। वरतम आधिका वटा हुमा किमाराः बीठ । मु॰ -बढामा-परवी परे इप धक्ये बीतना । कॉक्सिक-विण सहरा-'वहळ शाह विखाद वृद्धिः और वैद्धी

भोसरी!-खो॰ जनस्ट गरी। जीसाई-सी जोसावेधी मजरूरी दा ग्राम। ओसामा-स कि॰ मौरे हुए क्लाउन्हें स्वार्ते सक्त थानेकी मूसै आदिसे शस्य करणा। ओसार—पु॰ फैलावा मीसारा । वि० भीता । व्यक्तिरा – १८० साववान, बरामदा । क्षीड-न्य॰ दास हा श्रास्टरंगुक्य प्रश्य । ओहर*-सी॰ और । भीवता--प्रश्रां वर्षः स्वातः।-(वे)तार-प्रश्रादः कारी ! --बारी--कॉर्ड पदाविकार ! --के पतवासे परकी हैसिनतमे, प्रदेश । सीहमा! –स कि वंडमें! मारिको कर प्रस्त है?? हुए गांचे निराना, सरबी करना; किसी शहरों स्टिन **ऑडरनार्ग −०० कि कमीपर होगा**। ओडार~प+ पालको आदिपर परदे वा श्रीमाके किर रहा द्रभा कपशा । सीडो-स॰ दर्ग या साधनंधन**र** गुप्त । श्रवा थी चीकके बराबर बीचा है। (तरक बर्धने वर गैर का शरद और डॉसमें शरद मान होता है है श्रीसना! - व कि॰ क्सस होना। भी-प्र+ मिनो होचताया अस्त्र । स्त्री+ प्रमी । + सर् है 'भीर' । श्रीकात−५ [ल] बल्ड समका जमाना (देस[‡]म वड)। न्हीं वैस्थित । -वसरी-की बोस्व विरोध गुनर-वसर । गु॰ -बसर करबा-अंक्न विगेद राग-गुनर-बसर बरना । श्रीक्रः श्रीक्षक−पु (तं•) देशंका समृद्र । भीसदा – हा है 'भीपप'। भीता−प्रश्नावका चमदा वा चरसा । सीरास#-वि 📱 'श्रवपत । व मो+ दे॰ 'श्रवपति'। शीराह#−वि के 'क्रबगड'। सीवाइमा - अ॰ कि॰, स कि॰ दे 'अववाइना'! भीगरि-स्ता अलुकः येगाः जयसा जानवर केंग्रामेके विर वना हुना गण्डा। कारचीनी जुतेका करता वनशा थीगुन+−५ दे करप्रन'। भीगुनी र-वि शोषीः हुर्गुनी ! भाराय-पर्शनिकी स्थाना सर्वप्रता । क्रोध∽पु[सं]ब्रक्त, गइ ा श्रीबद्ध=-वि श्रार्टम दुर्गम । पु॰ दुर्गम मार्ग । शीयक्-पु नवारी फदरा मनगीती । वि जार्क्ट । औद्यर−वि जनगरः अत्रपा देशः विनित्र ! औत्तक−**म॰ लदानस्, द**कायद् । श्रीषट-न्त्री करिवार्त-नेस्ट । श्र अपानका प्^{कर्त}ः भौषित=-वि निरिषत्, स्रापर । भौषिसी—स्रो [क] देश 'जीविस । श्रीवित्य-पु [र्ग॰] चवित्र होता वन्त्रक्ता। हुन्हेल्रा

ओसरः ओसरिया-ली नर्भ बार्ण करते वास देन।

भौरिमा-स•क्षि•दे• को गमा। भौँगा 🗢 वि ॰ गुँगा । **धाँगी-को जुन्मी, गूँगायम** । श्रीवनाः श्रीवानां →# कि वै॰ 'कंपना'। स्टीरमां -- दु+ कारा कादि कारनेका ठोडा । सीटमा-स कि॰, अ॰ कि व॰ 'जीटमा'। **सीं**राना~स• क्रि. हे. 'बीराना । श्रीवर्≠-प्र ओवः वेसवार । आनि'∼सची। उभक्षावासमहताह्वा। अधिमा अधिमा≉~अ कि जमत दीमा व्यक्तक होना । क्यों क्रियाना~ अ≉ क्रिय संस्था जाना जीना श्रीमा । स॰ क्रि॰ क्षकट हेगा। श्रीभा-वि॰ विसका मेंद्र गोबेको जोर हो। प्रकराः गोवा । म विहा । मु॰ -ही बाना-वैद्युप दीना गिर पदमा । - (ची) स्रोपद्यी-मूरी । -समझ-वर-पुरि । -(दे) मुद्द-मुद्दे रह । - श्वरमा-भेषा याना भक करना ! श्रीभाना~ स दि÷ शोषा वा श्रकरा करना । थीरा - प्रभवा । भींस-५० [६०] एक अंग्रेजी बजन भी विष्राणांनी वी वा

क्रोर बारोबाला । -शासी(सिम)-वि० कपरकी और बातेबाकाः पण्यारमा । --चरण-वि शिसकी टौर्ये छपर की सीर उठी हो सिरके वह घडा। य दारस सामक पौराणिक जेत १ -ताळ-५० संगीतका एक ताल । --इकि -वि क्याको देशनवाकाः मध्यवाकोशी । स्त्री विकशी पर रहि समानेकी किया (बी०) । - हेल-प० किथा. जारायचा ! -- हेड -- खो मृत्युके बाग गिरुनवाका धारीर I ~केश-विश् स्वयंकी और देखनेवाला। महत्त्वाकांकी I -पाश-वि० पु है 'कम्बद्रण'। -पंड -प सडा तिकम्, बेध्यव या रामानंदी तिकम् । -बाह्य-प वह बार का भवना को अवनी यह बॉब सदा सवर अठाते रहे । -प्रेपी(धिक)-वि कर्षरेताः त्रखनारी । -सात -प+ संचारं। -सस-दि विसदा ग्रॅंड क्यरकी और क्षो । - प्रश्च - विश् क्रिस्की च< ऊपत्थी और हो । प० संसार । - हेता(सम्)-विश् बीर्वपाध न बोनं बेनेबाका नैष्ठिक महाचारी । प्र श्विक मीम्भ विवासका क्लमान । - सिंग - सिंगी(गिन) - प्र शिव । -सोक्ट-प्र० भारासः स्वर्ते । −वात्-प• −वाय-सी कपरी भागमें रहनेवाकी बाह्य ! - शाबी(बिस)-वि मेंच कपकी और बरके सानेकला। प्राधिव। - स्रोधन -प बसन्।-शास-पु॰ चपरको बहनेवाको साँस सस्यी साँस !: -साम-वि अधिकाधिक कपर वानेवासा। प कारकी चोटी। -स्थिति-नी सीथं यहा होता। मध-द्रिध्यमा घोड्यो पीठा बत्थान । →स्त्रोता(सम)-दि कर्लारता।

दि कर्षारता। क्रम्बॅक-पुर्व[संग] एक तरहका सूर्यम । क्रम्बॉल-पु [सं] हिरोका करएका माम सिर । क्रम्बॉल-पु [सं] प्राचीन कालको यक प्रकारकी माम । क्रम्बॉलम-पु [सं] व परकी कोर बाना। करही कोर वहना।

कर्ष्यांदेह्य-पु (मं) स्वर्गमन मृत्यु । करपावर्ग-पु [मं] स्वर्गाध्युण । कर्ष्यांसित-पु [मं] स्टेला । कर्मि-प्रोश [म] कहर प्रांग मनावा नेगः पवित्र प्रकारतः

करनेश्वी शिक्तः प्राण (वन कार खरारक व ए हुन-मूच, प्यारा लीम मीच, छरीं भीर यरमी (क्या); राव परिवार क्षणा के की उपना व्यक्त वा प्रकर बीमा । - माक्य-की तर्गावरी गर्गमार्ग असी यक्ष वृथ । - माक्षी(क्षिप) - पुनसुद्द ।

कर्मिका-सी [मं] कहर अंग्रहीत क्षत्रेकी शिक्ता शत्रः भीरेका ग्रेजन । कर्मिमान(मन्)-वि [सं०]तरंगिता देशा शुपराचे (केश) ।

कमिछा-सी भि । वश्मनश्च प्रणे ।

द्रम् स−देवनागरी व*महनाका सानवाँ (स्वर) वर्ण र व्यवस्था

कः -- रेजनागरी वर्गमालाका मानवाँ (स्वर) वर्ग । उचारण रेपास मूर्च । भौजनान - पु. हिं] वाल्छ ।

कर्मी(शिक्ष्), कर्म्य-मि॰ [सं] कहरोंनाका, सहराता हुआ। कर्म्या-मो॰ (सं॰) रात।

द्धार्था —आ॰ (चंप) रोकः ताकः समुद्राः प्रशुशाकाः मेपः वद-बानकः पितर्रोकाः पठ वर्गः । वि॰ विरमृतः । द्धार्वरा —कोः [सं] वे॰ 'प्रवेरा'।

द्धवर्गा-सा चि] वे॰ 'वर्षशा' । द्धवर्गा-प [सं] ध्रम् ।

अस्मान ३ (त.) व्यवस्थानमञ्जूषा | अर्था∽को [सं]देवतात्र नामक तृष्।

उक्कतस्तुष्य-वि० अटपदांग, वेडमा, वेसिर-पैरकाः अनामः कांश्रष्ट ।

कलनाक-स्था कि उपन्या। कलुपी(पिन्)-पुर्व [मं] १० 'उन्मी'। कलुक्र-पु [सं] १ 'उसक्त'।

क्षप-पु [सं॰] कसर रेडवको अमीना नानी मिट्टी आका बराठ विवस बर्नेद्याता सक्य वर्षत सार, मस्यूपा शुक्र,

ৰাব। ভ্ৰম্ভ –বু [বা] সীত চৰছা; নদৰ: ছাকা মিৰ্ব। ভ্ৰম্ভ –বু [বা] বিষদ্ধ, খালা; কাকা মিৰা; বাঁৱ;

पिपको पिपकोमूक कम्य । इटपर-वि [र्स॰] सारा । पु असर बमोन । --ख-पु॰ मोनो मिद्रीसं निकाका हुआ नमका एक सरहका प्रंकः ।

माना मम्हान जनकाण हुमा नमका एक तरहका पुनक।
द्वरपा-मी [सं] वैंद 'वहां।
द्वरपा-मी [सं] निकास मिहा तारो वसीन।
द्वरपा-म [सं] पानी मिहा तारो वसीन।

गरमः —ख—पुषि दे० 'छन्मय'। —प—पुश्रामिः सक्त पित्तमर्गः —खर्षे —पुश्रुस् द्वा खन्मा(प्राम्) —जी [शंग] गरमी भाग मीष्म काछ-

कावेशः वयता । स्रत्यापङ्-पु॰ (सं॰) बादेका मीसम । स्रत्यायण-पु (सं॰) धीरम काल ।

क्रमर-पु नद समीन विसमें रेट ही और कुछ पैदा शहो। क्रइ-पु [सं] परिवर्गना सुवारा सनुमाना तर्क निकक्ष

कह—् पुन 1 परवनना सुकार बनुमाना तक निकक्ष परोक्षण तर्केचुक्ति बनुक्त एरको अध्याद्यार हारा पूनि। क्रम्य—पु• [4•] परिवर्षना सुवार तकं नितर्क करना। विचारना।

अइनी−सी [सं•] शाह ।

त्रहा-नी [छं॰]दै 'कह् । -पोह्-पु प्रस्तिकेष& पूर्व और उत्तर बीनी फ्रॉपर विपार करनाः चर्चकृर्ग निवार याविक्यन ।

अदिनी-सी [से] श्रृंट समूद्दा साह । उद्यो(हिन्)-वि [सं] अदा करनवाना।

उध्य-वि [र्श•] क्या करने योग्य ।

क्र्र्~क्री० [म] डबमाता अदिनिः चण्हासः निता। पुत्रपर्गः

पुरयो। इत्कार-पुश्रीकः अधारयाबम-धेरवनि ।

भौतकार्य-भौतिया भौपकार्य-पु॰, काँपकार्यां-सो० (सं॰) महान; सेमा I भीपप्रसिष्क-पुर [संर] भइनः अस्त सर्वे या चंद्रमा । भीपचारिक~वि॰ (से॰) वपवार-संक्षी; रस्त्री िमाठा गोल । भाषरी रूपिश साँ । अवपरी, क्रुटिन । भीपदेशिक-वि+ [री॰] रुपरेश्व-संगी; सपरेशि या शिक्षणकार्यसे बोबिका प्रस्तानेनाका विकासार्वसे प्राप्त (धम) । भीपत्रविद्य~वि० (र्शo) रोग-क्रमधीमे संबंध रक्षनेवासा । औपधर्म ~पु • [से] क्में किरोधी मह । सीपधिक-पि॰ [र्स॰] छकी। प्र॰ ठम, मग दिखाकर चन **एँ ठनेबाका** । भौपनिधिक-वि [सं] भरोहर-संबंधीः विशासकः भरोहर रका हवा। भौपनिवेशिक-वि• [रो•] वर्गनिवेश-रोवेशीः धर्गनिवेशी रहनेवाका !-श्वराज्य-पु॰ एक प्रकारका स्वराज्य वी कुमाबा आर्ट्रेकिया आदि मिटिश क्पनिवेशीको प्राप्त है। भीपनिपद-वि [ti] क्पनिवर्में कहा, बतावा हुआ। स्पनिषर्भर बाजित । पु॰ परवक्का उपनिक्तका बसुवाबी। भौपनिपरिक कमै-पुर्श्ति। वे इर्थ का शहरा पाश कर (की)। भीपनी-सी• है 'भोवनी'। भौपन्यासिक-वि० [तं] क्यनात्र-संभीः प्रपन्नासके **बंगकाः अद्**षुत्ताः प्रचलकाराः सीपपत्तिक-वि (सं) भरतातः सप्तति सुका सुकि-संगत, डीक चपसक्त । भीवपातिक-पु॰ [र्श•] स्ववातक क्रुप्तेनाका ।

भीपस्य - प्र [एं॰] समता सत्त्रस्य, शरावरो । भीविषक-विश् (एं) न्वाच्या एव्युक्ता मयलसे माप्त । प्र सादनः बदाव । सीयमागिक-वि [6] वर्षीय-संबंधी Ì भीपराक्षिक-विश् सि] उपराच वा रावप्रतितिविश्वेष्धी। भीपक-वि॰ [मंग] मरतर-धर्मधाः प्रकरका वना हजाः पत्थरसे मिक्रमंत्राचा (कर)। भीपवस्त, भीपवस्त्र भाषवास्य-पु [सं] उक्तसः। भीपवस्तक-पु [सं] उपवासक बप्युक्त आहार न भीपवास-वि [धं] अपनास्त्रकर्मे शिवा वा फिना धानेपाका । भीपवाद्य-वि (ते॰) सवादेशे काम मानेवाका । य । राजस्मै संवारीमैं काम मानेवाका बाधी वा रथ। कीपशसिक-वि रिश्वी समन करनेवालाः समनते करक हीतेगला । भी प्रमाणिक-वि॰ (से॰) घपसमें संबंधी। उपसर्ग-स्वर्धे ग्राप्त (रीग)। विपक्तिका साममा करने बोग्य । पु एक मकार

हीतेशास । (१० (७०) क्षण्यां क्ष्मी व्यक्षणं नमा विश्व क्षाणं क्ष्मा मा (१०) व्यक्षणं विष्णं विष्णं

वानिताका। पुरु वनस्तर्दाः । ।
वीपायिक-विश्व (छ) निहेन अनुस्ताओं में सेन्तरविधेन वर्गीते संतर्द रस्तेताका।
वीपायिक-विश्व (छ) चपदारमें मिना दुवा मा कि
वानिताका (घरः)।
वीपासन-विश्व (छ) गुवामिन-संतर्भाः पुरुग-संतर्धाः १।
विश्व विश्व (छ) ।

जीसक कीरिक-वि [ड] है 'तेम । कीरमक कीरिक-वि [ड] है 'तेम । बीरगाइके-पुर (दार) ग्राप्करेड्या केरिन स्टिन्स्से बारधास (धासनस्थाद १६५ से १०००) को प्रस्तरेय सीरा-वर से स्वाची का कार्योक्षी कीर्तरेशा का स्टब्स् ब, सबा। दि ह्स्सा; क्लंद्र । ग्रुक-वर्ष मीर-पुर्य कुफ, क्लंद्र। -क्लंपा [-सुर्य क्लंद्र, वर्षो से स्ट्रों क्लंपा ह्स्सों का प्रस्ति है सहस्रों से कर के क्लाइ ह्स्से वाड ग्रीमेने बहमा थे। -दी वृक्क-स्टे दिस्सा क्लंप्या क्लंप्य। बीरस-वि० (चं] स्टोंस्का; स्टिस्टेंस्था। पुरु कर्स्य

भीरत-द्यी [ब] यो। पत्नी !

दवहा, द्वेरक ।

र्थीरमा≉-ज• कि आमे ज्यान स्हनाः सीरम-वि (सं•) मेह-संबंधाः प्रशासका संशब्ध

सीरामक-पु (६०) में होता हुंद । औरमिक-ति (६०) प्रकारीभा 1 दु गोरिया। औरस्त-वि (६०) विचारिया वसीरे स्टब्स, वैद कार्य। पु० विचारिया पसीरे स्टब्स पुत्र । औरस्ता-व्या० कि क्षा करणाणा । औरस्ता-व्या० (६०) विचारिया पसीरे स्टब्स दस्ता । औरस्ता-व्या० (६०) वै 'भीरस्त' । औरसा-पुर्व । औरसा-पुर्व । औरसा-पुर्व । औरसा-पुर्व ।

भीप्पेरेहिक, भीप्पेर्वहिक-वि॰[६०] वृद व्यक्ति संद

वा करते विशिष्य किता पता।
वीष-वि [तंत्र] पत्तीमें संदय या वस्त्रा धीनते वाचे।
वु पक स्वरं सबर्देक क्षित्र मुक्तानित गारी समर्थ।
वीर्वसेष-तुत्र [तं] वर्गमिका पुत्र संवतः अवस्त्र।
वीर्वसेष-तुत्र वि वेर्गमिका पुत्र संवतः अवस्त्र।
वीर्वसान-न्यः कित्र परमी वन्त्र। यह दोना।
वीर्वसान-न्यः [व्य] संवतः, दयन्यो क्या (प्रवंशे
वृद्र)।
वीर्वसान्तुनिय-वि काएरसङ, सेनी।
वीर्वसान्तुनिय-वि विराम सर्गात्र सेन।

बीकिया-त [अ] सिक् तरप स्त महत्रमाः प्र

इआ समलमान पन्धार ('नक्षी'का गर्ड")।

संमानना रहती है (पारमात्व विश्वेष्य यह काक रश्वीसे १७वा रावतक मामते हैं।) -गामी(सिम्)-वि ऋत काकम संगोग करनेवाला । - चर्या - की वस्तविशेवके धतु**रक आहार-विहार । −दाम−**धु ऋतुरमाता गरनीके साथ संवानकामनास संगोग करना । -भाधः-पति-पु॰ वसंत । -पर्ण-प्र एक अयोध्या-अरेश्व । -पर्याज-प्र कत्रज्ञोंका भावर्गन । --पा-प र्यंत्र । --प्राप्त-वि प्रक्रनेशासा (पेड्र)। -प्राप्ता-वि० खी० वी एकसका को चक्को हो। -प्राप्ति-चौ॰ रजीवर्श्वम। -पन्त-प्र० ऋत्तविश्रेपमें होनेवाले फल । —शाया -पु॰ छठा विश्सा । --मुक्त-पु• भनुका पहला दिल। --शाम-पु वसंत भत्त । - खिरा-प कतुका परिवासक विका स्वामानका क्कल । -विज्ञाम-पु॰ वातुमंटकमें धोनेवाके परिवर्तनी-का विद्यान विसक्ते आचारपर वर्षा सुपानका अञ्चलान क्रिया जाता है, औटिवोरॉलॉकी । -विपर्यय-पु॰ कत्तके विपरीत बात होता (जैसे-धर्मांकी वर्षा)। -ब्रुक्ति तो क्रवबॅडा बावर्तना वरसर । —वेका~को — समय-प्रशासना या यसके बाद गमाबानका समय। -संधि-मी दो क्तुऑका मंदिशक । -सासम-प्र क्लाके सम्बन्ध बाहार जाति । – स्लोस-पु० एक विधेष यदः। −स्ताद्यां −स्ती॰ चतुरतान करके शुक्र दुर्व खी। -स्मान-पुरबोदर्शनके बाद बीचे दिन किया वानेवाका रतान ।

क्तमती~वि , खो• [मं•] रचलका ।

मर•प−पु• [सं] पुट वीर्षः गर्मादानका वपञ्चकः समय । भरविक्(ध्)∽दु [सं∗] यह करानेवाका (कुन १६ कारियक होते है जिनमें चार सुबय है-होता, जन्मर्स

रहादा और बद्या) ।

म्ह**रू-दि** [र्ष•] सुराहाक, वन वान्यसे संपन्न निसकी भइतो हुई दो जमा दिना हुआ। प्रा विप्तु वृद्धिः प्रत्यक्ष पुरु ।

पर्राद्ध-स्तो • [मं] संपन्नता वृद्धि काती बाह्यर्वः गीरकः एकसवाः सिन्दिः पार्नेती छटमी पत्नीः गनेवाकी एक दासी। बाबा धरका एक भरा दवाके काम जानेवाकी एक क्षमा माणना । - काम-दि० इदि सन्दि नाहमेनाला । ─सिद्धि—स्वै चन-दौलत और सफलताः गणेशको तो मनवरिवाँ ।

क्तियाः व्यनी - वि दे वाणी ।

परम-९ [में]-देवना। एक नयनेवा देवीका एक अनुवार वर्ग शिस्पी। तीन कर्परेबी(कम् बाज और निध्वा)मेरे

पहरा निसन्दे नामनं वीनोंका चातन होता है। क्तमुस−५ [मं] इंश स्वर्गः इंद्रका वजा ।

परस्य-५० सि] सुगरियेका क्या - केत् -केत्रम-प

भनिस्या बामरेवा - क्-पु सून पर्वतिक निष स्तीरा हुमा गर्दा ।

क्त्यभ-पु॰ [सं॰] वैकः नर जानवरः। संगीतके सात स्वरी-मेरी इसराः कर्नरमा शकर वा मगरकी वैद्या व प्रसिद्ध नीपिनोर्गेसे एकः विष्युक्ता एक नवतार । वि उत्तमः मेध (समासांत्रमें-प्रवर्षम भरत्र्षभ इ)। - कट-प्र एक पर्वतः। – हेव – प् । विष्णुके २४ व्यवतारों मेरे एक। जैनोके एक तीभकर । ~प्यास-प्र॰ हिन ।

व्ययस**क**—पु० सि] अष्टवर्गके अंतर्गत एक भोवशि । करपमी-सी॰ (सं॰) यादा वह सी विसे मुँछ, दही वा और कीर्र पुरुष-पिक्ष की विषवा; एक लीववि, शुक्रशिकी;

क्षिसमा ।

ऋषि∽प [मं] मंत्रहरू, वेदमंत्रीका साक्षातकार और प्रकादन करनेवाका व्यक्तिः बद्धत बडा तपस्वी सनिः प्रशासकिरण: ७६३ संख्या एक कवियत क्याः एक भारत । --करण--प्र• मनुष्यका कविशोंके प्रतिकर्त्तक किर परने कानेसे रएसे मुख्डि मिछती है)। -इस्प-वि॰ मि द्वरूप । —कुमार् – प्र- कपिका वेटा, कपिवास्टरः । —कुस्ट -प कविका वैद्या करिका आसमा वह विद्यालय **वहाँ** मध्यवारियोंकी विचा चहावी माथ । ∼कुक्या – स्री. भद्दा-मारतमें उस्किद्धित एक गदी । ∽िराहि –पु+ मगवका एक वर्षतः । - चोद्रायण-पुः जतविशेषः । - सोगस-पुः —व्यागिकिका−सी॰ कक्ष्मंत्रा नामक पीत्रा । −सुर्पेज्ञ⊸ पुरु क्रविक्रोंकी सप्तिके किए अकदान । ∼सेक्र∽पु एक तकः। -पंचमी-सी भावों सदी पंचमी। -पतन-प• बनारएके पाएका एक जैनक, वर्धमान सारमाथ । -प्रोक्तर —सी नाक्पणीं । —थज्ञ —पु॰ कविवादे किए दिया बाने नाका वदः, नेराध्यवन । —सोकः—ए० एक कोक स्रो सस्य कोक्के वास माना बाता है। -साह्य-पु दे कावि-पतन'। ~स्तोस−पु॰ ऋषिकोस्धे स्तुति। एक यध । ~

श्वाच्याच-५ वेशेंकी बावृत्ति। क्रिक=प= (सं] निम्न शेगोसा कर्मा; एक जनपर और

वसका निवासी।

ऋषीक-पु (सं+) एक प्राणीन वनपर और वसका निवासी। तुम्बिक्षेत्र । ऋजु−वि [र्थ] वहार छक्तिज्ञासीर बहुर । पु॰ सूर्वरहिमर

मदास्थः प्रस्मदित बद्धाः ऋषि ।

अर्थि − स्त्री स्त्रि । स्त्रा, सम्बद्धार द्वारी सम्बद्धार इक्षिकार । भरिक-५० [धं] रैश्रविशेष ।

क्षरम~पु (सं•) एक तरहका हिरला वक शरहका धोल ∽केसनः⊶नेन∽म् कनिरद्धा~र्गधा~रते कद्यपंताः ~गता −भोन्ध−स्पै॰ शतपृत्रीः ध्रुधीः।-क्रिट्र-प्र पद तरहका इंड । -मुक-पु वंदासरके पामका एक पर्वत भिसंबर राम ऋछ भिन्ने मुग्रीबद्धे माब रहा। —श्रीम -- प्रकार का कि जिन्हें न्हार अभी बनवा छोता स्थापी

गबी भी ह

क्षरवद्य-प्र [शे] पूगविभव ।

(बस) ।

विश्वतेकाका ।

भौपकार्य-प . भौपकार्या-स्रो (सं] महानः भेगा ! भाषप्रक्रिक-प सि] महणा गरत सूर्य या चंद्रमा । सीवधारिक-वि विशे प्राचार संबंधीः रहमी दिसाकः

र्मापटी≛-वि॰ स्तौ० अपपटी *व्य*टिन । औपरोडिशक − दि॰ सि॰ो सप्टेंबा संबंधी - सप्टेंबसे बा

फिल्प्यार्वसे जीविका प्रकानेगाळाः शिक्षणकार्वसे प्राप्त श्रीपह्नविद्य-वि• सि॰] रोग-कक्षगाँसे संगंत रखनेनाला । भौपधरर्थं ~प [झं०] धर्मविरोधी महा !

भीपशिष्ठ−वि० सि०ो क्रमी। प० द्रमः सव दिसाकर जस भौपनिक्रिक्र-विश्लिशे वरीहर:संबद्धाः विश्वासपर वरीहर

रबाह्या । भीपनिषेशिक-वि+ सि] उपतिवेश-संबंधीः स्वनिवेहार्से रहमेगाला ।-स्वराज्य-५० एक महारका रवरास्य जी क्रमाक्षा आस्ट्रेसिया आदि मिटिस प्रपनिवेकीकी प्राप्त है। श्रीपसिपद्द~वि॰ सि] उपनिश्वमें कहा, श्राप्ता प्रजाः स्वितन्द्रम् आभित् । पुरु परमञ्ज ववनिनवका सनुवानी ।

भीपसिपदिक कर्म∽प़ श्री] देवर्गको शक्का नाध

करें (धी०) । भीपनी-स्वी है जीवनी ! भीपन्यामिक-वि (तं•) जननास-तंबनः उपन्यासके र्वतकाः भर्भुतः । धः चम्पासकाः । भीपपक्ति-नि [मं॰] मरतुता प्रयाचि जुचा जुक्ति-संगत ठोद, रप्रकृत ।

भीपपातिक-पुर्व (धुरू) चपपातक करनेवाका १ भीपश्य – प्र [सं+] सगता, साद्यय, परावरी । सीपविक-वि• [सं] न्याच्या वयनुका प्रवृक्त प्रवृक्त प्राप्त । पुरु साथनः चपानः । भीपयोगिक~वि» (सं०) घण्योग-संबंधी !

भीयराजिक-वि॰ (र्व॰) स्वराज्य या राजमतिनिधि-संरंधी। भ्योपक--विश् सिं । प्रस्तर-संबंधाः नत्वरका नमा द्वनाः पत्बरसे निक्रनेशका (कर) । भापवस्यः भीपवदः भीपवान्य-पु (सं॰) सम्बासः।

भीपयस्त्रक-पुर्व [सं] कप्रशासके कश्चाफ बाह्यार-। भीपवास-वि [मं] उपवासकारूमें विवा था किया भानेपका । भीपवाद्या-वि [सं] संगारके काम आनेवास्ता । प राजान्द्र संवारीमें काम मानेवाका दावी वा रथ। श्रीपद्मक्रिक-वि॰ सि] भ्रमन ब्रुटनेशकाः भ्रममसे प्रत्या

(रीम): विपश्चित्रः सामगा करने वीग्य । प्र+ एक मकार का सक्रिपदाः [र्ग] क्लियो कीरिका व्यक्तिपारसै भीपस्थिक-वि मन्दी हो । भीपस्थिका-सी॰ [शं॰] नेदवा बारांपना ।

श्रीवस्थ्य~पु [सं] संश्वास, भीग ।

हीनेपासा १

मामेबाका । पुरु बपहार्ट ।

बीपाधिक-वि० [सं•] विष्टेच अवस्थानीर हैनेक विशेव वर्गोर्से संबंध रखनेवामा । भौपायमिक-वि+ (सं+) वपहारमें दिन्य दश श 🖹 बानेशका (की)।

भीपासम-पि [र्स•] ग्रह्मान्त्रिस्तीः प्रासंस्थः गुष्पान्तिः पितरीको दिया जामेशाला पिरः। भीव*ष्ट* — विश्व (तंश्री सर्वेद्र-संबंधी ! भीम-वि॰ सि । सनका बना बचा ० रे॰ 'लम'। श्रीमक भौमिक-विश् छि॰] है 'सीम'। कीर्वाज्ञेष-पुरु [फारु] सुगव्यक्षका वीत्र प्रस्त्रचे

बारसाब (सासनकाक १६५९) से एवटर वीधरा प्रत भा । सीर-म यो शब्दों वा बाक्योंकी मोहचैशला एवं 🗣 व, तथा । वि॰ क्छराः व्यक्ति । मुण्न्या वीत-नुरू क्षुक, बक्दा । - नवा !-वा, अवस्य, तथे ते सा -ती मीर-इसरींबी वात जाने बेंद्र इसरींबी से १३ई क्या। बूछरी बात झोडिमें शतमा हो हैं नहीं हुए ली निराकाः सदाः भवता ।

शीरग-वि॰ [सं॰] सांपका। सॉप-स्नी । उ॰ राज्य नक्षत्र । श्रीरत-सी॰ (स॰) सी: शनी । कीरमाक∽श+ क्रि आगे म्हमा चहना। स्रीरक्य-वि (सं०) सेष्ट-संरथी। इ. सत्था संताप्त श्चपहाः, ब्रीवरू । भौरसक−प्र• (तं•] भें*तें*का धंद ! भीरशिक-वि॰ [से] सेर संभी। मु बनेरिया। भीरस:-वि [सं॰] विचाहिता प्रतीसे शत्त्व वेक ग्रहरा पु विवादिता स्त्रीसे बरपन्न प्रम ।

कौरसमार्थ-अर्थ मि स्टमा, बतसाना !

कारस्य−वि , प्र [सं] दे॰ 'औरस !

भीरसी-म्दो॰ [सं॰] विवादिया परासि दलक वन्ती

कीरासाच-वि विकसमा वेदंगा "दर्श कर यह वर्ष भौराधी'-धर । बरिरेश−तु विरक्षापन देवापना कपरेको गिरको कार³क नास । - बार-नि विस्त्री शासाना । व्यीवनरीय-पु [सं] अस्तेष्टि, मेत्रकर्म । सी जेंगेहिक, सी वर्षहिक-विश्विक) कृत सांह ने हंग्र था वसके मिसिच किया एवा । भीव-वि [सं] भरतीमें संदर्भ वा सका र्यपरे परा पु एक प्रपर-प्रवर्तक काका वत्रवाध्या साथ मन्द्र भी वेरीय-पुरु [लेर] बनझीशा पुत्रा वशिष्ठ। क्यान्स्री

बीबंसर=-पु॰ दे 'ओशंमा' । भी पसर्तिक-दि [से] कासर्ग-संग्वी। उपसर्ग-स्थ्वी माप्त भीक्षणरा - मा कि॰ धरमी बदनाः तत होता । जीम्याष्-स्ती [ल] संनान, धरानेये, वस हम्बर 95)/ श्रीका दीका-वि कादरवार मीजा ह श्रीलाम-पु [मे] तदारा पाभीका दीव !

श्रीक्षिया-दु॰ [श्र] फिद पुरुष स्त, भागमा रोट हुआ सुमक्रमाम प्रवीर ('पन्नी का 43°) । भीपद्वारिक-वि [नं॰] यपहार-संबंधीः उपहारके काम

-हेइ-पु• मुख्यइ। वि एक धरीरवाका। −धर्मा-(सेन्),-सर्मी(सिन्)-वि समान वर्भ वा ग्रय-रवमाववाका । - नयम-वि एकाछ । पु श्चिव कीवाः कुवेर: शुक्र प्रद । -नायक-पु० दिव । -नियु-वि० एक्ट हो कपर निष्ठा, अस्त या एक्स हो अनुशाग रखने बाका शतस्वापासकः। - मिद्या-की एकनिएता अस-म्बता बफाश्रारी । —नेधा,—मञ्रकः—पु० सिवं। —पक्षी-(क्षिम्) -पक्षीय-वि पक्तरपा । ~पटा-वि॰ [दि] एक पारदाका । -पद्वा-पु [दि०] कुरतीका पक पेंच । -पद्मी-सी॰ परित्रता । -पद्मीवत-पु॰ विवा-हिता पत्नी के सिवा और किसी कीसे प्रेम न करनेक बता −पश्चिका−की संवयताः −पश्च−पि कॅगडा एक टंबा। पुरु एक रहिएव। --एवी-की क्यर्ग्टी!--पदी (दिप्-)-वि एक पर या भरधवाला (शव द्यंत)। -पर्यो-सी दुर्गाः -पश्चिषाां-पु दद छात्रम जिल्ला इन्ह यस दी और हो, शेयमें वैदर न हो। --पाटका--सौ• एक दुर्गा। --पाठी(दिम्)-वि विसे एक 🜓 बार पाने था सतनमें पाठ बाद की जाय । -पास-वि अवादक्ष या वदायक बोकैवारा। पु मचद्रापहरू कृष्य वाप्रक्षकः। −पाद्−वि सैंगहः; ण्डरेता। पुशिकाविष्णु। −०वशा−पुशिष्णेन समबर्मे प्रवस्ति) एक पाँव कार वेनेका दंव। -पासण-भ पास-पास । -पिता,-पितास-पु कुवेर ।-पुणक-पु॰ कीहरूना एश्वी। -पुष्पी(प्यिम्)-नि एक बीन क्रीश्रवासा । - प्राण-वि वक्षश्रान, व्यक्ति । - फमछा -[fit] जिस(गेट या कमीन)में साक्रमें एक की थासम्बद्धाः – श-एकः – भः [दि] अयानकः, वदायकः। - बद्धी-को॰ [हि] एक सरहका कंगर । वि सक रस्तीका। -बारगी-म हिं] व्याक्षी नारमे विक कुरू। −भाव~वि• समाम भाववाराः; श्वर्धनङ । —भुक्त−ि दिन रावमै एक ही बार भोडम करनेवाना। पुण्य वार्भोजन करनेका झतः − सूस−विश्यकः मंत्रिका (प्रशान)। -संविद्धा-वि [दि] एकः मंत्रिक षा तस्नेवाचा (मद्यान)। −सत्त∽वि यद्या श्रमान मत रसमेवाने। -मसि-वि वकराव शशान मत रधनशक्ताः – समा(गस्)–वि श्वदिश्व श्वद्यविचार वार्छ। ∽साधिक∽वि विसर्नेश्व दीमाशा दी। -मुँदा-वि॰ (दि॰) एक शुंदवाशा। -शुरा-वि एक धी करवनी और प्रभूता एक थी अरनाजेनाका (भकाम) । − ॰ पिकय – पुस्तम ण्ड्रहान सहना हैना (क्ष्री)। −मुर्सा(गिन्)−ि पक मुख्याना। −मुदत-श [वि] स्वष्टा एक वारमें ! - मूक्ता-की अल्सी ग्राक प्पा । – मोसा– वि [दि] प्रदास क्वनेवाला की दामने कभो-वेदी न करें। ⊷(ंग∸वि एक (ंगशकाः रकर वा बाहर-शिवरसे ४-६, बुरंगीयमधे रहित सधा विष्यक्र । - इंशा-दि [हि] श्वह स्वदाला (दिश)। द्र शास (गढ़ा एक करका : --ईसी-सी (दि) वक् रंगबा दोना । म्यूनकार संवर्गः सायदिनी । -१दृश--पु गोरा। -रम-वि अस्ति गर्भ रप्ने रदः सभी नर्ग नरी अपरिष्णभी। जो सिटका एक ही गया हो।

शक्तिका −राज्ञ-पु• एक रात रातमरमें पूरा दोने नालायम यदा। ∼दला−वि [दि०]यम रखनाका, विश्वका ह्रीक एक की ओर क्षेत्र प्रश्रक्तका एकप्रदम्। [को 'धकरसी'।] ~क्य (~ विश्व मह वी करवाका को धव सदरशाओं में रुद्धसा रहे समाम र पदाका ! -- संगा--प्र [हिं•] कुरतीका एक देंचा – सत्य–पु० होनाकार्य का निवार शिष्ट जिसमें समक्षे मृषिको ग्रन मानकर बामविका संस्थी और गुरदक्षिणामें दादिमा वेंगुठा काट दर दे दिवा था । → किश – दि स्क लिंगवाला (शाधा)। पुञ्चित्र सेवापके राज्यश्चक बुल्दैव दुरेर ! ∼छसा∽ [कि] एक पूछा प्रस्ता पीपा। -कीसा-पि [क्रिं]क्षपने गॉ-बाइका कवला(वेटा)। (स्तो 'पक्र कीती ।] —वक्तम—वि यक्तमा बादक, 'सिट्टरर'। पु॰ यवका वाषक वदन वाधाम्यः। —वस्रनीत-४ ण्यक्षदश्की विमक्तिकालाः − क्षण्र−वि एक (स्वासाः पक्त वर्गवाञादिकाः वर्गभद रहितः प्वद्वप । −दक्ता− वि स्त्री को ल्क्ष दी कपड़े पदन रहे रजरंग्छा। -वॉश~सी [दि] कार×ध्या । −वायम-वि पद मत १९६९म । -काक्यता-भी व्यक्तम होता। एका ५ताः विविवासक् और अधवादयकारकदी सम प्रदूर वरना (मी)। --बासा(सम्)-पु अने दा पद मद । −विश−वि वक्कीस्था । −विश्वति−वि॰ थीस भौरण्ड।सी २१को स्वताः – विश्व–वि स्कर्षा विथि, प्रकारवाका। —धूँव-पुगरेका एक रीग। --वेकि --वेकी--की साथे छादै रगसे देशा चढाया चोटी । वि इस प्रकारका ज्ञाबा बाँचनवाशी विधवा विद्यो-गिनी (की)। −क्रासम पुष्यक्राथी तुकृत्ततः – दोप – पुर इंद समासका यह भव किसमें दोने एक ही पर रह जाता दे। — सुस− वि एक गरका सुना दुशा। --०धर--वि० या वक्ष वारका शुना वाद रखे । ~भृति नशी वैदपाटका बद्द हम विसमें बगास-बनुदास कारिका विदाद मही किया बाता। – पश्चि−िय• वे व्यस्ट'। – सट−िय [दि॰] साढ और एक । पु॰ ६१ की नंदना । ~ससाक--वि व्यवस्था, व्यवस्था। -साँ-वि॰ [दि] समान, हरम ।-साधिक-वि विस्का रक की साक्षा की, जिसे पक्रमे ही देखा हो। -सार्थ-न एक साथा एक वमाधमे । -साका-वि [दि] म्ब साहमा। म्ब साह की सुद्तकाका (पट्टा)। —सुद्य-यु क्यस्तानि एक रूपमें परस्पर सम्बद्ध (रक्षम् बता-एक रूपमे परस्पर संबद्ध शेनेका भाव) ।-स्यू-पु एक्टीना ल्ह्या ।-रथ-दि ण्डपर रिवत वा कदित !-इत्था-विक[दि] एक हास्ते वेंद्रित एक व्यक्ति द्वारा स्वालित एक था। चु किसी विषवपर ग्याधिकार वरमा । ⇔हाकी −वि को [हि•] र्दे ^कण्यक्रश्या । स्त्री सारुश्चित्री एक मध्दत । – द्वस्य-वि एक वार जीता दुवा !- इस्तपाद्यप-पु एक द्वार आर एक पाँव कारनेका वट (दी)। -इस्तवध-पुर ण्यादाव काश्नका रंग (को)। न्द्रायम-वि एक वर्षको अवस्थाका । अ० - अनार स्त्री बामार-सीज सीरी आर बाबनेवान बहुत ।-कॉरंग स सामा-र्हा क भी म थाना दिन्द्रक गांपर्रन दोना !- आंतम सदका ब्रावना

नक्षत्र ।

भीरासा'-सर ।

करें (की)। सीयकी-स्थे है 'कीपनी'। भीयन्यासिक-वि नि विपन्नास-पंत्रीः वक्रयासके दंगम्बाः सद्भुतः । ५० स्वयन्त्रम्भारः । भीपपश्चिक-वि॰ [सं॰] प्रस्तुतः उपरक्ति बुक्तः वृश्चि-संग्रा, क्षेत्रः एवसक्त । भीपपातिक-प्र• [सं•] रुपपातक करनेवासा । भीपस्य~ड स्ति] समताः सहदवः वरावरी ।

भीपविक-वि• [र्ष] स्वाच्या उपञ्चल प्रवक्षरे प्राप्त । प्रशासनाः क्या व । भीपयोगिक-वि [सं] सक्योग-संबंधी। भीचराजिक -पि (संश) क्यराच या राजमितिविन्संदेशी। क्षीयक्ष-विश् (संश्री प्रस्तर-संबंधीः परवरका बना हवाः

पत्थरप्ते निकनेगाला (कर)। भीपवस्त भीपवस्त भीपवास्य-प्रश्निशे क्वलाः । भीदचकाक~पु∙ [शं] क्वनासके क्वतुक बाहार+। भौपबास-वि॰ [सं] प्रप्तासकार्को दिवा वा किया भागेगत्य । भीपबाडा-वि॰ [री॰] स्वारोफे काम आनेवासा । प्र॰ राजाची रावारीमें काम आनेवाका दावी वा रथ । भाषशक्तिक-(४० (०) दामन करनेवासाः श्रमनशे जलक

भी प्रमारिक-वि [सं•] बक्तर्ग संगंधीः उपसर्ग कर्म गास

(रीग); विषयिका शामना करने थीग्य । प्र एक प्रकार

भीपद्वारिक~नि० (सं०) क्षपद्वार-संबंधीः क्षपद्वरके काम ।

का सक्रिपाछ । भीपस्थिक-वि [सं] जिल्ही वीविका व्यक्तिवारहे कनती हो । आपरियक्त-सी (रां+) वेदमा, नारांगमा । भीवस्प-तुर्मि । सहभास गीय ।

भौरत⊸दी वि] सी। पर्ती । श्रीरमा•~== क्रि: जाग म्हना सहना कीरका-वि [संत] सेक्संबी। प्र मेला मंत्रा मं कपदा अधिक ! औरश्रक∽ए (तंश्री मेंट्रॉका <u>श्रं</u>ह । भीरक्रिक-वि [तुं॰] भव तंत्री। व नहेर्द्याः भीरस-वि॰ [सं] निमारिया महोते क्षत्र, हैर, क्या पु विवादिया पश्चीने बत्दन प्रम । औरसमान-भ• क्रि ५७मा ननसमा। भौरसी-सी॰ [सं] निमाहिया पानीमें बारव निमा भौरस्य~वि , पु [सं•] हे 'भौरस'।

शीरात्मा - विश्व विस्थान देशा - वर्ग का यह वर्ग

भीरिय~पु॰ विरक्षापन देवापमा क्वडेको विरक्षी साम^{हे} व्यक्त । न्यार्-विश् तिर्द्धी काटवाना । कोध्येवेह-पु (सं०) असेकि प्रवस्मे। श्रीध्येनेहिक, श्रीध्येवहिक-वि•[तं•] का गांवने के था पराने निविध किया गया । कार्व-वि [सं] भगतीमे संबद्ध या तत्वका मीपमे प्रपत्ता मु पक प्रवर प्रवर्तक भावि। वहवारिकः शारी क्रमंत्रः कीवेकीय-पुरु [सं] धर्नशीका पुत्रा मधिक। क्षानम । भीषंगा=-पु= दे 'भोरंगा । श्रीमणशी—म सिर्ण गरमी पत्रनाः राम दीला ! कीसाय्-सी॰ (श॰) शंताम, धेराचेरी वेद (श्^{र्म}

4g) (कीत्वा बीका-विश् कापरवाद भीवी। श्रीसाम~पु॰ [नं॰] सहारा; पानीका श्रीव l श्रीविया-पुरु [स] निम्न पुरुष होता महरूके रहें हुआ सुमक्रमान क्योर ('यूब्री का गर्') ।

प्कारम-दि० [तं०] फरमात्र असित्र । -बाव्-पु कारमाठी पक्ता, बोव-प्रकृती धनताका तिवांत, गर्रेत बाद । प्कादश-दिशीचे] तत और प्कास्त्रास्त्रां पुन्यास्त

स्थानंत्रकारः पद्मावसाह-पु (सं•्री भृत्यु वा दाइकी तिभिन्ने स्वारहर्क

्रितः एस दिनका वर्त । प्रकारवर्गि—मी ्रिंशे चोह मासकी स्वारवर्गे विशि ।

प्रकारिक-वि [सं] यहने यदिक अनेक।

प्रकाधिकार-पु [सं] यह वा मजेने मारगोका अधिकाछ प्रमारा ।

पुकाश्चिप पृकाश्चिपति - पु [से] सारे वेस्तर प्रकासन राज्य करनेवाला असेना स्वामी वा सासक ! पुकाश्चिपत्य - पु व [सं] एकाविकार, एक बारमीका सर्वा-

विकार प्राप्त होना।

मुकाहरू(-त्यी (सं+) एक सासकी वश्चिमा ।

प्रकासन-वि० [मं] एकके प्रभन करने योज्य (पगर्न्डा); पकास । पुण पक्कोन स्थानः मिकनेकी बगक् एकमात्र कदेरदाः विवारोका पक्का नीविद्यास्य ।

मुकार-पु [मं•] 'य अधर वा उसको व्यति। प्रकार्गस-पु [सं•] स्वर्मरदेव नामक दोय।

प्काणीय~पु [सं∗] प्रावनः बस्त्रस्य ।

णकार्यः, मकार्यक्र—वि॰ [सं] समान वर्षवाका, वसमानी (सन्याति)। णकायसि—व्या [सं] वर्षालकारका व्यक्त नेर वहाँ पूर्व

णकावाल-ना (ह) स्वान्त्रमात्रका एक पर नहा पूर पूर्वे प्रति कररीयर बस्तुओंका विशेषणके कपने स्वापन वा निपेद दिवा बादा एक छोड़ मौतियोंकी एक दाश सेवी माता (दी)। वि एक कड़ेका।

माठा(का)ाचित्रक रहकार मकावसी ∽सी [सं]दे यदावर्षि ।

णकाष्ट्रीस-पुपुकाष्ट्रीका-की [सं॰] पाडा वक्कु । पुकाह-वि [सं] पुक्र दिनमें होनेवाला । पु॰ ण्या दिनका समया पुक्र दिन पुक्रीवाला वडा ।

पृक्षीकरम-५ [मं] दी या मधिक वरतुओंकी मिकाकर

श्वरूप कर देना।

ण्डीहरा-दि [सं] निकार एक विधा दुआ। ण्डीसदन, प्रजीसाद-पु [नंश] निकार स्ट्राही जाना

भूरी तरह भिन्न जाना । एकी मृत-दि [मै] जी मिल्कर एक ही गया हो ।

ण्डीसूत-4 [मं] जी मिल्करण्ड की गया दी। प्लॉम्बर-4 [सं] (बद प्राणी) विसंण्ड दी दंदिय दी (देलुका ऑक्टर)।

पदि परवाद – पु. [तं] देशर अपन्था सर्वन-निवयस बरमरान्ये सक्ति एक ही द – यह यन । एकोत्तरसी – वि. एक भी भीर यक, एकोत्तर शत । पुरु

१ १ थे. शंत्रा। णडोक्तर—दि [मं] व्यक्त समिद्ध (प्रेमे ग्रीयमे छ-)।

ण्डोत्क-पुनि [मं] पक हो पितरको सक हेनेवाला संबंधाः प्रोटिए-पि [संबंधि प्रस्ति क्षेत्रको भीता स्रोतिका

पुरोरिष्ट-वि (तंक) व्यक्ते बदेरवरी दिया जानेवाहा (भार)।

प्रकेशा = - वि सर्गेना, तनहा।

एका- वि अहेला वेजेड़ । यू दो पहियोकी गायी किस्मी एक दी योड़ा जोता जाता है। ताल, र्यंशिष्ट्रेस वह पत्ता किस्मर एक दी जूरी हो, रक्षी। अमेन किस काम कर एकनेवाला स्थिपारी मैनिकीके संवेशी रिसोर्ट कराजा कर सिवादी। वीवर पामनेका एक गावना। वाद मारी सुरूर जो दोनी हालोंसे सांजा बाद । — सुक्का- वि॰ सोका-बुकेला। एकनी (बादमी) । — बारा- यु एका होकेसे बासा ।

पुरुको-जो॰ पक वेकको गाती। पक गुरोबाका ठास ! पुक्तिविद्यान-पु [बं॰] प्रदर्जनी सुभारस । पुक्ट-पु॰ [बं॰] दे॰ 'पेस्ट'।

प्रभावित्ति कि चले आरं एड । पुरु ११ की संस्था । प्रकाशयान्त्रिक प्रसास और एड । पुरु ११ की संस्था । प्रकाशयान्त्रिक अस्ती और एड । पुरु ११ की संस्था । प्रकाश ने पुरु ११ की किया । पुरु ११ की संस्था । प्रकाश कर्षों के । शिकारीओ विकेष किरमें जिल्को स्थान पहारों करोर मेरे जिल्को विकेष किरमें आरोका विश्व किया वा एक्टा हैं। कर्र करशरकरण एक करकी बग्रुगीका प्रवेश नामक और

मारक वरतुर्भापर कमवेवाला कर उसकी वस्की करने और भोडी रीकनवाका विभाग ! - कियार्ट मेंट-पुर भावकारी विभाग ! - क्यार्टी-और वेशमें बननेवाली वस्तुओं मार्गेक द्रव्य भावित है कि कियारी वार्टी

एनिज़बिदान-पु [बं•] दे॰ 'यक्तिक्यन'। पुतान-पु [क•] चमलार, करिदमा, अर्टाक्षक शक्ति

स्वक कार्य। पुतुकेशनः, पृदुकेशन-५० [मं] शिक्षाः, तालोम। --

क्रियार्ट मेंड - इ दिवार निमान । पूर्वेड - इ [बने] दिनोक्षे बोरने उनके प्रतिप्रिक्ति कर्में क्षान करवेबाला। सिंदी ब्लागारी वा कम्मी बोरने रारोन वेश्वे बारि करनेवाला ग्रमारता क्रमीक्तनर माल बचने बाला क्रिकी राज्य वा उपनिवंदमें मितिबरिक्स हर्में बाला ब्लिकारी ।

ण्डेंहरी-सी॰ (बं॰) ज्डेंरका पर, काब या कार्कप्रेय वह स्थान वहाँ कमीशनपर माछ थेया जाया किसी परंटक वर्षीन प्रत्येश वा स्थावा; वह बाटक प्रति या प्रतिनिधित इंद्रनेता स्थान वा वास्तित।

ण्डर्ली—पु (अं॰) वद्येका नियमानुसार अधिकारप्राप्त प्रतिनिधि ।

पृष्ट-वि [मं] यहरा । पु० एक तरहरूप भेड़ा । --गळ--पु० एक ओविन, उरल चक्रमर्रक । एक-पु [मं] महरू ।

ण्ड्-न्यी ण्डी । सु०-युवा -स्यामा-(५१रेशे) स्व करने या बाले वालेके विष्णु सारमा । ण्डक-पु सिंगी भेंगा वनेता वस्ता ।

पृष्टिकीय-पु श्रि] वेनरकके सदायक्रमध्ये काम करने बाला चौत्री अध्यत् । परिकर-पु [अंश्री संगरक, संगरकडार्व करन्याता ।

पृतिहरी-सी॰ चीटरका काम संपादन । पृक्षितम-पु [मं] (पुलक्का) संस्कृतम आसीत ।

क्षेत्रास्य – क्षेट्रकास **इंडारुय~**पु (एं॰) छरीर ! । क्षेकासिमी-सो॰ (से॰) काकी । वि स्त्री सगहास्त्र : कर्रवा (औ)। ककारुरी−प्र एक मिलाबीबी बाति । कु पुरु [री॰] यह शत सीमनी (१)। कंड ए-प [स्॰] भातनेत्रमें वर्णित क्य तरहकी पहाडी कंक्य-प्र• [सं] शेहरका छरीर, मार्भवर देश। अकिरां−प व्यक्त दर¥का गामा г **इंकेर-पु॰ [सं॰] एक तरहका श्रीमा**। क्षेत्रिकि, क्षेत्रिक्षु, क्षेत्रिक्षु-पु [गुं+] क्योक बृङ्घ । क्कोक-पु० [सं०] एक तर्हको होतक बीनी । क्षेत्रोकी तसी (सं) देश 'क्ष्योस' । क्षा-पु [तं] पापनीय प्रक्रवीग । कॅलवारी~सी श्रीकटा द्वीश । र्वेजीरी-को दे 'संबद्धार'' संघ । कंगन−पु कठाईमें पहनवेका यक गयना कंक्य वह बागा बिसमें इक्त्रों सोदेश दक्ता शैकी शरसी श्रोकर मादि गाँचकर इसवीको एरमके समय मर-क्रमाख हाममें गाँथ देते हैं। कॅरासा~प कंगम बांबते समय गाया बानेवाका गीतः क्लाईपर धरनतेषा एक गर्दना । श्री १६ तरहकी गर्स । क्रेंगसी – लो• दोता अंगल व कर्मने पहलनेका एक शहनाः कासकी बनी वंदानेदार अपी। दीवारमें प्रयक्त हुई स्कीर कार्मिसः दहानेदार चलर वा चकरमरके वसके हर दाने। साँगमी बारिका यह अब, काकुन । – हुआ – दि गैंडीकी वेंद्रवाता । पु॰ वद हाथी विसद्धी दुममें यीठें ही । कॅगस्य-वि॰ दे॰ 'क्याक । धुनिश्च-गीदित । र्केंगमी-थी रंग गेंठमा। ध्वाद्यीर्ग −ली॰ दंषी । क्रमहेरा=-द है 'संगरा'। क्षेत्राक-पुर (क्षे) कारहे किया स्मृतिमी मार्थिने पावा वानेशका वक बानवर । क्षेत्रास~वि+ निर्भन गरीमा अनदानः शहतान । **~शुंदाः** —वॉका~पुनइ काइमी वी दंगमा दोलं पुर धौदीनी करे मुफलिस शीकीन। क्यासी-स्त गरीचे निर्धवता। इंतु-पु॰, इतुनी-मो॰ [तं॰] यह करवा। र्मगुरियार्ग -सी॰ दे॰ 'कमगुरिया' । भाग है है है है है है है है क्रोड-ने (स्) है। स्टेड,। क्यारा-त गुंदर, दर्ज । -(रे) बार-वि० क्यारेवाला । बंधा-प् बाक सेंपार्म सुरुप्तानेका देवामेपार कालाः अलाहाँका यह भीगार । **बंधी-सी छोटा बंधाः मुकाहोदा व्यः भौजारा व्यः** पौषा । ~कोटी-खो॰ बमाव-सियार । % घेरा~पु≼भी बभानेशका । ¥थ•−<u>५ प्र∙</u>रे• कॉव'। **बंधम-**प्र सीना। यम श्रीकता भगूरा। यक वाति विस्ति

~पुरुष~नु दे° क्रीवसनुस्य । र्कचनिया—सी॰ वह शरहहा कपनार । कचनी-सी॰ संबन बाहिकी थी। बेरवा । कचार-पु [यं•] स्यां अक्षरा कविका~सी॰ (सं] प्रश्विमाः शीसको शासा । कंखक-प्र• सि॰] वरतरा भागाः भैगरमाः भीता वैनिदाः र्वेजुङ; भूसी, डिक्का; वसमा। #3418-9 [d] Bala 1 कंखकिष्ठ∽नि॰ हिं] वस्तरकारः वक्षाप्छारितः। **इं**श्वही-मी॰ चोमी, वॅमिया + रॅब्स । कंपकी (किया)-नि॰ (६०) क्रमचर्गारी । प्र राजनाला रखक, बेतः पुराध्यक्षा द्वारपाका साँदा भी। केंद्र । क्षंपरिश्-सी ४० के युर्छ । क्ष्मिका क्ष्मुक्शे−सो॰ [सं] बोक्षी, सैरिया। क्ष्मकोश-स्रो है 'दें पुरु'। **दे**चेरा-प्र• क्रीयका काम करनेवाला । क्ष्मां−९ फासीटाका क्रजा-प [शं•] क्रमकः ब्रह्मा केशः असूत्र । विश् वरहे दर्का−ज−पुत्रद्धाः −सम−पु∘विम्पुः क्रजहर्-नि अजेक रंपका, यहरा शाकी। पुरु रात्मी रंप इस रंगधा आँसीमाना पीमा । क्रमक-पुर, क्षेत्रकी-स्तो । (सं] एक प्रदारका क्यो । •सद─प्रथ६ सातास्त्रीस वावि। **कंजम-** ६ [मे॰] कामरेवा एक तरहका क्यी ! **इंजर, इंजार-पु॰ (सं] स्वं: राधाः स्टर: प्रशाः गी**प गुम्बासी । क्षत्रास-प्रश्लिषे । एक तरहका पद्यो । कंडा-पु॰ एक केंट्रीकी झाड़ी ! वि राज्यी रंगमा करी থাঁৰীবাক্য । कक्रावलि − श्री (तं•ी यद वर्ष¶चा। कॅशिका-चौ॰ [र्न] माह्ममश्रद्धा बासर गैगा, बांगी। कॅंजियाना−य कि काला-सा प्रशास हरताका हैंस पहला । कंडी-विश्वी गर्रे साग्रे रंगमे । **र्वत्य-वि॰ सूम क्रूपम एउड़ीरा।** केंब्रमी-ली कुरवना। कर-वि [सं] वैद्योका । क पुर वर्तता !-- प्रमुखला-- मीर महार्देश भागक शेवा । न्याक-पु गीताहा कार **प्रपादाः स्ताप्तरं स** । कटक-पु [नं•] बॉरार गुर्र वा निर्धा सुरोबी कोश्सी भीतः बाबा। धीदा ग्रमुः बह भी बरेग्रान परा रीजीबा धदिवाल। बांगा बीवा बारगामा। अन्म<u>र</u> रक्षेमें पार्र भीवा सत्तवाँ और दश्चने स्वाम । - हम-पुर मेवन्त्री वेड़ ! - कल-बु यटका माग्रक रेड वा मन्देव। है। ~मझक -मुक(क)-मु उँ८। -शीधन-पुर शीरा निकाणमा क्र बरनाः निमानापात्रीको दूर करमा गी हाविबीका धनम !-धेकी-सी भाषीया। सारी !

बॅटकार-म [लेक] सेवस एक तरहडा वर्ण !

निवाँ प्रापः वेरवासर्व करती है। विश् निर्मेश शीरीम ! कडकाल-पु [6] है बंटक एक र वीटीका पर !

कॅटफारिका कटकारी-मी॰ [सं] भरतरेगा मेमण !

प्य∽न [सं]की। प्यक्त-पु•[म] दरका प्रतिक्रका वह की (किसीक) वहसमें काम करे, रशानापण । श करकेमें । मुख्यावजा -पुर सर्स सरका एक भी मने बंदलें में इसरी भी म देना वाहेसा।

प्यकृति-वि । वि वि विक्रिति काम करनेवास्त्र, श्वामायव । ण्यम्-अ० [सं] देसे, रस मकार । --अस्तु-ऐसा दी । (पार्वनाकी स्वीपूर्णत या वर देनेके समय कहा जाता है।) -(वं)गुध्-वि ऐसे गुणोबाका । -- मृतः-विध-वि॰

रेसा-इस प्रकारका । प्रेम्पू-पु [थं•] क्द सरक जिसपर थोडी-थोडी ट्रापर

पेक संग कीं। चीकी सहस्र ।

प्रशिया-त दुरियाके पाँच भूमंडी का अवादीपोर्वे सकते क्हा रोड । (मारत ईरान, चीम, आपान कार्रि देश इस्तिके संतर्गत है। इस्ति संवाई क्.८० मीस, क्षीडाई ५,० शीस और रक्ता रे करोड़, ७० कास, ५८ इवार वर्गभोत्त है।) —हुँ-वि पश्चिमका, श्रव्यक्ति संबद्ध। पु॰ पश्चिमासा । -प्रकोचक-पु॰ भगतोकिया एद्यियामादनर ।

प्पल-पु॰ [सं] स्पन्ना, श्राहः चारमा वालेका वत करनाः सीहमन नामः दनामाः प्रविष्ठ करमाः सजारं बादि

के वरिवे रोगकी काँच करमा । ण्यका−स्री स्िीइक्टा सहः प्राथनाः वाचना । एवडिका-स्ता [सं०] सीना-वॉशी शौननेका काँटा । प्पणी~सी॰ [सु॰] दे 'प्पक्तिः । कोइयुकाकः । पपनी(निम्)-वि (सं॰) बादनेवालाः वानेका यस

करनेवाका । प्रपणीय-वि• सि } चावने कोग्य । पुषा-सी॰ [सं] इच्छा बाह ।

पुषिता(१)∽वि [श्रं] पाइनेदाका, इथ्युक् । ण्यी(पिन्)-वि [सं] दच्छा करमेवाना, बाहनेवाना

(प्राव समास्रोत्तमें प्रमुक्त) । परि-स्रो [सं] रच्छा लाहा

प्रे−देवनागरी वभगाकाका वारवर्गक्त का संस्कृति कोवकर । मर्वी (स्वर) वर्ण ।

र्वे - म॰ अच्छी सरह न सुनी या शमक्री देवे वात किरसे बद्दानेक किए इनुका मयीग किया जागा है।

र्षेत्रप्र-वि [सं] इंग्रहोक्याः च इंग्रहोकी निरी । प्रसी-वि [बं] संमेभी इंस्टिश (समासमैक्ष्यवहरूप)।

-इंडियम-पु मारत दर्मा आदिमें असमा वा बढ़ी रहनेवाला अंग्रेजः पूरीचीय और एक्किवाई माता दिवाकी एंतान वृरेधियम । -वशांक्युसर(श्कृष्क)-मु वहाँ थमेंबी और देशमाना दीजी परायी बाता ही।

प्यमान्स कि सीयमा अपने जिथा ऐनाः कात्मा च्य माधिके स्वारे भनाजन मूझा निकारणा ।

प्रवासामा-वि किस्मी प्रचारी बादन समय बूसरी बरफ

धिपी १६ ।

च्च्य-वि+ [शं•] दच्छा करने नोम्य अभिसदयीमा रीग-की जाँकके किए सकाई क्यामे बोग्य । प्रसिद्ध-पु• [लं] देत्राव अम्छ ।

पर्वेद्यती-सी भि] समा, परिषदः समय, मबमा। क्यूंस-पु॰ [अं॰] सार, सचा अप्पसाद विलावती रवः

पुरिवर्तारो—पु॰ एक कृषिम माना नो निमन देखनारुँदि परस्पर व्यवसारके किय गड़ी मयी है। यहक-सर्व है० 'वह'।

पहतिसास-पु [स] प्रदेष इंतजाम आयोजनः नियसनी ।

ण्डतिसाछ−प्र• [स] संधारना बाहका, करेबा। शक्त

पञ्चतिमाधी-दि॰ संदिग्द ।

पक्षतियास-प बि देश पश्रतिवान'। पहरियात-प्र [न] १थना वचारः भीनती, होशि-

बारी ।

प्रतिपातन्-भ० [भ] प्रतिवातके वीरभरः वयावका

रहिसे । पृष्टतियाती-वि करिये क्यांक्रे किए किया जानेवासाः

वचान-संबंधी विकासकी । -काररवाई-की संमान्य जनिष्ट वा सतरेसे पचावके किए की गयी काररवाई ! ण्डसिसास—पुरु [बरु] रदप्तमें दीर्वपात, स्वप्नदोष ।

ण्डसाल-प्र• [ब] नेकी, मलाई, उपकार कथा। -फरामोश-वि ण्डसाम मूल बानेशका, कृता ।-संब् -वि॰ व्यकार माननेवाका, कृत्य। स॰ -बसाना-अपने उपदारीको चथा करना (किसीको) अपने पहसासको बार दिखाना । पृहाता-पु+ [ब+] पेरा; पहारदीवारीधे थेरी दुई बगहा

धवा मसिवेंसी। ण्डि॰-मर्न 'इस पद'का निमत्तिके पहके प्रमुक्त होने

शका स्व। ण्डो-न संनोधनार्थक धम्मक, है, य[ा]

र्ष्**वातामी** –सी अपनी-मपनी और श्रीवनेदा कोशिश । र्णेचीसा−वि **डथीटा: स्रोपे वाने योग्य**ा

र्णेष्ठमा॰-स कि सारना, रंपी करमा-देव चेंछि पुनि वैशि स्वाम कव कोटी सुभय बनाव -रवराजासिक । पॅरि-मी॰ गॅरमा बदा पर्मदा हैए।

र्वेहम∽मी० मरीइ पुमावा सिमावा र्णेंद्रमा—स त्रि:• मरीह श्रुमात्र देना। भीरत देवर या

भव दिनादर में हेना। अ. जि. सदरमा। यस सानाः दर्शनाः मरमा ।

र्णेटवाचा र्यरावा~स विक्रिंडन्द्रे सामर्थे शताना । र्वेटा-पुरसी कारेका एक वंश्र

चेंठ-वि पश्ची वक्ददवाथ ।

गुँड-पुँठ, शाम गर्नः भेंबर !~कार-वि० शामशासा वशीका प्राति ।

कंडक-पु मिकानी। तमारू ।

```
कंडर-वि॰ [सं ] सुबका पेदा करनेवाला । बु० एकतरह
  का सरक्रा।
 केंद्रवा-पु॰ राक्यांसे अब्रोका एक रोग ।
 कंडिय-छो॰ सि ] वै॰ 'कावा' ।
 कंद्रयम-विश्व सि ] सुमधी पेश करनेवाका । पुरु कुळ-
  छाने या सबकारेकी किया।
 कंडयनक-वि॰ [धं॰] लक्की पैडा दरमेवाका ।
 क्ट्रया-सी मि । सबता।
 कहरा~खी॰ सि॰ दिवाँच ।
 सङ्ख-वि• (र्व•) साम पेता करनेवाका । पु॰ पक साथ
  बंटा मोस ।
 केंद्रेरा - पुण्क काति को वर्ष बुनती है, हुनिया।
 कबोरू-५॰ [सं ] मनाव रखनेका वाँस वा वेराका होग्रहम
  बीराः मंडारः केंद्र । —बीजा-सी० वांडाक्रमेणाः किंगरी ।
 क्षेत्रोक्षक-पु सिंगी दोक्सा मेहार-बर ।
 कंडाय-प्र० (सं•) द्वारुकीर एव तरहका फनना ।
 कंकीर−प अवकारक रोगः।
 कंडीरा∽प अंद रक्षमधी अमरा बंडीका देर ।
 कृत−मि [मं] प्रसन्त । ● प्र पति। व्यारा। रेवधर ।
 क्षंत्-वि० (सं०) प्रसन्ध । पुर्व कामरीका हवका अन्नमंदार ।
 क्यंग॰~तु दे कत'।
 कंचा-सो॰ [सं॰] गुरुषीः कनरोः बीवारः नगर । न्यारी
  (रिन्) -प्र• बीगी ।
 केंयारी∽को क्षरी !
क्यारी-को [तं] एक इस्र ।
क्रंबी(चिन् )-दि॰ (सं॰) गुवर्श शास्त्र करनेवाका । पु
  साम् बसीर ।
कंद-पु [सं ] सहिदार वा भूरेबार वहा लोक सहना
  बारका सबस्ता कपूरा बीतिका यक रीना याँठा छोता
  एक वर्णवर्ष । -गवर्षी-सो एक सरक्षे गुउची
 पिडाछ, बहुप्तिका । -सूक्ष-हु॰ एक वीवा निसकी वष
  मन वादनाकदर साथी वाती है। शुली। ∽वर्षण,~
  द्यारण-प्र ओक्षः । –सार-पुरः संदवदागनः।
क्षेत्र-प्र [सर•] सफद शहरा विश्वी ।
क्षेत्रक−प्र [म•] पाक्ष्यो ।
क्रेंबर-पुर्व [संब] ग्रुपा अंक्रमा सीमा व मुका संबद्ध
 बाउक ।
संदरा संदरी-न्ती॰ (सं॰) गुफाः वारी ।
क्षेत्राकर-द्र॰ [सं ] पहार ।
चंत्रर्प~पु॰ [री॰] कामदेवा प्रथमा एक ताल (रोगीश)।
  -कृष-पु बोनि । -उत्तर-पु॰ बासम्बर् । -वृह्म -
 मधन-पु॰ द्विष । -सूचम -सुसक्त-पु॰ गहन, पुर्वे
 दिव । – म्हेस्स्य-प्र व्यवस्थित।
र्बटम-प [tiv] दपाना भवा भेलभा। शोमाः पुढा नार
 वियानः अपनानः क्लध्यनाः एक छर्डका ग्रेका ।
इंदमा~<u>प्र• तार शीयने</u>में व्यवहत वॉशको ग्रस्मी। प्रसा।
 स्रोने-पॉबोका तारा एक तरहरू। अवगार । --कवहरी--
 रते   वार्क्योश्च कार्याना । ~क्या~प्र• वारक्योका ।
```

```
काम करनेवाला ।
   कव्सी—सी [सं] केका कमकटा ग्रेश रक्ष प्रश
    ~इल्लम~प्र इक्टसचाः वेसेवा कर ।
   कदा-प्रकरहेरा अगर्ग।
   कवाल-ड बनक्ता
   कविरी--की० (सं•) स्त्रासः।
   कवी(विन)-प्र• [मं ] स्रम।
  खेंबीख-मी [ल॰] कागम, मिट्टी वा अस्टब्झ है
    निसमें दिया बळाबर स्टबारे हैं। -सी-तर गरिका
    निराग बसाजेगासा व्यक्ति !
  कंद्र-ड [सं ] महुरा भार ! - पक्क-वि शासी वृत
   ger I
  चंतुक−प्र [र्श+] मेंदा गश्रतकिया। तुरारी। इद दर्बद्वर
    मधीदा~को नेंद्र प्रकातने बादिका देत । −तीर्थ-
   पुण अवशंदरका नह स्थाम बहाँ कृष्यने वर्ष-संद
   की भी ।
  कश्री-सो॰ हुँदकः।
  करिकार-विर गैरकाः मिट्टी-कोचश्यासः ।
  क्योट-९ (छ॰) स्वत प्या गीसीरकः ।
  कदोत्र−द्र [सं] प्रवेत प्रस्ता
  क्षेत्रोरा-पुर करवनी ।
  र्क्य-प्र [शं॰] वादकः मीभाः * तमेकाकपरी मागः ६गा
 क्षंत्रशी-स्था करवर्गाः नेसला ।
 कंपर-प्र [संग] नरदन्त गलकः भीशाः ग्यः प्रायः !
 कघरा-सी [र्न•] गरदन । - ब्रध-प्र• भररन दश्रीय
  वंद (द्येन) ।
 र्वजा~<u>प्रभारता गरदन और शहबृतके वेश्या वा</u>प
  रक्षक, शाला, मोला बैक था धेर्तेको यरदमके तररहा
  भाग जिसपर जुला रखा जाता है। मुरु स्टारु देगान
  नैकका कंपेपर असा श केना। हिम्सत कारमा। (कारी)
  बील, विग्मेदारी बढातेसे भावता । - देमा - अर्थ शकी
  बीचा क्यानाः कारिक बीमा। मरह देमा । "प्रवस्ता"
  पाकको काँबर आदि श्वासे बृधरे विश्वस समा। प्रश्नी
  के वके द्वार कहाएको सुवानके किए पित्री मानीका देश
  क्याना । - क्यामा-द्वपको रमश्ते प्रश्नि वान हो बाना ।

 (घे)से कथा ग्रिसमा∽मारी मोह धाना ।

क्षेत्रार-प अफगानिस्तालका एक नगर भार वरेए
 गोषाराः * वे. 'बर्लपार' ।
क्षारी-वि अपारकाः क्षारमे वपत्रा दुना । ह अंबर
 रैशका योषा ।
क्षांबाक्-भी छीटा बुवटा भी क्षेत्र शास मिया बान
 है। जुल्का वह माय को देनके बंधेपर रवता 🖟 बारेनी
 वह रुसी विशक्त सवारे परी नव्य सरकार बजात है।
कंचि-सी [सं] परवन ! प्र समुद्र ।
कथोम्रा~म् । सारीका वंधेवर शामा मुक्ता छोर !
क्षेत्रेली-सी॰ धोरका एक छात्र। बीच वा रहती द्वारा
 रकारी बपानेके लिए रली बानेवाटी गरी।
कॅबेबा-५० रे वस्ता'ः
कथ-पु [सं०] हिन्सार कोक्सार एक सारिक कारा एकि
 के भीने या उपरक्षी हैंगनी ! - उपर-मु चरी-रूप १।
```

वेपन-पु॰ चानक और इस्टी एक धान वीसकर बनावा इबा केप को मांगतिक कार्बी, पुत्रलीमें काम वाता है। वेद-पु [सर] दीप स्रोप्त, दुराई; पश्चा, कांग्रम !-स्रो-वि० पेत्र हुँदनेवाका छिद्राम्बेदी । -सोई-सी॰ पेत्र हैंदना, क्रियाम्बेक्स । -- दार--विक वेबनासा, सबीप I - पोशी-सी विसीका दीव दियामा, किसीके थेवपर परता द्राक्टना । ~कीं-वि॰ दे पिनमो' !-बीमी-खी॰ १० विकार ।-(थो)हुनर-पु दोव-पुन, बुराई मकात। मु - करनेका दूसर चाहिये - थोप करमे (छिपाने)के किए गुणको नवसा है। **ऐबी-दि० बिसमें कोई येद या द्वण हो। दिक्**णांग । ग्रम-वि [सं] शाबी-संबंधी । इसेबर-पु [शं॰] वह व्यक्ति की वशकी कालसाने नहीं।

वश्चित विद्यंत बारिक वश्चिके कारण किसी कला आविका क्रम्बास दश्ता हो। सी€ीन ३ ष्यां – ली वृदी सी। दादी ।

पेपास~पु॰ [स] (रेन; समव, क्षक्र ('बोम'-दिन~का बद्ध 🕽 ।

ऐथार-पु [स] पूर्व पालाक, बक्ना-पुरवा व्यक्तिः देश वा रूप वरस्कर भनोसे साम करनेवाका व्यक्ति। **चेयारी−छी पर्वता चासान्धे।**

धेबास−दि [ल] विकासं, भोग-विकासमें रतः विद्वा-

सक्तः क्रमुद्धः । देपासी – स्रो॰ विरासिताः विषयासक्तिः कास्त्रता । हेरानीरा-वि॰ १४८-वधरकाः गहरोः अनवकाः येहानीसा तुष्छ, नगण्य । सु॰-नाम् सीरा-विसन्धे कीरे दैसियत म को शाकारण बनः Ωनाः, नगण्य जन ।- पँचकरपानी-

रेत-देत भारमा ।

प्रेशपति•⊶प दे॰ परावत'। चेरावल-पुॅी्स] शंद्रका दावी, वेरावत ।

चेराबत-५ [मे] रहका दानी जनम दरती। पूर्व निप्राका िमात्रः वित्रकीसे पनवता हुआ बादकः वृह्वभुष्: यह वरहरू विक्की मार्गेका एक राजाः नारंगी चंत्रमाका वत्तरी मार्गः ज्कुल शुद्धाः यह संपूर्ण शाय ।

पेरावती-स्वा॰ [मुं॰] वेरावतको जावाः विक्रमाः वरावता मदीः बरपत्रीः चंद्रकीशीका यक्ष भाग । गैरिज−तु[सं] मेंबाशसदा

म्रोप−पु• [सं] एक तत्त्वकी शराव ।

भी-देवबागरी वर्गमालाका तेरहवाँ और वह छ। छ की । त्योरकर दसर्व (स्वर) वर्त्र। इसका उद्यारण-स्थान चंदीय है।

भौडिएनरा - स कि बारना स्वीद्यावर करना । भीकना = - अ । कि कै करना करना। (सन) फिर जाना। क्रोंकार-पु∙ [रो॰] 'क्रीम् अंत्र या दसका ख्यारणा

भारंग भीगीय (श्रा) । र्भीगर्ना — द्र गारीको पुरीमें तिया आनेवाला तेल । र्कीगना−स कि याक्षेद्र पुरीमें सेह कनाना।

बे्छ-पु॰ (सं॰) इसापुण, पुस्तवा; मंगळ प्रशः स्नाम परार्थ प्रचारताः वादः क्षेत्रभावतः वस्त्रवस्यः सम्बद्धः † एकः प्रकारकी करा।

वेसवासुक-पु[सं] एक नेवद्रव्य । वेस्रविस्न-पु॰ [सं] कुनेर: मंगल शह । चेखान-पु [ज•] सार्वजनिक मोनगा सुनारी ।

पेक्षेय~प [सं•] एक गंगहरूप; मंगल ।

पेश-वि [सं•] वैद्य~दिवसे संबंध रखनेवासा वैद्या, र्वस्वरीय: राज्यक्रीय । प्र• (ल <u>] स</u>स्त भोग, विकास:

विषयमुखः। -गाइ-पु० विकासमवनः। -पर्माद्य-वि० बारामपर्संद, विकासविव । −व भारास−प ,-व

इश्वरतः–की॰ सुद्ध-चैन, भोग-विसास । पेरा म-वि॰ [मं•] शिव-संबंधीः एसर-पूर्व-संबंधी ।

पेकानी—सी सि•ी ईधानकोणः दर्मा। प्रक्रिक-वि सिंशे दिवसंश्वी । पेदय−पु[री•] प्रमुत्यः शक्तिः।

पेहबर−वि॰ [सं•] राजकोवः ईस्वरीयः शक्तिशाकीः शिव संबंधी ।

येश्वर्ष-पु॰ [पं॰] वेश्वरताः फ्रस्तिः प्रमुखः आविपरयः वन-वैभवः कविमादि सिक्रियाँ सर्वस्थापस्ता सर्वस्रक्ति मचा। -बाकी(छिम्)-वि ऐस्ववंताला।

पे**दवर्षकान्(कत्)**—वि॰ [श्रे] येदवर्षकालः। ष्पीक-वि॰ [र्स॰] वेत वा सरशंहका बना हुआ (वाण) शरदेवेडे बागरी संबंध रखनेवाका ।

पेक्क−वि॰ (से॰) र्वेरीसे बना हुमा (मकान) । पु० र्वेहेकी

पेक्टिक-वि॰ [सं॰] शहि-यद्यसे संबंध रक्तनेवाका । वृंस+-विदेश फेशां। पुरु देश 'पेछ'। पेसन!-वि॰ दे॰ पेता'।

पुसा−नि वस तरहका। ~बसा−नि॰ साधारम तुब्छ, नाभीन । (किसीकी) येमी हसी-पाकी। - क म काय-कुरो भारमें बाब (श्रीश या व्येद्धाने अर्थमें) ।

ਪੈਦੇ−ਕ ਵਦ ਸਦਮਨ ਵਚ ਵੱਧਦੇ। ग्रेडकोकिक-वि (स॰) यस कोक्से संबंध रखतेवाला. पेरिक ।

वेहिक-दि [मं] श्य कीक्से संवर रतनेवाला सांसा-रिका श्वामिका पु पुनियाका बाह्याह । - क्वानि

(सिंगू)-वि• बुमियातार ।

ओ

ऑिया-मु अपामार्ग इटधीरा । ऑदि−पु श्रोडायके शलादिके मेंद्रशा किसारा । स० -क्लाइमा-परती शतको पहत-पहत जीनना ।-प्रयाना-बोडको वॉर्ती सके दशाना, मोभ प्रकट करमा । -चाइमा-सा भुवनेपर स्वापके कार्रवात भौठीपर जीभ केरसा श्वादकी काल्या रह जाना । - ब्रुसना-अवस्त्रा संदन करना । -पपदाना-ओटॉस्स्ये पमरेका सूत जाना । --सहस्रभा-कीवदे बाह्य कोटोरा बोपना ।--सस्रमा--सराय बान कहमेवाटेकी दंध देशा । -हिसामा-हृहसे

कंकना-बचक्क निसना कर धीरेने मिनते-सकते मानारका होता है। स॰ −का भीर∽धीटा बपराध धरनेवाका । −के बोरको कटारीसे भारमा-छोडे अपरावके किय गारी सवा बैना। ~सीरा करना~त्रच्छ समझना । कक्ता!-प देश 'बगन'। ककती-को दे 'कैंगनी यानेदार अबरा कैंगनीके आकारकी एक मिठाई। ककन्•-प यक पद्मी जिसके संशंक्षमें वह प्रसिद्धि है कि जन वह गाठा है तन इसकी चौचके किशीमेंसे बाग मिक्सन स्थती है और वह बतीमें वस मनता है। ककमारी-सी॰ एक प्रकारकी कता। ककराष्टी-सी हे 'देंशीरी'। ककरी-सो देश करते। **ककरेडा**≔ए॰ दे 'काकरेजा । ककरेका नि प्र दे काकरेकी । ककरीक-पुर सेखसा। ककसी-कोशाक दरहरी यहकी। क्षक्रहरा-पु • क'से किंग्वक अधर, 'वर्णमाचाः किसी विषयको आरंगिक, मोटी-मोदी वार्चे, बक्किप-वे। एक तरह को कविता जिसके परण महारोद्ध प्रायसे बारंग होते हैं । ककडी - खाँ । यस सरहकी कमालः चीवनकाः है । विशे । क्रकारिका∽शी॰ सिं°ो सिरका पीदेका पक शास । क्रकार~प• (सं ो 'क्' क्रकार का क्सकी व्यक्ति । **कर्म अध**-प्र• [मे] चातक । क्षकंडर~प्र• (७) जनत-द्रम । क्षकरस्थ-५ (सं॰) श्वनक्षत्रं स्था यह राजा । कक्तप्र, ककुद्र-प्रश् (संश) कीटी, पर्वतःशिखरः। वैक वा साँदक्के र भेपरका दिल्ला सीया राजनिक्क । ककुपाम्(सन्)-वि॰ सि) चोटी वा विहेवाणाः ड बैकः पर्वतः ज्ञाम मामको भीवान । कक्रप्री(सिन्)-नि [सं•] भोटी वा दितेशका। इ बहाबेल जिल्ली कथपर विका वा कनड क्षा वर्गता निष्टा रेबलक मामको राजा जिल्ही करूवी रेक्सीका व्यास सक रामस दवा था । कक्कारी - स्ता दे की गरी ! **क**पुष् ककुभू-स्ता [सं•] दिशा। मनेषी। क्षोमा। **शंक**ा माका। शास्त्रः भीटी। श्रीतः बद्धमा वस बस्मा। रागिमी । क्रमुभ-पु (संग) गीमाके श्रीतना सुद्रा प्रभा भाग (१)। अर्जुनका पेश कुरण पुरुष एक रागा एक देखराण । कुकुमा-स्री [संग] दिशाहण्य रागिनी । कक्ता-पुरु देशमध कोनेका कीया । ककेश ककोशा-त समसा मामग्री सरकारी। **क्षत्रेत्रक्र-पुरु [ते] ज्यर-कृति ।** कर्बया-वि संभीके भाषास्त्री (१३)। स्त्री एकीरिया 22 1 ककोरमा!-त कि शरीयमा मोहना, विकेदना (4**(u**) i **बन्धोरा-५० दे०** *ब***देश** । कक्ष्य-पु सुरतीना भूरा शिका और सेरकर वनाया हमा म्हारा वयक् ।

क्षा-प॰ वेकव देशा सिराः दे॰ 'कला । कारी - सी. यह प्रदारका शारा देश । क्षकुरुर-प (श्रं) वरक वश्च । कक्कोछ-प , कक्कोछी-सी [मं] एक प्रसास वह र कक्कट-वि [सं] कडिमः इसमेवाला । कम्साटी-की॰ थि े सहिया । कका-प सि] कीसा कक्षेत्रा कमरा। कुशरा सभी करा कता सहा जेनका बेगरका भीतरी भाग शामान बेग परः रामियासः वगलः वाजः सेमाका श्राहिनानाशं वाजः तकदक क्रमीना कटिनेचा नावका एक विरक्षाः प्रदेशाः शिवनेका स्थानः चहारदीवारीः अंदल, वीटी बाडिका होत मसाः कारकः वादः सारा । -प-प्र॰ क्ष्म्यः क्रमेखे एक विभि । –द्याय –शाय-५० क्या । कक्कर −स्त्री • सिं≎े परिधि, दासरा: दरबा: प्रशेष्ट प्रयक्त वया काँदा: काँकात कोला: कसोदा: एक रखीकी होंग कमरा कमरफो वहारदीवारी: शॉगल' श्रेट'पुर: स्पटः आवर्षित बोबर क्रक्टका एक विशेष माय- पहला !-पर-पुरु शहोदा, क्रॉनः करिवल, क्रीबीन । क्षाबिहरू-प (सं•) अंद परका मिरीक्यः वपानग्राम हारपाकः संपर- (यतकारः समिनेता । क्ष्मीवान्(क्षम्)—प्र• [सं] एक वैदिक क्षावे । कक्षीरथा –की [थं] भद्रमुख्या नागरनीया। कारपा-मी॰ [सं] योडे आहिका देशे कारिका देशी क्करनाः क्षेत्राः अनुका अंतुपरः वेरा योगरः रही श्रेंबची। उचीम । क्रमचासी-सी देश क्रमराको । क्षणीरी-भाग्ये पॅट्लीरा । करार-त कगारः वारीः मेंत्रः कारतिस । 🕫 सः विमनेनर निषदः जक्रम । क्रगरी-यो• हे समार'। क्रारंश∽ण क्रियारे अक्य ! कमार-५ कॅपा दिनासा मनोका करासा होना ह करिशी-पुरु एक एवं विश्व देवस रवर बगता है। कब्रुती-ची कागत बनाभके काम वामेशासी एक महार की सारी ! कर्षगछ∽त• वि•ो समुद्र । क्ष्य-पु• [सं] सिएके बाल, वेशा स्टा प्रीश वा वास वंशा शेषा बृहरचिता वस पुत्र । - ए-प्र मुद्रा वर्ष । ~सास-प्र शुर्था । क्य-पु गाँत गाँरे भारिफ किमे मरम भावते हे हैं है वेंसने वा कुपन आनेकी आवाज ('कुप'ते पून गरा) ! नि अवस्था समासम् व्यवद्यः रूपः - दिसा-^{[4} बच्चे रिक्ता। -वें विया-नि बच्चो प्रोक्त नियं भागका भरीमा म दी मुल्मुक । - स्रोदा-पुर नोर्ग !

-काहा-पु:-कोही-सी बच्चा बीदा ! -लाहू"

कथारुपामा∵भ० कि संपद्धकरी जानाम दीना। ^{स्}री

क्षक्ष क्षयक्षा-पुरु क्षा्यका सीपरा ।

्यु० पंछा। कत्त्वकच्च~सी दे० किपनियाः

۲٦ यक अकार । भोता≉--वि **धतना** । कोत-पुर्मि॰] दासा भर विकाद । भोतो÷−वि∗ उत्तता। क्षोध-स्तो∘ [सं∘ो बसम, रापभ । भोत्।-वि गीटा भौगा हुआ। पु० गोकापन, तरी। सोत्क-पु [सं] ब्रह्मतुः ब्रह्मे रहनेवाला प्राची । कावन-प्र• [सं] मातः बादछ । भोवनाह्यमा,भोदनाह्या - स्ता [मं॰] दे॰ भोदनिका । कोद्गिका-सी [सं] महासमया जानक मीवा को दवक द्धार भावा है। बका। ओदमी ≔श्रो• [सं] वला वरियारा। भोदनीय कोदन्य-वि [सं०] मात-संबंधी कोत्रक-पु० दे० 'स्ट्र' । क्रोबर्ना अल्झ के भटनाः तर पहनाः नष्ट दीना । भोदा~दिगौका,नम। भोदारमा १-स॰ वि गिराना कानाः फायनाः नष्टकरमा ।

क्षोद्ध(स)−दु[म•] धन । भोधमा • - अ जि (काममें) हगना वेंग्रना उक्तरना । शोर्मत≠-६ अवनत शुका हुआ।

भोसचन-स्था अवदान पतानधी ररसी। भोमचना - म दि: पैतानेकी ररशी सीचकर करी करना। भोनवमा=-- म• कि.० झदमाः रिर बाजाः इटना । भोगा •- प • पानी निश्वसनेका रास्ता ।

कोनानार-स कि कान कालर सुनना मुकाना वर्ष करनाः वादशका पानन करना । कोशामासी ननी काररारमः आरंग ('अ सम'सिक्ज्'

का (नगड़ा इ.सा. इ.प.) ३ भोप-मा॰ चमक, दानि, आव; विका पाकिश। कोपची-पु कषयवारा योदाः रक्षक्षीका ।-स्थाना-पु

चौद्धे । भोपना - म फि पमक कानके किए मॉबना रगहना, पाक्सि दरना । भ॰ कि॰ चमकना आप आसा । भोपनि = न्या शक्तक चमक । -वारी-वि

चमकवानी । भोपमी-मा १८ मा पत्थरका उन्हा विश्वते तक्यार मारि मॉनी जाव। मोइरा ।

भोपामा - अ कि दूसकी देशिया आदि गरम करत समय व्यक्ति और स्ना जानेने क्सर्ने भुमी मिनित गंगका भानं क्यत् ।

भोपी>-(र चमदोका)

भोक्र−म [म∘]६ 'उक्त'। कोयरी ! - न्या ॰ संग बोडरी एसी बाडरी विसमें हवा और रीधनोद्दे निर रास्ता न हा।

भोम्-पु [मं] मंत्रीके भाविमें सबा वेदपाडके पहले बार पीछे बहा जानेवाला परित्र शब्द अधव 🕶 🗈

भार-सी॰ दरफ दिशा, पदा न व छोर सिया भेगा मारम । (पद्रत दिशा या संबंधानाच्या निर्शेषण मामेने पुनिय स्मिक्ति समार्थ है जैन-दिन्दे पन्तिम का सीन भेर मत्री दहरी थी।) सुरु -नियाहमा -निमाना-

चंतरक कर्त्रध्य पूरा करना । क्षोरती#—सी॰ हे॰ 'बोसरी' । कोरमनाग्र-स॰ कि अकुनाः स्टब्ना, सुक्रना । कोरमा-पु• सिसर्गका पक प्रकार ! कोरसामा=-स॰ फि॰ हकामाः स्टकामा । कीर**हा** '-पु॰ दे॰ 'होरहा' मोरांग बढांग-पु॰ सुमात्रा, वार्तियो बादि धोपीमें पाया

वामेवासा एक तरहका वनमानुस । मोराक-पुओसा।

बोरामा¹-थ॰ कि समाप्तदोमा, धुक्ता । मोरिया! - सी वे 'ओरा ।

थोरी-सी शेषती।

कोसवा कोब्धमाक-पुरु समाहमा, दिकावत । क्षोक-पुर, खीर बाहर बामवर मीदा श्राप्ता किसी गाउनी समान्द्रमें रखरे वा रीक रही यदी चीज वा भारमी। जमानता बहाना । वि० [सं] गौका मम । प्र सुरुम । कोळचा-प्र कक्षणेया दस्तेदार पात्र की खेतकी क्रिक्टकर सीचनके काम भारत है, हत्या; ब्रिक्टने दौरी निससे पानी क्कीयन या भनाव भीसानेका काम रेने हैं। शो**कची−ची॰** गिन्मस नामका पत्र ∤ भोकसी –थी छम्पर वा छात्रनका छोर अहाँसे वर्षका पानी बमीनवर फिरता है। ओकदी गिरमेकी बगह ।

२०−तकका भृत− यस रहनेवाका भारमी भी परके सब मेर बागता हो। भोसना≠-स कि परदा करनाः रोकनाः सुमानाः

भोइना, कपर छेना । भोखमना−**म कि फटकुमाः शक्रमा**। कोकरमा! ~ २० फि. डेटमाः सबना ।

भोकराना! – । कि (स्थानाः कटकाना शुकाना । ओसा-प बने पुर करूकों या वर्डका शोका को खाडेकी वपानं कर्मान्क्षमी गिरता है, वनीरी वपना मिन्नी या बानेबार जीनीका बना हुआ गील सद्दुः मदा परदा। नि॰ बहुत दंशा वर्षेता दंशा ।

शोखारमा-छ• कि• दे• 'शसराना । भोस्टिक#-पु बाइ, परदा ।

ओस्थियानार्र −त्त• फि॰ गोदमें घरनाः प्रमाना ।

भोसी-भा॰ गोरा बंबसा शोमी । ओस्या÷−9 वहामा- वैठी वह शुर कोगममें छिए छाल गर्वे करिनी करा औरथा --धानवि ।

भीस्छ−५ [र्ग•] कोल जमानन । वि गौला सम । भोबरकोर-पु॰ [शं॰] बोटके उत्तर पदनमेहा संश क्री≥

श्रीवरसियर−५ [श्री] स्थारत शादिके कामदा निरीधक। भोप-प [मं] दाइ जनमः पदाना। भीषण-तु (सं] वीवापन परचा तम स्वार्ट

भोपणी-स्पै [सं] एक ग्राफ । सोपप-गाँदे श्रीपम्।

भाषधि भोषधी-स्त्री [मं] मनस्यतिः ज्यो-नृद्याः एकः पनका यीया ।-शम-पु धंद्रमाः सूर्व । - सरः-पति-त चंद्रमा बनुरा विधिनाहर ।

रेसमी कपण विसर्वे गोंडी श स्वी हो। --सास-प बद बस्तु जिससे (शिक्प हारा) कोई चीज बनावी जाव (बैसे क्पडेके कप क्री);क्या-वाना; क्या योग ।-सोश-प्र• मोनी मिट्टी उदाकमेंथे बना हजा होरा । ~हाल-पु॰ मनम्बरत दाय । -दास-पु॰ दे॰ 'क्या विद्रा' । (धी) ससामी - श्री व वंदरावा वगह, वीद्धी । -कसी-को मुँदवेवी कको। अमाप्त-बोबमा श्री I-क्रकी-सी॰ मुद्रदमेका प्रैमुका क्षानेके पहले निवस्त्रवाची बागे-वासी इन्हर्ते । --गोटी,--गोझी --सा वीसरको वह गोडी विसने वाथा था वर्षिक रात्सा पार न कर किया हो। ~मडी~सो॰ समबद्धा यह मान वी २४ मिन**टके व**रावर होता है। -बाँदी-लो॰ योसी बाँदी। -बीपी-लो॰ रावसे शौरा निकासकर बनायो हुई भौगी को अधिक साक नहीं होती । "ज़कान" सी॰ शली, अध्सध्द । -बाक्कद-न्ती वह नहीं जिल्ली करी दिही, जाकहपर गर्यो हर श्रीजका स्वोरा किया बाव ! -- मुक्क -- माँ० खानगी नारमर सी हुई सरकारी काथऋषे नकुक I~शींह~ सी वह शीर की पूर्व न हुई ही !-पद्धी(बास)-सी॰ अपराप्त गा**की । ~पेशी~सौ सक्दम**क्ष पहली पेशी बिसमें फैसका नहीं होता। —व**ही—को॰ व**ह वही विश्वमें कृष्णा हिसार, बाददार्थे सादि किसी वार्गे। सिद्धी –सी॰ मिश्रित समबके पहरेको विद्योः सन्तर्थेन को निर्दो । – रसीई – स्त्री पानीमें पका हुआ अक पक्षी रसोरंबा बच्या । -रोकड्-क्षी॰ वह वही विसमें रीवर्ड बाद-व्यवहा क्या हिसान किया जान । -- शक्कर-त्वी॰ दे॰ 'कश्मी बीमी'। -सबक्ष-सी॰ वह सुरक ग्रिप्टर गिद्विमा बाबक न कुट समे हो। - सिखाई - स्वी मसिदा करने के पहल दाका बना बोका को पीछे कील तिवा आता है, संगर । -(६चे)वच्चे-व छाँडे वच्चे। बाल-बच्चे । मुरु --करमा-बाठिक उदरामा कार देगाः कदितत कुरसा। कवा शिकाई करना। "जाना"यर्ग विरुत्ता । --पडुना-शतत **उद्दरना भिन्तार उद्दरना**। ग्रिक्षित्रामा समित्र होता। "-वैद्या-चीत वैद्याः निराहारसे कनसीका पंस भागा ! -(वी) करना-चीसर पद्मीसीमें विपक्षीकी मीटी मारनेके किए अपनी साठ था पढ़ी गोंडीकी डिट शहर निकासमा । -शोटी या गोम्ही शोसना-जनाश जनुसब्हीन दोमा । -(यो) क्षे पानी भरमा -कडिन कान करमा ! -पक्के दिन-चार-पांच महामेका गर्भ। दी कार्रभेका न्यंपक्रकः। करचू-सी भाषी, बंदा

कचा-पु [तं•] किमारेकी वसीन कछारः अनुपरेश इस्तर अमीना भीतीकी काछ मा काँगा जीवाका भाग-विशेषा क्षण देवा एक एवा तुमका वेह । -प-प क्युआ। विश्वके दछ अवतारीमेंसे एकः व्या सरहका मभक्ता तालुमें दीमेवाली बतीबी। पुबरकी निविधीमेंसे एक । -पी-सी॰ मादा क्यूमा एक तरको सेनाः सरस्वतीको बीमा। क्रथक्रिया । -क्षेप-प् रिग्वर वैनोंबा एक भर ।

करप्रटिका-सी॰ [मं॰] चौतीकी कीन । क्षच्याविका-ली॰ [८] एक ह्या रीग जिसमें चीव-छा

इंदियाँ पास-पास निकलको 🕼 इसी । क्ष्या ली॰ [सं] स्थित बासको नामक भेवा । पुर [बिं॰] और छोरवाली वही मान जिसमें हो मानारें हरते द्देश वर्ष वहा नागोका मिकाकर धनावा पदा वेडा। मुख -पाटना-वर्ड कराजें वा बड़ी नार्वाको साथ वेपार वससा वगैरहरे किर सन्तींसे शाला। कप्छारिका कप्छाटी-स्री [तं] है। 'कप्रशिवा'। क्ष्मार-प्रश्निशे व्यक्तिय स्था। कच्छी-नि कच्छदेशका। पु कच्छ ^हराका निवासी कार वैराका बोहा जिसको होठ गोचमें हुछ महरो होती है। कच्छ-स्वी॰ [सं॰] रत्नतीन्ध्री नीमारी धर्मरहा । - प्री-सी॰ क्टीक बाहि । कच्छुमती-ली॰ [सं] देवीन मारि ग्रेभे में शुक्ता है। करते हैं। कृष्ट्रार−वि [मं] जिसे राज्यकीकी वीमारी दी। कंध्य कच्छूरा-सी॰ [यं॰] ध्रक्षशिशे हरावमा मारि धैरं र्बसकी छो। कच्छ-1यु १० इसुमा'। छो॰ [ई॰] १० '६व्ह'। क्ष्मग्रोटिका-चा सि दे क्ष्मान्ता । क्फोर-५ (सं) क्पूर। क्यवी∽शी [सं∘ेदे 'द्रभ्य । क्छना-पु• दे• 'व्हानी'। मं क्रि॰ कारा बाना । **क्छनी**~सी॰ पुरनेतकम्भे कमी हुई चोती मिएमें दीनी मेण काम नाँची जाड़ी है। हरमेक्के कमरको बीती छोटी भी बुरमेशक रहनेवाका एक तरहवा मॉनरा। वह वर्ख 🗵 क्षोर्व चीत्र काछी बाद । क्छरा 🗝 भी हे में इका मरका । क्छराका-तो हे 'क्रहराको । बसर्रा -मी॰ होस बस्ता । **कछवारा~५० दे ६** दिवाना १ क्**ष्ठवाहा-** प्रश्चनतीको एक वर्गमानि । क्षान-५० क्यमी काएमा । क्षकार-पुण् नराके किमारेको तर और शोधी बमीन मार्न मामाय प्रांतका एक जिला । अधियाना-पु वादिवीको वस्ती। वह क्षत्र विशवे सरह रिया बार्वा मार्व शरकारियोधी ऐती।

क्सर्व--विकासे अस्य । क्छुमा, क्युचा-धु एक प्रसिद्ध यक नेतु क्रप्टर है

क्रमुक्-विवर्षे कुछ । क्छु॰-पु इच्छ्या वि क्छा

क्छारा-तु बडोरी-मी बडमी। मीध्रे बटबोरे रव यर भरती हुई थोती। शु॰ नमारमा न्योरा ^{बट्ट} र्वाचना ।

कर्षाद्वारं −पु॰ दे 'दरार । कन्न-दि (का] देश, शुका हुमा, दक्ष र तु रेप (१)। -अवा-वि वेसुरीवता वरका) -श्रम-विव विदर्भ वर्व देही कमान-वेशी हों । - प्रक्रम-१४ वस्ती मन्द्र बाल्या नास्त्रम् । -रप्रसार-भि॰ रण कारेरण मुरिका।

220 भीय-१० दे॰ 'ओम : भिनी कैंचाई, मुस्टी उत्पर्धः महत्ता । -(अ) ब्रामाध-यः बरमोरवर्षः संगीतमे यह स्थात । सीजक÷-स॰ दे 'श्रीयह'। भीप्रक-ति० सम्बद्ध । भौक्रम-प सि• सोमा । भीकमिक-वि॰ [र्स॰] श्रोजवाकाः प्रसादी मसौद ! प॰ बीर परन ! भोजस्य-प सि] क्या कासाहा भीत्र। वि॰ छाछि uže i भीजार-प्र• [बा] कोर्र दाम करनेदा साथन, भाषा. ≃करण । भीग्रयस्य-पुर्व सि विश्वश्रयस्य सम्बद्धः। श्रीप्रक्र-ल दे॰ 'श्रीवर'। भीवासः सीवास्य-अश् सगातार । भीरतक-भी भीरतेको क्रियाः ताव गाँव। भौडवा-स कि इव रस भारिकी औंच देकर गता दरमा देशक वशकता श्रीकाना । म कि श्रीकता **भीष सानाः** पगमाः तपनाः **= म**टकना । भौटती-र्रो भौटी बातेवाको पोस्को बसानंको कक्छी बा कातव ! भौटाना-स कि भौटना मॉप देवर गढा बरना। भीटी-सो॰ देख्या भीश हुआ रस गावको स्वानेपर वी धानेक्सी पर्छ । सौटपाय के ने अक्रपाय, खूटारत जुर्तेका । भीड-दि॰ सि ी आई, गोका। बीडव-प॰ सि॰ो एक तरहन्त्र राग । वि. तारा-संनेषी । भौद्यंपर-प्र [मं] देश औदुंबर'। भीडपिक-प [सं•]नावका यात्री । वि• नावसे (दरिवा) पार बरनेवाका । भी ४-५ [सं] वरीसा निवासी । भीडर-नि चाडे जिया इक जानंत्रका बीडेर्न प्रश्च दीकर निदास कर देनेवाधा बाह्यतीय । -दानी-वि मार्थी। मधको निश्चान कर देनेदाना । भौतरना १-- भ० हि:० अवतार प्रदण करना जन्म केना । भौतार−त २ 'श्वतार'। भीरबंबर-त॰ मि] सस्दर्भ विका रच्छा । भीत्यस्पै~प्र• सि ी उत्तमता शेवता । भीत्रमणिक-वि [सं] को इहरेसे सरपर किया गवाडी। भीत्रमि-प [सं] भीतह मनुभेगिमे धीसरा । भीचर-वि [सं•] उत्तरी; अत्तरकारी। भीचरेय-दु [स॰] उत्तराते अलब पर्शाहित्। भीवानपाद भीवानपादि - इ [सं] मुनः गुनवारा । भीचापिक-वि (सं•) उद्याप-स्थी। वद्याप-वनितः ŕ भीत्पश्चिद्य-वि [मं] इत्पश्चिमे संगंध रखनेगाकाः सद्द्रव केनास्की । भीत्पातिक-नि [सं] बस्पान-संबंधाः। ł भीम्प-वि [मं] शरनेमें क्लब वा शरमा-संबंधी । भीत्यसिक-दि [मं] कासर्ग-संक्षी। सामान्य विधिवीस्य

होतेबाह्या स्थागते. छोडतैबाह्या स्थामाविदः, सङ्ग । भीरसक्य-प॰ (सं॰) सरस्यता 1 श्रीशराक-वि॰ स्थलाः सिरह्या-'सति समाथ सति बीबरी सनी कर सर वास'-वि० ! बीतक-विश्वमि विश्वीयः यह संबंधी। पश्चलवत्त बप्रसिवेद्य (की०) t शीरकता ७~३० कि॰ चौकता । सीडनिक-प सिंशी मात फानेपाका पापका मात विवनेवाला (क्री०) t श्रीतविक-वि० सि॰ो सर्वोत्रवसे गिना बानेवाका। द्वाम काकर्ते होनेवाला । सीहर-वि सिंगे छहर-संबंधीः बाधन-संबंधी । क्षीवरिक-वि॰ सिं॰ी बहत खातेबाला, पेटा शहरके लिए क्पक्छ । बीत्यं-वि मि॰ । छदर-संबंधाः उदरका । कीतक्रिय-पर्शार्थको कावा पानी ग्रिकासन तैवार दिवा हमा सदा । सीवसाध-स्तो अक्टसा, दर्गमा, विपत्ति । सीवार्थ-प॰ सि ी उदारताः महत्ताः सर्थगांमीर्थ ! भीवासीन्य भीदास्य-प्रवि वि वदासीनवा, चरासी। प्रकारीयम निर्वमताः वैरास्य । भीवीच्य-पु॰ गुबराती बाह्यलॅक्ट्री एक छपवाति। छत्तरका रहमेगाका । वि॰ क्यरी । धीर्वदर-वि [र्थ] उर्ददर या गुकरका बना हुनाः ताल निर्मित । इ॰ नृक्षरका फुका गुकाकी करही। गुकाकी क्यरीका बना बक्षपायः एक बसः एक प्रकारका श्रप्तः तींदा। धीर बरी – या सि ने गबरको छन्दरो। श्रीहासक-त [सं•] दोमक शारिके विससे मात होने बाका गय जैसा एक पदार्थ को महत्वा और शरीका होता है। श्रीक्षरा−प• (सं•) स्वत्तता प्रजापन t ब्बीजिज्ज-पि (सं॰) परवासे मात ! त॰ सारी मन्द । भी जेर-नि॰ [6] पूर्णांधे कोत्कर निकातनेपाणाः विश्ववी । प करनेका वाजीः सारी शमयः। श्रीचोगिक−वि (र्र•) क्योग-संबोध कल-कारपानीने र्वश्य रसनेशका । - अक्षति - स्रो उदीम-वंशी हम-श्चारसामें भी पचित यह । भौद्योगिद्रीकरण-पु॰ (तं॰) वर्षीम-वंगोधी उत्तरि करने नवे बारसाने भारि सोहतेशे दिया। श्रीद्वाहिक-दि शि देशह-संश्रीत विवाहमें क्रिका हुआ । पु॰ निवाह ६ समय कांको उपहार रूपमें मिका तुमा धन आभूषण धादि। क्षीय≉−पुदे•ेश्वपाधी•देशवि। भौषस~दि [मैं] यम या स्तनमें रहनेवाला (१ूप) । श्रीधारना = - छ । कि देश अववारना । मारंग करमा । आधिक-सी दे अवधि । श्रीन श्रीनिश-स्ते > 'नदिन ।-(नि)प-श राजा। भीने पाने~ अ वृत्त कम दामपर, वृत्त पाटा बटाइर। म॰ -षरमा-धीन-धीने नेपना । सामान्त्रत्वा मान्य (निवम-स्था॰)। सामान्यः समाप्त श्रीश्रस-५० [मं] उँचार्रः उत्थान ।

भीकी। -सा॰ रावसे पहले पहल काम्प्रत कावा हुआ नवा हरा शद्र १ सीसक∽प [सं∘] उसकीका सं≋ा भीखक्य-प [सं] वैशेषिक वर्णमके प्रवर्तक महर्षि क्याद । -- दर्दान -- पुनैने फिक दर्दान । भीस्ट्रमस-वि॰ [सं॰] मोदकोमे कृटा दुशाः वस्त्रस-संबंधी । मीस्यण्य-पु (से) बाबिस्या मतिस्रवता। प्राप्यप । धीवस-वि॰ [म॰] पहला प्रथमा प्रवानः सर्वनेत । --भीवस-अ पहले, प्रथमतः । श्रीचद्मन्⊸स पइले, प्रजमतः। क्षीति। स्रीसिन-सन् देव 'सनद्य'। भौतार-प [सं] बस्या वया प्रस्ता केपः वर्गात पंचे या वंबरको बाँबीः करसी । सीशीरिका-सी [मं•] (पीपका) संकृत, श्रेष्ट्रसाः ब्रह्माधार । [त] क्षत्रापमः काली मिर्थ। **~सींबी**~ भीपल∽प भी सीठ। भीपय-ना [तं॰] दवा जीवनि वदी-वृत्रीः यक छनिज हुव्य । वि जही-वृटिबॅसि वनी । भीपदासय-पु (सं•) दशस्त्राना ।

भीपधि भीपची नहीं [सं•] दे 'भोवभि'।

भीपर भीपरक-पु॰ [सं] सारी नमका चुंक्क परवर । भीयस-वि [मं] बनास संबद्ध उपाकाकीन ।

भीपद्योपचार-पु॰ [सं॰] दवा-दकात ।

श्मका संघारण स्थान कठ है।

औह−वि॰ [सं•] सन्ते संबद्ध वा उत्पन्न । पु• केंटमीका वृष । --र्य--पु॰ सँटगारी । भौहक-वि [सं] उँटरे प्राप्त । पु॰ उँटीका सुंध । भौतिक⊸वि॰ सि 1 खेंटसे प्राप्त कोनेवाका। प्र वैरिक, तेकी १ कीय-विस्ति | जीठकी क्षक्रम्याः श्रीप्त्रप−षि [सं•] कोठसे संबंध रखमेवासा । औरण, बौर्ज्य, बौरम्य-पुर्व (संब) सम्पदा, ताप, गरमी । बीसत-दि थि॰] शैक्का, दरमियानी। शादारम । प्र बीक्की संस्था वा राधि राधियोंके बीक्को उनकी संक्यासे वाग दैनेपर मागककके रूपमें प्राप्त शंक्या, परता !-- द्राप्त का-गोजका, व वहुत सन्धा, म हुरा । भीसना! – व॰ कि॰ कमत होना। गरमीसे द्यानको चीत्र ध्य विगामाः प्रनारिका स्टाक्टर प्रकृता । भीसर७-५० **दे** ^रअवसर । भीसान-प्र• शोध-श्वास, बेट-पी औश्वान सनम्बद देखि समुद्र दे बार्ड'−५०; ♦ अंत्र, अवसाम । मु० ~सता होना-हनास दिखने म रहना, धनरा जाना । भौसामा−**छ कि फलादिको मूले बादिमें र**पनर फाना । श्रीसी-सो॰ दे 'श्रीकी'। स्राहोर के नहीं के देव 'अवहेर । भी**इत+-सा अ**पनृत्युः कुगति । क्षीशासी#-वि स्ता॰ दे॰ अहिवासी'।

भीपसी-को [ei] गेर, प्रस्पूप!

र्षेठघा≯∽मी दे कावा । क्क-पु [मं] एक मांसाहारी पढ़ी विसक्ते पंछ काणने क्तावे जात के एक तरहका जामा बमा अभिया जुवितिए का एक माम को चग्होंने विराद, नगरमें कारण दिया माः बंध्या मार्थ। -बोट-१ एक वर्षकी महस्री। -पन्न-प्र वह बाग जिसमें श्रीक्रका पर सगा हो। श्रीक्रका पर।-पर्धा(जिम्)-नि विश्वमें संस्कापर खगा दी (शय) । -पूछी-स्रो यह तरहकी महन्ते । -प्रस्थ-इ. एक दरहफी विगरी जिससे शुप्ता हुआ बर्रेटा या अध्य मानु प्रज्ञाचर निकाला जा सकती है। कंकर-पु (सं॰) कवय, बस्तर; अंदुर: । -कमात-पु॰ करम नमानेका कारमाना । कंकप्र~ प्रजानके अंदरने निकलनेवाला एक तरहका रीहा भी सक्त बनामेढे कामये आहा और क्रियु जकावर भूमा नवाबा आंगा हा फनरका छोता द्वकता शिदी। सुरा। या सुरतीय पूरा मिला हुमा तंत्राष्ट्र जिल्ल याँनकी तरह पीने हैं। -परपर-पु॰ क्राक्तरकर, रही बीलें। क्षक्षी भी छील बहुब छुटी छील दुक्का, रही, स्वा। केर्यामा बंबरीसा-सि बंबर विका हुना। जिल्ले वेदर अधिक हो।

बाँपा जानेवाला भागा, विवादसूत्रः एक पाइव राथ । **र्व्यक्षका**–१० सि] एक अन्य । **बंधणी कंडणीका** नकी [मं] दक्ष आदिमें पहनते है प्रेषस्थार गवने। शह पंटिया । कंकरा-म (सं०) वंशीः वस पृष्ठः एक विवेका कीव । कंकतिका, संकती-सी [सं•] दया। क्षेक्रम+--पु+ दे+ 'श्वाप' । कंकर-वि॰ [सं] पुरा, मीच । प्र महा क दे चित्रह । कंकरीर-स्पी [बं कांकीर'] इंबड़, सीमेर काम आहि के मेक्से बना हुना छन मादि पनासेका मधाना। छाटी रक्तर । कंकरेत-मी दे चिक्रीर' छतपर शतर्मस स्थाप । वि है 'दंडरीका'। कंकरोल-प [सं] निकोरक मायक नृष्ट ।

कंकण-१ [र्थ•] श्रीन विवाहके पहने वर-कन्नाके हाथमें

ककास-पु भिः) वृद्धियोदा दाँना प्रत्ये। -शार्री (सिन्)-वि इट्रियोंनी माना पहननेवासा। मु हिन। -शार-पुर वर बाग विश्ववे शिरेपर दश स्त्री शा -शेष-वि जिन्हा नेशमें इस्रोमर रह न्यो है।।

कका-नी [मं] उमसेनकी नहीं भी बमुरेवक छोटे भार

की स्थादी थी।

क्षेत्रारी-स्त्री॰ यह क्षत्र ।

14-6

करोरसाई*∽सा हे करोरसा⁷ ।

क्रीत करीती-का॰ संदा क्रीता ।

कडीता~प्र॰ काटका यह छिछका बरतन विसुधे प्रापः

कर्डकर, कदगर~५ [सं] एकः भूग भाविके बंठल ।

कड-वि [र्स•] ग्रॅगाः मर्जास, मृतिकड्डः वरोष, गूर्ध ।

कवक-न्यो बहुत दशी और दशवती व्यवका विश्वकी

चमक्रमेर्ड बाद बीचेबाकी सावाजः जीरसे टॉबम-बच्टनेसी

भागानः निम्नकोः पेशायका २७ ३७.५८ जनमञ्जे साथ भाना' स्ट रस्टर होनेवाका दर्श पीचेकी सरपट चास-

पटेनामीस एक हाथ !--विज्ञासी--सी॰ तीश्वार चंत्रका

कर्षना-वि करे संगीवाला बहाबहार अवस्तव ।

क्टोग्द~वि• सि•ो दे 'क्टोर'।

धानेका सामान रया जाता है ।

कडक-प्र॰ सिंो समझी नगढ़।

कदग~प्र• [सं•] एक तरवकी शराब ।

करंतिका-स्रो सिंशी विशास सर्वविया।

कानमें पहनतेका एक शहना। धरीरमें उपवारके निए निज्ञा शीरानेका एक दंज । क्षक्ष - पु • बड़ी भाक्षे हुदने, ताहके वजने, दिन आदिकी भारत्यर किसी भीजके भीरसे गिरनेकी भाषात्र । क्षक्रकाला – वि० किससे 'काक्षक'को भागाम सिक्ते, भ्रमप्रसर। देज । कबकडाना−म कि किश्वत सम्य करना बी-टेटका श्तमा गरम ही जाना कि उसमेंसे 'बबक्क'की भाषान निवते । सः कि कृष गरम करमा (यो भावि) । क इक काइट~त्यी (करकर की भागात ३ कवक्ता-म विक्रों कावनेको भावाम द्रोता, गरनगाः किसी बीजका तेज आवाजके साथ कटना-इरगा डॉटर्स हुए बोरसे गोसना । कक्षा-पुर कामोकी सानाग ! कहररा-पु• वोरोक्स प्रभाताने रचित्र गीन को वोकाचीको बरसाहित करमे है किए गाना नावा है। क्दर्शस−त दश्या गानेदाला, मार । करम-प्र [तं] दे॰ फलन । श्तर। एक तरहका पन । कक्षम् इत-वि चित्रक्षरा । पुरु वह मनुष्य जिस्सी राहीके इत बाल सकेर हो गये ही। क्रवकारं-न्यो है॰ दश्री । कद्या-वि॰ जीभवी लगनेवाका शासदारा वडा जारिया मानवार्। प्रोपी। विश्वमित्राः रष्टः राजाः कविताः देशः। ⊷कसंस्था-वि बद्धा अभिव ।~वृँट~पु॰ अभिव वटार बात ।- श्रवाक्ट-पु॰ वह संबाध जिसमें गु४ कम पश दी, तीम स्वान्दा तेशह । -तक-प्र सरक्षेत्रा तव । -यम-दुर,-इड-सी क्शना शीका मान शहता। मु - भूट पामा-अति वहतर वातको सव हैना। -द्रोमा-राषा श्रीमाः विगत्ना । फर्पामा-न कि है कि कामामा। कद्यी-विसी दे दश्यो । श्री सुभारके एंडल का मारे । वामप्रे कार्य आया - निवादी: -शेरी-स्था वह स्ताना की मून स्वतिके निवट-संश्वी या नित्र वरुके श्रुविशेके क्रिय भेषत है।

क्ष्रहन-पुण्यक सरहका बाम । कदा-वि सबतं बठोरा भी नरम या लक्षका मधी: क्या द्वमा ठीसा रिजायत न करमेशकाः रानित धाः कठिना हुप्करा म दवन, म ठरमेशाला तव गरहा कर्मेश तीम क्सबा रोपएयक (स्वर): बजी देखार-सहका पुरु पुरीके अमहारका एक गहना की दल ना पविमें पहला जाता है बचवा छोदैया बना एना स्कि सिख पहनते हैं। बंदाक-बजाही आहिमें पहरते, बार्च व्यादिक किय लगा प्रजा छत्या एक तरहका स्ट्रुत्। स• -पद्मा-द्वा दिसाना अ दबना । कवाई-सी कशपन, सन्तीः वर्धार न्यवदार । क्याका-प्र करी बीजके ट्रटमडी बागाना वरस्य कारा ।-(के)का-तेज, सस्त बोरका । कवाकील-स्थी भोदशवारीके उपनक होटी पंदक। ककार-वि॰ (र्स॰) वर्मकी पिमक बयका । पु॰ पिस्त वर्म मीकर । कड़ाह कड़ाहा~पु शोदेका गीका विधना ररतन ये अभिक्र मात्रामें पूरिशा तरबारी ग्रन नादि नगरेडे कर काता है। कबादी-स्था कन्नदेशी शरमधा छोटा यात्र । सुरु "में हाय डालमा-व्यविष्रीद्या देना । कदिनुस्त-प्र[म] स्था दलकार। कविया-की अरहरका गुरुग वंदल । कविद्रां-शि॰ क्षमर । कविद्वारण-पु अद्वारकः निवासनेवाका । कवी-सी व्यक्तिमार्ग प्रसीरमा जेवीरहा एक सन्ता स्मे भीज हरकानेका छला। गीतका एक पर। छती। पान प शहतीर। भड़ भाविकी छातीको हुन्नी। बरावरा 🌿 🕈 गाय । वि लो न्हें 'क्या - हैंच स्तार बहसमा किन्में हैंप से कहा नेदनतन्त्र काम किने जाने रापरिशम कारावम ! ~बार-वि॰ प्रतारात । प्र एक तरका वसेता! ~नजर -नियाद्व-स्त्री शैक्ट्रब रहि। ^{विकास}ी हु= -क्टामा-मुभीवने शतना । -सुनामा-गांधे मणे कक्षा-विभी 'क्षां (समास में)। सुरु -कार्ना-र्षसा हमाना । क्षत्रभागान्त्रं कि वर्षा सम्मा भीत गामभ सर्थ श्रीना । क्षपुरुवां -- पु यभाद्ध हाब या प्रथम प्रदेशाया अलेहरा धोन दशा ऋषेरा−षु राराश्मेवामा। क्षेक्रोटः क्ष्मारम-पु मालगंगध ग्रह स्रारणः स्कारा-प्रजानगरमा अपन्ति। बहुमा-अ॰ दि जिस्समा शिमना र जाव हेणा काम बीमा। वर जाना। बाहा जाना। दूपका र जिल्हा गान होता । शुक बड़ वामा-दिसी नीका दिन दे साथ निष्ठ जामा । कपुरशालनी। भेगीर है बरवानमें रोगोडी वह लुगरे जिस्से बाद बाब बीमा थी श्रव रहना दें र मि॰ बन्नीका करा

धररामाः, कन्मामा०-ए

Ĺ

'n

औरती - स्री धेतसे पहले पहल काउकर लागा हुआ नवा दरा अला। भौलक∽प (सं∘) बत्≰ेंशा श्रंड । मोल्य-प [सं] वैशेषिक दर्धनके प्रवर्तक सर्वाप मलाद । —दर्शन –पु वैशेषिक वर्णन । श्रीसुलस-वि॰ [सं॰] बोसकीमें कुटा हुमा। **बस्**सक मीरवण्य-पु॰ [सं॰] शाधिवयः विशेषणाः प्राप्तयः। श्रीदास-वि० [श•] पृष्का प्रथम। प्रधानाः सर्वश्रेष्ठ । --सीबस-स पहले प्रवसतः। शाबसन्⊸थ पद्दसं, प्रवसत्तः । क्योदि। क्षीसिक-अ० हे अवदय'। भीशीर-प [र्स॰] बसकी बक्ष यसका केया कार्या पंके या भवरको सौदीर हरसी । भौशीरिका-ला [मं] (ग्रेथेका) वंड्रफ, वेलुकाः बकापार । श्रीपण-प्र [सं] शहरापमः श्रालः मिर्च । -शींडी-स्वी सीठ। भीषध-न्मा [तं] हवा भोषपि बड़ी-मूटीः एक खनिज हुम्ब । वि जडी-बरिवॉसे वसी । भीपदासय-पु सि॰] दशस्त्रामा । भीपचि जीपची-ता [सं•] हे 'ओपधि'। भीपद्योपचार⇔प्र [सं] स्वा-स्टाव ।

भाषर सीपरक-पु [सं•] सारी ममका चुंबक मरवर ।

क-देवतागरी वर्णमाकाके स्वर्गका पहला (व्यंत्रन) वर्ण ।

सीयस-विश् भि े उनामे संबद्धा जनाकाणील ।

रमका बचारण स्थान क्रंठ है ।

ब्बीयसी—सी [सं•] मेर, प्रत्यूष । औह∽वि [सं•] सहसे संबद्ध वा उत्पन्न । मु सेंटमीका दूष । –तथ-पु उँटगाडी । भीडक-पि॰ सि] केंद्रसे प्राप्त । यु केंद्रीका मीन । ऑहिक-वि॰ [सं] उँटरे प्राप्त क्षेत्रेगाला । प्र देखिक. भीड−वि० (सं•) ओठव्ये शक्तका । **औरअ-१** [सं•] औरसे संबंध रखनेवाका । भीव्य, भीव्यय, भीव्यय्—पु॰ [सं॰] सम्मता, ताप- गरमी । कीसत्र-वि वि•ी बीचका दरमिवासीः सावारण । प्र बीचको संबया या राहित राशियोंके बोक्को बनकी संस्थासे भाग देनेपर मानकन्द्रे रूपमें प्राप्त शंस्या परता।-वरश का-रीयका, म बहुत शब्दा न हुरा। बौसमा! - व कि कमस दीयाः गरमीसे सानेकी चीज का विगड़मा। श्रकारिका सुककर पहला । भौसर#-पु॰ दे[ा] अवसर । भौमान−५॰ दोख•दवास चेत- गै भौशान स्वन्दकर देखि समुद के बाक'-पना क संद्र, सबसाम । सुक -राता होना-दशस ठिकाने न रहना, परस बाना । भौसामा−स कि फकादिको भूने आदिये रक्षकर पकाना । ਕੀਸ਼ੀ—ਚੀ• ਫੇ 'ਕੀਦੀ'। सासेर•-सी॰ दे 'सबसेर'। र्भा**हतरू-भी • भ**पगृत्यः क्रमति । भीक्षाती क-विक स्वी है के कि विवादी !

कॅठचा+−स्तो दे कुश्रा । कक-पु [मं] एक मांनाशारी पक्षी क्लिके पंछा बालमें कराने जाने थे। एक तरहका आमा बमा क्षत्रिया अविदिश का एक नाम को चन्होंने विराद, नगरमें बारण किया याः बंधका मार्थ। -बोट-प्र• एक छर्दकी महली। -पन्न-प्र वह बाज जिसमें ब्रेडका पर समा ब्राह्म ब्रेडका पर।~पर्दा(सिन्)−वि क्रिसमें बंधकावर समाक्षे (राय)। -पृष्ठी-स्त्री यह तरदावी महत्ती। -सुस्व-पु॰ एक सरहरी विमरी विमुद्दे लुमा दुआ बहेरा या अन्य बरमु परुचकर निश्राण का सकती है। कंकर~षु (सं•) श्रवच वस्तर; अंदुरा । ~कमास−<u>ष</u> क्षम बनानेका कारमाना । कंपर-५ जमीनके भेदरने निकननेवाला एक सरहका रोड़ा जी सड़क बनामके बाममें आता और जिसे बसावर चूना बनाया जाता है। एवरका छोरा हुकता विद्वी। सूरग यो सर्गासा पूरा मिका दुवा संवाक जिल्ला गाँवकी तरह पीत दे । -परघर-पु॰ पृत्ता-करकर, रही की ने। कक्षी-स्रो छोटा बंबर, छटी। छोटा हुक्ता क्ली, स्वा। क्रेड्यांटा कक्रोसर-दि वंदन विका दुका, जिस्से वेदर अधिक हो।

#दंक्षणाध्य−तः वि]पदः असः। **बंकणी कवणीका** नशी॰ [मं∗] क2 मादिमें पहमनके पुँचन्दार गवने। शह पंटिका । कंकत-पु (तं) देवा। एक क्षा पक विभेता बाव। कंकतिका कंकती-को [हं] श्रेता। **भंकम = - पु + दे + 'दोगा)** कंकर~वि॰ सि] सरा नीच । सु महा कदेश शंकर । कंकरीर-मी [बे 'कांकीर'] बंबड शीमेंर, वास आहि वं मैकने बना दुवा छन आदि बनानका मसानाः छात्री क्षेत्रको । कंकरत-न्दी॰ दे विकरिया धनपर कामरेका वक्त । वि देश चित्ररीका । कंकरोस-प [सं] निश्चिषक नामक प्रधाः कका-की मि] एमसेनकी की भी बसुरेकर छाटे भार

कृषण-१ [र्ष] बंगनः निवाहके यहने वर-बन्दाके हाथमें

नीया जानेवामा भागा, विवाहसूत्र; एक पाउव राग ।

कंकाल-पु॰ [मं॰] दद्विपोदा दौना, द्वारी। -मासी (छिन्)-वि रद्विपोद्यमाना परननवाता । ह (न्यू) -बार-पुर वर बाग जिल्हे शिरेपर बड़ी स्था हो। -शय-वि जिन्दी देशमें इस्टोमर रह न्दी शा ।

का प्यादी भी ।

कंप्रारी-सी एक बध ।

र्म्वारा~कदम कतारा~प्र• उत्पक्षे एक किन्स । कतारी। – सा॰ दे॰ 'इतार'ः एक तरहको ईरा । कति-वि [र्स] कितना किराने। व कितने ही। कीना बहुर्सक्यम् । कतिकश-वि+ क्रियमाः भाषाः भृततः । कतिपय-विव [संव] को अछ । कतीरा-प॰ एक पेडका गाँव । क्लोक≉-वि देश किलेक'। क्रतेव – प॰ धर्मग्रन्थ । कतीमी-सी॰ शतार्वे विकारी काम करनाः नतत देर रूपासाः कार्तनेको क्रिया वा मावः कार्तनेको स्वरत । कत्तक--त• रतकाः परवर भरनेमें निक्कतैवाका छोटा उक्ता । कचार-प वैसफोरीका गाँस कारनेका एक औवार, बॉक: **छोटी और ऋछ टेडी तलवारः** पासा । कचारीः कचादार्ग ⊢प सप्यस्थातकारका वक्ष सवावहार कत्ती-सो॰ धेयो तल्यारः भटारः सोनारोकी सतरबीः म्ब टरहको पगडी । क्तुम-पु॰ [सं॰] एक सुगंधित त्व सीयंप। करबेई-विकासके रंगका, दीरा । पुरु करवर्ष (व । करयक - प्राने-नजानेका पैका करनेवाका पक हिंद मावि। - त प-४ अध्यक्तेमें प्रवक्ति भाष का दंग। क्रथम्-पुर [सं] द्रीम नारमा । विश् शीम नारवेवासा । क्रमना-खो॰ [तं] शंग। करपा-त येखी सकतेका सठ की पानमें खाबा जाताब । करसं~र [थ•] जामसे मार टालमा वर्ष शस्ता। —की राल-सुदर्भकी दसवी रास ! - गाइ-प्र वयरवस । —व सँ–प्र• मार-हार । —व ग़ारस—सी इस्वा और सक्त चर । -(हे) असव-त वान वनकर, ररारेके साव करत करमा। -मास-त अंबाईव वव अवरावी-बिरपराच, वच्चे-बरेबा विचार किमे विमा सम्बो शक करना । करसंबर-पु॰ [सं] क्या । कथा-पुरुषा। -क्रीकर-पुरीरका पेत्र। क्रमक्र-प [न] क्या क्यमेका पेशा करमेवालाः प्रराप गोपनेगाकाः शास्त्रको कशका वर्गम क्रमेगाकाः देश फरभद्र'। क्षाकर-पु कथा वांचनेका पेछा बरमेवाका रामायपारि के तरशक्तरहरू वर्ष करमेदाला । क्रमन-बु [मं] बहुआ। बन्नम, विद्या वर्णमा वक्रमास-का एकं भेद । कथ्यात्र-स कि क्यानाः निया करमाः। #धारी≉⊷सी॰ गाम क्वाना वक्षणाद । क्षचनीय-रि॰ सि॰ों क्डमें योग्य । क्षप्रमू-अ [मंग] दिस क्ष्मों देने।कांसे।-(पीक्षिक -पु॰ प्रश्नवती। कैंगे अथा हुआ आदि वृधनेवामा !- सूत −वि देसा विस्तरकारका । क्यरी-स्री भोगडे जोहबर बमाबा हवा भीत्रता विशेषाः गुरुषी ।

क्यांतर-प्र॰ (सं॰) पुछरी क्या किसी क्यांके क्यांत दसरी गीण करा । कमा-सी [ग्रं॰] वहातीः करिपत कहानी हिक्कन ब्रुणीत वर्गन चना विका बाहा रामावय-प्रसाधिक अर्थसंहत वाचव । —साधक-पु॰ दशका प्रथम सप वा जालंबन । --वीठ-पुर क्ष्माच्य मुख्य माना बहातीक्ष मस्तानना ! -प्रश्चच-प॰ खडामीः (खडिएर) सप्रदा-थिका !--प्रसीग-त वादयीता वादयीतका सिर्फान्य कथानार्यो : सैपेरा । विश् सर्मः नकश्ती । -प्राच-रः मिनेता। क्रमहरू । -अस-प् क्रमधे ब्रह्माना। -योग-प्र कथा वा शार्शका संक्रिका । -वस्तु-वी क्ष्मान्य सुरू कर । --वार्चा-को॰ प्रसासीर्थ कवार्थीकी पर्वात करेक प्रशास्त्र प्रशंग ! -सरिम्हागर-प्र संस्कृतका क्या ग्रासिक वहानी-संग्रह । मु॰ -काया-कवा वंद होगा। - क्षुप्रदेशा-दायश मिगना सर शासमा । ~बीटका ~ब धान्य जारीय होगा । ~बेटाया प्रशासिकी कथाका मानोबन करमा । कवामक-५ [सं•] धोटी दशः नदानीमा सकता। कविक-पर सि विद्यमेगालाः बदका बहानियाँ हुनाने कथित-दि॰ [सं॰] दश द्वजा, बक्त । प्र॰ परोवरा यर्थ कापा वर्दपका एक प्रबंध । कथीर-प राँगा। क्यीक क्यीका-पु देश क्यार । क्योद्रात-पु॰ (र्थ॰) रूपक्या प्रताननाथे धाँव केर्पनित इसराः क्षाका कार्यः । कथीपकथन−ड [सं] शतचीत संगदः। कृष्य-विश् सि] कहवे शाया, क्ष्मनीय ! कर्षच-प [सं] एक हरर देश जिसमें योने, पीरे पत करत है करमा देवताहरू तुमा समुद्रा सरसेंदा शैमा यक रानिय हम्ब । -शट-डु दक राग । "डुम्पा-प्रथमिनको अर्थवये से इसवासा वस बीबा, गोरसर्थी । कर्त्यक∽तु [तं] दे 'करंगः इतिहा। कर्मस−प सि ोदीम निरुष्ट प्राप ! कद्र--अ॰ यन, दिश समय । श्लो । [भ] दे 'वर'! S' [पा•] वर ! -श्वश्वर-पु घरका मास्टिक गृहरवा^{त्री} पतिः इक्ता । -पुरुवाई-सी॰ ध्वाद । क्रव्-पु का] श्रेण, देशके क्रेंबारे-ध्यारं !- व शावन -शो॰ शेम-शेत । -(हे) आइम-दि॰ अरतीये बेहके बरायर क्या । कटक-पुनि] भैरीका नंदा देश ! कव्छार--प्र [मेर] मुग्सिय वर्षाः सुरी नियारः । कर्षक् - पु क स्थाने । क्ष्म-त [र्न-] वथा दिनाशः दुवा कप शुरी- स्ति बरन करि भारत तुंब - एर । कवृत्र-तु [मं] यसम मीरा वय-मॉना क्रोरी मारि) क्ष्युप य-पु [६] क्ष्युत तुरी स्तान ! क्रम्य−पुदेश-सर्वाः क्रमुम-दु [ल] चीवा वर्ग प्रमा बसनेने दोगी परेंद बीचका अंतरा परनिक्षा कार्यनिकेकी तिक विवासना

200 भीडी। -सा॰ धेवसे पहले पहल का कर जाना हुआ नया हरा सह । मीस्क∽पु[सं०] उस्कॉका संडा भीसक्य-प [सं] वैशेषिक दशीनके प्रवर्तक महर्षि क्याद । -इर्हन-पु वैदेविक दर्शन । मीसन्तर-दि॰ [सं॰] भोवासीमें कृता दुशाः पस्पास संबंधी । भीस्वण्य-पु [चुं०] साविषयः मतिस्रयताः प्रायस्य । भौदछ-वि [श्र•] पद्वतः प्रथमः प्रथानः सर्ववेदः। --सीवळ~अ पहले, प्रथमतः । **शास्त्रम्**−स पहले प्रवसता । क्रीद्विः, क्रीसिक-क्षक देव 'शवदव' । भौशीर-प [सं] सस्या वदा प्रस्का केपः वर्शात पंसे या वैकाको दौनी करसी । मीर्शारिका−सी॰ [मं॰] (पीवेस) अंकूर, अँसुथा; अकादार । [d] क्ष्मपामा काली मिर्च । —सींबी--भीपण~प লী লীত। भीपध-भी [मं] इहा भोत्रशि जड़ी-वृद्धि एक सनिज इच्य । वि जही-वृदियंसि वनी । भीपपालय-पु [सं] दक्ताताना । भीपचि श्रीपत्नी - ला॰ [सं॰] दे 'भोपभि'।

भीपकोपचार-५० (सं०) बनावलाज ।

ŕ

.

भीपर भीपरक-पु॰ [सं॰] सारी नमकः चुंक्क परवर ।

सीयस-वि [धं] बबासे संबद्धा उपाकाकील ।

क्षीवसी-की [d] गेर, प्रस्**र**। औड−वि० [सं•] उष्ट्से संवद्भ या उत्पन्न । पुर्जेटमीका वृष । --रथ--पु॰ छँदगायी । भौक्रक−मि [सं] उँटसे प्राप्त । पु॰ उँटोंका भूर । भौक्रिक-वि॰ [सं•] छॅटसे प्राप्त दोनेवाला । प्रा देखिक, तेकी १ भीह−विसी जोठ%। शब्दक्याः श्रीप्कप−वि [सं•] बोठमे संबंध रखमेवाका । बीक्क, क्षीकव, बीद्मय—पु॰ (सं॰) उष्णता, ताप, मरमी । भीसस-वि [थ:] शेषका, दरमियानीः सादारम । प्र बीचकी संबंध वा राष्टि राधियोंके बोक्की उमध्ये संबंधाने वाग दैनेपर भागफ**ेंद्रे** रूपमें प्राप्त संस्था, परता !- दरस का-भोजका, म बहुत भण्डा, म हुए । श्रीसना!-व॰ क्रि॰ कमस दोनाः गरमस्य पामश्र चीव का विवक्ता। फ्रकारिका स्टाकर एकता । भौसरण-पुरु देश^रजरसर । भीसाम−५ दोध-दवास, येठ−पी औक्षान स्वम्ददर देखि समुद्र के बाद -पण कर्मत अवसाम । मुक -स्पता डोमा-इवास टिकाने न रहना, पनरा जाना । श्रीसामा~स कि फलाविकी धूमे शादिमें एउदर क्यमा । भौसी−का॰ दे 'औसी'। बासेरक-सी॰ दे॰ 'वयसेर । **र्थाहरत#—की अपश्रस्य क्रगति।** क्षीहातीक-विक की के देव 'अहिवाती'।

 ६-देवनागरी वर्षमालाके स्वयंका पहला (व्यंत्रम) वर्ष । । इसका उद्यारमध्यान कठ है। कॅंडबा - सो दे कावा । कक-प्र [मं] यह मांमादारी पद्मी विश्वके पंद बागमें कराने जाने में। यह तरहका सामा यमा श्रविता हुशिक्षर का एक नाम को उन्होंने दिशाद नवरमें बारण दिला षाः संसरा मार्द। नद्योट-पुरु यक्त **तरहत्येः** सष्टला। -पन्न-प्र वह बाग जिसमें श्रेषका पर क्रमा हो। श्रेषका पर।-पद्मी(द्विम्)-नि क्षित्रमें अध्यक्षापर सगाको (शत) । -पुष्टी-स्री यह नरहकी शहकी । -ग्रस्क-प्रक तरहको विमध मिलने समा क्ष्मा काँश ना अन्य बरतु पराग्दर निकासी का सकती है। ककर-पुनिः] काच वक्तरः अंदुष्यः । --कसात-पु

करम क्यानेक कार्याता । कंकर-पुजनीयके अंदरते निवस्त्रेशना एक साहका रोड़ा जी सहस्र बनानेद्र कामये. भारत और जिसे अनासर भूना बनाबा जाना देः प्रवरका ग्रीश हुकता विद्वी। स्ट्रा ना ग्रातीचा पूरा मिला दुआ संबाह जिसे वॉजकी वरह पीन है। -पाधर-पुक्राकरका रही बीजे। कंकड़ी-मी शीय बंबर, सरी। सीय दुक्ता रही, खा। क्ष्यासा बंदरीसा-वि वंदर विका प्रमा विश्वय

क्षंकम्प-१० [सं] धंगनः विवादके पहले वर-क्रवाके बावसे बीचा जानेवाला चागा, विवादसमा यक वान्य रागः। र्वकणास्त्र−प्र• सि•ो एक अन्त । क्रीकणी क्र्रंकणीका∼सी [सं] क्श्रंभातिमें पहनते क्र भेषस्थार गडने बाद पंटिका । ककरा-प्र शि] चंपीर एक पृक्षः एक विवक्ता बीव । कंकतिका, कंकती-सी॰ [सं॰] बंदा । क्षंक्रमण-पुरु है । 'संस्प' । व्यकर-वि० [सं] दुरा, मीथ । द्व महा + दे० शुद्धक्र । बंबरीर-मा॰ [अ 'कांग्रेर'] इंदर, सीमेंट, वाचु आदि के सेक्से बना हुआ छन बादि बनासेका संसाना। सारी र्वक्डी । क्षेत्ररत-भी दे शिक्सीर । धतार शास्त्रेका स्थाप । The R. Services of कंकरोस-पु॰ [तं] निकीएक नामद पुत्र ।

कंका-न्या [मं०] उपशेषका देश जो दम्हेदक एटि मार

क्कास-पुर्वि । विश्वीका दीवा स्टरी । -सामी

(लिन्)-वि इदियोंनी माला परमनेराता । प्र शिव ।

-पार-पु वह बान विमन्ते निरमर इट्टी हती हा। व दंद करिय हो। -शय-वि जिल्ली देशमें इस्टीवर रह न्या हो। 14-6

का स्थारी थी।

क्षंत्रारी-म्ये॰ यह श्रन्त ।

को॰ सेहेन्द्र दान ।

ৰিয়া, প্ৰব্ৰুমিয়াৰ।

कनका~५० सनकी, क्षण ।

भूतञ्जानीः नाग्नार करना ।

कनकनाइट-सी॰ कनकनानेका गाव।

कैना । --हार=--पु= कर्णशर ।

कनदर - (व॰ दे॰ वतीश ।

कमर्तेगछी-सा॰ कानी वंगसी, श्रियती ।

पनाशः काकीय वृद्धः जागकेशरः भेगा । —कत्रकी-की॰

ण्ड तरहवारका !-ककी-लो॰ कानमें नहसमेकी कीन ।

~कदिरपु-प हिरुव्यकदन्त । ~काक-प सदागा ।

-गिरि,-होस-प समेर पर्वत । -धेपा-सी बनि

बारीका पेड़ । -- और,-- औरा--प्र॰ [है॰] क्रम जाति

का यह गान । – इंस-प्र राजण्डन ।– नेदी (दिन्) –

प्र= शिक्का यक गण । - शिक्कप-प्र= कर्तारी । --पश-

पु॰ कानका पत्र गवना । ~पराग~पु सीनेकी पृक्त । -प्रमा-वि॰ सोनेक्प्रेसी भागा, जमस्त्रासा । -प्रमा-

की महाश्योतिष्मती। -प्रसन्ता-की स्वर्गकेतन्त्री।

-मंग-प सानेदा द्वकरा, बका । -रंभा-सी॰ रवण-

करकी । -रस-प्र• वरक सोनाः ४रकक । -क्रकि-

अ कार्षिकेष ! ~सम-त सोनेका शर ! -श्यकी-

कतकता-वि इसकी-सी भीउसे भी हुद जानेवाला। विदः

क्षमक्रमाना-भ॰ कि भौक्षका दोनाः रोगांक्ति दौनाः

कमकाचस, कनकाद्वि-पु [सं] सुमेर पर्वत । कमकाभ्यक्ष-५० (६०) सर्वाची, बोबाज्यस् । कनकानी-पु भी त्यो एक जाति। कनकारवदा-१री (छ॰) स्वर्शयः । क्रमकाठ-प्र• [मं] भगराः भागकेशर । कनकाद्वय-पु॰ [६] पत्रा। कन्द्री~सी. पारस्का हुटा हुआ क्या छोटा क्या। क्मक्या-को ११ क्रानीवा । क्रमकाबा-पुका प्रशंग गुप्ता। -(व) बाहा-पु= पर्नम क्यान-क्यानवासा । अ० -(मे)मा ब्राम्यस्था बद्धा-हात्य बर्खसे बंगभूत, अससे उनमा बरतका नग शोमा (अनुस्ता - पुर बानमें फुरनेवाधी छोटी-तिरछी हहती। पह महीका कपरका किलारा । **धनिवसमा-स**्थि कन्तीते देशमा दशारा क्रमा । सम्मा-भी स्पारी वार किरपी निगार्स देशनाः इसरोंकी निगाद वंबादर बैंचनाः सौराक्षां दशाराः भैनाः धीरा क्रम्या ! सूर्व -सारमा-अपने द्वारा करना ! कत्तरपा॰-गो॰ दे 'बनसी I कमगुरिया-स्ती काभी जैगकी शिशुनी ह भागतुनुसा-पु एक भागत विनेत्रा और वर्ग जातिका Arm ! कनन-रि॰ सि विशासा करमनामा-न॰ फ्रि॰ सीनचे आहर काहर या वेननीते ।

र्शगीत-मिय 1 -सस्पर्श-की॰ छोटा कुनलस्राः बाब-बाँव दिसाना, सिग्रीपना। विरोध-मुक्द थेश करता। कुरतीका यठ मेंच ! -सुई-मी शिवकर शुनना, शेव कमय क प्रमुख्य सोता । कनरई-न्मी॰ एक पीधा जिसमें बनीस मिस्तता है। कनरश्यास-मु एक राम । कनपर्श - गो० प्रयोद । कनक-न्या॰ गेहँका भारत । पु॰ [सं॰] सोनाः भवुराः बनवीं ∹त छन्दर कनवाँसा-पु॰ पवासेका नेश । कमबास-प्र [थं कैनक्ष"] सम परसन मारिका रू मोटा करणा विसक्ते करें, भने आही बनन है, 'दिहरिय'। कमयोकेसय-म (अं०) निरंशनियालनका उद्यक्तिको स्थव । कमसार-५० सनि आहिकै पत्रपर हैय सीहजेशना। कमसाख~पु• चारवार्यके पत्का वह छैर जो दिराग है कमसीरी । नगे एक वृक्ष दानर । कनस्तर-त [बं॰ फिनिसर] दोनका चीथेटा शेव । कमहा-त कमकुष धरनेशका दर्मशारी। कमा-प्रश्निमः सरस्टा । क्षमाई-सी वतको शरा दहती। क्रमाञ्जा=-वि दे प्रमीधाः। क्रमागत्त=-वि० हे 'क्रमागत । इत्तास−न्त्री॰ [ता] कपनेको नौकार भी धेमे या किली राके स्थानके चारी ओर राष्ट्री करत है। ¥नासी-वि॰ कनावसे बनाया धुआ । -सरिवर्-नि॰ कनात राष्ट्री कर समाज बन्ते है किए बनावा दुश स्वत्रः क्ष्मारा-५ महास्र शंहाहा एक भाग । क्रमारी-मा कनार। प्रदेशकी माध्य, 'बक्र' (\$* बनाराका निवस्ती । क्षमाचन्।-(वर देश 'ब्रमीश । क्ष्मामी-मा रेती। कमित्रारी नगी अमस्या। क्टनिक∽सी मेर्डका भारा । क्रमिका॰~शो देश श्राप्ताः क्षिगर्य-4 जानकाना । क्टनियाँ ० – न्हां गोद। क्षियामा~न॰ कि क्षत्रामा और श्याहर निष् वानाः गुडोदा एक भीर् शुक्या । कमियार-१ कनपः था। क्रिक्टिन वि वि वि क्रिक्ट विवास क्रिक्ट वि वि प्र• शिव । क्षतिएक-वि [ग्रे॰] क्षतिष्ठ । प्र एक गुरु । क्लिश्र-विश्ली [र] तथी हाक्ष स्त्री स्त्री स्त्री वियाणी। शक्ते पीछे स्वाक्षा हुई पानी। यह मार्विम वी पश्चिमें कम ब्यारी क्षा छोडे मार्रेडी की ! क्रकिलिका~=")+ [स] (रेग्यनी । कतिहार-तु वर्षधार, अप्याह-पन्ने वर्शनहर न भर क्षी कर्यु आह च शक्ति साथ चना (- श्रोन्स्व सा क्यों-री मि विशिक्ष क्या [दि॰] सा प्रदेश व्यक्तिमा बीरबी व्यक्तिमा भावतता छात इक्सा बारब या भागदा बद (६. ग) माय थी क्या उद गरा देंग ईर

Ċ

करफालक-प [सं•] बदासा । कटकारान-प [सं•] केंट । क्टकाधील-प सि विक सरकी मधकी । क्टकित-दि सि विद्यासारीमोजनका क्रंकिमी-को थि । मरब2ेशा। क्टंटकिक-प• सि ी यक तरहका कॉटेगर वॉस 1 कटकी-सी [म] भरकटेवा। क्ट्राची(किन)-वि नि । सीरीवाकाः प्रदश्यकः। प्रश माला। बारियार पेक: धीर बाँस केर का नीसकता क्षेत्रा। कॅटवॉस~प एक तरदया शब्दि कींटीवाका चौंस l क्षेत्र-प शोदेकी सराही जी सराह, ग्रहादक्छ आहि रदानेके काम आती है । खंटक ~प> सिं°ो पर्क । बंटाइन-छो॰ पुरुक मृतनीः क्वाफी खी। #ंटाव~प सारी मिरा l क्टॅंटाय~ली॰ एक क्टोका ऐह I क्टाळ~प॰ दे क्यक' । कटास्ट-प मिंगी भटकटेवा; कॉटेशर बाँस: बरका बढती ! क्टाम्ब-प [मं•] प्रमध्य । कॅटिया-रवी छोटी बीहा महाठी फैसानेकी बंसी: जॅक्सीके भाष्यास्त्री चीज विसर्ने कोई बीज फंसाबी जाव: दमकीकी बीजरुशित स्रोधी प्राक्तिको । कॅरिकारी⇔स्त्री द० वतवरें'। कंटी(दिन)-दि (सं•) कंटेशार । प॰ वपामार्गः गोलका यरिर । ब्रेटीका-दि खेरेगर । **ब**ंटससेंट~सी (बं १३समेंट'] छावनी । **वेटे**री−सी सम्बद्धेवा। **वॅटेका**−प करकेला । क्टोप-प दे 'क्बग्रीप । क्ट कट-प्र [ल] टेका; नियद मुख्यपर कोई माछ देने निवत चन्नतपर कोई ध्रम करनेका समाहिया । कंटीबटर-प [बं] स्ट्रीवर करनेवाला; वेकेपर सबक. मकान आर्ति बनवालेका काम शरनेवाका, देवेदार । कंदोल-पु [मं] मिनंत्रण । कंट-वि कंटरच वह परजवाना पुरु मिनी गला, बलकः रनर, मानामः परे भारिका गमाः तीने भारिके यनेपरकी रंगीन बचाकार नग्रीरः क्षीणः विमारा । -कडळ-म ण्ड तरहका सविपान !-कलिका-स्ती० बीमा !-तत-वि य≠में भाषा गरका द्वला। ~तकासिका-सी भोरके गर्ने ने दाना जानेवारी चमरेको पड़ी । -लासच्य -वि जिएका बचारण क्रंड और ताल बोनोंसे ही ("व" पि - व्या)। - ग्राण-प्र श्रद्धी गनेश्री रक्ताके निध पहनी जानेदाती होदेखी एक प्रसारकी जाही (री०)। -नीमक-त मधानः दृक्षः-मणि-त ग्रहेर्वे स्त्रमने का माँण विव वरता भें। की गरवनकी सेंक्षी !-आसा-सी ग²का एक रीम रिसमें कगातार बहुतमें कीड़ निक सने द ।-शासुक-इ यनके बोतरका अर्थुद । -हाँही -मी• राष्ट्राविद्या द्यात्र । **-द्यूल-पु** थीर्दे के सम्बद्धी भेनते । -सोच-पु॰ मध्या स्थानाः नेकारको नवलास । कष्ट कश्च-सी [सं] सात्र, सारिश । -ह्र-पु॰ स्टेट

प व वास्त । -सिरीय-सी बंदसी । -स्थ-वि० बंदरी श्चितः बंदरातः जनानी नाद ! — द्वार--प॰ हार ! स० -कसना-शानाम निष्कना । -प्रद्रमा-भागाव निर कताः स्वाती मानेपर भाषासद्यः वदकता । —वेदना-गक्षा बैठलाः वेसरा हीला ।--होशा--प्रवानी बाद होला । करसा—प॰ है॰ 'करना'। इटिस्टरिया५—स्रो संडी ! करंत-पुर बड़े मनकॉकी माका को गुड़ेसे सदी होती है। तीते आहिके गर्छकी रंगीन रेखाः करतेका गर्छेका रहने-बाबा कर्यचंटाकार भाग । क्षेत्रसा-विक सिंवी क्षेत्रस. वरसवास i क्टेंगक −प मि•ों जाना कताका परेका। सका सँटा एक सक्य मुख, जीक बैकाः संबनपात्र । संतिका-सी० सि । यह सरीया दार । कंटी-को विशे हरा बोहेडे समेडी रासी धोटे प्रस्की-का बंदार [हि॰] तकसीके कोटे दानीकी कीटी माला की वैष्णवत्त्वका प्रवान विक्र है । −कारी--क्रंब-वि क्रिं बो बंदी पहले हो । -श्व-त सिंहा मस्त हाथी। बनदरः रपट कथन सके सन्दीमें दह देगा । सुरु -सना-संटी की धापक ब्रामा ! -लोकसा-बेब्यबरक्या स्थाग कर फिर मांक-महत्ती हाति स्थाता । --वॉपका--मेमा-वेपाप र्माकावकी शीक्षा केला । कंडी(डिम्)-वि॰ [सं॰] प्रीवा-संबंधी । **र्द्रीय-**प चि विद्यास्थनपात्र । क्टरीकर —स्टॉ॰ सिं•ी संबनकर 1 क्रिकाक-पु (सं•) दिव । क्टेंग्रेप्स क्टेंग्रेप्स नहिं विशेष सम्पारम क्षेत्र भीर बोठ दीनोंने ही ('बी', 'बी'-म्या)। बाँड्य-वि॰ सि॰] बंद-सेपेची: बंटके किए उपमक्त वा दित करा बंदरे व ज्यारित । -बर्म-पु॰ वह वर्ग विमका बच्चारण बंदरी बोला है (स मा हा, स्व य मा ह और विसर्व)। बंदन-१ (सं॰) क्यम छोरमा । कंपनी-ची सिंगे बोधकीर मसन । **कंडरा∽ली [में] मोधै मस महारनाय महानारी।** कंटा-पु॰ वट गोनर की वी दी पशापश सुरा गया दी। निमा पाथा उपकार सुक्षा सन्दर्भरहा । अ०-होना-मर भागाः पैठ जाना । केटानक-प [सं] शिषका एक अनुपर। ककाल-पुर्वीन्दे शुँदका गहरा कोई-ठाँदे मारिका १रतन जी वाली रामनेके काम बाता है। नरसिंदाः जनाहेंका ण्या भी बार । कॅटिका-स्त [सं] छोटा देंटा नेश्वि ऋवाभीका छोटा समुद्या पैरा अमुष्के । क्षेष्टी-सी॰ छोरा केलाः सूरमा शल, भोगाः कंडीस-सी दे 'बंगीत । कंडीलिया~मने॰ मदाश-गर्नमा बंदील आरि करतादेश

कपदा-कपूर ~पृष्ठि~सी॰ करेर । -मिद्री-सी॰ रशन्मरमादि पतानेमें संपटपर गांका मिड़ी और ऋपश क्रपेटनेकी किया (करमा) । कपदा-पु कपास, कन बादिके वागीसे बुनी हुई बोदिने-पश्चमनेकै काममे आमेशको बस्ता पश्चाया । - खना--पु परनमेका सामाम । ग्रु॰ -श्वसार् हेमा-सब कुछ छोम हैमा। बदनपर करना म रहने देना । ⊸र्रेंगना--गेस्मा बाना केना विरक्त बोना ⊢(वीं)में न समावा-कुले बंग म समाना । ~से होगा-रक्तका होना । कपश्चिम, कपरिया~पुरु एक मीच माति । कपबोदी, कमरीटी-खो॰ वे॰ 'कपहमिदी' ।

कपर्दिका-सी [र्रः] भीश । कपर्दिनी-सी॰ (हं] दुर्ग ।

क्षपर्यं कपर्यं करूप [सं॰] बीशा (दिनका) गरा-बार । कपदी(दिन्)-वि सि] करा-जरभारी । प्र॰ शिव । क्यसा~मी श्रेष्ठ तरहकी मिडी काबिस गारा ! क्यसंता-पु, क्यसंती-सी क्यासंते बंठण । कपाट-त (६) दिवाद बरवाशा । -वञ्च-त दक वित्रकाम्ब । -शैराका-पु वरवामा वंद करना (बलम 5*) ! -वक्षा(शस्)-नि किनार वेटी चौरी गाती माका । -संधि-खो॰ बरवानके योजी पर्ताका बीव ।

-संधिक-पु॰ कामका थक रोन । क्षपार=-प्र॰ वै॰ क्षपाक'। कपाछ-त [सं•] धीपनी मरतदा मान्यतेन। पनेदा **इनका। मिट्टीका मिक्षापान, सम्पर। वह पान जिसमें उपा**न बाध महावर नाता है। बंगेका क्रिक्या; सहसूत्रेको सप्तीर एक प्रकारका कोहा समूदा बक्षना गरावरीकी राजीपर की बानेवाको सुकदा पैर वा और फिलो भेगवी चीवी घ्या । --केत्-पु पक केत्र । --क्रिया-स्पी सक्यावर्गे सुर्वेकी छोपरीको बास्से कोश्रमधे किया। दिसी पीजकी पूरी तरह बद्द कर देना ! - कुर्ण-पुरु शुरवकी एक किया ! ─सासिका─धी तक्ष्णां ─भाती─शी॰ वक्ष विशेष प्रकारको दगासकिता। -साक्षिती-ची॰ दुर्गः।-सास्ती

बीगोंका मित्र बना रहनेवाका शह । कपासक-वि (र्शः) ध्वाधकी छवलका । प्रश्न ध्वाला । क्षपास्त्रकान्यः [सं] एक मन्यः वास । क्ष्मासि~५० (सं०) थिव । कपासिका-सी [र्थ•] शीपनी पन्या द्वारा। शीवनी यपनीः दर्गा ।

(हिम्)-पु॰ शिवः। -शोचन-पु॰ कारोका वक

वाकार ! –संधि–सा वरावरोन्ध्रे बार्तोवर को द्वरं शिष । -श्रीक्षय-मु बी राष्ट्रीके मध्यमें रिवन और

ह्यासिनी-सी॰ [शं॰] बनों। कपाको(सिन्)-पु॰ [मं॰] शिव कपाल लेकर मोरा स्रोगनेवाकाः एक वर्गर्छकर् वाति अपरिवा । कपास-को एक भैश जिसके होतेंग्रे हरे जिन्नमा है। क्षपासी-६० कपासके कृषके शाका । पुरु एक रंग ना

ब्रवासके प्रतने मिलता और इक्का बीका होता है। सी रक्ष धीरा वेष ६ कवित्रस-पु [मं] वर्षशा वीता मरपूक्त वातरा एक |

समि । विश् पीछ रंगका । कपि-पु॰ सि॰] बंदरा हाभी। करंपका रह के। ले धिकारसा वस भूगा वस कवि । -क्षेत्रक-तुः सेन्द्रीः।

-कच्छ-सी॰ देशीय। -देशम-र शर्मा (Al-मारवर्षे धनको पठाकापर इनुमानुद्यो देव (१५ रे) -कैश-वि॰ यूरे वक्ष्मीवासा । -वृद्ध-वृत्त-वृत्त-मार्ग-बत-१र भगगा । -श्राधिका-श्रोध तेयोर किका । े जा, - तैस-पु॰ विकासा । -व्याप-पु

कर्तन । – मादाब–५० एक माहक देव । – प्रमा-श्रो केशीय । -प्रमु-पुण्हामा तुमीन ।-त्रिय-पुण्यता क्षेत्र । –स्थ-पुर रामा बसुन । नस्ता-कोर देखेर -कोसफ्छा-व्या॰ देशॉच ! -स्पेड-पु॰ देश्य देह तीतर । –दारक-पु॰ करमक्ता । कपि ध-तु (तं•) देश। कविश्यामी-सी॰ [सं॰] रक गीपा ! कपिस-वि [ई॰] सूरा बारामी। पु॰ दक्ष हुनि वै राजा समरके साह हजार तुन्नेका शाह देवर करन ॥

बद्धा इन्हा यह देशा मृता रेग ! - वृति-इ र्ड् ─ह्म-ड॰ एक इस्र जिल्ली कक्षी संगीत क्षेत्री है -धारा-वरि॰ कासीक पासका एक डीवेरवाद ! नस्पेन स्रो । शास्त्र सम्भ । कपिकविम-प्र• [६] दिए। कपिछा-वि॰ ली [हं•] भूर वा गहामी १६४ दे। स्ता भूरे वा स्वेद श्तको गापः मधिकीयकै विमान्द्री रीचनी पानी। दक्ष प्रवापतिकी एक करना चेन। एउ मामक गंधडम्बः एक घोटा सारा (१) १ कविकाक्षी-सी० [हं] एक तरहवी वृद्धा एक प्रवर्ग

देवेगले, सांबद दर्शसदे प्रवर्तक और विभूके और

अवनारीमें माने जाते हैं। अधिका एक इस स्के रिज

कपिस्तवच-तः [र्गः] इंद्रः। कपिश्व-वि॰ (तं॰) मृरा, वारामी विसमें वारान्देश रंग मिला हो । दुरु भूरा या बादासी रंगः पूर । कविशा-मा॰ (सं) मान्यो छता। एक बदा। एक हारण द्याराव । कविशी कविशीका-की [मं] एक त्रकार वर्ग । कपिस•-पु॰ रेशमा बल । क्वीत्र-५० (सं] तुत्रीयः दम्मान् : व्यंदगर् ! क्षणी-सा विकाः मि विवरी । कचीज्य~प [र्ग+] सम्रोतः राम। क्षोरिका दसं ।

शिशम १४४ ।

कविसाधार्ये-३० [लंश] विष्तु ।

कर्पातम-पु॰ [सं] अवाव, अववात रिरोप मिन कर्री क्षपीष्ठ-मु [मेर) क्षणिय । कपूर्य-पु॰ मानावस देश कुरुका साथ पुपलेबका स्पर्व क्षुत्र । **बन्ती-भा• माकावधी। अपूर्वा काम**ी

कपूर-त स्वारंश्ये (यन्त्र्या एक ग्रंश्यम प्रोत्या तुछ दिनीम वह वाना है। छात्रप्रीका वस बाह निक्रमी की श्रेष के बोर बार के बाम मानी है। -काउ-३

411 कप-प्र• [क्षं 'देव'] टेरा पश्चा । कॅपबॅपी-सी खॉपनाः संप । वंपति~प [सं]सम्बद्धाः कपम-प [सं•] क्रॉपनाः देक्ट्रॅपीः श्विधिर कत् । कॅपमा~म ति कॉपना, (इकता) करना । कपमी-स्म [भं] संयक्त धनसे व्यापार करनेवाले स्वरिज्ञें का समझः अन्ताः सेनाका एक विभाग । क्या-प गोएको तीकिनोने साम्रा सगावर नमाया हुआ एक तरहका एउरा विससे बदेशिये चिहियोंको फैसारी है। स्त्री॰ (सं॰) इंदनः सद । संपातंत्रर-प॰ (श्रं] टाक्टरका यह सहायक को दवा[©] सिकानेका काम करता है। कपार्वदरी-सी इंपारंटरका कार्य था पेछा। कंपाक-पु । [सं] इवा । र्फपाना-स कि किसीको क्षेपनेमें प्रकल करनाः विकास: ₹रामा । कपावसाम-ति (सं) कोपता हुआ। केंपास-ली [बं॰] दिल्ह्य यत्र, कुतुबनुमाः परबार । मुरु - स्माना - पैनाइस करनाः यात्रमे रहना । क्षेपत-दि सि निवास क्रिक्त क्रिक्त प्रमा देवाता, क्रिकाता हमा । कपिछ-प• (र्स•) रोषमी । कपिस्छ-प्र• [सं] है स्वीपित । कप्-प्र• [अ 'र्द्ध] प्रीवकी छावनी पहाक श्रेमाः फोब। कपीय-प [मं] छापने दे रिए बारपदे व्यवस्थि भीवनाः रवगा दरना। कपोक्तिग-सी॰ [अं॰] श्रांत्र करतेका दामः देगीवधी यमस्त । – स्टिब्स – मी टाइप बंटानेकी छोटी पड़ी । कपोक्तिटर-पु [40] टाइप वैठानेवाका । कंपाक्तिवरी-स्था कंपीजिवस्था क्या । कम-वि [सं॰] दिसता हुआ। काँपता हुआ। ध्यक। तेत । **क्षंबरल~दि दे॰** कमरक्त्र'। कंबर-दि [सं] बर्द क्योंका। पु विश्व क्या कदे E48 1 क्षम-पु॰ [मं॰] कुमल; याव-विक्रके गडेमें नीचे करकते बाली बाक सारनाः करुः वद शरहका दिरमः दीनारः पानीः एक छोटा की हा । क्षवरूफ−पु॰ [सं] सनी वस्त, ≰वरू । कंपसिका-गरी [मं] कमली; एक तरहकी हिरसी । वंषमी(लिम्)-4 [मं] इंतकमानाः वनकरी दका इमा । पुत्रमा विधिवा-स्ये [सं] एक प्राचीन कामा। वंपी-मी [सं•] करही; वॉसका मेगुआ या गाँड। ■3~5 [मं•] ६ए। यमा दावा दिन वर्ण क्राना मही (मरिप्राधः) । वि बार्र वर्गीका । -बाँडी-वि गी शंस

-माकिनी-गौ ग्रंसपुष्पै।

क्रमुक-पु० [एं०] श्रंशः स्थम म्बस्ति । क्षका-की सि विषयमंत्रा ग्रीमा । क्ष-वि॰ [सं॰] योरी दरनेवाला । पु॰ (१) योर: बंगुन । क्षीय-पु [एं] एक प्राचीम बनका को अब अपगानि-स्वानका भाग है। शंदाः एक तरहका हाथा । कमारी-ली॰ हिं] दे॰ गंगरी । र्कम~पुर्मि∘ी ससः बद्धीर । कॅबस-पु॰ दे 'इम्ह'। --क्कड़ी-सी० मसी'क। -शहा-<u>म</u>• कमकका शेव । -शाव-प्र दे• 'कमक-वाय । भैवासा ने - पुनातीका कर्म्या । कस−पु॰ (सं॰) कॉसाः एक मापा कटोराः सुराहोः साँसः कॉरोफा दरतन वधसेनका सहका जिसे कृष्णमें मारा वा । कृष्णको माता देवकी इसीको वहिन थी । —सासः— पु काँसः। --निपूदनः,-सञ्ज-पु कृष्णः। --पात्र-प्र करिका वरतनः एक माप. बादक । कसक-पु [सं] बॉसाः बॉसेरा पात्रा दशीस । कमस्टीमा-पु [बं] एक तरहका अंगरेवी बाजा । कंसरबेडिय-वि [र्थ+] वर्तमान व्यवस्था बदक्षने नवी-नवा या सुवार वारिका विरोधी । पु॰ मसरवेटिव दसका स्वरवः वेसे विचारका कारमा । -पार्टी-की विदेशका पद राजनीतिक रक को वर्तमाम वा प्ररामी क्यावरयाको यभाग्रेमव बनावे रखना बाहता है। कॅस-भाषाता समासगत विश्व रूप। ∽कुद्र−पु है० 'कराम्य ।- हॅब-प काँहेके बरतानीके इसके । - हॅबा-प - हेंकी-की हैग वा बरकोहीके इंगका एक बरतात ! कसट-प्र [कं•] कई वाजोंका समृद्द वा समदा एक साथ वसनाः गाने या पत्रानेपालीके स्वरद्धा सेतः । सवसी−मी [र्न•] दंसको पहिन। वंसारावि कसारि-द्र• [सं] कूम्ब । कॅसिक−ि ६ दि दिस्टः बना इका। बंसीय-वि [मं] क्योरेट कावक वा वस्तरे संत्य रखने-वाना । पुश्रीसा कॅमका-पु॰ कॅसेका एक भीकोर इंदरः जिसपर सीनार धीरिया बनात है। र्षेत्रसी−शी॰ छोटा वॅ**सका** । ब्रम्या - इ. रेसके नये शेथमें कगमेवाला एक ब्रोहा । मिडी। क-पु [el] अक्षाः विष्णुः कामरेवः सूर्तः अग्निः वासः वमः प्रवापतिः राजाः सयः वासः गाँदः आरमा सवः धरीरः श्रम्यः मौरः पश्चिरात्र गरनः घनः सानाः मन्त्रसः सुरा जानेदः पानीः मस्तवः। - स्-दि॰ सुरादः यस देने बाला। पु वारत। कडमा कड्नी!-श्री व्यस्ति प्राणी संशे रहमी। रहमी। कई-वि व्यापिक क्ट, क्टा नेसी गरणनवाधी (गी)। -काष्टा-गी अववर्षपाः बक्द-पु[मं•]धाना। ─प्रीव~ि दंश अमी मुसदीवार गर्दनवाला । कक्डी-सी क्पी। -भीषा-भी इस्त वेसी सराबीदार गरदम ! - मुख्यी मक्दार्मीती-नी॰ दे 'कादरानीती'। ककड़ी-मां गरमी भार परमातने भी होनवाली एक देल

क्रयर-कर्मगर क्रयर~सी॰ हैं • फेन । क्रवरस्याम, क्रवरिस्ताम~प्र॰ दे॰ 'क्रांतरसाव' । कवरा~वि॰ विसमें दूसरे रंगके बाग भवने ब्रॉड विश्ववनरा ! प एक मदारकी शाही, कीर ! कवरी-सी॰ [सं] दे 'बबरी'। क्रमक्र-भ• हैं• क्रम्ब । क्रवा-पु [श•] यक लेवा, बीका बद्दमाना की अँगररी आदिके करा पहला जाता है, बीगा । कवाद-पुट्टा समाम, रही की वें। कवादा-वुटांसर, वरीहा। कवाहिया, कवाही-पुर-दूरी-पूजी जीवें न्यरोदनं चपने-बाका । कवाय-प्र• फा े कटे या बारोक कटे हर मांसकी बीकी ना विकिता की छाछाचेने गोरकर कागपर सर्वा की गर्दा हो। विश्व मुना हुवा अस्त्र-भुना। मु - करमा-भूगमाः ाठाताः बहुत् कह पहुँचाना । -होना-कसना-मननाः विकिक होना । क्यावयीमी-स्पे॰ एक दवा विसन्धे दाने मिर्वदेशे दीतं है। क्यायी-पुरु कुराप रेपनेवाला । कवाय• -- प्र• दे॰ 'कवा'। कतार-प्र• म्यबसाय ग्याशास होता व्यवसायः शेयधीनः पश्चम कोर्तनः रही का छोटी मोटी बीजें । कवारमार्ग ~स॰ दिर वररावशा । क्रयासा-प्र [न•] संयोध इसरेको बेनेका दस्तावेगा वैभामाः दानपत्रः अविकारपत्र । -च मीकाम⁻⁻प्र मानाम केनेपारको मौलाम इरनेवाके मधिकारीने मिक्से बाह्य प्रमाणपत्र । - मदीस-पु क्वाह्य क्यिनेश पेश ~(छ) हार-वि॰ क्रिएके पारा (विधी चीवका) कराला ६।। स - किग्रामा,- केमा-बन्धा न्द्रद सेमा माडिक बन जाना। क्षपाहर-सी दैश क्षताहत । सपाहत-तो [घ०] होत मोठ, धराती: कटिमारी स्माद । कवि-प्रभाग वेश किन् । क्षतिगय-९ सि वे व्यक्ति । कवित्वी-भी एक तरहका गहर । क्षचीर-वि [म॰] वका <u>ज</u>नुर्या सम्मानित । तु० यक प्रसिद्ध राँच, ग्रादाब-प्रवर्तक और विदेश करि (समय सनुमानतः १४५६ १५७५ है०)। दोराँमे वावा जानवाचा दक् प्रस्तरका गीन । -- पंथ -- त्र । कशोरका प्रशास कुमा र्थंत्र हा संप्रदाय । – एंबी – वि । ५० करीरके र्थंत्र वा र्मप्रश्नका भनुवाको । --बङ्-पु महीबोः वासुन्। बट-बुद्ध जी दुनियादा सबसे बदा बरवा माना जाता है। सरील-इ [ल] मनुष्या शतनाय । कबीला-पु॰ दे॰ 'बयोला'। क्रयोसा-पुर [स] मुख बंद्या जाति। अगुरूव जैमरी

भागमियीया व्यक्तिविशेषको नेता या सरदार बानवेदाना

समृह र स्था प्रयोग्नी स्था

मपुश्रवामा−मः क्रि॰ स्रीकाट क्रामा ।

कतुरप्रमा≠=सः क्रि≗हे॰ (द्र<u>नु</u>यवासा[®]।

कबुक्ति-मी॰ [एं॰] बानवरका निहला मान । कबतर-प एक प्रसिद्ध पद्मी बिएके पासन और जंगनी भेद होते हैं। -- जाना-प्रश्निक्त रचनेक तर कानुक १ - हारबु--पुरु एक झारो । -बाज्र--पुरु कर थक्षके, उड़ाने, कहानेदाला । स्र • -शी तरह हारद तकपनाः वहत देवीन होना व कवलरी-द्याः ऋष्टरह्ये मादाः कवेगीः मर्गशीः गरं र कवल--विक फार्को मीला आसमानी । ह मीकार । गीरुग्देशीः गंसरोत्रमा । क्यूपी-विगीलाः शासमानी । क्रमुख-पु [ब॰] मानमा स्थोत्वार करता, रहरतवस्य -(हे) इस-वि॰ संरक्त सुरूप । क्षक्रमा - स॰ दि॰ सीदार करना, मान हैना। क्यक्रियत-स्वी (ल॰) स्वीइतिः वह दत्वानेन स्वी ध् स्प्रेगामा देशेगानेची जिसका उसाई शानिये स्टेशी रपमें देखा है। क्षपुद्धी-श्री १ अमेकी शासकी रिजयो वा उठाव । क्षाबल-त [बा] स्टान अभिकास समस्ता मोहस्र बलका अग्निमें रकता, केट साफ म बोला १ - हुसा-में क्षण्य हर करवेवाला, रंजक । सुर -करमा-कारा शीयमा, के बामा (यह के प्र करना)। महामरीय करता कटना-प्र [थ] रहाका अधिकास प्रता कार् रू दरता, मूठा बाब्द सोदे का पीतनका हरता विस क्रियांके ब्रांदि भीव्यक्ते बीक्तेपर प्रम स्कृत है। इ^{त्र्यंत} णक्र चेंच । −लार-वि कृष्या स्थानेवामाः सांस्थारे-विश्वमें कवता छगा हो । स॰ -(इन्ने)यर द्वाप रस्मान क्रवार सावते, दिशोवर बार बरनेशी बगद दिना है इतिहरत-मी दे॰ 'सन्द'। क्रत्मुसवस्त-त (का) वह रशिसर क्षित्र हैन वारोबालीके इरलाहार कराम जाने हैं र क्रम-न्त्री [ल] यह गर्दा (असमें मुख्यात) यादा हरी कपर रागा हुआ पाधर वो पनाया हुआ सप्तरा। -- व —ली कनिश्चान । मु —का अज्ञाव – (मुलहक वर्ते वियासामुसार) पानशेकी कमर्ने मिनमेवाना व ग्र १-का र्शेष साँक आगा (न्योगके ग्रेंडच निवन आगा) मार्ने भरत वचता । (अपनी)-श्वावृत्ता-अवन स्थ्या वशास करना । नमें पाँच, पेर लडराये हाना-राष्ट्र का तिस करीन दोना। वर्धत एम दोना । त्यों साथ स जाना-मरत स्पतन बाद स्थाना बभी श भूकता।-सै खडकर आमा:--मरत-संश्त वचना, संदर्शनन दाना ! क्रमिस्साम-पु [भ] बर रबान अही मुद्दे बाद वर्षे अही बरामधी करें हों। क्रम्य-म [अरु] पहल, पेरतर थाया - अमृ वय-**अ॰ समयते वहाँ** । कारी-अरु (कार्नाची) विद्यासमय । अपनि-वर्गा वशास्त्रः।-का-करता, भरतेशे । - म कमी-रक्ष एक दिन, विश्वीनन विभी शब्द । क्षापुर-भ वे विदेशी । क्मोसर्-प्र॰ क्माम बनानेशानाः वित्रस्ताः ब्रासी वी

बड़ी वैद्यानेवरण ।

क्षकमा! –स॰ फि॰ दरना देस स्थाना ! क्षकमामां –सः कि दशकर रोडमा; दरायाः गैसाना ! क्षकेसा –पु देकेशा एक मेर !

क्सफोछ-पु दे 'क्सकोक'।

कबदा-पु॰ दे॰ 'कबरा' ।

क्षणमार-पुपक पेड़ जिसको अभी वरकारी और धारू तथा कुल दशके काम शांत है कोचनार !

कचपण-को थोड़ी वरहमें बहुतती थोजेंका बमा है। बाता विविधन: कफ्टल ! कचपरिचा कचपणी-की॰ आकाशमें पूर्वको और विधार्ष

दैनेवाका छोटे वारीका यक संमूबा कृषिका मखवा यम-

कीका देश सितारा । कथवची-स्त्री चमकदार देश सितारा ।

क्रपर्द्ध अमाया – पुण्क तरका रंग को बरापन क्षिते भारामी दोता है।

क्षप्रकृत-भी क्षमा प्रत सानका सन्तः कष्क्ष । कृषरकृत-पु क्सक्त के देना, पूरी मरम्मतः र वटकर

मोजन करना।

क्षणरमान-पु॰ क्षपण क्षेत्रकः माराचीटः रूपने वण्येः बहुतसी वस्तुमीके पक्षप्र सीनेदे कारण यववणे होता । कृषरमा॰-स क्रि कुषरुमाः सीरना जुब सामा।

कचर-पचर-पु नियमिनः किमहिन। कचरा-पु कृता-सरकट रर्रवा निरोका शैक मारि पुणकाः

बाहका केदार मंद्र उरक्जा क्याही। स्पृत्ती रेपार । इन्दर्श-को प्रक क्या विश्वका प्रक स्वकारिक काम भाग दे बहुता पहुरेस प्रवास द्वार पाट करने। व्यक्षी क्यालिक सरकारी। शिक्येदार दाल । † बीमें सके हुए भाग्न, माधिक कहरे किसी निर्म और समझ क्या हो। में हो भीर प्रक

दानों छे सुक्त पनेका पीदा।

क्ष्मकोम-पु एक प्रकारका नगढ ।

कच्चोंनी-सी रीट मापनेका यह मान विस्तांतीका वासवी मान।

क्षाहरी-न्त्री॰ दशकासः अदाकतः दरनारः दनतरः समाय।

कथा-त्यो॰ [सं॰] इविनीः श्रीमा । कथाई-त्यो कथापनः अनुमवदीनताः दीवा बुटि, सामी । कथाकु-वि॰ [सं॰] बुट, कुटिलः अससाः बुध्याव्य । पु

क्षचाट्टर-पु [मं•] बनमुगा ।

सर्च ।

कचामा-भ कि कथिकाना, आगा-गोटा करमा । कचार्यभ-स्रो कथिमन्द्री गोथ ।

क्यापम-नी सर्गादश्यश क्रियशिय ।

इचार−५ नरीड दिनारेडा छिछ्हा और समा हुआ यह ।

कवारनार्ते – छ कि एएएइसा फीवना । कवार्यु – इंडान आनु लाडिके इस्तर विस्पर समक्र, मिने, सरावे आर्थि छिएको हो। बेटा असम्ब्य आरिक इस्तरे किसे समक्ष्यियं सिकारो होती है। सुन-करना

या बनामा~स्व वीरना । कविया-पु वीमने वनाया आनेवाला एक प्रकारका समक।

क्षीक्षी -- स्वी कवपविवाः ववशीता वीशः वाहः। अ--

र्वेषमा—वॉल वैठना । —खेमा—मरमेके समय दॉल वीसमा।

कञ्जू—स्ती॰ (१) [सं॰] एक साथ संद, पुरमों नंडा ≀ कञ्जूहरा—पु भीशी वेंदीका कटीरा, प्याका !

क्लुहार-पु चाश पर्वका कटारा, प्याणा र क्लुहार-पु कुषको हुई थीन, भर्ता । सुण-करना,~

विकासना-मर्गा वना देना, पीयस्य देवम कर देना कपरवादीसे वरतकर चीवको नट कर देना।

कचूर-पु॰ इस्टरीकी चातिका एक पीपा को ब्लाके काम आता है। क कटोरा ।

कचेल-पु॰ (सं॰) संबद्धे प्रवासी यद्ध साम वॉबनेशी डोरी भा क्पेटनेका कागज।

कचीका~पु कीर्द नीकरार शीव चुमानै-गण्डावेशी किया। कचीटना—वश् किश् खुमना, गप्तना शिक्षी प्रिव शनकी याद कर दुमनी दौना।

कचोना−**ए० कि भुमाना यक्षाना** ।

कचोरा=-पु= क्टोरा ।

कचोरी"-जी कटोरी । कचोडी कचीरी-ची चरद या फिसी और चीक्स्प्रे पीठी सरकर बनायी हुई पूरी समीसेका मसका सरकर बनायी

प्रदे होते विक्या ।

क्वार-प्रमि] असीव पीपा।

कचर-दि [र्स] पुरा: गंदा: दुष्ट कमीना । पु॰ महा, - छोड १

कचा-वि अनपदा, अपदः इरा (फ्रक): ऑवर्मेन धपाया हुना (सन्धा बड़ा)। जबक्रवराः जिसके प्रकार बजर हा (पारक सभी कुछ कभे हैं) अन्त्रंपुट छाप न निना क्षणाः मिट्टीका बनाः प्रामाणिक तीस मापसे कम (क्या सेर, क्या कीया); जो परे रूपने न हो जिसमें कार-धाँट, रद-परक हो छक्के (क्या मर्छाना); जो निय-मित रूपमें बाकायदा न दी (क्षयी रहीत): अधिक दिन ल दिक्तेवाका (कवा रंग): पूरी बाह्डी म पहुँचा हुना; अपरिवक, अनुमवदोनः क्षिप्तमें भैर्य, इद्दाः म हो कम बीर वंदिग्मतः अपद्व अनादीः अनम्यरतः समुन्धे (गीरा)। [स्री 'कच्ची ।] पु ग्राब्धा ग्रञ्ची शिसार्दः मग्रीदाः खरीः कलपये। —श्रसामी—प्र वह असामा जिस खेतपर कीर्र स्वापी अधिकार म हो, शिक्सी असामी। व्यो वातका धनी केम-देवमें घरा न हो। - काताज्ञ - प्र तम कार्रि छाननेता कामवः। कर बरतानम जिससी रवि रटरी म दुई हा !-कास-पु॰ कमें गाउँ, बलारच जारि का काम। -कोइ-५ सुबली। गरमान्धे बीमारी। ~गोटा−पु भुटा गोदा। −चदा−पु म पदा दुआ बनाः सीग्रन्ती प्रजबा भग्कार प्रदेश बरन बाग्य श्यक्ति (बान्फ आहि)। - बिट्टा-पु पूरा विपरण भुग्या क्षाक, क्याः विसीका शुप्त या गोपनीय वार्ने (शीकमा शुनाना) ।-ब्ना-पु (रमा पुराधा तुमा चूमा ⊢जिल-पु मूर्ग इस पेरे पर जानेवाना मान्यी । - आह -र्शीका-पु शीवका बीहा -तामा-पु वेजरा भाषा-क्मबोर शोव । -पद्धा-वि शिगा-भनतिमा ।-पुन्मा-

यु रकान विशेषमें सकतिन पछा-गोरमपुरी कालागाती

आदि । -शामा-पुरु रशमका बागा भी बरा स गया हो।

क्रमलक~क्रमीन पु≉ विष्मु । ∽शख∽सी क्रातकी देंदी । −पायि-क्षिए कमानके रीरेको भवनी और गाँवना। -श्राहा दि॰ क्रिसंके क्षात कमकत्वी तरह की । -वैद्य-पु॰ एक बीक्याका दीना श्रस्तीर्ने दोना । वित्र काम्म । -संयु -संधव-पु॰ तर्व । -बाई-सी कमाम-सी॰ [बं॰ 'कमोट'] भारेश पुत्रमा क्षेत्री हरू'। [fir] बेंबल रोग, पीकिया। -अय -शू-पु नद्या। -मप्टसर-पु॰ क्षमोदरः समोदिन सप्तरः । -सप्तरी -सम-पु॰ इनकारे **वह । -धो**निः-समय-पु॰ −की सेमा:विशेषका नायवस्य, संयक्तव । -का-पुर क्या। - बन-प्रकासमेका समुद्दा - वाय-सी एक कीमें अकसर । सुरूपर जाया-स्पारंस बना। रीय विनर्में भरतें शेषी हैं। याती है, वीकिया । -बोसना-कवार्यर धाने, बीबो रमोबा बरे क्सासक-पु॰ [र्स॰] झेरा करक । रिना ! क्ष्माका-पु॰ रपर्शेते सुवला पैश करनेनाका सूँबी शायक कसामा—स॰ कि॰ सम् उधममे वैद्या वैद्या करमह बडाउँ क्षीशा सहै कल मारिमें पहनेवाका बीहा ! सीर्व [संव] चवजाना, पैदा करमा। परकी कुछ विशेष मेगा (नार्न स्रमी। पना एक नरी। एक वर्षकृत्ता एक मीबू। -काँता बारी बादिके काम) शिवमद्देशक द्वाना राह्मना स्व –पति–दु• विप्तु । करमाः वस्तको भम शारा सवारमा काम नेते बतार क्रमधारुर-पु (सं॰) कमकोंका समृद्दा कमकींसे भरी बनामा (ग्रेस, चमवा १०); संबंध करमा (शार पुष्प १०): और ताकाय साहि। क्षत, देश्याश्रुष्टि करना हे बरामा; ग्रीतश्र राजा ब्यासाकार-वि [र्ष] कारुदे साकारका । पु॰ ग्रणपदा करना । (कमाची हुई बेह या इड्डी-ध्यावासी सीड थक मेद । गठीका पमाचा हुमा स्ररीर) । कॅमसा**श**−नि॰ (सं॰) दमक्सी आँखोंनाका । (शो॰ 'दम-कमानिवर-पु॰ क्यांबर ! साक्षी र ।] ५० कमसगङ्गा । कमानिया∽षु वीरंशन कमनेत्र । विश्वमानेऽस्य कमसामजा-नी॰ (तं॰) तक्नीको नही बहुन, वरिहा। मेहराषदार । कमामी-सी सोई मारियो तथीती भीर हुए गुवारी इसोस्य । क्रमकाखवा~ली॰ (र्रः } कहमो । हुने होलो: वंशी भारिका हारीके बहरको ग्रहका उरमा बह पेटी जी अति सतरमें ही बीमारीमें परनी मापे हैं क्सलासन-पु [सं] नद्याः व्यक्त नसन्। न्यासन । शारंगी बवामेका गवः वहरं मारिका नक बीदार रिपरे कप्तसिमी –सी॰ [सं] इपक्षा बीवा वा डंडी। इपक समूबा कारका कारकसे पूर्ण जकाश्चन । -कार्रा:-बच्-वरमा कैंसाकर सोधन है। -वार-(१० कमानीराना) य सर्व। कमायज्ञ-स्री॰ सार्गी वज्ञानेकी कमानी । कसमी-भी रादेश इंडल; [मृं] पश्चमृत् । कमाक-पु॰ [ब॰] पूर्वता, समाति। पराकाशाः निउ " क्समी(मिन्)-पु: [सं:] त्रहा। कीशका ग्रम औहरा अस्भृत भगतग्रारिक कार्या दर्गरश नेदा । वि सर्वोत्तमः पूर्णः मतिसम । सुर्-वरमा कमस्थान-वि सि॰] क्यक्स अधिवास । क्सहेश-पु [एं॰] क्लि। श्रद्भत कप्रकता श्रीम्बतारा गरियम देना। कसाखपाबार-पु बाबुनिक द्वराहा विमाण (१८८) कसवाना-स॰ कि॰ 'क्नाना'का है । कससरियद-५॰ (मं 'कमिसेरियर') क्षीत्री रसरका प्रवंध १ १८) । १ ९५में असने अंग्रेजीने श्रेशनियमनी शानि रहा की और 🧚 २२में ग्रुवंधि कृतानियोकी शार की बरनेवाका विभाग । रिया। तुर्व अवातंत्रका अवस रोट्यति १ ११छे १ रेट कर्माटर-प [मंग] मेना-मायक, मेनाका एक निशेष अक सर । -इन्-वीच-पुर प्रयाम सेमापति । कसाखा-पु॰ भण्यारा है लिए सही बानेवानी हरते हैं कमा-भी [त्रं] छत्रके। कमाइष्टर−सी क्यांनीः घीटी क्रमान । क्सासियल-स्य [श्र] रहना कृति। १ कमाई-स्थे परिममने पैरा दिवा हुया वैसा वा मारू, क्यास्त्र∸वि क्यानेशता, क्या के कसिटी-ली॰ [मं] दे प्रमेरी । उपार्तित भन्नः नम-पान्यः सबद्धाः परिश्रमः कामः सन्नुतः कमिया(म)-विक [मं] कार्नाः स्वतियारी । नि वैद्या अनामेका भंबार जयमा बरतुकी सुधारमं बनानेका 'क्रमिको ।) क्षित्वर-पु॰ (अं) क्षिरनरी वा क्रिमना प्रेरे कमाक-विश्वसार्वेशमा कमासून । अभिकारीः क्योशनका शारता सरकार में महिनिरिस्पर कमाच-पु॰ एक रेग्नमी कपश । ब्राम बरनेवामा अविदारी । श्रमाची∽रो शुद्धे दुई ठीची। कसिष्टवरी-न्यो॰ [बे॰] चमित्रस्ट बरोम प्रौण स्थित कमाम-मा (पार) पनुष् शंत्रवनुष् मेश्रावः थी तमोंके क्रियम कविश्मरका क्यारी । बोद्यारको हरी या गितिबसे किसी सारेबी बेंचारे नावनेका क्रमी-स्पै कम दोना करवा। दुरिः न्यूनावीण वत्र मात्ररामधी एक बसरता ७ तीए। -शह-त कमान बीताडी ! —हैसी –भी अम या खाना होता. भवान बनानेरामा । –चा–पु होतो कमानः शारेगी बनानेका मत्रा भुतको । -- इतर-नि मेहराक्तारः कथान वॉपने-अधिकता । कमीज्ञ-सी बाद भार बोलरसार दुरता मारी बामा ।-पुरुष-६० हुएहा । -(में)अध-वि जिस्ही क्यांत-मी [का] बात, हमना ब्रापेट दिन शिला मर्वे क्यांगमी कीं। शुंदर । इह -वरिकार-वीर वेंक्मेंके ह

ভাৰত-প্ৰত (দা] **প্**কৃত্ব ।

कसकोल-पु॰ [फा] मुस्ततमान प्रकारीका मिसापान को दरिवाई नारियसका होता है।

कज्ञभी-सा पातल बारिका बरतन सुरयनेका जीवार। कश्चरा - पु काजस कासी मोंगोंबाका देख । वि कासी र्भायोगाजा विस्त्री सार्गाम स्था हो। --हें---

कासायत ।

कतरारा-वि॰ कायक कमा हुमा, अंत्रनमुक्ता काला । कासी-पु॰ एक मान । † स्त्री दे कमसी²। कसरीटा कम्सीटा-पुनामस पारने-रदानेकी बोधीसार

निनिवा। क्यारीटी क्याफीटी-स्मे सोय क्यारीय !

कत्रसा−पु• स्वाद रंगका एक एथी मटिवा। वि काकी **व्यक्तिकाः। विस्त्ये कॉस्ट्रोमें श्रेष्टन स्था हो।** क्रकसाना~म॰ कि॰ स्वाह पत्रमाः मागका शैवाना । स॰

हि • कावस स्थाना । कस्रक्षी-को काहिसा करे और वंबवळी छुक्दी। साकी

ऑसोंबाको गाब पक तरबबी भेड़ा गोरतेका एक रीगा एक तरहाई। मछली खिल्लांका एक खोबार की मार्बी क्दी वीजड़ो मनाथा पाता है। इस जबसरफे किए मिटीमें गीनकर उमाने गये जीन केने नई: एक उरहका गीठ को बरसातमें मित्रापर कार्टिमें इस म्बोदारक्क गाना

बाता है। ⊷श्रीब्र−सी॰ भागों की तीन। बजार-ली भाँद सौंबी ।

कता-क्षा वि विश्वरीय मादेशः निवृत्तिः भाष्या सुन्ताः क्ष्मीव्य-पासनः निर्णय दा न्दाय करमा । -प्-कृष्णाही--ली ईवरेडा भारेच सुदाद्य य**न्ना । −कार−न** संयोग-क्ष क्रमानकः। सुरु −क्षाका-मीत कालाः −कर्माः -होबा-नमात्र वा दूसरे अवद्वी फर्क्स विवत समय-पर नदा न होता।

क्षाक−५ वे 'काकक'।

कडाकी-सी दे 'क्रावाची ; * एक मोधेवाजी । दक्षाया−पुरक्ष तर्दश्ची व्यवधी काठी।

क्रिया-त [भ] द्वन्ता रहा। -वसास-वि । प रामदा कगानेवाका ।

क्जी-ररी [पा] टेहापन बनवा श्रोप ।

क्षक्रजास-तु: [सं] क्षात्रमः वातिमः शुरमाः शात्रकः एक एंद । -ध्यञ्च-तु दीमा । -शेचक्-पु धीवर, दीवा

कामसित−पि• धि } काल्यम प्रता हजा। गाँवा हजा त्रिममें बाक्त रूगा का व

काकसी-मा [मं] एक एरहको मएगी। रोधामार्थः वारे और येपक्क मिसासी बना हुआ एक ह्रव्य ।

क्राहाक-पु [तु] एशिकार्र रूसकी एक तुब आति औ बीरता_{के} लिए प्रसिद्ध हो राक्, खुटन्यार करनेवाणा । काहाकी-सी सुदेशान शहबनी।

कर कर-पु [सं] भागा साना। गमेशा शिना निवह कुछ। कर्तवरती-सी [मं] दारहरूते ।

कर्रव-द [तं] एक संगीत बाया बाज ।

बर्टमर-५ [६] बरमी बृध्य ।

करमश-सी॰ [सं] मागवता, रोदिणी, मूर्वा भादि पीने । कट-पु॰ [ti] हाबीका गं*रवल मध्यिक, श्रीविः चटाई, टक्की बास सरपतः ग्रनः भरभीः श्मग्रानः सस्ताः व्यवि कता समदा एक स्वाह रंग ! वि अविकः एम ! -- फट--नि , पु॰वे "फ्रमर्ने"। -कुटी-की॰ क्रोपरी !-कोस-पीकदान । --सात्क-वि सर्वमधी । पुण्रवारः कोणाः। –पृसन–पु –पृतना–स्ताः एकः तरहकी प्रेतारमा । --माक्रिमी-कौ अंगूर आविकी द्वराव । ~दार्करा~सी॰ चटारंका छोटा <u>टक्</u>याः एक पीना। -स्थात-प निर्तन भीर **प**रिः। कट-पुबि•] कार तराया ! -पीम-पु सर्वे कपहोंके

इक्ट वह नवा क्ष्या की क्ष्माईके समय ही बट यका हो । ∽फ्रोश−प्र वह शाबा मारू को फिसी तरह कुछ खराव ही गवा हो।

कटक-प्र• [र्स•] सीमा: सीनका क्राः सेमा: कीका पहारका मध्य भागः राजवानीः धरः समुद्रः वकः हाथीके बॉडपर कगावा जानेवाका छहा। समक्षा क्रमधा क्रमधा क्रमधा **उशिसादी ध्रमवानी ।**

कटकर्टुं*-का॰ सेमा, फीब ।

कटकट-सी वाँठाँके एक-इसरेफ्र बगनेसे वानेवाला चण्दादु [सं] फिनावि विदेशाङ्का कटकटनाच--थ विद्**रे 'घरक**राना ।

कटकटामा-म कि वॉव पीसना। करकरिका-स्री एक तरहकी हस्तुत्र । कटकवाका-म मियादी है।

कटकाई॰-स्तो॰ बटब_े सेना । कटकी(किम्)−पु(सं]पदाका

करकाना-वि कार खानेवाला विश्वविद्या होथी। य লুক্তি বাক।

कट−'कार का समासगत और विश्वत कप । *−घरा−प* • दे 'करवरा । ~ताक्र~प दे 'करवार । ~हेती~ नी बाट रेतनेका एक भौतार ! -बाँसी-सी एक तरहका ठीम गीम ।

करशीरा-५ स्वाइनीरा। कटसी-मी निकी चपता ऐस्ता ।

₩टन-९ [मै] मकानको छात्रन वा छत ।

कटना-अ॰ कि वा दकरे दोनाः द्वरप्रश्वोनाः विश्वक दानाः दिन्ती चारगर योजदा धरीरमें पेंछना, बदनी द्दीनाः विमनाः भएग दीनाः दूर दीनाः शेवनाः सत्म होनाः कवित होमाः काश जामाः कतरा जामाः बुद्धमे मारा जामा: मिक्सा वाच रूपना (माभ करना)। रह होनाः खारित होनाः मुख्य या मिनहा होनाः याने या नवारीके रूपमें विभावित होता। किसी संस्थादा पर्य निमानम वा बराबर दिस्सोने वेंद्र वालाः गानी कारिसे राहमै भारता पुरा किया जाना। (इ.टा) ऋग्र-हि न महाराः धे खगान । अ० कर भरना-यटकर सर वागाः सर् भरता । वटपर समक छिद्दना-दुसिवा-

को और दुष्प देमा अष्ट बाद दुएनी कह पट्टेपामा ।

करनामश्—पु सीन्बंढ । इटनि॰~मी द्यार मसक्ति।

5र इथेपी ! -पार्था(दिन)-दि अंज्ञहोंमें ही सब बक हेकर प्रदेश करनेवाला(सामु)। ⊷बास्त-पु॰ साद्य करवास !-पासिका-सी॰ सींटा ! -पिश्वकी#-शी॰ दोनी प्राप्तिको मिलायर बनावी हुई विवकारी । -वीवस -पु पाणिशहरा, विश्वह । -प्रश्न-पु बायजा अपर बाला, इबेटीड्रा उक्का भाग । ∽वाक्क-पु० दे० करवास । -भार-पुरु करका बीका मारी कर । ~सर्व -सर्वद्र-प करीयाः श्रीवकाः। -साख-प प्रभा । -मासा-यो॰ अपने मानादै स्पर्ने साम देनेवाको सँगतियोको पोर्रे । - साम्रो(किन्)-पु० स्ते। -मक्त-वि अर्धे मक्ता प्र• पॅथ्यर कर करनेका दविवार । - अस-प्र॰ कवार्ट । - सह-प्र॰ मापन ! -वारण-पण है 'बरवारा'! -बास-प धड़ा साम्म । -वासिका-मीश्रोता हेटा । -बार्धा-करीको । -वीर--वीरक-प्र॰ वर्गरः तथकारः रमञागः मधावर्त देशका एक आधीन नगरः चेति वेशका यद्व प्राथाम नगर्। – हास्सा – नो 🕒 हास्य – पु॰ डेग्सी। ─साव─त क्रिरगोंका और पश्चाः दागको क्रमजीरो । ─स्त्र-पु० विवादका गंगम । ─श्वाद्धां(छिन्)-पु० शिया -स्थम-प्रतासी। कार्ड-स्री छाटा दरका यक छोटी विक्तिना । करक-रते वेशावका बीहरभोड़ा और बनमके साथ होता। भीड़ी-बोड़ी देरके बाद हानेवाकी पीड़ा टीस ! पु॰ [सं०] बर्जवमु: बरबा; जारिक्षसकी स्तीवकी। अमार; दान; गद्द स्तः वस पर्शा ४४० । **करकच-प्रश्नाहरू पानीसे बनाया जानेबाला समकः** ष्येष्टा । क(क्ष्यद्वारी -- ५० अमध्यास । करकट~तु कृता कन्तरहा † केंद्रिकी कर्णातार जावर बिगुम इंटाल, शलरी आदि बनाते हैं। करकटिया-सी एक तरहण्य गारा । करकाना-म मि भाषामध्ये साम परमा, सहस्राह नुमना धाननाः। क्रफ्रशाय~५० एक काशा वशी । करकरा-वि॰ दे॰ 'हिर्दाहरा' । प्र करकरिया । करकराइट-ना २ 'क्रिक्शियाद'। करकमण्नित है अर्थशं। करका-सा [मं+] भोता । करराना⇔म मि॰ जीशमें झाना। करन्या – पुरु उत्तेत्रमाः तावा करणाः यद पश् कार्तिसः । करगता-स्थे॰ करवरी । करगम-५ (का॰) गिष्टा व वीर् । करगह-पुरुद्देश दरवा । करगहना। - वु मरेका। करराही-भी। इब तरहड़ा अग्डेगी चान है करगी-मा भोनोडे बारगानेमे बायमें शर्था वानेशनी करमा-पु बरता दुनिका बंदा वह नव्हा निगम धीव सम्बद्धाः युमाना कपना बुगता है ह करणा-दु दे वल्छाः वक्षित्वाः

करणस~सी॰ एखँग, जस्त । करछिया-छी॰ वानोदे दिनारे रहनेशकी एक विदेश। करकी करससी -सी देश 'हमरी । करहता -पु• दि 'क्टल्का'। करर्रायाँ = नि सी । इस्ट कर काली स्यापा (बाव) । करद-प्र॰ [६॰] कीमा शाधीओ दमस्यो। निप कीवा पहादशाहादि शकः नारित्रतः यद्वशाताः वसमय देशाः करटक-प्र॰ [मं] क्रीमाः चीर्थ विचाने प्रश्नित बरासाः करटा-न्यां (संग) कडिनारंधे यहा वानेराही यार राहे-की करपदी । फरटी(टिन्)-पु॰ (तं॰) दानी । करत-प्रश्निक सरहका सारत करकरिया ! करण-१० [म] करताः जिया जियाचित्रेके कि बन्नि वार्ष जावासक शाधनः औबार। इंद्रिय गृहीय शास्त्र वतानेवाका कारक (ब्बा॰) हिता देश धवा स्थान वापरे द्यालके भेद्यम भाग गतानकी किया। कारका रक रिपर माना विसदा वक विभागा गांवरानी वक विदान करली मी एक चपत्राधि एक बंगसी जाति दस्तानेक रिनिंग प्रमाणः परमारमाः उचारमः एक रविशेषा वह एमर क्रिमका पर्गवस स तिब्दल सके 🕫 धान । करणा-भी श्री वे बाब हो। यह श्रदा रिस्स प्र बरायुक्त श शिष्टक सुद्धे । करणीय-नि [मं] दरने नाम्य दाये। कासच-न॰ बाम, बर्मा हमर, शुगा बीशका मशाजे दावनेवाकः काम (दिशाला)। बाह्रीगरी । करतिया-वि के करवरी । करतकी - वि शायी प्रवाधी। करतव रिधानेयाना । करतरी = न्यो है करेरी : 'करतनी । करतम्बरू--पुरु करन बारू कामः धर्म । दिरु करधेर । करता-पुर दे 'दले । गुरिरमा अधिकारी। एक वर्षहर्ष --मामवाम-प् मंतुकः वरिवादशः मुन्दिवा और #F थक । -धरसा-पु॰ वह जिल्लो महत्रो, माराने गर गाम हो चर्चाभिकारी। करतार-त॰ दे॰ 'एको'र ॰ दे॰ 'बरवाठ । करताराव-छो॰ करवापन क्लांब रेरबस्के क्रेनाक नामाः सामे । करती-नी कुनवासा गाम हुइनेके बिर साक्ष्मे पूर भरकर बमाया द्वामा नवनी बहारा । कारतल-भी काम बरमी। निष बसी गुणा वर्षी **कामृति**ण-मी० दे वरतृत । बद्धरा-पुरु तिथ देशवर्गा बाका ववत्री शिमा । करक्-ना सुरी चाक्र । द 'कर'वे। कर्म्स 🗝 करेंस बीया पाया माना कारण-प दिकाद सनाम आर्टिम निकारुमा १९ बर्स्टरा कृतं बर्स्टरस्य समस्यी होनियाली मृत्यी वर west 1 क्दर्शना-५० धाना । करधनरं – श 🔘 उर्वनी । करूपर्शाल्यी एक शहराधी बस्से श्वका शाण है। भूत का रेशमधी पनी हुई सेंखका ह

[हिं] पोत्रह भारिका एक दक्क्लरार वरतन ।

ार्ष । प्रशास का का कर्यारेन हिन्द मंत्रका । सुक्त कराना-नेरका पहा करायेके किए मंत्रकी सकिसे करोरेके प्रशासा

करोरिया-सा॰ दे॰ 'क्योरी' ।

कटोरी-सी॰ ग्रीरा कटोरा; कटोरांकेसी शक्कवाणी भीवा कॅगियाका वह माग विश्वमें रतन रहते हैं। तकवारकी गृठ-मेंका कपरका गोला मागा हरी पृठिमोंका कटोर्डुके बाकार

का बद्द माग जिसमें फूक निकल्ते और रहतं हैं।

क्योक-वि [त] कावा। पु कावापमा चांबाक। क्योती-चो किसी रकममेरी (वर्मादा स्टग्री आधिके क्यमें) कुठ कार लेगा। —का प्रस्ताव-किसी तिमामके क्यापर कार्रवाद महत्व करनेते किए उनके प्रपंकी मीमसे कोर्स छोटी। एकम करा देनेका प्रस्ताव।

कहर-दि कार सानेवाका। वह जिसे अपने मत वा दिनासका अविक आग्रह ही, हुराग्रही; अस्तरिम्नुः अनुवार विवारवाला ।

कष्ट्वा-पु॰ दे॰ 'क्रदा' ।

कहा-चि॰ साहा, मोटा-ताबा (इहारे साथ प्रमुक्त) । यु ब्रवहा: वृँ। सु॰ कहें स्ताता-किसेके कारण किसेके सा स्टब्से तिगाहपर बड़ी हुई चीजका नष्ट होसा ।

कहार-पु॰ [सं] स्टार ।

कहार - पुन हुत पुन्तर र इहा-पुन्नोतको एक शाप, अरोक्का शेलवाँ सागः एक प्रकारका (काल) शेहूँ।

कर्कल-४ (स॰) द्वावपन ।

कट्याना= न कि है 'किन्वाना । कट्वर-वि॰ [सं] प्रणितः देव । पु॰ छाछः चटनाः, अवार

आदि । कर्रगर-वि॰ मोटाः वडा ।

करा- (वर भारा करा। कर- 3 (सं) यक मुनि जिलके मामयर पञ्जवेदको एक प्राणिका मान वरा। कर माध्यका भाष्यका थे। अनुसरक कानेवाका। यक स्थानवर् आक्षण । - बाही-सी। एक क्यनिवर्।

कर-पु॰ एक वासा; 'काड'का समासगत रूप। विकार का बना। बर्धिवा निकृषः कटीर् (समासमें)। -क्कीकी-की॰ प्रयप्त । —केका--पु॰ एक परिवा रेखा जी बना और क्षम मीका बीता है। —कोसा-पु॰ व्हकोश निविधा। -गुसाब~⊈ एक तरहका अगसी शुसाब । -शुसाह--पु एक प्रकारका गुलर कहमर । -धरा-पु काठका वैगक्टार पर वा पेरा वका विश्वता जिल्ली कीई जंगली मानवर रक्षा था सक्रे । —घोड़ा-पु॰ शोहकी सवारीका ण्करबीम । ~जासुन~पु परिया जासुन छोराऔर अधिक राष्ट्रा जानुन । -साल-५ दे करताल'। --पुराली-की कारकी पुराली का गुरिया किसे तार वा मृत दिलाकर भवाने है। बूसरेके आदेश वा बग्रारंपर काम करनेवाना व्यक्ति । - व का साध-एक समाधा जिसमें बटपुरुतियोंका नाम दियाया जागा है। -फस्टा-पु इ.इ.स.चा । -कोइबा -फोड़ा-पु एक विदिवा जो अवनी कोंपने पेहोंनी छाल छेड़कर उन्नदे मीपेदे बीड़ोंकी दानी है । -वंदन-इ बादधे नहीं वा छाला विधे हाबोक वीवमें पहमात है। —सीसी-को० दे० 'कर-बोही'! —साय-पु धीनेला नाय! —सेर-पु मूंटला पेड़! —बेस-पु केव! —संद-पु॰ लगाड़ी या करते पेड़! —मेसळ-पु एक छोटे कालाएक! पेड़ कंडी! — -मिल्रिया॰—वि बो काटकी माला पहने हो! पु बना हुआ छाड़!—मस्स--मस्सा-पि० मस्त वेपिका मुस्ति। — -माटी-को कर सुर्मार वहीं को नानेवालों फंटकी छिट्टी!—मुक्का-पु॰ कम पड़ा दुला कहर, कछर पूक्क मुख्ला वा गीन्थी! —सेमल-पु सेमलकी बादिका पक हुए! —सोला-पु एक प्रकारकी हुसी-का बनावरी, बनपरस्तीको हुसी!

का नगरिक, नगरिक है। करवेश – पुरु वैश्वेषकी एक वादि । करवेश – पुरु वैश्वेषकी एक वादि । करवा – पुरु विश्वेषका । करवा – पुरु वैरु 'करवारा' करीया; कारका संबुक्त । करवा – पुरु वैरु 'करवारा' करीया; कारका संबुक्त ।

करु(ी-मी छोटा करुए । करुका∽द बॉदीकी बॉकियॉ वयनसा, वमरवह् आदिकी

करबस्य-भी। है 'कटीत'। करवता-तुः ने 'कटीत'। कराकु-तुः [सः] है। कटासुः । करास्य-तुः मदी बादिसा क्रिनारा । करास्य-ता करिस्सा क्रिया । करिका-भी। सि] चरिमा मिट्टो।

माला भी वर्षोकी पदनावी मार्टा है।

कटिन-वि॰ [चं]करा सरवा दुरसाम सुरिक्का टेग। यु सार्था। ॰ सी॰ कटिनारी कर। -यूस-पूरक-पु

करिनताई - ना दे 'कठिनाई ।

कठिला — ली [र्स] श्रीनीको मिठाई। मात्रन नगानेका मिहोका नरनन ।

कठिनाई—न्यां कठिन दुरसाय्य दोना; बक्षः संग्रट दिक्त संसर । कठिनिका कठिनी—न्यां [संग] काली वैगर्टा रिजानी।

करिनेत्वा करिनी−ली [प्रं॰] काली वैगर्छा (एगुनी) - एड्वि मिट्टी । करिया∽वि॰ ७३ (एटवेनाला । प्र. वक तरहका साम

गर्हे। श्री यक सरवस्त्रे घाँग। कटुला~पु॰ दे 'कठला।

क्युकामा=−न कि स्राहर काठको तरह कहा हो आसा। क्युकामा=−न कि स्राहर काठको तरह कहा हो आसा। क्युक्तर-पुर्व-क्युक्तर ।

करका करमार--विश् कर्रात करा ।

कटर-विश् [मं] ब्रह्मस्य । पु सुक्रांनम् ।

करक-प्र प्रनिर्वेदिः कमानः वस्त्रीतः एक भागार ।

करेसा−५ काता। करेसी−भी होराकस्ता।

क्टावर-५ [मं] व्ह उत्स्रीत ।

करोरमा न्या [मं] बहायम राजा निर्म्यता।

```
करबंत-करीब
  को पर बाने कम पने भी।
करहेत~प० हे <sup>(</sup>बरहेस<sup>3</sup>।
करहेस-प॰ (सं॰) एक वर्णकृत् ।
करह १ - प० क्रीतः यथ्यकविका ।
करहनी-न्हों। एक तरहका यात ।
 करहाट करहाटक-प॰ (सं॰) कमलबी बरा कमक्का
  क्ताः ग्रेरफन् ।
 करबी - भी एक प्रशासक पृक्ष ।
क्रॉक्स−प॰ क्रीच प्या ।
क्सीराण-प॰ (पं०) बाट, बाजार: बह स्थान बहाँ कर सा
 लुंगी शकती की काव 1
करौत-प्र॰ भारा।
करोंसी~प॰ जारा श्रकानेवाका ।
करा १ – सी १ वसा ।
कराष्ट्रत−त॰ दे 'करेत'।
कराई-सी मूँग, अरहर आदिका दिशका नी पशुनोंकी
  सिकाया जाता है। बरने वा बरानेका माना बरने था
 हरानेकी अवस्तः । बासायम ।
कराबात-प सिंश्री हाल्या प्रशास भाषात ।
करात-पु॰ एक वसन की कममन वै॥ प्रेनके बरावर बीवा
 है और सोमा बबाहरात आदि शीकनेके काम भाता है।
करामा~स॰ कि॰ 'करना'या में ।
कराबस-स्रो [अ ] समीपताः माताः (श्वा । -दार--
 बि॰ लावेदारः <del>धंत्रं</del>पी ।
इत्यवा-प [व•] धीग्रेश सरही थेशा वरतम विसमें
 कई दस्वादि रगते हैं। धीधेके सराही ।
बारासत-स्ते [ल ] सहस्रा वहाई। अनुमहा समस्ताद
 किविद्य ।
करामात-खो (ब•) नगलार, शिक्षि, वक्तवर्गी शत
 (बरामच का वहरू) ।
करामाती - वि॰ करामाठ करने-दिमानेवाशाः शमल्हारी ।
करायस-पुरेन विसी हो राम। रे सी॰ क्कीती।
 बंगरेमा ।
कराविका-सी [सं] एक फो। शारमदा एक मर जी
 धोरा होता है ।
करार-प्रश्निता केंचा और कुछ धारा क्षितारा, बगार ।
करार-म [बर] इवराया थेम, भारामा भीरमा मतियाः
 इक्टार । -शाय-इ वहरी को बाता निरथव । शु०-
 पामा-तै होनाः अहरमाः भेन आराम गामा ।
करारमा॰-- त्र॰ कि॰ कोम-कोन करना। नर्नेश रमरमें
 शहना ।
करारा-विश् कड़ाः तेता दश श्वर भिन्न प्रभा। यवरा । प्रश
 बगाध दोला ग्रीमा ह
क्तारोद-द [मं+] ग्रेंश्री ।
कराल-दिक लिको बहेनाह च लोबाका। चरावमा अयामका
 मनिक केंपा । पु राज मिला हमा तमा वातिका एक
 रोग ।
करान्य-भी [में ] कराबने संवशंकी बुट्यां अनीम्ब
 सारिका
कराशिक-५० (चं ] बुछः सन्यार ।
```

```
कराष्ट्रिका-मी॰ सि॰ी दर्गा ।
  करासी-सी॰ (र्ग॰) व्यक्ति सात विदान मेंने रह । है।
   की॰ दरावनी ।
  कराय-पुरु दे 'करावा ।
  करायस-प्र॰ शि॰ वाम बादर रानर कानेरामा क्रीस
   ना दस्ताः दिकार् मेलानेदाला ।
  कराबा~पु॰ बठिके मोबित रहते बिंद शीका दमरा भटा-
   समार्थे ।
  कराह-- व वर्ष वा धीराको भाषात्र, नारः व रैर
   EVIE!
  क्राइस-की [बर] विन अकरत।
  कराष्ट्रमा-अ॰ वि॰ बाह-बाह बरमा होता दस्क भारे
   निकासमा ।
  कररहा=−प्र• दे 'कशाहा !
  कराद्रियस-ऑ॰ (ल. ) है॰ 'कराइतः।
 कराडी॰-मी॰ दे 'कराडी'।
 करिंगा-पु॰ मनुपरा ।
 करित्र – पुरु पेरायतः गीलमें सम्य वहा हागी। यहा धर्मी।
 कारि*−प काथी।
 करिकट~ड नद्धविद्यांका दिवार क्रमेनाम हक १९११
 करिका – धी॰ [मं ] शाधनते हिल बारेश भार ।
 करित्वई ०-१री० क्राकापम ।
 करिनारों −५० काकिस ।
 करिणी-ली॰ [मं ] श्रामिनी ।
 करिव-प्र॰ [सं॰] करमारको सामान भारा रेगर स
  पापी हुई बरन ।
 करिनी •-सा 🐧 करियो ।
 करिया-म अमरदा एक रोमा ह दनवारा क्रावार क्रेंस
  - 'बम दिन अजनामी की सीहश क्यों बारेबा दिन नार्ड-
  सूर । नि कासा । -ईंड-सी बाबाबमा काल्यि ।
 षरियारी॰-न्सं ६ कहिबारी'। हवाम ।
करिक्क-न्दी वॉलना सवा बन्दा, बॉल्फ्र । विश्व करी
 करिश्मा−५ (का॰) हे कराया ।
 करींड ~ड (छं०) नेराबद्धा लेख बदस वंश दायो !
करी॰-न्ती॰ क्रमी-'वी करबीर करी बन शाव -रामके
  र्ग धौरी मामकी घएको। करा चरन ।
क्ती(रिन्)-इ [न] शना । -(रि)र्मन-इ शर्म
 का मरतक । -कुर्मास-पुर वस बूर्ग भी आगरेशारे
 शूनींने तैवार दिया जाता है। -वारक-5 गिर!"
 मासिका-मी॰ एक बाय । -ए-वु महात्र । -वीर्
 -द्याप -द्याबक-पु॰ दार्थ द। नदा ! -वंध-पु॰ दाटे
 वींपनेका सूरा । -साचार-पु स्ति । -वर्षेत्र प्र'
 बाबान्य बंगा। बादिनोदा संर ।
क्रांत्रि-वि [म ] मिला दुला छाव वैश्लेरणा हरण
 गुम्प : -(ने) क्यारर-वि किरो दृदि शीकार के के
 अवस्त्री पेटे । -अस्पन्द्रत-दि० वनित हमानित।
क्रशिया-त [ल ] शिव लागावता। देश, शबीहा। हार्ट्य
प्रशिथ-नि [भ+] निष्ठान संगोत्ती। सन्यक्तिमा
 च्यामगः। —प्रशिष्य=सः वागामः। -सरीम-विकासी
```

241 निकासना । कतवाना~स कि॰दे॰ 'कहाना'। कडाई-मी॰ नेक्चरे बतानेका काम वा उजरता निकाकने की किया का उकरता दे 'कशाबी'। कदाना-स वि॰ निकश्वाना, बाहर कराना वेक-बूटे वतवाता । क्टबाच-प नेक-भटेका कामा देश 'कलाइ'। क्रदावना÷-स कि दे 'दशना । करी-मी बसन, रही और मसकेने योगस बननेवाला होडी इक्टी चैसा एक व्यंत्रन । सु॰ -का(कासा) श्चाक-क्षमिक चल्लाव् या आवेछ । --में कंकवी --में क्रोबका-भारवंत सुंदर वस्तुमें ध्रटकनेवाका दोप द्योगा । श्रद्धा, श्रद्ध वा-पु॰ मरहे भारिते पानी निकाकनेका वर राना बारा-पायल आदि निकाकमें वा भाषभेका काम देने-बाला बरतम। क्रामा बर्चोन्डे माताबाक खानेचे किए बचा-क्ट रखा पवा राज्या भोजन । **क्ष्रेरना** – पु• बरहानपर सद्याद्यी करनेका यह आवार ! क्कें यार्र – पु॰ निकासनेवादः । स्वी कवादी । क्षारमा क्योसमार-सन्ति श्रमारमा। क्रण-पु [धे] मनावद्या दानाः पावक मादिका शहर छोटा उक्काः अस्तरीकरः वर्शः रवाः निद्धाः। -जीरु-चरिक-पु• सफ़ेर औरा। -प्रिय-पु गौरैया। -शक "सुक्(क्)~पु क्याद सुनिः!—शक्तक−पुक्रयादः एक पक्षा । **क्ष्णाच क्ष्णाळ** – प्रदेशीयः करंगः। कलप~पु [सं] कीइफा शाला। कमा-सी [मं] पीपल भीरा; एक तरहको मक्सी ! क्ष्मादीमः क्ष्मादीरः क्ष्मादीरक्द-पु [सं] धंत्रम प्रश्ली । कणाद-प्र [सं] वैशेषिठ दर्शमके प्रवर्तक अनुक मुनि । कमिक-पु [मं+] दण: अलावाध वाक: गेर्डदा आहा धंड । क्षणिका−स्तो॰ [सं] क्या तिसकाः बीराः अभिनतंत्र बृक्ष । कणिया-पु (सं) भी यह सारिको वास । क्विण्ड-वि [ते] छीरेने छीराः वृति सहम । क्यी-सी [मं] क्रीलका व्यः अतः। क्षणीक-विष् [मं•] बहुत छोटा अरवस्य । कणीची-स्रो [सं] शान्त यह कुछा श्रवत- पुष्पित कसा र क्षेत्रं क्षेर्-पु॰ [ॳ] कनियार या कांबकारका पह । क्षणेस-स्थै॰ [सं] जल्द्रहिनतीः बेह्ना १ कन्य-पु [सं] शर्रतलाका पाकम करनेवासे एक ऋषिः यज् रेदीय काण्य शाराके मन्त्रंक कर्त्वविदेश । क्स-० व क्यों, स्मितिय। प्र० [सं] निर्मती; रीटा। ~फम-प्रनिर्मर्ताया रीटका क्ष्मा इस्त-पु॰ [अ] बन्दमकी शोकको निरुष्टा कारणा। कनमधी मीवनी बीर (देना रगना कवाना) । -शीर -ब्रस-प्र चरशिक्षणी जिमपर बक्तम स्टाबर अन समास है। बत्रभम्-म [भ] पृरे तीरमें दिलपुक्तः वृशिव। कृतहर-वि [ल] पदा मिरिक्ता विना शर्मका। अ ण्यास निवांत दिवसूनः। -केंग्रामा-पुरु पद्या अनिम निग्य । -हुक्स-पु॰ एका अवस्य कर्नव्य आरेख ।

केते । करना~म कि॰ काता जाना। कतमी-सी॰ तककी: यत कातनेका सामान रसनेकी शेष्ट्रती । कतपा-पु॰, कतम्मी-सी वे कतरमां, कतरमां। कतमास-पु० (चे०) वागि । कत्तर-छाँद-सा॰ कार छाँद। क्षतरम-न्यो कपडे मागज शादिके काटनेके बाद वस रहनेवाले छोडे, रही क्षको । कसरमा-स॰ कि केंद्री या सरीतेसे काटना । प्र॰ वडी कतरनीः वात कारनेवाका व्यक्ति । कतरणी~सी॰ कतरनदा सायन सीमार दयी। कशर क्योंस – बी॰ काट-धाँट, हिसान या सन्में काट-धाँट: किकायत्वयारी जोड तोड १ -से-नाय-तीडकर डिसायसे (बसनाः वर्षं सरना) । कसरवाँ-वि औरेक्यारः हिरछा । कतरबामा-ध कि कतरनेका काम दशरेस कराना। कलरां-प दे 'कतला'। एक तरहकी (वर्ग) माद-परवर् गदमेमें निकलनेबाना छाटा द्वसदा । इटरा~प्र• [ब] बुँद । –श्साज−प्र वेसनसे बननेवाला एक एकमान, सीपरा। कतराई "सी कतरनेका काम या मबर्री। कतरामा-म । कि । किसीसे क्यनेक किए बोबा बटकर किनारेसे निक# बाना । स॰ क्रि॰ कतरवामाः कटवामा । कतरीं - सी कीरहमा पाटा यह महना। कतरमी। समी हुई मिठाई, गड़े कामेबाई पत्थर वा फूड आदिका पक्षा-शा द्वसनाः बहाबीपर नार्वे बन्नानेका एक यंत्र । इत्तर-पुदे फिल्का-~की शत⊶दे 'क्रकर्मा। −बाज्ञ−प वधिक, दश्या करनेवाका । कतका~प्र• किसी पाप वस्तुका तिकीमें या भीशीमे बाकारमें बढा हुआ द्वकरा करिंद कत्तस्यमा - पु॰ दे 'क्रत्वेशाम । कत्तकी~न्त्री परुवान कारिके चीकोर करें दुकर: चीमोकी काशमीमें परे गरश्के आदिके इक्षेत्र वा बीज आदि । कत्तवाना - स कि कार्तनेका काम कराना । कतवार-९ क्याक्रक्टः । काठनेवाद्याः। – म्यामा-पु कृशकरकाः भादि चॅन्हनेका स्थान । कतह बताई - अ दश दिना वयह। क्सा-पु [अ॰] काटनाः कार, वरायाः कार-छौटा येग तीरः रूप अकार । -कलाम-प्र शत दारता शतके वीपमें वील देना । - तुभम्यक-पु मंदर विष्णा विक्याव । - अजन-अ इसके मिरा । कताई-मी कावनेकी क्रिया काडमेकी मजदूरी। क्लाम-पु॰ अधिक गेंडनबाठे पानदा बारीय रेहामी स्पन्त किमसे सादियाँ दुवहे बादि बनाव जान है। दुरावे जमानिका यक अर्थित शुंदर की मन क्य (प्रमिद्धि 🕏 🕮 भंद्रमाना मकाश पहनेश भी वह कर जाता 🛍)। कतामा∽स कि॰ 'कातमा यो प्रे॰ क्रयामा । इसार-की [ल] चेंत, पंक्ति कम सिल्सिना समृद्द ।

क्तक-पु [सं॰] निर्मेटी। रौठा । * म॰ क्वी, क्सिकियः

करीशी-कर्प करीसी-ली॰ सीधी, मुख्यार सुरी। रावपुतानाकी ग्या रीदी रियामत । कर्म प्र-प्र[सं•] नेरका कका स्था कुधी। कक्ष्म-स्त (संश) देर । कर - पु॰ [सु॰] देवहाः शारह राशियों मेंसे सीओः आग मार्रेनाः पदाः सपद बीगः काक्ष्मसीगो । वि॰ सफेदः बरिया । --विक्तिरा--विकिश-न्वा॰ एक सरहकी महत्रकी । कर्बाट-प॰ [सं] बेक्सा: वर्ज राश्चि कमतक परः सारस-का एक मद करेंगा; तरामुको देशीका सिरा विसर्ग पक्षके-की तनी गोंदी फाती हा एक रतिरंगा गुचकी निष्याः बृत्यका एक इरसक । --श्रीती-श्री • काकशसीमा । क्षक प्रकार में विश्वास करें राधि। क्षा वह सरहकी हेरर: जेक्सी: एक विवेता मुक्त: एक प्रकारका अस्विर्मय । क्ष्म्बेटकी-स्ता॰ मि॰) साहा केमहा ह **कर्व**रा−सी॰ मिं } धेपसा। क्षचेदिका~तो [मं•] धोटो **क**र्या । [एं •] मादा बेक्सा; छोटा मना सेमक्स फलः तरामको बोबीका देश छोरः २क तरस्को कक्षां। तरीई: सर्प (१) । कर्केट-पु• [सं] एक तरहका सारत ! क्षकर-वि [सं०] कठोरा का । पु॰ बंदना करेंट परंपरा आईसाः दशीराः सरिवा गीयपीका अकताः अमनेकी गरी । **ध्याँशोग−५० (सं०)** संयन वद्यो । क्षवेरोधक कर्बरोपक~प्र [६] अंतरूर । क्कराक्ष-प्र. [सं] देश 'क्वरीय' । कर्कराष्ट्र-पु॰ [सं] काप्यु, तिरका भितवन । क्रबंशटक-प्र [सं•] यह तरहका सारख। क्रकरास-५० [मं] सुरासित प्रेयराने शह । ककरी-सां (पं) सारी। न्य पीया । ककरेट-प [सं•] शहंच्य गरवनियां। क्केंग्र, क्केंग्रक-इ [मं] रे 'फ्रमेराइफ । BES श- वि | वि] कडीरा गुरवरा। छीता परवा निर्देश बमा बहाबहा। हरायारी। मधिन्य । पुर्व देवा सनमारा समीका इस ! कर्कणा-दि सी॰ [तं] तहाबी। बहुवारिये। सी॰ क्टरेश मी। मुभिक्तमा गीपा ह कर्कशिका ककशी-स्थै [लंग]यमस्र । सर्वास-पुर [गर] दुन्यका । क्कारिक∽दु[र्श]त्तरपूत्र। कर्मतम-पुनि विकास अमृत्या कड़ीर, कड़ीरक-बु [40] पुरानील < मामराबीधेमें कहा बोहार है समाप्त बनका पेतर कि है कर्नोटकी-स्थे [तं] बीतधाना । क्कोरिकी-सी॰ [सं] वीररीण । क्योरि-परी० [लेक] समीपीः वननीर्धः । कर्ममान-स कि देव धर्ममा है क्षप्री-पुरु देश 'बर्चा । कपा कर्षर-त [मं] कप्रातीमा।

क्चीरका-मा [मं] क्वीरा ।

कर्णरक-५० (सं०) इस्ती । क्रज्ञ-प्र थिने कम प्रवाद, देना ! -तमाइ-प्रवर्ध वेनेनासा !-वार-पु॰ ऋषी अर्थ हेनेनामा ! -(में) इसमा-प्र- वेयुर और नेमाबार कर। सन्-सार-ऋषी श्रीनाः अणमारसं दश होता । कर्ता~प बे॰ फर्ब'। कर्णे~प सि विकास मानको प्यतारा प्रिनवदे सम्प्रे" सामनेकी मजार महामारतीक्ष कीरवराचा वह बराई की क्रीडिका अविवादिकाबध्वामें बारक पुत्र माना गाउ है। यह प्राचीन जाति। -बटु-वि॰ कानेसे में कमनेवाका । --क्षीटी-स्वै॰ कम्तवपुरा । --पुरा-पुं कानका हेप । —क्षोश —श्वष्ठ-त कामरा व्य देर जिसमें श्वासी कानाज मासून बोगी रहतो है। -एव-पुण्कामका सेन और। -मृशक्-मु सारद भूप युनदर कहा हो जामा ।–शोचर–रि॰ भागमा गर्नी न्याङ्चन्युः कपनारः। नश्रन्युः कानवा मेन् र नम -विन, पुर खुगक्योर । - समरा-वर्गका-1-1 कलमञ्जा । नजाइन्यु कलबो वर् । नजिएनी अर्थुन । -तास-पुहाबीका काम दिलाना वा उप-नावात । -देवता-५ वातु । -धार-५० र^{वार} पक्रप्रेनेशस्त्रा,गाँशी । वि बुध्सादिका निवास करने हरे --मार्-पु॰ बातमें धुनारें बहनेवाती गुवा कान्ता ^{वह} रीग जिसमें गूँब सुनाई पहती है। "परइन्ड इन्हे श्रीवरी दिरमका संस्थु साम । -पश्च-पुर सर[्]का। ~पर्रपरा−मी किमी शतके एक कावते हुम्मे कर^{के} पहुँचन, प्यति दृष्टरेक गुनमेका शिक्तिका अतिकारी। ~पाक्र~तु कानका पत्रना !~पान्नी~मी कान्धे हैं° वाकी ।-विशाची-श्रीक एक देवी का विदानियों रहेरे शमवतामे विसमेवाना परोद्य-ग्रामक सन्ति। "St 3" अवण्यार्थं । −पुर-पु॰ अय देशसे पुरानी राज्यने थेवा । - पूर-प्र क्रामपृक्षा विरित्ता करेरा मेन क्र^{क्र} -प्रक-पु करमपुत्ता करंदा संशोदा गीक का^ती मध्यम् ⊬मतिनात्−पुशामका दस्र देशाः - प्रवास प्रशासमध्ये शारतमे प्रश्नेतामा श्रम दीवे । न्यनं-बुर एक महाकी १ -शृष्य-बुर -शृषा-मीर द्वापी गहता। -सल-पुर्व भूर। -सूच-पु बल्धेका कामकी अरह क्लेक्ट संस्त । -शूर्रम-इ स्टब्ट तिसी विसंपर राज्यज्ञीतम संस्कृते आपानी समर्प क्षाणा द । -मोटी-मां पार्वदा देशे। -वा न-रि वी काममें जनमा दी १-रोम,-विमा-उ॰ शान्स देवी —शेग−तुं काममें उत्तव हानेशारे शेत कर्षा ह स^{ति है} ~स्ता;−श्तिका−शी दारग्रं को । ~क्स⁻⁵े बॉल्डा मृज र -बर्जिन-दिश् दिना बाम शा र 3. १.^५१ -वित्रधि-भी धामद भीतर दोश्य मा चं त्र सामग्री -वैध-तु कार्धानका अस्ति का शत्र । -वैधरी संधानिया-स्था वान ग्रेग्नेया क तार । -वेश-वान ~पु पुंचल र ~वारकुमा-म्द्री सन्त्रदा वन्त्री रिवली न्त्रीयन्त्रे समस्य_{क्}र नसबन्ति है कि ह गरे।-स्-मी बुन्।-सूबी-लो॰ मर छे। ६० -emier-ells en man fautifft -ieu-T'

यसः कोश्रिशः कामा योदेकी एक पाछ । -चा-प॰ पैर रक्षांच्या व्यवः पाकासेची संबदी पाकामा ।--व-कृतस-व सावसाव। -बाज-विश्वसम्बद्धे पास अवनेवास (बीहा) । -क्षोसी-सी० पाँव क्षमाः गुवनमीनित सम्मान-प्रतर्भनः साधात्कार । सक -उत्तरमा-पाँव उत्त इता, भाग बाता । -उद्यत्ता-मागे कृता । -व्यमना-वाँव सताः गुरुवतीयित सम्मान करनाः गुरु मान केना । -समा-पाँद परकर प्रणाम करणा। किरोकी कराम लागा स्यामद करना । - मिकासना-(धोडेको) कामको चाल सिकानाः वाहर आसा । ~पर कराम रक्तना-पीछे-पीछे बढना, बनुसरण करना । -ब-कदम चछना-साथ-साब बसना। जनसरण करना । - बदाना-भाक रेव ब्दनाः सारो स्द्रमा । -सारमा-वीव-वृप करनाः यस प्रवस करता। - छेना- पाँव पदमाः पाँच प्रकर मनाम करकाः आहर-सम्मात करना । (इस श्रम्णे कहतसे सहा-बरे 'पॉब'में मिलेंगे ।)

कदमा - सो • कर्दनके फुलके आकारको एक विठावे । कदर-प्र• [ti] आराः ,#क्रयः गोर्के रास्त्रेका गोखरः छेनाः सफेर दौर ।

कटर-को॰ भि नामः भाषा भाषा करहेरा देश 'क्ट । --वान-वि दे 'क्ट्रदाम' । --वानी--की॰ है 'कजवानी।

कतरई ३ - स्रो कावरपमा

कदरवंश-पु दे इत्ये । यह प्रशिद्ध पापी ।

कदरमस्त ना मार्नीय सहारे।

कदराई-४--छी० बावरंका ।

कदरामान-अ कि करनाः कवियाना पीछे बहना । कदरी-सा मैनाके बराबर एक पक्षी।

कर्य-वि॰ [सं] तिरर्वक, निकासा ।

कदर्यन-पु॰ कदर्यमा-स्यो [सं] सताना, पोदा पर्टे

चानाः तिरस्कारः वर्षयाः । कर्रार्थेत-ति॰ (सं॰) विस्त्री कर्शना की गनी की दिर

संस्त । करमें-वि [एं॰] कुरण, केन्छ। हायछ। हार । प्र की भाव उसकी महार्रेड किए रार्थ न कर बीध एकत करनेच किए प्रवादर कडीर शत्याचारतककरनेवाका कृतन

राजा (बी०) । कदछ कदसक-पुर् [मं] देला ।

कद्या-सी [सं-] परनी। टिविका। शास्त्रकी।

कदमिका-सी सि दिहा। करली-सी [तं+] देका यक दिरना शंका क्रांगिस स्था

वानेशका शंदा । करफी(किन्)-पु॰ [सं॰] एक तरहमा हिरम ।

कदा~स [ए॰]कर किस समय।

कदाकार-वि [तं •] कुस्य मदा मीता । पु • तुरा स्थ । क्षाच, क्ष्राचि -- अ । क्षावित्र ।

कराचन-भ [ब्] है 'करावित ।

कराचार-इ [मं] इसः, क्रीन्यत नामार । वि अरे मानरनवास दुरावारी !

क्याचित्-व [ते] क्यी द्वायर ।

क्रमाधि⊶म सिंग्री क्रमी, क्रमित । कतासत-की विशेषाचीमता।

कक्षाहार-पर [सं•] तरा भोजना सराव चीर्वे खाना । करी नवे कर रखनेवालाः बद्धीः कन्त्री ।

क्वीस-वि॰ भि॰ प्रसा प्राचीन ।

क्रवीसी-विश् वे 'ग्रवीम'। कर्याण-वि [एं॰] बोधा गरम, क्रमकुना । करात-वीर दे 'कररत'।

कते १-म॰ करा करी ।

कर-सी॰ जि देश जामहा करा कठिनारे। यस प्रवासः देव-कमस्र।

कशास्त्र-वि० वहे डोड-शीलका, चंत्रा-बीहा । कारी—विवर्धी, विवर्धनेवाला ।

क्षत्रत−प क्षा ोयह प्रसिद्ध सरकारी, कीच्ये ।−क्षत्रा−प्र≉ करण कमाना चानि रेतनेका आका । ⇔ताना-प सकके बाद जिल्ह्याने को है।

कृत−खी॰ [श] वहारी दस्ततः दरनाः मरतना । −दान -वि॰ का समझनेवाका शिरप्रस्त । -वानी-सौ

सिरपरस्तीः गणकी प्राचात । कह कह-सी [सं] करवपकी पत्नी की सीपीकी माता

गाना बाता है। −ब,−प्रज्ञ,∽सत्त⊸प्र• साँप भाग। कब्रड-वि (सं•] तराया गरूत कहनेवाका।

कहर-पु० [र्थ] छात्र, महा।

ब्रह्मी - वर ब्रह्मी ।

कर्मकर-प सोना-'पन्य कावन देत कियन होहिन्सीकि

कर्मक -- रामनंदिका । कम-पु॰ कम प्रसाध भीका क्या। गुँदा सतः काम'दा धमासमें व्यवहर संक्षिप्त रूप ! --कटो-वि शिसका कान बहा हो । (सी 'कलकरी' ।) ~करी-सी॰ कानकी एक नीमारी । −कटकी−शी यक नव । ∼कट−प्र∙ दे कुर्जंड । -इत-५० बमॉदार और बसामासे बपव के वेंडवारेके किए लड़ी फसकता कुछ होना । --शाजुरा--पु॰ मोबरकी जातिका एक कीहा की कमी-कमी कानमें प्रस जाता है । -शोदनी-सी॰ छोदे, टॉन बारिका नमा कान समस्यने भीर पराद्य मेर निकाकनेका एक बीजार । -सिवन-प॰ कान धेरै भानेको रसम कम्बिध-संस्कार । -श्रीप-पु॰ वह शेपी विस्तते काम बढ़े रहें । -धारण-प्र वर्णकार, बेक्ट । -पर-प्र -परी-छी । साम और ऑसफे बीयका रवास, गंटरवट । -चेदा-पुरु कासकत दह रीम । -फरा-पु॰ मोरसर्वनी साबु बिसके काम फरे कार है। -पुरुषण-पु कान पुँकनेनाका, बीधागुर ।

-प्रका-वि योद्या देने वा हेनेवाला । प्र॰ दान प्रकृते वाका गुरु शिष्व। - पुरसका-पुकानमें भोरेसे वाप कहनेवाका, भुगुक्त्योस वहदानेवाला । -पुन्तद्वी-श्री

दे॰ बानापूर्वी । -पूस्त-पु॰ दे॰ 'बरमफ्न'। -प्रोक्त -पुण्य कता था दवाचे काम माठी है। -बतिया-न्दी काममें बोरेसे कड़ी दुई बाद ! -विधा-दि काम

छेश्वेबालाः विसवा काल देगा गवा दी। -मेहिया-पु॰ कामका मैल निकालनेशाला । —१स-पु संगीतका

रसा गाने बनाने था बात सुननेका अस्तन । -रसिया-

करीकी-साँ संबो, मुख्यार सुरो। राजपुतामको छह छोरी रियासद ! कर्मच-प॰ सि े देशका फला सत्ता बजी । कर्ष भू-सी॰ [ई॰] वेर । कर-प सि दिवका पारह राभियोगिसे चौथाः सामः मार्रना वका सफेद बीका काककासीगी। वि॰ सकेदा विद्या । --विद्यितः--विद्यिती--स्वो॰ पद्य तरहकी कवनी । कर्केट-प [मं•] बेक्जा: वर्क राधि: क्यक्को जन सारस-का एक भेता काँदा। शराबादा बंबीका शिरा विसर्गे प्राथे-क्ष्रे तथी वॉक्स जाती है। एक एतियंथ- बचकी जिएका। मृत्यका यक प्रतकः। -श्रोगी- ली काकासीगी। क्रकटक-पु [सं] केवला वर्ष राह्या क्रूब पर वरस्के <u>इंसा मॅक्सी। एक विरेका मुक्त एक प्रकारका शरिवर्गन ।</u> क्रफेटकी-जी (संश) मारा केरहा । कर्बरा~का मिं∘ो लेखना। कर्वटिका~सी (सं) प्रारी करती। क्षकोटी-न्यो । [तं] मादा केंद्रशाः छोटा यक्षाः सेमक्काः फक तराज्ञात बोक्सा देवा छोर: एक तरहकी काली। वरोई सर्व (१)। **क्टेंट**-प्रश्मि । यह तरहका सारम् । क्षकर-वि शि•ीकटीराध्य । त वेकपा करेंच परवरा आहेताः प्रवीदाः अस्यिः सीवदीया अवकाः अमहेकी पति । कर्करांचा—प्रसि] संजन पक्षा । कर्करोधक, कर्करांत्रक-तु 😥] संबर्धर। ककराक्ष-पु सि॰ वे 'कर्नराग'। कुर्दराष्ट्र-१ (सं•) कुराब, क्षिरकी विकास । कर्तराहक 🖳 [नं] एक तरहका शारस । कर्करास्ट्र-प्रामि] सुवाधित प्रेंकराके वास । ककरी-सी [धं] सारीः एक पीता। कर्करेट-पु॰ [सं॰] वर्षच्छ, यरवनियाँ। कर्करेद्र, कर्करेट्रक-पु॰ [सं] दे॰ 'कर्मराइस' । कर्मशा-पि [सं] कडीरा दुरवरात रीमा परेना निर्वेता काः ब्रहाकहाः बुराचारीः अभित्य । पु रंकः वक्तारः क्मीका बक्ष । कर्कशा-दि॰ की [एं॰] कशकी; बह्नमाधियी। सी॰ कर्त्या साः बुन्धिकाशः वीवा । कर्कोद्राका कर्कोशी-मा [र्स] बनवेर । कर्बार-५ [ते] कुमस्ता । ककोरुक-पु[सं] तरवूग। कर्वेतन-पुर्धि । एक एक अमुरिया क्कार, क्वोंरक-पु [मं॰] पुराणीस ८ भागराजीमेंसे वक् बीकाः सेसासाः वेसका पेका क्या । क्कीरफी-सा (सं•) पीतकीका । क्कोरिकी-मा [सं॰] कॉक्सेन। कर्कोरी-स्त्री [मुंग] सन्त्रोहीः बनतीरहे । कर्राना≉~स कि॰ वे॰ कर्पना'। कर्पा-पु दे करवा । कर्चर, कर्चर∽प्र [तं] कष्टा सोना । क्वचेरिका-की [में] कवीरी।

कर्षरक-प्र [छ॰] इस्ताः कर्त-पु॰ [ब॰] क्य स्वार, रैना। -पुबार-पु॰ सं देनेवाका !--वार-प कर्णा, कर्व केमेवाका ! -(वें) इसना~पु॰ नेसूर और नेमानार कन। स॰ न्एक-क्तभी द्वीमा क्रवमारसे तवा द्वीचा । क्कर्या⊸प ते॰ कां। कर्ण - पु॰ [धुं] काना नामध्य प्रामारः त्रिपुक्ते एन्से हे सामनेको मनाः महामारतोष्ठ श्रीरवश्चराः गढ महारये भो क्रंतीका सरिवाहिहासस्वार्धे बरपन प्रश्न बाता बळ है। यह प्राचीन काति। -कड़-दि० कामेस्रो स्टेट कगनेवाला । ~कीटी-मा +मसन्ता । ~बुहर-प्र कामका क्षेत्र । -मोदा -वर्षेश्व-प्र॰ कामका सर्वेश क्सिमें गूँगसी कानाव मासून शेखी रहती है। -गूर्व-प्र कालका मैल, क्रेंट। -शुधक-पुर क्रवंदे क्रेंच स्टाबर कहा है। बाला !-शोकर-दि॰ के हुना वा पर च्या**ह**−तु कर्ववार् । ∼श्र∽तु कामरा मैक । −शर −वि पु॰ चुगलपोर । −बसका,-बसीका-न्देश कनसङ्ख्या । - बाह-- प्र काननो बन् । - जिन् ३१ अर्जुन । - ताक-प्रशासना काम विकास का पर्छ भावाम । - इवसा-प्र वस्त्र । - वार-प्रश्नात फरनेनाका माँगी । वि । दुःसारिका निवारमध्येताता -माड्-इ कानमें सताई पत्नीवाडी ग्रेंट। क्ष्मरा स रोग जिसमें गूँब सुनाई पहती है। -परह-ड॰ बले मीतरी दिस्पेका मध्य जाग । -पश्य-तुर असरसेवा। ~परंपरा~ली॰ किसी बातके एक कानसे कुसरे कार्य पर्दें बने, बक्से इसरेड समनेडा सक्तिका अतिसंत्रा। -पाक-पु कानका पहला (-पाकी-मी **का**नमें से वाली ।~पिद्याची~साँ० एक देवी वा पिछाविसी हरेपी मसबतासे मिलनेवाकी परीक्ष-दानको शक्ति। 📆 🗗 सरणमार्थं । ~पुर~पु संग् देखको उरानी धालाचे चेंथा । -पूर-प् करलक्षा सिरिसा करेंग सेल बंदर्ग ~पूरक~पु करमञ्जा करंगा अहोका मील दम^ह। मणार्-मतिनाव्-प्र कानका यक रोव । −प्रवाम प्र वद्यत्काममके रास्तमें प्रत्मेवाका एक तीर्व । न्यूस-द्र व्ह महस्रो । - सूचल-दु - सूचा-स्रो सम्ब गहना। - सक-पु सुर। - मृक्ष-पु काररा गी कामको बक्के पासको सूजन । -शार्थग-पुर कामके शिशी विशवर शब्दबनित बंदमके बाबातसे शब्दकी होगा द ! --भोडी--गाँ॰ बानुहा देवी ! --वाबि--शि वी कानसे जनमा दी !~र्झ -विवर-पु॰ धारहा हैर! चौग−पु कानमें एत्पा बोनेवार्ट रीग, ६पंपक कार्र -सता -सतिका-नी कामधे की । ∸वध-3° वॉसका ग्रेम । --वर्जित-वि० विना कारका । ३० छोर्र -बिह्मि-न्यी कानके मीठर दीलगांकी दुर्गी या बार -वेघ-पु कादेशनका स्तराह या राम।-वेधनी वैधनिका−न्यः कान ध्यनका औत्रार । --वेद्ध-वैद्य ~पु चुँबक । ~सण्डुली~स्त्री सामग्रा बादरी दिल्या⁵ —शूख−पु वागसा दरं। –श्रव−वि जो तवा वा सक् !-मू-सी इंदो !-सूची-सी॰ व्ह होग कीता −स्क्रीडा—स्त्री एक कर्ता विषयमी। −स्वय~\$

- शहरुद्री मरि माक कृती 'अक्ट्या "-कवितावली ! मु॰ (भनीपर)-सामाः-चाटमा-शीरेके यनी पासर भान देना। कनीति-सी॰ [र्ध•] शस्टः ग्रंबा ।

कमीज्ञ-स्रो [पा] सीडी, वॉदी। कमीस~दि [सं०] त्रण; क्य उपका

-फनीनक-५० [थे] अब्बा; विद्योर गाँएका तारा ।

कतीमका-नी [सं॰] वॉरी सहकी। ऑदकी पुतली। क्रमीमिका, क्रमीमी-कौ॰ (सं) एियुनी। मौराकी पुतकी।

क्रमीयस-वि० [मुंब] मबिक्र छोटा। मध्यतर । यु. ताँवा । कभीर = पु॰ कमेर कुश्च वा उसका पृक्ष ।

कन्--पुदे≎ कर्गा। कन्का+-पुदानाः दशः

करों –च पाना ओर। कनेरगी = न्दी व दे 'क्स्परी'।

कनेद्रां ~ दिकाना प्रेचा-ताना।

कमेरी-भी • प्राप्त एँद्रमा गोशमाकी । कमेर मामेर-पु॰ एक पीवा जिसमें सफेद, पीने और छाड़

रंगके पूछ लगन है, करबीर । कनेरा−सो+ [सं] दे 'कणेरा ।

कर्नेरिया-वि कर्नरके पृक्षके रंगका ।

करोरी-सी [शंश्रदेशेरी] एक पीड़े रंगकी छोटी विदिया।

क्रतोई • – की कामग्रामिक, क्रेंट। क्रमोग्या−वि दशश्चकः।

कर्मीक्रिया –वि॰ पु॰ यत्तीत्रद्धा रहनेवाकाः कान्यकुष्त्र ।

कमीरा-पुश्रीनाः किमाराः भारं-वंधु ।

क्रमीका-विश् कामाः अपंतः बदनामः ग्रदः शेमः कथितः पद्यानमंद्र ।

कर्माष्टी—गी पञ्चकाकान का उन्तरी भीका कान राहे करनेका रंगः वाला । सु० कसीतियाँ वदकना−भोदेगा काल राजा करना। चीवका द्वीमा ।

कर−९ (६) पाप मूर्छ।

क्यदृश्याम~पु• दे कन्द्रवाम'।

क्या - पु किनारा, श्रीरा प्रनंगर्मे कपर-नीचे वैधा द्वा पर माना विश्वमें भंगी होर वॉबहर उसे बहात है। चारकको वृक्त का टॉटनैमें निवस्त्रती है। वीवॉब्हा एक शेगा। वि बचा तथा हुआ (शक वा कहती) । सूक -श्रीसा होना~दीसका परत होनाः ऍड होको यह जाना। -साधमा-इत्रेमी गाँड ठीव बनहूपर वॉवनके किए पस्य रंगरं मापना। -(म्ने) से कटना-पर्नमका

ष्टनेपरसे बार जाना।

क्की-सी क्रिमारा; क्रोरा शारिया। पर्नमका क्रिमारा-बनम बरावर करनेके निय कांगली कांप का कमातीने वंभी जानवारी भव्यी। वह भीजार जिसमें राजगीर वारा हराता पहलार करता के परका सवा करा। संबद्धि 4 को जो पत्त कार सेनेपर फिरसे निकास है। मुख -पारमा-धाराना किमार्ग निपन्न पाना !-माना-परेग्या एक्नमें एक और शुक्ता । - ब्वाना-कार्में, भर्गमहाने साना ।

कर्पात-पु करेगावाद दिलेका एक कमवा नी पुरान

समभूमें बसूत बड़ा मगर था। क्रम्यका~सी [सं•] कम्पाः लविवादित सदसी । कम्पस-प्र [सं०] सबसे छोटा माई।

कृम्यसा--सी० [सं०] कानी र्वेगली । कृत्यसी – स्रो [सं] सबसे धोगे वर्धिन । कम्या-सी [र्स•] कम्ब्री; बाँटी रूपकी यश्चकाँमा व्यक्ति

नाविद्या नाकिका। नारह राजियों मेंसे छठी। हुर्या वर्षा इक्षानची। एतकुमारी। यस वर्ण पुष्ठ ! --कुक्ज --पु • कान्य कुष्य देश । -कुमारी - खी० एक अंतरीप की दक्षिणमें भारतको स्वक्ष्मीमा है हुर्गा ! -गत-वि कस्या राजिमें रिगत (सुर्व)। —शुन-पु विवाहमें वरको कृत्याका दान। ~धम−पु• दहेब, दावब। −पाछ~पु• दासी

कन्यार्गीको वेबनेवालाः वंगारूको एक शह जाति ।-पुर-पु॰ बन्तपुर। -शर्ता(त्)-पु॰ वामता क्रमास्य पतिः कार्षिकेत :-राशिः-वि विश्वका जन्म कन्याराशिमें हमा हो । -रासी-नि (हिं) कन्दाराधिमें वरपत्रः

सी स्वभावनात्राः दम्यः दुर्वतः । - सेही (दिन्) - प्रः वाशता । -शुस्क-तु कत्वाका मृस्य जो धरकी औरस करवाके विकासी दिवा जाव ! -हरण-पु करमानी (निवादार्थ) परुष्ठ उदा के जाना ।

कम्बाट-वि [धं]कविश्वीका गीए। गरनेवाका। प्र र्वत पुरः कदन्तियों स्व गीछा करनेवाका स्वस्ति ।

कन्यिका – स्रो० [सं] बस्याः अविवादिता बस्या । कम्युप∽पु॰ [थं] दाशका कलाईके मीचेका भाग ।

कन्द्रकी नको कर्याटी । कन्दाई-पु दे 'कन्देवा ।

कम्हाचर्र--पु॰ दुपहाः वैद्यक्ष गरदमधर रहनेनाटा चुण्का हिरसा ।

क्रम्बेया-पु कृष्या शुंदर वास्त्रः। प्रियमम यक्र प्रदार्शियः। कप-तु [तु] बस्पा दैस्योदी एक वाति (अं) प्याना। कपर-प (सं) पनापदी व्यवहार। एक भौता। मनदे माबदी विशाना दुराव । -तापस-पु बना हुना साधुः

रापुका मेर बनाकर श्रमेशका व्यक्ति। -साटक-पु कप्रश्नवदारः स्पने भोता देनका काम । -प्रवंध-पुं भीता देनेका वावमा । 🗝 छय-पु॰ बाकी था दुसवी दरवानेय ! -वेश-पुरु यनावटी मस ! 🖟 वनावटी भेसवाका ।

कपटना−स क्रि॰ वस्तुको कपरमे बोहा तीहनीच देनाः थीरमाः रवद वैसे, रहमपेने हुए बार-विराह सेना ।

कपटा−पुवासदे पार्थीमें कमनवासा स्कारीहा। कपटिफ्र−रि [मं] इपया।

क्षपरिणी−स्तो॰ [सं] विद्वा मामक येथ्रस्य ।

कपरी-की भानको दमुरुद्धा एक दीनाः [में] एद र्जजुमीकी मान्ना ।

कपटी(टिम्)−वि [सं] छन-फपर दरनेशना, फार्था। कपट्-पु कपकाका छाताओर समामुमे स्पयन्त कप्। -कोट-पुधमा नंबूध-संघ-सी इपरा बहरेती दुगम । -छमा-छाम-प्र िष्ठी दुर्र (सुनी) बरन्द्री कपर्य प्रावनकी जिल्हा (करता)। वि क रेने प्राचा हमा बद्रुष महीन ! =हार=प्र प्रपृद्धि संस्कृत

15-6

पु• मनवृत वतुर । ⇔क्कीकक-पु• वीवी ! ~कास-वि० काम करनेमें समर्थ । -क्षेत्र-प्रश् वर्ममृति, कार्वक्षेत्र । ~ग्**य**∽ड कासको सम्कार्शनरार्थः वर्म-सामर्थ्य (धो०) । −गुषापकर्पे−पु॰ ठोक कार्य न वेति।; कर्न-सामर्थ्य कम दोना । ∽शुद्दीतः≕नि चो कीईकान (चोटी आदि) रुरतादुव्यापककाश्राव । ∽धातु⊸ष कर्मद्वय । ⊸ चोडास - प्रवास को कर्मसे चौटाक मामा जावा मीज कमै करनेवाका-विशिद्धके अनुसार अश्चयक, विशास (पानुक सोर), इतम्त और दोवरीएक (बहुत निर्नोतक वेर, हुम्ब रसमेवाका) कर्मचाटाक है। -चावी(रिम्)-प काम करनेवाला, अहमकार । —कोबना-ली॰ कर्मप्रेरक हेता. कर्मभैरणा। —चा−विश्वक्रमेंते बरफ्कायु कर्मफका ---घारय∽पु॰ तत्पुरुष समासदा एक मेद विसमें विशेष भौर विश्वेषय समाजाविकरण श्री । —द्वेष-पुर पुरूषकर्मसे देवपर प्राप्त करनेवाका (बाजाम देवस मिल) १ -बाझा-**ठी।** शहाराट विहेको यह क्या किसके जलस्टर्ससे समस्य प्रव्यका नाश होना मामा बाता है । −निष्य−पि॰ भारमनिक्रित कर्मीमें भारधा रकाने जाने अभागर्यक करने बाका। - निष्यत्तिपेतन-५ काम हो जानेपर दिवा वारोबाका बेराम: बाक्की कचनता वा शिक्रवताके अन सार दिया कानेशका वेतन (की)।~निध्याक्र−तु परिज्ञमी मञ्जूरोंने भंतरक काम करवामा । -- भ्वास-प् क्रमंत्यान् । --पंचासी-को एक रागियो । --पाक-द पुर्वकृत क्रमाँका फरू !~प्रधान∽नि≉ जिस्(विद्यान्वलव)-में कर्मको प्रवासता हो – फ्रियाका किंग और वचन हर्मका अनुसरण करता दी ! ~प्यक्त−पु॰ पूर्वजन्ममें दिये दूर क्रमीका धक (सुक्र-पुन्क) । 🕶 बंब,—बंबस—पु॰ जन्म सरकका बंदम ! ~ मु. – श्रुसि – की वहादि करीके किए हरबुर्ड भूमिः नार्यासेर्ड । - भीग-५० कर्मफरू कर्मफरूके क्यमें शह हुन्य ! -सार्ग-पु निवित्त कर्म करते हुन मोस प्राप्त करनेका गार्गः - भास-प्र १० छलन दिनीका यह प्रकारका महीमा, शायम मारा । -स्छ-पु० कुछ । – पुरा-पु स्वीतन्तुग । – बीरा-पुर सर्मेमार्गकी सामना : -बीगी(शिम्)-त वर्ममार्गकी सामना दरने-न्यासा । नरंग-इ क्यारत । नरेक्स-स्रो॰ [वि:] कर्म- को देसा तकरोर ! ~क्य — अ विक्रित्सागत मसावधानी त्रिससं शानि पर्देचे (की) !—बाच्य −नि० (किनाका शह क्रप) विसमें क्रमेंको मंगानता हो (च्या)। —बाल—ड॰ क्र्मेंक्र एक क्लस्य दौना भीर मीनना पहना द-नद यत प्रारम्बन्द । -विपाक-पुर पिछके कर्मीमें किने हर शुभाशुम ४ मॅकिर फल: किस पापका क्रीनसा दुम्स दै-बह बलामेबाला शास्त्र । -बीर-वि॰ बर्राव्य कीर्बाहराक नर्म न्द्राचेने बीटः विध्यनावासीते विवतः प्रण वर्तन्त-पत्तम करभेगलाः पुरवानी । -बास्ता-ली॰ कारसाना । --श्रीक्र-सि स्पोनीः गरिनगी । ~-ह्यूर-नि॰ कर्मनीर । —क्षीच−प विनय सज्ञता । ~क्षां-<u>प</u> कमी और जनक करोंमें नासकि। −संकि−सी दो राज्योंमें दुर्ग रफ्ताके दिवसमें को जानेवाली छंवि । ~सम्ब्यास~पु बर्मरवाय।-साहा(दिवद्)-पु कर्मविधेवकीवैस्वयेवाका बदमबाद मनादा मनुष्यके भाठेनुरे क्योंके सार्श देवता |

(सर्य, कार, वस, कारू, प्रमी, वक, वस्ति, बाह और व्यक्तान्त)। -स्यान-पृ॰ कार्याक्त्य दश्तरा कार्याक्त क्षंबर्कीमें कम्बसे शस्त्रों स्मान ! ~श्रीन −िष• विसमे देर्न अध्या धार्व न हो; इतमाया । कर्मठ-नि [र्ष] बागर्ने खुदकः हसीरोते का करनेवाका" शास्त्रनिहित कर्मोर्ने क्ष्मा रहनेवाका,वर्जनेहरः। कर्मणाः, कर्मता (तस्)—नः [मं] वर्मरे, वर्म द्वारा । कर्मण्या-वि (सं-) क्रेमैक्सकः वयसो । तुः वासेनिकः सकिषता । कर्मण्या प्ली [तुंश] वारिममिकः कर्मना=-ल॰ दै॰ 'दर्मना' ! कर्मास-५० (सं-) कर्म समाप्ति कर्म-संग्रहन अक्रमान्य भोती हुई बमीनः करसावा । कर्मातिक-५ सि॰ो अर्गेवारी ! कर्माजीय-५ (तं॰) किता पेड्रेसे बाविसानिसंह सरे कमांबाज-बु [सं०] शावकीय किए निविद्य १५ वर्गीली क्षेत्री । कर्मापरोध-प [तं] रोशके वपवारमें डोका हाले। कर्मार-त [सं] कर्मकारः कारोनरः इशाय क्षेत्र कारक ! कर्माक्रया छति~क्षा [र्ड] क्रामके सनुसर नेतन य क्सिंड-वि॰ (सं०) दर्भक्रमस दर्मनिङ । कर्मी(मिथ्)-थि [संग] करून करवेशका क्यांम करी गरः फक्की बार्क्साचारे वर्म करनेशामा । कर्मीर-दि [सं] विस्तवतरा । प्रश्नारंती रेप । कर्में द्विय-ती॰ [सं] वह शेरिव विससे कोर्र काम किंग बाव (शाव पॉव बाबी, ग्रदा और उपले)। कार्रोपवासी(तिच्)-वि [सं•]कामवियाननेवामा(दे•) कराँ-वि कम कठिन। (सी 'करा"।) प्र॰ इमार्वि किए एतसी पैकादर तानदा । करांना~भ॰ क्रि॰ क्या दोना सस्य दोमा। कवर-पु (do) संभा पात्रारा नगरा विरोध हरू लाम प्रदासकी श्राच्या । कर्षर-प्र [सं०] पापः नामः राह्यसः। 🕷 वितकराः। कर्यरी~सा [सं•] दुर्माः राज्ञिः राज्ञसाः व्यामीः कर्मान-पि [सं] श्लोण करपेवाका । पुरु असि । क्रिशिस-वि [र्व] श्रीय, दुवका-पतका ! कर्षे-पु [सं] सांचनाः कोणनाः जुनसं ईश सरीय १६ मारीका मान (५ १ छोड़े भारेसे); हराने बमानेब पत रिका हुण बीचा राजा -पाल-तु विकेश बुशु ।-बुखा-न्यी शामक्की । कर्षक-मि॰ [सं] शीक्षीनाता । पुनिशात । कर्पन-पु [र्स+] क्षेत्रनाः बोतनाः मुकानाः इतिही दार्शिक्ताः समय बक्तमाः स्रति क्ट्रेबामाः बीटोऽ^र प्रमोग । कर्षेणि-सी [से] व्यक्तिवारिमा मी । कर्पनी-नी (de) स्वरमोका नेप्र *।* कपशा•~स कि श्रीवशाः शशाः।

Ħ

36

t A

٠,

11

एक चानक जो शारीक और सुधनुसार दोता है। सुक −कामा~विष साना । कपूरी-वि॰ कपूरके रंगका । पु॰ इकका पीका रंगा एक

तरहरू पान । की एक जनी जिल्ही जन्मे कपूरकी गाँव निक्सती है। क्योस-पु० [सं०] क्यूतरा पंत्रका विविधाः क्यूतरका

भूरा रेत । -चरव्य-स्रो॰ एक गेवहरू । -पाक्तिका:-

पाकी-थी॰ क्यूतरीका वरनाः क्यूतरीकी छतरी ।-वंका --सी प्राची स्ता। --वर्णी--सी॰ होटी वहाय**वी**। −बायाः न्यां । पद्मा यंद्रक्य । −ब्रासि न्यां संवय न बरनेकी इति। - जत-त वृत्तरीका कालाचार सहन करना । –सार~यु: सुरमा भा<u>त</u> ।

क्योशक-पु॰ [सं] छोटा क्यूतरा दाव बोदमेका यह रंग सरमा बात् ।

क्रपोर्शाधि –सी सिशीस्त्र शंबद्रव्य । क्योतिबन-प्र॰ सि] सरमा धाता। कपोतारि-पु॰ (ti॰) वाव । क्योसी-छो॰ [सं] बन्तरी; रंडुको ! क्योती(तिन)-दि॰ [सं] क्यूतरकी शक्तका क्योतके रंगका फाव्यरे कन्द्रर रखनेवाला। क्योछ~पु॰ [र्श•] गाठ । -कस्यमा-ली॰ ममसे यह

लेनाः मनसे गरी हुई शतः। —कश्चितः −वि सनगरंतः। -शरा-पुगकपरकी काकी। कसान~पु [बं• 'क्रैं-टेन'] कक-रवट सेमाका एक वपसार: दश-नामकः पुषिषः सुवस्टिहेट । कप्पदः कप्पररूपः प्रशा करका~प नकामका परेव । कच्चाक्य-पु॰ [मं॰] एक गंबह्ब्य, पूर । कप्पास-पु (से] बंदरका बुद्धा विकास।

क्क-प [सं] यरीरक्ष्य तीन पातुओं (बात विन्न, कक)-मेंसे एका बद गारी करोजी बीज को क्वसर सांसनेसे बाहर माठी है, बस्त्वमा हान फेन । ~कर-कारफ-वि॰ कम्म पैरा करनेवाला । -वृत्तिका~स्तो॰ कार-मुद्ध । ⇔क्षय⇔पु० वर्मा ३ –श्रंड−पु० गतेका एक रीग। -गुस्म-तु पेरका एक रीम । -ध्या,-शासना,-हुर-वि कप्रमारकः। - प्रवर-पु॰ कप्रके संचय और प्रकीपसे दीनेराता इसार ! - विरोधी (चित्र)-प्र मिर्व ।

र्पराकार दुकरा जी धक्यकते लाग झाएगेके काम जाता दे ! --दार--दि [दि] विसकी भारतीन वदारा हो । कळ~सी [म] इथेटी। ~हस्स~पु इथेकी। ~दा~ उ॰ तक्या। मु॰ -(के) अध्योग मस्मा-हाय मनना पटवाना। करू-पु (का•) शाम पीम- मुमाब- बलगम । -वरिद--प्र एक तरहकी बलाड़ी किसमें थी. भारतमी बारिका दान मेन आदि निकासते हैं। -चा-दु छीटा कपनीर।

कफ्र-प [बं॰] कमीन, इरते भारिकी भारतीयका श्रष्ट

दुदरा माग मिमुमें धरम कंपना है। शाँसी। श्रीहेका आई.

क्कामि-मी [सं] कुरनी। क्फन-पु [स] मु[>]बर संदेश जानेवाला कुववा श्रवा क्षापन छन्दरन, मृत्येक । - काटी-श्री शनपादः

क्ष्मुही। मोय-बासीटकर वन क्टोरमा ! - चोर-प्र वर वो कर बोहकर मुर्देका कफन भुराये। भारी घोरा हुए व्यक्ति। -दफन-पु अंत्येष्टिः अपेष्टिका प्रवंश। सुव-को की दी स रक्षमा—इन्न भी नवा न रसना, यो कुछ क्रमाना सन सर्व कर बालता । -क्री कीकी न होगा-

अंत्येटिका प्रयंत्र, सामग्री ।--स्रासीट-वि॰ बंबुमा दूसरेबा

भाक जनरवरती इत्रप कानेवाका। --कामीटी-की॰

धमद्यानका कर जिसे डोम इफन फाइकर वसूछ करता था।

अक्रियन बहुत गरीब होगा । ⊶फाइफर डटमा—मुर्देका बी पठना । --फाइकर चिक्रमाना, बीखना-- गहुत बीर-से नीकता । --सेका व होमा--एए। हुए व्यक्ति दिन म होना, मरे हुए शेहे ही दिन होना (मुस्कः)। -सर या

सिरसे बाँचना-त्यम्मिन जाते 😿 सैनियमा अफनके काम आनेके किए सिर्पे सफेत कपना गौपना, मरनेकी वैवार श्रीनाः बानपर खेळमा । कक्तमाना−स कि सुर्वेद्धे सप्तममें रुपेटना। शर कि.० रफनमें इक बाता। कफनी-को [ब॰] दिला भारतीयका करका को (मुसक मान) मुर्देश्चे पश्मामा जाता है। छाडु-फस्प्रेरीका विमा बाँहका परमनेका दीका-शका करता । क्षक्रक-वि॰ (र्स॰) इकेम्मानस्य द्वया । कफासी~पुणक प्रकारका नेहीं संप्रकी । क्षप्रधा-प्रशक्ति] महा। -बरबार-प्र बाते दीनेपालाः

हुष्ण सेवडः मुच्छ बन । क्रफ्रस-पु॰ [व॰] पिंबवा; कैरखामा; रांग पा वंद जगह । क्फार्थन्-की॰ [थ] कुरतेसा एक पैथा क्यारि~प॰ [सं] सींक। ककास्त-सा (ज॰) किम्मेदारीः अमानदे । ∼मामा – प बमानवनामा । ककाशप−द (सं•) कड रहनेका स्थान (संड, समासव कफी(फिस्)-वि [एं॰] कफ प्रवास कपनी मविकशारी पेश्ति । पुहानी । क्रमीना-प्रवहायके फर्चपर क्रम हुए तस्ते ।

क्रफेल्-वि॰ [६०] वयी १नेप्पिक। ककोषि~मी० (सं] हक्ती । क्कोतर-प्र• सि॰] व्य दरसीय । कक्ष-पु॰ [री॰] मिर्वरा या निमा मिरका भवा पेटा बारका बतः पुष्पार ताराः राष्ट्रः एक राद्यस जी बेटक वनमें रामके दानों भारा पना। कर्यथी(धिव्र)∽नि [सं] बल्लाका (सम्प्) । प्र कारवायन । क्रच-भ किम् समय कराः क्रमीमदी(वहमेरीवाट क्षत्र सुनक्षा है) । –का–दिननी देरमें। बहुत देरसे। बहुत यरने । क्वक-पु [प्रा॰] परीर ।

बाज़ीस-प [ब] बमानत करने बेनेबाना। विग्मेबार ।

क्षत्रञ्जी-रूगैन सहस्रोदा एक रेन्या संपा । क्या - वि [सं] निगक्तरा । १० व्यास्थाताः वैदी सर्वे

चीडी। स्वयाः अन्यः ।

क्षप्रदरी~क्कर्षिक कसम्बद्धी - सी० कुलनश्रकी क्षत्रहरी; बलनश्रका पर जा कार्पे । वि॰ कुक्क्टरकाः कुक्क्टरसे श्रेषकः । **कस्मा**~५० मरसेको तरहका एक यौवा । कक्रमी-न्त्री [फा•] टोपी, पगडीमें क्रमाया जानेवाका हरों ना फ़ैंदना। मोर भा अगेंके सिरपरकी चोटी। सिरका म्पः गदमाः केंबी इशारतका दिसरः कावनीक्षा एक तर्व । क्रमची-सी एक हॅटीकी साही, क्रेस । क्षानुरी~पु० रहिन भारतका एक राजनंध । करमदा-प्रवर्धाः बस्रकी-सी संगे टॉपीका गोक करारीगका चन्मव 'किस्से याच आदि निकाकते हैं। क्रम्सा-पुर्व क्या बाँगका क्रम्मा क्रिस्स मन्यूबा माह से बंक्टी शास निकास्त्वा है। कसञ्जाग∽पु॰ है 'ऋजियुग । क्छर−पु॰ [मं॰] सकामधी छावन । क्षप्रहरू-पुरु है 'क्रकरर'। कटत-विक [सं] सरवाट, गंबा ! फ्डप्र-पु॰ (सं] पही, मार्चाः गोषि। दर्गे !-वर्तिसम्ब-पुरु परिवारको जिला का बदामै रहनवाकी संगा। कस्त्रयशां –प्रकृष्टाहोंका एक कक्ष्रीका सीवाट पत्र ! कसन-प्र[र्स•] प्रदेश बानना, समधनाः धव्य करनाः गमितन्त्रे मित्राः गर्मको विकक्षक वहकौ क्रुज-शोपियके संगीतक बादकी अवस्थाः चन्याः दोवः वैदा । कल्लनर−स्त्री [सं] दानः श्रहक, कैनाः क्षोदना मीथन । कछप−पु॰ दे॰ किछ्छ और दिल्य । श्रिकाय । कस्त्रपत्ता-व कि किमाप करना, अंतर्वेदनाकी खब्दीर्य म्बद्ध करते हुए रोताः विस्तरमाः बुन्ध गानाः शुक्रमाः माह करना ! * स कि • काटना - 'करूपी माथ नेति निस्तरकै' —ए०: बस्पना करणा : खो नाव, बान (पहना)। दे० 'क्रम्पना'। कस्रपाना-स कि बलपनेका कारन होगाः सराजाः दशना । क्सक्र−पु भुत्ने कारहेमें कमार्थ, क्लिमार्ग कामेके किय कराक्षी हुई सेर्य या गाँडी। चेहरेयरका सम्का बच्चा। —हार−वि॰ विश्वमें दक्षफ दिवा गया ही। क्रम्यां -प्रश्रेष्ट्री पुरुषे प्रभावा वानेवाका व्यार्थ रहा। कळवीर--पुर एक पीधा जिल्ला वन रेहानपर रंग चग्रानेक काम जाती है जदकरीर। कसबूत-पुर काँचा। ग्रेकंगर । **बर्स्स-पु॰ [सं॰] शांधीका वधा। शांधी। ठेउँदा वधा।** भत्ता । --बहुभ-पु॰ पीस्का पेर । कससक~प्तर (मंध) शामीका वचा । कारपी-सी॰ (से॰) दावी का केंग्रज कवा (माशा); यह तरकारी पंचा क्रम-न्दी [सं] हैदानी । यु यक शरहका पान विसन्धा भावन सहीज और सुर्गभित होता है: बीरा वश्वास । फ़ुस्रम⇒गौ [at+] कारना। सरकरे, नरसक काविका द्वपुरा जिल्ली रिन्दमेका काम लेते के कक्षण, शतकारध आत्मा गील हंगीतरा श्रवशा जिसमें कोंदे भारिकी जीम ((६४) चनावद रिवात है, त्रेमानी- दिशी पेष-पीनेकी व्यक्ती

कवाया हुआ पीचाः अनुपटिशीपर सुंदरकाने किए होरे शीर कुछ संबर्धमें बटे हुए बाह्य मित्र बनावे वा स्व मरनेकी क्षीर काँच वा रक्षत्रिका पंहरदार अंक्रेस अकार। नकासी वा सुदार्य परनेका भौकर। देखे दने वड़ी हुई कवड़ी किससे श्रीका कारा बाता है। क्रेरे नीसावर काविका रहाः किसायर, क्रिके बादेश शब्द एक तरवृद्धी कुरुष्ठारी । वि वटा तराचा गया !-- बसार्व ~पु॰ [बिं] वह भी किसाने पहनेमें कठोरतासे क्रम है क्*र । −कार−पु॰ हेक्का* नित्रदारा नित्रोरी रक्तमी रंग भरनेशकाः एक तरक्षां नायता । -कारी-योग कृत्यांकी कारीमरी। क्ष्ममंत्री मनाचे हुए वेष्ट वरे ! ~कीवी ~मी॰ क्रसीक्ष एक पेंथ। =सद-विद्या हुन। --शराया-पुर सम्म बनानेदा बाङ् !--शत-पुर सम पीतक भारिको संबुक्तनी या शुक्रा भाषार जिसमें घटन दाबात रक्षी बाव । —यंद्र~वि विद्याद्वमा केस्स्रिः। युः कृष्वीपर वाक मॉबनेवाका । −री−औ॰ राज स्वर नतः। मः –करना–कोटनाः छटमा। –सीपरा किये हुपको क्टेंटना । —शसीटमा —श्रक्तमा—सिप्यो ~लीकमा~रचमामें ऐशे संद८ बन्धे यत करण विसम्ने अभिक सुंदर अनुहो बात न कही वा सने रसमा कीशक्ष्मध्रे पराकामा कर हैना। -दान हेना नेनी 🛚 मीर मुंधीका पर देशा । --फेरमा-निधे गुम्बा कांग्रे रर करणा । कसरुक्त+- धुद्दे 'बस्मम्'। कक्रमना≉−सः विश्वकृतम् करुता काटना । क्रसम्बद्धभाष-म क्रि है 'क्रमम्बन्त'। कक्रमकाना~अ• कि क्षप्रसाना ! कसमा—पु (२०) मार्थक सम्भावात शक्ति क पास वो मुख्यमानीक वर्श-क्रियासका मूल मंत्र है-⁴ला स्मर शक्तिकार शुक्तमर रखकितार'। -म्रारीर-प्रश्चिक मसी बाता सावारण प्रदेशा । –गी-पु॰ बढमा सर्वे गाका शुसक्तान । शुरू -पदमा-इसकाम वर्ग शीक्त

नी नवा पेड़ तैयार करमेके किए काटी पानः वर्ग सक्टेरे

करना। देयान काना । (किसीका)-पदमा -भागा (दिसीका) यक बनुक्त मेमी प्रमंत्रक होनाः (रिपीरी रूप-गुजपर मुख्य होना ! --पद्मना-हरसामध्ये दीन हेना मुनकमान वनाता। -(मे)ना धारीक-ज्यपनी भर्मेर्ग्य (मुम्ख्यान) । कसमास=-वि॰ ए॰ 'बस्माप'। क्रफारी-नि पा] एरतकिदिता क्षत्रम बारकर क्रांप हुआ (पेड़); रवायार । -होरा-इ सन रवेशाल और मधिक शाक घोरा । कारका-पु [सं] गर्भका आरंतिक एए जब वह देवत हुए कीपीका गीला रहता दे। नर्माक्षय । - क-तु = राहः वर्ष । कक्रवरिया-भी० वलकारका बुकान, सरास्थामा । करुवार-पु॰ कर दिन् जाति की वस्ते सुस्पतः धरन बनाने मेथमेका मेशा बरवी भी। उस जातिश व्यक्ति शक्त्या । [नो कम्पारिन' ।] कमविक-पु (र्रा०) गीरवा। क्रीयमा वर्तवः, सापः वर्माः त्ररकृत्रः सकेद् भीवरः। —क्यरं —तुः वटः तरहकी समारिः।

कर्मगरी-सी कर्मगरका दाम वा पैछा। कर्मचा-पु॰ नदरगोंका कमामको सहबाधा एक भीवार । कर्मकरु-पुदे (कमण्डु)।

कर्मब्रही-वि॰ कर्मण्डभारीः छात्र बीगी । पु॰ नद्या । कर्मडसु-पु [सं] साधु-सम्म्बासिनीका दरिवार्ष नारि नस, तुँवी वादिका नना जरूपात्र । -सक्-प्र॰ पास्त्रका

पेदा-धर-पुञ्जिया कर्माद- • प्र दे० 'कर्षथ'। सो [फा] प्रदेश प्रदेशस रस्ती क्रिक्ट सहारे चीर की मकाशीपर चढ़ असे हैं। ररसीन्ध्रे सीवी ।

क्याध-प्रवेश 'क्षंत्र ; श्रमना कनारे ।

कार-वि का] बोहा, अस्पा छोटा। बुरा, यराव । अ कवित्, गहुत कम। --भक्क-वि मूर्छ, निर्नुदिः। -अस्रख-दि॰ दीयनाः दसीना नीच । -उन्न-वि छोद्ये उधवाका बस्यवबस्ड । -क्कीमत-वि सरता करपम्स्य । - जुर्च-वि विकादतरे परुनेवासा । (-- बाला मर्सी-सरती पर बन्दि। वर्षेष्ट स्पर्वोगी।) -फ़्राक्-4ि कम सामैवाका । ∽ग्रवाय-<u>प</u> ण्ड रेशमी कपशा जिलपर सोने सोदाके वारीका काम क्षेता दे। -हो-वि क्म बोकीवाकाः अस्य मापी।-क्रक्री-भोग्राः क्रमीना मीव । −क्रोर−वि दुर्वत क्रम पादत या जसरवाठा। −कोशे-का॰ दु॰स्ता सञ-कता। ∽तर∽दि अविद छोटा रुपुत्र अस्पत्र। ~त्तरीत∽दि छोटेसे छोटा अपुत्तम; कमसे कम। -तवज्रही-सी कापरवाई।-तोखा-वि कम वीकने बाका बाँकी मारमेबाका । -मज़र-वि जिल्ली निगाद बोड़ी हो इरहक जाव अदुरदशी। - नसीव-वि० धमागा करमधीर। - नसीबी-स्त्री दुमाग्य कर किरमदी । - बस्त-दि अमागा इतमान !- बस्ती-सी दुर्भाग्य वदमसीनी। (-०का सारा-व्यमना।) -पाच-वि कम मिसमैवाका, वुर्णम ।-व(मो) प्रपादाः -वेस-म भारा-बद्दतः -स्तरम-वि दम नोसने बाका, अस्त्रमादी । -सिल-वि कम्प्राय बाह्य । -हिन्मत-वि परतदिमान बरपोक, स्वाबर ।-हिसियत-वि अस्पवित्तः होता सीवा ।

कसकर नप्र फदारको शेवीको वक बाति ।

कमकम-वि गामधीर, आसमी।

कमसोरा-पु वैक भारित मुँहमें दीलवाका एक रीय। कमची-श्री [पु] इत्तर्श कदश्रनवादी ध्रश्री गाँस मादिक्षी पराली टहनी कृषिकाः शीली पंत्रा कवानेता एक मस्सर जिसमे सैग्जियों हर बावा बरसी है।

कमण्डा⊸मी दे 'द्यमास्यो'।

कसरी-स्री पत्तरं नरम रहनी।

क्मर-पु [सं] क्पुणा बॉन- क्मंट्या तुँवी रान्येंसा पेदा एक देखा।

कमदा−५ कमल।

ू कमनीर्न−स्रोशकर्मा। विकास

वसन-दि [मं] कामी; संदर्। तु कामदेवा सदावः प्रस्ता ⊶च्छत्-मुरकप्ती संद्र, सर्वा। कमना!-अ कि दन दामा पटना।

कमनी - वि० दे "कमनीव"। कसमीय∽वि [र्स•] कामना धरमे. पाइने घोष्यः संदर । कमनित-प्र कमान गाँवनेवालाः धीरंदाव ।

कमनेती⊸का चारंटाका । कमर-वि (र्ध•) कामी। स्त्री (फा•) ध्र(रिका मध्य, पेट और पेट्के पौचका भाग, करि मध्य मागः कुरतीका पक पेंच । —कस-प प्रकारका गों? कमरमें पहनमेका ण्य गहना । -कोटः-कोडा-प्र॰ प्रकोटेके उत्पर्धा वीबार को लगभग कमरभर सँबी रहती है। रक्षाने हिए पेरी दुर्व दीवार । ∼कोठा−प्र कीटेकी वह कवी की वीनारसे वाचर निवकी हो। -एटा-वि हनका मामर्रे । — होगा — पु+ कुरहोका एक वेंग । — सोद्र — पु करतीका एक पेंचा —बोधाक —की जोन कसनेका उसमा। -पड़ी-ली अँगरपे बादिमें कमरके कपर कमानी बानेवाकी पट्टी। -पैटा-प्र मारुर्धनकी एक कसरत । —सव्—पु॰ कमर वीवनेका एक दुपटा, पटुका॰ पेटी; स्वार्तवा कहासी । वि॰ कटियम, सरवेद !- वही--की॰ सस्तेतीः कहार्रको तैवारी । -बंध-प अवतीका यक र्वेच । -बह्या-पु॰ खनरेकमें कीरीमीके नीचे सगावी कामेवाक्षी सक्दपी । —बस्ता—वि क्षमर वॉथे द्रायः देवारः सम्बद्ध । पु दे * 'कमरवतः । मु > ~करमा−भोन्दा स्वाधमें बन्द रुज़रुना । -कसमा-(दिसी कामके किए) वैवादः बामादा दोमाः यदा रराना बरमा। -कोसमा-समर्थंद सीसमाः दम हेनाः (वाशः वा किसी कामका) संकल्प निचार स्थाय देना । **∽ट**टना∽ दिन्मत परत होना। दिक बैठ बाना। बुछ दर्जका दम न रव जाना । -वॉंबना-दमरनंद वॉपना; सफरके किय वैयार दानाः कमर कलना । —येंड खामा –३ 'कमर इरवा' । -सीधी करवा-क्यावर मिटामा, सखाना । कमरका-१ एक इस वा उसका फल की पाँकरार और कुछ राहा होता है।

कमरकी-वि कमरस वैद्याः कमरखब धमान प्रॉस्टार । की किसी चीब है किनारे कहा हुई केंग्रोदार फोर्टे। कमरा-१ कोवरी: रक्तलस छरी बोटरी जिसमें विधा-रक जाराम निर्मा पातकीत करता और क्योन्हमी सक बना मा सनता है, 'चेंबर'! पोटी ग्रीमनेका वंद्रा है।

'ब्राग्रह'।

कमरिया-प शैमा दाशी। बन्ती देश फुमसी है ष.मर ।

कसरी • – श्री दे 'कमसी ; समुद्धाः पु पीरंका श्रक रीय ! वि चौक्र मारनेव का (भोदा) ।

कमम्ब-पु [मे] पानीमें होतेनामा यह प्रसिद्ध पीचा और वसका पुनः पदा यनः तींदाः होमः शास्त्रः बद्धाः भाषक जुलेका एक भेरा कॉराका काया। गमाछ्यका मुँहा भूव तालका एक भाग एक रागा एक कुछा पालिया रागा गामवधी जनानेका काँचका (गनाम: मृत्राह्मव १ - अहा-पु (दि) वेंश्वनगृहा । --क्षत्र-पु कमनदी यह सरार । -गष्टा-पु [हि॰] कमन्दा श्रीत । -गर्भ-पु कम्स का देशा । न्यान्यु बदा । न्यायन-वि क्यान्यो ५गुशसी ऑस्ट्रोंबस्टा । पु**्विष्युः शमः कृष्ट । —माम**—

वातक । **बक्षाप−प [मं]** समृहः प्र**माः** मीरको पैछः *पक् गहनाः* करवर्गाः तरकसा वाणः चंद्रमाः, यदः वर्द्धं चंद्राकार सन्तः शाबोके गणेको ररछी। एक राविती । क्र**सापक-पु॰** [सं॰] समृद्या पृक्षा मौतियोंकी कही। कर मनी। पार ऐसे स्कोकोंका समृद्द जिनको प्रिकानेसे एक बादव दोता है हाशीफ़े पत्रकों ररसी कराटपर अंकित शोगेवाका सांप्रदानिक चित्र । ककापिमी-भाँ र ो नेगरनीः राष्टः नागरमोधाः। क्छापी(पिम्)-वि॰ [र्ध॰] तरक्ष्मवारीः बुम फैकानेवाका (मीर)। प॰ मोरा कोनका बरकका मोरीके नाचनेका श्रमय । क्षस्यस्य – पु॰ [तुः] कशवत्। क्छाबस्ती-वि० क्कारच्या बना हुना । ककाबच-पुरशमक बागपर छवेश ह्रमा सीने वा न्यदीका तारा सीने-वीदीका तार क्रकारतका बना पतका कोता । कडाचा-प• [ब०] त्लाम कच्छा वा वासाः तकनीपर कियदा बन्धा सहा बाबीके गरेकी रस्ती। बाबीकी गरदम ! कसाम-पुमि नेवन उक्ति वात-धेता रचना निका धन परुराम । – (मे)पाक – शनीव – व<u>ुक्रानसरी</u>फ। ~स**बा**ड~ड डरान । कछासक-पु॰ [मै॰] बाहरी तैवार होमेशका यह शाम । ककामत्र - पु कलार्वन, संगीतप्र। कस्राय-प्र॰ [मं] भरत् बेराव (व्य करक)। -संब-पुर मंशिबीका पक रोग । कस्रयस−यु [सं•] नर्तक। बसार बहाल-प्र• ६ स्टबार'। कुमार्चत् -पु॰ विभिन्द शिक्षामाश गायक वा बादक । वि द्रका-कुछक । क्षमाबाती-विको सि किमानानी कवा बासतेवाकी। संदर्ग । कसाबा-पु दे 'कशाबा' । क्साबिक-पुरु [संरु] सुनो । ककाविकस∽प्र॰ (सं } गीरना पक्षी । क्यास-प्र [र्न•] एक माधीन नावा। कसाइक-तुमि] व्यवसाया । ककिंग-वि॰ (सं) चतुर, वृत्तं क्तिंग देशका । पु॰ : प्राचीन मारतका एक चनपदा बढाँका निवासी। कुळेगा बंबाबी। सिरिसः नरमुकः दरनावः यक्त राज् । कस्तिमक-प्रसि] ध्रमीः करत्य । कर्डिनादा−पुथकराग। करिया-या [मं] सररा था। क्रक्तिज्ञ-पुरु [मं] चरार्था परशा । कर्मिन्-पु (सं॰) वह पर्वत विसमे बमुमा निजनती 🛍 बहेशा सूर्म ।--क्रमा --जा -शमका --संदिमी --सुर्हात -स्वी: बसना ! कक्किदी≉∽सांदे कलिया। क्रि-पु [सं] करह शनशा पुरुष भार तुर्थों मेंसे भीवा विसन्धे भाग ४ स्टक्ष रेश हरार मागन वर्ष मानी जाती |

है। ब्रस्टियुगका अधिद्वाता असुरा पारश्रीका धर्मेका रा विद्यानाका पहस्य वदेवतः जीर पुरुषः बाल र स्री । प्रयो * वि॰ कका । -कमें(न्)-पु संगाम। -कार-कारण-पु नारकः पृतिकतेन ।-कारी-सी । धरियां। ~काल~पु॰ कवितुन । ~हुस -इस-पु॰ गरेश। -प्रर-प प्रशास समिका एक मेर I- मह-पुर बरस-की पुकास । --प्रिय-नि॰ शगशस्त्र 🚉 नारशः सर्। ~स**क**−पु पाप । **~∗सरि~सी० दर्मनाधा स्तो।** <u>-मुग-प्रक्रिक ।-युगाचा-को भाको पृथ्यि</u> (इससे कलियुगका आर्थ माना जाता है) ! - सुमी-तैः [दिण] क्रकिश्यकाः क्रकिश्मी सुद्धिः प्रवृत्तिसमा ! ~नामे -- वि• जिल्हा करियुगमें निषेत्र हो। प्र कन्युक्ते निपित्र कर्म (सन्दर्भेश, गीमैश, सन्त्रास मांस्का विकास और दंबरसे निवीम)। -हारी-सी वस्तियोगी कक्रिक−दु(ई•}कौव फ्शी। कस्टिका∼सी [से] इस्ते। एक देश कुमा, क्षेप्र वीचामुल । **कविकान**≠-वि+ हैराम परेछान। ककित-वि॰ [वं॰] यूदीतः द्वातः प्राप्तः तुस्य निमृतिय गणमा किया हुमाः ध्वनितः सुगर । **ऋकिया** - पु+ [ंश+] फ्लाया हुमा रसेरार मांस 1 कृतिकाचा-म कि॰ कृतियोसे बुक्त हाना। रहिर्देश नर्ग पंच नियन्त्रमा । कस्तियारी – स्ती एक जैवा बिलको बध्वा योजें (प होता है और दशके काम बाता में र कब्बिल−वि [मं] नावृतः मिला हुना। परिपूर्णः "है प्रमानितः अभव बना । पु वर्गाराधि । कर्कीय कर्लीबा~प सरदंब, शासिय। कसी-भी [मं] हेंद वेंथा कुछ बोदी। विदिवास करें निकल्पनेवाला छोता परः अप्राप्तवीयना कवा (हार) [दि॰] कुने शारिमें कमनेवाका तिकाना वरता रूप आदिका पूर्व्य हुव्या हुक्या जिसमे चुना बनावा जाता है। सु॰-कुरमा-वित्विते खते परेबी विश्वमा ! क्सीर≠−ति कास्त शस्या। क्छीरा!-पु चौतियाँ सुदारी आदिकी गूँपझ सारी इना शर । क्रसीस−नि॰ (ल] थोता क्रमा होरा ! कस्त्रीसा-पु॰ [ब् १६डोलिवा'] गिरमा, रहप्रवेश र पासना-मंदिर । कमीसाई-विक्तीग्रेते वंश्वः । पुर्वतार्थः कक्षीसिया-पुपक रंखारे संप्रशाय । क्षमुकाबीर-पु॰ झार-डॉड आरिये मंत्रीमे आनेशरा य प्रेत्रीय । क्लुक्-पु॰ [मं॰] एक शय स्रोत । क्रुक्का~ली (सं•) सराया शन्या । क्षुप्रश्~प , क्षेत्रसाहेश-लाः रे 'रत्त्र'। कारागी = - विश्व दोषी व भुषतुष्ट । कस्तुप-पु॰ [सं॰] मैल, संदर्गाः चापा झीपः भसा । (६० मैला गंदा। पानी। निरिता सुद्या सूर । - चेता (तम्)-वि बुट। -बोनिज-वि वर्गन्दर।

वैठना । वि. दे. 'कमीना' । —शाह--सी॰ वात स्थाने को बगह । -पन-प देश किमीमापम । कसीना-विश्वकि। नीय, हार, बोटा। -धन-पु मीचता, शहरता ।

कसीसा-पु॰ एक फ़रवार छोटा पेह । कसीशम-पु • [बं •] किसी विषयकी जाँच, विचारके किय

मिञ्चक छोडी समिति या मंदकः पुरस्य व्यक्तिके प्रवहारके किम एक या अभिन्न वसीलाँकी मिल्लिक पर्नेटका काम करमेका अधिकार; दकाठी, वस्तूरी ।

क्रमीस−सी॰ [अ] दे 'क्रमीख'। कर्मुबा कर्मुका-सी [सं] वाक्रीका गुक्छा।

कमुभा-प मायके बाँदका वस्ता ।

क्स्यक्र्यरम-प्र• बसुप् दोवनेवासे रामबंह। कम्ब-९ [स] बीरा।

कम्मा-वि॰ वीरेका वसा ।

कमेटी-त्या किसी पास कामके किय बनायो गयी समिति। क्रमेरा-व काम करनेवाकाः सीकर ।

क्रमेक्षा-प्रवानकराँको जिन्ह करनेका स्थान, क्लाईग्राना । कसेहरा –पु॰ चुड़ी शकतका मिट्टीका शॉया ।

कसोड-पु॰ [अं] चीनी सिट्टीक्ट बना यक पात्र की मक्त्वामदे किए स्टूकमें कमा विवा बाता है।

कमोदन कमोदिन - जा द॰ 'कुमुदिना । कसोविक-प्रकामीय राग गानेवालाः भवेवा । कमोरा-प्रमस्या।

कमोरी-स्रो होता क्ष्मीरा, महकी !

करमाध-प ओहने विद्यानिके कामका कमका बना मीटा

क्षपंत्रा श्रीवस ।

कस्मा । – प्रतादवश्वपर स्टिप्टा हुना स्टेख । कन्यम-त [सं] संपत्तिक समान और संबन्ध अविदारी मसुष्योका समृद्द या स्था अप्रेस कारिये देखका सबसे छोटा तथा रबंधासुक विमानः एक विमानके मिवासी

षा सरकार । करपुनिप्रस−पु॰ [शं॰] समादको वह व्यवस्था जिसमें संपोचपर समाक्का मधिकार इ.सा है और प्रत्येक म्यक्ति क्रपनी बोग्यवाचे अमुखार कार्च करता और आवश्यकता-

मुसार श्रुपि पाता है, साम्बदार । कम्पुनिरह-पु । अंशे कम्पुनिश्मका अनुवासी सावर्ग-

राह्ये । क्य-दि [मं] कामुकः संदर ।

रूपा०-सी है दाया'।

कपाध-न्त्री । [र्न-] दिरण्यस्थित्रक्षे पक्षे प्रहादकी माला। क्याम-इ [भ] हिमाना। हत्त्व हत्त्वा बहना। यश होमा।

क्रवामत−सी॰ (अ) मुसनभानी वंसारवी जा?ऋ विकामामुसार प्राणियोक्ने क्योंका हेगा हेनेका दिन रीवेवका मध्या भाषता इतामा इत्त्यसः। — हा--वकारः। गणवयः। —की श्रवी-प्रसम्बद्धासः योग संबद्धाः। बाब । मु -बरपा करना-धवन बामा संबद बप-स्तित करना मुसीबत काला; हरेंच करना । इपाम-दु [म•] जनुमान करदश्य वरदशा

क्रवासी−वि॰ अनुमितः माना हुआ। अटकरुपण्यः । कर्रक-पु॰ [सुं॰] सोयगाः ठउरीः भरिभा मरिनरीः कर्मक्स । साथ बादिमें निका शुक्रामें पहेंचहर निना बीजन किये न उक्तेवाछा, वॅगका १

कर्रगण-प्र• [सं] मेका; बामार ।

करंबा:-पु॰, करंबी--सी॰ एक तरहका मौदा वाम । कर्रज कर्रज्ञक∽पु• [सं•] एक झाइ, क्रंबा विसन्ते फक भादि वदाने काम भाते हैं। [दिं] सुरगा। ~ हवामा → पुरु सुरग रक्षानेकी जगह ।

करंजा−प़॰ दे॰ 'करंब'। दि॰ मुरी ऑंपोंनासा। करंज्या-प्र• दे 'करंज'; करंजकासा रंगः † जीके पीपी-

का एक रोग। धनीई। विकासके रंगका। कर्रड-५ कुश्क परभरः [र्थ] बीसमा बना दोकरा या

विदासा बहरका कत्ताः वक्तारः एक वरहकी यक्तरः

कार्रकरः यक्षतः एक तरक्षश्ची चमेली । कर्रडक-तु॰, कर विका-ली॰ [सं] गाँसकी नभी येकरी

बा पिटारी । कर्रश्री-सी॰ भंगेकी बादरः [सं] क्र/टिका।

करंडी(डिम्)−पु[र्थ] अट्टाः कर्रदां-त वह र्गला की विमा भीत्रम किये ॥ टक्के,

衛衛 1 कर्रव−वि [सं]वे॰ 'करनित्त' । प्र वे॰ 'करम । क्रमंबिल-बि (एं॰) सिमित मिला हुमा। सबित ।

कर्रभ-त [सं•] दहीमें सना हमा सत्ता रहिया एक मिमित गंबा एक।

कर्रभक-पु [मं•] वसिया। वहीमें समा हुआ ससू। कर-प्र॰ [र्ष] दाना किरणा दानोको स्टेंगा मालगुजारी महराष्ट्रा भोकाः हरत महामः ठवारंकी यक माप । वि बरभेगाका (समास्त्रीतमें-'समाहर', 'ब्रायहर')। ७ प क्षक, एक, बुक्ता । • म का [ताक्द नाम भरत अस होर , रामार्श ।-कटक-पुर नामन ।-कमल,-पंद्याः -पश-प्र-प्र- क्रम्स्सा क्रोमक सुंदर हाथ । -क्स्स-प्र अंत्रकि । -कोच-प पानी हेमेड किए गृहराबी हाँ इवेटी पुरस् । न्यत्न-वि॰ इस्तगत । नप्रहानप्रदृष्णन ष्ट क्यांना या वस्ट करमाः प्रामिप्रक्य । –प्राप्त-प्र पतिः कर वस्क करनेवाकाः। --थाः-प्र• [हि॰] यक तरबका रफ । - ज-पु मासूमा वैवली। परंजा -थोबी-सी॰[दि॰] एव शोपवि दरपावदी !- प्रमोडि-प्र पष्ट कुछ, करणीती । -- सस-५० इप्रसी । ध्यति—स्वी ताकी। —ससी—स्वी ६५८। नासी।

-सारी*-सी दे कसमें !-सास-प ताली बरतक-प्यति। दावसे बनामेदा कोर्नम आदिमें स्ववहत एद नामा । —शासिका-न्यो॰ ताली । – शासा-न्यो॰ छेरा बरतानः ताला । —सोधा –सी पूर्व वंशास्त्रः एक नदी ।

-इ-दे 'क्रम'में । वि कर खिरांत्र देनेवाला (राजा राज्य) शहारा देनेशला । पु दिसान ⊢हाता(नू)-पु• कर देनेवाला । -धर-पु॰ वान्छ । -पग्न -पग्नक-प भारा । -पलप्द॰ सी॰ दे 'करपार्थाः । -पार्य-पु॰

वैनली। -प्राची-श्री बैंगतियोच प्रदेशमें प्राप्त है योगनदी विया ! - पान्न-पु॰ कुछ छन्छे डिप्ट गहरस्या

योग्य । नकार-पु करपगुलीका रचविता (अध्यक्षायम मापरतंत्र, बोबायनः कारवाजनोः सादः धराव बनासवासा। वि सवाने-सँवारनेवान्य । ~क्षय~यु करपांत । ~सदः ~हम,--पादप-पु॰ दे॰ 'कश्यवित्य'। --पास्क-पु श्वराथ पेकनेवाङा । ⊶भव-प्र॰ जैनकार्योर्थे वर्णित एक प्रस्तरक देवराज । —कसा-सी॰ बरुपाकः कम्पनकादी शाखा । -वर्ष-५० एप्रसेनके मार्र देवकका पीत्र । -बास-प भावके महीभेमर गंगातरपर अध्ययपूर्वक रदकर वर्षेत्रस्य करमा !-बिटए -बक्क बाधी(शिम्) -पु॰ संदर्शननस्था पक कृष्ठ भी समुद्रसंधनसे निक्रणे प्रप १४ रजींस बीर की कुछ भी मोगिने उसे वेनेवाला माना बाता है। एक प्रश को कार्यका और भारतके महास बंबरें बादि प्रदेशों में होता है। मति खबार पुरव (का॰)। -- विद्-- विश् वन्तरस्त्रीका शाता । -- स्त्र-प्र• वैदिक बहारि या गृहस्थ-धर्मीका विधान करनेवाका सप्तर्धन (बीट भीर राष्ट्र सूत्र I) -द्विसा-की कवने पीसने काडिमें द्वीतेवासी दिंखा (वे)। कट्यक-दि०[र्थः] करवना करनेवाच्याः रचनेवाच्याः काटने-बाकाः प्र∙ नारी कच्या एक संस्कार ।

काका पु॰ नारी कच्या एक संस्कार । कस्पन प्राप्त हिली रचना। काना। संवाना संवारता। एक बस्त्री क्ष्मिका नारीय करना। कान्यावी करणना करना। धरेना। कराया। कस्पमार स्वी सिंडी रचना। कोई नवी वाल सोचना

उज्ञावना। इसकी प्रक्ति वस्त होणी दुई वात, परवा मतकी वह परि को परीप्त विपर्णमा रूप, विकास स्वक्ते सातने का देती हैं। सीमा। मान कैमा। कर बर्तामें इसरीका मारोप स्वारता। स्वारीके किए बाबीकी स्वारता। —प्रकार प्रकारताते स्वीवा द्वसा विका नक्षा। —प्रकार क्रवरताते स्वारता क्षा मान पर्वत । न्याद्र—प्रकार क्ष्मान की दुई करणा है— पर मत । न्याद्र—प्रकार क्ष्मान की दुई करणा है— पर मत। न्याद्रि—की कीई नयी बात दीवनेकी प्रकार प्रकारना प्रकार। —प्रक्रि—की करणनाकी रचना, मनी-रामन।

क्यरवी—ली [र्स*] करारती। क्यरवादि—हि [र्स] मिलकी करावा की या छन्ने। क्यावि—है [र्स] मिलक राहिका क्या । स्वायी(किए) —ि स्टिके क्यरक वण रहान्याचा। क्यावादित—है [र्स] कैमछान्यातुसार यक देवला। क्यावादित—है | वि हु [र्स] प्रसंस्त काल्याहै क्या क्योवास।।

कदिनक-[र [रं] कोक धरवुकः। कदिनस-दि [रं] सोका माना हुआ। मनने तदा बुका, कत्री; एकारा, सेवारा हुआ। कृतिन्त्रीयमा-रने शिक्षे वस्तुकः सरमा अर्थनार

बारी प्राप्त प्रवासन सं मिण्येयर मनसामा व्यवसान वरियन बार विया बात ! बारमाय-मु [हो-] सन्। मेशः पाशः यक मरकः कमारैकः मीनेका साम [वि. वापीः वहा प्रयाः !

कदमाप-नि [मं] विराज्ञकरा । षु विराज्ञकरा रेमा कामा रेमा राधसा मनिका कक रूप यक गुराबुदार चानकः वच्या ताम । -वंट-पु० स्थि। -वार् पु॰ ध्यः रामा, सुगसरा पुत्र ।

ण्य राजा, म्रान्यस्य पुत्र । करमान्यी न्यील (संत्र) बहुमा नयी । करमान्यी (संत्र) मेणित सरस्या मन्या मंत्रकामस्या हुने बाह्य (बिल स्वर्यक, नीरोगा मरहाना बहुत कुरूवाहुर, करमान्यस्य गुणा; बद्धा । अल्कर, बानेस्ये रिश न्यास्त्र-सार्यक्रमान्यस्य अल्करात्रस्य ।

-पु० सपेरेका भीवन कडवा। कस्या-वो [सं] धरावा क्रवामवयना हरीको करेर गाव () । -पाक -पाकक-प० व्यक्ता

गाव (f) 1 --पाक --पाक क-पु ० हण्या। कदमाव-पु ० [६४] मंगना हुच सीमाना मन्द्रों कपु वहां सीमा वर्षा पु मन्द्रों मुद्र स्वाप । (वि मेक्स्प्री पुंदर हों सीमा वर्षा पु मन्द्रों मुद्र स्वाप । (वि मेक्स्प्री पुंदर हों सीमान्वप्राणी । --क्रमोत् --पु एक सिर्म सामित करनेयाना समायाती। --व्रत-पु ० व्ह स्वस्त्र साम। --क्रमु --व्ह स्वस्त्र साम। --व्ह स्वस्त्र साम। --व्ह स्वस्त्र साम। --व्ह स्वस्त्र साम। --वि व्ह स्वस्त्र साम। --व्ह स्वस्त्र सा

करवाणक-वि [र्स] शुभ, मंत्रकारक क्यरिप्रेक। करवाणका-ची० सि०] मैनतिक। करवाणी-वि० चौ [र्स] वस्त्राज्यारिका वस्त्राज्ये

रियो । स्त्री मानः क्षतीर गाया प्रशासने स्वर्धेने नेपको स्वरत ।

क्षम्याणी(चित्) –वि [तं] तुनी। तपुदा वानवारी गेतलकारक। कस्यास॰ – प्र दे० वस्त्राण'।

कस्यास-पु (वं] धररेदा मोजन करेया। कस्यास-पु (वं] धररेदा मोजन करेया।

प्रसु−वि [सं] वहरा। प्रसुर-प्रभोगी मि£ि रेंद्र।

क्हाँच-वि ग्रेटा केंगा ।
क्हाँच-व लेटुआ, गोंडा (इटना) जनका जनके कैरे
क्हाँच-व लेटुआ, गोंडा (इटना) जनका जनके कैरे
ग्रेट बंद बद देनेनाना (बनान)। -च्याह-वि ग्रेटके
श्रिक्त बचान बहुत तेशीरे क्लेश क्लाना। -द्राहा-वि लो श्रुद्योरो वर्षोराओ। -पाय -पायना-वु क्लेश नदे क्लिके की देवता गोंच। गु - -प्याचा-वेन्द्रों रोकता। -पुक्रमना-वुद कुकान। -पायना-व् वकाम। -(होतक द्वा क्ला-वोस्त्रीयाक्षर हो

क्षम्राजा-अ कि जन्मदे साथ दर्ष होता! बसद्द-शि काणा कर्दराः बस्रोक-यु [सं] कुछ खेपी और आशाब करनेरणे कर्दर, मोबा कार्यराज्ञीयाः शि कष्टणपूर्वः। बस्लोकिमी-सी [सं] कर्दोबका नदी।

क्कांसिनी~या (स) सहरावाचा नया । **कस्यल**—वु (सं.) मनिक शीवामसंय राजभेति^{सी है} कर्ता ।

कान्द्र्य-पुनी मिट्टापिण्डंपर! कम्द्रमाथ-च क्रिण्डप्रामी भृगा वा तमा जाना! कम्द्रमां-पुर्वे दशक्ता!

करमद्वा०-वि क्षेत्राः।

करमरक-वि० है 'कर्मर' 1 क्रमा-+ प ते 'हर्ज' सरिष्ठ । -शारण-प० दे करमरी(रिम)-प॰ सि॰ो यह वंदी जिसे मानीयन 'कर्णबार' । - पुन्न-प बानमें पहलनेका एक गहनाः काराबासका देट ग्रिका हो । कॉप। -- क्रेस-प० कन्छेत्रन । करना - ए फि॰ किसी कामक होनेमें यसवान होनाः अध्यया⊸ध कार वाल किया । श्रेताम रेपा। दिशी कार्यको शंक्य करनाः निकटानाः करमास÷-प स्प्रीः भाष्य l करमी-श्री है। 'क्सी'। ' सी है 'क्सेम'। इतामा अन्य अप देना। पदाना। रखना। पहेँमामा। करमेंद्राः करमसा-वि काने मेंद्रवासाः मिस्के मेंद्रमें रोजगार, वेद्या बरना। माडेपर हेना (श्वा-ताँगा आदि) वित का चलीके कवर्षे बहुद्ध हरसाः पोतनाः प्रमंग बरमा । काक्षिय स्मी हो। कर्वित । प करनी कामा एक तरहका भीव । करमेळां -प्र• एक प्रकारका नहीं शाविका तीता । करमान-प एक तरहका बान । करमाई-मी० तरही। कररनार-भ कि पर्र-वर्र दरहे इरना। कर्मश्र वीसी करमाट-प्रदे कर्णार । बोह्ना । **≋रहाटक**--प महास प्रांतका क्षक-भाषी भाग १ करमारकी~वि करनारकका । य करनारकवासीर कसरत करराम•-सी धनुपको रक्षार । कररामाण-म॰ कि॰ है 'बररना' । भाविक काम दिखानेवालाः वाजीवर । यो करनावयनी कररी-को बनतक्सीः एक पत्रीः कररी । भाषा कलाई है काकण-प कवादी। ≅रकारी-को हे 'दर्जारी'। करमाख−प एक तरहब्दी तीए मीपा: वहा होल । करका-प करकी-नी कहा क्षेत्रस पत्ता। करवट-की शहते या बार्वे बान् हेटना। इस तरह हेटने-क्षरमी-तो क्रम करततः अल्बेष्टिः पिसराबोंका पक की स्थितिः पहस्य पान् । पुण्याराः एक विपेता वसः भीवार, धन्नी । करमेश-प॰ वि 'सर्नक') सेनास्त्र एक वहा जन्द्रसर ! बर्गेट । अ॰ - म सेमा - सर्वेम्बपर व्यान म देशा चार्चा करपर=-प्र सीपड़ी। खप्पर । वि+ क्रथम । सायता । -बरसमा -हेटनेमें प्रस सरकता, इसरी ओर करपरी ं - को पीठोकी पदीते । हो जानाः क्षरना वर्षेमीछे बार-बार बहुछ करहना सी **करफुळ** च्या दीना। न सकता। -खेना-हैटे वी सोने इप भारमीका इसरी करयरमा*~अ० कि कुकरव करना (विद्यों भातिका) । ओर प्रमताः प्रवृक्त वर्षणताः वर्षणताः प्रस्ताः स्वयं करयमा-ना मि दिराने भरनदा बद्र प्रवर्शन मैदान प्राप्तिको भारतासे काशी प्रधान भारतिमें क्रिकेट कारे है और पहाँ इमाम इसेन अपने छावियों छहित श्रद्धांव हुए। वह स्टब्स बात हैता। रथान अहाँ ताबिये दफन निमें बात हो। बलहीन स्थान । कावस-प॰ करपत्र सारा । करवर - ली । याता संबद विपत्ति। ब्रहिनाई। य करवास। इस्थी-ली॰ अजार या राजरेके दंग्रह की भारेके काम करवरनार-अ कि॰ पश्चना सनरन करना। करतार-पुदे 'कर्नर'। करवा-त मिट्टी वा बातुका कीटेका काम देनेबाका डॉसी-करमूम-पु बोदेश जीनमें दकी दूर पट्टी विसमें हिम्बार शार वरतन । -चीध-तो कारिक-प्रमा वतथा । स्दर्धांबा नाता है। करवामकश्राप्त गीरेवा एक्षा, चिहा। करम-५ [सं] करपुष: हाथीको सँवः हाथीका वया करवीराख-पर सि] रामके हाथी मारा गया खरका करता रचा करे। एक सुर्गवित ब्रम्बरन्स । सेनापति । करभक-प [सं] कर। करपीस॰-पुक्रीतः। **करमार्ग~डु**क्षक मील कादि बंगको जावियों≰श व्यक् करबंगां - प्रकारतेशना, करतर करनेशका । विशेष गाना। करपोटी~मी पद निश्या। करमी-भी [गं] हैंगो। करतमा-प्र• [फा+] बॉध वा मीदा इश्वाराः मादनवराः करमी(भिन्)-9 [म] दाना । भनेती शतः परस्यतः, बरामातः। करमीर-तु[सं∗] हिंद। करपर-पु, मीर्शनसम्बद्धाः वैदासप् होष । करमोछ-ति सी [स] किसरी बॉप दाबीडी सुँडडे करपक्र-पुरु हुन्छ, विमान १ समान की श्रीकर पायीवाधी । कर्पना॰-स कि वानना गौंपना भोसना गुणना करम-तु दर्भ, यामा दर्मप्तक भाग्य। --वेंबुव-पु० व्यास्ता । दर्म। ⊶भाग~ पुदर्मका धर्मकण इपने शिक्त नेवाला करसमा - स प्रि १ 'करपना । इ.स. १ — वर घनी – मार्ग्यक्षामी । सुरू — कृत्या – भाग्य करमाइक करमायम-<u>५</u> कामा हिरन । भूदना । करमामं=-पु शिहान । करम~दु [स] पूरा अनुगहा कशारता। शुमा ।-क्रनुमा करमी-भी समंगीतर उपनी मारिका पुर था छोड -दि कृपा अनुसद् करनेवाला। 34¢ 1 करमकाता-पु परेशका गामा पाठवीची । करहंच - च रे 'बरहंस !

करहेंब-५ यन मारिसे वह प्रमण यो बड़ी ती बायी

बडमल-प॰ सिंो सर्काः मोदः सत्तादवीननाः पाप। वि० मस्मिन गदा।

कदमीर-पुर [संत] मारतके पश्चिमीचर कोलमें रिशव श्रद्ध संदर प्रदाशी प्र³का । ~क~प॰ वेंसर ।

कृष्टमीरी~वि॰ कुम्मीरका अपनीरमें बगना। ती॰ कुम्मीर

की माना । प्र कदमीर-निनाशी ।

काय-दि० (५०) चावक मारने योग्या नहीं चावक मारा साव । पुरु बोहेम्द्री पीठ वा पाइनी सव !-प-पुरु एक कृषि जिलको विभिन्न पश्चिमोंसे सर, बसर, जनम्ब, पर्स, पक्षी आदि संपूर्ण प्राणिकांकी करपति मानी वाती है। सप्तविमेन्द्रका एक शारा कार्या एक शरहकी महस्ती एक तरहका हिरल । विश्वाके दौतीवाका। मचपान वरने-वाला। -- वर्षत्रस−पुगरङ।

क्रच-प॰ मि । दसीनाः परीक्षाः सान रगवना । -परिका-सी वसीरी।

क्रपण-वि [सं०] अएक, क्या । पु० रगमनाः विश्व करमाः करोंचमा क्ष्मीश्चेपर क्ष्मना ।

क्रपा~सो॰ (र्स•) हे 'क्रश'।

क्षपाकु-पुर्व [सं] अधिः सर्वे । कपाय-वि [सं] क्लेकाः सर्गकाका गरूके रंगका मधर रवरवाला; बद्धवितः गंदा। त कसैका स्वाद वा रक्षा गरभा रंग एक तरहरू। कांग किसमें चतुर्वीत कर सेव रहता है। क्रेम; अंगराग कगाना। गेंद: क्रोच यान माना भीर कोममेरी कोई (जे)। कवित्युगः धून्यः गंदगाः मूर्यनाः

मवदाः मानलेख रागः। क्षपाचित्र-वि [ई॰] गेरण रंगका प्रमाविता। कपाबी (विज्) नवि [मंग] कमैत्राः विसमें गींव वा नस-बार रस निक्रमे। गेरम रनका। क्याक-बावसका वनिवा-धार। प्र वन झाल भावि वस।

कपि-(१ (६॰) शासिकारक तुकसाश वहुँकानेवाला । कपित-(१० (मं॰) शरिप्रस्त विधे तक्तान पश्चि हो।

कविका-सा सि रिका। कपीका-सी [सं] यह शरहका मधी।

कपरका~सी [सं] रीत्र । क्रुएकप~पु [मं+] दक्ष सरहका निषेणा कीहा । कप्ट-प [र्स•] बीहा क्यमा पापा बुटताः बटिमार्वः सुधी-नवा सम । नि हरा। हानिकरा बुग्यकरा कविना दुन्ती । कान क्रिसकी प्रवर्गताने वहन सीच-तान करमी पहें। जी महिकानसे दिमार्गर्ने काले । -कारक-विश् वस देनेवाना । -पु॰ क्षमार । -मागिनेय-पु॰ शीक्षी वहनका लक्का । ~मातुम्य~प शीतका माँका मार्ग । ~मोचन~नि क्काम प्रवाने सवारभेगाना ! -सम्य-वि जी महिमार्थ सुमात्र ही सके। −साध्य−नि जो कक्रिनाइन निजा बा सके। किसे करमेने बहुत कम करना परे । ~स्थान~ इ दुन्धभनद्वरवान ।

कप्राक्रिय-दि [६] कहा शमने कमाना हुआ । कष्टासय-पु (सं) न्याक्षी रत्नीवर्गमें गैश होना । क्षप्रार्थ-पु [सं] सोक्स्प्रमदर लागा हुआ अने । कारि-रदी [र] दीवा कीम वरीका ।

करी-वि न्दी । सि रेप्रसबवेदमाने देशित (सी)। बड़ी(फिन)-वि सिंगे कह पानेशसा। कस-५० (सं•) बसीय: [डि॰] बीर, रूप राण, रूप बृती काबू दावा रीका औष सम्पर्ध मध्यः नम सारः क्षमान । स्ती । शह रहसी विस्ता होर्दे धीर संबं वाय । क तक हैने, नवेंकर । नका-बलक रहता -वक-प॰ और का रमध्य । ग॰ -में स्वय रोक या दशकी रक्षता ।

कसक-की॰ रह-रहरूर होनेवामी वीरा यीरा एका जरमान अधिकाताः प्रशाना वैरः इनवर्षा ।

कराकन-सी॰ व्यक्तिको किया वसक। कसकमा -- अ॰ कि॰ पीत्रा होना, ग्रीसमा सास्ना ! कार- कॉस का समासनत विकार पा -कुर-1 की

और बस्तेके मेक्से बना एक पात ! - वि - विश पुर - हेंदी-भी हैर 'ईस्पेंड' destat !

कमगर~पु॰ मिद्दीके बरतन बनामेवली सुप्तन्यानेकी क्राति ।

कम्पन-मी करानेकी फिला कप्तना क्याप बन्देके ररसी। वर्डेशा योक्स्प्र तंत्र । कसमुद्रे न्या एक स्था।

कसमा−ती [मं] एक जडरीरी सक्ती। स॰ झै॰ [see] चंपन वर रामानको सहर करमार दीसी चीक सेंग क्ष्णे बादिका कथा करमा शायकर संपना। हर्से गरिना जक्रमा। वेच, परवेंक्रीक्या वैक्रामाः (मूल केलेक्ट) कामको) पहलसा। वॉचना (वर्षी, चपरास आरि)। वरर् आविको रेसलाः बाम अभिक सेनाः ईसका धरना हैते हानीकी चारवामा होश रखबर (स्वारीके लिए) जार करनाः सोमेको कमीडीपर विसनाः परयनाः + रूप देणाः रापानाः। व्यस्य कटासमरी व्यक्तितं सद्य स्तान (कनती कसना) । वर क्रिंक तेन, पुरत होनम केर प्रदा भारतका कथा दीनाः शिवनाः समाः वका जानाः पु कसने, वांचनेका सामगा नेठन सीन। कमरा-का अवस्थित अवस्थरा पुरानुसा जोरने आयोने। कसा कथाया -गाप्र बसा द्रभा, वैदार १

क्षप्राणि == न्या = वै = विश्वन । करमधी-तो वह रस्ता जिस्में की वस्तु वसी वार् बरमा वेमियाः बसीयोः योग-चार बनीर वचनो स्री के बीरा के ऐम"-कनीरा प्रमावका पुरा क्वीरी है क्सब-पु [बा॰] अर्जन कमाना। पेता, धवा नेरवार्षि क्साबा-त [ब] धोरा शवर ।

क्रमबारा⊸पु [बर] वराने ('क्रम्स'का नदु) ।

कमभाती-वि॰ वगरवाग्रा मागरिकः। क्रमिप−शी दे दमरी।

कसभी-को नेरवा, व्यक्तियारमे अविना क्रमानेराये। -शाना-प नंदबक्य ।

कुम्मा-नी [ल] स्वयं सार्गया सम्बद्धि ही है अतिया । सु॰-बतारमा-मापन्दे नंपन व। प्रभारने जारे आवरी मुक्त बर्गा (भववीता)। राम-मार्गा, ववनेवारे किए कुछ बरमा। (बिस्सी बाहर र)-माबा-निसीरा

पासकाः निकटतम । करीबम्-अ॰ कगभग ।

करीकी-विश् निक्र संबंधी । करीवसमारी-वि॰ [अ] आएकपुरव् ।

करीम-दि॰ जि॰ दिरम करमेदाका, छत्रारः दवातुः अप-र व श्रमा करमैवाकाः नेक । पुरु देशर ।

करीर-प्र [मृ] वाँसका नवा करका; करीक; वहा ।

करीरक-प्र [एं॰] तक रुपरे । करीरा, करीरी-सी [एं॰] बाबीके वॉलकी मक्ष सींग्ररा

कसमा। करीरिका-स्री [सं] दावीके रोतकी जर ।

क्रुरीस-पु । शाहीके क्ष्में उपनेवाका एक बँटीका और विजा पत्तेका पेड़ ।

करीश करीधर-पु॰ (सं॰) दे 'करीह । करीय प्र [सं] ब्या बोबर बनकटा, करही।

करीविणी-को [सं] करमा। करीस ७ - ५० दे 'करीम ।

करुभा करुवा+-विश्वे 'कश्या' । † प्र करवाः पदा।

−(था)ई≉−की क्वापन। करमाना करवाना - अ कि॰ दलनाः गश्ना । स॰

कि॰ कड़बाहरसे मुँह विज्काना । करुपी • - भो • कनवी, दिस्छे भितवन ।

कर्म-पु॰ [सं] अनुद्धेपा दवा; एक काम्बरसः घर मारमा । वि करणायुक्तः दयनीयः करणा जलका करने-बाकाः – सक्सी−की मरिक्काः – विश्वक्रम−त

वियोग श्रेपार । करमा-ता [सं•] शतुर्दशः, दशः। - निधानः - निधा-दि करणा दवासे गरा हुआ। -पर-दि करणासे

भराहुमा अति द्वातु । करनासय-वि [सं॰] है 'करणावर ।

करमी~खी॰ (सं॰) वक प्रथम् ॥ चारियो ।

करुगी(जिन्)∽िर सि] करणाका पात्र, दननीय वæ-चस्त १

करुना#-दो दे 'बरमा'। क्रवेस−ची॰ दंशयन मामध्ये कता।

करतन-निश्वस्था।

करल-इ एक वही जातिकी विदिता। करवार-प्र पनदार ।

करवारि=+शो+ पतुशार । कक्य-५ [सं] एक प्राचीन क्षमपुर ।

वरॅट-इ [अ] प्रवाह बारा। विश्वश्यवाही वि शव-

क्ति हासदा।

करेबार-पुदे किलेबा। बरेबी-स्तं वे धरेबा।

करर−दु [स•] माग्न । करेट-इ दे 'करह'।

वरेलु-पु [सं] बाबी। कृषिकारका पेड़ । स्तीक ब्रधिनी ।

-म्-मुत-इ दरित्यानरदे प्रशंक पालकाच्य मुनि । वरेशक-1 [तं] करेगका विवेशा कृत । वरेगुरा-सी॰ [मं] हरिमी।

क्रोण –सौ॰ [सं॰] इथिनी । पु० हाथी । करेगरः करेधर-पु [धं] एक नंबद्रम्य, सोवान ।

करनका = नहीं वे 'करेग्रहा'। क्रनेच-प (अं० 'क्रेप') वारोक और श्लोमी हुनावटवाका

यक रेशमी कपशा। करम् --पु॰ पानीमें दोनवासी यह वेस जिसक परे सामकी

तरह सान वाते हैं। करें ६ करेराण-मि कड़ा, संस्त्र ।

करेल-प्र॰ एक तरहका वहा सगहर। करेक प्रमानेकी क्सरत ।

करे**का, करेका** – पु॰ एक तरकारी, कारवेश# । करेखी: करेंबी-न्यों : छोटा वातिका करेका जंगको करेका।

करैत-पु॰ साँधोंका एक थेट जो काका और बहुत जहरीका बीता है। करेल-ला॰ काली मिट्टा को गोकी होनेपर बहुत कसदार

की बाती है। इस तरहकी मिडीवाकी अमीन । पु॰ वॉसका नरम कल्याः दोमधीमा । कर्रीट ≉−स्पी दश्याः।

क्ररोट−पु• क्ररोटि−स्त [सं]सोप्शाः प्या**का** । करोटन-प [बं॰ 'क्रोरन'] बनरपतिका एक वर्ग जिसके

पीचीके क्ले संदर और रंक-विरंध हाते हैं। करोबी-की दे 'बरीट।

करोड़-वि सी कास, एक धारि । पु॰ सी कासकी संदर्भा । -**स्क**−िव धीय मारनेवाचा। --शरि-स्वा चेबा विमाग। -पशी-वि विस्के शत करीर या करीशी क्षमे श्री, बतुन बड़ा समीर ।

करोधी−धु रोक्षदियाः मदन्त्र श्वद्राः करनेवाला कर-नेमारक (अपन)।

करोत्त∽पु॰ आरा ।

करोदना॰-स कि दे 'कुरेदना **।** करोना®-स ति* सुरचना क्ररेदना।

करोनी−न्धं सुरचमः सुरचनाः। करारण-विकास के करोड़ी।

क्टोसा•~प ग्रमा। হ্ৰবিয়া লগাও ইও 'ৰন্তী ল'।

कर्रीका*-विकासा ।

कर्रीजी०-सो दे 'यहाँ था' ।

करिंग-मी करपट।

करिया-पु एक कटियार शाय या प्रस्ता फल करमरी यक जंगली काम जी महरके बरावर हीता है और एकनपर कामा हो जाना है ।

करिंदिया करेंदि।-वि बरारेके (गढा । पु गुलाबीने

शिस्ता-ज्रमा एक (१)। क्रीत∽पुंभारा । मी रहेको मी ।

करीता-प्र भाराः वरील मिद्रोः बराशाः

करीती—गो॰ माधा क्षेत्रका पट्टाः होता दरायाः करीना−ड्र वरतनपर नवाएं। करनेक्श क्रनम ≀

करीरण-प [धु 'करायक'] ईक्स करमे शिकार रोसाते बाला-बार के सिंह बसा गमुतार वरीमनि बार अनेत अठापे'--मु०।

```
440
```

TYPE /TIGH कसा-सी० [स] बेरबी मात्रा । कहवाना~स कि दे॰ 'क्रहकशाना'। कस्सा-पु० वर्षकी हाका वन्तकी हाकमें वसनेवाकी कडवेशा - पुक्क्षीशस्त्र । धरान । कहाँ - व विस अवह । पु । तु (त पंत्र हुव बस्पने रोनेत इस्साब−पु [म॰] मृथइ । ~सावा-पु॰ वृथइ-साता । ग्रन्थ । सु०-असुक, कहाँ असुक-धोनीमें बहुत संप कर्षे≠—प्रको के निष्≀च दे 'क्ला⁵। के दोमेंकि कोई <u>त</u>रुना नहीं ! —का—ौसार हैसा रस क्टरेंस्ना~म• कि० कराहमा । विकट (मूरा वस्त्रावि) माइवका, व्यर्थका । -का कर्त **कर्-•** वि• क्या । पु० [फा] बास ('साइ'का छीटा इप) क्वाँसे कहाँ । -की वात-देसे क्नहोती रात । -दवा-प्रण्य पीके रंगका मुद्दरा की चमके मा रेजम-कहा~पु सकाहः अलेश-द्रश्तम्। ≉ सी•क्य। ३० पर रगडकर सूदी शसके पास कानेसे वसे सीच हता है। बंदी: बल । धर्म = क्या ! वि+ क्या ! - ब्रही- ठाँ+ उत्तर **करकराँ--प्र• (फा॰) आकाशनेना** । मखुचर, तकरार । -सुमा-पु बोठनेमें हुई मृहन्द्र क्षइक्दा-तु [म] धिकसिकाकर देंसना, बोरकी देंसी नगीनित्व ! ~सुनी~वी+ हुयात्, त्वरार ! (कगाना) । ~दीकार-सी है 'चीमकी दीवार'। कहाउति - सा दे 'क्शक्त । कहारीस-सी॰ (फा) मिट्टीमें मुसा पुश्रासन्धे कुट्टी बादि **ब्हामा~स कि, अ**० कि**० बह**कमा। सानकर बनावा हका यारा । করানঃ –বা হখা হুচার ুলাহবাবিমা বদৰদেই फ़ाइत-पु॰ [म] अवर्षमः सम्बन्धः दुध्यापनाः (विसी रगडी छोटी रचना वो प्राय' ध्य हो वन्ना वा चौतिर्णी भीनदा ६)। - तदा-वि अकालपीरित, बहतका को केकर लिसी बनी को; मनते गती, उपनामी हो यह। मारा हुआ। ~साझी~जी द्रशिष्ठ, दान । कहार-पु क्य दिन् बादि वो प्रायः दोशे दोदै एमें कद्या-वि० ४३मे शेक्नेशका। भरमे मारिके काम करता है। कह्म-सी उक्ति, वक्ता, बहनावत । बहारा - प्रशेषरा । कट्टवा-ध कि स्रथ्य द्वारा भाव-प्रश्राच करनाः वीलनाः **६इ**।इ∽पु एक बाबा । बबान करना बतानाः प्रकृत करनाः नृत्रित करनाः प्रकान कहाबस-की मसक कोकोस्ति बस्ति, वक्ता सामने रता नारमताः महा देनाः मञ्जून गत स्थानाः स्थिता बारिको स्थान देसके क्रिय संविधी बारिको समा गरे रचना। प्रचिक्त कवनः आका अध्येष्ठ । स्र भन्नाना शोका भ्दंसा वा एक । -समजाना-बतानाः अनुरोधः प्रार्थना करना । बहनेको **कदाद−**पु[सं•] मसा। -नाम हो बराबनाम । (किसीके)-(मे)-म बाना-कदिया-०भ क्य किस दिन । पु रांगा बोहते है बाररे रिसीको बहकानेवाको वातको मान हेना रिसीके व्यक्तेमें वानेपाका एक भौकार । कहीं-व किम्री बयदा कुछरी बगहा (प्रश्त स्वरीकार्डे) थाना । (किसीके)-से होना-किसीके हायमें नहाने होगा । कर्-बदकर-प्रतिका करके। क्टकारकर । नहीं करापि नहीं। अगरा शाबर । वि गुरा सुर क्यारा ! -वहीं -म दुछ स्वामीमें वर्शे वर्षे !-बा-**क**डनाडल*~ली॰ दे 'क्डनाव्त'। **महत्र(वत-मी** क्रम) दहावत ! कियी जगरका। य जाने दशका (उस्स् कहों हा)। कद्दनि०~ली० दे सहन'। क्क्षी-ली क्वी हुई शत क्वना **कद्दली - श्री कदानी; क्ष्यन** । कहें कहें ना वे 'कहां"। कट्टका क-- विक काला । कश्चनतां -सी कहारत । कडुवा~पु शुकानमें दिना वानेवाला मी, तिर्व शहरेडे कहर-युनि [स] दे 'कर्र'। **क**हरना॰ - भ तिः करादमा । नमा बना पर अवलेड' र धर्मनदा रेड ! क्यद्र~यु (बा•) रहा आपरतः शुस्मा वि• नोरनः कदरबा~पु रह ताकः बदरवा ताकपर गाया वानेवाका -इसादी-तु सुरारं गवन। -का-गवन्त्रे। शु THE ! -करना~ गुरम करना र ~इटमा-देशे संबद सत्ता। **इडरी-दि यहर दरमेशमा** । कहरू- * पु जमग्र इवा वंद ही वानेसे होनेवाली गरमी। ─हामा-दिशीवर थादत ठावा । द्यापा दुरा धर्द। [श॰] सुरमा । कक्कार-पुनि | बरेन प्रमा । स्राप्त । इक्का कर स्थाप (०१व) ह-द्वान कड्फना -- म कि (हापरे) व्यानुक वेजन होगा। अब्समाना-स कि॰ दुसरेडे अरिये विम्मेमे कुछ बणनाः काँडवाँ-वि यानाइ धर्ने । स्रीता भवना। बधारय कराना । भ कि॰ पुकारा बाना। काँडें -- ज वदी। काँक-व सफेर थोल बदा श्रमी मासद स्व दर्ज । **कड़**लाना−स कि दे 'कड़हनाना ! अ कि पुदारा वाताः = १ 'बहतमा - 'बहताने यस्त रहत - दि । क्राकर०~प ४९४। क्रॉडर्श-न्यी होश दरहर कर्वॉ≉−श दशी की काँ -पु है 'बोर-बॉर । क्षद्रभा-दु [स] एक पेश्वर वीज जिसे मुनस्ट पीसते भौर बूप प्रसर मिलास्ट भावको तरह इस्तेमान करते क्रीपुर्वती-सी देशनी। कदिर्माप-वि [न] भावने बोग्प।

क्षांका-न्ये [मं] देश्या चारा सुवार, मर्गाप !

र्दे । -(रामा-पु+ प्रदेशी युकान, वर्षो सीग रस्ते

शास्त्र करवा पिते ।

कामका बद्दमा । --इक्लिका--खी० कालका एक दीय। ~डीम−यि वडरा। प्र≉ सींप । कर्णक-पु [सं०] बरतसका कानः पेचके पर्छ और इक्

नियाँ एक कता। एक व्यर । कर्णाद-पु॰ कर्णादु-का [नं०] करनपूछ ।

कर्माट-५ (सं॰) करनायका यह राय।

कर्णारी-ली [मं] इर्लाट देशभी खीड यह राव।

क्रमांदरीं~प॰ (स्] स्ट्रमङ्ख। कर्णानुज-पु [सं] युपिक्रिर।

कर्जारि-५ [सं] कर्जन।

कर्णिक-वि (स॰) कानवासा। जिसके हाथमें पतवार हो।

प्र मोंदी कर्षवारः

क्षिका - सी [4+] क्रमपुकः दिवसी हैंगजी। समस्दा छचा। दाबीदी गुँग्दी बीस्ट केंद्रनी। गाँठ, विक्यी। एक बोनिरोतः मधियंत्र प्रश्न ।

कर्णिकाचर ज्यु [सं] सुमेन पर्वत ।

कर्णिकार-पु [सं] क्रिनवारका पेत्र या पृक्तः यक तरह

बा भगस्तास ।

कर्णी-नो (से) फसवासा वाणः चीर्वशानक प्रवर्गक मुक्तदेवार्य माता बंधायी माता ।- रथ-पु म्बामा,कीकी पाइको (बा स्पर्वीको संवारीक काम मानो हो)। ~सत्त-पु॰ भौर्वद्यास्पन्धवस्य मुक्तदेवः देख ।

दर्गी(गिन्)-वि [सं] कानवालाः वने कानीवाका। म कर्णकारः बरधीयैक्षे क्रम्बाका बाग्यः सप्त वर्व वर्वदीर्मिसे

एकः गयाः गमाधनका व्य रीव ।

क्रमें क्षप-वि॰ पु [सं॰] ब्राममें कमकर करविदा करते बाका भुगुरुधोरः मेत्र वशानेवात्वा ।

कर्गोपकर्णका नहाँ । [सं] एक्टो वृक्षरे कालमें बहुँचले-बाकी बातः जनभूति अफनाह ।

कर्यम-५० सि] बारमाः क्टरमाः कातना । कर्तमी-लोश (संश) इतरता, देवी ।

कर्तकर-५ द 'करतः । कर्तरिः कर्तरिका-सा [सं] कथा प्रता करारे। कर्दरी-सी [मंग] क्यो दलस्ती। पुरी करारी: बायका

बह भाग बढ़ों ५७ वनाया बाहा है। शृत्यका वक अन्तरस भ्योतिषक्त एक बोगा। ∽क्षक्र~पु पुरीका फका

कर्तरय-वि [मेर] निते करना प्रवित या जानस्यक हो करणीय। क्रामने वाग्या नष्ट करने बीग्य । पु करणीय कार्य करें। -मूक-वि को अवशाहर के कारण अपने

कांच्यका निधव म कर सक्र।

क्यां(गं)-वि [d] बरनेवाला वकानवाला । प्र विशाला मध्याः १घरः करनेवालाः किया इंदरेनेरालैका बोपक कार र (ब्वा॰)। -श्राः -मु सब मुख करने बरनेशाला वह जिमे सब कुछ करनेका मधिकार हो। ~(मृ)प्रधान~दि॰ दिसमें बतांदी प्रशनता हो (व्या०)। -वाचड-वि कर्नारी बनामवाला (ब्बा) । -वावच-5 जियाका वह भय किएमें बनाती मनानठा ही (ब्या॰) (कर्नार-पु क्लाइंक्ट।

कर्नुक-(व [में] वर्तनेवाला (समभने-'नावक्र्नुक --

मप दे बर्ग (न्युद्धा) । 10

कर्वका-को सि॰ प्रताक्यता कर्तत्व-प॰ सि॰] कार्यः करमेवाधेका श्रवस्मार्गे होना ।

कर्त्त्रिका, कर्यो-लो॰ (सं] प्रता करो।

कर्त-पु सि॰) की वस क्षंट-पु॰ [सं] क्षेत्रमः पसक्तः।

कर्यम् प्य [सं०] वेस्की गुक्रमुक्त्य । कर्षस~पण (सं•) कोचड़ मोसा पाप (का॰); एक

प्रमापति । कर्तमञ्जूष सि विक सरका चारक ग्रीपका एक

कर्यभाटक-प्रसि॰ो विद्या पेंकनेका स्थान ।

कर्वमिस−वि सि वेशवण्याणाः करमी-मा [सं०] चैत्रपृष्टिमा !

कर्मळ-९ [बं] सेनादा एक नफ्सर करनेत ।

कर्नेता≎ – य योक्षेकाण्य शेरा।

कर्पर-पु [प्रं•] प्रया मैठा क्ष्महा, पोषहा । कर्परिक कर्परी(टिन)-वि० सि०] मी भोबने करते हो।

मिमारी ।

क्यण-पुनि विकस्मा कर्षर-पर सि 1 बहाबा क्यांका ठीकरा। एक ब्राप्तिकार-

गृहर् ।

कर्पराष्ट-पु [सं] पीतु स्थ ।

कर्परी-ली [सं] यक क्पनाहुः सपरिया । क्योस-प्र [सं] करास।

कर्पांसी-न्पी॰ [सं] कपाएका पीपा ।

कर्पर-प्र [मं०] कप्र । -शीर-वि० कप्र-जैसा सकेर । -सारी-को एक समिता। -मासिका-साँ० मैरेसे वननेवाका एक पद्भवाग । - स्रणि-पुण दवाके काम

ब्रानेवासा एक वस्परा एक रस्त । कर्ष्तक-तु (तिः) कप्रा

कर्पर-प (सं•) मार्चा।

कर्यर-प (छ०) वे 'कर्यर'। क्षंबार-त [छ॰] क्षीता सुकेर क्वनार। टेंटका देह !

कर्तुतारक-पु॰ (सं] श्हेष्मांच वृञ्च । कर्षुर-वि॰ [में] विषद्या, शाकिता। पुर वित्रक्षरा

रंगा पाप राध्मा धोमा। जलः भनुरा अपूर ।

फर्युरा~ग्पे॰ [सं] क्ततुत्तसी । क्ष्यंरिस-विश् सि] देश कार 1

कर्परी-की (पं•ी रुपो ।

कर्म(म)-प्र [तं॰] धारमिदिन निःश-नैमिरिक मान् कमें। कामा किया। पंचा आवरणा वह पूर्वपूर्ण कमें जिसदा फल इस जाममें जिल रहा हो। माम्या वह जिसवर क्रियाहा प्रज बहे (ब्या) !-कर-प्र मनहरू बनत्वपर काम इन्मेशका। प्राचीन दासवी एउ सेवावृश्चिपरावत वाति इमक्सः दम । - इसी-म्या महदूरिन दासी । -कांड-पु वेश्का यह विमाग जिल्ली निग्य-नैमिलिट आरि वधीरा दिवाम दें। वट संरवारादिकी विदि वताने-बाह्य ग्राम ! -बांडी(दिन्)-त वर्गसोदरा हाता प्रशिश्ति । -कार-पु समहत केग्या कारोगरा दशार ।

-कार्क-पुर कारकता पर भई (स्पा)। -कासक-

कॉबना-कस्य रवाय करनेवाडाः भारी पशुष् कर्नका वनुष्: दशक पुत्र । –संग−पु० दक्का हुट बाना । –संघि∽सो≉ र्रेख भारिको गाँउ। –स्पूष्ट∽पु॰ शस्त्रजीनी, सैलिक। -दीन-पुण्य तृष्, शहमुख्य । कर्विमान-स॰ कि उपन्ना, 'सटमारी भारी रासरे के बाररसे काँदिया –कविताल कृटना । कॉडली~ली प्रहफा। कोंदवान(धर्व)-पु [सं] तीरवान। काँदा-प दाँतका कीशा वेडीका एक रीवा ककशीमें समने महमा पद्ध बढेश । **कोडा**स-नु[र्स•] दे॰ 'कोडोक । क् दिका-सी [री॰] एक शबा एक तरहका कुम्हता। काँबी-भी आजनमें समनेवाओ क्यनेका नक्का वा गाँध: भरहरती सुबी सबड़ी;श्रीदासीबा,गड़बा;हाभीका एक रीग भी तकनेमें होता है। भारी चीने क्षोकनेका करहीका डेटार मग्रक्तिमा प्रदेश 🕆 श्रीयानीको दवा पिलानेका ४एका । कांद्वीर-प्र• सि] द्वीरंबाव वयामार्गः । कोडीरी-सी॰ [सं॰] मंबिहा। कविरी-सी॰ [सं॰] भागरता । कांबेदद्या-स्ती॰ [सं॰] बद्धको । कोडोस-५ (सं) नरकटका केवस्य । कांत - वि॰ [सं॰] प्रियः मनोर्म, श्रीमन । च प्यार करने बाबाः पतिः प्रिय व्यक्तिः विष्णुः पंडमाः वर्ततः काचित्रेयः क्रमा नुक्रमा पक्ष तरहका क्रीवा। -पक्षी(क्रिय)-मु मयूर ! --पायाज-मु भुवक ! - सक-पु॰ नेरी पुर्व । –सीरू-पुर्वातसारः श्लात । –सार-पु॰ स्क तरहका श्रीहा यो वैषक्त बाम भागा है। **कां**ता—स्रो• [सं] प्रियाः पत्नीः सुंबर्ध कीः प्रियंत्र क्वाः एक संबद्धन्यः प्रमीः वही रकानची । क्तार-पु [मं] यहम नमा दुर्गम पदा निवर, पदेखा एक देल: बाँगा एक भारत्या करूना क्रमण । क्रीतरक−त• [मं] पद्ध रेख । क्षाति-स्त्री [६] सीरई। चमक, शीक्षा रच्छा। प्रेमके कारम व्हा हुमा सीरकी श्रेमार। सुरर गी। वंहमान्धे धीलइ क्लाओं मेरे एक; दुर्या । नकर-वि सीतर्व व्याने-माला। ~४~५ पिछः गी। विद्वारता देवेवाला। -का-न्द्रों सीमराजी। -वायक-वि कोमा दैने शास्त्रा प्रश्निक प्रस्ता -- स्टा-प्रश्निक विद्या। ─हर-दि शर्प तट क्रमेनाका, कुम्ब क्रमेनाका । कॉसी+-सी विष्युका हेका होत्र व्यथाः सुरीः कैंची । फॉबरि॰-मी शरही। सर्विता! - म कि रोजा-विश्वामा । कोद्य~पु (सं•) भृत्ये दा कहायोगे भृती हुई भीव। कॉरपा-पु॰ दे॰ की हो। कोवविक-पु (छ॰) मूनमे, वहानेका पैद्या करनेका इक्ताई (कर्रेदा−पुरुक् शुस्य शिसमें व्याव वीनी गाँठ पत्ती 🖥 कांदिशीक-दि [सं] मयने भागा तुमाः दरा हुना।

कॉन्-पु वनिवेशि एक उपधानि ह

काँबोक-पुपक्रभीवर। कॉॅंगर-पुर दंशा; कोस्तुके जाठका कररता माग् । मुर -देशां –सदारा वेजाः स्वोकार करना । –मारशा नीस काँचमा=-- स॰ कि. चठानाः ऍमाकनाः सनमाः संस्त करमाः यार सहसा । क्रीधर्+~न्• कृषा । काँचा-= इ॰ इत्या र् क्या । कॉंबी~ली॰ ६वा। सु० --हेना~शक्तरूठ दरश। -मारना-सवारको विरानको परनसे नीवेश स्टब्से गरदन फेरमा। कॉस॰~पु॰ फूका। कॉप-मी॰ हानमें प्राप्तनेदा एक ग्रहमा, ररनपुन काको सचीलो शीलो पर्तगरे सगाची बानेवाको प्रैरीव क्रक्ट्या भुना। हाशंका शीव: सूत्ररका सीय ! कॉपमा-स॰ क्रि॰ हिस्साः करवनाः दरसे दिना वर्राना ! कॉपा-पु॰ बॉस्की पत्तरी तीकी । क्षेपिस−४ [र्स•] रङ्ग प्राचीन प्रदेश ! कांपिस्त-तुर [संग] एक प्राचीन प्रदेशा एक शंगी। कोपेस्क~ड॰ (सं॰) है - क्षंपियां। वस नेपासः क्मीका । क्षांपिक्सक-पुरु [र्सर] क्षांपिक्य सामक शैना। व्ह मेरे कौपीस-९ (सं•) दे 'क्रांदिस्य'। कांबकिक-पुरु [संग] श्रोत्रो । विशेश-दि॰ सि दिरीय देसका। पु॰ इरोन देशम निवासीः वंदीन वेद्यका मीहाः प्रवाग कृष्ट । कॉव-कॉव कॉब-कॉव-यु॰ क्रीवेक राज्य। कॉबर-सी वॉलका मोटा फट्टा जिसे हमेपर रणकर की 'छोरीपर वेथ छोड़ॉबर' चीजें रहका होते हैं, गरेंग्री ग देन विश्वते छोरीयर टोक्सिनों गॉक्ने और कार्ने नंग^{कर} नारि एक्सर है बार्च है। कॉबरची कॉबरम्। -५० दे० भागरेगी । कॉपरिण-श्री ए० 'ब्रॉवर । कॉबरिया-त क्षेत्र नेक्द यसनेवासा व्यक्ति। काँवक-नुकामस्य देशा कार्यारची-प श्रांबर केवर दीर्वयात्रा करनवाना ! कास-मु एक लंबी बास की शहर शतुमें इकती है। कारता - वु र्याने भीर बरतने मैक्से बनी वस बाह्या कीय र्मायनेका राज्यर । -गर्-प्र व्यक्षिका बाज करनेवाना । कॉसार-पु॰ क्रमेरा । कॉमी-सांव कांगा पानडे पीपेका एक राम र कौसीय-पु॰ (छ॰) जरना । कॉसुला-पु सामारी इ गुंदी मादि बनाने इ समये मादे वाला कांसेका चीकीर द्वहरा । वांग्रेबिल~नु[ध+]दै 'नार्गेबिक'। करिय-इ [तं] स्वि और अरते हैं मैलने बना वह स्तु भावुनिर्वित शानशाय । वि क्येंगेका बना हुना । नकार पु॰ समरा: उदेश ! --साम्र-पु शाहा !--भात्रन-पुः

कानका बदमा । -इस्तिका-सौ कामका एक रोग। -द्वीत-पि बदरा। पु॰ सॉप।

कर्णक-पु॰ [मु॰] नरतमका कान- पेड़के पर्च और टक् नियाँ। एक कता। एक स्वर ।

कर्णातु -पु॰, कर्णातु -सी [सं] करलपूरू । कर्णाट -पु॰ [सं॰] करलरुक्त एक राग ।

कर्णाटी नहीं [मं०] कर्णांट देशको खो। यक राग ।

कर्णाइसे-पु [से] करमकूल। कर्णानुज-पु [से] पुविधिर।

कर्णारि-पु [सं] बर्जुन । कर्जिक-वि [सं] कानवाकाः जिसके दावने पतवार दो।

प्र मीनी दर्गवार । कपिक्र-शी [अंश] करमकृष्ण विचनी होंगळी। कमण्या छत्ताः दाधीको ग्रॅडको मीक्स केखनी। गाँठ शिक्यी। एक

नोविरोगः विशेष दृद्धः । कविकासक~ दुर्मि] सुभव पर्वतः ।

कणिकार-पु॰ [सं॰] कनियारका पेड वा पूका एक तरह

का समस्ताम् ।

कर्णा-ना॰ [सं] पत्नवास्ता बाणः बोर्यशायकं प्रवर्गेक मूक्टेक्ट्रो माता शृंखके माता ।-रथ-पु स्वानाः बोर्यः पातको (वा स्विबंध्यः एवारीके काम बाती ६)। -सुस-पुरु पोदेशाय-प्रवर्गेक सुकरेबः केस ।

कर्णी(जिन्)-दि [सं] कानवालाः वहे कानीवालाः । पुक्रवीरा वरशोदेते गुरुवाका वालः साः वर्ष-पर्वतीर्मेते

एकः गवाः गमाध्यकः एकः रोग ।

कर्णे अप-वि+ पु [मं] काममें कगढर परनिया करने-वाका, जुरुक्योदः भेर वनानेवाका ।

कर्मीपकर्णिकः—सां सि॰} यकते दूसरे कानमें पहुँचने-वाली वाट जनम्हीर अफवाह ।

कर्तन-दु॰ [सं] कारनाः बतरभा कातनाः।

कर्तनी-मा॰ (सं) बहरमा केवा।

कर्तक - द्वं ६ १, १२ । कर्ति करारिका - श्री [मं] ६ थी। सुरी। करारी । कर्तेरी - श्री [मंश] करारी। सुरी करारी । वास्का वह भाग वर्षों पेस जगाया वास्त्रा है। शुल्बका एक प्रकार।

क्योरियम पर बीग ! - पक्क - पु सुरीका पक्क ! क्योरियम पर बीग ! - पक्क - पु सुरीका पक्क ! क्योरियम दि ही] विशे काला परित वा आवश्यक ही करणीय। कारने बीग्या जह करने बाग्य ! पु परणीय कार्य पर्व ! - मृत्र - वि बो बदराहरूके कारण अपने

वर्गमध्य निधव म कर सक्रे ।

क्तां(न)-वि [मं] करनेशका बनानेशका। उ रिपादा, मन्द्रा १४६८ करमेशका। दिन्तादे करनेशकेन अपक कारक (स्था)। - मर्ता-पु एव कुछ करमे भरनेशका वह दिना एव कुछ करमेशका मनिकार हो। -र्युत्रियान-वि दिवाने कमार्थ प्रधानता हो (स्ता)। -पायक-वि कर्म श्री मनानेशका (स्वा)। -क्याप्य-प्र नियान वह कर्म श्रिके कमार्थ प्रधानना हो (स्वा)। वहार-पु योगहेकर।

वर्षः -[र []] वरनवाना (समाममे-माववर्षः --

माप दे वर्गा (अग्रदा) ।

कर्तुंबा—को॰ सि॰] सुरी करारी ! कतुरव—पु [सं॰] कार्यं। करनेनासेको भवन्यामें दोना ! कर्मिका, कर्यो—को [सं] सुरी। मन्त्री !

कर्त्-पु॰ [सं॰] कीथड़ । कर्त्ट-पु॰ [सं॰] कीथड़ा पवक्र ।

कर्यम-ते [स] तुरुषा प्राथमेशकर । कर्यम-ते [स] तुरुषा प्राथमेशकर ।

प्रजापति । कर्तमक-पु [सं•] एक तरहका प्यासक सांप्रका एक

संद । इर्वेसारक-४० सिंी विधा पेंडनेटा स्थास ।

कर्षुमाटक-पु• [सं] निधा पेंचनेका स्थान । कर्षुमित-वि [सं] क्षेत्रपत्रवाहा ।

कर्यमी-को [तं॰] चैत-पृणिमा । कर्मक-पु [लं] सेनाढा एक मध्सर, करनेत ।

कर्मेता≄— पुथोर्जीका यह भेद । कर्यट – पु[र्स॰] फटा भैका कपड़ा चीवड़ा।

कर्पटिक कर्पटी(टिन्)-वि [सं] को भोवने क्पेटे हो। क्यारो ।

कपण-पु॰ [तं] यक दान्य।

कर्पर पुरु [सं] कशादा कराका डीकरा; एक इविसार। गुकर।

कर्पराष्ट्र-तु [सं] क्तु पृक्ष ।

कर्परी-ला [सं] एक वरवातुः समिताः

कपांस-पु॰ (सं] कपास । कपांसी-मो॰ (सं॰) कपासरा पीना ।

कप्र-प [सं॰] कप्र: -गीर-वि॰ कप्र कैसा सकेर। -गीरी-का एक राविमी। -गास्तिका-भी॰ मैदैसे वननेवाका एक वप्रवास। -मिका-पु॰ दवाके काम

वानेपाला ण्यः पत्यरः एकः एता । कर्परक-तुः[तुः] सपूरः।

क्षपर-पु (छ॰) जारेना । कर्षर-पु (छ॰) दे॰ 'कर्षर' ।

क्युदार-पु॰ (रं॰) क्योशा सफेर क्याराः तेंर्दा देश। क्युदारक-पु॰ (रं॰) रकेप्यांक श्रुष्ट ।

कर्षुर-वि॰ [र्ह] विषक्षम्यः रंग-विरंगा । पु॰ विषक्रम्यः रंगः वापः राष्ट्रसः सोमाः क्लः पनुराः कव्रः ।

क्ष्मुदा-श्री [तं•] क्ततुकसी।

कर्युरित-विश्वाि दे 'बर्नुर । कर्यरी-न्गे [सं] युर्गा।

कर्म(ग)- [मिं] शास्त्रशिदित निरम्नीतिशिक बार्ट कर्म होमा क्रिया भेषा स्वाद्या वह पूर्वहरू कर्म क्रिया एक हस कम्मर्स विक दश हो माम्य वह क्रियर क्रिया एक हर दिला । -क्ट- मुन्नदुद्ध क्रायरक्ष क्रम्म करनेवाचा मानीन बाकर्स एक क्षेत्रशिद्ध हार व्यक्ति कमस्त्रा यम। -क्ट्री-न्से स्वदृत्ति, रासो । -क्ट्रेड- वृष्ट्या वह विमाग मिन्ने निरम्नीतिष्ट क्षा वसीवा विमान देश पर मंद्याराहिश दिल्व कराने वाना राज्या -क्ट्रिड सम्दूर्ध केसा प्रतिक्र निर्मा क्रीरा । -क्ट्रिड- व्यक्ति क्रिया प्रतिक्र निर्मा

-कारक-पु कारका एक मेर (स्वा)। -कामक-

यक विषा कुरहार एक शरका काकोकी-स्थे [सं] एक वनीविष भी कहवांके अंतर्गत e. than r

कामोल्डिका-था॰ [सं] कीए बार असकासा सहज

काक्ष-प (सं•) वतामः वदी वर्ष त्योती ।

कासी-मी [र्थ] यह र'बहरूप एक तरहदी मर्गवित

मि⊊ी ≀

काग-प रे 'काक' [६] बीमा । -असीडि-भस्यी = - प्रदे 'काक्सभंकि'। काराज - प्र कार सन गाँस, की बड़े बाविकी सफरीसे

बनायी हुई बस्तु को शिक्षने आपने आदिके बाब जाती है. पेपर': सिसी हुई चीव सेखा किस्तित प्रमाद्य समानेश स्थाः मनपत्रः अक्षपारः। -यदा-प किसी मामहेसे संबद्ध किसी हुई बार्ते, दागब।तः मदत् । ⊸दा उपवा⊸ नीट । --की **नाव-कायन** मोइकर (रीडके डिय) बनावी

द्वरै नावः म टिक्नेबाकी अध्यर्गगुर बरता । मुक्-कासा-फरमा-बेकार वार्षे किसाना । -के बोबे बीबामा-लंबा किया पण, पत्र-व्यवदार करनाः (देशक) कागवी कार रवाई करता ।

काग ज्ञात्र~ पु. (का) कागववत्र (**'कायव'**का **व्ह**े) । काराजी-विश्वा] कागवका बनाः किस्ति (स्वत दर्शः

पत्रके क्रिक्मेशका (शहाम नीवृहर) । पुरु कागह बमाने वा नेपमेवालाः विश्वक्रकः सप्रेट् कन्तरः। "काररवाई-सी॰ स्पियां-एडी । - सीम्ब-सी बदुत पतनी और छोदी बीसः! – सब्त-पु विश्वित प्रमाण।

कागद-प्र• सि } कागत।

काशमारी-की॰ यह तरहकी भाव।

कागर*-पु॰ कागड-'तुम्हरे देश कागर मसि ख्यै'~

सरा देंत्रको। दंद्र ।

कागरी°−दि तच्छ । कारार - प्रकार - वासी - औ॰ वरके छानी बाने-बाको माँपः एव तरहका मोता । -होस-पु॰ बीमाँका स्पेर-पाँच करनाः शोराङ ।

कारोर-५ ककारि ।

भाच∼प्र सि विद्याशयारी मिद्रीः श्राटा नमक मीमा र्माराधी एक दीमारी । "भाजन-तु सीक्षेत्र परतन । ~सणि~प• एकटियः । ~सस्त,~सब्या~प• काना

कास्त्रज्ञ-प्र• [सं] शोद्याः वरवरः एतर !

काचन काचमक-पु (रॉ॰) देवन या पुरसक वीवनेकी होरी !

क्षाचरी≠~सी डेंब्सी।

काचा, काची--वि दे 'दवा।

काची -जी॰ सिंबारे, तुम्बरे आरिका बनुना।

काछ-पु॰ देव भार आंपका योवा गौतीका छोर जिसे बागीं ब ग्रीयमें है जाबर बीधे लेलिने 🖡 कॉंगा मिधींका बर्ट मर्डेका बेद्ध-दिन्यात । मुरु-व्योक्तमार्र्भाग दीयाः संभीत करमा । - इताना-पक्षनेमें राजीका रणह शानाः र्गारः। पोती पहनमे प्रयोगा मरने भातिष्ठे प्रसिक्ते निकः

कना या चमत्रका हिटका ठाउ हो जाना । कादमा-स कि॰ स्रोमधी पीछे हे बहुत होस्तः र्देशार्थाः, परनमा विसी तरत चौत्रधे चेटक गरा

हरमा । काळनी-स्तो प्रानीतक कसका परणी हरे थेते। किने बीनों जॉर्ने पीछ सुंसी बी। मूर्तिनी मारियो स्वराय

आनेवाका एक तरकता वॉपरा । काया-प्र- कुछ क्यर प्यत्सर और सम्बद रहती हर्रि है

मिसकी धीमों काँगें पीछे छोंछ। बान्धे हैं। काछी-पु॰ यह हिंदू माति वो हरहारियों शेमेनेक्सेस काम करती है, बोबर्स ।

काश्च†-पु॰ कस्था ।

काक्षेत्र-वन पास, निकट । काक्स-पु काम कार्य, पंचा; वर्ष, प्रवीतमा निवासी करवा व व्यावः करतका देश । कि काश्रलके हिए के बास्तं १)

काळर-प रे॰ 'हावल' । कार्कारी#-न्वी+ वह गाय विलय्धे मांग्रेड वार्री केरमें

हिरसा बाला हो। काजक-पु॰ दियेचे पुरिश्वी कारित्स भी सुरमंग्रे सर भोयमें क्लाबी याता है। सुरू-ह्ये होटरी-रेसे स्वर बड़ों बानेसे, ऐसा दाम बिसे दरमेंसे, दर्हर हमना सी वार्ष ही वदशासीका वर । -पारमा-रिवेध क्षेत्र हरू रीता मादि रखबर श्राक्तिय श्वन्ता बरना ।

काक़ी~पु॰ (श.) सुस्त्रमान म्याबाबोड वो शर्फे स सार मामलेंका निर्मंत करे। विचारका निकार शारिवण मीसमी । ~उद्य-कृत्वात~पु कारियोग्य मान्यः प्रचान न्यायाचीछ । ग्रु०-अकी दावी तदस्यमें वर्ष -किसी अच्छी चीवका याँ हो समाप्त हो जाना - विहे-के देवता तिलक्षमें की बजान '। --वी बुबते हरी सहरके अंदेशसे-देश नातीका विवास प्रत्या विदर

अपनेसे मंबंब न हो। काब् -पु॰ एक रेड़ और उसमां कल किसभी निर्दे हैंसी

तौरफर साबी बाता है। कार-पु [र्ग] कुमी । यो। [हि] बाटनेस बाय कारनेका दंश वराशा थीत, नामा चाक्याती। देशक केर्न तक वादिकी तकछट। मैक, भोरपा; गावपर किसी पीउडे कार्यसे दानेवाको धरछराइट । -कपड-की प्रिटरी या चतुरिन रोतिसे कारमा ।-क्रियाम्य-पु॰ रेवा कवाका विसमें सिवत अवश्वि अंगर बुद्ध सीहा म दिया जाद ती वे पका ही जाता है धती या मोबारी है। " कृत-सी मारकाटा स्विताक्तमें चीवन करिकन क्रमर-अवीता यसव-बणावः ग्रीपतः -सॉट-सो ~पेचा∽पु₅~कॉस~सी ददनेयः जीतनोऽ।

कारती-सी॰ वह छनी विधे क्रवंत बंगर-पान् वाकी समय डावर्षे रपने हैं।

कारम-पु॰ कारा हुना भीत कमरम । कारमा—स मि= प्रशं इपी वर्गारमें किया योगरे उसी करनाः अरुप करनाः चरायनाः पढि वनारमा कार्र इरहराहर देश करमा। वाद करना। बन्त करमा। स्टा कपिनी-सी॰ [सं०] योहेनी क्यामः खिरनीका वेड । कर्पित-वि॰ सि] सीचा हुना बोता हुना बीपा पोबित । [मी॰ 'कविता' ।] -- (ता) भूमि-की यत हारा पूरी तरह निष्पेश हुई भूमि।

कर्पा(पिन)-वि [सं] स्रीयनेवासा, मावर्गक्र । पु इक बोतनेशला, इत्यादा ।

कपू-सी॰ [सं] ईवा जुतारी मधी। नवर । पु० कीकी भागा रोती चीविका रोबी।

कर्ति - श [सं] क्या - चित्र - श ब्रुमी, विसी समव १ क्रमंद्र-पु•[सं]धय्यादासाकालादाय कोष्टम वद भागी। चंद्रमार्थे दिखाई देनैदाका कामा वागा दोवा कोइन्त्र मोरचा पारेकी कुनको ।—का टीका-करनामीका वच्या अयंग्रन ।

क्रसंक्य-५० (सं) सिंदः व्ह गाय।

क्ष्मंकभी-सी [सं] सिंदती।

कर्मकिस-वि० (सं०) कन्द्रसक्ता गोरका क्या हुआ । कुलंकी(किन्)-वि• [सं] विसे बलक कमा हो। नर

माम । पु॰ चंद्रमा ।

कर्सकुर-५० (से] पानीका सँगर आवर्त । कर्लेगा-पु वरतनपर सक्काशी करनेक्ष छैनी। एक पीवा ।

कर्रगी~सी दे 'दक्गी। कार्रतो निमा पहाडी या जंगकी भाँव ।

कर्रात-त [एं॰] विदियाः बहरीते अलये मारा हुमा मृग का पश्ची। ऐसे पहा-पश्चीका मांसा संवादका ग्रीवा । क्रुंदर-पु [सं]यदः वर्गस्कर काति। एस वर्गतकान्यकि । क्रस्ट्र-पु॰ [ब] मुसलसान साधुक्रीका एक समुरावः वस समुरायका व्यक्तिः वेदर शाह्यः सचानेवाकाः रैनरक प्यान समनमें मस्त रहनेवालाः प्रमुद्धनः रोगेका

क्रसंदरा-पु॰ [ब] एक तरदका रेशमी कपशाः मेसेका

चौक्य ।

क्रसंदरी-वि० (का) क्रमंदरका। क्रमंदरकामा। स्रो कर्ष्यस्य इति, पद्माः कर्णरा क्यो हुई छोस्त्रारी। व्य क्तक्या रेशमी क्रपणा।

क्स्प्रेडिका-ली [सं॰] बुद्धि समझ।

क्छीब-५० [मं] पाणा करेश साम जारिका ४८स । क्संबद्ध-पु॰ [मं॰] एक तरहका करंद ।

कर्रविका-सी [सं] गर्रम, पीठको औरका गरेका मागः एक साम ।

क्संबुट-बु (सं] बाग मनान । कल-वि [सं•] सरस्य मनुद्द, मंद मनुद्द (प्यक्ति); सुद्दा बनाः शृतिमधुर, क्षेमला हेसा द्वाव्य उत्पन्न करवेवाला-बमबोदः अभीर्य । पु अस्पष्ट मधुर ध्यक्तिः वीर्यः पिनही-का एक वर्गाः पार मात्राओंका काल-गालका देश । -कर--मोडी नावात्रवात्मा । पु कोदसः बजुताः इति । --कामः--पु रारने वा नारिके मराइ नार्दिको क्षोमन समुद्र व्यक्ति अनेक लोगोंके एक साथ वोल्पनेशी आवावः दिव पूना। -बीट-पुर्मगोगमें एक साम ।-कृत्रिका -कृत्रिका-मी मोडे बोम नोननवानी युंबसी। -योप-यु र्थे-१का −व-पुसर्या-न्यूक्रिका−सी पुश्रदी।

–भृत–पु॰ चौदी। –चीत−पु धोमाः चौदी मंद मपुर थ्वनि । वि० सुमक्का । −ध्वनि न्मा• कोमरू मकुर व्यक्ति । पु कोयका मोर कव्यतर । −नाद-पु इस । विश्यद, सबुर स्वर्गामा ! −**वस्र**≉−वि बचारित (बचम)। -श्व-पु॰ ब्येमध्र मधुर ध्वति। ⊶रीक-पु॰ दे॰ 'ब्रहरव । -किपि-खो॰ छोनेके पानीको किखावटा सनवरी रेखाओंसे मसंकृत हेना। --ह्रंस-पु• इति राज्ञदंतुः उत्तम राजाः परमदाः राज-पर्वोकी एक जाति। -बास-पु॰ बे.उबदासके मतसे बासका एक भेद ।

क्रक्र-भ अगने वा पिछ्डे दिम, आये प्रकट, पीछे। −का−इछ हो दिनोंका, विकडुक द्वारका (कककी बाद)। -का छोकरा-(बकासे) उभमें बहुत औटा: नादान, नासमञ्जा —काकछपर है--नामंत्री वात वागे वया-समब देखी बादगी। —को- कल कलके दिन।

कस- काका'का समासमें व्यवहरू एवं। -चिदा-पुर एक विदिवा विसका पेट कामा और भींच कास दोतो दै।[मी 'कलविक्षी।]—चीँचा—पुवह कब्दुतर विसर्धा शारी देह सफर दर कॉन कामी हो। -जिस्मा-नि काकी श्रीमनाका। जिसकी कही हुई कर्गगर नार्टे सत्य को कार्य। -क्षिक्षण-वि देश 'नुक्रजिस्मा'। --श्रेंपॉ--वि स्थाध् कासा १ -- ठोरा-प्रश्मकर्यीचा 44्टर । —हमा —हमा—पि काकी पेंड्याका । प्र काको बुमवाको कब्सर । —पोडिया—मी० एक विधिया। −मुँदा−वि याचे मुँदवासा। वसंदिद्ध । [स्री व्यक गुँरी ।] -सिरी-ली यक विदिवा विसके सिरका रंग रवाइ दोशा दै। दिन्दी कहान£ (स्त्र)।

क्छ−न्। चन भाराम ग्रांति। रतमीमान मुक्ति, धीग्रकः र्वत्र मधीनः पंच-पुरवाः वंद्यका मीताः करवर वकः श्रंग ! − वार्-प्र कल्से क्लां ह्रमा स्मिका, ६१वा । ति कक वेषवाका । - वस्र-पुर दाव-पँचः ओइ-सीह । मु॰ -विशा-प्रमाना-क्षत यनामाः दिसंग्रे मनसे अभीट दिशामें मोदं बेना। पट्टी पताना । - बेक्स होना-नेयम होनाः दिसी पेक-पुरनका दौला होना, अपनी वयदश हर वामा । -हाथमें द्वाना-भक्क दावर्गे दोना बादे विशर भुमानमें समर्थ दोता ।

इ.सर्ह्-स्त [ब] रॉगा शंग्धा सुक्रमा में) संनिधीतन के बरतनीपर दिवा जाता है। क्षेत्र मुक्तमा। भूना। भूनेकी पुतार सकेशी: अस्तियनको टिवानवासी वस्तु बनावर: थाक तरवीर । -शर-पु कर्ल्ड वरमेवाका । -शार-नि विसपर कर्ण्य भी भनी हो। −का कुङ्गा−रोगसा मरम । -का भूमा-कथरका शुक्रेरीके काम आनेवाला भूना । सु॰--सुरुपा-असरीयवदा प्रषट हो बाना, शैस गुनना।

कलक-पुनिर्भ एक सरवर्तन महस्य नवस्य एक श्रीन्य । क्रसक−दु [स] दुःग रंगः प्रत्यानाः म्हानिः विदलता वेनेमा।

कमञ्जार-अ कि दिपापना भारतार वरना । कसराम करकामिण-को युक्त रहेशानी। करहा कसकरर-पु [अंश] विश्में मालदा सुरभे न्या अकुसर ।

इनकार धरना ।

कामक-वि॰ [सं॰] शुवर्णका । पु॰ बमालयोग अय

कार्य-कापर काम्रव−नि [सं•] गहरे गोरु रंगका । काहबेय-पु॰ [से] एक तरहका साप। काम-पुर सन्दर्गेतको वृद्दिन, बृद्दि, कुर्ने। सुननेको सन्दित कानमें पहचनेका एक शहनाः भरतनका वस्ताः तराज्याः पर्तेगाः वेव्दकी रंजकवानीः कारपार्वका वेहापनः शिवार मारिको मुँटी। नावको पतकार । * भी दे० कानि । -(भी)काम-एकसे इसरे कानतक, कर्मपरंपराके द्वारा । सु॰ -उठाना-(पशुका) भीक्षण दोनाः बाहर सेना । -- उड़ना-फोर-गुक वा **ध्या** नकवाससे नहुत कथ मिकना । - उमेरमा - प्रेंग्ना-रंड वा चेतावनी देशेके किए काल भरीकना। काम वककना । —कसरबा। → काटमा-नद्र जाना नीचा दिखाना। -कर्जा-सुनना, काम देना । -का कथा-भो कुछ सुने बसपर निमा विचार किने नियनास कर केमेनाका। --साबे करना होना-सबेट चौकमा होना। -सहे रसमा-होसि गार रहना । - सामा- भंगे क्वनाससे कह स्ट्रेंबाना वेरतमः काने रहमा ! ~शुक्रमा~सत्रम होना । - लोखना-सार्थान दर देना । - गरम करना-दान मलना प्रमेठना । -- हवामा -- विरोध 🕆 बरमा । -- हेमा--प्तना भ्यान देवा। −धरमा−व्यावसे गुनशा दान बमेडना ! -न दिवा कामा-छोग्के यारे शुनार्थ म देनाः धीर और ध्वतिकी कर्मक्षणांचे वसका क्षत्र वीमा । --म क्रिकामा-चुँ सं करनाः विरोध नापणि स करता। प्रकार उठमा बैठना नवाँको था कानेवाली थक समा । --पकड्कर निकास देशा-भनागरपुर्व्य निधाल बाहर करना ! "पक्रकृता-भवती मूळ स्वीठार कर मनिष्यमें वैद्यी बाद न करनेकी प्रतिद्या करना थापा क्षरताः भागके किए समेत हो बागा । -पदी भाषाव सनाई म देशा-शिर-प्रकृत कारन कानमें वही हुई बातका समार्थ म देना । - पर जूँ म र्रेगमा- धनिक मी परबाह न हाना शिलक्षण व्याम न देशा ! - फूँकना-दोशा देना। कान भरता, नदकाता । —धंद या बहर कर क्षेमा-जान वृक्षकर किलोकी बात म सुनना शुक्कर भी बसुपर प्यान म देशा । लवजना-कानमें सांबन्ध पदी माशाब बीता । ∼बद्वना−कानने कसवार और इछ माई स्तामका चहना ! न्यह बाना-शुनर्गश्चनते कम बामा । --धरमा-विज्ञांके विश्वमें शिक्षीकी वार्या विगाह देता करगुमान कर वेमा ! ~भक्तमा-कान प्रम-

पाक बीम । कानका-विश्वासा । कालय∽पु सि] बन, जोगरु, बाग, बर् काननारि--पु॰ [सं०] धर्मा इस । कामा-वि० विस्ता रह भांस पुर गयी हो। साह कींड़ा साथा हुना, दाशा (फूल मारि); देश, रिह्ना। पु॰ चीसरके शसको विशे (तीन कार्ने) । कामाकामी--धी॰ कामा-क्ष्मी। पदम इसरे श्राप्त हो चनाः वर्णपरंपरा । कामागीसी १-सी कामा-कृती। कानापूरती-सी अनसे कंग्सर भीरे-मेरे बाव बरू रस सरह की कानेवाकी बात । कामाबाती-मा॰ काममें कही जालगरी शत (गर्देशे हैंसानेके लिए कमंके कानमें 'कामारामी कारायों ह कारो है। 😘 छन्द छोपकर और धीरने बदाबाद है जिल्ली क्या प्राजः दिक्तरिकार्यर हॅस पहल हैं। । कामि 🖛 शी॰ लोकस्थाः सर्वातः (स्वातः । कामिरिक-द्र [सं+] क्रिग्रवी । कामी – विश्वाः एक भारतवारी (तो); पूरी हुई (बॉर्स) स्वमे होसे । ~बँगहरी-स्त्री हिप्तमे । **-भौ**री^{-मो}र कृती ब्रोही । कानीय-पु॰ [सं] विश ब्लाही खोद्या देश झंराज्ये पेदा पुषा व्यक्ता कर्ण । वित्र मनिमाहिता भीते करन । कामीदाउस-५० [अ 'काश्म द्वारम'] दे० 'वारी-कावस'। कान्त-पु॰ [का॰] शत्रनियम, वह नियम निते महास राज्यविशेषके मस्त्रेक प्रमाजनका फर्ज बात बार्डन निर्माट विभि नियम । --गो-पु आस बहद्रमेदा एक दर्मपूरी विसका काम क्रवारियोंना कानवासकी मान करना है। -वॉॅं-वि कानून वाननेवाना I कागृतम् - व वागृतके मुताबिक निवसः। काम्जिया-वि कानूनका वाता द्वारा वरतेनामा कान्मी-वि॰ काम्नस मंदरा कामूबका कामूनहै ने कुला कानुस बचारसेवाना इस्ती। काम्फर्रेस—नो॰ (जं] समकता तिसी विकास विवर बरमें के किए मुखायी गयी समा ! काम्पकुरम-पु॰ (सं) एक प्राचीन बनरा। कार्याः देशका निवासी । इता । -में कीशी शासमा-गुलाम बनामा । (कोई काञ्चन्ना-छी॰ [मे॰] एवः गेषप्रम्म । बार)-में बारा बेसा-समादेश ! -में तेक बाखमा-ब्राम्प्रकेस~g [बं] पु? सम्रा सिपनी ! काम्हरू-पुद्धपा वर्ग्यमा। काव वहरे कर शेना। "में पारा वा सीसा भरता-कारुहकाः कारुहरा-पुरु यस राग ! -वद-पुरु वह संस गरम बारा था विवक्ताया प्रमा सीसा काममें गरश्रद बहरा बर हैना (पुराने समानेकी एक समा) !-सममा-कानसे काम्बद्धी-मी० एक रागिनी । शरदर धोरे-भीरे क्रप्त बहना। यूपके पुषके काम अरना । कापरिक-वि मि] बचर करमेवामा हुए। उर भी ~होमा~हसरोंकी कान भरनेवाली वाडोंका सुनना अनपर स्थाम देगा। चतना । -(भी) कान नवर न कारः (रेपाधी (कापट्य-दु [मं] हुस्मा इन्तरुष । होना-धनिक मी धनर, पतान होना । -पर हाथ श्रापथ-तु [दं] कुमार्ग तुरा राखाः राजः । धरमा-सम्मिष्याः प्रस्ट बर्गा, समग्रान वनगा, साक

कायर-०५ क्यार (थं०) खंदा। - प्रोद-५० करेंग्रे

चाररका इक्ष्मा का पहले जिलार क्योंके मनाना मार्च रे

क्तरा, कळस-पु [सं] वजा कलसा। मंतिर, आदिजा क्रिकर, सँग्रा। व सेरका माना ओटी (आ॰) सिरमीर । -कश्मा(क्सप्),-भव-पु॰ अगरस्व प्रिम ।

कस्तरी, कस्तरीं—ची [सं] छोटा वहा वगरा। छोटा कॅगूरा-पूछवरीं; एव वाजा। —धुतः—पु० कपरस्य मुनि। कस्तरी—ची कुरतीहा एक पेंच।

कससा−पु० व=ाः ⊈गुरा ।

कसर्वतिता-मा दे स्वरावरिवा'।

कळहनी-वि॰ सी हागरनेवानी।

क्रक्रहोत्तरिता - नौ॰ [मं॰] पति वा भावक्रका अपमान कर पोछे पडतानवारो नायिका (मा)।

क्छक्रारी-वि सी पापनवाकी। क्सही(हिन्)-वि [d] हागणन्।।

कर्छों—वि [फा] वशा दीवीकार।

कर्कोहर-पु [मं] सारव कराद्वरा वंशाहर । कर्कोतर-पु [मं] दूसरी वटा। म्यादा साम ।

ककावि, कर्यायिका न्यां [सं] कर्व दमाः सरयोगी। कस्य-सौ [सं] संद्वाः छाटा मागः चंद्रमंदकका शेकदर्शे भाग दे 'बान्ध करून : राधिके तीसमें अधना साठमी भागः बज्ज्या एक मान (१६ मिनट)ः रक्त मांस मंद भादिको भन्दग एउनेवाको सरीरको शिक्तियाँ। इनर, गुण (कामदान्यके अनुसार ६४ कडा माना गयी है। वे में दि—१ गीत २ वाद ३ मूल ४ मारूद, ५ भानेत्व (विषदारी) ६ विनेषद्वच्छ्य (छकारपर तिलक बमाना) ७ नंद्रस-<u>भन्नमङ्</u>कि-विद्यार (भावत तथा कुरु)-का बीढ बनाना),८ पुष्पारतरण (कुरूबिद्र) सेत्र बनाना), %-दश्चमबग्रनागराग (शंदी कर्ष्यद्वमा अंगेंकी रंगना ·). श्विम्मिकान्यमं (पर सञ्जाना) ११ छवम रचना १२ छर्डमाय (जल्द्यंग बहाना) ११ वर्डक्यात (गुड़ारकमारि छिर्द्यमा), १४ विजाबीन (क्यानकी बुदा बुदेकी जवान बसाना), १५ शास्त्रपर्शकविद्यस्य (मारू। गुंबना) १६ बेड्ड-दोखराचीय-बोबन (सिरवर कूक शत्राला) १४- नेपध्वयीन (शत्त्रमृत्रमादि पहनला), १८ कर्णप्रभेग (कर्णप्रकाहि बमाना) ? वाधयान्ति (वधः पुढेर बनामा), २० भूपमबीजन ६० इप्रजाक १२ **की**पुमार योग (कुरूपका संदर बनाभका उपन्यादि वैदार बरना) पर इस्तरायब २४ वित्रशासायुक्तभ्य विदार किया (तरह-तरहके शास, पुप पहतामार्ट नमामा) ९५ पानकरस रामासन बोजन (शर्वत आसवादि बनामा) २६ स्पोदमें (गीनदा काम) 🗝 - गुबहोता (बेलब्ट काप्ता) १८ प्र^३(तका २ - प्रतिमान्त (अंत्यासरी) इर्बाधनयोग (व्रक्षिमपरीका अर्थ करता) ३१ पुस्तक बापत १२ नादिवारयाधिकार्णन (नाटक देखना िरान्त्रता) ११ दास्य-ग्रमन्यापूरम (समस्वापृति), पर्दिशास्त्र-कण दिशक (नेसार, नाथ आदिश पार

पार्व नुमना), १५ तर्जुकर्म, १६ तक्षण, १७- वास्त-विचा १८ स्ट्यरल-परीक्षा १९ नात्वाद (बीमिया गिरी), ४० गणिराग-पान (रहोंके रंग वानना) ४१ बाररशान (सानेंकी विधा), ४९ वृक्षायुर्वेद-योग ४१ भेष-कुमकु>-छानक तुकाविधि, ४४ शुक्रमारिका-प्रकापन ४५ शसादन (उपटम रूगामा) ४६ देशमार्थम-दौराक. ४७. महारम्हिका-कथन (वैगकियोंके संकेत्रसे बोसना) ४८ म्डेप्टिइन्-विदस्य (वि^{क्}दी मानार्थे जाममा), ४९- देख मापाद्यान, ५० पुण्यक्षकदिका: निमित्तद्यान दिवी स्टान देखकर मनिष्यक्रमा), ५१ धंत्र-मातका (वंत्र वनामा), ५२ भारणभावका (स्मरण नदाना) ५३ मुंपाटम (किसीके कब पत्रनेपर बसी मकार पत्र देना), ५४ मानसीकाम्बक्तिया (मनमें काच्य कर सुनाते जामा), ** क्रियाविकस्य (क्रियाका प्रमाय वदल देना), ५६ छलिएक थोग (ण्वारी करना) ५७ अभिवासकीयच्छंदीयान. ५८ बलगीपन (क्रपडीकी रक्षा) ५º स्टबिटीम र. भावार्षणकीका (पासा फॅकना), ६१ वासकीटाकार्म (वर्षोदी क्षित्राना) ६२ वैनाविकी विवादान (विनव तथा शिष्टाचार) वह वैजयको नियापान ६४ नैता क्ति विद्यापाना गाने बनाने आदिनी विद्या संदर रचसा वा समयो रोति। व्यावः सीवा रव वतः भूगः समादः माठा छक्ष-द्रवटा चारु पुक्ति − इटतो होम देशा दरी करो शुबाको दाम¹--दीसद ; क्षीना; मात्रा (छंद): वंश = प्लोति तथा तथा द्योगा ! - स्वार-प किसी क्लाकी बातन उससे वीविका करनेवालाः करित क्लाओसेंस दिसाकी जामने प्रशंस जीविका करनेवाका. क्रमार्थतः आर्टिस्ट । –क्रशस्त्र-वि क्रिसी क्रमार्थे निप्रम । -कृति-न्दा कलामको रचना। -केसि-प कामरेका को बामक्रीहा !-कोदास-पु क्का-विदेशमें मिप्पणता। हमर ।-श्रय-प चंद्रमास्य चंद्रमा !-संग-प [दि•] क्रमोता या पंच ।- घर -नाव -निधि-पु नंद्रमा: कमाविद् ।-व्यास-पुरु यक्ष तंत्रीक न्यास । -बाज्ञ-प्रभृति] क्षणांवादी करनेवाला नदका काम करनेवाला। —बाझी—ला [दि॰] सिर मीचे और पैर कपर बरके वस्य बाना सीधनियाँ महिष्याः "भार-५० बीप्रमाः ब्रह्माश्चर १ क्साई-न्या शायमें श्येतीक बाइक करा, श्येती और पर्वेषेके बीचका भाग गट्टा कलाई परुवने-प्रवानेकी कस-रतः मुनुद्धा करुताः पुलाः बाधीते मुन्ते सुनावी बामेबाडी रत्सी जिसमें पीड़बान पर परेंसाता है। भनाम । क्रफाकेंग्र-प एक तरहरी परफी ! कलाकान-प [में] इनाइस दिए । कसाचिक-प कसाची-सी [मं] सनार। बनार। क्षमारील-प [र्ग] गेंबमश प्राप्तिस ग्रह वसपक्षा !

क्रमाद् क्रमादक-५ [म] भागर ।

बाराबर-प [लं] शिवटा एक गन ।

बान देश्या द ।

क्ष्मिक-त [मे] सुर्या ।

क्षणात्ता वे~त हाथीओ गरतनपरका बन साम वहाँ पैन

बलामुनावा(वित्र)-म [८] प्रमरः गरवाः परिवतः

ण्य प्रदारका अवर भी अर्धात प्रदायपंत्रे वालगरें। सराव "दोता दे। ⊷तरु–५० करपक्षः, शॉदाः ∽साख−त योगसः। - सिथि-सी० कामकी पूर्वाकी तिथि, वरीवधी। —व्—वि धर्मोड वावक कामना पूरी करमेवाका। प्र• धिषा रहेर । --ध्मणि-प्र• विशासणि । -वर्धन-नि देखमेर द्वार स्मानेनाका। -दहन-पु० कामको भरम क्रन्नेवासे शिव । - चा-क्सी॰ कामचेनुः यक वैबीः। पैत-प्रक्रा पद्मादशी । —दान~प्र थेसा मृत्य-पान शादि कि भ्रोग भवना काम-काम छोत्रकर बसोमें रमे रहें। ~बुध~नि॰ अमीक्षत्रानकः। ~बुधा~को॰ कामधेनुः। -वृतिका-का नागरता। -वृत्ती-का नागरताः कोयका --लेक-प्रकासका देवता, रतिपति क्ट्रियं। विष्णुः दिव । ∽षुक्,∼स्ता कामचेतु । ∽धेतु−द्यौ० स्वर्गमी माथ जो सब कामनाओंको पृष्टि करनेवाकी आसी भारत है। परिष्ठको गांव नेदिनो जिसके किय दिसादिकके साव पत्तका सुद्ध हुना । —ध्वज्र⊸पु॰ मछली ।—पाछ्य~ प्र विष्णुः क्षितः वकराम । – एत्क –पुर एक तरहका भाग । याण-तुकागदेवकं गौध बौज-गीधन धरमादन संतपन शोपय और निश्चेधीकरण अवना ने पाँच प्राच-काल करन कोन करण अधीयः आय और वर्गको। ~भूरह~प्र करत्थ !ं −सह(स्)−प्र वानदेवका परस्त्रे वा भैत-पूर्णिमको मनावा वाता है!−सूत्रा−खा॰ र्वत्रको एक सुद्रा । ~सूच "सोडित" वि कामकाः श्चमाद्वरः –रियु∽षु धिनः। –क्षत्रि–को रामको क्थि।निवसे प्राप्त सक्त वला। −इत्प−पु॰ शासासका एक किका नहीं कामारूमा देनोका मंदिर है। वि॰ मनपादा सम भारम क्षर सक्तनेवाला। संदर । 🗝 ह्यी (पिय) – वि रण्डानुसार रूप भारण स्ट्रतंबाका । –रेका नक्ष्यान्स्री० बेहबा।-स्ट्रशास्त्री प्रश्नेदिव किंग।-स्टोक-प्र एक परीक्ष कोठ (शी)! ∽वल्सन − प्रावनंता चंद्रसा अस्ता। -चारमा-सा॰ व्याप्ति । -बाल-वि० कामी अवर । ~शृद्धि~पु क्षविशय । ~प्रार~पुरु देश 'क्रमनाय'; भाग । -शाका-पु कामबला जिलानेवाका धान्त, रति-धास क्रेक्शास । ~ससा~३ वर्तत । ~स्त-प्र प्रयक्तके पुत्र अभिकृत ।-श्रद्ध-पुरु वास्त्वायमस्य काम-द्यासका प्रसिद्ध प्रेष । "क्षां(इम्)-पु॰ विवा निध्यु । काम-पु॰ यो कुछ किया जान पर्म प्रश्न कारा अर्थ मबीजभ सहस्रव गरका पंचा रीजगारा मीबरी प्रवर्णका दुरसाय्य काये। वेस-पूरे अकाशी आदि। वारीवरी। ~काज=पु काम-५व६ कारवार।~काळी~वि काम-बाबमें स्वा रहमेवाला, ध्यमी । --बकाळ-चि विसम फिलाहान बाम निकास जान, आवस्य प्रतासी पृति 🕅 भागः। -- भार-वि कामने जी भुरानेशका, व्याक्ती । -वाली-स्तृत वह सूत्री वा रेशमी क्रपण विश्वपर महा-की बढ़ियाँ बनी बीह एकमें सितारे आदिका काम ! - बार -वि अरदीयां या कशक्तके कामवाका (रोपं: नता) । ~धास~पु कामकाणः मु ~कामा-दरतेमाण क्षीमाः काममें काया। बुक्रमें मारा कामा। साथ देना सहावद दोना । ~करमा ~असर करना। कारगर दीमा। प्रनकर्म शोमाः मर्ज रिक्ट वरमा । —का-जिससे बरम निष्के

वपनीगी ! —वसमा—काम बोना। बामका आरं गुरुष ! ~चरुना नप्रयोक्त, वायस्यकत्रको पृति करकः लॉन रवीं काम निकास केता। बाम चक्दा, वारी रखना। -तमाम करना:-काम पूरा करना गर हान्छ। --चमास हाना--काम पूरा दोनाः माग बान**ठ भ**ता। ~निकम्भगा~प्रयोजन सिक्ष द्वाता । -यमन -प्रदेशन निकल्ना । --श्कामा-नारवा, सरीवार रखना गर्धन होना !--कमना--दरहार होना । -स दाम स्वना-अपने कास, प्रयोजन अर्थका ही प्याप हराता, और वासीमें न वहना । ⇔होना−मदलव पूरा दोवा। कास∽च [का•] इच्छा, कामनाः इराहा, मदल्यः हच्य र्मेष्ट । ~गार्~वि सफलमभोग्वा सीवामधानाः पु अभिक सम्बद्ध (बार) । --पाम--विर सुप्रप्रमेतिः क्रतकार्या वरीसामें स्थानं। ~याबी-को॰ सरवा क्रतकार्यता । –राम-वि शक्कममोरक सीमान्याक यस्य । – राजी –सौ सरकताः सीमान्यः प्रमुखनाः कासर-वि [र्स] क्षपुरुष्ठे संबंध रहानेवामा । कामविया-पुरु रामदेव-पंथा साध । कामता 🖳 विश्वकृतके पासका एक स्थान । काराम - वि [सं] संपर बाह्यक [संव] बान सत्तरम ! -बेस्थ-पु॰ श्रेच्छामे संबद्ध द्वर राष्ट्रका मंतर। —समा−न्नी [हि] क्रिटिश पाठनेंटकी सामारम पना ! कासमा-स्री (संग) श्वद्या, बाह । कामरिया स्थमरीर-स्थ दनही। कासक-द है 'कामक्य'। कामरेड-५ (लं॰) साथ, साथ काम बरनेवाना (नामर वादिवीका एक इसरेकी संशोधन)। कासर्स**-५० (अ**] व्याचार, वानिभ्य ! कासक – वि [धं] कामी। यु वर्छना विचारतेय पीकिया रोगा सहस्रात । कासार/१०-ची दमहो। कासका–९ एक शकारका रोग शक्तिमा ! कामसिका~का (रा•) जराव। कासली-नी काली;[में] ग्रेडिश रोग। कामसी(बिक्)-वि [मं] बिसे देशवा रेन इना है। कामवती-सी [सं] शुरदस्ये । वि सी क्ष्म वासमावाधी । कामां का~पु॰ (ग़ं॰) माधुना भरत । कामीय-पुषि] भागा कामीच-वि [में] जो कारते अंवादोयनाची समाप्ति कामा-भी एक इचा स्थापिमी । व [अ] बर्ग (साव) कामासी –सौ [मं] दुर्गका एक शाम । कामान्त्र्या - स्मी [तं] बुगोपा एव मामा सगीश केरिन पीठ कामस्य । कारगति –की॰ (सं] उप्कट प्रेमा कामीस वन ! कामानुर-वि (सं०) कामग्रीतिन कामोगन कान ! मासाध्म≭−षु [५०] अनिरद्र । कामाजि~तु [म] नामायदा एक १६१४ । कामानुज−तु [सं] क्रीप । कामाधन~3 [तं] कामनेत्रवे एशक पुरंप !

कळुपा**ड्र+**—सी दोव; अपनित्रता । कस्तिपत, कसुपी(पित्र)-वि [तं•] बनुवतुकः रहः भूषा दृष्ट । क्स्ट्ररा−(व० काके (यका, काका I कस्तुका#-पुमुल्छी। **क्ट्रॅडर**—पु• [वं०] विभियत्र । क्छेळ ० - प दे 'क्छेना'। क्रक्षेपटर-पु[अं+] है+ 'फ्रम्पटर'। कसेजाई-पु भूमीटिया रंग । वि कनेजाई शाका । कुरोजा-पुप्राधिनोंका एक मीतरी अवस्थ की सीमैके कदर बाँची और रहता है और जिससे पिच बनता और दृषित रक्त शुक्ष क्षेता वै वक्त क्रिगरा छाती किं। साइस द्विग्मतः अति प्रिय व्यक्ति या वस्तु । अ॰ - उछ समा-इर्न उद्देश आशंहा आविसे विस्ता पहकता। -कटमा-विवादिने मॉर्नोमें देव बीमाः दिकको कोर पहें चनाः सूनी दस्त आना । ←कदाव होना∽दिक वकनाः शति इन्द्र, संताद अनुसन् करना । -काँपमा-दिस दहलता हरसे बाँप जाता। -काबना -विकासमा-बदमा पहुँचानाः प्रिय बस्तु या शर्वस्य हे केना !-सामा-सतामा पीटा देना। विसी भी सको बार-बार सौगकर कह पहुँचाना । - खिसामा - प्रिय वस्तु वेमाः बादर-सत्कारमें **बोर्ड वात प्रधान राग्ना । —ख़रचना∽वटुत मृ**ण नयनाः प्रिय वरत्छ प्रथम होनेपर व्याफुल हाना। -छस्रजी क्षामा-ताने व्यन्य-शामेंने क्ष्रेका हिंद जाना ।-छित्रना ─विधवा~कडी वास्त्रे जी बुरामा । ─कसमा-मनकी अति क्ष्मेस श्रोताः अमद्य कगता द्वामी वक्तवा। - जमाना-वट व्द्वाना धृताना । - ट्रान-वी ट्रमा दौसता परत होना । - 2 वा होना - मनदी शांति मिनना, बकत-देवन्यं का दर दीना । -तर प्रामा-वर्त्वेवेमें इंटक प्रेचमाः निर्देद रहमा । -थासकर १ड आमा-अनहा बह-नेत्नाको निना बाद विवे, दिन फराबर सह हेला पैदमक्टो बाइर न भाने देलाः −ध∟स क्षेत्रा या पकक मेमा-नरमाको नाहर स आज देमेके निर्ण दिनको एउए हेगा ना रसना । - घष-घड करना - घडहमा-भव मार्गदाने असदा दश्के सहसके लिए मनमें बल संबद करनाः विशवा विकतिन विक्रत की जानाः दिल इह सना । —घरस हो जाना—श्याण्ड टर जामाः स्तरभ क्षे जाना विरिमत क्षेत्रा। **—शिकासकर धर या रम्ब** दमा−अति प्रिय वर्षा अर्थय कर देशाः जान दे ≼शा सारी शक्ति हमा देना । अबक आजा-निजी बहने कर बला एसका असम हो जाना। -प्रकृतसमा-वृद्ध सदने हे निए भी कहा करमा । -- चकामा-मानमें दम **४रना, परेग्रान करमा ।-परधारका करमा**~अस्टा बुन्स के गहमक निग भी क्या करना। निष्टुर निर्मेश क्य बाना । - पट जाना-निमीके दुःगमे इरमका विनीर्ग इतिन दोमा । —वित्याँ वाँमी उग्रम्मा-इर्व, अव मार्थका मारिने इत्त्वका जोरन संदित होता जिल्हा पट्टे भारने परस्ता । --सुँद्वा साना-किसी कर व्यवसि म्बपुत्र वेचैन दोनो अति क्ष्या दोना। –(से)का दुक्दा-भंताय पटा । -धा कोर-र नान पटी । -पर

हुरी चक्र जाना था फिरना-इन्बर्ग गहरा मायत होना बटेंबा इटने, विरमेदा-सा बट होना। - पर सॉप छोटना-- किसी बावके यह कर किसी भीनके देवस्य काता; हैप्योसे बक्र बटना। - पर हाथ फेरना था रस्त्रा-- व्यापी बक्र बटना। - पर हाथ फेरना था रस्त्रा-- व्यापी बावके स्वयंतिके विवयं अपने टिक, अंदारमासे पूछना। - में बाक्रना-- प्यापी क्यापा छोता। - में बाक्रना-- प्यारी प्राप्त प्राप्त क्याना होक होना। - में बाक्रना-- प्यारी प्राप्त रखना। - में श्रीर कमनता-दिक्में गहरी प्रोट स्वया। - में प्रस्ता। - से समावा-- हाशीने विषया हेना प्यार करना।

करेजी-नी क्नेजेस मंस् । करेजर-पु सि] देद, कोमा; टीक, ककार । मु० — वद्यमा-नमा घरीर पारण बरमा, कोमा प्रकाश स्पनानीय पुरानीमुहिन्दी नार नार्की स्पापना होना। स्पनानीय पुरानीमुहिन्दी नार्का स्पापनी स्पापना

स्पन्नावनीकी पुरानी मृतिकी नगह नवीकी स्थापना होता। कर्मवा - पु सरका वक्तपान, मास्ताः म्याहकी एक ररमः मार्गर्ने सानेटे निष्ण साथ दिवा शया भीवमः, पाधेयः। सुष् -करमा-रा। बाना।

क्कस॰-दु॰ दे॰ 'कांग्र ।

कड़ियां चन्या कुणवाश्री (रसना मारमा)।

ककोर-सी॰ जदान गाय की प्यापी वा गामिन न हो। ॰ पु वष्टथा-'मानी हरे एन बान वर्र नगरे सुरभेनुके वीन करारे -कविशावनी।

क्रफोरी-स्री जनान गाय, श्रुकोर ।

वकोल-युद्धीया देखि। क्योगसम्बद्धाः

वस्रोसमा॰−श्रातः क्ष्मेल वरमा । कर्मीको न्मो॰ समाचा मरदर यो-तेलमें तलो दुई समूची

भिन्नी, बगम लादिः गैंगरेला । कर्मीस-म्या कर्मक, कालिया स्वादी । दि० जी कामापस स्वित हो ।

क्सीधी-मा शुँग्रा पावन कुलाव।

ক্ষমক পু [f] বিজ আহিক দাখি নদনিবালা দীল, কাঁৱে বিলঃকালকা দীল' (বা বিছা) গাটা। যক বাছেকা কায়া। বাংলা বাংলা বাহালা বহিল সক্ষ গাঁধমালা বাহ্যক। বিভ বাংলা বছা । প্ৰদেশ পু কাৰাে।

करिक-पु: [सं] विजुदा रहती भार अधिम प्रवदार को पुरार कि मनुसार करिनुक्क अंतर्थ कमल (मुरारावार)में क्षेणा ! - पुराच-पु: एक वस्पुराण विश्वमें विक् अव सारको कथा चरित है !

क्यकी(स्थित)-वि [मं] बस्द, तंत्र पापानिने मुखः। पुटे 'बस्कि।

करण-पु [न] पार्थिक कर्मन्ये सा निविधिकामा निहित्त निक्षणा नेरके व अनिमिन्ने वह जिसमें वहाँ स्नामने आणिका निविधी वहायों गयो है। क्रायहत एक निक्ष (न्य द्वार सहातुमा-पंकार कर करी कामन करी क्रायह निक्रोभा आहु "त्वा निवधिक्ता भेगातिमामा (पुण्यक्ता निक्रोभा कार्यु "त्वा निवधिक्ता भेगातिमामा (पुण्यक्ता निक्रोभा कार्यु "त्वा प्रमाण मेंने निकारण क्रायह हरवारि) विश्व कीव्या ह्याका स्वत्य स्वत्य हराहर हरवारि) विश्व कीव्या ह्याका स्वत्य स्वत्य हराहर

-गजार-वि॰ कर्षकुछल, काममें चतुर । -गुजारी-मा । मरीडी और होशिवारीसे काम करना । - चोच-पु॰ एकवीका चीन्द्रश बीचा बिसपर कपक्ष तालकर कशीये या अस्कारीके काम करते के जरवीजीका काम करमेवालाः गुरुकारीका काम । —श्लोकी-न्त्वी • गुरुकारीः क्योरेका काम । वि॰ क्योरेका (काम) । -आउ-प॰ पुन्तः रण । —नामा-पु भारीसनीय कामा कार्यावसीः सरदार ! -परदाक-वि॰ काम कानेवाकाः प्रतंपक ! -परदाक्ती-साँ॰ कारगुवारो । -वंद-वि व्यक करनेवाका जाहा पाकन करनेवाका (बीमा) । -धार-प • सामश्राजा रोजगारः व्याचार । ---बारी--वि० ब्राज-काबी। रीजपारी। -स्वार्ड-खा किसी कामका बरमा बारी रएमा' कामः इरक्त' सपात्र सरवीरः बासः। --साझ--वि• काम वनाने, सुँवारनेवाला । --साझी--न्ती • काम बमानेकी योग्यताः बाधवाती । - रक्षाती--मी प्राक्रिय चाठवानी। -(२) होर-प् नेक कामः प्रान्य कार्व, सकार्रका काम। -(शे) बार-प दे० कारबार । कार- • वि काका। प्र [रो॰] (स्मासके शंतमें) करने-गाका, बर्ज़ (प्रवकार, विशेषार ह): किया काम (बसरकार ४०)। वर्षके जंतरे बसके स्वारणक क्यांने ('दकार' नकार' र)। रवालकारी भाष्यके शंतमें बनकी व्यक्तिके अर्थेमें समस्यः जटान्द्रश्रामा पतिः स्वामी संस्थरा शक्ति। कर वर्षका देश दिमालया वया जोलेसे कारण बल । स्ती [र्ज] गाड़ी मोटर नाधी। कारक~प सि । ऐका वा सर्वज्ञानका बद्ध रूप किसमे बारवर्में इसर हान्दींके साथ प्रमध्य मंदंप प्रकट बीता है। करवेबाका (छामकारक, शामिकारक र ~प्राय समास्रोदमें)। –दीपक-त व्या अर्थाकंकार विसमें बहुत-ही फ़िबाओंके साब कारफ मनाद बर्गाका यक ही गर क्शन हो।-विमक्ति-नी छई।हो छोश्वर और सर निमक्तियों !-शृहु-पु यह देतु जी कर्मका रायासक ही । कारज-वि [मं॰] वैदारी सर्वशी । 🕫 है कार्व। कारबार-५० घरट कीशा । कारटम-इ [मं] दिही सायविक चटना वा व्यक्तिकी शास्त्रकरकः रूपमें सामने कानेशका विका व्यापानिक । कारठनिस्ट~प्र [#] अस्ट्रम बनानेवाला व्याप्त विषयार । **कारण**-प्र• [एं•] दिमी चार्क्ड बीनवा देश वह विश्वसे ब्यार्वेक्ट्री करपत्ति ही निभित्त शुवन साधना क्रमानसम्बद्धा माधार (बा॰)। दानेंद्रिका शरीरा विद्वा प्रमाणा क्या कार्यः देशः अगु । - माला - स्री एक अर्थारकार विसरी किसी कारणसे कलक बीमैनाका कर्म स्वयं उच्छीचर कारण बसते प्रथ सम्य कार्य चलक करता पछना है। -बावी(दिव)-पु बावा करिबार करमेवामा !---बारि-प वह जन की स्टिके आर्थमें करवल हुआ था। —वारीर्~प्र अविदासन घरीर बादगंसदकोश (वै०) । कारका - म्यो । सिंगी पीवा नेदायाः समन्त्रातमाः नात्राताः । कारणिक-प्र [र्ग+] विनारका परीक्षका सर्वरिंद, वाजी समीग ।

कारतस्य-पर पीतल, इपती आदियो बनो कोटो क्रिके बंदक, समेचे बाविके एक फैरमाक किए रीती, रक्त मरी रहती है। कारमण-प॰ है 'कारण'। काल स्वर-'बागानी रूप है रोरे ~पर । कारनिस-सो॰ (र्थ०) दोचारको बँगना । कारनी-+ विश्वमधी प्रेरण बातेशका पेर एटो-बाजा । † प्र• प्रेतनावा बानिसे प्रस्त व्यक्तिः। कारपोरक-पु॰ (शं॰) फीजका एक छोटा भरूनर । कारबंकछ-५० (वं] पीठका (बद्दरीहा) ग्रेहा। कारबन-प बिनी भीतिक सक्रिके मुण्यत तस्त्रीमेंन रह की धीरे. कीवले कारवीतिक प्रसिन (ग्रेस) अवस्मि एए बाता है। -वेपर-पुगरी रंगका कामन विने सेने रक्षकर कहा पॅसिकमे किसमें वा शाव करवेच करे मीचे दरी हर कागवपर मक्स ठठर कामी है वर्गका। कारभ-वि [सं०] केरने प्राप्त वा संवष रसम्भाता। कारमिद्विका~की [लंग] क्यूर ! कारविसा(ल)-वि [सं॰] बराशेवासा। कारण-प्र (तंश) क्षीमा । कारवाँ-प्र [का] देखांतर जानेवाड वावियोः सात रिवीका झंट । कारबेस्क कारबेस्लक-पुरु [मंत्र] बरेगा। कारस्कर-५ (श्रं) एक ब्रम्न किराक ! कारा-ची॰ [सं] देशः देशसमाः शेहाः हतीः क्वारिंग रगर । अ विश्वकाला । अ हुन सर्पे । −गस-दु० देशे । -सृद्ध-ध केंद्रसाता । -पश्च-तुरु रामानवर्षे वित्र एक जनपर । -पास-पुर जेक्सा रक्षा चिना । -बास-ड वैद्र। -बासी(सिन)-ड वैद्री, श्तः। कारागार-तु [त्रं] हैरछाना । कारासव्-वि (का] बाम नामेके ठावतः वस्त्रीमी ह काराविका-स्त्रा (वं॰) सारधी। कारिया - प्र काम करमेवाणा कर्मवारी। उपारण । कारि-सी (से] कार्य । प्र कामारा ध्वनिर् क्षारिक्र−त० (स.) कको दरनेगला । कारिका-स्ती [मं॰] इस्रोबश्य स्वास्त्रा। मसे मर्नेट क्रपोक्ता स्वा वक्ष स्वीचे शास स्वाक्त । कारिस = -शां दे 'कारिस'। कारित−दि० [र्न] दरापा द्वला ≀ कारिता-स्ता [तं] वह सूर वो क्योंने देना संनी किया हो । --शुक्ति-म्यो॰ काथ दिने हुए वस्ती निर्मेशी रेक्टर जसमे निया पारेशमा सप् । कारी-व्यक्ति न्यां कार्याः[का] क्यूर वर् नेश्वाधार्यस्य ~आप्रा~तु० बातक घोर । **81318** बारी(रिश)-वि= (स] (समासीत्री) ('बृहदाग'कारी १०) र पु कारीवर: कशागर ! कारीगर-पु [का] बरनकार-दिश्ये । कारीगरी-भी॰ कि] छित्र दस्तकारी। दिन्तकीरण। कारीय-त [मं] सूरि चोषर करचे का देर ! कार्यक्रिका, कार्यक्षी-सी [संग] भेरे ह काद-पुरु [मं] दिवस बारीमारा विशवस्त्री दिवा

284 क्ष्महार-पु [सं] एक पुष्प सर्देश की । क्रमहारमा! - स फि॰ (इरे वा मिगोये चनै मटर कारिको) यो या तेल टोक्सर इसका तरुना । मा कि सराइना । कवक-प॰ सि] दशक, निशामाः कुरूरम्थाः। कवन-पु [सु] बस्तर, वर्मे धिकका; तांत्रिक साधनाका पद रहा मंत्र; एस भंत्रसे बना बंद्र, ताबीव; बक्ष नगाड़ा॰ पाकरका पेड़ ।-धर -हर-वि॰ क्षमध धारण करनेवासाः इ.स.च चारण इ.र.न योग्य अवस्वाका । --पश्च-पु भोत्रपत्र । कवत्ती(चिन)-दि सि रे जो करण बारण किये हो. वस्तरपोश्च । तु शिवः वृतराज्ञका एक प्रत्र । कपरी-थी (एं॰) दरवाबका पट्टा एक शुरू जातिकी सी। क्वड−९ [सं] कुही बरनेदा वामी। कदम-प्रसि•]पानी। + सव कान। कविद्या(न)-पुर्सि] स्विः। क्षत्रियो-सी॰ [सं] काम्बरचना करनेवाण सी। कव्यी−ली [सं] न्द्र मरुकी। कदर-ए [सं] बूग पोटी; शम्मः गमदः जितदशरापकः म्बास्थाताः दे 'चन्दन । वि वितक्षताः मिना जुलाः समित । प्र [4] दरमा, वेडमा विकासाः पुस्तद्दे क्षपर चनामा हुना कागवः श्रामीपर विकासी बगड कुगावा हुना कागन । क्रवरकी-सी [सं] वंदिनी। कवरमा == स॰ कि॰ एकनाः बरा वस भनना । कदरी-न्त्री [स] कोटीः वनतुष्यती । क्ष्यर्ग-प्र[मृ०] कस 'क तकके अपूरीका समूह। क्रयस~पु• [सं] श्रीर, प्राप्तः क्रतीः व्यः मध्यो व्यः वीना रे एक पश्चीर एक तरहका योहार बीलिया होगा। ⊷प्र**ड**−पुरुद्धतीन । क्वमन-५ [मं] पानाः चरानाः निगन्मा । कवसिका-सौ [मं] पौरे मादिपर शॅबी बानेवानी पट्टी। कवस्थित-नि [सं] साथा अशवा नियमा हुवा। गृहीत । कमप-प्रमि] दानः एक मंत्रपटा ऋषि । कवम-५ [गं] क्ष्मपा एउ ब्हेटेशर शाही। कपाट-प [मं•] दे 'कपाट ।-श्र-पु• चार ।-वक-उपस्पीका। क्रथाम-द्र• (म) घीरा यास्त्रीः बातः साथ सानेदे हिए सुरतीस पंसासर गांग किया हुआ रस । क्रपायत्-पु (अ] निवमायशे कार्यविधि (धायश का बद्)। सी व्याप्रस्मा सेना ना पुल्सिके सिपादिकोंका पुरुषान्य अभ्यास करना परेट। बदार-पु[म] क्ष्मण, यह बन्यती । कवारी । ना दे अरवस । विष-पु [मं•] विका वरमेवाना शादरा कवि प्रसा

बारमीति। प्या उम्बा श्वामार्थ । वि अमीदिय विषयी-

को पामनक्षणा कांत्रस्थाः मनीको संकारी । -कर्म(म)

दु वरिताः बाम्यरभनाः उद्भावन । -प्रयष्ट-दु आदि

वरि गम्मोदि । −तुग्र−तु हाकायाय । ⇔राञ्च−तु

बरियम मार नेवादा एक छवाचि । -शामायण-

प् व क्मोकि। -शयक-पु० के क्विसाय।-सासिका, -कासिका-ओ• एक तरहरी बीगा I-समय-पु० वे मान्यतार्गं विनका कवि छोग प्राचीन काछसे वर्णम करते मा रहे हैं (बैसे संबंध परायातस महोसका प्राप्तत होना भादि)। कविक−पु[सं]रुगास। कविका-सी० [सं] समाम केवडा; एक मदली । कविदा-की सि रसारमक छंदीबब रचना। कविताई?-सी वे॰ कविता । कवित्त-प्र कविताः यक वर्णवृत्ताः कविश्व-पु॰ [सं] काम्बरपमाद्ये श्राप्तः काम्यका ग्रापः कविभासा÷—मौ॰ कर्मनाञ्चा मही । कविय, कवीय-पु॰ [सं] हे० 'स्विक'। कविसास≠~g+ देनास स्वर्ग । क्षीं द्र-पु [सं] शस्मी/६। क्शीव-पु[सं] क्षेत्रक्रियः क्वीय−पु देशा। कवेरा-दि॰ वैदार । रुदेष−पु[सं]दमय। रवेसा~पुरीण्यावया। क्योप्य-दि [सं] धोश गरम दुनकुना। कृष्य-पु॰ [र्स] पित्तरोंकी दिया वानवाना श्रप्त । -बास, -बाइ,-बाइन-दु लग्नि। क्श-पु॰ (सं॰) बासुकः (का] स्वीवा संबाक् सिगरेट बारिके बुर्णका बुँट पूँक। वि स्मापनवामाः वटानेवासा (इंदन समास्य - नाराइस मेहनत्वरः)। - स्ट्रा - सी र्धीचा वानीः संपर्वः भीर भारः, पदमबद्धाः ।-(६) ह्यातः ~री बीदम संधामः अस्तित्व रक्षाके निए संघर्ष । कशक-पु॰ [मं॰] एक करक गवेसुरा। क्काकोक-तु (का॰) सुमनमान पन्धीरीका निद्यापात्र यप्पर । क्सा-भी॰ (सं] चारुझ रासी । क्याधात-१ (सं) थाउँ वा कीहा मारना । क्रिक-पु [मूं] मेवला। किनाय-व [संब] बटारी विधानत तकिया सका वस्ता कशिश-नी [का] विवाद आएवण, श्रांतने हो शक्ति स्कार प्रश्ति। क्यतिय् न्या [या] अर्थः सीवना (बरमा द्वांमा)। -वा-न्या सिवास मन्तुरात नारावया। -पा-उ दशीश ण्डलेप। बर्राञ्चा-वि [या] सिंधा वा मीया दुमा प्रस्था दुशा । पु सुरे बागन क्ष्यरदर् बनाया दुशा रह-बूग गुन कारी (काल्या) । -(इर) जासत-दि नदे कन्दा । बजर-पु [मं] बनस्त रोण यंतुरोतद नी मारोमेम एउ। कटारक-बु [सं] दर्भक्ता क्कारका-सी [सं] रोहा वहिषयू-वि , सर्व [मं] कार्र कृति एत क्श्मी=ग्रं [का] दे दिरही ।

कास-पु॰ (से॰) समय अवसरा अवधि। समयका कीर्र विमान (वडी, यंटा आदि); मीसमा बंदा युख्यः मशाकारः बना काका पर गहरर नीका रंगा जिला धानिः वारक्याः भौतिका बाका भाग कोशकः बीधाः यदः राजकथा। 🖓 कामाः गहरे नीते नंगकाः हानिकारकः । –कठ-पु» शिवः मीतकः भेरः गेरेवाः संज्ञाः -कंशक-प्रश्नाकाः सींप, देश्या । —कटंक्टर-प क्षित्र । —करवा-प यक तरहका कृता ।-क्रिका -कर्णी-को० वर्गमा !-कर्मा (र्मन्)-पु॰ मृह्यु । ~कदप-वि॰ वातुक, वानसेवा । -कवि-ए अधि । -काळ-ए॰ परमद्य । -कीळ-पुरु कोकाइक । – क्रुरंज – पुरुष् विष्णु । – क्रुरंज – पुरुष - मृद्ध-पु । एक भयानक विष्, वकावक विष । - क्रस-वि• कासका पैदा किया हुआ। -हृत्यु~तु० सूर्वे। मीरा मदा ! -कोटरी-सी॰ [हि] भवेदर अपराधिवाँको यकाकी रखनेके किए जेकरें बनों इहं एक कीटरी की बहत संग और अभेरी दोटी है। - कस-प्रसम्बद्ध गति। −क्षेप−प समय विद्याला दिल काटना। −क्केड्र--संज्ञन-प्र• वहुरा । ⇔लंड-प्र• बहुरा परमेश्वर । –र्शना–को धुनुना नवो ।∵न्यक्रित−३ [वि•] एक तरहरू विगैला साँप ≀−श्रीकि−न्या वर्ग, शाल ।- चळ--प समबका रहाः माग्यपरिवर्तभा सर्वे।—चिका—प कत्प निमट होनेके रुक्षण !--शा-नि॰ (कार्यनिशेपके) अवश्ररकी पद्काननेवासः। पुरु क्योतिकी सूर्गा । —अयोक्न-वि **धक्रमें बटाः माध्ययण्यः शयाना । −च्या−प** शीओं कारु-भृत मनिष्य भीर वर्तमान । -श्रंब-पु पूल्या बमराबद्धा वंट । -धर्म-प्र॰ अवसर, बसुविसेवके बक् शुक्त व्यवस्था पृत्युः –नाव-तु शिका कालभैरकः। -- निर्यास-प गुराल । -- निष्ठा।-- नी॰ दौरावस्थेश्रो रातः योर अंधेरी रातः। - नेमि-५ राषण्या मामाः व्य क्षानव की विष्युके शाका गारा गवा । -पडा-विश् अपने समयपर स्थामादिक कंपमें पका इचा। -पाश-प्रक षमका प्रदा: प्रांसी । -पाशिक-पु + नतम । -पुरुप-पु अप्रकार प्रवेशक व्यक्ति वासा कारा वासा वासा वासा च्या कात ! -पूर्व-पुर यह वरहका हिरमा क्षेत्र पर्या ! ~प्रमात्त~पु• शरद चतुः । ~प्रमेह~पु यद तरहदा ममेंद्र रीग ।-- बजर-- प्र [दि] बद्रत प्रशामी परशी । दिया काशीम शिवके एक सक्य गय । -प्राथ-द कारको माथा, माप । -मुका-तु० काने गुँद्रवासः केर्, संगुर् १- मेथी - स्था॰ मंत्रिया । - यवक-मु एक प्रनराज जिसन मण्डापर चलमें की भी और इ.ध्यक्ते कीश्चमने सुरायुंबका कीशमात्रम दोकर मरम हुआ। -पापम-५ ४७ ग्रमानाः दिन कारना। -पुक्त-पु बक्त स्वरक्षर ।-योग-पु॰ निवति भाग्य । ~घोरी(गिन)-५ धिव । ~शहा,-शिवेव-क्षी है≉ बारगानि'।-रामि -रामी-गी० अवेरी टरावणी राता प्रणयको राजः मानुको राजः "नार्थाको राजः वर कान्यीके कार्ज क्लंब्रे करें मामका कर्ना राता क्रूप्यंका एक माथा यमराबद्धे ग्रह्म ।-स्रोह्न-सीह-मु दरपान।-विधाद -पुर्व विकास वायरे पुरा दीतेके किन नियत काम ।-सृद्धिः रो विशेषकप्रदेश वानेगमा ग्याम (महावार)

विमाधीः ग्रमादी शादि) । -बसा-रो ग्रांसायः वह आभी पत्रीका समय क्षत्र बोर्ड धर्मगुण्य वरनेया निय है (विशानिक वारोंने वह समय विश्वनित होता है)। −शाक-पुपद्रमाः क्रोम् । ∼सर्प-पुक्रमा स्थ की मति निषयर होता है। -सार-प्र॰ हाना दिए-वीत भंदन । -स्य-पु॰ १८ प्रवान ऋषीहेने हरू ग्रह । −सर्वै~प प्रहरकारण सर्व । **~सर**~र हरिमाद्यी मीठ हेनेवाला टीम । -रहंद-५० हरत ष्य । –हर-प्र• क्षित्र । काकक-निश्मि] काला। प्रश्रीतकता कामा स्ट प्रामीका साँगः भाषाका काका मानः एक भन्न गर्हेद यक केता अञ्चल शहर (स॰) (कास्त्रवात-पुरु मेहराव वनानैके किए रहा क्या क्य सराच (कालस-त [नं०] भएनार वारिके प्रका यसे नेमाय रिक श्वानसं किया गया संह । कास्तर-त [प्रें+] क्यहंकी स्कारी वा देशी पर्रे में कीर-क्रमीय काहिमें समाध्य वा भनगमें गेनेने सरी बाती है। क्रचेड करने बोधनेका चमह वा पाउक गुप्त ब्लाट रेक् — ते भर क्यों म मोवर्ड क्यों कलरहा मेड -शर्खाः (काखकोय – पु॰ [ॳ॰] छलः, सद्रा । काससिर-४ वहाजके यस्तुनका हिरा ! काम्बीग-वि॰ [सं] कार्त प्रशासका (यह बारि)। कारुमिन-प्र (०) एक तरहका तरमा। काल जानी-को [म•] एक होती नाही वा स्वर्त का स्राती है। कासोबज-त [तं] बीकिय। काकांतर-५ [म] इसरा समय, भाव वान ।-विरेन प्र वस नेतु मिसके काटनका यहर क्षण भएन्द्रे दर चंद्रका दे (चंद्रा पामक ऋचा आहि)। कालांतरित प्रथ-पुरु [६०] वह मारू भी नहुन सन पक्षण्यानमाधी। काका-वि॰ कोवरके रंग्या, स्माहः क्रावर्गः कटीत मारी, वतुन वका । [स्री 'ब्रासी') स बाला सींघवले रंगका भारमा । -क्यू - पु एक ठाएका पान । वस्त्र वि नद्रत काला ।--बोर-- प्रारी पाराकारे निवह रेप वम ।--जीरा-पु॰ स्याह संग्ठा योश ।-तिस-पु॰ को श्यास तिक । (सुक -- क्यासा- १८व होमा १)-श्रमीन थु यक लग्रा निसंदे भीत दनाने बन्म भाव ६१ - देव-पु इंदरसमारी कामी याँचत एक देन (शनक): बन्न भीर दरावमी स्रवदा आदमा । -धारुग-६ प्र प्रकारका बतुरा १ -- मसक-प्र-प्र- सादर समझ १ -- मास पु कल्या सीमा भरि दृष्ट अंदिन जन (सा) र न्यस्य -त दुख्यान बोहित्य बार्य 1-पाम-पु सामापे (5 देश) इंस । - पानी-इ अंद्रमानका राष्ट्र वर्दा पहल भारतन बैतका वंड वानेगां ३ अवस्थां गढ बाव ४° मार्कस्म < का ग्रम ६—काल-इ क्लम । -सुर्वत-शिक्षके काला । -मोहरा-त सहित्यामा साथित हर् दिलारी प्रश्न विश्वमी बानी है। -(भेदी भोदी से एवं

के बरने या न करनेकी प्रतिषा करना ।-सानेकी-नाम-मामधे।

कसमस-५ , ली इसमसाहर !

कसमसामा = भ = कि भौवके कारण वापसमें रमक खाते द्वप हिळना कुरुनुसामाः कमकर हिस्सा होसनाः धन-बाना वेजैम होना) विषक्ता ।

कसमसाहर-म्यो॰ हुऋतुष्ठाहरः वेथैनी, ववहाहर I कसमा कसमी -सी॰ दोनी फॉका क्सम कामा ।

कम्मिया कम्मीया-म॰ स्प्रम सन्दर सपय-पूर्वक । क्सर-न्यो [स॰] क्मी म्यूनताः याटाः वैरः हरकः विक र ! मु = - करमा - रफ़ना - (किसी वातके करनेमें) कमी रप्रमा, सौराषी करना १-साम न्यारा धवना ।-विक क्षमा-धतिपति दोनाः वरका मिकमा । −िमकासमा-

बैर परमा बन्ता रेमा: यान या बना पूरी करना । कसरत-ती॰ (भ॰) छरीरको पुर बक्तवान् बमानेबाकी

क्रियाण, स्वाधाम विशा बहुकता आविषय । -राय-म्बी बहुमन ।

कसरती—दि कमस्त वरनेवाटा वसरतसे बनावा हमा (क्टून) ।

कम्परदा-पु सामपाम मामक ध्रुप ।

कसरवामी - पु॰ पविषोधः एक वपनाति । कमरश्रद्र।-प क्षेत्रीकी हाट वह बाबार वही बरतन वर्ने

बीर विदें ! कमसी-मी होसकाव्या

कसयामा~स॰ कि कप्तमका काम कराना ।

क्रमाई-पु [म] मास विज्ञता गोमांस वेचनेवाला मूचर्याति परदम, नेर्न्दी-ल्यामा−धुवद साम बही मस्य सिप पशुश्रीका वय किया कार्य। जु॰-का पिक्या~मेटा तामा भादमी । - के साहे भेंसमा-सितव

म्यक्ति राज परना। बंदर्शने म्याहा जाना । बसाउसी-सी॰ तमानमा बेर-विराध ।

कसाना≃भ कि ६ ठा स्वाद दी बाला। पालुका कुलाव वदर भानसे दियहना । ॥ जि. वस्त्राना ('कसना का F (f

कमाफल-मी [ब] महाफ्तः मीराई स्पृष्टताः शेरवी। क्सार-इ मृते हुए बाटे या बीरेटेका थी नक्छ मेवा आदि मिलाबर बनावा हुमा मधीदा वा कराहुः वीमें जुला हुमा भाग जिसमें भोनी पत्री हो।

मसास्त्र-स्रो [अ] सरतो ग्रिनिसता।

कमास्त-पु बर्किम क्षकर समा कहा वह राहाई जिसुने धोनार गद्दाना साफ बस्त है।

कसाय-पु दमनायमः वसमेका मानः समावः + कुमारै । कसावर-भी तनान, दिखान ।

क्सावका-प क्यारे।

बमाबर-पुण्ड देशनी बाबा।

कमिषु-चु[मं] भीवनः भागः।

कसिया-इ देवरिया - न्या ग्वः वसवा की बुक्के बदा-निवाच्या स्थान है हारीनगर । रे की एक व्हिका। कसियामा! – भ कि वस्तवसुक्त को जाना।

कमी-मी॰ प्रमीपरी एक नाप की की करमंद्र करावर हीती है

हा एक गौथा जिसके फलको पिरोको आसाम कादिको बंगली बातियाँ रोती प्रकार साती है राजका हरूका

कसीटमा*-स फि॰ ग्रसनाः रोकना ।

कसीदा−प्र• दे० 'दशीदा' ।

क्सीवा-पु॰ [ब॰] चर्-कारशेका वह पप बिसमें किसी की मलेखा ना (कवित) निदा की गयी हो। -गो-विश कसीता किसानेबाका ।

कसीर-वि• [ध] बहुत अविक स्वादा ।

कसीस-प पक की∉बन्व पदार्थ ! + न्हीं निर्ण्यताः कोशिया ।

कर्सें भीक-वित् ऋसमा रंगका। इस रंगमें रंगा हुका । कस्मर−पु॰ दे॰ 'कुसुम ।

क्रसर-त देश फसर'।

कसोई-ली॰ दे 'कसी'।

करोरा-पु एक विंदु जाति जी गाँछे मारिके बरतन बताले-वेचनका चवा करती है । ल्या 'बसेरम', 'बमेरिन ।]

क्सेए-पु [पं॰] एक तरहको भारत है। कार । क्सोरका-सा [शं] दे कीरका।

कसेरू-प एक मकारक मोधेकी बढ़ भी छोलकर साबी जानी है।

कर्मया - पु॰ चमने या जरको वाभाः पराप्तेवासा ।

कमका-वि विश्वमें दसाव वा वर्षकापन हो। क्रमंसी - ला॰ लपमा ।

कसीरा-त निर्देशिया नहां प्यांच्या भी विवास होता है। कर्सीका कर्सीदा−पुदास कैमा एक पीवा का छाजन

आदिक काम आजा दें। अध्यक्षकी जातिया एक प्रशा कसीटी−न्दी एक काला धकर विसदर सोना विसदर

परगा भाता है। परगा जॉब (सा) । करते≯−पुदेदस्य।

कस्तरी-मी दूप औरनका एक तरहवा मिहोदा पाछ। क्षसीर-प [ध] रीन । करतर-त करनरी-चन करनरी-जैसा एक परार्थ की

बीबर नामक बंतुकी मामिन मिस्त्रना है। करतूरा-पु॰ करपूरीवास। दिरम; सोमडी अमा यह जेतु ।

कस्तरिका~न्दी [म] करन्रो।

करत्रिया-वि करन्याताः वरन्रीशं विलय्तं बना-कृत्य रीक्षं रंगसा । यु कानूरी-कृप ।

करन्री-भी । [मं] एक सुर्गीन पणार्थ यो एक नरहरे मर दिरमधी मामिके पामधी गाँउमें पेटा दोना और इसाडे दाम भारत है। -मस्सिका -बस्सिका-मी एक स्था विसर्व बीक्ष्मे करमूरीओ गाँव निकटती है जनावरमूरिका शुक्ताना । -शूग-पु वह दिस्त विमुद्दी नामिक्रे

प'सबी गाँठ(नाणा)नें कानूरी पैदा होती है। क्रस्ट−प्र [भ] इराद्याः र्ववस्यः प्रवटा । करदेव-भ [स] बानबूटसर सारा कर्य ।

करन-भी कड़ मागा प्रशास्त्र कण मित्र (ग) शेरकी

इरवतः। –आगारिया-५ दर्गमन्द्र भिन्नः।

सास्य −कासी कास्य~वि छि]कप्पसंधी । यु कपुर । कादमीयैं~पु[र्स•] केंसरा कास्पतिक-वि॰ शि॰ करपनामें स्थित करियत पत्रीं। कास्य~पु॰ (सं॰) भय । ~ए~पु॰ मोस्र हे अस्मे (कास्य -वि॰ [सं॰] सामविका सुमा अनुकृत । पु० तथका काञ्चप~वि० [से] कदवप-संबंधीः करवर योजसा। र সার ভার । करवर मौत्रमें अपन्न क्या कविश क्यान मुनि। रे॰ सार्स में ।~मंत्रन्-पु॰ गर्का अस्या समुरा मीना । कास्या-स्त्री॰ सिंधी नर्माधानके घोरन स्त्री वर गाय है कास्ट्र, कास्ट्रिक−म० वे 'क्ल'। काश्यपि~पु [र्श•] गस्का शहन । मावा-प फा] पोडेको कुत्त वा वाबरेमें चक्रर हैना। **काश्य**पी~सी० (सं०) घरती । पदर । -वाज-वि चक्र क्यानेवालाः हापामार । कारमधेय-प सिंगी सर्वे: भादिस्वयंगः सहर । --बाज़ी-भी० दाना कारमा। दश्यमपर जन वहाँ मौदा काप~प्र [एं॰] वह वस्तु जिसपर कोर्र भीत्र पिक्षे,रर्ग जानः क्ष्मीयाः साधः एक ऋषि । मिले, छापा मारते रहना । ग्र॰-काटमा-वक्स मारमाः कगानाः किही विधेष रिवर्तिसे वचनैके किए चक्कर सगामा। कायाय-नि॰ [सं॰] इष, बदेडे बादिते ग्रेंग दुबार समा। काधार~प॰ [र्स•] मेदार १ प्रशासिक प्रसा काधारी-चौ [र्च+] दिना टटेब्री इतरी । काय-प सिंगी बाठ, स्वती। र्यवनः ग्रेसी संबर्त वास्ते। काग्रक-प्र• (सं] मुगीः कालाह । व्य औत्रार !-कत्रकी-पु कृत्रनेशा!-कीर-पु॰ दुर! काबेर-पु [सं] देशर। -कुरु,-कूट-पु• क्ल्प्रोस्मा । −वेतु-पु **कावेरी-त्ये [मं] वक्षिण भारतको एक प्रधान गर्याः** मीतर मिलनेशका एक सत जैसा बोशा नक्क त्रस्क-पुरु वहाँ। -ह-द्र वहाश (-पुत्रविका-बेह्याः इस्ती । ली च्यापुरकी । --प्रदान-इ विवा स्वाना काच्य-प• [सं] वह रचना जो रसारनक हो। क्विताः। भुजापार्थ । -चीर-तु वृत्तरेके कामको अपना क्यकर -भारिक-त कदश बीलेवालाः एकत्वारा ! -मग्री-प्रशिक करनेवाका ! - सिंग-पु व्यक्त वर्शनेकार ! त्वी॰ पिठा। नमस्-त भरवी। नर्जनी-से॰ वास्त्रस्यो । -श्रत्यक-प्र प्रत । -वाट-प्र रशांधी --हास्य-पु प्रइसन (मा•) । काम्बा-सी [म] समझ इतिर पूरुवा। शीवार ! -संबात-प्र सदक्षिका देश (भीर) ! काच्याधायिति-ली [सं] एक कर्यानंकार । काष्ट्रक-प (से॰) भगह। काश-प [सं॰] भीसा ग्रीसमा पूका खोसी। वक सुनि। काझा-स्ता [सं] दिखाः सीमाः भरम अंतिम सीमा करूना १ वॉ सागा पुरशेष्ट्रम मेरान वा गार्ग वया कांति। श्र4 [फा] रच्छा आदिका सूचन करनेके किए इमका प्रबोग होता है बैहमर बरता ! रिवतिः बश्यक्षी वस्त्र प्रामी जो शक्षकी बन्दा मी । क्राशि - प्र [मं] मुट्टी; स्वें; क्यांति । सी॰ दे॰ क्राशी । काञ्चगार−ए+ (सं ो क्रम्डीका नगा पर I म्हाज्ञ−५ काशीका राजाः निवीकास~धम्बनिर । काविक-प्र (तं+) बदतवारा । काष्ट्रिका-मी॰ (तं॰) स्वतंत्रा प्रोटा इवना पेरा। कादिका-सी मि । काकीप्रीः पानिनीय व्याकरपपर क्रियो एक वृधि । काशीसा-ची मिंगे देता। कार्या - स्वी० [सं] कत्तर भारतको एक असिक्र अगरी वो काम – पु ॰ [रो] खाँछो। छोँदा सहित्रनहा देश ^{हत्र करा}। सप्त आसादा परिवेमिने एक है बाराजसी । -करबट-पु -बंद-पु क्लेल । -ब्रेंट-विश् विधे बॉसी प्री हो। [हिं] ब्राहीके संतर्गत एक तीर्वरकाम वहाँ दुराने समक्त्री प्रथम । ⇔श्य−वि संधादर करनेवाका । नगर्ने भोग सम्रक्षि भागामे बारेके मोपे नरकर जान केंग्र वे। प्र क्षीशाः कासनी-सी [द्य] व्यः पीधाः उस्तः वीभ की रहा है -श्रंड-५ कार्याका मत्हारम्य वक्षानेवाचा एक मस्बिक ग्रंथ।-माथ-प्रश्रहा - फाय-प् इम्परा । सु०-बाम जाते है। बासमीके कुमकामा इकता मोना (व) करबर सेना- बाधीयरवर्ग आरेके गाँवे कश्वर जान कासर-प्र [स•] भक्ता। कामा-९ [का] जाका कीरा। साना (सान) वर्षरी 2मा । का भिकाराच कवरीन ।-(सव) गर्गा-प्र शेव कारत-सी॰ [दा] धर्माः जीयः दिमोधी जीनको नमीम । ऑगरेका जाका सजर । -(सा)मा -1° गेरी -- मार-पुरु महिद्दर, सेनी करनेवामा । -- कारी-न्तीरु रीती दिमानी, कृषिकर्म; वह बगीम विश्वपर निसीकी --सेम-वि व्यासा चाउनेवाका सोगीः गुणवी¹ रियो करनेका अधिकार हो। कासार-५ मि॰] वानाश वाना शीन । काइसरी - ली॰ [सं] गंभारी मामक कुछ। श्चासारि~प भि•ो है *सा*मपर्र । कारमीर-वि [सं] कामीरका कामीरमें परस्ता बामीर कायास-न [गं०] रह तरहा भार । में बानेरामा । प्र कम्मेर देशा अग्ररा प्रकारका कासिका-भी [मं]सोंग्री ! क्रामिन्-पु [स] प्रशाहका इत से गा न प्रामेशाना —ञ−५० बेसर 1 बादमीरक, कादमीरिक-वि [र्न•] बद्यीरवे उत्ता । नि॰ क्रम्य, श्राचा वरमेनाला । कासिर-शि (w] जुमूर क्मी, वीवादी वरनेरणा। कारमीरा-पु॰ यह कती करना i कामी(मिन)-दि [मं] रूप रीतराण मं

चीर्वत ।

कारमीरी-वि करमोरका । पुरु क्यमीर-विवासीः रंपरका

47 1

कौशित−वि [सं] पादा द्वमा । कांसी-सी (रं॰) एक तरहरी सुगंबित मिट्टी। कांक्री(क्षिम)-वि० [सं] बादनेवासा । क्रोंट्रोर-पु [सं•] क्राप्टेकी बातिका एक पड़ी । । काँल-ली॰ बाहुमूलके मीचेका गढा, वगछ । -कॉलना-अ॰ कि मरुखागर्ने और कगामे या भारी बोज क्षत्रानं आदिसे गुनेसे ध्रीसनेद्रीसी बावाब निवलना । काँकासोती-न्धाः दुपट्टा टाकनका एक बंग विसमें वह वार्वे ब्रीभेद्रे कपर और दाविनी वगक्के नीचेन्त्र अनेक्क्यो तरह निकाका जाता है। फर्रेंगदा—पुण्कपक्षी पंत्रास्काण्यः किला। काँगकीं - सो॰ करगीरियोंकी शतमें स्टकानेकी एक #मीको । काँगनी−को ईंगनी। कॉगक्-प दे 'दंगाक'। क्यादीक-स्ते देक संगी ! काँगरा॰-५० है॰ 'दंगरा । क्षां⊈स∽स्था (वं ो सम्मेक्तः धंपटन वासमुदाय-विधेवके प्रतिनिधियोंकी वार्षिक बैठका मारतको राष्ट्रीय महासमा इंडियन नेशनक कांग्रेस: संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी पार्कनेंट वा राष्ट्रधमा । - जन-प्र [दि] क्षांग्रसका अनुवादी या स्टरम । −भैन −५० कांग्रेसकन । कोऽसी-वि कांग्रेससे संबद्ध । प्रश्न क्रोप्रेसका अनुवायी । क्रॉच-प धोधा। सी ग्रदाका भीतरका भागः काछ। स −रोक्टमा−प्रमंग शरना । −निवस्त्रग−रक रोग जिसमें मसत्यागके समय काँच बाहर निकल आही है। श्रमाति सहतेमें असमर्थ होता । कांचम-प [मं] होता। दोति। समनः नम पन्ताः नेपाः पमबेछर । वि स्रोतेका क्याः समहरा । -कंपर-प हीनेक्ट सान । -शिरि-पु शुमक ।-चैगा-पु [कि] हिमाकपश्ची एक भोडी ! ~पुरुष-पु॰ छोनेक क्लरपर बनायी द्वर्ष पुरुषकी मृति जो एकाइछात्र कर्ममें महा आदलकी दाल की बाती है। -अभ-वि क्षोलंड समान चमक्तवाका । पुरु तेल बंदामें बरएक एक शाला । नर्शांका न्सी बरावरीकं वर्नेपर €ी दर्द शंथि। व्यक्तिक-प्र•ित्री प्रशासः सकार्यया । वीचनारं~प्र सि] कवनार । **कांचनी~न्गै० (सं०) इल्द्राः गोरीयन** । काँचरी काँचली-भी दे 'कें जुड़ी'। कॉपा॰-वि॰ राधाः अश्विर । कांकि कोकी-स्पे [नं] करकमी। मसमाः दक्षिण मारतका एक प्रसिद्ध नगर भी गुप्त पुरियोर्नेसे है, कांब्रि बरम् । - बस्प-पु सन्ता । - गुणस्थान - पन्-पु कमरा-प्रश-न्त्री कोदी। क्षिक-पुढि] क्षेत्रा कॉमुरी, कॉमुलार-गीर हेर या बन्धा वर्षि - वि वर्ष करें व विकलनेका रीय हो। रेपुरू वें जुला काँडो---द्र दे काए।

काँग्रना~स कि काण्याः नवारमा। प्रत्यका ।

कीगा = न्यो दे दोशा ।

कांजिवरम् कांजिवारम्-५ कांची नगरी । कांशी-लो । वि मेर्ड राईक पीछ सिरके मारिने जीरा, मनम् आदि शक्फर पनावा जानेवाला एक सद्दा पेव जो रवारिष्ट और पालक दोता दें। देशी या फरे हुए दूनका पानी 1 काँडी-मा॰ वे कांगा। कांडी हारुस-५० 🗐 🛮 बादन हाउस 🛚 मवेशीसानाः गद बाहा जिसमें वृत्तरेका रोत आदि ग्रानेबाके वा कावारिय चीपायं चंद्र किये जात और कुछ बंट ऐक्टर छोड़ या मीकाम किये बाते हैं। किश्री (तामिक)-काबारिस पद्म-हाउस (अं०)-पर] । करिक-पुरु हेरु किया । काँटा-प वेद-वीबीका ट्यानियोमें निक्नी हुई सुई असी पैनी मोसवानी भीता संदर: ठोडेको छंगे पहली कीछ: मारुपी परक्षानेही देशिया; बैकुसीका समूद विसमें कुएँमें विरे <u>दथ कक्ष्य, पालयी आदि निकास्त्री है</u> मछन्द्रकी वारीक इंद्रियों की साले हुए गड़ेमें भुमती ई॰ लीई पीतल मादिके तराजुकी टॉडीमें भोकी बीच लगी सूर्य। सीना वाँदी सीकनेका काँटेशर सरामा भागेकी सुद्री नह भाषा विससे विखान मुखा दठाव है। बह किया विससे हिशास्ट सही-गण्ड हीनेदी बॉब की जाय (ग); एक बाला विमुधे वरीधेय स्ताना बठास्टर साते हैं रहन आहे रोपनेकी वेंडुमी। शाह सँगनका हुक, नारुध कोल। म॰ -विश्वसा-नमका करेए, कराक मिरला। न्द्रोना-एघकर करा दो वामाः स्टारर अस्टामर रह वाना ।–(१)की श्रीक−विरुद्धण टीक, म कम न अधिक। -पहना-गने या श्रीवदा व्यासरे गुराना । (राहर्से)--विद्याना-धावार⁶ एकी करना रोडे काकाना ।--बोका -पुरारं करनाः मानी धनिष्टना कारण काना । -(श्री) पर सोटना-देनैन दाना उत्तपना ईप्यामे बक्तना। −में घसीटना −(भनुषित प्रशंखा हारा) छब्दिन हरना । काँटी-स्री छोटा काँदा दिन्या वर्णेश वृषदा । स०--स**स्त्रमा**-सद्देखा रह क्षेत्र लंगर सरामा । काँटा॰-प गड़ा। दिमारा। पार्च ठाउँदे गन्धी संन्ता-कार रेघा । कांड−५ [लं•] क्या विमागा रेप-मरकुत आदिको पेर पहका तमा क्युन्तंप प्रथमा विमाग परिच्छेत। ग्रन्छाः समुद्दा बोहा होता. बाया सम्बोता होता नासा बाह-पॅबिकी रूंबी बड़ी। मधी। अतमूर' निभन रशानः सुद्धामण जरा पद माप घटना (इत्याद्धीर) । वि॰ कृष्तिन माराव (देशक समाम्रांत्रमें) । —कटुक -पु क्रासाः —कार-पु बान बनानेवारा। सुपारीका पर । -शासर-प कोरका वाण जाराव। -तिक-पु (५रावटा।-ग्रय-पु तीन कांटीका समूद-कर्म बरामना और इन्त । -बार-५ क्यार (१) । -पर:-परक्र-५ क्राजा। -पात-पु तीरबी मारा वह हुरी नह नह तीर शा सदे। -प्रष्ट-त विद समार्थः सर्वास एक शांच वर्गाशिकाः मीथ स्दक्ति बदनी बाति बुद्धस्य

क[बिक−पु[रं]कॉथी।

कांक्रिका-मो॰ सि॰ो जीवंती कताः प्रकाशी रताः माँबी !

कित#~भ० दशॅं, दिस नगर् ।

कितो#-वि स० कित्रगा। किश्व-छो॰ दे॰ 'केहि'।

कियारा-पु॰ दें देवारा'।

किथर-भ॰ किस और, वहाँ । गु॰ -से चाँच निकस्ता? - कियर मूळ पढ़े ? (किसी मिश्रमे करसेके बाद अचानक मा बानेपर धडते हैं।)

किथीं – म॰ या, समदाः वा तो ।

किन−सर्व• 'किस'काण्डा । बा० नयों जा ≉ पु• दिक्का मद्राः गीगकः ।

किनका~पुरुषा दुरा दुशा दाशा।

किमकानी - स्रो हाडी फुहार।

किनहा-वि जिसमें की वे पह गवे ही (फल)। किमार-५० मि] पेश्की मीतरी छाछ ।

किनार-पु (फा] किनारा ।-वार-वि जिसमें फिनारा हो। -पेश-प दरीक वालेके दोनी ओर छनी वर्ष श्रीरियों ।

किनारा-पु कि] तट, तीरा दादिवार गीटा छीए। गम्ल, पहस्ता-क्ष्मी-स्त्री॰ किनारा धौधना किनारे रहना ! मु * -करना, स्वीवना-जक्य होना हर होना। −कल क्रीमा−शतन वक भोर की बाला।

किमारी-की पडका गाँवा को पुपड़ी आपके किमार क्या होता या क्याया भागा है ।-बाक्स-प्र+ क्रिलारीक्ट गोरा रूपानेबासा ।

किनार-भ किनारंपरः अनग । अ़॰ -छगना-धार पर्देषानाः काम समाप्त शोना । ~शोना-दूर हरनाः सुद्दी पाना ।

किनिका किनुका !-- प्र किनका ।

किन्नर-प्र [म] रेवगाओंको एक बोनि जिनवा मुँह योज्ये असा शीमा माना काछ। दी क्रियरण !

किश्वरी~सी (सं) किश्वर न्यीः यक तरवका तंतूरा किंगरी ।

किन्नायत-त्या [म] काची पुरा होना। कमधनी। बचता बीडा मुख्य १ − हिस्सार−वि० क्रियायससे काम करनेवाला। ऑहे रार्पर्वे काल धकानेवाका । --का~सम दामका सरता।

किकामती-वि किकारत करनेवाला ।

क्रिक्टा−९ [म] काका वह एवान निस्की और हैंह करके मुसलमान समात्र पात की पूज्य पुरुषा बाष-दावा भारिका सेरोबन ।-प्रभासमा-प्रवासमान्य ।-बाह्-पु बाप पिना।-सुमा-पु यह यंत्र किमकी गर्र महा परितमधी भार रहती है। -स-वि जा दिवलाबी और मेंद्र शिम दी। किसरिक किसरिय-४ एक निकास सपेद कपना ।

किमाछ-मा । केवांच । क्सिम-पु॰ दे॰ इन्हाम ।

क्रिमार-५॰ [थ] धर्न रुगचर धेला जानेवाला वील नुगा। -प्रामा-५ सुरध **=**द्वा! -श्वान-रि लगररा । ∽वाली∽सो० जुरका रीस । क्रियाता-९० (स] दन, नर्जे ।

किमिश-अ मेरे।

किम्∽धर्व[सं•] श्रीम नया। भ• नयो है∂, ∉ઇ}ट समासादिमें वह 'क्र'का चीनक होता है (छिन्छ-कुमित्र) ≀

किम्मतः = ची श्रीतकः बहारता २ 'प्रामत'। कियत्-विश् [मंग] किनना ।

कियारी-सी दे 'बपारी'। कियाह्-पु॰ [सं॰] कास रंगदा बोध।

किर्रटा~प॰ ग्रमा किलाम ।

किर--पु॰ [र्स•] स्कर । किरक-प्र• [मै•] हेसकः दुभरका श्वा !

किरका-पु० बंधर अग्री उसमा ।

विद्यविद्यी-शां है • 'दिरदिरो' ।

किरकिरा-वि वॅश्वरीका । तु क्षोदारींचा एवं भीरतः। मु -(भजा) श्रीना-कानंदमें निप्न पाना। किरकिरामा-भ+ कि॰ राँउ या माधुमें दिरस्थि पर्नेन

गश्मा, यह दीना । किरकिराइट-मी दिरदिशे बहनेदा अनुमन वा देश

दंबरील।का 1 किरकिरी-स्था रण वासिता दर्श भीमक देता क्य

धोटी इंडडी; अपमान हेडी ! किरकिस-पु॰ गिरमिट । ७ औं वह चंदेरस ना<u>त्र</u> नि^{त्र}

धांक वासी है। किरफिसा—पु≹+ क्रिकट्रिमा I

किरच-मी॰ है 'सिरिय'। नुबोठा रवा।

किरची-को रेखम वा गुहुको सम्भादक सरसाठक पम रेक्स । किन्य-म्हा (लं) क्योतिने प्रशाहरूको निरक्ते व

रशा बंधु रहिमा वृद्धिकत्तः। —केत् -पति -पानि--माश्री(विष्)-५ रहां।

किरणा-ली॰ (मं॰) बार्धानांडास म्ब मरी।

किरतम = पु माविक प्रवेष - पूरम प्रस दशा प्रदे किरतम किन घरराजा ⊷नोजद ।

किरमानती है 'बिरग ; बतारचधी पती पुरे पर तरी

की शतर । शु॰-फुरना-एवरिय दोना । किरपा=-मी है 'कूसा' !

किरपाम!- पु दे॰ इपाम' (

किरम-3 है किमें !

क्रियाई-मी एक दर्दको काय। किरमालक-कु सकतार ।

किरमाना-पु श्रमननास ।

किरमिच-पु रुड तरहार चित्रमा सीम दशा निर्दे पर्दे जन मादि ध्यन है। विक्रमित्र-पु एक भरतका साथ रम ब्रिस्ट-अर

न्युर्गेः किएमिमी रंगसा योशः र

विरमिश्री-वि दिर्धिय का दिरमानी रेप्टा किरयाल-पु (बरावना ।

किरशमा~म कि शंत पंचमा क्रिसिश मार¹

किर्याम किर्यार्थ-पुरु प्रचार नक्कार !

कॉमेका वरवन ।--मस-पु॰ वॉवेन्येवस काविका मोर्जा। कॉम्यक-पु॰ सि॰] पीठक ।

क्य-प्र• संबंध कारकवी निमक्ति । # सर्थं क्या; निमक्तिः पत्रते 'क्सिके व्यक्ते प्रयुक्त क्य-वैसे 'कासी' क्यादि ।

काइयाँ-वि॰ वृत्ती चातास ।

काहूं-सी पाती या सीक्से रहतेवाले एत्वर काहियर समनेवाको वारीक, रेहे बैसी बासा वेचे पानीके क्यर कामेवाको गोल परिजीकी एक पासा किहती तरह बमा हुमा मेंका तीवे पीतक बाहियर कमनेवाका मोरचा। शुक - सुवामा-समा हुका मैल हुवाना। -सा फरवा-क्रिकर काल।

कार्य - अ॰ बभी । सर्वे॰ कुछा सेर्मे ।

काथ-ए सि । श्रीमा एक प्रकारका तिरुक्त हेंगड़ा भारती। एक बीपा सक मापः कीणको तरह सिप्टें सिर तदावर स्तान करता: शदि पृष्टः नीच व्यक्ति (का)। -क्षंग-प देंगनी काकन । -क्का-मी काकांपाः यह वाछ । -राविक-प॰ धीपकी गरेसकी प्रतको (काप की कोकों में एक हो देवा का रोक्स होना माना काता है जिमे वह बावस्यकतामसार दीमों भीर प्रभा रेखा है)। -- विश्वा-सी॰ ईवशे वा प्रस्थो !- चरा-सी की९श्वे तरा भीवता रहता। –चाउर-४ कावरका अंतर । -अंधा-सी एक बनीवविः चक्येतीः ग्रंबपी । -अंब-प्र• दास्त्रप्रका, व्याधानेत् । -कास-प्र सोदरु । -तासीय -वि • वयातक संयोगका होनेवाला ।- व्यवाय-प॰ विसी परमाका केवल संबोगवधा कोला (वैसे कीएके देश्ने हो प्रस्पर तारब ध्वे फरूका च परना) !- तिस्ध-को स्थापनेशा प्रेयको । –५६४ –५० धाला सगर । -तंत्री-सो॰ क्षेमाठीके ! -वंत-प्र कीएक वाँक भीर अमहोमी वाट (का॰) i-- शबेपण-म अमहोनी वस्तर्धे स्रोप, वेकार् क्षोद्यित । - व्यक्त-पुर वादवारित। -प्राप्ता-प्राप्तिका-सी॰ कळवंपा ।-प्रश्न-प॰ क्रम परियोपर करकमेनाके नालांके पहे जास्य । -पन-प बीएके पट्या परिमान वा किसाबा धामविक्रित परिमाय है। छटे दर राष्ट्रके किए पंचित्के मीचे बमाबा जानेवाला चिद्ध (A); एक रहिनंबा दी रेक्स एक दीवा वर्शक्टिय । --पासी-को दीवस । -पीसु-पु कुचला ।-पुच्छ, -प्रप्-प्र• क्षेत्रसः। -पेक्-वि• क्रिएसाः ग्रॅहतक गरा इना । --कस-पुर्मामदाक्त । --प्रहा-स्वा वन षामम् ।-वंद्रमाः-वंद्रमा-श्योः एक वदा अन्तरः केवा वी वानेवाणी स्त्री । -- ब्राज्य-म्याः आद्रः आदिये व्हेयके क्षिप निकास बानेशस अप ।-शाँडी-भी महत्क्रांत । -मीइ-पु उस्सू। -भुद्धंदि-पु व्यत्रायमका वा छापरच कीमा हो नवा था !-शतूनु-पु बास्यूद करो । ~~मारिया -माची -माता-की सदाव ⊢सारी-नो है दशमारी । न्यब-प शहदा वह थांगा विसकी बानमें दाने म ही ।-रब-वि॰ कानरः टरपोदः । - एक - स्ट॰-दि वरपीका जनमुरीका निर्धन । पु परन् । [सी काकरेशी !] - रहा-पु शीएधी कराय बीला । - प्रदा-मी पेरोफे सदार भीनेशाला शवा, ५दा नारि । –दार्थि –दुः श्वरूष्ट्र ।

काकदा-प यक पहारी वस ! -सींगी-स्रो हवासे काम आनेवाका एक अच्या कर्कर शारी । काषण-प० मि । एक शरहका क्षेत्र । काकणी-सी सिंशी पंचवी। काक्यादिया - स्त्री है । 'कारवासी गीं । काकरीय-और सम्बंध । काकरेज-प॰ फा॰ो एक सरहका करा-साथ और काक रंगके शेकरी बना हुआ - रंप । काकरेता-पु॰ कार्यरेन रंगका कपशः काकरेनी रंग । काफरेजी-वि॰ कासरेज रंगसा । पु॰ काकरेज रंग । काकरील-प॰ बेदासा । कारक-प सिंगी बंठपणि बीमाः टेंडमाः वाला कीनाः शीलकाक । काकलक-प सिंशे कठमणि एक तरहका भागः स्वर समिक्ता मिरा। काककि-सी॰ (एं॰) करत्र मश्र भनि। काककी-भी सि नगर अध्यदध्यनि पतको, मीठी माबाधः श्रीरीमें सहायद श्रद भी बार मंगीतमें एक स्थान ण्ड याषः ७९)। १९५३। - हाक्षा-सी विद्यमित्री अंगर । −सिपाल−प॰ एक विकृत स्वर । −श्व−प क्षांबक । **क्षक्रमीक**−५० सि ी मेरः मधर स्वर । कार्याताः कार्याती-स्ता॰ सि े बाधपंत्रा । काकीची - सी विशे काक्प्रेश । काका – प चपा । तो (सं•ोकाक्षपाः काकोकोः प्रेयचीः प्रस्थेय । क्षाकातियोक्षक स्थाद-प• विंो एक श्रम्य या पत्रसे. कीएडी बॉएडे टेडेबी तरह, दी काम मिकाकना । काकातमा-५० एक तरहस्त वजना, वहा तीता विसके सिरपर भोदी क्षाती है। काकादमी-सा॰ (सं) ग्रंजा। सपैद सँगयी । **बाकाय-**त्र (सं०) स्वर्णस्स्ता । काकारि-पृति विवेधस्या काकिणी-सी॰ [पं•] कीशी। परदा चीवारं, गाँच गंड कीशीः मारोका शीशाई ग्रंथका । काकिनी-मी नि दे 'सादिना'! कारिक-प्र= मि विद्यापिः गायनदा स्वयदा प्राम । काकी-सी॰ काढाडी सी। (में०) बीएडी मारा। काक-प [र्स•] मार वा अवंदे भरते व्यक्तिमें भर द्वामा क्रोंकि भनंदारका एक भर दिसमें ध्वनिमर क्रामेका हंग वर्कनेन कर्ष बर्फ बाता है। मदारका ऐगा प्रशास बिसस 'ही का अर्थ शिक्ष रे। + व्यान शिपी मीर करने शासी पश्चि । काकुम्स्य-प्र. [सं] करुसस्ये बस्यमे सरका स्वति:--वशः-रण राम भादि । काक्च−व [म•] वाठः काकम-की॰ एक मेंग्रा कत्र, रंगती। काकुण-मी० (का) कनपास अरहत हुए बास अक्स ।

काकोदर-पु॰ [मं] सांप 🕻

काकोस-पुर (संर) दाना बीमा, रोमबीमा। सुर्व: शुक्रा

कि^{र्र}में रहनवाणी सेनाका प्रयान भावक तुर्गरक्षक। -बारी-द्यी क्रिन्दारका पर या कार्ब । -बॉब-विच किरेके मोतर केटा दुवा। -वर्ती-सी॰ किसी स्वासको महारदीवारी छार्र माविसे मुरक्षित करना। ऐसी वामीरा द्यतरबर्मे बारशाहक क्षिप किया बनाजा । मु॰-फराहु-सर करना ~ किया जीत केमा। अति कठिंग कार्य करमा । -वाँचना-छत्तरंत्रमें शदशहते १ई गिई सुइरोदी शस तरहरराना कि शह गमा सके। किरार∽पु [सं•] फरे हुए दूषका प्रणीमृत वा जमा हुआ

भाग । किस्टाटी(टिन)-५ [सं•] गीस ।

किसाधा-प॰ डामीके गरेमें सपेटी हवें रख्यी जिसपर महा-बत पर रखता है। सोनारीका एक भीआर ।

किसास-प [सं•] एक प्रकारका क्षेत्र सिच्न रोग । वि• किकास रागन पेडित ।

किसासी(सिन्)-वि॰ (से॰) फिनास रोगवाला । किसिय, किसिय, किसियक-प्र• [सं] बटारे।

ছিভিত্ৰ-৭০ না• > *বিদ*্ৰ'। विक्रोमीटर~व [थं] व्रोको यह नाप को कगतन भ/ट मीन हाती है।

क्रिकोस्त†-पु॰ दे 'कल्लाक ।

किस्क-पु स्त्री (पा॰) एक मरकड जिसकी कडम बनावी कारी है।

क्षित्रक्र-छो+ (स] क्षमी तेमी; दुर्णवता ।

किल्ला-इ वर्षा मेदा, भौताः चयो वा जातेके माधानीय, यही मैस । शु -शाइकर बढना-नरू क्षेत्रर बढना। क्रिप्रसामार - अर्थाः व्यक्तीन वरमाः विनिधिनामा । किएक्टी-न्दी । सुंदीर एक परहका सर्गन सिर्धानमीर वक्की सर्दिकाः १ औ । स॰ - व्यटना - चुसामा-पेन प्रमानाः क्रिसेचा मत पेर देनेकी तुच्छि करमा। ओड तीड कगाना । (किमीकी)-हाथमें होना-निमान निमाने का का में दीना। दिनोग समज्ञा काम करा लेनेकी शुद्धि साल्यम

होता । किक्टियप-इ (He) पाश दीना रीम ।

क्रिकॉस-मी है जिलॉब ।

कियाह-इ समरी शीध मादिका बच्छा निमने दरवाना वंद क्रिया क्राना थे, याबार । शुक -नृजा-दरवामा वंद कारता। - वद् हो आमा-मध्ये क्रिया न रहनाः सरका भर काना !

कियारी -- पुदे 'दिशा ।

क्रियारा-प्रजन्म कर वरहका छारा शहरात्राच्या

फिरानताम्<u>र</u>-पु॰ स्थल संस्कृतना दाला । क्रिशमित-स्री (या॰) सुवाया दुश्य शोटा शंगूर विस्तर्मे

बीब सहीं होता। क्रिशमिशी-वि॰ दिशमियामा विश्वविश्ववे रंगदा । प्र

क्या सरकार रंग । -भौगुर-मुक्त अंगुरको क्या जाति निधे मुनास्र दिश्वीमा स्मावे है ।

किमान विभागव-५ [६] कीवन सरपःनर । क्सिर-पुर (संर) १९ से १८ सक्स समामान नपुरा बगा १७गा मिर भाषित गया यो जनाव म हभा दील 🏻 [भी निजीरी'।]

किसोरक-प्र॰ [एं॰] वजा ।

किस्त-ती॰ (फा॰) सेती प्रतिकर्भ; सत्तर्वमें नादशासका विपक्षीके विश्वास्त्रदेवी अध्ये आजा शह (देना, रूपना)। म-शह~ ! ग्रायमध्यः स्थातः •हर-अव-वैती। इस वरा शेन । ~बार~पु+ पश्वारियोंका एक कामन निसमे सेतीका दिवरण रिया रहता है।

किस्ती-न्यों फा॰] लाव कोगो; एकवी सा वातको बनी संगी तहतती। धप्पर, बन्मधल ! -मसा-विश् मानरी THE REAL PROPERTY.

किर्विद्या किर्विक्य - पुरु (संक) मैसरके मानापानका रेपा कस क्षेत्रमें रिवत एफ पर्वत ।

किर्विक्या, किर्विक्या-ची॰ [शं॰] दिव्यत देशमी-शाकि तारीक्की राज्ञभानी। किंकिन वर्गतको एक शुक्ता। -(धा) करि-पु॰ रामायक्का एह क्रांच !

किस-सर्व वि भीन का (रववं उत्तरें वा प्रमुद्धे विदेश्य में विश्वकि सम्मेसे वहनेवाला) इय । किमन्द्री-सा किसानी इतिको।

क्सिमण-इ दे 'बस्प'।

किसबक्ष-भी॰ (का) वह दर्द सामीवाना बेटा विसमें मार भवने भीतार स्वता है।

किसमिस-म्पा॰ दे 'किश्मिम ।

किसमी ७-५० मनपूर ।

विमान किमलय-५ (धं॰) है निहान, हिहानम्'। किमान-पुर शेनिहरः श्रारतधार ।

किमानी-ची॰ दिशासदा क्षम भंदी ।

किसिस-सी० ६० 'किस ।

किमी-सर्वे वि॰ बीर्रे का (स्वय समझ बा बम इ विदेश में विश्वकि सगतेशे वसनवामा) रूप। व्हिस्तर-सर्व वि दे निहा ।

क्रिस्स − सा∘ अस् । अस्य भागा देश वा सराम साह-शबारीक। वर मान भी नियन समयपर विश्व बाद या देव इप्र देन मालगुरा है भावित भेगनिश्व से महानेश मियस समय । - रियमाक्री - मा विस्पदा निवर समय बर बड़ा न बीगा। --(बी-म्पी विश्व गीपना रैन्सी को दिल्लीमें मी दर दर एक्ट्रे महाये मानदा समय शीप देशा । -ब-क्रिक्ट-च (इस्त-दिस्त दरदे (रेमदी) कर्र अंशोर्ने बीरकर । न्यार-म दिन्त दिन्त बरना दिन्तके मनुपार १

निस्म-स्री [श•] प्रसार भरः नरह । किस्सार-सी [म] भेग मागा भाग्य सध्योरा वीम इन्हों, दिवाय है - आजमाई - स्ट्रेंट भाग्यकी परीक्षा है -वर-विश् भाग्वदान् शुप्रनेभीर । **मुश्र्मात्रमा**ना ज्ञान्तरं भरीमः शक्तराता निरंपयं न होत्र हुए मी साम scall −का धर्मा∽भाग्वराम वरं साम्बर्भाः -का कर-वरदिस्मती। जमानक प्रत्ये**र १ −का** क्रिया-या मान्यमे बना हो। नियति । - चमहमा -जागमा-भाष्य गुणमाः वहतीने हित भाना । -पण-हता-रिश्व वरण जाना बुजान हम वा तुना रे दुनार िम सामा ! -पुत्रमा-भाष्यना ६६ परना ।-सर्वा "

मा रेक्टर (पर्तगक्त) टोर कारनाः वाँत भैसाना वाँतसे कोर इस्ता बड़े ररेसी वीह देना, वहा है जाना (गाँव बमीन); (कुछ भेरा) जिकाल छैना, कम ऋर बेना" वडा, मिनदा धरनाः शरीक पीछना (शांग मछासा)। दूर करमा इटानाः रद् करमाः धंडम करमाः विवासाः गुजारमाः सारिज करमाः नवरः मान्ये क्वारी वात्रि बनाना एक रेखा कारम सहक भाविका वसरीक कपरने निकल जानाः एक संस्थाका दसरीसे ऐसा विभावन कि इक बचे नहीं। टेसना टंब मारना। बस, पीड़ा पहुँचाना (मा); प्रदानाः इथियानाः मु कार स्नामा-वाँवींसे यादछ दूरना टॅसना टंक मारमा। -(ने) दीवमा-बद्दत ग्रस्तेन बोक्सा अदि कोप प्रदाश करना । -(2)-ग्रासा-एतेपन किसीकी बाद विकाम भाविके कार्म इ°ग्यद दक्षमाः मनद्ये बद्धेद्ध देनाः :-(टो)सो स्तृत म**र्द**ि-बयानक उत्तव हुए भवादिने कारण रत्तव्य होना । कादर#−वि कट्टर !

काटक-प्रमि] अस्तता। काट-पु [६०] घट्टान पत्थुरः [हि] ककशी श्थनः कारको मनी वेटी। + ६८५वली १--इजाब-५ कक्डीको रही क्दार चीतें। ∽शीम−पु गथल नामक हुछ । —येस−भी इंदावन वैशी एक नेहा। अर् --का उस्तु–वत्र मृख। –का धोदा−वैशाधी। –की हाँदी-भौरोन्धे रट्टी दिसाक दीन । --मारना-कारकी वेश पद्दनानाः चन्द्रने फिरलेपर रोक्ट छनाता । 🗕 में पाँच देना-फाठकी देशे पहनानाः रक्ष्यं वंधनम पहना । ∽डोमा~मंदाहोन होता ।

काददा-पुकारका करीता ।

कारिन-पु [मं•] क्वापत कठोरगाः समूखा फल । कारिज्य-पु [सं] कठिनार्ग कडावनः निष्ट्रत्नाः अपुत्रः

रमधीरहता। – फुल – पुन्न दिल्ला। कारियाचाइ-पु गुजरातका परिश्रमी भाग ।

वाटियाबादी-पु काटियाबाहका निवामी। काटिवाबाबका

योश । वि. कार्डशासका ।

कारी-मी वह बीन जिसमें मीधे बाद होता हा अंदेजी र्धनको जीना महमिका शास्त्रा वता स्वाता देवको गरम । काठ-५ एक दरहका पीवा किस्त्री शेती हिमाकन प्रदेश में होता है।

कादी!-मी अरहरका गूरा टंडल, रहडा !

काइन(-स॰ फि॰ निस्त्रमना बाहर लाला। शरेहमाः (मुर्ग) वेक बूटे बमामा। ऐसा (क्षत्र)। धी-एकमें छीनना । कादा-पुदराभीकी पानीमें कीरकर बनावा तुका वेब

माथा काण-वि [भ॰] सामाः छर किया दुमा । पु कीमा ।

काण्य-पु [सं] दीमा मुन्तीः गर्व तरहका दमा क्या भामक चितिवा।

काणेय फाकर-पु [मं] कानी सीवा देश ह य बासी-सी [में] अगंधी व्यक्तिपारिकी हो। विज-

म्यादी गी। बारय-पु [६] हुस्तरा वेशव ।

काकत्र-पु [सं] संवस्ताहन व्यस्त्रन वायस्य ।

कात—प भेड़ोंके वास काटनेकी कपी। सर्वेके पैरका कॉटा ! काससा—स॰ कि॰ चरसे या तक्कीयर रई वा उनसे वागा निकालनाः सनसे सक्की नगाना ।

कालर-स्ता कोम्लुको क्तरी । नि० [मं] भवीर; उद्विध परेक्षामः नक्षसे बायुक्त, आर्चा विवदाः भीठा मीठ । पु० बबनर्षः एक बड़ी महकी ।

कातर्थे-प सि कातरता, भीवसा ।

काल छ∸पु[सं] एक वरी मछली ! काता-पु क्या दुवा युद्धा गाँस छीठनेकी सर्व कालार

ग्ररी गाँछ। काति—वि [सं] प्रच्छाकरनैवाकाः

कातिक−त॰ कार्रिक मासः एक महारका नदी बातिका

कातिय-पु (ल] किएसेंगला; श्रीवो प्रेसके लिए दापी क्यिनेवाला ।

क्रप्रसिक्छ−पु० [म] कम्स करनेवाका, इत्यारा । वि० भारक ।

कारी-स कैंकी क्री: हरी। कातीय-वि [र्स•] कारवावन-संबंधी । प्र• कारवायनका

दिग्द । कासु−पु[सं]कुर्मो।

कात्रम-प्र [सं•] रोहिए एन ।

कारेय – वि. सि.] कत ऋषि-संत्रीत । प्रण्यासमान । काकायन-५० [तं] कर गोत्रमें बत्तन प्रका पाणिनीय स्कॅपर वार्तिक सिन्धनेवाले वरविषः विभागित्रके बंदाज यब कवि जिन्होंने भीत सूत्र गृहा सूत्र भातिको रचना

की है। पालीका व्याकरण किरानेवाने भाजाये क्यायन । कारवाचनी~मी॰ मिं े दल गोप्रमें उरस्त सी:यादवस्तव की एक पत्नी। कुक या अभेज विषया। पार्वती । 🗝 प्रय 🗕

शत−प्र•काचिक्रीयः। काल्यायभीय-वि मि॰ो ग्राखायन एवितः।

काथ+-पुर करपा- यह बीरा तक चुन ह पान छीपाएँ। काथ – प । स्थे शुक्रदी।

काधरीर-मी गुर्श कारीब

आधिक—प [रो॰] क्यानियाँ करने था नियनेनाला । कार्यक-वि [मै] प्रत्य वा समृद्ये मंदद वा उल्ला

प कार्यका देश या करा वेसा बाधा कन इस । कार्यु**वफ**-पु॰ [सं॰] वाग । ।

कार्यवर--पुर्वातं कर्षको पृक्षोंने बना समा सपा गुपा

न्होंकी मन्दर्भ ।

कार्यवरी~सी [मैं] करंबके पृरुंक्ति शरानः शरानः गप्र मदा क्षीकिताः समाः चामभद्र रचित्र प्रसिद्धः गयराज्यः और उसकी मानिका। सरस्वती। यटदीमें एकत्र बंदाका अस् ।

कार्यविमी-न्योर्व (मं] वारकीयी न्या पंति, मेपमानाः एक राविनी ।

कान्द्र-वि देश वान्द्र'।

क्रादिर-रि [बर] कुन्तरामा ममर्थ शक्तिमाम् ।-(रे) मुतमक-वि मक्शिक्याम् (ररमण्या) ।

श्रादिरी-सी॰ रक तरहरी भागी।

मनीमें सामनकी ओरसे चन्नश्री ठींक बैजा: बॉबमा। मंत्रको प्रमानदीन कर देशा शीपकी मंत्र-प्रभावन दिस्ति श्रीकरीते असमर्थ कर हैमाः बदामें करमा ।

कीला-पुनर्शर्स्टी व्यक्ति ग्रीसा भव्या गृंधा मृद

कासाल-पु (स) देवनाओंका अधृत असा एक पेवा मधु पद्मानमा सीनाः कथिर । वि॰ वंधन दरानेपाता । -स-पुनोसा-धि-पुसमुद्रा-प-पु•राधसा कीसिका-धी॰ [सं॰] पुरेको गुँदी। एक तरहका शामा

मनुष्यके शरीरकी यक अस्य । कीसित-वि [सं] कीका हुमाः वयः गिरातः। कीलिया –प्र पुर हॉकनेवाका परहा।

क्रीसी-न्त्री नुँदीः प्रराः प्रदर्शका एक दाँव ।

कीमा-प [सं•] भंदरः चर्षे चिहिया । वि• भंगा। −केप्त –च्यञ्ज−९ अर्थुन । –चण–५ –चर्ची–स्पी संदासक ।

कीस-पुर्वेकी। वह वैठी या शिक्टी जिल्ले बीनर गर्ने रदवा है। • वंदर।

क्षीमा−९ [फा] धर प्राधेता शर्मा। कुँभर-पुंकुमार छक्का राजकुमार । −विरामन-पु दे 'बुँबरदिलाध'। −विस्नास−तु• यक तरहका विश्वा भाग का भाकता

≝ॅभरि≉−स्तै॰ कुमारी; राजकुमारी ।

क्रॅबरेटा = - पुछारा बाहरू। कुमा-द दे 'हमो'।

र्जे बाहा-दि॰ बिसरा स्याद न हुआ हो, अविवादिन । कुर्मारी-दिनी की कादीम ही कुमारी।सी

कुमारी अधिवादिन। बन्धा । र्षेष्ठमी नमा होता कुर्य ।

電氣一性の事 (日本人))

इंड्रम-पु [सं] बगरा रोक्षे पुरुमा ।

कं भा-पु सागवा पीना गीता विसमें गुनाब भरदर मारते हैं ।

कुंबुमाबि -पु+ [तं] स्त्रभारका एक वषन । कुंपन-पु [सं•] सिकुनना, सिमरना; देश दीवा: अतरी

का ग्य रोग।

कृषि-सी [मं] आठ शुद्रीराण्य वरिमण। कुंखिका-स्वी [संग] हानी श्रेणी मॅगरी बहनी देश

क्षरका महस्या यस तरहाकी महानी। हीना नाना कुंचित-दि [मं] मिनुश हुआ। है। मुश हुआ। मुँप

रान्ने (बान) ३

मुचीर-सी श्रीकी

बुँज-दु (का) कीना गीराम युगाने हे कीनेपर बनावे जानेशा र मुद्देर [तंत्र] साप्त जातिम विदा वा एका दुना रबाना दाभीश वृद्धि वीनानीनया वरशा हुटा ! 🗕 मृतीर-तु तनसूर । -ससी-भा (शि) स्वाकेमे दान दुमा पना तर पहरशालां । -विदाती(दिन्) −3 देशमें सिदार वरनेता⁵ कृष्य !

कुंबर -3 अनुसमें बा नद्रन्याना देवर्गनार देवुद्री। वृद्धिनत्र-विश्व किंशे ने पृत्रता मारे दुर हो।

कुर्मेश्वरू~पु किश्वस्त्रा में|रा कुँजवा-प वरकारी वयनवालाः एक वावि की तरसारी

नेवमेडा र्थम करती है। [ती र्नुबिन ।]-(इ)हा गरन्ध-गेलमाल दिसार यह दिसार में। साफ भीर म्यवस्थित म दी ।

अंजर-पुर मिर) दाशी पीपक एक देशा एक माना रामाक्यमें बरित एक पर्वता छप्पन १,४६६ गर भर। हरत नदानः नारुः जायको संह्याः (हेमरु समार्गातमे) अपने वर्गमें श्रेष्ठ अस या प्राची (कपिर्डेडर) ! -प्रड-पुर हाथी एक"नेशका । --पिप्पशी--शौ गत्ररिपनी ।

कुँजरा-सी॰ (से॰) दक्षिमी; पातरी; पथला : इंजराशीक-पु [मं•] दानिशीक्ष सेमा दरितरहा। क्र जराराति क्रेंजरारि-त [सं] मिदा धरभ ।

पुंचरारीइ-द्र [र] शलपान । कुँजराश्चम-पु [मं॰] बोबरका बेर र

कुजरी-मा (सं] हरिनी। कुज्ञास—तु [मेर] सोबी। व दार्था ।

कुंबा!-इ प्रसा। कुंजिका-की [मं] स्वाह शीरा निकुंशिकाल्या कुंजी।

क्रीजिल्लाम-वि श्रुविशा क्रीजी-सी तानी।

ब्रॉट−ि [तं] मोधरा श्वतुक्ति तुम्मः कमधोर ।

कुटक-पुर्वा मुर्गस्वति। विस्तरी। बुढिल-वि [मं] बुंद वा ओवरा दिया दुना मूर्ता

बिसका अंग नेय हुआ हो। गृहीतः पिरा हुआ । कुँड-पु [रो] पानी रगमेका पुँदा। मरका: छाटा गानाव: दीय। इपमध्ये भग्नि या यसन् पन्ध्ये निष्योगः हुना गाता बरमेर्वित कर्मण्या देशा स्वीता जारण प्रश्न विश्वका वृति कादिन की। दिएसा गर सामा सन्दरः [दि॰] पुराः मोदेश बेपा शामा । -श्वार-तु मार्श्वर मानो

माननेवानाः। स्थानाः राजनवानाः जाराज माद्रापः । —कीम −षु शीच भाग्भो ः –शास्त्र –शास्त्रः–पु॰ स्रौ ो ः कुँब-पु देश ५३ । -पुनी-सुदमी-रूप निराम'या यह जल्द का रशका बीआई समाप्त होन ह दिस अनावा याता है।

कुटक−पु [से] पाचा मध्यक्ष पृत्रशहरा एक पुत्र । कुंबकोय्र-वि [र्ग] मरचे भेगे घेरवाला । पु एक माना

दिवस व्ह गा। चु*डली−सी [र्ग}ण्डपाच+

क्षेंद्ररा-पुर कुथा। रेपूरी ।

कुँक्श-पुर गप्तरी। मेरकादार गोनी दुर्व रेगा विगर्दे भीता होस्ता अवन अहम बर्लया मीजन हमरर ये^{न्}रे

रुत्ये श्यान 🖁 ।

बहित्य-पुरु (मेर) बामने बहननवा बाला वाली) क्या वा श्रृद्धाः रूपः बनावरका वह रहना हि । क्षत्र रे बानाने बहरून हा रस्मी या मॉबरी चेंने। एक एंद ।

क्षेत्रमाद्वार-पि [वी] कु शब्दे क्षावापन गील । क्षण्डीतका-सोक (r) अस्तरकार देशाः कर्रान्यासी

कापाछ-नि [सं] कपाठ-संगंधी। यु कापाधिका यक प्रकारका कोडा एक प्राचीन करतः वावविवया एक सरहकी संग्रे विसमें दोनों पह एक दूसरेका समाव स्थाय स्थीकार करते हैं।

स्मापालिक-पु [सं] जब बाममागी थैन संग्रानक अनु नावी यो मनुष्पर्ध सीवडी किये रहता और उसीमें स्नाता

पीता है। वि॰ कपार-संग्वी । कापासी-सी॰ [सं] दपार्टोकी मालाः पास्रक श्रीरत । कापासी(सिन्)-पु॰ [सं] श्रिव । वि कपार्टोकी माला

पहननेवाला ।

कापिक-वि [सं] वंदरकीसी सन्द्रवसका था वैसा व्यव
हार करनेवाला ।

कापिस-वि [नं॰] इतिङ-संबंधी कविकका वहा हुआ। भूरा । यु सांद्यमक्को माननेवाका। भूरा रंग ।

काविधा-दु [सं•] एक प्रकारका भव।

काविशायन-पुर्नि] सथ एक देवता । काविश्ली-स्था (सं॰) यह स्थान वहीं सराव वच्छी

वनतीथी। काषिशेष∽षु[सं]पिशायः

कारी-ची॰ (बं॰) नक्क, मिक्कियि सुर्वे कागक्की वही। छात्रासानेमें छपनेके हिण दिया जानेवाका स्टेसार । -राहर-पु० प्रथकार वा प्रसासस्यो स्थनाविधेनपर

प्राप्त स्वस्त, उसके छापने वेचने काण्कि अधिकार। कायुरुय-पुर [म] कायर, नीच पुत्तिस पुरव। कायुय-वि [म] वहर संबंधी। पु वंदरीको पुरवी आधि। कायुरित-वि [म] भूसर वर्णका क्योस वर्णका। पु

कार्यात्म हर्षा है कार्य का कायर परणायाप करने कार्य-पुर्व हिं] कार्य कार्यका थोजा पात !-कर-विश् कार्य-पुर्व हिं] कार्य कार्यका थोजा पात !-कर-विश्

करन पासका हुदारिक करन वा वनगर परभागांच करन माता। कर्म-पूज स्पत्ति हिन्द क्योंकि करने या जनगर प्रभाजाय करनेवाका व्यक्तिः करना याच कोकार करना। क्याक-पु क्षि] करनी-कारने वर्षमाक्तका एक क्यार। क्याक-पु क्षि] करनी-कारने वर्षमाक्तका एक क्यार। क्या पत्त पीराणिक पर्यंता क्रमालका एक क्यारा सामाई बीच क्षारीया क्रमेतमान- बज्रकेग्रस । —से क्याकरक-चीचुर्व मुग्नेकस्में

कासम्य-पुरु [मे] सामग्रह ।

क्राफ्रिया-यु (म) तुन्न, अर्थाभुषातः । -वश् -वशे वाफ्रिया विभागः । मुक्-संग करणा-दशम परेशान करणाः -विकासा-एक विकासः ।

काकिर-पु [म] रेप्स्पका अधित्य न माननंत्रस्था अकीवार्य एक द्वरती आति। अकामिनमानकी स्वरूप्यर स्मानवार्थ एक आति। वि सुन्विर नाशिवका युव स्पानी। निर्देश प्यारा मासूक (युक्य-न मानना सम्बार क्रमा)।

काफ्रिरिस्तान-दु॰ (अ) अध्यानिस्तानका यह प्रदेश धर्मगक्ति आदि समग्री है ?

क्राहिसी=स्मी काशिर जातिको भाषा ।

कात्रिका-पु (भ) पातियो एकनं दूसरे देशकी मान से जानरामोश समूर। -साम्मर-पु बादिन्य। नैता

सरदार । काक्री-मी [अं॰] कववा । वि॰ [ब॰] क्रिसायत करने-पूरा पश्चेवाकाः पूरा पर्याप्तः बतुत । पु॰ एक राग । —से कृपादा-व्यावस्वकृतासे अभिकः।

काक्षर—पु [पा॰] कपूर। सु०—होता—उप जानाः अध्यय हो जाना।

काफ़र्री∽विं कपूरका बनाहुकाः कपूरके रंगना! पु+ - कपूरी रगः कपूरीपाल।

क्राथ-पु० [ग्रु] शाक्ष वहा सदत ।

जन्म पुरुषि | निवस्ता । १९ यस तरहकी जमीन । क्राचा—पुरु (कर) श्रीकोर समारतः मकाकी एक श्रीकोर समारत विसकी गोर्ने समारीमधी रखी हुई मानी जाती है। क्राबिज —रि॰ [ल] कम्बा करने रखनेसला मौका;

कण्य करनेवाला। इत्रविश्व-वि [अण] वोष्य, नावका विदान्। -(इ) सारीक्र-वि धरावने वोष्यः -वीष्-विश्वेदाने वोष्य, वर्षनीयः ।-समाध्यत-वि (सुकरमा) विस्के सुननेका

जिषकार हो। कृतविकीयत-सी वोज्यता निहत्ताः

क्रमाचकायत – ता वान्यता ।वहता । काविस – पुण्क (गंबी रूप्ये दरतन रॅंगनेके राम आता के राम रंगों सर्वेशको काल क्रिकेट

ची रस रंपमें पहनेशाली कारू मिट्टी । कासुक्∽मी [का] कब्तुरॉका दरना। कपहेका गरा जिस

पर रोश्यों रखकर तन्स्य कमाने हैं। काञ्चन-पु कफगानिस्तानकी राज्यामी और एक प्रांत।

सी यह नयों बीधरक नरीमें मिडती है। शु॰-में ह्या गये नहीं होते !-अपर्टी हे बीच हुई, पेरितोंने कुनमें गुर्दे थी हो उदले हैं। काबुद्धी-वि काबुक्का काबुकमें उत्तक। यु काबुद्धका

कामुका-भाग कामुक्ता कामुक्ता जलका। यु कामुक्ता रहमेशाला कामाना, बहुत ईच और देहतक कामेशाला वक मरहका कर्मुल्स कर तरहका सरर ! —सहर-पु सक तरहका को दानिका सरर !

क्राय्-पु॰ ति] यस, अभिकार, जीर, निर्यक्षण । कामतो (मृ)-पु (सं॰) पुरा पति या मारिक ।

कोयन । -जिन्-वि॰ कामका भीग सनवाला । पुरु

शिका स्मरा जिनदेव । - उपर-तु आञ्चर-दे अनुमार

इकासरकामर अजः । ∼नस−पु⇒ एकः विपैद्यासीय । -पाक-पु॰ एक नरक, इंडीमें एकाभी हुई चीमा एक तरहका उत्र । -मुख-पु० एक तरहका कोहा । कुर्मी(मिन)-पु [मे॰] बाधी। मगर- कुंगीपक नरका ण्ड मद्रश्रीः एक विरक्षा कीवाः एक तरहका गुग्गुकः।

··(मि) पाडी-स्रो॰ डायफड । -पुर-पु॰ शरितमा पुर । – सर्-पु मरवस् । कुमीक-पु॰ [सं॰] पुद्धान कृष्टा एक तरक्का नपुंसका

कुमीका-स्री [सं•] वक्षकुंगी; कुंशिका रोग !

कुंमीपु**र***—पु इस्तिनापुर ।

कुमार-पु॰ (सं॰) पहियाकः एक छोटा बर्रेशा एक यश्व ।

कुमीरक-पुष्कि शह ।

कुमीरासम-पुर्मि] इहयोगरे अंतर्गत व्यक्त आसन ।

क्रिमीख-पु [सं•] पश्चित्तकः सुंच मारमेवाला ।

कुमोदर-पु[र्स] सहादक्का यक्त रूग । वि∙दे 'कुड

बोरर'। कुमोस्फ्र-द∙ [मं] ०६ तरब्द्धा सम्प्रा

र्फ़ुबर-पु• सङ्काः राजकुमार् ।

क्रबरि: क्रबरी-मा कमारी: राजक्रमा : **डॅबरय-५** छारा **भर**का।

कुँबॉ-इ दे 'कुन्री' :

केंबारा-वि देश कमारा'।

श्रृंदर्भद्व०−पुरुदे 'कुमरुस ।

क्र-मी• [मं•] परती एजी; विभुवदा जापार ।—क्रीकः– प्रभाता – ज−प्र• मंगल ग्रहा बुद्धा सरकातुर । दि• कात । - जम्मा(स्मन्)-तु संगन प्रद । - का-मी॰ बामकी: बास्यायमा दुना । - दिम-५ वद न्योदनमे हैबर दुसर गुपांद यतस्था काल (दे अन्य कुं के छात्र)। -हव-तु मृदेव बाक्षण। -धर -भृत्-पु॰ भाषा

रोषमाना १ -पप -पर्या-पु स्व । -मा-सी॰ दे॰ क्षममें । – रुद्ध⊶तुनुद्धा – वलय – पुदे कमने ।

–सुत्त−दुर्भगत्रबर्धः

क्र-ध [र्म•] दीमना, मीवता दृश्ना अल्पना कुला भादिने सर्व देन। है । (१९रादि छच्चीके प्रदेत शतरा रूप बद , बन और का दी जाना है-बैसे कराबार, क्योंण, बीपा भारते)। -कर्मे(र्मन्),-कृत्य-पु नुस काम पापप्रमे । -कर्मी(मिन्)-दि हुक्में वरनेवाना । -होनक-पु नुरी अपद कुश्रीव । -स्पात-वि वद माम । -त्याति-न्दी । निता, बदमावी । -शति-न्दी हुर्वेति दुर्वद्याः –गद्दनिग्–भौ॰ दस्, दुरागदः । –प्रदू– पु भुरे भर् । - मात-पु [हि] क्यामरी वान् एक छन्। बुद्धांद १ -चेर्म न्यु ताल्धंदमा बुंदूम १-चक-पुर्व दिगोस्ट विषय्मे पसाने । सुबसान बहुवानेकी जान माबिस पर्वत्र । -चर्डा(किन्)-विक साविस, पर थम नरनेवाला । -चर-विश् विनेतालाः बीहर श्वामीने भाग मुमनेशामाः सामिरकः शि कुनशा , 'कुन्धा' है इ. स्वरं रहनेवाना गाता । —चर्चा-श्री॰ दुरापरथ । [हि] दुराबन्ध दुश्ला छोटाई । - चान-श्री -पाको-वि (दि॰) दुरावाही। दृष्ट शोशा १ -विमान,

~षीस॰ ~षीसा∽वि॰ १०'कुनैना'।~सेस,~धेस-विश्व विस्तवे कपा बहुत सैथे वा प्रदेशों। पुश्च सनिज वस । -बोधा-सी॰ सुरिसन घेटा बुरा मीवत बताने-वाली चेटा। -चैमर-सी वेनेती। -चैसा-वर [हिं] मैन क्पहवाका, मिलमा --अंग्र॰-पु॰ रोजा-टीटका। −अव∽पु दुर्वन, नुरा भारमी। −अस्मा-(म्सन्)-वि मीय हुन, जानिम बत्यक्ष । ~प्रम् •--पु॰ अपरका वन्मायो । –हाति-मी॰ मीव पानि। वि शीन वाविवाना। सानिव्युत् । - असी - पुर कुरेला कुसमब । --क्षोग॰-पु॰ हुनोयाः प्रतिहरू अवतुर्। -बोगी=-वि दे॰ कुयोगी । -टेक-सी॰ [fr॰] अनुपित इठ। -श्रेष-मा॰ [विं॰] तुरी पान कता -डॉउ व-डॉब,-टॉब -हाच-दु , सी [(€•] तुरी क्यमः नेमीडा । -डाट-इ [हि] इर विधेदी हराहे करवेवान कामका भावात्रम, कुचक । नहाहरर नहारन प्र [हिं•] द 'कुडोन'। -श्रील-वि• हिं] बेडीन मर् हरूर । न्ह्रीन-इ [हि] पुरा दग वाल । वि• वेदया । - इंगा-वि [हि] क्रियाः वेद्यास् । - इंगी-मि [हि॰] कुक्कगायी । – हय – दि [हि] देवन। बक्रिन बिटडां –सप−पु देश अध्यमें। ⊶सकः –पुश्दुशित अकेल तर्छ दिनंश । – तर्छो (चि.मू.) – दि कुनवं बामे वाना कड्डब्स्ना ! - ब्रांन-दि० तुमर प्रश्नाह ! -वॉय-पु• [दि] कुपान। (दरनामपान) कुदीर । -वाई ०-६० वृपान करनेवाटा । -वाड -दाय॰-५ दे॰ 'कुराँव । --शम-तु [हि] सीय निद्याः −द्वास−५० निदम्मा नेशदः । −दिम−५ बुरिनः विपण्डिः शिकः। −दिष्ट०−म्पी० दे 'बुरकिः। -दृष्टि-मी पूरी शीधै निवाह शप-रहि। अगुम रहि। -देव-पुरु दैत्य। राधम । -त्रश-पुरु दुरा देख १४म यरेन । - नेट-वि कुम्य क्षेत्र । - धान्-श्री निष्ट्रत थाता लोडा । –घाम्य-ए निष्ट्रम मध्य पासी रेसा कमानेरानेदा साग्य । —घी-दि मंदर्गका -नन-द• मगोदा एक होत्। -मनी(सिन्)-(र कुमरा रीय या बुरे मागुनवाना । -मामि-प् वर्गारा थ्ड निर्देश - मास - - १ रहमामी । - मामा(सन्)-वि जिल्ला नाम सुरवे लिनेन असंगलको आह्या की बाव । तु॰ मनि कृतन ध्यतिह । —ईय−पु [रि] दे 'तुपव । -पंची-वि [पि] तुमानी वृमानी । -चड्र-वि [दि] अनदः सुर्शः -चय-द् सपरे क्रमानिका रास्त्राः, कुमानीः के भूपस्य । 🗝 सामी (सिम्)-रि या श्राप्तायामा मुनामी ! -पान-वि॰ अनुसा अरबामध्यका । अ॰ अनुसा, अरबामध्यका बाहार विहार, वदवरहारी । -पाइ-पुर हरी मनाव दुशक्या । −पारी(हिन्) −िव बुक्त पतानी । −पाय= वि+ (निगी वग्नुदा) अन्तिवारी अवास । **-पुत्र**g जानायक देश कपून । -प्रचंच-दु दश न्दीत प्रदेश कार्रेणकामी । -बस्तर-न्यों पुरी काण पुर्गी कुथाशः −बाद्य०∼पुदे तुपनता −वामिरण भी तुरी क्र'रंप देव i -बामी s-स्यो तुरी वार्रिय i -बुद्धि-स्रो दुर्शकालमा३३ दि दिस्सी व्यक्त

कामायनी-स्रो [सं] कामगोत्रमें उत्पन्न स्रो। संतुकी पद्मी सद्भाः प्रसादजीका एक कान्यवंश ।

कासायु(स्)-वि [५०] मनवादी भावतका । प्र॰ गीप गरण ।

कामायुध-पु० [सं०] कामका वाणा पुवर्षेत्रिका साम । कामारिं∽प्र[मे०] क्षित्र ।

कामार्त - वि (मुं) कामानुर, कामसे पीष्टित ।

कामारिका-स्रो [सं] सव। कामावशायिता, कामावसायिसा-स्त्री॰ [सं॰] बोगियी-

की भए सिद्धिवीमेरी एकः सत्त्वसंबद्धाः। कामिक-वि [सं] बिस्तक्षे बच्छा की गयी हो ।

कासित-वि मि शिमिकपित, श्विश्त ।

कामिनी-त्यार [मं] कामरेवका अनुमन करनेवाकी न्यी। कामनाबक्त स्वाः सदरी स्वाः भीत्र स्वीः मदिराः वार इएपी; ग्रामा ∸क्रीचल−पु शुंदरी की और वन ।

-कोत-प्राण्ड कृत्त । -क्रिया-लो॰ एक धराव । कामिल-वि कि] पूरा, मंपूर्ण तथामा वोग्य पूर्ण वाता

(सिंद पुरक्)।

कामी-गाँ॰ इसिद्धा डाक्स हुना एउ । कामी(मिस्)-दि (र्ध•) पामनासक चाह रहनेवासाः भिसमें कामनेगन्धे प्रवच्छा हो निषवासन्छ। पुरु म्बार

करनेवासः अपट पुरुषः चक्रमाः कपूतरः योगः चंत्रमाः श्चिव धामदवर।

[सं] चावनेवाचा कामी । पु॰ कामुक कामुक∽ि पुरुषः गार्षाः अञ्चोद्मक्यः ।

असुका−ि सी [म] यनको १थ्छा अरनेवाको । स्वी० धन याहरीवाली स्ती।

कासकी-वि गाँउ भि] व्यक्तियोहिको ।

कामधारी-मी [में] एक भैरशी। कामारका वेबीकी एवं मृदि ।

कासोद∸पु[मं]लकरासः। –ऋस्याथा–पु ल्रह्नस्थर राग । - सिसक- प्रत्य स्थार राग । - मट-प्र यह चेदर राग । **-सामंद-**चु व्दः श्वर राग ।

कामीयुक-पु [मंग] यह जलांजित यो निहित न होती

हुई भी र/प्छामे मृत व्यक्तिको ही बाब । कामोदा-गी [म] एक रागिनी। यक पीथा।

कामोदी-सी सि विक शायिती।

कामोदीपक-वि+ [मं] काम सहवासकी दण्छा बदाने पासा ।

काम्प-वि [मं] बाहने योग्यः जिनकी चाह कामना द्याः सुन्दा प्रदयनिस्तरमे द्विता हुना । —कर्म(मू)-पु कर ग्रामनाधे अथवा उदयब विशेषधे शिया जालवाका वर्म । -दाम-पु स्वीकार करने बीग्व दान। रस्मापि न मुन्त बानुबीका दाक्त स्वच्छाने दिवा हुआ दान । -मरथ-पु अपनी इच्छा । प्राप्तवाग करणा। भारम-इ.स.।

कास्त्रक-पुनि] एक प्रसिद्ध वन ।

षाम्पा-गी [हः] रण्या, कामना। बाम्यप्रि∽र्गः [म.] बामन"ग्रै शिक्तिके लिए विशा जार्थे÷ बन्दा शह ।

काय-प्र• [सं] धारीर, देश पेशका तनाः (तारोंके शति रिए) बीवाका बाँजा संब, समूद्दा मूल बना मिनासरबामा रक्ताकः छित्रकीः प्राचापस्य निवादः कश्व । – क्रुप्त-प्र शारीरिक बाद, गीवा । - चिकित्सा-पु नासुर्वेदक ८ विभागोंमेंसे तोछरा किसमें छर्पानवापी रोगोंकी विकित्सा दो गयो है। --संधन-पुक्रश्मी। शुरु और रेक्स बोग् । - मान-पु॰ पर्यशासा । - मध्म-पु॰ दश्य । -स्थ~पु॰ परम**धः एक सिं**त् बाति। -स्था**−स्थ** कावरम सी। इता जीवकाः ग्रहकीः काबोरुं। -स्यी-खो॰ कारखंडी सी ।

कायक-वि [र्स•] धरीर-संपेधी । कायका~प [श] क्यामको टोरी। पारेकी गॉर्थनेका एक द्यरेका विसमें कगामको कोरी जीनमें वॉब बेते हैं।

कायस्य —पु॰ कायस्य जाति ।

क्रमदर्ग−पु [अः] निवमः इंगः विद्यानः क्रमः । कायफरां – पु दे 'कावफक'।

कायफरू – पुषद्ध वेद विसक्षी क्रांक दबादे सीरपर कामने कायी जाती है।

कायम-वि [न•] धना दुशाः दशरा हुमाः रिवरः रशकीः निर्वारिकः बराक्रीमें रहनेवाकः (शाबी ह•) । **∽ि**मिलाज स्थिरपिश्च । -मुकास-विश् बृहरेकी चग्रह भरभाषी रूपने काम करनवांका ध्वज ।

क्रायमा⊸दु[श•] • श्रंद्यका दोण समदोल। द्रायमी−सी॰ दावम दोना, रिवर दोना।

काषर∽दिटरपोक, दुत्रदिरु। क्रम**स्क−ि (अ॰)** माननेवासाः अपनी गळती रदीकार करनेवारा निवक्तर । अ॰--करमा-किमीसे बीर्व वात मनवा धनाः निरक्त कर देना। −माकुछ करना – कायर करना । —होमा—मान छनाः निपर्धादी नशका

भीनित्व स्तीकार करमा। निरुत्तर हो जाना । कायकी-सी॰ कावा म्वानिः 🕆 श्राकस्य ।

काया-की॰ देश, खरीर । -कश्य-पु॰ झरीरका मना वा जवान है। बानाः कावाक्यपन्त्रे विधि या औपधिः थीला बरक जाना। --पसद-पु॰ भीना बरल जाना। भारी अतिकारी परिवर्तन ।

कायिक-वि॰ [सं॰] वेद-संबंधी शरासी किया हुआ। श्चनमंत्रीयी (वी) ।

काविका-मी [मं०] स् । - बृद्धि-मी अपने घरोरसे वा पशुर्मीन काम करावर वृत् अश करनेका पक त्तरीका ।

कार्रड कार्रडक-प्रामि विश्व शरहका देस का बहरर । कार्रधमी(सिन्)-व वि] श्रेक्षिवागर ।

कार्यभा-ना [नं•] प्रियंश मामर पृद्ध ।

कार~पु॰ कि] काम कार्या (धमासके अंतमे) करमे वाला। - करवा-वि अनुसरपात यो दास कर मुद्रा हो। - कुल-पु काम करनेवाना, कारिया। - गाना-पुरु वह जगह जहां कोई क्रिकेश कान प्रमानी जाना कार्याक्रमः कार्यारः मामन्ताः यन्ता । --व्यामदार्-पुर कारगानेना मान्यि । -गर-वि अमर करनेवासा प्रयानप्रतः -गाद्द्-मी काम्मानाः कर्षाः एतिहाः।

सनकर-प्र [सं] सुर्गाः बनसुर्गाः सुन्धः विमनारी। नमाडो-स्पौ ,-र्यग्र-पु॰ पानी सादि डासनेदी युद्ध तरहकी देशे मन्ते । -पाद-प् वनाकेपा9का एक पूर्वत, कुरिशार । - सम्बद्ध-पु॰ चन्यः, गर्वायपसी । - सत्त-प्र• मात्र राहा सप्तमीको नित्या वानेवाका एक जुल । −शिका–पु पुनुस । कुक्कुटक-पु॰ [सं॰] मुगाँ बनमुगाः यक संबद जाति । कुरुक्टरीहा कुरुक्टरीहरू-प्र [सं०] एक तरहका बाम । फुक्कराभ -प्र• [छं•] एक शरहका सीव । इन्ड्यसन-प्रसिनी योगका एक बालत । इनकृटि कुक्कुरी-सी॰ (सं॰) सुगी। डिलस्की। सेंगा द्यादमधी । कुरुकुम – पु ॰ [एं ॰] बनमुगाँ। मुगाँ। बाजिस । हण्डर∽प्र सि•ोक्तचा मधिवचा। इस्थ−प्र• (ची पर। कुर्विमरि-वि [सं] पेट्ट स्थानी। कुक्ति~न्त्री । [सं] देट, कोखा गर्माद्यसः विसी वस्तुका मध्य मागः गुद्दाः स्वानः खादी । प्र प्रदेशकुका एक प्रशः पद प्राचीन देशा वहिका दूसरा नाम । समार-ली दिशा, भोर। क्रच-प (र्रः) रदन, वरीय ! --प्रस-प् अनार ! -मुख-पु• स्तमका समनागः पुणुकः। क्रथकेचया। -प्रश्यस्य । कुचनुचाक-विश् सानेमें गोका-दवा कमनेवाका विक-पिया।[सी॰ कुक्कुकी 1] क्रचकुचाना-स कि बार-बार इसके दावी कीवना। बीबा ऋषकमा । क्रचनारे∽शर विश् सिकुरना संदुधिन दोना। क्रचलना-स॰ कि फिर्मा मारी चीत्रमे बोरमे दशना मसक्ताः रादमा । सुरु कुचम बेमा-पीस कामना वक लोड हैमा । क्रचला-पु+ एक पेड़ और क्षत्रा बीज जी वित्र हैं और दवाके काम भारत दे। हुपीछ । कुक्षाग्र−पु [ग्रं∗] ग्तनका अध्यागः। कुचाहरू-श्री अमेगन वात, सेवाद । कुचिक-द्र [मं] बचर-पूर्व दिशाका एक प्राचीन वैद्य । क्षित-दि (मं•) समुनिये वीशा। क्षांसा-पुर दंश 'कुयमा । कुलुमार-पु [मं] कामशालके वद शाधीन वापार्व । मुस्प्रित =-दि देश मुस्मित'। क्रफ्र-विक भाषासा, सनिक । सर्वक कार्र क्षीप (ब्राप्ट देश-(दानारे ही!); बोर्र वही बात काम (कुछ कर दिमाना); कोई अनुवित अनिष्ट बात (बुछ कर वैद्या, बह देया)। -एक-वि बोहासा ≀-वैसा-वि विनक्षत स्टक्क-भ भारत हिमी रहर १३१० - सर देना - बाइ-रीना दर देनाः – धर बेटना−कोरै मनुदित वनित्र वाग कर राज्या ।-क्टमा-धीरै धरी नात नहना १ -का कुछ-क्ष्यरा औरबा और ! - न्या क्षेत्रा- बहर शा मेना !-गुर बीला भूछ यनिया,-सीना मोटा कुछ मीनार-दीन दीनी और है। -- व चनाना-नदा व प्रवान।

भ्य पृष्ठिय−कदर्वस्थे वान मही। क्या अप्रताः क्या बाह है !-सगाना -न्यमहामा-(अपनै जारहो) दश समाज अपने बन, बड़ आरिका गर्न करमा !-क्षे-बारे जो हो। -हां वाना-रीम, मेतवापा भारि ही जाता i कुष्रसम्बद्ध कुर्जिशिल-पुर्व [संघ] सेव सगानेदाना चीत् १ कमारम-प॰ थि॰ एक अल्प बाय जो बायनेटबीये मंगलके भारतें स्थानमें होनेस होता है। कुम्बार्ग - प्रश्न मिडीबे व्यानेमें जमानी दर्र निध्ये ह कुनमदिः कुनमरिकाः सन्त्रसरी-परी (स] इत्सा । कुरंक-पु॰ [मं] एतः इत्यर । कुर्रशक कुर्रशक-पु [मंग] पृक्षपर क्रेमी हुई सतामीने बना हुआ मेन्या बृद्धपर चैननेबली समा छता छात्रमः शोपशा ध्वा बरा मांगर गृह । क्टर्स = न्यो = मार बहुता, स्टिहं । कुट−पु पुत्रा द्वमा द्वसकाः [सं०] गाः, दिकाः घर। कन्सः, इयाना कुछा पाँत । --कारिका -हारिका-सी+ मौकरानी १-ज-ए रेड्जी। बमका अगलपा होगापार्व १ कटक-न [मं•] यह ब्रुधा राधिमका एक (माधीन) देश: वह बंधा क्रिप्तमें मधानीकी राखी क्रोधी-मानी है। इसका कुटका-पु॰ शीश द्वक्या कशीरेमें मारा दुना निधेन। कुटकी-न्या॰ एक पीपा जिल्ली नव दवादे दाम जाती है। एक धीरा कीड़ा भी सच्छरनो सरह बणुओं मनुस्थाकी कारता है। छोटा हरका । क्रद्रमधम **मुटनपमा मुदमप**ार~पुर कुरमोद्या दाम देशाः समझ कमानेस काम ! क्टब्रहारी−यो भागकृरनेवानीयो। कुटना−न कि पूटा जान। मारा-पीरा मामा । पुरु विश्वोद्धी पुरानाबर परपुरचन निनानेनानाः पुगुतस्पीरा मृहसंबा भीवारः पृथं भानदी किया । – हूँ-गी॰ दै॰ 'क्राज्यका । -पत्र -पा-पु पुरन्था क्रम रेसा । कुरमाशा-छ॰ दि॰ शिशी शीरी बद्दासर ध्वविवारके मायपर है जाना । कुटमी-न्ये थिये लीकी बदबा-पुस्तक्यार परपुरवर्षे मिनार्गवानी की कुटुनी। शांता नगानेवानी भूगकी व्यक्तिसामी भी । कुरम्बर जुरुप्रदन्तु भि रेशोमारः वेशसीया। कुटच-ध (६) यस्क भागरा शामिमा समन्त परिः दे पुरुष । कतर-मु॰ [र्गण] वह रहा बिगमें सदलाही रागी सरेदी जाती है। बुटाव∽पु+ (सं] टप्पर धात्रम । **कुरवाना-**ग जिल्लाकोती जिल्ला दुसरेन नगमा ('ब्रुटम ४१ में) । शुराई-=ां नृतनेश कामा प्रश्नकी प्रतक्ता ने नहीं शरम्पत्र विक्रो प्रसार-४ वरभार रहे । क्षाम-भी दिशा । बुदिनमा [६] कुरी देश मुध्य रेन्सन । नयर-उ

ति करते, नगानेवाच्या सर्वकर । —कार्य-पु शिरस्कार्व, वार्धा, मद्याद्या बारिका कार्य । —बीर-पु० हेव सारका वार्का । कार्य । कार्य । कार्य । कार्य कार्य । स्वाच्य । स्वच्य । स्वाच्य । स्वच्य । स्वच्य । स्वाच्य । स्वच्य । स्वच्य

कारक - पु [सं•] ककाकार, स्टिक्यो । कार्यावाक - वि [सं•] दयाबीक, करणा करणेवाका । कारुम्य - पु• [सं•] दया करणा ।

कारुवस−व हे 'बारायस'।

कार्यसम्बद्धः व कार्यसम्बद्धाः व वेदाः मार्वे को वतुत वसवान् ; पर वदा अनुस वा । नका स्त्रज्ञानाः चिद्दशाव श्रीकतः।

कासमी-स्रो बीहोन्द्रे एक वाठि । स्टाइस्त-पु (न०) चितिससम्ब्रे सैमीका पेद्राव विकामेकी स्टोदीर पेदाव; बास्त्रकी कृषी । सु०-मिकमा-गवरी

बोस्ती दोना, बहुद मेन दोना । कार्रीय-सी॰ दे॰ 'क्टरी छ'।

कारोक∽दि कांका !

कारीनर-पु [सं] वह अपसर बोतुर्यंटना आपाठ जवर सादिसे परा हुमा माने जानेवाने व्यक्तिको कासकी जाँव बरता है।

करता ६ । कार्क -पु॰ [सं] एक देक्को छालः क्षछाक्से ननी सीदी कोरकोर्ते क्रास्टर कार्नेगाली कारः कार ।

साक्ष्य-पु॰ [मं] क्टीरताः दहताः ठीसवनः निर्ववता । साक्ष्य-पु [मं॰] मोटे सागवधा दुक्ताः वास्त्रः पर्णाः पोत्रवारं । अक्षेत्र-प् वक्षीः ।

पारद्वाट । स्वाहरू प्रशान कार्ण-दि (संश्वेदनंसीयो । धुकानका सेका कर्मपृष्ट । -विकास-तुमक तरका दुर्जी ।

कातपुरा-वि [सं॰] स्ततपुर-संश्यो ।

कार्तवीर्य-पु (मं॰) स्टबोर्यका नेता सहरतानुंत । कार्तम्बर-पु (सं॰) शीमा; वत्रा।

कार्चिक-पु॰ [सं] मारियमके बादका महीताः। बाहरसन

ৰ্থা: কৰে। ক্মবিকী–আৰু (৫০) ক্মবিকাট পূৰ্বিদা। ক্মবিকীৰ-পুৰু (৬) কেং : সময়–কা ক্মবিকাট

माता, शार्रती । कार्यम-दि [र्च] श्रीमश्मे सना मरा हुणाः दर्शय प्रजा

काइस∽ाद [स] दस्यदश सना यरा हुमा; दर्शय प्रजाः । परिभे संदंश रसनेदाला । कार्पर−द [सं] दावाधी सम्प्रेशसः थीवशः सारा ।

नापरिक-तु [मं] नात्रीश वात्रिमीका समूद्दा मेगा आदि महिनार तर काकर वीदिका बरनेनाका अनुसरी व्यक्ति।

कप्रयेष्य-पु [मं] क्षप्रणा कन्सीः निर्णनताः वया। कार्यास-वि [मं]कपामका वना। पु कपासटा वना (तृती) कृषाि। --मसिका-मी सुनुषा।

वार्पाससीतिक-दि॰ [मं] कथमक सतना वना दुआ। वार्पासिक-दि [मं] दे 'कार्यस ।

कार्यामिका कार्यामी-सी [मं] कपासना पाणा। कार्य-रि [मं] रुपेशील परिक्रमी।

कार्मण-६ (स.) कार्यो द्वीदियार कर्मकुक्तक। य

मंत्र, भोषवि आदिसे मारण, मोइन भादि करना । कार्ममाश्रुती० दे॰ 'कार्मण ।

कार्मार~पु (सं•] शिस्पी, कारीगर ! कार्मारक~प॰ सिं•] क्रोदारका काम !

कार्सिक-पु [सं] वह वस्त्र विसमें फा, शास्त्रिक मादि

थिह बुगधर बनावे गये हों। कार्युक-पु [सं॰] पतुप , याप- धतुराधिः वाँस । दि॰

कार्युक-पु [सं∘] धनुष , चापः धनुराधिः शेसः । सं॰ कर्मशीलः । कार्ये-पु [सं॰] जो कुछ दिलाजान वा करना री, कर्तन्यः

समक्षे भारमी। -वस्तु-सी॰ स्टेस्न ।-सेप्-दु दिसी कामक बाक्षे भागः ।-सिद्धि-सी कार्पक्षे सफलता, कामकाषी । -स्थान-दु कार्यक्ष्य सम्बद्धः कार्यकः(सप्)-अ [सं] कार्यक्ष्यमे स्वतः। कार्यकः(ये-पु सि क्रिय-सम्बद्धानः। -विचार-प

कर्तन्त्वर्गान्यका विवार । कार्याक्षम-वि [में] कार्य करतेमें असमर्थ । कार्याक्षिप-प [मन्] कार्यनिरोधका प्रसम्बा निर्णावक

शह (त्यो)। कार्यान्विस−दि (सं∘) कार्यसे मंददा कायक्य मारः। कार्यार्थी(चित्र)−दि (सं) स्वदर्मसिद्धका यान करने

वासाः सम्मरवारः सुरूपेन्द्रे पैरवी करनेवाला । कार्यास्त्र पुरु [सं] काम करनेवा स्थान वस्तरः कार

कार्यो(र्थिन्)-वि॰ [मं] धार्याची । कार्येक्षण-पु [मं] कामकी निनराती ।

काव्य-पु [मं॰] दुवनावन मानका पेश बहदरा कवूर । कार्य कायक-पु [मं] कुपर गोतिहर ।

कार्यकारक=तुम्य प्रकृति । कार्यापण कार्यिक=तुम्बिको सारतमे पुरान सदयमे वसनेवासा एक सिद्धाः।

कार्या-दिश्मि हैस्य कृत्य देवायन या कृत्य कृत्ये मं व स्थानवात्या काणा १ पुश्चाने मृगद्धा दसै । कार्यिय-पु सिश्ची प्रयक्त व्यापदेश शरूरेय ।

कारम् - पु. (मं) कामायन । कारम् - पु. (मं) कामायन ।

बार्यवस−पु[र्ग] स्क्रवृक्षः। बार्यवर−पु[र्ग] व्यक्षकात्रः स्वा उम्र वस्ता प्रदेशः

सन्मानित्री स्था। जिन्न बहाने यहा उत्तर क्षेत्र। ।

होता है। क्षदा-पु. मुरेबा। दे 'ब्रुडा' । कविका-सी [में] पिडी या बाठका जलपात्र । क्रशी-मी [सं] होपरी उद्यो। क्षतक-पुण्य प्राचीन श्रामा । स्त्री भंदा म देनेवासी सुगों । वि व्यर्थ। साही । अ०-बोसमा-वेदार आना । कुब्मल-इ [सं] सिनती हुई बली। यह भरक । कर्य-५० (से०) दीवारः बीबारपर प्रस्तुर करनाः भीतमुक्त । -च्छेत्र (दिन्)-पु सेष मारमेताना भोर । -पुच्या,-मत्सी-सी॰,-म स्थ-पु॰ शिपक्की । शुक्रम-को। हुद्दमेश मार सीक्षा बचनाट्सरेके दुःस और उसके निवारणमें अपनी विण्याताको अनुसूचिसे होगेनाला ममस्त्रापः । कुरुशा−म कि मीटर ही भीतर जरूना गीशना जिल्ला मन-ही मन सिश्व शीना शना शना वसना । बला-प मुश्राद्वमे पेद्याश्ची मसीने प्रानेवाटी गाँउ । हुदासा-ध कि शिक्षामा रिकाना बनाना। क्रण-पुरु [मेर] ओक्स माधिवरका बैस १ क्रमक-पुर्व [मेर] सबबात स्ट्राप्टायक । कुमप-दु॰ (सं॰) हाशा भाषाः बुमप । वि॰ बुवपवाला । हुनारशी (शिन्)-पु [न] प्रशं लामेशला (योथ गीरह मारि): मेटीबा एक मह । कुणि-प [मं] तुमका देश बह (अमना दाव देश ही नदा ही हा गूर पदा हो। गुरुका । कुक्त (सस्) - अ [सं] कहांना दशी दन नवींदर । क्रवक, कृषका~ड मीदा; गतका भीगुठा । इन्तना~म॰ कि॰ इना जाना। कराप-प (संक) दिया पर्यतिक एक बाजा दिवका आहबी सुर्मं। सूर्यः शक्षिः भानवाः नवानाः नेवाण्यः स्मः कुछः । क्षतरम−सी जनसङ्ख्या इकता ह क्तामा≔स कि दोनीमें किमी चीमना कुछ लेख कर नेवा। दिसंकी मिसरेवाडी एकमाँने दुछ बार लेना र बुताबार−ड कृत बरमेशालाः ० हे 'कानशन्त । क्रमबारीर-को दें बोडवाडी । इतपाली−५ दे क्षेत्रपाव । क्लवासी!-भी दे कीवनानी । क्रताही – स्री दे व्यक्ताही । कृतिया-भी कुश्रमे मारा। कुन्नक्रम् व वि] प्रसुद्धमा बुप्रस्य । क्षत्रप-इ [सं] चमरेका कृष्या हिम्बा भावते शहते । कृत्य-पुलि विकास का बहु है -द्राप्ता-पु पुरतकासम्बद्धाः - प्रत्याः - मु विजान वैचनेनामा । क्रमुच−द्र (सर) भ्रष द्यारा -- क्रमुखी−द्र दक्षिणी अका -- मुमा-दुरुक्त कर जिल्ली मुख्या यह गिरा गता पत्तरो अवसी कोर रहता है। -सीमार-भी तुरानी रित्रीको पद मीमार को सहदरीन परकारी गरू बाबी हुई और अपनी क्रेमपेटे किए प्रतित है।-बाह्वी-भी । प्रदिग्य अञ्चलके चीप बहरूनी सुरूपनिने यह निमाधे रायपामी देलनुदा थे १ —धुमार्ग्य-५ वर्ण्या अव १ ~साइबंधी कार~मुजुवभीतारचे चान गरी वर्षे केदेशे

काट का महाराज पृथ्वीराजनी बनहादी हुई महनी वाती है। **इन्द्र**-की॰ [सं] तल रसनेको चमरेको हुग्ती। अगरण-४ [मं] विमी बस्त वा म्यक्तियो देसाँचे पस्तर इच्छा जासकता अध्या। अदेशा । क्तबाधी(किम्)-वि॰ (ति॰)बुन्दसनुष्मावणुर बीतुवी। कत्ता-पु॰ मेडिये, न्यार भारिका वारिका एक यांग्रयत्रो जानवर जो लव अधिकांशमें बातनू बहु बन गया है नामा बंद्रका योहा क्र्यहमेमें लगा हुमा सक्तिना द्वका विशे गिरा इंगेस दरवामा बाहरने नहीं सुक श्चनाः वदी या शारेका रक प्रत्याः शरीर्वे वासः ग्रुप्त श्चर वन (का॰)। देग्या शुकाम (ता) । मु॰ - (से)या कारमा-ननक बाता वरात्र ही जाना (मह कराने यहाँ बाटा इ भी अमुद्ध शन क्र-)। -की दुस कमी सीपी महीं होती-प्रकृतिगत स्टारपर समझान-पुत्रानना की ससर गरी वाना । -की सींद-नेगी मोर नी बराने बारहेमे शुन बाव । -की मीत मरमा-की दुरेशके साथ बरना । –की इक्क-धारन इसके कारनेन दीन वान्य कनार्वेड रीवडा शीरा ! ~ बडना - अमान्य (हरी थो बढ़े निर भातुर अधेर 🕅 शमा १ - के पाँच जाना-वहन नव दीवने द्रण जाना। नके भैक्समें शाधी नहीं बरता-विकासनी दुवन तुरस भारमीकी प्रस्तेती परवाद जडी करता । कुर्त्ता-ला कुचेश्र बादा कृतिया। कुच−क्र [मं] क्रसं शिम अमह। चुनसन-पु॰ [मं॰] निश करना ± बुरमा−नौ [यं] निरा गर्गा। कुरियस-वि (वं०) विदिन श्रीय गाँदत । ह पृष मायर भोर्चन, करा, बारैया। मिदा । कुथ-५ (मे॰)क्लोधी शुभा वरी। संबार कुछ। यह नीहां ! कृपना-भ नि द्वीरा बाना मार ग्रामा । कुषा-मो॰ मि॰] देवा दशरी। शह । प्रथमा−पुरचेश ग्यामेवरीय । कुरुक्ता-अ कि कुरमा। पुरस्य-पिर प्रभीवणाः। कुरका - ३ वटन-१४ । बाहरस-न्या (अ०) रंपराय श्राचित प्रश्ति शक्ति न समी क्षणीयो । - (म) राशा-मो वेपरयो बहिमा शाम की शाल । —का पहल-मान्य मुनी मीना । क्रम्राती-६ (का) प्राप्तिक क्रमाना । कुन्तरा ~ नु । नु राम । कुरुमाञ्चाः – भ दि वृदयदूर ५मशा। पुराम-न्त्री पूरनेती क्रिका, शनाना १६नेका स्वाम र शक -मरमा-कृत्याः मुद्रारी-भी देश मुगली । कुराम कुशानी-नी थिही रहेश्मेश पर भी नह भा कावनी बच क रा दीन है र कृत्रमु⊷म" [ध+] दैनाइन। रंतिष्ट कोना ६४। क्रमार क्रमाल-म [६०) प्रशान बीमार बीमा अन्य

बर्डेटेदार शार्था ।-बर्डेंची-सी यह मॉबी विसके आनेसे भेरेरा छ। बाद, मदानक भाषा । -याँसी-सी वर्षो-को होरेदाला एक दरहरी सन्ती जी बहुत कहकर होती है । - सटा-सी॰ काले रंगके भने वादलॉका धमड । -स्वान्-सी॰ वह बीम जिस्का समेगक वार्ते मावः शत्य 🕅 कार्ने । -आंशी-न्यं पद पानके बीज की बवा-क काम बाते हैं। -सिष्टी-सी विकर्ण करेकी मिद्री। -सिच-स्रो मोरू स्याह रंगनी मिर्च । -स्रीतका-मी काले वानींनाकी चेचक को सरुरानक दोशी है। ~इइ-मो धोदो इड । मु॰ -(स)का मंतर-शंपका मंत्र ।-कोस,-कोसी-क्ट्रत पूर । -सिरफा-जवान ! - के सारा चिरारा मधी सम्बता-जवरदरतके कारो बाठ जीर नहीं चरता (बहत हैं) काने सापदेशक कारसे विराग तस जाता दें)। कास्त्रगुरु-प [सं] एक दरहका काला समस्। द्यसाधि-ती [मं•] दे 'द्यवानव । कासाजिल-प्र [सं॰] कारे पुरस्ते साह ।

कास्तरिक्षमण-पु (संः) समक् बीत जाना, देर होना। कास्त्रतियात-पु (सं) समक्र नार्तः विकेश । कास्त्रतियेक-पु (सं) सम्बन्धियात । कास्त्रतियेक-पु (सं) दिस्तन्ना समक्ष्येत गया हो। कास्त्रात्ता (सर्च)-पु (सं) एरमाया । कास्त्रार्थात-पु (सं) पुरं, एरमेवर । कास्त्रायक-पु (सं) पुरं, एरमेवर । कास्त्रामक-पु (सं) पुरं पुरं कास्त्रा

रहाय । कासाय-प्र[सं] सिरके नाक शोपका पाणः दालवा।

कारावनी-स्रो [सं] दुर्गा। कारावचि-स्रो [सं] नियत कार शुरतः।

काकाशुद्धि-स्तं [मं] सुभ कावीते विष निषद्ध समय। कासासीच-पु [सं] अन्य या गरवसे अमनवाका मशीय।

कारादा—पु [५] वह वाच जिल्लो प्रकारसे प्राणांत निभिन्न हो।

कार्किया- दि [सं] कर्किय देशका । यु क्रकिय देशका निवासी वर्षाच्या राज्ञा करिया वेशका स्था हाथी। एक तरस्यो वर्षाच्या राज्ञाच्या दिवाग वाचा एक तरस्या कीता।

कार्किंगका-स्मे [६] तितृत् विश्वासः मामक शासा की दशक काम काता द (

दर्गान काम काता द । कासिंगी-स्ते मिनी एक सरहयो कवशी ।

कार्मिजर-पु [मेर] बीसदे पुरवमें पहनेवाला एक पहार कार्मिजर-पु [मेर] बीसदे पुरवमें पहनेवाला एक पहार कार्किर-वि [सं] विषय प्रवत वा वालियो नहींसे संदर्भ वु सर्वा

कासिंदक-प्र[मं•] तरका

वानियी-नी (मं) (क्षीप पश्ची- गिश्मी हुई)
यमुना मदी। सगरको मादा कृणकी एक दानी व्य रामिनी । -क्षपता-अद्दान-हु दुक्ताम (ब्रह्माना) दे दि वे बान कर्म समुनाको प्रावनो राज्य हो। ना -मून्ती प्रेशको हता। -क्षाव्य-हु यथ। कासिक स्थान स्थान भाग सानेवासा दिन । — कास्ता — व कभी, किसी समय । कासिक — वि [संग] समय-संबंधाः सामयिक, गीसमी ।

कारिक-(वै. [सं॰] समय-संबंधीः सामयिकः गीसमी पुक्रीय पश्चीः काका केव्या संदना सहता ।

कास्कित-की [मं] देवानी यह मूर्नि चीटका; कार्यमा; कारण रंग स्वादी; सेवमाला; कई किस्तोमें दिया माने-वाला सूच्य या स्वाद्य आर नरस्की रूपकी की कुमारी पूच्यमें हुर्गाक्य मानो बाती है; कार्य-देगकी रोग मादा श्रीला स्वामा प्रदीश यह रहपा; विपष्ट विसुख्या नामका वेड्डा यक तरवाकी सुर्गावित मिष्टी। —पुराण—पुण्याकिका देवाकी माहार-वाला वर्णाय करमाला एपपुण्य। —सुदिक् —सी महीने महीने किया जानेवाला सुद्र। कारिकेक्ष-व [मंत्री हरकाला कार्यक्रको स्वयंत्र पर

शासकप∽पु [६] ६६८म्या माहरूस धरपा असर वाति।

कामियः –क्षां कर्ताधाः स्वाधाः क्षत्रेष्ठः (क्याना) । काक्षित्र –पु [अ॰ काकेत्र] वह निवासय जहाँ कैये हार्र स्कृतसे अपरके वजीत्रे पहार्षः हो और जो दिसी दिस-निवास्त्रमने संबद्ध हो ।

कासिन्तरम-पु [सं] एप्तंश कुधारसंभव बारि कार्योके एक्टीका जी महाराज विकासारित्यक समा-वीन्तु संस्कृत के स्विधेष्ठ करि और विश्वक सर्वभेष्ठ करियोंमंस एक थे (समय विकासस्ता)।

कासिय-पु [ल] खाँचा देह ।

कार्किमा(सन्)-ली॰ (सं॰) कालापना स्वाही। कार्यिखः

कारिय-पु [सं] यसुनामें रहनेशका यह नाग जिसका हमन कुण्यन किया और ब्रीसन डोइस्ट चन्ने आमेरी विद्या किया । —कियु,—दसद,—सन्न-पु कुल्य।

—हर-पु॰ वह वह विश्वमें काश्यि नागे रहतो था। काश्यो—यो ि] विश्वम पातेची हुगा, काश्यिमा महा-विश्वा वद्य महाविधाओंकी वर्षणी, अधिनदेश शिक्सों के विश्वमें-मेरी व्या बस्पे रंगकी की। राशि। भेपेरा राशा हिमान्यसे निक्को व्या नागे की। व्यवस्थी निक्सा बालांजनी। मान्यो विहाम बीमकी थी। -व्यवस्था अध्या निक्सों की।

विदेशा बीमकी स्वी १ - चलय-पु असा । कारु।क-पु (६) कीच पदी । कारु/ची-सी० (६) यमका विचार मकत ।

|कारुं चार्चान्यां विश्व | समका स्थार मनम् । |कार्यान्यां विश्व | (समाप्तिमें) सुरुदा द्वारु≪ंदी। |कारुंगिर्मु | कि. | यहां गरीना गरीचा ।

कासीय-पु मि] काना चेरना है। 'बानिय'। कासीयक-पु मि] एक तरहता चेरना एक तरहती

हत्त्री; बेश्रद । कासुच्य-पु [मं•] मल्निता; अपनित्रता अस्वद्याता;

मत्रभागः। कारत्य-नि [सं] कन्तिमुन्तेन्त्री । मु स्ट्रातः काला

चंत्रम केत्रर । कामंत्रक-पु (मंग) एक सरकता कामा चंत्रमः एक सुर्व चित्र सकरो। चीरिका जैमा एक शाम करता ।

धार रुद्धी। वीरिया जेमा गर रामा कुछा। कारपा-पु [मं] कुछा यह तरद्धा पेन्तः। कारपा-पु [मं] मुद्धी (त्रवः) कारपा-मी वारिमा वारिमाः।

-ममय-पु दान्त्रिका यह प्रसिद्ध महाद्वाप्य।-सू-म्रा । पापठी । कुमारक-पु• [मं] हुमारः शीएको पुतरी । कुमारबाह्र-५० हुआएँ। **ड**मार्य-५ (वं•) रावकुमारा धुवरात्र । क्रमारिक-वि॰ [मं॰] विसन्धे कर्यस्यों दी। विसन्धे यहाँ बहुत छहरियाँ हीं । इमारिका−गी॰ (र्रं•) इमारी । क्रमारिस भट्ट-प्र [मे॰] सुप्रसिद्ध मौमांस**क्र** और माध्य कार जी र'करावार्यक्ष समझनीम मान पाते हैं। इमारी∽सी [स] १०मे १० वरसहस्की कृत्याः र्वे भारी बन्याः सन्ध्यः प्रतीः पानेताः शिकाः शारतवर्षेके इतिसमी धीरपरका भेडरीया मीक्रमारः वधी दव्यायथी। वि॰ मी भविराहिता ईं भारो (सहध्ये)। <u>"द्रश्य-प</u> इण । - प्रजन-पु॰ एक संशक्त पूजा विसमें ईअपी नवदिर्वीका प्रवन दिया बागा है । कुमद-९ [सं•] इर्श रक्तरमधा गाँदीः विष्टुः बहुरः दक्षिण-प्रश्रिम क्रोक्सा (रनवः) एक माय विश्वने अपनी छारी बहित कुमारती कुछका प्लाह दी। एक तरहवा देशर -क्षमा÷नी २१६मा। -किरल-मी॰ ५१दिरम। –नाम,-पति,-वधु –बोबव –मुद्रर्-७० ५३मा । इमुद्रमी-छो॰ दे॰ इमुरिमी । क्रमहिक-बि॰ [मं] हमुरीने पूर्व । क्रमिक्रिया−मी [में] करफरा कुम्बिली-मा [44] ब्रहेडा बीबार बृह्योंने यदा बुला शानान भारिः मुमुर-पुर्वोद्धा समृह । नमाथ -यति-बु कुमुद्रती नगी। (मृं) बुमुदिनी। मागराव सुमुन्धा धारी बहुत को कुछको ध्वादी गर्वा । क्रमरिया-पु॰ एक तरहरू। हाथी । कुमेर-पु (मे) वहिदी भुर । बुसार्क-इ॰ [में] तिल्ला कमातमी कमादिनी ==स्मे दे जुनुहर्ग । श्रमत-९ दि। देसारी मानन लान रेवा रहा रान्धा भोगा। वि दुर्भेत रंक्यः। कुरमंद०-५०, वि दे 'तुम्मेश । बाह्बा-१ एक प्रांतर रूप और उनका चक्र दिस्हो सरकारी गुरूपा भारि चनान है काशीकका बढ़ा है -(४)वितिया + नरी । दे 'कुन्द्रेकी वर्षिका । -(४)-की करिया-१९९ ही दमनीर देशान श्रीय। माहबीती-स्रोध रत दुप छनेर मुखद(देर)को बैदीये मिनाका बनावी दुर्व बरी ह मुत्रद्वरीयी-भा शको विक्रमी विद्री । क्षत्रहास्त्रा - म कि गुरतामा तावणे मपुरपादा म रहता भूगने समना ह सुबद्धान-तु मिहीके शरतम नतानन गाः शत केवते करने मान्य दिन्, प्राति अंभवत् । स्विक नुमहान्त्र ।) **प्रमा∗−**सारे ⊀को। पुर्वर क्रांबर-द (स) साल । Afu-fie nite farts 3 Bet eint fit mag.

व्यमीना (सं=) दिरना तामद रंगात दिस्ता एक छत्र। -मयमा,-मयमी -मया,-लाचना-६० भी० (त्य-कीमी कोसीवासी । -मामि_र-सार-पुरु परपूर्ण । -स्रीतम-५० पंट्रमा। कर्रगहः करगम-१ [म] वृग । करंगिय ० – गो० हिरनी । कुरट कुर्रटक-पुर, कुर्रटिका-स्था [मंत्र] बोबी का कर्रक्ष-पु॰ वद तरहका एका पाचर शिसमे माल बकती वै, मान्द्रिता [सं] कश्युदि रोगः सापुत्रस मामक कुरकक-पु (सं) फेट्स बररतीया । ब्रुमान-पु [भ] हे जुरान'। करका-सी॰ (मे॰) गरारे सन्दे । परकी−शी० दे० दिस्ता । कुरकुंद्र-यु व्यक्त शहरी याम । भुजकुद्र-त धारा ३६१॥ + तुन्तर सुन्छ । कुराकुरा-व उपना रोगिहा प्रयाग ब्राह्म-पुर शरी बीबाड बबदर ट्रान्टा शन्य । दुरदुरा-दि (सरी स्थि) या तभी दुरे धान) दि। तोहेन वा यरा भे उपकृतको मानाम निकने। कुरकुरामा-भ कि उत्तर की माराज करना। कुरकुराहर−री कुर्द्रश्चे भीवते दृद्धको भारात्र र क्षरकरी-मां थी। धी एक नीमारी। भी मह अभि । दि को है नुरह्मा¹। बुरगेन-पु बद धर वा वाशान्या ही पर नावा म गवा श्री: बदव तुष्यात्र । कुरगरा-पु॰ धारी बागे जिसमें बारनिम आदिका बारीक बाम रिया अला दे । मुक्त-पु० बर्भुत वधी । पुरिवात-१ [म] वेदशा कुरर-तु [त] धर्न्यार बीधी त कुरमा-१ दशेषद एगदा एड रश्माना । कुर्सा-मी शिवीया एक बहमारा बिगमें मान बान मने क्षात है। नुरम-पुरु⁵ सर्द । प्रमार्ग-स कि देर भयागा एक बाह्या ग्रह्म देशा । अस्ति देर व्यक्ता प्रत्य शिक्ष भागा दर्शनुम्लासः। कुरक करवक करवड़-५० (थे) बाद सरवरेशा बन्हर कुरवनहीं भी अपनीता कार बतावना एड बीजपा क्रस्वाम-द्र [अ]श्रीन निधानस्य वह शामा स्थिते ब्राह्य नेंबा रहता है।-ब्राह्मको अर्थानी बरनेती अग्र करियान । शुक्र - जाना - हीना-दिशास व्यक्ता, वित व ना । क्रावार्था--) व [थ] (श्वादवार्त दा) वद्योगरे तिन हैक(पान्दक पड़] नर्ज्य करना। चन्तर्गन। सनसम्बन्ध । Atmis-A Ble a,fa. 1 ger-g [] & 4 eilgef es freet fer ! बुरस∽५ क्रीअधित्रधाः केर्या≔स्त [रू] हर हेबेस्स दक्षा ३

0/1 क्टिंगक-प सि । प्रकाश । कामीस-प सिंगी होरा स्मीत । कास-नां मिं। सरपट वालीः देकिः रीमः कांतिः सामाः fürmen, fürmum-u felel et 'ferin'! कासति - सी [सं] गर्ताः शतमार्गः पगर्दशे । कारिटक-प [ब्रं॰] स्वथा आविको जला देनेवाका एक लंबाय । कार-क्सर स्था स्था वाता । प पिताको ससी बास 1 -KUI-4 40 'AFEE 1 बॉल प्रेमसा ३ कारक-प मि | रिस्की। सर्गा कीवा। शब्दा करपत वाणीः एक वाजा । विश्वस्था अरहाना ब्रमाः शनिकारकः कारा, पंक्रिक - अगेडि सब करिडे कावल -चीतरबाल ! काइसा-सी [री] पीत्री होड (काइकि-प [एं॰] शिव। श्वरपष्ट क्रास्ट्राहित । कारणसी -- स्रो० हिं। व स्वर्तीः । काहिक-सा हिन्दे। दिससे । कारिक-विश् क्षिणी सस्त, बारमा कामचीर ह काहिसी-नो॰ गरती बातरव दिसाई। कार्योक-अरु क्षोर पासर द्वारर है काडी-वि स्थावी किये द्रव दरे रंगता, वासक रंगदा ! म गहरा हरा रंग बासका रंग । काइक-सर्व दिसी। कारा-स्मर्थ दिसी। ए० [पा] यह यौगा की दशके हांच अस्त है। किदि-व सिीसबर। काहें वे~म नवीं दिससिए। किंकर-प [मं] सेवद, रहका, राखसीको यक जाति । सिक्सि-बोर्क मि विस्तर्यती। एक तरहका सहा अंगर I किकिसीक-मो । धरपती । किकिर-पु० [मं] बोदाः कीवलः एक वशा असरः कास-देवः काल रंगः गणनम । किंकिस−मा [सं]रकः। व्यक्तिरात-प मि तिलाः कायस कामरेव अनीकः करमरेवा । कियारी विकासि∽सी काश विकास । कियन-५० वि | पनादा असाहस्य । विवित्-वि (संव) इस, बीहा । किचिसिक किचिसक-९ [सं] रेंच्या। बद्दत स्थादा । किंग किंग्रस, किंग्रहक-पु [रो] क्यारका देशर, प्रा केसरः मागरेशर । दि पश्चनेसरके रंगदा पीन्य । विदरगार्रन-प्र• वि•ी वधीको वस्तपाठ, श्रिकीमाँ गोरीचम । मारिक द्वारा शिक्षा देनेको प्रचाली (किक्शगार्टम-क्की-का वाग)। क्ति-व [मं] केविन, प्रशासिकः। र्वितुष्प−दु[#] दक्करणः। प्र• प्रतद-विवेता । क्रियाक-पुरु [मं] दक पुत्र कालकर । कियुबारक-बु दे 'दियुरव । विप्रत्य-3 [में] विकास बेब्डीएका एक गाँश मीज किपईती-भी• [सं] कन्दर अक्टराइ। विवा–म [मं] या बाह्ये अथवाः किसार-पु (सं•) बारका ईंड बाग बंद करा।

कि-मा एक ओहतः प्राप्ता अध्याः व वर्षो, वर्षोद्धाः वशा । क्रिकि-प॰ मि ी जारियसका पेका गीसबँठ पर्धा । कियकिक-की सराज विवादः भराति । क्रियक्रियामा-अ॰ क्रि दांतपर शेंत ररास्त दवाना. किसकियाहर-हाँ। किपकियानेका माथ । क्रिक्सिकी-स्त्री विकस्थितहर । किसवाता-अ॰ कि॰ (श्रीकरों) श्रीवड मरना । किस्तिस-को० जीवमातः विज्ञासम् तिचवित्र । वि किचाविधा-मां वि हे 'हिपपिव । किरकिर-प शगरा दिवस्थि। किटकिद्यामा - भ कि गुरसेम दोत पोसनाः बाते समय बॉल के मीचे वक्की पहला। स कि (वॉल) पीमला। किरकिमा-व देवतारसे किया हमा, रेपेडमप्रे सोरसे दमरीको दिवा बानवाका देखा विशासनामी भी र वैत्तोंने दान बतानेदा इंगः काशस्त्रीः सानारोदा उपर । -(ति)वार-प॰ अंक्टारसे देखा चेनेवामा । -वाच~ वि किफायतः बतरार्गसं काम करसेवामा । डिटडिश-प सामाराँका रूपा। किटिका-स्थी सि । यमहे वा शीसरे बना हुआ बंबच । किरिम-पु [सं] वी । राटमन । बिक्ट बिक्ड-प [मं] तलप्रश्रही तरह बैदा हमा. ज्या हुआ सन्दर्भ बीदा यातका सैन्द्र । कियकता – शासि भूपहेरी धन देना। किन-प [म] बद्धाः परंदा अस्ताः सक्तीयः एक बीचा । क्तिक-अ दिवर, विस्कीर: इक्षी दरफ ! वि निमता ! कितक -- वि वित्रमा कहाँ, कितनी दर- " नवहै दित्रक त्व वाम -वादा दित । कितना-वि किस भाषा वा शिनशीका दिस दरजारा बहुत अधिका बहुत बहुत था दिस मानामा बहातका किस्तम-वि• बहत्तरे, बहत्तमे । किराय-पु॰ [मं॰] जुनारी पूर्न इया दुषा सनकी। पत्रा। क्रिता-त [म] ब्रस्ता संगः यह वर्ष प्यारे 'क्रता'। किसाय-स्व [अ] लिसी दर्द की का पीकी बढ़ी। इस हामी किलाव । -स्वाजा-प वस्तवानय । -प्राराध-किताबत-सी [लक] निसाद स्थल बरमेंबा यु. स । किताकी-विक विजारमे श्वाह प्राक्तिक। -हरम-प प्रतरमे मा प्रतर्थेय दिया !-क्षीका-पु रिवाद में नगनेवाला बीड़ा; वह आनमी मा बरावर परत्य प्राप्त रहता है।~बहरा~पुरु मंदातरा यहता। क्तिक विशेष-वि दिलगाः बहुतः वितव•-मा शित्रव ।

हीप, न्हीपफ-पु॰ वह जिसमें कुलका साम कतागर हो, पुरुभूषाः तुन्तापारमे भिदित्तदीष ।-देश-पु वह देवता जिमको पान हरू विशेषमें चै है। बर-पो ने होती था रही इ। । -देवता-पु॰ इक्टेब । स्ता १६ मानुब्रस्थेयेमे पद । - द्वम-पु देस, बरगर पीएन, गून्छ शीम बामरा रुमोहा इसका करंच और शर्य-वे रस प्रधान इए । ~धर्म-पु॰ कुण्का क्रमागत चर्मा कुल्मीति । -धर-पुत्रमा-धारक-पुत्रा। -माविका-सी बदंगी ना वासमारियों के पत्र में पूंधा का शब्दी का ≔ भरो, द्वापालियो, रजकी बद्दमा अर्थिता आद्वाची शहा गापिना और प्राप्तिनोत्रेश कीई (सं)। — मीर्याप्राहक-अ किमी समाव, संभ था संभक्ता शर्जाची । —पसि –पु॰ बुक्का शुरिका, वह अकृषि थी १० इपार सुनियों का विद्यादियोंका भरदानीकण करता प्रभा बर्दे बगवे। विश्वविद्यालय हा निवाधीयका शुरुपा विश्वानाः, बान्सवासम्परः । -वर्रवहा-मी० वेस पर्वहराः। -पर्यंत-पु भारतवर्षके इस ७ प्रकान दर्शनिमे नीर्यं —मदेह यस्त्र स्था श्रीच भाग्न विषय और वारियात्र । -प्रमुखा-शी व्यक्तिपारिधी। -पानि -पानिका -पान्दी-श्री महीशाशीओ स्व दुल्या सी। -पुरुष-तु प्रतिक्ति तुरोग कन। -बूख-हि कुल-परंपराम पूजा-सामाग्या अविकारी । —सारमां — वि कुनका माम द्वनानकाना भाकावक (श्रीवन्धीरनी)। - भूग्या-स्रो गतियोशे परिषयो । - सपश्चा-स्रीक मुसरी मरिक्षा नुभवाद(परामण शेकिनीत) । – सहस्य-पुरु सुर्भानिशेषके गायको मा मुर्ताको हार। पार्टनन राज्य। - व्याप-भी मर शाबी शी हे - वाह- वु भवन आह ह्यादार । -श्वा-पुर परवर वशान्ता मनुष । -शामा-बर प्राप्त-तु मीन भन्दि भागशीयामा गर्देश र~ धड़~ दि नुसम्मानप्रतास मु साधरम् 🗓 एउः उपनाति है। -मंब-पु नुबावनन साथका शबाक्षर- । -मम-म् (बानान भाषाके) कुल्लियेश्वरे हीत्व । विश्व बद्ध । -थी-भी हे कुम्बर् ह कुम्बद्र – पुर्वि 💽 दिवस्थाओं के पास्तिया १ के 💵 बनदी भग्नाः वृद्धिमाः सन्द्रः गढः गारका दशः दि 4W 148 1 सुष्यक्ता~भ & प्रशःशंशः।

इसक-इसाम (न')-तुर बंद्र मेरबाएक! -कसक-तु कुलमें दाग उरमनेने मित्रधनेश्रम् आराज । सगानेवाकाः, मुलयो भानश्रतिहा माग्र करनेवाका । — कुसकुसामा-स॰ दि:० मुचनुननी भाषाय निवसना । कानि-स्रो [हिंग] कुम्बरी मर्यागा । -कुंबसिबी-कुरुवा-पुरु वह तरहरी समीरी होता रामिके भारते करा न्ते। तंत्रमें मानी द्वरं मुकाबारमें अवरिवत यह दास्ति। त्तगा दुशा ल हा। -देत-तु कुरुमे ध्याने समाग कुरुमा व्यक्ति । कुमाबा—सी एक तरहरी यंगनी भरा (में) रुक्तम्। -शय-प कुननारा । ~गुरु-पु॰ वंशका पुरोहित । कुमर-इ व्यक्तियारी अंदार (भे०) अनीरम दुव-४४. −ज −कात−ि कॅचे बुक्में उत्पन्न, बुटोन । −जन− गौरु ६ आहि । पुष्टीन बन रे—चा−नी० दै शत्ममें र ∻र्शतू⊸ कुषरा-मी (सं०) व्यक्तिवारिया अनेक पुरुषेन वैम पु पंत्र भलानेवालाः पंत्रधा सदारा । -सारम-वि० ब्रामेशको भी । [[६] युक्तको तारनेवाकाः वद्गा वदा पुण्य करमेवाका । कुमाध~ड कुमिशा−सी [सं]कुम्धा। ~तिथि~मी निसी परनी पतुर्वी महर्या हारान वा कुम्मय-पुरु मुन्तरी। बहुरंदी दिनि । ~हिसक्-9 अपने बेदफा गीरव । --कुमयी न्या बराडी जातिहा १६ मोश मधा क्रम-मी दीस। कुलमान्त्र कि दर्शकरमा श्रेमना । कुमबार-इ स्मन्ताहत्। कुमपा०-पु दे 'बुक्न । कुम्बन्ध-मा (स) धनीय्यवा रंबा दिशस्ता । कुबदा-पु॰ १६ देश दिल्हा ग्रन्य लाया जाना है। रीन्द्रे मधारका भारत विसुध मनाई एन्ट्र आदिशे श्रफ बमान है। कुल क्री−स्वी यद स्थी ⊲सा स्पेबा निस्में दूध प्रकारे आदि अरब्दर शर्बने जमान है। इस सनिमें अरवत जनानी दुर्र चीना बीनक का सहिदी सभी जी जन और नियानीको जोहती है। कुलकुरु न्द्र धारन्धीरे भावन्ध ५१ मा विरामा । कुम्बुस्तामा-स॰ कि बीरी मधानवी मध्रिका दद साव हिरमान्याच्याः धीरेचीरे दिश्याः द्याव ग्रंट हिमामाः मलमें हिल्ला। देवेगी प्रस्त दरमा। कुलपुनाइट-सी० कुनपुनानसः भारः मुज्ञधश्च-स् भूजीन । कृत्रवतार्नाः सी तुरीत भारमती (शी)। कुलबान्(बन्)-वि [०] दुनीयः[सी पुणवर्ताः] कुमह-की रिप्ताधिकारी विदिशीको अनिहर समने बारी शंदी भविवासी ह Abita-Zog daß t कुलहीर-की राजीरीरीपी बनराया क्रुगिया-को वि क्रिकान क्रमांगार-व में हे ब्रह्म भाग राजनाना व्यवस्था कुरुर्विष≕धे हुन्त औरते (भरना महना)। कुर्वाचमा-भ हि पान्ती समा शैरपुरवाता। बुर्बार-मी १ उप्रांत । कुणाबय कुलाहि-५ (०) ८ उत्परत र कुमानार-३ [सं] कुन्द्री रोटि ग्रोडि जेमपन बाब-भागे ह कुलस्यि०-धी वना क्षातान्यु दिशाध्य भीमर । अद्दानदा कता अन्यो क्रमान्द्राच स योगा क्षान्त्रच-द्र [विश्वामा स्वयम देहा होत्स] gmifen-eft fe ffafte i er dure freit करण्डम-पृ[н]श्रहशेषा नेपाला कनी काथक कुकान-पृ[न]र्वपालाकनरूर राष्ट्र।

किरधारा#-प भगस्वासः। किरमग १-प दे 'कृम्प'।

किराँची-धी असुवान होनेवाको गावी; मृसा आदि बोने बाह्य बेह्नगारी ।

किरात-प॰ [सं॰] एक बंगली बाति। सार्थस बीमा दिखा एक प्राचीन देख: विरावता ।

क्रिसस-स्त्री [क्ष+] एक वजस जो खवाहरस्त सीछमेके काम भाता है (प्रयम्ग ४ मोके भरावर)।

किराताजीवीय-पु [सं] भारति इत एक महासम्बर्धाः

किराति ना (स्) दर्गा गंगा। किरासिनी-था [रं॰] किरातको सी: सरामासी I

किरासी-मी [d+] किरात वातिको की: किराती वैश् कारिकी वार्वतीः रचयेगाः इटनीः धमरघारिनी ।

किराज्ञ = अ वास तिहर ।

किराना-पु॰ पंसारीचे बुद्धानसे मिस्तनेशकी चीर्ने मिर्च-रामाचा भादि ।

किरानी-प अपेशे इस्तरका प्रचीः वरेशियन । किराबा-पु दूसरेकी चीत्र काममें कानेका बदका, भाषा ।

-(धे)हार-५ नोई भीज छास्त्रत मन्त्रान स्थितिकार सेमेवासा । मु॰-उतारमा-भाषा वसक करना ।-सरवा --(देराबेपर छेना ।

क्रियार#-पुण यस नीग आति !

किराधक-प सेनाका यह माग वी कहाईका शैनान साफ करते दे किए भागे पाठा है पंडक्त शिकार करनेवाला !

किरामम-५ मिहोदा तेष 'हैरीसिन । फिरि−प र्शी दासरा शदक ।

किरिका-मी [सं]दाशत मसिपात्र।

किरिय-गा नुसीबा दुवश या रका नौक्रकी भोरने शीकी वानेवाकी सीमी ततवार ! -का शीसा-बहावी गोखा

निसदे भौतर दोने या छरें मरे हों।

किरिटि-ए [मं] दिनाक प्रस्त । किरिमदाना~पु॰ एक छोटा क्षीप विने शुक्षादर दिसमित्री

र्ग बनाई € ।

किरिया÷~रगे शपमः क्रतंत्र्यः वतकको ।

किरीट-५ [मं] पर दिरीभूका किन राजा वा राज-दुगार भाग करते थे मुपुटा एक कानून व्यापारी। -पारी(रिम्)-पुरामा ! -मानी(रिन्)-पु भर्तन ।

किरारी(दिन)-वि [में] दिरीरवार्ण बदनवाका । पु ६ इ. अर्जुन ।

किरीराक-स्पं दे ब्हांका ।

रिशेष - प १ मीप'। किरोर!-वि : पु दे बहोड़ ।

विरोमना-ए कि सुरमना।

किरोना!~g बाहा।

क्षिम-सी दें धिरिया कितनिया = - अ पर्दर्शन प्रशीया = 11

किम-पु [फा] श्रीहा । --वार्श-वि कीश स्त्राया इमा। -वीता-पुरश्चमका बीहा। -दावताय-पु ञुगन्।

किर्मि किर्मी~सी॰ [सं॰] वहा यमराः समारतः सवर्षे वा कोरेकी प्रतिमा प्रकाश बख ।

किर्सिश्र-प॰ दें ॰ 'किरमिन'।

किर्मीर--पु• [मं] ना(गी। एक राराख जो मोमसेनके काओं कारा गयाः चितक्षवरा रंगः वि चित्रं वर्णवासा । - जित्र- निसदन - सदम-५ भौमधेन ।

किसीरिश=वि० सि] पित्रवारा।

किर्याणी न्यो वि वे वेगली प्रकरी । किराँ-सी॰ वातुपर मकावी करमैब कामकी एक छेनी।

क्छि⊸वु [सं•] क्षीया। अ० निश्चय थी। −किंचित्~ व संयोग श्रीगरका व्यक्त बाब बिसमें नाविका एक साम दर्ज भाष प्रकट करती है ।

किसक-प ासी॰ फिल्मारीः एक दराका नरदर।

किस्सम−सी विस्कानेशी दिया। किसकता-म कि॰ वर्धो-बंदरी ब्राटिका निल्ह्यारी

मारमा । फिलकार, किलकारी-सौ॰ वर्षी, बंदरी आदिके सुराध

अधिक इर्वेद्धी अवस्थामें निक्छनेवाची भरत्व ध्वति द्या

किस कारमा-भ कि॰ बोरसे भाषात्र करना । किछक्कि-चौ शगहा, किवनिया प्र [सं] हर्पत्यन

ध्वनि, दिशकारीः दिव ।

किसकिला-सी [सं] १९स्थ६ ध्वति, विकसारीः [हि] सप्टली सानेवासी यक छोडी निहिवा । प्र **छमद्रका वह भाग वहाँ कहाँ तम भागम करती हों:** पद समद्र ।

विकविस्ताना-श॰ कि विश्वकारी मारमा धर्प-प्रति दरना ।

क्रिक्किकाइट-धी॰ क्रिक्सपे :

किछकी-गी॰ वहरवाँका एक भीजार विसरे दे सापकर बाठपर निद्य कगाते हैं।

किक चिया 1−9, पद्म ध्मेरी वाति हा दगन्या। किम्बमा−न कि कीमा कासाः क्यमें किया बाता। किसमी-सौ॰ व्य धोटा बीडा वा कर्ती गाव-बेढी माडि की देवस विमरा रहता है।

किसविष्यामा-म मि र्थपक्ष दीमाः बहुतमे स्प्रेशे आरिया छोरीसी जनहमें एक शाब हिममा-टोहना ।

किसमाँक-प्रशासको भीनेका व्यापना किसपामा∽स कि धील टबनानाः धीलनेधी क्रिया

इसरेस बरामाः संत्रादि हारा प्रेशारिक विचादा दट

किम्स्याधी~°ी छोटी जावी टीलिबी आईटी दशजारका दाम देनेवामा छोटा शोध ।

किलक्षिप = - प्रदेशिक्ष '।

किस्त्रविर्धा + - (४० रीमी) पापीर मीची । किल्डडेंश-५० मिरोडी मामद पर्श । (धी० पेंडपर्देश हो

द्विला-द [अ] वह लेगोन और रेबी-भोड़ा इमारस जिमके भीवरसे रक्षात्मक युद्ध दिशा जा छ। गण दुर्य। शिर मजबूत बनावस्थानी हमारतः प्रतिकृति कार

बाहर निष एस्म दुर्शका स्थम। -(स)द्वार-प

की क्षम मंगळ शरिषण मलामगीः मलार्गः बालुयै । --काम-वि• मुशन वादने यमानेवाना । --होस-पु भानंद मगम सुग स्वास्थ्य गरी माफियत । −प्रद्रव-9॰ इ.सन मंगक रीरिवत पृथ्या । - सथाल-9॰ कुलक धम सर्पयत्। कुचलाई कुशस्यव • -- भी है 'कुमुकाई'। क्षणली-की [ग॰] भरमंत्रक कृष्ण सुद्रामसकी। कु पान्धी(सिन्) - (१० (४०) कुशस्तुका श्वरणा सुधी १ हु सांगुरीय, कुनांगुत्वीय-औ [मं•] पता परित्री । कुमा-सीर्श्यकोरस्री ध्याम;बादम द्रवदा वा तस्या । क्रशायन-प्र• (सं•) यदाक्षि । कुश्ताधर−५ [सं] भेन्र ≀ बुद्धाम-वि [तं] बुधक्य मेल जैला शाह्य तेव। — चुन्द्रि– दि पंत्री ती६य बुद्धिवाला । कुशादगी-भा• (का) क्शाश दोला पैलाव विरुट्त । कुगाना-दि [पा॰] चैना हुआ; स्टेशऔहा: शुना दुमा । - व्हरतः-दिम-दिश ज्याद सुने हाबी गर्थ बरनशला । -पशामी-दि॰ इमगुरा, व्यक्तविश । मुद्दारिज−५० [र'] दर्शना कदि। कुशायमी-भी । [मं] रामके पुत्र नुशासे राजधारी । क्षमाश्र−पु [मं∗] दर्दाह्+श्रद्धा यक राजा ह कुशाशम्~ बुंद्धि देशका वसा दुभा नासनः देश केन सार । कुशिक−चु [गं•] गढ राजा नी विश्वविश्वते दादा के क्रानः स्पीतुन्यस्य बदशा वि स्थानामा । ক্ষবিদে∸ৰি [#•] অংনিনিদ । सार्थी-न्ये: [मं+] पाला एक शरदका स्था । कुर्गा(सिन्)-दिश् [८०] पुश्चामा श्रेष्ट्र कारमीति ह क्रशीय-त [मं] दे नुभीव ह कुर्णामगर-पु बुद्ध निर्वात्म्बर, वर्ष ।या । कुर्शामार-५ ?+ इग्रेनगर । मुद्द्यालय-पुर [4] भार भारका एउ: गादक बलमीर्ड । क्षाचीम-पु । [र्ग] स्थायार्गियोधा अलगावा वहा । क्षाम-पु [र्गः] क्यारा मुखीये अमा बनारी। -पाम्यक-१ वर गृहरव निगळ रास तीम वामन्द्र गानेसे बंद हो। क्रोस॰-दु दे ਵਾਉਦਾ, । क्रोगय-१ [१] प्रें। सम्बाधारम । किशार्थक-तेव []e] बडी शहेब उस I क्रममङ्ख्या~इ सुख्यमपुष वृक्षी । कण्या दि [का] सारा दुश्य दशः मु क्षाम का भीत्रद द्वध्यर बाम न्छ। मुख्यें के पुरुग-लाहों है हैर । कर्रमी-सी [दा] ही कार्रायकेचा कर दुगाना कार दे}} हिए मुक्ष महमा, सम्बुद्ध । ÷बाह्र=ि कृतना वर्गनेताला । सुक -व्यामा-दृश्तीमे शह अणा । -मापना-करनी जीवना विद्याचा रूपा देगा। -सङ्ग्रहा-०१मी शहरूर गिराधरा **३** वृत्तीग्रव∽ु (बाध्) क्षरधार शृरेती स्पन-१ [त] हे। स्टूम १ मेंबाने-ह शिश्र कार्य में संस्कृतना है अला है

इशसाई-कुसुम

-माधान-त शोगात कुछ ।-माहित्ती-सो+मोमार्गात। ~स्ट्य-पु अग्रमनाम । ~ईसा(न) -पु: द(त्य:र । -इंबी-मा॰ वर्ष्या । -इम्-<u>व</u>॰ सरित् । बुग्रारि-यु [शं] बंदका अर्थिक स्वन्त मान्ति। विक वहनागह । क्टरी(दिन)-वि हिं देवर रोगः धारत बेगो । क्रुट्मल-मु [मं] क्या ऐत्य द्वारता। क्यांत्र क्यांत्रक-तु (मं] नगरा। कुष्मांडी-सी [गुंग] बर्ग्यस्थाः पार्वतीः करीतः। क्स-दुदे बुग्र । इसस्य ॰-विषु दें पुरागाः क्षासङ्क क्षासाई*-मी उदान हेया कृतस्मत्तर-नी पुश्न समापार । बुमाणाव∽की आमरी गुरुणीर र हा। दिक्षे 'मुश्चली' बुमवा-बु ४६ हा ४१ देव। क्रमपारी-पु+ रेशमका जोन्या औताः रशमशा काता । कुमपादा-पु+ वर दिदू शति भी नरदारी आर्थि ही है है विरेष कर्या करणी व । कुमियन्त-पुरु एक प्रधाद्ये रंग । कृतिरयोग:-१ दे वृत्त्व री । बुर्मा-सी १०११ वर्ग। कुमरिक-कु 'त] गुरशर बेना कहाननी। गुउस निया दुवा कर्न स्था १३ दि कार्यन स्वादी(विश्)-षु महात्रमा बाग्नेव ना भूरधीर १० वय-पु महामगीः भ्यात । - वृद्धि-स्री भ्याद । क्सीदा-थी [र्ग] यहात्रनी क्रमेशका भी । कुर्यादय कुर्यार्श(दिन)-५ [मं] मराप्रता बरने-बान्द गुन्ताहै। कुर्मानार-पु के 'कुशीनपर' । बुसुब-१ [8] १६ एम रिम्मो मध्ये दाहिशे भागे धना देश अभी है। बुर्श्य-१० [मे] १सदस दृष्टा ५मा भेता सन्मणे ब जन्दना वन्ती प्रेम । बेर्समा-३० रेघनर, रव : भी 🌔] बारत हैत. पद ! मुन्द्री-दि समुद्रद्रश्यात क्रोस-उ [य] है प श्टेश ६३ करांश ४६ है। बढ़ बार्याट के बुगर राज राजाते. होने अनी हिन्दे रीय ६ अ.६२ ६६ ३६१ - बाबूब - बाबू - बाबा (स्वयू)-तु सः देश-चंदाब-तुरु शामीरो रण क्ष प्रवृत्त -प्रातिम स्वास्त्र कर पर्ध 141-11-40 47-44 414.1 -EL4-4.

सुर्वः बद्धः ।

कुपिन-वि[गीदे शीला।

बुषीसक-बुर्मि । यह बार्य- एइ बजी ।

क्युंम-प्र [मंग] बहरीरे क्षेत्रेश निवधिश ।

कुर्याद्-सि॰ (ते॰) वशसीन नशरद । पु॰ हे पुरीत ।

ब्रष्ठ-पुरु [मेर] कोण पुरावृत्ता एक दिन । -केनू-पुरु

मृत्यादुवर। -वंधि-सी प्तुमा।-प्र-पुर दिवासनी

भागक व्यापि ? —श्**र्मा—स्पे श्र**ूमर क्षणीर्द्रास्ताः।

सामका अनुकृत होता; सारवधी परीक्षा होया ।

[कस्सा-पु [कः] करानी, दिकायत कृतीत विक्रः,
वर्षाः कपणः, तकरार । —क्षानी—काँ॰ सन्तर्गत वा ।

निर्देश वातः । —क्षेत्राहः, न्युप्तस्तर-च थोवेम,
क्षेत्रसं । —प्रवानी, न्योदेन, व्यानी कवनेवाला ।

—एवानी, न्योदें —को कहानी कान सुमनेका काम ।
मु-क्षेत्रसं करना-थोवेमें सन्तरक्षी वात कहना ।
-प्रवान समास या पाक होना-शगशः खरम होना;
(सन्ना सरसा।

किहरी-सी दे॰ कुदनी।

की-०४० या जपनाः स्या। सी [लंग] कुंनीः टेस्तः । क्रीक-क्षी० चीख चीखारः ।

काक-जार-पार्क पारकार र स्टीक्ट-प (सं•) सगव देश वहाँकी श्रक आयीन सनार्य

काहिः थोड़ाः। वि निर्धनः इत्यः। काहिः थोड़ाः। वि निर्धनः इत्यः। कविकतः ≔क्षः कि की.-की.को व्याचानके साथ जीखनः।।

कीकर-पुन्नक्य पेतृ। कीकरी-स्वा क्षेत्रस्थ पक मेत्राण्य तरहर्श सिकाई।

क्षीकश्रालयु [सं] कोशास्तः। क्षीकस्तलयु• [सं] दृष्टीः एक तरस्या क्षीकाः विकासिनाः

−मुल्ल−पुक्शीः। कीका−पुगेषाः।

कीकामां -पुर क्यान देखा रस देखका वीका योहा। कीच-९ सी पंक्र शोवर-'शीव दे कव्ह ये न होच

करानक्की न्यती। क्षीचक-पु॰ [सं] पोठा शॅस; यह गाँस को समाके संस्कृत सम्म करमा करता हो। महाभारतमें बस्तिस्ति राजा

विराजका सामा क्रिमे भागने आरा था। कांचकु-यु पैरोंमें विराजनेवामी गोकी विद्वी चंद्रा करियो विकल्पेवासा बन्नमध्ये अञ्चल वेस । अर्थ में चीसवा-

बढिमारं ज्ञगदे श्रमेन्में देखना ।

कॉट-पु [६०] कोशा। --छा-पु० गेवक। --छ-पु रेग्रम।-आ-सा० कारा। --सूरा-पु एक स्वाव को वी वरतुमीक एकस्पता साठ करनेपर स्थानमें काया जाता ह। -सचि-पु जुगन्।

कीटक-पु [सं] दीवा; एक मागव जानि ।

करिटेश-न्ये [मं] होता की हा तुष्छ आणी । की हा- हु रेमने वा बनताने हार केंद्र कीट (भिड़ तुष्के ता, धारमक लाटिं) कियो धीव के वनते पैदा वोधेवाले हिंद्र कीट कृषित लीच वीटितनता च्या । मुल-काटमा-वे जेनी दोला । - पहचा- (कियो धीवारे) साविष्ठे की ही पैदा वी बाला (कियो की क्या) सह रियह बाला । - सावा-कीरीया दिनो भी क्या हिनाद लाटिको धा आला वा उससे पर करता ।

कीका-स्त छोटा और वारीक कीका सीवा। कीक्ट -म दे 'दिथा ।

कानगरक-तु दे अस्तरवाद ।

कानना - स कि सरीहना क्रथ करना।

कीता-तु [का] देव वर तुरव। -कश -परवर --पर-वि योना बरनेशाला।

क्षीनाश-पुर [में] दमः दिशानः एक शरहका बंदर ।

वि सेती करनेवाकाः तुष्यः, करियनः, भोडाः छोराः। कीनिया। –वि कीना रमनेवाछः। कीय-सी वर्षः तह वाहिकी बासानीसे वेतसमें वासनेके

हिए काममें काबी धानेवाकी वातु मादिकी चींगी ! रियम काममें काबी धानेवाकी वातु मादिकी चींगी !

क्रीसह—सी[®][व•] मृस्य, दासः गुण दोग्यता । जीवानी—बि• विको सरमान्य हामी ।

द्भीसती−दि॰ (ब॰) बहुसूख दासी । द्रीसा−पु॰ (ब) ग्रीटेन्स्रटे टुकड़ोर्ने करा हुआ मोस्र ।

क्रासा-पुरु [स] छाट-धाट द्वरुपा स्टा इसा अस्त यु --करणा-चुढ छोट-छेट दुपने, रेवा दंवा करता ! क्षीसिया-कीर्ण ह] रसायन-विधा छोता-चौदी बनानेकी विधा: करबीर स्वाचना कार्य-छारक द्वरिक ! -गर,-साब-पुरु रसायनविद , छोता-चौदी बनानेवाछा कार्र वर्गी ! -यदी-की छोता-कौदी बनाने !

की मुख्य-पु॰ कि।॰] योदे वा चंगमी यभेकी पीठका हरे रंगका चमदा जिल्हा जुले बमते हैं।

कीमृत्यकी-दि कीमुक्टका बना !

कीर-पु॰ [सं] सीता' मांछा बदमीर वेदा' + न्याना। सर्प। कीरक-पु [सं॰] कल्यि प्राप्ति। यह तुद्धा पक नृष्टा।

कीरणा-सी॰ (स॰) एक नदी । कीरशन-पु दे॰ 'कीर्रन ।

कीरविश्-वी दे 'मीनि'।

क्रीरात-इ [अ] दे 'कराव !

कीरी-सा दे॰ 'स्मेरी'।

क्टोर्ण−दि [र्श•] दिखरा हुमाः दका हुमाः भृतः रिश्वदः मारा दा चीर वर्दुचाना हुमा ।

कीर्तन-पु [सं] कीर्तिनम्य बहोग्यनः। राम इन्य बार्दिके कमा शास्त्रकारे द्वय कहनाः गार्तन्याने द्वय प्राचण करमा (मगर-कीर्यन)ः करनः। वगमः। –कार-पु कीर्यन करमासमः।

कीर्मिषा-पुर्धार्तन करनेवाछा ।

क्षीतिं न्यां [तं] यदा स्वाति नामवरीः शीक्षः द्वादा विराताः भाषा पर्वत्वः यदः भद्रान्यः तम्त्र द्वानः दवः मद् विराताः भाषा पर्वत्वः यत्त्रं । न्याः विरात्त्रः । वदार्वा नामवरः । न्याय-वि विरात्ते ध्वित्वानः स्य द्वावियाने रदः वस्त्रं वै नामधः , एन । न्यस्त्रं न्युः (१८४१-वे प्यस्त्यस्यवे वस्त्रावः स्यान्त्रं भोषः नाम स्वयम् स्यान्त्राण्ये वीच पाद्यारः ।

कीर्तिस-वि [सं] वर्धन, विश्व सहामित स्वान। कीर्तिसान(सन्)-वि॰ (सं] दे 'दोहिराको ।

क्षिक्र-पर्वोक् प्रायायांका क्षेत्राः नारुवे पहसनका यह यहमा काम हुँचाने पूची आधिको हमानने निकन्नेवानो क्ष्णे प्रायाचे प्रायोदीक गरी रहेते वह रहेते दिवस्य प्रक पूचना है [में] कीरका कीमा नेता कारुकी रहेते स्वा । तु कुरती। पुत्रमीन काम आपना नाराम क्ष्या क्ष्मा शिक्ष कामधीका प्राप्त । - काम्य (हरू) क्ष्मार सात्र सात्राच्या हरवान्त्रवार । - काम्यम्-नु

कीसक - पुर्वि । शीर भृता एक नेवन्तर देवना संदर्भ सरव भागा कन्य संदर्भ प्रभाव स्टब्स देनवाना संदर्भ कीत्सम - पुर्वि । योगनाः वीवातः

बीसमा-स दिश्कीत श्रीरमा श्री गाइना। सीपरी

स• नि:• वदी यह बाजैमें ताली भरता ।

कुकरो – ५० ५ ता । –कीर-५५० कुश्चके बाग काम जाने-बाडी नहन द्वदरा। तुरा बस्तु। –धंदी~सी एड पीवा विसन्धे परिवा कुचेके कारे हुम्बर कगावी वासी दे । --वसरा-पु॰ बाहा नियाम । --ॲसरा-पु॰ बाला मगरा । -शुक्ता-पु॰ दे॰ 'बुकुरसुक्ता । -अर्दिश-पु इचीका मैद्रम ।

क्षा-प्र सिपीका क्ष संप्राप्तः । संबो गर्गो भाषात्रः। ककी-माँ वाहेकी प्रस्ताये कानेवाका एक बीहा (

ब्रुप्त-५० [पं•] दे॰ 'तुनुप'।

क्स - मा॰ क्षेत्र । कुच-प्र [र्श•] गीका गतम (विशेषतः अवाम का सदि बादिताका) [का] एकसे दुसरी जगह जामा, रवानगी। मृत्यु परकोदनाथा । -व-कृष-व कृषधर कृष रोच्छा, मंत्रिकदर संदित्र ते करतं हुए। सु०-का दंकाया मखारा बजना-(कीयका) रवाना द्वीमा प्रस्थम करना । -योलमा-स्थानधान्य द्वाम दलाः स्थाना श्रीमा ।

कृषा- । प्राप प्रा- नार्ने कुररी, बहिने कृषा'-पश् [पा•] गती, भेदरा शारता। –गर्श-स्था• वेमतकव इपर-क्यर प्रमन रहना आपारागरी। -श्रेष्ट्-पुर्वर गनी, बह गर्नी जिसमें दक ही और शस्त्रा ही है

सूचिका-मा [मेर] मूँची। बूँजी। क्वी-सं दे 'हुँची ।

कृत्र कृत्रम-पु [में] किमी पर्शका करुरवा पहिनेंकी MPUPIEZ P

क्ञना−भ कि मधुर ध्वनि करना।

कुत्रा-पु॰ मुभरता शुन्दएमें अमाधी हुई निगरी। वेनेदा

আহতিত – বি বিব) আনিত গুৱারুলা। এক সুখন। क्य-छी • इतमेदी किया हुआहे, (देवल मार-१ र, बार-च्य है। समाप्ति स्थवहती। एक भीवध्य सुनी। पुरु [तुं] एल, पोमा अपः, बनापाः। व्यान मार्गसे शिषयाः हुआ हविदार। बरिल प्रश्ना प्रशास्त्री फारी। क्षीया शाँध देश लादका सुँगरा। बाला-भमाना व्यक्ता निवारी बीमा। मगरकारा युद्दा अगराय मृति। क्रमारको मन्त्रि। ग्रीपैः दिरम पंचातिक जानक पत्ता वह वैन दिशके मीम हुरे हो। (२० अननः बन्तरद्याः प्रतिपाः अगम्ब ६–कर्म(म्) – प्र छण, भीशशामी । न्यार-प्र राण क्षका वरनेवाया, भोगोराजा - इस-वि सदाया बार विश्वे माहि बनाने बाला बाबतास्त्र । हु दिवश - सम्बंध-हु विदेशक बार गुप्ता। -सुन्दा-को वह नरामुजिनन शीयमें भोरी की था एन जिसमें बन्दन ही। -बीनि-सीव शत दश्रदो मोर्डि कलगभी । -वश्रद्धारहः-वि आसी शिक्षा कारि बनानेशामा, नारणान १ - वर्षे न्याक्रम -क्षे-पुद्रादिरोधी श्रीनेशामा विशेष व्यर । -पालक-पुंचित्रारा अपो । ≔यादा ≔र्वच ∻पुंचित्री अपी को चंत्रारेका राज्य वंदा । – प्रका–तुक करेकी ।– सामान ९० श्रेंब, मानने सीत् का कार बाद माका लग्नकुलपु भागा मुदद का जिल्हा कतानेकचा (बीर) र 🗕 सूचा 🗝 भी जार्रे हरर मा क्षारेश (दीव) ६ -शीहम-पुत्र वृषवारे-म दि पुरी लाह अपना बीजार

स्थे । -वंश-पु प्रयास ! - बुद्-पु एवं वे पेश्व सहार्ड, अवर्ममुद्द । -बोची(चिम्)-इ॰ शृत्य रहने वाता। -श्वता-सी क्तामेरी युक्ति देश। -मप-तुः वामी शिक्षा (बी॰) । —० कारक-तुः बाबी विदा वतानेवावा (री०)। -- विद्यापण-पुर बाला निदा नियायमा वा पराजा (क्षी) । 🗝 प्रतिप्रद्रस~व वासी सिद्धा लेमा (क्षी०) ! ~ जिपि-भी०-देश ~ केवय-५० वानी दरवारेत्र !-शास्मित-५ शास्मिद का यक भर काला शामितिः वमरावद्ये ग्या ने-शासक प्रश्नानी भाषापत्र वरमाम । ~साद्यो(शिक्)~प्रव श्रुद्धी गराष्ट्री वैनेवाला । ~साष्ट्रप-पु: श्रुद्धी प्रद्यातः। ~र्थ-वि॰ भीटीका सबसे **क्या अवस्थित जो** सन् ण्यः क्योने रिवन रहे अनिरिमानी । युक दरमान्या । −श्वर्थ-५ सीरामदमाक्षीनाः क्टरू-त [र्ग] एन्ट, भैगा। बढाम निक्ना दुवा मामा काला क्योर एक संबद्धमा । कुटकारुवाम-पु॰ [र्ग•] दश्तिन, बनावरी क्रवा I **ब्रुटल−न्धः प्**टनेको क्रिया वा भार भारता *पीरमा* । कुरमा-म॰ वि कुसस ईग्रांने दिनो चीवकी समाजार पीरमाः सिम-पश्च आदिमें शंदीमें लीना निश्रालमा मानमा-पीरमा। १पिया नरना । शु॰ पृष्टपुरवर मरा होना-(दिमी होच वा ग्रमधे) श्रीन्धवता अन्य-विद्या होमा ! कुराक्ष-५० [मं] शीमा या बारा भरा हवा बाता थी बैंक-वर निनी गला वसने ही जिन हो। बनाया हवा माधा । **क्टान्याम−९** (शं०) वृदार्थवार्थ शंभी शावधीने हरिङ

क्टामार-४ [नंग] नश्मे करायो छन्तराये शासी।

हरशामाः बानुव शुर्हो दे निष्य यमा दुवा मंदिर (बी०) र

क्रायुध-इ [म] छरी आरिके मीनर शिकामा हुना

ब्राजे−५ (सं•) कारी सम्प्रमें II आनेशामा गुइ #र्व ।

बरायवात-५ [ग] प्रतथी मानवर बंगाबेदे निर

बुद्ध-पु व्यक्तिका राज जी मनाईदेव साथा मना है।

कुर्या-बु भूग राघ आदि बुशरमः रही निक्रमी पीत्रै।

-बारबाट-प नदी जिंद की भी है। बगुशार १ - पुरासी !!

क्षप्र−वि क्यों, निर्मेद ३ पु ४०का ४७ भाग, परिशा बीज केंनेशाहर गरीबा १ - आह - (१० मरपूरि निगरी

कृतिका-नी [] दीना शिवार मान्ति [धिवाना कृतिहा-दि [ि] पर मंत्रुवित्र ।

बुगुन्ताः 'प्रवाद सन्द तीन भारत्याचीराया नवयीताः

कुम्बर्-सर्वेद व्यक्ति नुवस्तान परमा

चनाना द्वान सरदा भी दशा ही है

वशामी ।

द्यविचार ।

क्टी-स्ट हुने ।

द्व पूरा पर ने के बन्द ।

मक्रमध्ये कृष्ट भ भ ने ।

कृष्टिनेश्वल-१ (४०) वात्र व

acci-do [up] go Lac 1

क्रंबरिजी-की [से] दुर्गा या शक्तिक एक रूपः भूका-बार चक्रमें रिवन एक हाकि जिसे तेत्र और बठियोगका साबद बगाबर अहर अमें लगानका गरन करता है। अबेगी। सहस्र ।

क्टेंडसिया – की एक माध्कि छैं ।

कृंदली नती [सं] कम्मकुंदली कुंग्किमी बसेबी; सॉफ्की

केंद्री। रेंडरी ।

कुंबसी(किन्)-वि [सं] स्नावारी। कुंटरावार। यो क्रंडल था केंद्रे मारे हुए हो। लपेटा हुमा । पु साँप मीरः बरण; छिव; बह हिरम बिश्वके स्टम्म्स विक्तियाँ हों।

हुंबा-पु॰ मादा वड़ा मरका क्रोंदा । मी [सं॰] दुर्गा । कुँबासी(शिम्)~पु [मं] आरव वेटेकी कमार्थ धानै-

स्टेरिका−लो [सं] मटका घड़ाः क्रमेटलाः ∮ँडी ।

क्रंदिन∽पु॰ [मं] क्टिमं देशको राजधामी (वरिनणी बहाद राजाकी पंधे भी)।

क्रीकेया-न्त्रो द्रीरक कार्सानेमें सारी मिट्टी मिला पानी

रसनेका गरा वे 'ईवी'।

क्रडी−श्री पत्थरका बना योल्या, गदरा पात्र जिसमें भाग भेंद्री बाडी है पश्री। एक तरहका जिल्लाणः वरवानेकी नेनोर वा साँधकः कगरके सिरेपरका क्षकाः सर्रो मस । -सॉटा-प्रमोप पॅरिनेदा सामाम ≀ सुरू -साटखटामा-दरबाजा सुरुवानेंद्रे छिप छाँकल्ब्रे इस दरह दिखाना कि कोरको स्थापन हो ।

क्ट्रंच−द्र [सं] स्त्रेतिहाः माधाः क्रोपः प्र्रुं एक अकः

वासना । कुर्तक-पु[सं] सिरके शका ध्याका दका की। यह गेष्डका एक प्राचीन समयरा एक रागा गहरपिताः सूत्र भार ।-धर्यम-५० भँगरा । वि० वाक वदानेवाला ।

इंदिसिका-मा [सं] १६ पीपा मनराम आदि काटने

मिद्राष्ट्रमेद्धा थम्मच ।

क्रीतारी-मी एक तरहकी मधुमकती। [मं॰] सुरी चाकू। क्रांश-न्यो दे चुरी ।

दुर्मिमीय−६ [मं] मानदशका राजा विश्वन पूजा-बुंदी भी योद किया था।

इंती-मी राधी। एक तरहकी मनुसक्ती। [मं] शुभि

हिर भीम भीर मर्जुनको माना पूरा।

र्क्रण~प [सं] रुक्ष पीथा जिसके शुल वॉलीके वपमान माने गर्ने 🗈 बनेरका देश क्रमका विष्णुः जुनरकी सी निविधीमेन एका की भ्रत्या। सराह ! -कर-पु गगारभंदाना ।

पृष्-विक (का] भीवरा गुरुषाः संद । -जहस-वि भागुद्धि मीर्थ व्यवस्था। सुरु न्युशस द्वारास करणा-

बहुन बष्ट बना सनामा।

चैदन-५ सारिम और दमक्या गुभा साला। शुद्ध स्वस्य मीनरा पशर । दि यप ठुए माने जैमा शुक्र और निर्मेणः वांतिबुक्तारस्त्वाभंदरः --साङ्ग-पु कुदनका पक्तर बलानेबाला अहिबा ।

3 (431-3 & Alea 1

इंदम~द• (त } (रनात ।

कुर्वदर~पु [रं•] निष्णुः यक रूप वो दबाकेकाम काला है। क्रॅबस--प्र•ण्य बेरु भीर एएका फक्र विस्की दरकारी वनसी है।

क्रीदा-प कि।•] क्रकशैका यहा और मीटा दक्षा। वह मोरी भीर अपडे जबको जिसपर रक्षकर कुंदीगर कपदेपर कुंश करता और कारकसान मांस कारता है। बंदकता कारका बना बद्ध भाग भिन्नमें भीका भीर नहीं जही होती के बरता काठकी वेदी। क्राठः विदिवाका वेसाः पर्तगका बाहा क्षीनाः कुरतीका एक पेंचा खोवा। सुर - (रे)प्रोदः, शीर या बाँचकर उत्तरमा या गिरना - बदरना, गिरना। (प्रशिक्षा) परीक्षी समेरकर बरक्षीपर नामा । ~शीखना~ / वक्षाका क्षेत्रे केळाकर बक्तको चेटा करना ।

कुंदी-स्था कपहरी शिक्कर हुए करने और असक लागेके किए वसे सँगरीसे पोरना । -शर-प्र बुदी करनेवाका । **मु॰ −करमा−श्रूप पीटना, पूरी मरन्मत कर** देना।

इत्र-त (सं∘) पदा।

कुरूर-पु (छं॰) वक सुगंभित मीद । कुनुद-पु [र्व] शहकी वृद्ध क्षका निर्मास । क्रीरमा-स॰ कि खरायना धीकना ।

करिरा~प दे 'क्रवेरा'।

क्षी-सा॰ कारफका बलकंभी। यह देत ।

क्ष्में न प्राप्त कि सिर्धिका बना। बस्तमः दाशीक सिरका कुछ प्रमरा हुआ भाग को उसके दानों और दीवा दै। ण्ड राशि[.] असावका एक सातः एक पुण्यजनक पर्न भी दर गारहर्वे बरस पहला दें। क्रंमक मांगामामः वेहवा-विता शुरुशका यक क्षत्रोगा। यक राग । 🗝 वर्ण – पुरु यह विकासकाय राहस भी रावनका छोटा मार्च था।-कार-9º कुण्डार: यक संबर बाति: स्त्रीप: बस्य । -कारिका: -कारी-लो॰ कुमारको लो। कुछबी। मेनसिछ ।-जा,-बन्मा(नमन्),-बात-९ बगसन होना होपापार्य। ~दासी−की दुश्नो।~घर~दु दुंगरादि।~पद्दी~ सी॰ द्रीयपर्वा ।-श्रंडक-प्र अननुमन्। व्यक्ति ।-योनि -g अवस्थव स्रवित होगायार्थ ! - स्ता(तम)-ge मसिका एक रूप । -शास्ता-सी मिट्टीके बरतन बमाने का स्थान कारलामा । –संभव-१ अगरप सुनिः

होणाचार्य । [मं] मान्यपासके अनर्गन साक हुँह ४-र्कंसक∽न्धे

बरके नास रीक एउनेकी किया ।

कुमरी-मी॰ [ग्रं॰] एक दर्गा । कुमा-सी॰ [मृं॰] बहबा। बागदती नामक बोवधि ।

कुर्मिका-मी [सं•] छोटा बड़ा बरवा चल्युमी। घर बरबी कता। यह मेबरोग विकासी काबकना एक शिम रीय ।

कुमिस-पु» [ग्रं०] सेंव शंगानेवाणा भीरः इमानदी रवनाकी चोरी वरमैवाना। मान्या अपूर्ण गर्मने पता बालकः यक सरहर्वी मछली ।

कुमी-सी [सं∘] छोत पशा दशा धनारदा त्य परिमाणा एक करीन पाना चनरुंभी। सुनईसा पेता सनिवाधे। दंतीः घोटर । -धानक-मु परासर अप रसमेशना । -धाम्य-पु ६ निमे हे साई हिए रसा

पाः बॉबः युद्धमें विका चना भेंड । -कुम्मी(शैन)-वि मो भारता काम कर शुका हो। दश, कुछक । पुरु (का-प्रवसे मुक्ते सम्म्यामी परमेश्वर । - बाग्र-ि जिलाहे कामना पूरी हो गरी हा ! -कारक#-वि 📱 कुल कार्य । -कार्य-विश् जो भवता कार्य वा अमीह सिद्ध कर चुका हो सप्टलमनीरव । –काल-विश् क्षवति विद्योतिन कर नियम काठतर अध्ययन आहि करनेवासा। पर निवन काल अविष ! -- ७ नाम -- प वक निवत समय तदह निप भपनेदी दिसीका दान बनानेवाला व्यक्ति। ~करय∽4ि सफनगरीरव इतार्थ । −द्यप-पु• राशिशाः । ∽पन−रि॰ मेदी तकार व साननेशनाः भारता। 🗝शीव-वि 🤻 'बराग'। −ल-वि मिक्री तरकार माननेराला एडसानमंत्र। -श्रेड०-व बमराज । - न्याम-पु । निवन काम है छिए हिमीका द्यागम्ब वा सोहरी करलवासाः -को-वि विकरियशः शानी । -सिद्द-दिश कुन्ध्त । -सिद्दचय-दि विसर्वे कियी बायक्ष पाता बराया निवयप कर लिया हो । -<u>प्रंपर</u>-दि॰ रागरियाचे प्रश्नन । -पूर्व-दि किया दला । -प्रतिज्ञ-विक क्रियने क्षेत्रे प्रतिका की ही। मनमन्त्रः -कुम-नि सर्ज । हु श्रीत्यपीकीः क्षेत्रांचराः। –प्रक्षि-विश् देशः इत्तर्यः।–साल-प्र रद नरहका हिरला कलिकार ५५। आरम्बर । −गुग्य~ वि॰ पंडित विहास । - सुरा-चु नारी सुगोर्थेने परना स्त्रहम् । ~थोस्प−हि० इंडमें सन्मिनित हानेवाला । −रप−दि• सद्ध । −सम्रक्त−दि० निगरा अधा दिया गया हो। विदिता हो अपने शानींगे प्रशिक हो । -- कर्मा-(सैन्)-५० यह वृष्णिवंधीय सदारथी की सहाभारतमें बसीबमदे प्रथम सहा वा और जेपने बना रह गया। -बिइपमर्पि-मा शहर श्रीमंगका क्षेत्र सिक करके मुनिर्मग करना (बीर)। -विद्य-वि विद्राल । -धीर्य-वि+ वीपशानी वन्ते । धु सहसार्भृतका विगाः -बृद्धि-नि (शब्द) जिमदे आहि गारनी पृति हो थी। --बेंसब-(६) वनत बाउ बरन चनेशना !--बेर्श(दिस्)--दि । इन्द्र १-वैश-दिश्वीर क्यार तथा पाने 🛍 नग-गध्य । –शिष्य-वि किमी हिल्म वा प्रथमें वरण्ड सम्बन्त । - जरह-दि जिनही भूदी मुदा से गरी ही (के)। -बीच-वि नियने प्राणितक गरनी अन्ति इर बर दो ही। --इल्ल्यार्विध-श्री निर्ण का मालाव रसदर दो प्रावेशांनी पद्मी स्थि (क्षे) । -श्रेक्स्य-दि िल्ल कोई संदर्भ निद्यम किया हो ! - मंत्रा-शि जन्म इबार द्वीराय भाषा सुभग विनयी तुन्दि रेती है। र -इस्टिंग - विकास अपने भार मन्त्र १ वर विके ही । -सर्वक्षका नगपविका नगपर्याः नग वर्ष स्थ विलय क्षी म क्ष्मिके क्षीरत रहत कुल्या दिकाह कर जिला हो। । ~हरन् =हरन्द्र=हिः वृद्धनः वर्णस्यमे पुदान । इमध-दि [4] दशमा द्रमा बमावी। सन्तिथ (स्वर) । पुर बर्ग्स सम्बद्ध सम्बद्ध - पुत्र - पुत्र ने प्रिया हुन्। 37 384 F हरामा−सः [सन्, व्यक्तनः अस्तरः क्षत्रमान्त्रे -सं १ दे 'र्यान्'।

স্বাক্ত-বিভাগিনী বিভিন্ন : क्रमांक्रसि-वि मिन्ते वा प्रेक्ष चौर वा रेश रह हो। न्दी छात्रवसी । करतोत−वि [रं∗] भेत या निभय वर्नेवाला । पु• वम-विद्यांता पूर्व व समें किने दुर शुभाश्चव वर्म विरुध पत इम जन्ममें प्राप्त श्रीर दानिश दानिशार । कताकत-विश्व (संश्री दिया और म दिया द्वारा अंग्यः किया बन्धा । कृतागम-वि० [ते] यान्त, बुशन्त । बु० दरमामा । कृतासा(ध्यम्)-दि॰ (वे॰) गोर्म्य मारामः शहरिता। कृतास्त्रव~प भिर्ण भीग द्वारा वर्मनाद्म (श्री)। कताच-प्र- (सं) रहाया द्रभा अस । क्रमापराध-दि॰ वि] अश्तरी । क्तामय−वि (००) रातर। वपाया द्वा। কুলামিখন-ৰি থি | সনিবিত ট্যালয় ^কৰ চ पण्यासः । क्ट्यार्थ-विश् (सं] इनदाने सहस्रमानास्य संस्था। कृतासय – विश्व मिं] धा कशा तम गता हो । तु मेल्द । कुलावधि-दि [स] विषयो सर्वद सामा निवन है । कृतास्त्र-वि वि । क्रम-सुध्यः क्रम-प्रधानः काम-विदापे कृत्व । हुनाद्धान−दि [नं] शे पुराश वा शश्नास यस हो । कृति-नी [4] जिया कामा रचना रची मानी हो वरपुर शहर अभिवादः अध्यक्ताना हो स्थान अधिका यान (ग): बची र सी गरमा। वयः गरी : -कर-प्रश्राचम । क्ट्री(लिन्)-(१० (ग.) क्ट्रायं) माम्बराहा रिगने भक्ते क्राम निवे ही पुष्तवात्। कुशुन्ना भाषाकारी है क्रमाएक-(१० (१०) अस् । क्रमोजाह-दि वि दिसाहित । कृष्य-त विशेषानमें समारत सदा और विशेषम समाने बान प्रान्दीहा एक वर्त । विश्वहरी अभाग्यामा कर्त (बनन वर्गवायक शहा वशानेमें व्यवहरू-प्रेन 'मबार्य, Annia !! कृष्य-निकृति विकास प्रमासिकार अधिनारिक । कृष्टि-मा (म्र) शन मुनवर्ग भीत्रक कृष्टि मधन । –बाम –बागा(सार)–५० छि । कृतिहा—भे ७ (१७) १७ अद्वर्षाद्रेय होता। । कुरमा--वि (tio) करने भाग्य जानेन्द्र हु । स न्यानी श्रामधितित कर्वे (पूजन हश्य चार्यः)) द कामन्यः अनीत मन्द्रि प्राप्तक (स्थान) प्र कृत्यका-स्रो [स्] आहराजी र कृत्यान्त्रयो (०) बन्तर कविवार शहररक्षे यव श^तन बा देवें भी अन्तियार द्वारत विभीका सार्ज किए चन ब्राजवित ए र बलक्त की अभी है। करीता की र अनुष्याण मु पुन्त के प्रमुख्या प्रमुख्य हुन हुन हुन मुक्त मु क्रमण्डल-पु () वर्गसम्बर , बूर्रियमे-हि (६) बनका बुक्ता अल्हा मेर लिए guing aband men' e fear die fatt Im

ठीक म हो। नासमझ । ∼बेस्ना∼सी० हिं∗ी सतिकालः क्सम्म । -बोस-प विं ी बाद कठीर वा अमेगल इयम । -श्रोसनीक-विक स्पेत कमापिणी हरे वीस बोलनेवानी । -भा-न्यो देश क्रममें । -भाव-प बुरा भाव हेवमाव । - मंत्र - पु॰ बुरी सक्षाह, बुवाठ । ─सति—भी दर्वतिः अपनी तरार्व करनवाको तकि। -सारग्र-प दे 'क्रमार्ग । -सार्ग-प कपदः दरा रामा ।- व्हामी(मिन्) -मार्गी(गिन्)-वि अवर्ग अमेरिकी राहपर आनेशाना कुवाकी ! -मूल-पुरु रावगकी मेनाका एउ बीडा बुर्मुछ । न्योग-प् अध्य योगाः समिक मंदोगा । -श्रीगौ(शिन्)-वि प् वीग-सायम्बा होत करनेवाका । -रव-वि , प दे । क्रममें । -रस-वि जिल्हा स्वाद सराव हो या हो गढा हो। -शयक्ता दे 'कराह' !-शह-सी [वि] कुमार्ग, क्ष्मर प्राप्तर राष्ट्रा ! -राष्ट्री-वि॰ [हि] क्रव्यगामी ! -वोति-श्रो । वस वंगः सिवनीय प्रवा । - स्सा∹वि विशे विसका रख **व**राव हो, नाराव। -सप-विश् मरी देशी प्रप्रतनाता। नद्ययन्त्र समा नदोगन्त ष्टितः दश्साप्य रोग । **–धस्य-**प॰ तरा स्थल जनिष्ट सम्बद्ध विद्व । वि अदे अक्षयनाता !- इस्हाणी-विश् न्यीश बुदे बहाभन्यस बद्धनगढी। ती श्रुरे स्थलनाती सी। -सच्चम - वि पूर्व देश 'इक्सम' ! -सच्चनी-वि की [(हे•] दे• 'फ़्रस्थनो । ∽र्वन−प सीसा। ~वचन ~धारम~प्रदर्शनन गाली !~वर्ष-प अति वृद्धिः -वस्य-प दे अमने। -बाध्य-दि म कान योग्य । पुर गाली पुर्वचन । -बाद-वि इसरोबी निवा बरमेशका शीष । -वासना-खी वापमय बालना । -विचार-प्र• तुरा इतित दिवार । -विचारी(रिक)-नि हरे विचारवाका । ~कृत्ति नवी • निरित्त सावस्त्र । विश्वतिक्षेत्र भाषरणवाता। ~वेळी~को हे अध्योतः च्चेस-प्र• नमप्र वेग । -वैद्य-प्र नद्यानीय दंतम विकास करनेवाला बनाई। - सामन-९ इस सक् मनंष कुरास्त : नसरा नय बरेबा हंग, वरी शहबत । -संगति-मी इरो सोस्पनः। -थंस्कार-धु विचयर परा हुआ तुरा अतर विश्वमें जमी हुई कुबाएका वा क्या-रचा। -सतुम्ब-पुरु अपराकुम। -समय-पुरु बुरा समय अवसरा कुरेला । -साइत-भी । [हि•] बुसमवा इत मुद्दे । -माधी+-पु॰ दुरा दे। कुन्य ।-सूत•-इ. इरा मृद्धः इरा प्रश्वः । -स्त-विश्व दुरायारी । ~स्ति~सी भीरातामा दंदवाला दुराबार I

कुत्री-पु भूगमंत्र कन या शत निकासमेके किए शीता गवा बद्रुत गहरा और सावारणता शीला (कथा या पत्रा) मा क्षाम् -गोदमा-दिमीची हानि बुराई बरने-का क्यांव करना। रोजीके किए महमत करना। ~(ए) की सिद्दी कुणैंसे लगामा-वर्षको कृमा^ड वही रार्ने 🗈 वाना ।-प्रीकाना-दरेशान कामाः शनाशमे शीहाना । ─शर्रेडचा=दिमी भीजडी कीद्यिएमें बहुत जगह अस्कृता क्षण हेरान दोना । —पस्थ प्यामे **आ**मा—सःवसिक्रि नगरसे निराध भीला । ~में गिरमा~जान रैलक विष कु⁰मे कृतमाः जात-कृतकर विकामें कछना। —मिं | कुकुमानिक-की [संक] भूसोकी भाग तुककिन।

कालमा, में बर्बेखना-संश्रीको वरे परमें बाल देना लाको कियो। वर्शन कर देशा । में कॉस कासमा-बबत हैंदता. स्रोजना। में भाँग प्रक्रमा-प्रदे प्रका व्यक्षक वन काना, शबकी अवस्था मारा जाना । कमाबी-स्वी एक तरहको सब (सेवीत)। क्रमार-पु भाषिम मास । कमारा-वि॰ कभारमें बीनेवासा ! कामारी-वि व्यक्तिमें तैयार होनेवाका (पान व्यक्ति) ! प॰ एक मोटा धाम जो कुआरमें पत्रता है। कड़बाँ-त्या शोरा कुमी। क्ट की। दमल बेसा एक पीवा विसमें स्पेद कुछ सगरे बीर रातमें किन्तं है, इसर । कुक्टी--सो॰ यक सरहको कपास जिल्ही रई इसके सँवनी रंगकी बीसी है । कक्षणा - व कि सिमाना क्रबद्दरशी क्रबदेश-मी वैदास ! क्षकडी-मा॰ कृष्ये मुख्या अवता भवारका प्रमा सुराही I क्टबन~प वि विक करियद पद्मी विससे बनानियोंके विश्वासानमार पंगोतको स्टप्ति हरे । इक्कम−प [र्न] एक तरहरद्रे धराव। ककर-य॰ (ले॰) साना प्रकातेन्द्र एक येत्र जिसमें करे भी में एक शांच प्रक्रमी का सकती है ! **ककरी**≎−सी॰ इन्ड्रहरी, प्रयो । कुकर्रीहा, कुकर्रीचा -पु॰ एक पीपा विसन्ने पत्तिनी दवाके काम भारी है। बुर्फुदर, बुर्खुद्धर-४० [सं] वयसपूर कुरूरोगा । कुकु मंद-प्र [नं•] गीतम हमसे पहने हुए एक सुद्ध । बक्त करूर-प सि । समामंदार-प्रक्रिय कम्बाराम करनेवाका । कुक्रस-त [र्थ•] एक राम, क्युम । कक्रमा~शी• (तं) ण्ड शागिनी *६*५मा । करूर-पुर्व (मेर) यादव ध्वत्रियोसी एक धारताः यादव राजा अंपरका पुत्र विसम उक्त द्वारा प्रशीपक बनपर वद्यार्टः क्ताः प्रेविषयीः एक स्रवः -म्बीसीः-डॉसी-स्पेश [हि] यद तरहकी बहुत कह दमेवाली और मैद्रामक स्या स्त्रीमा । ->स-५० माबारण दोनोने ४० मोचे निधननेवाला अविरिक्त होता - इंता-विक [कि] विसके कुन्दरंत निकल हो। - निहिया-मा [िह] कुर्चेडी मीद यरामें भारवेंटी सुरू चानेवाचा मीद। -सँगरा-प [दि] भेगरेवा । -माछी-मी॰ [दि] वेके तरहकी भक्ती जो बाद कुले भारती क्या करता है।-मुक्ता-पु (ic•) एक वरहका क्षेत्रा जो अरमावद रिमोंने वेहोंकी जहाँके वा कारको जगहोंने उमा बरहा है ब्युर्सिंगे−शी० हे कुनुरवाही ।

कुर्या-स्त बनमुगी।

कुषुणक-पुनि | जीवीमा रक्ष रीग रोहा ।

स्मर्थके होरेनाह दुवर्शन मरा हुमा गुण्हा ।

बुक्य-पु [र्न] भूगीर भूगीरी भागा विनगी कृतवा

हृष्णक~केकावस -बसि-गरे गुनाराँग । -कोइस-पु॰ जुनारी। ~गंगा~गो कृष्ण भरो। -गंधा-सौ सीमोरश राहितमः - गति-५० भागः - गर्म-५० कारकमः। -गिरि-पु॰ भौतर्गिर । -गोघा-सी एक विशेश बाहा । -चेह्न-यु० वाम्त्रव । -शृद्धा-वृद्धिका-स्ती० पॅपपी । -सर्थ-पुरु होहेदा येन । -संतुम्ब-पुरु थक्त्य महाप्रमु । – १९६वि – स्तो व्याप्त शृतका समहा । - बटा - की बटामाग्री । - ब्रीस्फ-द्र स्थाद बीरा । −ताद्म-पु॰ व्य तर्हका भेरम ।−ताह-पु व्यक्तरहरू। हिरम । –देह--वि• कृष्णकाय । वु भारा ।–हीपायम--पुरु महानारत और पुरागीके रूपविता वेदन्यास । --धन पुर भारिछे कमाया प्रभा थश थाएकी कमारे । -पश-पुर भेररा पाता अर्जुन । -वर्णी -प्रस्मिका-न्ती । व्यक्ति परियोदार्थः गुरुशी । —व्यक्ति-पु । अस्ति । -पाक-पु करीशाः -पिगला-सः दुनीः -पुच्छ - पुर्वे महन्ते। - गुष्य-पुद्धाना धनुरा। - क्रम - पुन्ता । - कुला - सी मिर्चनी शता एक बाह्य । ─बीज─पु तर्व्या —सस्ट-पु कृत्व्या सस्त, उवा-सक्त । -भूजंग-५ करेत योष। -भूम-५० काली मिट्टीबाकी क्यांस ! - अदा - श्री कुरही ! - श्रीटक-पुर भौराका बाला भाष । - सुन्तः-बन्तः-बन्त-वन्त-विश कांचे मुँदवाना । पु अंगुरा एक दासव । - सूरा-पुरु कामा वा कार्न वर्माशामा (हरम । --वन्नवेंद-पुरु यहः वें ६ के वें। भरोमें ने यह । - बास - पु ऑग्र ! - इक्ट -षु गहरा साल रंग । विश् गहरे काल (गयह) –गद्धा – यस्मिरा∼भी रद्ध शेश जनुदा । ⊸लयच~पु बारा ममद । -सोइ-१ भुंब्द । -बणी-मी॰ इत्या महो । न्यक-सारबि-इ अर्थेम । −मार-पु० कृष्ण गुमा भूकता शीक्षण गिरवा केता । - व्यक्ति-पुर तमान परा । **मृ व्हार −पु** [र_ाक] बाने मृतका नवी; बण्टी शरमी । कृष्णम-५ ,कृष्णस्य-भौ [गं] गृंदा । कुरता-मो [मं] द्वीपरी। रहिम जारमधी पढ अपी कुण गंगाः बाली दाराः दुर्गः बाला पशिषोदाणीः सुक्रमीः दित्यभी। कामा भीताः कुरकीः शाँः अभिन्तां ७ जिल्ली मेरी गढा एक शरका भीता गढ गंग्यन्त । **करशासार--मु० [८१०] देशमध वर्शमः गोलगिति १** कंप्पाजिम=द्र [गं+] क्ष्मे पृत्रा धर्म । क्रव्याभिमारिका-मो॰ [र्ग] केंश्री श्लीहें अजिएए

बरनेवाची महिद्या ह

विदि अस्मारमी।

₩च्यापस~५० [त] शेराक

कृष्णाबाम=५० (मं•) अवाधं हुए। कृष्णाहर्मी⇔से (००) बाद कृष्ण कर्मी कृष्णकी सन्ध-

कृष्मिया(श्रष्ट्)- भी । (११) प्रश्विया ।

हे**च्याप्र−५** (८.) धर तरप्रकारकार

क्षण्यी – भी ः (तीर) सन्दर्भ राजाः।

क्रमाञ्चर=पु (४) सुराज्यस्य स्थापने वर्ता ।

करियाद्या – भी [स्] संपर्ध सरवे प्रशास पर्धा ।

कुम्बर्धिकान - वे के ब्यानिका के बहुति का न्यानिका के

[गं०] ब्रह्मूनर् १ ष्ट्रपन-दि॰ [सं] रोती करने योग्य (शृधि) । क्रमर-१० [मं] रे इसर । केंच-तो कुछड़े विन्तेशे धाराव। मु०-करवा-पि"नेकी तरह पीरामा १ कॅनुमा: कॅनुवा~पु॰ एक वरणाती बोश क्रियुधे देह (का श्रुप्तिको भीर करणाग एक विश्वा लेनी होती है। ब्येशीवे पैदा हो जाने और मणके साथ बाहर आनेरामा बीरा ह -- ध्रीय-पु॰ वह होर निस्त है अपनेक्षे मात्राचे सरक्ष क की स्वरक्षर । इत्रिल−भी दे 'देव्यो'। ईकुमी~मी साँपध्रे राषा वी बापमें मुगद्रश बर्प आप गीलको एकनी गिर जाती है। वि रेज्ह बैसा । - सम्बद्धा - पु १६ तरहरू न वहा बी सी बरेने बन्ता है। सुरु-शावना-सांख्य वेंबुरी होत्रता। -बन्ममा-र्वेष्मी सारना। ६९८ नशम्या दरस्या र क्तिर्र जनुरू एक तरहका यन । क्ष-प [ब] तेहबर घेर । केंद्रेक-3 [५] पालब वृश दक्ष गरहवा तेट्टा दक मारा 47-3 t di 1 केंद्र-पु (गं॰) कुछका मध्य थिए। मामि शरपाणी लामा मुस्य स्थामा शिमी बस्मुके बाबाइन विशला प्रमासक रवास, स्टिशः अम्पर्शतकोमे क्षमान पहुना चीवा मार्ज्य और दम्रचं स्थान । -न -गामी(मिन्)-वि+ देइसे और जानवाणा । –श्य-विक बहमें रिवर ।–स्पान-पुर्व बॅड्रक्ष स्थास १ वें ब्रापमारी(रिम्)-६ [६] बैदन दूर बादेनी প্ৰস্থৃতিবলে। । केंद्रामिगुरर−(र (#+) वेंद्रको ओर आनेको प्रशृतिगरा । कॅब्रामिमार।(रिम्)-वि (१०) हेंदरी केंद्र बादेशण। केंद्रिश-वि+ [श+] बेंद्रवे रिक्षणः स्थानविशेषवे स्थारेषुत्रे रे ब्रेडी(दिन्) -दि [म॰) ब्यमे रियम । बॅब्रीकरण-९ (तक) बेरिन करना एक कमर सत्तन अवा करमा वह दावरे, दश न्दरश्यामे माना । बॅलीमून-वि (ते) बहित र क्रेंन्रीय-वि [र्तन] वेद नरुदे। बेंद्रमे रिवन: सुरुव र के-पु 'का' रिवर्तनका बहु । रे सर्व कीता क्षेत्रां-मधे कीमा केररा-तु कोनगर। 1 37" \$ E- 316 क्षेत्रण-मर्ग क्षेत्री शिक्षी क्षेत्रका-मुबद्ध के वाचार होई प्रकारी विश्वदे मार राजे हेर्न है। -(दे) की बास-रेनेरांतरे व न ! क्षेत्रसन्त् [१०] एड बार्याम् अनुरा अनुराद दश (ब्रास्टिंग): क्या देशका र्वतवार्गी है केशमी-मा (१९०) देवर देशमा भार रत्तरके पर्म क्षेत्र प्रश्तकी दापा । हेक्स-दिः {१}रंबरप्रभार । पुरु करो वर " ७ वर्षः । बका-स्ट (००) हो।यो वें गो र

क्षेत्रपत देविक केवा(क्षित्र)-पु (रोबेपा

बहियाकः।

क्रिटिका-सी॰ [म] कुरिया।

कुटिया∽सी० बास-फूसका बना छीटा वर कुटी। कटिर-पु० [मं] सौपती १

करिस-वि [मुं•] देवा; छनी भारताब; बुट, सीर्टी ! प॰ एक बर्जबन्तः तगर । -कीर-प॰ साँग । -कीरक-पुर पद शरहका मरुवा। -गति-सी॰ यह बुका देवी मारा । वि देश पढनेवासा ।—सा−सी० वर्ष । – संवि

वि छोटे म्बमावका, दुराभा । कुटिकक-वि० [सं] टेवा, सुवा हुवा।

क्रटिसता-सी॰ [६०] टेवापम सुटाई।

करिसा-सी सि] सरस्वती मदीः भारतवर्षकी शह माचीन किपि। एक मेवर्स्ड ।

क्रिकाई ३ - सी क्रुटिनता ।

कुरिक्किन-भी । [मं०] सुपदे-सुपने पांच दवायर आगाः

कोदारकी सट्टी।

क्षरी−सी• [धं] मीड़ धुमान क्रुटिना होनडी। दनेत हुदक एक गंधहरूब मुरा। यह मधा हुदनी पुरस्तुच्छ । -चक्र,-चर-पु॰ सम्म्वास्त्रिके भार मेद्रीमेंसे यक भी द्विया रहाका त्याग शरी करना और अपने कुछ कुर्दुनवालीकी छोड़कर इसरोक्षे वहाँ मिस्सा नहाँ बरता । -प्रवेश-प मास्रश्रीक दश्श्विक्सादा यह अंगः विग्रेप विभिन्ने निर्मित प्रदीमें बन्ध-विक्रिमान्हे स्थि

रहना ।

कुरीका∽स्रो [सं] छोता वर ।

कुटीर-प्र• [मं] कुटी कुरिया। एविकिया। एक पीचा ! इसीरक-यु [सं] इसी।

कुर्दुब~पु [में] शक-वये शंनामः कुनवा परिवारः इंद्रेक्टा व्यक्ति, श्वत्रमः श्रृंबंधीः परिवादके प्रति कर्नव्यः

माम;समृद्दो −कल्कद्व~ पुरुदक्तद्दा हर्नुबक-पु॰ [म] च 'कटुंब । एक जूल ।

हर्दिक हर्द्यी(विम्)-इ [शं॰] बुनव, वाल-वच्ने वाला। कुर्दुवका व्यक्तिः हैम भातः करनेवाका (ला)। दिगान ।

क्टुंबिनी~सी॰ [सं॰] गृहिमी; बाक-वच्चेवाकी स्तीर धीरिया नामका सुव ।

स्ट्रमी-स्री [मं•] क्रमी ।

इंड्रमण-४ 🐧 'कुडुंप'। --क्रमीका--पु॰ वास-वच्येः

इटुवा-९ क्रनेवासा ईसकी वर्षिया कर्मवासा । हरीमी! −सी धान क्रनेका काम कुरनेकी अजरण। -पिसीमी-स्थे स्टन्येममेदाक्षामा इष्टफ-इ (६०) सारने प्रन या ग्रीसनेशासा ।

इप्त-इ [मंग] कृतमाः धीसना बारना । पुरती पुहिसी-स्त्री [सं]पुटना ।

च इसित-पु [न] साविकामश्रमें बामें इस फिकोब ११ दादोदेने ६६-सुरानुमदद समय दनादरी वशःदेश ।

च्छान्त परक्या बदुतर। वह वड़ी जिसके वॉब वेंदे ही भीर दिवतमें रेन दर दिया गता दा हिन्ने प्रशिक्षे दिग्या धर प्तरा प्री पेसादा जाना ह)।

कहाक-वि॰ [सं॰] काटने, होइने सक्य करनेवाला ! कुद्वार-पु [सं] पद्यका रिकिया सेवसा पार्थस्य । क्रहित-दि॰ सि] काटा, क्टा था पीसा हुआ।

कहिम-पु॰ [सं] पत्थर नैठाकर बनामा हुमा प्रचाकारी के कामका फर्ज़; रत्नकी खान; भनार; शोपही, कुटी ।

क्रहिसित्र-प्र• सिंगी दे० क्रइमित्र । कृष्टिकारिका-सी॰ (स॰) १ 'कुन्रहारिका'।

कड़ी-खो चारेको छोटे-छोटे उक्कॉमें काटनकी फिनाः नारीक काटा हुआ चारा: क्वकॉका सेठमें किसी साथीसे मेवा-जंगा बटा भीर शहाया तथा कागव । मुरू-करता

-वारा काटमाः मित्रता मंग करमा । कुट्टीर-पु॰ [सं] छीटा पश्चार, यहात्री ।

क्टरीरक-प॰ (सं॰) क्ररिया । कुठ∽पु[र्म•]शस्य।

करर~प॰ सि॰] दे॰'क्रस्र'।

कुरुका-प अनाव रक्षमके किए मिट्टीका बना वहा पात्र ! फुठाकु-९० [सं] कठफोहबा पश्ची।

इ्डाटक-दु -कुडार्टका-ली [सं] कुम्हादी।

कुडार-पु॰ कुरुका; [र्थ•] कुल्हाका फानका नाध करने बाकाः बुद्ध । --पाणि-वि जिसके बावमें कुठार हो ।

पुरु प्रस्तुराम ।

कुत्रारक−पु (सं•) कुम्हारी । कुठाराधात-प [र्च] कुमहाशिक्षा पाना पाठक और र

क्रुसरिक-वि॰ प्र [सं] कडडी काटनेवाका । इसरिका-सी॰ (सं॰) इन्हाशी । वि सी नाग करने-वाकी (दक्क समासमें)।

कुछारी-प मंदारी । की नाध करनेवाकी [धंव] क्रमहादी ।

हुन्त्राह-तु [र्श] देश वंत्ररः दशियार बनानेशका । **इटाही-श्री॰ शोना-वोश ग्हानेनी** परिवा ।

क्टि-प [मं] बुधा पर्वत । कुरिखा-पु॰ दे॰ 'कुठला'।

ब्रहेर-म [मं०] बाग्निः तुक्सी । पुळेरक-पु • [मं] इवेच गुलसी ।

क्रिके-प [न] पते या बमरकी इना ।

क्षरंग-पु॰ [सं] निकृत ।

कुक्−पु कुट भागक शोवनि ! स्ती॰ इसकी **श**रकोंगी । कुरकुर-प और शारिकी उड़ानेडे किए की जानेवाठी व्यादास ।

कुषकुषाना-अ ति० ६ "कुष्युरामा । स० कि धेतसे

विवियंश्री उड़ामा वा जानवराँको मगाना । कुब्रुकी-भी बडीर्प शादिस पेरवा गुरुगुराना। शुरु

−होमा-दिमी वानधा बाननेट हिए शाहर होता। gen-g [6] & gen 1

कुषपुदाना-अ॰ कि सीयर श्री भीतर कुन्ता सुँगछाना। कुरमस-पु दे पुर्यस् ।

मुक्टरिया-म्यो० दे मुक्ती । कुष्री-नी॰ रेंद्रपेः वरोने पुमारमे पिरी दुरे जमीन । कुइस~तु १क्तां क्मीने दोनवानी शरीरदो ग्रहन ।

बुक्य-दु॰ [बं] अध्यक्षे यक याप जी १२ शुट्टी के बराबर

19-5

पूर्वेषत्। केन्छी(किन्)-पु [सं] धेवल द्यानवाका, मुस्तिका अभिकारी साथ । केर्वोच~क्यादेश ध्रोप । केवा = -प= कमक - भीर सीज अस पाने केवा -प=। नहानाः संदोध । केबाब--प्रश्रदेश 'दिलाव' । केश-पु [र्थ] सिरके नामा भावत भी हेवा सिंहकी गर दनपरके बाला किरणा एक शंपहच्या विष्णा बरणा --मर्स्स (मृ)-पु वाक स्वारना, इंबी-बीडी ।-क्रमाप--पुरु केश राखि । -कीड-पु धूँ ! --शर्श-पु वरका क्वरी १ - धन्-पु+ शंबादन । --पर्णी--स्त्री अपासाने । ─पाका - प्र• क्या-समुद्दा स्टब्स्सी हुई सर्टें, क्टोंका प्रदाः केश्ररणे एव : -प्रसाधनी-को :-मार्बक-प्र• बंधी। —बंध~पु अनुवा चौदनका फोला शादि। मृत्वका प्क दरतका ∽समनी चांची चना धना बखा

-मार्जब-द∙ वार्ठको सकता, साप करनाः क्यो ।

−र्रबस−५ भैंगरा । ∽रचना−थी गर्कीको सैंबा-

रमा, भीय-पट्टी । – राज्य-पु नेयरा । – समा-की॰

पेडमा गोभा । —स्व**मकः**—इ॰ जैस साथ । **—व**पण-प्र॰ शास करवामा वा हैक्सामा । ∽विस्थाम-पुनीग-

केवरुगम्बदी(यिम्) – पु॰ [पु•] अनुगानका एक मेद,

प्रदेश – क्रीका−ए कमरी-पंथम । – खेळ – प्रश्ने केया-निन्नासः सोमंत् । केशक-वि+ (सं+) वालोको धेवारमे केशरपमामें कक्षकः गार्कीपर विद्येष कमन्त्रे ध्यान वैभेषाका । केदाउ-पु [सं] स्करा; श्राटयक मी; कामनेक्का पत

बान्धः विकाः टेंद्र ।

केसर-पु[मं] देश नेमर । केशक-प्र• [सं] विष्णुः वरमंदवरः विष्णुको एक सृतिः दियोके एक सुप्रसिद्ध करि । नि अंदर वालीवाका । केशबासुध-पु॰ (सं॰) रिज़का बचा बाम । केरावालय, केरावाबास-प्र॰ [र्स•] जरमत्व प्रथ । फेसांश~प्र• [सं•] १९ भरकारीमेंशे यक को क्पनवन कीर समावतंत्रके अवसरवर होता है। शंहता वाहका छिरा 🗠 केसाकेसि-श्री [शं•] दी बादमिनीका शगरमे एक

इ.स.च्. सिर्फे बाह फ्याबर गीवना, नोवना । के कि - प्रदर्भ मिर्म कि कि के जाने गाय था। केदिक~वि (सं•) संन्द्र वाकीवान्ता । केडिंगका – सी. नि.) धमनी भाषिने नियमनेवाकी संगत

मक्षिकार्थः क्षतावरीः। केशिमी-सी॰ (सं] हंदर वालीवाली जो; रावपकी मात्रा

बैक्सी। एक अप्सराः समर्थतीकी दली को नकते वास एसका सीरा से गंधी थी। बरानासी: बर्गा । केदरि-भी • [एं] चीथी दुर्गा अवसंगानीकी। मृतदेशी ! केशी(शिज्)-५० [सं०] शिक्षा भीता कृष्णा कृष्णके दार्थी

मारा गढा एक अधरप कालवा पेशीया श्रीपट वालीवाणा म्परितः कि संदर्द्यमे वालींबाह्य । केस-९५ वाक-(व्रं) मालाः ववतः मामना मुक्तमाः |

हैं। रोग कावात आहिको बटना । केसर-त [रं॰] कुक्के रोक्का शीवा वा रेशा राहा म्क विशेष कृष्या शीका भी पीकापन किन्ने काल (पहा भीर प्रगंत्रशंख दोता है। कम्फ्स, बादराजा सिंह बा भोडेकी गरवनवरका वाक भयाका मागरेखरा मीकविया

प्रचागः सीमा कसेस । केसराचक-प्र [सं॰] मेर पर्रत । केमराम्ध-पु॰ (सं॰) विभीरा भीत्। केमरि-प [सं] धनुमान्के पिता। केमरिका-सी (सं॰) सहदर्र स्ता। केसरिया-विकस्ति (गद्धाः वेसरमें रेंग प्रभाः केसर मिका हमा । इ. केसरका रंगः केसर बैसा रगः केसरी(रिन)-प्र [न] किंदा पोता प्रधाना विमेध

नोब्रा नागरेखरा दनुमान्के पिता । वि विद भैसा परा-अभी (समाम्रोवमें ~ीसे महाराष्ट्र-वेमरी पंजाद-देस्धें ब्रत्थादि) । −(रि)कियोर−५ स्टिशास्त्रः दनुसन् । —तमब,-र्मव्म,-श्रुत्र-प्र दन्मान्। केसारी-की मरस्को बादिका एक मीरा बच्च । केस॰-५ देख् । पत्राप्तका फक्र ।

केटरि॰-प्र केटरी। - नहर-प्रश्निका। केवरी • - 3 वे वेसरी । केदाण-प्रसीस शीलर बैसादक दशी। केडि॰-वि॰ दिल। सर्वकि ।

केष्टमी-मा॰ दे॰ 'कुइमी । केट केहर-म किसी तरहा केंब्रें-प्र [बं॰] शामुख संशान्द्रम । **विचा**−ध वदावैथा। वि॰ ऍवा-तामा।

र्वीची-नी <u>वि] कतर</u>नी; दी सबदिनों भी देंचीओ एरकरी नंबी या बड़ी का इस्तीका एक पैसा शास्त्रीकरी वह क्षारत ! -का जैराला-एकतिको तीतियो वा सनार्विको याम-कथर ठिराडे रक्षकर बगाया हुजा चैन्छा ! मुक -करना-६वोमे कारमा । **-वॉधना-**सर्वेषे

क्रिया-इ. राष्ट्रा नगारमेका भाग्या पैमाना। मोहा भँगामा र्थगः श्रीचाः चान्यमधे । सः −क्षेमा – साम्रा उतारमा । केंच-व (अं•) संमान्त्र पहान शिक्षरा सेमी। होक्ती

कारिका बना सम्पत्नी निवास । की-वि किन्ते। स वा अवता। मध्ये (संबंध बारक)। 🛍 – हरी 🤊 🖭 । घरधी, यमस् ।

क्रिय∽र विशेषकन्त्रेष्ठ। क्रेक्टम∽प सिंडेराध्यसः।

केंब्रसी-सी [र्श•] एवपनी माधा। **ईतेय−**ष [तं] नेदनकोश्चर पंश्चम। **∉क्षेत्री**-स्मी [तं] येअध्य नरेडाकी वेरी भर**रुको** माधा ।

र्केट~नि नि] मीउन्तर्शकी । ईटस−पु (सं] विष्युक्ते शार्थी मारा गया एक देख

स्था क्षेत्र भारे । - जिन्छ - रिप्त- श्राप्ति । केरमा केरमी-की [म] दुयो।

बैटमारि-५ [५०] विणु । क्कानी सानेतार किरती जिसमें छानेके शहर रही जात | बीतक-पु [तं] बेगक्का पुण्य है है। बेतकमें पाल मा क्रमक-त [कि] इ ,देशसक,। क्षरा-ते॰ [सं•] ६० ,श्रेब्स, । क्रमक-पु॰ [सं] मेटापर । कुम्ब-पु॰ [सं॰] कोशी। कुनक-पु [सं] काक । कुनकुना-विश् बोहा गरम । कुनमा-स॰ कि सरादना। कुनप−पुदे कुन्य। कुनवा-पु कुट्टंब परिवार। कुमधी -पुदे• किसी'। इन्नवा-पु॰ दे 'कुनेरा'। कुमइ-पु स्थित वेर, हेप शक्ता। कुमही-नि० कुनद रखनेवाला हेथी। क्रमाई-सी सक्ती बीरने खरायने बादिसे निकल्नेवाला ब्रा दीवलेका भूरः (शरतन) धरावनेका काम जरावने-की मजदूरी। कुमाक-पु [सं•] ण्यः पहादी पञ्जी । क्रमासिका-सी [सं•] क्षेत्र : क्रमित#-वि नवता शनकार करता हुआ, अलिस । कुनिया-प् कुनेशाः श्व करनेवाका । कुमेरा-पु बरादमेबाना, सरादी। कुनैन-सी [में 'किनाइम'] यह कुका सत की प्रावः मनैरिया क्वरमें दिवा बाह्य है। कुयां - प्र यास भूसे मारिको राशि । कुपक-५ एक मधुर स्वरवाका ग्रही। कुपमाश्रमक कि॰ दे 'क्रोपना' क्रपार=-पु है 'अक्टूबर । कुपिय-पु [म] १० कृषित् । हुपित-वि [रं•] कीप्युक्त, गुक्त, क्षणा विकृत विवदा हुमा (रोप)। -मूक-पु अस्टी हो गीव। क्रपीन−प्रदेशीपीन । कुप्पक-पु [मं] पीशेंका एक रीन। कृष्या - पु पमरेका बना योक आकारका नाज जिसमें वी यातक रखते ई। ∽साक्र-पुकुष्या वनानेवाला। स्॰-सुरुक्ता -सुद्धा-विशी वहे भावभीया सरमा । न्सा शुँद करना~र्नुह दुकाना। ~होता-सूत्रनाः मोटा दोनाः स्ठमा । कुष्पी≕सी छोसकुषा। क्रमुन् - वृद्देश कुमा। मुखेन-सी॰ बादुत नदीका भुराना माम ! कुरम्-५० [ब॰] इनस्पर म भागमा। ईश्वरके मरिक्सने बनदार मधीतकता इट, दुरायहा इतावा। -का कम्प्रमा - सुराब्धे धानमें गुरवायी करनेवाची बाता देवर मा पर्मेदो निदा। ∼का क्रसवा∽शर्वकारी भीतनी या मीनविष्टेंग्री ती हुई विसीन्द्रे वाफिर होनेशे व्यवस्था । मु-इटमा-इट सुटना दुरामबी बनका दिशी शतकी मान हेमा (गुजस-बु [ध•] वासा । Athi -- 110 [#] \$ las, : व्यक्त-प्र बनुष् दिव विक्रणीत्।

कुलका-वि जिसको गीठ देवी की गयी को, देवा । पुर टेदी पीठबाका भाष्त्रगी 1 कुबड़ी-ली॰ देही पीटवाड़ी की; यह छड़ी बी चिरेपर मा बीचसे टेबी 🛊 । क्रमरी-सी॰ बंदानी वासी क्रम्याः वैकेनीकी पासी संपराः वे॰ 'क्रवही'। कुबस्यापीय-पु दे॰ कुबस्यापीट ! कुबद्धी-श्री पिंदी। कुविञा≠∽सी दे 'कुण्या'। कुमेर-पु [सं॰] एक देवता जो बक्तर दिशाके अधिश्राता और धन समृद्धि सामी माने बाते हैं, बसराज । इयराच्छ कुवेराहि-पु॰ (सं॰) कैनास पर्रत । कुम्बन−वि [र्स•] कुनका जिल्ली गीठ टेही हो। प्र• कुबढ़ा सह। एक रोगा विविद्या अवासार्ग ।-शासी-(मिन्)-वि प्रुक्तर करनेवाचा। कुरमञ्ज-तु [सं] एक पुष्पतृष्ठ, बृतपुष्प । कुटबा-वि सी [र्ष] कुत्रमें। सी॰ ग्रंसमी कुरसी शांधी विश्वकी पीठ कृष्यने श्रीषी कर ही थी। कुब्बिका-सी॰ [सं] अष्टवस्था अविवादिता सन्या। कुम्बर्ग-पु विकाश कुछ-तु [सं] बना बचकुरेश शहरा तंतुः केंगूठोः पानी । कुमा-की॰ [ई॰] कानुक नदी; पृष्टिमीकी छाना। ड्रमंडी÷-कॉ॰ पत्तकी धवीको दहतो। कुमहत्तक-पुर, दिर देर कुम्मैत । डमक-सी (फा॰) सदायदाः दिशी सेनाके सदायतार्थ भेगी हुर्द सेना । सु॰ (किसीकी)-पर होमा-दिसीका पद्य दिमानत करना मददयार होना । **इसकी**~ली नियाची हुई दक्षिनी विसन्ते वाविवीये ऋडनेमें सदाबता की जाती है ! वि कुमहक्ता । कुमकुम-पु केसरा पुमकुमा। कुसकुमरा-पु॰ काराका बना पोना सटकु जिसमें अवीर शुकाल भरकर होशीमें एक शुरुरेक्टी मारते हैं। कॉनस्ट बमा पीका गोका जी माला बमाने वा शत्रावरकी कामसे भागे हैं। कुमकुमी-वि॰ बुगकुमके शाकारका । कुमरिया-पु॰ यह तरहरू। दानी । हुमरी-भी॰ [अ] पंद्रक्यं वातिको एक चिटिया । कुमाय-पु एक तरहका रेशमी सप्ता केवीं व कुमार~तु [री•] नटा रूपका पाँच वर्षे कुम बन्नदा कट्डाः तुरावस्था वा ध्यमी बहुनेकी सवस्थाना प्रदेशः राज्युमारा युक्ताना काफिटवा महित सारित तीवा सिंधु नदीः बस्य दक्षः संयक्त ग्रहः सरा सीना। वि श्रविवादित र्वेभारा । -श्रीव-पु॰ पुर्श्रावक कृष्ण । -र्शय-५ आयुरेरका वह भाग विश्वमें वाणरीगीका निशम और विकित्सा हो । -शुल्प-५० प्रसन दरामेदी वियाः गरिको वा नववात दिशाबी परिपर्श । - मृत्या-न्ती विश्वजीकी देशमान । -बाइन -बाही-(हिम)-तु मपूर । - शत-पु॰ माभीवन महत्वपे वाटनका मत।

कुय~पु०दै० कृत्यः । कुत्रवा•-सौ०दे० 'कुष्या' ।

कॅटिया~कोचा कोंकणा-सी व [सं•] परद्वारामकी माता, रेलुका ! -सत –पु परश्चराम । क्ष्रोंक्जी−सा दॉदणको भागा। कॉचना~स क्रि॰ दे॰ 'कोचना'। আনিক্সী –কা ক্ৰ'ব। र्वीचा−पु एक अरुपक्षी वास्तुतिकारुमेका महमूबेका कम्प्राः दे 'सी'या'। कींस-पु॰ काँदकका कोना । सु॰ -- भरमा-शीमाग्यवारी सीके ऑपकम (विदा देते समब) चाक्त-इक्दी आदि दानना । कॅरिजा, कॅरिज्यामा~स जिल्क्सेंस यरकर बॉबस्के छारींको कमरमै पोछेकी और श्रीस हैना। अनती धनना । कॉब्र -पु॰ छोडे, पीतल कादिका प्रस्का किसमें श्रीर या कोई चीत्र महस्त्रयी जाय। र्क्षोदी नहीं होया कोंदा मेंद्रवर्षी कमी । क्रीयसा-म क्रि दे 'हॅपना । क्षींप≉⊸सी दे 'क्षेंपक। ऑपमां−अ कि ऑपल किस्लमा। कॉपरा-त शहका पद्म भाग। क्षीपल−श्री• नवी दोमत पत्ती सम्बा‡ कॉवर, कॉवरा≠-वि कोमल <u>स</u>कावम । स्टिका - प दे 'कुम्बना'। कॉबबीशी – को ॰ दे 'ऊग्बबीरी ३ अहारां-ड रे 'क्रमार'। को-प्र बर्म और संप्रदानको विमस्तिः जनमापार्ने संबंदधी मो। ॰ सर्वकीना त्कीव्यां - तु । दे । 'कीवा' । क्रीह्युरां -पु॰ साम, तरकारी शेमेका केता वस्तीके विक कुछ पासका दोन । कोडुनारं –पु॰ महुपदा फुछ । कोहरी-पु॰ एक शैर्तहर बाति काछी ! कीयकां, कोइसियान-सी- है कीवस । कोइसा - पु देश कीशवा । कोइसी-को काने दागराना कथा भागा भागने गुउनी। ह्योगस् । कोई-सर्व अपात, अनिविद्य वस्तु ना स्वक्तिः नाहे वी रका अ समम्मा नत्र कोई-सर्व वादे भी वका दर EE ! क्षोजण-सर्वश्ये कीर्रं । क्रीवक=-सर्व कुछ कीग क्षीरे यह । कोळण-सर्वण्येण देश स्त्रीर्थ । क्टोब-५० [पा] कभी हिलाई, संबद्ध (सं०) क्या बह्मसम्बद्ध कीयनः मध्य- कामशासके एक प्रसिद्ध जानार्य (इ) इरेष); विष्णुः जंगनी सन्दुरः महिषाः (एएइसी । --हेच-पु÷ हर्तर। कामशानके एक आधारे। -वर्-पु सास इमाना साल पुरे । --० व्यवि-नि कान । A nie (41-63-40 set 1 -einer-A and-कोषई-६ शहारीको दल्द किने इए नीजा । तुर रेखा रंग । की छोटी बेटिया ।

कोकटी-सो॰ वे॰ 'बस्टी'। कोकम-प आसाम और पूर्वी श्वालमें बीनेवाका एक पेश । कोकमा-स॰ कि कवी सिकाई दरना, स्पार दामना । कोकनी-पु॰ एक शरकत रंप। कोकथ--प्र॰ सि॰] एक तरहका राग । कोका-पु॰ दक्षियो समेरिकामें क्षेत्रेनाका एक शाह जिसरी वरियाँ छरीजनके क्रियः चवाबी जाती है। भावकी शंताकः पक कबूतर: † धीवा । स्त्री भीको कुई ।~होरी −वेस्री~ को॰ मोकी शुप्तरेनी। कोकास्या~प॰ (र्रा॰) महामारतमें बहिरुसित एक तार्थ। क्रेकाह-प॰ (र्ध॰) सफेर पीवा । कोक्सि-न्- (र्च॰) क्षेत्रका अंगाराः एक एरा एक तरहका वद्या एक तरहवा साँचा एक बहरीका धीवा । -कारी-वि सी धीवल्वेस गर्के, भावाजवासी । --ववन-१ वे की किनास । ⇔रच− प्रतासमा एक मेर । कोक्किन-सी॰ [ध] क्षेत्रक । क्षेकिलास-५० (ह) । सम्मदाना । कोकिसाबास कोविकोध्सव-५ [म] भागमा १४। कोकिस्प्रा-सी विीयग्रहासन्। कोकी-न्धा [मं] माता क्यवा। कोक्टीब-ए० दे 'कोटेब' । —सी –बाज-प० दोक्टेब साबेका भारी कीकीम धानेवाला । कोकुमा−पुण्य **⊈**रीका पीषाः समक्रिक । कोकेन-पु [बं॰] बोकाकी परिवास निवित्त हस्य शी क्यानेसे इस देरके किए शंक्षी श्रम कर रेता है और बगेडे दीरपर पानमें साथा जाता है। कीको-सी श्रीमा (बहकानेके सिए वर्धीसे बहा नाता है 'दोबो से गयी')। यु [मं+] छचा करिशंबके देशीमें वाया जानेवाला यक तरबका तावा वसके बहका पुरा बसके फरुरे बनावा बानेबासा बाव बैसा देव। कोकोजेम-तु साफ किना हुना नारिनटका तेल याँ थोदी तरह दाममें काया जाता है। कीया-को परका दीजों प्रशिक्ष के शोधका मान। हुए। पेटा गर्भाराव । — सस्ती – विश् की विश्वके वश्वे न बोर्ड हो (ऐसी सी)। अ॰ -रजहमा-शब्बम मर वाता। -शुक्तना-वद्या दीना वंग्यात्व इर दीना। -बद क्षामा:-मारी जाना-गर्भ न रहमा: श्वाम म द्दीमा । क्षीती-न सीवहीकी शक्ष्मका एक बंदकी जानका सोमहा । कोच-दि (सं०) संपूर्वित बरनैवाला । पु मंद्रीचा वर्ष मंदर जाति। [वं] एक तरहकी बन्धा-धीरागानी। एर बार वर्त्या, कुरमी का रेवा - वक्स - वक्स-इ योशमानीमें शोदनेशकेंद्रे वेदनेश्चे यवश । -बान-प्र धीडागारी डॉडनेंबाछा । कोचमा-स कि कोई मुद्रोरोधार मुमीना। पु रेगा। कोचनी-स्रो क्षेत्रसेंद्रा सापन-भीगार सेंग्रा हैना सन्दर्भ है स्थानका श्रवत श्रीपेटी सुर्रे । कोच्य-पु मीचपार वश्यिसका पान वो पार स 🕼

```
140
कुरक-पु [सं] क्रीयः पुँपराहे वास ।
करसन्त-भ कि कररंग करना-'भृरदि कुरव्हि
 बत सर इंसा'-ए०।
कुरसा-पु अताः मीवा ।
कुर्य−पु [मुं•] साठ पृथ्याओ इटस्रीयाः वाकः गीरवः
 बुरा शब्द ! दि॰ मर्दश आवाष्ट्रका ।
कुरबना-स॰ क्रि॰ डर ख्यानाः एक साथ अविद्वपरिमाण
  में विराना ।
कुरबारना•~स॰ कि छीरमा धरीचना।
 कुर्सित्-पु दे 'कुरस्ति।
 हरसार-पुत्रं नेगरी गोमी १
 कुरसी-सी ऊँचे पायेका एक बादमीके बैठनेका आसम
  जिसमें धेठके सहारेके किए एटरीमी और अवसर हाथोंके
  सहारे हैं किए बाजू भी दोने हैं। महानको सदह केंची करने
  के किए बनावा गया चनुतरा। गेड़ी पुत्रक टींगियोंमें बीनों
   तरफ नमी दुई नैठनेकी अगदः उरक्मी। -मामा-पु
   वंश्वरृष्ट पुरुतनामा । सु०-देशा-मादर करना, वस्त्रत
   देना ।
  कुरा – पु पुराने फोनेमें पक्ष्मकाकी गीठा के करसरीया ।
  कुरान-पु• [ल ] शुसनमासीका वर्गेप्रव थो इसदानी
   विशास माना बाता है। - सखीद - शरीक्र-पु॰ कुराम
   (बादरम्बद) । सु०-वठानाः - पर हाय रक्तना -कुरान-
   भ्रो क्सम याना । ~का जामा पर्ममा~वर्गनिष्ठ
  कुरानी~वि+ कुरामधे संबाध कुरामधे माननेवासा
    (मुस्ह्रमान) ।
  क्रराहर*-प्र क्रीकाहरू !
  कुरियार्ग - ली॰ दे॰ 'दुटिश ; छोटा गाँभः बेट, राह्म ।
   करियाध-त्यो॰ पदिशका मीजर्मे पंच शुक्कामा हर
    इरो केना।
   प्ररिद्वारः – पुश्लेकारकः।
   ब्रारी-त्यो देर राशि रोट इक्या शैला * ३७, परामा
    [एं•] ल्यु सम्र चेना।
   करीर~प॰ (मं॰) मंधन<sup>ः</sup> कियोंका एक वरदका शिरका
    पद्दनावा ।
   कुरंट कुर्रहक, कुरंड-पु [मं+] कान कम्मरेवा ।
   कुर्दय-९ (६ ) मार्रगी।
   कुर्दवा कुर्दयिका-मी॰ [मै ] श्राणपुष्पी ।
   कुछ-तु [मैं•] एक भूप्रवंदी राजा जिसके बंधाय बीरव
     दश्तावा दिस्सीचे भारतप्तस्ता देश जिल्लार कुरवंशियीका
     द्यागम भा कुर्स्यक्षी। भावः पुरीहित । -कुर्क-पु
     मृत्री १ - शत्र-पु रिस्कीके पश्चिम दरमाल जिल्हा
     क्क भेरान वहीं कीरवें पोटवेंगि संघाम हुआ था।
     ~रोत•~¶ दे दुरश्चन । −आंगल-पुकुतशेष ।
     -राज-पुदुर्वोषन । -धर्च-पु॰ उत्तरकुइ । -धिइ-

    माणिकः बार्रनाः काला मसकः दिवन्दः । –ियादः –

     पुण्य हातः। -विस्व-पुप्रशासभी। -विस्यकः
      - प्रमनुक्यो । ~ युद्र्-पु≉ भीग्म । ~ क्षेष्ठः,~सक्तम
      -दुः भन्नि ।
     दुरमा∽पुभक्षको दक्ष शाप ।
```

4ुरल−कुल कुरुई-सी मूँन था गाँसकी छोटी विकास कुरुमण-पु दे पूर्भ'। कुरुस-पु॰ [से] माभपर विसरी हुई जुन्छ। करूका-सी॰ [गुं॰] एक तरहकी गमक (संगीत) । क्रेरेदना-स कि॰ सुरवना, सरीयना ! कुरेड्मी-खी॰ नोस्टार छक् बैसी बाव विससे महुँची माग मुहेरते हैं। क्ररेमा—की वह गाव को सार्क्य की बार बचा है। कुत्ररू-सी किसोस, कीहा। इत्रष्ठमा~स वि•६ 'क्रोरना । कुरेखनी-को देश 'कुरेग्नी । कृतंत-पु॰ बिस्तैनार । कुरीमार≠~स कि॰ बाकना; विशाना; देर क्याना । पु राष्ट्रि इर । कुरिया-की पर पंपकी पेड़ विस्ता ग्रेज-इंद्रभी-अर्थ, अठिसार बादिकी दवा है कुटक । करीना≎~स विश् देर कगामा, शस्ति करना । क्रक्र −पु० हुि•ो रोक्रनाः मान्न बायदारकी रोक सन्ती । -धसीन-प्रभात कुई दरनेशका भइकदार । - नामा -पु॰ **दुर्शी**का परवामा । कर्की-भी देन खुर्माने आदिकी अस्त्मीडे किए माल पा वाक्षणका जन्म किया काना । कुकेंट-पु॰ [सं॰] भुगो; हुना । इन्हेर-प्र वि क्षेत्रचा ५५र। कृषिका-सी सिंगी द॰ कृषिका'। क्ली-पुरे करवा'। क्रोन-पु॰ [वं] १ - क्रोन । कुपैर-पु [सं•] पुरमा। कुम्मा ! कुर्यासः कुपासक-पु॰ [सं] धोको, मीगवा। कुर्व -पु [न] करीव होना। समीवता ! -त -सी॰ समी-वता ! -व बवार-पु॰ बास-पास पास-परीस । ह्यांन~यु [ब०] दे० 'जुरवान' । क्षयांनी~ली [भ•] दे छ्रवानी । कुर्मी-पु॰ एक स्विमीबी बिबू जावि कुनवी। क्रसे-पु० [बं•] विकिश बनाकी विकिया करन देशका ण्यः व्येशेषा विद्या । क्रमी-भी० दे 'तुरमा । कुर्यग-१ (का) एक वधी मुर्गा। हमंब हमंदन-पु॰ [मं] एक पीपा। कुर्नेघर-पु (सं•) कुलका भिक्तिसा बसानेवाला । कुम्पैमर-पु [मं] सेव भारतवामा चोर । कुक-वि सब सारा । मु [सं] बंदा पराना। मात्रा उदा कुन: एक वातिकार्वेका समूद्र, समुदाका जातिः शिन्पिकी स्यापारियोंका क्षय अक्षो। युगीनर्तत्र राज्या पर, शायासः अनवरः देव आधान दिग्गाः एक मीला परभरः दी इस्सि विकती चोनी जा सके बाजी जर्मा है बाम मार्ग- मृतापार यकः मृताबार भगमें निवत कुन्तिनी शक्ति (ते)। -करक-बु अवने हुरे बावोंने मुल्ल लीगीकी दुन्ती करने बाना । -क्षाल-पु रेशके निए सपमारहा कारण । -क्रमान्सी वर्षे ने बुवसे जसमी दुरं स्तृती। -क्रम्

कोणि-वि॰ [सं॰] टेडे शायवाका ।

कोसक--भी॰ यहः दियाः सरपः। कोत्तरी। - स्रो॰ एक छोरो मछसी।

कोतस-प्र• [तु•] किसी रागा-र्शसकी खास सगारका मोशा सुसम् बारिके साथ समान्सवावा साको पकने-माका भोड़ा। यह घोड़ा थी साथ मीकींपर हो कामी रुप्या जाय । वि जिसे क्षेत्रे काम न हो, काकी ।

कोसस गारव-५० छावतीया वह स्थान वहाँ हर समय गारद रहती है।

कोतवास्त्र-प्र विकेषे सुस्य गगरबापुक्तिस अफलर किल्के

मातदत नहीं के सब भानेतार और भाने होते है। वह मास्ति जो पंदिलीको समा सादिके किय एमका परिचय हेता और मिमंत्रण-पत्र बॉटता है।

कोतवासी-तो । होतवालका पर। बोतवालका दनतरः

नगरका बॅडीय भागा !

कोताइ-वि [फा] पोताः छोटाः तंत्र । -संदेश-वि० महरदर्शी को आने के राठ न सोच सके नश्चनुर्वि । - क्रद्र-वि नाटा, ठिंगना । - गर्नेन-वि॰ विस्थित गर्दन तंत, कम केंबी ही ! - जज़र-वि अपूरवर्धी !

कीसा#-वि है • 'क्रीवाह'।

कोताह-वि [फा] भोडाः छोराः तंग । -हिस्सर्त-वि॰ छान्ये हिम्मदबासा परव-हिम्मतः।

कोताडी-सा॰ क्या, हरि।

कोति में जी दिशा, भौंद तरफ ! काय-पु [सं•] बॉदका एक रोमा गंभना सनाम) नि•

पीरितः सनितः।

क्रोधसा-पुनश नेका थेट। कोचसी-सी॰ वपने रएनेकी मैकी को कमरमें बॉबी बाती है।

को*यी−न*िग्यानदी सामी ।

क्षीतृंड-पुरु [मं] पतुष्: वसु राध्रिः मीह ।

कोशंशी(दिन्)-प्र[पं•] धिन। कीव्य-स्त्री विका भीर-ध्यक्त कीर रघुनाव बरार। मरव दूसरी स्टेंद विचार न्यान । स्टेना ।

कीवरा-प्रदेशिको

कीरय-पुरुदे कोरी !

क्षीइयमा-स्री कारीके वीचे बैसी वक पाछ।

कोहार-पु [सं•] ग्रह सम्र ।

कोर्डी, कोशी-५० सोंबाबी जातिका एक मीटा अब । अूव —सम्रा⊤नविक भगवाका निकृष्ट काम करना । —हेकर पदमा-सेंध्रमें प॰मा प्रकत् कुछ छोद्य म पाना सुध रह बाना रे

क्षोडय-पर्ग्स विशेषाः।

स्रोधा -सानी कोर'-' "श्वा रुपने वर्षे कीन -सर ! कोब-प कोनाः भेतका बीमा की जुलाईमै सुट जाता है। स् - मारमा-बातनेम सूटे हुए बाबाना शावना । कोनियसा~पु॰ कोनियको छात्रभर्वे भरमस दीवारके केनिवद समानी आनेवाणी कदही।

कोना-पुबीण गोशा भूटा कमरे कारिका वह स्वान

निगाद न अाथः चहास्य (रलाङ)।-सँतरा-पु वरस्य कोमा और अंतरा।-(में) पृश्व-पुरु संस्कृत एक प्रकृति। **स॰-शॉकना**~मन ना राजाने हैंद भुराना । ~द्दना -वै॰ 'वोर दक्या' । -(में)में बेठ रहमा-एक्ट्रांवमें दिव कर नैड रहना ।

कोन≀सक–पु[तु]परः जकप्रीः।

कोलिया-नी॰ छात्रमदा एक प्रकार। परके कोनेमें बोबारी कगाकर बीस, कारुधी पररी भारिते बनाया सबा होता विकीमा भवाना वालीक्षे नक्षमें मीववर क्याचा बातेबाका क्रवनीके बंगका अक्रमा ।

क्रीय−पु॰ [सं] फ्रीथ, धेपादीप यानस्त्रकादिमकता। -पद-प कोभका कारण। -भवम-प बह महाव ना कमरा नियुर्ने कोई रही दुई न्हों वा बाविका दावर र्वेठ रहें। ∽सता~की कर्नरकोश कता।

कोचक-प [सं] वह राम की मंत्रियोधि पश्रीम वा राज-होशी मंत्रियोंके भना रसे शो।

कोपम-पु [मं॰] बीपना कुपिन दाना । नि॰ कुदिना कुपित करनेवालाः श्रारीरमें विकार करवन्न करमेवाला ।

क्ष्रीपमक-पु [मंग] भोगा । वि प्रत्या कोपना- • भ कि काप करमा हुत होना । नो [र्न•]

ह्य थी। विश्ली और **ब**रनेवांनी। कोपविष्ण-वि सि] नीप करनेशका।

कोचरां - पु॰ बफ्डा भागः पढे थाल पैसा पद्म गीला बहरा बरचन जिसमें चठानेके किए दोगों और बंट हमें रहते हैं। कोपस∽नी दे° 'हो। पक'।

कोचकी-वि आयके अये पत्ते (गया, बेगनी। प्र बैयनी रंग ।

कोपिस-वि शि किपरफ कर। कोपी=-वि कोई सी (कोपि) ।

कोर्चा (पिन्)-- वि [मं] बीप करमेशलाः बीकारक । ए जनपाराबना मधीर्थ रागात यह मेद ।

क्रोपील−त ∢ कीपोस'।

कोध्यापणवाद्याः नगी (गे॰) तदमी विक्रीका भगना

कीप्रस-स्वी [का] दुन्हा (ज सदमा। वरेशानी। कीरे पर सीने वा पत्रीका प्रकार । - शर-प मोहेकी पीनी (तमबार आहि) पर भौरी सामेश वयभोदारी अरमेवाका है —शादी—श्री = क्येप्शवस्त्रा चंधा ।

कोचला-विक पिता है जिसके दिख्या कीर सुरमा पर्देश शाः श्रु क्षत्रा हुना मानुः हु र दुए मानुदा बनाव ।

काबा-प का] शंगरी अमरा इतमेरा भी बार । कोशिय-वि वे 'कोशिय'।

कोवियार-त दे 'बोवियार'।

कोबी-ला॰ योगी र

कामार-वि [मेर] नरम शुन्तावमा शुनुमार। अवस्थितः मपुरा बनीहरा दवाई । वु वामरे तीन प्रशास्त्रे स्तरिके री एका जब बोली मिही । - विश्व-दि भरत दिना कारतः दशात्र निस्त ।

क्षामनक-पुरु [में] स्राधार

जर्दी की बीकारें भिन्नती हो। वह क्वान जहाँ करदी किसीकी | बीमासा-की [में] यह वृत्ति का करें की जना जिसी था।

कुछाछिका-स्रो० [सं] दे (कुराधिका)। कुरमासी-सी [६] वनकुष्टवीः कुम्बारिन । कुछाइ-पु॰ [सं] इस्ते पुरमीयाका मूरे रंगका भीता। [फा] कैंची मोक्सी दोपी जिसे हैराम-अफगानिस्टानक कोम पगरीनी मीचे पदमते है। राजमुकुट, ताजः टीपी। -- जार-प सुनहरे नामकी दोगे। - फिरगी-पु॰ भोजी रीपी हैट। कुरु।इक-पु [सं•] गिरगिर। एक शाक । कुसाइस-पुदे 'बीलाइस'। क्रकिंग-पु [तं] चित्रियाः गीराः एक तरहका चूहा । कुर्सिय-वु॰ [सं] पश्चिमीधर भारतका एक प्राचीम बतपः दुक्तिः निवासी । कुक्ति−पु [म] द्वाथः सटकटैवा ।−ब−पु मान्तृ । कुस्तिक-वि [सं] कुबाल । तु शिस्प मेणीका प्रवान कुडीन क्षिरपी; म्यबम; शिकारी; एव कॅमेका चीना कुछ-बार' एक विव । कुक्तिर-प्र[सं] दे 'कुकीर । कुलिया~प [सं] बंबका बजा विजली बीरा कुरवाकी, कुठार; एक तरहकी सत्तर्ता। ∽धर ∽पाव्यि − पुत्रहा ~सावक-पुण्करतिबंग। कुकिशासन-पु॰ [मं॰] बुद्ध । क्रकींजन-पु॰ दे 'कुलंबन'। क्रकी-मा [d] वड़ी साली। मरवरेवा । **इस्ती−प्र ति ो शकामः मोटिया रेक्टने स्टेशनीयर बीज** डीनेवाका मञदूर १ - क्यारी-ध निम्न शेथीके कीग । इक्को(फिल्)−से [६] ज्यार्थक्या। प्राप्तीतः। कुर्छीन-वि [सं] केंने कुकमें जनमा पूजा: शुद्धा निमेक । पु अवध्ये बाक्तिया योष्टा श्राक्ति-पूजकः नासूनका एक रीगा बंगाली जाहाणींका एक वर्ग । फुर्खीनस−पु•[मं]बह। कुछीर कुस्रीरक∽दु [मं•] चक्रकाः काँ≥ राधि । **इम्होदा**-पु (सं॰) दे॰ 'दुस्तिस' । कुलुक-पु॰ [र्थ॰] बीमपर बमा दुवा मैठ वा सिस्पी । कुलुक्त्र्यानान्यो (५०) ह्यादी । कुलुप-पु॰ वासा कुरस । कुरुद्र∽पुदेश फिल्फ्राः स्कृपेका इस्ट्रत-इ [सं] पश्चिमोत्तर भारतका वक वानवर । कुमान−सी है० ऋगोत । कुष्टेक्षमा ०~ व• क्रिक्ट क्षेत्र करमा। कुम्पाज्ञप-वि [सं] कुन(विशेष)में उत्पक्षः कुनीस । कु-नोपवेदा~९ [तं+] कुरुगत नाम। पुरुष-पु [मंग] एक रीय। कुरसा-मी० दे कुल्यी'। इस्माप-दु [मं] इस्थाः वमकुळवी वीरी बानः बना मादि दिन्स विशापद दीय । इस्म−५ [मे] भद्र पुत्रक कुग्रक-धूम पूछनाः मासः करिया सूच ३ कुस्या-मी॰ [६] सहरः सामाः धोरी मरीः कुनीन रीः नीवतीः एक दील ।

र्रगका भीड़ा । कुक्की~सी मुँह शाफ करनेके किए मुँहमें पानी मरकर पॅक्रमाः पानीका यक पूँठा जुस्का पट्टा ! कुरुलुक-पु॰ [सं॰] मनुस्मृतिक एक मसिक दौकाकार । **Econ** − A• [4] g• , *****, 1 **कुरुहुबु** – पुर पुरवा, सिष्टीका छोटा बक्रप च । कुरुहादा-पु॰ रुक्ष्या भीरने काटनेका एक भीजार । कुम्हाबी-सी॰ छोटा कुम्हाहा । क्रिक्श-खी॰ छीटा पुरवा वरिवा। सु॰ नर्से गुड़ फोबमा - छिपाकर काम करना । कुव∽पु•[सं]कुमक; कुछ । ∽व्य−पु आहाा। कुबस⊸पु० (सं•) धर्य । कुचल−पु [मं] कुई; मोती; बर्च सॉपका पेटा कुवस्त्य-पु (सं] कुर्व (मीक्) कुर्व भीकदमकः सूर्यवसः। कुरुक्तवार्गह~पु [स॰] अध्यय वीशितक्रत संस्कृतका यक अन्त्रकार-श्रंथ । कुवस्यापीइ - प्र [एं॰] एक इस्ति स्पपारी समुर का क्रफाई दानी मारा गया ! कुलक्रमाक्ष−प्र [सं] श्रंपुमार राजा कतुम्बनः प्रतर्शन । क्रवक्रियमी न्यां [मं] मोस्रा कुर्रवा पीवाः मोस्रा कुरदे कुलोका समृद्ध । क्ष्वॉॅं~पुदे 'कुमी'। क्रवाट क्रवाटक-प्र• [र्थ•] श्रवामेका परका । कुवार-पु दे॰ 'कुआर'। कुबारी-वि कुभारके महीनेमें होनेवाला (बाम भादि)। इवाहुक−दु [सं•] दर कुविद-पु [सं] शुकादा । क्रमेजी-सी [सं] मधको रसनेको बक्रिया, होकरी: ठीक तीरमें न गुँची धर्व वेगी। कुबेर-पु [सं] है कुबर । कुषेररच्छ कुषेरादि - दु (सं) कैताल पण्ड । कुबेस-पु० (मं०) दसल । कुश-तु [मं] कही बार मुक्कोडी पत्तिवावाडी एक बास की यह पूजन कादि वर्महरूपोंकी जानस्तक सामग्री है बभा रामक दो पुत्रोमेश एका राजा क्यारिकर बसुका पुत्रा नुभग्नीप कर दरिसको खुरने भारनेवानी रस्त्री माथा फाल । वि॰ युष्टा विशित । -क्ष्मेंबका-सी वदीवर वा इंटमें व्यक्षि-स्थापनकी किया । ∽केमु~पु बद्धा राजा कुछारवज्ञ । - हीय-पु पुरत्यवर्गित सात महाहोतिसेम ण्यः। —ध्यत्र—पुरात्रा सनकके छाटे मार्र जिल्ह्य वेटियाँ भरत और शतुष्मको स्वादी यथी एक अपि । -नाम-पुरु भवोष्णागरेश बुद्धका एक पुत्र । -पुरुष-इ संक्षित्रं। -युष्पद्ध-इ एक विष। -सुद्रिका-न्यो पवित्री ६ती । -रत्तरण-पु इवनके पूर्व यहनू टके नारी भार क्ष्म विधाना ।-ध्यक्षी-सी दारकाः बुद्धा वर्ती । -इस्त-दिश्याम आहः सादि स्टन्स् सपन् । कुराप−पु[मे] पामकाचा कुराय∽पु (र] कण्डुंद श्रीका पानराज । बुधाल-वि [६] यनुर, बीशिगारः कप्तविगेषमे नियम इति लड दे इत्धा काइका बोहेश एक रंग या बस्र (नीतिषुशत, कर्मेडुशक); विनेता मसमा । पुर शिवा

कोविदार-पु॰ [छ॰] सपनारका देश था फूळ । कोदा-प सि । अन्य भोरक (नेकदोन)- वासपाना म्यानः चनागर बनामाः शोमाःचौदीः संक्ति चनः सम्प्रद्धेयः स्रवतः सीलः नावरणः रेशमका क्षेत्राः कटकक नारिका कोवाः वेटांतमें भागे हुए नीवारमाके गाँव (अच्चमम प्राणमण नावि) आवरणा नेवकासा वकीः गठलीः नारकः नानिः शेष्टमः प्रश्वकाः एक तरवृक्ती विन्य बाक्षतिज्ञ परीचाः बनाजको नाका पानपर गाँपमिको पक्रपता !-कार प प्रथास स्थानेकाताः स्वात क्यानेकाताः रेसस्याः कीया । —कारक —कीर-पुरु रेशमका कीया -- प्रद्वाप--प निभावरीया देना । —श्रेष-प सारह । -प्र-प्र रेश्रम, सोप मीटी कादि। −समक~त धर्माकीः ड्रभेर । -पति-प्र कोशस्त्रध । -पाम-प्र अभियुक्तके मपराची या निरपराच होनेहा जॉक्को एक गांचीम विधि। -पाल--वसी(क्षिम्)-प्र•१ 'वोध-मावक'।-पेरक-पु रक्षे, ररनादि रमनेश्री वेदी, संबुक्त । -फल-प्र बायप्रक, तरीरं बस्द कुल्बन तरवृत्र भादि प्रका ~फसी-सो तरोर्ड **कोड**ो करती भारिको करा। ~बासी(सिन्)-पु॰ क्षेत्रामें रहनेवाने-वींवा, स्टब बादि प्राची। −वक्रि-न्ती अंटवदिका रोगः पनवृद्धिः। च्याविका~सी स्वालके श्रेवर एकी दुर्ग स्टारी भारि । -हाजि-श्री दिम्ब परीक्षांचे दोनेवाकी सक्ति ।-संबि-न्द्री सीख देवर की जानेवाकी संवि । -स्वा~प्र• कीव गांसी मानी । वि बोजिमें रिवत ।

कोसक−प [मं] भंदाः भं″कोशः । क्रीशक-प [सं] यह रागा देश क्रीसल । कोससा-यो॰ [तं॰] है 'होस्स'। को सक्षिक∽५ [सं•] मुख, रिस्वत । कोश्रोत-पुर [सं] एवं तरहवा सरहंगा । कोशांद्र-प [म] भट्योस । क्षीप्रसंबी-सी॰ [सं] वे 'क्रीशंनी ।

कोसागार कीपागार-५ [सं] ध्वमाना व्यवश्येता

रसमेका पर ग्रीमधाना । कीशासक-इ (सं) बहुवेंरको कर शाका। वरीरें। शान । कोसातको-न्या (तं] तराहै। वीतमी रात ।

कीशातकी(किस्)~ड [र्ड] व्यापारीः बाह्यानित ।

कोशाधिप कोशाप्यक्ष कोयाधिप कीपाप्यक्ष-प [क्षं•] स्त्रप्रांचा । क्षोक्रासिसंहरण∽पु॰ (सं] क्षोदाधी वभी पूरी करना ।

कोटराख-प्र• (तं•) कोसम जामक प्रछ । कोशिका-भी। (सं) प्यार। क्लिस

कारिया-स्ते (पार्श्व समाजसम कवीय। कोणी कोपी-भी [रं] कही; असावका हैं। कप्पल,

स्मिक्ट । कासी(विाम) कापी(पिन)-नि नि । की प्रतयका

A mintel da t

कोप-प्र[ग] ४ काछ (धमाध मी) । क्षीय-व मि विषया धीतरा माना क्षीका धरीरके भीतर का भागासन मुकायन विशासक जीता की बेगा है।

क्षोहरा~षु दे॰ <u>प्र</u>श्रा । कोहरू-पुर्शन) वह मुनि वी मारसाम्बद्धे बारि भागा

वंशी माँता सकाराया छारीएके संतरका दक बात पंचार वसारः वहारबीवारीः 'जैवेट' । -पाछ-प= मंत्रतीः कोगामध । -वब्रुता-माँ १ क्रम्य !-जब्रि-मी+ देखी सकार्यः ऑतका अस्पत्तित हो कामा ।

कीएक-पु॰ सि॰ी सकीरों है बनाबा हुआ साता हरे कार्योगका का सारकी कारवीवारी: बंधी धर्मी मारिको भेरतेमें व्यवहत विद्वीका बोहा 'हैबेट ।

कोष्ट्रागार-प [र्स•] भंटार, कोषागार । कोक्सगारिक-प्राति | क्रेप्यवासे प्राची: संदारे । कीराप्रि-न्यो॰ सिं॰ो शक्तमञ्जिक आस्त्रेह रम ।

कोळी –स्रो सि∙ों बस्मपत्री ।

कीय्या-पि॰ सि] धनक्ता सदम्म । प्र कम्मता । कीस-४० इरीकी वस माप की कमजब ही मौकने बराइट बोती है । कोसीं, काके कोसीं-वहत हर ।

कौसना−स क्रि॰ मिया करना: शरा-महा करना: पाकिकों-के रूपमें आप देना । (सुरू पानी धी-वीकर कोसमा-नवत अधिक कोशवा !)

श्रीसम~प यक देत जिल्ला सन्दर्भ इस बादि स्नाने भीर नीज रवाके काम माते हैं। है 'की छाना'। कोसक~न [र्स+] रुक प्राचीन समस्य, धरना केसन भारती ।

कोसका-की मि विश्वत लेककी राजवानी मंदीला।

क्षोसक्यी –शी+ **१%** रायिनी । कोसा—त एक तरहका रेजनी कन्ना निरोधा प्रधीरा। का हुआ। एक नाउं। अवधेश की विकली शुपारी स्थाते समय निकलता है (इसमें दर्श ग्रापादिनेको हैंना और स्वादिश बनावा जाता है)। -कारी-सो धावठे

क्षमें गाना । कोसिया-स्त्री॰ निशंकः धीरा बनोरा ।

कोसिका०-सा० दे 'कोशस्या । कोसी-स्त्री यह सरी को नैशार दे बढ़ारोंने निकासकर गंगामें सिकटी है। है होनेके बाद शक्तमें हुने रहनेवाने

कार्वेशा-प्रशेष अध्यक्ष ।

स्तो ।

कोर्हेबीरी-की वे• फ्रम्हरीरी। कोश-०९ होपा [का] पश्चार संत्र । स्थानिय-प्र क्याकामुसी पहार । -क्रम-वि पहार गोरने वान्य । ब्रु कर्दार । –व्याफ्र-ब्रु क्राक् परेत आदेवन पर्रतमाना विसक्ते जासपाधन्ते कीन बहुत सुन्द होत है। -जिस्त-वि बीर्ड सावसी। -सार-प्र क्यारी रकाम, अप्या वहार । -(है) ब्यालस-बु शंकाके एक वर्गतामी भाग्ने निश्चार निहित्तमें निकान बागै र मार्ने आमदबा धतरमा माना काना है। - नव-प्रमापका

यक बरिवाल-प्रसिक्त दौरा विस्त्या यक दिल्ला विदेशके महाराजने और दूसरा नशरामीने मुद्रवर्गे महा है। क्रोहरी~मा दे प्रदर्गाः कीहबर-पुत्र वर वर वर कमरा क्षित्र विशाद समय

नुकरेवणांकी स्थापना आर नुसा रामी बडा की बाती है।

पुरु क्रमना, भारा !-बाव्य:-सार्येण:-हार:-सायक-कुइरा∽्यु इवार्ने मिके हुए बशक्तम थी टंडसे जमकर मीचे पु कामदेव।--स्णु-पु० पराग। -विविद्या--सौ० यह गिरते हैं। इत !- शयन-पु पूर्लोकी नेज ।- स्तवक-पु पूर्लोका कुइराम~पु॰ कई बाटमियोंका एक साथ रोना-पीटनाः गुम्मा गुक्रमस्ता व्य पूर्व । छोरगुन, भारेताः रीने-पीटनेका छोर । कसमाजन-५• [सं] अस्तेक भरमका सरमा । कुइरित-पु॰ [सं॰] शब्द, स्वरः श्रीवसका कृतनः रक्ति-इसुमाबछि न्यां • [सं] पृश्तीम भरी अंबक्तिः स्दर्शना कारुमें निकस्प हुमा शब्द । 🤋 वि अन्दानमान । पार्यकृत म्यायका एक धंद । कुइलि -पु [सं] पान, तांनूका कुसुमाकर~५ [सं•] नागः वर्शव । श्रदमार-पु [पा•] पदावी स्वानः पदावः। क्समागम-प [धं] वसंत । **कुदा**−सी [सं] कुनुद्री। इसमाधियः भुसुमाधिराश्च-पु [सं] चंपाना पेषः। इसुमायुष-पु (६०) कामदेव। इसुमाछ-इ [मं] बीर। **कुरा**मा~पु० दे० 'कुएरा । इसमासब-पु [मं•] धहरा पृक्तीते बनी शराब । कहिरा-पुर दे॰ 'कुइरा । कुसुसित −वि [सं] पूना दुवा, पुणित । कुसुमेश्र-५ [मं] धानदेव । इ.समीदर-इ [सं] भीर शामक दृशाः कृत्र्र-पु [म] सुमै, बदरादः मूठ-पृदः दीवादी शीव ! ~संद्रु-नवार-वि॰ अपराधीः दोगी। इस्स-५० [सं•] एक देववोनि दे 'कुस्ल'। कुसेस। कुससम≠−पु ३० कुछेश्चन'। क्ती है। कुस्टी - विकास कुर्स्स्वरी - नी , कुर्स्स्वद-पु॰ [सं] पनिया। इस्तुम−५० [सं] समुद्रा विष्णु । क्रवेक्क +-प्र• दे॰ 'क्रमकम'। र्कें जना⊶ व कि॰ कॉलना। कुरैचा - पुरु बुहाई ! कृष-५० (सं] इन्स सम्बार दृष्ट । कुर्क - सी भीर वा कोयकका बोल । पु [र्स•] बंदवालाः वका छैउसी। पैरको मोटी सस भोसीबाबी। हगी। हम अबस्त एक तरहका मेक्द्र। मागीका पक् भेद ।-कार-पुटन । -स्थम -स्यर पु॰ मुर्गा। कुद्दमान्थ कि मीर क्षेत्रल भारिका मीठी भागावामें बोक्तना कुत्रमा। कुद्रक्ती−सं क्रेक्सः इन्दर्भ-प तंत्रमा केमर । इदस-तु [सं] ताकसा एक भर्। क्रूब-पुक्रीय एई।। कुरन-वि [सं] ईम्बांकः दमी। पु मिडीका बरवनः सीक्षेका बरतना बुस्हाः सींप । इच्दना≔नि (का]पुराना।†स कि दे॰ कृतना मारना- राम शांद कासी कामधेषु वास्त कुदस कुमार्थ दें ~स.दितामधी । स+ कि. याजा । स्क्री+ [सं∗] दे **अस्तिका** । पुरुमिका-स्ते [तु] कीन दंग दिसाऊ व्यान-पूत्रा नाम भागी है। भादि। इइमी−धी नाडु और श्रमका ओड़ा दुवेशी निगाकीमें हमायी पानेशामी नहीं । - उदान-सी दुश्तीका यक वेष । उद्ग-इ राख्या कु~सी [मं] पिद्याची । 1 389th' \$ 2-3932 क्ट्र-मा•६ क्रिं। कुद्दर-५ [मं+] गण छेदा मान वा गर्भका छेदा काना गना सामीप्या रतिमोहाः कटरवरः व दे द्वस्य । १

मी पद निकारी क्यां बहरी।

इहाबाः इहारा-पु॰ कुमहाशः। [सी॰ 'कुम्हाही'।] कुद्दाना रं⊸ध कि स्टना, माराय दोमा। कुद्दी-की बदरी, कुदर ! पु॰ श्व तरहका मीहा ! कुर्⊈ः कुर्ह्-रदी [सं] समाधरया अमावस्त्राकी अविष्ठाती देवी कोवलकी कुछ। --कंट - मुख --रय-पु कीवल। -कुहु-सी॰ [दिं] कीयमको बीको । कुडक-स्ती विदिवाँकी मधुर कोकी, कुलन । -यान-पुर यह तरहका बाच किसे पकारे समय पुछ भावान निक कुदेदिका कुदेदी कुद्दलिका~सी [सं] कुद्दरा। इदीकृदी - ला १० 'कुर्कुर'। कुँका – को की खा पेटा क्रीसनेका सम्प्र। र्द्धैग−प्र वरतम सरादनेका एक शीवार, खराहा । केंच-का वानेका युत साफ करनेका बङ्ग सोदारीकी र्युचनां −स कि दुषक्रमा। क्रिया-पु॰ पदनीः करछाः † कुमका द्वमा करचे साम अविके बादिका गुदा की बटमीके तीरकर सामा जाना है। कूँची नहीं छोड़ी बढ़नी बड़ा तृहिका। मिसरी बमानेकी फुरिइना व तानी । शु०-वेना-वृंगीस साम बरमाः श्य पदानाः एक दोनेसे दूसरे कोनंतक रात जीतमा । र्केंबनार−स निरुदे 'हबना'। क्टूब-प कोहेको दीपी। वामी निकासनेका टोस सीसा एक वरतनः बोतनेसे वनी हुई गहरी क्योरः मक गहरा पात्र बो तरहेका नावीं बनानेके काम आता है। क्रुँक्रां – पु कानो एसनेका चौड़ा क्रतन हुँटा; गमला; कठीताः एक तरहस्य शीरीस्य होंदी जी रीयजी करनेके कुँबी-मी परभरकी कटोरी पवरी। छोटी मारा कीस्ट्रका क्सल जैसा वह भाग विसमें बाढ रमा जाता है। क्रेयना∽न ति पौदान 'उँवृक्ति नावात निकासनाः दनी भाषानसं करादनाः कन्वरीका गुदुरग्रं करमा । कुछ-न्त्री कीयलकी योगी। संगी गएरी भागात्र कीका यशी वाने भारिमें कुंबी देना। न्कमा-न कि कोयलका बीचना, 'तुइ-तुर्' करना।

कीदमा-कोशासक वरीरना । –फिरवा-जुपमें अपना बाँव पक्ते स्वता । कीचेमरो – प्रवस्तरपर सम्राजी करमेका एक बीकार । कीणप-पु [सं•] सुर्राखोरा राक्स । वि• पातकी, वावमी । ~इंत∽यु मौपा। कौणपी - स्तो । (संक) राष्ट्रसी । कोतिक, कीतिग॰-पु॰ दे 'क्षीतुक । कीतक-प्र• [प्रं•] कृतहरू, प्रसादताः अधहरू बगानंतासी बस्तुः बर्चमाः तमाञ्चाः बरस्यः भानंदः शस्य-विनोदः हुँसी मजाकः रिवाहका बंगता बंगतको विधि । —प्रिय— वि विने सेक-तमाधा वा वैधी-मवाक वर्ध्य हो । कौतुकित−4ि [सं] असुद्धाः कौतकिया-पि कौतक करनेवालाः विनीती । भौतकी(फिन्)-रि॰ ६०) छेक-रामाक्षा करमेवाला विमीतीः विवाह-संश्व बराजेवाला-'ही बीहरियता व्याक्त आ**रो** −रामः ा कीत्रप्र4-प् कीसा बीत्रक्र । कीत्रहरू-प [सं•] क्यूहरू। रवोहार चलाव । कीरस~प॰ सि] एक कवि, करस क्यिका प्राप्त करस रिवेद साम । कीमां ⊶मी कीनही विकि: कीन सा कास, मंदर ! कीयार्ग – वि.स.स्थानका वि.स.संबनका । कौधम~द (तं] श्रीतुमी श्रासाका वध्यवन शरनेवाका । कीश्रमी—वो॰ [तं] कुनुयोके योक्या स्ता हामकेटका पक्ष शाला। कौद्भ~वि [का] मंद्युकि लाग्रमञ्जा कीदासिक, कीदासीक-3° (तं•) यह तंतर वाति, REUE I **क्षीह्रविक∽पु॰** [सं•] काका समक । क्षीधनी । – भो स्टबनी । क्षील-सर्व+ प्रसदाचक सर्वमाम । वि» विस प्रकारका । कीसपर-- त्र है० 'कीपर' ।

क्रीप-वि [मं] कूप-इं४भीर कुरव्हा । पु॰ कुर्वेका पानी । कीपान-त [तं] सरीरका श्रुश मागा प्रश्वम किना गुद्ध भागको दश्वतेशाचा वस्त्र-क्षत्र सैनीयोः भीत्रहाः इन्दर्भ, पाव ।

क्षीपाक्की-स्था निश्ती विष्तुको न्या । कीप्य-विद्विति विशेष क्षीनेर-दि [म] क्षेर संस्था ।

कीयेश-मा॰ [सं॰] उत्तर दिशाः पुनेरकी शक्ति।

धीराध—पु० [५०] क्रस्पन । क्रीम-भी [बर] मनुष्य-समृद्य मानिः बंध, भरतः राष्ट्र ।

~ प्रस्त-विश् राष्ट्रवादी !

दीमार-पु [सं] कुमार-(जन्मने पाँच वरसनकरी) बंबरभाः कुँबारापमः सनग्धुमाशादि रिशन सटिनिशेषः कमारीका प्रमाणक पमत र विण कुमार-संबंधीर कीमका नुसरेव-संबंधी !-कारी(सिन्)-वि सद्यवारी !-वंधका -मी वैद्या । ~भृत्य~तु वश्रीका वास्त्य-वीवण, दवा-रणामः साहरेतसः रिग्धः विकिन्तान्वयः । ज्यमन्तु **कविवादित रहमेका प्रत**ा

कीमारब-५ [तं] कुमस्रावस्थाः एक राजः ।

कासारिक-वि [संग] हुमार-संरंध । पुरु कर्नास्मीका पिता । कीमारिकेय-९ [सं] हुमारी स्रोक्त रेटा । कीयारी-की [सं] मेरे पुरुष्धे की किसने इसरा विवाह न दिवा दी। कार्णिनेवकी शक्ति वाराही है। एक रागिमी । क्रीसियत क्रीसीयत-न्या॰ वि॰) वाति, क्रीयदा मतः वातीवताः राष्ट्रीवता। क्रीसी-वि॰ कीमसे संपव रखनेवालाः वादीवा राशव । क्षीसद−५ (सं•) कार्णिक्या महोना । की मृदिया-वि [सं॰] कुमुर-संश्रीत क्षमुरपर्य । कौस्तिका-सी॰ (do) बमली एक सकी चाँदमी। कीमती-त्यो॰ [सं] यदेशोः यारिक्यो प्रविधाः भाषित-की बुक्तिमा बरहवा बीधोरसवा कुसुदा म्लाह्बा, येख (शंबके नामके शाव)। - बार-पु शररपृथिमा बाबिन को पर्विमा । -पति-पुरु कहमा। -सहोध्यक-पु कास्तिको पनिमाको होनेनाका वास्त्र । - इक्ट-५ होदर, विशामसाम । कीमोहकी, कीमोर्दा-स्था॰ (मृं०) निमाको परा । क्रीर-पुरु ध्वन विदाना । क्षीरमार्ग-न क्रि इक्का मुनना। बीरब-प [र्स•] करका बंधनः कर गरेश । ति॰ दर वंजिबीस संबंध रखनेशका (-सेमा)। कीरबेच-प्र• सि] कुरका बंधक । कारम्य-पुरु (मंत्र) कीरव । कीशां-पु॰ दरवात्रेके संगत्त-सम्बद्ध भीवदेके गेरिये हाबार। कुलेको रिवा बानवाका खाना। दे॰ कीहा । अ - (१) लगाना - दिसीब्री बार्ते सननेब्रे किए बरवानेशी काक्ष्में क्षिपका गड़ा रहनाः मेंद्र प्रकाशाः बानमें वैदना । क्षीरी०-ली **क्**र, गाइ । कीर्म-दि॰ (ते॰) कुर्मनंत्रथी। विष्युदे कुर्मानतारनंत्रेथी। पुरक्दश्य∤ कीसंब-४ पश्चिमीदे शीचे होलवासा वह सरहदा वर्ष । कील-प श्रीरा • कोरा कमका [सं] वाममायाँ सार्काः दि कुरूकमायत पानशामी; रूटोम ! क्रीक्र−<u>प</u> [ल] वचन कींश्न प्रतिद्वा रक्तारा वर सृष्टि कामा थीन का घर भी क्षेत्रास गान है। -(प)हरार-व बररवर मधिया। -(व) चेल-व वधन और वर्म। श्रुष-का प्रदा-बानका पत्ती । -रिमा-बयन रैमा । कीमई-र्व नंतरेढ रंगद्रा । तु मारंगी रंग । क्रीक्रटिनेय-५० (मं०) थिशुद्रोदा नुदा बारम सुत्र है कीसरच कासरा-प्रक [र्थक] जुलराबा पुत्र, बारन पुत्री मिश्रकीया पुत्र । कीसद्या-पुरुद्ध तरश्रद्धा द्रपृष्ट् क्रीमध्य-पुर्व [संव] १२ बार्थोरीमे क्य (औ) । कीका-तु एक तरहका कतरा ह रहे प्रश् प्रश्रका भीमटे के पोटेका भाग । भी*माचार* ~षु० (गं०) नामगर्ग १

कीलासक--वि॰ [तं] नुःहार-संश्वरं या उपना मनामा

ध्रमा। दुर्मिनी सा वर्णना

8.8 कृद~सी कृत्रोसी किया । ~फॉव्-सॉ॰ सएस-कृद । कृत्मा-म क्रि । उग्रकताः उँवाईसे उन्नक्टर गाँचे बानाः इतरामा । स॰ क्रि॰ फॉदमा, रुपैना । कृत्र-पु[सं•] भातिविशेष । कृप-पु [सं∗] कुमी; राष्ट्रा; छेदः अभवेका बना तकका इत्या। नदीके बीचमें अवस्थित वृक्ष या पहान। मस्त्रहा नाम बॉबनका स्टा । -कच्छप:-मंडूक-पु॰ कु^हका ब्युआ वा मेटक। वह विसके ग्रानको सीमा बहुत संकृ नित हो। -कार-पु पुर्भी खोरनेवाका। -बक-**थंग्र** – प्रानी निकाकनेकी करसी। भूपक्-पु [र्र•] छोरा कुमाँ। कुप्पाः अस्त्का नाव वाँवने-का सूँटा। विका। नवीके बीच रिवट बहुन । कृपम∽पु [अ] वह टिक्ट वा पुरवा विसे तिसानेसे कीर्य (नियमित) बरत मिक्र मनीयार्वर फार्मका वह साग क्षिपुर पानेबारेकी वन किया जा सकता है। कपार∽व [सं] सस्द्र । क्षी - सी [सं] छाटा कुथौं कुप्पीः नामिका गढ़ा । क्षपु-3 [रं•] म्वाधन मसामा । कृष∽पु•दे कृतक। कृषद्य-पु॰ पीठको दुर्शका इस सरह मिकल भागा कि बह रेडी ही आब ! क्ष्मर~प [मे•] कुनदा रथ या गाईन्द्रा वह बाँस जिसमें भुमा गाथा बाता है। मुगंबरा स्थाने वटनेकी जगह। वि॰ श्वेतरा प्रिया क्वरवासा । कृपरी∽सो [मं+] दे+ 'कुक्री । कृषा-प्र• दे 'तुनक'; वह तकारी जिल्लार वेंबरा रहा जाता है। सूम-पु॰ (सं॰) श्रीका ताका ताका व **क्र**-विश् तिर्देश; स्रा, मनहस्र निकामा; नाकासकः कावरः मृत्यं व मिच्या । पुर्व [सं] माजमः भारत । कृतस०−५०दे कृतं । भूरा∽दु देश राशि भाग । वि कुल्लि; **छ**राव । ¶री−को छोटो सहित • शेका हुछ। कृष-प्र [सं] पूका मुद्दीमर कुछ गुँधी बादी: मीरका पद्मा दर्प। भीगा संक अपना सिरः मान्नका अपरी भागः महार् । -शीर्प-तु अत्वद्व वृक्षः गारिकेळ । -होस्तर-प्र नारियलका रेक्षः कूर्यक-तु [सं] कृष्ये। बाँत साथ करनेका मश्च । कृषिका - स्रो [मं] कृषी। तसवीर बनानेकी कृषी। कुंबी। बब्धा सूरे। परा हुमा दूव । क्रेन-पु [सं] क्रमा धेल-क्र करमा । कूर्यनी-को॰ [पं॰] पत्रकी पूर्णिमा। कृप-3 [सं] मीही हे बोचका दिस्सा । **पू**पर-दु [मं•] दुवनीः पुरना । शूपीम-दु• [नं] ≹ कुपीस'। क्म-पु [म] कारुमाः विष्णुके वस अवनारीमेरी वृसरा कप्छपावदार। वह प्राप या बायु किससे वलके सुकती हैरती है। एक संनीतः सुद्रा। -क्षेत्र-मु एक हिंदू तीर्थ। -संद-दु पुरापानुसार एक धार का दवसा मामः। – चक-पुरक्तंत्रीकः शुभागुभ-गृथकः चढः।

-हावसी-सी॰ पीर-शुहा दारधी। -पुराण-पु० अठारह पुरानीमेंसे एक । -- पृष्ठ-पु क्युपको पीठः नाम-पुष्प । -सुद्रा-सी॰ शंत्रिसोंको एक सुद्रा । -शज-पु बहुत बड़ा कल्लमा। विष्युक्त कुर्मावतार । क्रमोसन-प्र• [सं] इठनोगका पक नासन । कुर्मी-छी॰ [र्न•] कहुई। यह प्राचीन वामा ! कुर्बंकप-वि [मं] किनारेको धूने, किनारेसे टकरानेवाका। कुसंक्या-स्थी [संग] गरी। कृतंत्र-पु • [अ०] बाँतहिबाँचा दर्द, 'कोलिक'। कुछ-पु [सं] नदी नादिका किनारा, तटा सामीप्याद्वरा ताकाषः सेमाका पृथ्वमागः। 🛡 व्यापासः - वर-वि किनारेपर, कक्षारमें बरनबासा (बिरम दायो सादि)। कृष्णक-पु [सं] किमारा इक् वॉनी । कुछवती-स्ती॰ (सं॰) सरी । **रूका**−पु॰ क्षेत्री नहर; दे वृत्रदा'! क्रक्किन्न-ली॰ [सं] बोचका मीचेका याय। कृष्टिमी – श्री • [सं] नदी । कृष्टेश्र(-वि (सं•) दे कृष्टमा[']। कुस्डा-पु॰ वह भीर जीवका शेहा समरक दानी भीरकी ह्यो कुरतीका गढ वेंच । सु ०--सरक्रमा - हरहका अपनी बगइसे इट माना । इवत−सौ [ब] शक्ति, दकः ।–(से)श्रिस्मामी−सी० हरीरकी छक्ति । −वाज्-ती॰ बहुक्त । −वाइ-न्ती॰ रविश्वक्ति नीर्व । -स्कानी-सी॰ बाव्यारिमक प्रक्ति । -इाक्रिमा-की पाचनशकिः ^३ कुबर-प [सं] है कुबर'। क्वार-ड [सं] दे 'क्वार । कृष्णोष्ट-पु [मे] कुम्हदाः पिछापीका एक मरा एक मक्दार ऋषि । क्यांश-सा॰ [सं] युर्गा। यदः भोवति । कुसक-पुरक्ष तरहभी वास । कुड़ = सी शार्थकी विग्याप: चीया। **क्ट**ा-मो॰ [सं•] कुटरा । कृतम-पु (तं॰) काटना कवरना। इकहे करमा । कृतमी-सी॰ [सं॰] कारने, फश्तेमा सापना देंथी। क्रक-त [र्स+] गमा । -सास-त गिर्गिया क्रिफ्टमी । कृकण-पु॰ [सं] तीनरको जातिका एक पद्मीः कृमि । कुकर-पु [र्श•] शिवा शरीरस्य वायुः कुक्रम कुनेर् । इक्स-त [१७] हे (इस्र)। क्रकमा−नी [सं] (पेप्लकी। कृष्यारिका-सी॰ [सं] गरवनका सका दुमा मागः सिर और गरदाया और । कृष्तु-वि [तंत्र] कष्टमवा वर्तिमा कप्तापा रुप्ता बराहर । त बहा द्वारा कविमार्थ सीवयम मायश्रिष्ठ अहा पाक मूत्रकृष्युरोग। −पराक्र−चु १२ हिमका एक् निरा-शार ज्ञा कृष्तुप्रतिकृष्तु,–पु [मं] २१ दिनोंदा त्यः दुल्हाहार्

कृत−ि (सं) किया हुआ। पनाया हुआ। प्रश्नाया हुआ।

द कामा क्षकारा करेकला छ (स्वा सन्युगः ४ को संस्वाः

स्वी० एक विकिया । – हास्र-पु अध्वरीय बद्धा राजसूव यम । -- विक्रमी(विम्)-विश् वन हैवर बहवा पत वेचनेवासः ।

क्रथर्कदिक-५० [सं॰] व्ह प्राचीन देश । क्रम्म-पु•[मं] काटनाः वया एक शासव ।

क्रम-पु (रो०) भाग भानेके किए करम उठाशा, दग भरमा दग करमा आर्भा पटनाओं, बरताओं, व्यक्तियोंकी बागे पाँछे ना ऊरर मौनेके विचारसे बवारवान जनश्यित तरतीय सिक्धिकाः नियमित व्यवस्थाः वेदपाठकी एक विद्येष प्रणालीः अस्तिः अक्षासम्बद्धे सुराः तेवारीः करण विच्य (बामनस्पर्मे), एक व्यक्तंत्रकार है । बबासंस्काः । क्रमी कार्य । एक्टा - स्वी० वेरपाटका एक प्रकार । ~नासार-धौ दे॰ 'बर्ममाद्या'। ~पाठ~पुर वेद पाठका यक प्रकार। −वक्रू−वि समयुक्त, सिक्सिके गर । ~सँग∽पुकम−तरठीक्का इटकाना ⊩विकास− प्रभारे पारे कमछ प्रचित्र किसस दोना अस्मोर्कात । - भंक्या - की निक्षी बरतु व्यक्तिको क्रमधार संस्था सिकसिनेन्द्रा संबर । -सम्बरस-पु+जक्रपर्वा² नाममेौ-में रह ज़ुरुनेके नार किया हुआ धम्प्यास ।

क्रमक-वि [मं•] क्रमयुक्त बान बदनेवासा । पु क्रम पाढ जानतेवाकाः सिवसिन अध्वास बरसेवाका विचानी । क्रमण-१ (सं) एक्ट्री इसरे स्थानकी, इन्ही स्थिति वानाः करम स्टामाः क्यानाः वीकाः पैर ।

हमतः(तम्)-व∗[मं]दे 'क्रमसः'। क्रमश (शम्)-म॰ [तं॰] बबाकम रिगलिसे। धीरे गरे।

इस्सोक−प्र सिं•}क्षमधंक्या। क्रमानतः—वि (सं) अन्यासः कुल्कमायनः वापनारामे

चडा भाषा हुआ ! अन्यानुसार्-अ [मं] बशक्तम, विकसिनेते । क्रमि-पु[भं•] दे क्रमि ।

क्रसिक-दि [मं] क्रमागतः बुल्कनामतः। सन्न-प्र [र्थ] सुपारीका देव ।

क्रमुक-पु [सं] सुपार्शका पेश नागरमोशा प्रकानी

मोपा शहनुनदा परा सपासमधे शोंडी । क्षमाकी-स्री [मं+] सुपारीका पेड़ ।

क्षर्मस्य, क्षरासक-पु [सं] अँद ।

श्रमोद्रेग−९ [सं] ०%

क्रम−पु [तं] सीव धना सरीरना। ~शस्य-पु॰ भैनामा श्रमाशा - • पत्त-पु विशी वस्तुके सन विक्रवरी संबंध रसनवाला वन । -विक्रय-पु सरीव (नह) व्यापार ! ~विक्रयिक~<u>श</u> व्यापारी ! ~विक्रयी (पिम्)-ति मरीद निक्री करतेनाचा । तु व्यापारी । क्रमण-पु[सं•]स(१ मा।

क्यारोह-म [] द्वार शामारा मेका ।

कपिक-वि [र्श•] सरीदनेशमा । तु व्याचारी । क्रविम-दु [ले॰] सिमी बग्गुए अव-बिजवपर निवा ज्ञानेवाभ्य कर (की) १

अवश्यपात−तु [सं] अवश्यन, शरीरमें एकार* शकता (रोप) ।

करप-विश् [सं] जो सरीना जा एके निर्देश-वित्र राज ह्रमा (मास)

कवान#~५० क्ष्मण सम्बद्धाः

कस्थ-पु॰ [सं] कथा मांस । ~चात्तन-पु (हरन। क्रच्याच्, क्रच्याच् - वि [मे] क्रच्या मांस सानेदासा। प्र• राजसा मोसमधी केंग्र-वाप मोटवा आदि। विगा-की महिता

क्रशित-दि [मंर] ग्रीरदाय दुवका-क्ला। लीत-वि॰ सि॰) गया हुआ। भीता हुआ। स्पेंग हुआ। भारतीतः वता हमाः पदा हमा । प्र पाँवः बोहाः वसमः टगः गंदमाके विसी महके साथ भोगको रिवर्ति । --इहीं-

(शिम)-वि॰ प्रा मनिष्य अवीदिय विषयीकी बागने शाना शर्वतः।

कांति-कां॰ (सं) कमणः गति, वामाः सांबमाः समेदा अमय-वार्गः रिवर्तिमें आहा बन्द-द्वेरा पूर्व परिवर्गन राजम्बनस्थाका करा दिया जाता राज्यांति । -कक्क-तु॰ स्वैका अभगमार्गः -कारी(रिन्)-नि॰ रिशति व्यवस्थाने आरी प्रस्ट-पेट कर देनेवाला ! उ राजकातिका अनासी । —अध्य—पत्र स्रोति पानतेके किर पनाया बालेशका धेत्र। -पात-तु वह विद्वार्थी कांतिकस्य विष्वन् रकामे मिनता है। -धीहरू-प्रश स्क्रैंडा भनवमार्गः। −वस्तय-तु स्रोतिनृत्तः। −तृत्त-ह दे कार्विगटल'।-साम्य-त प्रश्रीकी तृत्व बांवि। माहस्र-५० वि | ऐसाई वर्गके प्रवर्तक ऐसा ।

काकविक-प सिंश्वी रक्षशे चौरनेवाला । स्थय-प [र्व॰] गारण क्या स्टेरका गढ असुपर। कृत-

राष्ट्रका एक श्रमः एक गाग ।

कायकः काविक-दुः (सं] धरीयनेनाताः स्थापारी ! क्रिकेट∽५ [मं] गेंदफा यह रोत वी शतने शेका वता है। −थाक-त दिने≥ शेकनेदा गेंद्र। −श्रेच-त मिलं दयत शंगण ।

किमि-प शिंभे हैं 'क्रमि । -प्री-ली भीमरामी। 一萬一日 利亚二十一朝一部 東京ノー神田一日 門 नरक । -शस्त्र-त वश्योद ।

विष्य−९ (सं•) मेप राश्चि।

क्रियशाला−नि कि ने वो किया बारडा ही होता दुना र क्रिया - न्या [म] बुछ स्टिया बामा क्रमे स्थापार भेद्या काम करमेदी विधि शिक्षण क्षानः सम्बामः रवनी भागिक संस्थाना प्राथिता भारत गुप्तनः उपचारा अध्यक्षमा शापन प्रपादण, अमित्रागया विवाद आदि । ~कर्रो(म) –५० क्यर-दिना अधिर । ~कमाप−५° र्श्यपे शास्त्रविदित्त कर्य । -कार-पुकाम करनगणाः श्वार रन्धे धिरार्गम धरमेगाना धाष । -चन्र-इ वह जानक जी कार्न व्यवसारमें बतुरारे रिभन्गहर मनीक सिटिये समर्थ थे। - पूर्वा(चिन)-इ सार्थका वक प्रकार: शहन प्रवाच मारि भ माननेवाना प्रतिवाही? -मिर्चेश-पु नार्य।-सिश्व-वि ब-मिश्र।-वंध--पु समेशीय ! - पट्ट-दि ६ वेड्रमध ! - वय-५ जनवार शिष ।-पद-पुर क्रियानांक्य ग्रम्स (गार्-)। च्याब्रच्यु व्यवहार/बुक्दवा∉ पार गारी वा क्र³मेन्

जाशा । –छ−वि दे 'कृमिश'। –छा−सी वह सी

विसके बहुद बध्वे हो बहुप्रमुग मारी। --धर्ण-पुर

-पुरुष्क पद्यो । -नास-पुधिष । -भूप-वि

कात कपहा । - प्रास्ति-सी सीपी ।

मीक्टोंको कम धिकानेदाला ।

पुत्रा पुत्रवत् पास्तित समाव बाह्यकः झाला समकः रसीतः **कोबात ।—भूप-पु॰** दशीय या बोटशीय बृप !—पुच-पु॰ माँ शक्की सहमितिके बिना गोद किया हुआ पुत्र 1-पुत्रक-पु राष्ट्रा ।-भूमि-सी॰ महानदी कुरसी ।-मिन्न-पु॰ क्रसिक-प सि॰ो छोस की गा कुमिण-वि॰ [सं॰] विसमें कीई हों, कुमित्रकः। वर मित्र किसके साथ वपकारके कारण मित्रता दुई हो। क्रमीलक-प्र [सं] बंगकी मैंग । ~रध-प सरुटी या बनावडी रहा !~बन-पु॰ वर्णान क्रश-वि [सं] वुक्का कमबीरा शोका सक्रियम ! - सूद श्मीचा । कृतिमारिमकृति-पुर्मि॰] वह विजित राजा को जीतने बाबे राजाके विस्त्र दूसरीको उमाइका हो ! क्यासा-सी सि देवकापन । इत्स-प् (सं•) अक समुदाबा पाव । इत्रद्ध−वि [सं] संपूर्ण : तु जका इति पेर ! कर्तत-प्र [सं] पातुमै कुन प्रत्यय कगानेसे बना हुना स्रव्ह । क्य-प्र• [सं] हे 'क्याचार्व'। एक राजविं। क्रवण-वि [मं०] गुम, देशसा दीना मौचा श्रदा विकेट शीम । पु बावस भादभी। ब्येश । ~बी--ब्रेटि-वि ग्रीटे दिश्रका, भ्रद्रास्त्र । −व सक्त −ि वीनींपर दवा करनेपाठा । क्रपणता~को [सं•] संबक्षीः देन्य । कृपणी(जिन्)-वि [सं] दुःसी दीन। कृतमध-विश्य है 'कृत्य'। क्रपनाईश-सा॰ दे 'क्रपनता । क्रपया-म [सं] क्रपाप्षेद्ध, क्रपा करद्ध) हपा-तां॰ [रं•] प्रस्तुपरारधः क्षेत्रा म रखते हुए पर हुन्य-मिनारन्त्ये रच्या अनुसद्, दना। -इष्टि-छी० मेहरदानीको नियादः ह्यामाव । -धान्न-विश् जो कृपाके भीग्व हो। मनुमहमानव । -सिंशु-वि इपके समुद्र (भगवान्)। हपाचार्य-५० (सं•) समाधानः मामा और कौरम्बद्धके एक महारची । कृपान-पु॰ [सं॰] तक्वार; सुरी; क्टारी; एक वंटक बुत्त । कृपाणक∽उ [सं] तस्त्रार । कुपाणिस[्]न्मी [सं] छोडो वक्त्वारः क्रदारी । क्रपाणी-स्थै [मं] छोटो तकवारः इटारः कररमीः छुरी। क्रपास≉∽िर दे 'इपानु'। क्रपासु-वि [सं] क्रपायुक्त बसाउ । कृपिन≉∽वि पुर्व कृप्य । ष्ट्रियनाईं = न्शी • क्रपमता । क्रपी-मी॰ [मं] क्रपानार्यक्ष वहन और हाणानार्वकी पर्नाच -सुत-पु अश्रयामा। इमि-पु [म]क्षांस मक्ष्मा बीटी; कास ।-क्रंकट-पु विभाग विश्वाम चर्चनर । - इस्-पु यक विषेका क्षेत्रा । --वर्ण --वर्णव-ड कानका एक रोग। --कोश --कोप-पुरेशमके कोरेझ कोवा करूला। -व्य-दिश चे.रीका नारा करमेशास्त्र । ~क्सी~कॉ+ इक्सी । ~क्र~ वि• क्षोतीसे करणका पु॰ रेद्यम अगरा --आ-स्ती साम । -ईतक-पु बोहोडे कारण हीनेवाला दोनका रोगः, दर्भ । --पर्यंत --रीम-पु॰ वॉनीः वमीसः।-फस्ट--पु गुनर। -भोजन-दु रहं मरह। -रिपु -राजु-त्र निरंग । - होग-पु॰ मानीमें बोर वा बिचुए पैदा ही

कुशताई - औ॰ है 'कुशता'। क्रुशर-पु॰ [र्ष] तिह-वामहन्द्री विचन्नी विचन्नी । क्रशराबा-प [र्स+] शिषकी । क्रमका-न्दी [संग] सिरक वाड, केश । कसीत-दि० [सं] दरका । प्र• हिद । क्कवांसी~ला [र्ष] दुवली-पत्तसो खी; मिर्बर्स स्ता I क्रसाध्ये~न (सं) मक्का । कुद्धामु-पु [ए०] बहिः वित्रकः। -रेता(तस्)-पु० शिष । कृशाञ्च~दु [र्र] तृजर्विदु-बंशका एक राश्चर्य । कुसाइको(दिशक्)-पु॰ [सं] सर, नारप करनेवाका । क्रक्तिल-वि॰ (सं॰) क्षीणकाद, धुवका-पत्तका । ह्योद्दी-वि॰ की॰ [सं] पत्नी कमरवासी (की) । की॰ अन्त्युक्तः । क्रपञ्च-प [र्थ॰] इस बोतनेशका, दिशाना दैना फान ! वि॰ स्तीयमेत्रका । क्रवाच-प [सं] क्रिसन, सैतिहर, ह कृषि-स्त्री [र्ष] बीतमा-थोना सेतीः बमीन भीतमा । -कर्म(न)-प्र सेतीका क्षाम । -कार-प्र• कृपका। -बीबी(बिस्)-वि रोडीसे निर्वाह करनेवाका(किसान)। कृषिक-पु [सं] इरका कृषी−स्वी[सं] सेतः ≉ गेतो कृषि। कृषीबस-पु [पं•] दिसान, सेनिइर । कुरकर-९ [त] शिर । क्रष्ट-वि॰ [र्त] सीचा हुमा। जीता हुमा। ~पच्या~ पाचय-वि संवर्षे पश्चनेशका । - ग्रन्छ-पु॰ किसी प्रसन भ्ये उपग्र । कृष्टि−स्प [शं॰] आहर करना सीयना बीलना। पु• विदान् व्यक्ति ! कृष्टोस-वि [र्वन] जोती-नीवी द्वर (मयीन) । कृष्ण−दि॰ (तै॰) हाका दयामः मृताः मौकाः दुरिमृत वा पापक्रमें कर्मेवाला दुव । पु काला वा गहरा गीठा रंगा वहुबंदी बहारेब और देवधीके पुत्र मा विष्युक्त भारतें अवतार माने अभ हैं परमदा काका (रामा ग्रीमा श्रीविकः अञ्चय वा पन्नदर्मः कैनस्य पारमः बनिनुता पेतस्यानाः कार्नेगः काला ज्यारः बाली मिर्च लोडी। सुरमा करीँदाः ण्ड अंत्रकार किवा यसमे माप्त थन । —इटेंद्र-पु∗ हाहः क्थल । -कर्म(क्)-प्र कालो करतृत पापरमें। -कर्मा(मण्)-वि पारक्रमें करमेशाता !-काय-वि कार्व (नवासा 1 पु असा 1 -काइ-पुर दासा सगर ।

वृक्षमेका भवकार करनका तील सनीविकार, कीच, शरसा। रीप्र रसका रथाया मान (सा॰)। -धा-वि स्रोधने बरपद्य । पुरु साह । -सृष्टिम्रत-विरु शन्सीर्वे वयुद्धवासः मापेने नाहर । -बर्जित-विश् क्रीपरहित्त । -वजा-सीर दक्की एक रहता । —हा(हस्) -पु० विल्हा क्रोधन-दि॰ [सं] क्रोबी स्वयाक्षास्य शुस्सवर । प्र कीछिक्का एक प्रक छाठ संबरधरीयेसे यहा कानु करमा । क्रोधना - वि॰ न्ये: [सं॰] क्रोधा स्वभववाधी। मोचनंतर-विभयः, सुपित्र। क्रोधा-सी [सं•] वस प्रवापतिकी एक क्रमा । क्रोधास्त∽वि सि∘ेक्रीयी। क्रोधित-विक्रम, कृषित। क्रोची(चिम्)-दि॰ [सं॰] क्रोन क्र्रनेगकः, जिसे क्र्रन गुरसा था काव । पु भेषा। कुत्ताः गवाः व्या लंबस्पर । मोस-प्र-[मं] रीना। भोरस विस्तानाः प्रकारनाः क्रोसः -तास--ध्यति-इ यक तरहका गयाना इदा। #प्रेशम∽पु (सं•) विस्लाना । क्टोरा(म्द्र)~पु• (मं] न्युगा**छ** । क्रोप्ट-(में) गुरान । -पुरिश्वका -मसस्ता-विद्या-म्या प्रश्निक्सी। --प्रस्ट-प्र श्रीकी। ক্ষীক্তজ-ৰুও দিভ**িব ধ**টকে'। क्रीडी-सा• (तं) यागकाः कांगलाः दवत भूमितुण्यांतः क्रानिशसे। क्षीच-प्र• [मं] एक तरका नगणा कराँनुमः एक पर्वत को पुरागोमें दिमवान्(दिमालक)का वीता और मैनावका नेटा बताबा समा है। सात महाहीपीमेंसे एका मय पानवका पत्र जो स्टरके हातें मारा नना। - बारण-पुर है 'प्रौद्यरिय' । —शंद्रा—प्र॰ हिमाकवद्यी यक बार्ध । —रिय -शाम -स्वम-प्र॰ काक्तिया परदाराम । ऑक्टोबाइन-प्र•[सं] इन स। ह्रीचाहसी-को [सं]प्रशी**न** । क्षीचाराति क्षीचारि-पुर (सं] कार्चने वा वरहाराम । **क्षीचारम−५** (सं) एक तरहत्री म्यूडरचना ।

स्ट्रेंची-तो [ti] मारा क्रीय करवन कविको व्य सम्बा । **व**ीड − [र [र्म०] श्रृहरू-मंत्रीकोः वराष्ट्रावनार-धंस्थी ः

कीर्य-प [मं] करणा ।

क्षीप्रसारिक-पुर [d] मी कीस पर नवला मन्यासी। बह स्वक्ति जिम्ही की बीमकी बुरोंसे अफर निका जाय (Terre) 1 हाब−५ (n } साहित्व मंधीन भादिको चर्चा या मनश्रह

ठावरे सामीके साबोधनके निध रवापित समिति । स्म क्षमयः सम्मु-दु (ले॰) प्रधावा सानि ।

इत्य-पु [सं] (नवानेका काम नरनेवाना वर्मभारी संबो क्रिएसी । क्रकी-भी प्रदेश पेवा दिरामीगिरी।

क्रोत-वि [मं•] बड़ा बुवा बांता पुरश्नाचा बुवा। धीन कार देशकाद ह

क्षांनि-स्रो [मेरु] वहास्य । हर्तेक-४ (श्रे] को जाकारकी वना भी अंधरके सहार भक्ती और माथा दीवारसे स्माद्धर रही अली है। दीवार भरी । ~टावर~न भंगभर ।

क्षारनेट~पु॰ भि] सदमाकि बंगमा रद रिजाबती

क्रास~५० (में] दरमा मेची। विगविनोंका वर्षः क्या। ~शिचर−पु॰ रिजी सास श्रास दरमेंद्रा <u>म</u>स्य अभ्यापक। क्रिक-वि [सं] गीना मार्ट । -व मं(न) -य मौसी का एक रीम जिसमें परम्बोमें स्पत्रको बीती और बनत पानी गिरना है। - ब्राच-दि बीमल द्वरवदाया । विस्रकास-वि निश्च विस्रके ऑससे पानी विस्ता है।

विकाय-भी र्व किये बायज एक्स्रो अवसा स्थाने, नालेंक्स्रो परिया वैठामे जाना बॉथने आदिये काय देवेवाला भारत. dan t

क्टिसित-पि थि विश्व तिर्देश

विकल-विक [र्मक] बन्देशहरू वीविश्व होता प्रवीवर-विकर कर्वशास्त्र (बानव): जिसन्हा अर्थ बहुत सामने वा सीय-वामम निक**े ध**विद्याला मध्यित भिन्ना हुनाः हुदाावा हुआ । -कस्पमा-सी शहत गीप-ताम वा प्रमान-विरायकासी कन्यमा । -धास-प्र वह रेक्ट माना। -बर्स (स)-प्रश्नकोदा एक रोस ।

विस्रह्य-मी॰ [र्ग॰] भारमान्त्रे श्रेष्ट्य पर्देपामेशाली विसर पणि (वी) (क्सिप्टि−म्थं [मं] क्रॅप्ट चेड़ा; मीदरी। **क्टीड**-प्र. (संश्री व्ह विश्वेषा स्त्रीता ।

পভালত~র নি•ী লটান্দ। क्छीतकिका-का • [सं] मोक्का गीधा । **क्कीतनकः**—५० (शुं०) शतिरसाः मनुन्यितः । क्टीब, क्टोब-बि [से] दिवरा बेट, मर्सुस्य, नार्या कमीमाः क्रावर दरहोक। प्र मधु सक् प्रदानपु सक्रिया क्केड्∽पु [मं] गोलायम जाईटा। दुगरा पर्तीमा

क्केन्क-वि [नं०] गोला क्टनेवाला। बनीमा नानेवाला। अ कडा श्रारीरम्थ वस नाग्नियोगेने एक (रेंग किमि) ? क्कोश्स−सि [सं] वरेरका पु आवृद्धिक सनुनार द्वारीरस्य पाँच प्रकार है एकोमेंने कह जिनुसे पर्श्वनी निकल्या है।

सहनाः पोरञ्जा धाव ।

क्कैर∽पु[स] भारमाः छविपान । क्लान-पुलि देला बीचा सरिया। अधिमता बीच स्था राम हेच भीर अमिनिश्शमेर कार्र वृक्ति (वीर) I --पर्--(४० वर्षेश देनेवामा ।

क्टोसक⊸नि नि}वनेश देमेशाना। क्लेशिस-वि [मेक] वीति परेशवस्त्र क्सेशी(शिम्)-वि [त] क्रेग्न रेजाता द्वतिहार । क्सेप्टा(व्ह)-[ध] क्रेन देरेराना र

And -de se jand, क्रीनक्ति-तु [बं-] देश मधुमे नेशार क्षा दुरे छरात ! क्रीट्य क्लाय-पु [१'०] श्रीवता अर्जुसन्ताः श्रावरवता क्लीस-१ [-] शहना प्रशा

क्लोशकार्म-तु [बं] एक ल्ला बीत्रव [बंगे हॅवानर चौर-मारके रिय रीतोशी नेरीय करते हैं।

1.0 के चित्र-सन [सं] कोई कोई कोई कोई। केबा-ब कीपल, दस्था सब्युवक (सार)। के विका-सी [सं•] केमा संग्। केत-पु॰ (सु॰) परः स्थामः वसनाः पताकाः संदश्यः मंत्रणाः बद्धिः निमंत्रणः धन संपत्तिः आकाशः विवेकः ≢देतकी । केतक-पु [र्शः) केनहाः केनहेका प्रकाः प्रवादा । • वि

क्तिना बहुत । केतकी-औ॰ [सं॰] एउ पृक्त, केवड़ा । केतन-त [मं•] परा रवातः निर्मत्रणः पताका परिवासक

थिक प्रमा विद्या क्षेत्रकी-ची कि दिहिक' होंगे और वरतेशर वरतम

जिसमें पानी गरम करते हैं। केता, केतिक≉∽वि कितना। श्रा कितनादी।

केतित-विश् सि ी मामंत्रित आहतः यसा ह्या । केन-१० (सं] पराचाः विद्या सीरमंत्रका वर्षो ग्रह की बरानीके अनुसार संदिक्त राजसका कर्षण है और क्रिस्का सिर राष्ट्र हुमा। प्रच्छक कारा। मेहा स्वॉप्य स्थानका अभिकारी पुरुष ('रपुरुकदेत्र')। चमका विरूधा दिलका समयः विवेदः वीतीको एक जातिः एक रोगः धव । --क्रंडको-मा• १२ सार्नोका एक च्या विश्वसे क्वोतियाँ वर्षविद्येक्ट सामोद्या पना बगावे हैं !-तारा-द्र॰ पुष्कव तारा ≀ −पताका ~सी वर्षेष्ठ निकासनेका भी कोहीका एक श्रम (वर्षो०) १ = सास्त,~सासक्य= व् जन्तीस्त्र पक रांड । -पष्टि-स्रो व्यक्त । -शत-पु॰ स्व

सुनिया । ~वसन-पु• ध्वया, यहास्त्र । वेतुमान्(मत्)-वि [६] ध्वत्रपुकः विद्यपुकः तेत्रसी। प्र काश्चिराक विनोदासके बंखका यक राजा। केतो≉~पि फिरनांच किरनादी।

केदर-वि॰ (सं] ज्याताना। पुशक्त पीचा। केरसी†-न्दो॰ दें क्रक्ता ।

केदार-५॰ (रं॰) गानका सेता किवारी। वाका विमारण को एक भोटी। एक दिवलिंग एक रागा -संक-म स्बंद-पुरायका गढ़ सं विश्ववे बेकारणाब्द्रा माद्यास्य वर्गित है। पानीका भामा रीक्नेके किए बना दुला वॉब। -गंगा-सी गप्तस्को एक मरी। ~सट-पु वक मेन्द्र राग । - मान्य - प्र केशार वर्गतपर प्रतिक्रित ग्रह शिवस्थित ।

केदारा~प॰ एक शव ।

केदारी-नी बीफ्ट रामधे एक रामिशी । क्रन-सी वॉन किरेकी एक नदी थी बसुनामें गिरशी दे । दु [सं] ११ प्रधान अपनिषशीमेंने स्क्र ।

क्मा- • इ अनात्र देक्ट शरीशे कानवाली चीत्र (साव भागे भारि)। रे रह बला। केनार-पु[रां•] मिरा करोका जीवा नुंधीवाक गरक। वेनिपातःवेनिपातकः केनिपातश-पु [मं॰] रार अरिव।

केम केम -इ वर्श्वा केमहम-५ [मे] ५६माशः वद बोग (स्वी०)। क्संद−3 [सं∗] रहा।

केषूर-प्र [सं] क्यावड, भुववंदा एक रतिका।

केयरी(रिम्)−रि० [सं•] केय्रमारी । हेरक-प्रकारित प्रकार

केरक~प+ सि ी महाभारतमें उस्किशाद एक बनपर_• हेरक !

केरक-पु॰ [सं॰] वक्षिण भारतका एक जनपर या प्रदेशः भावभिक्त महावारः देरक्रमिवासी ।

केरसी-सी० (ग्रं॰) केरक देशको सी। केरान-पुरु देखा ।

केशमा-प रे॰ 'फिराना'।

बेराबा-५० है 'किरावा'। केशवा - पुरु महरकी जातिका एक कृत्या, कलाय ।

क्रेरिक-प्रविद्या सी वेति।

केरी व- मन की । **क्रे**रोसिम-पु• [भ] मिट्टीका रेहर !

केसक-प्र [सं] वलवारकी बारपर नामनेवाहर । केका-पु एक मसिक शहरूत दरकी। उसका पूरा के

केलि, भीषा । क्रेक्सस∼व∙ सि ो श्रुटिकः।

केचि-स्व [d] फीका कामजीका रक्ति हैंसी मजाका थरतो ।'~क्ष्मा∽सो देशि-कुष्ठसताः कामकरा। सर स्वतीक्षे बीचा । -किस-पुर निरूपक (ना०) । - किस्स, -किटाबरो-सी॰ कामरेको सी, रति । -कीर्ण-प्र

र्केट । - क्रुरेक्का ~ की पत्तीकी काटी वहन । - कोप ~ प् नट, नर्देश । -शहा-मिकेतन,-मंदिरा-सदम-यु रितियुद्दा कीशायुद्द । - धर-दि कीशामिय ।

--पश्चल-पु अन्द्रीकृता शासान । --मुस-पु भवार, ईसी । -१रा-५ मीहारबाम । -ब्रह्म-५ यक तरहका कर्षर । -साचिय-प्र मानवादी काममीका के दिश्यमें स्टाइ देनेवाला नर्मप्रिय ।

केश्विक-पुर्वि•] बाहोक रूप्त । केबी- रे व्य प्रस्का देशा [सं•] श्रीका काम क्रीहा । - पिक-धु भगो जनके लिए वाकी गयी क्षीवनः। -वनी-श्री । प्रमोरीयामः। - प्रक-तः मनी

रंजनके किए पास्त गवा तांचा। केश-पुरु एक वहादी बृक्ष ।

केवका-प्रश्नाको दिया वानेवाला मसाना । केचर-१ देश्ने भए। १।

केवरी-मी॰ दी वा अविक प्रकारको दाने मिकाकर क्यावी दर्द दाल ।

केमपूर्य-पुरु ८६ सरदक्षा रंग की मेवनेट रंगसे मिलसा है। वि देशहेके रंगरा ।

केपड़ा~पु एक धीरा इन्न मिस्सा पूरू मपनी सुर्गवरे निए प्रसिद्ध है सरेद बैठकी। यसका कुलायेवर के पृष्टका सर्व । केल्सा-पु दे फिल्हा !

केषाय-वि [वे] कांग सर्वेना स्वृक्त शुद्धा समित्र। क शिर्त गाव । -व्यक्तिका(वि.स.)-प अनुमान-का एक भेर अववन्। वि पार्ववन्य में मेरेच रसनेपाना

(#R)) I

केवनाध्या(ध्यम्)-५ [म] स्परः सुद्धः स्वप्राम्बाकाः मनुष्द ।

रामा !--वंप-प्र• क्षतिषः होनः, नाममामका क्षत्रिय ।--योग-प एक योग (स्वेतः) । -विद्या-स्वीः धनरिया पुरुविषा । —वक्षा-पुरु सम्बद्ध । —वेव-पुरु धस्त्रेद । -सब-प• पद वय बिसे बेजन शतिय कर सहता है। क्षप्रांतक-प्र [शं] परझराम । क्षन्त्राणी-न्ही॰ बीर नारी। श्रविवा । श्राम्यय - वि+ सि े शक्तिक जातिकाः शक्तिकनांश्यो । क्रमिय~प (सं क्रिंदकों दे चार क्लोमेंसे बसरा, बोक्स अरति।—≰क्र−व परकारास। क्षत्रियका, अनिधिका-सी वि] वे० फिलिया । श्रक्रिया−श्री [सं]धित्रव नौः क्षप्रियाणी, हा कियी -स्तो [सं] श्रुप्रियको पत्ती । श्राप्री(श्रिन)-प॰ सि । अविव । धारन-प्र• सि] कारनाः चौरमा फाण्मा साना ! क्षप−प सिं∘ी बहा। अपण-प सि•ी असीचः व्ययन वसगः श्रीक वा चैन सन्यामी । श्रपणक~प मि] नीड वा जैन सन्वामी: विजयादित्य-को राजमसाद सी रखींमेंग एक । क्षपणी−न्त्री (सं}द्रीहाः आस्त्र। सप्पयु-पु (मृष्) अपराच । सपीत-५ सि॰ प्रभात । ध्यपंच्य~प्र• सि ो रतीथी । क्षपा−मो• (सं•) राष्टः इक्करो । ~कर−तु श्रीरमाः करूर । -धन-प्र• काला नारल । -चर-प्र निया घर । −नायः −पति – ९ चंद्रमाः कपूर । अपाद-प• सि•ो राविकासमें सन्तरेवाला निधापर ! श्रपित=वि [सं] मह क्या ह्रणाः दशाया द्वागा। क्षम-वि॰ नि॰ सहन बरनेमें समर्थ बीम्बा वयुक्तः (डिरीमें वक सम्द केवल समासमें भारता है-कार्नझमः क्षम जारि) । मु भी विश्य चपत्रचनाः लढा दिन्। पक तरहम्ब गीरा पन्नी ह क्षमणीय-दि [मं] क्षमा करने नोग्य धन्य। क्षमता –गा॰ [सं॰] धस्ति, सामर्थ नोग्यता । इस्सनार~स कि॰ साफ करना। क्षमगीय*-'धमणीय'। श्चमबामा 4-५१ कि॰ ध्वमना का प्रैरणार्थक रूप । श्चमा~को॰ [ग्•] परकृत अपदार अपरापको दिना होत क्रिये वा डेट-प्राप्ति एकी बान मीथ सब नेजेवाली विश्व बुक्ति बर्गुजर, महर्गा सदमहीमना। धरनी। दर्गा। देनजा नदी। क्ष्मी एक धन्याः पत्रती धन्याः सरिर क्षाः एक बृश्च । - आ-म् मेरून सक् । - लस-मु बरातन । -१ंश-५ सहित्रनारेश।-शुक्र(भू)-५ समा। -मृत्- व वहार । -प्रवस- व वृत्री-त । -बुक्त ~ब्रीफ - दि॰ धमा दरनैदाना, शदनशील । अमाना: -म: कि श्रमा दराना ! शसान्त्रिक-दिनि वि किथालकः। क्षमापम - प्र [मंग] स्था बराजाः मास्य योगमा । श्रमाचान्(चन्)~रि [शं] दे÷'धमानुख"। इस्मित−वि [मे+] शबा दिया दुवा ।

कमिता(त)~वि॰ सि ी हमाडीहर स्ट्रीस्थ । श्रमी(मिन्)-पि [सं] श्रमातान समर्ग। क्षम्य-विश् सिश्रो धमा दरने घोम्ब । शर्यकर-वि॰ (ने॰) नाश करनवाला ध्वकारक। क्षम-प्र [र्थ•] बासरवामा धीयन हासा नामा कर्ब-हानि मूस्वादिका निरनाः प्रस्तवः यहमा रीयः रामः क्लराधि (ग॰): ६ संसप्तरीमेंचे अंगिम: वष्ट, वर्णम यमास्त्रम् । —क्षर−वि० दै० 'सर्वपर । —क्षार⇔र प्रसन्धाल । - ब्यास-प्र+ धवरीयमं शीधवादी गरेनी। ~कासी (सिल)-वि धपकास रोग्से की/त 1-प्रीवे-स्पै। क्षयरीयमें (ऑलीमें) होतेशको बिल्दो ! ~लिकि~ ली वह तिवि को स्वयदारमें क्षम मानो बाय! -मादिमी-ली॰ धोवंतीका देह ।-यक्स-व क्रामवत्ता -मास-प को संक्रांतिकोंचाला चांड माम को ^३४१रें वर्ष और कमा क्या १९वें वर्ष भी भाता है, हीन यस। -शेश-व वक दासाम्य रोप क्रिमें रेक्टेरी सही में: क्बर बना रहता है और प्रमुख चक्करमें जहम ही बना दै। -रोगी(शिम्)-वि इत्तर्रातमे धीरा दर्श। -वाय्-मा प्रत्वकाकमें बहुमेवाको बातु । न्सेपद्-की वर्षात्री मर्बनाग्र (श्चयण-त मि॰ों शांत जलताबा सानी ना नंदर निवासरवान । वि॰ नास करनेवाला । क्षमच-त्र सि॰ो सबको गाँची । क्षमाइ-पु॰ [सं] वह चोद्र दिस को चोद्र भैर सैर वंचागमें मेल बैडानेचे किए क्रीड दिया जाता है। श्रविक-रि मिंशो संपरीममे पीडित । अवित-वि+ [वं] महा ध्यमानः विमक्त (ग॰)! क्राहिच्छा−वि [सं•] श्रद होनेवाला शीक्रमेवाला अव् नाचकरी । श्रवी(शिष)-वि नि देश होनेवालाः मह होनेवालाः श्चवरीयमस्त । लि। 'छविनी ।] प चंद्रमा । अस्य-वि मिन्रे जिसका स्व हो एके। क्षर−दि [ते] दका बाह्मसन्। तु अका बादना देश अहामा र्रेषरा कारण और कार्य । दारण-पु॰ [री॰] पुना, रसना। शुरना। वेंसीहवेंपा पनी जनाः । श्चरित्त≕वि [शं•] सरित मुमा हमा। आदर्शित्र)−प्र[सं] वर्शम्याः क्षव-५ [६] छो छ। गोसी। सरे । -पद्मा -पत्नी-गोर ब्रोगपपी । सबर-१ [मं+] अवामार्थः एउँ । **सक्ष**∽प [मं] अधिक छोरू सामा रहेंगी। मनेश द*स गुन्दा ब्याया । श्चित्रचा—न्हें [र्म्फ] ग्रथ ग्रह्मा मन्त्रीया यह साहरी पात्रका भी । स्रोत-विक [गंक] ध्यापील सहन्तरीना धमा दिना एक सदा द्रभा । पु॰ जिब । स्रोता~भी० [मं] पृथ्ति । शांति-मीर [मं] हमा सरिष्ट्रमा । श्रीतु-वि [मं] कहमग्रीत श्रमा बरमेशना पुर तिरा

क्षेत्रं रखनेवासा । केतव-पु॰ [सं॰] बोसा, एक ठवी। श्रुमा: पण: ब्रह्स-निवाः वतुरा । -प्रयोग-पु • उगीः चौरीवाधी ।

कैसवक-प्र[से] जुण्यी पोक्षेत्रामा ।

कैतवापइ नुति-की [गुं०] अपबन्ति अलेकारका एक मद बिसमें बंधार्थ बाठका निवेष प्रत्यक्ष रूपसे न किया बाकर मिस, ब्यान भादि शुन्दी हारा किया माता हं। हेतून-पु[तु] जरी और रेशमको क्ये हुई कोरी जिमे अपरेक शाधिवेयर कराने हैं।

ভয-ৰু• বন্ধ দল-ৰুৱ্য উন্তৱ্য ভল ৰুবিৰে ! क्रैपा-पु॰ देव ।

हैशी-की॰ नागरी किपिका एक मेर जिसमें कुछ अखर क्षम है और उत्तपर शिरोरंचा नहीं होती: छोटी खातिका ŝĸ I

होद-सी [ब] वंधना कारानामः धर्ने, मतिश्व ।-स्वाना पु॰ वंदीगृहः जरूपाना ।~सनदाङ्-सा॰ केरीको असेवा वंद रखने काल्फोबरीको सना। -महत्र-को सादी

केर।-सक्त-की क्यो केर। क्षेत्रक-स्त्री कामज रखनेका एक तरहका सामजका स्ट्रा कैदार−नि [मं] क्वारीमें क्पना तुला। प्र मानः

क्षेत्र-भग्रह ।

केदी-वि पु [फा•]र्रेष्टमा। वदी केदको समा मायनेवाला । कीवी क्या था, वा किया ।

क्रेबर−वि• [सं] क्षित्रर-संबंधी ।

कैफ्र−प• [स•] नद्या नलीः तत्वः जानेद ।

क्रिकियतः क्रिकीयस-सी॰ [श॰] हाल समाचारः विकरणः हुत्रः, मानदः −का रदाना ∽वद साना जिसमें विदरण रेखेड अपनी राघ चटनाविधेच्छा कारण शरवाति क्रियाता है । पुरु – सुद्ध व करमा – जवान मौगनाः श्रारण पृथ्वमा ।

किही-वि• [भ] नरीमें चुर, मस्त ।

केवर*-स्ती॰ तीरको माँसी ।

कैंबा॰-अ कर्रवार-किया भागत यह गकी रहे जताय चर्छ म'∽वि०।

कैवारण-पु कियाहा

केविनद-पु [भ] छारा, याच लोगीते विकनेका क्यरा मेत्रनागृहा मंत्रिमंदरू खानेदार अनुमारी १-फोटोझाफ-पु॰ फोटोसा वह माकार जो का^ड मादनका दुना दोता है। कमा-प व वर्षको बार्टिका एक वृक्ष जिसकी कवनी बहुन विकती और इसके गोड़े रंगको हाती है । बर्शव । कैमेरा-१ [अं] फोरी साथनेका यह ।

र्वेगा 🗝 दक्ष भी शर बिससे दीन आदि रॉन्स बोइत 🕏 । करट-५ [अ] २॥ धेतका वक्षम, बरावा सीमेबी सुप्रवा-का एक मान (शासिस छोना २४ है,ररका होना ह)।

करम-पु [मं] पुसुद पुरी दश्य कमना श्रमा बगा जुनारी। - वशु-पु नंद्रमा।

करविणी-भी [सं] कुमुरिनी। दुमुर-पुष्पेंका समृक्षा र्भे रहक बनाइए । करपी-सी [मं] बादमी।

बरबो(बिम्)-पु [मं] च्ह्रमा ।

वीरा−पु मूरा रंगः वह तकेशे जितके भीतर सुध"की [

3-05

क्षक हो। येरी रंगका वैक ! वि भूरा, क्षेत्रा भूरी जॉस्ट्रॉबाका ।

कैराटक-५ [सं] यह तरहका बनस्पतिमन्य विद्या

कैरास-वि॰ [बं] किरात जाति या वैदारी संबंध रखने वाका । पुरु विदातीका राजाः वसवाम् पुरुषः विरावताः र्श्वर र्यवना एक राम ।

कैरातक, कैरातिक~वि॰ [सं०] किरात संपंत्री । भैराक-पु[र्ध] विशंग।

कैलंडर, कैलेंडर-पु॰ [बं] मंग्रेगे तिभिएतः सूची ।

र्कछ~पु[सं] क्रीहाः मनोविनोद । कैसास-पु [ग्रं॰] हिमाकयध्ये यह बोधे को पुरापोंमें शिव और क्रोरका वासरवान मानी यदी है # स्वर्ग । -माथ,-पति~पु• शिव। कुवेर ! -निकेशन-पु• द्विष । -बास-पु॰ मृत्य ।

केंबर्स-पु॰ [सं॰] बेनर निवाद । -सुस्तु:-सुरसक-पु केषशिमोधा ।

इदेश रें क्ट~प सि•ो केवट।

कैवसिका-का॰ (सं] यक बता यो दवाने काम आती है। कैंबक−प्र [सं] १० 'केराक'।

कैंदस्य-पु [सं] आत्माद्धा ससंग, सनिप्त मानः स्वरूपमें रिवति, मोखः एक उपनिवद् ।- ज्ञान-५० मंधव-विपर्वप

रहित घान ।

दिवा≎⊷श० धर्म बार । **कैश−**पु [श्रं] रुपया सिक्कामरूट दपदा। **-पुक**--प्र•रोकच-पद्यी ! ─सेसी-प्र-सारुका सदद दास पाने की रशीय नकती प्रस्ता।

केंद्रिक-वि॰ [सं॰] देख जैसा केस बैसा स्ट्मा हु॰ प्रणयः श्रीपार रसः कृत्यकः यकः भावः यकः रागः केशः-गुच्छ ।

कैंक्सिकी-की [र्न•] शहरूकी चार इत्तिवॉमेंसे यह जिसमें मृत्य भीतादिका विशेष धर्मन हो। दुर्गा ।

र्केशियर-पु (अ॰) ग्रजांची।

कैशार-पु॰ (पे॰) किशारावस्या । केमर-प [थ•] समार घाडधाडः अर्मनी भारितवा

रूस भारिके पूर्व प्रकारोंकी उद्यप्ति प्रथम महाशुक्रके समय वर्मनीका समाद्र । -(र)हिंद-पु मारत-समाद (भारत समार्के रूपमें (मिरिश गर्जरी उशापि)। - । एवक-प्र व्यक्त को भारत सरकारको औरसे सम्मानार्व दिया जाता वा ।

हैसरा-न्डो॰ [भ] नमधी ।

कैमा-विकिम तरहरा। अ किन तरहा किन्ना।

कैंसिक = - भ किस मग्रार। क्से-न॰ दिन प्रकार । कसा=-विकासानीसा

कॉइछा - पु कोके अंबष्टका वह दिग्छा विसमें कुछ बोब कर धार कमरमें सीम किये जाने है।

कीं -सारे इसे !

कोंबल-प्र [सं॰] समाप्रिके परिग्रमका प्रदेशा एक इति-बार १ -श्य-वि कॉक्ट में रहनेवाता । पुरु महाराष्ट

जाहरतेशी एक वाति ।

 परवाशात कामवाला । शरहका शेल । भुतक−५ [सं]र्ताः शांगि-मी [मं] धीरमा ३

र्टान्त्रा अनुवनः पराधिनः अन्यस्त । −अमा(सम्)~ शुष्पाद्र-पुर [६] असिहिते समय बनावा जानवस्य नद

श्चम−पु•[सं]रीठा। शाबी-नी सिन् पूर्वा । हाक्य-रि [d] रि रिवाहभा विशाहण गरिका

श्रीरीहम-पु [मंग] मुत्री पक्षा हुआ नावन शीर ! क्षीब-दि॰ [मं॰] प्रामश्च, महबाना ।

क्षीराज्य-पु [ते•] रश्न क्या एक तरस्या देखनी करणा। र्श्वारोप्रचि~g [मे॰] शेरमागर I

स्तिरिकी-का (सं•) वारकाकीका मिरना । भीरी(दिन) - दि [लं] द्रायत्रकः विनये हुए निकने । सरिदि-पुरु (मेर) श्रीरमसूर । "समय-पु चेरमा। ~तमपा~गी॰ बस्मी ।

क्षीरिक-पुरु [मंत्र] एक दरहका संदित्र श्रीरिका-स्रो [मं] विष्युत्रहा वैक्रमीयन ।

धीराद-द [धं] दुवसुद्दी वरवा। श्रीराध्यि-त [मं॰] श्रीरक्षणर ।

झीरम~ष (चं] मलाई। श्रीरा-गाँ० [६०] कान्रोनी ।

य व्यक्त मदार ! —काकोक्षिका,—काकोकी—सी॰ कारोकोका एक भर को अञ्चलकि मेनगैत है। -कृत~तु हुव मक्कर निकाका हुआ सबसान । --अ:--पु॰ बेह्या; यदीः मनसमः समृता क्रमकः। विः दृषरो धरमतः। —क्षा--स्रो॰ सर्मो । ~जारा-पु॰ एक तरवक्षी मध्यो । —र्तृवी -न्यो• कोको । --दस-पु मदार । --द्रश्न-पु• पोपक । -पानी-स्रो द्व पिटानेवाणी बाव । -बि -शिबि-यु समुद्रः धीरमायर । लखेजु नहीं दृत्र देनेवाकी गायः द्धरिपत गाव (गायब रथानमें बुग्शपूर्ण कृतक्क)। —मीर्— पु॰ दूध-पानीः यहा शास्त्रिमन ।--प-पु॰ बुधमुद्दा वचा । ~पर्णी−सा मदार । ~पस्तीह्र~पु॰ सफ्रेद मात्र । —पाक्क−वि दूभमें एकम्बाह्यमां पुरामी मिले हुए कृषमें भीतकर तैनार का हुई दवा । -पुष्पी-स्ता संस-पुरुषे । ~शृह्य-वि० श्रवस पुत्रपर रहनेवाका सफनी दनराष्ट्रमें केवल दूध मेनेवाका (चरवादा)। -बद्धी-मां शारानरारो । --विकृति -सा पूर्व वमा कार्य । —विदारी ~स्रो छफ्त और अभिक दुववारो विदारी १ -बुक्स-पुरु वह इस विस्ते ६५ निकले-गृतर पीक्त पर्गाद मनुजा हुन । -अश्र-पु देशक हुन गीकर रहमेका वना∽दार~पुनकार्यस्थानाः ∽दाक−पुकवा फरा हमा इप ! -पहिक-तु दुधनै प्रधाना हुमा साठी र⊒ भारक^{े।} −संतामिका−मी॰ एक तरहका निगता हुआ दूध ऐना। -समुद्ध -सागर-५० दुराजपदित सान समुद्रीवेसे एक । -सार-इ मासन । -रक्टिक -प्र एक तरकता रफटिक । -दिकीर-प्र कृषका प्रमा

बासा दुरपस्य रेखा जका ∽क्षठः∽क्षठक्र~पु॰ बृश

पीनेवाचा वया ! -कंद्-पु॰ शीरविदारी ! -क्रॉडफ-

श्रद्धाःमा(अव)-वि [ने] मीम दीम विवासिताः श्राम-१ [न•] क्षेप्रम । श्राज्ञायमी-शीव (संव) श्राण'रिया । शुद्राशय-रि [म] ऐसी बीधी मीवरशा शक्तिका-मा [ने] शेना धारा पेर । staftfi-eit [de] maren : शुक्रा-तो (ले॰) भूगा भेडनेनाए। -श्रील-रि भागवारम गुना दुन १ - शिकृषि - भी भूमरी शांति केर मध्या ।

हरएका भेजन । श्कालनी [शं∗] सप्ताः यपुरास्तोः देशाः वदाये सीः विवाहीय क्या अवनानीर असमानी अंदवारीर विवासी श्राचान समक्ती एक मान । **भवारियमंध-तु** [सं] ए.१३ ग्रियारी ।

क्ष**ब्रह्म**ान्या (मेर) धोरार मोदता जोधापन । भूत्रण-दि [मे] मन्त छता ((तम भागवर) । **सहाजम~**नु [भं] रीयमें नगाया श्रानशना ^{हक}

याय । – भुरता – स्वी॰ स्वीसः । – रसः – प्राप्तिका सुरा ।-श्रम-द्र धोरा रेगा, बोश-द्रसी बेसी श्रेमली (समुक्तमें ऐसे ४४ रोग तिमाचे गये हैं) I-वर्षणा-मी वर्रे, निषः शाम । – ब्रातांकिती – मा १ १४ ग्रंटकरें । -बार्ताकी-सी प्रमा । -जार्यस-पु भीवा। -शरिप-तु सन्दर्शना क्य -इवासा-नौ॰ कानै मागक वृक्ष : - सुराये-तु भागम ! ~ हा(इम)-5" शिष । ~हिंगुलिका-ग्रंथ बटरारी । श्रमक-वि (ते॰) श्रद्र । प्र गाला। एक प्राचीन समग्रे ।

श्चन्त्र सिंगी छोटा, मरहा। तुष्पाः नीप घीटा, भोडाः क्षेत्र्य । यु भागच्या कम शुरी सनुसाधी का वरें। —कुश्चिद्या—पु एक बहुयाच परवर्, वैद्यांत मवि। -चटिका-लो॰ एक शरहकी करवनो शिशमें शरियों वा प्रेंबर क्रमे रहने है ।-क्क्यु-पुरु एक शुरु ।-चंदम-पु काल पंत्रत । -पूब-पु एक छोरा ए३ । -प्रीत-इ नम्बर्धः अस्तिरदितः मानीः कोशा-मधाशा राजपी। ~र्द्धिका−सी दोंत्र । ~दुःस्वर्धा नसीर वश्यक्ती। ~बुरासमा−स। यह स्टेरेंग्स् पीपा। -श्राप्ती-सी कर्षे द्याः –पान्य-९ पुगवान्य, कुथान्य (देवती) कीरो बारि) ! ~नासिक~दि क्षेत्रे सक्ताना! ~पति −पु कुरिर । ∽वश्चा-की सीतिया धाप! ~पत्री-नी वय।~एमस~दु० स्कुय दृइ।~पर्ने~ पु॰ हुक्सा । -पिप्पक्षी-स्मा वर्तापतका ।-प्रहृति-वि गीटे, भोग्ने स्वभाववाला । -क्या -क्याक-पुर जीवन मामक कृद्यः भूमित्रंतु मामक कृत्यः। कृत्या-सीर गोपाराधर्वेदी। बंहवाराची। क्रकारी। अग्निशममी !-बुद्धिः वि॰ लोग्ने विवादकामा औ स्टा छोटी औरो वार्ने छीने देल । -अंडाकी-म्याः चंडकारी 🖖 - भ्र-पुण्यक परि

मुत्∽को॰ [मं•] श्रीर । श्रुव(भ) - लो॰ [तं] दे 'श्रुवा'। - श्राम-वि॰ अत्र, बाहार न मिलनेले हुर्बंक श्रुपादीय । -पिपामा-सी॰ भरा-प्यास ।

क्षर-पु॰ [सं॰] बाटा, मैदा ।

हो। पुरीको गात, व्यंग्य (मार्ला) । कोचिंद्रा-पु भगकी प्लाम ।

स्प्रेचिकां ~9 दे '5 वका। कोचीन-पु० दक्षिण भारतका एक राज्य !

कोबीनचीन-प हिर्गीनका एक प्रदेश को फाँएका

रुपनिवेदा है।

कोजागर-पु [सं•] शररपृष्यमध्ये होनेवामा एक स्वोदारः श्वरत्पृशिमा ।

कोट-प [ए॰] गह वुगी परकोश। राजप्रासान क्रिट सता दावी। -चक-प्र एक तेनीक चक्र विशसे (<u>ज</u>ब के पहने) हर्गका सुभाराम परिचाम बाना का सकता है। ,-पाछ-पु॰ दुर्गरक्ष्ट क्रिकार । -शारक-पु॰ हुर्ग-रक्षकः छोतिरक्षकः भीन्धेदार ।

कीट-श्री दे करीड़ । पु यूच समृद्य दे करीड़' अंग्रेमी दंगका एक पहलागा। -पसल्लम-प्रश्

म्रोधिव पदनावा साहवी पीक्षाकः । कोटक-इ [सं] हो।परे बनानेवाका कार्य एक छोटी वाति ।

कीटर-प [सं] पेहके दलेका बीसका मागा किन्के भारतासका जंक्स को उसके रक्षार्थ कगावा गया हो।

कीटरी, कीटबी-सी [एं॰] तंनी सी: इर्गा। कोटि-लो [मं•] पनुपद्मे नोद्य सिराः दिसी जीवदा सिरा। किसी दक्षिणारकी नीक दर्जा। वर्गा वादका पूर्वपक्ष परमोत्कर्षः भाष्टिरी दर्जाः करीक्द्री संस्थाः कर्व चंत्रका विरा: राधिकरूका तीक्स मंद्र ९ अंधके बाक्डे हो समाम मानों में से एक । वि सी कास करी ह । - क्या -की प्रदेशि रफ्टताके किए बनावै गर्वे एक विशेष प्रकार के क्षेत्रका एक मंध्र १ -- ध्वतः - पुन्दरीहपती १--पात्र -प्र परवार । -पाछ-प्र• दुर्गरङ्क ।-प्रस्थी(छिन)-गोरापरी नदीके सागरसंगमके पासका एक तीर्थ । -पेपी(धिन)-वि कठिन काम कामेनासा । -श्री-की शर्मा।

कोटिक-दि [मं•] परमोरकर्षं, पराकाशको महा करोडः सम्बद्धिः अस्पनिकः। पुण्यकः तरहका मेककः रहिणापः। कोटिर-प [र्थ•] शीगदे रूपमें नवी दुई बढ़ा। बंहा नेनहा:

गौरवहर्द्ध । कोटिसा (शम्)-न॰ [सं॰] करोड़ी बार वा तरहमे ।

कोरी-सी भि•ाद भीर । कोरीर~इ [सं॰] किरीस बरा।

कोरीयर कोट्यपीश-५० [सं] करोहपती ।

कोइ-इ [सं] कोट किया। -पाछ-पुरु बुगेरहक,

विशेशार । कोहबी-तो [सं] संगी त्यीः दुर्गाः बायामुरदी माता।

कोहार-पु [सं] दिवेदेशीयाचा नगरा किसा कुर्वीत वान्यवद्यो संप्रिवीं। संप्रद ।

कोठ-५ [भंग] एक तरहका कीरू । † नि अंदिन (रॉव)। कोरर-१ [मं] अंग्रेक । -पुरुषि-स्ती मामद प्रश्न ।

कोटरी-सोवं छोता कमरा 1 कोरवासी-भी दे 'होडीवासी । कोटा-प॰ वटा समरा, कटाएै: वाकासामा:मंदार घोठार। फेट' मेदा' साना, बर (बीसर, स्टर(ब मारिका); मस्तिम्ब का कृषि विशेषका अविद्यानसम् विभाग । -कुचाछ-पु हाभिनोंका एक छदररीय । –तार-पुकोठारी, मंदारी । —(हे)वास्त्री∽की वेश्वा । मु॰ ~बिग्रहमा~पापन विगक्ता ।–साफ हाना-पेटका साफ होना। ब्रह्मर दस्त भागा ।~(३)पर धैटना~बेस्थान्ति बरना ! -(र्सी)-में विश्व बाना या भरमधा-भनेक प्रकारको आईकार श्रोमा ।

कोठार--प्रश्नार, वसार। **कोठारी** -पु॰ मंदारी ।

कोडिका−पुदै 'क्रुटिका। कोठी - स्त्री पक्का भीर काफी कैंवा - बड़ा सकान, इनेसी, क्रमीर था रईस्टा भागासा वह मकान वहाँ छेन-देन या बड़े पैमानेपर कोई कारवार हो। भोक विकीनी हुकान। क्षेत्रा वकारः वंतूरुको वह जनह वहाँ नास्य रहतो है। यक बढ़से निक्के हुए बाँसीका समृद्ध पुरुके खसे या करेंद्री शीवारकी क्रमीके अंगरकी चीवार को बमवरके कपर होती है। परधरके क्रोस्ट्रमें बाठडे बासपासका स्थान विश्वमें ईक्की गैंदेरियाँ मधे जाती है। -वाध-प्र देन केन अनेवाका महाजन । -धाक्षी-खो॰ देनकेनदा कामः मुक्तिः अक्षरः । मु॰ -गस्राना-अमनस्ये उपर होनेवाकी जीवार्वको मीचे वेंसामा। -वसमा-देभ केनचा कारबार बीना १

कोड-पु 🗐] निवम-संबद्धः स्केत-किपिः संस्ति-प्रवासी। कोषना-स॰ हि दे॰ 'गोपना ।

कोड़ा-पु चलुका सोंटा; क्यनेवाकी बात; हुवतीका एट वैच ।

क्योबाई-की कीइनेका काम कीइनेकी मजदरी। कोडी-ला बीसका समृह, बीसी। वि बीस।

कोड-पु॰ यह चर्म-रक्त रीय जिल्ली यह जग्र मेदमें शाथ-पाँडकी चैगलियाँ गन-गरूपर गिर आही है। प्रशिव और विनासकारी नुरारं (का०)। सुरू नकी साजानमें साज-कोइमें भावणी दोनाः संदर्भर सेस्ट माना । --सना --दयक्रमा-क्षेत्रक बाबमे पार बहुना ।

कोन्नां - पु धतका वह स्वान यहाँ छाइटे हिए पहुकाँको रसते हैं।

कोढ़िया-पुरु संनाष्ट्रके पश्लेका व्यक्त रोय।

कोडी-दि बुद्ध रीगसे घरत । प बोद रीगसे दीहित

श्रादिल, निक्रम्मा आरमी ।

कोल-बु [सं] कोना। एक दूसरोधे मिनने एक दूसरोको बारनेवाधी थी रेखाओं के बीचका श्रीतरः संतर्विद्याः सार्गादी बमानी। तलबार आहिथी बार। रंश सींगा दोल, मगावा बयानेनी कोवा शनि महा मंगन महा —कुमा-थ स्थानका −पार्श(दिन्)-थ शिवा

कोणप∽तु[ंग] दे 'दीयन । कोष्णपात-५ [से] न्स हवार होत्ये और वह कास हुदुकों के वर्ष साथ बजनेकी भाषाया अनेक बार्वीकी तुमुक ध्वनि ।

कोबाक-पु [शं॰] मगन्नापपुरीका धांच ।

-कार-नि मंगलकारक ! -करी-ली॰ बुर्लका यक स्प ! ~कस्याण-५० एक संबद राय । *-५*६छा-औ गुकर । -राजि-ली॰ वह रात जिसमें बीरी, क्षत्रा भारि म पर्र हो (की)! -प्रचि-सी॰ वर्गमान रिवति मनवरका बनांदे रस्रतेका मान भरिवर्तन मीरताः किया-बेडिब' मतीवृत्ति । धोसक-पु॰ [मं] एक मंग्रहम्या शिवका पक अनुचरः प्रश्न शोपका यह स्रोहः परीक्षितका अंतिम बंद्यज्ञ । क्षेमा-स्री [सं•] दुर्गाः यह व्यपस्ता । श्रेमासन~पु• [सं] यद प्रकारका भारत (र्त•) । ध्रेमी(मिम्)-वि• [र्श•] ध्रेम्यक, निराक्षः • क्षेत्रहरः क्षेम बाइनेवाला । क्षोमें हा - पु [मृंक] संरक्ष्यके एक मित्र पुराने साहित्यकार । होत्य-वि॰ [मं] छांतिरावकः वश्याणकरः स्वारध्यकरः भाष्यवास् । प्र शिवः विमाम । क्षस्या-सी० [सं] दुर्गका एक रूप। ह्रोप-'वि॰ [मं॰] झय, नाझ करने घोय्य । श्रीवय-पु॰ [सं] बुवकापन श्रीमनाः ध्या सिंध-प• [रो•] धना केनसमूह । ध्रीय-प्र• [मं] श्रिपता । भैतिक-वि [मं] धम, सन्त्र बरहुद संरक्ष्यमें उदबोगी। क्षीरब-वि [र्न-] दूपने बना हुआ। क्षीड-पुर्मिण्डे बाबी क्षेपनेका सुँटा। शोषि शोणी-सा [मं] वरती। व्यक्ती मंद्रवा !- हेव-प्र मासन । -पति -पास-पु॰ रामा । -स्ट्(इ)-9 4V 1 धोइ-पु• [गं•] भूषी इहः यूर दरमा पीसनाः सिन । -श्रम-विपरशामें रिकनेवाका। शोतित-दि [सं∗] गीमा दुशा थुर दिशा दुशा । पु० भूतर भूरम जुरुगी। भारत दा कीई पीती हुई चीत्र । सोहिसा(सन्)-स्री (तं॰) ब्रम्मताः तुच्छनाः वस्तनाः। श्रोम-प्र• [मं] इत्यत सत्तवतीः नामुकताः रीप ! क्षोसक-रि॰ [तुर्र] शुष्य बरमेशका । दु॰ कामास्याका

एक पर्यम । क्षोमण-वि (सं•) धायक्रारी । इ शुव्य क्रमा। कार-दैक्का एक बाया द्विव- विश्वा श्रीमना=-श॰ क्रि॰ व्याकुर दाना-'श्रीवत जला वेड् न दोने -शमनदिकाः भीत का मुद्द शोनाः विकरा श्रहायमाम हीना । शोभियी-मा [तं॰] निवार सरको एक मृति। श्चामित्र =- विशेषपुरः। कोमी(मिम्)-वि॰ (हं॰) श्रोमपुष्ठ, शुम्मा मापुर्छ। क्षीम-५ (सं॰) इयंत्रिकेपरध्य क्षमरा। व्यापा समरी मारिके रेशोंने बना हुआ क्रपरा । क्षेत्रिय क्षीणी~मा॰ [सं॰] पृथ्वीः रक्ष्या मंस्या ! -बाचीर-इ समुद्र !-भुक्(क) -पति-द्र• शहाः -मृत्,-बर-पु पराह! क्षीय-त (तंशी अप्रताः चंदादा पेतः होना यस्तंत्र शहरः बकारक संबद बातिः युग्निस्थ । -बा-स्रो मनुष्टर्वरा । न्यानुननी श्रमाधिक । नमहन्तु मनु मंद नामक रीम । - झक्त-मो म्युप्तरंहा । क्षीहरू-५ [तं] मपुर धीइय~९ [सं] मोम। श्रीम-दि [र्नर] अस्त्री भारिने दमा दुना। दुर अल्लो भारिके रेडोंमे बना ड्रमा कपड़ाः सरुमीः रहामी कड़ाः इनके कररका (क्वाराट) कमरा: Witt । क्षीमक~द्र [सं] एक स्वत्रम्य भाषा। क्षीमी-ना [र्व•] क्लता। इप्तको ग्रहरी । क्षीर~प्र• [वं] सिर आदिच नाम बॅहमा यमसा⊬ स्मान यत बनाना । -कर्स (श्)-बु॰ इज्रामन बनाना । क्षीरिक~व सिंशी मधी। क्मा-स्रो• [मं] भरता। -धर-पु पहान।-धृति।" प -पति-दु॰ राजा। क्षेड−९ [ri] ध्वमि। सम्बद्धा व्यति। विका शासमी एक रोगा विक्रमारी त्याय । दि॰ नुरिका गीम । **इवेंड**ा−मी [सं०] सिहनार; युदनारा शॉस्की शूरी (श्चेका−सी॰ (सं∘ों डोदा, रोत ∤

m-ए देवतानरी वजवाकाके कवर्गका इमरा वर्ग । इसदा बचारणस्थान बंड है। राँकर-पु [तं] सद अस्य । र्माय-विर्णेण सालो। ज्वातः। संस्था-सी (में] मंग्रे कारिको ध्वरित । स्थार-विव बोराम एमहा दुना। पुक्ति] दे 'राहर'। सँगरा-दि , पु दै 'धारारा / मेंगार-१ रे 'गारार । र्शिशास्त्रा-म कि Po 'श्रशास्त्रा' ! संग−दुदे 'राप्ता≉ गैदा। सी० प्रथा र्मरादा - विश् अस्मार व्यक्त । स्रामकार-१ दह देश की बन्धे श्रीका सम्रोधार र्मेशामारे-म क्रि हे छबामा १ बनानेहे बचा भाता है।

र्शिवता = न कि पाना दर्भा दोना। र्ययानिक नुर पढनेडा रोग, शीम। व्यमहा-विक्शायकामा स्टब्स । य सही । र्धेगारमा-स क्रि रे॰ गेयचना । लैंगालमा-म कि॰ ग्रेक्पुत बरनवारे पूरी गार्मी क्षिप फिरमे भीमा। छर कुछ प्रदा से बाबा। साफ करना। गार्छ। बरमार माप केर हैना है भॅगी≠~श्री **र**मी। सँगुवा-५ वहवादीय । र्वेशेल−दि श*ल्बाका, बंदेना; विश•े शुर वर्षे हैं। t र्वियाशमा-श दि है 'तेनापमा । र्शियमा!-अर्थि देश श्रमा ।

र, क, ब, स, इ. मादि भ्रोमस अहरी तथा छोटे समासी का प्रमीय किया जाय (सा)- बिरनी ! कोमासिका-सी॰ [सं॰] फुनडा भारिशक रूप वरिया।

कोधरा –५० सम्बो। दरा पारा ।

कोयस-सी॰ काले (गढ़ी एक विदिना वी अपने नीककी मिठासके किय प्रसिक्त है, क्षेत्रिका अपराजिता कता ।

कोयसा-पु॰ पूरी सरह न बको हुई करशीका उला हुआ सबद्यतः कोयलेकी सङ्ख्या एक समित्र पदार्थ या जलाने-**दे का**म बाता है। मु•~(हे)की दक्तकीमें हाथ कासा -- बुरे सामग्रे नदनामी ही हाथ सगती है।---(सी)पर महर-छोटे मामूबी सचीमें ही अभिक कार-छोटे, किका-बत्तवारी बीजाः तुर्वे वस्त्रभीकी बहुमुख्य वस्तुओंकी तरह रद्या होना !

कीवष्टि, कीवष्टिक-पु (से] बक्कुबदुम वशी। कोया-पु ऑबका देका भौतका कीमा। रेजमके कीहेका बर या घोसकाः पत्रे स्टब्स्ट्या ग्रेक्स्रोप । कोरंशा -प्र मबद्री या शोपेडे रूपमें दिया आनेवाला

संश मध्य । कोर-अ [सं] नद संवि या जोक जिसपरसे अंग शोका

मा सद्द्रक्रमी । ⊸तूप ∽तूपक∽तु कीरो । कोर-१ दि करोड- क्या न समन भयन में बातन

क्येबियत कोर'−रतसङ्ग ली॰ किनाराः द्वाशियाः कोना। वट हरका इविदारको भारः पंक्ति। -कसर--फी॰ कमी द्वटि । सु०⊷ इक्का,∽दवावर्गे द्वीला । कीर-प [ब] ऐनाका विभागः प्रकानः कार्यविशेषके

किए संबंदित सैनिकरल । वि. कि:] श्रेषा । --वास्त-- विश्वमाना नदससीय। −वातिम −विश्वमाना नर्या। कोरक-प (रं•) कमा प्रकार करोगा प्रणाम शीतक भीनीः एक गंधहरू ।

कोरड-पु• दे कोर्र भाव बाब सं १ ह्य - स्टरमा-आव दारका 'कोर्ट भार बाद स'के प्रश्वेष निकल्यों । --बैटमा —होमा —िक्टमी जायदादका कीर्ड जाव बाद श्रीके प्रवंशीं हिया जाना ।

कोरना-छ कि॰ पत्थर या काठवर गुरुखं करना छोत सरपदर विवादि बनानाः धीर निश्राक्षमा ।

कारमी-मी॰ स्थार हरदार्रका काम ।

कोरम~प [#] किसी समासमितिके सरस्वीकी बह निवत्त संस्था निसमे कम्बद्धी सपरिवर्तिमें होनेवरकी बैठक वा कार्य विविन्तंगत नहीं माना जाता गणपृति ।

कारमा-पु॰ मगुःमा देकर भूमा बुका गोदन जिसमें शोरना म दी। – पुल्लाप∽प्र विश्वा श्वादिष्ठ शीवन, तर माल ।

कोरहमा - च म्ब प्रकारका थान ।

कोरा-नि नवा, संबद्धा हुमा जो प्रशास न गया थी मोंदीरार (दवए।)। को पुत्ता न ही जिसपर वानी न पदा को (मिहाका बरवन)। सादा अधिरिता रहित बैनिया बस्तरा,-गरा-५ वह गुरा जी सान भरनेचे बाद र(ता म सवा **दो । —अवाय—दु**० साफ रनकार । —बर सम-पुर मिट्टीका बरलम किसमें बानी न पन की। कोरि॰-दि करोता

कोरिश-वि [र्:•] ककियाया हुआ। अंकुरितः भूर किया ब्रुभा 1

कोरियाण-पुरु एक नीथ आदि । कोशी-पुर्विद् शुकादा । विक भीरा का का स्मा कोरिया-की दे करेगा'।

कोर्ट-प० किंग् दरभर, रावसभा स्वास्त, स्वापासका न्वायासम्। कोर्रपोसके खेकमें बीतका एक प्रकार । 🖛 आव् बाक्स~पु॰ नावाकियों विववामी कणप्रस्ती आहिन्द्री शंपरिका प्रनेष करमेनामा सरकारी मध्यमा। -- **इंस्पेक्टर**-पु फीक्टारी अदाक्तीमें पुलिसकी कोरसे मुक्रहर्गोद्धी पेर्गा करनेवाका अपसर । -पीस-प्र रायका एक धक । -फ्रीम-सॉ॰ दीवानी और मारू के मुक्तमोंमें करनेवाका अदावती रसम, स्वाम द्वारस । ~मार्शक−९ कीमै बक्स(मि) मनकत। (~मार्शक ह्रोजा−फोडी अवस्टतमें विचार होना।) –दि।प्∽ की • बर या विश्वासाधीका कन्याको विश्वासके किए राजी करमा ।

कोर्लयक−तु॰ (सं॰) तारॉन्डो छोड़बर सेथ गीणा !

कोळ-पु [एं॰] सूजरा नेहा कुनदा गोप अँकवार आर्टि गना यक तोहेको धौनः श्रमि श्रद्धा एक जंगको जाति काली मिर्च; एक देर । "क्षंत्र-पुर वाराष्ट्री बंद !-कर्क टिका −कर्वटी∽सी॰ एक सन्द्र !~कुण−पु श्रटमस । —शिरि−प दक्षिण भारतका एक पर्वत, क्ष्रेकाचक । —इस−पु÷ यक्षः संबद्धमः नदी । —पुच्छ –पु÷ सपेद चीक संख् पश्ची। -सुख-पु दिप्पकीमुक। -वासी-की गर्वापणकी। - विंबी-को पद कता, इपियुम्पे। कोसक-प्राप्ति | बान्ये सिन्धं अवस्रोटा श्रीहरूचीनी । कोचना—स कि स्थारी वा परश्रको भीवसे काटकर शोष्टा स्टरमा ।

कोका∸सी॰ [सं] पिष्पकीः नेरका पेड़। पु॰ [बं∗] पश्चिमी व्यक्तियमि होनेवासा एक वृद्ध विसक्ते बीज मस्त्रेने भीर वाक्तको दबाके वीरक्र काममें सामे बाते हैं।

कोखाद्वस-पु• [सं•] बहुत्तसे खोगोंके एक साथ बोसनेसे बीनेवाका धोर, बंगामा, एता: एक संकर राग । क्षोस्थि-स्ता [मं•] पृष्ठविद्येष, वन्स, कर्नुस् ।

क्रीसिया!-सी संग शस्ता कुसिया वह छीटा गेंद को र्थना भीर बहुत ऋम फीड़ा हा ।

कोव्यिषामा । 🗝 अन्य तान रारतसे जाना । पुरु कोन्दिर्दी-नः रहनेका स्थाम । कांकी-पुकोरी । श्री॰ वेंदशारः सैंदरी गेरीः [मं॰]

दे 'दाकि'। कोर्केश-पु महुण्का पदा पत्त, कोरना ।

कोस्या-नी (स्॰) रिप्तनी। कारहाइ-पुरीस पैरने और गुर पनानेसा स्थान ।

कीस्ट्रमा-चुकुरतीका एक पेंचा 1 कास्ट्रा कीस्ट-त रंग वा तत्र रेरन्या यंत्र। सु -काटकर

मुँगरी बनामा-छाटे लाभदे किए वहा हानि दरमा । —का बैस-वड़ी मेहनत बरने दर वस दिमनशासाः वश्र ही जगह पत्र रानेशना ।

क्रीविष्-दि॰ [भे] पंडित विद्यानः मधीरः ।

र्मना = पु योदनवाका । श्रीदा-वि• (फा॰) इसवा हुमा । तु॰ देंसी। रिक्किसहाइर।

-पेकामी-वि ईसमधा। नेंघबामा। - स॰ कि॰ सानी बराजा (पात्र)।

संबा-प क्ष एन।

र्लेमार - पुर्वशुक्रावशी। नैधियाना!-स॰ कि धाला करना (नाय)।

लंबायची - गाँ० एक शशिजी, सरमाय है

न्यम-प्रश्चिम यंगाः सहारा ।

स्त्रीमा-प परवर, सहरी, कोडे बा दर्शे आविदा बना संबर मधारः सहस्र ।

र्यमास-५० वर्ष समस्यो एक साही। पश्चिमी ग्रहरासका

र्वेमार+, स्र्वमार-प॰ क्ति।: क्या पश्चादाः होक-फिरह स सरकट मिट**ि धौगारू'-रामा**ः। ग्री॰ गंगारी

सामक देव । म्पॅमारी: मंभारी-छो: गंगले गामक देह !

मधापती−ली० एक रातिनी । % भिवा−मौ॰ होटा संग्रा।

र्धेंसम्(−व• क्रि॰ विरम्न संस्कृता । स्त~प॰ सि ो द्वारम स्थान, स्थानहार। सर्पर शरक, विनीर रश्या प्ररा नगरा क्षेत्रा भग्नकः ग्रालंदिनः धाना कम्मसे बसर्वा स्वामः जब्दाः सब्दाः दर्जः गरबाः देतः निष्ठासः भारतिका। बस्म । -कक्का-धी बाढाशकी परिवि । -कामिनी-स्री दुगः । -इंतल-प्र• व्योगकेश दिन ! -श्रीकरू-पु सर्वदा वद माम ! -श्रीता-ची मानाधर्गमा 🕴 🗝 मुन्तु । पत्नीः स्ट्री अहा मानुः नायकः पंत्रमा नाम देवता । -- कोल -- काम्य-- काति -- प्र गुरुष । - वस्थाम- प्रविद्या सीरामा वीममा । - गति -मी॰ एक बृद्ध । -गुम-दि निस्(राशि) से ग्रीयः धन्य हो (म)। नशास नशीकक-प्र आधारामेश्क। -प्राय-दि मांपास (धहन)। -श्रमस-त गेरमा। -चरु-चारी(रिन्)-वि हु रे 'शेवर[े]। त्विह ∽g+ अर्थातर बाद । −अल-g+ भोत । −वयोति(स) - व रावीतः सगत् । -तमाह-९ नारतः तर्माः -विसक-द० एवं । -शोस-त स्पी अवन्। -काराक-पुर एका गर वहराने कमाला कुछ । अधीराम -- पुर्व । -- पूच-- व एक ग्रंपरम्या याग (अल्प्स-बाजीका)। -पराग-पु अंबकार। -पुर-पु र्यवर्ग मगरा प्रदिश्वेदको हुए। सुबारीका वेदा वयमगा। मह सराह । -पुण्य-इ अर्थमन वश्यमः श्रादाणनुस्य । --थारर --धारर-५ ओन् । -भ्योग-न्धा धोन । -मचि-पु॰ गुपै ! -भव्य-पु॰ माराजस यथ सिरदे कारक निर् । नमीसन-पु संदा । नमृत्ति-पु शिका-मसी-सी शंभी। -बस्मी-सी अदःप-वैर । -पारि-इ भीता तुवस वर्षका प्रमा - पिया —भी+ बदोतिन दिना । —बायान्त्र+ नातु । ~सिंतु~ तु भेदमा । ~स्तानी~श्री १७३) । ~स्वस्मिक-तु कोरीन्द्र । –हर-दि० विभ(शक्ति)का वर बट्स्वकी (4)1

लाई है-भरी र साहा, ध्रया बढा शहरा,-'सन सकेर कि संस्त कुद्रम मिक्रि निम दिन होत गर्र -पर । राजन्यत-वि निर्णे कठिन शीमा स्क्रा । प्र शास्त्रा । मानवा-५० सिंगी विश्वदर्ध एते । राज्या-प करवया अहदास मनुभगे स्वतिः गरे होत रीक्षत्रा सार्था । रासरा-वि॰ श्रीना । प॰ वॉनदा बना शबरा। रेग । **गुलासा**-प ४० 'रीमासा । गरमार-प चयारनेषे विश्वन्तेपाता गाहाशसाह वन्ध्यम् । रामारमा-भ क्षित्र राखार निकालनाः वदना घरधरा-दृहवै साथ गड़ेमें थिएडा दुजा बाह्य निदालमा। स्वातहपत्रे व्यक्तेद्रजार-सर कि गरिक्षणा दशना। देशमा गरन करनाः स्वाहरू बरना / मनदा, कारक्यो = - प्रदा श्रदा, खम्ब - 'तीव मर्रे सरनावज्ञके कापदमके दिया माँग रागेटपा'-गुरामा-परिच । न्तरर्गोद्धरां - व वेदके बोटरमें बना हुआ बस्ट, महरूक भोसका । रताहा!-प्रदेशकरं। व्यानार-न कि॰ शहना मुसना। भिरामे वैदनाः मन रक्त दीना। निवित्त दाना उपर भाना। असर दोना वर रहता । रागदा−तु० गेहा। द्यगीकर-त• [गे] शाव । समामन-१० (मे०) विष्याः उरविदि । धार्वेद गरोग-तु (सं*) परद । समार-पु है 'तहन' । श्रचन-५० वरने, उन्हाने या प्रस्ति होनेसे मिना । क्यामा-भ कि जन्न बालाः मंदिन होताः प्रमा माना रम वाना। गचरा-विशेषनाः सेष । राचाराच-भ निनद्रन (धरा ध्रम) द्रमात्रा । गास मा-स मि विद-नदीर-बनाता गरित बरबार नेत्रीमे ज्याना। कथ पर∽शी रापना गटम । गरिका-दि॰ विन् अंदिश दिवा मानव नेश हुना । गणिया!-श्री ८१ रीविया । राधार-पुर भीता जिल्ला-पुरुता एक बायपर शे की और गुजार मिल संयति है। ररण-९ [स्त्र] संयानीत संयत्ता करण्या युद्ध । * रि ध्याम ध्यान बीग्य । ररज्ञक~पु [1] यशानी । स्राप-प्र [न] का सञ्चला-पुरु शाहरी मरहरी एवं विरुद्धे र क्षत्रहत्राक-पुरु सान बीध्व करण चला देशा है रामाची ह दिए दिलामध्या मनिक रा व बानवर्ष । स्वा-मी [1] ज्यांनी स्थाने मेरन पर मिनाया

₹14 मानं बाते हैं; यक बाबा; एक द्वाराव । वि॰ करप्रक्रमाणी । करनेपाका । कीक्षेतक-पु [सं०] तक्षार । कोहाँरा -पु॰ दे 'कुम्हार'। कौजुमार-प्र [एं॰] कुरूपको सुंदर बनानको बस्ता । कोहारी-प छोग्रे माँग। कीर-पु॰ [सं॰] एका घेराग वाका मुटन दूस । वि कोबान-प्र फा] केंद्रनी पीठपरका कृतप्र। कपने वर सानवाका, स्वतंत्रः भरेस्, छकाः वेरैमानः कोहामाक-क० कि.० स्ट्या, स्ट होना कुद हीमा ! कोडिफ-पुसर छात्री नाम । कोहिस्ताम-3 [फा] फानी औद्या पर्वतमाका देरानी कौटकिक-पु॰ [सं] पद्मी जादि पँसानेवाला, बहेकिया ⊷श्ररामः । कौटभी-सो॰ (धं॰) दुर्गा । कोहिरतामी-वि पदापी। पु॰ पदापी अदेशका रहने क्षीरस्य−<u>प</u> [सं]दे कीरस्य'। राष्ट्रा । क्रोडी~ ≉ दि क्रोपी: [फा] पदाशी ! † की काल पक्षीकी माना । क्षींक, क्षींक्रम-पुरु [सं] क्षींसन । क्रॉक्टिर - स्वी होरेकी क्रमी; क्रॉबकी रेत ! क्षीक्रम-वि॰ [सं] वेसर संबंधीः वेसरके रंगताः वेसरमें रैंगा⊈भा।पुण्क≉तुवर्गी क्षींच-प [सं] दिमाक्ष्यका एक पहान । इस्ति~नी सम बैसा ए६ फली बिसकी करकारी नमती भीर दबाब काम भी बाती है। उसकी वेस, केवींच । क्रींचर्रा -पु । कराका अपरी मान को शीरस दोता है । क्रींजर-वि [मं] दाधी-संबंधी। पुनंदमेका एक दंगी कॉ**ट्य∽**पु [सं•] भोबरायन । कींडसः कींडसिक-मि॰ (सं॰) ब्रंटस्थारी । कॅॅबिस्य-पुर्व [सं] बुदिन कपिके गीत्रमें जपन व्यक्ति । कीतस∽वि [सं•] क्षत वेदका। क्रीतिक-पश्सि] शक्षा चक्रामेगका, नेमान्दार । र्कीती∽को॰ [सं] एक गंबद्रव्य । र्केतिच~प्• [सं] श्रुतिपुत्र−श्चार्विकरः मीमः, वर्जुन । ৰ্মন্তি-ভা॰ বিষয়ান্ত খনত। খনত। **कॅपिशा−ल॰ कि विश्वकोका जनका।** क्षेषिमी†-चौ॰ दे॰ 'द्रीदमी'। ক্ৰীমালতাৰ বিষ্ঠানট অনকঃ বিষ্ঠাল বনু শ্ৰীৰা ক্ৰীয়াই दुर कोने '-प ; चमक ! र्कीम-वि•[सं•] पदेने रखा हुआ। पत्रसे संवंत्र रखनेवारत। क्षेत्रि≉∽पुक्षमत्। क्षींबराङ-विश् क्षोमछ । क्षीहर-पु॰ क्षीहरी-स्ते॰ बंदायमकी वातिका एक फल नो प्रतिष्ट बहुत काल होता है। को •−म• कर्मछप्रदान और लंक्ष्य कारकको विशक्ति । की भा∽पु एक पद्धायो अपने काले वेंग पूर्वता आर्थिके हिए प्रक्रिक है। पूर्व ममुख्य (छ।)। वर्षके प्रीत्रहकी वाँदी। कमकुरको एक मछली। −हाँही – स्थी मक सताबिसके क्षिको सदम बीएको पीरकोमी होती है। -पुरी-सी॰ कामी वरशक्त री। -शेर-पु इता कागारीक। कीमाना!-२० फि॰ ५वचकानाः स्वयमे २६४५।वा । क्षेत्रारा - पु॰ दे॰ क्षेत्रारीर । कीमाक्ट−पुरुक्षे ∦ीवारु । कामामी-र्ग दे 'कीवाकी । कीहरद-पु (स] पुरुषं करनाः परकाशापः। क्रीवचुटिक−4ि पु.[सी] सुर्गे वालनेवालाः डीयः

कीटवी-को [सं] मंगी सो। कीटिक-पु॰ [सं॰] दे॰ 'कीउविक' । वि॰ वाद्य-संबंबीः क्रमाः देवमान । कौटिलिक−पु [सं] म्वाप, वहेलिया सुदार । कोरिक्तच-वि [सं•] धीरिस्वकृत । कीटिस्य-त [सं•] क्रिटकता देशभाः फरेन भवेमानीः वर्षशालके कर्ता और कुटनीतिके बाजार्य जाणस्य । कौदीर-वि॰ [सं] इत्येर पीपा-संगंपाः कृदीरका पना । कौरीयाँ-सा॰ (सं॰) दुर्गा । कीर्टब-वि० (सं०) कुदंबक मरणके किए आवश्वका प्र परिवारः रिक्ता (कौटंबिक-वि॰ [सं॰] कुटंब-संबंधीः कुटंबी, कुनवेबाका ! पुरु पिताः गृहस्यामी । कीका-प्र• वहाँ कीकाः वकाव - वृद्दे नामकः पीधा निसस चज्रीसार बनाते 🕏 । कीविया-वि कीक्षेत्र रंग-कपना । * प्र• दे 'कीक्सा' । की दियाका – विकीमो रंगका के करे। पुरुको करें रंगः एक बहरोका छोपा यक शमीदविः कंब्छ धनदाम् । कीक्याकी-सा॰ कीक्यासा पीवा । कीवियाही-को॰ मिट्टी, हैर्दी माहिकी हुमाई की क्षेप पीछे कुछ कीवियोंके दिसावसे दी आती है। विश्वसार बहुत धोद्ये रकम लेक्ट द्वाम दरनेवाको । कौविहा-पु॰ यक मस्त्यभद्या करुपद्या । कीबी-स्था पॅपि शंक आदिके बर्गका एक कीबा प्रस कीरेका अधिकीया जा विनिमयके साधनके रूपने भी काममें भाषा जाता है, बराटिका, पैसा पना कर, अइसुन: भीष गरेंछ भारिमें निकलनेवाकी होती गिक्सी। औराक्षा टेला: धीनेकी वह बट्टी किसपर मीचकी पमुक्तियाँ मिनती है। बटारकी मोस ।--का --मुस्बरहित: तुच्छ, इय । --भर --बीकी बरावरः बहुत बाहा । सु० -कपानको स झाना--क्लिक मुफ्तिस, मुद्दतात्र शाना । नके सीम नके सीम वाम-बहुत सरता विशे दोई न पूछ ।- इ.स.न हाना-हुष्ट देव दोना । 🗝 मोछ-बदुत सरना वा सरनेमें । ~ • संपूर्णमा – वाले मा~ शुक्तमें भी न क्षेमा ण्ड दम निकामा समझमा । - विष्णा-बहुत सुरता विकास। गुष्पः विकार दीना। -कीदीका हिसाद--छीगेसे छोडी रक्षमका, कार पार्रका दिसार ! -कार्बाको शहताज~रिक्तुल गुपतिम भाँत निर्पेन । —दीशी शुका देना-पूरा वास्ता परंपारं देशक कर देना। -कीशी जीवना-एक-एक देशा-भोडा-धीडा करच पत

पाश्चक्क, जाकवाका । —साक्ष्म-पु॰ धुठी गंगादी ।

सांमिक्दिता ।

सथस हो, तुर्ध अस्त । पु॰ गृक्षक सीव् (१) । —चुक्र— वि बदुत घट्टा । अर्व-स्वाजा-जीवा देखनाः विफल रीमा। रिन फिर बाता ! -क्षोला-नप्रशब बीमा । सहाया-पु सिंगी गंपविकाय । सद्दाप्ती-सी॰ सि॰ो माता गंवनिमात । चड़ि -सी मिशे बस्बी दिवसे।

स्तरिक~प्र∙ स्त्रि] क्यार्थः बदेशियाः विशेषार । सहिका-सो वि वे होने राहर अरकेर अंगरेको-बाड़ी छी।

सही-सी राष्ट्री मार्शी गणनस मीवा एक परामीका मांब् ः -- सिही -- मी० एक सता ।

चहरक-वि• धि] हिंगमा।

स्त्रद्धर-दि॰ [मं०] सञ्चा। खदवीरा-प्र• मि] पाना बड़ी हुई पान्नी की छिन्छ। भारत बतायी जाती है। रिकीपका रफ मामा एक महा (र्न+): बादी संकटीपर मानी सन्दर्श चरवार बनावी हुई यक भीज जिसे सन्न्यासी मात्रः सात्र रससे है। जानगिरा करत समय भिक्षा मॉपनेका पात्र। - घर-त॰ शिवा परवोगी(गिन्)−९ [सं] धिव। सद्धा-न्दी [सं•] सार चारपारी स्ला। मुन्तमें वित

एक तरहकी पड़ी र

सरपाका सद्योका-स्थ [सं] होते शहर। लक्ष्मा-इ ईंग्रेस्ट राग्र भीशर्व ।

साक-पु (सं) यास्त बार क्यांचा शाब्देनमें बढावा हभा दक्ष तरहरू। एकाः सीमापदाः ।

प्रवक्तना—व॰ कि 'क्षड़-सह की जानाब होगा। युने क्रीके परस्य रकराते या दननेका भावान कीमा। गाँके सहवारक बरुदर जादिवर विस्तिकी आवाज होना सर-

कल्द ६

शक्कामा-स क्रि सरकामा। सदक्षित्राः सददी~सी [में] (धरुधी।

स्वक्रमहामा-म कि सङ्गाहंकी जानाव क्षामा निकतना। छ फि॰ फिमी बीजका ग्रेट वजाकर ^हरत राह³ आवाज **वैश्व श्रद्धमा गरहारामा** ।

स्वद्रभाष्ट्रद्र-स्री (तहराह क्षेत्राचाना ^हनाह सह आचात्र बीमा १

खक्ककिया-न्दो क्ड तरहको (बटिया) चानको। योशीको शिला देनीहे काम मानेपाता एक मनार्थी मानी या

गारीका दाँचा । व्यक्राक-युक देव 'स्रह ।

लकारि-विक राह्यारी । पुर वैदर्ग ।

व्यक्ता-प यगा

मध्यप्र-मी शवर शाप्त मारियो भोगीने टबराने विर्धे मान्द्रि मान्य गहरत, गीनगणः शतका ।

राष्ट्रवहासान्त्र कि॰ परतामा अस नियम बानाः अस-व्यान दी जाना । श्र दिन सहदत कामा। अस कार डम्य देना १

महत्रदाहर-१०)० १९९९) । साहमही-मा वेप्रतीकी गमक्ती मनशहर है

फड्बिड़ा-रि कर्डशास्त्र**।**

गरमंबस-पु॰ गरेरर, मीलमाल। सहसाम-प्रश्रीक (एसाम)

क्षत्रा-वि शीधा कपरको वहा हुमा लंबक्का संबंधि सवारे रिवता रिवर क्षता प्रभा रका प्रभा। वैशास बर रिश्रा कपना सम्बं भीभुरा दशा सरहा कारी। यो कारा स यथा हो अतमें भीजूर (राष्ट्री फलर); समुबा, साबिनः बनीदार्वे दृहरा दुना ! -रोत-पु वह सेर निसर्ने बसक मीनून हो। -(वे)बाहे-म धरा रहते क्रप- (देशाय) पाहा रक्षतेष्ठिः वर्गा प्रशा बीती हैर उठ क्षणके तिय ।-बाह-ज॰ तुरत । (शु॰ -श्वीवा-पाश बी कपश हैकर दिना भग्नी दिने थे। देजा क्छ बंदोंने ही क्ष्यता भी देशा ।] अ०-करना--तैबार करनाः क्यानाः बॉबा कामा। कभी सिकाई करना: शाइना (संया नर्दर)। भुगारमें (मेंगरी भारिका) अग्मेश्वार बनाना । -हीबा-रीवार दोना। बनना। दाँचा बमना। सदाबद्ध होना। यानावर्षे कमीरवार शीला ।

राचार्के-सी कारकी पती भूरीगार शुनी पाडुका। राशकाण-पुण्यपुरुतेहा सन्द ।

सवानमण-पुर कार्रिकेट । सविका−सां र्डि•ो शरिया गिरी।

साबिया-ना छटिर, सुभावन मिट्टी वा रह तरहरू चुनेहा पत्थर की किएते और सफेरो आलिये बायमें थाना है।

साबी-सी सिंशी शरिवा मिडी । माबी-भी॰ सहिया शिद्यो । वि. स्तेश देश 'सडा⁸ । ~चहाई~की॰ धीपी, बन्द क्षत्र बाहबानी सारी। -विशासी-स्तीर यहे रहास्य केवम होव बनाउ हर वैरमा । -- नियाज-म्ये मनीर ४ हिन्द श्रीनेश्र हुर्स दी जानेवाली निवास । -पाई-मी॰ गीपी, छीटी रेगा माबार्ग सिवानेमें मात्रर के बार्ग या था है। बनाबी बानेशमी शीपी क्योर। पूर्व विरामका विद्या - बाकी - या रिटी-मेरठ प्रदेशको नीमा ना आमृतिह शिक्षेत्र हर्ष है। --वकीर-नी० संबद्धे कव्में होती। ज्यार (-मपारी- त्रत शरं राहे (-स्तस्त ब्रामा) । -प्रेंडी-मी बह बुंदी जिल्हा दरना भुद्धाना भ भवा ही । अर्व-पदार्वे रतामा-गा ही होन्दर मिर पहला पढ़ारे गाना ! -शबारी व्यामा-सरव शीर जानेक्ट वेबार बीना !

सन्-प सङ्ग-स्थ (मं•) सर्थो ।

राष्ट्र-प [६०] सन्दर्शको दास्या एक बाधीन सन गाँता सम्मारा सोचा। यहका गाँका ग्रेश । -बीचा 🕾 राह्र पर तक्रवारका क्यान । −धर-पु+ तनकर पार्प कर्जवाका । --चार्-पुरु क्रहिहासम्बद्धा वद पर्वतः। −धारा−मी तनशरदाश्रमा(मा•) वर्ष वस्त्रि कार्ष १ --धेन् --धनुष्टा-न्होरः होत्। सङ्ग वराहा मारा देशा - बय-पु वनपूर्तका एक करिय वृत्र विसरी व्यवस्थित सम्बद्धि स्थी पुर्व बगाबी बाठी है। सम्बद्धाना कृत । -विधान-तु तत्रशास्त्र भान । -दुन्निस-सी बसर । -पान-पु महरी पर तहनमंत्री धार्म बाला बात ! - बंध-पु विश्वहासदा १६ धर लिपे त्रवर् सहस्रे शहरे तिथे जाने है। -लेखा-ली त्त्रभारीकी बनार । -हरम्-दिश रिग्री हास्त्रेधा

स्प्रीसिक-नि [सं॰] कुछ-संबंधाः कुछपरंपरागतः । पु० बाममानी। बीनी पारतेनी खुडावा ।

कीक्षीन-वि (संः) कुकीनः कुककानस्ता । पुः वासमार्थाः सिमुक्तीका पुषः करवस्य ग्रह्मकाः गुक्त श्रेषः पणुक्तीः सुर्यी कारिको कवार्थः पुत्रः कुकीनता । कोक्सीन्य-पुरु (संः) कुकीनता ।

कोक्षीत्य-शु॰ [स॰] कुरूनवा । कीक्षीरा-स्रो [स॰] कईरश्यी ।

कीसेयक-पि० [तं] उच पंत्रका वंश-संबंधी ! प्र कता।

कोर्छी •-- अस्तरहरू।

क्षीस्व~वि [ri+] बुस्रोमः छाक मतका ।

कीवछ-पु [सं०] कोसि, वेर ।

कीया-पु॰ दे॰ शीमा । कीयास-पु॰ (म॰) कीवाको गानेवाका। गरेवा ।

क्रावास-पु [सर्] स्विमामा गण्य या गीतः संयोतमे एक

ताल। की सिदी - स्रो [स्रेग] जुलाहेकी की । को बेर--विश् सि हि 'की देर ।

कीचेरी-को [सं] दे॰ कीवेरी'। कीश-दि [सं) रेशनी। इन्ह निमित्त (१देनी शादि)।

काश−ाव [स॰] रक्षमा क्रथ

पु कुशहाय साम्बकुष्य यस । स्रीयास-पु० [सं०] कुसलवा, यसवा; मंगर कानाम । स्रीयासिक-पुर्वासे वास विकास ।

क्रीसकिक-पु [संग] मूस रिस्ततः। काशकिका, काशकी-नी॰ [सं] कुछक-प्रस्ता थेंड, सपदार।

्षपदार । स्रोशकेय-५० [सं] क्रीशस्याके पुत्र राम ।

कारास्य – प्र. (५०) दे 'चीप्रक'। कीसस्या – नो (५०) दचरक्त्य पट्टमहिनो, रामधी माता। कीसस्यायनि – प्र. विशेषकाके प्रमासमा

कोशांव-पु॰ [मं] कुछ्ये यह पुण। कोशांव-पु॰ [मं] कुछ्ये यह पुण।

कीशांबी—स्या [संश्] वस्त्रीसकी प्राचीन राजवानी विस् कुटक पुत्र कीशांबी रसावा था आधुनिक कीशम । कीशक—प्र [सं 1 क्रांस्क्या वंशम किशानिक संस्

काराक-3 (६) कुरस्कत वरण अन्यासवा दहा यिवा वेशकरत वेशानका करना नेवला थेवार रख माना ग्रायुक्त (वि न्यानमें रखा हुआ। वर्क्यूनंपेयी कुरियनंत्राका रेशमी ! – मिम – पुत्र सम्। – पश्च-पुत्र मारियक्त रेश

कीशिका-स्था [सं] पानयात्र, तिलास भटीरा । काशिकायुध-तु [सं] पंदका बचाः पंद्रवसुत् ।

काशिकाराति वीशिकारि-तु [सं]काकः। काशिकाराति वीशिकारि-तु [सं]काकः।

क्योशिकी-स्या (सं] युर्गा कोसा गर्था राज काव्यकी पार वृश्विकों से एक के विश्वित के एक रागिनी । — कान्द्रवा-द्र [स्ति] वीधियो आर कार्यकों बीगने

पना यस संप्रत हात । क्रीमीजारक, क्रीपीकारक-मार्टिंग के क्रीमार्ट स्थाप की

क्षीमीधास्यः, क्षीपीचास्य⇔षुः [सं] क्षीशस सरक्ष क्षीतः ्रामा वान्यः तिकारिः।

र्चागीकव-पु[सं] सर अधिनेताका पद्माः। चौराय कीयय-पु[सं] देशसः देशमी कपहाः देशमी साप्ताः। विदेशमाः।

কাৰ্যালক-ডু (য়) খুক কৰি বা সুখালক পৰিট পুল

और कामेरकी एक दासाके प्रवर्तक ने ! कीरीसकी-कीर संग्री जानेत्रका एक बाह्यणः करनेरकी

यक् श्वासाः एक उपनिषद् अगस्य मुनिकी पत्ती ।

कीष्टेयक-पु॰ [सं॰] देवल खबाना वा अंबार सरनेके किए जनतासे समय-प्रमयपर किया जानेवाला कर । कीसक्या-म्बी॰ [सं] पे॰ 'कीशस्या'। -र्नद्व-पु॰ गामका ।

कीसिक=-पुरे कीस्का। कीसिका=-सी दे॰ कीसमा।

कोसीव-वि [सं] कणसंश्र्याः स्ट्सोर। बीसीव-वर्श्वां कसोव-वर्षः सदानमीः सदस्रोरीः

आक्तरमः संहाः क्षीर्शमान्त्रिः सिंशीकसमके फल्का थनाया उससे रैगा

कासुभ-वि॰ (स॰) कुसुमक्त फूक्का बनावा बसस रगा इसा। पु॰ वनकुसुम। कीसम-वि॰ (स॰) पुण्युक्त। पु॰ बुसुमांबन, पुण्या-

जमा पराग ।

कीच्युतिक-पु (सं) एक दरनंशका; नामीयर ! कीत्युम-पु (सं) समुद्रश्येवनते निकला द्वना यक रस भिन्ने निष्णु कावीपर भारत स्थि रहते हैं, समुद्रश्ये

वक्षा(क्षस्) –द्वत्य–५ विद्यु। कौर-५ अर्जनवृक्षः।

कोहरां -पुण देण की बर । क्या-सर्वे प्रश्नवाशक सर्वमाम । वि किछनाः बहुदः केमाः बहुत बदियाः अल्दिस किछः दिसं कारणः प्रवत्

्किशाबद्वत्य विद्याः। ज॰ दिश्व कियः, निःस कारणः प्रदन् एक्क ग्रन्थः। जयार्--०प्र दे काः। पुरुषेक्कावाकाः।

क्यारी-की वाग वा खेलको मेंड्र बनाकर प्राप्त' कैसोर स्थानेको सुकल्पे दिला हुआ विद्यास । क्यासी≎-लो॰ दे॰ क्यारी'

क्यीं—स रिस्न क्षिप् किस कारण । —क्षर—केने ।—क्षि-कारण वह कि इसकिए कि ! —सहीं—धवस्य, ४३कः । —स हो—क्वा कहना सामाध ।

कंदन-पु॰ [मं] रीना निनापा पुसके किए भारान समस्यादना। मार्थार ।

श्रंदित—वि (शं॰) रूक्यारा दुमा, माहूत ।

करूथ-पु [संब] बारा; यक गांत्रा; यक नरकः प्रतीककः पेदा प्रक्रित गुरु; यक योग (प्रयोक) । -- एप्ट्र-पु सामीनः । -- थाव-पु मिरमिट । -- प्राप्ती-सी एक माहते ।

क्रक्रमा~मी [सं]धनदो। इक्स्प~० [सं]पद्र विकास

ककर−पु [र्ष] एक चित्रिया, किन्दिका बारा; करीछ; पक रोगः केंद्रद्रा गीन व्यक्ति ।

कहा- पुनि विश्वा एक प्रवादित संकरत रेदिय योगयात प्रवाद विश्वा एक प्रवादित संकरत रेदिय योगयात प्रवाद व्यादित वर्ष सम्बद्ध वर्ष स्वाद्ध इत्तराक्ष राष्ट्र क्यादित वर्ष सम्बद्ध वर्ष स्वाद्ध अध्यता म्ह्रिट्(इ) - व्याद ।--प्रवादित वर्ष प्रवाद सम्बद्ध वर्ष वर्षा वर्ष स्वाद स्वाद वर्ष स्वाद योगा ।--प्रवाद - वर्ष सम्बद्ध - वर्ष स्वाद वर्ष स्वाद स्वाद वर्ष

- मुक (प्)-प दनिष्य सानेवाला देवना । - पक्-

रब जाना व विश्वापा निराणामा काणम ह राष्ट्रप्राप्त-५ [ल] दिन भवन्त्रा परस्या प्रतिप्ता

निर्देशि स्ट्रम ।

वि• सानमे निकमा हजा (साना आहि)। -आस-प• प्रकाशनी-वि जिस रामहानदी शिक्षावन से बढ़ना । धानींगला प्रदेश । स्वक्रमी-सीव फार) रीव, मारायमी क्रीव ! सनिवा(न)-पु॰ [धं॰] धौरमेपासः। लक्षा-निर्धाति है। सनिय~पु [मं•] रोताः कावता । स्बक्तीय-वि स्थित्री ब्रम्बाः बीवत तुन्छः वृत्ति । प्रव स्तिग्रह-पु॰ सनिधिका-सी [सं॰] संती छोटी ~शोना~ए(जन शोना । करानी । प्रक्राफ़ा−स्पै (व) होधे रहमीके दार सननेतन। स्रतियामा∽ग्र॰ क्रिं॰ माली करवा । महाक्रव स्माल कात कोई । बहब्दन भीरत। क्षमीमा≒−स क्रिश्रहे॰ धासना । खबर-की॰ थि॰ स्वनाः जामस्यो काः शक्त स्वा-सम्रा–प्र चारा दारनेदी क्यहा दात्रियोदा यह अन् । बारः स्टेशा बेग क्षेत्र । -गीर-निग् सोजनाग खपच∽जा॰ शीसदा उदहाः पर्वेस । केनेशालाः देगरेच रखनेशालाः सद्दावकः। -गीरी श्री रापचा~प स्वरीको सम्बो। गाँछ मारिका मीरहार योजनावर हेना। देशनेस सहावता । न्यार-वि Z641 1 धानवान भीवता ! ~हारी ~सं! शाववानता हादिः रायची~ग्पां+ वॉसकी फटी। तीकी। कवान मृत्तमेकी सीक्षाः बारी । -श्रमी-पण शहर वर्षपानेशाला स्वेशहरू । पश्चाः गीहा। स॰ -शेमा-सीव-सथ्य हेना द्वार पहला वना सपधी-ना मोमही होता था इयबी। वि (का)दरका । त्रक करमाः शश्ना फाबारमाः €ट देना । नपटा~पु तकत्र प्रे पट्टीः धापता । भावति स्वत्नविद्याक-ग्नो है । सन्तर्ग । **स**पद्ये~सी - सप्रधार रोज राष्ट्रा । राबीय-विश्व । नारचा दुश क्रा पु भूत मन। न्यपदा~त निहीस प्रकाश हुमा हुद्धश जिल्ले स्वाल राषीसी-मा॰ मापन्नी। सरीत मी । छात है मिहाका सम्पर- इते बुध बरगमका उक्ता एक खब्द∽य भि देश विश्वकृतिका क्षीता बीच पानका बाबा बनेका जीनेका आवा शाया समी-विश्विमें गण था समग्री। कत्रपद्मी पीडका वद्यम । व्यभवनात् राधरमार्ग-गः क्रिश् सिकासाः इक्रवरः सब न्वप्रकी-की भिट्टीको हैंथा विसुधै भइन्ते वाला भूमत है: वकी भवाना । डीकरा, स्रोटा खपशा । म्बमस्था-(व. पुश्रशीम क्षप्र (ब्रह्मा) । ग्रप्रदेस∽ड शांदे 'प्रशेष'। श्वमार्क∽प्र वनसङ्घा परशाली-पिति मिन्सि तम रह∑ स्तपदाक्षमा रवपदीई?-त्या मारियतका मानस्का कहा िसि कपिराठ भवेज समार - रामा । यया दुरा । प्रमा-विश् प्रात् शुक्ता हुआ हैना बक्रा प्रश्वहरूपा देशपनः वाज् । -व्या-त हिम्मत जीग्र । -वार-रि कापदा – स्वा॰ रायनेचा मावः सर्वः मातको विक्रीः निवादः। ग्रपद्यी - स्री दे भगवा रेडाः च वरानः (बाल्र) । प्राय -- न्यामा -- हारमाः, मीचः हैराना-शुरुवी तुरदः वर्षी राम सार्थ-इन्हरद्वादः रउपमा – भ क्रि॰ स्टर्न श्रीमा। श्रमनाः विद्याः सरनाः नाध दीमा। निवाद होना । -श्रीककर-सम्बद्धारसर शिन्द दौरर । -श्रीकमान म्बर्ग्स्ट~ष्ट्र यापन्य इंदर्ग । करवेडे किए लाम ठीडमा करदारता। स्त्रपश=त दे 'रापता । सम्बद्धाः म कि॰ रायसम् प्राप्त स्टार रासमा-वि [थ+] प्रथम गंदध रगजराच्या ग्रेंदम क्षपरिया - ला॰ यद करवात की तरमें आदिमें पति है। सुनाशार वंपछ। च नद एस जिसके हर दरमें चैन-चैव सोरा राष्ट्राः कोदी कमतका एक बीहा । सर्वरेम-५ स्व सब्द्रात सब्देश छात्रना सप्तरे छावा बिगरे श्रीः पाँची वंदलियोः स्थीनमे एक ताल । दुरमियाहा - इ. [का] अंग्यारे दिश्वेमे बनुकर अंगे ही बुक्ता यह । तामनको सना व ना प्रतिश्वतः बटा केश हानि। स्त्राच-भी रापभी रेशक तननेवाणीया एक जीवार । म - प्रशामा-व ना देश प्रशास मकार्या-स्त साया । श्याद-प्र चीम्ताने हुँदश्य समान जानेशके छाडे प्रकेश रामीवर्शा-न्ये (४) रशतन १४७)। राजान। कि राज्य कर देशा। नेग करवा। मोर समीक्षा-त्र (का) मुरा द्रभा, रहा ह नामीर-पु (म०) शुन मार शारिम (देशनक स्थानी) द्द्रम्याः द्वायमे नामाः देवनाः निवानाः । वैदा बेंक्नियाची रात्रांच भीर प्रभारत वद यात्र विदाये वर्ष म्बन्धा- (इ. इ.स्पे.इ.१ पुर दरवार्वेद नी) मूलको छैरमें द्भाग पान को गया की पान अपूर्वना बताबर । सुरू - प्राप्ता ब्रोक सरहरी बैठानेके निय संगदी बानवाली सक्ति। -भारे आदिका शमीर देश हा जानेन पुण्यर महस्र • कापा व्यक्ति- शुक्तमं करि बेददि मार वि यह गान्य र्थभना । सर्व राष्ट्रभा गरदे —श्रवितापणी । रुप्रशिश-वि (का॰) शर्माण्यामा । पु विकरी मा कोर्नेंग श्रापद-पुरु दे 'रत्या । का पालनीमें बढानी दुर्व दक्षा कर्यन आहे का समीत सरवार-पु मिट्टीका तराने मैसा क्षता- व्यक्तीके काथमें

बिराष्ट्र बनाया हुआ सुगरित तराह ।

रामीरी-विन्नी मा गर्मावनी (गरे) । क्क्यो~पु स्थाननानम् पेत्र र

वीसरा भिसमें नादी जयने दावेशी पुष्टिमें सबूत शहावत वेश करता है। -- यस-पु॰ कर्मका परिवास। --थोग--पुर किवारूप बोग−तप, रवाष्याव और ईश्वर प्रविचान (वो) फियाके साथ संबंध (व्या) ।-स्तोप-पु॰ झाला विवित्त नित्व नैमिलिक कुमोंका श किया जाना !- भाजक, -वाची(चिन्)-दि किताका अर्थ देनेवाका (व्या)। -वादी(दिन्)-पु॰ (मुक्टमेर्म) दावा पेटा करनेवास्ता। ~विद्रया-छी क्रिकार्के हारा अपना अभिभाव वताने-बाभी माथिका ।-बिद्दोपण-पु॰ वद छन्द को किवाकी विशेषता-एसमा कारु, स्थान शिति आदि वताये (ज्या)। -झक्ति-जो० रंपको सहिदारिने शक्ति। -सीछ-वि॰ हर्मनिष्ट । - शून्य - वि क्रमंदीन ! - संक्रांसि - सी० शिक्षण विचादास । - स्ताल-पु॰ सामको एक विशेष विवि विसर्ते अनुसार आन करनेसे तीर्वसानका फर्क प्राप्त द्वीचा है।

क्रियासिपत्ति – स्री [स्] एक काश्यासम्बार । क्रियाध्यक्र−(६ [मं] क्रियाक्रवमें किया द्वला अमसी। कियापनगं-पु [सं•] कार्यको समाप्ति ।

क्रिसाम्युपरास∽पु [सं] हो व्यक्तिलेका किसी कामके संबंधमें भाषसम्बद्ध समझौता । क्रियार्थ-वि [सं•] फ्रियानियायकः कर्तस्थवीयकः विदका

बल्द)। क्रिवाबसय-वि [एं॰] गराष्ट्रीके नवानके कारण मुकरमा

हारनेदाका । क्रियाबान्(बन्)-वि [सं•] कर्मनिष्ठ ।

क्षित्रिय-छो॰ [सं॰] समेदिय। किस्टाड-पु • [#] निष्ठीर, रपानिका शीरे कहार कारिका रवादार द्वका ।

किस्तान∸⊴ ईसाई।

क्रिन्दामी-वि+ ईसारवीका 1

क्षीडश-प देश फिरोट'।

क्षीड~प्र सि•ी क्रीका सेल-कृता देसी। समाका।

क्षीड क−प्र_[सं•] क्षीषा करनेवासाः शारपत्त्र । मधिष्ठम – पु. [सं] फेलना। मेलनेब्य साधन, ध्यकीना ।

कीडनक कीडनीसफ~प सि विशिधानाः

श्रीवनार-अ कि कीटा करना, रोक करना।

क्षीडा--रनी [म्] गत-कृष किलोका बारव विगीया लालके मुरव भरोनेमे एक। ~कामम ~कश~नुकीणके किय षर्पुष्क बचान प्रमीश्वम !—क्टोष ~धु बनावटी गुस्सा । -कीतुक-दु रस-कृदा आमोद-प्रमीद । *-गृह* --मंदिर-पु वेश्वगृह ।-चक-पुरु बृचनिशेष ।-नारां-न्धा वेदवा । - एयत्। - दाख-पु ख्यान आदिमे वनावा मानेशका पृक्षिम पर्वतः - अयुर-पु भनेतिसन्दे किय राना गरा मोर । - सूरा-पुरीनने भी बहनामेख निष वाता हुआ हरत । -याम -रथ-पु गैर-प्रस्तव आहि मै सनारीके प्रवृक्त रथ पुष्पत्य !-श्म-पु रतिक्रिया। -शीख-वि शहबादी ।

मादित∽4ि [मं] सेनादुका को शन युका हो। मंहिं।(हिम्)-वि [मं] मोदासील ।

मात∽वि [७+] त्र.य दिवा हुमा; सरीया हुमा। यु सी

नापको धन बैक्स करीया हुमा पुत्र । ऋतिक्क−पु०[सै]कोचपुत्र । विक्रवद्वारामाप्त । कीसानुषाय-पु॰ [६] सरात्री हुई भीवसी सीटाना । क्**य**-वि॰ [र्स॰] क्रीव्युक्त, ग्रुरसेसे भराः निर्नेष । हृष्या(श्वम्)~प (सं•ो गीतक, स्थार । क्रष्ट-वि [सं•] त्रकाया हुआ, आहृता विसे तुरा भला

क्यागवादी। प्र रीवनः छोर। अक्रर-प् [अं॰] इटका और द्वतगामी वंगी सदान I क्क्र्र−वि [शं•] निर्देष, संगत्तिक, परगीटकः टरावनाः होनिकारकः बाहतः हिला अपकः अधाम गरम अप्रिन । पु॰ बाज पही। सफेद बीकः पापग्रह माठा बना बोटा गिर्ववताः भवंकर कार्यः भवंकर करा। नक्क्म(न्)-प्र° निर्देशकाः परपीवनका कामः भीर मयावना वर्म । -कमा (र्मम्)-वि हार धर्म धरनेवाका । -कोष्ट-वि कडे कोडेबाका, जिसपर सुदु विरेषनका असर न हो। -शंध —प्र शंक्का − ध्रक्र−पुरवि, धनि राष्ट्र मंगछ और बदुर्मने कोई। -चरित्र -चेटित-वि निर्णय कार्य करनेवाला । −र्वसी~स्था दुमा 1 −रक्(श्)−मि तुरी पश्चिमानाः सान, बुद्ध । पु स्तिः मंगल । ~ पूर्न ~ पु कृष्य वर्षस्य । -रव-पु श्रमाक गीरव !-राबी-(विन्)-प्• होणकाक । −कोचन~प्• शमि। दोस-न्द्रीया ।

क्र्रा−वि॰ स्ती॰ [सं] क्र्र रवमाववान्धे । न्त्री क्राष्ट पूछवाको गरवपुर्ना ।

कराकृति-वि [र्थ•] टरावनी सदस्याका। यु रावण। क्राया(सन्)-पु• [सं] धनि । वि० क्र. स्वमाव बाका ।

क्रराक्षय−वि [सं॰] कण्यवाचाः शिसमें भवंकर जानवर वीं (बसे नदी)। निष्ट्रर स्वमाक्वाक्षा ।

इस्स∽पु [से फासी] चुका सलोवः ईसाइमीका पर्नेदिङ **की स्कीरे मिछते-अ़क्त आकारका दोता है।**

क्रीण, क्रेणी-सं • [सं] स्टब, सरीह ।

क्रेसा (n)-g (d+) धरोरतेवाला । -(n)संघर्ष-प घरीशासि वहा-कपरी (दी)।

क्रोम−ि [री•] सरीपने धारम ।

क्रींच-प्र• [मं] क्रीय पर्वत् ।

कोष-पु॰ (सं॰) धासी वद्यारवका गीद अंक, पेक्स याराकाः स्वरः धनि धषः शिधी बातुके नीम दा अंदरका दिरसा । -कम्बा-सी॰ वारादोदंट । -बृदा-सी महाभाविका नामक पांचा । -पग्र-यु पुरनकादि क्षिमोंमें सुटे हुए अंशकी पृत्तिक विष अवगमे क्षिमक्ष रहा द्वार विद्य संदित पत्र। समायार एत्रके साथ समानी छाफ्टर शिरश्ति हैंस निदायन आदि। --पूर्णी-सी भरवरवा। -पाव-पु वस्त्रा। -पाली-सी सीमा।

−सुग्न-पुर्गगा। श्राद्धीक कोटांकि-पु [र्ग] कप्एप। काडीकरण-प्र [सं] हातीस समाना आर्थियत ।

#ो**डी**सुरा-पु (रं•) गहा । ऋ।**वष्टा**−ती [मुं•] मोबा।

सीच-पु [r'o] विसी अधुनित वन अपरार आधि

प्राहर-सर्व गरहर-५० हिमालयको तराईमें होनबाका एक पेता रे है० नरहरना!-म कि॰ बरहरेने बहारना। सरहरा-पु मोदेशी वर्ष दंगपक्तिबीबाली चीडीर बंगी जिसमें बाहर बहुनको मुर्ने साद की जाती है। बहुहर के वरु भिन्ने साह. ह नरहरी • - मी • यद मेवा शुद्रारा । सरहा-पु शोगईस्त्रे ज'तिका करमें विहीके बरायर एक बंतु जिसकी काम बहुत रुवे दोते दें, सरगीस । न्दर्शद्वकच्य मिं∘े सिवतायक मनुबर । स्परोद्धा-पु । [र्थ] दर्व । म्बरा-विक विदास, मालिसा संघाः क्रम-कवरसे रहिता स्यरमाचीः स्वनदारमे समा। बन्दरः त्व क्या वा तपा हुआ: गृर निमा हुजा: करारा ! - भ्रमामी-पु॰ देन भेत्रमें स्या ईमामदार भादमी। -ई-स्टी सरापन सुनाई, ईमानप्रारी। देश क्रममें । -क्ट्रैया-विश् खरी बात बद्दनेशका । -शुस्त-पु॰ सम्बा गिक व्यवहार । -रग्रेय-वि भक्तानुरा। सु॰ -मोदा परन्तना-भने-नरबंदे पश्चान बरमा । मराही - भी भीरक समय कुछ कानेकी न सिकनेके कारम वरीबदका कछ छराव होना। दे॰ 'सरा में । मरातरी-मा [मं] देवतल इच गराज-५० [स] दे शिराज । लराद-५ [प्र] सरारनेदा आला चरणः गरावनेदा कामः गन्त । सु० -पर चहाना-सरादने दे निष्ट बरस पर बरानाः सुबारमा सुबस्त करना । ररराइमा-- म॰ दि॰ चररास्ट पहान्तर शबकी वा बाहुकी ! विकास, सुरील करना। ग्रीक-शकार दुव्सनः सुरीक बरमा ! राराष्ट्री-५ राराष्ट्रय काम करनेवाला ।

ering i 2. men 1

मंबदर ने जात है। वैशी बहिया रामा देश किहिया है।

बाबरे भारिकी एसन । प्रभवेषाणी द्वा । गोरा-इ । बरहरा । श्राय−ि [श•] अहा हुमा, बीराना श**क्ष बरवा**रा हरा होना दुधरिया र्तराया~ि (का॰) व उपा हुना, बीरामाशेखें के अवीत्यः र्रशायाय−पु+ (दा) धरास्त्रामा पुरुदा महा। परना । बराहा दिन बानदा निरात । रस्रापाती-पु॰ (फा] शराबाः सुनाकोः (पीवान । रहराबी-मंत्री कि] दीष दुरावे; तवादी बरवारी ह शरीर सरोह-भा े बराया स्तारहोक्तक-इ [मं] देह वे माचि ! शरोच∽को दे 'सर्वचः गरारि-इ॰ (गं॰) विच्या रामा कृष्णा नगराम । सरीचना-म॰ कि दे 'शरी बना । i fign & E-effine वराह्या~स वि. हे॰ भारो चना । सरात्यक सरात्रिक−५ [मं] नार्र। हिमनमा भीदेका तारः एक्षिना । च्या । स्थापा दिन माना शरीना द्वराचा ~श्री मुत्रभी । शराया-भी (मं) सप्रधिमा मायद हता । क्टॉटि॰-गी वे गांचित क्सीटमा-म कि दे गरी बना । श्याद्धान्त्रो [[+] अत्रभारा । सरीहों -4 ३७३०गता र राशिक-द्र गोटा घरानाह ! स्राहिका नशीक [में] चूर्व की हो क्यारी 1 क है

व्यक्तिमार्ग−स॰ कि॰ काडोमें मां देनाः प्राप्त ११तदन सरिहामां --प्र• दे॰ 'खरिनान । न्दरी-न्धा (सं•) थयो । –र्जध-पु शिव । –विधाय- ९० ऐसी वस्त विसद्धा भरितत्व न हो । —क्रूप-प्र• मना। लरी-दि सी है। मिरा ! मिरा है। ब्रिसियो यसी : = साजी ! - न्योरी-मो० १९वो-२मेझे। इसे क्यनेवाकी वात ! स्व - लर्रा समामा-साव, री रूप शाय बदनाः अधिव स्तरं बदना । ~गारी समाभा~ स्तवी मात्त बहनाः यसान्तरा बहना । मरीक•-पु• निमद्या। प्रशिक्षा−पुरु (थ+) भेनो। वहा किफाला जिनमें नरकारी आदेश भेजे बान है। इस अकार प्रेचिन सरकारी मारेगा अरः शर्रभागा रदानेको भन्दे । सरीह-न्दी (का॰) मरीतमेश्री दिया या माश हरा बरीर ध्री दर्व वस्तु । –ऋरोच्त-माँ० घरोरमानंपमा सेवा-वेपी । नरीहमा-स कि॰ मोच हेना दाम देवर नेना ! रुररीहा−दि॰ (यर] सरीद दिना तुमा; स्रोत । तु॰ रक्तं पुषा जनविधा मीती । रारीचार-प का किरोहनेशका प्राहद रक्ष्य नारीहारी-मी (दा) यरोठ हर। रासीक्र-स्था का वह वस्तर को असार शावनम बीमी भीर कानिर शयदनतर कार की पाव-पान X4रे राष्ट्र-वि [मं] लक्कर सूर्या निष्द्रशानिषद्भि वश्क्रभेता श्च्युद्ध । पुरु थीगा चाँता यमदा सामरेश विश वाँगी बरमुर्थे नेनेद्री दण्याः सच्य ४व । मो० अपना प्री १२५ गरेई वरीई - अ सब्दुनः आर्थतः। गर्देशें–भी इद्ध शेषा दक्षा शॉरवारा । व्यक्ति-को॰ लबाद्ध दहरे, नागम श्राप्ति हिन्द मान व्यशिक्ता-व कि शुरुपता होनना । उद्धि सामान्य क्रियोस (क्रि.) ह-मात्रक लरोड़ी सरोडी-मा (म) एक पानीम निर्मि बारगाडी शाद बाइनम बार्डे निक्ती जानी की कीर मैंचे दा=में र⁰रमीशर भारतमें धनना थे। लगोर-५ 🌘 १०६ शाहरा रेडमा । बन्द्री ० - प क स्टब्सार (इंडर्क-कु (कार) देल, बीजदा दिली कामने बराना गर्ने श्राविषा-भी संभागी बनी जाती जिल्ले मुना कर्दर ¹ बीमा अवसा आवस्यत कामीचे अस्टेशसा देना।

संग्−प॰ [सं॰] संगनीः कारुम । क्र−म [सं•]कडाँ। −चित्−म० कर्तीकडी वहुत क्रमः क्रमी । क्रमा−पु॰ [सं॰] भानि। बीबा ग्रॉवरः शाविको सावाज ।

कमान-पु॰ [मुं॰] क्याः शीमा पुँचक मारिका नमनाः मिद्रीका छोटा वरतन !

क्रियत−वि [सं] ध्वनितः ग्रेंबता हुआ । पु॰ शरूः, ध्यति।

क्रकितेसल~पु॰ [सं] गृध । इच्य∽पु[र्स•]द्वादाकाथ ।

क्ष्यम~प॰ [सं] भीतमा; काड़ा करणा ।

क्रमित-वि [सं•] भीरा हुमा। बाहा किया हुमा। क्रयसा-सी॰ [मं] आयुर्वेदमें कवित एक सरहकी नती को बहुत रोप्ट पाक्क कीर जग्निदोक्क क्लाको यदा है।

क्यांत-विश्वे 'द्वारा'।

क्काचिरक-वि [म] क्विन् होने मिलनेशला, विरल। काब-पु है 'काहेर' ।

काबेट-पु (मं] सीसेका मानेसे चार वशतस्त्री चीहार्र का कीकोर इकदा को कंपीन करत्यों नाशनकी साली

अगद्द भएतेके काम आठा है। क्काय−पु [मं•] बीया जारिका सम्यः कन ।

काय-प् [सं] दक्षा बोद्योदाः वह बुध्यः म्बसन ।

काषोज्ञव∽५० (स०) रसीव । कान १-५० समकारः कष ।

क्रारंटाइम-प्र• [कं) सहरे रोगोसे क्षीरेत सुसाकिरों मादिको रीकहर कुछ दिस भक्तम रखनेका प्रश्वः वह स्थान वहाँ हैते क्षीय रूपी जायें। सुतहा करपताक ।

क्रमर-पु॰ मानिम मास । कार**एकः कार्यम**-पु अनिवाहित अवस्था कारापन ।

कारा−वि ईकारा भविवादित।

कार्डर-पुर्श्वार श्रीवार श्रीवा भागः सावका श्रीवा हिरसा, तिमाही। १८ पीटका बजन- वर्गविशेषवासीक्ध परवी। रेष्ट्रन रकुम, काळिज आदिके वर्गचारिकोके किय संराक्ष्य भीरने परावादा हुमा मयाना कीमके १६ने वा रिक्नेका स्थान पहान! --मास्टर-प फीनका एक मफ्सर जिसका काम मनिकाँके लिए रसर, गनाम बादि क्य मर्गप करना होता है। एक जहां जो अफसर जिसका काम महत्राहोको भागप्रथा संदेत हेमा आहि होता है। **""व्यवस्थ-पु धनिकाँके किए शहर, भावासका प्रवर्ध** करनेदान विमागता सब्धे वदा अपसर ।

कहार-पुरोबसा।

शतप्प-वि [मं] शमा बरनेके योग्य, ग्रहन करनेके योग्य ।

र्सतः(न)-वि [मं] धुमाशीन महिल्यु ।

स- ६ मीर 'व के बामने बना हुआ नंतुष्क अक्टर । यु [मं] संत विश्वासा माहा प्रत्या विश्वतीः एक राष्ट्रणा विश्वका पतुर्ध-महिम्मू-सवनार । अय-प्र [मं] एन समहा। ४/५ सेवेंट निमेचका

भीवाहे वा रे॰ वर्ताके वरावर काला अवसरा अवदासा श्चिम काला परस्का आसंद । - ह-पु: क्योतिकी। जला 15

रतीथी। ल्वा−सी० राष: इस्दी। ∽•कर−पु चंहमा । ∼चुति ∼प्रकाशा −प्रमा−चौ० विवसी । –निःश्वास–प्र ऐंस् । –भग–पु• दे 'शनकार' (बी०)। -श्रीश्रक-विव देव क्षणमंद्ररे । -शेगुर-वि छनगरमें, भेड़ी ही देरमें मिट बानेबासा । "साज्र-न॰ छनगर। - सूच्य-पु भगद दाम। - शमी (मिन्)-पु क्रवतार । - विद्यांसी (सिन्) - वि० क्षणभरमें सह श्रीनेवाका । पु 'श्रामेकशव' माननेवाका स्पक्ति (वी) । क्षणहा—प् (सं०) घरम, धार ।

क्षणम-पु (र्श•) वश करमाः भावत करना ।

श्चणिक−वि॰ [सं०] क्षणस्थावी । ~वाद्र –पु नाम दर्शन-का यह यह कि अलोक वस्तु उत्पत्तिने दूसरे हा क्षणमें नह हो बाती भर्वात् प्रतिश्चन बदरूठी रहती है।

श्री क्यां निविधी।

क्षणिमी∽सौ॰[सं]रातः। क्षणी(जिन्)-वि॰ [d] खपरवानीः भरताद्यप्राप्त । **श्रत-नि॰ [सं] बावका कटा-फटा हुआ। श्रतिप्रस्ता** संदित, मध । यु बाद असम; कोन्से दोनेवाका फोड़ा; इन्प्र⁻ भव, यतरा । ~कास~त धतुत्र खाँसी ।~धन~ पु॰ इन्द्रर्शना। −धनी−की कास्ता −ज−५ रका पीव ! वि चावसे छत्त्वच । - • इदास - पु • ऐफ देने बदन बोनेने पैशा हुई खाँसी निसमें इफके साम सून मिला बोता है। -बोलि-विश् सीश विस्त(न्ये)का प्रश्यसे समागम की सुका हो, कीमार्च सह ही सुका ही। ~रोडण-प्र॰ बाक्स मरना ! -विसत-वि॰ विसद्य बैद पार्वीने गरी हा बहुत जगह शर-फर गयी हो। ~बृचि~सी॰ सीक्स्प्रका सामन न दोना। **−**श्रण**~** प्रभाव पर कारेंसे होनेवासा परेका । —प्रात्त—विक विस्(नक्षवारी)का बद्ध शंक्षित हो गया हो। -सर्पण-म नगरासिका नास । --हर-पु॰ अगुद । श्रता−मा (d•) वह कम्या त्रिलका कीमार्व भ्याहके

पहले ही तह ही जुद्धा ही। क्षतारि−वि शिंवित्रदी।

क्षताद्रीय∽द्र [सं] धावन शमेदा अधीय ।

श्रति-सी॰ मिं॰) दानि तास वाहाः भोट । -ग्रस्त--वि॰ विसन्ति **दानि दुर्र हो । —पूर्ति**—स्त्री॰ दानिका मर वानाः, यादैका पूरा क्षेत्र वासरा मुक्तमानका मुभावजा ।

क्षतीन्र-पु॰ [मं] एक उत्तर राग बिसमें भाने कार्र क्या नुकारी भीज नियल जाने आदिसे घट जाता है।

क्षणा(णु)-पु [र्स] द्वाटने यान कारीवानाः हारपासः बासीपुषा यात्र पिता और श्रातिब मातामें प्रत्यन्न संतानः नियोग करनवाला प्रत्या सा थी। मध्या मध्यी रजी।

क्रीपाध्यश्च । श्रम्प−पु [र्स] श्रविषा श्रविष जाति। यात्रा। वनः राज्यः देहा चन । --कर्म (स्)-पुरु छत्रियोषित कर्म । -धर्म-पु श्रुविवका भूमें श्रुविदक्ते कर्तेन्द्रा श्रीये। -धुमी

(र्मन्)-वि शावधर्मध वासन करनवाला । हु बोदा शिपादी । - एति - नी ध्य प्रधा राज्यस बद्धा एक अंग । ~प~तुर मापीन पप्तीय सामाग्यके यांटतिक

राजाजेंदी उपाधि मांताबियति राज्यसङ !-- पृति-पुर

ससु-नॉबी मत-म [से॰] निमय निषय विश्वासा, अनुसय इ॰ अवीमै प्रयुक्त । गळुरिका, लळुरा-माँ० [ग्रं॰] अस मंत्राहतके अध्यासक रालंख∽प्र तममै रह बादेशका महीका बंदा। ख़रत मस्त−वि॰ गटु मट्ट शिका ञूका। सस्या−सी+ [धुं+] ग्रहिदानींदा समृद् । चल्च [मं] माक चमहा। सक्षक्ष गरह गरशाः भागक सहर्। बलप्रजाली । नाहरू-प्रथमित महारू मनिष्य व्यक्ति (विश्वरी शाक्ष स्टब्र गरी हो)। म्बलिका-ला मिं। दशही। ग्रहिट महीर-५ [२०] मिरके बाल शहनेका रोग, गैतापन । निग्वा। साही-सी सभी: [सं॰] व्ह रोग विमर्ने दाव वैर्वे दर्र होना है। गस्वाट~दि [मं] नशा । पु॰ गंशापन । सवा~पुदंश भुत्रमृत । झु−(वे) शेलका क्रिसना⊸ बद्धत मोह, बहम बहा हाना । सवाई। – स्रो॰ कानेश्वे किया । न्यवाना-स कि सिकाना। स्वारा -- दि तीया अदान - इमें खबारा पुर घरि साई तार्वे बहु विकि मधी अधव --गुंदरदाम । श्रवास-५० [अ०] मुने इप कीम विशिष्ट वस (क्रायका परता)। साम (सहमतवारः भुमादश ग्रंखा गुण वर्गारः **व**तार्दे । स्पो∙ सीद्याः सुदेशी । खबासी-हो [#•] सबस्का काम बर दीरे वा गाडी: में खास श्वन्तके वैठनेकी जमह । सर्वेदा~९० खानैवालाः अविड सानेवाला । रतश−दु• [मं] दे• 'रासः । प्रशासनाम [का॰] बीरनेका शैवा बीस्तेका बीज, समसम् । लसी(शिन्)-नि [ने] बारतेते कुनते (नरा, इन्दा भातमानी । तु उत्तर (न । रुप्तम - पु० [या] ब्रीव रीच । न्यांच, −भाक-रि० गु०ने में बरा दुवा, बदा ह सरप=ष्र [सं•] आपा विद्याः निष्टुरना । सम्-पु [मं] माश्रमदे बत्तावा प्रदेश- यम प्रदेशहा निवागी। नेपान सार्टिमें बसनेदाली धक (अपन) शकिय बाति सानिया सुबन्ता पेपनेता पैता। -तिल-प ५११मा । --ब्रस्मक्षाह-पुण् वाशीय । राम-४ [था] त्यो यामः गार सामशे यामशे अह जिल्ली शीवों रहमीके रिजेंडे बमीको देश व्यतिके बिर रिशक्तिं। रावाबीयर समायी वानी है। --हराबा-पु गणकी रहित में थिस दुमा स्थान कमरा !-काश-रि मृत्रे क्यमे दि पूजा । -व(मा)न्यासाय-पु बाम-बागा करा बरका है

समक्रमा-भ दि है 'शिनवशा ।

मगराम/-म 🗗 है 'हिलडाना ।

नमनम-९ री न्द्राहात सप्तना।

नमनसा-वि॰ मुरमुराः बहुन छोराः पारठीः रानेसा । नससास~प॰दे सशनात्र । व्यसमा॰-व कि॰ शिसकताः शिरमा । न्यमधीय-दु• म्ब तुरहदा गंशरिरोजा । नसबोध-मी देश 'लश्रव' ! प्रसम−पु॰ [त्र] दुश्मन रूपनेबाचाः मानिक, परि । -पीटी-विश्लो विषया (याक्रो)। स -क्रामा-हिटीको परि बमाना (श्रीषा) म्याम् बरना। लमरा-प्रश्वक्षयो सुबनी। रुवशरा−पु॰ (फा॰) परवारीको वहाँ विसमें व्यंबदे हर रीतका मंतर, रक्षा का नदारका माम १ हिम रहते है। हिसारता कथा विद्वा गर्रो ।-ब्राबादी-इ. यह कारत क्षिप्रमें धौनके हर सन्धानका मंतर, रक्षणा प्रानिक्ता बात आदि निर्मे हों। ∽तक्रसीम=द्वारकोबा सहरा। द्मानस्त−सी [व•] बादत स्वमादः गुप्त । यमान/- स कि विरामाः वैद्याः। ग्रसारी-न्ये प्रमारा-पुर् (सर्) पास, रीम दानि। ख्यामत-मी•[ब•] शमीमपम क्षेत्रभी:धरना मीरनाः गसिया-पु॰ बासामरी एक पहारी। एम पहारी बाह्यरास्त्रा प्रदेश । ७ वि व दे० 'राकी' । खसियान −स॰ कि गरी दरनाः इस्सी-रि [ब] वरियाः दिवदा, अनुसद्धाः मु परिया करा । स - करमा-विधा करना । रुप्तीस-वि॰ [४०] श्रद्धः श्रुण्हरव । न्यमाह-मी वसोरमधी किया वा बाद। न्यसाटना-स कि मोधनाः वसाहनाः ग्रीन हेना। व्यमोडा−पु॰ कुश्गीका एक देंब । लमोदी-सी० है 'रामीर । व्यस्पास-द्र [मं•] शाना राष्ट्रसम् ! क्रस्तगी-गौ॰ (दा॰) गरनापम । झस्ता−रि [का] यावला विका **हां**टा दुर्रदार्मात अशमा दशनेमे पूर ही आनेशना वर्ग नरमा -क्वांको-स्था रिकिशसी शास्त्रको मीरमदार क्वीरी[‡] -हास-दि शिक्षा शिक्षा युर्गशासन्त करेवाण ! रास्मी-वि दु (भ) दे॰ लगः। र्मी-पु॰ दे॰ राम'। मॉर्म =को नुरसर । व्यक्तिरां - ६ विगमे बन्त मुख्य हो। श्रीता र क्यारा-त बाहाः जेगली मुखारा वह रांत दी रहि निक्रण रहणा और शक्कामा दाम देना है। यह दे हैंड ह रहनेशना गोगा गोगर, सुर्ग कारिदे पेरबा कना बार रैत आहिये सुर १४ आनेश रोग । ० मी प्रशिवमी 'बरिस रीम भवि शांब स दोरे –**य**ा ऑग्रेग्स्र वर्णके किस्त्रात्रा वर्षा करना र गंति रिया । व्याती-मो स्वीः सांचनार-म दि है दिशासमा व्योषा-५० करहर वर्गादे संस्कृत स्था क्षेत्र) स्था unt faunt i र्शीकी-को छोत्र शीवा, धेरिया र

भा-सी० वि ने प्रमी।

क्ष च-वि [तं •] स्त्रिय-संबंधी। स्त्रियोजितः पु • स्त्रिय का कर्म श्रुतिय भावि श्रुतियका भाव श्रुतिवृद्ध। -सेश्च(स)-पु॰ श्वतिशोषित तेत्र पराक्रम !

धाचि-पुं [तं] समित पुरुष भीर कम आधिकी थीते

बरपञ्च संवास । धाम-वि [सं] धील दुवला कमकोरा वस्त । पु० विष्यक्षाण्यः नामः श्रम नाद्यः।

शामा-सो॰ (रं॰) प्रमी I BIर-पु• [सं] अश्री-वृटियोंकी रास या रानिश हम्बोंका शासाबनिक विविधे बनाया हुआ जमक सार समनः शोराः ग्रह्माः काला नमक चनानारः ग्राँव राधः ग्रह रस सता ठता दुष्टा यक्ष । वि. साराः सरनदीन, रसने बाका, बहरोबाधा । —कदम-पु॰ एक शरक । —गुज-प्र खारापन । - सप-पु॰ समी, सोरा और सुदागा। -ह-प्र मोरवा नामक इस । -सदी-सी **वा**रे पानीको नदी जिल्हा नरकमें दोना माना जाताहै ।--पंचन -पद्मक-पुरु बहुण्या सरगा -पद्मा∽की विस्की नामक सता। -भूमि-सा॰ कशर। -शृतिका-की रेड मिट्टा ।~सह—५० प्रमेड रोगका एक मेद ।~कवण~ प्र खारी नत्का। - सेंड-प्र चारी मिद्रीः प्रशासा मीरवा।

क्षारक~५ [में] द्वार; सम्मी कृतिका; बोबी: विविवीका पित्रहा या द्वारा। चिकिया फैलानेका जाका सरको दक वनेद्ये खाँची ।

धारम-पु [र्ह] शार नमानाः उपक्राबाः परिका १५वाँ संस्कार। भववार स्थाना (ग्रासकर व्यक्तिकारका)। छाराक्ष∽दु (चं•) बॉचकी दमी दुवे औस ।

शारिका−मा• [मं] मृख।

सारिष्ठ-रि (सं•) इक्समा हुआः निसपर (व्यक्तिशारकः)

मिथ्या अपदार स्याया गया थे।। शारोद सारोदक, शारोदधि~यु (६०) नवण समुद्र । झाख−दु [मं]भोनाः शुकारे ।

क्षामन-१ (धं] पीना, शरा क्राना ।

सास्टित-वि [सं] चीया हुमा, साफ दिवा हुना ।

सिव-वि [सं] धीवा दुवा, द्यवाला शीव । ह बना श्राति ।

क्षिता∽सी [सं]प्रदर्गाः

श्चितिनारी [सं] पृथ्वीः पर बासरकामा स्वा प्रकाकाका ण्यसी संस्था। - इत्य-पुः भूकत्। - इत्यान पुः वृहितस्य। -श्रम-पु श्रेरका देश । -श्रीव्-पु वृत्ति ।-अनु-त केंजुवा । -अ-तुक बुद्धा मगळ शहा केंजुवा। बद रभाम वहाँ घरती और आक्षादा मिन्ने हुए िमार्र देते हैं र्धाटसीमा। नरदासुर । -जा-नी छोला ! -तमय-पु मगत ग्रह ।~तमया~ग्री सीता !~तस्त्र~यु वरागल । -देव-पु ब्रह्मपा-धर-पु पहार ।-मंदन -सुत-पु भाग मह ।-माग-पु केंगुवा । -नाय -पसि -प्राण-सुक्(क्)-इ राजा - महम-तु भूमरत। -रद-त दुद्र। -वर्षन-तु शव। -स्तुवास-तु शका ।

क्रितींत्र, क्रिसीया, क्रितीयर-पु॰ [सं] राजा । क्षित्यविति—स्तो॰ (सं०) कृष्णको माता देक्द्रो । क्षित्रपिप~प्र• [र्ष] राजा ।

हित्त-पु• [सं] रोगः ध्वां सींग ।

क्किप्-वि• [र्ग] पॅकनेशकाः मारनेशका । पु॰ पॅक्ताः अपमानित करना !

शिवक-वि [सं०] फेंब्रनेवाका । पु० धीरदाज वीमा । दित्यण-पु • [सं•] मेजनाः पेंगमाः भाक्षेप करना । क्षिपणि-प , क्षिपणी-सी॰ [बं] टॉंड; बास प्रियार:

क्ञानात् ≀ क्षिपशु—तु॰ [सं] गानैतः प्रभिवारः दवा ।

ब्रियम्यु-वि॰ [सं] सुगंबित । पु॰ शरीरा बसंद कहाः स्वास ।

क्षिपा-क्षी॰ [मं] भेजनाः फॅब्रनाः राति ।

शिस-वि [री] पेंका दूबाः स्थाना हमा अवदास, स्थे-खिकः चौत्रकः वर्षिर्मुख (बिन्त)ः बस्तरीन्त्रमस्तः पानकः। प विक्रकी पाँच इक्तिमेंसे पक (मी॰)। ∽क्रमक्रर∽ पु॰ गुग्रह 5चा । —चित्त-नि॰ जंबन विचनका ।

क्रिया—सीर्वास्त्री राषि । श्चिमि—स्वार [मं•] पॅकनाः छिपे हुए अर्थका रपटीकरम । हिस्स−नि [ti] सेन क्षीप्रगामीः वर्षोकः। स॰ वस्स् लत्याल । पु॰ अगुठै भीर सर्वनीफे पोनका स्थानः मुहर्चका पंत्रवर्गे भाग । -कारी(रिन्)-वि धनीसे काम सरने बाका मुस्तेव । - इस्त-वि॰ विस्तृका द्वाध तेथीसे पश् वेज काम करनेवाका । -होस-पु॰ मित्वनर्गके स्मर्मे सार्व-प्रातः किया जानेशका द्वीम ।

क्षिया-ली [लं•] दानि वर्गरी श्रवा मनीवाय माचार धेव ।

श्रीक्रम-त (र्स•) वीस, सरबंदे आदिको सरसराहर । क्षीय-वि [सं] इतका-पत्तमा कुमजोरः परा हुनाः द्वति प्रस्तः श्रुवप्राप्तः श्रुवः समाप्तः भोदाः निर्ममः -काय-वि वै 'श्रीवशरीर' । -चंद्र-पु॰ सात ना रससे कम ककाओं वाका पोहमा । ∼धन∼वि निसको पस पैसा न १६ तथा हो, निर्धत । -पाप-विश्व को पापदमीका पत्रक मीगहर निष्पाप ही गवा हो । -पुण्य-नि भा अपन सव पुष्पकर्मीका कन भीग मुका हो। -प्रकृति-वि विस(रामा)की प्रमा दीन दीन ही गयी ही या हाती सा रदी हो। -- सच्य-वि जिसको इसर पत्नी हो। --वासी(सिन्)-वि धैश्वरमें रक्षनेवाला। -विक्रोत-वि शैरवराम । ~ियश्त-वि वे धीयभन् । -शीर्य —वि• विसन्तार्थीर्य पराज्ञास घट गया हो सह ही गया थो। ~शूचि~नि निचके पत्त अनिकादा सुदारा न दो नरीजगार नकार। च्याचिक= विस्तरभी शक्ति महदी गर्भा क्षो । –शारीश–नि दुवसा-पत्तमा कमजोर । –शार ─बि विश्वकारस वृश्य गया हो, सुन्ना (वृष्ठ) ।

क्षीणार्थ−नि [मं•] त्रिप्तनी संपत्ति सष्ट हो सदी हो निर्भम ।

ह्मीच∽नि [सं]दर्शधीव । ध्रीयमाण-विक्षि के विवास गरण धीवता नाम । क्षीर-पु [में] दूषा बरगर गूनर चारि पूर्वासे निवृत्तन

गातक – सान/ <u>सम्बार । ~४पवद्वार~५० तालाव नारिका क्षेत्रकल</u> निकासनेका गणित । ग्यतक-प्र- (सं+) मीदनेवालाः सार्वे कर्वदार । स्वासम-प्र• [अ•] सहरत सहरवाको बीवारी । -बीव-प सदर गोरनेवासा वर्ताः वार्थन्दांश आरिपर गुण-बरे दमानेबाह्य । रातमा-प॰ थि॰। दे॰ सातिमा । ग्राक्ता-न्त्री • [मृं] हामाव । प्र [विश्] वह वही जिसमें हर पड घाडफ, असामी आदिका कलग-क्रमा हिमान जिला जाया हैगा हिसाब मदः बसार । संध-स्त्रीकशाः -डाकमा-दिसीधे केम-देन आरंग बर्गा। -(ते)में पक्त-किसोके नाम निसीके विसापमें निगा जानाः पद्मी बढ़ीमें किया आसा । न्त्राति-नी मि] सर्घाः स्वासिस-वि• मि देशमाति बरश्रवासा । व सवाति । रुवातिमा –प्र [ल•] लेन समाधिः स्टाः प्रतक्का विम सरशाय । द्यातिर-ली [अ] जन दिल प्याप गराका आहर् निदामा सन्दार, भारतगतः वच्छा भरमो । अ० वारतः किए । -स्वाह-सर्व इन्छात्सार, जैमा यम नाहे। -बसा-स्रो इत्रमीनान रिस्तवर्मा । -बारी-ध्रा मानमगत राज्यार । नम्बर्शीनिश को दिनमें वैद-क्य गवा हो । -शिक्षजी - लो. (दिगोदा) अनंतर व्यापन श्रीता । स॰ −में ल काला-परपाड व करना शका धमप्रता । इरातिरम्-म बारनः (रिसीकी) अस्त्रनार्ध निए। ध्यातिनी । नहीं है 'छाड़िर । मासी-को॰ गरदाः होरा नामाद । पुरानिया वादिः पर्दे । फ़ात्न-सो॰ (तु॰) मर दुवाव महिला। (क्रिनेंके बाबदे साथ बाररार्थ मा प्रशक्त कीया है- जुरेश सामग'।) -(में) भरव - हाथा - की श्रामिमा । -लाना-को शहरो।-इसक-को॰ पूर्व। म्बाच-द्व [मं॰] बावका तालावा स्टा मना मन । स्वाद्-रते अमीनदा उपयान्त्रन बणनेवानी वेह दैवीदे किए रायमप बरत । प [मंग] शाला अवग । शारक-वि 13 वि] मामेशला कश्यार ! कार्म-इ [मं] सामा भद्दना दौता साथ वहाये । रशायर-त मीभी वभीन नहीं बरगातका वाजी १६४। ही जाय, बद्धार' है सहा दुष्पा दीवर बादी नगर । न्तादिल~(व (do) शावा प्रमा । सातिना(न)-वि , दुः [गं] यानेवाना । रसाहिम-मु [ब] विरस्यत करतवाला, नेवद : enfem-eite [u] rent dien ! स्तरित-दि । गिर्मारशं वस्त्र । प्र वस्त्र । न्वादी-की शारका दुना मेंचा बच्छा मंग्री दक्ती. खेरी ब्राचा दाव दर्देवर श्रमा प्रमा क्षत्रा । -ब्रॉज-उ० शारी बुने का पेश कर बहु गरन जहाँ गारीना वासास्य

काध=-प्र• दें। भाग -सास न देर वर्ग होर दर क्य लडे म साथ - व स्वाधाः व्यक्तिक-पुरु सानेवाहाः, अएउ । स्तान-सी॰ वह बगह बहाते वात कीयला, भारि मीप बर मा गलरबी सिर्ने ठीवकर निकाली वार्वा धार्मि धोल-आकर, भेटार, राजामा । ४० मि । शीरमा हिल करनाः पीडमा सामेद्ये क्रिया भीत्रम ! - पात्र-पः रतामा-पीलाः सामे-पीलका बंधः काले-पीत्रेश स्वयस्त. र्मर्वच र क्सम−त शि रिकामी, माङिक सरदारः संग दहनः <u>कुछ बळान शानकीची जवादिः सामार और शबक्ते दुरावे</u> नारशार्वीकी बनानि । 🕳 🛊 न्याहरूमी 🛛 उररेगीहे रहबंका रवाल बरबाह । -रशामाम-व गररारीया सरवारः प्रथान सेमापनिः प्रशास मंत्री (बेरम सर्वे भेनेर यनके प्रथ अन्दरशीय(रहीस करि)को प्रधापि) । न्यादीन गाँका नदा खादमाता । नदासर-४ छरकारके एक क्यांनि या रित्यार भी मुख्यमानी और बारशियोंकी विषय जाना था। -सामाँ-व छात्री धरकटा भेटारी या श्वासाम का प्रशंपका लेपेनें दे। बारको । -साहच-५ १६ वराविः वराम । प्राम-"ग्राना'का गुमासन्त क्ष । -शी-विश् वरबंध वरेता निश्री काती । सी। बसुध वेहनाइति वरने शाणी क्या । ज्लाल-पुरु पराजा कुका कुटं र । ज्लाबीन इस्ट्रमागत नैतृद्य कॅथ क्रम्या, प्रचीत । कालक-४० (सं ी होरतेशकाः साम धौरतेशकाः। रशामम-म्यो॰ [गु॰] शाँधी पत्ती, रेगमा प्रजीन, मन्तिर न्यामा-स निः श्रीत भाषास्थे चयान्य निगयमा स्था करमाः निगलमाः सहस्वर पश्चम करमा (दिस र्थनुमीमार्थ बूनमा बरामा (बाम मेंहेरिबी)। बार माना (केरे आर्रिका)। सर्वे करमा। मन्न वरमा। क्रमोर्स, क्षीरान कारता कारता। सहजा अगेरजा। समने ५४ने देवा (६५ हवा कारि)। हरपना, गतक क्षरमा। वार्त वेर्रेशानीने इतिबच्चाः वैना बरता । प्र भीवन । मुख्या बाक -शालवा-विगल क्षांगाः बाद शालवाः शामें वर देव" इत्रम यान कर भगाः ज्याना-क्रमाना-केरना भर हरीने वैचा अब दर ग्रंथरनचर करना । -निकासा-बाच्छी क्षीने बनाकर साने कीर दमरोत्री शिवानेदा धीन रसमा ३ नामाचीमा –भेशमभान सामे च नशा है ? भागमाः। — कहा करमा-धीराग्येः गमन् धा वन्द वर्ष बामा लेगाव देनेबच्छा बात बाहे वगदा तुन मह बर देता । -(मे)वीनेन ध्रमा था सुन्धे-सुएर न । माधी जाना-श्रां-देश्वर शाम बरना प्रशासिका द्वात्रा-पुर् (कार) वर काल्या स्वाता रिवर रेत असमाधि श्रीदशासिकामा कृत्यत्व का करात उत्तर्जने षद वैकानवर हो । -धाशी-नि आही पहकनेतामाः बन्त विराण प्रीतिक । स्माधानुस्तर वाग वसवान्तरे देशन राजांका व्यवसार वर्तनाका १ -वीक्षा -प्रश

मारीकी दुश्चन ।

न्यार्श(विन्)-रि । प्र सिंगे मानेशसा।

कावक-वि विश्वी तरारं करनेवाचा हातिकारक ।

माध-वि मि रेगाने बीग्य र पुर गानेको श्रीव भीवन

ञ्जयातुर, ञ्जयात्त-(व॰ [मः] मृश्वाः मृदानं पीवितः। ञ्जयातु-(वः] विदे मानः मृदा सगौ रवती दो, पेटूः। ञ्जयात्वीर•∽ि मृश्वाः।

श्विति-वि• [सं] मूना।

क्षुप-पु॰ [सं] छोटे तन, बालिबीबाका पेड़, साब-बर्बालुके पिती। कृष्णका एक पुत्र ।

श्चपक-पु,श्चपा−शी [मं]शागी।

धुरुघ-वि [सं] झीमयुष्य चलेशित, वशांच मीहः बाह्या; क्रिसमें बोरकी कहरें चठ रही हो, त्यानी (समुद्र) । पु. मधानीकी डाँडी; एक रतिबंध ।

झुम-वि॰ [सं] उसेवित करनेवाछ। यवर्तक।

भ्रुसा-कौ॰ [मं] यक तरहका दनिवार। भ्रुसित-वि [मं] बद्यांता मीन। कुक्र।

ह्यमा-न्या [सं] रेखेदार पीचा-जंकसी सन नीक द०।
सुर-पु (सं०) पुरा चातुरा, सुर चारपारंता पासा
सामकी पुरेकी बार जैसे गाँसी। गोंकाक वाकस्ता(सा)
-कर्मा(त)-पु० -किट्या-न्यो। सुरेके शुक्करात्रासा।
-कर्मा(त)-पु० -किट्या-न्यो। सुरेके शुक्करात्रासा।
-कर्मा(त)-पु० -किट्या-न्यो।
-सु पुरा राजकेशे भेकी किज्यणा।-पार-नि सुरेको
सामका। पु० सुरेको पार वैसे गरीमाका माण पक सरक।-पुत्र नि सुरेको बार वैसे गरीमाका माण पक सरक।-पुत्र नि सुरेको बार वैसे गरीमाका दिखा-की साका। पु० सुरेका सुरेका विस्वा-निकार-न

वात्र । - मर्वी(विंग) - मुंबी(विद्य)-पु॰ मार्व । सुरक-पु [सं] सुरा मुर्लाकुदाः गीयन्तः तालमयाना । सुरिका-न्या [सं] सुरी; पालकः व्यवका मिहीका

बरतन ।

श्चरिषी - छा॰ [मं•] भारम ।

ह्यां(रिन्)-इ [सं] नारं।

सुष्ठ-वि (सं०) द्वीरा; योगः अस्य । ~तात-पु० वाक्यः धीरा मार्द, द्वीरा क्या ।

श्चरुक−ि [मं] श्रद्ध होता बोहा। कुरिका सीका

चैतिया करिन । पुरुष्य । सुच-पुरि] छोवः परिते ।

हुन हैं हिंग अमीना खाम अल्लिखना पर अस्ति हैं हैं कि अमीना खाम अल्लिखना पर अस्ति हैं कि उस अमीना खाम अल्लिखना पर अस्ति हैं है कि अमीना अस्ति कि अमीना असीना असी

वह । - वृश्विका, - वृशी-की श्रेत बंदकारी । - पति -प्र सेत, कमीकका माकिक । - पाक - पु सेरावी रखावां करनेवाला मेरवका श्रक मेर । - पदक - पु सेरावी रखावां रखागीताओं शहका एक वस्त्री क्यारे नोहारेका गुलमफल । - सक्ति-की॰ सेतवा बंदनारा । - सूसि-की॰ कोरोनीयों बागेवालों समीन ! - सिसि-यो॰ स्रित्माणित, सूमिति । - जहा-की पद तरकों कर्का । - विक्-वि॰ हैं क्षेत्रकुष्ट । - प्रस्ताहार-पु॰ स्थमक निकालना । - साम्याहार-पु॰ रमानिविचकी सीमाके संदर हो रहसिका स्रता । - हिंसा-की देतकी हानि पहुँचाना । स्रोताबीच-पु॰ हिंश किसान । वि॰ किसानीले जीविका चलानेवाला ।

क्षेत्राय्तियक~पु• [सं•] सेत पूँकन, वकानवाका । क्षेत्राधिदेवता~पु (सं] क्षेत्र, सिकरकान-विशयना गर्व

राता देशता ।

शतार वरणा । क्षेत्रात्रियन्यु॰ [चं] केटवा साहित्य राज्ञां । क्षेत्रात्रुगतन्यि० [वं] बाटवर सगा दुसा (अद्दान्त) । क्षेत्रात्रसम्ब्रीान्यी० [वं०] भूत्यासक्ती । क्षेत्रक्ति [वं] सेततावा । दु कितास । क्षेत्रियन्यि [वं] सेत संवर्धाः सेतमे उपसा हुसा क्षत्र बाजाः क्षताप्य (रोग) । यु० ब्याप्य रोगः भीवशं घरा

गाहा परवाररत पुण्य । क्षेत्री(त्रिज्) -वि॰ [सं] की क्षत्रका अभिकारी ही । पु॰ विस्ताना असाव्य रीया आश्नाः परमारमाः नाममात्रका

पवि ।

क्षेत्-पु॰ [मं] रोताशोता, धोल करना । क्षेप-पु [सं॰] कॅलला; प्रधानना। मेवना) दिकाना;

इप-पु (छ॰) केमनाः छष्टाङ्साः ममनाः दिकानाः रिदाताः काषादः विसंवः धाँद दोनाः सिदाः कपमासः काक्षपः वर्षः केपनाः पुष्पगुष्यः ।

क्षेपक-दि॰ [सं] पॅडनेनानाः मिठाना हुआः भगमान समकः। पु॰ (पुलकानियें) पोछैसे मिकामा, नहाना हुआ संदा-कर्मनारा, बाँड सेनेनाकाः।

होपच-पु॰ (सं॰) पॅडला; क्लिमा; झटकना; फॅडलर मारमा; मिदा आहेप करना; विवाना। पॅडलेका साथन (क्लिमीस आहि)।

श्चेपणि-पुर श्चेपणी-स्तेर [सं] टॉमा मएको प्रवृत्तेसा

- जल्पः वेलवीस वा शुक्तेकः । क्षेपणिक—शुः [सं] मलाष्ट । वि+ नाग्रकः ।

क्षपणिक⊷पु सि]महादावण नाइका श्रेपणीय∽वि• सि]फॅकर्नेयोग्यः चार्नेका बासक

(दला आहि)। पुरुषकासः। (दला आहि)। पुरुषकासः।

क्षेसा(प्तृ)-वि [मं॰] पॅक्रनेवाना । क्षेप्य-वि॰ [मं] चॅक्रने योग्बा रिंग परमे जान योग्बा

क्षप्य-।य॰ [स] चन्न-न दान्तः १६८ फर्डन बास द सष्ट करने बाग्डा मोड़े जाते दीग्य (स)। क्षमंकर-वि [सं]धम मंगल करनेदाला।

क्षमकर=ाव [स] दस समान्यर पर स्वताता । क्षेत्रकरी=सी ृसी }दस-विदेव ।

क्षमंकरी(रिज्)-पु [सं] एक सरक्षी सकर योज ने हाम मानी जानी है (विदेशि क्षेतिन) ऐमकरी । बोम-पुरु [सं] हुदान, मेरन्य हारण मात्र बन्तुको रस्त

ध्रम-पु॰ वि 1 दुचनः मन्त्रः प्रत्या प्राप्तः वस्तुन्ते दश्य (वीक्तभ्रमः) मुस्तिः भाषारः विध्यमस्यानः नक्षत्रः चानाः नि॰ कस्यानकारीः अयनकारः सुरगैः सरमायुक्तः । —करः माम् ।

म्रास-प्रास-४० (फा॰) बहुत विरक्त, कहीं कशी । नाष्ट्रायः स्पासित्य-४० सिंशी श्रीवाधन ।

प्राचना - विश्व है - रैमारिस्सा । यु॰ बह सरकारी बमीन पा रकाका विश्वका प्रशेष सरकार सुन बरे और थे। टिसीप्री बागीर, बमीरारी म यो सिसीब्हा वह (प्रमुख) गंजराय । न्योबाने—यु॰ सिरीक्षेत्र धर्मसमा । यु॰ — करमा—सरकारका दिनों बमीत, बाववारका प्रशेष अपने वासने थे केसा, जन्म कर सेता।

न्यासा-वि मीया (उँचा धाना)।

स्वास्ता-स्रो॰ (पा॰) गोशे वहमं योगे। - ब्राइ-वि मीधरा (मार-५६न)।-(स्रो)का घर-वतुत कानानकाम।

श्रासिक-ति [सं] गानेयाम जेसा । झाकिक-दि॰ [ज॰] जनानेवानाः, सहिदर्शः । –थारी--स्त्रो॰ मर्मार नुसरी-रचित यद पर-पुरवक विसर्वे प्रथकित

सरशं-कारसी छण्योंचे हिनी क्याय दिव गर्थ है। इसस्टिस−वि (श॰) हुन्द, वयका सरा, सक्षा। इसस्टिसा−वि (शं) हाड आक्रिस को राज्यके प्रवेषकें,

्रास्त्रक्षे रापि हो। स्मासिसामा≃सः मेकनीयतीसे, शुरू निरस्तार्थं मानसे

(-मिन्प)।

(माकी-वि [लंग] तिस्मी पुछ नरा-बरा न हो रोता,

रिवेद, प्रमा तिस्मी बोर्र ग्रहण म हो (स्थान)। विस्थि
हाम स (नहां जा रहां हो अस्ववरण। विस्थि प्रसान)।
हमारे नार से सारकाश स्थि देशार। लंग बेवना। पुण
हमारे नारि व बातनी सारी प्रोश हमा यान । -दिलपुण हमारे बातनी सारी प्रोश हमा यान । -दिलपुण कार्य वा नये बातनी दिल जातुक्का रिपः।
-पेद-वि की बुद्ध रास्ते को प्रसा कि दिशा कुछ
सारी, वासी होई।-हाम-वि विश्व हमारे वा वा हुछ
सारी (सा हुछ विचे दिला करें स विश्व वा हों।
बारी दिला हुछ विचे दिला करें मा विवाद के स्वित्ते हों।
बारी दिला हुछ विचे दिला करें मा विवाद करें।
कार्य दा सहाना-मुगननारीका वास्त्र वा स्वतंत्र सहीता
दो हुण की मनहन्न स्ताता जाला है (स्वी प्रदार सारीनी

-शिशानेपर स नगना ध्वर्व होना । −देना~हर-पाचर

बार रचाना ।-बिहमा-नेपार नेहना । -हाथ छीटमा-

देंगा, दियम कारता।

प्राह्य-पु [अन्) मीना। आर्थे।

राखी-पु भने वा बायदे जारी और शीरा पुना गा।

सा में पु बस कीरी, वर्षी रागी है।

सा में पु बस कीरी, वर्षी रागी है।

सा में पु बस कीरी, वर्षी रागी है।

सामें पुनी करना मन्त्रवार।

सामां मन्त्रवार (स्वा) मुल्ये करवार।

सामां मन्त्रवार (स्वा) मुल्ये करवार।

सामां मन्त्रवार (स्वा) मुल्ये करवार।

वर्षा मार्थि जागा में सा में प्राह्म मन्त्रवार।

वर्षा मार्थि जागा में सा में प्राह्म करवारिक मन्त्रवार।

वर्षा मार्थि जागा में सा में प्राह्म मन्द्रवार।

वर्षा मार्थि मार्थे प्राह्म करवार।

वर्षा मुल्ये। मार्थे वर्षी प्राह्म करवार।

वर्षी मार्थे मार्थे मार्थे प्राह्म करवार।

वर्षी मार्थे मार

~मी-मी राग्येवक विरेत्र ।। ~सराप्त-तु राग्य |

नारशाहरी इनामत दनानेशन। मार्ग । ~सटसीछ-सी चम स्थानको तहसोङ सामग्रामारी यहाँ राजा सुर स्टन थी। यह माण्युवाधै विभे राजा सरकार गुर बन्ट बरे । च्हान~पु॰ वानरास । *~वधीस-पु॰ रामहत्वम*। -वर्मद-विश्वास संभी विदिष्ट प्रमृत्ती व्यवेदान । -बरवार-प्र• वद शिपादी की बंदय हैका शाम, बन खाइकी सवारों के जाने मान करे। यह मीरह का (सत ररेंगका) पानराज लेकर साथ यने ।-बाजार-प्र• राज-महरूके धामने या पासका, उसकी भारत्यक्रमाओं के निर वधाया गया भागार । -- महस्र-५० भेतपर, बवान शामाः मनान नेगम पुरुमिशी । नस्टाम्र-१० वर बायपार मिसका प्रशंभ शान्य या छरदार मार बरे । रताम्य:-वि मि विश्वास्था मध्या परिवार क्षांमन हरदेश: संबद्ध है दर्शका सामात राजाचे संबाधना पेता बाबी। मन्यनच्ये किन्यका यह गुनी कपान एक तरहरी पर्या । धासियत-सी है। सामीयत । गासिया-त॰ दे॰ 'राशिया ३ न्वासियामा-१ यद तरहकी मधीड । रतसी-नि॰ भी 🕏 पत्राताः। र्गासीयत-स्ते [स] शुद्ध प्रभाग प्रकृति स्वतार ! राम्साई-प्र पित विक्तरका एक रंग !- हेर-पुर सपेट इक्क भी धारनर बननरको गरपमुद्धे सीचे होता है। सारमा−त [स] शुप्तिक्षेत्र स्त्रमानः साधीयन । राह-अ रे 'बाह (-असाह-अ रे स्मर्थनात ! राग्या-वि दे 'नवायां'। ताहिन-ना १ 'ज्याहिए'। रिंगिकर-ड [मं] सोमधे । स्थितिहरू अ [(०) श्रीमही। शारदा शाराः एक बेरान्स । रिंगा-वि कि। किरेर । प्रश्रामा भीता । रिक्षमा-म॰ कि गाँचा बाबा, नवना। (ध्या विशेष भागा, भारत दीना। बना बामा। (भाग भारते) बदर निकल्याः दिरमः जयनक शानाः विकित शानाः प्राप्ताः दर क्षांनाः भागा माना । (मारका शुन्त, शारारधी बदी मं रे) शीयनवाना ।

विषयान्तु (नारका तुन, शाराधी वदी नी)
सीवनामानाः विषयानान्तः कि तो बना का छ ।
निवादी-का रिवन्दी दिन्दा नीवनिकी प्रवाद।
निवादी-का रिवन्दी दिन्दा नीवनिकी प्रवाद।
निवादान्तः हिर्म देशका ।
निवादान्तः नीविष्यानां कि कि विषया ।
निवादान्तः नीविष्यानां कि कि विषया ।
निवादान्तः विषयाक्ष्यानां देशका ।
निविद्यान्तः विषयाक्ष्यानां विषयाक्ष्यानां ।
निविद्यान्तः विषयाक्ष्यानां विषयाक्ष्यानां ।
निविद्यान्तः विषयाक्ष्यानां विषयाक्ष्यानां ।
निविद्यान्तः विषयाक्ष्यानां विषयाक्ष्यानां विषयानां ।

विश्ववान्य को भीर वर्ड सरवर्ध वार्ष कि पर के हैं पूर्व किस्तों का बाद वह कर की बनी है। विश्वविकारित विश्वविकार किस्ता के स्थान

काण-बाबता ही बा करेंग्ड भाष ही जिल्लाहा ही नेंदरी कोशनंत्रण शहेद कर्णी वहची और अहाँक में र्जेंचिया~सी छोटा घाँचा, टेक्सी ! क्षचैया -पु॰ स्वीयनेवाचा । मंत्र-वि॰ [मं] सँगहा । --सोटः,-सेकः,-सेक-प्र सेंदरिक संबन । **शंत्रक**−दि० [सं•] दे 'संव'। संज्ञकारि-पु॰ [सं॰] धेसारी। स्त्रांबी-सी॰ इपक्रीके देगका, बाह्याएमें उससे छोटा, यक बाबा है श्रांजन-पु॰ [सं॰] एक मस्त्रिय छोटी चिद्दिणा जो मैदाजी प्रदेशोंने केवल बाइमें नियार वैद्या है योहरिक (साहिस्कृमें यह चंचल मॉसका उपमान मानी गयी है)। सँगहाते हुए चकता । −रत-पु• सल्वासिवीका ग्रप्त मेहन । र्मजनक~पु [सं] सेंहरिय। र्द्धजना-स्रो [सं] एडनको शहको एक विविद्यासरसों। र्गञ्जनकृति-पु• [र्नु•] ग्रंडमके बाह्यारका रह रही है संबनासन−पु [सं] यक पंत्रोक आसन । क्षंत्रतिका−को (धं•) यद प्रकारका संवन । लंबर~प [भ] करार, एक शरकत बना सरत ! लेंबरी-सी॰ दे 'देवरे । संबरीट, संबरीटक−3 [सं] संबन । र्शक(∹सी मिं] पक वर्गकृत । र्याद−४ (तं•) द्वारा। मागा शंबका विमागा देखा समुका समीनरणको एक किया (ग.)। खाँड, कोमी। काका ममकारमकाण्यः दीवः वदिश्वाः स्रांशाः वि द्रांटितः निमक्त क्षित्रमांगः छाउ। । –क्षंत् –कर्ण –पु • शक्तकर । -कथा-यो कशका एक नेद्र, होटी कहा । -काव्य-पुण धोरा काल्य, यह काय्य विश्वमें महाकात्मके पूरे कक्षण न की । —ज−प्राप्त व्यक्षक वर्दकी शर्वरा । —शास्त∽प्र प्रकाश वाक । "घारा"की अनुस्ता । "पवि-नु रामा। ~परद्य-पुधिनः परश्चराम निष्मु। ~पर्ध-पु क्षित्र निभ्नु परमुरामः राष्ट्रः हुटे क्षप बीतवाका दानी। -पास-पुर दलवादे। -प्रस्तव-पु प्रवादा ण्ड दिम-यद ध्वार पतुर्वेगी-बातनेपर श्रोमेशका शांधिक प्रक्रम क्रिसमें प्रराणानुसार स्वर्गसे नीयेके सब कीसीका नास की बाता है। -प्रस्ताह-पु॰ व्यक्ताल । -प्रज-षु एक तरहका माँच । -- पुत्रह्न-- प्रकृतकारी । -- मेक--इ. विमककी प्रशास-संबंधी एक रीति । -मोनुक-बु॰ रै 'रोप्य । –स-पुरुराटा राष्ट्र बारण करनेवाका । **"कवल-पु॰ गाला मगदा —मेलक**-पु रांबरीट। ~विकार~प भोनो। --विकासि−शी मिसरी। ^{—ध्यासाम}-पु भूत्वका एषः भइ । ∻हाकरा—सी० मिमरी।-शाका-भी यद वता महिवयही।-शीमा--षी असदी व्यक्तियारियी सी। -सर-पु बदास परेता थोती । मु॰ न्यंत्र करणा-इक्ट्रे इक्ट्रे बर्मा पन्धियाँ चन्ना हेगा । र्भेड-'शीर का समापने न्यवहन कप !-पूरी-सी सना। शहर विक्री गुणे कीया जारि मरबर बनावी हुई मोननदार पूरो । —बरा –पु सनीरा । —वार्ना - न्हां

सीहका घरनता बराविबीचे साम्बारके निष्ट गरनत केने

सी० हैशी बंगमे बीनी नमानेका कारबामा । -सारी-स्त्री॰ एक सरहकी देशी शीमी । श्रीप्रक-वि॰ [र्श॰] राज्य करनेवाकाः कारनेवाताः इटाने वाका । पुरु बोबः मिसरीः यह प्राणी विसक्ते मासून म दौ। र्श्वद्रतद्य−वि॰ धंन्ति । र्श्वहम-पु॰ [सं] कारमाः तीवनाः नामः करनाः वानि ब्रह्माः निराग्न करमा (प्रमय)। नावक दौनाः नोसा दैनाः विश्रीकः क्लास्त करणाः किसी गातको गलत वतानाः स्ट करमाः इसरेके मतका शुक्तिपूर्वक निराकरण । वि चोक्रने कारनेशाला । - संहद्माद्य-पु ओदर्गहत महेत बेरांतका प्रक्र प्रसिद्ध प्रोधन-प्रवास स्रोध ! - व कार-प्रव संदन र्धानसायके रचनिशा औदर्ग । – भंडम - पुर्व ज्ञेन्त और मंद्रमः बहस विवाद । --वल-वि प्रशिकार्यमें संबद्ध वा **संब्रमाण-स**्मा कि॰ सहित दरनाः निरासरण सरमाः द्वकरे द्रकृषे करमा । संबगी—सी भारतपुत्रारीकी किरतः वे 'शंदिनी'। **संबनीय-वि० (सं०)** खेल्ल करने वोष्य । **कडर-ए॰ सैटबरा (सं॰)** मिठाई । सँदरना॰-स॰ कि॰ रान्-सन दरना द्वसने द्वदने दरना। **श्रॅंडरा! −**प्रवेशनका बनाय**क प**क्षनान । **भॅबरिय-५० सं**वरीट । क्षंडचा—प्र दुक्रवा, ब्रह्मणा । बंदसः(शस)--म• [सं] संदर्धः क्रके करं बंधीने शीरकर । कॅबडर-प इव गिरे इप मकानका मब्देव॰ गिरा, बदा दुशा मकान । संदर्शन-पु• [सं•] स्पिरे हूपशत्रका रतस्रत (रविकोशमें) **र्वाहास्त्री** न्दी (सं∗ी तक्ष्ये एक मापः ताकः। ताका कामक्त्रों गी। म्बंडिक-पु॰ [पुं॰] बेरावा कोंदाः विद्यार्थाः योगी बनान शक्ताः शंक्रिका−मी॰ [सं॰] वेरावदा मीयन; क्रॉस ग्रह कर । संबित्त-नि [सं∘] सोशा द्रमा, ब्रह्म देवा हमा। टटा हुमा, भग्ना गयत उदरावा हुमा निराइल । –विव्रह-पि विसक्ते अंग भंग हो गये हो, विकलांग । - सन्त-विक बुदचरित्रः परिस्वकः। **अंडि**ता-न्यी [मं] जायक्रमें जन्य कीमे संगीगढ़े बिद्ध देशकर कृषित हु⁵ माविका । अविज्ञी-भी (सं) पृथियो । व्यक्तिया~<u>प</u> कमन्त्री गैटेरियाँ बनानेवाला । स्त्री० द्वसहा । र्राष्ट्रीज्ञव मंद्रीज्ञव∽द्र [मं•] दे 'राहत'। म्बंडो**स-पु॰ (स॰) धारका एक री**ग । गॅरीसां~पु मिनरोद्ध कट 🗗 । सैंतरा-प दराट शहरा होश गरदा (पाय शोमा'के साथ भेतमें भाता हो। ह र्णता!~षु मिही सीदनका एक भी बारा व€ म*्*टा बिसुमें में कुमहार मिट्टी माने ब र र्व्यदश्र-न्या (अ०) सारे, गररा गर्दा । बानेक वह राव (राष्ट्र-कोंड+पानी) !-सार -मास- | ११व्-वि: [पा:] हेंशनेवाला हेंगता हुना ।

राजवंद्य । भिमत विक्रतिः रिक्तवित्तः न्याः ≹० 'रिक्राम' । सिक्तमा—स क्रि॰ व्यक्तीका विक्रमित बीमा, फूल धननाः पानना, मेला सनामा। प्रसन्त, प्रपुत्तव होना। प्रश्न-मानकर महग-भहर हो जाना (बावरु, ग्रीहें), फा बाना । शिमवत-श्री थि॰] एकांता साली जनसम्ब स्थाना रामहार्थः भोनेका कमरा । - स्थापा-प अवेडीमें मिलते ग्रप्त मेत्रधाका स्थान ।-सर्वी-वि० प्रवासवासी । निस्तवाद-प देश रोकवाद I

खिलवामा-स॰ कि॰ बृक्षरेसे परस्वाकर, वृक्षरेके हारा दिसीको माजन करामा। मञ्जूष करामा। पीछे धनवानाः गीर्ने सरकार। ।

लिस्स्यार+-प+ रे+ 'गिलवात । सलाती । निसाई-सी॰ निसानका कामा निरामका केन (विकास निकारी) क्या धेलानेपर निवक्त मध्दरमा । रिकाद नि की॰ चंचन, वाब भावमें प्रवीच (सी); का

चेत्रत । गिला**दी**−िव शैकनेवाका; दिशी जास रोक्यें कुलका क्रस्तीः गतका सादिमें कुछ्छ । यु स्नामनामाः रील करनेवाकाः शेकशासाधाः करसव विध्यानेवाका वाजीगर । निस्तामा~स• कि भोजन बराबाः बलत देनाः गिकावे का कारण दोनाः निवर्धन अपूत करना । जुन-विकासा

~मीजम-पामसे सत्कार करणा । रिकाफ नि•[#] विस्ता प्रतिकृत वस्ता ।-क्रामून-विश् काममके विकास गरकानमा ।- जनगर-विश् भरकाः रप्टाके विस्तः : -बरङ्गी-सी॰ विरुत्तापरणः भाषाका यहारन । स्व -श्रीमा-विरुद्धः विधेवी श्रीमा ।

जिल्लाक्षत-लो॰ (स] कलोकाका पदा पैयेक्ट वा नाव शाहका भागधीन ना प्रतिनिषि द्यांगाः 🕯 है। गिलाको । ~श्रांतीसन्-पु प्रथम महातुक्(१९१४१८)के नार मारसमें टिकाफतको हुना श्वापमाकै किय जिटिश सर-श्चारके दिस्क प्रजाभा गया शांधीलन ।

दिसापी~सी॰ शुमासका, विरोध ! (तिमास-मी (त•) दाँव गीरनेका तिमक। वी पीओंद बीचका पानका। मात (वाधके शेलमें) हार ।

रिक्षीमा- पुर रोजनेको बोध, साममा बार्क विडी सारिका बना प्रमा हानी मोता मादिः समनहत्त्राचनी शीध । रिक्स-पु [म•] मिलायम शृहाको वैहालिकीमी मानो हुई शरीरको बार बातुओं (सकरा सीरा बसराय, लून)-सेंथे बोर्ड एक । -सिक्स-नि विकासना, एकवे रिला समा।

श्चिम्य-पु॰ [मुं॰] गारी नयऊ । वि वर्षशिष्टमै वर्गित হৰিব ১

रिक्ति-सी॰ हेंसी मजला कारा पासका कीशा !--वाक्र-पु सिती बराने प्राता । मु॰ -क्रब्रामा-विमीय समाह पंत्रामा, परशास धरमा ।

रिष्म-म (पार) हर।

रिरस्तक-स्त्री (फान) होटी वेंटा श्रीवनना । निमक्ता-म दि श्रमा स्थमा भुपने धन मेगा। निरमकाता÷त÷ कि इदाना नरथायां मुस्तेने दक्ति।

हैना उदाना। लिसलमा-व∘ कि दै 'शिसहना । जिसखाइर∽मी फिल्क्नेसा श्राव।

रितसामा®−अ० क्रि≉ टे 'शिर्तसवद्या । मिसारा-पु॰ १ 'लगुपा'।

शिसारी∽को है॰ लेगारी'। सिसिमानाः लिसियामा − म• किस्पीयन होताः रक्ति होन्दर, नेवक्ष्य वनपर शीक्षमा। यह बाबाः राष्ट्रा श्रीमा वि रिप्तियाचा समाः समितः। स्थि 'सिप्तिवामी ।

म - (नी)दिली लंभा मोधे-किसियाया रजा अन्य भवनी चीस इसरीपर जनारना है। किसियाहर-को दिसियानेक मार ।

सिमी क्याः ग्रीसः **पश्ता** । र्वाष-मां शीवनेदी मिया वा मान । - राज-भी सीना गोषी जोड-गॉनः क्षिमी तरह सीक सम्रहर

and region (न्विचना-स कि॰ अपनी भार शाहर बरना विन्हा यमीरमाः प्रमुदाः सारपदार्थं निकाल हेमाः विशित दरमाः शक रम्बनाः व्यापारिक वस्तुएँ मगाना । र्सीचा-वर्गिची – स्त्री विश्वीयसम्बद्धी प्राप्तिके किए ही स्वश्वितीया

परदश्र विधीषा अधोगः नीक्षणाह । र्गीबासाम कींबासामी-ती वे 'वीकाम'। सीज-सी सीवनेका मात्र मुंशकाहर कुरन ग्रहमा। क्रीजना-म कि भीशकाना हुई होगा।

चीक्र≠−सी दे सीत्र'। क्षीप्रनाष-भ क्षित्र है। दिश्वमा ।

स्वीस १ – वि० है 'क्षील । – ता – तो ० है० 'दोनताई। रामिताई+-मा दुर्गकता मुस्मकाः परी। श्रीप-पु॰ पद पेड बिसके रेशींसे रस्ती बनायी जानी है। क्रजात बता ।

र्तीसा-पु॰ [श] रोमा, संश्रा

रहीर-सी पूपमें पहाका हुना यावना पूपमें पहाबी हैं। नुषी श्रीक्षेत्र मराता भारि । ० पु. वृष । **- परार्ड**-सी॰ अक्रयाशन । ∽मोद्रम−९ हेनमें बामेवानी हम्ब किस्ती ।

श्रीरा~प क्यशेश जातिका वस्त्रप्त । सूरु-(१) करपी की तरह कारमा-भकावन दिना प्रवास कारना ह शारी-को गाव मेश मारिके यनके छपरका मानः

 गिरमी । व्यक्ति—स्त्री भूता द्वारा थाम कावाः † काँदाः सुदर्शः ब्राहिने जिब्रानीवाणा यवारका बील तेगा. बंदा पदीकी

बीयधी होंदी। यामची में रेर रशिक्षमा-शर्भक भाग इतीर शने कारिमें निनदा नेरना

श्रीसां~पुरीम धरी।

शीवन जीवनिश-सी० वसी यथ होना । व्यक्तिक-वि. श्रीरः वदारह !

क्षीम-भी विभिन्नका मण्ड सञ्चा योजा विभिन्न का श्रीनना दिसान हुए जॉन बाहर कर हैना। रेग्स 🐔 विस्त्री वर्तन मुख्य बावे। बादर नियन रूप गाँध देशन व नुसम्माग बन्तानी- वय म्यत्य दन ही की बबू मह दे सबाक−पु [६०] विविदा । सबाका−की० [सं०] क्लग्रे । स्वज्ञानची∽पु दे० 'सुबांची ।

रहहामा-पु॰ कि] न्यना, छोना घाँदी रखनेका स्थान, कीछ, पनागर, मेनार, पन माठः वंदुकर्मे वास्त रहनेका स्थान; राजस्व । -अफसर-पु॰ विपो कन्य-रके दरने का सफसर किछने वहाँ विलेकी सरकारी जाय समा होती

है और उसकी स्वीकृतिसे व्यव होता है। स्रतिका-सी [सं] दे 'राजका ।

द्वकिष्ठ∽वि॰ (फा] स्टब्स्स । स्वज्ञीसा-पु॰ (सा] द्वजानाः कीसः।

क्षत्रमाः, राज्ञवा-पु॰ ग्रामाः सम्बाः भरवाँछ । साज्ञास्टः, राज्ञास्टरी -ची एभ्रत्या नाग यक तरहका

यन्त्। मञ्जराष्ट्रीं-सी यन्त्रसाधागः

लहकाना — क कि॰, स कि॰ दे नुसकाना । राज्ञकी — की दे॰ नुसकी पक विरुद्धि । सन्दर—पु॰ वाहकी कादिना एक पेह विस्कारस वाही

भी ठार दिना जाता है और उससे ग्राम-ग्रन्थ मी बनाते हैं। मेरीकी बनी एक मिठाई। --छबी--छी कर रेखमी इनमा बिस्तपर साम्रासी परिमोद्धी वारिनों बोसी हैं।

सन्हरी-वि सन्हरः सन्हरे (परेप्र) भाकारका (सन्ही वोडी) । ७ जी॰ समूह । समोदरा-प्र पद सरहन्त सेवेगर कोला विसके स्पर्धते

पुत्रको पैदा दोवो है। सद-पु [मं] बक्ताम लेका कुत्रीं, कुरुवाकी। ऐसा दका पश्च तुम जो साजनके काम जाता है। --सादक-पु

स्वारः क्षेत्राः आनवस्यः चानवाकाः चोटिका बदान । बद्ध-स्यो दो प्रोबोर्क श्रम्यतान्त्रेः व्यति । - स्वट-स्यो बद्धार्यः श्रे आवात्रा दुर्मेन्तः एउटागः तावशः क्रिविटिका । - प्रदान-पु पश्चिमेद्ये स्वातम् क्षिण वृत्तेषे वीका व्यति वास्ता वेदकां द्वारा । - प्रदिन्यां विज्यस्य क्षेत्रपादा क्ष्यस्य ।

सी॰ बारुका बना कप्पकः पश्ची। —सि-तुरुमः। सर-पार्टका समावने क्षावकृत करा —किंद्रा —किंद्रा — कर्रावकृत्रा — प्राप्तकः पर्दा —किंद्रा — कर्रावकः प्राप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः विश्वाप्तकः क्षादिनिकः। प्राप्तकः कर्रावकः स्वाप्तकः विश्वाप्तकः क्षादिनिकः। प्राप्तकः विश्वाप्तकः प्राप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः विश्वाप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः पर्दा — स्वाप्तकः स्वापति स

मद-वि राहा का समासमें स्वबंदत करा। -सिंहु"-मीडा-वि रिसमी समाग-मिठाम योगी शी: बाह्य-बीडा (इस)।

गर॰-वि च । --इरस-तु २ विविधियानवाण पूरम बदुकान प्रामा प्रसाम । --इस्सी-वि घट इरस बरने गरदान देशातेशका। --धन्-तु दे देशा । --पदी-सी २० 'पदवरी । --धुम्ब-तु रे 'पदान' । --पस-वि पू २ 'पदवरी । --स्सा- पु श्रेंशर, समेला; काठ-दवाद (पैकाना)

कटक~सी पाटकनेका मात्रा जुमन टीस दुन्या शिका यक्ष पाटका, बार्यका (विकाटक)। पु० [सं] पाटका माणी सुकी सुद्दी सुटिका।

शरकामां न कि॰ साथ होना चुमना गतना तुरा कममा अनुचित जान भवना बन्दनाः जनवन, निगाह होनाः दार पर सम्द होना।

क्षष्टका—पु 'स्वर-सार'को काबाब; कार्सका; विवा; पैक पुरवा; सिटकिनी। पश्चिमीको उदानेके किय दूधमें बाँमा बानेबाटा बाँसका द्वकमा !

खटकाना न्छ कि स्तरम्बरामा भन्नामा अनेवन विगाह कराना ।

स्टकामुख-पु• [सं०] वाच चकातेमें हावॐ पक शुद्राः देख शुद्रावाका काशमी।

खटक्किन-साँ॰ [वं] सिरम्धे ।

काटकाटाना-स॰ कि किसा चीक्की पी॰, विकास प्राः स्टांकी काषाव निकाकना बाद दिसाना, टेक्सना । स्टारा-ब॰ कि॰ क्टीर अस स्टाना विस्ताः वनीपार्वन

करना, धमाना ।

काटप्राां −पु॰ देके तीहसेक्ष्म मुँगरी । काटका −पु॰ वाक-वच्चे, परिवार पत्ती, कानमें वाकी पद जनेका क्षेत्र ।

लटाई -- ती॰ खडार तुसीः सहो भीत्र (जाम इसको जाति)। सु॰ - में डास्त्रमा-गहना साफ करनेके टिस्स रहाई(इसकी जादि)में डाकनाः (बिस्से कामको) टाक देना करकारे रकता कुछ से न करनाः - में पदमा-

प्रशासि बाका जाता (समी कवेंसि)। जाटाका~प 'बार'की जानात ।

सरावर-पु चट-कर'की मानाज । श चिर-पार'की भागाज करते हुपः तुरस सत्काल ।

काराना न ग्रि॰ कारास काना स्वश्न को जानाः निराह होनाः दिक्ताः परयमि देख स्वतना । स॰ तिः इसके काम केना ।

क्रायरः क्रायप्रयी-सी॰ शगदा विरोध, अनवन ।

सदाव-पु निश**र**, गुवर ।

राटास-गी सहापन, ग्रांची। पु॰ गेविस्सान, सहास। व्यटिक-पु पक, सरकारी आदि वेजनैवाटी यक हिंदू वानिः सि] बावी सुसी सुद्री।

न्यतिका-मी [र्स] प्रतिया मिट्टी। कामका ऐद्र । स्वटिमी सरी-मी [र्स] प्रतिया मिट्टी। कामका ऐद्र ।

राटिया-ली छोध बारपार्द । नटीक-पु तरकारी नेवनेदा काम बरमेवाको एक हिंदू

्वातिः * क्षारं । गर्धसमारु-पु दे॰ पारीनः । गर्धमम्-पु प्रोडी साथ-पुरैक्टोन्ड अवर्षत् एक प्रदेशः ।

स्मरोसी—स्पे टीग सरीला । स्वष्टु—दि० [मं•] सर्द्रा ।

याहन-रि [मं] कियना गर्वः तु० हिमना भारमी भीनाः।

है चिन्तुरा । न्यम-वि दू दे चरस्य । न्यम- विद्यानमी विशे पारवासे एक नून । वि [रि] बिस्में

मुसी-सी कानमें प्रमनेक्षे कीक वा लागः दाधी करीन क्षा चहाया जागेशाला बाहुद्धा योगा-'समसब नेवा नीय सी समी-सुभी विष मीदि-दि : लाम-त [पा] मटका चड़ाः घरायका सन्दाः अही cोक । —हरामा – पु १९४१ राजा सरिसम्बद्ध । स्न • – चहाना-इपहेची बीनेमे बहने अडी बेमा। गमरा-पु (का) प्रसम्मान क्रिये(का ग्या मेर) एक मुख्यमान जानि की नीरिने पुनरीया भेदा करती है। नुमान -रि मापुष्पान् वर्गं मापुरानः। पु धिराधी-को उसकि । ्यमार-इ [ल] नद्या मदा कोशीय द्याबा द्वमा बदा है तुत्रमा-इ (बाब) सन्दरः गुत्रामा वट मिवर विदे

सुमना-म दि भुमगा पेशमा गरमा। सुभराना-भ॰ कि इक्ष्मले पिरना। वत्यान करनक किर ममना । म्मसिया!−शी°दे शमी ।

म्बद्धाप्ती-तो [स] व्ह वीवेदा कल जो दवाद काम माता है ।

ग्बंक्रिया-विश् [फा॰] दिया हुआ, शुप्त । ~पाला~दु॰ भदना। -सदीस-<u>प्रश</u>ुक्तिया रिपोर्ट क्रिसमेगका ग्रह्मविद् । ~प्रक्रिम−लो० श्रप्त रूपश काम करनेवाकी पुल्लिस सी भार थे। शुफ्रिका प्रशिसका भारती वास्म । स्वका-म वि•वे सुनगः।

सबसी-विश्वीभी ग्रम्मावर ।

समझी-स्रो [का] दंद सरवी। स्वनस-सार रोप, क्रोप। लनसामा-भगकि कीच करना।

सुद्दी-न्त्री॰ पावस, बास आदिके बहुत छोडे उक्तरे । सम्बन्धि का देशा छई।

सुदाव~५• सुदार्रका काम । ख़ ही नती (फा] मापा, भरता। वर्ष मदंगार र

हो)। −डाक्रिज़ --देश्वर रक्षक है। स्त्याई-सा सोपरेको क्रिया, गोरा बाला। शोरनकी समस्य १

रेहररीय । -सर्स-विश् रेंबरसे क्ररनेवासा, वर्ग मीह । -चाद-वि देशरका विकादधा, सहब, स्वामाधिक। -परस्त-दि दश्वरको मानने पुत्रनेदाला, मक्ता -रसीबा-वि देदवरके पास पर्वेषा क्रमा, पर्देशनवासा, संदाः नेकः वर्मनिष्ठ । - सद-प्र॰ मालिकः स्वामीः (संबी-धनमें) श्रीमन् । -शंबी-सां माहिन्धे बादशावतः भन्नम् । – का शहर - न्या शहर - वेश्वरका वाप विपन् । -का कारग्यामा:-विद्यन्त्रपंत्र, वनिया । -का सर-भर्ते, बैहुठ: प्रवासनारथल, मरिवय ! -की सार-वंशरका कीप पर (शाप) । नकी राष्ट्र-शरको भागपर, देवबरके प्रीरवर्ष । --की द्वारन-भगवानकी महिमा, विमृति । अ० - के घर आमा/- यामा । -को प्राप्तियाम हेना-र्देश्यको साम्री बमाना ।-श्रवा करके-वडी कठिवादेशै : -- इतर कर-"स्वर कुछक बने, भगताम् रक्षा करें। -गांतको माग्यम म हे-देहदर ओहे, यमीनेकी बन मिनार न दे। - न राजास्ता-इंस्कर ग करे विसा

> शुरुष-त है भरता । रारशा-पु (का] बुक्येश गरा।

शुरुषा∽षुः वाध वरदन धौरूनेदा वद भीजार । −धानी -स्यो सुरवा और राज्य पन संसद साहि सामान । सु०-जानी भीमारचा-पनिवारेश चैन बरमा ! शुरुषी-मो+ होंस मुस्या।

सुरर-९ गुर बदा रोग । शुरद्श-वि विशव साह विश्वती हमरार में शी राने दार, ह्रह्मारा १

धीक्रमवार जनके शामान स्टास्ट पी श्रेष्ट प्रेटमें वर्ष मेता है।

शुरुषाम्यो—वि वि० सुरवामी । लुरजी-सी शेवमें सुना क्वाभेता माहाता जिल्हे

सरपती-सी शुरपनेस भागा। गरकारां-मी हे गरवाक'।

नुरचना~छ कि बरतनमें बन्ने चिन्दर दूरे पीत्रकी धीलक्षर अनग करनाः प्रदेशमाः।

गीने जमा हुमा दूप वो शुरुचक्र निकाण बादा क्रारी से ब्रुपो और लुर्बच्य निकामी हुई मलाईकी पर्क क्रशामित शुरुपास्त तिराका हुमा शह ।

कता। 'सुर-सुर' धण्ट श्रीमा सुरसुरा मानूम श्रेना । **लरलराहर-**च्याः वरपराहरः सुरदगपन । शुरचन-त्या मुरपटर निवासी दुरे थान कहारी बहिरे

गरका भरिष्ठाः गुत्रसी (१) । त्रस्तरा−४ दे तरस्त'। शुरशुरामा−म कि॰ सोसस परमराहरके भाराय निर्

परका विश्व । -प्र-पुरु एक तरहरू वेजपारनाम नाप । –बद्यी–ली॰ [हिं] शास्त्रदी । –द्वर्श-सी॰ उपन आदिये वजुओं ६ जनमें से बना प्रभा रास्ता कारी। -हा-प्रवासीका व्ह रोय, गर-पना । लुरक-पु० [एं०] शुस्तका एक प्रकार। दिन । रे सी

खर-त [र्न•] सम, गराः इत्ता करतुराः पारवारेके वारे का पक्र हिरसा; एक अंबदम्ब । - जम्म-वि+ शुर वैसे निपरी मान्यवाला । -तारक-प्र रारका भाषास !- ग्र.च - प्रस्ता - स्थास-प्रसुप्धा निरान गुण्यो पञ्चका पत्रविद्ध । -पन्ध-पु [हि] मार, वेस मारिस सर और सेंद पढ कामेदा रोगः −पद्धी −की बोार्ड

मुचा आदि पीथे आहे हैं। दौठमें बरी हुई सबिधे कोश बाधीके बाँतपर चनावा हमा बातका दोला । व्यवहारिक-मी देश 'खमार'। करट-त है 'लरेंड । लार्रक-प-स्थात हुए पानके कपर नगमनानी पपरी-सडी।

चढ़ बाला । मुण-तीवृता-मधेर वतारका असार हर करणके किय बीडोसी शराव किर या केना । लमारी-न्"। दे 'रामार'। सुमी-भी एक पहिच्चर्न जिसके भरत महेन्द्रोह, कहर

नछैका उठारा मधा पत्रते समय मासूम हो दर हो बरा

वर, सिर-वर्ष मादिः चागरम, कथी मीद इस्तेने घोरों स

सदाई-फ्रासा

311 मक्कार को। भारतेका उच्छ । साबद्र-प सिनी एक तरबका नवा करेंस । सराधार-प (सं•) सहकोछ । श्रद्धारि=प• [सं] तहबारका फल असिबाराज्ञतबारी। MIN I श्राविक-विक सिको सहनारो । प्रा विकारीः क्यारे । लडी(डिन्)-नि सि] सहबारी । च गंडाः शिव । सामीक-प॰ सि विशेषका । सह, सहा-पु॰ बहुत गहरा गहहा। स्तर-पु वृत वान । -स्रोड-बा सर्व, स्राते इप काक्स करार अभी वर्ड पपडी । स्तर श्रच-प्र• [स] स्कीर, रेसाः विश्व किसावटः पत्र विद्रो; केंद्र, शहरीर; नवी बनती वाली मेंठोंके रीवें बैसे वाक रेका सरत-राष्ट्र इतिया । -कश-पु वह बाका क्रियते क्ष्मं क्षेत्रतेत्र सिए सक्ष्मीपर निष्मान स्नात है। -कशी-सी पित्र क्वानैके किय रेपार्थ सीचना। -किताबस-की॰ पत्र-परदाठ थिड्री पत्री । -प्रस्तध~ प बिटो-पत्री । −(ति)सक्षासी-प सेवाका मितापव । -मासासीह-प संदर, गील अहरीवाधी हिराबर विसमें का विधिवाको भाषाएँ काम तौरसे कियी-प्रापी वाता है। - सिकस्त,-शिकस्ता-प्र॰ (वर्द-कारसीकी) मसीर कियाबर । स॰ -की पेशानी-पत्र कियमेंसे छपर तारो हो याची बग्राः −सींचना~स्कोर योजनाः कारता ।-- निकलता--दार्शके बास धगना । -- बनाबा--हवासच बनाताः दादी और कनपदीक बाट उस्तुरेने ठीक हरमा । ज़तना-पु[स] मुस्तमान वच्चेके किनके आकी विस्तेवी स्वका बाट देवेदी रहम वा संस्कार, शक्त । प्रतम∽त दे सस्त्री। पतिमी-की पर रौथा जिसकी कह और बीब दबाई काम भाते हैं। प्रतर प्रतरा-पु• [थ•] डए, भवः शासंकाः श्रीराम । -(१)माक-वि खडोराहाः खडोरी भरा क्रमाः सबबाद । प्रतरामी-सौ॰ धनी सी । क्रवरेटा~प्र• सत्रीका नेया यत्री । कता - प्रश्नित पार । पता-को [श] चुका दीप अपराचा भीरता-धाडु अनि जाम गरता साहु माँत बारो'-मूचग !-कार्-प्र शहरतीः दीन करनेनाना । -बार-नि दोनी, अपराधी । सर -होना-स्तुर होनाः मन जानाः (होद्य) ठीठ-ठिदाने स रदमाः भगवानमै निद्यम बाजा (पेधावका)। स्वतिक-स्ते हेण भारत । राविषा – श्री छारा सर्दा । † पुण्ड जाति जी अभीन गोरनेसा थेवा बरती है। गतियामा-स कि शानेमें बदाना किएना। ग्रसिपीमी - स्पे दे सत्तामा । रातीय-वु [स] सुतवा परनेवाला, धर्मोपरैराङ (मुसक)। नतानी-सी बह द्वागम या नहीं विश्वमें परवारी हर कारतकारको जोतका १६वा, वर्गनेन (प्रकार), समान | धानि समी-मी [सं] छान गटवा; प्रकार-(मि)प्र-

आति किसता है वही-साता ! श॰ -करना-सातेमें यशमाः स्रतिवासाः । खत्ता-प्रश्वाहता कोई बीज बसाने रखने आदिके किए बना गरहाः ग्रीतः स्थान । असी~औ छोटा सत्ताया आहा, वसार i साम-पु० बिकी बीत, समाप्तिः परा दीनाः करामका पाठ अतम हीना 1 अजी-प॰ द्वतियोंके अंतर्गत एक बाति बी प्राया स्थापार करती है। खर्दरा~प॰ फार्री तीर, नामा केंक्सा समारका पेत्र । प्राप्रंगी≎∽सी तीर वाग । सदलदाना, सदबदाना-श॰ क्रि॰ किही बीवका उपले समय 'चारवस' शम्स स्टामा । अनुरा निकासा, रही । प+ ग्रहा । खादशा−प [श] धर सटका, विदा लगम−सी० वात । प्रविका−सी० सि ी ठावा ठावा । चितर-प (र्स•) शैरका वेद्य श्रंहः चंद्रमा । -पश्चिका --वसी-सी॰ डाज्यंती १. -क्या-प॰ स्टथा । कविरी~की सि॰ो साववंतीः परावजांता स्टा । ख्यवीका−की (क्ष+) महम्मदकी प्रदम पत्नी की इस्साम ग्रहच करनेवाकी पदकी की और फादिमाओ माँ थी। ख़बीब-प [त] मोनन्दि गरेटः मिनके गरकाराँको सपाचि । श्रासका ने प्राची कर्नशर । कर्रदमा-स॰ कि॰ मयाना दटाना। पाछा दरते हर भगाना । खबेरना-स कि दे 'क्टेब्सा । **बहर-९० हायका कता-तना करहा सारी ।** कार- । प्रमा संदा मिला । इस्तिश्व एक तरहका करहा । अ॰ तुरत तत्काक । की॰ क्पने देते आदिके दबन्द्री ध्वति, धनद्र । कारक - तो॰ धनकनेद्री क्रिया, भाषाय; द्वारे व्यविद्री मारिके वत्रवेदी भावात । पु॰ (सं॰) घोदनेवालाः साम धीरवेवाकाः सँच मार्नेवाकाः प्राः धान । धानकमा-म॰ क्रि॰ धन-धन' करफेनबना धनग्रतामा । लमकामा-स जि. धान-धन ध्वनि उरफा करमा। क्षव बादिको परसनैके दिए बजाना । **सम्बार-सी॰ समक** सदार । श्रम**राज्**रा∽प्र•दे 'क्षमप्रज्ञरा । समध्यमा-वि जिन्नके दिवाने उत्तन प्रवनेने 'राम-रान ध्वनि निक्ते । प्रमुखनामा−अ कि सुक्का । मु कि॰ सनुक्राना व्यया भादि धवाना । स्वत-पु [ग्री शान्ता गाहमा। स्तमना~स• क्षि॰ सीरमा । न्यपविद्या-त्या [सं] सोधनंत्रा भीवार, मंद्रा । समयाना । सनाना-स जि मीएनस क्या कराना । समहत्री −िव शुण्या दुवला-धनहा ।

स्रामी~यो दे 'खस्की। म्द्रामद-श्री॰ (पा॰) गुण करनेवाली वार भाषनशी

(रपुरा-|-भागद = मान्य-सत्पार आवमगत)। ग्रनासदी−4ि (फा•) चापसूरा, शुद्धानर करनेवाला ।

-टट्*ट-र्*रशामरकी कमार्र कालनका, औट्टबुर् । राशी-सी [मा] सुद्ध होना प्रसन्नता हुनै: हुन्द्रा, मरणी । --स्तुदरी--भ॰ मसकतापूर्वक, रहतीकै साथ । ~का सीडा—वह काम विमे करेगा ज करना अपनी मर श्रीकी वात की । सा ∼स प्रकार खडमा−सर्वि प्रसन्न होना शिक्ष घटना ।

राष्ट्रक-वि पार) युगा। यसा। वरतिका निस्के धाव कीर कुछ ग हो। माना (-धनस्वाह रोग्री)।-सार्वी-

रही • अवर्षणः अवहरू ।

ग्वदका−प्र• (फां) सादा पानीमें पका द्वला भावक । मध्यी—सौ (पा) यहापना स्यापना रक्षांत्रका अवर्षमः रक्षक मायः अमीन (तरीका बक्टा)। **⊸की** राष्ट्र-स्वलमर्गास् ।

ख्नसामति = न्त्री = दे 'स्**छास्थ**'।

मुसाल। सुस्यायण-वि सुश भवन।

स्वस्थिया-पुरु [स] फोता, अंडक्रोश । ~बरवार-वि सम्बद्धाः ।

सम्बद्धसर-यो कानाइमा । अ बहुत पानी भागावने ।

न्युस्तत-यो (म॰) धतुरा भरावरा रागगा। ।युम्सिवत−सः [अ] विशेषताः सेव शोहार्थ।

ग्वससी-वि+ [#+] विनम् रास ।

र्युद्धी-न्या सवारेकी तरद भोदा हुमा बंश्क थीयी। स्टॅंट-प्र कीना सहातके कीनंपर सगावा जानेपासा क्षा भार दिशा भाग कानका मैना छोडी पूरी। कान का एक पहला दारा सेक्स

म्बरमा-स कि॰ परनाः भुकना-'मछि भूरी कागर नह भीभ - सु : इटमा । छ जि रोमलाः छैड़छाड करनाः

क्षेत्रमा ।

र्ग्रेंश-५ अवसी मा गाँएको मेल क्रिमे गालकर गाम नेल बारिकी बॉबन दे। सरी गरी हुई कक्षी । हा -गावना-भट्टाप्ता सेना वस जाना। ⊸(ट)क वस कृत्ना∽

इसर्के यम वृतेपर मुदशा दगराना ।

गाँडी-क्षा चाँधे मेरा: नकरीको मेरा भा कर*द सादि* बोबनेंदे किय दीवारमें गावी कावा जीत वालकीकी विद्या भितार, मार्यी संशा शादिमें यत्री ट्रांटी मगा अरहर, प्रशास माहिन्दी सुरुपी जा प्रमान कारजी नार शेनमें रह कावा मानकी प्रभु जो अन्तरेष्ठे सेंहनेके बाल रह जाय । म -कम्ममा-निनार, सारंगी आहिक शार कमना र र्मियी!-सी देश मानी !

म्मॅुंच-स्था भुदर्शको सिवा ह

मॅब्सा-अरु हिरु पीरिहा प्रशाप रोडे जानपर क्रमी अवह इता:चन्त्रा भूममा वॉब मारमा शब्धे प्रशंस गीरमा रोपमा ।

स्–मा (या) भारत स्वतात भागते –गर–दि भणी।~मृत्री काइत धारा

लुक, सुन्दर्भ-त संस्त्र । खुली-सी॰ रवीको प्रस्तवको स्थानेत्रामा एक कोशा सदस

ल्झा-पु करू, तरकारीका रेमेशार मागा नविक बनाग हुआ श्रम्मा ।

स्टनार-- १० कि भरताः युक्ताः रहना अतस्य दीता। स कि॰ दीवना पुरुष्तार करनार छैरता । ल्व-प्र किसी तरक बीजको छातने निवारमेस निकर्ण

वासामित सल्छा। भ्रवक स्थारी−५ दे 'श्रा'। प्त-पु का रेक, स्कृत्सा कान । -स्राधा-पुरु सार-कार, शुभ बतासः पद्म मान्य श्री सो शाल बालिङ दनामें भीर दशकें भी काम भागा है। (ग्रें)ग्रार-रि र्गृतवार । --एचार--विश् मरवर्गा जानिमा सूर्ग हिंसा बरायमा !- दार-पुद्ध स्वातिका बन्दराधिशारी वी (बराजनके मनुसार) मृतदा रूका क्षेत्रेया अभियते वी !-वहा-पु वह वम औ इत्याजारी इत व्यक्ति वारिसॉकी दें। −र्रञ्ज−वि व्यन बदानेदाना भनी गार कार मचामेगाला। -हेन्नी-ली मारबार रहरान! रान भौत्योंसे बतरना-होबसे जीने मान ही वाना अधि शुक्त होसा । –का खोड़ा–दस बंधदे शर्र प्रत्यन स्मेड संबत्ता सगरनको सुद्दम्बद्ध । **-का सी**रा-दारीरमें श्रीनेपाला रचका भंगार । -का प्यासा-अस लेजेपर ग्रुमा इमा। जानी इटमस । —**के कॉस** शेका~ बदुन ग्रीफ करला। अतिगब व्यक्ति होता। –के पूँट पीना नगरी शुल्लेका की कामा सह हेना। **न सु**रम होना∸दे धुग प्राना । –शीकमा- भरि हद होना शुरुनेते काल हो जाना । -शरब्रमपर होजा-(दिम्नेदे) करणका विग्मेपार शोगा । -धूकमा-धुंदश धून दुक्री श्चवसं प्रैक्ति दाना । ~पानी प्रक करमा~ाहन वानीपी दरव बदाना । -पानी द्वाला-बदुत गम दोना। धन्त तकनीय प्रेवता । ल्याना-बहुत स्वानाः जान हेरा भार शक्तवा । -यहाना-एकपात करना भून-दन्त बरमा । -मॅद्द(को) स्ताना- त्या मना भितन पार सबनाः बारमेक्षे बारतः वह जाना । ~रमाना " बहुत बीहा कीरा देता । --स्याप्तर शहीद अनवा वा शहीरों विक्ति होता-कामका माम करके राजा वद्य बादमा । - मिरपर चप्रकर बोमला है-रायमा वाप क्रिया नहीं रहना । -श्विरपर चनुमा-ग्रामी है थेरी भेष्टा भारि । जब परराद्य प्रदार दीन लगना वि वि

शुरु करमेवर आधाश हो जाना । ∽शुक्र इ होमा÷हैक आरमीयताही मारना भ रहना निरूत ही अनी ~मुख्यमा-बदुष वर पूत्ररा जाना ।

रवजाब व्यवस्था−पुरु [कार्य]रक्तवितित प्रतारमस्थिति क्षीनु ३ मार्थ । सु

पुतर्मीं-दि (का॰) स्तारंतित रणवानमदा साम्। सनी ! रुप्ती-५० कि:) सूत्र वरनवाना, वर्दानः। वि 🕬 मान्तिमा प्रत्या गुन्छ, दाशाके मान्ति वृत्ते (- भाग)। रण भागमय भार-बाह्याला । -- बचाचीह्-भी वद ४४% र शिगमें भग्नेमें धू**म निद्यमा दें।**

द्राव~ि॰ (चा) अच्छा चर्चा। द्वार म^{ा करान}

प्रमोश-वि [फा॰] १० 'खामीछ । प्तमोसी-सी॰ [फा॰] दे 'सामोसी'। लस्माच-सी रावमें यानी घानेनाची यक रागिनी। ~काण्ड्या~पु॰ एक संकर रात । ~टीवी-सी॰ वक संबद रागनी ।

समाबी∽सा दे 'सम्माब'। स्रवर-पुरु हेरु 'श्वव'।

साहा#-पु॰ श्रुष्टमूक-'र्जयक सहस्य मन दोत गदमदी भरकत नैन सरे¹-सर।

ख्यानत−न्द्री [फा॰] अमानत रखी हुई भीन, रक्तको खुरा, रवा सेमा गरमः क्दरवानशी वेर्रमानी ।

स्वार-पु॰ (फा॰) व्यान, विता सीज-विचारः करपनाः मत विचारा सिवाब यादा दे 'क्वाल' ! - (से)स्नाम -प बस्पत, मासमधीका विवार । सु०-सँ न काना −िकदाव, एरनाइ म करना । −में समाना-व्यानमें चद काना इर वक्त वध्य रहता । ~धे कतरमा~पस

म रहना भूक जाना। ख्रदास्त्री−वि सस्पित, सोचा-माना हुना । —पुकाव – पुर मनसे गरी हुई बात, मनीराञ्च । -- महासून-पुर मनसे सोबा हुमा, स्वतंत्र कृत्यतासे क्यमृत विवयं रेखा ।

मु॰-पुष्ठाव पकामा-कर्पनाके महत्त्र शहे करना अन द्दीनी दातें सोचना । सर्जा-प्रश्नानी धर्मना । सर−वि [र्थ•] ६वा तेव, तौर्थः यगाः याद्यः अञ्चयः शामिकरः वीक्ष्म भारताकः नरमः निष्ट्वरः। पुरु गकाः बाबरा बनका बीमा; रामके दानों मारा गंगा वक राह्यस संवासरों मेंसे प्रयोक्तवाँ: कुरर क्यी । –कर =रिस-दु∘स्यं। – कुटी – स्ता, – शृह् – तु गर्थोको इक्तनेका परः मार्रका वरः। —कोश-पुंतीवरः। —कोशसः-पुः पेटका महीना । ~चातम ~ प्रामकेश र । ~**यस्त** ~ ष्ट्रंडर त्या मृश्मिमर कृश । —श्रृंड,—शास्त्र—प्र दमसः। – इन्छा – सी॰ स्टग्बरः। – इपया – प्र भीर बूबप मामक रायस को शबनके मारे के बतुरा। ति बहुत दीवींनाका । "चार-वि॰ प्रसार, तीहम बार बाहा । −ध्वंसी(सिम्)−पु राग । −नाद्−पु यरेकी बीक्षी रेंकमा। वि+ गरेकीसी भावाजनामा। --मादिमी-ग्नी॰ रेगुडा नामड मंध्यन्य । -नादी(दिन्) -वि॰ गर्भके जैसा नार वरनेवाका । -पाध-पु॰ लोहेका बना बरतन् । -पास-पु काटका बरतम् । -पुष्प्-इ. मरवा । - प्रिम - इ. व.वृदर । - मंजरी - ग्री. अवा-माग । - मास - पु 🐧 'छर्बोंस । - याम - पु बाइ गारी विग्रमें गंबा भीता जाव । –शंमा(सन्),–स्रोमा (मन्)-वि करे रोपेशना :-वाँस-व [दि] वन् मकरको संगादि (वृक्त) का मेक-कुकरी संगादि (वैक्त) विसमें श्रम कार्यक्ष विषय है। -बार-प्र अध्यय निव न्रिक्ति मंगन सादि । न्यस्यू-पुरु कुरर पत्री । न्याक ~तु मार्गी। ~हास्त्र⊸सी वधे स्तनेदा वर् ा⊸सान —मी• [दि•] अधिक संज साज —⁴मानदु सङ्गण अगत भीतनको काम नाम धरशाम सनारे'-मूर् । -रक्य-उ विगंत्रीय देश धन्य । -स्वरा-स्तेश जेवती |

परेकी, वसमस्क्रिका ! खर-पुर तुम वास । **-सीकी ह-लो**र बाग (तुम साने बाकी)। ∽तृपण≉−पुदर्शः -पात−पुवास-पातः। ख़र-पु॰ [फ़ां] गणा । दि॰ मूको बहुत बना महा, क्यप्रक्ष । -गोश-पु॰ सरहा !-दिमसा-वि॰ मासमझा हठीः वर्मही । -विभागी-सी मासमदी। हठा वर्मह । -मस्त-मस्त-विश्व भरतः कामीः मूर्स । -मस्ती-की मस्तोः कामुकताः मूलता । -सुना-वि॰ (बीहा) -मिसके सुम गभेके सुम जैसे हा। -(रे)ईसा-पुर्वसा-की छनारीका गंधा । सरक-पु गाँस, वस्काँसे बनाया हुमा नाव रक्तनंदा बाहा, गीठा बराया**ह । त्यी० खडका ख**टक !

सरकना~व कि दे॰ 'बङ्ग्ला': 'बर्फ्ला': विस्था। पुष्तिसे मान जाना- '--शम्य संगे सपुना रारके'-कविचावकी । करका−पु स्खाकनाविमका दाँठ क्रोपनेका दिनका

बरफ । करलरा−वि• शुरकुरा । इतरम्बद्धा—पु (फा॰) शगणा, निवादा क्लेगा, शंसर । लरग॰-९ दे॰ सद्द्र'। करच~पु॰ दे 'सर्च'।

करक्ता-स॰ कि॰ श्वर्थं करनाः काममें साना । करचा−पु• दे 'तार्पा ।

करची-जी दे 'सर्ची'। रे एस्ट भारि। सरस∽पु॰ दे॰ 'बस्त्र'।

सरवूर-पु॰ दे 'सर्वूर'। जरतनी खादनी-ली॰ यसदेश नौजार। करतुषा-पुषक्र निक्रमी शास ।

करहा-पु अंगूरको कमनेवाका पक्ष रोग । न्तरमुक्क+-पु• यह बुराना पहनादा । सरपञ्च-पुरु एक पेड़ ।

लरपा-पुरुण्य तरहको मिनेरै। † एक तरहका देशाती कपक विसे केंद्रक सियाँ पानती है। प्रश्य-नि॰ सौ भरन सन। दु सी भरनम्ने संदर्श।

शरकुमा-ड (का॰) हे 'टारकुमा'। शरकुता-प्र॰ गरमीके दिनीमें दीनवाका एक प्रसिद्ध पत्त । Ho-(हे) को देलका लातूता रंग पक्रवता है-

नारमा वैसेका लंग करे नैसा हो हो जाता है। इत्रह्मुकी−निकारनुवेदे (तथा।

न्तरभर•-पुरम्बदनी इनकर∵शीर इस्का। व्यरभरता शहमराना~म मि धनदमाना। इसवस

मचना । ग्**रशरी•⊸सी०** वे ^कारमर ।

गरस-पु पणर वा भोरेकी ईंडी जिसमें दशरें करने थीरत है। सु॰-करना-सरममें नारीक पीतना इन करवा । न्तरसी-सी शनी।

ग्रस्म-पु रीए भागू। गरमा०~५० व्य परवास । धारसमा~वि शुक्ष्ये शेवराना (क्यु) ।

सर केंडे~पण विवरना। ध०कि० कोई शास रेख (ताध श्वरंत्र जुला भारि) भक्तनाः श्रमिनय करना । स०-ग्राना-देवस बेहनैगामेम सर्वक्षत्र स्टासाः मिर्दिशतः निदद्ध रहक्य भीवनके जामंत्र क्षेत्रा । (दासा-सामा-नि आ दुनियाको देखे समझे तुप हो, अनुभवी । मोमी-प्रायी-वि स्ती प्रम समायमका व्यवस्थ रसनेवासी, रिकाट १) राष्ट्रमी - हो • [सं] रिसाता गाँउ, माइरा ≀ रोजवार-प• धन सीहा। म्बस्यादी-वि मेस क्रमें अविद विव रसनेवास (सद्यो)। संस्थार - प्रयोग दरभेवाचा शिलाही । स्रोसा-स्ता॰ [युं॰] वेक मोदा। धोषाकी-वि , त दे॰ शिकाती । रासाना-स कि गैतमें प्रशुच या शामिल करता; शैकने का भरतर देता (बध्येको) बद्दलामा, गुमामा-किरामा। जिनारको भगाने का होशाई किए बीवाना, नवाना साहि। वक्रगामे रागना । **अ॰ होत्या-सम्बद्ध मारका-साँ**सत देवर भारमा । स्रोक्षार्≉~प्र गित्वादी। रासि∽तो [मं•] सक, क्रीशा । यु जावदश पक्षी। पर्यः दाम गीत। रोहरमा! – प्रमार रेक्टबर्मेडा कारका एक भीवार । क्षेत्रीन(−पु≹•'गिलीना'। ग्रियक्र≠−प्रसित्रासा धनर । सीयद-पुर परवारीका एक कायत वा वहा विश्वमें गीवके अर चर्मादार वा पट्टीदारके दिन्छे आक्युबारी आदिका म्बोर: रहता है: + रोनेवाल: केन्द्र:-चार-प्र• स्टीरार । सेवटिया#-पु महाहः केवर । दोवनहार-पु॰ देनेबाला। पार कगानेबाला । स्तेत्रमा नग• कि दे• 'रीना । फ्रेबरिया*+<u>४</u> रीनेवाका । धीवा-ध नार धेनेको समरत नावका माहा बतराही मानको रीप भार। * नोहा सन्ही मान ह रोबाई-सा शेनेबा काम रोनेबा कारत । सु०-भी देना और यह भी जाना-पैने देखर वेदवृक्त पनना ह म्पेर्वया~प्रभाव संस्ट्रवार हे जानेवामा व्यक्ति । राम-प्र एक तरहकी मीटे शुनकी पुनी पारर । न्यसर-पु [तं:] राघर। स्पेसार। –भी अगस्य मान्या गर्ना स्था । रदेह~र्या० सून्य रास्य । शु०~स्थामा-भृत पर्वनमा दुर्वज्ञा-प्रश्त होता । मोहरण सी है 'गेर'। र्श्वयता⊷स (प्र. १. गॉ. विमा' । सिंबसी-भी आयार नाफ करतेनी संदर्शनी नवती । र्शियमान स्वितामी-भी वे सीभापानी। ११वर-५० दिस्तान और अद्यानिस्तलके शैष पाने य ना एक दुर्रों को प्रम दिशानी भारतका मुक्त प्रदेश रुवपान-तु (च }रोपनामा दरमी ह

पक प्रसिद्ध वर्षि, उपर लेवाम । सर~प॰ ववतको जातिका यह के किमकी *स*वर्श प्रसक कर करवा बनानं हैं, स्वरिष्ट करवा ! -सार्ट-४० कावा ! शर~की [ब•] समार्थ, नेबी। करान सनामने। द अच्छा, अस्तु । -अदिश-वि शमजितक धेरानार । -म्बाह-वि देश भीरम्बाह'। -मुबाह-विश्राहर, मसार, चाइनेवाला हित्तवित्तव । - एवाडी-मा राज-विनन, मैरभर्द्या । -च आक्रियत-मी॰ स्वस्थान (पृष्टमा क्रिमना) ।-य (शे)वश्यत-रशे भन्नारे पंगण सन्दि । -व(शे)मलाइ-मा॰ दुशक्रश्म सर र माफियतः। —सदस्या-स्ती० हे० 'गौरोपुरु:ह'। म० -वाद कडम(--विदा शरमा । मेरभर, रीक्रभक्त*-पु॰ राजन्त्री, दह रकः शेरगुन । र्वतरा-वि॰ क्रमार्थ । य॰ कर्ला रंगदा करता या चारत रस रंगका बगम्या । रीराल-मा॰ था । ('गीर का बद्र) दुन्यरमे राज्यपा —खामा-च संगरसामा, अधनत I ख़्री**राती~वि॰** [का] शैरानस भर्मार्थ मंपालिक हुत्तर्वे मिसा दुवा । - अस्पताम - द्यारताता- दुः वदः वदः धाना वहीं धर्मांथ सुक्त दवा दी बाद दल्प धीकी क्य । –सास्र–पुशुपत मिनी दुई भीता रही भीर । खिरियल प्रार्थिल-भी (फा॰) कुछका भगारे सेसी ! सु॰ - पूछना -सिलना - इञ्चल पुछता, विषया । ग्रीक−प्र [ब+] सम्ब-दन। क्षस्य व्यक्तक-न्योक प्रवासी । प्रीका-वि सी (अ) कृषकः मुग्नी। -पार्येचा-मीव प्रवर्ष शैरम मा। व्यक्तिया गाहिला - पुरु मोबा हुमा व्यवह । वर्गीवरपार्ग - स कि सामना १ र्षान्दां –दि योगसा । र्लोगी - सं नांगा र्सी व्यी-प्र नामिनेटी आसाजा बंदराहे पुरस्केटी माराम न्वीगाह-५ [म्] बर्दा मादन सकेर रंगका पेगः। र्मीय-न्यां+ रारीया क्षत्रको भोर वा छेर को दियो ग्रुपीयी क्षीत्रमे सक्तमकर की काया । प्रमुख्या अस्तर र्वीचा-पु॰ सम्मी वा बाँच जिल्हा निष्य बामा ननारा बदलिये जिविदा पंतान है। र्वोषिया!~प योश देतेगण विद्वह ! र्वोच्छि-त्यी वह अन्न गुरुद्धा माहि मा दुवन्यार शांतिमेंने बहारर दिलानेन्से हे 🕻 ! वॉडिमा~म जि॰ दिमो भोजद्य गामदर यान^{न्दा} क्षप्रका भाग, पुनगी गीय हैना । व्यक्ति-पुनाम । महिसा-पुदे सान्य । महिद्या-वि के का बा न्त्रीका-विक विक्रमाण (ते. अत-")त विशवत द त दूर दर्श ही। बारी हा । र्मीतन –पुरुटे गीता। व्यक्तिः-पु पेष्तचा । इरियाम-यु [सन्] रोमा मीते, बनातेशाला बारशिका विधि-सरे दृश्युत समा युक्त श्रंका की कर है वृत्

-सामगी-सी० निजी सर्वे। घरेष सर्वे। मु०-क्याना-सर्फा वर्णाल करमा व्यवसार वहन करना। -- निकस्ता-एको कागव निकम सामा । स्वर्धना-स कि दे 'रारवणा'। स्त्रचौ-go (फा•) सर्फा, सागतः सर्घ । सर्ची-वि• सर्वे करनेवासा । स्तो॰ क्षत्रमधी वजरत । एवर्चीका-वि॰ बहुत सर्व करनेवाला, सरीब । सर्वन-प्र• [सं•] सुद्धकाशा । सर्विका-सी है । एएवंश रोग गरमीकी भीमारी। पानेच्छा सरपन्न करनेबाका खाध पदार्थ गजन । रार्जु-सी [तं•] सुक्की। जंगकी खग्रा कह कीवा। --धम-पुर चतुराः चक्रमर्थः **मात**ा सर्जार-पु॰ [सं] बॉद्या सन्दरका पढ़ भेद । रार्ज्∽श्री [सं∗] सुबसी। यक क्षीका । रार्ज्रर-प [सं•] सन्दरका पेश वसका फरू। चाँदी। हरतालः पत्राः विष्युः । -रस-तुः तारो । -नेच-पु• विवाहमें विशेष्ठ एक बीग एकार्गक। सर्वरक−प्र [सं] विच्छा सर्वरी−सा॰ [म] दवर । स्पर-५ [सं•] बारा ठ्या बना दाव्यरा क्यान, सीपडी। मिट्टोका कृता हुआ वरवमः छाता। अवस्थि।। रार्परिका−ली॰ [मं•] छतरी। सर्परी-सो॰ [सं॰] श्ववरिका । सर्वे, सर्वे-वि॰ [सं॰] किस्तांया बीताः दिंगताः छोटाः धी भरत । प्र॰ सी भरतको संकवा। क्रुनेरको ९ निधियों-मेंसे एक !--शास्त्र-विश्व किंगला । सर्वेद सर्वेट-पु [मं•] बहाकी गाँवा वाजार, संदी ! लब्ब सर्वेड-५ (संशोधस्या। म्बर्ग-प्र संवा शेखा विवरणा मधीवा एक प्रमेरीय। रवर।य−दि॰ [फा•] बद्धन सर्थ करनवाका । सराँड−वि॰ द्वीष्टिवारः सनुभवाः हृद्ध । यराँग्र-५॰ छोतमें भारते मिदक्रमेगको सर्-सर्वा मानाम । सुरु (द)मरमान्नारमान्छेना-गद्दरी सीर नेयनर सामा। न्यर्रात-पु [म+] खरारदा काम इटलवाका राराची। गरती-सी [म] भरारीका पेशा । प्रसंद-प कि विश्व क्रियांत । न्यपित-वि [सं•] सर्वे, छोश किया प्रभा । व्वविद्या-स्री [श्रेण] बनुर्व श्रेयुक्त अमावस्याः वह निधि निएका भीगवाल पिछके िमाग्री विभिन्ते कम ही। राष-(व [संव] दुष सीताः वेष्ट्याः गीवाः जुनककोरः पु रास्त्रिमा शास्त्र भरतीः स्थामा सल्हासः पृक्तिराशिः। प्या प्रका भगरा । -धाम -धाम्य-प्र राहिबान ।-पू-रि सक् रेक्टनेवाडा । - सृति-पु पारा । - बद्ध-🧵 धनियानमें दिया जानवाना वह यह । -संसर्श-उ दृष्ण सादा रामई !- भी पुरता।

ममद्र-५० [4] पहा ।

राषा-४ देवरका बनाया हुआ जगाई।

क्रस्तक्र-पु॰ तरक पशार्वकी नीतक जारिसे पॅडेकने या क्षिप्रक्षिणकर ईसमेको सामान । रासदी-मा॰ बाठ । सम्रति~वि॰ [सं॰] श्रद्धाः । प्रकृतिक~पु• (र्शः) वहात्र । लाखमा-भ कि॰ पुरा रूपमा पठेशकर होना भुमना। शु कि भोड़मा, सुकाना; धुंपरूमें गट्डा बनाना; * सरकी पीटना । सक्षयक−पुदे 'बटमली'। लसबसाना-म कि श्रीकराः गुरुत वेचैन होता । **सब्दब्धाहर-जी॰ श्रव्यानेदा भाव वेनेतो: संस्थाते ।** सकस्त्री – सी॰ दरुपतः वेचेनी, पराइटः श्रीम । लक्षमस~पु॰ राक्षमछी∽ला दे॰ 'सम्बक्तो'। लखमकामा-म॰ कि॰ दे॰ अस्पराना'। श्रक्तमलाइट~की दे० 'बल्गकाइट । व्यक्त-प्रमा ख्रस्क-प्र [ज•] शका, जहप्रश -श्रीदाज-वि॰ वाषा शक्तिवाका । -श्रेदाजी-स्रो वाचा, सक्चन बाक्षना । -दिमारा-प्र दिमानका दिगङ आमाः समकः पानकपम् । वि॰ क्रिप्टकः दिमाग विनद गमा ही। सनकी । स्तत्सा~सी॰ एक वर्ग मधकी। सकाईी ∽ची॰ दुस्ता । सकाबारा-ब्री॰ [र्स॰] तेश्रवहा । सकामा~स॰ कि । याली करना। गब्डा करना। गेंसामा ! स्रक्षारां−दि जीचा ग्रदराः। चस्रास~ची॰ प्र दे 'शिकाक । ख्रकास~प [म•]धरकारा मुक्ति, निवृद्धि (पाना, द्दोना)। क्रशासी-ला ६० क्रमास । ५० वदाव होएसाने आदिमें छोट मोडे काम ऋरनेवाला मण्डूरा ऐसा माहि यहा करनवाला भीवर । म्बल्डि∽क्षा [सं] स्टी स्रसित्त#-वि स्पर्कितः प्रतितः दिका हुनाः गिरा हुना । श्रक्तिज्ञ∽तु० [सं०] क्यामका धाँदा । शक्तियाम∽प यह स्थान वहाँ प्रशन मान्यार रती और गाँधी नाया बैर । मु -करमा-कारी हुई पामस्का देए क्ष्मानाः सष्ट दरमा । स्व क्षित्रामा-स कि साम बनारना (करे बदर आरिका); र्ग साही बरमा । एक्किस-मी [का] चुमना याका रंकिश, देर । व्यक्तिहाल−५ दे• 'रासियान । राही-वि शक्तवेशना । सी॰ [सं] तत्रहनदी मीठी । नसी(मिन्)-नि [में] विसमें स्वटर हो। मु स्वि। रवसीज~सी (क•ो गारो । रासीता-पु देश राग्रेमा । स्पक्षान-पु॰ [मं] दे॰ पाकित । रामीका-तु [ल] वचराधिकारी जानशीतः हैनंदर इतसङ्ग-पु । [स] बोदममहिः सीक्षममूहः बगुन् । -(हे) (मुक्त्मप्र)का क्षराविकारी। नेना: मनद आपि वसाक्ता मायवः बूटा दराये; मार्रेः नावयो ।

श्वसञ्ज्ञत=~सी दे 'सिक्सर ।

द्यारिया−र्गगङ र्पराम के होती -- एक है के प्रीति । कारिया-गो । कटोरी: नुवैके क्यमें करे बप श्रीकरे दकते ! स्वीम-पु निमाफ, सावरणा बेठना मोटी पादरा बोडॉबी क्परी स्वना को बेंसुकको तरह क्षण करती है। [सं•] मिरवाल मोर । दि॰ विस्तांन सँगता । म्बाख-पर्क पित्रको स्त्राहर स्वरात । न्दोसक-प सि॰] शिरकाणः कपका सपारीका किन्दाः सीनी: अपानी ह मालमा-म कि मानरण, भगरीय इंदानाः वंधमरहित करनाः दरारः क्षेत्र करनाः चीरना क्षेत्रनाः प्रद्रदः बादिर करनाः बारंग करमाः बकानाः रशानित करमाः कार्गारंग बरना । स्रोमका - व रात्रे प्राप्तींमें साथ सन्द । चाकि−सां[सं]तस्याः न्दोसी –न्दी रिजाप पैनी। बचाई बीसा बपश जिसमें वर्षे म मरी हो । स्रोबा-प दे सीवा'। प्रोह्मा−प (पा+) अनावको नामा फ्लॉका गम्बर ! **→** ची-दि॰ गेठमें गिरे हुए बान जननगढ़ा। इमरेकी निपा पांटिसामे काम चठानवाला । गोसमाः ~ध• कि छीनमा त्रक्यमा। बाह-सी ग्राप्त बीन्सा ही पहाड़ोंने बीचनी ही नगह हरों । साही-त्यी पर्चोद्धी इसरी: बीघी: ब्हारेंदि बीचवा गर्स गरहा: • व्ठ - सर सरसाहि होति अवाग हमदि नेता ना सीढि −सर। स्टॅिनो यात नगडाः अत्र वस्त्र **ब**रनेकागहरा मह्या । सर्विचा~त सार्ट छन्द्रा प्रदाशाः मिठाई सादि गानेकी भी ने रंगनेका एक तरहका छन्छ । र्गोटन-मा गॉस्नेक क्रिया गरीय । प्र सुरक्ष । रही म∽प [म•] धंनीर चित्रन धोष-नियार गीर ! रशीप्र-प [अ+] इट मन आनंद । - नाव्य-ति दरा वसा भवानका रपार-त गोरनका काहा तिसक वित्रोहा विशेषा एक महताः एक सरहका मरानी वकरतेका जार । कारमा-एक्टि गीर करना निक्क स्थाना है उत्तरना पुरुष्या ।

धानेबास्त १ क्यात−वि॰ (सं॰) प्रसिद्धः दक्षित वसित । –शहंबः – गर्हिस-वि वदनामीसे मञ्जूर, वदनाम ! क्याति की [छं॰] प्रसिधि ग्रहरत, नाम हास्य प्रशंसाः वर्णमः वान । रुपायक-विकास (सं) रुपायम बरमेदाना । क्यापन-प्रवर्शिको शहरत घटनाः प्रबट प्रसातित दरमा। शापना शोप पापको प्रकट रूपने रगोदार करता । क्यास्ट—प्र• दे॰ 'खवारु'। यह निरोध बान प्रप्रति। • शेवा ARIA I रुपासिया – दु॰ क्याल मानेवाला । नवासी−रि है 'गरवासी । ऐक ब्रोडा-प्रीयुक्त करनेराक्यः समग्री, बहुमी । विधान-प्रश्र स्वारं । दिवरीय-दि॰ शीध-संस्थी, इंसाई। स्त्रीब्र-मण्डाहर ईसा । प्रवीदा∽दि (का] क्या द्वमा द्विवित । ल्लाजा−प पिटा मालिक सरकारः क्या मुनककार बावारीको पर्वाः विकास सीवा जाति ! - विकार-५० है 'निक्र' । –सरा-द्र रनिवासका हिक्का सैका श्राप्ती महत्त्वा (दिनश्र) शारीन्छ । एकान-प्रश्रिकाशी शहर उरुत । न्यान्य प्रोत यह रोशना । −धोश-पु॰ स्नान इंडनेडा दरहा । स्वामी-सी॰ (फा॰) परमठ दशमा (समासके संत्री व्यवद्यनं – 'धेरस्यानी') । ल्याव−९ (फा } वॉन्स सक्ता। महाह−९ सेनेस क्षमरा छपनागार । -व(को)रावास-पु॰ क्सना सम बहुम । -(बे)पुरस्तीश-इ शत्रीसमी नीध वेराश्रीको मोह। -राष्ट्रकत-मो वैसश्रीको मीरा पेमापरी अनंतपन। रम्बार-दि॰ कि। देवसील देशप्रका संबद्ध वरेग्रान । एवारी-को॰ (का) जिल्ला नरसनी। गराधी नरसनी। छ्वास्त∽शी॰ (का] सर्वादेश इच्छा। मार्थना (देश समागरी ब्लानरन) । -वार-वि आहमेपाना १९५६ प्राप्ती । क्षारमा-नि (चा॰) बारा द्वमा शंक्षित र ध्याह-म (याः) वार संपत्ता वा । न्याचाह-म गीरा-५ असी भारिको बानेवानो एक शरको गुजनी । बादे वा रिया पार अवस्या अवस्य । शयासी-नि॰ कि। विश्वतिकास स्थाद । रावादिर-गा (धा) गरिम । - नार्र-ड मनश् श्वादिस-मी (या) १९०१ पत । -मेर-पि इच्युक्त अपर्दार्थ । ग

क्तीहा-विक अधिक सानेवाला, देहा इस्टेबी

सीरहा-दि शारा रीयशन्मः संबा ।

लीममा-भ•कि प्रवस्ता श्रीशामाना। सीचाना-म कि बनानमा भौराना।

दि सीरा रीगतामा ।

शाहिक-लोक निष्यक्ष गांधी ।

ग-"न्जागरी कर्नमानाः कार्यका शानराः, वर्षे । कवारणः हे

गीरा-भी जेवा र ५० महिन्द्रांत्रका एक महिन्द्र दियो वृतिः क भाविक संदर्भ (का) श्वार - वराय-क्षा विवा

था बुलगी मंग्रीयो पारावे सीवेमे निक्रमा **दर्श** (जरी) अमीम । —शिकाम-वर्गः वर ब्रमीन मी मान्धि बत्राने बर भार है

र्शनहें-भी जैनली क्राफिट वर बिरिया ह

स्तंह~पु॰ [सं] संदित होनाः सांहसे बनी श्रीमः सिसरी । साँब-सा॰ गुरुबा वह भेद वो गोला बोता है और जिससे शकर बनाते हैं राष धकर, कवी भीनी। गष्टा ! ~सारी-सो द॰ 'वैंडसारी' ३ र्सोदमा - स 🏗 अजनमाः इत्तरं इतने करनाः पनानाः। **भाडर#**—पु॰ सँगराः बत्रता । खांडब-पु॰ [सं] महामारतमें वर्णित एक वन किसे अधिने मर्जुमधी सदावतासे जलानाः स्वीवसे नगी न्यीन, मिसरी भादि । --प्रस्थ-पु चृत्तराहुसे पांडवॉकी मिका हभा स्वाम वर्षा छन्दीन बह्मस्य नगर वसाया । – राग--पुरु मिसरी मिठाई। स्राहिकिक−पु•[सं•] इत्तवारै । साँबा−पु सह। छीवी भीर कुछ चीवी तकवारा माग राह । मु॰ -वजना-तक्यार यसना, तुरू होना । स्तरिक−पु[सं]धक्याः। रर्गोद्यना - प•िक द्वाना -नोरि दवि कोने सांधारे -- EX I काँप~सी फांक टुक्का। र्खाम=-प्रथमा देखाम'। ध्याँमना−स क्रि•दे॰ छामना'। **साँबाँ**-पु॰ दे 'सादी'। र्योसना-भ॰ क्रि॰ यदेने प्रमान आदि निकारने या संस्तृष्टे किए प्रकृति सटके और आवाबके साथ दशका शहर निक्रमना। चाँसी-सी गाँसमेकी किया गरे वा शासनात्मेमें सुर सुराहर दोनेस फेफरेने सरके और आवानके छात हवाका बाहर निकलना एक रोग जिसमें बार-बार यह किया होती है। खाइन-वि॰ [म] स्रवानत करनेवाका, करवा जा जाने बाला वेरेमान। चाँहैं, लाई-लो॰ किन, परकोडे भारिके बारी भीर रक्षार्थ स्तेत्री हुई महर्द्ध संदद्ध । साळ-वि वद्यत धानेवाकाः वृत्त केनेवाकाः। -शीत-प्र रानिके विष बोस्ती करनेशामा अतक्रमदा बार । साक-वी॰ पा] कुछ मिद्दी। राज भरमः तुष्ण बलाः मृतस्य । वि जुन्छ। छोटा । वा जुछ गही। विश्व कियू । -अंदात-पु भूरद्वे राग विद्यासनेका वरनना दिने भाविकी दीवारका वह छेट जिसने शतुबर गोला बादि थकात है। -बाम-पु॰ भूक-मिट्टी भूवा वें,बमेवी बगहा दुनिया (का)। -माय-नु श्यक-दमस्मव्य । -पाधर -- अ कुछ नहीं (त्याद-पत्थर भगता)। --रोब--प्र हारह हैनेवाला भंगी । -सार-विश् शुक्का साथीता बोनः विनीतः। -सारी-न्यो॰ दीनताः विनन्नताः। -(क)पा~न्द्री परस्त्र । वि व्यतिशीना विनीत । सु०--उदना-तराह परवाद हो जानाः बदमागीः वरमानी दोमा । - अवाना - सदस्य फिरमा आक शानना । -

करमा∽जनादर राग वर देना, भरम कुदता बनानाः

त्तवार वरवार कर ≧ना। −का पुत्रसा-मनुष्य। −का

पंपर द्वाना-प्यन दोना मरना। -बारकर-वरि

मरनार्वंद्र (कोर्र कात कडका) । —चारला चपून पारमाः

44

~**श**स्त्रमा~(व्यवह) पूर्व टाकना, क्रिपाना; भूस जाना । -बरसना-स्त्राप्त हराना, भूष दश्ता । -में मिछना -पूक्ते मिलना नह, परनार होना ! -सियाह कर वेना-बक्राकर राज्ञ कर देशा नष्ट कर देना । ~सिरपर बदाना-मातम मनामा, होक्रमें रोना बीना ! साकसी-सी॰ फा॰] एक बनरपविका दाना भी इवाके काम भारत है। सत्कसीर-सो॰ हे 'पानडी'। ख़ाका--पु॰ [फ़ा॰] सक्की वा चित्रपर पारदर्शी कागत्र रराक्ट बनावा हुआ मक्क्षा था विका क्या नक्ष्या। रेला नित्र; श्रीवाः श्वुक योजनाः यक तरहका कशीदा (स्ता रना, गाँचना) । सु०-डङ्गना-चिस्ही स्थानाः दरसाम क्राकान-पु॰ [गु॰] समारः शानके पुराने समार्थेकी **च**पाचि । व्वाकिरतर-मी॰ वृम्य राघ भयुत । ख़ाकी~वि फि:] मिद्रोका बनाः मिद्रोके रंगका मटि याका। पुगरियाका रंग' इस रंगका कपशाः पुक्सि या फीबको करी। शाक्षमाँका यक संबदाय । — मोद्या-प्रश्निक शंडा किसमेंसे बचा म निकृत्ये, खाली, विमहा सेंडा: दोगका (ठा॰)। सास+∽न्ये शास्त्र, बृक्त; पूर्ण । काकराब-थु॰ एक सरहका बाजा। काग−पु दे० 'सॉन्'। क्राग~५+ कि] सुरक्ति श्रंबा । सारामाण-अभिक्तिः सुमनाः। फ़ारीमा∽पु॰ कि:] तते हुए मंद्रे या बनका साबन । काज-को (पदाने गुजरो होनेका रीम दारिछ) काजा-प याप, यानेको पीता मेरेको बनी एक मिटक मिठाई: एक चंत्रको सम्र १ काञ्चिक-पु॰ [सं] भूना द्वमा वान, सावा। ग्राह्मिन-पु॰ [ब॰] सर्वाचा क्रीशायक्ष । रशामी १ - स्वा गाय प्रार्थ । कार-प [मं] हिम्मी, अरबी ! स्त्री • [दि] चार्यारे राटिया । ~न्यटोस्टा~पु (६०) एडरबीका सामान वीरियान्यना । शु०-बटना-सारपर हो भव भूव श्वागका मर्वत्र दीना, सस्य बीमार होना । -पर पहाना -भागर दीना । -क्षे उतारा जामा-मानुबन्धरण होना ! -स सरामा-रोयस कारण चढने-रेटनेमें अग्रक दो जागा। मारा भारा॰~दि॰ महा अन्त । रगदि रगदिका, स्मारी-स्मे (मंग) कर्या । silda-B stant ! ग्राइब-पु छ ध्वरीवान्त राग काइव । न्वादी-स्त्री समुद्रका वद माग भी तीन और हाइटीमे पिरा क्षेत्र नसीत्र । व्यास-पुर्व (में०) ओरबार न काबः कुर्मी गर्द्दार साई । वि सीश दुमा । ~भू~न्या॰ सार्थ । ~क्यबार~द

थीनता दियामाः स्थोकार करना । —ग्रानमा—किती

चीजकी तरुपक्षमें बहुत हैरान होना, भारा मारा फिरना ।

गंदनाजा। —सास्त्र-भी॰ गंद्रमाणा राग ।—सास्त्रिका— त्री॰ कजानु कता। —सास्त्री(डिन्ह)—वि संदगाणा रोगने प्रता। —सून्ते—वि बोर मृत्य। —दिस्त्रा—स्त्री॰ रिगाल बट्टाम। —सृच्यि—सी मृत्यद्रा श्वर आव। —स्यत्री—की १० गदरकरें।

र्गडक - स्त्री एक मनी को दिमालयस निष्क्रकर गंगामें मिनती है। पु॰ [मं॰] मंगाः गिरहः चार कीरियोके मृत्य का एक सिक्ता गंगाः निज्ञानः वायाः क्रीवाः पार्वक्यः ज्योतिकता एक अस्य ।

शिक्की न्यु संगतिमें स्थः ताकासी [सं] गेटक नदी। मादागकाः ∽युद्ध~युः,∽विस्तानसी शाक्यामकी विदेशाः

र्में इसरार्ग — पुत्र को सोटा और छोटा बच्च या कमरी को छोटे बक्रोक भीचे विद्या वी जानी है साकि बेसाव-पामाने से विन्तर न स्टाब हो।

गुडमी−ली सरपेटा।

गुँबरा-पु॰ तर अमीनमं शेनेनाको वक यस ।

र्गेडरी−ला गाटर नामक वाताः ग्रीडसी(सिम्)−पुर्शाः]क्षितः

र्गवति-पु [मं•] उपेशा अस्थवा नादि कुछ नश्चत्रीके

শ্রহ বাস হ'ব।

रीहा-बु राहिः संच एकर योठ कामा तुम्य भागा बा पंदर-वासीकरी तरह परणा जायः शैने भान्ति रूक्त रेपील इकता बंद्धाः योड्ड कोमेर्ड चलानेत्रय पहा सारी मारीः चारका एक्ट्र (दीवी ऐसा), कामा र मीचेर्ड किर संदा हुमा रेप्यता हुस्डा । लाखीं च-पु जंगर संगठ सार-कुमा रेप्यता हुस्डा । लाखीं च-पु जंगर संगठ सार-कुमा

गंडारि-५ [सं•] क्यनार ।

र्गडाली-ली॰ [मं॰] सपद द्र ।

तीं वासा- च यक विश्वार विश्वमें प्रवेधे शिरेपर कोरेचा समदार फलक कहा होता है, बरहा; एक बीमार निष्छे भारा कारते हैं !

गुँडासी-सी॰ रह भीबार बिश्मे भीपायोंके निम श्रासा बारत है।

रोडि-मी [सं] देइका चड़ शमाः योगा।

र्मोडिका नर्मा (तं) यद तरहका छोरा प्रथम वद वैया देनां क्षीर्म की प्रथम व्यवस्था पार कर हुछ(मि वर्टुं क मंदी हो।

संदिनी-भी [मं] हुनी।

शंबार-पु॰ [मं॰] चेंहेबा साग । इस बीर ।

गंद्रीरी-मा॰ [] मेन्द्र ह

र्मद्र-पु [त] संदारप्राः विता । स्पष्ट्-पुरु वसुत्राः सद्द्रक -पु र ने प ।

गह-दि सरासी नि के नेन्द्रगरा

संह्रक-दु दे पितृष ।

गहेल-वि [मं] ग्रीध्यात्ताः देगः। ग्रीहण-पु [मंग] पुरुष्कः पुरुष्कः। व्याप्ते सेन्द्रां मीद्रः। ग्रीहरी-व्योप्ते देश चा ज्यात्रः, सुरुष्कः व्याप्तिः। स्वर्णन्यः।

युगने वा बन्दूद देशन हिन्द बन्ता प्रम्या ६ स महिल्ला इंदर्ग ।

£441 i

गडोपधान−पु[शं≉]त(स्वाः। र्यक्षीयम् – प्रसि•ी बहा धिकारोह । र्मेश्वोरा-पु॰ इस कवा गत्रुर । गंडोस-१ (ई॰) गुरा बी८ निराण। र्गतप्य-रि॰ (सं॰) भाने योग्य, गम्य । गंता(त)-प्र [4] बार्नेवाताः राजेवानाः स्टब्स करनेशला । र्गम्-पुर्व र्शिको मार्गः पश्चितः बाजवासः । र्गतिका-को॰ मि ी होता गारी। र्वजी-सी (वंश) योकागाची वैस्तगारी । र्गव-न्या का निल्मता सर्वेष, गर्गा, ररहू । मुरु बक्ना-गरी वार्ते गामिनाँ स्टमा । र्गदर्शा –न्ता (का] शक्तिका किलोबना मनः भारदी बर्ब सरीब भएता। र्गदमा~पुर प्यात्र कद्युपदी कारिका एक मग्रामा एक विशेष पास, श्रमा । गॅरका-विश्वास मेळा-क्षेका । श्रंदा∽वि (का] मैला। मापत्क बदव्धरः विद्या हुम धराव तरा ।-दहम-विश् विश्व हुँहमे वरव करे गर्दा बाले बढ मैबाका । -बहाम-पुरु बहु बीहा स्मिर दोनों स्वतः मीरिवां ही । र्गेदीला~दुष्कतर≇धेयसः। र्गदुम~ दुक्ति] गहुँ। − शुमाक्षी क्ररोप्त+पुर्गी रियादर जी देवमेवाला, हम, दंबर । र्गतुमी−ि (का•) गरंद रंगदा, दरही सैरर्प्रशाना ! र्वाच-त्ये॰[सं] बास ब्राइयोनस्ट्रा शुप्र(म्या॰)। हुएर सुर्वित इच्या विशा द्वाना बहुछ। बहुन हेम्स बारिना केपा हेंच, प्रकार माममाना ग्रंथका पुरु सहस्रम !-बेर्ड -पु॰ क्मेक ।-कारिका-स्रो० सुर्वापन कराव कर् तैयार करमे, क्षत्र वसामेका काम वरनेवाली हारी। कासिका –कासी–स्रो० आयुक्ते मात्रा *स्वर्गी।* ~काड-९ अगर I-कुटी-सी मुरानामक नेंग्र¹री ~कुम्मा~स्पे॰ यनिहात्। -इतिहा ~षडिम" सी दान्ता। -इ)विका-सी वयस्य-रिटेरः च्यान-चु वह दावी विश्वके कुमन मर शरदा की वर्ष महारकी हासी । लगुरा-वि - गंध गुरुप्रकार संबद्ध ~सल~कु गुवर्गनन सुर्गावन प्रमा - अस्य - वै° वि बात र न्यान्सी शाविता र न्तंद्रकन्तु रणपन थारक। −नृषै-पु *रार्वाशा* (सबस्र। *नर्म*ी मृत्या क्या। -संघ-पु शुक्षत्व द्रशोको परका बनाबा दुमा तेल सुधर्शार देल । - ब्राम-इ अबर कुशा -थ्-पु पाना -थ्मा-मी प्रशोधी -बार-य अगर । -प्रथर-य शुर्मध्य प्रम विश्व कार क्षति। -पाश(स्ति)-ति को सुर्गात । क्याचे वा पारण क्षि हो । इ. जिव । -भूति भी बर्गूरी ।-सकुल-पु ए- रह ।-सापुनी-संपर्कार -नाडी- ि वर्ड । -नामा(मन)-उ^{र्ड स}र्ण तुण्यो ।-माम ६-९ १ नंदमारो । -मामिदा " माणी-की॰ भार १-मिलयान्तः १४ तराही कोती। -निसा-भे॰ श्रदता १-४-१ १४ न्यिमे न्यर

छार-प॰ का] काँटा, काँसा मुर्ग, चीतर भारिके पाँगमें

निकला द्वमा काँदाः हैयः, जवन १ - झार-पु काँदीसे भरी बगाहः काँदीका जंगल । - शार-विण काँदिहरः ।

–पुरुव−पु॰ गीठ सुजनानेका करेंगा कटका साथी।

-वद -वस्त-प्र कॉ.पेंकी वार । सु॰ -सामा-

बसना हैप करना। - देशा-बट, क्वेश देना (६०)।

वरको वरवाद करनेवाका । —झ्ल्या—पु॰ मस्त्रितः जपा समान्यान । न्यमीनसी जापसी कवार्व, गुरसुर । —जाद-वि (दिसीके) यरमें अनमा पका दुआ (काटी या गुलासका बंधज)। पु॰ सक्क, दास। -सकाशी-श्री भरको तकासी। ~तासाब्~पु॰ समुरके घर रहने बाला बामादः, परमेवारे । ~दार-वि यर-गृहस्थीवाका, ग्रहरभ । --दारी-सी॰ घर-ग्रहरभीका काम, गावस्थ्य । -मशीम-वि॰ को परमें ही बैठा रहे, फर्टी बाने आये मधी। वेदार । -पुरी-सी॰ निसी नक्छे, सारगीके यानीको भरना । - बदोश-वि जिसका कोरै वर और ठिकाला न दो । पु॰ धर्मी (श्रुरकियोमें रहनेवाकी) रवायी बाबामरदित जाति, जन । -वरवाद-वि धर-वजाह प्रशक्त । -बरबाडी-खी थरका प्रत्रका ।-शसारी~ स्त्री (किसी गाँव, समरक) घरोंकी निमती करना। ~साज्ञ−नि• भरका बना। सामि-सो (सं] सामः + भूँडा ओरा प्रकार, मेद । कामिक-प्र• [सं] दीवारमें किया दुवा छेर, दरारा मेंच । • मा• ग्रानि । प्रातिष्ठ~५° (शु•) सँव मारनेवाका । स्तामीदक-प्र• [सं] भारितकका पेह । सापगा:~की॰ [मं] आकाञ्चरंगा । सापट-की कानिस मिद्दोनाकी बमीन। साबर-पु दे॰ 'तवाव' । देशना । मामा-पु॰ धीरहके मीचेक बरतनमे तेल शिकाकनेका मिट्टीका वरतन । म्बास-तु तिफाफाः भीकः क शंधा । क विक धारीवाता । शाम−वि (कार) क्याः को क्काथराया या क्या म क्षी। समीप सनुभवदीना परकेने कम होता (बार चीक): मनुष्क, अनंतर । ∽इसाक्तर-पु• वर धनका या गीव विसकी वहसील सरकार, रिवासत सुर करे ।~शबाक~ वि मासमञ् वर्षः । -शयाखी~को॰ मासम**श**ीः मासमदीया, इचि.विन्यः विभार । ~हहसीस-मा कवामध्ये वसूनी भी घरकार शुप्त करे । अ० -धवमा-घरना कम पहला ह पासपाद्व-म दे 'नग्रहमम्बाह'। रराममा-स॰ कि माटे मादिशे (परे मादिका) मुँह रह करना। कियाचेमें बंद करमा। र्वामा~तु (का] करून धेरानी। रुगमी-भी । का] कपार्र। हमी। दोषा अनुभवद्योगना । रामुग्न-दि [का] दे 'नाओश'। रामुक्ती-सी [का] है 'सामौदी । सामोश-नि॰ (का) पुत्र मीन। रामोशी-सौ [पा॰] भुष्या। इराया-पु (का) अंटक्रीश कोताः मुर्गोका अंदा । -वरदार-वि भाषमुता । -वरमारी-व्यी वापसूनी । सार-पु सारा बार ग्रम सारापमा रेहा सीनाः सन्तीः रामाः = दौरारा : ४४रा -- वर्षः म जान भार कतरारै आहत भाग बहात -मुहा [मं] हे साहि ।

प्रसार हे (आप्तीर्वचन) ! -श्रायादी-की॰ घर वसनाः समृद्धि व्याद ! -स्त्रराच~वि॰ जानाराः वेषर-वारकाः

> -निकसमा-सम्बद्धः बसन मिन्मा । -निकासमा-क्दला केता, बढ़न मिगमा १ सारकभ्या है 'सारिक'। श्रारा~वि विसर्वे साराधन हो, श्रार गुणवाकाः मम**धे**नः क्रमभा । पु यासः, क्ले वॉबनेकी माधीः वदा टोकराः, बाबाः परु भारीयार ऋषमा । ख़ारा-च [फा॰] कहा परभर, चट्टाना एक कहरवार रेखमा करवा । - शिशाफ्र - विश्व परवरमें दरार टाल वेने, क्लरको कर देनेवाना (तेग, तसवार) । सारि-वर्ग (सं•) १९ होलस्थ एक वीछ । ख्रारिक~पु (फा॰) सन्दर सुद्दाराः फारसको खातीका पह श्रप्त । ख्रारिज~वि [श॰] वाहरः वःहर किया हुमा, वहिम्हराः काग दिया हुना। - क्रिस्सत-पु सबनफ्स समित्र (ग) । अ॰ -करना-नाहर करमा, निकास दैमा। विचारके अवीरय मानवा 'विशिष्त' नामंबद करमा (मार्किस, दरसाख मादि) । शारिमा−वि [थ] शबः पारिमी । ज़ारिकी--वि [मर्ग] बाहरी, शक्का परराव्र-एर्नची । प्र मुसक्तानीका एक संप्रांच को बाबोकी सिकापराकी न्यायर्थनतः नहीं भानता । —इखाञ्च-प्र• अपरी उपवारः शीवभद्रे वाद्य प्रयोगशका इकाञ । थारिकः नगरिक्त-नगर•[फा•]सुत्रको; शुत्रकीको नीमारी। सारिष्ट्रशी−वि+ (का+) जिसे सुबन्धका रोग हो । ज़ारिस्तान-पु॰ वे 'खारवार'। बारी∽लें!• [र्व] दे• 'लारि ; [हिं] शारी नमद। वि+ शारा । ~बमक~प्र कॉना मिट्टीसे निक्का द्रशा जमक जो नेहीं माटिक्षो क्षिष्ठांबा जाता है। साहर्यो ध्याहमा∽द्र यह तरहड़ा गहरा शांच (ग। उन्ह (गर्ने रंगा हुआ क्यशा । सारेजा-पुत्रंगनी कुसुमा गाकॉर-पु [मं] गथवा रॅबमा । रमाजूर-पुर्शन] राजुरके रसमे बनी द्याराव । नि राजुर मेर्नपी या धात्रुरमे पनर द्वमा । म्बार्वा−मी [∺] वेदानुग। व्याप्त~सी स्वमा चमक्षा विख्या। धीवमी। भाषा चरहा। मृत देश भीषी अभीना गररी अगदा रगारी । † नि॰ वासा । ~वृँका~पु भीवनी भसनेवामा । मुर्न ~ उधेशमा श्रमना पोरमा दि साल उर बाद बदुरा मारमा। --व्यीवहर भूमा भर दना-पुराने जमानेका वह कटीर इंड। -लियमा-नीवित शरास्त्र समहा अन्य दर तेमा । (अपनी)-में सम्त दोना-अपनी श्विद्धि सन्ह होनाः नेपरवा हीमा ३ ग्रास~तु मि विश्वनश्चा भाइतिक वासा विद्या तिला

र्गमातमा – गच गेषाइमा(इसन्)-पु [त्रं] गंगक्र। गोबाहरू-पु [सं] आठ गंपद्रव्योंका मित्रण, श्रष्टगंप (मित्र-मित्र हे बताओं है किह बह योग शित्र मित्र हैं)। गंभिक-वि (से०) रांधवासा । पुत्र दक्तररोद्धाः गंबदः । र्गोधिमी-सी॰ [मं॰] महिरा: एक गंबह्रथ्य । वि स्ती॰ गंधिया~पु॰ एक कुमच करनेवाला वरसाती कीका एक फनगा वा धान वारिकी फसरको मुकसाम पर्देशका है। रांधी(धिम्)-प्र• [सं] श्रमकरोश सरमका वह वास्। वि श्ववासा । ~ (चि) प्रश्ने~यु ग्वपर्णे । र्राष्ट्रीस्प्र - वि॰ गंटा, मैका- वहता यानी निर्मण वैंदा गंबीका दीव"-सम्मी। गंधेंद्रिप-स्री (सं) प्राजेतिय। र्मधेत्र~पुयक्ष तरहरी य छ । र्गाप्रेम-पु एक रूध शिलको परिशों महानेके और शास, मद भारि दबाद कान आती है। र्गिका-पुण्य विदिशा । † नि॰ श्गव दरनेशका । र्यधात्कर-प्र [मृं•] दीमा दमनद्र । गंधोत्तमा -स्री [मंग] अंग्री शराव। गंधोपजीबी (बिम्)-प [मं•] गंधा, श्वकरीय । र्गाघोपस-५० [सं] अपदः। र्गधोसी-ला॰ [मे॰] विक साँठः रहानी । गंधोध्यीप~⊈ [मं] सिद्धा गंचीत-५० (गं०) मंपरिकास ह र्शेच्य-पुरु [मेर] सुर्गनिः सध्यो गंबनाको बरन । र्गमारिता। र्गमारी-सा॰ (तं॰) यह देश विस्की साक भौर परु दवाने बाय भाते हैं। र्गमीर-दि [मं॰] गहरा; केंद्री भीर मारो (बालाव); बंद (भनि)। गहराः गृह दशोषा श्रीच-विचारकर बीलनी शाम हरनेवामा क्रम बोसने और हैनी-अजादने हर रहनेवामा संबोधा । प्र बंभीरी मीड् । क्रमकः एक राग ! -बेडी (विन)-वि अंक्शकी परश्च म बरनेवाका, बार-बार अंद्रध मारनेपर भी आर्थि कार्ड म करनेवाला बढाला (शामी) ह र्गमारक-विश् सि है बहरा। गंभीरा-भी॰ मि विकास सर्वा र्गजीरिका-मी [मं] क्या नगा। गैंब-मा दे 'वी' ! -हिंग-ब शांस व्यक्ति ! गेंबर-म्ब होरायक। र्मेश्चर- नैक्ट'का मधासनत इत्त । -हम्ब-वि द्वारी जैमा। बदा । −समला −९ वेंबारीओ वर्द्ध । र्वेबाळ-दि वैदानेशल वदाहर गैंबाना-स कि शीता, तह करना वा दो बाने देशा (मन्दर) इसमा । र्शेकार-वि नांदरा रक्ष-नेवाला देवानी। नर्गे, अजारी। चप्रद्र । –हारू-को शैक्पदमाः –दा अट्र~प्रवट REPT 1 ग्रेवारिम-भी वैशा की। र्मीवारी-वि र्गशस्त्रीको ग्रेशस्त्र गी॰ वेंगर् भी। गैबार-४ विषयभा देवका बोदा ह

र्वेबेसी १ - म्यो र्गमार स्यो। र्गस =-प्र•, भी• दे• 'ग्रांस' । र्वेसना॰~ए॰ वि॰ चढनमा, इसना। स. कि. बनावागः टा बागा । गैसीसा-वि विसमें गांधी हो। पुननेपाला गैसा हुना, पर। ग~ड [र्स] योगः भगेश ग्रह मात्राः मंश्री । ति॰ गमन करनेवासाः गानेवासा (समासदे श्रेट्ये स्ववाद-'नपव' 'सामय , इ०)। गर्रहरू-प्र• दे • 'पर्यर । गहनाही । – सी पात जामकारी । गई-विश्मी ('पदा'का सी+ कर) वा चर्ग नवी है। -बहोरक-नि यदी, वैदादी हुई थीमको दुन प्रम कराने विगरीकी बनानेवासा। मुख् -करमा-हरह हेमा- संयोक न करवा / गक्र∽ली गाव । वि+ सीधा (भाइमी~स्प)। ~पार= ह गावतेलोंके पाना चीते है किए नवापा हमा सन्दर्भ विभा शीदिबीका बार । गचरिया−न्दी निद्री वादी। राह्मर-पुर्वजानके पश्चिमीचर भागमें रहतेनाले पद प्रति। शराम-द्र [मं॰] मानास अंगरिका सून्य। "इमुम" तु भन्दाशतुम्बर ।—शह⁴—तु नवनत्वर्गाः वृत्य केरा शहर !~तति~नि भाष्यश्चारी । पु॰ ग्रहा देवगा । ~तिरा-मी॰ शकायराणी ।~चर-दि॰ बाराएपएँ। त्र पत्रीः शांशयकः स्त्रीयकः मझकः देवता । - चुँकी (विश्)-दि अस्तात छूनेवाला, बहुत ईवा ! " पूकि" को कैननेके वेनपरको पूछ। यस तरहरूम इउट्या -ध्वत्र-तु शारतः स्रो ।-पति-तु रंहा-भेर-चां (दि॰) कराँद्रम नामक पहा । मेही(दिन्)-रि॰ माह्यस्य वेदन बरने बाना बहुत केंचा, धर्वड । - रोमेंच -यु अनेवर राग (-बारिका-स्रो भाषास्था गारिक अनंबर राज !-विहारी(रिब्)-वि आन्नाएमै विसर् करमेशना । हु॰ प्रकाशनिका सूर्य। देवना ।-सिपु-भीव आसारागेगा ।-स्वर्शन-पुत्रायु आह मन्ने मेन एको -स्पर्शी(शिम्)-वि देश गमन-<u>भं</u>गी[†] । शासीसमा-ती निंशे भवारा । शामांडु-इ [मं] बरोसा नम । शरामाच्यरा-तु [शंच] मुक्ते प्रदार्थना । जगनामीग-९ [मे•] यद-माधि । ग्रं"। रागनायगा-सी [सं] अपराहर्गमा । शराबेधर-वि ॥ [कर] दे 'नपनवर । रागनोस्मु%-१० (मंग) मंगन घर । श्तारा∽त स्ति पीतन ता लोदेबा बना वशा बनना है रागरिया*-सी दे वगरी'। सरारी-की मिरीना वना छैस गगरा, क्लीरी। शराय-चु (वंश) गरेदा दिन । शुच-की हिनों नरम थीशमें क्षी नेमी में बहे हैं की भूगतेकी माराज्य पता करी वही छगा छग पतारेडी श्रम्भा शंत्रशाहमदा भूगा ।-कारी-भी । दशो हा व्यक्ती समाना !--शर-<u>प</u>्रे क्ष स्मान्त्रमा शनासिंग

मिलान्तः न्वाइको एउ रस्म निसमें बर और एसक छोटे भाईबोंको शिवडी शिकाते हैं। सकर-संज्ञांति। नावकी साई। विश् मिला जुला ग्रस्त महत्त । अधोली अभाषा अधी बढ़ बोसी, मापा जिसमें दो या मश्चि भाषाओंके शब्दोंका मिमग हो। अ॰ -भागः-मकर-संक्रोतिक अवसरपर वबके मैक्टी विषया श्रदा, तिल्या आहिका सामा मेबा बाता। -साधे पहेँचा उत्तरसा-वृद्ध नाजक होनाः बद्दत नवाकत दिग्याना । -पक्रमा:-ग्रुप्त संत्रवा, साविध होना । -हीना-यक्त मस्त होनाः पासीना फडने ठगना ।

कित्त्वमा~अ क्रिंदे 'सिॅंचना'। श्चित्राच-प॰ दे 'रिरॅं घाव'।

शिज्ञमा~ अ कि ै गीवमः । † दिश्विष्यविद्याः । क्रिकमत*~सी दे रिख्यात ।

ग्रिजमप्रिक-स्रोक देव 'श्रिक्यत' । ≔गार-पु देक निष्मवगर ।

लिज़र, विदान पुक्ति । एक पैगवर की सुस्लमाओं के निश्वासासुसार समृत चीषर समर हो गये हैं। पश्र मददाक । -स्रत-वि संद नद्दारमा जैसे रूप वैश्ववाला । -(३)

राह्-प्र पर प्रदर्शक । गिवस्थाना−भ०कि विप्ता। स॰ क्रि∗ विद्याना, संग

दरना । स्निकॉॅं~प्र• स्वी [फा] पत्ततस्त्री क्याःशासः शास्तालः

इरापाः वेरीनको । क्रिजामा−स कि•दे• दिशानाः।

ख्रिहाय~पु॰ [म॰] सफेर नाकॉको रवाह कर देनेवाठी

दवा, केसक्या (करता, कगाता) । क्रिज़ाबी−वि॰ विवादका। पु॰ विवाद क्रगानेदाका।

भिजास्त∽को॰ (ब॰) कमिद्र दोला, शक्तियो । स्पिस+−सो+दे 'द्रोश'।

रिज्ञाना – म॰ क्रि॰ दे॰ 'रीज़ना । † वि॰ दे॰ 'रिज्ञाना'। पिसाना च कि थिहाना छेड़ना। गुरसा विकासेबाकी बात करना ।

लिझाचना≉=स कि वे *रिाहा*ना।

लिइकना॰-अ॰कि दे॰ 'विसक्ता ।

गिक्कामा-स कि॰ इराना भटन क्रनाः वन इनाः। रिस्को-परी मधान रेल प्रदान आदिन हवा और रीयनी भानेक किए बनाया हजा छात्रा ब्रह्माणा शरीम्या मानायन राहकी। क्रियं या परकोरेका और परमाजा। महानमें जाने मानेका गीण का पीर्टका द्वार । --वार--वि जिसमें गिड़की था विद्कियों ही ।---क्रेंगर्रमा-पु वर भेगतया विसमें छात्रीका वस दिरसा सुका रहता है।

~ व्यमकी - मी व हम धरह वधी हुई दगरी कि कपरका 5D भाग सुका र र । — चेद −ि वा स्वतंत्र स्परी पूरा

रिरावेपर निया यदा हा (मकान)।

भिता = न्या + दे शिति ।

रिस्ताय-पु [ब] क्रिपोक्ट भार देश करना, सुरातिक दीना। वान चीना पण्डीः दाञ्चको और । दी वानेवानी षपाचि । —वाप्रता—दि त्रिध रित्तान विला हो । हिस्ताबी−वि॰ जिल्ल दिला हो।

शिका-प [ल॰] भूसंह, प्रदेश । खिबसत∽सी॰ [श॰] सेवा, टबक, श्वावरी कामा पर ।

~गार-प्र खिदमत करनेकका, टह्नु । -गारी-सी• श्चिदमत्तवारका काम, टहरू (—गुहार~पु॰ सेवा करने

बाष्टा । —में –सामने, पास संवार्ध । सिक्ससी-वि॰ सिक्सत करनवाच्या सिदम**ाने** व्यक्तेमें मास (मिदमदी धागीर)।

स्थिब्र-पु॰ [सं] भड़मा। वपस्थी। वरिदा दंद । शिद्ध−प्र [सं०] निर्धन व्यक्तिः रोग ≀

किम≉−पुछन, शुण । **क्षिश्र−वि॰**[सं०] खेत्युकः दुःग्री;कश्रमुक्तः रदासः चितितः

क्रांत वोन । कियना≉∽श किल्खपना मिक वानाः निसप्त द्वीला ।

(निप्रक्रस∽सी [ब] सफीफ दोनका मान इसका छोटा

क्षोमाः बननाः धोनसक्तः समिक्योः वैद्याती । कियामत∽सी दे 'ग्रावामत । नियाना!∽स कि पिस्थाना।स किश्विसाना।

विषयाचाँ-व कि] क्यारी, रनिश्च ! मियामां –g+ रायास, विचारा हेंसी. मजाक I

क्रिरका-पु॰ [स॰] गुरुवी, र्वदाः पुराना क्षाया । श्चिरका−g दे॰ 'छरक'- रॉमिट गी लिखममें **गहरा**

दित पार्र'-सर ।

किरजी - की है 'रिश्की ।

द्रिरद्-सा॰ फि:] हुकि, भड़ । -मंद्र-वि॰ हुकिमान्। क्तिरमी~सॉ॰ व्या फक्रवृद्ध था प्रस्का फल *बोरियो* ।

श्चिरमम्-९० [फा] खकियाना अंशरा फरक । क्रिरस−५० [का] रीछ, माख्र.।

ज़िराक्र−पु॰ [श॰] क्रुं शालगुत्रारी; नवीन राज्यकी औरहे प्रमु राज्यकी दिवा जामेशका कर । −ग्रजार--वि॰ करव (राज्य, राजा) ।

शिरास−प पा] मरकते हुद, नाव-नदोके साथ वसना। रेखी चाक ।

रिरामाँ-दि (फा॰) महस्कर, नाम नएरंके साथ च्छने कासा ।

विविद्याः - स•कि॰ भगावको सापः कृतन ६ छिए सराहा

बार कायमें रगस्य छानवाः सुरयना । विश्वित-सो० बरिवारा ।

शिरीरा−प , निरीरी*−सी भेनपमें संपक्षित कर्यको रिकिया ।

निर्एंदरा-वि गिलवाइ **६**एनेदाला :

रिस्छ-प् [मंग] परती अभीम, उग्ररा गाठी अगहा परि

विष्ट, पुरव्हा श्रेषांचा विष्या ह्रद्या । निस्त्रशत्त−पुन्ति [सर्] जीता, ५:शप्रा वद् पदनावा

औ राजा बादशाह (३६१व) एवमानार्थ प्रदान करे।

रिक्टक्स∼मी श्रीयदि रथनाः म∑निः जगतः। विसरीरी।–मा गैन।

शिलगिसाना−भ कि मादाबकेसाथ शुक्रकर हंगता. वहरदा कगामा ।

शिखरियलाहर-मनै निक खानर इमनेदी सावाह । निक्तान्य परानीकी एक जानिः हिट्टु नक्षा एक परान

श्रीका-गंदगदानी ग्रासरा-पु॰ क्लॉको याका, हार। कहाईपर पदनमेका एक गहना। एक रेझमी कपशा गावरका पत्ता । तात्र री—स्वी॰ कुमाईपर पहलमेका रक महना; छोटी गाअर ! राजरीट-सी॰ गामरको वसी । गामह-भी । [अ ।] फारसी उद्भें मुक्तक काव्यका एक मेर् क्रिसहा प्रधान विषय प्रेम होता है। -गो-वि गत्रछ रको बनानेशका। गश्रदाम्(वन्)−५० [तं•] महादत्र । राजदी - न्यो॰ वह मवानी जिसमें क्या हुव मक्दर सक्यम निद्धासने हैं। राजा-- प्रतगाना नजानेका टंडार वक वेंगला मिठाई । राजारमा-मो॰ (गं॰) चनमर्ग नामक ग्रेशा । गुजाबीव −५० [मं] हाशीवानु भवानतः। गापारा -पु रे गरापर'। (देवक व्यक्तिनेंके नावमें गज्ञानव-पु• [सं } समेश्च । राजायचेंद्र-५० [मे] इशि-विनिद्धाशाला । गजारि-५० [सं•] शिक्ष सिक्ष एक कृद्य । गजाराइ−५ [मं•] मदावड । राज्ञासन-पुरु (संर) पीएन्का पेड़ा स्थलको बड़ । गजासूर-पु॰ [मं] यह दैत्य की शिवडे दावी मारा गवा। गजास्य-प॰ (सं॰) गनेछ । गजाह-ना (सं] महरित्वको । राजिया। - त्या दिशस्त्रा एक भीतार । राज्ञी-न्री॰ [सं] इविमी । गुर्जी(जिन्)-40 दु [सं0] गहारीही। राजी-प• शावका हुना मोटा करना गारा। -यादा-प्र मोराः सन्ता सपदा । राजीह-५० [मी] दश शामी सवरायः वरामकः रहवान नामद राजा की अगलद के साक्ते हानी ही यदा और माहमस्त होनेपर अगनान्त्री बाद कर गायमुख हुआ। राजवा-सी॰ [मे] विदारी बंद । राजीयमा−स्री [मं•] राजरियकी। बाहसूह*-५० हादिशैका श्रुट गणपूर्व ! गुद्धिर्मा – विश्वना यात्रा । शह-मी दिनी नरक परार्वकी निगमने वा धीरनेमें हीनेवामी सावात्र । न्यदन्स 'गर-गर'की सावास्ट माधा बररी-पापा क्यानार (धेना नियरना) । की॰ गरनार की आवास । गर्दो --भी नना शराज । गरक्ता-स कि नित्यमा कारम्ब करता दशना है शुरस्रा== म दि ईथमा प्रदर्ग जानाः गटपर-सो॰ दी या अपित वृत्युची व्यक्तिदीहा विश्वत मिझ-शुरू बागा सहबचा । गरस्माजा-नी ६३ दालीके माना ह शहार-व है भागा । गरापारचा - पुण गढ तरहसा और और रगरको तगर कामने सामा भाग है ह

गहा-पु क्यारा पुरी, रखनाः नपेशे गाँउ जी शरपंदे सुँहपर रक्ष्ती है। गाँठ। थीन (समक्रमहा)। भीनी ना पुत्रस एक तरहरी विकार । गहर-पु॰ वर्श गहरी, गहा । मु॰ -माधना-वरमहा यटरी बीबार अंबासि कुरुमा । गद्वा-पु वही गठरी गट्टर पाछ नाही बारिया रोहार ध्यान शसारिकी गाँठ। कहा । गद्धी−सी• मॉठ। शह-सी है। फर। गदन-वर्ग ,-पु॰ बनाबर, इयनाः भर्मोद्दा वसाव एका। गटमा−क कि प्रकृताः गर्का वामाः गिना वाह्य र्थका मरा जामा। ठीउ वीसी समना क्या द्वा स होनाः अभिक देक येस होया रिप्ती वर्श्वमें स्पिटील द्रीमाः व्यान्त्रकाः संयोग होता । गरती-सी॰ कपाने नेथा बना सामान, हक्या पीटा संचित्र थम बना। वहां रहमा तैराधीमें पुरबंधी समीते कगाने भीर दोनों दार्थीन गुंध देनेश्च मुत्रा । नमुररीन यो गटरीमें देश हुआ सामान नाशका सामान म् - करना - मारी रहम दायने निक्क वाना, सर्व होता । -वॉधना-मद्रस्थी तैरारी हरना । -मारनाः बुसरका यम इत्तर इथिका सेमा । गडरेबॉर-प भीपार्थना एक रीम। गढवाँसी-ग्री शिखांधी । गरवाई −ग्गै (जना) गर्दक्रनेक्षे राजस्त । गरपाना, गराना-स॰ 🖫 गाँउमा दा है । गदा॰-इ॰दे 'गट्टा । गहाब-तु गहन। गटिल-वि प्रधित गठा हुना, बसा हुआ। गडिक्यण-पुर्वे सँडरंपग्र'। गढिया-पुर देन मादियर अनाव आहेर मारमान दूररा भेगा वा बाहा शुरजी। धोरी गठरी। एक बार्टीक संश्रियात्र । गटियाला!-ए 🔍 योड हेनाः मौडमे शोरना । गरियम-प्र. एक पेत्र जिल्ला कृषियाँ दवादे दाम भागी दे प्रदिगाउँ। गरीम्य∽िया दश दश दश हुआ ।। शहूमा, गहुवार-तु भूमरी गहेठ । शर्टीव-स्थे॰ धौडधी वशारे। पराप्तर । शहीय गर्वाती-भी भेगवी+ दोरहो; श्रीमंति। गर्दक गर्दग~पु० शमसार् । गर्त-थी॰ री ।के पर बारा न्यो परपू । शह-दु (२)को नेशादिना। योग स्वरंपाना मरी रट गार्था; बावशास व& मान्। -हेराज -क्वमा पुरु का यह अगद । र्शहरू-पुरु [सं] दह याला । शहरमाञ्चम दि 'महनाद राज्य काला मर्न हेर्स युक्ता । ग्रहमात्र≃पु हे ग्रहरा । महमदा−द्र प्रधानका को प्रदर्भ र गर्महाबा-भ दि दोना श्रम होना स्टब्स

را جهار ا

गरी-सी निकासम्म

गर-५ दे भर ।

183 शीर्ख'−एश्रमकारा नास ! * नि० नए निष्यसा ! सु० -या स्त्रीस काइना या गिकालका-३स तरह इसना कि वॉव टिपार्र दें। वेबेगी हेंसी हेंसमा; गिश्मिशनस्र मॉगना आविजी करना। स्वीसमा-अ० कि नह होनाः सराव वरवाद होना । सीमा-पु॰ वैही बदुभा जेव । स्रीक्क्यी-स्री [मं] एक तरहकी बीगा। स्पेगाइ-पु [सं•] काका मीरा । **व्युटकद्या-पु कानका सेल मिनासनेवाका ।** मुक्ता-पु॰ शोपशाः **र्में इदाना**~ ध जि॰ भी **श्री रा**पने नुषडनाना री^नराना । र्भुदाना-स॰ कि योश कुराना। संबी समी-ग्री॰ दे सुमी'। **भ्यक्षात्य-दि पुण्देश् न्यार् ।** मुधारी । - सी० दे । 'क्वारी' । धुक्य सुरुवा−वि सालो धुँटा; नाटार I स्राही-सो॰ तमस्य वर्ग हुमा सत कन एक तरहका नहा सुरा, नेपाको बटार, करीनो। यह पासका स्ट्रा बंधक **को शामकी तरह काममें काना पाता है।** सुगीर−५ दे 'दोगोर'। सुबद्दः सुब्दः सुब्दः-को॰ किसोके काममें साहमलाह दीर निकासना, ढिडाम्बरम (करना सगाजा) । सुचरी, सुचरी, जुबुरी-नि॰ शुधर निकारनेशका। सुअकामा-न कि॰ शुक्ती गालूम दोना स्वधाने ऐसी भुतका वठना जो शहरूनि रगधनेने मिटे। (अंगविशेषका) दिसी कामके किए भेनेन दोना फड़कना (दाल पीठ हुँद शुक्ताला) । स॰ प्रि॰ शुक्रणी मितालेके निय श्वचानी मक्ता रगरमा, जानूनमे सरोयमा । **लुबसाहर-गाँ॰ गुत्रको ।** लु बसी-स्वा स्वयामें बनुमन होनेवाठी शुसद्रम वा सुर सुरो वा रगइने सहकातेंधे मिटे शाबा एक रोग बिस्पी रबमामर बाने निकलत बीर उनमें शील शुक्ती होती है स्मारेक्षः (निसी शतक्षे) क्षेत्र इच्छा । सुआना-भ कि स कि॰ दे गुजनाता। सुअवक-पु [मं+] देवताट बृह्म । गुक्ता भुशसा≉~तु दे गा।। शुक्तर-पुण प्राथित वह अह यो प्रशिक्त और त जाहर रूपर ही उपर फैनशी है। सुर- तीर' मा तारा'दर समास्यत इप । - स्वराह-गौ गौरापन दुशता ~चास्री=-बि॰ स्पोदा दुधा ─पन ─पमा─बु गोरापन बुद्दवा पात्रीपन । सुटक्र-री गाका गुंका। सुरकमा-म कि किमा श्रेशी पूजनी वा उपस्था मान नीन भेशा गोरना। सुरक्षां-५ देश 'सरद'। शुरनार-अ कि दे सुलना -निश्ट बढे वा स्त्या निया शु⁹ म क्या क्याह -वि । समाप्त हीना । भुदाई-सी॰ मीतपन देख । सुरामार-मर कि क्रा दोना समान द्वीना ।

सुरिमा-त करतपूजः

पक्ष किया जिसमें वे दूसरेकी कामी वेंगकोसे अपनी कानी **धॅगओं** मिलाकर चून देते हैं। सही−सी स्(र। सुद्धी, सुद्धती-सी॰ पागानेके पुरदेका पावदान, कामनाः पाश्चाना फिरनेका भक्ता । खुत्रया-पु॰ [अ॰] वेद शामिक स्वास्थान जो जुमै वा ईरकी नमानके बाद स्थान मेंबरपर राषा दोकर देता दे और विसमें अंतमें उस समय यो सक्तेपा दोता है सम्बद्धे किय तुमा की काती है। व्यास्तानः भागम (परना) पुरसक्ती भूमिका । खु थ-पु करे हुए पेइक्स कर और एसके कपरका भाग। खुभी-को छोटा झुरक भूटी। परोहर शाती। कमरमें रपये बॉबक्ट रखनेकी पनको संनी नेकी बसनी । ख़्र्र−अ [फ़ा॰] स्वर्ग वाप : ∽भाराई-सी॰ बनाव सिगार । −इस्सियार−विश् स्वतंत्र स्वयं विकार रक्षमेवाका । -इश्चितवारी-न्दौ॰ स्वतंत्रताः भनवादा करनेका अधिकार । -काइल-वि० भएनी अमीनमें सुद खेती करनेवाला। स्ती॰ वह (श्रीरसे मिक्र) जमीन विसे वर्गादार सुर योने । ∽कुक्ती−सी आत्मद्दवाः बात्म-पातक कार्व र ∽ग़रक्ष−दि अपनी गरव मदस्य देखने षासा, स्वाधीं मतक्षी । −ग्रस्क्री−सी॰ स्वार्थपरता । -हार-वि॰ भारमसुरमानी अपने कपर काबू रागने॰ बान्य । -इारी-की• शरमसम्मान । -नुमाई-वी भपने रूप ग्रुप्त, बङ्ग्पसक्त गर्ने भीर बसको जुमादस्त । -परस्त-विश् यमेदीः स्वाबी । -पसंद-विश् हती ररराया वर्ग"। -फ्रार मोश-वि अपने आपका मुका हुआ अपेत । ~फ़रोबा~दि॰ जपनी दश्रई साप हरने वासा । −व-स्रव्-म अस्ते माप, स्वतः । −से-िव पमधी अपने सॅफ ग्रुचका गर्च रछनेवाला। -धीमी-की । गर्व धर्मण । — सतस्य – विष् भुदगरज । — सत सभी-सी शुरगरती। "मुख्यार-वि विक्षोका काव नियंत्रण न हो। स्वतंत्र ।−मुगन्तार्श*⇔स*ो० कु मुस्दार बीजा, स्वर्गत्रमा । -रग-वि सद्य स्वा-मानिक रंगवाला ।- राष्ट्रे-त्या॰ रवेच्छाबा(ता ।-शय-वि दूसरेको राग समाव म माननवाला, सोबद्धाधारो । ~री -री-वि अपने भाष जगा द्वशा_र अंगनी (पह वीवा) ।-सर-वि स्वतंत्र, सुदमुस्तारः इटी ।-मरी-सी शुदमुण्यारी। इसीनायम । -साएमा-वि अपना बनाबा दुवा स्वनिधित स्वयंभू (मेठा बनादि)। 🗢 निताई-न्यी॰ आध्यप्रशंता अपने मुँद निवा मित्र ह पनना । सुरमा−९ दे कृतसा'। गुरुगा−भ ति सीराजाना! खुदरा~च दे 'सुदा । नुत्रवाई-स्था मुरवानेश भाव या क्रियाः मुरवानेश्रे मबद्दी । सुर्वामा−स कि॰ 'सीरना का मे ।

ग्रवा-पुणा दिवसम् देशर मान्ति । -इ-की०

रेरवरता रेन्दरका महिमा विमृति सहि दुनिया । वि

सुष्टी†~सी० धंरव-विच्छे॰ सुनित करनेवासी नासकोंकी

गदाई-गत देत गर्न गारः इसी भेंग्री हुई जगहा पेट (हा)! म॰ (किसीके लिए)-चौदमा-किमीका अरावेका. विग्रीको मुक्सान पर्नेपानेका श्राय दरना । - भरेमा -बाटा पूरा द्वाना- पेर भरमा । -(ह) में गिरमा-निपर् में वैसनाः कान होता । गराई−सी गरनेदा दाम; गरनेदी सत्रसा । राष्ट्रामा-स• क्रि॰ यदवाना वसवासा । अ क्रि॰ राज्याह बहरूर होना । रादिया−पुरुरनेवामा। शही-स्वी द्वाटा गडु, किया कि जैसा वहा और मनवृत भक्रानः धोरा गदा । शहीहा, गर्दास्य =-पु शहदति दिलेदार् । गहिया-पु गन्नेवाका । मी गहबी, छान ठालाव । शबोर्ड - प नापति । राज-पु [सं•] गम्ह, नरीह; वर्ग बेगी; वादिः समाम परेह्यवासे मनुष्यींदा समृद मंदा अनुपर वा अनुवादि वर्गः अप्रीरियोका एक विमाग-२० रथ २० हाथी ८२ थोंदे और १३५ पैनका शेर जानके तीन बर्गेसा समृह (मगुन क्यांन आदि): संक्याः समान सीव अगाम आदि बाल श्रम्में। बाहुओंका वर्ष (ध्या): शिवडे मेरकॉका समुदायः प्रमयः संबद्धः अनुवदः बद्धवीवदः बद्धवीका तीय कोरिबॉमॅरे एक गर्नश । —कलिका⇔मी शहरायमी। -कार-त वर्गस्त्रच करनेवाला मीमनम । -सच-पुरु श्राप्तनका एक प्रकार िनमें शासनका बार्व पुने द्वर

मुसिबीके हारा दोता है। -शोधा-सी॰ व्यक्तीया यह साब, सामृदिक कीछा । -बीक्सी(क्सिन)-वि॰ प् बहुतींकी रह माथ बीक्षा देने, शान वह दरानेवाणाः यनेयको दौरग केनेवाला । --वैचता-प्र॰ ध्वमृत सम्बर्म रवसे, दिवरनेवाठे बैवता (आदित्व, वह रहा, सदन् भारि)। -ह्रव्य-तु पंचावनी पन शास्त्री -**धर**-निश्ली वर्ग का इन्द्रका सुगिया। जैन आवाबींका थ्यः वर्ते। −काय =नामक=<u>प</u> गमस्तातीः नमेसः विद। ∽तायिका∽मी दुर्गा। −प∽द नगरा। -पति-इ गास्तामी। मीछा छिन । -पर्वत-दुः कैलास १ - पाठ-प्र यह ही जिनमके अनर्गत साजेवाने द्यानीका सबुद । -पीडक-पु॰ मोना बधु । -पुंगव, ~सरप्-पु जातिका मुगिया । ~भीजन-पु॰ बर्राहीं॰ क्षा यक्ष शांव वेटक्ट स्थाना भहमीत्र । -यश-पुर साम् (६३ वध । ~राज्य-पु॰ वह राज्य ब्रियमें शासन थुन दर सुरियोक हारा दाना दी। वॉक्टप्टा यह शाव । -स्प-त सददम ! -हास्-हासक-त संबद्धाः । स्वार-१ [त] भन्ना क्रीकृत्वा, उथानियी ।

राजाधी-सी [६०] स्वोतिवीवी वर्ता । राणस-५ [मृ॰] विज्ञा दिस' बस्याः सम्बन्, समहत्त्वा है रायमा - मी (मं०) रिजनाः दिमतीः विद्यादः निवृत्त्व ह

~पनि-पु कदराकोः गरेश । न्यहासात्र-पुः u la a i रामनीय-दिश् [सं] (हम्प्रेशनका मन्या निवास वरने |

बेंगव । गणाप्रणी~प॰ शि॰ी मोद्ध ।

गणाचल-पुरि•ोदैनसः। गणाधियः गणाधियति गणाध्यस-५ (६) । । सेनामायका गमधा दिए ।

ग्रायाचा – प्र. शि. विश्वतसे स्वतियोदे क्रिय स्ट माध राग ह्या भोजम ।

शिष-स्थै॰ [सं॰] गममा । गण्डिल-सी॰ [सुं०] नेहचार चन्द्र शमसे नामदन प्रेप करनेवाकी साथिकाः गरियारीका येतः इतिनी एक पूर

वो बनेबारी विकता है। गणिकारिका, गःजिहारी-सां॰ [६०] गर्नगारी, प्रेप्ट स्मा।

राणिन-१ [स] संस्थः, अवद्राशः सावा सार्वः निवार करभवाना शाग्य ब्रीह्यान्यः हिसाद। रि. शिन्य हुमाः बोश हुमा । – श्र-नि यदिनशान्ते प्लेर्डिशे । -विक्रय-पु योत्रीको विवर्गाक हिमारमे देशम (क्षे) । -विद्या-स्रो अंग्रहास्य इस्मेहिमार । गणेर-चु [म] दृष्टिदार बुध । स्त्री अपना दक्षिणे ।

शहरक-पुनि दि गरेद। गणसञ्च-ली भि | ब्रामी दक्षिती।

गणश~प [रा] एक प्रसिद्ध विदू देवता भी थिर धनधे है पुत्र माने बार है और पंबरेबोमें परिमान है। निम गवनायकः। −कृतुस−५ ताह क्नेरः। −क्रिया−वीप शुराबा मन शाफ बरनेनी नक योगर्किया। नर्मधन पु रसंस्पुराणका एक खड जिसमें गर्मेशकी कार्यन मार्थ श्ताको गयो है।-शतुर्वी-लो॰ द्विमी मी अनग्रे विशेषकर माहबद मीट मायच्छे कृष्मा बहुवी जिन् दिव र्गाजका जन रमा और पूजन दिया जाना है। अधीय-न्त्री॰ [हि॰] है। गर्नेश-ब<u>र</u>्नुश्री । <u>-प्रसम-प्र</u> प्रोसस् बरवित महिमा बाहिका वर्षन बरमेराका रह उद्यापन। -मृत्य-प्र निवृत् ।-संदिशा-स्रो सारवात स्त्रास **६३ व्ह उपप्**राम ।

शक्य-दि [सं] रणबीद १ -माश्य-दि गम्मादि । शत−ि [मं] मदा हुआ। दीना हुआ। दिएका (त मप्ताद बाग): युवा पट्टेंचा दुवा बावा रिश्वन लग्ने श्रव्यः रहिनः दात ।-बस्मप-दि यत्र-रेशने मुक्तः -बाल-यु वीमा दुश्चा सदय । -कुल-दि साद्वीरा (वह शबदात) र -वलम-दिरु बिमधी भरावर दूर हो नदी दी। -चन्त-दिश स्टननव देशेश।-प्राव-दिश कृत। -तोबद्-ति वर्गाने रात्ति। -तप्र-ति कत्मा वा भवते मुख । -दिन -दिवय-पु वेना हर दिया अ बचा -पार-दि ५१म श्रीवापा प्रीप कृता। —प्रयासन∽दि जक्दकीस±सा। 3 रिं वाज्य भंद (संगे) र−प्राथासमानको पर्वणी है द्विती अनुस्तिहे किया पर्वे अभी साथ और इए हैं। नार किंद् लीर अर्थ (-प्राथ-दि भूप देशन)-प्राय-रि यमा येना दुशासार - मनुबा-सीक दिवर' ∼श्म−६ रिमरा स्त मण्ड पना रघरी[‡] -कहार्राड−(४० माध्यर्थभ प्रताप्रशासका ।×कन्न-

वादी ! सरकी-सी॰ [तं] समान्यात वा उत्तका स्थान । सरा-प्र॰ सर का रोग फलकी दाताके हिए समाया आप्रेगका काँटा ।

सराष्ट्र-सी॰ पशुभादे भागके पर साथ बॉपमंकी रस्सी ! स्ताब-प सुराबा-त्ये [६०] क्या खशक-स्वी (का] बाना आहारः यक मारमीका यह

समयका (नियत) मोधना दबाकी यह सावा । एवराकी-दि० अधिक धानेवाना । भी सरस्य करले दिया बानवाहा परा। सानक खर्ब, (दैनिक) मामनस्पद।

नराधास-प [मं•] रारका मापात हापसे मारणा । स्याकात-स्री अ] बेट्टवा बाउँ, क्कबामा छरास्त,

श्तगड़ा सड़ा करनेवाकी बाद बरोड़ा । सराकाती-वि स्राफात करनेवाका ।

म्यासक∽पुरु (शंरु) केंद्रिका थाल, शाराय । सरासिक-पु [६०] मार्रद्धे किएरतः नाराकः विकेता । ज़रासाम-४ [फा] एक देश जो अन रेरालका पूर्वी

संसाही। सरासामी-वि• [फा] सराधानका । द• सराधानका

रहनेवाका । स्वरिया – जी - क्योरीः प्रश्नके बीवपरकी बडी ।

सरी-सी टाफ्डा विद्रा सुरी(रिम)-पु॰ [६०] शुरबाका जानवर ।

सरू-प तरसे भिद्दी चौरानेकी किया। स्त्याता हटा, वर्षेत्राः वर्षात्री ।

रतर्दे−नि (का] छाराः यज्ञमें छोराः अस्यवदस्का प छाना। – वीन – सी एफ अलग जिससे आर्थिसे न रिपार देनेशको भीने हेर्छ। या सरुठी है क्ल्बिक्स र्षत्र । -पुर् -पु॰ दा-पौ भागाः गरन रावानतः । ति॰ नद्द : --साछ-वि होरा कमितन । --साछी-खी क्षमसिनी वयपना

एरदनी-विदानदशेखां यो गानेकी पीता। स्तदा-दि [का] राजा हुआ। पु॰ द्वारा रेजाः रेज गारीः भोडी मात्रा (धीसदा बनटा)ः निरातनानेकाशामानः धारी-मोटा बीजे। मन् बीडी मात्रामें शाहरू पुरस्क (विज्ञा) । -फ्रारीस-पुपुण्कत वेषमेत्राधाः विसाती । -प्रशीनी-स्थ पुरस्त्र वेपनका शवपार।सु०-सर्मा

-१पवा मुमाना । ल्दी-सा (का) स्वर्ध।

मुर्तिर सुर्वाट-वि बुद्दाः बनुभवी चान्दावः वत्ताद । । साम के •ए-प्रांग्न कार्में

गुल्ली-सी दे उत्तर्भा ।

सुप्रमा-४० हि. रीइ इटनाः वायरण इटनाः वंपन एरना फरने नियमना, क्यी हुई भीवका वंबन म रहना। कानाः ऐक द्वा दहार द्वीगाः प्रकृष्टीमा । बताना जानाः भार्ष होना कायम होना। निकटना वंद, रहे हुए कामहा फिर बारी क्षीना (रहक दक्तर)) हुउना (रक मन्द्र भारि); शाममें भाने भगमा (मारग सहस्र)। उपहला (भिनाई); गत्रनाः शिन्ताः ममश्री वान कदमाः सिन्धं बोप दानर दात बहमा: (१०) माध्र होना सॉबकापन

बरनाः सगना (भाष) ≀ स्तुसकर−न निर्सकोप रकृत' प्रस्त स्थमें । मु॰ सूर सेकमा-किपक्तिपासर किये बानेबाले कामको सुरुधर करने स्थाना। स्वता संदोब त्याग देना । क्षाप्रशा रंग-इल्बा सीहानमा रंग । खक्षाना~स कि॰ सीधनेका काम कराना।

अक्का−वि• को वैंवा वा वंद ज द्वाः विश्वमे रोक स दो। को तकान्द्रिया न का प्रबट्ध व्यक्तिस को तेंग थिस हुआ ल बोर हरेबा-बीका (सबक, संतान)। नहीं काफी हवा-रोशनी नावे। [सी 'राकी'।] -पसा-प -सरसा वजानेका एक इंग (संगीत) । अ०-(र्रा) मुद्दी द्वांना-दान हैने, शर्थ करनमें उदार होमा। -(स) भामा-म्बज्ञाने -चंदाँ -बाज्ञार -मेदान-नेवरक सबदे सामने क्कानिया । -दिसका-उदार, साफ्-दिक । -दिससे-उदार**तापुर्वक** ह खाकासा~प्र∘िच े निचोद्र, सार, संक्षेप । वि संक्षिकः

चुना, श्राँथ श्रमा १ व सम्बद्धः साफ साफ (री)। कुछेदमा-स॰ हि॰ पुरेदमा चलाना बस्ट पुन्द करमा। ख्रष्ठ-वि [सं] छोटा; बतीना । −सास−५ पिताका धौरा माई।

स्टरुप्त−पु॰ [मं॰] सुक्द ।

लुस्क्रमञ्चरका नश्च शुने भाग प्रकारत स्पन्ते ।

हुबबारी - गी दे 'स्वारी । ख़्दा-वि [का॰] मुदित, प्रस्का सुसी। प्रकृता अपरा महा । -आग्नद्वीद-अ॰ अच्छे आये, रबागद (स्वागद-बादव)। -धावात्रा-वि बच्छी मानावदाका, सुरीका। -इतिज्ञाम-विष् प्रवेषपटः अन्छा स्तमाम करनेवाला । ~इंतिज्ञासी~सी सपश्च। -क्रिस्मत-वि अच्छे माग्बराका माध्यवाम् । -क्रिस्सदी-मा धीमाग्व । −१७त−वि सुंदर अद्यर किस्तरनामा सुरेखक । ─शवरीं न्या स्वाच्यां द्वार स्वयं समाचार। -रिशाम-रि॰ शंदर भोडक गृतिवासः। -निशासी-नी क्षेत्र मोदक बाठ । -गुराब-दि मच्छा छाला धामनाना, बानेका शैत्र्येन । – सन्त स–४० सुधी सुधी प्रमुखता-पूर्वसः। -स्यू-वि अच्छी मान्त स्वमाय बाला। -सवार-वि॰ प्रिय रविष्यसः सुरस्र। -सुप्त राम-वि दान-वेरेते सुद्धी सुदाने बोबन विधाने बान्दा । - क्रायका-वि० व्यव्छ स्वादवाका प्रप्रदार । -हासन-न्यो• सास ।-हिस-दि प्रमुप्रदिश भानेश वेसमुख । -विकी-सी० गुश्रदेस दोना । -नवीम-वि शुँदर अग्नद शिराजेवाना सुनाराम । ~संघीमी ~ भी संदर भग्नर रियाना रियानेकी कना। - नसीय--भाग्यकाण् सुराकित्मतः । - मसीवी-स्री धीमान्य । -मुद्रा-वि॰ भना हर्गोनाना सुन्र । -नुमाइ-सी शुंत्रता। -दवान-दि सुरक्षा माथगपद्व । -श्-व्ही व्हार्य । -व्हार-निव्हार्य

युक्त । - महा-वि स्थारित मंत्रेशर । - मिहान-

वि प्रमक्षविश्व इसमुग्व। -रग-वि अपी शास

रंगशना। वु अच्छा छोतारंग। -शह-रि संतर

शुरूष १ -हास्ट-बि॰ मेपप्र ४पने प्रसम सुगी ।-हासी-

को शेरवता समृद्धि।

पु॰ किया । न्युद्ध न्यु॰ गराधी कहारी । गदा न्यु॰ कि] जिसारी भैगमा । कि॰ रंक निर्वत । न्यु॰ नगरी नकी विद्याद्योत । गदाई नशे॰ दें 'गरा' में । कि प्रच्छ, निक्रमा रही। गदाईन से कि दें प्रस्ता में कि प्रच्छ, निक्रमा रही। गदाका न्यु किसीकी प्रकृष्ण करीनपर दे केरता । कि॰

म्रागिन ग्रहेरवालाः । गद्गारम-पुरु (सं) हुए । गद्गारम्-मः एक्टरर एक्ट, क्यानारं (भाषात क्रमा) । पुरु (संश्रीकामा ।

पु• [सं•] अभिनीपुगम् । गदामञ्ज्य [सं•] कृष्य । गदामञ्ज्य [सं•] कृष्य ।

गद्रास्ताति पु [से] शावन । गद्रासाति पु [से] शावन । गद्रासा-पु॰ दार्बासी गीठपर कमा मानेवाका गरा ।

गराद्धः गराद्धय-५० (सं॰] रुप्त । गर्दि-स्पे॰ (सं] स्थमः भारतः ।

गरित-पि॰ (सं] बदा हुना उक्तः। गर्दी (पिन्)-पि॰ (मं) गराभारी। रोगी । पु॰ दिखु। गरिता-पु गरा। करकहा नान्द-'किरे सुनवसे सुगव गरित-पुग्न।

गहुन्नि (ई॰) वर्ष धन व्यक्ति व्यक्तिको मिल्ला गठा भर नावा हो। विसक्ते धुँदमे रख्य प्रत्य न निकल्ये हो। प्रत्यक्तिम व्यक्तिका पुरस्काता। —क्ष्य-पुरु क्ष्मीरिके सरा द्वमा गका। —स्वर—पुरु करप्य कार। गडीवेका—सी॰ (ई॰) दक्षादर।

राष्ट्र-पुष्ट सुनायमं बरावस्य विक्रो क्षेत्रके गिरानेवा स्राप्ट बल्य ११ वयनेवाणी श्रीव शामिके कारण केरवा मारी वीमात एक करियन तकती जिसके रचकी मीगीबा बससे हो जाना माना जाना है। वि मुन्ते।

राहमां −तु एक धारी शिक्षा। सहरा −िष अभवता। तु जन्म वहा।

शहरा—पु॰ भारी भीग संशाक दसकी बनी मीधे गरी शि वाहा—पु॰ भारी भीग संशाक दसकी बनी मीधे गरी शि ्हाथोकी खेडपर रसकर होगा कमने हैं। गरिका। सुमानय

भीजीया शेक्षा दिन्ही ग्रुक्तवन भाजकी बार । गरी-न्द्री छोटा गरा क्रिक्टर बुकानदार छानुबार देवना दे। अभिक स्ममानित व्हसिक्त वैठनेके क्रिय नवाया हुआ

गय नहामधामह ग्रामक्ष्य-पु (१०) व्याप्यीशतीयः ग्राप-पु केरेक्ट्र ज्ञा ११०६ केप्याची मेक्स्य्य केप्र कप्परेते त्या प्राचा भाषा है व्याप्त स्थान १६ आस्त्रा मृश महारा (मा) १ --प्रम-पुरु मृशीसा मनाहरीः।

सम्हर्ण-पुरुष कृतः ।
सामकः,-पति-पुरुषे कंप्यः
सामकः प्रति-पुरुषे कंप्यः
सामकः पर्वाति । -प्य-पुरुषे कंप्यः । -साम-पुरुषे
सामकः व्याति । -प्य-पुरुषे कंप्यः ।
सामकः व्याति -पुरुष्यः ।
सामकः विश्वः ।

शनिवारीं नहीं एक तार किएको तकती रागने। सर्थ तिवारणों है ऐसे व्यक्ति। गरी-वि है 'पत्री। स्तीत [अ] राहत्त्वा नता मेर्स सा विनक्ष नो चन्न सार्थ नतने हैं। -वैश-पुर नेता। गरी-वि [अन] भनी साकदारा-नेररागा गुंदी। गरी-कि [अ] चन्न हुन्देशा स्वका हानका सक्ता नी

शामासला-पार्वक निरुद्ध साला प्रपादक साला का बारा भरोष करने वीष्य काल (जानना, सम्माना शेवा प्रकारि) । सर्वारी-व्यो जासस्थिता । सन्दर्भ-व्यो कासस्थिता ।

| सम्रा=षु देश । | सम्री=गरी दे गर्ना (चं०) । | सपु-षु० निम्मने गरफनचे दिवा । श्री देश देशी

करे निश्वधेतत नोश स्वर्तमारे कि धे बारेरणे गामधोतः सूर्य गातः सूर्य शरा बंगा। न्या के श्वर-कर्य गात्रधीतः स्वरक्ताच्ये गानधीतः सुर -बहुमा-सूर्य शरा चैननाः -सारमा न्योज्या-सूर्याना नंया नीय गाउँ बरनाः बहुमन् बारा। -स्वरुत्ता-नच्या बरगाः

शासकारण्याः दिः रियण मिता श्रार्थे का मिता। ० हर्षे करता ! समझ्यीयण्युः राज्यस् यीतमान्तः देशस्त्री स्टब्स्य सार्थ

दिव त्यावात भी है। वादावाक-संकृति से सामाज्या । वादावाद-संकृति से सामाज्या । वादावाद-सिंसा सामेत्रमा । वादावाद-सिंसा सामेत्रमा ।

जालवार या व नगर । श्रीवद्दाः - वि वस्ते । श्रीवद्दाः श्रीविद्याः - विश्व वस्त्रे वस्त्र । 180 तरह पूरी तरहा बहुता सामु बाह ! -स्न-वि० ग्रीवरः पुरुष। -स्ट्रं-मा श्वरता। -सूरत-वि श्वरु स्यगम्। -सुरती-सी भुररता। स्त बकार्यो -पु [फा] एक तरहकी बाध जिसके भीज वधा के काम जाते हैं। म्यानी-सौ॰ (पा॰) एक प्रसिद्ध भंगा, वरवास.। पुर्वी-सी [का] महाई अच्छाई गुण निजेबता। स्परन-स्पा॰ हाथीके नामृतका वक रोग। ख़राक्र−सी दे लुराउ । ख्रासंज्ञान्≕पु [फा] पनको वह कुर्ववन । क्रमट-वि अराजीयी बरसिका मनतूस । यु उस्ता। सुमार*-विश् पु०देश 'खुस्ट । लुष्टीय-वि दे 'सिद्यीव' । संक्रमा सेन्यमा-प्रश्यक नेस क्षित्रका प्रश्न तरकारीके काम भारत है: र एक तरहके सफद बारी जैसे बिक की ह्यबाबरबामें मनुष्यके पेट, जान आरिपर मान दिखाई कोचर-विश्व [सं] अल्हासमें प्रतनेवाला । यु अदः पशीः बायुः बारकः विमानः दननाः राक्ष्यः शिकः भृतः मेतः पाराः ऋतीस । ध्रेक्सम्ब-द्र [सं] शावसक्षे यना एक स्पंत्रम । क्षेत्ररी-वि न्ही [सं०] आद्यश्चारिणी। क्षी पुर्वाः परी !-गुटिका-स्री एक तंत्र-वर्षित गौली निस्के संबंध मैं यह माना बाता है कि ग्रॅंडमें रक्षनेवाका बाकासमें यह सकता है :-- मुद्र(-को बोमको बंगमूत एक मुद्रा जिसमें बीम बल्दबर वासुमें कगावी और दक्षि विकुटीपर स्वाप्ति की बागी है। धीर-प्र (सं) किसालीका गाँव छेता वीवा बाका भाष्ट्रेर। कृषः तुमः प्रष्टः ग्रम्रामकी गराः साहाः खास चमका। विश्व शतायाधीः नीच जवन। क्षेटक-पु० (सं०) कीटा याँच रीका काळा वळराभकी पदा। 4 अभार विकार। धीरकी-प्र भेदेरिया क्योतिया शिकारी। गोटिसान सेटितास-५ [मं•] वैदाहिन्छ। पोरी(दिन्)−ि प्•िम्ं] नगरवाधीः कामी **७**पट । रोक-तु॰ [न] रो≓ गाँव । रादा−पुटीस मंगः -पति∽पुणीक्स सुलिया या पुरोडित । ~ (के)की सुध−तुब्छ, बसहीस । रोड़ी रोड़ी-की रक तरहका इसपातः ऑबल । रोद्गो – पुञ्चमतः (सापुभोका सेहा)। रत−पुजनीनका द्वादाओं जीता वाया जावयाजा सर्वे क्षेत्रा मन्त्रे राजी कसक (का)। घो ६-वेक कारियी दिनी मारिका बरप्रतिन्धान भरतः रुगधुनः तसवारका पत्त । सु०-आमा-वीरगरि प्राप्त करना । -क्सामा-वनारे गाद मार्दिभ धेतका प्रपनाक बनाना !-कामा-भौर प्रगत समय भौरमीका सन्नमाः पुद्ध वरलाः । समनल बरमा । -कारमा नगरी कसल्यी थीरी करता। −पोदमा∽धेड दिसलाना। ⊶पर चते किसाली⊸ भाग्यतंत्रा एता काम पहनेपर रूपतादै। –शहुमा⊸

चननेश स्थान काक नियत करना। -रम्बमा-सुद्रमें |

मारमा अवको बीता प बाने बना । -रसामा -सेटकी रखवाकी करना । -रहुना:-होना-युद्धरें मारा बाना । श्रेतिहर-प विधान येती करनेगला। शेशी-सी रोत जीतमे-बोनका काम किमानी; बीभार्र कारतः प्रसन्तः । --धारी--सौ कियानी क्वियमें । क्षेत्-पु [मं] बुग्स रंगः क्यांसी गमानिः मधानरः श्यक्षाः निर्धनताः रीग । ~क्षमक-वि० शेर धैनेवालाः शीवनीय । कोदम-पु [र्व] क्यावरः स्ववा स्थानि, अफसोसः मिर्यनता । सोत्रना#~स कि॰ शिकारका पीछा करना; ^{२०(}सदेहमा[†] । कोडा--प॰ किसी बंगली बागवरको धरकर किसारको बगद **हे बाना ईकाः लाग्नेर** । दो दित−वि [सं•] रोदयुक्त रित्तः भावतः भी∻तः होतः। खेबिमी-भी [र्घ] बद्यमपणी स्ता प्रदस्त । कोदी(दिम्)-वि [सं] राज्यमक् द्वांत। खेना-स कि नाव वकानेके लिए टॉइ मारनाः विनामा, गुभारमा । कोप – को ॰ उतना मार्च बोक्स विकास व्यव वारमें दोगा का सके वह बारका शक्ता बाह्य दोनेबाट(बाबमी भीपाये वादी बादि)का एक बार कामा-बाना एक फेरा; स्टोस सिका ! मु॰ --कदामा-- इतना सामान देना भी फैरगाडी बादिपर दीवा वा एदः। ~छादमा-देकगादीपर माध णायमा । − द्वारमा − मासमै पद्धा प्रकाना । क्षेपमा~स+ कि∗ विज्ञानाः विदा करना । छोम≎≕पुदे• श्रिम । क्रोमडा – प्रस्कृताल । एस सालपर याया क्रानिवाला गीव । देश, तंबू । सु॰-(से) बाकना-(मेशका) पश्चाम करना रिश्वमा । क्षेत्र-वि॰ (सं॰) को धौदा का सके, सतनाव। प्र पुका सार्व । रोस+−५ दे॰ 'रोहा' । कोरी-सी॰ वंगावर्वे दोनेवाका व्यः तरदश्चा यह । धीरीरा॰-५ एक तरहका रुत्रु । रीक~नि [मं] क्रीलधीत । प्र **मनवद्दसाव** म्यायामके किए वा केवक विक्तते उस्लामुमे किया जाने वाका काम चंता औरहा वाजी। काववः समाद्याः अभि नवा कांकाः भारत कारतानीका कामः बहुत भारतान कामः कामपनि ।-कृष्-भी [हि दिन मीहा काका पटन हर। सं "परमा-दिनी पामको तथा समायर हनीते वहामा । -के दिन-महते साते के दिन -धन्या-गरं यसमा १-धन्यमा-नंग इरान हरमा। -बालना -समझना-नदुष भागामगमद्रभा १-६ममा-काम बनमा । -विसक्ता-काम रियदना । होसक•-पु॰ गेंशनेवाचा शेलाहा ! श्वसम~षु [मं] दिसना-भडना गेलगा गण **ह**ोहार िस्तेका गणम् । क्षेत्रमा-मण्डि यनबद्दलाको निष्या विकास सम्बद्धाः दीश्मा, नाचना जडणना-पूणना श्रीरा नामा पटम

वैति करनाः अनुभामाः व'कला बानाः अन समार मात-

भारी सोहा का परवर विके गन्धी बासका पैटक सवाते ई । ~इर-इ नरधर नीवाबोदे मध्ये देश जानेवासः रेंगा र

गर्राष्ट्र⊸र्मा एक स्तरी सस्की ।

रारक-विश्वित्री पदा द्वार निमग्न नष्टा लीन तामग्र । शरक्राय−ति (क०) हवा तथा। प्रश्नुवनेशर पानी

Gart 1 सर्वा-सी [भ] वह जमीन जी पानीमें कुब जाय बा उना रदा लेगीटी भादा गराड़ी । वि रूप बालेगाला । स --भामा-बाद सानाः पमयका वामीये हव भामा । रारगाज्ञ-तु क्रिन्यो धदाररीयारोपरका तुर्व विसपर सीप च"र रहती है। सब धामग्री ररानेके निए बना हुआ डीला नावके उपराध एकः टिबसी । शरमाच्च=-वि• दे 'सरकाव ।

गरज-सी जैनी यंगीर भागात्रा करणकर बीमनेकी भाषात नेगान्यन्तिः शेरदी दशाह ।

शरक्र-सी० [म] मतन्त्र, प्रयोजमः चाहः बस्रतः। ~संड्~नि॰ गरव स्मनेवामा अवी । शु०-का आयामा -प्रतस्परा दारतः - या यापसा-अवनी वरत्र गिका-क्रमेद शिय मर शाह करनेको सैवार । -कि-मतलब वह दि- गलासा यह कि। -बाचमी बोली है-गरवर्गर भावमी सर एक बरमेशी तंत्रार शोला ६ अने सुरका विवार महीं रग सक्ष्मा ।

शरक्रमण्च्य दे गर्रम'।

गरजना-म कि काश्मे बपबार शानमा गान्धीका गत्रमहालाः भरका रक्षारमा शत्रकता । १ वि गर्कत हरतेवामा ।

शरकी~बि॰ सर्तमंद्र ।

गरजुषा-पु॰ एक तरहकी शुमी।

114E+-A 21a1

गरण-मु [मं] निगणमाः हिल्बमाः नित्र ।

गरम्-वि दे यरणी । सरक-मी है में मि प्रा हिं। के मां में सरदश-मी दि रेगा मा भी । पहे सुरावी मारिका हें हुई शोधका लंग संबोतरा जाग ! - धुमाप-त॰ तुरवी का एक देन । -- प्राणी-न्यी कनन वरना ! -- सोय-त वहन्त्रदागद विवा - व्यापात-त गद गैसामकः सांपारिक रोग । -वंद-पु मरेमे एडलदेश एक गइना श्लाबर । −वर्षिच=द० क्रुपीका एक वेश र शु•= ज्ञामा-दिरोध बरना । ~जनामा-सिर भागे असथ बर देना भारत बरमा । -जेंदी बहुता-पर्धहरी घर पा माराप्र रहना । - बाहमा-ध्या बणनाः मारी वर्षत करना । −शुक्रमा-मधीन शेला गतिन शेला हेर्राप होता । -म प्रशामा-साधित होनाः नीमारिने परे रहनाः सर बुगा गढ नेगा । -बापला-परे हेवर तिकाम बाहर दरमा। वेश्यामी दरमा । -वर श्री | भूतमा-इनाम गरना। भारी जन्म अन्यान करणी । -पर ज्ञान रमना~धारी काथ शानु² हरता ! ~पर ! हामा-बस होना क्रिकेशर होता हिचा कारे ।

--पॅराबा-- राप्ते हीजा ६ -- सरी दवा-नार दासजा ६ |

-मारना-सिर कारना, पत्र करना । -में द्वाच हेता गरदनियाँ देनाः वेदानन करमा । गरवना-प्र गरदम नररमधर बगादा जानेराता हान्छ। गरवनियाँ-मा॰ निश्रल शहर बरनेडे किर क्रिके ही

में शब क्रमामा, अद्भंत (रेता)। गरदर्भा ननी। योदेशी गरतम और प्रेसपर बनाना करें बाला यह कपशाः स मैं बहमसेशा एक यहनाः श्रीतनाः कार्यनेसा यरवनियाँ । यरदमपर समाधा मानेराचा मामु ।

गरवा-प है मर्ग । गरबान-वि प्रार्भ नी दिर-फिरस्ट भरती अन्तर कीर बाने । पुनद कपूतर भा थम फ़िरदर बधने बर्टे पर और आर्थे । स्वी - द्राभ्तीका प्रचमापन (स्ता)ऽ वशनकी भावति ।

गरदानना – स॰ कि॰ मरदान करना श्रुप्ती हेस्प स्थान बहरानाः स्वकं बरमा माननाः सहयानाः ।

गरविका-न्या व र पारिश । गरहका—प्र-प्राभीको होनेशका एव तरहवा सर र गरमा →श डि॰ निचीया जाला। तिमयमा व देशीयको टपप्रमा गिरमा- विश्वत दिहारे क्षत्रक सदन नगि १६७ न नयन गीरको गरिशो -मुरा दे गहना । गरचं≠⊷प दे गर्वे दावीदा मर । - ग्रहेमा-ति॰

गर्बीना, पमरी। शरबर्ड•-भी गर्ने प्रतः। गरवमा गरवामा+-भ+ दि गर्ने धरना ।

गरबा~द॰ एक वरहका श्रवराती माथ । गरविस•-वि P+ गरित । शरबीखा-वि यहंगे कृत्सु।

गरम∽० ५० दे 'यां (धं०) दे 'तथे ! −गान~3 क्तराम । गरभाषा≠∽ध कि वर्ग भारप करना। धीरे में मण

रणनाः । ग्रामी+~वि धर्मरो ।

गरम-वि॰ विभे छुनेमें चन्त्रा वा वाका मनुबंद 🐔 **डेंने वाय**ञ्चनका पत्रमा दुव्या तेत्र लेगा हरा क्षीम कचित्रत है। बानेपाला (शून (मज़ाव): बादीना गरमी करमेशाचा बच्चार्यक् - कच्चा-त बाहमे बस्ते-का करता अनी वा गरेटार अवता ।-सावर-मी वर मनर मिनदी करण अयो हो ।-हाला -घर उन वर्र मकान मिमने गानुष पार जाहेंद्रे रिनीमें ही लाव ह --वाष्ट-श्री शुरत्रकी साध भेट र-श्रमान्या^{नद्रक} वनिया, मि रे काम हजायका रावादि वा दनका पूर्व ! -मिहाब-६ प्रशी बहा हो करें।कार नेरी स्वयंत था । शु॰-(प) सर्व बरामा देलमाः सदमा-प्रांत

बा अमानदा बुचा श्वास देश देशा पुनिवादा अनुवत

धार बरबा !-होमा -।एक होना ह सरमागरम−वि शृरेणका पक्षा नवा भणा पासारित गरमी वा वरोपना हो (रपनागर परमो ।

शरमागरमी-की अन्त शरगमा ही भा ही स र्ल्स हो) प्रजीत ही जाता गुर्के में माना है शहमामा-भ विश्व महावाद अनुवद बश्माः रहत्र देवा 111 रखनेका छात्रनदार पेरा ! सर्विमाो∽स कि भेकिनाः स्त्रीपा-पुष्टकता वह भाग जिसमें काळ क्या एइता है। मृष्ठा रक्षनेका स्रामनदार भेराः सामनका भौनाः ज्रा, प्राप्त । स्त्रीसमा-स फि॰ मरकाना फैसाना। स्तोमा-प् १ दे 'सोपा'। मोहया - सी॰ दे 'दोई' फलारिका किस्फा । स्तोई-सी रंबना रठस विस्ता रस निकास किया गया हो। कार्रा सही, इंश्लबी पीपी । रबोकंद-पु० सबरक(तुर्दिन्दान)का एक नगर । मोरार-४ ण्डरागः। विदेशीयकाः ग्रोक्स - विश्वे 'प्रोप्स । स्रोन्स्टा−दि भीतरसे खाली, गेला ! चु खोखकी पगदः कोटर। वदा छेट । क्योखा−पु॰ वह कागत क्रिसपर <u>इं</u>टी कियी हो; लुकानी हुई हुंटी। 🕇 वालक (वें 🕽 । स्रोगीर-प्र• [फा॰] बोलकी मरतीः नमदा ।-की मरती-रही, निक्तमी चीव । क्षीय-सा स्रोबनेश्च क्रिया, तकाश सन्वेदणः विद्यान, निक्कः पहितेकी सीकः प्रशिक्ष । अन् ~प्रावर खेला~ हारु पूछना पता केसा।~सारमा=कीक वा परिवह मिटा हैना (पहचानमें कान कावक न रहने देना)। -सिरामा-नाम-निघाल मिरा देना क्षेक पद्दि**द** मिदाना । श्रोजक्र+∽वि पुधीज हरनेवाका। स्रोजना−स जि.॰ इंदना चकादा करना, पठा कगाना । য়োজবাদা−র কি "ভৌষনাকাই া र्योद्या-प [फा] हिबदा हिबदा सेवड को समक्रमान भारशाहीके हरममें एरा जाता था। यह तिजारत-पैशा मुस्हमान बादि। रशाओ-वि सीम करनेवामा अवस्ता सीट-मी॰ शेप, इराई: रावा हुन्द्रः पाप बुक्ता, सुशर्शः धीने वोदीमें निसी परिवा चातुकी मिकावर दस तरह मिसाबोहर्र पीना सुरंह । वि० दुष्टा ^{हे}वी । अ० --होता--दृष्टि दीमा सराव दी बामा। सारवा+-न्ते• सुराई कुराई। म्पोदा-दि जिसमें चीर हो। धरा का बलवा; सरीव शुरा मेरियाः मिन्यस्थासाः रागः दुरात्मा । 🗝 🗗 न्योः दे 'सुरारे । - व्यरा-वि मना दुरा। संचा-जूठा। वृदियाः गीया !~साम~पु परिवा विकासी मान !~सि**हा**ा→ प्र• बाही अप्रामाणिक म चननवाना शिदा। सु• ~गाना≠-वर्रमानीको कमार्थ सामा। -(री)सरी शुमामा-बुरा भक्षा बदना, गानियाँ देना । गोरामा - म कि दे 'गुराना । मॉटि-मी [मं] पामराज भीरत । चौष्ट-वि [मं] विदर्शन सेनश-सून्या था गा न्ताद-न्ताः भूत-प्रेतस्य मारेशः न्यस्य । पु शोधस्य ।

क्रोदरा-पु कीरदा क्रीत मादिके मानुदक्त सन्दा ।

र्योद्-पु संदेश बना श्रेष शिरमाण। पु शोलक्षी

किया। छानगीन । ~पूछ~मी॰ श्वामनीन, पूछताछ । क्षोदना-स फि॰ प्ररचना कुरेदना पदशकरमा। स्रोत कर जन्नावनाः दशनाः स्कन्नाः मारिको हरेरकर चित्र वरेहमा वसानाः पदादी करना कोई नुकोसा बीव गौरेसे भुगोनाः वकसानाः धमारमा । मु०-सोद-स्रोद कर पुछता-पूरी बात जामनेके हिए जिरह करना, एक एक बातपर श्रेका शक्त करते हुए पूछना । स्रोदनी-सौ॰ सोदनेका भौतार । क्रोवचाना-स नि 'सोन्मा'का मै । कोदाश-सी० दे 'सुदाई । स्रोना-स कि गैंगमा अपनी यीत्र कही मूक, छोड़ वानाः पष्ट वरवाद करना । शु॰ ला स्नामा-ग्रम हो जानाः किसी चिताः विचारमें हुव बानाः इका-पका हो वाना । स्तीयाः स्तीया रहमा – दिशा निवा विकारमें मिमप्र रहमा ग्रमन्त्रम रहना। स्त्रोज्**का**∽पु वहा धारू विसमें फेरीवाले निशाश्याँ आदि रराक्टर नेपते के 'तमानमा । - फरोधा-प फेरीबाका । क्षोपद्या−पु कपाक, सिरा गरीका गौठाः नारिवकः मीस्र मीगमेदा सप्पर । क्षोपद्वी⊸न्दी॰ क्षप्रक सिर। सु॰−ल्याजामा≔काट जाना-बहुत बरुवास करके कह पहुँचाना । -साव्ही हो बामा-(किसीकी क्यास वा अभिक्र ममसे) दिमानका थक जाना । - खुबालामा-भार जानेका सपाय करना किनेको नौ पाइना । -गंबी हामा-श्तनौ भार साना कि शिरके बाक श्रह बाबें, शिरवर मूब जूते पहना । क्षोपरा!∽प्रदेशीपरा। रप्रोपा−पु छावनका कीनाः अनुवानेनी दुर्र थीनी। देश विम्बासका एक भेदा गरीका मोठा । रतोमस्ता-भ क्रि. भीपने पहला। क्षीमरा=-प्रमानेशकी बीज मुँदी बादि । न्दोभराना-म कि॰ दे॰ 'सुमराना । प्रीमार-प तय दरवाबेवामा त्रीपश जिसमें सभर रातको ने किमे बाते देशतंग अंधरी कास्ती। मृता रॉक्नीका षद्या । गोम॰-पु शृंट- वसे खकतके लेखा **ध**रीसनके सीम ह -भूषणा आवि । शोषां-सी है। या । ग्वांपा−पु ओरावर चुवरीसा बनावा द्वमा क्वा माबाः ध्य पाचनेका गारा । शोर-सी वनी। नाव-रेडको बारा-वानी देनदी सीरा दे पीरि । नि [मं] **ध्वाका** । ग्यारनार्ग−भ कि नदाना । ए कि ग्रीनमा भाग ब्यादि शुक्रेष्टमा । रगोरमी-रगे वह कदरी विसमें महर्मे वे बाहर बचा हुआ र्षभन मार्ग्यः भीतर् करत् ह । गोरा-19 करारा भागतीरा । व विकासीता विक्रमाता गोराक-मी ^क गराक । शासानी-गी देश गुराही । मावि गारी−श्री गणी। वृही गरी दीत हार्त-

श्रदे सुनारे समावित सीरि नगा कीरीन बाह बाब

गरना~गर्भ गरता+-सो+६ गुरुता । गरम्-पु॰ [धै॰] पेछः निमन्त्रा, मशुण । गरसम्बद्धान्य) - पु [संर] पद्मीः यर "। शस्ति । गरुस-पु॰ [मं॰] यहट । गर्बाङ्ग#-सी दे 'गरबाई । गस---वि॰ गुरु मारी। बड़ा । सरूर-पुध्य] गर्ने पर्मह । गरूरस•ननी॰ गरूर होनदा भाव । गरूरताहु=-सी॰ मस्ती। भर्म=। गरूराक-विक संपर्दर मनवासा । गरू() = - विश्व यमेशी मगस्य । गरेबाम~पु• (फा] दे 'ग(।वान । गरेरमा॰-ए कि बेरमा मुद्दासिए। बरमा। शबना । गरेरा १ - पु परा ! वि युगानदार । गररी-तो परधी भिरती। गॅदेरी । * वि* सी मूना-क्दार चद्रशार । गरेमी ! - ला दे 'भेशा गरिया - ५०६ वर्तना गरोइ-पु का दिन्द समात, इन मुंदा -बंदी-स्मी इवदंदी ! रागें∽पुर (र] एक संत्रकार काकि। श्रद्याका वक शासक्त पुत्र एक प्राचीन स्वीतिको। वैक क्षत्रि। केंपुत्रा वक ताला -प्रिराञ्च-तु व्य दोग। शर्गर-५ [मं] भैररः वैतिषक्षकता एक बाजाः इद्यो मधमेशा मन्द्राः एवं तरहवी मधनी । गर्गरी-न्या (मं•) यशा कल्सोः मधानोः दश्री ह गर्ज-प [नं] दावीक्त विश्वादना। वादनीका गरजना। गर्थमा (भिग्याहता क्षत्रा) दावी । राज्ञ - स्रो॰ दे॰ यर ३। शक्क-पु • [तं] दद तरहको भएनी । शर्भम्-५ (सं] गर्जनेको किया गरवनाः घरवनकी बाधाना बादमीकी महत्त्वाहरा गंभीर व्यक्ति अन्यास सका षाकार मार्गनाः -सर्जन-पु॰ गरम-तानः गरिना थमधामा । गर्जमा≔को [र्:]गर्जन । राजीर-५० (म्] गण्यर ।

राजी-सो+ [मं+] नारसीया गर्भेन र ∽द्रस्ट∽पु+ विदेशक,

गर्जिल-दि॰ [में] सहका बुक्ता । पु॰ बाहकेका गर्वमा

समें बु [4] महरू सदुः विमाः महरा कर गमाधि। बरिसात यह रीमा चिनले देशपा दह साम ।

रार्गेद्धी, गर्तिका-में ॰ [र्त•] न्युद्धाना भुनादेवा वर्ष

गत भय-५ में } रिनमें ११तेशना चंतु (बृहा कारोध

गर-वि [का विस्तादेशका श्रीराषा] पूर्व रागा ।

वि पातिशामा बाहरेशामा (देवन महापृद्धे-व्यावशी-

चवामा बुद्दा प्रामना । सक्ति-सी [रंग] बाइलेंका सर्वतः

शस्य-भी० [वंश] दिला शुक्रा ।

मरकत्ता हानी !

of (c) t

कैनेबाला अच्यो मैलान दानेवाला। इ. दरहारेदेशास्त्रे येर वीधमेके लिए दिशापी हुई मारिवह कार्र पार्न थामेराज, धार्पारा । -मंग-पु एक तार्था गोमा ! -(व)गुवार-पु॰ साद पृता प्रन्यप्तः । मु॰-दोत्रः पहुँचना –न क सकना–रशरो म दर ग्रह्मा । गर्नाह्मप-पु॰ (लं॰) दुमुर । गर्दभ-पु [सं•] गथा। सकेर कुरी बंध । -गर्-पु•र६ चर्मरीम । ~धारा~पु॰ प्रश्नवर्दने प्रवृत्त होनेके रचते मापश्चित्रकृषे दिवा जानवाचा बद्दविषे ।-शाह-१५ --वास्ताः--वास्ती-सो भारंगीः प्रपर्शः । गर्देशक-पु [गुंब] यह खोड़ा, ग्रार्शना यह पर्नहेता। वर्जभांड-१० (सं०) पारका पीपण । गर्दमिका-सी [गं•] १६ वर्धाल । गर्मभी∽सी (सं) गर्भा, गर्भविद्धा रोगा रहसीत गुबरेस्य । ग्रहीचान्-रि॰ (दा] भृतमे भरा दुधा। तमा बेटन। गर्बान्द्र-५० अन्द्र हुगारा । गर्दिश-भी (दार) पुगल देश यहर परिमयण ही धरिवर्गना रियस्त पर दिवत्। –(ध्र)त्रमाना की रिजदा केर, बुमीग्द । गर्दुबा-दु० दे 'गरुमा ∤ शर्षे -पु • (का •) बाबाद्या भाषी एवं । वर्ष-प्र [मं] इच्छाः भीत्मुपनः समय । गर्चन गधित-(व॰ (गं॰) साहबा । हार्बी(चिंक्)-दि॰ (मै॰) च हनवाला क्रीमी i शर्माह-सी वे व्यास राष-पु देश नर्ग । गर्वीहा-वि पर्यद्ये। शर्मेष्ट-इ: [मं] मानिको बुक्ति भं नो मरब प्रवरी हैं। श्रानि । शर्म-त [र्थन] शुरून १६ लंबीयम प्रशास मार्गित गर्नाग्रवमे रिवप दक्षाचा प्रश्न इसन्। देश दस्यर सर्माचानदाक दिन्दा बस्तुदा भोगरी, मध्यरी बन्द विनः नरीया देश। कहा लाहारा गुर्व किरोडी शारा के^{म्बर}ी और बाहायमें मंत्रित वाप्त हाया वर महिरक्ष के पर केंद्रवर्धी माना माना माना माना ५ प्रदारमें मंति मेने रहा कार्यका देशेण (अस्त्रा) संपंता स्पर्धिये -कर-रि॰ गर्ने कारण करानेवामा । तुरु कुपरान वर्षी -कारी(रिक)-वि वर्तनास्य क्रान्समा । -का^ल-त्र क्षणदान गर्मोनारणदा सम्बद्ध । –क्षेत्रर-५० ५ दे भूत जैसे हेडे की गर्जनमाने अधा होता है। स्वीती " कोष-पु सर्वात्रश्र वधारासी । -वनेस-पुर्व व व रोताः। –शय-पुत्रनेताः। -गुर्शी-वि र्णांबची । न्यूक् न्यु वर्षे रोचीरोवस क्या वर्ता are mei afreit er Ctft fant gan bemit प्रांत्या हो। - ब्राइ-चुर्ल्यन्ता - प्राहिका-मी बाबा विर्वाप । न्यानित्रीन्य क्रांक्टर रही। -प्रति(तिष)-ति : दर्वरण हारेवालेवणी ! -बण्य-तु अश्रीदेशी बच्चेश दिल्लाकिश ! - स्पूर्ति भी शतहा श्रीतना - प्रणाप-पा कर्त क्रिक्शानी हे अनुसार, अनुसीर-दिश्यास्त्री साम्य हर

शराका −स्ता सि विशेषाः। भीगमा-पश्चित तरहका शहराम । रोतीय-प सिंगी गंगका बना वर्गका अस पर । शंता-सी शि । भारतवर्षको यक प्रभान भीर पवित्रतम करी किसका भगीरक्षके राज्ये स्वर्गसे प्रथमिपर भाना माना सना है, बाहरी, सलोरबी । -होस-पू गंगाकी भारा जीत होती क्रियारोंसे ही हो होत्रतहरू। मधारा 1-शसिक-को । गंगाराम, मुक्ति । -किस्सी-की । कि रेपक बक्तप्ती । -बसनी-वि॰ हिं॰) दीरंगाः सोने-वॉरीका बजाः सीजे-पाँठीके कामबाबाः काला-अजना । सी॰ कानका हक राहमा: बीडॉकी धोरंगी गरवजी। केवटी दाला सनहते प्रपक्षके कामको करतारो । -प्रस्क-प+ गंगाका पानीः बहिन जल जिससे कारत रिज्ञाते हैं। (हि) एक सरवका सफेब रेक्समी कपडा-'यंगावरूकी बाय सिर सीवस भी रवनाथ -रामधंतिका । -ऋकी-सी [वि] धारा वा श्रीरको सराही विसमें वाबी इस्तार आदिसे गंगा-वरू हाते हैं। भातको सराहो। सीरे जैसा पात्र विसमें बडोबार बक्त समा होता है। यह तरहका गर्ह । --वक्त-प श्रीष्म । -ब्रार-प॰ हरिहार । -धर-प॰ शिवः समहः इक वर्षक्ता – भाग−थ समद्रा – धकी – की० एक ब्या, सर्वता नवपत्रिका । -पाट-प कि विपेशके त्यके मीचे ब्रोनेवाली एक भीरी । -चार-च वंगाका दसरा सर । -प्रय-प भीष्मा कार्तिकेवा गंगा आविके बाटीयर बैठने भीर पंटींका काम करवेबाला जाहाण यह संबद बादि ।--प्रत्या--लो॰ (हि हि 'गंगा-प्रमा' ।--वमा--ली व्याहके पार पर-पच्छी केंद्रर गाने-पालेके छाप होनवाको गंगा देवताओं जादिकी पूजा । -बाधा-सी रोमारको यंगाठरपर इसकिए के बाना कि वहाँ असकी बुरदु हो। −हास~पु॰ [हि॰] दोतेका प्यारका जाम बिस्ते परात समय उसका संबोधन करते हैं। -कहरी-की पंडिवराज मगनाथ-र्श्वित गंगाख्यात्र । - खास-प गंगाको मातिः गंगाहरपर यस्य वा वाहर्यः होनाः कस्य । -बासी(सिम्)-वि॰ वंगाहरपर रहनेवाका !-सागर-प्र• प्रक दीर्थरपान वर्षी संगा समुद्रमे भिकती है।-सुद्ध-ए॰ भीष्मा कारिकेय । स॰ -हरामा -बासी सराना-यंगावस सेवर करूप साना । - बहाना-विसी बाहित कार्यकी पूरा कर लेगा, कुछकार्य कीगा । -पार करवा-देशम निकासमा । ~पीमा~शठी कम्रम शामा । गंगाका गंगिकर-धो [र्थ] गंगा। र्गगास-त बेटान वना बरुपात्र ।

गंगास-चु कटार वहा वरुपत । गंगापतरक, गंगावतार-चु [गं॰]गंगाका वतरण व्यर्गेस चरतीर काला

गीरी-सी यस वतीवधि । साम्यक्-च देव गांगव ।

गोरम गैंगस-पु पढ़ पाथा भा दबाके काम भागा है। गैंगरमा-पु॰ एक पहारी पेट।

र्मगोस+-पु• दे शंगोरकः। मंगोचरी~की दिमक्ष्यको एक भेटी बहाँने शंगा

ं निकरी है। संगोदक-दु [६०] संगातल यक वर्णपुत्त । र्वतोक्षेत्र-प॰ सि ो गेगम्ब स्ट्रमस्थान । र्गसोस-प॰ सि॰ी सीमेद मणि । गंशीटी*-सी॰ गंगके फिमारेकी रत वा मिड़ी ! शीगीक्रिया-प॰ यह तरहका शहा नीय ! र्राध-४० मिल्डे बाल घट सातेका रोग, गुजापल कालकोरा रोगा सिंगी साम रखोंकी साना समामा भनसाति। हेर अंदार: मंदी बाजार: गीठ: पानपात्र: सबद्या, तिरस्कार: फिल्टो कामानाः धनराधिः हेरः भंगरः मंगैः वह चीत्र बिसमें कर्ष सप्योगी चीर्चे एक साथ हों । ~गदारा•∽ य वसरीका । —गीका-य शोपका वह शका किसरी वनतमी चीचे चरी हो। -दस्या-दि॰ रामाना सरा हैनेबाका, जहाराजी। –का बाव्य-वट बाव्य जिसमें साध-साथ हैकी जानाजा आहे भी भी । र्वज्ञम-च [मं•] अवद्या, तिरस्कार करमाः करा देनाः नत्सः नीचा विद्यानाः संगीतक बाठ तासोर्नेमे एक बागर) कि तांत्रलकर्ता अवद्या करलेकाका लाहत्क । गंत्रमारू-स कि अवश करना। माध करना । र्शक्रमी-सी॰ एक पास जिसमें मीवकीसी महेंद्र होता है।

र्गक्रान्त — पुक्ति | दे पंत्रीका कि शका — कि देशकाका करूका शु गंत्रापनः गत्र रोगः व्या [सं] मदिराक्षका कोपकी पानपात्र रक्षेकी

्यानः गुंक्रिका−स्रो [सं]मदिशक्यः।

र्गैकिया-की॰ रपये ररावेकी वाकीशार वेकी प्राप्त समने की बाकी। यह रारका मिट्टीका बरावन। अकरवर्ध । वंज्ञी-की छोरा गोब केर रादि। यह तुमा हुना पर मात्रा थी क्षी-मीतारतीम कारिकी यह मीचे परना बाहा थी क्षी-मीतारतीम कारिकी यह मीचे परना बाहा थी वीत्रवाचन। में छकरवरे ।

र्गजीमा−पु० (दा०) दाजाना राज । रोजीका−पु (पा०) दाद्य जैसा एक दोस क्रिस्ट परे

गोल और संस्वामें ९६ दोते हैं । विजेबी∽वि गाँआ पीनवाका ।

गणका पर भागा प्राप्तकार । गॉडम−पु यक तरहरी कोहेदी करून जो साक्ष्यत्रप्र किननेक काम कादी था।

गैठ-'गीठ'का समासिये व्यवहत रूप ! -कदा-पुः गिरह कर, वाडेटमार ! -कोड़ा -ध्यपन-पुः विवाहको छद रीति विसमें बर-वपुष्ठे बदहक छोर पक्रमें और दिवे मान है। पक्षा नाता काइट सुर्वत ।

मैटियम-पु है गठियम'।

संह-पु [म] याला कारधी याजम कारधीयका सार सामा हार्योची कारधीम जीवा पुनेम पेया पीडाम गाँउ। रोहा मक्या कारकाम संकलकार रेगाम विद्या रियाम सीव(तरक)म कार्योची प्रकलिया रियाम विद्या रियाम सीव(तरक)म कार्योची कारधीम प्रकलिया सन्। -कुर्यूस-पु वार्योची कारधीम प्रकलिया सन। पु एक सीठा पन करियम। -मार्यामका-सीव वार्यान सामक बीवा। -मार्यान्य वार्योची -मूर्यान्य भी गाँउवानी पुरवाद जनसम्। पुरा निक्षान मन्न

गंदरवलका विद्र जिल्लाम मण सरता हो। -मासक-प्र

थमा-पु [हि॰] गनन्त्रत ।-श्वार-पु॰ मधा ।-स्वीय-सी॰ [दि] मानशंबर्ध एक कुमत्त्र । -फॉसी-सी॰ [हि] गष्टेकी फॉमी फंडा जंबास, शनग्रह ! --फेब्र-पु॰ [दि॰] गन्मो गिन्दो । -चंत्रली-श्री [दि॰] गनेमा वस गरना ग्रम्हर । -यहियाँ - बाहीं-की हिं। क्षेप्रे नीर रामना, स्थलस आभिगम । -सेम्ब्सा-री र्येटहार । -प्रम-पुण मन्द्र । -हांडिका -हांडी-श्री छोडी जीम उपनिद्धाः एक रोग जिसमें सासमें छोज की बाना दं। -सिरी-न्यो [क्षि] ग^{मे}का यक वड्मा बॅडभी । ज्यान-पर क्यारिबोंके गरेने करफलेवाली अन धंभी थेकी गरूबन । - काली - स्तै। गल्लामशाही पदती। □हस्स – प्रस्थित गरदिनशी अद्भवेदाकार वाच । राम्द्र~ गाल का ममासुधै क्ववद्वत लय ।~काबा ∽लोबा— प्र एक तरक्का चातुका मान्यमंत्रको एक शतरतः प्रदर्गका रक्ष पेंथ । −र्राज्ञ−प्र शोर दस्मा । −रायज्ञ-प्र• दे वरभुष्टा । - पुसक्ता-सी+ दानहा एक वहना जो गामीयो छन। रहता है। ~छट~५ माल्यीके गवक्रकेश ण्यः मागः -त्रकिया-प• गारुके मीच श्रानेका धीटा मरम प्रक्रिया । -धेम्बी-म्पी० बंदरक गालके बंदर रहनेदाली थैको । -पद्मा-प जलवरी मान्दिः वह अववय जिसमें वे स.स रेने हैं। गालका चमना । -फ़र--स्री वहवडानेक्ष सदा। - कम्बा-वि क्रिमुक्ते गास कृते हों। प्र गण्युमा। - संदरी-मी दे॰ 'गण्युप्त'। —सच्छा—९ नालीपर वाली ओर मेंछको सोचमें रही इन शान ननगुच्छा । ~शृङ्का ~सी विश्वी पुत्रामी कर्ने प्रसन्न करनेके नियं गान बजाता । ~सुमालपुंदर रीत जिसमें गालोड जीनेड कियों एवं आहे हैं और स्वर रहता है। -स्ट्रॉंड-स्पे० शन्तिका। गुल्डे-मी दें गुल्ही । गसक-व [में] मनाः गराक महानी । राजदा-पु धार या परिश्वी वैगरियोधि द्वीनेशण एक न्दरक्षा धाने जेला कीता। शामगंत्रमा!-म कि देश गणगामना । शक्षताल∽तु स्परीगरेके काश्चारका यक्ष बदुल गरा मीनुः करा और असगीया गन मिलाइर बनावा प्रवा एक मर्बद्धा मलागाः एक वितिया । शम्बालार-पिनीना तर। शस्त्रप्रमाना न न माना या तर दीना । राज्यात्रज्ञा-भ कि शुक्तीये कुण्यत एएसबर नहीं पत्री बार्ते बधनाः अप और रे बीटना । शलगुधना - दि॰ मीय-गापा । राजनंतर - चु ों ने आपादिती मंत्रति का अपने पींचे तिमीको सीहस नदा दी। निर्णाल वृत्र अवितः। स्व नदी आमा-निवर्ध हो अभा, वंशका भारत ही थाना । रामान-विक क्षि के की गाड़ी का ब्रीक में की मार्विता मिन्स अस्त को - अद्योग - वि मी दीव वन्त होने िमा भर म को । -बाह-विक कीमा ³नैवाला। दुशनरहा - बारी-र्यं प्रयो का राजी क्रमायार [ब्राधा । - नामा-पुराधिका । - प्रदर्श-सी तक्त सम्मान्छ नुरुषा कृष्ठ सहस्रमा । ज्यवासी ज्या (

मयशार्थं कान्य । शामता-ि (का॰) कीरता ग्रदक्षा हुजा, मेहनेसम्। —व येचीं—दिश्शीला और मदर साता दुवा शेएप। शम्पता~प [कार] रेडाम और सुगद्रो विकास में बना दर थमस्त्रात क्याता । शलतान-दि॰ दे॰ 'यनता । शस्तरी−सी॰ (थ॰) गण्ड होना अहाई। अव-बद्ध। शत्मतलभास−प [ल॰] यह मधाप प्रदीन वी बार धीनेके बारण गाप भान किया शाप । गरुम−पु (शं०) चुना सरमः स्वमाः गण्ना शरमः। शलनहर्निष् काविनीरा वस रीम विसमें बनश शापूर गलने लगता है। नि हमे रीनवाना (दावी)। राम्बना-म दि दीस शतका ताल होता स्विन्दर क्षी चीजका प्रकर भरम होमा स्पेत्रज्य यक्ता अर्च श्रीमा। सहसा। द्वन्य द्वीमा। सुरामा। क्रियमा। नह है रू यकाश सागा। शक्तवस्त≉−म् शण्यास क्रोमाञ्चन-धर्मः भी राजस्य मन्दो'-एत्रमहारा । रामचा−५ (स.) प्ररक्ताः वीन विवय (होतानःगो)। रासकामा – स॰ दि॰ यनग्नेदा साम वराजा । गमही-सी मानका असना हिरसा बडी दोने। ग्रार मिलत है। गक[कुर-पु॰ (सं] गलेका एक रोम 'शीहिन'का बहुना। गम्पा−प्र सिरमी भएने जीपनेशाला अंत क्ये. रणस त्तर, भागायः भेगरति मार्टका गरेशमा परे आरिका £रके मोथका संगममा≔(से)का≢−5 भरते वक्षेत्रासा वनेवा । -बाजरी-सी *राण* दर्दे यानाः नात सेना । सुरु - उद्धाना - करना-पंधे रेज्या। -बहमा-रगन रिया जानाः (रुमरेके कामने) प्रणी दानि दाना | इदल्यादीमा । - बटवाना - दस्या-जान हैमा कतर होना। क्यमी भारी हानि *कार*ी -कारमा-गरदन मारनाः वच करनाः वार व्यटित कार गानी शुक्रमी जुजनुगाहर देश करना (क्रमेश्वर मा का) (-श्वारता-परी हुई आसाव्या माद ही वाडा है -प्रदक्ष द्वीला-गणा अग्राता। शिरारे निराण वर्ग ०६ जाना । —धूँनमा~नमा बंबाद जानेमें छ छ वस्ता। --वेरिमा-ग³की का शहद दशमा कि क्षेत्र कर अस वनेदी रक्ष तरद प्रवाहर जान नेगा । –गुणाबानशैटार्थ कानेवारे व्यक्ति वा वागुन रोहा गुराना । "र्या"" murgid geet! राषा भीरता। यसाव आसमा ~पक्षमा-गरमे चित्रकतार+>मे शुप्रमो वा सम्मर्वे~ बरभार महाना संब बरमा अपना बरना । - वर्षा -बीरमा-(शीव बहुत्र वीमने गाने आरिमे) मन्द्र कार्या स क्रिकेटना १५८ विष्टुण ही काला ३ - भीवता-विक निश्च होजा अल्प्सन्य होत्या सन्द्र आवात्र अस्थित्व^{वतः} -परावृत्तर विष्यासा -परावृत्ता-पोमध्र के *उ*न दर्दे ोर । अभग्रा कि रुपा केंद्र जाए र जीवराज्या Chen fiebe ermit a ditti gut 1 -(9) mal. -- में व जा जाता थी कि जहां स दिया जा मदे वर्ष रिया विष्या अध्यक्ष शुरादी का सब्द दर बन्द अप

प्र सकेर तुकसी। मस्ता यह मार्गी ।-पन्ना -पन्निका-सी॰ कपूरकपरी।-पद्मी-सी अवगदा।-पसाविका-को करिका।~प्रकाशी-सौ गंदपशा-प्रमारः~पसारी~ सी [वि] दे॰ 'गंदप्रशारिक्' । -पाचाचा-पु गंबद । -विशासिका-सी बनदा बुगाँ।-पुर्य-पु श्रुशब्दार पूका वेतः केनशः गनियारो । —पुष्या-स्रो नीसका पौषा।-प्रस्थय-पुनाक। -प्रसारिधी-सी० दवाके बपयोगमें भानेवाको एक स्ता । ~प.स्व~पु॰ कृषित्थ । ~फसा–सी० प्रियंगु ।~फसी–सी भिषंगुः चंपककशी। ~बंबु-पु भाग । −वधूस-पु• [वि] विकायती बब्धा --विसाध-पु॰ [वि] जेबबेसे मिलता-शुक्ता एक जेतु सुद्दविकाल ।-श्रीका-स्वी॰ ग्रेथी ।-जम-पु [दि] गंदवेषु एक सुनवित वास ।-भांद-पुरु गर्दमोड। -मासी-मा• रह करहरी करामामा । -माता(न)-सी॰ वृष्टी । -माद्-पु राम-सेनामा दर प्रमुख दंदर; एक बादव की अकरका साद था। −सादव−पु एक पुराणवर्णित पर्वत जिसकी अवस्थिति इकाइत भीर गहान-छोडके बीच बढानी गयी है। यस पर्वतपर रूगा हुमा सुगे भित कुद्रोका अंगल, भौरा ! - साइजी-नी मरिए ! "मादिनी-ली काए ! "मार्कार्" प्रवासनाय ! -मास्तरी-को यद्ग गंदरम्य । ~मृंद्र~पु॰ गंवमाव । -मुक-पु कुनंबन।-मुस्क-पुर,-मुका -मुखिका, -मृष्ठी-की यवत्रा। -मृषिक-पु॰ -मृषी-की छप्टेंबर ।−सूग−षु । कल्ह्रीमृगः गंध विलाव ।∽सिशुम− पु धाँका ल्योज्ल-पु लंगका – शाहिमी – खी चंपान्धे सत्यो । – बुक्ति – स्रो संबद्धमा बमानेकी कला । -रस-त सुर्गभसारा ग्रागुक। -राज्ञ-त मीनरा वैका पंदनः क्वादि नामक वंबह्नमा। −दाजी-सी मधी नामक गंबद्रव्य । —खला≔सी प्रितंश कथा। सुरुष-पु॰ भ्रमर । +सोसुप-पु शक्ती नच्छर । यजिक(भू)-पुर्गभी श्वप्रशिष्ठा। -ब्रायू-स्री गंव वसायो । नयस्कल-पुरु दारयीमा । नवसरी नवस्ती-की महरेरें। -बह-ु बाबु। विश्वीप बहन बरने बाला । -वहा-सी भारत । -बाह-पुर बायुः करत्री चुगः। −याद्वा −वाद्वी~सी+ नावः। −विशुक्र-पु+ गेर्ह । - ब्रह्म-पु॰ सालका पेत्र । - बेलू-पु पर शुर्ग वित पस । -स्यानुस-९ व्यक्ति वृष्ठ । -शाहि-९ बागमनी भावत । नहाँहिजी-की छईन्द ।-दाग्यर-पुर बरपुरी । −सार-पु चंदनः मीगरा वेशा । ∽सुन्ती-स्यो-को एउँदर। -साम-यु कुनुर। -इस्ती (स्वन्) - दुर संश्यम । - हारिका - स्वी अंधकारिकाः रवामिनीके पीछे पीछे सुर्गंध लेकर चलनेवानी बागी।

रोपक-पुरुषी [म] कि नीरंग गरपुक्त बीनवर्ष शांतव परार्ष को दवा पारण कारि बनामें है काम आगा है। पीमोबना तुर्गत । -पीपका-की व्यवस्था पीछने बारो को । -बरी-का प्रक प्रक्रिय पारक कोचय (बा देश)।

र्गपकास्मः – पु. (सं.) । प्रकाशकाशः र्गपकी – शि संबद्धदेशसम् पु. र्गपमी १४०३ – सम्राद्ध – पु. र्गपकाम सेवार १ र्गाञ्चल-प् दे॰ 'गंदना' [मं] गंगका प्रशास एक चावका अविराम प्रवक्ता वय प्रशास दोव-प्रदर्गनः संकेत, सूचना । र्गाधरस#~यु० है। गंधर्य । र्शधर्विज्ञण-सी गंवर्व सी या नंबर्वेदी सी । र्गाचर्य-पु [ग्रं॰] वेयताओंका एक मेर को वेयकोकके गायक माने काले हैं। गायका करत्रीयुगा मोद्या अस्म मरणके गोचकी अवस्थानांका जीन। स्प्रें क्रीकिक एक हिंदू जाति विसक्त काकियाँ माचने-गानेका पेशा करती है। परंदा संतः यक् ताल- एक मामस रोग या अन्मादः। —साद्य--प्र भारतवर्गके भी भागों मेंसे एक। ~प्रह्न-प्र• गंवर्ग रोग ! -- र्वक -- प्रश्न व्यवका तेक । -- भगरु -- प्रर-- प्रश चटियोपने माकादानें दिसाई बेनेगला निव्या बामासकप नगर, वरिश्व नयरः महाभारवर्ने वर्षित मानसरीवरके पासका यह नगर ! -- शक्ष -- प्राचनीका राजा विजयः ! —शेग-पु॰ एक म्हारका सामारण करमाद रोग।—छोक्क~ पुक्त कोक के कपर भीर विधायर कोक नोचे अवश्वित एक क्षेत्र। −विद्या−सी -विवाह--प्र-मनुस्तृतिमें बायब माने ⊈ए बाठ प्रदारके विवाहों मेंसे एक, वह विवाह जिसे वर-कन्या परश्यर मेमसे मेरित दोकर माता-पिताकी जनुमति किमे विना ही करें। -बेद-पु॰ बार उपवेदों मेरे एक, संगोत-दास्त्र। ~इस्त,-इस्तक−५ परंत इस्। र्गप्रको-सी॰ (सं॰) दुर्गा । गंबर्वास-पुरु [सं] एक दिव्याल । गंधर्विम नहीं। गंधर्वदी था गंधर्व आविद्धी हरी। गंबर्की-वि गंबर्वका । शी॰ [धं] गंधर्वकी स्वीः सरमिद्धी र्गधर्थोन्साद∽पु[सं] दे 'गंवरंश्रह'। गंधवती-जी॰ (सं) पृथ्वीः वरणपुरीः व्वासकी मानाः शुरा मनमक्षिकाः भुरा नामक संपद्रव्य । वि० स्ती र्गममानी । र्गवान्-९ (सं] छर्नेश्ट । गंधाजीब-प्र• [सं] गंबी स्थव्योश । र्थयाडच-वि॰ (सं) सुरावृदार । पु॰ मारंगीया दुवा पंत्रमा जवादि मामक गंबद्रम्य । वाँबाह्या-भो (सं) यंवपना स्वनंतृधी रामदरसीः भारामधीतलाः गंबाको । गंबाधिक-पु[लं] एक लंबहब्य १ र्योद्याला!-- म कि॰ मईक्या दुमंथ निरहता। दु यह भूत्र । गंधाविरोजा-तु पर गाँव जिल्हा मरश्त्र द्वीरे शारिपर

लगाने है। ग्रीवास्त्रप्र-स्थी [सं] बंदानी जीव्। ग्रीवार-पु [शं] क्ल प्राचीन बनवर देंभारदे आस ग्रामका देखा समस्त्रा तीस्त्रा स्वर्ध एक शुगः। ग्रीवारी-स्थी है गीनाएँ। ग्रामास-स्थी [सं] प्रस्तारिंग नेपनात्। मित्र। ग्रीवारी-न्यी [सं] प्रस्तारिंग नेपनात्। मित्र।

गंधानम-पु॰ [मं] बातु ।

गपारा-वि* [फा॰] पवनशताः अधिकरः मनीनुकृतः। गबारिय-मी॰ (फा) पावक, श्रुवन । गवालुक-पु [म] हे 'गवम है गवाराम-(र [मं∗] गामधी । पुचमार घांडाच। गबास- • प • गोमधी बसाउँ । ई म्या गामेशी इचात । गबाइ-पु॰ (फा॰) विमुन दिन्छी धरमास्त्रे अधनी आंखीं देशा दी या उनकी बानता का, साक्षी। अदास्तामें किसी पटना दारे ववामधी संवर्षको शहारत दैनेवाला । गबादी-भी • प्रि.] गब इसी देखिनाहे दिया जानेवाला बवान, मास्य । गविष्ठ-पु॰ [सं॰] स्पै । गविहिल्ला [नं] स्प्या यसदता। करनेथी स्प्या । वि॰ गार्वे यादनेवालाः द्रष्युक्तः। गपीपु~न् [छ•] दे 'यस्य । गर्वीश-५ [मं•] मार्वोद्धा मारिकः गोरवामीः गोपाडकः ন্দ্ৰী সা≉−মী ৽ বাহ্নীর বছন । गर्बेड्-५० (मे॰) बाइनः है गरेपु । गर्वेषु शब्द्रक्र-ष्ट [मे] तूनवान्य-दिरोव ! गवेशका−गो [मं•] कमा नामक करण दे नीप । गवेरक∽द० [सं] यक्≀ गबेस०-वि० गॅवार । गबेश-५ [र्सर्ग देश नक्षेत्र । गवप ग्रवेचन-५ [मं] (इरी भुरावी दर्ग) मान्यी हुँहमा, शीजाा। हैन्सा यहना । गर्वेपणा-स्रो [मं] शाब टातकीस । गश्चपित्र-विश् [मैं] तताण दिया हुना अध्यवित । शकेपी(पिन्)-ति॰ [ri॰] वरेषय क्रशोतामा सोत्री । राहेममा १ - म १ दि १ गोजमा १ स्वेश देश गरेला १ गर्वेमी - वि॰ दे॰ 'गरेवी' । सर्वेदर्रे−(६ देशली प्रामका) राबपा-पु॰ यातेवाला । शब्द-दि॰ [र्थ-] गावके धानव माम (दूभ दशी गीवर भारि);गीरंशके बनव्छ । दु मायीका सुद्र। बूबा बरा गापः स्थाः गीरीयमः + पंदनमः गम्मा-स्रो [तंन] तादीका शुंदा ही बेलसी यह मापः षशा गेरीपना । बाध्य-दिन [सं] गीत्रातिमे दिलवन्धे मेरीयाताः गाद या इन बाहनेशामाः जागुद्दः बुक्ता हमाहरः गाध्यम-पुर गाय्युति-स्रो (नंर) त्याचन एक क्षेत्रदी द्र मार शे क्योंचे सह मार बागा है। गरा-व (स) रेटीए) नृष्ट्री । सु -वामा-वृ छ। होना ! गर्ती-भी दरेग्री । गान-की (का) रिएम समा व्यवहार्याम वर्ग बन्दाश बहरेडे किर श में बुमम दीव (बहमा कराना)। -गमामी-मं दीरेश गरे पुर अद्रार्श दिक्रवाना । मजराज्या शुक्र-माथमा-वरशालीक कार्यके मध मापने दूर भन्नता ह मानी-रि भरत बर्वकाना, दिश्यामा दक्षी कुछा है]

~हबम-9 वर विद्वी या दुवम भी गृह माण्डा इर्र-चारिबोद्ध यम अगदा अजा जाए। गमना -स॰ कि चहुना यसना इगना। वसीछा-वि॰ वदा हुआ हम हुआ हुआ है गस्मा~पु॰ प्राप्त, निवाना । गहकमान-भ कि समहना, शतसायुक्त होना । सहसङ्ग-वि॰ दे 'ग्रहासह । गहगहः गहगहा-नि प्रपुरतः, बारंद्र प्रत्यस्य हार हवा। २.० धुमवातसे, १५ उत्पाहरे मात्र। गहगहामा-मन कि स्त्रीत मर बदना परत करतेत होना । शहराष्ट्रे-अ॰ मृमधामन, दुर्ध-बल्लाइकै सुन्य । गहरोस्मा - छ दि धरा ६८मा। शक्क-नि निः गहराः यमा स्थप निरित्त हर्षण क्षतिन । पुरु शक्साई। शुक्षाः जन्न जननः स्नेत स्नयः गहमाः गीवा परमधरः । अवनः विषटः पंचतः । । और WEST ES ! शहनमा-भा• [मं] येथारता शहरारे(द्वेयना । गदमा-पु रंगस [ग] जार, आमृत्रम ! ० स॰ हि। पदक्ता दे 'गाइना'। गद्दविश्ननी स्थाप्त दि विद्र। गहनी-न्दो । बारहा छेट ईट ब्रह्मे छे दिया पहुनेया व्य शवा शेषक्र बाम निहासनेहा पर श्राप्तार i ग्रहमेश-अरु बंधद है महरशर ह गइकर १ - वि पूर्वमा बहुरा श्रोक्षतिह्ना माध्यतिहरू **ब्याप्टलः ध्वासम्बद्धाः ।** ग**हंबर्ना॰-**क कि बरशना म्या<u>न</u>च होना- द^{न्तर} रगनसम्बद्धाः - १ । गहण्यसम्बद्धान्य-म् द्वा यदश्र देशः । त्र । द्वरः वराणः । गहर-भी देर। दि गहन दुर्वस। गहरमा०~म कि देर सरामा। सरमा। कृरित हैरी कुन्मा । बाहरबार-पुबद शतिवर्नणः गहरा-नि॰ विसुद्री सपद अपूर्ण के स्थान का निवारि शीयो ही जिल्लामी वक्तादा प्रशास दर्धाएं है। मारी। कटिमा बहुत प्रवादा। जिल्ले मनदी गण बारी जानों स जा पढ़े देवंद्र श्वतावद्या गृह भी जारी स्वत में शंभातारे (काम)। [ब्लो रहरों।] =है-ब्लॉ महरायन नवरा बँगा। यहरत्वदी भार । हुन नवना -वरी वृंबी नार्रवन्ता भारती आठरार अन्तरे ।-वैर -भा न भीपतेशमा । -हान माहमा-देश ग win fe reit u talt unt ten urtigint केड इंदरांग प्रसास । -(स)प्रसा-मंत्री के क्षिमा, नार्थ विकास दोना। शह अपने करेर केर हैया। -धनमा-गारी या अपन धना देना होती देन बोजा पुर बुक्का वान बोजा : -मॉम माबा-10 8 Jan 4 San 8 ग्रह्समा -- अ दिश्तन्ता चेत्रः। म्राप्त चैत्रा रेग fre Ren ater 1

वास वानेवामा (दुवम, ब्रावाना दुव)।-ब्रिया-स्टेन

गचना • − स० कि गाँसनाः हैंसकर मरमा। गचएच-वि दे० गिष्कविन । ग्रमाका-पु॰ गवसे निरनेकी वाबाव । स्ती॰ व्यान सी ।

वि॰ मरपूर। गच्छ-प्र [सं] पेइ, गाष्टा बैन सायुगोंका मठ ।

श्यप्रता#-- भ० कि॰ वाना ।

ग्रह्मा • - अ कि • बाना । स कि • निवाहनाः अपने कपर केना। गूँबना- ' इरवा सक्ष्म भरत साँग्र रे'-मामगीतः श्रमानाः ।

गर्जन गर्जना=-पु० वे 'गर्जेन'।

गर्ज्ञद्-पु कि] सरमाः दु ध कोटः कटः हानि । राज-पु [संव] दावी लाटकी संक्याः लंगारेकी यह माप, ६० मंगुष्का सवासुर। ८ दिम्मवीर्वेसे एकः नीवे प्रवता । ~धसम≠~पुदे• गंबाधने ।-चंत्-पु एक वनी पवि इस्टिस्टर ।—कर्ज-पु॰ यक बस्तः † वादः, दाहु । — कर्मी-सी॰ म्य वतीववि १-क्टेस-५ हाशीके मस्तदका वमरा हुमा भाग। - कुनुम-पु भागकेशर। - कुर्माशी (दिास)-पु॰ गरक ।-केसर-पु॰ एक बहिबा बाल । ~कीडिस~पु नृत्वका एक मात्र ।~गति~की दागी-कीची मंद्र, गौरवमरी आकः एक वर्णकृत्तः इस प्रकारकी चाकवाको स्तो । वि - गजमामी ।--गजम-पु॰ हावीकोसी मंद चारु । -शामिमी-वि सी॰ हाबोधीसी मंद्र गीरनमरी चालवासी । "यादण-पुण दावीपर दाठी वानेवाको छ्च पासर। –गीनक∽षु 'गबनमन'। -गौनी•-वि लॉ॰ दे॰ 'गञ्जामिनी³। -गौहर-पु॰ [दि] गतमोती। - चर्म(मैन्)-पु॰ दानीकी साकः एक परेरोग। - विमदा - विमिदा-की इंहावन। -विर्मिट-५० एक उरहरी इन्हों। -व्याया-सी करित व्योतिपदा एक पीन वी मानके किए प्रशुरत माना नवा है। ∽दकका∽सी हाबीपर रखकर नवावा आने-नाला वड़ा नगाड़ा । चर्नंत=पु डाबीका याँठः गनेसः कपने रागनेके किए बाबारमें गाना दुई गूँधे। एक शरहका मीक्षा श्रीवपर किस्का हुआ शाँवा मृत्यका यक माय। -- क्सा-को विवदाः - दंशी-वि० [हि०] हाथी-दौतका नना हुना। - दान-पुदाधीका वाना हातीके र्गष्टरबससे बहनेवाना सद् । —घर् — व श्वपति सेमार । ~सक-पु शंका! −साछ−सौ भारी तीव जिसे बहसे हाथी स्वीवते ने ।-मासा-ली हानीको मूह । -निमी-सिका-न्दी॰ न देसनेका बहामाः कावरवादी । -यति- इ.स. १९८१ वालाः विद्यालकान गरेका सरवार वालीः रिवयनमर्दे रावामीकी बपाचि । --पाक्प-पु नेतिया प्रेपतः। –पास-पु॰ हाथीवामः महावतः। –पिप्पक्ती-मी । गत्रवीवकः । -पीपरः -पीपस-मी [दिः] वदः चीना निसन्धे मंत्ररी दनाने काम आगी है। —पुंगव—पु॰ वता द्वाची । -पुर-पु भागुकी पृत्वार रस बमाने ६ िए बनाया हुआ नियस मामका गणा कम गणी। रसाहर षातु भारिको पृक्षना ।-पुर-पु० इस्तिमापुर ।-पुष्पी-सी॰ मागीन । −ब्रिया−सी धाऋी चीइ । –संध− पु॰ भित्रकाम्यका एक भद्र ।-वंधन-पु काथी नीधनका ·[रा । -थपनी -वंधिनी-री दानियोंना सरननस

इस्तिज्ञाका । -वव्सक-पुगमेशः । -बाँकः -थाग-पु [दिं•] दाथीका अंकुछ।—धेकी—खी• [दिं•] एक तरहका फीकार, कांतसार ।−अक्षक-पुपीपकना पेह । - मक्षा - मक्षा-की सक्की, चीर। - मणि-पु गबमुक्ता ! - सब्-पु गबदान ! - साचक, - मोटन-यु सिंद्र। - मुक्ता-सी कशिसमय-सिक्ट मोती निसका हाबोंके मस्तदसे मिरुकता माना बाता है।-मुक्त,-बबदा, ~वद्ध~पु गणेश । ≁सोचन~पु विश्वका एक हम । -मोसी-पु [दि] गवमुका । -मौक्तिक-पु॰ धन-मुका ।-यूय-पु दाधिबाँद्य श्रृंड ! -रय-पु विश्वात र्व जिसे बांधी कॉयरे थे। -शत-पुर बहुत बहा हाथी गर्बेड्। -डीस-पु॰ एक शास । -वस्समा-सौ॰ गिरिकरको !−विस्रसिता−नौ≠रक वृत्त ⊢वीयी−नौ रोदियी सुगशित और बार्स नक्षत्रीका समूद्र । -- प्रक्र-पु॰ दावियोंकी सेमा। -शाका-की -शिक्षा-मी॰ शिथर्निकी सिकाने, सामनेकी निवार इस्तिश्रास ३ −साञ्चय − पु इस्तिनापुर । −स्नान – पु हाथीका महानाः निरर्थक कार्न (हाथी नहानेके बाद क्रीचर, बूक देहदर टाक टेना है)।

यह्न−पु [फा] चंदारंका यक साम, १६ गिरह, ६६ ईमा सारंपी बादि बजानेकी कमानी। कोहेका छए वा छए बैसी करूरी विसमें शहर गरी जाती है; यह तरहरू। तां । वोहियाके कपर रची वानैवाली स्वर्धारी पररा । ─इकाही─पु अक्तरी गव को ४१ दंबदा होता है। गज़क-प कि] वह घटपरी चीव को शराक्ते साम गा श्चराव पीमेके बाद द्वरत सावी काम चार सर्मिका।

तिलक्षक्ती। क्रेसेवा। गज़र-पु [अं•] सरकारी मनस्वार, वह सामयिक पत्र विसमें सरकारी स्वमार्थे प्रकाशित कीं। समापार्यक (करावारोंके नाममें) गैकेट'। मुख -होबा-बिसी स्वता बा पुचका गबरमे छए बाना।

गजता-न्यो [सं] शावियोंका सुंद ।

राज्ञमधी−यु (पा) नवनीया रहनेवामा पद तुक्त राज-बंध जिसमें प्रसिद्ध विनेता महसूर गजनवी हुआ। ग्रज्ञमा*-- अ॰ कि॰ गर्वन दरना ।

राक्तमी-पु का] भग्नगानिखलका एव नगर वो सह मुरकी राजधानी था।

गृहच−पु [अ•] मीच कीपा विपन्, ।माप्रता अभेर अस्म । —इम्माद्दी – वुर् श्वरीव बीप देवदीप । -- भाकः--वि अतिमुक्त युवितः। -का-अविदाय नेहपः वनुत वडाः अद्भुतः विरुक्षणः। -पुरुष्णा-रंभावाः कोषः। सु॰ -हृटना -पद्मा-अपानकं गारी विपत्ति भा पर्ना।

-डाना-साफादरमा जुस्य दरमा भारी अन्तर्र दरमा।

गञ्जवीकार-वि गमन वर्ते गत्र दानेवाला । गजर-पु वहर-पहरपर वजनेशका पंटार भीरका पंटार जमानेकी थेटीर चार जाड नारह नजनपर उननी ही नार जरूर पर पत्रनेशमा श्रम्या मान और सप्ता मिता दुवा म्हें। - न्या-व शहके, पी करता - बदा-व

भ"रेटः घरनामस्य । गत्रसमा राजस्मात-पु यात्रस्थाशस्त्रापादुशामातः।

```
सोधवंड-गाव
```

राजियेक, गांवविक-प्र+ सिंगी गरीया ! गांधर्वी-मी॰ [सं॰] दर्गाः वाणी । शांदार-पर [सं] मारतवर्षका एक प्राचीन जनपण. केलाबरसे ब्रांगरकरूत महेदा अंभारा गाँचार देशवासी: प्रांचारका राजा- सात स्वरीमेश बीसरा। सिंहर- एक राजा एक संबद्धका - प्रचास-प्रश्न यस राम (- औरक-प्रश एक शाम ।

शां_{दारि} – प्रसि } दशेषमका मामा क्रकति । गोबारी-सी (सं•) गांधारकी रावकुमारी, दुवींधनकी

भारतः एक रागिनी। सभी मोसकी एक नारी: एक फागाः यश्च विधारेची (भै०): जवासाः गौता । शांबारेय-प [मु॰] दर्शेयन ।

गांधिक-प्र• [सं] गंपी, दक्षकरीशा नंबद्धका एक नंबदार धोशः हैगाइ ।

गाँची-पु॰ गुप्रराती वरबोंका एक मतः हर रंददा एक क्षेत्र क्षेत्र मित्रमें तम दुगन शती दी मक पान शीवा रेताको बीएवी महीके एक बहुत वर मेता जिल्हींने साव

भीर अवसाढे आबारपर राष्ट्रीय आंधीलन जनावर पारतकी राराध्य दिलाया (जन्म-२ आदशर १८६ , शल-३० यनवरी ³ ४८) । —हाची-मी+ गाडीकी किर्मानया

रोचे । ~क्टर्स-ए॰ गांचीका बोलन-मंत्री दश्कीय ।~

याद्र-प्र साथ और अधिमादा सिकान विमन। रामर्थन प्रतिपादन और पने पैमानेपर प्रवास गांधीने दिया या । शोबीचै-त [मं] गंबीरता गहराहै विश्वकी रिवरता

अध्यक्ताः प्रदिश्रता । गाँब-५० माम छोटी वरती ।

र्शीस-स्त्री॰ स्कारत भेरकी बाता बेटा गाँठ, परशा तीएका कसः * निगरानीः शासनः सर्विदारः।

गाँसमा−स॰ (८० गुँधमा। कममा छेरमा। रे रिक्साः बरावे राज्य ।

गाँसी-स्रो तीर भा दा गण, इतिकारको में का गर्देश

श्रदश समजवाती बात । गाँडको-त दे 'गाइक ।

enge-scho ? faiu ! गाहक-पु (मंग) वय प्रशासिक वार्विकी वर्देशकी किया मगर या देखदे बर्जानीय स्थान-बालपे भारत विधानीबाला-बह शुरु नक जिल्ली मगर अवाधनपर आदिका दिवास हो।

गाळपणां - वु दे 'बारपक । गागर॰-न्धे॰ पश समाग्रा । सु॰ - में मागर महना-

थोतेने बर्ज व्यक्ति वानीका समारेण ब्रह्मा ।

शागरी॰-न्ये॰ द॰ नगरी ।

शास्त्री −म् एक लाइका जामीशाह करता ह

गाछ-इ देश रीपा गार्चा-भी बच्छ मेनी गुरुवी ह

गाफ-की गर्बमा विकरीकी करण दिल्ली। या चील शाम । हा॰ -तिरमा -यद्या-रिजमी तिथा अन्तर

गाजना-०० हि. शहत्रका शुक्ती वारे प्रीट् बीएम है 1 140

मरावे आहिते स्वमें भी गादा बाता है। -सूर्या-स्व तरक बस्त ।

tn

शाक्ता-पुरु[क] मुनेषित बाउरर दिने निर्धे क्षेत्रं हुई जिब गामीपर महाती है।

सामी-पु [थ॰] काफिरोड़े सक्षेत्रका सुसुसदाब क्षान विज्ञताः घर वीर । - सन् - प्र वीर प्रश्न पीताः सिर्वे-प्र महसूर गमनवीका मोबा सालार महका वे बारल है राजा सन्देवके हाथीं बहराहवाँ मारा द्या ।

गादर-पु॰ [में 'गर्रर] मोरेको पत्री मा रपनेर । गाटा!-पु॰ रीवडा छाटा बहरा बहान होते हैं कि **रै**लीको माधना ।

बाद्र-पु॰ ग्रह्मा समाव शामेचा ग्रहा एक, सूर् रोवादी पैंका कर्णकी शाल । ग बना-न्य• कि यह वे स्रावर विद्रीत दस्ता प्रदर

करनाः परनीमै पेशाताः विचादर सामा । गाहर । नी महा गाइय-पुरु भिरो बाइत ।

गावा−पु॰ वानमें नैदनेदा शरदा, दमी-वक्त करदा बैजगाबीर कीनरके मी बक्त गड़ दा जिसमें नज का जिस बरमंडे निण बरतम रसा जाता है। गार्का-स्त्री वर्षिके छक्तरे सक्त्रेवामी सुरुष्ठे द्वस

रेक्नामी । - स्रामा-पुर साथी वा वादियों समेवा रवान १ – याम – ५० गारी प्रकितेतामा । राष्ट्र−4ि॰ [मं•] अवग्रहम क्रिया ह्रमा मणा गरंग

बसा बना। जून शतकता अस्परिकः बहिना तेता द्वारे -मृष्टि-वि॰ धन्यम् विसद्ये <u>सही न सते ।</u>

गाइ∽पु॰ संकट कडिमारी बरवा । गाहा-विश् की अधिक पत्ता अ ही, दिलकी दररा दे डीम परार्थका बंध कुछ सदिक हो। बनिहा सीमा उर्व गहरा: बक्तिमा दिवर । क श्रव है । भारे । इ. इ.च्य हुमा मीरा बनदा गंभी। यतनामा दानी । -सन -(र्त) छत्रमा-भेरका सूर दिया कामा। बहरी मित्रश हैक' द्यम संबंधा केला। क्रियेच केला । -(१)का मार्च

विषय्यामी माथ देरेवासा । - विम-नप हा^{नेदारी}

िम । -यमीनेकी कमाई-वरी मेहबरने कमा \$7 दैना । -- में -- विश्वत । शाहिक-म बामक्षा जारते भगती सरहा । शास्त्रज्ञ-दि [#] माप्तिर स्वी ।

गामपाच-५ (१) यमार्गका नवण्या यगार्गको वर्ग शबाद बारजा पञ्चल । शास्त्रिक्य-व [कि] बरवाभ का शमूर है शामेश-दु [ते=] मेरेशहा उशामह ।

ends-2 Lift and s शासक्य-दि [१०] य ने देशर ह शाना(म)-द्र [०] राषद्र, रहेवा। देव रे र

गनामुगनिष्ठ-दि (११) अंशन्त्रास्यव । शाली-की चान्द मादि की तथा पद धान देन उप

र्वती भग्ना दुन स्वयान हारमुळ्यु [होत] शंभा सहित्रह वीष्ट्रभा भी रहते

रामान है कि कि प्रवास्तान्तिक करते । सामान्द्रवृति के देशका प्रति अन्ते देशका नार्त

(शरकका) । स कि 'गइ-गइ' शब्द तराब करनाः हवा गदगदाइट-सी गदगदाने, बादक गरकने आदिश्री

जावामः हुक्केदी शावाम । गबगबी~को भगांबाः हुगहुगीः

गदगुरुद्ध-पु॰ भीभदा।

गब्दार-पु मतवाके हाथीय साथ भाका तेकर चक्री नालाः महानतः।

गइना-म कि भुमना, पेंसना। भुमनेक पोड़ा होना। पुसना समानाः बमना, ठइरना, रिधर दीनाः गाहा बाना दफन दोना। (नंदा मादि) राहा किया वाशा। सु**॰ गइ बाना** – लजासे सिर सुद्ध जाना, भराविद्ध सका श्रमुमद दरना । शङ्गा चन या माख-दरतीमें शाहबर रसा हुमा पन दक्तीना :- मुद्दी या गड़े मुद्दें उला हुमा —इरामी मुको हुई (मिप्रिय) कार्तीको चर्चा करना कार्रा

गर्पन्द∽पु सर्दोद्धा स्द शका स्ट स्था। राइप-मी पानी, इस्ट्रहमें दिशी बीक्षके करदी में वस्त्री इनमेका शस्त्र । —स्- गहर आवासके साह झुट, इर्रत । मु॰-होमा-इन जामा वस बाजा।

श्रद्भमा-स क्रिश्मिकता श्रयक्ता।

गङ्प्या∽पु न रो गटदा इकश्रक पाल क्रिसनें चीक, भारमी पैस श्रृष जाय ।

राइयद∽नि गट्टनट्ट अस्त-वस्तः। पु, स्त्री अव्यवस्थाः, मीकमालः वद्र-समसी पपद्रवा छरावी रोगारिका प्रकीप । च्**स'का−पु गो**समाच सम्बद्दश समेखा।

गइवडा~पु यह गएडा जिसका मुँद कपाने थास आदि रसदर छिपा दिवा गवा हो।

गङ्बङ्गाना न कि॰ यहबङ्गोना । स कि॰ गङ्बङ

करना । गष्वदिया-वि॰ यहवह करनेवाका अञ्चवस्था उत्पन्न **करनेशमा**।

गहबदी~ली॰ दे॰ गहदह । गडपता गडविरमु-५ [मं] शहस्त्र । गहरिया-पु॰ एक हिंदू बादि की भई गुक्ती है।

गक्कात - लो पहिषेक्षे क्रीका गर्पाना-स कि नाइमा का बे॰।

गहरा-पु. हे. नहश । गर्ही-मी छोडा गर्दा।

गदा~पु देर गाँव रादा । ~बटाईूं-न्सी० सेत्रधी

प्रपत्रका विमा माँ है दूर बोटा याना। गङ्क-सी एक नरस्यी मछना ।

गङ्गा-म हि॰ सुभाना भैंपानाः > 'गहवाना' । शक्ष-प्रशे यहव ।

गदापा गदाप्पा-त है गहपा।

गदापत•-वि गाने पुमनवाला। गदारी-नो॰ इत पेरा आही कडीरा पिरमी, गांल

भरनीः रिरमेच रीपद्म गर्दाः एक वास । -बार-दि॰ भाडी पारिको राष्ट्रा परदारा जिसमें गहारी जैसा सण्दा हो। गदाबम-पु॰ ८६ तर्दश ममद ।

गबासा-पु• दे• गॅबामा । शक्ति-पु॰ [सं॰] वछवाः अविधमः, गरिवार् वैसः।

गिक्षमार-वि॰ वै॰ 'गरिवार'।

गह्न-पु [मं•] कृषका गक्यंट, येथा; गङ्गाः बरागः निर र्वेद बर्त्ताः कृषक्रमाला भारती। केंचुवा । वि कृषक्वाका । गङ्का गङ्जा-पु॰ टीवीदार कोरा, शारी, गट्**दका** 🕇

पुरसका छोटा । गर्क-सा छोरा गर्वा।

गद्रक-पु (सं•) गहना; अगुठी ! गहर, गहरू ∽वि [सं०] कुवशा।

गद्वरी−सौ॰ यक पक्षी। गर्भना, गर्बोस्टना~पु कर्चांकी पुमानेका छोटी याहा ।

गहेर−पु० [शं•] बान्छ । गइरबार-विश् वेरवार !

गईरन गइरिन-सी॰ गहरिवा सी !

गबरिया-पु वे 'गपरिवा'। गहेरुमा -पुर चीपावींका एक रीम ।

गड़ीमा-स जि• सुभाना पंसामा। गराह-प्र [मं] प्राप्ता कथी पीनी । गद्योसमा-पु वयाँको शुमान-फिरानेको छाया गाही।

गद्दीना-पुरु वह तरहका पानः 🕈 कॉटा । गक्र−पु यख्पर एक रसी हुई भीजोंकी राशिः ताशके

पर्श दागव आरिका दरः + गट्दा। -वडुः-मडु~ वि दिना किसी अप-नियमके निका हुना, रहस्त-मरत ।

—का गङ्ख-देखा ६८ वहुत ज्यादा।

गडमगोरू-पुरु ग४वदशाना । शक्टर शक्तर-पु॰ [चं] भइ शप!

गङ्करिका राष्ट्रकिका-त्या [मृं] महोंकी पाँता अधिरिक्टब प्रवाह । -प्रवाह-प्र मेरियावसान संवानुसरण।

गद्वासी−4 पात्री तुषा नारकीव (गाइटम मी−ईश्रर तुत्ते मरक है)। -जूला-पु अंग्रेमी जुता, बट। −बोसी−को अंग्रेगी, गेरॉसी बोसी।

गङ्गी-की॰ छोटा यह देश साहरू पर्ची, हागर्जी, होते नौरीके नरकों भारिका यह पर यह बमाधर रहा। हुआ हेर।

गब्द्रक गब्द्रक-पु [सं] बक्यात्र-विशेष, गश्या । गङ्कां-पु॰ गहा गर्ने। गईत-वि॰ वना हुआ, शस्तित । ग्री ॰ ग्रही हुई बात ।

गद-पु॰ कोट किया अद्वा, बेंद्रा सार्र । -कसाम-पु० रिलेशर । -पति -पास-पु यन्द्रा प्रधाम अभिग्रारी किनदार । -बारक-पुक गण्यास ।-बास-पु गरूपनिः

कत्तरार्धतका यह प्रदेश । मु॰ -बातना,-तोदमा-किना पनव करमाः कठित दश काम करमा ।

गइत~की गढम। बनावर ।

गर्म-मी वजावर आहुनिः गरुन ।

गहमा-स कि रिमी चीत्र उपानानमृत परार्थमे भीशारीची सहादनासे इए बनाना रक्ता निर्माण करनाः कार-र्टाट या बीक-पीटस्र मृदीन करमाः करपना दरना समन् उपजाना पीरना भरम्बन दरना (मा•) !

गदवामा-स क्रि गहाना। गर्त-पु वर्गानमें वाण्यर बनावा दुवा दा प्रस्तिनिष्ठ

भैनिकोका दरता या उक्ती जा किसी ग्यान, व्यक्ति आदि की रहापर निवुक्त की गयी हो। पहरा रहण्ड प्रकरा । म -में बरमा:-में स्थना-परावे स्थात: प्रकारओ बंद कर देना।

शास्त्रा −ां स॰ कि॰ निर्धादकाः ≉ विसनाः स्थरकाः गमाना। * रदायमा। मह बरमा-'आदी गात बढारथ गारचे।'-सर॰।

गारा-पु॰ मिट्टी या पुगे-सुर्गोका केप किसमे वर्षे जीकी बाती है। प्रशास करने है किए आलन है वर बनाया हजा मिडीका केए । **~काम्बद्धा**~ए० व्यक्त राग ।

गारिय-प॰ भि॰ी पाषकः सक्र ।

शारीक−को है साली । शास्त्र - दि० मि ी सरद-संदेशीः सददके आकारता । प० बह मंत्र दिसका देवता गरह हो। सीपका अहर हर बरशेक्ता संबा प्रधाः यकारक, गवत श्रदा सीमा । गाददिक गामका(दिम्)-पुर [धं] शांपका बहर बद्यारनेबाका, दिवरीया संपेता ।

वास्तिमस्-वि• [सं] गुरुष-धुंबेभी। य इदा । पुरु वस्त्रका भंभा पद्या ।

शारी-पु आसामका एक पहाड़ा वहाँ दलनवानी एक वंगको वादि। 🕈 गर्पः मीरकः प्रतिष्ठा 🕨 रार्श-(व (सं) यर्ग-रंश्यो ।

गार्गि~प्र [सं] गर्न सुनिका ९४३ सार्ती-स्वा (सं] गर्ननी प्रयोग प्रचनिवशीमें अधिक वक महाराष्ट्रियों की दुर्गी र

राशिय-प शिक्षे गर्न गांधी प्रत्या पुरुषा मर्ग द्वारा

श्रीकर शंब र सार्विद-सी हि] सर्व गोशवाडी स्त्री ।

शावर्ष-प्र [अंक] गर्न शोषने कावत प्रमा पानिनद पूर्व क्षत्र एक वैदायस्य ।

शाबरें च्च [मं•] गावर । गार्थ-पु॰ [भं॰] रक्ष्ट, महरी। हेनची रहाके निए शिक्षे-

यार् अविकास की संश्ते दी है बश्य में बैहता है। गार्थम-वि [मं] गर्(म-गन्त) शंत्र्यश्यतेत्रात्याः थरदाः। गाउँ य-पुर्व [तं] सन्तव ।

शाम-दिर मि] भ्यारांशी । च स्थेत्रा नाम । -पदा-

बासा(सम्)-पु बद वाह बियमें रियमें दर सर्व शे । मार्थ-(रेक (रेक) गर्वन्यवधी। गर्वके बीपण-वर्वनके जिल् वर्षाव्य ।

शास्त्रपुण-विक [sta] श्रूषत्रति श्रीवंता । पु शूक्षत्र विकास आवा र दर्भ रच्या

साहत्रम् -पुर (११०) स दिस भूरत्व ।

बहाद प्राथित-मी (ते] व्य एत्रवी अकि शे व'रवारहे बंधानगर बणायी जाती है ह

मार्थेमेष-पुरु [बं] युरायदे किए कर्मन वंदवह र सार्वेश्वयन्तुरु (६] द्वाराधनम् राष्ट्रवर्धः विन वर्ववर्

KARE (IKIM) PERMI गाम-पु चेराडे होन्रो केंग्स प्रश्ती और सम्बन्ध है d'us un alle ammit neall arement मान्द्राद्य (कानद्र रूप्ये)। मुद्र र न्त्रीयरून्य स्थर्न (

शता−सस्री०~शी एड प्रश्नामास वान्यांकर बात करला। मुँदबीरी करमा-राज करत देशिका वस पारे'-रामान । -पिकामा-राजेश रेन नामाः दुवना होगा। -पुरुष्तामा-वर अनुष्या देर प्रमाना स्टेना। -दबाना-मानास र र र रहा वक्रवास करवा । –आस्वा–द्रीप शासना। हुदमै सम् टायना । -में जाना-हैंश्मे पाता।

गालम-प्र• सिं•ो निरोधनाः गराता । गहरना 🗝 सः शेरमा। गाम्प-४० [बं] एक अबि का निवर्धकरे हिन्दकी

पारितिके पर्ववती वक बनाइस्था नोक नेट ह गाला-पु॰ भूगो पुरै भरम करेबा पीना,वृत्री, हन्दरोते। गासि-मो• [ह] गाहो।

गासिस-रि॰ शि॰ो निषोदा हमा: यनवा रजा । गासिकी-भी (र्व) तंत्रकी एक मुहा।

हास्त्रिय-निक लि है बोत हिल्ला दिश्यो; शक्त की मानेदाला । प्र वर्ष हे प्रसिद्ध वर्षि विरुद्धा #ग्द स्प्य गाँडा करनाम ।

गामियस~ष० कि देशवना अधिदन्द संघर है र गान्तिम । - विश् देश 'धानिय ।

गली-मी॰ यंत्र वा अवनीत शन्त, स्वयंत्रा परिशा कांग्रन करानेवाची बादा निराहा में राजा कोरका भाक्षील गीरा । - मानाज - गुप्तना - भाव पद पूर्विके गाबिको देना। अपन्या दुर्वभन्त । प्रश्नाचान विवासके पूर्व विद्यारी किया करबीका पाँउ मान पर्टी कारि बनामा ।-वहका-विमी भीके वृश्मि कार्य निम्म बात बहनाः बैमा सब्द्राः बहना । शामिबीवर उनस्य गानियाँ वचने कथमा ।

ग छ ०-वि गाल वजारीवालाः धारी वधारनेवालाः र बालोडिस-वि [ले॰] मधेमें धूरा वीमारा मूर्रा उ परीवार को बन्दरताल १

गामाह्य-पु (गं॰) कामग्दा ।

शास्त्रज्ञाण-चा कि बीनम बहुगा। गत्व−तु (का॰) गाप−देना पुत्र (ग्रींश । −मुझी−मी भी १४ । -काहास-५० वह थीता वित्या बीजर होग निकला वी !-(शाला-इ मरेभेभालम हरो बनारेमी क्षान बदारनेकी जनह १- गुपु - दिश्यापर अव (रीमा)। -प्रय -थण्य-वि दुस्तरवी मान वमा ब्रह्म क्रिक्स वरे देखाला (लाश्ती) । चेहरा-दि शावरेत 25 नेहरेताला ३० असी अक्षाम-५० एवं प्रतिष्ठ पर्वन्दीर्थ -शोर-दिश्यमाम् । अस्यान् वर दाव देव अ अपने बाबा !-कारी-मा चंबर मंद्रीको दक्ता दारापी ! -मक्तिया-त वरा परिया माना ।-वस्ती-प्री अरको देश वन्त्रीनविश्वती । इत् अत् इदि वन्द्रम " बुक्या-वि भा प्रशास कावरी बाता है ला ब र पान की दृहरी।-ब्रास-ब्रास-वु १० दरदेश संन्य। -बाराय-पूर मुदर्भका क्या देव र-विदर-निर 🖅 हैन्द्र अपने बागान्त वार्तपृष्यच्या १००वाहमा लतु र हु १ तेन्द्र स्थ देश । - मुख-पु वीवाबीये यह मध्य बनी मेर ब्रेंका व्यवस्थानुक संपक्तर मरारच दिल्ला वर्ष

ति (तकंका । न्यस्क, नवन (यस्) - दि० व्यपिक स्वस्ताता । न्यस्य नि रोक्ति मुक्तः । न्यस्य निव रोक्ति मुक्तः । न्यस्य निव स्वस्ताता । न्यस्य निव स्वस्ताता । न्यस्य निव स्वतास्य (दि० । न्यस्य निव स्वतास्य (दि० । न्यस्य निव मुक्ते देवाना सक्य रिवा । न्यस्य निव स्वते क्षेत्रं स्वाह, क्ष्या स्वति । स्वस्ता न्यस्य स्वता स्वति स्वता स्वतास्य स्वतास्य

गलक-पु॰ [सं•] गमन, गति ।

प्रस्क - पुंच कराविक देने बाब लंगा, चमा ब्या मुक्तिपदार दश बिससे एक खास ऐक खेला बाता है। मताब क्टीका तेल को बाती करती मिलवा-सुच्या है। मताब - पुंच विका करते, संस्था (सामनिक पत्र कान्त्रिक)। विकास-सेता।

गतांत—वि (शं∘) विस्का लंग का गया हो। गताका—वि० (शं॰) लंबा।

गतागत-पु [सं] पाना भाना वाम मरण । वि आपा-गदाः भाने जानेताका ।

गतागति च्ली [र्मण] मरमा और विर बन्य केमा । गतानुगत् च्यु [र्स] प्रथम्ब मनुसरण ।

गतार्जुगतिक-वि (सं॰) बॉक मूँरकर इसरेकि गीछे क्रमेनाका अंशानुपायो । राजाराज-प (सं वेकाला और कारण व

गतापात—पु[सं] भाना और भागा। गतायु(स्)−वि॰ (मं॰) त्रिएको भागु समास हो चली

ही। कमनीरा देवान । गतारा, गतारि! — स्रो चोदा बॉचनेको दरसो। जूल्मे नैसको परदन बॉचनेको रस्सो।

गतातवा चर्णा [सं] वह न्या की कतुमनी न होती हो हिनाः

गसार्थं नि [ले॰] वर्षद्दीन; समण दुव्यः क्षितं । गसार्कोकनि [लें] काकीकादितः मदश्यद्दीतः । समारानि [सि॰] तन ।

गातानुन्ति [4] वृतः ।
गातिन्त्री [4] बाना गानतः बाङ रक्षारः इरक्षाः
गातिन्त्री [4] बाना गानतः बाङ रक्षारः इरक्षाः
कांका पर्वेच प्रदेशः पानत्त्रेचनेथे शामक्षेत्री शीमाः
दशः इरक्षाः रिपतिः इक्ष्मंतः प्राप्ते वृत्तः योगातान्ये
प्रणेचिति वृत्ताः स्वर्णतः स्वर्णतः स्वर्णतः वृत्ताः
गातः वृत्ताः स्वर्णतः स्वर्णतः स्वर्णतः मृत्यः
रेददाः वे गतः । -क्षांता न्येच-व हर्षः, गाम बार्शिः
कांत्रे गानकी त्रवण हृद वामा । विद्यान्त-पु-विद्यान्तः
न्यी -शास्त्र-विद्यान्त्राः विद्यानिक विर्णाणः दिवाः
न्याः न्यास्त्र-विद्यान्तः । निविद्य-व्यं वेशः इरक्षाः
रार्शितः (६) । -चानिन्तिः मातिकान् । न्यास्त्र-विः
क्षाराः विद्यवदः मरिदितिः।
गातिक-व [4] गामलः वानः मात्रे व्यवस्थाः वासवः ।
गतिक-व [4] गोनलः वानः मात्रे व्यवस्थाः वासवः।

रातिमा-सी [मं] परस्यर कमेर दोना। वक नगा

पक्र चेथा । गक्त/—पुषक्र तरहकी वश्विग टक्तो । गक्त/कस्त्राता≔पुनकृष्यता ।

गत्तास्त्रसाताः । गत्तारमञ्जूषे गर्नः ।

वास्तर-वि [सं] जाता दुष्णः गतिमाम् । नाशमान । गयश-पु पूँजी, जमाः माल- प्रान्दरे गण लादौ गर्यस्यर श्रीम सिरानि पीपरि कह मानति'-मूर्ण चनः सुंह । वासनाण-सण्डी जीहना यक साथ वीपना। महस्र

शब्दाण-एक का बाक्षा पक तात्र पाण्या। परस्त बार्ट करना । बाद्-पु किसी नरम पीत्रपर कड़ी मा कड़ी पीत्रपर नरम पोजक मिरनेको बाबाम [केन] रोगः पक विच माच्या अस्त्व सावण, मेचयानि वरूरामका छोरा मार्र एक ब्रमुस्स रामको बानरी सेनका पक सनक ।—बास-पुक-[विच]

क्षाबीकी पीठपर बाव की जन्मा । —क्षा(इ.स.)—पु० वैदा देश कमर्गे । सनका—पु दे 'मतका'।

गवकारा-वि गुणगुणाः गरम । [सी । भारकारी ।]

गद्गाद्ध-ि वे 'गहद ! गदम~पु (सं०] स्टब्न, वर्णम ।

गचना - प कि द्या, नेकना । गचनमः - विश्व स्थान को गठ ।

गन्मां ~पु नान बनाये वा उसकी भरण्यत करते समय कस उसमें रसनेके किय कमानी बानेवाली ककडी, याम । सविकाल वि [सं] वाचाक कामी । प्र≉ कामदेव ।

शर्भरतु—। एउ प्रभावक कामा ग्यु॰ कामय्य ग शर्मर—पु शक्तरयोकी शक्तामी जानेवाठी रर्गरार वगठनंती। शर्मर—पु (ज ो निद्राय यगायत, निर्देश ।

राष्ट्ररा−वि॰ गररावा हुना सवपदाः। शक्रामा−व कि॰ पदनेपर दोनाः सीवनाममर्ने अंगेंदा अरना, विकताः वॉरामें दोवश सानाः और बुरामे

काना। ॰ (०० पररासा हुआ।
वाहकानि मेला मिट्टा या धेनक मिठा हुआ (पानी)।
वाहकानि कर दि पान्य होना। छ कि॰ सेठा इत्ता।
वाहकानि कर दि पान्य होना। छ कि॰ सेठा इत्ता।
वाहकानि कर दि पान्य होना। छ कि॰ सेठा इत्ता।
वाहकानि कर दि से १५ वाहकान्द्री कारवा सरती होत्य
वाहमानी कर दि से १५ वाहकान्द्री कारवा सरती होत्य
वाहमानी कर देवा। नया नुव स्वाना । नहीन्द्री
वाहमानी कर देवा। नया नुव स्वाना सिटामेर्ड हिल्स

गरेका चुकमें लीत्या। यह अगर जहाँ राभेके कोटनेका निधान हो। गत्रहरूपेला-ली० एक पीथा जो दवाने काम जाता है, पुतर्नवा।

गबहरा॰-9 गपा गरा।

गन्दहा पुर्विषय । गन्दहिरा-पुरुष पुरा भिसपर पर भारि मान्ते है।

गीवहीरे जैमा एक विशेला ध्रीहा । गर्दासक-यु [सं] अध्यित्वसार ।

शद्दिक-पु[री]सदिनीतृथार । शर्दाशर-पु[री]बारल । शरद-सी[री•ीकाटका नगरक पर

वर्ग-की [40] भारता बना एक प्राप्ता प्रिवार त्रिन्न दे एक निर्मेषर मीक्ष्यार बढ़ा कर है कमा होना वा ग्रान्। बोमके स्टब्से परनावा प्रभा ए-बाका गोना किन सुरुष्टी सांद भीवत द ! - भार-वि गां। भारत कर नवाना ! तिर्शिष्टी-स्तै॰ एक पेट्ट । गिर्रागरी-सी. निकारेकी तरहका दक क्षिलीमा । गिरञा-पुर्वसारबोका उपासमाग्रहा एक पश्ची । ह स्पी दे॰ 'विरिया'।

गिरद्रक−क देव 'विर्र 1

गिरदा! – ५० पदर: हर्षिया: फाड़ीके नी ने दखनेका गीड़ी कपदाः वामः संप्रतीका मेटरा ।

गिरदाम•-प• गिरस्दि ।

गिरवायर∽वि द• 'गिरांवर'। गिरमा-म॰ ति॰ उपरंधेः अपनी अग्रही मीचे जानाः धारे रहनेमें इसमयं शोदर जयीनपर था जानाः दहना (बर, दीबार): उसहमा: बाहमा: (मदी भारिका) दमुएँ बबी गरी आर्टिमें मिन्टमाः छीत्रशाः भवनत होशाः मंत्रा होना, परना (मार): दरसना पायल होदर (तर काला

इ.स्मा: मारा जाना या चनन बीनाः (शक्तिः वर्तता भारिका) परमा, रास दोना बीमार दोना साहबरनाह इरमा (बाबदा शिकारपर)। किमी चानके किय बनत चार दिग्यानाः सरव अस्पाहरदित होताः हेन रीमदा हाला बिराद्य सिंद का निमायन भी बंधा और भागा माना बाना ही (कालिय, अधना विरता)। विरता पन्ता--Me शिरमे चटन वरी चडिनार्रमे । शिर पत्रकर-अ निर्त एरत । शिरा-पदा-वि जमीनपर वहा हुमा। सुध एका दुभा दश दुभा शीर्गशीर्म । सुरू विस्थर

मामना सीदा करका-दरअमर पनवर दरवर मामण E EINI I गिरमार-पु गुक्सभका एक एर्ड को वैमीका वस प्रवान

नार्व है।

विद्यारी - ६ विद्याद वर्षेत्रक रक्ष-शन्या विद्यारका । रिरायन-गरे कि विकास की मान पढ़ानाः यनराजाः

44 I शिरक्तार-वि (का॰) परश दुश्या ग्रेमा दुश्या पैरा हमा वंदी । शिरास्तारी-स्रो (चा) विकास बरमा वा क्षामा केट ह fittet-eit & fatet !

शिरमिष्ट-पु यश वरवा [अंक दिशोमेर] वश्यास्थामाः क्षत्राक्षत्रः दवरार ।

शिहमिटिया-५ स्थि वर्ष देशमें तथा दूका छाउँद रिश्रामधी महार ।

शिरबासन-पुर देश नोर्याय देश परीकृत । गिरवामा-गं दिश गिरामा वा के। तिराची - श्री १ वया, रेइन्ट वंबय वधी पूर्व थीव ! - गाँश -म् रोबद्धा - ब्राय्-पु १४वः वद्यानेवानाः वेदवरात्। -बन्धा-द हेश्याना।

विकासी-भी है गहरूकी ह तिहरू-महो (बान) र इ वंबया गुन्दे प्रकारना नेव देश रेस भारके पीर्तपा मोहा पेर पुराने का अधिक रिकार mut en angeite bra meter Lei greier. मन पेना मय बाब की लगा ही इसदे बहानर बीनी है।

न्यदन्तु नेरक्षणीराज एतिसन्।-सीर्-रि Literal du tiell Ent's gates 1 - And-iteविश्वमें गाँडें ही । -- बाज़-पुर बर कर्मर थी जात दूर क्रमाश्रम् बरमा है। --व्यश्नी-मी क्रम्यक्रमासी। मु -काटना -सुलमा-दे 'यो काना-साम्य शामादि । ('गाँठ शान्तके प्राच' सबी सुदावरे दसके रहद भी स्वन है।)

गिराही == वि , पुरु देश रेगरी । गिर्से-दि॰ दे 'गरी'।

शिर्मिष्ट – प गिरा-को मिने गाने सरस्तको सस्य ५७% सन्त ।

-पश्चि-पु॰ प्रदा । -पितु॰-पु॰ प्रदा । निसमा-स॰ कि॰ मीचे शतना वेंश्वमा द्वामा धर देना। जमीमपर शुरुका देना। बहाना। (नामी मार्ग्य) गिरनेका उपाव करमा। मृज सक्षि प्रतिश साहि बण्या इस रचारते स जाना। लक्ष्मा उत्तरिवन करम्भ बढरे भार दासना ।

विश्वणी-स्पार्के वरामा । गिराच-त है 'विस्ताः। निरायह न्या निर्वेदा यात्, प्राव, अव वाप । गिराम॰--पु∙ दे प्राम ।

गिरामना+~स 💪 है। प्रापना । गिराहण-तु है बाद ह गिरि-म [मं] पहार पर्वतः मध्यागिनादी एक वर्ग रे व्यायका एवं रीमा वारेका वक जाना मेदा बादमा नामने गंन्या । स्री पहिचा निगरम । -बटक-५० १६६ वक्र विक्रमी । -ब्हेंट्र-पु पश्चमधे ग्रहा । -क्यार-

 वहावसी शुक्राणे रहनवाना क्युपात नकारिक कर्षकण्ड करवटा वट घर । सक्ती-भागमार्ग केला। -वर्जिश्य-भी ६४शा अवार्यामा तर्णा -वर्शी-मा जनसमिता। -वान-१५ सिस्ट १६ भागा तिर्दे होशने जह हा शही हो।-कामम-पुरस्ति के कवर सवावर बुधा बाव : - मुद्दर-पुरु निर्दे (

-ब्रुट-पु क्वास्थ्य चीदा । -विद्यान-पु स्टब्स्य बहानुक समाप्ता अन्ते । अनुकुन्तु अस्त्रहा है। -ग्रहा-को परात्थे छना। -बर-इ पर पर्न । -म-तु शिवायत् यवदशीशाः शमदा स्पुतारति बहारने पनाय । -आ-मी बर्मनी मेरा यारे

केला वावमाना लगा मीन्द्राः -- व्यक्ति-प्रविधितः -- अम्ल-द्रः अभवः । - जाल-<u>तः</u> सौत्रवेगीः -अवर-व वात्र । लहार-त वहानदा वा वहाने दीय वस दुला दिला। -बुहिसा(तृ)-में कर्पना -इत-५ १९११ -पर-पर्ना(रिम)-५ प्रचा

-धरम -धारमः-३ १८/६४ । -याप्र-क एक । −रपञ्च वज्र । −अदिशी-वॉ॰ दर्वी वेदा ।-मगर-पु िरमार परेशार मेंगा ग्या मरा -वही-मी प्रशाही हरी !-माम-5 दिर !"विम"

पुत्र वहत्त्वत । नवस-पुत्र की बहुत है केवश केंगा कर्म प्रश्नी नवीमुन्य कलमा । न्युमकन्त्री

Cannal anight 1 -min-le elife bar भीत्म देशाय :-विका-भी हता राज !-दर्वक उ

दिन। -सिन्-पु द्वायपन्नेद । नस्तुत्रामकेष

ग्पोइ(-पु• गप। -(इ)बाज़ी-स्री श्रुटी गुरुवास। गप्प-सी० दे॰ 'गप'। गर्व्यी−वि॰ गप बॉक्स्नेवासा । गण्या~पु॰ वहा प्राप्ता नका, सास । गफ-वि ठम, बना (बुना हुआ) शीना का उकरा । गुक्रस्त-सी॰ [म॰] भूछा मसाववानता, वेपवरी । -की मींब-बेखबरीको, गाड़ी भीद । गक्तिकाई ० ∽स्तो० गएकत् । शक्रर−वि जि]द्यमाक्ररनेवाका ववाकः। राप्रफार-वि [स] वश क्षमातील । पु ईक्र । शवकी !--सी काडी ! राधकी!-की दन्द्री ! गबर-वि युस जरमति। श्यम - प्र [म] भगानतको रक्षम द्या बामा, खवानत । शबर-प सर पार्टीके कपर बगावा जानेवाला पार । राधरगंड-विश्वपुर वननुदि । श्वरहा-विश् गीवर मिला का लगा हुआ। शबराक-विश्वे यव्यर । शबक्र-वि भाववान विसक्ते रेल भिम रही हो। योका-माला। १ प्रश्वका। गुबस्त-पुष्क तरहका मीटा चारखाना । गुजी−वि [ज] मंदनुदिः कुंदजेश्य । शुरुवर-विश् मर्गणी; इदी। चनी । गरमा-प गरा दीशकः। गाप्र – पु पा] पारशी, अधिकृषक । शक्त-पु(सं•]सय। शमस्ति-पु [सं+] स्टिमा सर्वा शाम । ली॰ मक्तियो वर्तो न्वाहा । —करु-पाणि —मासी(किन्),—हान्त-प्रस्1 - नेमि-पुविष्यु। शमस्तिमान्(मन्)-वि [धं॰] धमप्रवाका । प्र धर्वः बाताकका एक विभागः मारतका एक श्रंड । शमीर-विश्मि दे गंगीर'। शभीरिका−की [मं] वहाडोकः गमुभार, गमुबार-नि पेन्का पैदावडी (केन्न)। विस्ता श्रुंदन न दुभा हो। धीरा (बाक्क) । गर्मोलिक−५० [तं•] ग्रीमा गावतकियाः मसूर । गम-सी प"व गुमर । दु [सं] यमना सहका राहा कूष मिमाना सापायाही। विमा ध्यान दिने यानाः क्षी-प्रमंगः पासे बादिका क्षेत्र । सुरु -कर्मार-का समा । शम-द्र [स] हुता कोका मातवा निता परवा। ण्डार-वि सदमग्रीत !-पुरावी-कौ॰ सदनगीतता ।

∽रोर−वि दे 'धमहबार । ~योरी−सी दे 'धमन्त्रती' ।-प्रचार-वि दुःश्च वडानेवाला, इसप्रदी सहयदीनः - ग्वारी-स्थे हमर्गेः सहनदीकताः ~गोन-विभिन्न जगम। -गोनी-सी विकता बाली । -गुमार-दि॰ इमई दुष्य बद्यवेशमा बृत्तरे के दुत्राने दुत्ती दीनेवाला !- क्रवर-दि शिव दुत्ती। न्त्राक वि द्वायमताः द्वाराः । सुरू न्यामा-क्षमा बरना सद भना। कुछरेके दुःसमे दु सी होना । --शकता

गपीका-गर करमा'-दु'स देनेवाकी शताओं मुखना भी वहसाना ! गसक-सी॰ गाम, महँक' गूँअनेकोसी भागात । वि [सं•] बीयक, सूबक। पु गानेमें एक शृतिसे दूसरी सृतिपर आनम्ही एक रोति।। गसकना - अ० कि महैकमा गूँगनेकी की भागा उत्पन्न रामकीका ! - वि॰ सुगंभित । गमस-प्र राखा। वेशा । शसय-स• [सं] पश्कि, मुसापिरा रास्ता । ग्राम-प्र [सं] जानाः पास कानाः घटारं, निजववात्रा करमा संयोग करमा । ग्रभनम≀क⊸म कि वाना। गश्रमा≉−भ कि आगाः पदना । गमनीय-वि [सं] गमन करने मोग्य पास जाने नीग्यः स्वीषः अञ्चास क्रामे योग्व। गमका-प बाकरी बैसा मिहीका बरतन जिसमें फुलोंके पौषे कगावे बाते हैं। कमीब । गमागम-प (चे) बाग-बागा । गमामाण-ध॰ कि दै॰ 'गेंदाता । शमारण-वि०दे 'वॅबार'। शसी(मिन्) −वि [६] जो बानेबाहा हो। पु॰ पश्चिः। शसी की मृत्युजीक, मातमः पृत्यु । गम्ब-वि॰ (सं॰) गमन करने, जाने योग्या बिसके पास नाया ना सके समक्षाने नाया बाय;तस्दा व्यव्य (अई)। गर्ययु-पु॰ दीवेका एक भेरा 🗢 गर्मेंद्र, वचा हाथी। शय~पु (सं•) वर बमा माना बाकामा संति प्रभा प्रम राजनि जिलकी नयम्मिका नाम महामारतके अनुसार गवा पक्षा एक अनुर विसकी बद्धा विच्या आदिने मिका गुका **परवान गवाके तीर्थरन और माहारम्यका** कारण हुमा ।- त्रिर्(मृ)-पु गवाने पासका एक वर्वतः यबाः पश्चिमी श्विति । गय॰-प्र गर्भः दावी । --नाम-न्यी देश गवलान्त्रे । गम्बद्धण-स्त्री गलीः रारता । गया-स्था [सं] मयथको एक प्रशे और मस्बद्ध दीर्थस्थान वहाँ बायुपुरायके अनुमार, विक्रमन आदि कर्मेशकेटी क इकार पीतियाँ तर आती है। -पुर-पु सना। मुक -करना-मधार्मे आसर पिन्दान शादि करमा । गवा∽म कि॰ वामाका भृतक्रातिक रूप। वि∗ सदा

हुमा । [सी॰ गर्ग ।] -गुप्रश -वीता-दि सरानः निकृता करे हालवामा श्रीम दशाका माप्त । गपावास-१ नवस्य रंग। गर्रक-त वही वयोद्ध हाँ विर्दे आश विस्नेदे निक् बता

ह्रमा पेरा । गर-प [तं] एक कत्या पेया विषा रोगा निगनसा ११ करणीर्वेने एक ।-का-वि विवन्ताहारः स्वास्थ्यक्तरः। —त्र्—वि विष देशकाश अवशास्त्रवहर । पु० विष बद्धः तरहरू रेसमा करमा। नियन्त्र द्विर। नमन-प मन्दर - दा(इस) - इ. वसनुरुपीः। समरा । गर्-म [कार] बनानेवाना । र पुरु गया, गरदन । --नाल-मी भीत गुहकी तात यमनारा । भननपार

का बन्देण करनेतामा प्रयक्षेत्र क्षित्रगीता समगीता आधिः शेमक्रमस्टीसाः एक रागः एक माविक स्टेट. • मावाः म्ह्या । र्गासायन-पुर्व [मंत्र] गोक्का सापन वीला आहि । र्गाति-भी [मे] गोना एक मात्राक्ष । -काक्य-प्र गीनत रूपमें बमा हुना कान्य की प्राया भागमपुरक हाता दे। −साटप,−रूपक्-पु॰ वद्य नाटक जिल्हों पच वा गानेसी भीवें ही प्रवानता हो। र्गासिका-स्ते (सं) धारा गीता एक गायिक धेना एक बर्मपूरा । गीती(सिन्)-६ [मे] मापर पाने पाठ करनाला। रशिया-न्या [मं•] बापी। मेन । गीदक-पुरु भेडियेको जानिका एक वाननर, स्वार शुराह । दि० दरवीद । —शबद्धी—सी० दिगाद पर्यक्त दराभेदे किए मुद्री धमकी देना । -सम्म-पुरु ४६ फूल दार क्य । र्गाददी~सी मार्ग), बादा शेरह I गीव्दरं~पु• दे• गोग्य ३ गोप्री-वि (का] धरपोठ कापरा नेवया वे रेख । गीय-५ दे शिक्ष । शीधमार-अश्वतः पर्यमा । शीबरा-न्योश [No] अगुपन्ति। पीड पीटे तुरार्वे करमा बुग्नगीरी । शीर्व-म्प्री वासी, बोडी। सरम्पी । - याज - बाब--म दे 'गोर्वाग'। शीरथ-द्र [नंश] पुरस्यति । शीर्- मिर् दा समान्यात स्व । -देवी-शी सरस्वती । -पंति-प्र दे शिपति । -मापा-भी हे गोबानी । -स्तार-को महान्वीति मनीर वही मान क्गानी t == क्व-प्र - देनगा (जिल्लाने नाग्नी की जिगना भग ६)। - • बुरास-बु भीग। - वासी-गो • देव-भाषा लेहन । होर्क-दि (०) निगरा दुवन वर्षितः। गोबि-स्ते [संब] फिल्मसा वयस १ मीर्चि-डि [1] जिगन गना ह शीमा-विश्वसंगा दुधा अस अर्द्ध १ -पम-पुश्वमी ML₁SD 1 शीर्व शीवण-स्ते दे 'शीरा व र्माध्यति – पु. (६) पुरस्यति । परिचा श्रीपार्ग-विक हेक । ता र - सहरी-स्था वय सप्पर्ण र steet - le ? _FT 1 नेती-(१५ मा के कि Unminia-ne fr ffeft bes elent Auf gut HELL DEE H APAIL बोबा-पु (का किमी शुरत्रा अह । दिन बाग काश्य मुंबात । -रहण-६० वनी है केने हैरका होए FREE HATLAS र्माची-स्टेब्स्स मेंब-धीर करी अंकिया एड व्यान केया रूप हुता । यु किनो धारवाश्वेतका विभाग -किम्प्रस्य विश्वानको () करा श्रेर अस्वेतनक सम्

ष• मारा **।** गुजिक-पुरु [मं] एक दीपा । ग्रीयम-पुरु [ग्रेर] भीरेका धनयमच्या गृहाहा एकएकान्य दण्यम् । गुजना-भ कि॰ भीरेश विषय स्थमा गुजगुरासा। र्गजरमाण-मा जिल्लोजार बरमाः गएवसा १ ग्रेंबस्क-सी॰ कि 1 दिस्स जिल्हा सर गर् बद्धार । श्रीजहरा - ९ वर्षे ६ शब्दा करा । र्शना-स्थे॰ [में] श्रीवधी चामग्राद्य वस रिशस्त मदिरात्मा थिनमा वद बिचना धीरा । गुजाहस-न्यो॰ (का॰) स्थामा मरध्यपा गयाने अस्तर भवदाय । र्गज्ञान−दि (फा॰) पना, ल्ला टुका । वीवायमाल-दि (रो०) ग्रीमकः दुना । र्रोजार-५० भीरेदा धनभनाइर । र्गजारमा – व । कि॰ वीजा। मंत्रिका-मी [मं] ५४औ। र्गुजिष्ठ-विर्श्तिरी श्रवनतुसः। गुर्विया-भी • सार ६। एक गहमा । श्रीमी(जिम्)−६ (तं∗) ग्राप्तस्का र्**श्वन-९०** [मं] एयना विवासा क्षेत्रम १ र्मुरा~पुरुष स्टब्स भीता। दिस्य प्रारेगायाः मृद्धिम-रि (१ +) एका दिलादा हुमा केन दिसा हुमा कीमा एमा (नुष्ट−प्र मनार रशारा रह भेश [4] कुनै सम्ब पीगन्याः क्रमेशः । गृहर् −शी॰ श्रीरायन, बुद्या । होबक-यु 🚺 वृत्ति वैत्रवादा पुर सिमा भागा हार्यो वर्षे मेर स्वर र शृंदन-प्र• [1] ब्रेडन १ में हकी-को नानी नानी ह श्रीक्षान्ति तु बदालय दुर्ग , क्षी भागन्त्रवार्थ र्शकारिक्यी- १ [1] शुरुद्धपृथिका शालका धामधी नाम । शुंबिक-१ (व) भरा । मंदित-दि (८) भरे दिखा द्रभाग भूग विकारण प नेदशाल्या। मुद्दानको अपूर्ण सूच्यो स्था है केल्बए हैंग विषया-१० क्रि. श्रीस अध्यक्त किल। हुँ क्षरा≔दे + अन्तरन्त्रीया १ ग्रेप्ट-प (१) प्रस्तर । र्वेश्वयान्त्रः कि श्रीषात्रात्रामधिस्य। ffeif-et enbelennen miet feber unt? हिंदाबार-को स्वतंत्र राजनीतियात र १ theng for I sam the aten unge #7 CHE CHATCHE श्रीकामान्यु कि इ. बार । शाव व. मर्ग र रेन्त्र र

Ħ मस्तीपर भाना हुत होना। सि फि॰ गरम करना। गरमाइट-सी गरमी, वप्यता । गरमी-सा मरम दोनेका माथ, उप्पत्ताः दशरतः लेगीः क्रीयः सामेशः जीश वर्तगः धीष्म ऋतुः मयः, पर्मदः जप बंध रीग भातश्रदः दाथी-पौडोंका एक रीग !-दाना--पु॰ सम्होरी । मु॰-सिक्छमा -पचवा-पर्मंड पूर हो बाना एँड डोडी हो बाना। गररा • - पु • दे 'गर्रा । शररामा≉−अ कि॰ गरप्रमा, गंबीर प्यनि करनाः जीवर्ने माना । शररी−स्त्री पक्ष विदिया सिरोही ! गरस-प्र [सं] यहर, विका सर्पविका पासका पूजा। एक माप।−चर∽पु सौंपः शिव।−बत्त⊸पु• सब्रा गरकारि-पु॰ [सं] पद्मा । गरको(सिम्)-नि [म॰] अश्रीका वित्रपुत्तः। शरदार∽दि दंगळका । पु• गला। गरबी≉−दिस्यो गर्न्डः गरहो -प्र• दे 'प्रह'। सु -कटना-नरिष्ट दूर होना विषय रक्षना । गरहन#-पु॰ देश प्रहत्य'। गरहें हुवा!-प की दिला । गरौँ-वि फि:] मारी बजनी। वहेगा कठिन: अधिव मायवार । - क्रज्र-वि वहे भरतदेवाला, शुरुशानित । →क्रीमत्र-वि वद्दमुस्य !—ख्रातिर-वि० धूमर लगने-वाकाः, समिवा समस्य ।∽वार्∽वि॰ शोशसे स्था हुना । सु॰−गुह्नरमा−भारी द्वीनाः नायकार द्वीनः । गराष्ट्रील-वि॰ छना-चर्गा, ऊँचे करका । गराँचां -पु • पञ्चिरार ररखी जो बैक भारिके गलेमें प्रश्नावी याती है। शरा−स्रो॰ [सं॰] देवशको सक्षा । गरागरी-स्तै॰ (सं॰) देवडाए । गरास-प मोटरपाना गेरेन'। बना । यर्थन । गराबी-खाँ॰ परधी, बिरमी; रवत्रमे पूरी हुई कड़ीह । गराधिका-लो॰ [मं॰] कार्यका क्षेत्राः कार्यका रंग् । गराचा॰−स कि॰ ग्रहाताः निवेशना । गरामी नगे. मारीपना मदगीः पेटका मारी दीना अजीर्ज । गरामी-दि॰ [पत्र॰] सन्मानितः बूज्य तुनुर्गे ।-नामा-प्र पुरव पुरुष(गुरू, विदा आहि)का पत्र । गरारा-दि॰ वर्मदीः उद्धतः। राशारा-प [भ] गरेमें वानी लेकर गर्गर आवाभके छाप कुम्ली करना। कुम्ली करनेकी बचा। पाजागेकी धीली मोदरी शामियानेक वाक्ता शिनाफ ।-(ह)बार-वि दौरी मोदशेश्त (पात्रामा) ह गरास∙−५ ६ 'धानु । गरासमा - स कि प्रमुगा निगनना कष्ट देता। गरिका-स्पै [मं] नारियनको गरी। गरित-वि [म] विवास्त । गरिमा(मन्)-म्ये [सुर) गुरुवा, भारीपनः गैरव महारा गी। बाह मिदियोंकी एक विश्वम अवना देश मार पारे जिल्ला बारवा का सक्ता है।

गरियामा – स कि वाली देना। गरियारः गरियाख-नवि॰ अविवस, मट्टर (वैक) सुस्त । गरिवासः – पु पक्ष वरहका काला-नीला १ग । गरिष्ठ-वि॰ [मं] सबसे भारोः सबसे मन्मातिका बहुन कुन, बुप्पाच्य (मोश्रम); सम्से सराव । गरी-की मारिकका मन्त्र, सोपरा नाजका मन्त्र, मिरी। 🖅] वेबताप्र १ ग़रीब∽नि [व] परदेशीः मुखाफिरः अनेखाः निर्वन, मफ़्रिस बीन•बीन ।−भ्रामा~प्र र्यानको कृतिया (मधताबश अपने चरको कहते हैं) !-गुर्म!-प दौन वरित् गरीन कीम । - निवाह - वि वीनपर दवा अनु धद करनेनाका, दौनन्यातु ।-परवर-वि ग**ै**नीका पाकन सरनेवाका । गरीबान−९ फा] अंगरपे करत आदिका वह माम थो गड़े इं मीचे भीर छाती इंकपर रहता है। −गीर∽ दि दारेदार अभिवीका । मु -च/फक्ररना -पाइमा -कःशावर्गे कपके फावना। पायस दीना।-में भुँड शक्तना-कवित्र होता अपराव स्तीदार करना। -स सिर इासमा -- कांधन शना कांपासे सेंद्र थिपाना । गुरीबाजा--विश निर्वमावित । अश निर्वनीवित स्थमें. गरीनी ईगरी। गरीबासक−वि यसक्त योग्यः निर्वनोश्वितः । तारी की ∽स्ती [स] मिथनतः मुफ्तिन्सी; कीनदा। गढ+-वि भारी, वधनदारः गंमीर, छात । गरुभ गरुभा≉∽वि वश्वनगरः गीरवयुक्तः [स्री≉'गर्न्हः ।] −(बा)ई-की भारीपन ग्रस्त । शहमानाक-म मि॰ नारी ना वजनदार द्वीना। शस्त्र-पु॰ (पुं॰) दिनवाके गर्ममे वरपत्र करवप% पुत्र को पक्षिराम और विष्णुके बादन माने बाते हैं। बदाया छंत्री गरदनवाका एक पश्ची की मसकियाँ प्रकृतकर द्वाला है। परवाद्यर-शेषमें चौरा, आगे पीछे मोद्रपर प्रासादः भीरहर्गं दश्यः एक प्रकारको व्यूवरचनाः एक पृक्तः मृत्यका एक स्थानक। -केन्द्र-पुर्श कृत्य। -शासी (सिम्)-प्र विष्णु। - घंटा-पु वह यंद्र विस्तर मक्दर्भे प्रतिमा वनी दाः --ध्यञ्च-पु विष्मा बह शंना विश्वने कपर नवस्की मृति बनी होती है। ग्राप्त समारोक राजविद्ध । -पद्म-पु मृश्वमे एक विश्व मार । "पादा-पु पुराने लगपम भागुनमपने स्थाहन वक तरहका क्षेत्र । -पुराण-प अद्याद पुरानीमेंचे एक जिसमें मरकोंका वर्णन प्रशासीका विधान आहि है। -प्यत-पु जृत्यमे यक प्रकारका भाव । -सन्द-पु प्राचीन काळ्या यह गर्ने प्राप्त भेप्रदाप । -स्य-प ण्ड दिवशास्त्र मंत्र विश्वके देवना सरू है। -- सन्-<u>प</u> बुलविक्षत्र । - स्युष्ट-तु वह स्यूष्ट वा स्वरूपमा क्रिप्तमे सेनाका मध्यमाय आहा और अगुना रिएना भाग पत्रसर हो। गरबोद्ध-पुष्टि] निष्या गरद्वीक्ति-प [न] दे ग्रहणस्मा । वदस्यात्रज्ञ = वि । यहिसा भारति असः ।

गहराइमा(१मम्)-पु [छ॰] रचा।

गुहुरत−रि॰ गाँठ गुरुकीराकाः वाक्रिकः मोवरा घरः, मूरों । पु॰ गई सान्दि दवनमे बनी दुई गाँठ, मिल्ही ।

गुद्धी-स्वा मोरी गाँठ। स्पना । गुरुष्ठामा—व कि व र, भीवरा हो बामा: महारेंद्रे मसर में दॉर्टीका बाटने पश्चमें कायक म रहना।

गुरुमी-रर्ग (भाम, बामुन भारि) पंचका बना और

कुछ बड़ा बीज कुसन्ताः गिल्ट्या शक्त्या ।

मुक्षा-पु॰ गुरसी चारामीमें टायहर परामा हुमा कथा

गुद-पु॰ [मं॰] दे॰ शुर । नैया धास निवाका गीला पिया क्यारा दायीरा सकाद !- तूम - शार-पु॰ हैरा। -रबर (प्) -पचा-गी शर्भेनी । -धामा-सी दे॰ गुरुवनिया । ज्येशु - न्यो श्वास क्षेत्र विष बनादी हुई गुरुको गाय ।-पाक-पु गुरुको चादामीयै शम्पर भीवत बनानको प्रक्रियाः उस प्रक्रियाने क्या औरथ ।—पुरम्यः पुरु मा आ । – परमा-पु प्रेष्ठ वृत्र । – यावशा-कीक शबर भीमो ।–इरीतकी–गी। शुश्ची वादमीमें दुरोशी दुई हरें।

मुद्र-पु• रेगर था साह-गत्ररक रमधी गारा करके बनाबी ह्रा बड़ी था भन्ने ।-धनिया,-धानी-भी । अने द्रण रहेंश्री ग्रहमें बायदर बनाया हुआ। अव्यु । हा - न्याना गुलगुल्म परदेव करना~की तुसर्व दरना, धोरीचे मेंच्या । ∽दित्याकर क्या मारमा~छात्रका शोध रिमा-कृत कृत देनेशाला आग करता !-अवा हॅसिया-रेटाः शीरणांश्रयो गाँगवाण काम !-मे महे तो ज़हर चर्चो क्षे-मरमीन याम कर हो कहाई क्वों वरे ह

शुक्रफ्र-पुर्व [मं] जीलाकृष्ट बडाबी नैदा शुक्र शहकाव

गुर्गुए-तु हुपरा देने या आंत्रीये बायुदे शेवारमे हीने

बाला शुप्ता । गुक्गुक्रमा-अ विरु गुरुवृत् की माराव होना निवन्त्र।।

धः जिल्ह्यस्य पीना ह

सूद्रगृहाहरू-सी ^पपुरपुत को साराका वैग्रामानाम दीस। शुक्गुदी-भी अध्यो नियानीयाना धीत हुवा । गुरुष-मी है गुल्य ।

गुरुवी-मी (र्ग) देव गुरुव ।

शहर-पुरु रह विशेषा शहरी ।

गुरुदर गुरुल-३० मान्यदा ६० स्वावत्तव व्यापीत 37.5

शहानको [सं] रचन ग्रेमी: ह स्थान्य । गृहाका-नी [मेर] मान्यामा द ह

गुक्त पुक्तम्-मु वह नंताकृतिमाने एक विकासी ।

तिक द्वान्य (११०) वर्ग विश्व गुडिया-लार बरोबी पर पूर्व पुष्पा ।-मी-लमीके म्रह (med), दुल'(m) । मु -श्रीपारमा-लपनी थेरे बन्द मृत्तिक लाग्रेस प्रतिकत हेना।-(वी) का शेष-पान क्रमाध काम १-का क्याव-पु-हे और

पुरिशास बाल (बर्न करविशे अपने बरनी है। दरीश # 1 44 4 I

पुरवान्त्र की ज़िशाबुर्वे प्रशिवार

गुड़ी ===गी= गुट्टी। गाँड, दोगा। गुक्तीमार्ग-वि सब वीसा मेका । गु मुख-नरी॰ एक देस जिसका रंडन दशहे दाम अता है गुरुधी ।

ग्र दुरूर्ग-नरी॰ क्रिसाइक्र टेहरी, पूरा रोग रूप्ता । गु दुवा-पुरु शहर ।

शुद्धवी-म्दी (र्स) गुडुब गुरुष रिचेय । गुर्थर गुढेरक-५ [त] गैरा मान ।

शुक्रा-पुरु वही श्रविया सर श्रविया वही बर्गन । मुन्न वाधवा-मागदा रियो धेर्म अवसातनी ग्रूप करेने मिए बामुके गिरेवर एमडा कुल्या बाँचमा कार मुझ पूरार

बनग्री निना बरमा । गुड़ी-स्व॰ पान क्रमधेवा। वस धार दुवरा पर दे तारे

निहिवों है बंगकी रिवति। पुरन्छ रही । गुर्दू-पुर पर शास कीता । भीन गुपूर ।

गुद्र - पु । रिपने बनमेग्र स्वान ।

गुण्या॰=भ॰ दि॰ क्रिया । शुधा-बु ॰ (मे॰) बार्रिश्वमा । प्रेरी मर्गुर संगति निष निवुत्त्वा क्यांन। प्रभाव कारा साथ वादार प्राप्ति है वाना निर्मेवना। प्रष्टतिसाधर्म-सम्भ एक नहाँ की धारिका तारा पाया। होरी प्रानंपा: गैप गर्पा गर्प सीयनेश घोरी। स्मापुर शार्नेदिवश विश्वा शार्म द्राप्त आहित थे भी भीर भर जा अवदार सनेह सर्नेहतरी बन्-कर्ने स्थानपर होने हैं (स्था)। नीनदी मंतरा भी शक्ता रसका अरम्भ वर्ग (मा॰); वायत हरा हैंग वरित्याया निमाण । —कचन=<u>व</u> शुक्रनार प्रयस्र श्रीवारामामें सामकार्य तम क्याओं में। एक हि विका रमरामा) ।-चर्-रि सादशयत । -क्सी-मी ए शायिनी ।-कर्म(क)-प्रमुच और कर्म देन की -कली-भोश्यंश्यान्यं ।-कार-दि सम्माप कु कानेय क्षेत्रक्षेत्र पारे नेक्ट कामेगक क्षेत्र ··कारक -कारी(शिम्)-रि मन् बरनेशक मन बरनेशना ।-क्रीतन-च तुरुवान ।-शाम-३० वसार गुरू-बर्गन ।-प्रदेश-पुर ((दर्मक) तुद स्वापन शुरुका भारत बतना ।-प्राह्म-प्राह्मि(दिन) विर तु ग्राम्मको ग्रवस धार कानेसाम स्टाम^३ -प्राप्त-१ श्रुपेटा शक्त श्री द्वानिशाम I-पार् (निम्)-रि देव कार्यामा १०स-रिः प्रत पार्थे श्यापनेदाना सरदाव १०मीव-४ मनोहे सन्दान विकार करमा ।- अप -वितय-पुर प्रश्री है तेन हैं सार रम तथ र-शीय-पु पुत्र मोर रीप मनी quit t-un-ge fel'e grat uf & fer wette को ।-विचान -विकि वि भी हुलेका करना है।

-niat (al) -2 nilght litet ningengia, ल्हारालपुर कृत है ब्लाने बता सामन्त्रका । नवीर वि प्रणानविवयुक्त विवानक्षत्रक्ष दु व्यवदेव स्टाप वर्षभाषः विष्या-संयोगसः नस्पत्रीनमः मेरे एर्ड म्न्ब्रेस न्यासह देन मनून्त होन् नुकर् ी प्राथा केर बस्तेमच्या क्यापूर्ण असी राष्ट्र

at one or enfolgment, as fire front much

अस्तरता, पैताहसी । -श-वि॰ गर्भ वेनेवाका । प्र॰ प्रश्न-बीर ब्रुप्त । -हा--हानी-सी॰ सचेत्र सटस्ट्रैमा ।-हास-प केनावशी ग्रासाम, बन्मका दास । −दिवस−५० गर्मकाक । -हृद्(इ)-वि गर्माचाम न चाइमेवाकाः गर्भपात करानेशाचा । -इडा-वि॰ खी॰ गर्मधारणकी विरोधिनी (क्या) । -धरा-वि स्त्री गर्मवर्ती।-धारण-पु॰ गर्मवर्ता होना हमछ रहना । -नाबी-कौ॰ मामि (राज्ञ । -- मास्र-सी॰ पुरुषे गीतरकी पतकी मासी बिसके सिरेपर पर्मकेसर होता है। -पश्च-प कॉपका फलके संतरके पर्छ । -पाकी(किम्)-प्र• साठी शान । -पास-प पर्मका मिर बाना, चीने महीसंके बादके गर्मेखा गिरमा। -पातक-वि वर्मपत करनेवाका। पु काल सङ्ग्रन । -पालम -वि गर्नपालकारी । पुरु रोजा । ~पालिसी~सी करिवारीः विग्रस्या !~संयम-प्रश्निमा भीता । -- संस्थ-प अवनागास गर्मगृह । -मास-प बद महीतः विसमें गर्म रहे । -सोधा-क्योंकी पैरारस ! -सक्षय-त गर्मके विश्व। -बध-प्रश्नहत्वा। -बास-प्र (बच्चेका) गर्मके भीतर रक्षनाः क्षीसः गर्भाष्ट्रव । -व्याकरण-पु॰ गर्मकी परपत्ति भीर नृति। (छरीर) भावनंत्रका वह भंग विसर्वे इनका वर्णन हो । -व्यह-पु वक म्यूड वा सैन्य-रवना विसमें सेना समझ्के आधारमें सभी की वार्ता है 1-सड़-प्र• एक सरहकी सेंश्सी जिससे गरा हुआ बच्चा पेटस निकास बाता है। —ब्रह्मा –सी गर्मासन । −सचि – सी नारवधारामें कवित वेंच प्रकारको संविधीयेते एक-पर्व संविधीमें लक्ष्यक्र प्रदर्भ प्रवासका वहाँ शास और अन्धवनसे कुछ वार-वार विकास हो। ~स्य-वि गर्भमें रिक्टा ~काव~व गर्भगत चार महीरेतसके गर्भका गिर बासा ! - लाखी(विम्)-विक नर्मपात करनवाका । पुहिताक वृक्ष । →हत्यां-मी भंगहरका । गर्मक−९ [सं०] नालोंके नीच भारच को दुई माला दी राठी और छमन्द्रे बीचके दिशका समय । गर्भवती-दि सी सिंशी गर्भवासी नर्भिणी दाशिका। गर्सोड-५० (सं०) सर्द्धने अंदर्ध अंतर्गत अंद वा रस्य विधेय । गर्भागार-१ [र्च•] गर्माञ्चका गर्भगृष्ठः ध्रवनागारः मन्तिग्रह । गर्मापान-प्र•[र्व] गर्ने रहवा गर्भ-वारवः १६ संस्कारी मेरी एक । गर्मारि-ड॰ (र्स॰) होटी इलाबयो । गर्मोशम-५ [गं॰] सीके बेडकी बह बैसी जिल्ली बच्चा

रहता है, बरवादानी ह गर्माप्टम-९ [से] गर्मने बाइमाँ मदीमा वा वर्षे । गर्मिकी-रि स्री मिं] किमे गर्म की गर्मक्री दामिना । -दोइय-पु गर्भवतीका कुछ शास धीजीपर मन पत्तना । गर्मित-दि [नं] गर्भेनुष्यः भरा हुना । प्० शास्त्रश एक दीष, दिगी अठिरिक्त वानवदा किमी बानयके बीवमें वा वामा।

गर्जंड-गर गर्भी(मिल)-विक सि] गर्भवक्त । गर्मीपनिषद-सी॰ [सं] अधनेदेशसे संदश्र एक उपनिदर्। कर्य-दिव क्रिको सरस १ -जोशी-स्वी स्टलाह, बारासः सरवर्गी। -बाजारी-स्वी बहुत दिन्नी मॉन होसाः बहर पछ होनाः चर्चा शहरत । -सिज्ञाब-वि बस्री अन्य थी जानेवासाः उध स्वमानका । --रप्रतार-वि तेव व्यक्तेवास्त्रः द्वतगामी । यसँटिकाः गर्सोटिका-सी॰ सि] एक स्टब्स जनामना । गर्मत-सी॰ हि] एक पास एक करण एक तरहका सरबंदाः सीमाः एक तरबन्धः मधमनती । शर्म-विक कामके रंगका । य काकी रंगर कासी रंगका थीश जिलके कुछ बाक सफ़ेर हीं। कार्या रंगका कबतर: शराबीः भरसीः पामीका शायात । गरी-प० (अ०) गस्र वर्गड । गर्ब-प सि] वर्तप्त, गहर-स्य वस, विद्या बाहिसे जपनेको इसरोंसे काकर समझनेका मान कह संचारी यात । -प्रदारी(रिम)--वि० गर्बका शास करनेवाका । गर्बर-वि सिंगी यमंत्री । प्रवाद । शर्खं शी∽की सिं∘ो दर्ता। गर्बर्चत#-वि गर्वज्ञकः (शर्बाट~प॰ (सं०) चौद्धेशारः हारपास । राषांना=-भ क्षित्र गर्व काला । गर्वित-विश्वसि विश्वस्य सम्बोध गर्बिटा−क्षा [र्थ•] अपने रूप-ग्रमका गर्व करनेदाओ . सामिका । गर्बी(विंग)-वि सिंग) गर्व करतेवाचा धर्महो । रावींकर-वि+ वर्शनी । गर्हण-९ (सं) निरा करना, दीव सगाना । गर्हणा-सी॰ सि॰ दे 'गर्हरा'। गर्रेणीय-दि॰ सि विका करते बोस्ट, तिया। गर्हा-सी (सं•) निश कला। गहिल-वि [निः] निरित दुरा, दृष्टि । गर्ह्य - वि [सं] गर्द्धीय, निच । गर्मतिका गर्सती-सी॰ (सं) धोरी कुल्सी। छेरदार वश विसमे शिवल्यि आर्दियर पानी धृता रहता है। गर्लश-प वह संपत्ति जिसका मान्यि वा बारिस स ही। शस-द [में] गया बंटा साठका गींदा गराकू माठकी। यद बाजाः रस्ती । -क्षेत्रस-प् गाय-वेमके मनेका जीचे करकतेवाला भाग हाकर । -ग्रंड-पुरु गर्वेका एक रीय विसमें एक गोंडसी नियक जाती है और कमी-कमी बह नाकर सरकते सगरी है थया।-प्रह-पु गना करवता, थोंटनाः यन्त्रेशः एक रोगः भएगोद्धः कृताः कृत्यः पश्चकी चुछ दिनियाँ: वह चीज जिसने जनरी जान स स्टें: मछलोडा रहा। बध्ययम आरंब दोनेपर रसुने रापा पहला। -अव्दा-प् [दि] पीछा न छोड्नेव्स्टाः गर्नेमें नशी हुई हावपत्का पहा । - जो इ - स्रोत-स्रो [दि] का रहनी जिसमें की भैन दक साथ कींच जीने वार्थे। गरेका द्वार । - प्रांच - प्र॰ [दि] (मुद्रमें) दार्था दे प-पर दारी जानेवासी काइद्ये शुरू ! - सूनी-स्ती० [दि] वैनोद वर्रोवदे माथ वर्षिनेची रम्मा । - एव --

--गौरि-सी॰ गीरी नेशी साधास्यपनी पश्चिमना स्वीः स्पितेना एक मन् ।-पंत्र-चन्म-दि॰ गुप्तै गुण्याम् । गुनगुमा-पि दे अन्तरना । नाक्ष्मे बोचनेवासा । गुमगुनामा-भ॰ ति॰ नाइमें बीलमाः वदन बीम रवसी.

अस्पष्ट सभ्दीचारण करत तुण वास्त । ग्रेमना- स कि विपार करना, धीवना व वर्णन करना

गामा १ गुनद-त का] 'गुनाइ का समु रूप । -मार-वि॰

देशि अपराधी । -शारी-त्यीव देशि, अपराध ।

गमदी०-वि शमदगार । गुना-दि॰ गुनित (यह शब्द संग्याबानक शब्दों के बंतमें नगर विशेष शब्दको भेरूया या मानामै वक्षनी बाह्ना सर्व परपन्न बरना है। प्रेथे-निगुमा भीगुमा ६०)। भि भिता ।

गुनायमण-पुरु विवाह ह

गुनाइ-५ (फा॰) पार दुप्तर्मा बीच अस्ताच ।-सार्-नि॰ वारी अवस्तित क्रियन पात्र विवा हो।

गुमाधी -- (६ शुनदगार ।

शमिया ! -- पण देश गितिया : विधार कर मेशका। विश् गणी। ग्रमियासार-- विश् गुणीयाना १

होनी-वि श्रेणीयल्या । पुरु कन्य मनुष्या ज्ञान्त्रीयः बरनेवाता ।

शुमीमा=-(व॰ शुगीवासा शुभी ।

गुनोचर-पुरु एड सरहदा दैवहार । शुक्री-स्था एक तरहरा बीवा था होत्रीड अवगरवर

মনী কান্ম পাৰা বাবা হ' शपचय-अर्थ (उपहर तुम रीतिये। मो एक मिहारे,

गुलाबबाह्य महर्भेंबा १५ हिला दश्च शिलामा । शुपालन-५ हे 'नियम ।

गुविल-पर्न वि विश्वान गएक । 11241-(4 \$0 'Up 1

गप्त-दिन (रोन) रहिन्द्रा विचा का दिवाला क्रांसा करवता तूरा ध्नुन ध्नुन । पु देश्बीका प्रानाय का क्षेत्रक बर्गांक भारतदा दढ याचीन शाजांश । - बाशी-नी मदरियाधमादे राज्येते वह रेगाना वढ होबेग्याम (-शन्ति--म् स्वयत् । –स्यु-५० ध्रदशस्य । –सोशावरी → मी । पद राजेश्याम की निषश्यक्ष निवार है । - चर्-पुन बाट्स (bree रिप के>बाना । -शाम-पु: विरायर दिया बारेगाना दाला यह दान कि) राज्य लिया बन्धा ध अने। वर दाव निष्णा वाना द्वारा म दी ! - मार-भी [[है] रेली यार जिल्ली मारीका करें दिश करर स रेगर परे। - श्वादका-मी वह नही रिमाद. या भ सार बात ही एता हो। - बेगा-रि भी अनु बर्द है है। यह देश में मानुसाय १३ -- केन्द्र-हिं होत क्षत्रिष्ट्र सरोवाला । --वन्द्रा-शाः कः ४ जुलाः गुसक-पुर्व (र ४ हर्दन बार्बर का)

पुष्पा को [१०] १६६६। सं ५० हे ६ वेटेडेन १४ रे वे लिए मेलको उत्तरका र आध्येषदा श्रीक प्रवस्त्र イ ヤン キリレジョ

नसम्ब=५ / }f हमारा

गति-औ॰ विशे दक्ते जिन्तेनी दिया, रेपक स्थान दश्च का माथमा माद्या गुक्ता स्वापा कृत्यार नारदा रोह ।

ग्रामी-मी॰ वह इंदा वा छड़े लिएडे डॉन्स् हुन्सर रैफ हविदार जिपा हो।

ग्रक्षोध्येक्स-न्यो॰ (र[.]) बायद्रवा(मानी) जा हे इस्ट¹रे) राहेन बन्नेका ।

गुरुद्धा~बु॰ गुन्छ। बुँ श्रा ।

गुक्त-सी॰ एकार या जमोत्रमें क्या क्रमा धंस स्टम्स छ ह

राज्य-सी॰ द्वारो द्वार वीटा दीन (देवन एउटी स्पर्यक्त । -गू-गी शक्तभीतः बेटयम । -ब(म्बे) शामीता-शामत-मोश बदमा ग्रामना बाहरीत है

गुज्रसार्-भी (का) बेंकियान, शाहबात । शबरेका-त गीवर मैना आहि मातेशका रव बेमा ह राकार-व कि विक नर्ग मन्त्रेग्रीवर इ.स टिशप शैल । ज्ञाप-जिद्रास्थमा-समये वरा भी वर्ते वर्ते वर

रामना अराय निधामना । गुबारा~पुरु रे गुरुरग'।

गुविष्टर-पु है 'नारिष्ट ह

ग्रह्माचार्र -प्र• ≥ 'ग्रह्मारा । गुरुवारा-त बायबदा बना द्वा रोजा देना हो भी दें। शुन्ता रहना है आह तारमें थीवरे कोट्टर जना देनी इरामे परणा है। रक्षम आहिदा दक्ष और प्रश्नमे इस्टे रेमने यह बुजा भैना की जाकारावे वह सदता है किए? गोरेकी राजके एक आतिश्ववाधी भी प्रधानेके गर क्षाची जानी और केंनारेसर जावर काले हैं। दिली हैन इक्ट्रा बना वया विभीना विशे इसा. बरदर ग्रामनी भीर हातमे श्रीपत्र प्रशाह है।

तुम-रि (पान) शोपा दुवा सारा तुर वपारी -माम-दि॰ जिल्ला मात्र प्रतिद्वि स की किने की बी बम लेगा जान्य हो। दिना जन्मका (४४८ ^{हेन्द्री}। -ताह-वि शेदाला जुल नदा हो अध्यहना शे शाः वर आरेडामा व्यवस्ता - राष्ट्री-मान प्रदेशना ÷हारा-रि श्रीवा दुश भूवा दुशा ।÷सुमर्-रि द्वी धीर निरंपेष्ट श्यूष्य (रोगा) र

शुप्रक-नो है 'गाद । शुस्त्रका-सन् दिन भेत्रत् ही सेन्द्र शृहक्त कर्तर हत

स होजा ।

शक्ताती नामें ने रोता शेवर । गुम्हा-इ की वर्णा अपने देवेदान संनाम के

सुबना क्षापान वस की ना र गुम्रही-की बह ने साने करा गरा ही बरोदी ले गरी एन देनरे बारमदा दिस्तरून अपनार्थ अर्थ दार ६६३३ हिल स्वाप्त का दश हो दोन क्षाति है

पुरु अन्तर्भाषाः । स्पर् प्रदः न सा श्रामार १ ल्ह्यमार्गेलभ विकास राज्या है

the said of the said and a र्गमाम-प्र विकासित हर अनुसार की की क भएनमा दि कुचाराम ह

यत्तरमा-पीटा, तिगका याना समझमें आना ठीक कगना। -पद्कर हेना-क्यरवस्ती देना सस्वे सहना। -प्रमा-अनचारी, अर्थक्टर वस्तुकी प्राप्ति दोगाः उसके प्रकृति किए विक्छ होना मत्ये मदा बाना । -धर सुरी फेरमा-भारी बहित अन्याय करना गला फारमा। -- प्रवसा--(दिसीका) गले पडकर कीई चीज देना: कीई काम साथना । -सिस्रनाः -कामाः - अविधन करनाः बगडगीर दीमाः मेरना । -में सटदमा-बीटा निगका म जा स्वस्ताः मनमें न बैडना मुक्तिको स्वीकार न बीना। -समाप्ता-माकिंगन करनाः गले महमा । राष्ट्राड-वि॰ ग्रहनेवाटा । गलामा-स कि॰ दिसी दोस बीमदो तरक, दिसी दशी भोजनो नर्भ क्लाना, बुकाना विषकानाः गाँठ, विस्ती मारिको धीरे-धीरे गावन कर देश। (कोठी) भेंसाना अर्थ कराना । राकानिक-सी दे 'व्हानि'। गसामिस्र, गसाविक-प्र+ [म+] मेरस्यविशेष । राखार-प इच्चिरीच । † विश्व क्षरावासः। गसारी-लो॰ एक एग्रे, हिरोही । शकाबट-सा॰ गडनेका यावा गडामेबाको भीत । शकि -पुरु [मं०] बद्धशाः सूक्त बैकः। रास्तिः-वि [सं०] तटा दुका, दिवटा हुका: अुवा: गिरा इक्षाः चीर्ण- श्वयमासः शरका बनाः निगका इक्षाः परिपद्ध । —कुन्न-पुत्र वह कीई विस्तर्ने शाथ-प्रोपकी वैगठियाँ सादि गठकर गिर बाठी है। ~सखर्त्त-वि॰ निसंदे गढ़ा और दाँत गिर गये हो।-लयन-वि जिसकी मॉर्पे संबी हो गयी हीं अंचा !~धीवमा~वि+को+ विश्व-(सी)ची नवामी दक गया हो। दक्षती बनवाती । गक्तित इ∽द र्श्व ो नृत्यका यक इंग, अंगर्थमी । गांडियारा-द , गांडियारी-क्षी॰ हेंद्ररा, नहीं बेहा राखा । गसी-भा र्वंदरा संदक्ष्मे कम श्रीका राखा जिसक दोमों भीर मदानीयां बतार हो कृषा। (किसीक) बरके भास-पासका रथान, ग्रेका ! -कृषा-पु गक्षा !-शकी "म इर गर्भार्में, इस प्रकास वस गर्शामें। इर-दरह ! म -कमाना-गर्नामें झाई लगानाः गर्लाकी योगी पासाने गाफ करमा । शक्तियाँ छानमा। झाँकमा-निसीन्त्रे स्रोजमें बदुन भरकना हैरान होना । गर्छीचा-पु मृत या कनक भागत जुला दुआ विश्वीला दारोत । ससीच्र-वि॰ [स०] गासा गेरा मैला। पु∙ मैसा, विद्या। गकीत = - वि यक्ति न सीर्थः दुर्दशासी प्राप्त - 'शीन स मीर्त गर्वात है जो भरिते पन आरि -ि । ध्वतात । गल्-पु॰ एक तरहरू। दीमनी बरबर । गमेर्गाट-इ [सं] एक नरदका पत्री। गमेक्र-पुनिहाकः गिरेकः। गसरतनी-सी [गं] घटती। गलकारे-पुरानीका । गर्मा । प्रमा

कगा रहमेवाडा (वनना, वनाना होमा)। -के नीचे

गुरुविद्या~पु० वंदरीके गुरुके बंदरहरे बेटी। यसीय-पुर्शियनेना अर्थेषः। शक्य-प्रश्न स्त्री॰ राष्या टींगः सहामीः मूर्तमस्त्र एक मनेष् गस्म-दि सि] होठा थर्मही। बापाल । गञ्ज-पु० [तृं≉] गास १ ∽चत्तुरी~सी गकसुरै। गहाई-वि॰ जो गलेके स्पर्मे हो । पु॰ वपत्रके स्पर्मे लिया बानेवाहा स्थानः ब्यारेपर बोहा भानवाहा क्षेत्र । गञ्जक शञ्चकं – पु. [ti] सप्पामपात्र ! शहा- द म शोर इहा। ६० 'यहा': [पा०] बानवर्षित श्चंड, क्षेड़ । ∽वाम~पु भड़, क्करी मादि वरानदाका, बरवाका गमरिया। राष्ट्रा−प• (ब•) अनावः वद् अनाव जिसका बाटा पीस कर छात्रा बाया रीजकी निकोकी आग्रान्ती, योसक गिरे वा तीत्र हय आयोका देर । --फ्रारोश-प असाव वेचनवासा । गहबर्क∽पु [मं] स्प्रिटेका स्प्रतिक मारिका बना द्वमा संप्रपालका पान । गर्ध = ली दे 'गी'। गश्चम ≠ – पुशमनाः गीमाः। – धार्–पुशीनाः। गबनमार-भ० कि॰ बाना । शबना - प है 'गीना' । ग्रह्म-५० [सं] सूर्य दा कुपको आदिका एक जानकर, मीसगायका नर (१)। शक्यी-औ• (सं) मीछगाच (!)। शवर्नमेंट−सी॰ [थं] शासन हुकूमता शासन मंडक, सरकारः धासन-प्रवृति । गवर्गर-पु+ [वं] शहरका देश, धरेश या नगरका शावा या राज्यको भौरसे निवक्त दासका किसी संबद्धा प्रधान शासक, राज्यपास (-बान्स-प्र प्रधान शासक) विविध शामास्यके वैजीमें जिटिन सरकार हारा नियुक्त समाहका प्रविनिधिक्ष प्रधान द्वासक । शक्करी-वि गवनरका (शासन फरमान श्वापि)। स्वी श्वनंतका वर कार्य वा शासनकात । शक्रमेंह∽ली दे 'पवर्नरेंट'। गवर्मेटी-वि शरकारी। शक्क-प [मैं] बंगही भसाः बंगही भरेषा सीम । गवामा-स॰ कि सोना। गवास, गवासक-१ [मं] छोटा दिएको शर्मना । गयाखित-वि [मुं] गवाधनुक गिरुकीरार (मकान्) । शबासी-व्ये [नं॰] रहवारणी अपराहिता। शबान्त्र गचाछ=-पु ने गबाध । गवाची-मा [मे] एइ तरहस्र महन्। गवादभ-प्रमि । पाम । गवादुर्मा-स्तै [मं] गाव-५०को धारा देनेस शत बोरः पागु । गवाधिका-सी॰ [मं] राशा भारा। गवामवन-९ [नं] इस या शरह महीनेमें पूरा इंन्से बाता एक वैश्विषय । शकार-वि॰ [फा] पश्चमंत्रान्यः इत्तरीशालाः, अ<u>त्रक</u>ृतः (देवह समासमे-'गुरागव'र, 'म'गवार रावाति) ।

स्पिपीका एक त्रवा-विता-वास-विव गुणी गुलवाल । गुमगुमा-वि॰ दे० 'कुनकुमा जावसे बीक्नेबाका । ग्रमगुनामा-म॰ नि माक्से बोकमाः बहत भीगे स्वरमें भग्पष्ट श्रम्दीचारण करते पुण गागा । ग्रहमा~स॰ क्रि॰ विधार काला, धोषना व वर्णश करणाः

-गौरि-सा गौरी जैसा सोभाग्यवती, पतिश्रता खी।

गाना । गुमद-पुका] 'गुमाद'का सपुरूप ! -गार-वि• वीबी, अपरानी । -यारी-सी॰ दोव अपराव ।

गुनदी#-पि गुनदगार। गुमा-वि गुगित (वह भ्रष्य श्रेक्यावाचक सम्बोंके श्रेतमें कराइर विशेष्य शब्दकी संक्ष्या वा मात्रामें बतनी। वारका कर्व जलक करता है, जैसे-तिश्रमा, बीग्रमा ह)।

स्ति• प्रता ।**।** शुमावन#-५० विचार ।

श्रमाद्व−प्र• फा ोपाप वष्कर्म दीव अवशाव ।–सार– वि होपी अपराचीः जिस्तो वाप किया हो ।

गुमाही#-दि गुनहगार। गुनियार्ग-प दे 'ग्रांनिया : विचार करनेवाला । वि श्रेणी । श्विवासार-वि॰ गुर्गोनाका ।

गुमी-वि॰ गुजीवाका । पु चनुर मनुष्य शाक्रपुष करनेवासा ।

शामीका≠−वि ग्रणींबाका ग्रकी ।

शुक्रोबर-पु॰ एक तरहका देवदार । गुष्टी-तो एक दरहका भ्रेश भी हामान्डे अवसरपर

मनमें काममें काबा जाता है। गुपञ्चप−स॰ क्रिपकर, ग्रह रोडिये। खो॰ एक मिकार्यः ग्रहारप्राप्तमा संबंधीया यह रीका एक विमीना ।

गपाख≉⊸प हे॰ गीपाछ'। गुपिस-त (सं•) राजा रहक !

गुप्रसाण-वि वि गुप्तरे । रास-दि॰ सिंशे रसिना किया वा विवासी होती। अस्पना गुदा संयुक्त, संयुक्त । जु वैषयीधा वननाम वा वर्णसूच्या क्यापेः भारतका एक माचीव राज्येष ≀ −कारारि≕यी मररिकाशमठे रास्तमें पहनेवाला वक शोर्वरणाम ।~गति~ पु॰ शुप्तभर । -यह-पु॰ शुवनागार ! --गोहाबरी-स्पी एक शोर्परशान की विषयुक्तके नियम है। - सर-प्र॰ बारास, क्रियक्टर दीव कैमेवाका । −बाम-प क्रियाकट दिना बामेनाना दामा वह दाभ निसे दाठाके शिना दसरा म बाने। वह बात जिल्हा बाता गर्फर त दी। -मार-श्री किं। ऐसी मार किसमें मारनेका कोई विश्व करा म देश वडे। ≔रजस्थका≃सी वह सम्बो निमका मासिक साथ आरंभ दी गया दी। −वेदा−वि जी भेत बरमें हो। इच्चेद्या बदला हुआ अन । -अनेह-वि० ग्रार पते मेम करतेवाका । ~स्मेदा –स्मे वर्गकी वर्गकी व्या गुराक-पु [स] इस्मा कामेदावा ।

शुप्ता-श्म [तं] परश्चीया मायिकाके व मेरीमेंने एक, शुर्री जिपानेशाली मादिशा रहिली। बैदन क्रीका वयनाम या वर्षमञ्जूषक क्याचि ।

गुसासम-१ [७] विद्यापन।

गृशि-सी [मं] इक्से शिपामेक्ष्र किया, वीक्स स्माप रवाका सामना यव्हार ग्रहा मनदारा करायस नामका क्षेत्र ।

गुर्सी—स्त्री वह रंडा या छड़ी विसक्ते मीतर दलवार रेख प्रश्निवार क्षिया है। गुप्तोव्येद्धा-न्ह्यां (र्धः) वाष्ट्रपर(मानी, बानी इलारि)-

रहित ब्रह्मेथा । गुप्पा-पु॰ गुण्याः ईरमा । ग्रफा-सी॰ पहाइ वा बमीनमें क्ला हुमा हंश दश, धौर.

THE P गुप्रत−स्त्री [फा] कवन, एक्टि, गील (हेक्क समस्त्री व्यवहत् । --गू-की पातबीत, बीमवास ! --व(क्त्रो) समीदः-सन्द-मी कदनाश्चनमा गत्रभीतः।

गुप्रतार−ली॰ (का] नीक्याल, नावधीउ ! शुबरिका-प्र गीवर, मैका आदि सानेराण का धेवा। राबार-प [बर] पूछ, वर्ता महमें संकित हुआ दिसाय: मैक । सुरु - निकासना-सबमें यरी दर्र वर्ते वर दाक्रमा अंदास निश्चारुमा ।

ग्रकारा-प्र॰ है शुक्तारा । गुर्वित्र - पुरु है नोवित्र ।

गुम्बाबार्ग-तुरु दे 'शुम्बारा'। गुरुवारा – पुकायबद्धानना हुआ गोला वैद्याओं बीनेडे गुका रहता है और शारमें चीवहे कपड़ार बका देन्दे इवामें बदना है। रेखन आदिका बना और हवासे स्त्रमें गैसरे भरा हुआ बैधा जो बाबाएमें सह सदना है बैब्स गोमेको शहरी एक आदिश्वाओं को ग्रमाको स्प वहाबी बाती और क्रेंबार्रपर बाबर धार्ती है। सिती जैने रवरका बना वक दिक्तीमा बिसे हवा अरकर इनाने और वागेमें बाबकर प्रकात है।

गुम−नि [फा॰] योवा हुना, नामर हुन, जारध [-नास-वि विस्का नाम प्रसिक्ति न हो। जिमे व्हर्ज की कम न्येन जानन हैं। दिना नामक (१४ ^{हेमा}) ! ~राह्-वि जो राख्ता मूक गवा हो भरता हुन्या ही रारतेपर वानेवाका प्रश्नमहो। -राही-स्नो॰ सन्प्रवरा। −शुक्:-वि शोवा तुना भूवा हुना ।-सुम-वि• पुर भीर मिश्चेष्ट श्तय्य (होमा) ह

शासक-स्ति है शासक । गुरुक्तां~न कि मोतर हो नोतर ग्रैंबना बाहर मन्द्र न होना ।

गुसमी—मी॰ होता श्रेषर । गुमरा-पु॰ चीर कारिके कारण होनेवाडी मावेपरकी बीट शूषमा क्रवासमा यक्ष कोड़ा र

गुसरी-नो महत्वमें नवने करर बड़ी हुई कमरेबा सीरीको एका रतने सारजको हिमानक करमेराने कीरी-बारके रहनेके किए लाइनके पात बना हुई धोरी बीक्पे ! ष+ मावदा पानी पादर चैन्द्रनेवाला महाद !

गुममा - म कि॰ सी जाला। गुमर-पु धर्मदा हेव गुवारा कागापूची । गुमाण-पु [का] मरिह यका अनुमाना गर्न वर्तरा

वरगुमानी कुषाहणा ।

विवा १

गहराची −प्र• गहराई ।

गद्वद्ध≉−विदेशभाहर'।

गहरेवासी - सी एकडे ताँगेकी शृष तब दीवाना। एकके

आहिको तेत्र बीहाने, आगे वह जानेको गवरी प्रतिवी

शहसीत-पु∙ राजपूर्वीका एक वंश । गहवार-पु पॅक्सी ! गद्वधारा-पु (पा) पाछना, वच्चेकी मुखानेका सूखाः बह स्वात बहाँ कोई बीज पाछ-पोछक्ट बड़ी की जाय, विकासस्वरू । शहाई ७ -- स्त्री । शहल प्रज्ञा गहागद्व-वि गहरा। गृष तेता शहागह-स दे 'गरगर । गद्राना-स कि पक्रमा 'गरना का में । शहरसञ्चाक-स० फि. शिवकनाः प्रकृताः। गहिरां-वि देश गहरा । गहिराचां – पु के 'गहरावे । गहिरोक-विश्वदेश गहरा । गहिसाक-वि पागक वावका। गहरि#−नि दै• गहरा । गडीसा-वि गर्वाका, पर्मणी। गङ्गभा~त एक हर्राको सँहती। गहेरुका - च छाँदर । गहेमराञ-विश्वावकाः मृत्व । गहेला - मि इटी घमंद्री पानक बीवस । गर्देशां च्यु परदनेशका प्रकृष करनवाला । गद्धर-वि [मै] गहरा: यनाः निविधः दुर्गमः हारा । प्रश ग्रुका, बंदरा; रिका मेथरी शिवने शायक नगरः निहुवः गहराः देशः गंगोर निपयः अकः। गदरी~की [इं] गुका इंश्ला। गोंकर∽मी तिही वारी ३ गोग-वि॰ (सं॰) गंगा-संबंधीः यमाका । प्र भीषमा कार्तिः चैवा साना। भट्टाः वर्षेका विशेष प्रशास्त्रा जल । गोगर गोगरक गोगरेय-५० (सं॰) एक तरहकी मदको । गौगापनि - ५ मि | भीष्मः कार्किकेव । गांगी-सी [मं] धुगां। गरिय-त [रा] मान्मा काचित्रेया सीमा क्षेत्रस्थिता मराजी । वि॰ गंगार्ने या गंगानत्तर रिवन । गौगयी-शी॰ [नं] (एससा मटका । गौगरका गाँगेरकी-स्व [मे] मागवर्ताः एक करव । गोरोष्टी न्थी [में] एय तना कट्यकरा । गोग्य-दि [मं] गेगा संबंधा । गाँउना~ए° कि गूपना। गाँच-पु देश धवाल-पत्ती आहिका देए । गोजना~स॰ कि देर हमाना। गाँबा-पु॰ मॅनकी मानिका एक वीचा जिसकी पशिया म रेड निय मंशकृती तरह वाने 🕻 । गोत्त्रदाय गोबोदाय~नु [नं] दास । गाँउ-भी रामी पाने आदिका चैरा चलमे या जीवमेन

पही क्षर्य शाली, गिरह, श्रीमा कपहेने छोरमें कुछ रखकर क्रमाओं हुई गिरका धेवा टेंट गठरी। चैंगली, बॉब-पींव व्याविके और, वंक, वॉस आदिके घीरकि घोड़, पर्वे। गाँठकी शकतकादी जदः गद्वाः गिलटीः भैरः भुग्ज । —कटः, -क्सरा-प्र अव काटनेवाका पाईटमार; रूपका; इग । -गोमी~धी पक सरक्त्री गीमी विसमें भरते **उ**ष्ट उपर गाँठ दोती है। —दार--वि॰ गाँठदासर। **−का~** पासका, जो अपने पास हो । अ-कटमा-जैद कर्रमाः गाँउका पैसा मिक्क भागाः छगा भागा । -कदरमाः-कादमा-वेद कतरना । -करना-ग्रंप्रच करना । -का पूरा-पैसेनाका, मालदार i -का पूरा, कॉसका कैंघा-पैसेवाका पर मूर्य। -लुक्कना-चन्छन हर होनाः रिलको सफाई होनाः मनको बात खोलकर कर दिवा जाना । अक्षेत्रग्र-श्रविनार्ष दृर करना । - **कोवृना**-गठवंबन करना । (समर्से)-पद्यना-विगाद दोनाः (किशक मोठे) मनमें बैर-धुराई पता द्वीना। −पर गाँठ यक्ता-कठिमार्थः पंकीरणी का मराई-वैमनस्मका वहते वाना ! --वाँचमा-(किसी शतको) भन्दो तरह नार हर डेवा कि मुख्यानेका दर स**रहे।** गाँटना-म॰ कि॰ गिरह सगानाः बीहनाः बुता सीमा, **ब्**तेकी मरम्मत करनाः मिकानाः हाधमें कर लेना अस चाडी वार्त करनेकी वैदार करकेनाःशतनाः (पंताः सनारी)ः निव्यव करनाः वीवना (सबसून संख्या); दवामाः वार रोकमा । गाँडिक-सी देक 'गाँड'। गाँठी~को। यह गष्टनाः संस्कृता गाँउदार प्रवशा । गाँव-मो॰ ग्रदा तका पेदा । गाँदर-ती॰ एक बाध विसाध अवदी धास करते है। एक गाँडा-पुर ईराका गीने वा परनेके किय बास हवा हवाहा। रंका मेंपरी। गोबासी~सी॰ [सं] एक तरदको यास। शक्तिब-प [मंग] वे माटाव। गांबी-ना॰ एक दरहदी यास बिसे चीपाने सान है। गांधीर-वि [सं•] गंदीर पीपेसे माप्त या उसका बना । गांडीय-इ (सं॰) अर्तुमका प्रमुख यो उन्हें अग्निसे मिला था। वसुए ! ~धम्या(स्वन)~पु । अर्जन । गाँडीवी(विम्)-पु॰[यं॰] धन्नन । गाँड-वि॰ विसे शुरामंत्रन करानेश कद हो। कमश्रीर रिष्ठकाः निक्रमाः दरवेकि । गाँती~मा दे 'गती'। गौतु--पु [गे०] बचनेवाका पश्चिक्त गायद्व । गोश्री—स्पै [में] बैडवारी। शाँचमा-स नि श्वमाः गाँउना । गाँदिनी-भी मि॰ पेगाः अक्ररनी माना। -मृत-पु॰ भौग्मा काश्विदेवा सप्तर । शोदी-की [मे] देन गांदिनी । गांवर्षे नि [र्गण] नंबर्ग-वंबपी। गवर्ग-देशमें गत्यन । प

र्गबर्वेद मामविषाः गंबवं दियादः मारत्रवर्षका एक उपरीपः

योश।-वेष्-पुद गरर-४ । मामरे दा उमीन।

बेंड्डी भीर सीवा बाला।

गुरुविमी#-स्रो दे 'प्रविणी'। गुरू।-पु॰ गुर ।-बंटाफ-वि॰ पु॰ बहुत बाकाक, वृत्ते

कारगी।-क्षम-ए दे**० 'गु**ददम ।

गुरेरमार्ग−स॰ क्रि॰ धृरना।

ग़रेरा-+ प्रवेश 'गुडेका'; प्रानेकी किया देखारेकी ~'अंश इंतम्] मयो गुरेरा ~प॰ ।

गुर्ग-पु॰ (फा॰) मेहिना । —शाहानाई(-सौ॰ दिसाक) कप्रमरी मित्रवाः कपरसे दोस्ती भीवरसे दुस्मनीरखना। गुगी-पु दे गुरका।

ग्रह्म-प्र फा] यहाः तुर्व । -बरदार-प्र गदाशारी पैनिक । – सार~प्र एक तरहके ग्रशतमान फकीर को शाबमें डोइका गुर्न किने रहते हैं और मिद्रा न पनिपर भवने छिरदर मार उसे है हुँदिनरा।

गुर्बर-पु [रो•] गुबरात देश: गुबरातका रहनेवाकाः धनराती ।

गुर्बेराद-५ गुबराव।

गुर्बरी-सी॰ (सं॰) गुजरात देशको मी एक रागिनी। ~ टोबी – लॉ॰ [दि] यद राग ३

गर्वा-प देश गरदा । अध्य तरहा होता तीय । गुराँ-प् [बन्] मुसकमानीच बांह नासकी मनिया

(दितीया)। नागः अंक्षाः। सु०-यताना−धक्ष्मह्रू बरना ।

गुराँमा-मन् कि (इन्ते-निस्तोका) स्रोपने गुँह कर छर्छे मारी भाराज निष्कांकनाः (का॰) क्रीयम्बद्ध आयावर्गे मेकना ।

गुर्वादिस्य−५ [संग] एड बोग, बृहस्पति और स्पैका एक राद्धि एक नक्षत्रपर रिवत होना (ववी॰)। गुर्चिनी, गुर्वी-सी [रे] वर्षवती की। गुरपरनी। श्रेड

स्ता। दिन्दी धर्मनतीः विशास बहुत वही। शुक्त च-पुनि] यह इंटा

गुर्वदाज-पु दे॰ 'गीकराथ ।

गुक्त-प [सं•] गुका (फा] गुका परा पृक्त करते भादिपर यमा दुवा दु ग्रहार बूगा ग्रेक निग्रामा जनमे था दागतेका निधाना क्लोडा सिरा को विक्तुन कर गया द्वी। पुरुष्के आफारकी बहरयोशीकी बनी पुर्व नहीं दिक्की। इंस्पे समय भरे द्वय नालोंमें बहुनवाला गर्द्या पराओंके शरीरपरना निम्न रंगका बाना छान, दाना कनन्त्रीवर क्रमाबी जानेराची बुनन्धे क्रिकेट एक बरुधा सामा: यस्ता द्वभा बीवणा भेगाराः वंशकृतः बहुाः सीशका रेखाः व्होंमें पहाँ है गीनेहा धमका (छा) ह्रिन्ट सुधुमार स्वी पुरुषः । कार्याः । --व्यद्राम-वि कुकसी वेदवाना संबद्ध सक्ताम । -मजीक-त वक कुमदार वीवा । —अजायम-पु॰ गुरुसम्बा चुन्छ क्सकायीया । **—जना**र —चु भगारका पूर्छ । —शस्त्रास—चु व्य पृष्ठा वसका पीता । -भरवासी-पु गुरुषधासके पुककारंग ! वि उत्तर्यद्धाः — अद्यापूर्ति – स्ती श्रद्ध पीने रंगका पूछाः "भानदी - भानिसी-पुगहरे ताह रंगस ग्रना ! -भीरग-पुषद्वत्रद्वाशियाः -क्द्र-पुगुणावकी < सारियोधे घपर सिनानर बनावी हुद यक सरस मीरण ।

-क>-पु दश्रेपर नेक-पृटे ध्रापनेका रुपा। -क्रम-पु पुरुवारी क्यान ! --कार-पु गुलकारी करवेबाका वह चीत्र जिसपर गुरुकारी की गयी हो । -कारी-थी॰ वेक वृटे बाहमे बनानेका काम कडीहरकारी। --केस-प्र° कन्नरका कुका कसका पीवा । जात्वारी । —शत्र न-प्रव यही भाषा तनूरः अभिनक्ष्ट । -प्रशा-मीक-प् ण्क पृक्तः चसका पौकाः –गञ्च–श्री वा**ल्य**ामीः वयान असन । —शीर-पु वर्षास्य गुरु करनेसे देवे। ~र्गू~नि॰ ग्रहानके १८का, ग्रहानी। −गृना~त्र• रह सरहका बकान निसे श्रेपरता बहानेके क्रिय मीरवें हुँहस क्याती **है। —चर्**म-वि॰ जिस्को कॉरामें दूसी हो। -वॉदमी-मी॰ एक सक्षर कुरु वो प्रापः चौर्या राजरे विक्ता है। अस्ता शैवा । -- धीं-पु कुन सुमतेतन, मानीः एक स्वरारहार कुलः हस्का देह । रि॰ हान हरादे बाला । - बीन-पुष्क तरहत्रा वृद्ध जो वसंद्रा कृत्रत दें।∽थीनी∽ला कृष्युनसाः − ब्रमीस-पुत्रसः बगका कुछ । - ज़ार-प्र बाटिका, प्रयान । वि सिरा दुना प्रकुत्तः वहरू-पहरूपाना । -स्याप्त-पु गुर्ग कतरनिक्री रहेंगी। गुरूमीरा यह कूँची क्रिसमें वर्धाचेते रोगी: की कार-धाँर की जान; पत्नरपर बस-नरे बनानेका सीगरा बिरागका गुरू कारने वा पीचीकी बारन्तीर वरवेवाग बारमी । -तुर्रा-पुरु बन्धोदा पुन्त !--वस्ता-पुरु रूपी का गुण्छा। चुनी पूर्व चीको(एव आति)का संप्रदे वर निका । -- हाम-पु शुक्रास्ता रखनेका पात्र !-- हाउरी -व्राख्यी~सी शरद कतुमें कुछनेदासा वस पूर्मा वसका पीवा । −बार-वि» बागदारा विस्तर दून वर्ने र्दी । पुरु एक सरक्का सकेद अधूनर जिल्हर काल शी काने याग दोते हैं। एक तरहका क्योदा । जहाबदी " को दे॰ शुक्तराउदी । –हुपहरिया-की गहरे शर्म रंगका पढ एका क्लका पीना । -ब्रुम-धान वर्ष दरा की दुन्दुक जिसकी दुमके मीचे बाल दाय दीना है। " नरशिस−र्ता जरगिमद्भ ५७% इसका पौरा । −वारं− यु जनारका १ सः एक तरहत्वा सनारः। अमारके पूक् वेभा गहरा क्षक रम । ~पपड़ी-मो । एक तरहमी निर्मा -पादा-पु गुरु।वस्त्र एक भर क्रिप्तमें मामनावधे सुगर रोती है। -फानूस-पु ग्रीवाफे किए कमारी बानेबाका एक छोटा पेट्र १ -फ्राम-वि॰ गुक्राव है (गन्धा होतर । प्र वंदर-समान्द्री सन्दानीमे सन्त्र परीन्द्र मेनचात्र । -क्रिर्श्य-पु एक सरलदार कुळ जी सन्द्रजीर गुगारी (मद्रा दोवा दे । -फिरकी-स्त्री॰ रह धेरा निर्मे शुरु। पी रक्षे कृत सपने हैं। —क्रिक्तें—वि कृत समिने नान्या स्वया स्थानसम्बर्धः पुजानी सुनार विश क्रमेडी द्वीदी । -क्रिसामी-तो मूळ स्थापा हीर च्रशास्त्रीस्थे शर्भे स्थाना भुधस्यानी । -वशास्त्री -की अवस्पेटाइ बंगकार्वे रीनेशका पर गर्नेट सर्वीरी कृत जो ऑसोंके समोंको अध्यादना नताना नता है। वर्द्धी एक ग्रांसद धवानी और अर्थन्याम्य । नवर्षन नि॰ कुमनी देदबाला सुंदर । द्व एक सरहका मत्रास रधमा कारा । -बाज़ी-स्री वृत्रीने राज्याः १६ इसरेवर पूज ईक्का । -बाव्या-पुरुष वर्ष । -ब्र्स

भाग । - कप ज-पु॰ अपेरका कमभोर बोना ! - मुस-पु॰ कुणके रक पुणका लाग । - मंतान-और मुक्कियों । - माजमी- त्री॰ संगोधा, तोकिया । - पसिट-क्स्वा-को पत्रका वाम । - म्हा-पु वाक, होमीं । - विव् पु॰ क्स्मलाके गमने बरला कुण्यके यक पुणका लाग । - संकोचनी-को साथों । -- सम्मित-पु॰ तोन माजीने कर्यका (भूग) । - सीहब-पु॰ वेद, अंगोधी सुवारं ।

गाश्रक-पु [मं] श्वरीर । गाश्रक-पु - [मं] सुर सावनकी यह प्रवृति । गाश्रकान्(वत्)-पु [मं॰] कृषाठे यह पुत्रका भाग ।

नि+ सुरंद घरीरशाका । शाखानुक्षेपनी—स्वा [सं] क्याराय ।

शाहाबरण−९ (सं) विद्ययनकार क्ष्यपः वाकः। साध−९ (सं) स्त्रोतः गातः। कश्चोः नावाः वसः। साधःह−९ (सं) यावकः स्त्रोतस्य गात करनेवालः। साधाः–ती (सं∘) सर्वेदिकः स्त्रोत्रः स्कृतः माह्यकः यक

मेरा क्याः क्रीक्य क्याः हेदा आर्था होद । —कार-पु महाकान्यका रचिताः गायक । गायिक-पु सि] है - गाथक ।

गामिका-को॰ (सं) गामिका, गानशकी। गान । गामी(विम्)-वि॰ (स॰) मानीते परिवित्त । यु साथ वेदका गावक ।

गादों ∽सी॰ तकछ्ट ।

गाइंद्र-पु गरिवार वंडा मेता; गीवक । वि करतीका । गादर्र-वि॰ करनेका गररावा हुआ। महरु सुरत । पु गीवका महरु विका

गावा - प्रभवना अनाम या फलका महण्या कृष्ठ ।

गादी-स्था गरी। एक परनाम । गार्द्र - इ. चमगादह ।

गाय-वि॰ (सं) जिस्की बाद मिक सके। इस्कर बार करने कावक, उपना; स्वस्त । यु वह बगह बहाँ गरी इसकर पार की जा सके बाहा रवाना गाहिकी इच्छा सिन्धा तस्त्र ।

गाभि-पु (सं॰] रिश्ताभित्रके पिना को रेस्के अद्योगे कारण माने जाते हैं। न्यानम्,न्यंत्रम् न्युप्र न्युत्त न् स्मुन्य विस्वामित्र। न्यार न्युर-पु बहुत्वकृष्ण भाषुनिक बजीय।

शाधेष-पु [मं] (बन्बामित्र ।

गाचेश-स्य [सं•] साथिको क्रमा सरवासी।

गाम-द्र [से] गामा, शीदा बगाज स्वबना ग्रुज्यः गमन । -पाच-द्र गामा बगामा । -विद्या-सी स्मेपिन-दिया ।

गामा-स दि महनात्मदे गांव राज्योंका जवारण करना दिशी गोताई शास्तुरदे गांव कहना। वर्षन करना स्थानमा (गुण पाता)। गुणि करना। की तीन बेरान्ता (देशक भारिका)। पुण्योत गांव। गुण्य-बंदाना-रागर्यन, पात्रवाण उत्तवश्च के शुरू समाना। गांतिकी-स्थे [त] हेवा।

गानी(त्रिम्) -ति [सं] गानेवाणाः प्रानेवाणाः

गापितळ-वि [अ॰] गण्डन्त करनेवाछा, वेकवर, बसाव बान, कापरवा । बारम-पु॰ दे॰ 'बाना'; पराका गर्भ । बारमा-पु॰ कहा, व्यंपक; टाङ पेड बादिका दोर । बारमा-पु॰ को नमंत्रती (गाप, पेछ बादिका दोर । बारस-० पु दे॰ 'धाम': [का] पंड, पदा करम, बगः

गास-च्यु द्व आस [[का] वया परा बराग व्या स्थाम । --प्रमु-वि चकतेवाका तेत्र सकतेवाका वा सारिमां(-च्ये [स्व] प्राचीन काकते पर स्युद्धी नाव । सार्मा(सिन्यु)-विव [सं] ग्रमम करनेवाका व्याने चकने बक्का पुर्वु नेवाका संभीय करनेवाका क्रिक समार्थातमें

क्यनहरः) ! [सी॰ 'गामिनी ।] गामक∽वि सि॰] वानेवासः ।

ग्रामुक्त-[वं [सिन वानंताता । ग्राच-पु [से] गाना । औन [विन] गोमतीन माना पर्यु औ त्व दैनेवादे पहामेंथे संस्थान और हिंदुसमेंमें पूरव मानो बाती है, वैन्द्री मादा चेतु । वि बहुत सीचा, दील (बानमी-का) । न्योठ-सीन प्रद वाहा था स्टब्स्ट विसमें गार्वे रखी वीची जाई गोड़। न्यासा-पु तरहता बनावा भी पहामेंके मुक्के सार दक्कर कीकेंक्क्रे खुता है। नरीम-पु गोरोबन। मुन नकी सरह

कारा ६। --राव-पु भाराकर। मुख्य-का तरह कॉयना-चडुट रहता। गायक-पुरु [र्थ•] गानेवाला, पेनेथा) बभिनेता। गायका-पुरु वहीदानरेक्क्ये उपार्थि। गायकी-व्यंश मानेदी उच्च कहा, गानेका येखा। गायक-व्यंश [बर्•] बंत सोसा; मदेल्य, गरब ⊢य्रज्ञ-

वि वेदर, दर दरवेदा । गायतास-पु दे गैतास । गायस-पु [सं] (वेदिक) स्वीता मापत्री छन्में रिचन

स्तील। शायप्री-क्यां [सं०] एक वैदिक छंद विसमें ब्राठ-भाठ वजीके तीन वरल बोने दे एक छंदमें दिन एक वैदिक मन विस्का चर्नेत्र चरनवा संस्कादमें दिव बाक्यकों क्रिया बाता है सावित्री सुनी। मंगा।

वासची(चिन्)-पु॰ (रां॰) धामगावका गैरका पेड़ ।

्त्यो॰ 'गावपियोः ।] शासन∽पु॰ सिं] गरीयाः मावकः गानीपबीबीः गानाः ।

सायनी-न्यों [सं] पानेका देशा करनेवानों को । सायब-निव बि] शिक्षा हुआ खुत्राशिक्षा सुत्रः अस्त्य । -मुक्का-विव सावव सारायां । न्यान-पुत्र देशत देश स्वादेव केन्द्रनाका । मुक -करमा-वदा नेना । -प्रेक्षमा-विना देने सावग्य केन्द्रस (समझ सार्य्य (सावादी कार्यों सनुसार साथ स्वता दे)

गायपाना—भ [ब] बनुवस्थितिमें पीठ-पीछे। गार-भन्ते वार्षा म [कार] करनेवाला (विल्मक

गार गुजहमार): साबम (बानगर): याग्य (रश्नपार) । नार-पु॰ [ण] सह्या, गन: गुफा सीदा क्यानी जामबर का विक्र और । नारप-सी [ण॰] सह मार: तवादी वरवादी (दरसा

होता) । विश् मधः वरवारः छवाहः। नशर-षु० सूर मार् करनेवानाः शुटेराः सवाहं करनेवाकाः।

गारक्-मी [भे 'बार्ट] सिपादियोंका होता दरका

भीर नाहर पीला होता हो। गुस्केर-सा॰ [ब] दो ताँतोंकी कमान विसपर मिट्टीकी भोली रखबर पॅकन है। -ची-पु॰ गुरुष बळानवाका। -बाझी-सी॰ गुरेक बसासा। गुरेहरो विविधा बाहि मारमा । गुसेसा-पु गुकेस्स पॅड्रमेडी मिट्टीब्री गोसी-पुकेस । गुस्रोह∽सा गुरद। गुफीर गुक्षीरा! - प्र वह स्थान बहाँ रस पकाकर गुक, राव वनावें। गुरुफ-पु [र्न•] एईस्के ऊपरको गाँक; टबाना, बुट्टी । गुष्स~प्र [सं•] विना वनेका पौथा विसमें अवसे ही कई शासार निरुक्ती है (देश बाज सरबंदा रत्यादि): साव समाधा एक विभाग- ९ हाथी; रव, २७ मीडे और ४५ पैरम नदीके पारपर रक्षार्व स्थापित नौकी। तिली। एक **प**प्रस्तोग पेरके मीतर गोलासा वैच बाजा। दुर्व ३ **~केत्र**− पु अम्बरेतस्।-हेना-विश् श्रद्धिः वासोवासः।-प-पुंग्राह्म साबद्ध। - शुक्र - पु अन्तरह। - वसी-वी सीमतता I-बात-पुर श्लीका एक रोप I-शुक्र-पुण्यक रोगका एक नेद । गुएमी-सा सि रिमाः वेशेका सरमुद्ध व्यवकेका वेश छोटी हमायचीका वेड 1 गुस्सी(हिमस्)-वि॰ [मं] गुश्य रीयसे चौषिया सुरुपक्रे क्षपमें सममेबाला । (सी अस्मिनी' ।) शुस्मोदर-५० [सं] वे गुरुमवातः। गुक्म-तु [सं] मिडास मीडा लार । राज्ञक~प सिंगी योक्फ । गुला-प (पा॰) गुफेरपर देंश्री वामेशको मिट्टीकी बनी गोसी ('गुम्का'हा क्य स्य)। = श्रीर गुक् (इस्प-गुक्ता)। गुलाका-प देश गुलकाला । गुली-को बनीतरा उदना निमने बीमों छार मुखेने बी काठ्या लंगोतरा उक्सा सीने या पाँधीका टका। गुरुनी। महरके फलको गुरुनी। कैमहेका कुला छात्रेमें मुखु रहमेका स्थान। मर्फाको सुराही। कबाधी मेहिरी। का तरहाधी मैना। द्वीरा गील बामाः एक भीबार जिसमे सिक्कांनर जैग सुरवने हैं। -इंश-इ सरबोंका वड एक विसनी गहीको बंबरे मारत है। स॰ नईडा सहना-पैठ कुदमें समय मह क्रांचा ! गुपा - पु दे 'गुपाइ । गुपाक-पु॰ [सं] सुतारीः विक्रमी सुतारी । गुवार - पुरुष्टि । शुपारपाठा-पु रे 'स्वारपाडा । गुपास र-पु १० माङ । गुपासि*-सी॰ 'सानिम'। गुर्विद्यक-थु है । 'बीविर'। गुसन्।-पु दे गुन्न ।-शामा-पु दे॰ 'गुस्तगाना'। शुंबाई-पु १० वीम्यामी । गुसा॰-इ दे॰ 'गुस्मा । ग्रमंबी - प्र स्थामी। रेवर। गुस्ताहर~दि [दा] होड अविनीत वेमरव ! गुम्नाप्ताना-व [का] क्षित्रार्वके साथ आहित्तापूर्वक ।

गुस्ताकृति-स्तं (फा] दिहाई, बरिश्या, रेज्यती । गुस्क-पु [बर] मारे छरीरको पोना, स्नाम हरेथे भवकामा !- ध्र मा-प्र नवाने है बोरती, स्मानागर ! ~(एक)सेडल~अ श्रीमारीसे पढनेके शार दिना करे बाका प्रथम स्माम । गुस्सा-पु॰ मि॰] कोष, रोष, धोप। -वर-दि॰ दिते बस्दी पुरसा बादे । मु॰ -उतारमा,-विकासना-कीमकी श्रांतिके किए (विसीपर) विमाना, मारवा श्रांति। -थुक देमा-धमा दर देमा गुस्सेको यो वाना ! गुस्मेल-वि गुस्मवद क्रोदी। ग्रह-प रे १० 'गू । [सं•] बारिक्या पोका श्रेपरेख्या निवादराज विसर्व बसम्प्रमुखे समय श्रापको संचाहर करानाः ग्रहाः निष्णुः गंगाको कावरवेन्द्रः एकः उपग्रति। -वही-सा॰ मार्यद्रीर्थ-शुद्धा पत्नी I ग्रहमा!-स कि॰ ग्रॅंबना। ग्रहरानां−स कि॰ पद्धारमा । गुहबामा-स॰ कि॰ 'गुहबा का मे॰। गुर्होजनी-सी विकता। ग्रहा-नी॰ (सं•) ग्रहा बोहा मौरा ग्रिपनेश्री नन्स (का॰) श्रदम क्षेत्रफरमा सिंहपुन्यीः शक्षमणीः इदि ! ∽बर−दि शुदामें रहने, विष्युरीवासा । पुरु स्मा -शय-पु मॉदमें रहतेवाचे पतु, पूता सिंह मारी। **परमात्या** ह गुहाई।-सी गुहनेकी क्रियाः गुहनेकी सबदरी। गुहाना!-स॰ ति॰ गुहनाका में गुहार-ली शिहार्थ रखाने किए प्रकार ! शुक्रारिश-ची देश शहार' ! शक्राहित-वि [री॰] शक्षा क्ष्यबन्देशमें रिवन । उ परमारमा । गुहिन-पु॰ [र्थ•] बन अंगत । गृहिक-प्र• सि] धन संपत्ति । गुहेर-५ [नं•] जमियाबद्ध, रक्ष्या छोहार । ग्रहेश-त गीव । गुद्देशी-ना निकती। गुक्क-दि [सं] क्षित्राचे सावद्वा गुप्ता गृह, बढिमानि समहामें भारे बाला। पुनेद रहरका गुन्न बंद, उपर (गुरा क): बीन रंगा क्युजा: विष्णु ।-गुरु-पु । विरी च्यीपक-पु॰ जुगन् । -शार-पु॰ मन्दार उत्ता ~निवर्षत्-पुरुष । ~पुरुष-पुष्पिमा । - वीवः 3º भृष्य । -भाषन,-भाषित-3 ग्रेम नार्यः शप्त मेचना १ गुक्काक-पु [मं] कुपेन्टे सामानेको एहा क्रमेनाने नहें रा क्षां शुरिवा । -पति-पुरु कु रह । गुक्करेयर-तु [र्थ•] तुरेर । र्गू-पु॰ (फा॰) हंग वर्ता हंग (बाहरू)। -मागूब-रि॰ रम-विरंगा । र्गुगा-वि वी पीछ स सके, मूदा म बीचनेशकाः की बीच साप ही। इ ग्रीमा ब्लासी। हा -(त)शामुक -का संपन्ना-नद बात जी अनुभव की बात कर करी व मा शक्के व्यवधान मनुभव ।

101 करनेका एक साम टंग।-हामारी-खी पशुगणना। -सुमा -शुम्मा-पु वह पीता त्रिसक सुर फ³ हों। मु - ज़ोरी दिल्लामा - वहने करतव दिलानाः वह परीक्षा करना । गावन - सा गानेका दंग ! गावस~पुरहाक। गावस्मणि~पु [म] बृतराष्ट्रश्च मंत्री मेवय । शास•~प• दस्य चंदर । गासियार-पु श्रीमपौद्य । शाह-पु [से] अवगादन गहराई। ≉ भावका पक्का मगर माह । वि । गाइन करनेवाका । श्री [फा] स्वामः बगहा समय कानः वारी ! - बगाह- व कमी-कमीः समय-समयपर । साह्रे-पाह्रे गाह्रे-पाह्रे-व कमी श्रमीः प्रचित्र । गाष्ट्रक-पु॰ प्राद्यः पारीदारः वद्याः [सं] अनगावन करनेवाका । गाइकताई • न्यो सरीयाये। ब्ह्रवामी । ग्राहकी −ली॰ सरीगरी किही । शाहन−पु[मं] पानीमें पेंसुना, पेठना, गोना कगाना निमञ्जन बाह छना। छानना। विक्रीहरा। शाह्रमा~स कि बाद हेनाः जनगढन करनाः विक्रीयनाः पार करना-'कार भीमरा कृषा वादी'-छनमञ्जूषा ग्रहण करनाः भनाव माँहनेमें हाना नाहमेछे किए रोठको र्रोडेसे उठामा- बहुरि प्यारिह गाइत - घुरु । शाहाक-री॰ कथा गाथा, कृतीस । गाहित−ि (सं•) गाइन दिया हुआ। गाहिता(त)-दि॰ [मं] गाहन करनेवाका । गादी-स्रो पाँच भोजांका छम्द्रः शक सारि मिननेका गढ मान । गिंजमा−म• कि॰ गोजा जाला । र्गियाई-सी॰ गीवनेके क्रिया बरशावर्ग गैरा होनेबाका एक की शा र गिहरी-म्बं देश दि इरो'। गितुक-पु[मं∗] येद शतुद्धा र्गिदीहा, र्गिदीरा-प मोध रोडीक्स शक्तमें बमानी हरे चीनी । गिभान•∽पु•दे• इल'। शिउन-भी श्रीश गता। रियपिय-वि पास-पास विद्या हुआ अस्प्रः। गिचपिया∽सी क्रमप्रिया। गिजगिजा−दि गोना पिनपिना। गित्रा-सी [स] साहर तस्य पदाव। गिवाईं। नभी ६व बरमानी कीहा ब्हारिज । रिकाई-वि॰ महार-विश्वीत का आहार रूपने हो । गिरक्शि-न्य छात सेतेने स्वरंधी कैंपाना । तिरशातिना वंद्रशे पपत्का गण छार। दुवना र गिर्दापर-रंगे विकृत, अर्वहोत शब्शवती ।-बाक्टी --भाषा-श्री भंगेग्री। मु -कामा-(ह्री-कृरी) भंगेत्री واللحراة

₹¥~E

आदिका छोटा द्वकता गिटक्रिरोके कंपमें निरुक्तमेवाहे स्वरका सबसे ध्रीटा बॉझ ! गिद्वा-पु चिलमके छेरपर रखनेकी क्रमी। विडी-खी॰ इट-परपरके छोटे वोने इप इक्स को छत बमाने आदिमें काम जात है। मिट्टीके बरवनका छोटा उक्काः विक्रमके **ऐ**रपर रखनेकी कंकनी। बागेकी गीसी । विक्विकामा-म कि॰ दीन मामसे प्रार्थना करमा: बार्विकी करनाः विरीरी करना । विश्वविद्याहर-स्थै॰ विश्वविश्वमेना मान । शिष्टा!-प शिर्वीके गानैका एक गीत सकता। शिक्ष-पु॰ मरे बानवरीका मांस धानेबाका एक बढ़ा पश्ची जिल्ला बहि बड़ी वीरण घोती है। एक तरहकी बड़ी पर्तन । ~राज~पु बरायु। शिमशिमान्तरी —अ•िन वेदका कॉफ्ता रोमांच द्रोना । स॰ कि तक्योरमा। शिनती-स्रो शिननेक्ष किया, गणनाः संस्याः मृस्यः महत्त्वा दा:बरी (सेना) ।-के-गिने द्वप, बोडेसे । मुरु -पर जान(-दाविरीदेने बाता !- में भाना - में होना-**कुछ गुरुष महत्त्वका दामा कुछ धमन्ना भामा।~होना**~ मद्दरबद्धा समझा बाला । तिश्रमा~सं क्रि॰ संस्था, विनती मासूम करना, वसन, गणना बरता: दिसाव क्याना। समप्रना। मुख्य मृत्व। महस्व रप्रमेशका गानमा। म् गिन-गिनकर-गिनकर गिनतं दिमादं करते द्वयाँ — कदम रक्तमा—वद्वत बीरे भीरे बक्ता छोटेन्छोटे बरम राउना । - गासियाँ वेमा-वरकं इर बादयोदा नाम हे क्टर पाकियाँ देना । गिम वृत्ता-प्रत पुरुता कर देना। गिमे-गिनाधे,-चुन-भोपने गिनतीक। गिनकामा-स फ्रि॰ दे गिनामा । गिनाना∽स कि गिननेसा काम इसरेसे कराना। गिमी—स्पे॰ 🗯) यक विकायती पासः सोने हा अंग्रेजी सिक्या वा ११ शिक्तिमका वीला दे।-सावश्व-पु॰ वह धोमा क्षिप्रमें वर्षिदा मेल दा ! गिया-नी बदरा दे 'गिना'। मु॰ -लामा-(पांगका) षदर दाना। गिव्यम-प् [र्थ•] कारा, समात्रा आदिमें पादा जानेवादा यक तरहका गंदर। शिमण-स्पे॰ शर्यम । निमधी-की विद्यानेके काम भानेवाका वक्त सूनी क्षपदा । गिय#-सी गना गरहन। गियाह-पुप्त तरहरा योश। गिरॅंड-पु एक रेग्नमी क्वाहा 'स्वारस्ट'। निर्व−पु रै निर्दि । −घर −घारन −घारी-पु वे 'विदिश्वर । -वार्क-यु वहा श्रेष्ट पहाच रिप्रदेवर । - धारी-त कुण निर्धित्ता गिर्श्ह−मी एड दोसे घटचा। निस्तिष्ट-पु क्षित्रक्षणेकी वातिका एक रहा थी कई हर्सके रग बण्य सहया दे । सुक -की तरह रंग सदसना-सत वृधि बारत रहना सभी तुछ करी कुछ बनदा। गिहक-पु भिमन देशकर सम्मेश क्यो। बागु, क्यो | गिर्शिटानां -पु भिर्शिट

गुभू-नि॰[सं] दुष्ट सका सी अवान वासः समझः त्रकिः ।

गुध्म-दि॰ [सं•] होसी होल्प।

गृभ्य-पु॰, दृष्या-सी॰ [मं॰] इच्छाः लीम । राधा-पुर [पुरु] गिक्र । वि कीमी !-कुट-पुरु राजगृहके पासका एक पर्वत । -शाक-पु॰ करानु । -ध्यक्र-पु॰ वह म्यह किसमें सेना गिडकी चनलमें खड़ी की जाय । गुप्रसी - सौ॰ सि] एक बावरीम जिसमें कमरसे आरंग

बीकर सारे परमें दर्व बीहा ओर गाँठ करूबसी जाती है। गुनिका-सी [एं॰] गिडोंको भारिमावा भी वाजाने

सरपद्म करवपद्मी मुत्री थी । ग्रभी-सी [सं] सारागिमः।

राष्ट्रि∽सी • [सं] एक बार स्थानो हुई नावा वह तो जिसे एक दी क्या क्रमा को सञ्चय प्रदेशा।

गृह-पु [सं] भर बासस्यानः पत्ती शृहिकोः गृहश्वात्रमः मैपादि राश्चि। - उद्योग- पुपरमें किया आनेवाआ वंशा ।-कस्या -कुसारी-न्या वांक्शर । -क्योत -क्योतक-प्र पासन् क्रूनर ।-कर्म(न)-त ग्रह-कार्यः ग्रहस्यके लिए विस्ति कर्म ।-कस्मक्र-पुरु वरस् झनका, भार्र मार्टको लहार ।~कारक-धु यह क्लाने बाक् । राज :-कारी(रिस्)-प वर वनानेवासाः एक त्तरहर्या भित्र ।-कार्य-पु परका कामकात्र ।-गोचा ~गोधिका~नी+ डिपडणे !~चिछत्त-तु यश्या दिया द्यापा, कर्मक मरमार । - ज - अहत- वि परमें पैता हुआ। पु॰ सत्त प्रकारके वासीमेंसे एक, अपने बरमें पैटा बास (१० दास") । - जन-पु कुडुंनी। कुडुन ।- ब्रासिका-को॰ एक-प्रच :-ज्ञामी(निम्)-नि विसका याम पोहिरव परमें हो प्रचट हो सके, मुर्छ। जतशी-जी प्रवश्च-प्रवा -स्वारा-प पर छोड़मार गृहरशाममदा स्वाग ।-स्वाराी (शिन्)-वि धर धोरदर यहा जानेवाला। प्र सम्बाधी । -चाह-पु बरमें साम समया था समामा । -वीहि-#ा परकी शीमा सदीसाम्बी शी।-केकता-प श्राप्तिने ज्ञाहरू ४% देशता जिनको। गृहके विविध अंगोर्गे रिवृद्धि मानी बाठी है।-देशी-जी॰ बरा नामग्री राहसीर ग्रहिणी !-इस-व मंदर्भयी ! -मासम-व वर्गकी कर्नर !- मीड-दु गीरैया !--प-पु॰ शृहवति। सृद पाना कृता ।-पति-इ परका माकिका ग्रहरथा वजनामा भाग्न ।-पद्मी-स्पे युद्दस्यासिनी 1-पह्म-पु त्रुचा । -पारः-म् परको रस्पत्रकी बरनेवासा। कुला ।-पाकिल-वि यहमें पाला-बोसा हुआ !- पोलक-पु गृहमूनि ! -प्रवध-प्रभट्न गृहस्थीका प्रवेष एनवाम ।-प्रवेश-व प्रथे घरमें विभिन्नक मन्छ करना।-शकि-न्या प्रस्में क्षा जानेवाली वृत्ति वैश्वतेत्व !- ० द्विया-व व्यक्त क्यो ।--० सुक्(ज्) -पु दश्यः गीरेया ।-- शहक-पु बैठाइ।-असि-स्ती यह मगीन जिलपर बीई सदाम बमा दी बारतुरबाम !-अद-पु बरमें लगहा सगगा। रीं क्यामा :--भेड़ी(दिन्)-वि वर्षे हानहा स्थाने बारस मेर भारतेवका ।-र्बश्री(ब्रिज्) -सविव-प स्वराष्ट्रमन्दिक, के धालकार्रको ।-अधि-क वीपदः । – मास्त्रियः – मोश्विका – न्या सम्याप्तकः । – ग्राम – विश्वता – स॰ दि व वीपमा ।

प्र कृता।-मेष-पु॰ महानौंद्रा समृद् ।-मेध-पु॰ वंशवरा पंपवरा करमेवाला गृहरव ।-मधी(चित्र)-प्र गृहस्य गृहस्य प्राप्तान ।-यंत्र-प्र सस्य वर्षाहे अवसरपर सेना फहरानेका टंडा ।-पुत्र-तु॰ वरका मार्च-भारका समका। किसी देशके निवासियों वा विक्रिक वर्गीको व्यापसको स्टबर्स, धानावंती।-वंश-प॰ सरि वारिक रूक्ट वा पुर !~सप्तमी-खो॰ वरको सर्वा, स्वाका गृहिको ।─वाटिका-सी॰ घरमे सरा हमा बाग-बाहवारा !--बारमी(सिम्)-वि तु परमें रहनेवाला युद्धी परमें इसा रहनेशाना ।-विष्ण्येद-पु॰ परिनारश परनारी 1-विक्त-प परका लामी 1-शापी(पिक्)-प अयोत ।--सञ्चा-न्सी॰ मरका साम-सामान असरार। -स्थ-प्र महावर्ध जलमाठ बाद विवाह करके हुआे आध्यमें प्रदेश करने वा रहनेवाला गृही। पर-वारवाला क्षिप्राच । वि गृहवामी । रीती-पारी करनवासाः ~स्वासिनी−ली यर्थः सक्कित स्ती। गृहणी-सी॰ [सं] धांत्री : गृहस्थाक्षम-५ [सं•] अधक्षेत्रे बल्दा सामम पुरुतः का भीषमः निराहित भीषन । राहरची—सी. ग्रहरबच्च जीवमः मार्टरम्ब पर-वास वरस काम-कामा मरका माक-अमनानः नास-नभ कुईरा मेगी। गुहाक्ष –५० (तं॰) यसाह श्विपदी । ग्रहागल−ि [र्स॰] पर अभा दुआ (अदिवि)। राष्ट्रापण−५ (सं∘) वाशार । गृहास्क-पु [पं•] स्टेंगे । ग्रहाराम-१ [म] ग्रहगरिका । गुहाधस−षु [नं•] गृहरशभग। गुहासकः-नि० [तंण] यर-गुहरुधे, शक्त बर्वोंने बहुत निहुः राग रचनेशका । गृहिणी-स्वार्थिशी गृहस्वामिनी स्त्री। युष्टी(दिन्द)-वि प्र [श्रेश] युष्टरम वर-वारवाना ! राशील-विक [में] सक्य दिया हुआ। पढ़ता हुआ। सी

कृता माता पाता शंगुदीता पाता किया हुआ। (सी॰ 'ग्रहोत्ता'।]-शर्मा-विश्वकी गर्मेवती। गृहीतार्थ−वि [गुं॰] विश्वने भने समप्त क्रिया है। वर्ष mat (

गुहोचान-४ (ई॰) युदरारिका । गृहोशीय-५ [गंग] है गृह ब्योग । ग्रहोपकरण-पु॰ [सं] शरनन मारि शरका शामान ! गुहा-वि॰ [मं] गुह-संबंधीः वरमें द्विषा बानेवाला (क्रां)। पान्यनु । माथितः धवन करने बेंग्य । प्र पानम् पत्न नदी। गृहबना गुपाः गृहाधि ।-बामें(न)-प गृहाबरे निय विद्या वर्ष शंकारती ।-सूच-तु गृह्यस्मी संस्थारे की दिवियों बतानेवाता वरिक मंत्र ।

गुक्कक−वि [स्•] पालगुः शाबितः। तु पालगू जानवरः। शहार-स्था [सं•] मगरके पश्चक्षा गरेंव । धींबद्दार-पु है गीरिका ।

गीरा!-इ वेदशा र्वीकी-सी पाराची चंद्र ।

कुटम । –मान–पु॰ हाबीः विद्यादकाव हाबी ।–सूत्– र्ता॰ गेसः। -सून्तव-पु गेसः।-मेव्-पु विर्वादिर। -राज-पु॰ वहा पडाइ, हिमाक्य ।-वर्तिका-नी॰एक पदाकी इंसिनी वतसा। - अज-पु॰ वरासंबकी राजपानी, राजगृह ।--हा--पु॰ शिव ।--शाखिनी--सी० गिरिकवीं । ~शिकार~पु∗ गिरिकृट । ~श्रृंग~पु पदाककी घोटी। गमेश । -संभव-प्र एक पहाड़ी भूषा ! --साञ्च-प्र॰ प्रशास अधिरयका ।-सार-पु कोबाः शाँवाः शिकानग्रः मत्रय पर्वतः। -सुस-पु॰ भैनाक पर्वतः। -सृता -की पार्वती । ~ स्त्रवा ~ स्रो पदाकी गरी । रिहिन्द्र-विक [संक] पर्वतारे बल्पन । पु दिवस गेंद । गिरका−सौ [सं•] पृहिया। गिरियक गिरियाक, गिरीयक, गिरीयाक-प्र॰ [सं] क्षेक्नेका गैंद । तिरिस्ती-सी॰ दे॰ 'गृहरथी । गिर्रीह-पु[सं•] दश पहान, दिमालका क्षितः आठकी संख्या । शिशी −सी वीवके मीतरका गया मध्य । शिरीश-५ [सं] दिमाक्यः शिकः बृहरपति । गिरेबा-पु क्रोधे पदाशे टीका वक्तरेका रास्ता। गिरेबान-पु दे गरीवान'। गिरियाँ≠−को गन्देका छोटा ररखा । गिरो−वि गिरमीः नंपद रखा ध्या । गिर−मो [सं] दे• 'गिरा'। तिज्ञी-पु देश्रीस्वा । निर्-म कि] मास-पास वास । व नीकारी मेरा। ~काब्~पु वगूला वर्वदर । गिर्दोगिर्द-न [फा] पारी भीर, हर्र-गिर्ट । गिर्दाव−पु[का]भँगर। गिर्दोदर−वि [फा॰] धूमनेशका शीरा करमेशाला। ~कानुनगी-पु॰ एक मान्न पर्मधारी जिल्हा काम पट-बारियोंके कामजेंकी जीन करना है। गिक−दि [सं] भएक, निगकतेवाकाः पु वृदियाकः वॅशिरी मीव्। निस - प्राह्न-यु नका नामः। गिष्ठ-मी [फा] मिट्टी। गीकी मिट्टी, गारा । - श्रीबाकी स्वी सक्क वॉथ मारिक्ट मिट्टी आक्रमाः प्रवशानी । "कार" प्रशिक्षा पणस्तर बरनेवाका । "कारी "शी

पनरतर यरनेका काम ।-हिकसत-ली यपशीय । गिष्पगिसिया-सौ सिरीदी पद्मी। तिम्डवर्ष-रनी मारक्यी पश्चिमीचर श्रीमा और अफगा-निरताममें रहमेरानी एक करीती जानि । शिलष्ट-ची मुलम्मा धीनेका चनी वशमैका कामा र्षोरीके (गन्धे यक मरिवा बातु । गिक्टो-स्वै॰ धरीरब संभिन्धानको गाँठा वक रीग जिसमें यह गाँठ गूम जाती है या अन्यव गाँउ निकल आती है। शिसन-पु दश्च परावेदी एक बाद गलन : [सं-] भिय=ना । निमना -स क्रि विगयमा - हं वर बूं बोरी विक वैठी -

सै"ररामा मनभे रसना :

गिरुषिमा-वि विश्विता।

गिरिक−गीता गिकविकाला-म्थ कि॰ अरपट क्षेत्र वोकना । गिल्लम्-सी० करी कालोनः मोद्यः गरा≔'गुक्युकी गिकमै गतीयादी गुनीबन दें '⊸पमक्दर ! वि सुकारम ! शिक्समिल−पु• एक तरहका बढ़िया कपशा । शिखद्वरा~प्र बॉएको चप्यी होकियोंका बना पनध्याः पक कपका । गिसहरी-सो॰ पेडोंपर रहनेवाका चुहे यैसा एक छौटा बंद्य गिकार्र किन्नुरी १ शिका-प्र• [फा] श्विमायतः रुकादमा । विकाई-की गिड**दरी**। शिकाशस∽सी (च] गढापन गंदगी। नापली: मैका। विस्तान=-को दे 'कानि'। ध्या-'शित दरिह विहास् को अगवन कर गिकाश -- दोनदमान । गिकाफ्र−पु• (फा॰) वकिनेको खोको सिवार भारिको योकीः किहाका म्यान । गिखाय−की दें गिकाई। निकायु-पु॰ [धं॰] गरेका यक रीग जिसमें उसके मीदर छोरीसी गाँठ हो नाती है। गिकावार् - प्र गारा। तिहास-पु॰ धीधे वा बाहुका बना पानी पीनेका गोरु, संबोधरा व्यासाः स्ट्रमीरमें होमेबाना एक स्वादिष्ठ एन । गिकिस−वि० (सं•) सिग्ठा हुआ, खावा हुआ। गिक्तिक ∸सी दे॰ 'गिक्रम'। गिकी∽≉को दे 'गुक्ता। वि [का] मिहोका। गिसेको-पुदे 'गिकाफ'। गिक्रोव−शी॰ [पा] ग्रहच । निक्रोक्स"-पु गुडेक्से पेन्द्रे बानेवाडी मिट्टीकी गीकी । गिसींबा! −९ दे॰ 'ग्रन' दा'। गिकीरी-की पानका विकोना या भौनीता भोड़ा । ल्याम -9 पमटप्ना। गिक्टी−सा दे 'गिस्त्री । गिप्यान्र≉∽लो दे 'कानि'। गिह्या-पु॰ दे 'गिला । गिली-को श्रुकी। रिष्ण-प्र [सं] नायका सामगावक। र्गीक्रनरां−स कि चरम सामुद्र भीवको ससमदर शराय कर देना। छ।नेकी चोजॉकी भरे वरीरेने ल्क्स विकास । र्गीका - न्या धीया गरदन । गीरा-वि भि ने गाया दकाः विश्वत विश्वतः विश्वत यहा

माना गया था। भुवद भी गाना चाय गाने दी भीजा गामः बदार्द ।- ज्ञाम-पुरु किसी गीतका गामकाम रवरोदाः उत्पार-बनाना एक तरदानी शान । -गोविष्ट-प अव देश-रशिष शंस्कृषका यद्ध प्रशिद्ध गौतिकास्य । —प्रिय- विमे गाना विष थी। पु दिवा - विया-स्तं। काधिकेषको एक मामूका । -मोदी(दिन्) - प्राप्ता । -शास्त्र-पु संगीनविया । मु (बिसीके)-गामा-५शार्र क्यान बरना । शीतक-भिन्ने गामः स्टीत्र । गीमा-क्ये [मं] शुक्र-शिव्य-वंशान-क्षमें आस्यारम-नुसर

 निमानस्ताहभा, जो नस्तान स्वाही, नही। ─वाजिय—दि जै। वाजिव, मुनासिव म दो, अनुविशः। -सरकारी-वि जो सरकार्रा न हो । ~mक्रिर-वि• भनुपरिषदः त्री शक्तिः मानूहः न हो। *-शक्तिरी-*-रदी अनुपस्थिति नागा।

गैरत−द्यी [थ] स्टब्स दवा;शाम । ~बार,−मैद∽

 नि भिसे गैरत हो कळाछोक। वीरिक-प [सं•] यस, सीमा । वि• पहाबरी उत्पक्षः गेरप

रंगका । गैरिकाक्ष-पु [मं०] प्रक्रमपृद्ध।

गैरियत-ली हे 'वैरावत । गैरी⊶सी [सं] कांगलिकी, विकश्विका; रंखार जगा करनेका गहरा।

गेरीयत∽स्त्री [ज] गैर दोना, नेगामधी, परावापनः भारमीवृत्तका भ्रमाव ।

गैरेच∽वि [सं] विरिक्षे था विरिक्त उत्पन्न। पदानी । पुरु गस्य शिकावत ।

गैक−त्मै॰ रास्ताः गढी । अ॰ (किसीकी)−शामा− स्टितीका अनुसरण करना । **–धतामा**–दगावाजी करना । गैकन−प॰ [अं] तरक पदार्थका यक मान जो सन्यन चारे तीन सैरका होता है।

गैलरी--भौ [लं] नाटम्हाला व्यास्थानभवन आदिमें वैद्यतिकै लिए वता तुआ सी:"तुमा स्थाना असेंबनी बादि में दश्कीचे वैद्वनेद्वे किए बना तुमा बारबा। यह मफान मा क्षमरा जिसमें क्ष्मको वस्त्रजीका मार्गन किया पान । गंका गुँकारा। -प्रश्न गांधको होन वा गानी जाने सायह गारता ।

गैस−सो• [थं०] बाह्यस्य पूर्वम और चादे जिल्ला फैंक सक्रमनामा हुन्य (ऐस हो हुन्बोंने संयोक्त बक बाबु भारिको उत्पत्ति होती है आनिसबनः शहरापन भारि । র্মীরভাা~র ওকাঃ

गींद्रका-प्र वे ने दिना ।

र्गीद्रदा-प्र गाँव हे पासदा स्वान ।

र्गीको−को पॉका *मी*छ-स्मा गहमुख्यः।

र्शीड-भी भातीची सपैर मरी।

वींद्रमा-स कि रेगाने घेरता, (दिनी भावते) शव और रेता वीदनाः प्रतिका भीडी पुरे मारिकी नीक या कीर मोहनाः शोक या कोर मोबरा कर दैना ।

र्वोहिनी-स्थाः गुहिदानी सीर प्रशानका भीवार ।

सीट-प मि] उमरी हुई जाना ऐसी मानिवास अल्पीत न्यः गीप अपि, गीर । −किरी-स्पे [दि•] एक रागिमी ! -यामा-पु॰ [दि॰] मध्यम रतका वस महेश द्धी में व जातिया भारि वासरवाम है।

र्वीड-५० भारतको एक जेनको या आदि विद जानि (उत्तर प्रन्ध दिहारमें इस आविके सोग सासका गणर ग न भीर दाना भूमनेता देश करत है) गीत देश एक रागः मीठ ।

गोदरी-भी रेड्स बेब्स । गीदम्य~५ ल्योरका ब्रहा र्गीवरा -पु॰ चवारबीकारीमे विरा हुआ स्थान बाह्य खहारदीवारीने दिहा हुमा पाला माहस्था गीन्द्रा चौती सक्दा संदन्ता परक्रम ।

मेरिही-की अध्यक्षारहाती एवं बोजी।

गाँद-तु वेक्का असवार पश्च जा गुल कवा हो निवास। की यक कृष्य नीदी। —करा—पु काश्वास ग्रीट फैलानेफा आका । -- दानी--रदी॰ भिगोदा हमा बेंच रमनेका बरहान । -पंजीरी-मी प्रमुक्ते शिक्से जानिसकी वह पंजीश निसमें गींद मिना रहना है। च्याग−प गोंद बीट श्वेगोके मेक्के क्यो हाँ हा निकार्र । --सलामा --प्रश्नीर मधाने आदिका राह से मसगरको विश्वे किय विश्वामा बाला है।

गॅडिश-सा व्यवस्थान पीता विस्कृत करारे रनदी है। पयाचनी चराई ।

गॅरिक्श-पुर बद्धा मानरमेश्या एक नृथ क्सिने पर्टा वनती है।

र्गीहर-पु पानीमें गूँबा हुआ पने हा सब वी पुरुष्टी है श्विकाया पाता है।

र्गोदी-या॰ इंग्रुवाः मीकसिरासे विकता प्रकारक के । र्शीबीस्प-वि+ (पेड़) विससे धॉन निकरे।

गो−न्गै (सं] पाचा रहिम दिरणा दक्षिया दार्गे, सर रत्तीः भाँछः बुध राभिः भरतीः माता दिद्याः जीन । द वैका परस आबादा। सर्वे। मीद्रमा: बामा कमा स्वर्गः वजा दीरा। घण्या अत अंद। रोमा गावदः ग्रेमेर वर १० व्हेंड प्र गानका शुरा गानके शुरका निवास क्यांगा -कम्बा ६ – गी. कासभेत् । – कप्प – विश्व सावनेते कानी बाका । प्र रायरः साँपः बात्यित निसाः बहाबम्पे रियत शैबीहा एक शोबी वहाँ स्वापित शिवार मुनिस्टिंड धरहका दिरमा यस धरहका राम । —कर्मी-साँ॰ सूर्ग ण्या । —किसरा –किसरिका-भी सार्रध १४ । -किन -कीय-बु इस्। मृत्या -पुंत्रर-दुर सेमा ताजा नेन्द्र शिक्ता संरा -कुद-प्र यानीम संग योग्राका गोंड: बुंशबनके शतका वक गाँव की मंदना नीती रमाम ना और वहाँ कृत्न तथा वसरामका पानन केर हुमा । --शाम --पति-तु प्रमा --श्य-रि गीपुक्तमाधी । षु - बक्तक-पुक्तवा र गारवानियोका दङ्ग ^{संस} तैश्य ब्रायलीका एक मेद । - ब्रुप्टिक-वि धडमें बैठी मायकी सहाबना म देनेन्द्रमा ऐवातामा । - हन-उ थीवर । -क्रोम-प [वि] प्रत्यी इरी बरोडर पर की भागान सनारे दे । -शरिर-प्र गायका मुखा -धुरि -शास-प गायका शास क्षेत्र । -सम्बन्ध वर्ष चर प्राणी पशु । -गुर-तु सावका गुरा सावके गुरक निशान ।-सुरा-उ [दि] कोत माँव । -गृष्ट-मी खरून प्रमुक्त नी । —र्ष्ट-पु॰ गोर गीवाला !~मंपि~ की गुरुत हुआ गीवर, बर्भीत गीठा गीजिंद्रमा ।-प्राम -पु॰ धीतनदा वह भाग भी गाय श्री द अनग हर दिस माना है। गावको तरब श्रीहते नढाकर िमा बना श्रीकन बरमा !-माम-पु गोहरवा !-पासक -मामी(तिर) -ति शांवर बर्दनेवाका । तु० वसारे । -पूत्र-पु० दर्भ का थी। वर्ष । -या-डि कीवर कानेवामा, सिंहिटि

योजना, वानव-रचना ।

गुंफित-वि [सं] गूँबा हुमाः समाया हुआ है गुंबत-५० दे 'गुंबर'।

र्गुपद-पु॰ कि] मरियर भारिको गोह इन विसर्ने भावाय ग्रेंचे ।

गुंबदी-वि॰ गुंददकी शहस्का। पु॰ एक संवेका योज

गुंगी - सी शहर। की पह ।

गुभार-पु दे शुनाक ।

गुनार−श्री दुरुभी। ≠ पु म्बाका। ग्रभारपाठा-स्त्री है 'ब्लारपाठा ।

शमारिक-सी खाडित ।

गुभारी-थी कुल्बी।

गुभासिन १ - सी व्यक्ति ।

गुरुषा-पु धेसका साबी। सी एछी। गपह-प दे 'गोचर ।

गुस्तुर−द•द गुग्द्रक'।

गुग्तुक, गुग्तुल्च-प्र [सं] एक वशीला पेक् उस पेक्टा गाँद जो गंबहरूम है और दबादे काममें भी जाता है दक्षिम भारतमें शोवा जानशका एक वेश निसन्धे राष्ट्र

वार्निश्च बनामेक्रं दाम आदी है। गुग्युक्क-५ (चं) गुग्युक्का व्यापारी ।

गुची~सी आभी होडी।

गुची-सो गुटी बादि येक्तेने किए बगीनमें नमा हवा मुख्योगाया। विश्वी बहुद्र छाती।

गुष्य-५ (६) गुष्या पृत्तेका गुष्या गुष्याताः कनाप मोरको पूँछ। छात्। ३२ छदियोका संख्यादार । −कणित− पुरागी पान । −कर्श्य− पुगरंबका व्य मेर। -देतिका-मा दश्शा। -पग्न-प्र तास्त्रा वेह । - यस-पु मंगूर; देका; मदाम; राहा । - प्राचा-यो अधि रमनीः हामा क्ष्माः कारमाधी ।-मुलिहा-

सी एक पास ग्रंगसिनी। गुरुष्ठक्र∽[मं•] दे• 'गुरुउ' ।

शुष्पक-बु [मेर] यह तरहकी वास ।

गुरजा-पुण्ड व्हमीम प्रश्नपात क्ये हुए कून या प्रका एक्से वेपे हुए पूजा एक्से समी वेशो छात्री बीजीया एन्सा राष्याः ⊈रमा । −शारा−पु+ क्यप्रिया ।

-(परे)दार-वि शुप्रदेशाला।

शुरुआये-त [में] १६ वा २४ महिबीका मुखादार । गुप्छी-स्त्री कर्रमा रोडा कल्मीरको तरफ होनवाला एक कृत की सुमाये जानेपर सकती कमानेके काम भागा

में भीर बना स्वानिष्ठ दोता है।

गुकर-दु• [म] रास्ता। पारा पट्टेंच प्रवद्या बामा नियः सनाः निर्वादः गुजारा ।-साह-पु॰ रारपाः भाग राखाः। ~नामा-इ राहरारीका परवाना । -यमर-पु निवाद गुवारा । -बाम-पु रास्तवी सरवानी कारी बारा। महाका पास्त्र महत्त्व वसन करनेवाना । मुक --वरमा-निर्वाद करमा। दिन कारमा । -हामा-निर्वाद दीनाः (सिमी भार राव्यम) निरम्ना वा निरम्मा । पुहरमा-भ दि श्रीतना श्रीतमा जाना निष्णमा।

गुकर होनाः (नदी) पार होना निमनाः पश्चि होनाः कृष्ट, कृष्टिनाइवाँ काना। भौगरूवर्गे प्राप्त होना। (इस्तीरत बारिका) पेश दानाः (जीमें) बामा (मान, निचार)। (गुक्रर माना = भर माना ।)

गुअरास~प्र भारतवर्णके बक्तिग पश्चिममें अवश्वित पक

प्रदेश । गुजराती-वि शुवरातका शुवरातका वना । यु शुव-रातमें बसनेबाका । छी॰ ग्रहरातकी मापा ।

शुक्तराम−पु [श•] गुषरु निर्वाद ।

गृहरामसा-ध कि• पेश करना ! शुजरिया। – सी॰ वे॰ 'गूशरी'।

गुजरी-खो॰ धामको सहक्रके किनारे रूगनेवाला नामारः गुरकी। यह तरहबी पहेंची है 'गूजरी 1

गुबरेटी –को गुबर कम्या। गुबरी ।

शुक्तक्ता-वि [का+] बीता बुआ, अतीता पिछका (मास, वर्ष इस्वादि) । शुक्रार-पि॰ (फा] (श्रमासंतर्मे) बदा करनेवाला ('शुक्र

ग्रचार , 'खिरमतग्रवार')।

शुक्रारमा-स+दि रिहाना कारनाः मदा करना (समात्र)ः देश करना (भरकी चकर)।

गुनारा-प्र फिर रास्ता बारः पुरु वा नावने नदी पार करमा। निर्वाधः निर्वादार्थं दी जानेवाकी रक्षम । −(रे)की नाख−बार-पार जानेवाको नाव, घटहा।

शुक्रारिश-रही (फा] निवेदम वर्ष प्रार्थमा । -नामा ─प्र• निवेदनपत्र (छोटेकी ओर्स्ड परेको किसे गर्ने पत्रके

(कंप व्यवस्त्र) । शुक्री चेली भाक्तक तुरशाहकामण सक्ती।

धुक्तरी~सी [मं] दे• धुनंती ।

गुक्ता-पु वीपकी कीच गीला देशेकार गूरा है कि विश टिपाद्वभा ग्रप्त।

गुसरोट गुझरीट०-५० बपत्था दिस्म- सर उठाव बुषर करत क्छरत पर ग्रुगरीर -ि ; स्मिय्दि नामिके आस-पासका भाग ।

गुणिया-की मेरेकी कुलनीमें भेषा, धोषा भारि भरकर बनाबा हुमा एक पर्धामा सीच्यी बनी एक मिठा । गुक्षीर॰-प्र दे॰ गुनरीर ।

गुर-पु है । गुरु ।

गुरकमा-म कि वनुगरका मता द्वीयर गुररग्री करना। श∙िक निग≅नाः।

शुरुरा-धु गीली, गुरिका छीटे बाबार, पास्ट सार्वधी पुरतक करहे । वानमें वानेका एक मुनाना ।

शुरकाना-स क्रि (तश्मा) प्रवाता ।

गुटरर्गे,—गर्ग अनुनरको थानी ।

गुटिका गुरी-की [मं] वरी गोनी रेग्नमका कीमा मानीः मंत्रनिक्य योगी विभे पुंचमें रसनेवारेका दूमरीके भिण अवस्य हो याना माना माना दा दुर्ग दुविया । ग्रह-पु नम सन्दर्भ भारते भागतिकता दम । --भूनी--

की दन बनामा । मु॰ -वॉपमा-दन बनाना । गुहा-त कालचे बोदीर गाउँ वा नगरियादे रीमनदे

निए बनाबी जानी है।

मेवा पक्षा । -इत-प्र॰ वा कीस्त्री वृरीकी एक माप । -स्प-वि वाक्ते स्पन्नाका । पु+ गामका स्व, बाकारा शिवा – रोच~पुदरताल । – होचन – पुपद्र सर्वधित पदार्च विस्तकी अस्पत्ति गानके पित्तसे माना जाती है। -रोचना-सी औरीचन । -क्षांगृक्क~पु॰ एक तरहका क्दर । -मोक-पु॰ वैष्टुंठ । --व्यास-पु॰ स्वर्गवस्ता मृत्य । – स्रोबेश – प॰ क्रप्य । – क्रोचस⊸प है॰ 'तो रीयम ।-स्रोमी-साध्येशवा वया सपेन दूव !-बास-प्र नगरा। -वध-प्र गायकी बरमा करमा, गामकाशी। -वर-पु॰ करसी गीमसमा पुर । -वधम-पु॰ वृश-भनका एक प्रदान मिले पुराणींके मनुसार बंदके कीएले जनमृतिको रक्षा करवेचे किए भगवासूने अपनी चेंपकीपर बढा स्थि। मा। −०वर,− भारण,−०वारी(रिम्)− प्र इन्म । -सिंद-प्र॰ योपासका गोशासका सप्ताधः कृष्णः कृष्टरपति ।—श्कारकृष्टी—स्वीश कारशुपके हाक प्रस्ती हादशी। - पर-पु॰ माठा । - पाप(पाहाचार्च)-अक्टाबार्वके गुरु । —•सिंह-पु॰ सिस्रोंके दस्त्र और श्रतिम गुरू :--विसर्ग -- त्र और वक्का :-वीथी--नी चंद्रमान्द्रे ध्रमणपुशस्य अंशविशेष ! -श्रव-य गार्गोद्धा सम्ब गोसम्ब । -वैद्य-पुरु पक्षचित्रसम्ब भगाना वैद्या - ग्रस-१ गीठा गावीका होता करागाव । - ग्रस-प गोहरमाने प्रायक्षिक स्वमें किया जानेवाका एक जन । - शहरा - द्रागोदश | →शहरा-स्था गावाके रहनेशा रवानः बाहा गोप्र । – क्षीर्यं – प्र क्यम वर्गतः वस् वर्गतः पर होनेवाला चंदत । ~श्रीग−५ गायका श्रीवा दक्षिण मारतका वस पर्वमा एक कवि । ∽ध−५ भोडाका, गोठ, पञ्च-धान्याः महारीका गाँवा गोत्रो। कर्र आव्यमिनीके धाव मिलकर करनेका रख आक । - पति-प गोधका क्यस्यः व्यक्तिंदा सरदार । ~की-व्यो • समा अंव्सी समाना बार्तालापा समृदा वारिवारिक शंदेवा मारकता ण्या मेर शिसमें एक ही और दोता दे। −संक्य~प गोपारक । -सर्ग-प्र गानांकी बरनेफे क्रिय द्योपनेका छमनः मौरः – सर्थ-पु॰ वोदः - सम-पु॰ गीमेनः —सङ्ग्रस—५० एक व बार गावींका महादान (—सङ्ग्रही— सी कारिक या क्षेत्रको अमानरना !- साहिँ-पु॰ [हि॰] गोरनामाः रेनदा एक्टन सेच छात्रमंत्रः वक छप्रतायः श्रदीथ । वि॰ नातिका श्रेष्ठ !-सुत-पुन्छना !-सुन्द्र~-म अविरया पर मुक्त। -श्रमी-प्र मान्दिः रवामी । -श्तमा -स्तर्वा-सी॰ श्रेगुर । -श्याम-ब गाए। -स्थामी(मिन्)-पु गानीका मानिका नार्ये रदानेवाका। जितिहिया बहुधकुक सिवाई-संप्रशय और प्रध्य-संबद्धायके जापानीता परवी ।-इत्या-न्या ने त्या -हिस-रि॰ रोस्डक । वु विभा ।

तो-वि (दा) (अमसायमे) बहरोवाल ('रास्त्रो 'राहाती' कहलीकी')। यु गेर नुबसा। स्न वसी कर्त्यो। -वि-स्वादि। -अगो-स बहरो नायक, गणनीय। सरस्या मंदित्य (राजा, हहना)।

गोर्द्यान्यु प्रवद्याः) गोर्देव गार्द्देवारेन्यु शृक्तिः सामाजः,गोर्द्याः किनाराः। गोर्देवरेन्यः समीव गासः।

गोहना-प॰ दे॰ 'मोर्थरा'। गोड़≉−प गेंद्र। गोद्दम-५० एक तरहका हिरम : गीहर्यों – प्रत्यो • देव गहर्यो । गीर्रं≠∽सी सक्ता, गोध्यों। गीकण-वि भुरानेवाचा। गरेका-सा॰ (मं॰) छोटा गावा मास्त्राव । गोप्त-म॰ में का शीलक्:-पु॰ एक श्रुपा उसका हैंदीका पान जो दवादे कार भारत है। बोलस्के फलके बादारके होते बारिकेशने कैंदील अकते। बोटे: चैंपमें पहलतेका एक महता: हकते वा इथेकीमें पड़ा हुआ बहुत । गोदाले-पु पहाराह मादानीका एक मता कांमेलके नाप बलके मेवा और मारत छेक्ड-समितिके संस्थान्ड राव गोपकश्राम गोसमे । गोसा 🗝 १ शरीयाः गवादाः सम्ब गोगापीर-पुर वह मुसलमान ग्रेर विसक्षे समावित का ग्रेका कवता है और बहुतंत्वह मंगी मेहतर बारि बिनसे प्याबरत है। —की छविया-भारी तुरी ८९ की गीनावारकी समाधिवर समनेवामा केसा । गोचना~त॰ गोचनी-सा चना क्रिया दमा थे। गोची-मा [मं] यह तरहरी मण्डी । शीष्यक्रसः—९ [लं॰] ऋत्यक्ष्यं सामय धीवा । गोज्ञ-पु॰ फा] अवास वासु । -ब्रासुर-वि जिल्हा कोर्द मुख्य मदस्य ल हो। देवकड (बात) । शासाई – सी भी मिका हुआ। महा शोजर-इ क्लस्ट्रा सीबरार-पुद्ध गीवर्र । गोजिया-ली क्य बास धनगोधी। होजी!-मी॰ क्रमी देश ! बोक्स – ५० ग्रहिया ग्रम्म । गोद-मो॰ कपत्था दुवरा नहीं भी सुंदरहाके किए बनाँदे किमारे समाने हैं मनावी सेवाफा किमारी चैचंध व्यासा आदि रासमेक्षा स्वती मादिक्षा यनी खेरी, नरी शंदकी। बगरके बाहरको वह धैर जिसमें शानान्येना में हो । प्र गर्वश तीनका गाना ! -- बस्ती -स्ने पर पूर्व जिसका वसी बंधी हो ! गोरा~पु शुनक्षे या वषक्षे और रश्चमके नारीकी निर्मा बर बुमा बीता, पट्टा। सपका। छोटे द्ववरीये दशरी हो गिरी मुवारी वादाम रलावची आदि जी वालके वाले शाल है। प्रतिवासी पिरी। रागा दुवा मन, बीरे। नैत्यान 'भी वर्गे शुर्गदे अञ्चल भीटा'-४० । मोतिका चाल-स्ती दृष्टियानमही यात्र यात्रवामी ! शोदी-सी गाँद मर्देश बाद वा बलाई रावी वारिट छोटे दुखड़े जिनमें उनके को नारको राम गैसने हैं। गोरिबोंकी महाबनाने बन्दर मारिक्ट बीडक बनावर रीला जामेबाका रीला सुर्कित बंदावा प्राप्तिका कील । सुर -जरामा -बरमा-पृष्टि सक्य बीमा। बार्रिय क्रि वनना ६ –अरहा:-दिनी गीटीका भूग साम निर्मा मान शेलमे काम म भा सक्या। - छाल होता-पीतर स

गुपना-म कि चनात्माः निष्यमाः भिष्नाः गूँवा यात्रा । गुपवाना-स नि गृवना काले । गुपुर्वी-दि गूधनर बनाबा दुआ। गुद-४ भी [सं] गुना सम्बाह । -क्कीस--क्कीसक —पु दराधीर । - सङ्क्ष्यु क्रश्य सन्तवरीप ।- निर्मास - इ ग्रुशका पक रोग कीय निश्नमा । - पाक-पु मत्राह्म पर बागा। न्यांशन्य सांव निवनमा।

कठिमाई । गुरस-तु [मं] गुन्छतः यैनतः संबद्धा परिच्छेतः हैर सहियेदा मुक्ताहर । गुल्पक-पु [मं] गुष्काः चेंबरः शंक्वरिक्टेशः।

गुष्य-वि (सं) गुमा करने योग्यः जरू. गुणीयालाः वर्षनीय । तु वह अंके ब्रिस शुशा शरमा हो । गुरुपोद्ध-पुरु [संरु] बद्द अंक विसका शुरुव किया बाद । गुष्यमगुष्या – धुः शुक्र जालेका मानः मि√तः। गुरपी-सी॰ ताग भारिमें बस्क्षेत्रेसे वही दुई गीठ,शब्द्राना

गुणीमृत्र−वि [मं] सुरुव कर्वते रहितः यौग वनाया दुभा । -- ध्याप-पुदान्यका यह भए जिसमे व्याप्यार्थ बाच्यार्थसे अधिक चमन्द्रार्शका न हो। शुष्पेश्वर∽प्र[मे] परमेश्वर। वित्रकृत पनतः। गुणोयेत-वि [सं] भक्ते गुनाने मुक्तः।

कुछ। जिल्लाको राजना की गयी हो। गुणी(चिन्)-वि [सं] गुणतुका कीर्र हुनर-कवा वातनेवाचा ।

गुणित-वि [सं] विसमा गुणन किया गया हो। राम्री-

गुष्पन्त्रित-नि (संग्) गुनीसे मुक्त । गुवाखय-वि [सं] बहुतस गुर्गीनाका । गुलिका-न्यो [सं•] अर्थेद स्त्रन ।

गुजासीस∽ वि० [सं] प्रकृति हे तीनों गुजोसे अकिस, परे। दु परमेक्ट। गुणानुरोध-पु॰ [सं] करछे गुणींक जनुबूक होना । गुजानुबाद-५ [सं] गुगनाम शुनकशन ।

गुप्पाट्य−ि• [मुं•] बहुदसे अन्यो गुर्गोबासा, सत्रगुण घाठी ।

गुणाकर-वि॰ (से॰) को गुर्जोन्ध याम वो शुणराधि । गुणाह्य-५ [ए] तीन गुनीमें सबसे अच्छा गुन सस्बग्रम ।

मृत्तवियाः हारः शुन्यः रहा । गुजनीय~दि [तं•] गुजन दरने कोग्य। गुजवाम्(वत्)-वि [सं] गुजशाबी गुली।

गुणत-पु• [सं] गुणा करना । —फक्क-पु• एक अंक्को इसरेसे गुगम करनेसे छपडम्प और वासिक करन । गुण्मिका-सी० [तं] प्रंशं (सा०); बावृत्तिः गृताः

-दीम-वि गुणरवित निर्मुण । गुणक-प [सं] वह श्रेक जिससे गुणा करें।

का विवास हो (मी॰) !- हुझ,- हुझक-मु आव बीवसे द्धार्ग्यः – वृत्ति – सी० गीथ वृत्तिः – बत−पु स्ङ प्रतीन्त्रे रहा करनेवल तीन तत (वै॰) !-दावद्-पु विशेषत्र । -सीरा-प्रश्रापाँके साथ मेका विषयासिक । -सागर-वि गुनसिवि । पु अकः गुनी ध्वकि ।

१७९

शुद्धी −श्रो सम्बद्धीर्थाः गुन्-पु दे गुन् ।-गाइक-दि॰ पु॰ गुन्माहक'।

गुदाश्रम-५ (र्न०) कोप्रयस्ता । गुर्रीष्ट−पु॰ [मं•] गुराक मुग्तरका दमें ।

गुरार -धनप्रसाध । शुनुसाक-पु भारतर मधी पार रोमा गुनासा है। 'शहारा । वि गृहेशस ।

शुक्तरां −वि गृरेदार, मांग्रकः शुक्ताव । गुद्रारना॰--स कि सुनाना। युना-'सुन्नना वहाँ निवात

वेशमा। गुवाना~स कि: 'गीरना'का के । गुराम-पु दे 'गीराम ।

का भाषती (सप्राक्षतिक) मैश्रम । गुद्दान-दि (फा॰) मरम, गुद्दगुद्दाः (समासमें) पिमकामे-बाका (दिक्युतात)। तु गडावा विपठनाः मनीस्वताः

गुप्तकर-ध [मं] पदासीर । शुदा-म्नी (ते] सक्तार शुद्र ।- शजन-पु पुरुष-पुरुष

गुत्ररंत+−न्धे+ पाठ बा" दोसके परीक्षा देना। परीक्षा । गुरुवाना-स कि शुरामा ।

· निकार विमीषण भाष शुक्राने । कविपनि स्रो सबदी गुररान'−रामपंदिका ।

धुवारिए करमा भ्वतीय द्वारा गुभरता। श्रदराबा॰-स कि वे 'श्रवरावनाः निवेडन करना

शुक्रर=-प्रशास्त्रकारमें शामिखे । गुब्रमा - अ कि स्वायमा महग होना। निवेदम करणा

गुदनदारी नर्गा गोदनेदासो । गुर्मा∽स कि•यगना चुभना।पुगोदना।

हुमा भोदना विधायम क्षेत्राः संबंध हुरी-पृत्ये चीक्षीबा देरा गुप्तशे बाबार ।-फ्ररोश-पु फरे-पुराने कपहे ट्री-कृरी चीनें बेचनेवासा ।-बाहार-पु॰ फ्री-पुरानी इरी-फूरी भीवींका नावार । सु॰ −का सास-सामारण बरमें बलमा हुमा खाबारण बेस मुवाने रहनेबाका नवाचारण पुर्वे । —में कास –तुन्छ स्थानमें सच्छी बल्दु ।

शुद्धिमा-पु॰ वह की गुरही कीरे या चीपने रुपेट हो। खेवा बादि माहेपर दैनेवासाः गुन्द वेबनेवासा ।-पीर-पु गाँनके पालका वह बुध जिलमें बीअडे छपेडकर गैंबार मनीती मानते हैं ।-फ्रकीर-पु॰ धरही पहमनेवाना १ अभिन गुर्वी-सो चीवशे रंग-विशे इक्टेंका सीमर बनावा

गुव्युवाहर-ली॰ गुद्रश्वी । गुब्युवी-सी॰ गुरगुरानेसे पंदा क्रांमेवासी सुसार सुरगुरा-इट वां ईसानेवाडी खुवडी; पाव 'पुड़ !

गुब्गुद्दाना-स• कि नगल, चलने नारिको उँगिकवासि रसंतरम् सहस्राना कि सुरस्रराहट वा सुराण सुक्ती मासूम हो। छेपना। वमारना ।

गुर्गुद्धाः। बुब्गुब्रा−वि॰ भरा हुमा। तरम, गुक्रगुरून, गुदाम ।

-रोग-पु गुत्रामें बीनेशका रोग । -बदम-पु• गुदा । −१सस~पु भव्य । शुद्कार शुद्कारा−वि गृहेदार भरा पृका हुआ।

कर साँच क्यांचनेपाका । स्वी दीकार क्यांनिकी सीच नापनेका एक भी गर । गोनी -सौ॰ शटका थेला, भेरा पार सम । गोप-प गड़ेमें पहलनका एक गहना। दे॰ 'गो'में । गोएक-प्र• [सं•] गोपः बदत्तमे गोंवी बलाकीका बच्चकाः गोपनकताः रक्षकः । स्थि। ^वगोपिका है। गोपन-प भि े छितासा छिपाका सर्लना जिला मेराज्या बीति। सब आसः हेवा ववशहर । गोपना – सी सिंगे सहया दीप्ति । • स॰ कि दिवाला । गोपमीय-वि [सं•] हिनाने कानका रक्षणाव । गोपविद्या(न)-वि॰ सि ो संसक्तः विधानेका । सीपांगना-चौ॰ (ही॰) स्वाक्तिमा गोपवय । शाधानक-प (रे॰) व्यक्तियरके पासका एक कांता म्बासिबर । गोपायक-वि [सं•] रक्षक, रखवाका। गोपायम-५ [तं+] रख्या गोपन । गोपाप्टमी-न्ते [तं] कार्चिक शहर बहरी। रोधिका-न्धं सिंशी स्वाहित गोपवत् । गोपित-विश् [सं] रशिषः शिवाना प्रमा । गोपिनी-कौ [सं] स्वामा क्वा। रारिक-दि सि॰ । गोपनदर्जाः रक्षकः। मोपी-नी [हं] हारिबा एका हिपानवाकी वे 'गो'ले । गीपी(पिम्)-वि॰ सि॰) रखकः नीपनकर्ता। श्री गोपिसा"। गोपीचंद्र-पु एक् ग्रथकाधीन होता को भर्त्दरिका मानजा मताका जाता है और जो राजपाट छाउनर निराणी को सदा । गापेंड-९० (सं०) ऋष्य । गोप्ता(क)-विश्वि] गोपनक्तीः स्वकः। च विश्वः। गोप्य-वि सि] गोपमीय (बाल विच ग्रहरिग्रह मंत्र मैधन भेरत तप, दान और जयमान-वे मी विषय महबत गोष्ट्र माने गर्दे हैं) । य दासीत्रम, दास । शोक-पश्यक तरहका क्रीला शीप ! शोका-प॰ दक्ता थामा । » स्त्री शकाः चहन्यामा -'मोद्धन मोडी बीइत परिमल जंग कमान'-छायी । गीवर-पुगामनः धाररः। – श्रुवेश-वि सूर्गं दुरुषः नदीन । - प भी-ली गीवर पावनेवानी ली !- हारा-प्राचित्र वठानेवामा भीवत् । सुरू —का चाथ-वेदीकः मृर्ग । –त्यामा~प्राथमिश्व वरमा । ~पायमा~गोवर्थः र्धान, द्वय ने बनामा । गोबरामा!-स॰ कि शैश्री करमा ! गोवरिया—पु॰ शपनामको जातिका एक शशा । गोबरी-की गोररका तेष (करमा)। बंदा यपना । सोकरेका सोवरीया सोवरीमा-५ वे अपरेना । शोबी-सी॰दै गीमी । गाम-व पीपोदा एक होग। वसी व्यवस्ति होग। र्गामा॰-स ७६९- - उडति सनिः मानंत्र्ये गामा -गरापर भागा योगिम-पु [तं] एक गुणशुप्रकार कवि । गामी-मी व्यवसाम हाय भी प्रमासी वासीमी

या बरमबरशा और गॉंटगोमी ई भारते तीम तरहबा होता है। बनगीमी पार्शीका एक रोग । गोम = - प्र स्थान । सी॰ पेडींकी एक भेजरो । गोससी-को॰ सि ने प्रधारेतको एउ वरो तो कारास और गाभीपर विकेशी शीमाचर गंगामें शिक्ती है। एक बच 1 गोसब⊸प निीगासा गौर्यका-प्र• दे 'गोरेश'। गोयहा-वि॰ [फा] यहमे नेलनेराका । श्र बाह्म गाय-प्रश्न (फार्श वेंद्र । गोपा-वि॰ (फा॰) बोकनेवाना, बस्ता स्टब्स व मारी-जैसे । -इ-छा॰ बोन्मेक्षा श्रक्ति, बक्तल शक्ति। रोर−14 दे भीरा। त [का] कर गुग विसुदे मर्तेको दफल करें, कम ! --कम -प्रश् कम गोहमेरा रेश करमेशाला । -परस्त-नि कनके पत्रा करनेशकः मेत-एकका - (ह)गरीयाँ-पु॰ वह स्थान नहीं करेड़े का महाकिर बक्रन किमे जाने। गोश-प॰ कि। । कंपारक पायका एक प्रदेश । शोबस-व॰ यारसनाव । -ब्राह्मवी-स्ते दे॰ धीरा करुदी'। - मंधा-त तार, करियाँ भारियो एक्सें बोहरूर फिर अलग की या सर्देश गोरलवंत्री प्राथमोदे द्वाबमें रहनेवाका दंदा जिलमें बहुन सी फरियाँ बार्ड होंनी है। पेचपाधरासी जरती समझमें न आनेनाची पीत मामका पहेली। शासना । - माध-त १५वी तहीके एक प्रशिक्ष करवीगी। और पंत्रप्रवर्तक राजा -पंच-प्रश गौरदासायका चकाया हुआ एक धैन ५२ ना संप्रतन्त मानसंप्रदाय ! -थयरि-दि , तुः गौरसम्राधना अनुः गामी । —प्रविति—क्यी यक्ष पास जी प्रवासेकाम काशी है। गीरलर-प्र (का] गभवी अर्थतका एक अंबर्ध बाबवर । योगसा—प्रानेपायका यक प्रदक्ष का क्योंका निरासी । गारम्यान्दी-पु मेशानका यह वानि । स्मे धन मानिसे नीला । शोरम्बी−मी ण्यः कटश मेरसक्रं थे। गोरलस्री-पु देश्शीलस्री। गोरष्टा - वि गारा । गोरश-पु [त] उचम अध्यवसाव । गोरमरा - प्र योगके पं (तन)की हरी है ग्राव देवी **基和(1)** J शार्ग्स-ग्री भंगीकी । गोरा-वि गीए दरेग क्याला (मनुष्य) बिगके वर्षास रंग सकेर हो । -ई-मी बोरायना मेररण !-बिरान वि गुरुगौरा गोरियर-स्त [मं] दे नी सास्मित शोरिकारा-त अयोकार्य पत्रा जानेनामा निराज्यान वण्यात् , दिग वसमापुरा । वासी-विजी वार्गक्षी हो संसी सी । सारी-दि (काव) गोरका । तु शारका रहनेशाणा घण नुरीय गीरीका उपनाम ! सोक्स'-पु चीत्रका द्वार (साथ नन अग्र क्रांड) । गोर्च । गार्च-पुर [ांक] मन्त्रिक ।

गुमामा १-- छ० कि० को देना, गॅंदाका १ गुमानी-दि॰ गुमान करनेवाका, वर्मधी । गुमाफ्ता-पु॰ [फा] दिखी व्यापारी वा कोठीकी औरसे माक संरोदन-वेचनेवाला पर्नेटके रूपमें काम करनेवाला कर्मनारी । - गिरी-सी॰ गुमाश्वाका पर वा काम । गुमिटबार-भर कि किएगा, रुपेस बाना। गुमेरना•-स• क्रि॰ क्षेरना। गुम्मद-पु॰ दे 'गुंबद' । शुस्मरी-पुषका मश्रा, शर्नुंद । गुरंब, गुरंबा, गुरंभा! - पु है 'गुरंबा । गुरंभर - प्र मीठे आमदा पेड़ । गुर-पु दिसाप मिन्द्राकनेका संक्षिप्त और पक्षा कानदाः कार्य साथनेकी अस्ति। सवायः 🔸 दे॰ 'ग्रवः दे० 'ग्रक'ः † दे॰ 'ग्रह'। -सुका-वि दे॰ 'ग्रह्मुख'। -सुक्ती-

स्रो है 'ग्रस्युयी । गुरगा-पु॰ मीकर, टबस: बुद सेक्स: बास्स । गुरगकी-दुर्मुबा ज्वा ।

गुरच-तो दे॰ गुरुच'।

गुरचियामा! - भ कि सिकुक्कर देहा दी बाना ।

गुरुषीरं –सं१० वक, सिकुदन । गुरका-दुदे गुर्व।

गुरण-तु [सं] दे 'गुरुष'।

गुरदा-बु॰ 🐿] छरीरके संदर रोहके दोगों और अब रिवन भंग किनदा काम आहारसे पेदावको अलग करना भीर गुमसे नेहार 'सम्बनीय अस्पक्षी निकाणकर परे शाम करना है, प्रवः हिम्मतः, बीक्ट । -(वे)का शर्व-ण्ड रीय बिसमें ग्रारदेके मीतर पक्ती पैता की काती है।

शुरविभी • –रत्री • दे • 'गुनिकी' । गुर्ची०∽वि वर्गदी।

गुरसीं -ला॰ बंगोसे गोरसी।

गुराई • न्या है । गोराई । गुराब-पु॰ तीप कादमेश्री गाणी।

गुराय~पु∙ भारा कारनः। गैकासः । श्रीरेशा-प्र देश गोरंशा' ।

गुरियण-त गुर्व, गरा ।

गुरिया-को छोरो मोडो; मनका, मालाका राजा; (मांस

मारिका) छोटा हुक्का थोटी ।

गुरिहा-पु दे॰ नोरिहा । छापामार वस्तवा मैनिक, 'गरिका'। ∽वस्सा∽पु॰ छोडा फीडा बस्ता जी बीका षाक्र दुरमनपर छापा भारता है। −तुद्ध-पु वह क्यारं जिसमें छोटे-छाटे बरसीयें वेंटी हुए सेना जीका बार्टर बुदमनपर छापे मारा बर्ली है।

गुरीशा - वि स्था मामुर्यम् ।

गुर-वि [छ] मारी वजनशास बना बुष्पाच्या, देशम वपनैवाना पूरवा महत्रा कटिमा दीर्शमा दी सालामी-बाला (बर्ग साल)। विवादपपूर्ण (तक्ति)। दुर्वमा जाकि शानी । पु विता पूरव पुरुषा शुक्रुगी शिलक, निया देनेराला, धार्र कला विचा सिगानेशका सम्मार गायनी मंत्रका संवद्धा कर्नवस्थाः कृटरवनि सक्त देवनाओके धर बहरपति। पुष्य मध्य आधार्या परमेश्वरः ही ।

माभागों वाका वर्ण, ताक। -कार्य-पु॰ भारी। कठिन कार्य : महत्त्ववाचा कामः आचार्वका पः या कार्य । -क्र**डफ**ि-सी फकित क्लोतियके अनुसार बमाबा बाने वाला यह चक्र जिसके मध्यमें शहरपति हाते हैं।-कुल-पु॰ गुरू या काकार्यका बासस्थान वहाँ रहकर शिष्ट विचाध्यवन करते हैं, धुरुगृहः प्राचीम पहातेपर स्थापित विधावीठ ।—शेवर्ष ~पु थन्द्र ताक) - शृष्ट् -पु • गुरुकुर । ~m-पु॰ थीर सर्पप । वि शुक्को मारनेवाका । -चर्या -स्रो शुक्ते सेवा : ~चौद्दीययोग-पु श्रदस्पति स्रोर चंद्रमाध्ये अर्थः राश्चिमें व्यक्तव होनेसे पहनेवाका योग। --जन-पु॰ वदा, नुसुर्ग, पूज्य पुरुव, माता पिता मानार्य जादि । -तस्य -पु गुक्का विस्तर (मार्मा) गुरुपक्षीके शाव अनुवित संबंध ।- तस्यम - तस्यी (स्विम्)-वि०, पु शुक्तको या विमाताके साथ मनुभित्त संबंध करनेवाका । ~तास्र−पु संगोतका यक तास्र । ~सोमार−पु• परा छेद । −दक्षिणा −स्त्री सदाने वा मंत्रोपदेखके सिर शुक्-को दी जानेवाची दक्षिणा। — दंबसः — पु. पुम्य नक्षत्र। −हारा−पु• [विं] गुरूके रचनेका स्थान} निर्माका मठ वा मंदिर । -वन्न,-वज्रक-पु॰ वंग वातु, राँगा ।-वन्ना सा व्यक्तिका देव : —पाक-वि देरमें प्रथमें दाला, मारी। -पुष्प-पु॰ एक वीग गुस्तारको पुष्य तक्षत्र पहना (स्थो॰) —पूर्णिमा—कौ॰ भाषातस्त्र पूर्णिमा बिस दिन गुम्की पूजाका विश्वेष विभान है। – सं–पु० पुष्प नक्षत्रः मीन राशिः पनु राशिः। – माई-पु [हि॰] पक दो गुरुते क्षिया ना दीक्षा पाननाता, एक गुरुका शिष्य दोनेके नाते मार्द । - मंद्र - पु गुक्से प्राप्त मंत्र । -सर्ब-पु यद तरहदा दीन वा गराहा। -सुरन-वि बीबागास बीबिय । - सुनरी-स्त्री देवनागरी किपिका एक कप जिसमें पंजानी भाषा किया बाती है।-रम-प उपराव।-वार -वासर-प्र• बहरपरिवार। -बासी(सिम्)-इ गुरगृहमें रहनवाका शिप्त अ³-वासी । -बृचि-मी गुम, भावावेंके प्रति शिष्यके निय क्रांच्य व्यवदारः ग्रस्माई। - प्यथ-विश बहुत पेहित वा शीकान्तित !-शिलारी(रिय)-प हिमासव। −सिंह-पु॰ बहरविडे सिंह राशिमें आनेपर छगने बाला व्यक्त पूर्व । गुरुभई गुरुभाई-छी॰ गुम्बा काम संशोदरेख देनेका कामा चस्तादी । गुरुभाइमां - छो दे शुरुभागी । शुक्रमाणी-स्ते गुर पत्रीः शिक्षा देनेवाकी स्ते ।

गुरुक-नि॰[नं॰] जो थोश हो मारी हो। दीर्थ (छेर शान)।

गुरुडम- । शाहिरवादिके क्षेत्रमे गुरुवर चीनानेका यहा।

गृष्ट्या-व्या [र्थ] भारीपन, बोराः मदण्य गीरवः गुण्या

बुदय-पुर्व वि वे बुरता । विद्यु पार्थ का किन्द

बह मध्य बिदु जिलवर पूरे दराचे रा मार बॅटिन ही सके।

सुरायाकप्रय-१० [मं] मारह कृपण कर्तुरा कृष्णिके

गुरुषां-त्या दे 'गु.५व ।

गुरुजाई॰−सी दे 'धुरता ।

गुरुव•−पु≹ गुर्वा

परः शुरस्यमध्येष ।

कर सींव स्त्रीयनेशस्त्रा । सी॰ शीवार साडिकी सीध नापनेका एक सीजार । गोभी - स्त्रा अस्त्रा क्षेत्राः वीराः वार शसः । । गोप-पु• गक्षेमें पहलनका एक गहना। वे 'सी'में । शांपक-प सि | मीपः बहतते गीनी, हकाकीका कव्यक्ता गोपनकर्ताः रधकः । स्ति० 'बोपिका] । गोपन-प॰ थि॰ डिपामा, डिपामा मर्खना, निका मंरक्षणः दौति। भवः श्रासः हेवः ववहाहट । गोपना∽ठो सिं•ोरखणः वीष्ठि। ♦ स क्रि॰ विपासा। गोपनीय-विश् (संश) हिपाने कामक रखनात । गोपविद्या(छ)-दि [सं•] संस्कृत छिपानैवाका । मोपांगमा-सी (धं•ी ग्वाकिमा गोववध । गोपाचस-५० [सं] न्याक्रियरके पासका एक प्रवंतः रवास्थिर । गोपायक-रि सि रहक रहनका। गापायन-५ [स्•] एहचः धोपन । गोपाष्टमी – स्वं + (एं+) कार्एफ प्रक्रा अवयो । गोपिका - ला [संश] म्याहिमा गोपस्य । गोपित-वि [सं•] रहिता क्षिपामा हुना । गोपिनी~न्त्री [र्स•] द्वामा छ्टा । गोपिछ-वि [संग] गोपनदर्ताः रक्द । गोपी-न्ये [सं•] शारिका कताः प्रियानेवाकी। दे 'गी'ने । गोपी(पिन)-नि॰ सि॰) एएकः गोपमकतां। स्ति गोपिनी 🖺 । गापीचेश-प एक मध्यकालीन राजा को अर्ग्वरिका वालका बदामा जाता हं और का रावपाट छोड़कर निरामी हैं। गवा । गोर्पेड−५ सि•ोक्टयः। गासा(प्र)-वि (संब) गोवमकर्ता। रहकः। प्र विभ्यु। गोप्य-वि [र्स] गोपनीव (मानु विश्व गृहण्यिक मंत्र मैशन भेचत्र तय दालऔर अपमाग—ये भी विषय मुत्रवरः मेप्य मानै गर्वे हैं) । इ. बास्तेष्ठम, बारा । गोफ-त एक तरहका दंठा भीव । गोफा-त+ दहा गमा। * वी ग्रहा वहसाना मोद्यम माँका योग्स परिमन क्रम क्रमार्थ-सारग्रे । गोदर-प गोमकः गारर । -- गणश-विश् मर्ग तर्थ । बटान ! - प धी-ररी + धावर पापनेवानी क्ये !-हारा-य गारर वहामेराणा मीस्ट । श्र॰ नदा बाग्र-वेशीयः मूर्व । -- त्यामा-प्रावश्यित करमा । - पामणा-गीवरू **द.". ३५**४ वसामा । गोवरामा!- छ कि शैवरी करना। गोवरिया-पुरु शहसामधी जातिका एक शंशा । सोकरी-का गोशरका है ? (करना)। बंटा करना ! बीवरैका गोवरीस गावरीका-9 वे॰ समीटा । गोबी-स है गामी। गोभ-प पीर्वाक्ष की वा करी सहर स्था गाभाग-मं । सहर्-"--जहिंग त्रति जागंददी गीमा -ULIN TALLL गाभिम्द~पु [र] | वष्ट गृषागूमकार ऋषि । गामी-भी यह प्रशिष्ठ श्राष्ट्र श्री कृषयांगी, पानगीयी है

बा करमज्ञला और गाँउगोमी अभेड में तीन सरदश केता है। बसगीमी: वीचींका व्यवस्था। गोस 🗝 🗝 स्थाम । स्वी चोत्रीको 🗪 घेरते । गीमती-था॰ सि॰। मध्यदेशको एक मधी जो बनास सेत गामीवर जिदेशी सीप्रायर तेतामें किसती है। यह बच र गोमय-प॰ (सं॰) गोरर । गोबंबा-प॰ दे॰ भीटेर । गोर्थना-नि॰ (फा॰) क्यूमे, बोक्रतेवाना । पु॰ बाब्य, भंदिया । गोय-प (कार्श कर। गोया-वि (का॰) वेलनेक्स वक्ता सरह । म मानी श्रीते । -- क्रे--ला नीलनेक्ष्रे शक्ति नकरव श्रीक । शार-विश् देश भीत । पुर [कार] बद यहा स्टिने मर्वेकी बचन करें, कब । -कन-पुर कम मोरानेना सेन क्षरमेवाला । -परस्त-वि काको पुत्रा करनेवारः प्रेत-पुत्रकः। --(र)ग्रीयाँ-पु॰ वह स्थाम नहां सरेहे था संशाहित इफन दिने वाने। शार-प कि: किशास्त्र शासका एक प्रदेश ! क्षेत्रच-प्र गीर्समाथ । -इफ्बी-मी दे बेरए कईशे । -भंधा-प्रश्न तार, करियाँ आरि वी एक्टें बोहकर फिर जरूम की जा छुटे। गीरगांकी संख्ये हैं द्याथम रहमेशाका एटा जिलमें बहुत हो करियाँ गर्म होती है। वेचपाचनाक्षी अहरी समक्षमें में मानेनामी भीने, मागका, पढेकी। समस्ता । -माम-इ १५वी राहीके यस प्रशिक्त क्रयोगी। भीर पंकाबर्टक स्ट । -पंच-इर गीरपामाश्रक्ता चन्नामा हुआ एक दीव ५व मा संवतन, नावनंत्रत्रक । -पंची-विक, 🖫 गीरगनावस 🛂 गामी । - भूंडी-स्पे॰ एक पास को दबाने साब मात्री है। गोर्वर~पु (पा+) गपेकी वातिका दह जंपनी जानगर ! गोरस्या - व मेपालका एक प्रदेश का क्यांका निवासी। गोरण्यासी-पु वेपालको एक भाग । स्रा अधिकी धानी । गोरसी-मा एक क्या गेररफा से। गारसको - ९ ४० वेस्टर । गोरदा - वि गारा । गोरण-९ [म] बचमः अध्यवसार । गोरमरा-पु॰ राजके फंक्सिकोडी हंग्रेके छात्र रेथे क्षमानी र गोरमी~गो भंगीकी। गीरा-वि+ गीर दरेण वर्णनामा (बनुष्य) जिल्ले पत्राच र्ग मुफेर हो । -ई-मी॰ गारानमा संररता ।-विहान वि•्राष्ट्रगीसः। गोरिका-मी॰ [मं] रे नी रादिश ! गोरिस्मा-पु अमीकार्ये पाया जानवाला विद्यालय कृत्रवात् हिरा कममानुग । शारी-वि सी शह फनाशी श्रेती ग्रंडरी सी शोरी-वि कि] बोल्डा । मु शाना रहदेवाना प्राप्त त्ररीम वारीका यवमाम । साइटां -पु चीरावा टीट (साव देव भेग = छे। शार्त, लाचे-पु [] मन्त्रप्र ।

गुमाना च प• क्रि॰ स्रो देना गैंदाना। गुसासी-वि॰ गुमान करनेवालाः वर्मही । गमास्ता-प [का] किसी व्यापारी वा की के की भोरते माक सरीदर्श-नेवानेवाला, पर्जेटके रूपमें काम करनेवाला कर्मवारी । -शिरी-बी॰ गुमास्ताका पर वा काम । शुमिरमा =- व कि. किपरना, क्येश वाना । गुमेरमा - ए॰ कि॰ छपेरना । गुम्मर-पु है॰ 'गुंदर' । ग्रमस् -प्र• वहा मसाः अर्थेद । गुरंब, गुरंबा, गुरंमार्ग - पु दे॰ 'गुवंबा' । गरंभर • - प्र मीठे शामका देह । ग्रर-प्र विसार मिकाकनेका संक्षित और पक्षा कावदाः कार्य सापनेकी बुक्ति स्वावः क दे 'गुरु'; दे० 'गुरू'; वि 'ग्रह'। -म्ल-वि० दे॰ 'ग्रहमुख'। -मुस्री-स्रो है॰ 'ग्रस्मुसी'। गुरुगा-प मीक्स दहसू बुट छेवक बासूस ! गुरगावी-पुर मुंदा ब्ला । गुरच-स्वी दे 'गुदुव'। गुरचियाना! - श॰ कि शिक्षकर देश ही जाना । गरची ं -धो॰ वह, सिड्डन ! गुरका - प्रदेशका । गरण-त [सं] रे गरच। गुरदा-पु • का] सरीरके अंदर रीक्के दोनों और अब रिवन अंग क्रिमद्धा दाम बाहारसे पेछावको असग दरमा भीर भनसे देखार 'नमजनीय' हम्बदी निदाककर ससे सना बरेना है, वक् हिम्मत जीवट ! -(हे)का वर्ड-पद रोग जिसमें शुरदेने भोतर पनरा पैश को बाती है। गुरविमी !- मी दे॰ 'गुरिमी । गुरुषी !- वि भने ही । गुरसी।-न्ते बँगीठी गोरधी। गुराई • न्यो है 'गोराई' ! गुराच-५० तीप काइनक्षे गाडी । गराय-५ भारा कारना। वैक्सा । शारिका-पण दे 'मीर'दा । गुरिद्र•−पु• गुत्र, क्या । गुरिया -सी॰ छोरी गोनी। यनका माठाका दाना- (शांस बादिया) छोटा प्रवश बीग्रे ह गुरिसा-म रे॰ गोरिसा । छापामार बलका भैनिक 'गेरिना'। -- वस्ता-दु होग फीग बस्ता को मीका गंबर दुरमनभ्र छापा मारता है। -पुद-पु वह मनारं जिसमें छोटेन्छाटे दश्तीमें नहीं हुई सेना मौका पास्य दशमनपर द्वापे भारा करती है।

गुरीशक-वि संघरः मापर्वमकः गुर-वि [मं] भारी, बजनशरा बहार बुखाब्य देशी रपनेयासा पूरवा महत्त्र इंडिना दीर्गवा दी मात्राओं बाना (दर्न ठाठ); भिद्र इर्पपूर्व (उक्ति); दुर्वम चाक्ति शासी। पु पिताः पूज्य पुरका नुजुर्गः हिह्दः, दिना देनेराना शोरं सना, विचा सिगानेराका परमाद गायती मंत्रका प्रपोक्त करनेवामाः कृष्टक्यी शक्त देवताओं ह गुरु प्रस्पति। पुष्य नश्च प्राथायार्थः प्रसीक्षः ही

मात्राओंबाका वर्ग, वाल । ⊶कार्य~प० भारी, कठिम कार्य, महत्त्ववाका कामः जानार्वका पर या कार्य। -कंडकी-को फक्रित स्वीतिपरे मनसार नगाया माने बाह्य एक चार जिसके मध्यमें प्रदर्गति वाते व ।-इस-प गृह वा आवार्षका बासस्थान वहाँ रहकर शिप्त विवाध्ययम् करते हैं , गुरुगृष्ठः प्रामीन प्रकृतिगर स्मापित विवापीठ।-गीवव-पु॰ यक तास ।-शृह-पु॰ गुस्तुस । -नी शुरुको सेवा। -थांद्रीययोग-प्र• सहरपति मीर चंद्रमान्द्रे कर्क राश्चिम एक क्रानेसे पक्रनेवाला योग । -दान-पु॰ वहा, बुजुर्ग, पुस्व पुश्प माता पिता, जामार्व बारि। -सस्प-त गुरका विस्तर (भार्वा)। गुरपत्तीके साब सनुधित संबंध ।-तस्यग -तस्यी(स्पिन्)-विक व गुरुपको या विभाताने साथ भनन्ति संबंध दरनेवाछा । -तास-प्र॰ संगीतका यह तास । -शोसर-प्र॰ यह छन्। -इश्चिमा-स्त्री क्यान या मंत्रीपरेश्चर्ट किए शरू-को दी जानेवाकी नक्षिया। - देवत-प्र पुष्प सम्बद्ध। -बारा-प किं ो गुरुडे रहनेका स्थानः मिलेका मठ वा अदिर । - वज्र - पद्मक- पु र्थय पातुः सौगा । - पद्मा —मौ इसकीका पेड़ । —पाक्क—वि० देरमें प्रमादाका, मारी । -पुरुष-पु॰ एक योग गुस्नारको प्रभ्य नधन पहना (क्बों) -पूर्णिमा-सी भाषाहको पूर्विमा बिस रिन गुक्को पुत्राका विशेष विवान है। -भ-पु० पुष्प मदात्रा मीन राक्षिः वतु राधि । - माई-पु [हिं•] णक दी गुक्से शिक्षा या दीक्षा पानेबाका एक गुरुका शिष्य बोनेके माते मार्थ । -मंद्र-प॰ गुरूरे प्राप्त मंत्र । ~सर्क-पुरुक तरहरू दोश वा नगाहा। ~सस्र~ वि बोद्यापास दीक्षित । "मुक्ती-छो॰ देवनागरी किपिका एक कप बिसमें पंजानी भाषा लियो जाती है।-रय-९ पुरस्ता (-बार)-बासर-५ इहस्पतिकार । -बामी(सिम्)-प गुस्तृवर्षे रवनेयाचा शिष्य अंतु-वासी ! -बचि-सी॰ ग्रम, भाषायंत्रे प्रति क्षिप्तके किए क्रॉब्य व्यवहारः गुरुआरे। ५थयम-वि वहत बेहित वा शोधान्वत ।-शिलरी(रिन्)-प शिमासव। -सिंह-पु बहरपविके सिंह राधिमें शानेकर सर्गन-बाइटा व्यट पर्व । गुरुबद् गुरुधाई-नी॰ गुरुब काम भन्नागरेश देनेका कामः वस्तादो । गुरभाइनां ~सी० दे 'गुरुधामी । शुरुभागी-सी॰ गुरुपती। शिक्षा वैनेवाकी ग्यो । गुरक-दि॰[मं] वो बोहा हो मारी ही। दीर्थ (तंर छान्य) । गुरुषी−न्दी० दे 'गुपुत । शहतक-पु है सर्व । गुरदश-पु मादिरवारिके क्षेत्रवे क्षमार्व केनानेका यहा

गुरना री [री•] भारीपन बीमा बहान गारवः गुरका

शुरुय-पुनि देश देश । अस्ता । अस्ति - पुनि मा विन्य

गुरम्बास्थव-व [तं] भारत स्थल वाजुवा कार्यक्ष

बह मध्य बिहु बिमदर पूरे बडार्चहा मार शन्त हो सहै।

बरा श्रमसम्बद्धीय ।

गुरुताई॰-मी॰ दे 'गुरुता'।

गोदरीर!-पु॰ वपसंदा समावद स्थाया हुना हैर ।
गोदरीत-पु र॰ गादकीय!
गोदर-गी पुलार स्वावभाके तिय विकासाः दीर-पुल्य गोदर-गी पुलार स्वावभाके तिय विकासाः दीर-पुल्य ग्रदार सम्बद्ध स्वावभाके तिय । गोदिर-पु सि पुल्यक स्वी। गोदिर-पु सि पुल्यक स्वी। गोदिर-पु सि पुल्यक स्वी। गोदिसम् गोद्यम-पु स्व स्वीत विकास साँव विस्के समझा रोग देगा है। गोद्वी-पु कर भेट्टा ।

गाहरा चु गाहर विकासकार । सिन्दारिक काम निकन्मेका मोका, अकसरा बाता, मसल्या, जुक्ता क गति पहुँचा बेत, बक्ता । मुश्लका-मतलका, कासता । नका पार-मतलबका शेला । नगाँठमा-काम निकल्या, अपनी गरज देखना । निकल्या-काम निकल्या । नपदमा-काम परमा । नसे-चुक्येने । स्मिन्दार्थ देश (क्षेत्र ।

गाय-सान्दर्गकायः। शीक्षिकः गीक्षिग-पुः [मं] शीदरंग सुवर्णकारः। गीद-पुरु यदः स्रोश कृष्णः। गीदिंग-पिः योव-संवेधी। गीवकाः।

सी-दी [सं]गाम ! -चरी-सी [सं] माव चराने स्त्र सर ! -हुमार-दि साम्द्रम, नलकी गूँठ चेता ! -हुद्य-दि, पु॰ दे॰ गोहुस्त ! -हुद्यी-सी दे भीहुसी ! -साला-चो दे मोहाला !

गीका'—सं काह्य नीवाल । गीरवा'—पु नरीवा मनावातासमा गावदा नमना । गीराा-पु [अ॰] दोर-गुल, दह्यस मनना । —हे—(४

इस्त म्यानेवाना।
गीह-व [मं] मंगालका पुराना भागा गीह वेदायाधा
प्रास्तीय एक वर्ष चंग्र मोहा भारतके माम्यानेक वक् स्ववादिः क्रवर्राक्षेत्र वक्ष व्यवादिः एक रागा निकारे।
-मह-पुर एक स्मार राग। निकारे।
पंतर स्वादिः क्ष्य प्रकारिः एक रागा निकारे।
पंतर स्वादे पुरक्षे पुर क्रियोगे मांवृष्य व्यानायायै-पु
पंतर स्वादे स्वादे - स्वादे प्रकार स्वादे स्वादे

्ताः । विदिक्ष्ण-1 > [र्व] युक्त-१४वीः युक्ताः । यु देशः वक्षः सरद्वाः सराव भी चीरेन महावी जाती है। विदिक्षण-1 । गीत देशकः । —मीत्रवृत्य-यु थेवन सर्मारभुद्धाः कमाना दुमा वक्षः निर्मातः ।

भीडी-सी० [सं] शुरने बनाबो हुई राहावः एक राधिनीः काण प्राप्तती तीव स्वनाःरीतिरीयमे एक, दे 'वस्था-पति ।

भी होय - (र [ग॰] भीर देशमंबी । यु मीर निवासी । -माया - हो। वैनना माबा बचर वंगालको बाता । गोरेकर - यु [थ॰] बैनन्य महामन् ।

गीच-(व [1] अज्ञानाम महावर्षे बृधरे वहनेका। एर संरंपी । -वहन-चु भारता वह च्या की व्यवसन वा अपुर री। गाणिक-रि [मंत्र] एणसंस्था; सरवन्यनामके संबंध

वर्षे महीन हमीन गरिपना इसकी प्रिया। गीरा, गीरा-पुर-गुन्का, गीर। गीराम, गीरिपन, गीरिप-पु (ईन) गोरिकलय। गीराम-पु गमना गीना। रि पंतक। गीराई-पु (ईन) गोर्मा हैक्से स्तव, क्रांबर। गीनहर-खी है 'गीनहारों'। गोनहर्मु-भी॰ वह वह निक्ता मेला हल्में लगा है-गीनहर्म-भी॰ बहु वह निक्ता मेला हल्में लगा है-गीनहर्म-भी॰ बुब्दिनके खाब उसकी स्तुराक गोन् गीराहर्म-भी॰ बुब्दिनके खाब उसकी स्तुराक गोन् बालों भी।

गीनदारिम-को दे भीनदारी।
गीनदारिम-पा गार्नका देश करनेवाछी, सन्दर्भे कर्षे
गार्ने-कार्नेवामी सी।
गीना-पुर (नेवाक्ट कुछ कान बार दुन्तिसम्म देशे
रिश होकर छश्ररक माना। विर्माणन।
गीरिक-पु (में) वेशेका पुन।
गीरिक-पु (में) गार्कक देशे
गीरिक-सि (में) गार्कक देशे

वीर-वि [म] गोरा रतेवा प्रोक्षा नाम रणक विद्वी समक्ष्मा । चु कोर रंगा श्रीमा रंग नाम रंग प्रेस क्षीमा भवका वेश करे र रोगो श्रीमा श्रीमा सम्प्राम पेण्य सबस्तुः कड तरह्या दिरमा एक तरह्या मेगा के क्षेत्रर, व्हरवृति यह। —क्ष्मु-वुक नैनगर्दर। —क्ष्में — वि गोरे रंगा नाम हिम्स वुक नीरारंग —क्ष्मिन वु स्पृद्ध —क्षाबि-वु कड तरह्या वात । —क्ष्म

गीरीय-दुर्मि•] देख मोदा दुव ।

- इ. योगी मरती । - सुवर्षे - इ. इत्र प्रवादः । शीर- व. [बन] कोच रिवादः विन्तः । - समय-रिवरः वीवः विवारने वीव्यः - व. रिव्रः - इ. , - व. विवारः स्त्रोः सीच-दिन्तरः । - से-प्यान देवदः प्रवाद्यं र ।

शीरक-पु॰ [र्ग] वय सरवया वाम । शीरसप-पु॰ [र्ग] गोवामन नीरस्त्र (देरवदेकिर विपेट वोम दिरोच क्योंमिन बक्त) ।

विश्व क्षेत्र विशेष्ट्र क्षित्र क्षित्र क्षेत्र क्

गीत्या-मु अन्य वर्षाः गीत्यान्त्रियः-वि गिर्ने गीत्यकः

गकार्योस-५ गुक्रभण्यासः। ~इसारा~प्र• गेंदा दोहरा गुरुकाला । सु•~कतरणा~ गसाया#-प्रश्नि वरतन । गधाची-वि शुक्तवत्रे रंगका, इत्रका सामः इत्रका काराज-करने कारिके थल कतरका बनामाः नशीका शह (बाका गठा) शुस्तावमें पनाया हुमा (रेवणे आर्थि): कारता अर्थमध्ये बात करना । -खामा-वरमपर गरम धातमे क्षात क्याबानाः ज्ञानाः । -व्यक्तमा - भेद राक्तमाः गुलाव मंत्रीयो । य गुलाक्यो पराहियोकासा दक्या साल कीर्य भनेप्यीः मजदार बात दोनाः क्यका चठना। रंग। श्री धरान पीतेशी प्याक्तीः गुरुवकी पेटाहिनीसे —स्विद्धाला—कोई बदागत अवेमको नाम करमाः गरीवा बनी एक मिठाई: यक नरहकी मैना। प्रदाता । -विकास-वसीकै सिरेका सब वस जानाः राकास-प [ल] बरोदा द्रमा कार माहिनकी संपत्ति समझा वामेबाका शीकर दास मीदरा संभोत, बधवरी. बागमा सक्य जामा । -होला-(शेपक) नहाना । राख-द हे॰ 'यह'। -सपादा-दु॰ श्रारगृह, इता। बराबीन स्थक्तिः ताद्यका यह पत्ता । ~क्राविर~प यह गुक- योकांका समासगर क्य । ~क्छा-त॰ गीका बढेका सरदार जिसमें दिलीपर करता करके छाड आसम पकानेराता गोलंदातः। (दिवाब)को आँखें निकल्या को भी। -शर्विदा-प्रक शक-प्र- (पार-) शीर वता। -शका-पुर शीर पुन। महक भारिके चारी तरकटा बरामणा बनानसामेके गुरुगचिया-बी॰ गिरुगिडिया । मीतरी बरवाबेके सामने जावके किए बनी हुई बीबार । गुरुग्छ−वि दे॰ 'गुरुगुका'। ~कोर~प वायका एक सेट । ~झाडा~प्र• ग्रहामका प्रकारता-विश्व मरम मुकायम श्रुपाय । प्रश्व बाटेमें ग्रुप वेटा (बळा नमतावस अपने वेटके क्रिय कहता है)। सार मिलाकर और तेर वा पाय तलवर बनावा जाने हास्त्रामी-सी॰ दासवाः यत्रदीः पराधीनवा । बाला एक पश्चान । गुरुगळ-पु सरीर । गुक्रमुखानार्ग -स॰ किले पृषेदार पीवको दशकर गुकाखा-पु है गुक्काका । विक्रिका करमाः * ग्रदशकाना । गुसिक-पु॰ [च] भीरवा । प्रकारकी 🌣 स्था संस्थाति । 🛊 प्रकारको मध्यो । 🛊 गरिका-भी सि विस्तानका छोटा गेंदा है 'शाने । गुरिया-वि मदुण्य वीत्रका । सी महादमा فجح गुरूगोपना~प वह मादा भारमी जिसका धरीर सूब गुडियामा - १० कि वे 'गोनियाना ; चौगर्ने भीष्य ď मरा भीर फुला हो। भारि भरकर पहाकी क्लिमा । गुरुषना - ए० कि शुरुषका भाषान करना । गुक्तिस्ती-इ [फा॰] पुष्पबादिया द्यान देखसादी-गुमचा-प्र• सुप्ती बोधकर वैगतिबीकी बारते, प्रमान र नित कारणीका एक प्रसिक्त सीतिप्रय । विनीर्मे मार्शेमर भाषात करना (बारना) । शासी-स्थं सि] भोगाः चएकः । दे गुलचाना गुलविधाना - स॰ कि॰ गुलना मारता । गासक गानुष्य - प्र वि । प्रच्या । गुमची-सी बार्बीका एक भीबार । गुस्-पु [का॰] वहा गररन । -ग्रसामी-सी॰ वना गुक्छरां-पु॰ मीव धन देश । स -(रें) उदामा-एरनाः एरकार।। -वद-प्र गरीम वपनद किए निरद्ध देशर शुग भीवना सीव दरना । वर्षेत्रे छप्ता जानेवाली बट्टी गाउँगे पदननेता एक जन्म १ गुल्पारी-स्वी पान आदिने कस्त्राह पड़ी हुई शाँठ, गरमान्ड कि] श्रमामा गुर्थाः ग्रिक्म । सुरु -शिकाकमा-मनीमान्त्रिक हर शुर्सिता शुर्मिता~षु मद्रपद्मायन कार्रेगा। 41 रामा । --पदमा-मनमे गाँउ परना । गुखरमान्यु एक पादर विश्वार खिक्रभीगर भवना मनासा र हिलाओं हे १ - जिलाहे रगरन है। गुम्पता-इ. गु[>]तेने रुधे जानेवाणी विद्वीची ग्रेक्टो । गुष्टनार~इ वे गुहासार। गुसाबी-का मधिक गीला और गणाया दुना बादल । गुछराबा "इ वार इका दक्ष पूर्ण भा मीतरही और काल

महाजी अभेका मनारीका एक बीबार । -सीसम-प्रकारक की इसके साधमानी रंगका दोठा है।

rŧ

ć

À

14 -पु॰ कुछ पत्ती, देह-बृद्ध ! ~सहास**छ** -पु॰ यह छोडा कर समझ पीवा । —संबद्ध-क्यी० वह बीस विस्ता सिरा क्य जैसा तील होता है। -सेहँ ती-की॰ पद सिगंप क्षमः समका पीता । -श्रीम-विक ग्रहावके रंगका, काल गुक्रम् । --इन्न --छ--वि॰ पुरुसे मुख्याला संदर ।

-रेश-वि कृत बसेरीवाला। प्रव वह तरवडी क्रक

श्रातीः एक कपशा । -कासा-पुरु पक्र पुरु को पोरते है

फुट्से मिलता है। उसका पीथा। -जका-ली॰ गड

दंत । ~ाक्सी-सी० सदामें ग्रहांकी पैंसावियाँ

मलकर बनाजा हुना रूपक विश्वते शायत बनाते हैं।

~धार~प काम वाधिया । ~धान्यो -प॰ यक फल

क्षित्रके सर्वेष रस्तकी अधिक होती है। -सम-प्रश

गमाय-प्र• कि] एक देशका पौपा वा भार उसमा फूक जो बहुत संबर और मीठी सुगंबवासा दोता है। गुकाबके प्रस्तीका भएक गुलाबजर । -आफर्सी-पु॰ ग्रहाबर्धाः । -अख-५० ग्रहाबद्धाः वस्तः । -सामग्र-

गुरुवी-की जीट समतेसे द्वारीतमें होनेबाला गिक्टी या गठका शैसा सीवा मैदा बादि बोलतेसे बनी दर्व गाँठ । जाक्या-पर सिरपर कीर कार्नेसे होनेवाकी गोक सजता मसमितार कीमा भरी वर्ष कररीकी माँच ! गुस्तहयी-सी॰ वे 'गुकरशी ।

पुर एक मुस्कि मिठाई, जासनको शक्षणके मीमें द्वानकर

शीरेमें बनीये हर क्षोत्रेके कबत ! -पाड़ा-प गानाव

पक्ष रिक्टनेटा एड ब्रह्मरामार येष । ~वाडी नकी।

गकाब है फलोंकी काशी बारिका ।

ग्रसित-विश् देश ग्रस्त'।

प्रसिष्ण-दि [र्म०] निगननैका आहो, प्रसन्धीक । व० परभवा ।

प्रस्त-वि (सं) यश हुआ फुटा, निगका हुआ गीविदा ग्रहण करा। इक्षा । ए० अम्बोद्यारित शब्द ।

ग्रस्ता(स्तु)~वि [र्श•] श्रास क्रग्नेवाका, शक्ष्य । प्रस्तास्त-प्र• मि॰ी गुर्व या चंडमाका प्रदेश कर दूर हो

भरत हा जाना । प्रक्रित−स्त्री मिं ग्रेसक्स ग्रमच।

प्रस्तीवय-प (६०) तर्य या ५० मध्य प्रवण कन वय ही धत्य शोमः।

प्रस्य-विक [सं] यसमञ्जे बीग्य ।

प्रद-पु (र्स्) सूर्यको परिवामा करवेनाका वारा। सीर मंटक के प्रधान तार।--- सूर्य ६,६ मंगल, दुव गुरू, शुक्र, र्धान, राष्ट्र और बेन-पेशे कोई एका नीकी संस्वाः प्रदेश माति प्रदेश भोरी खुरुका मान्य नामादिका दशका वृद्धिका भाष्ट्रकाः अध्यवसाय स्वानः दृश्काः प्रवः भन्नद्दा भवव भागः शक रखना वन्ति करनाः नीकः रतन्त्रह । -पत्त्रोल-इ राह । -शति-मा प्रहोकी गरि प्रदर्शेय । -प्रश्त-वि प्रेताविष्टः पापप्रव हारा प्रमानित ।-प्राप्तकी-पुनुनं ।-चितक-पुर्वोतियो। —ह्या~सी अन्मराहिको ग्रहिते ग्रहीको रिवर्ति। प्रनदा प्राप्त का काम प्रक हेमेबाला होनाः वरे दिनः विका-बाह् । ~हाय~पु॰ प्रहाँकी रिषतिक अनुसार बनुप्तकी मार्थ । -- नेबता--प्रश्न प्रद् विशेषका अधिकाता देवता । −दौप−पु प्रदृशिषको कशुम महिटकारक यह। -इस-९ कादशसँगो।-शायक-९० मुक्तं सनि। - मादा - साहाम- प्राधितमध्य देव । - मीमि- प्र बदमा। - पति-पुर्वः यहः आकः। -पीडम-पुरु - पीड़ा-स्पी अहजनित ध्रशा बहुवायः। - पुप-ग्र्व। -भौतिकित्-पुर थोड सामक गंधास्य। ~सर्व-प्र प्रदुष्ट्। −र्मन्ती-स्थे० वर-वन्याक प्रद स्थाप्तिबीक्ष परस्पर भित्र वा अनुकृत हीना । न्याप्त न याग-इ प्रद-होत्रद्धी छांतिके तिय दिया बानेवाला यप । -यति - सी०, -योग - प्र शिश निर्धातके व्यव हो। मंश्रप से प्रदेखा था थाना । ~सुद्य-पु प्रदेशि पर हतर निरीय या अपर्थ । - शाम - मु सद्दी चंद्रा ब्रहरपति । -बर्च-प ग्रहीरी वृतिहे हिमान्ये मामा जानेवाका स्यं। -विचारी(रिम्)-पु महन्तिकः। -विम-पु क्वीतिथी । -वर्ध-पु प्रदेशि हिस्तिका शाम अप्त atmi-ulfi-गो अप, पत्रम आवि हारा सह दीपरी निष्क्तित उपाद किया जाना । -महराहक-ध ग्रहीका एक सरहका थात । -सनम-तु वर्ष धारीका इक्ट्रा दी जाना । "स्वर्" पुराग मार्थ्य करनदा स्वर्ध

प्रक-पुनि विशेषा ग्रहण-तु [मं] पदानेगी किया चढडा सेना, स्नीकारा मामि। नारमा बरम, सुनावः शयहाना अवतीका प्रक-(बरीक्स कुछरे प्रका) प्राथान कुछ कालके दिए छित्र यामा। गुरे भार पृथिती दे शेषमें दशमात्रा था यूर्वे और र्ध मादे बावदे पृथिक्षका आ जामा (गैरान्कि धनायुग्नर)

राहका सर्व या भद्रमाओं निगकनेको भौतिय सामी-दाना पानेंद्रिया नंदी बेरी। पानिपदया देर दरन मान्द्रपेमा सेवार प्रशंसार भाग्नेक्ट । प्रहणांत-पुरु (ले॰) अध्ययनही समाति। प्रहानि: प्रहायी-स्थे [सं+) बदर और पराश्यके शेमधे पढ नाशे। यह वरहवा शिक्षार ! =हर-पु॰ हीए। ग्रहणीय-वि भि । शहर दरने बीम्ब । प्रदाससम्प मि । प्रतासिक भारेज । ब्रह्मक्रसर-ए॰ (र्ध॰) चन्मा । श्रहाकार्य−प्र• [तं] शहविष्र ! प्रकाचार-पर (संग्) प्रथ भएव । ग्रहाभीका-प सिंशे सर्व । प्रदासय-पुर (र्ष) मुच्छो, बुगो: सर्भेग, मेरदीय सारेश १ इ.इ.स्चिन-५ (एं) शिकारशर शराबर उसे गा दासना (ग्रहाधमन्त्र-५० (सं०) प्रवस्का राह् । प्रद्वासर्ग-पुर्तिः] बायपर्गाः महाची(धिन)-इ [न] महमाध रूप ग्रहासय~द [पं•] प्रव तारा। इहाह्य-१० सि] मृतांक्ष मामक धेरा । प्रहिस-निक [र्नक] हिस्त्याची तेनेवाच्या देवी। मृगतिह । हाहील-वि तेष 'ग्रहेल' । प्रहीतम्य-वि॰ [र्स॰] श्रहण दरने यान । इ.इतिसा(तृ)-रि प्र+ मि । सहस करनवाना साहक कर्म केमबाकाः निरोधम करनवाका । स्थित प्रदेशी ग्रे श्रीडोक्ड~वि वहे टीक्रणीतदा 'महदर । ब्रास-इ [तं] बरनी। गाँव भाति। धनश एक वर्तने दूसरे बद्वतक्ता स्वर समूद स्वर शाहक ! -करक-5° वह की बाममें क्षमहे-बद्रोते उठाता है बामश्मी। उन्हर च्यु पालग् मुरमा।-इट -क्ट्रड-ड वॉक्झ**ड्**किर३ शहर । - दूबर-वि गांवदे बाहर रिवतन - दूबक-पु देशनी वार्र । -बात-पुर औरधी सुरना ! -वर-प्र मायशही । -वयाँ-सी सीना ! -वैषन्त गॉवका धीत हुए । - ज - यात-रि मोनी प्रवस दुणा देशली रातमें प्रदेश दुशा - मी - दी सुरिस्या। प्रयान नातका हात्राया विश्वा कामी हर्ष लंपर र क्वी • वेरया। मीलका पीपा र -- लक्ष-पुर प्र^{प्}रय क्रों। - ब्य,-बेंबता-ब्रागीका श्रीका श्रीकात संगी रधा बरगेवाना देवना ! -होटी(दिव)-वि पुर माने के निषधका भेग मामप्रवासती निर्मेषका कार्यन वाने वासा । -धार्म-बु र्ववृष्ट स्थानाय । -वंबादत-मे [if] nied mur gut nit egret, gert arfiel प्रदेश करनदाणा मेहल । --पादशामा-भी धौददी द्रदशास्त्रः बेहानी मररमा । -पाम-५ व्यवस्थ सस्त मामरथ्ड नेमा । -प्रेरप-तु र'वदा वृत वा केंदर । -शुल-पुवाशर । -शृग-पु+ कृता । ~वावर-" याजी(जिम्)-प्र माश्या दुर्शित्वा दुवमी 1-युद-5. देगा, रण्या ।- ह्यार-ओ शहरी त्यो । -बाय-इ व वी बगुना । - त्रासी(सिन्) - वि , तु न्द्रवे वच्ये

गूँगी-वि सौ० न वें।सनदाकी ! सी॰ न वीक सकतेवारी सी। एक तरहकी निष्टिया। वोर्मेहा सौंप । -पहेसी-न्यी इशारोंमें कहा बानेवाड़ी पहेड़ी।

र्गेष-सौ॰ मुँघभी। गूँब-सौ॰ प्रतिष्यनि टब्स्प्यर कीर वाकी वानावा देर तक बनी रहनेवाकी व्यक्ति गुंबार वाली वा संबंधी सुद्री

हुई भोरा रूप्ट्राश्ची श्रार ।

गुजना-भ कि शासाजका स्कराकर भारता प्रतिव्यनित हो बाना। दिसी ध्वनिस दिसी स्थानका व्याप्त हो बाना। िरही प्रतिका देरतक श्रुनाई देत रहना और या मधु-मपकीका ग्रंबार करना गरजना ।

गुँजार-पु दे 'गुंबदरा ।

र्गेंडॉ−पुपदाकीटन्द्र।

र्गीयमा~स ति द 'गूबना;दे॰ गीूबना'। गैंदना-स कि॰ दे शुपना ।

गृहा-पुदे गादा।

र्गुदी-ता गैथला नामक दृष्ट् ।

ग्रॅं**पना** – स अने अपे पानी टाडकर उसे **वार्यी**ने अस-रुना मौदनाः भागों या कालांद्री करी बनामा चीटी

करताः पिरोता ।

ग-प्र [मं] गंदगीः मैठा शयामा, विद्या । -मृत-पु• [हि] मलमूत्र । सु० - उष्टक्षमा - क्रमंक वकागर होना, वदनामा फेसना । -उद्धाक्षमा-क्षम्बद्धी शुक्रत करना । -का काइ(-मैक्से वसके सहनसे पैदा होनेपाका कोहा: पदुष मेहा रहनेवाला विनीमा आदमी। **—का फोध**~ भरा धिनोना निकासा आहमी। - अता टोकरा--वर मामीका बाह्यः मारी कलेक था बदनामी (बढाना)। =धाना-अर्थत चनुषित ४६त तुरा काम करना। "मृद्ध करमा~रथेता पास्तन-पोषम करना । *−*में पसीटना,-में महस्राना-बहुत बसीक करना, दुर्वद्या बरना। -में देखा प्रकृता-ध्योनेको छत्ता, शीवके में इ कगना।

गृगसं गृगुध-दु॰ दे 'गुग्नुन'। गृतः 🗝 अद्देशिका एक भद ख्वियोंका एक भेद। गृह्मरी नगो । गृहर स्पीः एक रागिनीः परका यक शहना । गुमा-पुरको गुडियाः किलीयः भीतरका देशाः। •ेवि ग्रुप्त ।

मृह∽ि [मं•] तिपा हुआ दबा दुत्रा अतः समझनमें मेरिना गहन जिममें होर ठिया अर्थ का स्थरक हा (गृह निरा) । पु एकान स्थानः नुप्तानः स्वरयः एक अन्देशर P ग्म भणकार)। -कारी(विम्)-वि क्षिपार पम शहर रेनेबाला। पु अदिया आसून।[श्री० ग्द्रपारिको]। - ज - जाल-पुक विवाहिता क्षीका नारव प्रमा - जोबा(पिन) - वि दिस्ती आनीविद्य दारनाम इत्। −मीड−पुस्तरिव संडन। −प्रयू− पु वरीला अशार कृष । - पथ-पु विपा दुमा राज्या मान्दरम ुद्धि।-पार् -पार्-पु साँप। -पुरुष-इ जानम इप्र-र। -पुरप्रक-पु बनुन, शीनमिरी। -कार-पु∢र।-मापित-पुगुप्तवार्गस्थमा। -मार्ग-त सर्गा दिया राजा। -मैधुन-त श्रीवा।

-व्याय-पुरुष्णका एक में शिक्षमें व्यंगका वर्ष कठिनार्शस अकता है।-साक्षी(धिन)-प वह गवाह निसं वर्गी(बादी)ने स्वार्थनिकिक किय मस्वर्था(मितवादी)का बचन मना टिया हो। गृहता-सौ गृहन्ध-पु [र्व] गृह होना ग्रुप्त गहन

र्गमीर होगा । गृहाँग-पु॰ [सं] कप्तुमा।

गृहों मि-पु॰ [मं॰] सींप।

गुष्टा-पु शावकी संवर्षके दिसावसे टेइन्से दावको दूरीभर ठगायी जानेवाधी रुख्यी।

गृहोक्ति−सी [मं] एक अर्थारुटार नहीं सोई ग्रप्त वात विससे प्रस्का संबंध ही उसको छोड़कर किसी अन्यके प्रति क्ष्यकर कही बाय विससे समीपवाके बन्य क्रोग उसे समहा न सर्वे ।

गृबोत्तर-पु [सं] यक वर्षार्तकार जिसमें शिली प्रश्नारा क्कर कोई गढ़ कर्ब सिवे हुए दिया जाता है।

गढोरपञ्च-प (५०) गूपव पुत्र ।

गुम-पु [सं] मक, विद्या। गुधमा-स कि (मनका फुछ बादि) धार्मे पिरोना रूही बनाना गुफना ग्रॅंडना मेरी विकार सरना।

गृहां - पुराह्यां नहाः विद्वा गृब्द-पु श्रीबहा।-साह -साई-पु गुरहीपीस छापु फकीर ।

ज्ञाहर≉−पु• दे 'गूद्र ।

गृहा-पु॰ फलका टिकरेके जीचका खाद्य मागा मग्द गाँगीः मोर्रा रोटीका छिल्क्षेत्रे नीचेका नरम भागः सार बाग। [क्या 'गृदा।]−(दे) द्वार−वि जिसमें गृदा दो। गुज−सी वह रस्ती विससं भाव स्त्रीची जाती है शुप; धक पास ।

तृमा∽पुथक तरहदा समहका (गः। शुनी≥−स्तं । दे॰ भीती ।

गृमदा-पु॰ सिरपर बोट कपनेसे दोनेवाडी गोठ समन । गुमा-पु॰ वह छोटा वीबा, होणपुप्यी ।

शूरेष्य-पु • [मे] प्रयम् । सरपदनाद । गुर्द-प्र [मं] कुरमेश्र किया पुरान।

गुम्बर-प्र वरगर वेपन्नकी नाशिक्षा यह पेड़ छईबर: उसका कन जो अंत्रीरमे जिल्हा सुन्ता है। -इश्राय-तु यह वरदश्चा स्वाव । अ० -का फाड़ा-इप महन्द्रा-का कुल-िसी चीत्र में कभी देखनेमें न बाब अक्रम्य कन्तु। गृताक-पु [मं] दे 'गुपाद ।

गृत्रणा-न्दो॰ [म] भीरकी वैटवर् बद बंद अमे निद्र ! ग्रद−५ देगु।

गृहन-५ [मं] टिपाना। गुहाँजनी-भी दे ध्रदौबनी ।

गृहासीक्षां-न्या गरी दशासुनी धर्मद । र्गुजन-पु [6] शावस एक प्रमा कान कर्मुमा गाँडाः

विशक्त बाधने मारे हुए पशुद्धा मांन । र्मृद्धित गृष्टीय-पु [4] १५ तरहवा गृग्य । गृश्म-दि• [मं] मेथाश चतुर । यु बःम(र। शुप-पु [गं॰] बामरम । दि॰ बानी ।

रस्यपम-वि (से॰) अकाने या हांत करनेवाना। पु॰
सुरसाना कहान वा गमाव दूर करमा।
स्वरिय-वि॰ (से॰) इतिछा विश्वकः।
स्वरिय-वि॰ (से॰) वहा दुआत दिख्य कालियुक्तः।
स्वराम-पि (से॰) वहा दुआत दिख्य कालियुक्तः।
स्वराम-पि (से॰) वहा दुआत दिख्य कालियुक्तः।
स्वराम-प् (से॰) वहा दुआत दिख्य स्वराधिकः।
स्वराम-पु (से॰) श्रीत्याः वे॰ (गिकस्यः।
स्वरी-पु॰ (से) भ्रीत्याः वेषुरा पूर्णीः
स्वरा-पु॰ (से) भ्रीत्याः वेषुरा पूर्णीः
स्वरास्य पुण्याः विश्वक्याः।
स्वरास्य पुण्याः वृक्षसाः।
स्वरास्य पुण्याः वृक्षसाः।
स्वरास्य प्रमुक्तसाः।

घ~रेवनागरी वर्णमानाके अवर्धका चौथा वर्ष । अचारच

व्यास-पु॰ है 'ब्बाला'। -बाल-पु॰ अर्तिहे हुन्हे, कुन्हे बाबस्ता ।
व्यास्त्रक्रद्दी-एर्ग अंगली पित्रता ।
व्यास्त्रक्रद्दी-एर्ग अंगली पित्रता ।
व्यास्त्र-पु॰ गीव अद्देश १० ६ १६ १ ।
व्यास्त्र-पु॰ वेश 'बनाह'।
वर्षेट्या॰-स दे॰ 'बनाह'।
वर्षेट्या॰-स दि॰ वैदना मरोहना देश करना।
वर्षेट्या॰-स सिमा-सुरत्यक्री व्यु हुँद सी है। १ वर्गां-स्वाह-पु॰ वै॰ 'वीहिं-स देश हुन्हे सी है। वर्गां-स्वाह-पु॰ वै॰ 'गीरिंग ।
वर्षिक-पु॰ वै॰ 'गीरिंग ।

Б

(rr-11) t

चेरी(रिम)-[[सं] भेतमुगा जिसमें वेरियों नवी की। चल्ली-की क्यांत कार्नात रही कहीता !

श्वान बिद्या∺मृत्र वा कठ। **ध्रमरा**-प दे• घवरा । र्वे**बरी**−स्वै॰ र 'प्रयरी ३ चैंद्रोरना, चैंद्रोक्षमा ~स• दि॰ पानीको बिकाबत उसमें मिट्टी भारि योक्तमाः वानीको शंदा बरना । र्घंड-<u>१</u> अविक्रियामें शिक्क्से कटकाया सानेवाला बढाः भयः [मं•] एक व्यंत्रनः शिक्र। र्घरक घंटाक-द [सं] यह श्चर। घंडा-पु [मं] बीसका गाँछ पट्ट विसे मुँगरीसे पीरकर पुत्रनमें या मगयकी सूचनारे निष्ण बकाते हैं। शक्यानः मंदिरों आदिमें समाया जानेबाका ब्रोनका लंगरबार बाबा भी सगर हिसामेंने बनता है। बड़ा बजनेका शब्दा [दि॰] पिनर वा रश परीक्षा काल शामा है ना (क्ष्म मही)। -करन-पु॰ [दि] एक पात । -कल -पु शिरध इक् गरा। -धर-त विनेश मीनार विगम क्रमनी अवार्थ **पर परग पता नगी का कि बगुत दरगे दिशाई दें और** क्षम के पदा बकामेको स्थानाच रामाई है। -साह-प भंश राजानशका पहिचानी । - शाच-त धरेकी ध्वनिः कुरस्था एक मंत्री । -पश्च-पु राजमार्ग, भीशी सहस्र (बीरिप्पके मगमे रमधे भीता ? वनु होली वाहिरे) । न्पारसि~तु मुप्दद मामश्र वृक्ष ।-श्रीश्र-तु० प्रमान गारेका पीरा⊨ उत्तक्ष भीजा —रच—म्बन~पु पटका शाध्यः एक राय । -रथा-स्त्री वृश्वितेव । -याद्यक-प्र गरा क्यानिमा । -पाब्य्-पु पटेकी कानाका क्षांना । स्॰-द्वित्राजा- भावाय दश्ना विभने कुछ इत्थम क्ये। चेतिक-पुरु [मं] वहिवान मगर । संविद्या-रत [र्म+] होते पंता पुंतरप क्यानिया रहेंटकी र्चरी-स्त स्टुत धोरा वंसा पुरस्य पीती भारामा मीम-की बादे कस्र शासनपाना गांस्तानः कीचा वन्दा तर

दोरी बड़ी भी जाएरी और जिल्ली रहनी है। लूनेश ह

र्थ**ेको तरह बजने**बाला । पु॰ दिन । र्घटील-श्री चारेडे दाम भारेताती रह मार र्घट-प्र [मं] तापा प्रश्राप्ता गर्मारा । **भंड**-प्र [सं] मनुमनको । यई - ली और "परवी मानी पेर परं वे -पेश्रम जवाह भूनी। विश्वदृत गहरा। श्वस्थेल∽ली॰ कृत्रमें सगनेवाली वह तरहबी देन वंदण। घदरा-पु॰ निर्धादा एठ पहलावा तर्देगा। वचरी~ती क्षां सर्वेगा। घट-पु (तं•) यश कनताः पित्र देश कुंब राक्षि रे°े बंगरा बुंबका बार्वास बुंब, १ होरही तीता किंगा। -क खुकी-मो॰ वांबिकोसी एक मनेतिक रोडि I-दर्ब −पु य∉ सामः! –क्या−पु क्रमस्त्री। –क्यानी ण्य कृति की विक्रवादित्वकी समाहे सब्दर्जीमें के वासी डोबरा । —बार-१० कुम्हार । —ब्रह्न-१० वानी मर्ने बान्ता - स-प्र अगस्य । - दामी-की॰ दर्रे -वर्षमन-पु प्रावशित म मरनेपान प्रति अवह हाति त्रमों द्वारा वसुद्रे मोरिश रहने हो किया बानेशला ^{सहर} मेनटम । -पहाच-तुक महे और पछ त्रीम लिक्न रांजा । -योमि -संयय-५ अगस्य । -स्वारत-५ पूजनमें दिनी देवताचे मानाहमार्थ पत्ती स्मारण ! हैं वर करमा-स्थाव देशंतको यथे दरमाना सम हाता। भट-गो॰ क्मी । ~ब॰-गो क्मी-देशे (न्यान्स्) है। का प्रयोग रम समागरी हो होता हो। हि इस मार्गि घटड-वि [में] करानेवाना, पावका विनारेग बीजह । यु व्याह त क्रानेशना हिमुबा हरू वास बरनु जिसके समान कोई परार्थ बता हो अरवर पूरे हैं. वंशायनी शुनानवानाः वह पूर्व किसमें दिना दृष्ट हो भूम्ब कर्ने; महा। शहहराज्ञान सं कि बीधा बहेद भीन प्रशासी धरुधा—तु आभागरण व्यक्तियी ग्रॉगसा वद व्हर्म ^{हर्} मसाहरू तम भूग्या अपने दन्या हर है क

र्मिक्की-स्ती० पेरा, फेरा सकर । तिका-पुर्वकके ठवरके वरे परेश भए। सेंडु सेंडुक-पुर्व (चे गिननेका सेंट। सेंडुक्स, सेंडुक्स-पुर्व उत्तिका का सेंट। सेंडुक्स, सेंडुक्स-सी पड़रों डेंडबी।

निया पहुरिया १ ५ १६८ काठ वार्त आरिकायना गोला किससे कहते रोठते हैं, संबुद्ध दोगी जनाने ना पगर्श भीवनेका कारिया तारकी साक्तियोका पना गीला निसमें दिया रख कर बलाते हैं। – घर – युक किरेट वा देगेस आरि रोजा का रवाना (विकार ने समा । – सही न सी काक्तिका एक किरेट वा महान न्युक नेंद्र और बता किरेट खेलनेस्ट्री

सामग्रीः क्रिकेटका शेखः। गिँदक्-वि॰ मेंदेके एक बीते २गका वर्षे । पु गेरेके पुरू से मिलता रंगः।

गैंदवा - पुदे गेंदुबा।

सीदा-पुण्क गीपाः उसस्य कृतः जो पोते रंगसः होता है एक शास्त्रित्रराजीः एक गहनाः रं नेंद्र शहरः

र्गेंदुका गेंदुबा-पु॰ गोक दक्षिण । गेंदुक-पु [सं] टीकनेका गेंदर गरा।

शहक-पुस्ति । धकनका गरः गर गैंदीरा-पुर्दिशियोगः।

रोराका—इ मसरको जातिका एक बीधा थो मान' यहँ जारिके साम पैना होता है। वि मूर्ख। गरिस—इ मौजा नौबनेका पोछा।

रोड्ना-स कि कन्द्रेर आरिसे पेरना। * क कि चारों और किरना।

चारामाराकरनाः गेदा−पुनपद्माचित्रियाकावद्याः।

शहा-पु वर्गका वर्षाकाला करा। शेय-वि [मंग] गाने कायक, भी गांवा या छक्रे । शैरमाण-स नि गिरमागा वेदेकना। बाकमा आरोव

करना। ल॰ कि चारों और फिरना। गेरॉयां –चु भौपायों के भनता वह माग की गयेंगे

रस्ता है।

रोहझा-दि गेरके रंगहा गेरमें रंगा दुआ। बीशमा। चु गेरक रंकता एक दौरा। रहेके पीतीका एक रोग। -वाना-चु गेरका कल सम्म्यासिकीका बीशिया पर माता।

गेरहें। नभी गेहें भी आदिको प्रशनका एक दोय जिसमें पतके पत कारुने दो जाने हैं।

रोस-पुन्धी सामीने निकलनेवाणी एक तरहको बाल मिटी वा रंगने भार बाढे मी काम नाती है।

गेन्द्र-पुनशुगनी।

गरहा-इ तन स्थाका प्रमाना कुला।

तेच्य राज्य-पु (ति) गरीवा गायका अभिनेता । गम्-पु (का) तियोदा तर, कान्त यहा। -व्हराझ-विश्वित तेर् सदे हो।

गेष-५ [१३] वर मधान। -पश्चि-५ गृहवति।

ग्रेहमी = -सी = दे 'ग्रेहिनी'। ग्रेहिमी -सी = (मं) ग्रुहणी ग्रहस्त्रामिनी। ग्रेह्मी (हिन्) - वि , यु (स्थे) प्रस्ताका पर-वारमाका।

शहुँक्षेत्र—पु एक बहुत कहरीका साँप जिसका रंग गहेंके रगते मिकता है।

शेहुआँ-वि मेहूँके रंगका, गुंदुमी। शेहूँ-पु पक बज जिसको पत्सक पैठमें कटतो है। शेह्रेनर्या(त्रिन्)-विश्वि वि वे 'मेटेसर'।

गेहेमेही(दिन्) – वि [स] काटसी कोदिकः। गेहेसूर-वि [स] जी धरमें दो वहादुरी दिखानेवाका हो कायर ।

र्गिहा-पु भमेकी श्वरणका विशासकाम बंद्र विसमी नाक पर एक वा दी सींग बीठे हैं और मिसके पमरेकी काक बनानी बाती हैं।

र्गिती - स्रो शिट्टी योजनेका एक श्रीबार। तील - पुण्या विशेष की प्राप्त - प्राप्तिको प्राप्त स्रोप पुण्यातिको प्राप्त स्रोप

रीसाछ-पु निम्म कोरिका वैका निश्च पशुः नेसार रही पीत्र।

शीन • - पु इस्ता गक्षः गक्षन - द्वार पापो तो विस्तियो महि करि बेदो गैन - चापादित ब्रेशवनः गगन गर्वतः । शीना - पुण्नाटा वैकः।

गंबीक-विक सी० गामिनी ।

रीय−ड [स] रिषा दोना दिशोदर ह दोनाः परीय परीय विषय ! −दॉॅं~नि परीक्षरसीं, मृत मनिष्य वामने वाला !

गबर-नं पुरु एक प्रशा र क्षेत्र दानी। होबी-वि [स] पेरवरोबा ग्राप्त सम्राप्त समेय। ग्रीवरर-पु नशा दावी यजनर।

स्वरूप क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्र

होर-ि शि] दूनरा करवा कि बरण हुवा (हास्य दीर दोगा); रगाया परावा। - आवाद-वि बो आवाद न हा उमाद परावा। - महाबाद-वि बो आवाद न हा उमाद परावा। - हुम्मद्रा-चु दूसरा गांवा दूगरेकी बागीगारी। - मुक्तरी-वि क्यान्यका - हिस्सव्यत-वि (अपनी) विकासरो स सम्प्रानेवाला दारिव्यक्षिण निष्का भागा न किया जा सके। - सम् सम्बा-वि का कीया वीयो न नवी हो परागी (कारीन)। - समझ्या-वि का का स्वास्त (कारीज)। - सद्-चु परिने शिख बुक्या रेपाना आपनी। - मस्मुबी-वि समावारण। - सिसिसक-वि आयुवित, असाव

(शान्त्रे)। - मुक्तमाम-वि अन्। अन्। - मुमा विवन-वि अनुवित्र ते मुनानिश्च हा। - मुमाबिन-वि अनेनवा अत्राव म ही सप्तेनाहा। - मुप्ति-वि वित्या। - मुम्सावित्य-वि भीषा; सरवादा। - मुम्माव्या-वि विना गर्गावा प्रकार या एक्से

ही संबंध हो। -मीस्त्र्यां-िश की बनाम में ही। जिसका या जिल भीतसी इब होनित में हो। -समुग्न- समय बनाया जो बाका ग्रंटा छिएक्सीओ झक्काहा एक हिंग्रत वहां सकतेनु प्रायः। —का करोटा—एक नरबका करोटा किसने पुराने सकसमें परीका काम छेत ने (कम्पी पेटीमें एक छाटा छेद बना रहता वा। पानीकी मांसी छोड़ बेनले बही या गरेमारी क्यमें हतना पानी वा। बाजा वा कि बह इव जाय)।

घडियासः -पु परियक्त ध्वानेत्रासः । सी० पूजाके समय - पत्रानेया यक सरहक्त येटा ज्ञासरः ।

स्वी-न्यो ६ एक या २४ मिनन्या कावमान परी देंद्र समय, बच्चा व्यस्तर परा वर्तावाका एक येव, विक्र कार्या, मार्गित वीडियो कि स्वान्त मार्गित वीडियो कि देंद्र इमारा - न्याक्री-क्षी के देंद्र इमारा - न्याक्री-व्यक्ति कार्या मार्गित करा मार्

धर्मादिमा-तु (गमिक्षोमें) शृत व्यक्तिके यर जुन्छक्ष स्थानपर इस दिगीतक रचा कालबाका पक्ष किनके देवेंमें पानी पुनेके किय छोजाना सहाक रहता है और श्रीदम्स दिवा कनावा बाहा है।

घर्षामा-५० धारा परा।

धर्विवीलनी परारमने अस्ति रिण नना हमा वर्गरा ना निपार्द ।

यतिया-पुपाती भीगा वैनेशना । प्रतियाना-सुक्रिश्चानम् सानाः तिः

घष्टियाना−स क्रि॰ यानमें कानाः छिपानाः। धन-वि [मं•] पना उसः द्रीसः धनपः निविदः रहः र्गमीरा निरंतर। पूर्ण। शुम, विद्याल । पु मेप, बारला क्षुप्रत्वा वहा प्रवीदा। किसा अंतवी वधी अंदसे दी बार शुक्ता करनेने उपकर्भ शुक्तावात बनुवां। संवार-बीवारे मीटार्च, निरतारः रहनाः धमत्वा वेश्मेत्रीके पाठकी एक विशेष विविद्ध पानुका नमा हा हा इरमाल जैमा एक नामाः पंदाक्षीशास्त्रका प्राक्ता प्रदेश मध्यम मूखा सेप्याः समुदासभादा व्यवस्था । बहुर । ~ क्या-तः शोका । -काळ-१ वर्ष वर्ष । -कार्ट-५ प्रथमुर्। -श्रत्र-पुरु भंगते चार्या और गहरामेश दिल्या ह -शरप्र-सी (दि विशानको यदमः ग्यः भागा यद शहरू र नाय। - गाजित-चु नायभीका सर्वेन !-सासय- भाने बीर स्टेनी मिणावर । —शहर—व्योक नावनीता जमावः गहरी कान्। यहा । - घोर-विश् न न ननाः वनरत्स्य गरहाः करास्त्रा । त त्रशासी मनगराहरू भाषात् । - • घरा - भी [(६] काकी वशायनी परा । -चवर-प (ic) मूर्ग, बाग्रमा अस्टिश्मीयः भाषासाम्य । इ. यस मात्रियसमा मसमी। सहसा महे मुत्तेश कृत । - ३३ मा - भ्ये किली । - ताल-प्र बर्गामः पातव क्षेत्र । ~शास-इ वर्गदा । ~हुम-त्र विश्वक पूर्व - चानु-भी लगोबा । - नाव्-त र्मप्रदेशः देवसन्त । -शाधि-तुः पृष्टाः -पथन्तुः [

पुनर्मवा ।-पृत्-पुरु धनमूत ।-पृत्वी-सीर धन्यः। -पार्वेड -प्रिय-पु॰ मीर । -छम-पु न्दर्श-ीर्म् मोठार्यका गुपानकल विषेटक वृद्ध । - धाम-व [व] म्ब तरहका काल । ∸सेस ० – वि विश्वतर देवे देश-१ वर्गे 🛍 ः −थेवरी −स्ता देलाका एक मेर्ा ∽सूछ −1ुः यम राशिका मृद्ध शंद्ध । -र्ष-पु॰ भपनान । -रम-अ॰ अः अन्। सपुरः मोरः नामकः पोपा । --क्ष्पा-को मिसरी ! - मर-प् चेहरा सगरा । - बर्ग-प् प्रस्थ वर्ग !~यशिका-स्ता विजया !-वर्शी-सा॰ प्रमुप्तरा सता । –बास–पु कुप्भोद । –बाह्र–पु: बावु (रः) थन चनानेवाला । -बार्का-सी॰ वि॰) पन्छ गेरनेश कामः वद् स्थानः जही यम धलावेदाना राष्ट्रा होता है। ~वाक्कन-पु+ इंद्र* शिव । ~इयास-वि अनुमेर वर्ष वैसाकामा पुरुकास गाइन कृत्या राम । - धर्मी-रवी॰ मेपमाला । -सार-पुत्रला कपूरा एक 🏗 । -रमम-त भगवर्षना तद्वतीय राज्य । -इस्त-द्वा क्क द्वाब संदा क्क बाब भीता कार एक दाव नरस या या एक द्वाच मोटा विग्र अक्षारि मापनेश एक मान । यमक्र--सी गर्बन व गहाब्दा घार, प्रदार-प्राप्ति वसद यम वंश वनदश माली --- रोसन्यन । चनकता~श कि॰ गरवना समाव करना ! यनकाराण-दि कॅथी काराज गरवेशाला गरकोराणाः यमधनावा-स॰ तिः धन्यन्ते अपाय दौना मिक्षणमा । प्रज्ञासाहरू नहीं प्रत्यन की भाषात्र ! धवला-स्री॰, धनस्त्र-पु॰ [मं॰] प्रतासन क्रेन्डस्म सह संवर्षः चीवारं भीर मॅहरारंखा भाव । धबद्धरो-च बामा श्रुमामेनासा । धर्मात्रमी – ली॰ [सं] हाई। धनोत∽९॰ [शं॰] सरत् कतु । धनांधकार-पु॰ (वं॰) अधराङ्गणः मिरिष् अंवदार । ब्रमा-दि गुंबाल, बिसद मददर पत्त-पास हरे ही दिंग्य बाल)। दल गणा। ७ वडुन अधिक संविद्यवाद्य । व डु अंग्स वेड्डिय राज्य । मो [rio] मानवरी रहेक्टी पद गाय । धवाकर धनातम-इ (सं) वर्ग प्रयू। धनाहरी-भी॰ रंग्ड ५६ वॉर्स्स १ घनाचम−ष्ठः [७] इंद्रः ६रगतेशना नार्कं मन्त्र व^{रहे है} धनात्त्रप—५ (११०) देश पनायः । धनार्भद्र-पु [मं] त्य बाय्त्र्या एक भरा प्राप्त^{न हे}

रह बनुता बहि। धामाध्य - पु [हा नु हा नु धामाध्य - पु [हा नु हा नु धामाध्य - पु [हा नु हा नु धामाध्य - पु हा नु हा नु धामाध्य हा नु हा नु हा नु धामाध्य भागा (क्लि) । धामाध्य धामाध्य - पु [हा नु हा हो।

जमना देश क्रमा क्ष्मीमृत्योग है। वमना देश क्रमा क्ष्मीमृत्योग हैया क्ष्म है^आ वमीमृत्योग है गोवन दिवा बाय (मतिनि) ! -- चेत्न-पु वक तरहका र्थरम ! - चंद्रमा - स्रो एक तरहकी बहरीको बीट । -बर-वि इंद्रिय हारा जानने योग्य, इंद्रियमान । पुरु इंडियक्स विषय (रूप रसादि) ईडियब्राव्य बस्तुः संद्या-स्थातः बरागाद्यः व्यक्तिके मामके बनुसारः निकाका हुना प्रद (पु० क्यो) ! ~चरी~सो सिम्नावृत्ति ! ~धर्म (म्)-पु गायका कमहा। मूमिकी एक नाय, घरसा। -चारक,-भारी(रिभू)-पु याव परानेवाका म्वाका । -चारण-पु गान बराना । -ज्ञ-वि गीने घरणा । पु • दूबसे बना एक पदार्थ अमिपेकके अनिवकारी एक मकारके शतिब : - कल - पुगोमूत्र । - आगरिक - पुण मंगळ बस्यामा कस्तारिकाः राजक । -जाति-मी गी-वंश सारी दुनियाके सारे गाय-वेक, गोसमदि ।~शिहा,~ जिद्दिका - मी वनगां सी । - हुंबा - मो • तरवृत्र ! - तीर्य -पु॰ गोद्याला, गोठ : -म्र-पु दे॰ ऋममें । -द्रश्च-पुण्गोर्दवी इरताल । दि इत्यत्रक्तः - वाम-पु गायका दाना विनाहके पहलेका एक संस्कार देखाँव। -वारम-प इसा कुदान। -बुट्(६) -बुक्-पु० गाम बुद्दनेवाला स्वाका । —होद्दश-पुरु गान बुद्दनाः माय दुइनेका समय । --होहमी-मी॰ दूव दुइनका कर दन । −द्रव−द्र•गाम या वैत्रका सूत्र । −धन−द्र यायों, गावनैलीका समुद्रः गावन्येक क्ले अनः नीहे क्रका गांग । गोनर्थन पर्यतः - बर् - ध्र-प्र- पर्यतः। -भर्म- प्राप्तः पशुक्त विचारहीय संयोग !- भूकि, ─पृक्षी=सी॰ गायोदः चरकर सीवनेका समय संच्या वेका ।-धेमु-मी चून देनेदाकी स्वासा गाय !~नर्ज् -नर-पुण्क प्राचीन बनपर को पर्तकक्रिका बन्मरमाल श्रीवानगरमाया सारमः । – सर्वीय – प्रमायाप्यकारः पर्वत्रति श्रुमि ।- मस - मास-पु यक तरहका सींपा वैकातमनि । ~माथ~तु वरुः गीखामीः भूम्वामी । -नाय-पुग्नाका । -निम्मंद-पु॰ गीमूत्र । -प-पु० गोपालका म्बान्य अर्दार: गोहका नव्यक्ष रहका यह चैत्राः भृमिपति राजाः माधीन दिद् रास्तम्बनस्थामें गोंकडी सीमा भाराती येनी-पारी अन विक्रम माहिका छेळा रियमेशका कर्मेकारी • मोपन ग्रिपामा; इ॰ क्रममें। - क्रमा-साँ पोर् मारी: मातिन, गोपी I- क्रक्टिका-स्तां वस पीवा ।-वन्तर-पु श्रुपारीका देव । -व्हाबू-पु प्राचीन भारतदा ०३ शायप्रकाम बनप्र । - वर्ष -"पप्दी-स्वी गाँप प्रदार शाद मुवती, न्वास्तिन, गाँपी। -•व्ही-मी मद्रविद्धा अनंतपूत्र । -पति-पु॰ माथीका मान्यित गोरवामी। सोई व्यक्ति। राजा। कृष्ण श्चिमः बिप्पुः गर्दे । –पद्-पु• गावके गुरका निद्यान वा बर्ममे बता गरार बरागाइ !-पद्मी !- वि गोपर है जिस्ता छोदा। −पा∽सी माद की म्वालिस द्वामा सना। दुवरी पती वरोषिरा ! -पाल-वु शापालका खाला मदीरा राजा। कृष्णा शिव । - अस्त्रज्ञी - स्री व व धेथा। ग्रार्कना । --वतापम --वतापमीय~पु वय उपनिवर् । - महिर-पु वनमनःयगवदासोदा दीहर ।-वासक्-मागल । -पासि-पु जिबा -पास्त्रिका-धी - रातिना गीपरपूर म्बातिन माम्डाबीहर १-पार्मी- सी॰ व्वाहिन ! -पी-भी॰ घोष्ववू , व्वाह्मिन कृष्यकी बाक्कीकार्मे सम्मिक्ति बुंदाननको योपक्रनार्गे या योपन्धुपै गीपन करनेवासी ! - व्यक्ति। सी भागागवत वस्त स्बंधमें गोवियों द्वारा की हुई कुम्परहुदि। -- क्यद्र-पुर दे• ऋमनें ≀ − ० र्वदण −पु एक तरदक्की पीकी मिष्टी विसका वैष्यव विक्क स्थात है।-•सन-पु॰ गोपियोंका समूद !- • जनवहुम-पु कृष्ण !- • शास-पु कृष्ण ! -पीत-पु॰ संबनका एक भर ।-पीता॰-स्रो॰ गोपी। -पीच-पु॰ रक्षाः तीर्वश्वानः वह सरोवर बहाँ भीपँ बस वेती हों । -पुच्छ-पु॰ गामको वृष्टा यह तरहका नेररा एक तरहका हारा एक प्राचीन नामा। --पुटा-न्सी वरी रकावची। -पुछ-पु वस्त्राः कर्तः। -पुर-पु नगरहार, शहरका फाटकः महक या मंदिरका मुख्य हार। होरण । -पुरीय-पु॰ गीवर । -प्रधार-पु वरागाद । -प्रवेश-पु॰ वार्वीके चरकर छोडमेका समय गोप्ति। -ख्या~कौ॰ हुद्दी अक आदिदर वीवनके सिए विशेष मझरसे बनावी हुई पट्टी, ग्रीफन, डेडबॉस । -कम-पुर [वि:] केलवींस । -वर-प्र• [वि:] वे आसमें। ~अुक्(क)-पुरावा १ -भृत्-पुपदार ।-संत∽ प्रचाहि पर्वतमानाके अनुगत एक प्राची !-सिका-सी॰ कुर्राधी शींस । -शरस्य-पु सुमुक्तमें वर्णित पक तरस्क्री भक्तको । "सथ-पु व्यक्ता। "सरक"पु गोबातक, इधारै ।-सक-पु॰ गोबर !-मौस-पु माय वैस्का मांस । - माता(त)-की माप्रवानीय गीवाति गायरूपी माताः गीर्वश्वद्धी आदिमाताः, कृदयपदी पत्नी श्रुरमि । -मायु~पु॰ शतानः मदः श्रुरद्दा सेवच । −सुप्र−िव नायकेने मुखवाका। पुरु यह तरहका संख्र नर्धिकाः नाम्य वा पश्चितानः एक तरक्षी र्वय गामुद्धीः। - श्नाहर - श्याध-पु॰ देखनेमें सीवा पर अमकर्मे बहुत हुरिह मनुष्य ! –शुद्धी-सी॰ अपमातः। रद्धनेश्चे गीमुखंड आबारका बेगी जिसमें हान टाइन्सर जप करते हैं। पेंगे चरीको गोशुरराष्ट्रिन गुद्दा मिसम पंगा निकलती है। – सूच – व्यापका सूत्र। − सूत्रिका – सी जित्र कान्यका एक मेट्रा इस बाहारीको बेका एक गाँग जिससा रंग कानी किये हर फेका बीता है पीत मनिश शीतक-भीती ! ~ सूरा-पु॰ नीलगाव ! ~ सेव्~प् इस एस ! -मेन्द-पु॰ वोमेदा पढ विष काकीका अंगराम कगाना। -संघ-प्र बहियुगने किए निविद एक बेरिक बद्द विसमें गोवरिका विवास दे। -यास-पु वहनी देवनावी। ~र्ड्ड-पु॰ एक जरूपश्ची देशी शिर्मशर सापुर मंत्रपाटक। -रश-पु॰ गोरक्षण नारंभा थाला । - इक्टी-मो विभिन्न ।--० प्रेंब्-नी भोषुमा गोर्घ्म पुष्टा ।--० श्रेटमा--न्यो॰ शहर कतानियात । - तुँबी-गो॰ बुंमतुँबी । --बुक्या-रते व्यक्तावी !--सप्रक-पु गावनि रहा करनेवाला वीपानकः व्याना (--श्रविक्रा-दिक श्रीक गीरका करमेवाणी मीरकांदे किए स्वाहित (गुन्त) । -श्य-पु [हि॰] दे अपने I-श्य(म्)-शी+ ग्राददे शुरोमे बहा हुई पुलि । -१य-पु जारराम । -१म-इपा रही। महा। र्रात्यम्म । -श्मा-वि [[४] गावक दूरमें वना दुशा (न्या) ।-राटिका,-राटी-मा

सक्षिका द्वारण । —का काटे शामा-धरमें हरिद भी भी न रुपना परका मयानक शयना। -का श्ररीमा-करमा-सरपामास करमा । -का विस्तानि है प्रमाणा ।-का स घाटका-भी कार्डिश स दी:निक्रमा । का योग उदाना या सँशाक्षता-यरका कामकार देखना वर-वार मेमाकना। -का श्रेडिया:-का भेड़ी-परक गर भर जामनेवाका। -का सर्व,-का शेर-जो धरमें दी बहादरी दिशा सके गहेचार। -का शस्ता-भाशाम बाम ।- का बारमा सेमा--चल बेगा. शिवारना मरको बापस बाला। -की-परवाकी सी पत्नी। -की कोरी-अपने यहाँ पैदा होनेवाको औषः अपना भाका —की बात-वरका मामका। स्वत्रतासे संबंध रक्षतेवाली बाव: बरका भर । नकी गुर्गी-बरका कावक वट वेक्टर मारमी। पर्सा । -बर्न मुर्गी बाल वा साग बराबर-यरकी अन्छी चीत्रको मी कह सबी बोडी । -के-चर्ति, परवाला । —के घर—यर ¶ वरमें अहर हो अंहर ।—के मर रहमा−क्लिंग शह वा रोजगरमें न याटा धाना न मफा! −के ब्रास प्रदारमा−पर-पर फिरना थरक्या। - के छोग-कर्डशः गोन्थे । - चरका हो जाना-विवर विवर को बाना नार नार फिरमा। - पामर्से सवाना-बहुर्वे दालनाः राजा देना । −य अना-पर क्यित्तराः माध्य **बर्गाः** परश्ची नर्षाताः प्रविद्वानह*ब*रना । -- असता-गृहरथी और होता। -- प्रवता-पर तराह द्दीना । -तक पर्दू बना-भागनारा स्वामगाः मानदिन की मान्ना हैना: परा करना । -वेन्य छेना-नार-नार कुछ मॉगन माना, पाचे जाना । (किसीके)-धड़वा-स्ती वह दीकर जानाः भ्याष्टा जानाः। -धर शेशा भागा--दिना मेहनतके काम पूरा दी जाना। — कुँक समाचा केल्पना-वरको वरबाद कर, वरबी शीवश हुरावरः वर वेषकर मीत्र-चैत्र या भूमधान कर्ता । —क्रोबना-वरमे कुट बालमा अपना अपोना । -ध्य होमा-धनरंत वा भीशरमें दिशी मोहरे का मीडका दिनी गरमें क का शकना। -बसना-परदा अला: होगा। हरमे भीदा अना च्याह होना । -बमाला-वर्षी आवाद कराताः मारी करा देना ।-विशासना-परको विनादना वर्गारीकी मेर से जामा: बरमें १४ शासना।-बेबिशाग हा काना-१रेडा बर बाबा: धोर्द बामरेवा न रह जामा । ~बैदना~नाहर: नियमना देश कर देशा। म्यांत्रशासी दीना। मानरी छोत्र हेमा बर्रामे मदामदा वदः यामा (विमोक)-बेरमा-क्रियोद्धी पत्री या रहोती जनना १-वर्टी शादी-घर बैंद विकासको रोबो वैधम ।-अस्ता-पामा पन-वर्गे मरा होना। पर दी चन पाग्यसे मरला। चन चोहमाः मन्त क्षमा करवा ।-साँच भाँच करमा-एनेनमढ कारम बरका बरायमा श्यामा ।-में-प्रणी: मरवाणी ।-में बद्दमा-डोड रहरडे राज गाना !-में डासवा-रधे पे वमा केता ।-में पश्रमा-रे 'बर पश्रमा ।-सिरपर परा समा-भाग गीत कवन समामा !-स-वन्धी योक्षे ।-श्रमा-४६१८ वेडे रहना ।-शे गाँवनिकालमा-मुक्त संबोद्धका अधिकासक करमा अवन्यायाधीः वेदवा षी अभा ।—होना—गहरदी **क**तना !

बरबराना-ज कि 'पर-पर'की भारात्र निकटना, दर पराष्ट्र क्षांना । घरचराष्टरं~श्री॰ "पर-पर की आसाओ गु⁵में कहा देतीस **छाम हैनेमैं होनेबामी आबाब** । मरष्ट घरष्टक-पु॰ [मं] चर्दा जाता। परद्विका−छा• (सं] पर्धाः। बरणी-की बरजी। [मं] बार को शिमुद्धे वस बर हो । धरम-नी॰ एक वरहकी प्राप्ती भए। घरमद्वी-न्या दे 'घरनई । धरमास्ट-न्याः एक वर्षको नुराना तीच-न्द्रिमि बरमण और करमान, सुनुरमास जेवार्न --- (परावितः । चरनी-स॰ गढिया, वर्ण । घरसण्नतु देश 'वर्ष ।- क्रह-तु सूत्र । यश्वार - पु वे 'बहिवाक' । घरर घरर-५० रगधनेधे उत्पन्न होनशका शब्द ? घररमा-म कि रगप्रशामा भियमा। **परका परकाहा-द्र॰** शला वर्। वरीना । घरसार-पुर १ विग्या । घरा•∼पु दै 'नशा। बराक्र∽नियक्त बरेम्⊈। घराती-प (भ्वाहरी) फम्प्रासम्बद्ध भारती। सन्तरमा बाका बराती का तस्था । पराणा~त कुछ वंशा किया विद्यान्यकाके विर गर्छक मरिमा मरिवार!-तु है 'यहिनाः । घरिजी-सी॰ [म•] २० 'श्रह्यः । परिया−मो दे 'वरिवाः यरियाना!-ध कि: वरो तयाना, तद बरना । धरिवारी • - इ. भंदा बजाने राजा । चरी - ली॰ है॰ वर्षा : रोप्ता धरा। बहिया। तह होने श्ररीकार-च परीमर छन्।र। बहुआ बहुवर्श-य परका अल्या प्रदेश वर्ग क रमनेदा दिश्या । घर-वि परदा, ग्रायगी। धरेखा-१ देश धरन् । बराद्र-वि वरकाः वरमे संबर रमनेवरनाः राष्ट्री ! धरमार्ग-त घरका भारती रश्यम । रि घरका प^{र्}ी F EVERTE F परिता परिवा−पु शक्तेके निष्ट्रवय सा बनायो वि निर्देशिक मन्द्रामा वर । **धशमः–पुरु मरः** भरोधः । चर्षर-पु (स) यादा रही कार्ड दे सन्देश अन्तर गर्पराहर। यक्तत लगप राज्या अर्थर में अटर ने दें अया ह शास्त्रा प्रमुखा मुखीयी आया बरशा शाम परिचयः दशा महानी। वापरा गरी । यर्थे (क्र∽पुर्नि] या र श्रभ्शः बादरा नरी र शर्मरा-भी [4] ग्रह वी का पुरुत्तर बाबते। के दे गरेकी बंदी। गेलप एक गुराप्ती की रा धर्वेरिका-मी [म] शुरू । शायक बच्च माना । शर्वतिस−त [भ]न्त्रमध्ये वेश्युरोध्या सन्दर

पर्वासीको गोटीका धन सानोंने फिरकर छठ जाना। काम बननाः साम होना । गोठ-पु गोप्र गोझालाः गोप्री शक्तः गोप्रीः छैर-सपास ।

गोरा∗−५ सकार। गोदिकां -वि मोबरा।

गोड-५० [सं•] मसिल मानि ।

गोक् ने पुराव, पेर ।-गाव-पु० वह रस्सी को पिछावी-बाकी रस्तीके साथ लगाकर बोड़के पिछके पैरॉमें फैसाबी बातो है। - बॉस - की फिली प्रमुक्ते पॉनमें बॉपनेकी रस्ता । मु॰ -भरना-पाँचमें महावर क्याना । -स्वतना

-पार्वे सुना । गोबहरा -५० गॉवका चीकीदार ।

गोदमा-स कि मिट्टीको नत्म और मुरभुरी बरमेके निय कुराक बादिसे खोदना, दोइना; सोदना ।

गोदशाना-ध कि॰ नीवना का मे॰ । गोद्यां – पु वारवार्रं मान्धिः वाषाः बोहियाः वाला । गोबाई-खो॰ गोवनको किया। गोदनेकी सबदुरी। गोद्याना-स॰ कि 'नोदना का मे॰। गांदापाईं†−सी वार-वार जाना-जाना।

गोदिया - ला छोटा पैरा छोटा पाषा । 🖟 अधिः मिणाने बाकर ह

गोदी-त्यो॰ वक्टे लादिके पैरको जलीः फाक्टा, शासिः †पाँव । ञु॰ −समना −सगना−प्रवस्ता सफ्क होना।

−हायसे कान(−58 प्राप्ति न दोना । गोमी-खी [सं•] गीनी; दी सुप्रद्री मापः चीवण । गोत−द वैद्य योजः समुदादै 'योत'।

शोत−५ [म॰] नष्ठ, देहोत्री सूर्व्धाः। गोत्रम-पुर्मि] एक गोत्रमवर्गक ऋषिः अवस्थाकै पतिः स्वावधालंके प्रवर्तक गीतम सनि ।- प्रय-प्र सतानंद । -स्तोम-दु• दानधीक धंवानको काममासे किया आने

वाला एक बद्धा एक स्टूब ।

गीतसी – लो॰ [धं] वहस्या। ग्रांखा−ड [म] पानीमें इतमा अवकी ।-न्तीर-वि

पु अबसे कगानेवाका कृष्मि गिरो दुई ची वेनिकाकनेवाका। -- सार-पु॰ समुद्रभे सीप, मोदी आदि निकासनेशसा पनदुष्याः परदुष्या मौद्या। नि॰ होनातीर्। ग्र॰-स्वामा-क्षमाः भीरमं सामा ।-देमा-दुक्धे देना द्वरोताः भोसा देशा !- सारमा-इनक्षे क्यालाः लागा करना भुरद्रेमे गैरहाविर हो जाना ।

र्गोतिया गोती-वि॰ भफ्ने गोत्रवाला, गोत्रत्र । गोतीत - विभाग की देशियाचा न दी (गी-

महोत्)।

गोध-पु॰ [त] कुक बंधा गोवधवर्गक माने हुए कवियो- मैतानव(परा) भाषि-पुरवदे नाममे प्राप्त वंदार्गणाः समूद संपाद्यासमा हेत्र(राखाः शतः वातः नीहः। क्यों(मुं),-कार -कारी(रिज)-रि , प्र त्रवर्षः।-क्रीका-सी कृष्यी ।-राममृ-पु सगीवके साथ निवाह या धरीर-विचा-ज-नि एक हैं। शांत्रसा गोर्छ। - पर-५ वंदर्वः - प्रवतक-वि थगानेवामा बीप्रदार ।-शिक्-पु रह ।-सुरार-भी

पार्वती !—स्टाळन~प्र॰ गचत नाममे संगोपन करना ! गोजा-की॰ [सं॰] पृथिषीः गार्नोका समृद्र । गोत्री(बिन)-वि॰ सिं॰] एक दी या अपने दी गोत्रमें

उत्पन्न, गोती । गोग्रीय-वि [सं॰] योजनाकाः (ममुक) गोत्रमें बत्पन

(गर्गगोत्रीय) । गोवंती हरताल-पु॰ सफेर हरताल ।

गोव-प्र• सि] मस्तिप्त भेगा । श्री • [हि] स्रोह पहस: ऑपक !--मर्हाँ-वि॰ गीर किया हुना, रचक। ~मसीनी-सी गोद शिवा बाता !~भरी-वि• स्पै• शक-वर्धेवाकी । शुक-का-पोर्ट्स खेकनेवाकाः छोटा (वचा) !—का यद्या—शिशु दूव-पीना वद्या।—हेशा— अपना कहता दशक दमानेके लिए इसरेको देना। ∽विठामा—गोद संजा दशक संना ।—वेठना—दशक बनना, योट किया जाना ।-सरमा-ग्राम अवसरीपर सीमान्यक्ती अभि भौकर्मे भारियस नादि बासनाः र्श्वाम द्वीना ।--ऐमा--दिशी करदेकी दत्तर बमाना । गोवसहरु गोवसहारी नहीं गोवस गोवसेवाली खी।

गोदना-ए कि युगाना पहाना। सभीके देना ठाना भारताः बंकुछ देनाः बन्ममें सुर्व भुमोक्टर भीर स्ट्राल्डमें जोकका पानी आदि भरकर शहरताके किए विशे प्रक आदि बनाना । पु - सुरै जुसकर बदनपर बनाई हुई विदा शारिः सेत गोवनेका श्रीनार ।

वीवनी-द्या गोरना गोरनेकी सुर्र। देखा समाजकी सुर्र । गोबा-पु॰ वद्र पीपक या पाकत्का पदा प्रकः नयी द्राकः। क्सी [शुं•] गोशावरी नदी।

गोदाम-प नाक, विशेषकर विजारती मान रगमेका रचाना । बरम ।

गोन्।परी∽ली [सं•] दक्षिण भारतको धक प्रवास सदी। गोदी! - सी॰ दे 'मोर ।

गोध-स्रागीरा

शोधा-व्या [वं] गोहः पतुष्के विश्वेद्ये वोर्धः वचते दे क्षिप बावी बलारेवर वीपनेका समझा पहिचानको माला। ~पत्रिका ~पद्री~सी. सूननी: इंसपरी !-स्कंच-<u>प</u>

विशमिदर । गाधि-पुर्मि•] एष्टारः पश्चिमः ।

गोभिका−स्पे [म्4] (एएस्पे। परिवासको मन्ता । गोभिकारमञ−५० [मं] एक चरवका गिरगिर ।

गोधुम-तु [मं•] गर्रे १-च्या-पु भारा १-सार-पु

ार्थका स**रा** ।

गोधेर−प सि । रखक व्यक्तिमायक ।

गोम−सी बनपर भनाव आि लावनेबा टीशों ऑस कारनेवाका थेका गांनी भारत असावद्ये पद्ध तीना जाद गीनने किय नाय कार किया में में पूर्व देशी हैं देशी मुझा है एक याम भी शाग बारानके काम भी आगी है।-राम्य:-

प्रभावका मस्युव्ह । शामरां−पुरक्षाा यो प्राभोद्र साने भार मराां

थमानदे काम भागा द । शीमा॰-स॰ कि (हपाना धापन कृत्या ।

शामिया-पु देश सारनेशना बार द्रोमेसमा दश्मी कृत

प्रारिया~धिया भाटिया~पु थाटवर वेडकर स्थामाविवासि दान सेनेवासा mure t बारी-मी॰ दी पहाड़ीके बीचनी जीनी जमीन, मैदासः हर्राः प्राप्ताः हानः सहस्रती वस्तुर्वे के वानेका बाधा-बात-पु॰ [मुं॰] थोर, भाषात प्रहार: वथ, दस्या: महिदाः गुनुनपुरु राजा जन्मतक्षत्रसे सातवी, धोक्टेबी या पत्री सर्ग मधनः । टक्टर । --कृषस्-पुः एकं मुन्ररोग । --तिकि−स्थै॰ बहुम विवि । →मक्षप्र-पु॰ बहुम सक्ष्य । -वार-पु शहास वार । —स्थास-पु वपश्यान । शात-सी॰ कार्यमिकिता अच्छा कासर साकः वीव-पेंचः छक, विधासमातः वाच लगानेका स्थानः पाठः चीर स्तीका । अ॰-पर चढनाः-में भागा-वयमें भागाः बांबरर चरमा । -में फिरना-ताक्रमें प्रथमा। -में मेठना-अञ्चयप नादि करनेके किए क्रिपक्र बैटना । --में रहना-दिसीके शिमाफ कोई काम करनेका मौका इंस्ते रहना । →स्त्रामा-अपना मौका मिळ्या। ~ हमामा~चार्यमें बैठन। साक्षमण शारिके व्यवसरकी सीव में रहना ! ~ (तें)कताना-चारु किसाना चारुगानी वरना । मासक-वि॰ [मं] यान करनेवाला। क्राण करमेवाला श्रुत्यारा; श्रानिकृत् । मु यान करनवाका व्यक्तिः वद वी मुक्तान प्रदेशने । भारतम-वि [सं•] एव करनेवाना । त॰ मारामा वर्ष ब्दला । ~स्यान-पुरु वधश्यान । भातकी~नि दे भारत । चाला-प• वह चीत्र को बाहराही शीक का विनशी के कश ही जाय, मान । धारि-ली॰ [हं] बापात भोड़ क्यमा पश्चिमें। देंशाना या मारनाः चित्रिया पँठानेका जाल । चातिया−दि० दे० धलः। शासी-वि पातमें स्वतेवासा एसी, विभागाणी ह धाली(सिन्)-दि (र्ध) थान करतेवाच्या नाडाक । धानक-वि [मं] यानक विशा शिखात वानिकारक! चास्त-थि [सं] गान करने वीगन, नम्य। शाम-प्र यनना अनाम मितना एक बार पेसनक किन **च**रीमें हाना प्राप्ता प्रदता सम्बन मिनमा यक बार कीरह में हाला मापः वनमा चीन नितमी एक गर आर्मे भूमी न काहमे छामी अथा भागान चार। धाला - त कि गारमा गर करमा परम्मा । प्र महारा सद । धानी-सा॰ यामा ६९। -का सवारी-मानसंबरी स्क पास-पुरु पूर्व । - निधि र-प्र सर्वे । यासद -(र मुर्गा भागको। भूगका सुताबा हुमा (बर्गू) । साच≠−मु है भाव । पायकग्नि नाग्र करनशाणाः ।

मायक-वि नी भीर राजि हा बहुनी श्वपुष्ट, बाहरा।

चार~पु [d+] [तक्षम कत्मी वर बरमा ११ म्यो॰ प्र'नी

के बदावार बना हुआ ग्रहता है

भागी -सी सरक, गांग, गांठ। बास-पुरु आहफरी तीन या गिनती है बार दी बानेसारी चीत्र, प्रमुधा । सुरु -म शिनवा-५७ म सब्द्रना (घासक-वि मार्नेशका, माश्च करनेशका । भा**सकता**∽न्धं * विनासक्रिया । घालमा-स॰ कि॰ मारा बरना। निगायनाः, चेंद्रसा। महार करमा, मारना चनाना-भावति सुरी ग्रेमध्रे वानी -ग्रुः (इवियार) वालना रामा-'इएई पालन वाहि मध्यवर -रामाणः बरना । षान्यभक्त-दि॰ गटु महु रान्त मन्त (दरना, दीता)। याका†-पु॰ दे 'वाल' । घालिकाः बासिनी-भीः माद्य वर्रोशांनी वर्तनो । प्राच−तु बोर, वापातः तत्र धन । मु॰ ~सामा-अस्त दाना । -- दमा--दुग्छ देशा । -- पर ममङ छिददमा--**द**्धान्द्री हान्त्वमें ६४ हेना । -पूजनात-शरमा-पत्ता मर्देहर सता बामा । व्यवरिदाण−पु वर्ष€ पाक्कारलाव वरमेशान्य । बाम-भी पक शरहका रेशमी क्षप्ता शक्ति शामि लगाने वासेशन क्योंके उन्हों। [सं] गाय क्यार्य: मैधरू में बनमेशाना इवध्र वातिका भारतवेश्वर रक्ष पारा, गुण। -<u>प्रदेश-स्थान-प्रश्नारायाः । -प्रद-प्रत्याप्तः।</u> -पाल,-कुम-पु (दि) गार-पत्तवारा कृता-बरध्य। स॰ ~कारनाः~स्थादनाः~छीलना-धरधः काम करवार । --पान्या-पान्यम प्रानाः धीर क्रोपीया परिवय देशा। षामकेटी−4ि निश्दः विकामाः ५१। धसी*−मो॰ पन्न । माष्ट्रण-१८ देश चाहे । विश्व विश्वी-प्र वा विभावा-९ यो स्वनदा निहोस बार । विषा-पु वै भिया । विक्यी-की जरिष भवद दाव्य श्रेष्टे वाच्या शर्फ आबाब म निवल्ना। रोनशीत मॉनवा रवन सपदा विवयी (देवता) । विविधासाना कि होते हुए दिनारी करण नि विद्यास । विविध-सा॰ वीरी शन्दर्वे अधिक नीजी आधीन्त्रस्थ यमा हो जाना: भीषः भगन्य बन्धाः भागा पीरा । वि बिना- नृत्याः अभ्यषः, गियदियः (निशावर) । विचिविकामा-म कि भागा प्राप्त करना निर्दिशाना । पिन-भी ४७ मध्याः धिमाना-अ कि प्रशासरना। विमाधमा-वि है। विवेदा । विजीवा-रिक जिल्लामा प्रतिका विक्री-को है विश्वाद रिकेट विवा-पुदे थे। विवाहा-मु थी वस का विहोश बरतन प्रणात ! विया-१ कर: कार्या ननुष्ये । - कश-त कर्युक्ता -सरोहें -मुरहें -मारह -तारी-क वह केर क्लिके चम श्रंब होते बाय भार है. नेतृत्री साह भार

शोलंबाळ-प॰ गीठा चलानेबाङा सीपनी । शोर्षत्रासी-सी॰ गोर्बशस्य धाम ।

सोएंबर-प्र गंबर: गंबर बीती गोल पठी वर्ष कोई चीता

कारिया वागर्म वना क्या ग्रोक स्वतरा ! गोळ-ए [सं] संदूषा गांबकार पिट बच विश्ववादा अरबात पुत्रः मेनएकः भरतीका मेन्क या बीकाः आकाश मेश्का गोस्बंधा पर नामक बोपका मिडीका गीस घटा । --पंद्र-पु वह बंध विसते अब तक्षत्रीको गति विवति भारि जानी जा सकती है। -सोग-प॰ स्वोतिकटा एक बीमा एक राशिमें ६ दा क महीका पक्ष की बामा: गांतमाक ! -विद्या-नी क्योतिर्विधाका श्रीम विद्येश परतीका आकार विख्तार, गति मादि मानभेकी विथि । गोस-वि योका इसकार हिगना और मीटा अस्पत । ~कस्मर−प वरतनपर सकाशी वरनेये काम बानेवाली एक तरहादी छनी । -काळी-ची यह तरहादा बीगर । ~शच्या-प धरी, वह प्रकी हुई बराये पूरी विशे परबंध तरह याते हैं। ~सीछ-वि॰ गीलाः भरपत्त । -वंशा-प मंत्र बता। -मटोछ-विश् विससे कार्र साय अर्थ म तिक्ते अस्प्ह) -माछ-प० गडबर.

काका ! - किसें-मी काडी मिर्च । - सेस साम्ब्रॉस-क्षा सर्वेद्धा-सम्बेदन, ऐसा सम्बेदन जिसमें सभी फ्योंन्ड भोत एक शास कैराइट विकार करें । गोळ-पश्दे चौडः 'गोहा'का समासगढ कम !-चळा-

प्रश्न योजीयात्र । गोस-५० [भ] प्रश्नात आदिते केवने वह त्यान वहाँ गेंद्र फर्रेयनमे पद्ध-विरोक्धे और होती है। इस तरह दर्ष कीत (बरसा शीला) । -कीचर-प वीलकी रक्षापर

नियक्त रिकाश । शास-प॰ (पा॰) मंदनी श्रंटा भीर । श॰ -बॉयना-भीष लगाना ।

गोसक-पु नद्द संदक् क्रिप्तनें कार्यविशेषके किए धन मक्त किया आया हैसे तरह देवता हुआ बेना श्रीका [सं॰] बीक पिंदा गीकी। माठका गेर गरका। विश्वाका पारव तमा औररका देखा। यहा कई महीका दोगा गुरा रोडोड ।

गासा~सी [सं] गीनी। मरब्द्री। सहेती। द्याः गीरावरी मदी: वर्षोद्ध सेमनेषा बाइबा गेंगः मेन्छः स्थादीः मैम-सिक। वि• [दि] गीलाईवाला बृत्ताकार । पु शील प्रवादार वरत वा विंदा कादेकी वनी गीली जिले वीवमें भरवर दागते है। मारियलका साबित नगता दस्ती मारिश्वे पिटी: पारे दिराने आदिका बाजार जी किसी रहात-दे में र हो। मीम शहतीर, महा। पासुदा गुहा। बाबुगोठा रीगः अंतनी बॉम को भीतरभ पासा नहीं होता। र्थनणे बर्गरा परः तरहका नेत ।-ई-श्री गोलास्त । -पार्-वि॰ मृतकपार्। -बारूद्र-शी गुला और बाहर: प्रकामधी ।

गोलाबार गोलाकृति-वि॰ [तुं] गोला विश्वहार । गोनाध्याय-तु [मे॰]भास्टराचार्थ कृत एक वरोतित श्रंव। गोकार-इ [त] प्रशंका भाषा भाग ना प्रति पूमर भूरदर रेता सामनेने की ।

गोळास-प॰ सि॰ो दशक, क्रम्समत्ता ! गोस्तसन-प भि पिक वरहकी होता मोदिकारमा अपन कि भोज काकारका बनाताः सोज क्षीकरा । गोळी-सी छोटा गोखाः मिडी, स्वेंच बारिका बना होटा गीला बिसरी सटके रोक्ने हैं। गोकीका धीका सीम या खोबेका छोटा गोका क्रिसे बंदक, तमंत्रेमें मरकर छोड़ते हैं। शोलीके क्यांने बलाती नहें हवा, बरी शोश प्रशा वहाओंका एक शेवर सहस्रको गोठी । स॰-सामा-वंदक-की गोडीसे भावड होना, गोलीकी कोट सहना !- चलमा च्चरकार वोक्रीका चलावा शासाः पेर किया वासा। -आहमा-बोडोसे वायक करनाः खेळापर्वक रवाग हेमाः

उद्धरा देना । गोस्रीय-दि छि॰] गोष-संबंधी । गौर्सिंडा! –प॰ महस्ता फल, बोर्डेडा १ सीक्क-पर कि ो क्षेत्र कीर गेंडमे क्षेत्रा पाप्तिवासा एक भंगेता रोज । गो**डमा॰**—स॰ डिट रिपाबा दस्ता । गोवर्षेत्र-व दिनो देन भी में।

गोविंडसिंड-प् दे भी में। गोश~प॰ द्वार्श दात । ~वेच~प॰ दानपे पहततेस यह गहना । -आस्ट्र-य॰ पन्तरीमें क्रमी मोतियोंकी कड़ी को कामके पास शकतो रहतो है ।−माम −मास्ती− सी कात सकता एवडता क्षत्रेडी ताइन I **≔मादी**— सी॰ सीय । -बारा-प्रवासा कुंग्का वहा मीतीर पा होक्स कलावत्तरे बना बन्ना संकल बलगी। जोड सीमानः विसारका समासा। रक्षिस्टर आदिके धानीका घोषेकः व्य पेश्वा गोंट । म्र -यज्ञार काला-सनाना ।-होना -शनना काममे पहमा । योदास~प की सम मासऊ पहा

गोदा(-त॰ कि) कीमा कीमा दिया। एकाँव स्थानः क्रमानयी मोका -ए तबहाई-मी पश्चेत स्थात। ~य~दिख~य दिल शरपद्मे स्पेमा!~सर्घी~दि पद्मीवरासी संसारत्याची ।-नशीमी-त्यी एवांतवास । गोस्त-प (फा॰) मंस्, साठन, बहुम गुहा ।-। खार-वि गोरत साजेवाना मांग्राहारी।

गाष्ट्रागार~प [मे॰] सभागद । गोप्तर-प [म•] वे धोपर । गाम-3 [सं•] भेरा प्राप्त कता होतान । गोसमाबछ-ब रै॰ भारतमहरू । गोसा~प इ.स. प्रपतः। गार्मा 🗝 समुद्रगामिनी मीदा ।

शोह-नी टिएरानीकी वाविदा एक प्रदर्शना जेन वा बाद्यारचे नेवने ६ बरावर द्वाना है। शोहम~पु [थे] दक्षमाः रिपामाः । धेग साथः संग लगा रहनेवाचा हराम शाब रहनेवाचा ।

शोहर-पु शिमगीयहा । गोद्दरा-पु वक्ता।

गाहराना = - ए कि. अ कि भारात्र रेना। विज्ञाताः पुरारमा ।

पुटरः-पुरुपुरुार्य सुरस्∙ घुटुरू•~**द•** गुरना । पुरवाना-स॰ कि॰ पिसवानाः स्ववनानाः निर मुँगाना । प्रटाई−सी॰ धीरनेदी किया या भाषा घीटनेदी छत्ररह । भुदाना-स कि॰ 'बेरिने का में॰ । मुद्दी -- सी॰ दे॰ 'मुद्दा'; चूँट। घुटुरुअन पुरुदन भुटुरुवनश—अ पुरनीक्षेत्रस (बसना) ३ भुष्टी-स्था॰ सरबात विद्युको पिछानी जानेवाटी एक रपक पाक्क दवा । मुरु -में पद्मा-स्वमादक दीनाः रामीर, बनाबरमें द्वीमा । सुक्−'बीइ:का समासमें व्यवहृत रूप ! -खड़ा∽वि० भारतवार । पुरु गोरसवारीका यक स्वीत । -चही-कौर म्बाहरो एक रीति वरका योहेनर चहकर वनके यर गामाः देशती या छोटे मीठे शाशास्त्रे रहमवाली बेप्या जी प्रावा मार्डेड रिनीमें पें।इपर स्वबंद गांव-गांव युमवर भावती गाडी इ गुरुमान ! -हीड़-सी भोरीकी बीड़ा बोरीकी यह दौर भी अर्त का बाजी बरकर 🛍 बाबर चोहरीहता. मैदाना वह नाव बिसका माम्याग यो 🗯 सुँच जैसा 💵 वर्षोक्य दौर, रहन-कृद । अ वर्षा तेबीरी । -बास्र-स्तो॰ में। इपर बोबी आनेवाली दशक्ष तीय । -बद्दस-प्र -प्रदुक्ता-स्ती वह रव जिलमें भार मोन वार्वे र -सबसी-ली॰ भूर रंगकी बढ़ी अवनी भी वीहोंसी बाउटी है। -शुद्धा-दि॰ जिसका श्रेह गोवेडे जैगा अधिक वंदा हो। पुरुष क्षम्पन जाति विसका सुँद वीरका और शेष हारीर मनुध्यका माना जाना है किन्छ। -सबार-पु अवारीहो !-सार-मी दे॰ 'बुरसास I ~सा**छ~धी॰ अ**स्तरक, अयदाता । धुक्कमा – स । हिः थमको हे स्वरमें श्रीरमा, श्रप्रकर बीकना । मुंद्रकी - खी॰ पुरुषमेकी किया या माना नमकी गरी गाँउ र भूबस्थ-पु॰ छोडा भोता बोईको शक्तका भोती स्तादिका बिजीना । सुद्धिया – स्रो॰ दे॰ 'वीरिया'। मु बुक्ता-म॰ क्रि॰ दे॰ 'पुरदमा' । श्चम−प्र (से] पुत्र ।-सिपि-मी• है 'पुगस्त्र । भागका विना प्रयमने संनीगरशाद ही माना !

मुणाक्तर-प [मं] प्रनोत्ते रात्मेश एकशीम का शामकत चारतेमे पुरतक्षमे बनी श्रुरे ककोर । --ज्याय-पुर दिनी चुन-पु भनार कदशे वादिमें कनशका घढ धीय क्षेत्रा । सुरु –सदमा–प्रम समी पुर्व सदमोके भूरका छत-सन्दर् (तरबा । –सगमा–अनाव वा करतेये प्रमुखा सामार देश होता अपना भी भीतर भीतर देशकी सा जाप वस्तुकी भीर कीर मह वर काले ह पुनपुना-५ कद्दा रेज भारिका वया और दिवासैये बजनवास एक शिक्षाना । सुमना-अर दि बद्दी अनाव अपीकी पुत्र समना, पुन क्षारा राजा जाना । पुका-दि पुष्पा, भवने बनके मानोकी शुम रसानेशका । युवी-रि भी नवस्त्रे मनदा भाव गुग्न रमनेवणी (मी) । M qual प्रयानि गररा बीर दिस घामका बबीग अनेगानुब मुक्तपुन्तारय-पु [तंन] वक शरहका वर् १३

म्बर्ड ही होता है।।

सुर्मेषुमा=-भ= क्रि= देव 'ग्रुमहना'। भुमक्क - वि॰ बहुत सूमनेवाला भैर सरादेवा शीकान। शुमदा-पु॰ शिरका वहर । श्रमकृतारूम॰ दि॰ वादकीया १५८ प्रथान अप्तर जना हाना, छामा । भुसदामार--भ• कि दै॰ 'पुमहचा' । चुमकी−न्री॰ सिरका वहर ग्रामा। वहर; शरेकमा । श्चमनती-विश्वमृत्रनेताना प्रमहरू। भुमनीरं-विश्वां वृमनेवन्त्री (देशा समाध्रमे ध्यवरप-'भरपुमनी जिलापुमनी')। स्ती प्रशुक्षेत्रा यह छैल भुमरना-म॰ जि॰ है ⁴पुमरना ; यरपहाना,नदुन भोरने धनमा (मुमरामा - अ॰ कि॰ द 'पमरमा । भुमतीर्ग – स्था॰ है 'तुमहो । बाजीका भेरता बहाजेंका एड रोग पुत्रवी। पुताना/-छ॰ कि किरामा चकर देश। मीश्ना देश्या । प्रमाच-त प्रथमे प्रमानेश भाग पहर नेशा उत्तरी जमीम जिन्ही एक भोड़ी वल विकारने जीन मध्य दलने का भीत ।--कार-वि वेचशाद चहरशार । प्रमारमा −भ कि॰ दे॰ 'पुनरमा । पुर-पुर का समासगतस्य । -विना -वि• प्रापर विदे इर दामे भूजनेशाला। धनामें परी दुई हुई।कृषे क्षेत्रे वक्ट्री कार्यवामा । ∽विनित्ता~ली पुरवर पंकेट्रप वाने या सबक-प्रकाम पत्त हुछ सूरी भीते हेवडूी बरमा है प्रस्कार-स• क्रि दे॰ 'प्रस्का' ≀ पुरका−षु श्रीशाबीका वक रीग । पुर-पुर-पु॰ रनेमें कल्पंचन होतेपर संस केनेमें निवयी वानी कावायां विशेष शांधर सादिके गणेले. निक्रणीय की प्रस्मुशा – वु शकेमें होनेवाला एक तरहरा बीवा पंजपना। प्ररच्यामा-भ+ कि गनेशे 'बुर-पुर' भागाव निकालमा। मुरपुराहर-शे। 'पुर पुर' काबाब निकाननेत्रे किया वा नार । पुरुष-पु (सं) यह विधेष प्रधारक्षा घण 'पुरुनी' धुरमा॰-अ हि नश्मा-'पुरन निगान स्'न मस **इ**टि भरि क्रोड़ा सहबारें -यह । देव 'पुलना । शुरामा-म हिंद छाना घर भाना ह यहिका-स्टोर [६] ससीत । यूरी-भी [मं] गुत्ररवा म्थन । मुद्दरी पुरदूरी-की अंगलके रीरिट मण्डेने बना देव शस्ता भाउरी । मुर्थर-पु (ते] 'पुर पुर की मानाना बमकी र श्चीरक-प्रः पुष्रिश-१९० (त) याता मा वन Sal Med 1 युनिय-दि दे 'दृष्टिय । बुरवा-पुर बहुको १६ देव ।

daga-A [4] Ce atta uplati

वाज-प्रश्मेषा चकानेवाका दोएची। दाशी-सौ॰ गोसंदाबका काम ।

बर-पु शुक्त गुक्त बैधी गोल छठी हुई कोई भीव;

क्षित्रः शागर्मे बना द्वथा गोस्न व्यवहरा। -पु• [ti] मंदसः गाणकार विद्यः वृत्तः विश्वनाका (बार पुत्र मैनफूनः भरदीका मेन्ड या गोडाः काकाश्च क; गीकर्नत्र; भूर मामक औषणि मिट्टोका गोछ धड़ा । र्वत्र~प **क्ट र्यत्र जिससे ध्रह सक्षत्रोंको ग**वि∌ स्थिति दि बानी या सदती है। — भोग – पु च्योतियका भोग, एक राहिमें ६ वा **७ झड़ोंका** यक्कम को जाना। इमाइ । ∼विद्या∸र्ता पदोतिर्विद्यासा अंग-विधेवः तीका माकार, दिखाए, गति भादि वानमेकी दिशि । r~ वियोज्ञा, कृत्तकारः क्रियना और मोटा *करप*ट। करम~५० बरतगरर नकाशी बरतेमें काम आनेवाकी । तरहर्य ऐनी। ≕क्सी~की यह तरहर्या अंगर। गप्या-पु॰ धोरी, नृत फूली हुई करारी पूरी विसे

दभै तरह साते हैं। −गोक−दि गोका वस्त्रह। पैदा~५ सेटा बता। ~सरोक्ट~वि विष्ठते कोई फ भर्ग न निक्को, अस्पद्द ! —सास्र-पु॰ गवपद, का। −मिच−नो काबी मिर्च । −सेस कार्र्सस~ े प्रविद्यासम्मलन पंता सम्मेकन किसमें समी प्रकृति

त एक साथ बैठकर निचार करें।

ह−पु•दे• 'दोल'। 'गोला क्रा समासगन स्त्र ।—चक्का~ गार्कदा छ ।

क~पु॰ [अं] पुरसाक जाति के केकमें वह त्थान जहाँ र चौषमेस पर-विशेषको बीत वाती है। वस तरह उर्दे वि (६१ना, दोना) । -व्हीपर-पु गोलको रक्षापर नुष विकाश ।

ष−६ [फा] मंदरी, संद्राभी ह । सु ∽वाँधना−

पेष क्याना ।

केक∽इ वह संबुद्ध क्रिसमें कार्यविक्षेत्रके किए धन का दिया पांका हम तरह दक्का हुना बना गुंकरा ^{हे}ं नीक पिंदा गोकी। काटका गेंदा मटका। विश्वनाकः गरम प्रभा भौदाका टेला। इता कई अहाँका नीगा ग्रहा

ोकाइ ।

का चो [सं॰] गोनीः सदकीः सहेकीः दुगाः गोटावरी न्दी। वर्षोच्ड रोम्पन्स्य कारुका गेंदा मंग्छ। रवादी। मैन मेत। वि [दि] मीनार्रवाका कुलाकार। यु गील शिकार वस्तु या पिटा कोट्रेकी वनी नीली जिस गेवमें मरकर दागते हैं। नारियरूका सावित मण्या रस्सी महिद्या विभी। यसे किराम भाविका वाकार को किसी रहाने इ. धेरर हो। मीक सकतीर वटा । पासका गहा। बायुरीका होगा अंगली बॉस जो मीतरने पाँका नहीं होता: नेनडी बब्तरा एक तरहका नेत !-ई-दी गोलापन ! -बार-दि मुसबबार। -सारु-द्-मी गीला आर बक्दः हुद्रतामग्री।

लिकार गासामृति-वि [मं] गीमा विनकार । कारपाय-इ [र्व]भास्त्रराचार्यकृत एक स्थातिकर्जाक। मनार्-प [सं]पृथ्नीया भाषा मान जो पद्रशर्द्सरे भरतह रेगा गौबनेने बन ।

गोष्टास-पु [सं] छत्रक कुकुरमुचा । गोस्मसन-प [एं॰] एक तरहाई तोप ।

गोस्टियामा!~स॰ कि॰ गोक बाकारका बनानाः गोस बॉपता ।

गोस्त्री-सी छोटा गोखाः मिटीः श्रीप भारिका पना छोटा गीरू। विससे कड़के दोक्ते हैं। गोलोका खेका सीसे वा ओदेका होटा गोला बिले बंदक, दर्मचेमें भरकर-छोएते के भोकीके रूपमें बनायी हुई दबा, बदी; छोटा पड़ा पश्चभीका एक रोगः भरककी गोली । स् -- साना-बंदक की गोडीसे बावह होना गोड़ोडी बोट सहसा !- चलना ─बंदकसे गोळीका चलाया जाना, फैर किया जाना। -मारन(-वीलीसे शावल करना। वरेशापूर्वक त्याग देना, ठकरा देना ।

गोखीय-वि सिंशी गोक-संबंधी ।

गीर्खेदा -पु॰ महस्रहा एक, काईदा । गोक्फ-प॰ अं े टंडे और गेंडसे सेला वानेवासा एक शंग्रेजी सेक ।

गोबना - प कि छियानाः दक्षना ।

गोवर्षम-पु [सं] दे • 'गो'से । गोविवसिंह-पुहै भी में।

गोल-पु॰ [पा] कान। -पैच-पु॰ कानमें पहननेका यदः गद्दना । - मायख-प पग्रीमें रूमी मोतियों धी कड़ी को कालके पास श्करों रहती है। - माल ~ माछी -खी॰ कान सकना अमेठना करीठी। वाइन ! - माडी-खी॰ सीप । --बारा-पु बाका, कुंडक बड़ा मीती; पग दोका रूठावच्छे दुना हुना शंबरः क्रमगीः बोहः मौनानः हिसारका सुकासा। रविस्टर कारिके सामीका द्वीर्वक एक पेरका गाँद । 🌃 -गुज़ार करमा-गुनामा ।-होना

-श्रनना कानमें पहना। गोवास-प्रकासम नामक पेक

गोशा-पु (का) क्षेमा क्षेमा शिवा रिवाः एकवि स्थाना कमानकी मोक। -- प्रतनहाई -- स्रो प्रश्रीत स्थान। -व-विख-प दिन, हर्यका धीना। नन्नी-नि पद्धांतवासीः संसारत्याची ।-बद्दानी-नी व्यक्तिवास । गोश्त-प [का] मांस सासम बहमः गृदा ।- स्वार-नीरत गानेवाका मांसादारी।

शोद्यागार-प [सं] समाग्रह। गोप्पद-प [००] दे 'गोपर । गोस-पु [ग•] भीर धाप्य बतुः स्रोशम । गोममाधस-पु दै॰ गोरामाधस'।

गोमा-पुश्रुश उपना।

शोसी! न्या एक समुद्रगायिनी गीफा ! गोह-सी दिवसमाद्ये बातिका एक उदरीका भंत जा आबारमें नेवन्दे भरावर बाता है।

गोइन-प [सं] बहनाः शिषानाः र्ग मंग साथः संग स्या रहनेरासा दरश्य शाथ रहनेराना ।

शोहर-१ विमुगीपरा। गोहरा⊸पु ४५ना।

शोहराना = - स• कि अ कि अवात रेनाः विन्हानाः पदारना ।

सी पीक्षं बारा। एक पुरावसीन सही !-च-[4 थी पीनंबाइ। पुर कामक जिल्ला !-चण-त्यांक--पुर काम !-च्य-, पूणक न्यां-पु णक मिठाएँ, पेक्ष !-मसीक,-चोनि-पुक मील !-ममइ-पुक प्रमद शैनहा एक पर !-मोइ-पुक थी उचानेने निक सनसम्म मैन !-मोइ-प्ने सारमाची कौशाहित्र ! -छन्नी-प्ने साहस्य हिम्माचा !

पृतासः-वि [श्रं•] यो प्यवहा हवा। गृतापी-स्रा [मं] एक अध्यस्य स्वा । प्रतास−पु• [तं] प्रतपुक्त अक्ष अधिन । पृताचि(स)-१ [सं]कान। प्रताहरम-प्र• (चं) जरिन। धनाहति-सा० मि०ो पीकी मारति । पूर्ता(तिन्)-दि॰ [मैं] एतमुक्त जिसमें यो हो। प्रसी-मी [मं] एक बीका तैसवाविका । पृतोर्क-पु[नं•] पंत्री हच्या । पृतीव-प [धं] मीदा समुद्र (व+)। ग्रष्ट−वि शि•ो विसादभा। प्रशि~सी [मं] पर्वत शिलारै। स्वकां । प्र श्वरत्। गृही−स्रो• मि ी शस्तो । पृष्टिन्दा-मी [मं] भूरिनप्ती। गृरिय-त [मं] गृहर । र्थेष पेपा-प दे 'पेपा'।

विदा-चु सुव्यत्वात्रभा। पेदा-चु गरेदा तह रीत नवसंत। पेदिची-सो दे "यो भी। पेद-चु० पेता पत्रमा। पेट्स केबेकी दिवा। न्याय-चु० पेरता स्वत औरमे बसना, वहा दोना (वादमेस्ट पेरतारो) स्पर्धियोग्दे किए अञ्चल विनय व्यति सामा।

-त्रार-वि० वरे घेरेवाणा श्रीका । घेरना-धः दि० आरेटिन बरनाः नगरीत बरनाः शेवनाः चेन्ना। राजनाः निर्मा कामके निष विमीके वर्षाः वार-वार चानाः बरानाः (दीरो) धरत बरनाः ।

घरा—पुरिनारः पैकाकः परिविका मानः धरनेवाणः भीत्र बीकार् मा िरा हुमा श्वामः स्वरीपः। घराहे—सी दें 'सार्वः

चराय−५ > पंशाव ।

भैवर-इंग्डेगा चीजो≼ बोयमे वनी हुई व्यक्तिहाई ह सिंहा-पुदेधिता ।

घटा-तु व प्रार्धिया-तु व्यक्ति पारः साधाः यूपके प्रया-त्यां वन्यां निकर्ता प्रश्चे व्यक्ति वादः साधाः यूपके चित्रं प्रश्चित्रं स्व स्टब्स्स सक्त्यत्य युव्य क्टनेया कामाः

र्यर पेद+-५ वडमागीः सुग्गीः र्थना!-५ वज्ञ क्रमा

भारा - वि वायम, श्राहत-"वृश्य स्य मशरवे पेहा"-

ध्य । सीध-पु [4] हे जानका केन्स्र कर कि निश्चा पीम-पु द्राधी प्राप्ति एक बीत दण्डा द्रश्च क्या सेम्स्र किनी बान प्रभा है कि नुर्ध केन्स्य भीक्ता निग्मदा-दर्धन-दि सहसूर्या र्धोबना-9 वह के फिल्मे होय नोनेश कर कुते हो। धींबा-90 बीर, गुरस्ता के 'पीवस'। धींबी-सी० वह याप किछडे सीन मोनेश कर हुने ही। धींबुजा०-90 के 'नीसप्ता।

घोटमा~स क्रि॰ पूँटमाः गरकः इम तरह रक्ता कि सींस रक माया हत्यस बहताः रमहताः, सैमनाः शताः गृह पामा ।

घोटा, घोटी-चो॰ [सं॰] एक श्वर रेतः श्वरकशेरिक तुपारीका वेह । घोपमा-संश्वरिक घोटना, गुण्डेहमा बन्दो निकार्य कारा

र्वीसन्त्र-पु॰ कृशारिकर तुलाक्ष्ति वना कृता करीहै -रहनेका स्थान चीड़ सीता। चोंसुझाण-पु॰ है 'विस्तिता।

घोरमा-स॰ कि॰ वाद करने के जिस बार-बार पाना, सन्। धानकाना धानामा-स॰ कि 'शीनमा'का वे॰ । घोषा-इ पक टोन खीन। धार्षा-सि॰ दे॰ 'शुरुषी । घोटा-इ नि॰ के 'शुरुष'।

घोटक-तु [मंग] व भारतः । घोटक-तु [मंग] बीचा ।- सुरप-तु रिवरीन्द्र यद धर। घोटकारि-पुण [सं] धना । बोटकार-स किंग रागस्य वारीक सामा (स्टेंग) स्वास्त

बोटमा - स कि रागुक्त वारीक बर्जा (ब्रॉब) रहाइर विकास करना (तस्त्री कागत्र शर्वारी)। इत बर्जार्म्स्य (क्रम)। बच्चाम बर्जार वीरजा। वुन वीरलेक भावार र बीडावी - सी वीन्तर दोशा शीवार।

वाह्यानाच्या चित्रक होता हरामा। बाह्यानाच्या दिन गोतन्त्री हिन्दा बरामा। बाह्यानाच्या वाह्यानाच्या भोतन्त्रा भोतापुदा इन बम्पतीला बराहा बहुमोरी दवा आहि विकास संस्था भोग संस्था बमहीला बरनेका एक श्रीवाह भूतेथ काम इंबाया।

यांताई-मी॰ पीटायी दिवा वा प्राय दीरनेटी एरएउ । योरामा-पु पक्ष, गोशतान, महदर् । याटिका यार्टी-भी [यंक] पी ।

योद्दां-वि पीरनेवालाः योदारं-द्र गींव गींवः

भोड़-'में। इं। का समाये व्यवदेश क्ष्य १- बहा-हि प्र देव पृष्ठपण । -चनी-मा दे प्रप्रती । -शीरण क्षी दे चुर्रीर । - गृहाँ-रि , दुर्ग दे 'इस्सा ' -वय-तु शुरायामी वयदा यह भार ना दीतेंसे निवास आता है। -सई-की के दा ग्रेस में धारानी विरुपाणी जानी है। नरामजन्य राधा नामा क्षेत्रविद्यालयः घर । -शेक्ष-पु पद महाद्रश्च वीचान्त्र न्दे बहुत तम बीतार है १ -मास-स्रोध है जिलान ! शाबार-पुटक भागवा त्री रात्त बता बादा है और करनी अधिकेत्रम् मात्रा दे अप ग्रांत बंहर, तुर्वदेश सामा किन देवान हे बंध दरणा है। होत(बंदा रेड्. अतरा^{त के क} छा बढ़े जी वे दौराहमें सरावा प्रामेशमा अबते अ^{स्त}रा शिका -कर्वत्र-पु ज्यासहस्य संग्रा-सामी-मीव बर ल्यी जिसने चेता था गाँउ ीत बार्व चलके गाँ द्रास्त्रे वर रिनेशको स्परी स्वीतर्शनमी एद्रवनीयीर ∽ब्रयुन्ती वर्षी अपनी कर भारणे किंग्रह

l۲۲ गौरवासन=प्र• [एं•] गौरवदा आसन, सम्माभित पर् । पौरविस-वि॰ [सं•] यौरवयुक्तः सम्मानयुक्तः। पौरोग-पु॰ [पं॰] चैतस्यदेश कृष्या विष्णु । वि॰ गोराः न्रोपेन । - महाप्रभु-पु नैतन्यदेव । मीरांगी-वि॰ सी॰ [र्च॰] गोरी । सी॰ यूरोपीव सी। हेस 1 गौरा-पु॰ मर मीरैया पक्षी । सी [सं] गोरी सी। पार्नती। इस्रो। एक रागिनी । गौराटिका-चौ॰ [सं॰] एक तरहका कौना । गौरार्ज्ञक-पु॰ [धं] स्थावर विष । गीरास्य-पु [सं॰] यह तरहका नंदर। गौरा**हिक−**उ [सं•] एक दर्शका साँग। गोरिक-नि [सं] गोरा। पुस्केर सरसी। गौरिका-को [सं] अविवाहिता कृत्वा गीरी । पीरिष्ठ-पु॰ (सं॰) सफेर स्टलॉ; कोहेका **क्**रा। गौरी-स्रो [सं] गोरी ली; पार्वती आठ वर्वकी अवि नादिता करताः नरतीः नानाः सचेद दृव वृत्त्दीः गोरीजनः मारक्डी एक्सिमोचर सीमापर वहनेवाली एक प्राचीन नदीः वरमध्ये पत्नीः मस्किक्षाः <u>त</u>कतीः मंत्रिष्ठाः । —काँत ~नाथ-पु शिव । -गुरु-पु+ हिमाकव । -चन्म-इ॰ काक चंदन । — च — पु कार्तिकेश गणेशा अबदा । -पष्ट-व सिवक्रियहा भरमा । -पुरुप-पु+ क्रिक्ंगु मामक दुस् । -सर्वो(तृ)-पुगौरीनाव । -स्वकित-इ॰ इग्वाक । −बर-प्र सिकः गौरीकावरवान ।→ईक्टर -3º दिमाक्त्रको सबसे कैंबी कोटी।-हि।सार-यु रिमलनको वह चोनी जिसकर पार्वशीने सपरका की बी। -सर-पु॰ इंसराव मामक वृद्धे । गौरीझ~दु• [मं•] क्षित्र । गौक्तस्मिक-इ [सं] ग्रवपक्षीसे अनुभित्त संबंध रसामे रासा । गोरीया-लो एक छोटी विविद्याः । एक तरवका निद्वीका गीरुञ्जनिङ-पु॰ [सं॰] यात्र-दैक्षोंके मक्षे-तुरे कक्षण पद वाजनेवाका । गोका-मो॰ [सं॰] पार्वती । मौद्धिक-पु [सं•] मुफ्क नामक कृष्ण, एक प्रकारका गौरिमक-दु [सं] १० सिपादियोका नायक, गुरुननायका गुम्मका सिचादी । वि गुम्म, नर्नुव रीम सर्वती । वीस्त-त [मृ] रारवतः सराव । गित्रतिक-वि [६] हो गार्वे रसमबामा । गीग्रीन-पु॰ [सु॰] पुरानी गोद्यालाका स्थान । गीसम~ दुकीतम नामका पेड़ । गीमहरियक-वि [सं॰] एक इजार गार्थीका सालिक । गोर्र-प [का] मोदी: शोरर। -ताब-प वस बनुत गारीक क्या जिसके मीतरमें बदम शककता रहना है। म्मा-न्त्रे [सं] पृष्कीः। मातिक-स्पोक्ताति । पु 💸 * धाति । म्पान•~<u>प</u>•दे दान्। नात्स-की रकारणी।

व्यारह्र−वि दस और एक । मु इस और एक्सी र्शस्या, ११। ग्रथ-पु [सं•] ग्रंबन; पुस्तक, कितार थन; अनुग्द्वप् छंदमें रथित स्कोक । ~कतां(तूं),-कार्-कृत्-पु• प्रव क्रिक्रने, रचनेवाका। -कुटी,-कुटी-स्री प्रस्त-कालय । — चुर्वक — पु॰ पुस्तकके कुछ पत्रे प्रपुद्ध हो, विषवकारवस्य ग्रान शास करके रह जामेवाका, पहनगाही। -मासा-ली कार्याक्त-विशेषसे कमपूर्वक प्रकाशित पुरतके । - रचवा - सी॰ पुरतक एपमा, कितार किसना । -संधि-को पुस्तकका अध्याय, परिच्छेद । -सा**हव-**प्र• [दि•] सिसीका धर्मधंग, सिस्त गुक्तीक प्रश्नोका अंधन-पु [सं] गाँठ देकर गाँधमा गठिवानाः गूँधना ग्रेफनः रचना । र्शवना•~स कि ग्रॅं**ब**ना। ग्रंथांतर−प्र (सं•) अस्य प्रव । प्रयाक्य-त [सं] प्रस्तकास्त्र । प्रधाविक, ग्रंबाधकी-स्री (सं) श्रंबनाका । प्रयादकोद्भन-पु [सं] पुस्तकाध्यवसः। प्रीध-न्या (मेर) गाँठ, गिरहा गुरुवी। गुरुवी हैरा, बॉस आदिकी गाँठः अंगोंका बीच छरीरके अंदरकी गाँठें जिनसे रस मिक्कता है। अंधा कृतिकताः (हा) माबा पाश्च । -च्छेदक-द्र गिरहरूर।~दर्वा-स्रो गाहर हुद। च्यत्र चपुर चोरक नामक गंबहरूद । चपर्ण चपुर गरियन । -पणक-पु एक सुर्गधित पांचा। -पणी-स्त्री वतका कता । -पर्वो-स्ता प्रश्विद्यो । -परस-पुरु देशः मैनफ्का - वंधन-तु गैर-वना - वर्डी(हिंस)-धेनिपर्वकः । भनेतः नशेषकः पुरु विरहकः । -मुक-पु॰ सङ्गुन, शक्तम शावर, मुकी दस्वादि। -हर-९ मंत्री । श्रीयक-त [सं] पिपरामृकः गठिवनः करीरः गुग्गुसः दैवदा सहवेदचा भवातवासकालका भाग । द्रांचित-वि॰ (र्द्ध•) दे॰ प्रवितः ड्रांधिमान्(मत्)−दि [सं•] वंपाद्वमा । प्र भरिनसंदारक থুৱা। −(মনু)পুত-রু• ভরুৰ। ग्रंथिक-वि [सं] गाँठपार । पु॰ पिपामूल नप्रका विवेदन वृक्षा करीरा धेएक नामक गंबहच्या धीरार्थका शागः विश्लेषः वृक्तः विशासः । र्द्धाधिसा-सी [सं] भद्रमुखाः मान्यदृशा गाटर दृष । ध्रथी(थिन्)-वि॰ [तं] विमक्ते एन्से बदुनमे प्रव सी; विसने बहुतमे संथ पहे ही विदान । पु संबदनां। संबद्ध थाठ करनेवाला । थ्रंस≠−५ कुटिकता एकटित्र। ग्रथम-पु[मै•] गूँबमा ग्रंथमः रचना दरनाः अमना । द्रधित−वि [सं] र्युवादुकाः १६ हार्योगादुमा रचितः क्रमबद्ध दिया हुआ। भा भम यदा वा दीष्ट हो। तथा ही। धनागृहीतः विभिन्नाभावात । द्वा वर्धिम गरिवाला सप्तर इसन-पु [सं] मद्या निगमनाः प्रश्नाः बर्द्यमाः धासा बहरा ०२ मुदेबा गौर-धहम । द्रसया-स॰ कि यसक, मान करना मनाना ।

र्थम-वि॰ [६] स्तरथ-सुंदर; यहुर । पु॰ [फा] रफकी घटलका एक बाजा; गंजीपेक्ष एक बाजी: शिरास्का एक मुर ! स्ती । पर्तगः बद पर्नग जिसमें दिवा शासकर कशांते दै। –सवाह-पु॰ यंग बबानेवासः। सु॰ –उसहमाः– चदना-भार होना । ~पर चहाना-मित्रात्र क्या हेनाः भपमे अनुकृत बनाना । चैंगमा • - स कि व्यव्या बसना । चॅगला-नी रह राविनी। र्चरतः–वि रवस्य नीरागा निर्मन्। महा । थोगु ० - पु ० दे ० 'नेगुल' । चेंगु#-१ चिदियो लासका शिकारी विदिशांका पता पदर, बार्! सुरु −में र्यसमा-परामे बाना। र्चेरोरः चैरोरी-स्रो कृत रगांग्यी हरियाः ब्रिह्मी देवरी मद्राध्य रोक्टीका रग्सीध बनाबा दुवा सका। र्चेगरा-पु॰ ६ नगर । र्थगेरिक-पु , चंगरिका-श्रो॰ [शं॰] रोद्धरी, रुनिवा। **ब**नेसी-स्त्री• दे• नेगरी । र्पष-पु (मंग) शेररी, हनिया भीन अंगुण्डी एक माप । = श्रदी मॉफ — 'मस्त दम अक्तम पड़ा तक स वीरी श्रेष —क्दौर । चेचक~(र [गं] उप्रथने, क्रमेशणाः गमनशीतः बोदने क्षिमनेशमः । चंचनाना-त्र कि भुमभुनामा । पदरी-स्थ [] अमरी। एक वर्णवृक्षः एइ मात्रिक र्ग्या पापरि । चंदरी(रिम्) चंदरीड-५० [मं] अमर । चेष(क्रिक्स) - १९ [मं+] अमरीदा समूद। वद वर्णद्रश्च । धक्त-वि+ [र्ट] एड जबह वह विविधि न रहमेशामा भरिवर डॉनारीमार्थापन चनपुना चन्ना होगा समुद्र। प्र• वादा प्रमी। श्रामी । — विशा-नि अस्मिरिया। चंचन्या-नी [मं] अस्यस्ताः पानता । चंचलमाईं∗−सा∘दे वंदवता । चीचना - म्दी [मं] दिवनीत हरानीत विवरणी ह र्यक्षप्रार्देश-श्रीक पंत्रमहा । च बद्धान्य−वु [सं•] स्द शुर्वदिण व्यव । र्चक्य-स्प [न] न्यू आहि हो हो। इतिहा क्योरे । -प्रदूष-त निर्देश आहित। हरानेके निष क्लाबा का शासा नुभाम माहिना बुडना। नुभग व्यक्ति । म ब्रु-पु [तंब] प्र(शा बरशास्त्र) हैं पीबान्ता कर लाग भेवा दिरत । सीर भीव । विर अपुरा प्रीयः । ज्याप्र न्युर एड शाय । ~पुर~पु० रूगेरी वेर धीय । ~प्र**देण~**पु दिनी विषयश्चमन दान ।-प्रहार-पु भौजन महासा। ~भूत्-५ वद्गी : --सृचि-५० दारंडव पत्री । चंत्रका-सी (र जिनेत र्थनमान्(मन्)-५ भि रिपे। चीग-ति [क] गए बतुर । चेष्-मा (मे) ४ ४ । चेंचारमा-श वि श्रेतिवरका वृत्ता **पंर-रि बदुर मना क्राना**ना न्द्र-दि कि विदेश-क्ष्मिक्ति होन्द्रभावता विदेश्य किन्ते विशेश्वर्ति विदेशक होन्द्र होन्द्र होन्द्र

वानिका जिसका जिमागको का हो। पु॰ बन्तान, गरमी। क्रीवा मुंह देश्यका भारी। दिशा स्वरा प्रसद्धा देत । -कर -दीचिति,-मास-५० दर्म ।-वीचित्र-उ व्यक्त काणि शंस्त्रणका यह प्रभिन्न मानह । नर्पद्रा ~औ दुर्यो । *~शुंदक-पु०* मन्द्रशास्त्र पुर ! −वायिका∽सी० दुर्स । –सुंड-५ सुंबन्धिसे दी संजापति जी दुनांके हाची मारे गरे। **←**मुदा∽ सी॰ वर्मात देशे । -मेडी-सी॰ व्य तंत्ररीत देशे । -रहिम-त त्र्ये । -इद्विरा-स्रो धर-मानिकामोंके पूजरेंसे प्राप्त होनेनामा मिन्दे (रे 'तर नाविडा") । - रूपा-को १६ १वी। - विजय-वि शर्वेद पराज्ञमशाका श्रुनाची । -पृत्ति-निश्वमी निर्देशो । ~शक्टि-विश् प्रफार धाँकः शाम मरान्य । पु वरिष्धी मैलाका एक शतक । -हाँकि-शि॰ कामी । र्चप्रता-मी॰ (६०) नप्रताः होत्यतः । र्वडवर्ता-न्दार [नंर] बुगी। सांविक्ती अस्मानिकामीनेने PE I र्चटाह्य−५० (व०) स्र्पं । र्थंडा-दि॰ मी॰ (सं॰) वस स्वसनवार्ग केल्स्ट्रीय (म्पी) । स्पी॰ दुर्थाः सहसाधिकाओं मेंने एकः वस्तरेवरमा मीदा सीवा; सके बूब ह र्षशङ्क - सी वतावसी। जोर धवान्ती। र्चवात-५ (सं•) करकार । र्षहाल्क-९ [में4] कर्शा साया । र्चद्यार-पुरु [र्ग] दे. चिंदाल'। विश्व करहमी !१४ रै ~तु वद तरहवा बंद । —पश्ती(वित्त) -पुः शेवा। -बद्भाकी-बीक्य-मी० यह तरहवा लेगा वा िद्यारा । चंड्रासिका-नरी० [सं०] बुर्गाः चंडाकरीयाः यह हैर है र्थहासिमी∽सी भंशव ६४ मी। चंद्रायम्य-तुः शैनास्य पृष्ठमागाः बोट गैर्निसः परिगारः । चंडि बडिका-मी•[म] र्मा। वृद्धिक-वि [शंव] तत्र स्वर्यामाः मिगना नियापक क्श हो । -चंट-पुर शिव । चे हेमा(सन्)-मो [H] रोपा मिन्द्रशासाम गेव? र्फेटिय-५० [में) रहा राशमा मनुमा साम रे चडी-औ॰ [में] दुगार बर्स श्रमांबर्ध सर्थ । धरे । -कुञ्चा-पुर शास क्षेत् । -क्षि-पुर विष । থর্মান-র 🗐 বিষ र प्रदर्भ क्रिकेट स्थाप के हिन्दु के चीह-पुरु असीमदा दिश्व किये सहिदितिहर्तिहर्त भार दोत है। -दामा-त भंट बेनेश मान र-वाह - इ थे दीनश्ता शिवार वीर्या कर दीर मुक् त्वानेही गच-गरी वेष्ठी वन । र्श्टरन-पुरक्र निर्देशी प्रशिक्षणस्य भारती। deut-3 (:]frett er tierf et! न्द्राता- रे [ते] दृष त यह ए स्था मन्द्रात वंद्रीय-१ वर दादशे दण्यो विद्रिश वर निर्मा

नावा नेहारी। नसंकर-पुण गाँवकी माली, मोरी। नसंकरन-पुण प्राप्त-पीवनकी संगरितः क्याविषय करने का कार्म। निहंद-पु कुत्ता। न्युचार-पुण [हिण] मामके रोप्य भीवनकी स्वपातका काम। नसेवक-पु प्राप्ताविवाकी सेवा प्राप्त-पीवनकी सुपारका कार्य करने वाका। नहारक-पुण-पिलोप्तरि, वानोवी। प्राप्त-पुणि-पीकी प्राप्ति कारनीवी।

द्राम-दु [भंग] एक भंग्रेजी तोख । प्रामटिका-सी [मं] गया-बीता गाँव स्वराव वस्ती ।

प्रामारका नहीं [म] गया बाता गांव सहाव बस्ता । प्रामात पुर [म] गाँवकी मीमा, सिवाना गाँवका बस्ती है भारता गा।

मामातर-५० [सं] दूसरा गौन। सामानाय-एक स्रि | स्टब्टे कर

प्रामाचार-पु• [सं] गॉबडी प्रवा रोति । प्रामाचान-पु [सं] बास्टर, शिकारा छोटा गाँव ।

अमिथान-पु सि] बास्टर, ध्रकार; छोटा गाँव । प्रामाभिकृत प्रामाभिप, द्रामाध्यक्ष-पु (सं॰) गाँवका

मुख्या। मासिक~दि [सं•] देशाती, गॅबारः असभ्यः गीत-बाद-विपनकः। पु० मामचे रक्षानं निञ्चकः अधिकारी, मुक्तिया

मानवासी । मानिकी-सी॰ [सं॰] नीसका भीवा ।

भ्रामी(सिन्)-दि॰ [सं॰] गॉक्काः गैंबारः कामी, विषयी । इ. शामस्वामीः ग्रामकासी ।

मामीय-वि [र्ष] मामर्सवीः गैंबारः गाँवका । [ती

मानीना ।] पु॰ मामनासी। दुन्ताः सीनाः भ्वतः । मानीना –सो॰ [सं] मानीन सीः पाकनमा सागः गीकना

भीषा। प्रामीय-दि [मं•] गाँकका: प्रामनासी।

मासय-ति [मं] गाँवमें जनमा हुआ गैवार। [बी भामनी ।] तु मामनाती।

ममेवी - स्रो [सं] बेस्या।

मामेश मामेश्वर-पु॰ [सं०] गॉक्का प्रवान ।

मामोक्योन-यु [अं] एक यंत्र क्रिसमें शब्दाव्यनि भरकर

या बादे प्रावः ठाँच उद्यो स्वर्म सुन सकते हैं।
प्रावर - वि [म] प्राम संवंदा प्रायोगः पूर्ण, बनाई।:
बादमः प्राराष्ट्रः अपोष्टः (उपट्रो) वाक्यु (पृष्ट्वो)
वेदुननंदेती । दु स्थानस्य एक दौष किसमें प्राप्य
प्रशोस मुनान्य हो। बादिष्ट, बादोठ ग्राप्त, शासकी

देशती नीवस पासत् कुछा एक र्शिवश नेव राधा वर राधा स्त्रीहर्त । -कंत्र-पु व्यक्तरेश नेव कुरति-सी० कुमांड ।-कर्म(स)-पु प्राप्त वर्णका वेडा: स्त्रीपतंत्र ।-कुक्त-पु वर कुछुव।

-कोप-पु बास्य या रचनामें गंबाक छन्न अधिक बाना।-मर्म-पु मैहन। -पद्म-पु बीबा, कृषा एकर सारि। -पुदि-नि गंबार, समाही।-सन्

गुरिस-को श्रीमण्डी।-सूग-पु कुषा।-यहमा-भी भाग पावनका समा।-सुप्त-पु मेशुन रौपमंग। सम्या-दि मो [मं] मोदमें रहनेशामी मैनार (मी)। भी ग्रेम्से मोहका पावा।

माम्याभ-द्र• [मं] गवा ।

माय-- इ. दे मारा । भीना ।

माया(बन्)-पु [मं] पचरः पशकः बारतः। वि

करा, सस्त ।

प्रास-पु॰[र्स] कीर, निवाका भाकार निवक्ता; प्रसत्ता; भाकारः चंद्र वा सर्वका प्रस्तांत्रः अस्पष्ट प्रधारमः प्रका। -कारो(रिन्त)-वि० प्रस्ते निगकत्वाका।-चास्य-पु॰ ग^{ेत्रे} पुण, सरक बानेवाको भीज (मएसोदा क्रेंश साहि)।

ग्रासना**॰**─स कि दे• ग्रसना ।

प्राह—पु [र्स॰] प्रहणः प्रस्तः शाप्रहः मगरः पश्चितारः केरी समझ शेष निश्चाः रोगः यहा मस्यः कार्यारमः। वि॰ परुवनेवास्ताः सेनेवास्ताः।

प्राह्म-वि [र्स] प्रष्टम करनेवालाः सकरोवकः [स्ते 'भाषिका'।] यु गाहरः, सरोदारः, बात पत्तीः, पुलिस कप्रसर विवर्शिकतस्यकः।

प्राह्मिका ची [र्स•] त्रिवलोकी तीसरी वन्यो । प्राह्मी(हिन्तु) – वि [र्स] प्रहण करनेवासाः प्रहकने

वाका कण्य करनेवाका । [त्वी॰ भाविणी ।] प्राष्टुक-वि [चं] प्रवण करनेवाका प्रावक । प्रकानवि [चं] प्रवण करने वोस्तः एकको हेने सम

राने बोग्दा मान्द ! द्रीक-बि॰ [बं] ग्रीस बुनान देशका । यु ग्रीस-मिबासी,

युनानी। स्रो मीस व्हारी मापा:

भीक्रमण-पु दे० 'ग्रीप्म'। भीदा-सी [मं॰] गरन्त गरुः।-घंटा-पु देव

मारिके गर्छेस करकतेवाही पैशै । श्रीवास्त्रिका-सी [सं] श्रीवा !

भोवी (विन्)-वि [मं] अंती शुंदर गरानवाहा।

पुर्वदेश श्रीपस≉—पुरे सीप्सं।

क्षेत्रचन वृद्ध सामान्य मेलम (विहास क्षेत्र मा क्षेत्र आचाह) वरमी मिदाय !-काक्स-पु नरमीचे दिल !-कार्लीव-ि मीप्प कनुपंश्यो !-जा-अवा-की सवसरिका, मेवारी !-आस-पु० गरमी होनेवाना बनाव !-पुरस्त प्रो पुषस्त ! मानान्य वर्षी स्पर्ध अधिक पहले हो ।-संबुद्ध-

तु शास्त्रियेष ।- हास-पु तुरिवल्या गृतः। श्रीयमी-स्रो [मे॰] मेशारी, सप्तमिन्हाः।

श्रीपरोज्ञवा-स्त्री [मं] नवमरिका। ग्रामुण्य-पु [मं] से किमी विश्वविधानमकी नत्रीव परिक्षा पस कर मुख्य हो भी य पात करिता सानद । ग्रीट-वि [अ] वहा ग्रह्मम् ।-प्रियम-पु (प्रत्य स्त्राट अर-भीर वैस्त्रा प्रेयक मान

प्रम-पु [मं] एक अग्रेगी चीन (मानी रची)।

ग्रेहर-पुगह। ग्रेहीर-निस्तरी— जाक गुरु मेरी महे भेषा ग्रेही इत्य —ग्रासी।

प्रेव प्रयोग प्रयोगक-दि [मं] गणानं था। पु शारः शामीने गणी बहनायी जानवानी (गुना)

ब्रैष्म प्रष्मिक-वि [तं] ब्रोध्य-वंदंधी। ब्रष्मक-वि [सं] गरमीने देशा जानैदानाः गरमीमे

पुराया यानगरना ।

इडभमुष् ।-घर-प (बंडमार्क भारण करतेवाने) शिव । -तिम-भि॰ चमश्रेता। संदर !-पंचांग-पु॰ चोट विविमासके आवारपर निर्मित पंत्रीय ।-पर्की-नी० प्रसारिंगी व्यता । - याच् - वु व्यवस्थित । - वापाण-स्था पु॰ चंद्रकांत मांग या अस्तर।-पुत्र-पु॰ पुण ग्रह । चौरती। बक्ती। सर्वेद धरकरैका : ─प्रम−िव• चांदकीमी प्रमा कौतिवासा। पु० वीनोक्त भाठनें दौर्थकरः एक बोबिएल ।-प्रशा-ली॰ शहरवाति मॉरनीः बहुचीः कृष्टा-प्रसद्भ-पु॰ राहुका एक मार ।-प्रान्ताव्-पु॰ स्वपत्का कमरा ।-वंपु-पु र्घमः इतुर ।-बप्टी०-मी० भेरवहुदी।-बाण-५० वह वाण जिसम्बा पता वजनार ही।-बाखा-की यंत्रमानी पत्ती। गीर्जिश्या वही बलायथी।-विद्य-प सानुमानिक वर्गक करर समाया जानेवाला अक्टाहाकार बिद्ध सदिन दिद्ध ।- विद्यानम् अञ्चलका मकाशमय अर्थ काकार स्थ ।-बोबा-पु [दि] एक तरहवा अश्रमहा -भरम-९ ६९८ !-भा-ली <u>२</u> 'बंद्रकृषा । —माग्र−च -प्रमाद्य दमा अंश विकालवृद्ध अंतर्गत रक पर्नम ।~साका-भी भेद्रमाग वर्षतम निकली कुटे चनाव मरी !-भाट-ए [हि] बर्च गृहस्य श्रीय सम्प्राप कार-कोशा∽भार-न~च सायमामाभ करा प्रण्यका च्य द्वन ।-भास-द्व िन ।-भास-द्व तत्रवार। -प्रति-मी पोरी।-भवण-९ शिरा-संदर्भ∽ प -रहमासा विश्व ६ मार्क चारी भार क्षमी-क्षमी संगार्थ देतवाडो मीरास्पर् प्रतिव !-स्राजि-पुर चंदकांग मपि । —सिका-सा एक तरक्त्री वर्षती ।~सद्द−पः क्ता।-सन्ता-संश्तासका एक भर्।-सामा-सीव पर धेर ।-सकुर-मुद्धिय ।-सुम्ब-विश्वपरमा जैथ सुरक्षाला।-मुन्ती-वि स्पी भन्मा परी सुरसानी शिवरमी हुँगरी ।-मासि-पु॰ शिव ।~रय-पु मोनो ।- त्रारा - सररा - ली । धंद्रबनाः चंद्रविरणः एक शासाहा बायासार्थी बन्दा बबाओ सन्देश बन बन बुरा । ~रम्-<u>५ कप्लदीर ≀</u>-मोक<u>-द</u> भीरमाका शक्षा मारतार्वका दलरा -417-5 प्रधान गामधीय विलया मार्ग्य क्यस पुत्र पुरुषानी माला अलावा --वंशी-वि [वि] देश प्राचेशव ।-वंशीय-वि भट्रशामे प्रशास ।- बद्दम-निर्ण्यामा हैन सुरस्था। [ला॰ प नामा ।]~पप्-भी०वप्नह्या-वर्ष्म(न्)~ बु वद बर्दश्य ।-बाइरी-मी सेम स्वा ।-बासी-मो शीम करार साथरी अगा १~बार~में शीमकर १ -विक्-प दे ५६/६६ ।-बेप-प्र क्रिका-मन-थु चोडायर मन १ - बाला - बालिका - वर्ग व्यायमा द्धनी अवस्था क्यरा या चीत्रमा बिगान अन्दर्गीया पुरा भानेर (तमा आ गुद्धा-सिला-स्थी० थंडशंव स^{र्द्ध}। -म्रह-दु श्रीका स्काप्तित्री-सूर-पुरु पररा -शामा-५ ६४मा है ऐसर ('धरीभूष्ण) जिल्हा चित्र एक परेना आढ नजीहें। एक १ -संग - द्र कपूर १ न्संभव-पु पुरत -स्वया-सीश ती है वनवदी । -मन्दर-१ अव्यक्ति शेर्यरो रचाप्रस्य गेर् शामान्तुस द अवा −द्वार-द श्रद वरवत वड |

हार। -हास-प तक्कार गार राक्त्री तक्कर। -हामा-थौ॰ शोध स्त्रा । बहुक-पुर्व (र्श•) अंध्याः योष्मीः मीर्श्वनारकः वाकतः विका नागुना सकेर कि । यह महत्रा नद्वना रद्व*रा*हा चंद्र नेमा याम निष्ट । चंद्रकी(कियू)-(१ (सं) यह दशका । ५० मेर । चोत्रग्रस-प० सि०] दे • 'नह में । चंत्रमा(शम)-प॰ (तं०) शीरबंश्वदा एव स्पार द': (म्बाह ११६० बील परियाम पुल्तिस १/४६ पुन्तेने दरी २१४० मीलो: मामा ६५८। ~सम्राद्ध-केकास-५० [हि] शिव । र्भन्नकित-५० [तंर] महायेव । चेंत्रांश-व शिशे बंद्रविरमा रि.स. र्वज्ञा-सी विशे बहोता गण शतामा होते श्राप्तरी गर्भ (र्वक्रायतियात-५० (तं०) मृत्यके ग्रह भाष । र्वाहासप-प्र [तंक] च्होता विद्याता बॉडानी शुलाडामध्य। चीतलसञ्ज−९ सि•ोदर। र्चनामन-दि० [त] चॅदसासुसदराना । द्र धारिहेद । र्वहामना-वि सी॰(रां] यां जैमे हुम सामा पंतप्रकार र्चन्नाचीह-इ [वंश] शिला बरमोत्का रक राज्य वर्णा तिस्वका पश बरा- कार्यपरी गावदान्यका मान्छ ! **भंडाधण≠−९० जां**डायस । र्चत्राचनम~९ [स•] धंद्रशान्य । चंद्रार्खे−५ [मं•] अर्थ्यद्र । - चदाममि−५० डिर । चेत्राकाच-पुर (श्रं) यों हो। अवदेवहत एक प्र^{क्रं}ड मर्भश्राराधित । र्चतायनों−भी शि कि कॉक्स । चौत्रायामी-न्यो। [सं] शाबादी एक एवटी। यह केंद्रिये रे पहिषांच्य-५ (सं] समुर । वीदिका-मा [मं] धीरमी। प्रशास प्रशास करें। सी बसावधी जुडी या अमेनी। क्षेत्रा महत्ती। मेनी वड गहरार ५री, वडा । -श्राच-तुक संदर्शत में । -वादी(विन्)-व वद्याः। चंद्रिकालय-१० [र] | योहरी ह बीह्रकाजिसारिका-भी । [त] दिवस दिवने दिव चौरती रातमें महेत्रश्वासी और मामेशनी मार्थिश इत्राधिगारिका माविका । र्वित्रको गव-पु [तक] प्रश्तपृत्ति शाबी मनावा प्राप्तिकार THE ! र्णीयसा∽सीशीसी प*रजी र व्यक्तिस-तु (१९०) दाराया है सा बन्तवा समा बंही(दिय)-रि कि दिनादे एम सूर्य रें। चॅत्रका-भी (स) ४९५०)। चेत्राइय-पूर्वतः) वहमध्य अस्य वरेशा अपुरेशी रश्च म नह राग्रेश र चंद्रायमस्य−५ (स०) ५०सरण । न्योगम-पु (००) प राग म रेग । भीतन्तु (१४) योग क्यार र न्यूमी से स्टेर बर्गक्रोब्रा वस स्ट्राम भ्रम्यूची राम्यू दूर्ण स्थ नार्थ

परव-द॰ (र्ए०) दोना काला; शिकाना, कोइना; गहना; मतिः बरुषः । घरना-ना॰ [एं॰] जो बात हो या घटित हो, अ्यापार गाहिनाः रचनाः योजनाः सभानक द्वानंत्राणी नात शारिषा सम्बोदरणः गत्रदकः। - ज्ञा-प्रश्च वस्ताओंका सिक्तिका । **-चळ-पु०** धन्ना**जींका** सिकसिका, धाना बरबरा । षरसा−थ कि॰ वटित होनाः क्यना—'सपन नृप कई नरै विग्र वव ^{त्र २}−विनयपत्रिका । वक्ति का वसनका ववार्व सिद्ध होना। काम बाना कम होना। क्षेत्रका।

रीक्में क्रम दोनाः (किसी पीत्रको) क्रमी; समाव दोना (कर्ते क्वा घटा है) । मुक-चढ़मा-क्रम-वेश होनाः स्टीरा न्ता होना । घट चड़कर -कुछ क्रमी बंदी करके । भरनावकी-मा [सं] घटनाबोंका सिकसिका, समृद् । भरवाई - वि भारवासा स्कावट नासनेवासा- आवन वान स पावत कीक ग्रम मगर्मे बहवाई'~स् । मरबाबा- छ कि 'बशना'का के ।

व्यवार~पु पाटका ठैडेरार, पाटको मान सेनेना#ा; बाटिबा । भरवारिका भटवाकिया-धु याटिकाः केवर । भटबाइ - पु भावका हेन्द्रशह, बाटका महसून कर्नवाका । वद्यां - प्रवादका वेदेशरा मार-पार जाने मानेवाकी नार । च्य∽लो• [सं] प्रवस; समूद्रः गोग्रीः युद्धः व्यादिकः किय

प्यम दक्षिमारीका समृद्दा एक तरहका ढोका संतरा पटना [रि॰] क्लभरे बाते बादलीका समूद्धः अवगाला । सु॰--बदनार-मेनमालाका समझना । -विरमाः-खाना~ बाकासका बादकींसे हैंक बाना । षटाईं ०~सी॰ अप्रतिशा मानदानि ।

वयकास-द [सं] बालास्त्रज्ञा वह मंध्र वो वहेके भीतर ना बाब बरसे संबन्धित आहारा । वराप्र-पु: [सं:] बारहुस्तंमका काठवाँ माग (जिसमें

देवनाका आवादम जिया काता 🗗 । घरानीए-पु॰ [सं] गानी, पाक्नी नाविका मोदार मी परे पूर्व दरह दक्त के। कोई इन्ह केनेवाकी बस्तु सामाना वेषस्य बार्टन्स् । घटना-तः कि क्य करनाः वाकी निकाकनाः शास-

मित्रिक्षे गिराना । केराच-पुण्यति क्रमी। अवनति। नावका यासा ।

ď

ø

ŕ

٧

1

व्यटिवय-पु [सं] कुम्हार ।

परित-पु [तं •] पहें, पानरें के सदारे नदी पार करने काभेराकाः यरिवास वजानेराकाः निर्देश ।

में देका-श्रीष्ठ [मं] २४ मिनरका समय यही। धोग पालक टारा वहा जिससे दिलकी पहियाँ बालूम की यती वी बुरता । -बग्न-पु देश भारतित ।-सतक-3° प्रति स्टिन १ स्कीर यनानेवाना या सा काम

ब्रोनाम स्थि। -स्थान-पु॰ सराय नही। परिकायमान-इ [मं] दे॰ परिकाशनक । के छा-रि [सं] वा इजा की बोहा मिलावा हुआ नी दें, इ बत्तरा ही रहिता।

घटिवाई • − सी कमी, हुति। घटिया-वि भो वतिया न हो सराव निकृष्ट। घटिहा-वि॰ भोसा दैनेवाका विश्वासभाता नीच सकार र्घ्यम् ।

घटी−की॰ कमी। याटा जुक्कान [र्स•] २४ मिनटका कांक-मान, पश्ची छोटा यहा फ़क्सी रहेंटकी भक्षिया समय माननेके किए काममें सादा जातेगाका सक्रपात्र। ~कार-पु कुम्हार । -द्रहु,~प्राहु~पु+ पानी भरमे वासर । -- चाँग्र--पु० वडी काकशापक यंत्र- रहेट ।

धरी(रिन)-प [सं॰] क्रम राधि शिव। -(रि)धर-प्र• ঘিৰ । धर्काण-पु० धरोत्सच । यटोत्कथ-पु॰ [सं॰] दिहिना राष्ट्रमीक गर्मने उत्पद्ध मीमसेमका पुत्र ।

भटो जय-पु [सं] भगत्त्व मृति। घरोर+~प मेरा । बह-पु• [र्स] बाट; खुपी वा महसून हेमेकी जगह हुष्य बरना । -कुटी-सी॰ चुंगीको चौरत । -जीबी

(बिन्)-वि धारके महसूत्र या परशा शावक सेवेसे गुबर करनेवाका । पुरु एक वर्णसंकर बादि । भरूब-९ [र्नु॰] हिलामाः पश्चाना (पासमा आहि); षौरमाः मंधन्त । षक्ष्मा-मी॰ [सं•] दिलाना, यहाना: रमहना: पश्चा

बद्दा~पु॰ घटी। बाटा छिन्छ दरार बहु। द बटा। यक्ति-वि [सं=] रगण हुना, विक्लावा हुमाः दवावा हुआः दिकाया, वकाया हुआ। निर्मित । पु॰ मृत्यना

यह देग । म्हर-पु॰ क्यातार रगक कमनसे शरीरपर पहनकारा िक्ष । सुरू -लक्तमा-च्य बाना नरार दोना । <u> पदमा</u>-आरत पहना अस्यास होना। घडघड-प्र• बारकके गरवते गाडी भारिक यक्तेया

मानाव । घषधदाना - व कि 'यह वह व्यवस्त्र होता तिकल्लना। धइपहाइट-ली 'बर वर छन्द । धवत-सी दे 'गवत'।

भवनई-साँ॰ वॉस्ट बॉचेमें यह बॉबडर बनाया हुई हास-धताक नाव ।

घक्रमा~स कि गइना। यहनैक-शी० दे० घरनई । घडा-प मिटीका कल्का पानी रणनेका बरतमा अर

सकी पानी पक्त जामा-अमेरी यह जाना बहुत निर्धात दीना ।

श्रक्षार्क्र~सी वै 'गर्ना । घशना-स कि॰ रे॰ गणना ।

घविया-स्पे विद्राहा यता यहेवे आक्रारका छोटा चर-त्तन अविक्या धानारोधी वृक्तिया या परिया विकास

स्रोमा-बाँदी गलाम दा रहियों स्पी दूर्र टिटिया ग्रहत्या द्वाः वर्धन्य । धविषाछ-तु पंश पहर अधि बताने हे निम दा बुक्रनहे

प•साउ। चध(स)-प्र• [मं] मॉया हरि, देशनेको प्रक्ति रीवामीः गत्र काति । चधार - यराम का समासमन रूप ।-अस्तेल-विव्येकतील । --इंद्रिय-म्पा भोग। --गोश्चर-वि दक्षिकेट। −वाम−प्र प्रायमिकाके समय मृतिकी भागीयै रंग भरमा । - निराध -प॰ कोरायर सगाबी आग्रेबानी पटी । -थथ-पु भौरा दश्या । -शहस्त्र-वहम-पु अव गुगी। -मन-वि द्रष्टिकारः। -सल-वर् स्वीरपा महा क्षांचर । -यन्य-वि जेत्ररोमस प्रस्त । -विषय-पु रहिरवः रहिका निषया श्रितित । -हा(हम्)-वि॰ दृष्टिमायसे सह प्रहमकाता । चार्य - वशुभुका समास्यत स्व । - क्या - व -पश-४ रहिएका शिवित्र । चहारमाम्(मन्)-वि॰ [म] आंधवाशाः संन्त् आंधाः भक्ता निगावनामा । चशुरव-वि [मंग] भौगीते विष दिवहरा सुंग्र, विष दर्शनः अपन्य सरदक्ष । अ. अधानः बेबवाः सदिवन । चक्तप्रा-गर्ग [मं] मृंदरी श्रीः बननुष्योः जनगंगीः सरमा ह चम्रु- मधुम् का समारागा रूप। -राग-५० ऑतकी कानीः वास्तिः विय नगा । ~शेरा~१ नेक्शेम । चाव=-पु= भोग । चर्र-भी (पा) शगता, तकारा का -चार-मी शगहा अस्तानी । दारपंपित-स्था वहाभार । चनमा-ग॰ क्रि॰ श्वा^{० क्}नाः रहास्वा^०म बहमा^० स्वादके किए शामा । चन(करर∽सी+ नहक्षात्रिको समक्रातः । व्यवस्थानी-न्यां विशेष ततात्त्री कामनाव र चालामा न्य क्रिश् 'बनमा के देश ह यत्त्रया-वि हागरास शक्यक करनेवाला । क्रम्बर-पश्रदेश यहाँ र धारीदा - ३ शिक्षा । सर्गोती~सी. चरपरी पारेगाना र गाहो-हि चे भागाः। न्यतामाई-प्र• (चा) तम गांके बटे नथपारे स्वीते समा कता मेरीनवंद्य मिगमें बावर असवर मारि विद्रश्याके स्त्व र प्रशाह दुव र बग्रल -पु (१) हे अपन्दे । व्यवहरूम् मेर वर्ता स्थान मे यस शक्त मान्ये શ્ર રી જો ! क्का-पु बच्छा मार्ड । अहायु-विक नवशा । ह्यूक --बल-मा-म्य बरमा बना र व्यविदारे - (१० व ११० जनाजनिर्दा लिएस ग्राम) । बर्धीत-पु १ विकार वर्षा-के प्रकोशी प्यपेंदर्श-५ ३० विष्या । चवश-रि धवनी ग्रामा क्रमाज्य ह चर्रप्रा-स हि. श्री के राज्यर प्राचा

वयोदवामा-स॰ कि 'यशेरमा'वा के र चरसञ्चव हैव यस'। चट-म हा। तरत । -चर-म शहरा हो । -मे-इस्ट नरत् । षद-सी नियी भीजडे हरनेक्ष जातात्र क्षेत्रज्ञो धीरने की पान्य । -बर-भी 'बर-यर्डिंग कावात्र । स् -चढ बसाएँ क्षेत्रा-वैश्वीत्वाँ प्रश्ना दर (तवर मार्ग) बाल्फा माछ मनान हुए) बनार्ड सेवा १ चढ्र−मी पारमेदा माथ । दि० बार रैलटर नादा रहा । मु॰ -कर जावा-चार-पीएवर सा वाजाविक बागा। बार- - व व शाम प्रशास्त्र करिय करिया है राजरण हार । -बाल-स्वी परमतको बरतर निर्मित कानेवारी चैत्रको चा हातेन १ -हास्य-भी १३३ वर्जनी १३ शाला । –सार –साह-सी॰ नताना • रंगर्गर । षदक पुरु [तुंर] वीरवा । रू दिरु ध्यक्ताना पृशीक कारता। कम राज्य । सीव अमधारदी पंजी मध्या तेथा प्रानी। सन्तिके मध्यमेशे दिया। नशा-वि॰ पटचेना शोध।-मदद-भी राज्यागर नेमार स्वयव । -पाद्वां-दि॰ पुरनीरा । -बाहो।-मे ष्ट्रती होतिता। शरक्रमा-स्रो [में] माद्या माक्रम चटक्रम-९० तमाना । चढकवा-म किए भटनी वाहकरी अभागे संप टुटरा कृतमा अन्तरा प्रदना संदर्गा करीय रिक्यी कराम सेमलको बीडीका करगा। शराकावा। सिन्त होता। पु लगाया । चटकमी-की॰ दिवाह ५१ करतेशी हंडी तिसीमी चटका-ते पुर शोमता बाना। बरररी स्थार बीमा बाह इस केंद्र । और (संत) प्राण बाद्य ! - सुम्ब-द्रव सर ब्राप्तेत्र क्षमः। -िरा(स्)-पुः शेपरान्तः। बरकामा-म॰ हि॰ रिम्री बीबरे बाइनेवी बारू हैय बर की भाषांत्र वैदा करना; बंधवित्रां क्षीतमाः डीस्ट दर बरमाः श्रितामः १ वटबास-विरु परकेता वका- "मरका मीन मार्गर योगन श्रीवरीट करकारे --एट । तुक है । बागणा *र* चरकारी -मां मुखी। षरकाली-को [म्] रोजोती कोल जिल्लिम होर? बारकाहर -- भी । बारजेश प्राशः बन्दने कान्योदे जिन्हे MITTER MINISTER B श्वरविका⊷मी [र्थन] मन्ता ५१६ । भारती-म्योक एक शेप्ति विदिशा *में* रेशा । चहरीता-दि व दशा फाटला द्रणा बागी। चरश्राम--पुरु बदीना यह शिकामा । च्यानान्त्र कि है बिरदश । व्यवस्थाति । भी विश्वति । व्यान्तासः पुत्र समीप्रभागं की शाहित्रमा प्रभागं नाहरे क्षतप्रेत सी बाला सामात ह सक न(र)जराम सन्द Bur erer Bu bereit चरंचरा~मी [1र] दहिरपीई थ रूपरे हरते स संस् क्र रहे एक्टेने बार्क प्रान्त ३

धमोध-५ एक पीचा विस्तृता रस नेत्ररोगको दवा मामा धनेतर-वि० [सं०] तरह । ग्रतेरा≄−विवे पता। धनोत्तम~पु• [मुं•] वंदरा, मुखवा । धनीदधि~पु॰ [सु॰] यक गरक । ग्रमोदय−प [सं•] वर्ग ऋतुरा भारम । बमोपल-पु [सं] औछा । श्चाक्षी-न्या दे 'यहनहं'। धपविषयाना - म॰ कि ववरामाः सिथियानाः ववरावरमे वर्शन्य रिवर न कर सकता । द्मपची – स्री दोनों हाभी है कसकर पढ़क कैना । झपका-पु सर्वड गीरमास्त्र। धप्रमा घप्या - वि स्सं बस्ता। चवदामा~श कि सं• कि• दे॰ 'वराना'। ध्यदाहर-सी दे॰ 'घनतहर'। प्रवरामा∽भ नि भरीर द्वीमा भव वितासे अस्विर स्प्रीय श्रीमाः विक्रेते काम न रूमाः प्रविवासाः इका वका होता संतादकोर्ने होता । स. फि॰ मरिवर, अभीर बरमाः वरेमान बन्या जवानाः वष्टवर्शने टाक्सा । धवराहर-तो वर्भारतः, वश्चिताः परश्चामाः दश्यकी । धर्मका॰-प॰ पैसा सका। धर्मक-पु॰ गर्व दर्भ क्षेत्रा, मरीसा सदारा। धर्मही-दि धर्मड करनेवाला, मगक्या श्रेखीवाय । धस~प गरम भागपर कही भोजके गिरमैकी *ना*याज पमाचा । धमकमा−ध कि॰ मेंधा भारता । ● भ कि॰ गरवता. धमका~त है 'धमका । कमसं - श्रीत धमका निवस भौ म पाद्व दारकन्न है —सेनापति । चमळोरां −वि॰ याम सर सदनेदाला । धमधमाना - स॰ कि॰ व्यातार पूँछे भारता। अ॰ कि॰ 'पम पम' दान्द्र होना । धमर-५० नगांच बादियो भागांव, गंबीट व्यक्ति । धमरा-द्र भैनरा भृंगराव । धमरीस~न्दो॰ कथमः इहा शहाः गदवदः। ममस∽री दे वनगा'। प्रसमा-पु कमसः पनापन्। धमसाम-५ पीर सक्ष, मचानक मार-कार (दोनाः मनना) । नकी संवार्त-मेर शब्द, विका संधाम । भमाष्य-नु दम की काशामा पूरी वा जीर किसी मारी व्यावानक्षा श्र १। 'प्ययम की कालाका गमाका । अ० धमाधम-४ 'बम-यम के माथ।

वाता है। महसँह । धामीरी-धी० अम्हीरी, फ्रीमा मरनेसे उत्पन्न होनेपानी धोध-छोदी पंशियाँ । धर-प्र• [सं•] अध्योक रहतेको जगहः भागासः योगारसे विरा और क्राया हुना स्थान, शकामः [दिल] कमराः रवान, क्रिकामा। पैतक बासरवाना स्वरेश वतमा क्रस वरानाः कार्याक्रमः (तारवर्)। ज्ञातिरवामः वहाँ निसी चीजधी बहतावत हो। वह त्वाम वहाँ बरद्धाशा भारामः स्पास मिले। कोठा, साना (बीसर, संदक, सतरंत्र भारिका)। न्यान, क्षीन्तः जनमञ्जूबक्षीर्मे प्रदृतिश्चेपका स्त्रानः सीरत्या केंग, किसी भीजके जबने, बैठनका स्थानः देवः रागका रवामा वरका माळ मधनान, बट-नाट: धरका काम-काम यृहस्थी: बार मारमेका रवामा आँगका गो**डकः दाँव**। च्यायीच्या साथ किसका यर स्वत्र गया दी नियोगी। −िरस्ती −राष्ट्रस्यी~सा॰ परका धामसाम । −धर− अ॰ इर परमें, सबके यहां। "घरामा"पु॰ कुछ-छुद्रवा ~घाट~पु (य-६वः ठीर-टिकाना । ~घाळ,−घासन~ वि• यर पाक्रमे विगाइनवाका । ~भूसदा ~धुसना~ षि० को सदा धरमें प्रसा **क**नानदानेमें देठा रहे। −चित्रा−त पद तरहका साँप को मायः धरमें श्रहता है!-जैवाई-पु वह दशाद विसे सास स्टूट अपन पर राम लें । −जामा~ प्रकास गृहदास । −लुगत-ब्री• पर-ग्रहमीका प्लॉत प्रशंप ! ~जोत~सी निजको रोती शतकालता − झर्में कली −दिन्हीं को जरने पर स रबकर पंत्रोक्तियोंके परमें बुमती रहे। -हासी-स्वा शक्ति पत्ती । नद्वार नप्त+ पर, वासरवाना धरको चीज वस्तु बाल-असवायः गृहस्थीः - हारी-सी॰ नरपी**छे** किया बानेवाला कर। --वर्षा-न्या॰ मरपीछे लगावा जानेदाका चंदा । −फोदनी−वि॰ की॰ परमें शतवा क्यानेबाटा । –फोरी॰-वि॰ सी दे॰ 'बरफोडमी । -- बसा--वि+ कै+ 'पर-असमा' । प्र वपपदि । -- बसी--न्दी उपयक्ती। वि स्ता शीमाग्यन्ती। यर बसानेवासी। बरका जाश करनेवाली (स्थंस्य) ! ∽बार-पु भरु वास श्वामः गृहरकी:वाठ-वचे:परकी भीत्र वस्तु, मान-अग्रवाह । -वारी-श शास्त्रवर्षेशमा ग्रहरव । -बास्र-प० है० 'परवारी ।-बेठे-म विमा काम किए।-धाल - खा० वरका सामान, भीमनामु । - बाध्या-मु शहरवामी प्रति । -बासी-री शहरवामिनी गृहिणी पक्षी । ~हाष्ट्र≉−वि भी परमें इत्यद्दशने पर विवाहनेताली। परनी बुराह फैमानि बहुबाबी फुटानेबानी प्रगुन्धरीह ! म -बाबाय श्रीमा-दे 'धर बग्रना । - उत्रवमा-परका तबाद बीमा भरके धन-जनका माध्य द्वानाः पश्चितः गर जाना । -- ब्रह्मा-पर बमनाः परवर त्वाही माना । -कश्मा-अवन तिए वया निराभनाः वसनाः यर नमाना !-का-अपने चरका कर्णस्या (सन्दर्मा)। अदनाः निज्ञात्रभास्त्रात्तः श्वन्तिः श्वन्ताः पति परवानाः। –काअरणा–सुरदान । ∽काओंगन टाआसा– धीरक्ष की जाना। संतान करता कीता । –का ब्राजाला– गरमस्या व्यासः बहुन स्टब्स (वेश): बरुद्धे श्रीमा

षमासान∽दु रे 'वसासान'।

पीला ही बाना ह

पमाधमी-स्व दे 'यथायम'ः मार्चाः।

यमात्रा - भ कि भूष सामाः पूर्वा वर्गाने वदमा

धर्मीला 🗗 । याच सावा 🕬 प्रामं मुद्दाावा दुआ र

धर्मीई-री बॉरका एक हींग किछन बन्धे प्रवे कत

पमाथछ-रियाम । एका मुभा पान शाबा हुआ ।

चता-उत्तरी-न्दी॰ शर्-शर बहना-उत्तरमा । थहा उपरी, यहान्वदी-मी० लायन्यर, द्वार, प्रति चदासा-स• कि उत्तर है जाना; हरकनो हुई चीजहो सिकार-सरकादर ऊपर है जाना (बालीम): संज केंबा. रामा करमा (भार, स्वर): बनमा: देवतादिको भेर देना. भारण करनाः (वहां आदिमें) हिरामा दर्भ करनाः शीयमा वामना (भी, कमाम)। स्ट्राना (करे)। पावनाः स्ट्रानाः प्रे जामा, उदरस्य करमाः चाने चर्नारं करनेश्रे शेरित करमाः ररीक्ना (नारुमे पानी): प्रदेश बरामा। योठ धोस, पर्मजे वना देना । चुरामी-का॰ वह रशन जो बचराचर ईमाबीतानवा हो। चनाय-प्रश्वानेका मान, चनारी नताना व्यावके समय बपुको बरपद्मक्ष भीरसे पहलावा जानेकला गहला, बहाबा धारी या बगावको छन्दी दिशा । भरापा-पु॰ पृषामें देवताको याची वानेवामी सावग्री। क्या या टालंक गहना वा वपूर्वी हमें पहनाने 🏖 रश्य बनारा भौराद बादियर रक्षी बानेशली डोन्सकी सामग्री। चर्देत−पु० बन्नेशला ३ थइ सा−त्र थाका केरनेकाम सवार । चरीबॉ-प वडी दर्ग ग्लीका जुला। थण-पु॰ (मे॰) यजा !-ह्रम-पु गुर गोपुर ! -यजी-भी राजी नामक शर है चण इ - दु (मं•) यनाः एक गोत्रकार करि । चनका-भी [मं•] तीही। चलकारमञ्ज-पः [स्] भारत्य वास्यादनः । गुणिका – स्रो [में] एक पास तो दवा के भी काम आधी है । श्रामर्गग-पुरुदेर चतुर्ग । गतरभेग-५० देशेका व्य दोष । धतरभंगा-पि॰ धनरमंग दोतवाका (६०)। भागुः - नतुः सा गुमामगत स्व । -शस्त-विश् वारं गुरी-बानः । -सान्य-पु प्रपोरः। -श्रेम-पु देश यु होस । -संबद्धाय-पु दे चतुरश्वराध : -सन-पु अधारी भार पुथ-गमस, गमंदन समातन और गन-रामारा रिप्ता : नसम-१ 🔾 'पनुगान । नसमूह ~ि भार शतुर्वे न वर्रिवेश्य (१००) । ~सीमा~नी० दे वत्रभीमा । –सूर्या=भी वे वत्रम्या । चतर-दि [र्ग] भाराकः बीदियार कर्पत्रधा तत वर होना। होर । पुरु किया-नपुर वा सनन पशुर अन्दर (स))। शार्वतरासा। गेल्य ॥ इवा वस गर्वत ब्रेटिएवारी । -- अस-- पुर ११ तन्त्र (धर्मा) । -श-नि स्व जान-ALT I चताई न्या॰ ८ नपुराई । हा न्यानमा नर्गातमा -वासम्बद्धाः-चार् धन स्त्र मार कृत्रम् दश चनुरवे कलन ६ -गृह व चपुरक-दि [ले॰] दश्च डीडियार व चत्रसम्बर-दर दे 'ह्युग्सव'। नरुमाई- १ किस्सी सन्त्राधा भारतायम् - न भन्दारे ह चतुर्=ि [५] धारशुरु थन्।रीरम्भश्रीमस्परी

बह राज्य केवल समासमे स्ववहत बाहा है। ।- होता (र चार अंथीबाहा । य बनुर्शनि मेना हो हेन दूर दराज अभिकारी। यवर्षमा एक सरका याना जिसमें सामक तराना, तबके बादिके केन बार्ग दान है। -अंग्रियी-वि सी॰ बार अंगीनाही (मेमा) । में राष्ट्रियान रच और पंदल−इम चारी क्षेत्रीये सन्द्र क्षेत्रा i = क्षेत्री-(शिक्)-वि॰ बार अंगे बला । - जेगान-वि बार अंदुक चीहर या संश । दु० सम्प्रतास । —संगुधा—क धीतकी तता । -श्रीन-दिश पारी श्रीरदेश ग्री पा केता~को॰ पृथ्वी । –भ्रम्य-पु अदयदा १४° जेंगीरी मीन और ऋगशी मीन-इन पर गरे क्येश समाहार । -- अस-वि श्रीक्षेत्र प्रमुख्यान हर्षण । कु बौदीर बाप्तिका क्षेत्रा भीता वा बाहरी रही। (१३) १ ब्रह्मनाय सामदा रेमु । **– अह(मृ)–**५० वर्ग निमा कानः यार दिनोपे पूरा दोश्यामा एक मीमरह। = कारमा(ध्यन)-१ पर्यथरः (राग् ! -भानव-प्र अञ्चा १-काक्षम्-तु अञ्चलपे गाउरम्य पानगण करे सम्बात-१व बार भग्नमाना समाहार । –ईडिय-१ बार वरियोशने जीत । –ऋबान-पु» में र फेरन दिर्द और विपरामृत-का धार गरम भीओहा समावर । -शति-पु॰ श्रमेष्या निष्या ब्रमुशा । नमद-पु नर मानी जिसमें बार बेल जीन जाते । -गुम-निः पेट्रवा बिनमें बार वंद या वंचन ही (बर्ज़पर परमनेशक्षण) −ञानक=पु रमापनी शारयोनी तंत्रका यमरेगर# इन पार भोजीका समाहार । -ईन-रिश्र मार सं बासा । पुरु देशावन बाधी !-र्नड्ड-नि बार दीरिश्या । यु कद दिन्द बहुत विश्वत स्वेत्यत कह महुबात कह गानव । - ब्राम (म्)-दिव ी शा भी परवे । द्व १४६ मंत्रमा। -- भुक्म-पु मृ पुरा, ११ मर 🕬 वक साथ-बागान रशर्ग और अतन हुउस हिन्द तमानम बद्दानन इसानक और वानम-वे मात्र कार्र मोड। 🗝 विद्यानमा यार देर 🛚 देशत भीर वर्ष शान्त नुराय गीमांगा भीर तर्द (स्थान)- र १४ रिपर्यः -ब्रां-मी वर्णवर्षको भेग्यवं निद्धा-दिक(म) -अ॰ वारी भेर केंग्रह 1 ओ॰ वर्गो सिमारे । रिगन यु बारी दिशाने या ग्रमारण्या अवया बीर । नरीत −g बर् भार्यवदीन दोदी जानशनी गमरी (दर्बर्ट शान्दी श्री ११ वर्षेता च र रहे हैं है वे मार्ग नहीं न वि (ग्रहान) जिल्ली बारी भीर दरशाने हो। इ. वर्र श्यारे। -धाम(म)-पु रिएमेंदे चा मेर्च रे वारो बाम १ - बाहु-दि० संगर्धत । प्र रिमा रिमा -श्रीत्र-पुरु ह ना बीश अवदायम क्रेस की बीए बेहर-हत चुण यो १ हा शवास्तर १ नमञ्जूनपु पर्ने वर्ग शासकी हसीत संघ () पुरुष है। -भाव(१) वि धीर्क्य नेटरामा र पुरु ग्रहादी मानदा दार्चान राहर्व ≱3वात राजाः –शन्त-पुर रिग्याः नमुद्र^{नीः} भार स्थाने बन्दा हु । चतुर्थेण संदातिलु । नहरी (जिल्)-न केम्स्स रह रमा सामा सा स्वास्तर क्षत्रचर्ताति ६ ६ ४१ ल्झामान्<u>य</u> समार म बाला कामान्द्र मृतिया का शहर प्रवास ह सामा

मघरी-सी० सि दि॰ पर्यश । धर्म-पु (हं) पुर यामा भीष्यकाला पतीनाः पतीली । --वर्चिका --विचर्चिका-कौ॰ वमीरी, अम्बीरीः-अक्-ताम -बारि-पु॰ पहाना ।-वीधिति -पुति -रिस-पुरु मूर्व ।- जिल्ल-पु अमसीकर ।- स्वेत्-वि जिसके द्वरीरमे दापके कारण पर्यामा निकल रहा थी। घर्मीत−प सि•ो नपौ ऋतका भारम। यमां १-९ [सं] पसाना। धर्माञ्च-पु [धं] स्वं । घर्मात-(६ [मं•] परानेशे वर । धर्मोद्द-पु [२०] परीमा। शर्रा~प पद तरहका भेवन क्लेक्ट परवराहर (बक्रमा)। घराँद्य-पु गराँद्य (मरमा) । प्ररोमी-प कव्यर छानवासा ।

धर्यंक−ि प्र [र्स•] मिसनेबाल्या पाकिश करनेबाल्य । घषण-पु॰ [सं] पिसुना रमङ्नाः मॉबना पीसना (सिक-बड़ेमे)। चर्षित-वि [सं•] पिता पिता, रगश, भाषा हुना।

(को 'भिंगिता')। घसमा-म॰ कि॰ मारा केंद्रा जाना (तीर भारिका)। मार-पीत हो बाना !

घक्षायस, यसायसी - नी । परसर भाषात भार्योह । पलुभां −९ पान, पाता। भवदा-पुरे भीर । **घषरि≉**−स्त्री दे भीरा ।

द्यर्थ~प (सं•ी रगइ पर्ययः पीसना ।

षसक्तां−म कि रित्रक्ता। धमसुदा~४ वाम ग्रीमनेबाहा ।

धसना-स कि अप कि वै विसना। षसिटना−७ कि यमोरा जासा।

बसिवारा-त पाछ गोरल, वेबनेवाना सुच्छ, वेबहन

भारमा १ यसियारिन यसियारी-ली पासशीको वेचनेवासी थी। घमीट−मी यसास्तिका भागा कन्दीमें लिये दूर अक्षर निनदी गुक्ति भीर शुंररवादा रागक न राग गया हो

शिक्षरत शिमाचड । भमीडना-स॰ कि किमी मीजको इम तरह शाजना कि वद जमीनमें रगद सानी हुई निन्नि किसीकी किमी मामन में अमध्ये शरणांद्रे विरुद्ध मामिल करना। अस्ती प्रस्ती

पनीर निरामा निरामा । षस्मर−4ि [नं•] वेह । प्र थएक।

यान-वि [मं] शानिहर । पु । शिवा दिना गुन्ता वेनर । पस्मा-पु १ 'पिग्हा ।

महत्रामा-अव क्रिक्ट 'पहराना । पहरना~अ० कि दे धहराता⁹।

पदरामा-× कि गर्जन वैमा शुक्र करना। गरकना गहमहाना ।

पहरानिर~सी॰ पहरा का माना गर्भनः संनीर रहनि । घटरासार-त पररानेश बनि गरेन।वि गरवनशाणाः। पहराही • - मो । दे । वहराति ।

र्घों - स्ट्री० और, तरफ दिशा ! र्घोष्टरा-प व्यवैगा नोका की निमा। घाँघरी-खी हे 'गंबरा'। योडिक-पु+ [सं] स्तुतिपाहक वंदी अमानेवाका। भगूरा ।

साँटी! - लां । गवेश्वे अंदरदी भेटी, श्लीमा । घाँडी-प पक तरहका गीत जो चैतमें गाया जाता है !

घाँड घाँडी - ला॰ और, तरफ ! घा#-सी ओर सरदा

घाष्ट्र-सी दे॰ 'पान'। यात्रक#-विश् देव 'वायल' ।

धाई -- त्या जोर तरका यो बरत्रभीके बीबकी अगह संभा धेवरा गाउ बका ।

घाई-सा॰ हो उँगलिबाँके बाबको बगह, संग्रेः । भीधाः मे॰ 'वाम'।

घाडच-५० हे 'वाव'। घास्तवप-विश्ववृक्षरेका माक जमा अवसार वकार जामे बाकाः विस्तृक्षा मेर् कस्ती स सुन्ने भारी अंट।

षाग-पु देश पाप । घाछ-प्र जीवपुरी बीकीके एक कवि विनकी क्रविकर्मे मीति बादि संबंधी बहावतें बहुत प्रसिद्ध है। बहुत सामार

आहमी कारवाँ। बादगर। वस्तुको पातिका यक् पक्षी धासम् । घाचरा−प करेंगा एक तरहका कृत्तर। सी शरस् पत्री ! ~पकटम~सी॰ स्काटलेडवासी गोरॉक्श पकटम

बिसके प्रस्के(निकट)का घेटा करेंग बेसा होता है। घायम-५ यात्र प्रशी।

धाधी-न्दी+ मध्या पदन्तेका पहा बाक । घाट-प्र [सं] गरदनका पिछना मागः महाः मार बादि श्री उत्तरनेका रथाला (दि॰) मरी भ्रीक आदिमें वह रथान कहाँ कोग महार्वे थीवें जामबर बानी विने, भीबी कपहा भीवें: वह रवान कहाँसे मरी इक्कर बार दी बावे: पहार पर चढ़ने या बसके पार बानेका शास्त्राः पक्षाकः माद मा पुरुकी क्नरार्व, महसूका और तरका मैगिबादा गुला। तकमारका बादम कमरका भागा रंगन्तंग । भाग-दान्य श्री क्षी गिरी; कर्षमा । + वि+ म्यून, क्षम, चोद्या । 🕆 श्री+ क्याः क्ष्ममे : -क्यताम-पु न बंदरगादका वदा अक्रम्र । -र्थणी~स्रो वाव रोखनदी मनादी। *⊶दानद∞पु०* यान्या, गंगापुष । मु - बाटका पानी पीना-बग्रह

वीरी वनमा । "धरना-राष्ट् धेरमा । "नहाना-विस भार का तालाव भारिकर भवकर्त किया जा रहा 🐧 वर्षी महावर तिस्रोजनि वेशा। –साहमा-पाटका सहसूट उत्तर्भ न देमा । (कियी) - प्रमाना-क्ष्मी (स्वामा क्ष्मना आभव शिलमा।

अगब फिरमा, अन्दाना क्ये घट धरणना। बहतेरेकी

थाटा-पु रोता, परी, मुक्मान । सी [ग्रं] पहार मार बादिन बहरनेहा स्थाना गरतमहै बीरोध हात । पाटारोड :- प् पान्दा सर्राप पार्शनी, पारसे दियाची

उन्हेंने म देना । पारि॰~4ि• कम स्पून । सी भीव कर्ने दुर्शा दुन्ह । यादिका-स्री भिश्वी गरण्यसा विण्या माथ।

यनाव∽चवेती रााया जाना है, रहिला। -सार-पु॰ समेडे टंडक, परियों मान्द्रि प्रशस्त निवाल हुना धार । धनाय-भी वंपारकी धाँच प्रवान महियों मेंसे यह बो लक्षमरके पहार्थमे निकलकर निवर्षे विरती है, बंहसाला । पमार-पुण्ड कीना पेड जो बदमीरमें बदन होना है और बड़ा सुंदर दोता द । धनठ१-५० दद तरहरी गाम १ चप-वि॰ (पा॰) वायाँ। -वस्त-बु॰ यह योहा जिसका मगमा दाइना पेर सकेद हो । —व हास्त−िश शहमा कार्योध्य दाइने-कार्ये। चरकन-भी। यह सरहया शिएखाः है यह सरहवी उनके इमक्ष्या । चपक्रना-अ वि देश 'निषक्रमा'। चपप्रत्यस्य-त्यां विश्वी तत्वारकी बदारी होगा, सगहाः भीड़ा जगहरी नंगी: महत्रज कठिमाई । चपका-म पद तरहका दौशा। चपकामा−स• कि दे निपदाना ३ चपकस्मि-धौ+ दे+ 'धपाक्य'। चपर-९ [मं]दै॰ वपेर' (मं)। रापटमा!-ध• कि ६ विषश्मा । चपद्यां-दि देश दिया । चपदामा!- स कि निपदाना विमराना। चन्द्री-वन्द्री साली। पुरद्री। एक ब्रीहा, हिल्की। योनि ! र् वि• स्मी• विषयी । चपद्रज्ञनातिया-विश् नाष्ट्रमः सुगावणै । पपदगह −िव• दे• चथरगः । चप्रदूषप्र-मी हैं। 'नमहत्वमर । चपदा-प्र साम को हुई लगा। परहा दह की।। चवत-गा समाधाः धीनः बद्याः सुबसान । -गाइ-इ सीपरी i-यात्री-मी० मनीरिनीएके किए किमोक्षे वस्त मगाना । मुरु -वैदना -क्ष्मना~नुस्पन्न दीवा। चपती-गी यह बैही बाहबी बड़ी विहमी स्पन्ने नकीर चपना-भग्रद इरना कुनमा नामा दाध्ये दहनाः मातित होना र चपनी-सं। ६ भी: महिनाई मारियवडा क्यंत्या पृश्नकी द्दी: इंडीस दहन । चनरगदह्-वि स्थामा विषयमधा गुम्बयगुमा। चपाता-स दि०दै० प्रश्नाः शानना । भारता-पुरुषेत्र संदर्भ । चरराम-मी॰ शिनारी अद्राप्ती आदिश पानुनिवित्र जिह जिने देने बा दरल्डेमें समापत साला दा मुखामा Correte Sere totte an trattent trum (I Cra योगी पर्सा । थरगमी-द धरशतकानकरनेशना व्यक्ती निकारी। चररि -मन्द्रपारर पुरतिने- रहि स लिएक बाह भारे पण्यो है न्दरिश्यमी । भारती*-मा तद करक, रेगारी ह भारेमा⁴=५० इद दन्ता

भरम-(रगः) श्रंबन क्षां ब्राप्तेश कररवाताकविवासिः

किर्देश । तु याता मण्डी। परीदा। पढ तरदा प्रा इका संक्षेत्रक सरहका गंदामा, भारता रह मरास क्तरी ग्रेम । चपछक-दि॰ मि॰। बरियरा मधिनारी। चपम्पता—भी०[र्ग०] र्ययम् हा, करियरमाः नेत्रीः मरणार्यः। चवळा-वि श्री॰[में] चवर, धेयन (श्री) । औ. स्तरी विवतीः बंधनी भीः जीमः मन्। समा विपतीः। चपसाईंग्-सी अवत्या। वपसामार-अश्विश्विता, वहता । सु (६० वरण दिसामा १ चपपामा-स॰ क्रि॰ इराजा । थपादण-मण् अयामहा बरदर । चपार-पु॰ वह जुना किमको एनी बस्री न हो। चवार्ता-को पनना रोग्ने हरना ! -सा पेड्र-फेन्स्स और दवा भैना द्वा है? ! चपामा-त॰ कि इस्तामा रहती वा युवधे शामा ह चपेट-छी॰ भटा- श्लाह स्वात ! ५ (५) भाग तमाना र क्यंडना-स॰ कि॰ शास्त्राः रोग राव दुर वस्त्राः र्दोध्या । चपटा−षु बद्या दशकारसम्। श्री (संग्) वस्थ तमायाः १ चपरिका-मी [1] तमाशा । चपेरी-स्प [मं] भार-हाहा स्था। क्रेरना ॰ ना॰ कि॰ इराना पास्ता। क्वीरी-मी चारी रोपी। शिएमें बधी हुई रोपी। खप्पड-प॰ दे दिन्पर । वलम-९ (एएचा स्टोरा । चप्पल-तुः स्रो० परदे रहेदाः जुहा कार्ने रेग हरे समा होता है। चन्या~तु भार अं<u>श</u>व वा पार दिवा स्थान वैशाल श्याता शृशीय । -क्या - व रशीरके हा वन्दा क्यी-रो॰ व्येपनेधा दिनाः भीर भीरे व र रण्याः चरपू-पु॰ दन्शरदा द्वाम वेनेशसा दढ दर्द्य हो। **थबक्रो**-मो रेगु (६ दर्शनः) चवद्रमा - न॰ दि॰ रोमला दरे दरमा । शवकाना-म कि बस्मकारी है। बराई०-५ वे॰ नारे । चवानां न्य कि द्विमृत्यमा पृत्यामा वर्षे चवावर-३६-१६थ ५० वाहोदी धार वाहानी हरि (शेनजारे । इस अवस आजा-मा अप्ताचा आर^{ा ह} बबारान-इ औरसा श्रवाय•~पुरुदे नरान । बसायमञ्जूष है अस्य । बर्गा-द निर्देश की बर्गाने केल्टे जिन बना म्बा केंद्रा केंद्रा क्वाम ह करेबा कर्वमा-पूर घरादर बांटेरी मीत हुता र्या सम्बद्ध मारच धर्गर भूति। ३ बदवी बदवी-संग्र लगे शतः स्थितं कर्मः क्रमान के धामदी महेना सन्दर्भश देन हैं

चिरतः ब्रिटिसक-प है 'यून ! विरमा-म॰ कि॰ पेरमें आगा, पेरा जाना। छाना, पैकमा, (धरा विस्मा)।

धिराती-स्त्री करें मु यानी ध्यों बनेकी घरसी इस्सी बढनेकी कामी । प्र यह बरुपशी सोडन धन्तर ।

धिरवाना-म दिः पेरमेका काम कराजा। पदात्र करामा ।

धिराई-श्री धेरतेकी जिला प्रश्नोंकी चरातेका काम मा एसकी सम्बद्धी।

यिरामें ए-न्दों मृतको पूर्व ।

क्रिताल-प॰ धरनेकी क्रिया या भागा थेरा ! शिशायनाक-छ कि दे 'पिरमाना ।

बिरिनि, बिरिनी +-सी । पु दै 'पिरनी ।

धिरिया-सी शिकार वरेनेक किय वशाबा बना आद ftreiber ber !

धिरीरारं-प मसका विका धिक्रां−प को।

पिसक्स(-भ• क्षि दे पिस्क्सा ।

धिमधिम-मो० हर, दिक्का अनिश्चय ।

विस्तान है। कि किसी क्षेत्रको किसी करी। श्रीजपर पस तरह रगक्ता कि प्रसक्ता कार मंद्रा करता काथ (फलर. चंद्रम पिससा)। स॰ कि. रगहस बहना क्षेत्रना । प्रिसा-पिटा पिका पिका-विश् जो बटत विजीस चला ना रहा है। चिरम्बबद्ध पराना।

पिसपिसां – भा• विस्तितः सदा-बद्धाः। पिसमाता -स कि 'पिलना'का हे ।

बिसाई - तो दिशमेकी जिना ना भाग दिसमेकी कवरता विसमेसे नह दक्षा भंदा ।

बिसाना~स कि विमनाका छै।

विसाय-प्र• धिसमेका भार, रणना धीव ।

विसायर-मा देश पिसाव ।

मिसिमानां∽स कि पर्यादना।

भिसिरविसिर~स्त्री॰ शिमस्यि ।

धिनसमधिनसा~प्र वक्रमवद्याः सर्वोद्याः एदः सेसः । मिस्सा-इ रगता यक पर्तगाध बीरका बूमरी पर्नगढी बारमे रनव गाना, पद्माः करनीमें प्रतिस्वकानी वरत्यपर

क्रममा भीर समार्थने पांचको प्रश्लोको रगप देला, हरा । घीष १-मी शहरता

भीरियां-स क्रिगीयसा।

भी-प पृथको निक्रमाई या क्ससे असग् बर सी गयी हो। गनावा हुमा मस्यान । -कुमार -बुवार-बु॰ प्रत-कुमारी प्वारवाटा । -का श्रीरा-संयाधे द्वार योकी भार । मुरु -का कुत्या सुँदना-वर्श बनी वा रांसकी शरा होता। मारी शांति हीता । -के विराहा या विधे अमना-मुरार पूरी दीना, बहुत मानंद दीना । -के चित्ता या दिये जन्ताना-मम कामना पूरी क्षीनेपर गुटी बनाया, व सर मनामा । - विश्वर्षः हाम-मगा मैम यहरी दोली होला।

र्षाया-पुरुष्ट्राकोशाः

घोरार*-म रमन ।

र्में पची-भी । एक बेल- बगुडा लाह बा स्तर ई गडा बीज

मेका । वैद्याती—औ॰ चंबाला या शिगैष्टर तसा द्वारा पता. प्रशः

र्वेघराराक-वि• वे 'प्रंपराका ।

ग्रॅंचनका--वि॰ वस साया दमा, ग्रहेशर (केस) केवित (बध्यकत-वीयरास-क्यमें दी प्रशक्त) । (स्ती॰

'गुँबराका' ।]

र्वेषक:-प॰ जाँदी, पीतक कादिका गील, पीला बामा विसक्ते भीतर संबंधी भरी बीती है और विसनेने वजता है. संबोधः ऐसे बार्नोका बना बचा पाँकीर्ने पहननेका गवनाः घटकाः चनेते अधरका धील !-वार-वि॰ जिसी वेंबर का हो । -बंद-वि नावने गानेक देश करने बाबी (बेध्वा) । --मोतिया--प्रश्न मौतिया बंकाना एक भव ! 🗝 -वाँचमा - माजमेको तैबार होनाः मरबधिमामें

तिष्य बहासा । व्यवारा व्यवासा-वि॰ दे॰ 'त्रवराहा ।

पुर, ब्रोटक-पु [बे॰] श्लमा, ग्रस्ट । धेरका-ध कि दे॰ परना । मुटिक-पुर [में] बंदा !

प्रिका-सी॰ [तं•] दे॰ प्रं । र्श्वशी-स्वीत इपनेश्वी गोसी जिसमें बटनका काम नदी हैं।

कड़ कोक्षन आदिकी शुक्रममें छोरपर बनी हुई गोक, शीकतार गाँडा यह जास ! - वार-दिश निसमें पंदी

वनी हो । पुमा−पु रे॰ पुना ।

बहुँयाँ-सा॰ एत शास्त्र, अन्दे । बाबी-स्वी योषी। पंत्रक ।

याच-प्र थस्य ।

प्रवरी प्रवरी-मा॰ प्रवती। सम्बा-प्र १० भूष्य ।

प्रमुखान(- म कि बस्तुका बोहना; तस्नुकी तरह बीकनाः विर्देश्यो स्टब्स् शरीमा ।

शरकता निस् कि॰ प्रेंट प्रके पीना; निस्त जाना । भरकी-सा॰ गणका यह मधी विससे दोकर आहार देवमें

वर्षे बता है। बरका । सु॰ —सगमा—प्राप्ता बरगत होता । घटना-व कि॰ वीरा जाना पैसा बाना पन-मिस वामा वक दी बागा। रयहसे विक्रमा दोना। (सिर) मुँहा

बाना। श्रीस रक्ता भटकता । अन् धर-घर करके जात बनाया मरना--गुड-बुरुद्वर असम यह मुद्दते ५०

मरना । शुद्धा हुआ-मुद्दा हुआ, मन्द्राचह (मिर); बन्त बानावः कावया ।

शहमा-प्र माम श्रार धीवक भीवना भाव । सु -(ने) हेकना-पुरने जमीनन कपानाः अधीनता स्थीका प्रदेश वरावद स्तीदार कर ऐसा ! - (भी)हे दस चारमा --

बधरा वैशालको बलमा ।- में सिर हेमा-गोबमें बैदमा भिवित बाास दोना। एत्यित दोना । -स सगहर बैदना-दरस्य पान रहता सटे श्वना ।

ग्रहमी !- म्या गुरमा !

पुरुषा-पु मुस्नेत्रहरूर पात्रामा निकास स्व स्वर्णास

शामामा भी रणनीन कार रहता है।

वासी एक भरपन बादि । —चीदस-क्षां वनारीका बरुसा बार दिनको चूमवामा शीर गुरू इसका।

चमारिम-सा॰ चमार सी। चमारी-सी चमार सी: बमारका र्थवा र

घमीकर-प्र [६] होनेको एक (प्राचीन) सान ।

प्रमुपति –पु [सं] दें • 'कम्पति'।

चस-स्री [सं•] सेवाः सेनाका एक भाग जिसमें ७२९ शांनी ७२९ रण, २१८७ समार और १६४५ पैरक बीते के इकन का । - वर-प्र सैनिक सिपादी । - माब -माधकः-प -पति-पु सेमामानकः। -द्वर्-पु सिव ।

बस्ठ−प्र (र्स•] एक तरबका विरत । करोकिया - विश्वमेकीकै रंगका।

चरेक्की-सी पद साहीया कता विश्वक पुत्रकृष्णकारी सर्गभने लिए प्रस्तिक है। स्कार जास-एक तरहका क्योदा । —का रोक्र−वर्गकोंके फलोंसे बसावे इप विकता तर ।

चमोदा−पु नगकेबा द्वकता विसपर सुरेको पार नेव करनेके किए रगक्त है।

चमोडी-की जमोदाः चलुकः पत्रशं छनाः साम वा खराख्में नपेश बामैबाका तरमा ।

चारीका, चर्मावा~प्र चमरीवा ज्ञाा धमाच-प देश 'शमधा ।

श्वमस्य-प्रभीय मौगनेका व्यक्ता मिछापात्र ।

खब~पु•[मं॰] समूब हेर; नोवें हुद, ग्रेका; खाईको मिही-से बना हुना बाँच या शुरस धुर्यभाषीरा क्रिकेश फाटका तिपारै। चौकी। ककशैका केटा लावरण बात क्लि कलमें

से किसोका वह बागा। मन्त्र-बद्दन । चयक-वि [एं॰] चवन करनेवाका। पवन करवेसे कुछक ! चयन~पु [सं∗] रसहा करना भूममाः पूक भूममाः क्रमसे क्यानाः शुनी हुई वरतुर्मीका संग्रहः बच्छे किए शक्ति। एवं संस्कार: क्यूबी जमा करमा: + रे 'बैम' । —शीक्ष~नि संपद करमेशका संगदी ।

चयनिका-की [सं] जुली क्षर्य करियाओं कदानियाँ मारिका संगद।

चयमीय-वि [र्ट] चयन रूरने बीग्य ।

चर-९ ऋपने मारिके प्रयोक्ता सन्दर्श सिंशी त्यराह वा परराष्ट्रको किमी गार्ते माध्यम करनेपर शिक्षक व्यक्ति, ग्राह बृत भेरिया। बृता कीही। पालेका शेका खेररिया भगव धावः मेमकनारः मेव कर्क तस्य मक्ट राधिवाः शासवा करमा करमीका समाधारः नाषुः वी देशांतर-रेखाओंके बीच पढतेवाचा समयका शंतर । वि अक, अरिवरः क्षरुजेवाकाः चीत्रवारी समीव । ~काक्र~पु दिसमान वासमेने उपनीती कासमेर ! -गृह -मा-भवन-प्र चर राशिल-मेच कक, तका और सकर । −क्रम्य~प चस पदार्व संपत्ति । - बहाब-५ स्वती पुनर्वतः अवग चरित्रा भादि तक्षत्र । ~प्रष्ट-प्र अध्यस्य । ~ भर्ति-ली वह मुर्ति जिसकी सवारी निकाली जान । चर्त्र-स्त पशुर्वीको चाराया गामी वैनैके किए क्यर नारिका नना बुना बीव; शारदी भूँगे (क्रपीर) । चरक−ला रे 'चरको'। पु॰ एक प्रकारका अब विसर्गे ।

बदनपर अफेद दाग ही जाते हैं, कुछा [सं] चर, हता आयुर्वेदके एक प्रचान आवार्ग जिसका प्रेन वरस्मिता मानुवेदका प्रवास विकित्सामेन माना बाहा है। क्रक चंडिया। विचनापकाः भिन्नः । —संहिता-न्तीः भरक हनिः का ननाया हमा विकित्सार्धव !

चरकरा-प्र॰ कर, हाथी मारिके किए चारा कासर करने गणाः तथ्यः धन ।

षश्चना≠−न+ कि दुदमा, कृत्या, शरकरा। चरका~५० दक्कासा वहम आहेचा भरम कीदेते दावके

का निधान' शानि, शाराः क्कमा, बीबा (साना, रेमा)। चरकी-स्ता [सं] एक विपेका मधका ।

चरस-५० वाकः वरसी विरतीः सरहा चरसाः रेहर

वा सकावत क्षेटनेको चरबाँ। डेकवॉस। होर होनसभी गानीः कमानवमाः एक शिकारा विक्रिया । -कस-प्र॰ पारावकी बोरो धी बनेवाका धरावी ।~पुत्रा~की भेक को संकातिको क्रिको प्रसन्न करनेके रूप दोनेवामी एक सामृदिक पृथा !

चरसा~पु बाबसे धून बातमेका ध्राप्रनिर्मित येव (श्राप्तना पकाना) शहरा शून कपेरनेको भरधी। विश्नी। कार्काना कुरतीका एक देंचा कराका रस मिकाकनेकी राजा नेवीन पश्चिम शिथिकांग बुद्ध व्यक्तिः अंतरमाठा साम ।

चरपी-ली॰ पुमनवासा पहरा भारत नोहती। होय परकार पूर कपेरमेकी फिरफोर एक बातिश्वामी यो पहर बाती हुई सुरती है। जुवाहोंका एक में बार। कुरेंसे पानी निवासनेकी यराची: विदेखा ।

बरग≠−पु॰ बरदा सामको विकास विकिया छउउनमा । चरचना − छः । कि॰ चंदन हेसर बादिका क्षेत्र क्ररनाः गर भागनाः वादमाः सापना-"सैननि यदाव वर्षः ग्रेमनि अफिल भई मैग्निमें चाह करे दैननिमें ग्राहेवीं नार्त विकास। पूजा करमा-'स्राकाश <u>स</u>नि करन करवि करें धरलीयन रुपि मानी —सर ।

चरचरा—त सामा रंगको एक मितिया मिताने आहे सकेर बोदा है।

चश्चराना∽क॰ कि 'बर्-बर'की आवानके साव हुरवा वा बकनाः चर्ममाः तवावदे समध्य वर्ष दोना । **बरचराइट** नहीं परबरानेको किया वा माना किये की र

के चरचरामका शब्द ।

बरिवतण-विवे वित्तर्गा चरचा०∽सी दे 'वर्षा ।

वरचारीक-वि , प्र चर्चा करनेवाचाः विस्का श्वरम×∽प़॰ श्वरम क्यी ।

चरजमा∸त कि वहकाया । अ॰ कि॰ अंदाजा स्थामा । बरद्र-प्र. मि] सैन्दिया

चरण-पु [सं] प्रेंग एग करमा शेलका बद्रवीर संरक्षा तथ पार, मिस्सा। चीवार, चतुर्वास। त्वविमानः वेरको कोर्र शारता-कर कीतुम नादिः नृतः वहः रर्गनः सदाराः पराशिः धूर्वं चीत्र आदिको किरणः करता अपना अक्षणः व्यवस्थानः वर्गविक्षेत्रकः विक्षितं कर्तः वाक्षणः (सा) जरमीकी समीपना जाभवा गीत आहि। अम ! -कसक्त∗-पद्म-पु पारवच हुंदर बरण । -गत-वि*

भूसना-न कि दिशी तरह बस्तुमें इक हो माना, गड़ बर् मिक भाना, गरुनाः विषयना, चन्नर भरम होनाः (रोगारिसे) मुखना थींण शेमाः व्यवीत होमा। मु• पुस्कर काँदा होना-वहुत दुवका हो बाना। पुख मुसकर जान देना सरना-रोम-छोक्ने कमधः सम्बद्धः स्तरहर, बहुत दिनीतक कट बठाकर भरमा । शुक्र-मिक्र कर-पार, मुद्दमतके शान दिल गिलकर। गुसा हुमा-स्त्र पदा हुमा। विख्यिता। बुढ़ा । पुरुवाना न कि 'पुढ़ाना वा 'भीठना'का मे । धुस्रामा-स कि सप्तामा विवकामाः परम विकविका करनाः चुमकानाः (मुरमा कावक) संगाना रथानाः

रिवाना । मुखायर-सी मरभी विषयिनापना काश्रम सुरमेकी द्योगा ।

मुमा-पु•दे 'पृशा ।

धुपना !- अ कि बाद होता ।

पुषित पुष्ट-नि [सं०] विसकी योजणा की गयी हो चन्दित ।

युक्र∽दु [सं] धस्त्र गाकी।

मुसना−म॰ फ्रि॰ मौतर जाना, वास्त्रिक दीनाः वकपूर्वक मनेध करना। भसना। दिनी काममें दशक देना। तूर हो जानाः ज्याम देना ।

सुस-पर-सी पर्देच, रहाई।

ध्रसवाना-ध कि॰ प्रसानेका क्षम कराना।

युसामा-स॰कि भीतर पहुँचामा,वाशिक करमाः वैद्याना। ससेदमा – स॰ कि॰ मोतर पर्देवानाः वैद्यानाः ठैसना । प्रयट-प सारी, दुपटे वा पाररका किनारा वो ली

क्रमापरा पररेके किए मुँदपर गाँव छेगी है, अवगुंडना पाइरी दरवानेके पीछेदी बीकार जो भौगनके परदेखे किए बमाबी जाती है, गुनामनारिया भोनेको ऑग्यपर डालनेका दरश भेदेरी । सु॰ =वटामा =वलटमा=ग्रँड मौकनेके लिय वृष्यक्री उपर बढाना यहहा इडाजा। - क्रम्मा -काइमा -मिकायमा-छात्री-दुपट्टे आरिते हुँदकी दक

सेना परदा करना। पूँपर-त वानोमें वहा हुआ एन। -बास्त-वि श्रीय राना (शल) ।

र्षेष(१०-मी॰ प्रेंपस, मृदुर ।

र्षेषा-पु॰ वृंता।

र्थेट~ इंकल या दिसी देव क्लाक्टी कह मात्रा जा स्क भारमें मर्थ्य मीचे उतारी वा सके। किमी तरक बदावेडी भीशी मात्राः एक तरहका पदाशी टट्टुः यक वेहः कठनेर । मु - वेवना-बीनेके बद-वेब बदार्थकी एक मात्रा मबर मारिने दबनेदे किए वसीनवर मिरा हेना। पॅरमा-स कि किमी तरम बरार्वकी गलके नी वे बतार ना । भेंद्रा-पु पैरदे गापदा जीह । प्री-मी वदीश्रे एक दवा। भूम-ग•दे ५०।

गुँगा-प प्रदासके निष्ट क्यी दर्द सुद्दी सुबा। देनी सुद्दी-का महार। -(म्)यात्री-सी॰ पूर्वीची सहारे। मु -(मी) वा क्या क्यार !-मारका करणा शुरत ऐना

मारमेशनेकी तरत मारशः चाहिने। पुत्रा−पु काँस सरकटे मारिका रई बैसा फुल; को पहने रहनेवासा एक धोवाः चूस बटकानेका छेर। पुक∽दु[र्ड•] छन्द, पुष्पृ।[स्रो 'पूद्धे'।]—मादिनी~ स्री गंगा।

पुका~पु सेंबरे हैंइकी बींस बादिको शेकरी।

चुकारि-पु [सं•] कीमा ।

धूम-पु नुक्यें मिरके रक्षार्थ पहनी बानेवाठी कोहे या पीतकको वनी टोपी दिएसाणः र मुँघर। युधी (- स्त्रा थैटी पुग्पीः पे दुस्त्रीः)

ल्पूक-द∙दे 'पुन्त्'।

मृदनाक-स• कि दे 'ब्रेंटना । ष्का-पु•दे प्रा।

कुम-त्वी धुमाव, मीहा थेरा !-धुमारा~वि भेरतारा यतवाकाः वर्वीदा । - युमाव-वि वदरवार ।

क्षममा~क कि किरमा **क**दर **का**ना पर भरीके भारों ओर पद्धर साना। प्रमम बरना। मुख्ना। सी बा।

🕫 जम्मच होना । **पुमनि=~मी• पे**रा ।

म्र-पु• दे 'वृरा । प्रवार-ली॰ दे 'ब्रायारी'।

पुरेशा-अ॰ कि आँखें गहाकर, दीसी नियाइसे देखना।

काम वा क्रीवमरी धटिमें देखना । बृरा~पु∙ क्हा-करका प्रेंकनेकी बगर। कृते-बरकाश्चा हेर ।

भूराचारी-की पूरनेकी क्रिया भूरना वृर्ण-पु॰ (सं) वृत्रता, पदर सामा । वि॰ गूमता हुन।

भ्रोत ।-वायु-स्वी वर्वहर । पूर्णत-पु॰ पूर्णना-मो [मं] पूमना पक्षर शानाः

भ्रमगः पुमाना । घूकिं−सी [सं] नृर्णम । वृद्धित-वि [मं•] भूमता श्रूषा प्रमितः पुमाबा हुमा।

– आव−तु भेवर। – बात – पु॰ वर्गदर। बूस−की वह वन या वस्तु की अपने अनुकृत, पर अनु

किन, अन्य कार्य कराने दे विष किनीको वी जाव (रेशह (शाना देना केना)। पुण्य तरहवा वदा घटा। -मोर-विश्वम सानक्षाः ।

पूषा-२२० [मी] पिन नयरता बीमरम रसमा रथानी मानः दया करणा !-शास-पु कुप्तोह ।

पूजःसु-वि [ध] दयानु । भूणप्रसम्द~दि [र्म•] प्रदा करने बोग्य ।

पृति−५ [लं•] किरमान्यास्यास्य त(या स्काकीका विषयक्षार अधिव।-निधि-पुनुषं।स्तो॰ नेनाः। शुनित-वि [तं] प्रयास पान प्रता करने वास्या

निर्दित निरम्द्रत गरिव । यूकी(चिन्) -वि [सं] एवा बरन गमा। दवानुः दीप्त ।

शुक्य-वि [मं] एवा करने थाम्य प्रमापात्र । शुम-पु [वं] पी। यह । वि: विशिषा हर किया हुआ। आश्रादित । - कर्रज-पु पद तरहवा कर्ज कृत ।

-बुमारी-की पीडुकार १-बुम्पा-भी भी में मही। थीश पारा ।- इता - श्रीधिति-पु॰ भग्नि ।- धारा-

सरावारी । शिव 'बरियवती' ।

धकनवाका 1

चरिमा-नी [संश] शमशीका वेह ।

हुगों । क्यों(चैस्)-पु [गं०] कुनेरकी मी जिंक्शोरेंसे एक र चरिष्मु-वि (सं=) चलभे-फिरमेशासा, ३.शम।

सुराई।-मायक-पु है 'बरितनावक ।-धंशक-पु मैत्रोपूर्व प्रतिशा ! —हीम-वि दुशरिष घराव वाक चरिप्रवानु(बन्त) – वि [सं] अच्छे पान-पननवानाः

गमन। –गद्रम−पु क्षिः] शीलः सरावार-पृतिका निर्माण । नदोप-प्र भारत्वक्रमध्ये धरावी आवरणक्षे

चरिश्र-तु [र्स•] मावरण व्यवदार; पाक-पक्षता वर्शन्तः क्रम-ककापः श्रील स्वमायः सदायारः कीवनी असा पैरः

करनेगमा । चरिताबद्धी-न्दार (एं) वह पुरुष जिसमें बहुतीने जीवन वरित विदे पने हीं चरितप्रका ! चरिसर्†−५ चरित्रा ग्रम, फरेना थॉग ।

मनित होना । चरितार्थी(चिन्र)-वि [शं] सफ्ज्यकी

(प्रक्ति चरिताई होना) । चरियार्थया – जो [सं] कृतार्थवाः ववार्थं सिकः बीनाः

चरिदार्थ-वि (एं॰) विस्ता भने, मनोजन सिंग थी गमा हो। कुदाओं। एंद्रहा जो डीय करते, बचार्ज किय ही

बृष्ट । विश्वभाषरितः किया क्षमाः प्राप्तः गतः पातः। -कार -केक¢-४ जीवनवरित्रका केका !-बायक~ पुर निसी कथ:क्शनीका प्रधान पात्र । चरित्रम्य~दि [ઇ] आचरण इरने बीमा। बाने बीमा ।

चरि~प (संोफ्स। चरित-त॰ [सं] काथरणः क्रमैः श्लीक, रवमावः जीवस-

पद्य-प्रथी। चरिंदा~प फि.] चरनेवाका प्राप्त कलवर, शीपाया ।

श्वराधर#-खो॰ रकतात । चरित-प फा हे 'नरिता । -स परित-प्र॰

भारिमें है बाकर याचा भारा बिकाना' नेरक्क पनाना मोसा देता। धराष-५० चरशेः धरागासः।

क्सिमें से सम्ब निकाका बाला है। श्वरामा-स॰ कि॰ गाव वेक आविको जंगक गैदान

रबायर और जेयस । तः संपर्धं चगर । जाकाशः । – सह~ पण्जाकाः परमेश्वरः सिन्। चराच-प्र॰ चरामादा समुद्रकाके वास सारे पानीका वकरक

पासका मैदाल । धराचर-दि मिं । पक्षमेशका और स घक्षनेताका

भरारतम~प० फिर•ो ('बराय'का वह) बहतमे दिवीका साम व्यवसा, बीपोलसम् । धरागाइ-प [या] क्यानीके परनेन्दरानेकी नगह,

चरानेका कर । श्वरारा-प्र• किर•ो निरामः विवा ।

चरहीं-सी वे बरमी'।

चरसिया, चरसी-पु॰ चरस पीतेशका चरसका व्यस्तीः चरी-सी पञ्चभोके चरवेशे किए वर्गासारको बोहरी है चरछडे बारेने पानी निकासने वा धैत सीवनैवासा । चराई-सो॰ परने वा परामेका कायः परामेक्षी कवरतः

भी बास्मा वासी। बंशन सी। चरीस-प० सिंशी है। 'बरीक' ।

चक-त्र गोचर भूमि। गीचर मुमिका सरा (छं) वा

याव-वैसंबिध सिकानेचे किए नोनो गर्ना हो। [सं•] इर

नाइति देनेके स्वयं एकावा हमा नह, इम्बाका वह वात

विसमें पर पदाना बाना मेप वड़। - खेडी(किन्)

पु॰ किन ! -पाय-प ,-स्थासी-खो॰ चर कार्य-

नरतम । —प्रण-त॰ एक तरहकी शीक्षे या नक्सान ।

चरमधी—प्र भीवे मेंबका मिट्टोका बाजा का पात्र जिस

चरैका-पुबस तरहका चून्हा क्यितर भार पीत्र स

चार्व~ंत्र [का] धुमनेवामा चक्ररः चानः समाव

धरारा विची हुई समान धरबी। देववंशि चरधाः स

तरहका नाव । -कश-प्रश्न सराहको होऐ योननेनाना ।

चर्च-प्र [सं] दिवारनाः [श्रं] ईसारबीका वराठमा अंदिर फिरका। ईसाई कमें माननेवालोकी समक्ति रेसर्म

चर्चक−व [सं] चर्चा करतेवासाः मावन्ति करनेवाना । चर्चेन-त [सं॰] चर्चा। बध्ययना सञ्ज्ञातिः वरमारिका

चर्चोरिका-सी [सं•] नाटकमे एक करना निरमंत्रे ^{मार्}

शीर वृक्षरा घटनेके पहले गावा जानेवाका माना गण्येते

शास देगाः जागोरभागेत्यो पूजा उत्सवा भारती। पुँचराने वाका यो अवस्थितिका नारी-वारी करिनाकर

वर्षेशे–या [संग] वर्षेरिका वॉन्स क्रमा रेम्स्मिर्म प्रमाशा वर्षकीया जानीव प्रयोगः गामा-वत्रामाः करवस

ज्ञानिः तासका त्या नेदः वस वर्णवृत्ता वस तरहसः बीना

वर्षारीक-४० (6०) सदाकाकमेरनः नाल सॅनारना।

क्की-भी [में] पाठ जलांचि। नार-निनारी मिक

श्वामः वार्गान्यपः वयावादः विवारयाः चरमारिका केवनः

मनैसंबर रैसाई पसेबा बोर्ड विदेश संस्थान है

पचान्द्रे किए गामी गरम दिना जान ।

चरेसार-४ परनेवासाः स्टानेवासा ।

चरमधार--प्र वरका।

चरेकी-मी अस्तो दुर्ग ।

साथ पदायों का सकती है।

चरोक्स्रां~पुरू घरीः गोचर मुमि । चरोत्तर प्र किसी-हे निर्वादार्थ किएगीतरके किए में वर्ग

-क्रम-पु **बरसा पार्टनेशक**।।

वर्षा-प्रश्री परमा ।

वर्षी-मी • हे • 'वरहो ।

चरेरा - विश्व सरदराः स्था ।

चक्रण-प है चरा

चरसञ्जा स्थी।

चर्मात ।

क्षेपन ।

श्रदना ।

क्रेगर्समा ।

शाग भागी ।

कराम मिली हुई बमीम, मीबारबम्मि; इरी स्वार

-शीम-न्दी क्याइम । -यश-पु० दे॰ 'बोइवप । -वॉस-पु॰ एक तरहका गाँस । -वेक-सी॰ पक कता बिसकी बनकी निवारिका नवते हैं। सु॰ ~समाना-मीटेकी सरप्त बीहाना । -कसना-भोहेपर बीम शा बारजामा कम्रता । ∽द्याध्यमा,--पर्किना--भोड़ेको दिसी दिखार्ने तेनीसे दौहाना । -फेरमा-मोहेको समाना सवारी का गाड़ीके कायक बनामा ! - बेचकर सीमा-वेफिक दोकर सोना गुरादे भरना। -(दे) बोदेकी सीर -- दुबहा-पुस्त्न और उसकी सवारी सकुग्रस रहे । -- पर चर आमी-होटनकी बस्री मजामा।

चोविया-या । छारी धारी: छोटा दोशा पाप हे शाँगनेका भेरी 1

बोची-न्धं घोडकी भाराः शताः व्याहकी एक ररमा व्याहर्मे बरपद्यको बारसे गाये कामेबाने गोदा। जुकाहीका पद भी बारा भोवियोंकी अकरानी। पानीके पढ़े रखनेके हिर संबंधि सहारे बगाबी हुई पर्यो । सु**॰ ~सह**ना− च्याइमें इन्हेंका भौधीपर चश्कर बुछहिनके पर जाना।

भौतस भीतस-५ [मं] ण्यः तरवका स्रोपः। बोधा-सो॰ (सं॰) नामः धोरं वा शुक्रतका वृत्रनः स्वयुक्ती चींब: एक पीवा थिसे सुपनमे छोड़ वाती है।

घोषी(किन्)∽५ [सं] शुक्रर।

धीर- • सी प्यति सन्द । वि [सं•] बरावना सथामका मनः निरिष्ठा गाटा गढराः कठिन कठोरः मारीः तरा । पु • शिवः विषः मानदः जायरानः। पुजनीवना । 🗠 प्रया −पुरप−५ पीतकः धाँसः। –बीरतर−पु शिव। च्हें चित्र दरावने दौदींदाका :च्होंच चित्र दरावना क्टिरास । पुश्वस्य । - रासनः - रासी(सिन्) :- बासनः

~बामी(सिन्)~पुश्गा≢ ।~रूप∽पुशिव। धोरना - स कि भोकता। अ कि पर्वत दरला। घोरा−दि की मिं]भोर। सी॰ रात अवल दिला भारि मधर्मामें मुचनी गरि । 💌 प्राहा अद्या टोहर ।

भौराकार चाराकृति∽ि (सं] दरावना ।

घारिया - सी है पिंहिया ।

धीरिस्पन-त वर्षीके धेलनेका मिईन्का बना पाड़ाः वार यैसे मुँदबाना भैदा ।

घोस-५ [रं०] तकः दिना पानी टाके सदा हुआ। दही रासी। भेलकर बनावी दुई बीज।

योग्पमा-स॰ दि॰ दिग्री भीत्रका वानी आदिने दश तरह ।

घोसकर पी मिकाना कि वह उसमें प्रक्र आय । मु क्षाणा-पार्यत हो जाना नियम जाना।

घोला~पु॰ वीक्रकर पनायी हुई चीज (भफोम मादि) रीतमें पानी से बानेकी मार्का ! सु० ~(से)में दास्ना~ राटाईमें टाबना, प्रहरानमें टाड रखना ।

योसमा 🗝 भोनकर ननाया हुआ । पुराकी हुई

पत्तकी दवा एसा झीरवा। घीली हुई अफीम ! घोष-प [सं०] ध्वनि धोपणा अपनाकः नाइरुकी गरवः आहीरोंका गाँव भरती। भरवादा ग्वाका। सम्द्रणा -कॉसा। वर्णोंके उचारणके बाद्य प्रवसीमेंने एक दरः हास्का एक

भदा नगाडी कावरबाँकी एक जपाधि: शिवः व गोसाका । घोषक-५ (सं] भोषणा सुनारी करनेवाला।

घोषण-पु॰ घाषणा-मौ (र्ध॰) कोरमे शेककर बतामा, शुनारी वा एकान करना। ध्वनि ।

घोषयरतु-पु॰ [सं] धोषणा करनेवासा धारणाकोकितः।

घोषवती −सी [सं•] श्राथा। योपा-सौ [र्यण] सौदः क्राफ्रशसीयो ।

घोषास-पु॰ वंगाकी **जहारों औ**र बादरशोंओ एक उपनाति। घोसना ॰ - की दे॰ 'धावणा । छ कि पोवित दरना

उद्यारण **६**रना । धोसी-पु॰ महीर' मुख्डमान महीर ।

धीर धीरा-पुदे भीना

भीर्−९ पर्कोका गुप्छा । र्धार, चीरा-प्र ६ 'पाप'।

घारी-स्पै॰ वे 'बीद - काडु गद्दी वेरा के बीरी । श-वि· [मं] नष्ट करमेवाला (देवक समास्रोतमें-विवास)।

चित्र भी धे

प्राच-प (एं) गंधा नैंपनाः संपनेधी शक्तः नाक। -चन्न(म्)-वि अंशा संमध्द दिशी बलुका पान प्राप्त करभेदाका (प्रमु) । -सर्पण-दि न्ना∘ियकी तुस करनेवाला। प्र∷मुर्गपा – पाक – प्र नामका वक शेव । -पुटक-पु शासारभ ।

प्रावेदिय-मी [मं•] सक्र। प्राक्त~वि [मं] ग्रीपाडमा । आसम्ब~वि [मं•] मूधने बीम्ब । प्राता(ग)-वि [सं•] वृषदेवारा ।

प्राति−न्त्री [नं] प्राथ। प्रीय-रि [मं] मेंपने पाम्य ।

₹

ड-देवनागरी वर्णमानाक वर्णका वेशिम वर्ण । असका | च-पु [मं०] इंदिय विषया विषयणा (उपका पद नाम षयारणस्थाम वट कार सामिका है। (नेरथ) ।

च-देवनागरी ब-मानामें अवर्गका पहला करा। छटारण । चैत्रमा चैत्रमण-पु [गै] युमनाः दहनना। हुननाः श्यान कहु । चंद्र-दि सम्बार्य उत्तर मान्त्रस्य कामन्। चेंद्रर-प [मेर] रथ सराही: वध ।

ब्द्रज्जेश स्थान । र्चनमा-न्या [मे] पूमना शहरता । र्पत्रमित-थि 😉 🕽 पूमा दा भइर गाया दमा । मित्र ! - विश्वस-वि सी अपनी जगहरी हर गता हो: मरिशर दार्वोडीलः सम्बद्धरियतः। स्री स्थिते अविकारः क्रमसंग ।

चरुक्ता-२० हि॰ निक्कताः चमकता ।

चस्रच्छाव-प॰ सथ भीतः चक्रतेको तैशारीः प्रत्यातकाकः परमानकी इक्वडी रमारनी ।

च्याचारा-विश्व ग्रंडल, आशॉरोक ।

चस्ता – स्री सिंशी भक्त का गतिओं क डोलेका सकः भरिषरता । वि िंदै वे चकता ब्रभा गतिमान । जिसका भक्तम दी प्रथमितः जी शया सका, बारी रहे (साता): श्रक्तनेवाका काम देने कावका वहता, चगळता बना (बस्ती बदान बसाइर)। सासरी स्वरी (अक्तो निगाष्ट्र); शाकाक (स्ववदारकशक); बाववकाळ (कार्व); इसकाः नशासीय (पाका श्रीप्र)। ~काता-प्र॰ वंदका बद्ध माठा जिसमें पाड़े जब २०वा कमा किया और निकाश मा सके। −पुरक्रा−वि॰ वाकार, धर्त । सक -करना-इटाना निवा करनाः निपटाशाः -किरताः मञ्जर काना-पन्छ। स्थना । -वशना -होना-पक देता, विस्त्र वासा । -(ते)बात्र,-हाम-वरत्व वरते पास शक्ति-सामर्थ्न रहे ।

चक्रती-सो० आर. भरर।

चक्रतां-दि दे 'यन्छ ।

चस्त्वर्थिमा-सो॰ (सं) चंद्रक मामको मधको । चल्या, चल्याक-प्रसिक्तिक तरक्की मलकी।

चकद्विप−५ [मं•] क्रीलिक।

चसन-९ (सं॰) दिकना टोकना। गति चाका प्रभण भरमः इरिण । -कक्रम-प ज्योतिका यह ग्रामित विसके हारा दिनमानका परमा:बद्दमा बाना वाता है। —स्मान्त्रज्ञाल—प गाजिलको एक विशेष क्रिया विशेषे हारा धात राशिन्द्रे सहावतासे सम्रात राधि निकामी

बामस-प प्रकलका साथः स्ववहारः रिवाशः रोतिः वास इंगः प्रवार । —सार~दि॰ विस्ता करनः स्वकार हीः

मयक्ति (सिंद्धा): विकास ।

बसन्द्र-दु [स्॰] (नर्तद्री भाष्ट्रि) बाबरा ।

चळनदरी! −को दे 'यस्वरी ।

चक्ता-प वही सकती। छवा। अ कि विकता वर क्य करता। एक्से इसरी जगह बाना गरबान करना। यकन दीमा प्रयमित दीमा। कार्रम दीमा किटना (धर्मा, बात): दिया होना: मरना: पारी कामम रहमा (ताम बंदा): निमनाः दिक्ताः वद्यमाः कामी कावा भागा (तकवार काठी र): सुरमा देखा भागा (तीर-गोली): वा एकलाः वहताः स्वतीवर दोना वाम्यमाः चलती हीगा। काम देना करना। असर करना कारनर शोमा (आदु-संत्र); जोरः वस क्लगा आयरव दश्याः परसा जानाः बता बामा (प्रवादि)। धाया जानाः गुजर दोनाः दावर दोना (सदस्यादः) । स कि (शत रंग नीतर भारितें) मीहरे वा बोरकी एकते इसरे वरवें रमना दरावा वहानाः (नाशनंत्रीकेते) कोई पत्ता शेकने-वालों हे सामने ऐंदला । सु॰ चक निकस्ता-होक

वीरसे चक्को क्यानाः क्षममाः सम्बन्धाः क्षेप्र स्था (फाम, पदाकत आहे) । चछनिश-की है 'चक्रत'। चक्रनिका-को॰ सि विज्ञानी झालर । चक्रजी-स्वी॰ दे॰ 'छक्रम्) ; [ग्रं॰] वेंवरी: ४२६ वॉस्टेस चसवीसाँ-ए॰ यह प्रार्थ को पाकनेदे शह पक्रमोर्ड स्व रहे. चौकर भारत । पसर्वोद्ध~वि वे [']वरवॉद्ध'ः तत्र क्लनेवका । चसर्वत≉−९ पेश्य सेनिक। चक्रवासा—स कि चक्राने वा बाकतेचा कार कराया । चसबीयारं~प चक्रनेपासा । चळा-सी [संग] निवकीः पृथ्तीः सरमीः रिपकी । चलाळ-वि मध्य दिव पश्चनेदाला दिवात ! चकाकः -वि पानाक, प्रश्रा पंचक । यसाकार-सी० दिशको । चकाचळ−वि॰ (र्रः) चठ और अवका गरिवा। बन-रवादीः वंदरु । ए॰ क्षीमा । क खी॰ भश्रावकी पत्र । चळाचळी—सी० चङ्गवसः सर्होद्या एक स्ट॰ चन्ना। 🤊 वि चलनेको स्थत । चकार्शक-५० [मं] एक शतरोग जामगत। श्रमान−प है 'बासान । −तार−प• हे 'बासान' कार ह

कसामा-स कि यक्तेको देशित करता. वक्तेको किना करानाः श्रीकमाः विकासः प्रत्यत् देशाः वायस्य धरानाः व्यक्तम कराना वक्तमसार करना (क्षेत्रा, शिक्षा)। वार्रव करनाः प्रथमन प्रकृते धरना (क्यां, को बंध); क्रायम बारी रखनाः काममें कानाः झोडनाः प्रेंडना (क्रेर-बोक्पी)ः निमाना गुन्दर करनाः व्हाना पमकाना (रोवनारः क्काक्त); परसना; दावर करता (सकतमा र); बहाना । चळाचमाम-वि [सं] विच्छितः सर्वादीनः विका

इन्डचता बुका । क्रमाब-त प्रस्थान रदानगी। क्लावा !

क्रमाका∼दु भीना सुद्धनाका प्रकल रिवामा वर्गा नीमारीमें यह याँनही बोरसे इसरे याँनई सोमामें दिना बानेवाचा बकारा ।

चकि-त (र्र+) शवरण वैमरस्य ।

चक्रित्र−दि [सं] चन्ता इनाः विकतः, क्रीप्ता [मा करिनर गया प्राप्तः प्राप्तः ब्रह्मा ब्रह्मा । प्र विस्त्रा गममा नृत्वमें एक तरहबी थेहा ! -प्रह्-म वह प्रह जिसका कुछ फल भीगा था खुका हो और पुछ क्षेत्र हो। चकिष्णा—दि॰ [सं] गमसभीका जातेशा तैशार ।

चार-त सिंगी मेंदमें बानेमर शती।

असुक-पुर्सि] भुश्यासर पानी। यह होया पाय ! वर्सवा!-पुवक्तेशका।

क्लोमा-पु तृष आदि क्लानेको करको वह स्वर्गात इक्ता जिसमे बरका बनावा जाता है। क्सीबा-पुष्यः तरहका बतारा वो इसरे मोक्से सोवाने

चेंद्र निया जाता है। चयना∜∽अ कि चूशा, उत्त्रवा । स कि चुआनी प्रसरदारं जो प्रयोग्नासामीके रयनिका माने बाते हैं।

- ज्व - पुर - देश्य । - ज्व - पुर - पुर - पुर - देश - पुर - देश - द

पंदक-पु॰ (सं॰) चंद्रमाः वॉदनीः एक छोटो सङ्ग्रीः । पर पद्रमनेका एक गहना । —पुष्य—पु॰ कींग ।

चंद्रमा-नी॰ [मं] चंद्रमशारिका । ● धु चंद्रमा।

चंद्रतादि~पु [नंश] भंदम, ग्रस कपूर, बकुवी वकावणी कपूर आदि पित्रशासक दशमीका व्यक्त शाग । ∼तिछ~ पु॰ दशमीक वीगमे बनाया जानेवाका व्यक्तियेका यक प्रसिद्ध तक ।

चंदती-सी॰(स॰) रामावयमें बनिव यह नवी; बनीयती । चंदती(मिन्)-वि॰ (स॰) चंदनसे किस । यु॰ शिव । चंदतीया-सी॰ (सं॰) गोरोबद ।

चैत्रीदा - पु॰ यक तरहका सहँगा ।

चैंद्राना! - अ॰ कि॰ दिसी यातको जानने इथ जनवानको ्तरह पूछना ।

चैत्हा-वि गंबा सस्ताद।

चैंड्डा-पु॰ गरी जारिके कमर यहा किया गडा छोटा धारिमामा चैरीमा गोरू पकटी। मारपेटकी चीट्रका दोरीक कररका गोरू मागृ रक तरहकी अछकी। खालाच्य भीगरका गट्टा किछमें अछली पकड़ी जाती है। एक चिटेम्ट्रच

चेर्रे-वि॰ (का॰) स्तमाः श्रविकः बहुतः।

चेत्रा-पुर- बहुतीसे जरहनी कर, चौड़ा बीड़ा केतर हकड़ा किया हुआ पत बेहरी। एरस्वायका हुम्या, शासिक वर्ष पुरवकका बार्किक एकाशी आदि मृत्यु वर्षाद । -सामा -मार्मे -पुर- चौद (द्योंचे बहुबारिके निय सहा बाना है)। चैदायत-पुराविकेश यह शासा।

चेशयती-सी ण्डरानिसे ।

चेतिका-भी है। भेडिका ।

चेदिनि, चेदिनी = न्याः धान्ताः । दि० म्याः धांदशी-वाताः।

विद्या-भी मिरदा मध्य भाग छोत्ती ने गीन्द्री छोती होता चौतेको सिर्वात सका वह माम जो अविद्व गहरा हो। मु॰ -रामा-वस्तार करमा । -सुभामा-सिर

खुबकानाः मार रात्नेका काम करमा ! -पर थाक ण छोड्ना-सन कुछ है नेना ! -मूबना-स्वामत बनामाः खुरुद्दर राजा !

चंदिर-पु [संग] चंपमा। दायोः कपूर । चंदि-म [फा] कुछ दिन, भोगे दिन । चंदिरी-स्त्री एक प्राचीन सगर !-पति-पु भरेरो नरेस सिज्ञपाल ।

चंदेख-पु क्षत्रियोंकी एक शासा ।

चेंबोबा!-पु॰ दे॰ 'बंदवा' ।

चैवोबा-पु॰ छोता श्वामियामा ।

चंद-पु [सं॰] चंद्रमा कपूर बका शामा होरा: चंद्रमा जैसा विद्वा मोरपंतका भर्व पंत्राचार निद्वा मर्च विसर्गका विद्या बद्ध अनुगारिक्षका चिद्ध नंद्रविद्य सास रंगद्वा मोती चंद्रशीया भूगविर गराभा (छा) एकतो छेल्या संदर उक्जन आसरमान्य वस्त । वि॰ कमनीय: अप (समास्रतिम-पुरुषयेष्ठ)। -कर-पुरु यहिंदल धाँरमी। ~क्ख~ि॰ र्यमधीरी योतिवाचा।~कसा~तो र्वहर्मधक्तका १६ वर्षे यागः चंडमान्द्रो १६ स्टार्ग (काम शासके अनुसार-पूपा वद्या सुप्रनसा, रिप प्राप्तिः वृति, काहि, सीम्या, वरीनि, बंशुमासिनी अंगिरा शक्षिमी छावा मंपूर्णमंडका तृष्टि बीर मगुता); पंद्रमाधी किरवा माधेवर पहनतका एक गहना। एक बपवृत्ता एक स्तताल वाल धोरा शोका यह मधकी मराधत !--धर-पु॰ महादेव ।-क्रांत-पु॰ यदः यपि निसन्तं निवनमें प्रशिद्धि है कि अंतर्किरण के स्पर्मी यह प्रशीय आहा है। चंदनः <u>क्रमुरः</u> यक राग ।~कांता-छो॰ चंद्रमाको पहाँ। रातः चौरतीः तक्ष्मणके प्रम चंत्रकेतको राजभानीः एक वर्णका ।-क्षांति-खा॰ चाँदनीः चाँदी ।-क्रमार-प्रश चेहमाका प्रव, तुप ।—कूट−५ वामसप प्रदेशका यक वर्षतः । - केनु-पु कश्मयका एक प्रश्न विसे रामने मत्तम्भिका राज्य विवा । नकीव-पु॰ यक ताल । नक्षय-प्र समायस्या । "गिरि-प्र काठमां इ(नेपारु) के पासका पद पर्वत ।- ग्रास-प्र विष्णुप्तः मीर्यवध्यका अथम समाद की सिर्देशरका समग्राधिक याः ग्रामप्तका प्रथम समार , वस्त्रप्रास्त्र विचाः ग्रप्तवंशका समार् वो समुद्रग्राहा पुत्र वा वितीय योग्यास !-शह-पु॰ कर्त राश्चि !-शास-पु॰ चंद्रमंदत ।-गोलिका-स्ता॰ पाँश्मा।-प्रहः-६ इण-म पुविनीकी छावामे मेनूप्रहम्मा थिए बाला शैरानिक मनमे राष्ट्र शारा चंद्रमाना प्रमान । -धंरा-की एक देश जिनकी गणना भी दर्गाओं में है ।- चंत्रस -उ चर्चचरा∽त्थे थ्रह सामद्र मध्यो।-चच-प्र शिव !- बढामणि-पु शिवामहीका एक वाग !- असकg समुद्दां-अति-न्या (दि) यॉन्नी(४६ अलग्न वाजी भइतादी ।—तास्त्र-पु रह तान (मंगीत)। -इस्स-को चेहमाको पत्ती, अभिनी प्रकार २० मनव ।- देव-पुरु पत्रमाः महामग्रनम् शीर्वोद्धी औरने करनेशना १४ राजा।-छति-न्दी पॉसी। प भ्रम । - द्वीच-पुरु पुराधवरित १८ हीवीमेरी एक (पुन वंगालके बरीमार करी दपुर और सुणमा विकेश करा मार्ग ।-धनु(स्)-प चाँरमीमें दिसारं देनेताल

चहासम-वि [फा॰] भौवा। प्र चतुर्वाह भौवार । चर्षे - वि चार, भारो । - भोर, - वार-विस-म बारी बोर ।

चर्डेक-स्थेश वे विदेखें। चहरमा ७-स क्रिं• चोट परेंचासा। चहुमान०-पु॰ दे 'श्रीहान ।

पार्टे॰-वि दे 'पार्ट'।

चाइँटना*~म फि॰ सदना।

चहेटमा - स ब्रि॰ वे॰ 'बपेटना': निनीवशा !

चहेता-वि प्वारा प्रेमपात्र ! [सी॰ अहेती ३] चडीवना धडीरमा! - स कि रोपनाः मैंशासमा ।

श्रद्धोरा ! – प्र अग्रद्धनी बान ।

च्याँडियाँ ⊶विश्वतं उस । चर्डिं-वि उचको पूर्तपालकः ग्रेगा पुठनासी **डिरन्छ एक रोग जिसमें 9 सिम्नों बोसी और बास**

मिरत है। चाँक 🖳 काठकी बापी जिससे खक्रियानमें अक्की राशि

गींठते हैं। अवस्थे राध्य मीठलेका पित्र ।

चौंकमा – स. कि. मॉडमा नेवाओंसे बेरमार **अवस्थ**राहिन्दी गोपर भादिते गाँउना ।

चौंका-प॰ हे॰ चिक्र ।

योग-प [तं] है 'बागरी । बोरोंको सपेनी । चौँगका−वि॰ वर्त का**रा**का इद्यप्रध ।

चांगेरी-कौ॰ [सं] अञ्चलेचिका साहा

चाँचरः चाँचरि-स्रो होतीके अवसरपर गावा जानवाका पंड राग, पत्याः प्रती बमीन । † २० शाकपान

शामक श्रप । चौबस्य-५० (सं०) चंत्रकता चव्रकता।

र्वोद्द≉~को पीत्र।

वाँद्या-प्र वपत तमावाः 🗢 वीदा 🖟

चाँडी-को कारीगरीयर करानेबाका मक प्रराजा कर। वनकेके कपर किनारेपर कगायी जानेवाकी मगजी। इस समजीपर भाषात होतेसे तिबक्तनेवामा सन्दा 🕈 वीदी ।

चांड−प्रसि विकास सर्वन्ताः।

चौँड-न्दी मारीभाषासकता गरमः देवनी प्रवत्न देखान 'तोरे बनुव वॉंड नहि धर्म'-रामा : अभिनना वनाव भनी। वि प्रवेता हो। प्रनेटा कर-कावर, मेहा सार श्रवादा द्वजा । मु॰ –शरना−काक्ता पूरी दाना ।

चाँबना-ध मि॰ रीयमा। ताककोक्कर मध करमा। मीव হালমা !

भोडास-प [मं] अंखक वर्गमें सबसे मीची मानी गर्वा आणि क्रोमः निपादा हार भीच कर्म करनेवाका न्यक्ति । योडाबिका-की [मं] चंडासमीका दुर्गाः यह गीवा । चौडाकिसी-सी [तं•] एक तंत्रीक देवा। चांडासी-सी [सं॰] चांडाल मी; विगिनी कता ! व्यक्तिका = - दि । भेत-प्रक्री प्रवत्ता प्रवता बहुत वहा हुआ । चौंची र≕न्त्री चौंगी की ग!

पॉर्श-पु दे 'चेर ।

चौंद्-प्र चंहमा एक ग्रहमा को बूजकी बॉरकी शक्तका दीना है। कालपर सहा क्षणा प्रत्याकार काँदा। वीरमारीका

नियामा क्रकार्थयर गीवा जानेबाचा एक सरहका योगसा। की॰ चाँदिया सीपक्षे । -टीका-पु मावपर पहनतेस एक गहरा । —सारा-प वारीक मधमक विस्तर वर और सारेको श्राक्तश्रक्ष यदियाँ बनी होती है। एक सरहरी पर्तम । —बाका—प अर्थनंत्राहार बच्चा । —बीबी— की॰ मादिएकाइकी विशवा पनी विसने महनएके सेनाहे अहमत्रमगर पेर केनेपर मधानारण शौर्य और रमधीयत्वा परिचय दिया । – मारी–भौ। बंदबरो विद्याने स्थानेच जन्यास, बनहा मन्द्रे हुए श्रीक्षाटे या श्रीवारपर पन हर गोक, काके निशानपर निशाना कताना । (-- का मैदान-वह मैदान जिसमें चाँदमारी की बाब !]-सरब-प्र यक गहना जी चोटीमें गुंबदर बहना कहा है। बादकेके बरो चाँद और सरक्ष को कामदार दीविशोगें स्कार आते हैं। −का कुंडल ~का संदय~दक्की काणीत प्रकाश बहुनसे बहुमाई बारों और बना हुना नेए। मु॰ −का द्रकड़ा−अदि शुंदर। −को ग्रहम स्थामा~ अच्छी <u>सं</u>न्त बरतुमें क्षेत्र होता। नर्गकी हो वामान वतने जने कगना कि चारपर बाक म रह बार्ने Hकामा-नवा महीशा चहुना। चतुका बीत बाना वर्ष रहवा (मुसक कि)। -पर हराक या भूम बहाना-निर्देश श्वक्ति वा बस्तुमें दीए निकाकना। सास्वरित कारर दीर क्ष्मामा । -पर चुक्क्या-साक्ष्मारेन वा महान् पुस्तस

"कांग्रन क्याक्ट सार्व शांकित होना । -सा सुवारा" **बहुत्त हुन्दर, ध्वारा सुक्ष** । चाँदमा-पु बनाजा, रीससी। चौरमी। प्रण-होबा-

पी **फ**टमा सर्वेश बीजा !

चोडनिक-दि सिं∗े देवसका बना इता। चरनदे मारा बंदनसे पासा हजा।

वाँदगी-ना चाँरको रोधमी क्वारसा। क्वंरर सिप्नने की क्यों कोश सकेर चाररा धरनारा गुक्रचाँरती। नक्य खेत-चंत्रमका चारी और फैठा हुवा प्रशास ! हुण -का दोश करबा-बाँगनो फैलमा हिरद्रजा। "मारमा" वॉदनीका पुरा क्सर पहला; योडोको रूक धेमारी !

चाँदा-प पूरवीसका कक्ष-स्थासः सुनिको रह गाप बॉस्फ्री शहरूका एक भागा जिसमें क्रोप स्मातं वा

नाभा है।

वर्षिती—मी समार रंगको एक घरम वसकीमें महिन्ने गहमें सिके आदि पनानके फाममें भारी है नानिक कामा एक छीत्री मछनी। # दे "बेरिवा"। मुरु "करवा" गहरी भाव होना यूव अपने मिनना। -कर देवा-क्साकर राग्न कर देमा । —का जुता —की जुती-पृष्ट जल्दोन ! --का पहरा-समृदिकाक । -होसा-सूर बाम होता सन्दर्भ विकसा ।

चांह-वि [मं] पोर्-गुर्था । पुरु योड मासः सुद्र चरा र्वत्रकांत गणि। या त्यम अतः बुगाँहरा मधुना करस्क । --आस-पु चंहमाध्ये गतिके अनुमार दीनेवाला महीया। -बासर-पु दश्याको गतिके अमुसार होनेदाका वर्ग । —प्रतिक−दि चाहावध मन स्टमेगणा ।

श्रीप्रक-प्र [सं०] संक । वि चंत्रसंन्धाः चौत्रभागा-सी [सं] है बंदमस्य र

मछली !

र्चपर्ट-वि चंपाके फूक मेरे रंगका । पु॰ एक रग । चेपक-प सि] एक पुष्पपुष्ठः भेपाः बसका फुकः पुरु

रागः चवाचेका एक शंबद्ध्य । - सास्त्रा-स्वी चंपाके पूर्वोक्षे मान्ना चंपाकती। यह वर्गवृत्तः। -रमा-नी चेता केमा ।

चंपकारण्य-प [मं] एक प्राचीन तीर्थ, आधुनिक चंपारन ।

चंपकास-पुर्शिः) कटहरू ।

र्वपकावती-स्रो [स्र] वंपापुरी । र्थपकोश-प [एं॰] स्टब्र ।

र्चपत्र∽वि चकता, गायव (इस सम्प्रका प्रतीम सदा

'बमना' वा होना'के साथ महाबरेकी तरह होता 🗗। र्चेपमा-अ• कि॰ चौंपा बामा दननाः कव्या था उपकारके बोजाने दबना ।

चैपा~पु• गद्ध प्रप्यश्चाः वसका वसकः पीके रंगका फूल भी सपनी तील गंबके किए मसिक दे। यक तरहका भीठा कला। रेशमडे ब्रोडेब्ट एक मेरा एक शरानदार पेश पीरकी एक जाति। -कसी--वी एक तरहका द्वार विसक्षे वाने पंपाक्ष करोक्से होतं है।

र्चवा—सो [मं•] अंग्रेशको राजवानी, क्यंप्री । –पुरी

−स्रो कर्त्रको राजवानी दर्लपरी । र्चवारण्य⇔प्र [सं]दे 'नंपकारण्य ।

र्षपासु-पु (सं॰) दे॰ 'चंकास ।

चंपावती−को सिंौ चंपापरी। र्चद्र∽द्र[el]गव थय सम्बद्धान्तः।

र्थक्क-मी एक नदी की किंग्याकक्के प्रदासींग्रे निकासकर बसुनामें मिकी है। पु. भीषा मॉगर्गका प्याका। निक्रमका सरवोद्याः पानीकी बाहा नहरके किनारे क्या हुई पानी चरानेदी संदर्भ ।

र्चक्यी-स्त २६ तरहका धोरा म्याका ।

र्थंबी-न्दी क्यदेवी छपाईने काम जानेवाका कालन वा

भोमशासका ब्रद्धाः। र्थेयेली—भी दे 'यसकी।

र्षे बर~प्र सरामानकी पैछक्ष शक्तीका ग्रण्याः योहे आरिके **छिरपर छगानेक्ष कर्मणे † यह विरक्त गांधी अमीन** विसर्ने बरसाक्षी पानी प्रसद्धा होता और पानश्ची धेती बोती र्षे । –शार-तु निरः द्वलानवासा ।

वैवरी-श्री - नेवरकी एकतका भारका पृष्टक बालीका ग्रन्छ। बिसम प्रसन्ने बदनक्तम महिलायों प्रवृत्ति है ।

र्थम्र-च ष्टसमा।

च-उ [सं] शिक्ष बक्षामाः पेदमाः बहुआः दुर्वनः धारः। भ भीर। रि शैअरहिता दुरा भीगा विद्युद्ध।

पई-सी एक पूरा मिलकी जह और नक्षी दवाद काम भाता है।

चंद्रनस् चंद्रतसा - पु 🤾 'जनूनसः। चडपाई०-न्या है नीपाई ।

पहरु--पुरु हैर चहर ।

चहरा-पु॰ दे॰ भारा ।

चरहा -इ थारहा पीरासा

चठहान#--पु० दे० 'भीहान ।

चक-प्र चक्याः चक्र्यं भामका दिशीमाः पहिषाः बगामका वहां रहिः यह करा, पतः सरवेमें कर्गनेवाका एक सकते। का भीबार, कळकराः छोटा गाँव, प्रशाः एक गहनाः माधिवकः अधिकारः । वि सरपुरः सौकदाः, परितः । --चास-क्षा॰ पन्धर । ~होर-क्षा वर्षाची धोरा । --तराद्यी∸सो॰ व्यवस्था । ∽फेरी∽सी परिक्रमा । ~-र्वश्री-सी अमीनका वहे-वहे उक्कोंमें वेंटवारा । - ध्यस —वि चर्चीमें वेंद्रा हुना । प्र• क्वमीरी ब्राइन्मेंको वक्क

बपत्राति । स॰ ~कसना—रंग अमना । चक्रई-सी॰ महा धक्रमा विर्तिक महारहा व्ह क्रिकीस विसे कोर कपेटकर गजाते हैं। वि गोक बनाबरका।

चक्रथकाना-म कि स्तना गोका होगा। **चक्र**चकी-स्त्री॰ करतात्र ।

चक्रचामा#--व कि दीवियाना।

चेक्रचाव०—पुपदापार्थाः। चकचून, चक्रचूर≠−वि विमा हुआ, चक्रनाचूर−'ट्टाहें

परवर्ष मन प्रदारा । हीइ थक बून उवहि तेहि झारा -प । षक्षरमा । स॰ वि:० पश्नापर सरना ।

चक्रचोडी०--वि॰ स्री विकनी-पुपर्श ।

चक्रचींप-ता १ यहाची भी।

पकर्पीयमा∸य∙कि पापियानाः ≡ कि शॉस्टॉमें पकार्याव पैदा करना ।

चक्रवीयी, चक्रवीहरू-मी दे॰ 'बसावी'स ! चक्चीइना॰−स कि॰ नायामरी धीरसे देसना।

चक्रका-५ दे 'नश्रता । चक्त-प्र क्योदा।

धक्ता~प रे व्यक्ता।

धकताई#-प्र दे 'बयतारे । चकती~को कपर वा चमरे मारिका होरा टकरा हो इसरे क्षत्रहे वा चमहे आहिमें नौहन्द्री सरद लगावा गया

दी पेनदः पालाः इतिको दुस । चकत्ता-प स्वयापर पश हुमा बड़ा निद्याम। हाँव स्टेंटन

का मिछामा बदीरा। दे 'वयचा । चक्रमारु⊸न कि पनित दोना प्रश्निता।

श्वकताशृर-वि॰ मी इटकर भूर-पूर हो गया हो। मृशिक्ष बद्धा थाइन द्वामा ।

शक्यक-वि• चरित्र भाषद्व।

चकपशमा∽श विश्मीपकदोना शक्ता पक्तिकोना। चक्रमक्र~प्र [तु॰] एक सरदका परवर जिल्हार आयात बरभने भाग निवस्ता है (ियासमाधि भाविपदारके पहर इसीम भाग शाहबह निया बाला आग सक्रमान थ) ।

चरमा - प्रथम प्रकाश जुन (गामा देना): हानि-एक्ट्रीसा एक शन ।

षक्रमा≭−द्र [तु] ५४म६।

थक्रमात्रां व्यक्ति विद्युने ध्यस्यः श्या दा। सी वह बंहद विसमें बार्ट में बाग देने है निष्य प्रदेश हुना है।

चक्रर*-पुपदनाः ^७ 'दशर ।

चक्रस्या-प्र पदर वर निग्र परिशित्त शमरा-ब्रामाश क्षेत्रा १

चासक्ती चामीकर **पराकती*-सौ॰** मादा पातक, पातकी । पातकाकदत−पु• (सं०) शदकः वर्गकीसः । चात्तर-प्रशासाम्यः शर्यक्षेत्रः । चातुर-वि॰ [एं॰] पारहे एंकाः बतुरः बावनूसः बारहे भाजा जानेवाका (रथ): द्वारान करनेवान्यः रहत गोबर । प्र चार पहिचाँकी याही। छोटा गीक तकिया । पातुरईं!−दे 'शातुरी'। बाह्यरक-नि॰ [र्ष] बापक्षरा व्यव, गोषरा द्वासन करने-बाका। प्रक्रीय गीत विक्रमा। चातुरक्ष-प्र• [सं] चार पासीका बेला सीटा योक संदिया । चातुरिक-प्र• [रंप] हारवि गाडीवाम ! चातरी-की सि] पतरावं। चार्त्वात चार्त्वातक-पु [मं] पार इष्मीका समाहार। चक्तर्यक, चातर्थिक-दि॰ [तं०] चौथ दिन होनेवाका, भौविया। प्रचीनिया क्यर। चाप्तर्यक्ष∽वि [धं]चप्तर्यशीको दोने, पैदा दोनेवाका । प्रसम्बद्धाः चार्त्वक्रक-वि०, पु [t] क्युर्वशिके विग क्यूनवाका। चातुर्मेत्र चानुर्मेहक∽पु•[सं] जागरमीवा अधिविपा मुस्ता भीर ग्रह्मी-इन चार ओववियाँका धमाहार । चार्त्रमेहाराजिक~५० (राष्ट्र) विष्या उद्य । चाहुसास-वि [र्न•] बार महीनेमें होनेवाला। चातुर्मासिक-दि [सं] पार महीनेथे होनेदाका (बद्ध) चार्समाँसी-सी० मि०) एक वदा वह पूर्विमा विस दिन नद बद्ध दिना जाता है। चार्चमास्य~५ [सं] भार मासमें होनेवाका एक वैतिक नकः चौमासा आवादको प्रक्रिया वा शहा हारकीसे काचित्रको पूर्विमा वा सुझा शावदीत्वका समन्। स्त काक्रमें किया जातेवाका एक पौराणिक तत । च तथैं−प्र रि•ो चल्रसे । चातुर्वनर्य-तु [र्स॰] चारी वर्ण-नाक्षण श्रविव वैश्व शहर भारों क्यों दे कर्म, कर्मन्य । वि चारी क्योंसे संबंध रसमेगला । चातर्पिय-५ [सं] पारी नेरीका प्राचा। चारी नेद्र । चलाहीय-वि [मंग] चार शैलाओं हारा क्रिया वानेयाका। प्र बार दीवाजी झारा दिया वानेशका वध । माभ-प [मं] विद्यानंत्रनमें व्यवदात श्रेरको १९ वंत्रक संधी कहती ! चाविक, चात्रिग>-३ भातक। चारर-सी साईभि कपर लीज़ अभिशता अभिद स्था-चीहा हुपद्या निरवरके कमर निध्नमा चामेनाका हुपद्दाः लोड्रे पीतन मारिका संदानीहा पतना संद, पत्तरा की क्यानसे (गर्नेवाको पानीको चीडी बारा थाटरके रूपमें ौरी हुए कुल यो कुल वा मजारकर चनाने जान की *य*क माविधनात्री निससे भागनी चारर नियतवी है। शुरू : - बतारमा-वेपर वेर.जब दरमा Ì- कोदावा →टालवा -- विषवाकी परमें बाब रेजा विषवाने व्याह करना। -केलकर पाँच फीपाना:-निक्त विसाद वेमकर खर्च !

करना । –हिस्समा – हुद्दमें बात्ससमर्पण वा नवर्त का करनेके किए कृपका दिकाना । चाव्रा~प मरवानी धारर ! चामक्र≉∽म॰ हैं • 'अयाहरू' । चानस−ड वास्ता ए% सेक (अंग्रेगीर्ने स्ते 'पांत' करते हि) । भाप-पु॰ सिं•ी मनुषः इंटमनुषः यस प्रश्चिः पुरुद्धे परिविका कोई अंछ, 'बार्ड' । स्वी (ब्रिंग) दवावा दक्का पॉर्नोकी बाहर । --अरीब~पु» स्पारेको माप। खापड-का॰ नोकर । वि चपरा समतका भीरत। चायक-वि॰ भी बान पहनेते चपरा ही नवा होरं समाबः वरवाद, मटिवामेट । स्टॉ॰ क्रोकर । भागमा –स॰ ६६० दशनाः दार पर्वेशना १ चापर−सी पापक नोक्टा चापळ~द (रं•) चपकता, बंबकता; मरिगरता उता बकीः श्रीशीः श्रीम । + नि+ पपक । खपळता = ना वे 'चरक्रा' । चापस्रस-वि कि] स्रशामरी पद्धकार। खपखुरा-को॰ (का) शुद्धामरः शूद्धे प्रपंता। चापस्य−५ [सं]रै पापर्र'ः चापी(पिन)-वि [संग] बतुर्वर । प्र सिना बन्न राजि चार्त्तर्-पुर यह तरस्या भारता चाव-ची॰ एक गीया विश्वको यह और कामी रतने का भावी है। इस चैथेका फ्रम्स टाइ । पु ४६ तरह्या वॉस । थानमा~ संक्रियमानाः सुरदाना । चाकी-की अंबी। पंतर । सूरु - देशा-अंबी प्रयम् वही मारिकी क्यानीको क्स हेमा 🕃 चाह्रक-वि॰ (दा] पुरतीका, पुरत तेव। हु॰ भीरा। −वस्त−वि जिल्लाका रहा -वस्ती−वीर किरे कुक्कताः रक्षमा । –समार−प्र मोहेको समाहे, माठ सियानेदाका।—सवारी - स्वां में) हे सवानेका काम, देखा। चातुका~ली [सं (१)] क्रीटा तकिया। चान्नुकी∼सा (का] पुरतो, कुरतो तेमो । चाम-तो दे 'पान'। चामना∽स कि॰ सामाः क्रमान बागाः † चूमना र चामा∽त वैश्लेका एक रोग। वामी-मी दे 'बाबी'। व्याम-तु व्यवहा सावः। –थीर-तुः ग्रहः स्वने सतीः के पास आपेश्चा । सु० -के दास-अलोके विके निवास विश्तीका चन्यांचा प्रवा शिवा विमे इवाईस हुवनेंसे वचाने इं वर्षे आपे दिनकी नाइध्यादी निमी की व्यक्षित्रारुद्धे क्यार्ट । -- श्चकामा - अभेर करना । चामर-५ [मं] चैवरा मोरक्ष्य यह वर्षवृत्त । नमाह -माहिक-माही(हिम)-तु देवर दुलमेत्रवा। [ली॰ 'सामर-शादिची र] -पुरय-प्र बासा भागा तुनी रीका पेका केलाही । --व्यक्रम-प् वेनर । चासरिक-५० [र्ग०] देवर दुकानेशका । **पामरी(रिन्)-पु॰ [श॰]** धोना । चामीकर-पु [मं] सोमा। बचुरा १ - मक्य-वि सोने

करसरामा-अ॰ कि॰ 'बर-कर की आवायक साथ हरमा, बटना, सकनाः सम पैदा हो जानाः निपदना । श्रदश्यस्य - प॰ सि विज्ञती क्यारी वा नामका चरपटाना ।

चटचेन्छ-पु• बाद्-'ग्रीदन वर्तकान घटचेटक नंत्र जैन सब बाने हो नगरावर मह ।

सरम-प सिंश प्रत्याः वरकताः उत्तरं उत्तरे दोकर बह्म होसा ।

चटनी - औ॰ चारनदा बीजः नमकः, मिर्नः राटाउँके थोगसे बना हुआ अवसद को सामके किए गोजनके साथ सामा वाता है। बहतीय स्पर्ने वती हुई दवा: अवसेहा काठका बता एक रित्सीना बिसे वज बारा करने हैं। अ॰ -

कश्मा-वहत दारीक पीछनाः चाट बानाः नियस जाना । कटपटा-वि चरफा, मिर्च-मशकेशारा मनेशार । व

धरपदी चीज चार । चटपटाला- + भ । क्रि चटपटानाः † वश्री करनाः दश्यशी संबोती ।

दे 'चटपरा' । सी । भवशहर, करपरी--विसी वक्तमची स्टब्सी ।

चरर-पुरु 'बर-पुरु' शब्द ।

कररजी-पर बंगाओ जारानेंब्री यह उवाधि घडीपाच्याय । चररीं −ला॰ एक दरक, बेमारी ।

चठपामा-स क्रिक्ट प्रियमा ।

चढाई-जी: बास सीक देखते ग्रास भाविका पता विद्यापम्, साथरीः बाटमेठी क्रिया । चराका चरारा-त चराका धन्ता क्षाम मक्छा ।

~पटाक, पटाल-म+ शरपः तेवीसेः 'बर-पर श्रम्दके साथ । चढाका चढाररा-प कवती विमनी आहिके दरमे

उंग्डोबे कार्यने, तमाचा बादि परनेको आवात । चराचर-सांश क्षित्र वर्तात कृतनेकी 'बर-बर' भागात्र । श⁴क्ट-बट⁴ शाबात्रक साथ ।

बरामण्यको देश 'बराम ।

चटामा-स ति चारमेन्द्रे फिया दरानाः बाहा-बीहा विकासा ग्रम् देसा। देखवार आदिवर मान पराना । षटापटी-स्री बनावकी सम्बाधितामक रामसे सीमाँका

षद्यी प्रदेश गरेना । चरायम-त वधीधी पहली बार अब फिलान वा बतावेदी

ररम अध्याद्यमनीस्थार ।

षरिक्रण-अ घटना सरकाण ।

व्यटिका-सी [मे]मारा वरका (पचनीमूक ।-शिर्(म्)-उ निपकीमृत ।

व्यक्तिमा-वि चेत्र-वीचीशे रहित सवाट (देशान) ।

परी-सी बटग्रामा एक नरवता जुना बट्टी।

at-2 [1] ficales alathi fet mislaniti रद माममा भीतार १-कार-वि गुरावरी ।-छासमla firmagener i

बरुष-पु [मं+] सरम बनावे रमानेके हिम बना सुन्ना काट्य बर्तन ।

चट्टल-वि [संक] चेपण मरिवर ग्रेटर ।

बहुरा-मी [तं] (बत्रशे । दि० श्री हे व्यक्त ।

चटकिस-वि॰ सि॰। देपितः हिलाया हमा १ कटकोळ. चटाबोछ-वि॰ (तं॰) सुर्चवहा संतरः मपुरमापी ।

सर्वेश-वि० ते॰ 'बरियल' । सहोत-विक है "सहैसा"। -यश-प बरोतापन, साह कीकपता ।

चरीरा-विर सारिष्ठ, चरपरी चीजेंका सीक्षीत. स्वाद-लोलपः कानी-पीनेमें सपये उदानेशकाः सीमी ।

कर-कि॰ बाट-पीक्सर साथा समार साराम, गायब र सदा-प केला धामिरी चक्चा गीसको घटाई। मैदान । श्रद्धाल-औ॰ बृहत्त्र शिला, वहा परवर ।

बहा-बहा-प्र• काउंदे लिसीनी-बहु सनमुत्रे आरिका समुद्रा (बढ में) बाजीगरको बैलीसे निकलनेवाले गोले वा गोकियाँ । स॰ एक ही यैकीके चहे यहे-एक मैंने यह हो विचार-स्वमारके मन्त्य । चट्टे-बट्टे सहामा-इवरकी जबर क्याकर रागवा कराना ।

सकी-को पहाल, बानियोंके टिकनेको अगका रिकपर,

यशेकी तरफ गुका हुआ जुता: दानि, दीया दंड । बाह - वि बहीरा १ पुरु कारका पक छोटा शिकीना किने शीट क्ये मंडमें बाककर चारते रहते हैं।

क्षक्र-च लक्षी आदिके फरतेका शुरू !~चक्र-पु॰ स्ती क्ष्मांके बटने वा जलमेका शब्द । -से-'चर' शब्दके

लक्षक-मी॰ वह-वह, रर-टर ।

चन्नी - स्रो व्यवस्था मारी हुई कहा।

चताः चळा-प॰ जॉबके कपरका जोतः एक तरहवा कीताः समयरा ।

च्छी −श्री वक सरहका संगीत।

चडी-सी पॉक्स समारी: एक मधेया हमरे मधेया प्रीक्षण सनार श्रीतेषा थेल । अ -गाँउना-धनारी करमा। ─वेमा—हारकर पोठपर सवार कराना ।

च्चल-मी॰ देवताही पटावी हुई वर्ता, बदावा। श्रवता~विश्वतना स्टब्स समस्ता, सारंभ दोना हजा। स्मि॰ 'चडरी'।]

चरन॰-स्रो चन्त्रेश्ची किया। बहना-अ कि नीयेंसे कप्रदेश बाना सैया होना। तह तीमा द्रीमा (१४८): संबाद द्राना: यहबन्दे माद जाना बनाई बरना: पढना पत्रति बरना: बहाबके दिन्छ जाला: बाना जामा (दापत्र गील धाना) तसना, दमा बाना। दैवतारिको भेर क्रिया जाना। नगना आर्थन दाना (मास मद्यत्र आदि)। पारमा दोमा निकल्ला। किया जाना (माम रयम)। असर दोनाः अवस्य दाना (मत): पोना जानाः परनेके लिए पुस्ट्रेपर चलका जाना। नज महैंगा होना (सार्थ): सामना अशास्त्रमें है बानाः (मरीरा) बन्ता वाण्यर दोना । चड-बरकर धरा परा-वि अपिक भक्ता वड । प्रु व शैदमा-याः सता भ जामा । ~वनना~धनवादी देशा दल जाता । →केरला

~मश्रप् हो जाना, इस स्ना । बन्दामा-स॰ वि.० वामे वा चानेना दिला दराना । ब्रहाई-सी य^{ा न}दी निया मान जैयाई वा उत्पर्दायर

केंची होती अनेवाली भूमि। • भूगवा ।

चारिप्रवती-स्त्री । सि ी वक बिटाव सवाधि । चारिवा-सी सिंगे इससी। कारियी(थिन्)-नि॰ [सं] नरिश्रनाम्, सदावारी । वारित्य~प्र (सं) दे० 'बारिक'। बारिवाक्(च)-सी [सं•] काळवासिता । भारी-मो [सं] मृत्यका बेगविक्षेत्र, मृत्यके बेतर्गत र्श्यारादि रसीका छदीपन करनेवाली कुछ चेदाएँ। पूर्वा-

बाका वीत्या बास्सी। क प्रापक्षी । चारी(रिम्) नि॰[री॰] पसनेनासा जागेशका(ब्लोमवारी)ः

भाषरम करनेपाका । पु॰ गैदक सिपादी । चाठ-वि [सं] मिया शुक्त मनोहर । प्र बृहस्वतिः केवर । --केसरा--की मागरमीथाः चेवती । --गुक्का--की अंगर! - घोष-वि शुंदर गाववाका।- वर्षामा-वि॰ स्वे॰ रूपवर्ष (वो) ।-धासाः-धाराः-शाबा-स्रो॰ श्चनी वंद्राणी। - माक्षक-पु॰ एक प्रधा - मेळ-वि संदर मेत्रीयाका। प्र विरन। −नेत्रा−वि स्त्री के 'वादठोपला'। -पर्णी-सी प्रसारियो सामह कता। -- प्रद-त तालका यह भेद । -- फका-सी भेगुर-प्राप्ता क्या । -क्येचन-वि संबर नेवीवाका । एव प्रिरम् ।~कोचना~विश्वाः संदर्भनीयाको ।~कर्षना--सी॰ भी । -वेश--वेप-वि॰ अच्छी पाशक्रवाका । ~ जला-वि स्त्री महीतेमरका ब्रह करमेवाली (शी) । ~शिका~की पदरकः।~शीक-वि सुंदर शोक्वाका। [की 'चाक्-धीका'।] −सार~प होना ।--हासिमी--विकरी मनोक्षर वैसी, सरकानगर्भी (सी)। सी पक इस ।

चाइक-पु (सं) सरपञ्चा नीव। चारेक्षण-पु [मं] राजा। चार्चिक-वि॰ [सं] बेन्बाइमें क्रसन ह

श्वार्श्विक्य-ए० [मं] अंगरागका केपमा अंगराय ! कार्य-प [नं] रेउ-रेक शुपुरंगा धर्ममारा वामा सभरता सन्। मामिनोगा कीरका इसका हुए पहला।

—इरिड−९ व्यक्तिमापव पर्यक्रमै। श्वामी-वि [मं] कमलेका बना ह्याः कमहा महा ह्या (confe) (चार्मन-दि [सं] भागते देका हुन। दु सानी या

बार्कीका समूद । वासिक~(व [धं] वर्गनिर्मित ।

श्वामिण-पु [मं•] ब कवालीका सम्बर्ध

बार्य-प् [संग] श्रीत्या जासूमी। एक वर्णनंदर बाति । शायांक~पु [सं∗] वार्याक-दर्णनक रश्वविद्या एक सुनि नो माहितद महाने प्रवर्षक और बुद्दरपति है फिल्म नताने बाते के सहामारदर्में वर्णित एक राध्यस थी क्ष्योंचसका (सप्र था । - दर्शन-पु जानाकर निय मास्तिक धर्मन रेवट देश, प्रमर्जनम, परकीक आदिकी स माननेपाका बर्धन। -सल-पु वार्षक-वर्शन।

चार्ची-स्रा [सं] बारवानुक, गुवरी स्त्रीः वृद्धिः योशिः भी जी। परेस्टी पत्ती ।

चाल-द्र [र्स+] ग्रन्थर, कृष आदिको ग्राममा स्तः।

चूर पढ़ी मोक्डक परिस्तालता । लो॰ [हि॰] सकतेसी चालुक्य-छ [मं॰] बहिल बार्तका एक प्रमुख सार्

किया यदि दिकता युगता इरका (वर्शको नाक); अक्रमेका हंगाः अक्रमेकी सामता अक्रम आवर्षः। रातिः रिवामा कर बनावदा दंग, प्रकारा छल, बीधा देनेवाची वातः कृदनुष्ठिः वाकः क्षत्रदंव कार्रिमें वते वा महरेदी थकनाः जाहरः अ इक्तवकः इस दंगसे वसामा वया यारो भकाम जिसमें बचारों किरायेवार करंद रह सर्वे (बस्रे)। ─चकन—प्र॰ सामाण चरित्र, मीति-संबंध सादाद। ~क.रू~को॰ तीर-तरीका, रहन सहनका दंद ।~काह~ वि॰ पार्छ वसनैवाका छक्रिया वृर्त । -बाहरी-छी॰ क्क पूर्वता भीका देना। अ॰ -चक्रना-पोका देने इगनेका बवाव करमा। पाछका एकड होना । -- वृक्षमा--शकतः अपनी भी हानि करनेवाको बाक भक्ता। -कॅसमा-(शतरंब भादिरें) ऐसी चारू काना दि बपना ही सहरा देंड कावा बपती चाकमें सह रेंड, रेंब माना। चासम्ब−वि० सि०ी यक्षतेवालाः + इसी वालगत। 5° अंक्रध न मानमेनाका दानी। मृत्यको एक मुत्रा ।

चाळकंड-५ [सं] उद्योक्तम्म विक्या शोह । चाराम-त जन्मीसा (संग) जनामा प्रयस करवा क्षिणा। क्षिम्या यदिः छाननाः इसमी ।

चाक्रमहार्-प्र॰ चक्रते, चलातेशका । चाळना~स कि छानमाः ≉ चरानाः दिशनाः द असंग छेपना । वर बिक शकदितका पहनी नार शुप्रान

कार्याः * चक्रमाः (

बाळवी−सांसि∘े छकती≀ चाक्रमीय-भी (सं) चक्राने दिकाने काने बोस्प । बास्ता-पु॰ रवानगीः प्रत्यानका शुक्रवं बुलहिनका वर्री थार खुछराल बाना: शौनाः <u>यत व्यक्तिमो बान श्रेष ग्रे</u>न मिलेगी वसका पता कमानेके किए बोडलेको रायसे के वारोबाकी राज वा वास. बाहतेसी जिला !

चाक्राक-वि+ [या] मुस्तः कुरतीका बहुरा पूर्व । चासाकी-न्हां का] चतुराहै; वृतंता।

चाकाम-प भन्ने पूर यानको सूपी विशय क्षेत्रक रक्ताः मालका वस जगहते वृक्षरे वनह सना जाना भाइर मेना हुना वा वहाँसे आवा हमा माना वांसाका विचारके किए मंबिरहेरके शास भवा बाला ! "पार"ड" गाकडी विकायतके किय यसके साथ बाजेशका व्यक्ति वह व्यक्ति जिल्लाके वाल पत्लामका कामम है। -वही-की वह नहीं जिल्ली बाकान किने बानेनारे मानका

विकास किया भाग । चाक्रिया∽नि चालगायः

चासी-विश्वाकशास छन्। श्रमहत्ता श्रेसी वर्तन चलसेका तरीरा ।

चास्त्रीस[—]नि सीस और इस । <u>प्र</u> वासीसम् संस्त्राः ४ । −वॉॅं-नि जो समी १ के बाद आते। 5° बूत अवधिको जातासुने विसदा कर्न भेडतुमा बेहनुस्थ

चालीसा−पु नाबीत वस्तुभीका तमाबारा वाबीत रि^र का काक, विकाश वह पुरंतक या काम्य किमी ४ वर्ष श्री (इत्यानकारीया) ।

शुक्त इत्रक्षीतका कार ! —सुक्त-वि: भार सुँहोंगाका। पु॰ ब्रह्मा; भीताला ताकका एक मेर्। [ली॰ चतुर्मुसी ।] श• चारों ओर। -मृति-पु ब्रह्मा स्टेश विष्णु। ~युक्त~नि॰ क्रिसमें चार भोड़े या वैक धोते कार्ये (गाई) ! -युरा-पु॰ -युरी-सी॰ वारी जुनी-सत्य, नेता द्वापर और कवियुगका समावार, चीकरी । न्यक्य-पु ब्रह्मा । वि॰ पार मुँहोंशका । -धर्म-पु॰ पारी पुरवाध-वर्ष, अर्थ काम और मोछ । -वर्ण-पुर वारी वर्ण-आक्ष्या छतिब, बैरव और शुद्र । -बाही(हिस्)- वि दे॰ चतुर्यक्त'। पु॰ चीक्रशी। --विद्य-पि॰ पारों नेर्रोद्ध प्राता । -विद्या-की बारों नेर । -विद्य-नि॰ भार प्रकारका । -- भीर-पु भार दिन अकनेवाका एक सीमयप !-वेद-पु ऋद् दजु साम और अवर्ष-वे मारी नेदः परमेशर । वि॰ चारी वेशीका प्राता । अवेदी (बिन)-नि॰ पारी बेरॉन्डा दाता । पु मादायाँकी एक षपकारि । - स्पृष्ट-पु चार पुरुषो, पराशीका शमुराव चित्रे बासुरेव संबर्गण, प्रमुख अनिवकः देव (संसार), देवदेत, क्षान (मीध) मीखडा छपायः रोग, रोग-निदान, मारोज्य भेवता दर्ीः विष्युः −हायक-दायम−विर पार बरसीका पीसाठा। यहर बरसीमें बना धल्पक्ष । [ग्पी 'चतुर्दायनी (प्राणी) 'चतुर्दायमा (बन्तु)।] -हाता(तृ)-5 वेदीक पारी होम करनेवाला ।-होध ~पुविष्यु।

चतुर्थै−4ि•[मी] भीवा। पुण्य सातः। −काछ−पु० भीजनकी विदेश करून, दीवहर (अहीराजका जीवा माम)। -भाव्य(ज्)-वि उपत्र जातिका जनुनौहा

पानेबामा (राजा) ।

चनुर्धक~पु [मं] चीविया द्रशार ।

चतुर्योश−५० [रं] यीवा मान्ध थीवारै । वि. चीवारैका मानिक(स्थू)।

थतुर्योसो(शिन्)−ि [सं] बनुबाँदा पानेवाका । प्युचीसम−५ [में] सम्बास ।

चतुर्विका-सो [मं•] दशको यक तीन जी चार करके बरावर होती थी।

पनुर्धी-नि॰ सी॰ [मं॰] थीयो । स्रो वद्य-विश्ववक्री भीषां निर्वतः संप्रदान सारम् (स्ता) । -कर्मा (स्)-पु भ्याद्ये पीथ रिनदा कर्म प्राम-देश्यादिका यूजन साहि । -विया-स्रो माता-दिनाको स्टनु होनेकर निवादिता बन्दा हारा भाषे किन दिवा पानेवाला भाद । –सन्पुद्ध "इ तन्त्रदश समाभक्त वह भेट किसमें श्रेपदानकारकारी बिमविका कीप ही (स्या) ।

चनुर्या-त्र [नं] यार मस्तरने पनुर्वित्र बार संदे में। चतुम-पुरु [मे] श्वावभिता ।

पांस- नन्द्र का समामनात क्या - व्याल-नि विसर्वे नार भाग हो । इ. चीनावा । -श्रीन-ति चार सीगी-

बन्ता । इ. इ.चीमहा एक प्रता चतुप- नन् का समामगा वय । -कर्ण-विक जी (नान) पार कानोने ही पति हो, दा नार्यविवों हो ही मालुम हो। -वर्षी-री स्ट्रंसी एड माध्याः -कम-दि वार

दकाओं माबाभेदाबा। -कोबा-दि चार बीजीवासा

चौद्योर !' --पद्य--पुरु शाराबार आद्याग ! --पद--विरु पार पैरोंबाला । [मी॰ 'बयुप्परी 1] पु॰ भौपावा मानवरः ११ करवोमेंसे एकः बनावस्याका पूर्वार्कः । -पदा-सौ॰ थोपैबा छंद । --पदी-सौ॰ पार **प**रणी-वका पदा गोतः भीपार्व ग्रंद । —पर्णी—स्प वमहोनी। ससना । ⊷पादी−सी नदी । ~पीठी~सी• वड विचालक जिसमें चारों केद पदाये जाते €ीं।~पाणि~ पुरु विष्णु । -पाद-विरु, पुरु दे 'बतुष्पद'। -पाइय-विक जिसमें बार पार्व का पहल हो, जीपहका ।~फला~ की नागवका नामक भोपनि ।

बतुदक्र−पु॰ (सं॰) पारका समाहार, पांक्रोः पार पौर्नी-नाका मेटपः सामताकार साँगमः नीराहाः चारः करियोका बार !

चतुरुक्री-स्वी॰ [मृं] पदा चीकोर ताकाव' भीन्द्रोः सस-इरोः चन्धौ (पंडितमंडध्यै) ।

चतुरुच−तु [सं•] चारकी संदयाः चारयस्तुओं, व्यक्तियों-का समादार (अंशःकरण**व**शः अनुवंशयतः)। पत्म-कंटकीयें कब बीर कबसे चांबा, साँतवाँ तवाबसूवाँ स्वाम।

चनुष्टीम-पु॰ [मं॰] यह वरिष्ट यस । लुम्~'वतुर् का समामगत एव । ⊸तास−५० भोवाला वासका एक मेर । -संप्रदाय-पु॰ वेण्योके ये चार संपदाब−भी भारत वह और सनक। –सन−त दे॰ 'बर'सन' ! –सम–१ एक भीवप विस्में काम बीरा अध्यायन और इनके सम भाग होत है। एक गंगहण्य की कन्तुरी चंदन, बुंबुल भीर कन्दके योगसे वनदा है। ~सीमा–गा श्रीदरी।~सुन्नी–सी मदस्त्रद मधम भार पूच जी वह महत्त्वके समरी जाते हैं।

वतुस्तनः ऋतुस्तनी~वि स्पे [मे] मार स्तर्नोबानो । स्रो० गाव ।

चत्राध−पु॰ [मं] एक नैतिक नव भी बार रानोमें पूरा दोना दे । च बर∽ड [र्म•] चीकोर स्थानः घीराहा घीमहाशीः

यदके किए साफ किया हुना मैशना शार रथीं हा मुन्ह । ~सद-प्र॰ भीरादेपरका पेष्ट ! -बामिनी-सौ॰ रचरेदी ध्यः भावता ।

चत्वाम-पु॰ (सं॰) दोवकुंगः क्रग्र, दर्भः गर्भ । चरसां-५° विश्वास । षश्रिमान-न्त्री दे 'बारर'।

चित्र-पु [मे•] चेह्माः बन्धः शामाः सर्वः। व्यविरी-स्री० [मं•] इत्यानीः अवनाः ।

बहर-मी॰ है 'चाप्र । ॰ एक तरहवी हीए। धनक्र≉−9ुपना।

चनकट॰-गी॰ वर्ग समाना। चमकनार्ग-न मि जिन्दमा दरवनाः नाराव दीना ।

चमण्यां−ण विः चित्रनाः यसद्याः। चमचन्ना 🚉 नंशकृति पशुरुको बर (शहर धद्र ब्रीका ।

चनम≉−पुदे √रन'। चनवर*~९ मास कोर~'मारने दाव में दन है चनार

इष इही ६७ मानि –भगरदाय १

चना-इ भेगा वणनदा यह प्रधान सम भ। वर्ष स्वीत

भौमी भाक । नके पर निककना~मरनेका समय बानाः सामत भागा । (चीटीक पर मिक्कनेपर वह सबती और पिरकर मर बाती या चिट्टियोंका मध्य बनती है।) -(टियाँ)से भरा कथाध-शगहे शंहरकी चीम मुसीबत-का भर ।

चित्रका-पुदे• 'निक्शा'।

चित्ररा*-पु• वे विक्या ३ चित्रकी-त्वी यक तरहका रेक्षमी कपड़ा। पक जंगशी पेड़-निक्रमी सुपारी ।

चिक−प्र• क्करकसाव मांस विजेता। † सौ• विक्य । चिश्र-सी॰ [तु॰] चोंछक्त सोसिबींचा बना हुण होता पर्या विसे बिहकी दरवाकीपर बाकते हैं।

चिकट-दि॰ दे॰ 'भीकट' । प्र यक तरहका रेसमी करहा । विकास - अस्ति में असे बकार विषयिया हो आता।

चित्रदा-विश्वे 'चीकर'।

चिकम-पु स्ट्री ६पवेषर सुईश वंत-वृटे बनानका काम[.] मेरे कामनाका क्रपता। -कार -गरु-दोश-प् विकत ननानेवाका । −कारी −हाओ −सी व्स्थित वनामेका कास ।

चिक्रमा~वि विस्ते सनइ वरावर रक्ती रंदा को <u>वर्ष</u> हो को सरदरा न हो। जिल्लार हाथ-प्रीन जिल्ला लाल भौर चमश्रेतः तथ यो अगा हुमा, रिमन्धः + रनेदी। -ई-नो पिक्रनापन रिनावताः वी तेक बारि रनेद ! ~बंद इट-स्थे क्यिनाईं∤ स्थ →घडा−विसंपर

कदने प्रतनेका असर स दी देदवा। चिक्रनामा "स कि विक्रमा करनाः कव्यापन सुरवरायन मिटासाः तेक आदि करावा । अ कि॰ विद्या दीवाः मोटा द्वोला चरना कामाः विक्रमी-पुनश नार्वे करनाः स्लेब्स क्ला अनुरक्त होता ।

चिकसिया निव को बना-उना रहे छैला।

क्षिक्रमी-विश्वमी देश क्षित्रमा । - शुपदी वार्ते - ली किसीको उगल-पुरस्कारेके किय कही बारीवाकी मोडी वार्ते, चापब्रह्मीकी नातें। ∽डशी −सुरारी−नो वनानी हुई विषयं स्वारी । -मिही-सी कामी मध्यार निही ।

चिक्रम्ता-स कि विवाहता।

चिकवा--प्र• बुवन विका + एक रेसमी कपहा। विकार+-प्र चीस्तार चीस !

चिकारमात्र-मः क्रि॰ शीखार करना ।

चिकारा-प यह तरहकी सारंगी; बन वरहका हिरन । चिकारी-तो छोरा विकारा। मच्छत्र वैसा एक छोरा

क्षीका । चिकित−दि० [मं] दात । पु वक कवि ।

चिक्तान-तु [रं॰] पद कवि । वि॰ व्यविष् । चिकिरसक-पु [ग्रं॰] विकित्सा क्रमेवाना वैद्य ।

चिनित्सम-पु (सं•) विशिक्ता धरवा ।

विकित्सा-छो । [है] रीग विकारणता वक्षा श्लाम भीवनीयभार । —स्वबसाय—पु वैष शबन्दका देशाः ~व्यवसाधी(विन्)~ु वेच दावरदा वेश दरने वाका ह

चिकियराक्य-१ (सं॰) बरपप्तक, क्षत्रहाना ।

चिकित्यत-वि॰ [सं॰] विस्त्री चिक्रिसा श्रमक देश गमा हो । चिकित्स-वि [सं] निकित्सा यपनार करवेतामा।

विकित्स्य-वि [सं•] विक्रिसाके योग्य। चिकिम-वि० [सं] थिएमे सहवाला । विकिस-पु॰ [सं॰] कीयह । चिकीर्यंक-वि [सं] विक्रीर्शनाताः करनेकी रस्त

रस्रनेशका । चिकीपाँ-सी [सं•] बरनेक्स रच्छा ! चिक्रीर्विश-रि॰ [सं॰] विसे क्रुक्तिया एवडा का गरी हो।

पु॰ इच्छा अभिशास, प्रदीयन । थिकीएँ-वि वि देशमध्ये रच्छा रहाने रामा ।

चिक्ररी॰-की क्लिये पुरस्र। चिट्टर-पु॰ [र्स॰] देश शिरदे शाला रॅक्नेरामा ग्रेप

पहात्र गिक्रहरी। अर्थेन्द्र ! --क्रकाप --विकर--पश्च --पास नभार, नइस्त न प्र वेस्ट्रकार, अन्य, वर ।

चिट्टर-पु• (सं) बाहा ३ विश्व-पुर्निः । छाउँ र । विश्वये माननामा । चिक्कर−दि बहुत सैका, तदा । प्राचना दुना सैन ।

विकास-वि [में] विकास हम सुपारीक पेड़ा बसका क्सा इह ।

चिड्रण −सी निीवदिवासायः समारी ! चिक्क्यी~की [सं] त्रश्राहेः भिक्रमी सुद्रही।

विकरना-अ॰ कि॰ चौत्कार करना विवाहना। चिक्रम-५ [मं] बौद्धा शाद्धाः तेल और इनग्रे मिन हुमा वृद्धि बाटा यो वर और कृम्बाको उद्दरमधे दरह

मका जाता है। विका-सी [सं] द्वरारीः पुरिवा । रे इन वस्ताः केंग्र

देखाः यह रोज । चिकार≕दु थिकार।

चिकारा∽प पद तरबदा हिरन। विश्विण-विश् (तंश्री विकास ।

चिक्तिर-पु [र्च] यद करहता पुराः निकारते । चिक्रिय-प्र• सि] मसी भावता चेत्रमा ! विक्रमा!-१ सवपानके समय खाया आनेवामा व्यापी

वस्तु बाद ! चिन्त्रस-९० (ते] ५६, स्प्रेयर । चितुरमां -सी बोतने वा निरानेसे निवनी पूर्व पछ ।

विस्तरमार्गे~स कि॰ बोतमेडे शत वा निरमर गत गिदासना । विसुरा=-पु गिशहरी ।

चित्रुराष्ट्रां~सी विद्युरक्की जिला वा संबद्धी । विश्वरी - न्यां मात्रा गिक्टरी । विश्वादी-भी है दिया ।

विषक्।-पु॰ वक पीपा निसन्धे जह-रसिक्षे आदि दर्शके काम बाडी है अपायायोः क्रिक्रमी । विवाही-त्ये क्रिजनाः र जन्मार्थः ।

चिचाम≄-दुनात्र। विकास - अंदि विद्याप विश्वाबनारु-ध निरुधे विविद्यामा - पुन्न विश्वय वसक~सी* रिसी चीवडे पानीमें हवनेसे निकलनेवाली.

वसद-वसद-त्यो॰ कुत्ते-विद्यो आर्टिके पानी पीते वा सरस परतु रताते समय मेंद्रसे निवलसवाकी भावानः वाते समय मुँद्रसे उत्पन्न होनेदाका शब्द ।

बसमा—स∗कि दुपका बाना रीदा बागा।

षमाना−स कि•सिसानाः चरमाङ सिधानाः दृष्ड यामा ।

चमीरमा-स कि॰ गाता देश दुशेकर तर करमा। चर्मकता÷-अ क्रि॰ दे॰ 'चमदशा ।

चम-'चाम'का समासगत कर । ~गाव्द,-गीर्द-पु॰ चुदेशी श्रम्प्रयक्षा रतनपानी यीन वा निविनोंकी तरह सर सकता है। -चित्रचंद्र-दिश किस्मीकी शरद चिप टरीबासा पि" म छोड्मैबासा। -लुई -बोई-खी० यह तरहारी छोरी विसनीः विमटनेशको चीक । -रक्ष-पत्रदेशी अफ्नी विधानेंसे धेउर परधेका तरका मुमला है। वि॰ रही | इवस्थे पत्तकी (स्त्री)। -रस-पुर जतेको रगहका भार । चमक-ला॰ भोए, बांदिः झरूब (रेना मार्गा)। महबः

क्षयकः आके भारिने कमर बादिमें अयानक पेदा होन-बाका दर्द । -वॉर्रिमी-की बब्रुत बनाव-सिंगारसे रहमेवासी स्वा । -ताई#-स्वा+ चमक, चमकोकारम । च्यमक-न्यो शांति शोशिः तक्य भवतः। ~बार-वि+

पमस्याकाः स्रोतियसः।

चमकना-अश्क्रिः धमक देता, शतकता, वगगगानाः मिन्द्र होनाः वश्रति-सनुद्धि माह्य होनाः बीर पक्तनाः श्रीदमाः भरदनाः हाटपट वट देनाः सिप्पद जाना ।

चमक्रमी-विश्लोश हाट भरूक जानेवाकी। यटक मटक शकी।

चमकाना-स मि. चमक्रार क्लाना, उज्लेक करला। विदानाः महत्रानाः यह सगादर बीहरी वरुवक नेयल भीर श्रम दरनाः चयक्रानेक किए दिव्यानाः दिनानाः (तरी तसवार): मटडाला (वैगलिको आहेरे)।

चमकारा-५० चमकः प्रक्राचात पदा क्रावंशकी रोहानी। वि थमद्येका।

चमकारी+-म्पी दे 'चयवारा । वि स्पी० यमधीमी । चमकी~सी दारनोरीम अमीत अरनेद साम आनदाना

मूध विदाराः नदकी रहमका द्रवशः। षस३।सा⊸ि वमदतार।

पमशीवल-गो भगरान्या दिवा।

चमहो-मी॰ पमहावेशसी मी। इतरा भी। हमशास मी। चमगान्द~५ १ पम ≼ साव।

पस्यम-पु॰ एक र्याणा निराई। अ दे नमानम ।

चमचमाना-स 🗗 नमद्रमा स्तना सुन्दन्तवस्य रोगा दि समझ निरूपः ॥ कि समझना धमायम

चमचा-५० टिएनी सम्बद्ध थेमा चाच जिल्ला गाला वरीयने की पावन मारि बढावर वाज-पीनका काम

सेत है। निमया बोदसा मिदालनात कावड़ा है वसर्वा-मी॰ दोश यमपा। भे श्-यदरी शेक्सारी सर्वारे

विससे बरवा चूमा निकासत और पामपर प्रेकात है। चमदा-पुरे विमरा'।

चमदा⊸प प्राणिक्षरीरका नसमिक्र भावरण, धर्म, त्वपाः शरीरसे सकत की हुई स्वमा शास किकड़ा।

चमदी-सी वर्गसमा।

चमत्करण-पु॰ (सं॰) विरिमद, चमरकृत कर्मा; एरसर ब्यथ्योत्दर्भ ।

चमस्कार-पु॰ [६॰] बोकोचर बस्तु देखदर मनमें सत्पन्न हीनेवाला आर्नेडक्श विरमवः भदमत कात करामातः तमानाः बत्तवः भीतः कान्योत्हर्पः अपामागः हमक् ।

चमस्कार्क-वि॰ [से] चमस्कारी । चमस्कारित−वि [सं] चमस्कृत विरिमतः।

क्सत्कारी(रिस्)-वि [र्त] विरिमत करमेवाका चम-

स्कारमञ्ज । चमस्कृत−वि [सं] अर्थभमें आवा हमा विशिष्ठ ।

चमक्कति−सौ [र्थ•] चमस्कार ।

चमम-पु॰ (र्श॰) पीनाः सानाः (का) स्वाराः पुरूपारी इश भरा स्थान । -कवी-त्यो• वस्य छगामा। वधारिवाँ बारि रताना।

चमनिस्सान−९ [सं•] पुम्प्वारिकाः इरिवामा और पृत्ती से शोभिन स्थाम ।

चमर-पु (र्थ•) तुरा गाय नामका एक पशुः चैंबर । -प्रच्छ-प्र• शिक्बरी। श्रीमश्री चैंबर । -शिर्सा-व्हा॰

थोड़ीको क्ष्मगी। धमर-'चमार'का समलामें ध्यवत् रूप । - जसाहा-प्र

हिंद जलाहा, बोरी ! -वगक्ती-सी॰ दाने एंफा और। क्यां । -शा-ली चमारकाशा स्वभाव, भीच मकति । चमरक-प्रश्री वि नेपमन्ती ।

अमरता—पुरुद्ध मुनंशित वर्ष को वरतममें हानी भाती है। बसरावत-स्ता बसहा इसाने मीट शादि स्नानेसी मध्यो ।

चमरिक-५ [मंग्] क्षनारका देत !

चमरी~न्दो [मं•] ग्रुस गावः धवरीः मंडरी । चमरीड-ए चमारीका उनके कामके बदल मिकनेबाना दमन शारिका शारा ।

व्यवस्थि-स्री व्यवस्थि बन्धा वा राजा । बमरीबा-त देशी इंबडा बना मारो, महा जना

वयांभा ।

धममा−५ चमसी~मी दे नगरन । चमस−प॰ मि॰ो मोमपान स्टनेदा सदरीया बना भगन

के माधारका यद्याता समया। यभीसः वादरः सट ८। चमसि-मो॰ [ब्रं] एक शरहको पीर्ध ।

चममी-मो [मै] छोटा भगता उरद मैंन भारिको

चमर्मा(सिम्)-वि [सं] चमग्र (मृप्यतममे पूर्ण) पाने या भिषदारी।

बमाळ- व नैवस ! प्यस्ता !

श्वसादक-भी समह शांति। वसायम-म थमस्य शासा

क्षमार-१ अमहा क्षमाने जून आहे बनानेका क्षमा करने

**-E

चितायमी-ची । शिवानेकी फिया। शिवानेके किए कही यवी बात मागाबी, तंबीब (देना)।

चिति - सी [सं] चवन अुमार्श हैरः थिता चेत्रमाः रटेंकी जोड़ारें। जसिका वह संस्कारः समझः दुर्गाः » विश्वी कोरी । -व्यवदार-पुनद मेणिन जिससे किमी बीबार में रंगनेवाठी हैंटी, डॉब्डॉब्डी गिनती मासम की बाब । चितिका-सी [एं०] बेट निता करवनी।

चितेरा-पु निवकार।

चितेरिम, चिसेरी-चौ शी निजवार; चित्रकारकी पक्षी I चितैना≉~स क्रि≯दे 'शितवना'। चित्रीमः चित्रीजि॰-साँ० है विस्तवन ।

चित्तीमान-स• कि॰ दै 'वित्वसा'। विदांगी-मो • दे • 'विदावमा ।

चित्र नो (सं) चेतनाः यानाः शत्याः वदाः विका अप्ति । पु॰ चयनकर्ताः खुननेवासाः रामानुबके मदसेवीव पदवाच्य पदार्थ । -पर् -म्बद्धप-पुरु प्रमारमा ।

चितकार-प्र• दे 'चीरव्यर'।

चिच-प [संग] अंतरिहित अंतम्बर्ण, मना अंतम्बर्णकी चितना अनुसंबानकारियो पश्चि (वे) । वि+ विचारितः मतुभृतः द्रप्तितः गोपर् । —कक्कित्-वि॰ विश्वकी भारत की गर्ना हो। -कारी(रिक्)-नि वसरोदी वकासे पक्नीतला ।~चीर--ध प्रेमा ।-ब -बन्मा(न्मन)-प्र कामदेव । — क्रा∽िष इसरॉका मन इच्छा बानने शका । - बारा-सी विवारवारा !- भाष-प्र॰ प्रेयी । -नि**वृत्ति-श्रो॰** मंडोप श्रुद्ध । -प्रसादम-पु॰ बीप बर्शनमें वर्षित विचन्ना एक प्रेस्कार विश्वधे विचन्नी प्रसन्दर्भ प्राप्त होती है। - सँग-पु वदरिकामम-रिक्ट ण्ड पर्वतः । ~ सुमि~सी विश्वद्धे व्यवस्थाः दम पाँचमेंते निक्की कोई **भवरथा**−किस सूड विश्वित, यकाम भीर निक्स (यो॰); समाधिकी वन चार मुविकीमेंसे कोर्बे-महासतीः महामतीकाः विश्वोत्ता भार कतंत्ररः। ~सेव्~ प्र मतमेदा मनश्च मस्थिरता । - अम-प्र उ-भाति-भी क्वरके कारण होनेवाका प्रकामः ववहाहर ।-सोनि -पुदामदेव ।-६८-दुवे 'बीक्क'। -विलेप-प्र• निचान मरिनरता धमेन निवर्गोंने महकते रहमा !~बिदा —प्र विकास बाद बामनेवाका ।—बिद्रव—प्र॰ सम्माद। -विसंशः-विसम-९० अविः स्थारः । -विहस्रेप-प्र मैत्री भंग । -- कृष्टि-मी क्रिक्टी अमरवा' मनकः भावः निषका निपवाकारः वरिवाम । 🗝 निरोध-पुरु बिचकी शहा विवर्णेसे इराहर बंगर्ग्य बरमा !- श्रुद्धि-स्त्री क्लिका निर्मेल, निर्विकार, कुनानताओंसे रहित । द्वाला । – द्वारी(रित्) – वि मनको दश्य करमेवाणा । मु॰ ~अचरना~श्री स कगता मन स्राप्त होना। -चन्ना-दे 'वित्तपर चढ़ना । ~बिहुँडना≉~किसें दीका बत्दब ६८ना । ~सुरामा-मन मोह[े] टेना ।-देमा -मन क्याचा। दक्षान देशा । ~पर चतुना∽नराक्षर नाद रहता वा वरावर पान जाना । -वेंटना-मनका विसी पद निषदमें म ७ व सदमा विश्वमें नदुरामी निरामें दीना। ∽से उत्तरमा⊶अधिव हो जानाः वाद म र€मा !

चित्तरंजनशास-प (१४१प) मोतीरून नेहरकी हो ।

तरह जापने भी बिना पैतुक मंदति पारे क्यास्त्रश कर रुपया समावा । अस्टर्योग अंदीलन्दे समय आपने नकारुत छोड़ थी और सादा बीचन निरामे बया । । व में जाप कमिएके जप्यदा निर्वापित क्रूप र सूख १ १५ विचाक्यंक−कि (सं∗) मनको भएना बाँर गाँव क्रमानेशका ।

विचापद्वारक-नि॰ [सं॰] संदर । चिचासीग−पु• (सं] पूर्ण चेत्रनता। क्रिप्ती विषयके प्रा

मनको आसस्हि। विचासीग-प (सं•) प्रेम ।

चिचि-की॰ [एं॰] प्रश्ना तुन्हिः थितना स्वादि। क्र अस्तिः प्रयोगनः। किसी-खो॰ थ्रोरा क्या: रोरॉमें वक बानेश दाग निर्म

बीरी विश्वते अना केलते हैं। कुम्हारके नाकके विनारेक गजा दमकोठा चिन्हीं दिसका एक भोरका (इनकारनार) बूर ऋर दिया गया क्षा मुनिका मितिका । त भौतन व क्रिकेश साँप।

चित्तोहेक-पुर्धी} तर्वधरा चित्तीर-प मेनाइके महाराजाओंको दुरानी राज्यानी।

चिहर-वि [र्स] पुनने बीव्य व्यनीय विनानीपी। प रमधानः समापि ।

चित्रा-सी [सं] थिया। पुत्रना, एकत्र करना। स्थान (बेदी सादि) । **चित्र-**पु [मं] ब्रह्माज ब्रह्मे बाहिम्स बनायी हुई हिसी नीबधी प्रतिनृति, तसबीरः आवेदनः विक्या प्रणापित भित्रकाल्या निश अंधीका काम्मा एक वर्गा विस्थान निमक्त समीका परंदा भारतमा नेत क्रवा कर वर्तना संबोधा चमकरार बरता। वि रश-विरंगा विश्वपा चमक्रीका। कर वधीवाला। दहव गीमरा विभिन्न है सेन दुवरत । -बंद-प्र कृत्तर । -बंबम-पुरु धार्यमः दरीः दाधीको सूकः। -कर-तु स्विकारः अभिनेता यक वर्णसंसर काविः विनिधास परः। -वर्म(व)-ह जिब बनासाः बालेयनः वाबोगरीः विविध कर्यः बसंबरण। -क्सो(सेन)-पु विविध क्से करे नाक्श वाजीगरा विश्वकारा विभिन्न इस । -क्सा-पीर यित्रवियाः, वित्र बनामेध्ये बस्ता । --काय-इ बीहरः। -कार-पु वित्र बन्धनेवाका जिनेस । -कारी-गी [है] विश्वकारका काम पंथा विश्वकर्ता (-कास्य —पु निव(छव, चमर बादि)के बाकारमें निर्देश बास्त्र । -कृष्ट-तु शेव बुड । -कृट-तु चौरा विशेषा

सदसगढा वद पुत्र ! —श्रीक्र-पु (तप्तरमी ! -गीव--पु॰ हरवाल ! -गुस-पु॰ १८ दर्मीमेंने कहा बन्हें दर नामके केरसक की सब ममुख्यीका बाय-पुरूष किसा करत है कीर की कायरन बातिके साहित्रम माने जाने है। -धंदा-स्म कारोमें वित स्कर्तेना - जस्य-इ बासबक्ता एक अकार। जनाव सनाव रूप क्यारी वात ! -र्नकम-पु वायविद्या । -ताल-पु चीना एक का रह थेर ! -लह(प्)-प्र गोशामा ना

वक वर्षत क्रियम्द बनवाछ-दासमें राम सीना कर करत

रदे। –कृत्−वि अन्युतः। पु निषदार। –देनु-५०

चरणींपर गिराहुमाः −गुप्त−पु विज्ञकान्यकाणक मेद बिसमें कोएक बनावर महर गरे बाते हैं। -प्रीय-सी गुरुष ट्याना । -चिद्व-पु॰ पॉनका निशान परनिष्ठ । -तक-पु॰ पैरका उत्तवा परवस । -शास-वि अरण-मेनी । पु॰ टिहाँके रहनेवाके एक संप्रवास-प्रवर्तक संघ (सं १७६ -- १८३)। - दासी-पु [दि] चरचदास के अमुयानी । सी नर्जोकी दासी सेविकाः पत्तीः नहीं। -म्बास-पु• बहमा परविद्या-प-पु वृद्धा-पर्म(भ्) -पु गुस्ट रतना। -पानुका-सी समाके, प्रशर श्चारिपर वना सरप्यभिद्ध । -पीठ-प्र शावाउँ; पाँवको । ~युगा,~युगास~पुदोनों पर पारकवा ~रवा(स्)~ ह्यो । सरकपुष्टि । - स्टार-दि 📱 'भरकपण । - स्टाह--पु । वेदशासाओसा विभाग धरनेवाला संपविशीय। -क्रश्रयाः-से**वा**-सी नरम्पत दोशाः पाँव दवाना भागपी हेवा, रिहमत ! -सेवी(विन)-प॰ टहरू भेवकः सर्गीमें रहनेवाला। अ॰ -छना-पाँव छकर प्रणाम करमाः प्रजाम करना । -- देशा--वाँव श्लामा । -पदमा-अपमन, प्रदेश होना ! -हेना-पाँव पहना बरम छना । च(प्यास-५० (सं•) मद्यपार, मौतम । चरण्यद्वि−षु (सं]पुनार। भरणामति नहीं [सं] यरणींवर गिरना। चरगानग-वि मि (दिसोके) योध शसगामी । च(णास्त-५० सि] वह बल किसमें दिमी देवमति वा पुरुष पुरुषके बाद बतार गर्ने हो। देवमूशिको लाल करावा हुमा यस या पंचातृत । चरनायय-त [र्व] सरगाः चरनारचिंद-५ [मं] दे 'वरनदम्स । चरणादः-पु [में] चरणका भाग गाग वरतुका आठवी

चरणारहेरम-५ [गं] गरीने क्रयमना शास्ता । चरणोदक-द॰ [सं] शरणानृत । चरणोपधान-पु [मं] पैर ररानेको धीन, धाँबहान। चरवा−सी॰ (सं॰) यसनेदा शादा पृथ्वी । चरती-पुर प्रत म करनेशाचा व्यक्ति । चरप-वि [मं] जंगमा धकतेवाला ।

चामान्य कि पशुभौका मैशान या दीवश्रीभाग शामादि शामा। क्रक्षमा दनाना- भी इहि जनको सीव सरै ─विनयपविका। क्षा कि चल्या क्यवहार सहसाः किरमा रिनरमा । पुकारा ।

चानावुष्य०-तु रे नररातुष । चरमि -सी पनने में किया वा एंगा बाल ।

भीदर चक्छ बरदार।

षामी-मा में(दार वरीतरा चब्नरावितार गाव-स्वसी भारा-वाली दिवा जाता है। गाव वेंग्या - भारा-वाली देनेके निष गारो हुई म १६० थाम आराह बरामाहः बरनेकी विशा

बरधी - सा॰ पर्या । चरपर-पु॰ समहाः भवत्, हमाभाः एकः श्रेर । बरपर−वि दै॰ 'परपरा । चरपरा—वि तीधै स्वादवाका साक्रमारा तेत्र छत्रपट । चरपरामा-भ कि॰ पर्तनाः पानमे सुरक्षके कारण वनावसे गोवा होनाः परपराहर बोना । चरपराहर-को व्यादका तीमापन, शामा धारको बरूना बाद, देव । चरकरा - वि दे० 'बरपरा । चरफरास(*-म कि॰ तक्षकामा व्याक्ष दोना । चरब−वि॰ [दा] चर4ारा८, निकताः मधाः तेव चतुर । ~ वस्त नि कुशुन्त चतुरः कारीगरः (हा) गठकरारा । - जाबाल - वि विसकी अवान तेत्रीये पकेः भिक्रमी भुवनी वार्ते करनवाका भाषमूल । -ज्ञमामी-स्रो राजालताः चापस्तो । सु॰ –करमा~पी-तेकमें वस्ताः शी-वेन क्यानाः विस्तानाः। चश्चन~४ पवैना। चरवाँक, चरवाक-वि चतुर; बीठ, निहर; चंपछ । चरवा-पु॰ [फा॰] वह निकृता नारीक कानम वा कपड़ा विशे कपर रखकर नित्र का भक्षेका आस वहारते हैं श्चाद्य (बतारमा) । चरचामा – स कि क्षेत्रपर बग्रहा पहाना । चरबी⊸र्या (का॰) मालके रूपर और स्वयाके मीचे रहमेबाका सफद या इकके पीठे शंगका विक्रमा परार्थ। बसा नेदः गोसको पिषकाचर अक्ताको हुई विक्रमाईः मोटाई। मुरु --चडुवा-भोटा दीना। मध व्यन्ता, वर्मड होता । (बाँकाँ में)-छाना-पर्मट कापरवादे जारिसे किसी बरतुंबर ध्यान न बाना। चाम-वि [न०] अधिन आधिरी: इत दरमेका। सबसे पेरिका प्रथिमी। वरह (भवरबा)!-ब्राह्म-पु॰मृत्युदान। --गिरि-प अरवानन। --वया(यस)-वि वह। चरमर-व अध्येते ज्याने, चारपाईपर नेउने आधि क्षीनेवामी सावाय । चरमरा−वि॰ ⁴वरमर दाध्य करनेराला । चरमराना−म कि॰ 'बरमर' मादान होना। स कि॰ नरमः श्रमः बरपन्न बरमा । चामवती :--गी० हे 'वर्धवाती'। चरम॰-पु दे॰ यस्य । -श्रामी-मी॰ ब्रुनी (नापु) । परकीता−व यह बाधीवनि । "बरबार" ! नेता बहमाने था जुना शेवर बलनवाला चार्वाड-विदे वर्वाड'। चरवाई-मी थरानका काम । चरानेकी धवरम । परमामा∽स कि वसनेदा काम कराना । चरबाहा-पु मान भग चरातेका काम बरनेवाचा र परबाही-स्री भरवादका कामा वहा भरानेकी समस्त । चर्यवार् - व यरनेशनाः चरानेशनाः। चरम्य-नि [मं] विष्ठभं पर बनाया बाब (५८हाहि) र चरम-प्र गाँभेरे पेश्मे निरम्य द्रभा में र भा गो स्टा हो सरह पिया जाना है। दे⁴चरमा । चहमा—<u>त</u> देव, अन भारिका समझा प्रमहता बना बहा

धैनाः पमदद्या होन जिलने क्षेत्र सीवर्ने दिए पानी

निकाणत है। पुरा समीनको वद माप ४। नमें ४

विये क्षत्र पहलने, दिवहे क्षेप्रनेकी काबार होना। बहुत गरीचे भाना ।

विभावमा-स॰ कि फावना विवताकर देना। (किसीके पक्षका) हर पहारु हे र्षात्रन करनाः स्थेतनाः बसीक करनाः षद्भियाँ सहाना ।

चिद-'निव'का समासगत रूप। -आकारा-प्र॰ ध्रव पानसक्य प्रश्ना । —भागास~पु० चित्तकत्र परमक्का भेतं करणमें प्रतिविधित व्यामासः श्रीव !- प्रात-विश्व शामसवः दानरूप । प्रक्रावरमात्मा ।—क्रप--वि॰ शक्र चैतन्य रूप फिन्मका बानी। पुरु परत्रका । -विकास-प जिस्तर परमेश्रको मानाः भारमा या अक्षरकरूपमें रमय। चिन-प॰ दिमाणपपर होनेशका एक सत्रावदार पेत्र ? चितक-चौ अञ्चरी शाव होनेवाकी पीका शाकती रीगरी मुजनाकोर्ने होनेवाको बक्त और पीडा ।

चिमगी−सी दे दिनक।

चिमगदार-५० विवदा । चिमगारी-सी वस्तं हुए कीवले आदिका बहुत छोटा दस्ता बदिदल एट्डिंग । अ॰ -छोदमा-हण्हा समानेशको नात बहना । -शकना-आव बगासाः अनगरा बताता ।

चिनगी • नहीं है 'जिनगरी।

चिनमा 🖛 छ 🔉 होबार बढामाः शुमवा । चिनामा -- स॰ कि चनपामाः दीवार वस्ताना ।

चिमाय-खो पंशासदी चैंच प्रधान महिलोंमेंसे एक र्वक्रमागा ।

चित्रिया-वि भीतीके रंगदा सकेत: भीती जैसे ज्वाहता मीडाः बीत देवसा । -केला-५ अंगलमें होनेशला पत दरहरू। देशा जो अधिक मोठा होता है। -पोद-प्रश्यक्ष तरहक्ष क्षप्रा । - बाक्षाम-प्रा मैंनफको । चिम्पय-वि (सं) शक्ष बानमञ्ज बानस्कर । प्रश यराज्य ।

चिन्सान-पु (सं) शुद्ध चैतन्त्र । वि शुद्ध प्रानसक्तः । बिन्द्र-प्र हे 'विद्व'।

चिन्द्रवानां नम कि परचान इराजा।

चिन्हामा!-स मि पद्दश्राम दरामा । बढ्यामा जाना ।

चिन्हानी!~सी निष्ठ पदचामः शादगार ।

चिन्हारां-वि वरिनितः।

बिन्हारि विग्हारी !- सी जान-पहनान ।

चिम्बल-वि देश विक्रित ।

विपक्ता-वर्क किए दिसी समुदार को को बोमस स्थ धीनका इसरीते जुड़ना सटनाः कियानाः दिशी काममें समनाः ठी-परका परस्यर मासक होनाः।

विपकासा-स॰ हि॰ दिही कमदार चोवद बीएने १६ बीक्को इसरीने बाहमा साटमाः क्रियामा । विपश्चिप-तो दिनो समशर बरतुकी सुनेसे होनेशका

चप्य वा अमुमद । विपविपा-१० क्रहदार, विवसनेवासा रे **-हद-भी** चिपनियादीसेका भाग सम्।

विपरिपाना∽श॰ क्रि॰ छसदार दोनाः स्थनः ।

चिपद-वि सिंगी विपरी माध्याका । प जिल्ला चिपडमा-म॰ फि॰ है 'विमरमा'।

विषया-दि॰ भी समा हुआ व हो, बैठा का देश हुआ। चिपटी-वि॰ सी दे 'विश्रा'। सी इह तरके बाक्री। योति । स् - द्रीसमा-परमा बेरियपम ।

चिपशां-वि शिसको मन्तिये सब मैक (क्षेत्र) गरा हो। चिपडी-चिपरी-को डपनी। चिपिट-वि प सिंग्डे 'विपर' !- प्रीव-रिग्धेरी

यर्वजनका ।~मास,-नासिक-विश् विशो मन्नात्मः य तातार वर मंधिक तैका ताशार वा संग्रैत ।

बिपिडक-पु॰ [सुं॰] वित्रवा । चित्रर-प्र [प्रे॰] (बहबा।

चिया, चिया-पुर [र्सर] एक मस्तरीन, मलके नापेडे मसिर्ने सकत्र भीर पौदा दीवा ।

चिप्पड~४ क्डरोडी एक मारिया प्रदेश । चिव्यका-सी [सं»] एड राजियर श्रेष्ठा रक विशिवा र चिप्पी-औ॰ सक्त्री, भाग बाहिया छारा निस्त उद्देश

जपको। श्रीका कीहा नहा करउता । विधि-मी० सि० वे 'निरि'।

चिवित्ता!-विश्वे विश्वविद्या।

चिव क्रियक – प्रमिटिशी। विमहत्ता-भ= कि विपद्वमाः विष्टताः गरे वा एक्ति

रूपनाः गुथनाः विद्यं न ग्रीकरा । चिमदा-प बच्चा कीवला आहि पहरनेक बागी

इस्तपनाह (चिमटाता~स॰ द्वि॰ विश्वमता क्षेत्रप्रमा । चिमटी-ची द्वारा विमया वह आधा विमन्ने होसे बीव

पकतमे बठाने, तार मातृने मादिका क्रम हेन है। पुरर्द विकीश ।

श्चिमका-विदेशीयर (

चिमनी∽सी [च] इंबन वारिका प्रस्यं वा मा नियमने है किए बनो हुई नहीं बैदी बहुत हुयाँ विकालने हैं किए परको छठमें छेर करके बमाबो हुई सेरे, सीनेंड बारिक्स बनी; कंपके अपर क्या हुई छोड़ेक्स नहीं विके रूपकी कीको दशा निस्ती मार उसका दुर्श पार्र निष्क्षमा है।

विमि चिमिक-५ (the) वीना । चिमोरा-इ दे 'बगेरा ।

विमारी-मी॰ दे॰ नमेरी ।

चियाँ-प दे 'पिका । चिरंजीय-भ [तं] जिल्लाते ही बहुत दिस विशे

(आधीर्वाच) । प्र अधारीया (हि] मेरा, प्रमा हिन है॰ निरबीयी ।

किर्ज्ञीवी(विम्)-वि० (तं०) दिरशेगी । बिर्दरी-मी [मंग] समामी ही जानेस मी पिनाहे हैं

यर रहमेशामी सम्द्रीः युवर्ता । क्रिंतम-वि [बे॰] बहुत रिगीस्य पुरायन ।

चिरोस चिरोसणान्य [ग्रे॰] मीन ।

चिर-वि [मं] का बहुत रिवॉम का दोर्पदर्णान पुरामा दिनी। भी क्षुष्त दिन कर रहे द्वीर्दशहरनकी। चर्चि-सी [मे•] जावृत्ति निपारणा । पर्विका-सी [सं] दे॰ 'पर्वा'। चर्चिक्य-पु [सं] चेदतानिका लेपना अंगराय । चर्चिस-वि• [सं] लेक्निः विचारित दक्कितः विसकी भनी की गयी की । यु केपना चर्चिस विम्सरन-प्र• त्रिरिश रावनेताः जन्म १८७४। ब्रिटेन के प्रशास संत्री ^{१९}४ ४५ तबा^{१ ५१} से १ ५५

85 L चर्नारक-बुदे 'चरवाहि'।

घर्षर-पु [सं] सुको, फेमी हुई दथेकी, चपत ।

चर्परी-स्री [सं*] चपानी । चर्परा-नि दे 'बरपरा'।

चर्यन-प्र [सं] दे वर्षणे । चर्वित-दि [मं] दे चरित ।

चर्वी-मी है बर्बी!

चर्मट-व [मं] एक तरहकी कक्षी । चर्मदी-स्त्री [सं] धार्मदमे बछ्डना-कृदमा, इर्बेडीकाः यार्गाः नवें कि ।

चर्सै –पु• [सं] साक्र काङ।

चर्म(म्)-पु [सं] पमहा क्षाका सप्तेदिया हाक। -करण-पु॰ धम³का काम करना !-कशा,-कवा-सी एक गंपऱ्या, पमरका। -कार -कारक-पु चगार, चमदेका काम बरनेवाला, मीथी । -कारिणी-मी बह सी जिसके मासिक साबक बुसरा दिन बह रहा हो। -कारी-मो कर्मकरीवधि। -कीस-प् बबाभीर एक राग जिसमें देहमें जुदीना मरला निकन भावा है। -क्रप-द्र• पामको कृष्णे। -श्रीव-द्र शिक्या वस अमुबर । -प्रदिका-ली जीव । -कप् (स्)-पु॰ स्तूल रहि । -बटक-पु॰ -बटका -चटिका -चटी-नी यमगारक । -चित्रक-पु छफेर क्या प्रसा-चेस-प्रथमका पन्टकर बनावा हुआ परनाशा - ज-वि यमस्य छरपण । पुरीमीः एक । ~वरंग~सो• सामग्री सिक्रान, गुरी । ~सिल~बि इ'(नियोंने भरा हुमा (छरार) । -ईड-इ पम नेक बना पापुत्र। - इस-पु॰ एक तरहरा कोइ। - इपिछा-सी दार । - इस-म भी प्रश्नका पेह । - माकिका -प्राप्तिका-सी प्रमहेका बना बावुका -प्रशिका-मी यमोधे। -पशा-सी धमगान्द। -पाइका-री मृता। -पीडिका-भी एउ तरहडी हीतला। -पुर.-पुटक-तु यमश्रक्ष बना दुवा कुत्वा वा थेनाः भीवनी । -प्रभेदिका-मी धूजा सुतारी ।-प्रस्वक-५ ।~प्रमायिका-कौ ∢ पर्वतुर'। ~र्वध-पु पमहे भी पृत्ते, गरमा । - असृदिहा-स्त्री॰ मधुरिहा होन्छा रक्ष भर । — मुँदा – स्थो दुर्गा। — मुद्रा – री वॉक्सि प्रामे प्रतुष्क रक मुद्रा ! -यदि-मी प्रमरेटा भातुक। -रंगा-सी भारतंती जायक योगा। -वंदा-पुन्क मानीन नामा। -पसम-पुशिव। -पाछ-पुशैव-मगारा । - बृक्त - पु भोजवत्रका पेट । - स्पक्षमायी-(पिन्)-पु नगपा बार बार करनेवाना !-समबा-र " वरी दलावभी । - आर-चु देवमें आदार । यासक

हानेवाका रस कसीका । चर्मणा-सी॰ [सं॰] एक तरहरी महसी। श्वर्मण्य-वि [सुंग] धमहेका बना । पु धमहेका द्वाम । चर्मण्डली-स्हो। सिंश्] श्रेष्ट नशे। चर्ममय∽वि॰ [सं] चमहेका बना हुआ। चर्मरु-पु॰ [छं] दे 'बर्गार'। चर्मात-प [सै] धर्मसंद नमस्या द्वरता भोर-पारके ब्राम भानेबाहा एक प्राचीन क्षेत्र ह चर्माम(स्)-प्र• [सं] कसाद्या चर्मारय-पुरु (से॰) कुछ (।गस्म एक मह । चर्मानुरंशम्~पु [मं] बदन रॅगनेके शाम मानवाडा मितूर जैसा वद हव्य । खर्मार-पु [न•] पर्महार, वभार । चमारक-प॰ (सं॰) १० धर्मान्यंत्रन'। चमायकतम-पु॰ [मै॰] चमहेदा दाम । समावकर्ता(त) सम बकर्ती(तिन्)-पु॰ (सं॰) पर्महार। चर्मिक-वि [र्स•] जिसके पास दान हो। चर्मी(र्मिन्)-वि॰ [सं॰] डाडवाडा, वर्मवारी: धमक्का बना हुना । ए॰ भी वधनका बेश केटा: पर्मवारी रिनिद्ध । चर्य-वि॰ [मं॰] गमन करने बीग्य (स्थानावि); करने बीम्य भाषरयीव । चर्यां नती [र्त•] भाषरया शक्षना बौतिका निवसपूर्वक बनुसरका गति वसना जयण भोजना चाक प्रशाहिमी। चरोंना−श॰ कि॰ साकरें भुरकोंसे तमाव दा इसका दर्र होला। 'बर-घर इसके हटमा। (का) प्रवत्न इच्छा होला (धीक वर्शना)। चरी-सी स्थयेनाठी शन। वर्षेत्र-स्री [मं] वदानाः रमास्वादनः वनेनाः होस

साय परार्थ । चवणः-स्तै [सं] चवण रस्तरवादमः भवानेवामा दाँउ। चर्चा-सी॰ [मं॰] परमः यशमा । चर्चित-वि मि] पशना हमा । - चर्वण-प् पराय हुएको चवानाः (ला) करो दुई शक्को तिर किर कहना ।

-पात्र -पाश्र€-५ पोदराम । चर्च-दि [मं] चवाने शेखा पु गवास सानेस योगः

चर्विय-पुर्वाते ने नमुप्य । चपणी-स्रो [मं] कुलरासी। चार्यता-वि यणनेवाचा पाछ ।

चर्मदरी-स्व० वेम्स ।

चन-वि [मं] गविमाना दिखता दोनता। भरिवरः जेपमा यवहावा हुनाः श्रयश्यायी । पु पाराः संपः बातः भूतः बीका छन्। शिका परमारवरा विष्णुः कृत्यमे कम विशेष थेश । -कर्ण-पु प्रशिक्षे प्रदेशि बारपरिक दूरीः शारी। वि विमद्भे काम सुश दिनत गरें। -कृतु-प्र पश्चिमने जननेशना नद पुष्टन शारा । -चंच-प चकार। - विज-विश वरिवर्रानिष्ठ चेनन विद्याला। -चित्र-पु मिनवा वात्मधार (घा०)। -च्या-मा एम-दरा ।- वृत्र -वय्र-तु रोपन्या पर ।-विश्वन-रि की [[ए] दे 'यणनियण ।-सिम्न-पुरु करियर

चिरानां निव दे 'विराना (प्राय' 'प्ररान'दे साथ स्वयवत्रात् । विरामा~सर्का दे॰ 'निरवाशा'। ज॰ क्रि॰ शीवसे शिर माना-'मठ्ठ गोहेंबर हिवा चिराना'-प । व वि पुराना, नग्रन दिगोंका । चिरार्वेघ-सी॰ हे 'क्रिसेंस । चिरायता-प्रश्यक्षेत्र स्थापका क्षत्र छोटा पौषा की बवाके म्हाम भाता है। चिराय(स)-वि+ सि+] बतत दिन बोनैवाका विश्वीवी। प देवतां सीमा। चिरारी-सी निरामी। चिराव-प नौरदेका मानः चीरतेका यान चीरा । चिरिंटी-चा [सं] रे॰ 'चिर्टा'। चिरि-प सिंशे तीता। विरिद्या-नी॰ [सं] यह कला। बिरिया - जी । दे । 'विदिया'। चिरिष्टार#-प विशेमार, कोकिया। चिरी = स्त्री चित्रिया'। -स्त्रामा-प चित्रिवायर। चिद-प्र+ सि] दश और वॉडका बोड, मोता। विरेता चिरेतां-प दे करावता'ः चिरेमा = -सी निविधाः । तथा मक्षत्रः परिशतका छिए। चिरींटा∽पुगौरवा पश्ची । चिर्रीजी-स्त्री पिमालके बीकको निरी को मेवॉर्स निशी वाती है। विर्देशि~सी॰ दीनतापूर्वक क्षेत्र वानेवासी पार्वना । चिकं-"पु (का] मंदगीः गायी । चिमंदी-ला [सं०] क्यारी। विसक-मा वमक, शककः दिवने मारिसे प्रकारमा दीनेवाको तीज पाँवा अस, क्य रहकर दीनेवाकी पेड़ा । विस्तकमा-म कि वमकमाः विकास मारमाः हीसनाः श्रीवाना । चित्रका−तु पॉर्शका नमचमाता सिका । सो वहांमकी चिक्रकामा । − श कि प्रमुख्या व्यवस्थ करना। विकारीका-प कि 1 वक मेला जिसकी विदि दावी वाती है। चिलचिस-मा अस्तः। विकविकाता-म कि चमद्रमा। चिम्ददा!-पुण्ड पद्भाग उत्तरा चीका । विस्ता-त कि। देव तरहरा क्ष्म । चिसिधिस-प एक मंगली पेता † नि० दे 'यिनविका'। चित्रविद्या, चित्रविद्या~वि यंप≠ घरारती नवसा ! विस्ता-ली (फा] मिट्टी का बाहुका करीरीनुमा पात्र बिसपर संवाप-पाँचा आदि रखकर पीने हैं ।-वार्य-वरी इक्टेमें क्यो दर्र वह गली जिसपर मिष्टम रसी. माती है। -चर-वि (विसम भार कानवांका) बहुत संशक्त पीती-नाका। -पोश-५ शिक्सका क्वान सर्विद्य । -बरदार-पुदुका दिलाने या स्वर शाव धक्तीशका भीदर । स॰ -चडामा -सरमा-विस्मयर र्वशक् और मान रतनाः निरम्बनारी बरमा । -पीना-युवा

र्चनाक पीमा । चिक्तमची-सी० एक बरतन बिमका दिवार। बार जैस भीर शीक्का मांग देसवी बीसा होता है और को दाव हैंद नीते. करी बादि धरमेचे काम बाता है। हक्स्य वह सब विसापर शिक्स रही आव ! विकास -पु॰ (पा॰) गाँसकी विकियोग का हुआ पर्याः क्षित्रः। विस्तरिक्षितः विस्तरीसिका नसी [हं] भूपम् निपर्धः पक्ष परस्का बंदबार । चिक्रवास र-प जीवका ग्रांस (विसद्दे धारीने किया है। बातेकी बात कही चाता है), बिडिबा बसानेस हर तरहका पंता (१) । चिक्तहरू, चिक्तिया-मॉ॰ एक तराब्द्री महती। जिल्ला−मा पैस्टर गर्छा। चिल्ल-प्र सि] योक। ति॰ क्षेत्रणारे जीतिसा। - भक्का - की जमी सामक पंदरम्य ! चिक्कर-मी [र्ष] होग्रर । वित्तव -प्र• प्र्युं वैद्या क्षेत्रा को सरीना गरमेको व क्षपञ्जीमें प्रकासरता है । क्ति-वी क्षेत्र-प्रकार, श्रेर-ग्रह । चित्रवास-त नवजात शिहरका रोगडे कारम विस्पना ! किरवामा-स कि चिटानेको प्रेरिट, विवश करमा ! चिला-प्र अञ्चनको कोरी कमामको ठीवा पीठा। सामै का छोर (विश्वमें कक्षावस्त्वा काम रहना है। प्रिन् भाकीस दिवीका काकः चांत्रीस दिसीका जन, बनुजन प्रवृत्तास्त्र भागतिवर्षे शिक्या साम (मुक्तकः)। मुक्न्यविका -पाकीस विमॉका अनुवास करमा (तुन्छ०)। -(हे)श जावा-क्रमी सरवी चतु (वस)के १५ और मकर(क्रम) के १५ विमीका बाजा। चिल्लामा-न तिः कोर्से बोकनाः भीरामाः ग्रोर कामा विकास-प [सं] छोदी-छोदी चीरिया बर्दियाण्य विरंद्यक्त । विदाहर-स्रो विदानम् क्रियाः ग्रीट दयः। चिक्तिका-स्त्री [सं•] मुद्रसी हॉग्ररा बहुमा । "क्टा" की मी। ॰ वज्र, विश्वी। चिक्की-स्त्री [र्स+] शीग्ररा वस ग्रावन बस्त्रमा व रिक्रपी विवसी#-सी बीम ! विवि-सी (री) द्वरदी। चिविद−पु[ग] निहवार चिषिहिका-मी (स) एक शुपा विपुक्त-पु (चं०) द्वर्षा । विश्वत-मी दे 'पाद । चिष्टकारण-मी महयदी। चिहें को ∽मी गरका रत। विष्टेकमा!-व क्रिक्योदमा। चिट्टॅंटगा*म्म मि शुरुद्रे दास्ताः विश्रता । **बिर्ट्रमी बिहुरमी॰-म्या प्रेंपनी** । बिर्देरी ० – तो ॰ चरनी । विश्वद्रमां –श कि चुछ नेश (१)। क्षिकर-त [4] वे पंचार ।

सवित करना । चवशी~की पार माने मृत्यका चाँदी थारिका हिका।

चबर्पया-ला दे 'बोपैबा'।

क्यवेका चतुर्वास ।

भवरा-प कोनिया । सवस-पु० (सं) कोविया ।

चका 🖛 स्त्री । एक साथ चारी दिशाओं से बढ़ती जान पढ़ने बाली इवा ।

चवाई-पु चुगन्दसीर मिदक, चवाव करनेवासाः मिव्या भाषी-'सुनह कान्द करमह चनार जनमत ही की भूत −स्रा

खबातक-पुर दे 'बनाव t

चवाच-प्रअधवादः दुरारेकी चचाः पुगन्यारी । चवि चमिका, चयी∽त्री+ (शं+) दे ["]वविक"। स्तिक-५ [सं•] व्यविशेष ।

चस्य-प [मं∗] दे चिन्छ'। -बा-छी॰,~फल-पु

यश्रियम्मः ।

च्या-मो• [सं•] बचा। हवास १

चराक-पु न्रोतिवनीके वाविषयीका विशेष अवसरीपर

मिलमेशाला मोजन । चशम−सी॰ दे 'चदम ।

चशमा-त दे 'परमा ।

चह्म-त्वा [द्रा •] भारत सेत्रा नेनाकार वरतु । 🗝 -नो प्रोती भाषा भाँदाका देखारा, नेना (निया, मन मेह्यद । 🛏 ज्ञब-प्र• भौमते दशारा करनेवाला । - अहम-प क्षेत्र श्रम्भागाः श्रम्, निम्म रे - टीव-वि भाँदाँ इक्षा (प्रतमे भाँदाँ) हैंचा हो, प्रत्यक्षरहाँ (युगह)। ─सुमाई—स्वी वरामेके लिए मीछ विद्यामा तंबीक। -पोशी-ली दिशीके दीव दुर्गुण देखकर रास जाना, क्षेत्रहा करना । नव चरारान्य आँख और स्थोति गहर प्तारा; (सा॰) देश । -(से)नस~ती॰ गीरी, शॉनुसरी भौरा । –वह-स्त्री॰ हरी नियाह, श्रीड । –•वर-हरी नवर म क्षय (बि.मी.के कम-शुक्ता सरहता करते

समय बहते हैं) । चरमा-पु• [फा] शाता सीतः वेनडः तर्रकादेवः। ∽परिज्ञ-ए-देशेँ-पुश्यन्तका क्षेत्र काना-ध

सार-प यह रवान वहाँ बद्रवरे यहमें ही । चपर-प्रदेशा । --शोस-प्रशासका चक्क-प्र (मं.) शाराव वीलेका ब्लामा जामपात्र। वक्क करवयी करावः शहर ।

चपण-षु [मं॰] भग्नमा इतन ।

चचम-तु [सं] यदद रामेमें पहा वाधमेके लिए समी दुर्व नक्ती या शेहकी किरकी ।

चमक~मी अगबीब भग सगायी जानेवाली व्यक्ती गीडा रच्यो पेश रोम । ० पुरु देरु 'दबदः । चमक्ता-म कि कमक्ता, दलका वर्त दीनाः चसका

श्यम १ चमका-पु किमी धीवका सवा निल्निमें छन फिर करने भोग्नेडी इस्ता दोना चाटा रस सरद शरी पुर्द कत (शहरा सग्जा) ।

चसकी--सां ६० 'नसदा'। **चसमा-म कि॰ मर**मा विपक्ता । चसस#-श्री है 'परम'। चसमा । प• दे॰ ^{*}बदमा । चस्का~पु॰ हैं 'चसका।

चस्याँ-वि फिर] विषक्त हमार वपरका मीन (हाता) । चड-पुनदीमें वने गावकर तथा तकते विधाकर बनावा

हमा भरवाची प्रस् पित्र ने 'बाह'का समास्थव रूप । -वचा-पुगंदा पानी बना दोनेदे किए छोदा हुआ गड़ा रूपवा-पैक्षा गाइनके किए बनाया हुआ गहेकी

ध्रकस्था सहस्रामा । चहक−मा• पहरुमेका मान, पहपदा । † प्रापंक । चडकमा−म कि निकियोका बहपदाना, बार्भवर्ने धरकर कल्प्य करनाः प्रथिते सिक्कर योजनाः जनगा । स कि॰ वकाना संबद्ध करना~ 'गाव परे अरगवाची आ

काग वश्यम - इव । चहका−पुर्दरोका कर्शकी क्षेत्रका । स्ट्वा ।

थहकार-मी वहक। चहुकारमा । - म - अरु चहुकमा ।

वहकारा १ – वि. वहकनवाका, करूरव कुरमेवाका ।

वहचहा-ध वहचहानेका भारा चिहिनोंकी आसंद भरी बोकी करूरवा इसी-लग्नी कई भावनियोका एक साथ बॅसना, मुदित बीकर बीकना। बॅसी मजार । वि "बहबह" शब्दरे भरा दुना। भानंद उत्तद सरनेवाहाः बस्तम अका दावा ।

चहचढाला−म कि चिक्रियोका बमेग्में आकृत बगुतार **गोलना पहचना**।

थाद्रमणां~स कि॰ रीदनाः श्रहणा॰-स॰ प्रिः देखमाः श्रहणाः। सहिंग = न्यों है ॰ 'बाइ'।

बहर - सा बहर पहला भागेरका को साहत, शीरा उपहर । N वित्या सन्। -पहर-स्तेश दे 'बहर-पहल ।

बहरवा*~#० कि॰ मुरित होना । चहरामा - न नि मसन होना। यराना। कटना ।

श्राहरू- को दे विद्वाः आमंदीन्त्वः। - पद्वस्य-स्थाः किली रवासमें अधिक आदमियोंके इकट्टे बोले आहे वानेने बातुमंत्रकर्मे पैश पुरं समारतः चूम-बामः प्रसन्नताः भागारीः रीतकः।

बहरू-वि॰ [फा] दे पहल । - जदमी-सी है 'पइकक्र"मी।

बहुमार-पु क्षेत्रह-ध्यहन चरि निष्टमे मही मना दूबरी गाव'-ध्वाधवा । -(मे)की भेम-मोटा भरा दोना दास्य भारती ।

चहरूमी नन्मी हुन्देन या । साजनन्ध मरागे ।

बह्तुम-५० दे पश्तुम'। बहार-वि [का॰] पार । पु॰ पारवी सन्या !-शांसा-विश् भौद्येना । - अपू-वि भागुना । - पृष्ठ-वि पुर भीइद्य । -वीवारी-श्री दिखा स्थानके मारी भार आह बनावके तिए की भी दूरें बीबार प्रत्या । -पारी-प

सुसतसामीका सुबी संप्राप । –शुका–मु सुव ।

चीमद-सुबना र्तपादकः। -कमित्रनर-प विसी छोटे संवेदा प्रकात पासक को गवर्गरमें छोटा होता है। -कोद-ए० विसी होटे स्वेदा हार्रदोर्ट या प्रधान स्यायाकव । - अञ्च~प हार्रकोर्दश प्रधान स्थ । -जस्टिस-प्र॰ हार्दकोर्दका प्रवान स्थानामीय १ चीमइ-वि सी बस्दी पत्ने हुटै मही। पुरु एक पीवा विसके बीज दबाके काम आते हैं। बाह्यपू ! वीमर-निपदे 'बीमक'। चीर्वो - प्रश्रेष भी श्रे चीर-प [से] क्यबंगः दम धंदा क्ससंह, पट्टी, नधीः बपड़ा, बन्पः बीज मिशुऑका पहराकाः पेड़की छाकः रेखाः क्कोरः योग्री। सीसाः गायका थना यार ऋषियोको गोरीको गाहा। –चरम≠–व पाधंबरः सग्राक्षाः। –पशिका– मी जैंच नामका शाम । -परिश्रह -बासा(यस)-वि जो छात पहने हो करकश्वारी । प्र शिव ।-- प्रया-पु सासमा पेड । ~हरण-पु कुलको शककीयाने अतर्गत गीरियोंके कर सुरा केनकी बीका । चीर-सी चीरनेकी फिबा ता मानः चटनेकी फिना बा भाव इस्तीका एक वेंच । पुढे चीट !~फाइ-की चौरनै-फाइनेका काम फोड़े आसिमें चीरा बनाबा पर्वती चल्द-क्रिया।

चीरक−द्र [मं] सिरित्त प्रमाणकः एक भेद, श्कित हैस। चीरमा-स कि (कारब कार्ड मादिको) कारना उकड़े करा। विश्वक विदीर्थ करनाः राष्ट्र निकायना (भीक पानी) ।

चौरा-प्र• चौरनेका वाव कोहेका शिवाका वनकी बनानेके काम भानेवाला सहरियातार इपका गाँकमी धीमावर गापा हुआ प्रचए श्रीमार्च (उतारमा होतमा)। नर्मेच्-पु भीरा भीपनका काम क्रमेकाका ।--यंबी-खी वासके क्रपरेपर पगरी बनातेचे किए की बानेवाकी हुनावर ।

भीरि-स्रो [सं] कांद्रपर गाँवनकी पट्टीः भीती आविकी

क्षीया भीग्रर ! चीरिका चीरका-की [र्र] हीग्रर ।

चीरित्र-रि [सं] का हुआ (क्षेत्रन स्थासमें)। चीरी- श्रेमी 'निश्याः | पत्र तरहबी होथी महत्री। [मं] भीतर ।

बहिरी(हिम्)-वि [मेर] सम्बन्धनारीः विश्वे क्षेप्रमेगोला । भौरीपाक-त [तं] सांतुर ।

चीर्ज-नि [र्श•] चीरा क्राशा हुमा[.] इस संशारित ।

~पर्या~द राज्यानीय। चीम-स्रो वाक्ये वादिशे परिव मीगकी विदेश में श्रदसर शरपुर मारहर कॉगॉडि डावमे रामियी चीत्रे छीन

से जाती है। -इएडा-५० दिशी भी क्या भीकरी तरह सपदा मारदर धीन जन्म सनाः न्थीका एक धनः। चीएक श्रीमर-पु दैर्व निहर्न ।

चीन्या-पु एक्टा मामका पक्ष्यान, निक्षा । चीनिका-मा [मेर] होगुर शिक्षे।

चीतक-पु,-चीलका-सी (सं) तीपुर। चरिष्ठ-मा ५७।

चीम्द्रद चीस्टर-५ चीरा।

चीस्टी = -सी॰ एक तंत्रोपदार । भीवर-पु॰ [सं] वस, बदमाबा; साधु-सन्वानिबोद्धा प्रः नामाः नीकः मिश्रजीका कपरी पद्यापाः क्षेत्रा । धीबरी(रिम्)-५ सि॰] श्रीह वा पैन सम्पास क्रिक

सम्बद्धाः । भीस-सी थैस। र्चेगमा-स॰ फि॰ दे 'ब्गना'।

चुँगछ-५ प्रानिधिको बासकर विकास जिल्हे बानवरीका पंत्रा चंगुकः हुक्यः एउड् । नगर-विश <u>चैत्रकर्षे भानेवर बीक्सा नुस्योगर।</u>

चैगाना-स• कि दे॰ 'खगाना ।

भुगी-को पुंतकपर भीतः बनात आदि रमनेतानी इस रूपमें किया जानेवाला महस्रकः मान्ये म्युनिसिस धीमार्ने भानपर क्रिया जानेवाका महत्त्व । -कब्हरी-की॰ म्बनिधिपविश्वीका दशक्षा । न्धर--<u>व</u>॰ संगीम इक्टर । -विठ-सी॰ वह शहार क्लिमें अमेरारक्षे बुकानदारींसे करक्यमें सुंगत-सुंतकतर चीव निक्री है।

चैंगामा-स कि असाना ! चेच-द [र्थ•] छ्टुँररा मास्रय दुश्न और देश गीने

अरका एक वर्षतंदर वादि । र्जुजु(ी-क्या [ej+] पासनी बरले इसलोने नोमेंने केश

बानेरामा एक अधा । र्युटा र्युडा-स्ता (सं॰) होटा सुनों। कुनैने परास शीर ।

त्रंबित्तर-वि किस्के सिर्दे मध्या है। अधिरा-स्ता है। 'सरी । चुँदरी!-की है चुनरी।

अंदी-सी पुरियाः [सं] पुरमी। विवसाना - वर किर बक्रवीर होता बारना। र्चेंचा −िव+ छोरी कॉस्ट्रोंनामा; विस्त्री वर्ष श्रीव ही !

चैंश्रियामा-व कि॰ भीपना ।

चुंब−इ [सं] भूबस। र्जुबक-पु (सं) धुरम स्ट्रमेरास्य सम्बद्ध सः वी बहुवसे मंत्रीकी बहाँ तहाँसे फाकर, उत्तर-पुण्यार हो। है किरोकी पूरी चरद पहे-छमले नहीं। बूर्ना मोडे हिंदर क्याना वानेशना क्रेशा तराजुका क्रेसी ना क्या प्रस्त एक तरहका (माहाविक का कृतिक) पत्थर की शोरेंग्रे अक्तो कीर सीवता है। -इति-सी॰ प्रशेषी वर

क्षर क्षर छोड़ हेमेदी भाग्य। चुँचकरव~तु [d] पुंच्यका ग्रम बाह्यका चुंबकीय-वि॰ (सं) विमर्गे चुंक्य वा उसमें दुन है।

र्जुबन-पु॰ (रं॰) भूमनेदी किया बोसा। (मा) पूर्व रपर्ध ।

श्रुवनाण-स कि पृथमा। र्वज्ञा-सी॰ (सं॰) धुरान । अंक्ति-वि [6] पूना दुना। गुना हुन' स्टूप र

र्जुबी(बिम्)-वि [बं] चुनम बरमेनाचा एकेरावा (पयन भुरी) ।

भुमना - भ दि है भुमना ; † (इस्ट स्पे द्रौ योजनक) यह बारमीके शक्य मेर्डन्स (१) ।

जुलनाव-व 🏚 दे 'बूला ।

श्रोडमस−वि॰ सि॰] चंडमासे संबंब रखनेवाला। प॰ भवतिया नक्षत्र । चोद्रभसापन चोद्रससायनि-प॰ धि विवासका सोहमसी-सी॰ सि॰] बदरपरिकी पत्री । चीतास्य~प (ते•ो सरस्क। चोत्र(यथा-पु॰ [तुं॰] एक माधर्म पुरा क्षीमेवाका एक क्रम्ब वर्ष (इसमें कृष्ण प्रसमें बाबार प्रतिदिज्ञ एक प्राप्त पराना और शत प्रथम बताना बीता है)। चौडायणिक-वि सि] श्रोतावण जत करनेवाला । श्रीति-प सि दिन महा सोती-सी। [सं] वेहमाध्री पत्नी। चौरती। सफेर सर æŠarii भौत-प दे 'शाप । बंदकता एक प्रत्याः + चंत्रका पुछ । सी दे⁴नाप । र्गोपता—स॰ क्रि॰ दवाना । कांतिमा-मी मिने चंदा मटी, चंदत वही (१) । सारिय-प [मं] चंचका मागरेसर। किंत्रस्का सुवर्णः धनसः । बारियक-प्र [सं] शिवतक केसर । वार्त सार्व वार्व-सार्व -सार वस्ताः। चाँबर॰-पु॰ चावन । चौनसर-व (६) रिधरियात्रवस्य सुर्वेष अविकारी । बाह बाउर-म दे 'बार'। पाई-वि हे 'बारे'। पायरां-व दे पायल । चाक-पर प्रकासार परबर जिसे फिराबर कावार परवन बताता है। पहिचाः चरपीः मिसी समानेती शरियाः का ने बीरा दरारा जारतीन वा दामनदा शहा बना भाग । वि परा इमा । -किमारीबॉ-व वरावानका शका प्रजा दिश्ला है चाक-वि [तु.] बुरता रश्रवा इट-बुदा महे कानेके निय वैदार (पोहा) । -चीवद-दि॰ पुरत, प्रातीनाः EE-GE! षाञ्चक-वि॰ तुरः, तुरक्षितः। चाइचरव-इ [सं] बरम्बन्दा वमद्ववसद्य शोगा । चारुचित्रय-१ [म] पमका पद्मानी । चाकविद्या-सी मिनी शतनहा समतिसा मानव गीवा। पादमा-स॰ कि रेवार्ष सीनहर तिनी चीत्रकी हट पनाना रेसाभीय पेरना। जनानको राजिक विशे वा गौरासे एक मगानाः पहचानके किए जिह्न बनाना । भाकर-प्रश्वा ी मीसर भेवड । **पाररती, चाहरामी~धी+ मीदरानी ।** चावरी-स्थ (का] माधरी क्षेत्र । चारम्-पु बनवस्थी । माधा-इ गारी मा का पहिना सक । वाकी-गरी वधीर दिश्रमीर निरंतर 🛍 जानेवाली पटेकी भाग रे भरोडे बादास्था नगामा द्वाना ग्रह । चार्-१ दि । धार्र पुरी क्ष्म स्थान क्ष तरकारी बारनदा धीरा भीतार, बक्रमन्(छ । पाण-रिः [तं] कर-मंत्रीः प्रदासारः करः। रिका

जानेशका (यह)। चाक्रिक-वि॰ सिं०ी चक्र था मंदलसे संरव रखनेवासार चाराकार । ४० महस्रमधार पावे बोर्स्स स्वति गानेवाचे वंशीयतः अल्यारः तेलीः सारीयान । बाहिश-व (सं रितेश का कमारका सरकार नालेग-कि सिंधी का संबंधी । बाह्मय-कि सिं। प्राप्त संजीत यससे प्राप्त (ग्राम)। बह्म ग्रांद्ध । क्रिक 'काशको' ।) एक क्रमने ग्राप्त द्वान, प्रत्यक्ष प्रमाणका एक भैदा शरे मनः ग्रठा मन्ध्रार । खारा-च रे 'बाब' । श्रासनार-स कि प्रयत्म, खान्हेमा । बाचपर-प॰ सि॰ो ताबका यह मेर (संगीत) । साधाः पासति-मी॰ हे॰ 'वाँबा : रोबीबा स्थात दरदंग । थाचरी-सी योक्डी एक ग्रहा ! श्राचा-प॰ वापदा मार्ग प्रचा बाबी-सी यानाही सी बयी। बाट-खी॰ पतका, सम्बा, क्त मिर्च मसामा देखा वैवार किया द्वारा धीसे स्वतस्त्राचा स्वाप (रही-वहाः गुरुगच्या काहि), भ्रद्रसाः गत्रकः (पहनाः सगना) । पश थि। 📶 बारास उरफ्ड ६८ वन दरण दरमेवासा ! चारकीर-ए सि विश्वका भर रचा। चारता - स कि॰ बहती बैसी चीबकी बीमसे बहाबर वा पोंडकर खानाः किसी चीत्रपर नीम फिरानाः स्वाद हेना (डॉड. हाथ पारमा): (गु:प कर्च मान्स्य प्यारमे) बीम थं सब्द्वाना श्रीम चेरका होशेंका दिसी बरतको गाना। म॰ चार जाना-धा बाबना चाक बर देना। चार पींडकर का काबा-सर दा नाना, कुछ म छोत्रना। बाट-९० [मे] विदयकत भीठी नातः शकी मिय नातः स्ये प्रशंता चापस्थी।-कार-3 चापस्थीकरनेवानाः यक तरहवा मध्यदार !-बारी-खाँ (दि) पापनधी। -पट्ट-पि॰ चावर्मीमें मुद्यक्र । प्र मीह ।-बट, बट--तुर विश्वका भीर । -होछ-वि भाषसमः संदरता-वर्षेक्ष हिस्तनेवाहा । बाह्य-नु [मे] त्रिम क्यन । धाटिक:-मी० सि०) बापप्रमी । वाहलोम~दि [मं•] चाइदार। बाइन-सी है चाँद । षाहिता~नि॰दे 'बंहिता'। चाशी-भी पुतनी। बाहार-पु॰ भेगपात्र व्यासाः प्रेमी विकासक सुरुपा बाजरव−पु• [सं] (यतक सुनिक्षे ध्यामे बारक) योह्यास मार्वके प्रदान मंत्री वर्वशास्त्रके स्वदिया विष्णुगतः क्रोतिब । --जांछि-व्यं = चायस्यरचित्र गीतियं । चाण्र~नु• [र्व] क्रानद शाबी मारा यदा बोहदा वद मत् ।-सदम-प्रमूप । बानक-पु॰ [सं] परेहा शार्ति । (श्रीतस्प्रशासके अनुसार वह पर्य धंवन वंदा परिक्र स्राती स<u>रा</u>चारी दीनवाणी वराटा बार दीना है करना सहा बारकोंची ओर हरहरी नयान रहता है) र

सुटियामा-सुपका बसमें नपने कच्डेमें होना। चुनशा—स॰ कि छोटी चीमोंको एकएक करके रक्ता शुटियामा । - ए॰ कि श्रुरोका करमा । करमा बीममा। विशिवीका बॉन्से दाना वार्ष बरान पुरीछना—५० कि॰ चोड पर्नुवाना बस्मी करमा । भुगना। वोक्सा, कीहमा (पून्त, बर्ला) बहुवाँमेंत दिया त्ररीका-ति॰ को चीर साने वा पानक बक्तीर नीर सास भी बढ़ी। कार्वविशेषके किए बखुक या क्षेत्र मानस करमेवासा- याने संदन पुरीके मारी'-बाबा दिश-मक्षम करमा छोटना पर्छन् करमा बोडबे हारा दो वा बृंशाबना जोटीका सबसे बतिबा । पु॰ छोटी बोडी । व्यक्ति कम्मीटवारोंमेंसे पर वा कार्यनिसंबद्धे किए रहस्ते शरकी≉−मी है 'चरको'। पर्नेद करनाः समानाः वरतांश्ये क्यानाः बोहना (हर्दे-)ः खुदक्का - प्र- प्रकाश अकारो बाहबे ही बाट हकारीसे मुशर बाक्सा । बना द्वमा एक बाधा किछ केंद्रिक करतालकी तरह येंग खनरी-की काल बमीनका करेश विस्तर होते वा क्यिंसे दवाकर वजाने हैं। बूसरे शम्बी मृदियाँ नमी श्री: खुद्धी । धुरेड-वि॰ पीट सामा हुमा, बढ्मी: बीट दरमेदाका । चुनवा-वि॰ भुना हुआ शहबा। खंबिडारा-प्र पृथिता नगाने, नेवने प्रशासिताका । श्रुमबाना-स॰ क्रि श्रुननेक्र काम कराना। [की जुतिशारिन ।] जुर्गी-वि॰ (का) देश रह तरहरू (हिरो अनि मोरे भुद्दका~पु कारसे भिनती-भूनती यह रोधी विदिया। व्यवहृत नहीं होता)। -युवी-वि॰ पेमाविद्या। तो श्रदेस-सी मूदनी, टायमा काकी कुरूप खी। जूर इवट क्यरकी वातः शक महील। वहस (वरार (वरता)। स्वभाववाली स्वी । –(भो)चे−०० इस प्रकारा ⊌ड मिदान । **प्र**व-प्र [मं] ग्रहार । * वि च्युत । जुमाई –सी॰ पुगनेको किना वा माना रीनारके बेनके शुरबरू-वि मस्परा, उद्देशन । -पना-पु उद्देशनी । श्रुमनेकी उत्र(त । खुरमा-वि (बह गटेर) जिले इसरे गटेरने थावक किया हो। जुनासा−५• परका८ देपास । -बटेर-पु॰ (बा॰) वह आवसी बिसे विसक्ते जो दिसमें जुनाना-स कि दें 'सुनवाना । श्रमार-प्र• बमारछके पाछका यक स्नारमार सामे माने, दश है। च्यक्रव-प्र वे 'बीरक्रा । रबान चरणादि । भुनाव-इ भुममेकी फिना वा याना (शेरके शरा) खुदना~न कि पुरुष हारा एंग्रोन किया जाता; पुरुष्ठे र्धवक होमा । विश्वीका पर या कार्वनिशेषके क्रियः वर्गतः विमा वाना । चुरवाई-ला॰ का प्रसंग, संयोगको फिना; संयोग करन मा करामेजे नदसे मिलनेवाका थन । इसरे चन्मीदवारींसे प्रतिबंधितत करमा। खुरवामा-स॰ कि॰ पुरुष्ठे संगोन कराना, मैधुन कराजा जुनाबर-लॉ॰ भुमट ((भक्तमंत्रके समान मनुष्क)ः किसी कीको पुरुवस संजुक्तः। कराना । 'पुत्रासा'] । पुरवास-नी॰ संगीन दरामेकी शब्दा । श्रुतियाँ १-- श्री देश 'लुवी' ।

लुइवासी-ना वह यो वी संगीत करानेका बाह्यर हो। चुदर्वमा-पु॰ मैनुन क्रतेशका। जुराई-सी रे 'जुरहार्ट । ख्रदाना-स॰ कि॰ दे 'चुरवामा । खुदास~ली मंगीप प्रतिकी प्रवस दच्छा। अकामा-नि दे 'बीपाछा । खरीया-द वे 'सुरर्वया'। क्ष्मीबस-स्पै मनेय बरमेश्री क्रिया वा माथ । **क्षुत−पु० व्हर 'पूर (कीइपुन); बाटा**: गुपनेदी चीज ! श्चमञ्चमा-वि श्वमञ्चनाहर परा करनेवाला स्थानवासा विश्वतिका, भिद्रमेवाला । पु मलाशयमें पैता धानवाला भारेद गून श्रीसा बीडा थी मनके साथ निकल्या है भुषा। चुनचुमाला−भ कि बनतकै साथ सुमनो पैदा बीना था पुथना रूपमाः (रघोंकः) हिमकना ।

शुक्र अन्त-मी प्रश् कामक बादिमें बाबमे पत्रनेवाली मा रमाकर दाली गयी है। इन शिलवर । भुनम्-स्रो दे 'भुनाः । ~बार्-वि निसर्ने शुगाः बाजी पनी थी।

शुप्तजुनाइड−न्यो भुनशुप्तामेका अनुसय असमके साथ

बीनपाली सुप्रकी ।

सु॰ - छड्मा-भुनावके किए बम्मीरवार दोना जुनवरें चुनिदा-दि चुना हुआ छ्दा हुआ। बहिबा अह कि युनियागोंद-९ शबका गे~। पुनी-मा वे 'बुधा । भुमीदिया-पुरु एक तरहका क्रमाँ या बाब्देनी रहा वि सन्तरगदा-विदे भीर बुवारिया बाद कीपुर्व द्वात - विदारी । क्रम या गंबाहु कि निष् भूमा रसमेश्री प्रभौधी-को

क्रमध्दर (रेना)। पुनारी । शुप्रद शुप्रत-मा १ शुन्रहे। शुक्रम-मी है 'गुनय'। शुका~तु दे भुमनुगा'। पुत्री-सी मागिक वा सामग्रा होटा उदशा थोग स्था चमका। अरहर था और किसी शंभ दे देवर दिनने मूर्न

शुमाती-सी वहावा वृद्ध झान्तार्व साहिते निरंशकार

विविधा हारिया ।

विली 🗗 पनार्देश में भी में जुप्−वि जी बील्या स बीठ भीज शासाल । स्री जुन्दे-मीम । -बाप-अ विमा वीवे बुक्ते मे। रिना (१ रे रे) शुक्तमुव । -शुक् -शुक्तते-श्रव शुक्तार ।

भुपना-वि चुद् भीता पुषा हु॰ -काबा-मी-वर्जवण करणाः गीनावर्णवर्ण बरामा ।--साधवा-५९ र बामीकराष्ट्र, धामीकराहि-पु॰ (सं॰) मंद पर्वत । बार्महा-स्रो [सं] दुर्गादा एक रूप। बाम्य-प [एं॰] मोजन साप पहार्व।

चाय- • पु•दे 'भाव । को एक गीया जिलको पश्चिमीका कामा दुव शकर मिलाकर पिया जाना है। उक्त पीवकी मुमानी दुर परिवा, पायद्री परिवादो अवाककर बनामा हुआ पेदा ∽दान्न-पु•₃—दानी—ची विसर्ने बाद बनाबी या बनाकर रखी बाव ! -पानी-पु॰ सुदेरेहा बसपान ।

चायक - पु चाइनेवाता ।

चार∽वि तीम और एक, कुछ। करें । पु॰ चारकी संस्वा ४ ।—अबस्-पु • सिर्: मर्वे दाही और मुँछ। यक तरवर्क मुसक्तान करोर थी सिंद भी, दाही, गूँछ वारोंका सकाबा करावे रहते हैं। -आईमा-पुण्क प्रकारका बतन विसमें छातो गोठ और दोनों गुवाओंनर बॉपनंडे किए सोहेकी बार एटरियों होती है। -काने - व पासेका ण्ड दवि, पासंबा इस तरह परना कि ण्डबा दो विदियों वाला और दोके एक-एक विशेषाले वस जिल हो। -- ऱरामा-पु वह ऋपका क्रियमें रंगीन भारियोंके भौभृँदे सामे का हो । ⊶गुर्देशासा−वि॰ वहादुरः थोक्टबाका । – चंद्र–दिर्व चौगुमा । – सास्र−पुर भौताना । -दिम-पुर बोहे दिम शरा झाल । -दीबारी-स्रो शंबारीका पेरा, प्राचीट परकोटा ! -पाई~सी॰ गार छोटा श्रमेंग । (मु॰ - पर पड्ना -डेटनाः श्रीमार श्रीमा । - से पींड स्थाना-सका नीमार होमा छठम बैठनेको हाछि स रह बाना।] — मामा−पु भीकता पहु। −क्षता−पु॰ भीधर कया मह भार वा रूपान की रंगके जरिने चार हिरलीये नेंटा दी।−वास्तिश−५ वदी।मतनर्।−वीसी~नि भरती । -- सन्द्र-पु अवरोदा नवीके सेवनेदा मिडीका गोलीः गरपुत्र सीरे, बद्धश्च और बहदके विजेत्रा गिरी । -मेख-मी॰ भपराभोकी क्रियक्त उस€ बाथ-बॉब नार भूँबैंसे धॉप दैनको सना। -बारी-प्रस्ता संबदायः यार विश्रोद्धी गोष्ठी; चत्रीका चौक्षीर शिक्षा जिलगर कमा वा मुहरभरके यारी शाबिबीक बाम शरी होते हैं भीर मिसे मुसनमान साबोजके शारवर कामने लात है। -(री)भोर-म सब भो८ वर करका -धाम-द पारी विद्याभीमें रिश्त हिंदुओंना चार प्रयान तीर्थ-पुरी वररिकामम कारका और रामेश्वर । -पदार्थ-इ ममुष्य जीवनके चार पुरुपार्थ-अर्थ, वर्ग काम और सीध । मु॰ - मॉर्स काना-देगा-देशी, शाशस्त्राट करणा निगाद विकास । -ऑर्स होका-ऑस बार हीनाः देपा>धो दोना । --भादमी--वा-पाद क्रपे आदगी। -क्रद्म-योग कामका । -के क्ये या काँचे चहना या चलना न्यर बाता अरबी उड़ना । — के कान प्रकृता पनी दोना नाउस एनमा। -वॉब्समाना-शीधा दररंग वन्ता। ~दिमकी धाँकृती~गे-पार दी निम ररने विकासनी का पीरीजा कात । -पाँच करना ्यौता इसका करनाम हुम्स्य करता । **-महत्ता करता-**रियारर हान एंद स्ट्रीम बॉब देता। →(वीं)हान चित्र

गिरना-दे॰ 'बारों' शाने यित गिरना ! -फून्या-दो रकृत असिं और ही इत्रवधी, सबका फूट बाना निपट वंश होना । -शाने चित गिरमा या होना-(कुरतीम) इस तरह नित होना कि पूरी पीठ और हाम-पीव समीनसं रूप सार्थे। पूरी तरह परास्त हो बाना। (होर्र शाक-संवाद शुनकर) स्तम्ब, बदहबास हो बाना हिम्मठ हार बामा । चार-प• कामार राति (दार-पार)ः ≉ सेवक टबस्: सिंगी गति। ग्रहण्यः, जास्यः। श्रहरागासः प्रियानः। कृतिम विष । - संसु - चण-विश संदर वाठ । ~ चस्(स्)--प्रशासन शिसक्षे भाँछ है) राजा । न्तुक्ष -पुर नेवरी । -पथ-प॰ राजमार्ग (-पास-प्र॰ ग्राप्तर ! -पुरुप —व मिर्वा । —वचार—व• जास्म स्थाना । —मर्ट— पु । वीर सैनिक !-बायु-सी । सू , मरमीकी इवा । चार-'चारा (प्रथम)का कपु रूप । -माचार-म शम पूरम, निरुपाय पीकर । धारक−पु [र्न•] फरवादाः वाककः अधारोदी मेनिकः नाषका गुप्तवरा छाथी। कारागारा दबाकातः वंधना दय कृतीः विश्वाक अमयकारी ज्ञामारी ! चारज−९ दे 'ना='। चारकामा-पु॰ (फा॰) क्योदा थीन विसमें हाठ मरी क्रवा होना । चार्डिका−सी॰ [तुं॰] वसी मामक गंबर्ज्यः भावसंपतीः माण्डा पीपा। चारटी-नी [एं॰] धृम्यामसम्बद्धः प्रम्यारिणी शृद्धः। बारण-पु॰ [बुं] वीर्थवात्रीः भाट वंदित्रनः ग्राप्तवरः राष्ट्रपतानादी एक आदिः परामकः कार्य । शारम = - पु दे 'यारम । चारना॰-छ कि दे भरागा । श्वारांतरित−पु [मं } ग्रमवर । चारा-पु॰ भीपाबोद्धे सानकी सीव-पाछ, भरा आदि। विदिशों महकियों भारिको रिकामी जानेवाली चीज-एक भारेकी गोनी भारी मधनियाँ पँछानके सिप **दिरियामें क्याचा बारीवाला गीला माटा आदिः थ्या**ी त्रपाद, इकाब । ~क्रोई~न्दा (मडाक्रम) धम्बास्के प्रतिद्वारको पार्वना नाकिस परियार । - साज-दि॰ दाय ननानेवाकाः सहायदः। -साज्ञा-न्योः महायसा मदर । श्वारायण=प् (मं•) दामग्राग्यद्वे एद प्राचीन भाषार्व । श्वारिश्-विश् यक्षतेशमा आयरम करभगक्षाः यसः । प्र गरेश । गरी॰ दीला धुराना । चारिका-स्री [र्ग+] सेविका, रहतर । षारिटी−ली॰ [नं•] १ 'पारधे । चारिका-मा (ते) कराति सामक पीता । (ते ना आपरण करमेवाणी। श्वारित-पि॰ भि॰] जो यनावा गया द्वार सदस्य गौना इजा ३ प्र आराः = बर्गभीना धारा भरा । बारितार्थे~पु [गं॰] अमेर सिद्धि सरण्या। षारिव∽ष [मं] यरिष थात यन्ता रामार बुन्दरमागत मा एक संभानाद मापुत्रा राष्ट्रीय ६६ भवत्। -क्ष्यच-वि स्थानर हो निमुद्दा करन हो।

अस-पूरी प्रत-नि॰ [से॰] बिसको शीखोंमें कोचड़ मरा हो। तु॰ धीपहर्मा गाँउ । अक्तक−प सि•ोधस्याः जुसकी-सी [सं•] एक तरहका सम्बदात्र स्मा शुक्तां-वि नरघर १ पुष्टि-सा॰ [मं] पुरवाः विशा ! पुर्ही-वि निविद्या महस्तर। सी॰ (तं॰) दे 'चुहिं'। पुस्छ - पु उँगलिवीको धोण मी-कर गहरी की दुई हरेगी, भागी अवधी । -भर-कि जिल्ला मुख्यूमें आपे भोगा छ। अ० न्यर पानीम इब मस्त्रानकवाने मेंद्र न रिका सहता । न्यर छड्ड परिमान्दुश्यनको कतल कर मुस्सूमर भून गीमा (पुरामे समानेको एक धाक)। -में अस्तु बनमा-बोधीसी मींग-घरान पोक्ट करमस्त हो बाला । सुक्सुओँ रोजा-बहुत रोना !-स**हू** पीशा-बहुव सनाना । **पुस्री**ना॰-पुन्नसः। **भुवमा**ण−म ति धृता उल्लासाः छ∙ति बुवनाः रवकामा । भुवार-दु नीचवा पशु−वाव शुवा वर्दे ओर वनै सपट क्षपट सो तमीकर दौषी'-कवितानको । सरवा । शुकाना~स कि दे 'जुशाना'। भुसकी-यो सरस क्यार्थको होटीन हुक्तेले कशकी सरह श्रीपकर पीना। तुननेका कक्षा श्रृंट । बुसना भ कि होंडीते पिया वामाः प्ता वामाः निवुद्गाः सोचरः धारदीम दो बामा पासमें पैसा व रह जाना ।

शुसमी~मी एक बिकीना विसे बच्चे मुँहमें शाककर भूसते हैं। क्योंको हुव किनामेश्री श्रीशी।

चुनेवाना−स क्रिंदे 'बुनाना । चुसाई~सी जूननेओ क्रियो वा भाष ।

चुसामा-म ि चुचनेस्य काम कराना !

सुमी बस, श्वसीबल-४ वड्वरी व्यक्तिका व्य शाव

प्मनाः अभिक प्रानाः।

बुस्त∽पु [गं+] मृते तुर गाँगका कथरी दिरसाः भृता हुआ मांसः भूसीः कान, क्षित्रकाः विकाीतेत्र पुरतीयाः संग क्षा हुवाः सः सबक्तः चानासः शेकः वरपुक्ता न रता हुना । -(व)यान्याक-नि॰ तेव पुर तीस भीर चनुर ।

सुरता∽तु (पत्र] बद्धरी वा अंप्रके वधनेका मामामय प्रियम् भिन्नामा वही जीनका भेतिम मात्र सन्ताहास । बुस्ती-मी [का] संत्री, पुरती: र्यंत दोना बनावा सबबुती; पानकी ।

चुर्वेशी चुर्वशीर-मी गुरुधी।

गुहयुद्दानित दे 'नुहयुद्दाता ।

अवज्ञदाता-वि रसीमा, मनेशास प्रकाश कुमा । पुरुष्ट्रामा-म कि चित्रियोदा शक्ता पश्यक्ताः इस टपरनाः धरनीता श्यना ।

सुद्दुपुरी-श्री १ ४६ छोटी अंध्य विदिश शिक्ष्मी वीशी बंदी प्लारी शारी है।

सुप्रदेशा•∸स कि रीऽया अस्त्रमा।

मुहदा-पु दे॰ 'बृहदा'। पुरुष-छी ईसी, डिडोनी मनस, रिनोर्। -बाह-वि॰ वेंसी-ठिठीना करनेवामा, विनोशी । -बाही-सी

इँसी ठिठीको अस्त्रारापन । अहिया−क्षी बाटा भूदा ('जूदा का अस्तर•)। जुहुदमा -- अ॰ कि॰ विमहना । विमहिशना । शुहृद्रमी-वि॰ सी विमानेशमी। भी चुँवची।

🖣-पु॰ छोगी बिहिया या बिहिया है। यभेन्द्री योगीर 'नृ'द्री भावान !--व्य-पु॰ विहिबाँकी वीकी भावात 'धाँ-वाँ , 'पूँ-पूँ'को भारामः एक भिक्षीता मिसे रशकेने 'पूँ-पूँ हो आवाब निरुव्धती **दें। ग्रु॰ -वृँद्ध गुरव्दा**∽हरर-तरर-को देनेम बोबॉका बोग। - स करना-एनिकमी एक

पत्तराज म बरना । वुँ−तर [फार] को अवरा संस्था कर्ने मिश्र किर**ः−**हि - अ इसकिए कि, वृद्धाः स्वीकि। -- (व) वरा-पुर

कत प्रतराजा विवाद । र्युचर∽सी वॉद।

र्बेंट्री•-सौ• दे॰ 'बुगरी ।

क्र-की मूळ गर्मा, सता। अरराषा एक पीरा। इ मीक्डा शुराबा हुमा रस की बहुत गहा दीना दी दें? 'बुद्धा'। विषद्व सहा।

चूकमा-न कि भूक ग्रहती करना। सीना नेप्रस (अक्छर) क्रम्बपर स क्यमा,ग्रना द्रीना (निश्चानाम और वात करने, कहरेहा अक्छर आवेदर उसे व करना, में कड्ना। करने कडनेसे शाब रहना (वह इव मुक्तेशना है)।

चुका−पुषक सद्वासाम ।

चूची-स्पी स्तमका बागमा, चूमुका स्तन । च्चुक, च्चुक-५० (सं) स्तनका भगमान ।

प्हा-५ कि] सुरमेका रथा।

पुडक∽३ [सं]कुत्रों।

चुवात-पु [मं] भरमगीमा । अ० वप्टन ववारा । वि भरम सीमापर पट्टेंबा हुआ।

गृद्धा−त्वो• (तं] चोटो दिसाः श्रेर वा मुरगद्रे हिन्दर की बीनी। स्वापकी बोली। मन्तका क्रमारेसर स्वयनेश यह महना कहा, इंक्याः कुऔं। चूहाबर्य मंत्रारा वनारे का कमरा । -करण -कर्म (म्)-पु दिनू वर्षेश पर्ने

थार सिर मुँपायन चोटी रस्तामेका गीरका मुहन । नमनि ··वृ मीमकूमा गुवनो । वि मर्गभव आगस्य । -गव ~पुसोसप्रमा

पृका−५ विदशा

ब्हास्स-पुनि देशनी।

ब्रहार-(४ [मे] सन्त्रीचार ब्रहानुक्र । न्द्राम~पु [मं] मिर । दि प्रामुकः।

मृहामा-नरी॰ [मं•] मदेर गुँपभी शायरमोबा द€रा माग्रह राज !

भृतिया∽पु यक्त पारीशर कमशा । चूड़ी-मी कींव लाम मीने हाता दीत सार्वत की कृषाकार आधूबम जिसे त्यारी करारेगर बरमणी है। प्री-की शबनकी भीका छह आदि सिरेक्ट बमाना कांत्रेरणी

पूर्वकी सहत्रकी यहरी रेगावे पुरमा। माभीक्ष्रांत्रका रेक्ष्री

888 क्रिसने छहाने संदर्भ धना(वैक्रम)शक राज्य किया ! चास्य-वि [मंग] हे 'धालमीन । चास्त् चायद्वाक-मी चेत्रवा गहकी। शास्त्री-सी भावके सिरेके पासका पटा हुआ स्वाम नहीं महाइ सेनेके किए बैठवा है। चाब-प तीन इरहा चाहा भीका मैम, अमुरागा वर्मगा क्रमाहः । भिन्ना वदवामी । -चोचला-पु काव-प्यारः माब-सग्रदा । चावडी-जी बड़ी, पहार ! भाषण-पु॰ [थ्॰] पुत्ररातका एक प्रामीन राप्तपृत वंश । चाबना = स कि वाइना। चाबरां-पुद 'वादक ' चायछ-पु॰ बान, साँबाँ, कोशी बारिका सार माग जो बाजरे मुखा जलग कर बेनंपर वन रहता है। वंडका फ्टाबा हुआ चावल जाता रचीका भारतों मान । चासभी-भी (दा॰) वस्त्रको भीत्रः साथ बन्तुका नमुना थी परानेके किए दिया जावा चीनी-गुरु मारिका शीराः स्वारः, मजाः शमुनेका सीना को नाइक अपने पास रमना है। -मोर-५ राजानी जादिक वहाँ मीन्य षदाओंद्रो क्यानेटे लिए निष्कु कर्मपारी । चाप-पु (से) नोस्त्र प्रदीः बाह्यः २ पष्ट और । चाम-द (स) देश 'साव' । † स्वी जीत, खेती । षामा 🗝 किमानः इक्षादा । चाइ-सी इच्छा लालसा। प्रमा बस्तत परमा पृष्ट, माररा + सररा मंद्र । तु (का] कुऔं। --कम-तु क्रमा सोदनेवाला । दि॰ नस्याचार, इसरेको ईराई करपे-बाका। -(हे) रुग्लस-५० वह इत्र्मा त्रिसमें तीर तकवारे माश्कर श्लाम गिराया नवा था। षाहरू 🗝 पु॰ चाइनेशला प्रेमी। चाइस॰-की भार, मेम। चाहमा-प्र• इ.• इन्छा करमा इटाया करमा: माँगनाः प्रेम करनाः पारंद करनाः वन करनाः = वाहभरी वहिने देखमा निहार्ता - स्रोय न्यस्ति वित शमहि नाहा --रामाश हैंदना। क न्योक चाह । चाहा-त नगमेकी तरहका एक छोटा पत्नी । चाडिन-म से बहबर, मब्दि ! चाडिय-म॰ रुपिन है वर्शमह है। अपेशित है, हरकार है। बाही-दिण सीन परेती (ब.); [प्रान] कुक्ने थी; कुतेने सी भी भानवानी (बसीत)। च हे-अ जो चाद मरजीमें आहे (श) क्वाक्: वा थी। स्॰ नमा हो नमे होता हो वह हो। चित्री-प रमतीया दो छ। चित्री - इ. हे. नी सा विदिया-ता॰ दे था थे' । विक्रिटिया रेगाम-छो∘ नगत भीमी जात है चितार-१० [त] १'व्या महन्ता ।

विज्ञेषका उसकी महींका म फैलमा सिक्रवना । विधाद-सा॰ दापीके जिलामेका शब्दा नीस्कार, गाँत । विधायना-अ कि॰ हाशीका शोरहे योजनाः चीरानाः थीत्कार करनाः गरमना । [एं॰] रमलीः रमलीका विमाः ग्रंगा। ৰিখ~েশী ~सार-पु दे॰ 'विचान्क' । **चित्राहरू** – प्र• [सं] चेंच मामका शाग । विचानक-पु॰ (सं॰) वृक्त मामका साग । चिंचिका~ची सिं∘े हें जिसी । चिंचियी−सी [धे] दसकी≀ र्विकी-स्वी सिंगी ग्रेमा। चित्रोडक-प [र्श•] क्षीबारम मामक पीपा । चिता•−प• वेश । चिंक्ती+-सी वेटी। चिंद्र-प मत्थकारहरीय। चित्र≉∽को भिता। स्रवाङ चन्द्र । षितक~दि [धं] भित्रम करनेशालाः घ्यान करनेशाला (भाव' समासांतर्मे प्रयुक्त) । पु निराधकः भनन करन वाका । चित्रम-प्र• [मं•] फिनी परतु व्यक्तिको बार-बार सीयना बाद करनाः श्रीचना विचारमा अन्त । चित्रना−नी सि } भित्रन । ≉ स कि • <ित्रन दाना• फ्रिक करनाः शीयमा समक्षमाः । चित्रमीय-वि (वंश) विता करन वाग्यः विवास्पीयः धीवनीय । चित्रवन्र≁-पु०दे 'विनन। र्विता-नी [नं] वितना सीथ फिला ध्याना परनाहा यह संवारी माव : - अगळ-वि विवाहा कारनकप चितित कर देनेवाका। ~णर नशास-दि विद्या छापने हवा हमा । चयस=नवि वै 'दिनापर । च्यावि-प्र• वह करिशत रेम विसर्वे की गाँगी वह दैनेकी मायक्षे प्राप्ती वाती है नर कामनार्प पूरी करनेमें समर्थ परमेशकरः यात्राका यह बीग पोहेंसे वह शुप्त भैदरी। बस भैदरीहे पुष्क बीहा: सरस्वतीका बीजमेन की महजान विहासी बीमपर विधामामिके किए हिसा बाता है।-श्रद्धा(स)-अवगायुद्ध । -शीम-दि विसे सीच विचारका भारत हो मननशील संतीको । चिताकुम-वि [मंग] चिताने म्याकुत उदिया चितानुर-विश् मि) विज्ञामे एद्रिय । चितिशी-गाँ० [मं] रमना। चितित-रि [सं] भिनानुधन मोचमें पहा हुमा। वितिति वितिया-ग्पै॰ [म] विका किय-वि शि विशा कामे साम मिल्लीक क्यार कीय । क्तिशी-मी छाटा द्वदश, पत्रती ! विराज्ञाल्य अधीराचे पादा जानेशका एक दशयानुस् दिसुद्धे द्वान आदयीने बन्त विनन्त है। थियाँ-प रे । भा। विदर्शेश-पुरि-नेया वितृरबारिक कि देरतक एक स्थितिमे रहममे अल- विश्वेदी-छ। के वीटी । शुक्र क्ही चाछ-वर्त

विगदा-५ रागा महन्।

दिनमा-इ पुराधिक छोश क्या भूजा छोश क्या ।

चूसमा−चेला **प्**सना−स क्रि कॉठों और चौमके बीगत रसपान । करना। ग्य, सार नियोध केना खोलका दूर देना। यनका धरण करना श्रापण धरणा। प्रद-पु दे चूदता'। पृह्द्या~पु संगी।दोस । [श्री 'यूह्दी'।] बुहर-पु दे॰ बुहरा । पृहरा*-पु दे जुदश⁸। चुद्दा-पु परी धेरोमि विक बमाकर रहनेवाका पद्ध अध ध्यद अंतु जिसके दाँच क्युच तेज दोते हैं, भूवक ।-वंसी-ची पर तरहरी पहुँची। -वान-पु॰ चूह पैसानेशा खटकेदार पित्रशा : -(हे)वानी-सी वै॰ 'बुहादान'। **व**िस्ता निविद्यासी होती । --धि-स्ता॰ भी-बी । पस-क्क ⊢र्यें न्यों भी न्यरहा ब्ह्रवाद । शु• न्युसवादा --द्वार मनवाना। दतना दैरान करना कि कोर्न द्वार मान है। —बोस्नमा—देरान हो जानाः हार मान केना । र्षेत्र-पु १रसावमें छगनेवाका यक साग । चेंद्रमा÷−पु थिक्रिशका बचा। र्चेवर−पु (श्रे] कमरा। कक्का रुगरा किस्तों वह ऐसे : मुक्त्रमे मुनवा है जिन्हें अवालवर्गे मुननेकी बहरत स हो। समागृहः परिषद् !- आव् कामसँ-दुः मगरः प्रदेश-विशेषके स्वापारिकांकी किलताको किए छंपरिण संबक्त. म्बापार मधन । चेक−तु [#] किसी मेकडे गाग किसीको वस्त्रे वैनेका किस्तित महोशः बारगामा । ∽ब्रक−मी अकन्ति । मु —काटना−थेद किछार हेना । चेकिसाम-प्र [सं] छिदा महाभारतमें पोटवॉकी जोरहे करनेवाला एक वादश मरेश । वि वद्गत शामवान् । चेचक-स्त्री एक पुरुषा रोग किछमें नगरके सार्व सारी देवमें दाने निक्रम असे है। धीवला। -क्र-विश् विसदे गुँदपर श्रेषक्के दाग हो। चेता = - प । ग्रेस सराज । चेंद्र-पु [सं] शास सेवका गतिः भावक और माविकाको / मिकानेशालाः भाँदः यदः महकी । चेटक-पु शंहबाल शामीगरी। तमाधाः बीवुः (सं॰) बास सेनका कपपति। नामकडी नानिकारी मिकानेनाका पत्रह सेक्कः वसमाः शोधवा । चैरकती≉−तो ने/का। चेरका∽सी दमञानः निराः। चेरका-प्रशास करमेवामा वामीगर। बेरिका-स्रो॰ [सं॰] पारी कौडी । चेरिकी=-मी पेरिका। चेरिया ० - प्राप्त । चेरी-मो [मं] दामी। चेटुवा-पु॰ विश्विमा वया।

चक्र−पु[सं∗]दे नेटा

रच्या सार्थानी ह

चेदक~पु[त] देश चेदक ।

चढिरा चडी-सा [लं•] है मिला नेया। चेतापीडा-सो [लं] दुग्य सीहा

चेत(स्)-पु [में] द्वीप्त शया नाश दाना वित्त मना

चेसक-वि [सं•] चेत करागेवासाः चेनतः। चेतकी-यो (ए॰) इत इरोवकी नमसी वह राधिगा। चेतन-पु [मं] भारमा बीवः परमेशाः यनधः प्रायीः मन । वि॰ प्राणवृक्त, चेतुरय-विशिष्ट । चेतनकी~की सिंडिक ! चेतना-भ कि बीशमें भागा निजनिवदमे क्षम हैना सालवाम होना । स कि॰ छोवना विचारमा (प्रका चेवना, भागम चवना) । श्री (छे॰] बैठम्बः दामा होश यादः इतिः चेतः जीवनी सक्तिः धीवन । चेत्रशीय-वि (ते॰) जामने वीम्ब देव। शेतश्रीया—वाँ शिं°ी ऋदि नामके क्टा। चेतवनि#~क्षी॰ निवननः निवलनी । चेतरय⊸वि [र्श•] चवन करमे बोग्द । चेता! –पुण्येत हो घ्रयार । चेतावणी-मी॰ शाववात करने किये दानिस करें रोक्सेडे किए बड़ी गयी बात संग्रीह, सगरेकी पूर्व इसना क्षेतिका≠−स्री विद्या । चेतो-'चेतन्'का समासमद रूप । -जम्मा(म्मर्) -भव -अ-पु प्रणवः कामरेव । -विकार-प्र मानसिक विकास । -इर-विश निश्व हरम बरनेशन्य । चेत्—वरु [र्ग०] यदि अगुरः कदाभिद् । चेस्य−वि [सं] पाउच्याः चेदि~g [मं] यह भाषीन वमका वहाँदे विसमी। वर्षाका राजा । -पश्चि -शजा-त वर्षाकर स्त्रा श्चित्रहरू । थेन-श्री [अं] जेबीट सिक्सी। चना−पु≼गर्गाया साँगँ की बातिका एक मोध जनागः चेप-पु॰ गक्षा ससरार रसा आसाः = ससार । - शर-नि जेपनाका, कसरार । चेत्रका⊸५ ०६ देव । चेव-दिश [वंश] चयत करने बीय्य प्रश्मीत ! चेयर-श्री [लंश] कुरस्ताः समापविद्या वर आसना/वार) समापति अध्यक्षा विधारीक्षमें विषय-विधेरके अध्यारह (मोकेसर)का पर । -सेन-इ क्येग सुविधिक केर्र भारिका स्थानी समापति अरमञ्जा चेर०-ड रास सेगद्र। चेरा•~च दास नेवश केला किया। चराई--ना गुनामी चाहरी। शामिरी। चेरि चरी०-मा शैविका रामी। चंग्र-पु अक पुरानी वार्ति जिलका पहले रिहार श^{ारी} वर्ष प्रदेशीमें शस्त्र था। चेल-पु [मं] कपश यन्त्र । पि॰ समन (समातांत्रमें) । --वीगा-न्त्री महामारवर्षे वर्षित दक्षिप भारत*वे व*ड नरीं ! ∽प्रशासक−५ भीचे । चेक्रवाई॰-ली॰ दे॰ 'पेनदारें'। भोसपार-भी दे 'देश्रवा'। चेलहाई। -धी अचीका समृद्दा धेना बनादेश स्परनार भेनोड वहाँ प्रमहर मेंग पूजा हैया। चेखा-त शिष्य शामिर्दे दोया गुम्मेद >नेरचा। वैर भेन्द्रवा माम्बो । <u>सुष् -मृ</u>बुमा-भेवा बनाना ।

है बड़ा आगु विवारे मित -सम्बी। विविशा-प्र दे 'विनिष्ठा'। चिचिड-९ [मंग] मिथिटा। चिचिष्ठा-पु एक नेक विश्वमें गील संगोतरे फल समने और तरकारी दे काम माते दें। उसका कर । चिचियामा! - श्र॰ कि॰ चौराना, विशामा। विश्वक्रमान्य क्रि॰ दे 'सुसुक्रमा'। चियोदमा!-स क्रि॰ र 'नवाइना । पिथिटिंग-प [सं•] एक विपेता क्रीड़ा। विकारित-सी [मं] चैतन्त्र, चेतनाशक्ति। बिविद्यस-पु [सं•] महामारतमें दक्षित एक देश: उन् रेस्ट्रश निवासी । चित्रारा ७ -- पु॰ राज मेमार। चिद्र-सी॰ श्वागप्रका होता इरुका, प्राचा। करकेकी पत्नी ।

-मधीस-प्र नेस्क मुद्रारिए। चिटकमा~न• कि युक्तर पत्ना उदक्ता। क्दांसा सक्दे समय 'निट थिट' सानात ऋत्नाः नित्रना स्टोशका। विदक्तामा-स कि विश्वनेका कारण द्यामाः विश्वामा निहासा ।

चिह्र-नी दे 'विद्र'। चिद्वा-वि गीरा सक्ते (गौरा-विद्वा)। † पु॰ धानिकर कार्नेट किए दिना जानेवाला चक्रमा बदावा दिना कवाना) ।

चिद्वा-पु राजा भाव-ध्यव मारिका बार्पिक विस्रणः र्देनिक सामादिक या मासिक मनदरी वेदानहा दिसायः वर्ग मुख्यतेहे किए गाँध जानेवाका रचनाः प्रवस्तित मुमी। विवरण !

षिद्वी-न्या पत्र रातः दुरमा आवाषमा निर्मनगपत्रः पुरने वास्त्रह विदेश वरतु है अविहारीका नाम निक्षित बरना 'लाररी'। -एग्री-न्ये पत्रः वक्ष्यवदार । म्स्मी-प्र थिट्टिवी वींडनेताका शक्तिका । स्व इक्तिमा - हाटरी टाहना ।

चिद्र-स्री॰ दे॰ भि"। जसनेकी आवात्र (१)। विश्वविद्यानि भी भरामी बातपर बिर बाब श्रीतका बढ़े, तुमद्र-मित्रात्र । पुर न्द्र होटा प्यी । -प्रम-प् निवनिश स्वमीय सुमद्धनिकाकी ।

चित्रचित्राना-म•ति विस्ताना बलनेमें निश्निद्दशाया ब धीना। नि^{क्}ना श्रृंशस्त्रका।

पिइवा-पु इरे वा भिनाव दुए भामक्ष मून और मूत्रदार चिपरा दिशा देशा एक शाद दशकें 1

चित्रा-9 बीरक, मन्द्र। विशासा-स॰ कि । है (ननामा ।

चिदिया-न्तीर बहतेदाका पंरायुक्त मानी वशी करेक-भीरगणा भेगिराधी करहरेगों हे बीयही निवाही पादणार मा मर्रेगरा नकार महत्त्वा वस रंगः विश्वीर वैद्याली भारिक लिएम श्यादी जानेशली निविधारी अवलबी >२ ती। क्य प्रदारको लिकाई । —दशका —श्वर-पु० पश् र्काशके स्थानेक स्वाय अनुवान्य । - सुममुख- कु परे पारा-मामा-निः मृति उत्पर्ध स् -का मूच-मन्भ्य पातु अवदीनी वात । -धुनामा-जिहार हे

र्वेमानाः किमी सुररी मुनती था मानदार भसामीको पुग्रहाकर शावमें कर केता । चिविद्वार=~पु॰ वे॰ 'विदीमार**ा** चित्री-सी वाद्यका यह रंगः निविमा (केनक समासमें व्यवद्यो । ~सार्~पु॰ थिषिया एक्ष्यगेनामा, बरेकिया। चित्र-क्षी निवृतेका मान सीक्ष मारावगीः मध्यतः। म• -- निकासना~ निहाना ! शिक्षमा~म कि॰ राफा, नाराम दोमा। विसी तात्कारिक बातपर ऋद हो भागा हुरा मानना । चित्राना~स॰ कि नारात्र करना; कुभित करनेवाली बाद कदना, शिक्षामा अँद वनामा। छेडमा वपदास करना । चिस-वि॰ [र्व॰] चुनकर श्रृहा किया हुमा, निसका चवन किया नवा हो। संवितः बाल्छादित । पुरु मकास, हमारतः वित्रका दे॰ 'विच । ~चीतां = विच मनवाहा। चाहा हुआ । -चार-विश् निश्च न्हानेशकः, मनोहर । -भार - प्र प्रवाद जी न करानाः सुद्धि कियाने न रहना। चित्त-निर्वतिस्ता मुँह-केर कपरकी और ही वत्तान परका बक्या विसदी पूरी पैठ अमीमसे समी हो। ज॰ पीठके वक १ - पट-पु॰ व्ह शहा दुवती । सु॰ -करना-करतीमें प्रतिपश्चीको बहाकता, उसकी पीठ खना बेना। -पर करना-दबर या छवर कुछ निर्मेद करना कुछ ते कर बाबना । -पट होना-इस है शना, कोई निर्गय होना र **−होना −कुरती**में दार साना प्रकाश जानाः नरहथान, इदा-नका की बाना

चित्रदरण-प्र निचीर। चित्रकवरा-दि शिसमें यह रंगन्धे बमीनपर इसरे रंगडे बध्दे ही जिल्ला। रंग-विरंगा ।

चित्रकृद्ध 🗝 🗐 निष्रकृद्ध । चित्रगृपिस ६ -- पुण्डे 'वित्रग्रह' । वित्रवाह-पु॰ तक्तवारका एक दाव I चितरमहार-प चित्रम करनेवाला । चित्रजा = ना कि वित्र वेत्र वेद्याना परेहमा । कितरबा चितरोक्ष−३ ण्ड निश्वि। चित्तमा∽वि निवक्षरा। प्र∘ निचौरार शरवृत्राः २६ बदो प्रस्ते ।

चित्रयन-न्दी॰ दिलीकी कोर देगनेका देन धीं: बराछ।

चित्रधना १ - म - देसना निरसना । चित्रवनि १ - स्थी ४ - नित्रवस

चित्रपात्राण-स कि दिवाला।

चिता-भी [में] मुख्या अलानके निष्ट भागकर रूपी दुर्ग व्यक्तियो। हेर्, शमुद्दा + रमशाम । --विद्य-प्र स्मराममे शरशस्य पूर्व विश्वा जानेशसः विदेशम् । -प्रशाय-पु श्रीन नी भिवापर भरम कर देनका नंद (क्री॰) । -श्रुशि-न्दी प्रमाल । -मापन-न रबद्यानमें नैहरूर भवता अनुषाम बर्ता ।

चित्रामा~म कि थे। कराना बार दिशाना किने मन्दे बुरर्शके बारे ने माल्याम बरना: दानोकाम बरमा । क्तिसीर-पु॰ दे॰ विश्वतः । क्लिसहमा [मं] (दिस्सहा) स्ती हाने द्वित विद्वा

पर याना अलीन होना।

चौँगा-पु॰ गाँएको बोवानी मणी बिएका यह छिरा वंद और दूसरा गुला हो; कायब आदिकी बना धूर्व बैसी नहीं । चॅोिंगी—सी माथीकी नहीं बिससे डोकर उसकी हवा निक्रमती है। छोध याँ वा । र्चीयना = - स • फ्रि॰ जुनना । चीच-सी विदिवें हैं में इका अपना भीवतार माग होर. बीटः हीं (रवं)। मु॰ -बंद करना-मुँद धर करना, लग हो जाना। **धींपशा-प १० भो**जमा । चीरता - स॰ कि॰ बीरनाः भीवना नोवना । र्चीडकी ∽ली सफेर पॅपकी। चींबा-पु (प्रेचारेंबे किए छोटा गया छोटा कवा कर्जी: † सिरः श्रीरा। चौँदी-ली॰ साही। चौँभ-प गाद⁴क भारिका उतना गावर जितना वह यक बारमें करे। चीयमा - ए फि॰ सीरमाः मोचनाः ध्रेषमा । र्ष्योधर-दि॰ बहुद होडी ऑस्ट्रोबाहा: मुर्छ । चॅॉप~प॰ निक्कनेवासी वरतः कासाः दे "बाप । चोक्षा-पु॰ कई संबहरूवाँकी मिलाकर बनाया जानेवाका रह सुरांतित हरना दिसी जीवकी हमी पूरी करनेहै किय बसके साथ रखी जानेवाली श्रीतः बारको केंगी पूरी करने-में किए प्रकारिय रहा। बानेबाका **६५**ए कादि है ें श्रीता । चोडूँ-मा मएकोफे छरोरके सर्वर मैसे छोटे-छोटे गोक 2क्रहे । भोई-सी॰ मिगोप्रर मधनेते निकामेवाका शास्का टिक्य । क्षीक-ए० (एं०) भइमोंश्योजह वो दवले काम आदी है। चौकर-पु॰ रोहें भी भारिका छिक्का की माटेको छाननेसे प्रकरीमें रह बादा है। चौक्र-वि [एं] द्वाय स्वष्ठः स्याः दक्ष (क्तुरा धराः होधाः तंत्र । कोरा = न्यो तेवी प्रशी । वि वैत्र 'कीसा' । चौत्रना!-ए॰ कि थमछे मुँद कगस्तर दुव दीना चसमा । चारिति • – सी भोगते की किया। चौका-नि मारिस देवेल स्था सराः बहुरः दीसी **पार्याता । प्र भागः, नैगन भारिका मरता ।** भीमाई-सी भागापशः चुप्रनेश्चे किना। बोगइ-इ दे 'मुपद'। चोगर-पु उस्सुडी-सी व्हॅर्पीनाष्टा बीहा। योगा-५ नुगाः विदिवीका बारा । चोग़ा-पु (पा॰) संश बीका बाला अँगरमा विस्तवा मागा गुला होना है 'नाउन'। चीच-प्र [सं] छाङ; साना आस्यितः कनना वह संश भी साने बीम्ब म द्वी। तेमप्रतः हालपनः केना ह चौरा%-५ [मं•] बस्हत_ः राष्ठ । चोचमा-पु भग्ररा दादमान (- (मे)बाहा-वि मधरेराजा -बाब्री-स्मे चोचना करना महारेशामी। चोज-पु चमस्द्रारपूर्वे शक्ति व्यंग्वभए हेंनी।

चीड-सी॰ बाबात प्रदास बास पाना दिस पाना बाह मना क्टेश व्यवशः संतापः व्यंत्यः, इटाशः हार्थः पर्देषानेके किए चले हुई पान !-चपेर-ता पार के। सु॰ ∽उमरशा−चोट सामे हर संग्रह्म ट्रेड नवने स्ट्रीन फिर सूत्र भागाः वर्षे करमा । -- करमा-वतः इताः करमाः (दिन्य अंतुका) कारना इंसना । –सामा-पार्य दोनाः आपत्त सहसा। न्यर चोट पदना-साधेत धरमा बैठमा। बानिकर बानि बाना ! -(ई)कामा-रा भारतियोका एक बृष्टरेपर (सभ्य वा शराने) बार बरबा। चौटमा-पोटमा*—सं द्वि भयाना, दुमहाना । चोरहा-दि॰ विसन्त नोरका विद्व शो चोडा-प रावडे कथर हड भादेवाला सीता बनी। चोटार्--वि चीर करनेरालाः चीः सामा द्वारा । चोरास्मार-म कि॰ चोर बरमा ! चीरिका-भी रिं] सादा करेंगा। चोडियार्ग-मी॰ चीरी बासीको सर । प्र पाउराना पत्रमेशका छात्र । चोटियामार्गे~सः दि॰ योग पर्देशमाः भागे समना वारी गुवमा । चोडी-नी [र्स•] कहवा समा भारिः [रि] (रिट्र^{के}रे) क्षितके बीजोबीच क्रोड़ हुई हुए करे बाक (एउ) ^{क्}रो सिरके ग्रेंब हुए और प्रोडको बीर वा अगल गान ठरहरे बाके बाका वह रंगीय टीरा यो बीग्री ग्रीमतेने बाम मह हैं। विदेशों के सिरपटकी कमगी। एक गहना में वा नौषकर बहना बाता है। दहारदा छन्छे सेवासम्परिता (का॰) प्रत्यवंद्य सीमा । –दार-वि वीधेतामा -बासा-वि विस्ति बोर्स हो। पु॰ ब्रावेगा हा च्छावर-वसमें दोनाः गुलाम वनवा ।-कतामान्तरी करना अपीन करना । -करना-तिरके वाह निहरत र्गुबना । -का-श्रीवत दरवेका, स्वीत्त्र । -इरम -हायमें हाला-दरावमें दोता कार्मे दोता। चोटी-पोटी#-वि क्यिती-चर्चा वनावये (बात)। चोद्या-दश्योर । चोड-मु (तु०) दूपहा, क्यरना हरतीः येण देश। **चीरक-न्द्र** [मं] कुरनाः भेनिया ! चोदा-सो [सं] पहा गेरप्रतुनी। **चोडी−**न्ही [बं] साडी वरती ! আৰু ১০-ৰ লাৰ গমণ। कोय-पुरे नाव'। चोद-वि [सं•] ग्रेरड । यु: पा<u>त्र</u>ड सांग्रे । चान्छ-पु॰ [लं॰] कर्गमें शहरा करतेशता (विधान) विक प्रेर्ट । चार्कड्-च अल्पिक मंधाय करनेशाना । चीवृत्र-तु [लंक] बेरणाः प्रवर्तना शिवः वदनाना । चोब्ना-स क्रि॰ मेंथ्य करना संबोध वरना। 🗷 [र्शः] प्रेरमाः प्रवर्गनः दिवि द्यानारेशः। श्रीवर्षया-दि संभैतः इरनेशामः। कोहाई-सी मंभोतरी किया वा मार्च ! चोबास-ना संजोन**ः**। प्रश्त श्रमना । चीवात्मा-वि को संगीमनी प्रवत्न बामनां) व्यवसूत्र हो।

-वडक-प्र- स्रमः स्राप्तः । -देवी -ती महेंद्रवास्पी देशाचा व्य मेर । -धाम(म्)-पु वसमें रेखाओंने बनाया बानेबाखा एक भीऔर। पन सर्वेशोसह-भड़क । -नेवा-या मेना। -वश्च-प वीवर। -पट-प्र नित्र; वह कपड़ा, पमड़ा था सामत विसपर भित्र बनाया वाव भित्रावारः सितेमाको फिरम । ~पटी~सी कोय विषयः -पश्चिका-मी॰ कपिरभवनीः हीवपुष्पे । -पद्यी-न्दी क्लिपली ! -पद्या-न्दी॰ प्रमास तीर्थं के अंतरत यह कोटी नदी । ∽पथा ~सी छवास: मैना: पद संद । --पर्को --स्वी॰ अजीठः बक्तविष्यकीः बणस्फीसा होशपूर्यो । --पाना-सौ भैना । --पिष्यक-प् मोर । -र्थन्त-पुरु वाण । -पुदरी-स्ती श्रेवशा । -पुष्ट-पु गीरवा । -फल-प्र विवत महलीः तरवृष ! -फलक-ए कार दाशीरोस भारिकी परिवा निसंपर नित्र नेनावा काब वा बनाया गया हो। - पत्सा-स्वंश् सिनिनी। श्रंदकारी (गना सक्त्री। महेंद्रवारकी। एक महाकी। —बर्द-त मार्≀–भाम∽पुनर्वासकीः नेरवाशिका बिनकः मदार । -- अपञ्चा-स्थे काक्षेत्रंत्ररिका यह गुरुर । - भोग-प॰ राजभा वह सहावद वा समयपर क्रमेक प्रकारस सहायना कर ! -- श्रीच-प॰ यद साल ! =सद्य-प्र अर्जनकी प्रश्ना चित्रांग्याने पिताः निवानं कुमार । नसक्क-प्रश्र पक तरहका सर्वे । नशति-विश विभिन्न सुविवासा । – सूरा – पु न्योतक हिरल । – मेरास्ट्र पु॰ सबुद् । - शुक्क-पु तक्की छड़ाई । - बीरा-पु॰ न्देकी बदान, जनामको बदा बना देनेको निया। ६४ क्नामॉमेंसे पढ़ा -बोबी(चिन्)-वि अहुगृत (असा-पारण) पीदा। पुनर्मुम : - इथ-पुनर्म, कुवैरका ष्ठा एक गंथर्वः −र्था−को अहामारतमे वर्षित एक नदी ।ं −रद्विस−प ४९ मरनीमेंने एक । −रेका− न्दो+ बाया<u>सरको करवा उवाको एक महेन्द्रो । —हेक्क</u>—य ण्ड वर्ष या मृतंद । --स-निः वित्रद्ववरा । --छसा--स्रो मंत्रीतः। -- निरित्त-दि निवितः गतिक्षीतः सक्तः। ─सिपि ~सी वह लिपि जिसमें कर रोक्स धगढ सोंद्र तिक जित्र काममें काये आ है। — क्षेत्रक — पु विकटार। -सर्गमिका-स्रो तकिया । -स्याप-स्रो विका बामामुरके मंत्रीको कन्या की जगाना यक मती थी। एक मप्पराः वस्तीर वससिदी कृती । लगोशना-व्यी मेना । - वम - प्र पद प्रराधर्याचन वन । - विशिश्न-रंग-विरंगा देल बृटदार । -विद्या-सी वमानेकी रिया भित्रहरू। -पित्र्यास-पु रमाना मा³शम । ∺शाकुल-पु॰ थाना (अं3) । ~शामा~श्री यह भवन में~प आदि जिल्ली बहुत्ती निवास्यास्था । यहाँ विवासकारा सद्देशना विद्या नाथ 'शिनर-गैन्री । यह श्वाम जहाँ निम बनाये जार्थे पट्टी या । मिसिनिनश्रामे भरा मबस मेन्य ।-ब्रिस्टिस-3 वहरची । -सिम्बहा(हिन्)-पु छप्तर्थि । -शिक्षी(चित्रम्)-तु विवद्यत्। -सय-पुण्योतस स्र । -मारा-सा (रि) विशाला । अहम्स-पु महत्वे कार्य के एक विशेष विशेष चित्रद्र-दुः[मं] भोताः, वापः भाता नामका शुक्त ग्र(दरः [30-16

क्रिकाः निवकारः सदका एक हेगः एक विशेष वन् । विकास - स॰ कि विश्व बनामा, बरेबना: रंग भरमा । चित्रप्रद्य∽िक सि ी निजीसे भरा दजा सिपद । विद्यासन-विश् सिंग] विश्व जैसार (कार) रिवर, गतिरहित: चित्रवरी-मी [सं•] गंभार ग्रामध्ये एक स्वक्षमा । चिद्यवदास-प मि रेपाठीन मस्य । विज्ञांग-नि॰ [सं] विसका शरीर निर्धासार हो । प्र यक तरहका शाँप अञ्चल: सिदर हरताल चित्रका विद्यागव-पु॰ (सं॰) हातनुका एक पुत्र, विभिन्नपीर्यका भारेः एक मक्षराज्ञ । चित्रांगडा – स्रो॰ सिंो अर्थन ही पक पत्नो की समिपरके रामाची परी भी । विद्योगी~सी [सं] भग्रेटः कृतवजूरा । चित्रा-न्या [सं] २० मधनोंमेंसे यका वितादशी गावा कक्षणीः सीरा अजीकः वायविर्णनः सुविद्यपन्तीः एक अप्सराः एक रागिगी। एक मुर्च्छना। एक सर्वः श्रमहा । - श्रय-प्रशासिक्यपी। विवास-वि (सं•) <u>सं</u>दर वेजीवाका । चित्राक्षी∽गोः [मं] मैनाः सारिकः । चित्रादीर-प (सं•ी चडमाः वंशकर्णः वसि चनावे हप बढरेकं एकने गीवत सम्बाद । चित्राधार−तु॰ [र्थ] विषयः। विश्व रदानदा स्थान । चिचापप−प (धं•) यक प्रकारका पुत्रा । चित्रायस-प॰ भि व शस्त्रास । चित्रासुध−पु॰ (सं॰) निधित्र करा। नि॰ विकिय अस वास्त्र । पिश्राक्रय∽प पि विश्वसंप्रदास्य विषयाका । चित्रायस्-वि॰ [मं॰] मध्यमंदित (रामि) । चित्राद्य−५ [स] सम्प्रात् । चितिक∽पु• [मं] चैनका मदीना । चिक्रिकी-स्रो [मं] बामशासमें मान इय रिस्वीके पश्चिमी भारि चार भवीमेंश एक (बह समानियुग भीत बनाव सियारकी शीकीम क्षानी हो। चित्रित्त-विश्मि] विसदा निष्यां गांवा हो। छोडा क्षमाः दिवयुक्तः निगप्तरतः। बिसी(मिन)-वि [र्थ] निवनुका निगद्दरा। प्रशन काने वासीवासा । चित्रीकरण−५ [छं॰] विनिध चर्गोध रंगनाः निवित करमाः समानाः भारवर्षे । चित्रीकार~प॰ सिंो दे॰ 'निर्पारणः । चित्रश्र∽पु [न•] ५५मा (निचा बध्रवके पनि) । **विद्योत्ति**-न्दी॰ [मे॰] शदभुत या. व्यक्तारावाणी भावर पे थाचनः भार-पंत्रसदः बहानी । षिधात्तर−९ [मं•] एक शप्रानंशर विमुधे प्रस्तदे शक्ती में भी उनका वन्तर क्षेत्रा है। चिम्य-दि [गंग] पुत्रव र विषया-प्रयानप्रशामान्या गुरुष स्पर्ध प्रजा। म॰ -(इ)पियह ही जाना-इरी तरह कर जाता विवर्धे उर वाना । -समाना-गरीबीढे बाह्य कर

प्रामनका साध-इयो म ध्रुटरेनाका साथ । शोस्त्रा=-प॰ दें॰ 'श्रोक्षा ।

चोवा-पु॰ दे॰ 'बोआ' ।

चोप-पु॰ [सं॰] बोषणा एक रोग विसमें रोगाकी बगकर्म बद्दत देव जरून होती है; सूनना ।

घोपक∽पु• [मं•] खसनेवाका ।

चोपण~पु• [ध•] गुसना ।

चोपमा•~स कि• है॰ **बोब**ना ।

चारव-नि [सं॰] भूमने नाम्य ! पु नुसम्बर सानी वारेवाडी भीत्र।

चौस्क-त• सि] पद्यत मन्ति याता ।

चिकि−की पश्चिकाभागा

चौँकता-अ क्रि अय निश्मन या पीइन्हो अयामक अनुमृतिष्ठे पंपक ही बाना हिन्छ, क्षीप बहनाः सीतेसे वरायक बाग करना कीवता शानाः शिक्षका धाकाराः

पक्ति होसा । चींकाना-स कि बूसरेके शक्केका कारण क्षेता ! चॅटिमा ?- स कि पुन्हों से तोश्रमा (कुल बादि)- मनु

सुरि गो कीरमु क्यत, ची दत केंचे कुल'-वि । चीँटकी-को सफर देवको।

चिंदेल-पुनइ दोला निसपर पर्श पण हो।

ਅੰਗਿਜ਼−ਜਿ.ਤ ਵੇ 'ਕੀਗੋਦ'। चींतीस-दिदीम और बार । उ तीग और चारधी मुंख्या, १४ ।

चींच-को क्यापीय।

चौँघना∽म• कि॰ (शिक्तीका) चमक्रना, क्रांचना : **ची धियान:-व० ६० क्यावीप होता** ।

র্ঘারী#ল্মাণ স্বয়র্ঘার ।

चौँय-स्त्री रच्छा-'क्षीर सीव। वया करे जानस्त्री कर को व'-सारी।

पॅरि-प्र भॅनर: शास्त्ररः प्रेननाः गदमीनको बह । ∽शाय सरा गाय । मु**॰ -वलना -हरना-**शिरपर भैवर शका शाला ।

चीरा-पु॰ अस रखनेदा गर्डाः सफेर वृष्टवासा वैत्र । चौरामा॰-च फि॰ पैस्ट द्रकानाः नहारेना ।

चीरी-मी॰ पीएको पेंडके शकीका ग्रंपछ। जिसस प्रप सरार मस्स्रियाँ उद्दोनेका काम नेता है। बीटी बॉबर्नेस्टी

शेरीः शक्रेर पंचनाला गाय । चॅसिट-वि॰ साट और बार । दु भीगडकी संग्या ९४ । ची-४ माडी भादि श्रीन्मीना गर । वि भार (देशक समास्य स्थापका । - बाई -बाई -बाई -बाई -बाई -बाई रिटार्जीने बची इस और कभी क्षम दिसान बढ़नेवाणी

इवार अफराइ १ - इस्त-गी दे 'पीसर । -- इस्त-पु दे भीरारा । —कद्र−वि वदिवा र -कदा--पु को हो। स्रोतिकीबाटी बागी। वैटाईची एक रोहि जिनमें वर्गान्द्रे मान्द्रिको चनुर्वाह भिन्नतः है। -कवी-नी पार भौतीका सन्दर्भ बार भारतियोगी मेटनीर बार पीडी-

की याही। कीशाबीकी वह दीर या छलाँव किएमें वारी पॅरि एद शाव केंद्रे कार्यः दिश्य जानियी क्लीन (यरमा)। भार तुर्गाहा लग्नदः चारकाची वह बुनावर जिसमें सुर्वनी | या वानकी वार्र पार वहिंबीयकसम हो। (मुर --स्मन जाना-अब्दक्त काम संकरता राह मंग्रेडना बार वाना ।) −कचा−वि॰ वारी और शान रगनेरङ समग सामभाग बोजिमार :-करीश-स्ते रे चिन्ती -क्छ-पु॰ पार मताओंडा समूह । -कम-ति॰ नीवजा सावधानः और, दुराउ । [-इसई -इसी-सी॰ भाववामीः निगरानी ।] -काम-रि है।

'वीकीना'। -कोमा-२० योग्नर प्रमुखी । ~कोर~नि वाक्षेता चौर्यंटा। न्यंड~रि॰ पर र्यार्थेशाला (मकान) आमंत्रिका । - १९४-सी एडाँग चौकोर कॉया निमर्गे क्रियारके परने बने बल के देहरी। (स॰ - न महिमा-(हिमीडेयर) यूने न

बाना ।)-सटा-पु॰ कड़रीका बॉन्स जिसमें स्मरोर श मार्थना बहा बाबः भीराट ।−सबा−दि० चार संर्व रण (मदान)। -नामिश्-नो चार प्रदारती सहि घेरा पित्रम, कप्मण और एड्रिज-ये भार प्रकार दे और। -सॅंट-प्र**वारी रिशा**लें । ध॰ पारी जोर । -सँदा ्षीयोना भौगोरः। –ग्रहा-प 🖰 धराः। सरगाछ । -गङ्गा-छ भार मीर्जेका समृहा वह लान बढ़ों चार गॉबॉक्से सीमार्थ वा चार धरने हिन्दे हैं।

~गड़ी नवी जानवर फॅमानेके किए बमाबा हुना व^{रू}पी पद्भिष्योद्धाः श्रीषाः । −तिष्ट्री−अ॰ वारी और । ~पुद्रा• विव दे 'बीग्रता । ~गुना-वि किनी बन्तुम पर गुना सार बार इसके बरानर, न्युपुन । -गुन्-नी के 'बीग्रना । -बोका-वि बार परीवल्या। इं॰ एउ छरका । -गोक्षिया-स्त्री चार पानीशी कॅनी हरेगर तिपारं विसपर चरकर केंग्रे स्थानीचे मनारं पड़ेरी मादि की जाती का गाँउकी तीनिगोक्त भितिया गेंडमेंके पोरा ६ -- सोद्या-- वि चार कोगॉबाबा चतुःकीप [‡] ड बीम्ँदी किलो वा धरम ! -- गासिबा-दि बीन्देशः ररो॰ पार विकार उपयोक्त क्यों की देरी । अ विश

पीड़ा । **– पड़ा – ५** पार शनीनामा हिमा जिने शां रमावयी सारि रगो है। मसामा रमनेया वर गालेंका परवनः निद्येका बना निश्ना जिसने ^{वर्ष} हुसरीमें खुदी चार हुस्सियों होती है। यार दीहे वास्पी सीबी। यक बाबा भीशेल । -पदिशा-रि॰ वर थविगीया । स्ती अस्य भागेत्वा केवी निवर्त पीतीरिया। --अहर्स-१ अन्ति बाधीके निष् ग्रीवा साराज

क्षा-बार पहीदा कामनवाक सुटुर्न । -धर -शि सार् (बाल) । -धरा-त वीतलको बीवरा है। क्वीनर्ग । -शाकीव-न्याः जार घेरशंको गारी भारते । -सुनी-न्यो चतुर्वुगी ।—श्रीत्रः—शास्त्रः—तु *ए३ वाता* भाषा। -सम्मी-वि बार तथ मिमारर वेश दूथा (रेरा)।

-समियाँ=-गाँ दे नीत्रवा । अधिवा पाना स्नामी-र्गा वर्षीकी दीवीशी होती। - तरका-भव मनी भी धीविरे । -सराक-त यार हारीवाया हर राजा है क्रम्मे । -सहा-वि चार नहीं राजा (-सरी-रो[.] रव

क्षारियात्राह समझ भी पार तह बरके रिटामा अपने हैं च्याम-तुः सर्वका ६६ वामा होतीये गारा रापेर^{दा} क्ष गीत !-शान्य:-(१ जिलमें बार शांव हो :-तुहान स॰ बहत दिसा, बहत दिसीतक, सता । प्राचीन मात्रामी-का गर्प जिसका पहला वर्ज रूप हो। -क्लोबिल-विक क्रिसरी चार कामना बहत दिनोंसे हवी हो । -कार--सारिक-कारी(रिम)-दि॰ काममें देर एगानेवाका होधमत्री । -कास-प॰ दोधकाछ । अ॰ वहत रिनीसेः बद्दत दिनीतक !-कासार्जिस-वि वदत दिनीमें कमाबा वदौरा हुभा । -क्यसिक :-कासीन-विश् वहतं दिसकाः परामाः योष (रोग)। -कमार-वि॰ मात्रीवन काँरा रक्षत्रवाहा । लि। 'चिरकमारी' ।) -क्रिय-वि वीध-रात्रो । --सीयक-दि० विराजीती । प० चीनक सामका वेड । -श्रीवी(विन)-वि बहुत विन बीनेवाला, विस्ति मान संराही। समर । य दिल्य कीना इनमान सक. देव प्रापि आदि: बोवक पस्त मेमर । - लिक-प् विवा-वता !-तयार रेपा-तो पर्वत आदियो वह केनारे जहाँ शाफ कमी राष्ट्री सही। रती नाहन । - सबीन-दिः बिरमतन' । -निवा-गी॰ महामित्रा कुला: -मतन-वि जो सरा नवा बना रहे। -परिचित-वि विमे बटत तिजॉमे जातने-पहणानते हों। -पाकी (किस) - वि टेरमें परनेवाला । प॰ कैव । - पण्य -प भीनमिरी । ~योचित ~ि जिसका बहुत हिसीतक पारक, पोक्य दिवा तथा हो। विरद्धांद्यतः। -प्रचस्तितः-दि जो बदस दिसीन चना का रहा हो पराना। -जिसकी बहत दिसीमें बाल सगी ही. ਪੂਰੀਜ਼ਿਲ-ਭਿ मनीका की जा रही हो। -प्रकृत-वि वटत दिनीतक वा बरायर टिक्नेवाका । -प्रसिक्त-विश्व वे बहुत दिलीश मिलद्वे हो। -प्रसत्ता-ग्री वह गाव जिसे वद्या तिवे बहुत दिन हैं। नवे हैं।। -बिट्य-म ब्रांग ब्रह्म। -सिद्ध ─ि वृद्ध दिनों स भित्र पुराना बीरत ।—सेडी(डिल) -प (रेरवड पेशाद हरनेवाका) गया । -होशी(शिय) -विश् भी बद्दत दिनांभी बीमार हो। भी सना हीगी वह । [सी: चिररीविणी ।] - ज्ञाद्य-वि श्री बहत दिशोंकी ोष्टा बहुन दिनोत्द आसः समाने रहने**दं** बाद मिला हो । -वियोगः-पिरह्न-इ विस्थान्त्र्यापी विशेश संशी मुरारं। -विम्युत-दि श्री बहुत दिमीन धन गया हो षा मुक्ता दिवा गया हो। - भीमें - प्रारूप रख्य परंटा - है। - इ. प्रशामी भग्नावत विरश्चन्ता । -शाम - वि प्रशामा पुरमन बिसके मात्र शता दिनीका या सप्तापा के हो। "राप्रता"मी प्रस्ती मानत । -सन्ति-मी शैप-कामम्बारी शांति। स्थानी शांति-मुक्ति। -संगी(शिस) वि मराका मानो अभनेको । (और विस्तरिनी ही -मृता:-मृतिका-स्त्री है॰ निरप्रसूत। । -सेवक-इ. प्राना नीक्र । -क्ष-वि विस्त्रवाची । -क्याची-(विम्)-वि बटुन निनिष्क बना रहनवाला, टिकाफा -रमरबीय-वि वर्त हिनीनड वा॰ इसने नावड । विरद्धी-मी निदिवा

चिरकेक्षीय-स्था निमो न क्रियो रीमका व्यवसायना रवनाः - रगरा।

पिरकता-भ ति कोहाश कामाना करनाः वर्रे बार् भोता-बोहा कामाना करमाः ।

विश्वीत-वि [का] मेला शंदाहमध्ये दिवस हुआ ।

प॰ बीडासा रसके एक सर्व कविका उपनाम । श्चित्रकार-प॰ बहत फटा हजा कपडा विश्वता ! चिरवार-व कि हर होता, विश्विशना चित्रक्तिश-ए० विश्वका । विश्वविद्या । प विश्वविद्या । प विश्ववा । विरय-दि॰ सि] प्रराना । चिरमा-म क्रि॰ पूरनाः सीधा कर काना । प॰ भीरनेका भी गार र बिरयश्री-वि॰ ट्रहरा-ट्रहरा । बिरमः विरमिः विरमिशी -सी प्रथा। विरक्ष-प एक पीधा विससे रंग निकलता है। चिरवाई--सी विरवानेदा काम या बतरहा पानी वरसने के भवाकी पश्ची कोताई। चिरवासा-स कि चीरनेसा सम स्टाना । बिराइँटा - प्र विशीमार । चिराँडा-सी चमडे शांस चरनी भारिके बहतेमें निक नेवासी बुगवा (छा) वश्रमामी । वि विक्रनिया । चिराहमा-प है 'पिराबता । चिरावनां -चौ+ है विराँश । बिशाई-सी चीरनेकी किया: चीरनेकी मण्डरी । चिराक+-त•, स्त्री है 'बिराय'-'बेती और राजनिके राजनिमें संपति है। तेती रीज राजके निराई जोति बायनी -क्षतित । चिरामा-प फा•ी दिवा, शेपठ संप (का•) बेटा । -बाबे-श दिवा बनतेके समय अवेरा होतेगर। -हाश-प दीवरः दीवाबार (← (रो)सहरीः-सयह-य (भोरदा शिवा) बहाता हजा दिवा। वह क्रिसके मरमैके दिस बरीर हो कुछ दिनोंका मेहमान। स - उक्र करना - विराग ब्रह्मामा । -का इसमार-विरागन कुन शहना। ~गुक्त करना-दिया <u>अज्ञानाः । ~गुक्तः पगदी गायम</u>-नियम्ब शर्पने ही शासका गायन कर दिवा जाना । —गुस्स होना-रिया बन्नमा । -र्टहा करना-दिया बन्नाना । -तम्बे धेंचेरा-रक्षतान्ये सामने भोरी। शानी चंद्रित इ वरमें वीर मर्गनादा वा अशासीय मायान हाता। 🗝 विष्यामा - रारवेभे वा सामने रोजनी करमा । -पा श्रीका -भोरेका अरूप दीना। -यदामा-रिवा तपामा। -वत्ती करना-दिवा कराना, धेर भारि क्षेत्र करना । -वसीका वक्स-दिया बसानदा वस्त, झरपरा ।-क्रेक्ट हुँ इना-बद्दत शोधियने हेंदना, तना उद्दरना। सम विराश जमता है-एकड गुण आरिम इसरको साब १५ नता है। -स कुल झहना-बनती हुई बतीस अपहे rieni i

चित्रासी-सी दिवानसीत्। सर्ने: ममारपर सी जानेसामी

मेंट कें। प्राप्त किशाब्दे भी नं एक दी जाती है। दिशी

मधारपर दियान्त्रसी करनेक्षा सन्तः नण्डे भर रपर दिवा

विश्वविद्यान्यी [र्जन] सम्देश गण्डन्तमाः निरायकाः ।

विशाय-म [मं] गरवा वसामध्ये मानिया पद्म पूर्ता ।

प्रदानेगान्यी निवा जानसाना पता ।

चिरात्रप्र - नि॰ प्रामा प्रजापुराना ।

विरातिषट-५०३ 'निशीन्द्र ।

रोटी बैठनंडा चटठा; बार बीबींका समूदा बागंके बार बौर्वीको पंक्ति हिन्के छाना पक्षमें वा छानेका साथा-रणक मेरीसे विरा हुआ, चीकोट रवाना मिट्टी वा बीक्ट का सेवा भादे जारिको छन्दोरींन वना हुआ चौकीर नित्रः भीकोर रट. सीसपुरू हाशका वह पश्चा विसपर थार मृटिवाँ हों। चार सीगोंवाका यक अंगकी वक्षरा। फर्रापर विज्ञानेके काम व्यानेपाला एक तरहका कपका ।-वरसण-पु रसीरेमें सीमा कगानेका और बरतन आँकनेका काम (करन), होना) । सुरु -खनामा-विशी स्थानको गोक्र या मिट्टीसे कीयनाः श्रीपर, सत्यामास करना । चीकिया सहागा-प्र- भीकीर इक्कीमें बढा हवा प्रशास

जो दबादे रूपमें सादा बाता है। चीकी-ना॰ सक्ता या प्रश्रदक्ष बार पार्वीवाला, चीकोर भारत छोटा तस्यः भार वृटिबीबाका ताञ्चका पत्ता बह स्वाम वहाँ पुक्सि वा सेनार बोबेस सिपारी रहा मिगः रानी आदिने सिर रखे आवें; बुंधी वसून करनवानीके रक्षतेका स्थानः पहरा (विठाना बेंडेना), रदाबाकीः प्रकार, िकातः सन्तमे पहनतेकी चीकीर परदेश चक्का। संदिएसें मंद्रपढे संगेंके शेषका स्थान। किसी देश देशताको पहायी भानेवासी मेंटा जाबुः तकके कोल्बुमें समनेवासी यक रुपति । - वार-प्रश्न पहरा दैनेवाकाः वॉवर्ने पहरा देनेके क्षिप मिनुष्य पुक्ति समेंबारी थोहरत । [-दारी-स्वी भीकादारका काम। शखकाकोः भीकादार रखनेके किए किया जानेवाना कर ।] शुरु -भरवा-पहरेकी क्यूरी पुरी करना। किसी **देशे-दे**वता पीर-पैनंशर आदिकी में*ट*-पुनाको मनौतो पूर्ध करमा ।

ष्टीक्ष-वि॰ (सं॰) हार. साला मनोद्या रक्षः धारम । चीगान-पु॰ [का] गेर-क्लेका रोड ओ वेलीमे मिलवा-ज्ञान है। जीगान सेसनेका बहा की मागेकी भीर कुछ द्वाद्वा द्वमा द्वाता है। नगाशा प्रवानेकी सकती। 🤏 चीपान क्षेत्रमेद्धा मैदान । –शाह्य-पु वीनान क्षेत्रनेका मैदान । —बाळ~प चीवान ऐकनेकाका । चीगानी-भी॰ इनोश्री निगन्धी ।

श्रीबद्द−पु दे॰ वीमर *।*

चीचैंद्र•-पु करमामी अक्तरश्रागता-क्सार-⁴वनि वनि वानमंत्रीर वहन चौपंद सवावन -श्लाकर !

पीर्पेन्हाई-विका को बूखरेंकी निहा, बरनामी करती fet i

चीम-प दे 'बीव ।

चीड-दि [मंग] सम्मोतारा भृशन्तंत्पी । दु भृष्टादर्भ । --कर्म(म्)-५ भूगसर्ग संस्त्र।

थीबा-वि होबार्ड दोनी छोरीके क्षेप विरमूत, अप्रका करामा। (स्ता - बीर्श ।)-ई-मी० भीरापन लनातहे बीजी छोरीके बीयका निरतार, बाट ! - बाहत्त्व-वि पैता हमा दिस्तृत । प्र अनाम स्मनेदा यहण।

चीबाम-स्री दे भागां।

भीकामा। —स कि भीका करना **।** चीतरा –पु - पर्नरा– अर्थ श्रुवाप के चीतरा करर |

कारी मई शुग्र सीरम सामी'-रपनाव ।

चीय-भी कादो कादी दिनि, बतुनी। धीनारी। राजस

का चतुर्भाग जो मराठे हुमरे राज्योंसे करके करने दिया करतं थे। कवि भौता। -पनक-तुकदेक पीवास्त्र। -का चाँव-माइ-सुद्धा चनुशीका चंद्रमा बिसडे हेरादेने सुडा कर्लंड कमना माना बाहा है।

चीवा~वि॰ जो क्रममें तीनके बाद, बादके शानक हो। यु दावकर्म करनेवाले वा सून व्यक्तिया विशवादी क्या कपहे भादि देनेकी १२म ! -पश-तुर तहारा जीवनसे चौथी अवस्था ।

चीवाई—त्या॰ जीवा जान, चनुर्वास ।

चौथि=-स्था॰ दे॰ ⁽धीय । चीकिया-पर भीभ दिन भानेताका परश वह शो धीवरै

का इक्टार हो; जनावदी रह मार । चीब्री−वि स्था है 'बीबा'। ठी दिशाहड चीदेति वृत्त्वे न्युरिवृत्तके वंगन स्त्रोधनेको । रातिः विवाहके धीवे पि (बा कुछ क्षक्रिक दिल बाद भी) कन्याचे पर्ने विस्तरी कवड आदि अत्र कानेको रहमा वेदाँको यह रोति विक्री बर्मादार भीशाई और असामी तीन-पाबाई दमन हैन है। सुरु -होसमा-स्थाहकै बीने दिम दुरहेनुनिका यक कुमरपर वा कुक्दे और क्सके छोडे मारबेका उन्नण आबर शाकियाँ भाविषर मने जाति बेंबला । -हरना-

दरहे-दकदिनके कंपन सुसना। चीबराई −नी शावरीया पर वा दाम। चीधरात-सा ६ 'मोपराना'।

चीधराना-तः वीचराईः वीवरासः हरसार ! चीवराजी-स्री श्रीवरादी पत्री । चीवरी—व रिही बाति वा समाजका ह(चवा) ^{सरहार}

बाटी कुर्मिनी भारिको भरती । चीप-पुरे भाग'।

चीपस∽तः वह एचर जिसमें सन्धे कोमपर कुमहारका ^{बाज} रिका रहना है ।

चीपत्रमा, चीपरतमा-स॰ कि वह क्रमामा। भीवया−प्र दे बददयाः।

चीबा-तु दै 'चीर । चौबाइन-सा भीरमं सा । भीवे-पु॰ माहायोधी रह वरमर्थन प्रपूर्वेशी ।

थीसव∽पु॰ धारा, यस्ता दाँठ का भारास्थ कुनस्टे≓ काम करता है।

वीर-व [लं] धारा वद प्राचीय गरे । -वर्म(त) प्रभोगी ।

चीरट चौरश-पु रे 'नोका'। चौरमाना!-॥ कि चीरएकामा।

चीता-त अनुनराः भीवाना वह प्रदूषरा या देशे दिमार कियो देवी, मनी या मन आदिश्व स्थापना कुर्व बीएनेईस्स्व

क्षेत्र दृष्टरासा रेल । चीराईं!-व्या मात्रके निर्मत्रणता एक शीत जिल्हा 📑 स्थात जानेवाके कर्डवढ द्वारवर इनगाये देव भावत राग

भाषा है। है - जीशाई : एक विशिष्टा ! र्षातमचे चीरामय~रि मध्य भीर पार 1 प्र कारानी

श्रीतंत्रमा ४ ।

कीराष्ट्रक-<u>व</u>्षः [६] यक्त होनद् दशः।

चिद्व-पु• [सं] रुस्ण, पदवान, भिद्यान छाप (प*विद्व)। सक्षार' पर सादिकी सूचक वस्तुः व्यवाः कक्षाः निद्धानी बारगार ! -कारी(रिन्)-वि निदास बनानवाकाः धान, बराम करमेनालाः तन करानंताला मयानका -धर-दि+ चिद्ध भारच दरनेदाका । ~धारियी-सी इदामा लता ।

बिद्धित-दि० [सं०] निष्ठतुष्ठ, विस्तुपर विद्य, निस्ताम दो **बंक्टितः रु**क्षितः।

भी-ना छोडी निवियों या चिवियोंके वसीकी नारीक भावातः [पा•] शिकन शुरी वतः।-चपवः -चप्पवः-रवी कार्य या शब्द इतरा विरोधका प्रदर्शन ।-ची-सी यी-वीदी भाषात्रा यी-वी करताः छोटी विहित्रों वा बिश्विक वर्षोकः वारोक सावायमे बीकना । हा 🗢 कोब्दला-बार मान मेना असमर्थता खोकार कर बना । चीरवार-पुदेश पीरा ।

चीटा~ए निर्देशिक्षे मिसता-अन्यता पर् बन्तमे वहे आसार का कीश चिउँदा !

चींटी नभी यह छीटा कोड़ा की मीटेकी शंबरी कपके पार पर्नेश काला है। विशेक्तिका ।

चीतना - च कि शिवित करना लिखना ।

र्षीयया~स कि• दे• दौबना ।

चीवाँ-पु॰ दे शिंभी ।

चीक−सी दे• चील ; स्रोपकां पुक्ताई। चीकर-५० तकका मेल क्लिप्ट- कसार विद्याः † यक तरहदा रेडमी क्यकाः माने का मांत्रीको धारोमें कानकी विवे जानेवारे इपरे-पहले आदि । वि० मिसपर भिक्रमार्थ

कै साथ मेल यमा दो पहन मेला।

चौक्रमा−म कि भौछना~'श्रीक चाठि थौकि सरि रोव नाहि सार्वर्य −रामरसायम । ● विकास । चीख-मी जिलानेको भाराज निलाहर। --प्रकार--ररी • शीर गुष्कः शीर समाद्धरं की जानेवाली कार्रवाद । म - मारना-शिलाताः वारने कराहना ।

चीरामा~स नि॰ स्वाट जाननके किय निशी चीवकी षोडी माणामें गाना।

चीलमा-म॰ हि॰ विद्याना और मपामा। चीगर चीगाव∗~पु ब्£गुः।

चीगर-त निवरी।

चीत-स्री [का] बस्तु कार्य ही बहुमूस्य अनुटी परदा मदरशाव बाह्य बाह्य कामा शाबित्व का कनाही षरतु (गीत रपना १)। - घारतु-सी श्वासाता ग्रहना 4471

चीइ०~गी० मेल ।

चीटा॰-इ दे निहा।

चीरार्ग-स्ते हे भिन्द्री ।

चीष-पु एक बुंदर शनाब्दार पेड आ लंबक्रम माना चात्रा दे भार जिसमा तमा बहुत लेवा श्रीता और अवसी महरू मादि बनानेके काम आती दे। एक तरहका देशी रोहा।

भी-म दे दीहा

चीत्र-पुरे प्रशासिका सम्बन

चीतकार*~पु दे चीतकार ; दे 'चित्रकार'। चीतना*-स कि॰ सीवना चेत करमाः भावनाः याद करमाः चित्र बनानाः ।

चीतर†–५० दे॰ 'बीतरु' ।

चीतस-पु॰ दिरनका पद भेद निसन्धे खारूपर सपेद विशिवाँदीती है, विश्वसूपः विश्वीदार सबपरः एक सिद्धा । चीता~प्र• वक तरहका नाम जिलको सासपर संनी मासी-पीली भारियाँ होती हैं (बह बहत तेजीसे शपरकर दिरनी-को पहन नवा द)। एक ध्रुप मिसको छास भीर जद दवाके काम आती है। क थिए। के की विता- मंदीदरी हदक करि भीता ∽रामा०३ के कि जाहा हुआ। ३ चीत्कार-पु• [म•] चीग पिलाइटा घीर वियाह ।

चीयदा−पु०दे विश्वका ।

वीयमा-म॰ कि॰ काइना वासी वासी करता: दाँठाँसे फाइना छत्त विश्वत कर देना (दिख मंत्रका)।

षीधरा*-पुदे विषया ।

बीदा-दि [पा॰] भूना हुमा; धण्टा बदिया । -धीदा-वि॰ यूने इए (व्यक्ति, वरत्) अवदे-अवदे ।

चील−प (सं•ी दक्षिण-पर्व पर्रस्वाका एक शस्त्र सका• हेश: एस देशका निकासी चीली। एक तरहका हिरला बीनका बना रेशमी अपनाः एक तरहका सार्वे भेमाः शोगाः प्राकाः स्त । -कर्पूर-पुर मीना कपूर । -ज-वि चीनमें सर्वच । प्र चीनमे भानेबास कीसार । -पिष्ट-पु॰ सिद्दर सीसा । -वंग-पु सीमा ।-बास (म)-प भीनमें नमनं या भीशमें मानेवाला रेलमों कपशा रेघमी कपशा ! - की वीवार-वचरी आनियों इ बाक्रमणसे अपनके किए बसवादी हुई लगभग १५ सी मीज होनी बीनार भी सप्ताहपदीमें गिनी जाती है।

चीनक∽ष (सं } योगो कपुरा चेनाः संगती । वीममार-सर किर नीम्हना पहचानमा । **चीमांज्य-**प् [सं] योनमें बनन या धोनमे भानेवाला

रेदामी कपड़ाः रेदामी कपड़ा । क्षीमा-वि कीम देशका चीनमैं उत्पन्न क्ष्मका ४०

चान देशासा पीमाः । पेमा । चीनाक-पुर्नि] भीनी पर्रा

श्रीनिया=4ि॰ पीनी पीनका । ~बादास~तु॰ मृँगफ्रनी । भीती-मी॰ रंग गमर आदिक रससे बना हुआ सदद

बानेशर भूर्य की गुड़-शोरबी जगह स्त्रमारे लावा जाता है शहर । ति भीन-तंथी। भीनका धीममें संपन्ध बरमस्य। प्र पीन देशवासी ! -ऋबूर-प्र एक तरह का कपुर। -चेपा-प व्यक्त सरहसाबदिवा केमा। -मिहा-मी पदानी हुई सराह मिट्टी जिला बरतन निलीने बादि बनने है। -मार-व एक निरंदा।

चीम्द्रमां−म कि पदमानना।

चीन्द्रा॰-५ विद्या

चीवां-न्या एक का श्वराण प्रमानमे निर्णनकाता विहीसा गे॰ ।

चीपद-तुर्मसस्य धीनतः

चीक-वि [b] सुरव प्रपान । मु सुनिया प्रातिका क्षे⁵का नेता एरदासः समा। **-परिस्त-**प प्रयास

र्धदो~'छंन्म्'का समासगढ कव ! ~श~पु» सामगावक । -दोप-प्•र्डश्में कर्र, मात्राके वश्चह आने, वति शाहि के स्वर-चवर हो जानेका धीव-अधिकाश्चर, न्ववाहर, विर्धन और मात्राव्युतिमेंसे कीर्र एक !-शक्रु-विक वध रूपमें र्ययत, दबोदयद । -श्रीग-प श्रेषमें वर्ग, ग्रापा भाविक निवमका पूर्व पाकन स शोना । छंदोम-५ (छ॰) द्वारहात वागके शंतर्गत एक हरू। छः – वि॰ प्रीय सीर एक । प॰ छन्नी संस्था, ६ । छ−पु• [सं] कारनाः खबः वर् । वि निर्मकः वरिवर । छ−वि पूर्वेम और एक । ए० छन्द्री संस्था, ६ १—कविया-की॰ वह पारको विश्वके दीनेमें छ बहार लगें वह स्परनान भी छ बगद परेंचे और छ भगद कसी भाग। ─क्षवी – स्त्री छन्ना समृद्यु एकविया पालकी। चारपाईकी बद बुलाबर बिसमें सुबलोक छ फरे एक साब जुने आये। एक दरहरू। चीसर विसमें वासेका केवल छका बाँद गढ़ीत दोवा है। वि॰ स भवयर्गवासा। ~कुर~तु॰ फस्टका वह वैंटबारा जिसमें अमीदारको छठा माम मिस्रे ! -पदण −प्रभारुपद्पर भैंगरा। —श्रंता—प्रपक्त वक्रीका स्प्रेग विसन्धे पीउपर छ <u>पुरे शांते हैं । </u>--आशी-न्धे॰ छ माधेका बार । —सासी—सी पुरुषे छ मदीने बाद हीनेवाला शादः । - माही-वि छ महीनेपर होनेवाला (श्लदान बारि) । –प्रुफ्र॰-पु॰ कांचिरेन । **छर्ड-ला** सपरीय । वि श्रय बोनेनामाः छव रोयनाला । छक>—धी नद्याः तृप्तिः काकसा—मिरेशक वे शनमधी

सूनी तोक्षिक काल -वाचा दिवहेशका । छक्दा-तु सामा, केशाही। कि बीधे बीमेगाता । सुक -मदाना-श्वमा देना कि गाष्ट्रीका मीहा हो जाय, बहुव

विषय सामान दे देना । स्रक्षता—व क्रि विषाता, सुप्त दोनाः नरीते वृश वरवस्त दोनाः दरान दोनाः वदस्ता ।

छकाङक-(व नृष्टः परिपूर्वः नधेषे चुर । छकाना---स॰ कि॰ भरदेव दिखाना, गुप्त करनाः शृह नधा दिचाकर वरमस्त कर देनाः देरान करनाः चरस्रहे

्दासमा । स्टब्सिकार्श्—वि स्टब्सा हुआ। मरत ।

एका — चु ज व्यवनीवानी बर्गा एका छम्हा लुपके चार बीनीमेरे एक, रारम्य क्या मिस्पर ए मुक्ति की वरीका वह वस मिसी ए सिरिश की वस बस्के पित प्रमेशे बरनेशाल वीत जुमा होश । -चैजा — चु तीव वेश एक बरहा। सुक -एउपा-हिम्मन बारना बरान की जाना। -चैजा सुक जाना-वर्गय म बरना अप्रकास काम म बरना। -(हे)मुद्दाना-हैएसन परन कर देन। परेणान कर देना।

छग−५ (लं॰) धान वसरा (सी 'व्ली ।)

छराकाश-पुनकरा ।

तमण-पु [तंन] केंग । तमण-पुन तोटे क्योडे किंग व्यारका सन्दर्भ अन्तर्भ व्यारा क्या ! - अमान-पु देतनवीचन क्या क्योडेनोटे क्ये । तमण-पु [त] बक्का का देश कार्त कार्र कार्रक हो, विभाग व्याप करिय जीता क्या ! छगरूक-पु॰ (सं] बदरा । छगरूक्षिका-रगे॰ (मे॰) बृष्ट्रियेच अयांत्री । छगरूक्षियो(सिन्)-पु (से॰) मेरिया । छगरूपि-सो॰ (से॰) बदरी ।

खपुरी-को कालो बेंगको । छक्तिमा छक्तिया-स्थी॰ छोठ मापने वा रसनेस सहसः छोठ ।

क्ष्मीर-पु पहेंची चातिका पद जंतु विश्वासे ने,सर्वे पू सुर्वेचे वासि दरवी हे जीत देवते तोज पंच निकारते ने एक चातिश्वासी (१०१) निपायीज्य स्टाउंदर पत्रका क्षित्वा करवा-पर्वा दरनेगाता चर्चा सुत्र- प्रावस न्यावा क्षाता-सुराका हरना।

स्त्रज्ञाना—मण्डी६० संज्ञमा, श्रीमा देशा प्रदेशा डॉड बड बहुला। स्त्रज्ञा—पुरु सहाह कीवारके बाहर निष्टमा हुना स्राप्त

ख्या — पुण्णा की वार्ष वाहर विकेश हम। सम्य वारका। दीवारके वाहर विकेश हुई धनारकी पट्टी देखाः वृत्ते वयानेके किया आगे विकास हम। साथ। —(अ)-वाह—वि विक्रका दिनारा आगे विकास हो।

स्टब्री-सी॰ सर्वेश्वा वार । वि स्पेस, स्टबर (सन्द -वे)। स्टब्रेड सरबा पुरका-परका (स्टब्रि)। स्टब्डना-म॰ सि॰ तेसेडे साथ प्रस्ते निरम बना वावसे सरक बाला। कापूरे निकम बाला। दूर हुए, स्ट

पदा रहेगा। स्टब्स् — इ. महस्थिन व्यक्तिके भिर हो गेडॉडे नेस्स् मेंक्स्स मनामा हुना नददा।

ण्डकामा —सः किः हारका देकर बंधन ना परनाई प्राने केमा सरकामा।

छरमा-म कि दें धरमा । स्टब्स्ट-वि तब प्रतिक्श चंबक । स्रो छरवामेंस्ट

मिला। छटपद्यका⊷क कि स्वापुत क्षाना तरक्या (निर्णे वस्तुरु विष्र) सात्तर धीला।

ध्यवरी-नो शहुकता चेन्सी एनस्यान्स वर्षः प्रयोक प्रशाक-की शुक्र सेन्सा रोनस्वी माराः। प्रयान्यी विशेषा प्रशासीत्व स्वारं स्वारं प्रयान्यी विशेषा प्रशासीत्व स्वारं स्वारं प्रयान्यी स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं

और पण । -आ-गो॰ विजनी विज्ञानी काम

सुमाधे क्षीति । छरस-दि । छा दुन्ताः चान्त्रहः ।

सदी-गरी है॰ परी । सद-को कम्प्रीस्टी निधि वर्ता ! स्त्रसिक गुटा वर्डी बीनेपाला वक्र तन ।

स्वर्थों−ि दे स्वरा

प्रश्नीं प्रशानिक अध्यक्ष बीकरे बात प्रदेश बाता है। भुक प्रदेश साथि जन्मी बना बातारे कारी के प्रश्नीति की प्रश्नावति का का विशेष प्रशिक्त के प्रश्नी की बाता के कि का कि प्रश्नीति का का प्रभावता का प्रश्नीति कि बीकर के कि कि का कार्य च्यारती को कि की की विश्वीति कार्यका कार्यका कार्यका 885 लुमा-दुदे 'योगा । चुमाई-मी॰ चुनामेका काम चुनानेकी मनदूरी। सुमाना - खी॰ नहरा छोडा। सुमाना-स कि टक्समा; मक्क्रेमें वर्ष यौक्ना। • ध्यपद्रमा । सुभाव-पु भुभानेकी किया या मात्र। चुकदर-पु (का॰) गाजर वा शक्रममध्ये शक्रकका एक मूल जो सुग-भागों के रूपमें खाया भाता है जीर जिसके रसमे चीनी भी बनती है। शुक्र-पु तीवू अंरसमे वनाया हुआ एक खड्डा परार्थः यूप । मुक्कुकाना≃म कि रिसक्त नवर माना परीवना । जुइचुहिया-स्रो एक छोटी विविधा। खुइट०-यु देश सुदरा'। बुक्टा-इ मुरकी मुख्धेगर वर्ता । मुक्टी। नता दे पुरधे । भुक्ता-दि॰ का पुढ़ां दिवा गया हो। अना देवास ! प्रकाती-विसी•दे 'तुद्रमा । **भुकता-भ कि॰ समाप्त होना बाबी न रहना। निवदना** ते होना धरा दशक होनाः + पुरुना साकी जाना।

† वि **ज्यमे**वासा मुस**र**्। पुरुरेंद−प्रदेशसा सांद । शुक्रमामा-स कि मदाक्रामाः दिख्यामा। शुरुष्टं-सी जुरुता होनेका भाग।

भुकामा – स• कि. अदा करना शुक्रमा करनाः निवरामा तै करना। श्रक्ति अनुक्रमा गलतो करना−'तउम पात्र अस समय भुकाश । देख विमारि मातु मम माहा - रामा । चुकिया चिन्नी कुन्दियाः

द्मक्रीता∽पुक्षत्रं साम्य वशक्ष दी जाना ।

Sei-3 3(4) 2468 |

शुकार-५ [मं] गर्नन सिहनार ।

सुक्र-पु [मं] पृद्ध, पृद्धा मामः अमतनेना श्रीती । -क्षरु-पुश्मन्। -बारनुइ-पुश्रमणीनी नामञ साम । - वायक-पु॰ वद तरहकी क्रीकी । पुक्क−पु• [मं] चुका नामका सात् । श्रमा श्रमी-नी [मं] दमनी। असनीनीका साथ ।

नुकारम-१ [सं] पृदा पृदा मामका साम। चुकिश∽मा [मं] मीविश सामः समन्ताः। नुक्रिमा(मन्)-छो॰ [सं] शहापन ।

श्रमा-स्मे [सं] क्या प्रथानम् ।

पुराना!-म कि बतामा गायके पेशानके निए दुवन समय बढ़की दूच दिलामा । पुगर-५० (फा) क्ल्युको एक छोटा किल्मा सूर्य व्यक्ति ।

भुगमा-छ॰ मि िहिसेका धीनमे शुन शुनंबर दाना सना नुगर-५ र 'नुगर । -शीर-१ १ 'गुण्यात ।

-गोरी-मी दे 'नुवस्तात्ते'। Antal-A se dueste 1

श्रुमाना-को परियम को इरे मिरा पुराई । सु०- साला ह -एट एछे मिश बर्ध्य बस्मा ।

खुगा-पु॰ विकियोंक शुगनेके किए बाठी गयी। चीका वह पारा को निविधा भौपसे उठाकर वक्षेके मुँदमें दे। है॰ 'बीया'।

भुगाई-सी॰ भुगनेकी किया या भाषा भुगानेकी किया । शुगामा-स॰ कि विदिवोद्ये दाना श्रिष्ठाना । अशास-पु॰ विकासी गिष्टी का] पीठ पीछे निदा-पुराई करनेशांका भुगुकी सामेशका। मुगर्शिर ! --प्रोर-पु जुगुको खानेगाका पीठ पीछै निदा पुराई करनेवाका,

कुतरा ! ~फ़ोरी~सॉ भुगली पाना ! शुगृही-मी॰ है 'पुगती । मुग्गा-३ दे 'चुगा'। जुनकारमा~स कि॰ दे 'जुनकारना । जुबकारी-को दे जुमकारी। जुन्धमा-भ कि भूना, रिस्ता । पुणि-मी [मं] स्तम। बुब्रमामा-म कि चुपामा। ब्रवह-व॰ [तं] दे॰ 'ब्रवह'। चुच्चमार्ग-अ कि॰ स्टाबर सिक्तमा ।

शुकारमा*-स कि दे जुमकारना । **पुरक्**-पु [न] पाक्कध आदिका यह माय। **ब्रहरू-५०** एड सरहका गर्नाचा ।

शुरक्ता- स कि थानुक मारनाः शुरक्षेते दोहना ।

बुटकला~पु॰ दे॰ 'गुाकुना । **पुरका−५ की** घुरबी चुरबीमर नीय। चुदकी-स्था किया चीत्रको एकइने उठाने मादिक हिए

भेगुढे भीर वर्षनी था बाबको सँवडीको परस्पर सदानाः नीयको वैगनीयर संगुरेको स्वाने भीर छट्यानेसे होनेशानी वानावः भिष्ठकरो दिया बानवाका सुगलभर आहा बाहि मीगर भैगुढे और वर्षमीचे समस्या प्रक्राबर दशामा या मान्युम पद्माना (कारमा)" कपहेमें रंग म पहन इसके लिए बी पदी पाँठ। प्रवस्ताः कागत्र आधिनो पर्य रागनेका भाना, 'हिप: पाँचमे जेगलियों में पहननदा एक गहना। दरीकै तानेका ग्राः -कात्राशे - भ दमभरभ वात्राधे बानमे । - सर-रि॰ चुगक्तमर, थोइासा । सु॰ -वेना-

भुरको बजानाः भीरा देशा १ **- बजाना -** धानदी कॅगलीपर भेगुरेशी दश और छन्दावर मारात्र निद्यालना । – सर्मा -मुन्दी बारनाः पुन्दो तेना। -साँगमा -सेया मानना। --सरामा-पुरकीन परवना मधडनाः कप्रवादा न क्षिमी फेसकर फाइना। (रपधार्थमा मुराने (कर) वैयक्तिवीमे जब पावना । -ममा-रग्री उदाना व्यव्य तामावनी करना। शुटकियोँ सें∽भुष्ये वजान तममर में । 🗝 बजुरना-पानको बाउमें कह टाल्लाह हाप

भुटकुम्ब-पु शारीमी पर मनेप्टस उति हरेना जन्दी गाम धोदाना। सना पर काम बर्टनना जुला। दवा । मु॰ -छाद्रमा-मनी(प्रक्ष पुनुस्त्रपद क्रम बुरमा – द्व विशेषका एक गरमा नहीं। हिर पुर्देश।

समदामा ।

चुरिया-मी॰ भिरदे में भे शेव छात्र सा द्वा करें कर दीश रिया। सु॰ (क्यिकि)-हायम हाना-मन्ने

-प्रम-सी॰ 'यन-एन'की भाषात्र । सन्दर्भ प • एक धण । थ० ब्रामधर । सी० 'स्टर-स्टर'की भाषामः शतकारः भक्कः पुत्ती । --शलक-न्ती॰ वहनी-की शरकार अजया । छनकता-व कि 'छत-छन' बरनाः 'छम-सन' अरहे यह जाना (जबते तमे भादिषर पामीक्षी मूँद्या); शनकार द्यीमाः महस्रताः। छनकामा – सं कि॰ पानीको भी बपर एकक दसका कछ भेश बकानाः गरम किने इप बरतनमें पानी शासनाः छन्छमाना−भ कि 'छन-छन'को बाबाब होताः अन यार द्रीमाः र लगनाः अकन मालम होनाः हरस्याना । स॰ फि॰ इन-छम' घण्ड सत्पन्न करना । छन्त सन्न-प॰ बर्बरत थी-तेश आदिमें किसी गौकी भी बद्धे परनेसं होनेवाडा व्यावात । अरु लहोना-पूरी पश्चमान बनता । श्रममा-भ कि॰ शाना बाना जाननेकी किथा होनाः छोडे-छोडे छिदासे दोषर मिक्कना। क्रिन काला। मादक पदार्थका सेवन किया जाता । प कानतेका सावन सहीत क्षप्रदेश द्रवता जिससे दथ पानी बादि काने कार्ये । हनबाना-स॰ कि छानतेका काय बरागा । रामाका – प्राप्तिकी आवासः समस्तर । छनामा~स कि छनवासाः विकाला (श्रीय द्वराव इं.)। क्षानिक ० - दि० है 'श्राणिक'। श्रा ग्रनासर । व एक श्राण । सम्बन्ध है 'छन' -स्ते । वि [सं] रिपा हुना हका हुआ। सार । -मति-वि वहमति, बहमद । छका-प॰ दे॰ 'छनना' । ° राप-स्ते शानीमें किसी बीक्के बोरसे गिरने वा किसी गारी चीत्र(दीवह, वही ह)के निशी चीत्रकर गिरमेसे हीतियाचा भावात । -शरथ-की 'छप की माधाम गीर बार होला । अर् 'छप छप' भागावके साथ । धपक +-मी दलबार भारिने कानेडी आवात +-धपके--ररीक 'क्रफर-एफ्ड'की बानात । सक 'एक्ड-छाक सी आशासके राज्य । छएकना - अ॰ कि भोड़े पानीमें बाध पैर मारना । क्रपदा-प रिरमें पहरानेका एक गरमा। रारनका रीना यनही राषीः बनगर र्यसानेका बाधः पानीका सीराः पानी-में शाय पेर मारना। वे छपाया । छप्छपाना~⊭ कि पानीपर दान-पैर मारना। ध क्रि पानीपर छड़ी मादि माध्यर क्रम छन की भागान स्रप्रवर-पुत्राचा श्रीहार ! -- हार-वि माश्र करमेवाला ! धपना - मं कि धारा नामा ध्यनेका काम दोना। वैका दप्ता । रापर-- रापर का समायगत रूप । -मार-नार-मी बह परंग निमुपर ममस्यों रुगानेके तिथ क्षेत्र रूप सी ! -चंद-५ १० वापरवंद । -चंदी-की छपर छाने-का काम बा बजरते । चपरचपर+~वि+ हरारोर ।

प्रपरिवा-मी छोरा छपर एउटा ।

सपरीय-सी मोवशे। छपवाना−स विद∙ १० 'तथाना'। सर्पर्वेषा । - ५० सार्वतेकानाः स्वातेकाता । क्यान-सी राशा इस्त्री । -कर-माथ-१० वाया क्षपर । छपार्श्वे नती. छापमेदा बान ना रुएको समस्त । प्रधाका-प= वासीवा विभी चीत्रहे विरमेश्री बाताम पानी वहीं कीपड़ आदिके विसी बीबपर पारेधे व्यवाज । छपाना∸स॰ कि साधनेका काम करानाः प्राथमने (प्रेस)में परतक आहे महित कराना टोका बगहरू • शियाना। ० श्रा कि कनारामा। खपाच=-प॰ क्रिपार, दराव । छप्यल-वि ववास और छ । पर छप्पनको संस्था ५६। सप्पय-ली छ परनीताता १६ मार्थिक धेर । स्वयर-पु॰ दूस, पतार आहिया स्थापना क्षेत्रा । -वेर-पुर प्रमार क्रानेबाका । विश् वी (बाँगर्वे) वस वसा है नावात (वादीका क्लश-'एव्य(वेद असामी) ! -वेरी" की अन्तर आनेका काम मा कमरत । सुर -पर हुम न होमा-बहुत निर्वत होता। -पाइकर देवा-स्मि कुछ सम दिने, बर बैठे हैता । छच~तो है 'वरि ।~तसनी~तो॰ रेस्से द्वार पर^व गांध कीर बश्चरतकारी संबद्धा (छयबा-५० टोबरा हारा। छवि-सी॰ श्रामा, संदरता । ~पर नमार न्यतं नि ध्योक्य-वि शक्तिका संदर, समीना । छम्बीस-वि बीस भीर छ। य छमीसके मंग्बा रहा ध्यमीमी-स्त्री क्योंको शिवतीका मैदार श्री ए^{न्ह्रेस} गाडी था ११० का बोठा है। क्रमेंड-५० [मंग] विजा महिनाहरी वसी जनाव । छम-भी पुषक्त बनने का मेह कामेंग्री आवाप ! दि मीम्ब समर्थ। 13 सामन्ये सकि। न्हमन्त्र⁴ **ईवर वायक आधिको बाएगार होनेशको अपान** भीरका भेद वड़नेकी कालावा ग्रमाग्रम । अत्र ^{क्}रावटर्व ध्ययके साथ । छमक्र−सी॰ दसक, वाल-बात्म्ये नभार^{न्} (निर्देशि[‡] राजकमा - म गश्ने वश्नाता प्रथम आदि वशाहर अवन्य भरना। इसक दिखामा । छमछमामा≃थ मि॰ 'धमधम' छथ कामा मा स्रो राम करते दूर घनना। क्रमसार-सर्केट धना बाला । समयाना समाना - सः दि सना हराना । ग्रमार-ओर दे 'समा १ -पम-तु श्रम बांभ्य तिवा । -पान-विश् सहनदीन, हमा वाने स्था प्रमाई॰-सी प्रमा चम-चम की मानात्र । सं 'दम राष' ध्यास्त्र-मी धण्ये सार । ध्य॰-नुदे धित्र । छयशा[®]-म॰ दि॰ स्थ नाम रोगा। श जना ।

रहता मीनावकतन करना। ~(के)से ~धुपचाप। चुपद्धी-स्वी॰ मीन, चुप्यी ध

भूपदमा-स कि तेक, यो या दूसरी शरक, विकरी थीब सगाना, पीठमा (रोटीमें थी शुपहना)। भाषमधी **करनाः बदनाः छिपाना** ।

सुपदा-पुबद किछनी कोर्जे कीपवंधे मरी हो। वि॰ भूपड़ा या पोता दुभाः विकता भूपड़ा बाद करनेवाका । सुपदी-दि॰ मा॰ तेल, यो पुता दुई (चीन) ! जी भी

पुत्ती हुई रोटी (एक पुत्रश और वी)। मुपरताक-सक ६६० हे 'मुपक्ता'।

युवामा - म॰ कि॰ चुप हो रहना । खुप्पा-वि॰ सुर रहमेराठा जो पतुत कम रोकता हो।

बुषा । [की जुमी'।] चुन्यी-सी मौन सामोधी। मु॰ -साधना-मीन हो

रहना, शुप छगा समा । चुबळानाः चुममाना-स कि निमा चीजका गुँहमें श्यक्त योगरी बाहा दिलाश-तुकाते हुए स्वाद हेना ।

श्रम-पु॰ [सं] भेदरा सुखदा, सुँद । **चुभक्ता-म• क्रि॰ वार-वार गोता खाला, इवना-उत्तराना ।**

शुभक्तना च । कि नार नार गीता देना । प्रमहा-सी॰ गीता, दुबदी ।

चुमन-सी॰ युवनका भावः दर्व करकः। पुसना−त्र॰ कि॰ वैसना नुद्धको चोत्रका मोत्तर पुसनाः

मनमें भैसमा, बस्रमा। सरकाना शास्त्रमा। 🌣 स्टब्स्स,

चुमर-चुमर-पु॰ पर्योद्धे तूथ पीमेश्ची माशाज । म यह भागात्र करत हुए हुन ग्रीमा ।

चुमपान/−त कि॰ जुनाताका मे ।

शुमाना-स कि पेगाना गराना।

शुर्मीका ! - वि श्रुमनेवाकाः भनमे धर वर नेनवाका चुमोना~स दि दे 'बुमाना'।

शुमनार-मी भुमदारनेत्री भागात्र शुपदार । शुमकारना-स॰ कि वर्षीको प्यार करते, बनुजीको मुमान है किए हैं हमें मूमन जैसी मामात्र निवासमा

पुषकारमा । जुमकारी-स्य है "पुमकार ।

गुमवामा-शक्ति भूमनका काम कराना ।

प्रमामा-ग कि भूमने हे किए (बूस(बे) शामने करना

बैठाना । शुरमारिय सुरवा

शुर-दि [मे] भारी करनेशालाः व अधिक बहुत । शु [दि] दिश बंतकी मारा केवका एश परी या बागव भारित हरन कानका सन्द । -सुर-पु॰ यूनै वर्तक हर दी भाषात्र । - शुरा-दि भी त्रराखा दवानेश 'शुर भुर राध्यके साव दृश्याव [बुगा पत्ता बापव]। -सुर-तु सरी वरारी भोजने हरननी भागाय । व नि तुर मुरा । -मुरा-वि जी दशनन मुरगुर करके हुट भाव बरारा । प्र. मुने दुष चित्रवे कार चनकी ग्रीमें त्रवार मगद्रश्यम भगव्या यथाया दुव्य वर्गना या | शुन्द्रवर-पु पुरसू ।

पुरनीशना । भु० -सुर होना-'जुरमुर'की भाग (बके साथ दूरना 'चूर होना ! अरकमा - म कि॰ चदरमाः पुर होना । शुरकीं-की पुरिवा।

शुरक्ट शुरक्रमण्नि मस्मान्त पृणित ।

अस्ताना-म॰ कि॰ है 'जुरकता ! जुरजुरामा−म॰ कि॰ 'सुरजुर' धप्य करते हुय ट्रटना ।

पुरद-पु देश 'गुक्र'। शुरमार्ग-न कि॰ पानीमें पक्षमा धीशनाः ग्रप्त मंत्रमा

द्योगा। पु॰ दे॰ 'पुनचुमा ।

बुरमुराना-स॰ कि॰ 'बुरमुर' शब्दके साथ होरना। ष• कि 'शुरमुर' छन्दके साथ द्वरमा ।

शरवामा-स॰ कि पकामेका काम करामा। भौरी करामा। पुरम-स्री अपहे भाविकी शिक्त ।

बुरा-मो• [सं] योरी। • प्र दे 'यूरा। श्राई-ली भुरने था प्रश्नेने किया।

जुराना-स कि॰ दूसरेकी चीबको उसको बानकारी वा मनुमरिके विना के सेमा; छिपाना वयाना (माँस मुँह);

करने, देनेमें कपुर रराना प्रशिवनी कम करना देना (गायका कृष भुरामा)ः पामीमें पद्मामा । पुरि, पुरी−की [सं] छोरा हुआँ।

पुरिका-प अविका द्ववता जिसमें करके परिवा रग वते हैं।

चुरिहारा-५० दे० 'चुरिहारा'।

नुरीक-तीक पूर्वा । नुरुर-पु• सिगरेट सिगार्।

बुक्र•-पु॰ पन्त्र्।

दुरं दुर्म-९ दे शुमर'।

पुरु-ली गुक्नी। तीत रच्छा। दामीदेग (कडता, मिरमा) 1

शुम्रशुम्राना−थ कि धुन, मुबसी रहमाः (स्पॉका) मरगर्धे ६एना ।

যুক্তবুভাইত, যুক্তবুভী–ংগী॰ পুরু সুপ্রকী। सुख्युल-गो नुनयुकापय, यसल्हा। † वि सुक्युका। जुलपुत्ता-वि चंवक मदाद में निवर न रह सहै।

—पत्र-षु चैनक्षम नटस्राधेः ध्रमो ।

शुक्रमुकाना-म कि वार-वार दिक्सा दीवना। विदर म रह सक्तमा चेनमना रिम्माना ।

जुल्युलियां −ि दे अुल्युता ।

जुरुमा-स कि देश ज़िशाना ।

शुन्तव-१ विना मांसदा युनावः गुभानेदी बिचा । भुन्तियाम्या~४ ४% मावि% धंर ।

शुर्मुप-पु [रो॰] वधीका लाइन्यार आसन । पुसुक-पु [मं] पुश्याः नापनेके बाम आनेवाना

यक वरताना गहरा की नहा एक शातपवर्तक महिरा कहर का धीरन । मुमुका-भी [भे] वसमारवर्षे वर्षित एक नर्या

श्रप्तको(किन्)-पुरु (सं) संगढ माधारश एढ मानव । पुणुशा-की [#] नररी।

छस्डि-छाती मैंबसी के स्वतेको गरम करके क्या छेता है। प्रस्थि−को सि] शास्त्र करा। सेनति । प्रस्की-ली कवी दीवारके रक्षाविषयी बी दुरै पकी बीवारः सि दि दक्कि'। **छवना-**प॰ दे॰ 'छीना' । छवा≉-पु छीमा शावकः एको-'छुडे छवामि का देस निराज्य तार वहे तमनार हमें से'-रसविकास । छवाई −मी॰ छानेका कामः छानेका प्रशस्त । प्रवामा-स॰ कि छामेका काम कराजा। छवि-मी [तं] पर्मः पर्मका वर्षः शोगाः, सुरद्ताः वसकः कांतिः प्रकाशको किरम । छदैया-प छानेका साम करनेवाला । **छडर®**—शी (रेसरनेश्च क्रिया । **प्रदरमा**=-भ कि विराहना शिरक्रमा । छद्दरामा≠~न कि छद्दरना । स कि॰ निसरामा, जिस काता। द्यार करना भरम करना । **छट**रीका - वि छितरानेवाकाः सम्बा और सुबीक, प्रश छरहरा । **छडिबॉ॰**-न्ती॰ छावा । छही-सो वह निविधा गासकर कब्तर को बशरी विदिवीकी बहकायर अपने अद्वेषर कार्य । ভ—িন্নী চাৰা। र्फोगना~स कि॰ दारना सौरना (बरकाइ)। छाँगरा - वि (बह बाहमी) जिसके किमी पंत्रमें छ **ध्वित्वाँ हो ।** र्णीड−लो महामदी। फ्रॉंट-स्त्री ध्रोंटनेकी किया बाजेग कनरमध्री किया वर दंग- सन्तरमा मांसके छिएका छोटकर अलग को हुई बेकार चीत्रा अनाव छॉरनमे निक्यवेशासा कता या भूमी। कै दसय । र्सीटल-स्टा प्रोडनेमे निक्की वर्ष वैकार चीवा क्यारम । **छाँदना**-स॰ कि कारना कररनाः शुनना निव्यानाः भनामकी साम्र यरमेके किय पूरमा करकमाः कनरकर धोदा करमाः निश्चणना दूर गरना (ग्राप्तमका मैन रवाका क्या छाँदना)। रिली चीमके द्यान वीटावका प्रार्थन करमा (दान-कानून, पंतिवर्ग छाउना) । र्जीबन्दिद्वीर्ग-स्मा दिवार्वया शरवामा । छोंबमार्ग−स कि दे 'छोड़ना। छोद-म्याः छाननेको ररही छानः मीर्वे । एर्डिन(-स कि गोंपका श्रमका (मरनेक किए) जानवरी-के बनाहे था पिएन पैर नक साथ बांचना वाबीने पैर प्रसुद्ध हैंग जाता है छोदस-दि मि] छरनंदरी वेशनंदरी वरिका वेशक वेदवाटी । पु चंद्रपाठी लावा" ओजिय । प्रसिद-दि॰ [ते॰] ऐप्रशासका शाता । णींदा!-पुर पद्भवामा दिएता । छोद्रीरब-चु [र्थ+] सामश्रका एक प्रात्ताया क्रक मादारधी वर्गानस्य जो सुनव बन वर्गनर्याये हैं। धाँवैनमा १ तरी ।

णिंदरा॰−५ क्षेत्रा रहाग्रावडाक्षोध यक्षडा

र्छोस-को छोरनेथे निकाम द्वमा क्य बारि निकारी थीमः कृशन्तरकः । छाँड-मी छाया। मामब-स्थान-दिविद्वारी देहदे छाँकी पाहत छाँद -निन्ध छापी हुई त्रयहा प्रतिक्ति स छार्र । - गीर-पु॰ छनः भारता । सु॰ -म छुने हेवा-चम न बाने देमा (-श्रमाशा-पर्छ व जाना) र्जाहीरं∽सी दे दॉह'। छा—खो [सं॰] वेंद्रना, ग्रैनाना । दु॰ विशुः शुक्रमदः पराः विद्या साईी-मी रागा गार। छा**क−धी छक्तेका मान, मृक्षि मञ्जा मस्त्री। वह सा**न्य वी बलवाडी, बरवाडी बारिके छामेडे किर रोसरवे येता जाता है। साद । छाकनार−मर्शक है छक्ता । द्वारा - पु (र्थ•] वक्ता वक्तीका दूपानुरोदाश वेप तर्पर । नि॰ पदरा गरेपी । -भोजी(जिन्)-नि॰ वस्तेस मह र्यानेवास्त । तु॰ महिवा । –सुग्र-तु॰ क्राविक्षेत्रा वर्षिः केवकां यह अनुकर । ~र्बा, न्याहम - पु अपि । छागण−५ (र्च•) देनेद्रो भाग । छागमच−९ [मं] कासिदेवका एठा सुसा । छामध्य-स्ती श्रीवर्मे पहत्तनेद्वा दक्ष गहना। वसहये हैं है मशक । पु [तं] पद्भारा वह मछता । ति धान नेरंदी। धारिका धारी-मी॰ हिं॰] १६८)। छाछ−भी सहासदी। छाछढ-वि॰ प्र दे॰ 'हासक ! छाज∽ पु सीक का बाँसके टिस्क्रोंका क्या पान जिल्ले अनाज पाष्ट्रने हैं सूत्रः प्राप्तनः बगोंडे अमेराधारे त्रैमा भाग । -मी हाड़ी-एन् र'गे-दीने दारे । सु॰ = (ओ) मेह परसवा-भूगवदार वर्ध दीमा ! खाजन-को आप्छातन सर्श-'ग्राप्त सेवन हैं सि बीने साथु कुणाय —क्सीरः छत्पर छानेका बान वा देश यकः सरकका की^न अपरश । छाजना-न अि॰ फरना, शीमा देमा ग्रमेनित हैंना। कामा- • इ. क्या र कामन । प्राक्तिक-दि धौभिन । द्यास−रि॰ (र्न॰) दिल प्रश्न हुमा; दुरमा। वृद्ध दन C1री। माभव । छाता−त छन्छ। वडी छन्छ। तारके वडी बा वंपरे िनक्षोकी बनी वर्ग शतरी। छन्छ। भी से प्राती ! छाली-मीण पश्चा पेटड कशरदा पेर और नरदबंदे देश का जान कदारतथल कालाः रतसः विज्ञात दौराकः । तुन -शृहमा-दे शाना शास्त्र १ -के कियान शुक्रमान छाती न रनाः गदश भीतः (तदममा । - एकनी द्रामा-नन्ता कामाण सहत्रनाहते कर भाना क्षेत्रा वर प्रामा -असमा-दुरगये यनदा व्यक्ति संना देता इति मनमै जनन दोना (- प्रशासारी--हे "प्राप्ती करी करण) भागी हुने दोला ।-इंडी करमा-दिभी देवेन हर राजे-वाली काममा व ननी मानना कारियी गुप्त वर प्रार्थना व करना: शिक्षी जनमें सिरामा I—ईडी द्वांमा—*ई* ग्रे ब[ा]र्स मिला । -वीककर कडमा-बोर्र बीटर बार्च का व

हेनकहा इन्हार रेडाम साफ करनेवालीका यह भीनारः भूगोधी प्रक्रमका गोरना । ~बार-[न विश्वधी पृथ्विंगी हो: प्रिमी पास परि कर कारों हों। पु सम भार मंत्री गोरदिका पासना दिन पर्कारित पृथ्विंगी और्ता दिक्करें पर जाती है। सुन भूबियाँ देवी करना था तोवना-स्रोके देववा धानेयर भूबियाँ तोड़ देना। —पद्मनता— धाना सेन बनाना औ ननजा (भाँ): विववका किरते स्वाद करना वा स्थितिक पर बैठ खाना। —पद्मनामा— दिक्वादी स्थाइ करना।

च्त्र∽कृषी सस योजि। पु [सं] सामका देश गुरा।

चुतक-पु [मं•] भामका पेक छोता कुनी।

ब्रुतंद्र-पु कमरके माने जीर जीरोंके कपर पीठको जीरका मोसक, गुक्रपुका मान नितत । शुरु --विष्कामा-भाग जाता। --पीडन् ।--कमामा-चहुत गुरु होना।

चूति~नी [सं•] ग्रदा।

कृतिया-दिश्या इत । -सावाः,-कक्तर-दुश्विषा सूर्य शक्ति।-पंत्री-तमी वेशमसी सूर्यता दुव्यतः। सूर्य-दु कार्या पुतने वा स्यानेश वर्षाः - पोन दर्रे तित चुनति देहं -सुरार एक सरका ब्ववः वे जूना। बृतद चुनती न्योश देश 'युक्तरे।

सूत्रान्त्रभ कि दरकता चूँर-पूर करके और दिस्ता पर वा एरे परका द्वार परत्रा। क गर्मपात दोता। ने विक सूत्रेसका। पुरु पत्यद कंकर छोत कारिको पुंकर प्रस्तुत किवा बातेनस्त्रा तिहत छात को पायने धाने और वर्ष-एतः छन्ते। करने कारिके काम बाता है। —सुधी-स्वीक सुनाया। पुरु –स्टेस्ता-स्टर्स्सा स्टरमा। —स्यापा —वेवकूत बनामा तीया रियाना स्वीत पुचाना।

पूर्वी न्यों का प्राप्तस्य भने कारियों वाक्त होटेन्छंटे इन्हें चुटी कारान । न्यूसी न्यों चुनी और शूरी या थोस्ट मेंटन्डीस क्या

सुमना-स कि शोहप्रशादि किय होठीने कियाधिक बनादे होठी गानो मानिका राग्नेक्सन बनानासम्मान मकावेद किय कियोधिक्समाने सम वान्यासम्मान स्वाप्त किया कियाधिका किया का बनानमाने कृदंदकी विस्ती कालियोस्य वर बा नहानशिके क्षेत्र, माने सारिती हर चारकते हाना।

यूमा-पुर चुमनेदी दिवा चुंदन ।-बाटी-स्वार कृतना

बारना, धुवन माहिमन ।

ब्र-इ दिनी ठींस बानुका इस्ते पोस्ते या देतनम बहुत सारिक द्वकाँ में इसा स्पावत, पूर्ण पृक्त पूरा। वि रूपा इसा नियात होएं बान्तर (महीने पूरा) दिखिल पाद (बादका पूर बीना)। मु -ब्यूट करना-चोक-कीरस्ट रेमा रोमा सा इक्ते हैं "इ कर दलामण्ड बर हैना। ब्यूल-चू रेन पूर्ण!

प्रेन-१० रे भूगे। यीमे मूना हुना शारा ज्याने भीनी मिन्ये ही। सारक दशभीका भूते।

व्यामहार-पुरुष महत्रहरी जानी देश की दवाद बाग्र व्यामा दे।

पुरमा १- छ कि पूर बरमा छोना न बान्छा ह गर भूरा विन्त्रत्या इसल्य - इ ।

चूरमा—पु नाडी, नानरेकी में दी रीडी भारिकी मसनकर और पी शकर विकासर नानार हुआ धान ।

व्यक्ति विकास वर्षात्र विकास वर्षात्र क्षाप्त विकास कर्मा वेरमा-विमास वर्षात्र प्रिता प्रकास भीतमी कर बूरा दुर्वे पार -घर्रा : कश्रीः कोटी, शिला मराका। -मरिष--पुर हैः व्यक्तिमान वृत्त-पुर हिन्दे वृद्धान्य प्रतागेष्यस्मान्य वृत्तं मनोरा

चूर्ण-पुरु सिंश चूर, बूका बूरना गंधर स्मोका चूर्ण सनीर, धारिशा चूना । "कार"-पुरु गोधनंत्राला चूना रहेकी शाला, यह वस्तरेत सारि। "कुरतस-पुरु शालक, सुरुदा "द्वार पुरुष कंदर। "चारद"-पुरु शिकाल, हिन्दूर। स्मारि-सीर ग्रुटीमर सुर्गमित चूना। "योग नुरु गंध स्मारिस बूर्ण। "चारद्वीक" पुरो । स्मामस सम्मा बुर्वाक-पुरु (से) एत् । सुर्गिष्य चूर्ण। वर गण की सारक कर्णकडू ब्लीवी रहित तथा कस्त्वसात है। यह मुझा एक

सर्ह्यः शामिभाग्यः । सूर्यन-पु [सं॰] सूभ दरना ।

क्यंद्वार-पुरु एक परवस्त्र वेक, भूरमहार । क्यो-स्त्र [त] भार्या छेरका एक भट्ट ।

वृद्धिं-ल्यो [८०] पु॰न-१० कास्योका समूदः काचा पर्पाः पाणिनिक्षे एश्रीका पर्वज्ञानेसून सदामाप्य । —कृद्र-पुण्येकि साध्यकार । —दार्मी—ल्यो पीननेवाको किमनदारी ।

च्किका-न्यां • [सं•] मच् ; एक स्वन्तरो । चुकित-वि• [मं] चुर किया हुआ सह ध्यम्प ।

चूर्णी─स्त्री॰ [सं] दे 'युगि। चूर्णी(किन्) – दि [सं॰] चूर्णसे नना हुना मासूर्णे

मिलाया दुआः वृत्ति-न्याः [मंक] गममः।

ष्मी-पु दें ॰ पर्ता । युक्त-पु [न] बाला धारे । लो ॰ [हि] लड़ शे बांस आरिया एतना किरा की दूनारी कड़ शे बांस आरिये छैन्दें श्रीका नाथा पुराते थेंगढ़ दिशाबा नाथ करदा नाथ करदा नाथ स्त्रीका भाग विस्तर वर पूरा बरता है। सु॰ ~ (स्) बीकी द्वीचा-चुन कड़ बाला पत्त हो बाला !

वासा द्वाना चतुत के बाल परन दा बाला। चूना∽को विशे वोरी। शिक्षाः वासम्प्रातेना कमरा बोह्याला।

वृश्चिक-पु॰ [शुं॰] मुन्तं स्ता।

प्रातक-पु॰ (त॰) पुत्रुत स्तुता। पृक्तिका-प्यो॰ [र्स] सुर्वेश श्रोदा हारोहा सनप्री। नेपक्की किसी बस्तादे हारेसी धूमना (सा)। पुस्दा-पु सिद्दो, स्टी आरियो बसी नई सील बालुओं

पुष्टा भाग । १६ तर सारका नवा त्य तान वाहुआ नवाहुआ नवाहुआ

ण्यम-पुर (मेर) भूममा । भूमा-मोर (र.) भूममा दारोडा दाना दर्गसा सरसा

नगा देते बमर्थर ।

क्ष-पि मि] वा पूमा जा मदे । दुः सूचनरा बाद ।

ध्यामय−छित्र भीर पश्चमें सफ्ती छावा देखकर शरहित हान दस्ते है। −दह−को अभरोरी मृति।~हम~दु०दे०'छाया-तर'। -मर-पु एक राग। - वय-पु बाक्यश्रनीया। -पुरुष-पु द्रव्योग तंत्रके अनुसार आव्यसमें (सापना विशेषमे) दिखाई एइनेवाली इद्यादी सामास्य भाइति। ~सान-यु बंदमा !-सिय-यु छतरी !-मृति-सी धायास्य मृति-भाकृति।-सूगसर-पु॰ चंद्रमा।-चंद्र-पु हायाके हारा कावका शाम करामेवाला बंगः पृष्यक्री। ~लोक-पु० अटस्य कगर्त्, स्प्राकीकः । ≁शाह्-पु० स्क काम्बरात शैकी बिमर्पे बाग्नेयके प्रति जिलासा कार प्रकृतिक विषयों में नराबार मानमा स्वक्त की आही है। -सुत-छ।यासय-वि॰ [र्स॰] हाबा-नुषद सावानार । छार~पु• हारा झार क्राणें। गांधे जनका राधः पुरू । ~छश्रीया-तु दे॰ बरोसा'। शु० -सार करना-रात्रासिक्षक कर देनाः जह घट करना । खास-त्यो [d] पेक्ट पत्र, खास्रा आदिपरका दता डिकटा वरद्वनः वरद्वकानः + वद गिढाई । छ।सटी-स्था एक कपका जी सम या परसमके रेक्षेसे मनदा है। प्राप्तमा−म कि• क्रामना साष्ट करना। के करना। पोना। क्षाना प्रभीका भावना ग्राम पर्य (बुम्छान्।): श्रीके आहिपर समझ ह्या दानः + दत्र-'तर उर्दन सन्। सिम्ब बीग्हा "-प्रमानन् । श्वासित्र=−दि॰ पुर्या हुमा, प्रशासित । छास्त्रिया – ५ छात्राशन बरनेब्ध क्रीरी । स्वे+ दे•'छाक्ता।' **छास्री−को ग्र**पारोः स्त्री हुई श्रुपारो । **छाधँ** –सी धाना, परधार; दारण नामय । द्यावसाः −स॰ क्रि॰ दे॰ 'छाना'। राजनी-मी एम्पर। एम्परीश महाना वह स्थान बही सेमा राग्रे जाव पहान हितिर। वह महान विसर्वे क्रमी-हार शहसीम-बगमने क्रिय आधर बहरे वा चमने बारिते अपनि रहें। **छापर−मा सं**दर्भे तैरनेवाने मछकियेंके छीडे वथे व **छापरा॰−**ष्ट धीनाः द्यावकः। छाचा-तुर नशा नेगा हायोका पट्टा । छासट-वि साम भीर छ । इ छानवदी संख्या, १९ । । 'याय' ई कि।-अध्य र्विकाना-स॰ कि धोडनेमें प्रवृत्त करना। र्तिग्रनिया र्तिग्रमी न्यो अनी बंगनी। चिंगसिया चिंगुजी~भी 🗱 4/3 ग्रमी १ रिंख डिडि॰-मी॰ छोरा- सीनित क्रिंग बहारे मास सहित गांव वार्थिम निर लागी असूरा प्रदर्भश बार । विद्वा विद्वा-त पाका शेव शेनेका यक वर्शका । विदासरा-म जि॰ धीन सेना । किः, छि-भ• बना, तिरम्बार वा विवारत्वक समा सी। क्रिनेंबा-५ भूरे रंगडा मानाएन मोरेने इए छीता बीताः िरिकेट मान्या एक धन्नेशामा बीनार โซโฟ-ฟ ४६ भी बार जो सफ्ती वहाने हे बाम बाला है। विक्रमी-भा दह मूर्ग जिल ब्रॅंबरेने बहुत धीर भागी है।

मध्यक्रिमा । छिकरा-पु॰ व्य तरहका हिरम । धिक्रमी-स्थै। (सं) मक्राटकमी वृद्धे। किका-30 [Ho] रे 'रिवार ! बिक्श~थी॰ [सं•] श्रीका ग्रीसा ! धिकार-पु॰ (र्थ॰) एक तरहबा दिरम किसा। दिक्किम-सी॰ [मं] मद्धरिप्रनी । डिगुमी-मी॰ कामी बँगमी, श्रानिप्रिका । **विवार-मी** ब्रिसीस । हिछदा−प्र मोलया देखार इकार में <u>क्यों सिश्</u>तेओ खानके किए फेंड दिया जाता है जानशोध प्रशासन छिष्ठवाना~स कि त्रगा करनाः निश करनाः। क्रिज्या-नि॰ क्षका ! [सी (रेएकी i] **छिछोरपन~प्र•** छिठीरेदा स्तम, बीएपन, सुरहा । क्रिकोरा-नि॰ भोठा, श्वरा कमीना। नपव-पु॰ रे॰ 'डिकेरपन । क्रिजामा—स॰ तिर॰ धीडमेका कार्य क्षामाः धीमने देगा छिटकमा~स कि॰ दिगरमा पैक्रमा दिशे धीकी व्योति, सामग्रद कॉरबीया पैक्सा । **क्रिटरामा**−स कि दिशसा पैतामा। क्रिकों - सो छोडा । Bदमी-ची॰ दे 'शिममी'। िट्या-त शेरतः शावा । विक्कता-स॰ कि यस बा बुमरे इब इम्पड गोरेने का मुख्ना। न्योधावर ६रहा (मि॰)। खिदकवाना~स॰ कि खिदक्रमसा बाम कराना। **विकार्ड-को॰** हिरकानः हिन्दमेन्री बनरव ! डिइकाप-प्र• डिइबनेद्धं दिवा छोगेंसे वर बरगा। खिक्चा-म कि दैश सामा मारंग होता, धन कार^न सगरा जराई हाम श्रीमा ! खित~वि+ शि दे÷ 'छत्त । छित्रती-स्थे शेल्द्री कांद्रशे का दोसिकीन पर्न हैं थेक्टी । गितरामा∽व कि विभएत। स॰ कि स्मिरि देशनाः वचन-वतन बरमा । क्रिति॰-मी दे 'दिति । -क्रत -माध -पार्म-1 रामा। -स-त पुत्र। रितीस ०-५ रावा। क्रिकि−णी वि•ी रेण्या क्राप्ता । बिरवर-त [में] राजक्ती। राजा पूर्व । क्रिक्क-म [बेब्रे बन्न: श्रीत । क्रिक्सा-सन्दि देना जाता हैर होता। श्रवण होता मानीने मर माना। धननी होना (समेजा हिए मधा) । विक्शानि हैनेशाला थे। बना म हो। बना इसी क्रिक्वामा=म (x• दे 'दिवासा । हिशाना-ग॰ दि॰ टेप्सेका बाम बराना । हिर्दि-स्टें। (र्थ०) कुश्हादी बना माना। चित्रिर-त [थे] बुस्तारीत स्वतारा स्वीता रस्ति । विज्ञा [बं] हेर वराता भरतां सरमा है। क्षणः दुर्वयश्वतयः, सावद्व वाता दुर्वत्र काण्यत्रदेशिको।

888 चेसाम चेसास-प [तं] तरब्बस वीवा । चेसामक-पु॰ [रां॰] कपत्र आदि सामेशना कीवा । चेलिका-ली॰ [सं०] बल दिहेना औरावा, घोली । चेकिन चेमी-की गुररोड़ा वा अधेक माप्त करने बाली औं । चेलुक-पु॰ [मु॰] बाह्र भिष्नुका चेला । चेरहमा~की एक होये महनी। चेची-छो॰ [चं॰] यह रागिती १ चेएठ-प [म्•] चेटा क्रमेशका एक रतिर्थ । चेप्टन-पु [मं] घटा करना । चेष्टा-न्त्री [सं] गांति इरयता कियासायक काविक न्यायारा मतका भाव बदातेगाठी अगीकी गति भावसगी सबस क्षांशिश !-नाश-प्रमण्य गतिहाम होना !-मिस्यण-प दिशी व्यक्तिय गरिनीवि बेगमा ।-वल-प्र महरा रिवति-मिगापमे अभित्र बनवाग् ही जाना ! चेष्टिन-विश्वाते । यहाहरू । वृत्र येहा । चस-पु [अं] रातांत वह सो का क्रेम जिसमें बंधीय क्षिप हुए दाइप छापते है निय कमार हैं। **चेहरई**-मी शिवमें सेहरेश रंगतः वह एवा जिल्लार भेडरा बना हा । प्र हक्त्रा गुकाबी रंग । चेहरा-प [फा॰] शिरहा सामनका मावेने जगावर हुद्दीतरका भाग सुसर्भक्ष्म) सामनेका गरा आगा। किञी बेच-कामनको चाह्र मिट्टी मादिको सुरराष्ट्रीत राजिएर भारिमें शिया जानेशका इक्तिया । ~ण-शाही−वि० (गद्द क्रिया) मिश्चपर धादी श्रेष्टरा बना हो। प्र वेसी स्दा!-प्रशा~प्र• विषक्षार!~कशाई-छो• विषकारी। -दार-वि॰ प्र दे 'बेहरा-दन्ताही । -मनीस-प्र॰ इतिबा क्रियमेबाला । -वंदी-जी॰ इतिया ।-महरा-पुरु त्रत एवड । मुरु -बत्तरमा-धेदरेते सुसी बराठी, ग्रहरी जिला मादि प्रस्त होना : चेहरंगर तेम अञ्चलता न रहमा (– पीक्षा क्षा कामा – रीग, यह आहे के कारण नदृरेपर पे.रेक्नके शहरू था जाना ।-विगासमा~शहना मारना कि चहरका हृतिया बर्फ आय । - कियाना-(नेनामे) मीरशं करना । ∽मफद हो आला-रीग या मपर्क बारम भंदरेवर श्राप्तेती जा आना, उसक्षी जमक शुप्तीका धारप ही जाना । --(हे)वर प्रचारची उपला--भयः विश्राहरमे चहरका रंग प्रश्न जामा । चक्रल-र्न (कार) भागाम । - क्रव्यी-मी भारेशीर षाशन्म रहणनाः मुमहत्मामीको ज्ञापिष्टकी एक रहम । परसम-दि॰ (चा] पार्शनशा । दु॰ सुमनमानीमै बृन्दुके बार्गामन रिनदा कारिदा और मोता सुदर्शन वालागरे दिन होनेशमा करवगाडे छडीगोडा ऋर्यवहा । 40-4 5 va 1 প্ৰিনাম-ৰি 😘 🕽 নহিবান ইচাই রচাছ। बैत-पुर येत्र माग कान्युमक बादका महीला । भनम्प-इ [rl] देश्या श्राम श्रीवन् । भागाः विस्त कर बरमामा। महा देवारे दे वह व्यवसदि सर्शद **१**ण ५०-द शेरवादी व⁹रशि सहादशु व ~खवितास्तुत्र÷

**

माठी-सी विश्वीम भाग ग्रामको मस्तिष्कमें हे जाने वानो नाही । ~संप्रवाय~पु॰ भैतन्य देव द्वारा प्रवर्तित मेप्रदाव । चेता∽५० एक पक्षीः पती । चैती-वि भैतमें धोनेशका (वैदी ग्रकार)। सी भैतमें पद्धतेवासी प्रसस एवी यक तरहका बहता गाना । वैच वैचिक्-वि॰ [सं] विचन्तरंगी, मानसिंह। चैत्य-वि [संग] चिना-शंबंधा । पुरु परः देवासवः सुमाभि-मंदिरा यश्चराकाः गाँक्यी सीमायरका मुख्यमुदा नुसम्प्रिः बीज शिक्ष- बीद्ध विद्वार: गीपक: वेकका पेड़ । -- लट --हुम -पृश्ल-पु॰ गीवस । -पारु-पु नैत्वका रस्स । −मरा−पुकांटलु। −यक्र-पुण्यवेदिक यदा। -वंशम-प बीबरी वा बीनियोसी मुनित विद्यार: देव मंदिरके भगका रक्षण । - विद्वार-पुंगीनर या अग मह । -स्थाम-व वह स्वात पहाँ तुरुदेवशी भृति हा पवित्र स्थान । र्चस्पक-पु• (मे•) पीपका राजगृदन्तं पासका एक पदन । चन्न-पु[मं] वद चांद्रमाम विसको पृतिमा विदा बश्चवर्मे ४४ती है. भैना मात वर्ष-पर्वतीर्मेने एका देवानव चरवा बीड मिश्रा निचा मसब्रेड गर्मसे उत्पन्न बुपका ण्य वैदा । - गीक्षी-स्पी पद रागिमी । - सप्र-प्र चैव मासमें मदमचयोदग्री आतिही होनवाका बसंगीत्मव । ~सय-पुकानदेव। বিরত-ডুমি] বীর দলে। चैत्रस्य चन्नरच्य-इ [सं] चित्रस्य गंधरेका मनाया द्रमा इंश्रह्म ख्यान । विज्ञाबली-त्यो [तं] वैबको पूर्णिमा। वैत्र शुक्रा धयो विभि, वैद्रिक-५० (व) येत्र मास । बैद्यी-मी (सं) वैत्रको पूरिमा। बैग्री(ग्रिम्)-पु [मं०] वैत्र भास । विविक-वि [सं] भेरि देशका चेरि देशमें करता। शि 'देशिक देखिक'।) **बदा-पु॰** [मं] शिहापान । र्वन-५० सुर आरामः ६७ शांति। सु० -की बनी यज्ञामा-वर वार्थन्य दिन निरामा । -पडका-दन गिनना । -स करना -म गुबरना-भारामने बिरपी यगर हाना । चेवसा-प व्यवस्थितः चैवॉ०−९ व'रः कील-पु [संर] दशका मध्य पत्रताबा मदौना। वि बरर निर्मित । -धाय-पु भारी । बुसक-१ [संब] बाद निमुद्द क बन्देबर जारि। र्षमा–पु॰ बनानेक निर्माती हुर्ने छढ्दी पट्टा। वैक्टिक-पु[स] क्याता चर्या-म्या ६ था बैना। गरबाँद्वे कारण नामने निद्यन्ते क्षण बना दुष्प स्न । बॉक्र-मी पुरन्सादि। इण्ण्या बरिहान स्थित वित्रम देवका प्रोक्त्यप्रित । वैद्या-पु भूमने होटी। स्टब्ट कर 🎝 क्रिका -भरपी-र्वः नाद्देशे रद्धः धेर्वाः -वादितीः मुर्व -पीत्रा-वर्धेवा संशावनन्यन करता।

धीं स~सुरीती स॰ छींबते था छींकमेपर माक कटना-छोटेने अप-राबका बदुत बड़ा दंध मिलना । र्धीका~पुदे 'शोका'। कींट-स्थी पद करका किमपर रंग-विरंगी बृटियाँ छपी हों। दै॰ छोटा'-'भागम रही सकित पय-छी है छात्रन छवि तुन तीरे'~तर : र्छीटन(-स कि॰ फितराना निसेरना। छीँदा-पुपानी या इसरे हव ब्रम्पकी वृदें की अकते बछाक्रमेने फिटी चीवपर पहें। छोटेबा हागः मन्त्रासा दागः इतकी वर्णः वैद्यारः इतका माक्षदः व्यंखीतिह हाथने बदोरबर कीने हुए बोजः वस शरहकी बोआई: अवस भारिती एक माधाः है हीता ! सूक -छोडनाः-पॅक्रम:-भाभव करनाः व्यंध्य करना । -वेन:-मह कामा उद्यासा । र्षीदारं - १ छोमी, फन्मे । **धरिवी-**न्यं • मट्द्दे दोमी । ची~म प्रमा तिरस्कार या भिकारका माव प्रकर करता है भू, भिद्यार। न्या गूमैना (वर्षीकी कोनी) । सु **~छी करना~धना प्रत्य धरना ।** छीका-पुरम्मी तार मारिकी बनी शासी बैद्धे भीज बिमें एतं भादिने मन्द्राहर उसपर सामे-धीनेशो पीने ररात है सीका सिद्धहर जाना मोहरा। सुकेन। पुका धितमा । स्॰ -इटना-न्योगते दिना अवस दिये देवे काम ही जाना । छीछदा-४ दे॰ 'छिछइ।'। छीछाछेदर−सी दुर्दशः, कमोइतः। धीज~त्यो॰ धीकनेका भाव दाय भडाव जासः **॰** यादां ह क्षीक्षमा-अ॰ 🗁 वीष होना चानाः मह होगाः यहा शीमाः शानि शोमाः । छीर-ना दे• 'धाँट। छीडना~म कि दे 'धो रमा । छीदा-पु॰ भॉमको होसियोंका नमा शेवरा को छिनती। छोत्तमा न्यु कि विश्वयु निश्व भारिका प्रश्न भारमाः श्रीर ११ सामा । छीतरपासी-र एक कुणानक द्वि थी बण्मावार्यें शिष्य और अक्टाएक अंतर्गत मामे जात है। सीति = नां शान परे। धीर्माधानी – दि॰ हिप निष्न । सीवा-नि॰ बहुन्ते हैशेबाळा बिरन्त । ए।न-० वि दे 'शीत'। स्वी गीनतेशी दिवाया भाव (देशम विदेश शहर में व्यवस्था) । नशरह नगी धीना शर्मा । सीमगा-म कि इसरने जनरास्ती से मेगा उनक केता देंड हेना। दे दिव करना कार नेम- निष्ठ आहि प्रीवार-म कि सूत्र को बरमा-⁴रवाम महान्दि हो नवी की स गरी निटारि -व्यायती ।

र्णनान्यमधी सीव र्जानी गीवा हर्क्य-ही 📆

मुग्रोदे शाची ("म हेन्सी क्रोपियाः दूसीर्थ बाक्ये चीव

शराहर है देवा केंद्र बंदन हैंपा।

क्टीय-म्बी॰ छाव, दाना सेहुक'। यह छन्। क्रिम्रदे बान्धे फेंसादेकी बेंदिवा बॉबी आही है। रूपि तह देखारा। छीपना-स॰ कि केंदिनामें महारोद कैस्सेन होस्रो सब्दा देवर उसे (महत्रोदो) बाहर (बहानता। छीपार्ग-म यक तरहका दृषका माँशा शाली। दीर्घ । छीपी-प॰ धीर्डे प्रापनेशका । स्ते॰ पान्य सन्त्रप क्ष्मगर संशामेका सम्या । छीवर - जी धाँरके साई। देत ब्टेशर अहा। कीमी-सी प्रकी। महरको प्रकी: † मापभेस कार्या चदौ । छीर=-म रे॰ 'क्षीर'। -ब-म रशाः -पि प्र शीरसागर। -च-पु इब पीनेशना रक्षा। -धर ष्ठ इथक्षे मक्तर। –समुद्रः–सागर-मिषु दुः रै **'धौ**रसामर । क्रीसफर-पुरु (ग्रिस्स । छीक्रमा−स कि वदारमाः शरीवनाः शुरक्सर सम्म करना (बास अक्षर इ)। यह आर्टिमें समस्याहर है। हरना । र्ध्यकर-पु॰ मोतका पानी उदलनेडे निर कुर्रेडे राम का हुआ यद्द्रा छिएका भण्डा, दनैया । विक छिल्ला । स्रीयर-दि में श्रीय र र्ह्मग्रही≉-न्यो वेषस्थार क्षेत्रहो। सुनवा!-म॰ क्षः रपने करनाः मदेशे वरना। सुमाई-न्या केशा रक्षां, सगवा मिनेसे बरोसे किया था उसकी उन्नति। सुआहृत-वी हृदछानका सवाकः वस्त्रवको हुना। ल्लामा!-स॰ कि॰ रे हुनामा : सरीये करता ! शुईमुई-नी॰ लाहापती क्षायः बहुत हो नाहुच्या ना नुक्रमित्रात्र वा निश्चित्रा मारमी। बहुन स्मरीर कीर! स्मम् - पुपर। गुच्छा-सि है ग्रंग । कुंतडी-वि भी देशीईसी । ही बन्ती सेरी ^{सभी} जनाहीनी मधी नाडमें बर्गमेदा गई बदमा धीर? रास्ट्रेंब[†]-भी गुरो दर्शि र द्यान्तर-पुत्र्वा वि वि वि विदेश । स्वामाना-भक्ष कि छात्रिका तरह एक बार्नावा वेदार मन्द्रमा । सुर-०५ टीस्का स्थित है भी गराण की देवम गयासमें वर्षत स्प ! -यम-प्र निम्म हुतार्व स्थलन । -भया-५० ८११ श्रु रिज्यम आवसी र सुरकामा -श कि स्थापना क्षीपना स्थापन दरक" हुशना । पुरकारा-५ ४४वमे कृतः हिलो। विभाग हि क्रमंत्र । ग्रह्मा॰−म दि दे श्रामा । पुराई।-मा रे तिसरे। गुराशां का दि है तुराता । व दिन वन प्रमान इथ देशा (इ क्ष्मा है वहाने सिक्ष्म क्ष्मा ! सुटीनी!-मा॰ स्र या नवम भी रोप रिवा मार

चोदित-दि॰ [मं॰] प्रेरितः प्रेषिण नारितः तर्करूपमें पेश क्षिया इथा । चोत् −पु• संमोग करनेवाळा ।

षाय-वि [सं] प्रेरणा करने कोव्या प्रेपनीय । यु प्रका चोप-प नामधी रेपनी तीइनेसे निवकनेवाका तेवाबी

रसः। सौ वे 'चोवः + भाषः चावः चर्मगः बहावः। -बार-पु दे 'बोनपार'।

चौपम-पु [सं॰] हिस्मा-गुरुमा; सेंद्र गतिमे बामा । चोपनाः - अ॰ क्रि॰ मोदित दौनाः वासक दोना ।

भोपी−+ वि भाव भाइ उत्तराह रखनेवालाः † की भामद मुँदपरसे निक्रमनेवाका रस ।

चोय-मी॰ [फा] स्दरीः शंहा सींटाः सेमेका संहाः दोन मगाहा थादि वजानेकी सकडी। सोमा वा चाँदी महा दुमा दंदा असा।-दस्त्र,-व्रती-न्दौ॰ काठी।-वार-प्र असावरदार ।

चोषा∽दुर्दरा काडी। कोदेकी भूँथी। मीठे चावक जिनमें में बादि पड़े हों।

षायी-वि॰ [फा] सम्हरेका बला हुना है

चीमा-पु॰ रवाभीकी पोरणी बिससे आँछ वा और कोई पीडित भेग संसा बाया कॉपनी । सुरू ~हेना-स्वामीकी पोरसीधे संहता ।

चौभामा1ं − छ॰ कि जुमाना। चौथा-इ दे बोमा।

चोर-पु [मं] बोटी करनेवाका छिम्बर बूसरेब्टे चीव पश्चिमा सेनेबाका संस्थरा कवितने कम काम करने कम माल देनेवाला देईमाला छिपकर काम करमेवालाः जो मनका मान प्रकट स दीने दे। मनमें क्रियी बुदाई, बुर्माव। पाव भारिके मीनर छिपै बिहरित खरानी। रीकर्मे बारने बाना छहना जिससे भीर कहते दाँव कें; तादा गंबीचेता पचा निमे कोई सिकाशी ब्लाय बेठा हो। यक गंधनूब्य भोरका वि [दि॰] छिपा हुआ। युक्ता जिसका पासकप भारत देनवाका है। (योद दरवाका चीर महरू दरवाति)। -कंटर-च पोरक मामका गंबहरूय।-कट-वु॰ [िंदे] ार पोट्टा ।-कर्म(म्)-3 पोरो।-स्तामा-पु∘[िं] संदर्भ भागमारीका छिपा गामा । -शिवसी-सी [वि] धीना चीर दरवाता । -शहा-पु॰ [वि] दिया इमा गरा। -शम्मी-श्री [हि] मेंद्ररी गर्ने जिनका वता कुछ दी शीमीको दी। महीकै भीतर गढी। वाजानेकी मिनानी। -चनार-पु [दिव] धोर जपदा।-छित्र- मंदि दरार । - क्रमीन - ग्री॰ [दि] वट दलास थे। फक्ष देरानेचे स्रा। दशे बनीन सा बान वट ।-तासा -द [दि] दिशहद बोर्ड स्था हुमा ग्रुम ताना निगुद्धा पण कपरने म सन्। -धन-दि भी [दिन] दुदत समन पूर्व मुदा राग्नेवाणी !- प्रत-तु है - नीरांखा । - र्मा-यात-प्र [६] वर्णाम बॉगों ६ वर्गिरेक श्रेन विम-निरुनेमे बहुत रूप दीता है। -ब्रवासा-पु [हि] मनामद विधनात्य धीता वरनावा जिमस्य बना बुध माल श्रीमीनी श्री श्री । -ब्रार-बु आर दर्बामा । -पत्र-पु (१) विषयार हे अवन्या दस वंग ।-पहरा

−पु• [विं] ग्रह महरा। −पुरिषका,−पुरमी−स्ती० शंखादुकी। -पेट-यु [हिं •] ऐसा पेट शिसमें गर्सदा पता अरसेतक म करो । —सदम -पु » [वि] वह ममुख वो कपरसे कमबोर मासूम हो पर वस्तुतः वक्रवान् हो । -बाज़ार-पु॰ [विं] वह दुध्यन स्थान यहाँ थोरीसे नाजायज तरीकेसे माठ वेका सरीशा बाय ।-यास-सी॰ प्र [हि] वह रेता विसक्ते नीचे दकरत हो। -सहस्र- [ई॰] वह महरू विचर्ने किसी राजा रहेसकी रखेलियों रहें। -सिहीचमी=-सी माँए-मिनीमी। - मूँग-पु: [हि] मैंगका यह कहा दाना भी म दलनेसे दला बाय भीर न पडामेशे गड़े। -रस्ता-प्र [दि] भोरगड़ी। -क्स-पु॰ चष्कर बोर। -सीड़ी-क्षाँ॰ [क्रिं] क्रिपी धीदी । -इटियार्ग-प चीरींथे मात सरीरमेवासा दुकानदार ।

चोरक-पु॰ [६॰] बसदरमः एक तरहका गठिवन । चोरटा-पु॰ बीर । [स्री चीरटी'।]

चौरमा र-स॰ कि भीते स्रना । चोरहुसी-स्री बोखुधी।

चोरा-सी॰ [मं] संबादुकी, संबदुष्यी। षोराकम-पु [सं] वोरक्षभी। चोरा चोरी ! - अ है ! 'चोरी चोरी'।

चौराना-स मि॰ १० 'पुराना'। चोरिका-सी॰ [सं॰] चोरी।

चोरित-वि [सं] मुरावा हुना। चोरितक-पु॰ (d॰) छोटी-योटी चीजीची चीटी; घुरावी द्वरं चीत्र।

चारी-सी चोरका काम चुरानेकी मिला; क्रिपान हराना डगी बीमोबाडी । —चोरी—अ छिपे-छिपे; छिपासर । -छिनास्त्र-पु थीरी और व्यक्तिकार; दृषित दुर्मे। —का काम —की बाल-धिवाबर करनेका काम। वात । -से-दिपाहर।

बोसंडुक, बोसॉहुक-पु [मं] प्यशी।

बोस-ब [सं] वद्याण मारतका यह मामीन मनपर भाषनिक वंबीरः चक्क जनपरका निवासीः भागाः समीदः वरक्षणः करव । म्यी - भाकी-- पास वता वॉक्टी मही स्था क्री बपुरी भोल -सामी । -मंह-पु • म्ह मोडीहे म्यों। भारका नार्वाजीक कामका करणा । -र्रग-पु मनीवका (ग। - सपारी-नी [वि] निवनी सपारी। चोमक-पुनि] भोबी। दश्या छान ।

चामकी(किम)-पु॰ [मं॰] क्वपवारी शैमिका बॉमझा ब्दलाः जारंगीका पेडा बनाई ।

बासमार-वु माधुमीका संग कृत्वा ।

चोखा-पु॰ मुस्पाओं क्योरी मारिके पहननेटा संश डीना-दाना दुरनाः शिशुकी पहली बार पहनावा याने बाठा क्षत्रा। भैगरभेका करान्का भागा देह, शरीर । मुरु -यण्यमा-व्य शरीर स्थायदा दूसरा भारत करनाः क्ष बालना। -(के) समनका साथ-क्यी न गरन थाना माथ । चासी—मी॰ [मं] वह कविवा त्रिमुने बीएकी ओर बेर म दी। भोता। - सार्ग- दुवाममार्गदा वद भेर। सुर --

बड़म दिना बाला३ शहमा रक्ता, वंद होगा (नावी साँस); क्रिक्स स्टब्स (राग, रंग) । सुरक्रर - व• व्यावारी **दे** साथ विना किसी शेक वा वंचमके।

स्प्रत-स्ता छने छू जानेका भाव, स्पर्श; रपर्शवनित बारा विका स्पर्ध बीचा स्पर्ध से पक्का रोग इसरेकी बीमा। सगताः स्पर्धेने दोनेवाले रीमका दिवा विगायः अराईकी और से बानेबाका प्रवाहरण प्रभावः भनदूस आदसी वा मृतःनेपन्धं छाया ।~का रोगः,~की बीमारी~वह रोग वी रोगा वा वसक मल-भूत आदिके स्पर्शते दूसरेको शा वार । स्॰ -उतारमा,-भावना-भगत्त आदमी वा मृत-नेगको धानाको हाए पृत्रक्षे हर करमा । स्रमा~स कि विन्ती कीवसे संद, क्रम कामा शिक्षी चीजका दाव वा घरीरक विसी भंगस स्पर्धेशस्ताः क्रिलीके

पास पर्देशमाः शह साहिये (किसीबी) बबह बनाः बाजने

किए रपन्ने करता 'शिन्ते' सीचा खुना)। दाथ नगाकर छोड़ देना भारा ही बाममें काना बहुत हलको चपत सनामाः पानना १४ करमा । अ॰ द्वि॰ दी बरलजीके वीप भववानका समाव होना एकका वृत्तरिक्षात जाना। हरा−५ उस्तराः वका थाकृ ह्ररा । र्खेक−मी हेंबनेको किया। रोक− समा सादि गइ सेका

र्फ़िना-स कि पेरना: रामना: नगर केना अहर शादि षादनाः मिद्रमा । क्रेक-प् (से) पात्रम् यहाः भनुमास अर्गकारका एक भश मतुससरीत । ग्रेटा बढान । नि नास्तुः निदम्भ पतुरा

नागर 1 देकासुमास−द [०•] अनुपान अल्पारका वह मेर बिसमें एक या सबिक बर्गीकी बावृधि एक दीवार दीनी है। छेडापद्रति−त्वी [र्थ] बवडति अनंबारका यह मर∽ इनरेकी अनुमिनिका अवशार्ग प्रक्ति शारा खडन ।

छेडाल एडिस-रि मि]रे 'टेड । होक्कोन्द्र-न्हर्ग (हं) अर्थानर-गमिन क्रोक्केस्सि ।

होटा॰-मी बद्धावरन

छ्य∽सी+ देवनेद्रो क्रिया वा माना विवत्रीते छ। कीवद्रश बाब्यंत्र चुरबी द्वारा दिलीशी विशने रित्मनेकी बीबिया विश्वाम, रिक्समेगारी गतः मोद्रश्रमेकः वद प्रतरपर चोटे करमा। सर निकानमेथे किए बाने(स्वरवाय)बी एते बनानेका किया। -गामी "छाव-मी छेडने बानी बान साम, देशी-दिशीशी, मीच-जीक ह धेवना-स 🏗 बसान विनानेड निए अवनी बादिने

छुना, बोबमा अंख करमा, भुष्के शैना। किमीको प्रट-शिन करने हैं दिय पुछ काबा, कहना चैतनाह करनाह आरंग करमा (काम चर्चा)। श्वर जिकालनैन निव वाने-

का ग्रामा इकामा । शहवामा-म कि छेश्मेश किया कराना !

होता (ता) - दि॰ [मी] देशनद्रणा मह बरनवाला। निवा रण गरनेवाना (भग भावि) । प्र सबरी शारनेवणा । शोष -पु ४० क्षेत्र ।

धेर-५ ११दे ईश्याना महरा बरहा, शिष, महामा यह दिर की किया भी जके आहनाए ही गया ही। कि] क्रिन रोहमा माम्रा करनेस पात्र सीरावह दि भगामः सम्बन्धाः भावतः (१०) । ५४१-५० मार बारनेवासः ।

छेदक−प [र्व•] छैदमन्त्रीः माजनः ₶ (र•)।(रः छेदन-पु॰ (मॅ॰] कडमा वी इकड़े करमा: बुर (मराम्यव

करमा। माद्य करमा। कारने, हाँरनेका कर्म भी हर रह निकासमैदानी दवा। राहा दिमायत । दि॰ दे प्र धेवनकता ।

खेलमहार≠−वि॰ काटनेवालाः मध्य करनेवाना । क्रेब्ना—स॰ क्रि: हेन्द्र, स्राप्ता करमा, वेरमा। यस क्रारा।

प्र• देर करनेका जीवार, सूवा आदि ! छेवजीय~वि० [सं०] छेदम बरने भोग्य । खेबा-मु गुमा चुम रुपनेके बार्ग समावदा सेमन दोना दिर ।

छेदि−वि (तं•] छैरनध्या। प्र कारीस्त्रा। होदिस−दि [मं]क्टाइका त्या। छर्श(विष्)-विक [मं] क्षत्रमे वा कानमेसना विक जन करमेंबाला तह करनेवाला। वर करनवामा !

छेच−दि सिं∗ो कारमें सावक देशनीय। छेमा-बु कटे हुए पूजका शामी नियोद रेनेश वर सर्दे बाका ठाछ अंद्राः पनीर । छ॰ कि॰ तारः, शब्रावे औ भारिकी रम तिकासमेडे निय ग्रीनमा। क'रमा। क'मा कि क्षीय दोना।

धेनां-ली_{़ पत्नर का कीर बाग्र कारने वा नगरर गार्न} कानका भीकार क्षेत्रा वह पहची जिल्हे अग्रेम दर्ज आनी है।

हैमंड-९ [मंग] रिजा मॉन्सपस रबा अतार। छम=-पु दे 'धेम'। -क्सी-सी॰ सकेर बीन। छरा−पु **रद**सा

होरी-स्त्री॰ बहरी । ग्रेकफ-पु॰ [शे] बरुरा । प्रशा-सो १० ऐसे ।

क्षेत्र-पु॰ बार, क्षेत्रः बाव-धारिमके कर मारि बेंग्रे श्मि हैय है '-जूबका बारमे वा झिलमेबा बाबा हैरा थें! धीवम-पु= पासपरका बरतन बाटबर मान्य बर हेवा इता। धेवना-रे स कि॰ कारना विदिश करना करेंडण

शिलामा । पु॰ छात्री । धवर्णां-भी ऐनी।

होपर छवरार्ग-पुरु टिलका सन्ता। हिवार-पु रेश हैर ।

सीह -पुर सेवा दास्या भूत्य नाम श्रेता मृत्यका रह रहा: विक सर्विता स्तुल । हि-विक पुरु देश द्वा १८ पुरु क्षत्र नाग्न ।

हेरिक-पुनि विशेषा र्छमाण-भग्नाद्र धीतमा यथ रामा । र्थया=-प्र शक्दारि, माम कामेशका द्वीत प्रा

(पार्व) । रीमा-पुर है लिए । -किरमियी-प्रथ सार्ग

ब्लाय-वियम्परः। द्रीयोगः ।

वि चार तुर्कोबाका । पु वह ध्यः तिसके चारी वरणीर्ने मंत्यातुप्राप्त दी । ∽वृंता−दि॰ चार वाँचींगाना। भरदद । पु पार शॉर्नोबाला दाशी ! --वृंती--कॉ॰ मस्द्रहपन । −इस:−न्यो किसी पद्मको चौदहर्गी विवि बतुर्वशी । – बद्र−वि॰ दस मीर भार । पु भीवहकी संस्था, १४ । -इसिक-पु॰ को दानियाँकी कड़ाई । -सामा-वि॰ (रोस) भिसमें चार दवि की वा क्य सर्के । -बानिया-सी दे 'जीरामी'। -दानी-सी॰ वह बाली बिसमें चार मीती या नड़ाक स्थितिवाँ क्यी हों। ~धारी*-की चारधाना । -पई-नो एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमे १५ मात्राचे शोवों हैं। -यह-वि० बारी बोरसे सुना हुआ। पट, तवाद । --व्यरण-विव जिलके कहीं एई कर ही दशही, बरवादी का जान शस्त्रानाश्री । -पटहा !- वि है ॰ 'मीपरा' । -पटा-वि भीपः कत्मेशका निगाम्। ~पव-प्र भीसर। -पत्त-न्तां क्ष्यदेश्चे तह । पु वेश्वममें !-पतिमा-रती यह सामा एक पासः चार प्रमोदी पोथी पुस्तिकाः कक्षीरकी बार पश्चिमीमाठी कृते। -पश्च-प् भाराका, बतुष्पकाद 'नापन'। ~पद्र≠~पु घोषाका बतुष्वर। ~पदा-पु यार नरबीयाका यक विग्रेष छा। ~पक-पु॰ दे॰ 'धीरत । -पहरा-वि॰ भार पहरका भार पहरके अंतरमे धानवासा । -प्रहस्त-वि भार पर्को मा पहलुमीनाका : −पहला −(व+ वे+ ^{*}योपहरू' । पु यद तरहरी इसको शुक्षे पाकको चीपान । –पहुरु – पहिला-दि दे भीतहम'। -पश्चिमा-दि॰ नार पहिनीशका। स्वी पार पहिन्दीनाती नाती। ल्याईल ली १६१६ मात्रामीके बार परचीका एक प्रशिक्ष छेट । -पाद-पुदे भीवास ।-पादा-पुरुवाद वेरीवासा प्रमु, जामवर, दोर गाव-भेश कादि । ~पार≉~यु दे 'भीपाल'। ∽पास-पुराली वा छावी हुई अंत्रपादार बैद्ध नहाँ गाँवरे काम बददर पंचायत मादि करते ही। पक **दरहरी शा**क्यो । ∽पुरा~पु• वह कुम्यों बिश्रपर चार पुर पद माथ चक सहै। -पैया-पु॰ एक माबिक छैर। -फस्त-विश् चार फन्दोबाला (बाष्ट्र)। -क्टर-श षारा भीर । ~बंदी - स्वा श्रुरत कम श्रंदा भेगरमा बिम है मीन कपर है दोनों पन्धी बार-बार बंद होते हैं। (पी १रे) भारी मुमीकी मालवंदी । —श्रमा—पु एक वृत्ता । ~बगमा-पु पुरन भेगरम आहिको बगलह गीन जीर क्लोडे कारका भाग । दि॰ कागरफा । -चग्रखा-मी भीरंगे। - बर्ग्स - री पार वर्गमो गाहो। - यहसी -भी । भागे वरस बीनेबाना उत्पन्न वा आद्ध । –बाह्य--पुगल छाउनमे प्रयमित हवः प्रशास्त्रा कर् ।—बारा— उ बन्तारानक कारा जिल्ले नारी कार शिवकियों था दरका न दोर भी दल । —बीस—दि वील भार याद । द ~ रीमरी मारवा २४ 1-कीमा-प ८+७ (वा १६+ ९४) सामाओना घदा और ।—संक्रिया∼(व पार्सनिमी वा रानेवज्ञा (सरात) । -माह्या-पुरु असरीत । -मानवा-वि भागमेषे हानेवना। यु श्रीयानेशर राम वर्"द (मा राग शहा दणदादा र जन्महरूगा≕दि प'र्गारका र न्यारों+-पु **प्राचा र न्यास**-पु है

'बीमासा'। ⊶मासा−५ वरसातके बार मधीने वसदसे कुमारतकका काम्य वह रोठ में। मीमासेमें केवल मोनसर टीए दिया जाय बोबा न जामः वर्षात्रतु-धरंभी स्विता । -मासी-सी॰ योगासेमें माना वानेवाला एक गाना। -मुल-म चारी बोर। -मुला-दि॰ घार मुँदीवाका क्सिके मुँह चारों ओर 🚮 I−•दिया −• दीया−पु० वह रिया जिसमें चारीं ओर चार विचयी सगावी जायें। ~सहामी-मी भौराहा भगुष्पव। ~सेंहा~पु वह धगह बहाँ भार टाँडे वा सरहरें मिकती हों। ~मेधा~ पु॰ पुराने समनका एक बंड जिसमें टंडनीय स्पक्तिके हाय-पाँव पीठ या पेटक वन किशकर बार ऑहिबीसे बीध दिये वाते ने (करना) । वि न्यार मेसीवाना ।-रंग-वि तकनारके माधावसे कर्र दुकड़ोंने करा हुआ 1 पु॰ तत्कारका एक द्वार । (शु॰ - ण्डदाना -- करना -- काटमा-कियी जीजपर तक्कारका एक बार कपरमे जीने और दूसरा क्षांबेंमे वार्वे क्स समीस करना कि वह जार इकड़े **धो**कर गिर नाम वन्नी सकाईसे कारमा । −०**इवाई** करवा-दिनी श्रीवडी इशापे बछाल्डर निरमेने पहले हो कार द्वक्ते कर देला। -श्या-वि धार श्रोबाला। —रैंगिया−प्र गारुसंमधी यद्ग दसरद! ∽रस−वि समतक, बीपहरू । पु ठठेरीका एक भीजारा एक क्य क्ता -रसा-वि विश्वमें बार रम म्याद हों। प्र• चार वर्षेमरका शट। [-रसाई-न्ता जीरस करनका काम या जबरत । -रसी-न्या बीरस करमका भौजार: वॅं€का एक बहमा (]∽रस्ता∽तु योग्या। ~राहा− पुनद जेयद जहाँ पार रास्त्र मिलें ना दो सक्तें धक बुसरीकी कारें। जीजुबानी ! - छबा-ति जार लहियाँ-क्षका(दार द)। ⊸मर्∽दुगोधे और पर्सके सदारे विसासक्य रोजा कानेकाका वक्ष रोक्ष चीएका हम रोक्स्प्री विसातः • बार कविबाँकः हार । • वि• बार कविबाँ वाका श्रीनदा। -सिघा--दि बार ग्रीमीवाना। पु दे 'चीतिदा । ∽सिदा~पुदर नगर जदः पार गाँवीच्य सामार्य मिलतो 🕅 । -इट -इष्ट॰-पु दे॰ 'चीवहा । -इहा-इ चीवा मीमुदानी । -इहा-प्रवास्थान कर्र चार गाँवींकी सीमा^त मिलनी हों। "इडी-न्नी॰ दिस्री स्थान वा मन्त्रन शांदिसी पार्री मीमार्गे एक अव^{के}ड । —इस्टब्रा-पु काशीनधी एक तरबधी शुनाबर । चीमा−९ पार संगुचको सागः पार उँगनिवीदा सम्**र**ः

जाराज भार वृथिपेशास पत्ता भीशा भाराता। विमाना-०० स्र थरिन होता। १ प्र गिन जागेस सम्बद्धी बार विश्ववीदर करेटना। १ प्र ग्रीकाता)। व्योद्ध-पुर भेगृहा सहस्र कंग्ना-सुदामीः मगरदा हान्य सामा-बीन्द्री पत्तुवारा पूरत लागिने लारे भारे दे रामाभीने नतावा मानेक्या होता भारता महार भारत की निवास मर गोन थे पत्ति भारतमपुर ।-व्यान्त्री-की मानान्त्र कुष्टा पत्ती पत्तीतमा गर्द रहेदिन। निकास-इ प्यान दे दर्गनेशने दुवानरारे रे निस्ता अभेदन्त्र बहरे

चीका-पु चपरकी भीकोर निमा मृतिका भीन्त द्वनाम

tent i

र्थर्गा-रि [दा] मुक्र-बंबरी। मेमानवंदी क्षेत्रीः | मुद्रादित (देनो कारवारी): मुक्रावरीयो (वेदी बहाबीर)

Eh-

होइसी॰-सी करकी होन्सी।
छोइसा॰-मा किन्न धीर इस्ता, स्मेरकुक हाना। दवा,
कृष इस्ता।
छाइसा-पु॰ दे॰ श्वहास। ।
छोइसा॰-सी॰ क्षर्तीहिणी।
छोइी-दि छोद करनेवाला स्मेरी। सी मेरेसाओ धीडी।
छोइ-सी॰ प्रस्नेत्री किया, बचारी वह चीन निष्टी

विद्यान्स - कि व्यस्ता, एस्स देन । स्वित्तां - पु करका छोदरा, साथ मणा। स्वितां - पु करका छोदरा, साथ मणा। स्विता - पु मानवरका छादा (सारत) वका, सावद । स्विता - पु कर जीत । है ' देशेरा। स्वितां - पु क्वार वाजदेश कोदे बाद स्वदेशना देखा सामा - कि सामाना।

वंत्र महत्रह प्रकाश वादा सन्ये प्रदर्भेश वह आह

देवशानाः नीताः -संवर-द्रः दश्याः शाः रेट

ञ क-वेदनागरी क^{र्}याकारी कर्नाका तीमरा अध्यत । वकारक- 1 विद्यालकायः वटे शीलान्दीहराः अशब्दः सरास् स्थान तार्तः शहरप्राच । -ब्रधान-वर्व लंबा-बीहा, परे श्रीमनीम्बर प्रवास र्वे द्वरान-५० (४०) हो सहस्रो रास्तीन्द्र विस्त्रोद्धा स्थानः च्याज -द० सहारेमें काम सामेशना बहात. प्रक्रीत बह रहेशन बहाँ हैं। वा अधिक रेन्साएसे किये। -चेवा-व॰ संगी बहाश्रीमा वेदा !-प्राट-व मारमर श्रीर-मी॰ पा] सहार्थ तुद्ध । -आपरा-श्र-सि मनास सेनावन्ति, अमोदर-उप-कोफ' (ब्रिटिश प्राप्तः)। थीया ।-(ते) हरगरी-सी दिलाइ- श्रद्रमदश्चे कशा । र्जाती-पर विकर्ण हराये । - हक्ष-श्री कामी भेर देने -(गो)बद्दछ,-जिदाछ-त तद कारी क्रम-प पा॰] मीरघा, धानुका ग्रेला वर्शायोका देश अंग्रस-पुर्व [मं] निष् स्टारेक्स पंते । र्जाया-को सिंधी याँपा विरक्षी देवाचा रहता।-सम भौगम्-वि+ सि+ो चस्रतेवाका, यका विमे *पद्धे* दसपै कार-पुर बाबर, इरस्टरा ।- लाक-४ - श्रीवर देवरे बार्यं के जा सर्वे. स्थावस्था कवरा (अनम संयक्ति): का करवा । प्रातिजन्या सिमायक स्थानाको गुरुभोको कर्वार । पुरु अंधार-प्र• क्षीपमें बंदनेशका कोना ! चन नरहा । - ब्राटी - लो । इत्यो । - ग्रहम - पर वेपस अवारा - प्रश्निकोधी **ग्रह स**रवाति । नियादियोदा वस्ता ।-विथ-व वर प्राणियो(गर्गारि)वा र्जधास-१ [मं] धारु दशाहिता । वि ता परी बहर । बाका र अधिल-विश् (रांश्री श्रव शीरवेशामाः पुर्शाना । र्जेंग*रंत−ि* शॉसरकता परिश्रमी । असम्बन्ध निश्री बना रेकिन्साना यहाँत स्थाना स्थान क्यमा-म॰ कि आंधरे दोड माना क्या मानुगरेन रशतः बंधरः मांत । = अस्त्रश्ची=स्त्रो॰ हिंद्र ी अनेपीकी डीड कपनाः कार भागाः अथा ताडा । शहबदान। गू । ~से अंगल-उदाह अनुसन्य स्थानमे जैया-वि जांबा हुमाः सुद्रोह, अयुद्धाः रागरंग (समाना, देश्या) । जीवपुरू-१ (सं) में भारते वह बरनेताना बर्फ ! र्वेशस्त्र-प छत रहामदे आधिक व्याने जनो दुई बाह त्रं अचील-सा । शाहा दिलाँ सीटे वा क्यांने एक या जाती नहीं थी। छप बंबर बंबल०-रि इसन्त्रत बीर्ना निस्मा। बा जानी बनी बुर रिल्की। दवह वारिके दिनारेशर के र्वजार • जीजाक-म शहर, बधेशा बंगार, हरेली में इए राम बुरे। एक रागा भनावके रोडक जिमरी अनाव मनीबी बारी बंदक (था+); वह मेहबी दीव (था)? द्याद सिवा गया ही । जेजालिया-वि रे**० बंदाओ** । जंजाकी-दि॰ शोदिया कमाती । श्री अह रत्ये औ श्रीतारों - दिन जीवनी दिनले वा पदा दोलेवाना दम्या निमा नीमे बमनवाद्याः शुल्रीः श्री वास्त्राम् वा वनस्याः विरमी जिनम वाल भणने उनारमध्य ध्यव को है। बागुरुष प्रजड़ी मु जीवचारी शहनेशामा बनवासी ह र्श्वतिर-मी (का) सर्वत्रक, मुगला मही देशिविशको ~जानपर~द वन्द दर्हा । ~वाहास~द कडीटेसी बंदी ! नगामा-म केंगाया t अंबीस-पु नेशासी धरनमें बरा हुमा रेगा बर'रेड बार्तिका एक देश पून दुई पहली बारिका एक देह ! शिकार जिल्ही संबोदगी बनही सामी हा हरीया। जीता-प्रश्नीयस्था दाना । संगार संगास-५० [का॰] नविदा क्यांव नृतिका। -(१)शाद-दि क्षत्रियातार (शिकारे) । इतिहिन्दि चि] त्रेत्रीरमे देश हमा बंदी बंद हारा रह रेन । —ग्रोक्श~यु० जे दिये देव द्वर ते दे था शंसवे ग्रा संगारी-वि [का] उन्तरके स्वरा, मीका । अंगाल-पु [मंग] क दा मेरू । रसाहर सोर भाने । जीतर-प्र नंत्र कारीया करिन्द्री अन्दिरे सामे प्रतिने भंगानी-मु वह शहदा देशकी समा । दिन्देन

चौरासी-वि भरमी भीर भार । पु भौराधीकी संस्वा, ८४। भौरामी छाद्र बीनिः एक तरहकी रॉक्टी पुष्कर्मीका गुच्छा ।

चौरी-स्पी छोटा चौरा। एक पेड़ बिसकी छाल्सी श्य ननाया जाता हा होदी हंडते। [से] श्वार स्वी । मारेख-प भागतका माठाः पानी भिकासर पीसा हुआ

पायक । चौर्य-पु [मं] दोरी, कोरका कामा सक्कामा हिपान ! -रत-पु॰ ग्रुप्त मेथुन। -श्रुसि-की चोरीकी जादतः

चोरीसे जीविका चढाना !

चीपड-पु॰ [सं] योशा

भीक-वि• [स] पूर-भूग-संरंधे । यु शुंग्न भूबादर्भ । चासाई-सी॰ यह पंत्रशस्त्र १

चीत्रक्य-५ [मे॰] पुतुद्ध श्रतिका वंश्वत । चौबल-वि पबास सीर पार। पु॰ घीवमकी सदवा ५४।

सौदा~प्र∘६ 'वीजाः चीबालीस−वि पालीम और पार I <u>प्र वीवालीसको</u>

संख्या ४४ । भौस−दु कार बार जोता हुआ। शेत ।

चीहरू-पुदे 'श्रीमत् । चीहरा−वि॰ प्रिष्ठमें बार तहें हीं। बीगुना ।

चौद्वतर−4ि सत्तरभीर वार≀षु कश्को संस्या। चीहान-५० थप्रिक्टनाने धनिनोदी एक द्वारत ।

चीड•ि~म नारों भार ।

७-देवनाय**री** वर्णमाकामें चवर्गका इसरा वर्ष । कथारव रधान तानु ।

र्षश•~प्र गोरु शंद ।

छंगा छंगू-वि जिसके हिसी पंजेमें छ वैननियों 🛍 ।

छग्निया॰-न्दो॰ दे 'छगुनी ।

धुष्टिया धैमुमी⊸मी द एग्रमी। ऐंद्रीरी~स्पै एक प्रशास का ए×दमे बनाया जाना दे। पॅंडनां−अ नि गोंटा बानाः कुना यानाः कटनाः वृर

श्रीमाः बरुग श्रोमाः विवरमाः श्लोण श्रीमाः साम्रः विवा याना । मु॰ −(टा) हमा−पाताः वर्ग । −(१) सँटे किरमा-दूर दूर रहता ।

फॅरनी-मी फॉरनरी मिला (कर्मवारी जारिक्री) हरानेका

धरवामा नग कि धौरनेका काम करामा ।

धेंटा-वि जिमके पिछने पर छाने ग्रं हो (बीश) । चैंडाई-मी लॉटनेडा कामा लॉटनेसी जन्हता (कर्मवारी

भारिको) अनग व रतस्य काय ।

र्वेद्यमा-स कि है 'दिशाला । ऍसव∽दु ऐस्र ।

धेरम-वि धेरा दुमा प्री श्रीटार मतम दिया दुमा । प्रदेश - म • कि धारमा स्थापना। ग्रोटना । अ कि

के पाना :

चैंदाना --म कि शीनमा, सुमर्दे शावने वरपूर्वेद के

च्यवश-पु॰ (तं॰) चूना, रक्षता, क्षरमः च्युतिः यह कृषि जिनक विषयमें मेखिब है कि अधिनीकुमारोंने सम्बं च्यवनगाध सिलाकर बूटेसे जवान बना दिया ।~प्राशः= पु॰ आयुर्वेदका एक अवलेड को श्वास-कास स्थ भारि रोगोंकी प्रसिक्त भीषण है और अधिनीकुमारीका बदावा बनाया माना भागा 🕻 ।

च्यादम-पु [सं०] पुत्राना टपराना। निहास देना । च्युत-वि [र्स•] पुना शता हुना श्वरितः निरा **ह**माः अपनी बगदरी दश का दशका द्वाना, रमानम्हा पुका दुव्या (कर्तम्बन्धुत) । ~सच्यस~पु एक विरुद्ध स्वर । --थब्ब-पु॰ एक विकृत स्वर !-संस्कारिता -सस्कृति -को कान्यका एक दोच व्याकरम-विरुद्ध पर मोजना। ष्युतारमा(रमम्)--वि+ (सं 🕽 हो विवारीयाका, कृष्टिक ।

ज्युताधिकार-वि [थं] परथे दशवा हुआ। च्युति−की [सं] च्युत होना चुना शहना। भ**र**ने

रवामसे अब दोना, रखनित दीमा। चूका कीप (वर्णन्तुति)। मगः गुरा। च्युप-पु [सं•] मुछ, चेहरा।

र्ष्या-प्र•६ 'वॉश । चप्री-मी देश वाही।

च्युका-पुरु निक्का । रपुत्त−पु[लं] आधका देश ।

च्योत-प्र• (सं] चना रपदना विदना। श्वीनाच-पु॰ परिया।

र्छ हुमा!-वि छीता हुना । तु देशता नादिके मामपर

धोका द्रमा प्रशुः स्ट्रस्टी छर ।

र्धव्~्रं मृभा समासगत ६०० । −प्रयंध-पु• छ रवना । −शास्त्र-पु धीर-रचना-मंत्रो हास्य । −श्तुम —अ अग्या न नेवता जिलको नेदीमें स्त्रति की गनी है: रतुनि ६,६नेशस्त ।

र्धेद∽९ [मं] अभिनापः निर्वेदपः, बस्यदाः मःनः स्रीक्ष-मावः विषः श्रष्टन-पृश्वः प्रसुचना । वि मनोरमः ग्रप्त । -ब-द॰ वै॰िस देवता । -पासम-त टग दोग करने

धीय-पु अकारियर यहमनीया यक्क शहसाः दे० फेर(स) । -प्रबंध-द्र धरन्यना । -बंब-पु॰ छनन्या पोगा । र्धन्(स्)-पु [मं•] १४८१६ अभिप्रायः स्वेग्दाचारः भीरत एकः नेषः मात्रा वष्यः वनि भारिश्वे निवधीने शुक्त बावय- धर धान्य । र्छंदकली राणी।पु [मं]रशका बासुरेक गानव बुद्ध

का सार्थकः -पामन-पुढग दीन वरनेराना। छन्म-तु [मं] प्रमुख कर्मा रितामा । र्धशस्त्रक्रन-९ [सं] बस्स बस्पेत्रस ग्रेंशनपुणि-श्री [मं] रिशामाः प्रग्रंच बरना ।

र्रोदिन-वि [से] प्रमण संन्त्र ।

र्खेडीं-र^ समारेक्र फामनशाब्द गरूना। वि समिशा।

बंगका) शक्यमा १ सक्ता≉~स ति, भीवक्षा द्वीता स्त्रीमग द्वीता । क्रकर-पु+ [स] किंग पुरुषेत्रितः गरः भीशायः। जरूरमा*-स क्रि॰ दे॰ 'बद्धमा ।

खकात-सा॰ देसावरते मामेवाके माळपर मगवेवाना धरः भावासकत् ।

कृतसार-भो• [ध•] बाम् धैराता वनतका वाष्ट्रीसर्वे आग मिसे बान करना हर मुसलमानका कर्तन्य है।

अकासी-पु॰ बदात वमूल करनेवाला । सकित्र=-वि चरित्र, भौवका ।

अकुर-पु [एं∗] मक्यावका वैयनका पूरत कुला।

जीदा, सुग्य । क्ककी‴न्दी पद शरदकी चुक्जुल । वि+ हाकी।

ब्राक्ट+-पु+ अगन्, ६सार।

व्यक्तर-पुरु बहा ।

वाक्षण-पु [सं] श्रथण, साता ।

जसम-पु•दे 'वश्म'। अस्त्रनी−स्रो दे• दक्षिणी ।

जलम-प है। 'तलम'।

खक्तसी~दि देश 'बन्नमो' ।

ज्ञाप्तिरा-प्र+ [अ] श्रजानाः जंदारः देश पीत्रका काम देशैबाडे पीपॉस्ट बयारी या गेतु ।

इत्सम−५ [का•] पात्र चीर। दानि । ∸ग्रदर्ग−वि जो बदम गावे हो। पावल ।—(हो)जिहार~पु• रिक्क्ट क्रमी दुर्र बोर दुन्स मनोवेदमा । मु॰ -हुरा हाना-बात दुर

बश्या फिर कीर भागा ।

क्रएमी−ि [फा] शतक, अने बदम क्या हो। त्तर्राद−स्पे [फा] दे• 'ठक्रंद'।

क्षरा-पु॰ जगद वृश्यितः। -क्षर-पु॰ अक्षरः।-क्षरवनः--पु॰ अगन्ते कारभमप अगलता, परमेचर !- अनमी !--की देश 'वयाजनमा । - आमिनिश-म्बीश संग्रारणयी रात्रि !- आहिर-वि नगणासिक सर्वविदियः।- जीवन-पुरु नगर्दे वायमस्य परमेश्वर । -जोनिय-पुरु है 'अपबीति'।~लारम्थ-पु॰ जनन्दी वारमेगाका प्रमेचर। --नियास-पु॰ दे॰ 'बर्गाबबास । --श्रान-पु दे॰ अगञाच -- बीब बीकनर में दूर्ता सहित भये संग्राम -दीनर । -कद्--वि॰ दे जिगरंग ! -वंद्रज्ञ-दि कादम, गुरुद्धे किए पृश्य । +श्रीती-स्पी मोदन्त

दिन्त्रा कदानी ।~मोहली~दि मी+ दुनिवादी गोहने थानी, गुररी । -सर>-त शत्रा । -ईमाई-मी० बदमामी लीइनिया।

बगधरा(स्)-५० (न०) ग्र्वं ।

अराजगाना। ~%+ कि+ क्यमगाना धनव्याना । ज्ञान-"नगर्"का समागगण मद । "जनगी-धी जय-

इस, प्रमेक्ता। -क्रपी(यिम्)-वि द्रनिवासी भीउने बाला विश्वविद्या ह

क्रमार्थप-पुरु एक मार्थान सामा।

कराज-९ [सं] दिशक है भार शानिमें एक निमये बाहि मंत्र वर्ष मन्त्र और मृत्य करें द्वक श्रीता है (प्रेड़े) एवंको । सगतान्त्री पुरुका क्ष्यून्या हेषु० सगर्, युनिया !--शुक्रन | अ दै॰ 'बगर्गुड' । ~जमनि~को॰ दे॰ 'बगजनदे । ~पति-पु दे॰ 'जगपति ।-मेर-पु॰ सामनिदेशः सबने बढ़ा महाजन, बढ़ महाजम जिल्ही मुप्त हारे मानी बाब । मु॰ - सरका साका-वह भारती निर्मा

पन अक्ष्पन दशरेती क्षप्रका दश हो। जगती−स्पे॰ (सं॰) परतीः दुनिया कन्त्। मान्यरा*≻ गाया मकामकी जगह। अंतुर्प्रतृष्ट रमायः रहरेरिः धेदा−चर−तुमनुध्या−आमि∽दुराजा।-तद्र∽

पु॰ वरतीः बुनिया ।-घर-पु॰ दर्यतः। -पति,-अर्थः (तृ)-यु रामा ।- स्ट्र-पुरु पृष्ठ ।

अगल-त [र्शक] दुविवा, संसार वास । रिक केन्द्र थतः। - ऋता(म) - म दरमेशा ब्रह्मा । - वास्य द्रग सहित कारणस्य परमेचर । -तारम-पुर सरेग चगनको तारनेवाका ।—वति −विता(न)--५० स्रोक्तः --प्रसिद्ध-दि विश्वविस्तात । -प्राम-<u>५</u>

-पराधव-दु॰ विष्यु ।-प्रश्न-दु॰ म्हार विश्वा दिश -साक्षां(क्षित्)-इ एवं। -संद-तुर सरमा ~सहा(द्)-पु०≹ अवप्रस्मे ।

जगरीसकंत्र बस्-त ग्रमान्य भारतेव के नेव (१८५८ । १७) । इन्होंने बैद्यानिय दंगन वदारित वर

दिया कि वेड-पीधीमें भी धननत्व होता है।

व्याद्-वान'का समाञ्चात रहा -व्यंतद-५०६वा -श्रेंबा -ब्रॉबिका नश्रे दुर्गा, श्र्यामनो । -श्राम (मन्)-प्रवर्भवरः बात् । -आदि-प्रव सर्वे मला । - आधार-पु॰ एरमेश्रा बाह्य काम ।- मर्च। प्रभाषर । विसंगानो सानंद देनेराणा । 🗝 (स्)-प्र कात्र ।-ईश-प्र वसच्चित्र सम्भग्नारः च्हेंचर-प्र वरमेवरा शिवा हरा रामा। -प्रस् बरमेंचर। बिरेवा मारण शंदराचारेका गरीवर केलेका की परको (-वरिर्श-स्रोध हुर्गा मनस्रोती। -रीव पुर परमधरा एतं : -पाता(त)-वि अमन्धे वन बरनेवामा । शु वरमेवरा ब्रह्मा । -धात्री-मा इर वररक्तार -बल-इ बाहुर -बीज-इ रिर -बोबि-पु॰ परमेवरा विदेव । -बंध-दि॰ इस कृत्यः। नवदा-स्यः कृत्याः। नवित्यातःनीः क्रित्य प्रतिदि सुर्वत्र हो विचनिमतः - विमाश-५० प्रवरः।

श्राचित्र समझ सचिक परिमय देशा दिया हैवल है आरिका)। नंशकू गाँचे आरिया समयमा पूरा देवे हेरे स्थाना । जगनु जगन्यु-९ (गं॰) शक्ति क्षेत्रा पर्द र अराज्- अल्प्डा समामान स्व । - माथ 3 सार्वित रिणुः बुरीमें स्थारित दिन्तुमृति b-स्क्षेत्र -स्वाम(र)-त्र हो। अन्यान्त्रहें। प्रत्यानकाम अस्त्रान्ति। [मु॰ - का माम्-जन्मकाोदा मराज्ञार। वर वर्

कागनर~म कि॰ मागना निद्दित प्रदेशा मध्य संदे

हीनाः समरमा। चल्माः प्रदीत होना (बण क्रे^{ति}ः

श्री दिल्ली एनेने अधीय म है। जिने सती प्राप्त ही करें I] --विषेता(मृ)-पु कान्द्रा (अवस्व स्तीरक पारेवर ।-विकास-पु क्रोधरा रिगु । अंदर्ग 2000 CE 2791 - ETE(2)-4'1 FC

मु॰ -का वृत्र निकक्षना-कही मेहनत पह नाः वयपनका रताया-विया निष्कतना । ज्या कृष शाद भागा-कृष्टिन महनत पहना; प्रतना कह मिक्रना कि क्यपनका सुस बार भा बाद। नक्ष राज्ञा-पुरनेती समीरः (व्यं॰) भग्मका बरिद्र । ~में स पङ्ना-प्रकृतिमें न दीनाः भाग्वमें न होता।

छद्−५ औ• सोइ, पीतल, नील आदिका पतका होटा भी दिएको बगहे आदिमें कगावा बाता है।

छ इमा-स कि (भावक भादि) छाँरनाः व छोइना । छदा-पु चौदीक वारका बना चुडी बैशा यहना को चुनमें पहना जाता है। मीतियादी रुहियोंका गुन्दा। वि अदेश तनदाः

स्रविया-प दरवान ए∮वरदार्∽दार एउँ मनुरू छदिवा −नुदामा वरित्र ।

छवियास∸प एक तरहता शका।

प्रदो-त्या बांस देत कदश आहिया बना प्रत्या, छोटा रंदाः पोरीके मनारपर चडानकी होदी। गोयक भुटकी भारिको सीची रेंसारे। वि औ अटेकी, व्याकिनी। -छटाँक-भ मारेने, तमहा। -तार-वि॰ की छही क्षित्र हो। शीधी चारियोंनाका (करना) । पु॰ छड़ीनरहार ।

~बरबार~प्र• भोरदार, बहावरदार ।

छत्र-सी मञ्जानको पक्षी शटन वा शान्त्राजानेका पद्य-गुमा फर्टा वह पागर जो इन्तके मीच बाँची जान, छन गोर। • ९ वत पाद। • अ अवत (क्रिनीरे) दोते, रस्त पूर् । नगीर-पु छतके मीचे बोवनेकी भारर था पाँदमा । -गीरी-स्वा छतगर । -कोइन-पु एक तरहाडी कप्तरत । -वंत+-वि थानक धननासा । छतना≠-तु पत्ते बोहसर बमाया हुमा छाताः मधु-

मनरहेका छाता । म॰ कि. रहना । छतनारः छतनारा।'-दि (पंद-पीपा) विश्वये दातियाँ,

रहतियाँ हरतक फैमी हों। फैना हुआ ।

छतरिया विष-पु॰ एक तरहको बहरीली सुनी। छत्तरी-सी नीहेकी तीनिशीपर कपना पदालार वर्ग था भूपते नयनेडे किय बनाबा दुना मान्छारम जो पीकानेपर मीठ भरीबामा बन बाता है। छाना वर्षीका छाता। छीना छाता। पेरांबा। रेगर वर्धी मरवन मारिकी बनी हुई ग्रमाध्यर मेरदे। दिगाँगदे रामापि वा विशाबे श्वानवर बना हुआ मेरप स्वृतर्रार्थ पैटनेडा डट्टा टीकी दे रूपरका डट्टा वहरी मान्डि समानीशार दांबेडे कपरका भाष्यान्तः ह्यारमुक्ता एक्स । -शार-वि विशवर शतरी हो ।

पता*-चु छाना।

छति∗−मा∘ है 'छवि ।

प्रतिपा॰−भ्मे ≼ छती।

प्रतिपामा-ध दि॰ छाप्रे । कगाना मगसा (बाह्य, बंद्धका बुरा १)।

छतियम−पुरक्षेद्र।

एतीमा~वि चानार- महार ।

एकीमी-विश्मी दोंद, महारे इर्देमें बपुर एक-एं-में रू(गो); हिन्सम् ।

एद्रशि॰-को दे ८वत ।

प्रतीना—प्र∙ धवरीः कुकुरमुत्ता । छत्ता-पु॰ मधुमनिसयों, मिड़ों मान्दि। परा पहत्ता। एतरी। छानी हुई गली या नामार; कमलका नीम धीना छत्रसास । छत्तीस-नि॰ वीम भीर छ । पु॰ १६ की संस्था ।

क्वीसा−पु॰ नार्द । वि दे॰ छतीसा । छचीसी-वि॰ स्रो॰ वे 'छदीसी'। छत्र-पु [सं] छत्तरीः रामार्थेनेः कपर स्माया जानेशको रामनिवृह्य छत्तरीः छवदः कुदुरमुत्ता छत्तरिया विपः शुक्ता दीवशीयन । - चक्र-पु स्वीतिवदा एक चक्र बिससे द्वाम-ब्रह्मस ५७ जाने का सकते 🕻 ! --व्यामा--ररी॰ छन्न अस्य अस्य १~घर -धार-पु॰ स्त्रभारी। राजाः राजाके कपर छव कमा रखनेवाका सेवकः। -बारी(रिम्)-तु रे 'इच्चर । वि छत्र धारण करनेवाला । ~पति~पु॰ राजाः महाराज शिनानीकी परवी (~पन्न ~पु स्थकपम भाषपत्रसा पंका छतिवसः मालकच्च्। ∽बंधु~पु॰ [हिं] मीच कुरूीत्पन्न शृत्रिय। ~भग-त राज्यका माधा गृह्या स्वापीनतामा माधा वंषव्यः स्वीतिषद्धां एक वाप श्रियुद्धा एक राजनाश्च माना

याता है। छत्रक−पु [र्स] छत्ररीः कुप्रस्ताचाः रू(मीः शहरका छत्ताः जिनमंत्रिरः मध्र्यं नःमद्यौ पिहिया ।

छप्रवती-त्यां+ [सं] सं६० छत्राः। छत्रांग−पु• [सं] गोरतो इरताक ।

छया−यी [सं] कुकुएनचाः पनिवाः मीवा । छवाक−पु॰ (पं॰) कुकुरमुशा धत्रक।

पत्राकी~तो [मं]इङ्ख्याः। छविक~पु[सं] दे॰ छत्रकर ।

एविका−सी [मं] एक्का

छत्री(ब्रिन्)-दि [सं] छवडुकः, को छाना समाये ही। पुर मार्ग व देश श्रीवय ।

छन्दर-१ (सं•) यरा इंडा **त्रृथ छर्म॰-**पु एम पश्चामा।

छत्र छत्त-५ (स॰) भारत्य वदनवाची चीत्र। स्वाकः छानः गिलार योका पत्ता पंछ । -पप्र-पु भीत्रपत्रः

छदाम-पु॰ दुक्रश विश्वका श्रीवा भाग ! छवि-स्ति [मे] धनः गारीका आध्यास्त ।

छ छ(म्)-इ [नं॰] इन दुरा अपना असूरी रूप शिवानाः वरमा दुवा भेगः वदानदी छात्रमः छन्। -तापम-पु नगा दुआ तरानी क्वरी सापु I -वेदा-पु॰ बनाबरी भग। -बसी(शिम्)-नि मी भेत

बद्ध हो। र एप्रिका−सी [न] गुटुपी।

छची(चित्र)-दि [ब] एचरश्चारी। रुप्ते। स्तर-पुक्षा रण पुष्पदानः आनंतः। -स्वि-मीः

विवरी शमयना । --दा-भी शामिः विवनी :--धानुक--वि श्रमनेगुर शं≔सर्≔स रह ६५ प्रशास्त्र । छन-रा जनन दुणना आरिपर पानी वत्रवश्रव स्रो

श्रम आस्मि मारेकी कर्ण आन्दि परनम् निकृतन्त्रामी भारायः पुँदमः भारित दश्यारा भाराय शामकार ।

लिए सद दिया था। मराल-वि [सं•] बराधारी प्रटिक । पु• वर्गाण क्यारा मोमाः सम्बद्धः ।

जटासा−र्सा• [मं०] बरामानी ।

जराषती~औ• (सं) बरामासी ।

बटामुर-पु॰ (सं॰) पद राक्षम को मीमद्रे दावों मारा यसा १

जटि~थी [र्छ+] बटाइ समृह्य जरामासीः वर्गर। प्रकृष । जरिस−वि॰ यश हुआः।

अटिख-नि [सं] करावारी। एकता दुवा पेनीयाः कटिन दुर्शेष । पु जद्मपारीः सायुक्तमवासीः नितः

नकरा। शिव । अटिस्टवा--ग्री॰ [मं०] वेचीत्रमा सम्बद्धतः बटिलाई । जरिखा-न्ये [मंग] प्रदामासीः विष्यकीः बनः बीनाः मदापारियो (१)।

ब्रही-सी [सं•] वे• 'सह ।

जरी(दिन)-वि [सं•] जरावारी । मु शिना वरगर । जट्टक जदुस-५ [१] } स्ववायर यथ द्वमा वैसादनी

दाग संच्छना जहू !- वि वरमे, उगनेवाला उचिनमें वाधिक मूख से सेरिवाना ।

जहर-प [मं] पेरा द्वति जराष्ट्रा एक प्रशासीक वर्गता महामारत आरिमें बनित एक देश । वि कश करिया वक्ष बुद्दा । –गष्ट्-पु ऑगका विकार । –प्रयान्ता– मी॰ परस्माणा भूमका बत्त श्रृत । -शुन्(तृ)-९० भगवतासः । -वीप्रणाः - बालना - स्वौः गर्वजानसः वतः । **बारक्रिश−सं**(१ द 'बारक्रिस

प्रदर्शामि-गो॰ सि । प्रदर्शवन अप्रि नो आवर्षेत्रदे मतरो भारारकी प्रवासिका काम करनी है। मामाध्यकती विन्दिवीरी निकल्पेक्का बादक रसः गीरद्रक जुगः (

चटरामस−५ [मं+] है 'त्रदराधि'। अहरासक-पु• [मं] क्रमीसार; वकारर रीम ।

प्रदम्म−पु (सं) क्टरके भाषारका वक अन्यान (वे) । कदराच=वि वैका शहा । तु≈कदका='शन मी बन्द करन्

किरस महरिकी परेरी'-नर ।

जह-दि [सं] चपनन, पेशनारहिता निर्वृक्षि सूरी। बेर परनेमें बलमर्व (दावमाग): छराने हिट्टरा बदश द्यमा निरंभेष्ट गविनक्रिका स्थित। ब्यस्ता ग्रीता । तु. अप अनेपत परार्थः जलः शोशाः - विदय-१। दोर्शयोः शीमा । ~ सरान् − श्र न्यान् विक वांधवीतिक वरावीती समक्रि । -पशार्थ-ए अन्तरन साले माहित प्रगत्ना बनाइएएसम् इस्त्र । - छक्ति-स्या जल्बगण् चंयपन् था बांगभीटिक बराबी हो गमर्ड ! --भरत-प्र भागरत में ब्रिंग एक योदी ही ल्लाएकी आ ग्रेंक्ष्में बच है किए। अरबन् स्वरहार बर्ते था। -बाब-५ भेरत भगमना मरित्रम म माननेरात्रा नाऽनिक ग्रंड ।~बादी(रिक्)-वि पुरु प्रण्यास्य अनुवासी । -विकास-पु शार्व नियाम मर्गितियाम।

मह-प देवनी मेरा वह भाग जी जागेला नेप्रवस्ता !

और दिलाने हारा ने पर्ताल देवन संव बहन ए जूना !

नीर्वे, भाषारः मृत्य कार्यः । मृत्य - कम्प्रवृतः - स्पृत बाध करमा । "कारमाः "गोरमा- गर" कर"थे क्षीर्यं करना भारी दानि पूँचामा। -प्रमन पण्डमा-पीपडा संदर्भ गरह वस बाना रा होत धमना । - मुनियार्स - मूसये - सन्व बन्धे । ह पानी देना-वर भीरता।

सद्रता⊸नी॰, जदरव~पु॰ [मं] या दौरेश मा अमेतनगाः काशामः, मूर्लेशाः एकः मंत्रारी जार-वरः स्त स्तरवता मा चेहाहीमतादा योज्य है से दि स्वर्तनी नियोग होने का बरराहर कार्रको स्थित के करह र

मानिकामें परिशक्तित होती है। जबताहर-मांश देश 'बरवा'। अबमा-स॰ दि एक वस्तुकी इसरीमें वैद्यान, बण्या वधी करमाः श्रोकमा (क्षेत्र, मार्ट) सारकाः करार

(धीक, चाँध)। दिमीकी चुमली लाला वा स्मिक्ट निगर दिनीह कान घरमा, शिक्षावत दरना ! जक्षामा∽छ॰ कि दे॰ विशास । जबद्दम-पु॰ अगहनी मान ।

प्रदा−को [सं] सुर्रमामनाः नेवॉन । अवार्ड-मी अपनेका सामः अपनेना प्रवर्गः

जडाळ-ति विसार सम्बारनं बराही काणा गाः श्रमाणा कि॰ जडनस सम स्रामा । वे मणी वादा सरामा बादा साना ।

कदाय-स अशोदा काम वधीरायाँ। जवावट−री दे॰ 'अहाव ।

जदायर-पुत्राक्षी पदमने और नहे बरम कारी

बहाबकी-पु॰ दे 'तहाबर । राश्यि•–दि० महा धुमाः उदा≭।

जिटमा(सन्) -शां (मं) जहमा रगम्या ५^{००(जर}

अविद्या∸षु नग पहंदेका काम करनेवामा । जनी-गरी बनीयाय बुरी। यह बम्म्यूर्य जिल्ली मार्थ मार्थ

दे काममें नायो जान ! - मुदी-मा क्योपि ! जर्वाभूत-वि [गं] बहबारों मात्र बी हिंह हैं " म हो निःशंद ।

जन्मेमा-पु वदर्शेया दिमध्ये वर गार्थ का व्राप्ति सहैयार-को जाग देश कानेशक गाउँ नागे।

अप्री-रि देश मा । जलर−दि वर्गतानाः

खनम∽व देश दश'। प्रमुखीं लिं। यज्ञ करनेशाला चालपा प्रदूर ।

जनमाना-श< दि ^२० वशना ।

CEPTIT-TO E STOR'S खनाबालन - द्वित पनाता अस्यत वशका झन्दाद वार्गी

2691-9 C 4'8 ! अमीक-पुरु ने वृति ।

ज्यु−पु [कि] कीन्त्र क्रमण्य शिन्यापुर की नारण्यर -बार्श-१ वर्गा भाग्य कर्णा - इन्ह-१⁻वर्ग भी पूर्वते जन्मरे भगात नगर है बन्ना का

था (तेमा दुवीयमने अपन ही अपने रेडे किए प्यानी

छर-को छरी ना कंद्रक्रिकोई मिरनेकी बाबाव । ० वि॰ नाएवान् । ० पु दे एक'। -- छंद्र०-पु०दे 'एकर्सर'। -- एर्स्सि-वि पूर्न, कर्सर । -- छर-क्षी० छरी या कंद्र-एर्स्सि-विक्तास्त्र (मेरनेकी कावाव । भ 'सन्स्यः, छर एर' कावाको सभा ।

प्रस्कता−म ति विद्यरमा द्विस्क्रमाः दे॰ 'ग्रन्थना ।

छरकीसा! -वि तदा भीर सुक्षक ध्रदरीता । धरछराना -च कि वातपर नमक वा खार त्यानेसे पीवा

होना; हमीं बारिका छर-छर करते हुए शिरमा । छरछराहर-सी॰ पाकर समक वा सार कगनसे होनेवाले। योगा क्योंके एक छाव 'छर-छर' करते हुए गिरमेकी किया।

हरना - म हि. बूना झरण जुजुबाना मह होना। क्षेत्र होना। हैंदमा अक्षण होना। १ छना बाना। प्राप्तको हैदद्धर मोहित पोहित होना । १ सि. छनमा अगमा मोहना। मृत-प्रतक्ष बनावने क्य रिकास्ट मोहना

भागक्रित करना । प्रशेषुरी – सौ दं छशीलाः वह पुरिया विदामें विवाहमें काम भागवाल सुर्वावत हज्य रखे जाते ह ।

कान नात्रपाल पुगायत हुन्य एक चात है। छरमारण-पु प्रवेषमार कामका वीजा श्रीहर । छरहरा-वि स्टब्स वस्तका जी मीटा न हो। कला

इन्द्रवाहा।

प्रसुक्त्यः छत्राः क्योः रत्सीः नीवी वजारवंद ।

छरिका-वि देश 'छरोदा'।

छरिया≠-पुदे 'छदिया । छरिसा-पुदे हरीका'।

छरी॰ न्यों दें रे छंडों । वि दें रेडको । न्दार-वि॰ तु॰ दें छड़ोदार । छरीदा-वि॰ कंटेना छनद्वा। विश्वके पास कोई गक्री

शुक्री न हो।

दबादे भी काम भावा है प्रैमेव शिवायुग्य ।

छरीला-इ एक परीपश्रीषी पीथा वा महानेमें बहता और

छरारतां −५० छरीच ।

छर्न-द्रमि] के प्रमा

पर्यम-पु [मं] के स्टब्स, बमनः मस्यस्यक्षाः मीमकः पेशः प्रेमकनः परि(म)-म्ये [मं] के समनः मतनोः वेशः प्रकानः।

प्रदि(म्) न्या [म] के बमना मतली बंदा मदान। प्रदिश्चान्यी [म] बमना विष्णुताला लता। न्यम्नु महानित्र वकारन। वि प्रदिनाराक। नियुन्तु प्राध्ये बतायनी।

छरी-पु वंदशी ग्रंपुण में गहनीमें मरी आनेताली संख दिनों छीने केंद्रिक के बंदुकी वास्त्रके छात्र मरे मात्र है। मुल-पिसाला-बंदुकी छुटे भरता। छरी-ली छोन छर।

एक-दु (में] अपने अधानी कपान जियाना स्वार्थका पीतना द्वार्थका पीतना द्वार्थका पीतना द्वार्थका पीतना द्वार्थका पीतना द्वार्थका प्रतिमा देशनानी वाद्य व्याप्त कारणा करता प्रतिमा द्वार्थका प्रतिमान वाद्योक्ष प्रतिमान वाद्य प्रतिमान वाद्योक्ष प्रतिमान वाद्य प्रतिमान

-वि छङ-इपट करमेवाला, भोक्षेताल । -छास-पुर-[हिं] छक्टिश्र । -छामा-चौर-कपटलाल, माया । -छिल्ल-पुर्व देश "टक्क्सपट" । -छेन्दर-पुर-दश्चित छिल्ल ।

छक्ष−पु॰ पानीके छक्कर शिरनंधी भागाम । सु॰ —पिकाशा—राद्य-बक्रतको बक पिकामा । क्रमक्क−ती छक्कपोका भाग । वि. प्र. सिं•ी छक्

क्रतेनाचा । स्टब्स्थम=-लो॰ एकनेका भाव ।

क्षक्रमा—अ∘ कि श्रीदतक भरेद्रपण्डम या दूसरे सरण परार्थका दिक्नोडे कारण वरतनके नादर गिरना; उष्ट कनाः उपार्थका ।

छसकाना-स कि बरतनमें मरे द्वय कर शादिकों दिखाबर निराना।

खक्तसम्बान-अश्कि भागीकाभरभाना मार्रदी जाना। स्रस्तन-पुर्मि प्रथमा अपना सप्टा

छक्तमा~स कि पीका देना उमना । सी॰ [लं॰] छक्त, कोरा वंकना।

छक्कानि—मी छाजनेक आका झीना बारण या पमण्डे हैं गीतक आदिकों बाको मही हुए राजशीकों छक्काने में के स्वादेश के छक्काने में के स्वादेश छक्काने में स्वादेश छक्काने में स्वादेश स्वादेश पार देना जावत कर देना — मूर्ट इसकान एमजाम कर्मा (विकास) भोड़ेसे दोकको ब्लंबर पहुंच बचारा परणाम करना विकास ताव करनाना — हो जाना — छेटाँके भर बाला पढ़ दिवसन देकार हो बाना वर्षर की बाना ।

छस्तुत्वार--वि एला । [सी॰ 'छन्दारे ।] छन्दान-की बीक्षी कुराल छाड़ा। छन्दा-- दु दे छता ; † क्षीत, दौति । छन्दाई०--बी कप्पाल, पूर्वता। छन्दाला-चु॰ कि क्याला पेस्सा दिलाला। छन्दाला--दु स्वसंक्ये छावा भी छट भ्रदय् दा जाव।

मृतभेदा रण्डस्, वसवान आदिमें राजभे दिनाई देन बाकी दीरानी को कुणकुछ श्वापर गय भरदन दांती रहती है अधिवानेदीताल भेता, बाद । श्रुक न्यदनस्नान्यवार या अधिवा देवान्य वर्षों वस्त दीरन दियार देना । नहा आमा-कररव ही आना ।

छक्तिक-पु [मं] नात्य वा मृत्यद्वा यद्व मेर् । छत्यित-वि [मं] एला, ठगा हुमा । छत्यितक-पु• [मं] दे 'इत्तिक । एत्रिया-वि• एका ।

स्वयो(किम्)-वि [मं] एन बरप्रयाना, प्रेमानात्र । स्वयोशी-मी॰ नाम्माके भोतर सामा परने या वक बानकी

प्रस्ता न्यु शिया वन नवागीकी वीतीनोन निवा तार सीनवर कारते दुई सेन्द्री, बुंबरी इन्द्रस्त ता हो राम या कानवादे कारने वनाया दुसा निव दिए क्यो नीवार् की रहाने निय कमने तारहर बनाये दुई येदी दोना कार्य (सम्बद्धारनी विससे निवेदी, निरक्ता इन्टेनार, वैपादावे (यान) : नवा गुल-प्रन्नेदा इन्ह्यों के दिन्दी

जानना-" की बद्द पीर बन'-स्वामी प्रश्विस । बनामा-स॰ कि॰ बहाता दे 'बबबना । जननाशीच-पु॰ (सं॰) प्रसनका नशीन, सीरीका सनक ! जमामा-वि॰ (का॰) छीनांशी (तहत, अराहत मार्गः) वानमि-स्पी (रो॰) मानाः चन्माः वनि नामक गंवतका । सीओ तरह (बाठ, सात) ! वर बसामधानाः रिक्र-जमनी-मी (धुं) जम्म बेनेवाली माताः बयाः सम दरपोद भारती १ -पन-प दिशासन अपरा ह गारका बाह्य अही। मजीका कटबो: बटागासी: वर्षटी: सक्त हाव-भाव । स्रती । शमामी-विश्मी, देश 'बमामा'। अनमें हिप-की [गं॰] वह इंद्रिय जिसने संतान**ध** जनाब-प जि. । ४४३ औरसः सम्बद्धीन प्रमा सत्पत्ति द्वाती है, उपरब । संशेषन-मीमन् महोदव हुन्तर! -भारो होस् कमस-५० घामः पीरम किरगो । --घेँटी-मो० मरवात (संशोधमा) । नचेको पिछ को जामेकाको भूँग । −विज्ञ-पु० दे० जनामा – सो विश्वो सोमति (वेशेरन) ! 'बन्मरिन' ।~चरती-सी॰ बन्ममधि । ~पती-सी॰ जनावन-प्रश् [र्थ] विष्याः श्रामेश्वर । विश् जनदेश्व । है 'जरमप्रधिका' !~संशी-विश् विशवा साथ अरमसे ही अमाब-प॰ बनानेश कामा ७ जनानेश मात्र सक्या। वा विश्वामर रहे (पवि वा पत्री) । -संघातीक-वि जनाबर०-५० बातवर, परा । धनवर्षनी । मुरु र्ल्युँडीमें पदना-अवसे ही सनता । अमाराम-प्रश्री विशेषाः अनुध्यकः अप्रण कर रिण-समामा-म जिल्लाम केला, पैदा क्षेत्रा थ जिल्ला यमभाषा मध्य । रत्यन्न कामा−'स्ट्र सन कनमन भई शोख'-रामा+। जनाध्यम-५ (स॰) पर्वश्रामा, गरतः । श्रममामा−स॰ कि जग्म रेमा। प्रस्का (क्रमाद्यय-५० (संग्री द्यामियाना मेरदा मधना परे अक्रमारोश-प अस्मः जीवन । शाना मरीव । धानमेजध-पर सिर्भे परीशिष्टा एवं विसमें बनके सर्व क्रमि-वस मही यन (निषवार्षक)। श्री शांकी क्या देशसे घरनेने पाद सर्वोडे भाषाडे निम्द सर्पसत्र किया: म्पीः माताः वल्पाः प्रजवश् । बागीः यस नेवरमा वर्षिः क्षक्रमा एक प्रमाह हनः । -बीक्रिका~स्रो० प्रदर्शनी । अमसिता(ए) - दि (मे॰) अस्म व्यवस्था अस्यावकः अमिक-दि॰ (सं०) साम दैनेशका वाशान्त । प विदा समिका-म्हाँ हिंगे है । 'असि । जनविद्यी-सी [सं] बननी माना। वि मी• बस्य जमिल-विश् [मेर] क्लब पैश हुना ! बेनवासी, बत्वादिका ३ जनिता(त)~प॰ मि ी दिना। अन्यिप्त∽वि॰ [मं॰] यनन करनेवासाः शलारकः। जनिष्य-प्र. (ए०) कमरबादा होता। जनवरी-स्री रेमबी सालका पहला महीना ! जनिन्धी-ला॰ [बं] मान्य, नमनी। क्षत्रचाई-सी॰ यमदानेश्च करत वा वैग्र । व्यक्तित्व∽पु॰ [वं] क्ता। अस्वास:-स॰ कि वदा बनाना जनतेमें भार बरना। व्यक्तिया-सी [मे] माठा । अभिमा(मन्)-सीव [त] भागा ५%ते १ र्ग कचित्र कराना । अमृति∽द [तं] प्रदेश जिला। जनशीन वधान। यम । अमिर्मी ≔भी दे जनी'। वि सन्दर्भोद्धा लंग अस्मिताना । जनी-वि को वैशा को हो। को छिने क्यत वर्गी क्रमांतिक-पु [गं] भविनवर्गे वक्ष अभिनेताचा दूसरेके देश अनि । बाबने सरदर कुछ बदना। मञ्जूषका सामीपा । उदार∽को सि•ोधन्य । ० म नानो ४५ै । जमा-वि बलय दिया हुना । सी॰ वि वे वार्यस्त । जन्त्रा [संग] प्रथा अनुम - व [च०] पास्त्रपत कतार। (श) वया ! अभा-प भि दे किया । समाई-स्टोर अमानेको प्रवरत था नेका बनानंशको सी अमही-विश्वपान । जन्म-९ (स)वरिगर। अमार*-प >० अमार I अमधी-विश् वस्थिमी। जनाकीर्ज-विश् [मंग] भारमियोने भरा हुमा बहुत क्षत्रेज्ञ−दु[ल]राशार जनेक्र−पु वरोक्तीया वशेषरीय स्थ्या र सि॰ व यती भागारी गणी ह Rief-fineiter gat Rie al ale fruge, बनाचार∽दु[सं] भीकानार। अनेना कर जान अनीय गणनार वार्ड बरेने गिरी अर्थ अनामा-तु [लरु] सामा अरथी, नावृत्र (प्रका निक लात) । -(n)की समाह'~समक्रमांत्रधी अंध्यक्ति क्षरै शिवाम प्राप्त ह अवसरपर राज्ये वा व्यक्तिपानवेवण जानेवाणे जमात्र। अनेता-की बराग ह क्रतरा!-५ अवा नी-रही। सनातिश-(4 (ab) मनावारण मीडीलर । जनाधिनाध-५० [१] राज्या निष्यु र अनेका-च देश अनेका अनेका १ अनेवा-१ वश्यावा महा हिन्ता प्रदेश स्था समाजिए-५० (ले] राजाः दिप्त । मध्ये महिने दर्श दुई पारी। रह बना है क्रमामनुष्टाबर-पु (बर्ध) बरुधा बरु काग बर गरेर विगत्रे अवेदा~५० वि । शया । लियों हर अंग्राव्ह है

प्रतिमा करता निभास दिकाना । −चेना-न्यरेके सैंकर्मे स्तन देना वधेको दूव पिलामा । "खबुक्रना-विसी मय भाराकासे हरयका बोरसे बछलना । -- निकासकर चहना-धीना सातकर, अबस्यर वक्ना । -पक्रमा-वाजिब बाना परेखान ही जाना खुनोंमें याब 🗊 भाना । -परधरकी करमा-कोर्र भारी द्वारा आगत सहनेदे किए दिल बड़ा करना । ~चरका क्रम-हर वही साम क्या रहने या पेरे रहनेवाका आध्यी। -परका प धर-वह भीत्र जिल्ही भिता स्वा सिरपर स्वार रहे। -पर कोदो या मूँग दछना-दिसीको दिसा दिगाकर हमें जमामे-कुदानेवाकी बात करवाः मीत कामा । ~पर धरकर या सादकर स जाना-मरनपर साथ ने जाना । -पर परधर या सिक्ट घर कमा-वै॰ छाती पत्थरकी करना । --पर घा**छ होना** -- ऊँच हीमनेवाका गरोसा क्रत्न लावक दीना । -पर साँप लोटमा-दायका गहरी दरमा दोनाः ईप्बंसे दरब बरू घटमा ।-पीटना-धोठ से व्यक्तिक होकर वा रंप्बांके अधिरेकने छातीपर वार-वार हाब परकताः सातम ममाना । —षटना —प्रमध्य अमरा हो जामा, हरव विशेषं होना। हाइथ जनमा !- कुम्बामा ↔ गर्न धरना इतरामा । - से स्तारमा-भारियन बरचा य-दे अनाता ! - से अना श्राता-पामसे बटने म देना ! छ च−५ [मं] छिप्न निपार्थीः अंतेनासीः एक तरहकी म्थुमनती सर्वाः वस मक्दी हारा संक्ति म्थु । -गंड-प्र वह विधार्थी जिसे एकोक्स्त पहला चरणगर बाद हो। मंदनुद्धि दिप्य ।-इर्शन-पुत्रज्ञा भग्यन । ~शृचि-मा विदानादी विदानकारमें सहायतार्व मिलनवाना वन बप्रीयः । – वर्षसम्ब-पः यह था मेरपरिः छात्र ।

য়েল্পত-বু॰ (मি॰) যোগ্য লাগকী সাধা বাবে নিশিল মৃথ।

মুখ।

তায়েলৰ ভাবে শাল-বু॰ (দি॰) কিন্তা ব্ৰুক্ত আন্তৰ্গক কৰিছে।

আৰ্ক্ত বি প্ৰতি কৰিছে বিশ্ব বিশ

छादिन(~सी [तं] यसका, शांक । छाद्री(दिस्)~िं [तं] एकावानाः नाच्छादन करने वाचाः

सारिक-वि [मं] एपनएपारी बारो । वृ ट्य । एपन-व्यो गामनाते क्रिया वा आव (रस वर्षचे क्रेंबर एम्स विनान गामनीत न्यो वृष्ठ समाय वर्षोते हो व्यव देव दापा दे। यह रागी व्याप्ति विस्ते वात्यरको प्राप्ते, गीता रिपरा (-वरक -विवान -वीन-व्यो गीत,

णनना-ए दिः आरे आन्दिः मोहा अंग्र एनमीमे निक्षणना रूप पाने आन्दिः गुण्य दर्शनः निर्वारीक वर्षान्य प्रतिक्षणना निर्माणना वर्षा किर्माना हुना रोजना। प्रविक्षणना समा समा रोना पोन रमना है जैन्द्रात अम्मा पार्यक्ता।

हानवे-दि॰ सभी और छ। यु छातनेकी संस्था र। छाता-स्था कि॰ करा वेकता पहासा; स्वमा; दिस्ता। स्य छै करना वाशिकाशित करना। मकानरर छप्पर या रापरि टाइमा। शान्त्रास्त्र करनेनामी पोजदी फैन्मा। स्विकाताः समा करना। आस्त्र रेमा।

छानिव~सी छप्पर । छामीर्ग−सी॰ दे॰ 'छप्पर'; गाँसकी फट्टिबों मादिका दयन (विससे देवके रसकी गाँद वेंकने हैं) !

छ।नेन्छ।ने>-म भूपदेशे छिपे-छिप ।

ज्ञाप - श्रीक रिक्षी बराज थिए नियाना मुद्दरका नियाना मुद्दरकार्थी बेंगूडी: हर्राठ, चक्र भादित दिव को बैनाव स्वयन अंशीको बगवाकर कमनात हैं। विभिन्न कारसानोंमें बनी बराजीपर बहुबानके किए एक दुना दान्य या थिन, सन्दों क्यार प्रसाद (दहना टाकना)।

छ पता- एक कि उत्पार , सुरह, क्याद कादिका विद्व स्वादी वा रंगडे बोगसे कागक कार्रियर काराना; की है हुद कार्यों क्याक आक्ति प्रिश्चित कराव कादियर वतारमा पुरवक भारि सुदित करना; एएकर प्रकाशिय करना; शैक्ष स्वमान ।

छापा—ए वर्षियां रूपाः सुद्दरः छपा हुआ चिद्ध वा अञ्चर्ता छरा चक्र बारिदे वसी हुए चिद्ध सुत्राः छाप, सार्धाः इस्प्री या देवनने दीचार बारित्रर करावा जानवाका मेकेत चिद्धाः छापेडी क्या वह इस्प्रता वा दुम्पनगरः बचावक्द बद्धत तेवीते दिना जास क्यावक हुए प्रवसाः बावा (बारसा) । —व्याना—पु वह कराव चया छपारंका काम दो वेश । —सार-नि छापा मारोवाला छापारंका सारवर दुस्पर्याका बरेनवाला (धीटक इराता)।

-(पे)की कल-एपार्यकी मधीन, मैस । एस-१-वि थाम दुरमा-स्तका, ग्रीम । एसोव्योग-वि स्वी छोटे वेटाली क्रफोररी ।

द्यायम-पु निर्वीच यह पहनावा । प्राचीय-पु विकी संस्था ।

छ।योद्र−९ [म•] वर्मा। छाया−श्री [मं] प्रकाशके मनत्त्रम्भ दराग्न इसका भेपरा छाउँ छावा प्रकाशका भवरोत करनेवानी वस्तुकी परछाई। वह स्थान वहाँ दिनी बीजा छात्रा पाती हो। वह रवान वहाँ पूर स बहुँवती हो। प्रतिनिध अससा तर्व कहा, अनुवृति साराया भेपेरा। क्रांतिः धहरेका रंगः गाँउवै रहा मामवा निषदा माधारूत कम प्रदाशशासा मागः भूत-भंतका ममार सावा (परीक्षे छावा)। एड रायिनी। बुगाः गर्वे है वसी संदा । -कर-प्र निसी दे पाँछे छत्रशै नेदर् भननेवाना । -गणित-प्रार्थातस्य बद निया निमन छाबाद सद्दारे घरमध्य गठि आदि जानी या सबनी है। - ग्रह्म-पुरु भारता । - ग्राहिकी -श्री धावाद वरिने प्रदेश कर्नवादी एक राज्यों विसने इन मानवी परथ निया था। -चित्र-पुर साली नमरीर, योगे। -चित्रल-पुर छाता विश्व उत्तर-दा साम । -तमय-१ रानि र नग-५ वह रूप विस्ता राया दूरवड कें≥ आर पमी का एतिस्त र -दाम-व• ग्रहणानिय अरिष्टमी शांतिकै निय दिया मानुबाबा एक विजय राज विगमें को वो करियोंने भी या एक सरकर

गवदा~प्र• मेंद्रमें नीप-ऊपरधी दटी निसमें वॉट जडे होते दे दश्का । -साइ-विक दी मेंद्र तीव सदे, क्यवाना (धम्द्र) जिमका छद्यारच श्राटम दी । कृषर⊶ि॰ [पा•] ऊपरवाळाः वनवानः वन्मे अधिकः। प्र• भरनी-फारसी किस्तावण्ये १९५३ अक्सरका निक्र । अ० चपर । -दस्त-वि॰ बलवानः प्रवतः पहनेपाकाः विजयीः भारी विद्याल । -- दस्ती-स्त्री जरमः वबाहरी: धीमा-धीर्ता । प्रवर १६ - पु (भ) एक तरहरू। प्रश्ना, प्रग्रहा । ब्रयरज्ञक ६ अहन्'। जयरार्ग -(२० जररहरू वहदान । स्रवराष्ट्रस−पु दे॰ 'तिशील' । अवदरम-दि दे 'तपरदरत'। ज्ञवद्यस्त्री—गो दे० जगदास्ती । ञ्चल-पु[भ•ीपहाइ । धवड्र∼५ दे उथहा जवहा-पु (इन्मन, जीवटा थि] माथा पेशाची !-साई ⊶भी सभागिसला। सबान~स्री+ फा] जीय, रहना; वाषी, बेरी; मापा; वयनः बाद्यः । –शीर-विश्वशास्त्रः मन्याः । – ज्ञाद्य-विश मिरिक को भौगोंको जनामपर रहे । - दराज्ञ-नि बहुन बीननेवानाः बीतनेम ५४ शुरूप्तरः वराज्यामः - न्तराङ्गी "भी वाबालतः गृहतः वद्यवामा । —वॉ—वि॰ मावा (निरोष)का पटितः – दामहिनन्दी । माना(निरीष)का पूर्व धान, बोडिएय । --धन्-पुरु यंश तत्वीजः ब्रमनुद्धी जनाम नंद करभनाना जंज । - कही - त्यो दिसी मुख्यमे-के गराहोता क्यान किया किया जानाः गानीशी । स -सर्विता-मरी मार्ने बक्तमेहे कारण करा इंद्र रेगा । ─श्रमना—बामनेमें समर्व होता, तुँवमें वात निकालकाः बर्चेदा बीचन समना । —सुस्रवामा≔वीसने जनाव देने या कार अधिक बान कर की दिल्हा करना ग्रेह सुक्तराता । +१७३% हाशा-वर्षा प्यासा होनाः वर्षा थाने करता । —श्यामाहा-कृत बहरू भीतना। कह मा शिक्षायन बरम्स । -कमबा-मुँदये क्रायोक्ता जारी- (बादी विराममाः संबोध वीतमा • **–चनामा**−सर्माप बोधनाः व्यवसारी दश्याः - चन्नःयेदी वादी वानाः —णारत्मीमें ५१ एकमा । —णारमा—ओह पारता । -हरमा-(रद्रहा) द्विष्ठ द्वानीश हाद शक् उदारण करते भगना ।-धामना-६ वशम वध्यमा ।-सूमा- । वक्षत्र हेवा, बाडा बरला । रूपक्षणुत्रा -सिगोरी अपनी द न यहतन देश्यप दावन व देशम बननमें द्वीप रण्यी निकासमा केंद्रमा । न्यर आमा-किमी बामका सदन । निकालमा ६६। प्राचा ।- वर साम्य व्यामा-देश स्थान दे नाहा समूजा । नपर शहर द्वाबा-अपन ४१ हीला, बाल स काला। -पह सामा-पहार, वका मरमा :- यर हामा - घट चन्द्र बाद रहना : ६३१४ हीना रबंदा (श्रेष द्वाता १८६ वान आत्र वानोंदी प्रधानसः) जमाई-वि (सम) वी अस हे सबी ही . रेट्या किसी इ) १-पारमा-शाः दश्यः हृदश्यः वदम् धर्यं दश्यः न्यद् द्वांसान्योगं संशब्दाः भुव रहतेथे विश्वयं दानाः महागमे द्वार जन्म । -- वर्षमा :- दे विशान वन्दना । [क्रमचर क्रमचरा-पु अगारिक्षे दे प्रीत पर र

~विगदमा-भएगुण युद्दने, यातियाँ ४६देश दार पत्रमाः पदीरपनकी भारत सम्मा । -में क्टि पटवा-जनानका स्वाहर शरवरी हो जाना । -में स्वजनी हुना -- तकते बाद्यामधी जो माहना । -में साका स्वाता-भूप रहमा औरतावर्गवन बरुवा १-में समन्त्र स दोग-बीकमेर्ने ठवित-अनुनिनदा विकार म बोबा, संस्था हो जाना । (मैंडमें)-स्मन(-शेलन उत्तर दर्भ दस होना । -दाइमा-शेहमेचे भरवता यत्र होगा -शेक्स-शेक्स बंद करणा भार दो गहनाः मार पढ्या ।-सँमाध्या-श्रेष्ठनेषे वर्ष्यम्भील्याम्स रसना, बनुनित श्रम्त हेंद्रसे म निदन्तवा र नमें दिर समा-ज्याति होता दश जाता !-हारमः-रप्य होगाः प्रतिया करमा । -हिस्समा-रोवनेसे सेर्देश करनाः शकना । -(मे) हासम बहुम:-रिया शे रिपरिस प्रदा होना । क्रयामी−वि• (दाः] ते येज्य ज्ञानने कहा या है मीबिक अलिशित (१४हा८ संशत् मेरेगा १)" कर्ज दिगाक। --कमारुख-इ यह दात भी दरी अस्त र क्षे न जान, रिसाङ, भौति द कारगरे । प्रकृष-दि [पा•] सराव निरूपा निर्दे# ! क्रपूर-भी॰ [श॰] दल्हामी दिनाव की पुनुष्यार्थरे शिशासक अञ्चलार लाक्ष्यपर जारी थी। ज्ञाबस-त [ब] प्रवंश जिल्लामी महमा देवेंचर राज्य शारा निर्णा वस्तु नेपविद्धा इत्य (बरना हेंच)। -इरहा-नि॰ जन्द दिया हमा । ज्ञारती-सी दिश्री पीत्रदा यन दिशा मारा है। क्रमतीया−स्थै [अ] प्रश्निम । जन-पु [स] दशह सक्तृते अस्टरनी हरूरी हैं −व सस्यविका−५० संबर्गातः । जनम्~भ (भ) अपरारमी ।, प्राप रेका, वर्णा ~य बद्धप्-अ विषद्य बीवर, अप्रवृत्यू । ग्राप्टी−नि० वसपूर्वक करावा ज्ञानशस्य (-सरनी) (कर्माया-मर्श्मको सत्तृह कार, वरदार^{का} द्र मानींदा एक फिर्श में। मानगा है कि मनुष्य बाउं हरें गर्ववा निवर्शिया वेषरच्छा अभाग है । अमिल-पु [भ] दे विभाग । भ्रम्बर-पु (म) गणा बारकर नान नैनेश बार्च । हैं करवा—वरण गढलेच्ट नेमा र अमन-पुर यथ ।-बारा -बारार-धीर वह गाँ का मार्ग कमका गारा । - प्र अरहर - चीर प्र रे सम्प्रति । -स-दिव पुत्रति (स्थे) । -४ प्रति यह हुन्ते जीवशानी दशह । -दिशान-की र् विद्यान-मूल-पु हे सन्दर ग्रनार है है र रहे दार १ -बार न्यू के बस्तार १ न्यान-१ रेर विद्यान । सुर -ब्रा आमा-व रतन रोपा न नट कराज सन्देश हैं। ३ MIE -1 1: 42E 1

-क्रमी-दि दिसदे कान छिरे ही। -हर्जी(जिल)-A. दस्रेंदे दीप पेव स्टिनेशका !-पिप्पासी - वेहेबी--भी जीवाकी स्वास्त्र किन्नोसर्-पु॰ [धं] सरईज सर्वक । क्रित्रोहा-9 [मं•] सरद्रा । रितारमा(रमन)—विकोंसेक) अपने वीच प्रकट करनेवाका। विज्ञानवीषी(बिन)-वि॰ [मं] वे 'शिक्राम्बेपी । किहामुसंबामी(निक्)-वि [सं] दे॰ 'क्रिया-वेती'। कितामसारी (रिन्)-वि [सं-] देन 'शिवागेवी'। विज्ञानकेपण-प्र• [सं] इसरेफ दोष, पेन टॅंटमा लवड निकासमा । विज्ञान्वेपी(चिन्)-वि [र्व] विज्ञान्वेषण करमेवाला । तिहाप्रस्थ-प॰ [र्ग] मान्यस्थ । फिन्नित-दि [मं+] बिसमै छेर ही चरासकार । प्रिमोदर-प [मं] वरस्य एवं रोग खडोबर। सिन्ध-प दे० 'हम । - एकि-मी वित्रकी। -ता-मो समझा, शत । -श्रंग-वि॰ यणयेगर । शिवक≠∽पुण्डधना। स सलमा। रित्रक्रज्ञा-म । हि । सामित्रे साथ मायका मन बाहर विश्वस्ता साह साह करना । † अ॰ कि॰ धनवमा. सरक्रमा । छिमन/-ब कि छोना जाना सिक साहिका करनाः एभरका रोमी आहिसे बदला । प्रिनरा−दि॰, प परस्थागामी, संपट । स्थि॰ 'धिनरी' ।] रिमबामा-स॰ कि॰ ध्रेशनेटा काम करालाः बस्ता कर-बामाः सिक द्वरानाः । क्रिनामा~स कि॰ है॰ 'डिनवामा ६ ● सोनमा । छिमार। छिमाझ-वि• सी पुँथली नपकार कुल्डा (सी)। छिनाछा−५० टिनाकपत व्यक्तियार, परकारी । विजीवविश्=न्त्री । के 'विनाहिंब' । रिश्र-दि॰ [मं∗] क्य हुमाः कान्दर अस्य दिवा हवा. संदिता नह किया हुआ। सीमा हांत ।-केस-दि॰ जिसके बाल बार मूँद दिये गुदे ही !-क्किय-बिश विश्वकी दुविया गंद्राय मिर्द्र यया हो । - नास्त-नासिक-विश् सकताः शिमधी साद बर गयी है। -प्रश्नी-की प्रश्ना। -प्रस्प -रष्ट-५ निजद वृध । -क्ष्यम-वि० हिमके वंपन इट गय ही मक्त ! -मिश्र-वि प्रतान्तराः वश प्रष्टा वा नितर बिनर ही गया हो । -अस्त -अस्तब-विश् जिमका मिर् क्षण गया हा । **-अस्तका ~अस्त**ा-मी इस महादिवामोद अंतर्गन एक देवी जा अपना निर इयनीश्र धरे गोर्नेम जिडननी रक्तभारा चीनी द्वर मानी मारो इं। -मृत-दि वर्ग । यटा द्वथा। --हरा-सी गुरुपी । -पशिका-स्मे बाहा । --प्रण-पु निर्मा इत्यमे बार्नेका बाद । न्यास-पु एक सरदक्ष बाग-रोम । --नंदाय-दि जिल्हा शंद्यद थिट तथा 🕏 भिष्यर्भग्रथ । िष**द−**दि॰ [र्न•] जिलका कुछ भेदा बहा हो। विकास-दर्श (है] रह उन्हरीय। विषा-भी (से] गुडुनीः व्यक्तिवादि हे सी ।

विषाज्ञा-को० [तं] शहरी।

रिवासकी-को । एक रेंगजवासा योग की समार धरकी शिवारीयर दियावें हेता और क्येंडे मध्येते स्थाता है गह गोधिकाः कामका एक साहनाः (का) वनकी-प्रवर्का स्ता । कियाना~#• दि: आह या परतेमें होना पेसी बगह हीना अब्दें कोई हैदा अब्बोद्धे, इब्दा स दोसा हरमा। शल दोना। क्रिपाटस्त्रमान्ति व अक्षापार्य, किंत्र सप्रसिद्ध गर्याः पंदित का बदसारा को हैरानेमें भ्रमा मारमी धना। तियों क्यों-अ विलक्त, राज अपने । विवासा-म कि आवर्ते हरमा, ऐपी बयह वा रिवर्तिमें रदाना बाहें क्षेत्रे हेदा न सकें। इंडना' प्रस्त न करना । क्रियाध-प॰ किफानेकी क्रिया या मान, गोपन ! ब्रियी-य है 'शीर्गा': इजा (बहेल) । विद्यार-विश् सर् है 'तिया' । धिकबा-प तामा निषर वेरेका संस्ता । क्रिक्की-सी छात्र शेवरा एक तरहको दोनी को रतीके महासोसे बावसे बाबो असी है। रियार - और है 'न्या । छिया-+वि मका, गंता:प्रचित: तुर्छ- कामें सब भौर द्वितियास द्वितिमें द्विया - मुचन । रं प्र मेला य (वजींकी बीक्री)। बढ़ी संदी, पिलीमी बीज समस्ती। स्र - परंत करमा - धी-धी बरना । छियामके−वि•, प॰ है 'छानवे'। विवासीम-बि॰ बाबोस और छ । त ४५की संस्या । रिकामी-दि॰ बस्मी और छ । प॰ ८६को संस्वा । (दिरक्ता•-स कि॰ है॰ 'डिश्क्स । विरमार-भ कि देश फिला । । 'कावी' र्ड ए-फारवी छिरेटा-प यक कता जिसके वर्षे और फल बनाब काम बाते है । ग्रिसक्ता॰~स॰ दि॰ दे॰ 'शिवना । ग्रिसका-प फल मन, की आहिका कपरी मादरग ह ग्रिक्षिमा•~वि (CCचा । रिस्त्रज्ञा=अ कि: पारर का रिजयंक्ट बटवर अपा हो शाना वा रचपरे उपर वासा ! दिस्तवा-व (काकी परिवा) ग्रीनवेदाका । जिल्लाई-मी जिल्लानेक मजदरी। जिल्लामा-स कि॰ ध्रान्येका काम कराना । विस्थिति - प्रवासि कि पिटरहा । जिसाई-मी धीमनेस दाम छोल्पदी संपद्धी। चिन्द्रामा∼म कि दै ज़िन्दाना । ग्रिमाष−५ ग्रिसायर-न्त्रा धोननेश **शिया।** चित्रारी−भी छोरा ए**न्या**। ग्रिष्टचर−वियक्तर भार ग्रांच ग्रिक्टकी मन्दा ७६। शिक्षांचांच्य कि प्रचास्याताः रिहामी = न्यो = धरय : यसुन् । र्छोड-भो छोडनेसे जिलामा भारात्र । मुक्त-शामा-भारतस्य द्वामा । धींबमा-अ विश् मनुनीये गुबरी पुनप्तपा रेग वरनेवाली या बाग्डियामे बाबद बार्डा निवान है जिए भीगरही बायुक्त बंब और आवारदे सुद्ध बाहर आसा।

भाग ।-बंद-प सरव !-वार-पु॰ वमीमका मार्टिकः कारतकार, विमान ! -शारी-शी अमीशास्त्र इकः वह क्षतीन जिमपर दिभी बास भारमीको जमीशरका इक हासिम हो। अमेरिएका काम पंता । - दोल --वि॰ समीनमें देश हुआ इस दरह बना हुआ कि जमीनके कवर म समरा दा (दिन्याः मद्याम)ः जो अमीनके बरावर दर िया गया तो परपर । -योस~पु॰ भर्मान पुमने बाका (-योग्सी-स्त्री वर्गान चूममा) मु॰ - व्यासमाम एक करना-जारशिक प्रशास था ज्योग करमार इसन्त मयानाः दनिशा छान भारता । —भासमात्रका क्षत्रं — बद्द्य अभिद्र अंतर, शादाश-पातासका अंतर । - भास मानके कप्राये मिसामा-वश्त बीग मारमा अखाति दरना सुरुदा पुत्र शोधना दिही शामक किए नरुव प्रवस हरना । – का पाँच क्ससं शियक या निक्ष जामा– सथ वा वदराइटमें राजा न २इ छदना, बब्दबास हो वाना ।-फा पैर्यंद हामा-रफन होना मरमा !-प्यना न्द्रम तरह विरना कि मुँद्र•लाफ बमीवने का बादें। नगोमने माथा टेबक्टर (शाधा बारशाह सद्दरको) प्रणाम करना, धमौरोमी । —दिलामा~पण्करा -दंशमा-दरका कामा। मोपा **दे**शमा । -मापमा-भवित यापा बरनाः नेकार किरत रहना । -यकहना-बम्धर वंड जाना। (हरतीयें) थित म दोना। -पर साना-गिरमा (कुरतामें) मीचे भागा । **-पर पाँच** म पदमा या न रागमा-भतुन वर्ष होता महुत हतरामा। ⊶वाँदमा-भारत सगावर विक्यी वसीम तैवार वरना। मृमिद्धा श्रीपमा, पेश्वरी धरना !- में गद जामां-अस्पेन स्थित हाना, कजाने सिर न उठा सकता। आसीर-परिश् र'गमी वंदिबोक्स निग्रह करमेवाला । क्रमीमी-दि (पा) वमीनकाः ज्योगसे संबद् (-कर्र)। क्रमीसा-तु (भ) परिद्या पुरद्य औरत्र । धार्मार-त [भ] हरणः अन-तरेका विचार करनेवाली भेतन्त्ररण्डी गृधिः मन्यमन् विनेदः सर्वतात्र (स्वाः) । -वॉ-ि यमक्री वात जातनवाता । -ऋरोगा-विव रशांकी क्रिय बुरेकी मना मानमे करमेशना, ईमान ক্ষিয়া ! जमील-दि॰ [म॰] गुंदर जमाल्याका। वर्मासा-ति भी । [अ] श्रेन्ता । अमुक्ता अस्ट्रिकारं - पुरु वह वातक वामरात । जमुक्मा॰-ज कि याम आना शीना । जमुना-नीर वक्त बार्वधे नद प्रवान नहीं भी बयनी स्ति । निचलदर प्रसाममें नंगाने दिलनी है बहुना । अस्तियाँरे-सि॰ प्राप्तमादै स्वयः काला । पुरु जानुसदा अमुरी-भी मार्टरोडा दर भीवार। समुर्दर-पुरु (का] पहार अपूर्वानि है अनुंदीय । समृतिम-रि कारे कारिके तक दश । १ था। समुद्रामा ४ - स १ कि अग्दर्श सेवा है

यहती थी। जम्रा−९ १ 'उप्रका अमेवत-मी [ब•] स्कृत होला महरू ममुरमा म परिवद र जमीयनुस्र उल्पेमा−श्री० (त०) सुगुप्रमान क्रिनेट्रेट्रे समाया परिकर । बसोर्गा-पु॰ बधोरनेरी शिवा।~शार-पु॰ परेथे त्तरीबेरी अमीत्रास्टा रहना देनेशना । जमारामा । -- स॰ जि.० हिलासी गाँव बरामा। वृत पर्य सुर भारताः भारते को जिल्हारो दुसीके सीमा से वसन इसाधे दायो भरा रेनाः हिनीधी रावधी हुई र तमरीय बाला । असारावादार्ग --स॰ दिश बनोपमेका बाम अन्तः। जमोगा!-५० वर्शगरेश मिया। जमीशा -विश्वनाहर् बनावा दुश । ज्ञास्-पु॰ ब्हर्सारका एक म न और एक रूपर है था। पारहाई-की की कर भागत साहित हैरेको श्रीरको एक सहज किया क्रिगमें मुँह पूरा गु^{क क्र}ा और गींछ औरने अंश्रिमियक्ष दिर की दे। रत निरक्ती है, बनासी । अग्रहामा~थ दि॰ त्रमार्र हेना। जर्बत-इ [लंब] देहदा हवा शिश निष्तु भरमा वर्गे देशा एक बदा एक ताना निरार मन्त्री का नामी गमप मीमनेबदा सामा दापादा १६ वाम है है। हिस्से बदरकिया। **अर्थतिका-भा [40] हाशा रे० वर्धी ।** प्रचंती-सं (०) प्रमुक्त रंड्यो समा वर सं दौर बुर्गाः चवनीः माद्र-कृत्वा अवग्रीकी संबी शाक्षी कि मसम दोनेपे पर्तनाता का दीन (इन्टर) उन्हार बीगमें हुमा बा): रिगंफी अन्मतित वामशंद रहा त्रीक्षे जरवेद दल्की। वर्षा। पुण्डिक्रें । वि मेन स यरनेशाणी विश्वविती । जर-भी॰ [वे] शतुना शिर्धाची सामा गाँउ त्रीतः कार्ये करना निमार (रहिकाम) हरा^{ने प्र} थीक्समें जीवना युमरीने र जाना। है टिडेरी हारणाली(अव विश्वय)देवे एका पाकेरवा शक्ति हैं बरेका वृश्विष्टरचा दिहार मगरमे महानगर kमार मात्रा सूर्वी महानार्गा अर्नुना हक मान महिल्ल बार्ड अब घर के अनुसँग क्या गरुगार है। है की ल (जबानारे) । ~वार-पु प्रापनि र न्योजपूर्व प् वानेसा कड सारका (धारीन) शत । न्हेरियन हिंदुमीने अधिक कह अहारदा अविकास करें ते अवदर्शन । -- अतंत्रावे-देश जरा,ता शहरा,त माधीतीर । -अपनीतीनशीव [[र] रह राज्यो। श्रीवर-पुरु रह तरदश बाधन अध्यानमध्य । नव्या भी मोन्स इसा = भीत-तेन कर कार कता बुक्ती-को अध्यो तेला ध्या-पूर्ण ल्बरे अनुसार बृद्धि कर मृति । - देव-तु कर्न ज में वस्तिना समित्र बंदान कवि ही मह राष्ट्र कार्यकोर्ण समादित है । -श्वम-तु विश्वासको से गि समृत्कान-पृतुदान् भवप्रदे दक्षकेष्ठभी पृत्या कैप्पर

सुद्दा−दि बी वैंवान हो अदेशा, दिना वाक-वच्चेदा। —पाम−पु वद पान विसदा नीका न अपा दा ।

सुद्दी-सी॰ पुरकारा भवकासकाक कुरसका काम वंद रहनेका दिल वातीका कार्य इएको जानेकी अनुमति। मोर्फो । सु॰ -समाजा-भरकाञका भागेद सेमा ।

मुद्रवामा-ध कि॰ छाइनेका काम करामा। सुदाई-मी घोडने वा शुदारीकी क्रियाः छोडनेके बरकेरे दिया जानेवाला बना पर्तपस्ते कुछ हूर से जाकर स्पर

बछालमा (इसने उदानेदानको उसे उदामेंने बाधानी

सुकामा नत कि॰ पक्क रखी दुई वस्तु व्यक्तिके सूब्येका क्याय करमा शुरहारा निकानाः रिवा करानाः वंत्रमधे निकासनाः पृत्तरेके कम्बेने निकासना (रेवन येत वर)। रेक्ट्रे डाल्स्ड आची हुई भी बच्चे महर्ग्ड आहि जुडाकर के केना पूर करना (दाग मेल द॰); मीकरोठे अस्व करनाः है 'छोण्याना' । रेम विद्युष्टियाना । **सुर्वेशा−पु॰** सुद्दानदासः। दयानेदासाः † वर्गगद्धे कुछ दृर के बादर कपर छष्टाकनेका काम विसमे उदानेबाका भासनीसे उत्ता सके।

सुबीती!-सी बंदम मुक्त बरने, छोड़नेके किय दिया

बानेबाना धन १६धैनी ।

मुतदा सुतिदारं-वि छुत्रशकाः विसे छत कगी ही। प्र धोरंका सम्बन्धः।

छ्तिहरां – धु वह पश नो मशुद्ध हो गया हो। पुराञ्चलि । छन्≠−भी दे छत्।

गुन्र-वि दे 'गुन्र' । ~चंट-पु -चंटिका-सी दे **अ**द्रपेटिका ।

सुद्रावकी • - नरी दे शुद्रपंरिका । स्या=-सी भूम छ्या।

ह्रिधित्त≉−4ि भूगा धुवित्र।

धुनधुमाना÷भ कि 'गुन-धुन आवात्र पैदा करमा। पुननमुनन मुनमुन-पु वर्धीको वैत्रनिधी मान्द्रि मानाव ।

सुप-पु [मेर] धुना गर्या; युका बाखु । 🖪 व्यंपक सेत्र ।

ख्यना-भ कि दे । रिपना । गुपाना-म कि॰ है 'टियाना'।

गुपुर-पु (स॰) विदुध, दृद्धा (वे)।

शुमित--वि ै 'धुवित ।

दुभिरामाण्यम कि गुन्ध दीना। हुरण-पुर्मि लियकरका पोत्रसा।

गुरधार=न्मी गरेशी भार ।

मुरा~री [ग्री•] भूता । दु [हि] बढ़ा बाहू जा बंद मदी किया जा सक्या कार माछ बाउने आजमण बरमे भारिक काम भागा देश्यास मुक्तेका भीवार पन्तरा । -(१)बाबी-की पृश्वी सहाद्या (त्य आहिये) गुरा में रेशे परवार होना।

पुरिका-भी [मं] पुरी ।

गरित-वि [६] म्यं दिया दुवा पुत्रा सुवा स्थापक क्ष द्वा । पुरु कार्य कार्यदा वस क्षत्र । मुरी-मः [।] धेना गुरा, बन्द्रन्तास वन्तु ।-बाद-

सी॰ हाभीदाँवका बना एक भी बार । मु॰ -कटारी रहना-बैर होना, उनाउँ-नगना होते रहमा । -कटारी सिचे श्ह्रना-स्वनको तैवार श्हना । -कस्परी होना-दे 'सुरी-करारी रहना'। -चस्रामा-बहुद स्वाना कष्ट देनाः मारी हानि करमा। –तसे दम सेमा–मति क्लैश विपश्चिमें पैर्व भारण करता ! - क्षेत्र करणा-- मफार-बस्पीइनको तैयारी करमा।-केरना-दे पुरी पहाना'। शुक्तकमा-अ॰ कि भोड़ा-बोड़ा करके पेग्रान करना । सुक्रमुक-पु॰ बीहा-बोहा करके पैछात करनेकी भावात । छुरुष्ठामा-अ कि थोशाओंडा करक पेशाव करना । स कि भोड़ा भोड़ा करक पानी गिराना।

बुकाना-स कि॰ दूसरी वीश्रते सराना रपर्स कराना।

सुवाकृत-न्तै। दे 'सुत्राहन्त'। श्रुवाना≉∽च कि दे•'शुरूपा।।

सूद्रमा॰- छ कि चूमें से पोतमा सफदी करना रेंगना, पीनना। अ० कि रैया पीना दीना। पृष्टामा!-म॰ कि छोड़ बलक दोना, श्नेद्रयुक्त दोनाः दबा अनुषद करना रेंगा पीता बाना, सपेदी होना।

छ कि रेंगवाना फेसवाना खपरी कराना। खुद्दारा-पु॰ खन्तरुदा एक नद को रनिस्नानी प्रदेशीमें बीता है विन्याबुर, शुरमाः वसका (स्रा) फन ।

पुरारी−सा॰ छेत पुरारा ।

सुद्दी । स्वा सक्द मिद्दी। **र्हें छा**∽नि साक्षी रीताः धाररहितः सावकाः निमके पास कुछ म क्षेत्र सिर्थन । सु० -पदमा०-स्वर्भ जाना

निप्तक दोना। र्कुजि-दि॰ सी है 'हुँजा। सी॰ है 'प्रुच्टो'। छु-पु क्रिये गासकर मंत्र पाकर क्रियेकी मानाव। -संतर-तु संव पत्कर कुंबना। संत खाह । सु≉

-करमा-भेर पहरू पृष्टमा ।-बनमा-चनना चनना गायर दीमा । - मेलर हाना - तुरन दूर दीना यह जाना (पीका जाविका) । -शोना-द 'छ बनना । एवा-वि है 'पूँचा । (की 'पृद्धा ।)

छुष्ट्र-वि॰ पुर्भू अदमक (यतना, यमामा) । स्री भाष । शहर-स्रो॰ छरनेहा बाव शुरदारा। भवसाया (का बरमेकी) मात्रारो शेखन दोना। समान मानगुजारी या कमदी (भेरात) माधी नमें परे बादियी वह सदारें जिलमें बाद वर्षां बार किया वा सर्वे (तहना); गुस्रा असील परिवास; काश्य वर्गके करनेमें भूक जागा। कदश्याजी। तनाक।

−ग्रहाम-पुत्रानानीर रिच्छेर्। शुरुमा-भागी वंशन दूर दाना पुरवारा दीनाः वणी

द्वों भावता सुष्ट जाना। सदी निएकी दुर्र भावका अन्तर शोमा निकल्मा। मुलना १४:ला शाना (रेल बर्गरका)-चनमा बंगन केंद्रा भारा जामा (तोर बंद्रक १); विपुर्वाः (मे) जुरा विकुत्र राजा (पट देव र); हर बोमा जाना रहमा (राय क्या अल्न) बाराक्यमें देशी निषयमा (विकास पुरस्य मानिश्वामी)। इस्ता निमुश्मा (शनी छु)। यथमा बाढी रवना। वंचे दुव बहारा निवल भागना। यथवा । निवल्ता। किये काम मा

बोर्न्स गून गना जूब, मगद दोला शीरते मान्य

सरपार+--दि॰ भी अबक्द राय हो गया हो। सरप्रर-वि वे 'अर्थर । जरठ-दि [एं॰] कटीर करुश ब्ला बीची सुदा हुना। वरी किये दूप मधेर रंगका। मु नुनवा। **धरटाई॰-मी** दुरापा। बरबी-मा॰ [सं॰] भूवविशेष, नगोरिका जवामवा । [मं] बडापाः श्रीराहस्याद श्रीराहशीय-कर्मानाः बाला नमदः वदः प्रदारका प्रदेश । दि० जीनीः **भृहाः पापकः ! —हृश-पु :** सारगु : सामीज । जरेना-सी॰ [मं] दुरायाः स्यादं मीराः प्रमंशाः। अरतिका, अरती-नी [तं] बुदी सी। **मरतस्त∽प्र** पि:•ी प्रापीन यारसीथमेरे प्रथनंद्र और र्थन-भारताह स्थविता। करनुस्मी - वि॰ अरतुस्तकाः अरतुस्त-प्रवर्तितः। जरम्-(६ [4ं०] १६१) जीर्ग । यु बन बारमी १-कार्य-पु एक मुनि बिरहोन बाग्नकि मानको बहम मनसा हैबोने भ्याह किया था । जाद-दि दे 'ऋरं। सरदक-प• (का } पीत पथी। ज़रदा-प [का॰] केशर रेशर पदावे हुए मोडे चावका पानके साथ सानेक निष् विशेष विभिन्ने बनावी हुई सुर्ग वित त्राती। पीले (महा बोशा: पीकी जोगींगाला कर्तर । ∽क्षरीय-त नरका क्वनेशका। हरदास्य - प्र• (का) स्वानी । ख(वी-मां दे 'ठ१°। ज्ञारदास्य−५ दे॰ ऋगरः। जश्म = न्यो दे अस्त्र । ज्ञासात्र-अश्रात्र के क्षेत्रकार । स्थाति के अध्याप्त प्रारमि । न्या है । विस्ता ह बर्गल-५०६ अन्तरम । प्रस्य-स्ते [४०] थीन बार, अपात बावा द्रम्याः शुग (ग): मोपद्य दलना वार । - राज्ञान-पुरु दरमास । -सर्गास-५ गणानाग । -(वे)सङ्गीत-मो० इत्यो नार । --शर्डाइ--मी० गइरी थीर । मरबीसा॰-वि॰ महस्रोता चमहन्यहराता । जानुष्यमसाम-मो॰ [अ॰] क्शानत सोशोफि । अर्मन-रि• [#] अर्मनीनाः जरमनोः, वरमन जाति या भरमम भाषामे लंबक्ष । पुरु जरमसीया निवासी । मी अरमनाद्री माना ।-शिकबर-पु॰ जरत हाँदे और निक्रमधी किमानामें बारी एक भारत की बरनम आहि बमाने है बाम भागी है। सामारी-प [बंगी मत्य बुरीयता वस प्रमुख देश । त्तरर-दर्श [अरु] शानित केरत दोहा !- स्मिं-वि शुक् साम पर्भानेपाना बाजियर । माग-६ [अ०] मत परिवान । भरा-मी श्वा] मुहाबाह पुगरेने पेहा हो कमनीयी। मह रामनी जिल्ले प्रशा है अरणंदरी देशहे हैं। इसरीd) riter ra ex frei i 3 ay fire fent: un मनोपे मन्त । इन्तरा वृत्त्व हो। मंग्र (दे)। -बुमार "3 अराज्य : - मान्य-वि बुद्दा । - श्रीर्म-वि

ब्रापि विश्ववे भंग और रेटियों हिन्द ही स्ट ह वराने वर्वर १ - प्रष्ट-पुरु अरामव । -बोच-पुरु स्ट्री करके जमाना हुई अधि ! - मोत - मोइ-पु: इन्हेर -बोप-प छोर रोगस बढ भेर में 3 फेरबार दोता दे। -संघ:-सुत-४ मनदर राग मेरो समूर वा और मुविदिरके राजनूत यहके समर है हाथी मारा नवा (पीरामिक क्यांटे अनुमार शर् क माँके पेरसे की मामीमें रिमक्त उलक हुना का करे। व नामधी वह राजसीने रोमों हरतोंथे मोत रिवा। ए बसका बरागंप साथ पता ।) -- क्रियु-पु भेत्र । करा-नि॰ बि॰ो बीडा, सनिब । स॰ सनिब देशे हैं। किए। - प्ररा-४० बोइा-बोहा। --मा-देशकः। ब्ररामत-मा॰ (ध॰] १॰ 'हिरामन' i जराज+-दि• रे• 'शराक - वीरे भाग विण ता राका परवी वराउ'-सर। श्रातर~वि॰ वि•} प्रराप्तः चरा। जरामा - स॰ कि जलाना है थी प्रत्य बर्या जराकम-मा॰ अ] हैमारपना हेनी बनाइ ! न्यमेर वि परिद्राम्-प्रिक, हजोर !-की पीट-की म सम्बन ब्रसका~पु• [भ] हे 'जिराह्य'। अराब, अराव+--रि+ अनुष्ठ । पुरु वहीराही र वरायनि -५० [मं•] प्रशानंब । जरायम पशा-विक सपराथ कर 'शाना अने सकेरण' वरायु-दु मी वह विद्या निम्में निम्में दिन मोर्क गर्नम बाहर अन्ता है रेहिं। गर्ने प्रमा ६ वि^{कार} कता बरानु ! -अ-ए वह बाबी जी शांधि निर्धा प्रभा देश की का जिल्हा जन्म गर्नाशकों दें। जिल्हा ज्ञराह-पु+ दे 'बरोंड' । करिची-दि स्वीक्ति हे हिर्देश। ऋरित-दि॰ [त] जरावत स्मार अविधा- वि जनाहर नेवार दिया हुना। + 1 वे विदिवार १ श्रीवा-पुरु है विदेश । अरिहरू~तु० (का०) क्य थेशा ता गर्व दाव लावी बारश्रमी । अर्थ-विक [शा] संजेश बना द्वार हमारा। अरी॰-शी॰ दे 'दर्श ! क्रवी-दि॰ (था॰) राज्यते हार्वेद्या वता दुवा। बीप र्य का गार रिमक्त मोनेश कभी थाना दरा है न मामा द्वा । -दा वाम-द्वारण रा मन्द्रे का काम । जरी(रिष्)-दि वि रेप्टा ufigi-ge [n] gel gerei ret figett if अक्षेत्र तनशा miln-les [n] fifte ft. bitten diem fit अतिब-सं10 (स] राई, रहा मध्य मारेथ है। शे भंद बाब वामा रोगी है। रेडरट सा रिल शापी जुबारे हे बाथ शामेरी बंदर बन्द पारे हे -un-3 sebes friet ein Reter बर्जनमा १-वर्गी-शं अरोह शंवाने वर्षेत्र

रिक्का-प बह जो जून नमा ठमा रहे। बाँका रेंगीका पुरुत । र्जीबर कींबरा∽पु॰ संध्द बोबर, अमी I धाँदा-प मशनीः हरका। श्रीकि-की गंधानी। वहा धरवना * सव्यी ! धौँदी-स्त्री सदस्री। धो-प धोहः प्रमायवाः गुरसा छोभा-प• जमी शौरा। कोई-सी ईराम सूरी पत्तीः पतार्ट सीई।निस्तार वस्तु। छोड्डा- ५० दे० 'होस्त' । छोक्की-स्रो देश क्षेक्सी । सीकरा-प दशी उम्र भीर महत्वा सहका सांदा है 'टेरिंदरा । --यम-पु॰ शब्द्धपनः मास्यही । छोक्रो-औ॰ क्या क्रम भीर अध्यो स्थान, कांडिया । छाटा-वि सँबार्र, संशर्द, बीहार्द समी कुम क्या प्रतिष्ठा योग्यताचे कमा मक्त्वरहितः तुष्टाः भोधा क्रमामा, ग्रह ! - भावसी-प्र छोटी इंक्षित्रका मारमी साथारण चन। ~ई नवी छोरापन ग्रहता। -क्युर-पु: क्युरक्यरी।-क्यब्रा-पु वैशिया थोडी दीपी,समाल, गंडी जैमा ऋरहा; बद्दोका ऋपहा।- कुँ आर षता जिसको यह सर्वनिषको दवा मानो बालो है।—स्थिता - ४० प्रस्तामा प्रसन्दे इसर्वे बीसर्वे या शीसर्वे किनका द्यान (मुसन)। ~पच~प श्होर्ग्स वयपन।~पाट~ पु॰ रेशमचे क्षेत्रेका एक भेर । -शहा-वि कामीर गरीर । 🙎 नया-पुराः वहा आण्यो और साधारण पन । -मादा-वि धोरासा सावारण । -(हे)मियाँ-3 अमीर, वह भारमोच्य देश छोडे वाब (बीक्ट) । स −सँह वदी बात-अपनी हैसिनतसे नही नाउ करना। छोटे भौरमीका क्षेत्र दीव निकालमा निजा बरना । धोरिय-मा (सं] पश्चे (रबाँना) ।

प्रीदेख-म्यं (छ) पुरश्च (वर्षाता) ।

प्रारंश-वि मो धीर वा न्ये । - इस्वयक्षी-मी०

प्रारंग-वि मो धीर वा न्ये । - इस्वयक्षी-मी०

प्रारंग-वि मो धीर वा न्ये । - वा न्या मार्ग-वा मार्ग-व

विद्युति नहीं शंदश्यात । शहता न कि वहरेंदे निकल देता चंदन शीलता गुट्टारिया मा जेगा मुझ्य दश्या शदन शेहर देता खादन करन होना (पर, देएने) प्रशान करना विद्या देना दश दरे देना साद न लागा स लगा (किंगो साद दिन) दलास करना अजना शहाना परना। (विश्वेदें) पंच लगाना देवन एवंदि निकल्यारों की जो

र्वेदना, मारना बहाना (पिक्सरी भाविश्वामी १०); इरगामी मर्खोंकी चलाना (तीर, तीप चंद्रक भारि) धप-भौगरे वका रहने देना वानी रखना (जुटन, काम यरनेके बाद संवान, मंपति र०); नीचे गिराना, वाक्साः स करना करने कहने स्थितनेमें मुक्ती या जानकर एउ काने वेना (अक्षर खरेख); करनेशे निरत हीना, म बरना (नोबरी भारत)। इकाशी पराधा धोशना । सुर छोड-छाडकर-छोडकर । (किसीपर) छोदमा-दिशीके मरोसे छोड़ना पि.सी.धे सापना १ सोडवाना-स॰ क्रि॰ श्रीप्रनेका काम करामा । छोडामा-स कि ब कि दे दे प्रामा । छोत्र≉∽सी॰ दे॰ 'छत्र ३ छोनिप -- पु श्रीणिप राजा। खोनी≉⊸सी क्षोणी सुनि। खोव-पु॰ धोपतेश्च दियाः मीम सेपा छोपनेश्च शाम माने बाडी गीडी मिदी बादि। दिवाना साधात ! -छाप-पु दीवारकी भरम्भन इट-कृत भरना । छोपना~स कि किसे चौत्रकी हुगरीका हेर करनाः दीबारपर धनस्तर दरने उसदा गरा भारि भरनेद निप विकास समानाः दरोपनाः धर दरानाः इसनाः माने छापार्ग -पु॰ पानके को गिए देश हुई रहिसूदी जिनसे दह कपर चहावा बाता है। छोपाई - सी छोपनक्ष किया भाव या अवरत । छोम 🗕 पु 🤻 कीम । नदी बादिका बमहना। छोमना है न कि सम्ब होता चेचन परिच होता। द्योगित = नि दे धीमित । छोस≉−वि विश्वनाः सकावमः। छार- व सिरा नेम्स की गाः श्रीमाः। द्योरटी॰~सा हश्क्य होदरी। छारबा-व विशेष्ट्रोदमा परिस्थाय । छोरमा- • छ कि अपहरण हरमा, छोमना- शीरि सर्दे नांई भोरक, छोरि छई नाई अप - होनप्यामः † है 'टोहना । छोरा छारी-भी॰ छोना-गपद्मा बगर । टीरा॰−९ तरका संबद्धा (की 'होरो ।] छोजंग~दु [मं•] मीर्। छील-सी धिनने वा गरींच्या दिहा शाँपडे दौन अपने-का दिखा होस्यारी-सी होश क्षेत्र। छामना॰∽तः क्रि॰ ही=ना, मुरचगार्गेनाताः (धाताः पु दिवयारीका भुरथा सुकानका एक भीजार । छोलनीं −सी धीनी दा भी बार, सुरमनी। ए।सा-५ दना उस कारेन आर धीननकामा । छोषमा - व वह पाना जिल्ला न व्हार पाहरर घरे बर त्रको बारबर भगग करना है। छोड्-पु॰ वर्नेत अमनात क्या नवा व -- गर्रा -- वि केही ोट दरनेरण्या। छाहना॰~च कि दे धामना । ददा वा श्रेम **ब**रमा । सोहरा०-पुन्ताश धःदरा ।

धीइरिया - १ रे छोट्ये ।

ध्रता । −द्रास−पु वर्णवरु रोग । ∻र्थम−पु॰ [दि•] अकरतमा । ~थक-प्र• [दि] चल और रवस । बादकः कपुरः मौधा । वि अक्र देनेबाका । -- कारु-पु॰ वर्षकाल । -- क्षाय-पु॰ श्रारकाल । --• सिताका−प़ [विं•] तिताका साकका एक मेत्र। ~ बर्दर-पुरक्त भाग । -वस्य-पुरु समारी काका -वाता(म)-प॰ पानी देनेबाखा। -शाम-प॰ पेत-कर्मके बंदर्शत एव व्यक्तिको दिलांजकि देशा, सर्वत्र । --द्विप-५० क्वास्ता । -तुर्ग-प्र नदा श्लोक नाविसे थिरा हुमा किला, कल्मेक्षित दुर्ग। —वेव∽पु पूर्वायहा नधनः वरण । - देवसा -पु॰ वरण । - ह्रव्य-पु॰ वानी-में पैदा दोनेवाठी चीनें (मोती, संख आहे)। -होणी-की मानका पामी क्लीयनेका इत्था। बीन । -धर-पुर बारकः समुद्र मोभाः तिनिष्ठ क्या 🗝 केटारा—प [हि•] एक संकर राग । ~•साखा-को अवर्गका एक संद । -घरी-सी अन्दरी । -घार-पु श्वास्थीयता प्रकामीत । ≉ जो अक्काला । −धारा−सी असमा प्रवाह । ~धारी+-व• नादक । ~धि~पु+ महुद्र। चारकी संस्था != •गा~सो • नदी != •ल= पु चंद्रमा । ~ • मा - ली • फश्मी ! ~ क्षेत्र - सी वानके किय वाशी-के वर्षे स्ट्रियतः गाय । -मकुस-प् करविकार । - माडी: - माडी - ची । पानी तिवसमंद्रा रास्ताः वाकाः। -- मिथि~पु समुद्रः चारको संक्याः। -- निर्गम-पु पानीका निकास जरूपक। −शीक्षिका₃−शीक्की−श्रो Bबार । ~पक्षी(क्षिम्)~प्र॰ पानोके किमारे रहमेवाका भाजिक्यों भावि कालवाका व्याः। ∽परक्र∽पु⇒ वादक । ~पसि~पुस्सदः वस्यः पूर्वांकातः जञ्जनः ~पच− पु वक्सार्गः महर भाविः वासीका वास्ता । -पदाति-स्तौ नासा। −पाटक≉−पुद्धावक≀ −पात्र−पु पानी पीलेका करतकः पानीका करतन । —पान-५० बक्रेया, मास्ता । ≃ युक्क~पु बद्ध स्थान अर्थी वक्रपांस का सामान (चार, मिठाई आवि) निकेश वहीं करूपन क्रिया वा सके 'रेस्टर्स'। --वारायत-पुरु वसक्योत। -पिच-४ सक्षि। -पिप्पकी-सौ ─पीपक्क─पु [दि] चैपक(जोववि)का पक संद। −पुष्प~पुदानीमें दीनेशाचा फूड (कमड, कुई ६)। -प्रवास-सी सिनार । -प्रवास-प्रच देशाविके किय सत्यान तर्पन । - अव्यक्तिक-पु सद्यागरतम् सापन्दे अंतर्गत पुत्र अवंतर पर्व । —प्रपा—औ॰ पीसरा प्याक । —प्रपात-प्रक्रिका किंदी नदी-माक्रेक पहाइके छपरसे सीचे नीचे तिरना ! - प्रसम्ब-धः संपूर्व सहिका बक्यत हो बाला । -प्रवाह-पु पानीका वदावः पानीकी वाराः। अवसी सबी सादिमें बढ़ा देना ! -प्रांत-५० नदी, शीक आदिके पासकी जमीन । ~प्राम-पु वक्षपुक प्रदेश । हि॰ सहौ पक व्यविक हो । --श्रिय-पु॰ चातकः ग्रहको । -प्रिया-सी वातकोः वर्वतीः -प्रेश-तु वद दत व्यक्ति भी जुड़में शूनकर अरनेके फारण मैतवीनि की माप्त करें । - प्रय-तु कदिकान । -प्रावन-प्र प्रकारकरा शह ।-एक~पु॰ शिवाना ।~र्थय −र्धयक्-प्र पानीबा बॉपा गोपका नाम देनेगाकी चट्टान मारि ।

-वंध-पु० सहको । -बासक-पु सिप्त दर्श -याकिका-औ॰ निवकी। -विव-तु॰ तुक्ताः -विश्वाक-पु करविकान। -विश्व-पु॰ तालक शीका बेक्शा र्थेन । -पुत्र-पु पुक्रका । -श्व [कि] छवा जैसा एक महारका रेव यो स्ट आदिके किमारे पैदा शीता है। -श्रक्षी-स्य इस्स्य साम हिक्क्मीकी ! -सँवरा-प॰ विशे राजेस तेरमेवाका एक बीहा। -भावन-पु॰ सकपूर। -भारद-त [विं•] सोक्की बाहिता पर चेत Hसीति-नी॰ बकार्तक रीग i —भू-नि॰ बकाव i पु शहर एक तरहका क्यार । श्री पानी बना कर रखनेश सान। ~शूपण~प्रवाह । ~शूत्~पु• नश्का वाची एक्के बरतम, बढ़ा बादिः यह तरहवा बहुर । -मेहूक-इ पुराने समयका एक बाजा, बक्ष्यर्तुर । असक्रिका के वानीमें रहनवाका एक श्रीष्ठा । —प्रदा—विश् शब्देने हुई हुआ । -- सङ्ग्रु-पु ६६ बरूपूरी फ्रेरिस्स (--सप्र पु बलगढुगो । - मर्बाट-पु॰ हे 'बलब्दि' ! - स्क प फेन । -मसि-त नहका एक तरहम क्ष् -सङ्गा-प [हिं] सङ्ग्या एक सेर की गर्नी किनारे बाता दें ! -मार्तग-उ वनहस्ती 1-मानूम सी एक करोगी। -सालप-उ यह करिय (१) प्राणी क्रिएको गामिसे नीचेको वेद सहस्रोको कीर स्मर की महत्त्वकी मानी बाही है। 'वर्छर'। नमर्मन्?' करूप अक्षत्रजाकी र ∺मास्रोर-प क्यम्बर -मुक्(क्)-प्र नारका एक मकारका करूर 1-पूर्व पु विष् । -मृतिका-को क्षेका।-साद-५ क --वंध~पु दुवाराः दुर्वे मारिसे नामो निकालनेस र (रहर मादि)। सक्यही । —• ग्रहः → संदिर-उ° मकान विसमें वा जिसके मास-बास प्रवारे की वह की विसके चारों ओर मानो हो । --पामा-को॰ वस्तर मान नारिके हारा बावा। तीर्वेडक वालेके किर वस्पी की संविधि वात्राः कार्तिक-गृहा वहुर्रशीक्षे देतिक राजपुराताका एक बलावा क्वेड हुझ वृत्वमाको होनेहर बैकारीका यक करतन जिसमें बनवार उद्दे बतरी पू सहसाये कार्त है। -याम-दु॰ वानोद्ये स्वारी-^{अहान} नाव ! - सुद्ध-प्र पाथों के स्वर दीनेवाना पुरः शार्व सवारे । -रेक -रेख-प्र वनका । -रेक्ट-प्राप्ति यानी । —र्रंड-पु मेंनरा जक्कमा धाँव । —र्म-पु ममकः साभर समक वा समुद्री क्रीतः। -शहसी-ही लगण समुद्रम रहनेवाको स्मिटिका नामको राम्न व कपर् वक्सवाके पश्चिमीच्या छावा वक्तवार प्रमें सांच हैई थी और इनुमान्दे लंदा जाते समय बनदे सन्दर्भ की बरनेवर तम्हाते दानी मारा यथी । -राधि-ती^{र स्ट्री} का नहुत नहा हैरा रभावविधेवपर संचित सावरिक अ प्र समुद्र । न्हेंड-पु भैनर । जनक्ष) सार् । न्हें यु क्रमक। -स्य-यु सगरः गश्रः राश्चि। -इता-सी कहर, तरंग। --बरंद-तु स्व प्रवास्त्र प्रश ~वश्चिका-ची एक अरुप्यो । ~वस्कर-पुर प्र क्षंगी। - वसी-सी सिपादेश दीवा। -बार्च-प्र एक बाथ । -बाबसं-पु कीतिका मामधी विशिष्ट

संतरी-सी पंषांग, पत्राः छोटा संतर । प्र संतर-मंतर करनवास्ता है। अंशी ।

बॅत-'बॉत'का समास्यत रुष्ट्र स्य ।-यर-पु , सारी-स्ती बह गीत जी शक्दी पीछते बद्ध मियाँ गाठी है। -सार-सी वह वर, स्थान वहाँ मंता गहा हो। र्वता-प्• येष: सार द्यायनेका भीजार। * वि यंत्रश देनेवाकाः निवमन करनवाकाः वदा रणनेवाका 'वंता' ।

र्सेटामा-स॰ क्रि॰ बाँते भादिसे दनकर पिस बानाः कुषक बाह्य ।

र्जती-सौ• होटा बहा।

व्यंत-प्र [मं] प्राची, बीनः पशुः कीश-सन्तीशः बीनारमा। -बंतु-पु श्रयका कीवा। श्रीय । -का-पु विश्व होंग विशेरा तीवृजारि हमिनाग्रक शैवय । वि हमिन माध्यक्, ब्रह्मभेद्धा माद्य करमेशका । -प्या-का॰ वाय विदंग ।--तादान-प्रश्नीय ।--पादप-प्रश्नीपात्र प्रश्ना -पम-पु॰ गृषर । -मारी-मो जीव ।-का-मी कारतन्त्र काँस ।-हास्त-न्त्री बह स्थान वहाँ प्रदर्शन मा सम्भवत्य सिप्र जीवित यतु १८। याचे चिटियाचर ।

~हग्री−र1• वायश्टिंग । **र्जनु**का=जो• [मं] हास । र्वनसती−स्तौ• [सं] परह्ये ।

र्वत्र-प्रवंत्र तानीयः ताना। -सय-प्रवं र्मगर ।

संबन्ध•-म•क्रि॰ ताका स्याना-'गरत मगति सबके मति वर्षा - रामा । स्री है । 'बंहता ।

অভিনে≉−ৰি ব্ৰিন, অভয়াছলঃ ৰ্বা

संप्री−९ दोणा~ "शिना तार तथी औम अंत्रीकी दवत दे =रमश्काम । दि चौत्रा-चाइकः कडानंश करनेवाला ।

न्दी तिथियत्र।

प्रद−नी नारीकी रेशनी धाराकी प्राचीन भाषा जा बैदिक मंरक्रतक्षे बहुन मिलनी ई । प्र अरतुरती पारसियों-का प्रथम धर्मणेया जन अधेरना । नामकेरता न्य वार सियोका परतरन रुधित प्रमेशन ।

संदरा-५० जाताः सन् । र्वेदर्श-५० [म०] दे० 'दंबन) ।

र्मपमाश्र—प किश्वदानाः।

श्रेष-प्र [म] पर, ब्रायह ।

वीबास-प्र [म] को भड़ा बार्या से बारा करता ।

वेवास्त्रिमी-भ्ये [n]सरी।

र्जेकोर-पु [मं] जरीरी मीवः सम्बा बनतुसन्।।

जैवारी मीपू-नुरु मीबुदा एक भइ जी बागजीने आशास्त्र बता भार मॉबंड राष्ट्रा दोगा है।

संदु अंयू-दु [मं] जामुमन्। ५३ श्रार् कृतः। -व्यंद्र-द देव वेवनीर । -श्रीच-यु पुरायानुमार परगी-C मात्र महादीपी या प्रपान विभागीमिन एक विगद वी संरोधन एक मार्डको सी ह । -मर्जा-की जुराया-नुगार रह मनी वा बंदुदीपढे लामनर्गंडे हेनु जामुन्छे द्रान त्रवान बात्रमुं ह रागी निरम्भी है। कट्मीर र तिरणे दूरे स्पन स्पेत्र मेरे हक । नमस्य - मु व्यासी भीव रामायपने मन्ति एक मरा जी मनिहानने सारा

समय भरतके रास्तेमें पहा था! ~बनम~पु॰ सफेर शबहुक ।--श--पु॰ जासुनः केवडा केतकीः वर-कर्मा-पश्चनाकॉन्डी बोरसे यक बुसरेके प्रति कहा जानेगाका परिशास-बचन ।

जीवुक, जीवुक−पु [सं] जासुना स्वार, श्रमालः केववाः वरूण शीच, पूर्व भारती । [शी 'बंतुकी , चिंतुकी ।] अंत्रमाम्(मन्), अंयुमाम्(मत्)-प्र• [हं•] प्राह ।

जीवका-स्पा [म] किरामिश्च । जीवर-प [म जन्दर] मिनः शहरकी मन्दीः प्रताने समयश्री थक्ष छोटी काष । 🗝 द्वाना—पुरु भिङ्ग वा छाईह को मनिक्यनीका छत्ता। —वी-पु होपनी । जोकरक−प है 'संबर'। तापक्षा पक्षी मेबरक्ली।

क्रयरा-प दे॰ 'चंत्रक'; एक भीवार, गाँउ। क्रीम-त [सं] टाइ: ठ्रटी: प्रधाना, मध्या: अंधा: बन्हारी: तक्षक्ष विद्यासुरका बाप भी देखके हाथी मारा सवा। र्वशरी नीव ।-ब्रिट (प),-भेती(बिन),-रिप-पश्दर। जैसक-वि [मं•] बम्हार्र केनेवाछाः महाप करनेवासाः

दिनक । प्र• दिशा वैशेरी गीव । स्रमस्य−स्ता सि•ी बन्हारे ।

र्जमन−पु॰ [सं॰] मन्दाना। भद्यम। मेनुन । श्रीमा∽सी [र्ग] बन्हार्रे। र्वेमाई-मी १० 'बन्हारं।

क्रमाना-म॰ कि॰ दे॰ 'नम्हाना'। र्जभागति~प॰ मि॰ो दे 'प्रमारि'।

अभारि – पु॰ [सं∗] श्रहः पऋः अधि । अधिका—श्री• [सं] दे• 'बंबा ।

अंमी(भिन्) जंमीर~ड [सं॰] वॅशेरी सोद। र्जिमीश-इ दे अंशरी गीव ।

m-g [मं] इत्सुंबवा अन्या विनाः विष्तु। शिवा विका अकिशतमा विद्याला वेगा निजताः विगतका एक या विसका आि मेन वर्ग कडु भीर पीपका शुरू होता है। वि वेगवान् विषयी समामांत्रमें भी वा है प्रापन का अर्व पदा करेगा है (वैश-जसन, बानश क्षेत्रत १०)।

अर्ह-त्यो॰ बीडी वादिश एक बनाव जो प्राय वाहीकी जिलाना जाता है साथा जीवा भेशुमा; सार सम्बद मादिकी दरिया । सुरू –हासना–हिमी असदा सेराप निकमनके सिए नियामा ।

ज़र्दक~ि (स] प्राः दुरेल ।

क्राईका-विश्वती [शर] पुरी बुद्धा । ज्ञाईकी-स्री शुरुषाः दुवसना ।

ठाइड•∽भ यषविः

प्रक्रींद~क्षा (का] स्त्रीय चीरहा । जकदमा = - व मि छलौव मारनाः प्रश्टना । जक्दैदनिक−स्यो वीदपुषः बन्तरनः ।

जक्र-शी हर धुन रस्ता पु यथः शेन्स भारती। म -देवना-राज्यनाः

क्तक-नी [मंदी दार परायदः सीमा देखना दानि । जार-मी जनस्य बगहर व बनही दिया या मार। -यथ-ति बमहर वेचा गमा । यु दश बंदन प्रश्न । जरूरमा-म दिश क्यर बोचरा । ms दिश (Qui)

1 -=

क्षकाका−स्त्री [सं∗] बॉक + दे॰ विसाद । धकासका-सी सि विशेष। जकाकाश-पुर्ति] चक्रमें मतिनिनित, जक्रमें अनुधितन वकाइक-नि॰ वकाव ≀ माकाक्ष १ जकाश्चय−५ (र्श•) कमला जरुगाही−सी॰ ही] वक्षपेपकी। जिका-शी (७०) वॉक। बसाल ∽पु॰ सिं•ी ध्वत्रविकात । ज्ञासीस-विश् [मर्थ] अपमानिषः द्वापिता। क्रियो केस्स बकाजक-५० गोट मादिकी शासर ! वि वकसव । की गयी थी। बसारन-पु (सं०) दंद पश्री । बहुका वसूका-स्त [र्स•] रे 'क्टीमा'। मसाटमी∽सी [सं] बॉक्। बस्यस-प्र∘ वै॰ 'जहस'। बसातक-पु (सं•) नागत कुछे, पागक स्वार आदिके बर्सेड्र~४० (सं] वश्या क्रिया सम्प्र । काटे इएको बोलवाका वह तरहका कमाद रोग जिसमें अक्टेंशन−पु॰ [सं॰] बद्यवानकः सूनै । बद्द पानी देखका करता है। वक्रेबर-वि , प्र (सं•) दे 'वक्रवर'। व्यवस्थान्यः चि] वीदः। जक्षेत्रक्रया-का॰ (सं॰) दरितसंबा मामक पीना ! चलास्यय−प्र सि॰ोधात कत्। थरेज, थांग्रेज(त∽ि , प्र [र्ल•] हे 'जलत'। सकाधार-पु [हं∘] बकाधन। खस्त्रेत्रज्ञ⊶वि• क्षोची, जरासी गातक जानस्म है सकाधिरैवत−५ (छ॰) बरणः पूर्वांकाः तक्का । वानेवासा । अकाथिप-पु [सं] वनगः वह ग्रंद की संक्रश्राविधानी प्रक्षेया−त वही प्रदेशी ३ भक्ता स्वामी हो । खसेवी-भी • शंबकी; शंबकीचे नाशाएको एक निर्मात स असाना≃ध कि॰ कलनेका कारण दोगा, किसी चौजकी पीपार एक भातिश्रवाको । भाग प्यत्राना शहना, भाग चमानाः गरमी वा शाँच अक्षेम−५ [र्ध] वस्दस्ती। पर्देशाहर स्थानाः प्रक्रामाः एकामा, व्यक्ति ।संका थाधेक्द्रा—सी॰ [र्थ] कर्रविनीः वर्रमुखी । असेबाह-प्र (रं°] गीताहोर, पत्रुच्या, मरीबा। करना । मु धला-जक्षाकर सारमा-नक्ष्य एतामा, त्रका प्रकार मारता । जक्षेश्र−प्र [र्स] वरूपः समुद्र । जलापा~डु॰ दाइक्ट्रॅ वस्त्र । जक्षेत्रवा−प सि विकासनी, विष्तुः स्तर । चलायुका – स्रो [र्स॰] भीव । बचेचर~प्र [धं] परमा एसर ! अस्ताक − पुर्ति }कक्में प्रतिविधित सूर्य। वसोका-का [सं] है 'क्कीका'। बक्रोक्क्रास-प्र॰ [सं॰] (नदी बादिके) बच्चा निकरि सकार्णय-प्र (६०) जवसमारः वर्षकारः । क्ष्मर चटकर, क्षक्रकर नहमा। सर्विरक्त वसका निवर्त क्रसद्ध्र्यं∽वि [शुं] पानीसे नीमा हुआ। गंका। अकोव्र−प [सं] एक राम जिसमें मेरको स्वाहे सी भळाडां −सी सिं•ी गीका वसा≀ अक्षाक्र−५ [व] तेवः मदत्ता गीरवः रीतः शब्दतः पानी श्वका हो बादा है। **ब**बितयार । बलोजवा-का [सं॰] होटा मान्या ग्रंहण । श्रक्कासी~दि [ल] विसमें शतक हो। नकाक पा बस्मेरगी-सी [सं] बीहा। गकीकस−९ (सं∘) जॉका क्षकार्त्तरीमका चकावा प्रमा । तः असकमान क्रमोरीका बस्प्रेक्स (क्स्)-सा॰ [मे॰] बीका क्ट संप्रदाया क्ला**लारी** नका कराया हुआ सन् । व्यवर्-वि॰ (बे॰) तेत्र, प्ररतीयाः मात्राकः। व॰ इन्हर-ब्रह्मासक-प्र सि॰] यसककी वर, गरवार । क्षीत्र । —बाज्ञ--विश् वदावसा बस्से नवनिस्ता यकासका वकाकोका-ना [मं•] बॉबा स्काष-पुरु दामीरा समीरका वडना । **-पानी-वरिः प्रवास्कास्य ।** अक्दी-की वेशी धीमता स्तामकापन । म अन्द । भागायतम−प थि । तिर्वासन देसनिकाचा । वि० निर्वासित स्वरेशसे निष्यसित । अक्य-प (ए॰) कमना बदमादा तकी बदस ! सम्पन्न, जनपान-वि [सं]'वातूनी वाचान ! प्रसावतमी~भी निर्वासन देसनिकाना। अक्षण=-त्र [सं] कथना कालास, करवार करना। वि प्रसावतार-५ [तं•] साव मादिपरमे ज्यारमेका पार । खळावन-पु असानेके काममें शामेवाली श्रीतें वेंबन । वस्यक्ष । **अवस्**ता – स कि , भ कि है 'वस्ता'। सी [स्रो बजाबर्वे−इ [सं] मैंबर। शक्षाप्तय-त [र्थ•] श्रीकः ताकानः जसाधारः सक्कीः दे 'जस्पन । व्यक्तियतः-नि [में॰] कथिता रोम वा स्वन्धदे स्व्ते क्रा समहा क्या विवाहा । वि अकरी एडनेवाका। मूखै । सकाशवा-स्रो [संग] नागरमीया । हुमा । अस्त्राम् पु [अ] राजाधाने देश्व वनरा बर्ग्स कस्त्रवाची सर्गे – पु. (तं॰) कुर्वे तासाव बारिकी प्रतिसावय मारनेवाला वा धमे करेंग्री प्रवासेवाला वारेका वि पुत्रा । निर्देश वैरहम (बस्द-धोरे मारमा)। अस्त्राय-प्र• [सं] जनारमा प्रश्नांदी तुनः ननारः। जब-ध [सं•] येगा र जी। वि वेमसन्। अकालया-ली॰ [सं] चूकी तूल। जबन-पुर्वासं]केता पीता है अवस । वि केप्सूचन है। जमाद्वीका-सौ [मंग] पदा भाषीर शकात ।

2+1 कर्मी । -मोहिमी-छी॰ [सं] महामानाः दुर्गा । जगम्मय−५ [सं•] विष्णु । अगम्मयी-सी [मं•] हर्मी। क्रयमग्-वि॰ धमकीका, अगमगाता दुमा, मकाक्षित। स्वी॰ जगमगाइट । प्रगमगा-वि है॰ बगमग । श्रामगामा-म• कि जानी वा दूसरेकी रोधनीसे अम कता, प्रकाशके अंपन्ते शतकता, वमकता, चमजमाना । **जगमगाहर-सी धगमगानेका भाव अमक, वमक**। जगर-प [सं] क्षण निरद्याः ज्ञराहन = - प्र ने॰ 'जागरण । जगर मगर-वि॰ दै॰ 'जनमन'। क्षमक-(व [मं] पूर्व चाटवात्र । पु॰ गोवछ पीठीकी सरावा सरावस्त्रे सीठी। स्तप । अरापाना—स क्रि• बगानेदा दाम दराना । अगह-सी अवदासका बंध-दिसेय अवदासका वह बंस जिसमें किसी बरत दा व्यक्तिको रिवर्ति हो स्थाना बस्त था व्यक्ति-विद्योगका निवत रवाना समार्थ, श्रेषायका पर पहताः तीकरीः अवसरः भीका । - जगह-- भ । हर अगहः जगाजोति॰~सी मामगाइड ।

सगाता ने सी दे 'रामार'। अगाष्टी • - प्रज्ञात दम् ह परने दाना । अगाना-स कि सोधने बढाना जागनेको प्रेरित करना। समग सामबान करना। मुक्रमानाः प्रदीत करना (व्योति बनाना); यंत्र प्रंप किंद्र करना वा कनका प्रभाव बनाये राउमेके नियं ध्रहण आदियर धमका अप आदि करमा। र्वशक्त गाँवा भारि द्वनमाना ।

असार≠−स्थै जामस्य जागति। जगी-नी भौरकी बाविका एक पक्षी। खगीर ॰ न्यी दे जानीर । अमीमा॰−वि उनेदिः।

सन्प−ि [है] सावाह्मा अकः। पु श्रीतन आहारः बह रबान यहाँ क्रिसीने में।अन क्रिया है।

जन्धि-छो॰ [मं] भोत्रत भादारा ग्रहमोजन । व्यक्ति-दि [में] पड़ता द्वा अंगम । तु बातु । वयत-पु [सं] सियोग्ड पर् शोविश निर्मय सेनास्त पिटका मारा । -कृप -कृपक:-पु व्यवको अपरका गरवा । -गीरप-पु निनंद-भार । -चपसर-मी मामुका व्यक्तिपारियाँ ग्वी। सेजीने सायनेवासी श्वी। यक माचलुक्त ।

अपनी(मिन्)-विश्वि [मं] वहे धृतहोताला। अपन्य-दि [ले॰] संदिम सबसे क्रीटेसा सबस बुरार भवम भीवा निरित्त हेमा भीच वातिका। पुरु सुप्ता िरिया-च-त स्वाधाय मारे। अधिन-पु [मं] धननपा शायन सम्प । मध्य-ति [म] इनलस्य पायकः। अधि-त [तंत्र] ग्रंतनसन्दर्भ इत्यागिनकी [या] प्राप्त प्रमृत्यक्ता । संबता-स (र•३ 1यता ।

वगम्मय-अराषु ज्ञाचा, क्रमां∽सी० फि.] समःप्रस्ताः वह स्रो विसे मसव किमे ४ विश्व म इत्य हो। - स्वाना-पु॰ मसवगुर सोरो । -गीरी-जी॰ सोरोका गोठ, सोहर । शच्छ =-पु• दे 'ब्रह्म'। बाज-पु [ब्रो] वह जनिकारी जिसे सुकारमे सुनकर प्रमुख प्रेसका करमेका अधिकार की विचारका विकेका प्रचान न्वायाचीका, बिला जवा निर्णायक । -सेंट-प्र फैसका धवदीय । वाजना = -स कि बादर करना, पूजना - कि पूज पार्राच्छी वर्ने न स्ति नाबार'-गीनर॰। खज्ञसाम-प दे॰ विवसान'। सप्तसामी-भौ॰ दे॰ वजमानी । आज्ञा-स्यो [अ॰] बदका, फल: बरकोक्रमें मिकनेवाका पुष्पपत्तः । स्रक्तिया~पुदे• 'विकिवा'। श्रजी-की जनका परा श्रमकी क्षणहरी। बज़ीश-५ [वर] टाप् दीप । ~ मुमा-५० प्रावदीप । श्रञ्ज ० - पुरु देश 'बद्य'। क्षप्रक-पुर्व [स] सोसमाः विचान, साहर्यन । सन्या-तु [ब॰] मान, मनाविद्वारा बीद्या रोव। जावाती-वि माथ-संबंधी माबारमका खर-पु॰ रक तरहवा गीरना; दे 'बाट । खरमा~स कि॰ ठगताः * अवनाः अक्तमा~'दिन दिन बीन हीय भई कावा प्रश बंबल बड़े - घड़ । करक~की बरबाए बेतको बाठा पप ! −काफिया−प नेतन्त्री वातः गए । – काम्रा–दि वदमाती गए वॉब्टने बास्य ।

अटएमी-दि॰ व्यक्तात्र । अद्रा−स्ती [सं] यसके और आपसमें निपके द्वर स्पि वाल- बदाबारी आदिके संदे वाल को दरगहका एवं समा-बर विषया दिवे गरे हों। वेड-पीपॉब्ट जरा आसार कबले दुष रेखे; क्यामाची शास्त्रवर्ध नेरशास्त्री एक प्रसादी (इसमें समा को ध्या का पाठ क्स तरक किया जावगा-नमी गर्रेश्यी बरेच्यी नमी मना क्रेप्नर ?। सुनाबरा केशंव । -चीर-पु शिव । -जूट-पु॰ जूरेके स्पर्म रेंची इर्द करा; चिषक्षे करा ! - ज्वास-पु: निर्मा क्षा-इंक-प्र विका -चर-वि क्रम्बारी । प्र विका एक तुक । -पारी(रिम)-नि विस्ते शिपर बरा हा । पुरु साधुनाम्यानी । -परम-पुरु बेर्नारहा

जराजियी(निम)−वि+ वि ो बरा और म्बिन (नगवर्त) भारण बस्तेशामा । अरारीर-पु (मे॰) शिव । जारामा = भ+ कि अध माना इगाभा । सः करनेदे निय प्रेरित बरना ।

एक करिन कम । --सहस्र-पुरु प्रश्ना । --सीमी-धारु

वानसङ् । -मानी(सिन्)-पु॰ महान्व।-मार्सा-

नी [हिंग] हे 'जहाबांनी ! -चान्की-भी सहस्रशः

नंपमांगी १

करायु-प [सं] रामाययने समित यह शिक्ष (अपूर्व श्रीतावी बरबर के जात हर रावानी गरेतानी रावा देह गस्तई−वि• अस्तंदे रंगका, साम्द्री । प्र_ अस्तेदा रंग । चस्रा-पु सकी रंगको एक पाठ विसे ताँकेंद्रे साव मिष्णानेसे पीतक बनता है। है 'बरता ।

पार्टें≉−म दे 'जहाँ।

वहाँगमा*-अ कि॰ दे॰ वहाँशमा ।

कार्ट्रवाना १ – थिक ठमाना, गैंबानाः श्वानि वटाया । **अहरू** – वि [मं•] स्वाग करनेवाला । पु समनः क्षिताः

र्वेचली । पहरूमार्ग -- म मिर नहकता, विगक्तर काँउ-केट कंकना । अहमा-सी [ई०] मेनकेची वातिका एक जेतु करास । अइतिया÷-पु॰ अदात-दर्, स्थाप-वर्ष दरनेशाला । जहरस्वार्थी-की सि॰ो संख्याका एक ग्रेड जिसमें का ला बारन माच्यार्थका स्वाग कर छछछे छंदद बूछरा वर्ष प्रस्ट

करवा है । खहर्जहरूहरूपा-ली [र्प०] कश्चलाका एक सद विससे कुछ क्यों का निपक्षिका त्यान कर निसी पक्षको प्रकृष किया जाता है।

सहदना∽ल० कि॰ क्षेत्रक होना। हांत हो जागा, थक

सद्भार-पुरस्का।

सहरमन-५ है जरम्मूम ।

अहमा -- स कि छोरगा नास करना ।

प्रदुष्टम−पु [ल] दे 'जदल्लुस'।

चहन्त्रस−प्रशिक्ष] गहरा कुथाँ। भरकः शहरा नरह (मुस्ड)। -रसीब्-वि वदन्तुनमें पर्वेवा हजा भार क्षेत्र । सुरु −सें जानाः,−रसीद द्वीला~नद्र होना बरबार शीला ।

बहरूनसी⇔वि परकर्में आनेनाधा पारकोन ।

ब्रह्मत−सी [म] इट, त्वलीफा शंतर !

शहर−पु [फा] वह कील को वेहमें पर्देक्कर पृद्यका कारण को का स्वारध्यकी द्वानि करं, निमा स्वादमें व्यक्ति बाद बरताः अदि अप्रियः अस्या गातः। वि॰ व्यति शानिकरः शासका भारत बद्धा श्राप्तचा —श्रार—विण जहरीला सिरदुक्त !-बाद्-पु एक तरहका बहरीला और नक्ष-माध्य क्रोडा । --सोहरा-प्र पक वरहका क्लर क्रिसमें सॉफ्डे भीर कुछ इसरे निवेंकी भी शीख वेनेका ग्रम होना है। - व ख़ताई-पु शुवना वैद्ये दता नगरते आने-बाका बहरमोहरा की गहुत मणिक ग्रामकारी भागा आधा है। मु: - उगसमा-कगनेवाली पात बहना। वकी बरो कदमा !-कर देमा-(रामेधी श्रीकरी) दशना अत्रवा शीता कर देना कि नियका म का सके। ऐसी कहा कहीर दा बुट्यन् बात कर देना कि मीत्रमका स्वारानुधा काता रहे ।-का चूँड-वर्ति अधिव असम नाश । -- वीकर रह बामा:- पीमा-निवशकाके बारण गुरहेकी अंदर हो बचा रखना मसबादी सब केना। नदी प्रकियान मारी बच्छता, प्रसाधी । (किसी बातपर)-सामा-विसी पारंसे विक, इ.सी बीकर भारमकायाका वक ब्रुरना !--मार् **करना-अच्छा न क**गते हुए भी शानाः **अन्दर्दा दे**श्में बाल देशा । −मार्गा~नदरका नगर बुर करना । —से श्रुक्ताना∽वीर-तकनार नाविकी नागर्वे | शृङ्कर−9 के 'सुद्धर ।

बाहर करके विपरिश्वित बाहर्में शहाना विससे बनते बचन बोजवालेके द्वारीरमें विष प्रवेश कर जावा वातनी सर्ववाद मसम्बन्धाः वसा देना ! ~होना~किसी विसेव स्वत्र वर्सा या भीजनका (समय-मिर्च शाहिको मध्यमा वा क्षेत्रनहे समय कीई बति दुःसर भात सुननेसे) असाम 🗓 सक भौंटा विगका न बा सकता। अहरी, अहरीसर-वि० विश्वमें बहुर हो विदरका।

बहुछ = न्त्री गर्मी ताथ। **बहरतश**ाला-स्ता (ते॰) दे॰ बहरतार्था ।

बहवाँ मान वेश वहाँ। अक्टॉ~म॰ जिस नगद्ध जिस स्वानपर । ~सर्हो~# " श्वर:चवरा अमेळ स्थातींपर । **~का तडाँ**~वडाँ था स**स**

भपनी बनक्कर ! खडाँ—'बहान'का समासमें स्वबह्द रूप। ~गर्र नीर पुनवार विकारमें रहा । - वार्ही - स्त्री विकास मा । - धीर -वि धुनिवापर राज्य दरनेवाचा विश्वविवयो। ३१ थारहका भीवा सुयस समादः अकारका प्रशः। नहीरी क्षी किन्द्रशिक्षका शुर्मणलका राज्यका ककाईपर परमनेध यक बाहरू गहरू(। वि. पहाँगीरका वहाँगीरते सेव)

--बीक्:-वि की दुनिया देसे की अनुवर्ता ! --पुमा नि विसमें दुनिना दिसाई दे वा विश्वनरमें सन् 🗫 वेका वा एके (वाईना केंब्रे) मोनाए)। -पदाइ-सि द्यनिवाकी रक्षा करनेवाका। सराराज शामनवर्ग रे उ शवकारः समाद विदस्तानक मसक्यान गाइकानः संबोधम)।

ब्रह्मक्र−९७ (व] वड़ी और समुद्रमें क्वने वाकन सबनेवाको नाव, असनाव गोवा (छा) बहुत क्ये गीर्व मीजः बहुत मारो नीमा ।—राम-पुर जहात स्मानेपना ~शमीर-मी अश्व क्यानाः रहात्र क्यानेसंख्याः। सुरू —का कीमा—स<u>स्त्र</u>में वक्रनेवाले पहात्रवस्त्रा वीग जी कही जवीन न देख बाद बाद हिस्सिटकर उन्हेंच भावर वैक्ता की वह भारती जिसके कि एक **ए**

क्षिमाना थी। बहाझी-वि वहाकता प्रशासी शेतेनका (कारमर्ट) मदावसे बाता बरमेशलाः बहान्दा काली -बाक्-पु बदावीपर बादे बाकनेवाका स^{बराह}

समुद्री बाकु । अक्रान−पु॰ (सा॰) दुनिया असर क्रीक्र । −आरा (मारा)-वि बुनिवाकी संवानेवाका सुविधी ग्रीत र्यमार । — बेगम-ली॰ छहत्रसँसे को की से क्साकी चरणुक्तक पश्चके साथ केरागावेथे रही। हैं ~ ऑर्रोरों स्थाह की जाधा-सन और सॅनेरा की जैसी

विवार हैना। बद्धालक−५ [मं] प्रसम् । सद्दासमा-की [श॰] शवान सूर्तना, शाहकपर !

वाहियाण-स वस ! जहींंंं≁म क्योंदी। विस रवामस्ट नदीं हीं र ब्राहीय-वि [ब] जिलका बेहम तब हो, तीरप्तुर्वि मेनानी ह

वा)। -पुसक-प कासकी वनी पुराकी असर्वेजका सदराः चीसरकः गोदो । -मणि-प्र हे॰ 'बद्रह'। -स्य-प हारा महाबर !

जत्रक-प्र• सि•] डींग नासा है 'जट्रक 1 क्तका-सी मि काराः समगान्यः पर्यशै सता ।

करती-सौ मिने चमगहर ।

सत-मी [र्व] चमगाद्र । -क्या-पु॰ यक् विका नाम १

पतका~सी [मं] चमगातका रवनी नाम≟ गेवरूमा । अनंक≉-ति स॰ जितना।

ब्रह्मा-पु॰ कार्य-विशेषके किए संपश्ति छोटा दल मुख । -(रमे)दार-प प्रत्येदा नायक दकनायक । -वंती-श्री • बला बनाना इन्हरेरी ।

सब समुक्र-व [सं॰] ध्रेके मोनेको कुमानी बेसी हुनी। देसकी ।

जरवदसक−पु॰ [मे] शिकाजतः ।

शधार-स दे॰ 'यथा। सी यस, मुँगी। पु वे

'बला । स्यारमध-विदे विभागे ।

लको −व० जवः यि ।

जर-सी• पा विदेश आपतः निशामा गर।

प्रश्ती-वि॰ थि। । मारलंके धाविक क्या (गरदम क्यमा)।

प्रकृषि =- म ॰ दे॰ 'वयदि ।

बदस-पु[भ]पुद कदारै।

जनवार-व भि । एक दिवनादाक भोषति निर्विदी । क्या-वि (भाष) बारा हुमा पीतित (सुमीवनवडा-(रवनका मारा) ।

अदीच−4 (अ] मनाः दाख्याः

पहर-पुरे पर्। - कुल-पुर• पिर्कृतः।-बाच -चति-पु॰ दे 'बदुनाव'। -पुर-पु प्रभूता । -पंमी-वि प दे नद्वंशी । -शह -शप-प्र बदराज कृष्ण। -वर -वीर-प कृष्ण।

चर-० दि प्रश्मः सधिक र पु+[स+] दाशा बायका बाय श्वरातः शीका । स्वी कीशिय । -(११) ब्रेइस्-स्वे०

प्रवत्त वीरभूका बांदीलन । यद्विश-स वयदि।

अरवर-प गराद शत त दहन दोव्य शत । पर्धा-(व वाप गाप्ताकी मामसी (बावकाप्त)। को क्योटीय

र र-प्र प्रयस्ता

जर्मगम-पु [सं] पादाव ।

पत-५० [मं] मनुष्या व्यक्तिः यनुष्य समृद्द श्रीदः आतिः जनगारा नाम महान्याद्वियोजेने वका यह असरा नेवक. याम । - भौदानन-पुनिगी परवदारी सिदिहे दिन जनपा हारा अनावा नदा भा³/न्य । -कारी-सी -कारी(रिक)-इ अलग्रह। -शय-प + इनाग्र-मरामारी ! - शासमा - शी अंदेशश्माशी देशविश्रांकरे मर मन्भोधे गन्ना १- थभु(म्)-पु स्रे । - थर्च-धी भेजवार । - जावरम-पु अन साधारण समस्त

वनगरि भरत अधिकार हिलादिलका राम होना।

-संब-प॰ कोकर्तृत्र, प्रवार्त्तत्र । -ब्रा-स्रो॰ सत्तरी. छाता । --बेच-पुरु राजा । --धन-पुरु भारमी भीर वैसा (अन-वमसे सहावता) । -पद-पु देश, राज्या राज्य विशेषका ग्राम माना कोल प्रवा । -- कस्याणी--स्रो॰ बेश्वा ।- धर्म-प कोहासा ।-धरी(दिस)-प॰ शासक । -पाश्च-प सम्दर्भ पा श्वेदरीका। पाकम करनेवाहा । -प्रवाद-५ अध्वाद, साम अर्थाः क्रीकापकाद ।-प्रिय-वि क्रीक्षिय । प्र वनिया सप्ति बनः जित्र १ - अत-प० छोद्यमत्, जनमानारमधी राष । -सरक-पु॰ महामारी । -र्जन-वि॰ कोचको सध-आनंद देतवाहा । पर कोदरंबन । -रच-पर कप्रवाह बनमतिः क्षेत्रापनाद । -स्रोद्ध-पु॰ रुपरके सात क्रोदी-वेंसे चौक्यों, महको उदे कपर रिश्त कोक । न्यापम नप नेत रीहित कुछ ।-बाब-प दे 'जनरव' । -बास-प्र सर्वसायाचे उदरनेश स्थानः बराजियोंके उदरने की जगह समा समाज !-वासा-म !हिंग्] गरातियोंके ठहरनेकी जगह ! -शस्य-वि॰ आइमियोंसे साही शतसात । −धन~वि अभिक्र क्रिसे वत्र कीरा सामते हों। - झति-रती यनरव । -संग्या-र्था । रवान विशेषमें बसमेबाकोंकी संख्या आवारी । -संग्रास-पः वह अद विसमें सारी बनवा द्यामिल हो ! -सवाच-वि बना वशा इका। -समाय-१ समाक वन शाबारण । -समदाय-५ भीड, सबसा । -समह-प्र अग्रहरू विद्यान करसमह भारी भीड़ । -सम्रह-प्र भीड सबसा। -श्राधारण-न सापारण जनः जनसमात्रः अमता। -श्यात-त रहेरद्यास्त्रका यह भाग बड़ी सीताका दश्य दक्षा था। नद्वरणान्य एक रंटच क्य ।-दिश-प कोस्ट€त मनगाउ लामदा ग्राम। -दीन-दि बनग्रम् दिशम ! जन-सी का] नो मारी। वनी ।-सुशद-विश्वती के बसमें रहनेवाचा जोकडा गुलाम । - व फर्ज़ र-प वीरी वर्षे प्रश्चनय । -प सद-प परि-पत्री ।

जनक−दि भिीजन्म देतेदला सरपाद्धां प दिसा मिविनाका रामायण-कानीन रावदंश शिक्षी कर यह नद्भपानी हुए। इक शहरे राजा मीरय्यन की मोनाह विना वे। -तनवा-सी मीता। -वसारी-सी [[४] धीना । ~र्वेदिमी-सी धीता । ~पुर-पु मिन्दिक्षी पुरानी-जनकारको-राजधानी !-सुसा-सी सीता ! जनकारमञा∽सी मिं सीना।

जनकारण-पुत्रनद्वरः धनस्य । ज्ञमहरा-पु भीरगोंको सरह शांत्रन भीर नेदार करने

बाह्य पश्य दिवस र अनना-सी॰ [सं] जनसमूद क्षोदा प्रसमा-अनार्यम-पुरु जात्रासूप बनारिन धनकात् ।

जनम-पु [रो॰] क्लाता क्रम मारिमार प्रस्ट हाना जनमा बल्यान्ता बेहा जीवना परमप्ता मन्द हम नंग्हरोदे दरण (त) १० दंबनंग्वार । यहने हे नवाना दीरित ध्वलिदी वह दीवा रिया।

जनना~ग॰ वि वधको जन्म देना ग्राम्स **व**रम्या क

जागता-नि॰ बागवा हुनाः नपनी शक्तिका धरिषय वेशे-बाक्षा राजस्वी, प्रशत्न, प्रत्यक्ष । चारातिचः~दि॰ (सं॰) काद संबंधी, सांसारिक । बागरी-विश्नी दे 'अलता'।-इसा,-ओस-सी पकता दीएका बायती <u>ह</u>ई देशी। धारामा-अ॰ कि॰ मीरका स्थान करना। बना प्रथा होना फकराक्य होता (मान्य, मसीय)। सबग होनाः चेतनाः एकिया पदार बीना, घठनाः नवनाः चमकमाः प्रदीप्त होनाः • बगरमाः प्रसिद्ध होना । ज्ञाराबस्त्रिक•−५ दे 'वाद्यवस्त्र्य'। बारार-पु॰ [सं] आगरणः बंद-करमधी वह अवस्था विसमें सर पुरियों जायत 🜓 दन्य । विश् कानता हजा। बागरक्र−दि [एं] बागता हुमा भसूस । कारारण-पु (चं) बननाः बागः बंगा प्रका होनाः भजन-दोर्तम भादि करते हुए रात निवासा रतज्ञा। आगरम¥-पुदे 'आतरम'। सागरा न्स्रो (से•) बागरथ । भागरित=वि (सं•) जागता हुना, माम्रद्। बागरिता(त)-वि• [सं] जागना इमाः धनेत साववात। जागरी(रिन्)−नि [सं] दे 'बागरिता'। वागरूक-वि [मेर] बावता क्रमाः बावरमञ्जेकः स्व-कर्तेन्द्रके विवदर्भे साध्यान। क्षागरस्प†−वि+ भागता हुमा (वैवता तेव)।प्रत्यक्ष, रुख। बागर्ति−सी [धं] कागरच। द्यारामां −नो (धं) कागरम। **व्यागाः** —स्यो दे॰ बगद्र ३ स्रायीय-पु वंदी नाव । आसीर-सी (का] वह बमीन मी राज्यकी मीरते किनोबी किसी विशेष सेवाके अरस्कारमें की गयी हो। वह बमीन नी गाँक्के मार्ड, क्वार कुण्डार भारिकी **एमधी सेवाके भरकेमें दिना कगाम जीवनेको दी गर्वी हो ।** -सिहमती-की सेवा-विशेषके किए (स्वार, क्रमार मार्थिको) हो हुई बागोर ।-बार-पुर विसे बागोर मिछी की। सरदारा सामंत !-वारी-को बानीरदारका पर वा बागोरदार दोनेका मानः रहेंसे । ~मेंसबी-को॰ वह नाभैर जो किसी परके साथ संबद्ध हो। भागीरीक-को • है 'बागीरदारी । आगर-प (सं) देशरा एक भाषीन कानका वहाँका निवासी । अध्यति चली शनरग। जागुबि-पुरु (स्रेर) राजा अधि । दि जागद। जामति-सी जानरम, आगत् बीनंका मान। भाग्नत-वि (ते] कानता क्रमाः समय, सावनामः प्रश्रासभात् । प्र॰ नइ नवस्था विसमें बीव शस्त्र, रमग्रे भारि विकासी प्रदन करे ।-श्वम-प्र जानतंका स्वना करपनासाह । पाधनी-सो॰ [गं] बाँदा पूँछ। आयड≠-पु है 'नापड'।

आवक्ता : - स्री वाक्कृति शिवसी !

धाजम-खी॰ है॰ 'वाविम'। जाज सम्बार-पुरु शह राग । जाबराक-विश् वीर्थ, वर्षर । सास**स**~पु• [सं] सव€रेरको एक शासा । जाञ्जकि−पु० (सं०) एक प्रवरमवर्तक कवि । जातिस-सी॰ हि॰ो इरोबे क्या शिक्ष्में क्ये चारर । जाजी(जिन्)-पु॰ [सं] बोसा। वारवस्पमान-वि॰ (चं॰) प्रभावतः वेनोपरितः। वाट~प्र• पश्चिमी बचर-प्रदेश, पंत्रान, राजपुनास नाहै। वसनेवाकी थड़ बिंह बाहि। वस बाहिका बन । बाटकि~प , सी [सं•] पश्राप्तको बारिका स्थ पृष् बाह-की जार्थेकी बेको, शीपर । बाउ-पु क्षेत्रको ईंग्रीमें एक्तेनाको बक्तीस ग्रेन, किन बहा विस्के पुमनेसे पेरलेखे किया होती है। सम्पत्ती बीक्से शहा हुआ बहा । बाहर-वि [सं] बहर-देर-संबंधी; बहरसे सत्ता सारे स्थित । प्र बहरानिः। वस्या । बाठरारिम-जी [सं] बस्परिम । वाटरामक-g (स्॰) हे 'बहरागिन'। बाइ०-पु दे॰ शक्तां। बाहर-पु शीक्काक-हेर्सत और शिक्षिर **प**तुर्ध (वे हिसान) बाने कारिक्से जाने पापुनतक्का समना सर उंड (वहना कगना) । हु॰ -श्वामा-बानेश दर 🗷 करना । --(वे)की चाँचनी -नेकार भीता। जाक्य-५० [सं] बरता निभेक्ता। सूर्यन्या स्वार माख्य श्रीना । वाक्यारि−प्र [सं•] वैनीरा मीन्। जात-वि॰ [तं•] बदमा हुमा, यना हुमा। उत्तम अ व्यक्ता वरिता अंगुबोत । पुरु बन्मा नेमा वरवा। व सम्बागायाः -कर्म(म्)-इ॰,-क्रिया-मा उ कराके अवसरपर किया जानेवामा यह संकार दिनी धीका संस्थारीमेंधे चीवा । -क्काप-वि क्रेमा (बैंछे मोर) । काम। -सम्मय-वि जिसके वर्षे की क्य गना की कासका। -वंत-नि० विसन्ने की विद्रा जाने दों (वका)। -दोप-नि बोगी। -पश्च-नि विचये हैंने निवल जाने हों। -पास-वि अंतर्का विसे इक्दरी पहतानी गर्ना हो । -पुत्रा-मी॰ स मी को नेरा या नेटी कर भुक्ते हो। -प्रत्वय-वि क्रिके मनमें निवास महीर्थित वरका ही भुद्धे ही। -माच^{्रा} तुरराका जनमा हुआ समीजात ! -धृत-वि॰ नी वर्ष मते ही मर जान । -रूप-वि संदर । इ॰ बीमी क्तूरा । -विश्वस-वि॰ परसवा हमा !-वेदसी-की दुनों ।- बेबर(दम्)-प्र मन्तिः मुर्गः निवाः समेपर -बेहम(म्)-च छोरा नृतिकागृह। जास∽ती दं वाति । −वास−तो निरासी । कात-सी [भ] बर्गुतस्य स्वस्ता त्रिप्रयमा सम्बद्ध देश व्यक्ति व्यक्तिया प्रशास - शरीज-वि इष्ट

काधनाः – स॰ कि सीपनाः सीस सीपना।

45

₫

petit

-करेप-दि ति•ो केलपिय । पु॰ एक पुष्पा सहर कुछ । सरिमा-छो । [संव] बतका पृष्टि मामक बीपवि पर्मकीः दक्ती (अर्रेयार-प• बाजनगडा । बनोपयोगी(गिन)-वि॰ [एं॰] क्रीबोपवीगी. बनसाथाrunk fier ferent ! सती ह- सं मानी जानी। कतीय-प सिंधी मनुष्योद्धा सम्रातः भीतः। क्रस-प॰ बि॰ो बारणा, ग्रहान, सनाक ! क्यम-प [अव] समाम, बाबा स्वर्ग, बेस्टेंट, विदिश्त ! ~(ते) सदन~प्र• वह बाग जिसमें बादम गेहें या सेव रमायेमे पहले हती गरी थे । क्रमानी-हिर क्रमाने रक्षमेवासा स्वर्धवासी: (क्रा) सीपा भीका । करण(स) - प । सि] समेरी बाहर कालाः सरपतिः वैदा रप्ताः श्रोहताः क्राप्रसद्धः । —क्षीसः—प॰ विपन् । —क्षत्रसी= जी कर बद्ध किसमें जन्मकालके शहीकी रिवर्ति बनावी भवी को । -क्रम-पुर विमा । -क्षेत्र-पुर वागरवाम । - रहर - दि । अस्मेन प्राप्त, वैद्यावका I-cam-व । सर्वान करम केला ।किचिय-को अस्तरको निक्रिय वासनीत । -द -बासा(स)-वि अन्य वैभेवाला । प -हाद्यी-स्वी• माता । -विमा-विवस-प• दिवीके करम का पैदाक्कामा दिमा अन्मतिभि । - नकाश-५० वर्ष मद्यत्र जिसमें किसीका बन्न हुआ हो। -नाम(न)--प वंद्र साम की अन्यके समय का करम के बारवर्षे दिल रता बाय । -प,-पति-ध कामक्य या कामराधिका रवामी । -पश्च-प्रश्-पद्मिका-स्री वह पत्र बाकागर जिसमें किसीके जनसङ्ख्ये यह नश्जीको रिवति कनको बद्धा बोवर्रश्चा भीर चनके लुमालूम पण बनावे गय वॉ जायना । ~पारप~प॰ वंशकृत । ~प्रतिहा~मी बन्मरबानः माता ! - माचा-सी॰ मानुमाचा !- ममि-की वह वनह-प्राप्त नगर हेश-वहाँ दिनीका काम हुमा हा जनसरहाम । -- भूता -- प्रापी, जीव । -योग-पुर सम्मपत्रिका । -शक्ति-त्योर वह राशि विसर्वे हिसीका कम्म इका हो। -होशी(शिम)-वि॰ जन्मका रोगी, जिसे का मकालमें की रीम कमा हो । -साम-पुर अन्मराधि । -बार्स(म्)-पुर वीति । -श्रमीत-प् जीवनपूर्णात जीवम परित ।-हो। धम-अन्ममे प्राप्त क्लोका परिधोषम । -- विद्य-वि कम्पना प्राप्त, देशास्त्री । -स्थान-पुरु जन्मपूर्ति । ग्रुक -गैंबामा-श्रीवमदा छर्डदीग संदर्भा । -बिशहमा-वर्म मद दीवा । -इरहना-दान दीवर रहना । जन्मना-स॰ कि है 'जनमना । स [र्ग्ण] प्रस्मी बन्दर (बन्धना माद्रत्)। अस्मोतर-५ (मेर) दूसरा कामा शिक्षा काम असमा जाना परतीह । -बाद-पु पुनर्वेग्मवाद । अन्मोद-दि: [मे] बामझे देशहरी अंशा

अन्माधिप-दु [र्ग•] क्यांशीचा स्वयीः शिव !

जनमाहमी-धी [सं] भान हरगाहमी हुरूकी प्रथम

जस्मारपत-पिसे वे सरधान । अवसी(धिन)~प॰ सिं । भागी। जनमेज्ञय~५० सिंशी ४० 'बनसंत्रय'। सस्योज-प्र• स्थि वि 'सन्माधिप' । जन्मीश्वन्त्र-प सिंश्री वस्त्रीकी वाही एवीका जल्मका क्रमदिशका बस्सन, वरशनाँठ । अन्य - विश् सिश्री जन्म हेनेवाली, जायमाना जात, बराबा (बारावर्तमाँ) से घन्यवा जन-नेरंपीर किमी काठि बा वंद्रसे संबंध राजनेशाकार सामान्यर कासम्य । प॰ करमा जनकः, विनाः वरका समा था संबंधीः वहातीः साधारण जना जो घरणा सभा हो यह, उत्पादित वस्त हैहा जाति। Bin: munit: fint, Gietraft; uniter unt gut पश्च" कारीको । जम्बा-न्था॰ सि] माताको सरी। १५६६ सहस्रे प्रोतिः सरा क्यातेष । बन्द-त [मं] करमा माणीः त्रह्माः भरित । व्यय-प (र्स॰) दिसी गय रहीत रेडबरके नाम सानिकी थीमें स्वरसे बार बार बहरामा। दिसी शब्द नाम आदिकी बार-बार सेंबने कहना । -तप-तक एका-वाठ, जन सरकात । -प्राप्ता -लीव उप सरसेटी प्राप्ता । -वश-य जबस्य क्या। -क्षोस-य काके क्यमें संजातिका कार । सपञ्जी—५० सिस्टॉन्डर एक धर्मसंत्र । अपनच्य-विश्व विशेष अपनीय । अपन-प्रश्विणे वर करनेको क्रिया अए। जपना-स कि॰ वर बरमाः वय बरना। अपनी-नी माजाः ग्रेमसी। अपनीय-विश् सिश्री प्रव करने योग्त । सपा-व वि जन करमेराका । स्रोव [मंव] सन्दूष । --इस्म−इ अध्यक्तका कला। अधियान-नि॰ पु॰ है 'अपी । अपी(पिन्)−वि प्र∘[र्श•] जप करनेवाहा । समा-प देश चप्त । सामी - यो है॰ 'रुप्ता'। अध्य-वि॰ सि] जपने बीग्य । दु॰ जपा जानेवासा संख । अक्रर-त [रंग] परीश्व बार्ने जानने, बनानेकी विधा । ज्ञाहर-न्यी [त्र•] विवया सरक्या ।-बाय-दि॰ विवय पानेशनः । बका-प् [थ•] जुन्म भाषाभार, सक्ती । −बदा-वि• कट शहतेवाला। क्या मेहनत करनेवाना परिश्रमी: जुस्म सदनेशाला । -कदाी-न्या सहित्य परिमामी शाना ।

-कारा-शिकार-वि अन्याव कावाचार बरनेवासाः

क्रप्रीर क्रमीछ-न्या॰ [ल] मीरी। सुद्दमें मिदाली जाने

अप्रीरी-मी [म] सीरी। मियमे पैरा हीनेवानी एक

जव-अ॰ जिल समय वदा। -कमी-अ मारे प्रव

विश्री सदय। -कि-म प्रदा -प्रद-भः विस्तिम लुमर । - तम-मः स्थी-स्थी यदा-स्ता।

निर्देश ।

बाधी शीरीकी बार्बीत ।

तरहरी इंगम ।

भासन्तमाग । --बाक्न-वि बानपा श्रेकरेवाका गीठ पाइपी । ~बाकी-न्यों साइस बोरवाः वानको सतरेमें टारुनेका मान ! - थीजा-प्र क्रियोका बीमा ! - छेवा —वि आन हैनेपर ग्रुका दुवा, कानी बुदमव ।—व माछ-—प्रमाण और धन-धन-अन । ~बर~प्रमाधीः पद्य-हैवान । विश्वमुक्तं प्रवहा । --(ने)ऑ--वि प्राणीका प्राण व्यक्ति प्रिया प्रियतमा । -सम-वि प्रिययनका धंरोपन, गेरी बान, प्राणवारे (व्याप्त) । स**॰ ~शॉर्सीर्जे** था सामा-भासवसम्ब होना । -आमा-मम रिवर होता । ~का अज्ञाब-जोका चंत्राल, अंकर, बधेवा । -का शाहक-मी बाम देनेपर वागवा 🖥 बानका वैरो । -का सकसाम-माणवानिः किसी <u>व</u>र्णटनार्ने मनुष्योका मरमा या भारा बाना । -का रोग-का बैनेबाठी बस्ता, स्वक्ति जिससे जबरी पीछा न छटे। मारी वंशकः । –का कागू-जानका दुवसम् । –की बासाम--प्राप्तरक्षा, प्राणवान (पाना, मॉनमा) । 🗝 हिर-प्राप-रखाः रुप्तकः । -- ध्यलामा-प्राचरधान्यः चपान करनाः जाम दब बाय इसको भनीमत गानना। -वी तरह रस्तवा-तिक मी कर न पर्वेचने देना वस-अपस्का विशेष ध्याम रखनाः वहत सैमाक्कर रदाना ! -की पश्चमा-जान वजानेको विद्या श्रोताः प्राथमव होनाः। —के आले पहला∽ कार बचना रुटिन हो बाजा, प्रवर्ते #A माञ्चान र¥ना।−को श्रामन सम्प्रमाना-व्यः सम्बद्धियन्त्री परकार न करनाः निर्मेस शोकर आस केना । (किसीक्षी)-को रोना-किसीसे, निर्हाणे कारण पर्देणे इ.प. कड दानिको बाद करके इत्रना । ∽कपाना−(किटी काममें) बहुत अस करना कह चडाना । -सामा-विसी बातके किए बार-बार कशकर : फिसी बातकी बाचना बा काहेरे परेशास कर देशा । -कोना-बान हेना। दिसी बुम्बमें बुक्ता :--बुरामा-वे 'की घुराना'। --सुदाबा ~सुरुदारेका चपाम करमा-करामाः पीडा प्रश्नामा।~कृदमा ~फरकारा मिन्ना ! -बेमा-मरमाः मरमेको तैपार होता। (किसी चीडांडे किम)−हेमा**≔रा**तरे क्हरे रहना व्यव वा हानि सह म सबना। (किसीपर)-सेवा किसीके कार्यसे विका कहा होकर प्रानस्थान, आरमहाका करनाः दिलीपर बहुत मनुरक्त भारत्क दीता ।-तिकत्रका -वित का दीना। जान एकना !-शिसाद करना-दूसरे के लिए मरना भागोरधर्ग करमा । --पदमा--प्रागर्धचार होताः शक्ति भागाः हरा-मर। होना ।-पर भा वनमा-भाग जातेका वर दीमा भारी एंकटमें पहला। --पर क्रोक्रमा-जामजीवाँका काम करमाः साहस वीरताका काम करना जिसमें जान जानेका दर हो । —पर बीबल माला-दें 'बानवर था अन्तरा । ∽वधाना-विसी अधिव था कडप्राप्त कामसे कतराना, मागना पीका द्रवाना । - वची झार्सी पाये -मरनेसे वचे वदी दरम नाम है।-सारी होना-जीवा हुगर हो जाना, किरगी-से क्रव जाना ।-सारमा-वे आम क्रेमा । −से जाम भागा-शास वेंबना इत्योजान शैमा (-सेंबान होना ~िवरा द्वीना (बरतक बालमें बाल द्वी) !~लकासा~वी पामसे भोतोब कोक्षिक करमा । —सर्वोपर भाषा—है

'बान हो को पर भाना ।-सेबा-नव करना वस्त का देमाः बहुत कही मेहमत हेना । -सलमा-हरम होत गुम हो माना, सुच हो जाना । -सक्रीपर होता-क्रम खतरेमें बोना। गारी परेशानीमें दोना ।~सेगडा कर-−से आया∽मर जाना । −से शंग श्रामाः −धे वेता होना-जीना असदा ही माता बारेने कर बागा ~से मारणा~गार बाक्सा बद्धन पर देता। −से शार थोसा-बाम वैंबाना भरमा !-- है हो बहान है-पुनरा-का सब सब जिंदगोंके माथ है।~हर्रिया बाना-कार-मरण बोमा, अनतन बोमा। मार्मादक वद्य, नेरण दोनाः वालकी –सो० सि०] बनक्को प्रयो, सीवा !–सप्री उ (बाधनी है जाना जिन्ही) रामचंद्र । "श्रीवन न्याव पु रामचेत् । ~र्मग्रह-पु न्येस्वामी <u>त</u>क्सीरासमे स रचमा विसमें राम-सोवाके विवाधका वर्षेत्र है।-समद-पुरु शामनीत् । -रखनः -पु दे 'नानकोरन्य'। -**वारम**-त रामधंद्र ।

आसनहार - पुण भारते साम ।

आसमा- ए कि किसी वर्ष्ण, ध्यक्ति, सरमध्य भीतः
भारतार होना, बारा होना एउत्तवम, मानकरो प्रिधित होना, नवरात होना । अस्तकर-नमते प्र्
भारत्वे प्रकार । अन्य आसम् । अस्तकर-नमते प्र्
भारत्वे अस्ति हुए स्व अस्ति होना । अस्ति अस्ति हुए स्व अस्ति ।

शिक्षां । आसम् भूममा-आसम् एस्ट्रमा स्व होना ।

शोका । आसम् भूममा-आसम् एस्ट्रमा वर्ष्ण ।

शोका । आसम् अस्ति हुए होन्स्य हैना ।

शोका । अस्ति वर्षण ।

क्षप्रवास-न्यानस्य वा (नता वा वा व क्षारप्रवा-पु (तंन) वानस्यानतं, प्रायास्त्री कर नेरेन देशा ज्वारप्रदेश प्रस्त बद बादि (ने अवदानतेषे) बालपुरि-न्ती (त) बुद्धि एक क्षप्रदार्थ बालपुरि-न्दी यानेवास्त्रा वक बोदेवका।

वानश्चीवानि'। ० दिण्यानी। वानित्व नश्ची [बन्) तरफ, दिया। नश्चर-दि दर्दार्थ तरफपार । नश्चरी-ची प्रशास तरफारो। वानित्वी (या] वानश्चा वानमे संदर्ध रमनेवन्ता वि यो मान्यदिवा व्यारो। नहुदमन-प्र दृहर दे (सगामा, द्रोना) !

बसपहर-पु॰ है 'बसपर'।

अमुजम-अ॰ सदा दमशा !-नित-नित-अ सदा(खि)!

समझम−पु [ल॰] काशके पसका वक कुणें। हसहसा-पु॰ [का] गानाः सवः गोतः।-सवाम -संज

--प्रशासक गर्वशा । जमन्त्रि-पु [सं०] एक बेरिक ऋषि जी सप्तवियोंने विमे कार परश्चरामके पिता मानै जात है।

समन-पु॰ (सं॰) योशनः भाहारः ॰ दे॰ सदम[ा]।

क्रमन−पु[थ•] बगाना का# ।

क्रमा-सा दे 'यमना'। ए पदके वर्षाके बाद केवा क्षानेवाकी पास । अ॰ क्रि॰ पर्राची श्रीजका नाही वा ठीस क्षामा (वर्षी वाली)। रि.सी क्लाइ बेरलक बेठना। अपनी बचडपर दटा, बमा रहना दिखना राताले स्थित होना। जह मधनुत होता डान्द्र तीरसे चक्रमे लगनाः माथे नैडना (बक्टट) बमा इत्रहा द्वाना (भीद): विकर्मे बैबना संदर, सफ़ड़, बधह रसीरपारक होना (गाना, रीन, म्यास्यान): पक निश्नमा (दुश्चन १); डोड भाना रेटना (शपी काही द॰); (बाहेका) द्वमुक्टर चलना भइनाः जगना (श्रीय कारु) । असक्तर-म व्यक्तपूर्वकः । क्रमनिका−मी॰ दे 'ज्यन्तिकाः # कार्दः

जमनीसरी-स्वी विद्यास्त्यको वह चोटी जिससे वसना

निकनती है।

क्रमणीत(⇔पु जमानद करनेवलेक) वसके वदलेमें दी बानेवाही रदम ।

असबट~सी• ध्यहोका मीका ऋका निसके कपर वर्षे कुएँको भोताई बीठी है ।

जमदीद-इ॰ दंशनका एक प्राचीन बारशाद विसक्ते पास

बहुत है एक ऐसा व्याच्या था विसमें सारी बनिवामें धोनेवाकी वार्ते हिग्गाई हैती थी।

जमहर−दु [स] रे॰ 'ज़गहर'।

जसहरी-दि॰ दे॰ सुमहुरी ।

क्रमा-न्दी [म] सुनूद, जमातः कोइ (स)। बहुब्यस (म्या); पुत्री चना वदी सातका वद भाग वा श॰ किसमें माप्ति वा बामदनी रिगो जाया कनान । ~पूर्व −दु∙ भागरमा और धर्षः भागदमा-शर्बका विसायः व्योरा । - • नपीस - तु • कपहरीमा एक भश्तकार ।- अथा-शौ पूँची धन-स्पत्ति। -शार-पुर निपादियो मादिका शुगिरवा। दुश्याका वेदकारी वक्ता मंतिबीचे कामका शिय-रागी बरनेशाचा बर्मवारी । -पूँची-व्यो॰ है। जान-वया । -वदी-सी नगानका दिग्रावः वावारीकी वद वही जिममें गांवके हर कारतकार के सगानका दिसाब और भ्योरा टिया दीना देश्यॉद अशक वा दिखेका कुछ क्रमान।--मार-वि दृष्टीका शावन। स्वत कर आने वाना वेरेमान । सु॰ -ग्रार्थ करमा-दिग्रात वरावर बरनेद्रे लिए दिनी रहमधे मगाये लिसकर फिर राजेंबें ियाना।-प्रारमा-तयान क्य वा अन्तन्दे क्यूबे र्गिया पारता इत्रम बह जावा दुसरेका पेता बाह लेला। समाजन-स्त [ल] समुराय काला धीर सबसा दरा क्षा भेगी। समाविद्यानी इतिहा

जमाज्ञसी−वि॰ सामुदाविक ।

जसाई-पु॰ दाबाद, जागाता ! सी जमानेकी निवा वा मबद्री !

बमात-धौ दे 'बगाभव'।

ज्ञसामत-सी॰[अ] विस्मेदारीः निशीकै वीर्य काम करने (शमयपुर हाकिर होते भाग जुकाने, मतिपाका बाकन बरने कारिक्ष जिम्मेदारी की दसरा भादमी अपने कपर के: किसी बातके किने जानेके इत्तमीमानके लिए समा की हुई रक्षम जानगदः इस तरहका इतमीमान दिलानेगानी थीज, गार्दी !-इस्-प्रसमानत करनेवाता, सामिन । --मासा-प्र॰ धामिन होमेदी हिसित स्वीकृति।

ज्ञसामसी−वि• विसर्भे था विश्वक्षे जमानत दो सके.

बमानतके फानिक (-वार्ट) ।

क्षमाना-स॰ कि॰ पतको भीषको गाडी मा ठीस ननाना (बहा बरक आहि); मजबूटीसे बैडानाः दिक्रमें बैठानाः समाक्त रचना भूनाई करनाः बमनेका कारण क्ष्र शोनाः जर समयुक्त करनाः ठामः शीरते अक्षते नायक बनाना (कारबाद, स्कूट भारि)। नैहाना स्थापित करना (अग्रर, बाब, रीव भारि); बमा रक्ष्मा करना। ग्रीहर्ने रक्षमा (याम, कहा १०)। छामा उदरस्य कट्ना (मॉनका थोका): क्यानाः रचना (प्रितसो): प्रारता 🕻 सीट 🕊 सा (श्या गैंसा काठी सारि)। सस्य बरना नैठाना (दाव)।

शक्ता, वंगामा अपनामा ।

जमाभा~प्र• [भ•] काक्षः सुगः भरसा, भवभिः बद्ध समयः राम्बदानः कार्यकानः दुनिया, संसारः श्रिमादा कान (शत मनिष्य वर्तमान); चन्त्रीके दिन, शीमान्यकार । —साज्ञ−वि चनावसै शैम भारर दिसानेवामा इकुरश्चराती करनेवाका *चाका*क । ~साङ्गी-श्री बर, पाक्सती । सुरु -उद्यहना-समयदा वदसार्था बर्क माना, नवा तुप वपरिया हो जाना । - छानना-बहुत तकास करना । ∽देराना-अनुभव प्राप्त करना । -देखे द्वीमा-अनुमर्श दाना । -पस्टमा -**वदसमा**-अच्छे रिनधे बरे वा बरेश अच्छे रिन बाता। -(मे) की शर्विश-समयश्च क्ल्य-केर, दिलका पर । जमास-पु [म] सुररता श्रीमा दुग्ना रेश्यस मापुर्व,

रेयमें । अमासगोटा−५० वस चनका क्षेत्र में। दौन विरेपक

श्रीता है । जमामी-वि विव रमणीकः विवर्षे देशको द्वारा छत्री JULY !

बदाच∽ष्• अमेरेका माना और भाजपा। जमाषर-सी अपनेदा मार ।

अमापदा-पु॰ अमार ध

जमादी-भी दे 'अन्हार्र ।

जर्मी जमान-मी॰ [फा॰] दभी (यह); बली भूमिः चरतीका रचनमामा जमीतका दुवहा होता वह सीह, मिटी काराज करने आपिकी सहारी का अस्तर की पूर्व शामक शिक्षपर चित्रकारी, जवासी या छता² की प्राप्त; बद्ध तम जिमपर बीर्रे हम नैवार दिया जान अमरा मादा गुरुम्मी रवीच काविचा भार छेटा मेटी जातार साहिया हुए

रबाता स्टब्स् - पंताह-की प्रताहकी बगह, बासव स्वान !- सहाहस्त-की॰ रहमेकी बगह, बासरबात ! जायक-प्रासिकी पीला चंदत !

सूचक्र-पुरु [सर] स्वाद समाः स्त्रमध्यक्री अधिः स्तै-दिरः - - सिनाम-विरु मानक्र प्रश्नानेनाचा विसे स्तरक्रा क्या काव हो। - (के)बार-वि स्वादिश क्रोनाः।

हराय। जायभद्र-पुषक तुर्याको यह वी महार भीर वहाठे रुपने हायमे सावा जाता है जातीकरू। जायक-पे [सन] मिन्नेवाला। नष्ट सुग्र !

त्यायस्य १८ - १ । पार्थापारः १८ - १ । त्यायस्य १८ - १ । पार्थापारः । विशेषाः सह सहस्रा, महिक सुहस्मद् सारमस्या वाहरसम्ब ।

आवसी-पु॰ वादस(रायक्रेडी)का रहमेवाका अवसंके मुक्तिक क्यों करि मक्ति शुक्तमर जावसी। वि बारमार्क्स कि दै॰ 'ब्रहाना'। जारिजी-स्थी [धं] बारस मेम बरमेशको की हुण्या जारिज-दि [सं] यकावा बवाबा हुआ छोपेश मारिज

(बातु)। जारी-की॰ जारवर्म। दि [ल] बद्दा हुनाः बन्नाः हुनाः मण्डितः बना दुवा। सु॰ -करना-स्थिपनाः, पकानाः धारंम करताः।

जासम्प्रम् (सं) स्थानं वस्ता नस्य यर। जारीब-सी (सार) सार।-कस-पुरु सार् देवेशम् मन्।।

वार्षेक-यु [तं] दे 'बाइक । बार्श्वयर-यु [तं] यह क्षित्र वार्त्वय देखा गढ वेल सुद्रा विवर्ण देख(बार्लयर मीर कॉगड़ा विने) निर्मारकी।

कार्तनार्वार्त्तनका पुत्र । -ध्वसि-सी॰ वनगोप । -पस७ -पु• दे• 'जबपन' । --पश्च-पु• पराजिस राजा भावि का वह हैसा जिसुमें वह अपनी पराध्य स्वीकार करें। सुक दमेने बीहतेबासे पद्धको मिस्टनबाला जयसूनक पत्र डिग(। −पश्ची−सी जानित्री। −पराजय−सी जीत द्वार !−पाछ∽पु वधातगोरा विच्या मद्या राजा। ~पुत्रक~पु पुराने समक्ता एक करहका पासा !- त्रिय ~पु• रात्रा विरायका धारी वासके <u>स</u>क्य मेवीमेरी एक। ~मरी~सा बोडका टंका। —सँगम−प रामास्र संवारीका द्वाची। एक साकः जनकारः एक द्वसः । बानुर्देशेख एक स्वरनाग्रह रस । -~• रस**−**प संस्थार-पुण्य राषः - साख-न्याः (दि॰) दे॰ 'जयमासा । - मासा-साँ० दिवसको पदि नामी जाने बाकी कथगुन्द माला वह माला चारवर्वरा कवा रवर्षर बिनवी का मनीभीत बरके गरेमें टाले (हि)। भव्यमेष यद्य । ∸मास्य~प जनसङ् । –थक्र−9 -सश्मी-सो जनभी । -सन्दर्भ-पु जनपत्र । --वाहिनी-स्ना इंडामी। वित्रविती सेमा। -म्ह्रीन-पु अवदीपनारं निए रजावा जानशता विवा । 🗝शी—सी॰ विजवको अविद्यामी देश चित्रका एक रागिनी । −स्तर्भ -पु देशवित्रयद्व रमारकस्त्रमे संग्यापित स्थम ! -स्वामी(मिन्)-पु॰ कात्मावन कम्प्यूमके वर्क व्याप्याचा । मु॰ -मनामा-(क्रिमीक्री) विवयं वा कन्वायकी कामना 4.रमा। अवरु-वि , पु [मे] अवस्था जीवनेवाला । जयचैद-पु बृध्धीराजका एक रिश्तेशार को बजीवका राजा वा (बहा जाना है कि प्रकाराजवर आफ्रमण करने के निव रनीने छहातुरीन गोरीका आयंत्रित किया था); (मा) देशश्रीह करनेवासा व्यक्ति। अयति∽दु॰ पद संदर राग । ∽क्षी~ची॰ यद रागिती । जयसी∽सी॰ भी रामको एक रागिनी ३ अवसु-म [40] जय हो, भागीकीय । अवस्थित्याण-तुर्नि । वद्य संदर्शना

व्यवस्थान पूर्ण क्यारित क्यारित क्यारित हा स्वयं स्वय

दिया । -वाध-पुर शिक्षामुद्ध वर्षते वाद स्थानिका स्थानिका

जपनारूमा कि विश्वय मात्र करता। जपनी~को [से] इंदरी करता।

खया-भी [मं] दुर्गा दुर्गाने एक नदश्यी पत्रकाः इति दृश्यमी में तः इत्तरभोग सदन्यका पूर्व दोनी रहोति तृतिया अदमी भार सवीत्रती एक माधीन वात्रा । कृति मो अदमिनानवर्षः।

ज्ञमापीड-पु॰ [शुं॰] कदमीरका एक प्रवापी राजा जो माठवी शतीमें हुमा था। क्षवावती-सी॰ [सं॰] एक रॉक्ट रागिनी। कार्तिकेनकी यह मानुसा । क्यांबह्-वि [सं] अय दिलानेत्रका । जयाबहा—सी [सं॰] महत्रती बृक्ष । अवाक्रमा~को० सिं] वाटी नामद दूथ । जवाद्ध(−र्था • [मृं] भर्यती दूस ! जविष्ण्र−ि॰ सि॰] वयशीक सदा जीवनेवासा । बायी(मिम्)−िर्द[सं॰] ओतनवाका, जवधील । वयेती~सी सीप्य स्थर रागिनाः व्ययेष्-पु॰ [मुं॰] यद्व राम । जयेत्रीशी−सी॰ [सं] एक मेदर शांगती । जबांस्कास∽पु• [सं] विजवका रहास, जीवकी सुझी । अक्टब∽वि [मं•] जीवन धान्य। अपरंड− दि सिं∘ीधीणः पदः। वर्(त−९ सि॰) प्रदाननुष्यः भना। जर−५ [मं] जराः निनामः + जन वनरः दे 'तर । विकासिया श्रद या क्ष्य होने या करनेगला । क्ष्मी । जहः इतियसः, भादासः। —कम्पः—क्रमी०—वि० दे० 'बर&छ । −बारा+−नि पेतेशमा, पनी । ज्ञर-पु (का•ोधोनाः धन दौसतः −शस्त्र-पु मृत पन । ∽क्षत्रा−पु कम्पारच्छ छार स्तीयनेवासा । दिश (क्षपहा) निशापर जरी वा क्षणांच्छा काम का । -कार-वि॰ क्रिसदर शानका मुक्तन्या वा काम दुभा 🛍 । पु**०** सुनार । −१.२शेष−वि वषया दक्तर शरीदा हुन। अतिह (गुरुपम अमीन): बिरापर पूर्व स्वामितः प्राप्त हो १-एउहा-वि वपनाक (~ बगोन)। — होङ्गी—स्त्री उपनाकश्म। -गर-प्र सनार । -विगरी-प्र हिमरीका क्रयाः वह रक्षम जिल्ला हियरी विने । -शार-दि॰ जिल्लार गरीका काम थी। पुरु गरी। −तारी~दि देश 'रर वार³। ली भरीका काल। -शार-विश्वनी, माल बार। −दोज्ञ−दि॰ शिखपर ऋरोगा काम हो। ड॰ मरी। बसावणका काम बरमेवाला । ~होज़ी −सी वका वत्त या सनमे-सिनारेका काम । -सम्बद्-पुरु समय वच्या रोक्ष । - मिगार-विश सनदरे कामका सन इरा । - निगारी-भी भानेका कामा मोनेका मुख्यमा । -निर्मा-प्र• कारेपर शुनदर देल-पूरे दनानेसा साम । -- भार-पु॰ वर्शनाभें बमानेबाला । -- मीलाम-पु वह रक्षा भा किमा चीजका भीमाम करतम निकेत -परस्त-दि (पनधी पूजा करात्रामा) मीमीए देज्या --वंशनी-न्धे बदामा । --बक्रन-पु॰ ६ना६न् और रंद्यमंद्रे सार् मिन्नश्वर नमा दुश्रा कपश । -- साक्र-दु मरवस्य परवस्य पुगनेशामा । —बाक्टी-दि बनारमः केकामसा को अरदात्री। -सात्रनता-पुप्राप्त वम, र बमा। --(१)हालिय-पुगरारा। मा। जरहें-भी थान जी सारिका निगारर वा निर्देश e-इ कर सम्मया द्वारा असुभार यानके असुभावे द्वर की र । व्यस्थरी−५ व्यविशासिक्री । अरगा-च प्य सराधी पास ।

कनेमा पक्षनाः हरी तरह कुदनाः। नक्के द्रकदे द्वीना → दिकपर मारी स्त्रमा श्रीताः वश्य होता । —शासका बैट जामा-भएक थाभावः गीवासे व्याचक होता । श्चितरा - प॰ पीष्ट, समास । बिगरी-वि फार्के विगरका, निकी, अंतरम (-बोस्त) । जिमीपा-सी [सं०] बोहनेकी इच्छा समझे अभिन्नाताः प्रकर्मः सचम् । सिराप्ति-वि [सं] जयकी श्यक्त रखमेवाका । जियरन्-वि सि•ी वक्ता वक्तक, शहर । विश्वस्था-औ॰ [सं॰] भोजनही १७०० जुल । विधास्त-नि॰ सि] भीत्रमधी रुपक्ष करनेवाणा शक्षा । कियोसक-वि॰ [शु॰] वयका वश्वक, श्रन्त । बिघाँसा-खाँ । सि॰] मार बाक्नेकी श्वाम मतिहिंसा । विषांस-वि॰ [मं॰] गार वाक्त्रेकी श्वका रक्षतेवाला बैरीः पावकः जिपासा-साँ॰ धि॰ो फाउतेकी उचना । जिल्ला-विश् [एं] पडवनेका रक्षकः। किछ-वि (सं) सँधनेवाकाः स्तिक करनेवाकाः देखने समझनेहाका । क्रिच-स्रो सम्बद्धी, विषश्चताः श्रत्तदेवमें नादश्चादकी भारको सिप पर जीर वर्षण दैनेके किए कोई सुद्दा न रह जाना वा होई मीहरा चलनेको क्यह ज रह बानाः किसी मामकेमें वाले कानेका रास्ता क्षेत्र ही जाना, शतिरीच । किजिया-सी वेशी साम । शिक्रिया−प्र॰ (स्र.) वह कर को सकतान पालक गैर सम्बद्धमान प्रशापर क्रमाते थे और छसके बरके वसके बान मानको रामका भार क्यते क्या हैते और पने शेनान भरती होमेके कर्तव्यते सक्त कर हेते ने ह क्रिजीविया∽नी [सं•] कोलेके दक्ता। जिल्लीकिय--वि॰ सि॰] जीतेकी रूप्का करमेवाका ! जिल्लापविषा-को (से॰) जगनेको १**म्छा** । बिज्ञापयिष्य-नि [तेन] जतानेका श्लाक । विज्ञासा~नी सिं°ी जागतेको इच्छा शानको जाहा यानपातिके किए विचार, पूरुचाछ शीम। बिक्तामिस-नि (सं) गुण द्वारा निस्त्री विद्यासा की गभी हो । सिजास्-वि (सं) जानमेका बन्धुक, क्षानामी। स्रोतीः समध्र । विज्ञास्य-वि [मे] विद्यास करने धार्य । जिटामी-गौ दे 'केशमी I किल- • च • प्रिपर, किस भीर । वि [सं•] ाीसा प्रभा पराधितः वसमें दिशा हुआ । ∽कीपः-क्रोध-वि क्रिसने क्रोबकी बीट किया ही, कीवरदित । ~नेसि~ड वीपक्रका रोग । -सम्बू-वि दे॰ 'विस्कीव । <u>४</u>० विच्या । —सोक्र--विश् किसने बुनिवाकी चीता किया हो। थी पुम्बवक्रमे स्वर्शानका अधिकारी ही नया हो !-धानु--वि विश्वमें श्रमुद्री जील किया ही विश्वमी ! - क्रामा--वि की की मही । -संश-वि त्रिशने मोद माबापर नियव पा की दी। - स्वर्ग-वि पुष्पवच्छे स्वर्ग ग्राप्त

जिसका−4 • जिस मात्राकाः विस कर्रा # • विष् सकारी । वित्रचमा+-स• कि जवासा वितास । वितवामा-स कि है॰ 'तिलामा'। वित्रवारण-वि॰ बीतनेवासा । वित्रविद्या--पुर नात्रमेगाका । किलाश-वि [धं•] क्लिंग्रिय । वितासर-विश् सिंशी अपना परते-क्रिक्केरका ! बिसारमा(सन्)-दि॰ [सं] विसने अपने मन, जारी पॅडियोंकी यसमें कर सिया हो। निकामा न्य कि बीवनेक कारम होना चेतरेरें समर्थ बरना । जितारि~वि (र्स•] विसने बदने शहुजों वा बाय, शोर वारि-वद्दिप्रमी-की बीत रिवा हो। इ. इस् । जिलाधमी न्हां (सं∗) बावरपत्रिका तत्। निवाहार-वि [सं] विसने भीवनको रुप्रास्त तेग पाओं की है किति−ची [सं] बीट जमा माप्ति। जिल्लम-प्र [सं•] मिल्लम राश्चि । बिल्लिब-वि॰ [सं॰] तिसने भवनी धीरनेकी वपने कर किया हो। जिलेश-वि जिल्ला बिते#~-ब॰ बिस और I जिसेवा≠~प+ जीवनेवाला ! विज्ञो≉−वि विद्या। बित्-वि॰ [सं०] - को औरतेवाटा (समाधारमें म्बर्गाः भेरी श्राविश ह)। जित्तम जिल्म−इ [सं] मित्रव राहि। जिला-वि [र्पण] वेश जीवने बोप्य ! त नता हता बिह्या-ली॰ [र्श॰] फाक्रा शिरावब, पारा ! जिल्बर जिल्बा(स्वस्)-वि [सं]बाहनेदाका, अवर्धनः तिष्-षि [म] बक्टा ! 3 विश्रात गुन-वर्गमे क्स्यु । स्वी॰ इक दुरामद । सः - वहमा।-पर बार्च ~हरू फ्रहरना । जिश्स-म वि•ी प्रस्तर । क्रिक्टी~कि वडी क्टिक्टमेगका ! जियर-म विश्व भोरा वर्षो । -तियर-म॰ स्वीतर्ही जिल-सर्व मिस का बहु १ दु (संक) हुका जैन सर्व करा विष्णुा भठि पुत्र म्वक्ति। वि अवधीका रामदेवारि की जीततेवाच्या स्थि बुद्ध !--सच्च (तु)-प्र वैतक्षी Parit I तिम जिल्ल−पु (च] मुख्यमानीके विभागके वसुगत बद्ध तेवस बीनिः भूत प्रेतः मातुरी बन-दैरवाना नारमी। इसे भारमी। सुरु −का सावा-दिक्य ^{हिन्द} संबाद बीमा । -चडुना -सवाद होना-प्रतित वार धी जामा । विसा-पु॰ [अ॰] एरसीगमन वा वरपुरवगमन म्बदिनर

वतकारी । -कार-वि॰ व्यक्तियो । -बारी-की

विका व्यक्तिकारः -विज्ञान-५ वस्त्रपारः वस्त्र

ष्ट्रसेवाला ।

की नाप । सु • ~कास्रमा~अमीनको अरोबसे नापना । बरीची-वि बरीवसे नाम हुवा (-वीमा) । मरीया-पु [प्र•] कगल, वसेला सावन[के मुरीयेन (किमी) के सारा] । अरूथ-g [सं] मांसा वि• कटुमापी। हरूर-वि॰ [ब] आवदवद, अवदय-करणीय अकरी । ल अवस्य वंशक। ~ज़रूप्र-स अवस्यमंत। तस्तत−सी [स] बातस्वदश, वावन । इस्टासन् - २० (ज] मानवस्टावस । इ.स.रियात-न्या [अ०] (दिन्या वस्तु वा कार्वत किय) बावश्वक बस्मुर्य, कियार्य । - सिन्नगी-स्वीव बीवसके तिए आवश्यक वस्तुर्थै। सु० –से फ्राविश होना~ श्रीबादिसे निइच दोना । क्ररूरी−वि [ы] भावश्वक, वाश्विक, जिसके विना काम स बच्चा खरीट•∼वि जना≍ा प्र**र्थ-वर्ष्ट-(४० (४०) ज**मक्र**श्यक्तामा, मक्**ष्टार । सी **चमक-इमद** ठाट-बाट ! बार्बर−दि [में] कोर्यः इटान्हराः सनः वेदित। पु इंड्डी भ्यमा। ग्रेरीमा । सर्प्रदेश-वि•[सं] जी जील जर्बर को गवा का; ममिश्रुष्ट । अप्रतीक-वि [सं] श्लोकः प्ररानाः ऐपीते भरा क्रमा ।

वर्ण-दि [सं] श्रीनः जीर्ण । प्र॰ वृक्षः (बन्दा हुवा) बंद्रमा । **पार्तिल −५० [२१०]** प्रंपली विक । पर्त-प्रसि¦दाथी। योगिः। तुर्व−वि [पा] पीला। -चाप-न्या दश्री। हु० ~पदमा~पैका दो बाना ।

भवीतः-प्रश्रे तररानः । क्रदीं-त्ये॰ (पा॰) पेठापन। पीका रंश । क्रफ्रें-प्र [भ] पात्र नरतना वात्रना, वाश्वता ।

ज्ञर्ग−५ दे चरदा।

क्रझीयत~सी (फा॰] पात्रता । न्तरी-पु• [अ•] अनु वह दण जा स्देनप्राधम धहना दिसाई देवा ६, त्रमेगुः बीचा ग्रीवी मागः रहवा १,० ।

-तरां-म विज तिना श्रमक्ता। -शर्-वि तिव घरः सनिक्ता । **वरार∽दि॰ (वर•) शार, रहिन्छ। मारी प्रशं**न (सेमा) ।

धर्रोह-पु॰ (अ] थीर-कार शश्त्रक्रिया करवंगाला । वरांद्री-सी भीर-फारमा काम।

प्रदिक्त−पु[सं∗]दे 'अभिन्त ।

असंग-तु [गं॰] यह शिवड वीवा महाक्रान । वि यणीय । वर्षेतस-४० (४) पाराच ।

जर्रपर-तु [मं] यह अगुरः प्रक्र कृति। इत्रमीयके सेन तीत पर क्या है दे अन्य होता है वर्तवस-५ [तं] मार्गा भंतन ।

क्षरर-५ [तं] बानी। शस- बुर्शवाश गर्धवा ग्रुगं सुर्गवरमा । १ ६ - ४ । - जीर-पु॰ वनश गीरा । - ब्रॉटक-त्र शिवाहा। परिवास १ - कष्ट्र-तु वदावद सीमा ददनद |

कारण पाँवमें बोनेवाली सुप्रको । -कपि-पु सुँछ, शिक्षमार । -क्षपोत्त-प्र पानीके किमारे रहमेवाली पक जिहिया, जनपारावत । -कर्रक-पु शारिवकः कमरुः। वक्कताः नारकः ग्रीपा । --कर-पुर पानीका करु मध तुन्तः जलसै मिळनेवाले पदाशीपर कगनेवाना सक्ष्युक्त । ~करु∽सी [विं∗] पानीका नस, भारप ! -- विभाग --पु॰ म्युनिसिपहिटीका वह विभाग यी मगरका जरूपक्ष करे,'बारतवर्ध ।—करूक-पु॰ ग्रीपशः सेवार।—करमप —पु॰ समुद्रमंत्रनसे प्राप्त निष् ।─कष्ट्र─पु पानीको कमी, जनमान । --कांक्स --कांक्सी(तिन) - प्र दार्था । --कृति–पु॰ वासु । ~कृतिहर्-पु० वहण । ~कृत्क-पु॰ बलकीमा !-कासुक-पु+ कुर्दुशिमी मामक दृश् । -काय ─पु॰ वशीय श्ररीश्याका बीव ! ─किमार्-पु [विं•] यक तरहका रशमी करहा । —िकराट-पु॰ प्राद्द, पहि-बारु । –कुर्त्तस्र – पु. शिवार । –कुमी – स्तो• पानीपर होते और फेरुनेवाका एक दोषा क्रुंगा। -कुक्कुट-पु मुरगावी । −क्षच्युक्त∽तु यद्य अस्पन्नी । −क्षुद्रज्ञङ्ग⊸ स्वारः कार्रः । –कृषी –स्वा॰ ताकावः मॅदरः । –कृष्मं -पु॰ मृद्धः। -केनु-पु धन तरहवा पुरुष्टलतारा।= केळि~का॰ बककोटा । ~केस~पु० सिवार ! ~कीमा —पु (दि] व्य प्रस्तरहो निसकी सारी देव काली और गरबन सकेर बोना है। −क्रिया−स्टो॰ तर्पण।−ऋदि।~ भी • नदी, शकार आदिमें सिवींका परस्पर वा नायक-नाविकाका एक दूसरेपर पानीके छीरे पेंग्सना, बरुकैरिः क्रीडाके किए पानीमें तैरमा आदि। - लग-पु॰ बह वधी । - लरो - त गाँवधी समीमका बलभाग, वाक त्राकाष कारि । नशर्यं नपुर पानीमें रहनेबाका साँप हैंदरा । -गुक्स-पु॰ भेंदरा बहुना। भावताकार श्रीकोर तालार ! -यदी-नार [दि] बालयामका यक माधम, बानीयर तैरवा हुना करोरा जिसके बेरेमें छेर होता है भीर भो डोक यक वहांपर पामीके पोशमी त्रवा आता है। -चरवर-पु॰ चीओर वालाव । -चर-पु बनमें रहन शाना प्राणी यसर्गन् । विश्व अनमें रहमेवाना । −सारी~ न्या अट्डा । -चानर-स्य [हि] पानी है भारत केंचार्वने निर्देशको पानीको कादी चारी पार् । -पार्श (रिम)-तश्यान-तरः यक्षानाः वि अनमे रहतेरान्तः। ~र्जनु-तु सल्ये रहनेवाला बीव बमचर । - अंतुका --की बीटा-जनका,-जनका-मा॰ जनवामना -अ-प समन्द्राता भागी भागति महत्री। निवार असर्वेतः समुद्रमगरा चंत्रमधः भूतमा । वि. जनमे प्रताना ~जन्म(स्)−पुश्यकः - ज्ञात−रि जनमे पारश्यः तु कमका - आञ्चम-तु [हि] एक महदरा प्रीगृशी बामुम र -जिह्न-पु परिवास । -जीबी(विन्)-पु मतुना । - हमरमध्य-पु रा गुरुति शाहियी मादि को काइनेशकी जल-प्रकारी । - विव-पुर्ध पा। --सरगा—प्र यक्ष बाजा जिसमें पानीन भरी करोरिजीयर इसीने भाषात कर ध्यनि जन्दत्र की नाडी है। की इस्त की लहर ! - लावज-न्यु पानी चीरना (ला) देवार कम । -सापिक -सामा(पिन्)-इ हिन्मा मछन्। -तिक्रिका-स्थे सर्वदेश वेह ! -ब्रा-स्थे एन्।

कियाक्रिय-प सि विद्यार पक्षी। Buttern o - ex file flavour 1 जिल्ला-वि प्रिंको जीत्रतेवासाः समग्रीकः। व विकार सर्वेद इंटर अर्जन । जिस-सर्व भो का विश्वकि कगरेंसे वसनवाला कर

(Ores) (mail) विस्तिस-प हे भीकरा³।

बिस्ता−प है 'हस्ता ।

जिस्स-प जि देशीर बदना ठीए चीता वह बीप विसमें बंबार्ड श्रीबार्ड और खेंबार्ड जा मीराई हो (ग०) ।

जिस्सामी - दि॰ जि: ो द्वारोशिक, तेषश्रव(तक्ष्मीफ, शता)। विस्मी-वि आगैरिक 1 सिहण-सी जंह, क्या किया।

विषय-१० हे 'बद्रम'! -तार-वि सारकार. की बातकी सकरी शराय है ।

जिहार -प [भा] (समझ्यानीका) आफिरोसे सप्ता वह हरू जो भगकी रहाचे किए किया बाव ! -(हे) अ**क्व**र

-प दंदियोका निवाह सक्तमस्त्री (तकी) । जिहाकी∼दि दिक्क क्रम्मकाका । सिडान-पुसि•ो समना मापि।

किद्रामक-प्रतिशिक्तः। विद्यासन~सी॰ दे ⁴प्रदासन ।

विद्वासा~को थि । स्थानने, होवनेका दच्छा । विकास-वि सि रेखान करनेका उच्छक्त ।

विद्यीपाँ-सी [सं•] इरन करने, होन क्षेत्रेक्ष क्ष्मा विद्यीर नि [ए॰] इरक्का रक्कक ।

क्रिक्त−प्र वि कि 'क्टेक'। जिल्ला-दि॰ [सं] टेबा, कृतिका दुष्टा मंद । ह कपरा त्तगरका भूका - स - सति-दि योगा वा देश-मेदा

पक्रमेनाका। प्र साँप। -प्रोक्षी(क्षित्)-वि देवा-तामा : -मेहन-व मेडक । -बोधी(बिस्)-दि क्षपर क्षत्र करनेवाका । य भीम ! -शस्य-प्र॰ सरित बस् ।

किञ्चाक्षर~दि दि] पेंचलाना । जिल्ह-म सि तिमरमका के 'विकार"।

बिह्नक-पु [सं] वह शक्तिवात विसमें बीममें क्रिट पह बार्य और वीक्षनेत्र करलबाब्द हो ।

क्रिक्रफ-मि [धं] क्रियता, परीय । शिक्का-स्वी+ [मं] जीय रसमाह मायकी सप्तर । ~जप~

प्रवृद्ध अप जिसमें देवण जीन विसे । -- मिसेलान → मिर्ने मुक्तिक - प्रामी । - प्र-प्र वीमरे पानी कैने-बाहा बग्न-कृताः वाद विस्त्री, मास् वरपादि । - मन्द-प जीयक्र बैठा हुमा मैठ । - मुख-पु वीसकी वह । - मूलीय-पु विकान्त्री संधरित वर्ष (mie) । - स्व -प्रभी।-५ पुरुषा। −सोक्

प्र नदीरपन। - है बोमसे चाइना । निहिचा-को॰ (सं॰

जिद्दीरखेलनी-धाः ।

र्जीशासक--प= साम्य ।

औ~न माम, सम्ह या फारीके साथ शोरा अनेटरा आवरसंबद हान्द्र (गुरुवी हाबदवी)। बहेंचे प्रति स्तीवरि सप्तर्बन, प्रदत्त आदिये प्रवत्त होनेवाना वह प्रमा १०

जान जीव सन विश्व तथेवताजीवः। स॰ (विसीका) -भागा-किरीवर बासस दोना गाँधक होता।-दबरना-विसी काममें, किसी स्थानका निक्र व सकता −तका जाना-विचका श्रातिस्म पंचयः स्तिध्य हो स्थाः

बहत बहराहर होना । --समझना-दिक प्रशास -कामा∽श्का दोता विक बादनाः विकास शका -का प्रकार निकासमा-दिक्का गुक्त निवाहरा।

−का बोहा इसका हो जाना~िंसा वा धार्यधार दी बाला । —की अग्रात ग्रातिला—प्राचाको प्रापंत करमा ! -बी जीमें रहशा-नार्ध, सेनी हा रहस न बोला बीसका का बरगास्त्रत य सिक्समा ! -वी राय

-दे 'बच्चको पहमा'। -को सागी-समागें को si बाता मनोध्यवा । 🗝 होता सत्तता - हिमी बहार्स हैंस् करता । -को क्याला-विकास सम्म होता सी क वना । -बड़ा करमा -किरोधे विकर्ते पता वासिर्वे का मान भर देता। - सका होता-मबर्ने प्राप्त शर्म है

जाना ! -कोका-शान हैवार विकास शतमें व रहता -कोसकर-वो सरकर, बश्रह |-चाहना-स्था सेंध् -चाहे-१च्छा ही बीमें सामें (दी) । -बराबा-रिप्ने कामसे भागना जान अस्ता।-इस्ता-हिम्स्ड र्यः बताश दीना । -छोडा करमा-रासाह दन दरना 🔭

क्रीय करना । -छोडकर मारामा-नरदनत हैन्द्र भागता, शांस केनेकी भी म एकता ! -प्रोक्स-हिम्स बारमा । -अकमा-इरवमें भारी दुन्ह, संग्रह हैम् कुरुमा । - अस्टामा-सतामाः स्वामा । - प्राक्ता (होता)-अपना श्री शिक्ष जानदा-समझना है नहाने दूसरा कान-समझ न सहेगा। -जान इनावा-एर विश्व दोक्ट प्रवत्त करमा सूब मेहमत करमा। न्यान

से-पूरे रिक्ते। पूरी शक्ति । - किस रीमा पूरे तिकमे आहिक दीना हमासन बार देना । -रैस रहुणा या होशा-दिशी शतको विता वर्षा रहता बार क्ना रहना। -हुद सामा-दिग्मन वा बलाई व री व्याना १ - र्टंडा होता-दे 'क्लेश रंडा होंगी -क्षुवना-पेदीको सी दोना दिक-दिमासका गुरा हो। का जाना । - तरसना-किसा भीवनी धन येन्द्री किंद रिक्ता धनेन दोना । -बहरूना-१ श्रीत से क्षमा ।-पुन्नावा-निक्ते इन्छ पुरेवारा (स दुनारः। -देमा-व्योक्षावर कामा प्राप है देगा। बहुत नर

-- शक्-चक करना-- मन्त्रे प्रशासा विक पादना −विवास होता−विकास स्थाउत होता । -यह ब्राह निगी बरुद्धर शावश की कर साथा कियो बहुता प्रणी हो बाता । -यर का बनना-प्राप्ति रहा बरना है वाना । -पर सेमना-रे 'सनस्र रोनर्ग'

प्लार करना ! -चैंसा जाना-दे॰ श्री देश कार्य!

विकास बचास प्रमित की माना। नकी कर जाना ।-चेंद्रमा-दिक्श (ति

~वायु-पु॰ भारहरा। ~बासुक-पु॰ विष्य शेली। -वासं-पु सरा विष्णुकंत् । -बाइ-पु वाहरू जरु बाहर । –वाहरू –पु पानी दोनवामा । –िबंदुजा – रती वाबनाठी दाईरा, अुवारकी पीनी । –विपुत-पु शुकाको संप्रांति। -वृश्चिक-पु शीमा मछली। -मेत(म्)-पु•दे अकरेत ।~र्यकृत-पु• मदी मान्डि जरुमें भेजानक भग्नुम-स्टब्स क्यार हो बाता। -स्यवः,-स्पञ्-पु॰ ण्डः मछकी सङ्गतीर । —स्याध्र-पु सीसकी वातिका एक दिसक असर्वत । -व्यास-पु॰ पामीमै रहतेवाला साँप, देंब्हा !- बाय - वायम - वायी-(यिम्)-पु विष्कु मारावण। वि॰ धामीपर सीने-बामा ।- प्रकरा-सी सीमा । - हुक्ति-सी धीमा । -इत्तक-यु जल-अबुक !- श्रुक-यु सेवार !-श्रुकर -g. पश्चिम । -होप~डु ख्या । -संस्कार~डु सानः शक्या जनप्रवाहः । -समाधि-लोश करुमें हुक्द्रर प्रावस्यामः नदी, समुद्र आदिमै निसी भाजका इतमा वा द्वतावा जाना । -ससुद्ध-प्र पुराचीन वामे हु॰ शांत समुद्रों में अंतिम मोडे पानीका समुद्र । -सर्विणी-सी॰ बॉक । -सिंइ-पु शोलको पाठिका यक हिन्न जस बंद्र जिस्त्रक्षे गर्र नपर सिंद्रकी संरद्द अवान इ।तादै।−सिक्तः−वि चडसे सोवाद्वमा वर।−सीप -को॰ [हि॰] वह सीप विसर्ने मोती पैदा हो !-मृत-प्र• क्रमक मीना । - स्चि-को• सुंहाः श्रीशः क्षतीट मामद महलो। करुमा: सिवाहा: बॉक ।~सूर्य ~सूर्यंत्र~ प्र समपर पना धमा धर्म-निव । -सेक -सेवन-प पामी (छनकना: धीवमा तर करना । -सेमा-नी अगे बहाबीस देशा जेगी बहाबीपरसे बक्षमें करनेवानी संग भीभेगा । - पति-तु जरूनगरा मनते वहा अफसर, भीतेनाप्यश्च नदमिरक । - • स्वचित्र-पु मंत्रिमरकशा वह सुन्तव जो अन्तरीमादा निर्वत्रण करे । -- स्तुझ-व अवस्तमना धाररनंत्रन स्ट्रनेशका मंत्रा समुद्र, शीक भारिमें बारचेंका रानेके माकारमें हुक माना (-श्रांसन ~§ मंत्रवसमे पानीको वीथ देना कसकी यति अवस्ट कर ⁹ना (कहा बाता है कि दुर्शोषन इस निवास: बानदा: बा । महामारको अंतमै वह श्लीके बनने ब्यास सरीवरमे धामा था वही भीम भारिने बादर बस लक्ष्मारा ।) -रयाद-पुरु यक भीर स्वत्र, वरी भीएगुन्ही ।-रथा-भी गंदद्वी ।-स्यान -स्थाय-पु तालाब प्रमाशवा च्याप-पुर श्रोगस्य एक शिष । अशोशः च्यु वामीका धीमा। जनप्रवाह ! -- हर १ -- वि अनगर । यु अभाग्यय — दे जमहर हम मीन वापुरी —शूर । ⇔हरण—धु या में दोनाः एक मात्रावृत्त । -इरी-स्म [दि] हिंद भिय स्थापित करनेका असीर समीतः तिलीये विक्रियाचे मदर म दाना मानेवामा (मनपूर्ण) वदा जिसके देशेर्वे एक धा होता है। -इस्मी(विन्तु)-तु शीलका जानिका यक राजधारी जनजेतु जिलको धारण सामीन भारी-सन्त विननी है। विभुषान्त्र १ - हार - हारक-मु वानी धाने मर-नामा पनिहार।। -दारिकी-नी बानी हीते वाणी वीहर्साता संग्ये । न्हारी(दिन्)-पु धानी कीने जरनेशना चनिवास । नदासन्य प्रजासमुन

पेन १ --होस-पुरु यह प्रकारका होन । सुरु -- धक ण्क होमा-वारों और पानी ही पानी दिखाई देना, पीर बलक-पु॰ (सं॰) शंखा क्षेत्री । जक्तस्त्री−म्पा॰ रस्ता या तुलेदी जलीदार शोनी । अळज्ञा−वि कोषी, विगर्देल, विविधना । ज्ञस्त्रसा−पु [ल•] मृद्धेप, मृटीन । ज्रखज्ञरुतमा−भ कि नारावदीमा। जस्साम्र−प्र [सं] सतर्थका पेका जलशागम—पु॰ [सं] वर्षाहरू । जकवाम-वि॰ [सं] बारकके श्यका, काला । बसदागन-पु॰ (सं॰) ग्राम बृह्य । खखम−स्वो• बसमधी पीटा, दाहा टाहा देवा मनस्ताव भनोभ्यथा । बरूना−व॰ फ्रि॰ किसी शीवका आग फाइना,सप्तिसंयोग से ज्वोति वा ज्वालाका रूप प्राप्त करना बरुमा, प्रपद्ममा; भरम दोनाः दण्य दोना प्रक्रमनाः श्टानाः ईर्फान्दर मान्धि <u>प्र</u>यमा धंनस द्योगा। जसकर - <u>प्र</u>यक्त संनप्त शेकर । तु॰ जसकर यस शुनकर कवाद। कोपका। लाक या राप्त होना-बहुत क्रुड होना ग्रूप्तिने पॅडना प्रका भाग-पर्कादीना । **वस्य पर्सना** - वस्ता। अस भुनमा-प्रकृता कुदना। अस भरना-बाहरी तुरी तरह बुदना, बच्नाः वक्कर मर भाना, भारमपात करना । अकती भागमें कृदना−जान-बूतकर विकामें फैंसानेबाबा काम करना । जरुती भागर्मे भी या सेख श्राकमा-शुगरा पराना ⁹सी पान करना निससे कुदका हो। भीर क बाद। जका बना, जला सुना-हो। में तवलता हुमा **वद्रत मुद्धः। समी-बटी**−ग्रुस्मे बा बननमे भरी हुई वार्ने सीटी ब्लंग्ब (तुनाना) । असेपर जसक छिड्डमा-जनेकी बसामा, हुनियाकी भीर हुना देना। आरक्षे प्रिवासी शिक्षी−वद्य स्था जो वर्षीने वर्षी किरता रहे, बहा दिवर होसर वैठे नहीं। शक्ष प्रकाशि फोइमा-भटाग्रं निकालमा । जक्रपमा॰−म 👫 थीन नारमा। स॰ नि॰ दीन मारते हुय कहनाः पुनः-पुन" शहना । यो । शोगा न्यर्थकी बात । जन्ममय−नि [मैं] पानीसे मरा दुना बक्रप्लानितः जन निर्मित । बु. चीहमा। भीवका बस्टीय शरीर (विन्याम) । अलमा-प्र [म+] बैटका अधिवेदाना समा। गाने-प्रश्नाने नाय-वंगरी सहकित्र गोडी। नमात्रमें शिकरा करके पहली शार्थंडला । ⇔गाइ--पुबद्द अगुद्द जहाँ जलना दा । जलांचल-५ [मं] पानीका भागा विकार १ जलक्रिके−न्द्री [र्ग] अंत्रनीयर पानी; मेठ या रित**ें प्रे** नुसिद्ध निष् दिया बातशाचा जनशान सर्पण ! **जन्नीटफ**−पु[शं•]यगर नकरात्र। जन्मीतर-पुर्व [सं] जनमनुष्य सम्बद्धामान्त्रे सर्वते प्रवश्च कुम्मच्या एक ग्रेश । অফ্রিয়া∽ং" (গ্ৰ) সমা। जमाहरूनगर मूत्र देखी आणा

अन्तपर-पु [श] शपु"। बणराधिः प्रदेशा कुम् ।

जन्मकोश जाराकोशी(शिन्)-दुक (५०) हाथी ।

चीरक, जीरण-पु॰ (तं॰) चीरा।
पीरण, जीरन॰ कि तुं 'बीर्च'।
पीरण, जीरन॰ कि कीर्च होना। ट्रेपकाना। करना।
पीरा-पु॰ एक हमेरित दोना को महाने जीर बवाके कपरें
भी कार्म जना। जला है (यह एन्छर और स्पाह दो
ठरका वोटा दी। सकता पीना। चीरेकी कक्का बीवा।
कुक्का केरर।

क्षीरिका-श्री सि॰ो एक पास_ः वंशपत्री । जील-वि॰ [री॰] ब्हा, बरायुक्त पुराना दिमी। पटा-पुरामा। दश्ता हुना, अर्थर, श्वनप्राप्तः पना हुना । पु पुद्र स्वतित दुवा बीरा। शिकानदुः कुशपाः श्रीमता । -जबर-पु॰ पुराना तुकातः अधिक दिससे रहनेवाका मंदरबर; शरह दिनसे अधिबका ध्वर (का वे) ।−वाठ-प निवारा । --पन्त-प पठामी कोथ । --पश्चिका--स्त्री बंधपत्री तृष १ - पर्य - पु इदंश पुराया पान । ~पत्नी−सी• विदाश । – ब्रध्म∽व शीर्यपत्र । – ब्रख्न~ प्र वैकांत मणि ! - बद्ध - पु॰ फरा-पुराना कपड़ा । 🖟 को फटे-पराने कपद पश्चन हो।—बादिका—मा धाँदवर । जीर्मक-ति [मं] दरीक्करीन चुता वा शुरक्षावा हुना । बीमी−विती [सं]वहसी बो इक् वर्षर हो नदी हो । स्रो मोद्य चौरद्ध स्वाह बीरा (१) । **क्रीफिं−ओ॰ सि॰ो बोर्न**दरः पायन । बीर्गोद्धार—पु [सं•] पुरामा, इसे-पूर्व बीक्की मरमातः

पुराने सरिर, कुर्व, ताकार कारिको मरम्मतः । श्रीकोंद्यान-पुर- (सं) वह केरोवा को पुराना हो बावे वा स्थितं भारि न होनेके कारन स्यूत, कवन रहा हो । कीर्य-पुर- (सं) कुतारा प्रमुख छोटा स्थळ । श्रीक-कीर मोना वालाम, दबके या होन्या नावों । बीरका-विरु होता, वारिक ।

बीकामी⊶दि॰ [का] बीकाम(गीकान)का। प्र तरका कार्करंग।

परका काक रा। सीर्वज्ञाथ-पु [र्न-] व्यक्तैरः यक दृष्ठं । सीर्वज्ञ-पि [सं-] बाविक, मोता हुमा। दीर्वादु । द्व मानुः मोदनः कोदन्तु मोदकाकः रामनि ।

भावताक-पु (सं०) बोवककः। जीवतिक-पु (सं] दे 'बोवोतक'।

आवातकण्य (तु कि वास्त्राचीहाः गुहुवः नीवेतीः जीवातकः पीनी दशु द्वतीः जीवातकः पीनी दशु द्वतीः

क्षांबंदी—(र स्त्री (स) जोती हुई किया। स्त्री० है - बीवंदिका।

शीवरिका ।
व्यक्ति मुन्ति हैयरिक्त वा देशाविक्य में विस्ता वित्ता ।
प्राप्त, बाता जीवता प्राची। क्षित्रोश जीविक्य। वित्ता ।
क्षत्री कर मन्द्र वहराति। क्षत्रेश जीविक्य। वित्ता ।
क्षत्री कर मन्द्र वहराति। क्षत्रेश जीद पुत्र वहरू ।
क्षत्रामा भीवर्गक । प्राप्ति - पुत्र करिया ।
वित्ता - प्राप्ती (वित्त) - वि विश्वा करनेवाल।
(व्या । - अंतु - प्राप्ती । वित्ते ।
व्यात - प्राप्ति प्राप्ति । - - अवित्त - व्यक्ति ।
व्यात - प्राप्ति प्राप्ति ।
वित्ता प्राप्ति ।
वित्ति ।
वित्ता प्राप्ति ।
वित्ता प्राप्ति ।
वित्ता प्राप्ति ।
वित्ति ।
वित्ति ।
वित्ता प्राप्ति ।
वित्ति ।
वित्ति

--धामी-छो॰ वरही !--धारी(रिव्)-पु॰ शन्ते, रेतु। -नेत्री-खी॰ सिंदशी । -म्यास-दु॰ मंत्रहारा (वृत्ति वादिमें) प्रावप्रतिष्टाः। —पति –पदी-नौ वहसे जिसका पवि श्रीता हो।-पत्र-त मना पता।-पितृह -वि मिसका बाब योधा हो। -पुगक-पु॰रंगरी। -पुत्रा -वरसा-को वह की विस्ता देश गीता हो। -पुष्पा-सी॰ वही बीवंदी ! -प्रमा-सी॰ करण, रुव (केशनदास) । ∽प्रिया−सी इतः । −वद+ ५० जीवर्षम्" । -वंधु-पु॰ गुरुपुराह(दा। **~** यकि-सी पशु आहिको वित । -महा-सी॰ बीरी कता । -संदिर-पु॰ शरीर । -सानुका-तौ॰ सन दैनियाँ को माताके समाम प्राणिबाँका चारुन चोदन सर्हे बाली मानी जाती है (कुमारी भनदा, नंदा निगड़: मंगला, वका और एडा) १ --पान-५ वर वर किने पहाबक्तिका विवास हो। —क्षोति−सी अध्यक्तिवॉर्थ बानि अंगम बामि (मनुष्य रहा क्यी बारि)। -एड पुरु स्तीका रक, मात्रदा –हा–नो सिर्दिक्ती। च्छनेक−५ छंशार, मर्त्वतो ३ प्राप्यवन्त । -वही॰ न्त्री॰ श्रीरक्षकीको । -विज्ञाब-तुः प्रोरन्त्रुकेरे **घरीररचना वर्गीक्ष्यः डोनेक्ट इंव मारिका विग्रं** ⁴ जुर्जाडी ।—विषय—दु॰ जीवम-दिस्तार !—इपि-मो॰ पहुचाकन गाय-मैस बाहि मक्त्रेका रोजगरा येले सहय गुण (रच्छा हेश प्रयक्ष बादि)। नदाकन्द्रां स शक को मानव देखमें विशेष रूपते होता है सन्त्री ~शुक्का~काँ० श्रीरकात्रीको । ~शेप-ति० हिलाँ बानभर बची हो। जो सर इस छोड़कर केरू जम नैस माय भाषा हो । –शोषिश्च-दुल्बस्य एक । –श्रेष्ट-सी जीवसहा । -संब्रमण-५ जीवदा रह देह लाग कर बूसरीमें वाना ।-संज्ञ-पु कामकृति हम :-साध्ये —5 वास्य समाय :—सुसा—सो० सेवणुविका !-धै° को वह लो विस्तरी संगति बोद्री हो। -स्थाव-उ मर्गन्यान इरम् । –इस्मा–म्बो॰ बोदरम, प्रांबरिता ~हिंसा−सी प्राणितवः –श्रीन∽ि वीपटीर सर्गाः वर्षा बोर्र जीव ज क्षेत्र प्राचिशन्त । अधिक-पु॰ [मं] प्राणपारकः अध्यये अध्यये वर्षते यह उसै क्ष्मका क्षमा स्रमोरा हेरता।

कारका उपका स्रजारा स्वरा। वीवट~यु हिम्मन साहसः बहादुरी । वीवतिण−सी जीविकाः

विषय-१० विश्व शेष्टम् । -सास्त्र-त्याः देरे प्युक्तिः। -पति -पद्यी-त्यो यह श्री त्यादाः देशे स्थितः हो। -पितृष्ठ-पु दश विषद्धाः रिगा वर्षे स्थीतिय हो। -पुद्याद्धाः न्यो वह श्री विषद्धाः पुत्र हो। स्थाः स्थितः कृष्णार्थास्त्र त्याः । श्रीस्थ-पुत्र (विन्) प्राप्ता सहसा। स्थाः तथः प्रवः द्वति

क्या । कि पारिक क्षेत्र आयुवाका । वीषयू-वीषम् का ध्यारायत कर । - मर्जुका-हो । वीषयती (- वास्ता-कि को किस्ता पुत्र केरत हो । वीषयन् व (व) बीरत रहना प्रत्यप्तामा औरत सर विकास वीष्ट्रका आवारकर सर्वा सार्वेद हो । कर्षा पार्ट्य क्षार स्थारमा सार्वे प्रदेश सार्वेद स्थार कपिन्छन्नतो॰ (सं॰) पर्याः वनातः पातः । अवनिमा(मन्)-सी (सं॰) देग । कदनी-सी॰ (सं॰) अवनायनः दे॰ विवनीः दे॰

'बदनिका'।

कवस-५० [सं] भास ।

जर्बी - 'बवार'का समासमय रूप । - अर्थ - पु॰ वहाहरः बीर, मर्थाना ! - अर्थी - स्योश वहादुरी, मर्थानगी ! जवार्ग - पु॰ कहासका एक कानाः एक सरकी शिकारे !

ती॰ [सं॰] अवदुरू। जयाः —कुनुम—पु भूकः

क्रवाहुनी-सी देश 'बहरादन' ।

श्रवार्ष्ट्री —सी जानेकी किया या मान गमन । जयागार —पु जीके गैरेकी जलकर निकाला जानेकाला स्रार ।

प्रकारि-पु [मं] पद सुगंपित इथ्य सुगरमें व । प्रकारिक-वि॰ [सं] बहुत वेरताम् । पु तब योहा । स्थान-वि [सा] तुवा सन्धा बोता वन्यान् । पु पुता पुत्रम शिवादीः वीदा ! - वर्ष्ट्य-वि॰ सीमान्यस्तानी ।

~सास्त∽दि• माबदाम, नत्युद्धः। स्वानिष्ठ~पु• [र्गः] सीमी।

स्वामी न्यों अजवादन कि] सुवावरवा कीवन स्वामी न्यों अजवादन कि सुवावरवा कीवन स्वामी न्या अजवादन कि सुवावरवा कीवन पर है कि सुवान का स्वामी स्वाम स्वाम कि सुवान का सुवान का सुवान का सुवान के सु

जयांकी नीत कि] उपास्त्रों वर्तने तिया बुना। जिल्हा नवाब तुरद सीत सक्त हो। नवास नु नुह इत देश को किसी। यह स्वाध्येतिक अजा जोता हो। नतार नु वह तत्र विश्व जवाददा सन्ने अजीवाना वरण हो बसा करहै।

प्रवार-पु(स) परेला दे जवला रेजरी दे भार ।

जवारा-पु॰ बीडे अंकुर मिन्हें छत्रकियों कत्रकां(साह कृषा तृतीया)के दिस अपने भारतीडे और त्राह्मय इस-हरेडे टिम सुबधानीक कानपर रसते हैं, जरहें।

सदारिश-सी [श०] सन्दर्भे स्पर्ने बमामी हुई पाउक जीवन ।

अधारी-न्यी॰ जी, शुकारं कारिको पक्षी गुँगकर बनाया हुना दार- तारबाधे वाजीका एक पुरजा योही। वि॰ पक्षेती।

जवास-पु॰ शंसर, बंबाह ।

हवास्त−पु[स॰] हास यगव अवनति । अप्याद्वीर−पु एक तरहका र्यमा विरोजा ।

जवास-५ ६ 'जवासा ।

जबासा-पु॰ एक बैंडीका सुव को बरसातमें पत्रहीन ही जाता और सर्व कतुमें फिर पनपना है, संवासक ।

क्याह-प्रश्रीतका व्ह रोग।

जबाहर-पु दे 'जवाहिर ।-काळ-पु स्तर्वत मारवरे मध्यम मध्यम मंत्री । कम्म १४ मर्बर, १८८०। इंगकैट्स हिस्टिरी पता कर स्माहावार प्य न्यावामनमें मेहिस्टरी शुरू बी, १ १३, होमस्का मोगाठे मंत्री बने, १०१८। क्रोमधके महामंत्री १ १६ में प्रवा काहीरमें राष्ट्रपति चुने गये (१२९०)। १०६०, १ १६ में सी कामिसके अध्यक्ष निर्वाधिक। सन्दर्भ १ ४० में मारवर्षे मचाम मंत्री हवा १९ राष्ट्रभंती हैं।

व्यवाहिर-पु [अ] राम, अनि ('औहर हा वहु॰ पर आव व्यवनमर्भे प्रपुष्त)। -(रामा-पु॰ रामाभूपण राजनका रवान वीकारामा। -विचार-दि रामाधि वहारः।

अवाहिरात-५ [थ] को प्रधारके रालमान ('जीवर'का

वहु)। जविन-वि [ग्रं] दे 'जवी। जवी(विक्)-वि [ग्रं] वेमरान्।

अवया – प्रवासना ।

अञ्चल-पु दे 'बस्त'। जन्म-पु कि] बस्तक, गुरीका रकमा; गानाश्रवाता

(मनाना)। जीम-†पुरै 'यस । ० २० जीमा। जमर-पुर्वि परना, गरार्थ

जमान-१ [ल] मरता पर्या । जसामत-सी [ल] मोरार्च प्रश्तिको स्वूलता।

जमीम-दि [अ] भेश श्रृणदाय । जसु-तु [मं] आयुव देवियास असन्तरा असन्तर ।

जसुरि-पु+ [मं] नत्र । जमोदार-गीर दे सरीहा ।

जनारी जमार्डि-स्रो हे बनान र

अस्टिपाई-स् वि+ [अ] बंधीय दिये दुए सरहबी सीन्द्र बहाबर बरना ह

करिया-पु [मं] हार्रशंका कम विजासनि। भीव नमार रेसक। नभाव द पीम-पु ग्रांतिरण भार छोटे सामगैद विचारक निर तिपुक्त स्वन्देव प्राहित्य कस्म-पु दे जन्म। स्वीव (चा) एक पि प्रोहेश कर्माना

X1-8

लुई−की स्वाः माध-मंदिक मतमेर)। प्रकाम-प्र मि॰ो एक रीग जिसमें नाफ बहती, कुछ लुलो-पुरु [बरु] हेरु जुल । -- प्रहम-विर से हस्स क्तर हो जाता और सिर मारी हो जाता है। सर --रसः रक्त आदि यन श्या हो (-होसा)। विगदना-न्यामकः धव नामा । ब्रुज्यं+−५० द्वद्य । प्रकट-प [सं•] कताः मध्य प्रवतः। प्रमवामा~स॰ कि॰ दे॰ 'सप्तानः । स्तर-प्र उपा पीती। काशा, सम्मा ग्रहा कीसरकी गीरियो-समाळ-वि प्रव संवंधी ज्ञानेक्षे शसाहित परनेदण का बीडा यह परमें बैटी हुई दी वीटिवाँ। -ब्राग-म मारू (-पात्रा)। सदा प्रगोतक । स्॰ -क्रग क्रियो-बुगोंटक भीते रही व्यक्तामा~स कि॰ व्यक्तिकी परित बत्सादित करना। मना बाबु भोगी । -इटना, -फुटबा-बी बब्दी गीटियों-लक्षार≠−दि रमभिन, गोर् । मु तुद्धः। का भवन हो बानाः एका न रह जाना कुट पहना । अद्र−सी नीता, सम्मादी अभिक्र मित्रा ध्टा केट। पात्रगामा-भ कि॰ निश्मिकामा दिमरिमानाः करमाः लुटक-पु (रं•) भरा; बनरी स्वा। र्धपत्रतादी और अगसर द्वीशा है हाटना-म कि ज़रना संबद्ध होनाः स्टब्स् (बस्म) प्रगत्नगी-सी एक चित्रियां शकरखोरा। गुभनाः जमा दशहा शोगाः पर्देषमाः (निनी साम्ये जुगत-सी पुष्टि, क्याया पतुरा^क इपर्यन्न शत स्वीन्त सरनेशीरे **क**यनाः समीय करनाः स्रविश्वि करना ! विनोरमरी पछि । । व अका संगव । -वाक-वि शरकीर-४ वर्लोक्रे हेर्न क्ट्रीमाका । स्यत बोकनेबाका । स्य —क्षतामा—बोक्नोड मिहाना प्रदामा-स॰ कि॰ पीउनाः पास पर्तमानाः स्वदा स्रया। वृक्ति बरना । **तराय-**प्रवसका श्चगती-वि बीद-तोइ क्यानेशका, पत्तर। ब्रुटिका−मी [सं] भुटैनाः भूताः यत तरसम स्तूरा द्वरानी -सी दे जनन्' + दारभादिमें स्ना दुशा गर। श्रुष्टी−शौ पुरूपः शर्द्वोः जुन त्रुन व्यदिसः स्वाध्याः। बरान-प प्रकृतीका राष्ट्रीत (शतमें बक्रमेवर इसकी क्रम जरारमा जरासना-स॰ कि॰ बरा सर देश दम सरे से रोशनी निकल्यों है); गईमें पहननेका यह गहना । होड़ हैना (प्रगम•—दि दे 'तुस्म"। ज्ञुद्धिशारा−५॰ ब्रुग यानशका । जगस-विश्वे 'जुनक'। क्रमा−व कि॰ योदा जाना संत्रक होना। रुद्धा हैन शुरावमा−स कि जोड़ना; दस्ट्टा करना; सेमासकर स्ततनाः **उपक्रम्य** होताः । रसना∤ ह्यकृषिची−स्पै॰ ६६ ऐग दिसमें सदयमें सुप्रमें 🕅 प्रगादरी-वि॰ बहुत पुरामा, अति प्राचीन । और वहेन्द्रे दर्दरे सिक्ज बाते है विद्या । द्धगाना । - स• कि दे 'खगनना । ख़क्कॉॅं– वि अन्देहर, यसक∤ प्रश्वक साव पैराधी ञ्चगर-सी दे 'जुगको । शी बच्चे । ष्ट्रगासमा−म हि॰ जुगानी करता । लुक्वाई-सी दे 'जीहवाई'। जगाडी-सी गाव-कि भारिका नियने हुए पारेक्षे ल**क्ष्याला**ं−स कि टंडा बरवाः एत कस्या दें भीका भाक्षा पेटले औडमें काकर जनामा रोगंधा जनित 'जीपनमा । भूषाना!-स॰ कि उँदा दोसा। स कि उँदा देखा चर्नन (स्तं)। सगत प्रगतिश-मा है अदि'। प्रशासनाक-स किन् उटा करना । श्वगुप्तक-प्र [धं] मिंदा करनेवाला निरक्र । प्रत•-नि दे शक'। हुगुप्सन-पु[मं•] निंदा करमाः क्रमा करना । ब्रतना~न कि भीता जागाः सगगाः शुस्म । अतवाना−छ कि जेलनंद्र दाव दराना गेरे रेंग सगपरा-को [मं] निदाः प्रयाः बीमरस स्त्रका स्वाकी मारिकी संदर्शना । प्रगुप्तित-वि॰ [सं] निरितः प्रणित । तुनाई-न्नी जीवनेकी किया वा भार: मेलनेकी बराई! श्चगुप्प्-िद [सं] निया धना करमेवाना । जतामा~स कि दे नेतामा'। प्रग्रह•—वि दे <u>न</u>प्रह । जुतिकीवल-मा आपगर्म बृहोंग सारपेर दरना ! खु तिपाना-स क्षि ज्ञन क्यानाः तुरी तरह अनक्षी प्रज−म [फा] के निमा मंगे**ड निमा**।त [क] भेदा प्रश्नवाः बद्रत छोना रातः प्रश्तकमः अकय माँने और बर्मा जलील धरमा। सिके हुए पन्ने प्रार्थ । -बाल-पु वह बेना जिसमें श्राम≉−द है 'ब्रेश । त्रशा∽ि [पा] भनगः भिषः निरातः। न्द्रेन्थे करके कितान गाँगकर संदर्भ के वाते हैं। -वांदी-सी वियाग विकास । - सामा - संव अन्तर्भागमा क्रियानके ज़र्जीना जिल्हानेतीके किए सीना। विशावकी निवार जिसमें पक्ष कहा जुन वा फार्म संस्थानमा हिला अद्वरी−निसी दे अपरा वाय । - रस-वि सुरुमरशा तीर्गद्किः बीवृगः नित-श्रुवण-पुरे सुद्र । म्बर्गाः – रसी – स्री - न रम रशिताः क्षेत्रमीः क्षिप्रवतः लुन्ब−पु[अ]दै प्रमुखा शिवारी । —ब कुल-पु क्षेद्ध और संपूर्ण: सुब कुक ह श्रुन्थ-पु{ध}∦ बन्दा

प्रुप्ट्रीं −की स्वार् ।

क्षमणी-वि [भ] बदुत भोगा धोला भाविक (-शतिन-

प्रदेश-पु• [#] वह वन जो कृत्या(वा वर)की निवाहके समय दशके (बन्बाबे) माँ नापसे मिने दहता बालेटिका सामान कफनकाठी। ung -go [सं] विध्युत व्यक्त राजवि किन्दीने सगीरवये गंगा कार्त समय वरे या किया और बनकी विमतीपर किर कानकी राष्ट्र निकाल दिना था (पु॰) । -कन्या -तमया-सी गंगा। -सप्तयी-सी वैद्यादानाता सप्तमी शंतासम्मी (बहुदे गंगायान और उद्रीरण्या विशि। -सुता-सी गंगा। ज्ञह−पु [फा] बहर दिवा -(हे) क्रातिछ-पु धातक विषा स्त्राँ-मी•[मा] दै 'बा; दे 'बान'। नि•दे 'बा'। -मिमार-वि दे 'बाननिसार ।-निसारी-व्या दे 'बानतिसारे । -क्रिशामी -स्पो दे 'बामफ्रियामी । -बद्दाी-स्रो दे 'जानरस्थी । -बाज्र-वि दे बानवाद । -बाङ्गी-सी दे 'जानवादी'। ऑडनि≉~ली जामुनः णाँग+-प पोशीको एक बाठि । व्योगह-प अमद्यक्ति अमद्यक्तिहाः पीरवा र महर करह भारिका वह एंडम जिससे दामा निकास किया गया हो। चीर-वि॰ पु॰ मेहनत न क्रमेंकामा । मू०~ शकता -शरीरका भक्तमा शिविक होताः पीरवका-जवाव देना ! वॉगरा-प्र• भार, वंदी । जोगम-२ (से] अंगडका अंगली । प्र वह प्रदेश वहाँ चमो कम नरसे भूप-गरमी अधिक कहा हो पेष्ट-पीचे कम ही। मांसः हिरम भारिका मांसः वाकर । भौगिष्ठि भौगिष्ठिक्र-पु• [मे] ऐपेरा नदारो। विपर्नेय । भौगमी-मो॰ [सं॰] शुद्धशिनी केनीय i वाँगाद्र−ि असम्ब उद्यु द्रंगनी। व्यांतुल-द [सं] विदः होरहे । योगुलि योगुलिक-बु [नं•] मैथेरा। खांगुळी-मी॰ [मं] दुगाः विद्विधाः। आँध-सा॰ प्रिका समर और पुरनके बीलका माग जब । वाँघरां - व महारोदा पुरा । व्योधिक-पु [तं] इरकारा पारना उँटा एक शूग । वि॰ बीपनेशका । व्यक्तिया-च एक वश्यका भेगोटः पुरमीनद्वस बाजामा त्राचा। मान्योगको यह देशक । सामिल-पु एक मन्दर्भा दिएने पैरका मेंगवा देखा कार-भी क्षेत्र-भी किया परम परीक्षा छान-शैन वस्त्रीरामः। -प्रताम-सी छान-धन वस्त्रीयाम वस्तीश इ वाँचक्र-न दे श्वानह । व्यक्तिता १ - स्मी भौगनदा काम । र्भीषमा-न कि विश्री बानके नदी संभन क्यी-सीनी षानक्ष प्रशास्त्राच्याचा प्रस्य कर्तमा श्री । आयना श वांत्रता -दि मेर्न धर्मर । भौत भौति।!-पु भारती हवा a साथ दीनेवाली वर्श गरानी वर्षे ।

र्जीन जीता-इ. भारा रेमनेकी पदी र

क्षीय#-पुरु जाभुनदा फ्रक जीवधत-पु ६ 'वांनदाम्'। **व्यंवर-**प्रसि] जानुनका प्रकासीना । व्यांबन्नती-को [सं] जारवाम्को बन्या जिसका निवाद कुर्जिसे हुआ था नागरमनी स्ता ! क्षांबवाम्(बर्)-पु [सं] सुगोवका मंत्री विससे संदा विजयमें रामभेदको बहुत सहायता मिली। यहा जाता है कि वह काणद समयतक वीनित रहा। जीवची-औ॰ (सं•ी भागप्रमनी (जांबबोप्ट, जांबबीप्ट-पु॰ (सं॰) समुतमें वर्णित एक भी बार किसमें फीड़े भादि जलाड़े बार्ड थे। बौबीर-त [एं॰] बेंबीरी मीम् जांबीक-प्र सिंगी प्रश्नेके बीहररकी गीक चिपना बड़ी। अशेरी मीर । बोव्ड-वि [सं] श्याल-संबंधी। वांतुमामी(मिन्)-पु॰ (धं) शंकारा पक रायस यो अदीलमार्टिका उवाइते समय इन्मामद हाशीमार। गया। **व्याद्यसम्(बन्)**-पु (मं•] १ जांदवान् । #140-30 \$ ".4 ! व्यायमद-५ (ए॰) सोनाः परारा । व्यक्षिष्ठ-पुरु [सं] दे 'बांदरीक्ष । व्यक्तिश-वि , म दे 'यानत् । विंदिर = पुगमन बामा। बा~नी [र्स] वाति। देवरानी। माठा । वि स्ती+ करपन्न बरमवानी: "में या में वा एतम हुई हो (समा-स्रोतभे-विरिवा आस्मवा)। + सर्व विमा श्यो [दा] यनद श्वामा मीका । वि विनित्त सुमासिका - अक्टर-य प्रधाना शीनासय । -शमात-मी वह अपना विभे विशवहर नमात्र घन्त है, सुम्हा ! - मर्झाम-प दिनीके स्वाम परका अविकारी। उत्तराधिकारी !- महाति। -सी॰ आमधीन दीना। -दजा-श॰ अगृहण्यगृह बदान्तर्वा। --वेबा-वि व्यित-अनुनित नुराधना। म मोडे रेमीरे, डिकाने रेटिकाने । (-मार पेटना हाब •धाइ देना।) बाह्रव-वि कृषा देवार्। जाई-मी दत्याः घमनी। ब्राईन-विश्वाि असायुभा जान (नीसारेश-सव अध्यक्षेत्र । जाहरी-मी शीर ! आर्ड+-पुष्धा जाषक्-त्र• मारानंद दोनेषर भीश देने 🏻 द्वारिद गरीना दुशा भीता (देना लेगा)। - यही - स्री वह वही कियमें अव्यत् रिक्रीक्ष व्योग वा बारकारत रिसी बाद । जाब्दि-मी एक शहरी दरी 'बेरेंट ! ज्ञारिनी १-११ रे 'विभि । ज्ञास-भी अधनका भार भारतमा • अगूर, हदन। 4 45 6 जाराम १ (s) देशनी सामक इस ।

जांतव-वि [से] अंतु-संबंधी जेतुओं ने प्राप्त उत्पन्न र

व्यापना श्रम्भ कि इशामा चौपना ।

जू-सी [र्धः] वातावरणः राष्ट्रसीः सरस्कीः बायः कैछ मा योजेके मानेपरका टीकाः तीम गममा वेगः। कम नाम के साथ कमावा जानेवाणा जातरस्वक स्वयः, जी का मच वृद्देशसंद्री आदि सावाजीरी प्रचक्ति समः।

क्मा−पुर• 'भुजा'। ज्यू−पु॰ वच्चोंडी बरामेके किय कस्पतवान, दीया।

ब्राह्म -- पुरु शुद्धी

स्मान-अ क्रि॰ छहना। सहते हुव मर बाना। स्ट-पु॰ [र्ट] क्षा, मटा। [र्क] परसन्। परसन्धा वना

म्हण उन् छ । मून्छ नटा हिल । पश्सनाः परसास सप्ताः । –सिस्ह-मो हेरु 'चटहरू'।

जुरुमा#—स॰ कि जोड़मा, मिलामा। ज कि वक्तन धीना, प्रमुख धीना, कामा। जुटिश—को॰ संभि, मेका जोड़ी।

खुडम-की साकर छीए। हुआ भीवन व्यक्तिहरू दस्तेताङ की दुर्द भीज है

क्ट्र-वि साकर श्रांत श्रुजा, खुआन हुआ, स्विश्वहः विसन्दे प्रांत्रा दिया गया हो (बरतन चौद्धा) जिसमें ब्रुट्स क्या हो (हाथ श्रुंद्द) श्र हुआ। यु व्हाजा। युव्प-(दे) हायस कुचा न मारना-पहा मस्तीवृत्त होना।

सूब १ - वि सीतका प्रस्त । पुर देश स्वता । जूबा - पुर तिरक्ष बाज जो क्येटकर बीच दिने गर्व हों, खुटा

भोदी। गेंद्वरीः वधोदा यस रोग, वक्षका । सूदी भो जाने और दंशके छाथ आनेनाका उत्तर, जनेवा

स्ता-पु॰ बमने किसीयन, रवर आदिका वना हुना पार त्राल करालक पारोश !-एसोर-वि॰ पीटे बालेका लागी करावीत वैदार! शु॰-उन्नक्ष्मा-सार-वीट बीता, बारी-वेदार बीता! -जकाना-नाम सामनेके वैदार बीता। वि निक्सीका)-वकाना-नाम केपा करना। !-(किसावा) न्यति पीता पाना। बालेक होना! ! मार्किमा-बीलेके सरमाव करना। जीव काम करना। !- पकना-चे 'ब्रुणा करना। !- पहना;- चरका। !- पकना-चे 'ब्रुणा करना। !- पहना;- चरका। करना श्री शाय पहना। नारता-तुन कमाना। जलीक करना। श्रीवीच व्याव रेना। !- पक्षामा;-व्याव प्रकाश श्रीवीच व्याव रेना। स्वावा-च्या प्रकाश श्रीवा विद्याला व्याव प्रकाश वरमानित बीता! !- खमाना-बुन सारमा व्याव पुनेते वीदार। !- स्थायत करना न्यावा। यावा व्यावा।

मृति सो (र्ट-) वेम तथा प्रधानम मोलाइना मन्ति ।

सूरिक-मा [सं] प्रक तरका कपूर।
सूर्यी-भा कपाना बागा (वा) । - कारी-का जातेल सूर्यी-भा कपाना बागा (वा) । - कारी-का जाते सारा - ट्रीर - विश्व रागिका कारी कार्य स्ट्रीक्टी परवाद ता करकेवाका, मिन्मा । - छिपाइ -सूपाई-न्या क्याची, क्रीकरों वा इक्किन्सी विशांके समत सामित्रीका करके जुते छिपा तमा कीर सम्बन्ध समत सामित्रीका करके जुते छिपा तमा कीर सम्बन्ध समा जुने छिपाने और कीरानिक येग । - पुनार-की॰ स्ट्रा करमा सार-कीर गीत कारी । गुन की माकपर समस्या-इस न स्ट्राना । - की जीवरी - (ये) कारी इस्स्ट्रपता समी (बहु बहु) कारी कोरी हों। कुछ म समजाता । - (सियाँ) बद्धामा-बीय हेम सरण - गाँउमा- करी-द्वामी ब्रिवेशी मरस्य दरमा रिक कार्य कराता । - चढरामी दिलाम-मारा सर्मा रिक - चगळम द्वामा- भीरेसे विच्छ देमा (- मरस्य-रे-'ब्रो मारमा' |- करामाना- वे च्ये कमाना । - क्या पर राजाा- वाच्छा कराता । - मानि वर्षा देस सेवा करना । (किसीकी) - (विचीं) का सर्मा (किसीके) वरणीका मराम (किसीका) की मिंग कार्य । - व्या क्या वेटमा-कार्य रामा सेता करे च्या- व्या व्या वेटमा-कार्य रामा सेता करे च्या- व्या वेटमा- कार्य रामा सेता करे च्या-कार्य रामा कर्या वे च्याना ।

प्रस्क - तु र् (मृत')

प्रस्कार ज्यिकार - ती रे 'मृतिका।

ज्युत- वि [कार] तेव दुवा स अरते, स्टा-प्रस् वि बातको सर तत्त्र सन्तरका तैरस्पृति।

स्था- तु वका बका दिनका सदे मारा स्ट्रिशोर्स

स्था- तु वका बका दिनका सदे मारा स्ट्रिशोर्स

स्था- तु वित्त वे वक्त सनावी हुई रहती वस्स।

स्था- तु श्रामा युवा विवाद सरवाह है तुवा तिकेट

स्क्र (विता है 'यूव')

्यक्त राज्य व पूरा। व्यसनार्थ-अश्रक्ति श्वरता, रवड्डा दोना। व्यर्थ-तु बीड वैर । व्यरमार्थ-स्थ्यक्ति बीडना स्वया करमा। वंश्की

ब्रुर्भाण-एण क्रि. जाइना रक्ष्य क्रिया रक्ष्य होना । जुरर-पु [बं] ब्रुरीका नरम्य, रंग ।

ब्रा॰-पु॰ दे॰ 'ब्राग । ब्रां - ची पुका, जुद्दीः एक तरहकी क्रीगि [में पंचीया नंदन को मीन्दरारा सुबदनेने क्रीगुचने कर्म धीते वा न दौतके संवेधी बनकी क्रानी एवं रेप हैं। पु॰ राष्ट्री स्वरूप !

पुण रखके स्वरस्य । बार्चाव्य-पु (छ॰) यक पुण, यमें । बार्चाह्य-पुण (छं) देवसस्य । बार्चिल-पुण (छं) हे या स्वर्भाः एक रेम । प् मुस्सा जानिरस्य । दि चेतवाणु । तस्येवसस्या गुणेनुस्य मुस्सा जानिरस्य । दि चेतवाणु । तस्येवसस्या गुणेनुस्य

ज्ञाहरू-पुरु तुन । प्रहर-पुरे जीवर । ज्ञाही-को एक साथ विश्वके पून बर्ग्य परि स्वर्गर है बर्गे मधुर सेवसके होते सा कर कार्यवसीम संस्कृत में कार्यवाला एक दोगा। ज्ञाहर सेवसके सेवसके सेवसके सिल्ला।

कुछ परबाह मही (बह बही आहे हो भेरी ज़तीकी ओंक | जू ल-बु [छ] अन्हारी फैठाका शिक्ता है हे-लि) ! -के बहाबर व समझगा-शुक्त देव वा | जू सक-दि [छ] जेनारे स्टेशाना हर बर्धरा जातक - प्र (है) नवजात रिप्तु, कथा। सिक्ष फरित क्योरिकता वह संग मिससे नवजात शिद्युका शुमाहाम एक बरा जाता हा जातको एक जैसी वस्त्रुजेका सीमहा वह बीद संब रिप्ती दुस्ते पूर्व जम्मोकी कथाएँ विस्ता है। कि जात, प्रस्त्व। -स्विन-सीर केवि। सात्रुजा, स्वास्त्राई क-सीर है बारुमा।

आता∽सी [सं] क्वकी। जासि न्या [सं] जन्म, उत्पत्तिः वंश गोत्रः वीवमेणीः कुछ वर्त वा योनिका भेर स्थित करनेवाला वर्गः वर्णः बंग, माना, देश रतिहास संस्कृति कारिकी समामता र्रानेबाला मानव समुदाव "नेजन : दिवुमीनः विभिन्न बर्गी-दे जेनगंत प्रस्पर रीती-नेटीका संबंध रखनेपाला और सामान्यसः एक ही भंगा करनेवासा जनमञ्ज जनसमुदायः वर्षविद्येवके विभिन्न स्वक्तिवीमें पावा जानेवाका समाम धर्म (स्वा); छोटा ब्लॉरका क्रमेकी। जानिकी: जायकका स्वर-छप्तरः एक शम्राव्यकारः भावासम्बर्धः (१)। मात्रिक छर अक्षिर्दर ।–कोस –कोच−पुर जानकर ।–कोदरि —कोपी—ग्री• वानिश्री । —च्युस—वि॰ स्वजातिसे अक्टन किया दशा। −सरव−प मानय गाठिके शृक विभागों और छनके परस्पर छंनेक्यी विवेचना करनेवाला द्यारर 'पक्नॉĕॉप्री । -धर्म-पु• कानि या वर्णनिरीक द्म दिशंप पर्म आभार ! —पद्म-∸पर्म्म ─प्र• —पद्मी~ स्त्री बारिश्री। -पॉर्ति-स्त्री [हि] बार्ति-उपवाति चादि दर्ग ।−फुल-पु॰ कायफुल । *--*व्यक्काल-पु॰ वह बाह्य की देनम बामने बाह्य हो। ग्रम-कर्मन म 👔 द्यप-नाप्नावरहित माद्यपः! −ध्रांदा−प्रः वानिमद्याः चानिशादि। - कर-वि चानिश्रष्ट कर वेलेवाला (पाप)। -भ्रष्ट-दि पानिरमुत्। -मक्षण-मु जातित्वर विशेषका^{र्य । —}बाचक-दि जावि बनानेशसा (शंका) । —विद्वीप —प् वानियत देवः अन्य जातिकेप्रति शतुमाव। -घर-पु सहात्र वर ग्यामाक्ति शतुता ।-ध्यवसाय-म मानिनिधेवका सामाम्ब थेवा वेद्या । —कास्य —प्र• पायपत्तः - मंद्रर-प्रदो पातिवीका मिभण दोगना ९न । –सार-पुत्रावणन । –स्मर-वि॰ जिने भवने पूर्व जन्मका पूर्वाट बाद हो । -स्यमाध-द जानिप्राप्त रवभारा एक अर्थालंबार जिल्हा हिलीकी आपति सवा शुमी भारिका चित्रम किया आय । —श्रीम् —वि । नीय वातिहाः बानिष्युत् ।

आतिमास्(मार)-वि [००] कृषीन शरुकमे छरपद्र। जाती-भी० [गं] नगरी। मानगी। छोग ऑस्का। जाकर-1-वाग-कोप-ध्य-चु जावकर-1-ध्यी -मा गावियो।-रम-चु दशर्थप्रव्य।

क्राती~िं+ व्यक्तिगत नियी व्यवसः वस्तुस्य अस्त्री। यातीय~ि मि]जातिन्दंशीर जातिहा।

नामियता न्यो [मं] कार्तिकाष्ट्र मंबद ब्रानेका मार्व बामीयता न्यो त्राहिक सन्तिमाना बाहीयता ।

पातुर्भ (रोन) शास्त्र करावित्रा कृती । प्रापुद्रसमु (र्गः) शादा ।

पानुपान-इ वानुबार शामा ।

जानुच-दि [१] जनु-कामस्य धनाबुधारित्यसन्तराहरू

- अस्पार । कासू—पु[मु] यज्ञा —कर्णे —पुश्यक स्ति । कासेप्रि —सी [संश] वास्टर्स ।

जातोक्र−पु[सं]कमण्यभितः। ज्ञारसंघ–भि०[सं]धम्प्राचः।

जात्य-दि [सं] कुणीना सुन्ता लेका समसोण (ग)। --चित्रज्ञ-पु॰ समसोग शित्रुल ।

याग्रा−सी॰ दे॰ 'बाजा'। बाग्री−पु॰ दे 'याणी।

काधका=-सी॰ केर, राजि । कादक=-पु दे॰ "वाग्य"। --पति-पु कृष्ण ।

जानसपति जानमपती+-पु+ वरम् । जान्स+-वि दै+ 'स्वाना'।

बाहू-जु का] धेना जंतर मंतर, वर्धावरमा मोहनी। देहाणक, नवरवंदी द्वावकी एकार्यका काम वानोगरी। -गर-जु जानू करनेताला। [सी॰ 'बाहुगरते' -गरि-जी जावुका ख्यान अहु करनेके दिया। -नगरा-निगाइ-दि निग्नके पहिंछे मोहनी हो। -ययान-वि निग्नके वालोंने बाहुका क्यार मनके मोह केनकी शक्ति हो। गु॰ -उत्तरमा-माहुका क्यार होता। -क्याक्ना-बाहुका क्यार दोता। निग्नका-बाहुका क्यार दोता। निग्नका-बाहुका क्यार दोता। -क्याक्ना,-सारमा-बाहू करवा। -व्या की सिरायर खड़का बोले-ज्याय वही क्यार हो जो तथक

दो श्रीर विरोधकों सी सानना पर।

जादी - पु है थान रो। - राय - पु हु ' पा ।

जादी - पु है थान रो। - राय - पु हु ' पा ।

जादा - पु हो जान न का सान, जानकारी समझ

एवाल । (स्म सप्तका प्रवीग की जान में नीने अस्पद

दर्श वा सम्प्रीत से। होगा है। प्राप्त करिना और

संक्ष्मकर्ते प्राप्त पु किम्मे दो। प्रयोग किना है।) दि

सानाल सु बान । - करिन से प्राप्त । प्रयान ।

प्रया - प्रयान प्राप्त । स्वार । - प्रयान प्रयान ।

प्रयान - प्रयान से वातस्रारं। - प्रयान स्वार । - प्रयान का वरिष्य स्वार - प्रयान - प्रयान - प्रयान - प्रयान - राय से वरिष्य स्वार । - प्रयान - राय से वरिष्य स्वार । - प्रयान - राय से वरिष्य स्वार । - प्रयान - राय से वरिष्य स्वार - सिंग - राय से वरिष्य स्वार से। - सिंग - राय के वरिष्य स्वार से ।

रापीकी शमाधान । - बर-वि सुर्ता न मरी सनामन ।

-बलब-दि॰ निगरी जान भोरोप्त आ रही ही

दी।-(री)ज्ञवर-म दे॰ 'केर व पदर'। मु०-**स्टरगर-इ**राना प्रक्रवताः भवीन करमा । जेरना - स॰ कि चलाहित करना परेखान करना। जरियाः केरी –सो+ परवाहेका बंटाः वेतीकारक क्षेत्रसः। जरु-ए० [बी कैरकाना नेरीग्रह (धन वह धन्य प्राय की कियमें बीका-किया आता है)। 🕈 जंबाक, धंबस । -सामा-प• केरसानाः कारागार । स -कारनाः-धंदकी समा मगतना । चेकर-प [र्थ] बेकड्री वैद्यानक इस्तेवाका जपसर । केडी-को • भूसा वददा करनेका एक भौजार । खेवडी - मो॰ हे 'नेवरी । भ्रद्रमा-स कि•दे बीमना³। जबनार−स्री भीत, दावठ । श्रवर-पुण्क विदिया। दे श्रेवर² । श्री रस्ती । नेवर-प [फा] गहना आभूषणाशीमारूप वस्ता-शंगार । सबराक-पुर्णदा रखी। भेवरात-पु (फा) अंवर'ट्रा वट• । चनरी≠-स्रो रस्तो। राध्र-वि•्पु वे क्वेष्ट । स्रेश-सी हे 'क्यग्रा। जोद्द-स्रो (पा) कमानका पिकाः क्षेत्रः पोताः दीवारमें मीचेद्रो और किया हुआ कुछ अधिक मीटा प्रकरतर । थ॰ खेडल-पु• दे• 'मेड'। ∽डार-वि पडने-किसनेम देव धीरणक्रिः। सहर#-पु॰ पानेन । जेहरि जहरी≉—मी दे 'कार । सहि - पर्व निषः विससे। रोड-प्र [बर्ग] पारनासकिः त्रीर समग्र । स॰ -स्म्रमा-इदिका तीरम शोना ! - मद्यीन होना-धमहर्मे वानाः याव दोनाः । - संबेठमा - सन्दर्भे वाना सन्दर्भे नैक्षा । —सद्यामा – सोचना । वित-प्र वर्गती दश्र । जे−ो वि वित्ते । + छो दे 'वव' । +कार-प॰ दे० जबकार ।-बारा-प्र क्यकार क्यमानि ।-जर्बती-यो 🎜 'वयप्रवस्ता । 🗕 बक्र 📲 पन दश होक । -संग्रह-५ दे॰ अध्येष्ठ । -साह -साह्य न्हो दे 'जबसाना । जगीवस्य – पुर्वि] यह शामनेका सुनि । र्यत-पुरक्षि । कर्मा अति वया - एक-पुत्रव पत्र । -बार-विश् जीतमेशका निजेवा । -धी-सी एक रागिती। वैती-नी पद्भवसा र्वत्–पु[स∗] जैत्त्या त# । बेत्म-इ [न] एक सरावदार पेड़ जिसका प्रम शाना भीर गाँजीका तर रगने भीर दशके काममें लागा जाता है। र्जन-दि [सं] धरधील, दिल्यो अष्ट र पुत्राराः भीषपः निषयः श्रेष्टमः । ⊸त्रम−तः निजेऽा । जधी-स्री [सं•] करेडी १७३ सम-१ सि किन्द्री स्वाधना स्टीनाम पर्ये गारत

वर्षका यक निरीदकरवाची धर्म-धंत्रराय को अभिसाधे पर धर्म मानता है। बेतपर्माश्चरी । केनी-प यैन थमेडो मामनेवाङा । र्वे**न**≉-प्रभीपन। अन्य-वि॰ [सं] चैन संरंधा । जिसनी-प्र• सि] पूर्वभीमांसा दर्धनके प्रशुक्त रह है र वी बैञ्च्यासके श्रिष्य थे। - दर्श म-तु पूर्वधीमता। खेमिनीय-वि सि] वैमिनिकटा वैमिनिक र्जियव-वि [भ] मारी चररदस्त (-माहिम)। केंड-प [ल] हामना मीचेहा बावा हमसा पी इकादा। व शीचे । - दार-पु वह कर्मचारी जि बिम्म कई गाँबोंकी शहसीस साहि हो। सैच~वि० सि विश्वचनित्रो प्रत्यनिसंको। र ए र्जनालक-वि+ [सं] दीपाँदुः हुनका पहका ∤ दुः चेहर कब्रा प्रवा भीववा क्रास ! र्जनेय- प्र [सं] कृहराहिक प्रमुक्तन । जैस•-वि० वैसा । क्रमचार-५० हुरमिन्रें और इक्रवारींका एक मेर (कैसा-वि शिस तरहरा, बहुझ: जितना: स्ट(रा), स्प मु॰ -(स)का तैसा-स्वॉका त्यो। -को तैसा रै बैसा इ वसके साथ बैसा (व्यवहार), इस्तरम ! र्जरा-अ॰ विश्व तरहा विश्व रोहिसे क्यों। -जैमे P क्वों-क्वों। -ही-अ॰ क्वोंहो। स॰ -वने-सिन सी शो सके। क्रमोध-वि है। वैमा I व्य-भ दे 'क्वी । -ब्रॉ-म दे व्यक्तियाँ'। " सी-म दे 'स्विनियों"। व्यक्ति-स्वी पामीका एक क्षेत्रा जो प्राप्तिकारी देशन विके बर बमका रक्त सेता है अभीड़ा जक्स(रेगी। र्जीकी-स्रो पानोस ग्राप कोंक यो जानेसे नाव-देव धर्मारे केम होनेवाची जलमः पामीका एक कांगा प्रीह । स्रोंग स्रोतक−प (स•) मग्रह। जाराड-४ भिंशे गांभपीकी रच्छा शहर । र्जेलाका-ना [म] देवनस्य। ऑबरीर ऑबरी-स्ते महार होरे शनेमे सार ! र्टीपवा! नमे भौरमे। जी-सं गर्वश्यापद स्थ्यामा अ सी अस्। नी −अ अगा, पदावि । जीवमार-स कि दे 'वीदमा । ओड़ = न्यो वै 'जीव । सर्व वै 'बी' ! श्रोहरती १-ए है ज्यानियों ! जीडर्र-मर्ने ∥ 'ओ ≀ द्योग्य−शी अधिनेदी किया या भाषा धी^{त है} जीवमा-स 🚣 व्यक्ताः 🕫 मीपनाः रिवारनाः। कोशसम−स्था वै [€]श्रारिम⁴ १ जीग्रा−च दिसान (पान^{, दि}रमा दे सान श्र^{क्})। मारिवर्ते≠-सी दें जीनिरम I कोशिता॰-सा॰ दे चीन्छ। आर्थिस-भी हानि अनिष्ट पटिशे हंगास्त्री ए^{मा}

241 बान सेमेका तैवार रहनेवाका धडा। सानु-+ स• दे जानी । पु॰ [सं॰] पुग्ना । -व्यन- प्रतितक अध्या या गहरा । ~पाजि ~क पुरमी और दाबदे पंतींद्र वस, पुदुक्ती । -पानिव-ना दे 'आनु वाणि'। --फुरुक,-संबस-पु॰ मुरनेके बोहके कपर्की रहो । - विज्ञामु-पु॰ तक्तवारका पक दाध । हान्-पु॰ का] बुरनाः जोव । -पोश-पु॰ वह कपना निमें (मुसबमान) पाते समय वॉपपर रख सेते 👣 मुख -तइ करनाः-तोबना-अरवते वी-वान् वीकर वेठ रदमा । व्यामोर्ग−भ मानो वैसे ध आप−पु॰ [सं॰] जपः = जपशला । द्यापद्ध-दि॰ [मे] बप दरनवासा । खापम-पु [H] निरसन, निर्दर्शन । व्यापा-प्र सीरी। जापास−५ पृशॅ पश्चिमका श्कापसुरा देख । जापाती~दि जापानकः। दु• वापानवासी। बादानको मापा । आरो(पिन्)−वि [मं] जपकरनेकलाः खाच्य-दि [मं] जप करने बोग्य। शाफ्रत=सी ^P डियापन । साकराम-प [म॰] केसर । शाक्ररामी निव• केसरिवा, केसरक रंगका । जायता-पु॰ दे॰ 'वारिता । आया-प्र शीके नेसी बनी पुर्व रश्मीकी जानी जिले वैस भारिक मुँदपर पहलाते हैं। मुख्या । स्तादाल ज्यु [र्थ] यह कवि जिल्ली मालका नाम जानामा था और जिन्दा भारतान छोदीग्य क्यनिक्र्में खाबाकि−प [मं] एक उपस्यविकार सुनि। वशस्यके एक पुरोबित जिन्होंने रामचंद्रका अगमे और जानक किए श्रमाना मा । हाबित-वि [#॰] जभ्य दरने रणनगक्ता सहनशीकः निवामका रक्षक । प्र प्रतिस अकसर (भरव देश) । क्राविता-त (म) मियम कायताः दश्नुर स्ववहार विधि पद्धि । -(तप्) अन्यस्ति-पु अशननी कार्य निवि । -श्रीपामी-पु रीगामी अदाएतीकी कार्यनिवि (बोड बाब मिनिल मोनिडबीर)। न्यीजवारी-पु भीजपारी जपानती की सार्पनिक (कोड आपु जिमिनक भौभिष्योर) । -सास-पु॰ शासकी अपासनी अवस्तिकी बादेशिक । ज्ञाबिनी-पुर पुलिस कर्मचारी, व्हांश्टरिन (अर्थ देश) । जापिर-दु शि] अम वरमहाला, अध्यानारी आन्यान । जाकी-भी छाता प्रांता ।

एक बुख । कासमा#-- अ॰ कि॰ दे॰ 'बमना । ज्ञामनी−न्धे र 'शावमी । श्राम≪ −५ [सं•]ण्डमस्तरदार्यमा कामर्वत−पु दे• जीववान् । रदमा अति सुद्ध था प्रसन्न हीना। पनिः इत्दर । ज्ञामान्•∼षु दे 'ञानाना । जामानुरू-पु [नं•] शामार । सरिट मी: नकरी । असिक-पु• दे 'दाभिक्त । −पुरक्ष अञ्चल वागः सिन) । ~दार~पुत्राधित (धमाध) । आसिकी−गाद शस्त्रिता। हास्ता-५ दे 'बारिता । जामी-मां [६] १ अपि ६ प्रमान १ आम-1 वि अवस्य (मार्ग आहि)। प्र वहर् वास्र जामुम-पु वक वार्ययहा पन भार जमका पेर जेव । a.fint [21] edinit pittert edinit Alfhibart जामुंबी - दि॰ जामुनद रंगका रवाह । रक मन्त्र। -(मे) जम - जमरीव-पु ईराबद का जामप-पु॰ [में] भागमा बरिमदा बेटा। र र जमरीको लिए वैद्यानिकोका बनावा दुव्या व्याला । आर्थी∸दिशन'विदा (६६१ दे कि इछन देसनने मनिष्दमें दोनेवाणी वाली माम-०० वि व्यर्च दंबाद १ की विश्व प्रमान

बा सारी दुनिवार्ने बोभवाकी वार्टोका ग्रान की भाग था)।-जहाँनुसा-पु दे॰ भामे बस । -सिइस-पु किसीकी रवारका कामनासे पिया आनेवाका धरावका व्याका । सु॰ -चलना-धरावका दीर बसना, प्यातेपर व्याका पीत जाना । ज्ञासगी-तो [फा] वीश्में भाग देनेका फ्लोवा; नंदक का चोशा । आसन्दरम्य~पु॰ (सं॰) अनदप्रिके पुत्र, परशुराम । ज्ञामदानी-को फा॰] क्यहा रखनेका संदक (शामा-वानी): चमहेका संबुद्धः शीरी वा भगरकती वनी संबुद्धची: पद गरीन करना मुटीदार असी । ब्रासम-पु॰ दूनकी जमानेके किय टाठा जानेवाला दही या और कार्य रही योजा जामुमा आमु मुखारेकी जातिका आमा—स्त्री [सं] वेटीः पुत्रवयु ' पु [फा॰] कपका, पद-नावा दुवहेकी पहलावा जानेवाना भेगराग जिसका मीचे-का घेरा देशवाज जैसा दोना है। – जोब–दि जिसकी वैदयर काहे जिलें। -दार-पु वह कर्मनारी निसका काम क्षपंत्रिक्क सैंभाक को । -पोदा-वि यो क्षपे पहले क्षी। −(स)बार−५० वह नमी शास्त्र विसन्धे सारी व्यमीनवर बुटे हीं। यह शरहकी छी र बिस्फें बुटे वशासिके न्रीप्रि मिकन है। सु॰ -(मे)में कुन्य न समाना-बहुत राघ दोना, श्वरांना ।-से बाहर होमा-भाषेमें म कामासा(न)-५ [मे] सामाद सम्यामा पनिः स्वामीः अभिन्यो [सं] बहिना रेगा पर्राष्ट्रा निक्ट संरंधवानी आसिय−९ [सं] इंप्लीमें रुपने छात्रमं स्थान । – इस क्रासिम-पु+ (का] जवानत बरनेराला। विश्वा केनेराका। मैनकी दीमों मसियोदा अन्य रगते है निय भौता जाने बाली एक ब्लाइरेर जामना बह चीज जो इसरी चीजधी वयनम् वयानके तिथ गाव श्मी जाय (अ र कपूरके साथ क्षामिनी-मी (या) जामिन दानदा भाव जमानवः।

जोना≠~स कि देशना। स्रोति≉−स्रो है 'क्रोनि'। बोन्ह, जोन्हाई-सी॰ घाँदनी । षोन्हरी । न्त्री • होटे गानेबी बनारः यहा । बोर्न्ड-सा॰ सम्हार्द, चाँदनी । बोपर-पु है० 'बृष् ! क्रोफ-पु [ब] क्रमशेरी, हिर्बकता । -(फ्रे)शियर-प्र भिगरकी कमबोरी। यक्तका अपना काम ठीफ चौरस म कर सकता। -दिमाग-त विभागकी कमजोरी। -भेदा-प पापमञ्जिक्ती वर्षेत्रताः **व**श्चितांच । जीवम-पुक्तानी बीननः चमरतीः सिक्टी हुई अवागीः यौगनमनित श्रेररताः स्वारः धोमाः स्तन छातौ । # वि प्रवा-'स्टर स्थाम करिकार्र भूकी जोकन भये जुरारी --स्र । म नपर भाना-संदरताका क्षिष्ठ वठना, ब्हारपर होगा । ~स्टमा ~(किसी चीकी) बनानीका सस कटना । ज़ीस−प्र [ब•] गर्द, वर्सदः वारवा, राबाद्यः छत्साद छमेग—'क्वरिक्रें। सक्ति दिन बानरी बक्की सल वक्त जास'— रम्भ प्रस्कताः समह । क्षीय ० − स्री० पत्री जीसः । सर्वजी । जोपना≯−स कि वकानाः दे ओडमा । जीयसी 🚝 🗓 दे 'क्कोर्टिपी । होर-५ [फा] यह, छखि। प्रवण्ता देग तेशी वस रस्तिनारः सहारा मरीमाः ध्वरंक्षे एक मुहरेको बृहरेसे मिकनेवाला एक, संशाराः वन्त्रजीय अवस्वस्ती महन्त मम ! - भारतमाई-सी वरुप(। हा। - व्यस्त-प्र॰ शम्बाय-अत्याचार । −शुरु-वि चोरवाना प्रवका भाग्रह-मुक्त (तिफारिक्र) । ∽कोर−५० तेत्री वयनाः प्रकराः बौधः। –(१)क्रम्यः–पु बक्रम्बा बीर संसन-शक्ति। −त्रदीयत−१ कल्पनाशक्ति। −वात्र−१ बाहुदक गुज्रदक । शुरू ~ आक्रमामा ~ रकपधेकान्द्रमाः सिरमा <u>स्थारका करना । -क्ष्यका</u>-श्रम कशासाः दोशिश्च दरमा। कामा । -का-प्रकृ ओरवार । *-चसमा-कः चनतः । -अखना-दगवं रावता नामद् इरना । - विस्ताना-शक्ति अधिकारका परिचय बैना । --बुकर्-माग्रहपूत्रक, व्हताने साथ । --वेमा--शतरंबर मुश्रेकी इसरे मुश्रेका स्वारा देवा: आप्रव क्ष(मा। बीभ दाकमा। -पक्कमा-वरु प्राप्त करनाः भग्ना। न्दर होना~बाटपर, क्या दुका प्रकृत दोना। -वाँधना-प्रस्म दोना यम प्राप्त बरमाः। -सारमाः-**१**इत भीर लगाना' बहुत क्षेशिश करमा । −(रॉ)से∽ बोर दश्रर, बहुत आमहबै छाप । श्रोरतां -पु र देश बीइन । बोरना - स वि दे बोरना । जीराजोरी-म सम्पूर्वक वदरदरश्री । की अवरवरली । भोरावर-दि॰ [का] बनवान् । जनरहरन । द्योगी = -भी है जीती ३ चनरहरती । जोर-ता पत्री माना! - बॉहा-पु वरनार! जोम+-तु समूह हुरि ~! ~ निवक्ते बर्वर जील ~स्र ! वीक्कार-प्रदेशसाध जोहा<u>एल=</u>-सौ+ स्थाना ।

बोस्नाहा−५० दे॰ 'ज़शहा'। 1 कोसी*-सा शरावरीः वोसे, वरावरीमा बाहमे । जोसोर-पुर जंतर १ कोबमा॰-स कि दे भोता। जोश-प [फा] क्यान बवाया यस्त्री, वरेक्टा वरसाहा अभेस । —व वारोदा-पु॰ वृत्र सेप्पुतः जसावः भाषेषः । ~(शे)वयामी~5 वरानाः। वहा -श्रम्म-प् सन्भारका बारः शतकः। स॰ **-भाश**-यक्तमा । --देना--यक्तमा ! --मार्मा--प्रस्ता स बनाः सबसाः। —में भागाः-वद्य शोवाः परेतित होता। भारतम−प फा•ो शेंहपर पड़बतेका एक नहना। सिर्ए बरतर क्यप । भोदार्वित−पु [का]कादाकाशः सोशिश-मी कि रेगेस-1 क्षोक्ती. काची—प॰ श्वोतिकोः गुवरादी अक्रमेंचे स प्रवादि स्थानक जाक्योंकी एक उपवादित क्यार्टका बक्रमें बननेवाने ब्रह्मयेंकी दह उपप्रति है क्रीशीका-दि बोधने मराद्रमा सावपूर्व। जोप-प+ (et+) प्रका भारामा मंद्रक्षि मौना हैरा। ⇒ ਵਰੀ ਘੇਜ਼ਕ ਹੀਜ਼:ਈਨੀ। बोपल~४ कोपच:~सा [मं] १० 'बोप (प्र°)। जीपा-सी [मं] भी। कोपिडा-मा [गं] मा; दक्षिका स्पूर । क्रापिता क्षेपित−श्री [सं]गी। को हरू – स्पी स्थो वः प्रतीशाः स्ति । जोडन हे - सी देशसे अं भिना सोडा प्रतीका जोइनार्य-म कि देखना। राष्ट्र हेमना अधेवा सर्वत सीवमा । आहार~मा दे° 'तुरार । प्र शेरर । वीद्रारमा-ध कि देश स्वारमा । व्यक्ति-अ॰ भी वरिश्वयों। व्हरिरक्षेरिर-९ याचना रगतेका तस्माना ! र्वीरे≉−व निवद शासनास∤ जी-पु रशेको कमन्या एक मनाव विगम लाव गरि क्यमें व्यवद्य अनामार्थे मेहेके बार हा है और जिन्हे यिनवी वनिष्यात्रीमें है चना रक्ष्मा केवा नह रेम विसम्बो व्यक्तिमोके बाउरे भारि भनते हैं। गढ बी रा राहिका माना। -बुद-दि॰ इत तरह इस इस है डोटेन्डोटे बादे बरावर इंदर हो वार्व । -वेराई-में भटर था समाय मिना हुआ भी । -शोश-रि जीरा। व्योग-अ जो वरि, अन्तर जन ! --प्र--अर स्वर, पर् औड, जीमन-पुर समृद श्रुटा सेवा ! ज्ञीजा∽स्त [६८] प्रसी मार्गा श्रीजीयस-ना वित] वामीरर । जीसक-व रै॰ धीटर । जीपिक-दुर्नि । तन्त्रारं वा संद्रका दक दाव । आश्रह-भर्त है ती हम् है। वसन ह बीम्हर-मी दे 'जीम्ह र श्रीवनिष-स्त देश विवर्त । जीवम जीवस#-पु दे 'वीतम'।

इत्। प्रत्यानिकेषका प्रधान शासक । विक आक्रमीती । माक्रिफा~श्री॰ [मं॰] माध्य सियोंका सुक्षावरणः चेवरेपर शहरोही बाही। बींब: विषया बाह्मेका बना कवना मस्त्री। सोहा कें,काः वस विशेषा व समूह जास । जालिक्यी-न्यी [मं] निक्दाकाः सीर्यः प्रमध्में दीमेनाना होश । शासिम-दि [अ॰] ज्स्म दरमेगाना, वायाचारी; मृर । कास्तिमाना-वि नत्याचारपूर्व।

जास्तिमा∽वि जारुसात्र । annal — वि∗ नदनी झटा (दरतायेक, नीट वादि) । स्ती बद मात्र बिसम जान पीछे छोटे-छोटे छेर बमे हो। ऐसी

बनावरको कदभी या परधर जी वित्रक्तियाँ माविमें जहा प्राप्ता है। ऐसी बनाबरका क्यका जो असकरी आविके काम भाता है। यह क्रुनेश किममें अन बुटेड़े बीचमें छारे छोटे छेर हो। भाग वान्त्रियो गुरुडोपरके रेश । - वार~ वि क्रिप्रमें बार्टा हो। **-स**ट्य-स्वीद-पुरु एक **ए**का बिस्**द्धे तुनाबट बालम्हीसी दोती दें** ।

आमी(सिन्)-नि [मु॰] मिसके पास बाक हो। बिहर्ने बासदार गवाद हो (महान): शेखा बेनेबास ।

बास्स-वि [सं] निष्द्रर कठोरा विचारशीन । तु० बष्ट व्यक्तिः सीच मादमीः तुरा धाठ करनेवाका ।

काइसक−ि [सं•] देश क्मीता।

आस्य-पु [तु•] द्विव । वि जालमें फैंमाये बाने योग्य । प्राथक-प महादर करुक्ताः।

आयत−ि भ वे वावचा आवस•-पु रं• बामन ।

भावन्य-पुसि विशेष स्त्रीश सीमका।

याया-प पूर्वी एदिवास्त वर्व वहा डीए, वक्टीपा शहाव बमानेक। मसामा ।

आविद्यी~त्री जायप्रस्था क्षित्रका भी महासे और दशा-42 रूपने द्वातमे लावा भागा है।

पापनीर-शी दे 'मधिनी र

आसुर-सर्वे विमन्त्रः।

जासम-म जिपका भेग (जेनामा, जनराथ बाहिका पता त्तवानपाना सगरिए।

प्रामुमी~श्री बायुसदा शाम सस्रविरो ।

ज्ञान्पवि-त [भि] तमार (वे) ।

बाइ-द (का) परा प्रतिका। गार्ष । -य जासाल -व इसम-५ दान-साध्य ।

जाहरू-पु [में] पींका साहा रूपनिमानक्षी आनिया एक नेर महार ।

माहरण-रि दे शहिर ।

फ़ादिर−ति [भ] प्रस् शुना द्वमा बु≉ बाह्य स्व । -क्रपुर-वि मध्य जाहिए। -ब्राही-की दिलावा बनावर । -परम्य-रि अपरी बाठीवर दक्षि रुग्रनेवानाः बग्दीक्षे मदत्त्व दनवानाः दुनिभावातः। -वत्त्वती-वर्गः अविश्वारत केला दुनियान्ति । -चीत्-पु धीवनीध वश्चित एक एए। नकीं-दि कपरी वालीको ही हेराने स्टाच दे राम्पाः -वीकी-सी पाहिएकी कालाः। ~व वातिम~नाहर भीतर, बक्द और मनदें।

जाबिरा-व कपरसे देशमेर्ने प्रकटत[्]। जाडिरी−मि कपरी नाहा रिखाक। काहिस-वि [श॰] वदा वदा गेंदार I **अव्हिली-सी॰ शदता मूर्मता।** कादिकीयस-सी॰ जाबिक दोना अदनाः सरवर्ने रसकाम

की रहापनाके पहरेका कारण। जाही-स्पै॰ एक तरहर्की पमेठीः यक माविद्यमधी । बाळवी-वि० सिं•ो गंगा (बढसे जनमें हुई)। र्जिगिनी-सी॰ [सं] प्रमीतिमी र्जिगी।

किशी-मी० सि०ो शेविया ।

जिबसाधी-सी॰ (फा॰) विदर्श । हिंदगी-स्वे [पा] बीवन, बीनिट होना, मासु सुबी वता। -थरपा-वि भौवनपरा रक्षतिरायक। -भर-भ भागीवन । पुरु ∼धन्यर करमा~प्रीवन विदाना वायनवापन करमा । —म मीतका सम्रा चस्रमा—१६त कुट भीगना । -से बेजार हाना-जीनधे ७१ जाना

प्राथमसे मृश्युको अधिक पर्मर करना । ज़िहा-वि• प्रि.] चौदा हुआ जीविदा सुर्वाव: प्रप्रमन हरा-शराः वसती, शुन्नाती ह्रई (भाग)। - क सद-वि बनर । - बरगोर-- वि॰ जीव पूर ाी बीरे पुर भी एत बन ६) । –हार-वि० प्रीता रहतेवाकाः यागतवास्त्र । -विक-दि॰ वैद्योदः अस्यनिकः स्तरावी । -विक्री-छो॰ विवादिक शाना । -पीर-प्रवह प्रदेश की बीवन में हो पत्र सम्मानक अधिकारी हो । -बाल-बीटा रहे ।

-बाध-जीत रही !

जिंदाना−स कि दे विनाना'। जिस-न्ये [स] बरता स्वापारकी भीते। वस्त्राः सम्वादः कामरणा वर्ग किरमा क्रिया जाति। परिवादा ध्यवद्वार गणित (भंद-परिच) । -लागा-प्र मंदारपर । -बार —वि वर्गकै अनुसार । प्र परवारियोद्या एक ग्रामा क्रिममें प्रमुक्तका विशरण शहता है। **-पारी-म्मा॰** शार्म

बरन । विभागा १ – सः विकामा पालना । जिद•-प्र•े -गर'। सु• -तपमा-दे जी बहना'। जिडकिया-प बोहर वन-पर्वतीपर प्राप्य बरता (बरनरी)

शिकामग्र १०) लावर नेपनेपाला; रीपनारी। जित्ततिया-मी भारियम-पृत्या अस्त्रीको हानेशका हक मा निमे क्षण पुणवरी नियाँ स्थान ह बीनपुनिका वनः सम् वन्त्रे पदना प्रानेशनः काव-पी-४ वापदा संदा । क्रिक-प्र [भ] प्रथा। वर्णना स्मरणा है वरदा नाम शते दुए रमरण १ – अञ्चल्र – दु नर्ना। – (क्र)न्यद्रा– दु भगवत्रमरम । -दौर-प क्रिगेट कारेमें भारता बाउ

क्षमा । क्रिक्य [में] प्रक्रमध्य

जिमसिपा−सी [र्ग] जानेंशे इत्छा। जिसमिषु – वि. सि. हे जानेक्ष रच्या करनवामा ।

जितार-पु का विषय बन्या बीरट, दिग्यता मार भाग । -गरराधा-वि विगरको धान पाना अति इ-सार : - वासा - ० = - प्र देश (ना) : - मोज-वि दिन जनानेवानाः । सत्रता । स्० -- स्वाय द्वारा--

ज्येष्टाभग-ज्यास्ट नदी नहिन, सकक्ष्मी, दरिहा गंगाः विश्वली संग्रहीः क्रिपरमा । क्येष्टाबास-पु [सं०] गृहरशासमाः गृहस्य । क्षेष्टाभर्मा(मिन्)-पु [सं] गृहस्य । क्येष्टी-सा [धं•] छिमदकाः क्यों-भ जेसे, जिस दरहा जिस क्या। -प्रश्रॉ-२० कीने-बैसे जिस क्रमसे। -स्वॉ-ब॰ बैसे-रीसे, क्रिसी सरका कठिमार्रसः । [-स्री करके-क्वोत्त्वो ।]-ही-स वेसे **धी, जिस सम । ग्र॰ −का त्वॉॅं**--बेसा वा वैसा हो । क्योतिःसाध्य-पु [सं] क्योतिर्विया । क्योति(स्)-सी॰ [सं] त्रकाध, रोधनी। भी। स्वा नदामः अधिः ऑसकी पुत्तशेषा मध्यविदः रक्षिः जारमाः चैतन्तः प्रवोतिषद्मातः मेथाः विवृत् । क्योतिक्र-- दु क्योतिकी। क्योतित-वि+ [सं] पुरिमान् प्रकाशित । क्योसिमाम-वि दे विवेदिश्मान्। क्योसिर्-'वर्षातिस'का समाधगन रूव । -इंग,-इंगज-पु जुनम्। -शक्-पु नयुश्रयेटक हारायम्। -श्रीमः ~वीज~पु• जुगन् । ~संदक्त~पु• नद्यवर्ग**न्छ** । -सिंग-पु॰ शिवा शिवडे सुक्व-सोममाब महाझार विस्तेत्वर, मरिकार्जुन ऑकार, देवार, मीमझंद्रर, व्यंवद्व, वैषनाथ नायंपर, रायंपर भूग्लेक्शर-का १२ कियोंमेंहे कोई। -स्रोक-प्रभावतोका प्रशंस्वर।-विद्याति)-नि , पु न्वोविपशास जामनेवाका प्याविधी ।-विद्या-क्षी पर्वोतिपञ्चासः । महस्ता-स्वो॰ हुगौ । क्योतिसंय−दि सि क्योतिसे भरा बना यनिमन । स्पोतिशक~पु [मं•] नक्ष्त्रोरे पुच राधिय**र** । क्योतिय-पु [मं•] ग्रह-प्रकृतिको गति शिवति वादिका विकार करमेवाला झाल (गणिन क्यो)। प्रबन्ध्यप्री भादिके शुभाराम कल वतानेवाला द्यान्त (फलित क्यो॰)। वयोतिपिक-पुर्व [मं] स्योतित जानमेशालाः क्योतित पदमदासा । वि. वसीतिष-संबंधी । वयोतियी-मी [मं•] प्रदः मध्य वारा ! उद्योतिची(पिन्)-वि , ह [त्रंग] बनोविषदास मानने-बाका, देवद्र । क्योशिएक-तु [सं] यह, मधनादि। विवक्त मेरकी एक चीती; मेची; देवनाओंका वह वर्ग जिसमें सह-सक्षव रहाँ-मंद्र धादि भात है। क्योसिएका-स्रा [मुं॰] क्योति मनी नना सास्त्र्यंयनी ।

क्योतिष्टोम−g [म] श्रविष्ठोमका गंरवारून एक वद्य । ज्योतिदना = न्यः वदीस्स्ना । उबोतियय-दु 😣] अन्द्राय अंतरिश्च । ज्योतिष्मसी-वि॰ ग्राँ॰ [मं॰] क्योतिर्मेशः । ग्री सामिः मालदंगनी एक नदी। [मं•] उदातिमेय आनीह क्योतिप्माम्(भन्)-वि मुक्त । तु नुन्। प्रभूपीयता यद पर्नतः प्रकादा गुनीय नानः प्रनमके समय करित होमेनाने सात न्वीमेने

अबोसी-'रबोतिस का समानगत रूप। -रथ-पु

नधका एक सर्व । -रस-दु एक रत्व ।

क्योरस्ना-सं:॰ [ई॰] पाँरनीः पाँरनी राहा राहे की। -मिय-पु॰ क्योर । -बृश-पु॰ रीवर । क्योरस्त्री-स्वी [में] चाँदती रात र अधोक्सेश−पु[ई+]पंत्रमा। व्योगार-सी० रसोर्गः वात्र । क्योद्दत≠~पु नात्मदृत्या । ज्योहर-पु॰ दे 'जीहर । उयी•—स वरि, अगर। क्यौतिय-नि॰ [मृं०] क्योतिक मंत्रेची । वसीतिषिक-पु (ए॰) स्थोतियो । ज्यीत्सन-वि॰ [तं] चंदिकायुक्त । प्र सुद्र स्त्र । ज्यीरस्मी-बी [नं॰] पृत्रिमानी रात् । क्वी**नार−श्री+ १** 'बेननार'। उदर-तु [t] एड सापारण रोग जिसका सुस्व न्द्र' अरीरको शरमीका स्थामानिकने अकित हो सारा है E% <u>इसारः भागसिक इस, क्लबना (द्रायम्मर) । - इस्र</u> पुर करान साथ होनेवाले प्रदश्य । लध्य-दिश्हरा मासक । प्रशुक्त बहुमा । - विकिन्सा-सी^० मर रोगका इकास । --इंग्री-को सेनिहा। स्वरधी । जबर्राकुश−५० (तुं•) यह तून हो कुछ वैसादाता ने एक भीषप । ज्वरांगी-स्त शि] महरंतिहा। क्यरतिक-पु॰ (सं॰) यह तरहका सीमा आरस्ता शि व्यक्तिमञ्जू ज्यस−ती [6] स्तरः + सृत्रः । उचराविसार~पु॰ [मं॰] इनर**मुक्त श**तिमार रोप। क्वरापदा—श्री॰ (एं॰) विस्तरमे । अवरितः, उपरी(रिक्)-वि+ [सं+] स्वराहर्षः । उपरीक्-प के 'ज़री'। ज्यालीता—वि॰ वक्या द्वारा प्रशासना स्मर्था अस्क∽ि (शुं•) बढता ह्रमा । पुस्ताना । ক্ৰেডকা—স্বাঙ (ri) প্ৰাৰম্ভ চণঃ। उपल्लन−पु [रां•] अकता। प्रमुक्ता। नहीं। वितस हैं की संस्था। वि॰ कनना हुआ। बमरना हुमा। -इरे-पु॰ विनगारी स्प्रतिम । क्यनमारमा(रमम्)−पु॰ [तं] स्र्वेदांत स्ति । उवस्तित-रि [मे॰] बका हुआ। जनता वसना हुआ (हैं।

उबस्तिमी-मा [र्!+] मूर्ग सना मरीहरूमी ! ब्रवानां−नि पुदे केंदान ! ज्ञामी '∽सी दे' ज्ञामी' । क्षार-मी सरीफड़ी फसलों होनेवला हट हैं^ड अनामा चॅदलके जार्राजके कारत मनुरहे वन्छ। उन

बहना माहादा मन्द्रा । -- भारा-पुर महरदे प्रण कहर प्रदेशा और दिस् भीच भाषा चाल उन्हें र ज्**भारी!** –प्राप्ते सभारी ।

उचाल−तु [तुं] क्लाना महान । (र जन॥ऽ^{हर} ~मामी(लिप्)~वृत्र्ंः क्याला-स्री [लंग] जागारी सपर अधिनशा गाप. रही

तुना हुआ शासक (अध १) । - जिद्ध -ध्यत्र-इ^{० बाउ} ~सुर्गा~मी दह रोडम्बामा श्राप्त कारा स^रगा न^स

रमार्गरीके निमा किया हुआ संमीत । बिना (मुहम्मदमसी)-पु॰ प्रसिक्त भारतीय मुसकिम नेता (१८७९-१९४८), बगातार वर्षे वर्षोतक सुमुक्तिम क्षोगके अध्यक्ष । पाकिस्तानको स्थापनाका सक्य अव भाषको हो है। १९४७ में पाकिस्तामक प्रथम गवर्नर क्रमाक वसे । क्रिकि#-अ• दें• 'अनि । क्रिनिस∽को दे बिर्ख'। क्रिमेंद्र-प॰ [मं॰] एक तुब्हा एक बैन संत । जिल्लाल−पु० (थः] जिन'का वधु० । तिम्नाती–दि जिन या निवातका। ~एक्ट−पु॰ यह क्षिद्धाषट की मुहिन्द्रमसे पड़ी बाय । क्रिक्की−पु जिसको सामना करनेवासा, विनको वसमें ब्राजेशका । दि० दिससे संबद्ध । जिबद्र-५ गला कारना इलाड करना। क्रिमीस−५ (१९का य% फरिस्ता (मुस्ह॰) । जिस्हा । – ली कें विद्या जिमसा-वि यरोर विहासानुग ! ত্ৰিম্যাদ-লাও ইও 'বিছা । जिमाना-स• कि• गाना रिकाना । जिसिश-म जैमे. जिस प्रदार ! जिमित−५ (सं•) भोजन । किस्सा-प्र• [भ] प्रतिदा किसी बतके करने किने जाने-का भार। बमानतः विदुर्रगी । -(इसे)वार-वि बनावः देव ! -बारी-मोश क्यापरेष्टा !-बाद-विश् क्रिमशार ! च्यारी=सी+ जिम्मेदारे । सु+ =सेमा=(क्रिताकामका) भार उठाना, दाया भरना । (किसीके जिल्ला-किनीके कपर माम इशने-करना छगाना निकालना ।) क्रिक्सी-५ [अ] इस्टामी राज्यका गैरमुस्क्रिय (बहुक्र दितार) प्रमानन थी जिनिया कर करा करे। बिपर-पुरु मी भीत्। - यदा-पुरु अहारा। जियम • - पु • जीवन । जियरा≉−प्र कीर । जिपॉक्सर∽दि॰ (फा] शानि इरने या पर्वेशानवाटा । क्रिया-स्ते [ल] नईहा प्रदाश प्रमा रक्ष्मी क्रीते। कियादत-स्पे [म] श्रिक्ताः जस्य यस्त्रीताः। तिपादती-स्रो॰ दे हिवादन'। क्रियादा-वि+ [ब+] क्विक, बहुन काशिक । -शौ--वि षद्व वाननेवालाः, वस्वासी । -शर-विक अविस्तर । ─ससद~ि मधिक पाइने मांगनेवाला कामी । हिपान~५ [का] शनि मुद्दगान दोश। जियामा - स कि वे विभाना । जिवापाला - प्रचार पर्याप्त । तियाप्रत-सी [सर] इसन भावनी नास्त्राह कान्दित वियास्त-स्थे [अ] मापुन्तन देवमूनि आन्दि दर्शन बरमा या रामार्थ जला। तीर्थशामा । -साह-प रधेने व स्वाम दर्गाद ।

क्षिपारती-वि दण्याचे विवादत वरववाता ।

श्रिकारी -भी औदना औदर जीविका ।

की पंचानत । जिस्ला--पु (सं•] भीरा । तिरह-न्ही॰ [ब॰ 'जरह'] चीरा, बाब; व प्रश्न की प्रति पद्मी या असुद्धा वृद्धील ववालको समार्थ आँचनिके लिए बरे। शिरड-ली॰ [फा॰] कीलादकी कदियोंका बना <u>ह</u>मा करन ! ~पोश-नि॰ सम्पर्धारी ! ज़िरही-नि॰ कम्पपारी । पु॰ क्वयपारी सैमिक । किरामत-सी [म] सेती, किमानी। -पेसा-नि॰ कविशीयों सेक्षिकर । बिरासी - सी॰ दे॰ 'बिरामत । जिराक्रा~पु॰ [श 'कराफा'] सफ़ीकाके वंगकोंमें पाना वानेशका पद्ध बानवर जिसकी गरबन और अगकी शेंगें करश्रेशी भीए धासपर वद-वड़े लाक-पीले वा मुरे भवन शीन है (भीवाबीमें यह सबसे छंत्रा होता है। मरसी कवार्र हो क्रमी-क्रमी १८ दुटहे भी मनिष्क होती है)। क्रिरिया−५ वक्र वश्विवा भाग । किसा-सी॰ (स॰) चमक ओप गाँकप्र: रमप्र गाँजश्रर यमकानेका काम । -कार,-साझ-पुर जिला करने-बाह्य, दिससीगर । क्रिका-पु॰ (अ॰) पहल्क पाया वैद्यका विभाग प्रदेश बांत वा शुरेका वह भाग वा डिपटी कमिटनर या कक्रवटर के शातक्त 💶 'हिरिट्रवटः इ.थर्वेड बाठ व्यंग्योक्तिः जगन।−अन्तासन−सी बिना भटसरका दबमास क्षप्रदेशी । -- अफसर -- पुरु क्षप्रकार । -- क्षप्रदेशी -- स्मेर दे 'तिका अदाकर्त' (—श्रज्ञ – पु विकेदा प्रयास स्यापा: विकारी 'हिरिद्रका सत्र'। - अस-स्त्रीक, प्र जिसन्ता अक्टाना । -वोर्ड-प्रश्र विकेके मनिविधोका मेण्य बिसता काम विकेश संबंधी शिक्षा, स्वारध्य आदिया प्रश्व बरना होता है। -मजिस्ट्रेड-पु विशेश प्रवान मर्वशिकारी । -(के)दार-पुजमीनारका कारिया जी गर्ववका कमान बम्बन करे। महर महक्तमेका एक कर्मवारी । ~बारी-को• विकेशास्त्र पर काम । मु• -बोसना-इयर्बंक नाम कहना न्यंग्योक्ति करना १ जिलाह-५० (में) माधीन कालका एक नाजा। जिलामा-स नि॰ मरे दुमको निया करना। शहना पोमणा घरनेम रयाला औषन हेमा। जिसाह जिलाहाण-प्र जारिम अत्यापार करनेराचा । जिस्द-मी॰ [बन] सात्र खबाः पुरतहरी रहाके निष समायीः विपतायी हुई देशी आहि। पुरतक्रमा समय सिना, वैवा हुमा गरेश पुस्तकती मति । -तार-पु है 'जिस्त्वंद' । -बार-वि॰ विश्वादी विश्वद नवी हों। -वंद-पु विश्व वॉपनेशाला । -वंदी-मी ब्रिप्ट-वॉपने बनानका काम । ~साहा-मु हे 'बिश्र'रंह । -माधी-को दे विध्यरंश । ब्रिस्टी-वि बिश्रका स्वचा या गालका (रीय मारि) । क्षिप्तन-ग्री॰ [w] बेरघरती हीनवी दुर्ग । स्॰ --**बरामा-**मध्यम् अस्मानित् होता । जिस्होरां ~पु० एक मण्डा मग्दर्भ गान । जिल्ला है भी रा श्रिरगा~९ (काक) धंतरो समाना श्रुटा घरदरी परानी- | प्रिवर्गिनार्ग~स कि दे प्रमाना र

र्सेवाना-म॰ वि ॰ कुछ स्यादी का बाना; मुख्याना; काव-का अध्यक्त दुलते कंगना कोवछ, क्षेगारेपर राह्य पत बानाः घटनाः स्रोवेशे रमश बाना । स॰ कि॰ स्वासी का देना। भाग डंडी करना। धराना। शॉनिसे रगक्ता वा रगइवाना । र्सेवायमा २ – ५० कि० दे 'नैशाना । मेंसना~ए कि॰ इंग्या भोसा देखर, वेबकुफ बयाबर पैसे है नेमा। सिर आदिमें चोरे-चोरे तेल महना । श्र~प [री॰] रोहानाता अंपका तंत्र हराके साथ वृष्टिः बहरपवि: बैरबराजः 'हान-दान'को बालावः वाकः ग्रह बस्य । शह शह - सी दे 'शाँवे"। शरहमा!-प्र मित्री बोनेका क्रिक्रण दीवता । शक्त~श्री • सन्द सम्य भुकः दहदरा¥ः ऑच सापः देश 'प्रव' । दि भगवता द्वा सकासक । - केन्-प् सक्देख । शक्सक~भी इधार, स्टार ! शक्तका-नि॰ चमक्राह चमकीका । ~हर-सी॰ समस् । सक्तीर "पु॰ क्षक्तीरनेका भाव, तक्तीरा। क्रॉका ! वि॰ शक्तीरना-५० कि फदकर जेरहे दिशमा *सरहा* देमा ! शक्रमोरा∽द शक्कोरनेदायाव भो दा / सक्सीस्मा∽स॰ क्रि दे 'शक्जोरता । शकद्र दे 'शक्ष । शकना - न दि श्वस्तार शामाः वश्वशामाः सपलमाः प्रमण करना । सदान-विवदे 'तक'। **इत्काहरू-वि॰ सून** शाङ और चमक्रण हुन। अमाचम । सकरामार-म कि तनीरा सामा । स कि सनीरा हेता। सकोर-प दे 'तकोरा । सकीरमा-म कि दवादा बोबेटे साथ पर्नेची शक श्रीरने इप नदमा सन्देश गारना। शकीरा-इ इनावा तेन शा का सार सरकार वेशीय दनाके शो हैसे हिण्या शुमना। झमोल~पु**रै** अधोर । शक्त-मा, दि दे अक्षा हाइट्ट-पुरु क्षेत्र शत हवा । वि देश शहरी । शक्ती−ि समस्य सम्तोः नदी नक्क्तारी । क्षवसमा*~म कि॰ दे शी सना ! इस्त-तु दे किया । यो संश्लिकेनो किया ! - बेत-सम्बेग् । -निकेत-न वे 'अपनिकेत । -शाम-व देश शवराय ।-सराम-व देश शवस्त्र । स -मारता-वंधर श्रम करना वंद्य वर्गार करना। मंबदर क्षीला । शारामा॰ - स॰ कि दे शारामा । द्यासी+-सी प्रत मार्थी। शगदना-न कि+(री भारतिवीदा) हमशास्त्रमा कश्याः

इरण्डा-पु दी कारमियोंका बाहरू है, उदरास की स॰ -भोड सना-श्रद**्रहर** सर्देने शता ह श्ववा करनेवाली बाठ करना । सगकास्ट्र-वि सगहा करनेनाका कमहरित ! सगदी-वि सी॰ सगदा बरनेवाकी। झगर--<u>त</u>• एक चिहिनाः • दे• भागः ! सगरमाण-म+ कि De 'अगरमा 1 कागुराक-प्र• देश ¹क्तग्रहा । श्चगराक्ष÷~नि॰ दे॰ 'क्षपदास: 1 संगती-वि की है। मगरी र इस्स**का**च-प् देश्रासयो। झया-त (श्लोंक) श्रेश क्रशा संस्ता। झगहियाः झगुकी-न्यो अया । सम्बद्ध सम्बद्धर-त भीने हैंदबा छात्र पदा होगा। अस्त्री-सो॰ ऋो दौरी ! जनस्क-श्री कञ्चलोदी किया वा मानः दे॰ विकरो शक्षकन==ची रे॰ क्रम्क । शशक्ता-म॰ कि वकावद सूत्र होस्र शरराने, व बारते रोजने सम्बाध मध्य स्थमा है शिल्पमा ससकाना - स॰ कि॰ क्रियोके ग्रहकोका भारत होता। झक्षकार-की | शक्कारमेको किया वा भार ! सम्बद्धाः एक मि. हर्तसन्ताः हुन्छ स्परमा। समिया-ची॰ दे॰ 'शिकिया'। सर--वर बहुत बस्द तुरत। -पर-४० ता पर झटकना-सं कि॰ हाटका देना हरकारमा। सेन हैय द्यविवासा वेंडमा । १ व कि देव सरवा । झरका−पु॰ शोलके साथ दिया हवा थहा। (दशक) होन ब्युवक्कित वह प्रकार मिसमें बसूरी सारव रूपी मारिके एक ही हाममें सतम हैं। जाना भारतिक हैं। चंदरीया गोमारी। अवासक बागो हो निर्मात गर् इन्तिका यह रेव । -(के)का मीत-सम्बद्ध (**) बारे इय पहादा मांच । शरकारमा−8 क्रि+ संबद्धी IH क्राइ दियास दि में शुक्र जान और उत्तरर नहीं तुर्व मूठ आहि हर यह शरका हैना । अश-को (रे॰) भूरेजीवना ग्रीमता । शराया-भ अस्तिमे, गरका। सरि-सी [मं] तामा शामा शरिष्टा-स्थी० [मं] शाही। मुहेनोरना । अरहिति-थ॰ (सं०) शाबा हरते। शहर-मी है जहां । शक्कमा-स निरुदे 'शिरक्या ! सदसदामा-स कि॰ हारकमा। विश्वाः पार^{पर्यः} वियक्तर नीमना। सबुम-मी पर थी दिनी पीउने तरदर दिहें। हा दिनाः शुर्वमा वद्शे भागानी । - शुर्व-श्री: हर्न regni-m las gent farei (1919 untiffich em का): बरसमा: (धारनार्रदा) शतमा (बीवन र र नार नक

PORT THREE E

विना, सीवकी भूसकर) दूसरी बादमें कम बाला व्यालका दुसरी और पक्षा प्राता। -वदमा-दं दिरू बहुमा । -बहाना-दं 'रिष्ठ श्राता !-बहस्रता-विचडा क्रिसी बावमें संसार दु"रा भूत जाना, प्रश्रवता अनुसब करना । -पद्गाना-चित्रशे दिनी प्रिय, प्रमुश्रतात्रमक कार्यमे क्ष्माना । −विगद्ता~औः मननामाः विम **छ**गसा । -बैठ ग्रामा-दिक दुवनाः विश्वका अति शिव बीना । -बेटा जामा-दिस वंधेन होता बामा मनका स्वेदं मष्ट होता बाना। -- धर भागा--दे दिछ भर भागा⁹। मरकर्−वितना जी भादा यथेच्छ । —मरमा–तृप्ति द्रोना अपानाः धिन ल स्यनाः दिश्वभवदेशस्याः ।--भारी होना-जनमना दाना तर्वायत सुरत दीना। -भिट कत्र - पित छगना । - मतस्रामा - सनकी दीना वसम ह्य काबास दोमा । -में आमा-रच्छा दोनाः विवार करमा । नमें सुभमा, नमें सदमा नभनमें दस जाना । -- में असवा-मनमें दुवना धवना। - में घरना-दे॰ 'बीमें रतना । −सेंबसमा−दिवने वर कर केना सरा बाद रहमा ! -में बैठमा-इरवपर अकित हो श्वानाः ग्रीह कमना । - में रखना - बाद श्यानाः रायास करनाः दुरा मामना । -सगना-दिक कपना । -सरामा-दिक क्याना । -सरा होना-ध्यान थमा रहमा, विजा लगी रहना । "कश्जना "इक्षेत्रा क्रीपना । - एक बाना - दिशा भावकी पाने, मोगनेकी अवल दच्छा होनाः ननमें जीम था कास्टब पैदा इतना। -होना-मन टर्धेक्ना, रत बाननेका यक करना प्राप केना। -काढ जाना -सोटमा-दिन्ये बीव≰ किए दिकश देवन दो बाना। ~सब होना-विक दक्त हो ब अः **दो**ण के याना । −से अन्या−भर बाधा ।

ही-वि॰ (स) मार्टिक, राग्तेवाला । -शकर-वि समझ्यार राज्यसम् । -शास-वि सानवाला ।

क्रीमाजीडण−पु॰ दे 'टी; बोवः

सीमन - पुरे श्रीवन ।

मीहार्य-पुरु [स] हिन्दी मन्द्रा न्वारहर्श महीता ।

र्यागन*−९ दे 'त्री गन ।

मीता-द्र कि दिन्धे सिवेप।

स्रीआ−९ वर्ग बहुमका वृति। स्रीती-भी० वृत्ती बहुन ।

अस्ति चार्चा द्रीतः।

क्षार - । पानु के बारोई में मुद्राम प्रतिशोधका कार्दि में मिन्दारी मुक्तका, भय क्षतका लागा - हार-मी द बार नीन :

जीनता-स हि॰ पुड, मुड मा सल मतिवीयिता जा मै गड्ड या किस्सीको इराना जननाम करनार वसना करमा नामे लागा (मन १८व जारिका) ।

जीता-(६ पीता दुत्रम् विमा शन्त वा नाम । चोता । विदे (मिता) । (व्यं भीती))-जामता-(६ माना-पंग महत्त्व माना-पंग मान-पंग माना-पंग मान-पंग म

विद्या रहते हुए, मीन्द्रसीमें। विद्यामर । --भर आधा-मीक्स को बाना, किमी मारी चीक, बाचारते मनका मन्द्रपता भिरामंद्र, निस्त्याद हो माना । सीते मरते-क्रिसी तरद वहीं बढिनारंते । सीते रही-वदुन दिम क्रिसी (बादीमांद्र) ।

बीवाख्-पु भारारोग

त्रीति—गो॰ [त] विस्ता धृति द्वर । जीव-दि [नं»] चीर्ण, श्रीण स्त्र [दु॰ यसस्त्रा सेता । होति-दु [का] बारबामा बाडी। प्रमाना प्रद मीरा कार यदी स्पन्त । —पोशा—दु जीमडे क्यर एकत्रैका हाकरवार क्यार गुरू ।—सवारी—मो चीरकी सन्नारी

के काममें जाना। —साह - वु श्रीन बमानेवाला। इतिवद्य-सी [ब] सबाबर, श्रीमारा सीमा। - सहस्र-वि॰ महक्की सामा, श्रीमारावस्य। सु॰ - देनाः-

बाइमाना-श्रेमाररूर होगा होगा सामा।
विनान्त्र कि जीवनको अवरवाने होना, ४६में प्राण
वा बीवक बना रहता हिए होता; बीवनवाषा करमा
(किसी वीजरर जीना-किमी वोजके छहारे जीना); मसक
होता। ग्रु॰ जी उक्ता-नारे हुण्का को जामा। एरें
हुण्का हरा हा जाना। जीना दूनर या भारी हो
जाना-जीवमका पाररूप वा ठीत ही जाना। जीनेका

सज्ञा−वीवनका सुरा । वृत्तिग−५० (का] सीधी कोपान ।

वीम-की बुँद्ध भीतर (स्टन बद्दा मोडड माँ वो रह हाम बीर मनुश्वीम बोडमेंथी दिवसन हामन है जिहा रहना बदामा क्रम्मकी भीत जिससे तिस्ता नाता है कु - चक्रमा-तरहनरहरू तरह केनेकी हमा होता। -निकासमा-नाम बाहर करना। बदाम गीपमा।

—हिम्मला—पेक्ना हुँद गीनता।
—हिम्मला—द्र जीव जैमी कीर्द करानु भीपायोधी जीमर्में
कौतेयाता कह होगा वर्णोर्ड म्योदी कीर्दारा एक होग।
जीसी—न्या कार्द विश्व वान्य आहेक प्रदार्थ वर्गा बीर किसी जीव कार्द के बीर्दार करते हैं। जीव शास करतेथी
किसा कार्द्र कीर्द्र वार्द्र कीर्द्र कीर्द्र करामका
कर मारा। —क्षामा—दुक्त चार्द्र कीर्द्र कीर्ट्स कीर कीर

जीमर-९ वेष-वैभीनी धारग रहनी मारिके जंदरका गुडाः

व्यविमान्त कि मानन बरमा।
वीम्मन्त मिन प्राप्त बर्गन रहा गर्छ। मानस्वामा
वीम्मन्त मिन प्राप्त बर्गन रहा गर्छ। मानस्वामा
वेनात हुए: देवन बरनेवाला; एक कर्षतः । न्यूर-पु
वर्गतः । न्यून-पु चित्रः । न्यून्त-भो वारक्ष्मे देशा
बीनेवाला भागी (संस्कृतके स्वत्तीयानिकान्व मंत्रीये स्वामा
बान्याला सिक्ताः है। न्यून-पु ग्राप्त संबद्धि ।
वाहब-पुन गर्धि स्वेत्र है वाहतः सिन्छा)। श्राप्तवासवाहब - वाहर(दिस्)-पु गुम्पः ।

जीय॰-५ दे जी अव 1-दान-५ मणपन।

जीवशी-पुद्ग भाषा । जीवतिक-स्था जीवन ।

जीर-पु॰ सि॰] थोरा दुरुदः प्रशास्त्रा । सिर्द

समाका 🗝 'शय जम की भागायः उसका। शमासम- २० 'ग्रम सम करते बुधः भगवा सात । समार-५ श्ररसर। श्रमामा-भ+ कि छाना गेरमा। दे॰ 'रीशमा (म• कि॰ स॰ कि॰ दोमी)। द्यामेका-पुजगहाः वधेगा, जंशरः क बीहा। श्रमखिथा~वि श्रगका करनवाका, श्रगकास् । शर-प [ध•] हरनाः सोधाः। ♦ सी• त्रशैः शशै या जलप्रवाहदी दर्गन: बगाका: आँवा तालेका कृता: अंड । श्चरक्र≉⊶स्रो॰ दे॰ शसकः ३ श्राकना~भ• कि॰ शश्रकता । स॰ कि॰ वपरना । शर-शर चरा वराको शही कगने, पानी था दवा वहसेको श्रीवाच । झरझराचा~म॰ कि॰ 'दार झर ≰रते द्वप श्वना गिरना, बंधना । स॰ किं शरकार की भावायक साथ गिराला। झरम−न्दी है शक्त¹। श्चरमा~४ वहाइये नोचे निरनेवामा छोता निष्ठत छैद बार पट्टा जिससे पूरियाँ आदि छानी जाती है। असाव छानने भी वर्षा छकतो । † वि॰ द्ववनेवासः । **० व**। द्वि॰ ककाराका पर्वत आदिशे मीचे गिरना है। 'शक्ना'ड बजना-'नीक्त शरव चन्नो नागम महें रव करताक भपारे -रधरात्र सिंह। स॰ कि वजाना। मरनि≉-को॰ रे 'शरन । शरनी≉∽विश्सी जिससे क्षत्र करे। शरप≠-को जोठा। वेगा विका सदारा: दे "झरूप"। इस्प्रमा ॰~भ कि॰ श्लोका देशाः शहबना[®]। झरफ#-स्रो दे॰ 'झरिक'। सरवंत शरवेती -न्दा॰ दे॰ 'क्रथवेदी'। झरसवार~अ० कि दे 'शहरूमा। स कि दें∘ 'श्रव्सामा । झरहरना - स कि 'सर शर व्यनि करना ! **झरहरा** ७-वि मूरभवदार आकीदार । झरहरामा-अ कि पर्शका जानाजके नाथ नीने जाना सहराशामा । ॥ जि. शक दिलाकर पश्ची मार्रिको निदासा । मरहिस-मी एक निरिवा । मरा~सी [गं•] तरना शीना। प्राप्तासर-म तर-तर ध्वनि भरते ह्वा तमीने । धरापमारू-अ कि ग्रह्मा इमका करना ! सरिय-ली देश तही । शरिफ•-तो श्री परा। झरी-ग्री (बंग) हारमा शासाः राहीः निष बर जो बाबारमें अनुमा मान के जावर नेनमेवानीमें बाबारके मातिकां वा डैनागरका मिडे। संपि दरार । झरोगा-प्र होरी तिष्की नगर्थ । समर-पु [मंग] शांमा दिशिया कतिनुमा एक सरा भग्माः जॉडन ! सर्गरक-दु [सं] वरिद्या हार्सरा-क्षे [तं] बेरवा: करा बैंगी। हार्ह्म राषती—स्म [मं] गंगाः श्रास्ट्रीया ।

आर्रोरेका-स्तो॰ [ए॰] रे॰ 'सर्दरा'। सर्सरी~सी॰ (सं॰) स्टंस । शर्मरी(रिम्)-प्र [तं•] पिर। सामी कि-त [छ॰] सरीरा देशा वित्र । अर्थ =-सी दे॰ 'शक्प । शर्श-पुरु यह छाडी बिहिया परा। झस्र-पु प्रवासा बस्ना स्रोप; सल्हर कावरा द™ बासनाः सबद्द । -हाया-विश् शह कानेतः बङ्गेशासा । शसक-न्या॰ चमका भागासा द्वानिक नशा र (रिद्याभा मार्गा) । ~बार-दि नम्दोशा। इस्केश-भग्नि चमहचा। मीतरमे पमस्या ति हैनाः बायम होता । शसक्ति≉−र्शा • दे॰ 'रहरः' । श्रसका-पु॰ ग्राका (शस्कामा:-स॰ द्वि॰ यमदासम् सनस्यार स्वर दिसाना। भाषामु इना । • म॰ कि॰ दे॰ 'तत्कारा । सुक्रमेखा-न्ये [सं•] ब्रीसी स्रोधी बासगर्य कान फरफरामेकी बाबाब ! शक शख∽म साम्र, पूरी शक्तके साम (~शिवर्त रेर¹ स्रो अध्यक्ष । सकारकामा-म कि॰ चमकमा, सबक स'(वा) वन बढता, ब्रहाना । पुरु क्रि^३ वमस्रता । शक्रमकाहर-शी जनहा झसमा-स कि (पंता भारि) हिल्लर हरा हर इवा करमेडे किए दिसामा । अन् कि दिसना । शसमस-पु सलमलानेका भाव (-दर्भा) । (रः श्रीत शक्यकाता हुना (महाध) । झस्रमल-वि शतप्ता दशा यमग्रीता। झख्यमाना-थ॰ कि॰ रहरवटर कर्ष मा हरे पुष्ती इसकी रोक्षण देवा। रीशनीय स्मृत्य हिलमा । **अक्टाना=-**भ॰ कि॰ प्रता देवना । इस्सी~मी॰ (वं०) हाँत । शस्त्रामा - ह कि समने या शास्त्रेश बात धारण हासा-ली [मं] क्षा प्रमासीन वहरी है इनकी थीत्री देखी वर्षी। झाल्स स्मा ! झामाझाम-वि यमस्या दुशा समादय। ॥» करी साथ । श्रक्ताश्रमाव-वि जनस्तार । सी राजातन दिस माम । श्रमामा-म० कि दे श्रध्वामा । हात्याचीर-पुण शुक्रहमें ६६४% छारोंने पुना हुन वर्न ह आनकः बार् नोगे । दिन जमकता इत्रा जनावनः शसामको-मी यगधनम्बः। शक्ति-व्यो [मेर्] एक नरहरी हाएते। साम-पुरु [क्षेत्र] बद्ध क्षत्रीक्षर काति। मीदा श्राद्धा व्यव -4'3-30 E441 I इस्तुक-ब् [मेर्च] करतासा हाँस । शहाकी-आंव (वंद) रेव 'हाएक ।

भागा ।

जीवादान-५ (तेर) मृत्यों वेहीकी र

धुर्शक्क मामक पीभा औरक ! वि० जीवमदाता: प्राचप्रद्र । - कस-पु जीवनयात्राः, रहन-सहनका हंग । -मरिता,-चरित्र-पु॰ जीवनवृत्तांता वह पुरतक निसमें क्रिमोद्धा जीवनपुरु निक्षा हो । - सर्था-न्यी १६न सदनका सर्भका। - द-दि जीवनशासा। - धन-वि॰ बोबसका भाषारभृत सर्वस्वस्य (पतिका सब यस पति)। -घर-दि॰ औरनरहार, भीरनदाता । -बही-श्री॰ [हिं] संबोधनी वृद्धे । -अरण-प् जीमा-भरनाः विद्रगी-सीत । ~स्रि-सी॰ [दि॰] संगीवनी वृदी वर्ति प्रिय बरत अतः। -ब्रुक्त,-ब्रुक्तत-पु श्रीवनवरितः। -वृत्ति-को योनिद्या । -दर-नि भोदनद्य दरम बरमेदाला । --हेल् -पु • पोविद्यः, रीजी । जीवनक-प्र [सं•] वह भादार। श्रीयमोत-४० [मे॰] श्रीयनका सेत सुरुत् । जीवना-सी॰ [मं॰] मदा मामक्रे जहा । # भ॰ कि॰ दीना । जीवनाभात-पु[मे] निप। जीयमाह−पु[स] द्रथः अग्रः। जीबनायास~प [सं] बरगः शरीर । सीविमि = न्यां • मंत्रावनी वृही विकामेवासी भीव व्यक्ति शिव बस्त् । जीवनिका—सौ [मं] हरोक्छे । जीवमी-मा• वावन वरितः [मं] मेशाः महामंशः वावीतीः होतीः जीवंती । जीवनीय-दि [मंग] योदसदा आधारकत । पुरु यहः तामा यूप । −शय-दु पुष्टिकर ओवधिकीका यक वर्ग (भोर्वती बाधीकी महा मुहपनी मानप्रमी क्यमक, मोरफ और मर्द्ध)। श्रीयमीया-स्ते [मं] जीवंगी नगा । जीवनीपाय-४ [सं] श्रीविका । अधिनीपभ−न्ये [सं] वहद्याओ गरसको जिला देः क्रीवम्(नृ)−वि [4] जीता दुमा निदा। −सुक्त∽ ने बीबिन दशामें 🗖 मारमञ्जन प्राप्त कर संखार बेपन : पूर गया को । -मुस्टि-मो० बोक्सुकारी मराधा मीनित इतामें ही ५व-निवृत्ति । -शतु-विक भी भीता दुना भी शुरे जैता ही विदाल्हगोर । जीवराग-द बीर। भीवरिश=गी॰ जीवन भार्य करनेको छक्ति । बीर्शनक∽द्र• [मं] बदेरिया । वि० बीरोदा वच बरने-STYL I मीया-सी (तं) चनुर्मे शरी। यापढ री सिरीकी विकानेशको रेसाः जनः वृष्टीः त्रीविद्याः वयाः जीवंतीः गरनेशे जनसरा जीवन १ मीवासून ० - चु और नेपुः जीपालु-प [सं] धुन्तम और चिक्किस । जीवामु-दु [4] मादाहा भीरत अतिमना चुनवीयना क रनगारह को प्रा

सीबाचार-पु॰ [र्स॰] जीवका अभिष्ठानः इत्यः। जीवान्त्र-९ (सं•ी गर्गानार्य । जीवास्तिकाय-पु॰ (र्श॰) और या भारमाना एक प्रकार श्रीविका-स्मा [सं•] बीवनवामाका साथन रोगी वृत्ति। जीजिल—नि• (सं•) पीता प्रभा, भीनंत बीनमञ्जूषः जिसे पम जीवन मिका हो । ए जीवनः जीवन कालः बीविद्याः माणी। —कास्र-पुरु आसु । —क्त -स्वीर भमनी। --माध-पु• पति।-स्थय-पु भीवनकी भाइति।--संदाय-पु• श्रीवनका सत्तरा । जीविसम्ब-नि॰ [सं] बोबित रुपने बोम्ब । प्र जीनित रहनेकी संमायनाः जीवन । जीवितोतक-५ (स•) शिव t जीविरोहा-पुर्श्स] प्राणाभारः चंद्रः सुर्वः समः एक जीवन बाबक भाषप । जीवीतंबर~पु[र्ध] विवा जीवी(विम्)-(व [सं•] क्रीनेवाना (-भे भीनेवासा : देवक समासमें व्यवहत-देशे निरक्षेत्री, गोपबीबी सम भोबी ह)। पुरु मीवचारी । जीविंधन-पु [र्श•] क्कती पुरे रुक्शी ! श्रीवेश-५० (सं•) बरमेपर । जोबोपा चे−सी [सं•] जागति, स्वप्न भीर मुप्तिको अवस्थार्थ । इरीस्स−सी [फा] शीवन विदर्गा । जीह, जीहाक-सी दे 'जीस-' जो न स्पारवें तब दश कीका −रामा । व्यक्तिः सीडीश-सी+ रे 'श्रीम । हैंदै-सो दे 'खरे । त्रेग-प्र वि देशकारक प्रथा क्रमिश्च-नि [सं] परिस्यकः। पुरु योहानः। श्रीमानित का निर्माश करनेताला, हिल्ला क्रमा । र्शिवण−मी (का]ेगित दरकत दिख्या। क्रण−श मर्दरी 'ती'। लाभती - ची दे हुन्छ। समाँ-पु दे भी। लुमा-पुष्ट ने नेत्राही आदिने जीने जानेताने नम बा वैक्षीके क्ष्मेचर रसी जानेवाली कक्ष्मी; जीनेग्री मुठः बागी क्यानर अका जानेशका (शाद्य शारिका) शत्र यह सान्य विश्री कीदिबाँने शत्य जानेवाला वग नरद्वा शेन-१ 'र्न् । --तामा-पु सुधाशनमेका धहा। -चोर-बु जीवसर माग जानेशना नुजारी। धी-स्वात । -वारी-सी वीमेसाती। जनाटनार्ग−सः कि नैन स्त्यारिको जुरमे नीतना र्वापना । भूभारी-५ जुगाधैकनेशला। प्रभार-की देव आर १०५ रेव 'जुनारी स्मारा-भुक्षे अपारभाग । जीशासा(सम्)-५० [1] ीर देहरम नैतम स्वटि मुभारी-पु नुमा शेन्द्रेशमा १ सर्वे नगी थीरी दें। मार अपीने लगतेशाचा एक शिश 40411

भामियानेसे सरकाकर जकाया बाता है और शिसमें **45**0सी मीमवरियों या वस्त्र भक्त साथ जकारे था सकते है। एक भातिसनाजीः सींदा।—संड-पु अंगल।दे० ! -झंन्याब-पु बीडीके पढ़ों, झाहिबोंका समूद । —व्हर-वि व्हॅरीकाः वना । पु॰ एक तरहका क्यीया । ~प्रानुस~पु॰ बीशका क्या रोहागी और समान्यका सामान ।

झायु--सी० शायनेकी किया॰ (क्रेयक समासमें स्पवहरा)-फरकार भरसंभाः मंत्रीपचारः मंत्र पहकर गुँकना ! -पीछ -स्रो सफाई । -फ्रेंड-स्रो सामगा^{-प्}कना मंतर-बंधर । ⊶बाकी-स्त्रीं देनको पूरी सफाई, वेदाको । −ब्रहार−लो॰ सफर्म ।

झावम-भी॰ श्राहमसे निक्की हुई बीवा शादनके काम भानेबाका कपना ।

झाइना-स कि शरकारना भूक-गर्ज माफ करनाः इरारना जार रनाः मंत्र प्रकर क्रेंडनाः कन्द्रारनाः क्यो करनाः (चेश्से फरू) भीच गिरामाः (विशिवींका पेन) झोरनाः हर करमा मगामा (ग्रेसी बदमाधी मर्मः)। शु शाब-पछोदकर देखना-नायनीक करनाः **ल्**र भावनाता । झाक्-पाँछकर-कुरू श्रवहा ६२%, आइ-बुदारकर्।

मादा~प्र नामा समायो। अक्फि. मैला थ्। अ० ~ **फिरना**-मकरवाग करना श्रीच थाना ।

हाकी-लो॰ देराने पौर्वा वा शावीका समृद्ध एकवें विस्ते इए केंद्रील पीचे । क्षाक् --की सीकी तीकियों माहिका पूजा विससे कुल, गर्द भारिको स्थाउँ करते हैं अक्षारी बद्रमी प्रचल वारा । -कदा-द्र शाक् देशेका बेद्धा करमेवाकाः शंगी ।

च्छमा=प्र वह शार्थ किसकी बम शारको तरह भैसी ही । - बरदार-पु॰ दे॰ 'शाहकस्र । शुं॰ -फिरमा-कुछ बासी म रहना धन मह हो बाना ! -मारना-विरस्कार करना डोकर गारमा (मि)।

सापव⇔प्र• रःप्तः, कीरका तमाना ।

शाबर-इ रतरहा + श्रीचा ! शाका−प्र टीकरा। कुप्पा। चमनेका गोल बाक की पंजावमें

बारा शामनेद दाम माता है। शाहर शब्दा १ साची~की छोग्र लागः।

झास~प्र• ग्रहर्रास मिट्टी कीटकर निकाननवामा **०५**. यंत्रा पद शरतन की भाव भारिये बाल तरकारी आहि

परसमेके काम आता है। • शब्द्या छन्द, भोरीनामाः क्षेट दच्द । शीशीय मि ह-समाप्त

शामर-पु भूनोमें पहलनेका वह यहनाः (ते॰) देशमा तेष करनेकी सिक्षी । विश्वे कांबर ।

सामी०--वि॰ छडिया, भारेवाम । **शाबें-शायें - सी गुबमान जगदी दोनेवाली अस-स**न भावाज इवासा छन्द । सुरु --कर्शा-श्मा वरावमा झार≠−सी असन ज्यारा राख्य दे शावा े

समूद्रा क्षेत्रा। विक निराह निपता सव । -शक-प्र | सिएका-म सि दे के प्रवाद वर कीमा

यक पर्वतमाना जो वैपनावसे पुरानक गना है। एकेन्स्र छोटा नागपर । - झरस-भौ। असन, गरबी। श्चारनां-सी वे॰ 'आइन । भारता!-ए० कि॰ दे॰ 'मारता । **सारा**-त अरगाः स्थः पन्ती धनी धर्म प्रेमंग • हनारी भारि-सी । वि॰ दे॰ 'गार' ।

शारी−मा॰ पानी परसने डाव तुँद धुकाने वारिके कि मार्थे कावा जानेशका द्येग्रीया शतक का^{क्रा} शाही: एक राहा देव र श और-पु॰ (सं॰) हुद्धक्र या बोल स्वानेशका।

हान्छ-द्र शाँहा शास्त्रेको क्रिया। सी॰ परसरा वीतापमा कहरा बचाकाः संगीयक्षे रूपाः वर्रावे ह बी वर्ष दिस शर्मा रहे । विश् देश 'शार'।

शास्त्रप्र-सी देश 'शानर' । **भासमा**-स॰ कि भा<u>त</u>न्धे को बीम्प्रे धरेने देन किनी चीजको उंदा करमंड लिए वरफ वा दी(वे स्वर') झासन्—सी स्टरमेशामा द्वारियाः क्रिनारः वीराण ण्यः क्यानान । —हार-नि शिसमें हालर स्मे है। झासहन्। = अ दिश् । 'शबराबा'। प्रशासित के होर'। शासा-प्र**राजपूर्वीका एक भर**। शास्त्रि-ली॰ [सं] वद गरहको बॉनीः ० सरी। शतः शार्वेशार्वे~को द्रध्यन तकरार। शाबर-पु वै 'धापर ! साबु साबुक-पु+ (सं•) सा≭।

क्षिणम-ध सारस्वत आदानोंकी एक दवडाँवा एक के। शिंगका-पु दे 'हो मा । क्षिमाक-पु [मं] होस्ये । शिंगिमी-म्वा॰ (सं॰) हुदा एक बंतनो रें। 1 विगी-सा [#] भिनिनी मानक **१**४।

र्शिगुस्री ७ – सी • दे • 'शगा' । हिंक्सिम-पु [मं+] बक्ता हुवा बन । शिक्षिया-ना वर बना जिसके वेरे ब बहुतने हेर हैं। और जिसमें दिया गामकर प्रमाना जाता है।

र्विधिरिया-स्य (००) यह झारी । वितिसरीया-मी एक प्रश्न तितिसरिया । बिहारि-मी [में] शीपुर, दिल्ही। र्शिजीरी~न्दा र**क्र** रागियो ।

विंग्ही-स्त वि । इस्परेशा । शिगवृत्ता रिगरमा०-अ कि है 'सम्दर्गा तिशक-स्पी दियक यहका क्रमावनित रास्त्र । शिक्षकता-म॰ कि॰ अब वा सदादे बारू देरे वा

बहुन बहुनमें हिण्हमा दिहबना। भारतमा ! तिशवाद-क्यो | तिलकारने में किया का बाव ! शिक्षकारमा-छ कि बुक्करमा। शिवना। शिवक्या न्य कि बीरनाः परदारमा निसम्बन्धे वर्ग

पेंद्र देशा । शिक्की-मी शिक्ष्य पाय, बाँट, काका ! सिमयां- व एक वारीक पान । रि॰ देन प्रीतः ।

शिवाविशा-की शंबुक त्रमुक्ती। की के में

401 प्रमहाई-सी बॉदनी, मंद्रिका । लुम्द्रैयां॰~स्रो दे 'जुम्हारं । पु॰ चंद्रमा~' मैवा मैया बोरुत अम्हेवाको स्वार्व री न्टोनश्यास । प्रस्य-प्र (का) जावा, वा समर्थक्वा। श्वदासन-पु दे॰ 'बुबराम । श्वक्ती-सी [बंक 'जुनिकी] कतावा वर्षती, (१५ वीँ, भ भा ९० माँ) बरसगाँठका बत्सव (२५ माँ ~सिस्वर जुबकी, रजत क्यंती: ५० वी --मेरिटेस जुबकी स्वर्ट वर्षनाः ६० वी -हाममेह जुरुनी, हीरक प्रवृती) । भ्रदाद+-पुण्यः तरहदी कस्त्री। खुबान~सी दे 'उदान । खवामी-वि देश 'तवानी'। क्रमसा-वि [स॰] कुछ, समाध सुव : पु॰ जोड्ड वास्य ! सुसहर-पु [स॰] बनममुदाव जनता, खाड । श्रमहरी-वि सोय-मंत्रातित, सावस्तामयः।~सस्तनत ~सी **धारतंत्र प्रजार्तत्र राज्य** । ञ्चमा~पु [स] शुक्तभार । −सरिक्रव − न्यां वह मरिवर बिसमें जुक्रवारकी बोपदरमें सामुद्धिक नमान पढ़ी जाय। ~(म)शास-मो ग्रम्बार। -शासी-वि जुमैरानको जनमा हुआ (बुल्लबानीने प्रवक्ति नाम) । सुरू -जुला बाठ दिन-धाँ । दिव चंद होता। फ्रम्मां−पुदे 'जुमा। खुर्बोग-दु दशसाद्धी एक भंगली जानि । हर≠−९ रशर। त्रुरभत-नी [भ] बहादुरी मर्वामधी- शहस (ध्रनाः हरमा॰=भ॰ ति दे॰ प्रुरता; मित्रना-'ठक्मों त जुरी **७**श्यागुर भौर –रामभंद्रिकाः ज्ञसाना-द रे ज्यांना । द्वराध-को दुरायाः शुन्दु । पुरानार-म ति इंदा दोना। सर कि चक्र करना। जुराका-प्र• दे• 'निराश' (श्वका कोश विपुत्त ही नर माँश दोमेंली मृत्य ही जानी है)। ष्ठरापना+−स कि• दे 'जुराना । ष्ट्ररी−सी इरारत। शुर्मे-पु [म] भरराप वह काम वो कामूनमें इंडतीय माना गया 💵 !- गद्धीक्"-प् छोटा नाबार्य मनराजः। -बाइडि-पुथारी अपराव । समाना-५ वर रहम नो दिनी अवराध्य वनकृत्ये

देगा वर अर्थरण।

स्त-गो है। 'न्ह्मा। सुरी-पु [कार्श गर शत । ष्ठशेष−मी [नु]भेशा प्त-पुरागा भरमा। -चान्न-दि ज्व देवसन्। मनराम - दु [भ नुस्कानन] निर्देश्(म्बी)शी क्रप्र⁴र ।

तरमा-भ क्रि निधना (श्वन विधना क्रेसच प्रमुख)। Shar Silk -rel 5 Ila 1 स्टाई--- [भे] रेमरी शहरा संपन्न यहाँमा जः ا کا ٹائے کے مقدمہ سامع

मुन्हाई − ग्रॅंटम जुलाब~पु दस्त कानेवाली दवा, विरेचन । बुलाहा-पु॰ इपहा बुननेवाला, तंतुवाया पानीपर देरने बाला यक बीहार एक बरमाती दीहा। (सी॰ 'जुकाहिन'।] मु = -(हे)का सीर-भूठी वात ! -कीमी दाकी-द्रौद्ध भोकतार दादी ¹ ब्रुस्य-पु॰ [ल] बैठना॰ तस्त्रनधौगी, राज्यारोहम (इरमा फरमामा): राजा, बादधाइको स्वारी: पर्वासे कीर्वीका व्यक्टा दौदर समारीहके साथ कही जाना वा बगरप्रभन्न (निक्रकता निकाङ्का)। **अक्षोक:--पु: धनो**क सुरक्रोह, बेहुँछ । जुरक-सी फा॰ पट्टा काकुस गेम्। --गिरहगीर-सी॰ वृंबरकार वाल । -परीधाँ-न्यी विद्धरे हुए वाल । जस्की-मा०दे 'जुस्क । नुस्स−पु॰ (अ०) अन्यायः जशरतस्तीः अरवाचारः विदः आफन ।-दीस्त, -पर्मद्-दि अवाधारप्रिय अस्ता-चारी ।-रमीदा-वि बरबानार-पीरित । -व(स्मा) सिवम-प अधावार । स॰ -वाना,-वोदमा-अस्वाचार करना । जुरमत-मी [श•] वेंपर() वंपरारक्षे दाकिमा । जुस्मात-पु॰ [म] अंक्झर ('जुस्मत का बहु)। वह अवदारपुण स्थान जहाँ असूत रहना है (मुसन्)। ज्ञदमी - है बालिम, अत्यायारी ।

ज्ञाय-प्र• [अ] अधार विरंपन । खबराज्ञ०-पु० दे 'पुरराज । त्रवा-दु ६ 'हुमा'। अबार-ली है॰ बबार । • प्र दे॰ जिमारी ।-भाटा -पु॰ दे 'ज्यार मादा । खवारी-प है ज़जारी ! अप-दि [सं] शेविता इक्तः ब्राः तिय । दुः जनम

बन्दिर ।

कुष्य-दि [मं]पुत्रव मेथ्या अस्तक्र~श्री (ए।०) गीव ननाय। श्रद्धामार्थ−स . दि॰ १६ड्डा दरना । अ॰ फि॰ म्हन दीना - महासीर मूपिके हारे कारान निम सुहाने - एप-राज विद् **ब्रहार-न्दी॰ ध**निवादनका यह प्रदार प्रदाम ।

ब्रहापना नम क्रि दे व्ह्रभ करमा। ल्ली-सी दे 'ब्दी। जुहुराण~पु [मं] पेप्रया । वि मुश्लिना बरनेशना । बहुँचान-पु [मं] अग्नि वृग्त मिन्द्रुर स्पति । अद्र∽रो॰ [मं] कालसे नरहोदा यमा दुभा बहराय: पूर्व था। - शण - वाण-पु अदिः अल्पुः चं भा। महर-३॰ [अ] प्रस्ट शानाः मुमारश । लहेबान(धन)−५ (१५) भ व १

हदारमा−श जि॰ अधिशालम करना ।

चुँ—हरी अंत कार परीना मरने १ व्यिद्दे वर्ण में पेता हो। मानका व्य मन्द्रा वीश दोल । सुरु (बार्मीरा) - म शिना-स्विधिर धान स बाता होस न होता। र्जेन जेंद्रा-विजिध्या विज्ञा पार्च । र्जिंदग−भी०दे जूला

₹₹~₩

ź

đ

श्चरस्थना-भूठा रम हो कि दीर्व भीज साफ दिखाई म दे, वह समय अब **कुछ-कुछ भेरिरा भीर कुछ कुछ उनाका हो** । झ्टलाना~स॰ वि॰ दे॰ 'शुरुकामा[®]। **प्रसावना**−स कि वे• जुठारमा । **प्रदेग−ि** शेटिवाका, प्रशंकारी । धुउकाना-स कि दे० 'सुरकाना । श्रुक्काना-स फि॰ भूठा सानित करनाः श्रुठी गत कर कर भीवा देना। श्चरवना*-स कि॰ शूरा बनाना । **झुठाई−स्त्री** मृठापन, असम्बता। झराना≔स कि॰दे॰ 'शुरुकाना'। झडासमा-स• कि **र• '**झडकामा['] रै 'बुडारमा । श्चनक∽सी र्रोपककी भावान। द्वमक्ता∽ल कि 'शुन-शुन वजना। पुरंण'शुन सना । शुनकारा*−वि सीवा ! [खं शुनकारी'।] अन सन-प्र• न्पुर, पेवनी शाविके प्रवनेकी शाबात । धुनमुना-पु काठ दिन नारिका क्या सिनीना वो हिकानेसे 'सुन-सुम' बत्रता ये शुनयुना। झनझनामार−म कि फिन-झन व्यनिदीना । स कि॰ 'झम-झन शब्द उत्पद्ध करना। सुनमुनियाँ-सी 'सून'मुन' धम धरनेवाका गहना। वेशीः सनर्दका पीपा । श्वमञ्जूनी - जो श्राथ-प्रेयके यक बावतमें देरतक रहने या द्यनेसे पैरा दीनेबाठी सनम्माद्य । शुपश्चपीर्ग नन्ते • देव 'शुरञ्जको' । सपरी •~सी दे• की पड़ी। श्चयञ्चवी निश्ची कालका यह गहना । श्चमका-पु॰ कानमें पहततेका यक बहना की करनकुछकी तरकीरी सरकता रक्षता है। 📭 शीवा। उसका कृष । समरि-सी [सं•] एक हारिनी। द्मसी लो हैंगरे। विस्ता । श्वमामा-ए कि क्रिग्रेडी श्वमनेमें बहुत करना । झसिरना*-भ कि दे समना[†] । शुक्षर-वि स्तर दुनाः हुनमाः भुरक्षम (गममारती) । शरशरीर्ग - रगे ॰ नडी श्रमारको र्वकर्वेगै । शरना+-अ कि स्टामाः हुम्ब वा विगान श्रीव होना । हुरभूर-पु पान-दम को हुए दे। वा शाक विनदी टानियाँ मिनवर संभन्धा नना रही हों। समहः मंदलीः पार (क्षे इस वरह भीज़मा कि मारा धरीर के बाब ह सरपर्ना=गाँ दे सुरादन'। शरमना र-म कि छ कि॰ दे 'शुक्सना। सरमामा≠−स कि॰ दे शुक्तगुना[†]। सरदूरी-मी दे॰ मुरप्रुधे । शराना - म कि धुराना । स कि शुराना । सरावनां नागं गलनेने बालकी बीलमें बीनशाम कमी। शरी-भी मधनेने (यहरे देह मारिक्र) वानेवाची धिस्त । गुलका-पुप्रवासा सुनना-इ स्माधीशकृता। दि स्मेशना

श्चरूपी नहीं शीमें, गीविपी मार्ड्स पनी शहर दे सवर्में कटकायी वा सकयक्षे भी वैमारी दश दश्री पदमी बाती है। झसमुखाः - वि॰ दे 'ग्रिकविता'। शुक्रयाना-स कि स्थानेका काम कराना। शुससमा−ו कि श्वता बस्ना कि स्तर सारौ जाब, बरतुकी केवल कवरी भागका जनना, भरता होनाः वृप सुना पतन्ते वैद्यो व्याप्ता स्तर रा श्रामा । स॰ क्रि॰ दे 'ग्रहसाना'। शुक्रसंबाना-स॰ कि॰ शुनसनेका काथ कराना। मुख्सामा-स॰ कि वस्तुका करो मान, सन्द स देगा, जबक्या कर देना; ग्रुल्सनेप्रा कारम रोगा। झुखाना~म॰ क्रि शुनेक्षे हिमाना अकेपना र पस दिकालाः वरदापै रखना नामकम दरवे रहना। মুভাৰনাগ-ও॰ কি 🕏 'মুদানা'। द्वास्त्रासनि≉−स्थे भुक्षानेस्य क्रियायामारः। **मुक्तिया~लो वर्धोंका** कुरता *रिपृ*टिया। श्चरांभा श्वकीबाञ्चल सिवीस हरता मृता हरोर सावन । विस्तृष्टनेवाकाः हास्कार्ग-त रिखोंकी एक तरहकी निमान हमी हुन! शृक्रिमाण-श्र किः श्राश बाना । शुक्र-त दे शिका । सीव दे रेकि । स्वाक-पु े शांका । र्वसना •- ध॰ कि है 'ही सना'। सँभव-धी दे संमुशहर। हाँदा-वि स्टा । पु॰ वेंगा वालीक सपृर होंगा । राष्ट्री-स्री होसे चार्थ। शाम = - प्रदेश शक्तमा≠-भ दि भ्रणना प्रद**्**रमा। ब्राह-विपुरिसर्ह'। ग्रुठ=वि भासव मही, अववार्व शहरद दिम्सा है राग्री बाद कारत ।—मूर-व बीरी क्यार हैरर -सच-पु पुछ सरी और हुए सची बाद हाउँ ही सक्से शिपही। सुरु —का दम्पर-मनम^{न्}र रण रे द्यम जो बारिने भेनजद सुर हो। -शा पुनमा-म सूर शक्मेराना यारी सुरा। -वा पुत राज्या श्रदकी गढ़ी सना देना श्रद्धार श्रद दीनवा । नदी दी −शरसर आदिसे वंतन्त्र शुर्धे वात।-वां सर्व वर्ग -शब्दों इस तरह बहना दि तथ जान दत हारी वर्ण सवी सारित कर देशा। -मय बोइना या स्व की सबमें शुरू विकासर बल्या। गुरी शिक्षण बरना । ह्यान-व्याश्रीक प्रान्त । स्टा−िश् वा गय मधी असला, दिस्ता सर् दे^{नी} बाषा, विद्वासाची। नक्ष्मी, बनावी। विद्याद (-देए) न्द्रा । शु॰ -पदमा-(दिगो ६४ पुर्व ना अपर) हर्व दने भावक म रहना स्थार ही काना। -(1) छ है। कामा-सूरा वर जनव जरीन दीता है। -दी कृत व यसाऊ पहुँचना था हो आना-मृदेश शुर रा बद गारित बन्द्रे को कांग्रस बरमा। न्यों क पहुँचा इना-गुरेनी बावम कर देनः उन्ने धन केर

पुरु एक करना एक राह्नपण । र्यमण-पु [६०] अन्दारं लेगा प्रैकनाः शिलना । जमा–सी॰ सिं•ो दे० 'वसः। र्वभिद्या∽स्त्री [मं] बन्दारे; शाख्यव । क्षेत्रिणी~सी० (मे॰) ण्हावत्री सता । र्जुभित-वि [सं] दिसमें बन्दा सी दी प्रैका हुआ। पीनावा दक्षाः चेहितः सिका द्वमा । बूंबी (मिन्)-वि [सं] प्रमार्थ हेनेवालाः विहसित द्वीनैशन्त । र्जीगराक-पु जुगन्- बेंगशाकी जीति कहा रंजनी किस्त हे -सुररदाम । **केंटिक**र्मन~प [श्रे] हुलीन चरीप नेक आदमी माजना श्रीमहामधे रहनेवाला, धुरुव वेश-धवावाला आहमी भद्र पुरुष । र्जिताक-प• मि] गरम कमरा वा दम प्रधारका अन्त मानम निरुपे गरमी पर्देशभ्दर प्रमोना निकाला जान । अनिर*−स कि दै 'बोमना'। विन-४ शानेको भीत या कार्त । र्जिवना~स रि॰दै 'शीमना । † पु शीजन । विवसार-गी दे जिनतार । र्जिपाशा−स कि मीत्रन कराना। छा≉~सर्व ^दो का बहुका अद्वात नेक्र∜∼सद दे 'बो । अर-मो• ऐस मोद। अदी~सी पानीफे कपर बना हुआ कक्दी आहिका चयु तरा जिसपरसे जहाबपर मान बहाबा-बतारा जाता है। ने स-९ जरमी-सी वहे नाईका हिरमा। वह गाईका वधीनीमें बका दिश्मा बानेका दथः क्येक्संटा । तद-दि भोड बहमें बहा। पु पतिहा बड़ा मार्देश बमाग और असा के बीम परनेवाला खाँड जाता । केरा-दि बना ओड़ शेष्ट। -ई-स्टी तटा दीना नेशायम । खटानी~शी॰ परिकेश को मास्ति की व बही-वि प्रदेश पेटमें होनेहाड़ा (-भाव हपास है)। रती एक दरदायी बदाना । षर्शमपु-पु मु³टी। अटीम जेडीसा~दु पविदे बढ़े मार्ग जेटचा करका । जैतस्य-दि [से] जीवन मास्य वेद । अता^क-- विश्वता । अना(न)∼4ि [मं] तिनेशाल विश्वता । पु तिल्ला। वैतिक • - भ वित्रसा वेतेर-वि (अन्तेर धनार-स विद्या । जनसम-रि [भं] काम मामान्या का प्रपान (-पीरर भारिम -हारिएम ६) । पु. नेमानाबस कारका रक् भक्षमर जिल्ला कर प्रधान मेनापत्रिक नीचे दाता रेर -क्षत्रशम-५ आम पुनार र -अर्थेंग्-५ बान नरक्या विवासकोटा मात्राम नेवनकमा । -संबद्धी-५ प्रयत्न सन्दिः -स्टाक्-५ प्रयत्न

वेगारीय संस्थित संनक्ष

पहले पहल जर्ममीके कांवर विश्विमने बमामा । श्रथ-पु॰ [ल] गरेवानः कुरतं कमीत्र नादिमें रपदे-पैते, वरी-समात कादि रक्षानके लिए लगी दुई बैठी। सीक्षा शास्तिः (विदोधे नद्व शब्द प्राय स्त्रीतियमें शेका जाता है); दे॰ 'तेष । —कट —कसरा—पु॰ जेर क्यरनेवासा पाक्टिमार। −मर्च-प् नित्रो सर्च नित्रो सर्पद्र क्षिप मिकनेवाली रकम ! ∽स्थास~पुरामा वारागावके नित्री धर्मके किए राज्यकीशसे दिवा जानेवाका पन । ~घड़ी -सी वेडमें एएनडो (छोटी) दही। सुरू ~कत इमा-बेद कान्दर रपवर-पेता निकास सेना गाँउ बाटना। −धास्त्री होमा-पापने कुछ न होना, हान खाटी होमा । -मरी होना-इ।भर्में काफी पैसा होना । श्रेष-त्या कि] संदरता, दोमा श्रेगार । दि (समाध-में) को श्रीमा देनेवाका धवनेवाका (गनदेव जामा: वेर)। –दार−दि शुंदर, समलवाला। –द ज्ञीनस्-शी बनाव सिगार सप्तावर । मु० -सन यदन करना-पारण करता, वहमता । - हमा-करमा क्षीमा क्रेयरा-प [बं] यह जंगली जानवर जिल्ही वदमपर भारियों होती और श्रद्ध मोड़ या राघरसे मिनती है । क्रोबा−दि॰ कि।] सबने क्यनेवाका छोमायनकः। नेवाहवा जेवाई-गरी (पा॰) श्रीमाः सुररताः समावत। होबी-वि [म] वेदमें रहते काबदा होता ।-इन्माछ-य बह बनाल को दाब-मूंद बींग्र ने के किए जैबमें रता अव । जनविसा(नेगम)-गा [न] भी(गत्रनदी नेदी जा बारमीरी अच्छी कवदित्री (बयनाम 'मेन्स्पर्रे') थी और आप्रीवन अनिवादित रही। ज्ञान-तु [मं] भीजनकरना जीमनाःभीवन भादारः। जब-दि भि विद्योगीयान वेतना। अर-शी० मॉन्स । क्तीर−म [पा] मीनं तथै । नियम्भोर तथा द्वमा। श्री भरती पारती हिमानामें दे पे आह दर्श माना । - जासा-वु वह ऋषश बिभे धोरेवी पीटपर टाम्प्र र कपर गीव बमुते है। -हाबशील-दि दिवास-भीन निसंपर नियार ही रहा हा, भनियान (तुप्रदमा)। ─व्यम्=वि अपनीर व्यनगरायाः अभीतः --पाई--न्दी जनामा जनीः नना। -पच-प॰ धनरीटे सीचे वीपी मानवारी हारी वयदो । -- व्यंद-पु वद समा जिलका एक मिरा थीरकी मोहरीने और दूसरा नंगने वॉबा जाता है। -बार-वि वाहके मीन देवा हुआ; क्षायरकः भारी शर्वे आवित हानि बढानवाहा । -वार्श-स्थी अस्यम क्षीमा मुक्काना परेग्रानी। -प प्रवर-म जीन प्रपट है। प्रवर-पुष्ट अन्तु व्यागाः वहीशानाः । --माषा-दिः दिनीरी सामा धाधवते रहनवानाः -हिरामन-वि यो हिरामान्ते

< तिशा गया हो। गिरवतार । —हवूसन~दि० अर्थान

श गनापान ! --(रे)ग्राय - अ बजरे । (१० जी बजन

जना~स कि ॐ जीमना ।

श्रद्धिल~प [बी] विद्याल, नुद्धोपयोगी इनार्च बहाब त्रिसे

मोरमा - म. कि. जोरसे दिकाना, रखतीरमा: बाक्की रस वरह दिकाना कि एक शह बायें। प्रशेरनाः र शक्तर भोजन करता। झोरि≠~सी॰ दे 'शोकी'। शोरी • - स्वी० शोली: पेर पक तरवकी राता । क्रोक~पु• रसा; करी: कपहेंके किसी अंशका श्रीटा वा नापसे बड़ा दोनेके कारण शुक्तता कटकना; इस तरह रुटक्षीवाका श्रेष्ठ; सुकरमाः 🕈 बॉक्सः श्रेटः वह हिली बिसमें किएस हमा बचा पैदा दोता है, अराया गर्मा रास-'वेडियर निरह सरावर्षे यहै प्रदाना श्रीस -पश् क्कमः । भारतः । वि धीकाः निक्रमा । -- झास्र-वि दोकादाका । † पुरु वहानेवानीः सम्बद्धाः। -हार-वि विसमें हाल हो। दोकाः रसेवार ! झोखना≉−स कि॰ वणना। झोमा∽प कपडे, किरमिश मादिका वैका शोकी गिकाफ: चीलाः स्टबा, बंगनिश्चस्यर् विरा हुमा प्राक्रिया 🕏 ह्रॉम्हा इञ्चारा । सु॰ -मारमा-फाक्रिज निरना । मोसी~वाँ• वारीं दोने वाँथदर दथि वादिस करदाया श्रमा करहा हो शाके या भेक्षेता काम दे। एकरी निस्तरा

पुरः बरसाः वास क्षेत्रनेक जानः स्वत्रस्य सन् सुरु -सुप्ताना-पीवद वह बहे प्र प्रस्की राख शुहासा। ब्रह्मेका समय बीन बामेडे रहा। मींशर-प॰ मी॰ दे॰ हंहर ! श्रीद-पु॰ पैर I शीर-प॰ संब, समूदा गुच्छा। होत्र, मुख्या वह सार र्शीरमाण-वर्गाहरू ग्रीवमा । सः विरुद्धारम् साप्ट झींदा-प॰ दे॰ 'ही र । श्रीरामाण-अ॰ कि॰ शमवा शीने प्रामा शेर हैर मरामाना । इस्सिनां⇔इ दिःस• दिः दे• दिलस्याः क्षीर#—प्र• क्ष्मला, हासत, तकराना रॉथ मन्तर। शीरमा १-७ कि एक द बोब नेना। शीरा!~त दे 'तीर। सीरेक-म पास मिस्टा साव। शीयार्ग-पु॰ सैविया ।

रमस्वाम वातः!

ह-देवमानरा वर्णमाळामें स्वर्गका पहला वर्ष । सम्राटन

लान मदौ।

छ−रेशनायरी क्लेमालामें क्वर्गका ध्रेषमें कर्ण । बद्धा- | भ−पु+ [सं+] गावनः वर्षर प्रांति की की

सौद्यामा-**भ**+ क्रि॰ ग्रस्प्रेमें आसर रोजना।

र्टक-पुरु [मं] चार मारोकी यह तीना प्रथर कारमे बा गइने हें ऐसी। इस्हाही। वस्तार। स्थान। पहाडी में दाला सीहागा। यह रागा कोचा बर्वा पैरा नीक अपित्वा विकार बरार । -शक-पुर शिव । -पति-पुर दे 'देस्क र्पतः । – शास्त्रा – सी दे 'दंबर-बाला'। रंकच-प्र [सं] वांद्रीका सिद्धा । -पति-प्र• रक्शाल का भाषाय ! – शासा–स्ते मिस्के बाठनेको जगह ! रंकण-प् [सं॰] सोदाना। सँका देना। -श्रार-प्र॰ हीहाया । र्देक्स-दु [सं॰] सोशमाः दींद्री देना । रक्ता-म कि शंका जामा। मिलमा। मिलाई दारा अ:काथा जागा। किया जाना। सिक्त आदिका कुरमा । र्देक्यामा-स कि 'श्रीतमा का में । रंका-५० याँदीको रह पुरानी वीना तोरेका यक दुगना शिक्षा । स्री अंशा श्व शांवनी । र्वेकाइ-सी सॅक्नेका कामा सैंक्नेकी प्रवर्त । रंब्यमञ्ज-प॰ [स॰] शहतून ।

इंडाना-स कि॰ सिन्हरी गाँप क्राना।

र्रेकाना-सः क्रि शेंद्रे सगवाना। नित्र महि पुरवाना ।

रकार-भी [तं] पशुरूती यही हुई दोहीची ग्रीयनर

जलक ध्वनिः जिलाहरः प्रसिद्धिः शामनं (रामा) र्वकारमा - छ कि चलुका रोता सामार मारपर श्रामा । र्दकारी−सी॰ [मं] दक शाही i रंकारी(रिम्)-दि [मं] रंकार करनेशामा इंकिस-मी [रो॰] बाबर झारमेसे ऐसी रती। इंकी-सी पानी तंत्र आदि स्रानेडे हिए बनपा रे वरसके आसारका वड़ा पात्रा पक रागिनी । र्थकोर-स्री है र्रहार । इंकोरमा−स कि दे (कारमा (र्टकोरी, र्टकीरी-स्रो॰ सोमान्तरी बारि ग्रीनदेश हैं र्थम-पु [नं] कुरान करमा। बार मादेश दर हैर भोडागरः बेपर र हैंगई।-सी॰ शेम पैर । र्थनग-प्र मि विशेषामा । हैंगमा-म कि सरसमा। सरकारा जाना। देनी एर पु सक्रमनी । सु॰ हैंग आबा-श्रीवीस प'ना । रैंगरी-मी देश रेवरी ! हॅरिजी-स्में [ले॰] पाटा व र्देशिया-सी धोधे इन्हारी। देव-वि वैवास दश्याः - दश्या ब्होसार प्र छात्रनेते करम मनित् भातुराह भारिकर भागाण होतेते । हेंद मेंद-पु॰ वृत्ता-वाहका महत्वर वेपा (स्टेंहर्ना)

ऐसी बीज जो विपश्चिका कारन हो !-का काश-सतरका काम । मु॰ —उटाना,-छेता-बोशिमकाना काम करना बाति या स्थतिहरू सतरा क्षेत्रे से तैयार बीना । कान्त्रिमी-वि शिसमें कोरिय हो। दो**लीं~तो** ओदिन रावरा ! जोगंबर-५० छन्नुहे भग्नसे बनावकी एक मुख्ति । आरेश- # पु दे 'बीग'। वि दे 'बीग्य'। श ''की, के रिए (बोग हिसी ** से **) । ~सा ** से * 'बायवा । -साया-मी० दे बोगमाया' । -साधन - प्रवद्यकी । क्रोगदा-पुनक्रमा थागी । भोगन−स्थ **दे** जीवन । द्रोगबना≠-स॰ नि दिफात्रहमे रखना। स्कहा करना। ध्याम म देना। पृश करना। भावर करना । जोगान्ह•-पु• याम्ये उत्प**व म**न्नि । पोरिष्क-पुर दे 'वीगाँड I

जीशिम-नी जागी भी हा जोगीकी भी। विज्ञानिमी एक रहते हैं। जीशिमी-नी॰ र 'बीगिनी: > 'जीगिम। जीशिमा-नी॰ बोगको जीगीका गेहक १णका भागमा । बुंबंगिना रेना जीगीका गेहक १णका भागमा ।

आति । न्या है बोगिम'।

कोर्गीहरू-पु॰ दे 'बोगॉड' । कोर्गी-पु दे बागी'; विद्यापीनी गहरन सामुजीका एक भंपदाय ।

स्रोतीहा-पु॰ वर्मतमे पाया जानेवाणा यक तरहका यकता गामा। रक्ष प्रश्नाक पाना वानेवाणीका समाव। स्रोतिहरूर प्रतिदेवर०-पु दे वीगोतहर । स्रोपण-वि॰ दे॰ वोसर्व । -साध-न्यो दे वोस्वना । स्रोजन०-पु दे वोष्टम । -साधा-न्यो० दे वीसन् ग्रीता।

कोट॰-इ जोशासाभा सुंट । वि वशासीका । कोटा॰-इ जाशा मोला । कोटिंग-इ [मं] महादेश महामती कडिल तप करने-सामा ।

वाही —सी॰ नीही; बाह्य साथी । वाह्य-इ. [सं.] १वन १

जोबनां-पु॰ वामन ।

जोबना-स दि॰ दो भीओं हवर्षको यक दूसरे से साथ
रिप्रकानाः सीना सिकामा ब्यादिः हुरी हुई चीनके
दूसरोंको सिकानाः, चैरानाः स्टादीवरी स्थानाः पैरामा
(दर, बाह्यरोः संस्वामीको जमा करनाः निगतीने ज्ञानिक
करमाः बटीरला संबय करमाः गहनाः, मनसे उपबाना
(बाह्यः व्यादाः भयरचना करनाः स्वादिन करमाः
पित्रका नाताः। भेतना । मु॰ जोब जोबक सरनाः
-सेसाचित करसे चन बटीरलाः जाब सरीसकर-मुक्त
रिक्तानाः

धिकत्तर ।

जोक्षणां नि , यु दे० 'जुक्से ।

जाक्षणां नि भी शोक्षणों भी निया भा तजरत ।

बोक्षणां नि भी शोक्षणों भी निया भा तजरत ।

बोक्षणां नि भी शोक्षणों भी समान ।

जोक्षणां नुश्यकती था यक साम कामी कायी जानेताको रो

मो अ साम समी मोनिक से करने हिन्दानाकामा ।

कर्तमां क्षणों भूगा वस्ताता। सोनी सौदा जेतो तर और साम क्षों भी दुरुष सरकत्या। स्याहमें दुविहमके किए

भोजा जो भी दुरुष सरकत्या। स्याहमें दुविहमके किए

भोजा जोनेताक करका नकरिंगा, सामी भारि। जीह । शुक्षणां निम्म समीन जीह । शुक्षणां भी समीन जीह ।

जाक्षणों भी जोक्षणों भून करता ।

जाक्षणों भी जोक्षणों महन करता ।

खाबाई-स्वी जीवनेका काम या घतरत ! बीबी-स्ती बाका एक छाव जीत जानेवाले ने के या घोडे दो धार्नको नाका क्यां। सुगरका चीना संनेदार थोडे दो धार्नको नाका क्यां। सुगरका चीना न्यास-पुर गायकाल्ये छाव मेंबीरा बनानेवाला ! सुरु —की बहक —सुगरकी नीक्षर हाव देखर की बानेवाली के हक । खीक़-स्वीत है जाक !

आह्नू म्लाव ते जाहि ।
आह्नू म्लाव ते जाहि ।
अहि न्लाव ते जाहि ।
अहि न्लाव ते जाहि ।
अहि न्लाव ते जाहि ।
अहि ना जाहि ।
अहि ना ते जाहि ।
अहि ना जाहि ।
अहि ना

जोता~ध जुनादेन नेंधो दुर्व रख्यो जिसमें दल या गारीमें भाग जानेवाने वक्त्यी मरदान प्रमायी जाती दे; दलवादा । जोताई~न्यों जीतनेदी निया या सराजीवनेदी महदूरी। जातामा न्या जिल्लानेद्या काम बरामा।

आतिश्रास्त्री श्रीतः । स्वयंक् वर्मामः दे 'क्यांति । देवनाक्ष श्रीत्यंत्रे जन्मया जानवाना दीयकः । स्वयंत्रश्रीतः वर्माति श्रीत्यं

कारिकः, कारिक्यो = चु ८ स्थोरिकः । कोरियम = चु दे कारिकः । सारिक्यो = चु दे कारिकः । सीरिक्यो = चु दे कारिकः । सीरिक्यो = चित्रं । पद्मीदी कीर्यः । सार्वेदे सीरिक्यो = चित्रं । सीरिक्यो = चित्रं । कोरिक्या = चु विद्या । सार्वे = मेरिक्यो = ।

झोरना-- स॰ कि॰ जोरहे दिकाना शहसारना; बाक्सी इस तरह हिलाना कि एक शह बावें। बटोरना। † हम्हतर भीवन करना । मोरिक-साव देव 'जीकी' । सोरी • – स्त्री • शोकां। यदा एक शरक्षी रोडी । झोल-प रसा स्त्री कपरंदे किसी अंशब्द क्रीका वर नापसे वड़ा दोनेके कारण शुक्रना, करकना। इस सरह क्रस्तेनका बंदा मुक्तमा • बॉबका मोटा वह शिक्षी बिसमें कियदा हुना बचा चैदा होता है अरामु: समें: राख-'तेदियर निरव बरावधी चडी छडावा शीक'-पश्च क्कम; † आका । वि॰ बोका; निवस्ता । ⇔माक्र~वि० बीकादासः। । पु० वद्यानेवात्री अन्यवस्था। -सार-वि॰ क्रिसमें ब्रोल की बीलाः रसेवार । झोकसार-सर किर बराजा। शोसा-प्र करतं किरमित्र भाविका वैका साँकी, विलाहा भीकाः रुक्ताः श्रेगनिधेषपर गिरा हुना फालिका क होंचाः

रधारा । अ॰ -भारमा-कालिव गिरना ।

झोछी-चौ॰ वारों दोनं चांवदर दंशे आदिसे सरकावा .

हमा बरहा में) झेले वा भैलेका काम है। सफरी विस्तरा

पुरः भरता। वास बीवनेका जासः रहसाया रा राधा । सुक -प्रशामा-चीरडे वन जमेरे १० पसको एए। इशानाः धरमेना समय गाँउ वानेदे १९४३ श्रीवार-पु, सी॰ दे॰ 'शंहर'। सरिए-पु पेट। सीर-त॰ संद, समहा राष्ट्रा क्षेत्र मरमञ्जूष गर प्रीरिकाण-अस्त मिल ग्रेजमा । स॰ कि॰ सपरस्र सा सीरा-प्र• दे॰ 'ही र'। श्रीराजा===== कि॰ समना सोंडे प्राचा होत । मुखामा । र्शीसनार्ग-म कि॰, छ॰ कि॰ दे [†]शुरूछन । शीर*-पु+ सगरा, दुवरत, ठक्तरारा संध मन्दर I श्रीरमा≯~स कि सफक्त दरोय तरा। श्रीरा!-प॰ दे॰ 'शीर' । सीरे॰-व पास निच्टा साथ । झीवार्ग – ५० संभिषा । क्षीहामा-ल कि ग्रस्तेमें शहर येनमा।

श्र--देवमायरी वर्गमाणामें सवर्गका खंबनों वर्ग । छक्ता- | श्र-पु [तं] शहरता पर्यर प्रान्ता हमें ह रक्त्थान तत्त्व । बाससम् ।

== टेडब्रागरी दर्गमञ्ज्ञामे स्वर्गका पहला वर्ण । क्वारकः स्तान सुद्धी। र्टक-पु [सं•] भार मारुखो यस तीमा परवर कारने वा गडनेश्चे हेनी। हरशाही। तत्त्वारा म्बानः पहाहीशी दालः है सीक्षणाः बन्ध रागः क्रीयः वर्षः परः मान्य कपित्यः विकार बरार । -डीक-प्र धिव । -पश्चि-प्र॰ देश देवक वर्ति । --शास्त्रा-स्पी दे 'श्रहत-द्रासा' । टंकक∽पु (सं∗) भारीका सिका । ~पति~पु रक्ताक बा अपन्य । -सास्ता-न्यो शिवडे बाकनेको जगह । र्टबज-प [सं] भोषागाः सन्धि हेना । -बार-प धीषागा । र्यक्रम-५ [र्थ] साहागाः धौदी देना । र्देकमा-भ+ कि शेवा माना। शिमना। शिकारे हारा मध्याचा जामा। किया जामा। सिष्य भारिका कुरमा । र्टकवामा – स वि 'टॉब्स्म'का में । र्रका-प॰ चाँदीकी एक प्रधानी तील त्रविका एक प्रधान। सिक्टर । स्तो । अंधर एक राविमी । र्वेकाई-भी बोक्नेका कामा बॉक्नेको प्रश्तः र्शकामक-पुरु (लेर) यहरून । रंकामा-स॰ कि सिवरनी भीव करना। हैंबरना-स कि से इंग्लिमाशिय आदि बुरमाना ! दकार-मी [मं] बतुषको या हुई बोरीची धानवर

चलक ध्वनि जिलाहरः प्रसिद्धिः मार्थर् शिष्टः। र्रकारमा-स॰ कि चतुरुका रीता तानक सराव बरता । र्शकारी-स्तं [म] एव शाही। र्वकारी(रिक्)-वि [सं] इंकार करनेशाचा हॅकिस-स्वी (संध) पायर कारनेश्री हेती राधे! र्टकी-मी पामी तेल बादि स्थानेके तिर व्याप वरसके जासारका वहा बाब: बढ शक्ति। र्रकोश-मा है प्रकार । र्रकोरणा-स॰ कि॰ वे र्रदारमा । र्वेकोरी: रेंकोरी-सो मोमा-भोरी मारि दन्देर हैं शराज्य । र्थग-त [नं॰] बुदाल, करगा। बार माठेश दर है। सोगगा अंपा र र्देशकी-स्रो शेन पैर र र्रगम-पु॰ [पं॰] शहाया । हैंगता-सर्फिर लक्ष्मा सरस्वा अपा केंग्रेस तु अक्रमती। सु रैस याना-मांभेपर भारती रैंगरी-को है रेगरी ! रंगिनी-सी (तं) पारा र र्वेतिया−मी क्षेत्रे पुरुषारे । देख-ति देशारा बस्त्रका व देत्ता का राजारी छोडनेने पराम कानित बानुसंह लाशित लागान होनेसे हैंह स्ट्र-युक बूजा बाहदा आनंदर देशा (कानित

... औद्यास-प पिराहि 'आसस'। सीहर-प॰ बहारे छन्छ। विजय निधित हो बागेपर राज-पुर स्विबंदित बहरूरी हुई विद्यान विताम यक साथ प्रवेदा **बर् सक मरता: इस कार्यके लिए बनावी गर्वी जिला:** [wo] राना सार, सरवा ग्रम अवी (सकता, दिसाना): क्तवारपरकी भारीक बारियाँ जिससे कीहकी अक्टाईका पता भक्ता है। बाईनैकी जमक । -वार-वि सिसर्थे जीवर की 1 जीवरी-प (we) जवादरातकः रोजगार करनेवाका रखः श्यवसात्री । दि पारसी गुण-दीव पश्चानतेवाकाः बहरों। - ब्राह्मार-पुर वह बाजार जहाँ बवाहरात निर्देत रक्षप्रार । न- व और सके संवोगध बना हमा संयक्त महार ! (व शि] (संद्रा आदियः अंतर्थे सत्तनेथे) जाननेवासाः क्रता (शक्क बहस इ.) । य सामी पंडिता बीवारमा जवाः वर्ष धवः संतर्भ प्रदः। अधित अस-वि [र्न•] प्रतावा प्रजा पर्यपन । क्रमि-को भिने क्रमा बढिर तम करना। तीवका स्तरित ज्ञात-वि भिक्षे जाना द्वारा विदित्त । -वाचना-सीक बह मन्दा आहिदा जिले बीबसायमका प्राप्त को । —सिक्रांत~वि शास्त्रविशेषका प्रीन्त । ज्ञातम्य - दि॰ मि॰। जाममे वाग्य, धन । शाता(प)-वि [मं] जाननेवासा । प्र चनर आसमीर परिचित्तं स्वस्तिः उम्रामनदारः । काति - ५० मि] पिनाः पिनुबंदामें अल्बन व्यक्तिः गीतिया । -कर्म(स) -कार्य-पुरु मार्र-वरका क्रांब्व । -युव- गीवज्ञा पक्षा जीम सार्वेदर प्रकाबीर स्वामी । ज्ञातरब-१ (सं) प्राता क्षांसर कासवारी । शतिय-द मि] शांतित्वा कुक, बंधका दीना ! णान~प्र [मं∗] बानना क्षेत्र, जानवारीः सधी जान इपि: द्यासामुशीरम आदिने अरमनस्यक्ष अवग्रव मारममाधान्त्रारः त्रहित्तिः वेतः परमदा । -क्षीक-व

कारी सम्बद्ध दीन। परार्थका ग्रहण करमेवाडी शतकी बण्डा वह विभाग जिममें ब्रह्मार विचार किया गया है। -हन्त-दि जामकर दिवा हुना। -कोदा-पु वह कीरा विभन्ने प्राप्तम्य विषयीका विवरण निवा शका की । -गरंध-दि॰ जी जाना समना जा महा जी बेसल यानका रिश्व ही मने जानाभर जा गढ़ (एरमेजर) । =गभै-दि शानमें नरा दुना। -गोचर-दि शान मन्य। - चश् (स्)-इ शमक्ष भौग अंगरहि। वि प्रान्तीह हमनेवामा विमान्। - उत्तरह-वि शामधेवता क्षेत्र की । - म-पु गुक्त । - मुख्यनेह-ह न्युक्तमा गन्दान्त -श्र-का सरव्याः -दाना(म)-14 धाम देश्य मा । यु शुरु ।- नाग्री-वि मी धाम रेजेवामी ६ क्षीत बाइववती । - शिश्व-वि दारणावत-सवण समन वर्गा । तथा लक्षित् ।--एति -इ दर्भ प्रक्षिपर र -विवासा-को राजातिकी टेज अपन्या -पिपसु-६ रामधी जिल्ला -मम-द रह तवनदा-मुझ-रिश्वानवन् बहुर।

भौज्ञन-अपेग्रा -सहा-स्रो तंत्रसारमें श्रीत यह विरोध सदा ।-सम —व अभेतधान ! —बोश—प॰ शब्द चानको माप्ति । -स्थाप-प्र-स्काण-स्था विशेषण द्वारा विशेष्यका गान (-वागी-की कादीका यक प्रसिद्ध तीर्थ)-बड-ि शासके पदा । —साधार-प दानका सापनस्प इंडिया तस्ववानाः सायम् अवदः मनन् भाडि । जानत (सस)-न [सं॰] जानने हुए यानपूर्वक । जानका-कि॰ सि॰ विश्व कारमे भरा बमा वासरपः नि मन। य परमध्य सिव । भागांत्रज-प॰ (गं॰) ब्रह्माय । ज्ञामाकार-द [सं•] सद । ज्ञामापोष्ट-व [र्गः] विश्माचनीसना । लामावरल-व मिंगी वामप्राप्तिमें बाधक पापको । जासासम - व सिंगी यागदा वद सासम । जामी(निन)-वि [वं] वानवान । जिसने बारमधान था अद्यास प्राप्त कर स्थित है। य निवध कवि । जालेंक्टिन-और वि वे विषयंग्या सामन प्रतियाँ-बाल काल जाक, जीव और खबा । ज्ञामोडय-पु [मं] धानका उदब बरासि । क्रायक-वि मि शिवानेवास्य सन्द्र, बोधक । प्र ग्राप्त रकामी १ ज्ञायम~व सि॰ी धतामा बनामाः प्रदूर करना । ज्ञापविता(त) निरं विरं पार्ड ! जापित-विक मिको बताया तथा सुनितः प्रशादात । ज्ञाप्य-दि॰ [एं॰] बनाने बोम्य । क्षेत्र-वि [सं] जानने दौरवा की बामा वा सदै। ज्या-मो• सि] पतुरको होता पाएकै सिरीको मिलाने बाको सीबी रेक्स बुव्यी: माना । "सिवि-म्यो॰ रेक्स-गमित क्षेत्रगनित । ज्यावती-मा । अधिकताः जस्मः वररपरते । क्याचा-नि॰ अधिकः पात्रिल । उदाल ० ~ प वे विवास । ज्यासरक-मा क्रिक देश 'जिलासा' । उचानि-म्दो । [र्थ] शुणपा। श्रवः परित्यागामदीः उत्पेदन उपाप्रस−मा दे विवाहत। उपारमार-म॰ कि जिलामा । च्याचमा≠-स+ कि विनामा । ज्यकि~सी मि दि भवेति । उर्धे~म दे० उथा '। उपहि−वि [मं•] सुरुथे दश (आई) सह। पु वहा मार्थः वेटका महीना। परमंपरः भागगानका गरः भारः प्राप दीन र -- साम-पु वापदा वशा भारे । -- वारा-न्सी सदेने बुद्ध १ - वर्ण-पुनाइन १ - मधा-भी वरी मानी । उ<mark>षशीलु−५</mark> [गं] पावण्या भावण सोता ज्यशील-त [में] बहे वर्षशाहित्मा दर शहित बहै की में बरा भाग पानेश प्रयु, जाती है उपद्यानश्री [मं] वरी धरिम १८ वर्ग रूप प्रदेश

ओ रान्ध्ये कीरीने कांग्रह प्लारी हो (छा) सामारी

टहर-टसक नारावमें निकासी बानेनासी फुलनारीका सकता ! शुः 🕳 टपाटप-म 'रच-टप की बाबावधे साब-हयातमः 🗠 की मावस शिकार खेळना-डिप्सर चाल चळता. गार से। यक-एक करके। रंग्तिसे विस्त्र कार्य करना। —की ओड विरुत्ता-किये टपाना-स कि॰ निमा विकास दिवाने रमना प्रान्त तीरपर कोई बार्व बरमा । -जें छेत करना-सनेआम हैरान करना अर्थ भागरेमें राजा। । जाना, बंदफो क्रममें करना, सिर्मेख हो जाना। टपरा-त धपराधका । दहर-पु॰ [र्च॰] मगाहेका भ्राष्ट्र । बप्पा-प्र• वहतती प्रदेशसा ग्रीवश्चेत्रमें हुन्हे इस टर्ड-पु छोटे बनका भोषा। गु॰ -पार होना-बाध यह फासका जहाँतक कार्र भीत र , में: एकॉदा एक लाए तिक्क जामा । याना निसमें डामको प्रधानका होती है। वं बीता दिश रहिया-स्री बाँडपर प्रदानीका यह प्रदाना । वहाँ पाक्तमीके कहार बदकते है। मही शिलाई। मण्ड टन-प• [मं] स्त्रामण ०८ मनदा यक अंगरेबी परिधाल। मारमा-इर-इर विकार करना । सी [दिं] परे पातक परतम वा क्रकांसे करपश्च राज्य । टच−प॰ थि ो रनाम आदिये क्षाप्रका कर्या राग्नेग्राम -रन-सी॰ गंदा पानेका सन्त । मू॰ -हो जाता-बरा वरतात क्षेत्रक र शदसे सर जासा । टसकी-मो॰ सनाराश्चे शाना । टनकमा−ध॰ कि 'दनरम' वजनाः वप कमने आविके हमरम-म [बे 'रहेम'] हा धहिबोध एक सुबैधां कारण सिरमें दर्द होलाः रष-रष्टकर योग होला । विसर्वे एक बोका जोना ताता है। इसटी :- स्वा • एक वरतम । द्रमटनामा--स+कि+ थंटा चात्रके बरतन वर प्रकटेसे 'द्रम दत की प्रवृति निकालना । अ॰ कि पदि भाषिका 'दनप्रम' दमस−नी तबसानरी। दमादर-५० (८० टोवेरी') विकादती ५०व । टनमन-प्रभाइ सेना । वि वे विजयना । इसकी नहीं है 'हमके ह टनमना-वि॰ स्वरंब, चेपाः सरोजः प्रसम्बन्तिः इरी-यरी हर-सी॰ कर राज्य मेण्डको बोडी असर प्रमानि नाता हठा औद्यो नातः चोरका प्रम्दा रहरारा रेरने रूपे त्तवीयतका । दनमनामा । - म कि भका-धेना होना रचरव होना । दिनका मेंछा । अ॰ *–हर करना –हर* नगाक-प्रेपी टमा-प्रभवः मनदा ग्रह भाग । करमा विकारित गीलते हो जाना। द्यमाका-नित्न (भूप)।† प्र परिको साथाय। टरकना-म कि सिसंद बाता। • दर्बंड लासे देन्छा दनाइन-प्र जनातार वंश प्रश्नेको सामाण। वि दोक **टरकाना~**ध॰ क्रि॰ रिलका देता। स< देशा वर्ड दास्त्रमें प्रशास समन्दर्भ भाषाकर सार। करनाः श्रद्धामा करके छीता देना । श्रकी-प [तुरु] एक गुर्गा विस्त सहे दे मी वे मन इनेस्ड-प्र• [#] पदाप वा नदीकै भी वेमे निकाणी नवी सरंगः बमीलंड मीटर रहतेवाके जानवरी हारा योदा हजा बार शासर बातो है। एवं हैया तरबी। मार्चे विमनीका बढा कीया । दरदराना-म क्रिक संबन्धंद बदमा रूपातार रेरावर्ध इप-म्हा वृंद कल इत्यारिके गिर्नेका शब्दा वस्त्रम शर्ते श्वना । क्षादिको बतरो क। इत्यामसार फैलामी या मोडी जा दरना॰-भ क्रि॰ दे॰ दसमा । मक्ती है। -से-इस्के, बहुव अस्र। दशमा॰-ज कि इटला स्कना। दएक-को। उपकलेको किया या मामा पूँबीके गिरमेका श्री हर नावी जिल्हा के अस्तार है दर्ग-दि॰ धेंडचर वार्वे करनेवाहात अधिमवर्देह बाँदे धान्या स्था वसकर होतवामी चीवा । थचर देनेवासाः बहुमावीः बहुबंदाने वीरनवास्य वर्द् इएकम् नती । रय-स्थयत् वीनेवाली पीक्षा येखः । दर्शना-म कि गर्वक सार बात करना। भी वे में हैं कर द्रपद्मता-म कि॰ वैश-वैश गिरमाः पदे प्रक्रमा माधन भाष गिरमा: किमी मायका बामालिङ होना, शब्दकाः बद्ध बयम बनगा । सुरुष द्वीताः शाव आर्थितं र**द-रशक**र प्रीका द्वीला । सुरू दक्त ∼तु दर्श कारमा; मेटका भीता । इम्ब इसम्बन्ध (व) प्रवत्नावर विक्रमणा हरूमा नथ कि विधानन दीना। विभागमा स्थव है। अपने रनानमे परना सरवना विह्ना ध्रीत है

अन्त्रमा द्योगा भावके निष्य समय अर्ग शिक्षि हैं

हस्र-मी आरी क्यादि इस्तेरी भाषास वर्षे प्रतिहे

करनेकी भाषात्र । सुरू नम् सम्म म होगान्त्रे ^{ता है}

न दिसमा। करने गुजनम नौश हा वी प्रमारित ह दिय

दमक-श्री १६-१-१६ ही नगरी घेत रेम ?

रवरित होनाः व्यन्तेत होना ह

इसस**ल−ि** दिन्दा दुला । टलाटकी॰-सी डाल्महोन व्यानेगरी।

ज्ञारीय-स्रोध व्यर्थ ययना **!**

क्रमा-दिनी बरतका शहसा अपरे गिरनाः दर परनाः सदस्यात ना भाना । देपका-पु र्ा-र्द विरमा। १९३१ हुआ पक माहि। रह रहकर होनेवाकी पाताः श्रीक्योंका एक रीप, शरपछा । -(के) ही विद्या-दोन-ग्रवटार नानेकी विया। इपका-रपकी-सं। कनका एक श्वकर गिरना। वृँशानाँ है। कुल बीगी स महामारी बादिन रीव मरना । वि कोर्र कोई एहमाधा

रपदाना-म कि नैर-रेश निरामा पुलाना । दपना-- त्र कि दिमा कारे-पाप वहा रक्षमाः व्यर्व दिमी के भरीने देश रहता पुरुषा। है म कि शोपना। I THERE

मिस्कानेका स्थानः + सुरोगमा । पु [हि] बद पहात् | -वस्त्र-पु शिव । जिसकी नोरीक पास स्थित गरीरे कीयमा, शाम जरूना | ज्वाकी(किन्)-वि॰ [सं] स्वाकामुख । पु॰ निव । हमा तरक क्यार्थ, जलता हुई गैस लादि बाइर मिक्ट । अपैमा - सं कि दे 'ओहना' ।

हा-देवनागरी वत्रमातामें भवर्षका चौथा वर्ण । छ्यारण रधान शास ।

प्रांक्रमा-स कि P शिया। इर्रे कर-स्त्री [र्ग+] हानपमाइरः जाँहा पावन मान्स्रि नजनेते दोनेवाचा च्यतिः नीमा सिपार मारिका प्रातिः वनकार ।

इंक्सर्मा−म कि तन पन सानाव दशना। भ० कि॰

'जनकान' श्रहाण होता ।

झॅकारित−४ [नं] */कारकुक । तु शक्कर ।

संस्वरिजी-सी भिशे पंता। इंडारी(रिन्)-रि [मं] इंडार या गुप्तन करमेवान्याः

श्लारकृष्ट । शक्कत्त−ति • [मे] हांकारत्वकः गंधार करता द्वमा ।

झंक्रसा∽न्ते [सं] तारा देशी।

इंक्रिके −न्वं• (सं) शकार । इस्लिसा—म कि∙द दीसना।

झंत्राब−प बांदेपार शाकी का पीथा। ऐसी शाकियों का

पीचीका समूद्धा रही चीचीका हैर ।

द्रौगा-द दे॰ 'नगा'।

प्रमुक्ता भौगुरतार-पुर दीका कुरता। वर्षीका दीका हरवा । र्हेंगुकिया हींगुक्ती हींगुका*~भी दे हागा'।

इत्संश-पु दे श्रीत ।

श्रांबर-द सी शमेराः शमश-वरोशः कडिमारं करे वस्ति १

हांझटी-दि शहररामा (काम)। शगराचः क्यारिका । शंसन-५ [मं] सनसर।

श्रीप्रमाना-स किं, म कि दे 'श्रीदारमा । इर्डाइर-पु॰ दें • म्यन्त् ३

धुरा-दि समस धाना ।

बाँहारी-न्यो॰ अस्त्रीः जानंदार मिश्बोः जातीदार बाहर-यमनी । -शार-वि शालीपाद गुरामानार ।

र्शेशा-मी [में] संब दवा अंबदा आँपी-वानी। वही-बसी र्वे भिन्न बच्छा अपर या अपरस्य साथ होनेताकी वर्णानी मानाम: इन्द्रारा धीनी हुई क्ष्मा । ६ दि० तम । प्रत्म । -मगत् -मारतः-पात-त अंश्वश्ववंदे साव वहन

बाजी बहुत तात्र हवा । श्रीसानित-दु[मं]≷ जनावान ।

वर्रशाहरू-पु आगाधी सदा उदाशा- उपटि श्रेगाह र तार धार्थो ∺मुर ।

र्ताता-को कृते को हो। ពីពិវិជី-ខា និ តែនាពី ៖

धीमाइमा-म दि बहरवर शाद देशा लग प्रमात चीरानी का का निवासका की उस प्रकार करने देखा

भाषना ।

इंडर-प्• (रचयेके) मुंडनसे प्रश्नके, पैशास्त्री वाछ । शहा-प॰ वॉस या ककड़ीके कटके सिरंपर पहमाया <u>ह</u>मा

विश्वोना या बौद्धोना कपदा था राष्ट्र मारिक प्रतीकके रूप-में का संदित बादिके किए कामने कावा आता दें पंताबा निशान । - अहाज्ञ-पु॰ नेरेके नावकता प्रदाश।

-बरहार-प्र नहा ६ पननगरा । -भ्टेशन-प्र छोवा स्टेशन बहाँ शही दिगानेपर ही उने रहें। स॰ --उदामा−गद्य बद्दराना । (रिम्पी चीजका)−धवा

करना-दिन्ये पायके मामपर, किमी बात्र है किए की गाँकी दरका फरना जमका भावाम करना (नगावतका और।

यहाँ करना) । (किसी नगर द्वार आदिपर)-गाइमा कम्बा करनाः अपन अधिकारको पोषणा करना । — **इर हाम:**—किसीकी मृत्युपर राज्य या किसी यह - मंश्याकी भारते शीकप्रकाश किया जाला। (किमीके)-(ते)के

नीच - वरे भागा या जमा होना-दिनाकी भारते कदमेद किए तेबार दाना यदन हामा। -सस्की दोस्ती

~शब चलतेकी सकावात । -पर चडामा-वन्नाम धरना ।

र्मरी-न्त्रो छोटा शंदा । -शार्-नि॰ जिमने शंरो समी र्शोद्वक्य-वि विस्तर्क सिरपर गर्नके बाल ही विस्ता शहन

म हुना हो। गर्भकाः पनी परिवर्धेशका । पुनह बचा क्रिमके शिर्पर गर्भके बान हों। समके बान। पने पर्चोनामा भूषा ।

अर्थ-म [सं] एकाँग कुलावा गोरीहर मुनेमें पहनानेहर एक गहना ।

श्रीपक्षमा - भ० कि दे शापकता ।

शैपसाम-५ दे शक्ताम । शेषमा−म वि धर्मान मारता उद्यम्ना एक्नाः

सपनाः श पना । शैंपरिया शैंपरी?~भी॰ पारुद्धेन्द्रा ओहार ।

nigem-g [el] dre t श्रीपाक्षी-म्या [मं] वन्तिका ।

श्रीतान-त पदाहरो चर्रामें दाम मानेशनो एड भरत्यो

सन्देश शामी । श्रीपाद-पुरु [मं] नेदर् ।

संपित्र -वि द्वाद्रभाः शंपी(पिम्)-प [मेर] दार व ग्रेषोव्य-पु॰ धाटा हाँचा वितास ।

अब - प्रशासमूद । श्रीयकार श्रीवकारा !-- वि स्थार दशास्त्र । र्धियस्ता–म कि शाला परना मुरान्ता ।

श्रीका−प्रदेशीय ।

राकु-रिटकारमा टाक्ट-पु॰ तक्का रहागा। शह-पु॰ निष्ठाने या पर्रेके काम मानेवाका सम या वट सुनका माटा करका। (हा॰) मीटा कपका निराहरी। महा-करकी गरी ! ~चाफ्र-पु॰ टाट पुननेवाकाः कपहोपर धोते-चाँदीके काम करनेवाका । -बाव्यी-न्वी० कमावत का कामा टाट दुनमेका काम । -- अता-पु॰ कामशार स्थाका विशिषा−त्रैसी मही चीत्र वैसी ही सत्रावह ह -बाहर होना-विराहरीते वहिन्द्रत होना। -में पाट का धरितवा-नेमक श्रुजानर । बादर-प दे॰ 'टइर': व ठवरी: श्रोपशी । रारिका॰-सी॰ रही। रारी≠−मी छोता रहता रही । द्यारी -स्रो वाकी। टाइक-पु मुभापर पहलनेका यक आध्यम । टान-कोर्ड रिर्फान, तनाना साधनेको किया विदार वज्रानेका एक दरीका । पुरु सवान । द्यनमा−स॰ कि धीयना। द्याप-त्या । योपेके शेंबका सबसे माचेका आयः समा मीहे के प्रविक्ते पृथ्वीपर पहनेते वडी भाषाचा बारपार्वके पानेका मीचेदा छमरा द्वामा मागा मधनी करवने, सुनिबंधी वंद करनेका शेकरा वा धाँवा । इन् - हेमा-एकॉन सारमा । द्यापब∽पु क्यार मैदान। द्रापना-म कि वे 'अपना'। बाद मारना। ताकने एड बाना। † स. कि॰ इद बानाः कोयना। द्यापा-पु॰ मेरामा वग्राका शाबा । मु॰ -देमा-करून द्वाचू-पु पृत्तीका वह भाव को चारी ओरने वकने पिता क्षेत्र होष । शक्दर्ग-त सरका। द्यमञ्==३॰ दुम्मी । द्यासन् = पुण्डीना, रोदका । द्यार-प• (सं] पीता: कीवा: क्राना: † एक सरहका दस शिक्षमें बीच विराने जानेके किए बीची क्यी रहती है। † सी देर राजि। द्राप्तां-म∙ कि दे 'बाकना । द्वारचीडो-पु॰ (भं०) एड स्वतः थकनेवाला विस्वंसद पत-क्रभी बहाब भी इसरे बहाबसे रहरती ही पर जाता है। और स्वरानेनान मंबायांग देश कर देशा है। शास-भी जुनान कारिका मेंच महाना संबर्धीयी हकाना राधनकी किया। प्रजासान स्टब्स्स - सहस्य - सहस्य । -मरोम-रगै॰ पहानाः रखानेथी क्रिया ! हाक्रमा−स॰ कि॰ हिमी वरमधी क्रुपे श्वामने हटायाः विमन्द्रानाः दरकामाः न्थगित कर विमाः + दरामाः **भा**गीत करना। उत्ताना वातंत्रम करना । शुक दान देना-पूर **१८ देमा। वहाना बर देश: २१%।**ना। (मा.) मारा करना। रिगो दामको इसरे गुजबदे किए इस ग्रीडमा समय निर्वारित वरमा र किमीपर शास वेबा-समय विज्ञाना। ब्यानी मान वर्ग । द्वार बूतरेका निर्देश कर देना ।

हासी-सी॰ पैक आहिते गरेबी पंदी तीव वांते का स्म की विध्या भी बहुत चछलती-कृरती हो। टास्मटाच का⊋ट कियो−४० १८१८-१९१ क: त स्वात-स्माद राभा समात्र स्वारह । टाइस्टी#-ए॰ शेश्फ, मीटर । हिंचर-पु॰ [अं॰'दिवर'] सुरासार(मतबीरा)चे वर्टर पर रीमार की नजी भीवपका सार, एक एनोर्नेदिय बैन्स। र्दिरिनिद्या-माँ० (सं०) अंत्रिक्षिपेरिद्या गरेद । दिंख दिंखा-पु० वर एक की हरकारीक सान गांता है। दिविया-पु॰ [तं॰] रिटेबा रक्ष । टिकट~पु शहरूक वा बर भुदानेपर प्राप्त बनका व कुछ्छ जिल्ले विकेश, कारचे, देव बारिये हरेग्छ की कार मास बोला है। मनेश्वनका निमेच मनल्या था। ष्ट्रीसः स्टाप । टिक-टिक−सी अहीको जानावः धोडा रॉक्टेय मी । टिकटिकी-सी टबरकी भरतनेते ग्रीसर रेंड हर्यो किए बना क्षमा क्षमाः पूर्वती देनेसः तक्षाः, विस्ते। रिकटी-माँ॰ चाँसीका तस्मा। तिवार्वे ६ मध्ये । टिकवा-पु विषया, नीत उद्याग भाव क्या पा बरो मारिका छोटा द्वाबका मॉअपर सेडी हुई नामे ह रिकडी-मा छोडा रिक्डा । डिकना-म० कि॰ कहरमा। बोडे सम्बद्धे विर वन धार महनाः विशेष अवधितक साम रामाः निवा रहनाः उन्हें श्रद्धे दरना । दिकरी-की एक नमदीन पदवाना विदेश। रिककी नगा छोड़ी विद्या विकास वहनी ! टिकम~९ ६८। दिकाळ-वि दिवनेवामा कुछ निर्नेटक वस स्टिक्न दिकाम-मी: निक्तेको विवाद प्रशंप टिकामा-स॰ कि॰ टहराबा। बामके डिए आब रेंग व्यक्ताना । दिकिया-नी क्षेत्र पराचक्र ग्रीता विका विकास मिडाई: र्थशक् योतेई किए बीवरेमें बताया हुन कि गोल ३६१३ विशे । रिक्री-सी स्ट्रा टिश्वमी-मी वध्यो। पमधी रिगे। टिकेस-इ मुक्ताव राजकुमार भी राजादे का रिका-अभिकारी थी। सरवार ! टिकोरा! --पुरु मामसा क्या धीरा इन सी(गा.) रिक्क - प्रं वारी जेगायारें। वही विदेशा रे रिक्टी-मी विक्रिया गरें। मेंगुद्रे मार्निश हिले (से शमा क्रमा निद्यानः वाध्ये वृत्ते । रिव्य-टिव्य-व्यो० दे परिद्वारिक १ हिम्ममा-म हि पितमा क्षेमने हवर रहे ही हैं। होमा । रियमामा-५० दि० रियमाना । दिल्ला-विश्वनम नेवारः हुप्तम टीवा रिटक-मी बर देव- रिट सार्दि बारी दार्ग्य र हवान हमें बहमोर्द पर वेर -रबाबर र हिटकारमा-ग॰ कि 'हिब्दिक शब्द ब्राट की की

411 सक्य-स्त्री हो पश्चिमी आदिश्ची अस्पदाक्रिक मिर्वतः सर पतेका भाग शास्त्रका भागेदाः करनः सरका । शक्यमा - श्र कि इमला क्रमा हुट पहना छल्जा ! म 🛣 टाटकमा, इरबम धीम बना । शहपा-सहपी-श्री गुरवमगुरवा । अवपाना-स कि पशियोंको आपसम कहाना । शक्यरी-मी जेनली बेर शरकामा- ११ कि आवनेदा काम बराना । शबाह-सी॰ झारनेश फिरा या वजरत । शासाका-पर शहर । वर प्रारम तल्हाल । श्राक्षाच-अ अगातार शही के रूपमें। बारी-भी भगातार प्रश्ना रक्ष्मी किंग सगानार वका हारी के क्यों चन्द्रने वाले वाने अविराम बाग्यारा (बचना) हवनाः शंधना हवाना) तलेक मौतरका घटका । मणमञ्जू , अणप्रयः - सी [१] 'अन-प्रव की भाषात्र मनबार । झब्दकार-पु॰ [मं] शनकार । प्राप-स्ता अस्तराहेषर आपातमे करपन श्रीवाकी प्रवित । -प्राप्त-मी (प्राप्त की संगातार होनेवास) व्यनि : क्रमण-स्त्री शास्त्रारा क्रमजनावरा पैरको क्ररका साव बठान इए जनना । ⇔प्रतक्र~स्त्री पायक आदिको संद मधर प्रति । ⊷काल-४० चौदार्थीका एक रोग जिसमें थ पैरकी मारवेदी साथ पठाते हुए यकते हैं। समकमा-अ• कि• सनक दीनाः श्रीस्थामा, धीशनाः पैरकी शब्दा देते हुए चक्रमाः। शनकार-सी॰ 'सम सम की जानाजा शीतुरी आहिके बीहतेसे द्वीतंबाकी ध्वति । सनकारमा-म वि: इन-धन'को आवाब निकटमा । स॰ कि॰ 'शम शम की अलाज पैदा करना । श्रमसम्बा−ि सन-अन' शब्द कारक करनेवाला । शनप्रमामा~व कि 'शनदान को ध्वनि होगा। स कि 'राम-शन की प्यति निद्धातना उरपञ्च करना । श्रमसमाहद~रो 'शन शम की भागाओ शुमञ्जूमी । झनामन "सी॰ शन-शन । म शन-कर्न थ्वति सदित । प्रतिवाद-विक्रोना । प्रकान:-अ॰ कि शनसमाना t शपादर-भी शतशताहर। शर्प-म शर तुरव । शपद-मी पहलेखा विरमाः पट्ट विरमेने स्वतेवाता समय निमयः गपदी । संपन्नवान्त्रः किः पण्यः विरुमाः शपरी नेताः शवण्याः शपकाना-म अ.० वार-वार पनक विराना । सरकी-मी दलकी, बीडी दे(को मींड अन्य सम्मा र नदमा भीगा। सरपंदिर्वे -रि जी दमें सपर नदानी (अ^{र्थान} अन्तिहें 301 सपट-मी अपटनेदी किया वा बावा हर पहला । श्वरता-म कि दिसी चीमडी छने प्रदाने विसी चीज

द्मपटास~मी॰ श्रपट । द्रापटामा-स कि अपरमेश्चे किया बरामा । झपडा-प॰ शपरमेदी किया ! -मार-वि अपग्नेवाका. टट पहलेबाला (हवाई बहाज) । स० -सरमा-(बीह भाविका) किश्री भीवपर दृश्या । अपसास-प दस मात्राभीका एक शास । झपना-स कि दे शपक्षा'। सपर्छवार-श्री श्रीकेसा क्रप्रवास — स॰ क्रि ध्रपाशाका प्रे अपसमा−अ• कि वेद-वीभोंका वसे, ट्यनियाँ फॅक्कर बदना पंसना। **शराका-म**ारपर । पु• श्रीप्रता । भवाटा-व संबद्धाः सब्दा क्षपामा-ग॰ कि मैंश्मा (नार्दे) बंद घरना। अधित॰-वि अपाइमा मदाइमा लजिन । प्रविद्या - लो॰ श्रिप्ता गर्भे कन्नेका एक गहना । क्रवर-सी है। अप ! क्रवेटमा~स॰ &ि॰ ददावमा । क्रचंता-प॰ हमन्त्रः यहा ग्रेनवाया । द्मपोका-ए० दे० 'हाँपोका । श्राप्यह-पु॰ वप्पन् । सप्पर०-५ दे 'क्रपर । झप्पान-प है॰ 'श्रंपान । झप्पामी-प॰ झपात बोनेवासा । झचरा-वि बंदे और सब ओर विखरे इय वालीवांछा । ज्ञवरीस:-वि चारी भोर विदारा हजा (देश-सन्द्र) । श्रवरेशक-दि दे 'अवरोका । द्याचा-द है 'शब्दा' । शबार शबारि!-स्य वंशक, शंतर । शक्या-मी छारा राष्मा बाजूबंद मादिमें शीधे सरकते बानी कीरी। झएकपार-च कि भौक्ता। झरबा-प शब्दा प्रमा। समक-ली उन्हारी गतः जननाम का भाराजः यगदः। शमक्या-व देश 'तमा । शमकता अ कि श्रीह गहनीकी जनकार शहन धनमाः नापनाः 'शम-श्रम की भारात होता। श्रम श्रम करन दूर न**ा**में जाना-जामा। सदमा भामने आला-पावक शरही अमिक के गया शरीग शान्ति -दि । वस्त्रमा धाना। अद्द विद्यासा । श्रमकात्रा-न कि समस्ता। मस्ताना शम गम वी आवाज करमा। यह आदिमें इविवाद गरमराना । क्रमकाशा-वि पान प्रम करके बर्गनेशना (बादका) हासकीमा-६ श्वतः वयशेमाः हाम हाम-न्नी॰ पुँपहारों ६ वजने हा जीरां। वर्ण होनेकी नावात सम्मान सम्माम कर्त हर। ग्रमसमाना∸म कि एककव भारावहीनम्पमहना। स कि तम सम ध्वनि उत्तम बरना चम्रामा । दर इक्ता बर्बेटे नियं श्रवीचे क्षमदी भीर बन्ता हत्या। हासमाध-अन्न किन् शुक्ता दवमा ।

रूपदना । स॰ कि अपन्यत धीन सना, प्रदूष हेना ।

ह्या-रंग द्वचा−वि मीच कमीनाः बुद्धाः द्रवद्धा-म॰ हे॰ 'द्रोडका'। हरमी - सी॰ शामीकी होटी । द्वर्ये जिया-वि कम पुँजीवालाः वीवी विधा, धन मारिवासः । हटरूँ-त पहुंद्ध नामक विदेवा । -हैं-खी॰ पेंद्रकोडी नीका । नि० सन्देकाः अञ्चल । द्वची-सी माथिः देखीः दुक्ताः दकी। द्रमगी~सी+ पुलगी। हुनहाया-वि+, पु+ बार् दोना करनेगाना ! [नी 'इन दारें 'द्वनिहार्र'।] **हनाका∽ली॰ [मं॰]** तालमुखी ग्रसली । द्वमा-पु॰ तरकारी काविका वह इंडल जिसमें फूल लक्का छरच्ते है । द्वपक्तां-स॰ कि भीरेते कारमा वा र्टक मारमाः शगका लगानेवाला वात बीरेसे बह देना । हर्श~प दाना।कण हक्का। हेंगमा–ध क्रि दे 'ईंगमाः क्रवरना । हुँ इ- पु॰ भी, गहं भाग आणिकी पाकमें उत्पत्की और निकला हुमा तुन्द्रोला. जाना यच्छत्र बादि कीडीके शुंदके मारी मुँक्दी तरह निक्ती हुई प्तनी नही । हैंबी-सा गामर-मूला थारिका मोका लंदी मोका औ भारिके दानेके अपरका मुक्ताला दिरसा । इष्मरो −4 (शह भवा) विसक्ती माँ गर गयो हो । हुका-3 हुक्ता संह। हकार्ग -- प्रश्नेष्ट (द्वरता); क्ष्मुर्वाद्य । इट०-वि• इटा हुमा, संवित । स्ता॰ युक्त, भूत, भूति-'दूर सँवारद्व मेरवद्व सन्ना'~प+३ इटमा-अन् हिन् भग्न होना चंदित होना, दी इक्ष्में दी बाला। इडियोंके बीएका असम दो जाना। गतिका रूक बामा। देवने किसा और शहरता सहसा भारतन करनाः करत दीमा। रांचंप स रहना। कम दी जाना। अंगदार्ददे शांव श्रीदाका थडना। कसीका तीवा जाना। जनायान कहोंने का पहला इस होना। पनहोंन होना । जुरू हट कर बरमना-नुमन्त्रार वर्ग शीमा । इट जाना-वेद श्री जामाः क्ष्मता स्ट कामाः गाका कशीमें का जानाः दुर्शन या शक्तिदीन दोता। हर पदमा-अधानद ना जामाः उत्पर्ध मीच विरमा । हुदा-बि॰ साउता [फो हुरो |] -पूरा-बि ओर्च शीर्थं (ला) साधारण कॉलिया समावत्त रहिन। -(ही)कुरी-वि स्ता धीर्य-सीमी सरपर मन्त्रद (414) 1 टुटवा♥~प्र क्रि॰ सेंगुष्ट दीनाः प्रमद्य दोना । ट्ठिति ॰ न्सी ॰ मेनुद्धि प्रस्कार । टम-स्पे केस्त वस्ता। ~टाम-स्पे सत्त्र शिल्हा दूरभार्मेट—९ [शं] रिल्हो प्रशिशीतिता। ह्स-५ एक तरहका समी करेश । हमा- प्रशंभ क्याका ह्मीर-मादे 'हता।

र्ट~ली॰ सेलेकी दोलो। -ई-सी॰ बहार सां* नात । स्- -बोसना-परपर मर् कारा । टॅफिका-सी [र्ल•] रालका एक मेर । रेंबी-सी [र्ग•] एक शुद्ध राम एक सरझा मृत्रः। र्देगमा - थी॰ एक महसी। र्टीगर, टेंगरा—सी॰ दे॰ 'दें बना । टेंड-ली॰ मोतीको सुरी। बचासका बल या शेंग स्टेंड का फल पत्राभीका एक बार । र्वेटरां - इ विकासी कारण श्रीयमें ठमहा दुश्य यांगा रेंग-पु॰ यह यदी । र्देशर-प रे॰ 'रेडा'। हें दिक्का -- विक श्रवकास : रहा, क्योहा सका करने राम। र्टेटी-स्वी॰ करोक्स यक्ष । वि शमशन्त्र निर्माना र्टेट-५० मोमात्रहा । र्रोक्सीर्श - मा॰ एक देश विश्व कर सरकारी है कम मी टेडकम~ऱ दे∙ 'रेडक्रे'। टेडफी-सी॰ वह परत जो दिनों क्छाचे तादनने शेपी किय जसके मीचे सम्पत्ता जाती है। टेक-लो॰ कृती, संदाराः न्यूनराः ग्रेनाः म्प्रन हो मारतः वीतकः श्यापी पदा । माम्य अवन् । हुर नियादना-संबद्धको पूरा करता। -प्रवृत्त करा करमा प्रव प्रवृत्ता । डेकन-पु+ व्यक्ताय डेक्नीः यूनी ! हेकमा-स॰ कि॰ धाम केना। सहारा केना। मर्रोहे 🛅 कीरे बरश पहला। व शहन करना। इह स्वाया । हेक्नी-श्ली॰ वह चीव जिल्हा सहारा दिनावा कि टेकर, डेक्स्र'-पु॰ कॅपी थुनि, हुद्दा ग्रीटी रहती ¹ हेकरी-सा॰ दे टेकर'। टेक्सा = - सी० प्रम, एरम् । हेकाल-पुटेब अंग शृतीः वह केंगा बनुता लिए नीसा वीवेनारे अपना भोट्या रराष्ट्र श्रमणाने हैं। देकामा-धन वि" शहारा देना। श्रावका नगराहेन, वीसमा । डेकामी-ला॰ श्रुतिया बाल की परिदेश दिएने देव है। बैनमारीके पंछार और नर्द्रवेशनी सार्थर है हरदरी या गुनी जी शाहीको समर अनिम रीहे, रेह ' टकी-वि॰ इइमेरिए: इसे. मामहो ! टेकुआ-१ तकना सहसे दे किर स्थानी बाटेन के हरी आरि ! हेर्ड्या-ओ॰ राष्ट्रमीर रेग्रम चैमानेश स्टिश्चा बर्ड्ड शामा सीयनेवा गुवा। मृतिदा तम विदना वर्षेश वा भी शह ध होक-वि हे ति। वो हेन्सम वर्गात हैं -विशेश-वि देशका । देश-दिश बाद शुद्धा दुवा दुवा बहुत्व बहुत्व बु-माल्या वेथीशा क्रमण विमयप्रिया वर्ष ही अपरी का ! -ई-की शाक्षीरेका मात्र श्लित : -वर Ing Buf ! - Hitt-fe mittell al tiel all et.

शहराः शहरी-स्पै [र्नु•] इ.इ.च. गाहाः पर्शनाः शुक्रताः र्वेषरासे वास । महा∽ प्रकारोकराः नीटार । विजी पादा न दी।

झालामा-म॰ कि बहुद शिग श्रामा भूक्तरा **ब**ठना । स॰ कि निशानेवासा काम करमा भूँतसा देना। प्रतिका~सी सि ो स्वरमको जिल्लो। रंग रूप व्यक्ति

कगारीमें स्थवद्दन रई था क्यहेदी बाजी: युनि समक। शासी-सा॰ सि । एक रामाः इतक । अवर १ - सी नगहा ।

श्रवारि-न्दो॰ दे॰ शदर[®]।

क्षप-पु [मं] भएको मनरः गौन राशिः मक्ट राहिः राप' दत्। ~केतन ~केत्र ~ध्वज्र~पु॰ कामदेव ।

-निकेश-पुत्रकाराया - राज-पुस्परा - स्ट्रा-पुण् मीन संग्र ।

झपना • - भ कि झराना। **सर्पोठ~**पु (से] कास्त्रव । **श**पा~ती॰ [सं] गानश्चा ।

सपालम~द्र[म•] मून ः झपोदरी-त्या [गं•] ध्वासको माता, मन्दवादरी सत्व नती ।

इस्सना−स•िक दे• इस्रता'।

ì

1

ď

ď

₫[₹]

ţ

सदलना - म कि राजानाः संबादेने आसाः श्रामीय शोना ।

शदमाना−स कि शुक्कार पैताकरका वजाना। क कि शनकार **दरना~** "मनदुँ दंद शहनानै -सूर । सहरमा - अ कि दे 'शहराना । स कि क्षिप कुमा ।

सहरामार्ग−अ नि• इसबोर होइट गिर व्यक्त (क्लें भारिका)। इक्शनाः निरस्टन दीना । 👭 🕱 भीरनाः चथतमा ।

साँहें-स्रो टावा क्रहार्र अवरात प्रविच्वनित बोद्धार रक्तिकार७ कारम एहा हुआ बाला थमा। -माई-भी । वस्ति एक शत । सु • - भागा - जीरोंके सामने भेपरा छ। जाना । - यतामा-भोसा देमा । स्रोत-को सोहनको किया दिवन शह गाँक से

रम्बद्दन) । शॉकना-व वि• वाहते हारीने वाहिने बाहरदी बन्तु

को देखना। इपर उपर देशना । साँडली -श्री शाँडी कुनी ।

शाबर-पु दे नागा ।

शाँग-९ जालीगर गाँचा शरीया अंतर- " परने म पावा ॥ स −न्दर ६

हाँकी-भी वर्धना कुछ बुर । होनेबाना अपूर्व बराना राया -रोगरा ।

मोहन-पु [धेक] बरवा एक पुँचमपूर नव्याः न्यने भारिके गिरनंदा शब्द । शाय- • इ एड गरहता जेगनी हिहमा अहहर अधिका

てとち 1 प्राप्तन्ता-च दि हे नीसनाः; जस्ताः।

साँगर्-पु प्रांशाक्ष बांदेगार् रागिकीका समूर । 11

झॉिंगसा−विदोङा-दाष्टा (दश्वद्) । क्राँगाश—प वे 'शगा ।

शाँश - त्या कांग्रेक दो तरमधी वंशे दुक्र में स बना मैं और वैसा बाधा आहः शरारतः अदिब्हपना मौधन । —हार -- वि॰ 'हात राम चडनवाना ।

श्रीशही •-सी दे 'श्रीण । क्योंबान-की पॉर्वमें पहननका पीठा कहा को चलनेसे

'तन-सन' वर्ष हाँहादार बदा । क्षाँगर=-सो देव 'शौशन' । वि समरा क्षितीवास्ता ।

क्रांसिरिश-क्या दे 'शाँतर । श्रीसरां=-सी द्याँस द्राँगन ।

श्रीमा-प क्सक्को करमेगाना एक कोशा श्रीमा शेपरा र्ग धेर छाजनेका चीना ।

क्रोंकिया-पुर्श्नांत वज्ञानवासा ! क्वाँट-त्यां • जपरचके बाल प्याम । क्रांटिक-स्रोव है 'तार ।

क्षीय-प दहते हे साम भानेवाली चीत्रा वीत्रहा क्षेत्रहा क्षेत्रहा र्वासका बना व्यानवीया शिक्ती-दरबाबके सामने वप वर्षाने ववाब है किए समाया जानेवाला दीम कमबी आदि का बना पर्दा; बन्योका दवा बामकी तीक्षियोका बना मुर्गिबोस्य दरवा: एउन-कृत ! + स्ती पदी विदः পদ্ধী ৷

क्षाँपना−स॰ डि. इटना, समस्य करनाः शौप सेता । अ कि शपना।

भाषी - ना शहरी। विगयी सपक्षी। शॉपन: - स॰ कि शॉर्वेने रतक्ता (मैस पुरानेके रूप)। भ बर-नी भीषी बमीन दावर । कि निस्ने श्वामता

शे मुरशाबा दुवा । **शॉबर्स:** –सी॰ तनका लोई। ऑगस्स संदेन ।

शाया-व बना हरे बंट वो मेन रहनामें के किए देह रश-इनेक काम आता है। शॉसमा∽स॰ कि॰ श्रांधा देना, ठणनाः बहसाना ।

शॉमा-९० थोवा अन् पुरा । -पट्टी-स्रो॰ दयवात्री दुवा ।

श्रीसिया, श्रीम्-विश् शांसा देनेवाला । शा−पु॰ मैथिक बादारीको एक उपायि। को• सि•ो

जनप्रधान । शाई-मा॰ दे 'सर्' ।

शाउ-पुरु एक छाद्य लाह था रतीहे मेहासीहे स्वरिद क्षामा है।

दराग-पु केन गाव ।

ब्रामद्र-पुर्व स्वरा'।

झाट-पु [मुं] चंदा शारीतथावरी घीना।

शाहक-बु [में] वद सर्ददा मीच पेग्यफिन। झाटा⊸भी [मं] ज्री। भृग्वासण्यी ।

शाराद्यक-प्र मि । भरवय ध

शाहिका साही शाहीका-थी [में] रे॰ ग्राप्त । शाब-पु श्वरा पत्र वा क्या किस्सी अपने शाहित्वी है। बरे हर्न निबचन हार्दिवीची एउने पेन उन्ते सीक्ष

्रणन केंद्रीला देह शाक्षी शक्षद्य कालूगाची छात्रा

टोइ-सी॰ धीन, भनुसंबामा पताः देग माल । मु॰ -मैं रदमा-भोत्र फिराक्ष्म रदना।-क्ष्यामा -समा-का लगमर ।

रोष्ट्रमा-स जिल्हां सीवमा, सुराग क्यामा। स्टोब्रना । रोद्वाराई-मा॰ सात्र, छान बीमा देश भन्द ।

टोडिया-विक पुरु पता क्रमानेवाला बीड लमानवालाः सर्विया ।

दोही-वि । तु देश 'दोहिया'।

र्टीस-मी अयाप्पाफे पश्चिमधे निरुक्तर बनिवादे पास र्गगार्थे गिरनेशाली एक सकी जिल्हा प्राथीन शाप समसा है।

दीनदास-५ ६ 'टाउमदार'।

इ.क~पु• [#•] मोदे वा शेषका करने आदि रहादेका इंब-पु• [बं] ताशके भेन्यों निवत दिवा हुआ (वशिस्ते।

बद वर्त्ते कारे जात है । इक्र∼न्यी [प्रं] मारी साम होनेकी बाद वा छ″ पढ़ियां-

हम्द्र-प [भ] इसरेडे कावार्थ संबक्तिया प्रत्य शीवना। देनी गंदरिये साम बढानेका व्यक्तिहर ।

इस्टी-९ [प्रेर] वह म्बजि निष्ठे वदी नियानकी बारे प्रशंबके मिए गंबर्सि भीची पाद ।

ब्रीमधर-पुनि विश्वासारका। हाम-न्यी [बंग] वर वरे चहरीमें रिजलीकी चाहिने थकनेवाची वटी गड़ी । -बे-मी द्वामक्री सारव । कृष-त [बं∗] भैतिधीया दका साढ प्रसारीमा दभ बिसमें की मेरिवरनेंट आह एक क्यान ही। इ.स.न्सी [थ] द्वय स्थिति वरतेन्द्रे अस्यक्षनात स्थि निरामनिष । इंड-वि विशे कार्वनिधे की किए विशा श्री प्रशा प्रशिक्षित । हेब्रस्ट-पु 🙀 विमर्शको क्षेत्रायस्र ।

हेजरी-स्य (४०) सवाना । -- मकसर-५ - मवानेश

अपगर । इप्रहरिनमी [मंग्री निषत्रांत मारहा

टेंडमा&-त॰ [थं] किसी स्थापाध डारा अपने मानवर मवाना बचा निशेष विद्व । हेतिक जन्मिनमाँ॰ वि ो सापनेको होटी क्षम हिने **१**६

म्बद्धि प्रशास है। इम्र⊸सी (चीरेनगदीत

हैनिय-मी [४] बर्मनिधनमे ब्रिक्ष, क्रीइन्। —काम्रज्ञ−प कार्वरिक्षमी शिक्षा केल्या बारेजा। -स्कूल~तु वह शिक्षाभय विभन्ने हेनिग**्रो** वर्णाः होता है ।

ਡ

रवान सद्धी।

±द्र−दि० विश्वदी शनियाँ और विद्यो सम वा करकर गिर मनी की हैंदा।

प्रशासा≔स कि॰ कि की की प्रशास निकालना र अ० कि० 🖈 🖈 🕊 ध्वति नियनमा ।

ध्यार-विदिक्त ग्रमा ग्रेण ।

र्दरी-सी॰ पीरनेंद्र बाद शानमें बगा बच्च । वि. स्वी. कींद्र, (बाद दा भन) भी बचा और बूब म दै।

र्टंड नहीं सरदी चादां।

EEE-NI & he !

३द्वा−ि सर्वे चीतमा तजा हुन्या देशीनक शोहव ह -ई-मी दे 'हमई।

इह्ना है इंट । न्ह्रें-मी दे हिंदर्द ३ 'इट (राक) तथा गुप्तिः संबोध स्तिति । र्हेड्ड-शी देशा−ि देश इंदा । ∽हैं-स्थे गरी पर्यानवंग्यी भीनांभवाः वेद्यविदेशः । - मुख्यमा - पुण् माँजे-व रीहाः मुचामा स्रो दिना भीवदे पहाना जाय : -(ह)वहि-स बाराममें भूष करी हात । १९२: आनेरपुर्वेदा सुवकाष । म् - वरवा-हाप धान करना । - वर्गा-हाप धान हानाः भानेदगरित होना ! -शामा-मर बाना !

इंशी−दि की देश टारा । ~बाला~की काणा । ~ सींग-मो रामश्री शत । सूरु —सॉय अना−कार मस्या ।

४-५ (^८) रिशा भाग्ने कृष्या पंत्रवेदसर श्*या*लाल ह

ठ−⁵रमागरी बचगानामें उदर्गका बुगर। नर्ग । खबारण- , इक्र-म्यं । शहरूर नाह वशनेदा प्रान्या । ४४ रे रिश भीवदा रगरप। **⇒डक=स्त्री सनस्**या गाना कि इद बन्द। सूरु –होज मा∽रानित ही बाना भीयहा हो अमा । हरहरमाना-१० हि. हर, इंट दी पाति हाएव हरता ।

1 थ∘ मिं भी दादालला। दश्रद्धिया=िर प शंहर गरा धरनेवाद धौरीसी

बानवर निवार करनेवाना । इक्टीमा~9 - दरनामा दरनाम नशास्त्रभीस स्विभेशमा।

श्चनहों-मी है किस्तार ।

शकुरमुद्दाती-मां व्यक्तिविधेष मा शामाओ विक मनने वामी वाम चारकमी भाइका(ता।

रचराष्ट्रग्र-मी द इन्रायम् । इक्सहमारे-भी व्यविनी। हानुनयी गी। शानी। गार्रे

की बड़ी। शर्रवदश्री भी । **इट्राई**~मी॰ आधिय प्रमुशा शामनारीन प्रदेश रामा यनमाभीदना घवतार शहरदना एदिवा स्थामी भा नहीं।

eit gratt flette i इक्समी-नरी अमारार द'हर वर मरदारकी मी⊤रानी।

1"14 D 4(-) 1

रकृतायन-९ श्रीवरीका वस्त भर । हकुरायम-मी यमुना, स्तरीयात अभैनायप शामनी थीन श्रीयाः

हकोरी-भी नदारा अनेदी रह रिगोप महरी !

३श्वर-को १४ (४६ ।

414 शिपाना-मु॰ कि॰ स्वभाना, शर्मिश हरना । ब्रिस-सी दे॰ 'प्रिरी I शिरकना-ए॰ कि दे °िडकना । ब्रिस्क्रिर-त्र गंद गतिने। 'शिर शिर भावात्रके सात्र ! विरामिस-१ शीना । बिराबिरामा-म कि शिर-शिर करते हुए बहुना । ब्रिस्ता-अ ब्रि॰ रे॰ 'शरना । पु छेदा द 'हारना' । सिराहर =- वि सीना प्राप्तधार । सिरिका सिरीका-सी॰ [मे] शीग्रर । ब्रिसी-स्ती मंचि झरी। वह गण विसमें वाली रिमकर दकरा दी। पाला [मं७] दरीगुर । दिस्स्या:-पु पुरासी छाट जिल्मकी बुनायर **दी**की को गयी बाइट गबी दी। ऐसी शास्त्रा बाप । † विश् शीला दीनादाका ६ शिसना-अ कि प्रथमा नुप्त होना। मगन होना। सेना जाता। • मा जि॰ इमना करमा। ५ राशिर। शिक्रम नयी कोईका वसा दीप का शिरखाल । **न**टीप न पुरु शिक्स । शिम्बहित्स-गर्ग हिस्त्ती १४-१४कर पंगवानी हुई रीजनी। विक्रमिकानेका भागः एक महोन बस्त । वि. विक्रमिकाका हुआ । जिम्मिमा-रि॰ शीना जिससे विस्मिकाती हुई रोधनी शिक्सित्याना-अ० कि॰ रोधनीका क्रिकना क्र**धी ग**श-कमा क्यों म यमकमाः दिमदिमाना । शिलसिसाइट−म्बं शिलमिसानेश किया वा माव। शिक्तमिकी~सी शिशक्षियों आदिमें जना वानेनाता भागी पर्दरवीका क्षीया जी पीछे लगा हुई करहाकी गायनेमे

समता था रेंद्र दीना है। थिस जिनमनः एक सरहकी बानीः दानमें बहननेदा एक गहना । शिलपाना-ग• कि रो¤नेस साम कराना सहाना (शहनाका है)।

जिल्दी = = भी सीग्रह ।

तिलाद-वि शिसकी बुनाया दरन्यर हो शीला । सिलि-स्ते [सं] एड शका शायर ।

शिक्षिका-सी (4+) शीत्रा शीत्रको शनकारा वर्ष मधाशा गीति। भिन्नी उसमदा मैल ।

तिप्तरी-रमें [नं•] शीवुरः मुक्तमाया शीक्ष शेरेद्री मसी। हम लगा है। बहुदाह कह बाबा । -क्षेत्र-म प्राच्य क्ष्युतर् १

शिस्त्री-की अमने मारिकी पानी तथा वारीक टिन्तका

لم

1

ď

'n

भौतका जामध वराम भावि भगानेमे दारीरम सुरन्तामा मैना-दार-विविश्वरिक्षिणी हो। ब्रिक्नीक-मु [शंव] शोतुर १

शिक्तीपर-सी [तं] तीपुरः वृदेवश्राचः उत्त्वश्चा मैन । शीद-पु ? रोहा ।

शीदमा-भ दि०? राशना । श्रीका-मु अवसे वह मामा श दीनोडे निय यहीने

दर बंद भाना जाना गोता।

व्यक्ति की श्रीसना ना मान्त

क्षींदाना-भ॰ कि इन्सी दीना, दुस्ना। दुस्ता रोना । इसींका−प्रपद्ध छोटी म**छ**को भिसके सुँद भीर प्रेटपर **स**रे पान दीते दं । हािंगर-पु॰ एह कीहा बिसकी भागान बद्दा तेम होती भीर बरमाठकी राठमें अवसर सुनाई देती है।

भीषर#-पुरे 'शीमर I श्लींबी−को नन्दौ-भग्दो बृँदेंमिं दोनेवान्ये वदा पुदार ! श्रीका-पुर्णका ।

श्रीसमा−स फि॰दे॰ 'वॉसिना । श्रीरु॰-ि॰ श्रुट मिच्या ।

इरीकुमा रूज कि ग्रसनाः वैसना र मानतें सरा सिधमें शीहत मध्य पानके हेत -- स्रा

क्रीमा-वि बद्धत वारोवः दूर-दूर हुना हुमा, शाँशरा

प्रीमानारी≉−५ यक तरहका पामन । श्रीसनश'−न कि•दे• समना ध इतिसर-प्रभीषर, समुका । शीरिका, बीवका-मां (सं•) शांग्रर ।

श्रील-स्वी॰ प्रश्नृति-निर्मित सरीवरा बद्दत वडा ठान ! हरिष्टर-५ छोटी होन्छ । शीवर-पु• माती मत्सा ।

भूरामा - पु भूगन् - युरुष्के भागे वैसे भूगना दिसा वर्षे -नुदरदास । धॅशना*-पु* सुनसुना यक रिकीना ।

र्शेष्टकाना - व कि शीयता, निरमा निगरता। र्ष्ट्रीस**काइट**-गी॰ श्रीप्तकानेका मान (मि?) राष्ट्रगी । श्रीर-प [लं] विना धनेका पेश लाही। प्रोड−प समुद्र विशेषकः पद्मान्यधिकोस्य निदेशः निस्काः

— के बांद – रकके रका बद्रत व्यथित । श्रंधी-मी श्रीशिक्ष भूरी जी क्सल कार मेने है बार शेतरें

रद आव । शुक्रमा-भ निः देश दीना सरदमाः मुक्ताः मीवा हाना (कॉलींका)। दरका, ममिल होमा। हार वा राटाई शीकार करमा। प्रश्च बीमा कनना। दिखी और बखबाड बरनाः गावनाः । हितसानाः १६ ड होना-भेदन ही प्रमु शहर द वर्षी व बदी समाग्रा -रामनंदिका ।

शुक्रमुपार-तु भृत्युता । शक्समा-म वि में प्राचार । शक्सनार-भ• कि शोख साथा। शक्याना-स कि सन्धनेक काम कराना।

शुकाई-की मुखानेधी किया वा माना शुबानेधी पत्ररूप शहामा-म वि देश बरमा हरशाना मेरना। जीवा

करनाः प्रयुच करना जनाता । मध्यमुगी ७ –शी दे सध्यत ।

शुक्राच-पु॰ शुक्रीकी किया या माना दाना प्रश्नीत-च'इ !

शुक्रावर-न्यो है सुकार र रामरामा शुप्तकापना -- वि रेज्या आह्नमुद्दे श्रिद प्रीर्थ करना ।

शहरपुरा-तु अनेरे वा ग्रामका समय मन प्रदाश हतुमा

क्रमाना । अ॰ फि॰ नंबनपूर्वक आरंब दीनाः उननाः टहरमा, बममा: ध्युक्त होती ।

टरमा!-म कि शरबीधे गणना, ठिक्करमा; मार्थण मधिक शीत पत्रमाः + स्तम्य दा बाना ।

इन्टभारि~स्यै विसंपालामार गयाचा।

इरोी-पुक्ता रण दुमा मेहा त्ता एक शरहकी वैशी द्याराद ।

रुजामा 🖛 स कि थिरानाः निकल्याना ।

टवन-मी॰ अंग मंदायनका हंगा सह होने वैदने व्यक्ति बंगः रिमतिः सहा ।

दबमा≉-स कि म॰ कि है 'ठवना'।

ठवमि॰-श्री दे० ठवन ।

इस-दि आएसी। कर्मा किल्मे कुछ निरम्ता बद्दी। मनी पुनाबरका (काषा) दशीका (म्पना) विस्तृती आसाज मारी हो। हठी। रिवर) ए ।

इसक्-भी सगर। चान-हालका बनाउदीपन जिससे हुए, भम अधिका गर्न स्थित दाना हा, पेट दान । न्हार-वि उत्तरकानाः।

इसका - प्राथित हो से विकास करें हैं। हमाहम-म धाषागका हैंस-हैंसहर (भरा)।

द्रस्थां - ५ उत्तर अभियानवरी मानः द्याना नदासी धनानेका यस भौतार ।

इक्सार-भ कि इसस्माना दिवदिमाना। काम करने में जमना।

टहनाना १-४० दि० वक्ताः (वीतेश) दिवहिनामाः क्षारंक्षा सुनाम करने मंद्रप्त करनके किए आवत समझते क्रुण जाग वर्णनाः क्षाम करलेमे अधना ।

इट्टर+-पु+ रशन अपदा चीका नागे द्वां वयद । टहरमा∽प्र+ द्वि+ रक्षमाः क्रिमाः बंगा रहेगाः अग्यामी इपमे रहनाः पटा होनाः तय होनाः वननाः प्रतिद्या

रहराई-ल्रा॰ इंड्रानेसी दिया वा जनहरी। संस्था । दश्राक्र−ि दश्रमेशकाः (श्राक्र ।

बहरामा-म कि॰ रीटमा रिवर बरमा रिवामा धन बरमा श्वा बरमा। + अ+ दिन डएरामा दिन्ता **५ व्यक्त**ा

द्वदराष-पुटदरमेश मचा न्यर या गणका विराम (धंगीत)। महाका निगका टहरीनी। गमाशता ।

दहरीनी-मा॰ दरेड भा दे संब-देनचे अधिहा या बिद्य ।

हट्टाका-द्र अपनी हेती। सु -क्याना-अहराय दरना ।

र्सें र्रोहे -भी है हाँच । अन्तर्वे प्रतिवास बीर्ज -पु के दिल क्ष्मा निका, क्षम व साँद-विक सम्बोतः (गान काडि) थी बूच म देनी था ह र्वोदरभ=पु इदरी ।

बॉर्च-पुरि प्राप्त । की बहुब शुरनेकी संस्था। क्रीब~पुश्चाम प्रगण्य अनगर, कीटा र

रौगमा-मः 😥 ट्रेनमाचा बनुबर एरनाः जनविरु श्रीलार ह

गुंबित ।

संहीं।-ची॰ रे स्रोत्ता बाकुन-पु॰ बंबप्रनिया (विशेषहर विष्युद्धे) परमेपरा अभीवर स्वामी। मावका कृत्व व्यक्तिः सुवियं ही पराचा व्यविद्यार प्रदेशविशेष या गाँवका माहिका मार्र ।-हारा- ठाकुरका मंदिरः वरोरियत अग्याभका मंदिर ।-बाबी-साँ देवस्थान । —सेवा-मा देवताया प्रश्ना देवास

राकुरी-मी॰ दे॰ कुराई ।

टार-प्र रीक वा रक्षांके बाम वामेशका श्रीवका द्वांगा समयमा शामा वितास्य तारा न्हिंग + वेशरी। आयोजना जनसमूद भीता बेदारजनाः संदा अधिरता। -बंदी-सी छाने बादिके किय स्था बना की निया -बाट-म् सहक महक । मु । - बन्सना - भन रहन्याः वक्ष्यम बनाना । -आस्मा-पेन ६१मा ।

बाहमा ७- स कि व वाट करमा। संभागा आधान करना हानमाः स्थारमा । खाइर-पु• पूरा इंक्पीर पश्चिमी पनी कर्नरीमी धारीर

• सम्बद्धाः समावित्रः ठाशी+-शो+ दे 'बर्ट'।

टाइ-५० १० सार १ राहणा ४-स कि दै 'हारसा ।

सासर-प्र• दे 'ठारर । द्यादः, शहाय-दिव रातम् जन्तमः विना दुरुषा दिवा द्वामा रनिना करका प्रानुत्ता वाशिक्षाको । सुरू 🗕 (दर)देसा 🗕

रिकानाः बद्दामा । हानेप्रवरी-पुर दिल-राम यने रहतेनान गापु ।

बाबर=-त रार शगका-दिव नापनी मही गीबारत करन दर सा कारर -सर ।

हाम~न्द्री हान[्]द्रा चार करनेतारा निधवा दार भावन्त साथ अंगर्गवाष्ट्रनः कार्येविद्रोपनी गैवारीः कार्यारेगः शुरू दिशा दुआ कार्य ।

शामना-स विक बरनेदा र॰ निधय बरना। देशमा बार्वविधिको सरस्याने प्रारंभ करना। (मनमें) निश्चित्र

शामात-स क्रिक्ट कालमा । देव 'व्यवा : मान्य सार्व रियम् रेग ।

डाम॰=इ दे॰ 'डोर्ड श्रातेरडी सुरा भेगनिन्यास । शार्थे-सा है धार्व र पूर्व दी राव ।

शास-पुरु [में] बामा आदिक गारही ।

हाला-भी दे हामा (पुरस्तर) शासा-व देशारी। अपन्य क्यो। बाय प्रश्न मेर दर

भागा । वि. वहार निकास । ब्रालिनी-मी॰ (मे] क्यर्यर बरचनी ।

क्षारी-रि बद्धा विभे इस राम-रेग म र निग्मी a क्षी क शोह स साम्मा - - सम्मा नेन मार द्वार्थ हान

क्षेत्रे समयात्रीकी मा काशी ते स्ट्रांबरी -रंग्यान । शार्च-प्रदेश विश्व

शासमारू-म दि दे 'दाना । समा-५ भेडाहीश एर भे बर्ध

बाह्-मा मानेनामाध्या विश्वत हाँत । अवस्थाना

कि उसने मूठी बात कहो । —पर लुक्कि मार या सानस-सुद्ध बोहमेबानेका सरवामान हो। -(डी)का पीर या बादशाह-भग्नत वहा झुठा । शहीं-म शृठ-पृठ बीही हिस्सानेके किए (-म पूछना)। झ्राबि-न्त्री [सं∗] एक तरदकी सुपारी असगुना अवंगल-मुक्द भारतधाराणी । श्रमा∗-विदे°शीमा ।

श्चम-भी अूमनेशे क्रिया या माक केंद्र ।

समा - प्रमारः समारके साथ होनेवाला ज्या शुक्छाः शाही पुष्ट्रेके मानेपर रहनेवाले मागपर हैंका मीतियाँ मारिका गुच्छा ।-साङ्गी-सी वह माडी विसमें सुमक 26 611

झुमका−पु∗दे'सुमहाः≷ झुनद्र'।

इत्सद-पु दे शूनर् । "झासद-पु अंडर्ट, स्वर्थकी बात इद्योगना ।

झमदा−५ द॰ शुमरा'≀

श्रमना-अ कि रपर-उपर दिक्सा, शाँके खाला। क€ रानाः (मरती आनंदमें) मिर-धरको आगे-पीछे वा शादने-याचे दिवासाः मधेने कद्धातामा । शूम-शूमकर-सुमते हर, सिरन्पश्ची दिलाने द्वर ।

सुमर−`दु॰ होनीमें माचके साथ गावा जानकामा एक गीसा इस पीत्र साव श्रीमेशला भावः शिशी पहलनेका एक गरमा। मेदलादारमें राहे सी-पहन नावें जाति: बरुका:

दे॰ समरा ।

βĺ

ام

đ.

1

d

34

समरा = प्रश्नेतिका एक ताल ।

समरी-बी॰ शाबद रागदा यह भेर !

प्रदान - अ० कि० गुराना ।

स्ट्रा−र्न वि• मूररा, सुरस्त शाली । • पु• शवर्षमा कृती । इत्तिक-स्ते बच्छा ।

स्रे−अ व्यर्थे शॅं देकार ३० वि० व्यर्थे। स्राप्ता द्वाकी ३ शुक्र-न्यो॰ शामी-पीड़ भादिको पीठपर समावटकै क्रिय शाना मानेवाना करहा: दोला-शाका भदा बहुनावा ! इ. श्रमा श्रमेसा माधन । -वंड-पु॰ गोरदी यद

क्षमरत में। सुन्द हुए की जाती है।

इल्लिम-पु सून ह्या करमना गढ वरूना गाता । मूमना-म वि लायदर मागचीरे होताः वेन केनाः

सुन्दर बहबर या न्यूबर धन रेजा। हिमी आशाधि करहे रस्ता। पु दिसेन्या वह श्रेन । दि अन्तेवाला ।

i. शासमी-वि मी श्रुकतैवाणी। - श्रुवाकी-की मृत्यूद d क्षी पढ तरहकी कमरत । -ब्रेटक-म्या यह मरहकी ers

सम्बर्ध =ा १० वि भागरा ।

श्रमा-प्र हरूनेदा सारन देश्यी टाम छनदी कृतिशी भारिमें देवी हुवे र मंदि सदार लावना हुआ नाना भारि हिरोला शादा रुग्मी वीबीसे आहिका बना दिना संबद्ध पुना एक नरहरी दिना बोहती कुने' जिल मान देशाच्ये स्पिती परमणी है। शुरू देश ग्यमा । 1 100-17 [e] \$ cf- 1

्रे सुनी को वह बन्ता किया दस वह दीनार दर ALC HAND PAIN \$1

क्रीपना—स॰ कि॰ समाना, शर्मिश होता । र्हिपू—वि सेंपनेवाला, कम्बाधील । द्रोपमा−म कि दे• 'हे पिता'। होय-विश्वे 'हे"प्'। होरक-स्रो हेर. विसंवः शंगाः, बरोबा । द्वीरमा-स कि शेखना छेदना । ब्रोरा#—पु॰ दागदा" वोशटः **दे॰ '**बार' । में ह-नो दोलनेदी फिया या माना दिलीता वदा। देर, विश्वंद ।

श्रीसनाः च कि सहना, परदाश्त बरमा; केम्पाः पानी की हाब-पाँवते हराना। इककर शर करना। * मामना । श्रेकणी-खी॰ पाँधी वा सीनही बंबीर वा बनके गहनोंका बील सँबालनेड किए बाब्रॉमें बटदावी जाती है।

झर्तें क्र−रती॰ नेग झोंका; वोणा मृत, आवेशा # मीट नापाता चारू दंग। मु॰ -मारना-दीरूमेमें तराम्हा राँगोधी दवामा डाँगी मारणा ।

ऑकमा−स॰ कि वागेकी और केंद्रनाः पकेलनाः मह भाइमें इथन डाकना, फेंक्ना; बुरी अमह लाकना देन देमा: ('में हॉक्ना) वदाना रार्च करमा: (गेप) कगामा ।

झॉकरनारां ~#+ कि **१० 'मु**ल्सना'।

र्शीकवार्ग −प्र भाष भाषि शॉस्टनेका काम करनेवाका । श्रींकचामा~स कि॰ श्रीकतेका काम कराता।

सीका-प्र• तेव दशका थका, सरकाः सकीरा। तबीसे वानेपाकी चीवका पक्का पानीका हिकीरा। # कार-माना सदी ।

धींकाई – सी क्रोंकनेकी क्रिया या माथा शॉक्टनेक्ट बबरत ।

डॉब्डारमा†-स॰ क्रि शक्स देना । श्रीकिया-प्रशासनीय काम करनेवाला, शासका !

ऑक्टो−न्धे नेश जनानदिदी। बीदिम I श्रीशिशं -त देव विद्या मान्कि गरेने पैनीकी शक्रमें

शरकता बुधा मांगः पीसरा । इतिसस−पु• श्वेतचादर ।

झीर-प्रशासा हास्तरा जुड़ी। भारत । श्रीरा-त शुन की बाला विगरे हुए, समे मैंने हर बाण जहा जुट्टा व वेंग । -श्रीदी-भी ही शिवीना

परवत्र बाल वासीरत हुए लड्डा ।

श्रीरी-भी• है 'ता रा। इतिवहा-पु यान-कृषये छापा दुवा छारा दशा पर क्रिया मेर्द्ध ।

श्रीपदी-मी॰ ऐसा शोपना । श्रीपा−प्रशासका स्वराह शासर-पुष-, आमध्य । ब्रार्टिग-वि पु लेरियामा अगुवारी । शीब-पु [मं] ह्यारोचा देश

शीवहा-पु दे शा वहा"। शीपवी-स्तेटेशे परि

हरीर-पुंच्ये रोज ।-ई -दि रहेगए। म्हें न्य सरकारी ।

11-4

द्वमरी-क्षेस द्वमरी-स्रा एक ठरहका छोटा मधुर गामा जिसे गणे समय माथा कई रागीका शिक्षण कर दिवा बाता है। दुरियाना-म॰ क्रि॰ छरीते बिदुर जानाः † दुरी हो वासा । द्वर्धी-मी॰ बह दामा जी मूपनैपर शिक्षा न हो। द्रसमा-भ कि र्यंग वगश्में मर वाना, दशहर गरा द्वमनाना-स कि॰ तंप जयहमें कसकर भरवाता प्रस-भागा । द्रमाना-स• फ्रि॰ दे॰ 'द्रसवाना' । हूँ ग-न्यी चंत्रपहारा सुनी हुई उँगकोसे डीक्ट बारनेकी दिया । हेंट हेंदा∽त दे 'दुं≅ ≀ र्हेंटी ननी व्यार पात्रर भरदर भारिके टंडलका जीपेका भाग मो रीत कारते समय पुल्तीमें नदा छूट जाता है मंदी । हुमना—प•कि. दे ३ छना'। र्हेसा−दु हॅमा। इसना−स• कि दश-रक्तहर यरना क्षमध्य राजा। बोर्से प्रसामाः (ला) बहुद अन्ति सामा । हिंगना!-दि दे 'हिंगना'। र्देशा-तु भैगुहाः दंदाः, रुद्धः। सु॰ – दिन्तामा-माद इमबार बरमाः निराध करमा । - बजना-लाठी बलानाः। –(गे)से−वणसे । टॅर्गरां-१ बीनने भीर बध्य कुर मनामेशके चौछाबों दे क्निमें बीपी मानेबाची रुकड़ी। र्देषा−प्रभूमी पॉइ। रहा-पु॰ दे॰ 'ठें दो' । हिंदी-स्त्री व्यापका महा कानदा देश वंद बरनके लिए समी रहे भारित क्षण दार । हैंगी।-मा॰ बोदल आदिका प्रद वंग बरने है सकते। आति। काय द्वार । देख-त देव चाँदा सहागाः वैद्या क्या । देखना-मु॰ कि सदारा नेना देखना । देखा-५ अनुग देखा बीकरा तक्त्रेया गायी। तक्ता दशाने का दक प्रधारा देश कीया । हेंबाई। -मा व दरहेंद्रे दिनारेक्षे छरते ! देशामाण-पुर रशामा प्रशासकी जगहा मिनासन्ताम ह हेक्ट्री-म्यो० देव '१क्ट्री हेक्ज्ञां~वु देश कीरवा । रेगाता - स॰ कि रोक्ता, मना वरमा। दे॰ दिवना । रेतमी -भी • रेबनेची स्पनीः सवाधा । रेपमार्थ-सर कि इंदराना शहना । अ कि उदाना। रक्ता - कल सम मा पुत्रा को देवा -४०। हेपनी -- ना दे दिवस । देपार-पुरु बनी रहेंगा रव-दिन बद्दान, जिल्ला अग्रादि विक सावारण वेजनान-बो: शिमने कमरोजिनाहर देख ल हो। शहर विश्विकार र मार्थ मोधी मात्री बीमो । —से-नाष्ट्रवी ।

माहि । हेम्पना—स॰ कि स्टेमहर भाग रशना दा शमग्रानाः चसकानाः । देखमञ्ज-व ब्लममुद्रे शाय । डेका-पु॰ डेल्टर यहायी जानेवाली मारी। पद्या, भोड़) –हेल,–हेसी–मी॰ थ्हनवद्या। ट**पदा!** – प॰ दे॰ 'ठीसा। टेक्डी!-श्री वरहार (हैस~भी॰ इस्टा चोटा चक्तते रामव पन्स भारिने वैस्मे समी चोर । हैसना!−म॰ कि॰ दे॰ 'इसमा। डेहरी-त्या दिवाल्डी पुरुद्धे गीने लगावा बानेवाना सद्यो । बेह्मरा-पु॰ पुरमा । र्तनव−मो० स्थान *चन*ह । दंशींग-सी है 'इन'। हे**ड** केव-मा० वरस्मवस्य रेमपेन । र्जेंड-भी डॉब्मेडा भाव वा दिवा: वापान) क्रिका~स कि॰ मारी वशागे भाषान करवा। महार द्वारा चीनर प्रसामा। मारता पीरना। शहन बरमा। (संदरमा) दलर करनाः ध्वार या तारने बरमचनाः मंजपूरीन बहमा। भिरुपार' शहर रास्पन बरने हुए मानान करना। वेशे आर्थि वहत्ता । सुरु श्रीकर्शकपर छद्या-एटक्ट वा नम्बाहर भवता ! हा बचा-बजाना-भग्छी तरह दर्ध केया । होंग-लो• बोंगा भोंपद्मे बारा हुए। हुई उगनीमै आहर मारंगः । हींगणा-म॰ कि भींच धारना। हती हो निकान श्रीतर मास्या । र्शिया-प वणी बेशा कालक्का पात्र बिगावे दक्षामहार गारकोदी सामान देते हैं। क्षां - अ॰ पूर्वा दिशीये गेरफाताबद्धः शान्तीये सम्बाह्यये बाना व्यक्त द्वावर् । शोकवा-त कि दे शैक्ता । क्षोकर-मा॰ वनन समय बंदर पंचर भारिने दक्षानेने **बैर्डि** लटी भीरा रामी बरता हिंगों भीर संदर्शी मीर्ताः बना हो। बेरने दिवा नवा भावता महा। जनहा अवना हिरमा । मु॰ -बदामा-पाण महना। वदणीय प्रशाना । -न्यात फिरमा-उदेश्वरिश्चाने सम्बद्धन हो। सम्बद्ध बारा मारा किरमा ६ - न्यामा-भगारपानीका अगरियाण भोगना । ~(शे[®])पर एडा रहना-भागन गरं*वर* श्वस्य । ग्रेंक्सा - अ मेश शानवर बनावी दुवे मोर्थ पूरी। होर-वि नव्यक्ति मृत्री होदराक-दि दीएचा, शामी ह श्रीची घोरी-भी है 'दरी ! बीयरे-५ ब्री कार-य वृत्ती तेला बढ़ कार द्वारा बरवामा व मीच- नेर क्षेत्रि सन्त प्रेप भरि लेडी -- पर ! हेची-गों भी ह बरतन माण्डि हुँद वंद बर्देश हम | होगा-दि भी देखा म ही। को ग्रेन्द वाची म ही। हन ह

भागोगन । देश-५ छगडा प्रशाद बारह । र्दश्य, रहिम-पुर महदूरीका मेठ । देशिया-सी शॉहपर पहनमेदा एक ग्रहता, बहुँटा ! र-प• [सं•] रंकार जैला छन्छ बीनाः बतुबाँछः सारि वरुदा सीपदा । टर्डें≠⊶सी॰ म्हामा म्हाम निकाणनेकी सुच्छा ताक । टक-ली एक हो ओर देरतक सनी दुई रहिः सकती शादि श्रीकोका चीभे्टा परुश । सु॰ -वैंधना~वहि बागकर देरतक देशना । -खगामा-मतीवा करनाः **शक्सावर्ष १टिसे देखना** ३ दक्रणकाक-पुर दे॰ 'दक्रणको'। दिश यक जनह रिशत (eft) t हक्तरकामरा -स॰ कि रक्तको कगावर देखना । अ कि स्थल्ब सन्दर्भवस्य दश्मा। टक्टकी-मो निनिमेष रहि । टक्टोना - स कि वैविक्तींसे छुक्त क्रियो बखुका पता अगाना ध्रीतनाः इदिना, शीवमा-'वाबी नहि शामंत्र केस ग्रे सबै देख रहरोडे −साग्रहोडास I टप्रदोरमा॰-स कि॰ दे॰ 'ब्ब्टोबना । द्रकटोलना-स कि रपर्शरी बता क्रमामा था वर्षेयमा । इस्रोहन १-५ हरे। इन्द्र देखनेका दान । दस्योहमा- १ स॰ कि दे॰ 'इक्टोलमा' । † दि॰ इपर सभर स्टीकरा रहनेशका (बीट, काक्यी)। इक्संबी~फो॰ स्थित नैसा पढ दुराना बाजा । रकरामा-भ कि दी बरतुओंका एक दूसरीथे विष भागा। ठीकर करा बागा। बार्नको शिक्ति निय बार-बार माना प्रामाः । मारा फिरनाः श्वर-उपर पूमना । श - कि को बरतुओं की सापतमें कहा देगा। दश्रमार-गो॰ है उद्यास । दक्साम-मी॰ सिद्दीकी दक्षार्थका श्याना ह निर्दोष वस्ता। विभीगा सरा। —का गोडा—मोब बर्माना। इडमाडी-4॰ व्हमाच्या; प्रामानिका रासा विशं दारा **मनुभारित । पुटदमारका सम्बद्धाः −धारा**−सी क्षेद्र बाद पद्मी बात । —बास्त्री—क्षी# शिक्ष भाषा । इरहाई-विश्वी देश्राक्षी'। टका-दु॰ पाँरीका पुराना शिका, रचना ही वेती है वरा-पर वर्षिका निकान अवध्या आयो हटोइन्द्रो होता ह्या मेरका गण्यांनी वरिमाण । मुरु -पान्य स द्वीना-निर्धेन शैना । -भर-भरासा । -मा जवाच देसा-भाक रनदार कर देना । -सा सुँद क्रेफर रह जाना-संज्ञा प्राना 1 दबारकी नगी रे 'रक्टकी । श्यामा-स कि है दिवाता । इशामी-मी रक्तापीते दा पैनेद हिसादने किया गया प्राप्ति म्नीड एक उनेक हिसानने लगाना गना गंदा 41401 इक्रादी-वि गी दर-एक इक्ष्य अवना सनीम् वेयने वालाः निम्त सेनीदी(बन्या) । शा देक बद्धानी । दक्कां न्यु या शतने और ल्य नेके बाम धानेसका

गुना, सहका: बोटगीका एक पुरना; छोटे वरामुके पक्रमेरी ¥गा हुआ तागा । दक्तमी-भी • पत्रद कार्यकी हैनी। नकाशीके काम बाने-बाधा एक की बार । दर्बरा~बि॰ ट्येनाका, धनी, मासरार ! दकोर-का दंकीरा टंकेनो भोर या प्रम्या **इककी** भीरा थरपराष्ट्र सेंग्र । इक्रोरमा--स॰ कि. चीरेसे मापात करना। वजाना। दके वादियर चीर करना। योरकी से संस्ता । दकोरा-तु० दंदेशी चीर । **दकोरो≠**~थी॰ टक्स पीट, सापात । **टडीरी**-स्त्री छोदा वराष्ट्रः शोदो-सोमा श्रीकमेका **द्रा**टाः रदासी । टक्क−प्र• (र्थ•) पादीक भातिका व्यक्ति। संबक्त सारमी । -देशीय-वि॰ वादीकोंदे देशसा। प॰ वश्रमा सामक साग् । टक्कर−की॰ ठीन्द्रर, दी बरतुर्भोदा बेगके साथ मापसर्ने मिद वानाः सुद्धावकाः द्यानि । सु −का−सुद्धावकेका । ⊷ रतामा-भारा नारा फिरमाः सुराक्ष्मेश्च होना । -सेक्सा -पारा श्रहमा । -मारमा-हराव होना । रका-५० (मंग) शिव । इसमा-पुर एडीके कपरकी बड़ीकी गाँउ। इगल-१ [र्न•] छ शाचाओंका व्यागन । हरार-प [र्धन] सीहागाः तगरका वृक्ष जीवाः मैदा होता। वि॰ वेंबा-तामा । इयरना!- कि दिवक्ता ह्यामुख होना । इस इस०-म 'धार्वे नावे बरते हुए (भागता बसना) । द्रवारी -शा॰ वरतमीयर मधाद्री करनेका एक भीवार I टरका॰-वि वात्राः शतकाः कोरा । -ई-सी वात्रमी । टटक बरस = नि भेसिर-पेरकाः कदपराँगं। हराना!-- क्रि॰ स्म बागाः गुरुद्ध अक्रुनाः। इटावकी-भी दुरएी। श्रीया−श्री॰ भीम भारिकी हड़ी । दर्शवाड-प॰ पिरनी, चदर। टरीरी-मी इररी। ट्रमा-बु॰ ट्रा टरीरमा -ग दि दे दिरेहना । ट्टोल-मा ऑननेये किया वा मारा हरीसना-स॰ कि॰ उँगनियों। एकर पता समाना, इक्न बर छना। वातानाप द्वारा नियास्त्रा पता क्यामा। भावमाना I द्रद्वमी-मी [मं•] क्षिप्रमी। टहर-पु॰ रधा वा पर्देद्रे निय बनावा हुना वींन शारिकी कडियोका पाना। उद्दरी-व्यी [मं•] टप्टाइ थीगः श्रुटी वानः व्यत वाताः श्रीन । टहा-पु वरी टही । रही-मी॰ ध्रांश टर्ड वा वस्याः प्राया शीमा और बरदाः व^{्ये}की दीवारः अंगुर प्यान-धे झाम आनेवानी

वॉनसे वहियोंसे दोवारा शिकार सम्मेदी भारा शासानाः

488 **बद्धवादार्ग** - पुरु बाद शेर्नेवाना - टाक्टिया । इ देपल-(१० संदी दारीवाना र इकार-स्तेत साराजडे साप सुंद्रते निवनी हुई हवा. ष्ट्रयोश -- वि॰ दे॰ 'दबदार । उन्दर्भस्य च्यारा दशाद । स्र० −श सना−मणी साव हमर-की॰ वितास प्रत्याद बीच थीव मीडचे प्राप नाय १ द्वबारमा-भ दि॰ स्वार हेना। शादर तुम दीना-इपटना−ए॰ कि॰ शिहरमाः पुरस्ताः, दौरवा । अ० दि रस्री धर्मर, गोन्द्रशामे क्लारेमें ∽कारियान सरपट शीहवा ह त्रिवरीः हिसीका मास्र वया भानाः बद्धावना । **ब**पारशस्य **ब**पोरसंस-व॰ टोव मारनेशस्य केवच वार्ते प्रकृत−पुटाकु, बुरसा। बनानेशाचाः वदः वनुष्यः। इक्टेमी ≕सी दाक्षा दासनेका काम सदा दाकावनी । डफ:−पुकीम्बाली कादि गावैत्तर्लोदा एट वाजाः प्रमेश हकीत, हकीनिया। - प्रामुद्धि न्यानिक भारिकी नाम-महा समा एक बढ़ाबाया जी समहीने बमाबा आता है। कारीका रशींग रयनेशाकाः यह काव करनेशामीएक जानि। द्वप्रसा-न दे० द्वर । सद्यारी-भौ । विशे चांद्रकरोगः। दक्रमी-मी॰ छोटा रुप्त, धीप्रहा । द्यान्त धननेमें दोनी प्रोनेटि बीनका अंतर कान, बन्य। बचार॰-सी शमा काएडर रेजिये भाषाप: विनात है मु॰ -देना-बन्म श्लना ! -भरता-स्थन बनना ! द्यारमा - ज कि निषादनाः दा भारमा । −भारमा⊶नी-नंद इस दशका। इप्रसर्चा-१ देश्ट्याती । इकासी~नु र रह बंगामेशना एकचर की भागी अपनी दराद्वरात्मा - भ कि अस्वित् द्वामा वीवनाः स्वर्-क्वर पुत्रत फिरना। स्थमग काना । आहि ग'नेशका सगयमार्ग(का वद दर्ध । द्याद्रोलना १ - अ० कि० दे० 'दयमयाचा । इप्हारनार-भ कि शोबर्ड शाम करमा नरभगा-श्वरादीर-वि दक्षिणेतः अभिन्तः। · हातमी तिकृत स्वीत बदन क्योरिके -बदिना । श्रामा+-स कि॰ दिसमा: रिपनित दीनम अपने स्वान क्ष्य−म जैन थेना। **भवशा जिल्लाह कुल आ**दि बसन है । स इ. सा. वरायमाः एशारामाः चयमाः **इबक्रमा∽स॰** कि॰ रीयनाः दर्द बरमाः मॉर्गला सम क्षाप्रमा—स॰ हिलने सुक्षमे। सहरवनावरके मात्र ३ पूर्व प्रीमा । द्यासगमाः -श कि देश दमयगाना रें। इवर्डोहीं-नि सम्पूर्ण दरदसमा दुशा । इवहवाना-म कि अधानि अधुका बाना अध श्रामागमा~व कि श्रप्रतक्र हिल्ला वा मुख्ला। विचलित होना हाँका ति होना। लगगगमा है है शुरू बक्त होना । कि दिनामा उत्तामाः विश्वतित वश्मा । इबरा-पु जिल्ला गरका, वह भीनी अभीन अर्था पानी धनता हो । हरार-भी भागी, शह शाक्षा । ज्ञान - बनाना-ज्याव डकरी∽शी धौदानश्चाः दन्माना । इक्कर-दुद्ध तरहदा लोरका मिद्रा पैगा। वि [र्थ•] चरारमा ॰-भ रि. चनना गंद गति } चनना इत्हना। (4)) काम जातिका रिती प्रकार चाना रहना । क्ता रोहरा : -शेटी-धी कशाहित दक्ता - प्रमुक्ता विहेश और सुरका सेमा बरवन । हरारा- • ५ मार्ग, शाना। रे बोस बारिका बना व्य द्विया-री धारा विभा। िराना बरनम् । 20) -07 \$0 Sect 1 इस्तुन-तु भीर तुम्हों भारि वक्षान्धी नवर्गा हुए इक्षोमा-म कि॰ देश द्रशमा । -- बना-सनामा वंशसा इद्रश-९ कामुद्रा बना बह्नपार ध्रेश पार्थ बद्रेश हैक हराजा-सर्गाः दिनवित करनाः राज्याताः दिकासाः ह गारीका बह ब फरिन्सा दिल्ला ही अभव किया जा गर्दे ह क्षमार-च भरिषे अन्य वह मांमाबारी जानवर शी राष्ट्री **ब्राम**−९ करन्य नेना ४६ वाप ने परमनेटेकाय क्रिक्टर बस्या है । क्ष्म-प्रदानदर्शनियमी श्रेट दान्त्या । 如何 美多 श्चरमा~न 🛝 भागा एक श्वामक प्रशास्त्रमाः हिस्स इस्रहमा~म ६६ (नर्गते) धन वर भागप्रद्रदराः रहरा। अगहमे व हरना। (बार्यन) बहुत बाना समझा TRUTE • ऋग्नाः • श्रु कि देशना। ब्रमकारं – पुन्न अपना शृंदा हुआ प्रमा वर गरंद । दिन प्री में हा त्यां हिमाना दूधा (बाजी)। तह हा जिल्ला इका इटारें-+ी रणमेड*कामा रणनेरी कप्रशास बराबा-म दि गामने इंश्वान कराना, क्यांना mn: इक्कामा-म हि इस दी मावायके भाव हुन या ! arpit (atiti) अवर्गार्थी-रि देश वर्गी हा । स्मा-पुण बामा नेशा श्ला ह TREE-fe mit einem ferun magt fin क्षाकीरी-भोन स्तरकी देशेये परी ! क्षान्त [मंत्र] शेर श्रीर व राजी इत्यत्र स्थीव 47811 ELM-41 1-EL ERGEL संबद्द स दिन होगा क्रमर-प्र [लंक] राजा २ ए शबन्दर का स्टान्स् प्रमुधी **ब्रुवा०∼भ ६** जनशा शुरस्टा ।

दात एएस−हि दिश्देश³ हीः "शीगण ह

अवन्तर बद्दे अपने संदेश है नी, अन्तर है है

समा, तक्का औरमीका पक पुरवा: छोटे तराबुद्धे एकडेमें

टक्कमी-न्सी परवर कारनेकी छेगी। मकाधीके काम नाने-

टकोर--की॰ उंकोरः इंकिकी चीट वा सन्दा इक्की चीटा

बकोरला−स॰ कि. भौरेसे भागात करना; नवाना; दके

टकीरी-की छोडा सराबः चाँदी-सीमा सीकनेका खँडाः

क्या द्वभा चाया ।

वाक्षा एक औवार ।

चरपराष्ट्य सेन्द्र ।

श्कासी ।

दकोरा∽प्त बंदेकी बीट (टकीरी#-सी॰ टक्स भोट, भाषात ।

टकेत−नि कोनालाः धरोः माकदार ।

भादिपर प्रोट फरमा। गीरमीसे संधना ।

ď

4

ř

भावोषन । देश-प झगश, फसार, रहस्य । रंबस, रंबेस-पु मधवूरीका मेठ। टेंदिया न्ही बॉहपर पहेनमेका एक सहमा, बहुँटा । ट-प [सं•] टंकार येसा घच्या गीनाः चतुर्गादाः भारि यकका खोपना। दर्द्ध = म्मी • कामा काम निकाकनेकी लुक्ति। ताक । टक-की॰ एक ही भीर देरतक बनी हुई पटि। जनश बादि तीवनेका चोक्षेत पठका। <u>सु०</u> -वेँघना-वटि यमाकर देरतक देशना । - स्थाना-प्रतीका करनाः काक्सापूर्ण घटित देखना । इक्टकार-पु दे 'टक्टको । वि॰ एक बगद रिवत (दहि)। रफरकानां ~स कि रफरको कगकर देखना। अ॰ कि उक्त क चन्द्र क्लब क्ला टक्टकी~को निर्मिमेप धीर । दकटोशा*-स तिः उँगक्तिनीसै छकर किसी वसाका पता स्माना क्ष्रीकनाः हेंदना, खोजना-'धावी नहिं मानंद प्रेस में धरे देख टक्टोबे'-मागरीयास । टक्टोरमाण-स कि वेश 'ब्ब्टोकना । टक्टरेकमा-४• कि रपर्लंसे प्ता क्यामा वा वॉबसा । टक्टोइन+-प्रशीसकर देखनेका काम। दकरोडमा- = छ । कि दे 'टक्टोकमा । † वि+ धपर चथर ब्दोन्स्ता रहनंगका (भोर, कालभी)। टरमंत्री-खो• मिवार बैहा एक प्रशास बाजा। टकराना~भ कि॰ दी बरतुर्वीका एक बूसरीसे निव जाना। ठोकर कन बाना। कार्यकी शिक्षिके निय चार-वार भाना जानाः • भारा फिरनाः स्थर-उपर पूमना । स कि दो वस्तुओंको भाषसमें सहा देना । ढक्रमार~स्त्री दें॰ क्स्मुल'। दक्तास−र्या सिक्रेंको बकाँका श्वाना + निर्दोष पर⊈। थैसा एए। — गरोदा – भीव यभीता। टडमासी-(र टक्नारुका प्रामाणक सरा। दिहीं दारा अनुमोरित । पु ददमाञ्चा अध्यय । --बाल-ध्यो० टीइ बात पदी बात ! -बोधी-खी शिष्ट माना ! दक्कदाई−वि॰ न्दी दे॰ 'टबाही'। टका~पु पाँदीका पुराना सिक्षा, रचवा। शो वैसेंकि वरा-नर त्रोंनेका मिदा अवका। आणी छटाँकती शीकः समा भेरका गण्यानी परिमाण । मुरू —यास ज हीजा—निर्धन याना ।

टक्क-पुर्व [सं] वाहीक बातिका व्यक्तिः कंन्छ मारमी । --वेदरीय-वि॰ वादीकोंके देशका । यु वशुमा नामक रकर-की ठोकर, दो बस्तुमींका बेगड़े शाब मापसमें मिड वागाः सुदानकाः दानि । सुर -दा-सुदारकेता । --सामा-मारा मारा फिरमाः मुदाननेका होना । -झेकना -वाटा सहमा । -मारना -हैरान होता । रक्कर~य [सं•] शिवा इखाना - प्रशासे क्यरको दशीको गाँठ। टराज-पु (सं॰) छ मात्राओंका यक गण। दत्तर-पु॰ (सं॰) सोहागाः सगरका कृषा क्रोहाः मेंकः टीका । वि वेजा-सामा। इचरमा! → म कि॰ दिवकताः हवीभत होना । टच टच॰→श 'भावें वावें' करते इए (भागका वकता) । द्रचनी रे-की परतनींपर नवाद्यो करमेका एक भीवार । टरका+−वि तामा। दालका। कोरा । नई-व्यी ताम्मो । टटख-बदल क-- वि विस्तिर-वेरकाः कटपटींगं । टक्षणां −व कि धन वानाः सगस्य व्यक्तमा । ट्टावसी-मी॰ कुर्री। रहिया∽सी+ गाँग थारिकी टट्टी। दशीयार-पुरु पिरनी चकर । रशीरी-स्रो इररी। EC MT - 9º CE. 1 ब्होरमा•−छ दि• । 'ट्रीलना' । रहोल-व्या ध्योकनेदी किया या भारत रहीसमा-त कि वैगहिबींचे छन्नर पता समाना अवा-कर शुनाः वातावाप शारा विचारका पठा क्रमायाः भागधाना । टाइमी-भी [सं•] शिपकारी । टहर-प रक्षा या पररेदे किए करावा हमा वीत आहियाँ कट्टिबीका परमा। बहरी-मी [मं] उट्टा बीया सुदी माना एक बाजा होन्द । द्वहा-पु॰ वही दही। डड्डी-मी॰ छोस टहर वा प्रताः रामा शीणाः श्रीटः शरताः वर्तन्यः शैवारः अंग्र चराने देवाम भागेशानी वॉसरी कटिवॉमी बीबार। शिकार मेसनदी आहा प्रशासा

शीना । -भर-जरासा । -सा अवाश देशा-भाष रनदार कर देना । -मा शुँह क्षेत्रर रह जाना-लग रकारकीर-सी है उक्सी। इस्मान्स कि॰ है॰ दिसाता । रकासी-भी क्ष्मानीते ही चैन दे हिसावने निवा गया प्राप्ति स्वक्ति एक टबैके दिसाको क्यांना गया गंग रद्यादी-वि तमै एक-एक रहेपर भवना सुनीत्व नेपने षानीः निश्न सेमीक्रे(रेग्या) । शी - १० टक्सीं। । टकुमा-इ ग्रन कानने और सपेटनेक काम मानेशका

टॉबरा-बासनी रंटे स्मे रहते हैं। तनेका वह भाग जिलपर पूल वा फल रिवन रदता है टहनी। रशिक्षण या अवस्थितों क्रिक्से हिरीकेटी परश करकत रहती है। व राजी। पत्तकी। **स्∙ −मारमा∽दम तीवना** । काँबरा • - प्र देश दावरा । द्वीवरी+-मी हैं+ 'लारहै'। र्खायसी-पुरापका रक्षा । र्टोबॅडिडि-वि॰ चैपल, भरिवर, डिटरा एका । **बॉस −५०** एक शरहका बहा मध्यक्त <u>कक्</u>रीक्षे । दा-सा [मं•] दाकिमा। बढेगीरी दीवी जामेवाली टीक्सी ! बाइम∽सी भुरेना बाद करनेवाली सी। दरावनी भाइतिशाली सी । बाइमामाइट-पु॰ (में] एक विस्कीरक श्रार्थ । दाई-न्या [अंश] पामा। कागत शिक्ष यरह आहिक्त निइनिध्य बसानको उपको होग्री —प्रेस —ए उपको उटानेगी बन । बारु−स्नी॰ पत्रा पर्द्रमाने वा गनारीका टेगा प्रशेष विसमें स्थान स्थानपर मह दुए बनुष्मी तथा वीही है पर-सनेदी व्यवस्था हो। बिडियों आदिके माने बारेबा सर मारी प्रश्वा बागक्ष का जो शास्त्र भावे बाद हारा मानेवाको वरतः मीकाभको वालीः 🕯 वमन । —श्वरसा-पु भीरवाविस् । – गावी – भी ४७४ क्षेत्रेशमी थाती । -घर-ए चेरर माणिम् । -चीकी-माँ० वह स्थान जहाँ सनारोके थोडे भारि नद्**री। -वैशाला-**ए अन्द्र सरी वा बरदेशियोंके रिक्तका माकारी यक मा - न्यह-सम-प बाद हारा भंडी संगादी कानेवाकी वरनुवर क्रमनेवाला सर्व । नर्मवी-५० वीग्ट-वास्टर । न्यस्यन पुरु है 'दाम: महस्ता"। हा -वैद्याना-शोत बर्टेबनेदे

क्रिए रवान-स्थामण स्वारी बहकतेका स्वयरण करना । क्ष्मॅंड-५० [सं] १० 'दस' (र्म०) । काकता-स॰ दिः वर्षाता श्रीवता। स॰ दि॰ वयत बरमा ।

बाबा-पुर मास सूरनेके किर मुदेशे हारा किया गया थादा द्यापा। - जनी-मान क्षा मारमेशे किया महा, परीक्षा ।

श्चाविय-मो १० दारियो । शाहिजी-भी दि] धार्याची यक अनुवरी। प्रश्च । श्वाकिया-पुरु हाम होनेशका ह

क्षाकी--भीर समन १ दिर हैरू ह

श्चायः-तु शास्त्र शामनेरामा शुरम ।

द्वापटर-मु [संर] मामार्थ पारणप्रशिक्ष, हिर्ग निषय बा गर्नेक्न प्रवास्त्रिम व्यक्ति वर्तन्त्री का बीविदीनेत्रे है भनुमार विकित्म करनैवका ।

श्चावररी-ना रतीरेथे होनिनी थे मार्थ वाहनाव विक्रियाद्वाम ६६ काम्प्रसा

बालर-५ दे 'हत्रार'। Auche-de Ault. Rig t

unn-g to ter t

बार-भार देश सम्बद्धा बाग वर्षा प्राचार है

कारमा म दि क्षिणे बालुदी कुम्रो बालु विदायन बाले हैं

धरेणनाः जीरमे निषामाः छैर अर्थः देश कामाः करेल-टुमनर यामाः बरममा (व्यं)। (व्यंते) विश्वामाः। काइ-नी क्यमेंके नॉट बीमदास्मादा निक्ता हुवा थोंतः वर अपी वृथीं की शासाने निकन्तर मीने सादने-मणी जग, बरीब ।

बाइमा ० नन मि जनमा दग्र बर्मा – र सा र्हेर् पध्रारहें मुमुदि क्वी --वावित्रावली ह

द १८०-५० बमाधि, दावासम्य तथ जनम् । दावी−मी दुही। हड़ी"रके बा≪ र श्राप-पु दे 'बाम ।

दायक, बाभक-दि तामा (वानी)।

काबर-५० गण्डा संशोध मेला वामीत विलवधी । रि वैश्या विद्या विद्या । खावा=-पु: दन्ता, बद्दमपार शहरा दर्गम ।

काम-त नम है। एक वापा नमा(भाममा) रीर-पिन सदि अंतर्दि द्याप न डीई -- १ ३ इरा मारियन । कासर-त निर्ने शिव हारा करीत संविधिका होताना

देशा प्रवास अरम्भ राय सम्भाराः एक संदर प्रार्थनः हे सामका गींड राम्य राम बनाने रान्धे यह अनुसन्ती। मन्द्रमरा । दि भवेदरा असम्ब ईना दरमेशका । बामन -पु+ मार्गारम दालकणदा गंदः देशविद्यान ।

कायम-मा दे दिश्य । बायममा-प िन्नी दिहरी वैदा बरनेपी रूप महीता। चापरी−म्बा (सं) यह पश्चिम्न जिल्लामें दैतिय कारीस्थ

दिशस्य शीः रीजनामया । चारण-मी दावा कन भारि शादेशी वर्णका गमद

र्ह्य १ **रारमा**+-ग कि+ दे 'हालमा' i

काळ-में • शासा। शीरीया कानून नगानेदे बिर दोर रे में बना वृद्धे नहीं। निवादकी एक रतन विरामें बरधी भी रहे बनकी बरहे और दहते दिवे बान हैं। ब्रोहकी वर्ण हरण जिसमें के भी है रही जाती है। ट्रांतवा; बाल का बॉनवार्ड समाजर अजी जानेगाची धालेनीनेगी की है।

शामना-स॰ द्रिः विरामा ७६१मे मन्दि पर्वपाना केरमा श्रीकृताः विकाला पुरान्तः प्रतिक वराताः वर्षतः वराताः बहानायाः सन्त प्रदेशाः धार्यन्त्रीः मानाः राहतः । सर क्षाम हैना-स्थान करका दि इता व र व राजना रिमेने क्यारबा। क्रेमामा। वर्षेके शकी क्षेत्रे रागु मादाना भीशाः

बाबर-१ ४४ सोविक्य विद्या है। भवतम् चार् (बार्य-बार पांची अपनिष्ठे परावर काम से ।

क्रुप्रस–मु∗[]०]है रा^{त्}ल t

हाली-सा जेन्द्रे बन्ने धन पूर एक पूर जिस् में मान अवहारित्य हो तक इंडलच्च देश के अवहा ~क्लामा-देदे सामि है। दरना र

matte-3 34 gir s हाब्रीकन्त्र, दुन ३०३ Kittany ferres fer ex

द्वासमान्त्र कि विकास (मा (का) द स्वात

क्षामानुन्द्री सामा (राज्य र र

टसक्या-म कि किसी मारी चीवका अपनी चनवसे इरमा। चन्ने बाजा विसक बाना। डीसनाः प्रमानित

टसकासा-स॰ कि किसी चीजको भगनी जगहरी इटाना । दसर-५ एक करहका कहा और मोठा रेसम ।

बहकां -सी हीस प्रसंत ।

रहकता! - ण॰ प्रिः रिधकनाः रष-रषकर पर्वे करना ।

टहमा-प्र पेड़की शकी।

टहनी-स्रो पर्दर्श और खबौठी उपशासा !

दहरना≠-अ० कि है [।]टहरूमा ।

टब्स-मो॰ रेगा, श्रमगाः चाकरो । –डब्र्॰-फो॰ रेगा-

सुभूता। सु० -वजाना-सेवा करना।

टडकना - भ कि॰ मनोनिनोद वा स्वारध्यको रहिसे बीरे बोरे चरता वृपमा मंद्र गतिये प्रमण करनाः मर जाना। स दक्क अस्ता-भूषपाप पना पाना ।

टाइस्मी-सी दासी नीकरामीः विरामको वची उसकाने

ध्ये सम्बंधी !

टब्रस्समा~स कि॰ ब्रुमाना-फिराना, सेर कराना, इवा क्षिणनाः गाँरे गाँरे चणनाः इदा देना ।

रह्लुमा, इह्लुमा~पु दे 'टाह्न_।

टइसुई−ली॰ दे॰ 'उइसमी ।

रहत्त-प रित्मत करमेवाका चाक्र धेवक ।

दह्रका-पु सुरक्षा परेली। इहाँका−५ दान वा पैरसे दिवा जानेवाका वदा ।

रोड−९ [सं]ण्यः वरस्यो सराव ।

र्टोंड-स्री॰ कार माप्नेडी एक वीका ज्योषा हिरसा। ● क्रियावर) क्रेगमीकी मीका करोरा-'वृद्धिने माछ क्रक्के र्वेदा -प॰ ।

र्शेंकमा - स कि॰ सिकार शारा जीवना वा केरकाताः विकार करके एक वस्तुको दूसरीपर यह करना इककी सिनार्व करना। वदीपर चढ़ाना। शिक कुटना ।

द्यांकर−पु॰ [सं] ठंपण हुदना ।

र्टोंका−९ वह वस्तु विश्वके द्वारा यो वस्तुर्वे जीही जार्वे। बाहुकी पहर जोड़नेके काम आगेशाला काँगा छोतना पानको सिनाई। निप्पी। हाम। जोक (बाहुक्त)। एक हरहकी योकः दोनः दशकः। सुरु −मारुगा – दूर-पूर्परः शिकारे बरना ।

शकार-प (संक) इंकार ।

रॉबी-सी पानर कारनेकी देगी। तरबूच मारिपरका भीकार करावा कारकर बनावा हुआ हेता आरीका बाँछ। मारा समाप्र भारिका भागा ही मा बंदास । - कद-वि (बर बोहारे) जिसमें बहेती आरिके हारा परवर जोड़े

यपे ही। र्होंग-मी मॉन्से ऐसर प्रशंतकका माग वह अन विस्के सहारे प्राप्त पत्तव-विरने हैं। कुश्तीका एक वेंच हे सुरू 🖛 अवाना-किना अविद्यारके दिशी कामधे वरण्येत करना, नाना शानना इसक देना । -बटामा-जन्दी-वसी चननाः प्रसंग बर्गा । -सम्बद्ध निषक्षणा-पशक्य न्दीकार करना । -पसारकर स्पोना:-अगरक सीनाः निर्देश शक्त चैत्रते त्या विकास-।

र्टीतम-५० छोटे करका भीवा ।

डाँगना-स॰ कि सूँबी या अस्मनी जैसे कॅचे माचारसे गेरकाना, परकानाः पाँछा देगा ।

हाँगा-प्र• क्रस्ताका दे 'ताँगा ।

टॉंगी -ली॰ करहाशे ¹

हाँगुन-की नामरे थैसा छोटे शनेका एक नमान जी

साबन भारतमें देवार दोदा है। द्राधन ० - पु ॰ ६० 'द्रोंगन' ।

र्टीच⊸सी॰ ऐसी वात विससे वनता हुआ क्राम विगर काव, गाँजी धाँकाः शिकार्यः नेवंगः । काटनधाँर । स । न्यारमान

कार्यनाशक गार्वे करना । टाँचना~स कि बॉसना। सिलाईकरना। कार-धाँउ करना। अ० कि कुका-कुछा किरना ।

र्होन्सी-क्षो० वपये रखकर कमरमें गॉवनेन्ध्रे भेड़ी वसतीः भौती ।

र्टोंड∜−वि क्षशाध्या क्वनान् ।

र्रोंडा∽वि क्याः व्याप्तहा र्टीड-सी॰ सामान रक्षतेके किए बनी हुई कक्षतेको पाटन वा सरुवारी वैसा साँचाः मधानः नक्षपर पहननेका एक गहना । प्र समूहः राक्षि ग्रेंगा वर्रोची क्यारा ! याही

सेस्टब्स रहा। गुझापर बंटेकी चीर । र्द्धान्य• वैकॉपर क्यो हुई व्यापारको वस्तूर्यः वेसी वस्तानीसे करे हुए वैक्षेत्रा झंडा न्यावारिवीसा समूदा परिवार: अवशेषा यक कीश: * करदर एक स्थानसे

इसरे स्थानपर बानेवाटा शास्त्र । र्थोंकी • —की रिजी । र्शिव र्शिय-ची हिन्दे का कर्मच चन्दा नस्त्राद । सूक --फिल-क्या कर्ते पर परिणान क्वा नहीं। वृक्षभागते

काय ज़क करना पर अवमें कुछ न हो सकता। र्टीस-सी मधीमें तनावके कारण हीनेवाकी श्रमिक पीड़ा। र्धीमना!-स कि बीइना धेंडना। रांगमे बरतनका

क्षेत्र बंद बरना ।

द्य-स्रो सि दिल्लीः धरव ।

हाइटिल-सी [बं] बपापि (मैसे-बं ए दस॰ ए० आधि) धीर्षकः -पेज-प्र प्रसन्दर्भ स्वर्धे कप्रका

TE I

टाइप-प़॰ [#] छपारेंद्रे काम आनेवासा शीहेदा हका अक्षर । -कार्रिटम मशीम -पाडक्री-खो टाइव षाक्रनेकी महीन ! - राष्ट्रदर- शु नह होश महीन-जिसके हारा कागमबर याख जैसे अधर छाव जाते है।

राष्ट्रपिस्ट-प्र.[श्री]यापराप्रस्तरहारा छात्रनेवासा स्वरिद्धाः टाइम-पु थि॰ समय काम । - टेपुक -पु वह कागत जिसपर भित्र भिन्न काची ६ किए भियत समय निग्रा हो समनस्यो । -पीस-स्या मेत्र भारिषर एकनकी एक

प्रकारको पही जा निना ग्रंथ समय बनाता है । हाई-सी कि विशेषी पहलाओं मध्ये सरकाची बाजे बारी कपरेकी पटी।

शाबन-पु [बं] काला ! - हॉन-पु शराबी बर श्यारत जिसमें सरकार या जनगाने मंदंब स्मानेकारी समार्ग मा बैठवें की मन्द्रमदन ।

र्मगवा॰-पु॰ दे॰ 'दुग'। E80-90 20 188 1 ह्रांच-पुरु दे 'सिटिय'। बेदमा बंदम-प्र [मं] दे पितिमा र्बंदुम-द॰ [मं•] छोटा प्रस्यू। दंतुक~पु [मं] दे 'वादुक्र'। र्थय~द [म•] शेव । हेबर-पु॰ मि वि ६वर'। हरू – दुर्थसा। क्षक्रिया−ग्री० १० 'हाँक्रिका"। कुकियामा∽स कि॰ पूँगे जगाना ह हुगहुगामा~प्र जिल् द्वेग्यी आदिको कर्युसे प्रजाना । इगद्रगी-सा दे 'दुग्धे । सु -पीरवा-सुनारी दरमा । हुम्बी-मी॰ पमहेल मन, भी हु मुँद्दा वय छोरा शाजा । ष्ट्रपटना−ध नि सुनियानाः तद क्यावा । क्ष्पद्वान-पु•दे दुपट्टा इयकी~मी॰ वामीमें कृपनेकी क्रिका गोगा। एक तरहको निना तमी हुई बड़ी। ह्रयदाना-त कि दुशनेका काम कराना ह **हवाना**−श कि शाबी वा चन्य गर्म कार्वी शतका नीचे प्रवासा गोष्ठा देगा बारमाः करेनिय करना (हम मारिपर) भव्या क्यानाः क्रियोधे प्रशिक्ष सह करमा। बरशन करमा । द्वचाय-५ (नि.गीरे) श्वनेभरको गहराते। भूषोना−म•क्रि दे पुशना। दुरमा-पु बानीमैं दुवसी क्यामेशक, बनदुन्या । बुदबी-सी मोता। बुमबीरी-मा रे॰ 'हमश्रीरी । क्षामा १ - भर दि १ है जिला । इस्तमा-म॰ कि दिलामा, चानित दरमा। शाममा पूर धमामा, दुलसा: इपर उपर पुत्रामा-दिशामा ! इंडिन्मी॰ (मंग) मर्रा र क्रुनिका−गो॰ [1] शंहनके आधारके एक विदेवा ! दुर्मा−भी [तं] विशेषाम⊾स्वा। र्हेशर−५० कें*धे वशीन दीमा दृद्ध धीश क्*रेंड !~क#∽ म संबद्दानीक्षा क्रम । र्देन्ती-सी होदे पहानी। हुँगा-इ भगमना दे नुंगर । इंडा-दि स्ट भीयशना (रेन)। पु वह गीरपाग स्वता-अन्दि एवी बाब्द्य हरत व्यक्ति सम्बद्ध तुन्दे स्वत ज्ञामा । यस दीना। मीता बान्या। अन्त दीनाः बारत होत्या करीदित दीला। दिनी क्षाम कादक न हीत्या रिगरना। बरदाप दीमा। मापा भारत । मुण्यक्रिमेधी निषदेवा सहारा होना-भन्नवीतको वीदा व्यापः। दिवता । इसमा असरमा - दिल्प्ये सं व देवा विमी बनान्धे पर। १४मा । हुव महबा-चन्नां, को का नाता भ 🗠 को हुँद में दिशाना । चेंदुरशा—को चर्च केंग्री एक न(कार्र) विरोध किरोध व चींगान्तु वर्शे अंवर

देक-मु [40] एक्सीरे सामी मा कदरेशे रहे भीरेक्ष बनी न्यामधी पारनः 🕆 प्रसादन । अग-पुरु दे दिशा है स्म क्रमा -थी-सीर्दर विषयी । कड्णनि वक्ष और माधान प्र प्राधी संस्वकत्त । सुरू -हेंद्रकी मरिजद शुनना या बनाना - बावयही निचरी अलग पकामा-सब्दे अन्य राय बादव बरवा पा द्वाम दर्मा । वेदा-वि देण्युमा । पु देण्या बद्दावा । वड़ी-शी॰ वीमके देतें निनेको वक होति क्रिक्से बसव करनेपर लेनेपानेकी बेटा श्रीयमा परना है। केपुटशान-पुरु [लंग] किही उद्दरकी पृत्ति किए वक मधिनारीने मिल्मेबाना हिल्मंदर, प्रशितिधनात्म । क्षेत्रशी –शीर दीन वा शीरी आदियी दिव्ही क्षित्रे शीरह बा काम तेत है र बेरा-पु रिकान पश्या बायकारिक निरामा रिस्ता नरतन कारि उदरनेको सामग्री। उदरनके टिर पैकारा प्रमा शामाना टिक्नेंदी बरफा रेमा राष्ट्री मार्दि जिसमे रिका आया रहनेकी जयहरू था। असान । ० रि० शार्थ । - इ. हा - नु: देरेबा सामाब । सः - बासबा-सामान्दे भाष दिक्षमा । बेरी-की॰ [थं] वह दशन वर्श हुब देनडे टिह मर्फे भने दसी जानी हो भीट दहा मनतन आहि तेबार किहे वाते ही। पूर्व, सस्यम आर्थिते हुदान । - कार्य-पुर कृष्टिनार्ववी विवास वदा दृष आरिया धारतार होता हो। बल्य~ान्योः १वीधी ऋष्टणोर देनद श्रीतदार सीदी हो समि ३ 🕶 🕱 : बरमूर देलार निरमार बरमुर विषक्ता शनिवा हे बेलदा—ड्. [सं] बहाबी हुई मिट्टी बाल, ब्रारिने महिबे के शुद्रानेषर बनी निश्ता मृति भी बचर प्रपर, बहनेवाली भाराजीति (१६६ प्रीनी ४ । केला-पुर रोशा केला जनसार विकास हेंपुर । देलि॰-भी॰ शनिया साँगा। क्षेपरु−<u>ष</u> कम निकशिका । त्र वि देश्यासः । बंबहमा-स कि (६९४) में हमा तब धराना। मन कि॰ तेरीका चनना । वेबप्रा-वि दागुना १ पु यह प्याप्त विनुधे असी क्रनेक बहुकी दर्शानी भेरता गरी। जाने हैं। लक्ष्माल पु शहर प्रमान ब्रवही-को है दानी । हेश्यक्तपु (भे) निगते ६ नेढे याम भानेशमी यहार्य ब्रह्महीरे -- स्टीन प्रत्य रहाने हा बच्ची कि देखा बना बरा मरः तया दे "रिएमी । ern-g & Jent 1 हैतकार-च देवर । far-inge ge ger 1 बेशा−पूर्व पर ः हैंग्र-पूर्व (ब.) दिलाहाईबंद भागे मदीर र Mitte-To et Lat tittlatet

498 को पसनेच किए प्रेरित दरना । टिटिइ-पु दे 'विद्विम । दिटिहरी-सी॰ पानीक दिलारे रहनेवाकी पक विविधा ! (कहा जाता है कि वह साकाशके गिरनंक मयसे टॉर्ने फ्यर करके सोता है।) टिटिशा-पु॰ दे 'टिट्टिम । -शेर-पु॰ शोरपुका रोमा-पीरता । दिक्सि-प [६] नर विविद्यो। टिष्ट्रिमा-सी॰ [मं] टिट्टिमझे मादा । टिट्रिमी-की० [सं] दे 'थिट्रिमा'। टिक्का-य एक परवार कीवा। टिड्डी-की एड परदार काल रंगका कीड़ा की फलकी द्वानि परेवाता है। ~चक्र - प्र बहा झंड। टिइविगा-वि• वंदील, देदर-वंदा । टिन~पुदे 'टोन। टिप-सी छपंडसमारक मकार। दिषका•−५ १६। हिपद्मारी-सी पेटी बादिको मीहार्रेक संविरवासपर शीमेंट वा वरीका मसाला क्रमाना । डिप-डिप-सी हॅं दें के गिरनेका शब्द । टिपवामा—ध॰ कि॰ दबबाना अद्दार बराबा। रिखबाना । टिपारा*−प अकट≼ आकारको एक टोपी । टिपुर-पुढीगः समेडा टिप्पनी टिप्पनी सो (सं) संब्रिस टेका। हिप्पम-पु बमाइंटली। दे 'रिप्पनी'। टिप्पसां – श्री प्रक्ति वराया प्रयोजन-सिक्रिका स्त्र । टिप्पी-सी अंगूडे आदिका केसी रंगसे बना हुआ निशान। टिमरिमाना-भ॰ कि क्षेत्र प्रशासक साथ प्रकार मरनेके बरीव होना । दिमाक-स्तै बनाव शृंगार। हिरफिस-मी निरोध विकार्त । दिरामा-म कि है । दराना । दिसवा∽द्र• विगना वा बारदस भारतीः † दे 'दीका । दिला-९० वदा, डीवर । -(६८) अवीसी-सी० निबद्यापनः बद्याना । रिष्टको नहीं अमद्य जीवनाः वदनेको दिया । टिहुक्मर−ो ल कि पाक्ना स्टला। ०(व० स्टनेवाका। रिद्यो।-सी॰ कुरमी। पुण्ना । टींबसी-मी एक फम क्रिसचे सरवारी बमती है। र्वीक्षी=न्मी हिन्नो। शे~सी [sie] बात ! -शास्त्रम-पु वायका गरीपा ! -पार्टी-स्पै भावको दादन । र्टीक-की गते था निरका नक गहना ! शीकन-पुत्रमी चाँद। रीवना-स॰ कि रीमा वा नितक समाना। देशनीमें रंग कगादर निग्रान बनाना । रीका~गी [मृं]स्वास्याः —कार—पु रिसी संबक्षी व्यारमा वरनेतामा । ष्टीका-पुरु जिल्दा मरतहरा चील वा रीली आदिका

ररमः क्षंकः शुवरामः रामवित्तकः संसामक रीमसे वचने-के किए सर्व हारा धरीरमें औरच प्रविष्ट करनेकी किया। सिरका एक मागुपया 🛎 किसी हुन्ह था समुदायका सर्वेमेप्र पुरुषार्थेट, नगराना। भू० -काइमा - भूटन वा वद्यीपनीत-के सरसरपर संस्कार किने जानराते करनेको टीका करके इन्द हेनाः गाँगमें सिंदर चारण करमा । ∽खगाना∽ ककारपर चंदन जारिसे विश्व फरमा। सूर्व धारा सीवप प्रविष्ट फरना । टीन−तु [#•] कर्का की दुर्ग कोदेकी पदरा कमस्तर । टीय-सी दावसे दवानेका कामा दकका मावातः १टीके बोडोंपर क्याये गये. यसालेकी छन्नीए केंना स्वटः द्वार सप्तक्रमेंसे किसी पहापर अस्पकासीन उत्तराका जनमपत्रीह इंडो: गच्ची पिराई: डॉब हेनेबी किया ! 'न्हाप'-सीव ठार-पार, समापर। छतः शीवार मारिकी छिरपुट मरम्मत। टीपनो ~प्र•वस्त्रश्री । स्ती बहार्गाठ । डीपना-छ॰ कि काब वा पेंगलीहे दवाना; क्रका मापात करनाः तारस्वरमें गामाः श्रीक सेनाः विकारी करना । † स्वी सम्मपनी। रीबा-पुरु मीटा रोका। रीम~सी (शं∘ी रीकादिवाँका दक । द्यीम राम −स्पै॰ तषक-पदक। द्यका-प जेंची बमीन इस्त मिट्टी वा बाइसा जेंचा देख टीस-को॰ रह रहकर उठनेवाको कोरको पौत्रा, कनुक १ श्रीसना−थ कि रेड-रडकर पैश दोशा। टॅंगमा−स• कि• (बीपावॉक्स) टहमीये पर्यो छोटे घोवी-की क्यांसे कारमाः श्रीषान्त्रीया कारकर लाना । र्देष-विकासमा भाषा हुण्छ । दंदा−वि स्मा विसक्षे दाव म दी। टेंठा। हुँदुक−९॰ (ते॰) एक पक्षीः काठा गैरः इवेष्मक नामका युद्धां (शंक्ष्या मन्द्रा ष्ट्रहरू-सी॰ यदः यूर्ता **ब**पदा । ष्ट्रक−ि बोहा तनिक अस्त्र। श्र॰ घोहा जरा। द्रकद्र-'इक्ना का समासगद रूप। --पोर्-दि द्रकन्ना मॉगस्र वीमेबाला । न्यादा-वि॰ वर-यर रोटाका दक्का मांगनेवाका । यु मैगवा । -रावाई-की॰ उद्दश माँगन का काम ! -सोइ-वि यूमाके भरीमे जीनवाटा । पु॰ आधिन व्यक्ति। हुक्या-पु विमी वस्तुदा एट संन्। (सा०) जूहन । सु० -शोद जवाय देशा-साफ साफ शमधार कर नेता, दी-ह्य अवाद हैना । -तोबुमा-रूनरेक दिये दुए भीवनमे शुक्त बरना । --मॉलस(--पीग्र मॉपना । --सा सपाव बेमा-दोग्क जनाव देना । इक्दो-मी होस इहरा। होस होर बाहमुराया मैनिकी-का धोरा दल क्षमी'। रक्षमी-मी देश शिक्स । हुकुर हुकुर-ल॰ श्वटकी सगादर र द्रव्या – मुद्रकार मनुबोरा । दुव्यी - की धीश दुवसा यनुर्देश । पैरकोमे बसाबा हुमा विश्वविधेका विवाहके पूर्वको एक हिमकाला∽स कि॰ गुँवमें बराइर पुमलाना ।

बंबार-मि नैशल। **वैदार•**-५० मानुदी जेंदी करन । र्वे होरची - g मुनारी करनेशाला । हैं होरमा • -- स • कि हैंदना एक व्यव बरनुबर ब्वान देते दर धोजना । बॅबारा-च उपये मुनारी। स्०-पीडवा-धोरिय बरना । र्वेदारिया −9 देंदोरा थेंग्नेवाला । र्हेपमा~पु∘,स हि.॰, ध॰ कि दे॰ 'हरूमा'। ब-पु • [में] बड़ा कोन्य करता। करेग्री पैछा सर्वा अस बरण्या राष्ट्र । बही-नी परमा । मु॰ -तमा-अन्तक काम स है। बाव एनगढ क्रिमोकै यहाँ दश रहना, भरना देना । इक्ना-१ इक्न । म कि रिवामा भाष्यारित करमा। अर्ध्य दिवसा आल्हादिन होबा। इक्टनियाँ । –सी दाँधनेकी वरन दक्त । इक्सी !- त्या । श्रांदनेको वस्ता क्रमीरा । क्टा-प॰ शीम भेरकी यक शील, सारकः ● पदा: महारा बद्धा क्षांत्र १ इक्टिक •−मी साजमण पहार्दे३ इक्टेन्सर-स• कि॰ डेन्सर निरानाः वदा देवर भाग बणासा । इक्टोममा-स॰ दि अल्बांच्य मात्रामें पीना। तस्ती शक्री पीना र हकोशका-पुर शहा रिजाबा स्वार्वसाधमाई निय किया हुमा भारंबर, दर्भंड । दक्ष-च [सं] बगा मंदिर ह इक्स-पुरु एक्स, संब्रोधी बाहा [शंरु] (दिवार) वर देशका । हरू।-मी॰ [सं॰] बार बीना देखा दिवाना श्रीपा॰ वदार ब्रह्मारी-मी॰ [मं॰] तारा देशे । बराय-द्र [तं•] नीब मागाभे का रक मारिक यण । इचर-१ जामीबमा बाईस्रा वर्धाक शांक ! हरींगर् हरींगर्। हर्गिगर-ड मेरा-समा भारती। इद्धा-स्था दान व व्योधी प्रशेषकात । हन्त-वि अनावस्क्य विश्वप्रवासा विगनि शिशाया स्राधिक हो । मा अहर्य र दिशाली बारशार । इयम्बाहा-च॰ कि तुरस्ताः भारतं सफर विस्ता । Ed &ac - 3 5 , 6.2 1 श्वमान्द्र श्वस्ता म दि० तथा शता । स० दि क्षेत्रमा दिशमा । इदला - दु० 🖁 'दृहवा । हपारी!-मी रे टरमी । इय-पुरुष्य भीर दशिका संदेश करावा अप्यानुवित ह इचरारं-दि अस सामेगा। ERM-MIN ER PRO 1 ह्योप्यां-दि इत्त्वा भाषाह । सम्भारे~५ मेलाः इप्तान्ति केंद्रण विद्वी विन्य दुर्गा है बस बस-पुरीय को की कार्त्र ह

बमकामार्ग-४० दि० हाबमा । स् दि० चुन्दासा । " हपमा-भ॰ दि सक्षम श्रामिश मिरमा । वरकमाण-अन्ति गीनदी भेर वाता हानदी भेर वहना। जन करिया वाचमेरी विकास स्टब्स । बरका -पु नविशि परावर यानी वर नदा रीमा विरोध क्षमध्ये तरह बटा हुना बाँगझ भोगा विश्वये भीग्यरेधे बबा माडि विचाने हैं। श्रीताबाँधी दरदेने बबा (श्राचेत्री किया । षरकामा*-स॰ मिः य≒ कारिको बापने दिसमा । हरफी-भी॰ जुलाहींका एक औपार क्रिगुमे हे वानेका रात केंबन हैं, भरती: रे टीटा दरका ! दरकीसार्ग ≔वि॰ दरकने या मण्य-नामा र बरमा०-च हि॰ दे॰ 'दबता' । क्रामिन-स्थेन गिरनेशा भागवा क्रिया प्रचला (१०) और दलगाः दिलमेती - दिवाः दीव दशा देवन्यः निर्मेशे और महनेदी दिशा। हरहरपार-म नि कल्याः निनमाः यात्र हो ६१ हिमी भीर प्रस्मा। सरहरा। -- दि॰ बन्तरो । दाहरी।-वि भीन्दार्श । भीन्दारी। बरामार्ग-स कि है 'दनाना । सर्क कि स्टिनशाकार ब्रहारा-विश् दमध्याना। प्रवित्र क्षानेशाना। यात्र र स्वयार्थ — १० दाक्रनेशका । दर्श-तर मार्थ शाराह शैक्षा भारत कर व ह दमस्या-भ कि है 'एसला'। क्षणका 🗝 अतिहैस धानी सिर्द्यका होता। बलकामा-एक दिन (वानी भारि) शुरुतवा । बलकी-सो+ रे दरकी। बल्या-च दि॰ दरहमा शु दन्ता धीरमा वीपेसी भीर जानाः भरगायणको भीर जानाः गरेनने दाण। शामाः समाप्ति का चन्द्री और अमा: ५वर बार्राटा विशेष देव में रचर उचर विकास काला प्रतिम काला उरना अल्हा हमप्रम-वि रिवित र हम्म्बी-दि॰ दामा द्वार । दक्तवामा-नार्श्वतः यान्त्रेशा वाद दशका । बामाई-मी बामनेशे दिशा वा अन्तन ह श्रम्यागा-स दि है। बच्चामा व इम्पर्वी∽दि हे दिल्ला ३ इलेम-पुर व व पारच दरनेपामा व्यक्ति वेर्रेट्स । क्षणीर-मी नगर मुना हमक∽को शुन्दी शाँभी । बहुता-च प्रिक्षकान व्यक्तिकार्त्तिका प्रश्न हाती। द्वारक्षाण-अन्धिः । दशा दिर सामा । श्वष्टवासारे न्या किन् हा व न्या विराद्धर प्राप्त प्रशास Britoner gentrucht : बहुबानाच्या थि प्रशासकायाम् बराजाः । grat-e fei feren ineg arm t श्रीब-१ क्यान शारीक स्ट्रेस । सीध्या करीर है। इस्ता ह श्रीत्रक-दु क्याधाः

484 क्षि द्वप : म -पड्ना-स्टारंशे नाश करना । रेती-वि• मी० दे रेती । – स्तीर्−शी मक्तिन काम। म् • न्सीधी सुमाना-दुरा-भका स्त्रना । टेर-म तिरुछे। मु• ~टेरे जामा~पर्मंव करना, इत-रामा । टेना~स कि पत्थर आदिषर बार तेव करनाः मूँ 🙈 वार्कीकी पेठमा । देशिस-पु० [४०] रवरके गैरको बाक्षीदार देवेसे भारतेका एक जंगरेजी खेळ । दनी। -- ला० छोटी र्वंगरी । सु॰ -- मारना-(सीहा) दम धारोडे तिए गराबुद्धा टॉडीडी ग्रॅंगकोसे दवा देना। सम दोकसा । है बिल टेवुस-प [अं] मेवः नक्छा । - ऋथ-प मेक्पोध । देम-मा रेनिको सी। प 🗗 'दारम रे समना ४१-मी पुरुष क्रींका क्रिया गावना दूरते पुरुष्टिका क्षण । वि [धं] पेंचावाना । देशक−रि [मं] ऍपानालः। देरमा-स कि तह स्वरमें गामाः पुकारना कृत्से हुकानाः मरददे किए प्रकारनाः विद्याना कारकाः पुरा फरमर । देरा-पु॰ मधेकः तना शहाया। वि॰ की [सं॰] वेंबा द्याना । टैकीमाफ − दु [अं] वित्तुत्रक्षे छोप्र समाचार नेजनेका रक साथन सार। दनीमाम∽द्र [भं] तार द्वारा भंगे गगी खबर । दर्मीपेची −मी [थं] दूसर्निये मावनार्यं जामनेश्रे मान क्षित्रं क्रिया। देसीभिंदर-प्र[भे] वह येत्र किसमें तार द्वारा प्राप्त स्त्रियः रववं बादप हो बाता है। देखीकोरोप्राफी~मी॰ [सं] दूरगैन द्वारा वित्र केना । हेम्बीकोन-पु [भ] यह वंद जिसमें शास्त्रे संवंदसे हरके शुरु वर्षीके हवी सुनाई देश है। टसीविज्ञम-पु [मंग] म्यवदान रहते पुर मी दूरधी वस्तु ब्धे देगनेद्धे हिया। टमिस्कीप−५० [अ०] ह्रदोन । दय-मी॰ सर्व भागत, स्वमाव । सु॰ -पदमा-बारव पर जामा । दंपना!~स वि∙दे टेला । हेनबा॰-पु॰ धार तब बर्नेनाका । देशमा-मुब्द दिन् । इस्-इ प्राथम कृता व सर्दोदा रह सेवा। र्वेद्ध∽पु [अं] #हार्दमें काम मामेदाली मोटरकार जैसी गारी मा तीप मारिश सेंस और कारेबी मीटी चररस दब्धे रहती है। हरग-तु [भे] बर, महगून दिवात ।

र्टरमी-मी (प्र.) हिरावंदर धननेवानी मोटर-द्वार ।

र्रवारेट-इ [४०] छोरी रिक्रिया ।

रीका-प होत बाहा

र्टीर−सी चींचा र्टीटमी~सी॰ वक्यात्रमें क्यो पूर्व रोंदी ! टॅॉटा∽प• पामी गिरानेकी टॉटी। दे 'टॉमा'। र्टेंटी-न्यां • वरतन बादिमें चगी दुई शती गिरानेकी नची। शुभन ! धोक-मो॰ टोक्नेसी किया, रोक पुरु-सार । --टाक-की पृष्ठचाए । टोकमा-स कि चरुते समय बाजाके विषयमें पूछ वास करनाः कित्री बातकी बाद दिकानाः असुद्विपर बोरू उठनाः यतरात्र करना । पु इंटा; क्षेत्ररा । दोक्मी-सो॰ दोक्रो। देगची। छोटा इंडा । टोकरा-ध वर्षा टोकरी शावा सर्तेचा । टोकरी~सी वास, फ़रू, तरफारी आिंट रसमेका गाँस या श्राक बादिका बना गोका गहरा पात्र सैंबिया १ रोहक •- पुदे दीका '। टोटका-पु॰ येना ! -(के)हाई -खा होमा करनेताला ! टोटा-प कारतमा वाँस भारिका उद्यान धारा कर्मा । टोडरसक-प जदरहे वर्धमंत्री : डोड़ा−पु पुरान इंगके मन्त्रनॉमें बीबारमें गादा बानेवाका विशेष बनावळ्डा परवर या ककड़ीका हुकडा यी माने बड़ी दुई छाजमधी रिक्ट किय सगस्या जाता है। टोडी-सी एड रागिनी भैरव रागको सी। द्योन-'दीना का समासगत रूप । ~धा-प्र दे 'दीन हाया⁷। **–हाई** –सी टीना र्तप्र-मंत्र मरमंगक्ती सी। —हाचा—प्र टीना, वाह करनेवासा । टोमा-प बाह रोश्काः व एक क्षिकारी एथी । स॰ प्रि॰ वैशक्तिमेरे दशस्य पर शुक्रत मासून करना, टरोक्ना । होप-प वर्ध दीपी क्षिरखान, कोइंदी दैपी। 🕆 नेंद्र । रोपमा-त केस्स। द्योपा—प्रवर्गियोपी दिएरगणः विभागाः होवी-नी सिर्ध पर पहनामा ग्रेम और गहर। इस्ता भातका बहरा क्यन जिल्ला बंदको पोरच गिरमते भाग काती है। विदारी जानवरकी ऑन्पपर कमानेकी पट्टी। -वार-वि दीपीवासी (वंद्रक्); विसमें टीपी समास्टर दाम क्या नाम। निसमें रोपी बमी हो। -पामा-वि., पु निसक्षे सिरमर धैपी थाः अंगरेवः पुरोपियन । द्येमर-९० शॅस्स । होर॰-को बटारी, बरार । टीरमा॰-स॰ दि॰ तारमा । क्षांरा−तु मृत्र शीवनेका सरामाः दे शका । रोबी-स्था दे रोती। पु [अं] थेम्स न्ति। पहे निष्कासम तथा १८३१ के रिफार्म विषेक्षा विरोध बरने बाने वर्स (मुबार विरोधी) दहन्या सरस्य विसन्धा स्वास बारको बन्सरवेटिवीने स्टिबा । होल-व्या दक समुदाब, शुंदा दुवना शिना पाठग्रासा । पु वह समा (र्थ) बानिबी भारिषर भगनेराना एक बर !-कछेवरर-पु॰ यह कर वगून करनेशासा व्यक्ति। होका-द होये बन्धाः महता वह देश या चार्रशको-ब्दी बरगी है रीवना-स कि नहाता। भारता। पु बनाववा। नाता। हासी-की धीरा महत्या मंदनी। हुंबा निका

र्वेडवाम≀−क्रीत **र्वेडवामः**-स॰क्रि॰ स्रोजनामा पता खक्ताना । दृहा-मी॰ [मं॰] दिरम्बक्तिपुत्री बदिन वी बहातकी गोरमें नेक्ट भागमें बैठनेपर जन मही। र्दुवि-पु [मं] कादीस्य यह गोलाः – राज-पुरु है \$f* 1 दृंदित-दि॰ [मं॰] विसम्री शीव की गवी हो, को हुँग द्वंडी−स्त्री वॉड मुख्या साजि। द्वक्रम - म॰ वि॰ पुसनाः हारुमें बैदमाः हिपे शीरमे पर मुनमे पा देखमेढे थिए भाइमे बैढना। इट पहला । **द्रकास−सी॰ तब** ध्याम । प्रका~त देश हेका । द्वधीना≠−५० क्षारा रुपका ३ द्वनमुनिया। -मी कवडी गानका गढ देव विश्वी स्थित मीलार्से पुमती और बीय-बीबमें झडती है। मुण्डनही किया । दुरकना+−>। ति• गुउनला मोथं सरक्या दिस्तनाः हरमा॰-म जि॰ रत्साः दरकताः विश्वनमाः बीधेक्री भीर बहुमा। डोलसा। प्रसन्न होकर रिमीकी और शुक्रमा प्रश्च दोना (इरहुरी रूसी । करा मी ने ही ने इस गिरनेकी जिला तंत्र द्वरामा, <u>श्वराधना −स॰ कि॰ दरकानाः इकक्</u>नाः गिरामाः दुवाना ।

द्वदृष्टमा । - अ०,द्वि । देश दुल्यमा । द्वरीं-को पगर्रहो। हुम्दद्रमा-भ+ क्रि+ उत्तरहे-पुत्ररत निरमा । बुक्क कामा − स्टक्ति श्रेष्ट्या । द्वसद्ध-विद्वाधीयाः

चुक्तमा~स सि दे॰ 'दृश्मा । दोना कामा । द्वलमुल-दि दे 'दनवत ।

बुलपाई-भी देनेश काम वा प्रवास ह पुलवामा-ग॰ दि हीनेदा काव बरामा । हुमाई-सी जीनदी दिवा वा करता ह दुन्यानां-स•दि है पूरागः।≷ द्विषश्याः श्रेरेताः

द्वराज्ञा-स्रो समृत्धी भेगी। हेंद्रश~म दि दे द्दना ।

हुबा-त बुछ देयने हुन्ते वा किनेकी यह से बनेटहे क्रिए स्थानक ब्यादि विकास

हें।-शो रोप नराश ! दि थेरेची वस्त्रहे प्रदेश प्रशाम बर्जेराचा र

हेंदशाला कि शोदन स्थाप दश्या । र्हें दशा−भी दुल मध्यक्षे राष्ट्र^क ह Profit - Not the set to profit their t

प्रवान्त् हे दि इत्रेड्ल माहिक्त बालद मानत Ecal-I tjedt jier de git t BE-5 St manufall

grit-y t be i

हिंच−पु (तं] एक मधीय शही विलयी और कीर हरें।

दन र'री होती है।

र्वेडमी-मी विपारिकेतिर एमी निकासन्तारक देश वान ब्रानेका एक वंत्र, हेती। व्या निकामनेका एक अध्य शिरदे वक उत्तरनेदी किया मिलादित एक प्रदार ।

हेंबा-पु॰ नहीं देवी। ब्रीन्ड्में बारके निरने लगावा काने-काला शॉम ।

देंकिका−स्रो [सं] पदताचा

इंकिया-सी वर्षाचे एक कार जिल्ले संपूर्व वर मार्च और भीतार्वे वह जाता है।

हेंकी-मी [सं•] मृत्यका यद प्रकार । वैकी-भी भान मृत्येहा एक संस ह

हिंदरां-भी देश देशका। बॅक्सी-मी दे 'दे दर्श'।

र्देशी-मी प्रदा रहा र्वेड॰-चु प्रभी। दह बीच जाति। धूर्ग सार्थी। दत्तत

मारिया होता। हेरर-५ देश्वी रहा हेंद्रवारी-चु अंगूर ।

हिंदा-पुर दे दे है । **र्ड**डी-भी॰ बशय मेमर शेरन शस्त्रादिका श्रीहा है प्रीप्त :

दामदा रह गरमा। हैंय-सांश् कर या वरेंडे हंददरश वह रहता आयश्चित्रे

बक्त वह बेहरी दहकीने शहरता रहता है।

ईदियी-क्यो∘ है 'है द'। देशकारे-पुर रैला (लार) दन । बेम् सा-पुर देश दे बडी।

देवम-पु॰ दे॰ 'दे वर्ता । हैपनी:-सा है दिवा

हेबरी-मा॰ है॰ 'शिरा । देषुवा!-पुर देव देवद ।

६ प्रस्त 🗝 व्यवेश रह मिहा रेगा। हेर-९ राथि भगमा राष्ट्र देवा fle बहुत, प्रतिका

में -करमा-बार शब्दा । -श्री प्राथा-प्रर श्रामा । देशां – प्राप्तां भारि वालेख व्यक्तीस वद और श

ल्द्र पूर्व विक्री वद्रा हेरी-लोश्रे रेरा

ईछ•-पुरे∗ वा। हैचर्चान-१ देश देखनेसे राजो जिनने १ने रहारे

बिर प्रांग देश होता है रोपाया है

हेमा-पुरु थिही पानर अर्थित हेबता एट पृष्ट र अर्थीप -भी॰ बारी श्रेरी भीष जब नहवाडी हेवनेस् बार मुनरते भरवर देशर भेरत है।

हैरपुष्टा-भी [में] एवं निष्टा देला ह र्वेबा-पु बारे गेरवा रामगा एक प्रशा रिक्ट अरे

¥क्षेत्रोट स्तर्गेत्रारी ग्रहणा सही अन्तर है उ

क्षेत्रपूर्व न्या है उन्हें व Sid-ny gant end:

डींडर-पुरुष कारित तम दुवस में गा मण्ड E- 481 887 1

वींग-पुर मार्गर पर्यश शुक्र नवाप्र-रिन हैन

रक्टर-प [सं] देवताः देवप्रतिमा मैक्सि जासकोटी द्रह स्वाधि । दरा−प्र भोखा देकर छुउनेवालाः वाधेवाव भारमीः वर्ग वंपना करनवामा । -क्वी-स्ता॰ वोसेवामीः उनमेध्य किया ! -पना-प्र स्माहाई हममेकी किया। कृतवा । -मरी-ली उगनेकी मरजसे नेबोध करनेके किय सैयारे बानेवाली एक बढ़ी। -मीवक-व॰ नशीकी वस्तुओंसे बक्त मोरक जिसे पिकाकर क्ष्म पविकाली वेडोम करते थे। -साह-पु दे 'ठगमीसक । -विचा-की भीका देवेडा धूनर ! -हाई -हारी-ची ठगपना ! मुर -थमा करना-वर्ततानी चार बहना। ठराज-पु [सं] पाँच मात्रिक गणोंमैसे थक । रताना न्स कि भीमा देखर खड़मा। दशायांनी करना इंचना हरता चोद्रा देना छलमाः ग्राहरोंने व्हिट हात बना । के ब्र. क्रि. हमा बामा। भोगा साना। रंग रह शका । हरामी-ली हरानेवाडी ली। हराडी ली: ब्रह्मी I द्यावाना-स कि बसरे हारा बांधा रिक्याना । हगडाई बगडारीं -सं दे 'ठग में। क्षमाई। - लो॰ स्मपना ३ द्वराज्यी~सी+ ठगपना छक-दपट। प्रसामार्थ - अरु किरु श्रीया या जाना मुकार्वमें नासर रिसी वस्तका अधिक सम्ब ६ देना। छ कि है रुम्बाला³ । स्माद्धी = स्वी इम्पना । हरीन-सा थोदा हैनेवाली सी, दमावाद सी: इमग्री पन्नो। शरीरव । स्रीमी-स्री है॰ रुविमा । हरियारे-पुढमा असी-मार्थ उपनेकी किया। उनका देशाः उनका । हरारे (१० - स्पे॰ मोहित कर देनेशको किया आह. शास । रुट~प वरताओं अथवा कारोंका जमावः वक्तव इद क्षोती की पंकित समहाया मीहा हार समापर ! -श्रीका-दिव मेरकराद सवा धना। इटना-भ कि॰ टरनार शहनार विरोपमें रिवत रहनार समझ होना । ए॰ कि संभानाः वैवाद करनाः निर्धारित करना। टेन्मा । इस्मि॰~मी सन्धवः तैवारीः बनाव । इडरी-सी थीना श्रीरका बॉना भूसा श्यतेका आस भाषी । मुरु -हाना-अध्यंत मुद्रा होता । रइ-५ दे क्षा उड़ी-सी उस्ते : रद्वर्थ −रसे इसी फर्डडाल । दहा-पु शिनवाद क्रिकान । -(ह्र) राह्र-वि रिस्स्वी कार । म - मारका -सगाना-हडास्ट हेमना । रद-पुटे 'स्टू । रप्रदेग-सी देश दहाँ । अक्षाना-भ कि 🗈 टिव्हना । रणी-रो रे स्था।

क्ताना-स कि अचात करमा। बारते पीरना । अ कि

विविध्यक-भी त 'हरेरिय'। इटक्सी-म फिल्हें दिवस्मा । अदेश-प शासके बरसम बनानेशाला क्सेश । म• -(३) की किस्की-बीठ, ऐसा स्वर्तित जिसपर विसी पातका प्रभाव स पड़े । -- ८ ने बलकाई -- बीड-चीडका स्थवहार । xxरिक~औ÷ xरेरेडी झी । रहेरी-सी उहेरेबा बागा हहेरेबी ली। -बाहार-पर वह वाबार बहाँ शविकांश दकानें ठडेरोंकी हो। ठठोक-वि मसराराः अभिक परिवास करनेवाका । प्रश परिश्रास करमेशाच्याः वरिश्रमः । अरोकी−भी हेवी अवक्र, दरिहास । रका, रहा पं-बिक शका, सीवा स्थित । रहिया~प॰ केंचा कोराका † दीरिका एक रोग जिसमें व दिसीं-दिन सबत बात है। एक साम, भरसा । उल-मी धानके उक्के बरतन या वरवेडे कारनकी errerry F रसङ्ख्या नवस्य नवस्य आदिकी ध्यति होस । दलक्या~अ कि॰ 'दल दल करके प्रमा। शंदा बल्ला हीनाः रक्ष महस्तर पादा होना । रमका-प• ते 'प्रमक्त' । टनधना-स॰ कि बातरांड वा तत्ता भारि वजकर सन्द्र सरका करना । (sual उनका सेमा-३पका क्रमण कर छैला हो द्रमकार-१ थानुद्रांत्रसे **द**रदब ध्यनि । इनगम- इ नय पाने है किय हर बरना। इठ जिल्ला हनगमा! - अ जि॰ हनगम हरना। इन्-टम -चौ॰ भारतोन्हे वत्रमेठो ध्वति । ~गापास-व० वह विसमे अवगोबाल-होर शिद्याचार-हे मतिरिक्त कछ न निष्टं निष्मार वस्त । ठमडमाना−स कि 'ठल-ठन की प्रति उत्का करमा। थ॰ कि 'उम उम' दश्द वपना । टममा-म कि मिश्रित होना। एतम्हे साथ कार्यका मार्थम दोनाः प्रवृक्त होसाः स्मनाः देशार होता । दनसमामा- भ॰ कि॰ हे॰ 'दनममामा'। दमाका−प 'दन द्वत'को व्यति । टमारम-४० देश रस आधारदे माथ । टप-वि॰ वंद । दपकाश-५ इस्टर, दीस्टर, आयात् । ज्या-त माँचा की छापा या विद्वविश्व ज्यानेके काम माना है। हॉंपने फाड़ी हुई हाए। डमक-स्था महता रक्त जातेका भारा हतरात हर चतन का भारा महाउत्तपरी शाल (डमक्रमा−भ कि॰ धय, बाधरं बारिय प्रमत-प्रसत् कदः. जानो सहस जामा। शहरानं दूर अधना आक्रमावधे साथ

टमकामा~स - कि॰ चननको सक्ता शिक्ष देना। ०४ जाता।

हचना -स कि वानना। र नियपके साथ आरंग

बरमा। वैदार करमा पूरा बरमा। स्वापित करना-

इमहारना-१ कि दे इनहाना !

यनम् ।

बादशास करसा, जोरासे देंग्सा ।

र्वदुमारय-पु [सं] मॉक व्यवस्था धीवन । तंतुमीदक-पु [मं०] धावसवा बीवना गाँउ । तदर्माप-तु [त] पारवदा देश व्यः शीत । र्संस॰=धु साँच सस्यः हाहबाका बाधाः खपाव- बानजदी हेंग हरी भयो ना यमेत मीहि –शन्मा होत्रशासः भविष्ठाचाः समीतवाः। सी प्रमापनी जनसभाती। ⊶संद−९ दे 'तंत्र मंत्र । र्वतरी*~पु तारवाना बाजा वजानेवामा। शी॰ तार-बाह्य बाजा। धार्यका हार है र्राति-स्मा [मं] अंशा रस्मी (शिक्षमें बार्र कराहे मेंने ब्रों)। गीः बनारः चैनाव । पु॰ अनाहा । —पास-मु मोरध्यः निराद् मगर्मे **अ**दातरागड समय सहदेवडा नाम । र्सत—<u>त्र [सं•] गृत तामाः</u> रेगाः प्राद्यः संताम वरमेक्दाः मक्रशीका भारता। -काञ्च-पु॰ तामा साक्र करनेका जुनाहीस यह भीशर । ∽दीर∽तु० रेग्रमका बीका मक्ती । --मारा-- १० वना यवियान । --मारा--१० मक्ता। - निर्माय-प्रशासका कार - वर्ष(क) - प्रश मानगरी पुरिमा जिस रिम रदान्धनदा वर्गे बोला है। -भ-दु मरगोः व्यक्ता। -वद्धम-वि मंत्रतिको वृद्धि दरनेशना । पु निष्युः निष । न्यादक-५० ष्टारनाचा नाम क्यानेवाला । —वाच-तु॰ वारनावा बाबा । -बाबा--बाब--प्र• अनावाः तीताः ज्वा । ह'द−पु॰ करपा। -विग्रहा-भी॰ देशा। —धाल्य−स्रो धेनपर । —सेनत−नि तुला तुला । -सार-५ ग्रारीका देश। नंतुक-द्र [4] मरसी रक्ता पद सर्व । संतुद्धी-भी [मंग] मारी। र्ततुष्तः, तीतुम-पुरु (मेर) एक जलवेतः सगर र तंतुमान्(मन्)-५० (११०) कश्म । संबुद्ध संबुध-पु [मं] कुराल अवह में नाह । संब-५० [मं] इता ताँगा बोइनिय मृत्यानियांगा संगनि। प्रशास अल्यादा सभा थेंग्यो वय कारात देखा राहा राज्या रेमा। प्रदेश चागन गर्गण सन्दर्भ सुग्ध चरना प्रमातका व्यवसार। श्रेयानाः निषमा तुमा गरिनासा मर्थ-दिष्णा श्रीतिका एक मंगा प्रत्याः मधीनदाः विकास शेरपी निर्दात रचना का दिवसा भी रचनाचा दढ क्रप्याचा शिक्तव्यतिको पुना कोर अधिनार आधिका दिशान का नेपाना प्राप्ता भागमा श्रीका अपरिका नाए। -und-des Lates ! -mise-8 ene der बर व्यक्ति में काहि मर्ग की वे रहता है। -संब-षु शहरीया वर्ष मुख्ति । न्युक्तिनम्। क्युदिशी-को हर करने दूर मर्नेक गए बानेश ह छ। (भरिकार, बन्दा कार्य अन्ति । न्याच न्याचन्त्र देव अनु कार । —संस्था-सी 2000年代である BLACKAR! 1 -वर्षप्-प्र र्राट्य व्होतिक। -बीम-प्र SPECIFIC ब्रद्धारि दिशा मान्यका होय । लेकक्-मु [५] कीराः समा वर्गतः मेत्रव-द [मे] ए-पमन्दरश संबन्ध-धीन [मेन] बीरे देश बार्न बाना जिनते जतेह बर्दारो दे पूर्व हो। हो र 37 लीन पूत्रम अनी है दिल्ला | वीव्यवन्त्र पान अनुसार

बारकार स्नान स करते हहा ही बार स्नाव काना ~भर्षशाम्भ); स्पोन्तः । संसा-यो० [वं] है। नंदा : र्मग्रापी(विन्)-पु॰ (५०) सूर्व । संब्रि-स्वी॰ [र्गं॰] नॉव: बॅल्पा बॅल्पा हम। उत्तर इस दिए विभिन्न द्वार्षेत्राची श्री । -याम-४ देश 'स्तिराम' । -पासक-नः अवद्याः र्विविका-भी॰ [मं॰] शहभीः शॉन । र्वप्री-सी॰ [मं॰] बैप्त कान्त्रि समा तारा ग्रहूची देश्री मसा ग्लामशी: रागी: शारा का बाहा बीपा ~मकि−द्र एक तारीशना शुक्रा, बीला । ~सुरव्-व० क्षांबद्धी एक गुण्य है क्यो(विष्)-वि [मं] वारीशन्ता संबद्धा सनुगरम बरमेरामा । प्र धरेवाः मैनिक । संबराण-मा देश तंता । र्संपुद्दरत-विरु [का] स्वरंग जिल्हा स्तारंद क्षेत्र हो है र्शंदुकाणी-भी श्वास्थ वार्ताक्षा र्श्यम = पुरु है भित्रस । धंद्रकीयम-५ देश तंद्रकारक । मेंबर-४० एक सरहका भू का दि है तरम करते. रिटेश पदाने हैं। वीषुरी-प्राथक महारक्षा वेदाव । दिव लेहर नार्यन । **मंदरी-मी॰ दें** वनरिद्धी ३ र्तेह्र-रि. (में) इंत्र दिविमा भागा। । र्वत्रवाप-९ (मंगोरी तंत्रगण । र्रोजर-वरी [संक] क्षेत्र प्र'तिः वस्क्ष्मे प्रारी के शारी कीर र्थ बेंदि शिवस रोजेश एका व र्मद्रास्त्र-दि [र्ग] संग्रहरू र संजि—भी (००) संदर्भ नेक्रिक-तु (शेन) यह प्रशासा ३५१ । र्विद्वचा~शी [स∞] ≓दा। श्रीहरू∽वि (लं•) श्राप्तच्यातरहान् शेल्य र संदर्भ-स्था [सन्] दे सदि । र्गदी(हिष्)-दिर (र्नर) होता सर्वर व सीरा-में शिकी नाम । र्मशान्त्रः यद्य परवका भौती भेपतीया गणामा । स्ते [म] क्ष्य । र्तवाबु-५० सर्थः सर्वापे बक्यापे दुवे वह स्थानी भीव क्षिन क्षिणम अर्थरका स्थापन क्षेत्रका स्थाप - प्रयोगा -त्र भंगा देवसम्ब मेरिकार-क्या कि जिल्ला र्विक्स−९ ह ध धेर राज्या र्श्वीर-पु (सं] ६ ^{५८} १५६ नद देखा श्रीबाह्य-की बिशानी चेन्त्रक्री ह संबन्ध क्यांच्या १ वा । noted [at] as that have also his ARTHUR E श्रीपृश्वालयु किल्मा जैन वह बाहारि हा दे देव राज्ये E fat 42 } 2 = "ft) 1

सुरंगना एक शास । साहरक-पुनायहः स्टरनेका स्थामः विकासा । सिंगना-विनायहरूपे स्टारंग । सिकटेनक-पुन्मदरमा, प्रदेश ।

टिक्स्। -पु॰ वे 'ठीकरा'। टिक्सा = -ब॰ कि॰ वे॰ 'ठिटक्सा'।

रिकरा!-प दे॰ 'ठीकरा ।

ठिकरीर! — वि विश्वर्मे ठीकरे मण्डिकों (अमीन)। सी

रेही बसीन ।

ठिकाना—पु॰ रेवान, बजद जासरवान; रहने ना ठहरनेथी
जगह, मुहाम बदरेवा गुजर करमेका रवान। निवल या
अनुकृत रवान' बदाय, व्यवस्थाः सीमा अरोसा विवासा
आरोर । मु॰ -क्यामा—वाध्यस्या या वोविकाका
कर्मन प्राप्त थोना ।—क्यामा—वीकारी वा रहमेका स्थान
ठोक करमा प्रवंध करना । —(बे)आला—ठेक रास्त्रेय जाना, अवधिवदयर पहुँचना । —क्री बात—पुष्ति सीनत
वा आक्ष्मी वार्त !— नर सुना !—क्यामा— पर्युचामा—वामीस स्वाननक पहुँचा हैना । —क्यामा— प्रवंद रवामर एवँ बाना; काममै सामा कर जाना ।
ज्यासा—वामीस स्वाननक पहुँचा हैना। । —क्यामा—

टिटकमा-अ कि॰ यसते यसते सहमा रह बालाः विस कुरु रिवर हो जाना प्रश्लेर-संबाधन न होताः स्तस्य

होनाः ठठ रह जाना ।

ठिट्राना~भ कि स्त्रीसे सिक्टब बाला।

रिडोसी-खा॰ दे 'उठीका ।

हिनकमा−भ ि (वर्षोका) बनावये वीरसे रोना । हिर∽न्ता कवायेको स्त्री, शका।

हिरमा−म कि बहुत अधिक संत्री पहला। हिट्टरमा,

सर्विध अक्ष वाना।

डिसना—अ॰ कि॰ वकपूर्वेद क्षेत्रश जानाः जाग दिसकाया या बनाया जानाः संग्रीसे प्रसनाः वसनाः ।

टिकाटिस॰ न्य वसमस्रत हुए। पहमभूके साथ।

दिक्तिमा-स्रो मिट्टीका छाटा यहा गर्गरो । दिस्तमा-वि॰ मिडता वैकाद मिसे कार्य बाम म हो ।

ाढसुमा-।व॰ ।गडसा वेका८ मिसे कारे काम म हो दिसा-पु मिहोका वहा ।

हिली-स्पं दे 'दिक्सि'।

ठिहारी •- वि रगे • पद्मी श्वामी। स हुरनेवासी । स्ती •

निश्चय ठहराय।

श्रीक- वि यपपुक्तः प्रिकितंत्रातः वशार्थः अवद्याः स्वताः प्रताः प्राप्तः विद्याः भागितः प्रकृतः प्रदीः कृततः स्वताः भावितः विद्याः स्वतः मा वस्याः मा वस्यः मा वस्यः

श्रीक्रमा-3+ \$ श्रीवरा ।

बीबमरीब-स॰ रिन्तुच शेरा पृष्टाचन एक्टम रिन्तुच।

दीकरा-इ मिट्टीके बरतम वा शब्देका हकरण पुराना

करतनः विद्वापात्रः (का) वपवानीमाः निकल्पां श्रीय । मु (सिरपर)—प्रीवना—रिस्टीके सिर वोप मदगा । —समञ्जापा—इंछ न समञ्जाष ! —होना—श्रीपुर सर्वे वीता ।

ठीकरी-सी॰ छोटा ठीकराः विकासर रसमेका मिड्डीका तथाः सिकस्मी भीज ।

ठीका-पु॰ निवत समय अवना परपर कोई काम करने वा करानका कराए; कर वाणि वस्त करनेका किमा। -पश-पु॰ ठीकेका एकराएनामा! -(के)दार-पु॰ ठीकेस केनेवाका व्यक्ति।

ठीकरी#-कौ॰ परवरः परदा ।

ठाकुर्। "पार परवर परवर व ठी ठी~चो॰ इचकी भाषानवाकी इँसी, बंहदा ईंसी । मु•

~करमा-शत मकारको बंशो बँगमा। शीखनाव-स कि दे॰ 'ठेकना'।

ठीवन+-पु+ क्व, सरार, वकेमा । ठीड--सा दिमदिमानेको मानाव ।

तीहा-यु पृथीमें वहां स्वश्नां इक्श विश्वपर रहस्य कीर्यं बीव गड़ी या कारी जाती है। कैंबी पगड़ा नरी।

ारी। दर । हुदु~पु॰ विना काक-पानका स्ट्रा पेक ना उसका हसा।

नि• सङ्गा

हुँच-पु , वि कुँठ'। दुक्तमा-मा॰ कि॰ पीटा थाना; ठौँका आना; घीट दावर भीतर वेंसना; बावर होना (दाना); हानि होना। शु॰ कुक क्षामा-चावित होना, पिर बामा; हानि होना। वेंस

जाना । दुकराना-स कि ठीकर भारता, पैरके जम आवसे मारताः (का) पैरसे भारकर इसनाः विरस्कार करना

थपछा बरमाः दुवकारमा ।

हुरुवाना~छ कि॰ पिरवाना भार पितानाः शानिकरानाः हुङ्गी~की कीश वीठके सीवे निवनी तुर्व बहुाः सृता इमा शाना वा पिता न वी। हु॰ ∼पक्कवृता~ननुनव

विनव करंता, शुष्टामद करना । द्रमकना-भ॰ कि॰ वे॰ 'क्रिनकना । स. बि. है 'ठक-

कामा ।

द्वमकाना-स॰ कि॰ वैगणीमे धीरेसे मानास करना। इसके बाममे डोकना ।

दुन दुन-पु॰ वरतनी या भातुके दुवर्गीको आपानकस्य भानि। वच्योके स्व रहकर रोजेको सावाज ।

द्भमक-ि उनके भरी दुई। (यात) त्रिमि चनत समय नीक्षेत्रीको हरसर पर परका काल । नदुमक-क• शीमता और जीगऊ साथ कोश-नीको हुश्सर पेर परक-क• दूप (छेटे कथ्यीत चन्ना) उटल-कुददे साथ (यजना)।

वन्यारा वन्या। उएक-पृदक्ष छात्र (यक्ता)। दुसकेमान्स कि॰ मानने छम्प तानके समुनार रहरह वर पर पत्रमा। योदी योपी नृरवर पैरदक्त पुर प्रथम।।

हुमका-विक धार्ट कनका सारा । हुमकान्यां-म कि व्यंतरी बोरीका शहना हेना ।

हुमको-वि को धोटे काकी वार्तक हरना हुमको हुमको-वि को धोटे काकी बादी की प्रशंकी होते का देशनी सोजन दिया जानवाना शाका होती हारी पूरी विक्रक !

ŧ,

तं ह्रसोरय-पु [सं॰] महित्र चावसका बीवन ! र्षंड्रसीदक-पु. [सं•] पादकका बीवनः साँव ।। तद्वसीय−दु [मं•] वाबचका हेर; यक बॉस । संप्र•−५ धाँवः वस्तः हारबाका शामा; उत्राय− शासमकी वैत वरी मनो ना नसंद मोहि'-६१सा वैत्रज्ञासः मिमापाः भगोनतः। सी० शताब्दाः वस्तवार्थाः। र्मत∼द•दे 'तंत्र-संत्र'। र्वेषरी^७~५ तारवामा वाजा वजानेवाचा । सी*न* तार गाठा गाजाः गाजेका सार । संवि-स्रो [सं॰] संशे रत्सी (विसमें कई बच्चने वेंने हों); योः बतारः प्रेतार । यु॰ जुकाशा । —यास्र—यु॰ मेरखनः विराद् नवर्मे अदातवासके समय सब्देवका नाम । तंत्र−प्र सिंशी सतः तत्त्वाः रेकाः बावः संतावः परमेश्यः मक्र¶का काछा। ∽काछ−पु• तावा शक्त करलेका ञ्चनार्केता रह भोबार । ∽इटि∽पु॰ रेश्चमका सीवाः मक्तीः –नाग–पु॰ वशा यदियाचा ∹नाश-पु॰ मक्षो । -नियास-५० ताश्वा ५६ । -वर्व(स)-५ मानभग्ने पूर्विमा विश्व दिन रक्षाचेशमका वर्ष होता है। −म∽पु॰ सरसी। बहुना। –स्द्रीन–शि संस्तिकी पुनिः करनेराकाः ड॰ विन्ताः क्षित्रः —वादक—उ वारकाका नामा नजानेकाका। -बाद्य-धु वारकाका गता। –गाप –गाप–पु॰ जुणलाः साँतीः सक्ता। करपा। -विग्रहा-सी र्चड-प्र ~शास्त्र-ची धेंदपर। ~संत्रत-नि दुना दुना। ~सार~<u>प्रजीतम्य पेत्र ।</u> तंतक-९ [र्स•] सरसीः रस्तोः एक सर्व । शंतकी-सी॰ (सं॰) नाही। र्ततण, श्रीतम~६ [सं] एक अध्योक मगर । शंतमान(मत्)−५ [ध•] व्यमि। र्रतुर वंतुरू-५॰ [सं॰] नृगाङ, कमस्यी नाङ । संग्र−प• [सं] तंतुः तीतः श्रीद्वनिक भूरमः सिकांवः मोननिः प्रधाना संस्थाता क्या वेदाई एक धारता हेता राहा राज्या धनाः प्रचंका शासन-प्रवंका समृहः सुका अपना भना गुष्टा व्यवद्यारः समारदः नियमः क्रुकः परिवारका मरम-बेपणः मोतिका यक भंगः करबाः मधीनताः विदासः संबंधी सिग्रांत रचना या निवनः नेनी रचनाका स्क बम्माया दिक्-प्रसिद्धी पूजा और अभिवाद जारिका विकास करनेवासा धारमा भागमा बीचा जारिका तार । -काष्ठ∽पु दे॰ 'ततुकाष । ~धारक-पु कर्मर्डाटमें बह स्पृष्कि मी प्रति संगीको किने रहता है। -संग्र-प जाद-रोनाः प्रधाव-तृष्ठिः। ~युक्तिः ∽सी अहादिनी-की वर बरते हुए अर्थकी रुष्ट बरनेकी कुक्ति (अधिवरण योग, परार्थ आरि) । -वाय -वाय-तु दे॰ बाव । -संस्था-स्रो मंशिगंडक, शासकसमा । ~स्क्रंच्~पु गरिव क्वोरिव । −होम~पु र्वपदास है भनुसार दिया जानेनामा क्षाम । संबद-दु[4] क.स नवा क्वता ! र्शक्त-५ [सं] शामग-प्रदेश। संप्रता-सी [नंग] कोर्स देना कार्य करना जिससे अनेक बर्डमीन्द्र पृति हो (सेने तर्पय पूत्रम आहिके निनिष्ठ | र्शवृत्तक-पुक वान राष्ट्रिक ।

बार-बार स्तान स करके एक ही बार स्वान करता -वर्मशास्त्र); व्यक्तिहा । र्तत्रा−सी [सं]दे 'संहा। संज्ञानी(पिन्)-५० (सं) स्वं। वींक्रि—मी [र्स•] ताँवा बीगा। बीमाना तमः मरा पृष्ट विभिन्न गुर्थोदाको छ।। -पास-नु दे॰ 'देविपास । -पासक-पुनगरम । त्रविका−मी [सं•] ग्रहभी। ताँत । संजी-स्रो [सं•] बीमा आदिमें क्या शारा गुरुवो। देश्यी नसः एक मनीः रस्तीः माटीः कार्याका नाजाः नीमाः −भाँड~पु एक तार्रोनाका नामा, नीया । ⊷मुल~पु+ दाक्ष्ये एक सहा। तंत्री(चिन्)-वि॰ (सं॰) वार्रोनाकाः वंत्रस्य अतुसाय करनेपाठा । प्र शरीयाः समित्रः। तंत्रराण-स्त्री हैण 'तंहा'। र्तद्रदस्त−वि॰ [चा] स्वरक विमद्धा स्वास्थ्य डीउ हो। र्वतुरुस्ती-ची श्वारम् बारीम् । र्तंबसन्-प्र दे तंबस । र्सद्रकीयक−५ दे 'तंद्रकोक्का । र्तदर-इ रक वरहका कृत्या जिसे गरम करके री। फाते है। तंबुरी-इ एक मकारका रेखन । वि तंबुर-निर्वा। वर्षेशी-का दै 'वनदिशी ! र्श्वद्र-वि (सं) द्वांत शिविका आकरी। र्वज्ञाय-९ [सं] दे॰ 'तंत्रवाप । वैद्या नहीं [सं] कैंगा झांति वैद्यूमें छरीर हे मार्छ व देशियोके शिविक होनेकी दशा। र्वज्ञासु−ि [सं] तेशञ्चका वीद्र-सी [नं•] तहा। तंत्रिक-पु॰ (सं॰) यह प्रकारका कर । त्रविद्धा∽सी [सं] तंत्राः तींब्रिक-दि [सं] संदल्लकः देवाने संदरः तंत्री-ली (प्रे) दे तहि । संदर्श (दिन्) - वि [मं] हांता कारिल । तंपा−नौ [सं] नाय। र्वमा-पुरु एक तरहका चीडी मीडरोडा शावजामा । स्री (एं) याचा र्शेषाकु-प्र शुरुती। गुरुतीने बनावी हुई वह मधीरी पी क्षि भिन्म बारियर रशक्त पाने है। बर्श । न्यारीम ९ र्तनाम नेपनेनाना । र्तिका-मी शिगाव। र्तेषिया−५ चॉरेका धेरा इम्हा। संबीर-प्र• (र्स•) क्योदिनया एक बीम । संबीह-की [का] येताकी ह **संब-९** द्यामिकामा शेवा। तबूर~तु (का॰) यद क्षरदक्षा दीन । ~घी~तु देद वधानंत्राका । र्तपुरा∸पु शिवार नेमा वड यात्रा विने तुर कादम रसने कै विष बनाते हैं। हानपुरा ।

पु कुद्रना शाह, ईप्यों। दोसा - पु रे के के ना । सु - विकाना - साफ वनकार करता । -(से)से-वकासे, कुछ परवाह महीं । द्रोहना - स॰ कि स्वाम हेंद्रना, धीवना । रीका-पुनद रोटा मद्दा बहाँ सिंधा के दिए वीरी आदिसे पानी गिरात हैं।

होति#-सी॰ दे॰ 'ठनम' । हीर~पु० स्थान चगह जनसर, मौन्द्रा उननुष्क स्थान ! शु॰ -- ठिकामा~रहनेका स्थान । -कुरीर-अ**न्धी**नुरी अगृहः पुरी अगृह। -स आभा-पास न साना। -रक्षमा-मार् बाकमा । -रहमा-पत्र रहना। मर

णामा ।

च-देवनायरी वर्गमाकार्मे त्वगता शीखरा वर्ण । छवारण] खडाखां--पु॰ टंका, नगाङा । रवान मर्खा ।

र्टक-पु॰ विष्यु, मपुमक्ती। निक् कादिका बढरीला काँटा जिसे ने दूसरे प्राणिवॉक्ट घरीरमें चुमा देते हैं। वंक्ट क्ट हारा किया गवा भेरमा क्लमकी बीम, व बंद्य । -चार-वि संस्ताका।

र्श्वस्ता#⊶अ॰ क्रि॰ भारी श्रम्य करनाः सोएका गर्**य**ना ! र्वेद्रस्मा'⇔अस्टि देश देखारमा'।

हंका-पुनगाना, भासा । मुक् -कजमा-अविकार दीनाः यकती होना ! (छ हाईका)- श्रजना-पुद नारंग होना। -बळाला-पोपित करना कोर-बोरमे क्यूकर सक्को सुनाना । -(के)की चोट कक्क्मा-निकर होकर सबके

में इक्ट कहना, धीपित करना ।

द्यकिसी – स्रोदेश 'टाकिसी। र्वकीरं−सी एक कुल्ला कि वंबक्का। इँकीछा† − विटंइसकाः टक्सारनेवाकाः

र्धेक्र - ५ एक प्रशाना वाका।

हबीती-सा॰ भिर पदा। र्दगर-पु चीपाया, पशु (गाव गत बादि) । वि दशका

क्लाः (ता) वद धूर्त । र्वेगरी~सी वही बढ़री। बाहन ।

र्देशवारा−प्र° क्रिशलीको वैक आदिको आपसको सद्यायमा ।

हरिया - प्रदेशेशानाः समग्रे देवेशाला ।

दंटल-ब गेर्डू भी स्नार माहिका बना विश्वपर नास सगायी है। यह और बाक्के बीचका भाग ।

वहीं नमी है। 'इंटर्स'।

र्देष-पुर वाम्, वॉदा एक बसरत जो हावनेरके पंजीके मदारे के के कल की जाती दें। संज्ञा ज्ञरमानाः वासा समयका एक परिमाण (२४ मिमट) ! -चेस-पु अभिक दर करनेवाका पहलवान ।

बंबक - पु दे 'बंदक ।

बेंदपतं-प्र, सी दे बेंदबत्।

वृह्मारा-त वृह्मपारी-स्ते तेल वा घेरेडे किए बजी द्वरे कम कॅपी श्रीवादा पशास्त्री आही।

र्वेडपी - दि॰ दर देनेवासा ।

रोटा-पु॰ चींम मादिका संवा द्वसपा साठी सीटाः पदार रासरा । - टोमी -सी सरकीता यह शेव ! - बेडी--क्री वह देश क्रियुमें एक क्रमें की । सुक -ब्लाब्स-स्टेर में विभा। -बजाते फिरमा-मारा मारा फिरना। र्वशावसमार-मु न्टबस्था

बॅंडिया - मा • पेक्षा साथी विसवर पूर्वा बारियोंके स्टार्ने भीटे हेंके ब्रीन नेईकि पीचेकी वह सीक विसमें नाफ कमी हो । पु॰ शहराज बगाहनेवाला ।

र्वेडियाला~स॰ कि क्षो कपड़ोंकी संनारंकी मोरसे मिला-बर सीतः।

र्वडी—सा॰ धोटी श्रीषा और पतको क्याप्रीः छाते भारिने रूगी शावर्गे पशक्तेकी करूकी विस्तपर कमाली चढायी वाती है। तराबधी कहती जिसके दोनों और रस्टिकॉसे पकड़े बाँचे जाते हैं। शनैका कपरी मान किछपर फूक वा कुक रिश्वत रहते हैं। नारु † क्षित्त । -सार-विश्वो क्य सीदा होडे। प्र• वनिवा। स॰ -सारना-क्स सीया तीक्या ।

र्वेडीर-बोर सीधी रेटार ।

वैदोरमाध-स॰ कि वकर-प्रकार ईंदनाः दिलीएकर ₹दना ।

डडीत∽प सी दे॰ 'उंदबर्द'।

वंबर-प् [सं•] बाएंबरा पहक-पहका समूह, राहि। सायस्याः गर्नः आयोजनाः मारी धान्तः सीदवैः विस्तारः

थक नकारका वका चैदीवाः वि प्रसिद्धः। बंबेक-पु॰ बि॰) बद्दू वैसे गील सिर्देनाका कोई वा क्रमहोस्त अपन्या मिले पंत्रेते प्रकृत्य स्मरत करते हैं-

वसे बाबमें लेकर की जानेवाकी क्रमरत I वैवरकाच-द गटिवा एक बातस्थावि विमाने शरीरको

गाँडों में दर्व दीता है।

ब्रिक्ट-पु वै 'बस्द'। वैवाहोस-वि मस्विद दगमगाता हुना वेवैन ।

र्थम-पुरे शेषा

र्सिना∽स कि दे• 'दसना ।

च-प्र [मं] दावरः वक सरदका नगावाः बटवाधिः भवा शिव।

डक्क−वि वहे रोककाः श्रीक वयवाद्याः ।

डक-०प कैतनेका बागः [बं शॉफ] स्टी या सम आदिका बमा देवीय कपका जिससे होते वाल जा धान्य शहनाने (निधेशकर माशिक्षीक) बनते है। वह क्याचा समुद्र वर गरीये बना पदा धार वर्षी भारत कान्त्रे और वतारमंके निय नदान ठदरते है। भग्रतत्त्वा कठवरा जहाँ अधियुक्त सन्ने दिये जाते हैं।

। एईड' ०१ ए-एड्रफ

दक्रमा-जन्दि दबार हैना र देन दक्रमा । द्रकराजा-ल॰ कि भाँव नैक वा बेनेवा बोहने नोकता।

ध्यक्रनेवासा । सक्षम-त [रं•] रुकती आदि श्रीकमा वा कारनाः कारनेवाला । -वसमी-सी॰ [र्स॰] क्यमी वरायनेका श्रीजार, मर्स्सा । शक्ता(सम्)-पु [सं] वहरी विश्वकर्ता । वि० है। खख्रक्रीक्र∼को॰ (थं } क्यो, म्यूसवा। –(फ्रे)क्रसाव− मी॰ हपानं कम करवा। सप्तमीनन्-म [म] जंदानन् अनुपानतः। राप्तमीमा - प्र [थ] भेषामाः भागरं या राजेहा अंशासाः **WZER** 1 दालिया-प [ल] निर्जन स्थानः तनहार्यः साकः चलस्युस −५० (अ) स्त्रीय मा केन्द्रस्का उपनाम । सर्वसीर−पु॰ [झ] विज्ञद्र 1 रुप्रसीस−५ [ब] विशेषता क्यसिंदत । राप्रय~५॰ [फा] सिंदाशमा कवशोबी वही चौद्यी। ~गाइ-की राजवानी। -जज्ञीन-विश् सिंहासना-स्व । --पोश-प्र तस्तर विधानेकी भारत । --धंशी--की तक्टोंको बनी धर्म बीबारा पेती बीबार बचामेंकी किया। -ताउस-प्रशासकारीका प्रतिक सिकासक भी मीरके आबारका था (इसे १७३९ में नाविरखान सर-क्टर के गवा)। ~(¢से)स्वॉॅं∽ड़ वह तकत विसवर बाबधाइको स्वारी निकल्यो है। वहनपरीका । 🗝 हो मान-प्र• तुनेमानका तकत विश्ववर वह एका करते है। मु॰ ∽का तस्त्रा हो जाना न्दरवार हो बाजा। सक्ता—प्र (का) कीमी भीमों। कक्कीका क्या और दस मोटा चीभ्येर द्वस्त्रा, यक्ता। न्यूशासीमन्यु वर दस्ता विस्तुपर राहिनासे किसकर विधानियोकी नामस्वक बार्वे समजानी नानी है। -पासहरू-अ सम्बास करने-का दक्ताः अम्बासका सार्वन । सु० -उक्कर जाना-बरबार हो आता. नह प्रष्ठ हो काना, तबाद ही नामा ह –(ग्से)के तहते स्याह करका−वहुत क्सिका । सहरती-सी सकती, बाह्य भारिका होता, बीकीर द्वकरा कीता तकता परिषा । सराबा-वि इष्टा कटा मीटा वाका मकत्ता। हत्तव-५० [सं] साम क्योंदा यह माक्दि गव । सगदमा~५० दे वक्षरमा'। सरामा-म मि वागा पाना। तगमा-९ है 'तमपा'। सगर~प (सं•) एक पृक्ष थी क्षेत्रण अफगानिस्तान शादिमें दौता दे और जिल्हा पह गंगहमके कनमें बाम हैती है। मरम-हका एक श्रीवश । सगका-प तकका असहीदा एक बीगाए। त्तगार-दुव ताना । सराई-हो: तरामेश्र कम वा कारत ! समाच-पुर बीशाईके किए मशाका गारा आदि शैवार करमें हा बीजकी करवे बना हुना थेरा वाल करकारी भारि पदानेदा पीतक्या वहा पर्वन । क्यादा-प देश कहाता ।

त्रगामा-स कि॰ तामनेका काम कराया । तगार~म दे॰ तगाव । सरिवामा-स॰ क्रि हैं । 'सामना'। सगीर - प्राथिति-परिवर्तन, स्वरीका । तगीरी−सी वे 'तगर'। तत्त्वमा = -- अ० मि० मार्चन सप्र होता, तपना। हु स्प्री होता । तचा≠−सी लगाथमगा। तवाना 🗝 नुरु कि संबंध करवा तवा । त्तचित्र≄−विश्वपाद्रभासंबक्षः दासा। तप्रक−त दे 'का'। तप्रक्र-पु॰ दे 'तक्षक'। वरिष्ठम १० शहाल वही समन १ तज-मु॰ दारचीनीको बाविधा यह मुख्र दिसको हान बनाइ काम काती है (शसके श्लेको तेमपत्ता' कार है)। सञ्जाकिरा ~ पु (ब॰) क्षिष्ठ चर्चाः बीचन-चरित्तः। सम्बद्धीय-पुरु [सरु] शया करवा। (पट्टे आदि) पदकता। तज्ञसः-५० लागः वाक्रः। सम्बद्धा न्त्र• कि श्रीश्माः त्याममा। तकरबा−५ [भ] असुमनः दिन्नी वस्तुके वारेमें दान शास करनेक किए की नवी वरीक्षा माजमारका । -कार-वि अनुष्यी। तजस्वा-प्र• दे 'तबरदा' (तमात मी)। तक्राची~सी वि विश्वय होन्सा दिम्ब व्योतिका हार्मनः माँचे । **डबर्चा**ज्ञ−को (ल) सकाह रामः फ्रेसका, निर्देश निर्देश विचार। −शामी−को दिशे देशके को मञ्जनसमै पुनर्विचार । तम्-'तत्'का समासमा ६५। -अमिता-जम्म-ति॰ क्सते करात्र । -बादीय-दिश् उस बानिहा । -श-विकारी कामनंशका । तत्र-वि जानकार। वलविद्। शक्दी-हो। [सं] शिप्तश्यो ३ सर्वकः-१० कातका एक माना कर्षकत । शट~पु॰ (सं॰) पदापको बाका वितिया किनारा/ वर्ष तीरा नरीके किमारेको मृत्ति। प्रदेशा क्षेत्रा श्चित्र । मण पास समीव। - स्थ-वि॰ जोसमीप रहता हो विश्वटला को अतलर न १राना हो प्रशासीमा को गुरुवंदीसे १वद क्षा । प्रश्न तत्रासीय व्यक्ति । -- श्रक्षण-प्र वह सहन विसमें कश्यके बरबाबी और चरिवर्गनशीक गुनीका निर्म वन हो। -स्थित-वि वे 'तरन्व'। श्रदक-त [मं] मरी भारिका किमारा। शरकार-नि वामा गु(तका । तहरा-तु [मं॰] तहारा । सरपी०--न्दी० दे सरिजी । त्रराष्ट्र र [मं] वदान कावा लटाकिमी~साँ० [एं०] वना सामान । त्रवाषात-तु [र्थ] क्युकॉची नीवींस विद्वी सीएस वहालनेकी होता । तरिनी-न्ये [सं] मरी । -यति-प्र• समुद्र । श्रदी−मी [सं] श्रीर दिवारा। ≠ नदी। समापि।

411 इस६-५ [सं•] चमदेने महा बानेवाला एक छोटा वाजा काटमाः चैक मारमा । को बीचर्ने पतला होता है और हिकानेपर कसमें कगी प्रेंडिबीस प्रवता है। --सध्य-पु॰ वश्र ना स्वस्के वो वहे धेनीको मिलानेवाका अक ना स्वक्रका एंकीमें भाग । -वंग्र-प्रजबं खोजने तथा सिंगरफका पारा भीर कपूर छशानेका एक येव १ बमक्मा-प दे 'ईंब्स्मा । क्रमसका –सी• [सं] हाथको यह वॉविक सुहा । इसक-प∘दे 'इसर'। ~सध्य∽पुदे• 'इसद्सव्य'। इयन ज्य [सं•] उदनेकी किया बदामः पाककी। **४१-**प॰ मन, मोदि जास, सौफा जीचा । -पोक-नि कावर तुम्रतिक भीव। दरमा~अ कि॰ मंत्र छाना, भीत दोना लीफ करना। सर्वेद होना । **इरएना≉**~म• कि दे 'दरवा'। **इरपाना+--ध** कि दराना त्रस्त करना। बरबामा - स कि द 'टराना : † दे॰ 'बरूबामा । इरा॰−दु ल्ला, दोका । **बराक-नि॰ बरदोक ।** इराइरी•~खो• मद टर। द्वराना-स कि॰ सद विद्याना भीत करनाः सर्वक €रता। इरापना •−वि• भवानकः। हराबना-विश् विसे देखकर दर क्रमे, भवानक, नमीत्पा-बरावा-प्र॰ फलनाठे पेड़ोंमें वैंथी ककड़ी जिससे बराबर विदिवानी बवादे हैं। हराते हैं किए कहा बानेवाली बात । बराइका-दि॰ टरपेट्र। हरिया॰ नकी दे 'डाक'। बरी = न्मी । वही छोटा इंद्रश । षरीका+-वि• शक्षा<u>त</u>्रसः। डरेसा डरेसा≠-वि दरावना । बस-पुर्वे डबना शीका कामीरकी यह शीक । इसकः इस्कर-9 [fio] रॉप्त शारिका बनायात्र रका। इसमा-म॰ कि डाका जाना छोड़ा जाना, पहना ! दसमा--पुर पद तरहका बॉलका बना गोला महरा वरतन रारा । इसपाना-म कि शक्तेश काम कराना बस्ते रेता। इसा-तु इक्ता रान् (तमर, मिसरी आरिका) देसा बोम मारिका गोका गहरा, वहा बरतन । क्षतिया-स्त्री श्रीनस्त्र वना एक पात्र को एकेसे सीटा दीया है। क्ली-मी॰ एसा इंदरा स्वारी। दे 'वसिया । क्वेंद्रमा क्वरमा-पु है 'हेब्बमा । वर्गेर-पु है 'वमक' ह दवरा-प ८६ तरहदा वहा करीता । बबिरय-मु [सं] काइका बना कृत ।

इसवागा~स• कि दे 'इसामा'। इसाना-स॰ कि॰ सर्प आदि दारा वृद्धि इत्यानाः * क्याना । इस्टर∽प [अं] साइन । श्रद्धकाना के पान किए वेजना करना सकता। किसी वस्तुका कासच वेकर वसे बारमसाय करना ! * भ० कि भोचा रतामात कुर-फूक्टर रोगत विन्यादना फैकना छामा (चॉदनी) । **बहकाशा***−स कि॰ सीमा गॅंबाना वरवाद करमा~ कतहूँ बार बन्ध बरकारै --सरः बहुत सताना दा स्थाना । व कि उना बाना भोद्रा साना । **बहुबहार--वि॰ लहकहाता हुमा। इरा-भरा' प्रप्रका प्रसन्धा** तासा । बह्बहाट*-की तात्रवी। श्रद्धकाना-म कि॰ इस मरा दीनाः प्रश्रद्ध होना । वहत्त्वद्वाच-पु इरान्यरा दीनेका भाव अञ्चलका । श्रद्धम = पु पर पाँस । श्री जलत, वाह्य संनाप । कद्यमा-पु देवा। व निः अवसा, दग्य होसाः देखां करनाः हरा मानना । स॰ कि॰ ब्रह्ममा। (सा॰) स्ट रेना। _ बहर*∽सी॰ है॰ 'बगर'। **कड्रमा***−श॰ क्रि॰ चटना, वृमना । **बहराबा** *~स+ कि+ चकामा, प्रमाना । बहरिया, बहरी !-खाँ॰ असान रचनेका मिद्रोका पहा नरतन, क्रिका । बहार--वि- वट देवेशका-र्टाग करनेवाला । बाँक-खो॰ चाँदी वा वॉनिश करवंत पत्रका पत्तर बो लगीमोंके वर्त बैठाने और टिक्की आदि बनामेके साम भारत है। 🕆 प्रधास कक्टो । 🗢 पु॰ संबा बंबा । क्रोंकनार्ग-स॰ कि फॉरना कॉबनाः प्रदारता । स॰ क्रि॰ वमन करका । बांक्रप्रि-सी॰ [मं] घटिया मारिके नवसेक्षे आवात । क्षींग- 🕫 प्र• वंकाः पता बंदरः 🕆 काठी एटाः बक्ति। र्खोगरां —पुः वि० वे 'दंगर'। बॉट-ली॰ फ्रन्थर, शिक्का दनान, धासन । मु -सें रक्षमः-धासन हारः बदावै रधना । वॉटना-स॰ कि॰ शिक्कना फटकार्वा; भव दिस्तान-क किए बोएसे श्रासना । बॅडो-१ दे 'टंडल १ काँक-पु देशा नाव रोनेका गाँमा किना भगवका गरकार रीतको सीमा, मेंद्रा केंथी मधीना कमरा जुरमाना। सीयी ना मद्र दो गयी नरनुद्धा नदला । र्वोदमा∽स कि जरमाना करमा अर्थर देना; इर वावा दना । वाँका-पुरंगा लाहा नाम धेनेटा चट्या मेदा सीमा। -मेंबा-प -मेंबी-सी बी मीमामीके बीचकी देश (छा) यनिष्ठना निकटतस यदार अनवस ।

बॉबी-ली हंगे पतको क्योग सीबी रेगा। स्टान्धी

बंदी। यह होती जेसी परारी नवारी जिल्ही ही और ही

इसम-मी इसनेटी किया दसनेदा इंग !

इसना-त॰ कि संद मारि बहरीते जंतुनीका दॉलसे

तकोर्धको -प॰ बावववादः विकासा । सरव-प [प्-] मभार्यता नरप्रश्चितिः असकिवनः सारः रवस्यः प्रका मृत्यः गीतः बाचका मंद्रविद्येष विसे विलंबित बढते है। प्रियमा सांस्वधान्तीक प्रकृति आहि वर्षात पदार्थः स्वमानः वस्ताः मना पंचमता मुख्य पदार्थः । 🗝 🖚 वि जदानी जामनेवाला। विशे सार वरद्यका बाज हो। मध्यारमवेताः वार्शनेकः। —क्षान-प्र बद्धः जारमा भौर अगहित्यक यथार्थ द्यान, मध्यपान। <u>⊸ज्ञा</u>नार्थ दर्शन-प तत्त्वामका नानीमन । −क्षामी(निव)-रि जिसे जबा जारमा और बगाइके संबंधी बनाई पान वी जक्षवाभी। -वर्ष-वि तस्वद्यानी। प्र शावर्णि मनंतरमें हर एक ऋषि। -तर्वा(विश्व)-वि वे 'तरबर्च । प्र रेवत मनुके एक प्रव । —इहि~स्तं+ बरवद्यान प्रक्र करानेवाका यह । - मिश्र-वि सिर्वावका परका । —स्यास −५० विग्युकी वर्णक पुत्रामें विदिव रक शंगन्यास् । – भाष- व्रात्यामा प्रकृति । – भाषी (बिन्)-वि॰ संवार्षक्छ। या राय-बेच्छ बसमें माबर मी सन्यना म करे । -शात-वि शारकप । -बाच-प्रश्निश्चाल-संरंगे विचार । -बिक्-वि तत्त्वद्र'। हु परमेरपर। −विद्या−स्मे दर्शनकाक भारवारम्थिया । -वेचा(श्)-वि॰ तस्त्रहा दार्शनेकः । ∽सास्र−३ दर्शनकाला। तरवतः(तस्) -- व ॰ [लुं॰] पवार्व रूपमें, वासवयें । तरबाबचाम-पुर [मं] हैखरेम : त्तरबाबधामक-पु॰ [मं] मिरीएक। स्थ-अ [मं•] वहाँ, क्ष्म अवह । तथकां-त मह पेत्र । सप्रस्य-विश् सिश्री वहाँ १६नेवामा ३ समा-न• [सं] और हा। नेसा नेसा हो। -कमिस-वि 'त्रवेक्त' । - शत-पुर तुबका वढ मान । -- अब् --म सागार्मसद्देशक किम्बदा नाम । ∼राज−७ द्रवदा रकमान । — क्रियं – विंखस महास्का। समापि नश्र [सं] में भी किएपर भी वैता दोनेपर भी। सधारम⊸न॰ [मं] वैद्या हो हो। प्रवमरत । स्योध-म [शंक] क्यो महार । ह्योक्ट-वि (म्॰) नाम मानका । तथ्य-तु (सं॰) सत्य संवार्षः मंत्री बातः ववार्षताः सार ! -भाषी(पिन्)-वादी(दिन्)-वि सवी भारतर्व वात बडमेनाका । सद-'तन् का समासगत कप !-वर्गनर-व्य वस्ते कर ! -अमुरूप-वि वसीके रुपका तरीके जैला ! -अम् भार-ल॰ उसके अनुसार। ∼अपि-ल॰ वह मी। ७ हों भी तपापि। -अर्थ-अ अमधे किए। -आकार-वि॰ उमके आकारका उसकी तरहका। —०वृत्ति∽मी विक्तमे वह बृधि में। एसके (विवय-विदेवके) अल्हाएकी र्धा भवा हो । ∼क्रपरांत्र-श्रा यसके बार । ≔क्रपरि− क्या के कहर का बाद ! - ग्राप्त-वि असमें रिवणः त्तरोगः बत्तरे संबद्धः - गुज-दि जिनमें ने गुण हो। पराने चीने शुर्गावासा । यु अधीनकारका एक मेर जिसमें कियो यह परन हाटा अपने गुरुक्षा परित्याय हर जिन्हरकी |

इसरी बराखा ग्राम प्रहम कर किया जामा दिसादा बाला है। −वेगरिय∽विश्वक्ष देशका। ~चन∽वि कंत्रका −धर्मा(मैन्)-वि॰ विस्का वर्ष धर्म हो। -दस-द एक मकारका वाण ! -- भव-वि+ वसमे उत्तव । ए० कियो भाषाक वे द्वाप्त को देखी भाषामें करा विकल करते. प्रयोगमें भात है। ⊷स्प-वि+ देशी प्रकारका, वैभा ही । -- क्या क-ए॰ सम्मालकारका एक भर करों का मेवको जगमानमे भिन्न स्टब्स्ट मी बसीका रूप वा बसीका कार्य करतेवाका करें। आव । --कामता-न्यो असान समामका । त्तवबीर-स्वी० विक् क्षेत्रीय बरम, प्रवासः प्रपादः प्रदेश । ~(a) सहस्रज्ञत~को राज्यप्रर्थ । লহা∽ল॰ (संी उस समय त्रा। सदारुक-पु॰ (बा) प्रतिनंभा रिक्र-बामः उपायः रेड । तदीय-विश् मिन् क्लका । सकिल – प [मं] संबा-ग्रन्थिमें समनेवाका एक प्रकारका प्रश्वय (म्बा) । वि० छन्नके किए उपराक्त । सच्चित्र-अन् तबादि द्विगार भी। तद्वत-वि [सं∗] बसा छल्के समाप्त । भ वेते ही वर्ष मधार । तम-त प्रारीर देश नीवि । ● स भोर तरफा-प्राप -ब्राज-९ काचा -पास-९ मृत्या -रह*-५ दै॰'तन्दर्' । --शुल्ल-पु॰ तनवेश नैमा पुणवार दश्या । मु॰ -शनसे-बी जान स्मान्त । तम-पु का] छरार । − त्रीय-पु विदा नदीन यक्तक । -तन्द्रा-अ विकास महेने । -दिही-को॰ सुरनेश तत्परताः मिहमतः स्प्रेशियः। तमक-ती॰ व्ह शामिश । र वि भोश । ३ वर वरा) लनकमार्थ-म क्रिक्ट (तिनक्सा । तमक्रीत-मी [बर्ग] समोद्धा शासायना, महेन्द्रीयी तमझीड-ली [as] शांध करमा, परिष्ठन करमा। बार या अभियोगाम विराजके भाषारभूत विपर्वेका निर्धारम । तमनाह-मी है 'तमल्याह । --हार-प दे 'ठन-मनाधदार । तमस्याह्-नी (का॰) वेतम तसन। -दारं-इ देउन वानेपाला भी वेपन रेकर काम करना ही ? सभागात्म क कि॰ हे तिनक्ता[†] । समग्र-५ [म ४४] शाताः यज्ञः। तमञ्जीस-सी [थ॰] कार्यच्य बरनाः बनार्साः । तमाञ्चल-पु [अ] यो ने वहरमा, अदमति राम। तमाजसी-नी है तमाञ्रूक ह तनतवाना−४० ६० होतना। सनमा-भ कि विजय क्या देखा केनना भाग बीनाः रिक्ता अद्यक्षिता । पुर तालमेके तिर प्रमुख की आगेवानी रस्ग्री आदि । तमसयग-विदे 'तम्मय'। समसायाः - भी है 'तम्मामा । श्चाय-म [ते०] पुत्र वेशा पुत्र र समया-मी॰ (र्ग०) पुत्री शहरी ।

५१५ बाइ-सी॰ ईम्बी, उक्स । -श्राहमा →स॰ कि जकाताः सताः करनाः तेग करनाः। डाहुक−तु• [मं] एह अक्पक्षीः मोडकंटः वातकः। दिगर-पुरीक न मानतेवाली गाय बादिक गलेमें बाँधी मानेवाको रूपको। [सं•] वृद्धा गीथ व्यक्ति। सेवका मोटा बाह्यमी। फॅक्नेकी जिला। अपमान । विगल-स्रो रावपुतानाने पारनो वा मारोधी कान्य-माना । वि मीन, कमीना । द्विषस-पुर, द्विषसी-छो॰ व्ह तरकारीवाधा फल । किकिय-पु [मं] जकसर्व कोइहा। दिव्स-प् [सं] दुगद्वरी, पुर्मात कृष्णपाद फल । विविमी-को अगद्रगी। हिंदिर दिवीर-पु॰ [सं॰] समुद्रफेना झान । -- सोव्ड-इ. कश्चन ! किंदिश-<u>प्रसिक्त</u> सिंक] दिवसी। क्रिय-प् [सं+] सदा क्रीकाइका दंगा। भवकीव्यनित होहाँ । कुक्कुशा विद्वार बंद्रा। गैया आरंगिया अवस्थाका जूना गर्माद्यव । - सुद्ध-पुर वे 'विवादव । दिवाहच-पु [सं॰] मानूकी बनार्य, शहपा वह सुख विसमें राबाने स रहतेसे मनदर्जि होती हो। दिविका-की [सं] कालकीः बसर्काः सीनापाठा । विम-प् [सं•] छोडा नयाः शाककः सूर्वाः यक वदररोगः † दंशा भाटंबर, पारांत्र । ⊶वक−पु भागासून-योतक एक शंक्रिक श्रह । हिंसक − प्र. [शं•] सोध वया ∤ दिभिया−4ि दंगी, पस्ती। दिकारी−को श सिं] सन्ती । दिवसनरी∽सी [अं] शब्द-कोदा। द्विगंबर • - पु दै 'दिगंबर'। डियमा-म वि: इटनाः दिस्ताः वयनभग करना । दिरारी-सी [भं] बंदा क्या निचनियासमधे मिनने वाकी चदानिः 🕆 बादोक्ते संदक्षि माहित्रर भविकार दिसाने याका फैसमा, टिक्री । −दार−वि यद जिसकी पश्चमें मनास्त्रका इक दिसानेवासा देशका हुआ ही। हिरासामा, हिगुलामा । 🗝 कि हिस्मा, दगमगाना । विगामा-११ कि हटामाः सरकामाः हिसामाः। दिम्मी-स्ते दासारा शक्ता। डिज़ाइम∽ग्री० [अं] पनावत सर्वत दिसार-पि सीकामा। बिटिमारा दिटियारा ! - वि है हिंहार । हिट्रोहरी-सी वह वज्हा श्रीत श्री वर्षोधी मत्रर सम्तेत बबानके किए बहुमाने हैं। दिशीना-पु भवर समनेशे रचानेशे निष्ट सगाया जाने बला समित्रपा रोखाः दिश्वारी = नरी दार मारवर रीजा। विदिका-ची [सं] जगनीमें की बाह पहनेहा रीग ह दिद्र-- विदेशना दिदामा = म कि एक सत्र मुख्य करनाः सन्ते पक्षा निधय करना । स कि र॰ अवतूत्र दीना ।

बिच्यी~प॰ बि॰ 'विष्युरी') नाय**न । ~कस्रक्टर**~प्र क्लेक्टरका भावन (अफसर) । क्रिकेंस-प्र• [बं] रहा गणाना किसी देशको स्थानके क्षवरणाः सफार्ष (पद्म) । —भाव इंकिया ऐक्ट~पु० भारतस्था-कानुन । दिविया – श्री छीटा विष्या । डिक्का-पुरु हैं० 'क्रमा । विकारि-सी॰ क्षीरा बम्पा । बिमाश्या -स कि॰ एकता, प्रवारित करना । विस-प्र॰ [सं] बार अंक्षेका एक रीह रस-प्रवान स्पद क्सिमें माना, श्रंद्रवाल, क्रकार तथा विश्वाचकोला सादिका निश्रम रहता है। (इसमें छोत श्रेगार भीर हास्य रस वश्चित है।) क्रिमक्रिमी-सी॰ विदेश, हुगदुगी। हिमरेम−प [बं] बहामको समदपर न बीहाने वा **काता** म करनेका दरवानाः स्टेप्रनयर मालके अधिक समयतक पढ़े श्वनेका **क्रवाना थी क्रवानेवावेकी दे**ना पढ़ता है । विसाई-सा॰ [बं] १८X२२ (चंदी कामक्ये ताप। विका-त एक धंदा गैरूक स्पेपरका कुनइ । हिस्टिब्यट(करना)~स॰ कि [मं] छपारे हो भानेके गार टाश्गेंको करुग करून करक बामीने रखना । हिरिहण्युदर-पुण [बा] हिरिहण्युद करनेवाका । विश्वेसरी-सी॰ मि] सेराठी वनाखामाः भीपनास्य । डिइरी-ची॰ जनाव रखनेका मिट्टीका वका वरहन। कुक्तिमा । हाँत-स्था **डरी-पीडी भारमप्रशंसाः भ**मिमान-मो**टक** कोरी गक्त ऐसी । सुरु -हाँकना-संगी-वीधी वार्त बसगा । इति∽सी धर्मः सबरः सजा −र्यप्र−प्र• सवरवंदी । मु• ~खुरामाः ~छिपाना – सामन न सद्धना । –वॉबनः – बेह्द हारा धीरवे अय बारक करना । -मारहा - नवर टालमा । -- हर्ममा -- देखरेख करना ! -- इमाना-अवधी बरतको इस ग्रहार बेरामा कि बसपर तरा प्रभाव पहे नबर भगाना । इतिजना®−सः निदेसना। अ० कि० देस पदना। डीटिश-ला॰ दे 'दीड'। - मृटि-ली अल्, दोना। श्रीन-प्र [सं॰] जशना प्रश्निको एक प्रकारको गतिः इससे चलक सन्दर्भ - सीनक-पुर बीपर्ने स्वरूपकर वहनेकी फ़िया । द्धीलुका≉−५ पेसा। कीमहास॰-<u>प</u>्र भारंबर: भारीप चूनवाम: यर्व इसका श्रीस-५ कर शरीरको क्रीनाई-भीताँई भारत देश श्राप्तर व्यक्ति । ∽श्रीस्र−प ≓नाई-चीनाई आहि, धरीरका विम्हार १ हीवेखरा−तु (रेमम) आवर्तन्त्राद्ध क्रियनापन पासका नेताप्रपान क्षेत्री १ ५१; परराष्ट्रमंत्री १ ३२ मे १ ४८ : बीड-भू गाँवा गाँवमा वड़ा केंबा होता की पहली वस्ती है वज्रह कानेमे बना दोता है। मामरेहता । --हारी-स्त जमीशरी रचनेवाने जमीशरका यह ठरहरू। इस । हिष्य-पु[ी] बाह्या हाथे। वास्य और संदर स्वक्ति । व्हेंब०-पुराशि, देश इह सैना।

मरकः औष्मः मूर्यकांतमिनः गदारः अन्तिका एक भेदा शिक्षः भगतस्य । - ऋर, - दीधिश्च-पु वृद्धां वृद्धरास्य । -- राद-त मर्बमुखी पृष्क । -- तमय-पु॰ वमः सनिः कर्तः सुमीयः समीप्रस् । ~तनसा-सी० वस्ता। —भणि−प सर्वकांत मवि । तपनोद्य-पु॰ [सं॰] ग्रां सर्वरहिम । तपना-म कि वृष, भीव मात्रिते गरम होनाः लावमें पश रहना धार होना। किसी वश्तकी आसिके किय कह महत्ताः सर्वेद्धा प्रचार दोनाः किसीका प्रमस्य छाना था भारतम् क्षेत्रमाः **० राप ६१मा । ७ सः वि० क्षा**मा— सूरव में दिने, तमें रशोई'-प॰ । सपनि = न्ही • शप, वस्त्र । ष्ट्रपनी−स्त्री [सं] गमरत्वरी नदीः साधः † बीहा, शकाव। स्पनीय-प [रं•] ग्रोमा (विशेषकर श्वाबा हना)। वि÷ **इस करने बीम्का सदन दरने योग्न ।** तपमीयक-प (सं०) सोना। सपनेष्ट-इ॰ [मं] साँवा। सुषमीपस-प [सं•] सुर्वकांत मणि । सप्रवासा~स कि॰ इस करासा। सपदा - तपस्का समस्यक करा। - करण-५ - नवी-श्री तपस्या। सबस-प्र [सं] गुर्का बीहबा। पर्हा । सप्या-सी सभी नरीका बूखरा नाम ! तपसाच्यी-वि रापसे घोष्टिंग बोनेवाका। विगने बहुत क्षपन्था की थी। क्षपसी≉~पु 🗏 'दपस्थी । ग्यो व्यक्ष मध्यो। तपसोस्तिं -पु (सं•) कार्डने सम्बंतरने एक कार्न । तपस−व [सं∗] दे "त५(न)"। −तंक,~वशन-व० ध्दा-पश्चि-प्रभिक्ता वपस्य-पु (सं॰) फाश्युन मास्त बार्तुना वरमयौ। तायश समका वह प्रज ! सपस्या-शी [सं] तका (का) विसी जमीहकी विकिक क्षिप पठाया यानेवाका का १ स्वस्थी(विस्)-वि [धं] तपाया करनेवासाः बीताः बुक्तियाः देपारा । प्र. सारदा सम्बाहीः गीरवाः बीहुजारः इरिह मनुभ्या एक मरन्य । −(स्थि)पत्र-पु बीगाः गर्भमुम्ही । सपरिवानी-भी [सं] रापरका करनेवानी न्यी। जहामासी । सपारें लप्त चपरवी । वि सम्बर्गीये लेख्य । सपाड-पु [का] मेना राखा । सपारवन-९० (तंत्र) वर्षा कतुः। स्पानक-पुरु [मंग] सपछे क्लब देव । तपाशा-स॰ प्रिः गरम करमा तम करमा। (ला) वष्ट प्रदेशमा । सपार्वत =- इ तबसी । सपाय-पुर सन्तेकी किया वा मान, गरम बीना । स्वित-दि [शे॰] गरम दिना प्रणा शुद्ध दिना हुना (संभा) । सपिया-1 तु इद्ध्यक्षा = तप बरनेवाला ।

सरिश-सी (का) यरणी तत्रना

सपी(पिन्)-पु॰ [मं॰] सपसी मानु । दि तप इस्ते-बाकाः गरम । त्यु(स)−प्रसि•] समी अस्ति। शहा वि तारवस्त उष्णः वपानेशका । घपुरमा-सी॰ (सं॰) (जिसकी मोल वर्गती हैं) माना । त्रपेविक-की॰ फि:ी बीर्च उपर, बदमा। वपेका•∽प्रमही। त्तवी-'तपम्'का समासमत क्षा - सुति-इ असहरे मन्तरके एक शर्म । - यम-दि॰ तर्म ही विश्वसा सम हो तपली। - साम(म्) - पुदव तोर्व। - निधि-वि॰ तपस्ती । पु॰ वर्ममाच स्वच्छि । -शिष्ट-वि : त्वर्मे विस्तरी निष्ठा हो। --वस-पुतप हारा प्राप्त सक्रि। -भंग-प्र• क्यिन-शनाके कारण तपश्चका यन होग्त ! -मुक्ति-को उप करनेका स्थान । --मृति-पु० कर मेश्वरः तपरवीः कवियोकः एक भेदः। –शाम-पुरु कंदमा । - स्रोक-पु भूर भूनर्, स्नर् आरी करावे सात क्षेत्रोमें संकठा कला । −बट-पु॰ जसावते देख (मध्यमारत) । नवग-पु तपस्य कोर्गाह रहतेका हरा तपस्था करने भाग्य वन :-मृद्ध-वि निवेतसम्बक्ते सारा अध्या माठ वर्ष हो। - शत-प्र वयस्या-धर्मी मा। त्रपोमप-वि (ले॰) तपनाकाः वपरवा करवेनातः । त्रवीनी~ची सुसादिरोंको सुद शुक्रनेपर बर्गोका देवीको प्रसाद पदानेका दिवास । सप्त-बि॰ [चं] तपाचा हुना। मरमा हुनीता विस्ने त्परवा की दी विपछा हुआ। अ.स.। अ. बरम पानी। ~कविन~त तपादा क्रमा सोना। -क्रंम-त• रह नरका −क्प−पु॰ एक भरका −कुश्तू−पु अस-क्षित्तरूपये किया जानेशामा रुद्ध अस । --वादामाईड-त का नरक। --सरप-त दिसीकी संपार्शनारी निर्मवके सिप की बासनाको वक प्राचीन करोर परीका। -महा-ना पातुको तरावो हुई हहाओ हारा वापका अंगोदर मनाने हुए बिच्नु इ होरा ग्रह आरिके निक्र ! -क्य -क्यक-त वर्षण दर्श शह गाँगे । **-बाह्य**न पु एक मरक । - शूमी-पु • ४३ मरछ । - मुराबुंद-प एक मरका -इस-पु तरावा हुना सामा। तसक-दर्भ (नेष) क्यादी । सप्ता(स)-वि , पु [सं] शरमी पट्टेमानेवाचा सरव मतमेशका । शरासर्व−९ (न॰) शुद धनेका माध्यम । समायम-५ [ल] यष्टपीरिधीमा निरामस्थान । तसि-सी [में] दाव गरमी। श्राप्य = -प्रण त्रप । तत्त्र-पु [40] शिष । वि तत्त्रने वीम्य:शुरू वसने मोध्य । तक्रतीश-सी [#] धामशेन तस्प्रीका मॉप शक्तान । स्त्रप्रदक्त-पु॰ [ब] अंतर" मेरमान पुट । −भैराह-इ.स.चनेशसार-अंशक्तिनो इ.स.चना । लक्षरीक्र−मी० वि । भएन वरमा पार्ट करनाः परामा (4)1

र्होसी -सौ० होरी नाव !

वींदा - पु - बारत्म प्रकः वही रकायची ।

र्द्योदी –औ॰ पीरतेसा फड़ा टीटोः डीगोः डीकी, दुगहुगी ।

बॉब-पु• [सं] दे 'टीम'।

होई-छी॰ काठको बोंदीवाठी यह तरहकी कछडी विससे इव भादि चकाते हैं।

होक्स-पु॰ बुहा भादमी ।

बोक्सी-सी बुड़ी खी।

कोका-प॰ बाठका बरतन भी तेष्ठ भावि रसनेके काम माता है।

डोकिया दोकी –सी छोस दोका।

क्षोबद्दार्ग -- पु॰ बटसर्प ।

होदी-भो। औरंता। क्षोस, क्षोबा—पुगौठा पुरस्थे।

द्धीवना−स• क्रिगोता देना दुवाना !

होस~तु [सं०] अंत्यजीको एक जाति जो वीरी सूप आदि

वेवतो दे। बाह्य । ∽काव्य-काग~पुदे 'टोमकीमा'। ~कीमा−प्र [दि] पहासीमा।

श्रीमदा-प देश दीम'।

होमनी, हामिन-स्ते होमदी वा दौम वाविकी सीह वादीको स्त्री ।

श्रोमिनियन-पु [#] राज्यः उपनिवेशः । -स्टेटस-पु॰ भौपनिवेदिकः स्वराज्यका बरजा । सोर-लो• [म्रं•] पागा, तागा शृहः (४१०) वंपन कमाव।

मु • -पर सगाना-रास्तेपर काना ।

स्रोरक-पु• [सं•] दीरा, सूत्र भाषा ।

शोरा-पु स्त तानाः वादैः अखिकी पवली कान मसें बद बस्तु निसन्ने सहारे किसाबा बनुसंबान किया बा

सदे।

श्वारिया−पु भारोदार कपहा । धौरियामा॰-म॰ कि पीवो भारिकी रस्ती वॉवकर हे

वाना ।

डोरिहारां –पु॰ वन्ताः

श्रीरी-सी ररधी (हा) मूच; वंधन पर्वेष्ठ; हमन ।

श्रीरंश-म साम-साम।

श्रीस-प पानी भरनेश कीहेश गील परतना क सूता, श्ननेश सापना पासको इसवका वि बोस्नेवासा (६४नेवानाः चेपसा —ची-स्ता छोटा दोखः कुरूक्कः दीनेश दावमें सरदाने बोग्द श्रांतका मीला गहरा शरतम ।

क्षोलक-पुर्मि । यद प्राचीन शावा ।

रोप हामां - ५ अन्ना-शिरनाः शयाने वाना ।

र-रेपनागरी वभमामाने स्वर्गेका यांचा वर्ने । अधारगरवान व महो ।

वैवना-पु देश दश्या

र्वेदमा-इ स दिक्ष दि दे दहना। रंग - इ बनाश टाउ

हैंग-पुरीति धेरी वरीकाः तर्रेश पेशमा सरह, प्रकारः | हेंहस-पु हीय शर्मात नहामा ।

दोखमा-स॰ कि॰ दिकना गतिमात्र दोनाः दोकित होनाः इवर-उवर धुमना चक्रना-फिरना; संपनी अमहते हरनाः (मन्द्रा) अस्तिर होता, विचलित होता।

श्रोसा−म श्रिनॉकी पक सवारी जिसे कहार होत है। पक तरहबी पालको । मु -देमा-कहकी नरके वर से जाकर व्याह देनाः किसी राजाको भेटके रूपमें अपनी समझी वेमा ।

बोलामा-स कि विकाना वश्यमान करना असना (पंचा चैंबर); हर करना, श्टाना ।

क्षोकी-सी॰ एक तरहकी सिनोंनी पारुकी, शिनिका । बीडी=-सी वे 'दोर्'।

र्वीकी-की दुग्गी, मुनादी।

बींक-पुढे 'इमक्'। क्षीमाण-पुर काठकी वर्गा वही करछी ।

श्रीकी-सा वेंद्रकी। कौर=-प्र तामा बाया ।

हास-प॰ दाँचाः दवावरका तमे; दर; क्परेखा गठमः (का) श्वच्यः कार्व-शाधनका उपादः प्रदेप प्रक्तिः। → डाख~पु क्याना कोछिश ।~दार-नि॰ मुझील; संदर । स् - डाक्रमा - रूपरेखा वैदार करना । -पर छाना-इक्ट-म्बॅरिड इट बुरुग्त इटलाः रास्तेपर कालाः अनुकत बनासा ।

डीकमा - स॰ कि ग्रुनैस बनामा सुपद बनाना।

श्रीवा~पु०दे 'डीवा'। उन्ही-सी [बं] कतन्या करी देशा हुमा कामा संगी।

क्योदा—विद्वदिद्याः क्योदी-का दहलायः पीरी । -दार-पु पीरिवा

क्योग्नीपर रहमेशाका यहरेगार । - वाम-प्र हारपाळ । ढाईग~ली [शं+] रेखामी दारा विश बनानदी कना। −स्टम-पु॰ वैदसा।

बृद्दर-पु [ब] गारी पशामिताला ।

इस-वु (वं) तीन मारोका एक परिमाण की पानी बादि नापनेसे दाम बाता है।

इ।सा-पु [अं] शरद्र।

क्षावर-पु [अं] कागव आदि रराजका वह परस सीमा दौंना को मेत्रमें लगा रहता है इसक।

हिस-भी [#] **स्मा**य्र।

हेन-न्यी [अ॰] र्यं पानी मह सूत्र सारिके बहुनेही मासी । -हंस्पक्टर-पु नगरको गंदगी ६ वदाककी

व्यवस्थाका निरीकृत करनेवाना अप्रसर । क्रेम−प [अं] वेश-पूका पादास्त ।

स्य बनावटा तवाया बुद्धलताः आवरमः वामीदा सहागाः श्चिति । बंगी-वि वृर्ग चारातः कुशस्य विश्व वाम निधासनेधा रंग हो। **र्वेदरफा**-पुने रंग्रा

भास भारि मिकाकनेकी किया ! तमाकू-पुरे 'तंशकू'। तुसाचा – पु॰ बप्पड़, झार्ड । लगावी-सी [त॰] केम-देग या मुख्यमधी सुनवारी मारिको सर्विका बीत माना । तमाम-नि॰ [ब॰] कुरू शाराः श्रमात श्रुवम । समामी-का • एमाप्तिः एक वरीदार कपकः । तमारि-3 (सं॰) सूर्व । कस्रो तैवार सुमय, कहर । समाछ-प्र• [सं•] पहार्वीपर कार बसुनाके किमारे होने-बाला यह सरावदार पेड़ा सांगदाविक तिकका यह प्रकारकी तक्ष्मारः वस्य इक्षः काका धीरः तंत्रपातः बीतको काला सरती । -पन-१ तमाच इक्य पचा सरतीका पदाः श्रीप्रदाविक विद्व । तमाकक−५ (रं•) तमाकः बॉसकी छाकः तंत्रपातः एक राम । हमाबिका-की [मं] ताश्चरही स्वाः भूम्यायस्की । तमाकिमी-स्री [सं] वह मृति वहाँ तमानके पूर्वीकी वरिक्षता हो: अर्रजीवला । तसासी-को [सं॰] ताअवली करता बरण बखाः समाधाबीन-पु • तमाद्या देखनेवालाः वेवाद्य । तमाराबीमी-क्षी • व्याधी । समासा~प (भ) ममोर्चक व्यवः अव्यक्त वात । तमाशाई-त रे॰ विमा**व**रील है त्रसाद्धयं पद्धः [मं] ताकीश्रदमः। तमिः तसी-सी॰ (सं॰) रात्रिः मोद्यः मृच्छाः इस्री। -(मी)बर-पुराम्नस् निशाबर। -नाय-पु•वेदमा। -पति-प् चंद्रमा। -पीचि-की अप्तराजेंका यह भेर । तमिल-को॰ इविड भाषाको यक माधीन भीर मचाव शाला वो रहिनपूर्वी महासमें रोड़ी बादी है। समिल-पु [६०] अवदारः नदाना मोदः सीनः नतित पक्षा वस गरका -पक्ष-प्रकृत्य प्रकृत समिका नकी [सं] अंचेरी राठा निवित्र अंध्यार । लग्नील-बो॰ [स] अपने पुरेखी पहचान हिरेदा करता तसीध-द [सं] चंदमा। सम्रा-इ दे हंदरा । तमी-'वमम्'का समामगत क्या -गुल-द अकृतिहै रीन गुणीर्वेते वक्ष को लड़ाम आक्रूप और अस भाहि का कारम है। -गुर्जा (जिन्) - वि तामस वृत्तिकाका। -प्र-ए अंबकार वा लग्नानकी बधनेवाला नृत्येः अधिः बंहमा। विश्वा शिवः यह तुत्रा धान । वि शिसमे स्वरा इर हो। -अयोति(म्)-इ जुनन्। -इर्सन-इ॰ विकासरका एक मेर ! - गुक्-पु स्पी: चंद्र: क्रमरकर : - मद-पुर स्वः वंदः विषः वीष । -श्विद-पु जनन्। -मबा-पु भुगन्। गेमेरक मणि । -विकार-पु॰ रोग। - इर-पु स्री चेह । वि अवकार हर बरने-नमीमप~ि [र्म+] तमीगुप्तमे यहा हुना; हासहैना संबद्धारपुर्ध । तमीर समोख--पुतांद्य दाव।

वमालिन-स्रो स्रमः। तसीस्रो~५० पर्यः पान वेननेवाला । सब-दे॰ [ब] पुरा किया हुआ समासा निविद्य निवीका तयमा - म कि तपना गरम होता। संतप्त होता. दन्धी होता (लबार=-वि रे 'तैबार'। तरंग-ला॰ (सं॰) पानेको सहर भीता उर्ममा उद्याता हिकना-कीवना। इपर-क्रवर धमना। स्वरीका आरीव-क्रव रीद । पुरु वका मंक्सा संग्रा -- मारु (किय) - पुरु सर्रगरू-त [सं] पानोद्धी कहरा स्वरकहरी। सर्रगवधी –सी (संग) मरो । सर्रगाथिस~वि॰ (५०) तरंगद्रक । सरगिषी-मी [७] नरी। वि सी त(वींशमी। -बाय -धन (न)-प्र समह । तरॅगित-नि [एँ॰] कहराता हुआ। उत्तरमे बहता हुआ र्शपासमान् । तर्रगि(गिम्)−वि [शं] तरंगतकः मौब्रेः शरिवर । सर्रह-९ [नं•] ४ छोची दोरीमें गाँची बासेवाको होये कक्स को कच्छ क्वराची रहती है। शॉरा माना नेता। -- वादा-स्थे यह तरहको मार । तर्रका, सर्रही-स्री [मंश] मादा देश ! तर्रत-५ [५०] पमुद्दा भेडका राध्यका भक्ता मुक्तकार पृष्टि १ तरेती-सार्शन [मं] मौदा । सर्वित-पु [सं] सरवृत्र । तर-तु (tio) पार करमेच्ये किया। यह जाना। शरान्त **६**रमाः कम्मिः युद्धः यागिः गार्मः यारवात्रीः मार्गः सम्बन्धः माना विक्रिका वस मायम को ग्रामाधिका प्रकृत सरमें किए क्यावा बाता है (बैसे-स्वृत्तत्-मा) १-पम्ब-पुरु भावका भावा । -पश्चिमक-मु जावका भावा वैके बाला । –श्याल–तु भावसे उत्तरमेदा बाद । तर•−पुत्रह पेशाल शोचे, तके। –प्रदी~की तक्षर । तर-वि (दा) भाई। अर्लन मिक्षा उदार मानदार ! -- वतर-- विभागादमा सरावेर । -व सामा-विश तरवंदा । सर्(स्)-इ (ते॰) बला नेपा गमरा होरा रोगा गय मदी योर करनेका याक्ष माना देता । तरईं •− छ। वारा मध्या सरकंग-ब शाय-विचार कहारीहा प्रधीना वाता चातुर्व-वृत्ती ग्रस्ति । स्री वे "प्रवृत्त । त्तरकता"-अ कि तर्के बर्गा। भेरावा संगन्धा ध? कमा शक्या। दे 'वश्क्या । करकशा—त [का] तीर श्रामेश भोना तूमीर निर्देव । तरकमन-पु 🖁 'तरहथ । तरक्रमी॰-खो॰ धोश तरक्य र सरका-पु॰ उत्तराविकारीश मित्रनेशनी मधीता है है G\$41 1 सरकारी-भी वह वैचा क्लिक्रे वर्ष पूर्व पर्व दें

429 काँचा-पु क्रिपी वस्तुकी बनावरका आरंगिक वा स्थूल रूपः पंत्ररः बनावटः तरह तरीका । वॉपना-स•िक दे॰ दहना। हाँस-सौ॰ सूनी खाँसी खाँसनेकी भागाव। हाँसना−न कि॰ स्ट्री खाँसी खाँसना। बाँसी-की सकी साँधी। बाई-निदोसीर जाना। पुराईकी संस्था, २०३ H. - दिनकी बादशाहत-चेर दिनोंकी मीतः इस्हा हाक-प्रपासः नवा होतः। —के सीम पास-प्रमेशा त्तंगवस्य रहनेवाला । हाका-पु सूरी कपहोंने लिए प्रसिद्ध वंशासका एक प्राना मगर; रे साचा । -पाटम-पु॰ एक महीन क्ष्महा विस पर फुल बट होते हैं। हाटा हाठा-इ दादी वॉबनेकी कपहेची पट्टी ! बाब बाद-स्या बीस्कार बीख; विग्यात । सु० -मारना-धीत्कार करते हुए राजा । बाइना#-स• कि दे 'टाइसा । बाइस-५ बोरव दिकमा श्लोतका। हु॰ -वैद्यामा-संखना दिकासा देना। हादिम=सी॰ दाश पाठिन्ये सी।

बादी-पु सूम-सूमकर जन्मीतस्त्रके योख यानेवाकी वक मीय बावि।

डाइीन -पु॰ अकस्तिरिस नामका पेइ। दाना-स॰ कि॰ गिरानाः मकान शादिको गिरानाः, ध्वस्त करना । डापना-ध कि दे 'दरुना। डाबरण-वि गरका गंदा मटमैका।

ष्ट्राया~पु॰ सुनियो भारिको वंद करमेका टीकरा या खाँचाः बानः भोलतीः १रएधीः रीटीको दुखन ।

हासक-पु॰ मनावा होता हरें, दोन मानिका सन्द । रामरा-स्रो [से] इंस्टी मला, इंसी।

बार॰~g॰ डान्हर्वे बमीनः चवारः दीनाः मार्ग । स्तीः कांनका रक्ष गहना। फलक्ष ।

दारमा॰-मु॰ कि॰ दे॰ 'हासना । हारस-पु॰ दे 'दान्म ।

हास-स्रो भागको भार क्रमश मीची हाँही गरी बमीना षगार; दंग प्रकार; [मं•] तसमार, भाले आ?॰दे आपात को रीक्नेका सीहे या गर्नेके चनदेका क्या कृत्यकी बीड बैमा दर माधन।

द्दारमा-स कि वानी भारिक्षे गिराना उदेशनाः शराव पीता पित्रनी हुई चातु कारिकी छ। य हारा निरीय रूप

रेनाः देननाः दिलामा ! शालवाँ-4 भी भागदी ओर कमशा मौना बीटा गया सा दाना

बारित्या~पु वरदन बाक्रनेवालाः गहने बनानेवालाः । बामी(मिन्)-दु [मं॰] दाल बार्य बरमेवाना नैनिक। बालुका-वि है 'बारवी'। कास्-नि दे बालवी ।

डास॰-इ बार् हरेस।

डासमा-पु टेक, बावारको वस्तु सवाराः वकिया । श्राह्मना के कि 'शाना' ! विवोरमा - स॰ कि॰ दे॰ 'वेंदोरना' ।

हिँहोरा-पु॰ सुनादी हुम्मी। हुम्मी नवसर की गुनी हिरा−म॰ पास, समीप, नमरीक : ● सी॰ तर (क्पहेका) किमारा ।

डिटाई−सी॰ पृष्टता, देमश्वी; दु"साइस ।

विप्रमी~सी• चूसुकः। डिवरी-सी दीपाई काम भानेवाठी दीन शीरी, मिट्टी व्यादिकी बनी दिनिवाह बाक्ट्रके कपर कसा भानेबाका ठोदेका सका ।

दिसकाः विसाका -सर्वे अमुद्धः कर्ते । डिमरियाां - खी ६६।रिन पामी कानेशाली। विकविका-वि वीका-काकाः गारा मही। विकाई-सी॰ दीसापना सस्ती विभिन्नता ।

विकासा-स कि॰ दौष्टा करानाः वंदनसे सुदासाः व्योका रूरमा वयमसे मुक्त दरमा।

विस्कृष्-वि॰ विकार्र क्रानेवालाः आकर्ताः। हिसरनार-- अ॰ कि॰ किमक पत्रमा। प्रदुत्त दोमा: धुदमा । हींगर॰-पु॰ अभिक संवा-भीवा व्यक्ति। बार

बाँद -पु गर्मा बड़ा पेर । श्रीहस-पुरु देर 'टिटिस । बाँगा-पु दे॰ धाँह । दीच+-सी क्षत्र।

बीट॰-सी रेका सम्बद्धाः। बीड-वि॰ वृद्धः देमदवः संस्थेचरहिता चपका निद्धःस साहसी । =ता॰-सी॰ डिडाई।

हीता!-वि॰ दे 'हीड'। बीटी बीज्योक-प्र विकार । बीसण-पुरु है। 'दीमा'।

बीमरां - प्र नीवरः पानी भरनेवाकी एक जाति । वीमा! - पु॰ मिहोका शेका १८, पत्पर मारिका इकता । डील-सी॰ डिटार्र, सुस्त ; शिविकता तमावका समावा व्यर्वकी देश पुरश्चत सुद्धे। ई प्र वाशीम पहनेवाकः वक छोश कीश व्रा कि दे 'दीका'। सूक -हेना-रवच्छेर होने देशा दिसी दरगुक तनाक्से क्य करना।

वंदनमुद्ध दरना । बीखना-स कि दीला करना। वंधन मुक्त करना। सरकने देशाः पानी आि डेब्ट् रूपमा ब्रुट्ना ।

हीसा-नि विममें समान रियान न हो। वी कमा न ही। यो कसकर हैदा या देश न हो। यो पहनतेमें अभिक हंबा बीहा हो। क्यांदा वीत्ता बाहित सुरता नामुरनैरा शांत नरम । [स्पी 'दीली ।] -(तां) मॉन्य-आशी सुती जांधा महतूर्य रहि। मु॰ -पदमा-ग्रस्त हो बानाः बायस्थारी करना ।

बीइ-पुरोसा हुइ। हुर-- पु वयस्य स्थ तुरेशा दुहन-पु (सं॰) साम पता समान्य । बुंडपाजि बुंडपानि - पुरु बंडरानि भैरत ।

सरसमा-वरेरमा तरसमा-भ॰ कि॰ किसी बस्तुको वानेके क्रिय वेचैन रशना । स कि॰ वरास्त्राक्ष्मक्र कारणा । तरमान-पर (५०) मीदा । तरसामा - स॰ कि किसी वस्तुक किय किसीको व्यासक करमा मा कठनाना है सरमॉडॉ॰-नि॰ तरसनेनामा ! तरस्यान् (बत्)-वि [सं॰] तेथा वेपधीला घुरा वर्षा । तरस्वी(विन्)-वि [सं] तेना वली। सावसी । प्रक दश वाबना बीरः वासः नवदः शिव ह **तरह−को** [म] प्रकार भौति रंगा बनावटा रिवति। -दार-वि अच्छे डंग वा गर्गकाः स्थाला । -शारी-सा॰ तरहरार होनेका मान । सूठ-वेना-नवा जानाः व्यात-प्रसद्धाः प्रपेशा इतता । तरबरी-की॰ दे॰ 'तबदरी' । सरहर तरहारि तरहेंबण-म गाँचे तने। तरहरू÷~नि पराषितः परास्तः वशीयनः। सराञ्च-त [सं•] भीदे पेरेकी मान। तराई-की पदारके माध-गासकी निग्न मृति चहाँ सदा वरी बनी रहती है। # धारा । प्रशास-त• तीरुनेसा यह येत्र जिसमें शॉशके दोनी निर्धेने तक्षित्रों बारा भी पलड़े बँधे रहते हैं। सराटक•~त दे 'बाटक । सराना−प्र• (का] एक प्रशास्त्रा नाना। † अन्न क्रि दे 'तरियाना'। सराप=−श्री ठाएको शानात्र । तरापा=-प बाबाकार : त्तराबीर−नि सरानार, वर-वतर । तरामर • – सा दशदर की भाषायः वेजीसे कार्र काम करना । हरामल-५ व्हाबनाइ नीच सगाने भागनामे मूंबके सहै। ज़बेडे मीपेडी कहती। शरायक्रम १-वि चंचकः धनः। वरारा-प्र क्यावार गिरनशको बस्को बारा; छन्नीय ह वरासु-इ [मं] ६ 'वरांच'। तराबद्द-रनी सपीः शरीरमे टेब्स कानेबाली नी है। तरास-की [फा] वराधनेकी क्रिया; क्षार वजावश हुर्जा। −प्रशास−सी - गर्न-शास्ट, का॰धाँट। सरायाना-स कि कारना कींड-फॉब करणा ! शरास•-५ भग, यद भागतः। **शरासमा≠**~स कि धरन ६८मा । सराष्ट्री = न नी ने । सरि-सी [सं•] भीका वर्श रहायेका पेतरीह कारका धीर। -स्य-प्र शेर। सरिक-व [सं] वेश भीका बतराई वसून वरनेवाना (मारहै) । सरिका-श्वी [मं॰] मीद्या मनावै। नरिको(किन)-प्र [मं] मल्लाह, वॉली । तरिको -त तरब्दे। नरिणी-ग्ली । [मं] १० तर्मी ।

सरिया-रंगी [र्ग] बर्रेनी उंग्ला बॉला यह दुसी ० है

दे 'वटिन'। सरिय-प॰ शरियी-रथी सि॰ी न का पीत। सरियानाां - स॰ कि॰ नोचे सरमा। इ.स्ता। भ कि॰ तके नेक्सा मीचे असरा। सरिवन-पु॰ ऋष्ट्रक, सरक्षी । त्तरिकरण्ज्य वे तरनर'। शरिष्टतण-म मीने। सरी-रूपो सरावटा गोलावना वहार। वराई 🔸 स्ट्री जुलेका तका; गुलाः (छं०) मीधाः गणाः धुमाँ । तरीक्रा--प्र॰ [म॰] रीति एंगा बराय । सरीय-५० (नं०) साम पोषर संस्था नामा क्रशण व्यक्ति ममहा व्यवसाया समावता स्वर्थः संनद बाह तिः यह विधेष मकारकी मीका ! तरीपी∽स्थी॰ सि ी गंत्रकी यह कन्या । तद-पु [र्थ•] इस देव १ -कीटर-पु दूच्या सीमरा भाग । – लंड – पंड-पु पृथीका समुद्र । – शीवन-पु पेरको जर । ⊸सुलिका∼रमो० चमगान्ह । असन्द्र• (पेश्वा) वाँता । —पतिका~रहो । क्या । ≔बाही %-रवे काया, टाका −सुक्(क्)−पु व्यक्ता वंदास (वर्गाला) । - स्था-पुरु वंदर । -राग-पुरु अवपर भनः क्षमी । -शास-प्र पारिकातः अवस्यकः तस्त कृत र −कहा – रहे । वंदस्त । – होहिमी – स्है । क्दस्त । -पर-प उत्तम इद्धा -यस्की-लो नेरासा -विद्य-प्र द्वारत । -विस्त्रसिमी-नौ र्मातका। -शायी (यिन्)-द पद्मी। -सार-५० धार । -स्था-स्त शराम । लक्ष्य-वि (do) सीयह वप ! अवस्थि अवस्थानामा प्रमा: पद्रशी जवानीयाचा की वर्ष विद्यासधी न आह कुमा ही । पु - तुवा पुरुषा क्षत्र-भागक पुष्पा स्थूम श्रीका दर्गदा अंकर: क्रोमकारिक । - ज्यार-व वह क्यर यो क्य सप्ताहस काम्या मधार ∼बधि-प्रवर्ण प्रविकार द्वी : -पीतिका-गीव नैन्धिन । नुसम्ब−न (ग•) वर्षर (तदम्पाई~शी प्रचारका । लक्षणाविध-सी [मंग] वोमकारिव वह इंडी जो की स हो। सद्यविमा(सन्) - श्री [ग्री वाश्यव बनामी । शरकी-सी [मं] मुक्ता बंदी कुछ कर प्रत्या भीत नामका में भारत्या श्रेणणी । -कारासामान-मु निवन लरुप≠—वि रे तरप्र'। ~ई-सो रे तम्यां ! तदनाई-मी । सदबायम सरमाया - पु सारम् महत्त-पु [मंग] कुमलकी वदीनी गृहेदार कर । शहूँबा-प शानीम प्रवरानेशको वह वर । विसक्ते साले चार प्रमा जा सहै। मोरी-अंशीन सरा त्रवट-पु वेष । क्षरेटी नहीं नन्दरी। बदाइके बीचरी मृथि र शरेरबाण-स कि निर्देश देगानाः दरवने या बॉट बताने दे दिवर (नेप) विराध (बर) ^{के}राना ।

'हे|"गी । -बाज़ी-सी पार्खंट, मार्थंप । होंगी-वि होंय करनेवाका, पार्यटी । हाँदा-पु है 'होरा'। **र्वोड** – पु पास्त अपस्य आविका टोंडा, वेंद्री । सींबी-सी॰ गामिः † दे॰ 'हेंदी'ः पद सरहका सरकेश ! बीक-सी दें॰ शेंकं। डोका-पुदे बीँका । होराक-पुरु पुत्र वेटाः वास्त्र । होरी - सी पुत्री, नेटी। नाकिसा । शोरीना॰-पुरे 'होटा'। श्रोमा-स कि बोहको एक स्थानसे दूसरेपर पर्वेचानाः दिसी पसाकी से पकता, कठाकर वा कारकर के बाता । क्षीर-प्र कीषाया, मबंधी। क छटा अदा । श्रीरसा≠- छ कि है 'दरकाना : दिकाना । शीरा-प है 'होर । होरी-सी दरकन्द्रीकियाचा गावा रहन, शुन, की इरिक्रसमध्ये डोरी लागी –सूर । डोस-पु• [सं] द्वापरे बजानेका एक बाबा को दीनीं बोर अमदेशे मदा होता है कानका भीतरका परदा, कर्च पद । -हमझा-पु [हि] चहरू-पहरू, श्रमशामा वाजा-वाजा । ग्रुक -पीटवा-वारों और करते पिरता । बीरब-स्री होरा होता। शोसकिया-प कोठ वजानेवाला। श्रीमधी-स्री होरा होड ।

बोसम∽प॰ दे॰ 'डोसमा । क्षोक्तमा−पु॰ क्षीक्तक्षी शक्कका पक्षेमें पहननेका जंतरः पाकमा । अस कि बरकामा, विरामा । दोळगी-बी० होस पावना १ ढोका~पु० फल जादिमें पक्नेवाला पद सफेद **क्री**का। मे**द** राक्का कराया चारीरा पति। एक तरहका गीता मूर्ख म्बक्तिः सीमासम्बद्धः विद्यः । बोकिनीश-बा॰ डोक नवारीनाडी सी । होकिया~पु॰ वे 'होककिया'। कोखी-को को सो पानोंको गया वेंसी परिवासः विकास । कोव॰~प॰ मांगकिक अवसरपर राजा आदिको नजर हो। बामैबाकी बरता, टाकी, मेंड~'के से बीब प्रका प्रमुटित चने माति माति मार मार'-गोवानको । कोना-पु॰ दीने मानेकी फिला। सुट्टा दे॰ 'बीप । कोवाईं!-मा दे॰ 'ब्रकाई' । कोक्षणा - छ कि॰ हॅबना-'च्छ सुनैव नेति कोही किन, मने मरनके चीय -सरा होता। वींचा~पु॰ एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकीओ साडे चार गुमी छंस्या भी बाती है। बींसनार-अ ति चूमशम मचानाः इपंत्रति करना । वीकम-५० (सं•] शाली भेंट, प्रवहार: रिस्तन । हीकित-दि॰ [सं] पास काया <u>प्र</u>मा।

धीरी*~की भुन कपन्।

धा-देवनायरी वर्षमाकार्वे स्वर्गका गाँवको वर्ष । स्वाहकः । रवान सूर्या । वा~पुर्वाती किरोद~सुद्धका यद्ध माना भूवका निर्णवा गिरामा प्राप्त प्राप्त माना विकास कर ।

यामा विवा अर्थोक्तियुक्त शब्द। "टा क्रुटिक व्यक्ति अकीय भवन । वि शुक्रोत ।

त-देवनागरी वर्गमालामें सदर्गदा वहना वर्ण । उचारण- । संक-द [सं] भया कष्टमन धीनमा प्रश्ननेदा अपहा: निवके विकासका धुन्छ। सम्बद्ध, देनी । र्शकम~दु [मं] ब्रष्टमद जीवन विद्याना । संग-९ [का] जीन वस्त्रेको देशे । वि संग्रेजे विश्वारमें बमा भुरत बखा हुआ। दिक परेशाल। -इस्ट-वि विसक्षे पान पैमेश्री कमी हो अर्थक्टमें पहा हुमा । -- इम्ली--ररी० वैश्वकी दशी अर्थद्रष्ट । -- हास--वि नगररमा विषयमस्य । मु - ज्ञामा-वरेशान द्वाना । ~करमा-भावित्र करनाः बुट्या बर्देणागाः वैरान करना । र्सेगिया−स्थै तनी, वंद स र्त्तगी-म्पेः र्तम दोनाःमंद्रीर्णताः पुरताः परेशानीः गरीनी । संत्रेय∽मी द 'तनरेद । संद-द [मुंग] एक कशि व नाय। संबद्ध-तु [मं•] बाजीयरा संजना केना सजाबटा बह बारव जिममें अधिक समास ही। देहका बहा।

संदय#−त दे तांटथ । शंक्रा−सी शि.]यदा शंकि-द्र [सं] ण्डमाचीन वर्षि। संद्र-पु॰ [लंक] नशा। संद्वरीण-पु॰ [र्म॰] चारचका चीननः माँदा क्रीट पर्दगः तंबुस-पु [मं] याग्यः पावकः एक सरसीम्प्रे तीम । शक्तीय-य [र्न॰] पारकता भीतमः माँ४। तंदुका-न्या [तं] नावविष्या चीनार्वका छान । चैदसी-मी [सं•] वविका नामको स्ता। भीताई; यक वंदुसीक-५ [धं] भीनाईका साग । तंत्रमीय, तंतुमीयक-तु [मं] वापविरंग वामादिस र्शं कुम्धियका-स्वी॰ [र्स•] वायनिटंग । तंद्रस-प्र [4] विर्मा संदूरक संदूषरक-पु [मं] देव अंद्रभाद ।

सक्फना~म कि पौरासे म्यक्क दोना एउपराका । त्रवक्ती-स्त्री॰ स्रवादीः सवादीः वानि । तसप्रकृत्र−५० [म] क्यारम । सक्रय-न्त्री [म] मींग- इच्छा। भागद्यक्ता श्राहा नुमानाः नेतनः। ~शार्-नि सोंगने या चाइमेनाचः। --बार-वि 🤰 तकवगार्'। --वास्त-५० समन्। -- नामा-प समन अवानवर्गे दाविर क्षानेकी क्षितिया मापा । सः - महरना-प्रकाश । हरमबामा-पु॰ [फा] सराकतमे समा दिया जानेवाका गवाहींको राज्य करमेका गर्थ शमयपर मालगुवारी बना म करनेपर सगरेशमा वट, शासामः। नक्षी−को फि:•ीनहाइतः मन्। सब्दोली≪∽सी देनेशं⊸ तम परी सक्तरेमी ग्रहा हावो मैन सम है - हापरेवः होत्र कालसा । त्रसम्बद्धानारी−म द्वि दे (देरमिकाना । सध्यसाइटो - स्वा हे तिस्विकादर'। शुरुवकार−५ [सं] सामनंददी व्यक्त मासाः वससे संबद यक खपनियद् । सलबा-पुरावे दीने था चलतेने पृथ्मीपर प्रश्नेवाका पैर का नीचेका भाग । मु॰ -(वे) चारमा-वर्त अधिक सधामर करमा !-सक्तामा-सम्रामर करना !-(वि)-से भाग सगमा-बद्द अविक होन पदमा । सारबार-को एक प्रसिद्ध इतिकार सह । मु॰ -का क्षेत्र-सर्वादेका मैटात ! -की श्रीच-तनवारके वारका मदाबसा । - के बाद बतारमा-तक्तवारमे बार शास्त्रा । -मीच लेता-एउतेथे विश म्वानधे राज्यार शहर जिल्लान नेता ।-सीँतशा—गर करनेके निए स्वास-ध तमबार निकासना । सक्दरी-स्रो॰ पहादके ती नेगी सृति। समृतिकि-मी [सं०] परको देशनी। नका-पुर्वेश । सी [मं] तक्शाम । तमाइ-थी छीटा दान । सलाक-प्र• [म] केगामिक रोतिमे विवाद-संरेपका Tartis ! त्रहाची−से [मं] पराई । तुकातम – पु [र्च] मान वभीकी भौगी गढा क्षमाळी-यो शनिका न्यमा शनिवृधि। सन्दायां - इ. वे. वानाव व साधार्वसी-मी है सम्देगी। मन्द्रासम्बोर-सी > नव्यानी । समाबंध-यं सम्बद्धाः समाधानकी [त] सीका माह । क्तारमाञ्च कि सीवमा हेरगा। सम्बार्जा-को जिसमी का शुप्त को दुर्व बन्तुकी हैनी बग्रह मोत्र की किया नहीं बनके दिवाकर की बीनेका सीव हो। स -देश-तवाधी वेनेशवेशी बरनार मारि है भी देखा। -समा-जिलाह सिमी *बानु*के शुव बर्ने का जिनानेका हो है हो उन्हों घरनार आहे ये धन्त्री शीव करमा इ सन्दिका-स्त्री [मं] हीवहा। संय ।

तकित-वि॰ [सं] तेल वा योगे भूना दुआ। पॅरेशसा रिनर वैठा हुना। तु भूमा हुना मांस। वस्थित्-मी [सं•] दे॰ 'वडिव'। तिनन-वि [शं॰] विरहा दुर्वहा धोहाः स्वच्छः निम्मस्यः पुष्पंति व साम्या वस्ता । वस्थिम-पु [में] बह भूमि विश्वपूर पाधर्थ 34रे निग्नये मने हों। ध्रम्याः सङ्गः विद्यानः चँदीना । सकी−की पॅतीः तक्ष्यरः इभेकीः तक्षाः वलन−पु॰ मि॰] बाह्य भुषा पुरुष । तलुमी-सी॰ [मं] तुवतो । ससे-- अ॰ मीचे । - ऊपर-अ म्बद्धे छपर दूमरा । सु० की बुमिना ऊपर होमा-भदान परिवर्धन होना। वस्थान-५ [त] घरर। तस्रही-सी वेदीः तकहरी । तर्ह्या−मी होराक≢। सस्कोन्रर−वि+ [र्स] सीरवान्ता । सकोदरी-मा (सं०) भना भागा। सकीदा-सो॰ [मं] नदी। त्रसींछ−को १० 'तमध्र'। तकीयन−प्रर्व (अः) १४ वदसमाः क्रिकोरपनः एक नामस काथम म रहका यत परिवर्तन । तसक−प्र (संीयस जंदना त्रस्त्र∽पि (का]कद्वाकश्याः तक्ती-सी कड़वाफा बढ़वा। तस्य-दु [मं+] धम्मा सेत्र पहंचा स्थारी। (हा) मही। —कीड−पु सरमका – ज−पु निरोममे उत्तर पुरा सस्यक-प्र. वि. रे प्रचय रिवामेगामा सीवर । ठक्पन − दु (स॰) दाबोद्ये पीढ वा पीठका मीस । सस्यम-५ [मं] शाबीओ हो । वल-इ [मं] दिन्द शानाव । क्तज-तु [र्गण] बेंडका सुद्ध (समामानमें प्रतुक्त)। राला−प मुलका वह माम यो वेटके मीचे रहता है। (महातको) समिनः + धामीत्रः। त्रविका−ली (लं∘) तली इंदी। शहरी-की साइक्ष्री कांग या करजड़का। मीचेते प्रीपेने रमनेवाना यक प्रत्या जा चैचा [मे] तस्यो। भीवारं बम्बन्धी पत्ती । सारीम∽विनि}क्समेन⊌रुपाटमा। शस्य-व [मं•] गंभडव्यको स्थवनेन विकलनेवानी गुर्ववने नरवकार-प्र• शि] साम (रब्दे व्य शासा । तप-सर्व [सं] तम्बारा । समक्रा-५० (भ) माधा पन्नेप महीमा । तपत्रक्र-५ [अ] व्हादीचा तपसीर-५ [मं] नासर । सवाज्ञाह-को [घ] दिनीची क्तर स्था करना प्याप ेना ह भूषमा ०-अ दि १ गण्या । मुचनी−भी धोश सा तवताज-५ [मंग्री वशायप्रदेश । श्या-पु रीते वेंबलेश एवं रीक शिएका प्रणा निकार

वर्धोर्मे लगी क्षीब्रेकी सकाई, टेक्सा ।

काटा था दि 'मान । विषयमाः मृत्यादा एक कानि

बर्णी दश बायुओं मेंभ यक (रे बायु); एक कुरू आय

बढीक प्रश्नविद्धा द्वता वि कहरी नाहि साने.

तंबोस∽पु तांबुक, पान ः

तककी-को क्षोग तकका। विना चर्सके सूत्र काठने और सँबोक्सिन-स्री पान वेचनेवाकी खी वरहन । कपेटनेका एक बाबा । र्तेशोसी-प पान देवनेदाला वर्रे। तकक्रीफ्र-सी॰ (ब॰) दुःस क्यः स्केश । संस+-प यक सारियक क्युमाना सांग । सकरन्यक्र~पु॰ [ब॰] चक्कीफ उठामा। हिटाबार संमन ६ - पु ६० 'तम ; श्तमन । बनाबर । र्समावती-सी॰ एक राविनी। सकवाना-स॰ क्रि. क्रिमोको तारुनैमै प्रश्च करना । र्तेवार र्तेवारी −सा॰ प्रमयः पद्यर । सक्रवीयस-बा॰ (भ] सक्रत पर्देषांना तसही, भारत त-पु॰ [सं॰] चोरा बन्ता पृँछ (निशेषकर स्वारकी)। मोदः क्लेक्ट गर्मा छठ। रक्षः बीकाः हुबरेगः (मणसागर सन, बाह्स । खक्रसीम-च्या [श•] बॉटनाः बेंडवाराः एक स्टेबबासे तरनेको) नौजा-पुत्रमः एक गण (पिग्रक) । ● म तो । वृक्तरी संबनाधी भाग देगा (ग॰) । श्रमस्त्रद्र∽दु [स] बास्पर्वे, सर्वेश । सम्मुख-पु [ल॰] सोच-विचारा जागा-पीसा देख शकसीर-का॰ कि॰] कसर, अपराच, ग्रमाच दोव । तकाई-सी शकनेक किया। भरंदाव । तक्राहा-प्र[अ•] तवादा पावना गाँगनाः दच्छाः अन्त-तभस्मक−प शि ी सं4प क्याय । तभक्तुका-तु [स] वड़ा रक्षका । -(क्रे)दार-प्र॰ दबबताः नारेकः अनुरोधः कोई काम करनेके किम किसे त्रवस्तुदेका माकिका -तारी-श्री तथरपुढेनारका से बार बार बचना । तकाम-की दे 'बदान'। तकामा−ए कि किसी और धीट दल्लाना, देखनेमें राभस्यव-द [म•] पश्चपातः धर्म-संबंधी पश्चपार्ताः प्रवत्त करनाः दियाना । कडरदत । तक्राची-मो॰ [स॰] रीव वस बादि सरोदनेडे किए त्तप्रमा≉−वितेसाः किमानें की सरकारकी ओरसे दिया जानेगामा ऋच । सर्डें −प्र•की प्रति है। अ• वारत। तर्ह-सो+ **बहेगी** चादि बनानेक्षे छिडली कराही । तकिया−प फि!•ो वर्षस मरी धंको चैसी चीव को सदय-धा तक स्वी । केटते समय सिरके मीचे एए की बाह्य है, उनवान, काकिछ। मरीसा सदारा-" मोटे दीन दूबरेको सहित्या तक्र चन्त्र ती भी तदावि। सक-अ॰ सीमा या अवधि स्वित करनेवाका अभ्ययः विदारिय -श्रविवायकी। आमयस्थाना छात्रे आदिपर रीकडे किय क्याचा वालेवाला प्रभरको परिवाह प्रकोरींडे पर्वन । ७ स्ती॰ रक्त, निर्मिमेप धटिः तराज्य,। ७ ५० तकः। मही। दिर्मि] निरित्त (वै); सदमग्रीका रष्टनको जगह । -- ककास -- प्रसननकिया ।-- साह--सी पन्धेरके रहमेको नगह: --वार्-प्र॰ तकियामें वक्रवसा-५ [भ] भेराबा, वसमीमाः पेश करमाः प्रैसना । रक्षनेवाका क्योर तकियानधीत । सक्रवीर-ली॰ (अ॰) भारत किरमत । -बर-वि॰ भारत तकिस-विश् वि वे पर्तः दक्र । बार । स॰ -बाह्मसमा-बालके बरोधे कीई काम त्रकिका−की [सं०] भीवयायद पदा पदी। बरना। --वेंची जगड बदला-अमीर वरमें धारी तक्षमा−पु दै 'तक्रवा'ः देखनेशका । द्रीमा। —का दोस∽भाग्यके करियमें !ः —का प्रमी⊸ तकाल-प्र• (सं•) वद वस्र। भाग्यबात् । - जाराता-भाग्यका धदव शांगा ।-कुन्नला-तक-प्र॰ [सं] महा विश्वमें यह भीवार्र माग जनका किरमन घराव होना । ही छाछ। - वृत्तिका-की महेल भागते काहा हजा सक्रवीरी-वि भाग्य-संदर्भाः। कुत्र। -चिंद्र-पु छेना। -सिद्-पु देवहा कुछ, कपित्व । -मांस-पु महेचे बीगनं एका मांस । सकता १ - स. श. ति. देखमाः राज्ये श्वामाः शामव केमा । सदर्धार∽सी थि∘े अनावा भाग केला था बसरी -वामम-प भगाग। -संघान-प्र• यह तरहरी बढाई करमा । कॉमी 1 च्यार~प मध्यम **१** तकार-५ [सं] मधामी। शक्रदुर-५ (स] धर्म- गाँ। वस्मा - पुत्रमाः सुरो । तकाद्धा∽सी [सं]ण्यः शार्थाः । सक्सील-भी [भ] पूरा दोगाः पृश्य । तका(कन्)-१० [मं] योरा विकास विकिता । तकरार-न्त्री [ल] बार-बार बहमा। हुनजन विवादः तक-पुर्व [ग्रंक] रामके मार्थ भारतका अवस्था एक शान । वि बारनेवाका (समाराज्ये) । -शिस-पु॰ तर्शातका-शगशा । वक्सारी--वि वद्यार बरनेवाला । का निवासी। 🖟 चप्रशिका श्रेनभी। -शिका-सी। सङ्गीय-सी [ब] नमीर जाना या जान वेजा पत्रहा यह प्राचीन भवते । दिशशादिनां क्षेत्री करना कालव । ~कें-क्ष्यलक्ष्यी । सम्बद-प्र [एं॰] बाह क्लोमेंन वह विसने फ्रीधियकी तप्रशेषम्~म [ल] सन्धन्।

सफ्रहीर-स्री [ब] बीक्साः बन्नचीत सबस।

तकरा-तुक नान कानमें कार करेंग्ने के बाग जाने शकी

तदसीखना−सा# तहसीसना~ए कि मानगुवारी चंदा भारि वस्त्र करमा । स्या । ता~प्र [तं] यक्ष मानवायक प्रत्यव । स॰ (फा॰) तका तडौँ-च॰ नडौं ह ≠तो।≉स५ विसस। सद्दाना~स• क्रिंत्रह बनाना, क्रीरमा । ताई नग॰ दे॰ 'वॉर्र'। सहाशा-पु॰ [अ] परवाह, कर, भय ! ताई-नी वेटी पाचीः इतका व्यत् हाप वानः वनेनी राहियार-भ उम् दिन; एक समय। मारि बनामेकी छिछमी कशाही । तदियामा−8• क्षेत्र वह करना। साईद-सी थि] समर्थम प्रति। पुरु गीरी मावत। ताड प्र चाप तावा क्रीपा जावेश । त्रहीं −संवदी≀ वार्ड • - म तकः शास्त्र, निमित्तः के मितः पास । ताक−पुपिताका नहा मार्र। र्शोगा-पु॰ पीछेश्री भोर रुख्यी एक प्रकारकी पाड़ी जिसमें ताळन-प्र• 📭 🛚 प्रैम १ पद बोहा जीता जाना है। साइटर∽प नि ी मीरा कमानीमे बनावा प्रान£सः। सितार चैसा क्य भागा विश्वपर मीरदी शाक बनी होती **त्रोहरा~पु॰** [मं॰] पुरुषाया मृत्या शिवदा प्रसिद्ध पुरुषाः परु तुम । –तासिक-पुनंदोस्कर ।–प्रिय∽चुनिका टैं। एक तरहका शसराम । लाकसी-विश् मीर जलाः मोरङ रंगसा । श्रीक्रि−ए मि निस्वशास्त्र ३ साक-स्टी ताकनेकी किया अंबस रहिः मातः सीध साट्य-पुर्व [मं] नामसेवका व्यक्त बाद्यवसंब । सिंद-वि [मं] शांत पदा हुमा; करशुक्त मुरलावा श्रह । -प्रशुक्र-म्पा॰ विशीधी महोजा वा साहवे -१६ हुआ। बिसके अन्तर्मेत हो। रहदर तारमे वा ताँवनेको किया। २० -से रहमा-मोद्य देन्दर रहना । - छमाना - मोद्य देशमा तात−न्या भेड-वद-रामादिके बगडे वा मसीको बन्दर बनाबी धुई भावे जैही बरता नतीः बतुबनी टीरी।ज्ञानाही-शाना । ताक−व श्रिीवामा भारताः विकारोने कि बत राष्ट्र । त्रातिकी-लो नेति∤ न हो सदै-दैन वदः होत प्रविभागिः वर्दि तोत्य-ति [मं] तेत् नासे बमा हुना । पु॰ सृत काननाः —ज्ञान-पुज़रका यक्ष येथ विग्ने मुद्रोमें वं हुमसा। बाका बुलकर वैदार दिया हुना द्वारा । आदि तकर करकी सम था विषम संख्या पुरुत है। वातवा~पु॰ भाँत चतरनेका रोप । -पर **घरना था १रामा**~दाममें ग साना। -सा र्वोता-पु॰ सङ्ग्र पॉनः बनार । अर॰ ∽सरामा-तार म देवस्थामदर मनीनी वदाना (मुस्छ०) । इरमा, पराहे बाद बक्का इस तरह माना कि पंकि लाक्रल-स्थे॰ (च॰) वक, शक्ति : -बर-पि॰ वड मंद न को । शक्तिशको (र्ह्वोतिया−4ि ताँत शैक्षा इतका काणा। ताचना-स॰ कि॰ देवनाः स्विर रहिने देवनाः वाँती-स्त्री॰ पंतिः। सितविका । व॰ अवाहा । रखनाः बाह्नाः विदयन दरनाः हार हेना । त्तोतवायि तांतवायय-४ (तंश) जलतेका ४१६३ । लाकरी-सी जागरीमें मिलती अन्मी एक जिमि । सरिप्रय – ५० [मं•] द्यारमतत्त्वकः तंत्रद्यारमदा क्षानाः तंत्र साकार्न−दि विरहे सक्तमेशला । का प्रशीम बरनेवाकाः एक प्रकारका समिवना । नि ताकि-अ॰ कि।) श्मरिप है। विश्वमे विमने । तंत्र संबंधी । हाडीइ-सी [ब] रिनी ढाईटे किए शासार पे शाँशा∽प काल श्लको यह प्रसिद्ध बातु । नी किया। विश्य-५ (सं॰) पानः तथारी । -वर्रक-६ :-ताद्यवय सादच-१ (म॰) वार्यद्या ठरन्छ । पैटिका-मी पान रणनेवा वात वनक्या । -ह--ताप्ती−पु≹ ताइट । घर-इ भाग रगरने भीर बनाबर देनेबाना मीन्द्र । शाग्दा−इ 4ि भाभा साहा। -प्य-पु पानका प्रधान पान स्मे प्रधोनली रह सदा शार्या∽वि निभरी ऑन्ने ए६ क्रेक्ट न हों। साग~०५ नागाः। भी नामनंद्री क्रियाः =पाद-विद्यान_सुन्नी नामकंदना −शरा−च बन्दरधास शासेने उत्पन्न आनी। -बस्मी-मी वानकी वेठ रेशायका एक विशेष भाषा जिसे विशाहरे शहर व मागरहो । -बाइक-४ थान दिनायेशना श्रीर साथ मक्षा मार्थ वर्ष्टी पहनाता है। (बर्ग कर्। बनमें स माब पास नदर भननेशन्य । --बीटिका--सी पानका **अं**न्र्र भी पिरेंक् जान दें हे शरू - बाट शासना -। बहे आहेबा बच्ची वागपाट सहनामा । भीवा ! शागदी~सा करपना ध्राव?धा। सीपरिषक-दुर्भ] पान देशवेशाला समान्ये । तासवा−स क्रि॰ रजारे आदिमें दुर दूरपर नि सचित्री-भीत्र [रा] शतको बेक । सीक्यी(सिय)-5 [मंग] बान वनश्वर देशेन'ला। वान द्धाः । रेननवाणा । वि । तरिश्रनवंबी । तागा-चुग्न शेराः साज-तु [का] शकाश मुद्रा दलकी क्रिया। येथे गोंबग-पुरे तंबरो ।

सर्विरी –भी शर्र ५४१ शृष्पीः जुणैः अस्ट।

र्मोसनार-म क्रि चमकाला ब्रश्या ब्रीसा र्सम

बार्क र्वा पाइका समा। इत्री वाकारतका स

नाम । - प्राच्य-प्र हरेरे शिलारी रक्ष । - रा

चरों में बगी लीहेकी सकाई, टेक्सा ।

दूसरी संस्वाकी माग नेमा (ग)।

तकाई –सी॰ तकनेशी किया ∤

से बार**-वा**र **ध्वमा ।**

तकाम−की दे॰ 'क्कान'।

मन्त्र करनाः विकासा ।

तकस्रीक्र-सी॰ [ब॰] दुःस, बह, स्केश ।

कफेनेका एक काका (

बसाबद है

सन, **रा**तस ।

तकडी~सी छोटा तकना विना पर्सेके गुरा कारने और

सक्दलक-पु॰ [स॰] तक्कीफ उठामा। किटानार,

सक्रवीयत—सौ॰ (ब॰) वास्त्र पहेंचाना: तसस्प्रे, मास्ता-

तकसीस−सो [स•] बॉडनाः वैटवाराः यक संद्वासे

तक्राह्म −५ [स] तगाया, पावना माँगमा। रच्छा आसः

स्वक्षता' आदेखा मनुरीया होई हाम दूरनेके लिए किसी-

तकाना-स कि॰ किसी और रहि टल्बाना, देखनेमें

सक्याना-स॰ कि फिनीको ताकनैमें प्रकृत करना ।

तकसीर-का॰ (ब॰) इसर अपराव, ग्रमाह, दोव।

तंबीस-प्रतांबक, पान । तेंदोहिम-सी पान देवनेवाठी खी; दरदन । तेंश्रीकी~पु पान देवनेदाका वर्द । र्तस्य-प्रदक्षसारिक अ<u>ग</u>्रमाकः स्तंस । र्तमन≉−प देश तम इस्तंमन । तमावती-को॰ एक राविमी। तेंबार, सेंबारी-बी॰ दुमरा, चकर I स-पु [सु] चोरा बन्ता पूछ (विशेषकर स्वारकी)। मोतः म्लेक्त गर्मः शठः रहः योदाः बददेगः (भवसागर तरनेको) नौका-पुष्पः एव गण (विगक) । ७ व हो । सभस्यव∽पु[स•] नादथर्व सचेशा। समस्मूल-पु• [#•] सोच-विपारः वावा-पीछाः देउ करंबाव । तभएकुक्र-पु [स॰] संदेश, समाद । त्रसस्तुद्धा-पु [अ॰] दश इसका । -(क्रे)वार-पु॰ तमस्योगा भारिका - वारी--वी तमस्यकेरारका समस्युव-५ [म॰] कक्षपातः वर्म-संबंधी पश्चयतः कट्टरपत । सङ्मा∻−वितेसाः स्ट्रिं−प्रकी प्रतिसी का वास्त। सर्हे-सी बहेबी बादि बनानेओ डिएकी बहाही। सर्द्र≉−व तदःस्वी। तक - व तो भी तथापि। **तद-भ शो**धा या भन्दि श्_{रित} करनेवा**ना अभ्या**, प्यतः। कलो स्कानिर्निमेप सक्तिः कराजुः कपुरु कक्त महो । दि [र्थ] निरित्त (द); सहनश्रीक । सहद्या-५० (भ) अंदात्रा क्यमीनाः वेदा करनाः पीसका । लक्षतीर−स्य [म] भाग्य फिन्मत । −वर−वि भाग्य बाग् । स -भाजमामा-मान्वके बरोले कोई काब दरमा। - केंची बगह कड़ना-अमीर वरमें श्राप्ती होमा । - स्त्र द्रोक्र-माग्वके द्रश्विमे । -का समी-भाष्यवान् । - आगनाः - भाग्यवा तदव वाना ।-क्रुट्रमा-किरमत धराव दोना । सफ्रवीरी-विश्वापव-र्मको । क्षक्रमाण-सः कि देखनाः ताक्षमें रहवा। जाभव केता । सक्रशार-सी॰ [म॰] महाका नाय हैना वा उसकी वशादे करता । सकरपुर-पु [स] धर्मट वर्ते ।

तक्रादी−ली [स] बीज बैक मादि रारोदमेके किए किराने के सरकारके जोरते देवा जानेनका कप ! तकिया~द [फा] रुर्रम मरो थली बैद्यो पीव की केटा समय सिरके भीचे राग ही जाती है, प्रवास, काकिश मरीता, सहाया- मोते शीन हवरेको हस्ति। तिवारिये -श्रविनायकीः आभवस्थानः छन्ते बाहिपर रीक के किए कगाया वालेवाली प्रभरको परिवास क्राफ्रेसिक रहनेकी बगह । ~क्काम -पु॰ सञ्चनतकिया ।~ताह-सी प्रश्लेरके रहनेको नगह । -दार-प्र॰ तकियाने रहतेशस्य द्वारत तरियानशीसः । खक्किल~वि० [सं] वर्ता दुइः। खकिका−सी (सं•) श्रीपणः एक जरी। तक्तमा – द्र देश वस्ता । देखने शता । सकोछ~प॰ (सं॰) वद बग्र । तकः∽प्र॰ सि] यहा असमें एक कीशाई मान ससका ही, छाछ । -क्चिंका-छो॰ महेके बागसे पाहा हुआ क्षा - पिष्ट-पु ऐसा। -शिक्-पु देशना पत. कावित्व । - आसि-यु गहेक बोगने पदा साम । -वामम-प् मध्याय । -संघाम-प्र• एक सरकार क्रोंगी ! -सार-पुत्रशास ! तकार-५ [सं•] मधानी व तकमार्ग-पुत्रमया मुद्री। तकाद्धा∽की [सं•] ए% शारी । तकमील-मी [अ] पूरा दीनाः दृश्य ! तका(कन्)-पु॰ [मं] भारत क्रिकारी विदिया । सकार-न्ये [म] बार-बार बहुमा हुउबत दिशाह तस-पु॰ शि ी रामके धार्य भरतका अवेद पनः एक नाय। शयश । दि बारमेशाला (समामात्रमें) । -िस-प॰ तप्रशास-सदरारी-वि वदनार दरनेवाला। का निवासी। विक सम्पर्धिका मंत्रभी। --शिका-स्ताक सप्रशिष-मी [अ] मगीए लागा वा जाने देनाः व्यक्त दद प्राचीन मगरी। हासक-पु [मं] बाह कारोदेते एक विमने परीधित्रकी बारा था दि 'मान । विश्वसमाः गुनवातः यह बाति बर्णी यस बायुओंमेंन वह (? 'बारू); एक कूर मान-

दिवादारिन्सेवयो अरस्ता, जासव । —में - जवन्यद्वी १ तप्रशेवम्⊷वर्(स.) स्यथयः सङ्गीर-सी [स] योग्ना वात्रयीत मावत्र ह तकरा-पु एत कारने और स्वेटनेंडे बाग वानेनाली बनीए मनेनविद्दा पुत्र । दिन सदरी बाटि कारने,

तहसीयमा-ताज तहसीठना-स कि मात्रगुणारी, भंदा आहि बन्त करना । करमा । तां~म [सं•] यक भाववासक प्रत्यव । स• (का॰) तकः तर्हों~संदां। क शो । क सर्वक विक सस । राज्ञानान्य कि तर् स्थाना रूपेरमा । सार्थ≈—म दे॰ 'तांई '। सहामा-प मि परवाह हर, भव । ताई-सी॰ नेडी पानी। इसक्त न्यर। ताप, मान; क्र-सी सहिवा*−ध+ हम दिनः इस सग्रह । मानि बनामेंबी जिल्ला क्रशाही ! सहियानर∽ध• क्रि• दब करना । ताईव~मी॰ (थ॰) समर्थन पुटि । पु॰ मुंशी जावर । सर्हीं − मं बढ़ी। ताडण पुण्ताप, गावा मरोपा भावेश । सार्डि -- अ तक बारत निमिधा के प्रतिः पाम । साळ-प्राप्तिका वहा मार्थ। साँगा-प पोटेश्रो और करबी एक मकारकी नाही जिसमें ताक्रम-प्रश्मि] प्रेय । पक्ष बीजा भाना नाना है। साळ्य-चु [ब] मीरा कमानीमे बनाया नानेवका त्तौडय~ड़ • [मं] पुरुषीका सृत्या शिवका प्रसिद्ध भूत्या सितार जैसा वक बाधा विश्वपट मारको सक्त बमी होता एक एक । -साक्षिक-पु लंगास्ता ।-प्रिय-पु शिवा क्षेत्र एक सरक्षा इसराय १ **हारि:-पु॰** [र्ग] मृत्यशाला । साक्षमी-वि मोर जैला मार्ड (क्या । त्तरिय-त [सं] सामन्त्रका एक मासलावय । काळ-लो॰ कारूमेक्क किया भरत रहि: दल: गोय-वांत-वि [सं] शांत अका दुना कहनुका सुरहाया थे∉ः −झर्रक-नी॰ दिनोक्षे प्रतीका शायोजमें ११ हुमानिमुद्रे अनिमेन हो। रबक्द लाउने वा क्षांक्रनेक्ष किया। २२० नमें रहनान गौडा देखन रहवा । -मगामा-मौद्ध देशनाः पाउदे श्रात-स्पेश्भव-गार्थ मार्थिक चमडे वा नगीको बरकर बनावा द्वर बागे बैक्षी वरम् तंत्रीः बनुषवी टीरी। अकारी-रक्ता । ताक्र−पु[च] सक्ता आका। दिजो दोने दिर्माटड का राष्ट्र । र्मीतदी~मा वाँव∤ न हो सके-बैंगे एक, तीम धॉय भारि। अहिनीय र ~जुडत-पु अपका यक येक विक्रमें मुद्रामें श्रीरेशी व्यक्तिक-वि [मं] संतुनीमे धमा हुना । पु भूत बातमाः आदि रेक्ट बनकी सम वा दिवन सरुवा बुठले है। हु॰ हननाः क्षात्रः हनस्य वैदार क्षिया ह्या क्षपत्ता । **र्वोतवा−५० ऑ**व क्वरकेटा शेव । ~पर धरना या रसना-दाममें म वाना । -सरना-र्होता−दु सहद पॉट; बतार । शुरू ∽क्तामा≔तार म **रेक्स्थानपर मनौती पदावा (मसक**)। इंद्रमा, पश्चे बाद प्रमा दस तरह मामा कि वृक्ति ताका-सा॰ शिको यस, शक्ति । -वर-विश्वकरण् संय म हो। शक्तिसारी । र्सेंटिया – वि॰ दांद वैद्या हुवका काका । शाक्रमा−स॰ कि॰ देवनाः रिवर शीःने देवनाः मदर र्वोती-स्त्री पंकिः सिरुसिका । पुलुकादा । रसमाः बाहमाः निषयम बरमाः तार हेमा । तांत्वापि, तांत्वास्य - ५ [सं] जुलाहेका लक्ष्या । ताकरी – मी॰ नागरीमे दिनती जलमी एवं विपि । सांजिक-प्र [म] धारमधानकः नेमधानका शाहाः तेन ताका -दि विश्वे वाक्रीयाला । का प्रकीय करनेवाकाः एक प्रकारका समिवान । वि साक्रि≔थ कि ंश्वितर कि निगमें वित्रमें । तंत्र-संबंधी । शाकाय-स्रो [म] दिन्धे कार्यदे क्षिप्र गार-गर चेनाने লাঁৰা – বুলাশ ংকট ঘৰ মতিছে খাবু। की किया। सोबान-प (मंग) पानः सपारी । -वर्गक-प -शाध्यम साहण-तु [ग्र॰] वहाँका करका । पैटिका−न्या पास रखनेका पात्र पसबस्या। ≔द्य-साध्यो - पुरे ताक । धर-पुर धान रसने और बनावर देनेशाना जीहर। सागा−ड विभाषा नाड । -पन्न-त पानका पत्तार पानकी वर्तीवाली क्य लगा शार्म्बा-वि जिनक। ब्रांटी यक जैशा स ही । लाग-०५० नावा । भी सार्योधी मिश्रा ! -पार-5

विद्यास् सुबनी मानव कर। -शाग-ब मन्त-शाग धार्मेश परचा सान्धा - घरकी-को पानको केन, भागवनी । -बाइक-५० वाम शिलानवामा और साथ-शांध राम नेदर ननजंशना । -थाटिया-स्पेश् पानदा बीका र समितिक~पुर्धि] बान वैचनेबाधा समान्धे ।

सोबजी-मी॰ [ग] शतको पेता। सांहमी(विन्)-इ [गं॰) पान बनाबर देनेदान्या दान देशनेवाना । वि. तांब्य-संदर्शाः सॉबरा−पु े तॉबरी । मॅथिरी र∽भी ० प्रोती भवत समाहे अवीत स्वर त

समिना॰-न कि यमकामा ४राजा ग्रीमा नीता नेती

सामा-पुरु सून केरा : लाम-पु॰ (का) रामाध्य सुबुध बनयो। शिला - सर्वारे बाबक रंगा पानुका संभाग नुपीर नावमरणका में एउ माम । -प्रकृत-तु शुरे ई निरंदर हो दक्ती । -पूर्व-

सागमा-स कि स्वार्ध आहिमें दूर दूरार लिंक रे

रेग्राम्या एक विरोध बावा विगे विवाहकै समय बर्द्य

बहा आई बब्धी बहनाया है। (बदी-बही हममें होतेहे जनर भी विरोधे जान है।) ह्यू -बाह शासना वार्के

यह आहेका समुका सामहाट परभाना ।

शामधी-भी करूपमी ग्रह्मरिया र

APRIL P

1 -

तहरा-वि•[सं•] पर्वतको काकपर रहनेवाला । पु० शिव । तब-त बादिका छपविमागः दिरावरीः भव्यक मारमे वा वरा बाब तोरमेको साराव । -वेती-लो॰ वातीवताकी

दक्षि गुर बनानेकी किया दक्ष्येंदी।

तरक-सा । तरकलेकी किया या मानः तक्कीका विदः क्यार, करनी बादि, चाटा छात्रमके तीचे दीवारसे वैदेशस्य लगायी यानेवाकी एक कशकी ! "भवक"प ठार-बार ।

त्रवक्ता - अ कि॰ जींच पाकर तब की कालाज के साव प्रजा था इटना। कर्षरा स्वरमें शेकना। ब्रह्मणाना। कर्मग-के साथ जोरसे पहणना ।

सब्दा-प प्रभात, सबेरा ब्बार।

तदकाना-स कि॰ तह राज्यदे साथ तीहना। क्रियोची शिवाना ।

त्तवकीसार्ग-वि भरतीका चनकीकाः तक्षकीवास्त्र ।

श्वकार-जर्भ श्रीत्र, शरपर । सदग~प॰ [सं] दे॰ 'वडाय'।

तदप्रदामा~अ कि तक्तक राष्ट्र दोनांच कि 'तक-तक' शब्द उत्तम्म करमा ।

त्रवत्राहर-नी त्रत्रानेश्चे दिवा वा माव। सबप-मी वहपनेधी किया वा मान विज्ञानी कहना

विवरीयो पमक । ~शार-वि शहकोका अम**री**का । तदपना-भ• कि॰ भलंत दु'सी होना, स्वपना टर

पत्रना गरवनाः कृतमा-प्रारमा । सहयवामा-ध॰ कि॰ तहपानेका धाम कराना ।

सद्यामा-स विश्वतिहरू वह पहुँचाना कल्याना, स्ताना ।

सब्भवागा-भ क्रि वेजैन होया। ए० क्रि॰ व्यानुक बरना, बह पर्देशना ।

सब्द्रमा-अ॰ कि॰ रे॰ 'तब्दना' । तदाक-पु॰ [सं] हे 'तहाग्र'।

तकाक-सी॰ वहारेका शब्द, वही बीजडे बोरते इरवेका शन्द । 🕇 अ सापर । -पहाक,-सहाक्र-स॰ ब्रह्मट,

कौरन । -से-'तहाक' शब्दके साव । वडाका-सी॰ [मं] मापातः कृतः शांति समयः।

वहाका-पु वह की मानात ! स॰ स्ट्रप्र ।

वहाग-१ [सं] शालाव सरीवरः विरमकेंशानेका फंडा । तकारामा • - व कि दाँग मारमा - वर की कहा वहारिय देशी पारत श्रेष -सामी। उटक हुद स्थाना क्षेत्रिश दरमा ।

तहायात-इ॰ [नं] है क्यायात ।

तदात्रव=म तद हा की व्यक्तिके साव । सु०-अवाव देवा-ति संबोध दीहर ववदक प्रवाद देता । -पहुना-

सवानार् सर पहना । तवाना-स कि॰ तावनेक काम कराना।

त्त्रावा-तु ियास्य तत्रद महत्व ।

सक्रि−सी [र्ग] भाषात्र । विकासात्र करनेदाला । त्ति विदेश -सी है विदेश

सदिन्-भी [८] दिवली विष्युत्र दिला। -बुमार-चेत्रीके एक देवता । -पति-तु मेर, बाइका ।

~ग्रमा--वी॰ वित्रहीको चमकः कर्तिकेवको एक मारका । तकिरवास (बत्) - पु॰ (सु॰) सेमा मोधा। वि॰ विमर्काः

सहित्रम्-५० [धं] सेथ बादका त्रविन्यय-वि॰ [मृं॰] विवहीकी कीचवाका ।

त्रविपासा#--अ• फि॰ वे॰ 'तत्रपना । तिहेक्-'तिरित्'का समासगत रूप। -सता-सी

विश्वलीकी वह कीच जिसमें बहतती कहरें हों। —होजा-सी विजयोको सीक् ।

तही-सी॰ परत वणकः मारपीटः वंचना छकः, बोस्ताः बमबी; बाटा 1 शुरु --देशा-भोग्रा देना; नेरक्षः पत्रानाः हारकी सकी वजाना । -बसाना-भीका देशा । -में सारा: श्रीधा साना ।

तदीस#-सी दे 'तिरित'।

तत-त [मं•] तारवाका वाजा-बेहे बीगा सारंगी **जा**दिः बातः एक प्रचा संतानः + तस्यः सार बस्तः ततः। वि+ विस्तारितः दक्षा क्ष्माः भूका प्रमाः क तसः धतना । -पश्ची-को देका। -बाउश-प्र देश 'तंतुकार्य'।

-सार⁴-ली कोडा शादि तपानेकी **ब**गह 1 ततकार अवकास===== वै+ 'तत्कास' i

ततस्यन = व दे चल्छन्। ननस्म≎−भ दे 'तत्स्रप'। ततपर≠-वि॰ वे॰ 'तत्पर'।

वसवीरण-स्त्री दे 'वस्कीर'।

तलाई ०-न्या गरमा-'वर्राव वर्ता छिति च्योमको तलाई' —धेनापति ।

त्रतारमा-स कि गरम वससे भीना। सति−क्षी [सं•] शेनी पंकित समृद; विस्तार।

तत्तवाज्ञ-प दे॰ 'तंत्रवाय' ! कतरि-दि (पं॰) दिसका निजयोः कारनेवाका, पाट

करमेवला। पु भगिवः रहा तरीया - सी॰ वर्षे, मिन्, बहुा । वि॰ तंत्री चालाब ।

राष्ट्रीधिक−वि (सं } क्षप्तसे स्विद्धाः। तन-त (रं•) नदा गत्। सर्व• वदः —कास्र-श•

वार्चन, वरव वसी समद । -वसी-दि॰ प्रस्तुत्तव मित । -कासीन-वि वस वा उसे समब्दा। -श्रण-दै 'तरहात । -तत्-वि मिश्र मिश्र । सर्व वह-वह । (-सद्देशीय-वि प्रस-सम या सिख-विश्व रैशका । -पदार्थ-पु॰ सगनका कारणमृत परमारमा । -पर-वि॰ कार्य विश्ववर्षे क्या हुका क्रस्तीन मुक्तह । ~परसा~धी तापर दोनेकी फिना था मान, मुस्तैरी।

धवदता तस्तीनता। -वरायब-वि॰ विसदा मन किमो दक्षमें ही खया था। - एक्सान् - अ उत्दर बार बीछे। -पुरुष-पु • दरम पुरुष; रह समान (स्था)। -क्रम-पु॰ कृश नामको दवा; मीन क्रमत चार नाम का गंबरूपा -सर्ग -सम-व उसके समान

शमहे जैमा। तत्त-पुरे वस्ता

तुला । - वि यस्य हचा। वसाधई-की॰ मामद्वे श्रम्य या बोप ।

धारम~सामसी । शाहका-वि भिन्ने बेसा, बसके समाज । साधा-रगै॰ 'साताधेर' जैसा गरबदा यह गोड । साम-की र पंगीदमें स्वरका विस्तासः ताजनेक्य अक्रिया था भागः सिंबार । प िनंनी सम्रा विस्तारः प्राप्तकः विषद्ध । -सर्ग-यो [हि] तामके कार 1-प्रा-प [हि] सितारके जाकारका एक बाजा को माने समय त्वर देजेके काम माता है। सामता-स कि सीवकर क्या करणा पीकामाः क्या बरना। समरी वर्ड भीवको चैनाका व्यवहारकोग्य रिचतिये कानाः स्टॉक्कर कुछ अंतरपर रिश्त ही आभारीमें पैतानाः दिनौदी सरव दरके मारनेके किए पान वा अक्ष आहि यहामा । य॰ सामबा स्रोजा≔विधित होवह सीना । सामबान=-५ साना-शना। सामय-५० वि । दनदा बद्धता। तानसंग-पु • अधनर्षः ६१४११का एक मधिक गायक । शामा – प्रथमें सर्गावे का प्रैकाश हका एका [थ०] व्यंत्रवर्ण भरीती बाह्य । व स० हि० तपाना। परीकादे किए तुरालाः धाँचना शुँद वंद करमा। -पाई-न्दा पम-पिरकर आने अने रक्षमा । -बामा-५० हाना और भरता । भूक -मारना-पुरीकी वात करना । शानारीरी−नी मीसिक्षका गाना । शानामाइ-९ ०६ रारशास्त्र प्रथमामा (ना) स्वन्ता भारी शामक । शामाबादी-सी अभिगानकमा शेषकामारिया। शासीरं ~श्री प्रशास्त्रमें लंबारें के वक्ष रखा क्रमा स्वाः # बंद सनी । सान्द्र-प्र [र्ह] शामीका भेवर । साम्बन्द (सं) भीरस दुन । शाप-व• [शं•] उप्तता, नहमी। ध्वर। वु-छ। मामसिक स्वशा आणि ।- क्रस-पुरु शहीर वर वायुगेरकशी कव्यक्ता-क्य बनार-भगान । - निक्की-सी॰ (वि०) श्रीवा । न्ययन्त्र आधिनीतिक आधिरिनक और आध्यासिक ब्राम । - म-नि सम्बारक । - मुन्नन-तु सुन्यका इब बेर (बोयसाल) । −मान−प भरमाधीरर क्षारा मानी गनी शरीर मा बागुमंहर-४ तापकी मात्रा १००वंग्र--व भरमामीटर । -स्बेब-म जन्मता वर्धेयनैये बत्तम फ्टोमा । - इर-४ वाक्ताक । - इरी-सी एक क्षेत्रवा १ ताबळ-वि [र्न+] द्वाभाषाहर । तु रशेगुणा व्यर । भापारी - भी ॰ (सं ॰) सर्वकी करवार वक गरी । तापाय-१० [५] नभुगका यक माम। वि वापरी-वंधी । लायम-१० (तृं) सूर्व। प्रीप्त ऋतुः वामदेवका एक वामा श्रवेदांत मारित जानका केंद्र महारह एक नरका सुकर्त, जकानेवाला कर रेनेवाका । वि वायबारका करशक्त । भाषका - भ कि भीय वा तापने ग्रापी सम्माना । स वि: भव करण प्रशासक स्वासी है रायमीय-५ (मं) न्य प्रचीत्रका वय निष्क सम्मन्या

धीनः । ति॰ सुर्दमयः समहत्यः । सापधिन-५ (६०) ८६ वश्वः

तापस-प्र सि॰] तपसीः वयता सम्पादः दीना । वि तपरवा का तपरवी मंदंबीर तपरवा । - स-व ने जयता । -तदः-इस-प्र॰ ईग्रदी हिनीत। -विश्व-प्र॰ विकार क्षत । विक की सपरिवर्षोंकी जिल्ला क्षित्र स्था किये सरस्ता क्षत्र हो। -प्रिया-सी॰ दासा मनहा। -स्यंतर-६ सामुक्ते बेसमें युगमेनाका ग्रमचर (ब्री॰)। शाचसम्बन्धः (र्ग॰) यह प्रसारको ईछ । शापसेष्टा-मी सि दाय मनदा । शायस्य~व सि विश्वकृत्रमें। सार्विष्ठ-पु॰ [सं] तमाना माधिक भाग । सार्पिम~प्र॰ [धं•] पे॰ वापिण्ठ'। सापिष्ठ-प्रश्रीत विवास लापिल-पि नि विपाना बनाः शेक्ति। ताची-की [नै॰] तामी नरीम बसना मही। -ज-इ॰ माधिक पात । लापी(पिस्)-२० (सं) काविने मेरिका वह करने राहाः भारत (सामी-गी तापती बंदी। ताच्य-प [मंग] यतिक भात । साप्रवा-प्र• (बा॰) ध्रप्ता रेधमी बपरा। साब-म्या कि] दाना दिग्मता सामर्म्या महाना भेते। ताबबतोद−भ• कगाग्रर । तापत-त [ल] हरता के बानेबा संरक ! ताबे-विश्वधवर्गी वर्षात् । - दार्-वि व्यशसारी । प्र भीन्तर । - वारी-स्था सेवाः शीवरा । साम-प्र निर्ण भवका बार्य मोनग वन्ता होत प्री विशा बहरा भगनिः इत्याः प्रांतिः व अवराः होत-बसको निर्वेश है है करत रत्नपर सात्र'~सर। वि मगानका म्बाहरू । वासमान करमधास वासदाप-४ रह करहरी है शामधी १ शामदा-वि वार्वक्ष (वका । सामर-प्र भिन्ने की बारि । तामरस∽ड (र्स+) दमका तुनका ताँना। भन्नरा। दढ धं हामरसी-नी [म] कमभोदाहा दान वा सरीवर ह शासककी-शी॰ (गं॰) भूम्यामस्यो । सामारक-म अंगालके अंगर्गत वस अधीर जिल्हा हार भाग शाधनिम था। शासकेंट मामकोड-५ थेमरा पर पात्र दिसार भी विद्री भारिको धन्दर्भ हो । लामम-५० [म] भावतारी, सन्। सम्बुः भनुषं मनु माया राष्ट्रका एक प्रथा मर्था क्षीपा (निष्ठा) अधाना अ कार । नि जिसमें नमोगुष्यको प्रयानता की, नमोधी बक्तः कामगीनः स्टिसः नार्गः अन्तः -कीमक"३ वक संकारक नेमु भी शारी पुत्र माने नाग है (हा संस्था तैतील हैं) । शासविक∽वि [मं] नयेप्यूनःसंकीतं भैतरा । शासमी-मी॰ [मे] महाद्राती। भेरते रागः अशमने मानाविका भी मैपनारका दिवने मात्र हुई थी। दि॰ सी

त्यागुणवाको ।

त्रज्ञासा∽स कि ताननेका काम कराना तमाना। सनसीख्र - को॰ [अ] रद करना। सनदा-विश्या] सहेका। श्रा असेते। सनदाई-सी भरेकापन तनदा दीमा। एकांत रशान । सना-त॰ [का] यह । कम भोर, तरफ । सुनाड ३ - चु वे 'तनाव ६ समाङ्ग-वन वरान्सा । सनामा-पु [अ॰] श्रगहा समार्थ। त्रमाना-स कि ६० तनवाना'। तनाय•-पु दे॰ 'तनाय'। समाय-पु तननेका मान या किला' रम्सी। समासस्य-पु॰ [म॰] बामागसन । विभि, तिमिक -- वि बोदा, बादफ छोटा- दहाँ इती मेरी हरिक मरेवा की मृत कार सकी'-वट । श॰ वटा । तमिका-सी॰ [सं॰] कोई चीव बॉबनेको रस्सी । विना(सन्)-सी॰[एं] इपकापनः सुकुमारताः इप्स्ताः बक्त । श्रुनियाँ श्रुनिया • - न्या क्रुएनोः वर्गायार कुरवा । सबी-भी बंद, बचना कि स वे फिलिं। तन-५ (में] छरीर कावा स्वभाव प्रस्तिः वर्म। अस-स्थास । वि. भिरका भरता सुकुमारः कुमा पुरुषाधिकमा । -कृप-द रोमकृप। -केशी~को संदर वाकीवाकी न्दो । –क्षीर-पुभामका । –शृह-पुनक्तिने नक्षण । -च्छार्-पुक्तभ; सन्। -च्छाय~पु वर्ण। विश क्रम छावाबाका । - ज-प्र पुत्र । - जा-की पुत्री । ~रबाग~दि ≰वस । त शरीर-स्वाग । ~त ~याम~ पु इत्यम नर्म। -त्यक (चृ)-पुरु एक पेड़। विरु पतके क्षम∉क्षा क्रियुन्धे साथ पतको को । −कारी(रिन्)~ वि वेदभारी । -पञ्च-प्र मोहाका पेत्र बंग्रही । -पाश्च-पुरु पुरुष । - प्रकाश - वि शुवने का मेर प्रकासवाना । -धीज-इ रावरेर । दि विस्तवेशी व छोटे ही । -सद-इ॰ ९४, वरा । चनपर-को पुत्री, वरी । चनपर-सी मास्टिया ! −भूमि −त्यां नीश्र शायकके वीशनका यक विमाम। ~भृत्-वि छरीरशरी। ~सध्य~प्र इतर। वि+ पत्तमो क्षमरवाना । - अध्यक्षा-वि को -क्रमरवाभी। -प्रथमा-को एक वशवस्त । वि स्त्री पतनी समरदाबी । -इस-धु यमीमा श्रेट । -हारा-अ व्यक्त सुरोशित बनदान जिल्लामें केंगर आदि छात्रते है। इस धररमके कामके गंबहम्य । --राह-पुर शीम, शीमाँ । ~स्रता−स्री कडा वैद्यो शाववाची सुकुमार देख । ~यास-पुरक्त मरका विवाद स्वान अहाँ कम क्ष्मा हो। -बार-य करणा -शय-य वस्तीक रीय, कोलवाँर ।-दिरश्(रम्)-बु पश्चिद् छदका एक भए । व धारे सिरवाणा । —संचारिकी—सी॰ वालिका । -सर-५ पनीना स्थर।-एथाम-५ दे तलुग्रर'। -87-3 ASI I तमुखन्दि [में]पतन्ता छोता । ० दि , व्या दे० तनिका।

युष्यातः स्व प्रयासायायाः । स्व देश्यातः समुग्रान्थः सनुग्रान्यः स्वि प्रयासन् वृद्यसः। समुग्रान्थः सनुग्रान्यः स्व

तन-प्र [र्थ] करोटा प्रवा मनापतिः गौ । -च-प्र बेरा। --बा-सी बेरा। --तछ-पु इंबारेबाएकमान। –ताप−म द्वांतिः भारोरिक कट । –नपात्−मु मधिः थीर विकस क्या । -नप्ता(स)-५ वाद । -पा-प कहराधि । - पृष्ठ-पु शीमबागका एक भेर । - स्व-प रीम, रोम्बा पंचा पुत्र । - इद-पु पुरा । त्रनुपप-पु॰ [सं॰] धी । तन्र-५० तर्र। समेना#-वि० शिरका, बका किया हुमा। रह । तनेनी#-विश्वादि 'उनेमा । तनैश-पु॰ दे 'तनव'। त्रनिया≉~की दे उनवां'। सस्रोज्ञ#--पुरु रीमः पुत्र । तनोस्ड॰-पु दे 'तन्दर'। तथा-पु॰ वानेका स्त । सक्रि≔शी [मं•] पश्चक्या पित्रपर्मी। लक्की – को वह इरसो जिससे तराज्ञका पकड़ा वैदाहीता है। तम्-'तत् का समासगत रूप । -समस्य-विश् तग्मयः त्रहोत्। -साम्र-पु॰ पंथमृतंकि मूक स्थम स्प।

—साजा-की॰ है॰ 'तम्माय'। तम्माय-वि (व) व्यक्तिय व्यक्तित । वस्थातु-वु॰ वि] बाद्धा सात्रि गर्दरा वसः। वस्थात-वि (व) दुर्नल, ग्रह्मार व्यक्तियाना। वस्थानी-की (वे) व्यक्तियो क्या। वि सी॰ दुस्ती, गातुक ग्रह्मार भेगीनाकी। तन्त्री-वि को विश्व दुस्तारी युस्तारी। सी॰ प्रकी

श्रुमार ली।

तया- वस्त् सा समासायत कर। -कर-मु॰ वद करते

काला। यह मार्का। -क्का-दि दम्मे क्षेमा। -सूत-दि को तरस्या करके वन मनते परित्र हो मना है।

-प्रमाच-पु तपरे मात ककोनिक शकि। -साध्य-दि वस्ते दिस होनेत्राना। -सूत-पु युविहर।

-स्पक्ष-पु हम् करनेका त्यान। -स्वस्ति-स्व

सप-पु सि] तस्त्रमः ताप दादः सूर्वः प्रोध्य कहाः व्यदः व्ययः देतः वि चलानेताकाः ताः ब्रह्मेनाकाः ब्रह्मप्रः -च्छत्-पु मनारका पेरः -सृत्रिन्नः है 'वयोग्धिः -रिक्षण-व्यरः प्राप्तप्रस्तः

त्य(स्) - प्रान्ति त्याः ध्याः व्यान्ति बद्धः विषयस्यान् पूर्वक क्षण्टात्यक व्यत् विषयः यसस्या व्यान्ति । आयरणः प्रस्य-प्यान्य धीनः व्यन्त्य व्यान्ति । स्वितः प्रीतः व्यादि व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति व्यादि व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति व्यादि व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति व्याप्ति । स्वादि व्याप्ति । स्वादि । स्

हरक्या – मंदि वश्यातः वयस्याः यस्याः। तपती – यो किने युवेरी व्यवस्याः ताती भरी। हर्यन – विकित्तं वास्या विवस्या सर्वदा स्था प्रतियो विकास स्थारित्य विवस्य विवस्य स्थापः स्थापः तात्र सर्वती। युन्यक्ष देशाः वृद्धः स्थापः स्थापः

वीर्थ । न्याहर-पुरु रामका चटछर मंत्र । शारका-स्पे॰ [सं] नश्चत्रः यस्त्राः नॉसद्धे पुतनीः यह स्पतिका स्पेता माम' एक श्रंत । त्तारकास-पु॰ (रं॰) तारकासरका वहा ऋका । तारकामय-प (से॰) किशा तारकामण-पु॰ (ध्) विश्वाधित्रका पक्ष प्रत १ सारकारि-५० (मं॰) शास्त्रिय ! तारकासुर-५ [मे] तारक मामक असर । तारविणी-छी॰ [सं॰] हाराँसे उक्त राति। वारिकत-वि॰ [सं॰] वारोंसे शक्ति । शास्त्री(किन्)−वि वि] वारुदेशे प्रथा। हारकेश्वर~प [सं] हिना एक रसीयन (आ॰ वै॰) I शारकोस-५ अवस्तरा। शारण-प [सं•] डारपे वा तकार इरलेक्ट किया तारने मालाः निप्ताः शिवा मीबाः गरः करनाः वित्रव । 👭 तकार करनेवालाः पार करानेवाका । सारमी-मी॰ [मं] शोदा दशबद्ध यद वही ह सारसम्ब-प्र• [मं] तर और समग्री भार, दो बस्तुओंडे परम्पर महत्रहरू होनेका भाषा व्यामाध्यक्षे अनुसार तारम-तो एव वा ध्योदी शनः दक्षिकि मीपे रहने बाला गाँस । # वि । ५ वारनेशकाः प्रदार करनेशकाः । तारना-स कि॰ पार करना खड़ार करनाः अवश्वनन श्रामाः। तैरामाः साम्मः देखनाः। तारपीन-प्र• शारनिश विषयारी, श्रीवन बारिके दाय बारिशना चीप्रके गाँउमे नैवार क्रिया हवा नेक र सारविता(त)-दि॰ उ. (मे॰) शारक शारमेनामा । सारक्ष-विक [सुंक] अरिश्वट, संबक्ष, संघट । पुक विट । तारस्य-प्र• [मं] दालता, तरल शानेका माना स्प्रम हता हैयरना। सारा-पु (सं) रामको आसाग्रमे चमकमेवाका क्योनि-पित्र मध्य सिनारा। भाग्यः व्यक्तिः प्रतकीः मोती । क्या तंत्रोक्त वस महाविधाओं मेंसे एकः ब्रहरूपीकी पतनी जिसे चंद्रमाने भी ग्रुष्ठ (१मॉक्ड एक निया का नाकिकी पत्नी निश्नने परिध्ने पृत्युक्ते नात् सुर्गान्छे निगाव किया वा । -कुमार-तु संगर्। -बूट-पु व्यक्तिवर्गे दिशह के शुमाशुभ करके शामके क्षिप विचारा वानेताला एक गृह । -राषा-पु॰ नारीना ममूह । -प्रह्न-पु भूर्व और बेहमार व्यतिरिक्त चॅन टीरे महोदेंने एक । - सक-म तंत्रमें वह यह क्रिमने दोष्ठारै संबर्ध श्रामाश्रम प्रस्का नि^{प्}य क्षिया जाना है। ~नाम्र,~पति~प भंडमाः दृहरपतिः वारित सदीर ।- पथ-४ वासाश १-पीड-प्र- प्रदेशा इसीर्देश्व प्रापीत राजा ! -शूपा-मी रावि ! -संदल-१ हारीका सबदा एक दश्या १ -संदर-५० सद सदारका अं, र । - सूच-पुं॰ मृगतिश वस्त्र । -वर्ष-बुश्रद्धनेवाने नारे। सुश्र-(र) विवया-मंद म भाना राज्यर जानते रहता। - तीव सामा-धी क्रीम काम कर रियाजा । —दिलाई दे जाना∽िष्ठ मिनाहर होना ! -(र्री)की छाँह-छन्डे । नाराज=३ (का) दिलाख करवारी तरावी है

साराधिय-पु॰ [र्थ•] चंद्रमाः श्चिमः पुरस्कीः मान्ति संग्रीय । तारापीच-त॰ सि ी पेडमा । शाराम-पु॰ [मं॰] पारद, पारा । वि॰ तारे जैसी अपस-शराभ-पु [सं] कपूर । सारावण-प सि विभन्नासः वास्त्रसः। तारारि-५० (सं॰) एक वरभात । तारावरी−सा [नं•] रह दर्भा। तारावसी-ली (र्स॰) वारोंची पंकित वारोंका सन्द 15 हारिक-प्र• (सं•) महाद्वा मानदा किराना । सारिका−को विशे चादी। ≉ मध्या सितेशको सबिवेधे (**a**||•) i शारिको-नि॰ औ॰ (छं॰) वारनेशली कुन्ति देवेशको। हारिव-नि [नं] पार क्याबर प्रया विश्वय ब्रह्म क्षिमा मना हो। तारी-व्योव दरवकाणी वायो। वृंत्रीः समापिः साम — स्वि समाधि कारि वर्ष कारी!—इन्। स्वरंगा रे कारी। हारी(रिक्)-वि॰ [र्व॰] सरवे बोम्ब ब्वानेवाना बद्धहरू। सारीक-वि पा॰] वेरेरा अंबसरमया कामा। तारीकी-मी॰ संपेरापन, संबद्धारा स्वाही । सारीहर-की॰ [ब] हिन्दा मिति। वह निवि जिनमें की वेतिहासिक या बहरवपूर्ण धनमा बारे हो। वार्वविशेषके किए निवत क्रिया दुवा रिमा शतिहास । स्- - रसमा-निवत दिनका और बाग स्र बामा । - हासमा-तारीध निधित करना १ --पदमा--तारील निधित दोवा १ सारीक्र-मी 🚇] परिचया स्थान, गरिभासा गरीमा, बहारीः शिरीषता । वास्त वास्त-पु हैं वापु । नारम-वि॰ (मं•ों बवास अवा ! तारम्य-प्रश्री विवानी बीवन। सारेप∼प॰ (धं) ताराका पत्र-अंधरा वर । सारेश-पर विशे नंद्रमा । शार्किक-नि हु [मंग] वर्डजामका शता वर्षीण। विवाधिक १ शाहाँ - ५० [म] बदवप कवि । क्षाइति–सी० (सं०) बत्तासग्रहो सत्। । साइर्ष-पु॰ (पु॰) एथ सुनिदे ग्रीप्रधा नमहा गुरुष्टे मार्ने आहण अब सर्वे स्थानिक सामाना देश मुद्दी अब क्षा विशा तथा गढ परवा गरी। शिव । -श्र-प । स्वीयन रुनेत्। -ध्यत्र-पुर रिप्तु। -शायक्ष-पु नरा। -प्रसम्- व अध्वत्ते वृत्त १- दीय- व है तार्वत्र 1 -साम(म)-५ शावरर। शाहवीं-में [में] रह बमनता ह लार्स्य-५० (मे०) दे^{रात्}ड बाहदा न्ड शम थे। तुरा नामग्री क्रमाने तैशह दिश माना था। शार्ध-विक [शंक] बार करने बोग्या दिशित करने मेन्य। पुरु बाब कारिया दिशापा ह वार्छक-पुर (वर) न रहा शाब-इ [नं-] दावदा छए दनेतीर दावरर दाव मार्थे-

तकरीड-सी [ब॰] मनरहकाना विक्रमीः चहका सैरा नामग्री । तकरीडम्-स॰ मनव्हकावके क्योंग हेंसीसे । सक्तारिय-और क्षित्री स्वास्त्रा सा होका करताः करानकी ध्याकता सा भाग्य । तकसील ⊶दी० वि विवृत्त दरनाः म्बोरा । त्रप्रावत~प कि ौश्रेतर, प्रकः प्रासना । सत-स यस समय बारमें इस बजरमें। -मी-स फिर भी तिसपर भी ! त्रवक्र∽प बि े तुक तदः परतः सोने-चाँदी आदिका बरकः वही रकावी: बोडॉक्टे यक भोगारी। वह फर्क दीप आदि जो मसलमान कियाँ परियोंको सप्तर्थित करती है। ~शर~प सीवै थाँडी बादिके पश्चर बनानंबाका । तसका-प• भि ो तस्या संक्रिक तदः संक्र कोकः भाद मिबोद्य समझः बमीमठा स्टेम्प्या दक्षत्रा एई दरवा । ~(v)बास्म-प रूपरकी एत । स -उश्चट सामा-तवाड हो जामा । सबकिया-द• द तरकार । दिन क्रियमें परत हो ! -ETHIR-Y VESTOR सबरील-मी [म] बरकता एक स्थानते बूक्षरे स्थान-पर जाता। - आयोदचा-त्या बक्रवायका परिवर्तन । हबरोडी-मा बर्मपारीका एक बगहरे इसरी बगह भेडा बामाः फेरफारः परिवर्तत । क्षर-प किं। करहारी। यक शका। -वार-वि॰ बिसके दास तदर हो। तबराँ∽प [वर] सिसीके प्रति क्या प्रकट करना। पिक्का-रमाः शिवीदा ससीमें परकेरे होन दावीदाओंकी क्षेत्रता। सबर्धक-इ [अ] माहीबोदस्य बस्तु, प्रसाद । क्षय-प [ध•] वटा दोहर नवादा । त्तवलची-पुरु तरका रशतेराका । तबसा-प्रताल देनेंदा चमतेते भग यह नामा । ग्रु० --समकता "उनकता-देश्या वश्याः साथ रेग गामा वदाना होता। सप्रसिया-पुनवला स्थानेवाना तब्छक्षी। तवसीरा-मी॰ (भ॰) परंत्रचार । त्रवस्त्रम-प् [ब॰] ग्रम्बराहर । समाइ-दि [का] बरनाइ नहा सवाही-स्री (का) नाध वरवाही। त्वभित त्वापत-स्त्री [अ] जो सस विज्ञ समक्षाः -प्रर-विक माइड, सहरव । सुक -बाबा-धानस दोगा । --पर भीर डाम्पना--शाम तीरने प्यान दना । -किरमा-जी दरमा । सर्वाय-म [स] चिकित्सकः इसीय। त्रपेसा - पु अर्गस्य पुक्षमुग्न - -- रादिशी मधी है जिप रादिके तदेशामें -मृत्रदार्ग एक काल क्षमाना । तरवर=-पु= १ 'तपर : पुत्र : समी-व उक्षी सम्मागीतिहः सर्मग~पु[मं] मंगारंग-मंग।

14-2

दिस्सा । तसवा-पु॰ प्रा॰ो पिस्तीन । लका-'तप्रस'≉र समासगत ₹व । -प्रस-प॰ -प्रसी-सी एक सरक । -प्रबोध-प क्षेत्रेमें उदीकता दिक र्तेव्यविमश्ला । क्स-प सि वे केरहारा देखा बगहा मागा वसाग्रक राहः तमारु कृष्ट । नम्मनम् । नम्मानली । देव विमा WE . 'OR WHI' तम(स)-प्र[सं] लेफ्बर; राष्ट्रः भ्रम; सरवादि तीन गर्जामेंसे यकः अविधारे पाँच कर्पीमेंसे एक (मां•) । লয়য়∼মী≎ জি ীয়আন ভাতৰ । तसक-प॰ वावेदा बहेगः रोपः संबक्ताहरः जीहाः (स॰) ण्क बदालरान जमेका एक मेर । लक्कमा−थ कि आदेशमें आता रह दाना कोंपदा काभिषव दिसस्ताना । नक्रकिनन−नौ विश्रोदक्षन प्रतिपाः गीरव । लग्रागा-प ति ने विवासी सियाती आरिको परस्कारके क्यमें दिया बानेवाका साथे और) बादिका संद्र की प्राय विक्रोकी बारमध्य होता है एउक । तमचर-१ निधावर हस्यू। तमचरः तमचरः समचौर=-५ दनस्यः सरया । तमत~दि॰ मि॰ो इन्स्ट । तमतमाता-वि॰ चमस्ता प्रसाः यस्य । तमतमाना-भ॰ कि॰ कीच या नृपद्रे दारम चेहरेका काड क्षेत्र अस्ता। समब-प्र• (सं•) दम दुर बामा भरज। समस्य-की [सर्] इच्छा, ध्वारिस । तमयी®-सी® रात I तमरंगो ~9° यह प्रकारका नीष् । श्वमर~प [स॰] रोना सँगा । तमराम-प [री] १० 'ववराम'। तमसेद-प॰ दीनका परतन विसंदर चीनी बिटीकी करहे की गयी ही। तमय-प [मं] वंपदारः शुक्षाः विश्वाने रंगदाः। की॰ नममा नदी शस । तमसा-सी॰ वि । यह नहीं, होन । समस्य-१० वि विश्वतार । नमम-पु [गं॰] र॰ तम(भ्) : -कांड-पु पना मेरेरा ! -तित-मी दै॰ तमरहा । समस्वती-को [में] राम इसरी । वि मीक अंधदार भर्या । तमन्दान्(धन्)-दि॰ भि॰) भ्रषशस्य । तसस्यमी-को [मंग] राजा इनसा। नमस्मी(विष्)-वि [धं] तमेंशुक्त अंवरारपूर्ण। नगरसङ्क-पु० (अ०) कच्चव । नमहोद्-सी [ब] वृत्रिका प्रशासना। तमा-की [मं] राविः = दे 'तमम ! -पारी-प निशादर । तमः(भम्)-५ [मं] राद्रः तमेगड-पु [4] एत या छात्रवका बाहर निवया हुआ | तमाही-की चमक किय येत ओटनेस पहरे वसमेंदी

सावद-म (सं•) तरा यस अवधितक, त्रवनका सनमा भाषामें बस परिमाणसक। सुविना • - स • कि • स्पानाः जलानाः मंद्रस करना । सापर-+नी॰ दे॰ 'तावरी । अ [में॰] बमानका क्षावरा • - पु • ताव, यरमी: याम । साबरी-न्दी॰ तापा ध्वरः बुधः मृच्छां । सावान-प्र॰ (फा॰) इरवानाः जरमानाः वंह । साविप-प [ग्रं॰] दे • 'हविष'। ताविषी, तावीषी-स्रो॰ सि वेशकम्बर मधी प्रशिक्ष । **हार्याज्ञ−पु॰ [म॰] कागर या भोत्रपण आदिवर अफित** दश या चक्र भारि शिसे सीने-धोंदी भारिके संपर्धे वंद बर गडे, बॉद बमर मान्मि पारप करते हैं। सीने-वॉडी भारिका विद्येष सादारका एक आध्याण । सम्बीप−प (सं] समद्रः सोनाः स्वर्गः । त्ताबुरि-पु• [र्ग] कृप राद्यि । तारा-प रियनेके कामका मीहे कागमका चौनीए उकरा मिसपर पान वर आहि रंघोंक दापे हो। एक हिटीप प्रकारका रस्तीका द्वद्रशा जिसकर सागा करेटा जाना है। द्यारका सेन्द्र एक महारका जरदोगीका करता । लाकार-प जमनेसे मना और मेरका पत्र बाजा जी असेसे सरवादर क्यरोसे प्रवादा बाता है। शास•−तु ण्यः तरस्या वरशा वाशाः सासम्बद्धार्थी । नार्वे अपरे । तासा~प• दे वाद्या" । सासीर-पी॰ भि] भसर बरनाः प्रभाग गण सवर । श्वासुक-छर्बक उसका १ हास्कर्य-५० (छ॰) धारी। सास्यपन्त दे तथरता^र । साहम−व [फा] तबावि ∤ साहि साहीं - सर्व प्रश्न प्रश्न प्रमाधे । तिविद-प [पे] इमर्पाचा पेत्र वा उमझा पका इसको ही बदलीः एक देखा । वितिक्रिका विविक्षी~न्त्री [मं] इसन्त्री ।-(क्रा)शन-प्र इसलीके बीच बाबने निकर रीजा मानेवाला एक प्ररास्त्र जना । निविद्यीक~प्रसि दिमणी। र्टितिशिका विविश्वी तितिलीका-सी [1] इमहो। निविता-द (d] दिश्यो । 1 9 P 197 [ein] 2-Fff शिक्ष-तु [तंक] तेंद्रका पेश एक शान्त, कर्त । तियुक्ती चर्मा (संग) नेयुक्त देव । सिंद्ररा-प्र• [धे] वेट्या वह । तिर-मी विदार रावेश्य यह र वि तीम निमानमें क्तबप्रत) ।-कामां -विक निधामा!-कामा-वि जिस्सी र्गम कीने ही विश्व बाहरू । पुरु सुप्रीमा । -क्होबिया--वि दे 'डियोमा १ -यर्टीय-नीय तिवादी तीन पैडी बाला कादका भागम । -श्रींटा-वि जिलमें तीन ओंड वी तिरोगा। −गुमा−नि नील शुरू और काव∵र का परिवापि दी बार और अधिक दी । - जहा-पु: एक

दिन मामा देशन वानशाला उत्तर । - सारी-सी+ पू 'तिवरा'। -सारा-पुतान धारीवाला मक बाजा। -वरी-नी॰ वीन वरवाशींशमा कमरा । -धारा-१ ण्ड वरहका सेंद्रह ! -परश-दि (अगर्पे तीन पर) हो। -पाष्ट्र-स्था सीक्षा प्रेसा कदशेका तीम पावीका स्व भाषार । -पादण-वि शांत पार्टेखा । -वसी-वि (बारपार्वकी एक बुमानट) विश्ववे रूप (उरहुए स्टब्रे समाया थवा हो । --बारा--ब॰ डीसरी शर । दु॰ तीन बार बतारी तुर्दे शराया तीन ह रीवाना दमरा । ~साझी~ स्री : तीन मारेची एक तीज । -महासी -स्री : तीव गरिवी, सक्ष्मी या गरिबीचे एउमें विस्तेनो अगर। -र्रवा-वि॰ वीम (वीदाला ।-शहा-वि॰ वीन शली के मिक्तनेकी करवा -शत्का-नि होन स्ट्रेसा 🕆 प्रत्यर गडनेकी यह हैना। —लही-मोश्यनेय स्र गमेकी ग्रीम करियामी यह माना । -श्रीका-त रे 'विकास । - •पसि - प्रविद्या । - स्रोधमां - प्रवेश विसीयन । -पास -- च नीत (स्व : -पासा -बार्म्या-वियोग रिमंतः।। तिकार-मा निया मा। तिष्राद्वां – वि॰ विग्रद्धा संस्थाः विषयः दीनेके हा। पुरुषे ४५ वें तिम हातवामा एक शाह । तित्रहारा - ५० वै 'स्वोहार १ तिक्यम-१० व्यस्त शिक्षः तिक्वमी-वि विक्रम करनवाना । तिहा-था वार्य या यंत्रीकेंद्रा वह पत्ता जिम्हर वि रंगकी साम बृदियां हो । तिक्ला - रि. लीक्ष्य क्षेत्राह्म वाष्ट्र व विकास - विकास तिकस्ता - भ निरुद्ध । तिन्द्र−नि [र्ग] दोना चरवस ओ स्वादमें निर्• # के समाग की। सुनचयुष्ट । यु ६ रह्मों में थे एक (बह प राय नवन्त्रर काना है पर कान बन्तुनोंने की हैं। करता है। वनुमें गुरुधे अबनशो बड़ा दीवी और 🗄 मात्र बंदता है।। मुगंपा विचयपता मुख्या दशा हर -कद्कि:-गो गणताः वनस्थाः -क्टि-! विरावता । -गंधा -गंधिका-मी॰ वरादी वीरः वरा काराम सरमो । -र्गक -स्ये क्रंब । -एव-उ॰ गि आवनीके बीयन सेवार दिवा हुआ वृत्र मी हुइ दिया अवर आदिमें तिया अशा है। -में सम्म-मी चेरा -मुंडी-सी ४इन्से स्था । -मुची-सी निर्मार्थ -पुरचा-भी जिल्लो व्यर्गशीत । - बानू-की रि बानु । -पत्र-तु क्रवरील, देखता । -वर्गी-मे वेदशा - प्रयोक्ती हुन। इरहरा न्यायु हुरहरी गुरुवा - मुखा-भी प्रदान विश्व शीव जिल्हे पृत्व त्वाद विष्य हो। । -- प्रम्य-पु व १६ मृद्यः वर्षातमा स्ता -क्ष्मा-क्षेत्र प्रवतिना त्या वार्याचा सर्वाच (TR 4) 1 - HET-3 WITE: 一年1月7十年4 कार । न्यवान्त्री इतिमी । −गरिच~5 -शेक्सि-में कुरबी : -ब्रप्ती-भी नुर्व सन्। -शाक-यु वस्य हर्दाशीका देश वर १८ दस्

भारि पद्मदर मोज्य परार्थके साथ सानेके काम आते है सम्मी, शास्त्र तरका देकर प्रकाषा अना खाक, सम्मी भादि । तरकी-को॰ पुरुषी तरहका कानका एक गहना। सरकीय-सो॰ विश्वी मिद्यानाः मित्रावटा रचनाः उपायः र्ग तरीका। सरङ्का - पु॰ वाद । तरकरा-प तरकसी*--थी कानका व्यक्त गहना त्तरकी। तरकी-की॰ भि॰ विद्वति कातीः पर प्रक्रिः गोबेदे दरवे से कपरके दरवेगे जाना ! सरक्ष सरक्ष-पु॰ [सं] एक छोटो जातिका शब । तरकारी - प्रामीका तेज बहान । प्रस्तान-प्रदर्श। तरणाना रूच कि भौति है इग्रारा करना । करज−पुदे 'तर्ब'। सरजमा-म कि बॉटबर शेवनाः पुरुवनाः। तरजनी~को अँगटेचे पासको संगक्ष सर्वताः ⇒ सद ₹€ I सरमीला*−वि होपनुस्त्र बग्र। सरजीइ-सी [म] प्रधानतः; कः बहुकर होना, महस्त्रमें मन्द्रि होना । सरहर्श −मी छीत्र सराज्र। प्रस्तमा-पु॰ [ल॰] अनुवाद प्रस्ता । त्तरह्मान-५ [अ] अनुबाद करमेवाला । त्तरबाहाँ -- दि॰ इ. दा उम्र । सरम-इ (सं॰) मदी भादि पार करमेक्ट्री किया, वरमा। रबर्ग। छोटी मानः नेकाः टॉकः कराभूत करमा । सर्गि-पु॰ [मं॰] दर्गः विरमः मदारः वाँवा । स्मी छोगे भीना । दि॰ शीप्रगामीः तयः बत्नादी । —जा —तमया -तन्जा-स्रो वसुवाः यदः वर्णवृष्ट । -तन्य-पु० दे॰ 'तरनिमुत । -धम्य-मु+ शिव । -वरक-ब मानद्र पानी वसीवभेदा पात्र । -श्य-पु मानिनय । -- स्त-पु दम शनि दर्व, सुग्रीव कारि । -- सुता--स्ती वससा। वरमी-स्री [सं] ४इ३ हीसाः पोकुमारः वयशारिनी परवरासा−वि (कावान) जिसमे (यो) श्रुता हो । सरतराना॰-भ॰ कि दे 'तहनकामा । र वहना । तरतीय-को [भ] कम निस्तिशा शरत्-की • [मं] द्वव नेहा। कार्य्टव पश्री । वरकी-सी [मंग] पढ देशेला देव । तररीय-की [भ] स्र बरना शंहन। तरब्दुर-१ [अ•] महान चेशानी। विना सीच फिक Witti 1 ताहरी-भी [मं] यह प्रातान । सरमञ्जू हे 'तरम स्थाना। -सारम-दु उद्यार Etitielt auft ! सरमा-भ कि पार दोनाः नैरमाः भरवंपनमे शुरुकारा

शनाः सः कि कार करनाः ४ तहनाः।

सरमाग-प पक पक्षी। त्तरनिक-प्रे 'तर्मि'। को देव 'त्रमी'। -मा -सनुबा-सी॰ दे॰ 'तरविवा', 'तरविन्तनुबा । सरिम्र • प्र सी० दे • 'तरिम'। तरन्त्रम~प [भ०] माहाप। तरपण-सी दे॰ तक्य । तरपत=-प्रभीता। सरपन - पु॰ दे 'तपन'। सरपमा - म कि दे 'तहपमा । तरपर-म• भीचे-कपर। तरपरिया - वि॰ नीये-कपरका क्रामें पहले भीर पीछेना। सरपीसा - वि तत्रपतार वामकी क्षा। तरफ्र-की॰ [ज] और: दगक । -- दार-वि पश्चपाती, सदावक । -दारी-की॰ प्रश्नपात । संश्वरामा १ - अ॰ कि 🏲 'श्वरप्रधाना'। धरब-प्र सारंगीने तार। तरबङ्गा-पु देशप्रतिमत्को नहवानेको शाबी । तरवियत-सी॰ [#॰] पालन गोपन करना परवरिद्य करनाः हालीम, क्षिप्रा । सरब्ब-पु का] वहरं जमीमपर फ़ैकनेवाको एक वेक ध फर वो गोक काकारका, वहा इस मीर वासीरमें उदा द्वीना है। सरक्त्रा- + प्र+ तावा प्रका । तरवृक्ष । तरविवा-दि तरवृक्ते रंगका, गृहरा हरा । तरबोबा - स कि वराबोर करमा, मियोना । अब कि वरानीर दीना ! तरमर॰-श्री 'तहातक'दी भाषात्र; सक्तकी-'नती वेद्धी वरमर मानी - छत्रप्रद्राद्य । तरमीम-को [श॰] दुक्ती संशोधन हेर-देर । तरराबा - स कि॰ वैद्या। तरस्र-वि [सं] इवा विकता दुलता। वरका दीजगामी। क्षणभंतरः जरिक्तः चमक्रीकाः ग्रेकाः लेकः विस्तृतः। हारके बीबाज मणि हारा होरा। सीहा। बतरा। सतहा तका एक जनपरा उन जनपरके निवासी। पोशा -सदन-पुण्क वर्गवृत्तः। -वयनाः-कोचमा-दिण न्त्री अपन नेत्रींबासी। तरका-ओ॰ [सं॰] ववाग् । सुराः अपुनक्रोः। तरमाई-की सत्त्वा इवाव । तरसायित−दि [सं•] देशवा या हिनावा द्वभा। प्र वड़ी हर्रगः अस्थिरता । तरसित-दि [सं] दिख्या द्वारा अस्विर प्रवादशीक। सरवर-पु॰ [सं] वक धुर आहुक्य बतकाहर । सरपम-प कानका एक अध्या संरक्षी। तरबर=-पुक्तम वृत्ताः तरपरिया॰-पुतस्वार भक्तानेशनः।। गरवरिद्यां-पु॰ दे 'ग्ररवरिका । तरपार*-मी॰ दे तसवार 1 तरबारि-को [नं•] शतवार । तरस-द दया रहम [र्थ] मांस । मुक -स्वाना-रवा बरना १

तिस्व∽तिरो तिरय-मी [40] विक्रिशासासः मुनामी मिक्सियास, सिरवत-पु । हिमालय और श्रीनके नीयका एक देश । सिय्वती-वि विश्वतन्त्रंशी विश्वतका । प्र• विश्वका निवामी । स्वी - वियवत्रकी भाषा । तिस्त्रिया−वि [स•] तिन्य-संश्रेषा ।--कास्त्रज्ञ−पु मुनानी चिक्रियाशस्त्री क्षिप्त दैनेवाका विधासय । सिर्यी-वि [अ०] तिय्व-तिथी। तिर्मिगिछ∽पु॰ [से] एफ समुद्री बेत वा हिमिक्से निग# सदता दे। - तिख-प तिमिशिक्का भी निवल वाने बाला समुद्री जेतु । तिमि-म । एस प्रकार । पु [सं] समुद्रः बहुत को मान्तरका एक समुद्री मरस्य। मरस्य । --क्रोच--व॰ समुद्र । विसे रंडने दशरक्डी सहायदास मारा था। विभिन्न-नि [मं] योगा द्वमाः गविद्योत रिवर, छात । विमिर-प्र (सं•) अवकारा कोराका वक रोग- निरमिशा भीहका मोरणा । - जुद्दा- वि॰ अवकारणाञ्चन्न । पु॰ सूर्व । -शिव्-वि शंभक्तारका भवन करनेवाला। g याँ। -रिप्र-प अवदारका शह सर्व । -द्वर-पु॰ सर्वः द्योपक । तिमिरमप-५० [मे] शहमः राह्यः। वि० अंपरारम मरा इंगा। विमिरारि-प्र॰ [सं॰] अंथकारका शत्र वर्ष । विदिशारीक-स्रो अवकार-पुत्रा अवेरा । पुत्र गूर्व । सिक्तिला−ग्री यक्ष श्रेगीन-नाय । तिसिधा−प्र•[सं]दे तिनियं। तिमिष−प सिंगोदध्या प्रदा तिष==मी • मी। वही । तियस्तां −पु गिर्योदा **२० परमाना** ३ तिया-स्मे दे 'तिको । वदे निष् तियाग 30दे 'स्वाम । नियम्ती १ - वि श्वामी ३

निर- नि का निगना हुमा शमासमें न्यवहन कप । —क्टा-तु देश विद्य । नग्रीय-निश्व विश्वमें तीय सीर हो। -पाई-सी हे शिव्यां । -प्रजानित निक्षा । नवेनी १ नवेश १ - अक्षामी -स्त्री है 'तिमुद्दानी । -साका-न हे 'तिसीक । नसक्ति साठ और तीम ३ प्र विरह्मक्की संत्या ६१। -शम-६० तील शन व्यमे विकास बरा हुआ । -सारक-पु देश 'विद्याल । तापत्रव । - हन-प्र मिनिना-मुक्तकरपुर कार त्रस्था। -हतिया-वि हिरद्रशस्त । व । रहतुमका निवामी सैथिल । भी । निर द्रवधी बीनी। गिरकमा−म कि दे शकना ।

तिरम्म - मी दे भूमा । निराशित्र - शिव देव 'मुख्य । निरदा-रि भी एक भेर बच शबर दला हो बक, बन व"बा मुक्ति। ~ई-सा -पत्र-पु॰ शिरहा दीनेश MIT I

विरद्धामा-म कि विरद्धा शामा। विरखे-अ॰ विराधियनके साम्रा विराधी गतिये । वित्रविद्दी-दि अचकुछ निरद्या। वितार्थिक-म दे 'वितारे । विरमा−अश्राह दे 'वरमा । वहरामा । तिरमी श्रमी जीवी प्रभारी है सिरप-न्यी॰ नामका वक ताल । सिरपटो-नि॰ एक नगण नुस्र सुद्धा दुना कर दिस्स षर्दिम । तिरयज्ञ−वि पथास और राम। प्र• तिरध्नको संग्या ^५र। शिरपाल-पु॰ पामील प्रचावके कामका एक भारत करता छ। बनके पीचे समावा अपनेवास। सरव देवा सहा । तिरिवतण-रि• दे 'तम ! तिरमिशा-पुर गाँगका रह रोग जिल्ले देरलेका एडि क्षीण ही जाती है, सामने पुंच शाबा रहता है प्रकाश अमुद्धा हो जाता है और शहका कुछ रिसार देता है। शकाचीय । तिरस्थितामा-भ• कि 🕻 'तिकविकाना । तिरक्षीन-वि॰ (सै॰) विरक्षा वक । तिरम्-भ [मं] यह शम्र भी अंतर्शन दिएएस् तिररंकार आदि अभींका बाप कराता दे।-कर-५० आप्छारक । वि रहा-सण क्ष्मा । -करिबी-मीर्ग क्षवदेका बना काच्छारमः परदा क्षमातः जरस्य धनेमें विया । -करी (रिम) -पु र े 'शितस्त्रीयी'।-पार-प्र व्यवसाय अवादरा क्षत्रहा । —कृत्य—शिः अदमानिक भनारत क्सिकी अन्द्रलमा की गर्ना हो। भागारित परदेने किराबा हुमा । -क्रिया ननी आग्रामित दरने भी किया दे शिरस्कार । विरामबन्धि मध्य भार तील (5 विरामस्योगस्या ६३) तिरामा-स 🕰 रायार तैरावा वा उदरामा 🗗 %रनाः प्रसार करना । विरासी=4+ भागा भीर वामा अ विरामी मे एका भी तिरिमिद्धिक-पु (ते) एक पूर्ध । विरिमः - इ द 'वम । निरिमः तिरिष-द [ए॰] एक धान । तिरियाण-स्थे की भीरत । न्यरियर-पु मीधे **११७३) प्राप्ते वा कार्यक रहातेक्षे ध्वरारे ।** तिरीया॰-वि दै॰ विराम । निरीय-म निर्णे कालबा देश किरोट ! गिरीकम−९ दंगी १५४ € तिर्देश-पु शमुद्रमें तेरका द्रव्या दोवा जो वाहरेक्क ब्राह्म के दिन स्थाना नाथ वर्षनाद्ये बोरोपे कर हो होते. अक्षी भी वनशानी रहती ह यजराभरता बाद बा रह शरहरी कीर्र थीन जिसके लगारे मारे मारि बार की बाब है मिनी-'तिरम् का स्थान व क्षा - बाम-इ सिरीत या वर्षिये जीतम बीज का ब. नदी दिया अंतरीय जीता -धायक-ध अवस्य था क्रीपन करनेवाता रियाने वाका तुप वरनेवाना । जन्नाय-पुरु देशः विदयः । --श्रम-दि॰ अंतरीत द्वार भारत्या गुन । - दिश्र-दि

हे निर्देशमा । भाष्ट्रविष्ट दश्य प्रभा ।

eu l - साम । विवाह विकास क्षिति है । विवाह तरेया-प तरसेवाकाः तारनेवाका । की तारा । सरींच-सी॰ हे 'सरी छ'। मरोबं-की दे 'दर्द'। तरोता∽प पक लंबा दक । सरीबर=-प देश 'तरबर । स्रोतिर−सी तसस्य । स्तीता-प चनकीका निषका पत्थर । सर्वसम्बन्द रहा क्रियारा । सरीला-प॰ कालका एक गहनाः सरकी । तर्क-पु [संक] कहा जिसके दारा जारणका स्वयासन करतं इद दिली वरतंके अदात तत्त्वको जाना जाया न्यांक शास्त्र वृक्ति दक्षीया विवचना दक्षाः स्क्री संस्काः कारण ! -प्रद्य-पृष्ठ स्वरुशास्त्र-विशे संव । -साता-स्रो शक्तिक प्रपासनामें शक्ति पक्त गड़ा । --विसर्क-प॰ कहापीत । -विद्या-सी० स्थावशास । -आस-प बहु शास जिसमें गर्बरे, तिबस सिजांत जाति जिल पित हों (गीतम और क्यार इसके प्रवान आवार्य माने काले हैं)। सर्क-पु• [अ•] छटना। परिस्थाग किनाराकः।। सी बह बाबब आहि जो गर बानेके कारण हाश्चिमेप किया मया हो । - (कें) अदय-ध शुरुतासी । -इनिया-प प्रभीर है। जाना । -- सवाकाल-प्र असवनीय । सब्द -रि , पु । [ए॰] तक करनेवाना तर्द्वधारवी। बाबी: पत्ततास्य दरनेवास्य । तर्कण−प [मं•] तर्क करनेकी विका । सक्षेत्रा – रत्री [सं] तर्व बरनेकी फिनाऽ निभार । तक्ता-त्त्री दिवार: प्रक्ति। * अ कि विचार या तर्वे करता । लचेश∽त हे तरहरा'। सुबंसी-स्था दे 'तरक्सा । सक्तांसास-व (संब) मकत तर्व, गरुन परिचाम-निका-समा: ऐसा तर जी कपरने सही बान पड़े पर हरजनल गतव हो हेरबामास ह सकौरी-स्त्री [मं] यवंती कुछ । त्रविष-त [सं∗] क्दर्राः। सर्वित-वि [तं] मनुमिना जिनपर सर्वे विद्या गया हो: प्रतिक्षित्र । तर्वित्र-पर्श सिंगी यहर्वेह । सर्वारिक शासक्तिम केल [40] स्त है कि माने केल स⊈-प्र[सं] तसमा टेकुमा ! ~विंद्र-म सम्प्रकी हिस्सी । स्टुब-दु[से] पाने माथा । मनुरी-रती [तं] दे का । सर्वे-६ [में] एकं करन बीध्य निवारन बाध्य ह सर्हे-द्र [०१०] तेंद्रमा । सर्प-९ [4] अवासार । तर्ह्र-५ [स] रोति शंगी देवा बनावर । तर्जन-त [में] भमदानाः शेंश्माः स्रामाः क्रोप । सर्वेगा-स्ति [मं] ॰ हतन । इ.स. मि. शॉरना स्थ-रमा। १ भ 😉 मीपने वापना ।

अपीत संशिक्ष प्रयासमार्थे शाक्ष्मी एक महा । क्रक्रिक्र⇔कि (वंश्र) सप्तागतिला भी फरकारा संग हो । तर्जमा~प [भ] दे॰ 'सरजमा'। सवा-प॰ सि॰) बस्दा । अर्जन्य-प सि विज्ञासम्बद्धा पेता दशा प्रशासका । मर्जि-प॰ सि॰ी सर्पर वेदा t शकरीक-प [तं] एक प्रकारको नौका। वि पार आनेवाका । तर्व -स्त्री (सं॰) बोर्र । लर्पेण∽व सि•ी राप्त करनेकी किया देवताओं कावियों बीर दिवर्रोकी दिए वा तंत्रसमितित पर नेत्रों किया। अधारिका र्वजनः आसारः व्यक्तिमें तेल भरना । जर्तनी-स्त्री+ सिंग्रे एक बहा: गंगा I सर्पणे**या**-प्र• [र्च] भीष्म । सर्वित-दि सि] चम दिया हुमा । सर्पो(पिन)-वि ९० [थे॰] राप्त करनवाकाः तर्पेण बर नेवास । लर्धेट-च मि] घनवें श्राप्त । सर्वज्ञ-प दे तरकृष्ट । लम्पोमा॰~प वे तरौना'। कर्च~प॰ (सं] अभिकाश तथ्या समहा नाजाः यये । सयज-प्र• [सं•] पिपामा नृपा। इथ्हा । त्तर्पित-वि॰ सि॰ो प्यासाः इयस्क । मर्चक्र−दि सि वेर 'वर्षित'। सक्क~प॰ [र्थ] निषका मानः वह मान विश्वके वस्त्र कोई वरत रिवण की। पेंदा पेटा नतका सनी-काडी बरसाका छपरि शांग बंगक प्रत्यंत्राके कापातुमें बचनेके सिप बार्ने बाववर पदमा जामैबाका चमरेका धोकः मदानकी छतः बंग्यकः इवेकीः राजवाः राजवार बान्तिके मुठः वारे बावसे बीचा बमानाः विम्मताः गददा मौदः तारः शिवा सदस का थ्या माना एक क्योंहोना सामाना कारण देता। -कर-त वालाव कारियर क्यतेवाचा कर । -कीर-य वद देश । न्यर-प्र• [हि] नदराला । न्यास-व व्यव !-बट-स्थी [(हे॰] पानी शादि हव बदावी में मीचे बैठनेवामा मैस । -सास-प्रदानमें बनावा वानेवाला एक बाबा। वर्षाती ! - ब्राण-पु अवसे द्वेडी-की रहाके किए पदना जानेवाचा रामहका दरना। -महार-म व्यव -माद-म दे 'व्यवस । ~सीम-इ मधनी । -सोक-इ पातान । -पारण-पुरु सल्याया तनवार । -सारक-पु सेवका संग । ∽क्षप्रप−प तन्त्रसार्वेद्र। सम्ब-त [र्थ-] नालावा विद्याद्या बरतमा एक तरहवा शमदाक्ष सदा करकीय∽श्वी कि विधानाभोकः शहरा-वि [पाण] दश्या । तुलमा-स कियो पा स्थ्येपश्चमा। ललपर-पर्वे 'तरर । लहरमा॰−म कि॰३ तन्त्रमा। सम्म - वि [थ] मह बरवा सवार । व स्था बरवा

विषस्म-पु॰ द॰ 'विकिश्म । विस्तानि है भीविहरमी । विस्टब्स-प॰ प्रसन्तरे रूपरे बोरी वालेकार तेकड बीचे ! विस्नक्षितदस~प॰ (सं॰) हैनसंद्र। विस्तिक्षक-सी सिंगी औरप्येटेडिक अस्वका यक्त बांग निसमें दिए मृतक्रके माम तिक्रमितित जरुकी जंबकि हेते है। বিভাব−৭• [শ•] ই• 'নিনাহছি । विका-प नर्भरता नह सरनेवाला यह शल । तिखाळ−व दे॰ 'तसाकः । तिकाश-१० वि । तिक्यो विकशी। विकायसा-औ॰ सि॰ देखा बीरा । तिकित-न [र्थ•] ₹ग्र-दिशेच। तिमित्य-५० मि । भवगरः गानस सर्वे । तिविस्स-१ भि ने नातः श्रेडवाकः वेडवाकि स्थानाः मारे हर वय कारियर यमाबी हुई सर्प बारियो सहावजी भाष्ट्रति बाहुको रेखा वा विद्या अरु -ताहमा-बाह या करामानका भेद छोन देशा । तिम्बर्का - दि॰ डिसर्चे तिहिरमद चलकारका कर्तम हो। तिकित्यस्य संबंधी । सिसी-नो॰ रितमी। है निका रिती। तिसंती-स्था तकहन सार हेमेपर येतमें बची वर्ष कही। विसासमा-सी [र्थ] एड अप्सरा जिमे बाते है किए मंद और चपमंद आरशमें कह यरे थे ३ तिसोदक-प्रमिद्ये 'तिसंबक्षि । विकारी ! - मी एक प्रकारको मैनाः निकीत । तिसींद्रना-स॰ कि॰ तक कगावर विकास बरना । तिसींबा-वि तस्य-हे रवादशकाः विकास तिसीरी-रत्री निक मिलाबर बनायी वर्ष करे वा मूंग-की शरी। तिक्य-दिश् (संश्री तिरुक्षी होगी देशस्य । प्रश्न निस्त्रा धैन । तिहा-५० इतारच् माहिसा समा दुष्ट्रा वयनी मारिया बह मार्ग जिसपर कनावच मारिका काम हो। विहा-रबी श्रीका निक तिस्य-द॰ [सं] दितस्य नन' धीष । तिस्पद्ध-५ (ग्रे॰) शिविष्ट । तिबार्शः तिबारी-इ हाड्य-"द्ये दर क्यानि जियाये । तिधाना-द धाना ध्यंत्व । व भी तृष्या । तिष्ण-विश्वनाया द्वा द्वितः। तिहर्ग-पुर्व (सं) दीहमदानः भव्यः । विश्वमाण्यम दिश्वासमा सहस्रा । क्रिशा∼की विोण्डमधी। तिरप्र-प [र्ग+] पुष्प रखन भीत सामा क्रान्त्रम शकाह क्षांत्रके पढ गाँदा माना हि शुक्त दिन्य क्षत्रपे बारका मानदाकी ! -बेनु-इ शिव ! -प्रशा -बामा-को आधनको।-समिता-को नगा असीह की क्षेत्रा सन्दर्भ निष्पक-पु[ग] योग माग । विषया-भी [त] सारापदी।

तिष्यत्तव-दिश् शीरत । तिमां-मर्व गा का इक रूप जो को विज्ञानियों प्रचल होता है । -पर-शब नसके शन्त एमी विश्वविके कर्नार. इतना होनेश्र मी । तिसलाक-की है 'लक्य'। तिसरायन-सी॰ तीमरा श्रीनेका मात ! तिसरित-प बड व्यक्ति को दो पर्योक्षेत्रे दिनो १४६० मी म श्री: शीमरा स्वक्तिः मध्यरथ र्वयः शीगरे मानता सर्वकारी । विसामा = - न कि प्यामा होता, नरिन होसा है तिला-सी॰ (तं॰) शंरापधी। विक्रचर-दि संघर भीर दोम !त निक्रमधी गंगना, औ। विक्रश-दि देश सदरा'। विद्याया-स॰ दि॰ है॰ 'वस्ताना । तिहरी-भी॰ तीन करोबी यानाः रही बनानेसा मिहोस टीरा बरहर । विद्यार-५० वे॰ 'खोशर । तिइयारी-न्धे॰ दे 'त्याहारी । तिहा(इस्)-प्र [मं] राग भ्याचि सहारा भाषा धनव (तिहाई -मी वीचरा भाग तीमरा हित्साः क्रम ! तिहात •- पु दे 'विदाय । विद्वार विद्वारा विद्वारो - गा तथाय । तिहास-पु॰ क्रीप रीमा निगात ! लिहिक-मर्व दे 'लहि"। निर्देश-वि रीमी। विद्या - इ वीसरा माना वरनेन्द्रे एक विशेष गत । सीप-न्यं स्थीः प्रश्नी । क्षेत्रर-५ तीन दिग्सीम रूपहदा देशारा । तीराण शीक्षन ७-- वि ते तारण । शीरण-वि [सं] नव मोद्य मा तम पारवामा होत बुद्धामा कारा तत्र भीता। सुधना हुमा। मर्गनेरी। वर्ष तीगा। तेम वा चर्चर म्यादक्षा प्राव्ह गंबवाचा। करेंत भाग्यत्याचीः भागस्यस्थितः निम्म, भारतः तारस्या त्र विष अहरा श्रक्त भीडा। त्रसा मरणा मरीर संभा श्वरा। ममुद्री नवद: ज्यायार। तीपदा दद मेर, अवदा दरेन कुता। बुरस्का मूल आही व्येश और मार्के महाबोद्दा गाम । -कटक-मु मनुख्य देश रंदर्गरा वेश ब्यून्टा वेश करीत्या वेश । -ब्राट्सा-मी वयर्ग क्षा देश । - क्षत्र-पु करांद्र । याथ । - क्यां(सर्)-वि , पुरु बालाही (-बक्क-पु मुंदुहुदा पेह र न्वीपान की यह देशी ज्ञानपा ! - श्रीय-पुर महत्रवरा हैत स्टब्स हिल्ही हुईस शास्त्र संबद्धमा । नर्गपत्र न्द्री सहस्त । -शीया-क्षेत्र वया हार्व क्याहित है। जैसे-द्वारी बलाव-११ -संदुष्ठा-स्री दिनकी रेपने। -aid-A fat -fie-d gatet fat te. रक्ता - वृंद्व-पुर बचारि द्वार योगेवाता । - धीन वि विवाह क्षेत्र शास्त्र दश्यायी ! - भार-3' बह तन्त्रहोति लक्ष्मानाना । -पष-इ दीर १४१ -पुरद-तु होग १ -पुरश्न-भे र वेबसे !

रफदर तंत्राक् पीनेका योज ठीकरा । सूक -सिरसे बॉबना-सिरपर चोर सहनेके किए प्रस्तुत होना ।-(वे) की बँद-मानदबक्तासे बहुत कम श्रमस्थायी । सबासीर-पु॰ वंसकीबन । सवाज्ञा-स्रो [म•] बादर सम्मानः दावद । तवामा-स कि गरम करानाः † कोई चीव विश्वाकर किसी पात्रका मुँद दंग करवाना । वि• कि] मोधा-साना । तवायक्र-सी [म] रंटी वेदया (तावकाका वह , पर दिशीमें एकक्यनमें प्रयुक्त)। श्वारा-प्र अकन्, ताप। सवारीख़-सी [म] इतिहास । तपायन-ली (थ) स्नारं विस्तार व्यथिकताः अमेका । त्रविय-प् [मं] स्वर्गा समुद्रा स्ववसाया द्यक्ति । वि बकबान् सक्तियाठी बस्तादी। समिपी-सा [मं] सकिः हम्बीः नदीः रहको एक पुत्रो । तवीं −सो दे 'त्रं'। तवीप-द (रं०) स्वर्गः समुद्रः स्प्रेमा । तसस्वीस-सी [निश्वका रोगका निवाना सगान निर्वारित करनंदी किया । तरावृद्व-पु [म] भाग्रमण धरनाः सक्ती स्वारती । त्तराशिक-की [म] श्रमत करना आदर सम्मान इन्ताः स्व-रप्नना-विरादना वासनस्य होना। -सामा-पंदारमा । - छे जाना-पंका बाना । तत्तरीह−सी (व०) व्याप्ता। वस्त-प्र• (फा) बाली पराश जैसा दलका, शिएका बरनम । त्रश्नरी−स्तै ए। धेरकारी । तप्ट-विक [संक] छोता हुआ। इका हुआ। तथा(प्द्र)-पु [सं] वहां श्वकारः विश्वकारां बक भादित्व । तष्टी = नो पद तरहको रकाशे। स्तर - विशेषा । म वैसे हो। वसकीन-की (भ•) मांखना वसही। तसदीक्र-त्या अ प्रमाणित करना पुष्टि समर्थन । तसरीहर-नी शेहा बहा तसव्युक्त-तु [स] पुर्वामी भक्ति दाल रीरात ! वसमीक-मी [#] प्रंथरपना। समक्रीया-पु [भ] परिश्वारः समझीवाः वसनाः। वसमी-भी दे 'तम्रीह । तसकाह-स्रो [स] माका सुमिरबी। त्तसमा-५ [का] वमह या गूनको भीती वड़ी था किमी बराहा दमनेहे दाम बाता है। ससर-पु [तं] हे 'रमर । जुलाइमधे न्रद्धे । समान्द्र बरीरेक्षे रहस्य द्वार वहा और गहरा बरतन । तससी-भी होत तमका। नमसीम-भी [#]श्रमिक्तमार्थनीकारकरनंदी किया तसहसी-सी [स] हागा, दिकाना सोवसा । तसबी(-मे [स] विद। तुर्-पुर स्मारनी कामरी एक माप ।

सरकर-प्र[त] भीतः एक शाका मात्र वृक्षा कथा।

—वृत्ति—तु पादैटमार । —श्मायु-पु काकनासा श्चीबाठींठी । तरकरी-साँ॰ [सं] चोरकी स्त्री। चोरी करनेवासी स्त्री। एम स्वमास्क्री सी। सस्य-वि० [सं•] स्थानर व्यवसः । तस्वीर-छी॰ वे 'तस्वीर । तह, तहवाँ+--भ० वहाँ। तह—स्त्री [फा] परतः दे॰ 'ततः । −फ़ाना–पु० बमीनके मीचे बना हुआ कमरा या घर ।- हुई -- दर्ज --वि॰ विक्कुक मना (कृपका मानि), विसकी तक म राजा हो । -नहर्गि-वि पामी मगर्दमें नीच पैठनेवाकी (बीज)। -मिशाँ-पु॰ तकवारके कम्बेप्स होनेवाला सीने आदिका काम । -पेक-पु धनकोई गीबेटा कपड़ा । -पोशी-नी॰ साइन्डि नीचे पहलन्द्रा पायप्रामा । - कद्र-पु० र्तुनी की प्रावा मुख्यमान यहनत है। −वसह⇔स• तहपर तह। -वाज़ारी-सी वह नेंभी हुई रक्षम भी वर्गीदार या टेटेदार वाकारमें मीदा भगनवालींने वस्त करता है। - मत-द नुंगी । -(हो) वासा-व उसर पुरुद । सु - देमा - इन तैयार करममें अमीन हमा। ~(हे) दिलसे-सब्ध दिल्छ । तहस्रीक - सी॰ [अ॰] बसस्यित मासूम दरमा, दिसी बरतुके संबंधमें संबाईकी साम करना जॉन पहलात । सहद्रीकात-स्थै किसी मामते वा परमाने विपवाँ सरकारकी कोरसे होनवाकी आँच पहलाका दे 'तहस्रोक्क'। सु॰-धाना-क्रिमी मामडे वा परमाक्य जॉबके किए विश्वेष अविद्यारीका आना । तहज़ीय-मी [अ] सम्बना, ज़िहना। --पाफ्ता-वि० सम्ब दिला। तहमा० – अ० कि तपना शुक्क दोना। तहरमुक-पु [ब] सबदे मांव महना, वर्शस्त्र । वहरी-लो॰ एक प्रकारकी विवरी। तहरीक-नो॰ [ध॰] गतिः वत्तवनः वस्ताना वहावा देना । वहरीर-मी [ब॰] तिरास्ट निवार, विसन्हा हंगा किसित प्रमाण्य लिसनेको समस्त । तद्दरीरी-विश् निरिस्छ । तहसका-प [व] ग्रतवडी हथपत । तहसीस-सी [न] अभिग्रीवन पापन इत्रम। तहर्यो •-- भ वहाँ। तहबीस-नी [अ] बरमना इवान करना; अमामतः बिमी मन्द्रा रूपया जी बिमादि पास जमा दी। - द्वार--पु वह जिसके पाम विश्वी महका रुपया जमा रहना हा । तहसमहम-वि बर्बा एवंबा मह। तहसील-भी [अ] बग्न करनेका जिया; मानगुपारी बगुष बरबा: बामगुबारी की दिनी दिनेप प्रवेशन नगाई। वादी है। विन्त्रा वह भाग का तहसील्यार्थ अभीम रहता क्ष वहक्षारभारको समस्यो । - सार-५ प्रस्कारी मान मुबारी वसून वर्मेवालाः मानके मुद्दसम्बा एक नवस्तरः मानगुत्रारी बर्ज बर्जवामा । -बारी-सी नदसीन हारमा बाह नहमीण्यासा साम १ —वार—वर एड-एड वहसील परने ।

सीर्घादन - प्रमिन्ते संस्थानम्, सीर्थवादा । सीर्यिक-प्र [चै॰] तीर्थका प्रासम, पंताः तीर्थकरा मीर्वयाची ।

तीर्घोदक−५ [सं] तीर्वका बला।

सीर्च-प्र• (सं•) एक रहा सहपाटी, गुरुवार्रे । वि• तीर्व-भेरपी ।

तीर्में=~नि दे 'तीर्पं'।

वीकी-सा समार्थ, मोदी सीफ वा रायधी। रेजम क्येडमै-द्धा परवीका व्यक्त और एर ।

सीवडें = न्यो : स्यो, ओरत - तीवर दर्वेट सुपंच धरीह

वीपर~पु (सं•) समुत्रा बहुआ। बदेशिया। व# वर्ष-संबर पाति ।

सीय-दि [गं॰] तंत्र, तीर्या बल्युच्या कड्डा असका भोरका नितातः चल्वभिष्ठा हुतः वर्षप्रः कुछ छँमा (स्तर) ! इ. शीरचवा। शरशकः चेंगाः क्रोबाः श्रिषः शीरः पुरु ।-ईंटा-कद-द्र स्ट्राना ओल !-शंदा -गंधिद्या-ह्यो सबबायत । "गति - वि विश्वकी गांख सब हो । पु॰ परन इदा। सी तत्र बाल, दत गठि। ~उदास्त-रतीः धरमा पूछ । –शह-पुः मृद्ध विश्व । –शहि-पु स्प । - क्य-पु वनेशुष । - वेक्बा-सी बीर थावना । --संबग-ड्र ठीज बैराग्य ! --सब-ड्र॰ श्र्य बिनमें समाप्त श्रीमेनाका यक यह पदाद बड़ ।

र्सीमा-स्त्री [म्ं] रार्र: तुल्मीः गविरदुवः कुल्बीः यश क्वीतिन्मतीः तरदी बुधः बधावनी बडी। यह मृति (नंगीत) । श्रीमार्नद्र∽प॰ सिं] शिव सक्तरेव ।

सीब्रामुद्यग∽द्र• [सं] यह तरहड़ा भनिवार (त्री); बाबद मेमा

द्यीम−वि भीष भीर वस्र । दु॰ तीसको संख्या ३ । -सार साँ-वि वॉका वीर । -(साँ)वित~व सन्त र्ख्य ।

वीमर॰-दि तीमरा !

सीसरा-वि क्तरेंडे बाद्या, तो सततें दीने बार वह भा निनदीमें तीलके रवानपर बी। वी दीनेने बिसी पदाया म दो गैर्। पुर देश क्लिरेट । न्यहर-प्र अवस्थ। सीधी-सी॰ रह तनहम जनगी है

श्रीद्वार्ग-प्र भीएज, काल्मा विकार दार्श्यक्षा । र्श्ता∽वि॰ (सं॰) क्रेंया कक्षणा बन्ना प्रचान ३ पु० बुक्रायका पेश मारिका वर्षमा मुख ग्रावा शिवा विश्वा विश्ववना श्रिपुरीक्षेत्र क्या शास्त्रिः वक्षः वक्षः वक्षः व्यापा करावी पेता हें वार्षः वतार स्वतिः विशापन !- नाय-तु शिनाकदवर हिन्त एक दिश्किम तथा एक शीर्थश्याम । न्यास-प क्द ब्रारीका बीहा । -मान्य-नि अंनी मादशका । -बाहु-इ मनदारदा रह दाव । -बीज-इ दरा । -भार-पुर यस दानी । -महा-नी दरिय गरानी रद्र मरी । -सूल-पु॰ वैशा ।-रस-पु वह अवहम्य । -बेचा-सी बहास्पराये वित्त वह वरी ३ न्हास्तर-40 44 F b

र्मुगद्र-दु (वं॰) दुक्षण दुक्षा मागरेग्या दक्ष वरिष *वन* भार' सन्दर्भन गामि कविबोधी केर क्लाबा करन व ह

र्तुना-मी [तं] वेशबीयमा श्रमीका देश एक प्रश मैयरकी एक परी ह तुगारच्य-त [रो॰] भोनगाढे समीन देवराडे डिमारेस व्यक्त सीर्थ (यहाँ अन्तरक बंगल है और सब भी देवा समक्तर है} । र्शेगिनी-ग्री+ (सं=) महाश्रुतावरी ह तंगिमा(सन्)-न्ये (सं•) केंबर्म । र्तुगी-स्पै॰ (सै॰) इहसी। राजिः वनतुक्सी ।~नास~५॰ क्त अवरीता कीशा । --पति -- प्र⁻पा । तुंगी(गिन्)-वि॰ [हं॰] हैया । दु॰ ज्यार मह । र्मुयीश-पु (लंग) दिवः कृष्णः सूपेः बंद । श्चि-पु (do) बाबातः आक्रमणः वज्र । र्त्रद−त्र॰ [एं॰] मुखा मुसदा मागेडी भीर निक्रण द्वार भाग क्षनः शोधः इतिवारको मौकः तत्रवारका सम वत्रः शिवा यह राहस: दावीयो मूँ र I-दोरिका-मी॰ दासा लेंडि-द्र [मं] हैदा योंचा विराहन । सी नावि । —केरी—श्री= छानुदा फोना (निनक्ष ! —केमी−कीन कॅग्ड । -चेस-५० रह शोमनी स्वतः। र्तिटेक-वि॰ [एं॰] भूधनवामा । लंडिका-न्या [श्रं] नाथि । तुंहिम-दि (तं॰) बसरा हुई नाभिराना। (छाने हेर मिक्सी हुई हो। र्तृहिष्ट~ि॰ (ઇ॰) बहुत बोलनेबाला; बिसको माधि निष्मी षा वयरी हुई हो। तींदवाना । र्लंडी∽स्पे (सं}भाभिः रहतरहस्र क्रमदा। हौडी(डिन्)-वि [लं०] मेंट चीव, बदन या ग्रीने प्रैड पुशिवका मंदी। ७ समेह्या तुर्न्- (विश•) तीयः क्षय सर्वर नेयापुर्व (तं•) नान्य रें। ठाँ र । ∽कुविका ∽कुरी=स्ते। सामिका गाँका। र्श्वदि-न्या (मे॰) देश साथि। -क्श-ड वामि। तुंदिक-वि [र्न•] क्लिका बरद बड़ा की जिमे तीर की। पुरिका-सं[मं] वावि । तुंबित, तुंबिम-वि [बं] देव तुंतिको। तुंदिल-दि [मं] है शान्द्रेश - एका-को॰ वसी रदेश है र्शरिसीकरण-पुर् (तं०) पुनामा। शामा । संदी-र मि मिलाल । तुर्दा(दिक्)-नि०(से हिंदे तुम्बित र्वेड्स तेंड्रा - वि त्रिन तीरकारा मुंब-पुरु [र्थन] लोधो श्रीमा। गुँगाः कांगमा । लंबर-४० [र्ग] सामद्वरात शुंबर मामद संपर्व ! तुंबरी-भी दे 'नेंदी र [शर्न दक्ष क्या । श्रेवा-ओ॰ [ले॰] कर्द्रा पुषार साथा पुष्पराप । द्र बर्द्द ो बना गांव । लंबिरा∽स'्शं] यर हे कीदी: नेंगी । तुँकी-नी वि देशहरे कीदी दन भागीता शनदानना हुआ होता कर । तुंबद-पुरु [तरु] हद प्रतिह संबर्ग-देशमानी वन्त्र सर्गन्यः

शक्तमद्वा प्रतिशा QMe-ciée Assitt : तुरु वालकाह । वि काज के संगका । —पोसी—सीरु राज्यामिषेका भिंदासनाक्य दोने या वात्र बारण करनेके समयका बत्सव । -वस्ता-पु॰ वह सम्राद् वी वादशाह वसावे वर कारे हथ वादधाकको फिर वादधाक बनावे। —बीबी —सी॰ शावबडॉस्ट प्रसिद्ध नेगम समताबमहरू विसके मक्तरेके स्पर्मे ताजमहरूका निर्माण बन्धा -सहस-प॰ साहबहाँदी वेपन समतात्रमहरूका आगरा-रिश्रत प्रसिद्ध शीक्षा (इसकी गणना संसारके सप्ताव्यनी-में है)।

ताज्ञक-पु [फा॰] यद ईरानी काति। ताजगी-ता (फा॰) ताजा होनेका भाषा भवापना खुला

पन वा अम्बज्ञाहरका समानः मोति वा धीनतगरुः।

साधम तासमार-पुर देश 'तारिवाना : अचेवन देने बाकी बस्ता यंद्र । साजा-वि (फा) इरा मराः वो स्था वा मुखावा

हुआ न द्या पीने वा पैतने तत्वासम्बद्धा तीवा हुआ (पुष्प फलारि) शरदका वैवार किया हका। तरहका निकाण इक्षाः वी वर्षिक दिनोंका का वाली श हो।

साजिया-प (म) गॉलको सिहिमी, श्मीन कागमी भारिका बना हुआ वह कॉन्ट जो बमाम बसन भीर रमाम प्रशेसके सक्षररेकी बाक्षरिका बनावा बारः निवत स्वानपर रफनाया बादा है। ग्र॰ -हता होना-ताबिने का रफनावा बानाः किसी वह भारमीका देशांत दीना !

तातियामा-त [का] वश्च कोहा। शासी~दि [फा] नरनी नरनका। पु अरनी योजाः

विकारी क्या। यो अरवी मत्वा। वाजीम-भी [स] इसरेकी वहा समझवाः वहींके मति

मारर मार अराजन करमा । वाजीमी सरदार-५ (फा) वह सरटार विस्तरे ताजीम नमधाद भी करे।

सामीर-सी [अ] रेक सना।

वाज़ीराव-मी [म] 'वाबीर'बा बद्ध । -विक-श्री यारवर्षे प्रदोगमें भानेवाने कीवदारी कानूजीका संग्रह मारतीय दंढविदास ।

वाजीरी-वि दंशरमकः बंटरपर्ने तैनात या कगाना दुवा। (पृक्षित कर आहे)।

ताम्ब−९ दे 'तमम्बर'।

सार्थक-पु [सं] कामरा गढ मामूनमा गढ संह । वारस्य-पु॰ [सं] छामीप्या तरस्यमा विश्वेश्वमा षदागीनता ।

सार्थक-दु [सं] दे॰ सर्थका

वार-पु [ले] तारन आपानः ग्रन्टा पर्वतः तुगारिका वृत्ता । -ध-वात-पु इभीता बलानेवालाः शोदार । न्यप्रन्यु तार्ड।

वाद-इ क्ट बंबा पुर विसम्भ शाधार्य नहीं होती, सिक्ट शिरेस प्रवरी दोती है।

ताबक-द्र [में] वशिक यहार ।

साइका-मो • [मं] यह राक्षणी जिसे शाममें जारा था ह -कार-दर को स्टावनी।

ताडकायम - प्र[सं] विश्वाभित्रके यह पुत्रका नाम । सावकारि-पु [सं] रामचंद्र । साबकेय-पु॰ [मै॰] साबकाका पुत्र, मारीय ।

ताहम-पु॰ (सं॰) नागतः मारः परकारः ननशासमः दीक्षाके मंत्रका एक संस्कारः श्रंड प्रदर्भः गणन । सावना:-ची [सं•] मारा आभावा माराने-पीटनेबी क्रियाः

टॉट-इपर । ताइमा-स कि भाषना जान हैना समझ हैवा मारमाः

[ा]समा देगाः **दश** देगाः दुर्वचम सहना । सावनी-की [र्ग•] कीहा, चातुक।

साडमीय-वि [सं] इंडमीय। वाडि साडी-सी [तं॰] एक छोरी जातिका वादा एक

माभूका । साहित-वि॰ [सं] विस्तर मार पड़ी हो। विसे दह दिशा गवा हो।

साबी-की ताको शहने निककनेशका सफेर मारक रसः ष्यान, धमावि तारी ।

ताहरू-वि॰ [सं०] मारने-वीटनेवाका । वाइ - वि वाइ यानेशका ।

वाट्यमान-वि [एं॰] विसपर मार वहती हो। प्र क्यांसे स्थाना मानेशका एक करहका होता।

तास-पु॰ [सं॰] विताः आदरणीय व्यक्तिः एक संशेषन श्री बराबरके कोगीं का अपनेसे छोटोके लिए मसुक्त होता है। वि पूक्त प्रशस्तः • तत्त गरमः <u>-ग्-प</u>्र• मानाः

रि॰ पिताके किए सप्तुका पेतृह ! वातम-५० [सं] संबत ।

वातक-पु॰ [सं] रोगः सीदेशी वदाः तापः पताना। वि पितृतुस्या वैतृका संवंशी। क्रम्य । वाताक-वि वस गरम।

ताताथेइ−ना नृत्यकायक्र योक्षा तामार-पुषा] मध्य पश्चिमका एक देश। ताखारी~पु वाचार देश-निवासी । वि वाकार देशका ।

सावि-तु [चं] तुत्र । सी बंगप(परा । हातीस-न्य [न॰] वरपाम, पुर्दा ।

तारकास्टिक-वि (र्थ॰) तन्कामका, उसी बा दम समद्वा। सारिवक-विक [र्सक] तरव-संबंधी; जिसमें तरवपर विशेष व्यान दिवा गया दी। वारतिबद्ध !

तारपर्य-पु [मं] भाराव अभिपाव, मेहा । सारपर्यार्थ-व [मं] बानवाबने मिग्र वर्ष भी वासद विधेवमें बकासा समिमाव समशा जान ।

तारस्थ्य-मु [मं॰] एक बरतुमें दूसरी बरगुफें रिवन रहने-का भार ।

ताधई-सी है। वाताधेई।

तात्व्य-पु [मं] बरेरपदी व्हर ना। अर्थकी समानताः बरेश्य ।

तावारम्ब-पु [लंग] कथियता दी वस्तुत्री ६ वररपर अभिक्ष होनेदा साथ । —सर्वध-पु० सभेद संबंध । ताकात्विक-वि [मं] (राजा) जिमका कोप (त्तरका दरता हो।

ताराय् नशी [अर्थ] शंजवा ।

तुम्र-तरुष प्रमाणकर गरेको साथ और प्रकारती कराया । तुमुर−रि , त॰ [र्स•] दे 'तसक । तमछ-वि॰ सि॰) विसमें शारतक हो। को तरहकी प्यनियोके मक्से लाग्य (व्यपि)ः मक्का ध्रव्या प्रदासा हुना । पुरु भीर जुद्ध, बमामान भीवण जुद्धा, गहरी क्रमार्थः यस्त्रवेदाः यस । तुरद्व - सर्वे व दे सुम । तुम्हारा-सर्वे "ग्रम'का संबंध कारकका रूप वसका विससे बक्त बेरिता ही १

हुम्बी-सर्व 'हुम'का 'ही के योगने बमा बुका रूप ! तरहें - सर्व 'तुम'का कर्म और संप्रदान कारमका रूप । तर्रग-प्र• सि] मोदाः मनः विश्वा सावकी संस्था। -र्याप-त्याः अद्दर्गमा असुगंत्र । -शीह-प्रश्न स्ट राग । - जानच-प्रश्न भरवर प्यारी बेट्यो नामका रीत्य विसे इ.सने कुण्याका मारनेड लिए अंत्रा था। ~ कियाजी.

-इपिजी-सी॰ मेंछ। -प्रिय-त भी। -ब्रह्मचर्य-

प स्थी न सिलमेश भारित जहान्यं ज्ञत । -अस्य-वर दिशर । -मेश-प अस्वमेव । -वाश्री(पिल्)-प्र• मरवारोही । -रस-त सार्वस । -सीसक-त रह हात । -वश्य -वदम-पुर किसर । -बाल्य-मीर, -स्वाम-व पुरसान अस्तरण । -साबी(चित्र)-म भगरोडी ।

तुरगक-तुर्व (गं०) थोशा वहाँ सीर्य । तर्रगम-प [मंग] पोता यक प्रा तुरगमी-मी [मंग] थीरीः असर्थः। तुर्रगमी(मिन्)-इ [मं+] करनारीही पुत्रसवार । तर्गारि-पु [म] भेगा। बनेर ।

तुरगारुर-५ [म] भरतारीही। तुर्वविका-न्दौर्ग [र्ग] दंबनाती कता । सर्दगी-को [मं] पीनी। मसमंत्र । शुर्रगी(तिम्)-५० (छ॰) महत्तरीही, पुरस्वार ।

सर्दा-त मधीनस मीनू इसाने दिनारी बना शर्व शाहिने मीरीश्र शूरिने का कर बमाचा हुआ बहा बुरा । -बीम-को भोद्दे रहटा अर्थना संस्थातिके शेषीपर बननेवानी एक प्रधारकी भीती है तर्रत=म रे धरन । सर्वता-च व्यक्ति (निमया मधा प्रेष्ट हो का माना है)।

सर-अरु [तुरु] द्रीया अध्य नयदे मान । दि नेनवान । शाई-मा वस केन किये वणीती मासारी प्रश्ती है। DE -3 [41] \$0 54 1 शरकामा-वि का] गुर्व मेला शर्वकी शरहका । पु

हरीका देशा हरीके करी ! सरकानी-सार (कार) मुर्द औरनीदा यह दीना-हाना परमानाः मुर्नेनी मा प्रदे जान्ति भी । दि॰ की द्वाची रोजी १

तुरक्तिन-मी तुक्की या तुक मनिया और सुरिक्ताम-३ (या]दे "मुक्तिनाम"। त्राकी-ति (का] दुर्व देशका सुर्व देश विकास न्योक पुर्वे देवत बन्ता।

तुरान्यु [संर] दे श्वल (समार औ) ।

शरगी-छी॰ बिनी हे 'तरंदी । तरगी(गिन)-प॰ (ग । सपारोदी। तुरगोपचारक-प्र॰ [र्ध•] सार्रम । तुरत-म॰ शीन तरकात, परम्प । तुरपाई-ना १ 'तरपन'।

ग्रस्थारोह-५० सि॰ी बरदारोहा ।

तरपन-म्यो जरपनेयो किया। म्ड तर**र ©** सिमारे । लरपना-स॰ कि॰ वशिवा करमेडे किए श्रंतांडे का सीप सोगा । तरपवाना-स कि॰ तरपबड़ी निकार कराना । हरपामा-स॰ कि॰ **दे॰ 'ह**रप्राना'। तरम-त्र गरधाः

त्रस्रती-मी एक विकास निरिधा। तरमध-प वीहा । तुरसीसार-वि खद्या पैना बता तोमा-'पूनारे दी मरम करम करवनी शहा है। तरमीने -- मारावण साधी। हरही-मी॰ वृंबद्धर बजानेश एक रतने हैंस्का पता में। इसरे भिरनी और बराबर श्रीका केता जाता है।

सुराष-को है। 'लग्ग'। -ई-को जनावरी, बन्दे दे अध्यमें। तराष्ट्र शरावण-स साग्ररताते कारा तराई = नी श्रीशहः देश प्ररादि । अन् प्ररंग । तुरामाण-अ कि॰ श्रीप्रता वा वत्त्वनी दरमा ! वि र्दर के शाक्षमा । तुरायण-९० [र'] वद यहः जनासकि, जर्मा । तुरावती :- वि सी श्रेमन्त्री स्थाप परिशेषके या बहर्मबाची (

नुराचार(🖝)-इ [मंग] इसा मिला । ह्याम् ० – म । नवसे । तु देव । नुरिया-नी॰ जुनाहोदा वद भीताश वर यान वा नी निगना बचा मर गया हो। व शुरीशास्त्रा । तुरी~ • पु • भीवा सवार । जो भीती लगामा पूर्णीमा गुष्पार योग्रेसी करियोदा सम्माः मुखीः • गुरेश बन्धा । (तं) जुलाहीरा कका प्रजीश कार्य १३ भीषार निममे बानका तथ भरा जाता है। सुनारी

गुराबान = - वि वयमक स्वरम्बक ।

क्षी। निवधारके मधी श्रृष्टिका बग्नाको एक गर्मे हे माम । -बीच-९ भवेदो गति जामनेहा एव मेंप र नुरीय-वि [ते] वरिनुद्धा यतुर्वः पार भंगेरण्य मेंड प्रदेशको । पु नरांग्डे बनुगार वस सम्प्र बिसारे भारता अपने गीन ही आठी है। जबके पर चनुर्वे वर्षे शहर ह MER-S & SE ! लुरुपु-पुरु सामादा एवं क्षेत्र हिरानि क्षान काने हुए (क्या होती होता क्या अव्यवनी है कोने की बटकी की

सम्पद्ध दे दिवाँ । तरप्रमानम कि दे तरप्रमा । गुरुष-पु [१७] हुई आणि पुरे मारिश बदुना गुरिम्मानका निवानी सुदिरमान के बेबरबर बीराम) –गीद−पु≖६१लाः

पु॰ बारसाद । दि॰ ताम हे संगता । -पोसी-सी॰ राज्यामिनेक सिंहासनारूब होने या तान भारण करनेके समयका प्रत्यत । - बयुश-पुरु वह सुझाद जी वादशाह बनाये या बारे हर बादछाइको फिर बादछाइ बनाये। -बीबी-सी दाइवडाँदी प्रसिद्ध बेगम सुमताबमहरू विसक्ते सक्तरेके क्यमें ताजनदरूका निर्माण हुना। -महस्र-पु॰ श्राहबहाँकी नेगम मुमताबमहरूका जापरा-रिक्त प्रसिद्ध रीजा (इसक्षेट्र गणना संसारके सहाव्यवी-黄金) 1

सामक−५ [का•] एक ईरागी जाति। ताजगी-खी॰ (फा॰) ताबा दोनेका माना भवानना खुडा-पन या कुम्ब्लाइटका समावा मांति या सैविस्पका सक्टा ।

ताजन ताजनाः •- द रे॰ 'ताजिवाना ; क्लेपन देशै-बाकी बस्ता यंद्र ।

ताहा-दि॰ (फा) इरा पराः वी सुबा (वा सुरक्षाया हमान थे। पौचे वा देवसे तत्वाकका तीवा हुआ (पुष्प कवादि); हरतका वैदार किया हथा; हरतका निकाशः

इमा: वो प्रथिक दिनोंका या नहीं व ही। साजिया-प (म) गाँउद्ये विकियो, रंगीन कागर्जे **मारिका रना द्रमा वह धाँ**ला की दमान **द**शन और इमाम इतिको सक्तरीकी जाकृतिका बनावा भार नियव रमानपर रफ्नाया बाता है। मु॰ -उँडा होना -ताबिये का रफनावा काना। दिली रहे भादमीका देशोत दीना ।

ताकियामा~द [का] शहक,कोका । ताझी-दि [फा॰] भरनी जरहका। दु शरनी नीडाः

विकारी क्रचा । की भरने शता। वाज्ञीम-ची [म] बूसरेकी वहा समझनाः वहीके प्रवि

मारर मान प्रश्नित करमा। वाजीमी सरदार-इ [का] वह सरदार विस्तर वाजीम

नारग्राह भी करे।

वाजीर-दी [व] देव सता। ताझीराव−यो (व॰) वाबीर'६। बदु०। –हिंद्−सो०

भारतमें प्रयोगमें भानेशके श्रीत्रशारी कानूनोंका समाध मारतीय दंशविचान । सामीरी-वि दंशरमकः दंश्यमें तैनात वा कनावा तथा।

(पुक्सि, कर आदि)।

सारमुब-९ दे 'तमस्त्र ।

सार्वक-पु [मं॰] कामका एक आमृत्रम एक छो । सारहरय-पु॰ [सं] सामीच्या तरस्था विस्थाता **४ शा**रीनता ।

सारंक-तु [सं] हे सारंक ।

सार-पु [तं+] तारम, आपाना श्रम्या वर्गतः सुपारिका भूता। -य -बात-पु स्थीना घटानेवाला कीहार । ~पय-नु॰ तारं€।

वाद-पुरद संवा इव जिममें शाधारे नहीं होती निर्दे सिरेश्ट चीचने होती है।

तारक-पू [तं] वरिक, यहार ।

तादका-भी (ने) यह राष्ट्रशी किने रामने मारा था है ~कम-4 को शावनी।

त्रावकायन-प्र[र्ध] विश्वामित्रके एक पुत्रका साम । सादकारि-प (सं॰) रामचंत्र । साबकेय-पुनि॰] साबकाका प्रमा मारीम ।

ताडम-प्• (रं•) कादातः मारः दृश्कारः अनुशासनः बीक्षाके मंत्रका एक संस्कारः श्रंड ग्रहणः गुधन । काडना-मी (र्श•) मारा वाधावा मारने-पीटनकी क्रियाः

टॉंट-इक्ट 1 साइमा-स ति व पाँपमा, जाम केमा समझ सेना मारमा।

समा देशाः कट देशाः दुर्वपन कदना । साक्षमी-म्या (सं•) क्षेत्रा, पारक । तादभीय-वि॰ [र्स+] ब्रंटमीय ।

ताबि साबी-सी॰ (सं॰) यह छोटी बादिका ताहा एक आगुक्त । साबित-वि॰ [र्छ] विसपर मार पड़ी हो। विसे दंड दिया

गवा शो। साबी-की वाहकै श्वापे निवकनेशका सकेद मादक रसा

व्यान, समावि शारी। ताह्यक-वि॰ [सं॰] मारमे-वीटमेवाका ।

ताच -वि वाक बानेवाचा । तास्यमान-वि [सं॰] जिसपर मार पहती हो। प्र क्कडीसे प्रवादा कानेशका एक करहका होना।

वात-प्र [र्थ] रिवाः भाररणीय म्बक्तिः एक संवीवन वी बराबरके कीगों वा अपनेसे छोटोंके किए प्रमुक्त होता है। वि॰ पृथ्व प्रश्नरताः * ततः गर्मः -ग्-प्र पाचाः।

वि॰ पितान क्रिय छप्युक्ता पेत्र । वावम-५० (सं) संबन ।

वातक-थ [सं] रोगः कोदेश्ये गराः वापः पद्मता। दि पितृतुस्या पैतृका संबंधी। बस्य । वावाक-विवस गरम।

तातायेई −शी नृत्यका शक्ष शेक्षा तासार-पु॰ (पा॰) मध्य रशिवादा एक रेश । वासारी~पु वानार देश-निवासी । वि वादार देशका ।

ताति-प [सं] प्रमासी बंदाप(बरा । तातीर-ती [म॰] मस्बाध गुड़ी।

तास्क्रासिक-वि•[सं•] सम्बन्ध्या उसी वा उम समवका। सारिवक-वि॰ [सं] सरव-संबंदी। जिसमें सरवपर विशेष व्यान दिवा गया दी। बारतविद्ध ।

तारपर्ये-पु [सं] भारतप, समित्राय मेशा । सारपर्यार्थ-पु [सं] वाववार्यसे किय वर्ष की वावव विश्वमें बकारा अविभाव समहा आव ।

तातम्बन-तु [मं] एक वर्तामें दूसरी वर्ताके विश्व रहने-

का भाष। साधई-को देश 'वावाधे ।

ताइच्ये-पु॰ [मं] बरेश्वयी बढ्यपनाः अवंदी समाननाः वदेश्य ।

सादास्त्रम-पु॰ [तं] अधिप्रता को करतुओं ६ प्रस्त्र असित होनेदा बाद ! -संबच-पु अमर मेर्च ! ताशात्विक-वि [मं] (राजा) जिलहा की व दिल रहा

बरता हो ।

तादाद्≃मी [ल] शंस्त्रा।

धुमुर-तुरुष्क मुक्पान्द रुर्दको साह और पुरुपुरो करागा । तुम्र-वि॰, प [सं॰] वे 'तुमुक । तुमस-वि॰ [सं॰] दिसमें शास्त्रक की। को तरहकी ध्वनिर्देक्ति संबर्धे सरपञ्च (ध्वनि)। अवंदरः श्वन्तः प्रवदावा हुआ । तु भोर तुद्ध, बमासात, भीशम तुद्ध, गहरी छहार, बहेबेका पेड़ । नुम्द्र - सर्वदर्शना तुम्हारा - सर्वे "तुम'का संबंध कारकका रूप, समग्र विससे मका नीवता हो। तुम्हीं--सर्व द्विम'का 'ही के कोगते बना हका करा। तुर्ग्हें ~सर्व 'तुम'का कमें और संप्रदान कारकका क्य । द्वरंग~ड [सं] मोकाः सन विका सावकी संस्था। --रोधा-सा॰ भरक्षका, भस्तवंत्र : -गीह-पु॰ एक राग ! -वानव-ए जरश्रूपवारी बेद्री नामका देख विसे रंपने इयाओं मारनेके किय भना वा । -िव्याणी - हेपिजी - सी॰ मंस् । - प्रिय-पु+ वौ । - **ब्रह्मधर्य-**पुर्शीन मिलमंसे पारित ब्रह्मार्थं बतः। – सुम्य-पु दिवर । ~सेच~ए अध्दर्भव । ~वाबी(विम्)~ए मरनारीही। ∼रञ्च−तु सार्रम्। ∽क्षीकक्र−तु रक तान । --बस्त्र --बद्ध--पुरु विक्रत । --काळा--नौरु -स्थान-पु• पुरसार, महाकः। ~सादी(दिन्)-7 प्र• **समाराशी** । हुश्गक−इ (सं] पोनाः वहा कोरई। सुर्रगम−५ (छ॰] बीहाः क्य कृत्। तुरगमी-की [सं] भोगी; असर्गंव ! तुर्रगमी(मिन्)-इ॰ [र्स॰] नस्तारोही पुत्रमुकार। तरंगारि~प [र्म•] मेसाः कनेर । तुरगाहर-५ [सं] बलाहेशी। तरंशिका - सी [मंग] देववासी कवा। सर्वति - सी [मं] बीसी क्रानंत । तुर्वी(रिन्)-पु॰ [मं] कालारोदी इतस्वार । तुर्ज-तु व्यक्तिया नीम् इछालेके किनारी बना हरव शादिके मीत्रीपर नुरेंसे काटकर बनावा हुआ वना बुदा । —शोम~न्ता मोर्ड एस्ट्रा ग्रर्नतः कॅल्डगरेके ग्रीवीवर क्षगतेवाकी क्य प्रदारकी वीमी । तरंत-भ•६ 'द्वरत । हु(ता-पु गाँवा (बिसका नदा पेते ही का बाता है)। तुर्~भ• (सं] श्रीय वदर काफे साथ। दि॰ केमबान्। तरई-मा वस वेश मिछके प्राप्तिमें सरकारी बनती हैं। ताक-30 [का] देव 'तुई' । सरकामा-वि का] तुर्व जैसा कुर्दकी सरहरा। तु त्रकोंका देश तुक्रोंकी बस्ती ह तरकाती-तो (का] तुर्क भीरतीका "क दोषा वाना पहमाबाः तुर्वेकी या तुर्व जातिकी की ! वि जी च्चित्री होशी । त्राकिम नहीं पुर्वश्री का पुर्व कारियी ही। तुरविश्लाम-५ [का] दे 'तुकिन्नाम'। तुरकी~नि [कार] हुई देशकाः शुई देशनंत्रो। श्री त्योरे देशमा माना। तुरय-इ. डि.] हे 'दुरंग (समल भी) ।

हरगगरीह-पु॰ सि] अस्त्रतेहा । श्रुरगी-सी [ग्रं•] रे 'त्ररंगी'। त्राणी(यिन)-प्रश्नि । मणरीती। तुरगोपचारक-पु॰ (सं॰) सारंस । तुरव-व शीप्र तत्वाक, परधा ! तुरपई-न्मी॰ वे 'तुरपन'। तुरपन-को॰ तुरक्तेकी क्रिका एक तरहकी सिकार । तुरपना-स॰ कि वश्चिया बरनेडे किए संस्कृति स्व क्षेत्रे सीगा ! तुरपंचाना-संग कि॰ तुरपनको तिकाई कराता । तुरपामा-स॰ फि॰ दे 'द्वरपनाना'। तुरम~पु॰ तुरही। तुरमती-की॰ यह शिकारी निविता। तुरय#-पु शोहा। तरसीका=-वि॰ यसा पैना बड़ा तीवा-'एमस्पैसी जरम करम करवजी शब्द है हुएग्रेने - नारावय लागे। हरही-सी फुँसकर प्रवालेश यह स्टले हैंरका गांग बी कुरुरे शिरेकी मोर बराबर चौका होता माता है। तुरा १ न्या १० लंदा । -ई-सी चतावर्गे स्पी दे ऋसमें । तुराष्ट्र तुराय#~थ भातुरताके साथ। तुराई - यो तीरका 🖥 'तुरा'में । ब॰ तुर्ता । तुरामा 🖛 म 🍇 श्रीत्रता वा बतानको इरना 🖰 स कि॰ दे॰ 'वीशमा' । तुरायण−५ [मं] एक वडा बनासकि, बर्सम । तुरावशीक-वि लीक वैदानती, तीम गरिने कन्ने वा **भएनेवाकी** (तुराबान=-वि॰ वेयनुक्त स्वरानुक्त। तुरापाद(इ.)-५ [तेन] हंडा विष्यु । तरास॰-न वैपने। प देन। तुरिया∽भी॰ भुभारोंका न्ह्र औशार। वह पान मा लेंड विस्त्रम् वर्षा वर गवा हो। 🕫 तुरोपानस्था । तुरी-+ दु बोहा। स्वार १ को बोहा; त्यामा फ्रॉम गुच्छाः मोतीकी किन्द्रोका श्रम्माः तरही। # हरीना बरबा। [वं॰] शुकाहोसा कपता कुनमेसा सामग्र एक बीबार क्षिमधे शतेका रहा मरा याता है। जुनारीकी कृषी। विषकारको कृषी गुलिका बहुदेवको वय स्त्रीम भरम । –वीस-५० मर्वको गरिः जानसेमा स्थ मेर्च । शुरीय-वि [ग्रं॰] वर्षपुष्ठा बहुनी बार ग्रहीराणा नेषा शक्तिशाची। पु नेरागढे अनुमार रह नरस्य बिसमें भागमा अद्यमें सीम हो याती है। --पर्म-उ चतर्थ वर्ग शहर। तस्य-पु≹ 'प्रचं। नुरय-४ सारका रक फेल जिनमें प्रशान माने हर (पदा हों देने होरा का अन्य रंगी दे बहेते वह बतकी नार ! सकता के द्रेप ≉ त्तदपना~स कि दे॰ 'द्वरमना' ! तुष्पत-पु॰ (ते॰) तुर्दै पातिः तुर्दे वातिस नत्पी पुर्दिग्गामका निवासीः पुद्धिग्यामः वद बंबह्य्य, सीवानं । -गीष्ट-पु रहराग।

तासिक-को दे 'तिमेक'। तामिस-दु॰[सं] ण्य सरकः घणाः देश कोश अधित प्याः कर राष्ट्रतः ! सामीर-को [भ] मेकान श्यामा या सरम्बन करनाः अकान, स्थारतः निर्माण ।

तासीस-की [स] अमक करनाः (दुन्म) वृज्ञा कानाः तक्त किरी गर्ने व्यक्तिता समनभर दश्ताक्षर करना वा सैन्द्रिका निद्यान कगानाः।

सामोसन-पु॰ दे॰ 'तांब्क' । तामास-पु॰ दे॰ 'तांब्क' ।

तान्त-पुरु [सुरु] ताँगाः एक प्रकारका कीह । विरु तविका वता दुला तरिकी तरह काक रेका। -कर्जी-काँ॰ पश्चिमके दिस्यव श्रेजमकी यसी । -कार--कुट-पु तमेरा त्रींबेके बरतम सादि बनायन बीविकोपार्जन करने शाहा। –कुड∽पु र्हादेका बना क्षंड । ∽कुर∽पु• पद ग्रद, तंबाक्का पीवा । -क्कुमि,-क्कमि-पु वीर बहुदी नामक दीवा ! -शर्म-पु॰ तुत्व, तृतिवा !--व्य-यु सुमी। हुन्दराभा । -तुंब-यु एक शरहका वेरर । चत्रपुत्र−पु पीतल। –दुरथा–सी गोरपद्वी । -ब्रू-बु काल थंदन ।-ब्रीप-पु॰ सिंहरू ।-पट्ट-पु॰ रामपथ नारि सुरवामेका तरिका क्छर (प्राचीन कालमें इसका बहुत व्यवहार होता था)। तर्विकी यहर । -पश्च-पुर पृथ्व जिल्के एके काक ही दे 'ताझ पट्ट'। -पर्ण-पु॰ भारतका एक ग्रंड । ∽पर्की-ली दक्षिण भारतको एक सर्।। -परस्तक-प अञ्चेक कथा। -पाकी(किन्)-८ -प्रकृष्ट पेत्र। -पाछ-प्र विका गरवन । -पादी-मी इंग्रफ्ता । -पुष्प-पु इवनार । -पुरिपका - स्री निसेत । -पुरुपी - स्री भागकी। भवका पेड़ा पाटका काइरका पेड़ 1 - क्रक-पुर मेदीरः ≔क्तकच्यु तस्थिः पत्तर तात्रपट्टा – मुख्य—[विश् विसका ग्राप सावके रंगका को। पुरु व्यापीय। नमृता−सी॰ तुर्वमुर्दे । ~सूग-पु॰ व्य नत्त्रका जात हिरम । <u>चुरा-पु॰ श्रीवहासका वह कारं</u>गिक काल यह कोग तरिके मीबार। पात्र मादि काममें छाने था -पोग-पु॰ एक रामात्रनिष्क शोवत्र । -किस-पु दै 'तामसुद्धा −वर्ण∽वि सोनेके रंगका रस्त्रन्गे। सिंदतः। ~बस्सी-मी मजीडः। -बीज-पु इसमी। --बृंत-५० दुसमी। --बृक्ष-५० कुल्मी। काल परनदा इप । -शासन-पु नावपट्यर सुरा दुभा वर्मनेन शाह । -शियो(शिक्)-पु मुर्गा कुन्दुर । -सार-पु १० नामपुर ।-मारक-पु रक्त चेरमदा

प्यागर,काषाः तासक-पुर्शितिगाः

साम्रान्थां [तं] प्रवादित करवण्यो एतः वर्षाः सहस्रो । साम्राद्य-तुः [तं] कादिकः । तिः त्राप्तः आग्रः साम्रह्माः । साम्राद्य-तुः [तं] एकः प्रतः । तिः ज्ञानः व्यवद्यक्षाः । साम्राद्य-तुः [तं] देते ।

वाग्रास्मा(सम्)-५ [तं] स्टराव स्ति । वाग्रिक-५ [तं] है • ताम्रसर ।

नागक-पु: (म) देश तामग्रार । जिल्लाम् । जिल

साक्षिया(अय्) – की॰ (सं॰) कारिमा । —— ताझी-की [सं॰] एक बाजा करूपश्का पात्र । ताझीरूप्तर—तु (सं॰) विक्का माम (सा॰ वे)। ताझीपत्रीवी(विन्)—तु [सं] वे 'तामकार'। तायं क–ज॰ से। तक। ताझप्तर—तु॰ तापा कर्मा पूर्य। सर्व समस्को।

तायदावरं --स्रो दे॰ 'तादतर । तायमा॰--स्र क्रि॰ तपामाः संताप पर्देशानाः । तायमि॰--स्रो॰ तगमः, सकनाः पीडाः ।

तायका-सी॰ [अ॰] वेदवाः वेस्ता और उसके समाविती की मंग्डी ।

ताया-पु शपका वक्षा भार्व ।

सार-पु॰ (सं॰) अपने चपाछकाँद्धे तारमेवाकाः स्वारा महारेषा एक बानरा बालपार भीती। मीतीकी स्वच्छाताः महीतर, तीर (विकासकी अन्तके साथ समास होनेपर 'वीर'का 'वार ही बावा है, जैसे- हस्त्रिज्ञार'); शिका चौदी; रक्षण: बाठ सिक्दिबीमेंसे व्य (स्रो): बार करना मारा। ऑखकी पुरुकी। एक स्वरः सबसे शंब रवर्मे माया बानेवाका सप्तकः एक वर्षवृत्तः। वि. स्वयः श्वयः। निर्मनः विससे किरनें निकल रही हों। -कूट-पु पीतल-चोंदी मिकी नकती बाहु। -संडूक-पु ६४२ स्वार।-सार-इ वह गीव सिदि (सिं०) ! -पष्टक-पु पक तरहकी वस्त्रार । -पत्तन-पु॰ बस्त्रापात । -पुरप-पु॰ क्रुप पुन्त । -माशिक-पुन्तीरीके बीगने वनी एक छपपात । ~बायु~सी वह वातु जिससे बोरकी भावाज पठती हो। - विसका-स्था दे 'वारमाद्दिक । - शुक्किर-ष्ठ जीसा । −सार-पु॰ एक उपनिषद् । −स्वर-प कच्च स्वर । -हार-यु सुंदर मीतियोका दार । ∽हेमाम∽पुरुक्त वातु।

वार-पु वापकी तरह मील वा भीकीर, कम मारी, बीव-वार वरह मी त्यावी भावनीकी गीरहर वा शीकरत वार वरह मी त्याव गार मिनके दारा दिक्कीको धांकरी समाया भाव बाते हैं। तर हारा मारी हुं पर रहा तीन स्माया भाव बाते हैं। तर हारा मारी हुं पर रहा तीन स्माया कर करना वारका गारी है। -कमारी-को नगीवा बातनेका चतु ने तीन के स्मार निक्से वारको के स्मार (वर्ती है। -कमा-9- वार रीको-वारा। -कपी-पां। वार गीविका बाम। -स्मार-यान। -कपी-पां। वार गीविका बाम। -स्मार-यान। -कपी-पां। वार गीविका वार क्यान-यान। -कपी-पां। वार गीविका वार क्यान-वार मिकनेका सर्वात करना -पां- व्यान-वार मिकन कार विकामी स्मार स्मार-है। कुल-क्यान करना-वार्म प्राप्त । -हामा-विवार विवार हो सान-वार्म प्राप्त । -हामा-

तारक-वृ [र्ग-] वार्तवाला सहन्नः भारती वृत्तथा र्रोडवा छत्र वर्षः दिलो नेतुमुख्या वर्षः वार्त्यः वर् विद्युत्ते नारा या वद्यं भारत विशे कार्तिवरूते मारा याः बण्यान मीव्या मार्ग्यः (स्वाधाः स्टर्गनः वरासः (स्टर्गनः)ः बण्यान स्वाधः सामदा परस्र संत्र (म्यामान स्वाः)ः व्यावस्तिवर् (स्वाः संवृत्तः । सिन्-वृत्तः वर्षातिदेशः ।

तब्बकी क्रीरिका तक, वह तर्थ को बवार्वसे मिलता जुकता हो। - दश्य-वि जो सक्के समाम दक्षि देखता हो। समधीर, समदक्षीं । जनामा (सन्)-वि० कह वी नाय-का । —पान-प॰ सवादिवीका प्रकान सम काविः पोनाः। -पाग-पु,~पोगिता-सी वर्णस्कारका एक नेद नहीं कई छएमेर्दे वा बयमानीका एक हो समान वर्ग कहा जान भवना जहाँ दित तना वहितमें यह हो पूचि दिलानी वाय ! —कूप-वि∗ पक भैसा, यक वो क्लका। -- सक्षय--वि॰ समाध क्यागींवाका । -- बच्चि--वि वही पेद्या इस्मेगहा । तुषर-वि॰ [धं॰] बसीकाः विना वश्री वा विना मुँछका। पु॰ क्वाब रहा बरहर । तपरिका~सो॰ [सं॰] सरहरः फिटकरोः एक सर्गवित मिडी. नोपीचंदम । त्रवरी~सो [रं•] दे 'त्रवरिका । −िर्शव∽प व्यक् म**र्रक चन्द्रवें**हा द्ववि−को [सं∘]त्रंगी। तुप-प [सं•] शबदे कपरका किल्का, मृसी। अन्द्रे कपर का छिमका वहेक्दा पेर । "ब्रह्म-सार-प्रश्निष्ठा —धान्य−५ विकदेशका अव । तप्रांच∽प्र [सं] चावक या औरको कोंजो । तुपासिन न्यो [सं•] दे 'तुपासक । तपानक~प [सं•] भृक्षेक्ये आणः एक वरहका प्राथ-ईट बिसमें बदसपर दिनके क्पेटकर आग क्या दी बाती थी। तुपार-प्र [सं] इवामें मिकी भाग को चमकर श्लेव कर्यों-के रूपमें पृथ्वीपर गिरती है हिम वरफा बीनिवा कन्छ। भीवींके किए प्रसिद्ध दिमालवके क्लारका एक प्राचीन देखें। वि को छनेने नरककी तरह ठंडा हो। -कम्प-प्र॰ तुपारका कृष हिमक्त । -कर-प् चेहमाः कप्र । -रिहि -पर्वत-प दिमानव वहात्र । -शीर-प्र कपूर । ति तुनारको तरह सफेद रंगका । -सुति-पु चेहमा। −पापाथ-द्र भोकाः वरकः -शर्ति-द चंद्रमा । -शक्ति-पु: चंद्रमा । -शिश्ररी(रिन्), -सीक-द क्षिमाक्य । प्रपारत्र ∽को [सं] बाक्का मीमन । तुपारांग्र-प [स॰] बहमा। तुपारादि -पु॰ [सं] रिमाल्य पर्वत । सुवित-५ [तं] क प्रकारके रावदेवता (स्मक्षे संस्था शरह है कोई-कोई १६ मानते हैं)। विभा । तृपिता-सो॰ [सं॰] तुषित मायक मण्डेषधार्मीकी याता । तपो म⊸प [सं] दे॰ 'ग्रपंड'। तुपोवक-त [छं॰] दे 'तुवाह'। तह-वि [मं] तीरहरू प्रशन वृष्ठ, सुख। दु॰ विष्णु। तहमा = अ कि प्रदर्शना मसत्र होगा । तृष्टि-को (वं॰) मंद्रीन प्रश्नकाः भीग्य वस्तुओं अवि देशो वृद्धि जिसमें और अभिस्त्यों काश्रसा न ही। जिसमा गाम हो वससे अधिकार स्थान व होगा । (सास्वरे अनु सार ने नी प्रकारओं है है

तुष्ट्र−५ [सं]क्ष्मेंमिलि ।

तुम−५ [सं] १० दिवा

तुसार-पु॰ [सं॰] दे॰ 'तुदार' । पुस्ती = सी दें • 'द्वव'। तुस्त-पु [सं] पूछ, मर्गः भूसी। तहसत-की कि निर्धारका स्क्वाम प्रदेश करनाम । गुड्सती - वि॰, पु॰ १क्ष्माम बगानेवाका (मार्गी) । तृद्धिम-प्र॰ (सं॰) तकाट विभा गरफा चंद्रमध्ये ब्योतिः पंदिकाः कपूर । —क्षण-प्रश्नोसः वरसमा योगः । ~करु,−किरल,−गु,−चार्ति,−रहिस−पु श्वेमा। स्तर। −गिरिः−शेस−५ विसाध्य पर्वत । −सर्वता−साः बरफ । सुद्विमाँध्य—पु॰ [सं॰] चंद्रमाः कपूर । तुक्तिमानस-पु॰ [सं॰] दिमानम पर्वत । द्रशिमात्रि⊶प॰ सिंी शिमारूय पर्नद्र । र्देवका-पुरु होंगा ! र्तुंबा-पु॰ कर्तुवी। कन्ने कर्तुकी खोलका कर नमाना इना पात्र । र्तुवी-न्दी होत हुँचा रक्त वा बादु सीचनेस स्थ बीबार । त-छर्व एक सर्वजाम को क्स स्वक्तिके तिथ बाता है निसे संबोधित करके कुछ बहा जाता है। द्विमांका सक वचन रूप (रखका प्रयोग झोटी था। मीची तथा बमीचमी क्सबंत मिन और आल्राजीन भ्यक्तियों पर्व ईक्सके किर मा दोता दी)। की कर्तांकी द्रकामेका श्रम्य ⊢द्रः में में-सो॰ वासका, वीक ठोक गांकी-गड़ीय । स॰-रा र्म-मि करमा-कहान्त्रनो करनाः याद्य-प्रकीत करना । तुला≉~पु वरका संस्कृ। तहनाथ-अ क्रिश् देश 'हटना' ! तुरुमाञ्चल कि॰ तुह, प्रसंब दोना । व्यान्य सि विश्व तहार'। नववेशन्य वाम । त्यक-पु॰ (छ॰) एक छर किएका मार्चेक ग्रह ग्रह भवराष्ट्रा शोवा है। त्वय−५० (सं•) बॉहरी, केत्र । −ध्स−५० वीहरी वजानेवाला । द्यणि~वि+ (र्थ•) श्रीप्र तेवा सी+वेमा प्र•मम दक्षीका नहीं गढ़। वृत्ती-सो॰ (र्स॰) वरककः बोस्सा रोगाः तुरा नारिस यक मीतरी रीग। -यह -धार-त सरक्ष बारम करमेनामा कमनेत । सुबी(विम्)-वि+ [सं] तरक्षत्र वारम करमेवाला वर्षे र्थर । त्र शासका देश । त्योक-प्रसि] तबस्य देशा सुव्यहि-पुरु [पुरु] बाग रतानेका चीमा, तरक्छ, निर्देश ! त्त-प्र (का॰) वद गाँढे क्रमीवाचा वेश वसका कम ! सुनक−पु[ध] तृतिका≀ श्रुतिया-पु गंभकानके बोलमे मना हमा सर्विका कार तीटा थोषा । तृती नती॰ वक छोटो चितिया जिममी बोकी पहुत गाँधी होती है। सुरु (अक्टारातनेसे) –की वाबाह-केए होते समक्की योगी भाराज की सुकार नहीं राजी। रहेंदे सामग्रे ग्रेडोबी बाव (क्लिश करर नहीं दोनी)। (विसी

से उत्पन्न शुष्टः संगीतमें नियत मात्राओंपर ताकी बनावाः हाभीका काम फउफरानाः मॅंबीराः वाइका पेड या फक्रः भेषा वा बामूपर इभेनीसे ठॉककर छत्तव किया हुना सुन्दर इरताकः वाकाशयत दुर्गाका सिंदासमः नाकिस्तः वरुपारः की मूठा एक नृत्या वाटा वा सिन्सिमी पिंगसमें एक गंगा [[t] इंश-बीश प्राकृतिक गड्डा निसमें नरसाती पानी बमा रहता है। यहमे १०के शीधेका पड़ा। -कव-प वासमूतो। -इट-पु॰ दक्षिणका एक माथीन देश। -केत्-पु॰ भीष्मः वकराम । -श्वीर-पु शारी ।-गर्भ -go तावी ! -बर-पुर एक देशा वहाँका निवासी। वर्षाका रामा। - र्याच-ए एक देखा वर्षका निवासी या राजाः एक मकारका घटः यहामारतमे वर्णित एक बीर वातिका पूर्वेपुरुष । −कदा−न्यो दे "ताक-प्रक्रीय । −अ−५ (मेगीवर्मे) वालका जानकार । −धारक-५ मर्तदा-ध्वज-प्रकलामा -नवमी-व्याप्त प्रक्षानदमी । ∼पद्म−पु ताइका पत्ता (यह पदले कागबर्के स्थानपर क्षित्रनेके काम भागा था); कानका एक गइना तार्रकः। --पश्चिका-न्याः तालगृत्याः। --पञ्ची-स्रो मृत्रिद्वपर्तीः —पर्यो —पुण्कगंबद्रव्यः। —पर्वी — खो॰ बनसाफ । -पुरुषक-पु॰ प्रगीदरीक, पुंडरिया। ~प्रकृष-पु• ताक्ष्मी क्या । ~चैतास-पु [वि] यो मेद मिन्दें कहत है राजा विक्रमादित्वने सिक्स किया था। -मसामा-तु [दि•] यद गौथाः मसाना । -मर्द्रक-पु पर काप (संगीत)।-सुकी-की शुसको।-सेश~ पु (संगीतमें) तालेका भिनान। -वंद्र-पु चीर फारका एक प्राचीन भीजार (मुमुत) १--रस--प्र-ताकी १ **~रेखनक−**प्र नर्गेदः श्रामनेता ।-स्मातण−प्र वसराम । -- वम-पु॰ ताइचे देशेंका जंगक धमुनाके दिनारेपर रिवर मंत्रका एक वन । ∽शूंल ∽शूंलक−पु तात्रका पंता । −स्केंच∼प्रः यक्त प्राचीन शनः । तासक-पु (र्थ•) इरवाकः शावका पेव या करु तालाः **मरहरः * दे॰ 'तमस्तुक**ा शासकाम-वि [सं•] इस । पु इस रंग। शासकी-नरी [सं•] तारी। सामकेश्वर−५० (सं] एक शीवव (शाः वं)। शासम्ब~दि [गं॰] ताटुनांचीः ताटुमे कथारित हीने शाला (वर्द)।

हास्र ३-५ (में) बमरामा रिस्तेनेते काम आनेवाना वाद्या पद्या पुरवस मारात्मिक सुम क्यानामा मनुष्य ।

हालो स-५ [मं] मैसिन्छ।

ताला-पु (म) मार्गाल्य । कोरे पोण्य नारिया पर देव को माम पुर्वेशी वण काम और माण्य नीरिया पर देव को माम पुर्वेशी वण काम और माण्य दिस्सा मान्य । देव पण्येताला । -(के) अर्थ -पर-दि भागवाला वर्गा । अप्यादक्ता । पर्वा-रो मुस्तिस्सी मान्यस्थिता । मु -प्यादक्ता -सम्मार गण्य वेद बर्दमा । सामाप्य-रो (स) ट्रिट वेद-व्य । सामाप्य-रो देव रहता ।

ताखावेकिया ताखावेकी - स्तो स्याकुकता। ताळाबचर-पु (वं] मर्गाक मामिता। ताळिक-पुत्र (वं] चरात ताखाग्र ततका ताखाः कामक का पुष्टित् या इस्तकियित प्रति योजनका वेटन मा नेवन। ताळिका- स्तो (५०) व्याग्र क्यांग्र ताकम्ली। ममीठः १० 'तालिका - स्तो

सास्टित-पु सि॰] रंगीन वयका बाच (छंगीत); रत्सी बोरी।

साकिब-पु [ब] चारनेवालाः शिष्यः। त्रहस्स-पु निवाधीः।

विवाधी। ताकिश~पु॰ [सं] पदाष। ताकी~ची [सं॰] ताका क्षेत्र करने और सोक्नका पक्र

विशेष प्रकारका श्रीभार, ताथी, छोटा ताझ्नकी; राजीप्रका एक देश सरकार प्रमित्रकेत परस्य सामादा सप्ति चल्का श्रम्य, करतकार्याता, छोटा ताक, तथेवा; एक सुप्तित सिद्दी। सुरु —श्रीदना—उपहास करना। --वाज बाला—वपहास होना।

ताकी(किन्)-पु [मैन] दिन । _ ताकीका-पु [ब] मारु अस्तानको जण्डी। मकानको कुकी। परिशिष्ट कुर्ड किमे दुण मासको स्पे । ताकीम-न्यो। [ब] दिद्या ।

साकीसायत्र—पु॰ वालीसायत्री—सी॰ [तं] यह वसाधी वृश्व विश्वक परा सीय है। सामाण है; ग्रेलॅंगका प्राप्त क्षाप्त क

वासुक-पु [वं] वातु वासुका यह रोग । वास्तु-पु दे 'वातु'। रिमाग । —काद-पु॰ दाविबाँका

रके रोग निसमें सातुर्वे भाग हो जाना है। सुरु — भाटकमा-प्यासने मुंद स्पाना। --स जीम न स्नाना-मुद्र न रहना बैकने याना।

सास्त्र-प्र [मं•] पानीवा मैदर। सार्ट्यक-पु [मं] दे॰ 'तामु'। सार्ट्यक-पु दे 'तमस्तुक'।

अभिद्ध गर्म होना ।

वास्त्रकृत्युक् विश्व प्रभावित्रमें वानुमें समझ्ये बाह्यपुत्र-पुर्व विश्व प्रभावित्रमें वानुमें समझ्ये बाह्यपुत्र गोला निचल बाता है।

आहारका गीना निकल कारा है।
साव पु दिसी बच्छों ते तरने या पहानके तिय पहुँचावी
आविवाडी गरमी ताव औपा भीय हारत पड़ेचावी हूर्
गरमीया मामा अहंडलवुक्त रोज्या आन्याः अहंडलव्हे
होंचा बणन्या बच्चा अर्थेट दिसा बर्धान्यः प्रदारो
न्येद वृष्ठ अर्थेच्य निम्मे प्रवासि पोहीद रही।
न्यंद न्यु वह औप्य निम्मे प्रवासि पोहीद रही।
न्यंद नहाथे आनेच्य भी आहिर मही होता। मुख-आसा-वस्प्य गरमी वर्षेभाना।-सा आसा-प्रदार गती हुँ बन्नुका अर्थेड एस हो जाना मा अन्य जाना।
मूल्या जाना। -पर-मेंटेसर। विमाहसा-हम सु

मा रहांत देते समय भैगाविक वसका प्रवोग करते है। भर्माद् जिस प्रकार यक तिमधेके सिरेतक वर्षेषकर वह की व दूसरे तिमसके सिरेपर कह जाता है और वहले विनदेशे कोई बारवा नहीं रखवा वसी प्रकार आरमा पद शरीरको छोडकर वृत्तरे अरीरमें प्रक्रिट हो जाती है भीर पहनेसे उसे कुछ मी मदकन नहीं रहता)। -ज्ञ्योति(स्)-सा क्योतिष्मताकता। ∺ज्ञ्या -पक्ष-प नारिवक ठाव सुपारीका वेदा केटबीका पेदा पब्रका के। मुर्वेशविका। ⇒धाम्य∽पु तिली मासक वान नीशारः सार्वे । - ध्यस-प्र वसिः तार ।-विव-विरायताः -पश्चिका-पद्मी-न्या श्राप्तमा। -पीइ-पु रसा-व-दसा कवाई। ∽पुष्य-पु गंबद्रम्यः सिद्र-पुष्पी भागको बाक्षा गाँउवन । —पुष्पी— नी सिंदरपुष्पी। -पूर्शी-सी नरस्टकी वहाई। −थीब−पु सारो। −सणि−पु वे 'क्लशादी'। -म*न्द्रज*−९ आमिन बयामत **ब**रमेरासा। **⊸राज**− पु क्षाङ्कः भारिषकः चन्द्रः। ~सम्या~सी वासका निकीनाः सामरो । —शील ∽त पक स्थापित पास । ~सीता-को जब-विषयो। -सम्य~वि तुम्रादितः। प् (प्रमधी तरह फलहीत) के की। मतिका । -- हासी--सी एक इता : -सायक-प्रश्न वर्ष । -पर्यवन-प्र मित्र वर्षे । -संबाह-प्र बाध् । -ससाम-नि॰ दे 'तृत्वतृ'। –सारा~क्षी॰ दश्की केटा। –सिंह− पु कुरुहर । -हर्स्य-पु॰ शोपना । सु॰ -शहमा या पदक्ता-शरपमें नामा देख मस्ट दरना । ∼गहासा या प्रवाहाम(-त्वाही मीख सँगवामा) वदीभूत करता । (किसी बस्तुपर)-इटना-किसी नरगुरू शनना सुन्द वीना कि देखनेवाने बनपर अपनेको न्याखागर कर है। (फिल्मीस)-तोबना-ग्रेश्यविष्ठेर हरवा, माता वीरमा। -तोबना-स्वेवा नेताः अपनेका म्योगावर धरना । तृजक∽पु[मं] निकम्मादण। नगरीया पी [एं॰] यासका पर्मान । रुप्रमथ-वि [स] सुप्रमितिर पासन्ध नमा हुआ। तुमायत् –वि॰ [मं॰] तिनकेंद्रे बरावर अन्यत तुन्छ । नणाञ्चन-प [मृं] एक दरहका गिरमिछ। नज्यसि−सी तुलानस्र−पु (सं∘) निन्धे आये। भूजास-पु॰ [सं॰] निश्री । मुजारस-पु (र्थ•) यद शत क्लिमें गमकता नंदा होता क्षेत्र मधी निकाला एका मगढ । नुपायर्त-पु [मं] बारवाबाद, बबटरा वक् बेरब जी इस्यो भारती वर्गरका रच कारन कर कृष्यको आहरी यया वा । क्वेंब्र-५ [मं] ताबका वेह । नकोत्तम-पुर्मि । उदार्वत नामक तूम । नुणीसप-५ [मं] मीनार विश्री । नुवास्त्रस्नन्तीर [संर] तिमक्तेश्री मणाङ । मुणीक(म्)-पु [गंग] न्वहुदीर । तृषीपभ-पु [4] एनपानुक मामक वंधदस्य । नुष्मा∼स्त्री [लं•] शास-पालका देर । तृतीय-रि॰ (५०) तसरा । -प्रकृति-पु अर्थन्य, नितुमा-पु श्रीतरी वारिका एक दिगा श्री वी वार

हिन्दा । -सन्त-पु व्यविद्येग जारि पानीका तीमरा सबन सार्वसबन । नुसीयक-प [सं॰] दे॰ 'विवस । तृशीर्यास-पु॰ [सं] सोसरा भाव । चुत्तीया—वि० स्त्री• [र्न•] चीसरी । सी• पद्मक्रे तोस्सी विषि, वीयः करण कारकको निमक्ति । -तप्परप-त तत्पुरुष समासका यह मेद जिसके पूर्वपूर्म करण दारकी विमक्ति कगी रही ही। त्रदीयाश्रम−प्र [र्श•] तीशरा भारम वातप्रस्थ। तृतीयो(विस्)-इ [सं॰] बह व्यक्ति निमे मिसी मंचीत का वर्तीयांस मिन्ने किसी संपत्तिके वृतीयांसका महि-कारी । वि॰ दीसरे दरनेका । तुसक-पुरु दैरु 'तृष्य' । तपतिरू−सी•दे'चिति'। त्पन्-पु [मंग] चंहमा। क्षप्र-प्र• [र्थ•] बक्क, राष्ट्र । वि॰ संग्रुष: सारुष, देवेता त्रसा−सी॰ [सं] स्टाः विद्वाः। त्रपित्र - वि दे "स्तर"। क्**षिता=-धी** 'वृहि'। त्रष्ठ−दि [तं] अवादाद्वमा संदूदः। वताबाङ--थ॰ कि॰ वत होगा । नृप्ति—सी [र्स॰] तुप्त शतेका मार्च, मौजन मारिक्षे मार्ति **छे उत्स्य संदोप या धांदिः दश्कित वराह्यः धारिते गीया** मुत्र∽पु• (सं•) प्ररोटासः तर्पय करनेवासाः दप्त करने बाला ह या एवं। नुष्टका−सी [सं] दे॰ 'त्रिपतका∤ त्कु∽सी (सं] यह सर्भनाति। तृपा∽स्तं [र्ग] प्यासा तीत रस्या, अभिवादा कीव । -भू-ली -स्थाम-पुद्वीम । -इ-पुबरी −हा−सी सीफ। नृपाझ-वि [मं] प्वाचा विश्ववित वित्तरार्तः। त्याबंत - वि त्याका । तृपाबान्(बन्)−वि॰ [सं॰] त्वानु । श्ववित्र−वि (मं•) प्यामा । तुपिशोत्तरा~न्धे मि] अशनपर्यो । वृष्णा∽स्ती [शं•] प्यामः अप्राप्त वस्तृकी वामे से रोन इच्छाः भोवा गौर्येच्छा । -क्षय-म् गंदीर ११एसी अंद्राधानि निरक्षिः। तृष्कारि-पुर [मैरु] पर्वट विश्ववापता । तृष्णाल्य-वि [मेर] सुम्बामे बुद्ध सुम्बादाना प्राप्ता धीमी । भूष्य−दि [सं] इच्छा वा सीम बरने कोल्य । द्वा सीमी पास । र्ते≉−म सेः दारा। र्सेतामीस-सि मानोस और दीन । पु नेता^{नाग्र} संस्पा ४१। र्सितीम-नि 'तीम और तीन ! तु॰ वैतीमुद्धे तस्याः ^{३६३}

441 -सार-प्र• सेरका पेश दोगेरोदिष मामकी पास ! विकाम-पु [सं] परवकः विरायताः काका यैरः श्यारी कुमा विकास । वि सीवा । सिक्तका-सी• [सं•] दे• विकिता । निकान−स्री• सि े विवार्यः दोवापन । !तत्त्वौगा~सी॰ [र्मु॰] पातासगस्थी कता ! विका-सी [हं] इद्वरोदियोः पाठाः वनविका कताः नकटिक्ती। सरकृषा । तिकाप्या−सो [सं•] दे 'तिकिका' ध तिकिका-की [सं] तिवसीकी। कुटकी। विक्टिरी-सी [एं) दूमकी। तिध•−वि॰ तीरच तेत्र दीया । शिक्सता≉∽रही॰ तेत्री । विसाइ-ली वीश्लव देवी। तिस्म-वि सि॰) सीक्ष्यः प्रसरः प्रयंश संबंध स्वा सरने वाका । व॰ वायः वीधायन । →कर-प्र सूर्य । -केन्द्र-पुरु एक अववंशीय रामा । - अंग-पु अमि !-शीमिति-दुर्दा – सन्यु–दुर्ध्यर, स्ट । – अयुगमासी (किन्)-प सर्व ! -रहिम-प् शर्व ! विकाशि−३ [मं] सर्व। विष्यः • − वि वीष्प । तिच्छन#-- वि वीश्य ह विवहरिया विवहरी।-धी अपराव, विलक्ष वीसरा तिजारत - स्पं भि] स्थापार, वाणिज्य स्थवसाय सीदा गरी। रोजगार । विजिल~प॰ [मं] चंद्रमा। राक्षतः। तिज्ञारी-मां कोहेश्री सहभारी जिलमें रुपी गहने आदि रधे काते हैं। तिकी-स्तो दे 'तिको । सु० -करमा-गावव करमा। तित−क अ वहाँ नहीं। त्वा । वि 'तीता का समासगर रप । −क्षीमा−पु० बद्धार स्थानका करत् । −क्षीमी∽ सर्व दे विद्यवीमा । तित्र उ-५ [सं॰] पनमाः द्वाना । तितना ! - वि चवना । अ । वस मानामें । तितर-विशर-दि॰ रवर-वदर केटा हुआ, निरास दुआ निग्रीमी निपरितः। तिमरोगी~मा एक होये निश्चिता। वितनी-सी संदर पंतीशत व्हाप्रीस परिया कर पामा (ला.) बद्रत सरक महक्रमे रधनशासी और । तिर्शिया-९ मु शीन व्यक्तिमनाः परिवित्त । वितिष्ठ-वि [मं] की गरमी-मरपी आदि इंडोंनी सह एहिन्यु सहमञ्ज्ञात । तु एइ कवि । विविद्या-भी [सं] सररा-गरमी आदि इंटोंनी सहनेकी क्रिया का चाजिए किना मतीकार या विकाशाके संधी द्रानीको सबना। समा । तितिह्य-वि (शंक) विल्युग्युक्त सहन शील। श्वाबान् । सिनिम-५ [तं] परकरीः ज्यान्। निनिम्मा-पु दि:] पृरद्ध क्षेत्रः पुरन्दका दरिवित् ।

विविद विविद्य-५ [मे] सीवर क्यी ।

विविद्ध-प्र• सि] विक्की धकी। नौंदा बाहरी। सात बरवॉरिंसे एक (क्वींण) । तितीर्वौ−को॰ [सं] तरने वा पार करनेको क्ष्मा। तिसीपु-नि॰ [सं०] तरमे वा पार बोनेका रचाक । र्तितेद-वि उत्तने। घ० वस परिमाणमें। तितेकश-वि एतना। तिर्ते =- भ तहीं छवर । तिवो =- वि चतुना । अ उस परिमाणमें । विक्तिर-प [सं] तीतर मामका पक्षी महामारतमें वर्षित धक धनवर्ष । सिचिति—प [सं०] बीहरः मुख्यमें पाँव रखनेका एक बयः धन्वेदकी एक जाता इसके प्रवर्षक मुनि बिन्होंने छोठर वनकर बाधवन्तव हारा चनके हप यक्तरेंको खया था । शिय-पु॰ (सै॰) कामरेव' अस्ति; समदा वर्गकाक; प्रतहर । तिथि – सी थि । वह शास्त्रीशीय जिसमें चंद्रमा एक दका काता या बढता है. १-२ आदि संस्थाओं बारा निर्दिष्ट चांद्र मासका प्रत्येक दिना मिति तारीया पुरस्कित्वसः पंत्रका संक्या। - कथा-प् तिविविधेशपर किया जाने वाका वार्मिक कार्वा ⇔क्षय∽पु तिविकी दानि । -देवता-पु॰ विभिन्ना मधिशता देवता। -पति-पु॰ थह देवता विश्वके पुत्रमध्ये निय कोर्र एक तिनि मञ्चल मानी नकी हो। -यज्ञ-पु पंचांग। -प्रजी-पु० र्थ×मा। -धुरम-पु॰ वो विश्वेत विविवस्ता योग। -बक्रि-को॰ को तिथि दो स्वॉदवॉतक करे । -संदि-की॰ यो तिविवींकी संवि । तिष्यच−पु० [मं] कर्ष । तिबर! −#+ उपर, उन्न और । सिमा•—सर्व• 'तिस का नद्द∙ । प्र• त्या दिनका । तिमदर॰-५ चनग्रीः। तिबद्यमा-म॰ कि इत्यामा विगयमा रहना। तिमका-पु॰ तृत पास-पूस । -तोर=-प्र नाता-तोइ । मु॰~सोक्षमा-वनिया सेमा अपनेको स्वीछाक्य करमा । −वॉर्सिसे पकवमा-व्यक्ति मिद्रा सँगना । –(के) का सदारा-बोरीसी सदावना । —की ओट पदाव-होटी-सी वस्तुमें बहुत वहे रहस्वका दिया हाना । -खनना-विधिष्ठ दोना । -शुक्तपाना-विधिन कर देना । निनगना∽ण कि हैं 'दिसदस्य । तिलगरी *-श्री व्यवस्थान । निनपष्टका-वि तीन पर्व्यानामा । सिनस निनसुमा-पु दे निनिश्च । निमादाक−५ [मं•] शिन्स क्या। तिमाम-पु P 'शिनिय'। विभिन्न-प् [तं] चीचमध्य नाविका एक 📢। निज्**का तिमुका#-प देश** निज्**का**'न विचा-ध विभीके बामका कीना शिधी-स्री स्वयं बरपत्र दीनेवाचा एक बान जिसका भाषक कलादान काम आता दे सीवार ३ तिन्द्र-सर्व देश 'दिम'। तिपतिश्चमा गुप्ति। निच−भी दे निख।

सेरे•-म• से !

तरो#-सर्व है तरा'।

प्रेक-प भीजी, बगरपटियों माहिरी निककन वा विश्लेष **छपाय द्वारा मिन्द्रका कानैवाका रिजम्ब तरक परार्थ। धर-**बब्दों विवादकै पूर्व दश्दी निका हुना तेल कगामेद्री गढ रोति। -धेंबा-पु॰ तक रखनेका भिद्रोका वहा पात्र। -हेंदी-सी॰ छोटा तंक्वेंवा ! ग्र**०-च**हता-विवाह संबंधी तककी रस्य पूरी होता। —चक्रामा—तेककी रस्य

पुरी करमा । रीक्षगू−सा॰ तेशंग वा जांभ देखका भागा। तेकहम-पु ने बीच जिनसे तेल निकासा जाता है।

तेसदार्ग-वि हेरूसे संबद्ध तेकका, हेरूमें बमा बना विसमें तेक हो।

शस्त-प धीन दिनच्छका क्ष्यास ।

हेक्किय-सी इक्कोक्ट सी। ऐक्स्पा−नि जी तंब्द्धो तरह विक्शा हो। विस्तका रंप तेलके रग जैसा को १५ वर्क रंगा इस रंगका मोहार वस रिपानी पर महली। – क्रंट्-पु॰ पक प्रकारका नंद । - इत्रथा - पु क्लेका एक मेद । - काफरेकी - पु बाकारन किने द्वप गहरा कारू रंग । ~बुमीस **−मुर्रग**− प बोडेजा काकिया-मिशित काक ध्या वस रंगका थोड़ा ! -पत्ताम्-द्र• एक तरहका काला विकास शका। =पानी=प्र• बहुत द्वारा पानी । =ससान=प्र इंग्स मादमी । "सुद्वाराा-पु यह प्रकारका विकास सहाया। रोक्षी-न हिंदुऑसी इंद्र आदि की तक परने भीर देवने का पेक्षा करती है। शुरू-का बल-रात-दिन पिछनेवाटा

म्पक्ति। रीवका सेवरा∽डु एक सरहका नाख ।

रोगम~⊈० (सं.) झीबार औशोबाम । तेषर-पु क्रोपयूसक अनुमंग क्रोपमरी यदि कोए प्रस्ट करनेवाको तिरक्षा नजरः श्रीव । अ०~चवना नहीयके भारे मीडीका तब जामा। ~बद्धका - क द होमा ।

सबरी-ली॰ दे 'खोरी । संबद्दार-पु वे 'स्वीदार'।

सेवाम - चु सीव विद्या।

तेबाना १-अ दि सापनै बहुना विद्यान्त्र न होगा। सेड - द होष कीयः स्वामिमानः देश वादः शरारवा

विग्सवातमी।

रोहरा−ि धीन परंद दिया धना धीन तहींका जिल्ली तीन प्रतियाँ एक शाथ थीं। ठीछरी बार निमा हुना । तेप्रराजा-स कि॰ तीम परती वा वहाँका बनानाः तीमरी

मार करनाः तीस्ता नार गणा । सहा≉−९ दे 'त्रह'। ते दि•--मर्व उपस्थि प्रश्ले ।

सेद्दीच-दि द्रीपी ग्रुरमैका अभिमानी । सर्वे॰ द नदि । र्मिं∞~सर्वसू। मसी र्वेतासीस-पि पु है विज्ञानीम"।

गिविश्रीक-नि [गंग] हमछीकी क्षांगीमे बनाया हुना । र्निर्माम− ६ द्र दे ती दीखा

र्व- पि. दे दिव' (रिम क्या ने)

वैक-त (सं] निक्त होतेका भाग विकास विवास वैव्य-द्र॰ [सं०] वीर्ण होनेका मान, नीर्णना, द्रासा-पना भवेषरता खर्मा ।

वैकाना-पु सहसाना।

र्वजस-नि [संग] अमझेलाः तेजमे जरपता जिसमें तेज हो। तम-संबंधी: रमोगुयरी प्रत्या राजमा साहग्री चलाधीः चरित्रशामी (पु. तेत्रका निकास) मानुः जनि कादि तेवसे शुक्त वदार्थः बातु-द्रम्बा सक्ति, बराद्रमा बीर

गंभीरता । वैमसावर्षभी-स्रोः (छ॰) सोना-धेरी मारि एकानेग्री शरिषाः, शूपाः ।

रीबसी--स्तै॰ [मृं०] गत्रपिप्तकी ।

वैतिश्व~वि॰ [तं] स्रविभुः महनशीकः। सितिर-पण्डित विशेषर पद्यो ह

रीतिक-तु [पं] वव भारि दरशीमेंपे भावा दरम (ब्बी)। देशता। नेहा।

वैश्विर—प्र. [र्व] तीनरॉब्ड स्पष्ट वीनरा येश ! वैचिरि-पु (तं॰) क्रमा बज्रदेशके प्रवर्तक रक्ष मानि।

वैक्तिरिक−म [चं] तीशर पकानेवाका। तैचिरीय तैचिरीयक-४ [मं॰] बम्रवेंरको 🕫 छाउग

४८ छाखाका अलुकानी का अध्ययन करनेराला l र्तिचिरीयारण्यक्र~य [मं] वैचिरीय शामान्तरेशी भारक्टर !

र्समा≉−म कि॰ दपाना जलाना ।

र्वेमास−वि क्षित्री कामके किए मिनन दा निज्ञक किण डमा सक्रीर १

र्गनाती-सा निमुक्ति संपरिता

र्वसिर~प [नं•] औरसा यह रोग मिरामें हैंगणा भा जाता 🗗 ।

रीयार-कि की बनकर विस्तृत्र होया ही स्वाही। क्टबर साते बोरव 🐧 गवा हो। पूर्वता व्यवहारके वोर **इर धडारने हम्स्तः च्या करियतः मुलीरा मर्गः** मीनुदा मोता-तावा इष्टपुढ दिया बारिके दारा बाम नीरव बनावा द्वसा ।

वैवारी-का वैदार होनेकी दिया था माना वास्त शुरतेशा समस्या हारीएको पुरसा। मन्यामने मा

<u>इचल्या</u> ।

रीपा≠−व दीमी फिरमी। रीरमा-म कि विशेष जीवड़ा दाव पॉद मारि चमारे \$ वामीयर अख्याः प्रानीके कपर-कपर वित्रमाः कारामा ह वैस्त्री−स्त्रा[नं] प्रद्रशुप्र।

र्शिताई-की वैरनेकी किया था माना वैरने नैरानेके पर

भाप्त अच्य । प्रिक−ि तैरमने कुशकातु वर व्यक्तियो मन

वरह तैरमा जामना 🜓 🛚 र्तरामा-त कि नैरनेका काम करामा; दुगरकी नैने रुपाना ।

तैयं-वि [त] शर्व तस्या । च वादेवे दिया माने

काका कुरव । र्शिकि-वि॰ [तं॰] पवित्रा सीवे ग्रंदरीत सीवेदर्शन सरने विर्धिषा •− वि विरक्षा । विस्ति।-प्र• दे• 'विरे दा' । तिर्यंची – सौ • [सं•] पशु-पद्मीन्द्री मादा ।

विषेद् (येन्)-वि•[सं•] विरद्धां बाहाः वकः । अ॰ वक्ता पूर्वका विरक्षे। बाहे। पु पञ्चा पक्षी। -पाती (विन्)-वि॰ वेंदे गिरमैवाला ।—प्रामाण—पु॰ बीवार्ड । —प्रेक्षण— प्र• तिरसं भितवम । –स्रोता(तस्)–प्र वह मानी

बिसका बाहार पेटमें ठिएछे पर्वेचता हो-पन पद्मी ! तिर्पेका-सी॰ [थं] पशु-प्रकृतिः चीवारं । वियेग्- वियेक्'का धमासगत रूप। -अयन~पु य्वैकी

वार्षिक परिक्रमा । -व्हेंश-विश् तिरखे वैदानेवाका ।-व्हेंश —पु• कृष्ण । −राति−को तिरधी चाका पशुयोनिकी प्राप्ति।-नामी(मिन्)-प्र वेक्टाः वि तिरहे जानै। बस्तेराका ।-दिक्(ग्)-सी॰ उत्तर रिक्षा ।-बाब-

पु॰ केमा। - योनि - सी पञ्चकीकी योनि। विस्टेंगमा∽ प्रवक्तका एक भेद ।

तिकंगा-पु अगरेजो फीजका दिवस्तानी सिपादी ।

तिसंगामा−५० तैसंग देख ।

तिसंगी-न्मी• गुड्डी क्वंग । बु तिसंगानाका निवामी ।

विसंतुद−पु[सं]तका। तिस्र∽प्र•[सं] धाने या स्पेट रंगका ल्क छोटे वानेका रेक्टना रस्टा पीचा विक्रके बाह्यारका काला दाय की घरीरवर होता है। तिक्रके वरावर वक गोधना। किसी परार्थका बहुत छोटा इकता या क्षमा माँगको प्रतकीके मीक्का निष्ट (हि) • छन- से हो गिरोत अनुराग बयानवर तिसे विके मूतन बोव -विवाधि । -कट-प्र• तिकसा भूगे। —कम∽प्र• तिकसा दाना। — **कस्क−**पु रिक्टे चुर्गसे बननेवाकी एक तरहकी पीक्षे । -कार्षिक-पु दिल बीनेवाला । -कासक-प्र तिरुके नरापर कामा वाग की श्वरीरचर दोशा है। एक रीग ! - किष्ट-पु॰ विस्त्यी धारो ! - कुट-पु [दि॰] विक और चीनी वा गुरुके मेक्सी वननेवासी वक मिठाई। ~क्टी~को दिलको एसी। –क्टा~पु विंको एक मकारका सीगुर । -चनुर्यी-को मायके कृष्य यसको वतुर्थी ।—चाँबरी>−सो> है> निक-वान्ती'।—वाबकी −न्दी [र्षि] तिस्र भीर पातस्त्रो सिन्दो । *−*पित्र-पत्रक-तु दैस्पर।-पूर्ण-तु विकास पूर्ण।-संबुक्त ~पु• तिष्ठ और धारकः (अा•) पेसा संयोग जिसमे मिलनेपारीका अरिवल स्पष्टवा विश्वलाई है ।-श्रेपुक्षक-प्र भिक्त वार्तिमन ! - र्तस-प्र तिसका तेस !-चेन् -श्री विकास वनी गांप को बालमें दी जाय। -पाही -पपदी-नी [हि] सन या गुनकी वासमीय वने िक्तको बनो रोजे जैमी बरनु ।~पर्व्यं~पु थंदमः तित्रका पत्ता !-पर्वी-सी रक्ष नेन्या एक नती ! -पिंश-पु तिल्ला वह पंचा की ल कूछे, म कने । -विकार-पु निष्यी पाठी निष्युद्ध-पीड-इ तिन देरनेशाला सेनी। —যুদ্দ—যু• চিলভা দুলা লার । –যুদ্দর—রু• শিলভা कुण बरेतेचा देवा माधिया ।-यम-यु P श्रीनदित । -भाविमी-स्री इतिहार -सृष्ट-दि मिल्ड साथ मूना दुना । - भेद्-पु पीत्तवा दाना । -अयूर-पु 11-E

पक गौर जिसके पर विकक पृक्षकेनी बीते हैं। --एस--पु॰ तिलका तेल । -- धाकरी -- स्री [किं॰] विलमें चीनी मिकाकर नमानी हुई मिठाई ! - विकारिकाम्)-पु॰ विस् मनुर । −दीस-पु॰ विस्की पर्ववादार राश्चि जो बातमें श्री बाव । -स्सेड-पु॰ दिस्का तेल । मु॰ -का ताब करना-छोटीची शाल्डी वहां रूप देना ।-की मीट पहास-छोडी बातके लंदर बहुत बन्नी बाद होमा । – दिक करके−नोबा-धोबा करके। ~धरनेकी सगद म द्वीना~ भोड़ा सा भी श्वान रिक न होना, ठसाठस मरा दीसा। -भर-बोहासा मी (चमात्रा धोडी देर । ~(क्वीं)में सेख व होना-श्राठ-संबोध म होना, मुरीबद न होना । तिसक−त्र [तं] धार्मिकता या छोमाको गहिसे मिसे इए चंदन, देसर या रोकी बादिमें क्रकारपर बनाया हुमा विशेष मान्यरका निहा, दोनाः सिंदासनाहरू होते समय धुवराजके मस्तकार धनाया आनेवाका श्रीकाः वर्तवर्मे पूरवनेवाका यह पृक्षः विसन्त्य पीचाः किसी क्षत वा समदावका सर्वमेश प्रवय (समासीतमें): विवाद-संवेपी यह रत्म बिसमें बन्दायक्षके शोग नरबे मस्तबपर टीका कगान और कुछ इच्य भारि चढ़ाते हैं। सियोंका एक शिरीमुक्या देखे भीतरकी तिही। कुक्टुसा सीचर नमक पक प्रकारका बीडा। एक रीमा मदन कुक्का मरबका पीपक का थक चेत्रः चारीरपरका तिका प्रवस्का एक मेर किसमें मत्येक करणमें पकास कारत कोते हैं। सुकानके कपर पक् ननेका विना कास्तीलका दोका जमामा कुरता। क्रीक-मान्य बालगंगाचर विकक्त भारतीय स्वराज्यके अध्यापन मेता (बन्म १८५६, सृत्यु १ २०)- सन् १८८९ में कांगितके मंकते पीचपा की-'स्वराज्य हमारा कमासिक अधिकार है।' केसरी' हारा एक अंग्रेजको दायाके उत्तर का समर्थन करनेके कारण नापको कालेपानीकी समा द्वर्ष । आप मांडलेमें रसे गये बढ़ाँ आपने 'ऑक्टिन होम माफ दि देवाम की रचना की। 'गीतारहस्य' भाषकी यक और नगर कृति है। -कामीय-पु॰ एक रागिनी। ~हक्तो ~पु दे 'विक्कदार'। ~हार~पु॰ तिकक चशानेके किए भवा जानेवाका व्यक्ति । तिसक्ता-व॰ कि॰ गीधी मिही वा जमीनका दास्कर

ष्टना ।

तिलका−की सिं∘] शाका एक मेद्र । विकासकल-वि० [तं] विद्वीशका । विसम्बद्धाय~ए० [मं•] सनार । तिम्बित-विश् [मे] विद्याला । विकारना-भ॰ कि स्पाकृत होना एटपराना । तिसवायी~नी सर्व, अंगुरताला आदि रमनेकी दक्षिये}-**ब**द्री छोडी चेली ।

विष्ठमिष्ठ-भीः निष्टिवित्ताद्वरः एकायाव । तिलग्रिसामा-अर्थि देपेन दीनाः चौरियाना । तिसमिताहर-स्पे विकमित्रानेश क्रिया पा भारः देवेगा ।

विस्तिमिनी-स्था है 'विनीमवाहर । विषयर-यु निरुद्धाः तिम्बा∽प्र विन्दातदह।

तोज≠-पुत्रसङ्ख्य तूनीर। सोत•— दुराधि, समृद्र। सोतर्ड-नि तीतके रंगका । प्र• तीतेका सा रंग । सोतकण्यः प्रपेशः। सोतरां-वि दै॰ 'तोतका'। सोतरा-विदेशीतकार। षोतराना~ष• क्रि॰ वे॰ 'तरहात । तोतका~दि को <u>त</u>त्तराख्य बोक्स हो। तराकानेका सा । तोतकामा~भ• कि॰ दे॰ ^कनुतकासा'। दोता-पु॰ इरे रंपका एक मसिक पक्षी विसनी चींच काक होती है, बंदरका भीड़ा ! -- खड़श-बि॰ जो तीतेश्वे मीति भाँची पेर के, रूपफा। क्यिमें थोगोची मी सरीवत म दो । - चक्क्सी-स्वा नेसुरीवतीः वेबकार्य । - प्रती-प पक प्रकारका साम । शुरू ∽पाक्षमा−निसी दुर्स्यसनका भारी केला: किसी बीमारी वा तुराईकी करने देमा। -(ते)की सरह अलि फेरमा-धकरम मेहरीवत होना पुराने संबद्धी पद्धरम भुका देशा ! —की तरह रहवा— निमा मर्भ सम्बो बंड करना । सीरप्र – प्र॰ (स॰) बानवरॉक्ट्रे बॉबनको छवा क्रोहा, बंद्राप्त चलुक मादि । −सेस−पु विश्वके दावका दंट । तीय-पु [एं] स्वभा पीका, बक्षा एएं। तीम वेदनाः म्ब्या देविमा चकाता। तीव्य−पु [री•] गीटमा दै॰ 'रीतत्र'। तुंदा यक वेदा बसका बाब । सोद्री∽न्या• [का] फारसका यक यह विसक्ते बीज दशका काम जाते हैं। धतमीका नीव । शीप~त्री <u>ति</u>•] बुद्धमें गीलागरी कम्मेका एक प्रशिद सन्द्र जो अधिकार की का दोने अविक विवर्गनी धारीपर चकता है और विसमें जागेको ओर बद्दक्को नकी जैता क्तक क्या द्वीना दें। −स्वाना-प्रवद्य वह रवान वहीं तीर्पे और बनके भागायक अफरण ही। प्रकृषे किए शासीकार वीशोक्य समृद्धः। -ची-द्रः तीप प्रकानेशाकाः गोर्कशाकः। .शोपनार--स॰ कि ब्रॉक्स छिपाना ! सोस्तरी-स्रो स्रश मन्द्रापन। लोक्स – विश् देश 'दीहका' । क्षोत्रका-पु बोहकी बाना दिक्तनेका पमन या श्रद्धका मिक्या । मु• —श्रदाना—शिक्ते म देना <u>श</u>्रीव वंद दरना । होबा~पु• (भ 'ठीव') घणित या निय समें पुनान क्ट्रेंकी वधात्ताव या दापमपूर्वक की गंबी वह प्रतिदा (क्यी-क्रमी किसी व्यक्ति या परार्थके प्रति प्रणा प्रकट

दिना नुबन्नानंपर बाच दान बरना। -शोदना-धीनमे

(इप कामग्री तुनः करना । —कुकमाना-निर्माने श्वना

संग दरना कि वह बनाइ गाँगमें कने !

सोमनोम-पु पानका आरंगिक रवर तन !

सोम~द॰ सम्ब राग्री ।

वीमदी-की देवां।

मान'ऑका एक होता एक होत किसका मानेक बाद मी मधरीका दोता है। राजपूर्वीका पक प्रापीन राज्यंग (प्रमीराजकं नाना जनगपाल इस्ते पंशके थे)। —प्रह--प्रभागतारो सैनिक । —घर—पु॰ भग्निः शोमतम् । कोमरिका-का॰ [सं॰] दे॰ 'तुबरिका । सीमरी=-सी॰ ग्रम्भा कर्जा कर्ज् । वीय-पु॰ [सं] यह, पानी। पूर्वपादा मध्य । -कर्म (ग)-प्र॰ सर्गण । --कास-प्र॰ वरुमें दोनेवाका वृद्धः वानीर । वि. यसमा श्रम्तुक, व्यासा । -कुंस-तु सेवार । ⊸क्रब्कू – पुष्क क्रक्रिय अत विस्पे सहानेवर केनक मक गोस्ट रहते हैं। -ऋदिश-को॰ अस-प्रीताः। ~गर्म-पुर जारियक। −डिम-पुर मौका, वर्षोरह करका। -श-प्र मथ वादक; वो। -धर,-धार-प्र मेच वादक मीचा । -चि-प्र सागर सप्तरा वह को संबद्धाः - • प्रिम-पुर्शामः - निश्चि~पुर्शेर शोवधि'। -शोधा-क्षी पृथिषी। -धर्मी-मी करेका । --विध्यक्की--थां॰ एक धाक, संग्रही, वन विष्यक्षी । –पुरुषी, –प्रशानन्ती । बहसा वृद्ध ।-प्रमादव-प्र निर्मको । -प्राक्षा-स्त्री बक्तीभी पेष । -सर्म-पु॰ सहारका पान । ~शुक्र (च्)-द्र नेतरहा मीना। -र्यक्र-प करूमश्री कीनारा । -राज~द्र° मध्य बरण। —राक्ति−त ताला शीका समुद्र । नवसीन थी करेका।-बृश -शुक्र-पु सेवर।-शुक्तिका-खी॰ शोगी। -सर्विका-सी मेहके। -स्वक-उँ मेडकः वर्षेष्ठिपमें एक वर्षम् वस मेरा । शीयवासम−५ (सं॰) वर्ष कछ । तोबारमा(रमस्)-त [मे+] परमद्र ! तोबाचार-पु [गु॰] बलाश्चर । तोषाविवासिशी-की॰ [सं] पारका वस । तोवाखय−९ [मं•] समुद्र। कीबाराय−पु (त्र•] दे होबापार । त्रोयेश-पु॰ (५०) वरणा शतभिषा मक्का पूर्वारण सञ्जूषे । क्षोद्योध्यक्ष्यं-पर्वामं विष्याः सोर−ड अरहर। करें 'वीत्र । कसर्व वेरा । शोर≇−सा तुरवं। त्तोरणे~ड॰ [र्नु॰] कियो यर वा नगरका बाहरी *वर*मार्थः विदर्शना दीवारी सोवी आदिकी समावत्वे किए अनावी आमेनाशी मानाएँ आदि वंदनवाट (करो कही दारोडे वर्तियों आदि वॉवडर वी बीवारी आदियर कवात हैंने इत्में किर रतका मर्वाय बाला दें)। अध्याल प्रधानात. दिवा गला । - मारव-पु अमिसापुरी । -स्प्रदिका-बश्चाचाप। मु॰ —तिहा मचाना-श्रीगना विहासा। भी पुर्वेश्वयका संयास्थन । लोरवण-पुदे तीरणा बिट जाना अपनी बागपर कावस व रहनाः हीशा विशे शोरमाण-स कि दे तीत्रमा दूर करना। सीस॰~सर्व॰ स्टाः शुन्दारा । शु तुरी, कन्यो । होराहें--श॰ नगपुरेका सीमतापूर्वक तेबीने । तोरामा⁴-ध॰ ति 🐧 विशाना । सीराधान्क-वि वेगधान् संव । [नरी तीरावनी धी सारी-मी काले (क्या चरकी) हरते ! सोधा-व [मंo] अल्पा रशियोध बरावर रह होना होता सोमर-पु॰ [मं] माठेकी सरहका एक मशिक अवः। बारवः

−प्रिय-प॰ थी। −प्रस्थ-प० तेवस्था पेड़ा दि शिसका फल कावा हो। -मुद्धि-वि॰ क्रिसुकी अबि प्रमार हो । -प्रांतारी -स्रोध जागवासी, पामका पीवा । -सारा-पु॰ सङ्गार । -सङ-प॰ सङ्बना कुरुंगन । वि॰ जिसकी जर करकर शंदराको हो । ~राउँस-प॰ सर्व । वि जिसकी किरणें प्रकर ही । ∼रस~प चरा-सारः विष । वि+ जिसका रस भरवरा हो । -सीह-प० प्रसात ! -इक-पु॰ जी । वि जिसका ट्रेंड चीका हो । -प्रात-दि॰ जिसके साग नकोके हो। -सार-प सीवा । --बारा-सी॰ शीशनका पेड । मीत्रवाह-ए (सं०) वीकी सरसीं: सम्बद्ध ! शीवपता सी सिंगे तौरण होसेना मान प्रयासा नोखापन । श्रीक्षणोत्र-५० (सं•) सर्व । शीक्षणा नहीं है है | बक्त केवाँका मर्परदानी। महास्वी-

विष्मतीः कत्यम्हपनी । सीडपारिज-ली॰ सि॰] अवीर्य रोग' अक्रिस । सीरणायस-प= (सं•) इस्पात) सीराध-दि सीरार । तीयमण-विश् तीथ्य । वींपर, वीलक-प्र• हे 'वीलर'। वीका-वि दीश्य। -पन-प्र वीश्वता।

वीसर तीसस-प एक देर विश्वका सथ मिकाई चीर बारि स्मानेने बाम साता है।

सीपन≉−दि तीश्मः श्रीक्षत्रता*−सी तीश्यता ! सीपार-वि दीश्य ।

शीय-सी पसरी तीसरी तिथि। मान्त्राहा तृतीवाची द्दोमेरामा एक इत इरवाधिका प्रत (यह विवादिता विजी-ब्य एक प्रधान जत है)।

तीजा-प्र• मुस्कमानीमें मृख्ये बादका तीसरा मिन (हरा दिव बत्तकरी बादगारमें द्वसके संबंधी यहण होते और गरी रोध्ये प्राय दशवं गाँदै जात है) । वि तीसरा ।

शीवण-विश्वदे 'वीवा । सीतर-पर यह प्रतिद्व पत्री जिसे शोय नवाने हे किय पानने हैं बर्देगरावृत्त ।

सीता-वि॰ वीरो धरपरे स्वाउदा विस्तः गीना ।

शीतर शीतुम=-प्र• दे शीवर 1 सीमरी १ - स्मा दे 'तितरी ।

वीत-विशामीर एक । यु तीनकी संस्या है। महयू पारी आधारीमें तीन गोत्री(गर्ग गीतम शांटिस्व)का एक ममुराया रे विधीका भारत !-बार-नि वीश का पास कृष्ण - पाँच-स्ते • इधर उपस्थी नाटा सदर दग्ह तप्रदार। -मदी-की पेरवरः निमन् । स्व-सरह करमा-जला ध्यन करना, निनश-विनर बरना। -तेरह होना-टिवर-निवर होना विक्र बामा । -पाँच करमा-बेरवन्त्री वान बहना राममधीन बाना। (न)-में म तरहमें-भयाय संबाधीशिय, जिल्ही दशी पुरः स हो । सीमि - 4 सीना

सीसी—को॰ तिवाका श**ावक** ।

सीमार-पर पार) मेबान्सम्य दियावत । -सार-पर रोजीको सेवा करनेकाका । ⊶शारी~स्वी¢ रोजीको सेवाका क्रार्वे ।

श्रीय श्रीयार्थ-स्री सी. श्रीरत !

लीर्वाज-प कि ी तीर चकामेवाका, चमर्थर । वीरवाजी-खी॰ फा॰ो तीर प्रतानेकी किया वा विधा। सीर-य सिंको अनीका किलारा तर, कुछा गंगा-तर-सीसाः रॉयाः वान । - स-व वस्ववी वस । - अक्ति-य तिरहतः मिनिला । -वर्ती(तिन)-विक गीरफर विश्वत जी किलानेपर शहता का !

तीर~प था विज्ञा । ~सर~प्र• वाण वसनिवासा । तीरमञ्जूष देव 'तीर्थ' ।

सीरिस-वि सि॰ दे किया हमा निसदा फैसका है। गया हो । च कार्य-समाप्तिः रिवत शादिके सरिवे इंटसे वशा श्वमा ।

सीड-प॰ मि ने दिव । कीर्ण-दि॰ सिं॰ जो पार कर बका ही: जो पार किया वा खुद्धा हो। -पदी-ती वाहमुहो, सुसही। -प्रतिज्ञ-वि+ विसने अवनी प्रतिष्ठा परी कर नी हो ।

सीर्जा−सी मिंगिक्ट∜रा शीर्यं**कर**−५ [सं•] डिना विष्यु श्रासकार । तीर्थ-प भि । यह प्रधारधान जहाँ विशेष पर्मेंद्रे सम वाची पद्याः साज भारिके किए जाते 'हॉ-जैसे साधी प्रवाग मनदा भारि (इसके तीन भेर हैं-बंगम आजन भीर स्वापर), प्रथ्य क्षेत्रश्चावर्षेके क्ष्य खास स्थान बिनस काचमन कारि करते हैं। मंत्री परोडित प्रवराज भएति। हारपार, बंगवेशिय काराविकारी अन्यसंप्रवास्त्र अस्वर-करूप सर्वेद्य विनियोज्ञक, प्रतेष्ठा नगराच्यक्ष सार्वेतिर्माय-कारक, वर्माध्यस्य समाध्यस, ५इवात हुर्गपात राष्ट्रीत-पात- नरवीपाल-राजको ये अठारह संपत्तिमाँ शाला यहा धत्रा रोमका निहासः बपाया महः वपश्च स्वान या समया बाट, पाटकी सीटी: सीका रवा करियों हारा नेवित बका वराष्ट्रामा गुरा योगि। वर्षना ब्राह्मण नागमः निधा सम्बासियोद्ये एक उपाधि । नदर्मश्रत-प्रश्निक करें का जिसमें किसी वीचेंगा बत हो। -क्का-प्रमा निष्ण धालकार !-काक-म तीर्वका बीमा: (मा) सोनुष तीर्थोषयीयो १-कृत्-प्र श्रायकारः क्रिम। −श्य-पु• धिन। -पति-प -परोबित-इ वीर्थेक वंदा। --याका-सी॰ तीर्थ करने हे किए की गयी बाधा छीबौटन। -राज-प प्रवास ('राजा' वा 'वित का समानार्वक कीर्य भी साभ्य तीर्थ शब्द के बाद अहमें भे कर समस्य प्रमास अर्थ ययाम-नीपद हो जाना है)। -नाजी-मी॰ बाती। -बाक-म निरदेशक !-म्याम-प रे तीर्थकार । -शिला-भी धाटनढ कानेशना सोदियाँ। -शाय-पु॰ तीर्थमें यह आदिया गरिपार करने का बताने हो

प्रिया। −सत्रि−धी १६ की पढ माइडा। ~सदी

(पिन्)-दि॰ र्राभी वर्ममाध्याम वाग्र कार्यशहा । व

43 45511

(ब्रह्म्म) ।

स्वकारमा(रमन्)-रि [र्स॰] रताञ्च, निराध । स्परमापि(स्)-प्र[सं] यह साम ।

स्पन-प्र• [सं] होत्तरे, स्यापनेको क्रिया । राजनीय-वि सिन्दे स्वास्थ्य की छोड़ने बोरव हैं।

रमजित--(वे॰ दिंगी दे॰ 'स्वक्त' ।

रयज्यमान-वि+ [र्म+] वो छोड़ा वा रहा ही।

स्याग-पु॰ [र्स•] किसी वस्तुपरसे अपना स्वरण इस हैने व्यवना व्यवस्थानका भाव मिटाकर असे होत्र हेनेकी किया वत्तर्गः निसीसे नावा वीत्र वैनेकी किया। शांसारिक

विषयों तथा मौथों में किए म रहनेकी किया या मार्गः ममरबद्धा एच्छेर; पर्राहेतसायन अथवा स्थ कश्नको

मासिके किय की गर्नी स्वार्वकी क्षेत्रात करवानीत किसी

पद वा स्थानसे संबंध न रखना। - वय-व श्लीका। ~मृत –शीक-वि॰ अदार, त्यानी ।

स्यागना-स कि॰ धोइमा स्थाग **क**रना। त्वागी(गिन्न)-दि [र्च] त्री सांसादिक सुलीं में क्षि

न ही। विसने स्वार्थ, भोगड़ी इच्छा आदिका स्वाय कर दिवा हो। निरक्त ।

रमाजिल-वि॰ [सं॰] विससे परिस्ताग कराया शवा हो। विस्की प्रमेश स्तामी गरी हो ।

स्यास्य-विश् [सं] छोड़में स्थानने बोस्य। स्यार#-वि दे 'तैवार ।

र्स्युं†−म०दे 'स्वो"। त्यौं-व उस प्रकार, इस तरह, बंधे; इसी वरह, उसी

समय तत्व्यनः सोरः तरकः।

स्योनार=-५ हे 'त्यौनार'। खोर=-५ दे 'वीरी'।

त्योरसः स्वोदन्यां – दुः बीहा द्वामा बा मानेका वीसरा वर्षे। स्पोरी-सी मान्या रह मानेको सकीय निगाद, शह । मु॰ -चहुना मा महसना-क्रीवर्ध मार्थम वक्र पहना भोक्त शुरुरोद्धा कररही और सिन नाना ! --वहामा

या बदसमा-होन व्यक्त करनेके किए पेशामीपर वठ बाबना । न्यं वड पदना-स्वीरी पहना । स्थोद्वार-त प्रतिवर्ष मिश्रित विविद्धी मनावा पानेवाला

क्षेत्रे बहा वार्तिक वा जानीय कासव वर्षे । स्पोद्यारी-न्यो यह वस्त थी खोहारके व्यवस्वर्ग छोटी

था गौरुराँकी दी जाम। र्यों-अ दे 'लो' ।

स्पीनार॰-पुदंग सराहा । स्वीरण-पु है 'स्वीरी ।

रपीरामा-भ॰ कि॰ सिर युगमा, शिरमें पद्धर माना ।

स्पौरी~लो+दे 'खोउँ। स्वीरमां -प्रश्री (सीरस ।

त्यीहार-प्र दे॰ 'सीहरर'। खोहारी-खी॰ दे 'खाहारी'।

ध-दि [सं•] (नमासंतमे) स्था बर्नेवाचा तीव । प्र॰ सप्तमी विमक्ति दूरमें अवक होतेबाहा का अवव । पदा-को [नं] क्षापा, साम, श्रवी, बुलरा, व्यविचारियी

की। मीर्ति वद्यः इत बंद्य बाति । इति वस्तिता ।

-निरस्त-वीन-विश् मितंत्र । -रेबा-सी वेत्रा। चपित्र∼पि [सं]सम विनयोः कां⊟तः। ਬੜ−ਤ [ਜੋ] ਚੀਚਾਹੋਂਗ। −ਕੜੜੀ−ਸੀ ਬੜੀ: पीरा ।

प्रप्रटी-को [सं०] होशे रकावपी। त्रप्रख∽त्र [सं•] सँगा।

मपुष चपुस~पु॰ (र्श•) राँनाः **श्रो**रा । प्रप्रपी, प्रयुक्ती−न्तं+ [तं+] स्रोरेध देखा परा रहायत ।

अप्सा∽सी (र्ध•) बमा शत्रा रूप। श्राप्तम-प्रव (६०) गरा ।

ग्रय−वि [च•]सोता थ्रयी-का [र्व] शानका समाहार (तैते-वेर्षको हा रक्षी); कद्र, बम्रा और सामकेन बहु रहे जिसमा ही

देश संदानें मीनित हों प्रश्नी। नीव, समत । ननव-प्र बह किएके दीनों बेर छारीर हों। सुर्वे। क्रिया - क्रमें-प्र• वैदिक वर्ष (- मुख-प्र• मादल) वयीमव-५ [६०] मूर्व दरमदर।

चयोक्स−वि॰ सिं] दरहा दरहर्ते । सबोतकी-को [मं] दिसी प्याची तेरहवाँ तिवि होस। विका तेलावी।

प्रशाम—त एक मदारकी कालो जो प्रापः अक्त(•¶सनके काम काती है। बस-तु [सं] पैन सत्तरे मनुमार जोसीस स्वयस्य

इरकः वस जंगकः शंगम सृष्टि, मसुम्ब तथा पशुन्त्री। वि जंगम कर । ~१णु⊸न्दी० बृहद्भ वह मूस्य दन बी छित्रसे बानेवाले प्रकासमें दिखाई देता है। तहम सम सर्वेद्धे व्ह प्रश्नी (

बसय-९ (संर) यदा विद्याः म्वाकुलमा । प्रसमा•-म कि दरना भावशोगा। प्रसर−तु (सं•) कुन्पहोंचा एक भौजार, बरकी गर

संदर्शको क्रिया । बसामा = न्य कि॰ दशना तप रिवासा । वसित-वि दराह्मा भीत प्रसामन सार्वाता यसर-वि [सं] भीव, दरपेत्र । भरत-वि [नं॰] गोत दरा हुआ। व्हित, अर्थमेव शा

हवा। श्रीपता हुआ। संब (नेवीन) I प्रसम्-ति [लं•] है 'ब्रास । भारक-पु॰ [ri+] एटबोयमें किसी बिदुबर हारै बंबानेशे

बिटारा । त्राण-पु [तं] यवके देशका निवारण रका वपास बाधया रहा वा वनारका साथम (देवत समाप्रवे-केने पाण्याय)। त्रावशाया सता। समय । 🖟 रहित । न्यती (ग) -कारी(रिम्)-वि प्र १ए६ ववामेवाला। धालक-पु [रो०] रक्षम १

बास-रि (र्ग) रिवाः वपावा द्वमा । बातस्य-वि [र्शः) रक्षा करने बीग्य रथयीय र वाता(न)-नि पु [नं] रहक ववाननामा

धातारण-पुरस्का ब्रापुण-पु [र्थ•] रविद्य यता नाम वा भन्य बाग्र । तिर

रोंग्डा बना बना ह

तमसार-म क्रि॰ घना, इपस्ता, रक् म एसता; गर्मपत तहसाक-म कि शह होता, प्रस्त होता । स॰ कि छह प्रमाण बतना । होता । तदवाना-स॰ कि॰ दे॰ 'तीइवाना' । तकार-सी॰ बरहर ! तुषाई-सी• दे 'वीषाई'। सर्वेश-सर्वेश त हो । तक-सी दिसी छंददे करगोंदे वंतिम अधरीका मेठ-तहाता-स कि तीहवासा वंबन तीवना संबंध विष्टेप बंखानपासा सामेबस्य । -चंडी-खी तक मिकानेकी करनाः वहा सिका सनामाः मध्य घटवानी । कियाः सापारण पपर्यना मदी स्विता । अ०-बैठासा-सकी-सी॰ सि॰ो एक रागिनी । ग्रंदरे बरवीटे बंदर्रे ऐसे छण्डोंकी बीजना करना जिनकी राणि-प॰ (सं॰) सम्बद्ध पेड । ततराक-वि० है 'वीवहा । तुक सिक जान, तुक्तंदी करना । तुक्मा - पु [फा•] फ्या बिसमें बंदी फैसाते हैं। त्तराजा≠~श॰ कि दे॰ 'तत्त्वाना'। तकोत-प अत्यानपास चरचों के बंदिम मधरॉका मेच । सतरींबा - वि दे 'तीतका' । लकाक-प देव 'तबका' । त्तुसामा-श॰ कि॰ वर्षेका छम्दों तथा वर्षोका अख्य तकार-प 'तना' बरके संवीधित करनेकी किया। 'चन्च' भीर काला का बचारच करते हुए नोकना । करके किया गया संरोधन । तमळी -बि॰ स्पे॰ टै॰ 'तीतकी'। तकारना न कि तुन्त्' करके संवीधित करना । तत्व-प सि॰] सम्मा परवरा ततिवा मीका बीवा। तकारी#-की वे 'तकार' । तत्यांजम-पर्शासी एक अपरात, तत्य। तकर-दि , प्र॰ तक्त्रको करनेवाका शावारण क्य रचने-तुत्या-की [एं] नीतका पीना; छोटी रकानची । तन्म−प सि वेपेटित करते दा चमानेको किया पोकतः वाका है महत्तः श्रष्ट पीडा, स्वशा । स⊯क – स्तो॰ सोटो जोशमे बकाबी जानेवाकी वही पर्तप । तका-प• कि ो दशबरहित बाग विना फलका बाग । तम-प० वस-विशेष । त्तवन्तर-प सि वे 'तकार'। तमक-विश् कार्श थोवा छोटा सम्मा दर्बश माजक । तुल्र - पु दे 'तृष्' । -भिज्ञाख-दि॰ जी हाटपट वा धोरी-धोटी वार्तीपर तुसार-प्र• [सं] एक प्राचीन देशा नहींका नोश-रियाम-नाराव हो काम, विद्विद्याः नामक्रीस्वात !-सिजाञी-विकविकापनः भाजकमित्रायो । -- प्रवास-विक करम सब गाँध ग्रमारा -प । वडाँका निवासी। 🛡 है 'तवार । तीश्यपी । तपुम-त [व] बीव । शु+-तासीर सोइच्छे बनार--तमसुनी-सी 'तुन तुम वधनैवाहा एक वाजा। नीयमें अपनी सासोर होती है और संसर्वका प्रधान अवस्य तुनी~सी दे 'ताना पदता है। तुनीरक-पु देक 'तुनीर'। त्तरा −सी [सं•ो वंद्रकोचन । ~कीरी-मो• बंद्रकोचन । तमक-विदे तनक'। तम तमा - सी दे 'लया'। तम-प्र वि] तुनका के। वि क्षित्र कटा प्रभा। कुछ। संचार - वि॰ पैता - 'दरिगी दान अवरवा नींब सचार'-हुमा । -बाच-द दर्जा, मीविद्ध । तपर-श्री [तु] धीरी तोषा बंदूका -बी-प्र तुम्क गुठाव । तुष्य-वि [सं] शीन शहर, ओग्रा गणना निरूटः अस्या पनानेवाचा, गोन्धराव । नि एस असारा ग्रन्थ रिका मेदा दीना गरिस्पक्त । प्रश तक्षेत्र – सी॰ पिता ो एक प्रस्तरको छेत्री सक्षो क्रिमके स्तान त्र मनीः वर्तिमाः मील्का पौषा । —ह—प वर्तदका पुरुषे बोर्भ क्करी, और बादि छाडे बाते हैं। हवाई म्य । ~धाम्य#-तु तुत्र भूसी। तप्प्रच−ि [में] मीयमा रिका निमार I तपामां-प है। तकाम । तुष्ठा-मी [संव] कृष्य प्रदेशे चतुर्वेशी- मीलका पीवा । तुर्वे स-पु [भ] जरिवा वशीका। -से-- के जरिवे नुष्पातिनुष्प्र-वि (सं•) यद्याम गया-गुत्रहा **अस्पं**त ···धी क्याने । मिक्द । समया = - म दि रत्या है। याना। यह बाजाः सुरद गु.सक-पु॰ [तु॰] बैसर शाम-शीवल, देरवर्गः विकास दीनर अयस हो जागा । व्यवस्थाः आत्मचरितः। तुम-सर्व वह सर्वजाम विभक्ता प्रयोग वस पुरुषके निए तुस-सर्व ् तूंका वह सपत्री प्रशेक्तो तवा व्यंव कारकते. दीना दें विके संगवित करके मुख्य कहा बाहा है। तू का वाहिरिक्त जन्म कारकोंमें प्रमुक्त हीते हैं बहुए प्राप्त कीता बदु । रै-देने तुत नुझसे । तुमदी-को स्पा ६९६ : व्ये कर्ड्या ग्रा आदि तुरी-मर्व तुर्दा कर्म भीर मंत्रपान कारकता वय तुरास्त्री। निकालकर बनाया दुशा बाजः व्यो कर यूमे जनावा सामे हुर-दि॰ बायश बीहरना । बाना वह बाबा दिने धेरो बजन है। सुदि-सी [म] ग्रीटी श्लामधा । नुमरी!-नी॰ दे॰ 'नुपरी । तुरिनुर-पु॰ [मे] हिंद र नुमरु∽दि० पु ∢्रामुखः । तुरम-५ (मे) पूरा । तुमामा-म 🏗 नुमनेका काम कराना चंगिनेकोशि

परिजासका -- इल-प्र वेलका पेका -- इका-की गोपापरी करा । -इस्टिका--सी॰ वर्गक्या गामक करा । −वृश−पु देवताः धीव । −०गुरु–पु देवगुर, वृश रपति । −भगोप−प्र॰ गौरगहरो । −०वीर्धिका⊷ली० भावतम् गंता संशक्तिमा । -- चति-पु रहा । -- प्रांतप-पु॰ दिष्यु । – ॰पुच्य-पु॰ काग । – ॰मंकरी-सी। तुकसा । - वयू-सा॰ नप्तरा । - विवस्पृक् (स्)-पु॰ वद् तिथि जिसका भीगतीन विजोर्ने समाप्त हो । ∽विष−पु० स्वर्गः बाषाका भ्रुसः। −१क्(ग्)− पु• शिव : −देव−पु• अका निष्णु भीर महेदा−ने तीनों देव। --कोप-प तीनों दोव-वात, रिच और क्या इन दोनोंके प्रक्रीपरी अल्पन रोग, समिपाद ! --•ज--प्र समिपाद । वि॰ तीनों दीपोंसे करस्त्र। -धनी-सी (दिं] एक रायिनी। -धर्मा(सैन्)-पु क्षित्र । ~धानु~ पु गणेका । स्त्री तीशों पानुएँ~ सोना बॉरी और तौवा। ~चामा(मन्)−५ सिना निष्यः अस्ति कृत्य (१)। −धारक−पुर श्रंबत्य । ~धारा-स्रो गंगाः सेवेंच। -भयन-त्र शिव। −नयना–सी॰ इत्तां पार्वती । −मास−प्र -मेत्र-पु० शिव ! -०**व्**षासकि-पु चंत्रमा !-मेत्रा-न्त्री भाराही क्षेत्र । - एट्ट- तु काँच शीशा । - पताक--ह दामकी नद सदा मिसमें तीन वैपनियाँ कैनी हों। त्रिपुंक् । —यद्य—पु केकका पेष्ट । —पञ्चक−पु पकाश्च-का पेड़ा तकती हुद आर नेकके पर्तीका समादार। -पथ-प्र• बाम, क्रम और अवासमा-वे तीजो मागी आसाश, पूज्यों और पानाका वह त्थान वहीं तीन रास्त मिले हों। - • शा - • शामिनी - छी (स्वर्ग सर्व भीर पाताब-दोनी बोद्धीने बहनेवाकी) गंगा । -पया-खी॰ बशुरा । -पद्-वि॰ विसमें तीन वाने हों। विममें तीन करण या पर हों। तीन फरोंका (श्रम्य छन्दर)। -पदा-लो॰ गावची चंदा इंसपरी पूर्व ! -पविषय-ली॰ विद्वारी विपार्थकी वरदका एक बातु-निर्मित माबार (तं)। −पद्यी−स्ता गानको छन्। दाक्षेका पैर वा प्रकान गाँवनेका राष्ट्राः अर्म्बरात राजनेका दिवारे जेला माबार (र्गण)। गीबापदी सताः यद्य छेर । -यदा-प्रण नंहमाद्या एक नोहा। -परिकाल-नि शिसन काम-मीप भीर कोम-दोनीकी जीत किया हो। (महाक) जो बीविदार्थ बद्ध बराये, अध्यापण वहें जीर शाम है। ~पर्यं~प॰ वहासका देशां ~पर्यां~सी वसकासा ~पर्विडा-सी र्श्यास्ता --पर्णी-श्री शास्त्रणीः क्ष्मपास । -पादी(हिन्)-वि सीवी वेदीका बाना । प॰ जाधारीकी एक धपाधि-तिवारी विवेशी ! -- प्राप्य-प • तील दार सियोदा हुआ राहा वस्त्रतः । ~पादिका— मी विवारं गोवासी रूता ! -वाब्(स्)-प्र• वर मेक्ट्रा क्वट् । --पिंड-- प्रतिशा विनामह और मनिना-महस्री विकेशमें टील विकासर्गण नाव । -पिटक-प्र रीचोंका मुख्यांव भी दिलव सुराओर अभिवस्म∽रीन फिक्रो(भागी)में निश्रक्त है। -पिक-मु वह वहरा भिष्ठके दोनों काम शामा शोने सथव शामीने सू जाने दी। -पिक्प-प्रस्तीः भाकारः । -प्रीड-प्र[दि] दे०

'विपुंड' । —पुंड-पु॰ एक तिकक विसमें सहस्र अपी पर भरम अवना चंद्रसद्धे शीम भारी मा वर्षेच्द्रासर रक्षां है बनावे हैं। --पुर-पु शैक्षारी। वाला क्लेके एक बायब्री जनामी किनासी नामा गीयका सीस रहा-वयी। वही इकायची। महिन्दाः फीरेबा एक शहरा (सभूत) । —शटक−प्र विस्तयः देससी । दि॰ विस्तराः कार (क्षीता) । -पुद्रा-सी॰ दुर्माः इकावमीः मोनिया निसीय । –पुटी –को छोगे इकायबी। प्राप्ता, देव और बानः व्याता, ध्येव और व्यान, इद्या दश्य और दर्मन भादि तीन-तीनका समाद्वारः र्रेटः क्षेसारी। 🕫 है 'त्रिक्ट्ये'। - पर-प्र मनतिर्मित स्वर्यः वंत्रसित्र स्व पृथ्नीपरके नगर जिल्हें शंकरने बलाया वाः शावासरः —॰ व्या,∽० दहम ४० हर—५० छिन्। *−०*भारती~ स्रो*॰ दे॰ 'विदुरा' ! -- शाहिष्य-न्नो॰ मरियास* स्ट भर ! च∙र्ज़ुद्री च्लो॰ दुर्वा ! चुरा∽मा एक देश (तं) । -पुद्य - वृह्य-पु तीम पुरशीक्त समकार-पिना फिनामक और प्रविधामक यह संबंधि विस्ता धीर विशासक और विनाने, बाद पुत्र करें। विश्वनाता लंग वितना शीम पुरुषेकै मिक्नेपर हो। किसके तीम स्वर्क श्रदायक ही । -पुणकर-तु स्वोतिवरी दक्ष दोत्र। −प्रद्र−प विष्या वीनींके अनुसार प्रवस वस्तरेर ! —पीरुप−दि+ तील पीरियोत्तक चल्लेवाटाः दीवशे वर्षितः तावसे चत्तराधिकारमें प्राप्त । —वीक्स्या—सीर [वि] दानी की आसिक्के सामे बोग्य परास्तके तैले फाटकीने बुक्त स्थान । −प्रदम्न-प्रदिशा देश और काम-संबंधी प्रदम (क्ये) । -प्रदात - दि॰ जिन्द(दान्धे) सै मरका लाव धीरशा दी। —द्वरा-द्र सद असी प्राचीन देख । −क्रका−को पुरु ऑक्टा⊾इर सीर वदेशा। —**वक्की**—स्ता० देरदर पढनेवाने सीम रहे। --वस्तिक-तु० वातुः द्वतः। --वा**ह्व-तु** स्टब्स् एक मनुष्या एक प्रकारका असित्रक । -बीज-उ नार्ये -बेनीक-को देक 'त्रिवेची । -धंग-नि की बगरीये सुद्धा हुआ। जिसमें तीब कगह देगारन हैं। में वीम वायह एक गाये था। प्राप्त होनेको एक देर् विश्वमें गरदन कमर और शाहिने चेंबमें का पता है (कुष्णके चंद्रा समानेका वर्षम शरी सकी निसंता है) ! ~भंगी~सी एक कुछ । -भंगी(तिम्)-वि 'निमंग । पु॰ शासमा वृद्ध भेरू । ~संडी-सी विशेष । ~भ-वि सीम नग्नवीवाचा । ~०आवा ~ ज्या-नी है 'जिल्हा'। -अह पुरु सीजस्मा -- मुक्ति-की जि हुन मिनिया। - सुम-पुर होस सुमाभीसे सिरा ध्रम। -सुबम-पु स्वर्ग प्रशीऔर वाताल-स्वरीम नुवर्गक समाहार । -- श्राह-पुर शिव । -- श्रीवृशी-मी र् वार्षती । - मूस-पु तिमेशिका सद्भाव । -सैदमा-श्री एक विधिनी मक्ती : -मब्-पु मीवा, चीना कीर वावविद्या-इब तीमीका समुद्र। विद्या अन और डारि संबंधी गर । न्यानु न्यानुर-तुरु ऋगोल्हा रह वर्ष पूर्व नी में भीर मनुन्दन तीनोंदा भयादार !-मात* वि देश 'विधात । -माच -माधिक-दि विस्वे रीन मात्रा^{त्र} हो, पुतः । —मार्चगामिकी^{—मो०} रै

तुर्के-पु [का] तुर्धका रहनेशका। -धीन-पु सूर्य। -मान-पु• तुर्कोक्षे एक बाविः तुर्को बीका। -रोज्न-पु सूर्य।

तुर्कित तुर्किती-को दे 'तुरकित'। तुर्कित्सात-प्र [फा॰] तुर्कीका देख को कराने दक्षिण

हाक-स्तान "पुंचिममें पत्रता है। हवा पहिचाने पश्चिममें पत्रता है। हुईी–विश्वती देश दुरस्ते । —टोपी −खी पक्ष शब्द

बार गोक उँची रोगी ! तुर्य-दिक [सुक] चीवा तुरीय ! यु तुरीयावस्त्रा !

-गोक-पु एक कावडायक यह । -बार्(इ्)-पु॰

चार पर्यक्त पठना। प्रतिस्तन-पुत्र (चेत्र) चतुर्य जासदा, सन्त्रमासासमा। सुरी-पुत्र (स.) चुरना चत्रो या शेवी जादिये क्या इ.सा.ई.र.चा बार व्यक्ती परिवास दिवस प्रतिकेश मासका पुत्र कटावारी, कोडा चाठुका पट इत्तर । वि. (दार) जनादा। सुत्र – यह कि-च्यरके स्तरी

नात और कि । तुर्वसु—पु [सं] राजा बयातिका एक पुत्र जिल्ला निता-की जनना भीवन दैनेसे शनकार कर दिवा था।

तुराँ-विश् [का] धट्टा रूखा क्या कारमच क्यः -स-वि जी शीप्र रह हो जान, गुनकमिनाज ।

तुशाँना∸स कि छटा हो काला ! तुर्सी−सी॰ सटार्र, खट्टापना घटता !

तुस्त प्राप्त स्थार बहुर सार

हुएकन-पु (सन) राज्याता।
हुएकन-पु (सन) रोजना हुएका परापरी करना।
हुएकन-पु (सन) सीकना। हुएका वरापरी करना।
हुएका-पु कि तीका बानना आदिन बीना। तीक या
मार्ये समान होना। सिसी अपराएत रस मकार किन को
स्पाद रिटत होना (मेरे-तुक्कर केम्मा), सपना अक बराबके अनुसार अप्यस्त होना। एकक कताक होना।
पुराक भीवा बाना। कर्युरका। की (मन) म्यूना
स्पादक कियार, सम्बन्ध करना।
स्पादक कियार, सम्बन्ध करना।
स्पादक क्रियास क्षाना।

हुकनाध्मक-दि (सं.) हुकनाशुक्तः विसमें विसीत हुसना की बाय।

तुसनी−नो वरान्ध्ये शॅक्षेका कॅटिके दीलों शेरका हिस्सा।

तुस्याई-सो॰ तीनमेस्री ममदूरी।

तुरूवामा∼स कि॰दे 'तीलामा । तुरूमारिणी~सी॰[मं॰] सुद्योदः।

तुम्सरी-को [स] यह प्रतिक योग (हिंदू विशेषण देवा हुई महिला को मानते हैं)। - क्षम-पु तुस्ती को चो ।- क्षम-पु तुस्ती को चो। - क्षम-पु हिला को चो ।- क्षम-पु हिला को चो के स्वाप्त के स्वाप्त

ने बिरफ हुए थे। इनको प्रसिक्त रक्ता रामचरितमानस्त हा सर्वरों प्रभार थे। इनके विदिश्क इनके ११ श्रांस जीर १९ ११ वर्षको विदिश्क इनके ११ श्रांस जीर १९ ११ वर्षको है। इनका देवावस्तान काशों में वर्षक १९८० में वर्षको व्याप्त इनकारी, वनतास्त्री। —यून्य—पूर्व त्रावस्त्री। वन्तास—पुर्व त्रावस्त्री। —यास—पुर्व त्रिक्ति वर्षका वर्षका । —यास—पुर्व त्रावस्त्री। व्याप्त वर्षका वर्यका वर्षका वर्षका वर्षका वर्षका वर्षका वर्षका वर्यका वर्यका वर्षका वर्यका वर्षका व

तुस्त-ची॰ [र्ष] वराञ्, काँधाः समामवाः माप तीक्रमें वरावरी तुकताः १०० वल-कासग ५ सेरका यह प्राचीन परिमान्यः मांबः सातवी राक्षि (क्यो); एक प्रकारको सहरीरा एक दिव्य परीक्षा । - कूट-पु॰ शीवमें की गवी क्याः कम चीक्रमेवाकां । -क्रोटि-सी॰ तराज्या दंशके बोनों धोरः मृपुर । —कोशः,—कोय-पु तीस द्वारा रिव्य परीक्षाः तराज्ञं रतनेकी वगद्दाः −दव-प्रः तराज्ञको टंडी ! — इसन – दुल्क दाम किसमे शाबा द्वारा शीकके वरावर शक्ष प्रध्वादिका बान किया काशा ह । -धट-प ऑक्; तराज्ञा करुका । ∽धर – पुतुका राधि;शीदागर। −बार-पु: तुका राधिः विवदः सीदागरः तराज्ञे तथाः वह बणिक जिसने बाबनिको उपरेश दिया था।-परीक्षा-म्यो एक दिव्य परीक्षा जिसमें मिट्टी भादिसे तीला हुआ व्यक्ति वदि इसरी बार बीकमेमें पर बाला वा तो दोबो क्ट्रावा बाता था। ∽पुरुपक्कच्यू-पु> पद प्रत प्रिसुर्मे विण्याक (विकास दावर) मात महा, उस भीर एक्मेंसे प्रत्येक त्रीन-पीन दिल शासर पंद्रह दिनीतक रहेना होता है। -पुद्वदान-पु 🏲 'तुलावान'। -प्रग्रह -प्रवाह-पु दे॰ 'तुकास्त्र'। -बीज-पु गुंबा दुवबी। ~मान-पु॰ तराबुधे क्ष्मी भुकार्यक बाट बटकरा । -मानांतर-प भावदांको ठगनेके किए इकडे पार राजा (वी) । न्यष्टिनन्धे+ तुकारंड । नसूत्र नपु+ तराबदी बंदीमें दीचानच देश करके लगाया क्रमा मीटे बता वा रस्तीका द्वकता । नदीन नपुर देनी मारता, कम वीसमा ।

तुकाई-मा १० 'शीवार्ष: दुमार्ग: गारीको पुरीमें देख देखेडो किया ।

तुष्पाना- • न कि ना पत्रचनाः परावर द्वाना । स कि । पुरोने तन दिलाना ।

तुक्ति—त्यो [सं•] सुन्यदोकी कृषीः सुक्रिया ! —कक्का— ज्यो शास्त्रती ।

नुष्टिका-स्थे [सं] व्यः शरदका गांवम ।

तुष्टित-वि [सं]क्सिके साथ मात्रा दुमा समान मद्य ।

तुरिमी-मी [मं] कास्मनी। तुर्सी-मी० [सं०] जुवादोंदी कृती। सुनिदा।

तुस्य-विश् ति] समान छारा बरावरा निमन ।-कार-वि बरावर वनेता ! -कार्यक-विश् (प्रिवार) जिनका वर्गे दक्षो ! -काल -कार्योज-वि समग्रामदिक, सम कारीन ! -कुरुप-विश् दक्षो गुलका ! वु स्रेक्षो !

कार्तात्र । —कुप्प-विश्व हो तुरुका । यु - संस्त्री । —मुच-वि- समान गुणीन युद्ध । —मासीय-वि- एक हो जातिका जो जातिकी दरिने नमान हो । —सर्क-पुरु १ ४।५) । –सीवर्ण-प विश्वपर्णका द्वारा। वरमेवर । -स्कथ-पु (संदिता, तंत्र तवा दोरा-दम तीमी स्केवी से बुक्त) क्वोति छान्छ । -स्तमी-चौ॰ एक राधसी। -स्ताबा-त्री अध्मेद व्यूबी भेदी को वार्वप्रश्में सादा-रण पेडोको विद्युनी होतो थी । -स्थकी-माँ काशी वधा और प्रयाग । —स्मान-पु॰ विद्यास स्नान । -स्प्रशा∽न्ती॰ वह एकप्रश्री की एक ही दिम और दी निविधीं अक डोकर पहे (श्वमें दशमीक दूसरे दिन भारोसी प्रकारशीचे चपरांत हारशी ही वाती है और रात्रिक अंतर्मे जबीरकी पत्रती हैं)। -क्षोता(तस्)-स्ती • गरा । --हायजी-सी • तीन वर्षकी गाया होपरी । -इत∗-प्र∘दे 'विमुद्धि'।

ग्रिक-पु [नंश] तीमका समाहारः रीवका वशीवान वहाँ कुरुप्ता हर्द्विनों मिलतो है अस्तिया क्लेक्स बर्द्विनोंके बोलका समा त्रिप्रकाः त्रिकटा त्रिक्टा वीन साधीके मिल्ला स्थामः तीम प्रतिस्त सुरु वाकाम (मनु•)। तहराः दीन प्रतिसतः शीसरी नार होनेनाका। —ग्रय—प्र तिक्रका विसद और विरुद्धा सन्द∽(१) भावका इह भीर वटेडा (P) मोबा पीता और वाय-निरंप तथा (१) सीट, विर्थ और बीएस। -वेद्शा-र्ता -श्रुष्ट-प्र नातके प्रकोशने क्रवरों भीर रेलकी ह्यो दे संविरवानमें होनेवाकी बीहा ।

विका-स्रो [सं+] रस्तोके बाने-वानैके किए कुर्यंवर कगाया दुआ सन्दरी बादिया बंधा कुर्यका बद्दन ।

विन्धा≉-ली॰ दे 'दवा । निजग्र≁-पु॰दे 'तिर्वह', वे 'शि'में। —क्रोमि≕की

दे हिर्दग्योवि' ग्रिण ग्रिन≠-पु॰ दे 'तृच'।

সির−৫ [ৼ৾৽] দীরেন সভাবরি বাসকাক্ষ বর ডুকঃ मत् भाष्ट्रपदे १२ प्रशीमेंसे एक।

मिसप-(२ [गं॰] तीम मानॉशान्य । पु शिगुदः वीक्का

सम्बद्ध । बिन्सोकुश-पुरु [d] सह । ग्रिद्शाचार्य-S [संग] बृहरवर्ति। त्रिश्वाचिप-द [मं•] रंह । विद्शाप्यस~उ॰ [र्म•] **(**नन्तु ।

त्रिन्धापम-च [सं] विष्टु*।* विद्यासभाग्य [मं] वस ।

त्रित्वारि-इ [40] अनुर । ग्रिव्सारूप - पु॰ [शु॰] सुमेनः श्वर्गे । प्रिक्साहार-५ [६] वयुग ।

विद्योग्यर-इ [सं] इंद्र ! मिद्रोह्यरी-इ [लंग] दुर्गा ।

बिदिवार्थाश-इ [तं-] देश देव। विदिवेश-इ [मं] देशका वंद ।

बिहियोज्ञया-सी॰ [सं॰] यना वही रहाय-ी । निहिंबोबा(कम्)-इ०[सं]देवना। पिशोपना -- म कि हिन

श्रीच और जीवडे क्य

प्रिया-भ [धं] तीन

प्रकारका ! -सूर्ति-पु॰ परमंत्रर निग्नमे प्रका निम्न बीर मदेश-शीव वृतिवादि । -सर्ग-मु देव, हैरेब और मानप-ये तीन सर्ग (सां•)। विषितामा>--व कि॰ तुप्त दोना। स प्रि॰ इप्त वा

संबद्ध बरना । विपुरांतक विपुरारि-पु [ग्रे॰] मिष् । तिपुराक्षर-पु॰ [नं] कामासर ।

ब्रिय व्रिया = न्यो = न्यो । नारो ! --(या) वरिश्र-पुर **रे॰ '**विरिया-**म**रिचर ।

खिळाकेश~प॰ (तं०) परमेशरः सर्वे । श्चिम्रट-प॰ दे॰ 'त्रिनन'।

विषण~प [र्स•] संपूर्ण वाठिका यह राम ! निवनी-सी [संग्] यह रामिनी।

तिर्त्तकु-पु॰ [सं] दे भी मे। विवार-शो है 'त्रवा ।

न्निपित्त*−वि 🖁 'वृपित । विसित्तक-थि॰ है 'तृश्ति' ।

ग्रीष्टक-प्र [सं] यक प्रकारको असि ।

ब्रिट-सा (सं॰) दारवा क्रमी, क्सरा मूल, पूछा धीरी इहाबधीया पीथा संदाया जानका एक एदम निमाय थी हो क्रम बीट दिसी-सिमीके महस अनुबीर के गए-

बर होता है। अंगहीनताः प्रतिया अंगः स्थरही एक मार्ग्याः -श्रीख-ए॰ मर्राः, प्रश्वाः ।

प्रतित−वि (सं•) द्वय हुमाः संवित्त ।

अधी-सी [सं] १ 'इसि । ब्रेका~पु॰ [मं] चार चुगॉम दूसरा सुग (शस्त्री मदी १९९६ वर्ष मानी नदी है। वरसुराम मीर शब्दारी

राम रही पुगमें अवदीयें हुए थे)। नहें दक्षिण पाईपर और आइवनीय-ये तीम अधियोः पामेखा रह दीव ! ~बुग-पु॰ त्रेता शामका तुग ।

प्रताधि-मी [मं] दक्षिण मार्डपरन और बाहरनीर" थे तीम कमितको ।

श्रतिमी~मी [म] दक्षिण, मार्डवस्य भीर मारवर्तनं रत दीशी अन्तिशोधे की बानेशाली किया।

द्रेषा-व [र्ग•] श्रांच प्रकारमे; श्रांब भागीमें ! क्र≉−वितीस।

चिकासिक-वि (शुरू) विकास-छन्द्री। तीनी कान्येने देनि

बानाः त्रिद्धानवत्री ।

र्श्वकारय-दु [मे] सोमी साल-मृत, सरिप्यद मीर पूर्न मामः मात्र मध्याद्य और ध्यांत्मा मृद्धि निर्वित और চৰ ৷

न्नेकोचिक-4 िंशे] रॉन कोगोशमा निपारमा । द्वीवृष्टिक-दि [मे] विशुष गंदंगी। तीम बार दिवा दुवा। बैगुण्य~९ [मं] तीमी शुर्माका गुमादारः तीनी द्वर्णीना

यर्गला भागा वैद्जिक-वि [ग] विद देखाव । पु धेवरेत्र मगका मान में। रशिय माना प्राप्ता है।

प्रय-निर्मिते हेतरा। घतीन प्रधारी । अपिष्टप−ि दु० [मं] १ 'अभिटर !

दि भि रे भीन की विरुद्ध कर नेवाना ।

तुर्क-पु [फा॰] तुर्धीका रहनेवाला । —थीन-पु॰ वर्ष । -माब-पु॰ तुर्कीकी एक बावि तुर्की भीका । —रोझ-पु रहमें ।

तुर्किम तुर्किनी-स्ता॰ दे॰ 'तुरकिन'। वर्किन्यन-४० (घर्को नकीका है।

तुर्किस्तान-पु॰ [फा॰] तुर्कीका देख की कराके दक्षिण तमा परिवारे प्रधानमें पश्ता है ! जर्म-दिश को है। सराहे ! -जोगी-को एक सम्बे

तुर्झें-दि॰, को दे॰ दूरकों । -होपी -खो एक सम्बे दार, गीठ कॅमी दोग्री ।

तुर्पै-भिः [छ॰] चौना, तुरीयः। प्र तुरीयावरवाः।
-गोक-पु एक कालबायक वंशः -वार्(६_)-पु॰
वार वर्षका नग्रमः।

प्राप्ति प्रस्तु (से) चतुरं आसम, सम्मासाम ।
तरी-पुर [क्ष] चुरुष: प्राप्ती वा गरी मादिनें स्था
हुमा ईरला बा पर स्क्रमो। विश्वविध विप्ता अर्थेच्छ सामक्र पुर, स्वाप्ति। क्षेत्रा वापुत्वः पर प्रस्तुकः ।
वि [क्षाः] स्वाप्ताः। ग्रुष्ट - सह क्रि-क्ष्यरेस देवनीं बात सेरि कि।

पात कार कि। मुर्बेश्च-इ [सं] राजा बवातिका एक पुन जिसने पिछा को अपना भीवन देनेसे सनकार कर दिया था।

तुर्स−दि [का•] सहाः क्याः काः अपस्य कृदः । —यू−दि भी शोध रष्ट हो बाग तुमकप्रियाण । तुर्धाना—स्र कि स्ट्रा दो बागः ।

तुशाना-म कि प्रष्टा श्रामानाः तुसी-ची॰ बटार्यं, सहापना रक्ताः।

तुलक−दु [सं] राजमंत्री ।

हुकनाम्मक-दि॰ [सं] तुकनाञ्चकः जिसमें निसीये - हुरुना की आप ।

प्रस्ती न्स्री वराब्दी बॉडीका करिके योनी भोरका दिस्ता।

व्रस्ताई-सो॰ तीलमेक्ट महरूरी।

तुरूपाना−स कि दे 'तीरामा । तुरूमारिकी−स्त्री [ग्रं] तुशीर ।

तुम्मती-को [0] यह प्रसिद्ध कीवा (दिहू विदेवनाः देणाव स्ते बहुत वर्षत्र प्राप्तते हैं)। एक प्रमुख्य हुए तुस्को की वर्षाः न्यास-इ [दि] यह सहाताः न्यास-इ [दि] यह सहाताः न्यास-इ हुए तुस्को प्रस्ति क्षार कर्षाः वर्षते कामकालके मंदिनी हो प्रिक्ति मत्र हुं। प्रस्तिवाहुके प्रस्तात हामावणी यं हायपुलाम निर्मेश लेलुमार प्रमुख्य क्षार वर्षत्र हुं। प्रस्तिवाहुके प्रस्तात हामावणीयं हायपुलाम निर्मेश लेलुमार प्रमुख्य क्षार वर्षत्र हुंग्य सामुख्याति महास्वाद क्षार क

ये विरक्ष हुए थे। बमकी प्रसिद्ध रचना रामचरित्रमालस का वर्त्यस्त प्रचार थे। ससके महिरिक्त स्तर्के ११ गंध का दे ११ गंध कार्र है। समक्र वेदावसाल कार्योगे स्वय १९८ में मसी-बार्वर हुव्य)। —हैपा-की बम्बेरी, वनतुस्की। -पग्न-पु० हुब्सीक पर्या। -पास-पु० हिंक्) पर असकरार बाल। —बन-पु हुब्सीके पोगेका समूर। -विवाह-पु॰ हारसीके पोगेके साथ विश्वकी मृतिका विवाह। —बुंबाबल-पु हुब्सीका पोगा बगानेका

तुका—स्रो॰ [सं॰] वराब्द्र क्रॉटाः समामताः नाप, तीक्रमें वरावरी तकता: १ ० पक-समामा ५ सेरका एक प्राचीम परिमाल गाँड: सावधी शाह्य (क्यों): एक प्रकारकी सहतीरः एक दिन्य परीक्षा । -कूट-पु • तीलमें की गयी क्षमी। क्षम शीकनेवालां । -क्षोडि-क्षो तराज्की दंटीके क्षामी होरः भूपर । —कोश,—कोय-पु॰ सील द्वारा दिन्य परीक्षाः तराज्ञेराजनश्ची वगद्दाः ~दक्र~प् तराज्ञ्दश्चे टंडी। −दान−५ थक दान क्लिमे दाता दारा बौकके बरावर अक्र-इच्चादिका थान क्षित्रा जाता है। ∽घट−पु बाँकः तराज्ञ्य क्ष्मका । —धर--पु॰ तुका राश्चि-श्रीदागर । -बार-तु तुका राशिः वश्विद् : श्रीशगरः तराज्यो तथीः एक विषद् जिसने बाजनिको उपरेश दिया या।-परीक्षा-सी॰ व्यव प्रतिका जिसमें मिट्टी आदिसे सीका हवा म्बक्ति बटि इसरी बार तीलनेमें पर जाता वा तो दोबी ठबरावा जाता था। −पुरुपकृष्यु-पु पद वत विसमें विण्याक (विककी रासी), मात, महा, बस और सच्चेंसे प्रत्येक तीन-तीम दिन गावर पहुँद दिनीतक रहना होता है। -पुद्धवान-पु दे॰ 'तुमारान । -प्रश्रष्ट -प्रवाह-त है 'तस्त्रमूह : व्यक्ति-त॰ ग्रंथा हेंदयो। ─मान-पु॰ तरामुखे दथी तुक्तात्रंकः बाद बदलरा । ~सामांतर-पु पाइकोंको उननेके किए इकके बाट रराना (री॰)। −यष्टि−न्ये तुकारंड। −सुन्न-पु॰ तराज्या रहामें बीधाशय धेर करके मगाया हुना मीटे शत या रत्यांका इक्या ! -शीम-पु: देनी मारमा, सम रीक्ता ।

तुस्ताई-न्या दे॰ वीठार्र (दुनार्यः मानास) हुरोमें ठठ देनेको क्रियाः

तुम्बामा - + भ कि भा पर्वेचनाः नरावर होना । स•िद्ध पुरीमें संस्कृदिकामा ।

तुर्कि-मोश्सि] सुमार्शेकी शुर्वा सुविकाः -प्रका-नी शास्त्रक्षाः।

तुष्टिका-मी [सं] एक तरहका संत्रम ।

तु रुक्तार्थाः इत्] पक्ष तर्दक्या समान्। तुक्तित्रत्विः [तं] किसीके साथ मापा दुशाः समान मध्यः (

तुष्टिमी-स्रो [सं॰] शतमनी । तुष्टी-स्रो॰ (सं] जुलारोबी मृजी। तृत्या ।

तुहच-दिन हो] खंगान नरा, नरारा; स्थान ।- इहा-दिन नरादर पर्वेदा । - क्यांक-दिन (निनारी) दिनका क्यां रक्ष हो । - क्यांक - क्यान्य - दि समझापरिक, हास कारोन । - कुरूव-दि रह से पुरुषा । पु संस्था । - गण-दि समान गरी- सन्द । - क्यांग्रीस-दि क्या

-गुज-वि समान गुरीने सुरु । -ब्रासीय-वि स दो जातिहा; नो जातिकी रहिन समान हो। -सद्य-पु

भीमदापर्वेक १ - गति-५० एक वर्णकृत । स्परिता-सी सि॰ तंत्रमें यक हैवी। रबस्ता-पु [में॰] एक जबसर्प । रबद्या(प्र)-प्र सि विविधानी, विश्वसमी स्थानको भावित्य एक पेरिक देवता को पहाओं और मनुष्योंके घरीरका निर्माण करते हैं। शहर्ट । रवष्टि-सी॰ [सं॰] दास्कर्म । पु॰ एक संकर वाति ।

न्वाच-वि (ए॰) लवा-संबंधी ।

रबाष्टी-सी (सं•) दर्गा ।

श्यक्टा -पु वि] बजा कुणासुर। विस्वस्था यस स्रीटा रथ । रवाष्टी-की [र्स+] विशा पराश्व विशवकार्यकी अभी संबा बी सर्वेद्धी स्वाही सभी ।

लिह (प)-ली [मं•] प्रमा; स्वीत पृति, पीक्षिः स्पटा वजनः प्रचंदयाः भागी ।-(१)पति-पुः स्वं। वियोपति~पु॰ (सं॰) सूर्व ।

विषया-स्त्री [सं०] देश विषर्'। त्विपामीश-प्र• [सं] सर्व । त्विय-को॰ [तं॰] फिरमा दीति। प्रमाः शक्ति।

खेप(स)-वि [एं॰] शीहा मचाधित । खेरव*ा*वि सि॰ी सर्वहर, स्टायमा ।

रसत-प्र॰ सि ी तकवारकी महत्त सप्रमुख्तिः सरीयत्र रेपने गाका बंदेश । ~जार्ग ~प्र० तकशर चक्रातेश धम्यात । स्राह्म-प शिंको वह स्वक्ति जी तहनार क्लावेपे मिक्रप्रत ही।

य-चेदनागरी मध्याक्षामें तवर्गका कुछरा कर्त । जबारकः । श्रम-प्र-नाव मेस मारिका श्रम- गाक्ष्मेस आरिका वेमे रभान दंत ।

पंदिक#-पुन्धनेशी। र्धव-प दे 'वस ।

धंबी-हों। बॉर, धरी।

र्थम-प्र त्रीम संमा-'लिन अर्अत श्रीमणकी हुनई -राम : सद्वारा !

यंभम-पुरु स्कावटः एक शांत्रिक महोगः स्तंत्रन करनेवासी भीवव ।

र्येशमाध्यान अरु क्षित्र सँगकताः उद्दरना, वद्या । थमितः = निरुष्का हुआ दिका हुआ। रतका ।

थ-प [र्स+] प्रशाप रक्षका शारीका विका एक रीया मराणा रक्षाः मकः गंगकः।

धडमीं-मा देशभेता। मक-५ वल समुद्र।

धक्त−भी ° दे विकास ।

मकसा चन कि नमके कारण शिवित होना मांग होना। र्तेग भागाः शुष-तुष भूत मानाः क्षमा भागाः स्वनाः मीमा परना ! सम्बानगरिश~दि मना, हारा हजा। समनै शिविक । <u>अ</u>॰ शक जाना-तंप ना जाना, परैज्ञान ही बानाः बुकानस्थाके कारणशासिद्धांगधी जावा। कंडासर ही बामा।

धबदरी-भी वियोधे शह जावनेत्री वाग आदिकी गैंसी । धकान-सी वसनेदा मान बकावर मोति शैथिन्य ! धकामा-स कि आंत करमाः बरामाः धिक्ति गना देशा । स् अकाकासमा थका देशा-मांत कर देशा,

भश्च बना देगा । चकापर अकाष्टर−मी दे अकाम I

श्रावित-दि॰ मोत् शिविक वदा हुनाः सन्त । विदेशा-शी वहा। धार्वीहर्त -- ति॰ क्रुए धका हुआ बोहा शिथिन । धया-पुरु किया चीत्रका यहा हुआ हुक्छा, श्रीश ।

थागित - विस्तादमाः शिवितः । थति ० – श्री थानी। पृँधी ।

धकी-को साहि देवा

भैसा जंग जिसमें इप रहता है। थमी-सादे गलसार।

धनेका-पु लिबोंके स्ततपर होनेवाला द्रीशा प्रवरित्य कालिका एक ब्रोधा (श्रमेखी~मी शिवीं के स्तनपट शीनेवाना कीता !

धनेत∽प्र॰ गॉक्का सुरिवाः वमीशरका कारियाः यपकता-स कि प्यार वा साइ-पान्से निमोती के आदिपर इनेलीसे इकका आपात करनाः नत्त्री देगाः

क्षत्रेवारी धीरे-बारे डोबला । यपकार्ग-त पक्षाः अपन्ते ।

थपकी-न्तां द्वेकोका दशका भाषता मुग्-देना-छगामा-शामी भीरे-मीरे डोकमा । थपक्ष-ला॰ ताका, करतकस्थान । मु॰-पीरण-

बजाना-इवेतिबों-६ परशर बापात हारा बन्द असर करनाः चपदास करना ।

धपचपी-लो है॰ बस्द्री ।

मपन्तर-पु रवायन, स्वादित करमेची क्रिया । -हार-मुन्द्रश्यापित करनेपाना, प्रविद्यास्त्र । वपमान-बन् कि स्वापित हाता स्वापित हिना शमा।

कि सामि द्रामा विषय दरमा पर करना अमानाः क्रीक्रमा । प्र चार्याः द्रीक्रनेका साधन ।

यपानाच-स कि श्वापित करामा । धालुका-म श्रीमा विपरा रश्यमा क्लिके कपर महिया हती

नाती है। धपंत्रता—स कि अपन जमाना मामाण करमा क्रेसर

tar i थपेशा-पुरु पर्वतः अपेराः यान् प्रनिपातः दरेरा वदा ।

चपीकी-स्वी वे अपनी ।

यपीरी ६-स्म वे• 'बबरी । यण्यक्-पु तथाया सावह भवेता । सुरु न्क्सनी वी

सम्ताना-गनाथा धारचा । यमण्या स्रोतः केश्या वेशी र

धारकारी -नि श्रीप्रनिवामा वामनेवत्या । यसवा-न मि कामा करता पान, स रहता कर

की)-बासना-(रिसीकी) बाक प्रमान, खूब घलती रोना । तूद-पु [सं] श्रास्मको शृक्षः [फा॰] वै॰ 'तूदा'। त्रा-प्र• [पा] देर: प्रता, टीला: इत्वंदीका निशान: नह दोनार प्रिसुपर नैठनर शीरवान निधाना क्यांते हैं। चौंदमारीका नम्यास करनेका मिट्टेका टीका । तून-पु॰ एक पे॰ धुन। काछ वस-विजेवाक तूण तृणीर । त्ना-म के कि चुना, रपन्ताः विरनाः वर्भपात होना । सुनीर=-पु= तुवीर। सुफ्राम-पु [भ] जोरकी वाह, सैकावा जाँथी अंवय जिएमें इवा-पानी जारिका मीपण शरपात की मारी भाषी कहरा इंगामाः चयत्रक, बंगा-कसाद । मु०-बठामा था सहा करना-क्षेत्रा गवाना । स्कामी-वि स्वान-संबंधा त्वान वैशा पर्वत कमायी। छन्मी अपह्रवी। तुबर-पु॰ (सं॰) । गरील कुदम दसमुदील पुरुषा दिवदाः क्षाव रख । वि क्षपाय रखवाला । सुबरक-पु॰ [मं] होत हिन्दहा। त्वरी-की [सं•] दे 'तुवरिका' । **त्मदी**—सो॰ दे॰ 'तुमक्। । सुमना—स कि॰ वैगस्थित्रोंने नोच-नोयकर रदके रेघोंकी शक्त करमा। येव निकाशमा। भरी गाकिनाँ देनाः पीटमा। मान्द्रमें दम क्रमा । स्मरी • न्सी • दे 'तमही । क्मा-प्र हुंगा। -पछरी,-फेरी-की शक्त पीत्र प्रसदी देश। इपरक्षी भीज उपर करना । स्मार-पु• [म] छोडी बातकी बेकार बहुत बढ़ा बैना। त्र-मो भरहर । वि [सं] छोत्रका करनेवाछा । पुरु हरफाटा एक तरहका बाजा + तुरही जाना कपेरनेकी जुनाइन्द्रि एक करही । दरवर-परदे त्रं। क्रम क्रमण्नम दे शूर्ण । क्रना॰-स कि॰ दे 'वीइना'। पु तुरही। द्रत-मी [मं] ४४। + प्र हरती। व्यान-प (का॰) वालार देख । न्हानी-दि तूरानकाः तूराकनंदेशे । पु तूरानका निमसी । स्री-मी [मंग] प्राः स्य-दि [में] तेशाल तदीने दीया सम्बद्ध-पुरु [र] एक प्रकारका पादन । चूर्त-दिक [रोक] तज प्रशासना म शीय, तुर्व । सूर्य-द [न] हरकी। सुरत मृथ्य । -नोट-दु एक तरहका दोल । सूल-दु [मं] बाराधा रहे। तुनका पेड़- तुनका तिराः पारा। -वार्मक,-वाप -चनुप्-पुः -नासिका -नामी-सी॰ ध्यूनी । ⊸रिशु-पु रई। -इश-प्र नेमत्का पेड ग्रान्सकी। -हाकश-क्षीक करायशाचीत्र दिनीमा ।--स्थयन-पु मून काममा । तृत-+ दि समान मृत्य । तु आन (नदा करहा। याण

क्रेनार्रचीक्षार्थः। --सबीक्र--वि० बहुत संवा। सु० --प्रकृष्णा-किसी बातका बहुत अविक बढ़ जामा था उम रूप चारण फरना ! ल्लक-पु∘ [सं] स्रे। तुकता - जी समता साध्य । तुसमा- # म कि समान दोना समता करना । स कि मुरीमें तेक देना वा इस कार्यके किए पहिनेकी सकड़ी क सदारे किताना । त्क्रमत्क -- व भागने-सामने समग्र। तुसा-सी [सं•] क्षत्रसः शेफको नती। शुक्ति-की (do) शिवकारको कृथी। ∽एका-सी ज्ञास्त्रकी बुद्ध । सुक्रिका−सी॰ (सं•) विश्वकारोंकी रंग भरनेकी कृती। केरानी' की मरा गदा कोछक; नीतः धरमा; साँना । कुम्मिनी चर्चा [सं•] द्वान्यकी। क्र्यमणा द्वर । लुकी-चौ॰ [सं] रुद्दा विद्यानको बची। सुनादेकी कृती। वित्रकारकी कृती जीएका पीचा। **त्**वर−तु [सं]दे 'त्वर'। त्वरक-पु॰ [नं॰] १० त्वरक' । त्वरिका त्वरी~सा [सं•] दे॰ 'तुवरिका'। त्प−प (सं•) कपहेकी किनारी। **त्रकी-वि• मीम,पुर रागीछ। • खी जुली छामीसी।** त्रुष्णीक−दि (सं•) मीम रहनेवाका । क्ष्णीम्-म [र्र] पुर-पाप दिना दोने।-(प्पी)र्यंड-ष्ठ शास रंड । ∽माव−षु मीनावर्वदन । ⊸युद्ध−पु बद पुत्र विसमें राष्ट्रक्युके अमुरा व्यक्ति फ्रीप सिन्दे जार्ये (की)। ~सीख−दि० भुप रहतेनाता। तुम-पु तुव भूसी। मूसा। एक प्रकारका रुग्दा कन, वद्यमानाः वहरे काठ रंगदा करवा । तुमदान**−९ धार**त्स । सुमना॰-स कि संगुद्ध करना प्रसन्न करना। अ० कि प्रसन्न या संतर होया । तुमा−९ भूधी। सुमी-वि स्पेरके रंगका । यु॰ इस तरहका रंग । शुस्त-द्र [नं॰] वृष्क, वर्षः वानीको पीर्यः, जहा पापः नगु भूदम कम । विन्द्रस्य । शृक्ष-पु॰ (सं॰) करवप कवि । भूगा-त [सं] जातीकल सायप्रल । शुरुराष-स्ता है 'तुपा । शुज्जग=--वि॰ शु द० 'तिर्वेदः । मुण-तु [में] दिनका पामा धर-पान । -पोद-प्र नुगममूद । -कुंकुम -गीर-यु एए भपद्रस्य । -कुटी -न्य -कुटीर -कुटीरक-पु पास क्सरी बुटिया। -क्ट-ब यामका बर । -कृषिग्र-सी॰ शान् : -कन् -केनुक-पु वॉमा सार् । -शोधा-की एक सरहका गिर्मायर । - ग्रंगी-की १४ भोनेंगी । -मार्टा(हिन्)-इ भीव मनि । -चर-पु• गीभन मन्ति नृपर्ने रहमशाना चेतु । - ज्ञायायुका - ज्ञामाद्वा-भी॰ एक कोशा - जकीका स्थाप-तु सूय कीर न्तान रंगः[च] पंतारे शिनातः हेट। −अञ्चलपु० } जलीबान्धरेपी स्वाब (बारमाई इसरे प्रतीरमें प्रतिष्ट होन

का छापाः पुत्राका चैदाः विक्व बातमेका छापाः सीवाः [राद्धि वैरः नेपाहिनोद्धी यक आति ।

भाषी-सा मच पोटनेको बिपटो मैंगरी। कथा यहा पोउने का कुम्हारांका और शिरेका कवारी वा मिडीकायक बीजार। पाम - सी भागनेकी किया। पक्का अवशेष । ७ प राजा ! यामना∽ए कि नवस्द करना किसी बरतको शतिसे

निक्स करनाः गिरने शहका वाडिसे क्वाबा होके रहराः पद्भवनाः हावमें केताः सेमाकताः किमी कार्वकी अपने जिम्मे हेगा, किसी बायका चत्ररवायित्व स्वीकार सना १

थास्त्रमा चि• कि• दे॰ वायना ।

भाषी•---वि॰ स्थानी । --भाष-तु स्थानी भाव ! भार, थारा-त रे॰ 'शक'। धारी!-सी 'बासी!।

धास-प नेपाकको तराउँमै वसनेवासी एक वेपकी पाति । धास-प॰ काँसे वा पीतकका बाकीकी शक्क वहा वरसवा। भासा~प पीचे वा इक्की जरूके पारों और बनावा गया क्यारी में तरहका पेरा आनवाक फोरेको सजम ।

शाहिन्छा – छो । भानाः जाक्यातः । धासी-सी धेंसे पोतल मारिका शेकाकार विकका पात्र जिसमें भीजन करते हैं बधी तस्तरी। नायको पह-गद । स∙ ∽कार्यगन−वद्यो किसी व्यापनकान ही. क्रमी इस पक्षमें क्रमी तस पक्षमें ही जानेवाला ?

बावर १ - वि अयस जंगस्का उनदा रवादर । श्राह−सी नदी। तक समुद्र आदिकानक वा गीवेदी भरती: भरी आसिमें बढ रक्षांन क्याँ निमा दने पाँच दिख बाद या तक छमा का सदे: नहरारेकी सीमा नाथः पारा सीमाः इंतिहाः कियो बस्तकी वयचाका अनुमानः दिवे धीरमे सगावा समा पना । वि कम महरा वयका । मु॰ -सगना-गहरारेका कर निक्रमा। -समा-यह राईका अंदाज क्याना। क्रिया बरतको परिभिति वा रहम्य-श्री क्षीत दश्ता ।

शाहना--स॰ कि बाद लेनाः शर नामेखा दस करनाः नहराईका पता कगानाः संदाव केना ।

चाहरर≠−ति वत्रका रूम गारा ।

चिपटर-प [मं] वह भनन वहाँ मारक्या अभिसव दिशा जाता है (यद्यानाः कमिनद । थिपरिक्रस-नि॰ [शं] क्लिटर-धंनी ।

क्रियासी - स्वी देश दक्ती ।

थित = −नि वैद्धा या क्दरा दुला रिन्छ ।

विति - न्या दिवति, इदराव वने रहमेशी किया वा भावः पालनः इमा परिश्वितः रिवरता शांति । -भाष १-५ स्थानी मात्र ।

वियोसाक्री-म्ही [अर] ब्रह्मवियाः वह संप्रताय ह क्षिप-दिन रिक्ट यानिहील यह थी जनह अना वा स्त्रा अबा अप्क म दिग्रेवाका अनंदका एक ही रिवरिये रहनेवाला । -ब्रीहर-पुमधर्मा । -धानीव-विव एक स्थानमें रिवर सहसेराका ।

चिरक-स्रो मृत्यमें चंबचगाडे बाब पैरीडा वटना गिरमा

तवा दिशना ।

चिरकमा-अ कि॰ चैक्सताथे सात रेंगेंको प्रशान गीमाने या दिलाते इप भाषनाः नाधमेने अंपर्धे शर प्राप्त साथ संवास्ति करमाः थाने-गाँठे शेष्टना । थिरकीहाँ - वि शिरक्तेवासाः रिक्षाः

यिशता थिरताई०-की॰ विदर्ता ठटरावा अर्थकता रवाबित्यः छोति ।

थिरमा-स॰ कि॰ पानी कारि इव रराधीका हिसना स्ट वामा। शुरू या आकोहित वकका रियर होमाः पानीमें मिली मिडी बाविका सीचे बेठना। मैड बाडिके मोडे बमबेसे पानीका मिर्मेन होशातकारना ।

विशाव-सी प्रती।

यिशना-स॰ कि यानी शादि प्रत परावेश्य दिशना वंद करना आक्रोनिंग वा शुक्त बक्रको रिनर होने देनक गंडी पानीका मैक डॉटकर मिर्मक होने देशा ! शर दि दे 'विश्मा'।

श्रीता≉~त रिशरता, श्रांति भैन t स्रोती ≠ ~सी० दें 'शीता' । श्रीरण-वि० रिधर ।

धक्याना~स कि॰ है॰ 'प्रशामा'। थुकहाई-वि न्यां (ऐसी खी) विहे सभी विद्यारें। धुकाई-स्रो॰ वृक्तेका काम ।

श्रुकामा-स॰ कि मुक्तिमें प्रमुख करना। मुक्तिका कान **क**राजाः किमी वस्तको प्रथकतालाः निश कराना । थकापत्रबीहत-सी विदार और तिरस्कार।

भाषी-अरु विकारमुक्त शब्द हिन्। सी नेरमक्री हामत । म -धवी करना-विद्यारमा वृत्य करना। –धुड़ी होना – एक्झे शहमें कि बाना । धतकारमा-ए कि 'वन करना' किमी चौतार गर

बार बक्ता थीर प्रचा मच्छ करता। शुरकार-९ [सं] मृद्धनेक्य काशामः मृद्धनेकी निदा।

थुमना-तु है 'गूपन'। श्रमी≉−सी दे• ल्यां'। धनेर-प्रश्य तरहवा गरियन !

ध्रद्धी−स्ते पंतावनीः। थ्यपथुषी-स्पी वरकी झोंका। धुरना~स॰ हि. कुरना। (का+) पौरमा !

खुरह्या - वि होरे हान हार जिसकी दश्ती में से गरी मेर सके। क्याराचें। [भी नुरहत्यों।]- क्य हैंस सीम्बी पसुर बहु भुरदवी जानि -- रि

शुक्रमा-पु वक तरहका बहारी ईतक विश्वमें कार्म

शान जमामै गरे हीने है।

धार्वी –ही दलिया।

था-पु ॰ भूबनेका छथ्य भूकनेमें हुँहते नियमनेवाला धन्दे। न प्रमानीर विदार नृपद ग्राम ग्रिमाकी इति सामग । शु -- भू करवा-- पुत्री-पुत्री करना प्रणा नैर तिरस्थार न नित बरना । -धू होमा-पारी मोर निर्ध रोगा ।

थूक-दु॰ तारदी तरहरा रम मी मुँही भाने भाष पूरा बर्गा है श्रीवन । की जूबनेश फिला । सु -बरामी मीबा दिस'बा । भूकी शक्त सामना-मंबी हराराने

पीलापन स्थि भूरा-सा होता है और इसकी देहपर काले-कारे गील बध्दे वा विश्विमाँ ही होती है। सँहर्मा – पु॰ बेंहसी।

सर्वे - पु एक पेड़ बिसमा होर नाननुसके मामसे विकता है। ते-र्नम से ≀ सर्व≠ (सं•) वे वे कोग।

सेंड-सर्व० वे शो।

सर्वस-वि बास कोर तील । पु॰ शर्रसकी संख्या, २६। शेरतरा - म कि रष्ट नाराव शोमा।

सेग़∽सी [फा] बदी तस्वार ।

तेगा−प दे॰ दियः इस्तीका सद वाँव। सी यक देशी।

सेज कस-पु [सं] बृश्वविशेष, तेबक्छ।

तेत्र-पु (सं) तीसापना एलकी तीश्मताः समकः प्रसाह । -पत्ता -पात-५ [हि•] ममासेदे दाम आने-बाका एक प्रकारका पत्ता। - पद्म-प्रतिवरातः।

त्रेम्(स्)-प [##] तीरणवाः तीरण पारः विम्व स्वीतिः दीति, प्रमा, भारत, जलाका वक पराक्रमा कीर्या लगताः अधीरताः प्रभावः प्रामध्य धरस्य होनेपर भी अपमान वा भविश्लेक्ट्रो स सहस्रहा ग्रमः रूप्त प्रसाद्य तापः नवनीत मनसनः सीनाः अग्निः पंत्रमहाभूतं मेसे दोसराः विश्वः सःबाः सार औव (सभ उ)। सेवा इसरीको अभिगृत इरमेक्ट्रे शामकां; सुरव गुगसे उत्पन्न किंग-छरोर। भीवक्ट

देग' रजीगमः तेवसे वस व्यक्ति काँग्रही स्वष्टता । तेत−वि (का•) जिसका बार दीइण दी पैनी पारकाः इतगामी बेगवानः प्रतीकाः तीरम नुहिषाकाः तीने स्वाद क्या बहर असर करमेवाका। महेवा जिसका मुख्य चड गवा दी। प्रमर प्रचंदः दयः चवक, चंदकः।

तेजह-दु॰ [सं॰] मूँव सरपन ।

तेप्रम−प्र[म] दोसिया सम्बद्ध करोद्धे किया या भाग पान मादि तम बरमा। शक्का नीका शरफी धार सीमा में थ।

मजनक-दु (सं) दर सरवन ।

तेत्रमी-भी (सं) बडाई। ग्रह्माः यो ब्हे मिरवरके बाह्य भवामः प्रवीः क्वोतिष्यतः ।

तेजल-इ (सं•) पातक, पश्चेदा ।

रोजर्बत -- विश्वे विशेषान । रीजपान्-वि धवते प्रस्त परक्रमीः वरिष्ठः भोत्रशीः

शांतिमान् । सेजम-५ [मं] तमः शक्ति।

शतमी •- वि देवारी।

तिप्रम्-दु [सं] दे 'तप्र(म) - देवन समानमें अपव दर्ग - बर-वि सब बरामेशला विश्वके सेबनमें लंक पराकांशियाँक। --काम-वि शक्ति प्रशास आर्थिका 147741

समस्यान् (बन्)-दि॰ [मं॰] सत्रन तुसः तत्रदारान तेत्रस्थिता-भी []]तत्रस्थै द्वान्या आदः।

तेप्रस्थिती-सी [सं] तपन युक्त सी। सक्तर्यंतनी महास्थारियती। दिश्वी संव्याली।

सप्रमधी (बिन्)-दि [सं] नेजबानाः प्रताधेः शस्ति द्याकी प्रवादरास्त्र ।

तेजा~पुष्क तरहका काला रंग । विश्वेजी, माँगी। रोज्ञाब-प्र [फा] किसी क्षार परार्थका भाक निसमें वसरी बरतुओंको गुकानको शक्ति रहती ू है (यह आय बातऑको यहारी और श्वाऑके काम बाता है), 'एछिब' । सेजाबी∽वि॰ तेबाव-संबंधी। ~सोमा~प

सेक्विका~स्वा [सं] माकर्क्यनां। संजित−वि सिं] तेश किया द्रमाः उसेनित । ते किनी∽का∘ सिंदि० तबनी' ते बेक्त ता

तंड्री-सी॰ तेब दोनका माच क्षेत्रका क्षेत्रता प्रवरका धीवताः बस्दीः महेवी अस्तीका बक्रमः सफरका महीना ।

—का थाँव∽सफर महोनेका थाँउ ।

साफ क्या हुआ सीना ।

तेबो- तेबधका समासगत स्म। -ब-५० एक। -जल-पु ऑप्या ताक त्रैसा भाग ≓स¹। –शस− प एक बॅटीका जंगली पेड बिसुबा छिलका संसासे कार दबाके काम भागा है। −काञ्च−पु सख्याः −धैत−प अवमान बंदाज्याः। - भीद्-न्याः छायाः। - मध-प्र अध्निमंध **प्रस्** गनिवारी । ~सूर्ति~पु गूर्व । वि विश्वमै तक्की प्रपुरता ही तक्कारपा - रूप-प वह जिल्हा रूप सर्वमदासद भैतन्य हा। जस । वि तंत्रोमृति । −विदु−पु० व्ह उपनिषद् । −**वध** −पु धुद्र मधिमन, गाँधे सर्गोद्धा दृष्ठ । -इत-नि० भिस्नक्ष त्रव मद्द थी गया वी । −द्वार−स्तर श्रवस्थानी सना । सबोमय-प्र• मि] तक्ष्मे परिपर्ग विस्तृ शरीरसे तेव नियम्ता हो प्यानिर्मद।

तेत्रोवती-सा (सं) वत्रशिपताः परिचा महास्वी

नियनो । दिन्दी दै तशीवान्। तप्रोबान् (यत्)-दि [मंग] तम्मे सुक, तीमाः तेमा

बरमादी । सता - वि प्रवसा, या परिमाणमें उन्नोद्ध बरावर हो । तेशासीम−वि•पुदे•त शासीग्रा

मेक्रिक्र≠−4 उपना। नेक्री≉∽विगी उपनी।

सतीस−दि प्रदे• तर्दामा

शतो≉−4ि चवना।

तम∽षु [श्री] गानका भारितक स्वर दोम-नोस । तेम-प्र॰ [बं] भात्र होना ।

रोमम-पु [मंग] व्यवसायहा दुवा भीवनः बाई दूरम

को हिन्दा । लसमी-न्यो॰ [मं] आय १एनेची वगहः १६ तरहवा

तहरा ।

सस्म-ग्री दे त्रवादयी ।

तेरह-विश्वम भारतीम । पुनरहारी संवया २३ : तेरहीं-को वरनधे दिवन शरको विव जिम्र दिन आप्यदेशिक जिल्लाको समाप्ति दानी है और जाह्मणमाजन है बाद अरमादीयका अंत होना है।

सरा-मर्वे तृका भव कारवका रच । [मो० ०० ।] म् वन्तरीन्त्री नदे दिन्द्ये हरे वनुवन बान । तहम ॰-पु रित्म वा कार्या श्रीमरा एक (रिन्स-

स्पर्मे भी प्रदुक्त-मुरम् साथ १) भी नुरम्।

अप्सरा । -ग्रह्म-पु सन्वासग्रहम ।-श्न-वि०, पु० र्रेटेसे प्रहार करनेवाला। टंडसे मार्ट्स जान सेनेवाला। र्वटकी म माननेवाका !-चक्र~ड्र सेनाका वक विभाग । -- पारी(रिम्)-पु॰ छेमापति । -- रक्षप्त-पु शरतम रक्षमेका कमरा ।- बक्का-सी बमामा, मगाहा।-शाक्षम -पु॰ धनियोगीको टंटेसे भीरमेकी सत्रा, बेंडकी सत्रा। ~तासी-भी वारेके पात्रींगधा बाता (त्रसवरंग) 1-हास --पु॰ वह व्यक्ति जो सर्थर्ट म मुद्रानेके ४९७ दास नगा मिया गया हो !--देशकुरः-पु स्वाबालक् । --धर-पुर बह ब्बक्ति जी रोहा किये हो, देवा भारमक्तरमैवास्मा।बया रामाः शास्त्रः सम्न्दासा ।-बार-५० वह व्यक्ति विसक्ते द्दावमें देला दी बमः राजाः भूतराष्ट्रका यक्क पुत्र । ~धारक-१ स्वाद ६१२ थाछा ।-धारुष्य-स्री० वह स्वान वडाँ शास्त्राओं सुन्वदरशके लिए सेना इरानी पहे। न्मायक्र∽पु ऐनापति संनामी। न्याबाबीया, बॅटविवाबका राजा।-नीति-त्या शतुर्भो था अवस्थियोंको दंश देकर वसमें रमनेकी नीति। - नेता(त)-प्रशासकः भिनाररित । -प-त राजा।-पांत्रसः-पांसल-त्रश्वार पाका −पाणि−प यसः काशीरव यक् भैरव मृतिः वह म्बक्ति विराधे दावमें दंद हो । —पात-पुरूपरका दक्ष भेशः मृत्यमे पैरको एक सहा। - पाक्क्य - कात्र-वेसे जादि में भागत कर किश्रेके शरीरवर पूरू या वृक्ती गेरी बक्त देवनेका कासन (स्तृति); क्वा वंद । ~पाछ₃~पाछक-पु र्यडमाक्क दारपाला यह मध्या ।—पाशक ~पादिक —पु॰ पुलिसुका प्रदान कर्मभारीः वश्यादः । –प्रणास-प्र साधाग प्रमाम बह प्रचाम यो कुम्मीकर टडेक्ट्रे मॉर्टि परकर दिया जान । - कास्तिय-पु दाशी । - भैग-पु देवातास्य वरता स माना । -मय-५ समास्य **वर** । -- मृत्-पु+ वमः रह ध्वक्ति वी साठी किये ही: कुग्हार। -सरस्य-पु॰ पदः महसी । -माणव -मानय-पु बाक्क क्रिमे प्राया दंड हेमा पहला है। -माय~ पुराय शार्ग सरव मार्ग । -सन्द-प्र॰ सेनामावक । -सहार~ नो रंबके अनुसार एक मुद्रा क्सिमें ब्रुट्टी गोवकर मीन- देगमी कप्रयो और मीपी सड़ी नहत है। सायुमीका इंड और सद्दा ! -याग्रा-को दिन्तिवयरे विष प्रवास: क्रमपर की वयी भगरे। परवाता नरात । -बास-१० वमः प्रिमः वगम्प मुनि । -यय-तु पर्रमी प्राप्तंट । -बासी(पिन्)-द बारवाना वर व्यक्ति जिम एक मामका इट-मंबपी अधिकार मात हो। -वाडी(हिन्)-तु पुलिम कर्मभारी । -- विकास्य-पु रट-मंदंशी दिवश्य (बाया के " या लुरमानेफी समायी जाती है और अधि-राष्ट्रको होनों हैंने पार्ट निम भून हैंनेको मानादी ही वानी है) । -विचान-पु॰ नेप्यो व्यवस्था जुनै और मताबा कानुना − विषि−न्धा दे र्देशियांन । --विष्यंत्र-प् नवाभीकी शती वॉननका संगा । -व्यक्र-तु से हुँ र । – स्पृष्ठ – पु एकः साध्यस्यो व्युवस्थाना जिनमें गेमादे विक्ति क्या शहरतान कठारोंमें रिक्त किन जाने थ । -- शास्त्र-१ - तुर्व भीर मशहा कानूम । -- संवि-रंगे. मेना या न्यार्व्य मामान नेवर की जानेवाणी शंकि। ~म्बाम−५ हारीस्द्र बन्ध, क्रस्थ भारि नम स्थान क्रही

टंड देखर कट प्रदेशाया जा सदता है। वह स्थान वा प्रदेश वहाँ फीबी शासन हो (की); मनावा एक दिशावा -हरत-पु॰ दारवाका वमा तगरका करू। वृंडक-पु॰ [सं॰] दंता सींसा शरेना रोम्बा रेगार देनेबाला सासित करमेवाला वह पीपा: दहार: प्रशाद राजाका यक प्रका बह धेर जिसके प्रत्येक प्रत्येत रह में अविक **मध्यर हों। श्रंत्रशार**ण्य 1 र्व**डका**~नी [धं] वंटफारम्यः दष्टक्रममधी मृति। वृंबकारण्य-पु॰ [सं] विष्यके दक्षिण रह प्रापीन कर वर्षो वसवासाम्रासमे समने निवास दिया था (सीतपाव पर्धी दुव्या भा); अतरभाम । वंडम-प [मं•] दंट देनैको किया सुत्रा देना, निमह । **र्वडना॰** न्स कि इंडिस इस्सा, दंश देशा। र्वडमीय-विश् [मं] इंट देने शोल (अमे इंड हेग म्यायसंगद हो । **बंदमाम***--वि॰ वंदमी**य** ! इंडरी-का [मं] क्टरीका एव मेर । **ईडवन्−पु, न्ही** [सं•] ४८मी तरह प्रगीत पास किया जानेशका मनाम सर्ह्याग प्रसाम । **इंडावंडि-को** [सं] काठियोंकी मार-प्रेय, वह सार-प्रि बिनमें दीनों ओरसे लाडी चनता हो। इडाधिए∼प्रामि•ीरशमविधेयस प्रधान शास्य । र्वशानीक∼पु॰ [सं] भेताकाण्यः दिमागः। र्व्हापसामक व्यंक्रयसामक-तु [स्] एव रीय स्मिये धरीर क्षण हो जाता है। वंडापूप-प्र (मं॰) वंडा और पृजा। --श्याद-पु॰ रेव तर्रात्रणाटी विसर्ध अनुमार आवेषकर बाद रुपी मा" रवंग' सिक्द मानी का सकती है बिस प्रदार किये हैं है मावन हो बानेपर एसमें वेंथे हुए प्रदश शावर होता है र्देशयमान-१६ [घ] जो टंटेग्रे मोति होगा स्थित हो। र्देशर-५ [मे] रवा नावा क्रम्हारहा बाह्य पट्टपा मा राम करता हुआ हाथी । **इंडाइं∽ि** (र्ष] वंट सने थाम्दा र्दहासम्-त [न] बहास्त स्थानिहरूम स्टब्स rit I इंडामिसिका-मी [गं] इशा र्वश्रभम∽प्र [मं•] तीर्थपात्रीयो सरस्या । र्वशाभमी(मिन्)-५ [ग॰] सन्यामा । इंबाइत-वि॰ [तं] रंजेने मीरा हुआ। मु छण नहीं। मंदिक-पु= [म] "वपाद्द, छत्रीश्रतात क्ष वराष मध्यी प्रिय कर्मपारी । वृद्धिशा-स्था [त] यक वर्ष्यका एशी वृष्टि स्त्री मीनियोंकी करी । इडिन-रि [मं] निम पंट रिमा गरा ही धम्पन गी र्षेटिमी-भी [10] वह दीवा वंदेलात । दंश(दिन)-॥ [] थमा रामाशासामा शैका क्रमें वारी। मारिका स्तेबा एक बारवेपरा क्रम क्रिया क्रिय नीतेका पीवार रंज्यारी अस्त्वामी। संतुत्रीर संस्ट^करे वर्ष दिल्यात करि जिल्ही एदनाएँ राजुनार-परित की

काम्यारमं है। –(क्रि)मंद्र-पु जिस्स

बाक्षा । पु॰ सन्त्वासीः नदा दार्शनिक वा मार्निक सत बकानेवाचा, शासकारः तीर्थरशमका वक्र ! र्तक्रा-पुर भांत्र देशा तैत्रन देशका रहनेवाका । तैसंगी-वि तेहंग देशका। तेहंग देश-संबंधी । पुरु तैनंग देसका भिवासी । सी॰ तेका देखका मापा । हैस−पु [सं∗] तिसको पेरकर तिकाका हुन। तेक कार्र तक मरवरफूल । -कंद-पु तसिकार्वद । -कस्कब-पु शकी । - बार-पुतकी । - किष्ट-पु शकके नीचे वैठा हवा मैका सकी। -कीट-पुरू यह दोहा।-विज-पु॰ तसके योपनाने रंगने बना हुआ निष । -बौरिका-को॰ तेलपडा। - होजी-को॰ काठका बना मनुष्यके नरावर एक पात्र जिसमें प्राचीन काकमें तेल मरकर रीगी किटामें जाते ने तना सहनेसे नवानेडे किय सुरें रखं जाते थे। −धान्य−पुडस पन्योद्धाय**ड** वर्गनिनसे तथ निरुक्ता है (-तिक अससी वारी, नीनी मकारकी सरसी, सस और कुमुमदे शेव)। --पर्णंक-पु॰ गठिवन। -पर्णिक्र-प इरिपंदमः एक वृक्ष । -पर्णिका,-पर्णी-सी॰ चेरमः पृथः शारपीतः। -पाविका-नी बोहा, मुखबिद्या - पायी (बिन्दु)-प्र क्षीगुरु चपहाः सक्बार। - पिंज-पु सकेर तिश्रा - विपालिका-को॰ एक तरहत्वी योग्री । -पिच्टक-बु धकी ।-फस-म रेप्टी। बहेदा: तिस्का दीवा। -माविनी-खी॰ पमेठीस पेर । —सासी—सी शेल्सधे क्यो । —र्यत्र∽ पु रहेल । -कस्की-सो शोधे स्वायत । -वास्ता-की॰ वर्ष स्थान वर्षा हेठ देश जाता हो। -साधन-पु दनकोक मामद्य गंधद्रभ्य । —स्ट्यटिक-पु स्वनमि ।

पु कारकोड मामक गंवरम्य । न्यस्टोडक-पु त्रवसाय । न्यस्या-स्था क्षेत्र गोक्यां) कार्योगे । तेवक-पु (ते) थोता तक । तैव्यक-पु (ते) गेममार्थका गिक्यस्य । तिव्यक-वि (ते) विश्वसे तेत कमा द्याः विवय तेक भूतवा द्याः

तेखारव-दु [मं] दिकारम बामक मंबडम्य । तुंखागुरु-दु [सं॰] मगरभी करशे ।

र्वकार्यसा~पु[म] रारीएमें तक मक्त्रेको क्रिया सक्की मारिया। क्रिक्र-पक्ष सि ो स्की स्ति सम्बद्धिक स्वीप-स

तैसिक−५० [मं] दसीः । नस-संबोः −र्बध−५ •कोतः

रिमिनी-मी [शं+] रथी।

तेकी (सिम्)-पु [मंग] तथा। दिश गड-मंग्यी। -(कि) साम्रा-मी तक देरनेया स्थान।

त्तर्भन-पुरु [मं] तिल्हा धेर ।

तस्यक-वि [सं] सीभवा यमा दुवा; शोध-मंदंधी। तस-दु [मण] आदेगपुण माथ जोवादे शिषक । सु०--

में भामा-बहुत हा ह दोमा। नेव-द [तं•] य'द दीव मास।

तिपी-सी [गं] प्रध्य मध्यवासी वृश्या पृगकी पृश्या । तमा-वि दे नेमां।

समि-म॰ १ वेन ।

ती -म त्यो वस प्रशास उन समय । सीमरु--पु- माने जैमा एवं क्ष्म सीमर । सींद्र-सी॰ पेटका बागमी भीर भड़ा हुआ आग। सु॰-पुणक्रमा-मोटाई दूर होना। सींद्रस-वि॰ सींदवासा, विसका पेट निकवा हुमा हो।

सींबी-की मामि। सींबीमा-विश्वसंख्याः।

तो-न तर, उस स्थितिंगे पर अध्यय विस्ता प्रदोत किसी शक्यर और तैने किय जनना में से किया जात कि आ। असर्व कुछ पूर्वा नह स्म जो स्ते विप्रस्थि

स्थानके पहले भास होता है। सोहरू-प्राचीप, बस्टा

सोई सी ममबा गोट।

तोक-पु॰ [सं॰] कृष्णके एक स्पन्ना; भरत्व, शिसु । सोकक-पु [सं॰] चारारः, वरीहा ।

त्रोक्स~पु॰ [मैं } जी मादिकी इसे बाक; इस रंग; मेघा च्यानका में क्र

स्रोतरण-पु दे॰ 'तीप'।

वोसमा • - स॰ कि॰ संतुष्ट करना प्रसन्ध करमा।

सोसारण-तु **रे**ण 'तुपार ।

तोडक-पु (सं) यक वर्षप्रच मिसके प्रत्येक वर्णमें पार समय बीत के कावार्य संकरके यक पह शिवा !

तीरका-पु दे॰ 'रीटका'। तोरमा॰-अ॰ कि इस्ता।

वाटमान्नकर कि हुरना । बीह-पुत्र वोहनेकी किया या माना नारी आदिके सकका जीरवार वहाना कुरवीन एक दाँगके जनावने किया मया हुसरा बीचा सोका बहोजा पानी ! —सोक्-पुत्र दाँग्लेंडा

प्रवाद युद्धि।

होड़क-पु॰ (तंत्र-देशका ।
तोड़क-पु॰ (तं॰) मदनः काहवा। बोट पहुँचामा ।
तोड़क-पु॰ (तं॰) मदनः काहवा। बोट पहुँचामा ।
तोड़का-ए॰ कि॰ कावात, सम्बे या बनावते किसी वर्तुके
दो या व्यविक उदाहे करना। दिसी वर्तुके अंगको वा वर्त्तमे
वर्षक दूर साम किसी वर्त्ताक देसे की संदित था देशक वर्षक दरना। किसी वर्त्ताक देसे की संदित था देशक वर्षका प्रमाव व्यविक त्याचित वर्त्ताक वर्त्ता। किसी तरंदा या बार-वार्त्त्य व्यविक देशके किस देशक देशा दिसी निवमको रह करना वा कावम न रक्ता। विभी आयाको वर्त्त्यम्य करना तंत्रका मालिको मालिको

सोदर•-पुवाहा पैरका एक गहना। सोववाना-स• क्रिकोहमेका कार्य कराना। सोवनेने प्रवृत्त

करमाः होहमै देवा ।

तादानां – संः सादनेश याम बरामाः रस्तीदे अवनकी मुख्य बरमाः किसी सिक्केटी मुकानाः। **दंदाना** – दक्षिण वाका । र्देवामा- । भ कि गरमा मालूम होनाः गरम बीजके पास रहनेसे गरम होना । प्र फा कारा बंधी आहि का शांत । –(मे) दार-वि निसमें दंशमें ही। **इंदाह--प्रशास, प्रकोणा**। वंदी > - वि॰ दागनाखः सपदवी । स्पति। -पु॰ दे॰ 'र्यमो'। र्द्**पती~पु (सं•) पति-पर्सानी-प्रस्प**। र्द्धपान-भी विषय विज्ञाति इंग-पु [शं] बारांष, बाइंबर इसीसला अभिमाना क्यरः प्राप्तः बंद्रका वका शिव । दंसक-६, पु [सं] पास्त्रीः वंबद्ध, कपरी । इंसन-पु [में] दीम दरमा, वामन दरना। वैमान १-५ पासे : वर्मद-'ई। जु बहुत है थको माप्ये छोदि सदैवमान'-सर्। दंसी (भिन्द्)-वि [शं] क्षत्र करमेंबाका पार्खशीः वसिमासी । र्दमीकि-प्र[#•] बंदका क्या होरा । हें बरी −र्ता अनात्र निदाक्ते हे किए एटा चंद्रकांको नेहीं है रीदवाना । **बॅवारि॰**—सी दशानित। र्दश-५० [मे] रॉन खारने वा रंक गारनेको जिला। बाँच कारनेका बाबा विरोध जंबके कारने वा संब मारनेका पाया मुभनेवासी नानः सक प्रकारकी वडी प्राची जो बहुत तम कारता है, बाँछ, बमयक्षिका गाँता क्वक, बमा (रक्तमा) बीना तीन्यापमा धारीवची संभि। हैवा बाधीय ! ~माशिमी−सी॰ ण्ड तरहस्र दीश । −भीरु-मीटक~९ भैसा । ~सल~पु• सहजसका वेह । च्यारम् न्यः एक तरहक्षा भग्ना, क्षतः । **बंदा ह~**दि [स] कारीवाका। दंक मार्मवाका । स क्रचाः दासः मन्छकः मिक्रः। दशब~५ (रं•) कारन वा एंद मारनेकी किया: बतय । र्बंग्रनार-म कि दाँगते कारमा वा दक मारमा । र्दक्षित−दि (ग्रं•) यो ऍमा गमा ही जिमे क्रिमोने बॉनसे कार दिया हो। जिसने करक वारण किया हो। सक्तक बॉमेनः दक्षित । र्देशी-मा (मं+) दीरा दास सोध वमगीरका । र्दशी(जिन्द)-प (ह] दे दश्का नरी। क्रमनेनात्री बाय कर्रनेशासा १ इंद्राफ-दि [4-] शिवार श्विमे वा एवः मारनेका स्वभाव था। र्वहार-वि [में] कारने या रोड मार ।शम्या डानिकारक । बेश-को [40] मीता भार वहा वांत्र, वाद, बीमर ! -क्ट्रास्ट−दि अपंदर विशेषाता । -वीक्र-पु० समस्या बांत । - मन्त्रविष-पुरु वह जंगु जिम्म्के मग्दो और बांगी मै रिक हो। -किय-म एक मकारका गाँव। -विधा-मी ९६ प्रकारकी महत्ती है देशगुष-५ [मं] शहर नराह ।

प्राप्त∼ार [शेण] बारीवणा ।

र्वहाच्य-५ [सं] द्युर, बराद ।

बतिर्विशामा मेतुः एक दिस मेतु । विश्व वर्षे शतिराहस दौर्वीचे यात बरनेवाकाः मांसादारी । र्षस॰-पु दे ४ श्र । ब--वि॰ [र्व•] (समास्रांतर्मे) देनेवाचाः वरस्य करमेवाता। पुर हामा परित्र शतका काम्बद मध्य बदना । सद्रश्रमण-प्रवेश पीरम । भट्टमारा==-वि• दे 'दर्र-मारा I सई-पुर्वेव भाग्य शिवि, विवासा ! -- सई-म हा देव ! दा दव !, ईवरकी दुवार्र । -मारा-वि॰ विस सारा द्वारा इत्रभाग्य (इन्द्र⇔पुरु [र्थर] असः। वकत-य दक्तिया दक्षिणी भारत। क्षमी-विश्वकाता । सी वर्षा व्यक्ति हिस्सार प्रकलित संध । इकार्गस~पु (मृ०} दे 'दगानंड'। वृक्तियान्स~ पुरुष्ठ रोजन समार् को ३४९ ई में सिंहा समास्य हमा वा र इक्रियानून्यी−दि० पुरासाः, इरीमोः पुराने मंगास्य परामगंथी । वृक्तीक्रा∽तु∻[स] स्वम वस्तु वरून धीधे भीत्र तुर्द बुक्तिः क्संदः बनावः समा शुरु - बहा व स्पनाः-बाकी स छोक्ना-कोई कमर म छोत्रमा ! व्यक्ताक्र-पु (च) कारा पीछनेपाकाः पूरनेराणः । इक्टिम-प एक्ट्रे और मैंड करके धरे डीनेश सर्वर्र बाबको ओर पहलेबाली दिखा। मारहप्रवेदा परिपी मार दक्षिण देखा । भा दक्षिण दिखाने । व्यक्तिमानी-विश् व्यक्तिमन्त्रे और पश्मेवाना वश्चिम हिन् में रिवना बहिना देखका जिसकी संबंध देखें दुवै हो। बश्चिम बेहा-संबंधी । इ॰ दक्षिण बेहस्स निवर्ष वाधिगारव । न्ये । वश्चिम देशकी माना । इस-वि [सं] क्सिमें निनी विश्वकी सन्मान नमारे तथा कीर्र कार्व द्यार करनेकी शन्ति हो। कुतान निवृत नित्रहरून माहिर चनुरा हैमामशास बाहिना, बहिन। [की 'क्स' 1] प्र यह मनायति ना मदस्य गारिने बीगुरेसे बल्बम हुए के मुरमा रक्षणीरण किल्ला मुन्ति अपी। अधि। शिवा वह मायक दिगाई को बारिका बी। प्रधानरके पद पुत्र। निष्यु। बीदें। शक्ति बीव्या नुरा स्वमाव । -क्रम्या-सी १४ प्रवार्शास्त्रे सम शरीः दुर्गाः व्यवमा आरि मध्य । -अगुष्यमी (सिम्)-त शिवा शिवा शिवा अनुवा । - जा-मीकी 'ब्रम् क्रमा' । -- चति-तु शिवा चंद्रमा । - हबशा-मो॰ दे दशक्यां । -साधर्मि-इ मरे घत्र। -मृत-प्र १५५१ । -सूता-भी वर्षा गरी। इसोड-५ [त] सुनादा प्रदा । mm-mi [n] gutt 1 मुक्तरस्य−षु [अं७] शक्यः गुअः। वृक्तिम-इ॰ [र्ग] क्छरके मामनेक रीया, द्विका

ब्द्रिक-बि॰ [र्स०] दार्शीवाला ।

वंशिका-सी [सं•] दे 'रंशा

र्वश्री(हिन्?)−प सिं•ो यक्ता रक्ष प्रकारका मॉक को

सोसक-य॰ सि ी बारड साडीकी एक तीक । कोसन-सी॰ बाँड । म [मं] तोकनेश्री क्रियाः वहाला । तीसमा-# स• कि पहिनेदी धरीमें तक देनाः तीसमाः बत्य आदि सँगाङ्काः छठाना । तोसदाना-स॰ कि 'तीसवामा 1 शोसा-प॰ वारड मारोबी एक शीकः दल शीकका बार । तोसिया-प॰, सी हे 'तीसिया'। तोस्य-विक सिको नीने बांसे योग्य । प्रा चीकनेको किया । त्रोगळ-ली सि ी को भरा विद्यादन स्रोटा करा ! -श्वासा-प समीरोचे बखावि रसलका स्थान । सोदाराम-प पाथेय रखनेको थेकी: कारतम रसनेकी ântr I त्रोहा:-प॰ क्या] संदर्भ, पारेष । - खासा-प॰ दे 'तोधकसानः'। -(दो)भाक्रयत-उ (किसमे प्राक्षोक वते)। होच-प सि । मनक्षे बद पृष्टि बिसमें माप्त बरन सुख सामिसे सविकती लाकसा न हो हाहि निपसाका समाना मस्त्रता प्रसादः कृष्णदे एक सन्ता। होपऊ-दि सि) संबुद्ध का एस करनेकाला। सीयवा-प॰ (सं॰) सहाइ दरनेको फ्रिया था मानः शोप ! होपणी – स्ती • सि े दर्गा। सोपना +- स कि संतह करना तम करनाः प्रसन्न करना । क कि संबद्ध होना तम होना । सीपस-प [ध] यह अन्यः मृत्यनः वंसका एक सक्त क्रिमे क्याने धनवैद्यों सारा था। कोपिय-वि [थं] तद्र दिवा इका मसादित । सोपी(पिन्)-वि [मं] (नमामांवर्ष) " से संतह या मसमा मसम बरनेवासा । शोस॰-व दे तीप'। ਗਸਵੀ−ਜੀ•ਵੇ ਗੋਹਨ। हामक ॰ - पुरे हो वर्ष । वीमा - प्रदे वीक्षा' (- ग्याना - प्रवे वीक्षागाता'। वीमागार॰-प्र दे 'वाद्याचामा । तोइक्टगी∽को भन्नई सम्दर्भ स्वी। वीद्याः-विश् (मर्शे नावादः वदियाः अवदा । वः शीगात नबर, भेर संदर वा बीवा धीय। वोद्दमत-ध्री [भ+] मिग्या भारीप लोहम । शाहमधी-वि मिथ्या बारीय वरनेशना सांहन लगाने MIRT I वाहरा । अस सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः गोटारा-सर्वे सम्बारा । सोदिक-सक तुने तरहा र्वीक्रमाण्यम कि भाषी तपना। वींस~रनी भूप गानेने रूपी वन व्यानः वादः, वससः। र्वीमना १ - में कि तप मानाः गरमीने शुक्तम् जाना । तीमा-पु बरी गएभी भीषय ताप। सी-मंदीः अस्ति शा सीत-इ [य] रंगुनी। सकत पूरी कर्ने दे निय क्योंकी षदनायो दुर्दे हॅसुनो: बनुनर आदि प्रदिवीके गुनेका हैनली [

शमेरी पहलाते थे । भी को का साम को उन्हें का प्रस्त गाउँमा 1 लोशिक-पर्वासीयो वस राजि । सीतातिक-प (सं॰) कमारिक मङ्कत मीमोसाझास । नीतिक-प॰ (सं॰) गीतीः भीतीका सीप। मीयां-सर्वे बार सो । नीजी≕को कोश स्था। लीक्रीक-प [ब] श्रक्ति सामध्या विगत बीससा अवाका क्षेत्रे ध्रम संबद्धको पठिषे सापन जरा हैना। भारतकार प्राचन । सीबा-सो० दे॰ 'होना'। सीर-प [सं•] यह थाग [स•] चाल दंग तरह. घाँति । -मरीक-नगीका-प चाठ-वटन, चाठ-वात, वात animum 1 सीशभाषास-व सिंशीयक साम ध मीविक-स्ती प्रमारा श्रष्टर । शौरीत~त दे॰ 'वीरेव'। हौरेल-प [इष] यहरियोंका प्रवान वर्गर्गंव। सीय-प [सं] पूर्व भारिकी प्यति। तीर्यक्तिक-प॰ सि॰] गीत नाइन नत्म भावि कार्य । सीळ-श्री तीक्मेक्ट किया वा सावः सावः बोद्य बजरः परिमाण-बैस मत सेर, तटाँक शोला, माना आहि । 9∙ বি ীলব∙যোলভা বাঝি। नीअला~स कि. दिसी परार्षका परिमान या सारीपत जाननेके किए उसे तराबु का क्ष्रेटेगर रखना जीवानाः धापनाः पार्शकी तरीमें तेरु क्यासा । धीलवाई-ता दे॰ तीलाई'। वीस्थाना-स कि बीचनेक दान कराना। सीसा-प नम्बाः गहा तीसनेवासाः मदपद्ये द्वाराद । र्वाछाई-की॰ वीडनेकी जिला या मानः वीडनेकी बहात । वीक्पमा∽स कि इसरेको धीवनेमै प्रदत्त करना तीवाने का काम कराना । वीकिक साविकिक-प्र+ (d+) निषयार । सौष्टिया-प. स्त्री शरीर पीछनका विगय मकारका भेगीए। १ बीर्टा (किन्)-प (सं] वीननेवाका, तुका राशि । सांस्थ-प्र मि विश्वन, बीका सारस्य, समानदा । सीपार-पु॰ [र्थ] पाला ३६ । वि वसीका तुपारसका। शीयना =-अ• कि• दे 'शी समा । स कि साप था गरमी पर्रवादर देवेज करमा । शीहीम∽श्री [व] सनार्यः वरमान नदस्ती । वीडीबी!-को दे 'वीडीन । रवन्छ-दि॰ [धे॰] स्थाना छोडा हुआ बिछका स्वाप कर दिया गया हो। -जीवित -पाल-वि विग्रने जीवनकी माजा छोष थी दे। मरनेशी मन्तृत । - सज्ज-दि निर्मश्र बहवा। -विधि-बि निवम भेग बरने गका। -भी-वि रामी द्वारा परित्यक, भौदीन माम्बद्दीन । श्यक्तव्य - वि. [मंद] शोहने स्थापने द्यारा । राका(क)-वि पु [र्वन] धारनवाना स्यामनवाना सा निद्द । -(१) गुलामी-पु रेनुनी था पुलामार व्यक्तारिम -दि [में] गृहारिनदी परशा बरनेशाना

राधस्य – वि॰ सि॰ विकाने योग्य । वाधा-सी॰ [र्ग॰] वह दिशा त्रिसमें सूर्व वरावर सिरपर रक्ष्या है। कुछ निद्धेप विनियों जो जहान मानी जाती है। बग्पक्ता वश । दर्गा(रपू)-वि , पु (सै॰) क्लानवाका १ रामाधार-१० [मं] 50 मन्दर-झ, इ, र, म भीर प-जिमका छंदके भारममें प्रयोग करना निविक् है। इत्पिका-सी [मं] समाह्या माना जला ह्या मध । श्चरित्रञ्ञ =−वि॰ दे 'दरम । इस्पेएका-भी॰ [सं] शानों । श्रम-वि॰ (सं•) तक पर्चेचमेवासा (समासातमें-बानुरम्य) । हचक-त्या दचक्रमेकी क्रिया' हचका। बच्चा हवान । इच्छना-४० डि इबना मीथे-छन्र होना। झटहा सामा। सः हि॰ पद्धा क्यानाः दशनाः। इक्का न्यु सनारीके नी न-ककर दावरी कंगनेवाला वद्याः क्षेदर ! द्यमा :- म : कि : प्रना, विरना । इंप्प्र∗−पु दे वहा । -कुमारी,-सुता-ली॰ दे प्रवक्ता । इंप्तना दधिनां ∸न्यो विद्या, नक्क्योंको दिवा वाने बाका दानः मेंट । द्यप्रिम∗−विष्य अस्य दिशिय'। दजाल-५ [म] एक भौधका काना भलमी। दनानाव भारमा । ह्रमाश-स कि अस्ता। ददिपश्च-- विश् दाहोबाका । दतवन-स्रो॰ दावीन। दतारा≉−दि॰ वडे दॉर्टीवाला (दावी) । इतिया को बॉनका अस्तर धोटा बीठा यह रिवालना यक वहाडी तीतर ह इतुमन इतुबन, दत्म, इतीन-छो॰ दे 'दानीन । द्य-पु [मं] रक्षात्रया गावने नातरेन (वै॰); क्याको कायरबाँको एक स्वापि। इत्तक (प्रव): बाम । वि दिया इमाः शाम दिला इमाः सरकित । -श्विच-नि जिसका मन कियो कार्वमें भक्ती तरह हमा हो। श्वाप । –हाहि-नि॰ जिल्लको धर्ष किमी वद करुपर सभी हो। श्रुतेशय। ─शुस्का-न्यो वह सन्या विसक्ते तिथ शुस्क दिवा गवा ष्टा। --इत्स−वि शिमें वायका सवारा दिवा गया वो । इत्तर-पुर [मेर] थी आरम् पुत्र व होनेपर शाल-शिभिन्ने पुत्र बता किया थदा हो। योर क्रिया प्रभा पुत्र शुन्तका। इत्तरमा(।मन्)-इ (सं०)वह वागाना-पिनादे निवसद कारण अवदा पनके हारा स्थाने जानेपर दश्वे किमीके बर्चा जाबर बमदा दशक पुत्र बने । इसाप्रेय-पुर्व [मं] अति कविदे पुत्र की विश्वादे जीतीम मदशहीमेंने दढ़ अरण र माने बाले हैं। व्हामक्षमिक-दु॰ [मैं] बान ही दुर्गे क्लुको नावन नेनेश यह । दणापयान∼वि [मे॰] शावचान, शुनमादिव । इसि–भा[स]द्वार

ब्लोय-मु (म्०) हेट्र १ क्षोपनिपद्-सी॰ [मं॰] स्व वसनिषर् । बचोसि-वर्श (संश्री प्रहान्य करि । विकास-वि [सं•] दानसे मास । पु॰ बारव प्रसारके प्रशीमेंने एक बराब प्रम (बा दास) । बद्दत-व [र्छ•] बान देनाः दाम । ब्दाक-पु॰ दे॰ 'बादा । इतिमीरा।-पु दे 'वश्यान । ब्दिता(तृ)-विन, पु (र्धन) देनेवाका । वर्षियाक-प दे 'द्रतिहाल'। द्दिवाससुर−दु सप्तरका दिना। इदिया सास-सी छग्नरकी माता दरिया स्वरूपी पी सास्त्री चार । इतिहाक-पु॰ शराका कु≖ वा ५र । ब्दोदा-पु दे॰ 'ददोरा । हहोरा~ड् वढला जो सन्तर माहित दारनेदी जगरी हृबकामेंडे अवदा जुनरिची मारिके कारप धरोरकर स बाता है। बहु-पु॰ [मे॰] एड श्रद्धारमा कुछ, शार मामदा कि क्लार। - झ-प्र बक्रमर्थ मक्ष्रीहर बहुक-दु [4] दे 'दह । रहूज रहज-दि [सं॰] इह रीगमें प्ररत्। शह-मी [हं0] देव क्या इस-रि [तं] देनेवासी भारम बरमेवामा । व पु रे रे 'दथि'। -सारण-तु दे० 'दथिसार'। इपमार्थ-अ कि देश दहना । वृधि-पु [सं] वदी। यरः वन्य । दि भारण करवेराना -कॉरो-५० (देश) रूक्तमगारमोढे पार पानेगम एक कलाब जिनमें शीम इस्ती मिशा हुना दही पर बूसरेनर बॅकने है (कुणानगमके वन्तस्त्रमें योहनी नी करतन मनावाननानाभीर तमीते कराभारहा है। ~क्चिका~सी॰ दशे भीर जश^{क्ष} हर दूबदे दंप्ती नना क्षमा वक देवा होना। -बार-पुरे महानी। -अ -बाल-इ नस्प्रन । -धानी-मी दरिस्प ! -धेनु-न्ही शरकेमें वरे दहोत्तर गोलका भारीत करहे विशेष प्रकारके बामके मित्र वरिश्त की गरी थी (5)। -- जामा(शक्)-पु देवहा देश । - वृश्यिम-मे इतेन व्यरप्रतिता । -पुरशी-स्ते मेम । -पुर-प्र म्स पदनाम की दरीयें केरे हुए छातिन मेदी पीत्रे मन्दर वजावा जाता है। --प्राथ-पुरु देव। --प्रोप्त -स्वैदन पु दहाँमै सूटा मुभा वामी । -मंबोच-पु॰ दर्श नार्मी -संयम-पुरतो नवना १ - गुरू -यवत-५० गण्ड बाबरी नैमाना एक मेनार्ताना एक सरहशा मीर रह मान ! -वारि-इ प्रशंका पाना । -वार-पुर रे 'हिभिमेट' । ~हारण~पु० वागर । असीमण~5 वर्ष मीतः । -मामार-इ रशोषा सहर (इ.)। -सार-१ वहीने मिस्त्रभा दुना अभाग । -स्वेर-उ धीत । वृधिक-दु समुद्द । - अ - आत-पु वेरमा । - सुनै कुरु कमका चेंद्रमा। धारी। विष दक्ष दक्ष चर्चमा अन्यत् अन्यतः र्देश्य ३ — सुन-प्र वंदिन वित्र (I) 1 —सुप्रा^{-मी}

प्रापंती-सो॰ [सं॰] त्रावमात्रा कहा ।
प्रापताय-पु॰ [सं॰] एक भीवरोक्षीणं कहा ।
प्रापताय-पु॰ [सं॰] एक भीवरोक्षीणं कहा ।
प्रापतायां, प्रापतायिका-सो॰ [सं॰] वाकमात्र कहा ।
प्रापता-पु॰ [सं] यतं, रट, सीपः, प्रस्का एक दोष । वि
वकः मर्चकर । -कर-पु॰ दे॰ 'बासकः'। -दाधी
(यित्र्) -वि॰ भावशयकः।
प्राप्तक-दि , प्र [सं] बर्गने राका निष्यकः दूर करनेवाका।
प्राप्तक-पुलि] टराने वा बरस करनेकी किया भवकः
कारणा बासकः।

सासनाक-स फि॰ कराना, यन विद्याना । सारित्त-वि॰ [कं॰] बदा किवा हुआ दरावा हुआ। सारिति (किन्)-सि [कं॰] मनदानक। सारि-वा॰ (कं] वचाओ, एका करे। पावि । सुक-प्राहि कराना-वैन्वपूर्वक स्थाके किए प्रार्थना करना वेनस्र कोकर बचानके किए दिलीको सुकारना। -साहि सम्बना-विद्यालोके हैंदर्श मादि-बादिको सुकार निकन्ना। सिदा-वि (कं) होमनी।

विश्वत्–वि [सं] तीस। –पश्च–प्र° कुमुद्र। द्रि-वि+ [मृं] तीन (वह मानिक सन्दोंके भारतमें बोहा वाद्या है, जैसे-प्रकाल विश्व विकोध र॰)। -कर -**कंटक−**पु गोखकः से<u>र्द</u>ेश दे[®]नरा महलो । वि जिसमें धीन श्रीटेयानोर्के हीं। ~क्कुयू~ पुत्रिकृट पर्वछ विष्णुः इस दिनोंमें दिया बामेबाला यह नायः प्रवान ! नि॰ प्रिसे तीन कोण का स्टोंग हो। नि तीन चोरियों वाका। −कडुभ−ु इंहा बदान वासु नी दिनोंने द्रोमेराका एक वदा -क्ट~पु गोसक्का देह। -कट्ट,-कट्टक-दु दीन करूप पराशीका समादार-सीठ, रोतर भीर मिर्च । - कर्मा (मैन्)- पु रान, यान और अध्ययन-रम तीन दमीकी दरनेवाला आद्धार । -कक-५ तीन मात्राओंका दाव्यः ° शक् और ३ कपु क्यारोंका एक श्रीक्षा । दि जिसमें सीन कराएँ ही। द्योग क्लामीबाना। −कदि-पु अमरकोद्धाः निक्छः (य रीजी संब द्वान चीन क्टिमें विभक्त ह) । वि दीन कारीवाला । 🗝 दाप-पु॰ तीन कांडीके अनिरिक्त ममरकोशका शेर्पाध को पुरुषोत्तमकून इ.। -कांडी (दिन्)-प तीन वर्गिका समाहार। वि तीन वर्गेशे ৰালা। শ্বাৰ-ৰু পুত্ৰ। শ্বাধিক-ৰু নীত मतीस भीर मोबा-दम तीनोंवा ममादार । **-वास**-प वीमी राज-मृत वर्गमान कार महिष्या वीमी समय-प्रता मध्याद आर सार्व । ल आतः मध्याद और मार्च-वीमी समय । → ज्ञ−दि पु॰ ठीनों बालीकी वार्ने याननेपाला। - इश्र६-ड कथि। वि विधे तीनो बारोसी वार्ने हान हो। - व्हर्शिता-की निद्यापन्छी रोनेशे एडि या भार । --र्झी(शिन्)-दि है। विश्वासय । - बुटा-की [हि।] है 'विश्वद्व । ~इसे-सी मीडीके मध्यके बुछ कपरका स्थान बडी विष्य-पत्रको स्विति मानी जानी इ.१ --कुम्प-च् तीनी देव-रिशिक मार्थिक धना हस्योग्येक। -केम्पा-की बन्तिमा ! "मूर-पु वह कीन जिल्हा हैंगा वती थी। तीन शंगीयाचा परता एक पर्वत को सुमारका

पुत्र माना जाता है (बामन पु)। वीवमें एक कह विसक्ती रिवरि त्रिकृटीमें मानी नाती है। समुद्री कनमा --•ह्रवण-पु• समुद्री नमद्र। -कृश-सी अनुसार एक नैरनी । **-भूचक**~⊈ शीर-फाइ धरेनका एक शक्त (यह विश्वपद्भर वाल, वृक्ष, मारी भीर राजा आदिकी विकित्साके किए विदित्त हैं "सुमृत)! -कोण-प्रतीत कीनोंका क्षेत्र विमुत्र △ा कामरूपका पक सिक् बीका करमकुंद्रकीमें कघरवामसे पॉश्वमें और 'मर्ग' स्थाना मोक्का बोनि । वि॰ विसमें सीम कोने हीं तिकीना। -- क्रस-प सिंगाहा। -- शतन-पुर समा**र्वस**ीमें क्यारवानसे पाँचवाँ और ववाँ घर। - श्मिति - सीश ववामिति रेखानणितः। —काणक-पु॰ त्रिमुवः। –क्षार-च= वीन क्षारीकासमाहार-अवासार सक्षो तथा क्षहागा। -शार-प्• तावमसाना । -स-प्र• ग्रीरा । -र्राधक-पु दे जिनातक । -र्शमीर-पु गंमीर स्वरः सस्व त्वा नामिकाका व्यक्ति । –गण-पु॰ वर्गे अर्थ भार द्मान । —शर्त — यु उत्तरकारतका **वर** शामीन प्रदेश क्रिप्टमें वर्गधान पंजाबके कार्यपर और कांगड़ा आदि विने सम्मिरित है। इस मद्दस्या निवासी । --गर्ता-न्योव व्यक्षिचारियीः मीतीः यद तरहका शोगुर । –गुण-पु॰ क्षस्य रव वय−इन वीन पुर्णेका समाहार । वि॰ वीन ग्रना, विग्रनाः बिसमें सस्वादि सोनों ग्रम हो। तीन आगी-वाका । – गुणा –स्वी॰ भावाः दुर्गः । – गुणातीत्र – वि॰ को सत्त्वादि सीमाँ ग्रुजोंसे परे हो। पु॰ परमारमा। -गुव्यतम्ड−वि॰ विसमें सत्त्वादि तीनों गुल की। -गुक्ति-वि विग्रना क्रिया दुव्या । -गुव्यी-क्री॰ वंड-का देव। "शुप्ती (जिन्)"विण तीन शुर्गीवाता। -गृद्दः-गृद्दक-पुरु नियोदै वेद्यमै पुरवीका एक माच। -बक-पु॰ मधिनीकुमार्खेदा १व ३ −बह्म्(स)−पु॰ शिषः - चित्र-त नार्वपन अधिः - ज्ञाक-प तीनों कोफ-न्यर्ग प्रविशे और पाताला दे असमें। ~जगती~की°;—जगन्~९ ठोमो होस्। ~जट- च चित्र । - अद्य - स्रो मधाक्रवारिकामें आमधीके साब रहमेवाकी एक राख्यी (रसके इन्वमें श्रीताने प्रति विरोध पञ्चपात का) । --बात --बातक-प्र• इसाम्यो बार्जीनी और तबएका-इन नोनीका समाहार (नागरेसर मिलास्त रहे यतुर्वानस सर्छ ⁵)। -जामा॰-न्दो॰ त्रिवामा³। -जीपा -अ्या⇔तो वृत्तरे बेंडमे वरिवितक रिन्धी दुर सीधी रेखा (यह संवर्धि क्यास्ट्री आवी दोती है) i --वाहा----------- (वह जा सोज प्रगह मत ही) धनुष् । -व्याधिकेत-तु वह जिसन होन गर मासिबेन व्यक्तिका भाषाम किया हा; कृषा वज्देरकी कारक मेहिनाका अध्यक्त या अनुगमन कर्नेवानाः नारायतः। ~धीता-स्री ५५१। -तशिका-स्री तीय तारोंनानी वस की सा≀ − नाप − पुदे तारत्र । -ब्रंड-पु वह ब्रंड दिन नुरीयर और बहुरर सम्मानी बारम करते हैं (वह बाँछड़े तीन इंटांडी एउटी सापहर बनाया जाता है। बापी मन बार धाउँर-इस होलेखा संदमन। -इडी(दिन्)-पुरहरिसने रूक्क सन भीर यरीर इन वीमोंकी बरामें कर निया हा स्थानानी

मामरेको भाग म बदन हैमा ज्योंका त्यों रहने देता। मश्बने म देना, शांत करना और ल एकड़ने देना: किसी-में कार्रे वस्त हवपना। कापार बना हेना. क्विस करनाः दफन बरनाः दिवाना ।

इयाव-पुर इवाने है किया वा भाव: थॉप दाव। हा -इक्ष्मा-प्रवादिन दरमा ।

द्यीज-दि (फा॰) मौरा यक्त ठल, संबद्त । संबोर-प [ब] कादिन, मंत्री, मवरिंद, बर्च । दबस-वि॰ जिल्लार दवान वका द्वी: बच्च बबनेवाना । यमोत्रमा-स कि हापन्तर वदा बैटमा वर तवानाः

धिगना । दयोरमा १ - स कि वक्षपूर्वक भी है हटा देना। दवाना । दयोजी!~सो - नरतर्ने। गं करू-वर्ध माहि प्रमारनेका क्लेशंका एक भीजार ।

दश्र-वि [सं•] स्वस्य भोगाः सूर्यः क्रुप्त तनु । प्र समह ।

धर्मकता - अ कि समस्ता।

दम-प्र सि देव, एमना नार्वेदियोंको बनके विवयोंसे निवृत्त करना बाध वृत्तियोका निव्यवः क्रवर्गीते ननकी इरालाः कर्मम स्पेषकः वयसीया वक्त माहै। विध्या। -कर्ता(र्त)-प्र स्वामी धासकः। -घोप-प्र शिक्ष पाकस विदा । -सरीरी(रिस्)-वि शरीरकी नक्ष्ये बद्यमें रखनेवाला ! -स्बसा(स)-र्या दमबंदी ! इस-५ (का) श्वास साँस पण बहुता सुपा बात. बिश्मी। तासत और। हनके बादिका बद्या भीका प्रदेश पानीका ५३: एनपारको भारः नेजेबी ओउ। धमयः बच्चः कुछ बच्ची साम बस्तको प्रक्रेनेचे क्रिय पात्रका मेद्र वंद्र बरदे भोगो जॉनवर राजनेको किया। -बास्ट-प्र बास् द्धा संसानेदार तरकारी जिसमें मास धड़ रहत है !−काव —पुष्ठ वा व्यक्ति सक्तींबाना बंत्र-विश्व विसमें भरा हमा तरक पदार्थ विशेषण पानी हवाके बक्से वच्छ नहीं हार। दिसी बीर होंदेरी फेंद्रा या सदे। कस देगदा आग हुपानेका मनिद्ध क्षा : -कका ∽तु व्यवस्थे वनुनेक् ধনা হ্রণা নহয়িক পারিট গ্রভাবত ভিতেই का एक नेत्र। दमभूक्का। —ज़म-तु शक्ति भीर द्वता। - बस्टा-प्र मोदेका रह प्रकारका पृश्या किसमे कोबना बच्चा है। -क्षत्री-श्री जुप म्हमा ।-हाँसा-🗷 मध्या भाषासम् सुदी सोवना । 🗝रा-वि हो। निसमें भीर-शन्द्र व्यक्ति श्री तन। -विकासा-प्र मारी भाषाः इतकामाः -पारी-को -वसा-व शॉमाप्टी । -प्रात-४ मोन्य का हा भाषमे करताः बढ़तेहैं भोड़ीकी बगर रह माने हे बारण परवनका ग्रेंड रेंद्दर बीमी ध्रीवपर एक्टवी नवी भीश्य वर्ग्न !-बाह्न~ रि दम देनशता शहा आधातन देनेशका करेचे। ~बाबी-सी यम या शहा वाधानम दनेश कायः भीमाः परेका ~माष्ट्र~! यात सदय गरक साथ रेट मरनवाता । मुरु -- अग्रहमा-न्यामुदा अवस्य रोना। -गरियना-पुषी सापवा की इसका न बरना। बगाची कार यामा । -चटमा-इवादी बगीने भाग न विश्वा नामा अभा प्रयास-दिवादा वंद दीना ।

-धींटना-विधोकी शास्त्रिया क्षेत्र देना ग्रांस न केने देगाः गना दशक्त या काम प्रदारते क्रितीका स्टेन देश वर करना । —सरामा—शासको एम प्रकार रोज केन कि दारीर जरबन मालय हो। सींस राज्यर स्पन्नो का हुभाना यादिर करमा। –हरमा–धाँन रद प्रसा बीइने आदिमें भविक बांच होसर हायने स्था। -तोबमा-भारतिषद्य क्रिप्रेमे नियुक्त होनेपर बान वानंदान्सा कपाविद दश होनाः सर प्रानः । -साद्ये (या लाकमें इस) भागा~बद्रत परेशान शाना । -विद्यसमा-प्राप्त निध्नमा, सर्व होना । -वद्या-किमी असके कार्यमें इतना अभ्यस्त होया कि छॉस व पुळे। च्यर का बसनाची॰ ¹जानपर का स्थना । −पर कम−≼ 'कम-द-सम ! −प्रमादीना-स वानाः चौ स्था वावाः - फूसमा-वरिक वान होने वाँ बसेन्द्र द्वारण छाँछका मार्र।धम भीग पेमने हाथ धन्मा। -यह होना-भव आहि दे कारन रिन्तन मा १६ बाता । -व इम-प्रतिश्रमः शर-गर (-भरग-होत चडनाः हर वक्त दिलीन्द्री शारीक बरना। यहमनदा राग क्षरमाः वरीसा करमाः दक्षेत्र करमाः - सारमा-१३४ बर दर करमंत्रे निए थोड़ों देर का नामाः ग्रामा। -में इस रहना वा हाला-बान रहनाः प्राप रहनाः -सगाना-गाँवा परस भारिका क्य अमावापूर्व धीनना । न्यसान्देश 'दम मास्या' । नसाध्यान्यत रोक्रमेचा सम्यास बरमाः भीन मध्य बरमा नुष स्वयः छीत रीहमा । -स्रमा-त्री सम्बद्धाः देखा वस्त भीक्ष साना । —सुन्नीपर होना-शर्म श्रेयान शेना काम रामरेमें होना । -हाँडीपर भागा-परमधे रिर्देश मै होनाः मरणाश्रव होना । इसक-न्दी चमर यादिश्य, प्रथा। पुरु [र्थर] इस करणेशमा दशनेशमा । द्मक्मा:-व कि वमकता योतित क्षांना ग्रवण करती

इसही-शी॰ देशेस आठवाँ दिग्गा वक वसे। स " के सीन-बद्दद सरा।

द्मच, द्मपु-पु (सं) आत्मनिरंपन रहा व्मव्या-पुर मेलोमें बाल, कारि मरहर को गरी बीर र वंगी। मतदारकी भागाभा तीरोंग्रे भागामा सेंप्युक

डिकालाः धोषरतः चीनाः परेत । द्यम-इ [सं] रकान का क्षत्रकेड छोड स्त्रेस सम आसिनिवंबया ६३ वनाः यवा र्रात्रमेश्री वास श्रीतरेक निरोधा रिजा ग्रिस सार्शकः भनिक, ब्रोमा दीमा देश भैत्र शहर कारधीको सन्ताना आनेराना एक प्रचार। स कषि जिनके वार्धारोऽभे यमबंतीको कर्रात हुते हो। भि दमम करनेवान्यः अनुदार्गतन करनेरामाः स्राधित सर्वे

बाला। दर्शन । –शील-नि चित्रस्थान रहन करे का भी भी नरावर ध्यम दिवा वदगा है। रसमद∽प्र[|] ५८ इदा दीमा ।

कुल्लाक-सं: दि: दशन करता, दशामाः हर वरता। < पुरु होण्डा श्वार त्रमती-को॰ (सं) अतिगध्यो नायद्र सुस् *७ स्वोस*

'त्रिक्क्गामिनी'। -मार्गा-को॰ गंगा। -मुंब~प् त्रिक्षरा राम्रसः ध्वर । ⊷सुकृट−तुः त्रिकृटे पर्यतः। →मुद्रा−पु॰ सानवसुनि यावेत्री अपनेकी पक्र सुता। -मुला -मुली-की इसकी मावा, मामहोती। -सुनि-पु पाणिनि कारवायम और प्रतेवकि-नै सीनी सुमि, सुनित्रव । ~सुद्दानी! ~सी दे 'तिसुदानी'। -मूर्ति-पु॰ वह बिसंद्धे बद्धाः विष्णु और धिव-वे धीम मृतियाँ 🗞 प्रमिश्रसः स्त्रीः छो० मदस्यो पत्र शक्तिः नीहोंकी यक देनी। -यष्टि-तुक विश्वपापका शीम कहिशींका द्वार । —यान-पु॰ श्रीक्रवर्गके अंतर्गत सद्दा-बान, दोनबान तथा मध्यमबाग-वे तीन यान ।--वासक ~पु+ पाप ! -थामा-सो+ रामि: इस्ती: यसुनाः नीकः काका निर्देशि । --युरा-पु कीन पीहियाँ। राजी कर्एएँ--बसंद। वर्षा दवा शरदः दीनों सुग-सस्य। शाक्र और वेदाः विज्या । -युद्ध-प् कपिक वर्णका योगा । -योमि-वि॰ धीन कारमी(कांध, कीम मीड) हे डोनेवाका (मुख्यमा) ! -रझ-पु॰ (बीद धर्ममें) हुद, बीद धर्म और संपठा समावार । -रसका-पु॰ यस तरवकी खराव । -राज-प्र॰ तीन राती(तबा दिनी)का समया यक जत किसमें दीन दिन दपशास करते हैं। मर्थ-क्रिरात्र नामका बाया बृत्तुमे होसरे दिन होनेवाला प्रेतकर्म । -शब-तु शबक-कारक पुत्र। - १प-५ असमेव वर्गी वस्ति किर निर्कारित भोडा। नि॰ तीन बाह्नतियी वा रंगोंदा। –हेल –पु॰ श्रंद्धा दि॰ विसमें सीम रेखाएँ दी तीन रेखाओंसे मुद्ध ।-समु-पु • (बह बिसमें तीमों बर्म क्यु हों) नगन । -श्रमण-प्र सेंभा सामर और सीचर ममक !-कोक-दुस्तर्गसर्वभीर पाताल∽देसीनी कोड । - माथ,-व्यति-पुर तीमी लोडॉका स्वामी, देवरा राम कृष्ण आदि विभ्युका कोर्र अवतारा सूर्व । -सोकी-सी दे जिलेक । - माश-द दे० विक्रोबनाय । ~कोश्रम-पुदाय । ~कोश्रमा~को हुनी। असती स्वमिचारियो स्वी !-क्रीखनी-ली हुर्गा। -बोद -सोदक,-सीह-पुर सीमा, घोरी मीर सींगा। -वर्ग-त वर्ग वर्ग वर्ग कीर कामा विकास विकास सरन, रम भीर तम (सं)। त्राधन श्रृतिय भीर वैश्वा ध्या, रिवर्ति भीर पृत्रि (राजनीति) - वर्ण-नि तील रंगीराष्ट्र । पु निरिनिद्र । —बणक् –धु गौराकः निपत्नाः भिष्ठाः मासमः धनिय और बैश्य∼वे तीस वारियी। बासा कान और पोड़ा-व तीन रंग !-परसाँ --(रमेन)-प भीव। A तीन मानीमे जानेनाका। --वारी-की दे॰ 'तिवर्ग । --वार-नु ग्रन्थका वद पुत्र । -विकास-पु॰ दीन बग (विष्मुद्रे); विष्णा वायन। -विध-इ क् बन और साम-सीनी नशैका दाता द्वित्र । -विय-नि तीन प्रवास्त्र । -विनस-नि देशा आसा और गुम्के प्रति अवातः। --विक्य-पु भगै। तिमात । - सून्-पु एक वागः शीन शरिबीकी कर् भनी । स्रो एक सता निमीत्र ।-बुत्कर्श-पुतान अस भार सक्का याता - जूल-वि विद्याना । - कृत्यवी--वरीव दुवदुर दिलकान्तिका १-देव्ही-क्या वह रवान बडाँ-ीं तीन महिष्टों तीन आह बड़ी हीं। तीम नहिष्टेंदें मिनने

का स्थानः प्रयानमें गंगा, वसुमा और सरस्वतीके मिकनेका रबाग ।- वेश्र-पु॰ रच । - वेद्-पु॰ तीमी वेद-कर् वक और सामा इन तीनों नेत्रोंका बाता !-वेदी(दिन्) प॰ तीमी बेढीका चाताः जावागीकी पक ध्यत्राति, त्रिपाठी । -बेली#-बी बै॰ 'त्रिवेणी'। -वेळा-खी॰ निर्धाय! —वॉक्क्र—पु एक प्रसिद्ध स्पृत्रेशी राजा की दरिश्रेहके विता ने । (हमके बारेमें कहा बाता है कि स्वर्ग भीर पृथ्वी के बीच उक्रटे करके बर है । ऐसा मसिक है कि विश्वामित्र श्रम्बें अपने स्पीनक्रमें स्प्रेड स्वर्ग मेजना चाहते थे। पर हारके इन्हेल दैनेसे एकटे अभि गिरने क्नो । विद्यामित्रने इन्हें बड़ी रीक दिवा और समीसे ये बड़ी बैसे डी कटके वताये जाते हैं । कर्ममाश्चा नदी इनको कारने करफा मानी जाती है।) --•स-प्र जिसंत्रके प्रज सस्पन्नती हरि श्रंह । - व्यामी(जिम्) - प्र निवासित । - प्रस्ति-की (नवर्षे वर्णित) कांकी तारा भीर विपुरा-वे तीम दैवियाँ । ~सल्त~वि चीन सी ।~शरम~प्र+ द्रका प्रक भैन आचार्व । शर्बरा – की गुरू जीनी भीर मिली । ─शका─ला* धैनिवॉके अंतिम तीर्थवर महादीरको माता। -कामा-वि विसमें तीन धान्तार हो। -शास्त्र-पु॰ तीन कमरीशाला भक्ताम । -शासकः-पु॰ वह मकान निसंदे क्यर कोर्र दूसरा मदाना न दी (दृष् र्थ•); विशास । −िशास-पु॰ त्रियुक्तः किरोतः रावणका एक प्रच ! वि॰ तीम शिक्षामींबाहा !-- शिरा(रस)-प्र• एक राक्ष्म विधे रामने श्रंबकारण्यमें भारा था। कुनैरा क्बर-पुरुष विसके दोन वैट, दीम सिट, अ मुशा^ए और मी श्रीखें मानी गयी है। ~इरिपें−पु क्षित्र ।—इरिपेंक∽पु• विध्तः ।—शुक्त्(म्)—पु वह विश्वयो प्रमा स्वर्ग संहरिश्व और पृथ्वी - तीमी बगह फैंको हो, बसे तीमी तापी वा इन्डोंचे पेहित व्यक्ति। ~धूक्र ~पु॰ तीन क्रमीका एक प्रक्रिक अला को शिवका प्रवास कला है।−०द्वारी(रिस्) ~पु • शिव । — सुद्धाः—स्यो • तंत्रमे बायको एक सुद्धा । ~दाली(सिन)-न• (दान। -त्रांग-५ वित्रद वर्गतः निकाण। −क्षीक-पु॰ (तीन मदारके दोकी-ताचीसे पीक्ति) जीवा कथ्य कविके यक प्रतः। -- पश्च-वि० विर शब्दा ।- चहि-न्यो तिरशब्दा संस्था ६३ । वि+ साह भीर तीम !-शुपण -पु दे॰ त्रिमुपर्ग । -ध्द्रप्(भ्र)-क्य विश्वित और जिल्ला मत्येक चरवा स्वारह मधरींका क्षेत्रा है। --होस-पु॰ एक बान । --हु-पु तीम वहियोंनामा १व ।--मंचि-मी यह कृष क्यु-नियाँ ।-संध्य-पु विनदेशीम माग-प्रात । मध्याद भीर स्वांस्त । - व्यापिशी-वि स्पे प्रादःकातसे मंजाकार तक रहनेवाली (तिकि)। —संघ्या —म्यं सोमी गंध्यापै। ~सप्तति~नी विश्वत्या मेन्या करे। वि सुवर भीर तीन । -सम-पुर्तीट ग्रुप्त भीर प्रदेश समा हार। नि विश्वनी दीमी भुगा^ए नरानर हो (स्ना)। --सर-त तीन कदिबोंका प्रकाहार। विवदी ।-सर्ग-तु साथ रजभीर सम-दनणतीमीका सर्गशासिक। -सिता-भी० दे "त्रिश्चरत । -सुर्गाध-स्त दार भोनी इकायभी और वेजपानक समाहार । -सुपूर्व-पुरु करनेरके बद्यम मेरलके गीन विदिष्ट मन (१ ।११४)

[सं] बरनेवाला कायर । द्रकर्षा - न्या कुपधनेकी बीत । दरकचना - छ कि कुपक्रना। वरकमा-भ कि शिवाय या धवानसे फरनाः विरीर्ण शोना, मस्द्रभा । दरबार-पु चीर, दरार । दरकाना - स मिरु फाइना विशेषं दरना। = व कि विशेर्ष द्वानाः, परना । व्रत्ततः - पु दे॰ 'दरका । दरग्रव-पु॰ (का॰) देश श्रष्ट । इरज्ञ-सी इरार, चीर । दरबन-दि॰ पु 🖁 दर्जन । दरजा-पु॰ दे॰ 'दर्जा'। दरजिम-न्दी दे 'वशिम'। दरबी-पुदेश दर्श । बरग-प [म॰] विरोधं करने वा बीरमेका किया विदारम् । ब्रिया ब्रुगी-तो [सं०] भेंबरा कहरा प्रवाहा हारच र दरव(६)-मो॰ (५०) झाबा मका क्वेता बीवा मक्ता तौरः पद म्हेक्ट बाति । दरय-प्र [ले॰] गदहा। शुक्राः नतावमः शहेको तलाक्ष्में भ्रमन करना । **परद**-द दर्ग, पीक्षा करवा करसा हिं] दे चिरत् । नि दे 'दर'में।-संब्र~नि दे 'दर्शन: । -वंता-वंदन-वि+ करनामुक, दनानः इ'खित, केरित । दरदरा-वि निसन्ने कण गारीक न बीर की नाटा गीसा दरदरामा-स॰ कि ^ऐमा शेसना कि सटीक म ही और। पीछना । इरह०−५ दे० दर्ग । इरल॰-पु दे 'बसन'। इरमा - । कि इसनाः वह करनाः चेतवाः यसनाः यसनाः । इरप०-५०६ 'दर्ग अ प्रत्यक्रण-पु देश दर्ब । दरपन-पु॰ दे॰ 'दर्गन'। **प्रपमा**ण्य कि॰ यह दोना मधिमाम दश्मा गर्दिन द्वीसा । दरपत्री∼श्राधारादर्ग। बरब-9 इन्य पनः गरी भागः क्रिमारवार मोरी पारर । क्राया-९ कर्तारेक रहनके कामका शक्तीका शानेतार लंदक पेड़ आदिका छोम्मका भाग जिगमें कोई बधी वा काय और रहे ! श्वाशी = न्हीं करत्तक, वश्री : परम-त बंदरा है 'दर्ज । इरमन~५ (फार) हरूमा दवा श्रीवर । परपा-प [का॰] दे॰ दिरेवा । **प्रत्मा∽ए॰ कि इमल्या बळा देगा दलगा पैनना** RE SCATE इररामा॰-थ॰ ६० देगपुर्देह आगा । ब्रावाका-मुक्ति हेरा है।

दरपी-सी॰ दे॰ 'दवां' ! ब्रावेश-पु॰ (का॰) श्रमीरा भिमारो. संयव । बरशम~प रे॰ पर्शन'। व्रशामा-स॰ दि॰ रिरम्पता रहशाना समझना। म॰ कि देस पहना। वरस-प्र- वर्धन, सधारबार, हव धौरवै। वरसम-पु रे॰ दहंग । वरसमान-भ कि दिसाई देगा, देस राजा र्सना होता । स॰ कि देसमा। इरसमियारं - पु मरोकी छांतिके किर पूना दरमेर पा वरसनी =-सी = दर्शन, आर्रेना । दरसमीय॰-वि॰ दे॰ 'दर्शनीय' । वरसमी हंडी~भा• दें* 'दर्शनी इंडी'। दश्सामा-स कि रियाना, दक्षिन करना (गः) वनकाना । अ॰ कि विदार्श क्षमा धौराह दोना । दराई (~सी॰ इसमेद्धे किया वा बवरत) बराज-ली बरारा है बाबर'। दिन हैन 'दराज'। बराज्ञ-वि क्या देश दीर्थ, विश्वास । स गुफ अभिक्र । वराह=भी॰ रेमाध्य तरहवा संग्रा क्षित्र ज्ये नहीं पर्यं। बोबार वा रूक्श आर्थिय प्रत्येके बारण पर बागा है। दरारमा॰-व कि फटमा, विदेश होना । वृद्दारा-पु दरेरा, यात प्रतिवात, परसा गरि रदाररामा क्टा इमा । वर्तित वर्तिवा-५० (का०) चार सामेशका, दिस क्ये वरि-न्यं [सं] देव दिये । इतित−वि [गं•] भौतः इत्योदः विदार्तः । इतिहा-दि मिन् निर्थम बंबान, परी र । इन निर्मन मगुष्यः । दरिहता, निर्धनता । -भारायम-मु देदमा । हरिज्ञान-४ [र्ग+] ति५ तत्रा, गरीशी ! इडिजापक्र∽ि शि•ो शरित्र निर्शेम । बरिश्चित-बि [लंब] इरिश्च बगाना संस्थापत्र । इरिया-इ नदी। समुद्र १ -ई-लीक वि देव अपूर्व) -शासी-त निर्मुमपनिर्मोका एक संप्रदान । -रिश्व-वि॰ वहार । -हिसी-सी प्रशासी -बरामर " बारर-९ नदी बारा ग्रीही हुई बमोन । नवार-नि बद्दद्य वरमनेवाला।(ला) अस्त्रेष्ठ प्रशार ! -5र-5! नती द्वारा कारकर ५६१वी हुई भृषि । <u>स</u>क-को कुञ्जी **बंद क्**रमा-धोर्षे १९७ दश माना । बृरिपाई-सी० [वा] वद नाइका देवधी कशा । वि नदी-संरथी। को मदीयें दहना हा। नदीके किमारक" तापुर्नारंथी । -धीवा-त मरोदाका दक मेरे पत्री बाका गर्द जैना बासरर जो सरियोदे रिमारे रहता है। ∽नारियन-तु अपीधः अमेरिका नारियं नतुरके रिकार बीनेवाचा वह प्रचारका माहित्व । (वार्च कृत्या सिपीका करोबन बनीका पना बेरना है थे दरियाज्ञ - पु दे दरिया ! इरियात्रत-थी (पार) यात्र दरमा मना स्वाप्ताः परि कृतान । हि क्लिकी मॉन की नहीं दी बात ! वृश्चित्रय-पुत्र दे ⁴दरिका ।

त्रेमातुर-पु (तं•) कर्मच । प्रमासिक-वि [tio] तीम मधीनोंकाः तीव मधीनोंमें होनेवासाः हर तीसरे महानै निकटनेवासा । प्रमास्य-प्र सि] तान मलका समय । ग्रैथयक-प सि] एक होस । वि० व्यंतक-संबंधीः

गर्थकाता । प्रेराशिक-प [ए॰] तीन पात राधिओं के सदारे भीशी मधान राधि निकास धेयेकी रीति (य॰) I

ग्रेकोक-प्र• (सं•ो रह ।

ग्रीकोक्य-प्र• [मं] दे 'त्रिकोक । -कर्ता(तृ)-प् -धिन ! -नाय-पु॰ राम । -बंध-पु॰ मूर्व ।-विजया-स्ती भंग।

प्रवर्गिक−पु [सं] वर्ग अर्थ आर् काशका सामक कुर्ने। ध्रेवणिङ-पु॰ [सं॰] ब्राह्मन, स्त्रिय और बैश्य-शन तानी वर्णीका वर्गः वे दीनीं वर्गः वि जिवर्ण-संबंधीः।

ग्रीवर्षिक-वि॰ सि॰] जो तीन वर्षोमें हो (सविध्यत)। प्रवार्षिक-वि+ [सं] तीन वर्षेका; तीन वर्षेमें होनेवाला; प्रीन वर्षेके अंतरमे होनेवाका (सम्बन्धन्)। ग्रैविकस-ति [सं॰] विविद्रस-संबंधीः विष्युद्धाः पु॰

विष्णुके तीन दग । प्रीक्य-५ [सं] तीनों नेशेन्द्र काताः तीनों चंदः तीनों

वेद जामनेवाने माद्यानीको भंडली। तीनी वेदीका संस्वत्त । में विष्टर-पु• [मं] देवता । वि स्वर्गमें स्वर्गवाका । मेर्चकर-प [सं•] हरिश्याः

ग्रैस्पर्प-पु [सं•] ठीनी स्वर-छराच बनुदाच और स्वरिष्ठ ।

मेहायण-वि [सं] दे मेदाविक । घोटक-प [सं] एक शंगारप्रधान नात्का एक विपेता बीका क्य राजा एक छंद ।

मोटि मोटी-ली [मं] मोब; कावकतः।-(डि)इस्त-प्र पश्ची।

घोण∽दु[सं]तत्बद्धाः घोतल-वि [सं] तीवना बुतनानवाका।

ग्रीय-५० [मं] प्राभीको हॉक्नेको छन्। यासका दक भवाः रह म्यापि । च्रोन॰-पुदेशीम ।

म्बंगुरु-रि [मं॰] तीम अंगुम्बता।

म्पंजन∽इ [सं•] कामांत्रन रसांत्रन और पुःगांत्रन । म्यंवक-इ [सं] जिन्। -मल-इ इतेर।

व्यवशा-सी (सं०) दुर्गा ।

च्यंत्रक-तु [सं•] रक तरहरी महिका। म्पन-९ [मं] शिवः एक दैला ।

म्यक्षक-पु (सं) चित्र

म्पहर, म्पश्चरक-दि [गं] तीन अध्रोताना । म्बध्यता-स्त [सं] दे विस्थता ।

भ्यमुनवाग-तु [६] ज्यानिकमे त्यः योगः। भ्यवरा-न्दं [मं] सीन गण्रयोशी शामन परिषद्(मनु)।

म्परीत-[व [ब] दिसानीको । म्पशानि-को [केंब] तिरामीको संस्था ८३ १वि अस्सी भौर छन ।

म्यश्र, भ्यल – पु [संच] विश्वीय । दि० विमुजाकार । म्यड्-पु• [सं॰] तीन दिनोंद्रा समाद्यार । —स्पर्श-पु• वह सावन दिन जिसमें तीम विधियाँ पहती हो । -स्पूज (श्)~पुद 'विदिनस्पद'।

व्यद्देदिक-पु [सं] वह गृहस्य विसक्ते वहाँ तीन दिनतक मिर्वाह करमेमरको सामधी हो (मन)। प्रवार्षेय~पु• [ti] तीन प्रवर्शेवाका मोत्रा अंब, विवर और मुक्त (बढ़में इनका भवेश निविद्ध हैं)।

व्याहिक-पु [ti] विवस । वि तीन दिनीमें होते-वासा । म्युपण, म्युपण-पु॰ [सं॰] सोंठ, पीपर और मिर्च-त्रिवद्ध ।

त्वक-पु॰ वे 'त्वक् । लक (च्)-५० [र्स] डिक्का वस्त्रतः वर्गः दारपीतीः कर्ममें ब्लास रहनेवाको एक बाह्य कार्नेद्रिय जी स्पर्श द्वारा अपने विषयका ग्राम कराती है। -कंड्रर-पु मारा -सीरा:-सीरी-का॰ वंसकोचन । -ग्रेव्-तु॰ सरॉच, क्षत्र −छेदम-इ वर्मकर्मनः सुवतः −तरंगक-ge सुरों। -पंचक-पु॰ बरगः गृक्त, गोक्क सिरोस और पाकरको छाछ। -पन्न-तु देशवताः दारणीनी। ~पग्री,~पर्ली−सी हिंद्यपत्री । -पाक-पु म्बारि । ⊶पारुष्य-पु॰ चमदेका स्मापन । –पुष्प-पु॰ रोमांचः सेड्बॉ नामक रोव । -पुरियका,-पुर्यी-सी॰ 'त्वसपुथ्य न -सार-पु गाँसः दारचीनी। - भोदिनी - सी॰ धुरुषपु । - सारा-सी वंसहीयन। -मृगंब-दु महंगी। ं-सुगमा−जौ॰ यत्रवातुक नामद्र मंपहथ्य शुस्रभर ।

त्वम्-'त्वक् का समासगत कप । -शंकुर-पु॰ रीमांथ । −भाक्तीरी-स्त्री ६ 'स्वस्क्षीरी । −इंब्रिय-स्त्री रवर्वेदिव । --र्शब-पु नारंगी । --त-पु॰ नाका रखः। ~बस-दु॰ भीता । ~दोप-दु एक प्रकारका वर्ग रीमः कुछ । - तोपापदा-न्ती वकुवी । - दोपारि-प्र इरिक्ट । - भेड्न - १ कांदर्गन । श्वकाय-दि [मं∘] थमहे या छात्रका नमा हुआ।

•वर्च-प [वं] छाना शारपीनी। चेत्रपता । म्बचक्ता॰-अ॰ कि वक्कना योतरको भीर वेंसनाः प्राना पश्मा।

श्वया∽नी [शं•] वर्म पमझ । −पत्र-पुदारपीमी । त्वचिसार~पु० [लं•] वॉस ।

रवित्तमुर्गेघा~सी॰ [मुं॰] धोरी हमावयी । ।वदीय-दि॰ [मं] तुम्हारा ।

त्वम्-सर्व [मं] तुम । -पद्वाच्य-मु बीद ।

त्वरण-पु [सं] धीमनापुरेड करना, तबामे करमा । रबरणीय-वि [मं] विमे तत्रीमे बरना ही।

त्वरा-सी [तं] शीमता मन्दी । ग्बरारोह-पु० [तं०] बनुगर ।

त्वराचान्(बंन्)-वि॰ [मं] श्रीप्रता वर नेतानाः हत्यामीः नेब-प्रसार । [ग्री स्वरावती ।]

।वदि-नी [में] शीमता। रवरित्र∽4ि [सं] तीव संतिताला, तुवा भ+ तुनीस, वर्षर-पु [सं] गरिका चौक्षेत्रास प्रक्रियक्ष्मं वारी। ETCHIE I

यवशिक-पु [मंग] ग्रेंद्र बायुर एक शरहका बाच (संयीत) ह दर्षिक-पु, दर्षिका-सो॰ [सं] ऋरह्य का

दर्पिदा-मी [मं] बटफोश्वेद्य जातिकी एक जिल्हिता। वर्षी-सा [मं] वरी करसुक सॉक्झ फम । -कर्-पुर

पानशका साँव । दर्श-पु [सं] अवसीक्ष्म, वर्जना ध्यवा अमानास्त्राः भमानास्त्राके दिन किया बानैवाका यक बागा लाग्नुव प्रमाम । -प-पु+ एक देववर्ग । -पीणमास-पु दर्श भीर रीर्थमास नाग । ~बासिनी-लो॰ अभागस्त्राधी रातिः भैपरा राता । – विषक् (वृ) – धु भहमा ।

वर्षाक-दि (सं) देखनेवाला दर्शन करवेवाला इक्षा रिधानेराकाः निर्देश करनेवाशाः । पु हारपाकः कुल्ल भ्यक्ति ।

दर्शन-प्र (नं•) पाध्रप प्रत्यक्ष साधावकारः बाननाः वह द्यारर जिसमें बारमा, अनारमा जोन, बद्दा प्रकृति पुरस्र, बगत वर्म भीत मानर बीरनके छहेरय भारिका निरू दम हो, तत्वहान बरानेवाना ज्ञान हिन् आरिन्ड-मास्य बोग, वैशेषिक स्वाद मीमांसा (पूर्व गोमांसा) भीर नेतांत (क्तर गीर्मासा) तका छा मास्तिक-पार्वाकः चैन, माध्यतिक, बोगापार, छीवांतिक भौर बैमाविक~ प्रधान मामे बार्ड है। नैक्टिश नुद्धिः श्वप्तः प्रशासना परोद्यमा शान्तः दर्पमा धनैः कपरंगः रावः नीवतः यदः क्दरियनि (स्वादान्यवर्षे) । −गृक्-नु॰ समानवया -शोबर -पद-५० धरेशकः विनित्र । -प्रतिम-५० वह प्रतिम् की महाबनकी बच्छाके अनुसार कार्यका किली मी समय वा जिमी मी श्वामपर व्यक्तिय करनेका मार रशब्दर करें। जमानदश्य । −श्रातिमाध्य~त हें+ 'दर्शन-प्रतिम्' ।

इसेनारिम-ली [मं] शरीरवी वह अध्नि वी नैनेद्रियको

कार्यमें प्रशुप्त करती है।

इस निष-(१) (१) देसने दर्शन इरमे शेय्या मनोहरः रिक्षाने वाम्ब १

इर्रानी हुँडी-मी ऐभी बुंडी जिल्हा भूननाम नम्हारू बरना परे: (सा) मेनी बाल जिल्हा हारा कीते कान राष्ट्राम प्राप्त की का सक्दे ।

इश्रविता(न)-(४ [4] रिमानेशमा मानप्रस्व बरने माना। द्र हार्यानः।

इर्शाना-ए॰ कि म कि द दश्याता ।

व्यक्तिन-वि [मैं] व्यामा हुआ। प्रवरित प्रकाशितः प्रमादिशा प्रदेश !

usfi(सिंब)-(र [र्ग॰] (ममासंत्रमे) माकाचार बरवे बामा। विरेपम करनेशमा। त्ररक्षित करनेशमा ।

टार-१० [तं।] यत था सरावर मानेभेग एक जिल्ले सक्त बाने वा क्षण आहि बीज प्रवाद कारीयर अपने भार विमक्त ही जाना करा नता हुदशा लंदा स्वामा पत्ता एक महाभवता कृष्टकी देशही। एक विशास वा एक साथ कार्य करनेशांत अपॉब्डानेश समूच पुत्र श्रीव निरीत क्षेत्री। इमराबीः पार्यवदः रेडेंनबीवः शक्यः

सेना, कीवता श्रवता भित्रका आपारमूत वरत ।-कपार-पुर क्रीके छप्रकी पैगरियों । -कामस-पुक्रमक। -क्टेश-पु॰ बुंदवा पीवा : -शजन-पि॰ बारी वीर I -र्मच-पु॰ भप्तपर्न बृद्ध । -शार-हि (हि॰) है? दमबाहा । -निर्मोद-पु॰ मीत्रवत्रश गृञ्ज । -४-५० दश्का नाक्का दक्षिमारा श्रीनाः ग्राम । -पति-अ वस्का मुस्तिया वा सरदार । -पुरता-मा । देवारे । -बस-पु॰ नार-मरस्ट, ताथा ! -धारम-प॰ [हि॰] बान्छोंना समुद्रा बहुत बड़ी भेगा । नशीरक-तु आक का वस गरमा। -सायमी-भी दश पुरुगे। -सारिजी-मा॰ वंश, दरप्। -सची-मा॰ धी बार पर्चोगामा चौबाः काँदा । नेरमसर-मा वनशिव वर्त्तेषी नस । इसक्र-मी शुरही होस, पमदः भाषानसे करत देर। पु [तुं+] दक प्रशा + द्वारा दह।

इसक्रम-न्या इडइनेश किया इडक रात । बलकाना-म कि इस तरह फरमा कि दरार पर मान-किर जाना। वंशित दीवा श्रांबना। दगवनाना। मः क्रि शरत कर देवा; कैंपा देवा । सुरु श्रुपक श्रदमा-वंिंग

हो बद्धमा सुच्य ही बाला । त्सत्त्व-पुन्नी (अ } कीनह ईंड) दूरदक येमी क्रमीन विसमें पीत पेसना भना जान । सुरु - मैं र्वेशका-रेगी समीदनमें पंताना क्रिम्मो कराना रा महिन्दाच हो।

इन्द्रच्या−(६० इनग्छहानः। (सी. '४स४७'।) दक्रन−९ [मं] भूनंदरमा पोसना कुरूनना बाय महार अच्छेदा विशासम् । वि नाग्रसारक । इक्रमा-स॰ कि॰ चरकोमें दागदर दावा मस्टिइसि

इरला कुरुवना शंगवता तर दरना वरवार करना शोहमाः प्र बरमा । श्रमी-सी [म] देना।

इस्टास्टना−म 🕰 शैद दालना कुपक दावना। विदे बिच करनाः समझ राचना ।

इन्बद्धाना∽स॰ कि. बक्तनेका शाम दरामा दक्तनेतें दुर्घर ब्द्रे प्रकृत दरमा ।

ट्रम्याहर-दु मेनानी ।

क्षणाया-षु दलनेशन्याः श्रीमनेशनाः !

इन्द्रस-पु वह अब निमन दान तैवार ही नाव ! क्त्रहरा-पु शास वयवासा ।

बुक्ताबक-मु (तंक) भेगका तिथा यहा क्यारेग्सा द्वीर

शिरीका केना साथै। सहस्य मनश्रद गोरका मुख्यिमा सन्दे वा काय १

amisd-₫ [ij] dr t क्छाक्त्री-मी बलोदी दीहा स दीर बर्दे ! क्षमात्रके-ने हुर धाराच ६

ब्सामा∽छ॰ थि ४ १तवानाः । ब्रह्माञ्चल-तु [मं] बीजा सरभा। विजारका रेग र

क्साम्ब-१ [त] शॉबश गाय । इमान-पुरीरे अधियो सावेमें सन्द बना वर विका दिनवरी दूरना। शारणिवीमी एक धर्मत ।

दोना दीता न रहना रूक बामा प्रतीक्षा करना, उदरा रक्रमाः भैवं रद्मना । श्रमाता−स कि॰ सँगलाना **क**दाना। टेकाना । धर-प राजपुरामाके बक्तरमें एक रेगिस्ताना * स्थक, बसीन। अगह । स्त्री तहः होस्क्री मंदि । शरकना = नश्च कि मयसे कंपित होना वर्रामा । भरकाना - स॰ कि॰ भवस वैपाना । धरकाँहाँ = - वि० काँपता हुमा। चंचक। रिवर । श्रासर-भ• रस प्रकार कि सभी अंगोंमें इंपन हो आया बरवराइटके साय ।-कॅपमी-को॰ एक छोटी विविधा। धरधरामाः न कि मयदे मारे काँपनाः काँपना । बरवराह्ट-सो॰ संपर्देगे । **यरधरी-की** सब मारिके कारण होनेपाओं कैंपरेंगी ! भाषा - स॰ कि॰ है 'ज़रना': उगना। श्वरसम्बद्ध-वि वहरावा द्वावा स्तम्बः देखारका । **धरहर०-तो दे० धरभरी** । धरहरामा-न कि वे वरवरामा । बख्री-सा दे० 'नरवरी । धरहाईं ६-मी॰ निदीरा । धरि धरी +-सो + सिंह बाय मारिकी गाँउ ! श्चरियां - ला रे भारी । सद्व−पु•दे 'रक्ष । **बह्द्दर्श~**तु शास्त्रीकी बरती । धार्ड-वि॰ [बं॰] तोसरा । —इंटरबेगामख-यु दै॰ 'इंटरमञ्जल । -क्टास-५० तासरी बझा हेनमें बीसरा हरनाः शिक्षरी भेजी । वि॰ सेवम श्लेका परिवा ६शे । ─क्षिश्रहम=धुनृतीय शेणी। धर्मस~प्र [थे] यह प्रकारक बोतन विसमें नरम चीव हैरतक गरम और जंदी भीत्र हैरतक जंदी रहती है। धर्मामीहर-प [अं] धी हैनी नशीमें भोड़ा पाटा चरकर थमाया जानेशका गरमी मापलेका एक वंध किममें पारेके षद्भ दा बदारब मनुसार वापको मात्रा वामी अली है, वाषमामध्य । यशीना~न कि क्षीच बढना वहलना। थरा-त रक्ष रथान जनह कीc।अरुरहित मृति सुरुद्धीः कोरेका वेरा। -बर-पु॰ पृथ्वीपर रहमेवाछ जीव। -बारी-वि पृथ्वीपर विवरण करमेवाला । -अ-प्र गुरुषः। ~पति~५० राजा मृपति । ~बेहा~५ नाव या बहाबचे किमारे जगनेकी बगका (बा) ठिकामा । --रह--पुर प्रशीपर प्रगानेवाने क्या आहि । यसक्या-म कि भौराई या क्रीतेपनके कारण चलने मार्थि दिशनाः बीएनः । यसभन-दि योगई वा होकडे इन्ट्य दिल्हा हुआ। थकपत्तामा - म वि शरीरकी रमुनताके कारण मासका कर(नीचे दिवज्ञा। यशिया-की दे बाली ! धर्मी-मी रगन मदेशः वृति जलके मीधेवानका वैक्कः रेती नी बमीना वह भूगोर वी अपने प्रश्नत स्पर्ने हो । धवर्-५० शक्तीर संवान वन्ननेवाला बारीगर । मसबना-म किं ग्रानेको और दनना पा नेठना ।

यमामा-पापा थष्टमा 🗝 मा कि बाद केना। मांतरिक निमायका पता क्यामा । थहरमा-म कि॰ हिल्ला, चौंपना । शहरामा-भ कि॰ सबसे कॉपनाः दिकना। स कि बिकामाः भवसं केपामा । श्रहामा-स॰ कि बाद तेना यहराईका पता लगानाः जबगाइन करना 1 र्थीत-पु॰ चीरीका ग्राप्त सङ्घात्र क्षोत्र, ग्रुरागा मेर । थॉंगी-पु॰ बोरीका मुखियाः बारीका मात धनवाकाः चोरीकी पता बेमेबाका, चोरीका बता स्मानेबाका जायका चोरीको बाधव वेनेवाका । ~तारी ~ खाँ । वीगीका पेशा । र्योम•−षु संना। र्भीभगार-स कि देश 'श्रामना'। व्यविका-पु॰ वाका । था-स कि॰ 'होना'का भूतकाकिक कम रहा (सन्द क्रियाओं के मृतकारिक क्रपेंके साथ भी शसका संबुक्त प्रदोग क्रोता है) । [स्वी० वी' ।] याई ०-वि जो बहुत आकत्य बना रहे, रशायी । स्त्री० जगदः वेठकः । −भाष∽षु स्थायो भावः। बाक-इ धीमाः राशिः समुद्र। थाकमाध-म कि॰ हे 'बदना । थाट-पु वह राय वा स्वरसमूह मी की रागोंका आबार क्षे कनकराग (मेगोल) । थात+−विश्वैद्धा या उद्दरा हुमा स्थित । मावि∗~की रिवरता, स्वादित्तः द्वरने या रहतेश्री कियाः वाती । भावी-सी परीहर, भगानत किमीके पास बना की हुई बरना मेनिस क्रम, प्रेंबी। वान-त रवामा रहनेकी अगदा देवता अध शादिका

वान — इंचाना इस्तेश कराहा देवता आह्न कारिका स्थाना चतुर्वोक वोध बालेको बराहा देवी दूरे स्वारंका करवेका बात इक्का क्वर । धानक—पु दशाना नगरा चंत्रा वाला । धाना—पु दिलस्की भोडी। देश निवस्तावाना चीसकी कोडी। —पश्चि—पु धानदेवता स्वारंका रहक देवता। —(त) दार-पुरु वानदेवा प्रयान कडसर दारोगा। —दारी-कीश वानदेशरका प्रश्न वार्गा ।

वाशुक-पुरु नरापु । - सुन्न-पु परोध्य वा बेनना । वार्मित-पु रिसी रचानका स्वामी अधिवित वा बेनना । वार्म-लीक नव वी रचनिक सान सब्के आदि स्ट दिस्म गया बचेदीका आयाना सुन्ने हुए बानका पुरा आपास, नव्यक्ष आदिद सम्माना सर्वाने गीरिका स्वाम प्रायम । प्रायम निक्का निकास कियाना प्रायम । वार्मित-पु पुना रचारिक बरले ना रचावी क्लामकी दिसा, स्थापना स्वाम हुई महत्ते जसानिकाला । वार्मित-पुना हुई महत्ते जसानिकाला । वार्मित-पुना हुई महत्ते जसानिकाला । वार्मित-पुना हुई स्वाम स्वाम वार्मित क्याम स्थापना । वार्मित-पुना हुई स्वाम स्वाम वार्मित वार्मित स्थापना स्थापना । स्वाम स्थापना स्थापना । स्वाम स्थापना । स्याम स्थापना । स्वाम स्थापना । स्वाम स्थापना । स्वाम स्थापना । स्य

थापा-पु गैली इसी अहेरी कारिने बनाया दुना काव

थापर≐−की पुदे• वापाः ।

वशवि-न्मः (मं) सी, राव ।

दशमाञ्च-प्र• [सं] नॉर्सेन्द्रो धमक।

यदामाद्या-स्रो• (तं•ो स्रोगिया साग ।

द्राधा-ण• [मं] न्स प्रदारमे। दस भागीमें ।

प्र• दराधनका स्थान और भिद्धा —थीआ—प आगार ।

श्रीह । इस्तम~दि [मं•] दनवाँ । पु॰ दश्रवाँ माग । चत्रशा⊷ न्ती • कामझे अंतिम दशा जिसमें वियोगी प्राण स्थान देशा है।−भा**व−पु॰** परकित बदातिष**क अनुसार कन्मरुध**से दसर्वो पर । - छन्य - ५० विश्वका यक मेर विसमें इर बस बा उसका कोई पात दाता है (य॰)। दशमोस-९ [में] दस्तों भाग। इप्रामिक भग्नोश-3 [मं+] दशमस्य ! दशमी-ली॰ [मं] चाह भागके प्रत्येक पश्चक्र बसनी तिथि: मध्य वर्षते आदशी अवन्त्रा अरमानन्थाः शतायी-का अंशिय दशक । हरामी(मिन्)-वि॰ [4] क्रमण भीकी अवस्थादा बहुत बुद्धा र इसमुन्तिक-उ [मं] राग। इत्तरथ−3 [मं] दे वछ'में। ह्याति-इ [मं•] गुण्युक चंग्न, जग्रमाती धिनारस बोधान राल, शता, नरा, मीमसेमी कपूर तथा करनाएँ इस अंबद्रक्योंके बीगरी संबद्ध वक इवनीय भूव (यह समाह तथा दिशाय मादिका मात्रक मी मामा जाना है)। -काश-पुर दान भोषनियी-भगता शुरु व विश्ववायका निरावनाः प्रसम्पराः गीमक्ये छानः वरः बहेदाः अनिकाः भीर इसमी-मा कहा । इसागुल-पु[त•] धरवृता ३ वि का नावने रस भेगनदा हा ह इशांत-त [में] बुद्धानम्या हुणसा सीमनी नशीका धीरः पिछला भाग । बद्यान्तर-पुर्व [मं] जीरमरी विभिन्न अवस्थाने । श्वदा-भी (में] अवत्था रिवर्ण दालगा जीवनदी काल मूल दिर्शेष अनुरका- केरे सर्वताम अन्य अन्य कीयार. दौर्मण बीरम स्वाधिक जारा भाजराच और लाग्रा विरक्षिको है। दस अनुरक्षानी भेन कार्य कर-भगीवव संप्राव भाईर (दे नमरदर्श) या अभिजाना विन्ता स्वरण गुण क्रथन प्रतिम, प्रकाष क्रम्या अवाधि करता और मरणा क्वीरिक्त अनुगार सर्वदश्चिता मान्यवामा शेवेस वर्षाः कित बार का केम्स्था छोडा किए। -पवित्र-प्र साहारि है दिया जानेनका वयगर र -वाया-विवाध- आग्यास्त्रमा बृहा क्षांता। योगन्धी व्यवित अवस्था । -विपर्याम-५ ६४:४। इराक्ष्य-म् [संक] रोचन थिराम रोमा क्योना धोर । क्ताक्रनिं(चिन्)-इ [व] हे॰ देशपरे व

ब्लासर-पु [मं•] यह छर। दसक-प्र• [मं] दमका समाक्षारः दश वर्गीका समाबार । वसाबिपति~9 (र्थ•) विधिष्ट दशासा रशमी धर (ज्बोन)। दश नैपल शिपादियोका मानुक । षशामन~त सि । शरत । दशन~५ [मं] वॉटा बॉटले कारनेकी क्रियाकामा संग. इसामिक-प [सं•] वंती इस वमानतेसा । चोरी ।-च8र -याम(म)-ब ओइ, डॉट ः -यर-ब्धामय-पुनि वह । ब्सारहा-ली॰ [र्व] यह लता भी करना (यनेहे दार मार्थ है। व्हार्ज-पुरु [र्गर] एक प्राचीन देश जो मध्यरेगुढे रहिन दशनो विष्टष्ट-प्र [गुंक] अवद आदिका खंबमा निम्बासा पूर्वमें वा वस देसका राजा वा निवासी। वृक्ताद्य-नि [र्स] दसका बारा, धीन। पुरु धीनकी संस्थाः बद्धीय । ब्रह्माह~पुर (र्शर) एक लगाक वाशि राजा मुख्यसः शैवः कृष्णिरीयका राजा: कृष्णिलशियों हारा करिक्त रेश विष्य प्रदा दसायवार-तु [ले॰] विष्युद्धे इस मरनार-यासः कराज बराद मृशिष्ट वासन, परस्राराम, राम, रूपन, तुब भीर गरिया। दशाबरर-भी+ सि विम सरस्वीकी शक्तन-प्रवर्ध च्छादय−५ (चं}बंडमाः ब्सास्य−तु० [नं] रावग । दशाद−५० (लं) दस दिनोस्त्र समादारा औरपीती⊀ इत्यक्त पत्तवाँ दिशः। क्योंपम-अस्ति विश्वप्र ष्मोर−पु[र्म•] विश्व प्रायो । द्रशरकः द्रशस्त्रच-९० (गं०) मध्देश वा वर्शसः निगर्तेः कम अरखादा ठेंदा गुधा (१) । दसञ्जन्य [वं] इस ग्राजीका भावक। **१ए-वि॰ [मं] कास वा ग्रंद मारा हुआ।** रः। −साथ −सीकिंग−1' इस−६० दु है रावच । --१रा-च आस्प्रायको एक क्यारत । --रावै-त कुरनीका वस विकार -वॉ-िश जी अपने लीडे कर बारमके स्थानवर हो । ब्रु शुश्च विविधे दमर्ग रिमा यम दिन पीनेनामा प्रेनप्रम । इसल्या-४०६० दश्त्रय । वसमा-त (सं∗) क्षम शासाः मधेका बधास्त्रके ४ देव बुमना-भ+ कि शिल्ला निराया बाबा, निरुत मार्थि केमाना मामा । छ दि । विद्यामा विरुद्ध भी कमार्ग पुरुषे शासन्। इमग्री-भी २० रशमी । बुमा−९ भगरवाच वेरवोटा वद प्रवस्त नदा व अ देश क्या ३ बसामा -ए दिव रिक्राना । क्षारम-पु० ३ °रसा⊤ । क्यी-श्री कप्तेका से इंका संस्था क्या है शिक्षा शका जनवा शाल्येका कर श्रीमारः निक्र ! दर्गरक स्थेरक-५ [त०] दे 'रदिरक । क्षांत्रश्नारि जिलमे रेस भीर जुना की, यम करिया य शी देशे प्रमुख स्थाप ह

काम कठानाः वादी सामग्रीसे ददा काम करने स्थानाः । भूकना-न• कि॰ गुँदसे वृक्ष बाहर निकाकना या फेंकना। विकारमा, कि-कि करना ! स॰ कि अगळनाः मिता करमा । मु• **धृक**कर चाटना—स्पत्त वस्तुको सक्ष्म दरमा ।

मुस्सरः संस्कृत-प्र॰ [तं॰] दे॰ 'झस्हार' । धूमन-पुर्वे सुँदका मारोकी भीर निकला हुआ भाग । मुमनी∽सी॰ नूदन ।

शृधुनां-पु भूवन !

भूम-पु देव भूनी। शुनी-सी बीसको रीकनेडे लिए छगावा आनेवाला छोटा

रामा, स्तंम टेक। भूरना - स कि कूटना पीरना। (का॰) तोड देना। बुर करनाः देंस ईसकर साना ।

धुम्रण-वित्वृक्तः।

धूमेरा*~दि मोटा इट-५ट ! (ती॰ 'व्की !) यूकी-सी दक्षियाः

थ्वा-पु॰ इह धेला।

सूहद-पुर दे 'भूहर'। मृहर-९ शेर्डेंग

धूंदी-सी मिट्टेका इदा गहारीकी करनी रखनेके मिट्टीके रामे की कुण्पर नमें होते हैं। र्धेवरो -वि देशमा कता तुलाः देवरः वेदवा ।

थे द्वै-थे द्वै-स्ता सामका यक दश कीर ताल । थेथं - लो [d] भाषका बनुकरणारमक शब्द । धका-<u>प्रकृति सार्वे टार</u> भाविका बना बहुएके भाकारका

बढ़ा पात्र जिसमें बीजें रसी और वह की का संदें। दमसेका शौहाः बंदाले प्रस्तेतहरूत पानवानका नाग ।

चैक्री−क्षा धोरा भेजा न्यवॉक्श थेला। −हारू−g+ ो

रीका रखनेवाकाः समानेमें कार्य सठानवासा । -- यरवार -पु॰ पैटी होनेवाला । -वरदारी-सौ धर्मा हानेका पेद्या या मञ्दूरी । सु॰ --स्तौसमा-तोहे निनमाः भैसीके

सन रपने दे देना । बोक-पुराधि हैरा फुरकर या सुदराका सहया। पक्ष निजा बुका माकः माकको नही राधि ।-वारः-पन्नोस-पुरु बोक्त साक्ष अंचर्रेवाला स्वापारी । सुरु -करनारू-भगाकरमा एकत्र करमा ।

थोडन−पु[सं] डॉक्ने या कपरनेकी किया। योश्-वि न्यून मात्राकाः को परिमाणमें कम ही बरा-सा शल कुछ, किविद्।श वराधा। −यहुत∽स वरा-मना कुछकुछ । -सा-तिम्ह बरा-सा । -(वे)ही-

प्यक्रम म**र्श (का**कु) । थोष-थौ निकारता खोखनापना तीर। योयरा−नि निञ्चारा नेकाम ।

योदा-नि॰ क्लर्पहत निम्हारा मोतरहे लाग्री खोसकाः निक्रमा भीवरा । व मिट्टीका खाँचा त्रिसमें बरतन वाडडे हैं।

योपड़ी योपी!-सा॰ पप्तः योपमा-ए॰ कि॰ मिट्टी बारिके केरिकी किमी बस्तपर इस प्रकार रक्षना कि वह उसपर मिक्क जाय; भारोपित करनाः रोधे बनानके किए थोले लाटेको तबपर योँ ही फैला देवा। बाक्समय बादिसे रहा करना ।

योवदा-दुश्वनः थोर थोरार्ग−नि॰ वै 'शहा।धोटा~'चसुवात वर्षान कहूँ मुग्न बोरे -रामवंत्रिका। थोरिक°-वि बोहा-छा।

र्मीद्•−मी दे 'तो दा व्यायस्थि-प्र निवन्ता यंत्र कर भीरता।

इ--रेबनागरी वर्णमालामें छवर्गका तीमुरा वर्ग । तथारथ-रमान देत ।

देंग-वि [का] प्रतित माश्रदीने पहा हुना। इका प्रता वेबकूका जागरबाह । • हु शीक, वर । शु॰ -- वह प्यामा -पश्चित ही आबा ।

इंगई-वि , पुरु रंगा करमेशला प्रसारी लहाता। देशन-पु॰ का] दुर्ग मान्त्रि प्रतिक्रीत्रमा अधारा भारता समूदा गरा । मु ० -विश्वना - इक्का वॉबसा । -- भारता-पुत्रती पीवता !-- कड्ना--पुत्रती लह्ना । र्गानी-वि देगन मारचराताः दंगनमे बार्च या अत्र³टे-बोम्बा संबन युद्ध बरनेवाला ।

र्गापारा−प्र दिलामोकी इक-दैन आि दे हारा चार रपरिक म्हायता ।

चुँगा~ड शमरा-कसार मन्या विद्रव जलात हता कीवाहरू ।- है- पु शंगा कर वाला कवार्त । -(श)-बाह-दि। इ दे रंगरे। Wittg-fe g Ro tat :

द्र-त [सं] द्रा कटिटा कटिलाहिकी कथनीवित्री

बारण करमेका बाँस पकाश आदिका बेटा: राजा इहामें रहरीबाचा राह्न या दंश का अधिकार और सकता समक बाता है। दीनो तरह बड़ी और सीधी बरदा बाजा वयानेकी कमानी या देशा भारतमणा वसमाः भूमिकी प्रक माच महाः व्यूचका एक भेदा शरणमान-रद्यान आदि समेत धासना मना जुरमाना श्रेंद्रः साठ पन(२४ मिनर)दा कालका वक सूर्य विभाग, पत्री राजाओंकी चार मीतियों में से पहां स्वेदा एक पार्थन्या पम अभिमाना अषः क्रोणा मधानीहा रहा। नरावधी रहा। वह धॉस बार्ट्या निमंगे प्रमाद्य कर्ना रहनी है। इसमें समी संनी करती दरिसा रेटबगुः एक बस्तरा परवा पर। समन आदिकी साम्य द्वाचीका शृंद अदाश का भावदा परपुन्तः हर्वानुका दक बुका सर्पवित्योग न पात सा। दिवा विग्यान्त । -कन्य-पु म्मिर्ग । -कर्म(म्)-वर ल्या देनका कामा समा । —कम-पु ३० मात्राभीका न्द्र शेर । -काक-तु शामश्रीमा । -काष्ट्र-पु नद्शी बा एटा। -वार्चा(दिम्)-व बद व्यक्ति आ कर्रण रट यानेद कारद पुष्प शत एक का १ -गीरी-स्त एद

दहरीरी-दक्ति ब्हरीरी~लो• श्र्य तरहरा गुलगुला। **दहरु-की॰ धरमराध्यः बरसे श्रोप २**हना । द्दसना~भ क्रि॰ दरके मारे क्रीपमा, धर्मना । बहरून-प वाध्या यह पत्ता जिल्ला किलो श्रमे इस बिड परे हों; क शका, आनवाक । बदसामा−स कि॰ दरावर बैदावेमा जलांत वीतबरना । दक्ष्मी = न्मा वे देशो । दशसील-स्टब्स्ट (दर) भीतरकी गीचेनाकी सबता हो बमीनमें सूर्य रहता है, देहको । मु --का कुला-पाक्नू कुत्ता मुक्तपीर । नदी मिड्डी से कासमा-बहुगरे करे दरमा शर-शर जामा । --झाँकमा-किमोके शाप किसी कामके लिए बाजा । - म झाँकमा-वरत कविक परदेवें

स्त्रमा ।

ब्ह्रशास-स्थार (दा) सब वर, मार्गद्ध ह दशा-पु॰ वाजियाः मुद्दंगदा समय । द्यार्ड-मा अंडीडी शिवनी करने समय दाहिनी कॉरसे

दुसरा स्थाग । द्वष्टाच-पु शेर का नापका धार वर्षना औरकी विष्काहर। रीत गुमद जोरसे चिन्धानंद्ये आवात्र । सु॰ ⇒सादमा⇒

रोते ममद और औरमे विकास । दहाबमा-भ कि शेर वा शबदा गरवना किया-

विश्वादर रीता । वहाना-पु॰ (बा॰) ग्रेंदा मशबना मुँदा नरीब रूसरी नशे या शमुहमें गिरनेको जगहा नाली। लगामका श्रीहमें रहनेराभा हिरगा। एक सीमनी पत्थर । † स॰ क्रि॰ रभागीय मान्ये अमुदार अंशेकी कना ।

दर्दिगालो - ५० व्य छोरा पद्यो । इडिभीरीर्†−स्पै+ दहो शक्तकर बनावा हुन। गुणगुन्त †

षडिमा! - वि दे• 'दादिमा । दक्तिमा-स॰ दे॰ 'दादिने ।

इही-त्र संदारे हा बाजम बातक जमवा दुर्भा दूव ! -इही-माँ॰ हरिएत नामक एडीकी रोजी। <u>स</u>्० -इही करना-देवनेडे हिट दिली क्लुका प्रवार करते

दिस्ता।

१६ - अ दशिय ग्रायश अवश या ।

बहुँगरां - इ. बहोड़ा शम । स्ट्रीबी⇔सी । इसे श्रमनेका मिहीका बात ।

ब्रोज-१ विवादि अवगरहर ब्य्वाइप्रका बीरने बरका-भी दिया जानवाका थन और सामान, राजना है

सर्देखा +−4 परभ उक्ता पुरुषा, परिवार, पीरिवा पुरुषी। बाई।[भी॰ १रेगी।]

दशेतामी-ति वह ती स्म । वह ती रक्ती रक्ती स्वया

TEN P-4 TEN पट-(। [1]क्षेत्रावरोकात्र प्रत्यानात्र करवा श्राप्ति है । इस्ति है हों-५ पर रहा। दि॰ (वर) बाल्यन विर देवा

(मदल न्दे) । मॉडिक्सी दिनी बंदुदा बीचन गर्नेन घर देन्द्र है क्षिक्रमार-च क्रि. सर्वता दशलता ।

व्या-मो (फा) च रक्ता से से हिल क्षेत्र किन बलुद्ध एका भाग । ॰ प्र थेहा होते स्तारीत रेख । बाँगरा -प देन 'शामर' ।

ब्रॉज॰-सी॰ समानता, प्रक्रमा, दरावरी । बाँड-दि॰ (सं॰) श्रंडरे श्रंड रसनेवाडा । दौडरप-प्र• सि ने छत्रीयरहार या वनिमया काम पानर । वॉबमा!-त कि॰ इंड देमा।

वृद्धिमिक-पुरु [संरु] यह मिसने कीगोंदी परमचर पैसा पेंठनके दिव ग्रंड और मूपको पारव दिया है कृपये शाल । वि॰ (विगानेडे हिए) १६-धर्म शाल ६१३-बाला दीनी क्यमे । बाँखिक-नि प्रश्नि विश्व देनेशाला ।

वाँत-वि [गं॰] वंश-गंचेभीः विसने वार्वेदिशोधारस्य रयम्ब ।

निना बीर बनिवर शर्तत भीरा यत्रार । प्रश्नाता वृत्ति-त मन्द्रोक अवहाम रिवन वे छोटे-छोटे पश्चिम मस्तिपेड बिसर्ग काटमे चरानेका माम रेन्द्र राज र्दछ आरी देशी आस्त्रित ति। सुरु −काधी रोडी+ संदरी निकता । -काइमा-नित्नितामा । -हिर्राक्षी होम।-हार मानवा । -शरेबनेओ तिमका म रहना शासमें <u>कुछ स दोला। −लहें करवा</u>−शासन कर? मन्दर्में बम बहना। -गावना-दिसी लगुढे क्यि धुर व्यथिक काकादिन दीना । -श्वदामा -देश रीत पेतना । −तसे कॅगर्स्स इयामा-दे० 'डॉनी इंदन) दतना । -तोबना-वरारंग करमा । -तिन्याता-बादमाः करू" वरपव रिग्नामा । - विद्यासमा - विद्यासमा- वि विशेषाः हे शक्त हैमाः व्यवं हेगमाः -परसंग है होना-अधियन होना इतना हरित्र होना कि गार्नि कुछ स विदेश -पीसवा-पद्य व्यवहरूद रोगः। -वजना-इंडदे शहर हॉनोंझा द्विटिसामा । -वस्ती^क वेडीशोडे कारण करर-मोचेटे टॉनोंडा रण प्रदार रप वर्ग बि शुँह व शुक्त गरे ।-सरामा:-दे॰ 'दांत दाना'। दे दीन वेडला : - सताबा-(दिशी वानुवे) दवा माने

-(ती) देंगची कारमा-भाक्ष्मे का नामा स्ट हो वामा । -चतुमा-अंगुमे सुधने स्मन (वि)। -बहाबा-९री धरिने देशना (मि)। -धर्मी पन कर-वडी बरिनर्रंने वडी हिन्दनने !-वर्मीना मार्ची" बहुन करिक सम बहुना १ -में और स होना-वरि धार शहकाके बीचमें रहाना र नाम प्रसाना न्याने बर्ड ने (इस्य भारि) गर्दन्य करता ह वीतक वृत्तिक~दि॰ [सं] दाबोसीया बना दुंगा ह श्रीतना-म कि (शाम ता) ज्यान शाना (रहिशाह)

की बादमें रहता कारममात बरवेती प्रस्त रूप्ता स्पर्त ?

श्रीतका∽को काम दार ह ब्लि-पु॰ दे॰ राज्या । व्होंना विद्यविद्यः वृत्तितः दिक्तवियानभोतः "व्हारः 🕏 न्द्री ।

अहिन बीना ।

ब्रिनि=०१. [शे०] सज्बन्धाता स्वतंत्राचा तहा _{र हे}त **टरिन्द्र**मा १

दंडोरपस-पु॰ [सं॰] एक पाना । इंडोपसा-स्त्री [सं•] व्ह पीवा! व्ह मछली । वंडोपनत-वि [सं] पराणित करके वसमें किया हुआ (रामः) । र्षक्य-वि० [सं•] दे॰ 'दहनीय ।

वंत-पु॰ (सं॰) दाँदा पठार; मुंजा ३१ की संस्वा; पर्वतका श्रिप्रशः शामकी सोकः !-क्रशः-सी० विश्वती, जनमुनि । --कर्चल-पु॰ यह मीन् (अमीरी) । --कार-प्र वाशी-दाँतका काम करनवाका।-काष्ट-पुदासीन।-काष्टक-तु बाटुस्य पूर्व, तर्दर । ⊷कूर्-पु॰ सेमाम, सर्वाध सगर। -शत-पु॰ इविप्रसिद्धि अनुसार कामकेकिमै क्रपेको, वर्षापर वॉद काटनेसे पहनेनारा विद्या-धर्य-शांतीका किरकिरानाः वाँत पीसना । - बात-पु॰ दांतीने दारमा । - च्छर्-पु ओह दोंठ ।- च्छर्रोपमा লবা। বিবাহন কুল্ম। *–*তর,–তর্গ–এ ই 'বর श्चतः ।—आत्त−पुनद्दनदा प्रिसक्ते बॉव सिक्टन आवि बॉड बॉव निक्रकतेका समन । ∽जाइ – पुदोवकी कर । ∽ तास-प्र• ताल देनेसा एक प्राचीम बामा । -ब्रेस-पुर देश 'इंतद्वन । -- क्याम-प् कश्राई शगई मारिमें बाठ करपहार्त ग्रुप बाँव पीसनेकी किया। -चायन-प्र दांत साक दरमेका काम इंडमाईमा दावीना धैरका पेश क(बारा पहः मीकसिरीका वेह १ -पग्न - वु वाँवके वहा-दर पर्वीबाला झामरा एक भागूपण । ~पलक−पु हुरका पूज । -पवन,-पावन-पु बाँठ साफ बरमेका ~पांचाक्रिका~को कामः दावीसः। प्रचलिका। -पान-इ इति गिरमा। -पार-प्र [हिं] इंतरीका, बॉक्का दर्व । —वाछि –की बानीपीत को (तक्षवारको)मूढ । —पाक्षी—स्पे मस्का !—पुप्पुर--पु॰ वक रोन जिसमें मस्क्रीम छोबड़े कारण की हा बीली है। -पुर-पु क्षिण राज्यको राज्यनी वहाँ जनस्त नामके एक राजान बुद्धरेगके एक गाँउकी रथापना करके क्छ के अपर एक विद्यास मंदिर वसवावा था। **-प्र**का-पुनिर्मेकीः पुरस्मा कृतः —प्रश्लासम−पुरुदे वित दान । ∽फक−पु शिर्मेश्वी; ग्रैव । ⊸फ्या∽श्वी० पीपर । 🗝 वेस 🗝 बीज र 🗝 विज्ञ - विज्ञ र 🗎 अनार । न्सम्य-३ दावी ६ द्योगे ६ वीक्सी दूरी । ÷स्थ-५ , -रम(स्)-ग्री स्निम्ने प्रशा । -मीस-पु मस्हा। -मृत-तुं वातामे पदा एक भीषपा याँनका एक रोग । -मुक्तिका-भी रंगी बृद्धा -सूत्रीय-वि जिल्ला षयारा रहमूनमे होता दा-जैमे तबने । -सेरहफ्र-प्र दानीरी रेगारेने जीविका फलानेवाणां -वस्क-पु वांतरे क्यरका श्लामला मनुवा। --बसा-पु॰ काठ। -पीजा-मी दीन बरकतामाः एक प्रशास्त्र भागाः। -पष्ट-पु बानका एक रोगा मन्द्रात बाबीयांनपर ध्यापा वानेशना १५ता। -धर्म-प वृतिका एक होगाः बापानमे रानधा हरना । -स्यसन-पुरानका हरना बार्य। - संकृ-पु र'न बागरनेवा एक औतार। न्यार-पु रोष्ट्रा देवा बनरग्रा शारगीर पुका रागाई-विनद्ध गानव शेष गुठने ही जान हु । -एईस-शी र्वातम्स ज्यानेरासी परही । ~सामा-पुदौनीपर कमाने

का यक रंगीम मेजन, मिस्सी । ~ ह्यूक - पुर्वातका दर्व । -शोफ-पु॰ मस्टेंकि सूबन। -दिखप्ट-वि॰ दाँचीने ऑस्का ब्रमा । ~ब्रप्यंक-प् जेंपीरी मीन् । ~क्कीन-नि० विना दौनका, विसक्ते वर्षि न दों । वृंशक~म [सं] बाँता पर्वतका शिक्सा पर्वतको चोटीके पास भागकी ओर निकला हुमा नत्थरः दीनारसे निकली हुई सुँदी । वृंद्यांतर-पु (एं॰) दांतीके गोचका स्थान । हैताबात-प्र सि देवी दारा किया गया भाषामा मीक्। वंशावंशि-को॰ [सं] कहारै-सगहेमें एक इसरेकी दाँवसे कारना । दतायुध−५ [स] स्वर (क्सिका प्रसान मायुव बसका वॉत है)। वैतार-विश्वदे दाँतींवाका । यु इत्थी । वंतारा-वि देश दंतार'। **र्वतार्श्वर्−**तु [सं] मस्देमें वानेशका फोड़ा। र्वताल~पु॰ दाधी। इतिक्य−पु[ศ]मुस्। **इंतासि, इतावस्री−सी** [सं] दतपकि। बेताकिका, देताली-स्वा• [सं] समाम । इंताबस−५• [सं•] दानी । एति≉−पु• काओा। इंतिका−सी सिं] जगाधगीसा। र्वेतिया−वा कोरे-कोरे डॉट (र्वती-न्डी॰ (सं॰) परंडद्ध जातिका एक दश । इंती(तिन्)-वि [सं] शानशामा । प्र हाथी; मनेसः पदाव । – (ति) जा-की दे दंतिरा । – सद्-पु बाबीके मत्त्रवरी जुनेशका गर । - यक्य-पु धर्मेदा । वैदार-वि (सी मिसके बॉन मागको भीर मिसले हों। क्ष्यक्ष पायकः हैका हुआ। कपर वठा हुआ। बदलुमा, महा । च्छद-प्रभगेरी नीद। बंतरक-नि (संग) विस्ते दोन निदय हो। र्बतुरिस−वि [सं∘] दे॰ दंदुर'। किन दका दुवा। र्देतुरिया=-श्यो• वद्येके सर्व-वये दाँत । र्वताल~ाव [मं•] घरिनात्म । वैशाला-वि विसक्ते शॉन वहे या धानाकी और निकले हो। र्वतीयभेष-पुर्णि विशिधा निष्कास । दंवीसूर्यक्षक, वृक्षोसूर्यक्षी(हिन्)-पु महारणे साथु ओ भाग मादिका यो हो स्थाकर सा जाते हैं। र्वकोष्टय-वि [मंग] दॉन भीर ओडमे बचारित होनेवाना (बर्च-बैने घ) । ईस-दि [र्ग] दिनका उचारमस्त्रान दंश की-देते नवर्गः वानोडि लिंग दिल्दर । **व्यक्त** प्रमास स्थापन स्था व्यापन इ.दम•-वि॰ रमान करनवासा र [भी र्ना ।]

पंदरा~प्रांचीदेश

देश्यक-त [त] सर्वा कोशा एक राह्मा सरे में पूर

र्मदान-पु [का] धाँग । -साझ-पु । धाँग वमाने-

एक मरक । वि याटनेवालाः विवेताः शानिकर ।

दाबिम-पु॰ (थे॰) अनारः श्लावपी ।-पश्रफ-पु॰ रोहि-वर्ष ग्रा -पुष्प-पु रीहिशक बृद्धाः अनारका पूक्षः ~प्रिय,-भक्षण~पु॰ हाइ, होता । दादिमीमार-प्र [मं] है। 'वाहिम । दाउ-प जरहंदे भीतरके टॉत जिमसे साते समय अग भारि परान दे पीमहा समस्या भागेकी और निकसा हुआ गीत । स्री भार शब्दा गरम श्रवाह । **रादना**≉∽भ• तिः जन्माः मेन्नप्त श्रीनाः गरजना । स॰ मि • बहानाः मेरार धरनाः यह पर्वेषामा । बारा-भी [में] ल बहा बॉला छम्हा रच्छा । दादरा - पु बनाधि, बाबाधिः अग्निः जलनः संनी बाही । नि॰ बनाया दुशाः शंताः । श्रादिका−रगे (१) दातोः शॉन १ बादी-मी दुवी। दुवीपरके बाल, बादी ! -आर-ब एक गामी जा रिस्पों पुरुषेक्षि रेती है। दि॰ जिन्मरी दादी जन गयी ही। दात-रपु राना दाका। नि [मं] विमक्त विकाधना दुका, माबित । चात्रम-न्या देश वाहीस । दासम्ब-ि [मं] हेने दोम्ब।बानसे पहनेवाला लीहावा यानेशमा वर्ष दामके एएमें कोई बीम दी जानी ही। इ. शानग्रीकृता । सामा(१) -प॰ (मं॰) देलेबाका बान वेलेबाका यहाजन बचनपा शिधदः सहसेशना । दारार-५० देनेरानाः प्रदाम करमेशाधाः। दाति – स्रो॰ [मं∗] देनाः क्षित्र मित्र करमाः निमानः विभागः, रिनरमः । बाती = न्यां देनेयाना दात्रा । दानुन दात्न-शो० दे वाठीन । शानता-मी॰, दानुन्द∽य [सं॰] दान देनकी प्रश्नृति दाव शीक्ता बद्याग्यमा । इस्तीन-भीर संस्कृष्य आदिशे गोली दहलेकां वह प्रकार भी दोत साथ दर्जेंद्रे कामने लागा जाना है । क्षान्त्रद्र−तु (सं } पान्य वर्गाताः त्रक्रकामः मेव वारका काचीविक-शी दे वालीत । स्तिवाद-इ [त] दे 'वालूद । बाग्र-५ [न] ईतिया । शाची-दि मी [मंत्र] देनगानी। शाम बर्नेवानी । मीत्र ६ विषा । द्याप-पु [मं] प्राप्ताः वष्टका अनुकामा वस । शाह-मु [मैं]शान। -व-वि मु रामधनेवणा। बार-सी एर प्रसार कोरीय ! - तान्य-पु कर्रीय ! बाद-सी- पा] रंगच स्वाय । -- न्याद-वि परि या १ व्यावका प्राची । - एयाही - मी करिवा" स्वाक क्षेत्र आर्थभा । - समी - भी संगत्य बन्ता स्वादयांत्र । श्य -द्या-ध्याद वर्गा । बरहबी-मी (चार) दी यानेवाचे हहम वा बन्ता वेश्यो क्षा जानेककी रदम १ **प्रदेश−५** एड नम्माशाला **र≪नम**ा

शांश्यां−न्धः इटिया शंभा ।

बाहुक मतको माननेवाला बाहुका अभुवादी। वाध=-सी॰ यहमा श्रप । म्हारमा == म॰ क्रि॰ जनामाः हरामाः ग्रेश देता । बाधिक-पि॰ (सं॰) दहाँसे बना ब्रमा वा विकार रहि दाका गवा हो । त हही देशनेवाला हती है नाव की भीव शानेशाला एक तरहका सन्। दाबीच-५ [सं] हपीनिस गोपदा व्यक्ति दर्शांस्य शाम-तुरु (सं] देनेश्री शिवार भर्मश्री दक्षिये जा दवारण क्रितीको कार्र वस्त्र देनेनी क्रिया। वो वर्ष वस्त्रा निर्णा धनुर विवन पाने दे छाम जानि चार इरायों ने दर कुछ देखर राष्ट्रधे बरामें सरमेक्षे मोति। प्रशासा इ.चे.हे गेप्टलब्से निक्ननेयला सरवण प्राप्तक हैता भरागाचा ओहा। -कास-दिश वाहर, दानकीया -पुरुषा-स्वीव हाबोद्धा सह ।-साध-पुवदेशदान व.रि. ! च्यमें-इ बातस्थ भने : -पनि -द० कर्र व⁻¹ एक बारवा बदन शामी स्वक्ति । ~धन्न-वर्ग का रेस पा वक विश्वने किमी वस्तुक शानमपूर्व दिवे जानेका वन्त्र्य हो । –पाछ-तु सन देने नोम्बन्धकि वा प्यक्रि विभ बान दिया या महे ! -प्रतिमान्त-५ ^{कर} रिकानेकी जमानत । -प्रतिम-५ वह प्रतिन ही कर बपुत बता देनेकी अवाजा जें। -शिक्ष-वि सिनी देवर फाग हुना । —क्षाय-नि॰ दातस्वर्धे देने बाग्यं। -लीक्स-स्वी० कृष्यक्षी एक भोका जिसमें वर्गाने स^{र्मान} नीम कारणपेरे नेपान कारण रिवा था। - बाहा-पु देव शाओं और गवरी है कर प्रकार है की है भी अर्था देगाए बोने कार गया वदम्य रहत है। वेस्य 1 न्यारिन5 वार्थका मरभग देश समने । -वीर्-तु वर्ड ^{वर्} अधिक बोर रनका एक मेर (मा)। ~ सॉम्र - ग्रान वि जिल्हा भवाव राज देन्द्रा है। जीवरान ४५ रिया काला थी। -शांध-वि देश शांतरील ! -নালহ—প্র বর্গতথ্য সম্বাধন কর সহায়ার দিল^{র করি} आगन साहि शीलह मानुश्रीकेन प्रापेट पानु स्वेग्ड कार् बंदे संस्थामें को मानो है र क्षामञ्चलके [में] मृत्यान प्राप्त सुरुष राज । बामय-पुर [1] दरवरदे पुत्र भी बनुदे नरीने स्टाम हर मे । ~ग्रद∽द्र शहरावार्ते । क्षामवारि-पुरु [स] रिल्हा रेडा देवणा है। दार में ! शामधी-वि वालक्ष्मको प्रावकेतिक । मी (१४) रानस्य स्था।

शमधेत्र+५ [सं] वटि र

हामोत्रसम्-पु (००) यात्रदेशित स्पर्वेशना एक्टी

वाका-पुर विवादे क्षिता विज्ञामक्के क्षित्र प्रमुख अपूर

वार्वी—मी॰ विवासी माठाः विद्यासको । दुः परीका

दाव्-पुरु 'बारा' ग्रम्थ्या शेरायम बारबदा एक स्पादद

पॅथप्रवर्गक साधु रं-इमास-पुर शाह र -एंग्री-विर प्

युक्त श्रम पश मार्थः गुरुतः।

करनेशमा ।

दावर•-५० मन्द्र, दर्र !

वाविक-स्मी दे दा" स्वारिकार ।

विष्णुः शिक्षः एक तंत्रोक्त नापासः मानकता एक भेदा दाहिमा दावः दाहिना पार्र्यः स्वका दाहिना योकाः बस्त । वि वाहिनाः दक्षिण विद्यामें स्थितः बुसरेकी श्च्याचे अनुसार कार्य करतवाका अनुबूकः वैमामदार-सुषाः भपना सुनी नाविद्धात्रीमें तुरुव बनुराग रखनेवारू। (नायक)। पद्ध । श्र॰ दरिएानकी और दक्षिण दिशार्में । -मासिका-स्रो भइ काली जिनका शादिना पैर दिव के मधारभक्तपर रहता है। दुर्गाका वह रूप विसे तांत्रिक पुत्रते 🕻 : 🗝 गोछ-पु विपुदन् रेखाके विश्वमें स्थित तुका बारि र राशियाँका समूद। -पदम-पु रक्षिण वा मस्यिगिरिको ओरसे जानवाटी दवा । -प्रवण-वि॰ को दक्षिणको भीर दासुधाँ हो। -सार्ग-पु यह तंत्रीस भावार पिनृवान । –स्य न्यु सार्थि ।

इक्षिमा−सो• [सं] दक्षिम टिग्ना वग्न दामदर्भ आदिके श्रेतमें ब्राव्यनी और प्ररोदितोंको दिया जानेवाका इन्त्र ! वि भी (बह माविका) को दूखरे नावकमें अनुरक रहती हुई भी पूर्व कावबाठ प्रति प्रेम और सदाब रखती है। -कास-प्रदक्षिणा पानेका समदा -पथ-पु

मारतका दक्षिण भाग ।

बक्रिगाद्रि-नौ सिं•ो साइपल अद्विके दक्षिण रसी जानेवाकी अभिन 1

इश्चिमाप्र−दि• [मं] विस्तृद्वा भारमाग दक्षिणकी ओर हो। **इधिणाचक**−९+ [सं] मस्त्रगिरि ।

इक्षिणाचार~दु [सं] सुद्ध भाषरमः तंत्रमे यक आबार बिसमें अपनको शिव मानकर पंचवरणी दारा दिवाके पुजनका विधान है।

दक्तिजाबारी(रिन्)-वि धु [मेर] सुद्र भावरणवालाः श्रीकर्णम् ।

प्रक्षिणायरा - धी [में] नेक स्व आज ।

दक्षिण भिमरा-दि [में] दिनदा मुँद दक्षिणदी भीर

दी। रजिल ("शासी और बहनवाला । इंशियामृति−५ [नं] वह दिवविनदीमृतिकनुकृठ हो। इक्षिणायन-५ [मंग] स्पंडा नितुवन् रेखानी औरती

नार रेपाओं भार ममनः ६ महीनीका नमच जिनमें प्दं श्युदग रमाने दक्षिणको और रहता है। हि॰ दक्षिण की और गया गुआ।

व्धियाधन-पु [सं] वह शंग दिसमें हवा निरूपनेदा मार्गे बादिनो भोर हो । दिन बद्धिण दिशामे रिवनः जिनका जमार दर्शहमी और ही ।

ब्धियायइ~तु [मं] रे 'वश्चित्रवान ।

दक्षिणागा-श्री । [मं] दक्षिण (-गा। -यति-मु थमा मेगन सह ।

व्यक्तियां-पुरिधा रेपका निवासी । दि दि नादेशकाः रिता रेजनांका ।

दक्षिणीय-वि [तं] जी वि ा वाने बाव्य हो। र्वाधक्य-रि॰ [मं] हे 'दक्षिदीए'।

द्धान - द दे दिल्ल विश्वान-ति दे भग्नात ।

एगम-५ के क्षत्र ।

इन्तमा-पु: वह मात्र बहां बारती अन्ते मुटे वर्षाही 10

सा जानेके किए रस माते हैं।

ब्रुप्ताछ-पु [श॰] प्रवेश, पुस्तना कथ्या, भरिकार, भरित बार ।--तिज्ञानी--ठौ० कानुमी बंगते दशक दिकाना । -मामा-प वह सरकारी आधापत्र विसमें किसीकी हिन्दी वस्तको स्वाबच बरनेकी बाह्य दो गयी हो, दस्रह वानेका परवामा । अ - देना-वीममें वोसना, इरहधेप

दक्षिनद्वां∼वि दक्षिणका दक्षिणी।

हरप्रीक्ष-वि॰ [बा॰] इराह बैनेवालाः कानिम विसक्ते भवि कारमें हो। -कार-पुर वर्मोनपर स्थावी क्रयोका अभिकारी कारवकारा कारवारमें रखक देनेवालाः सलाह कार !-कारी-स्रो वसीक्कारका पर वा वक्तः वसील-दारके अधिकारकी बमीना करवा !

दगद-प कराईका देखा। द्शदर्य~वि चमक्ता हुनाः आक्रोक्सर । पु॰ एक तरहकी छोटी क्षेत्रीका [अ॰] सीफ, बर, मदा भरेखा

दरादरप्रमा∽व कि चमकना। धीरान होना। ध कि पमदावाः रीधन दरना ।

खाद्याहर-सी पमक-दमका तमतमाहर।

इराधना॰-ज॰ कि जलनाः पंतित होना। स॰ क्रि॰

चकामा क्या देता अमता। द्गना-न कि (बंद्रुक, तीप मादिशा) एटना वा प्रकास बाना बागा जाना। जलमा। विषयुक्त दोना। प्रसिक्त

दोना। = स॰ कि दै॰ 'दागना'।

दगरा=-पु देर निकंदा मार्ग, क्यार ।

इगर•-- पुर्ददनका। व्हारू ∽पु थि } सहसा शक्ता स∓८ दरद ।

हरान्या−पु एक संश दीका पहनावा स्थारा । इगमी-यो है 'दगना।

इगवाना-ध कि शयनेका काम दूराना, दूसरेकी दागमेमें छगाना।

इगडा−दि दाया हुआं दागरार । पु भूत⊊ संरक्षार करनंशका ।

इग़ा−मी [का] गोला करेंव छत ।–दार-वि• करव करनेवाना चौगोपाव, एकिया ।- हारी-मो । इसा करने का काम, बागा, एक ! --बाह--वि॰ बीगा देनवाला

कारी। -बाज़ी-मी॰ यामेराजी परेंद एक। हगागल-पु [में] निर्धन भूमागढे उपरी स्टागीका देशकर पृथ्वीके मीनर अनक्ष स्थिति भारिका पना सगाने

की निया। न्तीम-वि दागशरा विमे दाग सवा हो। गौरा। दगावाज

एको इसी। द्रश्य-वि [मं] जना था जलाया दुमा मरमीहना पीडिन,

नेन्स भूरे कशुका बोरम तुष्का, निशृष्ट । पुरु यह पान्। ~काक-पु श्रीमश्रीमा ।~आहर-पु॰ मृसा ५१ । ल्यानि -वि विमहा बहमानन मह दी दया दी ! -हम-प िनारव नेवर्त ।-इह-५ विश्वका देवा - इहा-नी बुरह नामक पूर्व १-वया कन्यु एक पास्त १ - सूर्य-पू जनेश पर १

शिकार पहुँचे, दश्य । शायापवतम-पुर्निः) उत्तराभिकारमें मिनी द्वरं आय शाहरी मणी १ दायित-दि [ई] दै 'दापित । बागिरब-न [एं॰] दायी या विग्मेशर दोनदा भाव (ब्रेग्मेशरी । शाची(विन्)−दि सि] देनेशका पर्देशमेशमा (शस वर्षमें इस सन्दर्धा प्रयोग नमासमें उत्तरपदके स्वमें होता है); उत्तरदायी । इाय-व बाहिनी तरफ। शार-ड [मं] चीरमा निशारण दशाद छिद्र ! सी मी, पत्ती । -कर्म (न्)-प -किया-मी विवाह । -प्रदल-परिप्रह-तुः विवादः। -वनिशुक् (अ)-पु दग्ना। श्वार−4ि (का }रहानेवालाः में यक्ता ≠ प्रदान, कास । ईपरी काल । दारक-प्र (स) नाइन्डा प्रथा भावना शामनावर । वि चीरतवाना विरोधं हरतेशका । दारधीमी-भी एक प्रधारका तब निगरा जिल्हा दश भीर ममानके शाम भागा है। बारण-प [मं∗] निर्मणी। बद्द कम जादि जिसमें कुछ भौरा कामः भौरतेद्ये किया अत्रमः श्रीचवदा एक मेत्र । शि भीरने या विदोर्ग करनवाला । दारणी~सौ (सं}दुर्गाः। बारद-५० [गं] एद प्रवारका विषः पाराः रेगुरः गमुद्र । शाम - विश्व है। यह रिमंग विश्व के की-वाराध चारमा = ना कि भारता फाइना। नष्ट कर देता बिहा देना । शारमदार-पु॰ का] दिनी कार्य है होने ना न दौने अवना बतमे बिगइनेक्षी पूरी विध्नेत्राची। कार्यमार ३ क्रिम-विश् [मेर] इहन्तरेथी संदर्शका । **शारा**-मी भी पनी भागी। दु (का॰) माठिका ग्रन्थ। दाराई-भी [का] अब शहबा मान रहनी दरहा; हुस्मन् । हाराचार्य-५ [म॰] बन्दादर । शारि-भी मि दिशास केला न के राज । श्वारिडॅ॰-चु द॰ शांश्म"। शारिका-मी [मं] क्या प्रशे। बारिय-दि [र्थ] श्रीरा द्वमा दिशीण दिया द्वमा । कारिद -इ दे वर्गताव । क्तिक - व है कादिक । बारियय-इ [मं] इरिज्याः बमारेनाः निर्मेनप नरीती । बारिम•~तु रे शारित । शारी-भी [बं] सारा प्रद्रश्चर देश लिये र पुर प्रदेशने ल्यादा प्रमा का अला केर वर्षे दरमें क्या है देल्दें । (सिनोदी दी प्रान्देशली यह जाली-दुरेल न । भारी- नानी वी प्रक्ति भीरतिसी हर् **>d**) शार्थको समी नश्यको हरिएम I

बामाच-प (सं•) रह संशीत मिसगर सर्पिट करिश्वीदा शारी(रित्र)-त [र्त्त•] प्रतिः वह तुरत्र शिमदे सी पश्चियाँ भी । वाद-पु [सं•] काष्ठ काङ क्रेन्स देशास (उसे कारीगरा क्वार व्यक्ति । दि० वानगीना व्यवस्था स पूर जानेवाकाः विकास्य करमेशासा । -- सप्तरी-को बार्वेस । – ष्टरय – पु॰ संदर्शका बाम । – गीवा – सी विराजा। -गर्भा-न्यो॰ करपुत्रनी। -श्रीती-प्रे॰ [वि:•] " विश्वभीनी । - अ-5 यह नरहशा देखा नि॰ चढ़रीका बना हमा ! —श्रोचित्त#-नरी देश पार-योशिय । -मरी,-मारी-मो॰ इस्त्राको । -विराय-की शब्दल्दी : --पग्नी-स्रो॰ हिंगुक्ती : --पाई उ व्हरीका बना इक्त बाद कारका शतक । --वीता-को दारहल्यो । -पुत्रिका -पुत्री-स्रो १३५७मो १ −कम-९ विस्ता। −मन्स्याद्वय नमुख्याद्वर ६ गाइ। -मूच-पु॰ एक रिपः -मूचा-मी प भोर्चाय । -वीय-व सास्ता यना द्वा दश रशक्यो। -योषा -योषित -योषिता-सः ६३११म। -४५-व्यो॰ बाहनी गुहिया। -मार्-च ५१म। -मिना-सी दारशीमा । नद्यी नसी । बद्ध रहता । नद्यापान नी शास्त्राः।-हरुरी-मी [हि+] १६ देने नश्गे जी दक्षेद्र काम भावी है ।~इस्त ~इस्तक-वृत्र करके PORT I बायक-पु [मं] देवनावः कृष्यधः स्टरवि । बारका न्या (से) काइकी प्रयोध बाजने वृति। बारण-वि [नं] दश बटीरा निर्देश मान्या स्म थीरा दीमा देवा दनेवामा । पु॰ मधानक रहा निवस विष्णा यद्ध शरद । द्दारुवाक्र−५ [सं] धालीक्ष सबमें दीनेबामा यह रीर द्वारच्य-९ [मं] बकारना निर्देदना । दादम १-४ दे शाम । बादमय-दि [म] काइब्रा काढबर बना दुना १ वास-न्यो (का) प्रवादास्यः प्रशाद । - प्राप्तव-5" बरवार, रणाम । हामहान्द्र शुरुष्ट्रि-भी १५११। शारोब-पु अनारका दाना वा वीत्र t द्रारीहरा-१ (दा) दिकारत बर्जरामस निरामी बरनेवामा बानेस क्वाम मविश्रमी बानेवार । 📲 🖰 शरी−भी रारीयभा नत्य वा में।€णा। क्षाकर्र−मु [द] ए धीनेदा मन्य रहना। हार्च्य-वि (शेष) बेदर-मरंगे । पु वह तराश क्षेत्र शामी । लाग । हार्च रक्ष-दि जिल्ली देन्द्र अंतर त erefer-5 [] sait (t) ite frentiti क्षाभै-वि [त] दर्धनंत्री। दुधशा शारवी *-१ अमारा समारद दाना । शायक - पुनि है - के शाप शाब-कि कि किमानारक, बारशा बना इसा ! बार्वेड-९ (०) अवसा दारेड हर रकता रकता है। ्रे बाबीबार, बाबीबान-पु (सं-) करबेपरा नामक के

सीप शुक्ति। द्यारम-पु [संग] कपित्व केव। -रस-पु कोवान। द्यारम-पु [सं] कोवान।

वधिपास्प-त (र्थः) पी ।

प्राचनाच्या तु (२) पर प्रसिद्ध कारि किनकी बहुति देवका कत्र नता वा (क पुराण दन्दे अधन कार्य तथा कर्रम कारिडी करना द्यांनिका पुत्र नतलाता है और यूसन शुक्रा-चार्यको)।

नानका)। नृजीचारिय-स्था॰ [सं॰] दे॰ 'दर्शाच्यक्षि'। नृजीचि-पु॰ [सं] दें 'दर्शाच । कृजीच्यस्थि-जों [सं] वजः द्वीरा !

इस्म-पु [सं•] चीत्रह वर्मीमेरी पड ।

क्ष्यासी-त्या [सं] सुरक्षंत्र अवस्तरस्य। इप्युचर,क्ष्युचरकः,क्ष्युचरत∽तु [सं]वे 'विवर्धकः। दनवस्ताना-सः ॐ दनवतः स्रव्य करमाः सुरी। अनाना।

बनाबन-म 'दम-पन'की मामाज्य आत्र क्यां निष्ठे पुत्र बुद्र-की [संग] क्यांच फारिकी एक स्त्री निष्ठे पुत्र सानव क्ष्मांगी ।-ज-पुत्र सानव समुद्र। -श्वकारी-सी हुर्गा। -शद्विद्(पू)-पु देवता। - स्पत्र-पु दिरम्बक्षिपु। -श्वित-पु

बनुबारि-पु [सं॰] देवता धुर । बनुबंद्र-पु [सं॰] रातना दिरम्बद्धशितु ।

वनुवेश-९ [सं] १ तनुभेद्र । वृत्र-मा १ दनुः।

इस−पु रम को कानाम की छोए कारिके हुस्लेमे होती है। सपर-को टॉस्ले-स्फानको किना पुत्रकी। सपरना—स कि प्रकारता टॉश्मा।

स्युर-त वर्ष, महसर ।

ब्रह्मी-सी दे 'दब्रां'।

वक्रम~पु॰ [सः] गाइमाः किछा बरतु या गुरदेकी जनीमः में गाइनेका काम ।

इप्रनामा-ध कि सुर्°दी अमीनमें माशमा । इद्या-स्ता बार, मर्तशा किमी कामूनधी दिनायडा बर अंग्र निगमें एक नियमका चल्पेस दी, कामूनका दक

निवम भारा। - क्र्र-पु॰ धीडीशरीका मुखिया। -क्र्रि-पी क्षाशस्त्र काम था पः। मु॰ -क्रमामा-कान्त्र्य किमी गास दकाढे जनुसार अभितुक डहराया नाग।

क्का-पु (भः) इरकरमा इटाना इटेनमा। क्कीना~पु (भः) कृषीमें यादा हुआ पन वक्तम दिखा दुमा राष्ट्राना।

इना राजारा (१८) हिएस रिमार्क समाज बसी दिस्तरह बह बात आहे रियों १०वा चा केंग्री चारिके कोचारी संस्थान असे रियों १०वा सा केंग्री सारिकों वर्ष सरिका निम्ने कमरा आदिया कर्म कर्मी सारिकों है। वि कर्मा थी। वर च्यान आदिया क्यों रियों वर्ष प्रमास्य विभावनी मानिया कार्क रियों से अक्टिम समाच्या परा विद्या कर्मी क्यों सा क्यान्य सा

व्यवहरी-पु वह जो दस्तरमें क्लिश्ते, सक सीवने आदिका काम करता हो। किन्दर्गरी करनेवाला। दस्तर दुक्त करनेवाला। -एनामा-पु॰ दस्तरीके काम करने का स्थान।

वृक्ती - ली॰ [फा॰] वर्ज कामजीकी भाषसी निपकाकर बनाबा हुआ मीटा कागव श्री विषय भौजनेके काम भावा है, कुठ ।

वृत्रतीन-सी॰ दे 'दश्ती'।

वृद्धाः—वि को किसीसे बनवा म हो। जिसका बूसरीपर प्रभाव है। ज्ञानकारी सेपीका ।

क्षक-की॰ दक्कनेस्त्रे किया; सिमटमा; वातुकी पीटकर वंगा करनेस्त्रे किया ! – यार-पु॰ वाहुकी पीरकर क्या करनेसका !

प्रकरा-क कि॰ भवके मारे सिमन्दर संग प्याह वा आक्रमें किपना श्वका रह पाना । स॰ कि॰ पोट्यर क्या करनार करोटना टबरना ।

इसकमी च्लां शालीका वह दिरसा विश्वे हवा मीदर जाती है।

इबक्याना - छ कि॰ दनकानेका काम कराना, न्यकानेमें बुसोको महत्त करना।

वृत्तका~पु भातुक्के पीरकर स्था क्षिया हुमा तार् ! वृत्तकामाः—सः क्षिः रिपानाः भीटमें करमाः टॉरनाः । वृत्तकी - सो॰ वृत्तकोनेके क्षिताः । वृत्तकी - सु दे॰ 'वृत्तकार' ।

व्यवस्था-पु कार्यका रोवन्ताव ।

द्वचा- नक कि. यार वा समसे तीये पत्रता देती (अति-वे होना मित्री कित्री और निरोप मार को अपक हाड़ हारा कहाति बोसर पीठे हरामा कित्रीत करन का करिक अमारित होस्ट एक्ट अमुक्त आयरण करना कितीने इरहर दक्क विरोप क करनते किर वास्य होना; क्रीय पत्रना; दिशी चाद या सामनेका ग्रुत रह जाना कषड़ा अभी म बन्ता और म पढ़ना ग्रीत रहना ठंडा चनना; कित्री वस्तुता और म पढ़ना ग्रीत रहना ठंडा चनना; कित्री वस्तुता और म पढ़ना ग्रीत रहना ठंडा चनना; कित्री वस्तुता और समये यह महार एक माना कि वह किर मिक न पत्री, (विरोध समावद्य ग्रास्त्र) अविद्व कावार ही माना। देर खाना संदर्भित होगा।

व्यवस्था-स कि दशतेके किशमें दूसरेके क्यामा कुगरेकी स्थानिमें प्रकृत करमा ।

ब्रानिक भारते भारतेन किन्नी भोरको हाथ इसा। [सी 'वर्गा !] —(बी)भारवात नती भोरता वर्गा सुन —(बी)ह्यातमो बद्दमा —रन्दे दरता भरता वर्गा बहना ! —(बे)द्रबाये रहना—चुक्शा का रस्मा। —पॉव-स्स मधार कि निर्माधी देखी भारत मास्त्रम म सी मारिन्दे पहरे !

क्वामा-स बि नार या प्याक्ते मीप काता। मार का त्रीर क्षेत्रमा क्यान का पीश दूर करने किय दिनों संपाद श्रीर पर्देनसाम स्वयंत करना। मामन दिक्ते म नेता कम्पूबंक बीध दरामा दिमीको दनता क्षत्र का समारित करना कि का दिस्स स्वान्तर म कर तहे दिनों पर शेव कमावद को नेक्स्प्र स्वानस्त्र म करते देता। निकी ग्रीरी कार दिनों से सम्बद्धाः दिनों का प्राप्त दास्ता, बास्तान-धी॰ [फा] ब्रुशंतः ब्रहानीः विस्त्य । वास्य - दु॰ [सं॰] मकिका यक भेटा दे॰ 'बासता । दारा-नि॰ [र्म॰] अस्तिनी सक्तनसंदेशी।

दाइ−५•[र्म•] जलानाः जलन, तारा असदना द्वना काछ रंग (भारतश्रदा)। व्यक्त रोग जिलमें शरीरमें निजीप जलन रीती है। मंत्रापः मुद्दां बस्पनाः यन बस्रानेका पूरन । -कर्म(म्)-पु॰ धनसंस्थार, धन जनानेश कृत्य। -काष्ट-पु॰ नगर । ~किया~मी॰ दे॰ ^दत्तकर्म । -- उदर-पु॰ एक क्वर जिलमें भ्रहीरमें बहुत क्लन होती है। ~सर,~स्पस-पु॰ स्वयान । ~हर,~हरथ-पु॰ राम ।

राहरू – प्र [५०] अक्षि निभन्न बृत्त, बीता; कार बीता। वि॰ वरानवास्य इस करनेवाला । (ब्री॰ 'दाहिन्दा' ।) दाइन-१ [ई] प्रकारी वा जनवामेडा कामा बसाना या अवदामाः तप्त होदेसे बनाना ।

दाहमा - स कि वकाना भरवमात् करमाः नह करमाः बट प्रेपामा मंत्रप्र बटना । वि॰ दाहिना ।

राहा-इ द 'न्हा'। बाहागुर-५ [मं] अगर 1 दाहित्र = - दि॰ दाहिनाः अनुकृतः ।

दाहिमा-दि धरीरके वस औरका नी पृषदी और मुँह करके लाई होनेपर दक्षिण दिशासी बोर पड़े नाशीक्ष बत्या दक्षिया दाहिने हायक्षे और पहनेशाला अनुकृष्ट । [गो॰ 'गहिनो ।] स॰ -(भी)देवा:- स्प्रमा-मराधिमाः **परिष्या करना ।**

दाहिमे-म॰ दादिने हानधी और १ मु॰ -होना-अञ्चलक होना ।

बाही(हिस्)-(१०, ५० (००) बलानेशका सह दैनेशला। बाहरू-दि॰ [मं॰] दे॰ 'हावी ।

बाह्य-दि [सं] बकाने बीम्बा बढ यहमैशका है दिक-५ [मं] अर्थातिका शेश । विकि-त सि कि 'तिविद्'। विवर्गनका

विकि(~पु । मि) यक माचीन नामा । विश्वीर~प्र [मं] शहरपेना है॰ 'विदोर'। रिमवार्ग-इ रे वीवा ।

दिमर्शी - न्ही १ दें ॰ 'रिक्रमी'। दिभवी-ना ग्रीम दीया।

दिमान्यु देश दीया । - वर्ती-देश दीवान्त्री । --सकाई-भी देश दिवागनाई ।

रिक्सा-प्रश्निकार्ग-मीश्यो पुर येवस्ते राजीके कदरकी बरही सुरेटा छीरा शीवा। यहनीकी भीते का

Axer t दिक्र-पुरु [स] एक प्रधारता क्यर श्री शहबादे होन्द्रेस दीना है तरेरिका दिन तीन काना बुध्वा पर्देशान,

आ दिश । दिक्याहर-त रे भीजाद ।

रिक्रमी!-बी॰ पनेद्ये हान ।

रिष् (स)-मा॰ [मं॰] रिया मादिश बाता शरियेवा है द्रावरी क्षेत्र रहाना रंग्यण रहायै शंग्याः गरेता दिलावा-पुरु अपरेश सेव र दराबात क्यादरण्योषक्री अधिकानी देशे । —कम्बा— | विरावतिक-मु देखदेशकात्र (स्थापेशमार)

श्री॰ रियामपियी कन्या । -कर-दिश स्वात । प् वदान भारमीः धिर । -करिका -करी-सी+ दुरर -करी(रिय)-पु॰ दिमात्र । -कोता -कामिनी-भा दे 'रिकमा ! --इंबर-पु: दिग्वर ! -पुमार-पु यक देशवर्ष । - चक-पुर शिवसंत्ता विधानीया तमा थिनित । -पति-पु बाठ प्रह मी नाइ प्रिक्र रे स्वामी माने बाते हैं (स्वी॰)। दिश्यक । न्यन्त न्यन -पुर दस िवामोंके रहक देशा-शर (पूर्व), क्रि (मिनकोग), सम (दक्षिम), नेवास (नेवान दोन वरण (पथिय), मस्त् (गातुकीय), मुवेर (प्यूर), रा (श्यानकोन), त्रका (कर्परिया) और वर्मन (वरे-दिया)। यह धर । ~प्रेक्सण-द । (धरमे) वार्त और देखना। –सिमा−मा पूर्वीका। –शूक्र–तु०स सबय जब दिनी विशेष दियाने श्राप्ता वीत्र हो। " साधन-त वह चवाद विसने दिशा वादी वाद !-मिपुर-पु रिमान। -सुर्री-भी रिहारपे रूपे। -स्वामी(सिन्)-पुरु रे ^५ नगीव'।

विक-त [मंग] बरम, शामीता वदा । विकास-मी॰ बि॰ मिटिल सेपी प्रशास प्रीमा । -तसय-दि॰ विसमें दिवनें को बहिनारेंगे होनेक ब्राहिन (

हिराबा-अ कि रिमार्र देगा। विकासमान-स कि॰ दे॰ 'रिसामा'। विव्यापनार-सर कि शिवनाना । विकासमी ! = स्वी दिसानेस स्वत हा मारा (नगर्)

बारिका) हुँच देगानेका नेग । दिल्लकाई-सा॰ श्यिमश्रमधे दिवा या मना हिंदा

बानेक्ट बहरत । हिरानवाना-स॰ दि॰ रियातारेश सन वरामा रिग लानेमें हमस्थे प्रशुप्त द्वरमा ।

दिखसाई-भी रिसन्देश दाम दा प्राप्त रिसन्देश उद्देश ।

निसन्तना~स कि॰ रेसनेस साम कान रा^{नी} देशमेवे नवाना। रिमी बानुसा बागुर बाग्रा सार्व वर्रीत करणा शहर करमा आहेर काना !

विश्वमाशा-५ दे रिग्रामा । दिन्दर्यवारं – इ. (रसकानेशका देननेशना)

विगहारण्यु देखनेताता। रिगाई-को रिगानेश किया वा बाबा रिकारेट हर इत देशनेशी दिवां वा भारा देशनेहे रूपने हिंदा करे

बामा भने ह विकास-वि देशने बाँग्या रियाने बाँग्या जो हें

हेमनबरकी हो निग्देश । हिच्यका∽स+ दिः देश 'शिय#शा' ।

विलाय-१ रेपानेदी क्रिया राष्

हिलाबर-को॰ दिवानेश जार वा वर्ग वस करें। दिलावधी-वि थी देखनेवाकी अन्तर बदे विर्धन जी करण करा अपर १ देवानेचे शुरूर वा अन्या हो।

440 इसनीय-वि [सं] इसन करने बोन्स, जिसका दमन किया जा सदेः (का) टीइने नीन्य । इसर्वती-स्ता [मं] निवर्ग गरेश गीमसेनकी कम्या और राजा नरुको पक्षी। दमधिता(त)-पु [सं] दमम करनेवाकाः वंड वैने वालाः विष्णुः शिव । इसरीक-सी देव वसदी । बमा-पु॰ यद्भ प्रसिद्ध न्यासरीय जिसमें साँस केमेंमें वहत कट होता है और कफ़ रक रहकर बहुत जोर अवानेपर निक्रमता है। द्मारा-पु • [झ •] दे ० 'दिमारा' । व्याद-५० प्रश्नेका पति आमाता । इसाइम-भ इम-इम शुष्ट्य साथ जगतार। दमानक - सी॰ तीपांकी शह । दमामा-प वंदा मगाना। दसारि = सी वनकी थाग दावामक ! दसावती≉−ली दमदनी । दसाइ:~प्र केलीकाण्क रोगा† वि विसे दमाद्रभादी। इमित−वि[मं•] किस्या दमन दिवागवादीः विविद परामृत । इसी-दि दमदाकाः दम स्मानेशकाः गाँवा परस भादि का दम श्रीयनेवाकाः दमा रीगते प्रस्त । भी फिर] मध तरहका मैना। इसी(मिन्)-(१ [मं] शमनद्योत्मः निर्देदियः। द्मुमा(मस्)-द [स॰] मरिन ! क्रमेबा १ – पु॰ समन क्रमेबालाः मिटानेबालाः ब्रह्मेबालाः । इसोदर - द दे 'दामीदर'। सम्ब-दि सि दि 'इसनीय'। प्रश्वद्व वैक भी पीस नाइने थोग्य ही गवा ही। इप−५ [सं•]दवाः इयमीय-दि [सं•] दवा दश्मे बीग्य ! ह्या-स्री [मं] रिसी विषयके यति हरवर्षे वाषक होने-बाला सदाप्रमृतिका भाव मी बसका बुन्छ हर बरमेरे किए प्रेरित करे करणा अगुद्धा रहमा दक्ष प्रशासनिकी यक राजा जिसका विवाद चमेरा हुआ था। -कर-वि दवानु । पु विषा- कुरा-कूथ-तु तुवरेशा-दक्ति-मी दवापूर्व यद्दे, बन्गामरी रहि। - निधान-पु दवाका मांगर वह न्यक्ति विश्वमें कृट-कृत्वर हवा भरी वाँ । -मिथि-पुपरमधरा दे॰ 'त्रवानिवान' ।-वाच-विश्भी इस वरने इ थान्य ही जिसपर दवा बी जा राधे। जिसपर किमीकी क्या थे। - बीर-प्र वह नावक जिम इ सम्पर्ने देवा करमेका अधिक लगाह बाहबह सायक जिसके इत्यमें देश करने समय मधिक एरसाई भर आना बीर भीर रसका एक भर । —श्रील-दि जिल्लका रवमाव दवा बरनेताका जी शन्त क्या किया करनावी। -मागर-५ दवाग्र व्यक्ति। इमानत-१९ [अ] ईमानदारी गमार । -हार-वि० हैमानदार !-दारा-धी है। दवालन । द्यानार-म हि दबाई शता क्वानुक ई'ना । इवामय-30 [4] बरदबर । दि हदाने पूर्व कर्नत

lc-w

दयार-पु॰ देवदार । # वि॰ स्वाह्न । व्याह्र-वि [सं०] मिसका इरव दवासे हवित हो। दयाहा। वयाक्र∗∽वि॰ वे० 'वयातु'। क्याल-नि [सं] क्रमानुकः। दयासंस ।- वि॰ इवानान् । च्यावना -- वि॰ दयनीय, दशके बोग्य । वयावान्(बत्)-वि॰ सि] दबाह कृषशुक्त। स्थि। ⁴वयावटी ।} द्यित-वि॰ [सं॰] प्रिय, मननादा। पु प्रिय व्यक्ति पति। दयिता~की॰ [सं॰] पक्षीः प्रेनसी । द्विरमु-वि॰ [तुं] दयाशीस्र । वर-पु॰ [सं] मना विदारका गहबा। कंदरा, ग्रहा। संस स्रोतः । - कंटिका - स्ता सतावरः । - तिमिर-पु• मन जन्य अविकार । ⇔क्⊸वि+ सर्वजनकः । पु. सिंदूरः भयः ण्ड देशा ण्ड व्यक्त वाति । -बर-प्र विभावा संदा पांचक्रम । बुर्≉∽पु॰ दस, सैमिकों या पाश्रमरीका समृद्दा रैंस ≀ स्तीः मान गौरन, गरिमा महत्ता । नि अप भीता दारण करनेवाटा (समासंतर्मे)। -कटी:-वंदी-स्तं: मान इस्रामा । दर⊸धु [फा] द्वार, दरवाबा फाटक, वदकीव । अ० में, अंदर । -- असळ--अ० अधनमें, वास्तवमें । -- कार-वि० आवस्त्क, बसरी । -किमार-विश्वस्ता, सुगा। सश बगलमें। एक तर्थः। -कृष-अ पहाव बरलते हुए, वरावर जागे वहते द्वयः।—सास्त्र-सी० दे॰ 'दरन्वास्तः। ~शाह~को चीन्त्रश (श्राहो) दरवार~पयी सहैमा शासना नमदो बरगद मॉद⁷-दशैरा मददरा मत्रारा मरिक्त !-- गुह्नर-- विश्व अक्रम !-- सर-अश्वरताम-सरवामे, प्रतितृह । −परवा−व० परदेको भोटमँ, ग्रुप्त रोतिछे। -पेस-अ सामने आगं -बान-पु॰ द्योडीदार-फाटकपर रहनेवाला श्रीकाचार (-वामी-न्या । दरवानका काम या पर । -धार-पु॰ वह स्थान वहाँ वादशाह या सरदारकी कवहरी समझी हो, आरपानमंदव राजसभार हार, दरवाता, स्थोरी १--व्यारी-की हिमीके पान वा अकर देरतक वैठने और राजामद करमेका काम। -- विकासी:-- प्र दारपष्ट क्योदीदार । -- बारी--वि॰ वरवार-वंबंधी, दरवारका । पु बरवारमें सुन्मिलिय दीनेवाला स्वतिः, रावसमादा सदरद ! -- काम्द्रवा-पु एक हाग !-- वारे आस-पु वादग्राह वा राजाका वह बरबार जिममें सर्वसायारच शुम्बन्ति हो शुर्ने । -बारे ह्यास-इ नारशाह या राजाबा वह नरवार दिलांग विने मुने कोन ही सम्मिनित हो ।-माहा-पुर मानिह वेगम तनस्यादः। —सियाम—पु शेष सायः। ध वीचमें भीनर। -सियानी-विश् मीतरी अतिरहा -इष्टोक्त-मार्थे दर्भस्य १-इस्त-भ भाउतम वर्गमास समवमे । गु॰ -गुहरना-टोड देमाः बाद णानाः मात्र कर देना । दरक~को दरवनेकी किया। दराठ चौर। वि , प्र

क्रपास ।

-पति-प्र प्रैं। धका बसवान् प्रशा वारेश । -पाछ-पु सर्व। -प्रणी,-कपु-पु॰ तुर्व बाब, मगर।-बस-पु॰ निमें संबंध पानेवाकी राशि । वि छ है-विह, नम्या, तुन्य पृथिद, अर्थन मीन ।) −भृति−पु≈ दैनिक नननपर दाम दरभेशना महदूर । —श्राणा-श्र<u>यम्य</u>-पुर्वे भार, स्प्तर् । – सक-पु॰ माल, महीना । ─मान-पु॰ ग्रॅडियमे भ्वॅल्टकडे समबद्दा मान ! -मुग-पु॰ प्राप्तकाल, सदेसा । -मूर्या(र्थव)-पु॰ वर्षायमः। -यीवम-पुमध्यादः। -श्य-पुरुश्याः भारः, मणरः। –शङ्क –शातः-पु॰ सूर्वः। –शाता–पु॰ गूर्व। -रास-[दि]-रेम०-भ स्रीन, सर्वता । -- ११-५ मंद्र्या सार्वक्षक, भ्राम । सुक -क्रमा-भिमी तरह ममय बीनना । -कादमा-दिमी तरह निर्वाह बरना । -हो सारे दिन्ताइ वेदा-दुन्सरी प्रवचनाके कारण दीश दिकाने व रहना !-की तारे नज़र आवा-बन्द गंत्र नदर बानाः भीर अंधदार बीना । 🗝 दिम रातको रात न समझमा-दाम दरनेकी धुनमें अपने स्वारथ्य आहिद्धा ध्याङ म करना । नद्धी रात कहनान उट्टी शत बहुना। −ियनमा-प्रनीदा करना । -चामा-बरवके दशाय एवंटा बादाएमें दुछ और उपर भागाः नर्गापान होना । --चडाना-गरेरेडा समय निज्ञात । -चरे-छनेता डॉनेड आही ^कर पार । -द्वपना-संध्या होता, स्वीत्य होता । -इसना-न्हें दा भरतायसगामी दोना । -ददादे-दिनमें सुने तीर सुने राजने । - बूना, तत कागुना होना या महमा-गोमनाधे और बहुत अधिक बचाने करमा। -परना- "न निवत करमा तारीस मुक्टेर करमा । -- भरामा-दिन नियव करामा वाधेन हक्ष्रेर करामा ! -निकलमा या द्दांना-ग्वीरव दीना, सवेश दीना। −फिरना−मने रिम भाग सुमके विभागा - परमा-दे 'दिन परना । डिबॉड−र [गं] भेपकार । दिमांत-पु॰ [मं॰] संप्ता साम ह fenfen-ge [ri] wente t दिशांब-दि [तंक] विने दिल्की कियो मेरेता ही रियोष । चु चन्द्र पार्ट । दिवाहरे-अंति है 'दिवाद । दिमाई - भी प्राप्ति कानतानी लिनी भीव- वर्गे बाल प्रीडि निगर्र ~गर र विमाणम-५ (१)] प्रतासाथ करेगा। विज्ञानी-न्दीर में ब्राहीका वक िलका काम का अवस्त । विमाण्यम-पुरु [ते] मुखांत्य १ दिवादि-३ [मं] क्रज्यहरू गोरा । दिवाचीम-५ [१०] ह्वे । दिनाम-को ५६ भन्दिन ला। रिनार०-५ [teri-3] रिशाग-⊈_ f=[441-+) रिनिषर+-9

दिमी−नि॰ बदुव रिमेंका प्ररामा, ब्रम्मेन । दिनेर=-१० श्र्यं । विनय-पुरु [मंरु] नुवा भारः, मरारा ियदै स्थान हरा। दिनेसारमञ्ज-पुरु (से] देरु '('मदरतबद । दिनसारमञ्ज-न्यो॰ (4॰) वनुनाः शास्ता । विनेश्वर-पु=[सं] दे 'रिनश'। दिनमञ्जू देश्भीनेश । विमीची-सी एक दीन विमर्वे मुप्ते प्रदान्न रहा दर हिसाई देवा है। तिपतिब~ली॰ २० 'दीमि । विषया -- अ कि: देशोपनान दोना पमस्ता। दिपामाण-अस्ति भगदमा । ए० दि समध्या । दिव•-यु भिय परीदा । निमाक--प्र देन दिमारा । -हार-दिन देन रिमाप दार'। विसाश−षु [म] सिरके भौतरका नृशासामान वेग मस्तिष्य नुद्धि समहार स्थिमाम । - चर-रि मा बारी। शीवरी पार जानेशका। -शार-रिश् मार्न धुमस्त्रात्त्रः पुढिमाष् । अभिमानी मगरर । -शारीप भी दिमायदार होनेस ग्राम । +शिशम-१० हैंस्ट्री म् • • भागमानपर होमा • नागरिक मनियान रोगी। -न्यामा-बद्दत बरकार क्षरमा । -हान्यी बरवा वि अब्देशवदान सम्रात **वड काना**।देश दियाद सार्गाः —चन्ना—भावविद क्रियान दोना । ≔चादवा०११ श्मित शाना । --बीचे क्रमञ्चयर क्षीमा-वर्त म[ा]ड यदंद होना । -में रासार होना-मरितप्दर्य भेरी निर्म दोना १ -सातर्थे बालमानपर द्वामा-१९७ म⁴र्व थमंत होता ! विमार्गे-वि दिवागरारः विमानदान दिवान गरेवी। दिमात् =- रि की माइन्मी शना। वी मालाओ राजा। रिमाना=-रि रे शेशना । रिषर-मा १ र शेरा । दिवरा १ – पु दीवाः रह सहरात । दिवा-पु॰ वे॰ डीवा । -बर्ता-भी॰ दीवा प्रशाही बार्य । न्यासाई-मी व्यामित श्वा अपिता लगचर बनावी हुई धीरी बराबी मीली ही रहा ने जल वहती है। लंदरीया होता मनत जिनने होनी लेतीर रधो १६मी ६ ३ हा०-समाई सरामा-भाग अगन्ते । दियानग∽क्षी < देन्न । न्यार∽दि हैं[‡] दवाअपदार । –शारी-भी दे । वालप्रपारी । विवास-प्र क्यारा क्रोग्रा नहा fattite-de untant ! fter -y & free 1 दिसम-५ (कार) ६ १६३ था मिका हो। जिसमें भगी है। कह म म 1 दिश्याम'-भी रिकामा हित्रमणीर-पुनिश्चित्र देवाओं दिसर्पर्ध fan wat sta a 4't my fy ter fithe"

वरी-सी॰ मीटे स्ताँका पनः निष्ठातमः, शतरंगीः [फा॰] ररामको एक प्राचीन माथाः (छं॰) बंदरा, शुका, बोदः सर्थोका एक मेर्। −भृत्-पुपर्वत, प्रवापः। −शुप्त-प्रयाका हार ।

दरी(रिम्)-वि [सं॰] कायर, टरपीका विदारणशीक। वरीप्रामा-प्र• वह यर विसमें अनेक दार हों।

क्रीचा-पु • [पा] ग्रोश दरनावाः शिक्षाः गोधाः। इरीची-मी छैटा दरीवा खिइकी।

द्रीवा−पु पासका वाजार ।

इर्रेटी−स्राथनाय इस्तेकी पाकी। वरेंद्र-पु∙ चिं} विष्युका संखाः

इरो≰-पुवदादन ।

हरेता-पु॰ [ब॰] फलाला, खेरा प्रचान्त्रोर क्सर,कोणांधी। दरेश्मा-स॰ क्रि॰ रगक्के साथ मक्का देमा तीन जावात ध्रमा ।

हरेरा न्यु रगप्त औरका धनकाः भावा नवाबका छोड़ । परेस−सी एक धी" ह।

दरेमी - स्रो अहर-होटकर युक्त अरमा। समतल करनाः सवाना किस्मि।

ब्रिया•--पु दरनेवाकाः रकन करनेवाकाः नासका भपद्यती ।

ब्रोता-पुर् (संर) शहत्य, विध्या शुरु । −इसफ्री-सी

श्रम रुक्त । । १०११म • ३ • इ-१तारिह

व्रोव्र-पु [मं] पासाः वाकः जुनाः भुनारी । दर्ज−को दे 'दरव'। वि [भ] क्षिया हुआ, लेकिन बरिबरिगत ।

दक्षम∽ि वारइ । तु वारइ(वरतःओ)का समाबार । क्जो-पु॰ [म] वारतम्बद्धे धरिक्षे निर्वारित स्वान श्रेषी, बोदिः बोम्बताके अनुसार पगर्रके किय निर्धारित किया

गया निपार्थनीका वर्ग, कक्षाः वद औहहा। बालाः। পাৰ প্ৰসা ১ इर्जिन−मी दर्जी वाति धे भौ: इधी छी ।

दर्शि-त (फा॰) करहा सीनेवाना, वह व्यक्ति जिसका व्यवसाय करता सीना हो। मुख्यको स्पूर्व-४१ सरहका माम करनेवाला भाउमी ।

वर्ष-पु च्या] पीता व्यवा। यह, दुःस तदलीका तर्ते रदमा महानुभृति। धीक। -क्षेत्रेज्ञ-वि वर्ष बढाने-शका मनकी व्यक्ति करनेशना । - आमेश-वि दे॰ दर्शनीय । - नाक-दि द है थरा दुना । - मंद-Ro पीटिन जिमे पीडा श्रीः इसरेकी स्ववानी शमदाने नामा, करमाधील इसर्छ । ~(हें)हिस-प् PPR I

दर्रर−4ि [सं] परा द्वमा । तु० वहादा गोदा दूरा नमा

दर्रशास दुरास-५ (०) वह व्यवस्था एक वृक्ष । दरेतीक-दुँ[मे∗] भ"का बारका यक नत्त्वा वाथ (ग्रेक्ट्रिक्) ।

बहुर-६ [६] भेन्दा रक्त बाजा। देवा रक्त वर्तन भी सत्य परितरे समाव है। बस परित्रा निकायों में छा

शगावेदी वादाणः एक सरदका प्यावतः भागसमूदः जिलाः प्रीतः, व्यक्ष राक्षसः। —चक्कत्रः,—पर्जी —सी प्रासी वृटी। ~पुर-पु गाँसरी माविका सुँद ।

दर्वरक-पु [सं] मेरकः यक राय ।

ब्रह्म --पु• [सं•] दब्दू दाद ।--ग्न-पु व्यक्तर्रं र ! -रोगी (शिम्)−पु॰दे चेंदुण ।

बहुण, वर्षण-प्र [तं∘] वद म्थकि विसे वादका रोग ब्रमा द्वी ।

ब्राई-सी० [सी०] दे० 'दार् '।

क्ष्रें~पु• [तं•] विक्तका वद शत विसक्ते कारण मनुष्य इसरोंकी धवदा करें और ग्रन्त, स्वामी राजा मारिकों मी कुछ म समझे अबंकारा वर्षेते शरपत गर्वः सुगमक कलारी। कम्मा। वश्य बाह्यताः शरसादः !-करू-नि॰ दर्पे मरी नार्ते भोक्नीनाला । --विद्यद्-वि दर्ग इरण करने बाला । न्द्र न्हा(इन्) न्द्रेशे विष्यु । न्यप्रकन्द्रश थक वास । नद्व नदर-वि॰ दर्प सह करनेवाका ।

इर्पक∽4ि [र्स•] दर्ग धरपत करमेनाका। पु कामरेना दर्ग ।

दर्पण∼पु [सं•] शाहति देखनेका शोधा आर्थना, सुकुर, भारती। नेत्रा एक पर्वत को अनेरका निनासरमान थाः प्रक्षित करनाः गर्नश्रुक्त करना । वर्षित वर्षी(पिन्)-शि॰ [सं॰] वर्षत्रक, महंबारी ।

वर्ष - प्राप्तः, पन-बीकतः करी पातः (सोमाः चौरी व्यक्ति ।

दर्वान-पुरे 'दरदान । दर्वार-प• दे 'दरदार'।

दर्भ-पु॰ (ते॰) इथ, टामा कुशासन ! — इसुस-पु 'यह कीसा । ⊶केतु∽दु राग वनकके भार कुछस्त्रता। —चीर−पुदर्भक्षानमाद्रमानसः। –सरुवक−पु दमका गोष्टा । −पन्न −प्र व्याधः, वर्षेतः । −प्रप्य−प्र यक साँपा दे वर्षकृत्यम्'। - बहु - दुः वर्गस्य बना प्रवत्ना । -लवल-पु॰ दर्भ वा वास कारमेका भी बाद हैसिया व्याि। -संस्तर-तु कुछका विरवर। -सुची-स्रो बामकी मोकः।

बभट−त (सं॰) पीतरका पद्मंत कमरा ।

रमेण-१ (स॰) कुलको पराई। दमीकर-तु (वं) धामका नीकरार गोका।

वर्धासम्बद्ध [सं] कुदाबा बना बना भाएन अधासन । त्रमोद्धप~प्र•[म] मेंवा

वृधि वृधी(सिन्)-तु [शं०] एद करि । इमेंपिका−सी [मुं•] बुधसा देहन।

इर्मिपान-दु॰, अ रे॰ 'दर्भिदान । ब्योब॰-यु दे 'दरिना ।

वर्गे-५० मोटा कारा। रनिश भारिक्र वानी जानेवानी बॅकरीकी मिटीर (का) थी पहारों के रीयने डीनर आने माना सेन राज्या, बाटी। पराए, बर्जा । श्ररीमाण-भ कि दे दररामः ।

वर्ष-व [मं•] आदवानी। राष्ट्रम दिसा करनराजा। दिस नेपुर करत्या सीपका कमा शीर भीता महाभारती

वीन वर प्राचीन बंगनी वाति ।

दिही-दिम्य विसमें दिस्ता क्या हो (दिवाइ) । दिस्ती-सी वमुनाके किनार बसी हुई छथर भारतकी प्रसिद्ध मगरी की ब्यामक्त भारतथी राजवामी है (यह हिंदू राजाओं तवा असनमान बादशाहीने समबये थी भारतको राजवानी रह मुद्री है)। -बास-वि० हिस्पी-काः रिस्तीका बना दुना । पुरु दिस्तीका निवासी। यह विशेष महारका जुना । दियंगत-वि [तं] स्वयंगद । विषंगम-वि॰ [मं॰] स्वर्गगामी । वित-पु [मं•] रवर्गः सावादाः दिनः वमः मीटवंड पक्षी (१) । -राज-पु॰ इंड् । विषस−ष [सं] दिन, बार, राज । ⇔क्षेप्र०–पु० है पित्रीय । -कर -नाथ-पु॰ स्रोत मदार । -क्षय-पु॰ न्यांसा। -मतां(न्) -मणि-वु स्यं। -मुख-वुः प्रमान सुरह । -सुद्वा-न्दी दिनमस्त्री सम्बद्धी, सद रिनदा पारिमधिक । -विशम-पु सार्वदान । -संज्ञाक —प्रतिमारका कृत्य । —स्वष्य —प्र ४ 'रिकास्वत्र' । दिषमांतर-वि [गं०] जो सिंद वद रिम्हा हा । दिवसस्र, दिवसेश्वर-बु॰ [मं] गूर्व । दिवस्पति-५ [म] इंड्र । दिवस्पृक्(स्)-पु•[सं] वायम-स्ववारी दिन्तु (क्रिकेट

मिलको एकन समय हरू चाँगमें स्वर्गको छ हिया था। । विश्वाब-प्र शि] बालू । वि विशे रिनवे रिलाई स दे। दिश्रोवकी दिश्रोधिका-मी [नं] छएरर । दिया-पुर्शी] जि. नासम्बन्धि दोना विहात । -कर-त न्दी मदारा कामा न्दीमुगी नामका कुछ । -कीर्ति-पु+ बांदाका मारी कानू । -कर-दु नावाना एक नधी स्वामा । - चारी(रिन्)-निन, पुरु रिनमें मंबरण बरमेराला । – पुष्ट – पुरे । – मीत – मीति – प्र वन्ताः रातमे शिक्तदेवामा यह प्रकारका समझ चार। = समि = <u>व</u>० पृथे। = सम्य= <u>१</u> सम्याह शोस्टर। ~राध−म रिम√ल। −क्स्−<u>ड</u> न्हें। –हाच− विक दिलामें सीवेशाला । - वस्ता-प्र दिलको कीका, विषयं निद्राः मनीहराज्यः इत्यार्थं दिनाः। [मुरू नामम दैलना-इदार्र (६० वनामा १) - स्वाप-५० (दशकेन्द्राः **明**明 [] दिवादम-पुरु [मंग] श्रीमा । दियातमः व [मं] रिज्ञाना दिवान-पुर दें स्थान । राजादा ग्रीश मधी समूद । भी सर्वाता- दिश्यो दल दादि है दिवान रागी दुनी विश्वासाय-वि दे "वेशासा ! शा कि० दे वेशिकाणा । विवासी!~सी! देश रोवाकी । रिवाधिमारिका-भीत्र (संत) (रसने भारतगर, सरवेशको । 4-4411 विकार!-मदे है जीवर । रिवारी -मी है 'डीवन्ये ह दिवाल १ नाथे हैं भी तर्रा रिवासा-मु सप्रदेशनाधी वर नद्या दिसमें कोई स्वर्णन भवता । ध्वा भारता कर में बुका गर्वे। श्रीता अवाध ही है

वाना । सुरु -निकनना-शिरामा होता १-विहानस या मारमा-दिवाभिया होनेही बूदना देता। दिवालिया-दि॰ बिस्टे शस मध्या कम शुक्र दे लि कुछ न रह गया हो जिलका विश्वाना निर्मा हो। दिवासी-सो० है 'शेवरो । विवि-पु • [सं•] मीहरंड रही। विविश्व-पु [गुंग] रेपहा। दिविद्या-की॰ [मं] प्रभा दीति। दिविषद्(त्)-पु॰ [सं॰] देशा । विविष्ठ-पुरु [संरु] देश्या । दिविश्य-पु॰ देवना । विवया-पु देवेपाना। दिबोदास-पु (सं॰) महामार्थमे वस्त्रिन्त इन्हेरे स रामा भा धर्मनरिके सरनार माने माने है। विचोद्धवा-श्री [लं•] रकाववी । दियोपका-मी॰ [मं॰] हिमर्चे (ग्रह्मानी शस्त्र)। दिबीबा(क्य्)-९ [मं+] स्वयं दिशम दर्शन देवनाः बान्ड पद्मीः मधुमनकोः दिखः हासे। विष्य-६० (वं०) स्वर्भनंत्री स्वर्गीम् अन्यसीम् अर्थः क्किः सीकार्गातः देवे।विनः यसक्रीका सीविषुण वर्षः र्देश्ट मध्य वर्तिसा हु॰ आसाश्चर्ते हीनेताला करण-विधेवा व्य परीक्षा विक्षते प्राचीन बातमे अप्रार्थके छरोवना का निर्देशनाम्हा निर्मेष ६९५ वे (१०६ १व तेर र्वादन है)। शायदक नान भरीदेश हह-सीक्षेद्र शहर वैने~रामा यथा शास्त्रकार तान प्रदार4 का दे। स-बबा दरिनेशमा धाक लीमा प्रमद्धा रह भेरा कृति। दीनेवाली दृष्टिमे श्मामा शायदेखा महामेश दुर न भविष्याः मानीः वद्या जीताः वदः गरीतः हुन्। नवर-५ महाभारतमें वां 'त बढ़ प्राचीन वैद्य । - बुंद्र रू॰ इ.स. मर रेप्ट्या यह होता - क्रिया - मो िय सोरा हे रे का कार्य । -शीव-युक स्थाप गोपदा प्रदी दशका । प र्वाया-स्थेत वही बनावया। यहा भेवा नतावव-उर मंतर्व १ – बाह्म(स्) – दि+ (१४४ हेचो राष्ट्र) होता अस्य बालाः संवा । पुरु रिव्य धीरः बीरः बहमाः एव स्थाप्तः । -तेश(अस्)-को अण् शृते।-शृती(सिंह)-रि अनीटिक कारोंद्रा हका !-इहि-मी श्रुप की मार fin e's 1 -queq-y with feles fire bette गर्वाहर का प्रान्थाना व तु । - मुद्दी - भो भारति में । ~मारी~भी आमरा(देवर्) -वेबायुग-९ पेर क्षारी-मेंदुर्व बेर्लाव । पूर्व, स्पृष्ट होराहे देवी वैदार बिया दुशा धनावृत्र । -पुरर-पुर बारोर बारो -पुत्रत्-श्री सहार्गाता शादश रीवा । -पुनिसान अन्य असार । —बाह्या—स्ट्रीत बतावत हेए**न** दह द्वानित जारे । अश्व-पु विवासीय अपि पुरु देवरा≒ का विश्वात । – हस्य – पु. प प्रान्त – हरी के मुहेरण १ – वया - पुर मुदेश प्रश्ना रह गारि कुण वर्षकृती । हिन्न दिनारे स्थार क्षण प्रयाद किया है । —बाबद-पु अन्द इन्दर्भा + शहित-म विभाग नामान्यु अध्या देश नवी साम

युक्ताकी-सी दकालका कामः व्यालका काम करनेके काडेमें की मानेवाली रक्स । दसाद्वय−पु[सं] तेबपता । वृद्धि-सी [मं] दे॰ 'व्यनी । द्मिक−५ [सं]काड। वस्ति-दि [सं॰] रादा, कुबसा,दवाबा हुवा, वराकृति। -वर्ग-पु दिंडुमोर्गे ने शहू किन्हें अन्य वादिनोंके समान अभिकार प्राप्त नहीं हैं। इक्सिया−पुदला हुवा असाव को दरदरा हो। इसी(सिन्)-नि॰ [मं] दलमुका पर्वोबाका । पु बृक्ष । वस्त्रीख-गाँ [अ॰] दुक्ति, वक्ते वहस् । दस्मंथि-पु॰ [सं] सप्तरत्रं छतिबन । बुद्धेस-पु सिपादिबोंने सजाबे शौरपर कराबी जानेवाकी दरी क्यावर । सुर -बोक्सा-समस्ते किए क्या क्या बरदी आग्रा देना । वसैना - प्र माधक, निवंता। इस्म-पु [सं] का परिवाः थीखाः वेर्रमानीः वाप ! दक्ति-पु॰ [सं] क्षितः रहका बज्र । वसास-प [स] हे 'दशस । व्वेरी-सी॰ दे॰ 'उँवरी । द्य-पु॰ [म़॰] बत, बंगमः बंगकमें स्वतं समिनाकी श्राम, दावानकः भरिनः क्याः पीड़ा । -व्यवक-धु पदः गुणः। — दृष्टल—पु दे॰ 'दवास्ति । — दान →पु भवतमें जाग स्थाना । इषयु-दु [मं] दाइ यक्षमा मेतान ।

इंबत-पु• इसतः, दीताः दि• दमन वा नाम्रकरने-दाना। इंबनपापदा-पु पिच्यापदा। इंबनपापदा-पु दे दीमा'ः च कि बकामा झुकमनाः

द्यमीरं नहीं है 'ईंबरी । द्रमरिया॰ नरी है 'इबारि'।

क्या-सरीक पातानम् (का) औरत, इकामा करवाए. विक्रिमा शमनमा वपाता शैक कामेन्ना सरीका, रास्तवर कामेन्ना वपात्त । — रामा-चु वर वसम वहीं वैचनेके मिर दशा रासी ही भीतवालय । — वर्षम-चु त्वारक-मी रसाम विक्रिमा घण्यार। वसार्थित्यों है दशा !—वामा-चु वे दंशायाना ।

इवागि द्वागिव॰-सी वे 'वशिन । प्रतानि-सी [सं] वनमें स्वतः सम्बदाले आस प्रतानि-को वाजस्थ

र्पात-पी [म] स्वादी रम्भीका बरवन मसिवान मनिवान।

र्वाम ० – पु पद दक्षिशार – 'तीप मान अव रहकमा औरता वरी दशान – सुभान ।

इवाम-- इ. [१] हे दे द्यामि । इवाम-- व. व. इवंगा । इ. इमेग्रामे, मानाव । इयामी-दि रवानी वादयो । - बबोबला-- इ. ब्रामेन-श्र द प्रदेश श्रिमे मालगुजारी व्येग्याके हिए निन्यत वर दो बारी द उसमें क्यो वृद्धिकारी होतो । इवार द्यारिक-को दे द्यारिक श्रीवा

इश(१)-वि [सं•] जी और एक । दु॰ दसकी संस्वा, १०। –क्टि−पु बद्यानन, रावच। –•बद्दा•−पु• राम । -- • जिल्-पु॰ राम । -- कंपर -पु दे 'दण कुठ ।-कर्म (ग)-पु॰ गर्माषानसे स्कर (असिप्टिकिया वा) विवादतक्ते दस कर्म-गर्माभान पुंसवन, सीमंतीप्रवन, बाह्यसम्, निष्कामम, शामकरम, भवप्राधन चूरमसरम, उपनयम तथा निवाह । -कुळाबुक्त-पु॰ तंत्रमें गृहीत दस कुक्ष-कसीका कर्रव, वेक्र, पीवक, ग्राव, नीम, वरमव, ग्≆र, ऑवस्य और इससे । —कोपी –सा एक राह (संगीत)। -क्षीर-पु॰ इस बीदी-याम भेंस मेड़, कारी, केंटनी, वीडी मी, इनिमी इरिनी मीर गवीका रूप। –शाव•~दु दे 'दशगात्र'। –गान्न-दु सरीर के मुख्य वस अंग चृत्युके दसवें दिन पूरा द्रानेवाका मह बीर्व्यदेशिक कृत्य (रस कर्मके अंतर्यंत प्रतिदिन दिये गर्मे पिंडसे क्रमस प्रेक्डे दस गार्थी - नंगींका निर्माण द्वीता दे)। -प्रामपति,-प्रामिक,-प्रामी(मिन्)-प् **प**र् विसे राजको भीरसे इस गाँबीनः शासनका भार शौपा गवा हो। - श्रीय-तु रावग । - दिक्यास-तु दै 'दिक्कास । -हार-पु दे 'मंगहार । -धर्म-पु: मनु बारा तथी वर्गोंके किए उपदिष्ट दश्चनिव पर्म ।-नामी प्रकारावार्वक रस प्रशिष्वींसे प्रका सम्म्यासिवीं-का रक संप्रदाद (इसीक अनुसार सन्न्याधिवींके दस मद-तीर्थ, आजम, वन, भरष्य मिक्ति एवंत, सागक सरवती, भारती भीर पुरी-दिवे गये हैं)। -पंचतपा (पस)-इ दर्शी इंडिवॉकी वसमें रखते हर पंचादि त्रप करनेशका तपस्ती । -प-पु॰ दे॰ 'दशमामिक'। -पारमिठायर-पु• पुक्रदेव । -पुर-प्र व्यक्त तरहका सुर्गवित मौथाः माध्यक्ता यक प्राचीन श्रंड जिसुर्मे इस जगर समिकित थे। -पेय-पुरक गाग। -वस-पु पुरुषेत् । −बाहु−पु शिव । −सुका−सी दुर्मा । -मृमिगः-मृमीदा∽५ ५वरेव। -महाविधा-भी दे 'मदा विधा । −मास्य−वि ञो वस महीनें/नद गर्भमे स्थित रहा की ! − झुप्त−तु रावम । ∽ झुन्न,− अप्रक-पु॰ रस योगी-हाथी, याहा छैर गाद, भैस, भेंद्र स्वरा गया अन्य और सी-बा मुत्र !-सस-प दश देशे-शरियम पिछवन छोत्री बटाई, वश बटाई, गोधक वेस धोनापाडा गंबारी गानिवारी और चुठा-की बढ़ वा छात्र । ~सीसि~पु रावम । ~हम-पुः अवीध्याके एक माचीन द्वंबंधी समाद में। रामके विशा वे !- ब्युत-पुराम !- रहिमसत-पुर स्वे ! - राग्र-पु॰ दस शरीय समाप्त क्षेत्रेशना एक वाग । - रूपक-पुरु यह श्रेथ जिम्में रस प्रदारके रूपशेका निरूपण है। ~रूपसृतं~पु विश्वा -वशः -वदन-पु रावता -बाबी(जिम्)-पु घडवा (विस्तुद्ध रूपमे देस धीहे शे।-बीर-तुस्क सदा -प्रज-पुश्सक्ति। -शिर -शीर्च-इ शब्य) -शीरा -सीम -- प्र स्तरम ।-स्पेदम-प्रास्त्र राजा रक्षरम । -हरा-प्रात्मा (रम पारीका दरण बरनवानी) क्लंब हाडा दशमी (रम रिज गंगला अन्य दुवा था और मेतु (बचे रामन शायका ब्री श्वापना की थी। विश्वपादश्रमी । स्त्री । र्मना ।

वीदार-वीसाध दीवार-पु (दा) देह चेहरा: मानारा। दर्शन सावा-कार । दीदी-सा• ग्रंश गहनकी मंशियत ब्रहनेका शब्द । वीधिविनम्बं (वंश) दिख्या र्वेगळी ह दीन-वि [मुं•] भवदीम, दरिह, नि"मा विका, दुर्वेदा-मन्त्र। न्यमान दशामें पत्रा दुशा दुःशतूर्व करना निष्ठ क्ताने मरा दुआ। पुरु तगरपुष्त । -श्यास-विन्, पु [िं] वे॰ दोनप्रवानु । —वचास्य—ि वोगीक दवा बरनेवाचा । पु॰ परयेवर । -र्वपु-वि॰ शोनीन्द्री सहा-यता रहा करनेवानाः पुरु वरमेवर । -- स्टोक्स--पुरु रिज्यो । ∽शरमञ∽ि बोलदयान् । र्शन-पु । [४०] धर्म समहर, रंप । - इस्राही-पु सद ररदा यमाया इत्रा एक मक्दर जी कुछ हो समयतक पन्कर रह गया । -तार-वि अपने वर्गमें आरबा राजेशसा, वर्गन्छ । "बुनिया"मा श्वतीय हवा परकोडा−द्वजी≕में कोव-परबोदा दीनक-दि• (में] द्राधान, रोन । दीनता-भी (मं } अवंदीनता, बरिहता, विश्वना, बरकामा । मीनताईं • − म्यो • दीमता ३ वीमा-मा॰ [मं०] मृतिका, शुरिवा। दीनामाध-४ दीमोढे मान-रशमी १८३० शहावड परमथरका ग्रह साम । षीमार~५ [में] सानका भूषमा निष्टका परिधार। मोनेबा एक सिवडा जो बाबीय समयमें बडिया और पुरीको यसमा भा दिश और काल्योभ असमी हीत भीर मुख्यमें भित्रता होती थी); होनेही सदा अरार्धी ह र्टीर्पकर−५० [i]+] <u>त</u>्रका २६ व्यक्तार । र्शय-पु॰ [मं] शेवा, विरागः निश्ची कुष या समुत्रावा। बभावस मेर पुरत विदीयनिः = डोर । - सक्तिकः -कसी~मी श्रीपदकी सी । "कास "९ वीक्ट बनाने शासमया −क्षिप्र−पुश्कामञ्कासमा −भूमी,− मोरी-भी नेपस्य ग्यो। -शव-इ देवशक्ते सामन दोप जनाना । —शामी—स्वी• [हि•] मी वर्षा कार्य क्रीपरा मामाय स्तनेशी दिविदा। -- ध्वत्र-मु ६६४३ शेरा १ ~पानप-मु दोनावपः दीनर १ - नुरर-पु चेराई। हुए १ - माला - मालिक-भी उत्तर इर दीररोंकी वंकि वा अगी। "मार्स्य" सी॰ शेरची। -वर्ति-भी बीदरी बन्धी। -बन्ध-पुर देश 'दीरराप्त । -शाम-म कांग, वानिगा। -शिला-भी॰ हे 'बीस्त्रक्रिया। सम्बद्ध सामस -शंग्रहा-भे व वीषेत्रो दशर । -शर्मभ-व चेवा-भार शहरहा शीरक-पु [नं] दोशा वक मानिक धरा अन्तेर्वकारका रह भर प्रश्ने कर्न-मरनी या जन्देन और व्यवस्था पद हो को दशा भाग मन्ता नहीं दिशायोधी अपूर्ण धी था अर्था नदारी बर्गादे साथ ब्युव्यी *दि*दावरीकी

~साम्या-रीक दीएदारंग रक्षा वह मेर जिस्से क्यान वया बीमाना येल दीना देश रह वर्गप्रचा - सत्य-प्र ६ अङ, श्रायस । दीपकावृत्ति−स्मै [मं] शैसः अञ्चारता **१**६ सेर विसमें क्ष ही कियारत निम्नतिन महीमें की बन करे का एक हो अर्थके सिर्मित विदासरीका प्रथम है प्रमामगा । वीप**तः शीपतिश—स्मैश धमसः शोसाः प्र**नार । दीपन-पु [५०] शीप दरना प्रामित्त दरमप्र नार्थ-किन करना। अधिवर्दमा उच्चित करमा दगरमे पन <u>बुँकमा भवरशिसा भाषती भाषति सामग्री समीहा</u> य्याना प्राधानंत्रका एक मंग्कार । वि. प्रश्लीवत वरनेप्रका व्यक्तिकर्वेद्ध । --शक-५० थीता, प्रतिवा मही अपि-वर्दंद्र धोवधियोंका गमणव । वीवजार-जर किर्दात शेला। धमरूना। सर्घकि पमकानाः मरीत दरमा । दीपमी~×ी (ri] मेथी: अवदायमः शरा । शीपशीय-नि [मं•] ग्रेम वरने वीम्या वर्धाता वरने बीध्य । पु॰ श्रवदायमा यह श्रोदिरमें हिममें निर्मी क्यिनामूच अध्यः भौता और मागर है। दीपोट्टर~द (तं } दोक्यों की ≀ डीफारिय-सी सिंधी शीमधे माँग र र्शपापार-पु (र्स०) गंदर। होपान्विता−भी (शं÷) शतिह सामग्रे स्टानापा बिम दिव दीवारी पहनी है। दीचाराधन−५ [4] भारती वनारमा । कृषिपान्तिः क्षिपान्ती-न्त्रीः (मंत्र) बोरमानाः दीरान्ते । र्रापाश्चरी-न्यो॰ (लं॰) मह श्रविनी । दीवावन्ति इतिबन्धी-नी [ग्रं]रे दीवानी । वीविका-मी [बं•] एला रोवदा वह शांवदेत बोग्यी विक की (लगासीत्री) शक्त करनेशकी ! वीचित-वि [मं]क्षातं, प्रभानितः, प्रकायिकः वर्धादाः। र्थार्था (चित्र)-६ [तं र] समता दुशा चण्डता दुशा श्रीयो सद-व [4] दोरानी । वृद्धि-दि॰ (ते॰) र रोदिन । तु॰ तुनर्र, छोबा मिना होदा भीवृत्र भारता एवं रोपन -क्रिय-५ दरी मास : -बालि-पुर बर्तिदेश ! दि दिमा बद्राला -जिल्ला-कीक लागे निकासित (का) म्याप्ट करेया सी । -विशय-दुर विश । - मृति-दुर लिए ि जिल्हा शरीर प्रवासूत थी। नामनपुर वेणुवा -शमा(सन्)-म वद शिरोत । -सीमम-1° विकार दिकार ।- श्रीह-तु क्षेत्र । - वर्ष - समि e aufelu i fe fane rord un ert ft लक्षेत्र भी हो। शीमक-५० (तन) शहर्य रोजा मलका एक (छ) शेशीन-इ (व) स्पाति संगुन शरीरान्छ। Vinty-5 [1 147] ment प्रीता-के हिंडे बर्नारको। स्टिमी अनिर्दे अर्थ हो (रे अरमहोस्त्र)। यह रामा दव ग्रामा मनतानम् भूत्वा वाव वर्षः होत्यो दिसा । दि होत MEIGH 1 artem unter action un e et unue : finit-1 e l'ere fore ife font de

7 दर्सीची-पु॰ बार्लोकी एक बार्श मार। इस्तुंदात-दि॰ [फा॰] इराक देनेवाका इसाग्रेप करनेवाका। इस्तंदाही-स्री [दा] इस्तस्य, छेड्छार । इस्त-वि [तं] थीण नहा फेंद्रा या वछाणा हुआ। बर्धास्त्र । पुरु [फा] दानः पंत्राः पत्रका पास्तानाः एक द्दावकी मापः मोकाः तारानः प्रियः मेदमानोको वैठानेकी बगहा प्रवास मंत्री। ताकतः वृत्तीः तीर-तरीकाः पहतः। इसः काम। -कार-पु॰ दावसे कारीगरीका काम करनेवाका व्यक्ति। -कारी-जी॰ दश्तकारका कामा इत्तरी ककापूर्व कृति, दावसे बनावी वुवे बकापूर्व वस्तु ! -ज़त-पु इस्ताधर । -ज़ती-दि॰ इस्ताक्ररपुक्त । -शीर-वि द्वाथ पद्धक्षेत्रीका सदारा दैनेवाका सदा-वक्त । -शुराज्ञ-वि॰ दोठा इथनुरा ध्वकपका परानी चौत्रपर हाथ मार्मपालाः पद्यवी बहुन्धीपर दाव कालमे वाला ! **– इराज्ञी – मी इव**हुटपनः **इवलफ**ीः परावी बहु-नेटीपर हाथ बाकता। -पमाइ-पु निमटा। —धृंद्−पु सिवॉका दावर्गे यदननेका मोनियों और नशहरालका करता । −वदस्त−भ द्वाचीदाध । -धरदार-दि दाश्रद्धा कैमेबाका बाज आनेवाका, विश्वन किमी बस्तपुरसे अवना स्वाय दश किया हो। जो वेशना हो गवा हो । −बरदारी~न्गै दरतवरदार दोमें मी किया, वैदाया द्वीना । — सुर्यु — ली मीव-प्रसीटः भपहरण । -याच-वि हरतयत कम्ब प्राप्त । दस्तक-सी का] वाली परसदाना। मारू भान्कि बानै-पानेकी किस्रित साधा वा खीतृतिः शवकारीका परवानाः माक्यात्रारी वसूकं करमेके किय निकासः गया माद्रापतः रामसः महत्त्वः समन सामील करनेकाशुरू । रस्तरएवान-द• [फा] याना रचनेका कर्ज चौकी बादिपर पैकावा धानेवाला कपना ।

इस्ता—पु [फा॰] बीमार नारियो गृठ वा नेंडा धरलका सुष्मा पुष्पा धेरिकीयो रिणी जावा बरावाडे घीनोथ कर्मीमी गुड़ी मुनीका पुष्पा चराया रेडा रुपाल धेरिना यह बरहा तो रुपारीड लाव बोवा बाता दें। बस्तामा—पु॰ (का] दावमें पदमनेका गुण नारिया नमा पुणा रिकाक दायार पदननाये लेटेकी विरक्ष सम्मार का समा

वस्तावर~दि [का] क्रिमडे सावछ वस्त कावे रेकड । वस्तावड़ा -छी (का] वह पत्र ओ दी या कविक आप मिनीके बीम बीनेवाने स्ववहारके छेपंपत्रे स्टिसा गया ची।

समस्य नवरीरा कियानाः समयः । दश्ताचेत्री – वि वस्तविश्वनांवेतीः वस्तावेशवाः । वस्ति – वि वि वस्ति वस्ति नामकः ।

क्सी-वि का] दावका जो दावन के बाया जाय ! भी छोटा वैदा छोटा कमासः बुदरीका एक शासामहासः छाटा कममहास !

देश्तर-५ [का] रीति गोर वर्राकाः प्रधानीः चान-बादमाः मेव बार्गतयोश पुश्चितः । दश्तरी-भो वर्षे वेपी हर्षे स्वस्त को स्वर्णतीने केटर-केटर

दरम्ती-भी वह नेथी दुई रक्षम जो अमोरीकेनोकर कीश सरी नेवर दुव(जगरी) २१ है । दरम-५ [114] दजनामा भीरा शत्मा अधि ।

दरत-१ [मं] दाई सहिता सन्त बाह्य बाह्य बाह्य बाह्य

रिक एक प्राचीन छोटी बार्डि (मनु) कनार्व वो प्राचीन काक्स यदानिक्षेत्र आदि दिया करते थे। - सुचि-क्षीक बाकुका देशा क्षेट्रापन। - द्वार् (इच्)-पु रहः। बुक्त-पु [संक] व्यथिनीकुमार; गरेन दोको संदका पुगकः व्यथिन। मनुष्कः [दिहर, रुप्तु। वि हिन्स भर्षकर व्यक्ताः। - सुकता-पुरः करियां। महत्र। - सु-क्षीक पूर्वपक्षी संद्रा।

हह—पु नदीका वह मान वहाँ पानी वहुत महरा हो; दीजा की॰ अधिशिक्षा ववाला (दि॰ [फा] दस ! हहक—फी जानका वहकना; रूपट, स्वाला !

दृह्यकण्या जानमा व्यक्ताहरू दृह्यकण्या व्यक्तनेकी किया ।

द्दकण-जा व्यवनाता क्या । वृद्दकण-जा-क कि ज्यद केंत्रते द्वय वक्ना, इस प्रकार वक्ना कि बॉब वा क्यर बाहर निस्तेश तर होता । वृद्दक्रम – पु [का॰] वैशात था गावज रहनवाता, किसान

कारनकार । कि नैवार जसङ्घ जादिकः। शहकामा≔छ कि॰ वस कममें अकामा कि सोच या कपट

बाहर निकंश महसाना उत्तेवित करमाः † श्वानीय मान के जमुसार अंबीको जाना ।

वृहक्राणियतः, बृहक्राणीयतः नती [का] गॅनारपन । वृहक्राणी - पु वे विद्याल ।

वहरू दक्षण-मा अवद वशस्त्रह !

ब्दन-पु [र्ध] कलना, बादा भाग भाषा अभानेत्रका।
यह बोदेवे कलाना हरिया नगणः प्रष्ट म्याच्य विजयभाषा। विवारी पठ तद्दार्थ बंदीः क्षृत्तरः गीनक्षं संनया।
(ब्यो) पद्ध बद्धः व्योतिक अनुसार एक योगः। दि
कलमेनामा दिनाग्रकः। —केन्द्रन-पु पूम, पुर्यो ।—
हार्य-दि क्षीवानिक्षे परा हुमा। —प्रिया-को भार्यः
से प्रशी नाहरः। — प्रोतिक विजयनिक वाद्यः।
सार्य-पुरु वादु।

स्वनहरूँ न्यु॰ (सं) कृषिका मध्य । बृह्वमारं न्यु॰ (सं) कृष्यका वाप दीना, मरम दीना; विद्यमा । स्व कि अकाना साथ दिना, मरम दीना;

या विश्विकरना । वि वाशिमा । वहमायुक् - पु (पु) दाशयुक्त पूर ।

वहमानुद-पु चि] दारापुः पूर्वः वहमानावि-पु चि] दारापुः पूर्वः

वृद्धमिश-म्योः वसनेद्री क्षिया, यस द्वीता । सृद्धमिय-दिश द्वि] अन्ते कीम्या बक्तमे वाने मीग्य ।

पहनायस-षु [र्ष] गर्वकांत मन्तिः भागता रोता । बहनास्का-न्यै॰ (र्ष] स्का तुनाता । बहराट-वि॰ बहाबर कृत्ये नित्ताना दुना रचन्ताः सुपका

दुन्ता पात्रामान् । दुन्ता पात्रामान् । स्टब्रमान्स कि ह्हामा स्टब्स सरमा स्टब्स स्टब्स

इडपडमा-त मि दशमा घरत्र याना नुपस शतना थितीका गर्ने भादि पुरु करता ।

बहर-चु [मं] पूरा भागा शरक (रहा सरका बस्ता हरवता साता ० वहा ईट । ० मो भवक । (४ १४-४, भोगा अर्थन गृथ्या का विस्तारन समत्त्रमें आहे ।

वृहर-पृहर---भ॰ वषस्य द्वार । वृहरमा॰--भ सि है इतना । स्∗िसि है•

इहराकाश-५ (वं) हैरवरा विश्वास्य इन्यांकास र

तृष । - वंश-पु॰ मर्का । - श्रवस - पु शायो । वि॰ विसमा हुँद संश हो । -वर्षिका-कांश मगर । -बर्सा —ती पराद्यां तताः शतालगरडी तताः मोद्रशस्यी । —पृंत -पृंतक-९० दयोगाः । -शृंता-स्पै० देशनिर्मेरी स्था । -वृतिका-सी० व्यापनी। -दार्-पु याद मारू । ∽दास्य~बु॰ सनश पेश साध्या **वे**श -~ शारिका-प्री॰ नीकाम्ठी नामक्ष एक प्राक्षी ।-र्दितिक −पु श्रुप रार्ट (–सग्र~पु॰ बहुत निर्नेतिक चतनेपासा यधा ऐसा यह बरनेशला व्यक्ति जीवनवाँग विया जाने बाना अपिनहोत्रा यस दीवे । -सुरत-पु॰ भुता। -- महस-पु एक प्रशास्त्र प्राप्तवाम । -- सुच-वि० बिसमें में केरी ने बीर दें। दें। वीर्यस्ती । -स्मता-थी। प्रापंक कार्यको देशमें कानना आपन । -सधी (बिन्)-नि की प्रत्येच दार्मका नेरमें बरे, वा आरंध रिने रूप कार्पने स्थितने स्थित समय समावे ।-स्ट्रीय-द्र• ताहका पेर । --श्यर--प्र• यो मात्रामीशाला व्यर । दीर्घा-भा में भि परिनयों, विक्रमा संग सकात । दीर्घोद्यार∽दि [नं•} वने आदारदा । वीयोप्यम-५० [44] दूस दरकारा । वीघीपु(म्)-पु [मं] बीमा। मेमरका देश नार्दिव पारि । दि बीर्चनीरी जेनी भारतनामा । श्रीपांपप-इ (तं) भाषाः यभरा सारो । वि विस्के पाल वदा अस्य 🜓 । र्रापायुष्य-पुर, वि [भे] दे दोपायु । बीय लग्न-त मि] श्रीत मेशरक ! दीपांत्य-पु [मं] हागी। शिक्या व्य अनुपर १ (र निचका हुँद नहा है। । र्रापिका-भी (१७) १६ तरहरा जनासन नारी (उत्तर द्ययो सर्वतररद अनुसार दीपिया ने ० अनुष् भंगे दीनी है); जलायमः एक प्रकारकी नही नान । नीर्धेबार-पुरु [मंर] रह ताबढी बढरी । क्षिप-(र [44) विदारित, त्राहा क्षमा करा हुमाः ररावा प्रमाप्तरा द्वा । इपिका-मा दे भीवह। बीपर-भी दौरक रमनेश नदश मीदे शैनन मारिका 'बारा भागार है श्रीबार-पुदेश दीवा ह रीकाम-५ (यार) यारी दरशर वा सरामन समयाम-मक्ता राजा या गरणारणे रेडका व्यवन संशी वह -पुरन र जिनमें परने नेर्जुर हो १-स्टाय -आनम-पु भारपाच था सामन्य वह बहबार जिल्हे गर्रमाचारण प्रदेश का गर्देश ~हराजा~पु देग्दा शहरी वीप्तेने प्रथम्भाग् कर्जेशे सम्म । ~शामामा-पुर वह शक कर्मभारी जिग्र पत्र शहरात वा राजवी बुहर ही। -शाम-पुर वारण्य वा शामधा वर शरवार विभवे किरेन्द्रने लीव हाँ प्रनित्र हो। र्पारामाग्री-भी थिए दे शेर शास्त्र । श्रीवाजा-(र (पा॰) बन्धक हिन्देल सम्बद्धि नवस-पु औरामा प्रेनेश कात प्रप्ताप सम्बद्ध है पीचारी-को (या) यह अञ्चलन जिल्ली अपने कीर है

वायापद मुद्रप्रयोदी सुनुवार्र दोती है। होबाध्धा वर । वीपार-मां (का) मिट्टी, रेंड स्ट्रीबर रमका दश वरदा वा पैरा, भीत । -गीर-मी । द्यारी नार हुन्य दीवा रामनेहा भाषाता शोशाये स्थादेश हैश -गीरी-खी॰ दीवारमें सगानेश म्ह ल्एस एए कत्तर । –श्रीन–श्री है 'नीनग्रे गीतर'। रीवाल-मी (धा•ी दे• 'वीशाः। वीवासी-न्ये॰ कास्त्रिकी अमारणवासी पानेशना रिर-मोंका एक श्वीवार जिसमें बीएक चलावे माने हैं मेर कर्मीका पुत्रन दीना है (वह स्वीदार प्रचानन रेगरी बद हैं) र शीवि~च नि दि 'स्टिश' । श्रीयमार्थ-मर्श्य किसा देश रहिएत हीना । श्रीद्वर-निरु दीर्घ-संशा वडा १ ब्रॅडक-रि [एं॰] वेर्रमामा कृतिना एनी । बुंबूम-यु (वंश) दक शरहरा निरित्र मां ! बुद्र-पुरी धारिनीया युद्ध वा वधरा प्रवर गाणा मुन्छ, भीता बगारा रंदा। ४० व्य व्य **र्युग्म॰~९० जान मर्यातीका वनेध**ा दु'दम-द्र (त्रं•) व्य शरहका मनाता । बुद्-द (सं) वह तरहवा मगाना हवारे किया करेगा अम्बन्धरण आदि क्ष्त्र । बुद्धा-पुर [मं] इंदा बुंद्धाः पागीमें रहने।चा क्षेप्र बारबाः शिर । बुंबुमि-स्रोश् सि विदेश सवाचा भीमा। पुरु सम्म ९६ हैरा। इस राक्षमा रह रिका क्षमा रिप्प । नगर्न त्र नगाइके नाराय। शुक्रमध्ये अनुसार यह सारची निर विक्रियाः मैचारिक्यं वाषा हुर क्रमेशा वह मंत्र। बुबुमिड-पुर (वंश) हह (सेंग शेश ! बुदुमी-मी मगाहा [मंग] एड रंग्स एना देवीरा 48 Ca 1 हुं हुज्याचात्र∽५ [गं•] अनाता वशनेराण । पुरमा-धीव [त] मगाहेदी राजि ! Actit-2 [4.] & Glitt i er tite. ber बाहार विश्वास बढानने निद्यमनेशाला पुर्व । 4.2£0-20 € 24a 1 हेबेक-पु [१०] व्ह दश्यका मेथ् हुता। बुंबर-पूर वह सदारदा है। विमध्ये देन निरेम होत. नोर्स और भी से रोज़े हैं। बुँबास-पुरु पुत्र भूँछः पत्रशह । द्वान्त म्यादा देव व Libito-do & Legs 1 Zuing fe janien vente i nat-fer in व्हेशनेशना बक्सर ! -माम-तु शन्ता राजेर लक्ष कनेद पु था। जिस्स जीय जिस्कार कता था छन्। बद्धावनन कता हुमा बदीया बहरून (माना - मत-तेर सन्तरांता स्पृतित वर् बारपारिक-ने स्टब अवार्ड पूछा । स्वर्क बुक्त वहुँबादेशका अध्वत्। - संस्थ-कि के द्री बु'सचे दीः क्षेत्रक वर्षण परा द्वार १- सामा(न)-प्रे^{र स्र}

E04 वाँतिया-पुरेडका नमक। दाँती−श्री• पास मादि काटनेका देंसिया नाव गाँवनेका में टा इंतपंकित दर्श। हाँना-स कि॰ इंटइसे वाना अन्य इरनेके किए फसफ हो बैडॉसे रीतवाना। हांपरय-पु॰ [सं] पति-पद्मीका संबंधा दंपती-संबंधी कृत्य । वि दंपतीका परिपक्ती-संबंधी । बांभ-दि॰ [सं॰] श्रोगी, रूपयी । वांसिक-नि [ग्र] दे बांग'। प्र• कांग करनेवाका व्यक्ति। शॉर्म =-श्री : दे : विंवरी । कॉपॉ-वि दे 'तादिना । श्रीव - प्र दे 'नारे'। र्ह्णमा-स कि॰ दे॰ 'दॉना'। काँपनी-स्वी० स्थ गद्दवा । **वॉवरी-मा र**स्त्री दोरी। हा-प्र• दिवारका एक बोक । खो [श्रं] वाप प्रशासाया छीवना दान रहा। वि सी देनेवाकी (समासांत्रमें)। हाह्य-त दे दाव । माइज, बाहजान-पु देश 'दावन' । वाई −िर सी॰ वादिनी । की बार दफा । बाई-सी वह सी भी नपना दूध विलाकर दूसरेके वण्ये-की बाढ़े, उपमाचा थाका वद्या जमानेवाकी ग्यीः वर्षीकी देखरेग दरनेवामी दासी। • वि दे 'दानी'। अ • -सं पर दिपामा-देने व्यक्तिते कोई बात दिपामा विसे शारा भेर माख्म दा। श्रुउँ०-पुदे रावे। हाउ॰-सी दावानत ! **इ.ड.-**प् वहा मार्रः हुम्बद्धे ज्वेड झाता वकराम । शासर-प्र [#] रेखारे मुखकमान और बहुदी वर्गके यक वैतंबर । पाक्रपुतामी−पु [का] यक तरदका भारका लक्ष सरहक्त गर्हे । दाकविया-पुर सप्टर टिक्केशला एक बन्दा गहुँ। एक कृषः यस तरपदी शानिदानानी । शक्तरी~त व्यक्तरस्था ग्रहे। दाक-प्र मिंगी प्रथमाना दाता । शास-दि [मं] रध-संस्थी । पुरु वरिय दिशा । हाधायग-पुर [में] एड वय जिमे दक्ष प्रवायतिने विया भार सुनर्गः आभूत्रमा बद्ध शांत्रका मुरुष । वि बन्ध गीत्र या। गध गीपने उत्पन्त । बाधायको-सी [मं] भरितनी रंगती आरि नश्चा सती दुनी देती कुछ करवपडी पनी महिता कर या दिनता। रथ गोत्रका क्ष्या । -वृति-पु॰ विका चंद्र । वासावकी(विन्)-इ [मं] स्वर्धनुंदकवारी मद्भवारी । राधायनय-द (त्रेन) मुने । शासाच्या-त [ग] गाम । Aufft-2 [4] 25ert 341 Alfeid-2 [17] ad kint Shichelfel [17]

दत्त्रमानीर्वता वर्तिम हिसानीर्वता ।

. (

पूर्व कादि कमें करनेवाका पत्रवा है। वि इद्यापूर्व भावि के बारा पंडलेक्ट्रो प्राप्त करमैनाका । साक्षिणास्य-पुरु [सं] दक्षिण देशका निवासीः नारिवक । बि॰ वशिण **देशमा**, वशिष्टी । वाशिणिक-दि [सं] वक्षिणा-संबंधी। बासिक्य-पु॰ सि] अनुकूष्टताः निपुत्रताः पद्वता स्वा रताः सरकताः नायकं दारा नायिकास्य जनुषतन (सा)। वि दक्षिणा-धेर्यभी। वाक्षी—स्रो [सं] शब्दधे प्रणी पाणिनिको माता ⊢प्रण पुपनिनि। शाक्षेय-५० [सं] काणिति मनि । वाश्य-५ (चे॰) बस्रवा निपुषता कार्यपद्धता। वारा-सी अंगुरः मुनदा। दारित•−न्यों दे 'दास । वाजिक-वि (का॰) मीतर पुता हुमा, प्रविद्य ग्रामिक । —खारिक-त किया सरकारी कागजपरशे पक व्यक्तिका नाम बटाकर वसके नाम किन्द्री जावदात्रपर इसरेका नाम चहानेके कानुनी बाररवार महत्रवर-वि दश्वरमें विना किसी निष्यको असम रस दिया हवा (कामत्र)। अ--करणा-बदा वा जमा करना !-शोना-बदा या जमा क्षिया जाना । वाग्निका-५ [ब] प्रनेदाः बमा बरनका धार्य अरा-वगी। यह रजिस्टर जिसमें किसी दाखिक वा जमा की पानवाकी वस्तुका केरा। हो। महत्त्व या चुनीकी रसीशः मान्याबारीको रसीर । पारित्रक्ती∽नि आप्यंतर, बीतरी, अंदरमी ! धारा-प वस्य करनेको निया। बाहा दाहकर्म- है 'ताय': बारा-प प्रा+ी किमी नामीके शरीरपरका जनन-बाट अथवा याव या बकते आदिका जिल्ला रंग आदिके सग जाने हे कर अधिपर पर जानेवाका विद्व अध्या कर्ने । -वार-वि जिसपर दाग हो धानदार। -हेल-सी [रि] छडक, मदर मीर्ने भारि लुइबानेके स्थानपर कारहेश योज्बर समावा द्वता निशाम । सुरू -स्मामा-कनंदित करनाः कपुषित करना । श्राममान्त्र कि उत्ताना संत्रप्त करमा। तपावे हुए होदे वा अभ्य बातुकी सुरुत्ती किसीक घरीरवर रिकेट मकारका पिछ भेदित बरना। व्यक्ति तम दवा नगासर फोड बारि को जना का सुमा देवा: चंद्रक मारि छोड़मा। घटना वाग़ी-दि॰ [का] बिनपर दान सना ही दानदार। क्ष क्षित्र क्षत्रिया परिवरीत सत्रा भूपना द्वा । बाध-पु॰ (सं॰) ताव बाह । इत्जन इक्षान्य-सी अवनापीताः दाजना दासनार⊶म कि दर्भ धारा जनना। रहिस होताः थिये करता । ॥ कि जनाता ग्रेयत करता । दाटक-५ [मं] दान्य रोहा काकार-पुरु एक सरक्षा स.च । वार्षिय-पु [८] अनुस्या क्या ।

शासिणक--पु॰ (सं॰) वह वंधन जिसमें कामनावश रहा-

यो नक्षेत्राको । -पटा-पु देश 'दुपट्टा' । -पटीश-सी॰ होटा दुपट्टा । -पड्डा-चु ओइनेडी बारह, छत्त रीय । -पष्टी =-मी = धारा दुपट्टा । -पद्-पु = हे 'दिकर'। -पर्दी-सी एक तरहकी पिऔर विश्वमें शीवी भीर परें क्रम रहतं है, नगक्रवंदी । --पश्चिया-मि० सी दी पहोंबाको । छी॰ यक तरहकी रोपी । "-पहरू-सी॰ दै॰ 'बीपहर । -पहरिया-सी॰ रुक शादा गीवा जिसमें काल-काक भूक रूपात है। † बापहर, मध्याह । ~पहरी-सो दे 'दोपहरी'। -कमकी-वि रवी भीर सरीफ बोनोंने पैदा हानेवाकाः संदिग्य ।—बगसी— को याक्रपंत्रको एक क्सरत । -वधा-स्ती है॰ 'दुनिया'। -बारा-व॰ है 'दीवारा'। -बास-नि वै 'दोनाचा । --विद्या-को॰ विक्रमे किहा एक दात-पर न बमनेकी मिया था जान, निश्चवद्या अवान, हैं थी-भावः भेरभाव-'ता हुविवा पारस महि रूचत द्वाव करत रातो −स्•ा संदाय, हरेड ओद्या। संदाय-विकास भतनंबस् । ≔वीच्यां ≔त्र स्टेब, सरबा । ≔मास्तीः= मापिया ~भाषी−पु वह को भाषाएँ बालनेवाका मध्यस्य का छम माचाओंके वीक्रमेशके हैं। व्यक्तियीकी अर्थाचे अवसर्पर व्यक्ती इसरेका अधिप्राव समझाये। ~मंजिला - दि॰ जिसमें ही गेविन हो।-साही-वि॰ही मदीनेपर दोनेवाका । - मुँहा - वि० किन्ने दी सुँद दी थी सुर्वेशि हुन्छ । --१ंग --१ंगा-विश् दो रंगोंबाका, विसमें बो र्थ हो। वी प्रकारका विसमें एकरूपता न हो। बाक्याओसे मराह्मा क्षत्रपूर्णः – श्रंधा∗−वि विसमें ही श्रंब ही। ्रविसमें बारपार केन हो। -श्वर -श्वाक - प्र• है 'बिरद'। ~स्म~षु हे० ऋगतें † हे० 'बीमर'। वि दे॰ 'दीरमा । --राज-तु यह वी देखमें वी राजाओका शासन, दो समझी खासन पुरा कायन वीषपूर्ण धासन ! ~राजी≉~दि जिसमें ही राजा राज्य करते **हीं** जिसपर ही राजाओंका सलान का करिकार हो । – दन्या−ि यो क्पींक्राचाः (जसके दीमी भीर दी र्य ही । -रेफ-ड रे 'हिरेक'। -छवा-विश् दी छवीका ही कवीवाणा। --इन्हो-दि हो है॰ दुलगा। सो दी क्लीकी मान्य । - असी-न्या बोहे मादि श्रीकर्वेक पीटेके बीनों पैरीसे मार्शाः -बाह्य-वि जिसका बूसरा विवाद क्षमा का द्वीतेवाला की !-बाका-पु यह तरहकी बद्रामीतेची चादर की बीवरी बांग है और किमारेबर देत-पूरे होते है। - ० योश-दि॰ को दुधाला आे हो। - • ऋरोहा - प्र प्रचाना वेजनेवासा । - साध्या-विक दी साधार्थेशका। पु॰ दी चान्नार्थाशका समापान। -सार∗-प• एद ओर्ग दुस्त0 भीरतद जानेवाका छेर । -माला! -पु• दे॰ 'हुशाला'।-शृशी-वि विसमें ताने और बाने रोनोमें रोहरा यह भगा रहे । की॰ रह महार का भोटा कपना । ∸सेजा०−चु पर्णग । −इन्बा∽नि क्रिममें दोनी हार कामने साथे जाव: वी नृदेशिला र -हाथी-मो॰ मानगंगको एक वत्तरत र हि_र औ॰ दे Street 1 दुभन-५ १० दुवन'। ZMITO-Y & RILL

दुर्भारवार-न्दी॰ तीटा दरवाया । बुखा-सी [बर] र्यासे मॉगना प्रारंबंद राजना भाग्नीवाँद ।-युन्ते १-स्पे शुवाशीवाँद ।-मो-दि•दुवा **करनेवाणाः आधीर्वारदानाः शुमिविनकः। –गोर्द्र-हा**र डुवा देना । अ़ु०-करमा-दे॰ 'दुवा ग्रीना १-करवा ब्याधीयार हैना । -मॉगना-इंपर्स किहोकी पहाँची मार्थना करना । -धगना-समादा तकत होना । दुभारस•-वि• दे 'द्रार' । दुमारु दुभारा िचुदै 'छर'। **पुनारी**†−शी॰ धोद्य हार । हुआस∽का • (का] यमहेवा ततमाः (दशका ततमाः दुभाक्षी-सी॰ पगरेकी नहीं निष्के स्टाल, सम वर्ग प्रमाये जाने है। द्वारी-दि॰ दे॰ भी। हुर्ज•-मी॰ दे 'रूब' । द्व ''तीयाना चंद्रमा । बुई-मी॰ दी दीना, दोन्ध्रे मानमा हेटा गैर, सना समज्ञना । सु॰-का परदा-देवयनिव भशन वा मावरम । हाभी। – वि० होनी । बुक्कहरा-वि विश्वकी बीला पक दुवना की स्वयं इक्टरेके लिए काकावित रहनेवाला अवस व्यक्ति T-COI हुक्कमा—पु॰ कुम्मा जोका यक वैशेका चीमा दिखा । दि॰ निष्ठमें बोर्र योग दी हो करके बची ही। बुक्क दी-सी वास्त्रकी वह पत्ती निष्ठवर किमी (क्यों से बृदिवाँ छवा हों। यह बन्धा जिसमें हो बोरे जुने ही। द्र**क्या**•−थ क्रि॰ छिपना सुरमा। कुकाम-स्री (का] यह स्थान वहाँ देवनेंद्री की निमा कर रुखी हों, शीला वेचने और स्रश्तिनेसे अन्तर I-हर-5º बुक्तलका रवामी बुक्तनवासाः वद्य म्यक्ति तिले अभीवार्वमदे प्रित्र बह्यसमा एवं एमा ही वार्विक दर। च्यारी~ली द्रकानशास्त्र थंगा द्रवानगरम का ^{वर} धनाने हे निय एवा गया दक्षेत्रका ह बुकाल-पु॰ है 'बहाल' (दि॰)-'नहि निकेश दुरार सम अदर्द ⇔रावा । बुक्त-पु॰ [में] रहमी रना विद्या और वर्ण करका श्रीम कम बहु बम । -पह-तु बसी करोड WITCH I दुकेशा—वि रिसके छात्र कोई और भी दी ! बुकेके-अर दिया औरके मार । हुक्कइ-पु॰ शहनारंके साथ वजाना जानेवामा मनने वेड एक शहर । हुक्कां-प्र ताशका का क्या क्रिसर किंगी रंकी के बृद्धि छपी हो। विश्वी एक बोहेड मनने होने दुवेका' ३ −तिश्वा−श श्री वा नीतकी शंस्वादेः दर्व

या हो भीरके साथमें र

हुब्बी-की देश बुद्धा र बुक्तिक-पुरु दे पुरान्त्र ।

दुन्त-पु है दुना र न्य-रिक हेर प्रमा^{र र}

-difo-le fa (Santiel) -Efe-2 Ca

हाना-पु॰[का॰] बाना-स्ता एक कवा जका भीवता वरेता; बतार, पोरता आदिका एक-एक बीजः सनका शुरिकाः एक्ते पिरोक्टर पाण्य साथ बोक्टर काममें कारी आत्रा बाधों में बा पहकरार सर्जानीये पक-प्रका अदर, रहा पुंची ! - पाशी-पु॰ जक-कका शामानीया ! - वंदी-सी॰ रागो रोतीको कृत ! - (मे)शार-वि विसमें बाने बार वंदों रहादार ! सु॰ - पाणी उठमा-मीविका न रहना, रोगो पाल बोजा !- (मे)शानेको तरसना-मूखों मरना ! - मुलेको शुरुकाव-विसे एक राना भी मयससर म हो, मिर निर्मत !

कृत्मा-ति (का] इकिमान् समक्षत्रारः ।-क्र्रं-न्ती इकि मक्त समक्षत्राराः ।-(ने)कार-वि॰ इकिमान् (विद्योपे प्रकृष्टे ।

हानाच्यल-पु [स] वह राज्यमंत्रारी विसक्ते दावमें दानका प्रदेश हों।

इतिश-वि पु दे दानी ।

इामिनी-मी॰ [सं॰] दान इरनवासी सी।

दानियां - वि दे दानी ।

बानिश-न्ते [का] कह तुर्धः। - मंद-वि वृद्धिमान्। हामी(मिद्र)-वि॰ [६०] दान करनेवाकाः बानकीक परारः । पु क्षान करनेवाका पुरुष बाताः कर स्वाहन बाताः।

दानीय-दि [#º] दास करने थोग्या वान पानेवासा ।

पु॰ दास ।

दामु-वि [मं] बीरा विजवी । यु वाना अन्युरवाः संतरि वाया वाजवा राजा वृद ।

दानोश-पुदे दानव ।

हाप-पु० रर्ष, अर्थकार, बनेदा प्रताप, छक्ति बत्ताहः स्रोप रोषः बहन दुन्य । दापक-पु दशनेदासाः दहन करनेदाताः पूर करनेदाता मिटानेदासा, माधनः ।

ामधानवाका, साधका शावन-पुरु [सं] किसीका देनेके किए प्रेरिन करता । दापवा०-सः धि दवाना। विकत करना ।

क्षापित-विक [मं] वा दनेके निय वाध्य निमा गया हो। मित्रद अर्थेड सगाया गया हो। विश्वका निर्मित्र स पैसना दिया गया हो।

हाव-पु रस्ते वा स्तानेश्च मान वर्गन वर्गन, मारः सम्मानित्रेक्षाः रोष्ट विद्वारः मुक्तः । न्यूर-वि मानस्याने स्थाने सु नियुक्तान-रोष वर्गनाता मुख्य स्थान मन (प्याना । नमानमा-प्रकृता स्थाना स्थान दिनं से मानस्याने पर सामान्य वर्णनी बोक्स स्थान । स्थान नमानस्य

हाबा-पु॰ कनम स्यानेके निय कृष्यी व्हनीको मिट्टीमें गाहना वा दशमा।

रावित-दुरुव जिस्सा।

शाम-पुरे दर्भ।

हास-पुरमहोडा नृतैयाद्या समृद्य साथाः सूद्य वीसना इ. इ. इडवा-वेगाः निकाः इत्युक्त वित्रव वानेके बाद प्रमारी में इ.इ.

दाम(म)-1 [र'] रण्डु रस्मीः पशुणी मार्ग्यो व पने

की रस्सी। कडी। माका। रखा, छीक। प्रदाः !

श्रासन-पु॰ [फा॰] जॅगरधेका नीचे करकी हुमा माग पदाबदे नीचेकी बसीना पा॰। --गीर-मि पस्टा पद-कीवाका सारेगार मरद चाइनेवाका।

ब्रासनी-को [सं] वह बंधी रस्सा क्रिसने छोटी-छाटी रस्तिनों नौबकर बछड़े वा पणु बोचे जात है। कि] वह करवा जो बोचकी पीठपर पका रहता है।

शमरि वामरी •-- ली रत्सी।

वासांबर, बार्माबन-पु॰ (सं॰) वद रस्ती प्रिम बोर्डक पिछके पैरोमि कैंसकर स्ट्रिमें बांबत है।

वामा-सी [सं]रसी • वागाधि।

दासाद- दुवामाता । दासासाह- दुवह दिवाकिया विस्तन्त्रे बासदाद सहाजमी-

में बैट बाय । इस्मिनी—की [मं] विदुष्य निजली निवर्तका एक हिर का पदना ।

दामी-विद्यामती। नी कर। दामोदर-व [सं] क्रथा नारावध।

कार्यं ॰ – प्रदेशीय क्रिक्ता व्यक्ति । कार्यं ॰ – प्रदेशीय क्रिक्ता ।

व्यवक-पु॰ [मं॰] देमेवाला, दावा; दावा? कचरावि कारो । लिा॰ 'दायिका ।)

दायक दायका-पु॰ विश्वहके समय बरपशकी दिया जाने बाला थन बादि बीतक दहेश ।

दायम-न [स] सरा धमेशा उनगर।

शायमी-दि [म] सन्। रहनेवाना सार्गेकान्छ। रहायो। वायमुख्द्रस्य-पु० [स०] सार्वादन कारावास (का दट) टामन।

दाधर-वि॰ [च] चलतवाला किरतवाला वा निर्मेशक किंग वाक्रियक सामने पेदा किया गया हो । मु चक्ररमा-विग्वेषके निष्य सुकरमा अदालगरी पेदा करता ।

ानगपद । नव मुक्तमा अज्ञाननमे देश करना । वापरा — पु [अ] गील धेरा वृक्षा वार्म वा अधिकारका

ध्याः दार्यो-६ टाइमा।

क्षा - वसी है? देशाः [का] हे दारे । - सर्ग-सी॰ दारेश काम।

क्ष्यामन-वि [मंग] का मामनी किमेप दश हा। पुर दाक्द रूपमें मात्र दास ।

वायाद-५ (मं॰) बादश करियारी शांति सी मंदेशी:दुवः

क्षपाक् वाषाक्षी-भी [त] कावाः नक्षा भाव कारीयो।

सीग, सीवः संसारका प्ररंग, संसारका श्रीवर । —ई--वि र्धासारिक । स्ता संसार । -दार-वि संसारके क्योंने क्रमा हुमा, स्थारी: थो क्रीक्श्ववदारमें मुखक हो, क्रोड पनुर । पुंगृहरथ । −दाशी −को शांतारिक प्रशंथ र्धमारका अंत्राचः दुनियादार द्वीमेका गुण, व्यवदार-क्रश कता, क्षेत्रपात्ररीः ननागरी व्यवदार । --परस्त-नि कान्छ । -भाग-वि दिखान्यं व्यवदार करनेवाका, मद्यार, वृतं । -साङ्गी-स्या वनावद, मद्यारी, पूर्वता, जाहिरदारी । स॰ -की हवा खगना-सांसारिक वातीकी जामकारा दीना, एसारका अनुभव दोना: बुनिवाके धीर तरीके अपना केना, संसारके इसरे कोगोको सरह आकरन करने सगता । -के परदेपर-संसारमें।-आका-चदुत अधिक । नसे सद कामानभर बाता । श्नुनियाची~वि दे दुनियवी[†]। दुशी - सी दुनिया मंगार। दुनोना, दुनीनां−श∘ क्रिः च क्रि॰ दे॰ 'दुनदनाः । द्वकता-अक्षि दे 'दक्कता'। दुबरा!-वि दुर्रेल इ.स. झीन घरीरवाका, दुवला-काका। दुश्राद्वी-त्री दुर्व#ता शीगत। क्रमताः चिक्रीमताः कमगोरी । हुयराना - भ कि दुर्वक होना क्रय होना। इंबस्त-नि जिसका सरोर शीम हो। इस । दुबाइम-मा दुनेश्चे पानी। सुबिष् - दु दे शिक्षिर । हुबिया-ना॰ दे हु दे साथ। हुये-पुत्राधारीकी एक क्यांनि क्रिन्दी। बुम-सी [का॰] पुँछ, पुष्का दुवको तरह बेहेको ओर अही हुई बरतुः विग्रमा दिरमाः बद की बरावर पीछे क्या र् (१६७नम्) रिजी उपापि (१४)। -पी-सी धीरोंके शाममें दुमके मीचे रहनेशका चमराः पृष्टीके बीचमी हड्डी । -दार-वि जिसके पूँछ हो। जिसके पीछे ¶द्भारी दुरह कोई बस्तु सर्गा वा जुनो हो। सु॰ ≃के पीक्रे॰ फिरमा-शेठे-थेठे धूमा करना नाच क्या रहता। -श्वाकर मागमा-मारे राके रत बरद जामना अंधे कीर्र क्षणा अपनेसे मनवृत क्षणा देगकर बाग राजा होता है। -इस जामा-दरकर मान बागा गरे दरके किशी कार्या पुरुष्ट् ही जाना । --में शुन्धना-- क्षा ही बाबा । -में सुता रहना-सुधायत्रमें नदा बीधे लगा रहना। हुसम-दि समस्या ग्राम विषश्य। हुमाद्यां -सी में दुमाना ह र्माता−सी॰ गराप मानाः निमाता । सुरता-रि [तं] विसन्दा परियान कुरा की, जा कहर बालमें इसर पहुँशापैर किलका बार बाबा करिन की ब्रुशियमा प्रवम, मनेश क्षत्र गर्वर दुरेंब । दुर्रतक-दु॰ [र्स] शिव ।

द्वर-पु हे दूरे । म किशोकी जिसकारपूर्वक इस्ते के

हुरश-रि [मं] क्रिमधे ब्हेरी बनशेह बी: हुरी निगार

विरम्बारपूर्वेड हरातेसा सन्त ।

रिन्द प्रदीमार्व लावा जानेवाचा शब्द । -पुत्-सन मुख्ये

वैशार किया यथा पासा। श्रेमानीका सुधा। बुरम्मण-पु॰ दे॰ 'दुर्थर'। बुरबोधमण-पु॰ दे॰ 'दुवीयन' । पुरक्षिकम-वि [र्तुः] विसक्त व्यक्तियन वा बर्रुस वड़ी कठिमारेंसे ही सके। विसक्ता क्रारंपन शक्ति रहा श्री, दुलम्ब । बुरम्यय−वि [सं] दुरविकम, दुम्तर । बुरयस्य-पु पुरास्त्राम कुर्रायः। हुरब्रास॰--वि॰ प्रवटा बढिमा निषद । बुरबुराना-स॰ कि विश्वतर करना अमारापूर्व हर भए।ना या इराना । बुररष्ट-व [र्स•] दुर्मान्या पाप। हरिषेगम-वि [र्न•] विते मात्र करना बरिन है। पुण्याप्य। मिसे समग्रमा बहुत कठिन हो पुरेव हुरोर। पुरश्चिष्ठिष्ठ −वि॰ (र्स•) हुरे छीर्से क्षिमा समाध्यमधीरा। बुरबीस-प्र [र्थ] अग्नाय बन्धारण तथा रतरके तार दिस यवा (वेदका) अपन्यतः । धुरच्य-५ [सं] इमार्ग, सरकर । धुरमार-अव कि बूट दीना। अधिते जीहर दीना **हिपमा** । बुरम्बय−नि (र्थ•) क्रिशका अनुसरम करमा नहिन् रेने बुध्याप्यः बुर्वेष । श्रुः अद्यक्षः निष्यत्रे । दुरवदी र-सी र दे 'शीपती'। दुरपवाद-प्र थि॰] निरा इस्ता। हुरबन्धा - इ. व.ब. मोतीशाकी वाशी । बरबक्र = नि दे प्रवंश' । बुरबारण-वि जिल्ला निवास म क्रिया वा सहै। दुरबास#-सी हरी गंप, दुर्गप। दुरबासा॰-इ॰ दे 'दुर्शमा'। इरबीच-सी॰ दे दूरशेम । दुरवेम•-पु• दरनेश, क्यार । ब्रिमिनक्-पु (संग्) अवामार्ग, निवनी । वि जी की बहिमारेथे वदश का सदे। पुरभिग्नद्वा−सी॰ (सं] अवासाः केर्येष । बुरिनिसंधि-मी [मंग] बुरे ब्र(रवने क्री गरी ग्रह बंगर कुषश्च । बुरभेषां-५० दुर्भन सरस्य बार्सस्य। बुरमुम-इ सरक आरिक्ट निवास वदा संबर केरर मराबर करनका एक औशार ह बुरमधा-नि वे दुर्मम । बुरबाह-नि॰[मैं] विशे रीयमा वा बावूने करना वरिषे ही जिल्हा निर्वत्तम बहुनाय्य हो । दुरबरध-वि [र्स] जो इसे रहाने क्षेत्र हुए रह² बहा दुना ह बुरवस्था-और (मंग्) दुरा राज्य बस्तूने रया। रासि र म्यादिको सबनीय बद्याः दुर्गति । पुरवाय-वि [नि-] दे दुव्याप्त । बुरसार-विश्वपास सारी, बीक्त देन द्वाम ! देन दे 441 नारा । मु ञुदमे वरेमानी करने≼े मिए साग सीरधे | बूरा**प्र∗**−पु दे दुरास ।

शार्विका-सी (ते) दानइस्टीते तैनार किया हमा विविद्याः गोविद्यः ।

वार्षिपश्चिका-सा [रो०] गौविद्या। वार्थी-मो॰ [सं॰] दारहरताः गोनिष्ठाः दैवतारः हरिता ।

-काषोज्ञव-५ रसंबन। दार्स-दि (तु) दर्श-धमादास्वादै दिस दीनेवाका ।

वार्गमिक-प्र [सं] रर्धम धारपद्म बानकार, तस्वरेचा।

वि वर्शनसास्त्र-संबंधी।

हार्पं त-वि» [र्ह्ष] प्रवरपर ग्रेसा हुमाः प्रस्तरमयः सनिज। क्षापंद्रत-पु • [सं] एक वस जिसे व्यवती सदीके किनारे

करनेका विवास है।

शार्टात शार्टातिक∽ि [सं] क्टांत्युकः क्टांत-संगंधीः ध्द्रांत हारा बिसका स्प्रदेशस्य किया गया हो। दास-ना दही हुई अरदर, मैंव आदि विसे सिशास्त मार, रोग्रे भारिये साथ द्वारे हैं। क्यांनी हुई नाज धारुमः शरंब । प्र+ नि) एक त्रहका बन्द मनुः कोदी । -मोठ-ली [दि] पी वा तेकमें तती दुई दाक विसमे

ममक, मिर्च भारि मिकते हैं। सु॰ ∽गकमा−दुकिका एफ्ट होसा ।-में कासा हाना-डोर्ड दान रिया दीना । −रोडी बलमा-निर्वाद दोना ।

इाक्रचीनी-ना दे॰ दार्यामा ।

दासन-५ (से) दांतका एक रोग रंतहन।

दारुमा≉−स कि दे॰ देलना --'क्य पीवत प्रतना

दाली'-गर । बाकस-पु (शं+) एक स्वादर विव। दासा-छी [सं] महाकान नामक कता ।

दासाम-५ वरामरा भोसारा। दास्तिम-५ [मं] भनारका ५३।

बासी-श्री । [सं] देवदाकी शामक बीधा ।

श्रास्मि-त [मं] इंद्र १

दार्वे -- प्र वार, मर्ववा सार्वितिका वर्षक भवसर, मौदा. ग्रुपीमा रहराधनका बराब मुक्ति कुद्रतीका वृष्टा करर पूर्व दुखि एक्तेन्द्री पाक जुद आदिके रोक्नी विवास बानी बाल; शेलनेंद्री वारी: र्र जगह, रिक्त स्वान ।

दार्चेना - ध नि । देश होता । शर्पेरी−मो ६ शेंदरा ।

दाय-पु [मं] बन अंगला बनमें स्तरीवासी अग्निः दादः

पीता क्षेत्रा रे एक द्वियाश जगह रिक स्थाव । पापत∽री [ल•] मोबदा निर्मवना कोई काम कामेशा

इमारा । म - इना-भीत माहित क्रिय निर्मीतन

दावन १ - पुण्टमना महारा (सिया) दामन । वि साध •रनेसमा।

दायमा - ग कि स्थन करना। सह करना। निध देना।

दापनी-नौ निदशास्द्रधिरोम्दराः विसी स्ट दरमेशानी ।

मापरी - को के देव 'हाँकरी ।

बाबा- सी दे शकाधि हे कि । स्वाबकी दशा

प्रार्थनाथक किसी बस्तुको अपना बताकर इसको औरदार माँग करनाः अविकारः इका होकः बोरः किसी पाठको वशार्वताकै विषयमें वह कात्मविश्वातः गवोंकि । -शीर-पु॰ दावा कर्नवाका अविकारको माँग करनेवाका। -(चे)वार-पु० वे 'दावामीर' i

वावारिय-सी [सं] बनको साम जो गाँस भारिके रगद खानेसे स्वतः कम बादी है।

दावात-संदेश्दवात'।

बाबासक-पु॰ [से] ३० 'बाबादि'। वावित-दि॰ [र्स॰] गीटित ।

श्राहा-पु• [सं] भीवर, महुना, बेन्टः भूस्य भाषार। ~धासः-पर-प वह पर या गाँव वहाँ प्रधानतवा बीवर वसते हो ।-विविजी-की क्यासकी माता सरववती । बारास्य – वि (र्स॰) बकारवक्ता बकारव संबंधी । प्र॰ बक्त

रथकं पुत्र, राम बादि ।

दाहारचि-त [एं॰] दछरवडे तन राम भरत मानि। दाचाराजिक-पु [र्थ+] वस दिनीमें समाप्त कीनवाला वाय । वि+ इप्रसात-गंदेशे ।

दारोव-१ [सं] भीवरीस बत्त्व्य संदान ।

वाद्येवी-की [मं•] सस्पन्ती । बाबोर-प [सं•] द॰ 'दाहेंब' ।

दासरक-प (सं•) माध्यदेशः माध्यमरेशः माध्य

बाह्य-मी का] परवरिश भएक पोषम द्वरागिरोः

इम्हारका अलाँ।

चान्य-वि [र्थ•] देनेबाका; बनार ।

दास-प [ए॰] वह को दूसरेडी सेवाडे किए अपनेकी समर्थित कर है। सन्ब किक्ट मीकर। सरीता प्रभा मीकर गुकाम (राख धात मदारके माने गरे ६-ध्यामाहत मत्त्र, गृहम, ब्रोत दक्षिम पैतक, दण्डवास) शहीकी यक तवाबिः वंगाली कावस्त्रेको यक स्पाबिः दस्तः वृत्रा त्तरः लावात्मा, भारमधानीः घटा भीवरः प्रक्रियदीताः दानपापः • रिप्रायमः। -जन-प्र• दानः सेरदः। -मंदिमी-नी व्यासको माता, सुख्यती। -भाद-

प्रस्ता। दासक-पु• [र्थ] दागु, शेवकः एक गोजपवर्षक कवि । ब्रासता-मी [मं] दास शनेका मान, ब्रासमान ग्रामानी,

पर्धवता। दामकृति । शासन=- ५ रे 'शामन'।

दासा-तु दीवारमं सराबर प्रकाश दुना पुरता दरवान या बीबारकी बुरमीक छपर छपावी पूर्व कक्षी या कथर।

दामानुदास~पु॰ [मं] दागीदा दाग्रा (ला॰) अन्दंत रिमग्र भक्द ।

दामावन-१ [म] वागी-५४।

रामिका-की [वं] ६ 'रामी।

वासी-की [मं•] सेवाध्यन इरदेशनी की मेरिसा थीररको की' बाहर्जना। मेन्समन, बोर्जन्योः बना १ तामेप-पु॰ [मं] रामेचा पुत्रः राम।

वा काबाद है बड़ीहर्द दिय स्वाबावयमें दिवा दवा | बासर बामेरक-पुर्वति वानीहा प्रशास दिया परामेश्वर्तित

ष्ट्रगै-पु• [सं•] गइ दिशा कीट (शरस्त्रपुराग तथा यनु बुर्मीय-तुर (संश) दुःसर शम्स मासू । शिश्वी हन्स ' स्मृतिमें इन प्रश्नारके दवीका बरुतेस है-(१) धन्दर्श-विष्ठके दर्श-रिर्द पाँच योजनस्य मस्मृति हो (३) मही बुर्जन-पु॰ (सं॰) बुह मनुष्य सका ६र्ग-मिस्त पारों भीर जैंपी नीपी मृमि हो। (१) घर धर्ग-को बारों भौरते सेमार्गीसे बिरा हो (४) बस्टर्ग-बिसके चारी कोर इस रूम बी, (०) अंतुर्ग −वा धारी भीरछे जरू हे बेहित हो (६) मिरिन्स-जो पर्वत या पदाशीपर बना दो); कठिम का तंग रात्ता; ब्लब्क् कावह बमीना एक बहुर निसन्ध वर करमेने द्वारण जाया शक्तिका 'दुर्गा' माम पहाः महाविष्नाः सवर्वधनः कक्रमैः मीया विपन्त ! शीका दुन्छ। मरदा यमर्था जन्मा महामया अतिरीमा शुग्गुकः परमेश्वर । निश् वर्गमः दुनीय । -कर्म (न)-पु॰ दुर्ग रभनारप कार्न । --कारक-पु दुर्ग बनाने-बाना, दुर्गनर्थाः एक कृद्धाः –ाजी-मी॰ दुर्याः -तरबी-न्यः एक देवा सावित्राः -एति-पुर दर्बदा तुर्धेष-वि (b) दे दुनव'! रवामी दुर्गाध्यधः -पाछ-पु॰ बुर्वको रक्षा करमेंबाका, दुर्गरश्च । -पुरर्ग-सा वृद्धविशेष । -संपन-तु प्रशिक्ष केंद्र (वो बोहड़ और रेनीकी भूमिकी तुषमतासे पार करता है)। भारोहन संबंधी कविवाई। -संबद-संबाद-इ हुर्गम स्थानीतम पर्देचनका मार्ग (श्रेस-तुक बादि) । श्री प्रक्छ। -संस्कार-५ दुर्गकी मरम्मन । दुर्वर•-दि दे॰ दुर्वर'। हरात-विश सिंश] तरी दशामें वशा हुआ, विश्वश दरिह ! दर्गति—मी [वं] बर्रदाः वरित्रताः भरकः। कर्मेशकः । हुँगैस−पु•[मे•] परसंबरः एक अनुर । वि अही पर्देषना कांक्रिन हो, भीहब; वो जीम समझमें न मापे हुबोब, भुगमका उत्तरा । बुदांत-रि॰ (मं] दे॰ द्वम । ह्रगंसमीय-विश् [सं] देश 'दुगम'। बुराक्ष-पुरु [संर] एव देश । यमा मंबदारा वषम वृद्धिः विचन्द्रातः। इक्कर~दि॰ ५७ (सं] नास्त्रिक्षा दुर्गा-लो• [मं] भाषा ग्रस्तिः मगनती देवीः वार्वतीः नीहका पौथाः सपराभिता तता। स्वामा वद्याः स्वयपित कृत्या । - लक्सी - स्रो कार्चिक-ग्राहा मनमे की रुग्यै-रधंत । पुजनके किए मध्स्य मानी नवी है। मानिन गुक्का नवमी। वैत्रकृष्टा मनमाः। हुगाँव हुगाँध हुगाँझ-वि॰ (सं॰) जिसको बाह करही क्षेत्र य दुशा हो । म मिक सरे असे बहामा बढिन ही दुरवनाचा ! बुगांधिकारी(रिम्)-त [सं•] है 'दुगवति । बुगांध्यश-दु [गं॰] दे 'दुगपति'। मुग ह्न-९ [मं] भूमिग्गृष्ठा देखमरम । विच्याति दे बर्धशं बुर्गुक-दु (ग) दुरा ग्रुप की र बुर्गेश-द [न] ६ दुर्गवनि । हुर्गोत्मव-पुरु [मंग] दुर्गोतुमा जो मनशत्रमें होती है। क्मीह-(40 [सं0] दिन परन्ता वहित्र ही। जी नहीं कहि इर्थपि-मी विविधारी। अल्हीसः। मारेगे प्राप्त दिया जा सके, दुष्पाप्ता की सीप समझमें स दुर्ची-वि भिगे वे ब्लंबि । भाषे दुवें वा दिन प्रीनना या वसरती बनामा वहित्र हो। ९ दुरामदः इरा मद् । सुद्ध वर्श भी जरह स बाज ह तुर्महा-की [मं] अत्रायार्थ । बुद् स-द्र [शंग] प्राप्त । दुराद्या-दि [तं] विने पदवना या बारण करना दुष्पर क्षरवास है हुपर-रि [तंर] जिसका होना वधिन हो। दुःसारत ।

मुर्घेदना-स्रो [म] अहाम बहमा क्रिक्ट बहना ।

ब्यनि बराज करें। विसम्ने क्र्यंत्रत प्तनि कारत हो। बुजय~ड़॰ (र्र॰) परमधर । दि॰ वो बहिनरी बीहा व सके, विग्रवर विजय पाना बढ़ीन हैं। कुर्जर-नि॰ [र्न॰] व्हे देरमें वा बक्रिनगरे पने । बुखरा~बी॰ [र्शं॰] स्वोतिभागी हता, मास्याना । तुर्कात-प• [मं•] जनीवित्या व्यक्तना रिर्मात शिर्मा विसदा जग्म भदारथ हो। विस्ते अर्थ अन्य तिहारो हुकांति-को [तं] मीच जाति, हुप्तुरः हुर्माद । है। इसे वा बीव वातिका तरे श्वमारका । तुर्शीव~पु॰ (सं॰) नियं मोबन प्रगित मौरन । निः सप याकर निर्वाद करनेताका परावधीनी । दुर्शोष-वि॰ (ति॰) को सहिनाईते जाना ना एके दुर्गेर। पुर्वेस दुर्वेसनः हुर्देसनीयः हुद्ग्य-दि॰ (तै॰) भि दवाया या बछमें करमा कठिम दा, बिग्रदा दयन इपर बुर्चेशै-दि॰ (ते॰) विश्व देखना बर्धन हा। वदार्थप रेए बुर्वहान-वि [नंग] जो हैछ नेमें महा हो। बाम्छ व । बुर्वसा-न्या [मंग] बुरी बालत बुरवल्याः दुर्वति । दुर्जिन दुर्विवस-द [सं•] हरा हिना मेदान्यन हिर बुर्दश्चानित [मंग] थी देशमेम अन्या म सम्प साँग हुर्देश-दि [तं] (अवदार-मुद्दमा) विनार च पानवूर्ण रहिमे विचार दिया गर्था हो। बिमदा वैनष्ट दुर्देष-६ (मंग) एटा हुमा भाष्य हुर्गामा वारिगारी। बुचेर~इ० (वं०) यह शरदा अपन नामक शेर्चरा पन जतातक शिमानी। महिराह्यरका एक ग्रेवारी परदेशी दुर्धर्व-त [त] पृत्रतहृद्धा रह द्वता रागाची नेतृता यह राज्यस । वि जिल्हा बरायब म दिवा वा मद्धारी बधन्ती बराजा बढिल क्षा बस प्रस्त्र । बुष्टर दुर्पुस्य-४ (तेर) वह शिव में प्रदर्भ दि बुर्वय-१ (तं) प्रशे क्यति प्रमाति। शनियव केपान पुर्वाम्(म्)-५ [] }शुरा बायः पूर्वनमः चैता की ववज्रीर ।

रिसीमा, दिसीना-वि॰ विवान्धी। दिग्-'दिक्'का समासनत कर। -अंगमा-की दे॰ दिष्टम्या'। -श्रंत प्य दिशमा भंत, छोर। -श्रंतर--प्र दो दिशामें के नीमको जयह । -संबर-दु सिन, धेकरा मैनिबोंका यक संप्रदाका अंगकार (जी दिशाओंके किए वस्त-गुस्त है)। वि जिसके किए दिशाएँ की वस-इप हो, नग्र मंगा। -श्रांवरी-को दुर्गा। -केंश-प्र शिवित्रकृतका १६० वॉ अंछ। -श्राधिय-प्र दिक्-पति। -अवस्थान-त बातु।-आगत-वि इरसे बाबा हुआ । -हम-पु॰ दिग्मत । -हैदा,-हैबर-पु है॰ 'दिनपि'। -गम-पु॰ वर हाथी थी वृष्यीकी मुँगाकनेके किए किसी टिशामें रिशत माना बाता है (बाठों दिशाओं में बाठ दिमार्जेको रिवरि मामी गयी है) ∽शर्यदर∽पु दिग्यशः - अष्-खो दे 'दिम्बिवव'। -स्या-सी दे 'श्रियं । -इंती(विन)-प्र रिभाद । -दर्शकर्यंत्र-५ रिक्षाचा काव करामेराका पक्ष वंश्व जिसकी सर्रकी लेख सरा जत्तरको और रहती है, अञ्चल्तमा क्षास । -दर्शन-पु सामान्य परिचय, सामान्य प्रानः रिखाका काम करानाः कत्रवन्तमा । -वाड-प एक सत्याद जिसमें असमवर्गे दिशाओं में क्राई छा जाती है और ऐसा द्वात होता है जैसे आग रुगो हो ।~देवता -देवत-प्र दे दिवरति !~वस~ प बढ बठ जो प्रश्नेको विधिष्ट दिखाने रिवन होनेसे मिलता है। – बक्की (स्निन्) – पुरिषक से पुरु गई। -भ्रम-५ दिहासंस्थी भग दिहानीका न बहबाना शना रिग्रा भूक प्रशाः। - वसम - वस - वासा (सस्)∽द्र वि दे रियंवर ।-पात्तन-प्र∙ रिमात्र । ~पित्रच~श्चे दिन्धे शताबा दक्तवत्वे साथ धर्महत्त्वे कम्य समस्त राजानीयी पूम-पुमन्द परारण करनाः दिसी विदिष्ट विदान मन्त्रवारक या शुनीका सभी अधिवंदिकी को सरावर संनारमें अपनी भाक समाना। -विज्ञावी (विम्)-दि निभित्रय करनेवासा क्रिसने रिव्याप क्मे थो। [सी: रिश्विवविनी']। =विभाग=पु+ रिद्या। "विभावित=ि निष्ठको स्वाति धनी दिखानीने फेरी हो । −व्यास~वि॰ समी रिद्याओं में स्वास I -मत-प्र• दिगी दिशेष निशाम कोई सीमा का स बरनेदा मन (वै)। बिगर्वि+−५ दे 'दिम्यत्र । दिग्य -- वि दे रीप 1 दिग्ध-वि [40] विशास, विश्री पुत्रावा द्वला निश पेश किया दुशा । दु दिवने दुशावा नामा तना आया

भास्यानिया । दिर-'' क का समामया कर !- असम्ब-द दे सात-साव विशिष्ट मद्यव जो कार शनिक दिशाओंगैने वह बढने संबद्ध माने याने देश - जाग-चु रिमाओ है सन् १४५-४२५ दे आम्बामादे एक ग्रहांट श्रीद आवार्त्। -नाध-द रे॰ विश्वति । -संदश्य-द विश्वका -मात्र-त ।कित मात्र। -मूड-दि जिन विस्तर ही मका क्षेत्र - मोद-वु विकास । रिगर-रि (शः] हतरः अन्य ।

दिसीशा∽दिन विच्छा - खी॰ दे॰ 'दीखा'। विचित्रत विधित*-वि॰ दे॰ दीवित'। तिकासक-प॰ दे॰ 'दिवस्य'। विज्ञोत्तम+-प्र• दे॰ दिशोत्तम'! विरुवान-सी दे॰ देनीत्सान (ग्वारासी)। वित्रवित्री • -- स्वी • देखारेखी । साधान्द्रार । विसीमा-पु॰ वह थिह यो वबाँको कुश्हिसे नयानेके जिए बाजकमे इनके गारू था मस्तरूपर बमा दिया जाता है। विक्रथ-वि० दे 'ca' । विकता#-सी दे व्यता'। विदाई "- सी दे 'वदना'। विद्यामा == स = फि = व्ह करना पदा करमा। विदाद÷-पुरद्व बनाना श्रमर्थम करमाः रहता । दिस-वि (र्व) द्वा हमा, स्वीत्तः विभक्तः। विवि-की [र्श+] देखींभी माता यो वस प्रमापविकी क्रमा और करवपकी पत्नी भी किसी बसाबे दोना मचिक इक्को करमेकी दिला, संदर्भ पुरामा। - क्र.-समय -पुष -स्त-पु॰ असुर, देख । दिरब-पुरु (संर) सहार, दैल्य । वि को ऐन्ने कानी दिरसा~सी [एं॰] देने या दान करनेकी इच्छा। दिल्लू-वि॰ (सं॰) विसे दैने वा दान करमेडी इच्छा हो। दिस्प−दि॰ (र्ष॰) विस्त(दरह)को वाल कर देनेकी इच्छा हो। विद्या-सी॰ (सं] देवनेके स्था । दिराध-नि॰ [सं] रेखनेका रमाक । दिक्सेच्या दिक्क्षेय-विश् हिं | देसने बोग्दा श्रांनीय | विच−५ (६) आसास । विधि-सी (ते•) दत्ता, (रशता। विभिन्न-९० (वं] वह प्रस्य विस्ति साथ किमी सीमा दुसरा विवाद हुआ हो। पृद्धि । दिखिणु विचीपु—स्री [सं०] यद क्यो विसक्ते दी निवाद द्वर हो। यह क्ष्म्या नी अपनी वही बहत दे पहले ही व्याह दो गयी हो। -पश्चि-त अपने सार्द्धी विषया कीने अनुभिन संरेष रखनेवासा व्यक्ति । विन-त [मं] वह समय विमहा आरंग सहोरय और अंत सूर्यालाने दोता दे। सूर्योरवने सूर्योरवतवस्त्र भीनीस धटेंबा समबा समय बाका मिति दिबिर सारीमा नियस समयाबासविधेया कथा सहा। - आरक-पु स्देश आस- सरार । ~वंश० ~पु सर्व । ~ कर ~कर्ता(ने) -कृत्-द्र स्वैश्वास, महार् १ - ०व्हण्या ~ ०त्रमधा -क्षी थमुसाः वाषती । --वतस्य,---भूत-पुण धारि यमा वर्षा सुमीय । -केन्स -केन्य-तु अधकार । नक्षय न्यात~ड् निविध्या नार्दश्चन । न्यर्यानग्री रिममरका कार्ये । -चारी(रिक्) - पु न्ये । - स्याति (स्)-सी॰ रिनदा अज्ञाका पूर । -बाजी०-पु वह जो प्रतिष्मि दाम करता हो । ~ दिन-भ प्रति िना बाल्फ्रममे । ~व्हिप-पुरु मुर्व । -श्चनियतु-पु परवादः बरवा वर्ता । न्याच न्यापक्र-व मुक्त -नाइक-पु क्वें १ -प-पु ग्रें। भाद महार । बुवर्णा−न्दो॰ [मे॰] चाँदी; पनुवा (र्चस-दि [सं•] वहाँ सरिकन्छै रहा का सहै। दुर्वसिव-मो [मं] दुश शिवासलाम । द्वंड-वि॰ मि] निसे दोना बढिम दी; लगदा, बुस्स्ट । शूबीक्(च)-सी॰ [सं] दे 'बुर्वसन' । निण्यह-मार्ग । द्रयदि-प्र [र्ग•] अपशक्त अवन्य कुरुवातिः श्तुतिके

रूपमें कहा गया दुर्बचन, निवित्त बाब्य ह दुर्पादी(दिन्)-रि [छ०] बुर्वधन क्यनेवाला । तुर्वीरः दुर्वारण दुर्वापै-वि [श्र•] दे॰ 'दुनिवार । दर्वासमा-चौ॰ [सं] पुरी बासमा विचन्धे कुमब्सिः नीछी कामनाः विश्वनीका विश्वनर पना हुना कुसेन्द्रार । ह्रयांसा(सम्)-इ [छं॰] एक गड़ाफोधी मुनि (ये ब्यति के प्रभ थे। ये जिसपर भ्रोच करत थ कसे जरपट द्याप है रिया करन ने । एक बार शम्होंने निष्णुमक्त राजा अंबरीक की भी चार दे टान्य जिसका श्रेत मीना देखना पड़ा) । विश्वकी पोद्याक तरी हा। मंगा । हुर्वाहित-दुमि }भारी बात।

हुर्बिक्तेय−वि॰ (सं•) जो भरकताने मं जाना बालके, प्रिपे जानना या समझना बढीज हो। दुर्विद्रय∽दि [सं] का थीड़ कानपर कुरू देश हो। मर्थित ।

बुर्बिगाइः दुर्बिगाद्य-२ [मं॰] वे 'दुगार'।

दुर्विय-दि [मंग] मृपः शक दरिह । हुर्पिनय-मी [मंद] अदिमद, औदस्य प्रदंदना । इंदिनीत-विश्मिशे व्यक्तिता वरंड। द्वेषिपाक-पुरु [सं] क्यरियाम, बम्परियाम, कुक्क । हुर्विभाष्य-दि॰ [एं॰] बिसको दशनातक म ही मुद्दे । बुर्विक्रमित-दु [मं॰] दुष्ट्रन्याः क्षत्रपुषनाः शरशयो । हुर्विकास-दु [तं•] स्टियत मराव दोना । बुर्विबाह-इ [मं] निरिष्ठ दिवाह ! वुर्विप-पु॰ [मं] महादेव (जिनपर विक्का हुछ मी अगर :

मही हुमा) । वि दुरै स्वमास्त्रामा । बुर्विपद्द-पु [र्ग] ग्रिकः भूतराहुका रूप पुत्र । वि बुम्मद् ।

हर्भच−५ [मं] निरित् शावरमः। दिश्शितस्र आव-रण इस सी दुराबारी।

सुर्वृत्ति-ग्री [मेन] दुरी वृत्ति शारात देशाः दुरा कामाः दुरायरमा पीता एस ।

दुवृद्धि न्त्री [मं] अरवीत पृष्टिः मनापृष्टि *नदा* । क्रोंड-वि (भंग) विसे समझना कृष्टिन क्षाः पूर्णमा वेण-ध्यपन न दरमेशका (आह्रा)।

ब्रह्मवर्था-मी [मं•] कुत्रश्य वर्शनवामी। मुख्येवहार-पुरु [मेर] मुख्य व्यवसार पुरा पर्यमा बह मुक्तमा विगक्त रामकेवारिके बारम गवित निर्मय स इमा दो १

पुर्चिमत पु [मं] हिन्ते शानिकर बन्तुवे सेवनका भारतामा पुरी सह स्ट्रांब का स्र।

दुर्ध्यानी(निष्)-दि [र्श-] निर्म दिशी वश्तवा दुर्ध्य

रव दी पुर्णमनदामा।

तुर्वस−दि [नं•] नियम या नाशका पाठम न ६८१-बुद्ध ब्य-वि [सं] दुरतमा, दुरित, रिन्दा योगा। इक्द्र(ए)-ड मिंग्रे अधित राष्ट्र । वित्र दृश्यि इदवबाका दुष्टद्दव, दुरात्या क्षय विवासीरणः मीम ह

हुईपीड-वि॰ [सं॰] विस्त्रो प्रानेतियाँ स्थिएपन हो। बुक्तकमा बुक्समा-अ॰ क्रि॰ शकार दरमा। बुखकी-मी पीरेश कुछ-कुछ छएछत हुए कप्र मीपे दौहराकी एक चारू।

बुक्युक्र-पु [ध०] वह राशर विने शन्तर (दा(मिमने बार्किमने मुब्ब्भश्को भेंद्रमे तिवा का मुद्दर्गके जरूरशर निकासा जानगरमा मोइड भाष्ट्रस्का तानिया। हिम सवारका धीहा वा सुबद्धक आठवें भीर संश्रीम संगाप और इसमदे मायमे निकामा बाहा है।

बुक्सवां -पुरु देश दीवन । दुक्रमा≠−ल० कि दे 'दोनना । हुस्त्रम•−वि•दे• दुर्मम । दुक्सार-वि पु दे दुशारा ।

बुखरामा ! - अ कि जाइन वधी के समाव एउटा, पर कना आर्थि दुनारे दधोदे छनान मान्यम दरदा। ही कि काइ-नाव दरमा, व्यारकी भेदाओं द्वारा वर्षे

दहकाना या प्रसन्न दल्ला ह तकस्वा - दि० पु० है० 'दलारा । बुसहम, बुसहिन-की मर्ना की, मनी बहु भारती।

बुषसप् भारिका एंगोपम् । बुखहा-पु० हे दूसरा । -ई०-ली (सारका देश)

दुसहियाक-सी दे 'दुसहत । बुसही!-सा दे दुसहब !

बुलहेटा-१ नाक्या केटा दुकारा करका ।

दुखाई-की भी मरा द्वना इतका बोहमा,इकडी रगी। बुळानाव-सक्ति है 'दुनामा ।

दुसार-इ दुनारनंद्री दिना या मात्र कार्य-दर, वर दुकारमा-म कि अमेड प्रशासी गीरपुरव रार्न (धरीरवर दाव केरना धानीन सगामा भूमना माने

करन दुर क्यों या असक्त्रका प्यार करका क्रक्या इरमा । बुक्तारा-दि जिल्ला वर्त बुनार वा नातनात होता है

शहमा । दु आपना वृष चत्रारा रेग । बुलाबी-मी लाइनी बी प्यारी बुप्ता रे रे रेन्ट्री वि भी विश्वता अधिक नाव व्यार बीडा की सारती

क्ति-स्त्री [सं] कच्छदी। बुलीचा १-- पुदार्गात समीचा ।

इसचा!-५ दे दुनाया । बुत्तमन-विश्देश दुर्वम १

दुष्र−ि शीर

हुँवन-इ गोर रिन्धांका मी, दुर्जन रहा गरा र

बुबाज-पुण्यम् स्थायाच्या विनदे दिना । बुबार्ग॰-रि > इसस् । -वामी-रि वर दिरासीक-सी देवरामी 1 हिरिएक-प॰ [सं॰] रोक्सका गेंग । दिरिस•-प दे• 'दाय ।

दिल-प पि:•ी एक अवसन जिसके दारा मनध्यक प्रतासमें कथिएका संचार होता रहता है। हतम मन थी। हिम्मता होसला। स्था। -आजार-दि० विक बराविवाला आक्षिम । -आधारी-सी दिक बुधानाः भूरम, शरदानर। —भारा−वि सासकः प्रिवतम। ~साराई-ची दिकको समाना। --भागस-दि० माधूक, प्रिवतम । -आक्रेज-विश् वी समानेवाका । -मायेज्ञी-को जो समाना। -कम-कि मनको स्वीपनेदाका विकासमें । - क्रशा-वि विकरी प्रसव करनेवाला । --क्रशाई-तो विचाने प्रथम करना । -कसी-लो बासी तमाना विचको अपनी और स्रोचना ।- एरश-वि मनका मनुष करनेवासा १-एवाह −वि सनपादाः। −गीर∽वि श्रीक्रासन रंबोडा । –तीरी-स्वे प्रामी रंब । –गर्वो-प्र॰ साइस प्रतसद्ध भीवर । --श्रक्त-वि साइसी जलाही बद्यादर । --श्वास्य-वि+ श्रिमुमें मन इसं स्थितर । -चस्पी-छो। बाब, छौठ। -बोर-वि मीव कावरः कामचौर ।- समर्थ-छो । विच्छा समावास वतमीमांस. तसती। -बसा-दि० १'थी। -सोई-सी बहुस दिलासा सांस्थता । -हरिबा-वि दे॰ 'दरिवान्ति । -हार-दि॰ विस्ति प्रेम किया जाय जा प्रेमपात्र की। रसिक्य बनार 1-नारी-लोग प्रेमपात्रकाः रसिक्ताः रूपा-रता। -पत्रीरा-पिकीर-वि निसे मन बादे वा स्रोकार बरे, मनोवांदित ।-पर्संब-वि जो योदी नच्छा क्यो. क्रिमे सन कारे । —क्या-विकासकारी । —कर-रि है 'तिकरार । -बन्स-वि जिसके' दिस बड़ी समा दुजा हो। - बस्तरहि-न्यी अवयवत्तार। - दुबा-वि मनभी द्वभानेवालाः प्यासः जो मेमवात्र होत्। प्रश दक पाया । नदपाई-स्त्री भन्ने तुमाना ।-शिकन-रि रिल तीइनेपाचा, दिग्मत धरन करनेपाला । -शिकस्त-दि॰ क्राप्त, चिनित । -श्रदा-दि माधिक दोवानाः।—सोक्रणनि वरद्वाराकाताः, हमप्रदी। -सीही-श्री इमरश्री स्वानुमृति। मु॰ -श्रटक्या-किमोमे प्रेम हो जाना (-श्रदकाना-दिमोसे प्रेमकाना) -कड़ा करवा~मनको दवरामे म देमा अनमें इत्या कामा । —कवाब हामा-ममका त्रत मुल जाया । —का कोटा-दर्शः दगाराज । -का गवाही देजा-अंग रसमाका क्ष³ काम करना स्तीकार करना । —का गुवार विकासमा-मनका अचात इर वरमा। -का बाद बाह-नति कारा मनर्मार्थ है -की आग बुझना-थी देश दोना। हरण पूरी दोना । –दूर्व दूरही जिल्हा – मी सुध रोता विभद्रतत्र शता। –ही दिल्में बहुना– बनप्रदा पूर्व म दामा । -दी कॉस-अन्दिद बन्जा । - इ. इ.स.च. क्रमा-यमका ए व इ.स. हाता। - इ. क्योन योदना-दिसंद. शरी थीरी सुनावर शनका क प र'त बरवा। -को इतार होमा-इन्सा अकार दीना सबने देश कला। -राष्ट्रा द्वाना-समावित् ।

जाता । –श्वराता–हासमै सन स क्याना । –जसना– शन्य कामा। –लक्सभा−ाज शीला सम होता । होमा। वेपैन होना । -तोहमा-हिम्मत तोहमा। -क्षक्रता-क्रेजा कॉपना । -क्ष्माना-क्ष्ट पर्देपामा, सताना । - हेना-प्रेमाशक होता । -चीहना-प्रश्व इच्छा होता । —सीहाता⇔प्रश्न वस्त्रानाः सीपना निवा उता। -शक्समाली० कटेवा पहला। -पस कार्य-रिक्यें सकत रीव होता: ताते सस मनकर दिक्के इ. इंग्ला । -पर मन्द्रा होमा-दिसी बातका मनमें वर बर खेला: अच्छी तरह यात होना । -वर सांच क्षोत्रका-हे 'इन्हेंबेपर साँच कोइता'। -पर कामा पा पद्रश्रा—हे॰ 'तिस छहा होता' । —फटा कामा—हेपैन होता काकल होगाः सक्यार्ट शारा । -वहसा-प्रसा-दित होता. भोदा श्रामा । −श्रदामा-पत्सादित **ध**रभा. बील जिलाया । -विरा काला-स्थायक क्षेत्राः वेकाल होता । –अर आमा-४६वा आदिसं विवर्तित होता । -किस्ता-र 'सन विस्ता । -से सामा-स्था बोमा विवासमें शाता ! -में गाँउ या गिरह पडवा-हैय होला। पर पता दोवा । -में घर करना।-में सराह करना-दिसी बातका हरवर्षे अच्छी तरह अस जाना। -में खड़ोसे वहना-कहत बाधिय मानसिय रह होना I -में कर्ड काला-मनमेराव होना). -मसा स्तवा-देश भन मेला करना'। -स्थाना-दे 'जो लगना'। ~समामा-दे॰ 'की समाना' । -मे उत्तरना-रनेट मा बदाका पात्र य रह बाला । -से दर करमा-प्रका देला। −डट काबा−सव फिर वासा । −डी दिसमें −सन की यत ।

विस्तवाना-स विश्वदेश 'रिकामा' :

रिक्वया-व दिखानेवासा ।

विस्तानित दे 'किता । -(हे)ता-रि दे पित्ते

दिस्मना-स॰ कि देनेदा दाम बराना, देनमें टूमरेदा प्रकृत स्त्रमा ।

दिसादर-दि [पा०] साइक्षी दिग्मनी। बहारर, निवेट । विन्यावरी-मां (का) विश्वाद क्षीनेस ग्राप, बहाद्या ।

न्सिमा−पु॰ भाषासन शरिदश पीरद। दिली-वि जिसमे दिनी प्रशास्त्र भाषा न है। अनिश्वः

विकोष-प्र [वं] स्वत्युनंशीय एक मानद्र राजा

विग्होंने में नीकी मेवा कर करा क्षेत्र भागीबोर में प्रत माप

दिग्गीर~इ॰ [सं] एवस ।

हिरेश-दि [का] सार्ग् बीबरवाना प्रशंनी ! दिलेश-छो॰ दिन्यतः वहाद्रशे ।

दिस्सरी-को देश परिदात मजार । -बाह्र-रि ,

इ. १६)-पर्शत करनेगता मस्करा। विस्था-तु विमारीको और दुरा दानुभरे गहा दुसा

रहात्म भीकेर द्वारा विशे किए वा निवर्ध है सके दानेमें शीमार्के लिए जह देते है। -(स्क्र)शार-हि

दुष्योदर−कृष पहा (रुवोंने दो बन्न करि द्वारा वार्ग हुई राहुतता मामक्री दिम्य-कृत्यदाने गांधर्व विवाद किया जा । दक्ती वुर्ध्यंत तथा धर्द्रतलाही रामाना कालियासमे कपने प्रसिद्ध गारक अभिवासधार्यन्त का उपशेष्य बलावा है)। क्रप्रोकर-प्र• (सं•) एक उत्तराय । दुसराना - स दि वद्याना । दुसरिहा -- दि॰ साथ रहमेवाकाः सहायः नरावरीका दावा करनेवालः प्रतिदंशे । दुसद्दर्भ-दि देश 'दु:सव' । बुसही - वि कठिनारेसे सहनेपालाः निरेशी, शह बरनेवासा । दुस्राघ∽पु शुक्रमें एक जाति जो सुधर गांचती है। बुसामन=-प्र= दे 'बुधानन' । इप्टार-वि [सं] विसे पार करना कठिन की वा सर कताने पार व दिया का मधे। बुरस्यज्ञ-वि [मै] जिमे होशा न वा सके, जिसे होडबा कडिल हा। तुस्य सुन्धित-वि [मं] छोपनीय दशामें पश ह्रवाः दुष्ट। मृग्री सुमाना दुन्ना सुष्य । द्रस्थिति न्मी [मं] दुर्दशा वरवन्या। वस्पर्श-विनिदे दन्वशै। ह्रस्पद्मां~त्यः (सं•) जनामाः नेपॉणः धरकटैया । सस्प्रप्ट-प्र• [सं•] जिहाका देवच् रवर्ध जिलसे म्,र्, ल व का बदारग प्राप्ता है। दश्मइ-वि [मंग] दे 'तु'मइ'। बंडला-प मानी शीरित्र। हुइमा-स क्रि स्तम भीर पूजुरको वेंगलियोश धराहर इप निवाहनाः निर्वेदनाः सार भाग निवालनाः (रिजी-ब्रो) थम अपहरण करनाः (विशिवी) व्यवसार स्र-बद्द स्टमा-सर्वन्त्र अक्टरण कर केमा। विमीने अधिरते मिथिक साम बहाता ! हुइमी-मी १४ इस्मेदा कात्र वीहनी। हाइरमा-म मि , म जि र रोशरमा'। हुद्दरा-वि दे 'रीपरा'। बुँहरामा-स कि॰ दे॰ दीवराना । बहाई-मो॰ बीचमा मुनामा एक दे किए की गरी

प्रधारः मार्गान है समा दशा दे किय निशी मनवे व्यक्ति

या ६४नाको पुरारमाः चपन कशमः द्वानेना ग्रामः

इहातिम् १-- दि॰ १ । युर्मास्यवती अमानिम विका

नुदाना-छ कि॰ दुइनेने कुगरेकी प्रकृत करमा दुवनेका

दुविता(मू)-मा [1] दुना बरशा -(मू) वति-

बुद्दाविको -ति असामा मान्यदीमा ध्रम्य शान्ध । **शहारी •-दि भागदीन अनुगा ।**

दुश्तेश्चे अभरत्।

नाथ दुर्भोत्त दराना ह

Tien -y t gier :

अंश मालाभा ।

षदाचर्मा –भी+ एव ब्युनेनी अवस्य ह

(নী) ৷

बुद्दारा-४ दुर्भाषा केम्ब ।

बुद्देसर-पुरु क्रेश, इंस्ट । हहसा-पु विचय शंना वृद्धित कार्या मेशावर बने। वि दुलावे पता द्वमा दुल्ली वर्षित ब्रह्मास्यः दुःक् महरू । [सी 'दहेशी ।] द्वहासरा-प्र देशका देश माना है दो और से मविद्ध । दुश्रा-नि (र्रा•) इतने योग्न । स्वरूप प्रदेश र्वेषमा—अ∗ति • इदि सपाना दशदा दरना । मुँ क्षिम-स्वी० दे० 'हेंद 1 को - दि॰, प्र दे॰ 'दी' । - गुनां - दिश दिशुर दुगरा। -संदार-वि• दे 'दु<u>व</u>ेदा । तुमा-तु है 'दुसा'। वृद्धां-विश्वदे 'दी। बाजा-ची दे 'दन । वर्षी-विदेशी मुक्क-वि बी-एक, प्राप्ता बकाग-नी देश दुवान । -दार-पुर देश देश-शार । -बारी-मी+ है इस्प्रारी । बुराम-पु॰ दे 'दृषण । बूल्बना≉−स कि दे दुसना । सु∗कि॰ रोडपैरर करना श्रीव सगाना। कृश्विता - विश्वे पुर्वति । दूरित । बाज-न्या कानी इसरी निवि तिरोदा। मुश्-बार्व्यर होना-वन्त कम दिसाई बहमा । द्या॰-विद्नारा। बुढाश-दि [में] निगत्र हरियनने प्रशास किश में सके। जपासिक । नृत-पु (ते॰) वह समस्ये दृत्तरी समह विद्वी-पर्रे नीश मारि पर्यपाने है हिए निमुख धानि, इरहणा रिमी रामा वा राज्य वह प्रतिविध भी सार्थी ह बार्यने बान्य राष्ट्रमे भवा गया हो वा श्वामी स्को सार क्षा राजप्रता मेगी मेथियाका क्षेत्रा एक इस्तेक रूप पर्देषानेशसा व्यक्ति। ~कर्म(म्)~तु प्रमुख की। −भूगर−रि ृतदे धरिने गैरुननामा । मृत्यक-पु० (ने०) दे० १५ । बुलरण-विश्वदागर बहिन। बनाबास-१ [तं] राज्यत्वहे रहनदा रवन और गुल कार्याथव । कृतिया वृतीं−को []यर को ने प्रेरो की(ऽैं≜री को विकास का एकता । देख दुनो दे छा। श्रीमार्थ । क्रप्र-तु [श] दृनका यार वा स्त्री। बूर-पुरु [कार] तुला। -कस-पुरु पुत्र दिश्मीय

ल्लाम विभगी।

takend & Ala i

मुख-यु शी शाय देश खणीच श्रमान निक्रिकेटाच

नानेप रंगवा अन्ति शहम बराई (त्याव्य प्रकटे बारे

भरित रिजेपक स्थाप कि सम्बेखन रासी एए हुई

चैचीके अंतीमेन निक्रमनेशामा पुष्के स्वया रम !- बार्रिक्

हिं की रिमान पूर्व बनावी निगरे स्टब्स

विभाक-पु [सं] सर्पविश्वेता वक् अंतु । रिक्रमात्रा - सी | सं] सप्तराः देशवय ।

दिव्योग-प॰ [सं•] सर्व ।

विष्या-सी० सि॰ी स्रोहोत्तर गुर्गोसे वक्त साथिका प्ररी-तकीर बंदमा क्योंग्रहीर शताबरीर महामेदार जागीर प्रवेत वर्षाः स्वक्रजीरकः । विष्याविष्य-प॰ सि॰ो शीम प्रकारके नाथकीमिने एक.

बढ माबढ बिसर्ने सोडीचर गुण मी हो (जैसे-सड anth) i

विष्याविष्या-स्त्री सिशी माविकासीका यक मेत्र. वह साविका जिसमें कोबोलर गण भी में विले-वसर्यती अस्ति ।

विष्यासम्-पु (सं•) एक भाग्रन (तं)।

विषयास्य-प [सं•] देवताओं द्वारा अवन्त हानेवाला बसा मंत्रप्रस्थिमे यहाया जामेराका बस्त । दिय्येलक-१ [सं] सॉफ्सा एक भेद । दिश्योदरु⊶पु [स] वर्णका करु।

दिव्योपपादक-तु [सं•] देवता। ਰਿਕਰੈਪਰਿ-ਰੀ। ਜ਼ਿੰ•ੀ ਸੋਸ਼ਜ਼ਿਲ ।

विशा-ली [मं] और, तरफा विवित्र मंदलके चार-पूर्व पश्चिम वश्चिन उत्तर-मार्गोमेंने कोई (विदिधाओं) वा बोजों और कहाने अवरका मिनावर वनको संबंबा दस मानी गयी है)। दमदी संस्था ! -शज-प दिग्यत ! - अप्र(स)-प्रगानके एक प्रवहा नाम (प्रा)। -जय-त्वी॰ दिस्थित । -पास्त-पु॰ दिवपाठ । -ध्रम-प शिक्षा भक्त बागा, रिकाम । ∽श्राल-पु•

हे दिक्षान । -सस्ट - पु है दिवन्यल । रिशायकाश-५ मिनो दो शिशाओं है नीचका भाग।

विशेम-९ [4] श्लिक।

दिश्य-दि [मेर] भितानांतंती। विद्याविशेवमें होनेवाळा । विष्ट-प [में] भाग्यः का⁹द्याः चंद्रका नाग्यस्तीः काळ समन् वैवरवन मणका एक पन । विश्वेश क्यांति । व्यक्ति निवत निधितः।

दिष्टीव−द्र [म] कृष्ट्र भरणः

विष्टि-मी [मं] मान्या श्रीमान्या इवा संवर्षिया दक मापा भा^रका छपरेका उत्तव ।

दिप्यु-दि॰ [मे॰] दैनदाडा वाता।

दिमेतर - पुरेशांतर, विश्वास समूत दश्तक। दिसंबर-इ [४०] भेदेश छाच्या अंतिम मान । दिम । - औ । दे दिया ।

दिसमार-अ कि दे शामा ।

दिसार-स्थ रे विशाद मनावाग । -हाहर-नु है िमाद । न्यूप्रन्तु १ क्यून्युक्त । दिमायर-प्र- परदेश अन्य देश । दिमावरी-दि वाहरा साया या जावा दुना, दूसरी

नगरका बाहरी। दिनि --१ १ भी श । -बुरव्य-पु दिलास । -नायक -ए -राजन-पु दिवरात ।

क्षिंगीर – भा २ ५/१ ।

रिमया -५ रेम राजा दिमानस्था (

निरित्रक-सी हे० पृष्टि । -संयक-पुर हे० 'प्रतिन'। विस्ता-प॰ कागबके चौबास तबताँकी गडी। टिकंक विश्वत-दि० किता देनेवाका (समस्य प्रवीग

बौतिक सन्दोंमें प्रायः बत्तरपत्रके रूपमें होता 🗗 । विश्वकानियत-सी है 'देहकानियत' (दिह'के साथ)। विश्वती -प= देवस्थान देवायतत !

विद्वानियाँ दे॰ 'दहलीय । विद्वात-सी॰ दे॰ विद्वात' ।

विकासी-विक के दिवासी ।-पश-पक दे विकासीपन'। वीसट~सी॰ दे॰ 'दीवट'।

दीभा~पुदे 'दीवा'।

बीक्षक--प॰ [सं॰] दीधा दैनेवाला, ग्रह, मंत्रोपरेग्रा । बीक्षण-पु॰ सि॰] दीक्षा देनेकी किया। यह समाप्त दीने पर बाकी अधिवीकी शांतिके किए किया जानेवाका समना

उपस्थम । वीक्षांत-४० सि विषक्ति वध्में इप दोरोंके मार्गनके किए

क्षिमा जाने गांका पुरस्क वदा शीक्षाका भंद । बीधा - सी मि विमाः उपनवन संस्थारः तंत्रके भनसार किमी वैक्साके प्रमुख्य राष्ट्रिया तंत्रीच्य रोतिसे किसी देवताका मंत्र बहुच करनेकी क्रिया। (बोई शामिक) करवा निवम । -ग्रह-पुर्व मंत्र देनेशका ग्रुद् । -पति-पुर (रीजा-नक्षका रक्षक) सोम ।

दीक्षित-विश् वि वे बिसे दीना दी गयी ही या जिसने ग्रस्टे दीवा की हो। जिसमें स्रोम भारि बाग किये हीं। श्राद्धयोंकी एक क्याचि ।

दीयना−व॰ निः दिसाई देना, ध्रद्रिगत होना ।

रीधी−सा दे॰ दीविद्या । बीच्छा®-सी **१ 'टोबा** । वीट-सी दे 'रहि'। पुरा प्रमाद बलब बरनेवाडी निगाइ को दिनो होरर का बतुमस्य बरतापर बाडी बाय-धिमी है सागी सगन दिव रिडीता दोड'-दिहारी !-र्शन-व . -वंदी-सी अपर चांपनेके किया ! -वंतर -विवं दति बुध्य समन्तरार । मु॰ -त्या बाना-पेने श्वक्ति हारा हैग्रा नाना निस्ती रहि अच्छी न हो। - बसामा-नुस व्यक्टिया प्रमान पुर बरना। -- प्र चरना-- नितरपर वाना । -किरमा-परिका दूसरी और प्रकृत होना। कृषा न बनी रहमा। - फेरना-इसरी और नवर कर सेनाः किमीयर बनावि व रहते देना । -बबामा-इसारेगीमे वयना। - वींचना-दे नदर वींपना। - विद्याना-बाधापूर्ण रहिसे स्मिद्धे भानेक्षे प्रगीधा बरना। वरी सह। में बादधरात करणा । —सारमा - मीगमे मंदेश करशा । -मारी जाना-^करानेद्ये छन्दि नदे दाना । -में समाना —नेशोंकी सुरार शीने के कारण सदा प्वानमें बना रहना। ~सगमा~नुशीः वह जाना । ~सगामा~स्कृती जाा-कर देगना ध्यानपूर्वक रेगमा ।

रीडना॰−म॰ कि ≧सना−ो सुमरो संभानी रोक्ता। बीडि॰-भी दे 'नैह'।

रीय∽रि [का] देगा द्रभा ।

बीदा-पु॰ [का] ऑग रहि निगारा पृष्टता (शि) र म् अस्ताना-बाधवे श्रीवय स्थला ।

```
सूरास्ट-नि [सं॰] काफी कॅनारेपर चड्डा हुना। बहुन
भागे नदा हुन्ना। श्रीमा कंडस्टुन। प्रगास ।
```

तृरिश-मः। । दूर । दुरी-सीश मेनर प्राप्तमा ।

पूरीकरण-पु [सं०] दृर करना । पुरेकर-वि० [सं०] दृरक्ता ।

वृरेबांधव-पु [मं•] १ रका रिश्तेशार । वृरेशिक्षण-ति• [सं•] वेंपानाना ।

वृ रारतसण-१४० [तः] ध्यानाना । वृरमवा(वप्)-वि॰ [मे॰] बहुत प्रसिद्ध ।

पूरीइ-पु॰ पि॰] आदित्यनीक वर्दानक पर्देशमा सुरिकक है। वि॰ दे॰ दरारीह ।

त्रोहण-पु॰ [सं॰] एवं। इस्पे-पु॰ [सं] विद्या केलाः कवर।

वृत्रा-सी॰ [मेर] वृत्र । -साम्र-तुरु सोमस्ताका यह

भेद । सूर्योग्रमी – नो [स॰] मात्री सुदी मश्रमी विस दिन अत भादि रखते हैं ।

मूर्वेष्टका नती [१००] महस्री वेश बनामेचे ईरबी तरह

काम भानेवाली याम । बुक्तम०-पुरु देव लिल्ह ।

न्छमां−(६ दे॰ दुर्मम । नुसद्द~९ दे 'दुन्हर ।

बुक्तिका-न्यो॰ [मे॰] माछ । वृक्तिका॰-वि॰ दे॰ ब्रोडिन ।

मुक्तवर-। वर्षः इत्रवर मुक्ती-पर्ततः (संव) स्रोतः।

यूका न्या । रिप्तु नार । यूक्टा न्युक वर स्यस्ति विस्ता स्याह दोने जा रहा हो या

वृत्यहरू नद्द नदान्य स्वयंत्र स्वाव शान गा रहा दुरा दी दिनों पहते हुआ हो। वरः मीग्राः पति ।

सूक्य-पु॰ (१५०) दीमा । बूपक-पु॰ (१५०) दोशारीपय कामेवामा स्थलि दीव लगाने या आधेर बरनेवाला मनुष्य। दुए व्यक्ति । दि वीपजनका सत्रोप बनानेवाला। करिक्ष वरवेवाला। अराध करने

नाकाः पुरा (बार्य) । मूच्य-इ [मं] दीचः धेच, घरानी बुर्गुनः शेष कगनेका कार्य ना मान शेषारीयमः बदबानाः विरोध करनाः सम कान्ना मान करनाः मानवारः करराचा राजण्याः यक मार्थ ।

च रि. विमाशकारी, त्यारकः। वृत्रकारि~डः [त] राम मिन्दोने वृत्यको मारा वा ।

ब्रुपर्काय+दि [मं+] निसंदर वीच क्रमावा वा सद्ध वीचा-रीराम्द्रे गीरव ।

नुषत्र-पु दै॰ दुश्य ।

क्यमा - स कि वेंड स्वामा कृष्य कामा । कृषित कृषिका कृष्टीका - स्वी अंदितका तेल । कृषित - कृष्टीका - स्वाक्त केल । कृषित - कि है के स्वयुक्त केल । - क्षिय - युक्त स्वाक्त कृषी - स्वी (त) अंद्राका केल । - क्षिय - युक्त स्वाक्त अंद्राम का कृष्टित किला कर अंद्राम का स्वी क्ष्याल का क्ष्यों केल इस्केट कारण का क्ष्यों दर्श का किला का स्वाक्त केल किला केला है।

दर्गा व । बृद्य-पु (१०) बम्पाक्षेयः हादी वॉक्नेबर श्रम्मा पूदा दिव । दि त्रीप बमाने, दृषिण बमाने बोल्या निकासम् का व्यद्ति व्यत्रेदण्या । —स्वत्रसमय-पु राजसीती र्मग्री ।

बूसना=-स= कि दीव स्गामा। वृसर=-वि• दे 'वृसरा।

बूसरा-वि॰ जो निजनीमें दोठे स्थानपर हो। पर्रे के गर क्या निज दिगदा निमक्त जर्माठे दिश्य वा आग्दोने और जनाव स वी !

वृहमा-स विश्वद्वना'। वृहमी-मी दे दीहमी'।

मूह्या-सा व दाह्या । मूह्य-पु देश् दीशा ।

द्वार प्रस्ति । विशेष विश्व विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य व

प्रकाशित करतेवाचा थनत प्रवर । - शृहि - पुण्ये । इस्तर-पुण्यतेत, रहि। देरावेदी द्वारि । - मिन्नव ३० कर्मनि-निर्मा । इस्-विकास सम्बद्धान क्या ! - श्रेषण-पुण्ये वर्गकी

-काम्बद्ध-पुण् कृत् । -शक्ति-लीण रहियी गर्ने श वटेश :-शाबार-वि है 'रहिमीवर' !-विर-पुण्य प्रमादका सीप निक्तती औदोंने विश्व रहता है। -वृत्त-

प्रसारका सीए निस्ता भोडोंने दिन दरता है। "नूम" दुन (वित्ति । एक"निर [सं] में पिर्यालन में से दिन माने भीद, माने दिकस्ता नामस्य हैना दुना भाडीचा माने

सबब्ध शायन विवाह पुरा वी दिन हुम में हैं जिसमें कार्र केरकार मा दी होते, वहां आणा क्षेत्र व्यूप्त श्यावी दिकाम ! युक अविवता दुरी विश्व सीक्षा संवीतका वक मणता -व्हेंडक-युक क्षायन

भागव पूर्ण। -सम (मंगू)-विश रागाईव समें काममें समा रहनेशासा सरन काममें हुँद में में नि

बाला। -बांड-वि बिल्मी गाँउ मनवृत्त हो। इर बाँछा दक्ष शुराबुदार बाम। -कारी(दिन)-वि

मिमया अध्यवसाया । - वान्त्रहा - मी राष के - मीधा वि श्र के दक्षर । - चेना(नम्) - वि हो

िस पर बरादेवाला : -च्युत-तु सामन हुन्छ

या पुत्र । नतरन्त्र भवदा देश । नामप्र (म्) र्षे सरस्या मेश यस गरदचा गरदन्ता । हिं स्त्री प्राप्त

-प्राक-पु कक दिश्र जन्मन्। -पत्र-पु नद्र। -प्राका(व्यक्) -पर्मा(स्वित्र)-दि दिनस १९१

सम्बन्धि अन्या क्योतः -निमार-रि ततः स्थ प्रकार -नीर-पु गारित्तः -तिमारितः

पुरा रहे थे १ - पाम-दिन पुन हे । ता है । - पाम-सोन बनामा भूम । - पहन्तु स्ट अनिह हो।

-वाय-प्रज्ञानि । तिश्वकारा -वारी-की वर्षत्या -वारी-की । श्वास्त्री । नारी

न्दि में प्रतिकृति स दिल सन्त के लावर्ड हो नप्रीकृत्य वर्त्याचा देश रूपमन्तु व देवर्ड न्दीयानिन्याः स्थाना कला न्दीसन्यु कारी

410 चयकता हो । यीसारित-पु॰ (सु॰) व्यारस्य सुनि । सी॰ प्रश्वसित कम्म । दि॰ जिसको बढरादिन प्रव्यक्ति हो । दीप्ति-की (सं) प्रता, युवि, चमका कांति, छटा। बाग-का (रेपुर्यतिसे बक्ताः (शानको) वासिव्यक्ति, दानका मकास (यो॰); कासा कारा; काँसा । पु॰ धक विश्लाव । वीसिमान(मत्)-वि॰ [सं॰] पृतियुक्त, प्रवायुक्त, समया कारिमान् , श्रीमन । प्र॰ कृत्यके एक तुव । वीसोपछ-५० (ए॰) स्पंद्रांत मणि। इप्पि -वि॰ [सं] जिसे प्रवस्तित करना बी। "प्रवस्तित क्रून बोग्यः जो चठरानिको तीत्र करे, अन्निवर्कक।

पु अजमीराः अजनायनः मब्रुधिसाः रहवटा । श्रीप्यक्र~पु[सं] वेश दीप्त'। हीप्यमान-वि [सं] प्रकाशमान, पमकता दुमा। श्रीप्या-स्री [संग] विश्वपद्ध । दीप-दि॰ [सं॰] दोसिमान्, बमकता हुआ। पु॰ सम्नि। हीमक-श्री॰ एक तरहाई एक्ट्र बॉटी को कागवा करती

भारिके किए बहुत हानिकर है। मु॰ -का काया हुआ - भी मददरार होतेने अभन्य दिखाई देता है। दीयउ-सी॰ दे॰ शेवर !

मिद्रीका छोटा शिक्षका चन किसमें बची बकाते है। -धर्ती-मां॰ रोवा बतानेका कार्य। -सछाई-खी माग बढ़ानेके बामको स्वताको छोटी श्रीक विसक्ते छिरेकर ऐसा प्रसामा सना रहता है की रगद खात ही ब**क** प्रता दे। बद्र बस्त क्लिमें वे चीकिमी रंगी रहती है। अ॰ -क्रमोके समय-संबा समय । - इंडा करना-रीयस्थ

इतिया~प्र• तेल पर मोडे बोगसे बक्तैवाली वचीका आवार।

इता देना ।-उंडा होना-रीपस्था दुष्ठना ।-दिमाना-(दिलीके) भाममे आलोक करना। -वसीका समय-रीथा जलानेका सन्य सार्वकात्र । -सेका हुँदमा-वहे परिमयने शीवना । दीरमण-दि दे दीर्थ ।

दीचे- ति [मं] (रेश और बाल क्लोबी क्रिक्ते) क्ला र्क्षवाः मावतः महरा (जैमे हवान्)ः निरन्तः सनाः गुरू (मापा) । पु छँदा गुरू मात्रा (मा दें क आदि)। पॉन्सी ग्रमी, सामग्री और मनी राशिषत एक तरहका सरवत । **-क्षेत्रक्र**-पु पर्वको पेर ३ -क्षेत्र-क्ष्यक्र-पुरु वि दे॰ 'दीपबंदर'। -वंद-दु॰ वृत्ती । -कंदिका-की॰ हुसती रातन्त्री। -कंपर-प्र॰ वक्षप्रती। वि अंशे गररबरामा। -क्या-मी श्रीद योगा। -कोड-पु० वातानगरही कता, विक्रीयाः गुंहत्व । -कोडा-सी० पातातगरसी कता । न्यायन्ति लेसा। न्याइन्तु० श्वरीर । न्दीस,न्दीसइ-पु॰ अंदीनदा पेर । ~ कुरवा-मी गर्थात्रज्ञी । -बूरक-पुण्यक तरहवा चारत, राजाब । -केस-पुरु मान्द्र। एक देश जी सूर्य रिमार्फे कत्तर-प्रथियमें है (इन ग्रंग)। दि जिसके बान र्व हो । -कासा -काशिका -कोशा -कोविका-की मिनादिका धीवा (*) । न्यानि-पुरु कींट (विकास रप बढ़त भरे होते हैं) ! -संधि -संधिका-सी० शत रिवरी । -प्रीय-पुर्वेश में नदाव वर्षा गान्स । वि

हेशी शरवनवाका । -धारिक-पु॰ केंद्र । वि॰ हेशी मर दशकासा । ~च्छात्~पुर्वस्न, गम्ना । विश्व वने वने पर्यो बाका । —बीगक्र-पु• एक तरस्को मध्सो । −अम – पु० वक, क्यन्य; केंट । वि० क्षेत्री ऑपवास्ता । ∽जिद्ध⇔ यु सर्वे शानवीका यक मेदा राक्षतीका यक मेर । विश विस्तरे बोम वही हैं। - जिह्ना-को कार्चिनको माए-कार्जीमेंसे एका एक राक्सी को निरोधनकी प्रशी भी जीर विधे रहने मारा था। -विद्वी(दिन)-प्र• क्या। -ब्रीबी(बिन्)-विश्वो वहुत निर्नोतन वोबे, विस्तीवी। -श्रपा(पस्)-वि॰ विश्वने दीर्यकालक तपस्मा की हो। पु॰ दरिवंद्रके बनुसार एक भागुपंतीय राजाः भदस्यापि गौतम । -समा(मस्)--पु० उतप्तपं पुत्र एक काने नो ग्रस्के बाध्ते अभि हो बने थे। -तरू-पु हानका पेत्र संग पेत्र । -तिसिपा-स्रां वस्त्री । -तंद्राः-त सी-चां॰ छहेदर । -वंड -वंडक-पु॰ रेंश वाष् । -वंडी ~तो मोरहो । −इस्तिता~तां॰ दूरतकडी बाद सोचने का शुक्र वा शक्ति दृष्टिश्चा। - वृत्ती(दिन्) - पु > माद्या यीष । वि को कहुत व्रतानको बात सीचे वा सीच सके दृरदर्धी । -दश्चि-पुरु ग्रंथ । दिरु भी दृरद्धी भीत मी रैस एके किएकी धीर ट्राइक बावा ट्रवर्गी । ~हू-यु दै॰ दिवित्तरः । -हुस-पु॰ नेपछ्या परः । -माद् -पु॰ ग्रेपा सुर्गाः कुना । वि विश्वमे साराम पूरतक फैल काय वा गूँज चठे: जिससे जोरको बानाज निक्के । चनाख-प्रशहित्या यावनातः दे 'दीर्थराहिक्क'। -निम्-नी॰ विरह्मन भूत्युः बहुकासम्बागी निद्रा । -निम्धाम-पु॰ श्रीद वा दुन्परे कारण की वावेशकी संरी सोस । - पद्धर- दु क्टिंग पड़ी । वि वह वहींबाका । -वय-पु वाहका पेश कुछका वस भेगा लाल प्याचा विष्युक्ता कुषला रेंदा काल सहस्रना रेंद्रा करोरका वेश बरुमहुमा। "पुत्रा-नी वित्रपूर्णी कठवामुना हेतकी" र्गपत्त्रा । -पश्चिम-न्दी द्वेतदवाः ग्राञ्चमाः प्राप्त आर । -पन्नी-सी॰ पनाही हवा। -पन्न-वि॰ वर्षे वर्तीवाचा । -पर्यो-न्या० वृह्तिवर्गा । -पर्यो(व वृ)-पु रेख सारि। -पस्च-पु॰ सनका शीपा। वि॰ वरे वर्त्तीवाका । -पवन-पु॰ शबी । -पाइ -पाइ-पु॰ क्र पही सारम । विक जिसकी होंगे बही हों। -पाइप -3 Biter det Antifet ga ! - An-2 Bia ! -पृष्टी-श्रीव मुस्ति। -प्रज्ञ-वि ह्रस्छी। -सम-पु॰ मारम्बन, असनताम् । —कन्द्र-पु॰ अगम्बद्धाः हेरः । --कमा:-करिका-नी कवित्राचा मतुवा।-बाका -मी पमछे सरके गाव । -बादु-पु शिवस पम अनुवरा भूतराहका व्यः प्रता वि विश्ववी सुवा संवी हो। -सादत-५ हानो। -सुन्य-५ हानो। छिपहा एक अनुपर । वि० विसका ग्रेंच बड़ा हो । - मुली-सी गर्ने रहे। - मृत्य-पुरु वॉहरत्यका लामानद र - मृ**डी**-भी श्रदानमा । -यम्-रि विश्ने रार्थकाकाक वर निया हो । -श्मा∽मी हरिहा। -स्व~द्र• कुछा। -श्य-त श्वर । वि विश्व श्री वर शे । -शमय-पु॰ ग.व 1 ~रावा-सी १=1 । -रामा(मन्)-पु॰ क्रिस्य वह अनुपत् भाग । -शहिपक -पु वह सुगरित

-भर सम्बन्ध-दक्षिपर्वत बैरामाः यो भरकर हैमानाः। -मारी सामा-शंथा होनाः नेत्रहीय शामा I-क्रियामा-दरा। देखी कमा । – में समामा – दे॰ 'बांबी में समामा । (किमीपर)-रम्बना-निगरानी करना वैसरमाँ रधनाः देश मान बरमा । -सगामा-पद्भव्ह नेदाना देखक दैगत रहमा। मेह भारता, ग्रीति हमाना । ष्टिचंत-वि दानवात् , तुद्धिमान् । बीठवाका । दे--पुर्वगानी कादरबोधी एक अपावि । 🛎 स्वी देवीका

चपु रूप । क्षेत्रं - म्या ६ दिवी'।

देश-पुरुषे दिवा वंदरा-प्र• दे पेसर ।

देवरामी !--सा॰ दे 'देनराबी' ।

हरा-ना रेपमेथे दिया या गाव । - भारत-नेरर-भी निगरानी, निरीधमः संरक्षम ।

शुम्पम - न्यो • देगानेकी किया वा मावा वितवन, विकी क्रम । -प्रारा-प्रदेशनेवालाः वर्णकः।

देखना-स कि नेवीं हारा विमीका धान माप्त करना। वनाच करना, शीवना, बरीया करना निगरामी करना वा ररानाः सग्रातमा अश्व करनाः सो नग-समझनाः निधेक्षण बरमाः अनुसद बरनाः मेगवाः पदना गाँचना संशायन करणाः मनीकार करणाः निष रमाः दिसी भीर रहि परना च्यान देता।

हैए जिल्ला है देशन'।

बैरनरामा १ - स॰ कि ौ १ दिखलाता । द्वरराषमा •−स कि॰ देश (रिश्लाना ।

सम्बद्ध-विश्व के बेबन केसने अरबी हो। नवनी नगापरी, दिसानसे ।

हेन्साइनी-श्री धद इमरेकी देशनेकी क्रिका, माधानकार। अ (दिमीय) करत देखकर, अनुसरण दे कपर्ने ।

बेरराबर+-स+ कि देश 'रिराणांगा । देशाब-५ रिएकानेका भावना दंग सम्बन्ध, तहरू भक्ष, वताव विचार ।

हेरराबद-मी है दरशय ह

इष्याचना –स॰ दि॰ दे॰ दिराहाना ।

देगीमा-वि दे रमाह ह

केंश-9 (पार) शामा वहामेका श्रेरिका वहा वरतम । -श्रंदात्र-६ गुरुवा। -था-५ ग्रेश देम। -थी-भी धारा रवणा

श्रद्धीध्यमात्र~ि 6] श्रद चमदता द्रमाः जास्त्रणः

क्षत्र−की० देशेची दिल्ला मामाना की दूर्र वस्तु । अण [का] क्षेत्र - हार-दि० क्षेत्रार, क्षेत्र- शामारी । -लारी-सी देगरार होनेधे रिवर्ण । -कन-त भटक्ट क्या देशेका स्टब्ट्स मधानांचा परन्तात है -द्वार-द्वाराण-वि देवेदामा

केमा-स दि दिनी पानुक्तने महत्रा स्वानित्व हरावर इसाबी दलका स्वामी बनामा अञ्चय क्राणा समर्थित बरमा भ रूपा विस्तातः, श रहात महानाः रखनाः बारधा १भीर करनार देश करना अनगा हवापे करना !

थमामाः बनुबद करामा। पर्देमामा । (हर् हिंदा स्टब् कियाओंके साथ प्रथा संदोविका किनाके क्रिके प्रकृत होती है।) पुरु कर्ण क्या बेमान•~9 १० 'दौरान' !

वेय-वि [मंक] देने याग्य, शत्यव । -प्रमे-पुक्तम-रुप भरते ।

हेर-सी॰ (पान) बन्जिने अधिक सुपय (रान १८०६)-पातः समय बक्तः।

वेरामी ^१ - श्री देशरानी ।

स्ती -मी दे दिर'। देवींको - मान, देवींको - प्रशासक। वेश-४० (का॰) हैत्य, दासरा भौगद्राद मनुष्ता (के) रवगर्मे विचाम काजेवाचा विच्य शहित्यांच ब्राह्म प्राप्त बैबना। परमान्याः र्वतः महिन्यतः बन्तरीति ११वे अर्थरः मेपा राज्ञा मन्य दारीखाना अस्ति अस्तिने व छपाधिः पुरुष स्वतिष्ठे तथा राजाओं है निय अन्दर्श्वर संगोधना प्रेम करनेरामाः १४को प्रोता धानेदिक गुणै दिवा। पाता देवदाव: ३२ की संद्या: • देश-'त" मात्र जन सीपर पानी । देव बेठ छव संगिद्र अप्येष्ट रामपंत्रिका । दि० रवर्ग-संबंधी हैव-संबंधी बमगारी सन्यान्य कृष्य (– अर्ज-५० एक प्रश्नादन राष्ट्रेन्द्र अर विश्वमें स्था होनेके लिए देववाओं है निविध वर वर बास जब बादि करमा बिहित है। -क्यपि-इ॰ म्पर बाहि देवनवर ऋषि (शामें ऋषके साम वे दे-नर्ग सामि, गरीनि, भरतात कुम्पस्य कुमह का बड़ी -कन्त्रका -कन्न्या-न्त्री हेन्द्राधी प्रकी (कार) बची स्वक्ती तरवी । ~कड्झ~इ पेरन अनर कपूर^{की}र ब्लर्ड मिमचमे शंबार दिया जानेवाडा एवं संबंधन ! -कर्म(स) -कार्य-इ दनवानीओ हरिके किर कि आनवारि इक्स-पुत्रनादि प्रत्या देशनिकारित वर्षे रा क्रींबर-ली [दिंग] महिबंदि क्रिनारे बीनवाला दहकेंगे धीया । नकाछ-पुर दरनाम १०५ छ-पुर प्राप्ट्रिक मन शका नियो वेबना है भामने असिक्ष या गुरवाका 🛍 मनाधर देवरवानके निक्रम्या प्रमुख्य । -5र 🗗 यरकोने। -पुर-प्र देवर्ग (र । -प्रतंबा-स्रो वंश्वाद्य एक संगा-मूल-१ एक ब्रह्मका क्रीए देवना देवगाबीका शतुनावा देवबंध । - पुत्रवा-मेन बाध्यानंतर। - प्रमुख-तु नाव सर्वतः - साम्र मानव-तु गुरुतः है दिन्द्रण !--गोवर्व-तु रमप मानेका एक विश्वपारंव । -वाया-बार क्यादेश !-शण-पु देवनामीदर समुद्रा आरिश्व विष वसु अ^तर शिक्षि देववार देवताहा बनुचरा मधिनी देवते इन सादि सदावीका गढ अनुद र अवस्थिता नगीन अस्तार -सर्वित्यो में ते वर्णात विभ महा कर देते मारि देशम की भागा द । -- गाम :- मु रे दिशम । " शत्रमञ्जू देवदा मन्त्र । नगर्ने-पु देशाचे देशी बारक बनुष्य । न्यांयाय-पु ४७ शम । न्यांयारीन की वस शांधिनी र न्यामन-१ परे ।- विस-में देशको प्रशास -शिति-त प्रदेश क्रिक्ट कर् बा रह माध्येन महर हैताका अपरित्र साम देवणना

व्यक्ति जो कह पर्देवाने ।~हासी नहीं कह पर्देवानेवाली सी। -तामक--शायी(यिम्)-वि॰ बुन्ध वैमेवाकाः विस्ते कर परेंचे ! - शोधा - स्री॰ गाय (जो वही कठि मासि ददी या सदें। -प्रद-वि दे 'दासद । -प्राया-वहस--वि+ विसमें दाराका भावित्य को द्वारापूर्ण कृष्टसंक्तः। –सस्य – दि० वृत्तेमः, दण्याप्तः। -सोक-इ संसार (वहाँ दुःखीको दो अधिकता है)। -क्षीप्र-वि क्षिमें शासके जनमनका अन्यास हो। -सागर-प॰ बन्धका समझ- संसार । -साध्य-विक दे॰ 'ब्'सारम्' स्॰-बढाना-तक्ष्मीफ सबना ।-वेशा-क्ट पहुँचाना । --पहुँचना-कर दोना । --पाना-तक क्रीफ सहता क्षेत्रका । -ब्रेटासा-विपश्चिमें साथ हेना. सदानमृतिपूर्ण व्यवदार दारा दुन्स इतका करना । -मामना-सित्र होता इन्ही होना। इज्यसय-दि॰ [ले॰] इ शीने मरा हुआ दुआपर्थ । क्राग्यांत-वि+ (सं+) जिसका श्रेत सम्यागम क्री: जिसका प्रवेदशाब इन्हर्मे हो। 3 वह नारफ विस्की समाप्ति दायमधी प्राप्ताते थी। इत्युद्धा संत या नाख । इप्पातीत-वि [सं] ४६से सका द्वारसम्बत्त−वि [चं•]द 'द्वम्यानं । द्वाप्यायतम् - प्रश्र [सं] समार बगव्। द्वासार्व-दि [सं] दुधी क्टमें पश हुना। वाधित-वि मि विशे कर हो पीडिता मिसे हुन्य पर्देषा ही शिक्षा हारियनी-दि श्री [सु] (बह ली) जिसपर विवर्ति पदी हो इत्यानें पदी हुई। हम्सी(रिव)-दि॰ [सं॰] तिने दु'छ हो। वो कक्ष्में श्री इभ्यानित् । क्षासङ्भ~र [ri] तथ छङ्गा अनिष्ट फलका स्वय रुधेय । हम्बाला-नो (तं) पूत्रराष्ट्रकी यह मात्र तुत्री की बय प्रवद्धे स्वाही थी। दुग्वामन-५० [सं] दुर्वोषनका होटा मार्ट विसने बरी समाम द्रीपरीका देशाकर्षण किया था । वि. जिसकर घाएन करना कठिन हो । दुमासि-(व॰ [मं•] जो प्रचीत म हो, तरे स्वमावकाः श्रुविमीत पश्चन । दु सोच-वि॰ [मं] जिससा श्लोबन महीकार शुगम न हो। द्वाभव-पु [रो॰] काम्पमें एक दोष मृतिका दीव। नि अनिदर कर्णकर समस्ये अधिय । दुग्पम~ति [मं] निचा इंग्पय-वि [मं] जिसका निषप करना कडिन क्षे निमदा दृष्टिमनामें नि.श्व दिवा था सद । दुःसीय-पुरु (संर) दुरा मात्र कुमेगति । दुम्मेयान-इ [तं] जावार्य बेछको मतानुसार एक रम। दु सद-दि [मं] दिन कदमा बहिम हो भी सहमश्रीम् में बाहर हो अलाहा।

रुमदा-भी [मं+] मागरमनी १

दुम्माप-दि [में] हे इसाध्य ।

दुंग्रापी(चिन्)-५ [न] बारवन।

विकास काला अधिम हो। वच्छतः विसका प्रतीकार स्वीत्रम हो. ससाध्य । हासाहस-प [सं•] असंगव वा वप्पर कार्वकी सिदिके किए दिया गया सामसः येमा साइस जिससे कछ भी काप न क्षोः कामिकर सावसः यनश्वित सावसः पृथ्वा । सन्धाप्रसिक-वि॰ सि] जिसक किए साइस करना क्रीक न हो । हम्साहसी(सिन्)-वि [सं] न्वर्वका साइस करनेवाका. मन्तित साइस करमेवाका । द्यास्त्र-वि सि•] विसक्ती अवस्था अच्छी न हो, दुर्गता निर्भमः मर्घः । वभयराँ – पु॰ (सं॰) करंगः केगाँधः बुरासमा । वि॰ विसे छमा कठिन थी। वास्पर्धा-सी॰ [सं•] केवांचा आकाशवतीः बंटरारीः दुराक्षभा । वानकोट-प॰ सि रे पद तरदका शस । दुन्स्वम – पुं [लं॰] हुरा स्वध्न, बरावना स्वमः हरे फल वाला स्वप्त । बारबमाब-विश् [र्थ] दुरे स्वभावता, सीटे स्वमावका, बुह, नीच कुटिक । पु॰ बुरा रहमाव बुद्ट प्रकृति । इ-'दो का संक्षित रूप भी समस्त प्लीमें पूर्वप्रक रूपमें प्रयक्त होना है। −अद्यी-सा को बानेका सिका। -आव,-आवा-द दी सर्विके मध्यका मुर्हेट। -४-सी॰ दे क्रममें : -क्रिसिश-को॰ शिमुद्रे दी किनोरे हो सरी । -लंबा-(वे॰ दो एडिवाला (मदास)। −गणा~िं दे 'हिन्नुग'। —शाबा-पु॰ दानाकी र्वक्ष । -गुणक्,-गुम -शुमा-वि० दे 'हिगुण'। -पश्चिम-नि॰ दो वर्गकाः दो परीद दिसावसे निकाला इना ! - अपूर्ण-त बीनी पडीके दिलामें विकाला द्रभा सहत । – परीरं⇔की दमक्षिता सहते । ⊸र्णद्र− वि शाता। -चित्र-वि विशवा मन दिशी हक बाउपर समना म दी, संशय या दक्षिकोर्ने पता हमा अस्विर्धिका अनेममा निमाप्तरत फिन्मने । - वितर -चिताई -- त्यी । पद बातपर यन स समना, दिवियाः सीवा विमा । - विशा-दि है दुविन'। - अ०-इ १० 'दिव'। --व्यक्ति≉-पू है -- श्राम -- पु दे दिवसाय'। - प्रस्मा -- पु दे दिसम्मा १ - आसि०-पु॰ सी दे 'दिवानि । --जीड्ड--पु॰ दे॰ 'दिजिड' । -जान्ड--थ॰ रा पुरसी क वह । -हक -- विश् वी हकती या रागीमें विमन्त-बिसके वी द्वरूप कर दियानये हो । -सरफा,-सद्धां-वि वानी औरका अ दीनी तरफ दी। दुरंग ! -तारा-प्र मितारकी तरहका एक नावा त्रिम्में दी तार स्थ रदन है। - बुल-पुरु दे 'दिवल'। यह बहारी देशा । -इत्मी-नी यह प्रकारका भूती क्या वा यहने माल्यामें बहुत अधिक यनता था । - दिस्मा - दि द्वित । -धारा-दि दीनी कार बारदाशा । पु रूप प्रवास्त्री तलवार जिल्लामें दीजी कोर बार रहता है। बिरी 'दुपारी ।] --वासी-वि श्री विश्वते दी नस हो,

क्षासाध्य-वि॰ [सं॰] वो कठिमतासे सिक्ष किया का सकै:

-पाना-मौ॰ शुक्राचार्यको बन्दा वो कवदे छात्रका मवातिक्रे म्यादी गयी थी। -सूग-त सर्वाम। -यामि-भी • देवना बाहित देवताओं ही बीटिमें निने जाने बान निपानर, भप्परा आदि इस जपदेवा आग बकानेके कामम सायी जानेवाची सब्द्री ! "योचा नहीं "नेताबी मी। अपारा । --स्थ-पु॰ मूर्वका रथा देशहाओका बाग निमान । - हाज-पु इद्रा राजाः पुत्रः - हात-पु (बिच्य हारा रिराव) राजा वरीक्षितः वादवस्तवद्धे निताः सारम वद्यो । -रामरि*-त्यो । इंद्राची, शको: १० फ्रिम मे'। -राय ० - पु ० १२ । -रिपु-पु शसुर । -शसा-यो नवमिट्या, मेवारी । -क्रोगुलिका-मी वृधि-बार्ग । -सोब--प्र- देवतानीका शोब, न्यर्ग भ , भव-मारि रात कार : -यक्त-पु॰ भन्नि (भी रेक्गाओं दे निष मुँरक तुस्य है)। -वधू-छो॰ देवतायी सीह नेवीः अपारा । ∽बरमं(नृ)-द्र[े] बाबास । −बद्धकि-पुर विश्वस्था। -वर्ष-पु एक होए। दे दैववर्ग। -बहुम-५० सुर्वुकाग वृक्ष । वि॰ देवनाओंकी मिय सगरी शासा । —धामी ~सी मंख्य मात्राः आकावशामी । — पाइन-पु॰ अनि (अ) देवनाओंके पास इच्य पर्दे वाती इ) । -विद्या-न्ये॰ निरन्तः। -विमाग-पु॰ बस्तर दिशा । --विद्वारा-५० एक रागः देवताओंका प्रिय भीतन । ∽युध्-पुशुग्तुनः एतिस्कादे॰ देवतद । -प्रत∽पु भीष्मविद्यासदा कारिक्षेत्रा कोर्व वार्तिक राध्यत्। - हात्र-५ वसरः देखाः - दिख्यी(दिवस्) -पु विषद्मी । -श्रामी-ग्नी॰ वेदनाके समान प्रयाद-मानी गरमा नामको क्रनिया। −दौशर−त• दीनेस रेपा। – नेप-दुशस्कात्रमा दुभावारा। – भी-दु, - ब्रहर-स्रो इस्मी । − झतु-३ (बर्स्स भारतः द्वालः एक किम । -श्रद्ध-वि देवताओं में श्रेष्ठ । -संघ-विश देश । -सदन-पुरश्रीः पीपकाः देश मंदिर ! -समा —स्रो• देवनाभेषी सम्रा शुपर्मात शावसमा । ~सम्प-पुत्रास्तिकते पासेमानवानमः देवमेवदः ~सारि — सरित-री दें ''वन' । सर्वा-त रद तरमें। -सद्दर-सी॰ इंटीयन । -सामुज्य~प दिनी देखाः ीं विनवर एक दी नामा नेवल माति ? -मावर्षि-प्र भगरतके भनगर नेरहरे मन्।—सिंह-नुश्रीका -शक्त-स्था महिरा । -सेमा~मी+ देवपार्वेदी मेनाः देशीनार्भ १६८६ पत्रो । - व्यक्ति - विष-इ स्ट्रीस दीला मैगरा १ -स्थान-डु स्तर्गेः संदिर् १ -स्थ-ड् देशानि मंची १ -इवि(म)-५ वरिक्य १ -इति - No व्यक्तार्थ का भाषाहता क⁵य कवियी कभी किसने सारम्हे आयार्थे व्यक्ति करका दूर मे । नहंद्रवा-पुर हैक्याओं है प्रीप रियह जानेक्या जनसब । नश्रीतेनकी िध्य कार । -६व-वृत्र सहामारनीन्द्र श्रीचैनएरहा दह हैगड-पुरु[में] निपार वह नहुपयी साना निजडी पुत्ती देश्रीन कृत्य कल्क हुए व १ वि क्षेत्रामीका देश्या वैनय गला संबंध । नेक्ट्रारे-मी दोवड । देशकी-तो (सं] वर्गोबच्चे क्ष्मी अप क्षणकी जाता । है

~र्वदन ∽९व -स्मु~४ इत्या देवकीय देवस्य-दि॰ [र्स] देवतामा देवतानात्ते। बेबर-पु॰ [मं] हिस्सी। वेबदी-स्वी॰ स्वीनी घौगर । देवता-पु॰ [मं॰] श्वर्यत्रे बाम्र दरनेताना रिव्य हाँ॥ संबन्न समर प्राची। देवप्रतिमा। बानेदिव । -ग्रह-व वेदमंदिर। -प्रतिमा-न्धं देदम्ति। -यदम्(वृ) -स्यान-इ विमेरिश देवसागार--५० (वं०) देः 🗦 वापारः । देवताम्मा(त्मन्)-५ [गुं॰] देवग्वरूपः देवश्या हेत्रः देवताधिप-प्र+ (सं+) दे देशारिक । देवताच्याय~पु• (६) शामश्रद्धा एव मास्त्र । देवम-द्र [र्स•] वानेस वह रोह ज्ञान स्वान स्वान ब्रीका चीरवें। ब्रीना प्रमेशवाना दमना सर्ग भरात म्बापारा रतिहा समन महिः धीढ । इषमा−सी [मं] सुमा। शोहा। शोह। वेषयु-40 (र्त०) वाभिक्त धर्मामा । हु देवता र देवर-५ [मं] प्रतिस अनुव गाँध गाँ (नेपार) होस) १ देवरा • - पु • साधारण देवता । देवदामी-की बनरदी पर्ना देव नेव में। वेपरी-सी॰ छोटी-मोरी देवा । व्यक्ति-९ [मं] चैनिष्ठदांतको भिष्टि बर्नेगम् ६६ प्रमिक् जैस श्वविद् । वैवर्षि-द्र [शंक] वे ^{क्ष}त्रक्षि । देवान-पु÷ वेंबाप्तकः मंदिरा [र'+] देवप्रकारी मार्ग त्रीहिता स्वानेशाला आह्ममा नेवटा शामित स्ववित ^{हरा}रे मुनि। वह रमुनिसारः दद धनि । **देवकक**~६ (मं०) देवनाश बनारी र वेपहरा। – ५ - १४ १२ १ हेपोनमा-मी॰ [नं॰] बागुसा देवपादी भी र रेवांप(म)-५ [त] देशम र रेचीरा-पु॰ [मे] रेबनाब्र शागा वरमेशस्य संग्रनगरी इका-भी [ये॰] श्वामारिकी क्षमा। श्रमन । देवाबीह-पु [मं] देवेवाम मातवस । देवासार-९ [१] मंतिर देवासामा गर्गे १ वेंबाजीय देवाजीयी(दिन)-मु॰ [ने] पुगरी ह देबार-पु [6] इतिहर वेष । देवातिरेष-५० (ग.) (वन्यः (५४)। देवाच्या(ध्यम्) - ५ (व) हे 'रेवनामा'। देवाधिरेष-पु [त] रिलाः धिर र देशांचिय-तु (तेत) वरमेपम् इता हावरमुधेन ४४ छन जी निर्देशसार्दे भेज । बताब दुना बा । देवान-५ प्रेशन धनी। राव ररशर । देवानांविष-५ [मं] अर्थे बद्धे परान्धः वराराः वि देनविदा मुर्धे । बंद्यामा -शिव पारास । देवाजीक-द्र [4] देवरीजा र देशायुग-पुरु [त] देशनकोट ४) देश व्यवस्ति हिमाना बच्च आहि शत महीश है। हा रेसरी

तथा इंड-सुख-दुन्छ, राग-हेच, श्रीत ज्ञ्या आदि परस्वर विरोधी मान और अनुमृतिनाँ ।

बुमदा-पु॰ दुन्ताः दुन्सगावा । मु॰ -रोमा-दूसरेसे भपनी हरूप पात्रा हरू सुनाना। दूसरेकी अपनी विपन्ना-बरशका कृतांत सुनामा ।

दुवाना-म॰ कि॰ दर्ग करना, पोड़ा दोना ।

बुखरा=-पु दे 'दुसहा'।

दुस्तवना*-स॰ कि॰ दे॰ 'दुसामा'-'सुर्वाह दुस्तव विधि म बरवरो कालके पर बात'-विनवपविका ।

पुजामा-स॰ क्रि॰ पीड़ा पर्टुयामा क्र**ड** देना; श्पर्श वादि के द्वारा इंसी भाव शादिमें स्वश सरवा स्टाना ।

दुवारा दुवारी+-वि• दुःशी व्यक्ति। बुरितत−दि दे दासित ।

बुलिया-वि॰ बुन्समें पहा हुआ, विषद्श्रस्त ।

बुरितयारा∽वि• बुद्धिवा संबद्धापछ । बुक्ती-वि जिसे मामसिक व्यवा हो। दिका बन्य ।

दुव्यक्ति। -वि दुःखदुष्यः, विधे दुःग्राद्या अनुगद ही

रहा हो।

दुप्तीर्ह्यॅं≠−वि दुप्पदर, दधप्रद्र। द्रगद्द≁न्त्री वरामरा-'वर्ति वर्त्नुत चंमनदी दुगई'-रामचंद्रिका ।

दुगदुगी-नी सीमेपस्य धात, पुरुषुद्धी।

हुगना - अ फि छिपना ।

दुगामरा १ - पु ॰ दुर्गदे पासका गाँवा रिवनेका स्थाम ।

दुग्छ-पु [सं] दे॰ 'दुवृक्त । हुमान-तु है 'दुवे'।

दुग्ध-त [सं•] द्वा पीबीका द्व जैसा रसा दुदना ! वि॰ हरा हुमा: चुमा हुमा: मराहुमा, प्रवृर्ग ।-कृषिका-मी एक स्टनाम। -तासीय-पु शूपका फेना नहाई। —दा-सी॰ इथ देनेवाली नाय। विसी दश देने वानी । -पाचन-मु दूव औरनेश पात । -पापाश-इ॰ एक १४। -पुच्छी-को पुछ्तिसेव। -पुच्छी-मी दुरपरेवा मामक इस्र ! - प्या-शी वक क्स ! ─पोष्प=ि मधान्त्र वृथ गीकर रहनैवाना (वच्चा) । -चेन-पुष्का कर मकारी -चेजी-सी० वस् शारीपार पोता। -शंबा,-शंबक-पु० वद स्ट्रा विसमें geनेटे समय गाव वॉपी बाय । —शीजा—स्ती॰ स्वार विभारतः। —समुद्र – दुः दुरामोकः सावः समुद्रीयेसे एकः

भीरमागर । द्रापीक-त [६०] एक महाएका प्रथर विशापर हुवके रंग के सकेर छोटे बीते हैं।

दुग्यास-पु [लं•] र 'दुग्लंद ।

दुर्भाग-५० [बं] मताई।

दुरवारिय-१ [मं] धीरसागर ।-शनया-श्री कर्मी ! दुम्पारमा(शमप)-५ [ति। दे दम्बरायात । बुध्यिका-भी [तं] दुवीमामधी याग बुधिका शीरानी।

दुरिवित्रवा-का [में] काम विविद्या है

द्वाची-सी [स] द द्रावतासार हरे दुविस्ता । दुन्ती(नियम्)-ति [सं] यूपनामाः नियमे दूव ही

Zeedar 1

हुष-पु• [सं•] (प्राय" समासंवर्षे) देनेवाका । दुमा-श्री [र्थ∘] वह गाव की दृव दे रही ही।

दुष्णक-पु॰ [सं॰] मुरा नामक एक गंपात्वः मनोरवन-

कारः; गंत्रकृटी । बुसन-पु॰ दे॰ 'दिन'।

बुबशब-पु देश दिवेश ! बुढि-सी [संग] बच्छपी।

तुकी-सी॰ दै॰ 'दुद्दी'। बुत-न॰ हमा था तिरस्कारस्पक एक शब्द (वचीरी प्यार

करतं समय भी कमी-कमी रसका प्रयोग करते हैं)। --कार-प्र॰ 'युक्त पुत' करकर किया गया किरम्बार। इस मकार मध्य की घरी प्रथा।

द्वतकारमा-स कि इत-इत' बहरूर विरस्तार सरमा,

तुति+-तो• दे 'बुवि'। -मान-वि• दे 'बुविमान्'। ~र्वत-वि॰ प्रमावुक्त, स्रोतिमान् ।

बुतिय•-वि• दे 'दितीव । वृतियाध-खी॰ दे॰ 'दितीवा' ।

बुतीय - ली दे॰ 'डिटीय'। द्वीया - सी दे दितीया ।

दुव्याना "-स कि दे 'दुवद्वारमा'।

बुबहंदी-ली० # 'बुबहंदी ।

बुद्धारना!-स॰ कि दे॰ 'बुतकारमा' ।

हुन्दी-ची व्यक्त महारक्षी बास जिसमें हुए दीता है। चिरिया मिट्टी।

दुइम-५ [मं•] प्यायदा दरा पीचा।

बुच-'दूब'का समासगढ रूप । -पिही-सीक,-पिटवार्ग -पु॰ वह महारहा परवान की गूँपे हुए मैं रहे छोटे-छोटे और पनके-फाने इक्डोंकी कुथमें पकानेमें चैदार दोना है। -मुक्त -सुँहार-वि देर 'द्वमुँहा । -हुँदी-सी

दूष गरम करनेका मिट्टीका पात्र । तुषार-विश् विसर्वे हुव हो। दूध देनैवाली: विमन सविष

मानामें हुन निरम्पती हो। यो वानिक हुन हेती ही। द्रवास्त्र-दि है 'द्रवार ।

दुधित-वि [शं] कटबुक, पीहिता स्माकृत, परशामा

बुभिया-की॰ दुवी नामकी बाक्ष स्वारको कह किरमा साहिता मिट्टी। एक चिटिया। एक मकारका निष । वि दूध भिना दुवा जिमका रंग दूचनी तरह गरीन हो। -बंबाई ~ि मीनावन निथे हुत मुदे (गदा। पु॰ हा। सरहका १ग । --परमर-पु॰ हद तरहदा सफर पन्नर । -पिप-

पु॰ बीधेने निवस्तनेतामा वद विष ह बुर्धम~ रिकी को बहुत हुथ नती हो ।

नुभ-वि [वं] दुर्गत, दुर्गनं विकास

बुमबना॰-त्र दि दिशी कोपार पीवक शाना सुक पाना कि बनके दोनों गिरे बिन जायें । शा कि किमी शीनदार चीत्रको शतना शुक्त दमा कि प्रशक्ते पीनी विदे भागभने भिन्द मार्वे ।

युनियमी-वि दुनियाका गंभार-वर्शी।

बुनिया-की [अ] अंतर, प्रमुख्य गर्ने स्दर्भेशन

मोठीयः "से दूर नदी। देशमें तरफा । पु॰ मस्पराद्धी, य"मरीद गुवाहा देशका निवासी प्रमाणित किया आले बाला विषय, पूर्वपद्य ।

देप्यु−ि (ग्रं•) नदुद घनार; क्रदंड । तु. थो*रो* । देम-पुदे• देए'।-निकासा-पुदे• दिश्वनिहासा'।

-पाछ-वि अपने नेशकाः स्वरेती ।

वेमावर-५ निरेश वरदेश। देमावरी-रि देशायरका विदेशी ।

हेमी-दि॰ दे॰ दिली १

देई-सर−रि , प [मं•] दारारमात्रका थापण करमे बालाः पेट्ट ।

होड्ड-भी॰ [सं] शरीरः तमः जीवन विद्योग व केवन । -कर-पु॰ (१९११ -क्नो(न)-प पंगमहायतः नृदेः रेप्तरा निता। -हान्-पु० चं-महानृता प्रतेप्तर। -कोप-प परा, देना वर्ष । -क्षच-प शरीरका माधः रोगः – अ:- पुत्रा – अ:(-सी -स्याग-प् कृत्य । -श-य+ पारा । -तीय-प+ भारता -चारक-इ. भरित हट्टी। चरीरी चरीर नारण बरनेवामा: भारता । -धारक-व् शरीर वार्य करना बरम लेगा। पानरका ! -थार।(रिमृ)-इ वह विसने धरीर पारन दिना हा धरीरी आदी । --धि-व+ हैना. पमा - एक्(प्)-प्रवासा - पास-प्रदेशीन, ग्रह्म । -वय-प्रश्रह्म क्रवा । -वय-पि निसमें शरीर भारत किया हो। शकुमान्। जुनियान्। -भाक (स)-प श्रीती विशेषन समध्य । -भाक (ज्)-पुर मोता एते। ~ध्वा-पुर दे दिवनारी । ~बाग्रा-सी॰ बोबबा शरीर शिक्दर दसरे शेवमें बाना धरीरायाग मरमः गरीरश्काः श्रीवन-वापना चीजन ! --सक्षण-तु शरीरवरदा दाश दान, निन ! -संचा रिजी-स्रो प्रशे स्थ्या । -सार-प्र सन्ता । मुण् --एरमा-शृत् होमा । -छोड्मा-मरमा । -धरमा-शरीर भारत बरता । -विनामा-ग्रद इव सी देनाः

भारतेश तुब प्राना ह हेड-वृधिकी साँगा - इसम-वृद्धानवासी विश्वान वि गैंबार बन्द्र । - ब्रामियल - मी मैंबारवना देवानी

होतेश मार्थ । -कामी-वि रेशनी। वैशर ।

देदर~दुशरी देपम दी शोधी मृति । हेंद्ररा-त देशमद मंदिर- बरोद बुनिया देवरे मीण

बदास्य बाद -हर्गाः १ मार्ग्यारीर । बेहरि, प्रहरी-मी देश रहती ।

देहका-शी [र्ग+] म⁷रा शहार ह

बेहसि, बेहसी~मी [में] इरकानेवी श्रीयरवैद्यी मीने बन्ती सदरी जिमे क्षेत्रह बरमें पूर्णने क्रिक्टमन है। -श्रीय -शीवक-म् देश्मीवर स्ता बुभा बीदा (शे बाहरूको पर बीजी केन्द्र बहारा कैकना है। अर्बनकारका है वस भर सहाँ गीनमें चहनेगाने शुक्तका अर्थ गीनो बीट क्याचा घप्ट । -- श्रमाय-पुरद शर्रपाया जिल्हे अप्रमार दिनी बादुरी ही बार्व एवं मान प्रशी बढाए शिक्ष का शहते हैं जिस प्रशादिक पर की देखने नाहर मीतर होना कीर क्षत्रामा ही मना है ।

वैद्ववंत -- वि प्रदेशका । हर देश्यते । देहिन-पु॰ [मं॰] मृत्यु मरम् । वेहांतर-प्र• [र्थ•] इसस्य क्षरेर । -प्राप्ति-भा• कीबारमाधा एक शरीर छोड़कर इसरा प्रचेर प्रथप ध्यमा ।

हेटाला ∽सी शॉब, गॅबरें।

बेंडासी-वि गाँबस्था गाँब-संस्था सांस्य होनेतार-मेंबार र -थम-पुरु देवानी हीनेका माना पॅरास्स ।

बेहातीत-रि थिं। ये देहन परे दी देशवरण्ये रहित शिक्षा बेहारम-प॰ मिंनी दारीर और भारमा। -क्राब प्राचय-प् देह और भारमाके समेत्रका धाव । न्यारू-

य हर बार्गनिक सिर्मान विस्ति अनुसार देह ही बाजा है, देहने कि बामा माध्या को बनाई हते। जाती (दिन)-पन रेडसयराखी माननेरामा, मार्गस्य प

देशाध्याम-र नि विदेश माना वा देशमें हरू। क्या, बुक्या और। आर्थि होना)की सामावा पर्ने स्थ-शनदा सन् । रैहाबरण−दु [सं•] बिरद्रः पस ३

बेहायमाम-५ मिश्री देशेन कृत्यः हेटी १-मी दारीर । वेदी(दिन्)-ड [र्स] देहवारी नीव गरीरी।

बेड्रेबर-४० वि विषय स्वामी भागा ! बेहाज्ञच बेहोज्ञस-२० [नं] महत्र प्रमायन।

देश--प्रशासाया देश fait-g & 'cien i

हैतेव-९० (r'+) अनुरा देख । -तुद -पुरोपा(वम्) -क्ष्य-इ श्वास्थावं । -निमुद्दन-इ॰ विद्या -माता(न)-श्री शिन ! -मेरजा-मी प्रिती! है थ-९० (५०) करवन्द्रे दे हरकर्या प्रथ भी उनकी का दिनिके गार्थने अरम इव दिनिक्ये रंतान (प्राप्त दुवन वे देवनाओंदे शपु दिने बान है)। भीमहाय और अपर बण्डाली अनुष्य । -शर-पु हामाबारे । -देव-17

वरणः बातु । -धृतिब्दी-मो । तथा देव में मनेत्रे वर्ष कामुद्दा । -पति-द्र दिरम्बर'राषु । -पुरोध'(वप्) कृत्य-९ शुक्षायार्थ । -मावा(१)-मे रिपे -मेर्ज-त ग्रापुत्र । -मर्जा-मी प्^{रिती ।}

-बुग-इ दैलंका प्राची देखाओ शार दर्ग वर्ष दा बीता है। -समा-मी प्रभार है वन्ता! हैया-यो [यं] रेल्डिशिय भी। में गाड्या अवर

गराउपरा मंद्रीपरि । **रिमारि~न**्नि [नं] निमार ^करशा र क्षेत्र्येष्ट्र−५ [ग्र•] र्रन्सेश रामा १ देखअप~go (श्रे) शुद्धानश्रो ।

देशदियानम [त] रिजोरिक प्रतिदेश। रिवर्षारिक क्षेप्रैक्षणः जिल्ह्याः

हैनेदिमी-रि शा [तुरु] रे रेगरेग । भी गीर बामपा राष्ट्री।

हिंबान्यु [ते]बोत्यात क्षेत्रत विकास प्राप्ता कि

तुराब-पु॰ [सं॰] म्हेच्छ-मेश म्हेच्छोंडा एड देश। तुराकृति-वि॰ [सं॰] क्रक्टल । द्रशास्त्र-वि [री॰] बाद मारकर रीता धुमा। दुराक्म-वि॰ [सं] दुश्व ।

दुराम्प्रमण-पु [सं•] बप्प्यपूर्व माम्रमणः वह स्थान वहाँ

बामा कठिन हो । दुरागम-पु [सं] हुरे वा धवैष रूपसे प्राप्त दोना ।

दुरागमन-पु दे 'दिरागमन । बुरागीस - पु॰ दे॰ 'दिरागमन'।

बुरामद्द-पु॰ [धं] अनुभित्त रीतिसे किसी वांतपर कड़ भागा, इंड, बिद् ।

हुरायही(हिन्)-वि॰ [एं॰] की दुराधह करे, हठी, विही। दुराचरन-प [सं•] ६ 'पुराचम । हुराचार-पु॰ [चं] निय शायर्थ, करापार कुकुरव ।

अध्याप्त अध्याप्त ।

दुराचारी(रिम्)-वि [सं॰] निय कर्म करनेवाका कुरिसत आपरगराका, कुद्धमी ।

हुरा मा(रमस्)-वि [सं॰] क्रिसका जंतऋरण शुद्ध न हो इत्त्वचा खोटा नीप प्रज्ञीका।

हराहरी-को छिपान, दुरान । -- करक-गुप्त रूपमे । दुराभम-पु । (सं) धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

हुराबर-पु [मं•] भृतराष्ट्रतः यह पुत्र । द्वराधर्प-दर्श [संरु] पोडी शरसीत विष्त्र । वि विसदा

हेसमात्र भी परामद म हो सकी विख्य, प्रचंड चग्र । ब्राघर्यां-सो॰ [मं॰] कुटुंरिनी मामकी बता ।

हुरामार-पु॰ (छं॰) शिव। हुरानम-दि• [सं•] जिसे सुकला बहुत कडिन हो जो

नहीं मुश्किनमें मुकादा जा सके। दुराना-स कि दूर दरनाः बॉमीने बोहरु दरना

ग्रियामा। ⊭ स फि॰ दे दुरना — "माम ≹त निव रान सुग दुग दुराव बरमात – रसिक्षविद्यारी ।

दुराप−दि [सं•] दे दुरवाथ । हुराबाध-पु॰ [मं] हिव ।

द्वरासाध्य-दि [मं] क्रिमे मंतुष्ट या प्रमन्त्र करमा बहुत करिन हो। निसका भाराचन बळसायन हो।

पुरास्ट्र-पु [सं=] देवा राज्या मारियल । दि० जिलक्ट नामा बहुन बहिन हो।

हुराहदा-भी॰ [मं॰] राष्ट्रका है।

दुरारोड-पु॰ [सं] ताहका पेत्र । वि जिल्लाहर अहना ऋहिम श्री ।

दुरारोहा-स्रो॰ [मं॰] मेमरबा पेट्ट दाजूरबा पेट्ट ह दुरासम, दुरालम-दि [ते] दिने धूना या वाना बर्दन बहिन हो।

दुरासंभा-नी॰ [तं॰] बरानाः बरान् । दुराकाप-दु [मं] दुरी बात-शेत कुवाती। दुर्व-म क्रांब्री ह

दुराशोद्र-दि॰ [तं॰] को वहिमारंगे देखा जा सकै। जिस्सी और देखनेने का ग्रीड वार्ते । चु चडाभीव रैण करनेशांश समद ह

दुराय-५ दरानेको किया छिएव गीयमा भेरमासः । र्यथकाः।

छक्त । बुराबार-वि॰ [सं] विसे डक्रना या रोकमा बहुत

ऋहिन हो । तुराञ्च-वि॰ [मै॰] विसे दुराहा दी, दुराञ्चावाता ।

तुराक्षय~पु॰ [सं॰] वह व्यक्ति विसक्ते विचार निम्न कोटिके हों कुरिसत विचारीवाका स्वक्ति, दुशरमा, दुरा विचार तुरा स्वाम । वि॰ निसन्धे नीयत सराव हो, निय विचारका, भीच हरवका, सीता । हुराद्या-की॰ [सं•] येमी भारत जिलका पूरा कीना कठिन

हो सुकी माशा दुरी प्रथा। त्रसम्ब-वि॰ [सं॰] विसके पास पटुँचना कठिल हो दुर्वमः दुष्पाप्तः, हुक्यः दुर्वयः अदितीय । पु शिव ।

द्वरासा==की दे॰ दुराद्या'। दुरिस−तु [तं] बाव दुन्कृत किरिसवा राहरा। संक्र? । वि कृष्टिमः पायः, पातःहाः। - वसनी - स्तो । स्रमी मृद्धः। विकी पापनाश्चिनी।

दुरियाभार्र-स कि॰ दुरदुरानाः दूर करना दशना । दुरिष्ट-दु (ई॰) मारण मोदन प्रधारम मारि अभि चारों है किए दिया वानेवामा वक्क अभिद्याप ।

तुरिष्टि-स्त्री [मृंश्] अञ्चासीय पाग । दुरीयणा दुरेपणा-स्ती [म] शाए।

द्रक-पु॰, बुरुक्ति-औ॰ (सं) दुर्वधन । दुरुप्छेद-नि॰ [सं] विसका बन्छेर कठिनवासे ही सके दुर्गार ।

बुक्चर-पु॰ [सं॰] पुरा बचर । शि॰ विसदा बचर स रिया जा सके दुस्तर ।

बुरुह्रक्र-वि॰ (सं॰) विसद्ध बहन या सहन म किया जा सदे।

इक्पयोग-दु [मं•] अमुवित वपयोग, बुरा दन्तमाल । बुंदफ-पु॰ मि॰) सीलकंट शानिकके अनुसार वदीतिका पद्भ शाग ।

हुरुस्त−दि॰ (फा॰) वो बच्छी (स्वतिमें हो डोहः तिसमें कोई खामी न हा बोक्टरिक उनिन यक्षा मुक्तिमुक्त । शु॰ -करना-रंड देकर क्षेत्र शास्त्रपर काना गुवारमाः दट रेमा ।

बुरवनी-सी॰ बुरुत बरवेदी किया सुपारमा । हुरूइ-दि [मं] वहुन मामापधी करनपर भी अपन समन्त्रें भ बानेशका, बढिनकारी समन्त्रें भाने बीग्ड करिन ।

दुरादर-इ [मं] वहसार अभारी पासाः सुमा पृहः मानी !

बुर्रीया-बु मरेडा दरवारेडे कपर लगायी मानेशानी

सदरी ।

हुर-वर्ष [मं] वह करमर्थ को मंदायरी भार विचायरो हे पहने इस अवेमि थाहा वाता ६-(१) ग्र**ा**च्छा (२) निण (१) निषप (४) युज्ञा बा संदर्ध ।

दुबंत-0-3 दे• दुपुत : दुर्शेष-की (ते) दुर्श मंद्र, बण्बू। पुरु कामा समग्र व्यातः क्षात्र कृष्ट होते विश्वन युग्त निरमनी हो, पुरी

बाद्ध मिन्नी हुई थिड्डी । नशहस्थानविश दी संविधी बान्य तीतरा । —ऑक्टा−विश् विमुक्त दी देश धी । - • मॉप - पु एक मॉप जिमको दुम मीडी होनेके कारण दशरे मेंद्रपोली जान पश्ती देशमद मनप्ता जो दो तरह मी शते करे कमी ममुख्य । -ईसा-वि॰ दें॰ दुरंगा । बिसमें की प्रकारके स्थाप का रस की। -स्या-वि -सदा-वि॰ ११ वरीवाचा । -शास्त्रा-पु० दी टाळी-बाहा धामादाम । -सासा-बि दी वर्षका की वर्षका पुरता। -मृती-सो० दे 'दुवृती'। -हत्त्वद्र-पु दीमी दादीश मारा दुधा अप्यतः। —हत्था-वि विमर्धे दीनों दाबीन दाम किया आवा जिममें शेमों दाबीका बरवीमा दो ⊢द्वराह−पु विद्वार सामश्र । ग्र० -स्रॉफी इंग्रमा-मनान रहिम न वैद्याना । -विनदा-दालदाः भद्रत कम उप्रता ।~ मार्चीयर चड्डमा या पेर रूपना≔डी पर्धोदा अश्रमन करना। दी चन्तुर्भेका सदारा केवा। -- सिर द्वीना--मरमदी तैबार द्वीमा भौतुक्वी•बीता देना है बोडो−ि द०२०४३ । दाउ, दोऊ-वि वानी। क्षेत्रका - ५० ट्रुगः। **श**ोपक-पुदे दीप ध शीपना १- छ कि वीवारीयण करना दोवी उदरामा दंब महाचार र योगीश-(**१ रे दीने ।** दोगा-प एक तरहवा छ्या हुआ निहाक पानीमें धीना ह्या पुता। दोस्पा(४५)-५ (तं॰) व्याका दुवनेवाचा वर्तवा धारण ग्वार्थस्य गोर्र कार्वे करनेवाण व्यक्ति । द्यारµी-म्या [र्ग] दृष ⁹भेनामी गान का नाय ३ **धीय~प्• [H•]** दुधमेरात्मा । क्षोचः – स्वी अंग्रह्म, बन्ना है शिका, अनुसंबंध विशेषीयः ETHE ! क्षोक्षक –शी० शोमः दशव दानमाः दशकी पतमाः। श्रापना∽ग्र क्रि बगाव राजना। ब्रोज -श्रा ६'त तिरोबा विविध क्षोज्ञरप्र-सर्वाचा । राजाम वर्भके अनुसार वह रवान यहाँ ध्रमानयो बार पत्ती आहेते, अहल्य जरह है क्षाप्रभुति-११ श्रीयम महंभी दीवतका नाग्यीका वीजम से अवने बारब (बारी); बहुन बहा बारी ह शोशन - पु के शिरान । सारमार्ग-म कि किने देग्यमने बारे पूर्व बारी मुदरमा। काराज्यां-एर किर नेपनेश काम विनी दुगरे । बरामा म्रोध-द (११+) मन्त्रा । दीयक-तु (११०) एक वर्णमृत्त । होत-पु रीभाषा दी प्राप्ति से बंदर मुजाया 🗓 श्री ही-बार्गमात्री वर्त्रभीका हैला कारता अकला दिया है पुष्पा बद मना पुरुषा जिल्ली बान्हे तेनवे वासी वहिनाते है। अता ही बढ़ मार होगा है होजा-द - दले'दा दवा हुना कीर्रेश बणु वः बणा दीया। सोनिक सामी-मी ऐतारीमा भोजी-1र पुरुवदित वा देने हो किन्द्रेन एक की ही हा शिक्स-पुर्न है। है समरीहर

द्या कार्य समय । बाबसन-पु शोप लांटन !- शेरन नेन हरे रेप्टि एक बस्यों में जायों नहर । क्षेपा-५० दुविचाः मी विवतिबंधिः बीयसी स्वादा । षोयण-नि० दीत्री । वीयम-निश्का] दूसरे वर्वेका दूसरे प्रस्तका। दीर-पु॰ भि॰] रम्बु हेर। हे सो दूसरा बह पे+ दर्व जमीन । बोरफ-पु॰ [सं] मीराने वारीक्ष क्षंप्रका र्रांश शेंप। वीर्-बीम् का समासमन् रूप । -प्रह्न-दिश्वनरम्। तुरे बाहुरतीम रीय । -वैद्य-५ अत्रोदा में ८ दार् थोद । --मूल-पुर भुरमूच 🐠 । -पुरू-पुर १५ ब्रुव कुरवी। कोबर-पुरु [र्सरु] सुन्ना; शुन्ना; श्रीको मना ५रीव रोगी। होलम-पु[मं•] शुलना। होसा-मी (लं) सका दिवेत्रा स्थित्र की में मोलका पीचा। थाः शोयनेता मन्द्राः। नवेत्र-५ 🛣 सर्वे चनारनेका मनका : - सुद्ध-पु: नर प्रवे किने वीतन्दार सविधित हो । क्षेक्राचिम्बर-वि० (सं०) श्_रपर बाा प्रया ^(का) विमदा निधम स ६। १ बोकापमाम-(१० [मं] सुन्दा दुमाः अस्मि दुवर र्गदाव-प्रश्न । बोक्सचित-दि॰ [मं+] दे दिर्मल । बीकिया –सी॰ (संन्) प्रचार धार्थ । क्षोक्रिय-रि [सं०] सुरुषा द्ववा वरिषर । होसी-स्थं [सं] शानीः पानना समा । बोन्धेग्सब्प्युर [सं] काश्यमद्या पृष्टिमध्ये सं रेजा मैजाबीका पद उत्तान जिल्ही दिही देवर क्रान्स्टे क्रीमार्टे शमाते है । बोशीहरहि-मा (का०) क्रीमारायाना क्रीमारी सारीका-भी (या] क्यारी बन्या ह क्षेत्र-प [में] अवराध कन्द्रा क्ष्याप देश विस् राराती। क्षांतम अन्यत्र बार, क्यांता हु^{तः} अपूर्ण रणा गीवृतिह किमी बायका संगमा रमकी अगहर बराने हैं बाज्यान पुरिश् लिपिटे अधिकारणी अपन रेजिए दक्ष सदारक्ष चल्छ (ग्री०)। अभरत-ग्राम सार्गी हे हराई हीनेसामा बागा प्रतिहमें रहतेबारे बात शिल और इन जिनके कोचा शारीर व्यास्थ्य र ही अन्ता है अन हैरेने वालप्र कियानः राण बेंचारि भी मनुष्यको कृतने वा देणहें प्रकृत करत दे। -कर कार्त(शिक्र),-इन-रिन् !" बर्नेन ना अ तरका श्लाही (हिने) नी अप गाँव -प्य-दिन बाद दिए और बन हे रेन्सी पन कारे मनावस वेदावस मार्ग वन्त्र वि विद्या प्रदेश -सप-तु वन शिवकोर दय-वे तेन रेव) हीर fie ba gibeinte -an-a an e'es lieu जराति है अवस्थित ब्हिस दिया 🖺 र नश्रव (व) विक रीपी अपरानी है होत्रक-पुरु [) हेरील वत्रराह

114 दुनामक-पु॰ [सं] धर्म रोग, बदासीर । दुभामा(मन)-पु• [छ०] धेरेषाः सोपः वर्श बनासीर । वि दुरे मामबालाः बदनाम । बुर्भामारि-दु[मं] ओस, शुरुव। हुर्नाम्बी-सा [सं] पॉपाः सीप। दुर्निप्रह्-वि [सं•] विसे वश्में काना कठिन हो। बुर्निमिश्च-पु॰ [सं॰] अपराकुमा बुरा बहाना । दुर्मिरीइय-नि [सं•] दे 'दूरालीक'। तुर्निवार दुर्निवाधै-दि [सं] जिसका निवारण करना कठिन द्या को सदसा रीका न का सके जिसे दूर करना या सममा दन्दर हो। ह्रवीत-वि• [सं] नीतिनिक्य जापरण क्रस्वेवाला। पु० दुष्यमें। दुर्भाग्य । हुर्गीति --सा॰ [सं॰] नीविनिस्ड बाबरण, कुनीवि। दर्बछ-दि [सं] शक्तिहीन, कमबोरा श्रीनकाय, कुशा দ্বিধিক। हुर्वमा-नो [मं•] बलसिरीसका वह । दुवांछ-दि [सं] जिसका सिर गंबा द्वाःकृतिक देशदानाः। दुर्बदि-दि [मं] दुष्ट दुविदाला कुदुविह इत्तुविह मूर्ते। दुर्योद-दि[सं] चौ शीम समलमें व आदे गृद हिए। दुर्भस-वि [सं•] विसे रात्रा वर्डित हो। विसदा स्वाद भण्डाम दो । पुनक्रासः। ह्मीग-वि [सं] इतमास्य मेरशास्य भगागा काकिरमत। दुर्मगा∽क्षा [सं] श्लो कौ बिने बसका वित स पादत। ही। कर्यद्वारगे। विश्व ली संद्रभाव्हा अवायित। स्मर-वि• [मं•] विश्व पारणकरमा कीना या निमाना श्रुटिन दी' सारी । हुमाँगी-दि भाग्यदीन । दुम। स्य-पु [मं] मतिकृत ईव कृटी क्रिस्मक वर किरमनी । वि भाग्यद्दीन, अमला। हुर्माय-पु॰ मि] दुरा धार कुमाना तुरछ नियार । इ.मॉपना न्यी [मं] दुरी मानना कृतियार । हुमाप्य-दि [मं] जिसकी दृष्यता करना कठिम हो। दुर्भिश-पु [मं] बदान, इत्ता। दुर्भिच्छ = चु के बुल्या हाभइ दुर्भेदः दुर्भेद-दि [धं] जो बहिनारीने मेदा या ऐशा का छड़े अनि हा। दुम्बय-१ [तं] देना मोदर वो वर्षावित रातिमे बादा का शासन म करे दृष्ट मीकर । दुर्मय-पु दुर्मयना-न्ते । [वं] बुरी हात । दुर्मति-पु [लंग] एक संस्कारका साम । स्वी दे इपनि । दि दुश मंद्रुक्ति, सूर्ग । दुर्मद्-दि॰ [तं॰] प्रमण्ड मशाब मरीवन वर्वन मरा दुमना(नम्)-वि [1] दुष्ट हत्त्वकानाः वर्णमः विका बागाः विगसा मन शिक्ष हो। उदानु । दुर्मनुष्य-त [त] दृष्ट मनुष्य रण्य । दुर्मर-इ [+] द्वत मीत समह तह हानु । वि ना रत द्वाराम मरे। दुर्मरा-मा (५) एक नरहबी दुव ।

दुर्में किका, दुर्में इसी ~सी [र्स•] एक प्रकारका सप्रस्पक (इसमें चार अंक होते हैं और हास्परसक्ती प्रवानता रहती हैं)। हुर्मर्थं दुर्मर्थंब~वि [सं] दे 'दुःसह । दुर्मित्र-पु॰ [सं॰] तुरा मित्र, कुमित्र । वुर्सिस्-वि [सं०] बनमेडः ब्रुटिनतासे मिहनेवाहा । पु• एक मात्रिक छेर। एक प्रकारका सबेबा। दुर्मुक-पु [मं] वीकाः महिवासुरको सेमाना यह सेना-पतिः रावणको सेमाका वक यह यक मामः शिवः बृतवाकः का यक प्रकारक संबरसरा यक राज्यसा एक पश्च-रामका व्यक्त ग्राप्तपरा एक वह । दि शहुमात्री, क्रमुमा बीकत-वाका। वदस्ति । दुर्मर, दुमस-व १० 'दुरमुछ'। दुर्गुहरी~दु (सं॰) दुरी सावत अप्रस्थ सुहुत । तुर्मेक्य-वि [र्मण] अधिक दामका बहुमूहया सहना। दुर्मेषा(धम्)-दि [सं] संदुद्धि, मृर्गः। पु संदुद्धि दुर्मोइ-५ [सं] कादनुरी कीमाठीकी। दुर्मोहा - ली [नं•] कीमाअही। सकेर पूर्वा। दुर्वेश (भ)-प (सं) कुल्पाठि अप्रयष्ट बदनामी। हुवाँग-पु [सं] हुनाम्बसूच्य प्रस्वोग, प्रश्लेषा हुरा पेत । तुर्योध-वि॰ [सं] थाँ भीषव शुद्धमें भी बरद्भर कहता रहे। जन्म । हर्योधन-पु॰ [सं॰] प्तराहका ओड पुष बिसडे कारण बीरवी और पां-वींके कीच विश्वहरूपिक महामारत कुक हुमा। वि देण दुवीप । हुर्योगि-वि॰ (सं०) बीच वातियाः अवस कुछ्काः दुर – पु [म] मानीः कानमें पहनतेका रक गहना। द्वरा-प (का॰ अ) चमतेका चारक। दुर्रामी ~ प्र अक्रमानोंकी वक्त आदि वो कंपारके समीप वसी है। दुसँच्य-वि॰ [६०] विशे सांचना या पार करमा ककिन ही। विमुद्धा दरसंपन या मितवामण हुप्पार हो। दुर्कहर-पु [सं॰] दुरा बदेदर, दुरा धीव। वि॰ श्री इंडिनारेंभे रेमा वा घडा बुरु म-पु [न] कपूरः रिप्पु। विश्वकारिकना कडिन हो, बुध्प्राप्या भवि प्रशस्तः प्रिव । इस्सा-सी [मं] इत्तरं कारी दुरावया। बुष्यभिता-वि [मं] अधिक प्यारंग विभावा दुशाः दुष्ट भेटाबानाः मरसार । पु भादत्य । दुर्सेगय-दि [मं] ज्यिती निरागर बन्नी हरी हा दि यी संज्ञासद्वातु क्लाकी कागक। बुर्यय-पु [मं] कहाँक, कह बसनः गानी। हि॰ त्री बर्टिनारेथे बहा बा महे जिने बहमा वन्छहर हा। नुर्वच(म्)-दु [त] बदुवयन। दुवयम-पु॰ [म] बरुवनः गानाः दुववा(वम्)-वि[मं]वरुमाराः तुर्वेच-तु [[-] रवा, वंदातातात महर । ति विम दात पुढ दूबा है। निय बर्द मा।

बीत्य-चुपा दीबारपर कुँची दीहाना) । दीत्य-प [मं•] दृतत्व दृनद्ध कार्यः सन्दाः। होम>-प्रदेशन । दिश्दमन बरमेराला । शीना-प्र वक बीपा जिल्ली वर्तियों मिनीय प्रकारकी ताम सर्गंप दोता है। * दाना। ब्रोग्यगिरि १ * स॰ दि बम्म करमा, दबामा देपामा है दौनागिरि~५०६ 'द्रोगगिरि । दीनाचन-प्र दे॰ 'होमगिरि'। हीर-पु॰ [न] फेरा घटर, बुमार समदश फैर, समाने की गरिया चहारे, माह्ममण समय मुना बन्निनहाणा साहः बाक प्रमादः पारी । कशी श्रीकः आक्रमणः छापा-मार् बुल्मा १ -दारा-ध बोनवाना बङ्गी। मु० -चढमा-धरावदे ध्वाध्का बारी-वारीते वंजैपाओं पूछ **रहें राया माना ।** दौरता≉−न॰ कि दे॰ वीदना । शीरा-15 रॉग, वेत मारिका राजरा। (म॰ दीर') बारो मीर शुममा वद्दरा इदर-इचर आना बाना। गरन श्रीव वत्रतान वा निरीधगढे किए अक्रमरका अपने रकाउँ हैं बमना। समय समयक्ष होत का समर्शनेकानी वीमारीका बाह्ममंग बर तर भाना-बानाः इमना । ग्रुव -कर्ता-कों व-परनान या निरोधन है हिन बाहमरका अपने दनाहे मैं पूमना ! - मिपुर्व करना-विवार वा निर्मेशके निष मनियुक्त वा सुब्दमेदी श्रेशन नश्च वहाँ भवना। ∽ सिपुर्व होमा~दिचार वा कि^{र्}षके विष ऑन<u>पु</u>रुका 8 धन मन के यहाँ भना जाना। −(र) पर रहमा था श्रीमा-भरने एकढडे निरोधन मादिके निर अफनाका सारमे बाहर रहना या होना । दीराग्य - प्रमि] दुरात्मा द्वीलका नाव दुर्जनगाः अंगः बरण मुक्ति, रवजार कारिक्ष मधीरता । षीरादीरी=न्मा• दे॰ 'दीश्रभीश' । दीराम-तु [#+] बद्धाः श्रीरा, जमानाः देरपेरः जाग्यः उस । श्रीराजा॰~स• कि दे÷ दीशना ^३ दीरिल-५० (में) शरादेश वानि दर्जि । भौती! ~भी चीता बीता होया होस्ती धनेती । दीर्गाच्य-व सिशी हो। संब बहुत्। दीरों – दि० [र्ग) दर्गंद : वर्ग-कंशी । षीर्गस्य~द्व [सं] निर्धननाः बटा दुर्गनि ३ बीरबै-५ [००] ब्रहिम्शा । बार्मर-४ [त] धरवन्य स्त्र । **रीजेन्य**--3॰ (सं॰) द्रेनमा दुष्टना वीजीविध-९ [सं] वश्यत् प्राचम व रीवंडय-५० (मे] दर्वजना । क्षीम तिमेच-पुरु [ब] हैं मी भी दो पुष (बसदी पर क्री ब्रह्म मही। मीर्काष-९० [¹] भावता क्षेत्रां दर्जाता । र्वामाच पु [वं] ब्राइटेस लाज्या सम्ह ।

बीर्मनस-पु [rio] र्मना दी का माबा वहा स्वसाया

- स्टब्रीन्ड स्टा द्वीषा ग्रेगास्ट र दीर्च-पु. (सं.) दूर होतेल, प्रत्य दुराय र

बैद्धित्य-पु [र्न•] दुरा बर्धरता । रीवॉद ~ड॰ [र्ग॰] १इ'द दोनेस मार शहा। र्वाइद्रि~पु॰ वि] दुइ र् दोनेस मात्र दुरिवर प्राप्त धानुताः क्षेत्रः । वेडिंवय−पु॰ (सं॰) ममको गोरारी शर्पा । वीर्द्धविजी-स्गै॰ (सं॰) गर्भरता सो । दीकत-न्ये॰ [थ] थन, संसदि । ~शाना-9 रक रबाम वर (बसका प्रयोग बाहानावर्ते विमीका वर रूपे समय दाने है । बसरवाना 'वहारसामा समूदा गरे। करता है)। -मंद-वि थवाराः, जान्हारः -मंहै नी॰ पनापता मारदारी । रीसिक्ति≠−ना शेसता दीवेष-पु॰ (वं] रूप्तर, स्तुना । वीस्मि–१० (००) गंद्र । दीवारिक-पु॰ [मं] मनिहार आरशन । दीवारिको-सा [न॰] व्यक्तिस्टिः शस्त्रारिसः । दीक्षर्य-थु [गं०] दुरापरमा दुप्धर्मा दुप्रना । (प्युप्ट∽4ि (स.) दोन∜ग्रमे बराधः शेष्ट्य-प्रश्नि दश्या। दीव्यंत दीव्यंति-दुर [4] देर 'दीव्यति'। र्शाच्यंत्रि~पु० (सं] बुष्यंत्रके पुत्र अरत्। वीदिय-तु [मं] बरीका देश नाती। बरिया दीधारण दिनः ग्रह, सनदार । र्गेदिसायण-९० (ते) रीदिमदा ९४ । दीहिची-भी [मं] देवेदो रेश मनियो। यामा यामा। - मु कि है हिल्ला । श-पु॰ [शं] निमा श्वर्ण, आक्रामा बर्णमा नीमणा —श~तु रही ३ वि अल्ह्याहरू गाव दरनेरण। −शय-पुरे बहरवा': -वर-पु प्रशासी -युनि नवी-मी रश्रीमा मंद्राहिनो । -विश्वा (मिन्)-पु॰ देशाः -पति-५ रा सीमा इप्र । -पथ-५० बन्धासमये । नमनिना पर मरारदा देश : -योविम्-मी अन्ता ! -सेक्नी स्वयं केंद्र : -पन्(ह) सन्(ह)-इ रेशनायी -मरिन-न्ये ।वर्गया मंदादिनी। धार-चारी प्रस्ता स्वारि-१ [तं श] के ना । स्ति-मो॰ (त) गरासी नाव शीर वर्ष री 1 ml -1-18-194 1-18-174 .aup श्रातिपु∽ि [रो] है भीर्यपुर र चःत्रिसेंन∽ि दे वितिमान् । द्यानमा(सम्)-भी [तं] दशि प्रमा वेरे । थतिसान्(सप्)=(१+ (+) प्रश्रिकः प्रगाप्तिः। शन-५ (त) राज्य क्षत्र-१ वर्ग रेजान सन्दर्शस्त्र र stud -une [no] fenentet ee ere & old चन है। यमन्(यम)-११० [त] दण्यातः। मेंबन-बेर [त] कि मधानमा क ्राहरून यश(४४)-५ [] ल्री

440 ग्गारिन्छ। क्रोतियुक्त (श्लका प्रदोग विश्वेषत सीनेके किए रोगा है)। दुवादमी + नमी दे • 'हारखें"। प्रवासी-पु• दे 'दार ! बुवारिका! - सी॰ दे॰ 'डारका 1 दुवास-५ [का•] यमहेका तसमाः रिकानका तसमाः कारमें रुपेन्नेका भगदेका भीका फीता, अपरास । -धंद-पु॰ तसमा गॅंबनेदाला सिपादी ! बुवाइ-वि• दे॰ 'दु'में। युवित्र •−पु दे 'दिनित्'। मुवीय-वि दोनी। दुरामन-पु दे दुरमन । हुवाबार-वि [फा॰] बढिन मुस्लिङ। हुंबाबारी-सी स्टिन्ता मुस्स्छि। बुबासनक-पु दे 'बुश्चलन'। स्थर-वि [मे] जिसे करना कडिन की केंद्रिनारेंसे क्रिया जा सके कठिन कटसाय्य सुप्तर। बुक्रारिस-मु [सं•] दुरा काचरक,कतापार। दुक्कृत पाप । वि॰ पुरे भागरणका दुर्वचः अदिमार्दने या वड सहकर निया हुआ। द्रसरिय−५ (शं•) दुरा पाल्यक्स । वि धरित दरा ही परिवरीन वृदयक्त। तुलर्मा(मन्)-पु॰ [मं०] वह पुरुष विश्वके मेहनके बगड़े गागपर बन्मसे ही बमहा न ही। बुभिकिम्म्य~नि [मं] विसन्धे चिनित्सा करना नद्वत वहित ही। यी अपटा म किया जा शके बसाध्य । बुश्चिक्य-५ [म] रुप्रधे दीनरी राधि (ब्बी)। दुधरा-मा॰ (सं) तरा भेदा। भुभेटित-तु [मं] कुरुष निषद्भै मीच साम। नुस्थ्यपन-पुमि देहा वि जो बक्ती च्युत वा विक क्षित ग दिया वा सके भविनास्य । बुक्प्याय-बु [मं] शिव । ति है बुक्यवन । तुरमन-द कि । ध्य, मेरी महित पादनेवाका, मदारो । ब्रुप्रमानी-स्री॰ शतुतः देर । बुप्पर-पु (मं) बहिन बार्वः बाबाए। वि विमे बहता बर्धिन दी बहसान्य शुक्रदश उस्ता। बुरुक्य-यु [म] पुत्रतहसा बन्द पुत्र । बुरमर्म(म)-इ [न] हुरा कामा वाप । क्रूप्टर्मा(मन्)-वि [सं] क्रुक्मी। पापी । हरकर्मी-दि॰ हुक्मी पुरा कार्य वरनेवानाः पापी । दुण्डाम-पु [सं] पुरा समय ऐसा समय क्रिममें भोगी-ही तरदनरद ६ दश दी। मनदा दुविना शिव । रुप्रीर्वि−री [] अपदश प्रतामी ! युष्पुत्र-पु[मं] मीप पुत्र ग्रुष्ध पराना। नि भीप कुनमें साम्न मीम कुन्या। पुरपुग्पीन-दि [गं•] श्रीय मुन्तमें करका भीव मुनद्धा। द्वाकृत-पि [4] ह देवेकाच । दुष्टम-प्र [म] नीम बर्म- वावा वि दुर गरीका

विशा दूम्यो पायी।

बुरकृति-सी [र्थ•] पाप। वि भीषकमैक्र(नेवासा) पापी। हुक्सी(तिन्)-वि॰ [सं] कुक्सीं। पापी। बुष्करिस-वि॰ [सं॰] मोक केते समय विशके रूप संदर्भा भारिको पूरी वरीका न की पनी हो महँगा। तुष्कदिर-पु [र्व] धीरका एक मेर । बुष्ट-वि॰ [सं] क्षतिप्रस्ता निकम्माः बोबनुक, दूबित सदोक तर्दशासमें व्यक्तिकार बादि दोपोंसे हुछ (ईह्र): वित्त जारिके महोवसे विकारमस्य (नेत्र वादि); सक, पिशुम, स्रोटा मीच वरमाश्च । पुरु कुछ कीदा पापा अपराव । -चारी(रिन्)-नि॰ दे॰ 'दुराबारी' । -चेता(सम्),-धी,-बुद्धि-वि छोटे इत्यका, बुष्ट स्वमानका। - कृष-पु॰ कामका करण वा समब्त होने हुए ठीक काम म करनेवाला वैक्र । −धण~पु॰ वह धाव भो जरुर अच्छा न की। नासूर । —माञ्ची(हितन्)—पु० बह साक्षा बिसमें साक्षियों में म होने योग्य दोव बर्तगाम 📆 अवश्य गुरुष्ट् । बुहर-विश् [सं] देश द्वरतर । ब्हा-को [र्थ•] बुरी भरती सी। बेरवा। बुहाचार-तु [र्शः] दे॰ 'बुरापार' । बुष्टाचारी(रिम्)-वि सि] दे 'बुरावारी । बुद्याच्या(त्मन्), बुद्धाञ्चय-दि [सं•] दे॰ 'दुरात्मा'। दुराध-तु (र्व•) छत्रा हुया मन्ना पापना अस। वृष्टि-लो॰ [सं] दोव विकार, धामी, वेव ! सुष्पच-वि॰ [सं॰] आ श्रीप्र स पथ, की हैरमें पड़े। हुप्पच-४ [सं•] थोर सामक शंबहस्य। बुप्पद-वि (do) दे 'दुष्प्राप्त'। बुष्पराधव−ि (त॰) दे 'द्रवंप'। पुष्परिष्यह्−वि [र्थ•] विशे पद्यत्रना, वश्चरदी वनाना ष्ट्रिन हो। हुम्पर्स-वि [सं] विसे छुना कटिन दी। या छुना म बा सके। बुष्पर्शा-ती॰ (ग्रं॰) बबासा । हुप्यार-वि [मं॰] विते पार करना कठित हो। बुष्दरा दु'साध्य । बुल्यूर-वि॰ [मं] की शीप्र कृषे म दा छने। जिल्हा मरमा बटिन द्याः विशवा निवारण न दिया मा गुन्हे । बुष्प्रकृति नशी॰ [शं॰] बुरा स्वमार सीशी बाइत । (र बुरे श्वभावदा जीव महतिहा। दुष्पर्याः हुष्पयान-वि (ते) हे दूर्वने । बुष्पपपत्री बुष्पपर्विणी-स्री [मं]ब्रह्मरा मण्डीवा। बुष्यधर्षां-सी [र्गः] वरमाः वनसञ्चरी । बुष्प्रकृति-की [मं•] दुनार समायार। तुरी मर्चि । बुष्पवेशा-मी [मं•] इंशरी वृध । दुव्याप, हुव्यापण, दुव्याव्य-वि [मे] दिसदा मिहना करित हो। का बरिजनाथ प्राप्त हो। सहै, जिसदा मिनना सुगम म दा १ बुच्चेहप-दि [र्ग] त्रिमे देगता बढित हो, जिल्ही भए ताका म वा मरा जिससे और देशनका साहम स का ।

बुष्मंत बुष्पंत-तु [सं] व्ह महिम पुरर्नमा राता

जिनके पुत्र मरणक मामचर मामोर ^सक्षा भारत मास

गति बेग । - कर - पु शहरता । हाबक-(व. [मंग] वरत बनारेशना द्वामृत करनेवाता गताने विपतानेवाता दयाः करणासा भाव सरपत्र कर्म बाला । हु॰ ६,रहात मन्ति सहागाः बाहा मापदा भगाने

बाकाः मीम । --ब्रॅंड्-पु॰ तैत्रहेर् । प्राचण-द्र [मं∗] हव बनानेदी क्रिया या भाव धनाना

पिपलाना। भगानेका कार्यः निर्मेनी ।

माधिका-सी॰ [मं] कार । द्वाविष-प [मं] द्विष्ट बेणा वस देखता आसी। वि इत्रिक्ता ३विट-वेर्वेगी । —प्रामायाम-पु॰ नामानी और

सीप सरीवेंमें किये जानवाने कामको देश बनादर कर्मा। भाविकक-पु॰ [गं॰] काला गमहा कप्रतः।

क्राबिटी-मी [मं•] हाबिट देश वा बाहिया व्याधित इनायभी ।

श्चापित-विश् [संश] हव किया ब्रजाः गणाया विश्ववादा हुमाः भवावा हुमः ।

क्राम्ब-बि [सं] मगावे जाने बीग्यः गणावे जाने बीग्य।

द्वाद्यायम-पु [मं] मामबद्दे शन्द्र औन तथा शत श्त्रीडे रवधिता एक करि।

ह-पुर (मेर) **प्**षा सामा। नकती। काश्रीमधित संश -बिक्टिम-५ देवराव । -धम-५ शहरा मुन्तरा मुग्यदे भादारका यह भन्छ। पुढार, बरमाह भूनेपा । -धनी-भी श्रेष्टाहो । -धम-विश्वेती महत्राह्य ।

-मगर-९ क्षेत्र। -सलुक-५० विवास। क्षण्य-वि [गंक] स्पिमरण। निस्तके विकक्ष बुर्राबर्गाव क्षे

गवी हो । प्र अवराषः तुरांका काम। ह्मण-दुर [मंर] पनुष् । राष्ट्रा भूगा विष्णुः दुष व्यक्तिः

-इ-५० म्यान ।

ह्रणा-न्ही॰ [र्ग] चतुन्ही बीरी।

ह्मचि हमी-नी (40) रुक प्रदास्त्र काउटा पात्रः ६ प्टरी। इतमञ्जा।

इस~नि [मं] भी इस दी गया दी द्रवीपृत गणा बा विषया द्वार्थाः इटियमानुष्यः मानाः द्वाराः नीम गरियामाः तमा भग्यता रिसरा हुमा । तु वालको यस नायाका भाषाः मध्यममे कृत 🕬 नदा विच्या द्या विच्या च्याति=दि॰ दीज गरिवामा ३ स्रो॰ नीत गरि तृहः मान । ≃गामी (मिन्) −ि क्षेत्र गरिन चल>ेवामा । -पर-पुद्ध देव वीचि बूध । वि तब मारनेपामा। -मत्या-मा यह सर्वयम वर्षेष्ठ । -विशेषित-५०

५६ व^{र्}पुन 1 ह्नति-भी (मॅ॰) हर होगाः भशनाः जना ।

= # 1"HFT-1 \$

हुँचपु-पु [मेर] परेशोध बणी हीनडी ६ दिना जीवोबाब रेश्वरे रामा वे (रनदा दुसरा मान बदनेन मा) र ह्यप्राध्य -पुरु [अंत्र] क्रियोक्षेत्र प्रयास १

प्रम-पु (") नृष् वेदा वारियाना अवेद । - व्हेटिका-भी + नेतर् । - मण - मर्-पुर गोत् । - व्यापि-शी देशमें सम्बेशका रोगः रेपा सका । ज्यापिन्द्रश्चेत्रसः रिरा पूर्वा मध्याम । -बीक्य-पु प्रथम पूर्वा स्नावा देर १ मर्गद्र मुक्तुन्त् देविया श्रंत १ -सार्म्-द्र हे आह्यो अनुसी बानुसी १

वाण्यि भन्तर। हुमामय-५० (हे] ४० '६म-मा'। । इमारि~त [गं•] कथा। ह्मासय-पुरु (गर) बंग्रन । हमाध्य-५० (त) (ल्हिन्स) इमिथी∼सौ [श≉] रत्सः व्यक्तिका-मा॰ [मं] एक माहिक हुइ । ह्मन्बर~मु (मं॰) वार्रश्राता तारः भेदवा । द्यमोभ्यक−पु[सं]क्षिक्षर कृत्र । ह्रवय-पुरु [स] यह मार । ह्रद-पु॰ (छ॰) पुषा शोछ । हरून, हरिय-५० [थं] महा। ह्यदी-मो [रो] प्रमो । ह्मझ-पुर (वंक) श्राविष्ठादे कार्ये कारण दर्गावद्या वर 341 ¥र∽पु[मं∗]शाना। इबम-५ [म] इबीश । इक-९ (सर्वे रिच्युः बहुष् र ब्राप्य−पु [शं∗] होगानार्थ वशीम नेरकी रद 🖩 र मापा सहर्थाना एक कका बाद भी बतुब्रमानीह जनाहाना बोमबीमा। लब्दीका रहा नावा दि हुँ देशा एक बुन्नुका देश एक पर्वता मेथीना एक सन्दर। ~कम्परा~पु० एक बद्यमान जी अन्दरास्त होगा है। -काक-पु दावा धीला शेमधीला =ार्विश क्यी शक्ता । -शिहि-पु॰ ४६ वर्ष-दश्य (एक्टर्य अनुमार बन्मान् वर्गा पर्वत्वर गंबीवर्गा वृत्र व वेहे निर भव गरे थे) । -या -बुल्या -बुया-वि मी। ईन्हा बुब देशवाली (गाव) । -विद्यान ब्यान चुंबदरी । नदुर्या −भी गृहा । −साना-वि वी । दे दिन्दुरा । -सुरव-व बाद की प्रार्थ है बीधका प्रशास अपना मध-पु बर्त श्रायद पानी बरगानेवन्ता व रण ।

मेरबा गढ पार्थान परिवास एक प्रकारक अवत देरेंग वेशा मेणका दीवा । - इस-पु के ध्रेशारिया । - मुख -पु हे हील्युस । -अवस-पु बरापदेशन क्षा ही देशका यह अवस्था अबद र श्रांशिक्षा औ [तंत्र] जीतका देशन देशन देशनी Black Lat.

द्वामाचार्य-पु॰ [4] अवामारतके अनुसार वह की ह

ब्रोलि ब्राची-भी [10] शेगीतवत्री सम्बद्धाः स्टेस

क्या आर्थित क्या वह प्रदेशका क्या वहरणांच

वरनोडे वेल्डी भृति। होलावारंडी - स्था के स्ट^{्र}ि

माद्या वाद्य किवीने कोर्बी और बंदरोंसे स्पूर्निय

Aufer's t-lage-y wer ather fret & यवक बरमा । -ब्रेट्रि-दि द्वार्त कानेता तथा हरा । nit gert uebe iber t हीशहन्ति [1] के काल मन बार से स मेन बा बह की जैलानकीय ब बुध सुरूप्तवह पीन है देनी

मीम-पुर सिंश मूंत्रोचा स्टेंग्ड न्एना विस्त स्थान

विकार की बी ।

क्रविकृत्य भर सामा दो ।−पिछाई−स्पे एक विवाद संबंधी रस्म निसमें बराठके रवाना कोनके पहले बरके बाएको भारिपर चरते समन उसको माता उसे दृव पित्रामे कीसी मुद्रा करती है इस कार्यके संपक्षतमें माताकी दिवा भानेवासा नेगः वृप पिकानवासी बाब । - पूल-पू बन बान्य, पुत्र पीत्रादि ।-फेली-सी॰ दुवके साथ सावा आनेशकाण्यः पहरान । −यहम−मी एक हो मीका रूप प्रेनेके नाते मानी जानेवाठी वहन । **~माई**~प्र धेसे तो शतको या श्वक्तियों मेंथ एक को सडोदर गर्दी कर एक हो स्रोत्धादन पोटर पछे हो। −सुँहा वि जो भगी माताके दूबवर रहता हो। बिसके. बूबके गाँत सभी न हरे ही, अस्त्ववरक ।-सुरर-वि दे० 'दुअसेहा ।-बाह्य-पु माना दूप रेपनेराहा। गु॰=उछासना=सीरत कुषको बजा करमेके लिए छाटे बर्डनमें बार-बार निकास-कर कैचेने पनली चारमें कड़ाड़ी माहिमें गिरामा। ~ दक्षरमा-स्नर्नोर्ने ६प माना । −का नृष भीर पानीका मानी--टीक-टीक, संधा-समा स्वार । **-का वदा**--इत्रत दृष्ट अधारपर रहमेदाला वया, वृति छिन्नु । —की सक्तान-अत्यंत तुच्छ वा ग्रामत वस्तु। —की मक्सीकी तरह निकासना या निकास फॅकना-भरपंत तुब्धः वस्तुकी तरह पदरम अकग कर देना ।∽के वात-रीक्षमबन्धामें निवन वाँत । 🗝 दाँत स हटमा-कमशिन या अनुभवदौन दौना। —चदुना—स्तर्नोपे कम दूध पतरमा। रतनमें दूव अधिक शतर आमा। ─च्याना─दुइनके समय गाय भादिका अपने श्वनीमें **5**छ दृष पुरा रधना । −द्युषामा-वर्षीको कैवल दृबधर म रहमे देमा। −तोइना− हुंच देना वंद कर देना वा कम रूप देन रुपना । -पद्मा - रूथे दानोंने रहा भर माना । -पीता बचा-पद दम माहा वध्वा । -फ्रहमा-शयई पहने भारिमे दुवके सार भाग तथा जन मायका असग भरून ही बाना। -फाइना-किन्ते बगावते हुवदे सार भीर जरुमानको जनगन्धनगदर देशा । तृसी नहामा पुर्ती प्रस्ता-धन भाग्य, पुत्र-रीजारिमे मन्त्र होना । सूचार-पुरुदेश (तहा रख वी सम्राह्म दालींगेंसे निकलना दे ।

मुखा मात्तीर्र−मी एक वैशक्ति प्रशा विसन्ते वर-धन्या दद हुमरेनी भरने हाओं दूध-मान शिमान है।

कृषिया-सी एक शरदका सक्त श्रवता वारिका विद्री। क्य सप्टर पाम । विकास भी भी। दूध विकास मा। कूमी रमशा सक्ता बता होनेटे कारण जिल्हों अबी हुन ही थान कवा । -श्याकी-पु सकेर रामा देना रंग ।

दुम-स्या ट्रेनेदा साव । वि गुमा बोबरा-[सं०] हांतः पेतिया शुन्धः वरमह । सुरु- की लेना वा हाँकमा-र्धेय मारना । 🗝 सिहामा-गाँउमे बाहरकी बागका मन्दे भागा ।

मुनर॰-दि था तुनदर रोहरा दी गण है। रूना-वि॰ दुगुना शेटुका । द्वा-(र रेली। **ब्**म-1र (क्षा) वन्तन्त् । रूप-भी एट मन्द्रका दुर्थ। \$4-E

तृसत्रू-अ• मुकावडेमें मुँदपर 1 कुँबरोक-वि॰ दुर्बक, ऋषा दीनदीमा मद्यक्त । तवां−को द्वा वृतिया-पु यक तरहका (ग । वि दूबकेते रंगमा। बूबे-पु॰ प्राह्मजाँकी एक उपाचि हुने, प्रिवेशी । दुभर-वि भारी बोहिला व्यक्तिः वसका दुष्पर । वसमाण-भगकि दिस्ता दोस्ता। वयम-पुर्शि । शरीरकाताप स्वरः। वर्गम-वि [नि॰] दे 'दूरगामी'। हरेदेश-वि॰ [पा] दे॰ 'दूररक्षा'। वृर्देसी-खी•दे 'दूररशिवा'। वृर-म [सं] देश-काक मातिकी दृष्टिसे भविक भेशरपरः विशिष्ट स्थान-समय आहिसे बहुत इटकर, फासनपर । दि॰ बो दूर हो, असमीपरव । -शामी(मिन)-वि इरवड जानेवासा! −प्राष्ट्रण −पु हृश्रय वस्तुऑस्ट्रो

दैछने श्रेष्ट द्वरिका ∼क्ष्मीक – पुर्विक प्राप्ता। वि दुरुष देवनेवाचा विस्ति द्वारा इरवस्त्री चीव " वेखी जाया दूरतक धोचनेशका तुक्तिमाम्। -०वंग्र-पु दे॰ 'दुरबीन । -वृत्तीम-पु॰ मीवः पंडितः हरवीन। ─व्हिता—की॰ दूरकी वल सोचनेका ग्रम वा शक्तिः ब्रदर्श बीनेका भाव ब्रदिशी : - दर्शी(शिन्)-वि हुरकी बाद सोचनेकला, हुरिस परिमानदशी। पु॰ गीपः पीरेत । -रक(द्य)-वि॰ दु दे॰ 'बूरदर्श । -रिट-ना दूररशिता दूररेशा। -निरीक्षण-पु दूरशैन। -पात-पु संदी सदाना मदिक केंबारेंने निर्मा। दिक र्रने वात पकानेवाका। -पार-वि॰ क्रिसका वृक्षरा किनारा दृर दो बहुद चौदा। −सिम्स−नि जो बहुत बस्मी ही गना है। - मूक - पु मृंब। - शायी (चिन्) -वि इरवामी ! -वर्ती(तिंम्)-वि इरीपर रहने बाका बो बूर हो।-बस्त्रक-दि॰ नम्र।-वामी(सिम्) -वि॰ दूर रहतेवाला । -बीहाल-पु दे 'बूरवीत' । -वेथी(भिन्)-वि इरने ही करवड़। भेरत हरते बाला। -स्य -स्थित-वि जी निवट संदा, अमुमी परव । सु॰ -करना-इटानाः अस्य करनाः मह करना । —की कहना—पर मार्डेको नात दहना पढ़ी सुमद्रो नात क्दनाः - की बात-अर्थनं नाना मार्थेकी या ग्रूप नात । -की सोचना- ृत्देशीको नात सीनमा । -वर्षी बाइये या अप-पूर्व स्टॉनक्षे छोत्रर निक्ने ही श्होतस् विचार् करें । -भारामा-बदुव वचमा, सदनदी क्रिमें। बहुन अन्य रखमा । -होला-बिट पाना बना म रहमा। इट जाना ।

बृर−म रि [ग्रा•] दे दुर (मं)। ≔दान+सी टेंड यंत्र जिल्ल हारा हुरदी वन्तुर्वे बड़ी और समीपन्य ियार देती है ।

क्रवां~मी हर्ना, हर। न्तीतरित∽ि [#] दुरस्य । ब्रागत-१ [नंग] दुश्ये आवा दुशा । ब्राम्यय~पु० [मं] वर्गा-किया (राप्य-कि)का शार्न का यह दुनारे हे हुर होजा। र बनाश एक दान (छा॰)। बुरापान-वि॰ [मं] (अछ) यो दूरने बेंद्रा का छदे ।

हरावती, हारावता-भी [60] है हारहां।
हरा-व [मं] साथक होनेग्रे या मण्क बनानेशे
व्यास्थे, जित्ये मारका । वृत्य है विद्याः।
हराया-वृत्य [मं] हे द्वार्थाः।
हरायिय-वृत्य | मं] हारावाः।
हरायिय-वृत्य | हारावाः।
हरायिय-वृत्य | हारावाः।
हरायि-वृत्य | हारावाः।

हि (हिर्)- म (गं०) वा शर। हि-वि• [र्थ•] वी ।-कस्तर-पुबाद (धीमा); कीद (सदरा)। -इनुस्-तु डेटा -क्सेंक्-दि श क्मों में युक्त (मिया) । -कम्प-पु फिरममें दी सहामें का समाहार। –हरार-नुधारा और सधी वे दो ¥ार्! −तु−दु समासन्धादकदशभार (व्याः) । 🕼 ≋। वार्योश्यासाः ∸सूच्य∽दि• इतना दुनाः −शृक्तित− वि• दुवना क्रिया टुआ। -शृह-पु पद तरहदा शाना। -परण-प मनुध्य माहि हो परीक्षके और । →== षु रे॰ इ.सम् । --जन्मा(स्मान्)-षु रे॰ 'भित्र'। -जा-मी॰ मद्भव वा धिरशे सवी । -वाति-पु॰, मां हे 'दिव ! -सानि-इ वह पुरुष किन्दे दी स्या हो। -ब्रिट्स-पुरु सर्प। स्वद्र, व्यूगणरोहा गव बुद्ध ! - इस-दि नी यभीवाला भी वधीवाला भी बली शहर में-शब्दित । यु का बन्नावाला सनात- जैमे अरहर मरर भना वाहिदान । - श्वासन-प्रवासी-सी बह छामनप्रयानी जिसमें दो दल मिनवर छाराज बरत हों। -हाररी-१% हो हन्सिपीय बॉधने बोम्ब बह यादा -देवन-वि (यव मार्रि) जारी देवनाधें दे हिए दी। पुनिद्यास्य सङ्गा नदेह−पुन्नेय (बिनदा शरीर मन्ध्य भार बाबी रीमीने निनदश नहा है) । – पानु-- विशेषापुर्वेन सिमवर वसाधी। भूक माध्य । की वर्षमा, बीतत मादि विषये वर बाल्मी ह्या मित्रप रहता है ३ ल्लानक-पुरु वह मन्दर जिल्ही गुन्न पूर्व हो। इसमें । नश्त्रभेदी(निष्ठ)-पुर बद व्यक्ति विमृत राती भी त्यात दी हो । ~ ऍक्साकी~ की "राजुकी ! -प-तु हाबी। लगारावर ! -प्रश्न-वि जिनके बीचर की जिनमें में का बीव व कर्रम महोता । -- पथ-पु॰ वा शार्त दे दिनदेशा स्वय्ताः -पर-वि नी वैरियल्या जिसमें दी बाल मा बर हो ह दी पैरीवामा प्राप्त सनुष्य अर्थारा बार्ग्यामका यदः केंद्र। -पश्च-तर दी बरा शारी कवा । -एप्री-भे पर प्रधानी में जिली से भार होते है। बढ अर्थिक के मार्थ-ति है स्थित मान्यान के (दानं क नरने) दूरना देश -बार्गा(दिम्)-इ कारो । - किए-पु रिगर्द (1) १ - आय-पु रहस्य १ fe ert's -mrti(fen) -g gw set i ft dt अन्तर्भ केल्प्रोहत्ता । नश्चान्ति की हुनकेशना शिच हे री इप्च ही हर्जु क्षेण्य । ल्लाझन्दी है रिप्ता । नमानु -मानुम-मु स्टेतिः वत्राचार्यः

-माग्र-वि जिममें का मात्रों ही ती र -माप्र-वि जी वरिमाणमें देश माहीका हो। -शुन्त-हिश्तानी गेहिद्दी। इ व्ह भां तिने ने सुदेशकी स प्रदास्या कृषिरीतः -गुगा-गाः प्रेषः -मार्थ-की बदयाय न प्रधान रही का और जिस्से के ह हींह और दा पर 🛍 पेश्वे चाहर जिल्ल को हो । 🗝 – तुकदै प्रिरेक ३ −वप्र-दिक्षतिग्रक्त री प्रीपृर्वः । तु वाची। --शान-५ वर्ष। दिः दे। जेजेरमाः −राग्र-पुरु श रिमापै शनेरामा व्यवदा -स्म-वि विसारे थी स्थ दी। भी भी प्रस्तने (ध्या अप। -वेना(सम्)-पु॰ दोगमा प्रान्त्र(-है। सबर (-रेफ़-पु+ सम्दर्शनार शभक्षेत्रस्य ने शर+प दो र - बचन्न - वि. तुरु दे विह्राय र - बचन-पूर व्हारत्वमें गेरा थार करानेशमा बदन र चयाहणीर बर कर क्रित्रचे शांग्ड कोन हो। न्यारिकान्ती शेला, तूला। -विदु-दु शिर्म। -क्षिप-पिनी महारका । -विमा-मो [हि] दुश्ति। -देर-दि॰ दो बेगोडी जानमें या चारेराण । नवेदी(दिष्ट)ग पुरु आदार्थीन्द्रों एक प्रशांधि पुर्व र न्यासानको स तरस्यो होती शाही जिल्मों शबद ने 5 वार्ड है। लाम तुरु द्वारोरिक भीर आरंगुढ के ही प्रदारक नाम (नम्प वि दोशींः −शम=ति भागेती देश र[©]ा गवादी। – सफ-द्राशीशनाद्यी। – सिर-दि॰ [दि•] दी सिरीनाना । न्तर्गिनी जिल्दे री शिरदार पुलक्षित-इ-रिया पीने रिवा शास्त्र हो। -समग्रिग्य-इ नह वि व लिये दा भूशरे बराबर की १ -महरर-दि की शाणा है बी बजारमें रारीश यथा शे । -साइरा-रि शिहर ! =मील -इस्प-दि शे पर भारि (भ)। -हा(इन्)-ड श्राप्त - हापर-ति लिली का दा बरेंगे दी। दी स्रोधा <u>६</u> है सी न्द्रायमी-मी ही बहेडी शहत नद्वारा अ वर्षियो स्ते ।

हिक-दि [60] दरनाः बुध्य बनानेशनः किरे हैं बी: दिन्दा बुधारे नार बीजानः भावी धार्मण दर्गा

हिज्यातका हिम्रोती-मोर्च भी र मी

बरगदा बब्का समस्या देर । वि जिसके वीज करे हों। --मृमि-सी॰ वोगसालमें शगको एकाम बनानेवाका एक प्रकारका जन्मास । —मुद्धि—वि॰ विसकी <u>सङ्</u>ही अस्ती म सुक सदे। प्रथम, संतुष्ठ । प्र तक्यार । -मूक्त-पुरु मूँवः नारिवणः -रंगा-सी॰ फिटकरो । -स्रता-सी पातानगरको कता । -छोमा(सम्)-पु॰ वर्नेका स्वर । वि जिसके रीने कड़े की। -सस्कार-पु सुपारीका पेश कडुन्का पेड । वि. कडी द्यावनाका । --वहका--स्रो अवस्रा । न्यीस-पु॰ दे॰ 'रहवीम' । न्यतः न्यु बृतरामका एक पुत्र : नि संबद्धका प्रका ध्वमिश्चन, यह प्रतिय । -संघ-वि॰ रहमतः श्वप्रतिय । -संघि-वि॰ भी ज़रूकर या सरकर पढ़ हो गया हो।~सुत्रिका-शी मूर्वो कर्ता । – एकंध-पुश्चिरमोका पेड़ । – हस्स-वि भो मजन्तीसे तकवार आदि पकड़ सके। दश्या-भी , दश्य-पु॰ [धु॰] रू बोनेका भाव । दबोरा-पु [सं∗] होरा । वि॰ वक्षिष्ठ भेगीवाका वटा-बहा। दर्शाई+ −सी+ १६ता, मजबूती । रदामा−भ वि• ध्य दोना पुष्ट दोना। रिवर दोना। स॰ क्रि॰ ध्र बनामा सञ्जूत करना पदा करना। रहायच-प्र [सं] दिवः श्वराष्ट्रका यक प्रम । वि० च्डतापुर्वेद अन्य चकानेवाका I रहेपुधि−वि [सं] बिसका तरक्य सबब्त दो वा कलकर रत-वि• [मं] भारत सम्मागितः विदीर्ण । रता∽सी॰ भि•ी भीरा । दिति−सी [मं] चम√दा पात्र, महन्दा महन्दी वह मनदा नी गाय-वैक भादिये शब्दे भीने शुक्ता रहता दे शलकंतकः सप !- धारकः-५ एकः पीपा । -हरि-रि यन्त्रदेश या शीदाशाला (पर्यु)। हु हुन्ता (शे वयहेकी याँ वे पुराता है)। नहार-बु महाक्रम पानी धीने बासा, निरमी । रम्फू-सी•[मं] सर्पः वज्रावदिया। यु स्यै। दरमृ∽दु[सं]बन्नः ह्यं। यमा राजा। दस-वि [में) गरिवा उग्मका दर्शयुक्त वेत्रायुक्त दीत । হ্ৰণ বিদ্যু চ दम-दि॰ [तं] पर्मरीः बसवात् । द्रस्य-वि [मं] प्रविता मीत । इ. दरा भागा होती । द्यान्(न्)-भी [मं•] दे॰ ध्यर् । रशहती-धी (वं] रे लहती । **ट**गा-सी [ने] अंगः दमावीय-५ [में) यमल १ दशास-द [सं] भारवाधिक सुरू जावाण सीक्ष्यणा पदप, बामा । क्षी-हो [तं] क्षा वहार देखना। मधाया शास । रसी-भी [4] क्या रहिः शाम प्रशास राहिक-दि [मेर] ध्वान देने बीच्या गुंजर १ यु प्रायश्च

रामा ।

रमोत्रम-१ [4] १३७ ६मण ।

इर्जुक्डी व्हिनीवर हो, नमाराः तमाशा । वि॰ देखने बोख, दर्शनीया भनोरम, शोमम जानमे योग्य चातम्या जी बर्दांकोंको अमिनद हारा दिखाना नाव (काम्प) । दृष्यमाम-नि॰ [र्स•] को देखा ना रहा हो, देसा नाता रुपए(श्)-साँ॰ [सं॰] जिका पिरा वदो । इपक्रती−को [सं•] यक नदी विसक्ता उहेल कम्बेदतकर्मे निकता है (मनुस्पृतिमें वसे अज्ञानर्तको सीमापर स्थित श्ताबा गया है); विश्वामित्रकी पद पत्नी । रष्ट−पु [सं•] बनुमृतिः साम्रात्कार, दर्यना राजन्ते अपनी तथा धनुकी सेनासे होनेवाका मना टाउँभी भादि का थव । नि॰ देखा हुआ। जाना हुआ। साम्राद, देखा वा मोना जानेवाला, ऐहिक (विवय); प्रत्वश्च (सां)। −कृ≾−ु परेकी। एक प्रकारको परेकी जैसी दुक्द कृषिता विसका गर्व बहुत सीध-सोजकर निकाका जाता है। -पूछ-वि॰ कवाईके मैदानसे भागनेवाका। -रजा (जम्)−सी वद्दशन्याथीरमसकाशीयगीदी। -बत्-वि मत्वधके समान मत्वधतुस्य। इष्टमाम-० वि दे 'दर्यमान'। दर्शत−पु॰ (सं) प्रस्तुत (बबक्दो समजानेके किर समान अमित्रावदानी दिशी दूसरी नासका कवन, जराहरण मिम्राका शर्वानंकारका एक भेद वहाँ उपमय नास्य और एपमान बामबीमें तथा बन बीनीके बसीमें दिव-प्रतिदिव-भाव दिगादा बाबा द्वाराः मरण । दलार्थ-वि [५०] जिसका अर्थ या विकय स्पष्ट हो। व्यावदारिक । ष्टलि-मी॰ (पं॰) देखना, अवकोकना देखनेकी शक्तिः बीक रक नगरा प्रकाश याना मत नियाद खवाना उदेश्य अभिमानः शीयने निवारनेका पहसः आधामरी नवर । −बूर-पु॰ दे॰ व्यक्ट । −बूल −बूल-पु रक्तप्र । -कोच-तु देराने-शोधने-विचारमेदापहरा। ─ब्रम-५ विवित्र वश्तुकोमैं वहाँ सापेदद छोटाई-वताई. क्रवार निवार सारि रिसार देना भी रवानविधेवने प्रस्वध वर्शनमें रिगार्र दवी है। -क्षेप-पु॰ वटि टामनेक्ष क्रिया नजर राज्या, अपनेक्षत । -शत-वि बा राजने में आया वा जो देख पड़ा हो। -गुम-पु॰ निशामा कश्य । -गोषर-वि विसदा वासून प्रत्यक्ष हा सके वी देशा वाथ निगाइमें वरनेवाना हिमाई बहनेवाना । --वीप-पु नजरबा दुरा बनरा देखनेम हरि दोना। -निपात-पु॰ रै॰ 'दरिश्चर । -पथ-पु श्वेतस्यापार काक्षण । -वास-पु∘ दे दष्टिक्षेत्र । -पून-दि जी देशनेमें शुद्ध को सन्दी मौति देशा माना दुआ। - क्यु-पुरु मनरवंदी । --बंपु--पु सचीत जुगत् । --शाय--👱 भ्यनेश्वे वियाका कवना या रीका जाना। रेगनेवे काममें दोनवाणी बन्दावर । —बिद्योप-पुरु दिग्छी नित्र वस कराभ्य रहिवान । -विद्या-को आर्टेस्ट-दिहान । −विध्रम−पु॰ प्रेमभरी नित्तरन नत्रनित्राध । ~िष्नु-थु वद प्रदारका स्पेत्र । सुक −िकारमा – दे 'अ''(हिर बाना । -केरमा-१ 'श्रीश परना । ∽बचाना-द० देवप−५ [त] जो दुछ देता जान वह तन कछ-ते हैं ध्येस वयामा । −विद्याया=" अस्त रिहासा"।

ट्रैप्प~धरा इप्प-विक [मेक] शहरी संस्क्ष । क्षेमानर—तुर्गो गादाः वरामेर । विश्वविद्यारेटीः मानाई हो र हमानुष-(४ [मंग] (४६ वरा) जो देवयावय भी हो और मनीमानुद्ध मी जहाँ मुत्री सबा वर्षा दीनोंदा क्ला रीतीकै काम भाता हो। द्वेमद्विष्ठ-दि 📴 🖹 भी थी दिनीमें चीः क्षिममें दी दिन erit e हेराउप~पु• (सं•) दुराक दी-अमली; दी राजानीस रिमफ देश । द्विपिष्य~पु॰ [मं॰] दो नरहका होनेठा भावा निवना दरिया । हेंपणाया-को॰ [गं॰] मागवानीका एड घट १ हैमसिक-दि॰ [मं] दो बरोबा । ईद्वायस~प्र• [सं•] ही वर्षका समय । घ~रेवनामरी बर्नमालामें तक्ष्मेश चीवा वर्ग । उबारण स्थान देव स र्घका॰ लप्तु भदाः आधान ओः। र्चय - नुबर्गता शहर, हवना। धंधक-१ वंशन नंसः। र्थपरक्ष १ - पुरु १ - चोर्रा - पुरु द्विबाई वंबासमें स्था १६०शना । র্থিকা∽র চৰ-হেণ্ডাল। र्धेथलामा-म क्रि॰ देम्बन्ना-एव बरमा । र्थमा-द्र कामकाया पेता शावनार व्यवमात । र्घभार-वसी अराधा । इ. आही इचर बारि बढाने-द्या पद भी हार । चेवारिक-भी र है पंचारी ३ घंबारी-मा गीरगार्थाः र्षवामा~नो॰ मुलो । र्भेषीर-स्री स्थातः, मन्द्रो लक्षाः होनी । चैवमाण-मण्डिक श्रीकमा-'दिएहा बूग औपारका वेते | बमारी देश नलसरी ह र्थेसन-भी पेसनेशे किस का इत ह

मानार में पेडी और इंड जाना वा बेह जाना वस्तार

चैंगामा-म कि दिनों को या मुद्रीमा बलुको धेर

देवर भोगर भुगमा, राष्ट्रा प्रशेष करता, देशला,

भ-त [ते] पर्वा कोरा क्या पर पेतन स्ताह

क्षेपे रूपकात् मर क्षेत्रत लहाह हाना ह र्वेशकिक-भी है ५नद ।

६६५३, इन्ट्रम दान्द्र अधीय ह

RUGEL HAT JAKEN !

पॅराप-१ रे नेनाज ।

1000

घडरधरी -प• दे॰ 'परदर।' । च&-म्बी+ श्रवदा क्रांत क्यूम, दिलको चेपको क्रां क प्रतंत, रहाना । क कर रदन्यम्, शहारा - पड क्यी द चित्रपत्री देशका अन्तरम द्वार धक्रप्रका~स॰ ति० हे चिरमहाना *।* यक्यवाना-च कि यथ पशक्त भरीहे हर क्ष्रिकेडी सेवीमें घटरमार व भवद्रमार धमक्ता । चक्रपदाहर-औ॰ वरपस्मेदा दिया बादने है श्वरूपका-मा अवक्तात्मुक्त्या व्यव्य नीवा ह -धरक्रमा - शिल पहच्या गहमा जार'डा इ'पन र व' घडपदाना-४० दि० धर भाना अल्डिन होगा। घटयब-मी बहरबरा रेगोच। श्रहर-पुपदा श्रीका सामान। -मूम-मो+ रेगोन बारमारी। -यम-स्त देश क्योप । **चन्नायकी। – ह्या ० सहयरहा ३ बद्धाना॰-श**िक ध्रमाना दश्कारा ह यक्तांत-पु परप्रकाश्वरहा क्रोरान चहियाबरां - गृहिः ५डा देनः दरेनमा । धवेत्रका-मध्या दश्यदा, वदा देगा । यश्रम-वियवारैनेवायाः र्धिमाण्य कि दिगो वहीया मुद्देश कर्यक वता है सक्षी-भी है जिस स्वक्षी के , में हेर विशेष ! बाका मीगर प्रमाण राज्या। केंग्ना प्रदेश करता चीजर है श्रष्टमोदक्टा-पु जागी बोचर्ने अनुधीका राजार क्^{रा} wick wat bers unteret at the bale रचे च ६ भेका-पुबर्दकार भी दिल्ले र हुवा वह लेती दिल् भैयाम-ध्रीर रेंगरेटी दिया का रंक्षी है। बरनी दिन्नी . म्हण्ये हुटत और दाविदे किए मास प्रणा हता है व १ वे वर वर नरोदे बरहे कुरते या किने साम folie eangery il s gatten boy 444 रूपि हो रारेएवी करण स्था रूप रूप मित्रत्वा बत्रका क्रमात्र क्रमात्र स्थात्र । त्युकी और og med fer Gre nou gert un f ut केंग्रेन १८ । मेर न्यामान्त्रा गरका इता मून

ही किनी होती ह

बोहरा शर्ब कियर ।

पुण्युक्त ।

रबमावमे पक्त ।

इपद-पुर् (वंर) स्वा।

इयम-दि (र्त) ही मेत्रीशका विकेश

इयाग्रि-५० (नं०) ८६ इए साम सेता ।

ह्रवयुष्ट-पु० (रां०) वी अनुमोद्ध यानी वदा दृश्य द्वारा

इयर्षे, इयर्क-विश्व विशेषिक है से हैं। जिल्

¥्वातिम−वि॰ (तं } १जोग्रान्तधान्तवे १५० गर

क्रयाप्तरक−५० भिं ौ दिविच प्रहतिसन्ताः हो बहरहे

इथामुख्यायल~पु० (मं०) वह म्यक्ति जो एक जाररीक

इसके बीन दुर भी दूसरका भीरत हुन हो। यह राष

जिसके विश्वपे उसके रिशा और अन्तरोशने अपर[्]

नव बर किया था कि यह इथ रोगांदा पन रहेश।

रे। -शिती-स्रो यस रायिनी । ~गड-प करवपः बहरति । -शही-सी॰ सरस्वती । -गुद्ध-पु॰ देवल देवतानीको पात रहस्य। मृत्यू । -गृह्य-प्र• देवाक्यः रावप्रासाद । -चर्या-मी देवताका चयत-अर्थेस । क्षेत्रक - विकित्सक∽प **अधिनीकमारा** -कांद-पु॰ एक प्रधारका बार जिसमें रै मा १०८ अववा किसी-किसीके मतसे ८१ कवियाँ बोली है । -- --व शासका व्यक्त भेट । वि देवतासे सरवा । - अवधः-कार्यक-प रोहिर शब ! - अप-विश् देवनाको समिति क्रिया स्था । -ताम-प॰ [हि॰] दे॰ 'वेबेस्वान' । -तर-प• देवहध-इमके माम दे-मेदार: पारिवात: धंतात कस्पन्ध और हरियेशमा गीयक । - सर्पेण-प्रव देवताओंको क्या देनेको क्रिया । -साव -सावक-प्रश बुक्कविशेश एक कता। राष्ट्रा समित । -तास-प्र करवण वप ! -शीर्थ-प देवायंत्रके किन जनकर समका बेंग-किनोक्ये सीकः। -तुमुक्त-पुरु संचनर्यनः। -नुष्टिपवि-पुर प्रभारो । - स्वयी-की चीन देवतामीका-नदा निमा और महेशका~समृद । ∽र्गका~सी जागरका । ─व्य-प्र सर्वनके शंखका नामः गौतम तबका चचेरा मार्ट (बह सतका होती था और आजीवन विरोध करता रका)। वह शरीरसंवारी वास निसंसे बन्दारें आती है। देवनाको समर्थित को हुई संपत्ति । वि देवताको दिवा दका देवताको समाप्तिः देवताका दिया द्वा । -दशन-प्र देवताका दर्शना सारद । वि देवनाओं के बर्शन करने-वाका । -कार-प॰ [दि॰] दे दिवशव^र ।-वाठ-प्र एक प्रसिद्ध पदानों पेत्र जिल्लाके एकती करी दशकी जीए रोने रंगदी होती दै। -हास्त्रिका -हारगी-न्मी वक दरहस्य दर्द महत्त्वायक्तका। -कास-पु देवावयमे कार शरदेवीमा शीव्य । −कासी−मी गाव-गावर देवता या देवालनकी सेवा करनेवाली नी देवमंतिरकी मर्द4ीः बरबाः निमीरा मीत्। −दीप-प् वैक्ताके निर्मित्त यसाथा जानेराका दीए: मेत्र कावन । -ईब्रुजि-सी राष्ट्र शुक्रमी। देश्याभीन्त्र मगावा। यु १६१ — कृत−पु देवता वा देवरका दृत पेर्गवरः कारिन्ताः -इसी-मी॰ भासरा ! -हेथ-पु॰ देवांदे स्वामी-शिवा मध्या निष्पु । नद्ममन्तु दे दिवसक ।-आली-स्थीव दैववात्राः शिवन्तिका अस्या । - धन-- श्रु दैवना ६ शाम पर निकास द्रमा बन । -धार्मी-क्टी॰ इंद्रवृद्दी । --षाम्प-त स्वार । न्यास(न)-पुर तीर्थरवान । -पुत्री-की॰ गंदाः वीर्थ परित्र सदी। -ध्य-पु० गुग्तल । -धन्-मी॰ बायपेत । -मंत्री(दिक्)-प ग्रंद्रका द्वारपात्र । - मची - त्या गंगा। तुष्पतीया मदी । -Biele- i minit sen inten and an E-minit-भी एक प्रतिक किरि जिनमें संस्कृत दियो गराबी बारि वाचार निमी जाडी है। --व्वर्णसाला-स्ती क्रमपद्रभ ना भारित्वर सर्वशासा क. का_{र्व}श भारि स्थान कर में देवनागरी किविदे सावार है। --नाय-५ थिर। -नायक-५ रंद। -नास-५ < ^{शि}रतमः। --निष्क-विः चः मानिक, देवनामीतीः निया बरनेराना। -विश्वाय-पु स्वर्गः देवलकृतः।

-क्रिकि-वि देवता द्वारा रिक्तः प्राइटिक ! -पति-प॰ इंड 1 -पद्मी-सी विवताओंकी की। एक बंट, मध्या लक्ष । —एका—प द्यायापम, माकाद्य: संगरभामकी मीर कारीकाका प्रार्थ । -पश्चिती-स्त्री साम्बद्धार्गमा । -पर-ति० ब:कार्डे परवार्थक्षीम क्षेत्रर भगवानके भरोसे **वै**ठा रहनेवाला । -पहा-प वेवताके मामक् स्वच्छेत्र छोडा हमा बड़ा । -वाख-प॰ अधिन ! -पात-प० राजाके किया बार्यसम्बद्ध संबोधार । --पास्ति-वि हैयता द्वारा रक्षित है। दिवसतक । ⇔पग्र−पः हेवतका पत्र। शिव । --पश्चिका--की॰ पदा ।--प्रमी-न्मी देवताकी प्रशीत क्लावचीत प्रका । -पुर-पु , -पुरी-सी॰ देइसी नगरी, अमरावरी । −थुज्य-पु इदरपति ∺प्रतिकृति − प्रतिसा-न्ती॰ देवतम्बी मर्ति । -प्रयाग-प एत्तर भारतका एक तीर्थरबाय को गंगा और सकत्त्रमंदाके संगम-पर है। −प्रक्रन −५० प्रकारि-संबंधी विद्यासाः भविष्य-संबंधी प्रकार महिष्यको कार्ते बठकाना। -प्रिय-प भगरतका पेका बीली सँगरेबात शिम । वि सी देवतानीकी प्रिय क्ये: विसे देवता प्रिय हो । -वध-न्ये: रवताकी मीः अपसरा । −वस्ता~सी॰ सप्त^{क्ष}रं मानकी न**टा**। − मका(धन)−५ भारद । −माक्रण−५ वह नाधम विसदी बीवनवृति देववृत्रा को । -सवत-प्र देवरथानः पीपकका पेश स्वर्ग । - मारा-तु वदादिमें देवनिधेव की दिया जानेकाला भागः संस्थिता बद्र समा जो देववार्षके किए सक्ता कर दिया गया हो। -आया-औ संस्त्र । -सिपक्(स्)-प्र अधिनोकुमार । -भू--नी रवर्ष । पु देवता । — भृति – भी मानासर्गगाः देवताओंका देवर्ष । – भूमि – स्रौ न्वर्ष । – सून् – दु र्वहः विष्यु । – भोरप-पु अपूत् । – मणि-पु कौरतुस मणि। एकै। एक मकारकी वालीको मेंगरी की भी बीको गर यमपर द्वानी दे। महामेदर । - माला(न) - रने देवनाओं की माता अदिति !-सातृक-दि (बह देश) जिमे कृषि बार्वचे किय क्षेत्रक वर्षाका जल सम्ब है। जहाँ रीजीको सियारिके निय वर्षाका हो अन्न वर्षाप्त हो अन्य हो। 🗕 माध्य-पु वेश्याओदी सद दरनेशाया, साम ।-साम-प्र कार गामाना वह मान शे देवनामीके भवेशी काम में लावा जाना है-जैसे मनुष्यका एक भीर वर्ष देवनाओं दे व्यः भिन्ने नरानर दाता है। -मानक-दु भीरत्य अपि । --आयां-मी देवनाओं-धी माया। परमेदवरबी अनिवास्तिती मावा जो जीतींदे वंशमदा कारण है। -मार्ग-पु ^३० देवपान । -माम्र-पु गर्मका भाटतें वहीमा देवताभीका महीना जी तीम शीर वर्षके बरावर बीवा है। --मीब-पुराजा जनदक्षे रुद्ध पूर्वज । -माञ्चप-त वस्तरके विशासक : -सुक्या-सी कन्तो । -मृति-तु देवति तारर । -मृति-सी देशकादी वृति। -यज्ञन-पुगय करलका स्वाम । -पत्रमी-मी क्यी। -पत्र-द देशपुत्रका -दश - पु वह इसन भा गहरवी दे पान गरिनक मानिमें एक है। -बाबा-कोक दिनी देवनादी गुनाते निवासनेदा बाल्ड । -याम-चु वह मानै रिल्ल प्रीदारमा शारीरमे निरम्भेसर बदलेनचा जाता है। देवताभेका विसान ।

प्रतिज्ञीताः भाषात्र, श्रम्शः विव व्यक्ति, व्येश्यात्रात्रः पंतिशा नदात्र गरियमें योगका विद्या बुंग्मीमें सहस्रे दुमरा रथाम । –काम –कास्य-दि० छोता । –कुचेर-पुर बह व्यक्ति की कुनरके समाम पनी हो जिस व्यक्ति माम प्रमुद भन की ! -केस्टि-पु करेर ! -तेस्य-म्पी - [हि] बारिय-कृत्या अयोग्यो (स्म विम क्यांशी पूजा की जानी है और मारा भोग गय बरनन शरीहत है) । --इंड-पु॰ जुरमामा, धर्वरंड । --व्--वि॰ सदार । पु प्रशास म्यान्ति पुरेशः अधिः पर्वत्रय नामश्री पारीशस्त्र बादुः पीतनः वृद्ध । ⇒०दिशा−थी० वचर िणा। ~ता-वि स्वी॰ वन देनेनानी । की आधिन-क्रम्मा ग्दारागे । −शर्पी(यिम्)-4° वर्षा । −श्य-मु दुरर । –धामी-मा० समाना । –धाम्य-व० रथवा पैशा अब नदी । -धाम(म्)-पुर रपवार्तना और पर-बार । -धारी(रिन्)-पु॰ कुबरः बहुन बहा भनी । -माथ-पु॰ इ-१र । -पति-पु॰ कुनरा शर्माना । -एप्र-ए दही साला। -चाप्र-पुण्यमी मनुष्य, भगान्य व्यक्ति । न्यान-पु पत्रदा रहहा राजीशीः द्वतेर । −पिपाय-वृ० दे० "प्रवंतिहाय" । --पिशा-यिका - पिशाची - शी अमर्थववदी यवच तृष्या । सामग्री रच्छाने दिमी स्थापार्थ -प्रयोग-प धन मनाना। ग्रथर व्यवा देशा । -प्रकृ-पु पनका तर्व । -सूल-पुरु मृत्र अञ ﴿श्री । -शासी-पनेपाना निगढे पर्सं पन दी पना। (सिव)-वि -श्याम-तु बुंदलीयै नगरी बनार श्वान निमये बहे प्रवेश्वी विविधि अनुगार विगीका धमकान का निर्धेत हामा अना भाषा है। यजना । - नवामी(मिन)-४० £रेर । −द्वर−विश्वम दश्य करमेशाचार हु भोरा ष्ट्रपानिकारीः एक संबद्धमा । ~शार्च-ति । यो पन वेक्ट वश्में किया जा सके। -श्लीन-विश् निर्णेत वरिश धन-चित्रका समस्याग्यकः - क्यी-सी अवसी कार्ताः एक एरहरा कारता । "कर-पुत्र वर भाग वा भृषि क्रियने पान बीवा जाना है। बामहे अन्तर अन्तर मिद्री । —बुद्री-मी जान क नेद्रा भी गरा लाक श्वदा यह क्षेत्र । -मार-शी अल्ड स्ट्रिका स्थात । धनक्ष-द (र्गर) पन्नद्री रच्छा (रच्छी क्रमना । धवराष्ट्री-मा १ (००) वह मण । धनमाथ-१६ पनशाद्र। MARIAN-(C MARINE धनवनी-दिन भी (भंग) बनगणी हको अनिहा सक्ता। धनवान(बन्)-वि [व] परताना पता द्यारश्रद्ध - व ि शेहद्र व्यक्ति विशेष प्रवासे सम्बन्ध होत क्षेत्र । धमाव-भी भुरती वर्ते समापार्ताः । मण्डे प्रश्नेतः विकासः । भवतिवन्तु (१) देशः । चनत्त्रच-पुरु (मं] पुरदास्त्र है र चमामती-मा कि र दशासीक रीला ह धमानुसान्द्र :] कर्त्रहान्द्रस भवाचित्र-दि रिहिस स्वाह संस्थित का स्वा

दिया पुत्रा । धवार्थी(विम्)-दि ५ [सं०] पत्र वाद्रप्रेराधाः घनामा-स्ये [ग्रं॰] परशे बाजा अर्रजनिशे बाहा। धनाधी-रीव (६०) यह शर्यको । धनिक≕भी पुरुषी; वर्षानिक प्रत्या —प्रविश=अस भाग-माम् । प्रतिक-वि [र्गण] थमवान् प्रती (वृ च्याण कम्प्र करपा बसमा स्थामी की मिल्हत की व्यापारीः नियंग् प्रश्न पनिषा । गनिका-न्यां वि] विद्यानी सीव बंदा वर्षणा मिन्त्र इस्त्र । घनिया~सी० रह प्रसिद्ध जमनाः दुश्मा पर् सी । धनियाद्यास-५० गरेवा वह रूटा (धनिहा~सी० सि विकास्ट प्रति पनी पनीका−नो॰ [तं] नुदरीकी । धर्मा(निज्)-दि [मंग्) पनरामा की तमेश दूरि निवारम्य-त्रेने असमन्त्रा वत्ती । पुरु वनगर्यान चनवर्गः क्रिया क्रमुका रचया । - मानी-विक्रिये भनवान् और जनिजित् ।~(यानुवा)-१० रणश र्यो । धनीयर-प विशेषनिशाः चल्र'-'पनुष्या समासमान रूप । -पर-प्र शि^{भा} कुल । -बारवा-री भूबी एता । -धेशी भी गरी सर्देडवारकी । श्रम-पुरु[स] पनुष्र पनुष्रा मेर भारि शाह शक्तिरें दे से एका कहा नदा जिल्ला पूर्वा मार बालडी का का रेगीमा सर । न्यारश्नम् वर्तर । धमळा-प व्यक्तिका क्षेत्रपर प्रमुख यमही-भाग्ये वन्याः **बम्द−ा** भग्नः देहचन्त्र । चनुर्- वनुश्का लवलके ब्रान्त ३४ । नपुने र्र प्रादेश पञ्चित होता । नतुमानको प्रश्ने संगोन शह-व अनुब्रा प्रवृतिवा। मृत्यान तक 3व । नहार ─इ चनुरंद र च्यापान्ती अर्थनार च्यूमे 2 मी ११-भार-पुर प्रमुख चनवा दरनेयाना। यह माहि मे बनुरिया अवना हो लेप्टाउ १ न्यारी(रित्र) र क्षेत्र प्रमुख्य स्ताबके । यु दे च्युनेर्टा सम्बद्ध वर्क चनुनंद र-मारा-त हे वर्त्य र नमाप -इ अनुद्रा वह भाग के तीर मनाइ शरह व दें राप की मुद्दों दे बर वा बाला हा । न्यानी न्यु विदेशी हरी बाद स्था । – भागा – भी । दी (त्रां) सूरी । नदी we we for which for a gold he'? until fent un es aufan bertite bie निष्यं ने विद्यासार न्यूनान्यु वर्गात न्याप पु यह बार्गाचा =विद्यानको जार नवालेसे निर्म बन्द्र क दाना वस्त व व । माना हा fannte margung mint a tott fent wet पन्तियक भागचार कर दायाँ व वर्षकाँ । undamate to some a manage to any Premies to the Killer with a being suppose at 1 all enges

देवानुचर-पु• [मं०] दे दिवानुग । देवानुवायी(विन्)-पु [सं] दे० 'देवानुव' । देवाध-५ [सं•] भएतः पर। देवापगा-सी॰ [सं॰] सुरसरित, गंगा । इंशापि-पु [सं] एक राजा को प्रशेषका पुत्र था। देवामियाग-पु॰ [सं] अनुधित कर्म करानेवाके देवता का घरीरमें प्रवेश (बै॰)। वेबामीष्टा-स्रो [मं] तांब्कीः देवायतम-पु॰ [सं] दे॰ देवागार । देवाय(स)-सी॰ [सं॰] देवताकी मासु को बहुत की। बोदी है। देवायुध-पु [मं] रिव्य अकः रहपतुत्। देवारच्य-५० [स्०] देवताओंका खपवन, नंत्रनवन । देवाराधन-५ [मं॰] रवनाको मन्त्र धरनेके किए किया जानेवाला पूजा-पाठ भादि । देवारि − पुंिम] असुर, बैस्व। देवारी, इंबाली! –सी दीपायनी १ देवार्चन-पुरुषाचना-नौ [ग्रं•] देवनाका पूजन । देवार्षेत्र-पु [सं•] दवनाके निमित्त किभी वरतका उत्सर्वः इस कर्मके कलका स्थात । देवास-पु॰ देनवासाः (का) वेपनेवाला। 🕆 शोरार । देवालय~पु• [सं } दवागार'। इवासा-पुरे दिवासा। देवा-स्ट्री-न्या देव-नेन । देवाबसम-बु (सं) १ देशगार १ देवाकाम-प्र वि दि देवागार । देवाच−पु०[मं•] इंद्रका मोहा उध्ध्यवा। हेपाद्वार-पुरु [संरु] अस्ता देवीके बोम्ब आहार, जब । देविक देविछ-वि (मं) देव मंदंबीः श्वर्गीयः धर्मारमा । श्विका-स्त [र्व] देवियोदा यक गीतवर्गः श्विधिरकी बर्मी और योबेयको माना। यह नदी। बनुहा। यह देश । देविता(नृ)-५ [मं•] ज्ञारी। देवी-मी [र्स] दश्ताको पत्री। भाषा शक्ति दुर्गाः सर শ্বনীঃ লাবিষ্ঠা তথ্যপূৰ্বী বিদাহিণ্য ভিন্টাঠা হড় ওছাবিঃ राज्यदिषी पररानी; (ना) शुद्रीसना श्रदाबार बान्नि

हुन्ह क्याः स्प्रेमधांति को देशे श्रद्धम संगलसमी सामी वानी देर दवामा बग्रीर कामरमोबार वाडार इवर कानसी तीनीः प्राम्पयां सरिवतः --काट-पु वागागुरकी मगरी धीरिनदुर । - गृष्ट्-पु भगवनीका महिरा राज महिचोदा निजी दम्हा । -पुराय-पु मद पुराम विक्ये इर्यास्य मन्द्राप्त्य वरिष है। -माग्रवत-तु इस माग्र-बादद पुराप दिसमें भगवती पुर्वका मान्यास्थ अर्थ बर्भित है (रूछ दिनान् हमें महायुराग तथा कुछ जापुरात मानव है)। -मून्द-तु अस्थापे एक देवी-विषयक मून्य र्ग्यगप्रधारी स अनुगति हेड वरी स्ताव । देवी(दिन्)-इ [तं] हे देविया । जीवा करनेवाना-शुक्र () ।

~कक़ी~रो• ण्ड शनिगी। ~कार-पु पक राग। -कारी,-पाकी-मी एक रागिनी। -गोधार-द एक राग ! - चारिल-५० जैसमनके अनुसार गाईरव्य वर्षे प्रिसके वारक भद्र है। — कार्-वि देशमें उत्पन्नः जेर बोळबाक्की भाषासे स्वतः अस्त्य हा पया हा (बह शब्द)। ─बर्म-व देशके अनुरूप पर्म, देशविधेवके लिए सचित्र वर्गः देशविशेवमें प्रविष्ठि जावार-वियोग । —निकाला— प्र• [दि] निर्वासम्बद्धा न्द्र । -- भाषा – ठी देशविशेष-की भाषा किही देशकी मण्डित भाषा। -- मानार-प यह राग । - इत्प-वु श्रीनित्व उपयुक्ता । - व्यवहार ─प्रशासिकोवधी प्रवास्त्र रहाता रिवाज । —स्थ-प्र मदाराष्ट्र ब्राह्मानिका एक भेद । वि वेदानें रिवत । देशक-पु (सं॰) दासका शिवका मार्गप्रदर्शका बेशना-मा॰ (सं) शिक्षा परदेश। वेशांकी-मा॰ वद रागिना । देशोतर-प्र (सं॰) प्राप्त देश, (४०१) वत्तर और दक्षिण अवस्थे विकानेवाची रेखाने पूर्व या पश्चिमद्धे दूरी । देवांतरी(रिष्)-वि• प्र [ते] विद्या । देशाका−५ [गं॰] एक शांगमा । देशाबार-प्र• [मं•] देशविश्वम प्रमक्षित रोति-रिवाज भावार-ध्यवहार । दैशाहन-९ [रो॰] भित्र मित्र मित्र मित्र प्रमण, प्रदान बरमा । बेदरातिथि~५० [मं०] विदयी अन्य ८७ना निवारी। इशिक-मु [मं॰] एविका कारशका गुरा स्थानन परि भिन व्यक्ति । देशित-वि [में] जिल मा शादिया गशाबा आदिका बिमें कर[े] स दिवा गया का कि र बनतावा गया है। । ब्धिनी-मी [मं] सर्वेनी प्रेन्ध : वेशी-वि स्थोरावे जरण या बना हुआ अपने नेरासा मिट मंदिर देख्या नेप्रसार में [u] इस रागिनी रवान या देशविरोवरी बाली । दर्वेद्र-प्र [] देश्लाकोदे अध्यक्षित्रह । देशीय-वि [यं०] रे >-१। देवेग्य-५ [४] दरार्द्य । बरव-वि [र्थ] जिने प्रमाणित बरका हो। स्वानीक

देवेश, देवेबर∽प्र[सं•] शह्य देवेदाय-प्र [सं=] परमेशर, विष्णु ! देवेदरी−स्ती [सं•]देवो पार्वती। वेबेल-वि॰ [सं] देवताकी प्रिय । प्र॰ महामेरा। गुग्युरु । तेबेश-सा॰ सि॰] विश्वीस मीव् । त्रेबे•∽सी॰ देवद्री। वेयेया '∽पु वेनेवाला । वेबीचर~प [सं] देवताके किए असग को दुई जावदाय। हेकोरबाल-प सि ो छ मासकी याग मिद्राके नार विचा-का कार्तिक सहा प्रकारशीकी श्रेमकी श्रम्पारी रहना । हेघोद्याम-पु॰ [तं०] देवतामोद्धे क्यान-नंदन, चैत्ररव बजाब और सर्वतोयह (विकासक्षेत्रके मतसे हनके माम है-वैज्ञात चैतरण मैत्रफ और दिअकावण) । वेबोन्माइ-पु॰ [र्भ•] देवताके क्रोप्स होनेगाना सरमाद । हेबीक(स)-प्र [मंर] देववात्रीका बासरवान, सुम् । देग-पु [सं] स्थाना मुख्यः क्षत्रः विभागा पदारागः। धस्का−इ कापतः गैसा। धमन-९० एक राष्ट्र था बाशीने पट्ट सप्रतानवे धन रधानकर क्याया स्था व प्रश्नो हरूने 'बर्न-व्यवदर्गन' भाग दिया वा १

धारमण धरिमण-५ [मंग] बहा बेदादशाना नहीं मोर्तियो आसि गनाया दुमा जुना । धयमा = - भ = कि = दोहमा । धाना माहमा - वे सुबालके गंग पर परि पीर ई-सुबामनः

धर्मा १-वि । पुरु पारण करनेवाला ।

धर-वि वि विभारण करभेवाचा, प्रक्रम बरमेवाचा (वस मर्थे इस शब्दका प्रयोग केवल समासुमै होता है) । व पर्वतः क्रपामकी स्टीः कुमेरामा अध्ययसक्तवारी विध्याः एक बुद्धा वि । मो [it] परने, पक्तपेकी दिला। * पृथित-'पर अवर िसि विनिस को अपि नावफ रिरम् रामान -ग्रा । -यसक्-मा शिरक्मरी ।

घरका-भी रे परवा धरकमा०-ज० जि॰ रे॰ चित्रप्ता ३ धरकार--द दे 'बह्दा'।

धरकार-९० एउ मीच जाति को गाँगशी पश्चिम आदि मना का काम करती है वेंगीर।

घरण=पु+ (मे॰) पारण कानेडी किया। एक माधीन गीमा पुक्र मेन्द्र गृहार्थः पहाच्या निजार्थः क्षेत्रः रजना गूर्वः भागा हिमान्य ।

घरकि घरमी-गी (Ho) पृथ्मीः मेमरका परः धरतारः मार् भारी !-बॉइ-पु+ एक बंद !-ब्हीयक-पु पर्वत ! −ज −पुत्र।−सुन-दु० धेरार प्रश्न सरकार । −का ∽ प्रची -सुना-भी जनस्थे पुत्री छोता । -चर-पु० महादश्यपा शक्ताम पर्वमा विष्युः शत्मा एक इपने वी कृतरे हा भारत करनेरामा माना वाता है । ⇔एत्-<u>त</u> रोपनामा वरेना रिष्यु । -पश्चि-पु० राजा । -पर --भ्रम-त गम् । - भृत्-पुर शानामा प्रांता रिना राया । अमेदार-पुरु भूमेराव । नगद-पुरु पुत्र । धारकीय-वि [मंत्र] चारच शरते बीत्वा महारा देते

Hart I चरणीयर-९ (ध) दिश निगृत राजा मुखी । भारता -द भारत दर्गराच्या कत्री क³रार ह चरती-रोश्य रे भूजेश्य शेवार र नका कुछ-तु हर मान रक्षा बता नहान । माधार मन्त्र है भिराता । मी भ है। भिरम् ।

परधरात-इ महत्त्वी पहत्रमा

भरपराजा-म (म ? परवराना ।

धरमान्त्रमा पर्वेशी शिक्षा का देश सकाशक का प्रकाश अल्यान बार्स वर्तना ने ने ने वर्तन हैं विकास

धाना-म है। १४ हम धामना रेशना १५५४ स्ता erial ur" and bert sarat, ffant) ter बर्दरा र स्मेर काँदि स्टब्स् नेता क्या नमा नेपार fried at ein reing unt gent gemint g. कार भारत को मान पूरी जा हो है है है है है है है है रेश्न राज्या रहन । शुरू परा प्रमानलकार विदेशों क्रियर कालान्य प्रदर्शन क्रिय अन्तर्भावित क्रिय

किए गरित वास् । यहा वह आवा-परीतने संस्तृत भरति -को • दे • भरते । रे करते । याजी-रावे देश भिराये : प्रश्तीत शरेक-प्रिहेश्त भागवयी भरती -धनिनावती । धरनन-४० भरता रेजेशसा । परमब-बु॰ दे ^{का}र्न । नमार-बु॰, श्रो स्टिबन मधायर्थ । घरवामा~न॰ कि॰ चरना दा है। धरणमा॰~म॰ कि॰ वर्गन दरमा, दरमा, रबर दारा पराभव करमाः वहामाः न्ती करमाः काला । यरमना-मण्डि दन कामा, सच्छीत ही प्रमा। हारा शहम जाना । छ कि॰ इशास्त्र ध्राप्ता । धरमजीय-की देश पर्यंता । घरहर०-म्पेन बीयने बहरर एक्टे क्रमप्रेरफीरे बर्ग में निग्त करना। बचाव रक्ता वैरे, बीएट। घरद्यमा - म कि 'चत्रवह प्रदा बरमा पानरामा घरहरा~ष्ट्र॰ मीमार, बीरहर ३ चरहरिया−<u>त</u> यह आ बीनमें यरवर सरने हवानेरा^के की शहादेने निरत करे, बीच-बचार बरनेनामा समा र्रे पीयन्त्रमारा व रू विस्तृत्ता, निर्देशक गर्दि । घरा-मो॰ पदा यार शेरदो बद्ध श्रीका व क्यी गार्क-बारा (रो॰) कुरनी चरनी बाबीना वर्नच्या महा वादी। वेंत्रदर्भ आधानेको ही भारेदानी सर्गताह व्यक्तित्व बर्गहर्थ । अक्टूब-इ क्रांस्क स्थातिक चनम-पुपर्नाति सन्दा प्रदीतिपरणः **-रै**४ यु माद्रा । -धा-पुर प्रपत्नामः वृत्ति हिम्प रामा। -चरम+-५ दे 'शहवा । -धार-५ देशप −पनि−द्र राज्या विष्यु । –सूत्र – द् मर€'सूर । −सुक(का)-पु+ें(त्राः। −मूपे ३ वहात । -शाया(विन्)-विक वर्तापर होए। मिन इका हारने निरम् । – हार~पु० प्राथम । अगुर्द्रणी साम्ब शहा सहय सुर । बशक-वि भी नुर्रात्त एवा वह भी ह रिरेन प्रकारीय शी कामने लावा जात । पंशक पराका+-५० वरारे**डी आ**वाद (थराध्यमं−९ [लं] बन्य यहः बरक-तुर र पराणामा-भी (क) क्या भगावित भगावित्रति-वृ [स] शाहाः पूर्व^{त्र ३} भागांचीशाल्य मि दिशास भारति ह भागाना कि वद्यामा अवस्था निर्देश्य दार्थ। चामार-५ (म.) अध्यक्ष धाराय-पुर्व (१) पद सम्बद श्राहर-दु है 'पाप्ता । यशिक्षी-भी श्री है है है है है थनिया(सन्) ननः (तः) नगर । इत् ६५^५ यही-भी पान एक स्थापन ग्रीका हरायो। बारम-१ (वे) कहा वहती हती। बर एक वर्ग सन unt mit a gigeten befriede und und fie Africe

क्याच्या हेड. अन्त्यात ही हहता बर्गा है

पिल-संबंधी देनेबाला। कर्या बेनेबी क्रियाः वी हुई बरहा। देनिक-विक [संक] प्रदिदिनकाः प्रदिवित कोने वा निक-

कनेवाकः; रिनर्सर्वनः। वृम्य-पु (सं•) रीनता दरिज्ञाः, कातरताः म्यः संचारी

भाष । इयतः - पु रे॰ 'देल्य' -- देराष्ट्रसः वस्तरीसको दैयस बाहुः इजार' - रामभीहका ।

्रवार – रामधाहका। पैयाने – पु॰ रेव दर्दा मो॰ दार्दा व॰ एक वासर्ववा सोस्टरवद सन्दाः

चैर्प देर्प-दु [सं] दीर्यता, संबार, बढ़ाई।

हैय-पुरु [मेरु] पूर्व कम्ममें उपावित क्ष्में विश्वका द्वामा-इस फूक वर्गमान करममें मौक्ते हैं भारत, नियति जरह होनहार। देवता। रेस्तरः विश्वाताः माकादाः माळ अकारके विवाहींमेंसे एकः एक प्रकारका साहरः तर्पवके किए विक्रित तीम प्रकारके तीवॉर्मेंसे एक देवतीर्थ । वि॰ देवता-संबंधीः दैनवाकाः देनवा द्वारा प्रेरित । -कुल-विश्वोनवारः मानुनिकः । लकोविद्-पु स्वोतियो । नगति-न्या रैकरीय प्ररणाः मान्यका पर । - चित्रक-प् अवोतिनी । →त्र=प क्योतिया । —संग्र=विक माग्वाधीन । —सीर्धं --प्र• दे 'देवतीमं । --दीप-पु ऑस । -दुर्विपाक ─प्र• विविधी प्रतिकृष्ठता, भाग्यका द्वरा चर दुमान्य। -दोप-त• माम्यक्षे सोटाई : -घर-वि को मान्वक्षे दुराई दे। भी माम्बद्धै भरीने वैद्धा रहे निविधवादी। -प्रमाण-वि भागवद्धे भरीते रक्षतेवाळा । -प्रक्रन-उ॰ भागी श्वमाश्चम संविध विदासाहस्यीतियः शामी शसा-भुनको स्थिका एक प्रशास्त्री भाषाद्यस्थी। संविध्वक्षत्र । --पुरा-त देश्नाओंका युव जो देवमानसे बारद हजार वरोंका होता है। -योग-दु संबोग, इतिकाद । ↔ सराक-तु स्वीविती । -वर्ष-यु॰ देवनाशीया वर्ष श्री १११५२१ सीर निर्मीका होता है। -बना -बहात्-थ संबोगन अदरमान्। -वाणी-न्या आकाराबाचीः र्मरहत माता । −बादी(दिन्) −िव रे ८४वर'। − पिट्-तु स्थातिमें । -विकाड-तु वह शिवाड विमये दृश्या वय दरानवाने करिवरूदी व्याह दी बाव । -भार-पु देवनिविधम माद्य । -मग-पु देवताओ-की सुद्धि जिस्के भाठ भद्र दांत हे-जास जाजास्य प्रिः, पेत्र गांवर्व याद्म, राम्छ और वैद्याभ । **न्हीन**⊷ नि भनागा मेरमान्य।

रेबत-५ [रा] रेबताः नेबनाओंटा समुद्रा नेबपतिमाः निरक्षका तीसरा कोट । दिः दवता-वेदधी । --पति-क

द्र। वयय-५ [छ] देश्या। वयम दयलक-५ [छ] प्रश्वकः। व्यक्ति-५ [छ] छनि। यम। देशकरी-को [छ] वमुना।

रवागत-(त. [म.] बाहरिमतः वादवदीगः। तुकावी । रवाग्-म. [म.] रोबायस्य रेवपायमः विकासम्बद्धः [म.] रदी सारतः आवश्यिकः सन्तर्वः।

रेबापीन देवाबस-दि [ते] हे देवनंत्र ह

देवारिप~पु॰ [तं] श्रव । दवाह्यर-पु॰ [तं॰] विवतमाँ और असुराका देर ।

दैविक-वि॰ [सं] देवता-संबंधाः देवताके निर्मित्तः किया हुआः देवकृतः। दैवी-वि॰ देव संबंधीः प्रैयरीयः, आधारिमकः। स्ती॰ [संब

द्वा—14॰ एवं सक्षा दमराय, आव्यासम् । सी॰ (सं॰) दैवविवादको विविधे विवाहित को दि॰ सी दे॰ देव । वृत्ती(विस्)—पु॰ (सं॰) क्वातियो ।

वृंबोपहरा-वि॰ [सं] असागा, मंदमामा।

वृष्य-वि [सं] वेबता-संबंधा । प्र माग्या देवी शक्ति । वृष्टिक-वि० [सं०] देश-संबंधा देश्वममिता स्थान-विशेषसे परिचित क्तामने या दिखानेवाला । पुष्टिक प्रवा मार्गिदर्शक ।

नाग्यक्का वृष्टिक-दि॰ [सं॰] वश हुवा । यु॰ मान्यवारी । वृष्टिक-दि॰ [सं] देद-संनेती, शारीरिका देहबनित ।

वैद्य-वि [सं] शारीरिक । पुरु सारमा । वैद्यमार-सर कि दवानाः दवावमें दावना । दोर (वोस्)-पुरु [सं] वाह भुन ।-शिसर-पुरु क्षेत्रा ।

न्महरूपम् पुर्व कार्ययोगीत्वेतः। दो-वि यक श्रीद यक, यक्ती यक विका कुछ। पुरु होस्री संस्था, र।-अससी-की एक स्थानपर हो राजानीका

संस्था, २। - अमसी - सी एक स्थानपर की राजाओं का शासनः हैव दासन । -मात्रशा-वि॰ दुवारा वीवा था चकावा दुका । -आव -आवा-प्र• दी मरिवाहे गीच्या भूतंत्र : ∽एक – दि॰ कुछ, बोहे, संस्वामें कम । -सका-विश्वर्थसंसर । -शुना-विश्व है 'शिशुम । -चंद-वि हुशुना । -चार-अ दे॰ दी-एक । ~चित्ता-विरु विसन्ता प्यान इपर-क्वर वेटा हो। −चिची−की विच्छारकाम गहना स्पन्नता। -- प्रची-सी दीनसी देहक 1-ज्ञानू-म पुरमेंके वस। ~तीवा-न्यो॰ गवियो ।-हुक्-दि ग्रस साफ-साक । ~तरका-वि• दीमों ओरखा दीमों पदीक नतुकृत। ~तस्यः-सस्मा−ि दी वर्त्येवाका दो-शंकिता। -तही-स्य दृहरा मीटा दगहा की दरी और चानर दे बीयमें विधाबा बाता है। −तारा-पुण्ड तरहका बुधानाः वो ताराँवाणा ण्ड बाजा । - द्री-मी बुनिया त्रिसके की दार क्ष-अस्म और मरगा - इल-पु देक हिटल ।~न्द्रमी-भी तण्यारका वात्रवा वाराक्रश्रीका ण्य वेव । वि दीनी शामीकाः दीनी हामसि किया हुआ (बार)।-बामी-बु दे 'बुबामी'। -दिमा-दि दे 'दोविका । -दिसी-मी १ रोजिकी । -मारा-विक्रमी दोनों ओर पार थो। गरी एक पीथा !- सम्बद्धी

ि क्यों को को क्या कर हो। तो प्याप्त -कि क्यों को को क्या का को। तो प्याप्त भीभा । नवासे -कि की विश्वमें दी नार्रे ही! -प्यस्ता-कि दो क्यों बक्ता (का ना)। -पछिया -पस्ती!-कि को किसे की हो। -पहर-की तिलक्ष वर क्या कर कर कर किएस का मात्र है सव्याद। -पर्ती!-की है त्रावस। -पीटा-पु काम क्यांत्रिय एक केर धरन के बार दूरी। और धरना। -पासा-पु कामी

दानी क्षत्र । -क्सन्दी-दि जिसमें दी कार्ने वर्षासी त्रावें । -क्क्स-अ० दक्ष कर्त । -क्क्स-दि दुगना । -साविधा-तु दे० 'दूसपीदा । -संजिला-दि नी लुदु क्षानी । -स्टान्सी

धसना - म कि चरत होनाः नष्ट होनाः रे मीचेकी सपनाः प्रयनाः, प्रवेश करमाः । कि॰ बेंसनाः मोचेको शोर बैठनाः धसमसाता#-व बरतोमें समाजा । धसान-सी १ 'वैसान । भसाना-स॰ क्रि॰ वे 'पेंसासा'। धसाव-१ दे विसाव। चर्कि−प एक बंगली बाति । भौरादः भौरार-प्र यह जनार्व वाति। इस पातिका अत्यमी। कर्जी आदि खोदमेठा कामकरमेगाओ एक वाति। रत बाविका भारमी। याँभना-स॰ कि॰ पंद दरना। ट्रॅंस हैंस्कर का केना। चाँचक-स्री अनम, श्रेतानी। नुर्तता दमा, इका स्वरा, बरागी। **पॉयकी**-वि कनमी, एक्ट्रबा; बंगानान, बूर्त । सी अन माना स्वरहारः भनीति, जलाभारः प्रोकाः कल्यात्री । भौद्या~ली॰ [सं∗] रकावधी। ਬਹੌਰ−ਗੇ। ਰੇ 'ਬਜੌ'। भाँस-यो र्चनाकु मातिका नंबसे बढनेनाको साँसी। साँसी कानेवाको तंत्र गंद। वॉसमा−न कि वीडेबादिका पॉलना। वॉसी-को इन्हें मारिको वॉही। घा-प्र भैनत स्वरका संबद्ध (संगीत)। तबकेका एक बीकः [री॰] अक्षाः च्रवरपितः वारण कानेवाका । प्र॰ एक प्रत्यन जो संस्थानाच्या विशेषजीके पीछे प्रकार, संग, बारके अर्थमें बीजा जाता है-जैसे बहवा जातवा साहि। भाइतं~सी दे भाद ३ **माई-नो॰** दे॰ 'बाव' । पाठ-पु॰ एक प्रश्नाका भाग। भारक-र्ने द्र भव **दस्तः + इ**रकारा । घाक−को रक्दम भातक, क्वांकि ग्रीवरत ! ध वाक पकामा [मं•] वेस होका पात्रा आहारा माता समार सहारा अवनंत्रः प्रश्नः । ३३० - कसमा - वैभवा-धन समना । भाकनार-भ कि शक्क समाना । घाकर-द नक्तीम अधावः राजपूरीको यक वादिः पंजाबका एक होई जी किया शालीके पैदा दीता है। भागा-त शेग वाया। धारी-औ मि॰] भक्तमण इमना। धाव-सी विस्कादर रीमेका शब्द विवादा दशक दाहा शृंद, बरबा; हाकुर्वीका छापा या भागा । सुरु --आरना--किन्स-विक्**ष्मान्य** रीना । धावना-म कि ददाइना। घाइम-५ दाइम तसन्दी, सांस्था। भाषी-प्रदेशको । भा**मक-द** [सं•] आ ets: 1 धात−श्री• दे चातकी−मी [मर्न्रो घातविक−4ि शि

भारता(तु)-तु [मे॰] मध्याः विश्वाः विशः वस्त्रिः मस्यम बातके ४० मेदोमेसे एका सर्वके ११ मेदोसेसे एका क्य मापिके एक पुत्रा नगाने एक पुत्रा व्यवस्था कर वेरालक्ष रक्षका चपपति । नि चारम करनेनामा। खेनन करने-वाका । -(तृ)पुत्र-पु सनस्क्रमार । -पुरिवसः-पुष्पी-मा॰ पाल्ही । धातः चौ [र्स•] शीमा चौदी बादि बपार-दर्शक स्वीतः परार्थ। रस रक, मांस, मेर, वारंग मना और गुरू-वे सारा चारी रस्य महाया भारत विकासीर अवश्यानी राज्य आदि भी जाकासके ग्रम है। पंत्रमहामूक परीधे बहुके श्रव्यक्ति मूल कप-वैसे भागांत्री मू, कर्तांत्री इ(बा); परमारमाः निरंश वंतिकः भाग राष्ट्र । -व्याप्रीतः -कासीस-प करीस ! –कवाळ-दिश्वातके दारने विपुण । -श्राय-प्र शरीरके तत्नोंका श्रवा धनतेन। -शर्म :-गोप-पु+ तुर सादि महात्मामीको शन्ति स्परे-का डिच्चा(वी)। ~च्य-दिश्यो वातुर्गका गरह हो । प्रद्रॉमी ऐ~का~पुक्तिय दारीसम देक!~ ब्रावक-त सरामा । - नाशक-निश् त दे निक्ष था । -प-प चरीरमें छाच करावंसे बनमेशाना परम रसः। -प्रशि-सा वात्रजासः शपनः -प्रशिकः-पुरुशी-को चक्दाकुकः - सन्- पुरुष्तः - सर्म-पु दे 'बाद्यबाद'। -सक-पु॰ केस सम्राथार व छरोरस्य प्रश्चनाँके सकके कपांतर है। सीसा। नसविष —पु एक वरवा<u>त</u> सीनामक्ती र नगरियों थी श्रदाया । -मारी(रिम्)-तु मंदद । -राय-5' प्रत भारत विकला हुआ रंग मेरी-नोक । -राजक-५ (प्रण ररथ) वाद्यजीका राजा नीर्थ । —रेव्यक्र −ि जो नीर्दय रेचन करे। -चर्यक-वि बोर्वकी गामेशला ! -वल्लभ-५ श्रदाना । -बाद-५ रासावविक विश दारा सीमा-नाँदी कादि क्लानेकी विका, क्रोन्सामा ! -बाबी(दिस्)-प्र बाह्यबारका दाता करंपनी। ~बेरी(रिम)~प र्यवह । ~क्षेक्रर-प शीसा । -सीयन -मेनव-प्र• शीसा । -मंद-प्र• सीमा । -साम्य-५ कत किए, क्षमध्रे समाचन जच्छा स्वारम्य । -- स्तंयक-वि॰ यो गेर्वक संज्ञ क्रे । -हा(हम्)-प्र॰ मेक्ट । बाह्यसा∽भौ रि•ो पहासल होसेका मल। चातुसय-वि [चं] बिसमें रानित पराबेंका शार्ष्य हैं। सनित्र पराधींने गरा पुत्रा । षातुमान्(मन्)-वि [धं] विश्वमे वा विस्के प्रम बायपं ही। वात्—की दे॰ 'वातु'। चात्पल न्यु [में] सहिवा विद्री दुनिया। षात्र−५ [सं] पात्र । धाविका-मी [र] आसम्बद्धाः बाग्री-ली [40] धार वरमाताः प्रजीः मागाः मीरणी -कर्म(क्)-व वायका काम । -पश्च-त वारीध^रे जीव-देश क्या । -पुश्च-प्र धावका नेशासर । -कुल-विद्या-सी प्रसव दरानेकी विद्या

नि ने पाक्की **र**देश भाष र

111 तोयन#-प सीप अपराध, दुवन ! होपना -- स॰ कि दौर स्नानाः ऐव स्वाना । क्रोक्ट-ब्रि [मं] स्टीव, होवयळ ! होपा-सो॰ सि॰ राजिः सजा । -कर-प॰ चेहमा । -क्सेक्श-स्त्री वनवर्वरिकाः वमतक्ती । -तिळक-प॰ प्रशेष, हीयक ! होपाकर-प्र• [सं] दे॰ दोष समृद्द । वि जिसमें धनेक शोवारावच-र मि | शोप सगाना । दीपाबह-वि [मं] दीवपूर्ण दावेंति मरा हुमा । क्षोपास्य-प सि प्रशीप दीपक श्रीपिक-पु [संश] रीत । विश् दोवशक ।

होपित्र≉--वि॰ दोषमुक्त । दीपी(चित्र)-वि उप [सं] अवराधी अधिवस्त पेनीः शर्पेक्टक् (श)-वि [मं] क्रिसल्वधी, यंव बूँड्जंबाका। दोस्-पु बोबा र मित्र । -वासी र-मित्रवा बोस्ती ।

होसा#-सी है 'दीवा' ! होस्त-प [फा] भित्रः सहर । -तार-प दीरत । -बारी-स्वी बास्ती। -नबाज-प्रा विश् मित्रीके

प्रति सद्यानमति रखनेवाका । होस्तामा - इ॰ [फा] मित्रता। भित्रताका व्यवहार । वि॰

हीरतीका विकीश्वित ।

होस्ती-को क्रिजना, सीहार्छ । वे हो होत्रवां पक साथ

मैठकर बनावी हुई होटी । वीस्थ-प सिंशी सेवका सेवा क्रीडाः श्रीडकः। बीड- - वर दे की हा [4] दबनेका किया बोहना दुषा इत्यवादा किसी चीत्रते काम बटामा। --ज-40 EW1

शोहरातां-की दर्मगाः वह विश्वा क्रिये क्रिये दसरेने राव किया का खरणभी।

शोहता 🗝 🖰 कर्ना या वर्षाः, माती । दोद्दर-पु॰ [गं] नर्भा छालमा। गमिनाको द्वारा प्रशासिक के अलुमार कुछ विधिए पटार्व जिलका मेवल निधा

बार तथा विविन्तंबंधी बाविक बीधीका शांत बरना है। करि समयके अनुसार रमणिकाके रपर्रा, प्रशासन शहिबान आरि जिनसे प्रियंत करतक, निकक गारि ब्रहीमें कुल सर्ग है। ⊶सदश्य~ व गर्भ-मन्धी सद्यगः प्रका जीवस भी रह अवस्थाने दसरीमें प्रस्त ।

दोहद्वती-मा [मं] यह गांभण विमे दिमी शरतदी \$107 ET 6

बाइनाभ्यिता-स्तै भि दे विवस्तनी ।

षोदरी(दिन)-वि [गं] विश्र मबन बच्छा हो। सोदम-इ [त] दुरनंद्रा शाम-दुम्बराधा (ला) चूमशा। शोहमी-स्नै। [तं] इच दुइनेसा वाया दहनेकी क्रिया । दोहरा - नी पद तरहबी शहरी था र जिसमें असूती गगारी बानी है।

दोइरबा~म जि शा परत होना रोहरा होना द्वारा दोना। संदर्भ वस्ता

पीदरा−ि की पर∂का बुगला । प्रदेशका

लोहरासा-स० कि० किसी पातको बार-बार बजनाः प्रमरा विश्व करनार अग्रादि वर करनेके किय यक बार और देस जानाः * दोहरा करना ।

लोहरी-विक सी हो तह की हुई वा घरतीकी: बगमी) – बास−सी दी तरबकी पात्र।

श्रीहरू-प [सं] इच्छाः यमिनीकी इच्छाः वाहपः सप्तीयः

वोहक्रमती-शो॰ सि॰ों दे 'दोहप्रवती । सीवस्ती-सी सि विशोकः सन्दर्भ

होडा-व॰ सि ी पद संद जिसके प्रथम और वतीय चरम-में ११ ११ तथा वितीन और अतर्थ चरणमें ११ ११ बाजारें बोली के एक संदीर्थ राग ।

लोकार्क-औ• दक्षार्थ, शहार प्रकारः # दक्षिता ।

वाहाराण-पु दुमाम्ब वदक्रिस्मती। वोद्यापमय-पु [सं•] दन ।

बोडिस-न्य बीदिम, करकीया करवा । वि मिंशी पिसे श्रदा गया थी।

सोदी-सा ण्ड छैन। शास-वि मिंशी बहते बीग्य । व दव । दोखा-ना [मं•] गार ।

र्शी≉−न दे 'ची"। ला दे 'दी'। वॉक्सा-#• कि दे 'दमकता' !

वींगवा, वींगरारे -प्र॰ तथे हुई बरतापर बोनेवाकी मौध्य कत्तरी करा पृष्टि तेबीसे मान्दर निरुष्ट जानेदानी वर्षा, तेव श्रीकार-'कात ही एन्होंने गाविको और धमन्दियोखा थीगणान्सा विताबीयर वरसा दिखा -जिल्लीर शोरगक । र्वीचनाक-स मि दवाब टास्कर देना । अ कि० बड

प्रक्रपटन होता । र्तीरी-धा देवरी वॉव ।

वैग्वरिष्य=ड [र्च] इरा स्वमाव बुद्दना । बीम्साबिक-त [मे•] दारवाहः माम-सिरीशकः।

वी≉−श्री अत्र बनारिश भागः मंत्रापः । श्रीकृतः श्रीगुरू—वि: (मं) दुक्त-संबंधाः दुक्तद्यः। पुरू वारीक रशामी अपनाः रेशमी अपनेम वटा दशा रथ ।

वीय-न्दा॰ वीयमें किया या भाषा द्रव गमना उद्दाना गरि पर्या पुरिसी ५३वा स्थेग आग्रामा बॉरनार इमन्या दिनी कार्वेगी शिविष्ट निय वस्त अधिक कहर क्यानेको किया। दीवनको प्रतिवागिता । -भूप-स्ते। बार बार दबरसे कपर आना-प्राणा बेंगबार कीशिया भरपूर उथान । भू -- मारमा सनामा-इरवह जाना था बहुँबामाः दूरतरसी बाबा करमा। प्रयोगाय करी बार

वार जामा-जानाः श्रीवयाः। **टीहना**~स कि अधि देगमे घल्ला हेग्री इन त्रिम गमन करना कि पाँव पृथ्वीयर पुरा म प्रमा बहुत सत्रीम भनमा किमी बामके रिप बार-बार इपर प्रवर आसा

वाना हैराम शता धैनमा बाता। रीबारीबॉ-स्प स्वस्त क्रम्मेशायीस्थीतपुर र वीदाल-को बीवनमें जिया बीवा बीवनका समा

दीश्नेदा चेराः मध्यमणः वेगा जिल्लाना ।

बीबाबा-स कि थीर देवाममें क्याना परवा (देव-

वि [सं] दे० 'वादक'। भागक-पि॰ [सं॰] वारण करनेवाका । चायी-सी देश 'नान'। भाष्य-पु• [सं] प्ररोदित ।

धार-पु॰ [मं॰] जमा दिना हुवा वर्षाका जल थी वहा <u>धम्फारी होता है। बारान्डे रूपमें बरुका बरसवा - बारही</u> वर्षाः ऋणः विष्णाः औकाः सीमाः एक तरहका पत्थरः यहरा स्थान । वि॰ भारण करनेवालाः सहारा देवेवालाः महरोगामा । सी [हि] सकवार आदिका वह सेव भिनारा निससे इस बार्ट्स हैं बादा किसी इस फार्चके गिरने ना नहनेकी करंपरा, प्रवाद, कीवा आक्रमण, कापा, बाका; सेना फीन; देशे या पवित्र मदी नाविक्री दिया वामेवाता बर्म्यः इस शर्थम्ही शामग्री । 🕏 व० स्रोर क्षरफ - महरि पैद्रतः स्त्रम मीतर श्रीक पाई पार -सर। -दार-वि [दि] भारवाका, विश्रमें बार दो। स -बॅबमा-रस प्रकार गिरमा कि बार बन बाबा मैत मारिके प्रवीगमध किसी प्रविवारकी काटनकी शक्तिका कंठित हो जाना । -शॉपना-इस मकार विरामा कि धार वैष जावः संज्ञ आदिको शक्तिमे विसी प्रविवारको कारमेकी शक्तिको संदित कर देना । धारक - वि • [र्थ] बारण करनेवाका । तु वह को वारण

करें। क्रम केनवाला कर्कशास वह बख्द जिसमें कोई क्स्स रसी जान पात्रा करूरा, बच्चा संद्रक मादि ।

घारका-स्थे [मंग्रे थेकि भय।

भारण-प्र [सं] किमी क्लुकी व्यव करना वा व्यका बादार वमना, बढ़बना बामवा या हेना जावाना पह मताः ऋण वा उदार हैनाः अवसंवत प्रदम वा स्वीकार करनाः द्वामा था पीमाः सरक्षित रहाना वनाये रखना रक्रम, पातका स्मरण रखना मरितकार्ये सुरक्षित रखनाः सम्बद्धा निरीषः शिषः स्त्रमः।

धारणक्-पु [सं•] कवी कर्वदार।

धारणा-सो॰ [सं॰] ग्रहन १इन, ग्राम्न मारि दरनेकी क्रियाः मस्तिष्कर्मे बीई वरत भारण करनेकी शक्ति वन निषम भावि बोगके बाद अंगोर्मेंसे एका एरक, रेक्ड और कंपन प्राचानामाँ द्वारा प्राचका निरोधा न्वामण्डमें स्थित रहना मर्यादा स्थिति। विचार निश्चित मनिः 🗝 वृक्षि-सुचक्र बीम (बु॰ सं॰) । -बीम-प्रमाह समावि। -शक्ति-को मितापमें प्रदेश दश्तेकी शक्ति। धारवादाम्(वद्)-वि [सं॰] येवानी ।

भारतिक:-पर सिरी क्यी कर्पटारा थव जमा करनेकी សំជា វ धारणी-सी [सं] रिवरताः मिताः वमनीः वेदी पंकिः

वहींका एक मंत्र ।

भारणीय-विश् [में] बारण करने बोल्य । पु भरणीकी । धारमः - वि , प्रश्न धारम बरनेवाना धारक । धारना ४-म में भारत करना। क्य केना ।

भारविता(त)-वि॰ व (ति॰) भारववर्गः पारम करवे-वाका चारक !

पारिषेप्री−ि स्पै [मं∘] शारण करमेशा**ना** । स्पै० प्रकृति ।

धारियेण्यू-वि [सं] पारत करते में समर्थ । धारसां -त है 'इछम् । भारां**ड**र-प [र्थ] बक्का क्या औला बरकर शेव-दक्षके भागे जाना ।

बार्शग~पु॰ (सं॰) तक्रवार ३ थारा-ली [सं•] किसी इन एदार्थके नहने ना शिनेश्रे परंपरा अवाद, बार, क्यम सम्बार मारिका नेव किनाराः यहेमें बना हुआ हेर: बीहेची बाधा हैशा। अग्रभागः अति वृष्टिः वहाहका किनाराः प्रयानका देशः क्यांकि। रामि। वरिकाः कानका सिराः शामी। कपः स प्रकारका परभरः समृद्धः दशका परिवा करूपः मानक । मरेश मोजको राजभागी। यमध्यात, अपनाद !-क्यंट-कु**॰ कर्दनका एक मेर** । —गृङ्ग~तुः रमानामार। **वर** वर जिसमें फीबारा क्या हो। - घर-पु बारका सम्बार -निपात:-पात-इ कम्बाराका विरनाः मारो पृष्ट -प्रवाह-वि वाराकको अविराम गतिने वर्ग र चक्रनेवाका (माध्य इ)। व । अविराम वितेश वर्ष भिक्रच ६५में । —कुक्त – तु सदस मामका दुव । – र्यव द कीवारा । —थर्च,—बर्यन-पु अभिरत को वहा वृष्टि । -बाह्यका-बारी(दिन्)-वि० अभिपन पर्व वाका। क्यातार होने वा जारी रहतेवाका। -विप-1 तकवार । –र्शयास-पु अभिरक वर्षः महार्ताः। -स्प्रहरी-सी॰ विचारा **महर (सेहेंप**) ।

बारा-न्ये दक्षा। -समा-को म्यरस्परिम् एप क्षांत्रिक ।

पालाग्र−प नि•ी शायका चौदा किरा । बाराठ-द [र्थ-] बार्क्स पर्धाः वीदाः बारमा मत्त्रामा द्वाची ।

बाराच्य-४ [मं] यद्भ प्रकारका पृथा। बाराक-वि [सं•] किसमें बार हो। बारदार (तकार कारि)।

चरावनि~सी [मं] शत्रु । पाशसार−५ (सं•) यहन्त्री ।

बारिक-मी पारा समदाव श्रंदा सेमा । बारिकी-सी [नं] पूत्र्याः हेमरका पेड़ । दि औ बारण करनेवाकी। किसपर दिलाका लग्र की, करीत (स्रो) I

भारित-वि [सं] थल्य दिवा <u>ह</u>मा; सँगाङा द्वमा । बारी-पु रह वर्त्रका सी करा मानिएको स्कीर सपूरा सेवा । — स्रर—पि विसर्व भारिकों ही । थारी(रिन्)-वि [बे॰] भारच क्रमेराला (रनदा प्रवर्त निकी अन्य सम्बद्धे साथ हो होता है-कीमें औरचंकि देववारी)। जिसमें पूरी हुई क्लोंको बारण बरनेमें प्रति बीं भारमानाम् । किसमें बार वा किमारा दी । 5 वर्ग

कर्मदारा चीनुस्य देश । धारोष्ण-विक [र्नक] त्ररंतका वहा क्षत्रक्ष ताम और गरम (इष) 1

भातराष्ट्र-त॰ [सं] पुनराष्ट्रका त्रवा पुनराष्ट्रवंशीमा नागः बानी भीत जार बाल देरीबाना इंछ! -वदी-ब्सी इंत्रप्री सहा।

(83 चत-पु• [र्श•] जुमा। -कर-पु खुना धेलनेगला, बुभारी । -कार-फारक-पु नुष्का धेल कराने गका, समिका शुभारी ।' −कृत-पु प्तकर । −ऋदेदा -र्सा॰ जुण्डा सङ्का -दास-पु॰ जुपमें जीता हुना इस । -पूर्णिमा-सौ आविनको पूर्गिमा । -प्रतिपदा -मो• कार्षिक-प्राप्ता प्रतिक्शा । -फकक-पु पासा सेवनेका तरना ।-धीज-पु कीशे कर्णक । -मूमि--स्रो• जुमा सहरोदी जगह । ⊶र्महळ,−समाज्ञ⊸पु• वतकारीकी मटली। -पूसि-पु वह जिसका सुमा रोकता पेहा हो यदा हो। अभा रोकानेपाका । श्यम-पु॰ [सं]दे यम । द्यी∽को [सं] स्वतं आकादाः —कार—दु॰ ववर्रः राजगीर । क्षोत∽दु[सं] प्रदाशः पूरः वाषः। श्रीतक-वि॰ पु [मं०] प्रश्राष्ठ इरनेवाका प्रद्राधकः सम्बद्धः । सीतन-पुमि] प्रकारत प्रकाश करना प्रकाशना प्रका सः सुनित बर्गाः शैरकः असतः वि अकाससीतः, पमद्रतेवाचा स्वदः! धोतनिक्र-सा॰ [मं] स्वास्या टीका । घोति(स)-स्रो [मं] क्योंनि प्रद्राद्याः वागाः वारा । योतिन-दि [मं] प्रकाशित । पादिरिंगण-५ [तं] धवीत ज्लान् । धोस धीस = ५ दिन दिवस । घोडरा०-पु देवासव। चौ(दिय्)-सा [मं॰] स्वर्गः मकाधा जिना प्रकाशा मक्षि चमद्र। क्रुंक्सण−पु[र्ग]ण्ड माम जी तीकेंद बरावर दोता था। र्द्धग~प [र्ग] मगर≰ा एक अब जुरी । इक्ट, हराइ-पु [मं] एक बाबा जुम्मी। द्रग≉⊸पुदगनेवा इदिमा(मन्)-मी [भे] ध्वता । मूच्य-पु [मं] पतका वदी। रसः शुद्धाः बूँदाः विसमी । विश्वपनशका। अपय-त [मं] १ इस्त । इरम-९ [म] एक प्राचीन शिक्षा। **इर्थती~**भी [मं•] मुमाकानीः मरी । मच-प [म] नरत होना विपत्रनाः करत पहार्थः तरल कीदर वह ेरी नियान धरणा किमी बदार्थका नरम शबा तरा रेस व्यागना भारता प्रकारम ह्रवस्य सामग्र शुकाः परिदाश देवा गति। क्रोटा । वि तरण विप्रता दुआ। दीहता दुभा चूना हुमा। बहता दुभा। - ज्ञ-बु गुङ्ग -रसा-भी नमा वी !-शील-दि विपटनेवाना ! इपक-दि [स] रहनराकाः एरण ग्रीत बनायनग्रीतः । मचग-५ (मे) दिवननेश जिया तरन शामा: बहमा एक्या विस्तास भागा दश्या, शामा । वि 🗦 🛚 इवस् । इंचना == अ अ. नर्म हीशा विश्वनाः इम्डेजनाः दर वीता।

मनापार-पु ि। ११ शापा अर्जन पुरन्।

निवासी: जाक्रजोंका एक वर्ग । -प्राणायाम-पु 'हा**बिट प्राणायाम**ी व्यक्तिज्ञ प्राप्ति वे विकासीनाः प्राप्ति पराक्रमः परार्थः वद विश्वते होई वस्त बनावी जाया इच्छा । - माशन-५ सदियन ।-प्रय-प्र• विष्णु । इविणाधिपति-पु॰ [सं] इनेर । व्यविष्योदा(दस्)-पु॰ [ti] अधि । वि धन देमैदासा । ह्वीभृत-वि [तुं०] विवता हुना बी दव ही गया ही, तर्कतः स्वादः । व्रवेतर-वि [सं०] ठीस, कठिय । व्रवोक्तर-वि॰ [सं] बहुत तरह । ब्रुच्य~पु [र्स•] परार्थ, वस्तुः वद्य वरतु को ग्रुण भीर किया वा इनक गुणका जानद हो (वैशेषिक दर्शनके अनुसार मी इस्य दोत है-पृथ्वी, जल, तेज वासु आदाध काक, दिख, भारमा और मन); वह मूक बरतु, बिससे इसरी बरतुएँ हैवार की बाती है, उपानान, सामान, उपदर्गः धन-दोहतः गोतहः भीपनः सामाः गौदा गया रूपा विभवताः यग । वि॰ वृक्ष-संबंधी। वृक्षसे स्त्रका कृष् जैसा। -कृदा-वि संपत्तिकीन। -गण-पु॰ समुख्के अनुसार सैतीस विशिष्ट मीपविजीका रह समूह !-पत्ति-पु राशिमाँ बिनमेंसे प्रत्येक कुछ विशिष्ट इच्चोंकी महार्थताका कारण दामसे बनको स्वामिनी मानी बाती है-जैने शंसक मस्ट भी भारिको स्वामिनी मेव राशिः वनी, पूँबीपति (१) । -परिग्रह्-पु॰ वनका संबद । - धाचक-वि विससे दिनी प्रवद्धा वीभ ही । ~ब्रुद्धि-सी द्रश्य वा बरतुको छनाई। -संस्कार्ण पु पक्ताममी से सुदि। ञ्चच्यक-पु [मं] हस्य या वरतुका बाहक । हुष्यमय-वि [मं] दिशी हुम्मदा बना हुनाः वन भंगविम बरिपूर्ण । हररवान्(वर्)-वि [र्त] हस्यवानः, वर्गाः। इच्योतर-पु [सं] दूसरा हथ्य । द्रव्यार्वम-९ [मं] यम, धमाना धमापार्वन : क्रमाधित-वि [र्] इम्बमें निहित। ह्मष्टम्ब-बि [में] देरान का दिराने बोग्क दर्शनीय: शाहास्टार करने वीम्या विचारणीया को इरानेमें अध्या छ। नेषमुगद भवपाधिराम । ह्रष्टा(पु)-१ [मं] देश्वनदाका, इर्ष , माह्यास्तार श्रानेशामाः प्रदानकः। इष्टार-पु [मं] दिचार करनेवाला निर्मायक विभारपनि। इद~५ [में] बहुत गहरी शीक हर । हासा-सी [मं] बाग्र संग्राहरूरा । इाधिमा(मद्)-मा [सं] दर्गनाः संसर्रः। माण-पु• [वं] निशा वनावन मनाता । वि सावा दुशा माना दुशा । ब्राप-पु [मं] बोयरा भावान सूर्वे स्वरित दिव वीहा। क्रामिष्ठ−५ [में] घ=ाव। ब्राय-3. [4] तरक धानशे दिया चिमने क्यांप्रदेश दिवानक या चित्रक वर हो दिया सामा दया था मुविष्ठ-पु [+] प्रारमका एक वर्तमी मान्या रूम देवाता

बरकारी भाई होत्सी किहा अनुसाम गाव प्रवासना

भीतिये वर्ग क्यों मांडे क्यान⁹-साधी; स्वीकार करना ! भ• कि॰ भैवं बरनाः संग्रह दोना । भीत-वि+ मि+ो को दिवा गना थी। विसपर निचार किना गया हो। जो शंहह किया गया हो 1 भीति – मी [मं] दौना बाना प्यासः। धीस•--वि• वे 'बीमा'। भीमर-पु १० भीवर । धीसा--वि॰ इम देगवाना, कम गरिवांका विश्वकी चाक तेत्र न हो। बगरहित मेर मेंबर: प्रधारता या चीवठाने रहित प्रचंत्रका बक्टाः (स्वर्) में क्या वा तीन च हो दना हुआ। विसद्ध नेग भा तेनी रूम ही सभी ही। जो बदर्तापर नहीं 500 छोत वा उत्तरा हुआ। [सी 'बीमी ।] योमान्(मध्)-दि॰ [मं॰] दुवियान् प्रधानान् । भीमां -हां है • 'शेश'। धीया—सी देशे सदस्ये। चीर−दि [सं•] डिसका दिस विकारजनक कारवींके रहतं हुए भी विचलित स ही, जो जक्दो क्विलित न हो सके, पैर्यमुक्त, रिवरिवक्ता वहा गंगीरा मेर' सक्का करमाबीः नम्म विनीता मनोव संदर । दु॰ समुद्रा केररः हुकुमा पंडिता राजा वर्षित भाषम नामडी भोषणि विदारमा। बुद्धा = पेर्व | चीरम, चित्तको व्हता। संतीप मत । ⊶चेता(तस्) −वि+ व्ह, न्यिरविच । ∽पन्नी-सी बर्गोदंद, परनीसंद । नप्रशति न्यति - ध वद मानक को बार और छांत हो। --कस्थित-प्र मायक की भीर और बीर दोनेके लाव दी क्रीकांत्रिय और निराधित हो। चरिक≁~ धुवीरम वैवै। भीरस॰-पु दे चित्रं ! - मान-नि वैत्रेवान् । चीरता-नो चीरःव~पु [सं] धीर दोनेका नाव वा गुना (नरामे अनिक्कता, पैनेः गंमीरताः संतीन, समः पोशित्वः चात्रवं । धीरा-सी (मृं) ब्लंग हारा की प्रकर करनेवाली मानिका (सा); इ.जि.ची; मारुकैंगती । घीराघीरा-सी [#] अ्थन और मुख्यमे मुहा दारा कीप क्ष्मद्र करमेवाली मादिका (सा)। चीराबी-मा (में) श्रीशमदा पेत ! भीरे-म मंत्र गतिमः मंत्र स्वरते। सुबद्धे । धीरीक्ष-पु [नं] आत्मरणवामे १दिछ, सुमाशील भीर, विसन्न और दाजन सामक-मिले रामचेंड, श्रविद्विर भाति (सा)। भीरीबृश-पु [ई॰] होथी चपल जर्दशरी और दिस-रवम माबक (सा)। बीरोच्मी(चित्रन)-५ [मृ॰] यह क्षित्रेत । भीय-वि [सं] कलार (वे)। = इ वे 'चेवे'। घीहरि घीलरी-सी [मं•] पुत्री, बन्या। थीयर-पुर्व [म] महाभा महाबः लीहा ! धीवरक-पु [ग्रं॰] महाह । चीचरी-ली॰ [ने॰] चीबरबी गीः वही गएकी बारमेका

एक क्रम्बा महात महत्रीको रोक्सी ।

प्रमिन्प• दे• 'प्रमी'। र्श्वें नारा-वि वृत्तिक की पुरुष्ति मैठा ही यशा हो। र्वे हैं - न्यां है 'धूना'। र्पुकार-मी हैं। पुकार । प्रागार-स्था॰ स्पाद सीह । र्श्वेगारना∽स॰ कि अपारमा, ध्रीकना । र्जुज्ञ÷—वि॰ जस्यह, श्रेंचकाः मंत्र स्थातितासः । र्ध्यन्ती दे॰ 'र्पुष'। र्जुब−सी जाकासमें बहुत अवित गर्न सा बामेने होने वाका बेरिया। बाँदाका रक रोग मिसमें क्यांदि वर स कानेसे चारों और श्रंप जैसा दिनाई देता है। श्रीयक्य~प वर्गों निकलनेका रिक्र । र्जुधकार-१० अंबकारः नर्मन । र्जुयमार र्जुयमास-पु॰ है 'बुदुमार । र्पुंबर, शुंबरि॰-सी नर्दा हुई, पृष्ठ बारिके बार्य हेर्ने बाका अंबकार। र्वेषराना <u>र्वे</u>षकाना॰-अ क्रि॰ धुंच्छा पहचा सता बा अंथकारङ्क होना । श्रीयका-वि पुण्डे रंपका इसका स्वाहः अस्यः मेरिता ~ई~सी -पन-पु» प्रवता दोनेवा नाप। र्थेयसी-सा॰ वेथे(म नवरकी क्रमवारी I र्वेद्यालाङ~स*व*िश्व हर्मा देना । र्थे धार=-पि॰ वृभिका पुन्तीपार । चीचिक-सी देव प्रवा र्भेषिपारा०-वि दे 'तुपका । र्श्वच-इ [र्स+] एक राष्ट्रस विसे क्रूपलयान नायडे राजाने मारा था (हरिबंछ) । -मार-ड॰ राजा हहरके उ कुरक्रमान जिन्होंने शुंह राष्ट्रगढा वर किया था। ससीठ मकानसे निकल्येबाटा हुआँ ! र्बेष्टकार-५ पुंकारः केनेता, पुंचलापन । बुंचुरिक-सीक पुर्य वृक्त मारिके कारव छाया दुना धर **कार ।** पुष्रित−वि भुँवका पत्राचा हुमा। मितको मेवलीनि कम हो गयी ही, मंदरहि । र्थुंचुरी-को अंश प्रेयकारमा आँचमा एक रीम । चुँचनाग॰-व कि॰ प्रती देगा। बोहाओस धरहे वसना ! **र्विश**-को 🕊 प्रप्रि र्धुवा-त ६० तिवा । न्यस-द०१ विश्वस्त्रा -बाब-पु पुंचका । -बार-विक स देव पुर्यातर चु-म्यी [र्ग् •] इर्थम । Ante-d go na, ! बुमा-पु सुमन्त्री वा नवती दुरे सबनी मारिते निक्रियो बाला माप जेला इकका बाबा क्रार्व भूगा व दिवास-'पुत्री देगि सरदूसन चेरा'-रामा । -कश-5 दे धीमर । पुर्मा निकन्तिके किर छन्ने बनावा वरा है: विमनी । -धार-वि बोरसाट वीर ग्रीरगाउँ भरा हुआ कारण । सः सरग्रतार और वह देगी। व बोर्मे । सु॰ -वेबा-धुम्ने धीरता या निवाधना दर्श वहुँपाना । - निकासना वा साहना-स्थानीती वर्षे

होडी(डिम्)-वि [र्थ•] होड करनेवाला, महितनितन करमेवाला। विद्रोह करमेवाला १ प्र+ वह व्यक्ति को होह को। रीणायम द्रीणायमि−५ [मं] होगाकर्षका पुत्र,

व्यवस्थामा ।

दौणि∽पु[सं]अवस्वासाः।

शीणिक−4ि [सं] जिसमें एक द्रोण गीज गोया बासको होप-संबंधी।

प्रीणिकी −ल्यो • [सं] एक होण सापका पाच । मीणी-स्रो॰ (सं॰) बुठवराः संटाक ।

हीपद∽षु [सं] हुब्दका युवा।

हीपदी-न्त्री • [सं•] हपदकी पुत्री, पाण्डव-पत्नी । द्रीपदेष−प सि•ो द्रीपदीका पत्र ।

#द-प॰ [सं] पंटा दमानेदा पहिदाकः सुग्म ओहा दे

'इंड्'। क म्बी व इंड्सी। इंदर*-दि शतका करनेवाला स्टब्बनेवाला। पु+ संनार। इंड्र−९ [सं] पुगल शुग्म कोशा दी व्यक्तिवाँका पर

रपर पुद्र। बन्दर संवर्ष श्रमका ली-पुरुषका भर गाटा-🔁 बीहा मिश्रमा नी परस्पर विरुद्ध बस्तवों या भावीका मोहा-बैभे छोड माह छोत-उच्च आहि; स्ट्रेड अनिसद हुनैः रदरवः एक रोगः मिलन राधिः समासदा वद भेर (व्याः)।-चर-चारी(रिन्)-पु वदवा। विश्वास रपमें चननेवासाः मी सदा मपनी मादाके साथ रहे। -- अ-वि वात विश्व कप्यमेंने किन्हीं हो हे विद्यारने बरामा समहबन्दः राग-इष आदि परस्पर विरोधी आवींने एतकः। – मोइ−५ धीदवस्य ६७। – मुद्र–५० दी स्वक्तिंका पारग्वरेक पुद ।

इंडी(डिम्)-दि [मं] गुग्म बनानेवालाः परस्थर निरोधी (सुरा−दुन्ध्र); हायज्ञान<u>ः</u> ।

इय-वि॰ [रो] दी। पु तुरम भीता (समासंतर्ने)। -बारी(दिन)-२० दुरंगी वात बद्दनेशना । स्ट्रीन-रिनर्परः (एकः)।

श्वात्म्य श्वात्मित्त-पु [शे•] हार्यान ।

डा~⁴देका समासगत रूप । ∼ज−पु॰ प्रारव पुत्र । -मृत्य-वि वारदा वारदर्वे। -+क्टर-तु+ कारिन्देशः वाधिदेवदा एक अनुपर्। -०एम्र-चु रिश्तका हार धार्यः मेत्र- > नमे। सगरनं बातुरेवायः । -- वसाय-९ तन वन मारि बारह माथ बिमपर जास्ट्रेन्सी दैमनमें विचार करत इ.। (स्था)। -क्शञ्च-प् नारह रिन में गमाप्त डोलरात्मा यद यह । - • साचन- ५० दाधिरेय । ∼वयर्गी∼स्थै औलन्ड वानिनके अनुनार धेत्र क्षोरा आदि बारद वर्गोका गम्**व** जिलके आबारवर प्रदेश क्लाक्ष पाना पाना है। -- कार्पिक-कु बदा-रम्बान मुन्द्र हाने है जिए बारह वर्षक बनमें सहसर निया मानेवाचा गढ मन्त्र। -त्यी-मी बन्नसे बारहवी विदि । - इस-दि [हि] दे "द्वान्य । - • वाजी-वि २० बारदवानी र -बद-बु क्र³ह संदाय वीकारा मुन नी नंतर बार बाता है। ही विदिवीसमा बानहर 454 1 हार्स्सोग-पु (६) गुनगुरु र्यन्त तबरात मानि वरह | हारकेस-पु (स) ह्रमा।

वस्तानीं के योगसे बना हुमा एक इवगान इच्या नि वारह थेगोंबाका । हाव्यांगुछ-पु [सं] शारव अंगुरुको माप, निचा,

द्वादशाक्ष-पु॰ [सं] कास्त्रिया नुद्र !

द्वावसाझर-पु (सं•) निष्पुद्ध नारह अक्षरीका संत्र-ॐ भमी भगवते बास्ट्रेबाच ।

द्वादशास्य-प [र्शः शबदेव। द्वाव्धातमा(त्मन्)-प [सं•] स्वैः वदार ।

द्वादशायतम~पु॰ [सं] बीद वर्शनके ननुसार मन, बुद्धि भारि पृत्रास्थान ।

हाव्शाह-पु॰ [से॰] बारह दिनोंका समुराव: बारह दिनोंने समाप्त होनेपाका एक वस्त सरण-विभिन्ने बारहरे दिन दिना वानेवाका माह ।।

इ.सप्यायण-पु [सं] वह जो एक व्यक्तिका मीरस भीर दुसरेका रचार पुत्र की (ऐसा व्यक्ति शास्त्रानुसार बीमी क्लाओंटी संपत्ति पाने तथा बन्हें विश्वान करमेवा अधिकारी दोता दै); गीतम मुनि ।

द्वार-पु॰ [सं] मकान कमरे लादिकी दीवारमें बनावा इमा मीवर-बाहर जाने-बानेका विशेष प्रस्तरका छित्र। बरवाजाः वह मार्ग जिसके हारा देहियाँ अपने विवर्गीका ग्रहण करती हैं। माध्यम सावन । -कटक-मु • दरवाने की किसी निर्देशनी । -क्याट-पु॰ ररवानेका यहा। -गोप-द दे 'दारपाक'।-धार-पु+ [हि] निवाह के व्यासरकर कश्बीवालेके करवाजेवर क्रीमेवासी एक रहन। -छँटाई-सी [le] एक नैवादिक रीति निसुमें वहन कीदनरके दारपर विवादीपरांत बबू सदित घर कीटे हुए मार्डका मार्च रोक्ती है। इस रोतिके उपकर्षमें बहुनको मिकतेबाका मेव। ~द्वीं(शिन्)-प्र

-वार-५० सागरामध्ये सर्दरी ! -नामक -प-प डारश्रक !-पंडित-पु॰ राबास्त प्रशन पंडित ।-पटी-न्री • दरवा देपर कमा हुआ परशाः चिक । -एष्ट-पु बरबावेदा बरता एका । -पाछ;-पासक-यु स्थानीवर निमुक्त विशादी या पहरेदार, हाररथक, स्पीतीदार। -पिंडी-सी देश्बी दहनीय! -पियान-प किसी अरमण । - चूजा - भी दिवाह है पहले रिनकी एक रीति हिममें बस्थापन करनेशका व्यक्ति बरावरे साब हाएएर भावे दुव करनी वृक्षा करना है। -व लमुक्(स्)-पुक काजाः गीरैया । -- र्यग्र-प् शामाः करगनः ।-समूद्र-

वाता। -सुद्धा होना-पर्या धर्वासे की दिमक वा बाबा न धाना । द्वारका द्वारिका~सी [सं] काहिनाशास्यो कह प्राचीन मगरी विभे कृष्याचे बागया था । (रमनी गयना पारी वाम में है) :-मास -पति-नुकृष्णा हारिकामे रिवन बनदी मुनि ।

🧣 विक्रिया एक मापीन सन्तर था कमी कर्णाकरे

राजाओंनी राजधानी रहा । -- स्थ-9 बारपास । मुक

--शुष्टना--किमी शतके जारी रहनेका राग्या निवस

द्वारकावीरा-द [4] हे शास्त्रमात :

करनेवालाः जोते वानै कोम्याः (विसी कामग्रे) जाने रहनै नाका। विसपर किसी कार्यका भार हो। पु याने आदि नो रभ मादिमें भीते जाते हैं। विश्व व्यक्तिपर कार्यका मार दोः जगनाः, प्रधान पुरुष । युरीत :-- नि पु दे 'पुरीण। भ्रुरीय−वि दु(छे॰]दे 'शुरोध'। पुरेंडी, पुरेंडी!-मी॰ डोडिया पक्रमेंडे बाद डोतेबाडे वर्षवात्सवका एक जैग भृत्रिकेशन, गदनोत्सव । श्वरेटमा १- छ कि कगाना, पोतनाः मृक्ते क्यमा । प्र-हो [सं•] वेडी आदिके पंश्वित रखा धानेवाड़ा न्द्रमाः मार् शहः रत्र मात्रिकः अग्रमानः योटोः, श्लीरं रेपान अग्रमाग । प्रयं−वि [सं•] दे 'पुरोच । पु विष्णुः वैतः कावस नामकी भीवभिः हे 'बुरीण'। पुरा-पु किसी वस्तुका पुरः कव । सु॰ -(रॅं)ठवा देमा-भरतो सहामा सर्वश नष्ट कर देना सरिवायेट कर रैना। द्रसमा−न कि पानी नारिके धोयसे स्वच्छ किया बाता भीवा बामाः पानी ए॰नेमे स्टब्स्ट वह बाता। प्रध्वाना-स कि दे 'स्वाना' ३ पुसाई-सी भीनेकी किया। बीनकी सबरत । बुस्राना-स कि गोनेका द्वाम दराया। प्रथम-विक्य दे जिल्ही धवच्य∽ली सिंोगीतका धवचाका के के स्वायी। धुवम-पु [मं] वस्ति। वि अस्ति करनेनाका। भुवॉल्ड दे 'पुश्री'। —कश्च-पु दे 'पुर्वादश्चा —धार-दि **७० दे० 'गुर्माधार** । धुवर्रीरा-पु छनम् बना हुवा नुवाँ मिन्नक्रमेका छेर । प्रवास-स्रो बरदका पिसान। प्रवाना~स कि दे॰ 'प्रकाना'। प्रविद्य-प [एं॰] नादिकीका नांग्रे बहकामेका प्राचनी न्तदिका पंकाः तानका पंका । प्रस्तुर-५ (छ॰) वन्द्रा । प्रसा-पुर वर्ष प्रयासको मिही-वेंड माहिका देश शेका। गरी वारिके किनारेका गाँउ। प्रस्ता-इ कमन्य मारी ईवड । भूषिक-सी दे प्रा भूँचर भूँपुर+-वि भुँभना। पु भेनेरा। बहती हुई कुरू-राधि। **भू∘−**वि रिवर । पुत्र शुक्तारा । भूमा-पुरे 'तुन्ति'। भृष्ट-सी देश भूनी ! पूर-प करावर बरमेची सकारे [ele] बाधा नहित र्थन मगुच्या काम, समय **।** मक्सां−न कि नेगडे अभान*ना। तु० कि सुत्री दैनाः भुत्राँ पहुँबाइर केने आहिको पद्माना । पुत्रहरू-पुरुष्टि वृत्रहि । ঘ্ৰদাণ-ল কি ছিল্লা কাঁগলাঃ भूत-गरिण पूर्व क्षमी पार्राशी चंत्रका[सं] हिलावा इमा: धोश तुमा कूर क्या हुमा स्वक्त; बॉय इमा, श्रिपायित-वि॰ [शे॰] दे॰ श्रिपा र

तिहरू हुआ कमकामा दुआ मॉलिटा स्थिति। -कस्मय,-पाप-वि पापरदित निष्पाप ! -पापा-की काधीसंटीच एक नहीं। भूतना । - छ । क्रि. पूर्तना करमा, बना करमा, समझ, वंबना करमा । भूता-धी (र्ध) एती। मृति-स्रो [सं•] दिल्ला, बंदना दश करना दश्तेलाँ श्ररीरशक्तिको एक किया । भृती-सी एक शिक्ता। भूतकः भूष-प्र हरको। नरसिंगा । भूभ~प्र भागके बीरसे प्रवनेका शम्र । भून-वि [सं] विकास क्षत्रा, बैंसवा क्ष्मा प्यान स राक्षे प्रस्त । **भूतक**—पु (सं॰) दिकालपाका, बंदित दरमेराका, राक। भूमब-९० (सं०) हवा: कंपनः शोन । भूनना—स कि दर्शसाद और बुब्दुको करना पुरस्क देवता नारिक निमित्त वृप कारिको मानम करान्य वृत्ती भारि । भूमा−पुरुकदेश था छल्का गॉहर को मूनी देने उचा दर निश वैदार करवंडे साम आता है। धृमि−को+ (d+) क्वाने, दिकानेको निना । भूनी-स्रो किसी देवताने भाषाकारे निमित्त भावों हो। समै गुरगुक्त आहिका पुजाँ। ३४मे वचने वा धरीरधे समने के किर संखुओं हारा अपने पास बहारी बानेराती जन। शु॰ −श्रमाना ∼रमाना-एलुजेंका तरके कर मनमे अपने वास जकाने रामा। बीगी होना विरक्ष होना। पूप-त [efo] देशवाने बाकारणके किए वा सुनिते निमित्त अकार्य वर्ष शुस्त्रुल सारिका हुजाँ। ग्राप्टन नही गंभत्रव्य (रसके वीच मेर है-(१) निर्वास (१) पूर्व (२) शंप (४) काह और (५) द्वांपर)।-हान[ा]र्द [हि] पूर रखने था देनेका वरतन ! - हामी-सी [रि] वे ब्रुगान'। -पाय-पुर देश 'पुतान'। च्यचीच्या [हिं] छ्रांचके सिए बसायो समेगाण एक प्रकारको मसल्या अनी दुई सीछ । न्यास-इ वैर इम्बद्धे पुरेशे बास्ता। -बृदा-पुर एव दे। विसी शुग्गुन निक्रमता है। शरक बृद्ध । पूप−ली भागप बाग ध्वंदा प्रदार महंदी नादी दीव (रीवके साथ ममुक्त) ! -बदी-सी॰ वह वी क्रिपोरे क्षके सहारे समक्ता यान होता है :-धाँह-में क्क तरहबूत करहा किएमें कई रंग दिवाई देत हैं। हुंच रताना-पूर्वे ध्रुपा अवता तुरतवा वा ध्रेनावा जाना भूव अगतेके किए वादर वेडना आदि। -शिवाना " विरताना-नृष करामंधे निष वाहर श्लामा ।-विष्ननमा नर्तका प्रकाश फैन्मा । भूगक, भृतिक-५ [H] भूग नेमनेशन्या गेरी। भूषम-५ [सं] जूप केनेचा काकी संपदम्य ! भूपमा-त्र कि बीत्तम (समामधे प्रपृत्त)। • प्र कि भूप देना ग्रंथण्या जमायाः भूपने बलागा । धर्पाग-व [लं॰] सरस एस ।

(89 द्विज्ञाग्रज्ञ, द्विज्ञाग्य-पु॰ [सं] माग्रग । हिजायमी-नी॰ [मे॰] यदीरबीत । द्विश्वास्त्य-पु॰ [सं॰] दिस्का वरः थीसका । हिस्द, द्विजेश-५ [सं•] दे॰ 'दिवराम'। हिसेंद्ररासराय−५ देंगकाऊ प्रशिद्ध कृति और भारवकारः रवनाय-आहमहाँ, चंत्र्युप्त, समुपार काति-(१८६६ १९११) । हिबोत्तम-पु [सं•] रिबोमें श्रेष्ठ आहल I ब्रिट्(प)-रि [सं] शतु मात्र रखनेवाका। तु॰ शतुः दुरमन । -सेवा-की होइ, विषासपात । द्विड-पु (मं) विमर्गः रवादा । हितय-वि [मं] दो अवयवींवाकाः जी दीम मिनवर बना हो। सर्व दीनीं। द्वितीय-रि [मे] हमरा । पु॰ पुत्र (बस्र ६ इपमें आरमा दी दुमरी बार जन्म केटी है)। मित्रा महाबा सहाबक (बैसे चाप द्विनीय); बोइ सुक्रिका करनवाका वनका **र्**षरा दम उत्तरार्थ । हितीयक-वि [rio] दूमरा: दूमरी वार डीमेवाला : हिर्ताया -त्या [।] पश्चकी बूसरी निभिन्न पत्नी । हितीमाकत-वि [गं] दो बार जाना हुना (रीत) । दिसीयामा-न्ये [म] कारक्की। डिसीयाध्यम −९ [सं] ग्रहश्यासम्। द्विरप्र-पु (सं०) दा अवदा डोहरा दीवेडा माव-मैसे बुर्व्य में विका शोहरा होना। बुग्य- गोडी संस्था। क्रिय-दि [तं] दी धंदीमें दिमका दिधा-व [ग्•] दो प्रशास्त्रे। दो वागोर्ने । -करण-पु दी मानों)में दिमाञ्चम । ~गति~पु केटबाः मगरः हमय पर अंद । द्विधारमञ्ज−९ [मं] क्रानीकोच जावचरू। क्रियास्य-पु [भे॰] गोछ। द्विरदांतक-दु[|] सिंद। द्विरवाशम-द [ग] मिद्र। द्विर्-भ [मे] रे डि ा - भागमन-तु तुनरागमनः विराहर् बाद बभुका परिश्व वर भाना थाना । -आप-इ.स.ग. - उत्त-दि श.दी शह बड़ा या किया यहः ही दी बार ध्विता जो की प्रकारने बहा गया हो। अना बरवस । पु पुना काला । -अक्टि-ब्या॰ की बार बहते क्षा पर[े]रा बरनेकी शिषा_री शार कहना। आवश्यक न होना । - अहा-मी यह की जिल्ला पूर्व प्रतिके महने वार्षि स दुमरेका भारता पति श्वीकार कर जिला हो। हिपिद-पु (१'०) सुदांदका वक मंत्री । द्विपंतर-पि [म] राष्ट्रभाशः नाव ५६ वानेशानाः क्रायः। द्वित द्वितर्-त [ा] देव स्थानेशालाः शत्रु, वैही । ब्रिष्ट-वि (मे) जिल्हा इत हो। पुर स्वेता । दिमदत्ताध-५ [म] दि अनेप । श्रीविष-५ [में] दा श्रीयोदाना अव । होर-पुर [मं] व्यक्त वह मान मिल्द वाही केर बची हो। पुरा: + मनुगु:ह जब् आहि वह सुरान्होंदे } हर रहा। स्वराधमी समाव अवर'द सदासा ब्दारा - सपूर-भौगे करूर । -कुमार-५ एक प्रकारका रेवता

*1-E

(वै॰)।-सर्वर-प महापारेनत !-शतु-प सतानर । वीपवती-सा॰ (सं॰) मदीः मृमि । डीपवान् (वत्)-वि॰[र्स] होपोंठे पूर्ण । पु नशः समुद्र । द्वीपिका~न्यै [र्स॰] सतावर। द्वीपी(पिन्)-पु॰ [र्थ•] शयः चौतः। -(पि)नसः-स्वाक्षनग्रा यह राजहरूव । -शत्रु -पु॰ श्वतमृत्री । द्वीच्य-नि॰ [सं॰] होपर्ने जत्पन्न । पु॰ होपनिवासी। स्पासः **रक करहका को मा रा**(। हेव--पु॰ [र्स] विस्तका वह मान को अप्रिय वस्तु पा व्यक्तिका नाश करनेकी प्रेरमा करता है रागका विरोधी माना चनुता, बैरा रूप, रस आदि श्रीपीस ग्रमॉर्मेसे शह वो भारमाओ दृष्टि माना जाता है, तु सकर वस्तुकी नष्ट करनेको इच्छा (स्था०)। अविधा आदि पाँच नहेस्रोमेंसे एक (वो): बुक्किका यह बर्मा: वह स्रोम वा जमर्पको दूर करने की रुक्ता की दुम्ह-तथा चलके कारमके मिंह हो (सां॰)। च्यक्तच्य कीच ईप्यां आर्टि देवदे सर्वातर मेद । क्रेपण~प सि दिवकरनेकी किया प्रमा। शहता वैरः श्रद्धानि द्वास्थ्येनामा । हेपी(पिन्)-वि॰ [ग्रं॰] हैक्नाव रखनेवाला। पु॰ धन, विरोधी । होष्टा(प्ट्)-तु (सं०) देश करनेवासाः वरी । हेप्य-वि [मं•] देव करने यांग्य । पु॰ देवजा पात्र। सन्तु। 🖥 🗕 🗣 । दी। दीनी । **इंक्ट०**−दि दो-यदः। हैगुलिक−दि (सं) जो तूना स्थाप के। पुञ्चनप्रति रात पुर सेनवाका महाबन । इंगुच्य-तु [मं] दूनी रहम या परिमामा देश तीनी गुर्वी-छत्व रव और तममेंस कियी टीसे हक्त दीमा। द्वीज्ञ≉∼=मी दिशीनादञ। द्वैत-पुर्वि वे दोनेक्र भाषा जाता सुमक मेर्न्यह, भेरमावनाः इत्यादा बदान मोइ। -वन-द्र एक् दम विसमें परियोंने कुछ समयदा निवास दिया था। - वाद -पु+ वक शारोनिक सिक्षीत मा जीव और अहा तथा छन और विष्टिकिम मेर मानता है (विशंतको छोडकर शेष धीयों मास्तिक वर्धन श्री सिकांत है पोषक है)। -बाबी (दिन्)-वि॰ प इत्यादकी माननेशमा। इती(तिष्)-दि॰, पु [मं] दे 'हेवबादी । द्वीयोक-वि [सं•] इमरा । क्रेंच-प [र्व] दी महारका दीनवा माना निक्रता। परगर विस्त होनेका भागा राजनीतिमें दूरी। मीन परतनेका पुष (श्लकी सन्त्रा गंधि बान् छः गुनीव है), नहेह अनिथय। –दास्मप्रणसी–सी वह ग्राप्तनप्रति बिमपै गुणा दी बरों में बिमक हो। द्विधीक्तण-पु [मं] देर मलोंमें बॉस्ता । र्वथीमाय-पु [र्ग । इ. इ.प.) निध्यदा मनाव द्दिशा। द्विच-वि [मी] हायू संबंधीः स्वाप्त-अंबंधीः व पद्म । प्र व्याप्रथमेः व्याप्रयम्न आह्म रद । द्वेपायम-द्र [र] महामारत द्वरानी आदिन स्वतिना भेरव्याम (रजहा जान वह होरमें त्या था रूपीमें रजहा

बद माम बहा) ।

कृषा । ~श्चना ~सी० हम-स्पर ब्रह्ता । धूर्मक-पु (र्ग•] गीरका झुभारी एक नाग । घर्तता-स्री [छ] वर्तका ग्रम वंचना, प्रतारणा, छन्न, दमाबाधी । घर्षर-विष मिीवेश ऋषिर। भूबेंड-वि , पु [संक] भार बहुन करनेवालाः कार्यमार

नैमालनेवाला । प्र वीश दोनेवाका प्राः। धर्वी-सा॰ सि॰) रबधा अध्यान । धक-सी॰ मिट्टी नातिका चरा रजा रेगा (ता) अति ग्रुष्क वस्तु । -धार्मा-सा० वृषका हैर। सु० (कार्रि)-उदना-तराह या गरनाद दीना कवक जाना सर्वनाश होमाः समप्राम हो जाना । ~उदाते फिरमा~भारा-सारा फिरमा: नाविकादी तकार्यों बमना । 🗕 बी वस्सी शहमा-अर्थमव बातके रिप सम करना। -वाहमा-बद्द पीनता प्रस्त करना ! -क्षाबना-क्षारको जाव छोड देता । -फॉफमा--ग्रीविक्रके समावमें दीमावस्थामें इधर-उत्तर पुमन फिरमा १ - में निक्रवा-सर्वधा यह

शोगा, गरबार शोना । --से मिखाना-गह करना महि

यामेर करनाः नरनार करना ।

भूलक-पु [सं] विप, नवर। धुक्ति-स्रो• [सं] बूक, प³ रत्न । -कर्यन-प्र करम-का एक मेरा मीप । -कुन्हिम -केबार-तु बीता हुमा क्षेत्र (बिसमें पुरुषो प्रवानका रहतो है)। प्रस्त !-ग्रच्छक -प्र अवीर ! -धमर,-ध्यरित-विश् जी प्रक कामीचे भूरे रंगक्षा ही गया हो। - व्यात-पुतानु। - पदक-पु पृष्टक्षा गरक । ~पुन्तिका,~पुन्ती - तो केतदा । धृक्तिका-सा॰ [सं] कुदरा कुम्परिका ।

धर्मी~प्रश्री (प्रमी । धमर-दि [सं•] मूरे रंगका मीलिमरोक रंगका गर मैका। पूरुमें सना दुआ। पुरु मूरा रेगा गथा केंद्र। बधुनरा हेकी। भूरे रंगको कोर्र करता : -कडवा-की व्येत बुद्धाः ~पश्चिम = भी इत्तिर्श्वश्च नामक श्वम ।

धाररा-वि पूछके रवका। पूछतं समा हुआ। सी॰ [मं॰] र्धहरस्को वामेक हुए।

भूसरित-नि [सं] पूनर किया हुमा, बूलमें किया हुमा। पृहे इंबका । धूमरी−सी [मं]किश्रोश का मर ।

श्रमणाव-विश्वे 'वृत्तरा'। भूस्तरः पूस्तुर-इ [ने॰] भगुरा ।

भूडा-इ दे इदा यह प्रश्ला की विश्विती आहिती हराहेडे किए बनाबा जला है।

पुक्त प्रतान-सर हैव 'विद्व' ।

पान-दि [हो+] धारण या ग्रदेश किया हुआ। वसता हुआ। त्या प्रमार गिरा प्रमा पतिगः रिनता वीका प्रमार वैनार दिया हुआ । पु॰ गिरमाः रिगमिः सहमा भारणः अवनेका बद्ध बंग । - लंब-वि प्रंव बेनेवाला। विवेश ! - वीजिति - प्र अध्य । -राष्ट्र-पु॰ दुर्योजमक विनाः यह वैद्य यहाँदा राजा वा शासक अच्छा दी। एक नाग' काले पैसें और चीचराध्य इंस ! -राष्ट्री-सी करवरको एक तुनी विक्ते इंस आदि क्ये बल्या हुए। -सहय-निक अपना | चेतुमती-त्योव [संव] गीमणी नदी।

कर्व माप्त करमेके भवन्त्रमें क्या हुना । -वर्मा(सेन)-वि॰ विसने कवन भारम दिवा हो। पु॰ विकांगरेस केत वर्माका अञ्चल जिसम अर्जुनसे तक किया था। - अर्ज-वि जिसने कोई जन भारत किया हो। दू ईहा बस्स करित । चतात्मा(सम्मु)−वि [मं॰] ८ड मित्तवाला चीर । पु•

विण्यु । प्रति−की [मं•] बारमा प्रद्रणा क्द्रपता ठदराता स्वेदी भैका ग्रांच्या प्रोतिश एक बाय (स्वी): गौरी आदि सोलह मात्कानीमेंसे यका मनका पारमा (शतके तीन मेर है-(१) सारिक्या (२) राजसी, (१) दामसी)- यद व्यक्तिसारी मान (सर०): वस्त्रही यह कृत्या भी धर्मही पत्नी है। चंद्रमा-

ध्ये एक कमा। प्रतिमाध्(मद्)-वि [मंग्] वैवेदाका, बीटा संदर । [सी पित्रमती ।]

प्रत्वरी~ची [र्स•] प्रभी। फ़्ला(श्वम्)-प्र• (र्छ•) विष्युः ब्रह्माः धर्मः आकादाः सञ्जा बहुर बादयो । चपिश्च~नि॰ [सं॰] बीरः नदासरः निर्मातः।

च्यु-निक[संक] बीर नहानुरा रक्ष चतुर । प्रक राधि। समृद् । एष्ट-बि॰ (एं॰) सारसी। समारदिया होइ, क्ष्मंत निर्देश थी अपराय करके भी निश्मेक यमा रहे भिक्कनेपर औ कटिक्स स की और दीप प्रचट होनंपर दी क्रार्न बलाना थान । पुरु अक्टाच करके निग्धेक बना रहनेवाका मानक। ~शहा-प्र• रामा इपरका प्रम निसने क्रायेशमें सक-श्वामाके श्रोकर्म मध हीभाषात्रेका वभ किया था।~धी~ वि बीक विशंदा -मामी(निव)-वि स्पृत वका समहानेवाला। डॉड ।

प्रक्रमा –को (सं•) दिशारे,परंडताः निर्मेशकाः निर्देशनाः। प्रशानिक को [मं] कतनी (को)। छटि−९ [सं] दिरम्बन्धका यक प्रमा वसरवके यह मेत्री।

रक वसपात्र । पूळाक्(क्)−िर [र] है 'कुना

पृथ्यिन-को (d] स्टिप । fal. 4 [40] go ,42,1

ध्यान्ति (सं] वर्षण बरमे नोम्ना श्राह्ममण करते नोग्ना, बोदर बीस्य ।

धन-प∞ विंशो समुद्रानदाकली ≹ भिन्।

द्येशा-सी [वंश] सरीः पारी । श्रीकेशका∽सी (सं•) पनिवा+ द्येश-न्या (र्थ) दालको प्यानी द्वर्ष यी, स्थाप्रमूना भी।

क्ष देनेताची नावा प्रवीतमा । -पुरुप-पुरु बीधीरा विभिन्न - नुस्वकर-४ वाजर । - मक्षिका-स्रो र्वश्च जोग । -सून्य-पु॰ गीमुश मामक शामा । भैनुक-पु [सं] यह नतुर जिले वररामने मारा था।

--सृत्त−५ प्रस्ताव ।

धेनुका-म्दा [सं] चेतुः बरिजनीर मेर, बपहारा नारा पद्माः धनिया ।

अपमानित होनाः भरकते रहना । शकार-वि+ जिसकी बाद सद समी हो। घगड-पु अपनि बार। न्याज्ञ-विश्वी अस्टा। धगहा-पु॰ छवपति, बार । धराषी-मी॰ मानिवारियो सी । धगधागमा ६ -- म क्रि (दिस) धमधना । धगरिन-मा॰ वर्णेका नाव कारनेवाको भी पमाधन सो

वर्धीका मान कारती है। चारी • - हो। व्यक्तियारिणी वा परिश्ली ग्रेंडकरी सी !

ध्रगा≉--पु बामा टोरा सूत्र।

धचका~पु• वदा शाँका।

ध्य-स्त्री बनाव-सिंगारः तक्क-महक्का बैठमे-चठने आहि का हंगा अचित गममा शकन-स्रत-'क्या वस बना रखी है -इमेमूमि । हिसदा प्रदोग प्राया 'सम सन्दर्क साथ होता है-(सजबज) ।

भ्राप्ता-स्ती । वे प्रश्ना । क्यरेटी वाली। भन ।

चत्रीला-वि अञ्चाका सत्रीका। धानी-तो । कपने, कागम सादिका तथा पत्रका उक्ता । म• प्रक्रियाँ उड़ना-सर वा परकर द्ववने द्ववने हो बाला । - उदामा-चीर वा फाइकर इक्टे दक्टे कर

हेना । प्रर-प [से] तराज्ञाः तका राक्षिः गुनापरीसा । घटक-प (ते॰) बवानीस रचिवाँको पढ प्ररामी शीक ! धारिका-ारी मिंशे चेंच मेरका एक परिमाण पंशेपी:

कीरोज मेंगोटी: चीर, चीवर । धारी-ारो । [संको संगोरी: चीर: गर्शाधानके उपनांत शियो को पश्चननेके किए दिया जानेनाचा बन्त ।

घटी(दिन)-प [मं] धिनः तला राज्ञि न्यापारी । घरंश-वि मंगा (प्राथः मंगकि साम दलका प्रवीप द्योगा है)।

पद-द शरीरका कमरने गरेकरका भवा रहित जागः निर दाम पैर, बूँछ भीर पंत्रको धीवकर पशु-पश्चित्रोंके शरीरका धेर माना कुण्हा जमीनके कपरने बहासळका माग पदत्मे "गररापे पूरणी है तना। 'बन की माबाज (रमाध प्रदीम प्राय स के नाव दीना द)। -हटा-वि शिमकी कमर मुख्यकी हो। −धव⊸नी दिनो मारी बरत है गिरने छुग्ने आदिने लगातार प्रापन होने बाली ध्वनि । सर पद-चड रचनि समझ बदन द्रणः विमाहर देरीह । -मे-ध्य प्रश्चे साच- व्यवदेश रिमा र के उन्होंने । घरक-मी दावरा स्रीता सरका विचान स्त्रागर।

पद्यम=स्यो दश्यका स्तंत्म क्ष्यदेशी वक्षकः। पदवत्रा-अश्रक्ति द्वापडा स्तेन्म करना- श्रीका चिट

पद मरमा। धरभर राज्य कच्छ करना । पद्या-पु॰ कामकी पहस्ता शांका बाह्यशा विहते मारिका राज्या निरियोंकी बराकर मनानेका चुनमा ।

घरवामा-म दि परव पैशकाला। माने संस्था वा मानेदा प्रत्य करना दिशी मारी बराबी कह या गिरा दर भवना द्रीराट राज्य प्राप्त कृत्या ।

वर्षशाम-भिक विरंत्तर स्टब्स करना का वे

नेता ।

भारता-पुरु पहाका नेगले गिरने आदिक्ष मानाम !

-(हि)से-वैसरके, वेपक्छ ।

धक्याई-पु॰ वटा करनेवाका, दीकनेवाका ।

धाका-प बाटा बजना चार वा पाँच सेरकी एक तीका

सराजः धर्मेगाः इक । -वंदी-सी॰ पदा सरना मा वॉपमाः वसर्वदीः सबसे किए प्रस्तुत दी रकोंका अपना सैम्बरक वरावर करना । सुर -उठावा-वीहना।

--करमा-किसी वश्तको वरतन सहित तीकनेके पर्व तराजके एक पलकेपर नरतन और इसरेपर नाट आदि

रक्षकर चन्नजेंकी बरावर करमा । श्रद्धाका-प किसी चीवके बोरसे गिरमे फडने सारिमे बलक क्षेत्रेशका बीर शब्द । -(के)से-फ्टॉसे, करपर । वदाचय-स॰ कवातार 'चइ-वड शन्द करते हरा कसी

कारी, विका वर्षे । घडाम-प यथीन पानी बानिपर जोरमे गिरने अपने

कातिकी साहात । ⇔से –श्वदाराति ।

धारी-मी एक दमन में पॉन सेर और कही करते हस मेरका बोला है। बॉब सी क्वयेको स्वमा लहार' बॉटीयर प्रवर्तेषाको शिस्सी या वासकी सम्बोदः वपरेका किलारा वा हात्रर । मु॰ -अमाबा -सगाना-बीठींपर मिस्सी थे तह जगाना । –घडी (करके) खुल्ना नसर कुछ खुर केना । (परियो-नहसायत्तने) ।

धन-सी॰ गरी भारत कर ।

पतकारना∽ध॰ कि | दतकारमाः विदारमा ।

चता-वि सवा हुआ, दरा हुआ। सुरु ∽करना-हराना, श्रमाता । -यद्याना-चनता करनाः शक देशा ।

धर्तियव धर्तियवान्यः योगकाव मनुष्यः वेशीय आहमी। द्रोगचा ।

धारर- • व - तरहीशी तरह प्रस्तर बनाया जानेवाका श्रव देश बाबा, सिया । वे धनरा ।

घतरा∽त स्कमशिक विरोदा घरनामा उत्प्रायून । श्रूष -श्रापे किरमा-पानन नमा प्रमना ।

श्रमुरिया-प्र विकॉपर प्रशुक्त प्रयोग करनेवाला अग्रेका

धन्-म बुनहारने विद्यारनेद्या शरू। धना-पु॰ पर धेर ! - मेंद-पु वद धेर ! धत्तर यसरक-प्र । धत्तरका-सी मिने पतत । थायक-मी अध्यत्नदी क्रिया या माना अपर भी। धाधकता-अ कि भागता हम प्रताह कमना कि टम्पेन क्रनी श्रप⁷ उठें भा**र्य-पार्य** जनजा ।

धषकामा∽म कि भागने च्यर पैश करनाः बहकाना। भ्रमामा - भ॰ कि॰ दे - ध्वप्रमा । रतराना । धर्ने≋य-द्र [र्ष] अर्थुना विश्वा ग्र**रोर**में रदनेशनी

पीन बानुसीयेन एका सरिना अपून नामक वृद्धा भीतवा पुरु एक साय ।

धन-वी जिल्ही (4.8) अंदर ज्ञाब-(अमुद्ध होस्यान) लुक्त दे विषय ३ जी की। माविका। मुक्ती ३ व [at] शहर मुझ कावजभूत इच्य सूमि सर्गा (रेच

लंबार्जा वृद्याः कीस्त । महत्वा बाका प्रारक्ताः स्वादना

र्घीसा-पुक्ता नगाहा-'प्रत्य तुवके भीसा वार्षि'-एक प्रकाशः बुद्धाः, सामध्ये ।

घाँसिया-प भीमा नवानेवासाः भीनावात्री करनेवासाः भीस समानेताला ।

घौत-वि [मै॰] भोना तुषा प्रश्नातितः धनसः शीत । तु भौती; प्रधासन । -क्ष**र**-प्रे भेता; सुतका बना भेता। ∽कोपम, व्यीपोश-पु पुका का साफ किया हुका

रेखमः । – मंडी – स्तामिधाः – दिस्क – पुरुषकिः।

घौतयः घौतेय−५ सि ो सेंबा नामक ।

धीति भीती-मी [मं•] इहबोगद्यं क्य दिवा विश्वने कपडेकी पार अंग्रल चीडी और पंत्रवान लंगे गीकी पट्टीको निमकते आर फिर बाहर निवाकते हैं। इस कियाने काम वानेवाको कवनेको पडो ।

घीरय-पु [सं] एक कवि जो पांटबाँडे प्रदेशित थे। मायोर कवि जिसके दिएन उपयन्त्र, आयंति और वेद थे। एक कार्य जो पश्चिम दिखामें हाराक्यमें रिवर है। घीझ~दि [सं] दुसदर्णनाका शुर्पेदे रंगका। पु पुत्र

क्ती । घीर≠−वि ववस सफेर। पुरुष पद्योग सफेर बन्सर। घीरहर≠∽त है 'नाहरा ३

भौरा-नि वरण स्नेत्र, छहेट्। हु सफेर नेव्य का ब्रह्म। यह प्रश्ली ।

भीरा**हर**∽प हे 'परहरा'।

घौरितक−४ [सं] पोरेको दुनको चारू ।

भीरिय॰-पु॰ गारीमें बोता जानेशका बैक, प्रवे । घीरी – हो। बन्धी पाना भीरा प्रश्लोधी माता । नि॰ स्ती पत्रही, सफेर ।

भीरेग-म दे भीरे।

भीरय-वि सि ने बो भरा भारत करने योग्य हो। योश बोजे बोज्य । प. गारी स्टॉबनेवाका वैका पीताः संशात

भायक । भीतंक भीतिक भीत्वे~प∘ सि दे 'परेता । घीय"-इ [तं] बोक्स दुक्स थाता।

भीक्र∽को छिए, दुने वा पीठवर किया वानेवाका शेसकी सरहरू भारी मानादा अपरा हानि। यु क्लका नेता कभीशाहर । व नि भनका~धासक्-प्र कपान र्गा। -श्रक्ता+-प्रभावात दशन वहेट। --ध्रप्यह --घरमा-न मार्गार; पन्तन । -धृतक-नि मनल वर्ष

पदा(भूती ।

भासहर भारतहरार-पुर परहरा।

भीका-दि दे 'वनक'। त वन गुणा सकेद नका-ई--स्वी चन्छता, समलायम !-म्बर-पुरु वक्तकी मातिका यक् सन्दर् छिल्क्नाकावेड ।-शिरि-पु॰ व 'नवन्नशिरि'। भी*नी* । न्या एक एक विश्वको सन्दर्श सिन्धीना आदि

यताने के काम जाती है। क्सोल-पु र [तं] कीना प्यामा नहरे निग्रह, निकंप स्वस्ति। - जीवा-की व काकरेशा की भारीती। - जीव-- पादश्या – लंदी – स्था श्रायमाना स्था । – वृंती – मानी-क्षी । प्राप्तनेशी । -मानिजी-मी॰ देवना दाक थर न्यासानमी कादशता । न्युक्रन्यु शेकिन।

~भाषी~सी कादमार्थः। ~पशी~सी कादनका। ध्यांकायुनी-मो॰ [तं] कावपुरी। ध्मांक्षाराति~पु• [र्गण] उस्**य** । प्सोक्ति-क्षां [सं] ध्रीरक्षे मात्राः शीतकवीती । ध्यांक्षोस्प्री-स्प [नं] राष्ट्रोक्षे । ध्याकार-प [र्ग•] सोशार । ध्मात-वि॰ [सं॰] (हुँकार) वजावा हुआ। पुनावा हुआ। शुक्प किया द्वमा । ध्यान-प्र• [सं•] (हैंबकर) वधानेकी दिवा।

ध्मापन-पु॰ [मं] देशहर प्रकारा । च्यापित∽ि [सं•] बहास्ट रास दिया हुआ। ध्याह-वि [सं] ध्यान क्या हवा सोयाद्रजा। ध्यासच्य-रि॰ [सं] रे व्येय ।

च्याता(तृ)-वि , पु [सं] ध्यान बरहेशका । ध्याच~त॰ (र्तः) किमोद्धे रक्षणका नितमः विषय विशेषमें क्लिको व्हायता, भीटा मीच विचार, वितन हरि समाना रमुति। बार, खबाक; बिसी एक विषवपर समस्री रिवर करतेची किया। बिगत वर चारक बरनेकी वरिव थिए, मना और विश्वके साथ भिष्की प्रत्ववादी दक्त-रामरा (थे) । --राम्य-दि देशक ध्यानरे प्राप्त ष्ट्रोनेशका। −तरपरः-निष्ट −परः-सरम् −रस-नि च्यानमें कीम ध्वानमें क्या हुआ । - घोरा-प ध्यान रूपी चीवा वह बीव विसमें प्रशासकी प्रशासका हो । -माध्य-वि ध्यानग निद्ध होनेयाका । --स्थ-वि थ्यानसम्ब परीत सरवा द्वारा श्रुष - ज्ञाना-रमर्ग होता । -- सुरुवा-ध्यान मंग दोता विश्वास वसामता मह दाना। —दमा-भित्तकी किन्ने और प्रश्च करनाः धवाक करना । -धरना-विहोने स्वरूपमा चित्रन करनाः रक्षाप्रयासने ईवर कारिका चितन करमा । नपर चन्नमा-स्मरम दीमा, या दोना । -वेंधमा-किसी न्होर निश्वक्ष समा रहता किसंदि बिस्तारे विस्तारकारकार हाना । – में न काना – चिता न करनाः प निपारना । -क्रगामा-दे॰ 'व्यान परना । -स उत्तरना-धूनमा, विरवद श्रीमा ।

ध्यासना ध्यासार-स कि ध्यान दश्ना गरागर स्मरप 4रमा ।

च्यासस्यास−५ [मं•] ध्यानदा सभ्यास, रामावि । ध्यातावरिषत-दि [मं] स्वावमें लगा हुना, व्यानमग्र। ध्याजिक-वि [मंग] ध्यान हारा हिन्न होने भोग्न ध्यान शक्य ।

ध्यासी(मिन्)-नि [सं] प्यान करमेनाकाः नी वरानर परमारमञ्जान क्षिता करता है। जानधील । ध्यास-वि [त्रं] गेरा शैनात्रकाना । मु यद सरहदा

मंध्यमः दमनदः !

रपामक-पुनि] रोदिश गृप । च्येय-नि [संन] प्रशान कर्प शामा (नद निनव) निप्तना वशास विभा भाग । ज व्याना निषया प्रश्न सम्ब । भारत-प्र वे भारता ।

प्रय-वि [मं] विवर अवन्य निनिष्य अपन प्रशास्त्र रुवस्य रक्ष्मेंबाका निष्य धाषता तु एक मिनद बास-

111 -कोरि-प्• पतुरुदा छीर एक तीर्थ ची पदरिकाशमके मार्गमें बहुता है। यह तीर्व को रामिश्वरके बक्रिय-पर्वीत स्वित है। -पट-पु विदास बुधा-पाणि-वि जिसके हासमें धनप हो । भनुष्मान्(मत्)-प [से] मनर्थरः क्वर दिवाका व्य क्षेत्र । पनुस-पु॰ [मं॰] तीर चहानेका एक प्रसिद्ध शायन । मनदो −प वतुप। धमहाई - सी वनपद्धे छवाई, वाणवह । धमुद्दिया-स्रो॰ हे 'बन्ही'। भगुरी - मा । छीरा पन्य जिनमें मण्डे शहते हैं। चम्-सी॰ [सं] वनुष्। प्र अलका मैनार। धनेयक=प∘ सि विशिवा । धनेता. बनेबर-व [मं•] क्रनेस सर्वाची। विष्यु क्यसे इमरा स्वान । प्रतेस−५ साका वैसा वद पर्याः ≠ पनेस ड्रनेर । धनपण्य-ली [मं] बसकी रच्छा । पर्नपी(चिन्)-वि॰ [मं] धम नाश्रनेशकाः वरना क्षवा माँगतेवाचा (महाबन) । घनोच्या(मन)-न्या (सं•) पनका गरमाः। घषा-व पाना किसी पातके किए अवसर बैठना । भ्रमासर-प॰ बहुत बनी सन्ध्य I बची-भी॰ पंत्रावमें पायी जानेवाकी गावी-वैकीकी एक बाति। मीरेक्ट यह जाति । चम्य-दि मि किताबी प्रचंतनीया प्रवाहमा अविका माध्यक्षाकीः चन देनेवाकाः पनी । व साध्यक्ष देनेदे तिए वीका प्रातेवाका एक शरू । तु. भाग्यवान व्यक्ति मास्तिकः विष्णुः अध्यक्षं वृक्षः धनः यनिया । --बाह-<u>प</u> भिग्य पान बहना साधनादः नक्ष्मादीः प्रत्यताप्रकाश । अ अनुपूर्वा प्रस्त स्थानेस्थ वस ग्रन्थ । धम्बरमस्य - दि [सं•] अदनेशो च व सारवणानी माजने WING ! भन्या-स्री [ते] दपम्हा पात्री; होय वॉबना; पनिवा। वि स्वी प्रशंसनीयाः भाष्यशास्त्रिनीः बुध्ववती (स्वी) । भग्पाक-९ [में] धनिया। पम्बान्त [तं दे क्यापि । पस्वतर-४ [4] पार दायदी व्ह मार । घम्यंतरि-पु [मं] स्वरेष विभवी गणना शीरह रहींमें रै। रिकमर्पारवर्गी समार्थ भी रश्रीमेंन एक । +प्रश्ता-मी बहुदी। पम्प-५ [म] पनुष् १-चि-म भन्नमहो होत्री । धारव(म)-त [मं] मारवना नात जानात । -श्र-वि सर देखमें जलप्र । -पूर्ण-पु वह दूस जिसके भारी और धाँव बीवनकी दूरीमें मन्मूमि हो। -वसाम -वयामा -यास-दु दुशन्या। पन्यत-तु [मं] बूफ्रश्चित बनुश्य । पम्पा(म्पन्)-पु [|] दे व्हार्त्न) : वाद १ प्रशासार-(१० [ा] प्र]पृटे बादारका । पश्चिम∼६ [ते] तृद्धः।

पारी(रिश्न)-रि [] जिल्ले बनुव बार्स विवा

श्रीः वर्तः विद्यम । यु असूर्यतः अर्जुनः विष्यः विषाः शर्जन क्या बरुक, मीकसिरोः दराक्रमाः वतु राशि । प्रय-सी 'वप'की शाबाब, दिसी मारी बीवके विरनेकी आवाजः चक्तः। श्यमा → कि देशसे जाने बहुमा शप्रनार † व० कि भारमा, पीटना । धय्या~प वय्यह, तमाचाः होरा, तुक्सान । भव-भव-ली किसी मोटी भीर गरम भीवके गिरमे या क्सपर आवात करनेसं डोनवाका शम्य । वर 'वन-वव'की आषात्रके साथ १ धरया-य किसी बरतपर पहा इना मदा और वेमेल विह, शाना बलंडा वेब शोब.। प्रा - समाना - कर्वकित बरना. वदनाम करमा। घम−पु[सं] चोहमाः कृष्यः यमः नक्ता। सी [दिं•] किमी भारी बन्तको गिरमे या प्रक्रिमी एउ मादिपर दवाब बारुते दूप प्रकृतेमें बोनेबाका छन्द ∺ग्राहर−प परपादः कवाई ! - चम-ली देरलक होती रहमेवाली 'बम बी आवात । स 'सम-सम द्राव्यके साथ । -मे-हे 'पराममे । धमक-न्या दे॰ 'बम : भारी बखके बाबात या चस्त्रे, बीइनेने सरका क्य । प्र+ (सं+) (भीक्षनेवासा) सोहार । धमक्ता-अ कि 'यम श्रध्य वत्यव करते हुए गिरमाः वद-रचकर पीदा देजा प्रदार करसा। शपटमा । † स+क्रि• इविवा केना अप देना, कमा देना (वैसा, क्रमांना)। मु॰ धमक पहना (वा था धमकना)-वेगरी आ पर्देवमा भटपर था बामा। धमकाना-स कि पमधी देना टराना सहित्यी बेता-बमी हैता । धमकी-सी वसकानेकी किया प्रदर्भ । धमधमाना-भ कि 'पर-पम शुरु बरमा। चम्रचयर-वि भीरा भीर वेरीन (भाइमी) । यमन-प्र- पि } इस ईक्तका सामा मानी चनातशका शतुष्या मरकट । वि शृक्रमेशास्मा निष्द्रर । धमना-न कि चीमना। इवा मरमा। धमनि, धमनी-सी [मं] नाटी सिसा गरणन एक संबत्रम्याः हरतीः पुँचनी । धमनिका-सी [ग्री ताला। धमसार-९ ६ भी मा । धमाना-प नारी वरमुद्धे विरमेशा गंबीर श्रम् । धमाचीक्रवी-सी॰ व्याप-११ क्रान्धे । पमापम-न स्यातार पमन्त राष्ट्रदेशाचा भमार भमास-भु भागसा एक भंग (गंगीत)। एक ताल । की संबद्ध प्रतम-नृद्ध बहाबादी। धमारिया-वि उत्तर्व क्षत्र कृत्र मनानेवानाः कृतावाकः पु प्रमार गानराणा । धमारा-रि थमानीकी मनानंताना । • २१ होनांदी ब्रीस ६ धमामा 🗝 जनाग्र । थमि-भी (वे] वृष्टेश क्रिया ।

धमिका∽श्री [] रीपास्कारी ।

भ्योत-पु॰ [६॰] भेषकारः एक मर्छ वर्षी सदा अरेरा प्रमा रहता है। एक मदग्-चर-पु॰ राव्यः।-विश्व-पु॰ क्योग सुनन्। -बालव-पु स्कां चेत्रमाः शियाः दर्गत वर्ष। व्यक्तिस्तति –पु॰ (तं॰) सदीः चंत्रमाः च्यत्यः स्तेत वर्षे । व्यक्तिम्मेष –पु॰ (तं॰) सभोतः जुनन्। व्यक्तिम्भेष –पु॰ (तं) सन्द व्यक्तामः, भादः गुनमः जुन-सन्तहरः।

न

म-देवनागरी वर्णमाणामें तवर्गका पाँचयों वर्ण। छवा-। रपस्मान रंत भीर नातिका।

र्नग्र-पु॰ [मं] बार धपपथि [दि] मैनापन, नज्जता। वि॰ मेगा। पात्रो। --धवंशा-वि॰ वी शिरते पैराक वक-रहित हो एकरम नंता।

मीरा-पु॰ कि:] सर्ग, हया कामा ! - जन्हासदाथ-पु कुक्तको ! - व दासूस-पु दशक मर्वादा ! भीरा-वि॰ मिसकी देवपर कार्य कपना स हो जो सोर्ट

बर्ख व पारम किने दी विरक्त वाकी। मिर्काम वेहना विवास की मिर्काम के विवास कि मिर्काम के विवास कि मिर्काम के विवास कि मिर्काम के विवास कि मिर्काम कि मिर्काम कि मिर्काम कि मिर्काम कि मिर्काम के विवास कि मिर्काम के विवास क

ुच्चा, पार्या वरमाञ्च । विशिवामाः च्यः स्टेना करनाः सब कुछ है नेसाः । वरियामाः वरियावनाः ०-छः कि० है वैशिवानाः । वर्ष्यन् –(१०) प्रत्युक्त करनेशकाः । चु पुत्रः सित्रः राजाः।

मंबंबी-सी सि] प्रशे ।

संद- toll दक्षिमें बहुब, ननद । पु॰ [सं] वर्गः बरमैनर, विष्या नेष्ठलके प्रमुख गीप जिनके यहाँ कृष्णका पाकन हमा था: मगभद्रे एक प्राचीन राजा जिनसे नंदर्श चया: मेंद्रका मीको संस्था। एक तरहकी गाँसुरी। क्रवेरको एक निर्मित् एक प्रकारका कर्तनः सहिरा जानकी क्योंने कराय मसुरेशका एक पुत्राः एक प्रकारका गाँसः एक राग ।—किसीर— पु॰ हम्म । -हॅंबर-पु [हि] हम्ब । -कुमार-च कृष्णः –शोषिसा–स्रो शरमा। – व–वि अन्दर बाबक, वर्षमदा म भागद बनेबाला प्रमा-मंद्रा-मंद्रान-पु कृत्य । - मंदिमी-शी धीगमाया दुर्गा ! - पाछ-पु॰ बस्त्र । -प्रश्नी-स्री बोगमाबा, दुर्गो । -प्रयाग-प नगरिकाममद मार्गमे एकतार्थ ! - राजी-मी कि रे मंदको रही। वडीका !-क्स-पुर [विरु] एक पेड़ विसमी वस्तियाँ देशमढे बोरींको खिलाबी जागी है। -काख-तु [हिं] कृष्ण । -क्षेत्र-पुरु समयका वस प्रशिक्ष राज-कत जिल्हा निमादा भागवन में किया ।

भेदक-दि [मं] प्रमात करमेवाला, वर्षमाः धंतीश्रव । बु विश्वुद्धा सञ्चः मंत्र लागक सीव श्रिमके वडी कृष्णका बालम कृषा था। एक मागा वास्तिकवदा एक अनुपरामेवडा

भूतराहरा यह तुन्। मन्त्रता ।

र्गदकि-सी [सं] विस्करी। गुंदकी(किन्)-दु [सं] विस्तु।

र्नेष्यु--पु (री॰) मानेर, प्रस्त्रता । मेंदन--वि॰ (री॰) मानेद दैनेवामा दर्वपर । पु श्रेदवा

वणाना आफिनेवस पक जनुवरा किया विष्णुः आभीत बीमाः आर्थात वर्षेत प्रमा कामास्थाकः एक परीतः १६ वी पंत चरो गेवा एक द्वार सेवकः एक सका । कामावन पुर नेरम सामका देशका व्यापता । न्यान्य वर्षित्व । - सकाम-पुर देश । न्याच्या नती एक मकारको साता कि कृष्य प्रमा करते में । न्यान्य पुर वर्षे भीतकामन । भीतककन्य (त) प्रमा

भवनकः है। प्रि पुत्रों । ॰ वा॰ कि॰ भानीत्म होता । वेदा-की हि॰) बान्सा हुएका एक निव्रतः मनदा किये वच्छा विक्सा को या रक्षादकी निव्रतः मनदा किये वच्छा विक्सा को या रक्षादकी निव्रतः कहारकी संक्रीति (को॰)। वृत्योगका एक मां (अमीत) संक्रिते निव्रत्ये वर्षिः ।—देवी-को॰ दिसामवदी एक २५००० दुस्ती को वर्षिक कैवी चेटी !—दुसान-पु एक कप्यूसन विवर्षे वर्षास्त्रा सहस्वा वर्षित्व है।

नैदारसञ्जन्तः (सं॰) मृध्यः । नैदारसञ्जनकोः (सं॰) भीगवायः ।

ने प्रश्निक व्यक्ति विष्टि विष्ति विष्ति विष्ति विषति विषति

शानंत नहानेवाळा । ⇔तृक्षा=तु देश नेदीवृद्ध । अंतिक=तुश्री] सानंदा तुसका वेदा नेदमकालका होय

बक्षका विवस एक भन्नपर ।

मीहिका-को [र्गः] मिट्टाको कोंद्र वा समयाना संगम सालमा किसी पश्चिम मिट्टाको को मा पनापदी तिनि । सीतकामर्ग-परः शिको एक मिन ।

नेविकेस नेविकेश्वन-तु [सं:] शिवका बाहनः संशीर

ंभेरी हारा कक्ष पद करपुरामा ग्रिम । अहिल-मि [मं] जानेरमुकः इडः मनुता + सरग ह्रजा ।

विश्विण-स्रो दुवी । वृद्धिवी-स्रो० लिंश्] दुवी, दुवी विदेश येगा ग्रवटीस

श्रीहेसी नरी० [तं०] दुगो। धुनी भेदी। येगा ग्रेक्टाया सीना रेपुका सामक संभ≃न्ता कामचेनुकी धुनी निक≛ प्रसादने रिकोक्ट वहाँ रापुका जन्म हुना। सनस दक

रशैकार किया हुआ पुरुष ! भरेबा−पु॰ तीको रहेनी वनाक्ट रखना । सी॰ रखेकी संस्थली ।

परेस, परेसी-ली रपेडी, सपपरनी i परेश-पु• [सं•] रागा, मृष्ति । धरेस≠-प दे 'वरेश ।

परिवा! -पु॰ वर्रावाला, वक्दनेवाका ।

धरोहर-स्रो वह बरत था हम्य जो कुछ समवके किए दिसी दूसरेके पास इस विद्वाससे रखा गवा हो कि माँगवे पर नुबः इसी रूपमें मिक जावना, वाती, अमानत ।

प्रतीसी† −सी॰ एक छोरा पेड़ 1

भ्रतीचा-पु उपयक्ष्मी राग्नेभ्द्री काल । भ्रता(त)-पु [तं•] भारम भ्रमेशका टेकनेशका ।

भन्र-पु[मं] धनूर। **धर्म−**पु [सं] वर सृक्षा स्रकारा टेका यदा पुरुषा नैविद्यता।

वर्म-दु [सं] अस्तुरय और नि'नेवमका सावनभून वेर विदिन कर्न (जैसे यह); एक प्रकारका अच्छ विसमें स्वर्ग की माप्ति होती है (मो); श्रीहरू सामात्रिक वर्तव्यः बह बर्म जिल वर्ण, आमन बाति आदिको रहिसे दरसा भावस्यक हो (रस ३ पॉन अंद ई-(१) वर्णवर्म (१) माभमवर्ग (३) वर्णाभ्रमवर्ग (४) वीजवर्ग तथा (५) मैमिचिक धर्म); मसुने धर्मरे दस एक्क्स माने है-धृति समा बस अस्तेय द्वीप इंडिड निग्नह, बी. विमा सत्य बौर अब्बोदा उपमय और उपमान शोगीमें रहनेवाला चापारण पर्मः कवि मनि या आवार्य द्वारा निर्दिष्ट वह इरव जिसमे पारसीविक सहा प्रात हो दिसी वरत या म्यक्तिमें सरा बनी रहनेवाकी शहत वृक्ति रवमार महिता रेपर वा एइटिकी प्राप्तिक किय किया महारमा वा पेगेवर हारा प्रश्तित मद्रक्षित्र आस आयार्थ राजा वा सर कार द्वारा नि¹ष्ट शोक्ष्यवद्वार-मंत्री निवमः यमः उपना निपपन्ना भौषिपना सन्तर्मण तरीका हैया युवि हिरः भाषारः बायः अहिन्नाः कानिकद्ः स्वानः चनुषः धीमरायी। मारमा। इंटलीमें लब्ने मर्वास्थाना [वि] रमान । -कथक-दु रिशाम, नियमध्ये व्यास्त्रा हरमे बाजा। -क्रमं(न)-पुरु थामिक कृत्य। -काम-वि थी क्रांबनुद्रिते शामिक कृत्य करे । -काय-बु बुद्र । **"कार्य-९ नामिद्र इ**ग्य । —क्षील-९ शावसासन । "ह्राप्यू-पु पर्नेदी रहिने विनी कार्वदे प्रियत तथा मनुनित बोनी प्रतीत होनेथे कथन इंबीमान देती स्थिति तिसमें धर्मपासन करना बहुत कडिल हो। -केशु-दु० इर । -काप-पुरु पर्नहपी दीवः विवानकीय । -क्रिया -भौ • ४ मिक इरप । -ध्रय-पु भारतको त्री धर्मोदा र्वेनदी कर्पभृति माना गवा देः मुल्यान । -गुस-पु रिप्तु । -ग्रंथ-पु धर्मरिग्रेवडा आधारमून ग्रंथ वह यं व विमने किया भनेने संबद्ध दिएन है से नवी हैं। -**पर-वृ** सुरुरित बक्षमे भर। दुवा बहा बिमे बुछ धीउथ बानुकोर्दे साथ वैद्यागानर शाम बरमा पुण्यहर बन्ना नया रें। ≕परी≕मी (हिं] टेगी प्रयद्व रैगी वड़ी (डिमे सभी कीम देख सुर्चे १ - च्या-दि की दिव कहितिन ।

—सक्र−प॰ धर्मसँकः तक्षरैकः तक्षमः शिक्षाः पक्त अस को प्राचीन कारूमें प्रशुक्त होता था। - चरण-पुरु,-चर्या-मो॰ यमका पालम वा आवरम ! -चारी(रिन) -- बु॰ तपसी सम्त्यासी। वि॰ वा वर्मातुकुण भावरण करे । -चितन-पु॰,-चिता-स्री पार्मिक निपर्नेसा मनन । —ब्युस ∽वि० वर्गमे भ्रष्ट, पवित । ~ स − पुप्रथम औरस पुत्रा सुविधिरा एक बुद्ध र दि॰ पर्मसे उत्पन्न । --बन्मा(न्मन्)-पु॰ युधिहर् । - सम्य-पि॰ बिस्स्धे एलचि पर्नावरणसे हो । −जिज्ञासा−को॰ वार्मिक निवर्गेको जाननेदी रच्छाः वर्गरे सापममुख कर्मीको विद्यासा । -बीबन-त वह ब्रध्यन विस्त्री भौतिका थार्निक कुरव कराने और दान शने आदिसे बहती हो ! विश वर्मानुसार कार्य करनेवाला । -श-पुर बुद्ध नेव । वि जिसे धर्मके स्वरूपका धान हो । -त्यारा-प॰ धर्मकी छोड़ देना धर्मविशेषके कपरन विश्वास हवा सेना। --श्चाता(तृ)−पु धर्मकी रद्धा करमेवाला । −ह–दि को अवने धर्मका फल बूछरेको दे है। पुकाश्चिपनका एक बनुवर : ~दाम~दु सात्विक्व दान निश्चाम दान । -बार-सी धर्मपामी । -ब्र्या-सी॰ वर पाव शिस्ता इथ देशक थामिक कुरवाँचे सिन्द दुदा जाना दा । --हेशक -द धर्माप³शक् । -ह्यी-लॉ॰ मंगा। -होही-(हिन्)-प्र• दैरवावि अभगा।-प्रदा-प्र [हिं•] थर्मके लिए कठावा जानेवाका बद्दाः स्पर्यको एरद्यामा । ~ धानु-पु बुद्देव १ - भूर्य-वि को पर्मपाइनमें बहु-क्ष्म हो। -ध्यत्र -ध्यत्री(दिन्)-प थामिकताका दौंग रथा को पार्च ?! - मेंबन - ए अबि ब्रिट । -माय-९ बैनोंके प्रहर्वे तीपबर । -माम-पु । बिष्यू । - जिबेश - पु अमेम मिक्का - जिल्ल- वि को पर्नेमें आरबा रहाना हा धर्मफ्रायण जा धर्मानुग्रन आयरण करता हो ! - निग्ना-स्वी । धर्ममें आस्वा. विचान, शका । −िनिष्पत्ति –स्ते वर्गवा धर्मस्यका शतन । -पड्-पुरामा या अभिकारीको औरमें दिवा यदा व्यवस्थानतः। -- पति - पु वरमः। -- पश्चन-पुः आर्थनी नमरी। गोक मिर्च । -परनी-सी० पर्मधान्यके निवर्गीके अनुसार स्वादो हुई स्वे । -पग्न-पुरु गुनर । -यम-पु॰ धर्मेदा मार्थ । -पर-वि॰ धर्मेशरावण। -पश्यम-दि॰ वर्षेषे त्रिष्टा राग्नेशमा । -परिणाम-पु व्ह वर्षके अर्डिर हुमरे वर्षमें प्रदेश (या) ।-पाटक - व वर्गदास्य पाने या पणनेवाशा । - पास-प वर्ग की रहा करनेवामा श्रेट (शिम), दरने छीन वर्गविनद आवरण नहीं करन)। राजा दश्रद एक मंत्री । -पीक-हु अमें हा सुहय स्थामः वह स्थाम जहाँ धर्मदी ध्यवस्था दी थायः काटी । ∼यादा−सी धर्मया स्वायका प्रश् बन । -पुत्र-पु पुषि इस बाहिक मारनान उत्पन्न क्षिपा दुला पुत्र । - पुर्री - न्दी वसपूरी - पापालक । -पुल्तक-भी हे अमेदीय । -विकित्सक-पुक्षिके भेरत मनुष्य हारा दुन्छ भीगत रच स्टब्सीकी कीया बर्दे देवन यग्नदे किए दूसरीको विशाला दान (११०) िमा दान चर्नेहा अप्राणमध्य है) । -प्रमास-पु पुर देव। -प्रवचा (कः)-द्र वर्तः नांदर शहरतेवारे।

मक्रियामा-नक्षत्र मकियाना र न कि गड़िश नेक्साः साक्षीरम द्वीला । म कि मानिज कर देशा बहुध लेग करमा। प्रकृतिच-प्र [लं∗] यह स्वक्ति का राजाओं आदिको सवारी के माग-भाग जनह बहदा यह गाना पन्तरा है वंशी चारम । मकुच-पु॰ [धं] मरारका पेत्र । मक्ट~पु[मे∘]सक्दा नक्रा - प्रमा सकुछ-पु (म] नेवकाः भुभिक्रिएके वक छोटे धाई। श्चिषः पुत्र । नि० कुसर्दारतः। —क्षेत्र~पु० राश्मा । स्कृतक-पु• [र्थ] ए६ माधीय आधरण स्थवा रखनेकी एक शरहकी बेली। **मक्कांघता**∽थी [बं•] व्यः नेत्ररीय। सकुरगा-ली [सं] वार्थनी । शहरमाज्या-सी [सं] गंपनानुकी। सक्त्यी-ची [rjo] नेवडको मादा गेवली इसरा जरामान्यै । मञ्जलीया मञ्जलेया−५ [मं] गेरवदा एक विश्वद (मं) । नक्सप्रा−स्ता [म] शस्ता । मकेस-बी • केंद्र भारत बादिकी शहर में बहुवायी जानेवाकी ररसी जिसकें सदारे करने स्परसे धपर के जाते हैं। सूरू-श्राधर्मे होना - रिमाबा वृत्तेदवा वसमे देला । मका-प्र सर्वत छेत्। ताधका पदाः कीरी ! - दशा-पुर क्षीदिवींधे क्षेत्रा जानेशमा एक जुला। मक्कारस्वामा∼प [का] नमाता रक्षन और वकानेकी वगर, नौरस्याना । स॰-(नै) में तनीकी भाषात्र-है। त्री में। महकारची-पु का] मनाहा बनानेवाला ३ शक्कारा-प (अ] सराताः इत्रह्नते । सु॰-वशके-स्थमस्था । ~श्रक्काते फिरमा~नग्रहर *करन* फिरमा । (१) की चोड−शतमञ्ज्ञा । सक्कारर-प 🕼] महत्त्व करमेवाच्या स्वीम बनानेवाच्याः शक्क्यसी-ली नदानदा काम ! मक्कास-द्र [अ] संदर्भ भादिपर नेच-मूट बना-न्याचाः विषयारा रंगमाय । मुख्याशी-स्था के कुन्दे सीशम निम क्याने आहिका कामा निवकारी। रंगसानी । -बार-दि० विश्वपर वेक बटे गरे या विश्व वने ही। शकी-सी पदका विश्वा एकके विद्यम जीता बारीमाना होर । - प्र-पु - न्यूड-स्पी श्रीविशेने रीका जानेवाका १६ जभा । स्टब्रू-दि जिसको मान वहां ही वही भारताला। जिसकी ओर सभी पैंदडी बढावें बीवधानम दीवी हबरावा आनेवामा बरमाम सबसे निवरीत सायरण करनेवामा ! मुन्द्रेषर-दि॰ [मं] राज्यो दियरनेवाला - राज्यो निवने मेवारा । प्रशास्त्र भारत वस्तु । ग्रामुक । अर्च्चरी-पि सि । सप्ती । मर्क्तपारं(रिन्)-रि दु भिः) रै निक्रणरी ।

मर्नादम मत्तरिय-भ [सं] राज्ञीया।

मक-पु [तं] वह समय जब संख्या होनमें कैन्छ रह क्ष्मको हेर हो। राजः एक मन जिनमें देवन शतका लारे देशपर भोजन करण हैं। वि सम्बद्धाः -चयी-क्री शानिकालमें अगण करमा। -चारी(रिन्)-नि रानमें निवरण करनेवाकाः रातको निकननवाना । प्र कोरा निष्ठीः वस्याः राजसः श्रिकः। – मोजन-४ रालका भाजन । – भोजी(जिन) – वि राजको सोजब करमेशालाः मक जन करमेशालाः । - मास-पु कर्यः । ~सुरश−की शतः।~बल~द्र ४० प्रतः शिम्में केनक रावकी तारे वैक्कर भीतम करत है। राशिकालमें किया जानेपाला कीई प्रथ । नक्तक-पु [में] येश करका प्रश्न-प्रशास प्रश्ना । नक्षीय-वि [संग] विशे रातको हिमाई न है। मक्तांच्य-पर मिर्श रातवें व रिसाई देनेबा रोक रतीचा । मभा-सी॰ मि । बल्बिसी । सप्रय-त भिने यह पम भी शिवाँके कमरे की यह रक्षम को कौरम करा की आव । वि. सस्तुमा क्रम्छा । कार तर्रत कार्य देकर । —ल-कॉ—मीर बाब कर । -व जिल-की अन्या और माल वा सामान । अप्रवी−मी [म+] रीक्त । −विद्वर-पु+ रोक्क्वरी । मक-प [मं] माकः विश्वास मगरः नासिकाः अस्त वराव । -शाम -दारक-त नाम वा बीर्र वप्रत वर्षा प्रकारित । नका−शी॰ [र्स] नाका अपुमनिरावी वा विकीशा झंद । नक्का-प [ब] यसपेर बनायाः तस्पीर नित्रः फरू-पत्ती या नेक्क्यूरे मात्रिका कामा सहर वा उल्लाह निद्यास शिक्ता ज़रका शक को तादाने शेका काना है। तानीमा बाहर एक तरहका रागः समरः गानिक । विश् अक्रिया विभिन्नः क्षिमा पुष्ता । ∽हार्-दि विस्तर नगस्य हो । -बंद-पु नररा६ विष बनानशका। -बंदी-सीर नवद्यां वा वित्र वमानेका काम । -मार-तु नावके वर्तीय शेला जानेवाला एक प्रदारका खना।-(दा) या-त्र नत्रभिद्ध सगप। -(को)विगार-त्र कृत-तर्थ नेक-परा मचाधी । स०-द्वाना-मंदिन दा बामा । बन्नशा—न 🔎 नि ने तलगर, विष्या प्राप्तरिक या क्रियो और तरबंदी रिवर्ति शुनित करनेनाका पृथ्वीके दिश्री माल ग गरीयका निता चेहरा-बीहरा आहुति। महान सस्य मारिका विशादेग शर्व। रिवृति ब्रामा अवस्था अपने वनावदः शह।-मबीस्-पु दे 'शब्द्वद'।-बबीसी-की ये नश्यवंदी । -श्रंब-पु शाहियों बार्रिये वेप-पूरके भवती बनाजवाता ।

बूर्व वर्गी बनानवारा । बहुद्धा - विश्व निरास नम-बूरे बने हो । बहुद्धा - विश्व ने हा अधिनी अरणे इचिटा चेहिया बुद्धिया, आही, दुबर्गे हु पुत्र , आरोका, आग उत्तरे अरण्यानी कर्मायकरायों इस विश्व वरणे विश्व अर्थाया अर्था गृह्य पूर्वपा - उर्गाय कर परिचा प्रामित पुराबायकर उत्तराम स्वरूर , देशी- में उप्ताप सार्वित पुराबायकर उत्तराम स्वरूर , देशी- में उप्ताप सार्वित क्षा कर विश्व स्वरूप कर कर विश्व स्वरूप कर स्वरूप स्वरूप स्वरूप सार्वित स्वरूप स्यूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरू

444 धारवर्ध-प सि । पाछ(पट या धान्यको प्रकृति)से निक सनेदाका वर्ष । भारवीय−दि [मं•] बाह्यका बना हुआ। धातु-संवंधी । भाम-पु [र्र] भाषारः पोषकः [र्हि] यकः प्रसिद्धः अञ निएका भारत प्रधान साथों में मिना बाता है, प्रपयुक्त चारक, शाकिः इसका पीना !-जर्डू-सी॰[विं॰] धानका एक मेर । -पान-पु॰ [हि॰] विवाहके पहलको एक रहम त्रिप्तमें परपद्मत्र औरसे कृत्याके यर थान और इस्ती मैबते हैं। मानक-पु [र्.] पनिया व्य प्राचीन परिभागः ● पनु बर, पामुच्छ धुनिवा। बामा-तो [सं•] मृना दुशा की वा बावका सभ् धनिया। सनाया ⊌पुर। - चूण - पु॰ सत्त्। - भर्जन - पुंजनाय धामा-+>। क्रि. दीइनाः (का) नेगमे अकना बीइपूर **写**关析 1 षानाका−त्ये [मं]दे धाना। भागी-वि भागको हरी पत्तीको रंगका जो रंगमें भागकी हरी पर्या मैसा ही हरू के हर रंगका । पु॰ भानकी हरी पर्याके रंगका एक रंग तीलर्र । म्हे एक रागिनी। ह बाल्या मुना दुमा जी:[मंग] शापार वात्र; अविद्यान रथान (त्रेमे राववानी, वमधानी)। पोसुका पेड्र वनिवा । मानुक-पु वनुर्वत् कमनैनः एक छोटी वानिः इस माति का कारमी। षानुरंदिक−९ [सं]६ 'शानुष्ट। षातुष्क्र-इ [सं] अनुभर शमी तीरदात्र। धानुष्का-स्त्री [सं॰] अपामार्थ विवदा। धानुष्य-पु[मं•] वीस । मानम भानपक-पु [मं] धनिया। षाम्य−५ [मं] सत्र अनात्र; स<u>त</u>्व शक्कः वानः वनियाः चार निनदा यह प्रायीन परिमान नागरमीथका यह नेर। -करक−६ अवते रामका ठिकका । –कृट,–कोश − क्षांटक-पु॰ वसार । -क्षेत्र-पु वास्पदा मेत्र । -चमत-५ पूरा विशिद्ध। -बारी(रिम्) -जीपी (पिन)-इ॰ पश्ची । -तुपोद-९ कांगी ।-त्वक्(न्) "उ मनाव या भानका (एमका । -चेतु-की अवदी राशि बिन पशु मानकर शन करन है। -वंचक-पु मन्नदे पाँच भेन (शाकि, मोहि शुक्र शिंदी, शुद्र): भाग वैन, मागरमोधा आर पान्यर्वकाकी एक छाथ उदानकार वैदार किया मानेदाना एक मकारका वायक पानी वी भितमारमें रिया जाता दें (भा दें) र−पति∽पु चादणा नी । -पानक-दु धनियाम एवा । -धीज-दु पनिया। −भीग−पु वदुन क्षत्रका स्मृति या जागीह (क्)। -माप-पु अत्र तीत्रवेशनाः अनावस्य भाषांत । - माप-पु एक प्राचीन परिवार ।- मुख-उ बारकारदे बामदा यह दुराना काणार (गुम्ल) । -मूल -यूप-पु ;-यानि-स् ब्रोडी । -शक-

3 वर भी ।-वनि-भी अध्यक्ष शांधा । -वस-बु

हे 'पान्द्रवद्दा - वर्षम-पु शत्र क्वाद हेनेदा

म्बरतार जिन्ने दिने दूरका मक्त्री का कर्तेण अन है।

-वाप-पु भार्यत धर्मरा मुमि (ई))। -वीर-पु• बरद । -- प्राकरा-का॰ बाना मिलकर दैवार किया हुना थनियाका पानी ।-सर्थिक-पु अनामके पैथेको संगरी । -युक-पुटुँका -संस्क-पु बनावको बहुत वही राधि निसे अबके पर्वतको मावनासे दान करते है। -र्सप्रह्-पु॰ अधका मेशर । -सार-पु० कृता **प्र**ना जनाथ चारक। धाम्या-सी॰, घान्याक-प्र॰ सि । पनिया । धान्याचळ−पु[मं] **१** 'धाम्य-होक' । धाल्यास्छ-पु॰ (मृं] कॉनी। घान्यारि-पु॰ [सं] पृद्दा । घाम्यार्ये~प्र॰ (सं॰) शामद रूपमें संपत्ति । धान्यास्थि−सी॰ [ई॰] मृदी तुष। भाग्योश्यम्-पु (सं•) शासि, बान । भान्यंतर्थं-वि॰ [मं॰] धम्बंडरि देवताई निमित्त रिया वा दिवा जानेवाहा । धान्य-वि॰ [सं] बन्व देखका थग्व देश-संदेशी। धान्त्रम-वि [रां] मन्देशस्यः मन्देशसंबंधाः। घाए-पु कासहा भाषा, वह मौका वह फासका भी पक र्मातमें दोक्कर पार किया जासके है रही सुप्ति, संदोद । धापना॰-थ कि॰ तेव चठना दीवना तुस हाना अवाना-'वानीडे फरवानसे यापा जाही क्षेत्र'-सासी। स कि समकरना मंत्रक करना। धावा-तु मकानकी इमदार छतः ऐसी छत्रदाना मकानः शासा होरल । धामाइ-९ द्वमार्। धाम−९ [मं•] एक दंददर्ग। धाम(न)-पु॰ [मं] गृष्, परः वासरवान, अधिवानः क्रिया देश प्रमात्रभवाप प्रमाण यह रवान या सीक अर्थ रिसी देवताका निवास क्षेत्र देवरथामा पारिकारिक मुत्रस्या मेनाः समृद्दा व्यवस्थाः वर्गः ग्रातीरः तमः अस्मः बरमेवरः काकसंबे नाविका एक वृक्षः -केसी(शिन्)-यु ब्रा - च्छर्-यु अबि। - निधि-यु स्व। -साक(म्)-पु यदरवानमें भाग केमेराचा देवता। -भ्री-स्रो एक रागिना। घामक-द• [मं] एक ताल माशा । वासक-धूमक-न्सी॰ धूम-धाम टाट-बाट। थामन-पुष्क पेहा एक प्रशाहत व'छ। धामनिका धामनी-स्ये [गुं] दे धमनी । धामम-धूमस-भी० धूम-पायः बहाहः। थामार्गेष-५० [में) निवशः पीवान्।।। धामिन-द वद सरहरा भाँप विस्ता पृथमें दिव रदना दे । धामिया-तु व्य वंदा रस पंतर। भारदी। घार्य-को यान-याना दगरेका घर (रमका प्रयास बादः सुद्धिमाद इता है)। — धार्य- वरु नगानाः 'वार्ड की भारामके साथा दश प्रकार (प्रतमा) कि लहाँ कार बर्टे (रेने-दिना चाई-बाद कम रही ह)। थाय-सी बदेशे दुव निवार और उमग्रे देश सन बरनेदे दिए नियुक्त भी उत्पाना, वात्री। तु अस वृक्ष ।

केंद्रीमा।पुसिकाशापा मनोद्र-प देश 'मिनेव'। मन्दोटमा ६ - स कि मासूजसे खरीवना या नीवना । मस्रीस-पुनिमोनाः। मरा-पु॰ सेंग्टी आदिमें बड़ा जानेवाका बहुमूक्य शखर, नगीनाः कोस्का द्वदन्यः गेरुमा थानः [मं•] पर्वतः कृकाः सर्प। सर्प। सातको संस्या । वि॰ को गमन न करता हो। म अवने पिरमेशका, अवाध रिशर । -वा-दिक पर्वतसे राषक । प्र दानी । -का-की पार्वतीः श्रद्ध वावाय-भेरा सामग्र छछ।। – वंशी – न्यां निमीवणकी दशी। – घर-प इस्म किन्दोंने गीवर्थन पर्वतको भारब किया मा। --चरम १-५ इत्या -- श्रीवनी-सी० पार्वती। -मदी-च्ये पहाइसे मिककनेवासी मरी। -पति-पु । दिमाक्या चंद्रमा (जी क्षेत्रविक्षेत्रा शक्तिवृति है); शिव-समेव। - मिब्-९ परनर ताइनेका एक प्राचीन सन्ता क्रकारः श्रेषा कीथा । ~शू-वि वदाववर वा वदावने शतक । प्र शह नापाणभरो । *~सूचा* (चेन्)−प्र पराहको भीते । ~र्रधकर~तु । का चंदेन । ~वाहम~ ९ दिवा मगर-'शरा'का समासमय कप रूप। -कमी-सी वे 'मागरमा । -फॉम -बासी-का दे 'मगबाध । -बाय-इ शामपाश्च । मगम~९ रिं] पद गण जिसमें तीनों क्थर कपु हीत £ (ni) 1 मगमा-न्यं [सं] स्वीतिपतीः मार्श्वनमाः नगरप−नि [भं] की सपनामें म आ सके, तुष्छ, निक्र'ट । मगर्~ि 🗝 दै॰ नक्तर । पु पागपमनी । सराधी-शी व दे भे भक्ती । सरानः - वि साम विराद्य । मागनिका-स्तो रुद्ध छैर विसक्षे अस्पेक नारमें बार नदर होते हैं। यह संधीनं राय । बारती-थी वर कन्या का रजीपर्वकी अनरवाकी व बंदुँची दी। यह बार अवस्थाकी क्ष्म्या की निमाकवरका शरीर क्षेत्रे भी रह गमुत्री हो। नमहीन ली । मरापरंगां – वि कामी बध्दको, महस्तर । बरामर-९ [घ+] भुरीकी साराज्य गानः रहा ! **–शंज**− वि धरेया। -मंजी-मी गीत कमा ! क्षरार-प्र• [र्न•] कारेंगे वहां कीर समुद्र वरता विसमें अमेह भारियों और वेजीय क्षेत्र बनते हो, सहर ।-काक - वृत्राप्त स्वक्ति । - वर्रितेन - पु अगरमे वृत्राचुनकर (tai ब्रानेंबरण कीर्टमा मात्रे-बार्ट्ड माथ किया जाने-बामा वर्षप्रयार । **~घात** ~पुण् वाणीः मगरवाशियोदाः अप । -शम-पु अगर्मे रहनेवाले कीव सागरिक ! -तीर्च-द् गुप्रशाहका एक माधीय नीर्च । -माविकाः -मारी -मीबमा-मी बारोक्ता देश्या -थास-दु पद जिल्हा काम सभी वावाओं में मगरकी रक्षा करना हो । -प्रदृशिया-मी अप्रमद्धे साथ बृधि आस्त्रि नगरमे पुमाना । -प्रांत-पुरु कक्तपर । -मरी(र्जिप) -- प्रभारको छान् दर्शकानेवाका) सहवाना दानी । --

मार्ग-पुरु राजमार्ग, चीपा सरब । -मस्ता-सा नागरमोवा ! -पद्धा-नो भगरको देखनाङ वा शासन प्रवेष । -रहरी(क्षित्र)-प्र मगरका निरोधक या दासका नगरका बहरेदार । -बासी(सिन्)-तु • बक्त में रहतेशका, नागर, पुरवाली । -पिबाइ-प्रश्नांतरे वर्णके । -स्थ-पुरु लगरवासी । ~हार-पुरु बारद्वका यक मानीम मगर (वह वर्गमान बकानाशास्त्र आमपान बसा था) । मगरहा-दु ननरनशी । मगराई॰--सी॰ मागरिकताः पतुरहाः, बाहाधी । मगराविसक्रिवस-प्र• [मं] मगर मारिका स्थापम भवर आदि बसाना (मगराधिकत-त [र्ग] दै॰ 'नगराधिक'। चगराधिय-त॰ [रां॰] वह कर्मभारी त्रिमुक्के कपर नगरधी रका भारिका बावित्व हो। नगराधिपति--पुर्व [सं] देण 'नगरापिष । मगराध्यक्ष-पुरु [सं] देश 'नमराधिष । नगरान्द्रासः, नगराञ्चास∽पु (मं•) मधरका दरीम । भगरी∼सी (सं]नगर्≀∽काक−पुनगुनाः⊶कक ⊸⊈ कीमा≀ मगरीय~दि (शं•) मगर-संशी मगरिक । मगरीत्वा∽नी [सं]महारमधाः। नगरीपांत∽⊈ (सं∗) घपनगर ३ धगरीका (कम्)-प [मंग] मागरिक, अयरवाधी । वगरीपधि~तो [तं]केशा। मगादम-दु [नं] थेदर। लगादा−५ द्वगद्वगीकी श्रंतकका यक बद्दन वरा श्रीर प्रसिद्ध पात्रा । नगाभिष नगाथिपति~⊈ [६] दिमानदा धुमैह। शराबिशाय-तु (सं०) हिमालका धुमेक । नगारा-द द 'नगारा । बागरि-१ (से॰) ग्रह मगाबाम-५ (से) मीर । नगासव−दि [मं] पर्वतस्र रहनेवातः। ३ इद्विदेर। शरीचामाण-श+कि वाम भाना। भारी-स्ता रक्षः दोता रकः पल्लाः पदादी गी । माधिय - मण्डे 'सराविद्र । नगीमा-पु (का) चीमापृदिके रिप लेगुडी सारिये क्षत्रा वानेशका रुपर वा शीरेका रंगीन प्रकश !-गर-शाह्र-पुत्रणीया बनाने था बहनेराया। वर्गेत्र∽त्र [शं•] दिवाण्यः सुपद । नगेश-पु [गे॰] ६० भरेंद्र । वनेमरि॰-चु मानदमर। भगाध्याप-पु [लं•] पराएको कैवारे) मगीरा(कम)-१ [राव] शिक्षा रही विविधा क्षीत्रा श्चरम । हि बृद्ध का वर्षतपट रहमेराला मिनका बाल-न्याय प्रथ या पर्नत हो । ज्ञार्गकरण~५ [मे•] भेगा करमा । माम-वि [तं] जिल्हे एक्सर यह भी नत म री-विकास मेना तिलेका विकास बोर्ड अभरत व की निरा-

ty3 धार्म-वि सि । धर्म-विषयक, धर्म-संगंधी । मार्मपत-वि॰ (सं॰) वर्मपति-संबंधी । भार्मिक-दि॰ सि॰ देन-सेनेनोः वर्ग करनेनालाः क्षमाः दवा बादिने पुन्त, पुन्यसमा, प्रमाहमा धर्मश्लोख । [सी० वाभिक्ष । षामिष-पु॰ [सं] भाषिक व्यक्तिबोकी संबद्धी । पार्सिपेव−पु [छं•] वर्मवती क्षीका पुत्र । मार्मिजेथी~सी छि] वर्गवदी सीक्षी प्रती । पार्य-वि सिंग् पारण करने योग्यः शब्दः स्मरण स्वाने नीम्म । पु॰ पोझासः वद्या । चाप्ट्य−पु[मं] पृष्टता, दिठाई, उर्देखता, शदिनय। बावज-तु [मं] पांगाः दृतः, इरकाराः वर्गते समक्के एक मध्यत बन्धि । दि० भीनेवालाः बहनेवालाः वीवनेवालाः तर वक्रतेवल्या । पायम-तु [मं] रीहमाः बद्दनाः इमका करनाः चीमाः सुंद करमा; साफ करामा; वह वस्त निस्थ कोई चीन साफ की जाया दूत हरकारा । वाबना । म कि ते वासे पक्रना। दीवना । पावनि-मी॰ [मं॰] पृहिनपर्वी, पिठवना कंदकारी सट था। • तबीस चक्रमे था दौड़नेक्रो किया अथवा बंगा बाह्यक, भारत । पावनिका-सौ॰ [सं॰] बंद्धारी । धावनी-नो [सं] पिठवन इंडकारीः भारको । षावरी • नरी चीरी इनेत वर्तको गाम । नि • सी • वजने रंगरी। चावस्य-तु [Ho] दरेनदा सफेरी ! चाचा-पु॰ क्रिमीकी पाँतने खुटन आहिक लिए बहुतमें सीर्गोंका गढ साथ बीड पड़ना चतार दमना बीडकर बाना । मु॰ -करना-भाजमय दश्ना चडाई करना । -बोसमा-अप्रमासा फीबको इमना करनका हुनम देनाः इमना करमा। —मारमा⊸क्षतक चतुर्वः करमाः बूरतक तम पक्कर शमा।

थाबिन-वि [मं] श्रीया हुमा माबिका गरा दीहा इमा शीवा हमा।

पाइ-करो चार विहाकर रीमा क्लिए ! र आगरी नरमीः छावा । -देना-१ 'बाङ् मारमा' ।

षाही-क्सी आया । भागकी गर्मीः छाया । धिम । - तो भीगाबीमी उपत्रव दारारत । चित्रहा~पु दं+ भी वछ ।

चिरााई = नरी कथम उपत्र शंशामीक्ष्मरिक्ता, स्वाराई । चिंगाचिंगी-भी १ भी गांधी गी। धिमामरा - अ कि धीन चीम बरमा समाह बहर बहना ।

पिती-श्री काम मचानवाकी औ। चि-द्र [ाः] भाषार भोन्तर (देवल समासांतम प्रपुष्ट-दे। सर्य)।

धिवार्ग-स्ता नेते प्रशीतना किया ह पिभाग+-दु है ध्यान ।

विजन्ता - संस्थिताना । TUE-4 > (ve)

होता। धिकामा! - स॰ फि॰ गरम करना, तपाना ।

बिक्-न (रं•) भन्तना निंदा और प्रमाने अपने प्रकुक्त हीनेवाडा एक शब्द !-कार-पु 'विक्' क्यकर की गंबी भर्सना निदाया प्रशाः - कृत-वि विसक्षी मर्स्सना कामतामतामत की गनी हो। - किया - सी॰ दे॰

'विकार' !- पारुष्य-पु निदा, मत्संमा ! चिकारमा-स कि॰ अनुविद बाउदे हिम दिसोदे प्रति निया और प्रयास्पद श्रष्टींद्ध प्रयोग दरना, कान्त

महामन करता । चिग्र≉−थ दंश'शिक्'।

भिग्वंड-प्र• [मं] वंडक्समें की गयी भरर्समा ! धिम्बण-५ (सं॰) एक संकर बानि जाउए। दिना और

भागोगमा माजाने उत्तक मनुष्य श्रमार । चिष्मु −िव• [मं•] छन करमंद्री इच्छा करमेवाला ।

चिष⁶-मा ४८ प्रशीः शतिका। धियांपति-तु [मं•] इहरपती ।

धिया-सी पत्री कन्दा।

धिरकारा -प • दे • भिद्वार । चिरवना - स कि दे 'शिरवना - तूर मंद्र वनरामहि

भिरवी हुनि मन बरव कम्दैवा - एर । विरवनार-स कि बमडी देशा, बमबानाः बाँदना । चिराना*-स॰ कि वसकाता, बराना। श॰ कि श्रीमा

हानाः कम होना, पटमाः भैर्व पारम करना । बियण-पु • (पं •) दृहरपति। बासरबान ।

चिषणा-स्मै [सं॰] श्रुकिः मधाः रत्ततिः वासीः प्रशीः ध्वाकी बढोरी।

चिषणाचिष-प [सं] ब्रह्मपति ।

चिष्ट्य-प्∘ सिंशे दे विष्यद ।

चिक्य-पु [मं] स्थामा गृहा महि। मध्या शक्ति हुक प्रदः गुकापार्वः प्राच्यानिमानी देवता (वे)। प्रस्तादा एक भर ।

र्धीग-त दे 'बीमरा'।

धींगधा-म दे॰ धींगरा ।

र्घीगरा-५० इस्पृष्ट मनुष्या गुंदा । दि० दुद्द, खत

र्वींगा-वि॰ दृष्ट वाजी । -वॉॅंगी,-सुस्ती-सी॰ शरा रत दुष्टगा ।

भीतिय-स्प [डि] ६ 'पानेंद्रिय ।

र्वीयर-प्र दे भीवर ।

ची-सी की नक्दी मि] कुछि महा। गमहा शाना कण्यताः विवासः अभिनावः अकिः यदः मनोत्र्रि (व)। स्वावमार्थमे प्रवृत्ति वर्मा मन (रे) । न्युत्रन्यु सुम्या सदग आहि बुद्धिके आरू थम । — हा स्थी सनीशाः युत्री कम्या । दि दुदि देनेवानी ।-पति-पु प्रदर्शन। -अंथी(बिन्)-पु॰ राय देनेशना संश सनाहरार ।

-शक्ति-को है 'वीगुण १ -सन्। -सविश्व-पुर चमर मंत्री । चीमा-भी देशे एक्टा

पिरवा - म कि नरना रूपा देन। तस्तर रात प्रीप्रचार-स कि विषय करण-'उसन टेविंग स

मज्ञ-पु[भ•}क्योतिह। मब्सी~पु अ्वीतिशी। मञ्चम −पु• [स] सरकारी जमीन । भगम-पु॰ [भ॰] तारा, शितारा (सुमास्यों) 1 मट-पु॰ [मं] माट्य करमेवाला माटक संकर्धवाका क्वकि अभिनेता या नवाचन या तरह-तरहकी बसरने या केल-चमारी मादि दिखलार श्रीवनवापन करमेवाली দক্ষ ৰাত্ৰি দক্ষ হাদিধ আদি মিনুদ্ধী তথেখি ভাগে धनियोंसे है (स्यू)। एक संसर जाति। एक रागा सनक अशीष हुए। दवीनाम हुए। एक सरहका मर्दुक !-चर्मा-की अधिनव।-शारावण-पुचक राग। -पशिका-यी नगस। ∽भूपण – भंडम−_त् इरताल । – शक्त – प्रकरिता - साहार-प्रकर्मा । - हैन-प्र रंगमंत्र । -राज-पुक्ता दिना पुत्रक सर । -बर-प्र मार्गन नदः स्वभारा अति कुशक बराक्षण को सहस् के मापार्य माने जात है। वि नगुरु नाकाक ।-शंशक-प्र गोर्वर्त। इरवास्य भाग्नेता । -सार,-सारा+-सी रें "मारक्पासा । -सारी+-भी वाजीगरी।-सूच-प्रकारो द्वारा रचित नारमांच । मदर्शी -सी शका गरेकी वंटी। नटक~्ष [मं] नमिशना। सदरपट∽वि चपप्रकी चंचन चरीर वाशी । बदलदी-ना प्रजापन शरारत। बरता-स्री [र्र] मरदा मान वा कार्ने । सरन - द्र [सं] नाचनाः अविश्व करना । बदमा - अ दि आधानव करमा: माचनाः यम शर बहरूर किर इनकार करनेना सकरना। मह शाना। स कि विगादमा नश्च करना । मटनि॰−न्या जर्नम कृत्यः इनकारु सुकरता । सदमी-मी दे नरिन'। शहसास+∽g जुमे हुद शहेका वद दिश्या की विकल न एका हो। लक्ष भारत बाजको गांधी को धरीरमें को रह गयी हो। दिली दिली समय अक्रमेराकी बीका क्षेत्र कराय-'बढ़े सदा मदलाक का सी/ननके बर साहि - वि॰ । লহারিকা-কা [4] কন্যাণললা महिल−५ [मं•] व्यक्तिया महिम महिमी-सी नदभी श्री। वर जाहियी ली । सरी-मी [म] माल्य बरनेशली मी अनिमेत्री। प्रश्न अधितेत्री सक्तप्रदेशी सीएलंड अधिनेताओं और नेप्रवाह शर प्रानिकी स्ती। वक्ष राशिनी। नन्धी सावक संस्तृत्व र सटेश, सटेहबर-प [र्ग] छित्र । **मटपा==शी गना गरदन** । कट्या−सी [सं] सं}शीयं थी। **बटना॰-४० कि ग**ह दीनाः ३ मट−पु• [तं] एक गीनप्रतीक कवि। शरकः थ्वी बनानेता पेता करनेवाली आर्था । -प्राच-दि (वह रबान) प्रदर्श सहदाको बहुनायण हो । -अस्य-पुरु नह क न वृत्ते स्थान । -शीन-पुर शीया महासी । -वन- रे पु मरकाकी साही। -संहति -की अरकाकी शक्ति। बडब-3 [मं] दहादे अंत्रवा छेन्द्र मार्चादे बीकाहे । अनुनीर-की शोहा संव व

बद्धी । शहकीय−वि [सं•] वे 'मदश् । बढरा-वि [सं] मरकाने दक्षा श्रुवा। वहाँ मरका भाषा हो । मक्क् भि [र्थ हो हो है । महिमी~सी [र्स•] यह नदी विसूपे मरक्टकी अधिका शा नरकटका देर । म**हिरु∽नि∘**[सं•]⊀ 'नदपाथ । मक्का-न्यै॰ [मं॰] मरकाका हेर । नवयत नवयस-वि [न] दे॰ निष्याय । मक्षरा-सी [सं•] वैराव मनुक्षी पत्ती। बरस्टका देर । भक्तमा - स कि गुलना, विहोना। कमना । शत्र−ि [तं] समीप्तः सुका हुमा देशः कुरितः। हु मर्व्यक्ति रमाधे किही घरस्ये दूरी; नगरमूक : नहुम-पुण करायान मानक इस । -मादिका -मादर-मी मच्याह और अर्थ राजिके नीमका कार्र प्रत्यकाल । -नाशिक-नि॰ निका मात्रपाता ! -पास-पु॰ सर शायनका पालन करमेंबाला प्रचनशन ! -- हा - वि नहीं विराधी भीडोंबाक्षी । **−मस्तक −4** विसकी भिर सक्क दुषा दी। शतक-म वे 'वडा । शतक्तां−व दे 'बदेगा शतकरां -- प्रत्येका क्या, नागः वीदेश । जनर मतरकः=-ल दे 'नतर'। जताद०~म मही हो, सम्बंधा (ज्ञांग-वि [नंश] विस्ता वस्य शुक्रा हो। ज्ञतांगी−सी [मं•] भी, नारी। श्रति−न्दी भि•ीवम दीना शक्ताः नगनः मनस्कारः विनवः देदायनः मुकायः । व्यक्तिवी - मा॰ बरोबी नेया। ज्ञतीका-त कि। देव वरिवास वरीशासका स लु०-स मधी तो अम्बधाः वर्गमां-पु रिश्तेपार मानरार पद स्वक्ति भी मानेसे कुछ कराना हो। वनिर्माट~भी भागा मंर्रप (रहा। लायी-मी कायत या करहते महतमे हदलीको स्कन बुदमार बन्देवे गुने बुद कामब वर सपहन्द उदहेर मिनिया ! न पर-त [मं] ब्ययोश्या पद्यो । ध्यय-भी मादने यहमनदा गणांदी राष्ट्रदा रह मन्दि गदमा । श्रमण~न कि नन्धे दोना नावा जाना। हेडा नामा । व मानके एरांका मानकी मारका उपरा वर्ण में खेन तीयमें और छोरनेमें बण्डना भार फलवा रहता है। 🕸 आन्धि मान । अधर्मा-न्यी छोटी तथा देन, धनदी बादमें परनादी कार्नशानी रश्ती। सनवारकी मुदारका सम्मा स्पर्क आन्द्रपदी परन । स्रविद्या ! – स्पी है 'स्पा मनुना!-५ दे 'नवना ।

1

لإبر

144 करना । –सा मुँह होमा∽विवर्ण होना, चेहरेका रंग **ठठर जाता। भरवंत कविन्त होगा। −होगा(किसी** थसाका)-एकरम काला हो। जाना । -(य्)का धीरहर -थनरवानी वस्तु । -के बावक ठवाना-संनी-बीनी वार्टे बतमा । पुर्मोमा-भ कि नुगेने वस सामा, अभिक भुपैनाकी कॉबरी क्टनेके कारण पुरुक्त गंबरी व्यास को जाना । पुर्वार्वेश-विक जिसमें पुरेकी की नंब की। प्रमारा-प दे॰ धुनावरा'। प्रमास! - को दे 'प्रवास'। पुर्मोसा-पु पुरंद्रो कारिका धुनौ क्यानेसे पानेवाकी काशिकावि पुर्मीयाद्वका। पुरुष-पुरुष-पु॰ मय, शंका आदिसे मनका शाबाँदील होता, महत्रकी । भुकपुषी-सी छानी और केठे बीचका कुछ पहरा स्वान वहाँ पहचन होतो रहती 🖒 बनेवा-धिस्ति विकेक्ति मरत रपुररको । कुर गन समय शुक्रमुखी वरकी -रामा । **पश्च**नः गर्नेका एक गद्दमा परिका पुरुषा - म दि सुदना नत दीनाः वर्षेपनाः हृद पहनाः श्चप्यनाः । पृक्ता जानाः । पुरुमी ौ−सी दे• वृत्ती'; भूक्षनेकी किया। मुख्यम् = न्यो । दे । प्रकार । प्रकार-स कि मिरालाः स्वाना मुकानाः धुर्श देकर परमो पट्टेंचासा।# दि क्∑ेंपना दरमा। प्रकारर - नी नगावेदी भागातः गरगराहर । प्रकारीर≕सी दे 'प्रकार'। प्रदाना•-म कि भ्दनाः शरशा । पुदारमा - न कि विरामाः शुक्राना । प्रमापुर्गी-सी दे धुरधुको । प्रत•-द रे 'धर। पुत्राव-लीव हे 'जल'। धुजिमी श्रमी ध्वित्री, भवा कीत्र । प्रदर्गी -- दि नेवा (स्वक्ति)। जिसके प्रतीरमें कुल पूरी बी। बुलिबुसर और शंगा (व्यक्ति) । पुत-दि [में] हिलाया हुमा वृद्धिनः स्थलः। ०० [हि] R 57 1 -- mr-4. [få.] & 'gusit 1 श्चिकारमा=स॰ दि॰ वे श्चनहारमा । श्वनाई • - स्री पूर्वता । शुनारांग-विदे पूर्व । पुत्-प्र•दे पृत्। adu-dog alle मुणां-वि निर्मेष मुण-विर्वे और मुख परे रहें -दिर्गी । adant-de ben : प्रप्रकार-स्ते 'ब्र्यु श्रे भाषामा बीर छन्छ । प्रप्रकारी-स्ते हे 'ब्रुपुकार । Adet-m 5 ,23eif, 1 भूम-भी विशी बादेंथे बराबर जब दबीजी प्रवृत्ति कान। मनदी कहर कीमा विकास चित्रमा रसके आरीह

है 'कानि'। मुक् -का पक्षा-बारंग दिये हुए कामको पूरा करके छोडमेवाका, फकोरमतक क्रमें करनेवाका । पुनक्षा-स॰ कि॰ दे 'धुनना'। ग्रनकी -- त्री॰ प्रनिवॉका वर्ष प्रमनेका प्रमुखे भाकारका बीबार, कटबा। कश्डीके लेकने या भीश-बहुत वर्ष धुमने-के कामका छोटा पनुष । शुनमा−**ध॰ कि वर्रको शुनकी**से इस प्रकार फटकारना कि गंदगी निकल जान और रेसोंके फैस्मेसे वह प्रस्पाती हो जाया वेशरह फेटना जिना स्के कहमा जिना सके कीई भ्रम करते बाना । भुनधामा~स कि॰ धुनना*काप्रे । पुनि∽न्दो॰ 'कामि'; [सं] शरी । पु॰ एक ससुर; सान-मक्तीमेंने एक दे मस्त'। श्वनिर्वा, श्वनिया-तु वर्ष धुननेडा द्वाम दरनेशका। † चौ धुनको−'सीनेको धुनिवा रेसमको है साँव'- धासगीत । श्रुमी-नि॰ मिसे किमी पाएकी श्रुम हो जो किसी श्रुममें हो। कर्मा॰ ६ 'व्यक्ति' ६ 'पूनीः [मं] नदी। -नाच~दु समुद्र[‡] चुपना॰-४० कि॰ धुनना । प्रपाना!-ए॰ कि प्र िमाना मुझने मान्ति तिर बूपमें राजनाः बूचके पुर्पेते सुवासित करना । श्रुपेन्दी-न्या पदानेसे दोनेवाको प्रसा। प्रसिक्तमारु-स कि पृथित बनाता। पुरिका-वि पुर्वेदे रंगकाः पुँतकाः। पुनीसा-वि वृतित पुरदे रेगदा। धर्रधर-वि [मैं॰] भार पहल बरमेवाचा जीने जाने बीरका किसके कपर रिसी कार्यका भार हो। दिमी कामके हानेमें जिनहा सबने अधिक दाप हो। उत्तन ग्रुगोंने सुका मेक्षा कमगण्या प्रशास । पु नैक भादि की गार्थामें कोत वाते हैं। नेना, न्यानी। द्विषा परका बुद्ध । प्रर-९ (वे] प्रशा गावीका क्ला। मार, वीशा: प्ररे≩ छोरक सगनेवाको बीकः बनीनको एक माप निम्नांसी। इंदा स्थामा किया-भीर पर्ताम कीय सतुबक्ष पुरको -भूवनः मृतः भारंम । दि [दि०] पद्या । ७० थबरम (क्रिमीची) परम सीमापर । - ऋपर-म एड-दम कपर । -किही-मी भुरीमें लगायी जानेशानी धक् क्षीम । पुरजरी॰−५ दे वृषेटि। पुरद्वी निर्माण्ये पुरक्षाः भरना॰-म कि पीरनाः बतानाः भूमा बनाने हे निय प्यालको किरमे शाना । शुरपद-३० हे॰ भूरतः । पुरवा॰-पु वारत । चुरा~पु॰ विको जबरी वा कोदेश वह रहा विमाने सहारे बहिया मुमा बरमा दे क्यू भार, बाम र पुरियानार्ग-म कि पूरुभे देशना । पुरियामलुप-तु मान्यादेश यह धर् । प्रती-की होटा पुरा । असरीवरी वर्दने गानेता विशेष देन व्यामधी एक रामा | युरीण-वि [थ] आस्ताव शह प्रमास पूरा बारण

मन-डेबका मभिप्राय । मप्रसामप्रयी−ही वापालागी। मक्रमानियत-सौ॰ स्वार्थेपरकाः अपनेश्वे बहुत अगानाः विषयासक्तिः विकासिता, वेदात्ती । अप्रमाजी-वि स्वार्थमवः स्वार्वग्रेरिशः श्रांत्रकाः-वृत्ते। भीग विकास-संबंधी। अची च्या थि । ईशरका दश वर्गवर । मगेवना - स कि वे "निवेषना । मवेडा-प॰ दे 'मिनेश'। मधेरना - स कि है • 'निवेदमा । मबेरा!-- प्र देश 'निवेदा' । नदेसा--(१० ६० ६० नदेला)। मकत−स्रौ [च] माई। दायकी वह रण विश्ववर वेंगकी नपन्दर वैष रीगको हाकत समझत है। अ॰ -सरमाः-म रहमा "मार्गामी गति रक्ष जाना । मध्वे−वि अल्डीऔर दस । पुल्केकी संख्या, ०। मभा−'नभम'का समासनद क्याः —केतम−तु तुर्वाः नमंत नमंति(तिम)-त सिंह। न्यांथ-प॰ तयं। -प्राण -बाम-५ वास् । -सब्-५ वही। देवता प्रद आहि जो आकासमें विकास है। -सरिस-का॰ भागावारोसा । नसरान्य वात्र १ नस्बस्न-त भागावा-स्पी रथाना धिव ! -स्वितः-विश् आकासमें रियन ! ष्ठ सरक। –स्युक्क(क्) –विश्व निमोकित्। मस−4ि [में] हिसका प्रश्लानमका महीमा। नावाण । --वा-पु॰ नेवरवत मनुद्धा पुत्र। पश्ची शत्वादि। वि गगनगमी!~ माच∽प्र गदक!~शामी~वि प्र दे 'समोनामी' । --चर--विश् पुरु है 'समग्रद ! --चप्ररू--सभीप्ततः । -ध्यत्र-पश्चेश 'नगीप्तत्र' । —सीरप=प• दे 'नहींवद । सम(स)-प [मं॰] बाह्याश आसमाम्। पूर्णी आदि वाँच द्वावाँमेंने एका सारमका महीना। मेव' करा अंटकी-N सदाने दलवाँ स्थाला चाग्रुप सम्बंतर्**के** नार्तिवीयेने एक श्चिम बचाः विकास भागवः पास (संदर्शस) । समग-दि [मेर] माध्यदीना दे 'सम' । समगेश-इ [मंग] गक्ड : मसद्य - 'नमतु'द्य समात्तात १९। - चल्ल(स्) -तुर सर्व ।-काम-इ परमाः विकार्यः वेदमान ।-चर-वि आकारामें विभारमेवाका । तुरु वशी। देवनाः रांचवं बारि को आकाशमें विमाने हैं। वारका नाम । नमसंगम-इ [त] द्वी ! भगस~तु» [मं•] दस्त्री मर्मानरहे सप्तविशेमिने वक्ष । समस्ताल-इ [में] बातुर्वेद्दरा शास्त्रज्ञका निम्न नाग । शमस्य-वि [नं] नापर्मं। कुररेति भरा पुत्रा र तु माह्रका मादीया महीमा ह नमस्यान्(बत्)-वि [र्ग] यात्रवी वा तुष्टींश वरा दुसा । ५० मानु । ममा-सी [गं॰] सैदरान ! नमाच-५ (ग्रे॰) भरदार ह मधीपुप-पुरु [मं] भारक । मसी-"मधन'वा समागुपत क्या । -श-विश् को साक्ष्यामें 📗

निवरण करता हो। जो अंडकोमें लग्नस्वानसे दसरें स्थानमें शो । पुरु पद्यीः देवनाः, र्यपनीतिः वसर्वे अम्बन्ददे सामीको-वेसे एक । –शक्र-पु नारक । –गति –हो । बदबासी विषरना बक्ना । वि है 'समाग । -गामी(मिन)-40 40 \$0 'nunt' ! - u-y um friffe ! -बुक-पु मेम भारत ! - दक्षि-विक शिसरी दक्षि मानाशको कार दी। जंशा। −डीप ⇔घम −ध्दड− प्र नारकः -सदी-मा॰ भाषाग्रागंगा । -संदल-प्र संदलकार आकारा । - मिल-पु वर्ष । - बोनि-प्र विव । -रस(स्)-प्र• अंश्रह्माः। -हरा-दि व्यक्तासके रंगका औरता। -रेण-पु॰ कुरसा। -क्रय-वि जान्यसमें सीम ही सानैवासा । पुरु सुन्नी। ~सिट (६)--वि भाषत्रश्राते छुनैवाला बहुन कैया यगवस्था। −वीयी−को दे• छाबाप्यः नगीका(कम)-'तुरु [मं∗] पहोत देवता 'प्रद नादि औ माषास्य वियत्ते हैं। जरुय−वि॰ सि॰ी व्यक्तिकी माथिकै किए भावत्यक । पंक धराः धरेमें कवाचा वानेशमा सक । मधार(स) →व (तं∗) दाका वशका। समा(सम्)-स॰[सं] प्रणात समर्रण आहिके अस्तरकर व्यवद्वत दिना जानेवामा तक शब्द । पुरु नामतः बद्धाः त्थाया जेंद्र (संस्कृतमें ये वर्ष भी सम्यवर्षे हो शुन्न है ।) म्म-(दे० (चा०) तर सीला, झाई। नमच-१० (का) रिशेष जकारके स्वारके निश् भोतन वस्तुजीमें छोड़ा बानेवाला यह प्रक्रिय छार बनाई सहार कावन्तः गर्कामापन । -एन्डार-दि॰ नमक ग्रामेशाना । -वान-ध नगर रधनेश वात्र । -सार-धी सम्ब तिकन्ते वा वनमेवी बगद : "हराम"वि॰ स्वामी वा बारुक्ती एन वा होर बरमेशकाः इनम्म । 🗕 हरासी 🗢 श्री रवायी शा बालकमें एक या होता करतेको दिवा वा बुर्जुन, कुनारना ।-इन्हाल-नि॰ रनामी वा चालक्की ययोपित मेश करनेवाला । -प्रत्यासी-सी॰ तमकानान दीमेका जार वा शुण । मुण-अदा अरला-श्नामी वा शक्यको बनावित सेवा बरमा, बसके प्रति भवना कर्त्रथ नरा बरनाः (किसीक्य)-न्यामा-(क्रिग्रंक्ष)ः इच्छे बिबाह बरमा (विधाया) मेबा करके मीविका चलामा। (कटेपर)-शिवकत-काला भीर दुरस देता। -पूरकर विकल्पा-नमक्ष्यामेका कुपन मिलना। -विश्व विकाश:-दिया बान्द्री आदर्ग्द्र या प्रवागेता:-बन्ध बलानेके शिष्ट कमर्थे अपनी औरही रूछ और भार देना। मुझक्षीन-रि (का॰) जिलुमें नमक छाता गंबा ६५ जिल्हें बमदका स्वार दी। सार्वव्ययुक्त नानीनाः होस्स । थ । अग्रह शास्त्रप्र तैवार दिशा तथा स्थानन वा प्रदेशन है इसल्ल~ वि] जन सद्य दुधाः वदः । । पु स्थिनेपाः भूमाँ। रवामी। वाण्या कमी वानु । शसदा-५ (का) जनाया बुबा करी दशरा। श्रमक्र-५ [र्ग] जयस्याद करमाः समस्कार, अन्यानः शुक्रमेशी किया । वि. इसरेवी शुक्रानेवाना । असमार्थ-अ कि मन देना। ब्राय देशा । अमिन-की देश अमन ।

भृषित-दि [सं] भृषमे वासा हुआ तास अका हुआ । भूम-पु [र्न•] तुर्मा तुरसा भूमकेतुः जस्कापाता बारका भवनके कारण आनेवाली टकारा सकान बनानेके किए तैयार किया गया स्थानः एक ऋषि। -केतन-पु अधि (विश्वतः अरितानः अनुमानका निष्कः मुर्भी है)। क्मकेतु । -केनु--पु अधिः पुष्पात्र ताराः पत् सद रावणकी सनाका एक भर । -गंधिक-पु राहिप सूच । -प्रकृ-पु• राष्ट्र। -ज्ञ-पु बारुङ मोथा। -दर्बी (सिन)-पु॰ वह मनुष्य विश चारी आर भुँचला विसार्थ देता हो। -ध्यत्र-पुअति। -प-थि वेत्रक दोसका नुभी पीक्टर रहननाका (तपन्नी)। -पय-पुरु पुत्र्यों तिकक्रमंक्य सरोग्राः विज्वास । -पाम-पु वंतरीयः जैवरीय क्रम आदिमें विशिष्ट वस्तुओं, जोपधिवीकी विक्रमपर क्याबर गाँच बादिकी तरह पीनाः तमाकः सौजा भारि पीला। – पोत्त-पु बहाज व्यक्तिकोट। -प्रमा-सी ण्ड शर्कः -प्राचा-वि॰ दै -महिपी-तो कुस्रा, कुग्सटिका। -यान-पु॰ रेकः गारी। -शोमि-पुन्न एक । - स-विधुपैन (गका मध्मेला। पु॰ एक तरहका बाचर्यत्र। -ससा-सी कुंचित चूमराद्यि । –संहृति-न्यो॰ भूमगशि । –साद-प्र मक्तमका पुर्भा । भूम-सी वैदारीके साथ किने जानेनानं किया नां काम या उत्प्रदक्ष क्षारा इस्लापुरूना, उपह्रवः शृहरतः असिबिः चर्याः द्वाराः विवादाः रामाश्रदः । अवकार- पु 🤊 - धास-मी • हार-बार, बहक-पहरू समारीह । भूमकांगक-पुमि] वजधार, मीधनर । धूमर्--वि॰ दे॰ 'नूमल । भूसमा–(६ दे भूसन । भूमवाम्(बन्)-विं निं) विसने भुगौ करना वा सिक्ष्मना हो । भूममी-मी [म॰] दररक्षा बहा; दरदक्षा विमान । भूमांग-पु [मं] श्रीममदा वह । वि० जिसदा क्षेत पुरी के श्वधा थी। **प्रमास-(१० (११०)** किन्द्री जाँग पुरेड रंगकी हो । [स्री० बुमाद्यी ।] भूमारिक-सी॰ [मं] वह भाग विमने पुत्रों ही पुत्रों की, ब्यामा म द्वा । भूमाम-वि [रो] पुरुके (बदा। भूमापम-५ [मंग] चुन्रो देना बाध्व निवनना शाव। प्मापमाथ-वि [त] प्राने पूर्व । भूमावती-री [सं] तम महाविवाभोदेन १४ । प्रमिका-गी [मे] बुक्स । पुमित-वि [गं] क्रिमेमे पुत्रों लगा बार वा पुत्रों लग्न मध्यमा हा त्याकार हु सा बारह अगर्दशास्त मंत्र (वह रीवर्ड्स माना ग्या ६-४)। पुमिता-भी [म] वर विद्यानियर गुवे बहत हुदना है। पुरिमोलको [] ब्राध्ये यह जिल्ला अवसीपी 4 3 (4184E) 1 भूमिल-रि(त) हे बृद्यन । पूर्मा(मिन)-रि [तं] रिगन बहुत भ^ररह पुत्रविहता]

25-E

या निकलता हो । [सी 'पृमिनी ।] भूमोरब-वि [सं•] बुर्वेसे उत्तव । पु मीमादर । प्रमोद्वार−प [d] अपयमें आनेवाको बकारः पुरस्ता षठनः । भूमोपइत~पुर्धि]एकरीन। धूमोर्णा-की [मं] बमकी कनी। भूरमा—स्ती [तं] पुरुषुत्र । भूम्याट-पु [धं] पढ पदी, दक्षिम, भूम । भूका−पु• [गं•] सकाई ठिमे काका गंग कृष्य-काहित वर्गः शिहकः कोवामः शिवायक अञ्चरः कार्तिकेवका यक अनुभरा एक योग (क्यो॰) याप दुष्टता। वि सकाई किमें कालं रंगकाः श्रीमका ा —क्रीता−पु॰ दक्ष रत्न । —केश−पु॰ राजा पृषुका एक पुत्र । वि• जिसके नाक पुरेक्टे रोगके हो । -पद्मा-म्बो॰ पक द्वार, गुप्रपत्ना। -पान-पु [६] दे 'पूमशत' (मसाबु)। -सृक्षिका -सो ग्रुली गामक नृजी - सक (च्)-वि कृष्य होदित वर्णका । -क्रोचन-पु कन्तरः श्रंगनामक बहुरका एक मेनावर्ति । विश् विसन्धे जीर्ने वृक्षवनकी हों। [मी॰ 'ब्राहोनना' ।] -सोडित-प्र शिर । वि गाना सात । –दर्ज –4 धुरेंदे रंगका। पु∙ क्षांशनः कवारै किन काका रंग ! - वध्यक-पु ॰ मॉरमें रहनवाका यद बानगढ़ सेंगर्श ! -वर्णा-सी॰ अधिको सात बिहार्जीमें हे प्यहा—द्वाइर—पुॐदा भूग्रद-पु (सं] सेंदर भूजा-स्रो [सं] स्वंदी बारह क्याओंमेंस एक द्या-एक तरहकी बक्ती । भूषाहा−4ि [सं∗] निसके नेत्र वृत्रवर्गद हों।[सो ब्ह्रासी ।] यु रावनकी संमान्ता वक राह्नस । भूमाद्य-पु॰ (रं॰) वह मोती जिल्हा (ग मदा हो। भूबार-पु॰ [सं] एक दिकारी चिहिया। भृत्राम−दु० [ग्]] थानुः वानावरम । षुष्ठाचि - भी ॰ [d] अध्निकी (क्रमा, ववतिमी नाहि) देश क्षणभौगेंगे एक । प्रशास-त [तं] १६शाक् वंशवा वय राजा। पुलिका-भी [मे•] धोशमका पेत्र ! पूर्व-सी दे विकास दे पुर । -पान-पु ;-धाती-की पृत्रको देर। प्रमधी०-पु॰ हे 'नृबंदि । प्रत-वि देश वृत्ती। भूग-पुरु पुन्तः चुन् । भूरिक-को दर्भपूत'। धारेग-अ निवार एता। **पूर्वेटि-पु**[नं] तिरा भूत-वि [6] वेबक रकातात्र एक दर दाना उग्रा मायानी। एउटा श्रांतप्रश्य । यु जुआरी। ग्रंड मायका मारी ममदा चनुराह आहरिष्ट्रा श्री पर्याना । - दिन्त -प्रजानी । - हर्-प्रप्राधि महार स् मान । - परिन-पुरु भृतीश भरित पर प्रशास्त्र मारक बिग्पे यह गारहरे परिश्व के न स्टबाई स्ट्रीन नारक । --वीतु-पुरु मनुष्य । --मानुषा-की । एएमा

सीभी गानी वामैनाकी अवली जीतुत सेवका बादेका 🗪 मेरा एक प्रकारका राष्ट्रभा । पानी शहरोका जला 📢 पुरत वाविद्या (सर्व) । --क्रेश--पु रामा सूत्र। --कपाल-पु मनुभारो शोपति । --क्रीसक-पु धर्म भरको क्रमा करमेगाधा । —क्रेसरी(रिम्),—केसरी (रिन्)-पु॰ विष्णुने भवतार मृतिका सिंह श्रीसा परा क्रमी ममुध्य ।-केक्सी#-पु है० 'नरकेशरी ।-कील्फ -- प्रशास्त्र देश । -- गण--पु॰ सवप्रश्रमूह-विश्वपा इस राजमें जाम केनेवाका व्यक्ति । —शास-पुरु राजा । --ब्राय-प्र• राजाः कृषाः । -क्षाराक-पुः वनसा वर्षः ;सक् । ∼देप−पुराजाः ज्ञायनः। ⊸द्विर(प्)∽पु रप्रसः। -धि-तुः संसारः। -नाय -नायक-तुः राजा । --मारायध-५० वर और आरावध-अर्जुन और कृष्य किन्हें वस ही छात्रके हो **हप मामते हैं। —नारी**— गो॰ मर्भुनक्षे को होल्हाः पुरुषको। –नाइ॰-पु॰ राजा ।-माइर-दु॰ [हि] दे 'नरकेवरी' ।-पवि-प्र राजा ! -पद-पु॰ है॰ 'जनपर । -पश्-पु पश्-प्रस्व मनुष्य। −पाश्च-पुराजा। −विद्याष-पुर फिरायकी करह कर स्वमाननाना मतुष्य, बहुत बहा मीचसमुप्ता-पुराज-पुन्न सहसमुप्ता-पुर-पु मार्थकोकः। अप्रिय-प् नीत्र कृतः। अवि-लीक मन्पानी वति । - मशी(शिव) - मुख(व)-४० ममुध्येक्षी लानेसम्बर्धः राक्षतः । -भू-भूमि-मी० मारतवर्ष ।-मामिका,-मानिमी-मी (१४१६) गाँति) बाह्य-बुँडवासी क्षी। −माना−नी॰ मगुपॉ4ो कोवदियाँको सामा ⊢साकिमी~नी देश गरमानिका ; भरमाना भारत करमेशाही भी । -सम-५० मनुप्रोकी ब्दिः। −यंत्र-पु० शुभव जामनेका एक महारका शासीम वंत्र भूरपही । -यान -श्य-५ मनुष्य शाहा शाबी का दोवी जानेवाली संबंधी (होती, पालको रिवद्या इ)। -सोस-पु मर्तकादा मनुष्यमानि ।-यथ-पु वर्षाचा ।-चर-दु० शेष मनुष्य । -वादम-द० इतरः 🕻० 'तर्वाम । वि वरवामवर धवनेवाळा ।-विध्वच-त्र राष्ट्र । −वीर-प्र• वीर प्र•व वासा । −व्याप्र-पु मेश पुरुषा एक जनमंत्रु विसका कर्यमामा नाप थैसा और क्योंबाग मनप्य नेता होता है। -शक-तु राजा । न्यार्क्**ड**-५ है नरस्त्रात् । नर्थस-पुर एक भनीक क्यान (मन क्या सीव मिसका बीवा बर्गम्ब है)। -संसर्ग-पुरु मानवरामात्र। -शन्य-पु भारावण । - मार-पु शासादर । - सिंच -पुरु दें। सर्मिष्ट । -सिष्ट्-पु: विष्युत्ता वद विषय विश क्वोंने चीने अवगारमें धारण किया था विष्युका धीना अवपार (रम अवगारमें निगाने गारिका आंधा मार्ग सिर जेगा था भीर थाया मसुन्य नेमा)। --०३३१--प एक प्रकारका अवर का तीन विनवक बना रहता और चीरे रिम तरा जाना करता दे। -- श्वराध-पु ९६ पुराना बिनामें मर्शनहरूत माद्या मा मानव इ १-१६.स - पु सन्तरमूह । - हरवा - भी अनु वसी याद वानना मर्बर । -इच-तु बेंन्डे और मनुष्यमें दीनेनाकी समार्व वा शतुरा । -इति-त्र दे 'जानिद । -इती-त्र

[रि] एक धंद । -हीरा-प्र [रि] बना होरा । मरबूँ-की भेंस, योह आदिकी सिलानेके फानड़ी शानदे देनिवासी एक पामा पास भारिका दीना रहत । मरक-पु (सं•) धर्मद्वास्त्रके अमुसार वह स्थान वहाँ पापिनीकी नारमाओंको अपने कुरुरनेका पता मीकरेडे लिए जाना पहला दे। यहता गरी जमना वह स्थान वर्ग बद्धत कर की। करिका यह पीवा यह अपूर । --क्रंड-पुर नरक्षे रिवण यह कुंड जिसमें बारानाके लिए बारमाएँ धीर वो वाती है। ~शहि-क्षी॰ वह कर्म जिसके द्वारच मरक मीगमा पने (दी) : --शासी(मिश्र)-- वि मरकर्मे वानैशाना । -वातुत्रशी-की हिमानीके द्रोक पहने पदनैवाकी चलर्रधी। -जिल-प है 'सरबांक्ड'। -- चेषता-पु निक'ति । - भूमि-सौ॰ वमपुरीकी भूमि ।- भूसिका-स्ता वरक्जोद (वे) (~स्वा-सी॰ वैतरणी मधी। मरकक्र-५ कप्र । नरकार-तु शतको संशे वर्धियो तथा पन्ने मौड्सर र्वक्रमाका एक शीवा जी शक्रमा, प्रदार्व आहि बमालेके काम भारत है। नरकाम मर्फान-४० गरदा। गरकरा 📆 शरकरा मरकोमक-पु [मं] (मरकासुन्या भाष्ट वरनेवरने) 要4年1 नरकामच-द्र [से] मेदा बरकरणे रोग । बरकारि-पु॰ [मं] कृत्य । मरकाचास-५ [में] सरवर्ते नागः तरवर्ते धननेताना । नरकासर-प्र• [गं] द्रधीन्द्रे नतेन व्यवध यद अनुर क्रियाचा वर्ष प्रध्यते दिया था । सरकी-वि॰ दे ⁶सरकी ३ नरविध-त [का] इसके बीटे रंगडा एक प्रतिक पूल वे। वर्द-दशस्त्रे माहित्यमे व्हॅरम्बा ववमान है १ वरशिसी-इ यह मधारका क्या विकार महिन वैके कुल बने रहेत है। वि. नर्रायत्वक भाकार का रंपका है मरतक्र-पु देश 'गर्नक' । मरह-की दै॰ गर्र । धरदम-प्र देश 'नाम'। मरवर्षे∽५ मारशन । मरदार-त मागराम । वरवशाल्या दे अमेगा। माम-वि दे 'सर्थ । मराग्रह—स्थै सुमायम विद्वीशानी वर्धात i बर्ग्यक्र-सी० देव 'सर्गरा । शरका:−मी १६ मधारको क्यापा होतरको की ए**६ हरर** का मुन्नायम क्ष्मता । मगुगाई०~मी ८ नमा । लहमामा-अ॰ कि अरम होता, हुनावम होना। धन बीना तांत्र बीना । ए० कि० मरम बरमा क्य करमा ule erm i बरमी-मी है नहीं। जरपैन-९० [त] राष्ट्रा ।

I)) भेतुष्या नसी॰ [सं॰] कणके दरहेमें वंशक रखी हुई गाव ! धेय-दि॰ [तं॰] धारण करने वाग्य, धारणीयः पीतक करने कोरव, पोध्यः पीने बोरव । पु प्रकृता पाना केवन । घेपना = - स कि । ध्वान करना । घेरिया!-मी॰ कक्षी वेडी-'वर्षेरे बागमधी भेरिया वर्षे बोक बोरे '- प्राम्मगीत । धसचा!-पु॰ दे॰ 'बरेका'। धेसा - प॰ दे॰ 'अभेटा । घेडी।-सं भड़्या। धनय-द्र[सं∗] वरहा। वि० गायसे उत्पद्ध। धमारू-न्दी० थेषाः आदत्त देव । घमुक-पु [सं] गीसमूदा यक रतिवेष । र्चर्य-पु • [e] भीर दोनेठा मान, भीरता। विकारीके कारनेंद्रे रहते हुए यी चिक्क विकृत न दीनेका भाव। विक्रम्य रहता रिश्वरताः श्रीरमः साहसः पृष्टता । र्भवत-पु॰ [मं•] सप्तदाहा छठा स्नर (मंगीत) । घपरब−प्र [सं•] पातुर्व । चींकमा !- स कि काँपना - सिकि केंग्री महानायक भौको - लदामाकरिया । स॰ कि॰ वे 'भी कना'। पाँडाल-वि हेर्जीने भरी (बमीम) । र्घीया-त• मिही मादिका कोता। वेशेक छरीर । घोई-सा बहर वा मैगडी राक जिल्हा तिक्का भीडर मध्य बर रिवा गवा हो । 🤊 पु॰ राजगीर । घोकदार्ग-वि मीयन्तामा । बाबा-इ दे॰ भीसा । धोरा॰-पु रे भीगा । धोरता—प्र वरतुरियदिक्षी छिपाक्षर बृछरीकी अममै टान्यन-का भ्याचार बंबना। बचन, भारबाहान देखर भी भागवा माचरण करमे**ं।** फिया, विस्तासपात कमा। **स्**ठी शत था सकती पीजमें विश्वास करनेने द्वीनदाता प्राप मुलाबा। इएको इए समल श्मेदा भाव, विक्या प्रशिक्ति सममें बावनेवाकी वरना मूकः मेरबानदाराः दानरा बीरिमा सरका, भरेगा मंग्रव। दमर हरि विश्विती दरानेके लिए शर्वीमें छड़ा किया जानेवाला मनुष्यके भाशास्त्र वरशे प्रयान मारिका प्रवता । -(१३)शाम-वि• भीरत दे विकास दया करने गुला । एकिया वसका -बाझी-मी भोगा देमेंडा काम वा बुर्गुल cकने की पानः छन्, प्रदारमा । सुरु -शामा-एना मासा प्रकारेमें १६मा प्रवासित होमा। इपका कुछ समझ केना। हानि सहना नुक्सान बढाना । - इमा-एकना, नुकार में बालमा। शिरवासपात करमा। (ला) अलवय सरकर षा नष्ट बीकर भाग्राओं एर बागी पर देना या बनती बाट विवाद देना । -वदमा-सीचे हुण्हा बल्या होना इएका कुछ दीना । - समना-पुटि वा वमुर श्रीना । -सरामा या सामा-पुरि या बम्प क्रमा । --(हो)-की रही-वर प्रदा जिल्ही आहमें हिनारी दिली जाना बरकी मार्गा दे। सब मुठमें केंना रहानेवाली क्षेत्र, माबार यत्त । - में सामा-दे॰ 'दीसा वाना । भोदा-५०५ होता । चीष-९ [तं -] एक मरहरा संद, ईरुव ।

योखा-५० एक तरबया मीटा बपदा । ई सी जोती । घोती-सी॰ धक प्रसिद्ध अधोनसा दे॰ 'बीदि'। अ॰ -श्रीस्त्री होना∽हिम्मत छुरमाः भवमीत होना *दर* जाना । घोला-स 🎏 पानीके बोगसे किसी बस्तुपरका मैक दूर करना, बक्क्षे रक्क्ष करनाः अलग करमा, पूर दशमा, धोर देना । स॰ घी बहामा - इर करना, ध्याना । घोप#-स्रा॰ तस्त्रार । घोष∽पु थोथे जानेकी किया, पुरूषे । घोषमा - न्दा है । 'बोबिम' । योविवटा~प॰ थे।4ियोंका कपडा भीनेका पाट । योजिम-की भोनेको मी। पीने श्रातिको की एक निविद्या। धोबी-प॰ करवा मौनका पेटा करनेपाका रजक (-धास-सी॰ वड़ी द्व । -य**छाड़ -**याट-पु॰ हुश्तीका यस देव । स॰ --का क्या--वस्स्य भारमी । -का र्यका--पराची बस्तुपर गर्न करनेवाका आगमी । धोस•~दुधूम, धुमाँ। घोर-प• नरस्यः दिशासः । धीरधा-प [सं] स्वारी, यान बाहन तीत्र ममनः थोरेग्री वह चान । घोरणि, घोरणी-स्री [सं] सर्विष्टिय क्रम पर्यस्त । धोरित-तु [तं] योहेशी दुल्की भारू झवि पर्देशामाः धोरी-तु पुरा धारम करनेवाका, पुरंबर: गावी बादिमें पीनं बानेवाले वैक आणि, पुर्वेश अमणी पुराण I धारेण-म भगीप निवक्त किनारे। घोषत॰-पुर्यानीः घोषती•∽न्धं भेता। घोषत-प्रश्नेनेकी किया था सारः वह पानी विसन्ने वा क्षिप्रे कोर्र क्स्य भागा गया 🛍 । ध।या+−पु•भीवनः वह। थायासा॰∼स क्रि॰प्रदासा।अ 🗗 प्रदना। মুডি-ৰ বন্ধ মুদ্ৰ লী ভৱৰ বিৰুদ্ধ, লাইছ লাইট प्रमुक्त दोता 📞 म मासून म भाने पटा नदी 💇 ठीय नहीं क्या मान्या था। अववाः दिः प्रान्ता हो । र्वीक-न्द्री भीतमेनी दिया। गरम द्वरा। धींबना-स वि: बागडी दन करनेडे किए उसपर शाबी। क्षा मान्त्रि हारा हवाद्या होता बर्देयाचा। मार हाहना । घोँकर्मा-भी शानारीश भाष शहरानेश और या बॉह की नहीं। माथी । र्थीकाो – पु॰ न्: गरम दवा। धींकिया-त मानी घणानेवाला माधी आहे लेकर पूरा-मुमकर करतनीकी मरम्मत करनेकला कारीवर । पींकी−सी दे 'शाकनाः थींज-मी मीहपूप नेवली परेशानी महिन्तमा। र्घीजना−ए মি रोहना पॉब्से हुपलना। व∗ মি

चींस-न्दी श्रीन्त्यर, पुरसी अमग्री श्रीमानदी। शहा

चीनना-स कि शीला-१९४मा प्रस्ताना पुरस्ताः

दे 'बुवॉस ३ ~पड़ी-स्पेश् भुनावा रा^मनावडी ।

दीषश्वा बरना ।

ंट देलाः न्यामाः देन्या ।

-क्यर-कृषर-पु कुरैरका प्रत्र । -व-पु॰ सस्: पुष्पम्य, सहर्षः बहायाचीः एक तुष । -वक्षिका-सी नरकरकी बनी धराई । ∽याँस∽पु [क्रिं•] दिगालवकी टरा¹में पाया जानेवाचा एक प्रकारका वॉस । −शीन− पु क्षिया मछनी । - मोतु-पु रामदी हेजाके पार् वत-रमेक किए मलका बनाया गुमा बुक्त ।

शस्त्रज्ञ प्राप्ति । नाम विकास विका मककिनी−स्रा• [मं] पेरा संवा।

मसर्यु - पु [सं•] मीमका पेर !

सम्मी । न्या दे निविमी ।

ममबा-पु॰ वर्षोद्ये पी भादि पिकानस्य बॉसका चीना । मक्टा~प्र पेद्यावकी ननी भूमनविकाः श्राव या पेरकी संबी बट्टी ।

मस्तिका-न्यो (तं•) कमी नामका गंबाह्य्य जुनाहोका कपड़ा दुमनेशा एक भीकारा एक प्राचीन भन्ता छोटा और एनवासय (आः)।

मस्ति−५ [मं]ण्यस्याग

भूमिन-प्र॰ [मं॰] क्रमण हमुक सारमः मोकः बनः

क्रम्पपाद पत्तः प्रतिपाना ।

मस्तिन्। न्यो [मं•] कमसिमीः वह जलाशय विश्वमें कमन 🛍 प्रमुरता हो। कमछीया समूचा मछी। नामका गंबहच्या सरी: सारिवका एक छेटा देवयेगा । - मांच - पंड-प्र कमितियोंकासमुद्दा −संदश−पुपकदेशीयान । − रह-पु समयको नाम चुपामा नदा।

मस्मिद्यम-पुरु [मेर] विष्यु ।

मसी-मा शोरा और पतना ननः बंद्धमें वह नंबा छैर जिममेंसे होस्टर गोटा बाहर माटी है। नक्क भावभावी पत्तो हुद्री। [में] मैननिका नक्कि नामक गण्डम्ब । मुख्या-पुरु पहालीका तक रागः छारा नकः वासकी पीर् । मसोत्तम-पुरु [मं] देवनत वहा महबा। ससीपारुपान-तु [मं] राजा ननद्यं क्याः महाभारतके

बनपर्वका एक अवस्तिर पर्व ।

बस्य-पु [मं] पार भी शावती या विमी-विमीचे मनमे यद सी दावटी यद प्राचीन नार । -वरमेगा-नी॰

बाबाओं सता ।

क्षीर वह की हिं

शर्चबर-इ [बं] रेमरी संस्था ग्याद्वर्य गर्दाता । क्रक−ि [सं∘] सदा मृतन जीरंदा एसटा। पु॰ कावः रत्व रतुतिः एक तुमर्नवा । न्यारिकाः-कालिका-स्ता अरोग मी। यह स्ता दिनका एजेपर्क हानमें 🗓 शह-हुआ ही। - रहान्त-९ सह विधानी जिसमें बासमें ही बन्मा आर्थ्य किया हो ।- जाल-वि - गुरंतका पेना द्रमा भरा । -ज्यर-द वह कार में। बन्धे बालमें भारंत्र हमा है तका क्या । - मूंडक-पु॰ यह प्रशास राव नात्र । -तुम्र-पुर नवा क्या। बदलकी नेपाई क्यारी देसद्देश - जी-की राजा महराज्य - जीत-पु देश 'सबसी । -- ब्रोनु-११० वेसुक्य यान्दर रूपा गी गाउँ बाला स्तरप्रकरी राशि किमके शामके कि (रम्ह्योदयी माप्ति होती मन्द्रभा की निपादहीं।

माशम-पुनदे अवसा पद्ने-पहत सामा मदावधीजवा =पाक्रिका=ली॰ वह की बिमे पहने-पर्च रवोत्तर्रन हुण को १ -सिन्दिका-सी॰ मेवारी सामका कुछ। श्यका शाह ! -मालिका-मां। एक छंदा दे। धन-मस्टिका । "युक्ठ-५ मीजवाम । [मी॰ 'बरावनी'] —सुवा—पु भीत्रवास । —बीमिन्यास—पु∙ नेत्रमें ६६ प्रकारका न्यास । -यीवन-त वर्षा वरानी भारो वनामा । —योषमा —सो वह सी विश्वसे धन्त्री प्रशास हा *तरवी । -ईश-दि॰ (दि॰) रिल्डत* हुए सीर्टनाला अधिनव द्रश्ति तुक्तः सर्वत्र एए या श्रीमान् मुक्तः। -रॅगी-वि॰ [दि] निल्प नपै रंगमें रंगा रवनेवाना रॅगीका ! -- रजा(अप्)--न्मी है 'नदशरिश'। --राष्ट्र न्त्र । एक प्राचीन देश । नवध-की सरदिशादिना की नदी दुकदिन। –वरिद्ध/-मी नवीश। –वरुप्रश ~पु॰ अमरका एक भेदः। ~शसिभूत्~पु शिवः। ~ शक्ती(दित्यु)-च् दिशंबान्या चंद्रमा । –शिक्षित-पि जिनने साम हालमें बोई अना था दिया सीगी ही। बी अभी हाल्मी कीई शका या निवासीराधर आवा ही जिसमें आधानिक शिद्या याग की हो। **-शा**म-विश नवी छनिवाकाः धरच । ⇔र्मगम−दु फलीका प्रथम विकास प्रदेश समायम । ~ससि**०**~ तुर दिलीवाका पंत्रमा । -सिन्ध-वि (विश्) देश 'नीनिराजा । −स्*ति* −स्रतिका−मो॰ रूप **दे**नेशकी गाया बढ़ मी बिने बालमें दी बचा पैरा दुनी ही। नव(म)-दिर्शर्ध]जी। व. बौधे संस्था ९ १-इमारी-भी॰ सररायमें कृत्री जानेराना की कुमारियाँ-कुमारिका विवृत्ति वश्वारी होहिया, बाला, वंडिया, श्रामनी दुर्गा और सुधरा। --श्रंड-पु॰ पूध्रीके मी विज्ञाग-आहत बनावृत विषुष्ट भन्न वैतुषान हरि, हिरान रश्वकीर बद्धाः − प्रष्ट− चुन्नी, प्रद− पूर्व चंद्र सीम पुथ ग्रन श्राक करि राजु कार नेता ! - विकास-मु दे मनगर'।-इधिकि-दु समनग्रह।-दुर्गा-मी दुर्गके की विश्वय-रेपपुत्री बद्धावादिया चंद्रवंश बूच्यांका १ईशमाना कारपायमी बालराजि महागीरी भीर निर्दि बाबा + ब्रार-ड शरीरके की किए में। मानके निकानिके मी भागे है हो मेर भारते होनो क्षित्र मुख्य की कार्य शीर की शुर्वेदियों । - श्लीप-पुनिषक्ता है कि जानीन विधार्वेद वर्तिका १ ~धार्यु-स्टो॰ मी प्रदारकी पार्यु-क्षवर्गे शत्रण आहे विष भारत भीका सावा रामा संदर्भक (शर्। *), बोला वांन्संप्-छर्ण्यनमप् । -तिमि-क्षा कुरेरबी मी निविधा-पत महापत्र प्रांग मण्ड क्रमतम सन्दर भूट कीम और सर्दे। ∽पन्निका∸ भी बेन ज्योर देश अबार माप (द्वानि 🎛 इपरी शामन करहे ज्यानी जन नी क्ट्रीकी चर्नाची निमया बरबीय बर्गीएमनमें बरने हैं :- अस्टि-भी है अरबे-प्रति । - मारा-पुर्वातका सर्व भागा-स्थ-पु वा प्रकारके रक्ष-मोता नाजिक, बेर्ड, मीमेर दीरा हुँगा पाराम पत्ना और जीनका राज्य दिककारिन्दरी नवादे परमान नी दिर मूल्यमा है। रापादः बमाना म खर्र क बचान बराइविटर और

तपत्नी जो निष्णुके वरसे जन्तर दिशामें अवल ताराके इत्याँ सब्दे कर्द प्रतिशिव है, अस्वारा जी शहा सत्तर रिशामें एक स्थानपर स्थित रहता है। पृथ्वीके शशरी और बधिगी सिरे। भाकाच निष्णुः दिवः नदाः वटवृद्धः भार बसुभीमेंने एका शरारि मामक वधी। स्थायु हैंका रीमा वर्त, मैंतरी; नारहवीं बीय (स्थी); वसरा फाव्युनी, एकराबाहा, एशरा माहरण और रीविना मध्यानासिका का भग्नमानः एक सक्रपात्रः गीतका मार्गनिक भेदा । --केतु -त देत ताराका व्या मेर । -चरण~प् व्या ताक्या पक भेर । -सारक -सारा-पु क्तर दिशामें मेरके रुपर सुद्रा एक स्थानपर स्थित रहमेवाका एक तारा। -ब्राइ-पु यद दिद्यागुष्ट येव विश्वको सूर्व वरावर बचर निश्नाकी भार रहती है, इतुबनुमा ! - इसाम-ब एक वैदाहिक प्रवा किसमें विवाहके बाद पर मुंबको और संबेद करते इए इए मंत्र करता है बिनका अविपाय बब्दे ब्ह्में बह होता हं कि तुम भुक्की माँति अपक स्मर्थ मेरे गृहमें सुख भोगो । - चेनु - स्रो बोहनका नर्मे भुवनात खड़ी रहनेवाठी यात । - प्रत्-तु एक सरहका गोन । - सस्य - पुरुष्यं । - रखा - स्वी • एक मालुका। - स्रोक-पु अवदा कार, वह कोक उद्यो धुव का निवास है। ध्रयक-प्रभि ने मेरिका वह भारतिक श्रेष्ठ भी बरावर द्वराचा जाना वै रेट। श्वालु, हुँठ ।

ध्रवता-भी , ध्रवाय-पु [सं] भ्रव धानेका भाव अव-कता रिवरता। निधव ह

ध्रमा~सी [तं•] यह बद्दशता सरिवन कुरी मरीटप्रमी; साधी ही । विसी वे प्रेष ।

प्रयाक्षर-५० [मे] रिप्तु । प्रयादन-प्र [सं] भोरदे शरीरवस्त्री वालीको मैन्ही । प्रीप्य−दु[में]दे भूवता।

ध्यंत-५० [र्व] माधः मदान वा दमारददा दहनाः

सभावदा एक भए (स्या)। प्यमद्र-रि [धं] माच क्रमेरानाः काइनवानाः। ध्यंसम-मु• [मं] ध्यस्त बरनेशी क्रिया ध्यस्त होने वा दिवे जानेश्री दिया वा भाव, भाछ। एवा गमन ।

प्र्यमावसय-दु [मे॰] संस्हर । व्यसित-वि [मं] नह दिया दुना। दशया दुना । प्यसी(मिन्)-वि [में] नाग्र करनेवाला नाग्रस्थ नक

षोनेराणाः मधर (पु ग्रेत कृत्राः

ध्यत्र-द्र [मं] हेना, इब उनता मान्यि। विद्युत बता <u>कायुक्त</u> वा पनाका संदेत कीन चनाग्र आर्था लेवा देशा होता. प्रतासक नियान विक्वः स्वापारिक विकासक धर्याया चे निवीक्ष वह चंदा चिन्न के कस है शीवती भीषात रहते दे। दागा "पे यमदा पूरवरी भीरता बरा सदम्बरसायी बन्धाना पुरवेषिय सीमान्यक विकास म्बार माहि (समान्त्री) । -सेर-ति कर स्थानुका नमरा । ⇔मीव−इ वढ रह्म । −हुम-दु० तादश देर। - पर-दे भेटा। - पास-दे ग्रीकता की बना - 1 112234 08 08-14-1614 E-1434-1 मूल-१ प्रभाषकी मोद्या (वी)। न्यहिनशी वह | य्योध-३ [मं] रे थ्या ।

रेटा विसमें प्राप्त बगो रहता दें। व्यजनान्(नन्)-वि [सं] विद्वविद्वेषमे युक्त, विस्रक्ष कोई निरोप थिए की। जिल्हें पास या दावमें प्राप्त की व्यवदानाः [न्दी० 'स्वप्रपर्धाः]पु व्यव नैकर घसमे बान्य, व्यवसम्बद्धः यह ब्राह्मण यो ब्राह्मस्याके प्राविश्वतके रूपमें मारे गये स्थक्तिकी शीपनी हेकर तीचोंन निमादन बरता फिरे (रक्ः); मधन्यवसायी औरिकः।

ध्यब्रोहाक−पु [सं] **१०** 'सक्-१र'। च्यानमी पताका, शंदा। ध्वज्ञारोप्रय-पु [मं•] तंत्रा यात्रमा वा रुगाना । प्यजाहरू-पु [सं] निजित शामाद्र वहाँमे बोतकर कावा यवा दाशः विजवके शह दापक वहाँ है सावा गया भन । ध्यज्ञिक्र-पु• [मं] दांभिक, रामशै। ध्यक्रिमी-स्पे [से॰] सेना । विस्ते शे॰ ध्वथनामी, विस-

(सी) इ बास स्वत्र हो। ध्यत्री(जिम्)-वि॰ सिंी धाववाना विसन्धे पास वा शायमें प्यत्र श्री। जिल्हा होई विशेष विद्व श्री। सरायानके चिद्ववान्य । पु ध्ववा धारण करनेशाकाः ब्राह्मणः पर्वतः रका योगाः सर्वः धारः मयन्ववसाधी अलानः। ध्यत्रोचोसम् – व [मं•] शंग प्रश्तानेश क्रिया । ष्पञ्जोत्यान-५० (सं) इंद्रप्तव महास्मद । ध्यम-प्र [र्ग] शप्रः श्रंबरः। -मादी(दिन्)-प्र•

ध्यमम-प्र• [मं] शान्त इत्माः श्रान्त्वा वह प्यापार जिस्ती व्यंग्वार्थकी प्रशीति होति है व्यंजन प्रायवना भरपट श्रम्यः असन्त्रमामा ।

प्रमर ।

घ्वनि−सी [मे•] ग्रध्य भाषात । गा गुभ्य निमद्य वर्षातमक रूपमें प्रदेश संदेश मुग्न भारिने करपंत्र शब्द (श); चण्यक्ता रशीट (न्या); गीनदा सब बह काम्य जिन्नमें स्थेग्याचे शाच्याचेने अधिक धमस्त्राद्याला ही (मा) वह मर्थ मा सीने श्रमोन म निरम्ता हो। व्यंग्याची गुर बाराय। १वर १ -काय्य-द्य व्यंग्य प्रवास काम्ब बह काय्व विसमें व्यव्यार्थ प्रशास हो। - कृत्-प्र "जन्यासोड" संबद्धे रचविता मानेरवर्गनाचार्यः। -प्रध-त कान (विश्वमे प्यनिका प्रदा होता है)। -मासा-सी वंगी। रीणा !-पिकार-तु समारिकार श्वरपरिवत्रका आहुः।

ध्वतिग-दि॰ [मे॰] वी ध्वति। स्थमें स्वक्त हुआ ही विषयी व्यति दुर्वदा व्यक्तिया शक्तिया य भेषय 🛵 । ध्यम्य-दि [मं] ध्वतित होने वोस्व ध्यनित होने समा

स्देष । च्यम्यात्मक-नि [मं]ध्वनिषय व्यक्तियश्(काव)शिवने

म्देग्य प्रशास हो। ध्यम्पार्थ-धु [मं] वह भर्न तिगद्य देश रू प्रतामुलिने क्षीता हो ह

प्रमान-वि [+]दश प्रभा मह न्दिर गमा प्रशेता

ग्रम् हुन भार रहेन प्रमा ध्यक्ति-स्मे सिनेस्थ बाह्य

मराम-प्र• सि•] नष्ट होता साहा ! मशमा - म कि नह दीना, परवाद दीना।

मशा-पु [ब] मौम, बदीम, प्रदान बारि मान्द्र हव्योंके सेवनमें उत्तव दशा निधुमें कभी कमी इंदिवॉ और अदि बार्ड बाहर हो जाती है। मान्ड ह्य्य, मंत्रीकी चीमा मर् यन । - हारि-वि० किमी मादक इच्नका वरावर सेवन करनेवाटा । —पामी-पु॰ मञ्जीटी और साना या प्रेना (शाधारधवः मंगदे तिपत्रवृक्त)। -(श्रे)-बाज-वि॰ महासीर। जु॰ -उत्तरमा-नम्रा दूर होनाः गर्ने गट दोना ! - किरकिरा होना-किसा कारणवस्र नरीका समा जाता रहना । - चटमा-सरा धीनाः नश्रीकी चीनका मग्रर शता ।-खामा-दे॰ 'नवा नदमा'। ~ट्रबा−**१** 'नशा उत्ता ।

मद्यामा∮~स कि•, अ• क्रि॰ दे 'नसाना'।

मशायन ० – ५० सह करमा नाशन । वि नह बरनेशन्ता. माशक (देवल समाराजे प्रयक्त) । मर्सीं, मराजि∽दि॰ (का॰) वैदनवाका (देवल समासर्वे

प्रबुक्त-बैदे तक्तनश्, परदानश्)। महीनी∽मां• बैठनेको किया वा भाव किन समासमें

प्रदुक्त जैम-तरहनदीनी, दरदानदीनी)। महरीसा∽िव• मधा कानैवाना विसक्षे सेवनश गक्षा हा पान, मारकः जिलमें ब्रह्मा छावा ६८ महमगा। [सी॰ 'नष्ठीको' ।

मदादी (- विसर्वेशक।

मशोहर#-वि नासक।

मस्मर-५ (का) सुरे थेला पोर-कार कानेवा आणा ! मु॰ -देन:-मध्दरसं कीहा वा पान धीरना !-कगमा-मस्तरमे ध्रीप वा शावका बीरा जामा । न्यमासान्हे

'मध्यम देना । मद्दरप्रसृतिका−की [शं•]वह सी विश्वका देशासर गरा दी, बुद्धारमा ।

सक्दर~िं [मं] गड हो जानेशका माझधीक शास यमी। धन-मंगुर। दानिहारक। बाद्य करनेवाला ।

लप॰-पु॰ नान्म, नस । −द्यिष −सिप॰-पु॰ १० 'कम-प्रियः।

भपत्र-प्रदेश सद्भा ।

मष्ट-रि [मं] जिमका अपनेत वा विरोमान ही सवा ही. दिरोदितः निगधी छण। छमान की लखी की बिलाधी वित्री भर म को भाद्यपाता प्रशामना भीय, अपना मरभाग तनाहा गरान भाषा । असने । मु आधा सव (ममामधे पद राज्य पूर्व-पर दीवर आता है) । क्रिक भाषा । । - चीत्र - व पार्श्व के बानी वर्षोची (अव दरब राष्ट्र शाधी) भीकार और शिक्टर शर्मन निविद्य इ। - विश्व-दि व्यवस दाग्ड । - धतम - चह--वि स्वीष्ठित देवीया। - चेवता - स्वीक स्वादी वेखवरीः प्रत्या भूगते नागढ वर्तराढ भारत - ज्ञामा(व्) -वाम्ड-प्र जनकारी व रहनेवर महबद्ध वय आरिक्ट **मनुष्तर किया व्यक्ति ६ जाएका गयब जाननके एक** (दया (१६)। -एक्टि-विक क्षिपरी और मारी यूपे इ. भंगा − धन−रि. शे.च सीम शो यश दा ।~ प्रस्नी

-विक मामार्दित, से बेर्राइत, संदिदीन । -यात्र-विक कररहित (भ्रम्य)। "नुद्धि-नि नुद्धिरीन, प्रराशित। ~अष्ट−ि वरवारः भीपः। -हाम्प-पु॰ एउ प्राचीत देश । -स्या-संश अनुद्रुत छंदका एक मर ।-विच-(बह बानबर) बिसंह शरीरमें दिव स रह बना हो। - शस्य - प्र मानदा गोगा जो शरीरमें दो रह गर्यो हो। ∽ञुक्ट-वि॰ विस्तरत गोर्व दश हो। भुद्रत हो। -संग्र-वि॰ दे॰ 'नहचेतन'। -म्यृति-वि॰ विग्रम रमरजशक्ति नष्ट या क्षीत हा गयी हो। मप्रता-भी • [सं] मट दोरेबा गाव। भष्टा-की (शे॰) वैरवाः ध्वनिधारिती । मधाग्रि-इ [सं•] वह माझन मिराहे यहाँकी बीच रिर्फ छ न्यापित व्यक्षि श्रप्त ही गद्री ही। भद्यारमा(रमन्)-4 [मै॰] अध्य नीय। नशसिस्ब-त (सं•) ेना विद्व कितने परायो हो चीत्रका प्ला जग त्राया मुख्या मान ।

नशर्य−िति (सं] दे 'नश्यन'। मक्रतांब--वि० (मे॰) धवरक्षितः (मरावर । नष्टाधनुरुवस्थाय-पुरु [सं] यह प्रसिद्ध १४। र क्रियका तारार्थ हो-(१) वा व्यक्तिवीका अहनी वरहानीका निजिम्ब करके वा पाररगरिक सक्षमीग हारा कोरे कार्य मिह कर लेगा: (१) विभिनात्त छना अर्थवात्रका भीर प्रयान बानव सथा भंगवाष्ट्रका यक वृगरेको भावतेया होनेसे कहरावयदा माम कर महत्त होना (मी.)।

मकि-क्षा (वंश) माए। **अप्टेंड्डम्य:**−सी:[शं] प्रतिपरशः यह श महें ब्रिय-दि (री॰) एंजरीन । श्रमंद्र•-दि नि'श्री निर्मेष निरा ।

शस-की दन देशियोंको र प्रभागा संद्रा संपर्तातिमी जिल्हाः 🕆 स्पतीः सरव । 🗢 हटा – पु हिर्माः नाम । ~सरंग~पु॰ धवनारेके देख्या शमा ३ **~काव~पु**० हावियोदा वॉंद पुरुजेटा एक होय। प्रक-बाइबा-अपने रवानमे इरनेदे कार्य शनका राज जाना। - वस ऋषक घटना-लारी देवमे प्रमणनावा मंनार वीमा परन शर्थिक वर्ष दीना । "सद्देशना-दे अस पाना । -(में)डीमी करना-देशना पन दरना वस क्षेत्र देता । नदीब्री दानान्धीमचा वरत होता वर्ष हर

वाना । नसत्तासीझ~ु [मर] पारणी भरतेपा "मी (बद्यापा जिसमें यपेड अगर भारत्य जारामी भारित साव साह साह और संदर दंगने निया गया का 'रिकाम'का प्रकाश बानशैष रिशिश्चिप पुरत्र पानमध्य भारती है असमार-म दि मध होना ग्रहार होना, भारर होना भाषना शासी ।

बसबबाया-१ (बार) वंदर्श कुरतीयाया धनरा । सम्बद्ध = भी । भि । निष (ने उस् = १४६६ वे ५८) ३ मगत्र∽श्री है अस्क'≀

बमदार्-भी साम श्रेपनी । ब्रसद्वा!-वि क्यानामा किये समर्था द हो। जन्म-न्ते [वं] प्रत्येका मन्द्रते पु रेश नार्ति । वर्णक्ष स्वाहि मुनिकी माता । —तनयः,—सुर्व-पु० स्वाहि मुनि ।

भंतियेय-पुर [सं] कास्तिदेवका यह बनुभर ।

मेदी(दिन्) पु॰ (सं॰) पुण; नारकमें नांदीपाठ करने बाला व्यक्ति धिवडा बादन शिवडा प्राप्तिचेस विष्णुः बरसरका देश बवडा पेश दानकर धोरा हमा धीर संगाल कारकों और सम्बितिश कर बालि । (ति)माल पा शिवडे हरपाल देश सी हो । प्यक्ति पु॰ सिन्

-पु शिवडे हारपाड वेका सींका -पांत-पु॰ शिवः रास्त्र । -शुक्ती-की तंत्रा । -पृक्ष-पु गुनका पेक्ष । प्रविधासक-प॰ के 'सोटीसका' ।

भंदीम् मंदीरवर-पु [री॰] धिवा सिक्के वार्यवरीका अदिशति ताकका एक सेर (संगीत)।

मंद्रेळ ० - प्रदेश भी में।

मंदोई, मंदोसी--पु॰ मनरका पठिः पठिका बदनोर्द ।

मंद्यायत-पु॰ [मं] एक प्रकारका मकान जिसमें परिचम कोर दरवामा बनामा नवित है।

श्रद्र (वाजा पाना पाना वाजा व र श्रद्र - चु (श्रं) संस्था गितती। लेका १६ देवकी यक साथ। - तार - चु एक तरकका वर्गोदार। - वार - श्र

क्रमानुसारः सिक्षसिनेनार ।

कमानुसार, स्वकार-वार : ग्रंबर्श-विक नेतरवाशा, मसहरुः कुबनातः ! -शक-पु॰ वरदा भारमेक्ट एक माद को १६ र्यक्टो दोशी दें !-सेर-पु शीनका एक मान की ८ दर्यमर दोशा है !

मंशुद्ध-दि [सं•] माश बरनेवाला वानिकारका मटकने-वासार यो जानेवाला बदल सोग्रा॰ सक्स ।

नंस॰-विशह।

म-भक्ति] निरेष, वितर्क भाविका स्वयुक्त पर सम्बद्ध गारी मत्तिक नदी, ता नदी वि पतनाः रिका नदी भनुस्यः भन्नति अविकास प्रमेतिक । पु मोती। मनेषः स्वति, अर्थत् वंप गोँकः सदः हाना सारायः।

महहरां~५ मिनोदा कितृह मायका।

सर्हे−दि न्दी मदाकानी ं ≉ि मीठिग्रामीतिपालका सीतिपान्। करी भरी।

मर्डेडी -न्दोर होयी। मडर-दिर ह्या भी।

मडभाग-पुनाकः।

मबकार-सीर देश 'शका' । मबजो −९० देश 'तीन ।

শ্বরণ-বি॰ মুদ্ধা ছুলা নত। শ্বজিগ-বি নবা, ধারা।

नवासरूमार नगाः ताजाः मञ्जोदश्य-कोश्यः नियोगाः ।

नक नाव के समासमें ध्वरत कर । — बहा-दि मिन्नी मार बर गरी हो। (ता) मिन्ना बहुत सरमास् इना दो। मिन्नी देशमें। [सी 'नवकरों ।]—विस्मत्ता-की बसीमर मार राज्या। वहुत करिक टीनता महर बरना !—बहा-दि विद्याना गुरुविमाना !—विद्यां —सी-रह यस दिनके कुनीको गुँपमेंगं होठे कान नमी है। —सीर्-ु हुस्ती। यह वह । —होद्या-दे मारा वहारा। —जब-रह आरोग स्वानी करने

 मररा परता। -वृत्र-पु॰ माटमे वहनगेडा वृत्र-दे भारत्या गहना। -वात्री०-सी है॰ महत्रात्री। पहनतेका मोती । —बामी॰-स्तो॰ नाकमें दम- तिन (कनको मारू मेंबारत ही भागी मकनामी निनयपत्रिका। —सीर-सी॰ नाकसे सुन निकसनेका रोग।

शक्टा-वि॰ दे 'गध्रहरा' । पु॰ यक प्रकारका गीता इस गीतके गामेका बल्पन ।

नकरी नविश्वती (वह की) त्रिष्ठकी नाक करी दी माजी वेहवा हो। †कीश्मालका मैलः।

जकदा—पु॰ वैलोका एक रोगः सालस्य एक रोगः। जक्रत्र-पु॰, वि॰ दें 'सन्त्र'।

मक्कदी – सी॰ दे॰ मिस्टी । भक्कमा॰ – स॰ कि॰ दे "सकाता ; नाँवा नाता । स॰ फि॰

ज्ञानाः चर्याः छोइनाः शास्त्रमें दम करना । कोषना फोदनाः छोइनाः शास्त्रमें दम करना । कक्कव⊷सो किंगों सेंगा ⇔क्रम⇔वर सेंग सारतेनाका ।

-क्रवी-सी संब क्याना सेंब मारकर चोरी करना। मक्रस-सी [ब•] एक व्यवसे बूसरी बमक से जाना कथ रवानगी। बढ़ थी दिलीसे कप बनावर बादिमें हरत

कृष रक्षानगाः वद्यं या स्टलास रूप बनावर बगायमहूनहू निक्रवा-सुकता बेठेप्रतिकरण, अनुकृतिः रूप साविक्षी प्रति-किपि कापीः दिलीके वेद्य, वाची बारिका वधावत् अनु

स्तर्भ, स्ति। (-धी-पु सम्बन्ध स्तनारा । नम्बीस-चु कामबाउदी सम्बन्ध स्तनेवाना क्षेत्रारी !-मबीसी-चौ सम्बन्धिस्का हार्य या एवं !-चडी-सी वह वर्षा

क्षिण प्रक्रियों सार्द्धी संदर्भ की साद ! विद्यक्ष दृष्टियों सार्द्धी संदर्भ की साद ! वहसी−वि यो दिलीका सनुद्धरणमान की सदास्तर

असलीका बल्दा। सीटा बल्डी। विसने किटीका स्वीप

वना तिवा श्वा, सूता वना हुआ। मकस-पु दे॰ 'नरह'। -मार-पु॰ द' 'नरप्रमार'। मकसा-पु॰ दे' 'नरहा । -नयीस-पु॰ द' 'नरप्रमार'।

नक्काा−पु॰ दे 'नासा । ⊶नयोस−पु॰ दे 'नासदेहः नक्काी−दि॰ दे 'नासी । नक्क्य−प दे 'नस्स । −साह∽प॰ दे नस्साहः

नकमा—पुर्दिनसहाै। |जकमा—पुर्दिनसहाै। |सकामा≎—मं किरुकाबिट कामा नंग सोमा मिरुक्टिक

नाबिन घरना परेछान बरना नाबमें इस करना; काँपनमें प्रकृत बरना ।

नकाष-मी, पु॰ [वं] श्रीह एक्तेका शिरसे गठेतका रंगीन वा बानीपार क्षणा पृष्टा । —पोश-वि॰ शिसने नकाव भारप किया हो जिल्हा नेहरा नकावश दका हो। नकाव-प्राप्त किया हो जिल्हा नेहरा नकावश दका हो।

कारण्यः सिण्यः न कशस्य सम्बद्धाः शब्दः कस्तीष्ट्रति दशकारः।

मकारची~दु र० 'तस्त्रार्थो ।

नकारमा-च नि• धार्याहन करमा, शनकार करना । मकारा!~पु नगारी । वि निकामा ।

मकाश−९ दे॰ ⁴नश्याद्य ।

नकारानार्गे नस् दिश् संबद्धारी क्रमा । नकार्यानकोश्चरित्रकारी । जनस्य

नकाशी-स्पे॰ है 'नामधी । -दार-दि नम्मधी बार्

मकामां —पु० १० जिल्लामाः। सकामनार्गे —श्राह्माः हे जिल्लामाः।

महामी~की दे जिल्हादी ।~हार-दि दे क्रिक्त-क्षोदार'।

-वेसर-भ'+ दे विग्रर । -माधी-पु० मण्डमे | मॉक्बन-दि० [n+] दे० 'सक्षिपत ।

सॉर्ड ॰-पु नाम । -गॉर्ड -पु॰ माम कीर फता ! मॉर्गा-(४॰ दें 'नेगा' ए॰ मांगा सामु । मॉर्गा-१४ कि कॉमना ।

माँडना~स कि नष्ट होना सराव दोना वरवाद होना। विभरीत होना।

पाँच-सा॰ एक प्रकारका प्रमुखेको श्वारा-पाणी देनेका मिटीका गोला गर्वरा और शोहे श्रृंदका वहा वरतमा इस प्रकारका पीतल सारिका पात्र ।

माँबुनाक-भ कि छन्द करमा। गंगीर शब्द करना। धीकना। इस बीमा मनक बोना ।

माविकर~पु॰ [मं॰] वे 'नांदीकर'।

'सांत्रोसुख । भौती(दिन्) – पु (छं०) दे० भावीकर'। भौतीक-पु (छं०) नांत्रीसुख सका छोरणप्तेभ । मांत-पु (भ) रततः सत्तव बान्व । सर्वि-पु साम । स० नहीं। सर्वि-पु नाम ।

मॉहरू-चु है 'तार'। ना-म [सं] यह निरंपदलक घण्ड, [का] ण्या निरंप अस्तीकृति या क्याय पृथित करनेवाना घण्ट न तहीं। -क्यायह-पि दिने जनकारी वाही। -काक्स्यूर्ग-रि अनुसर्वाम, करावी। -हिन्दाव्य-ची। मह

श्चरम (देरिक, रियाकः) — बूरमांक्र—पि स्त्री मात्र क कर सम्प्राची। — कुरमांक्री—पी० कमार्थ कमार्था— कम्मेर्-चि निराशा—कमार्थी—पी। निराश्चीकेस मात्र निराशा। —क्कं-चि० (क्कंप्र) निरुध कुर्ण्ड कार्या हो। कसी देश क्षिप्रियः कृर्षा । —क्कंप्र —कक्ष्प्रा—वि कर्या स्वीप्र म समास्त्रीया मान्यक्यः — कृत्रीकिल—वि॰ स्वीप्र ॥ —क्कंप्र—चि श्चे बद्धा क्ष्या क्ष्य क्ष्य विकास। —क्कंप्र—चि स्वीप्राच्या मान्यक्यः — दृश्या—वि॰ सरम्बद्ध क्ष्यं। —क्कंप्र—चि। स्वाप्रकृत स्वाप्त्री — सरम्बद्ध क्ष्यं। —क्कंप्र। —क्ष्यक्या स्वाप्त्री —

क्षिता वा सर्वे, अमब्दः स्वीतः। -शर्हो-स॰ शहता

भक्तमार्। --ग्रहामी-न्यां पह जो अधानक वरित हो । --चाक्र-वि दुर्वकः अस्तरकः --चाक्र-वि विवयः

वेवसः गरीवः निरासः अमादितः। स॰ कामार होसरः। ~चीज्ञ−वि॰ वयन्य, द्वारह । ~खावज्ञ−वि॰ अनुवितः विसे करना कैना करना शादि वक्ति न ही।-सन्नर्श-कार--वि॰ वै 'शा-बारमधा'। --तमाम-वि॰ मवता। -सराश-नि॰ सबडु नैवार । -सर्वो-नि॰ धाम ग्राह्म होन । - तयामी-ची॰ दमशेरी दुर्वेवता । -साहत-वि शक्तिहोन, बराख ! -शक्तरी-सी शक्तिहोनता, क्रमकोरी । -क्षम-विमासमञ्ज्ञानीय वर्ध ।-वामी-चौ नास्त्रमही, मुर्खेला । ∽वार∽नि • विसर्धे शस ग्रह म हो, अर्किषम ग्रुप्रक्तिः। – दारी – दो नारार होने का यान शुक्तिसी ! - दिइंड-वि सेकर मरा म करते शाना, जी की दुई रख्य म है। ल्डुएस्त-नि सी संब म हो ।- वैहंब-मि दे॰ 'मारिहर रें ।- मुक्का-मुद्यह-रते जरबीपूर्वि दनकार । -पर्संप्र-वि॰ भी पनर म ही, बिसे थी न चाहै, ममिद ! --पाक-दि अपविद्य बद्धक्ति मैला, गंदा पासका क्षम्या। --वाकी-सीर नावास दीमेका भार जपनित्रताः श्रेष्ठारन ।-पायबार-दि॰ भी रिकाक न दी अरिश्वर, क्षयरशाबी कमजोर, नाव-वारका प्रच्या । -पापशारी-खो॰ मापावशार हीनेका मान, अस्तिरता, श्रृष्टसार्थितः ।--पुरसाँ-नि॰ काररनारः श्रमारी । −पुरसामी –त्री॰ **काररवाही अमाद्द ।**−पैश– वि **को के**श न कोण की। अध्याप्य । −फ्रस्मॉॅं −4ि की हश्य स भावे सरक्षाः । - क्रारमानी--न्ये नाकरमा हीनेश भाग । -बाबिरा-वि विसने शेष न सेंगाका ही अस्यस्क (प्रायः १८ वर्षको सबन्धामें बाहमी शक्तिय शीता **है), नाकिएका धरुटा । -बा**लिग़ी-न्त्री नागाकिम होमेको अवस्था वा स्थिति । -- बाद -- विः जिसको सत्ता तदीन∉!−संब्रु-ति भीमंद्रर तदी मंद्रका ड≉टा थरनोइन । −अर्थ-नि न्युंस्ट; टरसैद, कावर ! - सर्वी - स्वी अपुंसदशा कावरता भीवता । −माक्क-दि अनुस्तुक्ता अनुदिना अनीता । − मासुम−दि॰ की नादन व है। बदात । ~मुबाक्रिक− वि॰ प्रतिष्ट्रमः, निकाषः विस्त्रः, श्रमाष्ट्रियसः यक्ताः । <u>~स्वासिव∸ि अनुभित्त ब्युक्तः ~सुसक्रिव−िश्</u> असंबव !-मुराष्ट्र विश् विस्तारे बरधना पूर्व म पुरे ही ! -अखायम-विश् मी नर्ने न हा इदिश्व इद्वीर ।-सहर-क्षाम∽वि सङ्गाहा ∼शीष्ठ" – वि थमना – याव – दि वो विक्यान हो अग्राप्य : −रवा−वि॰ अनुपिछ। ~श्साई-नी पर्वेषका न होना । -राज्र-वि करः श्रमगुष्टः एष्ट । —राज्ञानी-न्दी । हे -राष्ट्री-सी माराव दोनेका मान अप्रमादता । -खायक्र-वि जनीरवा नीच अनम (दि)। -वाकिः क्रीयतु~सी अवनिद्याः -बाक्रिफ्र-दि॰ अगमिक वानियका सनदा । "वाजिक-४० अनुभिन भैरवानिक) ~साहरूत−वि भारतवर, मामीर्वे, भरिष्ट । —साद्र= वि कामक रंबीरा। वितित्त । -समझ-वि विसे समस्य व का प्रदार्शित दुविद्यान सूर्य । -समगी~ सी॰ जासमा होन्छा यात्र वा दर्गप <u>सु</u>द्धिशीयनो नुरौग । −साञ्च-दि+ काराव । −साञ्ची-की जान-

रम्या । -शुक्र-अ अकारम, देशरशास्त्रमं, देनतमन ।

रनेत बायनास, सफेर वर्गन है। -क्षांतिविस्तार-पु म्बार् १ – गम – पु॰ नद्यश्रीके कुछ विदिष्ट समृद्द जिसके सम्बन्धकरम् नाम कीर पत्र है। —चळ—पु राधिककः एक प्रकारका पृथन करनेका चन्न । - चिंतासणि-प्र ण्ड कृतिपत रहा। -- वृशी-पु॰ देवस क्वोतिनी।--वृश्य--पु॰ एक प्रकारका बान विसमें शिव-धिप्र भक्तभीमें विश्व निध प्राथेंके दातका विवास दें। —साथा—धु पंदसा। --नेसि-पु• प्रव दारा भंदमाः विष्णु । स्त्री• रेवणी । -प,-पशि-पु चंद्रमा ! -पथ-पु॰ मध्योके समग का माग। -पद्योग-पु॰ एक वोग विसमें सुकके किय प्रशाम करनेपर राजा विजयी दोता है। -पाठक-इ क्योतिनी । -पुरुष-पु एक प्रतः मनुष्यकी बाक्रति बिसके अंगीपर विभिन्न सक्षम अंदिश रहते व (क्यो॰)। -भोरा-प महत्रविशेषद्व रहनेका समय । -माका-सी॰ वह माला जिसमें मोदीके एकार्रस दान दी। वारा छम्दः हाबीके ग्रेका पद गहना ।- वाजक-पुन्नक्व र्श्वपी दीवाँके सममन्त्रे किय पूजन इवन भारि करानेवाका अपम आधार (म॰ भा)। - योग-पु॰ नदाप्रविदीयमें क्र प्रश्लेका योग । —योगि – पु॰ विवादके क्रिए निषिक्ष नग्रेत्र । −राज्ञ−दु मंद्रमा । −स्रोक्र−पु वद कीठ विसमें नक्षत्र रिश्न इं नक्षत्रोंका स्रोकः भाषाम् ।-- वरमे (मृ)~पु॰ आस्त्रस्य ः —विचार—म्बो॰ वसोतिवविचा । - बीचि-चा तान-तान नक्षत्रों के बायका रिक्ट स्थान में। बीदि चैमा प्रतीत बीता है (येही का बीवियों दे-क्यो)। ~बृष्टि−त्वी तारा ट्रस्ता बन्दापात। –श्युद्द~तु पराची मारिके रवामी सद्यश्रीका समक पक (ज्यान) । —धत-९ मधन विशेवकै निमित्त किया जानेवाका जन। —स्म-प्र विशिष्ट रिम्नामें विशिष्ट मध्येत्रोके दश्तीका दुष्यांत शिक्षमें वात्रा बरना निविद्य है। -संधि-नी पंद्रमा मारि प्रदोच्य पूर्व मक्षत्रथे क्यार जसकार जाता। −सप्र−पु नदर्गोके निमित्त दिया वामेशना यहाँकहोत्र। -साधक-तु शिव शंकर। -साधन-पु॰ विशिव मदावपर विदिष्ट महस्य रिवरिकाल जाननेकी गणना। -सूचक,-सूची(चिन्)-९ वह व्यक्तिओ विना द्यान परे ही क्योतियां बन बैठा हा अयोध्य क्योतिहा । मक्षप्रासृत-इ॰ [मं॰] किनी निशिष्ट दिनकी वुछ निशिष्ट मध्यों है प्रमेदा योग भी भाषाके हिए प्रशास आता जाता दे (४वी०) । मस्तिप-वि॰ [मं॰] मद्यवनांनेपीः संशारंसः द्विय सर्वा । मस्यी-वि मो दिनी मत्ती गध्यमे उत्सवदुना ही मान्वद्याणी । नसवी(विन्)-५ [सं] न्याः रिप्ता मसवरा-४ [संग] चंद्रमाः अपूर । मध्येत्वर-तु [मं] भेत्रमाः शिक्का एक निम । मसप्रेष्टि-भी [गं॰]सद्योक-निमित्तविया जानवामा वदा मण्य-पु[तंक] साहित कड संधन्त्या १ की संक्रमा संत्र इतना ।-बुन-पु मारित मार्व दावाम । -सत-द्रभ माम्लके गरनसे बहनबाता विद्या पुरुष द्वाराविदेशप गांव रक्त आदिने शीके राज आदिएर पहनवाधा मधदा (नष्ट (m) । - नवार्ग (दिल) - प्राप्ती) नार | मन्ता (गिन) - दि [से] निष्ठ - नाम् वरेनरे दि।

कुतरनेशासा । -चारी(रिम्)-पु॰ पेमके वक चलने बाता प्राणी । —ध्यातः—छोक्तिया»—वु ौ • 'मसस्वत' । -का**ड**-पु॰ नराकी जर ! -दारण-पु वात्र पश्ची । - निर्कृतस-पु॰,- रजनी - ली॰ गहरमी । —सिष्पाय⊷पु≉ सेस । —पत्र्∽पु सान्त्र गइनेका विद्या -पर्की-मी दृश्चिका नामक शुप । -पुप्पी-सी+ पूदा। -- फालिकी -- जी होस। -- सिंह- पु संदरी ना महानर छगाबर नास्पूर्नोपर बमाबा गर्बा गोरू या बंदाबार चिद्धः - मुख-पु० वसुद्। - रेख+-की दे• 'नए धत । -- छेलक-पुनर्रोगनेशका । -- सेला-सी॰ मलनिका गरामी रँगाई। - विष-प्रश्न वह भीव विसर्ध मानुर्वीम विष दी-बीध मतुष्य कुत्ता, वंदर विष्यी मादि। ─विष्क्रिए─थ अपने शिकारको नाम्युमसे फाक्कर खाने-वाका पद्मी आदि । −वृक्ष-पुनोस-का पीवा । − व्रण-प्र मानुमकी धरीच ।- श्रीता-प्र छाग सेख ।- श्रास-पु॰ महरनी। -दिान्व-पु पैरक नाश्नमधे लेकर सिर एक्फे बंगा इन भंगोंका क्रम (सा)। – हाक – प्र भाष्यमम् श्रीनेशामी पीदा । मद्रा−स्पे [का] रेश्रमकातम हभा तामा पर्नमक्री दीर। मन्तवण-पुरे 'नधव'। ~राज्ञ -राय-पुरु पंत्रमा। नसप्तर≠-पु दे 'नस्त्र । मल्पतेस•∽⊈ पंत्रमा। मराध्र≯−पु•दे नक्षत्र । मध्यमा—स कि॰ नद्द करनाः यार करना । अ॰ कि॰ बॉक्प जाना पार किया जाना। मन्त्रवान≎~पु• माध्यम् । नसर−९ [तं] मधार्पता व्यक्त प्राचीन सन्तः। मखरा−द्व (का॰) विकासपटा हाव माव¦ नाज-सदा। विखावयी बनकारः वनमः । स्तिहात्त्र देश्रीमाजः नगरा । ~(१)बाह्र-दि मगरा करनेवाना। ~बाह्री −गी॰ सदारा करनेद्ध किया । मगरायुष-९ [मं•] रे 'नशायद । नगराह-इ [सं] करबीछ क्लेट। बग्रहीट॰−छो॰ नराइन । मरतीक−इ (सं॰) सामृत गहनेदा भिद्रा स्थापनारी । मन्त्रीय-९ [सं] मदा नामदा गंबहुम्ब । नग्राधात्त-तु [मं•] दे॰ 'नग्ग्या । खड़ारेंमें नरा दारा किया गया भाषात । नररामस्त्रि−न्दी [सं] वदं छण्यं क्रिसर्थे महनेताने एक तूमरे**फ्र नगमे आ**पात **द**ें। नन्त्रापुष-पु [बं] खिदा वापा सुनी। मन्तारि-पु॰ [सं] शिवदा वद अनुपर । नगामि~षु॰ [तं] धोग धेस र नगामु~तु [सं] गोनवा देश । मन्याशी(शिष्)-पु [तं] प्रस्कू करी। नहशास-पु बद्धां कर बाजार। बीतीश बाजार। बाजार । वरियामा॰-म जि माधुर्म्म सरीयनाः (स्मिमे)

वास्त ५ग्रामा र

शरी-मा [मं) सम माधद गंपण्य ।

माननेशका । मा.सन-प्र (फा] देश 'मानव'। मान्युना−5 [फा] दे साल्येग'। पा सम−प (फा॰) सँगहिकोके कनरी सिरेपाका कठिया भीर सिपटा जावरणा योपायोद्धी ढाव वा गुरस्की नहीं हुई। कोर !-सरादा-तु साम्य कारनेका आका नहरती। म् - छेना-नागन करायनाः वीदेश ठाउट साना । मा सभा~त फा॰ो एक नेवरीय जिन्नमें औंसीमें सफोर क्रिक्षी पर बाठी है और भीरे-भीरे प्रवक्षिणीवरका दाँक केती था लाक बीरे भी भी शिक्षी ऑक्टीमें पह जात है। एक प्रकारका क्याचा जो पर्द और रक्षमके वागरी शनता है। बारा-प्र• (एं) मनुष्यके आकारके पातानवामी सर्प जिनको राजना देवबोलिये हैं (इनमें मुख्य ये हैं-अनंध बासुकि, प्रम मदापय छन्नक, कुकौर क्योंटक और श्रंक): श्रापः एक प्रकारका काला साँप विसक्ते सिरपर दी नरम-भिन्न होते हैं। पर्नतः हाथीः नारकः नामकेशरः पुष्टाम स्वधीरमेका एक महारका व्यक्त एक बंदा वस देशमें बस्तनाकी एक जाति। रोगा सीसाः मागरभाषाः मामार नीह(का) अ.र. मनुष्यः बाहतेना नक्षणः सुँदीः भारती संबद्धा ।-क्षंत्र-त इतिकंत् ।-क्षम्यका -कम्या-कोश मागजातिकी कन्दा (पुराजीमें मागकन्याओंके सीदर्वकी बही प्रशंक्ता की गयी हैं) । --क्रम --तु॰ हाथीका कामा रेंड (जिसका पत्ता शामीके कानको सरह होता है) र-किंजर क-प्रश्रमार्थेशर ⊢कुमारिका-नी शुक्रमा गर्मी मे भेक्सर-को सफ्त महक्दार कुर्लेशका एक सरावदार देव जिसको सक्ष्मी बहुत क्ष्मी होतो है, नायर्नगाः वजकार । -संड-पु भारतक नी गांगींमेंसे यक । -गंबा-सी माकुकोबंद । -गार्टि-म्यो॰ अस्ति। भरवी वा पूर्वच्या मक्कम्बर रचनेके समवकी किया ग्रहकी मति। —गर्म — षु सिहर। —र्चपा-क्षां> नावश्वर। —स्व-प् धिर। -पद्भवा-मी जामस्वीका पेत्र। -- न-त सिद्दा रॉना। - बिद्धा-को० वर्नव्यूका सारिवा। -जिद्यान्सा मैनस्नि । -जीवन-तु शीवा। —सारा>−द्र अहिकेन अक्षानः। ~ईत ~ईतक-द्र श्रामीशीतः दोवारको भूँदी । —वृंतिका—म्पो॰ वृश्विद्यानी । -वंती-तो इरिताची क्षेत्रा नामक भीपनि । न्यूसन- मानदीनेका पीचा !-श्रमशे-खाँ॰ के 'सानदसन'। —ब्स्वा−सी॰ एक पेड़ जिल्ली शक्ती बहुत संबन्त होंगी है। – इस्रोपम– इ. फाल्सा। – इसा–नि [६] (बह ऐसी हाची) जिसकी बुँछका मिरा सांबद असके बाकारका हो। -हीन-दुर्ग हि] एक छीटा बहाती देश । -दीशा-पु [हि] दक बापा विश्ववे बदनियोकी समय जर्फे कपासे केंद्र वही-वही परिवर्ग समग्री है। यद तरहका करुमा और बॉटेशार थीना । 🗝 🗕 हुम--गुनुषा मागकती । -द्वीप-प्र भारतनपेका वद संद (पु) । −घर−पु जिल्। −ध्यति−सी वद रागिनी । -मक्स्प्र-पु अस्मित्र उक्षय । -अग्रह-पु मनमुष्ता । −मासक-द्राराज रोवा ।−मासा(सम्)~ तु द्वक्रती। – नायक – पु अर्≥का सक्ष्या अर्थन अर्थाः भाक प्रमुख जाम । -विर्युद्ध-पु दीवारकी वर्ग भूँही र

~पथमी~ली॰ मानय-गुद्रा र्वथमी त्रिम दिन समासमी विंद् माग वेगवाफी यूगा करत है। -पति-पु॰ सर्गरात्र नाशुक्तिः इतिशराभ देरावतः ल्यमानस्य मागरमनीः। --पत्री-न्सी० छक्तम्या। --पत्र--तु० एक रशितंत्र। -पाश-पु॰ वरणका अस्पमृत पाश; कार्र फेरका क्रेश; धौषीका प्रेमा । -पादाक-दु व्हरविश्व । -पुर-दुः बानामा दरिनना शामक पुर बढ़ों पर्वत है रूपमें स्वक्रीन वाजवने वंत्राका मार्ग रीका थाः मध्यप्रदेशको । राज्यानी । --पुष्प--पुरु र्थप्रह, मानकेशस्य पुत्राम बुध्र । ---कामा--की वेडा। - प्रियक्त - की पीओ जोडी। मागरीना। --प्रथी--सा॰ भागदमनीः मेहासाँगी ।-प्रत-प्र॰ [दि॰] एक लगा !-पापी-सी॰ [हि॰] पृहरकी वादिका नव यौगा विसमें दश्मिनोंकी समय बाब्स स्रोपके करके भाकार के बॉटेशर दक क्षेत्र है । -फक-तु परवक ।-कॉस-रुदे∘ [किं] वे॰ 'मागपात्त'। —क्रेम –पु अफीय। —र्वधक−प्र दानी देशमेदाका । —र्वध-पु॰ ग्रेस्स्य पेड़। --बल-पु भीम (जिन्हें इस हजार हाविजीका क्क वा)। ति जो दावीक्षे घरह बक्जान् हो। --चस्र--न्ता शांवेलको गंगरम । —बेस-मो [हि»] शक्यो वेता - भगिनी - ली वासकि नामकी वास वक्सा। -सिद-पु॰ एक तरदका यारी साँप । -श्र**पण**-प्र शिव ! - मंबक्किक-त मुँदेरा ! - मरोब-त [दि•] कुरतीका बढ वेंथ । -मकु-५० देरावत । -माता(त)-स्ता वानोंके वाता कर_े सरता। वेन*स्कि* भारतीकरी नाता सनता **रे**नी ! ~सारं~पु॰ काका भॅनरा ! –सुरर-प्र गनेश । −वश्चि−की बोलर्स तक्षणमें भाषीकीय पैरावा वावेपाका पुषाना, पद्भन आदिका संगा शंथा। —रंग−५ नारंगे । --रक्त−५० सेंद्रशाधी वा मांपका रका - राज-पु रीधनाया बहुत बड़ा सांचा देखना थीमकाव शाथी। धेंटश्यरमञ्जन प्रवर्तेक (साल । 🗝 दक-त्र मार्गाच्य पेत्र । −रेम्रु−पु० छेदुर । −सरा∽धी पानको नकः सद्भा किस् । —कोक्र —धुः पाताकः। −क्षीस− ए॰ नार्गीका वंदाः श्रद्ध कातिको एक श्राप्ता। विश मानर्शक्याः मानरंशमे चलक । ल्बल्सी, ल्बल्सेल्सी धार्मान्धे वक ।-बारिक-पु॰ राजवंजर। क्रीसवान वहा-बक्ता गरका मोरा वाभिनीया बूजवा मंद्रकीका जवान व्यक्ति । न्यायी-स्था । भेडमाधः वरमार्ग विसमे अधिमा जर्मा और क्रीक्स मध्य परते है। बरवक्से एक प्रमी। ~बुक्क~पु नागरे-प्रत्या पेड़ । −सुदी-सी दंगरी पन । -संमन्-संभव-५ सेरर । -साहप-5 श्वतितापुर । −पूर्यमा-स्तै० मूर्यगानी, हम प्रशासी रास्ता । -स्तोकक-पु समुनाम विव । -स्कामा-क्षी जागरंतीः वंती । "व्हेंची-क्षी और कांग्रेस गंप्स क्कोरको (−इमु−पुनया नामका र्यश्रह्मा (शारामती∽नी॰ [में] ४६ ल<u>ना</u> । भागर-वि [नं॰] नगर-नंबरीः नगरमे रहवेशानाः वद्रध

वाकारः पुरा जिलमें सनर-संबंधी दीव दी। सबरमें बेला

क्रामेरालाः नवः जामसेन । पु अगरनानाः ग्रीरः भद्रर

सभ्य पुरुषा वैवटा बानकारीने जनकार करमा। हीका

बारंगी। बागरमीयाः व्यानवाताः इति यदा मीर्यमे

दरमा जो भोतमें न भाता हो। जो भागाय न हो। प्र दिगंपर जना क्षपमकः डॉय करमेनाना वह विसके कुली रिसीने नेद-शासका अध्यवस म किया हो (ऐसे व्यक्तिमा बास्य प्राद्या नहीं हैं)। यह विश्वने गृहरबाजमके बाद शीव सम्स्वास ग्रहम कर किया हो। सेनाके सार रहनेवाला या भ्रमण इरमेवाला चारण शिव । ~श्चपणक्र ~पु० एक प्रसरका बौद्ध मिसु । -जिल्-पु गांचारका व्यक्त प्राचीन राजाः कोश्वरका पक प्राचीन राजा । - सूचित-वि ओ इस प्रकार सुद गया ही कि उसके पास धरीर वकनमरको बस भी न रह मधा हो।

शरवद्र-दि [सं•] शंगा, दिवन्त, निरावरत । पु॰ दिगंदर वैन वा शैका नंगा छन्यामी। बारण ।

मरतका, सरिनका-ली॰ [मं॰] मंगी, निर्मेख सीह वह क्रम्बी की रजस्तका न दुई दी।

नाना-ना [रं•] वह कन्या वो रवोक्तेको मासन हुई हो। इस दा दारह वर्षसे दान अवन्तानी कन्या ने दिना कनरके छरोरको वकें भी भून फिर सकती हो। भंगी या देशया ली।

भरमाद शामादक-पुर [मं] वह को बरावर लंगा बुमा करे. बराबर संगा रहमेबाका। दिलंबर संगरायका जैन या गीतः।

बस्मा−द्र दे 'नवना'ः ममर-पुर देश 'नगर'।

मधोष-५० वस्त्रुस् ।

मध्या-६० फ्रि॰ क्याना पार करना।

मधामा-स कि पार कराना कॉबनेश काम कराना। मचना • - अ कि: भाषता शत्व करना। इवर उवर मर

कता । दि॰ मार्कमेनाचा यो मार्थः की नरावर इधर-पथर पुमा करे जो किसी एक स्थानपर 🛚 रहे। मचनि = न्यी = नायमेश्री फ्रिया या बना नाथ ।

मचनिया॰ – प्राथनेका पेश्वा दश्मेताला। नाममेताला ।

मचनी-दि स्ती नाचनेदानीः क्रिमी एक स्थापपर स रहमेदानी (न्दी) ।

मचप्रया-प्रश्नाधनेतानाः।

नवाना-स कि नावनेमें प्रकृत करमा। इरान करमा_र परेशाम बरमा। क्रिमीसे नरह-तरहदे बाम करामा क्रिमीसे भी काम चाद वह काम कहाना। शालाईमें प्रमाना। श्वरते उपर पुमाना वा केर्ना ।

मिक्टेना (सम्)-प्र [मं] उरावक भृतिका प्रव विभन्ने शुप्तम माद्रान माह किया बाइ अग्नि ।

मियर-वि [वंगी हान्यक्षा।

व्यक्तिराज्ञ-रि माध्या दुवा चंदन । [सी मधीली ।] मधींहर-- वि भी श्पर्त उपर पृथा करे अपन अवन विकास- विदेशादे छै कालमें क्यान संबोदे जैल -मनिराम ।

मछत्र -प दे भागत । नप्रशी −4 जिसने निर्मा अच्छे मण्यमे जन्म लिया हो मान्यदानी ।

नहरीध∽न (का }ससैप, याना

महर्गाकी-रि [का] निकास १ पुरु निकास गरिया ।

स्वा॰ समीप होने या रहनेका मान, समीपदा ।

शत्तम−की दे 'नवम'। नक्कर−स्ती॰ [ल] धर्ट, निगत्तः कृपा, त्या निगरामी, देराबाकः कर्राष्ट्र, दोनाः परका व्यानः सपदार स्पानन मेंदा बहु रुपया अद्युरकी आदि जिस अभीमन्त्र राजा या प्रवादनीहै छोग राजानी या एके जमीदारीका दरवार. खोडार था किसी *जम्य* विशिष्ट जनसर्पर में⁷ करते **हैं**। चरावा काशवा ।-अंदाजी-मी जॉब, परस्र ।-बंद-वि॰ वी किसी स्वानमें कड़ी निगरानीमें रसा गया हो नौर विसे निश्चित शीमाने बाहर जानेकी मापा न हो विसे प्रवर्गकीकी सवादी गयी हो । ५० सकर्गकीका सेक दिकानेवाला बादगर। -वंदी-की वह समा विश्वके बनुमार विश्वको किमी स्थानमें करी निगरानीमें रका बाता है और निश्चित सीमाधे बाहर नहीं बान दिया बाला सवरबंद होनेकी रिवित; बाहुका एक रोक्त निसं बार्पर वर्शकोको नजर गाँगकर किया करता है। −थारा∽तु घरसे निकाद्वका नाग । −धाक्र∽दि संद वर परराजेवाकाः द्वराधारी करनेवातः । नवः मिद्याकः-षु मेंट-अपदार। -सामी -सी॰ सुवार वा मंद्रीपमधे किए किमी कार्य या लेखको देखना । -हाया-दि० सप्तर चगानेशामा । स्व-र्भवत्त्र करमा-नवरस धाइना रहि भ कावनाः नापसंद करमा । - भामा-ियार्थ देमाः -करना-देशनाः भेंदः उत्तरार देना । -पर शहमा-(किलीका) कोपनानम दीना। पर्नट मा बाता । −फिससमा−निमी चीबके बहुत संदर दोने≼ कारण वसर नियाद म दिक्ता । -बदलना - नद्र द्वाराः इराहा

वरकता । -वॉबबा-नवरवंग करना, बाद्धे ऐसी थीवें दिसाना विवका अस्तित म दा। -साना-स्री **श्टिका अनुर दोना । ∼समाना**~ीमा करना । जजरमा ७ -- अ० हि.० देखना । स. कि. जजर लगामा । श्रष्टशासना १~स कि नजर करमा, मेंटमे देना, उदायन के रूपमें देनाः सबर समाना ।

जजरामा −५० मजरके सीरपर भेंटमें दी जानेवामी बस्त था द्रम्य प्रपादन, वपदार । श॰ कि. नवर छन जाना । मु• कि सबर क्रपाना।

श्राप्तरिश्नभी दे भिष्ठर ।

सञ्चल-पु॰ [अ] जुकाम, प्रविद्याय सहरी। जजाकत-स्या (फा॰) तुरुमारता ।

सकात-मो॰ [स] शक्ति, बुरकारा ।

मज्ञासल-न्यो भाविमदा पनः नाविमदा महदूमा **वा** दपनरः प्रवंश र्शनकात्र ।

अज्ञारत-की माजिरका ५४ माजिरका महस्मा था इपनुर ।

महारा नाहारा∽पु [ल] रस्यः पत्ररा दशना ।–शान

-विदे भटरवात्र । नजिकामा≠−भ कि पास प²पसा, निरद पर्पना ।

शजीदण-ज मस्त्र, दम। महार-को [#] बरचरण १६ो७ मिगल (स्मी हराभका वर कैमला यें। कही श्रादे हुन्हें हराभूमें

मिगाक के हीरवर देश किया जात ह

(हो)भाता - नरारा-पु है 'नाज नरारा ।

माहाँ-विश् (का॰) जीयमानपुकः गर्नित मसीका।

माहाँका-विश (का॰) जीयमानपुकः गर्नित मसीका।

मुग्तकमानोके सभावता एक राजकभैवारी विश्वके कवर

रिक्षी हिंछ वा राम्बके सब मकारके मर्थकका वृत्तै वाविष्य
रदावा वा।

माहिर-वि [स] देससेवाला बर्सका पु॰ वह की देकभावकरः, निरीस्का। क सी॰ चेनपुरकी सुक्व परि

साह बरं, निरीएक। । श्रीं के प्रपुत्ती मुक्य पीर्
चारिया।

मानियानी [[बर्क] चतरवेवाका, भीचे आनेत्रका;
प्रारतेवाका। मुक्कमानामीने आना, अवतरित दीमा।

मा खुक्क हि (कार्क) क्रियान प्रकृपता, अवतरित दीमा।

मा खुक्क हि (कार्क) क्रियान प्रकृपता चहुत भागिन वारिक
सो करते हुर बार्क, फुर बाद या नह हो बाया प्रकृपता

मंदीरा संकर्षकु स्वनदेवा। मार्थिय। न्यूयाक है

सर्वा (कार्योमामा) निम्मानानी है के भागुक्क
स्वा () नव्य निर्मान कि स्वा प्रारावाका सीमाकान,
सुकृपता । पुरु क तरहवा वारिक कष्टा। निम्नायान
दिन भी किमी वादते बहुत करर प्रमावित हो साथ सिर्व
भीर्य वार बहुत कररी सम आदा विश्वित हो मुद्धानियान।

मार्थ ।

भाजो नाजी १-सी नाजनीः विवर्णना । जाद-प॰ सिंो गुन्दा नाजक असिनवः एक गुन्त कर्नाटक

भारकाबतार-३० [लं॰] यह मारकि धार्यन बूसरा मारक।

सार-सिया-पुरु अभिवेदाः व्युक्षिया । सारक्री-धी (इक्षे छवा । वु नावक रीननेवाका अधि येला ।

मारकीय निश् हिंगी मारक मंत्रीश मारक विशा । कारमा-क हि॰ दै 'मारगा' शा दिश अश्लीकार कारमा, श्राकार करमा ।

मादा-वि छीरे काथा। पुरु छीरे करका केता-कर्नज-पुरुषका एक भेरा।

पु करवाम प्याप्त । साराध्य-पु [तं] तरवृष । बारार-पुर [तंर] समितेगीय पुत्र ।

बाटार-पु॰ [न॰] मनिनाध पुत्र । बाटिया-नी [न॰] सपरपक्ता पक शेर (श्वमें बाट श्रेट होते दें श्रीट कपा करिया बीतो है)। बाटिस-[: [तन] रावका करियान रिया गया हो।

श्रीतरोग ! यु श्रीवतव । मारिनक-पुर [र्न] श्रताती विशीको वेशारिका वस्तु करण वर्षण ।

शास्त्र — पुन (मिन) गुरवा भारकादिका भारेवनद्वः गुरवरुगः।
शास्त्र नक्ष्मः। नामिताको वेद्यमुगाः स्टिनेदाः। — कर्रपुन नारक करनेवाका नदः! — यर- विन व्यक्तितासे
विद्याक प्रवाननेवाका । — प्यक्तिया—सी।
शास्त्र वर्षणे । — मिन्द्र — पुन (शास्त्र — पुन वेद्यानेवाको ।

शास्त्र पण्ड वर्षणे मेदका बीचा वे भीर पहने नामी त्रावा एवं
वर्षण भारकाद्वानेवा । — वर्षणे प्रवान नामित्र वर्षणे ।
वर्षण भारकाद्वानेवा वर्षणे नामित्र वर्षणे ।
विवा । — बाह्य — वर्षणे नामित्र वर्षणे ।
विवा । — बाह्य — वर्षणे नारक रोजनेका वर्षण । स्वार ।

च्यास-पु॰ ६॰ चानस्तरं । साव्यासार-पु (६०) मारपाला । ; साव्यासार्थ पु॰ (६) धरिन्य स्त्यारिको सिद्धा हैंने बात्या । साव्यासार्थ पु॰ (६) धरिनय स्त्यारिको सिद्धा हैंने बात्या । रिदे मकारात्या अवस्थार । साव्यासाय पुण्डा (६) पक्ष वरस्य कर्त्य । साव्यासाय पुण्डा (६) पक्ष वरस्य कर्त्य । साव्यासाय पुण्डा साव्यारिका । साव्यासाय साव्यारिका साव्यारिका । साव्यासाय साव्यारिका साव्यारिका । साव्यासाय साव्यारिका साव्यारिका साव्यासाय । साव्यासाय साव्यारिका सा

शासार-तु वह विस्के अमोनोडे फेर्र न है। :

वाध−पुनातः वीकास्टलः। जाव∽की गर्दनः

वाहा-पु निवेदित चौरत मा मेरी धैम्पेको स्वत्यो मोरी चौरी सीनी देवनामेकी ज्वाना वातिराका साम वा गोर्मे एका तिरार तुरा। वार्तियस-दि० (सं०) मसोधे पूँचनेपाका। माहिबीमें सीन उत्तरक बरामाला (सब साधि। पु सानार। साहिच्यन-दि (से) माहो वार्तिय साम बरदेवाला। बाहि-जो० (सं०) माहो। स्वत्यो पोरा देकर। चीरा-

यु॰ वरही। नयस-यु यह प्राप्तः। नाविका-नी [र्न] नाहीः महीः यह बालमान गरिकी योका व्यवस्था नाम्हाः सूचे-हरिमः वहिमाक (जिस्पर नामाव कर समय क्षत्रिक किया जाता है)।

कर समय ब्युंबन किया भारत है)। ब्याहिकेस-पु॰ [में] अग्रारकः। ब्याहिका-पुः (माडी बद्धगोगमा) वेप । ब्याही-सी॰ [सं] जन्याः स्पोरको रखनादिमी विराधी है मासिबी निक्षे बारा हरकता सुन्न रख इग्रोट्टे सर्थोंमें

रिक्षेप मिलुवेने सुन्ना मारिया निष्टण है (प्रवर्तान)।

मद्-पु• [सं•] वर्षा नदी-वैसे सोन, मधपुत्र, सिंपुः समुद्रः एक ऋषि । −पति,−शज−पु॰ समुद्र । **नर्य-प्•** [सं] श्रोर भिरकाश्य सौक्का ^कररणा। मदम-पु • [तं] शुन्द बूरनाः यंगीर शुन्द ब्रुरमा, बीरब्री भाराज सरमा । गरमाध-अ दि: पद्मश्रीका शेलमाः जावात करनाः वबमा । **मद्मु**−पु [सं•] सिंदा शलाकः गर्यमः बुद्धः नादक । महर-दि० [सं•] (वह देश) जो नदीते पास हो। निर्मव-बिसर । श्रुवाक--विक मादान, बंधमञ्ज अशेष । नदारद-वि॰ [फा] सान्धः गैरमी ब्रशः यादवः श्रप्तः। महास्र∽वि [सं•] माग्यवाम्। निका-ली॰ [सं॰] छोटी नरी। **मविद्या**—पु॰ वंगारुश्च एक प्रसिद्ध नगर । ♦ स्ती॰ नदीः 🕇 प्रतीमोद्धे भाष्ट्राएका एक छोटा मिट्टीका पात्र । वदी – सो॰ [सं॰] बकरी वह वही प्राकृतिक बारा की किसी पदान और भाविने निकलकर निशिप्द मार्गने वहती हुई दूसदी नदी झील या समुद्रमें जा मिकी हो। किन्री तरस परावंदी वही वारा । - कर्बंब-यु महाभाव पिका वही गोरसमुंदी: नदिवेंका समूद ! -कांच-पु प्रमुक्त राजक, सितुबार बुश्च; समुद्रप्रक । —कांता—स्ती० चानुसका पेश काकश्रमा कता । ⊶कुक्र−य सरीका किमारा तर । —•प्रिय-पु॰ बसर्नेत । —हार्थ-पु॰ मरीके तटीके धेक्का स्थान : - स-वि भरीमें बलक । उ. स्मुक्तका त्या अर्थन क्या भीष्या कला सरमा। ∽का−ली अमिनमंद । −आसून⊸<u>पु [दि•] शा</u>श बाहुन : -तरस्थाव-दु भार ! -तुर्ग-दु भन्नी वा धीरमें बना दुना दुर्ग । -होह-पु पार बत्तरनेसा किरावा । -घर-इ शिव (जिनके शिरक्र गंगा है)। -निष्पाच-पु वानका व्य भंदः, वीरी । -वृति-पु• समुद्रानस्य। - सव-दि आसरीमें शत्य दुनाही। उ थ्या नगढ । —सातुक-दि॰ (वह देश) वहाँ हेवल नरीके वक्षमे सिनाई होती हो। -मुल-पुर मुहाना। -रथ-दु॰ नरीका प्रवाह । -वंड-पु नरीका मोह । च्यट=ध्र भरीके किनारेका नरहका वहा वृक्ष । ~स.ळ⇒ दु॰ अर्मुमका १४ । मु॰ नमाब संयोग-एकोगरे जीती रेरडे किए डोनेवाली बुद्धी का माव। मर्गम-५ [मं•] समुद्रा बरम । मधीरा-द [रांण] समुद्रा बरण। - मंत्रिमी - म्या सक्ती। नदीष्ण~वि [मं॰] यो नदीबी रिवनितेपरिचित की जिसे मरी दे मीतर दे गुगम या दुर्गम रवजीका यान दी। महेपी-मी॰ [मं] मृमिनंदु । नय-वि [र्ग] देश हुमा। दहा दुमा। मिकाया दुमा। पु चंचना गिरद गाँउ ।

महिल्मी (मं] बॉबरेडी दिया।

नवावनंद्र-पु[4] यद दात्र-धण (३६)) ।

मच-रि॰ [स] मन्त्रे संस्थी ।

मधास-इ [शं+] समहिनाः

11

मयुरस्ट - पु कि] मदी हारा छोड़ी हुई भृमि, दरिया-बरार गंगवरार । नधना−#• कि नागा जाना जोता भागा। 6सी कार्यका बार्टम होनाः किसी बाममें एयना वा श्राटमा । मनद्र-सी॰ दे॰ 'मनंदा। नर्गवा(र) नर्मावा(र)-रगः• सि•) भनव, परिका बरन । ममकारमा*-अ कि॰ शस्तीकार करना, इमकार करना । मनद-मा॰ दे॰ 'गर्भशा'। ममदी । – स्रो॰ नम्द्र । मनदोई-पु॰ मनददा पनि । ननसार - जी॰ दै॰ 'ननिश्रां । मनिमदरा, मनिमादर*-पु॰ दे॰ 'मनिहास'। मनियाससूर−पुपविचा पत्नीका माना । वनिपासाम-चौ॰ पति या पत्नीको मानी, मनिवाससर ध्ये पत्नी । मनिदाख-पुनानास्य दर। नग्हा-ति॰ शोरा । -धूँ र-श्री छोटापन । मन्द्रिया - वि र देव 'सन्द्रा । नपराजिन्-पु॰ [सं] हिद । नपाई-सी॰ नापनकी किया या मानः नापनेकी स्वरुत । नपाक•-वि देश मायादः । नपात-पु॰ [सं] देववानमार्ग । मर्चस-९ [गं॰] द्वीप दिवसा मर्पुसक-तु [मं•] वह पुक्य बिसमें कामशक्ति न हो। दिवदा । वि (शब्द) जी न स्त्रीहिन हो, न बंहिंगा कायर । ⊶र्सच ∽पु वह संव विसक्ते भंतमें 'तसः' श्रुक्त हो (में)। नर्पुसकता-सी॰ वर्पुसकत्य-पु [मं] नर्पुसक हाने॰ का माना मर्पपद दीनका राग, मामदी। नपुआरं-पु॰ भारतेचे दाम मामेरात्या वरतन, माक्ट्ड । मपुत्री≉−दि देश 'निप्रशी'। मसा(प्तृ)-पु॰ [र्च॰] मानी। पाना । नप्ता-मी॰ (स॰) एड पहा । मध्यो-मी॰ [मं॰] पुत्र या पुत्रोद्धी सहदी। नकर-इ [स] मनदृश भावर सेनदा व्यक्ति । नकरत∽की [अ०] दिनी चीवसे मागनाः इता। -अतिहा-वि प्रणा करने योग्यः क्मोरपादक । नक्तरी-पु (का॰) जानत विदार । मक्र री-सी मनदृरको शिममरकी कमार्र वा काथ। नक्रम-पु [न०] सीस दम। मका-पु [स] पावश साथ हामिन । नक्रासम्-सी॰ वर्धास-पन्ता दीनंदा माद, दरिवादन, र्मश्रमा । मक्रीरी-सी [का] ग्रहनाई । मक्रीस-वि [ध] सम्हा वर्षिया होहर। लक्क्य−दु [अ] वास-कारमाः व्यक्तिः कामनाः वासना नक्मी-सी [मं] तांत प्रकृति करी। वसकेश कही। मेंत्रफ्टाः टिक्षा स्वार्थं (−कुश-दिः बामनामीकः दमन बरनशसा । -चुरा-िकी थामनाकेका रमन। -परस्त-वि विवदी देवाछ स्वाधी।-परस्ती-सी० दिन विना देवाशी श्वाचेवाना : -सहसूत-पुण सव

क्या है १

~पु• मामक मनदा शतुबानी ।~हााहु~पु• गुरू शानक। ~शाही-वि+ गुरू नाल्डमे शेवड विश्वका समाव गड भानक्षे हा भानक्षे प्रतको मामनेवासा । मानकार-प्रश्व मात्री विसदे समुसार अमीरार कड़ जमीतके लगानसे वरी रहत है। -इस्मी-सी वह नामकार जो दिसी एक भारतीने भागसे हो। -हेडी-स्मी किसी गाँव या तास्तु हैमें स्टाम्ट चढ़ी बादी हुई वह माफी जिसमें समी दिन्सेदारोंकी दक हो। नानकीन-प एक प्रकारका महमेके शंगका सती करका को पदम पीनमें पनता था पर जब अन्य देशोंमें भी बनमे

मानसी −सी मनिवासाम । नानसरा - च मनिया समरः पति वा परगीका नाता । माना-त॰ मातत्वा दिता मतामदा (ल॰) पुरीला। ● स॰ कि शतनाः तसानाः सन्तानाः। वि निन्ने स्रोक प्रकारके, कर तरहरी, विविधः अनेक, बक्ता । अ० विका । -बंद-प विदात । दि० क्रिमधेंमे बदन करें दिलाई हों। -- प्रचित-प्र अमेच स्वर यत्यन करवेवान्य वाच-र्मंत्र (दीना आहे) । -श्या-दि० विशिष्ठ स्वारीका । -स्था-त अतेष प्रधारके स्थ । विश् विभक्ते अनेक स्थ हों। पद्दिय । —शल-व प्रायत कारि कार वर्ष । दि० मतेष रंगीत । -विश्व-वि अनेष प्रवासी । सामारमकार्वा(बिक)~दि (सं) शांदवयत माननेपाला ।

मानार्थ-दि [de] अनेक अवींगालाः जो कर सरवर्ड कार्नोमें भी सके, जिससे अतेड प्रदोजन सिंड हो सहें : कातिहास−प• मानीका पर ।

सामी-ची शतान्ये पानी मातान्ये माता मातान्ये । स −सर साना−दोछ वह बाबा दौनका परव दो

काता । मान्द्रध-विनुधा क्षेत्रा नीच अपना पार्टमः नदीन। ग्रा॰ ⊶कातमा:–१ शाय्य सार्व करना ।

मान्द्रशिवा÷−दि श्राम मन्द्रा ।

बाल्डा = - दि० दे 'ताल्ड' । पुत्रन्दा नवा । बाप-ली किसी मानपंत्रके मनुसार हिन्द की सनी किसी बरनुको अंबार्व चीहाई शहराई कैंबाई मात्रा आदि, परिमाण माना किमी मामर्ग्डके अनुसार किमी करगढी शंको भौको अप्रिका निर्वारण बरमेको दिया। लेकाँका मान(इ. व.६ निषद किया इला पैगामा विसक्ते अनुमार रित्मी बन्तको संबर्ध निर्वारित को बाब । ∽कोलः −तीस -श्री आपने और तीनमेदी क्रिया। मायदर या तीकदर

रिक्टीत को गड़ी मात्रा वा बहिमाप । नापदामी –पु रे॰ 'मानदाम'।

बापना-म कि किमी मानरंटके बंगुमार किसी बस्तुके विश्नार परिमाम मात्रा मार्गरका निर्पारण करमा । मापित-५० [सं•] मार्च, इधाम!-शासा -शासिका-भी र प्रधानगी दक्षान ।

नापितायमि - ए० (सं०) हाजाबद्धा नवद्या । मारित्य-प [तं•] इत्रामका देशा। इत्यामका लडका । साम्राज्याः (का॰) माधिः मध्यत्यातः वेंड्रवानः सप्य भाग ।

बाक्षा~पु॰ [का] कलारी मगकी नामिके मीतरकी नत्तारीकी बैसी । वाववान-त मस्के बसीव, वीरे पानी शासिके सहते ही

जाको । अ॰ --वें सँह सारवा-प्रवित वार्व बरवा । नामक-प्र सि विरोधकी।

गामस∽दि॰ (पुं॰) नम-संबंधी अकासीय।

मामाग-प॰ (सं॰) रस्ताङ-वंगीय राजा अबदे विना. बधारवाँ 'लिपामहा जनरोवां विताः बाहर बंत्रके एक राजा ।

नामागारिष्ट-पर मि विश्वस्त प्रमाहे एक एक । नामाबास-प यह प्रसिद्ध वैष्यव साथ प्रिकारि 'बक् याच किसा है।

नामि-सी सि विदियेके बीकोबीय वेजनके मान्यास्य बह क्रिप्त किसमें भरी बहुनावी जाती है बहरवरण विकिता बरायत जनमाँके बन्दे गोवोगोध मैंगरीको तरहका गरहा. बोदी ह्रिक्किश कल्हरी । प्र अन्य राजाः त्रवामः नावकः श्रविया माग्रीप्र राजाने एवं और ऋष्यदेश्ये विद्या (४०): राजरार्थंगर ।-व्हंडक:-शबक:-शोलक-प॰ अवधी वां होती । - व्ह्रोर्ज - पुण नाल कारमेकी किया । - ज -बम्सा(भाव)-५ मध्य (जिन्हो छल्छि रिक्सी माथिसे हैं)। -बाबी-सी है॰ 'बाधिनासा । -माब्य -सी+ानाभिद्ये भारते (-पा**द्य**-५ ए**द** तेश क्रितरें वर्षीयी मानि वर बाती है ! —स—पु॰ ब्रह्म ! —सप्र— व धारीरका वह धाय मी मानिके बाद और बसके मीचे हो । -वर्ष ब-१ काक कारतेको किया। मेराया ! ... वर्ष-पुरु संदर्शको सी वर्गोमेने एक । -संबंध-पुरु एक हो बचरमे या एक हो ग्रेफर्से परक होनेका साता । नामिका∽सी [लं] बल्योका देश यापि बेमा सात्त । माधिष्य-वि सिंधी शाबि-लंबेची: हिस्सी प्राप्ति प्रमरी हर्ष को ।

माजील-प सि॰) माधिका यहका (खीके शरीरमें) मार्थि और जंबादे चेप्पका साहा कहा बोबाा समरो हुई। शामि । मान्य~प सिं•ोतिन । दि माहिनांशी।

बास~व कि ो है॰ 'साम' (सं•)। प्रसिद्धावाद: हानत मरना कुरू। साँधना बारगाए। --ब्राइ-दि० विश्वका मान बिला गातके किए विशेष क्षति लेकि दिया गया है। प्रतिब । -शक्ती-की किये कामप्रे किए सक्तर वा विधित करमेची हिया। -शार-विक मामवर अग्रिकी -विशान - व विशान-४ विश पता। - वर-दि नामी प्रविद्य निरुपात ! - परी - छो। स्वानि प्रविदेश *मु॰ −बासमानप्र होना−प्र*प्तिद्दोना। −उछ्डम - अववस कैलनाः वरमानी दोना ।- अहासाना-वराव कैनावा वदनाय धरवा । −डड जाता-व्यक्तिव में १६ काका श्वृतितक वयो भ रहना । −क्सामा −दे॰ 'साम बरना । -करना-विविध पाना बनाति माप बरना । (किसी कमरेका)-करना-श्चिको देशी उत्तरमान रिग्रीके मोथ रीप माना । (किमी बाहका)-करमा∽नाम माधके जिल बरना बरनेनरके निर बरना जिल्ला का क्रिस शरद शाहिने बंजना था वस गर्न व करना। −का∽नामगाध्या भागनापदे तिरः, वदने

ममनीय-वि [र्स] ममस्दार या प्रणाम करने योग्यः पुरुष्। समरा-सी [फा॰] पृथका बोड़ा जमा हुआ फैन की जाहेके दिमीमें निकता है। मन्देवा । मसस-वि॰ (सं॰) बनुकुछ, प्रसन्न । मसस्वारमा - स कि मगन्कार करना ! ममसित नमस्यित-वि॰ [शं॰] विसे नमस्कार किया गया हो, पृत्रित । मसस्−श• [सं] ▶• 'नमः' । ∽करण−पु नगरिकदा । -कार-पु किसाके प्रति विवय स्थितकरमेके किए सिर नदामा, दाव बोदना बादि । --कारी-की कतानुर, **सः। वर्ष**नी । —कार्य – वि समस्कार करने वीस्य वंद षीया पुरुष । -किया -सी दे॰ 'नगस्कार'। -से-प्रक बानव विश्वका अर्थ है-'जापको ममस्कार है।' मसस्य-वि [सं•] पूरव सम्प्रस्यः मध्न, विनयी । मसस्या-सौ [सं] पूजा अर्था। नमाइ-न्नो॰ [फा] युस्डयानीकी चपासनापद्यति। -गाइ-पु•, सी मरिक्यमें नमात्र पहनदी जगह ! -धंद-पु कुरतीका एक पेंच । सु०-क्राना द्वीमा-ममाबद्धा ठोड समदपर म पड़ा ना सबना । ममाज्ञी-वि [का] समाज पदनेवाकाः नियमित क्वसे ममाय प्रानेशका । -कपका-प्रान्य वह गुरू वल विसे देशक समात्र वन्ते इ. समय पहले । ममाना - ए कि शुकानाः बद्धने कामा कार्ये करना। ममित-दि [र्थ•] सुका दुवा। सुकाश दुवा। मसी−को [फा] तरी, सौ≈न। मुमुचि~तु [सं] कामदेवः वक्र वामव विशे देउने आरा वा। −हिर्(प्) −िद्य −स्टन-तु॰ रहा मस्दार−वि [फा] सकत जाहर। ममुदारी-भी प्रस्य दोनाः जादिर दोला । ममुमा-तु (का॰) किसी बरतका वह छोटा वा बीहा भंग निवसे थेधीका गुण, रवस्य मादि जाना जान बानगी। वह बर्ग्ड जिसमे यस दंग वा जातिको अस्व वस्तुमोद्या ग्रमः स्वरूप बारि जाना जानः वह जिसका सनुबरण बरबे बनो पंतको काई चीत्र तैवार की जाए। राखा । बसेर-प्र (संग) सुरपुक्तम बुक्ता रहास्त्रस पेक । नमोगुर-इ [सं] बाच्यात्मिक गुरा ब्राह्मण । मन्य-दि [मंग] दे 'सपन्य । मग्र−दि [मं] सुदा दुवा, नता विमीश कर र−शृतिं-रि शुकादुशा मग्रक-पुनि | देन । दि शुकादशा।

मधीग-वि [ते] हाहा हजा ह

मग्रित-६ [मं] २ 'समित'।

1-41(4)-14 -41(4)-14

भय-प्र[मं] से जाने दा भेगृत्व बरनेकी किया। मीति

राजनीति। सथा। स्वयदार वर्ताता सिर्दात मना दूर

दर्शिला नैविक्षा बीवनाः विकि लेगा यक प्रकारका

जना। दिन्तु । वि भेग्यब बरनैशनाः प्रवृत्तः वनितः।

मो मो। -वाविय् -श-दि गीति जाननेवानाः

दूरपदी

~मागर-वि॰ नीविनियुच। -भेवा(तृ)-पु० बहुत बहा राजनीतिक !—धीठी –सी॰ छतर्रमधी विस्तत ।–प्रयोग – पु॰ गीविकीश्वकः -बादी (दिन्)-वि॰ पु॰ राज नौतिका शाता । -विव् -विसारद-वि , पु• राव नीकिश याता। –शास्त्र-पु॰ रामनीविद्याख । –शासी (कियू)-दि॰ विनवीः सदायारी । -शीक्ष-वि०विनदीः मीविष । शयक-पु॰ [थुं•] कुशक व्यवस्थापकः राजनीतिनिपुण शयकारी®—पु॰ गर्तकीका मुक्किया । शयन-पु॰ (सं॰) के जाना था नेतृत्व करमा; शासन करना; वितामा, बापना कॉंग्स, दि । -गोचर -वि• दे गोपर'। -च्छन्-पु॰ पहन्न। -जस-पु॰ भाँस्। -पर-पु॰ पक्का-पथ-पु॰ दे 'रहिपव'।-पुर-पु मैत्र-होस्र । -बारि-सक्तिस-प्र• ऑस्.। -बिपय- च्या वरता शितिका परिपय । नयना - मी • [सं] नाउद्ये पुनको क्रमोनिका । 🛊 मं • कि॰ मुक्ता, नश्र दीनाः समस्कार करता । 🛎 पु दै 🛚 जवनामिषात्र-पु॰ [सं॰] मेजका एक रोग । मयनामिरास−दि [सं•] जो देखनेमें सुंदर हो। नेवप्रिय, प्रियमर्थन । वयमामोपी(चिन्)-दि [सं] नेत्रदी शहरीन करनेवाका। भवनी−मा [चं] दे॰ 'तदना'। लवजू~पु॰ जबनीत, मन्छन; य**द तरहद्रो ब्**टीदार महस्रह। भवनीरसव-द• [र्गण] दीपकः विवदर्शन वरतः। स्यनापात-पु• [मं] ऑराफी कीर, अयांग । मचनीपच∽त्र [सं] तुष्पक्रासीसः। नवर=-प्रभवर । मया−वि विसदा धरनारम निमाण प्रीडाशन ववने, प्रदर्तन, पान वा भाविष्कार हुए हो समय पूर्व हुआ ही, नवीम जुनम, धाबा, पुरानाका बनदा। कम उप्रका शिससे पर्-रे-परक साधारकार या परिचय अना हो। को कुछ दी समय पदने प्रस्ट दुमा, देगा गया, मिना था पावा यवा की क्षांच्या बना वा बला द्वांशा पहलेबाटका रवानापणा मिसुका धपयोग पहछे-पहल विचा जा रहा ही। जिसमें किमी इसरेने कमी काम न किया हो। जिसका आश्य या पुनरारंग जमीशालमें हुमा हो । [सी॰'मदी ।] -- चम-पु॰ मबा दोनेसा भाव, मदौनता ।-(ये)सिरसे--फ़िर्स भीर भारंभसे । भवास−पु[का]तकशास्त्रस्थानः। गरंग-पु [तं•] पुश्चेदिया ग्रैहासा । मर्रधि-द्र [सं] स्थारा भीतिक मोदन । -प -प-प॰ रिमा । नर−५ [4] पुरूष सन्। मर्रान्यद शरीरदे भाभागन कारण एक रिव्य सहति। स्वार्यमुक्त सम्भेतरमे चर्म और

वस मजारतिकी करवा सुनीले जापक एक कवि की ईकार्ड

अञ्चारतार माने कात के जरदेश महिदरे अवतार

अर्जुना विष्युत योहात प्रश्नर्दश्या भाइरा एक प्रकारका

शुर धारान्यवहारमे धारा हार। समय बाननेदे किए

मार्थे ≠ - प्रदेश 'नाम'। भ नहीं। माय~पु• [सं•] नेताः तेपृत्यः सब मीतिः उपाय हाकि। मायक−पु मि•] न जाने का पहुँगानेवासा शह दिसास मामाः विभी मस्पाय या जनताकी विशिष्ट बहेब्यकी पृष्टिका मार्ग निर्वेश कर्नक्षण प्रमावज्ञाकी व्यक्ति वा र्माधकारी अग्रमरः यह सनापति जिसके मधीन इस और सेनापति हो। बीम दावियां और घोड़ोंके तकका अध्वका प्रम अपीक्षरः हारका प्रधान मणिः केंग्र प्रवच किसी समुदाबदा आग्रगण्य व्यक्तिः श्रेगारका आलेका स्थानाना मादिने संपन्न पुरुष (नावड़के चार भंद वे ई---धोरीदास बॉरीब्रह भीरकनित भीरप्रज्ञान्त । इसमेरी प्रत्यवसे पार-पार थेत् ने के-कथिण श्रष्ट, अनुकृष साठ;---दस सरहम १६ भर दुप । इनके शाम भव और है-ज्याम सका शवम): वह पुरुष जिसके परिताही संकर किसी कान्य वा नारक मार्टिको एकना की गयी हो। यह वर्षकत्ता एक शभाः भारव सुनि ।

मायका-मी माविकाः वैश्वादी वासाः कृटवी ह मायकाधिए-५० [मे॰] राजा । मायकी-प्रश्निष्ठ रागः। -कान्ध्रवा-प्र -सञ्चार-पु॰ म्ब राग i

मायत-ली॰ है॰ 'मारत'। भाषाब-वि [ल] प्रतिनिधित करमेवाका श्वाणापकः शहाबकः। प्रश्न शहाबकः सुनीमः।

मायकी--श्री भागवदा कामः भागवदा पर ।

माधिका-सी [ti] के बाने या पर्वेचानेवाको शह विकासेवानीः बीवन तथा रूप-ग्रम्पंपन स्थेः सायस्त्री पत्तीः वह त्या प्रिष्ठका चरित किसी काम्बर्ने वर्गित शीर यक तरहारी करन्त्री। दुर्गाकी कोई शक्ति है। जरमाधिका'। मार्टरा-न [बं] नारंगीका पेड का करूर विद्य क्रमण प्राणीः मात्ररः विष्यते रस ।

मारशी-मां» एक तरहका भीडा भीकु संगरा। वि नारं मेके रगसा ।

मार-दि [हे] गर-गंदेशे मनुष्य-गंदेशे। जात्वारीमसः। प्र मरसमुदाना मन्य बालका नेश हुना नएता साह । −क्टीर-५ अरमधीरा टन बरमेगाना नाधा दिलाहर क्षेत्र भाग क्रमें बान्हा । - क्षीयम - व शोना ।

मार−भी गडमारगी। जुलाहोसी दरकी । † थ आला: प'चरा आदि १,४नेश्री शुरुकी बीरी। मोहा रहना। श्रीपक्र । -वेपार-इ मास धेर बारि बारा-पेथे । सक -सवासा -शीवा करणा-सभाः संशिव आहिये कारण मिर मीचा कर हैना ।

मारक-वि [मं•] मरक-शंबी । युक मरका मरकम पश

हमा थीर । मारिकक-दि तु [र्ग] है निएको ।

नारकी(विम्)-वि [गं॰] अरक्योगी। अरक्षी याने पान्य । पु मरकने रहनेशाला ।

नारफीय-रि [र्स+] मरह-मंतेशी करक-मोन्छेस तरहवा देमा त्रेना नरब भेगीना हो। शति तिवृक्त अति अवस । मार्क्-पु र [सं] एक प्रसिद्ध देशी को अव्यादे वारम वन माने जात है (बरा का क्यन है कि ये बंगा बनात और दरिका गुजगान करने हुए एक सोक्से इसरे शोदने बुवा करते हैं। वे वह क्षत्रहमेगी भी है और इमीकिन सपहा क्यानेशांतेको सीम 'मारब' कहा करते हैं । इनका एक माम 'बन्गदमिय' भी है)। विवासियके वह तुमा वह समा प्रतिः एक शपर्व । -पुराण-पु बक महापुराण जिल्ली सनकारिकने नारपको संरोधित करके क्या कहा है और बर्व्हें उपरेश दिवा है।

गारदीय~वि [मं] भारद-संवेधाः मारदद्यः । भारता≉-स कि॰ नारमा समझ्या भारता।

नारसिंह-नि॰ [नं] जिसमें मरसिंहका वर्षम हो। यर सिंह-र्श्वभी: नरसिंहका । पुत्र विष्णु ।

नारा-पुरु पूत्रा ना क्या मारिये प्रयुक्त मान रंगदा होता रशासूत्रा चौर्यरंपन इज्ञारचंदा सरवात क्षित्रका सामः पेशकी केंद्रकी। भरशासी पानीको मोटी भारा वा उससे बना दशा गप्रदा आका-धर्नेरिसि दिरेड वयव विधि नारा'-रामाणः किमी माँग या विश्वायनको भीर ध्वाम रिकामेडे किए शारकार उर्वद की कानेनाको सामृद्धिक कालाव। मो [रो॰] बस (रष्ट्)।

अध्यक्त≉−५ नारायण निष्याः। जाराख−प (वं•) कोहेका नागा नागा वस दर्गहणा रह

वावाभीका एक प्रेया प्रसदस्ती । नाराचिका−को [र्व] हुनारी मारिका श्राँराः ग्रीग्र माराच ।

माराची-स्थे [र्म•] **दै** 'नाराविद्या ।

लाहाराका-त [d] विष्णु मगवान् वरमामाः स्वाधित का पुत्रा जारामणकी सेमा। यह भारत वर्मराज और रध मधावतिको एक कम्वासे उरपन्न वस वीरानिक कवि की ईयरके अञ्चलनार और 'नर'के कार्र माने कार्र है। यह क्षपतिचर । –क्षेत्र-हः गंगाके दिनारेकी चार धावतक्री म्या । -प्रिय-इ शिकाकीत भेरत । -विकि-ली । आरमवान माहिने मरे हुए प्राचीकी भीप्नेहेडिक किया बरमेके वर्व प्राथमिक के क्यों कक्षा निम्तु क्रिया नव और बनर्द्ध लिक्स ही बारेनामी पति।

मारायकी-स्रो॰ (ने॰) कश्मीः दुर्यो। सत्तरा सुत्रव मनिन्द्र बनी। क्रापन्द्र मेना जिमे क्योने सम्बन्धे हार्गे-बनको नदाबतायै किए रिवा था।

आशासनीय-वि+ [न] नारावन-मंदेगीः मारावयका ! य आरंड और गारावण कविता संगरमण वशस्यान

सराजांस-५ (वं) कम और भीर बाम्म-वे तीन रिमुल्या वह बदन (ध्यवा) जिनमें इस दिवरीकी सेके रम दिया जाता है पिपरिके निमित्त धननेमें रता हुना मोसरमा नहर्नुबाय अंग जिनमें मनुष्योंकी प्रयंता है (वे)1

माराहाँसी-स्पे+ (मं] मनुष्येश्वी प्र^{त्र}या ! बारिक-म्यो० देक 'नारी । गरपन १ वारिक-वि+ वि] जनका जनीवा आश्वातिक I

जारिकेर मारिकेल-पु [शं] मारिक्य !-श्रीरी-म्योन क्ष प्रशासी विरोधी सी है।

मारिकेरी। लारिकेसी--ना (में) मारियका मारिकाके पानीने शमीरन वनमेवाला वद वय ।

405 मरवाड-न्दी॰ दे 'नाई I मर्तिम्या, भरतिया च्य ट्ये आकारका एक बाजा जो प्रस्त बहाया जाता है। मरसाँ-अ॰ बीने इय परसीचे पहते या आनेवाहेके पीछे । प बोत हुए परमाँ इ. एवडे वा आनेवाले है पोडेका दिन । मरोग-प मिशे परवित्रयः मैदासा । धारीतक−थ सि ी रायच्या थ**र प्रश्न**। मराच-प् वाग तीर मि] एक वर्णवृक्त । भराज-कि है। 'साराज 1 तराजना ३ - स कि माराज करना, मृद करना, अप्रसच करना । स॰ कि॰ माराव होनाः अप्रसुप्त होना । मराट•−५० राजा । नराष्ट्रम−व सि | सीप मनुष्य । नराचार-त (सं•) शिव । मराधिय जराधियति - प्रव [सं] राजा । मरायण-थ सिंशे विष्यु! मरायनां - पु रे 'भारावन । मराया नरायान-त सि ो राध्या। मर्जिष्ट≎⊸च नर्देह्र, राजा । मरिकर, मरिवरां - व है + 'मारिवल । मरिम्रती। नहीं है नरेकी ! मरिया - नी यह तरहका मर्बष्यानार हैना संदर्भ। मरियामा! - स॰ फ्रि॰ विद्यामा ! मरी-सो (हं] स्ताः दिः] वकरी या वस्रोका रैंगा इमा चमका नर्र पासा । यही गुणको समारीको गींस की बनी ई हमी। मरुवा! - पुं बना प्रवाद वीपीका (वीका) रंडक । मरेंद्र-ए [सं] राजाः विषरेव !-माग्र-पुरु राजमार्गः। मरेतर-पु॰ [मं] मनुष्यने भिन्न शेषाका प्राची। बानवर । मरोबी-सी क्षेत्र महिवन महिवनही गाँकी वा बनहा बना दुद्धाः । नरेश नरेश्वर-पु [Ho] राजा ! मरेम • ~ ५ • राजा । मर्रीं −भ ५ दे मिरर्छ। मरीचम-पु॰ [मं] शह प्रमुख्या विष्णु । मक−पु[4] मारः, ० दे० 'नरकः। मर्फर-प देश भरत्र । मकुट सकुटक-५० [से] नाइ। वर्गिम-९ ६ 'नरदिस'। नत-वि [मं•] मायनेशहा। पुनाय मर्नव। मर्तक-पु [मं•] नायने या मृशकरनेदा देशा करनेवाणाः भनिनताः शिषः राषाः ६६ संदर् वादि (स्तृ): पार्य मारा दानीः मीर । मर्नरी-भी ['व] मायनै या नृत करनेटा वेण करने वामी भी। मनिनेबी। इविनी। मीरमी। मन्दि। जामदा र्गश्राच्य । नम=-५० [र्न] रायटेशलाः नाथः नृत्यः,नायना दाः गृतः बरमा !- गुर-५ -शास्त्र-की नावनैदेतिए बनाया ग्या या देवन अपने दायने आनेशाना यह बाबबर । -प्रिय-रि विने भाग बराजा स्तर पुरु हिंदा ग्रेप्टर ¥1-E

श्रमेंशा≉⊷क्ष क्रि॰ सापना मत्त करना । सर्तिपेशा(ह)-वि॰, प़॰ [ti] नवानेवाकाः मापना मिसकारेवाना । सर्तित-वि० सि॰] जनावा हवा। माथता हमाः जो भाग पद्म हो । भन -प॰ [सं] तकवारकी भारपर मामनेवाला । मत-ली॰ [सं] मर्तश्रीः कमिनेशी। वर्त−वि बि•ो टेंकरने या गरपनेवाला। स्री पिताी चीसरकी सारी । कर्वत-प सिंशी यर्वना केंचे स्वरमें शुलनाम करना। नर्ती-पुरे 'नरदा'। लर्टिक−दि सिंोगरकाइका।प्र•पक तरहका पासा वा पासेश्वा हाव । मर्जी(र्दिन)-विश् सिश्रो मरबनेवासा । सर्वेदा-सी० है 'सर्वेदा । नर्स(न)−प॰ वि विसी, परिश्रस विनोद्र । −कील − प् पति । - गर्म-दि परिशासपूर्ण, विनीदमुक्त । प गुप्त मेमी । -ह-दिश् ईसानेवाला, परिवास मनक विनीत करः भारतदकारी । प नमस्यित विदेशकः। ∽शा-सी सब्ब प्रदेशको एक नती का समरकंडकी निक्तकर संभात को सारीमें गिरती है। पका लागठ मंत्रस्य । − स्रति → सौ॰ दिनो परिदाससे उत्पन्न आनंद या दोक्यी क्रियानैके Bu दिया गया परिदास (सा+)। ~सचिय ~सहर-य राजको हैंसाने प्रसन्न रहानेचे लिए उसके छात्र रहत बाक्श व्यक्ति, राजादा हैंसी-परिहासका स्पन्ना विहत्त्व । मर्ग-वि॰ फा॰ो ग्रह्मता मुलायम अनुसामाधान सक्ता सरनाः नी तन न को चीमाः विनय विसयवस्य योदाः नारिष्ठाः यंदा । --गर्म- वि सस्ता प्रशेषाः बदा-प्रता। - विस-विश्वामक द्वरवर्गाणा। समें ह-पु • [में] गुर्वे; मिट्टोब्स एक पाप राष्यर । भग्नैट-५ (वे) परिशाम-इसल मनुष्य मसुगराः बारः क्षपति। दृष्टी। रननदा अध्यमन । लर्मदा∽सी सि दि 'सर्म सिंशी'में। अर्मनुबार-प नि । समेदा सामे पावा आनेशासा एक तिवित्या । नर्सी≕री नर्मदानेसा माद ! बर्स – सी॰ बि े पापी भाषः वह सी जिसने रोतिशीको परिचयत्था गिम्ना मात्र की ही जा जो रम कार्यद किए निवुष्ट की गयी थी। ज्ञल~पु॰ पानी बाष्प व्यक्तिये यद्ध श्याजम दसरे स्थाजन्द वामेद निष्धान दाढ मारिदा बना टट्टे भागास्था योगा लंदीनरा इंद्रजा: यदमें ओई हुए हैंसे बन्द्रने इस्ते। योगी विद्री वा वसें आदित गीन वर्गा वह नाना जिला हारा परीना देश चानी अर्थर बहाबा जाना है। पेरापको नगी। • भारमी [4] । तिरम देशाद एक प्राचील और मनिद्ध चेद्रश्या शाया जिलहा दिशह विदर्मनहेल भोमधी कवा दनवंतीने दुवा था। समय ग्रेनाश एड मा जिलने में करे सहदायने एनुपत्र प्रधाना पुत्र वर्षा बा विपनिधि रानवदा ६ वा दुवा वद हरा मरहरा बसरा यह प्रधारक विश्ववेद क्षेत्र । - कास-पुरु पुरुषा

माबेश-निदा मावेल-पु॰ [मं] उपनास । कोर्द भीवा दाधीको एँदा घरेटा । -सळ-४० मारमे माध्य~वि नि । शक्ते पार करने बोग्यः प्रदोशनीय । निकलनेवाका स्टेप्सा । 📱 भारते पार दरने योग्य जवः गरापन अवीतता । नासिक्य-वि॰ [र्थ॰] मासिकासे बरस्य । प॰ मास्य नास-प [री•] मरिवल प रहना, शचा ग रहना। भविनोक्रमारः मासिकः जनमासिक श्वर । मध्येम, सब, संदार, वरवाशी। स्वामा अवस्थेत सीवा मासिक्यक-प भिर्म भारत प्रधायनः संबद्धः । -कारी (रिन्नः)-वि भाद्य करनेवासः । मासिर-प 🔎 नस (मद्र) विस्नेनलाः सरायनः नाशक-वि [सं] नष्ट करनेवालाः विद्रा देवेपाकाः सार विमेदा । मेबाका संदार करनेवाका। दूर करमेवाका। मासी -- वि॰ दे॰ 'नाशी'। नायान-प्र• [सं] मह करमा। इटामा। एरवा: निश्यरण । नासीर−वि सिंश्री भागे जानेवाचा अप्रेसरा भाने : वप्र वि॰ यट करने वा करानेवाला । कर रुक्नेबाका । प्र शेमाधा सम भाग, हरायक । नावामा#—स•िक वै 'शासमा'। मासर~न [बर] प्रतमा बाब विसमें संबा है। दी दब भारतपासी—स्त्री एक प्रसिद्ध फक्त बस्क्य पेत्र । की भीर विसमेंते माथ' यकार कहा करता ही नारी-माघाबान(बत)-वि [सं] को नह दा बाव, भंगुर, विकार मन्दर, बाह्यस्थल । भारतक-पु (रं*) यह जिसे रंघा परलीड बारिनें माशिल-दिश् [सं] या सह दिवा गका हा। विश्वास न ही वेय-भिरुष, मारितनका सत्तवा (नारितक)-मार्गा(सिम्)-वि• [सं] नाससीक, नगरा नासड । क अपने छः दर्शन है । जाशंक बीज और पैन माहता-त काशे अवयान, कामा । नारियक माने जाते हैं । इसमें पानंत गीर बारियक है 🛈 मह्म-नि• [मं] नाश-योग्य । वि वैनस्यविमें विष्यास स करनेवाला (-- इसम-५० प्रा नाधिक-वि [र्श-] निस्ता कीर्र वस्तु सी गवा हो (रहू); मारिक्ट वर्धम-चार्चक बोनाचार माध्यमिक नोमां विद्या वैभाषिक और जैस । स्रोमी हुई वरतु-संदेशी । हु॰ छोवी हुई वरतुका मारिक । ~धन-पुसोदा≝माधन। मान्सिकता−सी (मास्तिकस्य−५० (००) मारिकः मास-+ इ रे॰ नाइ । सी नाइने सरको वा हैंबी होमेका याल वैश्वरः परलोक जारिये अविवासस्वि । बानेशको भीवनः हेंबनो । -बाम-ध्र हेंबनो रछनेपः बास्तिबय∽५० (र्स•) < "महरेतदश । मास्तिय-१० [मं] भाक्का पेह । शम । मास्तिकार-५ (र्थ॰) सारितकमा । नामध−५ [सं] श्रीनीक्षमार । शास्य∽ि [सं] पत्कद्वाः मारिकासे संबदा मातिकाले मासना =−स कि मध् करमा, भरवार करना विश करप्रा । तु (वैस आरिदा) माथ नदेन । देनाः भार टाक्ना । मासपाध-प [का] कर्ण अमारका क्रिका। रह तरह माह-इ पृक्षिको मानि। • मान, मनीक्श क्ता [ते•] वंषना प्रदेश पाद्या काष्ट्रकत्त्वा । की भाविद्यवामी । मासपाकी-दि (दा) मामराकदे रंगदा । बाहरां -- विनयम् । मासा-स्रो [शंर] माध्र शानेंद्रिया दरवावेके कपर स्थापी माहमहा - सी॰ शमधार । बानेवाकी आवी समझी, मरेगा अनुसार दानीकी सेंबर माहर-तु क्षेट्र हिंद्र । -सॉय-प्र॰ नारोब्र दन पूछ रवर । -श्चित्र-प्र नास्त्रा देश (-ज्यर-प्रश्न माध्ये ह्य रीग । चौदा क्रिक्टवरेने होतेशका कर ! चताव-प्र• मरेटा ! भाहक-त भहरना साह रीना + मिह-'बारति ग -माइ-पु यद (ता जिसमें शक्त छेर कक्षे देव माहक कारी -रामा॰ । गादिन•-म परी।

जाने है। −वरिधाव∽पु॰ स″निमानका बहमा। − दाक−प माद पढ जा का रोग। ~तर-पु॰ माना। -बेच-बु मानका वह देश जिनमें बोल या प्रच वहनी वाता है। −१ंध्र−९ मारका छैर । −शेग−५० महर का रीय । --पंश-प मारुपी बद्री । --विवर-पुर मादका देए । -सीय-पु मादका बक्र बुरानिया क रिता ! - बराब - च सर्वाने माचना बदना ! मामाध-द [riv] माइका थम मान सम्बद्धी नीक । मामाल-९० (सं) कावकन ।

मासिक्यम-वि (एं) नामने प्रान वा स्वर्थरपे शका । मासिबंधब-१ (गं०) नावने पीनेगवा । मारिरक-पु सदाराष्ट्रमें गोशावरी के जन्मरवासके समीपका एक सोर्च ।

विरिधिया 🗢 स्रोत निद्रा और 🖯 मासिका-की [मं] मादा मानदिया नाक्यो शहरो | निवा-को [मं] दिनोदे रोस्का वर्षमा सहसूत्र विशेष

माइप भाइपि-३ (१०) पदवरे ५व बबादि !

जिल्ल-वि वि विकास क्योर वरनेयाना । निवय-४ [मंग] निया करना निया करनेकी किया

विद्याण-सः ४८० निदा करना, शिकायन करना ।

विवयीष-वि [मं] निश्च बरने बोस्य गर्दध्येव ।

विदरमार-निया मध्याः विरादर दशमा ।

मिक्किया∽को [सं] बरु,कनाय ।

माहिन्- ना नहां है।

मिस्त - भ० निरम प्रदेश। मियम-वि देश पीरव ।

हर्द्र थ ।

मार्थी-स रेश्वारी।

बररिया भी प्रदारके रत्मीवाका दार।-रस-पु॰ साहित्य में प्रसिद्ध भी प्रकारके रस-श्वार, दास्य, करण रीत्र, बार, भवानक, बामस्त अर्भुन और शांत । -राज-प्र नी दिनोंमें समाप्त होनेवाटा घए, तर वानुष्टान व्यादिः चैत्र और वाश्विममें छुटा प्रतिपशस नवमीतको मी रिम भिममें बुगाकी विशिष्ट पूजा की जाती है। -बासु हेब-पु• जैताके नी बासुरेब । - विध-वि मा प्रकार का । -विष-पु॰ नी प्रदारके विष-वस्तवाम, दारिहक, सस्तक, प्रदीपम सीराष्ट्रिक, श्वयक, काकबूट, इकाइक भीर प्रद्युत्र ।-स्यूद्र-पु विष्णु !--वाकि-की सकि 🔹 ही दिग्रह-प्रमा माना, जया, सहमा, विशुव्या, संदिनी, सुप्रमा, वित्रया और सर्वेसिदिशा। -सायक-पु: मी मिस बादिबॉ-१वाका नहीं, माठी, जुलावा, वहनार्थ, बरर्श, दुन्हार बमस्र और गारे ! - माझ-पु मेतके निभिन्न स्त्युके दिन तका वससे तीसरे, पाँचवें सातवें सर्वे और न्वारबर्वे दिन किया जानवाका शास !~सत्त#~ N पु दे 'नवस्रतः - न्यस-विश् स्रोकदः। पु मोक्द श्राह । -सर-पु॰ [दि॰] मी सरोका दार । वि तबी वन्नका । स्नु –सत्त सञ्जना पा साजना – शासकी जार करना ।

मदक-दि [सं•] बिसमें नी दीं। पुनी मनातीय बरतबोद्या समाहार-बैसे (मी) रहीका नवक (ना) इलाह्येका नवक ।

सवका≉−भौ॰ भौरा।

मब्ह-पु [rio] इं.स्तः द्रायोग्री सूत भावरण। **मदत्रक**िद मृत्व नया।

मकता-स्रो शयस्य-पु [से] नवा दोनेका मान नदारम ।

मदित-दि [मं] भरती और दल। नो अध्येदी तंत्वा

नवतिका−स्रो• [मं]त्हिका दे नवति । मक्या-म [मं•] मो प्रदारमे: मी प्राणीन मी द्वरही वासंदोमें। − अकि − ली॰ नाप्रदास्थे वाशी प्रकार से की बानेशाली संस्ति-अवग बीर्नन, स्वरूप पाइ धेदन अर्वन, बंदम दारय शब्द और भारतविद्यात । मदन~पु॰ [सं] प्रशंमा दरमा। ० शुक्ता सम्ब। मबना == = = कि शुक्ता नम दोना। मदनिक-स्रो मुक्तेसी किया था मात्र शुक्ता समग्र

विसयमाय मधना। मधम−६ [सी नशॉ।

मबसी - न्दो [सं•] बद्धाद्रे लडी निश्वित

नपन-वि मरीन मया। हैंगीना मुंहरा नयी सम्रक्त बुरात गुभ रवीत निमन ।- अर्मगा-मी एक प्रवारकी मुग्नानाविका । — किशाह-पुरुष्टः । -वपू-मी ६ 'अवस सनेया ।

मनवर मदयरि-भी दे शिद्धांतर ह मर्थों - दि मयम, भारते हैं हो ह बाइबह । नवीय-पू [मं] मीड रंचन दिने दर वर्दशा, भीवना चार भीता भीर वायविशंत से भा वर्णने ह नर्थाया 🗝 🚺 🖭 कर्तान्त्ये ।

शवाी-विभया। शवार्डे ७-वि० सवा । खी॰ नगता । जवारात-वि [सं] शया शवा या दाखका शाया दुमा ।

~र्सम्म−पु॰ रंगस्टीकी सेना (की॰) । जवाज्ञ-वि [फा॰] कृपा करमेवाका कृपास दवावान्।

शवाजना *- अ॰ कि कृपा दिख्छाना रहम करना।

जवाजिदा—सी॰ (फा॰) कुरा मेहर्यानी। मवाद्यां ~पुपक तरवको भाष ।

भवाबा-स कि शुकानाः नष्र होनेके किए प्रेरित करना ।

नवाद्ध-पु• (सं] घर्ने काया हुमानवा अका दाकर्मे

रीबार हुआ अब्दः नये अब्दे आगमके निमित्त दिया जामेराका करवरिदोष । नवाच−प अि॰ 'सन्धार'ी मसहमानेंके राजल-कालने क्रिया को प्रदेश का बुबेक शासनके किए निवुक्त किया जानेशाला राजकर्मचारीः मध्यम श्रेचीकेशर्तमान सुमन्त्रमान अशीयरोंकी यक उपाणि। मुसनमान रर्रसोंकी अंग्रेजी सरकार द्वारा दी जानेवाली वस छपावि । वि अहे ठाट-वाटने रदनराकाः फानुसकर्व अपन्ययो । —जादा-प नदाव-का पुत्र। वेदर सीकीन भारती । −पर्माद−प्रापक वान≀ नवादी−मी॰ नवारका परः भरारका दामः सदार श्रोसेकी रिवति। नवावीन्त्र ज्ञासनकारः नवावीन्त्रान्ता शासन वा

ढार-बाटा सवाबीदासा रहन-सहस बहुत अधिक अमीरी। मु॰-करना-नवार्थाकी तरह द्यान-दोस्त्रमे रहना ।

नवारार्ग-पु॰ पक प्रकारको बही मान । मबारी-सी दे निवारी। नवार्षि(म्)-पु॰ [मं] संगह ग्रह ।

नवासा-प का विश्वोदा बहुदा दीहित्रा मामादे स रहनेपर नानाकी बाधपाय पानेका माठीका अधिकार । मबासी∽ि बस्मी और भी । दु॰ नवासीकी मंस्या,८९। मबाइ−५० वि] मी दिन मर्चे दिनः नी दिनोंने समाप्त

किया जानवाटा (रामायम मान्कि) अनुवानस्य पाठः विमी भारत, पद्म आहिका प्रथम दिन ।

मक्षीम-दि [मं] वा बामी पहने देखा, सुना बा , दिया म गवा की अपूर्व अयाः मीतिकः। [सी नदीता ।] नयीस-पु (का॰) लिगनेशना रपद (स्म ग्रन्का मवीय बीविकोमें दी बचरपरके रूपमें दीवा है।

नवीमी-स्पे नशेसका दाम निवार । शबद्र−पु नियंत्र^{क्}र नियंत्रय-पश्च ।

मदेन्य−ि नरीन, नयाः मरी उप्रद्रा, सुवा। [सी 'मरेनी 1]

नवादां नगी० [सं०] अविवादिता सी मुक्ती। तामा और मबढ़े मारे भाषत्के पश्च जानेमें मुद्रागानेवाली माविद्या ह

नवादक~पु० [मुं०] परनी दर्गदा पानीः शीनने शमद बरही है जैतर्भ बर्धेन्छण निवसनेशाण पानी। नवार्थ्य∽पु॰ [भे] तात्रा समान ।

मध्य-विक [में] सवा स्थीना रनृति बहन बारप म्पुष्य । पुरु रक्त पुनर्नश ।

मध्याय~पृथि दे ज्यात । जस्याची~स्रो+ दे "जवार" ।

करमें ६ किए संद्रा, क्रिया नारिके पूर्व भीड़ा जाता है। पु॰ मिपार रवरका मंद्रेग (मंगीत)। गिमर – ॰ म समीप, निकट गाहा। वि कि समान। गिमर – ॰ मिसर, नाजीक भाषा, पास आगा, निक्क होना। स॰ कि॰ सार जीवना।

मिमाउग-प दे ज्यावा

निमान+-श वंतरे भेततीयला । पु भिवान, परिचामा निमामत-त्री [स+] दे÷ नियन'।

लिलास्त्र ~ला [स्रुष्ट क नवन । निमारार्ग ~वि दें के न्यारार्ग । निमार्थीक ~सीव अर्थशीतका, वरिद्रवा, वरीशी ।

निकति-को (सं॰) बहित्य-पश्चिम बीमकी शरिवाणी देपी। बपर्मकी पत्ती। अपर्मकी कृत्याः क्यमीकी बहित्य अक्समी बरिदा देवी। भागी विश्वति। कृत्याः स्वच बाह्यः

(धार); पृत्नीका ग्रीनेका तल । गिरुटक-वि दे 'निष्क्रेटक'।

निक्रन-प्र•[सं] नाष्ट संदार। वि नास्त्रानां।

निकदमा = स॰ क्रि॰ साम्र करणा ।

निकद-न॰ [सं॰] यस नवशे ६। वि वासका समीव-वर्षा, नवर्षको ने दूर या ब्रुका न हो। नवस्ति (सिन्न) -वि सामका, समीव रहनेवाका वो दूर न हो। विलये नवर्षाक्रका नाता हो। —स्थ-वि॰ समीपरव, परस्का, नवरो क्री

मिक्यता –को [मं॰] समीप बीमेका मान समीपता। निकटपना –पु॰ देश निकटता।

निक्ती—थी छोगतराम्, क्रेंग । निक्ता—विश्वित्व क्रिका । निक्ता—विश्वित्व क्रिका क्रुप्र स्रो स्रो तु

निकासा-दि॰ मिलका किया कुछ म को जो कुछ मी कर-पर न सके। जो किसी काम म भागो मी यक्तन वैकार को व्यर्थका।

निकर~पु [सं∗] समूद हुंदा राष्ट्रिः निर्पि स्वयानाः सारा[सं∗]बुटका जीपिकाः

निकरमार-असि दे निकन्या।

निकर्तन-इ [4] बाटनाः फानना ।

विक्रमां—(रिण्णकर्मम्य ची कुछ स करे । निकर्मल—धु [मं] रेल-मृरका नैदाना वरके प्रदेशनारक पासता करिना वरीसा वह मानेन को चीनमें च कारी

हो परता । निकारकः-वि कर्णकरहित्त, वेटागः, निर्धोष कांग्रवहीतः ।

निकस्तक−ार्थ कम्बर्गारम् गर्गमाः निर्माण स्वीत्रमहोत्रः निकस्तकीरम् कन्दिः स्वयारः। वि वर्णसहोत्रः। किस्तक-सीर्वासीरम् सार्थाः स्वीतस्ति। स्वया

निकल-सी॰ [सं॰] एक बातु मी बॉरी जैसी सप्टर कोडी है।

वाती है।

किक्टमा-२० कि बावर बीना या लाला, अब्द बीना।
प्रवादिन बीना गिरमा वदमा वदस बीना।
प्रवादिन बीना गिरमा वदमा वदस बीना।
स्वय बर्टुकोर्ट छात्र गिनी हर्ष बर्ट्ड्ड ब्रेच्ड बीना।
स्वय बर्ट्डकोर्ट छात्र गिनी हर्ष बर्ट्ड्ड ब्रेच्ड बीना।
स्वय वदमा स्वाना कर्डी या लाई दिन बर्ड्ड ब्रेच्ड बीना।
देवा कर्डिंड बावर क्रिंड बाद क्रिंड ब्रेड्ड ब्रेड व्यावस्थित क्रिंड
हित्त प्रवादक बामा। टिंटी क्रायते व्याव बीना। कर्ड्ड क्रिंड वार्ट क्रिंड व्यावस्था
स्वाद बीना। द्वारी क्रिंड बाद क्राया व्याव व्यावस्था
स्वाद बीना। द्यारी व्यावस्था बीना। कर्ड्ड क्राया क्रिंड क्राया क्राया
स्वाद बीना। द्वारी क्रिंड क्राया क्राया व्यावस्था

वह दोनाः मास दीमा, मिरुमा। व्यक्त दीना सुण्याः सिक दीना पूर्व दोना मणना, बारूब दोना, दिस्सा जनम द्याना पृथद किया जानाः दक्ष होमाः निर्मित होनाः रीवार किया जाला: (मडी ब्यहिका) बडर होता. बरमा भारम बरना। सोता जामा- भारिपद्वत या देशह होता। पेंसा वैशासा अक्षा । रहनाः प्रचरित होनाः वारी दोनाः प्रवर्तित होताः जपनेको दावित्यमे मुख्य करनाः पुश्रद होना गन्ध द्वीहानाः प्रकाशित होना। विक्रमा सपत द्वानाः निक्र द्वोनाः सप्रिन द्वोनाः विका पंत्र राषे यक बामा अपनेकी मुख्य करमा। वस्त्र वयन बारिसे सक्त होनाः हिसार हानेपर रक्तम विग्मे बाला प्रापना बीनाः चटकर करूप दीना पदना वासाः परामः दीनाः पाचा बानाः समाप्त दोमा बीतमा ग्रन्थाः स्वारी दीने था चन्नाईके किए ब्रिदिन दोना । ३२० निकक्ष व्यान्त-क्या जाना, पर्देश बाना। बम ही बाना, वर नाना; बाना रहता, सी अल्याः प्रपश्चिम न काना कानाः क्षित्र बानाः थान जाना करवर्ते न करना (न्योक्त) अपना वर सीत

कर क्रियो वेपनि पान क्या नामा । विकासमामान्त क्रि विकासनेया जान करामा । विकास पुर्वि क्रियोशी क्रियोशीय करमेर्सि क्रियोशी धान विकास क्रियोशीय क्रियोशीय करमेर्सि (मा) क्रियोशीय क्रिया क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रिया क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय क्रियोशीय

जिक्का - पु [सं] कड़ीया छामपर व्यानेको क्रिया विकास प्राप्ता ।

निकरा∽नी [र्ग] राज्य कार्रको साठा वा रायसीठी साठा। क॰ निकर। किकाससम्बद्धाः

निक्यासम्बन्धः (सं॰) राष्ट्रसः। निक्योपक-पु॰ (सं॰) तीना क्यने वा गान च्यानेदा क्याः।

निकार-पुर्शिको है जिस्स । निकारणाण-स कि के 'शिक्षणना' ।

निकाई०-५० दे॰ 'तिकाव । स्वी० मनार्दा क्याप्ता

नानापना राष्ट्रता । निकास-विश् निकामा वैकार ।

निकाना-छ॰ कि 🧎 दिराना ।

निकास-(४० वेदाय निवध्याः द्वराशः (४०) वर्षातः वातीः क्ष्मीष्टः वच्युकः कः अवंतः, मृद्धिः वद्युषः स्व । यह अनिवासः अधिकार्यः अधिकार्यः ।

निकासन-४ [नं] वरणा व्यक्तिया ।

जिक्सल-पु स्थि] समूद समुदायः संवातीय पर्यस्योत्ताः समूदा वासस्यामा वरमारमाः प्रदिदः स्पनः निकामाः ।

विकारय-पु॰ वि] घर, गृह । विकार-पु॰ विकासनीका काम व्यक्तिमार विश्वासनीक विकासनेका कार वा मार्ग विकास [वि] सनापर, सक्ता विश्वास प्रशासक सनाय सीवीना वा प्रस्ताम काना।

गारमः, तथा बुधना। इमा विरीय ! विकासम्भ-पु [संग] तारग वर !

विकारमा=-तु (तन्तु मार्ग वर्ग विकारमा=-तु कि है निरत्यमा !

निवास-पुर निवानों शिवानोंकी किया या माना दूररी

मसामा = - सि मण्डरमा । अकि व्हे 'सस्मा'। ससी - तो = इत्तरे फाडकी जीका । - पूजा - की = इत्तरी पूजा किसे फस्ड नो जानेके नात करते हैं। ससीत = - गो = दें 'मसीवट'।

मसीमी - सा॰ सीदी, बीना। दें 'नशीनी']

मसीब-पु [ब] दिरसा। दिरसा, भाग्व, देव, अध्या।

- व्यान-दि दिस्ता भाग्व पूर याया है। क्यान-दि

मागवरीन। - न्यर-दि आग्य पूर याया है। क्यान-दि

मु - व्यावसामा-चान्यदे सरोमे होते कान करणा।

- खुल काना, - व्यावस्था- व्याग्या, न्सीघा होगा
मागवरा परन होता। - न्देश होमा-पुरे दिन व्याना,
दिस्सक्त साथ न देना। - पुरु व्याप्त, न्सी व्याग्त

दिस्सक्त निगरना। - में लिक्सा होगा- निरम्त व्याग्त

किस्सक्त निगरना। - में लिक्सा होगा- निरम्त वे व्या

भिनना, प्राप्त होना । प्रसीवा! - पु॰ दें 'नतीव' । शु॰ - उत्कटमा - सम्बद्धा वक्टर दामा । - पुछ जाना - चस्रक्रमा, - साराना -

फिरमा-माग्वीरम दोना । -सो जाना-दुशम्यमस्य दोना । -(वे)का फर-मान्यका वेर ।

मसीम-छ। [स] उदा भोगो और स्वक्ष्य हवा शीसक ग्रंद सभीर : -(म)बहर-स्वी॰ समुद्रश्री क्ष्यों और इंदो हन।:-सह-सी सन्देखी इंदी, थोगी और स्वच्छ हवा।

शसीला - वि मसीवालाः नदीला ।

मसीहत -सी [स॰] सिक्षा कारेखा कामप्रश सम्मति कारो राजाः

नसृद्धियां−दि सनद्सः।

मध्र−५ हे नाम्रः'।

मसनी−गी धीड़ी व्येना ।

मस्त∽पु[म्]नतः। श्रुपमा ।

मस्तक−९ (सं }पत्तुश्रीकी मावने किया हुना धर। मस्ता−न्ये (सं } माकता छेर।

नस्तितः नि [मं] (वह वैक) जिल्को सम्बर्धे लाख यह नावा गया दा। चु नेता वैक।

मस्य - पुर (र्रार) नाम, श्रेंपनी। ग्रेंपनेडी एक विशेष प्रकार की श्रीपत वा विशिष्ट भीषभैके योगने तेवार किया हुना श्रम आशि नामके बाग। वि नामने निवननेवाना। भारत-विशेषी।

मस्या-व्यी [र्ग+] माभिका जाका देन शाहिकी माकते

षद्वापी यानेशन्यै रस्मी । मरवापार−दु (तं॰) नामदावी ।

नस्योग-दि॰ [र्ग] है। नरियत । तु नावदे त्रस्थि

बनाया जानवाना रेह या पशु ।

मस्म−सी [म] बंध पुत्राचाति। भाषा•−नि दे 'बसा ।

मही∸द्र यस्।

नदी-पुंत्रा सान्ता। -ए-पुंत्र धन दलरोडे सदयी विनादसे एक रत्न क्लिमें स्टारी दलायन दननी है सार्तन के जान दं की स्वहादर क्ली समात द (पुरासी

प्रथा मानावाकों में दानी व्यवस्त्यर पहरे पहल पैत्के नारम्स काटे जाते ही। बारप्नाक वारकी एक रस्म निसमें करवाके नावन् काटे वाले हैं और स्नाम कराया जाता है। सुसक-पुर वस्तिया ने करहरका पेत्र । सुसर्ग -पु नाय्नक क्यारी किसारेके पाछका व्यवस्थाना

सहरा−पु नस्रकृत । नहन सहसि≉-स्त्री मोट स्त्रींचनेद्री मोटी रस्ती ।

महत्ता*-स॰ कि भाषता काममें लगाना। महस्तीं-सी॰ दें नहर्तीं!

नहर-न्त्री वाताबात या सिचार्ड हिए किसी नहीं वा कडायवर्षेत्रे निकास गया कडामार्ग !

महरगी-की॰ हामामीका सास्य काटनेका प्रक्रिक काठा। इसके दंगका क बाला बिससे पोरतेका दौर चीरते हैं।

यदरी−श्रीः भदरके पानीसे सौथी वानेवाकी बमीन । नदरुक्षाः सदरुषाः नदुक्त∽पुः दें 'नारु' ।

बहरूा−षु भी बृदियोंबाला लासका पत्ताः नहादी आदि बनावकी राजगीरोंकी छोटी करनी। जहादाई-न्यो॰ शदकावेकी किया या यात्रा नहकावेकी

मक्ष्याक्रु—स्थाप श्रद संभक्ती ।

महस्ताना महत्रानाः स्व॰ ति ॰ श्तान बराना । नद्यों – तु पदिवेदा वह छेट जिसमें प्रशे पदनानं है।

नहरूत । भ्रष्टान-५ महानकी किया, रमाना रमानका पर्वे ।

नहाना-व कि निरम्स पानी ईटल्कर नदी जादिये गांवा लगावर था कपरधे गिरती दुई बारके नीये बैठकर मैक या बहान बूर करवेढे किय शरीरको मन्यर थीना। सिरमे परक्क विशी सरक परार्थम सरावार हो बाना।

राज्यके पथार सीधा स्तान बरना । महार-विश्वो नासी श्रेंद हा जो स्वेरेये निना कुछ सामे ही हो। -श्रुंद्द-ज नासी श्रेंद । शु॰ -तादना-जन पान बरना। -रहना-विमा कुछ साथे रहना, निराहार

सहारी-की स्वेरेका इंच्छा भोडन, अस्तान मारता; शोरवदार सामम जिससे सुभूतमान स्वरं गयोरी रोधी

नहिं महिंग - म द 'नदा'।

नहिमन नहिंचनां - प्र वेरका छोटा नेगुनोमें पहना कानेवाका विधिया जेना एक गहना ।

महियाँ । निर्म दे निहरूम ।

मही-म निश्व धरनीहिंश अभाव स्नित करनेदाता एक ग्रध्या - स्तो-स० वरि एसा म दुवा ता एसा म वानेश्री विविधि अन्यवा।

महुच-तु मि) यह माधीन धर्मती राजा जिसे अगम्यक प्रापश्च ग्राथानिमें प्रशिष्ठ हाना पत्रा था। एक वैक्षिण यह माग यह बुद्धिकरीत महत्त्र राजा। यह वेशक शर्मां एक मन्त्रा विकास

महुपानय-पु [ले॰]सारवृत्तः। महपानय-पु [लं] दश्कारः।

महराय-छी थि मिन्दरी।

निशेपक-निगाशी स्यागनं वा अर्थय इ.स्नेप्टी क्रिका वा माना धरीहा८ समा मना भरोबर रक्षनाः मरम्मत वा सदाई बानेके क्रिए फिनी कारीगरको दोई वस्त देशा । मिक्षेपक-५ [र्थ•] मिथ्रयप्रमां: वरीहर रगनेवाना । निक्षपन-प [सं] वेंदना हाबना। रखना। रयागना। चकानाः अर्थेग बरमाः भरोहर रक्षाता । निभोपित-दि॰ सिं॰ो निरावाया द्रमाः वंबद वा वरोहर रसंदावा दशा । मिक्षेपी(पिन)-वि॰ [पे॰] मिक्षेप बरनेशालाः परीहर रसनेवाना । निक्षेता(प्तु)-पु [तं] दे । 'मिलेक । मिझेय्य-वि॰ सि॰। सिगंप कारी बीम्ब । मिस्रीग=-पु देश मिथा। मिसंसी#-दिश् देश 'तिपंती । निसंह-वि मध्या इपर-उपर नहीं विश्वास होन्छ। मिलप्टरां - विश् बढोरहरव, विश्वर विर्देश । निस्तइ ट−नि॰ जो वहाँ स रिके, बो इवर-क्वर मारा किरे। सर जगह तगरा-कसाइ कानेसकाः वो सन क्याकर कोई काम म करे। जिस्से कम्र करते थरत य वने निकरमा । निरत्नम-५ [सं] सोश्नाः नावना । नित्रश्मा-भ कि निर्मेत दोवा शब्द दीना (निसी बरतक्र) और मविक (त मामाः वरिमावित होना । नियरबामा-स॰ वि: रक्ष्य बरामा साद बरामा । विसरी-मा॰ यहाँ रमोर्ड, 'ससरी का उद्या । निरार्थ-६ [मं+] इस इजार करोश क्रिया धोटे करका। प्रदक्ष इजार बरोक्टी संस्था। मिराबगार-अ दिसक्ता केरण ! निर्मात-दि [तं•] रीहा हुना। बमाना हुना। गाहा द्वभा । निस्ताद्≉−द्र० है 'निवाद'। मिनार-प सकारं। समान्य । विलाश्या-सं कि॰ सक्य करणा गांड करणा निर्मेड बनानाः चनित्र करमा शुद्ध करमा चापते रहित करमा। निमारा-प शब्द प्रेपार करनेश कराब । मिलालिमां - वि निना मिलावटहा, विकुछ वर्षत्र । मिलिस-रि. मि] सारा नेपर्य शरा निरुद्रमा निराहना॰-४० वि.० वट कानाः नजात ही वाना - 'नावी सूर्यी तक निग्रय -क्नीर । विध्येष - पु दे निष्य' । मिश्रप्रमाध-मध्यि निषेष काला यना काला है क्रिकोट-दि जिस्में दिसी प्रदारका कौरावन स है। बीपरहित निष्टनंडः विहृद्ध। म्यष्ट, शाक्तः व निर्माह रीक्षर नेगरके शहमनता । वियोजना - १० कि माध्यमे मोधना । मिमोबा-वि करीर हरववाना, निग्दर । मिर्गर-प्राव्ह ब्रो को दशके काम आनी है। निर्मादना-स कि रबारे वर्ग नागना ! विर्माप -- विकास मेर स हो अवस्थित है निराष्ट्र-सी [रो+] देशे अस्ता हाथी वॉबरेश्व जेंगीर !

वि० वेहीमैं बढहा हुआ। मिगदन-पु [र्ग•] वेश दावनाः वंत्रोरसे बीपाः। मिगबित-वि॰ सिं॰] वेही वा अंग्रीएन वंचा या बहुता EMI 1 निगय~पु॰ [सं॰] वकादिका प्रधा । मिगद-द [सं] भाषतः स्थाना शोध-शोहस्य दिना डुका जना इस महार बना सानेदारा मंत्रा प्रशेष करना। भाषणः निमा वर्ष समदो बार करना । निगदन-पुर सिर्भ बार की वर्ष बोडका बाठ करना। कथन । निगरित−ि [री•] धरा हवा वस्त्र। नियम-त [सं] वैदा बेन्द्रा कोई भेगा पत्र मार्न-विभिक्षक, हार वानारः मेलाः कार्ताः वनवाराः निष्याः अनुमामके पाँच अवयवीमें से पदः शियमम (न्या॰)। म्यावः शास्त्र नेरलायत यथा नेरके मर्वका शत करामेशाना र्थव । ∽निवासी(थिन्)-पु॰ विष्मु, नारायम । निगमय-त मि कित बहाहरम भीर बस्तवये प्रप रांत शिक्ष की नवी महिजाका पनः कथन (न्वा)। वाके धन्द्रीका क्यरणः भेदर यागा । निगमागम~पु॰ (सं॰) नेर और धान ≀ निगमी(मिक)-वि (च) वेददा निगर-इ मि निगतना मध्य मौदन होमदा प्रजी • समूद १ + वि• सद ममान । निवारक-दु [सं] निवसमा मञ्जन नता। (ना) पुरान पुरा धारण कर केशा होमका पुत्रत । निवर्गे-दि (का॰) देशरेग ब्रह्मेशना निवरानी रहाने-बाबा, निरीक्क, इरावका । निगरा-वि (वह रस) तिसमें वस म मिमला गया हो लान्ति । इ. जोतीके ५५ दाने वा धीकर्मे १६ रखी ही । निगशना - म कि निर्मय बरना धौरकर नमम शरमा श्यष्ट ब्रह्मा । वर्ग किंग पृत्रक द्वानाः स्वत्र दीनाः । विवसनी-सी॰ का] देध-मानः निरोधनः बिग्रह०-दि॰ दी शुरू संबंद मारी न ही एक्टा । विश**ष्ट-५** (चे) दे॰ निगाल । तिगक्तम−९ [मं] दे निगरण'। निगक्ता-म कि गरमें मीचे बदार देमा चूंह बाला। शा जामाः रहता वा चय इत्तर देना या दश नहता । निराह-मी॰ कि] निराह रहि। -बाम-नि॰ रेरा-रेश करनेशन। रमशन १५४३ -शामी-मा रेमः रेस रमनर्थ। निगाद-उर (से] दे "निवर"। निगार-पु [40] निगन्ता जन्मा (पार) महाशी देव व्याः व्यः कारमी राव । विशाहक विशाहक-वि [वं] निकाने मध्य बाने विशास-पु (श्रे॰) देश 'नियार । श्रेश्मी सरस्म[‡] विमालवृत्त पावा पानेशाला एक प्रधारका शेल है निगामकाम्(बन्)-प [र] थोता । बिताबिका-भी० (में) १६ वर्गस्य । विवासी-मा नेवेदा यह बाय वी हैदमें दहता है।

-हमवार-वि॰ केंबा-रीया विषम, कवश्रवावह l माइक्-पु॰ दे॰ 'मावक' ।

नाइरोजन-पु [अं] एव रकार तथा र्यवसे रहित एक गैस जो बायुमंडलका ४/५ भाव है।

नाइन-धी॰ गाईकी सी। नाई वातिकी ली। माइब॰-दि॰ पु॰ दे० 'शावन'।

मार्डे-भ मोंति तरह, प्रकार (छ)।

माई-पु• एक बादि बिसका व्यवसाय दशमत बनाना है । स्वीश्याव ।

नार्डे +-पुनाम।

मास्र≑-मी॰ नाव।

भावत-पु भून देत मादि चाहनेवाटा, भोजा, साधा । नाउनां−सो दे 'नारन'।

नाळां-च दे 'नाई' ।

माक-पु॰ [सं॰] स्वमः अंतरिद्य । वि सुद्या बहरदित । ~चर-त देवता। -नटी-स्थे अप्परा। ~नाथ ~ नायक,-पति-पु इंद्र। -पृष्ठ-पु॰ स्वर्ग । -बनिशा-स्री अप्रता। –वास−प स्वर्गमें निवास। –सर्-पुरु देवना ।

नाक-पु॰ मगर जैमा एक अक्षत्रेतु । स्वी+ वह दी छेडों-नाका प्रसिद्ध अवदव किससे साँस हैते और बाहर निकाष्ट्रे है। करलेभंका वह छक्ती जिस वक्तकर बसे पनाते हैं। वह जिससे किसीको प्रतिशा बनी रहे इज्जन रचनेवाला वह की किसी समुदायमें प्रशान या सबस राकर हो। मान, मरारा, प्रतिष्ठा र पत । -धिमानी-गिवगिषाद्या - मुद्धि-वि भी पत्रभाँकी तरह चैंपार वी मदयामस्य पद्यान सके मदामूर्य तुष्टबुद्धि । मु॰-इधर कि नाक कघर-हर तरहते वद ही शत । -अँबी होना-स्मत वन्ता। -क्टना-काव वा प्रतिशा जाती रहना, वेहाजती होना मान मर्गारा नह होना । -काटना-१मेर्ड बहार हेना प्रतिहा शह शासा देरमनी करना। -का बास-अर्थन अंतर्गया प्रिव। नकी सीधर्में नदेक सामन । निवसमा =>० 'शाक रगरना । -चनुमा-फ्रोबरस नवनेका कपरकी ओर रिरप बामा । -- चडामा - श्रोपमें नवगीको ७५१की बीट सीचनाः प्रमा प्रस्त करना । −छेत्रना-दैशन करना चे पुरुवामा । नतक स्वामा-हैम हेम्बर राजान नतक भरमा-(बरनम मान्दि)) कपरनद भरनाः हैंग हैनदर शाना । -न दी अत्मा-अस्य दुर्नेच मात्रम दीमा तीव दुर्भ माना । --पबद्दतं इस निकलना-नि शनिवीन हेना। (काई हपासे)-पत्रका चाहे उधासे-का बहतुमें हा तरहते। -पर गुस्मा होना-बहुत अस्ट कोष माना । -पर शीवा बालकर आसा-जीनकर या सक्त हो इर आना । -पर पहिया किर आमा-अक विषयी हें ना । -पर सहयों के बैठन देंबा-बटुन सहर्ट रहमा। दिछोडा बाहामा भी कृत्रत न होना। बहुत घष्ट मन्द्र रहता । -पर रत्य इता-वांगांगे देगाय ही इ देना वा भरा दर रेता : (विसीदा)-पर सुपारी साइना-रदुत परणात करता। -चारने समाना-दे 'क्रम्बस रो मागाः ∽बर्बा∽वपदेशे दकेषा विदण्याः। -बैठना-मात्र थिपटी दोमा ! -मीँ चट्टामा या सिको बुना-होश प्रकृट करना, नाराब होमा;श्या प्रकृट करमा। -में तीर करना या वालना-शुत देशन यरना। -में दम करना-न्य परेशान करना। -में पोकना-निकामा । -रस सेमा-१व्यव वयाना । -रगहना दीनता प्रकृत करना, विश्वविद्याना, मारन्-मियत करना । —स्रमाकर बैंग्ना-बहुत रज्ञतदार बनकर बैठना। -सिकोइना-एवा प्रकट करमा। -(कॉ) भाना-वाजित भागा, परेग्रान हो जाना। - वर्ग चत्रवामा-परेश्वाम करना, र्तग कर मारना । −हम करमा-दे 'नाक्ष्में दम करना ।

माक्का-पुनारका एक रीम ।

माक्रमा॰-स॰ कि जॉबना डॉबना प्रतियोगिनामें बद बाना, बन्दर होना। बारीं कीरमें धरना ।

नाका-पु विसी नगर, वस्ती कादिमें पैठनेका प्रमुख रवान अवेशकारः राम्ने भारिका वह मीत अहाँसे दूसरी बोर मुर्ने, निक्^म या पुकें हुर्ग आदिमें पुछन और बाहर निकलनका मार्व था हार; वह प्रमुख स्थान वहाँ यहरा देने या किसी तरहका महसूक बसून करनेके किए सिवाडी निवुक्त हों। जुलाहोंका वानेका वाना बॉबनेका पर भीजार। (स्रोका) ऐरा बाक सामका करूजेतु । -वंदी-न्ताव नाकेपर शिवादियोंकी तैनाती नाने पर पहरा देशना। अवरोष । -(के) दार-पुनादेपर तैनाम किया बाने बाका सिपादी । वि॰ छेरवासः ।

नाकिइ-पु॰ [ल॰] निकाह ब्युनेनाका ज्याह ब्युनेवाका। नाकी(किम्)-पु [मं•] देवना (जिसका निवासन्धान स्वर्ग हो।

नाकु-दु [सं] दियी वहसीका पर्दमा एक सुनि । माकुल-दि॰ [मं] नेदने थेमा। सम्मन्तदेशी। प मनुसद्धी भगाम ।

माकुळक∽वि [सं] सबुक्तकी पूजा दरनेबाना। नाकुछि -पु॰ [तं] बनुकरा पुत्र। मनुक गात्रका ममुप्य। नाष्ट्रसी-सी [सं•] शास्त्राः पविद्याः यवतिस्ताः द्वेन पंतकारि: एक क्षेत्र वा सपरंशस्त्र दिव हर बरता है। माकृ~पुदे∘'नदा।

माकेश-पू [मं] इंट्र ।

त्रास्त्रय−वि [मै] शगव-मंदेशीः विस्तृक्षा काल त्रयूत्रपक्र कं वरिवर्गनके अनुमार निवारित हो। पु योद्र माम। -दिव-पु माध्य मामदा एक रिम चेर्माद वद मरावदर्भे दृशरे रूपवदर जानेदा कृत । -मास-प बतना काच वित्रसेमें पहला २० सहयोक वट बार पुस जाना है। वाक्षत्रिक−दि [सं•]दे नाधका दुमाध्य समा।

वासविकी-की [मं] नक्ष्ये प्रवादित मनु यदी ब्रह्मा ि भी महत्रनश्चिनी।

भाग-न्दो॰ दह १रहरी जागण्यी : मान्यमा - गृ० कि सह वरमा वें दे च दानमा- 'मन कसर वृतिका मार्गः नव जार दक्षितारुगी -- संदरवासः

ीरान्यः शबना धोदना । मा.सुपा-द [या] बहाबस करात । वि सुपारी स

वस्त्रमेका तस्य मित्राच केनाः क्रिसीमी मारी पृत्री वर सेमा, क्रिमोद्धा सर कुछ है। स्मिर । नियोगा - म कि नियोगना। मिचोरक-पुर देश नियोद'। निचोरमा=-स निः है 'नियोशना'। नियोस-प [तं •] वह कपका विश्वते कोई वसा रखी बाप आच्छादम-बस बद्दमेका क्याचा पाउट्टा विद्यासम

की चान्छ भोहार; उत्तरीय: शियोंकी बोहती। निषासक-तु [सं॰] सररी: वीली: काम, उरलाय । मिचोयना स कि वें 'शिपोइना'।

निषाहाँ-वि मीयेकी भीर किया हुना, गाँभेकी भार शुका षा शकाया दकाः सीवा ।

निषीर्दे - अ मोधेश्री सीर।

निष्युषि-पु [मंग] यक माचीन विका, भाष्त्रीय विर हुद् ।

निर्वेद्धवि-पु (सं०) एक वर्णमेक्ट अत्ति । निसका -प निर्मन रथाम धिर्मेखिक वकांत रकात । † वि निरा।

मिछन - वि॰ विसके छिरमर छत्र म की भी छवकारी भ ही निरम्भ, बिना धनका स्त्रप्रदेश राजधिक्यक्रिक राक्क्षोतः विरामे श्वविध न वी, श्रविधक्षोतः तिन्त्वविध । मिछदमा - ५० एकांत स्थाम ।

क्रिप्रतिपाँ#−N° है 'निधान'।

ferten -if ferbe, greefen !

निप्रसार्ग-दि॰ विश्वमें निकास्य न ही शक्ष्मान कैनक। ब्रियाम!-वि जिसमं शिक्तावर न ही विशवः बाहिना

केवल एअप्राच । २० वस्त्रम, विमन्त्र ।

किरसम्बद-सी॰ किसं बलाको किसोके निए मा धरीरफे कपरने प्रमापर काल कर वेने वा कहाँ राजनी, धोपमे आदिया वक रीडवा (यह इस मानगाने दिया वाना है धरीरको नावा कर नाकृते बकी जान ना बहकारक प्रदापि वस वरमुक्त नाकर ही राम ही नान)न निजानर की बानवासी बरहा नेगा बिक करानी बनात ! मु -करना -समर्थेच बर्ममा स्थापना । -हीना-समन्ति विधा बासाः स्वाय दिया जामा । (किमीका किमीपर) नहींका —হিনাই লিঘ মান ইমা।

जिलापरि!∽धी° रे "निरावर ।

जिलाह-4ि क्रिमर्थे पेश वृत्ता ल की, निर्वेश, निद्धर ।

मिछोडी-वि॰ है 'निछेड'।

विश्व-विश् [मं] अवना रस्तीय भी बराया व ही (श्य शार के बाब माय' का निमालिका प्रयोग करते हैं)। खास-प्रधाना प्रजा। संचा । अ० विचनुष्णा प्रधाननः अविवाहरः बताबंद निभवपुर्वक । स्ट्यान्य अवना भागा -कारी-निधित क्षी, सरस्य । -बा-धाल मस्या म्बलियम् १

निजयातार नथ दि॰ पाग पर्देवना। सवरीक भागा वा

विजयारी-को देशईसे कमक वह समाम जिसके सवाम के बरन कामें अपने हुई भीत ही की बात । क्रिजन+-दि क्**र**प्रिट निर्मन स्वतान !

निजात-मा॰ दे 'नवात'। विश्वास-पुरु [अरु] छित्रछिका, तरतीया बेदोरस्य बैदरा-नाइके जनावकी क्यांकि प्रदेशका आध्वासना ।

निजि-विनिशेशक। निजी-वि निवका। निञ्च~वि•, 🖩 🤻 • 'निव'।

गिन्दौ--विश्वनित्रका।

निर्मारक-वि वक्क्षीय क्रमधीर । निशास्ता-अ॰ कि॰ एकरम धन वाना सना म (एसा) क्यी दर्श वस्ताने रिक्त वा जामा, खाली है। बाला-'मुबसर एक बंद मंदि नईची तिहारि नदे सब मेह'-सरा सार-दीन दी बाना। भपनेकी निर्दोष बहाना, सन्दार्द देता ।

निशादना -स कि॰ तरावर के कैना। शिक्षाभर्ता →श कि॰ सक-विषयर देगमा विषे धीरमे

देखना(† (बायक्य) ह्रप्तमा । † स॰ क्रि॰ मान ह्रप्ताना । बिटकः निदिल-५ (ई॰) मरददः सकार।

निरसाधा निर्देशाधा--५० (सं•) शंकर महारेष । निटसेक्सण, निटिक्सम् – ९ (६०) है "निरकाश्च ।

विद्योक-प क्षेत्रा सक्ता। निक्रिश-अ दे भीति।

निद्यस्ता निद्यस्य:-वि. निया ग्राम-विशा सामी वैश हणा पिदारा जी नेपार बैठा रहे अबसीव्य !

निहान्य-पु नैकारीया शमवा नाव ना मीनिहास क्षमाच ।

निहर-वि॰ दे 'निफर'। नई न्हार-सी निफरता

निहराई-की करना, दबाबीमना निष्करता। मिद्रराषी--पुर निष्द्ररताः।

विक्रीर-पु॰ दुरा स्थान कुठाँदा फुराँदा शीनमीथ अवस्था वर्षद्वा-'विनक्षे रिथ परीस सिपारी सी निव परी निर्देश

-प्रताहार -पद्मा-विषय न्यिनिम वर्गाः हरी धरव शेमा ।

तिकर-वि निर्वय निर्मोदा छाइछी दिग्मगी। **दी**। -थम -यना-प्र॰ निटर होनेदा माप निर्मेषता। मिचाना--ध+ कि दे निरामा'।

निश्रीम-पुर (वंश) पत्री वा विनामका (वीरे-वीरे : मुजीने) करएने मीनेची धार माना ।

निवित्र-म निकर चाल-'करिरा चारमके निव मोर्ग i र्मन्य शेरा¹-मरीर र

जिल्लान-पि॰ धरमार भार विशिष मोना पात है।

कामास्या ।

जिनीय∽थ दे 'निश्रंत । जिलेब-प [4] लिबीय छरीरवा कमरने मीचेवा मा बरिका अनेताम भूतवा कपरा छराव्या दावा मरी। बागुर्वी किमारा। चेचा । -विच-पुरु बंदबादार निर्मर

विलंकियी-दि की [40] सुन्द और बार्स निर्मं बान्धा ह स्त्री शहर और भारी निर्नरवामी मी । जिल-म नित्व प्रतिशिव सरा । - नित्त-भ हर रेड

क्युडिय । विश्वताम्-म (तं०) बहुत स्वयः, अर्थतः मीन्ययं करी

इच्छा। एक रहिनेन। गुजराती जासलोंकी एक स्पाधि-नागरी किपिके बाह्नर; एक प्रकारका गृहत्त्वतः [हि] बीबारका देहापन । -धन-पु॰ मागरमोबा । --मुस्सा-था। बागरमीया ।-सोधा-पु [वि] एक प्रकारका सुर्ग भित तुण विसन्धे वह मसाने और दबाके काम नाती है। नागरक-पु [सं] क्षिम्यी, कारीयरः चीरः नयरका शासन वकानेवाका राजकर्मवारीः एक रहित्वा सीढ । वि दे 'सागर'। नागरता-चौ • [सं] मध्यरिकनाः, कदरातीपनः शिक्षाः सम्बद्धाः पाकाद्ये, पतुरदा । मागरिक-दि॰ [सं॰] मगर-संबंधी। भगरका को जगरमें रहे, शहराती । प्र॰ नगरवासी, पौरः। नगरपर कमनेवासा MC I मागरिकता-सी (सं] मागरिक होनेका भावः आगरी-बित स्वास आचार या शिष्टताः मागरिक जीवन । सारारचेस-त्यां भागवस्ता पान । षागराद्ध−५ [रं•] स्रोड । मारारी-सी सि ने नगरमें रहनेवाकी की, शहरकी औरत नगरवासिनी। चतुर खी: सेट्रेंगः संस्कृत और दिशे मार्चा-भी किशि। परभरकी मोटाईकी एक नहीं माध्यपरनरकी मारी षरिया । मागरीड, मागधीड-पु र्सि] बार, उपनी: व्यक्तियारी, संपर। विवाद करानेवाका, वरक । मागरयक=बि [में] नगरमें बलक ! मानरीत्य-त [ध] मागरमीका । माराय- व [मं] मानर होनेका भाव भागरता। विद Wat I मागसां - १ इस नैनॉसी हारमें मोपनेकी ररसी । मार्गाग-इ [चं] इस्विनाहर । नाराशिका-स्ते श्री हिन्ती। मार्गाचका-मो [गं•] मानवडि । नागांजना-सी [मं•] मागवहिः दशिनी । मार्गातक=प्र• [सं] गरहा भीरा सिंद । मागा~त यक येव धेमहान क्रिसेंगे साधु कोग क्षे रहते है। इस संप्रशासका साथा कासामार्थे कसनेवाली यह जंगकी मानिः भागामधा एक प्रशुप्त प्रश्नित्र प्रस्तेत्राने कानमें परनेवासा संबद्ध योग । व वि सानीः अंवा । नागानप-५० (र्ध) नागन्देशर । मागामंद-४ [मं•] इर्चवर्डमदा एक शेरहन भारक । नायानम-५ (सं) गण्डा नागाभिभु-पु [तु] एक तुह । मागाराति नागारि-प॰ [सं॰] दे॰ 'नागांतक । नाग्यत्रेय-५० [र्व] एत्यवार वा माध्यमिक सिर्वानके मर्गेक एक श्रेड भाषाये (शमकी मुशान रचना माध्य मिक शास था माध्यमिक कार्रका है)। नागाञ्चयी-की [ग्री]दुविशः वाम । नागासाय-पुरु [एंड] रोह क्यू । नागायाय-मु [तं] हरू। बाद्य विद्व व माताबाय-द (de) इतिन्द्र ।

बागा ह - दूर्व] माम दिस् ।

पागा**हा**−सी (सं•] क्रसम्भा नामद संट । माशिस-की॰ सॉफ्डी माटा, सर्विया माग नामक सॉफ्डी मादा भी शब्द निपैकी धोठी है। कर या दुर न्वमानवाका ब्दीः खेठ या गरबजपरकी लंबी रोमावला। वैक्रीकी पीडपर क्षानेवाकी सॉफ्के आबारकी रूंची शंगराक्षि विसकी गणसा विवीति है र मारिमी-मी॰ रे॰ 'गागिन । मागी-सी॰ (रां॰) 'इरितनी । मागी(गिन्)−प्र• [सं] शिव । यागुला-पु नेरकाः माङ्की सापपि । नार्वोज-प [गुं•] बक्षा साँगः क्षेत्र भारि प्रमुख मागः महाकाय दाथी। गवरावः येरावट । मागेश-प्र• [सं] श्रेष भागः संस्कृतके यदः प्रसिद्ध वैद्या-करण, मागेश भरः स्टंबिट । नागंधर-प्र• [मृं•] धेव माग पेरावमः नागदशर । मागेसर -प रे॰ नागंबर । वि नामके परके राजाः भागोतः मागोपर-ए (र्ध) समापातसे दबनेके किए वदर वा श्रीनेपर वारच किया जानेनाचा लाहेका तना. उरर्जान वा उरम्याग् । मागोवरिका-ची सिंगी पढ प्रदारका दस्ताना जिसे पुरुषे शामकी रहाके लिए पहनत है। मागोक्मेन्-इ॰ [सं] भेरगिरियरका क्क स्थान अहाँ सरदिवासी ग्रप्त बारा करर देख पडता है। शामीर-प्र• मार्यार्मे एक शगर बहाँदे गाय-वेत बहत मसिद् है। मागीरा – वि. नागीरकाः भरधी अतिकाः सञ्जव । नागीरी−वि• दें• 'नानाश । वि स्रो (गाय) । बाच-प ताल और सवपर आधित अंगविश्वेषा आनेश-विरेक्ष्में मचाची कानेवाकी उत्तक कुरा क्षेत्र, ब्रीडा: ब्राम थेथा। -कृद्-सी वराच-कृशः नाथ-धनाधाः। --धरः-महस-पुदे 'नर्तनशाका । -रंग-पु भागोर प्रवीद । अ॰ -काछ्या-मावनेशे स्थत होना । -दिल्याना-रिसी के सामने बहुत-पृद मधाना । -अवाना-परेशान वरनाः क्रियोन रच्छानुमार काम दशमा । माचना-म दि॰ ताच और तबदे अनुसार गात्रविश्वेष करना शृष्य करनाः मानंशाविरेक्षम् वराजना स्टनाः प्रवास मा प्रवाद होता। हराने उपर आसा नामा रीह-बुष मधानाः बरेपना वर्रामाः क्रीवारेशमे वशकता कुरमा। माथिकेन-इ [सं] एक परिस्र व्यास माचीम-इ [तं] दक्षिणसा एक मानीन दशा रग देशका राज्य (म. आ.) १ नाजन-पुरु जनाव, अप्रासाय बन्तु न्राय परार्थ । माझ-त (पार) दार भाग विण्या-वेदार वर्त सर्वद र -महारा-पुरु द्वार आह और प्रदा : -मी-सी-क्ष्यती की। शाबुददान भीरत कामलंगी । -बर्दार-

वि सात व एत बरनेवाना आहित ।-बरनारा-मा

मात्र वर्गातम् वरस्य । -शू-पूक सक्तेसः पीता । -शू

हेग हुआ है। बछहा बॉबनकी दरशे क्षेत्र शुद्धि। अरु भेतमें आधिर। दि तिषुट, हुम्छ, गया-गुजरा। गिदारण-वि [सं] बढिमा निर्मया अनुसा।

निवाहण-प्रवर्षः निवापः।

निविश्य-विक [मंक] विसपर केंग फिया गया बीहमवर्थित । विविश्या निविश्यिक्य-व्योक [सक्त वस्ता ।

ानादरमा । शादारमञ्ज्ञा – स्वाः [स॰] इतावयी । मिद्रिष्यास निदिष्यासन – पु. [सं॰] अनवरत चित्रतः, भार-वार स्मरण करना ।

मिदिए-वि॰ [सं] निर्निश्तः आदिए।

निदेश-पु [मं•] बाह्या शासमा क्यमा समीक्ता निकृत्ता। पात्र वरतन ।

निवेदितनी-सी [मं] दिया। वि ली जावा वैनेशनी। निवेदी(सिस्)-वि॰ [मं] जावा वेनेशनाः।

निवेद्य(ब्यू)-(व [मंग] निरेश क्रानेशना ।

निष्स=-पुँ• दे 'निदेश । निष्पेप•--वि॰ दे• निरोद । निद्धिण-स्वा दे 'निवि'।

निव-पु॰ यस अन्त्र।

मिद्रा-नां (सं) प्राप्तियोध्ये वह अवस्था विसमें गंदा बहा नादियोक्षा द्याय कर जाता, नांदी कर हो बातो छरोर छिदिल पह बाता और बेतना बातीकी रहती है। आहरदा मोजना - नगा-चु जाताना । न्योय-चुक प्रमानकी वह अवस्था जो निप्तान्ती को न्यूच-चुक जंबार ! - न्यायन चुक कु क्षेप्या !

भिद्राष्ट्र-दि [मं] सेना द्वभाग्न सोल्ला। निद्रायमाण≕दि [सं] जो सो रदा दी। लिसे नॉर अस ज्यो सं।

रही हो। मिक्रास्टर-दि॰ (र्न॰) तंत्रातः छोवा हुमा।

निहासुन्दि [सं] सोनेशका निहाधीर्मा दुर्व दिण्हा भेडा बनतुष्मी। नको सास्त्र मेदास्य ।

सिद्धित्त निर्देश होता होता होता । सिध्यवस्त्र ने वेटार्टिसियक बोस्सा निर्माप्टे नेरीसः

विमा विमाहि । -

निषय - पुंचि । नारा भरता भरता समाहित पुंच्छीये नाहरी श्वामा क्रम नाह्यमें शास्त्रां, नीतवर्षी भीर तहें मर्था राष्ट्रा द्वार वा सात समयबीय ने सामक भीविक स्वरंद दिगे जात्रा अरिना नाति है: मीतदा भीति भाग वार्त्वार पुच्च परिताहर स्वरंदरा । विश्व रिकाल गरिष, निष्द्र । - कार्यारिय)-दिव पालक, साहक । - किया - जीव भौतिहित्या । -पति -पुण्ड रिवा ।

निधनी-विधनशीन, वरिहा

निपारको - जरु दे निकड़ । निपातस्य - दिन (तं) राज बीग्रा निवान करने दीन्य हं निपान - पूर्व | तो राजा रशामा आधार कामवा बाद्ध, गणाना तो प्रति वदा दिसी करतु दे क्या हो नेश स्थान कामवात ।

निचि-सी [मंग] दिशी बस्तुवा कावादा खबलाउ वर मदा दुमा पन दिसके रहाबीका क्या म दी। कुनैदर्दे नी इस (वर्ष) नदारम दोछ सबर खलाव, सुनुँद वुँद भीक और सर्व) समुद्रा रिष्मु पिश बीडी सन्दर्भ केर मामडी केरवी महिका मामना गंदरका करूनरुंग म्बक्ति । नाय-पुर कह सिनो एही मंद्रीदे साथ रेस्स कप्यायन किया ही कर्मुशन ! नगय न्य, न्यति न्याम-पुरु कुरेर !

निर्धासः निर्धासर-पु॰ (सं) दुरेर ! निर्धासन-पु॰ (सं॰) मैशुना केला, ब्रोहा बानीर-प्रवेण; बरेपन ।

विभेय∽िक (मंक) रखमें बोग्य श्वासन करने पीग्य। निष्पात्त∽िक (सं.) निषारित विश्वश्र मनम् क्रिया शवा थी।

निष्यान-पु [र्ग॰] देवना दर्धन। निप्रव-पु [र्ग॰] दक मानपर्राट परि।

मिष्याम~तु (ले॰) शब्द । विर्मरा~६ [गं] का सरमा वा सागमा पारणा हो ।

मिनश्—पु॰ [रां॰] दे॰ निमार'। निमहित निमाहित-दि॰ (सं॰) व्यनित सन्दित। पु

त्रान्य । विवादी (दिल्), निवादी (दिल्) - विव [तंत्र] सन्द बरने

। बाका। जिनवन – दुर्शिशे निष्पारना छित्रकता परिपत्न करमा । जिनसा−दिर्श्वासा कुरा।

ानवर-१० व्यास छुराः निवर्ष-पुर्व [स्तृ] वेश्वे धान्तीया त्रिमेव प्रवास्त्र व्यास्त्र । निवरह-पुर्व [स्तृ] व्यन्य श्रीयारा स्यक्ते परिपॅसी वात्रायः। निवरहम्पर-म कि स्नितर करवाः।

निवासण्यपु अंद। राहण । अ० अंतर्वे भागिर ! दि० व्यक्तिरो बावेदा, चेरा दुरा सुच्छ ।

विज्ञासारे -पुर धारमण । सिनारः विज्ञासार -पि स्थारा अहा - वे वर्षि अने वस मीन पापुरी हैंवें विवर्षि मिनार' -स्टरः दूरः चीधा

्युद्धस्य । जिलावाँ-पु॰ पूर्वभेदी तरहद बान दाने को जीम जन्दे तथा मुँद्दे बोनरी वाले माहिमें हिदल बान दे ।

चना भुद्दक चानरा चाना नगारेम ।तस्त्र भाग है निनोत्तार-सुरु कि सरामा शुद्धना । निनीता-भुरु सनिदाल ।

वनवारराज्य भागभागः विकासक-वि , दु है० नित्यासने इ नित्यासके-वि अस्त और सै ३ दु नित्यासमेदी अंक्स

९९ । मुठ न्या श्वक्र या चेर-चन वनानदी पून । निक्तारा १-दि० इ. निकारा । निर्माण-दि० च्या अपरित्त ।

निय-चु [न्न] बणमा वस्मया पेश। नियजनार-न्यर कि वयमना यन्त्रत्र होना जनमा चुक होना परित्तर बीनाः नियजनाः बनमा।

निवारी*-स्थे जनस नानता हुनालाः। निवार-स नानतः स्तितुत्तः सिताः। निवारमा-स कि दे 'मियरमा । निवारमा-स कि दे सिवारमाः।

मिपरासा-पु॰ रे॰ निवरेसः । विवरेस-पु रे निवरेसः । मिषरः, निवार-पु॰ (तु॰) पार अध्ययमः। ~चरबा−पु॰ पद्मो । ~जीय−पु कीकाः एक सुनिः एक विरजीवी बगुका को इंड्यम्न नामके सकास्व में रहता है (म॰ मा)। करवणका पुत्र राजधर्म नामका श्युक्त (म॰ मा॰)। ~तर्शन-पु॰ काकोका विंदका क्वोतिनीः संपर । -तिन्द्र-पु॰ लंपाकी भीम ।-वेह-पु शिवका दारपास भूगी जो आर्थन कुछकाब है। - महत्त्र-पु• जास-तशुत्र । −परीक्षा −स्तो (वैचका) सम्ब देखना । -पाच-पु॰ यक सरहको जरू गर्ग । -र्मडल-पु॰ भाकादीय विदुवत् रेखा क्रांतिकृतः। -यत्र-तुः शरीरमे भुसी वा पैसी हुई वस्तुकी मिकाकरेका एक प्राचीन येव (तुम्त) !--बक्स्या--बृच्य--पु॰ क्रांतिवृत्ताः समय वागमेका यक माबीम वंत्र !-बिग्रह-पु॰ हे 'शादीरेह' !-ब्राच-~पु॰ वह पुराना मात्र विसमें मीतर हो भीतर छेर ही बाता भीर अवाद निकामा करता है आयर । "शाक-पु । यहुवा नामका शाम । -संस्थाय-पु नाटियोका बाल ।-- स्नेद्र-पु दे 'लाबोरेड' ।- विग्र-पु॰ एक क्ल क्रिपुत पढ़ वरहकी होंग प्राप्त होती है। नाडीक-पु [सं] एक प्रकारका साग कानशाक। माबीका-सी० [तं] बासनतिका। **भार्याकेर**-पुरु [सं] सारिवङ । **माद्यीय-**पु [मं•] पट्टमा मामका शाग । बागर-पु [सं] सिका एक प्राचीन सिका (चुच्छ-報告(を) | मात्त+- इ संबंधी रियतचार; संबंध, माता। भातरः नातरिः मातरः -- अ देश गतरे ! माता-पु संगंभ रिस्ता। -(ते)वार-पु रिस्तंपार। वि॰ समा संबंधी। मातिम-खी सहबोदी सहबी; कहनकी सहबी । माती-पु॰ तर्वादा तर्वा; तर्वेदा वर्वा । बाते-व संरंपने, रिश्ता दीनन। क्रिय, पारत ।

भाव-५० (सं) शिक्ष गर्निक छाति अर्गाताः साधार्व । भारमी-द्र [व] जर्मनीद्रा एक रावगीविह रह शे िटोय विश्वपुरुके पहले पट्टन प्रवक्त ही गना था। माथ~त• [सं] ग्रमु अभीवर रवामी: पतिः बन आरिकी

माध्ये पदमापी प्रानेपाकी एरही: [हिंक] गीररायंकी सापुनोकी एक उदाधि। मैथेरा। + म्दो+ द्र+ जब । ~हारा~पु॰ [६०] इडयपुर शक्यमे वलभवतासवायी वैष्यवेश्चिम् यक प्रसिद्धः रथात्रः वाही सीनावन्ते सृति है। -बरि-प प्राः

मायदा-स्री [मं] माथ या स्वामी बानेबा बाद प्रमुवा। शायत्व-दु [मं] दे 'गानना ।

नायना-स 🕰 दैन सारिको सादको देशवर उसमें नाव परनाता। वर्ष बरनुत्रीको एक साथ ग्रीप्यर जनमे एन्सी मा रामा परमामा मध्यो करना। यक गुश्रमे शक वरमा। (मा) बद्धवडा बनावे स्थाना ।

मायवाम्(बत्)-दि [र्रः] प्राथीना समाध । नाय-५ [में] एस कांना अमल एका क्याँचे बधारणये एक प्रशास्त्रा नाता प्रयक्त अनुमानिक वर्गः मारी राष्ट्र माना स्तुति करनेशाना १—सङ्गा—स्रो० सङ् गांधिक सुदा मिनके बादिया सुद्दी वैधी रहती है यह है

अँगुरेकी शहम रसते हैं। सातमा∌∽स कि वजानाः। ज॰ कि॰ वजनाः गरवनाः। माव्यति-सी देश मारेन्सी। माबि--वि॰ [मं०] शब्द करनेवालाः गरमनेवाला । गावित−(वे॰ [ग्रं•] वजाया धूजा : भाविम-वि॰ [अ] तक्षित, सर्मिता। माविया-पु॰ मंदी। वह वस विसे सावमें पुना-प्रमाकर योगी भीरा मॉंगई 🕻 ।

माबिर-नि [थ॰] मध्मष्ठ असापारण। ~साद्व-पु॰ कारसका यह मुर्शस शासक क्रिसमें सम् १७१८ में दिलाहे तत्काकीन बादद्याद मुद्दमान द्यादकी दगकर मगरमें कतन्त्रमान कराया था । --क्षाही--विश् मादिरशाद-संबंधीः मादिरशाहके अरवाषार जैसा । स्वी॰ निरंक्य छासना पाश्चविक भत्याचार । नाब्दि(रे-को [स] मुतककारुका सदरो जैसा एक यह

नाना निसके विभारींपर कुछ काम किया रहताथाः गंबीचेका वह पत्ता जिसे पोरुके समय निजानकर अखग रकादेत है। माधी(दिन्)-वि [र्स] माद करनेवानाः वजनेवालाः गरजमेशका। [स्ता 'नार्रिमा'।]

मावेशकी~सी [ब•] शगरावासे बचनेरे तिए संप्रकी तरह गर्डमें पहली जानेवारी संस्वदाद जामक पश्चरकी चीनोर विकिया जिसपर कुरानको यक विशिष्ट आश्रत जो 'बार अक्रियन' इस सन्देंति आरंग होती है, सूरी

रवती है। मावेष-वि॰ [सं] नरी-संबंधा मदोबा; मदीवें सारता प्रदेश संबद्ध योग्य अप्राधाः यो अर्थेय अ हो देव, दन योग्य । पुर्नेथा जनकः कामः वानीयका पेट । माचेची∽सी [सं०] वहरेता मुरंबामुना मारंगी। वबर्वती।

अधियंत्र इस जेगव । भाषम - ली॰ स्तको रीकडे क्षिप तहने में छगाया जात-मामी गोल जिला ।

माधना-स॰ क्रि॰ देत थें।ई मारिका राष्ट्री या तरमके द्वारा स्वारी वरू भादिने जोहना या शंपना जीतना बीक्या, क्यानाः आरंब कत्याः ठानमाः गूँवमा - विरोमाः माधना ।

नाचा-पु॰ इत बोव्ह मारिको इरिमन्ने सुपरो बॉपने वा कैमामकी रस्तो या वसरेकी वही ।

नाम-ली॰ (फा॰) रीटी चत्रती। तंदूरमें परायी मानेशानी यक प्रकारनी भाग्रे समोरी होते ! - हाताबू-स्ता कर मकारको विकिताको स्टब्स्को भिटाई। -इनाह-पु अववादन ! -- पह-पुर नानगर ! -- पृत्री-सी : मान वार्षका वेद्या । -पाच-मु वन प्रकारकी रामीरी रीती । -करोश-पु मानगरं +-बाई-पु रांटा कीर शारश वेषनेदा वेद्या बर्मवाला ।

नानक-पु शिवसी के भारि पुत्र किमका याम कारिक हाहा वृत्तिमा अंबल् १५१६ वह कार पर्योक्समा काचित्र कृष्ण इश्रमी, स्वत् १५ ७ वर द्वमा (ये मृतिपूना तथा वर्ण्यवीक्सनाक विरोधी और यवेनरवार प्राप्ता रहासू । -वंश-पुरु मामह द्वारा यनावा दुवा भ्रतनाव । -वंशी मिकार ० - वि के भी रहें की ।

मियमाई = - स्थं = निर्वेक्ष्या शीवता ।

नियह-प देश निवह'।

नियहमा-म कि वथ निवस्ताः जाम पानाः शर पानाः घटी गमा। निशेष होना। स्वीका औं नना रहमा, क्रमी भग न होना किया रिवरि, श्रेरंच आदिमें एन्हें मा पहला दिया जा मक्ता पूरा होता रहना, पाख रह सहना निममा। परा दोना बाकन दोना ।

नियहर १-नि (बह स्वाल) त्रहाँ परेंचकर कोई कीर ल

सुद्रै (बमरार) । नियहरा - वि जो सराये किए बका जाय (गाली)। नियष्ट-प निरादरेका काम का भावः निर्वाध राज्य DBICH दिनों रिवनि, मेंच बारियों बनाये या जारी राप्रनदा साम, रक्षा मालमा वृद्धि सरकारेटा स्थान. प्रत्यक्षा मार्ग वयनेका राग्या बळाळ ।

नियादाक्र-वि॰ निवाद फरनेदाला ।

मिश्राह्मरा−स कि निवाह बरमाः क्वोंका स्वो बनको रयाना कमी मंग न होने देना किसी रिवर्टि संबंध भारिकी रथा किये जाना। किने जाना पूरा करते रहना। भागः,रानमा निमामाः पूरा इरना शास्त्रो करमा। निका हमाः सापमा ।

निविश्व-वि [मं•] यना, गहरा। ब्रटिय ।

निव्रमान-प्र वे भीव । निरुद्धमा = भ कि वय निध्नमा मुख दोना, गुरुद्धारा पाना पेपनम मुख होनाः नेधनका होना होता नियस मनाः मंबद्ध शीला ।

नियेदना~स दि॰ वंधनरहित करना, मुक्त करना, एर्याताः न्द्रमे शिक्षी पुर्व बरहाशीकी प्रवृद्ध पुरुष करना छोटनाः ग्रुकशाना प्रकशा त रहमे देवाः निस्टानाः पीमला धरमा: इर करमा, पुण्ड करमा: पूरा करमा, समाप्त धरना ।

निवेदा-प्र गुरुवारा। याग वयायः यवनै निसी वस्तुनी-के १४६ होने या किये जानेका काम मा भागः सम्पनामः निवदारान निगमा इरोकरण बराका पूर्ति पूरा करमा । निवेशमा-ए ६० है निवेशमा । छोल्मा, त्यामना। बन्द्रम करमा∽'न्द्र सूर महर धी सै ब्याच निरेरत WI - TEI

मिन्देश-५० देव 'निदेश' ।

निवेदमार-भार किर है 'निवेदमा'।

नियोध-पुर [मंत्र] समझनाः सीराजाः स्थलानाः सन

सिरोध्यम-पु [सं] सम्याने वा सम्यानिकी किया । निर्वाती - नी है निमधीरों।

विक्रीली-स्री देश 'विमनीशी' ।

लिय-[[4] रण्य अमरतार सम्रद प्रकारकाः शक्तम बद्धा (तमनांगरे) हे यु प्रकायः स्वाका छक बदा प्रकाशीय ह

विभवा-स दि है 'निवहमा'।

विसास • - किने रिचा जिल्हों किनी त्रवारका साका य क्षे प्रधादिक । या नेपारवे दिल्लीय ।

निमरमा-वि विस्तृक्षा भरम वा विशास का दश हो। मिसनी पील राष्ट्र गया हो।

निमरोसां--वि॰ बिसे भरीमा न हो: विमा स्तारेक निराशाः ।

निमरोसीक-वि किसे कीरे छत्ता म रह स्वाही नसहाय आसवदीत । मिमाब मिमाव~प॰ है। निवाह'। वि आवरदित।

निमागा-वि॰ माम्बरीत समागा। निसामा-स॰ क्रि॰ है॰ 'निराहमा ।

मिमाछन-पु॰ [मं] देसनाः दर्शनः नामुम दरमा ! निश्त-वि [संब] बीता हुना नृतः वी बद्धत वर बहा

भी क्रमि भीता नियत-वि [सं॰] रया वा वरा इस्रो। रिया वना ग्रह कंतरिया जो असा होने जा रहा हो। नम्र विनीता अवस रिवरा पुत्र, मरा बुक्ता निर्मेश सूना पुत्र शांता नी ओरबार म की भीमा। मंदा बंद दिका हुआ। शहुता

धीर भैर्वशान् । चु समना । मिखवान्मा(सम्)-विक मिन्) चीर १३ । मिलांत=-वि से॰ 'निर्मात'।

मिर्बद्यका-प॰ (गं॰) (इस्रो कार्य करनद भारिमें वा मान्द्र, भोड बारिमें सरिमलित होनेदा निरेश क्याना दशक क्वीता (सिर्मवर्ग वह है जिसका शास्त्र म करनेवर मनुष्य बीवका आग्री क्षांत्रा है-सिकांतकीमुरी) ! -पग्र-५० वह वह शिश्तमें रि.श्री कार्न जारान मारिमें सन्धिनित होतेका निवेदन किया गया हो। निमेक्सन। १४ । मिर्मदानाक-ए कि.व निर्मेशय देना स्वीता देमा ।

त्रिमंचिल-(4 (do) की भागतिन किया पंथा ही शरहते ।

शिम-५० (ते॰) कील स्ता रामासा । निमक्ता-पुरु देश अवद्यो। निसकी-मी नीर्पा जवारा मगदीम धिंदवा । निमधीची-ना मोमदा पन मा बनदा प्रेम :

विभाग-वि [व] हवा हवा, राजीत नर्द । विमञ्जूष-५ [८] हुबधे स्थाना। घषन बरना । निमालन-पुरु [ले] इ.स्ट्री संयोगा हुन्ही संयोगर स्तान

करमा, अवगासन । निमात्रमा॰~स कि॰ दुश्धे ननाना अपगारम बरमा ।

निराजिल-विश् [मेर] द्वा हुमा । मिग्रहमा-अ० कि० हे भैनवरमा ।

निमरामा-मृत्र मि • में 'निरदामा' । निमरेरा-प र 'निपरेरा ।

निवसार दि भी बात्त दुला का यक्त क हो। ग्रांत । निमय~पु [में] ११४ वर श्रंत न्यूरमें दिवा बानेशण BOTTH !

निमय~५ [त०] शिनमा। निमात्र-भी है। निवाद ।

निमान-पु॰ (मे॰) याता भून्या ७ मीवी रगर, व^{ाप}र शाका अचाराह ।

निमाना-रि अरेवा जिल्ल राजुर्वा अत्र विरुद्धि है विभि-पुर [त]] वह चर्च थी रक्तावेपके पुत्र की वंश्वार्क गरहो । (किसीके)-का कुत्ता पाछना-किग्रीका मध्य विक अपमान करना, किमोको अस्पेत नीच समझना। (किसीके)-किसीड पक्षमें; किसीके पासः किसीके प्रतिः सरकारी या अन्य प्रामाध्यक कामकर्मे किसीके नाम के सामने (रर्ज); कानूनी, प्रामाणिक हैया दारा किसीके प्यम । -के सिप्-देवत देखने या कहने सुबनेक किय, करनेमरकोः वरा-साः किसी काम या वपवागक किय, मही। -हो-बद्दनेमरको देश्ह काम चलानेमरको अपर्यात आत्यक्या स्थातिके शिय । -को मही-कहमे भरको मी मही बीहा-सा भी नहीं एक भी नहीं।-बसमा--सोडमें स्तृति बनी रहमा। -चारको-कडमेगरकी, मानगत्रको । (किसीके)-बासमा-(किमीक) नामके सामने दर्भ दरना । - नुवाना - भाग मर्वादा मिटाना कृतंत्र समाना । प्रवृद्यना-मान मर्वादा सह द्रोगाः कृतंत्र क्रमना । (किसीका) -धरमा -गामकरण क्रमाः दोवा-रोका करमा दीवा टहरामाः वदमामी करमा !- घरामा-नाम घरना का प्रे॰। —न क्षेत्रा−श्भरम**टक** म करना मय, प्रना, रित्त्रता भादिके कारण प्रसंगतक न **ऐननाः इ**र भागना बहुत अधिक बचमा । ('तो मेरा) -नहीं-तो मुश गया-गुत्ररा सनकता। -निकसना-किसी बातके किए माम प्रसिद्ध बोमा। तंत्र मंत्रकी किया हारा चारका नाम प्रभट होना। - निकल्लाना - नर-बौदि पैकानाः र्वत्र मंत्रक्षी किया हारा भारका माम मध्य कराना । -निकासमा-सुक्याति वा बुरुपश्री फैटाना र्चन मंश्रको किया हारा भारका नाम मक्ट करना। (किमीके)-पदमा-(दिमीके)नामके शामने किया जाना या तिया रहना। (किसीके)-यर-(डिग्रीके) निमिन्त, (किमीस्2) रवृतिमा (किमीके) व्यासे । -पैता करमा-स्वाति प्राप्त नरमा । - विक्रमा-प्रतिक्रिके कारण छोउमें बदुन भरिष्क सम्माम होमा इतनी श्वाति होना कि माम मुननेभरभे लेगे द हरवर्षे आहरका जाप जान कटे। -वेचमा-श्मिता मान लेकर दूमर्बदा शहानुन्ति, भाग्र या क्याना वाब वसना । -सिट खाला-> विमा कढवाना । ∼सिटना⊷करितलका रूद भी विद्वान रहना नामनंद म रथ रहमा। -हरामा-प्रतिशासी रक्षा धरता । ~सरामा-रीती हत्तराया पाना ।~सरााना -दीपी उद्दराना । -सिरमा-मर्ती काला ।-स्थिताना - भरता श्रीना । (हिसीका)-सेकर-(रिसीके) नामक प्रवादमें। (दिनीका) बहुतारमः (दिन्तीका) न्यरण वृह्दे । - हमा-नाम पुरान्ता। यार बरना। भारतः शतदारे भावने स्मरण करमा उत्तरिक करनाः वर्षा चलाना विवार बरना । (किमीक)-से-(किमीक) नाम लेकरः नाम बर्नमरी माम गुना ही। -हीना-स्वातिया यश **पैननामाम निवा जाना।−(सा) निधान वाकी** न रहेना या मिट जाना-१३ म बरवाद ही जाना, बन मनाप मध होता दि अरिनाचका बीते निष्ठ दी मा रह काद ।

नाम(न)-५ [सं] वर सध्य शिक्षणे दियो व्यक्ति वश्तु बा गर्वद १४ १' वायद इक ग्रंडा शब्द आवदा र्शनिरात भाषा । –बर्ग-५ । एम रसनेवा रंग्हार ।

--कर्म(न्)-पु॰ नामकरण संस्कार!-कीदन-पु॰ गान वजानेके साथ या वी की देवरका नाम बपना। - करा-व किसी बरहाका असकी नाम विपास्त इसरा नाम बन काया (ही)। -प्रष्टु -प्रहुण-पु॰ मामदे साथ संनीपन वा उरुभेख करना । ~प्राम−५० नाम और ठिकाना, शास और पता । ∽देव∽पुण्यः प्रसिद्धः क्रुप्पोपासकः। −श्चादशी−सौ॰ अगहन सुरी वीजको होनेदासाएक जत जिसमें गौरी, कासी मादि मारह देशियोंकी पूजा होती है। -धन-पुण्कराम। -धरता-पु[रि] नामकरण करनेवाला पिता। --धराई--सी॰ [दि॰] अपवदा, कुरुवादि । - धातु-स्वी॰ संद्वापदसे बनाबी दुई पातु (व्या)। -धारक-वि कहनेमरको कोई नाम धारण करनेवाका विश्वका बोर्ड विशिष्ट माम सेनेमरके किए हो ची अपने नामके अनुरूप दार्य न बरता हो। विदिध कर्म म करनेशका (बाराय)। -धारी(रिम्)-विश् मामग्रा, मामकः मामधारकः, तक्किथितः : -धेय-पु माम नास्त्रा र्चयाः नामकरण ।-भामिक-पु॰ विष्णु ।-निश्चेष-पु॰ भागरमरम(बै)। -निर्देश-पु नामका उरकेप करना । -बोका-वि [दि] नाम वपनेनाता । -साह्न-वि०, अ क्हममरको, अत्यस्य । -मासा-स्री -संप्रह्न-पु॰ ईहाराज्योंका काछ । −सुद्रा −सी वद सुद्रा पा मुद्रिका विश्ववर नाम शुदा को । −यज्ञ∽पु॰ दिखानसे यह । -रासी-वि [हि] समान मामवाला इमनाम। ~रूप-पु÷ नाम और रूप ! ~सेमा-पु [दि] नाम छेनेशना उत्तराधिकारी ।-वर्जित-वि भामदीस मूर्खं। —वाचक−दि॰ माम दनलानेवाला (पु व्यक्तिवायक र्धशा-दोप−दि विस्ता देवल नाम रहममा द्वाः गत गत। पु एत्यु। - सस्य-दु॰ गुग न दोते द्वप मी गुण्योतक नामका श्रवम । नामक-दि॰ [मै] नामरा, मामदाना (समामानुमै) । नामतः (तस्) - व [4] नामने नामके दारा। मामोइ-वि मि दे नामंदित । नामा कित-दि [सं०] विस्पर माम सिना वा सुना हो। नामांतर-पु॰ [मै॰] दुमरा वाम उपनाम र मामा-प शामरेप। मामा(मन) -वि [वं] मामवामा, नामद (देवत वर् ब्रीटि समाममें और उत्तरपन्छे रूपमें प्रमुक्त) ।

मामामुत्तासम् – पु॰ [सं] बारा । बामावराय-५• [र्व] रिमी सन्मानित स्वक्तिरा मामा

स्तेश का बहिट सम्बन्ध प्रयोग कामा । नामाभिधान-पुर्धिः। दीयः। नामायली-सी॰ [तं०] नामोनी स्था । वह कपना

िसंबर दिशा नेबजका माम सर्वेच श्रेडिन हो। रामनामी । मामि-५ [७] विद्या मामिइ-६ [गे॰] नामनारंश १

नसिन-रि[ा] गुरुपाहना।

बामी-वि नाधवाण मानदा प्रायद शियात महारू िम्म्हा बड़ा माम हो । -विरामी-दि प्रान्ति मन्दर म्बद्ध ।

मान्य-दि [नर्गे गुदाने शपदा क्रयोपना ।

चपस्या (

मियमन-पु [मं] नियममें बॉधनेका कार्य जनुदासुन वा बदावें रराना निर्येषण, द्यासमा निमाह दमना मेमा विधान विश्वतं दूपरेका निवारण हो ।

नियमपती नार्ग भिने वह स्रो दिलका मानिक साब

मिबमिन रूपने दोना दो । मियमित-वि [गे॰] वेंथा द्वना निधिता निवसीरा अक्सा हुभा निवयवद्यः निवयके बनुसार, बाह्यवद्या ।

नियमी(मिभ)-वि मि नियमके अनमार चन्ननेवासा नियमौका पालन कर नवाला ।

नियम्ब-वि॰ [गु॰] शिवमन करन थोग्य शासन था निमह बरने बीम्बः निवस्ता शीने बीग्यः। निपर्1-४० निदर पानु ।

नियराई १-भी छपोका नियरता।

नियराना • ~ अ । बि. पारा भाना । स १५५ना ।

मिवरेश-अश्रद्ध नियर²!

नियात्र - प्रा•} इंग्लाः आवश्यक्ताः प्रार्थनाः भेंद्र रर्शन । स्पा चरावा। फारिका जगार । ~कामा-पु पत्र (निमप्रता प्रशासित सहनेक निक्र अपने प्रवे किए प्रपुष्त)। -प्रांत्र-वि हुछ बादनेवामा। प्राथी। विनीत (क्का विनय-प्रकाशकार्य, निनयक्त अपनेको कहता है) । मु॰ -हासिछ करमा-(१३मे) मिकना दर्शन वा वरियम शाला ।

निपातन-५० [तं •] दे ॰ निवातन ।

नियान-पु॰ [गं॰] थोडा गोड (वै॰)। व चरितान १ ० **स** है॰ 'निश्रत'।

नियाम-५० [में] निवन ।

नियासक-पु [००] नियम करने वा वनानेवाला। स्वत्र रथा क्राप्तिकच्या विशायक नियमन करनेवाला निर्मेता भनुग्रामकः हुर क्ट्रव्याला माग्रकः ग्रास्थिः माँगी महाइ । [भी निशायका ।] वि निर्वत्रम करमेवालाः दमन धरनेदाला; द्यानुन धरनेदाला । −राष-<u>पं</u>दारेदी मारमेशमा शोशनियोदा ग्रह्मशब (का है)। नियासन-स्रो दे नियम ।

मियार-प भीरते वा द्वनारको इकानको इता कनका। र प्रेडेमे बढ़री मगमराज तिए उत्तरी सतुराकी तिनि सिवन कर ने दें लिए मधा यानेशामा पत्र ।

मिपारना • न्य कि अन्य करना दृर काना - गुम मीनि बरबर करी क्लडी बान निवारि से -चूर ।

नियास - दि दबर सुता।

निषारिया-पु रहते मिनी दुई बर्ड्स हो छ बनेवाना निवारमेरे ज्ञान निवासनेवाणाः समुर व्यक्ति ।

नियारेश-म दे स्वार ३

नियापश्च्यु देश स्थात ।

मिएम् -वि [रोव] सराया पुत्रमः शेल्य दुशा निवर्शनेताः बिने बेरना दी नदी वें बेरिना की निदीन करें वा रिक्षों निर्वेच करादा जावा तैनात दिया दुना भें रिनर परपट्रशास्त्रा की अधिकारित अधिकृत र निपुर्निप्र−भी [4] नितुक्त हैने शा दर>धी विश्व

वैनामी सुक्र(रा।

नियम-वि [र्थ•] एक कारा दग्न महा। ४० दक् का दस काराधी मंदवा ।

नियुद्ध-५ [मं] हावा-वीदी शहुदुद्ध कुरती। निर्मे कप्य-वि [र्ग •] निर्मे शिव बरमे योग्व । नियोक्।(भर्) −वि०, पु० [सं०] समाप्ते वा प्राप्तनेशकः नियोजित करनेवाला निवाद करनेवाला। नियोद करने वाका है

निचीय-पु+ (सं•ो बगाना वा चीतनाः निवक बरनेधी किया। प्रेर्मा करना प्रदेश। प्रश्त करना, प्रदर्गना माप्ता, क्योगः एक प्रापीन प्रदा विश्वके अनुभार निःग्नान की ९तिके रोगी सर्वक सा एव दोनेश दशामें ²वर सा क्रिमी अभ्य वीतके दारा मंतान प्रतात करा महाप्रे की (सन्)। यह अशाय जिसमें अधने दें निव तथ ही संशासका नियम हो सके दृशको नहां (दौ॰)।

निवीमी(तिष्)-वि [मंगे थे। निगम दिशा दवा द्वा बिसे कोई बर या अविदार दिया गया हो। निवास करने वाका । १० वर्मसचिवा नंगामिशोदी एक उपायि । नियोग्य-वि सि नियोग बरने दोग्य । प्र अर्थन्य

মম 1

मिनोजक-९ (वं०) निर्वातित करनंशाना, प्रश्च करमें शासा वैशान करते राजा । विद्योजन-५० वि) निवृद्ध इसमेद्रो क्रिया द्विमी कार्वमे

श्वच करका भरका तैनल या मुझ्टेर करना । नियोजिन-दि॰ दि॰) निरुद्ध दिश हुआ। प्रशुप किश

इ.भा. स्थापना तैनान । नियोज्य-वि [मं] निर्वेदित बरने वीम्या भी निश्चन दिना बाव । च नौहरु सेनदा दर्बपारी ।

नियोदा(रूप)-प्र [सं] मस्य परमशासः सुर्धाः । मिवायक-५० [र्ग०] स्तर पहनराम ।

निरंबार॰-रि॰ स दे॰ निराहार । निर्देशक्त-वि (गे॰) दिनशर दिनो तरहका पश्च मधी

यमबाना दश्नेशमा १रेम्छ बारी। मिर्देश-वि वर्रम शास्त्राः [मं] विना अंगकः अंगरीन

गुलनहोन- निशा दिहाइ, गृह्तिम । -सप्रक्र-इ म्पर्ट सन्दर्शका यह घट वर्षा प्रथमकी प्राथमाना रेन नरह आरीत हो। दि यहमानदे और सुर अंगेची कर्ता म MN I निरंजन-६० (गं०) विगये श्रीवन म ६५ (ता अवस्य

अंबरपदिया निरीषा अदासमे रहिटा मारा । पुण्या कारमार शिष ।

मिरंक्रम-न्या [में] पृतिकार बुगो र

निरंजनी(मिन्)-वि [मं] निरंबमी नेप्रायस (नार्)।

बुर सम्बन्धिहा एड स्थाप्त ।

निरंतर-वि [में] जिल्हें के वेरे को व्यक्त ने में करदर्शात्म, दिना कंतर वा प्रजानेका देशन्यमधी रहिते सर्वितक विसंदा प्राप्त हरा अही अर्थाद बागाए है ने कथा। सा क्या रहजराना, क्या असरित अर्था महा अरेशोद माधने नहतेवाना बना अंपित महीते शन्ता । स सम्पन्नात् वर्षवर्, वन्ताः ।

मारिदान#-पु॰ पनाका !

मारियक-पु संबोदरे और तिपहके पक्रीवाका शकताहकी तरहका देह की गरम देखीं में समुद्रका किनाता किये हुए होता है। इस पेड़में नगनेवाका फका : -पूर्णिमा-नी बंबर प्रांतका एक स्वोद्दार जिसमें कीन समुद्रमें मारियक

वेंकते हैं। मारियकी-मी नारिवछका खोपका नारिवककी वादीः

सारियकका दुव्हा । मारी नत्री • इरिसमें ज्ना गौंगमेकी रस्ती वा सरमाः ≉ 'नाडी ; देक 'साली ; रे एक पद्मीर [री॰] स्पी भीरत । ~कवच-पु॰ एक सूपवंशी राजा। -सरंगक-पु॰ सियोंको पॅमानेवाला पुरुष जार व्यक्तिपारी । **"तीर्य"**-पु॰ यह तीथ कहाँ विषयापने याद नती दुई वीच अप्तरा-स्रोंका सर्भुगने पदार किया था (श आ ·)। - वृपण-

मुरापाम दुर्जन-संसुयं ब्रादि थी खियोंके निए बुगुणस्य है।-मुल-पु पढ प्राचीन देश (इ. ए.)। -रस-पु॰ नारीक्ष रक्ष अदि गुण्यको भी।

मारी**केक-द॰** मारीकेकी-छो॰ [मं] मारियन । भारीच-पु॰ (सं॰) साहिता सामद्र छाद ।

मारीष्टा∽सी [सं]वमेसी।

श्राक्स-पुर्द्श मधिकतर गरम देशक कोगोंको दोनेवाका ण्य रीम जिसमें विशेषकर शरीरके मियने मागर्ने पुंसियाँ हो बातो है भीर उनमेंने दारेकी तरहकी पत्रजी-पत्रजी

राप्तर भीव निकल्ता है नहरवा।

भार्षस्य-दि [मं] नृपति-मंदेशी । मार्मेद-दि [मं] भर्मदा-सं√योः नर्मदाकः। । पु नर्मदामे पाया जानवासा श्चिवनित्र १ मार्मेन स्टूब्र-पु (वं) वह रहत नहीं मध्यापन-दत्तरहो

शिक्षा वो जाव।

मार्चेश-८० (से] सारंगीस्थ वेद । मार्थेतिकः−प्र मि ी-(रावना।

मार्मदा-प्र एक प्राचीन वीद विवरियानव को सगरमें था।

मार्मकी-मी [गं] शिक्ये बीहा।

माख-दि॰ [गं] मर्क्ड-मंत्रेडी का उसमे बना हुना। न्दी समत भारियी श्रदी। पांच्या पीठा तला सांदा लगी। माश्री पंदूरको सली । धुः भावकः धरतायः सूकः मायाः [हि] बसरत बरमें इं किए बमा दुआ आरी मोल बरबरः ममबरा तुण्या सञ्चा तुषा धेलानगण्यो हो आवेशाली रक्षमा एक जरीय पीपा । -क्टाइ-श्री [हि] साल कारमेका काम। माल कारमेकी उत्तरत । --थॉम-<u>न</u>-[दि] एक मकारका वीम : -वॉरा-पु नरवट, नरसस । मुरु (क्या किमीका)-कारा ई १-व्या दिलीकी वर्ग-बुरी दे (गि) । (कड़ीयर)-गदा होना-किमी स्थान का कम्मूमिकी साँति शिव होता विमी स्वातमी बहुत कविष प्रेम दोला। विभी रवालपर स्वरव दोवा।

नाक-पु [म॰] रगहमे बवानेंद्रे निय चीहेनी टाव और जानेकी परी है मीच लगावा जानेदाला लोहका काईसंद्रान कार द्वरता। -र्यत्-इ वह की धारकी रावता मृतकी परीमें बात अपनेका बाब करें। -बंदी-की जात वक्तेका क्षाम मालवरका केळा । ~तानीशी-पुरु क्छ । नावी(विन्)-पुरु [१०] कवड मस्याह ।

प्रकारकी कमाबीकी शेवराच जिसमें कई छोटी मेंबराने कटी बाती हैं।

शासकी~को एक तरबनी सुकी पासकी।

शास्त्र-पु॰ बूरतक गया दुआ लंबा-बीडा यद्शा जिसमें बोक्ट बरसातका पानी किसी नहीं आदिमें पट्टेंचता है। बससे बोकर बहरीवाकी जलको भारा रंगीन गेन्दार सूत्र, नारा । सी [सं॰] कमल्ट'ब: पीपका पीन्य तना ।

नास्ति—मी॰ [सं] कमक कादिकी टंटी; पप्रपुष्पा ण्य प्रधारका शाकः माधैः सिराः बटिकाः २४ मिनदः बाधीका कान धरनका आकाः पानी वहनेका नाकाः पंग पत्रानेका वहिवास । - अंध-पु॰ बीमधीमा !

माखिक−पु• [र्ड•] कमकः भसाः एक तरहरी वॉसुरी ! मालिका-की [रं•] कार्यका नाली। हाथीका काम देवने का भीवारः पश्चिः वमत्रका चाहुकः जुलाहीको सून कपरनेकी नजी: नाकिता नामका दाक, पट्टमा सागा पक र्श्वद्रक्य ।

मालिकेर-५०, मालिकेमी-ग्री० [मं०] दे 'मारिकेर । माकिता−थी॰ [मं≉] यक प्रकारका पडुमा क्रिमद पर्च साग के काम भाते हैं।

मासिया-न्यं [का] किसी प्रकारको शति या कट पर्रे यानेवाटेक विरद्ध ऐमे व्यक्ति या अभिकारीक निषद किया गया जावेदम की बीचीकी छनित दंद है गहे. करिवाद. व्यविदेश । मु 🗕 🗨 स्थाना – मानिस्न करना ।

मान्द्री –की [सं•] करेम्डा सागः इमकः इमकक्षे इंदीः रक्षनाहिमी दिवरा अमनी। इटमरका म्यूप, पटी: हाथी का काम छेपमेका भाकाः एक बाधा कि । मारी ।

−झण-पुशाम्रा नासीक-पुर्नि] पांका बाज जिसमें धेनक भुहपर शोहा-क्या रहता है। मान्या समन्त्रेका समृद्ध समन्त्रेदा कारहतु । मान्धीकेनी~सी [सं] पत्र-समृद्दा कमन्दीने पूर्ण जनास्त्रत। नास्रीप~५ [मं] वर्ष ।

मान्दर-पुर्श्यक्ते एक गंपहरू ।

शासीर-वि बदवर वरक जानेवाका मुखर जानेवाका ।

भावें ० − ५० भाग।

माच-श्री॰ जबके क्यर तरनेवाना बाढ या जिसका संबो-वरा शुन्त याम को नदी सामा भादि पार करने सप्रनी मारते जनमात्रा करने आदिकेशम भागा दे करणि वर्दित्र मीटा (∼धाट−पु॰ वद माट यद। मार्ने लगे या टररें ! सू॰ (स्रोमें)-चनामा-अनुसर कार्य करते थणना । - में धून उदाना-रातम मुद्री वार्ने बहुना सरेद शुरू शक्ता ।

मायक-पु (का) एक मकारका छोटा होटा मनुसारतीहा र्दशाः न मणाहः, श्वाः ।

माबनार-म वि शुक्षामाः गरामाः क्षणमाः पुनामा । नावनीत-वि [ते] हुनायम नृरूष ।

नापर शाबदि -मी मान भीशा मारध मोश-अनु मार्थार थलीं स्टर माथी −शमा । नाविक-तु [र्ग] बध्वार, गाँधी अस्तरह धनागेश माक्सर यात्रा श्रस्थकमा ।

निरवहमा-निरा मिरवहमा-भ॰ मि॰ निर्वाह होना, निवहना ! निरयाम•-पु दे**॰ '**निर्वाग । निरवाहमा-स कि दै 'निराहना' । मिरविसी = न्यो = दे = "निर्देशी" । मिरपेरा-पु० देश निदेश । निरमय=-वि देश निशेष । तिरमर*-वि दे 'निर्भर । निरमिसाम-वि [मं•] विसमै वर्षमान म हो गर्परहित । मिरमिकाय-दि॰ सि] निसे दिनी बस्तको चाद व हो निरोह । निरम-वि॰ [एं॰] बिसमें बादक न हो मेंबरहित । निरमनाक-सक कि निर्याण करना बनामा इतका करवा-'--रामायन केहि मिरमघेड -(रामा)। निरमर निरमस-नि॰ रै 'निमैंड । निरमसी-ना• दे**॰** निर्मेनी । निरमान•−९ दे 'निर्माण । निरमाना • − ए • कि निर्माय €रना बनाना । नि(मापश्र॰-पु॰ हे 'नियोश्व'। निर्मिय−वि [सं] विश्वका कीई शक्त व हो । पु० ৰতুশতা বুছ (মণ লাণ)। निरमुख्य-नि दे जिन्हा निरम्सन्त्र - स॰ कि अहते व्याहना, हम्बूदम करनाः सम्ब नह करना। निरमील-वि देश अनमीख । निरमोक्षिक निरमोसिका !- वि अनगोन, बहुभूक्त । मिरमोद्री•−दि **दे** निमोद ! निरम-१० [मं] नरक ! सिरवण-पु [मं•] स्वीतिश्ये वह शरहकी गमना ! निर्गास-दि [गुं•] अर्नकार्राहरण विश्वकर कीर्र रोक न हो प्रतिरंपरहितः जिसकी गति। प्रवाह अवस्य न हा रवण्डं अवाषः निधिः ! तिरर्घ-वि [मं] दे 'तिरशंद । मिर्पंड-(द॰ [मंग] जिएका कुछ अने म को नमनन्त्र दिमसं बोर्ड प्रवीवयं म स्प्ति वी निष्प्रवाजन निष्क्रम अवर्ष बेटाम । यु एक शुभ्यशीप नहीं दशको पुनिदे शिर अमाधरमक ग्रम्त रम दिया गया हो (ना): **र**ष्ट निधरम्बाम (म्दा)। मिरर्चर-दुर्शिद्ध मरका निरधम-वि [में] मक्रवहीत । निरवकारा-दि॰ [मं] जिमे या जिमने भवताय न ही अवस्थाराहरू । निरबग्रह-निर्शिको है निर्श्येत । निरमरिएक-दि [मं] जिल्हा निकृतिमा स प्रदे निर्देत्रर । बिरबय-दि॰ [र] दीपरदित दिश्या बन्दर अद्यानी र्शास्त्र । पण्डला अर्थासे स्ट्रिम परमण्या । मिरबपि-'व [मं] रिकडी वर्ष सीता न ही न्यारेत रियोध । निरमपप-रि (छ) अंदरदिन पूर्ण जिएम्बरा जिल्ला

विभाग म हो गर्दे ।

वाधपद्दीय । मिरबरीय-वि॰ [सं] संपूर्ण समग्र। निरक्सायू-वि [सं] प्रसम्र 🛤 । निरवसित-वि [सं] जिसके भीवन हिमें दूर बाव दिर श्चक म दी सढ़ें (यांशक मारि)। निरवहानिका निरवहासिका-स्रो [सं] बाबा बहार दीवारी प्राचीर । मिरवामा-स॰ प्रि:• निरानेदा दाम दराया । निरवार-पुर टावने वा दूर करनेकी किया शिक्ष त्राण बयादा मिनसाराः सुकतार । निरवारमा*-स॰ कि॰ निरारण करना। हराना। वी-र्वपन्त वरनुको दूर करना। मुक्त करना गुशना। सौनना वक्त्री दुरे वर्जुकी सुक्रशामाः वित्रपानाः सक्रम बर्जा वक्ता रदागनाः सय दश्जा फैनला दश्या *१* निरवाद्य 🕶 🙎 दे 'निर्वाह । निरवाहमा-छ द्वि रै निवाहमा । निरचेत्र-पुर देश 'निवेद । निरम्बय-वि [तुं+] शायन अनवर । निरशाम-दिन [लं] दिमने क्रष्ट गावा-दिश व हो । प थो। इमका अनार करना। । निरमंत्र=-विश्व के विश्वास । बिरम-दि [मं] जिनमें रम मं श्री रखने रिश्वा दिशा रवाहका श्वारहील फीका वेमना सारहीना मी आलंड व है। हरना बुला-शुरसका हतना। रागरीय र विरम्म-पु॰ (वं॰) वेंद्रमः, दृश दशनः, भरत्रामा निश रपा होश्य प्राथानकाना बमन करना। मुक्ना। हर करमा, निराहरका माध्य हरना भाएत । मिरम्ब-दि॰ [तं] दूर बराबा दुवा विमन्दा निव एत विया गया हो। निवारिया नमन दिया हुमा। युद्धा हुमा। केंद्र। पुत्राः अनय द्विया कृषा त्यमः गेदिनः विण्या माध्य दिवा नवा दी: शिलदा अवारम शीवना दे ताब किया गरा ही। एक चेंद्रा मा शीहा हुआ बामा मार्थेन कारः वरित्वागः त्यरायुक्तः ष्रधारणः वेदमा । -भेर-दि जिनदा अनर दर वर दिवा गरा की अनुस्त। -राग-(। (४रमः। निरम्ब-दि (म) जिसके पाप विवाद मंदी तिमा इविकास विश्वा मिरविद्य-मि [म] क्षिम्मेने रही निराम री क्यी री रिना रहीरा । बिरहेवार निरहेट्य बिरहेट्ति-विश् [र] दिस्य अभिम न न हो। लिये इत्तर बीद्रेष नाविक्रमी वर्षे देश है यह अपना मधा। निरहम-दि [मे] अविदार्गतम : निरम्ग-रि है किरेन र ज़िर्देश -दि ज़िन्दी बरोज्या के व्याधानार न if gen fage : निया-वि दिना किन पादा तिहास किमने दिनी पनी angag eine auge matureurer varu, fir विषय कि भी भी भी

निरवर्णन-वि॰ [र्स॰] बिमे बीर्र सदारा म बी. बसस्तर.

623 दीव मिद्धालनाः किसीमें पेसा दीव बताना जी बास्तवसे त हो (स्त): बप्ताप्तः जिहासनः वयसामी । --सनसि-सिंदा और प्रशंसाः स्वातस्तिति निवाके स्वातमी की क्यो वरोवा । निवाई-सी॰ निरानेका कामा निरानेकी उत्ररत ! मिंदामा-स• कि रे 'निरामा'। र्निवासा-वि जिसे भीद का रही हो। अस्साया हथा । सिंदित-वि सि विसन्धे निया की गयी हो वा की बाती ही वर्षित, दपित । जिल्ला - ली जॉद सिंदा। मित-सी [मं•] मृहबत्सा। मरा नवा सननेवाकी सी ! निय-वि+ [de] निया करमे बीग्यः क्रिसरी सिया की भाव, सिंहरतीय है मिय-व [मं] नीमका येत्र । -तरु-प्रश्न मीमका येत्रः महारका पेका वसायसका केंग्र । −कोळ-च राजादस विकास (धरीकी । सिंबकीकी सिंबकीश-सा॰ मामका फल । लिंबरियार्ग -त्या सीमहे पेपीका गाग । नियादिस्य-प्र [सं] निवादं संध्वरायदे आति आधार्यं जी राधिकाके बंगामा अवनार माने जाते हैं। निवाक-पु [मं॰] निवादित्या एक वेष्णव लेग्राय विसका प्रवर्तम निवादित्यमें क्लि था। निष निषक-१० (सं) पागर्था मीन । निम्ह्रपट-वि सि॰ दे॰ निम्ह्रपट । निकाशित-वि• सि | दे निकासित । विश्वासित-(६ [सं] दे 'निफ्जासिन'। निकाय-विश् मि विश्वविधि रहिता। मिक्सेप-इ [मं] रे 'निधेप । निगमम-विश् [संश] है 'निगमम'। जिल्लाह्न-दिक थि है जिले दिनी प्रकारका सरका म औ. निहर । अ दिना दिनी मरके वा टरके । निमानु-दि [मं] शपुरदिन । मिधारर-४ [गं] चण्दरहित वहाँ किता प्रकारका शब्द म होता हो। वी किमी प्रकारका सब्द स करे । नि'यास−द र्गि देशियः वेभीनोः ब्रशांति । विश्वारण-दिश् (से] अरक्षित । मिग्रासाक-रिश् वि विश्वांत विश्वेत । मिकास्य-रि [तं] एस्यरहिता बध्यदिन। प्रतिशंवसे यदिन। निःगरवा-मी [गं] दंती इस ! निश्वाम-वि [वंश] छापादीन । निर्माल-(व. [मं॰] दे॰ 'निर्माण । निःग्य-4• [4] एक्टिशन निरुत्ताह । नियान-त [त] एक प्रसारका विमा हेवका बाल व निष्युम्प~दि [#] रिसर्कशाणी । नियाय-दि [में] दिसमें मुछ पत्र म जाय सारा नम्पा बिसमे गत बरमंदी स रह गया ही, वर्ण समात । वि सोड-वि+ [मं] शेष्ड वा निवासे रहित । वि'शाष्य-रि॰ [र्ग] रिम्प्टा परिमार्जन करमा शानरएक म बाधारक दशकार

**-E

विकारीक-विक सि व क्रिकीन श्रीमाधास्य । तिराधीली-जो । [sie] आहरो सीदी: मीदी - राजरका देश: प्रक तरहादी बास L किश्चिक्य-प॰ मि । मोक्षः करवाणः मंगरुः विद्या विद्यानः प्रक्रिय प्रसादः विद्रोप अत्तरः दिश्य । वि सर्वेत्तिम । तिग्रहत्तरम-प॰ (सं॰) साँस बाहर फेंक्सा । जिल्ह्यास-प॰ सि॰ प्राणवासके शासिका द्वारा कारर जिल्लानेका ब्यापार, शॉमका बादर निकलनाः संबी साँस । मिलांकोच-म , विक [लंक] देव 'जिलांडीय'। विकासिक - वि. सिंशी बातवित्रम, विकास । क्रिक्रांत-कि॰ मि वि॰ 'जिल्ला'। विषयंचार-वि मि विशिष्ठीनः घर न छोउनेवासः । निक्यंत्र-वि सि निवासीय गोरीय । निर्माताल−वि [सं+]दे+ 'निरगंतान'। जिल्लांकेट-कि जि कि 'जिल्लीक । निवर्शक -वि सिंगी संविर्धात, जिसमें केर मादि म हो। पना, कमा दशाः मनपत्त, इत । मिम्संपात-प [संग] मापी रात (बव नोमेंका आस-बामा र्थन हो जाता है।। मित्रमंत्राच-वि भिश्ची विरत्तत t शिम्मका-दि मि] * भिरमस्य । निमावस-वि [सं•] मिएके सत्त न हो, शहमींसे रहिता निष्यंद्रकः विश्वया प्रशिवंदी म द्रीः अहिलीकः केवल प्रकृतः। बिग्सरबा-इ [मं] बाहर भागाः निरुक्ताः यर बादिहा निकास (हार)। भरण। वचनेका रास्ता अवायः निकास । शिकारा - वि. मि. दे 'तिरमार । निस्सारण-प [सं] बाहर करवा, निश्रासमा, वहिष्करका पर भारिका निदास । निमाग-भी भि॰ दावी। शिमारित-वि [सं] निकास हुआ। बाहर दिवा बना । शिक्षीम-(व [मं] दे 'जिल्होम'। निम्मुकि-९ (एं॰) एक मजरका गई जिससी कालीसे हैं व मही होता । मिन्स्तु−वि [री॰] बाहर माया हमा निरम्य हथा। निन्स्नेड-वि [मंच] दे निरम्नेड'। सिक्सेडा~श्री मिंशी अक्स्मी मीसी। मि स्पेत्-वि॰ [धं] र 'निरर्गर'। बिन्छड-वि॰ [र्ग] विशे क्या बस्तको स्था स को निरीह आधारहित । नि"साच~पु[र्ग•] वयत अवगुर । निज्याय∸पु[म] मॉदा मिफ्द∽दि[ंं]दे निस्त्रा निम्ह्यातु-वि [र्ग०] रे 'निमनार्'। निम्म्बार्येल्पि 🗐 🏃 निरस्कार्च । नि-उप॰ [सं॰] एक करणर्ग जी अवीजाब (जिवान) जनह (निका), पनवा (निकाय) आहेग (निका) निकार (विकेश) बीएड (विश्वप) बंधन (निषंप), सामीया (निक.) आयान (निवृत्ति) दर्गन (निवर्शन) सामद निव्यवर्धाः निव्यविधी-कोशः [ते] बादवी शोगीः | (निकाय)। अपनेदेश (नियोग) लाधिकी विधारणास्त सीमान

सीगी ।

निर्दिग - निरुपेध निर्दिग~दि॰ सि॰ो चवछ दिशर । मिर्दिगिणी मिरुगिनी-एगै॰ [मं॰] परवा । निर्दिय-दि॰ [रां॰] की दिशी बंदियसे रहित हो, दिलकी कीरै रंदिय रकाम हो। फमकीर । मिरिच्छ-वि [सं•] त्रिते कोई पाइ म हो निरोह । निरिच्छन । - पु॰ दे 'निरीक्षण । निरिच्छना - ए० कि निरीक्षण बरला, च्यानपूर्वक देसना । निरीक्षक-प्र [मं•] निरीक्षण करवेवाका, ध्यानस देसने बान्याः परीद्या-सदनमें वरीश्वाबिबीकी निगरानी करने माछा । स्थि॰ 'निराद्यिका' ।] निर्शासण-प [मं•] गीरंधे बेमना। देखरेख करना। स्त्रास्ना बरना, जॉय बरना। शिवनत भाजा । निरीक्षा - सी॰ सि॰ दि 'निरीक्षा । निरीक्षित-नि॰ [र्ग] गीरमे देगा हुआ। देगाआहा हुआ। विसनो जॉप की गयी हा मुलारना किया हुआ। मिरीक्य - दि॰ [मं] निरीक्षण करने थोग्य, हेमरेस करने वोम्द । निरीक्षमाण-वि॰ वि) विशवत निरीधन दिना जा रहा था जिसकी नियरानी की जा रही हो। निरीति-निर्मार्थने अनिर्देश अनावति बादि ईतिरोसि र्राहत । निरीधा-रि सि दि॰ निरीयर १ व वे॰ निरीय ह मिरीचर-वि सिनी जिसमें जैनाचे अस्तिनका संदर्भ हो जिसमें देशरके सभावका प्रतिशासम बोर वैश्वरकी न मामनेवाना नारिम्ड !-वाद-पु वैश्वरहे भरितनका में "न करनेवाला सिद्धांत । "-वादी(बित)-त॰ निरी: मरवाइक्षी सामनेवाचा । निरीय-प्र. [में] इन्द्रा काक। निरीह-दि [ei+] विषे किमी बरमुकी श्रमा न बी इस्ता सुम्माने रहित, बरातीन निरक्त ने किंपाधीक न ही भेदारदित द्यांता उपमहीन । निरीहता-सी निरीहाय-इ॰ (सं॰) निरीह हीनेश मान जेहाहीनठा । विरोहा-छा॰ [सं] १० 'निरोहता । विद्यारां - पु है जित्यार । निरभारमा!-ल॰ &ि॰ दे॰ निरवारमा । मिरणः-दिश् [मं] क्रिएका नियनम किया गया हो। क्रिकेल करानेपाला। नियीयमें मन्त्र किया हुना। पु केरके ॥ अंबोदेने एक बारक सुनिन्धिय एक ग्रामिक श्रंप तिसमें केरिक शार्मियों जिलाह स्थारता की सबी है। Se धार-पुर जिल्लाके र्वायक वास्त्र स्थान । - ज-व चपदे बारह अर्गहरी बळ ह बिर्मि-श्री [बं•] देशी स्पास्था तिश्रमे प्रहेति प्रचन भारि अवयुरीका सर्व रामगाने पुर प्रश्लीका सबै नवह

WT I

निद्यम्य न्य −वि

निरुष्ण-वि वै 'शीर्ष'। निक्तर-वि [सं०] दी कीरे बक्त म दे गर जिन्हे वाल कोई खरूर म ही। जिल्लाी मधान बंद ही अपी ही अपः निसम्ने वदा बीर्ज और म हो । निरम्सव-दि [तं] दिमा प्रसारका । निरस्साह-वि [मं] विश्वत्रे प्रामाह न हो क्रफार दिए। त प्रस्तादका अधाद (निरुप्तक=वि॰ [सं॰] बार्चन प्रश्नुकः प्रसूचनःसाहन । निरुक्क-दि [र] दिनमें या बर्ध जल सही उन रहित । निरुद्देश्य-विश् [संश] बरेश्वरदित । अश् दिना दिनी परेश्यक्ष । निस्द्र-वि॰ [स॰] विमध्य निरीध किया गया हो। विधेष कपने रीका बना। विरोध रूपने क्या द्वारा मनिवद विश हमा। विश्वती र्थंय भूमिबीमेंने एक (वी)। -बंग-नि शिराका गमा र्रथ गवा हो । लगुद्र-प्र पद रोग दिस्ते मन्द्राम बेरसा हो बाना है ।-प्रकल -प्रकम-१० मन-हार बंद सा को बाने और फल्का मुक्के ३५ स्टब्स निक्सनेका रीग । निक्कम-नि॰ (र्स॰) बी क्ष्यंत्र म वरे, प्रश्नाव पदा रहने बाबा बासगी वेढार, निद्यमा । निष्टचीग−4ि (सं]**दे** 'शिष्यम । निरुद्वेग-दि [मं] क्षेत्रहरू यांत्र । निरुप्रतिष्य-नि [मं] विश्वमे श्रवर न घो सके। नियुद्धम-4 [र्ग] क्लिमें का अहाँ कोई बादाय म ही, धानिमन विव्यर्शस्य शर्पाना भी दिनी अधारको वाना बा बाद म वर्षे बाबै। प्राय अंतरुवारी । निरुपधि-ति॰ [मं] रिशास, परिषा ग्रंगा निरुक्त, तिपदर । निरुप्रपत्ति-वि [वं+] क्यप्टिगदित ३ निरुक्कम-विश्विश्वे 'विश्वद्यव'। विरुप्तम-वि [लंक] वेजीव अनुव्योद । निहत्रमा-भी॰ [गं॰] शावधी । जिल्लाकोता-दिश विशे जिल्लाहा होते परवीम म ही. मैं शिमी काम ल आहे। जिल्लामी-विश्वसार, जिल्लंह । विकासरी-दि वि क्षेत्रदेश रहित्र । जिल्लाकम-वि विकी विकास परित शति । विद्याहरू-वि [मं] विशे शांत म पर्देनी 🕅 अन्तरण हाम संगणकारी । निद्याल्य--वि [वो] विश्वी मग्रा म दी अनप्रद (अन-अन्यापुत्र नात्वारविष्)। विना रश्लका नीवत्र बी बार और बयनों पर हो (दें ? - मदा) र विद्यापि-रि " "निर्मार । निरुपाय-रिक (गेक) दिनके पछ दीरे वपाय मा ही। की दिया गया हो। एक बाम्यानेकार कहाँ दिनों के जनका प्रानद कर्न होत्रवर तुनिपूर्वस कोने सननाना अर्थ किया कोई बंधाब करनेयें कलतने हो। जिल्हा कोई बचन स है। रिमाहा बीते प्रशेषाह अ दिवा था गठे ! the need to the finds (it) and might (तंत्र) जी भागत व केंग्रा ही जिल्ही बान ब्रेबाम दिया पेट हो। नहीं भीत नेनेनहरी जनह स एवं देन ।

क्षी सेना संस्था ।

का एक वेंबः वेंसका कार १ मिश्रासना-स कि॰ सदर करना वा काना प्रकट करना। प्रशादित करना गिराना, बहाना। व्याप्त या भाग वस्तुमोके साथ मिली हुई वस्तुको पुश्य करनाः बमाना, चगाना। गरी वा सटी दुई वस्तुको बाबारसे इस्स् सरमा। इस-पक्ष वा गावे-नामके साव पक रवानसे मनास्त इसरे स्वानतक के माना किसी कोरको वहा हमा करमा। बरस्य करना पैदा करना। बीनमें के जाकर नाहर के बाना ना पर्टेंचाना, पार करमा। शरीरपर परपत्र करना समारनाः शस करमा शिक्षा समाप्त करके पृत्रक करमा। रिवर करना, शोपना ठइरामा। वृत करना। नष्ट करना; प्राप्त करना; व्यक्त करना, सीकना; संबद्ध करनाः पूर्व करनाः जलाना आरंग करमाः छैतनाः शस्त्र करमा, पृथक् करमा; इक करमा; निर्माण करमा, वैदार दरमा; (मदी आदिको) उठ्ठत करमा, यदाना कार्रम करना। खोजना, बारिपदार करना वैवाद करना। कैंसा, वैंदा वा जुड़ा म रहते देनाः प्रवक्ति करमा, बारी करना प्रवृतित करनाः प्रकाशित करमाः वेचनाः स्रपत बर्ता। सिक बरना, शाबित बरना। र्यंत पानेसे ववामा मुक्त करनाः क्यार वंबन आहिसे मुक्त करनाः रक्षम जिल्मे उद्दरानाः फाक्कर अलग करनाः वरामर करनाः दिवालाः श्रवारताः श्रवारी कोलं का भोतार्वश्री शिकादेता। निकामा-पु निकाननेकी दिवा। वहिष्कारः निवासन ।

निकाश-g [4] क्रितिकः सामीप्यः साध्यव (समास्रोत

में)। रहव ।

निकाए-द [ले॰] सुरचनाः रमक्ता ।

मिकास-तु निकम्न निकासनेकी किया था भाषा दारः दरशजाः निदम्पनेका मार्ग या रशानः बाहर या नामनेकी सुधी बग्रह दर्व-निर्देका मैदान खदना बहुम जुलरवाना शक्रोंका रास्ता निर्वाहका क्याब निरुत्तिका बैदाबा मूळ ररोदा मागका बपाव समायका रारता (रशको शुक्ति) भावका रास्ताः भाव बामप्रणीः (सं॰) दे निकारा'। -पम-प (दि) जमा शर्न और बगतके दिशासकी WO I

निकासना!- स कि दे निकानमा"।

मिकामी~मी निकाननेदी शिवा वा भावःशस्त्रातः भाव माति। यह रहम जी मानगुजारी आदि वेशाद करमेंदे बार बमीनारके बास बच सुवाबार माध्यके एवानवी था सराहे। रवन्त्राः चुनीः रायतः।

निकाद-इ [अ] मुमलबानीकी विवाहपद्यति। यन प्रातिके ल<u>न</u>्नार किया गया शिवाह । ~शामा~पु० वह दानव निधमे निकारको धर्ने किसी बातो है। -(४) वेवगाँ-प विषया-विवाह १ -बाली-पुरु शहना दिरागवन ।

विदाही-दि मी विदाह करहे नादी हुई। (वह थी) बिगने रहेग्डामें किमीने निक्ष कर निवा हो। निविधाई।-भी। निविधानेकी किया क्रमकी कक्षण ह निविधामार्ग-भक दि भी नहर परिश्रों सक्य करना

करना । गिकिल#-वि• दे 'निकट'। निक्रंच-प्र∘ (सं∘) ताको क्रेबी र निकुरेचक-पु॰ [सं॰] एक प्राचीन परिमाणः बरुनेत । निकुंचन-पु [सं•] सङ्ग्यमा दे 'निङ्गपक'। गिकुचित−वि [सं] लेक्कविता निकंत-प्र॰ [सं] सपन वृक्षी और ब्रह्माओंसे आकृत स्थान कतार्यटप । निकृतिकालाः, निकृतिकाम्सा-म्नो॰ [सं॰] एक स्ता । निकुरंश-पु॰ (तं॰) यक असुर विते कृष्णमे मारा बार कुमकर्णका एक प्रमा प्रहारका एक प्रमा एक विश्वरेगा एक कीरब-सेनापतिः कुमारका एक अनुबर: शिवका एक बस् परः दंती क्या। निर्दुभारुपश्रीज-९ [सं॰] बमास्त्रोहा । निकुश्निस−दु[मं•] मृत्वयो रककिया। मिक्टमिका-मी [ti+] संबादे पश्चिमी द्वारके वास रिश्व पक गुष्पा रच गुष्पार्मे बास स्टामेशाची देशी। सर्पत्र आहि

करनेका स्थान । निक्टमी—सी सि देशी दक्ष। निकृरंब निकृदंब-पु (सं॰) समृह। निक्किंगिका-मी [सं] वेशपरेपरागत कहा: वावि-विशेक्षे क्या।

निर्हातन-पु॰ (सं॰) बारनकी किया चेत्रना विदारणः कारमेका यंत्र । दि॰ कारनेवाला क्रिज करनवाला । निष्टत-वि॰ (र्रा॰) बहिप्कृतः विरस्कृतः पराभवः परिव मीना घठा नेवित प्रतारित।-प्रज्ञ -मति-वि इक्षेत्राः

निकृति-सी [मं] वहिष्कारः तिरस्कारः परामनः दीननाः र्वेग्यः नीयताः इच्योः एक बहुः प्रहारमा अंचना । दिव भीय दमीना ध

निकृती(विन्)-रि [tl] भीय अथम । निकृत्त−वि॰ [मै] बारा दुमा छित्र। विदीमें । निकृष्ट-वि [म] वादि, भाषार वादिस होन, होय. नवमा गुण्य । तु नव्ययः सामीयः । मिकेचाय-५० [मं•] देर क्याता । निकेत निकेतक-त [र्व] यद बासरबान, निवास निकरात-पु॰ [सं] पर, नाग्रस्थाम; ध्यात ।

निकाषक निकोरक-पु [मं] अंदीकका पेर ! निकोचन−दु[तं+] संहुपमा विद्योगमार्ग-स दि॰ बॉड निद्यानमा दौर रीमना १

विकाली-भी हे भीराई। निमाह-पु [मंग] मोरा येत । विषय विषयण-तु [मं] बीटा मानिका चारदः शर ।

निम्नण−५ [गुं•]च/नः निधा-मी [मं] स्थित नीय ।

निक्तिस-दिश [मेर] वेदा प्रमा स्था प्रमा प्रमा बरोहर रमा दुला मना दुला; दल्तिक । निशामा-नी [सं] स्पेद्ध प्रशासकार ।

भीवदर ताक बरना। वल नावंगधी भीदवर अनव निर्धेष-पु (ग्रंग) वेंदन प्रापने रसने अपने वकाने

तिश्रंय-निर्धर्म तिज्ञय, निर्जिति-न्ती (र्शः) पूर्व दिवय । मिश्रीर-वि [मी] जो कथी जुड़का म बी, सदा प्रवा बला रहमेवाला । पुरु देवनाः अगुन । -सर्पय-पुरु देवार्थय सामका चैता । निर्वस-मी [मं] गुडुषा वानपत्री। निर्मेस-दि॰ [मं॰] बसर्हिण वहाँ पानी म हा। जिस्में बन्दर न प्रदेश दिया जाय जिसमें बक्त पीनेका निकेत दाः पुरुमस्मृतिः (सीरु 'निर्वेशा' ।]--(सर)क्याः यशी-मी॰ स्वप्न-दाका प्रकारको क्रिय विस सनी जननक प्रदय नहीं बरते । निर्मात-वि [मं] भाविभीत प्रकट । निर्जित-वि सिनी यो अच्छी तरह श्रीत किया गया हो। बी पर्च करम बदामें कर किया गया हो। निर्मितेक्षिप्रधाम-४ सि॰ वित निर्मिद्र-प सि विश्वकारित । निर्मीय-दि [सं] शिसमें बान म द्या, गनमाया शक्ति वा उत्पादने रहित्र मुशक्ति । निर्धर-५० [सं] हरना प्रवाता गर्जबा एक बोहा। मुसी-की जागा शामी है मिर्झ रिक्टी, निर्झ री -- मी + (रां+) शरमेथे (शहन नेवाको शर्गा) निर्मरी(रिम्)-इ॰ [छ॰] पराव । रि॰ विछ्छे शरहे झरने ही । मिर्वाच-प॰ (मं॰) इरामा। किस्रो विषयपर अधी तरह दिशार करके बसके की पश्चीमेंने किमी बकती अधिन उड रामा। दिशी विषय प्रत्य और क्लापप्रका विमर्श करके टीक मन रिवर करना। विभारपतिका निमी निपारके विषयों अपना नम रिवट करमा किमी विचारपति हारा किन्ती विवाहके विषयमें दिवर किया गया मछ कीमका-निवरारा । --पाय--प्रश्न स्ववदारके भार वार्रिमेंगे वकः विवार-मिष्क्रि । निर्णबन-तु [मे॰] विश्वय का निराश करना । निर्मयापमा-छी [मं] अवंत्रकारका रक भेर जिसमें क्षप्रेय तथा क्षप्रमानके गुल्ते तथा श्रीवीकः विश्वन दिवा श्राप । निपार~प्र• [तृं•] न्दरेदा यस अथ । निर्मायक-दिशः ह [म] निर्मय करमेशाना । feniun-y fei l feun unbit font mitat भाषा है बाहरी ब्रीकड़े बन्महादिशमा ब्रह्मों। बन बहना है । विर्शित:-दि [4] पुरा प्रमा, शोपना विमुद्दे विद बार्डांसच दिया गया हा ह विकिन्दि-स्पे में] भीवा श्रीषमा श्रीराप्त । क्रिसील-दि॰ (मं.) विमुखा निर्देश दिशा शक्त हो: चैनुष १ बिर्मेक किर्मेजन-१ (में देशेन गता कामा सन्त्रा प्रावदिवस । निर्मेशक-त शि शिर्म दश्या बिर्मेशा(न)-(४० (म.) जिल्लेदछ। (ब्रोक जिल्लेस) हो प्र विचल्ली। माधी। बाबबार्टका निर्मोद-दु [नै॰] विश्वज्ञन ।

निर्मे - पु भूतः साथ ।

निर्तेक -- प्रश्नाम सदा गाँव । निर्मेना॰-म कि॰ सामगा। निर्वेष-विक [नं] जिने सभी तरहड़ रह तिये का मने। वस देने बाग्य । पु शहर मिर्वत-विक [र्वक] दिने दनि म हो दिना दनिहा। निवस-वि [मेर्च संबद्धता निर्वत विश्वयोग-वि Po 'निर्वत' । निवर्गेष−4ि[मे] प्रनाहमा। जान कता हो । नियं जिल्ला-विश्व में किया देशीय विश्वास प्रमा प्रमान । निर्देय-वि॰ [सं] प्रयारवित्त प्रकीर प्रथमका। निर्देश प्रचेदः सव । निय यहा-न्यं • वि । निर्देश होनेका भार कहीरहर श्रा निष्टरता । निवर-प्र• [५०] निशरा सारा ग्रहा । वि. वशिना निर्दय । निर्देश-वि [मं] चत्रहोना बक्तहोना दक्रवंशीने अन्य। विद्वान-पुर (नंत) शहा स्त्या। संग करना। रिर रक्तन दरनेशका । निर्देश-दि [मं•] जिनको हुए एम दिन हो भुके हो। निर्मसम्-वि [गंग] वे निर्देश'। निर्देशन-व (सं) जिलारेका देश असामेका किया। नि अधिमे एक्टिए जिलमे दाद म हो। दादघटनः प्रकाने विर्वेद्धमा ७-- छ कि अला हैना राच दरना । मिर्देशनी~मी (वं•) वर्श नामध तता । निर्माता(न)-४० [वं] दानाः निराजराताः स्थितः बारनेशन्य । निर्पासित-ति [न] रै 'ति इरिक्र । निविष्य-६ (ग.) हरून्य भारान्वाशास्त्रिम निर्मान निर्विष्ट-4ि (भे) जिल्ह्या दिनेश हिया गया ४६ ४१० माना द्रभाः बर्गिनः निर्मात । निर्मुपक्र-दि (स) है जिसीर । निर्देश-त [ब] बगवाना रिमाना संकेत करण जनामा निका करणाः भारत काम भारत दिशायण क्षमा प्रत्याः मार्थाः । निर्देशक=(०) मि] मी नि⁷य कर र निर्देश(पर)-वि १ (व) निरंश करनेशन।। (वी "faith il विष्य-वि [#] शुप्ति : निर्देश-विक [बीक] दिशमें कोचे दीए में ही निष्टणक दीशरिका निरंपराथ । बिर्देशिया-की [मेर] निरोध केंद्रिश श्राप केंपराहित्र विषयंत्रण । विश्वीती-दि है निशेष ह निर्मय-वि है निर्मेश क्षिप्रेश-वि [सं] वर्ष विचय मार्ग्य हरीन गरि विमय बीरे बिर्दारी म की स्थल्टर ह विर्याल-(४० (४)०) धमरीज प्रदिस्त । क्षित्रीर्म-दिन [क] अ ने दरित औ पर्वदरमान म करे।

भिसा**द-को** दिल] धीट मजरा दयातकि कुमा नेदर गानीः विचारः समझः वितदमः जवकोतनः व्यानः परवाः निरोधन । -बान-दि॰ दे॰ 'निगदवात' । -बामी-न्त्री * ८ मिगद्रवामी । मु॰ -रत्वमा-देखरे**क** रखना रखनाकी करना। रूपान रखना ।- समझ-नवीनीकी एक प्रकार जिमें ने नार्याहन सामने किसोको पेश करते नक दिया बरश के । इसका अर्थ है-सरकार, इनर ब्वान दें । मिरिस+-- वि वहुत ध्वारा, परम प्रिवः करवंत गीप्त ।

मिसीर्ण-वि [सं•] निगका हुआ। विसका अंतर्भव वी गया को बादिया गना को १ निर्मापः - प् [सं•] मनी गुँकारैः भुरत रचना ।

मित् निक[सं] मनीय । पु मना मका मुकः विजया निगुण, निगम, निगुना । - वि॰ दे॰ 'निगुण । मिगुनोक-दि॰ को गुजी न ही गुजीका उकरा, गुजहीन । मित्रा-विश्वसित ग्रहते होद्या न को हो अरोदिया

#शिक्ति । मिगृह-दि [सं] अति ग्राप्त रहरवपूत्र, की जन्दी समन में कथाये। पुननमुद्र।

निगृहार्य-वि [मं] बिसका भर्व रवष्ट न को विसका

मर्व छिपा थी। निगृहम-५ [सं] दिपाना, गोवन ।

निराष्ट्रीत-वि [एं] पद्भा प्रका, गिर्वतार किया प्रभा। मध्ये बादा थया। रहाया द्वारा विसदा रमन दिना गया हो। विवाहमें परावितः यी बातमें पढड़ गवा हो। आमर्ति। पीहित 1

निग्रहीति-सी [मं] रीका परामय ।

निरादिश-५ [भ] बह ५६८ विश्वपर प्रकाश भीर छायाता भरम प्रकटा पहा हो। अर्थाद जिसमें सुकने और स्पेरिकी वगह काला और नहरा हा और काले-गहरेकी जगह राक्ष्या और सप्रेट की 'शामितिक का कमटा। वि क्षणारमञ्जू कामका सकाशासक जो निर्देश का सम्बोधार्त मुचित्र करे। निगोदा-दि अभागा, निरामना विश्व कोई स हो, जी

ग्यरम अफेला दी। निदासा। + बुळ शीख। निगोश = [4 है 'निमास' ।

बिग्रह-पुरु मि] रोट अवरीया वध्ये कालाः देव देवा दराना दममा वीचना, बंचना अनुसद्धा अनावा प्रवृत्तिते निवारित वरनाः मध्यास और वंरान्य द्वारा निचन्तिका निरीकः शीमाः भर्तनाः करमारमा । -- क्याम-पु नाद रिशासी वह स्पन वहीं असगत या अद्यानकी वर्गी करमेंने वारीकी सूर्वे करकर सुप कर दिवा जाव (त्वाः) । निमहण-५ [म] शब-नाम करनेवी किया। नंपमा स्थान हर देमेडा कामा क्रामका विक रीवन या इसन **प्**रेजेशका ।

निधवना - स कि पहत्ता। रीक्ता देश देशा, बसन

निमही(हिन)-वि [५०] निमह परनेवाण समन सहन मानाः बंद नेजवाना ॥

निमाह-दु (तं) शाका वंद व

निधाइक-वि [0] ने असमिकीरी अनुनित्र सा

म्यावदिरद्ध दंध दे।

निर्चाटका-ची [सं•] एक मधरका कर । शिर्बाट-पु [सं•] वह संध जिसमें खन्योंके पर्यायोकः संग्रह हो (वैसे समस्तोश, इस्मयुप, वैजवंती १०); बंदिक शब्द ब्रोध गिसको स्वादमा पाल्यने अपने निम्त्तमें की है । निध-वि॰ [सं] जिसकी अंवार्र और भीकार्र मा मोरार्र

वीमों बराबर बी, को कितमा संवा क्षी कतमा की चीका या मोटा थी। पु॰ पापा केंद्र।

शिष्यदना :- अ॰ कि॰ घटना, कम शोमा - नियटत मीर बीमरास चंसे'≔रामा≎। चीतमा! च॰ कि सिशना⊦ सह ब्रह्मा ।

निवरपद-वि॰ विमा घर-बाटका, विमा धर-बारबा। बी थून-फिर**कर** एक हो अपक्षपर रहे और इद्यानेस भी स इटें। केशर्य निर्मम । मुरु -- हेमा - कश्चित दिन जानेपर सफाई दैनेके किए शर्ते बनाना !

निधरा∽वि॰ दिना घर वारकाः निमोधाः स्थोनाः सीच । निषर्यं निषर्यंग−५ [सं] रगर विसायतः पीसना । निषस-५ [सं] भोत्रमः आहार । नियात-द [र्श•] भागात, प्रदार अनुराध स्वर ।

नियाति~की सिं•ी निशर्षः इपीटा। नियासी(तिम्)-वि॰ सि॰) प्रदार करनेवाका, आपास

करमेवाला। शारमेवाका वध करनवाका । [स्वी 'निया (तनी' 1) मिप्पष्ट-प्र. [सं] शब्द बाबामा फ्रोस्प्रकः।

निप्रष्ट-वि॰ [सं॰] रगवा हुआ। रगव सावा हुआ परामृत। निष्ट्य-पु [मं॰] गुरा गुरका विद्या हवा। शवा वा राधरा घ्टरा संबद्ध । वि रगहा तथा। छोडा सुच्छ । निय-वि [मं] स्पीन वशवती भावतः ग्रमित ग्रमा

दिया द्वेषा । निचय-पु• (र्थ•) सन्दा शंच्या निश्चय ।

निचल+-२० जनसः अरकः। निचला-विश्वानिका मीनेबालाः अवस्य स्तिर, शांत । मिचाइ-न्या श्रीवा शेलेका भाव गोबापन, सँवाका

पत्रदाः नीपेदी जीरका दिरमारः मीमवा, सीगई । निषान−मा॰ गौनापन दानुमाशन । निचाय-पुर [मंर] देर शक्ति।

निर्णित-वि है निश्चित्र । मिचिकी-न्यो॰ [शं] अच्छा गाय ।

निचित्र-वि [सं] दका प्रभार स्वासा पृत्या संदोगी। मंचिता कम्र वहावा हुमा ४८ लगाना हुमा । मिन्द्रमा-अ कि॰ निनोश पामा, गरमाः भारदीम बीना नव या प्रथित निरुष्ठ बानेने शीम दोना ।

मिलुक-पु: [शं] वेंद्रा हिस्तक्या पूछा कप्रका बात, निबोध ।

विश्वमक~तु [मुरु] परमायः नियोश । गिर्च-प्र•दे सिन्धा

निचाइ-पुर निवादनेपर निवर्ण दुर्द बागु निवादा दुशा अब द्वम बादि। गरांद्य जिल्लां तस्त गात । निचारमा-म॰ विश्वसम्बद्धा ऐक्टर दियो सीना या रमवाणी वरमुदेश वानी दा रस चित्रकतः सारता। दिसी

मिर्मिति-निर्वाज निर्मिति-मो । [मं] १० कियान । निर्मेक-वि [तं] विशेष स्पत्ते मुख त्री पूर शीरते हुटदारा चा चुका बी। वंधनीने रहित । ५ वह साँच का बेजुब छोर जुरा हो । निमुक्ति-मी [तं] मुक्ति, गुरकारा। निर्मुल-वि॰ [मृं] मृत्ररहित दिना बद्दक्षः बीमृद्ध सहित प्रयाप दिया गवा हो, थी जूल सहित नह दर दिया यथा ही सर्वया राष्ट्र । निमान्त्रम ज्पु [सं•] मृत्तरदिष्ठ दीना बाधरमा दिनाछ । मिर्मृष्ट−वि॰ [पं] प्रकाचामाफ (स्वाद्वयाः विरादा বুসা । निर्मेघ - वि॰ [सं॰] बादलेंसि रहित निर्भ । निर्मेध-वि [गं०] यूर्त, हविश्रीन । निर्मोद-पु॰ [तं] छोस्के बेंपुका छोतमा स्थानना मीपनः शरीरहे उपरका चनहा, धाकः अन्या अच्यातः साविष मनुके एक पुत्र । निर्मोध-५ [मं] पूर्व मेथा। मिर्मोचन-पु[नं•] पुटिः सुरदारा। निर्मोस॰-४ सम्योज बहुन्छ। निर्मोड∽वि [मंग] मीह या अदानसे रहिना ममना, रवामे १५४, निष्ठर, नेइर्ब । तु रैनत ममुक्ते एक हुना शिष १ मिर्मोडिया!−वि दे÷ 'तियोड'। निर्मोदी-विश्द निर्मोदै। निर्यप्रय-वि [सं] भनिषंत्रियः भगावितः । नियाँम∽द्र [र्र•] निकन्तमा, बाहर बाना, कुव अरबान (विधेषन' सेमल्फ्); प्राणका निकननाः बहामीको वॉबने मा प्राननेची रस्ती। शबीकी बॉसके ब्रीनेके मसका हिरमा बद्दांन यह निकलना है। मीका भाषा । निर्मात-(६ [मं०] श्री शहर दवा हो, जिसने परवान क्या हो । पु॰ वेचनेद्रे किए नाहर भेगा जानेवाला गाल: बाहर जाना वा भेजना !~कर-पुरु शिवीतार अयादा पानेशना बर । नियानम-प (मं०) बहना रेना प्रतिश्रीय प्रशिक्षातः विनिमया दिलीको बरावर जमे भीता देना अधिरामा अञ भारि भशमाः नम्य । निर्माति-को [सं•] प्राथांव शमना कृत्या होता । मियोम-इ [गं॰] शताच नारिका निवास-पु॰ (ते॰) त्यम या कारनेपर कृती आधिनेते निवसनेवाला श्राः गाँउ। विशे बरायेने निवसनेवाला गामी इस कार्द्रा क^{ल्ल} काका अर्दे । विर्योद्ध-(द (ते०) त्री अपने दल्मे विग्रु नदा हो र विषय-१० [१०] देश निर्दाण । मिय्द्र-पु [त] (म्ट्टर भ्याकी तरह बारा की अपे-बाररे बानु शिरीभूबार बारार मूँनी शार दशबान । निर्मेश-पि [il] अधारहिक वेधमे वेरवा ! निर्मिश्च-(र (लंब) क्षित्रमें बोर्ट परिश्वतक दिस न ही।

Alter-(1 [40] 2 Parti

निमुखन-६ (१) हिल्का दा भूगी सक्ष्य बरबा इ

निर्मादय-प्र [4] किर नेजा: कारकर अवश्वश्राह

सिर्छेन्द्रन<u>-त</u> सिंशी किमी भी स्वरता मेंत मा शर्वता बह वरत बिसमें दिसी की अंग्रहा में ह गुरुपा अप । निर्तेष-दि॰ [र्न॰] जिल्हार कर्ण नकी वर्त है। व किमी बरन का निवयमें आसफ म रहे, कल रहिता हो विश्वीति कुछ संबंध म १६६ प्रामीन (११४५) निष्ट्रक प्रस्तु करिया निर्कोम = वि॰ वि॰ो शोमरहित्र, मतोशी। विश्वीय-वि॰ दे निक्रीया । निक्टोंसा(सन)-वि नि विश्व रोवें में हो। कि 'तिसीम्नी । निर्वेश-(६० [मे] जिल्ही बंदर(हर। हम्देन्ने प्रशेषी समाप्त की साम जिल्ह्य क्या प्रक्रिय की समा है। निःर्मनाम । निर्यक्षण्य-वि वि] ? 'निर्वेदमीव'! विर्धेशम-निकृति] मीत नुषः मात्रविर्दिगः निर्मेत्। वृ निर्मान वधारमा वस्ति कवारण ग्रम्थन्त्री। विषयमीय-दि (मं•) (तर्गमन बर्दने बोध्द (समग्र निर्वयन निया वा शहे. जा स्थल आहर है इसा समन्त्रा अर सर्दे र विर्वेद्य विद्यान्ति भि विभिन्ने रहिता धर्म नपरा मुला दुवा ! निर्वयम-पुर्वारी दिश्याचा देना दासा गाँउना सप भारिका नितरम । विषयमी-सी [र्व] सत्पर्रे केंद्रभी। निषर-रि [1] तिलेख श्रामाः निदर्भ निष्यंत्र-त [११०] देशना समना ध्वामने देशना । विवर्णन-४ विशेष्ट 'न्यप्रीय । निवर्तित-(३ भि०) दे० 'निष्क १ निर्वर्शय-५ [1]दे दिशा । निर्वेशम-रि॰ [ले॰] यसहान । मियंग-दि॰ [गं] परिद्र । विर्वेद्दय-तु [तं] गयाता निरप्तमा, निर्वेदा मारको मार्ज दशही समापि। -मेबि-मार मार्डिम प्रमुख होनेशयी चेंद गरियोंचे रे ६६३ विचाद(प)-(। [त] धीन पुष। वियापक-तु [मं] निर्दोधन क्यूनेनपा पर भी निर्देश धन करे क्षे हिन बक्एवरण मण हो। नर्मय नसमूहण पुरु निर्धाक निर्धा क्षिति है । १११ । विश्रीचन-पुरु [ते । शह द्वार मुल्या पुनार।-श्रीवduitel Kael ! विश्ववित्त-दि हिं] दिल्या निरोधन थिया गया पैरे भीते हाग भुना हुमा । विश्वीच्यानांव [व] | भ वर्त्र केप्या विशेषा विश्वा ध्यक्ति म की जा गढ़े। शिवाँच विक्षि) तान दूसां (शिष्य मारि) कृत भी करते ही शहा है। अस भी में मुखा मांता अवसे रिवर । पु ुनजा कथा होता भा 'तुना हरायीकी मार कारत केला प्रकारक क्षेत्र संवर्धन प्रतीत विकास रंदसः हरा जिनुर्वेण यह आकारण (दा)। यस मानीर ह (क्ट प्रण्य कीप्रत् यो <u>प्र</u>ण्ये अव दर्शका के कार्य

पकरमा पूर्णतः। निरंतरः इमेशाः इर दाक्तमा निश्चय पुषक ।

नितंष-पु [सं] शात वर्गालोकोर्गसे एक ।

मित्रोत-म॰ [सं॰] मर्स्नत, बहुत अविकाणकरम विस्कृतः। मिति#-म• दे 'निद्र। शिरय-विश्व मि । सदा बना रहनेवाला, वो कभी भट्ट न

हो, मधर, मदिनाही, अनश्रर, हाज्या बराचि और विनाशमे रहिता प्रतिदिन दिया जानेवाका वा बीनेवाका प्रतिविसम्बद्धाः (बह विहित् कर्म) का मिरव किया जान । प्र समझा जिम्हार्व कर्म । ज॰ प्रतिदिन वर रोजः सदाः इमेशा। -कर्म(न्) -कृत्य-पु प्रतिवित्त क्रिया जाने बाबा कार्यः प्रतिदिश किया चाचेवाका विविध कर्म विसके ह बरमेरी पाप होता है (बैसे-मध्या, पंचवध खीय स्नान भाति) । - क्रिया-मा • है • 'मिस्पदमें । - गति - प बात , इना । - जाल-दि शिख अल्ब दोलनाका (गी॰)। -शान-व प्रतिदित दान देनेका कर्न । -नर्च-प्र पंकर महारेव। ≔जियम – पुक्रमी मंगम दोनंदाला निवम ! - मैसिचिक-दि० (वह कमें) को नित्य मी हो भीर मैमिलिड भी~बैसे पार्वण श्राह्म ।~प्रति-म प्रति-रिन, इर रीत । -प्रमुद्धित - वि सदा प्रसद्ध रहनेवाका। -प्रसम-प्•िमस्य दोनेपाला प्रसम सुपति (वे)। -प्रदि-तो॰ दिशं बराको निख समतमा । -भाव-प्र निरक्त । -सिध-५ प्रीति वा भेर्वको निःस्वार्थ भारते रक्षा करनदाका मित्र । - मुख- । परमारमा (बी तीनों काकोंमें बंबमसे रहित रहता है)। वि सराबे किए मुक्त ही यदा हो। -यज्ञ-प्रश्र प्रतिरिम क्रिया बानेशाला वद-वैसे अध्निहोत्र । -धुक्त-विश वरावर तत्वर रहतेवाला । -धीकता-वि जो जिल्हा

रवाबी कांद्रि ! -सरकरम-वि+ जी कमी धेर्य मधीहे। सदा सरवगुगने कुछ रहनेवाका जा रजीगुण और वमीपुरकी छोइनर सरा शस्त्रपुरका अवस्थत करे। -सम-<u>व</u> बाति ६ १४ भरोगेंगे एक (म्बा)। -समाय-दु वह समास विसदा विश्वह कर देनेवर पसंदे गरीने अमीट वर्ष म निकाला जा सके (त्रेसे-

भीतन रथानी हो । स्रो+द्रीपरी !--वेकुठ-पू सरवाहोकडे

र्मतर्गत विश्वका निवासस्थान । ~प्रश्न~थु वह ऋत

विसदासदा पासन दिवा बाय । − ब्रांकित − वि की

छरा सर्वेद रहे जिमे सरा संदा कगी रहे। -श्री-शीo

वि+ प्रतिनिम निवसपूर्वद रमान व रमेवाना ।—स्वाध्वायी (पिन्)-वि निर्नरनिवमपूर्वक वैशायमम् करनेवाना । -होता(त)-वि॰ वी निम्ब हवन कर । -होस-पु॰ शरा दिवा बानेवाना क्षीम ह निग्पशा-मो॰ निर्याच-दु० [मे॰] निन्य द्वानेस वाव

असर्गित, प्रवृष्य) । -सिद्ध-दु आत्मा । -शेवक-

वि भी नम दूसरीकी सेवा करें। -क्सावी(विम्)--

व्यक्तिका व्यारता। वि यश-४० [मं] सर्वतः

निरापर्तु-वि [ti] प्रत्यक्ष चतुर्वे बवासमय हाने वा

I latteim

निस्ताः(शास्)-प्र [६] १९ हीव वर्ष्यान्यः साराः

क्रमंत्रा ।

नित्या -सौ॰ [सं॰] दुगाको एक श्रुक्तिः ममसारेवा । नित्याचार-पु॰ [मं] बरावर बना रहनवाका सराचार.

पेसा सदापार जिसके भाजरणमें कमी पुढ़ि म दर्द हो। नित्यानंद-पु॰ [गृं॰] वह आमंद वी सुदा बना रहे । वि॰

बद को सहा भावंदरे रहे। निरुपानक्षाय-पुर्डि] ऐहा भवहर अब बेरका अध्य

वस अध्यापन सर्वधा स्वाग दिया बाय । मित्यानित्य-वि [सं॰] नित्व और अनित्व मश्रद और

अनुष्रा - वस्त्रविवेद्ध-प्रज्ञास्य है और बगुत मिय्वा-वह विवेचन या मिश्रव ।

नित्यामियुक्त-नि [मं] प्राणस्या मात्रके किए कुछ बाकर और शेष सभी वरतुओंकी स्थानहर सदा दीय

सायनमें छया रहनेशाला (बोगी) । नित्यामिन्नाभृमि – ली• [ग्रं•] ऐडी मृति वहाँके रहने

बाले स्था राजना रखें था क्रिसमें प्रवक छात्र वसें। नित्यारिश्च-दि [मुं•] (पोतादि) बो स्टन: चने ।

नि योदित-दि [मं] तदा बदित दीनेशला। बिस्टा उदय अपने आप हुआ हो।

नित्योधक-प्र [संग] एक वीशिसर ।

निर्धम ०-५ स्तम रागा। निवरना-भ॰ कि पानी वा किसी भ्रम्य तरक पशार्थका इस प्रकार रिशर होना कि यसमें प्रका हुआ मैल आदि

नीये वेड बाव, पुरे हुए मैस नारिये नीये वेड बाजेसे बड थारिका रहचा हो जाता। मिथार-पुवह जल की निवर पवा दी। निवरे हुए

बामीमें मीचे बैदी दुई बल्तु । नियारवा-म॰ कि॰ शमी वा किमी अन्य तरम पदापकी रम रूपमें छाना ६ इसमें पुत्रा हुआ मैक आहेर मोचे

4⊼ चाय । निषासमा=−स प्रि दे• 'निवारमा । निद-पु [पं॰] विष । वि॰ निदा इरनेवाला ।

निवर्षः - निर्मय । नियम-इ (सं) मनुष्य। विश्व दिन दारका रीत न क्षा। निद्रवा - स॰ कि अप्यान बर्मा सनाहर ब्रमाः निरस्त्रार करना स्यापना देवा करना मान करना। तुष्छ बनामा औषा दिश्रामा ।

निदर्शक-वि [मं] दिखवाने बहनानेवाना । निर्दर्शन-५० [मे] मराजन कराहरूप, रहात ।

निर्दर्शना-सी [मं•] अवॉन्दारका रक मेन प्रशंती

परायोंने भिष्ठता होने हर भी वहमा दारा अनके मंदंशनी धापना की जाए।

विद्यान ० - ५ दे 'निर्देशन । नित्द्वना०--ग० क्रि॰ बरुग्ना।

विश्वष-मु [मंग] गरमीः पामा मीध्य मृतः स्माना क्षेत्र दुवल्य करिक्ष एक प्रत (शिनुषु)। -वर-दः ग्री। -काम-द् शीम ण्या -सिप्-सीः रहमीके महीनीकी नृगीकी नहीं।

निकान-पु [मे] आदि बारणः कारणः शिवस बारमः

रीमका निर्देश नहीं बारा वह विभेद बरना कि बीन

मध मादिका स्वामः वपने किए महाग वन बक्का करता (स्म)। निर्दरण। निर्दारक∽प [सं] यह वो अर्थेकी बरसे बाहर निकाले षा इमधान है बाद। निर्दारी(रिन्)-प्र [चं] निर्धरण करनेवाकाः दरहरू फैलनेवाली यथा श्रुपंत्र । निर्देश-वि॰ [री॰] कहारण, विना कारणका । सिद्धांद्र-प (एक) सन्द, व्यक्ति, वाषाम ग्रंमता वर्णन । मिद्रांस-५ [म] बत्यंव हास । मिद्रांक-दि स्ति | निर्माण वह । शिक्षज्ञ†~दि है। निर्कतां। निकार्ड निसमता । -- श्री । निर्मेखता वेशमी । निक्की व्याविक दे 'निर्लंबन'। निखळा । - विश्व महिल् हैं । 'शिर्यक्र । निसंच-त॰ [एं॰] बाहरबाम, रहनेको बगहा वर गाँदा धींसकाः सर्वता नह या तह ही बाना कीप, अवर्धनः छिपता । निख्यम-पु [सं] बास करना, वसेरा केना। वासरवान, भामवर्गान घर। नावर आमा। यतरना मीचे बाजा। निसदा-वि जिएका संदय सीकरी हो। सीकवारमः बीवका काराबार करनेवाका (बेसे-निकका साहब) । निकास∼पुदे 'नोकास । निकिए-प् [एं॰] देवता । - निर्श्वरी-छो॰ स्वर्नेगा । निकिया निर्दिपका – स्रो सि ो शाया मिस्त्रीम-दि॰ [सं॰] पिनला हुआ; क्षिपा हुआ; निश्चेन स्थ-से वा बद्दा अभिक और नष्टा परिवर्तित । निबचन-पु (से) बराबर कवते जानाः वयनामावः निवछायरां-को दे 'निछावर'। निविधिया जिल्हा एक प्रकारकी सात्र । निक्रमा । — म कि नवना श्रुकना । निश्चपश-त [सं] विदरी व्यक्ति विशिष्त किया कामे बाबा बामः स्पिरमाः बीमा । सिवर-दि [tiv] दिवारण क्रमेवाका । प्र रोक्नेवालाः रक्षमा भावरम । निक्स-गां (धं) कुमारी ! निवर्शक:-विक सि क्रिकेटनेवाकाः प्रवानवाकाः इर करने बाला कौरामेगका । सिक्तेंन-प्र [संग] रोजना निधारणा जमीतको यक प्ररानी नाप गोषा। गोधे बरमा वा दयमा। कीरमा वा कारतमा । बिसर्टी(र्तिम्)-नि॰ [तं॰] चौरनेशनाः माम वानेशासाः परदेश करमेपाका। छीरमे देनेपाला । सिबर्देश-वि , प्र^० [सं०] है 'निकांस । नियसति हो [पं॰] बाहरबाम, वर । निवसप-इ [दं] ग्रीर, मात्र ! नियमम-पु [मृंग] गृह बामरबाम; बस्र । नियमना*~म कि वास करना रहता। निरद्र-दु [सं] समूद सनुवादः सात वानुवीर्वेते दका

रे अनिक । अधिको सात निहासीयेने वका क्य ।

निवाह् >- कि प्रयोगः वर्त्यन ।

निवाकु-वि॰ [चं] मीन, खुए। नियाअ-वि॰ दवा करनेवाला, रहम करवेदाका (प्रमानमें **उत्तरपद्धे स्मर्गे प्रमुद्ध**े । मिवाजना#-- स कि॰ कृपा करनाः कृषापात्र बनामा । निवाबिश-सी॰ दे॰ 'सदाबिश'। नियाद~तु, सी० वै 'निवार'। निवादरां-प्रश्यक प्रकारको क्रीये मादा नावर्षे वैद्रकर की वानेवाकी यक्ष प्रकारकी बक्तीया किसमें माक्की बीव-बारामें के जाकर सवाने है। निषाबी-मी दै॰ निवारी'। निवात-विश् सि विवा दया न पहली हो। यहाँ दवसे पाँच म हो। अमेरि सुस्थित प्रश्वित । ह वह सम्ब को शक्तों हारा भंगा व का छक्ते बाबन स्वानः गरः राजने रक्षित स्थानः वाश्रका बनावः स्रोतिः सरक्षितः स्थान । —कवच-प दिरम्बद्धिपदे एवं संसारका एक तमा एक प्रकारके शामव (निवान+−५+ वारी था क्षेत्रवसे भरी रहनेवाठी नीची समीवः बकाञ्च । निवाना≉−स कि॰ दे 'नवाना । बिबारबा-तो॰ (तं॰) वह बुक्तरहा थी जो इसरी नावके वक्षतेकी कगासर नुदी कान । निवाप-प [र्सण] बाना शितरींके बरेश्यमें किया बाने माला दान । विचार-प [र्ग] एक प्रकारका चान जिल्ला चामन जट आदिमें बाजा जाता है विक्री पत्तहों। निवारणा रे वक एएको मोधे मूक्ता । ती [हि॰] हुएँको नीर्नेने दिवा बानेवाला बक्दी भाविका चढा मिलके कस्रसे कोठांकी जीवलोडी जाती है। समस्यः प्रमंग प्रजने आदिके साम वामेनाकी मोट सहस्थ दनो द्वरे चीडी डही। —याफ्र~द्वर मिनार बुनमेशका । निवारक-नि [र्थ] निवारण करनेवाचा रीकनेवाचा ट्र क्रवेशना । निवारण-प्र [सं+] राजनाः दशनाः दृर दरमा विदाना ! विधारमण-पु देश 'निवारम'। निवारमा • च कि रीकताः इराताः वरमताः ववामाः कुर करनाः पुकाना-'पिछन्। बहु निवारि भाग धर छनि शोगो पन मामी श्राति **~स्**र र निवारी-को नहींको पाठिका गढ प्रैपाः इस पैथेको 561 मिवास्त्रा⊶द्र (का } दबर, प्राप्त, हरमा। निवास-त [सं } रहनेका मात्र वा कार्य रहना। रहनेकी रवान यर भाभवः राजि व्यक्तीय करताः वीशास्त्र । शिकास्त्रभं⊶म [सं] पर, राहा क्षाप्त कालके लिय ठहरमा। कास-मापन । निवासी(सिन्)-वि [वं] विवास बरवेशका १६ने वालाः वल भारण वरनेवाचा । पु रक्ष्मे वस्तरेवाचा । शिविश्व-वि [मं०] बना बना हुना वीरा वन अवस्थाता रमनः महाः यथरी वा देदी महस्यामा । मिबिडीश मिविडीस-वि+ [सं] दे 'निरिरीय । विविद्यान-त [र्ग+] एक ही रिनमें रामात वीनेवाका

-निपनन-प॰ सि॰ निषे जाना वहरनाः विस्मा वहन । जिल्लान-विक सि ी मीचे बनरा हमा। विश बना । निपत्या-सी। [सं] विच्छक भूमिः सब्समी । जिल्ला-दि क्रिसर्वे या ब्रिसपर परो न वी, पत्रदीन । त्रिपमादा-प [र्मण] बह बद्ध जिसके परो बाद गर्वे हों । निर्पागर-वि॰ पंग, किसन दाय-खेंव नेकास ही अपे ही. संबाहित । निपाक-पु॰ [सं॰] नहत्त अभिक एक जानाः अत्वविक पाकः। नियात-वि• दे• 'नियम' । य शिं•] गिरमाः वतमः क्षत्र पत्ता अक्षामणा चलाना चेंग्नाः अत्यः विमाधाः दसरा सिरा: बद्र सम्य जो वर्णामम नारिके समा किसी प्रदार वस जाता है। और व्याक्तवह नियम(सम)में जिल्लाक का क्षेत्रता की (क्या के) । निपातक-अ मि विषय, इप्यूमें । नियासन पर [लेक] गिरानेका स्त्रमा समनाः चीरमाः माग्र हरता दिताशना मीचे मिरना वा वत्कर मीचे भागा शुरूदा अनिवधित रूपने मित्रव प्रान्त । निपालबार-स दिन गिरानाः नाम कालाः वध कालाः प्राप्त लाहरतः कारक्ष्य विद्यासाः साह दासमा । नियातित-दि [सं] गिराया दुव्या वत था नट किया इकाः अनिव्यति रूपने बना हजा । निपाती-विश्वेश निपत्र । निपाली(तिन)-वि॰ [७०] गिरानेशनाः पंत्रतवानाः मारतेशका बाहाई । नियान-पुरु [मं] पुत्रा पशुकीक पानी पीनेके लिए करेंक बाम बमाया जानेबाला बीका बच बहनेका बरतना बहता. सत्ताः रम प्रकार रोमा कि इक्ष वस म रह मिन्दीय पान। नियोक्ट-वि लि विषय अधिक भेडा पर्देशनेशकाः जिलाको के के हे हाता। सक्तम का दबारेगाला । नियोद्धन-प॰ (सं॰) बदत करिक बीडा कर्रवासाः नियी-दमा गारमा। देशमा द्वामा वा प्रकना । निपीटमा – सी (सं∗) दे 'निपीडन'। ० स कि पीटा पर्रवानाः दवाताः मन्दाः पारमाः परना । नियोश्रिष्ठ-दि॰ (सं॰) बहुत कविक पीड़िना दवावा हुला। निबोधा द्वमा, वारा हवा। पैरा द्वमा । निपीत-(४० [मं] पान दिया दुमा। दादिन । निपीति – सी॰ (सं } क्षेत्रेची किया। निपुचना~भ कि (दॉत) क्यारना वा दिसना । नियम-वि [मं] यन्त मरील बुराल; श्रीका पूर्ण । वियुव्यता-भी [सं]नियुत्र शीनेका मान वा किया । नियुक्ताई -सी पतुरता प्रशेलना क्यालना । नियुत्री-वि विशेष्टन म द्राः शंतानरहितः। नियुन्तर-वि है 'नियुक्त' ।-ई -लाव-स्टीक नियुक्तात ह्यानताः प्रशानाः । नियुक्त के - भी • दे दिएकाई । वियुत्तर-वि विशेष्ठभ का प्रथान । बिप्ता-वि है निप्त ![जी निप्ती है] विशाहका-म॰ क्रि. (दोन) क्याहता का विज्ञाला ह नियमंग्नि संदूर्ण पूरा । स पूर्ण स्पृत्ते, पूरे गीरने । निकरनार-म हि. यंग्यूट अप्तरंप दोना। रुख दोना

संबद्ध होता है नियसक-वि है॰ 'निष्यस' । जिल्ला-मी विंश उसोतियाती सत्ता । निकाक∽प+ भि विभागना, हागडा । निकारमा-स॰ कि. आर-धार धेत बाता, पैमानर सार वार बनवार स्पष्ट करना साथ बरमा । जिल्लास्त-एक सिको है सामा, अवस्थित । शिक्तीद्र-वि स्पन्न, व्यक्त । निर्वाच-प सि । बंबना संबद्धना सेवह प्रेया हैया तीता क्यान प्राप्तिको नीमारीः प्रतिनंत्रा द्वालानीः स्थापनः सीका कह जरत जिसे बेलकी प्रतिका की शर्भा का गाँवने था योष्ट्रीकी किलार सरकारी साला (की) 1 सिर्वक्रम-प॰ सि । वींपनेको किया। वंधना वीगा वा सिनारको संदेश रचनाः रोकनाः वनरोष करमाः वंबन था सताबका ब्रामव ब्राचारा संबंध, खनावा हेत. पारका श्रामनपर वारि । निकासनी-द्रो थि । वेशमदा साधन । निर्वाता (क) - १० [सं] गाँधनेशकाः क्षेत्रकः रचविता । निवंबी(बिम्)-वि [६०] वांबनेवाडा र्धेक्कः कारणस्रदेशकः अस्पन्न कार्यनासः । ।बय-तो [बं] बंग्रेजी बनशें है शेस्टरीमें धीमी जाने वाली काहे जातिया लक्षीको बस्त विससे किसा बाता है. क्षीऔर । निषक्षांकी नियकीशी – छी॰ सीमका एक वा क्षेत्र । विवादना-म कि निष्क दोना महसारा पाना, प्रत्यक नामाः करागत होनाः करनेको शत्ये म रह जाना समान श्रीमाः गरम श्रीलाः मिन्द्रीय श्रीमाः निवराया जालाः फैलन होना तम होना। समाप्त होना। श्रीवधिवासे निक्च श्रीमा । निषदामा-स कि॰ समाप्त करना शास करना परा अदा कर देना चका देना। तब करना फैनका करणा. निर्णय करना । निषदारा निषदाष-प रे 'निषदेत'। नियरेश-९ नियानेका मान वा कार्य प्रत्मत वावकान १६६) समाप्ति यातमाः निर्नव कैसका । निवदण-वि ६० विविद्य । निवयमा०-भ नि॰ दे नियरना । नियद्य-नि (संव) वेंचा दुआ। ग्रीवा दुआ। प्रविता निरस हुन। विशिष्ठ घणीन रविना स्त्रा हुन। संबद्ध: अव्र दुआ शांकित अधिना रोका दुआ, सरकद्वः आहृत । निषर=~वि• दे निवस । निवरना-म कि र्वश गेंग्रा या रुगा स रहना, र्वशन या समावने मुक्त दीनाः गुण्याचा पाना मुक्त दीनाः चार शना। वदा रह सहना निष्ठ होना करापत बीना पुरवान पानाः पुरा दीना निमनाः निषरना सद बॅला: बुध ६ बेला उक्त प्राप्त बहुना सुष्ठतना बना म रहमा गाम दीना निष्ट जाना- मृशि बुंबर सद निवरे मेन्स १**स**ा ध्यान --प्रका निवद्दण-प [र्थ] मारन वा मारा परनक्षे दिसा मत्त्र । दिश्मास बद भागा ।

मिसामा – निश्व*ा*य पा] का कक्षण जिससे किसीकी पहचान की जा सके, परिचायक रूशक विद्या बिटी पदार्वकी समित करसे मामा व्यक्ता स्थानास्त्र शिवस्थितेना वस्ताद्यक्ते स्थानपर बागत भारिपर बनाया सानेवाका चित्रा दिसी प्राचीन वापूर्ववर्तीपरार्वयावश्माका परिवादक विद्याकिसी निरोप कार्य मा पहचानके किए निनश किया जानेवाला निद्धाः मादगारः सक्तः होताः पता ठिकामा । ⊸की-प दे॰ गिधान-भरवार'। ∽विद्यी-~बद्यी-की किमी व्यक्ति वा प्रसदी दिसी वरमधी पदचान करानेका काम । -पट्टी-सी हकिया। -धरदार-प+ दिशी राजा सेना वा रक्क भागे ससका शंदा हैकर चलतेवाका म्यक्ति। सु (किसी यातका)-उठामा या कवा करना-विसी धाँदोसनका मेतृत्व करना । -वेना-पना बतामाः सम्मन तामीक कराने कारिके किए पहचान स्टाता । निशाना-पु॰ कि:] वह क्रिसको दक्षिणे रखकर **दे**शे सस्य बनावा जाय अरदा निज्ञाना मावनेके कायका मिट्टोन्ड वेर ना कोर्र भन्न वरता वह जिसके प्रति कोर्र मुरंबुकी शत क्यों बान । सुर्व ∽वाँचना नक्त वादिको इस तरह सापता कि वह भकानेपर औक कश्यपर बार करे । ∽भारमा या समाजा∽कश्वको रहिमें र**धक**र वस बारिका बार करना !--साधमा-दे 'विद्याना धॉबना : निष्ठाका मारनेका अस्थास करवा । मिशाबी नहीं दिसीको बाद करामेंबाका बिद्ध भारगारः वह विद्ध शिसमें किसी वस्ताई बहुपान ही सहै।

मिद्यारण−द• [सं] दे 'निकरण ।

निशाबसाम~प्र [धं] वे 'निशाविकम'। निराहिक-पु [मं] यह प्रकारका रूपक वाल निसमें हो कप भीर दा ग्रुव भातार दाता है। तृत्वके साथ बहा बामेशका बील । वि बहुत हिला करनेवाका ।

नियास्ता-वि [फा] जमाना हवा। वैठा हुना। पु गेर्हका गुराः माँदी ।

निमान्त-स्ये मि शिक्षी।

मिशिक-सी राम।-इर-पु दे निशादर ।-चर-पु दे 'निम्नाबर । -- शाक-पु: निमीषण । -- दिश-राव दिश सर्देव । -माध -नायक-पति-प दे• 'निश्चानाथ । -वासर-म रात-दिन सर्दर । मिशि −व [सं] रातमें । −पाक्क,∼पाक्कक्क ⊸सु पद र्धनः प्रहरी (श्री रातमें पहरा देता है)∺प्रया -प्रयाकाः

--प्रची-सी हिस्सार, निग्रही । किसित-वि सि विजय प्रदाश हमा तम दिया

प्रमाः तेत्र तीक्ष्याच कोद्या निधिता-को नि रिपिन

मिनीय-५ [मं] स्वतन्त्राकः भागी रागः रातः राजिका

पक करियत पत्र । विद्यीयिती - सी॰ [र्न•] शक्षि रात ⊢पति दु अंद्रमा ! निशीधिनीस-९ [नंग] धंहमाः ऋषूर ।

निश्चीच्या - स्ते • [सं] रात्रि ।

निम्म-प [सं] वयः विधा करना विसना तीवना। हाकाना। यह अनुद् जी होमका मार्र वा अप्र जिसारा वर | विकास-पुक [संक] वहिर्मस जात प्राणवायुक्ते नारने

दुर्माने किया था । -- सधनीः - सर्दिनी - स्रो दर्गाः १ निश्चमम-पु [६०] मारच वप करता। निर्द्धभी(भिम्)-५० [त] एव ५६ । भिषोक्त~प्र सि दि निधाना**प** । निशीत-५० [मं•] वयका। निको सर्ग-इ [सं•] प्रमाव सरेता। भिक्षंत्-वि॰ [सं॰] चंत्रमासे परित । शिक्षक्रिक-वि विको सम्माद्धको एक्टि र्षमानवार ।

निश्चक्ष(स)-वि॰ (सं०) नेपद्यंग । निमन-प्र [do] सरेवरदित धाना रह विचारा विकास निवटारा, निर्वय फैसका, बॉवा वर्बामंद्रारका एक बेर जिसमें बाम विश्वका निर्मेष होकर वंशार्थ विश्वका रमायन ही।

निम्मवारमञ्ज्ञ-वि [सं] श्रीषर्विक, विसमें किसी मन्नर का संप्रय म हो। निश्रष्ठ-दि [तुं॰] वो यह न हो, बोहा-सा भी व दिस्ने-

इक्नेगमा अपस्य रिवर । गिश्चस्तौग−द [र्स+] वनकाः पर्नत आदि जो सदा अनक बने रहते है। वि विश्वदे मंग हिल दुल म सर्दे।

मिल्ला-सी [मंग] सामर्थी। प्रभी। तिमायक-वि पु॰ [तं] निम्प करवेवाका निर्वादक ! विद्यारक-द (do) बाहा प्ररोप स्वमाः सम्बद्धता । निर्वाल-वि सि विशे क्रिके महारकी विद्या म ही

विनारदिशं अधिक !

निर्कितई ० – सा निर्कित दोनेका भाव विक्रिको । विक्रिय-वि [सं•] विस्के बारेमें निश्वन विका वा पुत्र ही निवाब किया हुआ। जो १४८-७४८ न हैं। सके जिसमें विशे बहारका देर-दर म 🛭 सके पदा मिशिति-सी [र्गण] तिश्व का निर्मेश करमेकी किया

र्मक्त्य । विभिन्त-पुनि] एक ब्रह्मरकी समापि (मी)। मि**रुप्रज-९** [र्न•] मिरमी; देनमंदन ।

निरुचेतन – वि [एं॰] नेहादोन ४६ोछ, मुस्कित । सिक्योप्ट-वि सिं•] चेद्यारहिता अचेत मृथ्यित। भवतः रिधर ।

निष्ठचेशकाय-प (स•) काररेनका एक वाप । बिर्जर्ष ० - १ रे 'निमर'।

जिक्क्यवस-९० [सं] एड प्रदारको सन्नि (स॰ मा॰)। वैक्लन अर्थनाके सम्बंधिनेते एक ।

तिवर्शन्त (तुम्)-वि [सं] बिसने वेरका मध्यवन म किया हो।

विश्वास-नि [rio] एकरहिन शुद्ध हन्दवाना, सर्वी। विषय ११ ।

विश्राप−दि [मं] छावारहिंग ! निश्चेत्र-प [सं] वरियाम्य रापि (ग॰)। निकास-प [ग] विश्व श्रम भव्यवसाय । विश्रयणी निर्धेणिः विश्वशी-न्यै [भे] छेदी ।

र्नमुद्धे एक रामा को मिनिकाके विदेववंग्राठे प्रवर्तक थे। कर्म्यांका गिरमाः निमंप ! -रामाक-पुर रामा कनक ।

सिमिय•-प• दे 'शिमिव' !

निमित्त —पु॰ (सं॰) द्वारम्, सावनप्तकारम् थितः रुद्धन्तः स्तर् द्वेरम्, द्वनः छकुन दिखायये कारमः, नवाना । —कारण –देति —यु सम्वाची और व्यवस्थायी कारम्से मित्र कारम-वेती पर्यामांगर्ग कुन्यः नवः, वंद मान्ति (स्ता)। —कृत् —पु॰ कोमा। —वय—पु वीवन सारि के कारम् कोनेनाकी (गायते) ग्राप्तु। —विव्—वि छकुन

कानस्वाका। पुक्यातियाः। निमित्तक-वि सि । (किमोके) निमित्त होने या किया

कातवाकाः स्टब्स् कनित i

निमिय-पु॰ सि॰) काँदा दंद करना, पकक मानना। पनदीना गिरमा उदना समय मितना एक बार पनक मिरनेमें हमे हाना पूरुका संकुचना पककीका यक रोप। बरमकरा - क्षेत्र-प निमित्ताएक।

निमपीतर-पु[मं•] प्रमरका अंतर ।

निमिष्त-वि [सं॰] मिनीच्छ । यु पक्क गिरामा,

निमीकन-दु [d] ऑस गूँदना वा सफाना मरका

समाप्त प्रदम् (क्षे)। निमीका, निमीसिका – लो ॰ (चं) निमीकमः देखते वर

स देखना; ग्रह । निर्माष्टित-वि [सं] हुँदा हुमा, वंद (मेत्र); वो वट

मा सुत्र हो परा हो। अंश्वाराण्यास सुत्र । मिर्मुहा-दि जिसे बेल्लेबा साहस न हो। जो व्हतापूर्वक कुछ बेल म सफे, पुर रहनेवाला।

कुछ वाक संस्कतः जिसेंद्र−दि वंदः।

निमृत्व-विदे निर्मृतः।

निमृत्य=ान ६ ।नमू∾ः सिमोरर०≔दुदे निमेदः।

मिमेर -- वि मी मिर म एके अमिर, जा बना रहे।

निमय-५ [ग] देश निमय'।

निमय-० सी॰ पस्तः । धु [गै॰] दे॰ निमियः शॉसीदेः फरदनेदा रागः यदः यद्यः (ग॰ मा॰) । -कृत्-छी० (१परो: -द्यः(प)-वुः असन्।

विमेषद्र-पुनि | पनदः अनन्।

विभवक=पुम् । पनदानुनन्। निमेषक=पुर्विकीपतकस्यास्ता।

निमोना-च यम या मरहरे पिने हुद क्षे शानीने तैवार की दुर्र मना>द्रार शवाः

निमीनी!-मी देश बटनेका पहला कि ।

विम्न-(व) [1] गहरा शीचा। यु गहराहं शीधी वर्मोत्रहाम एएए। — शन्ति शीध्वी और जाते सम्मा-नात-यु मौनी वर्मोतः वि तीचे गत्त युवा-नात-ये मने वरात्री हत्ता। (व मौ भीने यानेत्वा। — योची(चिन्न)—दि० वी दिण्डे मोनेचे यानेत्वा स्त्रीतं स्त्रीतं हता। (व व मौने ज्या

निर्तिशिष=वि [सर्] शोध निया दुशा । निर्तिशास्त्रम=द्र [सं] पाद्य ।

निमायन-दिश्चि] रिद्या गीवा-वेंदा अदद-ग्रादह :

शिम्खुकि-मी [र्ड] स्प्रेंस । जिस्सोच-प० सि०] सर्वेडा वस्त्र क्षेत्र ।

निस्कोचनी−की (सं∘) वह पुरो वहो सूर्य भरत

होता है।

निर्यत्तस्य-वि॰ [सं] नियमन करम बोम्ब ।

नियसा(ग्)-वि , पु (०) नियमन बरनेवाका निर्मे वस्ते राजेवाका। शासनवर्ताः रंड दैनेवाका। विशिष्ट नियमके अनुसार संपाकत बरनेवाका संपाकतः वकाने वाला, श्रीकृषिवाका । पु सार्यिः परमेषरः । (को॰ किसी)

निर्यक्षण च्यु [शं] नियमों में बॉपस्ट रखना वसमें स्थान स्थला स्थलां सरहन देना प्रतिर्थन ।

रखना रक्षण्ठत न रहन दमा प्राठण्यन । निर्देशित-दिश् [सं] निर्देशभूमें रखा हुआ। प्रतिरद्धाः प्रतिर्वेश हारा जिल्ला स्थापार या कार्य सीमिन कर दिया

गमाधार विकास – जिल्लाम

वियल-स्त्री है॰ 'बीयल'। वि [मं] नियमच्छ, नेंपा हुमा; नियुक्त, तैनाताः रिवर हिमा हुमा, पदा दिमा हुमा, यव हिमा हुमा, निधिया, मुख्दरा छेतत । न्य्यायदारिक काळ-यु॰ जल, बाया बाया, निवार मानिक तिय नियम काळ (को०)।

नियतास्मा (धान्)-वि पु॰ [तं] अपने कपर निवंत्रण स्थानेताला संबंधी, बंधी।

रचनवाका सदमा, बद्धाः नियताक्षि~की [सं•] मास्त्रको चेंच भवरशामीमेंसे एक वित्तमें करुपानिका निश्चय होता है।

नियक्ति न्द्री॰ [ए॰] नियत इसिम्द्री किया वा भाषा निव भाग अस्ट थाप्य, यदितस्यता आग्मनेवमा अहरित्यी)। -वाद-पु॰ दे॰ साम्यवाय'। -वाद्री(दिन्न)-वि दे 'सारवस्त्री'।

नाप्पा । नियती−ना (तं∘ो दर्गाः

निवर्षेद्रिय∽ि (लं॰) दर्शिक्षः वद्यमे रशनेदाना, दिलें द्विय १

नियम "पु [सं•] विवास वा निश्चवक अमुकूल निर्वत्रकाः श्यायी कार्यक्रम बल्लूर। निधित स्वयन्त्रा। रीति प्रवृति द्याबद्याः जनशासन नियंत्ररः वह संदृत्य विसदा सहा निवाह दिया आप प्रतिकाः कार्यविकास संपादन का शंपालमध् किए निधित सिद्धांत या आधार विधि-विश्वामः योगदे आह अंगोर्देशे इक जिसद अंत्रम्य शीपः मंतीय सब मादि दे। बनियोधी एफ वयन फ्टानिः अयो-टेटारका एक मर विसमें दिसी बानदा एक है। स्वामपर होना वर्षित किया जाया। वह विभि ना अधारा भेराहर पूरण कर (मी)। धर्ना महमेश्ररा परिमाधा अध्या। ~र्शेत्र-दि॰ नियमच्यः नियमाधीन । -निष्टा-मी नियमीका कहारेंदे साथ करना। नयस-पु प्रतिनायस दर्गनामा । -यह-विश् निवमहा बाटम कर काला नियमके अधीत । -वद्य-वि विश्वमीने "कश् पुत्राव नियमें दे अनुसार समने या रानेशमाः नियमें दे अन वृत्र। -विधि-की दैन्द्रि वर्गित कृत्य। -अग्रा-मी काबिन हुआ स्कारदीने आर्थन कर काविरमर की पानेवारी विश्वाधी प्रदानता । - क्रिक्टि-सीव

निष्मामी-निष्मी जातियाचा अर्थ । निष्क्रामी 🖛 निष्क्रमः। मिपकारण-वि॰ [मे] कारणरहितः निमा किसी कारणकाः निमा किसी कारणके दोधेवाला, अवेत्रका पुरु इहाना: रे भानाः मारण । अ निमा विसी कारणके अञ्चल । —यंध्र~प्र वह की दिला किसी प्रकारके स्वार्वके वंशवा रधे रवार्थरदित रंपु । -वरी(दिसू)-पु॰ वह जी सका-रण नैरमान रखे, नद को निमा किसी कारणके शत बस बैठ । मिरकासक-प [रो•] यह विशक्त नाम, रोनें आदि ग्रॅंड श्रिये गये 📶 । निष्कासन-प्र [सं•] चकानाः भयाना (वध्र)ः सार रालमा वन करता । निष्कानिक-नि [मं•] को कुछ दी पिन और वी सके. भिराका संत निष्ट हो। सबैय । निष्काश निष्कास-प्र+ [सं] नाहर करना, निष्ठाकनाः प्रामाद आदिका पाहरको और निकला प्रभा हिस्साः प्रमातः भीष । निरुक्राप−पु [सं] दुभका बद्द भाग को बस्क कविक भौदे जासके कारण वरतनमें हो सबकर रह यदा हो। षुषक्षे लुरकत (वे) । निष्ठासन-त [म] नादर करना निकाळनाः निचारक । निष्कासित्र∽नि [मं] बाहर किया हजा निद्धारा हुया। निन्सारितः रहा द्वनाः निजुक्तः विरासितः विस्तरीः वर्तानाः की नवी हो। निष्क्रासिमी-स्रो [सं•] यह दासी विसपर स्वामिनीमे कोई प्रतिबंध न क्यावा हो। निर्धिकचन-विश् सि] के अधिवर्गी। मिरिक्षक्तिप~दि [सं] पाररशितः निर्दोप ! सिरकेश-य [संक] दती वृक्ष : विक लुंबरदित ! ; निष्कद-प [सं] परते लगा हुना क्गीचा, सबरवाय; बबारी। राजाओंका संवासर शतिकासः एक पर्वतः सारकः बरवाबाः कीरर । मिप्कटि, निरक्करी-सी [में] वही रकावची । निरक्रक-नि [मं] जिसके कुक्में कीर्र न रह गवा छ।। मिष्डानीकरण-प्र[मं] किसीके कुष्का नास करनाः जिल्ह्या असग सरमा । बिरक्रमीम-वि [मंग] भीम कुमका। तिरक्षपित-वि [स॰] निप्कारिका झीला हुआ। जिससी राख अभग कर दी गंगी ही। जहाँ तहाँ काटा या धाया gai (बैंगे--कीरमिन्हर्षिन)ः शुरेरकर गिकना gai । तिरकश-प्र• [तं •] देवका खोर र, कोरर । विश्वता-दि [सं] जन्तरहित, शांत । निरक्त-विक [र] इन्बरहित निष्क्रपर । मिप्पान-वि [तं] निकास प्रभा सुका दरावा प्रभा

बपेडिटा श्रीयतः। हु आवश्रिकः विकलरवानः।

शारतः प्रदासः प्रावधिका वरेका बराधरमः ।

àx 1 ~

निष्कृति - भी [मं] निस्तार पाप आन्ति स्विक्त स्वरू

निर±प−वि [मं] विश्वमे यवास द्वी निर्देश, विष्ट्रसः

निष्क्रप्ट-दि [मै] नियोश्कर मिकाका बुना सारमुद । निर्फेवस्य-नि [सं] निश्चकः पूर्णा मौद्यरहित । निष्क्रीय निष्क्रीयथ-पु. [सं] छोकनाः नृसी निकासनाः काइकट सरेवकर वा स्रोपकर वाहर निकासना । निष्यस्म-वि [र्स] विना ऋमका, ब्राह्म । प्र बाहर निकळनाः चार मासके वरुपकी पहले बहक वरसे बाहर निकलनेके शिमित्त किया बानेशका वक्ष संस्कारः वादि प्यति । ~सार्गे~प्र नाहर निकलने वा बानेका सस्ता। विष्क्रमण-पु [र्स•] दै॰ 'निष्क्रम'। निष्क्रय-पुरु (संर) धारीय, अवा वेतव, भूति। माशा **परस्तारा किसी वराफे करमेर्ने दी आनेदाको रक्त्य वा** बस्ता, काका प्रतिकृता निक्षीः द्वतिः, सामर्थ्यः प्रतास्थातः सटकारेके किय दिवा जानेवाका हम्ब (की)। जिब्ह्यण-प्र [र्गण] धूरकारेके किए दी वानेवाकी रक्ता। विष्कांत~वि॰ [र्स॰] विस्ता विषक्षय हो भुद्धा हो। मिर्गत । पिपकासित−पि (र्र•) विकास प्रमा प्रसा द्वा भगाना हमा: दर्शना हमा ! निष्कारय-प [सं] सालका निर्मात (क्षेत्र)।-प्रापक-प निर्मातका (की)। निष्किय-नि [सं] क्षेत्रे काम गाम म करमेनामा से कुछ भी न करे वरें। विहित कर्मीकी म करनेवाका। विसम शा निस्ते धर्म या व्यापार न हो जिलारहित। -प्रतिराध-५ धालको भौरते होनेशके दमनदा प्रविकार म कर जसको अनुविध भाषा था कान्यका **बर्लयम** पितिष रेगिर⁵स । निष्क्रियदा−स्तं (सं } निष्क्रित दोनेशे दशाना मार । विष्यक्षेत्रा-वि वि विवेशरहित, वी सब प्रदारके ब्रह्मीने शुरकारा वा चुका हो। विष्करथ-पु॰ (सं॰) गांस भाविका रसा, श्रोक स्रोरश । विष्टपन−प (सं∗ी फ्यानाः जवासा सक्सना । निष्टत-वि सि ी जनसा सभा भग्नी दरह प्रमुश मिलानक-प• (र!•] नर्बनः कनरम । विद्याप-प (सं-) बलागाः चौरा दम करना । निष्टि-मी॰ [d] रिति । निश्च-वि [सं•] (माया समोहांत्रमें) संरिषता निर्मेख र्मस्याः अनुरक्षः सत्परः" में निवास करमेवाकाः वर्षः ! निर्मात-वि॰ वि॰] विनासधीन, नगर । निका-की [सं•] स्थितिः भागारः एकामकः तरपरताः बहुताः अमुरागः गताः विचागः पूरा दीना निःचीः भाष्टा वनेष्टा निर्मात वापना। मत्ता निष्ट्राः निधव। वन भारतः श्रीशकः। निशान-प [नं] दाल, जाब, अच्यर शारि सीमनदे काइरम । विश्वयक∽५ [मे] यक्त साम । शिक्षाबास (बन्)-वि [र्व] निकाबाधा । विश्वित-वि [तं•] भरो अति रिश्व दा निष्ठा<u>य</u>ा क्यान वसा निष्टीय निष्टीयन-पु॰ (मं॰) स्वसार मारिकी हुँरने नावर

*** निर्देतरास्यास-पु [सं॰] सदा की जानेवाली (पास्की) भावति, बरावर किया जानेवाका जन्यासः स्वाच्याय । निर्देशास-वि [मैं] विसर्वे अवद्याद्य भवी, पना। र्तग । मिर्या-वि [सं•] भारी अंचा निपट मुखं, महामुखं। बद्दा अभिरा । निरंबर-वि [से•] मंगाः दिगंदर। निर्मन-वि [में] 'निर्वह'। निर्दम-दि [मं] निर्वेष को पानीतक न पिये। मिर्दान-दि [सं] विसे अपना भंदा प्राप्त स हुआ हो, बो अपने प्राप्ते वंदित रह गवा हो। निरकार :- वि॰ प॰ दे॰ 'निराकार । मिरकेयस: - वि विना मिकावटका धाकिस: स्वथ्छ, शमद्र । निरक्ष-वि॰ मि॰) दिना पासेनार को प्रश्नीके क्या भागमें हो। - देश-प दिपवद रेसापर है देश। - रेसा-सी॰ क्रांतिक्त, माडीमंडल । निरक्षन=-पु है । निरीधन'। निरधर-वि सि॰] अप्ता गैंगर, वृद्ये। निरस्तव। = स॰ कि देखनाः निरीशय हरना ! निरग = - पु दे 'नृग'। निरम्म = निर्मम । पुण्क पंथ। निरगुनिया-वि॰ दु॰ 'निरगुन' पंथके माननेवाका । मिरगमी =- वि देश निर्मण । निरिंग-वि [मं+] जिसने अप्निहोत्र स्वाग दिया हो। भी अग्निहोत्र स बनता हो । निरम-वि॰ [सं] निर्दोष पामरवितः निम्बन्तः। निरम-वि प्रावकाशः निश्चितः शाली । निरच्छे+−६ नत्रद्दीन अंधा। निरदार - पुदेशना । वि की कमी जीर्ग न ही । निरज्ञल-विश्वेष निर्मेख । निरक्ती - भी भंगमर्भरतर काम बनानं हो संगनराहींको एक प्रचारको महील शेकी । मिरबोम-व निष्यर्ग, सार्धना निर्मय। निरमीनिरं, प्र निष्कां निग्रसनेवाचा निर्देश सरभेदाना । निरशर० ~पु० दे० 'निदार । निरशरमी • न्सी दे विश्वविद्या । निरम्रारी = स्वी है । निर्मरी । निरम-दि [त] समा द्वमा सापर सीना मधका विश्वति । • धु मूरवा • वा• निर्श्वर लगानार । निरतना - भ कि मृत्य दरमा, बावमा । निर्रात-सी [गं॰] रिोष रि या अनुराग अमुन्दि। मिरनिशय-वि [मं] जिल्ला बता बा बहरूर दूसरा स शे मिनीय। दु दरदंशर । निरायय-वि [गं॰] बायरहित शहीत्तः, निरायनः निरोष जिल्ली कर्य हरि न बीत पूर्णता सक्रण । पुर शंत्रभा अमार। निश्वर्षे निरक्ष निरम्पी=-वि वे पीर³य व

निरघान-वि• दे 'निर्पात्र'। निरधार -पु निश्चय करने या ठक्रानेकी क्रिया, निर्मा रव 1 वि॰ भाषाररहित । अ॰ निम्मयपूर्वन-पी रक्षा करिष्टै भवा, यह मानी निर्वार'-छत्रप्रद्राध । निरधारमा-स॰ कि निश्व करना, तब करना। सीचना समजना। मिरिधाराम−वि सि विभागवदीना विना आधारका। निरध्व-वि [सं॰] को सस्ता भूक यका हो। निरमढ, निरमध-प• ६ 'निर्मद'। निरमा-वि॰ वं॰ 'निरमा'। निरमुख्येश-वि॰ [सं] निर्दय निष्टुर । पु॰ निर्वता । निरमुग-निर् [एंर] जिसका कोई अनुवादी म हो। निरनुनासिक-दि॰ [शं॰] बनुनासिक्से भिन्न, विस्के वकारणमें शकका बीय स हो (ब्या॰)। निरमुरोष-वि [सं] सङ्गवस्त्व, अमैश्रीपूर्ण । निरम • - पु दे 'निर्णव । निरम्ब- व [सं•] देवा बलका क्रिसी सबका रीवन न द्वीः विश्वन भन्न न गाना हा निराहार । निरमा~दि विसने अप्र म ग्रामा हो निराहार। निरम्बय-नि [सं] नि संताना असंबद्धा (वह चोरी) बिसवें रवामीकी अनुपरिवितें मारू जुरावा गवा ही। वर्षयमा दृष्टिने परे । निरपत्रप−वि [तं•] निरुद्ध, शृष्ट। निरपना = -वि को अपना न है। दरकी व। निरपराध-(व॰ [सं॰] दिसने अपराध न दिया हो। वंडम्हर । अ दिना अपराच हिन्दे, दिना दिमी क्षमुरक्ते । निरपराची •-वि दे "निरपराप"। निरपवर्तः निरपवर्तन-दि॰ [सं] बिसमा वयवर्गन म ही सदे। निरपबाद-वि [वं] निर्वेष, अवशिविधे रहिता क्रमी भम्बना न दामवाना, भी एमा म दी कि दही करा और कडी म कर सर्वत्र रक्षना करानेशामा- वेसे निरम्बाह नियम । निरपाय-वि वि] वो सदा बना रहे जिसका कमी नाग न ही, बिररबावी । निरपेश-(१ [मं+] रिप्ती भौरकी भौरता न रसनेवानाः तिमें अपने अर्थका दीय कराने किया कियी दूसरे पर बावय भारिकी भावरपद्भाग न है। जो स्वन अपने अर्थ वा सम्बद्ध दोन करा में जो अपने ही कपर सदणदिन हो बेहर अपना भरीमा इरनेवाका आधा, मृष्णांगे मुल विरक्ता की विशी पाउनी परना म करे, प्रशामीन । निस्पत्सा-भी [गं॰] बरेच्या उरामीनना । निरपश्चित-दि [में] दिन्दी अरण म की गरी है।। निरपर्सा(भिन्) -रि [मं] दरहा बरनेराठाः बरागीन। निरक्त - दिव दे निष्कृत । निरर्वध•-वि वजनरहित । मु चरमहामा-वर सेवा निरवसी पन्ने भेग गुवाद -ग्रामी। निरवर्गी-दि॰ वि हे बोर गंत्रज म दी आदान। निरवर्ती -- दि पु विरामी स्प्रमी । शिखमा ।- वि देव दिन दिन ।

मवर्षन, भारतदा ।

निहतार्थं - नीचा निहतार्थ-प॰ [मं॰] साहित्यमें एक दोष-किसी इवर्धक शब्दको उसके अप्रसिद्ध अधेमें प्रवृक्त करना ! निहरथा-वि॰ जिसके दावमें कोई द्विवार न हो, बिना हथियारका, निःशस्त्र, निरस्त्र । निहनन-पु० [सं०] बध, मारण । निहनना *-स॰ कि॰ मारना, वध करना। निहपाप#-वि० दे० 'सिप्पाप'। निहफल#-वि॰ दे॰ 'निःफल'। निहरू-पु० गगवरार । निहच-पु॰ [सं॰] आहार, बुछाना । निहाई-श्री प्य विशेष भाकारका लोहेका ठीस दुकड़ा जिसपर लोहा आदि भातुओंको रसकर पेटते है। -की भाली-निहारेपर रखकर नकाकी गर्वा थाली। निहाउ∗-पु० दे० 'तिहाई'। निहाका-सी॰ [सं॰] जल-गोधिका; तुकान । निष्ठानी-सी॰ सुदारेका महीन काम करनेकी एक तरहकी रतानी; उपेकी लकीरोंके भीतरका जमा दुआ रंग खुर-घनेका एक आला ३ मिष्टाय, निहास*-पु॰ दे॰ 'निहाई' । निहायत-अ० [अ०] अत्यधिक, बहुत उदादा । निहार- # वि० निहाल, लर्डू । पु० [से०] कुहराः पार्लाः श्रीस । −जल-ंपु• श्रीस । मिहारना 🖛 स॰ कि॰ गीरसे देशनाः निरम्बना । मिहारिका-स्त्री०ं [मं०] दे० 'नीहारिका'। निहासभा नपु॰ दे॰ 'नास्र'। मिहाल-वि॰ हर तरहसे छत, जिसके सभी मनोरथ सिद हो जुके हो, सफलमनोरथः प्रसन्त । पु॰ (फा॰) योगाः छोटा पौथा; सोशक, गहा । —चा—पु॰ वर्धोको सुरु।नेकी छोडी गदी। -छोचन-प्र॰ वह योदा विसका आधा भवाल गरदनकी दाहिनी और हो और आधा बाबी ओर । मिहाली-ग्री० [फा०] तोशक, गराः रजार्र-'बैमे नर शीतकारू सोचत निवासी ओड - संदर: निवार । मिहिसन-प्र० [में] यार दाएना, वय करना । निष्टि-उप॰ 'निम्'दा एक दिकुन रूप। निहिचय#-पु॰ दे॰ 'निशय'। निहिचित#-वि० दे० 'निश्चित' । निहित-वि॰ [मं॰] राम हुआ, घरा हुआ, स्वापितः वीषा हुआ। गंभीर स्वर्मे उद्यस्ति । निहीन-दि॰ [मं॰] अधम, नीच । पु॰ नीच भारमी। निहँकना - म॰ जि॰ अकना। निहेंद्रना! -- अ० फि॰ दें "निद्रना" । निहड्मना!-स॰ जि॰ दे॰ 'निहरामा'। निहरना -- अ० कि० शुक्रना, नत होना । निहराई १ - न्दो ० देवे 'निद्रराई' । निहराना! - ५० कि॰ इस्ताना, नत बरना । निहोर•-पु॰ दे॰ 'निहोरा' । निहोरमा - म॰ कि॰ निहोरा करना, बार्यना करनाः भाराधन करना, मनानाः भागार स्रीयार करना । निहोरा=-पु॰ प्रापंता, निवेदना हुपा, वपकार, पहसाना

निहोरे "-अ० कारणसे, वजहसे; बारते । निह्नच-पु॰ [मं॰] दनकार; बरतुरियनिका हिपाना, अप-छापः दुरावः शहताः बहानाः अविशासः प्रादिश्च । -वादी(दिन)-पु॰ यह जी टालमटोलपाला उत्ता दे। निह्नवन-पु॰ [सं॰] रनकार; वदाना । निह्नवीत्तर-पु० [मं०] टालमहोलवाला उत्तर । निह लत-वि॰ [मं०] छिपाया हुआ, गोरित । निह ज़ति-वि॰ [सं॰] छिपानेकी किया, गोपन । निहाद-५० [मं०] स्वर, आवाज । र्नींद्-सी० निदा । र्नीदही#-सी॰ नित्रा । चीँदन(७-स॰ जि॰ निया गरनाः निरासा । मॉरिस मॅरिसी#-सी० निद्राः मॉर । भौता-स्वा० नीम। नीअरा -अ॰ निस्ट । नीक-पु० [सं०] एक वृक्षः * भलाई, अध्यापन । * दि० वसम, अच्छा, भला । अ० - छराना-अच्छा छन्ना; थिय खगना, रुचना। कराना, मुद्दाना । मीका *-वि॰ दे॰ 'नीक'। स॰ -लगमा-दे॰ 'नीकं खगना'। नीकार-प॰ [सं॰] दे॰ 'निकार' । मीकाश-वि॰ (मं॰) सरश, समाम, तुश्य । मीके - अ॰ अच्छी तरह, भली मोति; स्कृशल । मीगनेश-विश्वपित, वेशुमार-'एगराज ज्यां बनराजमें गजराज सारत भीगमे"-रागनंद्रिका । नीच-वि॰ [मं॰] (उधका उसटा) यो जाति, गुण, कर्म आदिमें परकर हो, अथम, निरुष्टः राल, दुष्ट, सीटाः मीना । प॰ नीच समध्यः चीर नामका गंधद्रश्यः यंत्रहामें किसी 🥆 ग्रहका अपने उद्य रथानने सानवाँ स्थान (क्यो॰) i -- अँच-वि॰ [fe॰] होता बहा। होदे या यहे गुलका। सला-बरा, उचित-सन्चितः। पुरु सुफल-कुफस, भणाया तुरा परिचास, लाभाकामः सुग्र दश्य ।-कर्षय-प्र•संडी। -कमार्ट-सी॰ [हि॰] बरा पेशाः बरे स्ववसायसे जना-वित धन । -श-वि॰ नी-रेडी ओर जानेवाला, निम्न-गामी: गोटा, बोटा: (बद घर) जी अपने उस स्थानसे गुलवें स्थानमें पहा हो (उयो०) । [स्री० 'सीगवा' ।] ५० बल : -बा-सी० वदी: बीच कुलदालेके माथ व्यक्तिकार बारनेवाली स्त्री । -रमर्सा(मिन्)-वि॰ दे॰ 'गीमग'। [सी॰ 'नीचगाविनी' ।] -ग्रह-पु॰ ब्'रसीमें मिनी मह-का अपने उस स्थानने सामर्या स्थान (उपां) ।-भोध्य-पुरुष्यात्र । -योनि-विरु नीच जाति या कुल्हा । -बाज-पुर वैकान गणि !-स्थान-पुर देव 'नीयगृह'। भीचर-६० मि॰] सर्मानाः दिमनाः मेर् । जीखरा, जीखिना-म्यो० [मं०] बहिया गाय ।. सीयहा(विस्)-विश [मंग] उस, जेना । पु॰ दिगा बस्तुका शिराः बैहरका सिरः अन्ती गाय रसनेताना । जीचटौ --वि० १का, इद, मतरूत । शीखना-क्री॰, शीखम्य-पु॰ [मं॰] मीम होनेहा भार, मोछापन, गोटार्र । नीचा⊸वि० विसकी सतह खँदाहेर्वे बाग्रपासकी सन्दर्भ

निराष्ट्र-सी निरानेकी क्रियाः निरानेकी उत्तरत । निराक-पु॰ [ए॰] पाचन किया। पंधीना। हरे कर्मका रियाक । मिराकरण-पु॰ [सं॰] दूर इराना, निवारणा दूर करमा,

परिदारः श्रंडन निरम्रन ।

निराकांश-दि॰ [सं॰] जिने दिलोकी वर्षश्चा वच्छा न हो। इच्यारदित निरदेश।

निराकार-दि॰ [सं] क्रिसका कोर्र आकार या क्य म की, श्रामात्का प्रकराः भरा, कुरूपः निनम् । पु॰ परमात्माः

दिवः विष्यु । निराकाया - वि [मं] जिसमें भोड़ी-सी भी जगह सामी म

ही एकदम मराहुता। निराकुछ-दि [मं] ब्दाप्त भरा दुशीः को परतया न

श्रो, भीर; श्रांत: * रहत परताबा दुमा - व्यापुरु बाहु निराक्तल कृष्टि, बनयो वह निरुप बंदारुगियो?-रामचंत्रिका। निराक्क - वि [मं] क्रिसका निराद्धरण किया थया हो।

विराक्ति-सी [मं] तिराकरण ! वि॰ विना भाकारका, निराष्ट्रारः करुपः जी पनमहावश म करे (रह) !

निराकती(तिन)-वि (मं] को निराकरण करे। निराक्षेत्र-वि [4] यो विस्काने या शिकारत न करे:

विश्वकी प्रकार न सुनी जाय। को तुकार न सुने । प्र वह ग्याम पदी धोई शब्द न सुना का सबे।

निराधर॰-वि है निरक्षर ।

निराग-वि [मं•] रागरीन किरफः। निराम(स)-दि मि निष्याक निरमराव ।

निराचार-वि सि विज्ञानारहीत ।

निशामी-मी जलाहोंदे दर्पेके एक कदता।

निराट॰-वि निराः, काराः पद्मयामः विसङ्ग-शोत निराद रिगंबर'-संद ।

निराबंधर-वि [एं॰] बिछमें बाय म बीर विमा मधाईका । निरातंक-दि [मं॰] भवरदित निदर्श गीरीम स्वरथः

अनियंत्रित । पु**० शिव** । निरात्तप-निर्मि शिसमें भूष या गरमी न दी। कांबादार ।

निरातपा-भी [ग्रं॰] शत ।

निरादर-वि [गं॰] अपमानजनका जारररहित । प्र भाररका समारा अपयान ।

निरादाम-तु [नं] तुक्रदेव ।

निसाविष्ट-दि॰ [गं॰] में पूरा-पूरा भण कर दिवा गवा हो (६४) ।

निराइश-पु [न] क्य-परिश्लोच ।

निराधार-वि [मं] दिना आभरका यो किमीक्ट माभित म दी। दी दी सहिद्यारा म मात्र ही। क्सहानः भी दिभी प्रमाणपुर कालिए न ही। बेट्नियारः अयवार्थ क्ष्मुमः । विगा अश्वयक्ता निराहार ।

निराधि-[40 [मं] मनीप्यवाधे रहिना मीरीन । निरानेह-दि [मेर] बानेप्रदित । तु कार्यपदा समादः

निरामान्त कि ४४ की बागीबी होस्नेवाची अनावदद बाम तुर बारिको सुरदेश कालका बुर बराजा।

मिरायब-विक [संक] कापशिये रहित, मिनिया, सुरक्षित । मिरापम, निरापुन - वि को अपना म हो। परकीय । मिराबाध-वि॰ (सं०) बिसके साथ छेड़छाड़ न बी। नापा-रहित ।

विरासय-वि॰ [सं] विसे कीई रोग न हो मीरोपा निर्दोषः निर्मेषः । पु अंगकी वदस्यः स्मरः रोगराहित्य । गिरामालु-पु (सं•) केंग्रस पेर र

मिरामिय-वि॰ सिं] मीसरविता वासनारविता पारि अभिक आहि स पानेशकाः + मांस स धानेशका । निरामिपादी(शिन)-वि॰ (छ॰) व। भीत म काव

शास्त्रहारी । निराय-वि सिं विश्वते वा निसे इक भाव न की। निरायत−दि॰ वि•ें जो फैलावा दा महाया न हो.

सिक्तेका क्षमा । निरापास−दि॰ सिं] क्रिस्में परिजय न क्रमे. सदर, श्रासात ।

निरायध-बि॰ (सं॰) क्सिके पास इविवार न हो। निरम्र निहत्या ।

निराट निरारा*-वि अब्ग द्वरा। निरार्श्य-दि [सं•] ६ 'निरदनंद'। प्र प्रश्ना निरार्ल्डन न्ही [सं] छोटी बटामासी ।

निरासक - पु (चं) एक धमुद्री मधली। निरास्ता-वि देश निराहरव' ।

मिरासस्य-वि॰ [सं॰] जिनमें बाहस्य न हो, अहारय रहिता प्रभासन्बद्धा न होना ।

निरास्ता~त निर्वत स्वान, पदांत स्थान। वि अश्रौ कोई बस्ती या मनुष्य म ही विजन पढ़ांता की अपने रंगका लक्केम की विकक्षण, अयोगा विक्ते, समान कार्र इन्दर न दो वैजोहः अ<u>न</u>्दम अदितीय ।

निराक्षोक-वि॰ मि॰] मदाशरदितः स्पेराः भरवा श्री श्रीन । प्रश्रीय ।

निराचरण−वि [मुं•] भाषरण-रहित शना द्रभा। निराधना - स कि के पैनराना । निराष्ट्रत∽वि• [मं] वी दका म दी राता दुवा।

मिराजा-वि [मं•] विसे नाग्रा म हो, भारतरहित,

निराधक विराधी(सिन)-दि [ई-] दे 'निराध'। निराजा-न्यो॰ [मं] याधाका जनाव, जावस्परी । निरादिए-रि [मं•] बाद्यारांन्से रहिता बनामान ।

निराधय~4ि [र्व] दे 'शिरवर्त्रव'। विरास-पु॰ [मं] बूर करमाः प्रत्याच्यान, ग्रंडनः वसनः

विरोध। • वि दे॰ 'निराद्य'। निरामन-९ [नं]रे 'निरमन । रि शामनरदित्र।

निशमा॰-मी दे दिराशा ।

निरासी - वि इताध जानमेर विकास प्राम कांति-होनः वहाँ वा जिसमें बदलो धापी हो।

निशस्याद्-रि [शंक] दिना स्थाप्ता, अन्या ॥ भेमत्र। निसाहार-दि [वं] विसन इए सादारिया म ही बदे देश विसे बर्जमें दुए गाया म राम (वेमे-निरा-दार मन्)। पुरु उदस्य ।

नीरज-विं [मं] दे॰ 'नीरजा'। पु॰ शिव। गीरजा(जस्)-वि॰ [सं॰] पुलिरहित । पु॰ शिव। वि॰ स्ती॰ आजस्वला ।

नीरत-वि॰ [सं॰] विरत्त ।

नीरद-वि० [सं०] विना दातका, जिसे दाँत न हों। पुर बाहर निकला हुआ दाँत: दे॰ 'बीर'में ।

नीरना#-स॰ फि॰ विधेरना ।

नीरव-वि॰ [सं॰] शब्दरहित, जिसमें ध्वनि न हो: जो शब्द न करे ।

मीरस-ति॰ [मं॰] रसहीनः स्याः बेरवादका । पु॰ अनार, दादिम ।

भीराज−५० [सं०] उद्धावस्थाव ।

भीरंजन-पु॰ [सं॰] देवताको दीप आदि दिसानेकी पूजन॰ विधि, आरतीः विजययात्राके वहले हथियारोकी सकाई करनेका राजाओंका एक ब्रस्य को आधिन मासमें हका वरता था।

भीराजमा-सी॰ भि॰ो दे॰ 'नीराजन' । * स॰ कि॰ भारती करनाः इधियारोको शकार्य करना ।

मीरिंदु-पु० [सं०] सिद्दोरका पेड ।

नीएक (ज), नीरोग-वि० [सं०] रोगरदित, रयस्य । गीरज-पु॰ [छ॰] सुष्टीपधि, सुर । वि॰ रोगरदित । मीरे#-अव देव 'नियर'।

मीरेणुक-वि० [सं०] पृक्षिरहित ।

बीलंगु-पु॰ [सं॰] कोहा: एक तरहका छोटा भीका एक त्तरहकी मनखी; गीदहः भेपराः फुल ।

मील-दि॰ [सं॰] नीले शंगका, आसमानके शंगका काला (१); सी खरव । पु॰ नीला रंग; एक श्वरहका पौधा जिसते क्रीका रंग तैयार किया जाता है। एक पर्वतः रामकी सेना-का एक पानर जिसने नक्षके साथ समुद्रमें पुल्व बाँधा बाः कुबेरकी एक निधि। मणकः बहुका पेड़ा ईद्रामील गामि। यम-राजका एक विम्रहा एक तरहका पक्षी, मैना। काले-नीले रंगमा बैका काच-कवणा तृतियाः ग्रहमाः एक विषा वाकीस-पत्रा विद्या नृत्यके १०८ शहलीमेंसे यका एक मात्रिक कुछा एक दिगान: भी दारमक्षा संस्था. १,००,००,००,००,००, ooo I -कंट-बिर निराका गला गीले रंगहा हो, मीले क्टबाला । [सी॰ 'सीला(डी' ।] पु॰ मीर; शिव; मीले बंड और बेनोंबाका एक पशी जिसका विजयादशमीने दिन दर्शन करते है। गीरी नामका गंधाः गांवनः गीरैवाः धनरः मूळी; राह्यगीका एक भेट । ~संद~पु० भेसा संदः विष-क्षेत्र । -क्सरा-५० मीने रंगका कमन । -कांम-५० एक पहाकी पत्ती: विष्या: जीवाम गर्वि । -श्रीतला-स्वी० धर्मानी पक सही ! - अर्रटक-प्र॰ नीट दियी ! - केनी -सी॰ नीहका पीषा । -ऋांसा-मी॰ कृष्णापराजिता । -क्रीच-पु॰ काला बगना । -शंगा-न्दी॰ एक नदी । -शाय-भी॰ [दि॰] एए वर्नेटा जानवर जिसकी शह माय जैसी होती है ! -शिहि-पु॰ दक्षितका एक पर्वत ! -धीय-प० शिव । -चक्र-पु० एक यज विस्ती रिवर्ति व्यवदायके मेरिकी दिलास्पर मानी जागी है। देशक बुलका एक भेरू । - सर्म (जू) - पुण्जीते ईयका धमशा । -

चर्मा(मंत्)-विक निगका समझ नीने (गन्ध हो। -

च्छड्-पु॰ गहर; खन्त्या पेर ! -ज-पु॰ एक सरहरा: कोहा, वर्मकोह । —हिंदी—स्वी० नीलो करशुरेवा । —तरु -प्र॰ नारियछका पेड़ 1 -ताल-प्र॰ हितालः तमास वृक्ष । —द्वस—पु० असन वृक्ष । —ध्वत-पु० समान वृक्ष पक राजा। -निगुंडी-छो॰ गीला सिदुबार। -निया-सक-पु॰ पियासाङका पेड़ । --निलय-पु॰ आकारा । -- पंक-पु॰ अधकार, अधेरा १ - पेटल-पु॰ बना काला कावरणः अधिकी ऑसमेंकी काली शिली। -पग्र-प्र अनार; नीरु कमक। −पश्चिका,−पश्ची-मी॰ मीह। -पश्च-पु॰ दे॰ 'नीलकमल' । -पर्ण-पु॰ 'ब्र्यार क्यु । -पिच्छ-पु॰ बाग । -पुरप-पु॰ नीला भँगरा । -पुष्पाः-पुष्पिका-स्थै॰ अस्तीः तीसीः नीस्का पीधाः। -फ़ला-सी॰ जामुन । -यरी-सी॰ [हि॰] क्ये मीह-की बड़ी। -विरई-सी० [हि०] शनायका पीपा। -यीज-पु॰ दे॰ 'नीलनीज' । ~भ-पु॰ चंद्रमाः बारहः अमर। -मणि-प्रः गीलगः। -मश्चिका-गी० वेण। -माप-पु॰ काला उदद । -मीलिका-सी॰ जुगन्। -मृत्तिका-स्तेष काली मिट्टी । -मोर-पु० (k•) हिमालयपर पाया बानेवाला करही मामका पत्नी । -रस -पु॰ गीलम । -हाजि-स्रो॰ धना संधदार । -स्रोह-पु॰ दे॰ 'बर्सलोह'। —लोहिस-बि॰ समार्र तिथे नीका। र्वगर्ता । प्र॰ शिव । —छोडिला-स्वी॰ जामनकी पर जातिः पार्वती । -वर्ण-वि० तीने रंगका । पु० मली । -वर्षाभू-छो॰ गोरू पुनर्नेता। -यहरी-छो॰ परगोछा। - चस्तन-वि॰ जो भीने रंगका वस्त पहने वा पहने हैं। पु॰ जीले रंगका बन्धा मलरामा शर्नेधर । -पासा-(सम)-वि॰ दे॰ 'नीकवनन'। पु॰ शनिम्रह ।-धीत -पु॰ विवासास । -यूंतक-पु॰ न्हें। **-यूप-पु॰ दह** अकारका वय (साँब) विस्ता उत्सर्ग मशरत माना जाता है (इसके शुंह, सिर, पूछ और शुरका रंग दवेत दोता है और दोव दारीरका लाल)। —सूपा−सी॰ वैगन। — शिम्बंड∽पु॰ रहका यक मेर्रः −शिम्र−पु॰ सदयनका वेद । —संद्या—स्वी॰ कृष्यापराजिता । —सार-प्र॰ तेंद्रका वेष । -सिंद्रधार-पु॰ काने रंगका सिंद्रवार । ─सिर=प० [दि०] गीले तिरवाली एक अकारको नगर्छ । -श्वरूपः-स्वरूपक-पु० थाः वर्णवृक्ष । मील्डडेटाइपि-दि॰ स्थै॰ [सं०] स्वत्तर्थ ही ऑसीवानी !

वीलकं**टाध्र-५०** [रां०] स्त्राधा ! भीलक-पु॰ [गुं॰] भगर, भेनरा; काम स्वगः वर्धनीहा कार्ट रंगका धोराः सीसरी भगत राशि (ग०) । शीलम-पुरु (पारू) भी-देश्यदा एक प्रसिद्ध रस, इंद्रनीस ! मीलांग-वि० [मंग] जिसके और भीरे (गरे ही। 3º भारम १

भीलांग-प्र॰ [मं॰] २० 'शिरंगु'। भीखांजन-पु॰ (गं॰) गृथियाः नीमा ग्रुरमा । मीसाँजना-मी॰ [मं॰] शिन्ही ।

नीर्ट्यं बनी-स्री० [सं०] एक धुप, कार्यातनी । वीलोजमा−धी॰ [गं॰] एक अध्युरा; एक नदी; वित्रही ।

मीलांबर-वि॰ [मृं•] विमदा वस मीला हो, भी मीने र्गहा बल पश्ने वा पहने हो । पुण जीमा कपरा। वालीम ... निरुवरमा #- म कि बरिनारे दूर होना, सुख्याना ! मिरुवारी-पु॰ दे॰ 'निरवार' । मिरुवारना = स कि • दे • 'निरवारमा' । निरूद-दि [मं] अत्यंत स्त्र, अविक प्रसिक्त जिसका अधिक व्यवदार दीता दी। अधिवादिता साफ किया हुआ। पु एक पशुकार । ⊶छक्षणा—सी वह कक्षणा विसर्वे सम्बद्धा प्रसिद्ध कर्ष रूड हो गया हा । निरुदा-कौ० [में] निरूत-क्षणा। निक्षि-थी [4] प्रसिद्धि दश्याः निरूष सम्बन्धाः मिरूप-वि निमा समक्षा स्परवित पुरी शहका कुरूप। पु॰ बाबुः साम्बन्धः देवता । निस्तपक-दि॰ पु [मं०] निस्त्रण करनेपाका। खिरै॰ 'विक्षिका ।] निक्रमण-पु॰ [मं] इँदना, बाँचना अलोपणा किसी विषयको एस रूपमें रखना कि वह साफ साफ समहामें आ बाद, मीप्रिक रूपमें वा लंख द्वारा किसी विषवकी औक ठीक समना हैता: आक्रोड: इप: रहि । निकपद्या-श्री• [मं•] दे निरूपण । निक्काना - । कि । निरुष्ण करना रषष्ट शब्दों में समझा देवाः प्रतिकारम करमाः वर्षम करनाः। निक्रपित-(द॰ [मं] जिसका निक्पम किया गया थी। निक्यिति - ली • [सं] ब्याल्याः परीयन । मिक्कप्य-विमि निरूपन करवे योग्य। मिक्द-4• [4] बरिनका एक मेडा तर्फा निश्चया पूर्ण बारव र निस्त्रण-पु (स) पश्चिमा प्रदेश पर्य करनाः निश्य धरता । मिरेलन(*-छ । वि दैरामा निरम्मा। मिरेश-दि [1] श्रष्ट्रशंत । मिरे +- प निश्व मरका मिरोग निरोगी !- वि विभे की शीव न का स्वरव ! निशदम्य-वि [मु] निर्शेष करने दास्का घेरने वा मापन करने योग्य ३ निरीध-पु [गं+] रीट, न्यापर प्रतिर्थेश बदामें स्थाना, निमहा एडमा, परनाः नाद्या अर्गनाः नराहयः विश्वद्या बह भवन्या जिसमें सभी पृथिया और संस्वारीका लय हो। माना इ.। ~परिमाम~च विश्वतृत्तिको ६६ विशेष भवरवा (दी)। मिरोपड-ि (र्श) निरीष करनेरना शेष्टनशाना। [नी निरीपिया ।] मिरोपम-पु॰ [सं॰] रे निरोध। बारेबा एडा संस्कार (भा० दे) । निरोधी(धिन)-दि मि] निरोध बरवेशमा, शैक्ते कता (कि. प्रतिश्रिको ।) निर्-पर मि] दे दिल्। निर्मात-रि [रो] शोग शोर्ट-निर्देत । निकंति-के [ति] रेव्यनिक्या । बिरो-९ (४:) दर मार !-हारीसा-९ गुमलकानी दे रामनुरूपने बालएमे या में इमारसी देखेख बर्ते सर्वेद बिर श्वित दिया जानेसमा बद प्रदास्ता

¥4-E

दारीना । -नामा-पु॰ मुस्तुन्यानोके शासम्बाधको पक्ष प्रकारकी सभी विसमें अत्यंक किलेप बस्तुका भाव सिमा रहता वा ! -- संशी-न्त्री । किसी भी नकी दर ठहरासे का तिराँच-वि [सं•] बिसमें गंध श हो, गंपर दित!-प्रस्थी-स्रो॰ सेमरका पेश। मिर्गेधन-पु• [मृं•] भारना, वर करना । विर्म-त॰ (सं०) देश: भूभाग: स्वान । निर्मत-नि [र्स॰] जी बाहर माया हो। निक्रमा हुना। नि'स्म, निफांत । पुरु 👣 'गियांत' । निर्यम -प्र सि॰ वहर बाना निरुवनाः निष्मासः निष कनेका मार्ग, हार 1 निर्मासन-पु [सं] बाबर जानाः, निश्वस्माः, मि'सर्गाः बाहर बाने वा निकलनेका रास्त्रफ दरवाजाः प्रतिहारी । -मार्ग-प शहर निच्छमेदा मार्य । मिर्गमबाध-म+कि निरुक्त नाहर भारा। निर्गर्व - (१० (५०) अभिमानरहित । निर्वदाश्च-दिनि विभन्ने श्विषयी न ही । निर्मुद्धी, निर्मुद्धी~स्पी [शु•] सिरुपार । मिर्गण-दि [र्ग] बा सत्त रह, सम-दम ठानी ग्रामीधे परे ही विश्वणातीन भी शुनदान म ही गुमरहिता हितमें दोरी न दो (पनुष्) । पु॰ निग्रगातीत परमात्मा । निगृणिया, निर्गुनिया-वि निर्दुत्र नक्की उपासना करनेवासा । निर्मुड-नि [सं॰] मध्येत मूध बहुत गुप्त । पु॰ कोटर । निर्मेश-दि [मंग] मूर्ग असदाया दिरसः पंपनमुका निर्पमः दलक्षामः निष्मकः। पुः श्रीहः या दिगंदर धेन सान् धरणका ज्ञानारी। एक माना श्रुविद्योग स्पक्ति रूप । विश्रवद्य-विश्ववि वतुर, दक्षा पदाचीः परिवक्ताः कनदीन । पु॰ श्रमपद्य दियंबर ग्रम्म्याची। जुनाही । निर्मयन-९ [स] बारण, दर। निर्माधक-रि [सं] रिना गाँउका द्वरात, न्य । द क्यगब्द । निर्मेविका-स्वां (सं•) श्रीद मुल्यासिसी । निर्माष्ट-वि [मं] ग्रहण करने वीम्या अनुमव करभे बोग्यः ग्राशास्त्रार करने याग्य । निर्पर-९ मि विकेश मुपापक निर्पर। मियर-९० [मं०] वह बाबार नहीं हुबानहारीने कीना म की जादी ही। वहा बाहार या देना। विर्धात-पु [मं•] घ्रंस, साधा त्याना हवादे सेंबरेंद टबरानेथे उपन्न सच्या बजायना आवान प्रशास मुद्रेष । निर्धातन-५० [40] वाहर निर्धानना अनिर्धिताती एक हिया । विष्य-वि [वंक] प्रशासिक निरंद निष्युरः निरंद देश्या । निष्मा-सं [वं] निष्प्रताः पृथ्या । निर्धोप-इ [मं] शब्द जिनार । रि. शब्दांस्त । नियमण-विश्व धन का कराने रहित । निर्मन-रि [र्ग] वहाँ क्षेत्रे म को क्षात्र भूरमाम ह उ॰ महम्मीत क्यों हुई या ग्र-कागर प्रमान ।

नुक्रता-पु॰ [ब॰] धरवा, दाय; बिटुः टिखावटमें अधुरीपर लगायी जानेवाली विदी; सिफर, सुन्ना । मुक्ती-सी॰ एक तरहकी मिठाई।

नुकरा-पु॰ [अ॰] चाँदी; घोड़ेका सफेद रंग । वि॰ सफेद

सकरी!-सी॰ बटाशबीके किनारे पाया जानेवाटी एक छोडी चिडिया ।

चुकमान-पु॰ [अ॰] कमी, न्यूनता; हानि, क्षति; ऐब, दीय । मु॰ -उठाना-क्षतियस्त होना । -पहुँचना-

हानि होना । -पहुँचाना-हानि करना । मुकाना • ~स॰ कि॰ हिपाना ।

नुकना#-अ० कि० छिपना।

'रंगका (पोशा) ।

भुकीला-वि॰ नोपवाला, नोपदार; सपीला, संदर । पुक्र-पु॰ मीकः माका, मोकः होरः निकला हुमा कोना ।

जुका-पु॰ मोक । -टीपी-स्ता॰ पतली दुपलिया टोपी निसका प्रचार छखनऊमें है।

मुक्स-पु॰ (अ०) ऐब, दोष; खामी, बुटि । नुगदी-सी० दे० 'नुक्ती'।

मुचना-अ॰ फ्रि॰ नीचा जाना। नुचवानाः – स॰ कि॰ नौबनेका काम कराना ।

<u>नुत्त</u>-वि॰ [सं०] तिसे प्रणाम किया गया हो, वंदित,

नमरहतः जिसकी रत्तति की गयी हो। स्तुत । नुति-भी॰ [सं॰] प्रणामः स्तृति ।

नुत्त−4ि॰ [सं॰] पेंका या चळाया हुमा, शिप्तः मेरित । जुरफ्रा−पु॰ [अ॰] बीर्यं, हाकः संतान ៖ −(रक्रे) हरास⊸ वि॰ दोगला, जारजः नीच, कमीमा (गाछी)। अ॰

-टहरमा-गर्माधान होना I नुनरारा, नुनयारा-वि॰नमक्षेत्री स्वीदवाष्टा, नमकीन ।

सन्तर(-स॰ कि॰ सैदार फमलको काटना । मुनाई*-सी॰ लावण्य, शोभा, सीदर्व ।

भूमेरा-पु॰ नीमा मिट्टी भादिसे नमक तैयार करनेका पेका करनेवालाः गानिया ।

नमा-वि॰ (फा॰) जा**रिर** करनेवालाः दिखानेवालाः

बतारीबालाः सरश्, मानिद (येबल समाभुमें व्यवहत-बैने सुशनुमा, रहनुमा) ।

नुमाईदगी-को॰ (का॰) प्रतिनिधल । मुमाइदा-पु॰ [का॰] दिसानेवाटाः प्रकट करनेवाटाः

प्रतिनिधि । मुमाइश-सी॰ (का॰) दिसाबा, जहर, प्रश्नंतः रूप,

गुरत, शङ्कः सनेय प्रकारको सर्भुत बरनुओया प्रदर्शनः यह भेला बहाँ भिन्न-मिन्न स्थानेंची अनेद प्रकारनी मृत्रलबर्दक, अरमुत तथा सुंदर बरगुओंका प्रदर्शन दिवा जाता है, प्रदर्शनी । -शाह-पु॰, खी॰ वह स्थान वहाँ नमारद्य दो ।

मुसाह्यी-दि॰ [पा॰] दिगावशः तदन-भवकतानाः मुमाई-भी (पा) दिसाया, प्रदर्शन (ममामुमें स्ववदृत-नीते ,स्यनुमार्वे) ।

नुमायाँ-वि॰ (पा॰) जाहिर, मस्टः प्रधान, यहा ।

मुसरगा-पु [घ०] दिशा हुआ दागनः नदल, दावीः वह

७२६ कागब जिसपर हदीम, टाक्टर या वैप दवा, उसरे प्रयोग-की विधि आदि लिखते हैं। किसी हकीम, टाक्टर या वैस्के द्वारा रोगविशेपके लिए निकाली गयी औषभ, योग। सु॰ -बाँधना-समुदीमें दियी हुई दवाएँ देना। -खिलना-रोगोको उसके अनुकृष्ट नुसरा। हिराकर देना । लुहरनाक-अ० कि० दे० 'तिहरना'।

नृत-वि॰ [सं॰] दे॰ 'नुम'; * नया, नवीन । न्तन-वि॰ [मुं०] नवा, न्दीन, अभिनद; अपूर्व, भर्भुन; हालकी, साजा।

नृतनता−सी॰, नृतनत्व−९० [सं०] नृतन दोनेका भार, नयापन, नदीनता ।

न्न†-पु॰ नमकः एक सता ! # वि॰ दे॰ 'न्यून' 1-तेल= पु॰ गृहस्थीकी सामग्री।

म्,न~वि० [मं०] दे० 'नुनग'। सूद-पु॰ [मं०] शहतूत, अहादार वृक्ष) मृतवाहँ+-व्या॰ स्पृतवा, यभी i नुनी !-खी॰ किंगेंद्रिय (विदोषवार वधीयी)। जुदर-प॰ [सं॰] पैरका एक गहना, पुँपरः। जूर-पु॰ [ल॰] ज्योति, प्रकाशः पुनि, कानि, छनिः १थर॰ का रक नाम (ग्॰) । –धरम-पु॰ व्यारा पुत्र।–चरमी -सी॰ प्यारी प्रश्नी -बाफ्र-पु॰ जुलाहा। नरा-पु० मिलवर् छदी जानेवाछी सुद्यी । † वि० मूरमे

वुक्त, धुनिमान्, तेमस्यी। सह-पु॰ [अ॰] शामा या रश्रामी मगीके अनुसार आदम-से दसवी पीरीमें सरपन्न एक पैगंबर (जिनके समयमें एक देश तूपान बाया था कि सारी सृष्टि जलमा। शी गयी थी । उस समव अपने परिवाद तथा सभी जानवरीये पह-एक ओड़ेके माथ एक स्वतिमित नीकामें भैठकर इन्होंने प्राप बचाये थे । कहा जाता है कि जन्हींने प्रमा सृष्टि चरी)।

मृ-पु•[सं•] (नगरन परीमें प्रयुक्त) नर, मनुष्याधनर्रतका मोहरा। -कपाल-पु॰ मनुष्यकी शोपना। -फेशरी॰ (रिन्)-प्र नर्शिष्ट अवतारा गिष्टकेनी पराममनाना अनुश्य (−धन-वि॰ अनुश्यको आरनेवालाः अनुश्य पानः । -जल-पु॰ आदमीका पेशार ! -हुर्ग-पु॰ वह दुर्ग विस्के वारों भोर सेना हो । -देप-प्र माछगः रामा । -धमां(मंत्)-पु॰ बृदेर् ।-प-पु॰ दे॰ प्रममें ।-पति, -पाल-पु॰ राजा ।-पशु-पु॰ मनुभ्यमपी पशु, पशुनुस्य मनुष्यः महामूर्गं मनुष्य ।-सिधुन-पुर्नो-पुरुषहा शोहाः मिपून राशि। - मेथ-पु॰ तरमेथ यह। -बज्ञ-पु॰ गृहर्थ है सर्वन्यस्य पंचवदीमें शह, भविष्युत्रन, भविषिः सरकार । –छोक-पु॰ सर्दशेक । –यराह-पु॰ बराह-रूपवारी विष्यु । -बाहन-पु॰ कुनेर । -बेहत-पु॰ शिव । -श्रीय-वि० सनुष्येशि सनानेपाला, स्र, अप्याः व्यारी । -र्शन-पुरु समुध्येकि सीय क्षेत्री कर्ममर वर्ष या बात । -सिंह-पु॰ निहरूपरारी विष्युः विश्वस चतुर्थे अवनार (इसी अवनारमें विग्नुने हिरम्यक्रियुक्त नाय हिया था); सिंह देशा पराक्रमी ग्युष्य ।-• चतुर्दही —सी॰ वैद्यासन्तुष्टा बतुरंदी विन दिन गुन्दिस्सामस्तर हुमा था। - • पुराय-पु॰ एक् यरपुरान। - • पुरी-

निर्धातु-नि [तं•] क्रिस्टी बाहु झीग हो नवी हो, बीर्न होत. शक्तिहित ।

निर्धार, निर्धारण-पु॰ [सं॰] समान वाति, गुण किया भारिवाछे बहुरीमिसे एकको धाँरना खुमना वा अस्म करनाः निवद करनाः निर्णय या निश्चव करनाः निर्णयः तिश्चव ।

निर्धारमा • - ध • कि निवारम करना । निर्धारिस-वि• [सं] क्सिका निवारण किया गया हो। निर्मार्थ-वि [यं] निर्पारण करने बोग्या व्या उत्सादी। निर्मीक ।

विर्धत-वि [चं•] दिसाना हुआ। फेंबा हुआ। दूर किया प्रशास्त्रामा दुधा परित्वका मध दिवा दुवा, नाशित !

प संविभिनों बादि हारा परित्यक व्यक्ति।

विर्धम-दि [ं] सुपैस रहिता। निर्धात-वि [शंक] जो मुख गया हो। पमधाया हुआ ।

निर्मर-वि [सं॰] मनुष्यों शारा परित्यक्त । निर्माय-वि [सं] विसन्दा दोरं अभिमायक वा स्वामी च को ।

निर्तायता न्त्री [मं] रक्षामा मभागः वैषम्यः भनाव होतेको अवस्था [।]

किर्सिमित्त सिर्मिमित्तक-वि [मं] विना कार्यका

सराहम । मिर्मिय-दि॰ [सं] क्रिस्में पन्कल मारी जाव। अ॰

निना पण्य विरावे टक्टकी क्याकर । निपक्ष = - दि दि निप्पछ ।

निर्वाध ।- वि दे निष्यूच ।

निर्यंध-पु [4] भाग्रह हठः जनिनिन्छः स्टापरः श्रीर (१) । वि वेपनरहिता।

निर्बर्देण-प∙ [र] दे निर्वहणः

निर्यस-दि [सं] शक्तिशन कमजीर ।

मिर्बह्मा •- अ कि एए बना बाम पाना निवास. निमना ।

निर्माध-वि [ti+] विना वाथा वा रोग्रस प्रतिवंदरहिताः जहाँ या जिल्ली कीई उद्देव म ही निक्पत्रका वर्षात निर्दम ।

मिर्वाधित−वि+ नानारदित ।

मिश्रंदि-रि [लंग] दुदिशीन सूत्री वेदवृत्तः।

मियोप-वि [मंग] निर्म बोहाना वी हान य ही अदान मस्त्रमत् ।

मिमम-रि [मं•] शंदित भी द्वबहे द्वबह ही गया ही। शुक्राया द्वला ।

निभर-दि [शंव] दण बहिन ।

निर्मय-(4 [4] को विश्ली मन ज सान निरम्। निराहर ।

निमर-वि [में] आर्यत रहत अधिका तीत्र गान्य सरा इमा। अवनंदित । तु वेगारमें कम करनेवामा आरमी। ≖रिसदता।

विभेत्पम-तु । विभीत्यमा~००० (वं] अतिह क्रु⊅दी बद्दारे हेना। ब'र-इव", निवदा निरामात्रः अधिका पुरा-MATERIAL !

तिसारय-वि॰ सि] अमागा I निर्मास-प्र• [धै] प्रकट होनाः चमदना !

निर्मिद्य-वि [मैं] हिना हुआ। फाहा हुआ जो महट हो

गया हो बदादित । निर्मोक-वि• [र्ग] रै 'निर्मप'।

भिर्मृति-वि॰ मि] वेयारमें काम करनेवाट। I

विर्मेश-पु [नं•] फावमा ध्यना, वेबमा प्रस्य करना,

बद्धारनः स्पष्ट कयन था क्रम्हेरा ! निर्धाम∽वि [सं॰] प्रमर्दित विसमें या विमसे कीर्र भग न हो। व व नेपरके, स्वयंत्र होस्र।

विश्वात−वि वि दे• 'तिर्मम'।

निर्मंथ्य−पु॰ [र्ह•] बर्हमेडी रुक्त। क्रिने रनवदर माग पंत्राकरते हैं। निर्मिक्क-वि [सं॰] बर्बा कीर्र (एक मन्सीट्य) न ही,

निर्वन एक्षांत्र।

निर्मञ्ज-दि॰ [मं॰] दुवला-पत्तका । निर्मय-पु [सं] बर्गन दिसके मंत्रनस पदके किए मधि

कत्पन्न की आती हैं। निर्मद्द-नि [सं] समिमानरहितः हर्परहितः (वह हाथी)

विसक्ते गंदरवस्ती मह स बहुता हो। महत्रकसे रहित ! निर्मण्या-भी • (सं) नहीं नामद संबद्ध्य ।

मिर्मणा ७-५० कि॰ बनाना, उत्पन्न धरना ।

विमेनुक, निर्मेनुष्य, निर्मानुष-वि॰ [सं] मनुष्यीये र्यक्त गैरन्मानार। ममुष्यों डारा परिस्वक्त ।

निर्मम − वि सि•ो समनारक्षित्र, विष्ठर । मिर्मपांद-वि॰ [मं] विमने मर्पाराका महिरामण पर

दिवा है। स्ट्रंट, अधिष्ट । निर्मक्त∽दि [तं] विश्वमें मन म द्रीः निष्या ग्रह वित्रः रागारि दोषोमे एहितः असूत्र । प्र असूत्रः।

निर्माश्य । निर्मेखी-की एक कुछ या उसका कन जो पानी साफ करने और रशास्त्र द्यम जाना है।

विग्रंमोपस-पु• [सं] रहरिङ ।

निर्मास-वि॰ [ग्रे॰] गांशरहिता को प्यांत बोबन न दरने वा म मिलने] थीय हो गहा ही !

विर्माण-प॰ [9º] पनाने या रचनेरी दिवा, रचनाः मापना क्या महना कंदा नार, माना । -विद्या-मी

मकाम मारि यमानकी विद्या पारतुरिया।

विमाता(न)-विक पु [मं] बनामेबाका रचना करने कल्य सक्ता

निर्मातिक-६ [म] मापारिव !

निर्मान-दि॰ (र्स॰) जपार अग्रीमा अधिधानर(देन ।

निमाना - स॰ कि बनाना रचना बरना पैदा करना। निर्मायक १-५ रे॰ निर्माप ।

विर्मार्जन-पु॰ [#] थीमा भारः करना ।

विमास्य-५० (५०) हिन्धे रेरताश मूम रेड शिया हमा बराबे (विमर्जनके बार देशादित बरनुका 'तिमहिब 447 t) 1

निर्माट्या~भी मि] अमर्ग ध

निर्मित-दि॰ [मे] पनापा द्रमा, एवा द्रमा रहित ।

नेत - पु॰ दिसी बातका निश्चित होना, निर्धारणः पहा ररादा, निश्चयः आयोजन, प्रवंधः मधानीमं लगायी जानेवाली ररसी: एक गहना। छी॰ दे॰ 'नेतो'; दे० 'नीयन': एक प्रकारकी रेग्नमी चादर।

नेता-पु॰ मयानीकी रस्ती।

मेता(त) -पु॰ सिं॰) दलविरोण या जनताकी किसी और छे चलनेताला, नायक, अराजा, सरदारा पहुँचानेनाला, स्वामा, माल्डिः, वामको निमानेनाला; प्रवर्तन करियाला, प्रवर्तक, विसी काल्यका चरितनायकः नीमका पेडः विष्णुः रोक्षी भंदता।

नेताजी-पु॰ दे॰ 'सुभाषवंद्र वसु'।

निति – [संव] ब्रह्म या ईश्ररकी अनंतता स्वित करनेवाला यक औपनिषद यान्य निरुका वर्ष है 'बंत नहीं हैं' बर्धार् प्रकार या देशरकी महिमा अपार है। ≉ सौव नीवत, इराता।

नेती-जो॰ मधानीको रस्ती जिसे खींचनेसे यह पूमती है। हटपोगको एक किया, दे॰ 'नेती-पीती' । -घीती-र्सी॰ पेटमें करदेवी संबी पनसी पट्टी सास्वत खाँतें साफ करनेदी

पक किया।

नेय-५० (स०) ऑब: मधानीमें लगायी जानेवाली ररमी: पेशको जब्दा जटाः साधीः एक तरहका रेशमी कपडाः रयः दोनी संख्या (ज्यो०); नेता । -कनीनिका-स्वा० आंदने काले भागवे बीचका विंदु । -कोप-५० नेत्रपटल । ~६छन्-पु० पहन्द् ।–ज्ञ,∽जल-पु० ऑस्। −पर्यंत-पु॰ शासका कोना ।-पिड-पु॰ आंसका गोडकःविटाव। -पिंडी-सी० विली । -पुष्करा-सी० रहतरा रुता। ~र्थध-पु॰ काँदामिचीना । -बाला-सी॰ सुगंधवारा । -भाव-प॰ गृश्यमें देवल कॉलोंकी किया द्वारा सख-दःय आदि अभिन्यक्त वरनेशा गाव । नगंदछन्य गाँखका देशा ! - अस्ट-प॰ भाँसका गाँचन ! - मीछा-स्री॰ थवनिक्ता सता । -भूद् (च)-वि॰ ऑसीफी मपनी भार आप्रष्ट करनेवाला । -थीनि-प॰ दरा चंद्रमा । -रंजन-पुर कारक । -रोग-पुर ऑस्का रोग। -०हा(हन)-प० बृधिकारी वृद्धः -शेम(न)-प० मरीना । -यम्र-पु॰ पश्यः । -यारि-पु॰ माँस् । -ियट(प)-मी० ऑसका कायह । -ियप-प० पक रिम्य मर्व निग्नही भीगोंमें थिव होता है। -स्तेम-प्र॰ भौनीका ग्रेदना तथा सुलगा थेद देविका एक छप्दव (मुपत)।

रेतु जार मेप्रात-पु॰ [सं॰] मॉसका बाहरी कीना । मेप्रात, नेप्रांस(स्)-पु॰ (सं॰) ऑस्।

मेप्रामिष्यं इ, नेप्रामिस्यंद-पु॰ [गं॰] आँत आनेका रोग।

नेप्रामय-पु॰ [गं॰] काराका रोग।

नेप्रारि-पुर (संव) सेर्ड्ड ।

मेश्रिक-पुर [तंर] एक सरहरी छोडी विषयारी (स्थून);

करतुन । नीमी-मी० (मं०) मुरुविरोष या चनताको विग्री और के वक्षत्रेवारी, रहमुमार्ग करतेवानी नाडी; मदी: क्ष्मी । नेप्रीत्यय-पु० (मं०) असिकि तुन करनेवानी वस्तु । नेप्रीत्यय-पु० (मं०) बाह्म । निजीपच-की० [मंग] नेनरोगको दना; पुप्पदासीम। नेजीपित, नेजीपदी-की० [मंग] मेहासिगी, अनर्गता। नेज्य-पि० [संग्) नेत्र संभी; अर्गतोके टिए हित्तर। -राण-पु० रसीत, निकला आदि ऑगोर्के टिए हित्तर। बीपियोका समाहार।

नेदिष्ट-वि॰ [सं॰] अधिकतमः निवटतमः निद्वतायः अकोट सूत्र् ।

नेदिष्टी(प्टिन)-पु॰ [सं॰] सहोरर मार्र । ति॰ निकस्तन संबंधनाला ।

नेनुका, नेनुवा-पु॰ एक तरकारी, थियरा । नेप-पु॰ (सं०] पुरोहित; दक्त ।

नप जुन प्रश्नित संस्था प्रस्त हुई हो अन्य प्रश्ने के स्वय प्रश्ने के स्वयं प्रिके स्वयं प्रश्ने के स्वयं प्रश्ने के स्वयं प्रश्ने के स्वयं प्रिके स्वयं प्रत्ने के स्वयं प्रत्ने स्वयं प्रते स्वयं प्य

नेषण्य-पुण (इं०) वेश-भूषाः नटांनी वेश-भूषाः भूषणः इसमंबक्षे परदेके पीछनी जगह नहीं नटीनी वेशरनना की वानां है।

नेपाल-पु० सि०] भारतके उधरमें विधन पक देश तीन।
-कंबल-पु० एक तरएका वंग-विरोध चंदछ। -का, काता-सी० मैनसिक। - निव-पु० चित्रमेका एक - भेद। - मुक्क-पु० इतितांद चेसा एक मूल, वेनार।

नेपालक-पु॰ [री॰] साँवा ।

नेपालिका—स्वी॰ (मंश्री वेगसिल । केपाली—दिश विपाल-संग्री। वेशसका । पुश्चीपाण्या निवासी । स्वी॰(संश्री वेनसिल; वेबारी) यह शंमण्या सन्तर । नेपर॰—पुश्वेश 'नुपुर'।

नपुर्य-पुर दर 'न्यूर'। नेक्रा-पुर (कार) पायमामे, रुदेंगे मादिया वह अपरी

-माग जिसमें दबारवेर पिरीया जाता है। जैयह-पु॰ सहयोग करनेवाला, सहकारी; मंत्री।

नेयुष्ठा -पु० दे० 'नीयू'।

बेर्न्-पु॰ दे॰ 'बीर्न्'। वेस-दिल सिन्ं आपा। पु॰ वाला स्वपिः संदा प्रावधाः इकः, वेतवः सर्व भागः उपरका दिखाः सार्वज्ञाः मृहः शीदः यदयाः नृष्या स्वतः † पेषा द्वमा सम्, तिदम, पार्वदीः पर्नेश स्वत्वसः दिने स्वीत्राने गतः, वदस्यः शादः सायादकः विस्ता । प्रतिद्याः । प्रदस-पु॰ क्ष्माः वेदन, पुजस सादि।

बदन, पूचन आदि । नेमत्र-भी० (भ०) दंशरको देन, पनः स्वादिष्ठ भीजनः नुसा । – दूसना-पू० भीज्य परार्थ दसनेष्ठः अगदाया

शहमारी, मोधनगृह ।

स्तिम-न्दा० (गं) चरिषेका होना या गिराः ग्रेराः प्रशि है वयमः बनवदः परमाः श्रेरः कितासः नतः प्रशी । प्रश भिनितः पृद्धः यह कितः । न्योप-पु०,-एपिन-यो०, -निनाह-पु० परियो परमरं भागतः । न्यक-पु० परिर्हेण्या एक वंदातः । न्यूनि-(० परिमेर्स भावका अनुस्त्व परनेदानः । न्यारः,-करन-प्रश

देव 'निमर्पेष'। नेमी—कोव (संव) देव 'निम' (श्रोव) । तिव (१४०) नेमी दसनेबादा, नेमस्य पाटन वसनेशस्य। —परामी-दिव 'नेनन्दरस्यो रहनेसामा *11 प्रमुक्त दोवा है।)-प्रिया-म्हे॰ एक शंवर्गे। -मृपिष्ठ-वि इत । -सस्तक-पु मोदा ! - स्वि-वि मोधसायमम् रन । निर्धात-निर्दिश कही इस न परुषी हो बायुने रिका ग्रांत । निर्माद-प सि•] कोसापशय, कासनिया, अध्याहा मलगरन निषयका निपटाराः बादामान । भिर्माप-प [मं•] शानः पितरीके निमित्त किया जानेवाका दान बजाना (बाग बारि)। निर्धापण-पु [4] दाना भारण वया पुत्रामाः वर्ण्डनाः चांत करता । निर्पार्च-वि [मं] जो निप्तंत श्रीसर परिश्रमपूर्वंत कर्म करे। क्लिका मियारण न को सके। निर्वास निर्वासन-प्र [सं] देशनिकाकाः वारण दिसनः विसर्वतः प्रवास । निवसित-वि [सं] नगर देशमे निकाला दुआ। निर्पास्य-वि [सं] निर्पासित करने पीम्य । बिर्चाह-पु॰ (लं॰) दिशा चला आनी दुई बरतुका बना रहनाः शिमी कार्यकी पूरा करना निष्पातनः पूरा किया बाना समाप्तिः (मदिबा आरिक्ते) पुरा करना पाकम मिनाहमाः ग्रजारा । निर्वाहकः निर्वाह करनेवाला । निवादण-५ [मं] पुरा करमा, निमाना ऐसी बरगुओंकी मगरमें के बामा बिमके मानानपर प्रतिबंध सवा हो। नियाँडना=- छ कि॰ दे॰ 'निराहना । निर्विद्यस्य – दि [मं] दिन्द्रमध्ये रहित । नु द्याता-कय भारिके भेर तथा विशेष्य-विशेषणके मेनंपमे रहित वह द्यान जिसमें पेतन जहां और मतगानी चनरूपनाना अर्थन नीप दोता दो (दे); एक प्रकारका प्रत्यग्र दान जिल्ही किमी विषयका बैजल इसी कपर्य दान दोता है कि यह हाउ दै माम जाति कार्तिने संस्ट रूपमें बहा (स्वा)। -समाधि-की एड प्रश्नरही समाधि जिस्में व्हाही मभिन्न वरर प्रया िगाई देवा है और हाना देव वहा द्यानके विमेत्का वीव नहीं रह जाना । मिधिकस्पक-दि [मं] दे 'निहिद्दर्श । निर्विद्यर--दि॰ [मं] निरास्तिन अपरिवर्तिना जश-मीन । पुपरप्रप्रा विर्षिकास−4 [मं] जो शिका श्रक्षा अनिवन्ति । मिर्पिधन-वि [मंग] निगरहित जिसमें बोर्र बाबा म बी। श्रिमा श्रिप्त नापा है। निर्विचार-वि [र्ग] विधारद्व । व रामाविदा दक मदार (वी)। विधिष्य-विश् [मं] निर्देश्युक्त क्रिक विश वैशाय ही गदा हो दिरका मधा दान निकित । निर्वितक-वि [] बिगरर तमें म दिवा वा गई। -समाधि-को एक हरहरी समाधि वी श्वृत्र आसे वनमें स्थाप दोनी माम दीती है (सा)। निर्विध-६ [1] स्विधित जूरी कर । निविधेष-दि [रो] विधिपर्वाहत अरु दिना विदारके हैं निर्विचार्-रि [मं] स्वित्सारित जिल्ह निषयों कोर्रे |

विवाद न हो विमा शगहे, बरेहेका : निर्विषेक-वि [र्थ] विवेदस्यन्य । निर्विद्येष-वि॰ (सं॰) समान तुस्का स्टा एक रूप एइने बाह्य (परमदा) । भू व्यक्तरका भगाव । मिर्विप-वि [धं] विश्राहित। निर्विषय-वि॰ [सं] परसे निकास दुआ। निर्विषा-स्पे [सं] दे॰ त्रिविदी'। निर्विपी-ला [तं] एक प्रकारका पात जिसके सेवनसे साँव विष्णू आदिका विष दूर होता है। मिर्बिष्ट-वि॰ [मं] बो मीग शुका हो। वो बेतम पा शुका दी। विग्रस्थ विवाद को पाका की: जिसने अधिनकीय क्या हो । सिवींज-वि॰ [एं॰] बीजरहिता कारणरहिता अपुंत-६। -समाधि-स्तै॰ समाविद्यो वस अवस्था जिसमें श्रीज वा कार्यन रिमीन ही जाता है (हो)। निर्वीका−सी• [मं] किशमिस । निर्वीर-वि [एं] भीरसं रहित भीरविश्वीत । निर्योश −ग्गे [र्न•] एति और पुत्रमे रहित की। निर्वार्य-वि [40] वीर्यएक्ति शक्तिमा निर्वनः मर्यु-मिर्पति−गी॰ [सं] सुग; मोद्या। निकृत-वि [सं+] वी पूरा दिवा वा पुदा हो, निष्पत्र । निर्वाचि – गी (सं] नियस्ति। निर्वेग−दि [मं] बगरदित श्रांतः। मिर्वेशन-वि [मं] किने वेशन म भिन्नता हो अवैशनिक विना बेसनदा । निर्धेद-वि॰ [सं॰] मानिषक । पु॰ समने प्रति अवद्याः देराग्या छांत रसदा रथाना भाना गेर । निर्वेश-दु [मं] भीता देनना मृथ्छित होना मृष्छेना निष्टन-<u>प</u>्र [मं•] ग्रा क्रेरनेडी जुनाहीडी मरी। दर्खी। निर्वेश-वि [धं॰] वैरमावधे रहित भी वैरमाव न हरी। प्र॰ नेर या शतुत्राका मधान। निर्व्ययन-१ [रो] बोर पीटा। छैन। वि पीडान सुस्त । निर्धासीक-वि॰ वि॰ विना कपरदा निग्छन जी विश्वी प्रधारका कर या दुस्स न पट्टेंबा(१ प्रमुख । निर्णात-रि [मं] एन-इस्ने रहित नदा शिहुद्द निर्म्याचि-वि [वं०] व्यापिने रहित मीराग । निर्वातात-वि [मं] नि की की साम म दी नगर। गरीहीम । निष्पृश्च-ति॰ [में] पूरा का ममाप्त रिका दुमा बरा दुवा, वृद्धिपात कानिया परिवार्थ किया नहा स्वामा दुवा परित्यम, धीरा दुधा । निष्युद्धि—भी [ti] भेर समाप्ति वनगी। द्वारा भेता निमन-वि [1] मग्यरिया निद्दश्य-पु [तेक] मुदेश थर । बारर निरम्भना था की इस्टान है जाना। निकालना नष्ट कर्ना, नाधन । निर्दोष-१० [ध] मन सर्वदा ।यन्त्र ।

विद्वार-पू [मं] ६३ दूर करे आई का विद्यालना दल-

नैदाधिक, नैदाधीय-वि॰ [सं॰] दे॰ भैदाव'। भैदानिक-वि॰ [सं॰] वो रोगोंका निदान वानता हो। निदान-संबंधा ग्रंथको पढ़नेवाला। पु॰ रोगका निदान फरानेवाल।

नेदेदिक-पु॰ [सं॰] निरेशका पारन करनेवाला; नीकर । नेघन-पु॰ [सं॰] भरण, शृत्यु; स्टम्नसे आढवाँ स्थान (ज्यो॰)। वि॰ मरपाशील, नश्रर ।

नेधानी सीमा-नी॰ [सं॰] भूसी, कोवले बादिसे पूर्ण पदा गाइकर स्थिर को जानेवाली सीमा (रमृ॰)।

मधेय-विव [संव] निधि-संबंधी; निधिका।

नैन ६-पु॰ दे॰ 'नयन'। -सुग्य-पु॰ दक्त तरहका विकना स्ती कपदा।

नेन्-पु॰ एक तरदक्षा नृटेडार स्तृती कषड़ा; ♦ मम्सन । नेपास्त्र-वि॰ [सं॰] मेपाल-मंदंभी; नेपालका । पु॰ नेपाल-निय; ईरावा एक भेद; † नेपाल देश ।

मैपालिक-पु॰ (सं॰) तांवा । वि॰ नेपालमें उद्दश्य । मैपाली-वि॰ नेपाल-धंबंधी; नेपाल देशका; जो नेपालमें ददता हो, नेपालमें रहमेवाला । पु॰ नेपाल देशका निवाली । तो॰ (सं॰) नेपारी नामका कुछ, मैनसिल; नीकका पीपा; निर्मुंटीका एक मेद्द; नेपालको माथा । मैपुण, नेपुण्य-पु॰ (सं॰) निपुण होनेका माथ, नियुण्या, पदता, चामरी, कीयल; षट बच्छ (क्लके नियु कीयल

शायद्वय हो: समप्रता, पूर्णता । मेपोलियम, योनापार्ट-पुरु फ्रांसीसी सैगिक बीर सथा सेनापति जो १८०४में फ्रांस्का सम्राद् वत गया । १८१५-में बाटरब्की लगाई पराधित बोनेपर मेन्द्रेस्टीनामें निवो-

मित यह दिया गया (१७६९-१८२१)।

मसुख-पु॰ [मं॰] नमता, विनयः छिपावः रिथरता ।

ममंत्रणरा-पु० [सं०] भीग, तवाना।

र्नेमय-पु॰ [सं॰] व्यापारी, सीदागर । मेमिस-बि॰ [सं॰] निर्मित्त-मंबंधी; निमित्तसे खत्पतः विद्वः

मिस-पु॰ [सं॰] दे॰ भीमिय ।

मामरा-पुण (सण्) देशियसच्य नामक शीर्थ । विण प्रथमर दिस्तीवाला, राणिक ।

मितियारण्य —पु०[री॰] शरूपना एक प्राचीन वन विधे हिंदू भपता तीर्परवान मानते दें (कहा बला है कि यह सुनिने यही करियोंनी महाभारतकी बचा सुनायी थी।)

मिमियय-(१० (तृं)) नैतिक्यंत्री । यु० नैतिकारण्यस

निवामी ।

बुमेय-पु॰ (सं॰) विनिमय, अदल, बदला । नैयमोध-पु॰ (सं॰) वरतहता फल । नैयस्य-पु॰ (सं॰) विवत होनेहा माद, नियगस्य, अस्थ-नियस्य-पु॰

नैयमिक-दि॰ [सं॰] नियमके भनुसार होने या किया जानेवाला ।

नेया - सी॰ नाव । नेयायक - पु॰ [मं॰] न्यायशस्त्र श्र विद्वान् ।

र्नर्तर्स-पु॰ [सं॰] निरतर दोनेका भाव, निरत्तरम, बनि-व्यायता ।

नैर®-पु० नगरः देख । नैरपेद्य-पु० [गं०] निर्पेष्ठ होनेका मान, वपेद्या, सरस्ता। नैरिपेक-पु० [गं०] नार्को एक्तेवाला, नरक भोगनेताला । नैरिपेक-पु० [गं०] निर्पेक होनेका मान निर्पेक्या।

नेत्रव्य-पु० [स॰] निराध दोनेका मान, नावम्मेशी भाषा वा रच्छावा अमान ! नेत्रक, नेत्रकिक-पु० [स॰] निरक्ति वाननेवाला !

नेराय-पु॰ [मं॰] आरोग्य, स्वस्थता । नेर्स्सिक-पु॰ [सं॰] एस प्रशासी वस्ति (ग्रुष्त) । नेर्क्सि-सि॰ [सं॰] निर्काति-संश्री । पु॰ राग्नस रक्षिण पश्चिम कोएका स्वामी; मुल मक्षत्र ।

नैक्ट्री-का॰ [तं॰] यशिन पश्चिमका कोमाः दुर्गः । निट्ट्रिय-वि॰ [तं॰] निट्ट्रीत देवता-संबंधा । नैर्मुच्य-दु॰ [तं॰] निर्मुण बीनेका भाव, सत्त्व सादि धुर्गाने

रहित होनेहा भाव, निर्मुणान्यः ग्रुपराहित्यः। नर्मुण्य-पुरु सिर्गु निर्मुणान्यः। नर्मुण्य-पुरु सिर्गु भाव, निरमुरता। नर्मुक्षक-पुरु सिर्गु भाव, नीवरः।

नैसंद्य-पु॰ [सं॰] निर्मेल दोनेका भाव, निर्मेल्या, स्वष्टता । सैकंक्स-पु॰ [सं॰] निर्देख दोनेका भाव, स्वाबोनका,

श्रुक्ष्यर्≖पुरु [सुरु] । तष्टात्र द्वारता मान, रुध्वादानः - वेह्यार्दे ! नैस्य−पुरु [संरु] तीकापन !

वस्य - प्राप्त । नैवासिक - (वं∘ (वं∘) निवास है अगुपूत्र । नैविहद - पु० (सं∘) निविद्य दोनेका भाव, धनायन । नैवेद्य - पु० (सं०) देवताको समर्थित को अनेवली भीग्य

बस्तु । श्रीवेशिक-पु० [सं०] गृहस्थीका सामाना मादावको वी वानेशानी मेट ।

न्तरः, नैशिक-पि॰ (सं॰) निगामंत्रेषीः निशासा । निश्रस्य-पु॰ (मं॰) निश्रण दोनेदा मात्रः, रिश्रदा । निश्रिय-पु॰ (सं॰) निश्रिण दोनेदा मात्रः निश्रिण संस्कारः ।

मैह्येयमाः नैद्धीयसिक-वि॰ [गं॰] दे॰ 'मैश्मेदस'। नैयच-दु॰ [गं॰] निषप देशहा रामा निषय देशहा रामा मन्द्रः बहाँहा निषामीः श्लीदर्गे करिश यह महाकान्द्र विमये मन्द्री बन्ना बहित है। दि॰ निषप शीकी

्विष्यका । वृष्यप्रिय-दिश् [मंश] नह भरेश-गंदेशी राजा महस्र । वृष्यप्र-पुश् [मंश] निषय नरेशमा पुत्र राजा नलका पुत्र । [म्सीश-विषया" ।] वद्य सादि ।

वद्यक्षारः मिविरीमा मिविरीस−वि [सं•]यना गहराः, महा। विविधीसा–स्त्रो सिं•ो प्रयोगा देशै आकः।

निविश्वमान-पुरु [मं] उपनिदेश नतानके काम मानेदाले क्षेत्र (क्षेत्र) !

काग (का॰)। निविद्योप-वि॰ [सं॰] मेदरवित समागः यु नेपरावित्वः

निविधा-वि• है 'निर्विष'।

मिबीत-पु॰ [सं] वदीपरीत' कोवनेका वलः कोहनी

निवीती(तिम्)-वि [मं] जी वदोष्तीत वारण किये हो। निवीदी-वि [सं] दे 'निवीपं।

नियुत्त-पु (सं॰) भोड़नो, अचरीय। वि॰ पिरा इजा। वैशित।

तिवति-न्धै [मं] घेराः आवरण।

मिह्नल-वि [से] कीरा दुन्ताः जो भाग व्याव हो। पूरा या समाप्त किया दुन्ता। द्वाया दुन्ता। विरक्त जो अवकाश वा सुरक्तारा मा नुका हो, सुकः। वु स्थायनमन्त्राः स्रित सन्त । क्यादन-वि सिन्दा और कोरे कारण न ही। -पीयन-वि मिद्यक्ते वनामां कार आयो हो। -राग-वि विरकः। -पूरिच-विश्व मपना विद्या छोतने-वामा। -पूरिक आधि-की विन्योक्ते वहां बना विचा कारा का सन्तर समयर न्यास न विन्या कार्य

मिश्रुकारमा(रमन्)-दि॰ [तं] दिश्वीन दिरहा । पु

्बिप्यु।

निवृत्ति-लो॰ [मं] मिवृत्त बोनको क्रिया प्रवृत्तिका भगवा सुरकाराः मुक्ति कारमा। समाप्ति विग्व बामा। बरमा। विश्वास ।

सियंत्र १ - ४० हे 'संस्य ।

निधरक-वि द [मं] निपटन करनेवाला ।

मिबेर्न = पु [मं] किमोने कुछ कदमा। प्रार्थना। समर्थन करना समरमा किर।

निवेदनार-स कि निरम् करनाः प्रार्थना करनाः गर्माएन करनाः।

मिबद्दित-दि [मं] तिरद्रतं विया दुआः प्राथनारूपमें दवा दुआः अर्थन दिवा दुआं समर्थित ।

्यशासुन्नाः अनेय दिवासुन्नाः समापेतः। निवेशः-सः [सं•] हैः नेदेशः।

नियानारं = । हि है पिनरेरना ।

निवेश-वि शुना दुनाः मृतनः कर्मुनः कि

ार (१) । निवेश-पु (मे) प्रदेश आपका स्वादनः द्वाव दासना केने निवासः पदाव दासनेकी जगदा द्वितिर, मेमाः वापन्यात बदा विवादः सत्रावदः

निवेशम-पु [मं] निविष्ट वहनेकी क्रियाः ज्वापमा ग्रहः मनरा पत्रव रोगाः दौननाः

विवेशकी-भी [में] कृती।

frie-s [4] werricebet ereit

निवेषम−५ (०) १६मा।

प्रिवेटच-पु॰ [सं॰] व्याप्तिः ग्रॅंबरः श्रोस (वे॰) न्द्र (वे)। वि॰ चक्कर स्राता हुमा ।

निष्याची(धित)-पु [तं•] एक स्त्र ।

निष्युद्द-पु [मं•] उत्साहः सम्पन्ताय ।

विद्यकि-दि॰ दे॰ 'निष्ठक'।

निकाश-को रातः - चारश-पु रे॰ 'निकायरः । निकाश-विश्व विश्व विकास विकास । पु मन्द्रविष्ट एक पत्रः।

पुत्र। जिल्लाब्द्र−नि सिं•ोक्परसान।

निस्तान-पु [रिण] गुप, गान । निस्तान-पु [रिण] देशना अवलोरन दर्गन सुमना अवनः परिवय माप्त करना अवनद होना ।

निशारण-पु [मं॰] मारण, रूप । विशासमा-को [सं] बंसी व्या

निसांत-पुर्शि भवना प्रात हाल । वि बहुत शांत । निसांत-पुर्शि भवना प्रात हाल । वि बहुत शांत । निसांब-वि [सं] विसं रातको दिखाई मं है, रतीथी

रोगशका। निशासा∼सो० [मं•] अतका कता ।

निमा-सी॰ भि । रातः रातिः बलीः वायवसीः स्थाः ≹॰ 'निजाबस'। –का−व चटमाः एउटी संस्थाः मरमाः कपर । --ककामीकि-व शिव । -कांत-व चंद्रमा। -केन-४ चंद्रमा≀ -ध्रय-४ राधिका अतः। —ग्रह्ण-प्रश्चनागारः। —धर-वि निकलन वा पृत्रने-फिरनेशका । पुराग्रसः गीरहः उदम् । स्रोंबा चौर। भूतः विशाबः शिवः चक्रवादः एक गंबडम्ब । - व्यक्ति-प् रावमः धिर । - चरी-ररी रायसीः कृत्याः पंथलीः वशिमारिका । —सर्मे(म)~प० अंबबार । - चारी ! - व है 'तिहासर ! - सर्थ- व व बोस । -वहीं(सिन्)-प उत्मा (मे रावमी देशना दै) ः −नाथः −पति −पु चंद्रमाः कपूर । −पुग्र⊷पु• मधन भारि शबरा एक दानस्वर्त । -पुरंग-पु कुमुर । -बल-पुत्रक कृष मिश्रुल कक्, पन और सहर राधियाँ जा शनका विशेष सबस मानी प्रानी है। -भीतर -भी दम्भवृथ्यो । -सन्ति-व भेड्रमा । -सन्द-वक र्ख्याहास । - स्था-पु श्याम शीरप । - रहा-प

-बेरी(रिम्)-पु॰ तुरता। -इस-पु॰ पुनुः। निशासातिरां-मी रिकश्चां सम्प्रे।

। नशास्त्रातरा = च्या ११ त्रवह सम्प्रा विशास्त्रा = स्था विको दक्षाः

निगादः निमादन-वृ [तं] दश्यः राध्यम् । वि हे+

वंद्रमा। -बन-प सन्। -विद्यार-प राहमा

स्वताबर् । मिन्नारक-पु• [मं] गुग्गुचादि है निशापर । मिन्नात∽दि [मं] सामग्रद पटावा दुआ तत्र दिदा

दुनाः पमधावा दुशाः मिशानिकमः निशान्तव-दुः [तृं] रात्रशः वीतृशाः

- प्राप्तानः। निराहित्यः (से) राज्या सान्यानः। मीप बार्त्यस

व्यक्ति जिल्ला । भिगादि-दुर्वि विकास अध्या ।

निप्ताधारा-पुनि दि दिशालप ।

विशाम-९ [मं] मानस्र बणनः तम बानः

कालमें अपनी मान वांधी थी (म॰ मान) !-वार्खा(विन्) -नि॰ नान या जहाजमें जानेवाला (माल वा मुमाफिर) ! - याह-पु॰ दे॰ 'नीनेता' ! -व्यसम-पु॰ पोनधंग ! -साधन-पु॰ थेड़ा !-सोना-फो० सपुरी छहाई लहने-वाली सेना, जंगी जहाजींपरसे लड़नेवाली सेना, बलसेना। - ॰ पति-गु॰ गोरीनाका अपनुष्ठ !

मी-वि॰ बाठ और एक, आठसे एक अधिक। पु॰ मीकी संस्या । – कहा – पु॰ प्रतिन्यक्ति तीन तीन वीदियों हेकर सीन व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला एक प्रकारका लगा । -गरॅं,-गिरिही≉-सं।०दे० 'नीगही' !-गही,-प्रही-सी॰ दाथका एक गहना । - तेरही-सी॰ एक प्रकारकी परानी ईट: पानेंसि रोला जानेवाला एक प्रकारका जाजा । -दसी-सी॰ किसानोंकी अधीदारोंने कृपवा छैनेकी एक रीति जिसके अनुसार वे सालभरमें ९) के बदले १०) देते हैं।-धा-वि० मी प्रकारका (मीधामिक्त)। अ० है० 'नवधा'। -नराा-प० भी सर्गोवाला हाथमें पहननेका एक ग्रह्मा । —सासा—प० गर्भाधानसे नवाँ मानः इस मासमें की जानेवाली एक रूस जिसमें मिठाई आदि बैटती दै। -रतन-५० दे० 'नवरस': नीनगा। स्री० खटाई, गुर, सिर्ग, देसर आदि भी चीत्रीसे तैयार की जानेवासी एक मकारकी चटनी। -शत्तरां-प॰ दे॰ 'नवराध'। -सम्बद्धां-वि॰ दे॰ 'नीन्या' । -स्ट्या-वि॰ निसकी कीमत नी लास हो। नी लासका ! -सत्त#-प॰ सोलडो शंगार-'नौसत साज नही गोविका गिरिवर वृजा देत्र'-सर । -सरा-प० चालवाजीः करेव । -सरा-पु॰ नी रुदियाँवासी मास्ता । ~सदिया-वि॰ चास्त्राज, फरेबी, जालिया। गुरु -तेरह बाईम बनाना-टाल-मटल करना । -दी बयारह होना-चंपत होना, आग जामा ।

मी- ७ वि० तव, मया। -सोड़-पि० पहले मार श्रीरा हुआ (सेत)। -यह - पि० श्री हालमें मुरी द्वार्श आसी हुआ (सेत)। -यह - पि० श्री हालमें मुरी द्वार्श आसी पि० वें ह्यांशी आसी पुष्प हों। -यह पुर्वा- वह श्रीरा- श्रीरंग - प्राप्त - श्रीरंग - श्रीरंग - प्राप्त - श्रीरंग - प्राप्त - प्राप्त - श्रीरंग - प्राप्त - प्राप्त - श्रीरंग - प्राप्त - श्रीरंग - प्राप्त - श्रीरंग - श्रीरं

िपुरत ।

की-(४० (ता॰) नया, हालका, तावा। - व्यापाद-४० हाल्य त्या, हुआ, वहाँ कोग हाल्यों वने हो। - व्यापाद-४० हाल्य त्या हुआ, वहाँ कोग हाल्यों वने हो। - व्यापादी - व्यापाद कि गारिया। - हरता-४० वर्षी उद्या-४०, तीववा। - व्यापाद-४० वर्षी व्यापाद - व्

दार । -निहाल-पु॰ भीजवान, नरपुरतः। -दारत्-पु॰ वह वर्गीन विश्वर पहली मार मान्युप्रतः करो हो। -याला-नी॰ वह कहती वो हालमें वालिन दुरं हो। -रोम-पु॰ (वारवियोको वर्गका परका दिन स्टेस् वा मुख्यका दिन। -सहाना-वि॰ दुन्दे पैना, हुन्देरे समान। -दाा,-दाह-पु॰ नीजवान शादा दृद्धा, वर। -ही-सी॰ दुलदिन, नवस्प।

न्यान्त्रात् वुर्शास्त्र ज्वनप्।
नीकर-पुर कार्ण वह कर्मचारी में वेतन रंकर सिर्माधा,
काम करें। छोटे-मोटे कार्मोको करने के लिए निगुक्त दिस
गयां वेनिक सेनक, ग्रह्म, दिरमतगार। - साही-सो॰
कर्मचारियों दारा संचारित द्वारान-प्रमेण, दश्वरी हुस्मन,
'क्यरीकोसी'।

्रव्यूरावसाः। नौकराना-पु॰ दलारीः वेतन था श्नामके स्थमें भीदरको

दी जानेवाकी रक्षयः मीरूर-स्वयं।
भीरुरानी-स्वी० टहल ब्रह्मवाकी स्वी, हार्था, भूराया।
भीरुरा-स्वी० नीकरहक काम या चिता, सेवा, मुख्यान
बह काम विशे करवेश्वाले ही निवत देवन दिवा आप ।—
बेदार-वि०, पु० नीकरी करके जीवन निवाह करवेशन।
बीह्य-स्वी० [बि०] नावर येता।—मूं ह-पु० श्रीरा।
नीह्य-स्वी० वि०] नावर थेता। या परायो करकी विथे
बेदया अपना चेता (बिरासी है।

नीत्रावर! - सी॰ दे॰ 'निप्रावर' । नीज-न॰ पेसी नीवत न आये, सगवान् न करें। कुण पर बाह नहीं, कहासे (खि॰) । [अ॰ 'नेकब'-हम पनार गाँगने हों। ॰ पु॰ दे॰ 'नीजा' ।

मीजा = पु॰ बादामः निल्गोता । मीजी - सी॰ कीबी । र्रं अ० दे० मीज'।

नाज्ञा~स्वा॰ काया । राज्य द० नागा । नीतस॰-वि॰ दे॰ 'गृत्न' । नीतस॰-वि॰ दिङ्कुक नवा-'तुम्द छत्युक में मीदर

नातमण्यावः । त्रात्राः। पुरु नगताः। नीताः-विक नवाः। पुरु नगताः। नीताः-विक नवाः। पुरु देवः। नगताः।

भीता-190 वर्शरंगी दोषी हुई नीमश्ची फ्रान्यतमा बात। • वि० दे० 'संद्याबायक 'नी'में।

नीन•-पु॰ नगरः। जीता-भ॰ क्रि॰ तन होताः अस

भौता-अ॰ कि॰ नन शोना, श्रुरना, नम रीना ! * रि॰ मुदर !

ममोद करना, सुद्री मनाना । मीबर्सा-पुरु [फारु] मीवनः बजानेवासा श्रीद्राहर, परी-दारा समाहभा, पर रिना नेनारदा योदा, कोन्त्र रोगा नाहर भानेकी क्रिया; संबंधित । निहर्मक-वि [संब] द 'निहर्मक ।

निइसील-वि॰ [मं] शीसरहित दुष्ट स्वभावका ।

निस्तीय-वि [सं•] दे 'निःशेष'।

निर्धान्तु [सं-] तरक्ष स्वीतः तत्वारः ग्रुवि कृष्टि स्वासा सानेवाका प्राचीन काकक्ष एक वासा। विशेष कास्ति । निर्धन्तु सत्वारका स्वाम । निर्धापिन्द्र- [सं-] सत्वारका स्वाम । निर्धापिन्द्र- [सं] सान्तियन। सनुवेर सार्धन रवा

क्षंत्रा; यास । तिपारी(शिन्)-वि [मं] जिसके पास वरकछ ची। क्रिसने बसुद् धारण किया दो। छह वारण करनेवाण।

नार्यत आसंस्थिताता । पु॰ भृतराष्ट्रका यक पुत्र । नियक्त-वि॰ [सं॰] विश्वय स्वसे आसक्त ।

निषयम-वि [सं] वैठा दुका, रिश्तः, वयविष्ठः संदारा दिवा दुकाः विषयम् ।

निपण्नक−9ु[सं] अमन।

मिपन्-पु [मं•] मंगीतका एक रवर निपार !

निपदम-पु॰ [मं] बैठनाः निवास करााः आसमः वर । निपद्-भी [म॰] यद्य करनेके ठिल्लो जानेवाली वीदा। -वर-पु॰ पंक, कोपदः कामदेव । न्यरी-को रावि ।

निषया-की॰ [सं] वाजार, हारा छोटो सार । निषय-पु [सं] एक पर्वत (पु) कबके मार्र कुछक पीजा जनसङ्ख्ये पद्मा एक प्राचीन वहा कहाँ है राजा नक थे

बनमबबके पुत्रः एक प्राचीन वस्तु बहाँकै राजा शक थे (पुत्र); कुरका शक्ष पुत्रः मियान स्वरः (क्षेत्रेत) । विचाद-पुत्रः भी ने एक पुरानी अनाम बाठि (मनुके अनु

प्रचाद-चु ११) पड्युरानी कराज जाति (मनुक क्य सार शस्त्री कपश्चि प्रायत विना और शहा मानाचे है) यह प्राप्तीन देश तिस्त्री कम्पेट रामानल कारिमें तिस्ता हैं। भ्रेगोनके सासका अंतिम रसर विस्त्रा मीद्रीस रस नि है। —कर्य-सु एक प्रामीन देश।

निपादित-वि [मं•] वैठावा द्वलाः पेटित ।

नियादी(विन्)-पु॰ [मं॰] पीकवान, शहाबत । वि वैदने या भाराम करनेशका ।

मिपिकः-दि [मं] श्रवि मिक्तः भौतर पर्देशाया हुना । चु भौतमे अभित गर्भ ।

निषिद्ध-ि [सं] निरंश किया हुमा जिसपर रोष्ट्र समाची गयी दो जिसे करना मारि मना दो॰ तुष्छ कारि का प्रवित्त हरा सामा ह

विषिद्धिः स्त्री [सं] मनाशी रोस्य बगाव ।

निगुन्त-दि [सं] मारनेताका वय वर्धमाना जागक (प्राया समाममे स्वरत्त)। तुक्ष मात्र्य वयः मारनेताका। नियक-तुक्ष [सं] विशेष कर्म सीचना सर्वे रहता, सर्वो-भागः पुना स्थाना पर्यापानके क्ष्मास्य होनेताका व्य स्थाना पुना स्थाना पर्यापानके क्ष्मास्य होनेताका व्य स्थाना पुना स्थाना प्राया प्राया विशेष कर्म-स्था।

मिचनम-पुरु [मे] टिएबनाः मोबना ।

विषय - 5 [म] निर्मात कर्षां कर्म समादी होड स्थाना वरस्था होड वाण प्राह्म विषय दिनीया रेनव हो सा सहा सा निवय विषय दिनीया समादी से गयो हो। न्यान - इंटर निर्माण स्थाप रिकार से गयो हो। न्यान - इंटर निर्माण स्थाप

रूप निषेत-वेते 'ण्डारहीको मोबन स करे।' वहाँ योजनके निषेपका तारार्थ वह दै कि भीवनके अमावर्षे शब्दा सापन होता है। निषेशक-वि [मं] निषेत करनेताका, राकनेताका।

निपेबन-पु (सं॰) निषय बरमेडी तिथा मनादी वर्धन। निपेबण-पु॰ सि॰] विशेष कपते किया गया सेवनः विशेष मकारकी सेवाः पृथाः जनुष्ठानः कयानः, रुगनः द्वनः, वसना।

निपेबा—स्त्री [सं॰] वे 'निप्पण । निपंपिब—पि॰ [सं] पूरियाः विनेदाः अञ्जाद्वित । निपंपिबा(लिम्)—पु [सं॰] विरोध क्यांसे सेवन करणवाला। निपंप्य—पि [सं॰] विशेष क्यांसे सेवन करने कोग्य । निप्पांद्र—पि॰ [सं] वाषा, बापचि आविसे रवित,

विश्वमं दिशो अकारका प्रका वा व्योका म को निर्मेक निकित्त । निप्पर्वेड-वि॰ वि॰ विना स्टब्का, ब्रेटकोन । पु वस्त्र

कुछ । सिच्कप-वि [लंक] सिसमें शंपन म हो जो दिकता-पुकता न हो जा चंचल न हो अवल, रिवर ।

निष्क-पु [मंग] होनेका यह प्राचीन शिक्का को प्राय होक्क माग्रेता दोशा का १०८ या १५० सुक्लोकी बक्क प्राचीन हीन्य गर्भेका कर प्रकारका होनेका आसूरन होना। होनेका पास शास सुक्लोके बराबर कक प्राचीन होता। दोनारा कांटाका

निरुक्तर-दि [मं] छन्द-स्वयं रहित सबा शुद्ध इरवयाला। निरुद्धर-वि [सं] विस्तर दर म समा हो।

निष्करण-4॰ (र्ग॰) स्वारदिण कटोर इश्वनासाः, -निष्कुरः,निर्देशः

निष्कतंत्र-पुर्व [मं] फारकर वा बारकर शतना करना ।

तिष्वर्मे-वि॰ दे 'लिष्डमं । तिष्वर्मेच्य-वि [र्म॰] निकम्मा। दर्म न बरमेवाहा ।

निष्डमाँ(मँत्) -वि [मं] यो निम होस्स कर्म न हरे. जामितरहित दीवस वर्म करनेदाबाः निक्रमा । निरुष्टर्ण-पर्व (मेर्ब) नाम साराम कर्म स्थितः स्थापन

विष्यपै-पु॰ (वं॰) तस्य सारम्य वर्ष नियोश निश्वया किमा वरमुके रिषयों यह केसा दं और किमना है, स्छ स्वस्थात विचारा, जनीया सावर करमा निस्तारण, निकान्या मापन।

जिल्ह्यक-पु वि] बाहर करना। दूर करमा। मिराना।

तिरहार्यक्र-वि [मं] जिनने धारे बर्ण्ड म हो होत, पाप माहिने रहित बरान विवास रिगुड दिना वेबहा र निष्क्रम-विक [मं] बनारहित निरवयन मीगृहं मध्योपी धीम । धु महाह मानार ।

निष्यमा निष्यमी-न्दी॰ (र) वह बुद्दा भी जिल्हा वर्गांच्ये होता ४७ ही गया दी गाएकाशा ।

निष्याय-दि [मैं] तिहुत विभाग मा । पुरु एक दिन । निष्याय-दिश्मि] मन प्रवास्त्री नाममा दा अन्तर्भाने रहित्र दिनो प्रवास्त्री नाममा मुख्या निहेत् । -कर्मे(म)-पुरु चल्या दी रुग्धा स्वप्तरूप दिस्स

पूर्व स्थान; युगुर-देश । पंडण-पु॰ (ए॰) गाँशस्यी शोरती या निवासस्थान । पैकार-पुरु (संरू) संबादा सेन्द्रः श्रीया सोदी, ग्रीवानः वनः

पंकासम्बन्धः (में) बद्धाः। यंक्रिजी-मी (सं०) बसम्बा शेषाः प्रव शांशः सम्ब-

पंक-पु॰ [सं॰] की वहः दलदलः धनी बदी राश्चिः पापः पीतने थोग्य भीला पदार्थः श्रेष । - कवंट-पुरु अल-युक्त पंक । -कीर-पु॰ टिटिइरी नामक चिहिया। - श्रीदः - श्रीदनः - श्रीदनः - पु॰ सूशरः - ग्राहकः-. पु॰ एक प्रकारको मधला । -प्राष्ट्र-पु॰ मगर ।-विग्रद्र-प॰ निर्मेली । चल-वि॰ भी कीनवर्गे उत्पन्न हो। प॰ क्षमहा शारम पशी । -०जनमा(स्मन्)-५० प्रका । - व्यास-प्रविध्याः - व्याग-प्रपास्यागं स्थि। -०वाटिका-सी० एक वर्णन्य । -जन्म(न)-प्र० क्षमत । -जन्मा(न्मन)-प्र मारस पशी । दि० पंदमे बरपत्र दोनेयासा । -जात-पु॰ दम्रु । -जिल्-पु॰ गुरुवका एक पुत्र : -दिश्य-दिश् कीपद पुता हुआ। जिसमें श्रीनद समा हो । -०शारीर-५० एक दानव । -दिरधांग-वि॰ जिसके भंगीमें की वह सगा ही। स् यास्त्रियका दक्त सनुबर । -ध्यम-प्रव्यक नरक (तैव)। -प्यरी-सी॰ गोधनंदन । -प्रमा-सी॰ एक नरक नहीं की नह ही की नह है। -भाक (ज्)-वि॰ की नह-म निमान । -भारक-वि॰ पंतिल । -संडुक-पु॰ धीया। -शह-पुर कमना -धाम-पुर केवहा। -शुक्ति-स्तेश सुनदी; धोंदा । -शुरण,-सुरण-पुः क्रमत या शुभुदकी यह ।

पंकेशया-स्ती० (सं०) ऑक । चीमके खुमने वा बदनेसे होनेबाला धेर । देना बर्धित है-रहर)। -प्रीय-पुर रादम। -धर-पु॰ बुर्द पुछी । -पायन-पु॰ निया, तप आरिष्टे विविध सक्त दिसने आदमें निर्माधन साहर्योधी पीड दरित हो जाती देशवह माझन की पत्ति दुवस झारा अपनित्र की गयी पंतिको परित्र करते हेण है (रम्क).

वंतिपृष्यका रण्या । -धञ्च-वि॰ मेपीवञ्च १-रम-५०

दश्चरव । -बाह्य-विश् परित्र या भारतिमे व पर किया

हुआ । -वीत्र-पुरु वर्त ।

पेन्टिका-स्रो॰ [सं॰] बतार, ६५५ । र्थम-पु॰ सः, देना । सु॰ -अमना-भागते, निगृष्टते।

प-देवनागरी वर्णमालामें पर्गवा प्रथम वर्ण । उचारण-स्थान भीष्ट ।

म्यार्सा(सिन्)-१० [मे०] मुल्यासी । वि० स्यागी । म्यब्ज-विव मिंव] िसरा मेंह भीचेदी और हो. बीधा. अथोमुलः कुनजा। पु॰ बरगदः कुछकी न्तुनाः कमरखः आदमै पाम भानेवाना पात्र । -मञ्ज -पु॰ टेड्रा तलवार । म्य ज -प्र• (अं॰) समाचार, संवाद । -श्रिट-प॰ अस-भारी कागज । म्यून -वि० [मं०] श्री घरवार हो। वाम, थोड़ा। विकारयुक्त,

विहतः होनः नीयः, निहरः । —धी-वि॰ वसमहः, मुर्स । ।

पु॰ धरोहर रसमेवाला । -स्वर-पु॰ वह स्वर जिसपर न्यासापद्धव-पु॰ [मं॰] विसीकी घरोष्टा इटप बाना। म्यासिक-पु॰ [मं॰] वह जो अवने पास किसीकी धरोहर

पुकाना-निर्धय वरना, फैसला वरना । न्याम-पु॰ [सं०] रखना, स्थापन; उचित स्थानपर रसना; धरोहर, निश्चेष, अमाननः अर्पणः छोडना, त्यागः चिद्रः निशामः अंतरः स्वर मंद करना । -धारी(रिन्)-वि०, राग ममाप्त हो।

न्याय -पुण उचित-अनुचिनका विवेच, ईमाफ; विवाद बा

मामलेका निर्णय, पीमलाः आचारकी रीति । सु॰ -

कुरुवदः सिषाशः । पंकिल-वि॰ [मं॰] पंक्युक्त, जिसमें की वह मिना हो। की वदाला । पंकिलता – मी॰ [सं॰] यहकः काश्रिमाः गंरगी । पंकेञ्च-पु॰ [मु॰] यमल । वंदेरह-पु० [सं०] कमन, भारम । यंकेशय-वि० भि०ी सीचडमें रहमेवाला । पंक्षर-पुर (संर) टपुर, ब्लैटर सादिने दिसी गुरीधी पंक्ति-न्दी॰ [स॰] वह समृह विस्त्री प्रायः सवानीय परार्थ या स्वति एक इमरेके दौरी या श्रममी क्रमके अनुमार स्थित हो, मेची, कतारा यह बिनेक श्वा हत बैदिक धेदः योगका समाधारः दसकी संरयाः मुक्तीन अल्लानेनी श्रेची: श्रीत्रमें एक शाब कारनेशांती प्रेंग, पगना बर्गमान वीतीः पाकः पृथ्वीः वीर्व । -वेटकः-नृपः-नृपक-पृ बह बनिन माद्राय जो अच्छे माद्रायों हे साथ भीवन बरने हैं दीम्य न हो । रिमे बादालको शाहमें सिनाना एवा दान

न्यूनांग-वि॰ [मं॰] जिसका दोई क्षंत्र विरूत हो। न्यनाधिक-वि॰ [मे॰] कम-वेश; असम । न्योचनी-सी॰ [मं०] दासी, परिचारिका । न्योछ।वर-सी॰ दे॰ 'निष्टावर'। न्योजी =-मी॰ ही दी: विमारेश । न्योतना-स॰ कि॰ उत्सव, भीत मादिके लिए निमंतिन करना । न्योतनी-सी॰ विराहारि अवसरोंदर होनेवामा भीत । न्योतहरी-५९ निमंत्रित व्यक्ति । स्योता-पु॰ निमंत्रमः भोत्र आदिका निमंत्रम, दावनः **ब**ह रकम या वस्तु जो न्योतहरी न्योता देनेवारेकी देना या उसके यहाँ भेजता है। र्न्यारा-ध्यु॰ दे॰ 'नेवला'; बढ़े दानीका ध्रवह १

न्द्रवाना - स॰ मि॰ वहलाना, रनान कराना ।

न्यनता-सी॰ [सं॰] न्यून होनेका भाव, क्यी; शानगः

नीचनाः सदीयना ।

र्द्यनी*-सी॰ दे॰ 'नोई' !

न्द्रासा#-४० कि॰ नदासा ।

म्हान+-पु० स्वान ।

निकालना, धूकनाः धूक । निष्टर-वि॰ [सं०] कड़ा, कठोर; परुप; कड़े दिलका; निर्देय, बेरहम । पु॰ परुष बचन, नीच बचन, बड़ी बात । निष्ठेव, निष्ठेवन-पु॰ [सं॰] दे॰ 'निष्ठीव' । निष्ट गत-वि॰ [सं॰] यूका हुआ, उगला हुआ; बाहर निवाला हुआ; बदा हुआ, उक्त । निष्ट्यति-छो० [सं०] युक्तनेकी किया । निष्णा, निष्णात-विष [भंग] कुश्ल, प्रवीण, सिषुणः (किसी विषयका) पूर्ण द्यान रखनेवालाः पूरा किया हुआ, निष्पन्न । निर्पंक-वि० [मं०] जिसमें पंक न हो या न लगा हो. पंकरहित । निर्पंद-वि० [सं०] गतिहीन, रिधर । निरुपक्क-वि० [मं०] अच्छी तरह पदाया हुआ । निष्पक्ष-विव [संव] जो किसी पश्चका न ही, जिसमें पश्च-पात न हो, पश्चपात न करनेवाल।। निध्यसन-पु० [सं०] तेजीसे बाहर निकलना । निष्पताक-वि० [मं०] पताकारहित । निष्पत्ति-का॰ [सं॰] उत्पत्तिः पृरा किया जाना, समाप्तिः सिद्धिः परिवारः; शादकी अंतिम अवस्था (इठयोग)श्रीवर्वाहः पर्वणा, अभिन्यक्ति (सार्)। निष्पन्न-दि॰ [#०] शिसपर या जिसमें पर्ध न हों, पश्लीमे रहितः दिना पंतका । निष्पश्चिका~स्वी० [सं०] करीलका पेड़ । निष्पत्र-दि० [सं०] जिसके पैर न हो। पु० बिना पहिये भादिशी सवारी (जैसे-नाव)। निष्पन्न-वि० [सं०] जिमकी निष्पत्ति हो मुकी हो। मिध्यराक्रय=४० (मं०) पराक्रमदीन । निष्परिकर-वि० [40] शिसने कीई तैयारी न की हो । निरपरिश्रह-पु॰ [सं॰] कथा, पादका आदि पदार्थीमे रहिन शाप । दि० प्रिश्तने दिवाइ म दिया ही, अदिवाहित: किमके पाम कुछ न थी। दान आदि 🗏 रुनेवाला: बी विषयादिभें आसन्त न हो। निष्पर्यंस-वि॰ [मं०] भगर, विःमीम । निष्पवन-पु० [मं०] धान बादियो भूमी अलग करना । निष्पादक-२०, पु॰ [मं०] निष्पादन बरनेवाला । निष्पादम-पु० [गं०] निष्पश करनेकी किया। निष्पादी-मा० [गं०] बोहा लामका द्याक । निष्पाप-विक शिक्षी पापरदित । निष्पार-दि० [मॅ०] दे० 'सिष्पर्यंत' । मिरपाय-पु (मं) गुरु आदिको इस जिसमे अनावनी करूरत निकाली जाती है। धान भादिकी भूमी निकासना, निग्तुचीरहणः सेम । निष्यापक-पुर्व [ग्रंग] शर्वेद शेम । निष्पार्था - म्यो • [मं •] शेमदा एक मेद, बोधा । निव्यष्ट-दि [म'] पूत्रे स्था दुमा पात दुमा 4871 निप्रीदन-पु॰ [भं॰] निरोहमा । निरमुप-दिक (तक) दुपरीत, क्षिट्रे दुव स हो १ निरमुख-दि: [ग्रंग) शर्मगृह ।

निष्पुलाक-वि॰ [सं॰] विसमें पैया न हो; भूसी निकाला हुआ। निष्येष, निष्येषण-पु० [मृ०] येरना, यीमना, चर्ण करना; रगडनाः रगह । निष्यौरुष-विष् [मुंष] पौरुपद्दीन । निष्प्रकंप-वि॰ [सं॰] वंपनरहित, अवल, स्थिर । पु॰ चौदहर्वे मन्बंतरके सप्तर्षियों मेंसे एक । निष्यकारक∸वि० [मुं०] वैशिष्टवमे रहित (जैसे-निष्प्र• कारक धान)। निष्प्रकाश-वि॰ [सं॰] प्रकाशरहित, अधेरा । निष्प्रचार-वि॰ (सं॰] जो इधर-उधर जा न सके, एक श्री स्थानपर रहनेवाला, जो चल न सके। निष्प्रसाप-वि० सिंगी प्रतापरहित । निष्यतिष=वि० [सं०] श्रवाथ । निष्यतिभ-वि॰ [सं०] प्रतिभारहित, मर्स । निष्मतीकार-विश् मिंशी जिसका प्रतीकार न विया जा निष्प्रम-वि॰ [मं॰] जिसमें चमक ग हो, गुतिहीनः जिसमें-तेत्र न हो, विवर्ण । निष्पयोजन-दि॰ [मं॰] जिससे कोई प्रयोगम न सिद्ध हो, न्यर्थ; बिना किशी मतलबता, निरस्वार्थ । अ० वृथा, विना दिसी मतलब है। निष्प्रयाण, निष्प्रयाणि-पुरु (संरु) कोरा कपदा । निप्पेष्ठी = - वि॰ दे॰ 'निस्पृष्ठ'। निरफल-नि॰ [सं॰] बिसका कुछ फल ग हो; गिम्रमें कुछ अर्थ न सिद्ध हो। वेकार: निर्धार्य: निमा प्रत्यका: जिसों पुरु न सर्वे । पु॰ प्रवास । निरक्तला-गरी॰ [सं॰] वह अधिक अवस्थावामी को जिसे रबोधमं न होता हो, विगतार्तना गरी। निष्फलि-पु॰ [सं॰] असीदी बादनेवाला अस्त । निर्फेन-वि० [गं०] भेनरहित । निष्यंद-पु० [मं०] २० 'निस्पंद' । निसंक•-वि॰ दे० 'निःशंक' । निर्मग - वि॰ दे॰ 'निरमंग'। नियँट॰-वि॰ धनशीन, दरिद्र । निसंम•-वि• दे॰ 'नृः!स'। निर्मेस॰-वि॰ दे॰ 'निश्चाना' । निर्मेयना॰-अ॰ कि॰ इकिना । निय--नी॰ निया, रात १-वर-पु० चंद्रमा १ -थाँस -अ॰ दे॰ 'निमरामर' । -यामर-अ॰ रागरिंग, गर्वदा । पुरु राम और दिल । नियक -- विश्व श्रातिशीन, यसकेत । निसचयः नियर्धे = - पु = दे = '(नश्रव' । निसत्त--वि॰ अगत्य, भिष्या, शुरा । निमससार-भाव कि निम्तार पाना, शुक्ति पाना, सुट-बारा पाना, बचना । निसमार०-पु० १० 'निश्चर'। निमतारना = न कि उद्घार बर्गा, गुप्त दर्गा । जिसनेहा - स्टान देव 'ज़िल्हें हा' । निसम्बन्ध-की॰ [४०] सगाव, वंदेष, शास्त्रा गुष्टना । ६०

वि॰ पंचान-मंदर्भ । -ज्ञान-पु॰ बुद्धः पाशुपन दर्शनका धामा । -संग्र-पु॰ मंस्कृतको एक प्रसिद्ध पुरतक जिसमें मित्रनाभ, मुहद्भेद आदि पाँच प्रकरपाँके अंतर्गत अनेक नीतिविषयक कथाएँ दी हुई है। -तंत्री-की० पीय सारीबाली बीधा ।-सरध-पुरु पंदभसः पंत्रमदार । -सन्मात्र-पु० रूप, रस, गंध, स्वर्श और श्रध्य-ये यांच ए६म बार अतादिय तस्य दिनसे वंचमहाभृतींकी स्तर्पत्ति होनी है। -तपा(पस्)-विक पुरु पंचाक्षिका वाप लेनेवाला ! -तरू-पु॰ मंदार, पारिवात, संवान, करपष्ट्रा और इरिचंदनका समाहार । -तिक्त-पु० पाँच कहना ओपधियों - गुद्द व, बहब्दैया, मीठ, बुट और विरायना-का समाहार । -सीधी-व्या॰ चाँच सीची-विश्रांति, शीयर, मैमिय, प्रवाण और पुष्कर(दशह पु०)-का समाद्वार (इस प्रकारके अन्य समाद्वार भी मिलते हैं) ! ─त्ग-पु॰ कुश, कास, सरकंडा, टाम और ईस-इस पाँच तृणीका समाहार । -दश (न्)-वि०, यु० दे० 'पंदर' !-इशी-सी० पूर्णिमा; अमावस्वा; वेदांतका एक प्रसिद्ध संथ। →हीर्घ-पु॰ शरीरके ये पाँच होर्ग अंग-बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और रतनोंके बीचका माग । वि० तिस पुरुषके ये अंग दीर्घ हो । - देव-पु० विष्यु, शिव, स्पं, गंगेश और दुर्गा-वे देवना जिनकी उपासना स्मार्त दिव परते है। - हविड-प॰ दक्षिण भारतके पाँच अकारके माहाश-महाराष्ट्र, तैलंग, कर्नाट, गुर्वर भीर द्रविष । - सम्ब-पि० पाँच गरगेंबाला (जानवर) । पु॰ हाथी: सह्रका: बाप वा छेर। -नद-पु॰ पाँच मरियोनाला देश, पंजाब: दे० 'बंचर्गन'। -नाथ-व० बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और शीनाथ । -निय-पु॰ नीमके पाँच अंग । -नीशजन-पु॰ दीवक ममल, आम, बन्प और पान-इन पाँच बरत्ओं द्वारा की गयी भारती । -पक्षी(हिल्)-पु॰ एक नरहका शहनः द्यास्त । --पग्न-पु॰ एक वृक्ष । --पदी-सी॰ एक प्रशासी अत्याः पीन दमः पाँच पर (न्याः): बह मेर्थथ जिसमें मैथोका भावन हो। -यणिका,-पर्णी-स्तीः गोधुर सामक शुर । - पर्यं (मृ) - पुः अष्टभी, चतुः देशी, पृश्चिमा, अमावस्या और रविनेतानि । 🗕 बारवा-पुरु गंप समीन-भाम, जान्म, बीध, बेच और विवीस-इस प्रेन कुरोडि प्रत्यम बहिन्द वर्मने-पोएक, गुन्ह, पासकः भाग और मह-दन याँन क्योंके दरवयः तांतिक कर्नमें न्बरहरू, भाग, पोरण, बह और मौजनिहान्दन पाँच पुरोदे पन्त्र ! -पास-पुरु[हिरु] वंचीना सामद वीना । -पाद्य-पु॰ प्रि पात्रीका समाहानः वद तरहरा साह क्रिसमें पान पाय रशं जाने हैं (दे॰ 'पंन'ने भी)।-पाद-वि॰ पाँच भरगीवाङः । पु॰ मनसम् । -चिना(न)-पु॰ षीय प्रकारके विजा-विका, उपनेता, बहार, अवदाता और भववाता । -विस-पुरु सूधर, बदरा, भेना, मधनी और मो(-दन पांच जानवरीया दिला। -गुरा-पुर वंशा, भाम, ग्रमी, समस और क्षेरडे पूछीहा हमाहार ! --प्राण-प॰ एर्रारमे संघरन करनेवाणी बाय दे परेंच भेरी-मान, भयान, समात, बदान और स्वान-का समाहप्र । -प्रासाय-पुर वह मंदिर क्लिमें बार भन और बीयमें

शुंबद हो । -धंध-पुरु वह अधंदर भी नह प्रमुप्ति मुख्यका पंचमांश हो ।-घटी-सी०[हि०] देव 'प्चक्र'। -चला-स्थे॰ दला, अतिवला, नागवला, राजका भीर महादला-ये पाँच श्रीवियाँ । -पाण,-हार-५० रूप-देवः कामदेवके पाँच प्रकारके याण-सम्मोदन, सन्मादन, स्तंमन, शोक्य और तापन ।-बाहु-पु॰ शिव ।-सीत-पु॰ अनार, कक्षा, सीरा आदि ।-भट्ट-पु॰ एक प्रशास सुलक्षण घोडा जिसके सुँह, पीठ, छानी,दोनों समर्थेवर पर धब्बा होता है। वि॰ पवि गुणीबाला (स्वेबन सर्पर); इस १-भतारी-सी॰ (हि॰) दीवरा । -मर्ची-सी॰ द्रीपदी । -भज-दि० पीच भुदाभी गुहा। पु॰ पीद भुजार्थीवाला क्षेत्र । ~भूम~पुर पृथ्वी, जन, तेत, सार् और आक्राश्च-ये पाँच तत्त्व। -सकार-पुर्शमापारवे वंतर्यंत वे पाँच वरतुरे जिगके नामका प्रथम भग्नर 'म' ई-मच, मांस, मरस्य, मुद्रा और मीतुन i~शहापात∓~ पु॰ पाँच ब्रहार्के महापातक-ब्रह्महाया, शुरापान, रहेप, गुरुतन्त्र गमन और उक्त चार सङ्ग्रापनशैकी करनेरान्ध सत्तर्ग (रमु०)। -शहायज्ञ-पु० गृहरधीके शिप विदि वे पाँच कृत्य जिन्हें करनेसे पंत्रमूना संपंधी दिसाके होत्री दुरवारा मिलता है−वे कृत्य निग्नतिसिन **है−**रराष्याद -मदावस, द्वाम-देवयस, बलिवेश्वदेष-मृत्रस, हिर किया-पितृपञ्च और अतिधिपूजन-नृदद्य । -महाप्यापि -न्त्री० अरी, यहमा, कुछ, प्रमेह और स्थाप-दे प्रि बुःसाध्य व्यापियो । -सहाव्रत-प् अहिंगा, स्तृतः अस्तेव, श्रदानवं और अपरिश्रह (दो०)। - महिष-5° भेनका बूध, दहाँ, थी, मोदर और मूत्र I-मास्य-दिव देव महीनोंने या दर पॉनर्ने महीने हीतेराना। पॉन महीनेश -मुख-पु॰ ग्रिदः पाँच मुगीराना पुण वतेवित्य । रद्राशः पाँच नोहीवाला बाण । दि० निमरे पान श्री हो (२० 'वंच'में भी) । [सीव 'वंचमुसी'।]-मुखी-सी अष्टमाः सिंहकी मादा । —मुद्रा-सी० पूत्रमरिपिके और मेत चेच प्रसारकी मुद्राएँ-भाषाहमी, श्यापनी, मध्या वती, मेरोधियी और लम्मुसीहरूपी। लग्ननपुर या बढरी, मेर, भेस और गंधी-दर्ग पांच जागरींका गृष् -मृत्र-पु॰ वीच-पीच वनस्यनियोती अहते नेवार ही जानेशली यद प्रकारकी दया। -मृली-सी॰ धीन प्रकारके सून्येका समाहार । -यश-पुर सृहायीके धीन महाबद्ध ! -बाम-पु॰ दिन ! -रहाक-पु॰ पण्यी। क्तीबा ब्या = -राम=पु॰ दीच रामः पीम प्रवर्ष रम्ब-शीलम, दीरा, पप्रशास मानि, मीनी भीर मृता महानारत के वॉच मसिज आस्याना पॉच नीतियुर्व पर्येकी समूद १ -रदिम-पु वर्त १ -रसा-११० शहना। " राज-पु॰ पाँच राजियं का समावास प्रीय रागीका गमप ! -शासिक-पु॰ मरिनरी एक दिया दिया वार मार राजियोहे हारा वंचन राधि निकानी वाती है। नम्हार -पु॰ पुराज १-स्टबन-पु॰ दे॰ 'बंतपारगव' १ -स्रॉप · सफ-पु॰ पंच बसोंने जीती का सप्तेवाची भूतिया दान १-मोह-मोइफ-मोइ-पु मोत. यारा लंग र्शाना और गीमा-वे पास भागुरी इन प्रोमीरे बेंगने दरी चानु ।-बद्म-पुर्विद्दिःदेश्यदान्तं ।-बद्मा-भी दुर्ते।

पटकर हो, जो ऊँचा न हो, निम्न, कम ऊँचाईवाला, जो काफी ऊँचा न हो; नीचेकी और स्टका हुआ, जो जमीनके श्रविक समीप आ गया हो। जो कँचाईपर न हो। अका हुआ; जिसमें तीवना न हो, मंद, धीमा; जो कँचे दर्जेका न हो, जो जाति, गुण, कर्म आदिकी दृष्टिने न्यून हो (कॅचाका उस्या) । [मी० 'सीची' ।] -ऊँचा-वि० दे० 'नीच केंच'। —(ची) दृष्टि;-निगाह-सी० डाजासे मुनी दुई हरि । सु० - स्वाना-अपमानित होनाः पराजित होना, शिकरत खाना; लजित होना । -दिखाना-अप-मानित करना; प्राजित करना, शिकस्य देना; धर्मट दूर -इरना, शेखी उतारना; सत्रवाना । -देखना-दे॰ 'नीचा याना'। -(ची) दृष्टि या निगाहसे देखना-पृणित या तुष्छ समहाना, छोटा समजना । मीचाशय-वि० [सं०] तुरछ विचारवाला । भीचूर्र - वि॰ जी चूता न हो; दे॰ 'नीचा'।

मीरो-अ॰ नीरोबी तरफ, अधीमागरें, तलमें: घटकर; अधीनतामें । - अपर-अव्येसे अमसे जिसमें एक दूसरेके कपर हो। ऐसी दद्यामें जिसमें नीचेवा कपर और कपरका गीचे हो, व्यक्तिहास स्पर्ने । २० -शिरना-प्यन होना, भरोगतिको प्राप्त होनाः प्रष्टाहा जाना । -गिराना-पवित बनानाः अधोगतिको प्राप्त करानाः सदनीमें पछाइनाः परकृता ।-लाना-कुर्तामें परकृता । -से ऊपस्तक-विरसे पाँवतकः सभी अंगों या मानीमें; एक मिरेमे इमरे सिरेतर ।

नीजन = - वि॰ दे॰ 'निर्जन'। प॰ एकांत स्थान।

मीशरः - प्र० दे० 'निर्दार' ।

नीर--भ० दे० 'नोडि'। वि० दे० 'नोडा'। मीटा*-वि॰ जो अच्छा न छगे, अग्रिय, अर-विस्त् ।

मीडि-मी॰ अरुचि। अ॰ किसी सरह, कडिनाईसे। े−मीटि करके−िक्सी-किसी तरह, कटिनाईसे । मीड-पु॰ [सं॰] रहने या ठहर्नेकी जगह,आश्रयः घोसलाः

भौदारभद्रा एक अंगः किसी स्वारीमं बैठनेकी जगहः पहेन् । -ज-पु० पक्षी ।

मोहक-पु० [सं०] पशी; वींसला।

मीबोह्य-पु॰ [सं०] दशी, चिहिया।

मीस-दि० [मं०] से जाया, पर्वचाया हुआ; दिवाया हुआ;

महण दिया हुआ। पु॰ धन, श्रंपश्चिः गहा। भीति-म्बी (मं) है जानकी किया; स्ववधारका दंग, • बर्भवरः। तरीवाः यह आधारभूत सिद्धांन जिसके अनुसार कोई कार्य भंगालित किया जायः छो १ स्ववहारके निर्वाहके निष नियन किया गया आचारः सोकाचारकी बद्द पहली नियमे भवना बल्याच है। और दुमरेकी दानि न पटुँने। क्षित्रे राज्य, राष्ट्र, संस्था या सरकार द्वारा अपने कार्यके भैनासन्ते निए नियन की गयी कार्य परति। कार्यविशेषती हिहिडे तिए हामने लायो वानेवाणी मुस्ति चतुरार्वभरी भागः सत्रनीतिः भौशियः योजनाः वाकिः मेट देनाः मरंपः सहारा । —बुदाल-दि॰ दे॰ 'नीतिष्ठ' । —धीष— इ॰ इरायात्वा रथ !-ज्ञ,-लियुष्य,-लिष्या-दि॰ शीति वागरेशमा । –थीज-पु॰ दुर्शनर्गरिका भारेम दा सूध । -विद्य म-द्र॰ दे॰ 'श्रीदिशास्त्र'। -विद्य-दि॰ दे॰ रे

'नीतित' । -विद्या-की॰ राजनीतिशास्त्रः वर्तन्यशास्त्र । -शास्त-पु॰ राजनीतिसंबंधी शास्तः यह शास्त्र जिसमें बाचार-संबंधी नियमीका विधान हो।

नीतिमान्(मत्)-वि॰ [सं॰] नीतिके अनुसार आचरण बरनेवालाः राजनीतिमें दक्षः चतुरः बुद्धिमानः सदाचारी। नीदन(*-स० कि० निदाकरना।

नीधना*-वि॰ निर्धन, दरिद्र ।

नीध-प॰ (सं॰) ओलतो; वनः चंद्रमा; पदियेका घेराः रेवती नक्षत्र ।

नीप-पु॰ [सं॰] कदमका पेड़ या फूल; वंधूक वृक्ष; नील बजीकः एक प्राचीन देशः पर्यतका निम्नभाग । वि० निम्तसागर्से स्थित ।

नीपजना = - अ॰ ति ॰ उत्पन्न होनाः वदना, उन्नति करना ।

मीपमा=–स॰ कि॰ सीपना। नीयरां-वि॰ दे॰ 'निर्वेह' ।

सीयी-स्तं० दे० 'नीवी'।

नीयू-पु॰ खट्टे रसवाला एक प्रसिद्ध फल; इसरा पेइ I -निचोड्-वि॰ थोड़ा देकर बहुत छेनेवाला । पु॰ नीब्की दबाकर रस निकालनेका यंत्र ।

नीम-पु॰ एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सर अंग करने होते हैं। मु॰ -की दहनी हिलाना-उपरंशसे पीहित दीगर

बैठसा ।

नीम-वि॰ का॰] आधा !-आस्तीन-वो॰ आधी बाँहकी बुनी ! -चा-पु॰ छोशे तलबार, खाँदा ! -जाँ-वि॰ अधमरा । -टर-वि॰ कम पता-लिखा, अर्थशिक्षित । -पुस्त:-पुस्ता-वि॰ भाषा पका हुआ, अर्थवरः। -रक्षा,-राष्ट्री-वि॰ वापा रिवार्गद । -दाय-सी॰ आधी रात । - हकीम -पु॰ अधकचरा हकी ग, आयु विधान॰ की बहुत रूप जानकारी ररानेवाला विशिक्षक । स॰ -हकीम रातरे जान-अध्यादे बेपडी दवा करते। जान बानेका दर रहना है।

नीमगिदौ-पु॰ फा॰} यरध्येता एक भीतार । नीमनां ÷वि॰ उप्ता, बढियाः स्वस्थ, भीरीयः औ सराय स

हुआ हो, ठीव- काम देने लावक । नीमबर-५० (पा॰) कुश्तीका एक पेन ।

भीमरा-वि॰ निर्वह, भग्नफ, शील । नीमपार्वयः नीमपार्न! -पु॰ दे॰ 'नीमपारण्य'।

नीमस्तीन, नीमास्तीन-ही० दे० 'नीम-प्रास्तीत'। नीमा-पु॰ (फा॰) बामे है नीचे पहननेका एक पहनाबा।

नीमाधन-पुरु निशर्त संप्रशय ।

नीयत−मी॰ [ध॰] शाश, रच्छा, मंशा । मु॰ ⊷दिगना, -बद होना,-विगटना,-बरी होना-विगर दक्षित होना, मनमें हरी बाद पैटा होना, मनमें बेरेमानीकी बात व्यानः ।

मीर-पु॰ [मं॰] बन, पानी; प्रशेष भारिके भेरत्या धानीः रहः नीमके देशमे निकल्देशना रम । -श-विक बनीय, बनमे उत्पन्न होनेवाला ह पुरु कर्रासमाहः स्थाहः इसना मोनीः हुइ। -द्-धर-पु॰ शास। -धि,-निधि-पुरु गनुद्र । -पनि-पुरु बहुण । -निय-दिरु जिमे बन बिद हो । पुरु प्रत्येत । नशह-न्य स्वयं ।

इक कशिः सङ्देशः

पंचालिका-स्थे॰ [गं॰] करने अदिया पुत्रनी ।

पं चारित - पंज पंचारिन-सी०[सं०] पाँच प्रकारका निम्नलिवित अधियाँ-शरीरमें मानी जानेवाली पाँच अग्नियाँ-अन्बाहार्य-पचन. गार्थपत्य, बाहबनीय, सभ्य और आवसच्या उपनिषद्के अनुसार-स्वर्ग, पर्वन्य, वृथिवी, पुरुष और बीपियः चारी भीर जलनी दुरं चार अदियों तथा ऊपरसे सूर्वके लापका सेवन करनेका भ्रीष्म ऋतुमें किया जानेवाला एक तपः मीता, निचड़ी, भिन्तावाँ, गंधक और मदार-ये पाँच बहुत गरम नासीरवासी ओपपियाँ (आ॰ वे॰)। वि॰ ओहबनीय आदि पाँच अधियोंका आधान करनेवाला । पंचाज-पुर [मंत्र] बबरोका दथ, दही, धी, परीय और पंचातप-वि० मि०) यो पंचातिनय करे। पंचाम्मक-वि० [मंग] पाँच तस्वीवाला (छरीर) । पंचारमा(रमम्)-सी० (न०) पंचप्रात । पंचामन-विव [40] पाँच मुँहांबाला; चौड़े मुँहवाछा । पुरु शिवः सिष्टः पंचमनी रुद्राक्षः सिष्ट राशि । पंचाननी-सी॰ [मं॰] दुगाँ; सिंहनी। पंचानये-वि॰ नध्नेने धाँच अधिक, जो सीने पाँच कम हो। पुर पंचानवेकी संख्या, ९५ । पंचाप्सर(स्)-पु॰ [सं॰] वद सरीवर जहाँ शातकांव सुनिको सपर्या भग करनेवाली अध्यराप्र रहती थी। **पंचामरा – सी॰ [सं॰] दव, विजया, विस्वपथ, जि**राँकी और कालो तलसी । पंचासत∽वि० [एं०] पाँच द्रन्योंके मेलसे बना हथा। य० पाँच द्रम्यांका समाहार: देवताओंके रनान कराने और चदानेके कामका एक पेय क्यार्थ जी गायके दूध, दही, थी, मधु और चीनीके बीगसे बनाया जाता है: गुरून, गीरास, भुमनी, मुंदी और सतावर-दन पाँच ओवधिवीका योग (भार धेंग)। र्पधारुल-पु॰ [मं॰] येर, अनार, अगल्वेस, खुद और विजीरा सीय-ये पाँच सहे पदार्थ (आ॰ वं०)। र्षचायत-हो। पंचीकी मंदली वा सुमा; किम्रा आगने वा शागेके संपंथमें पंची द्वारा किया बार्नियाला विचार या निवडाराः यहं भादमियाँका एकत्र होकर हथा-उपस्की मार्ते करना, गपशप करना (व्यं०); जनना हाहा सुने हुए प्रतिविधिवीका ग्रंडल । पंचायतन-प्र॰ [रां॰] पाँच देवनाओंकी अनिवाओंका सम-पंचायती-विवर्षपायतकाः जिल्हर बदर्गका अधिदार हो। भनेक मनुष्योकाः जनतास्यः जनतापे प्रतिनिधियो द्वारा र्श्याधित, जिसका संयानन जनता द्वारा गुना हुआ प्रति-निधिमंदल करे । ~शाज्य-पु॰ जनगारे मनिनिधियों द्वारा श्वालित राज्य, गगरंत्र । **पंचारी-सी॰ (सं॰) राउ**रेन मारिकी निगान ह पंचाचि(स्)-५० [गे॰) बुध घइ । चेचार:-ए॰ [मं॰] दिमानद नवा थेरणने सीवित एक प्राचीन देश भी गंगांके दोनों और स्थित मा (ह पर यही है राजा थ-म॰मा॰): इस देशका निवामी: वहाँका राजाः

र्षंचालिसां -वि॰, पु॰ दे॰ 'वंतासीस' । पंचाली-सी॰ [मं०] कपड़े भारिका पुतली। एवं प्रशासा गीता चनरंत्र आदिकी विमान । पंचावयव-वि॰ [गुं॰] पाँच भवयरी या शंगीवाश । पंचायस्य – पु० [मं०] शव, मुद्रो । पंचाविक-पु॰ [मं०] भेंद्रका हुप, द्रशी, पी, पुरीप भीत मृत्र । पंचारा-वि० [६०] प्यासमी। पंचारात-वि॰ [मंग] चालीम और दस । व॰ दचनाछ संस्या, ५०। यंचाशिका-स्त्री॰ (सं०) यनाम बस्तुओं, स्वर्टियों मा प्रमोका समृह र यंचास्य-विक, पुरु [मेरु] देव 'वंबामन' । पंचाह-५० सिंगी पाँच दिगीका समह । र्वाचिका-स्तीर (संर) यांच अध्यावींबाली पुरवदः वीन गोरियंसि रोडा जानेवामा जुना । र्षचीकरण-प्र० [सं०] दी समान भागीमें बाँडे गये अफ़ाय आदि पाँच तर्विमिने प्रत्येकके प्रथमार्वकी वृतः थार भागीमें बॉटकर चन्हें बन्य सरव है दिनीदाईमें भिनानेसे किया (५०)। पंचीकृत-वि० [लंब] जिसका पंचीकरण हुआ हो (ने•)। र्पसूरा-पु॰ रुड़वीका एक मिट्टीका धिसीना जिमके . देरें बद्दतस देव होतं है। वंचेद्विय-म्यो॰ [सं॰] याँच शामेदियाँ स्वता बर्नेदियाँ । पंचेष-पुर [मंग] कामदेव । पंचीवचार-९० [मं०] प्ततके साधनमून पाव हम्म-नंत्र, पुष्प, पूष, शीप, नैदेवा इन पाँच हम्याँति किया गया पजन । वैचीपविष-पुरु [मंद्र] पाँच प्रकारके उपविष- हा। मदार, मनेर, जलपीएन और मुचना । पंचीच्या(व्यान्)-पु॰ [लं॰] आहारकी प्यानेवासी वांव अशियों । वंचीली-सी॰ यद वीषा जिमकी पश्चिमी और प्रेंडपीने सह अकारका सुदासुदार तेच भिकामा आगा है ह . पंछा-पु॰ मानियोके शरीर या पेक् पीपीमें बटने दिलने बारिकी चगहने निकननेवाना एक प्रकारका परेवा फकेरे. ये यह के दाने आदिमें नरा हुमा पानी ! पंदाला-पु॰ फफीलाः वासीनेसे भीतरका पानी ! यंत्री-पु॰ पद्मी, चिहिया । यंज्ञ-दि॰ [पा॰] पाँध । -अंगुरत-पु॰ दाधरी पाँग रैंक निया । -आयम्-मी गर्मा और प्रानेशाहे अस्पात्तर पदी जानेशानी पुरानकी पांच सन्हें। - कप्यान-पुर दे॰ 'ब्दबब्दाण' । -सान,-वन्ती-पु॰ पंथी दक्री सवात । -शोदा-दि॰ पीप दी-विवाल, देवसेय। -श्रीक्रा-विव्याय दिलीवश मुख दी दिलीवक रहनेवाली अन्यायीः यो दिवान स हो । -माह्मा-पुर ६६ तरहस्र मधाण, परमासा । -इन्नारी-पु॰ पांच हतार रेजि-कीवा नायकः गुगण्यासमै वापशाहकी श्रीरमे समितिही रिया मानेवाणा हड पर (रत परवान योव इप्रात हैन) इस गहरे के दा उठनी छेनाई मादह हमारे माने के)!

पत्रः बलरामः शनि ब्रहः राक्षसः । मीलांबरी~सी० [सं०] एक रागिना ।

मीलांबज, मीलांबजनम(न)-पु॰ [मं॰] सील कमल। नीला-ली॰ [सं॰] कालीकी एक शक्ति (कालीकवर्च); नीलका पीथाः एक रागिनीः नीली पुनर्ननाः एक तरहकी काली मनन्ती। वि० [हिं०] नीलकेसे रंगका, आसमानी रंगरा। प॰ नीलमः एक तरहका कवनर । -थोया-प॰ [हि॰] तृतिया । -पन,-हट-प॰ [हि॰] नीला होनेका माव, नीलवर्णता। मु० -करना-शतना मारना कि शरीरपर काले दाग पड़ जायें, बहुत अधिक मारना ! -पदना-मारके दाग महना। -पीला होना-कोप करना ।

मीलाक्ष-वि॰ [मं०] मीली ऑखोबाला । पु॰ राजहंस ।

मीलाचल-प० सिंग् नील विदि।

नीसाम-पु॰ विक्रीकी एक रीति जिसमें सबसे अधिक दाम बोलनेबालेके हाथ माल वेचा जाता है; बोली बोलकर भैचना। ~धर्~पु० यह घर या जगह जद्दों वस्तुएँ नीलाम की जायें। स॰ -पर चढना-नीलाम किया याना ।

नीलामी-वि॰ नीलामभें सरीदा हुआ; वो नीलाम किया

मीलास्सा-मो॰ [मं०] दे॰ 'नीलक्षिटी'। मीलास्कान-पु॰ [सं०] एक पुष्य ।

मीलास्टी-सी० [सं०] दीपंद्यातिका नामक श्रुप ।

नीलाहण-पु॰ [सं॰] ऊषा, प्रस्पृष । मीलालु~पु० [मं०] एक सरहका बंद ।

मीलायती-भी० चावलका एक भेद ।

मीलाझी-सी॰ [मं॰] सीला सिदुवार ।

मीलाइमा(इमन्)-पु॰ [सं॰] नीलम्। मीलाध−पु॰ [मं∘] एक देश ।

नीलासन-पु॰ [सं॰] पिवासाङका पेड़ I

मीलि-पु० [सं०] एक वस्त्रंतु ।

मीष्टिका-भी० [मं०] मीष्टका पीपा; नीला सिट्वार; एक नेप्रशेषा बालु और विश्वते प्रकीपने दोनेबाला एक ध्रद रीत जिसमें मुँहपर और अन्य अंगोमें छोटे-छोटे काले

दाने निराल आने हैं। मीष्टिनी-सी० [गं०] नामः नास्ता पीषा ।

मीरिमा(मन्)-सी॰ [गं॰] नालापन ।

मीछी-सी॰ [मं॰] नीटरा प्रेपा; नील नामका रंग; एड

महारको मस्यो। एक रोग । -सम-पु॰ प्रगाद और बद भेन; रवादी मित्र । —संघान—पु॰ नीहका रागीर ।

मोली-दिव क्री - २० 'सीला'। -घोडी-क्रीव मीडे रंगही धोड़ी; आमंदे साथ सिनी हुई कायबदी चोड़ी विनदे बारण यम गाउँको पहननेवाना योशीवर चहा प्रमाना जान परवा है। -चकरी-मी० एक प्रीमा। ~षाय~सी० अंतिया पाछ, बररूद्ध ।

मीक्-भी॰ एक प्रकारकी यागः। मीटोरप्रस-यु॰ [मे॰] मील दमन ।

मीमोन्यमा-को। (एक) नीक्यमधोरी पूर्व सरीहर । मीलोलमो(सिन्)-पु॰ [३१०] ह्यबढे अग्रमृत सञ्ज्यात ।

नीलोपल~प॰ [सं॰] नीला पत्थर; नीलम:। नीलोफ़र-पु॰ [फा॰] नील कमल; कुई ।

नीवँ-सी॰ नालीके आकारका गहरा गड्ढा जिसमेंसे दीनार उठायी जाती है: इसमें की जानेवाली इंट परथरकी चनाई या जमावट जिसके ऊपरसे दीवारकी जोहाई होती है, मुरु भित्ति, मूछ आधार । सु॰ –जमाना–जह मज-वत करना, आधार हद करना। -हालना,-देना-

दीवार उठानेके लिए नीवें तैयार करना; कोई कार्य आरंभ करना । -पद्ना-आरंग होना, शुरू होना । नीव∽सी॰ दे॰ 'नीवैं'।

नीवर-प॰ [सं॰] सम्न्यासी, परिवाजक; वणिक , व्यापारी; वाणिज्य, व्यवसायः रहनेकी जगह, यारतन्यः कीचहः

नीवाक-प्र॰ [मुं॰] दुभिक्षा दुभिक्षकारुमें अक्षकी बढी

हुई मोंग ।

नीवानास-पु॰ समूलनाशः सर्वनाशः सत्तानाशः सत्याः नास । वि॰ वो समूल नष्ट हो गया हो । नीवार-पु॰ [सं॰] विश्वी धाग । - छता-न्दी॰ निश्वी

धानका पीधा । नीवि~सी॰ [सं॰] दे॰ 'नीवी'।

नीर्वे =- छी० नीर्वे ।

नीवी-खी॰ सिंगी धोतीकी वह गाँठ निसे सियाँ नाभिके नीचे या वगनमें इजारवंदमे या योदी बॉधनी है: इसे बॉपनेकी सुनकी होती, इजारबंद: नारा: प्रेंजी, मूल भन: धरु (वे॰); यह बमा की हुई रहम जिसका ध्यान आदि दूसरे कामों में स्थाया जाता हो, स्थायी कीश (की॰); सर्चनेके बाद बची हुई पूँची (की॰)। -प्राहक-पु॰ वह व्यक्ति जिसके पास बंदा या किसीकी कुछ रकम जमा हो और जो उनके ज्यय आहिको देश-रेख करता हो

(a,to) 1 नीम-पु॰ [मं०] दे॰ 'नीम'।

मीजार-प॰ गिं॰ो भोडनेका गरम सपदा, आयरण (तिम

-वंदल कारि); वनान; मसद्री । मीसां - प्रश्नेद पर्रा ।

सीमर: - वि॰ भशता, अमुमर्ग t

नीसान = - पु॰ दे॰ 'निशान'।

भीमानी-मी॰ एक छेर ।

नीसां-पु॰ चारा या गन्ना बारने हे लिए नमीनमें शाहा वानेशला बाटका दुक्सा, टीशा ।

मीड़ो -ररी॰ दे० 'नीर्ने' ।

मीहार-पु मिं नुदूरा; दिम, बर्फ; साधी बरुगा, निष्यमुद्धः । – ज्ञस्य-पुरु बोध्यः ।

मीहारिया-सी॰ [गं॰] बुदरे या भुरेक्षे या इ आहामने

द्याया रहनेबाला प्रशासकृत को प्रहन्तप्रशेष्टा चपासन माना जाता है।

नुकता-पु+ [अ॰] प्रेडी वाद, वारीड पात, दूरदी सामा देव, मुक्स, दोष, क्रिया थोरेडे हुँदपर स्थामा आनंदासा यमका, शरका । -वी-विश्वता या ऐव निवासी-बाजाः विकासेनी रूप्यांनी नगीर दोत दा देव विकासते at win, ferriger !

पंदरहा पंदह-पि० दस और पाँच । पु० १५ की मंख्या। पंदरोहां-पु० दे० 'पढ़ोह'।

पंदार-प॰ सलाह या दिल्ला लेनेबाला ।

पंप-पुर (अंश) पानी आदि सरक परायोंके उत्तर मीचने या पर्नुचाने सथा इथर-उथर हे जानेकी एक कल, ट्यूव आदिमें इना भरनेकी एक कल, विनकारी। एक फलारका

ज्या।
पंपा-मी॰ [सं॰] दक्षिणको एक नदी जो कथ्यमुक ध्वेतके
गमीप भी: रस नदी जे पसका एक पुराना जगर: इस
गगरके पासकी एक झील। —सर-पु॰ पंपा नामकी

इतिह । यंपाल#—वि० पापी ।

पंपाल=-।यण पापा । पंपालपुर करा रेगलेके कामका एक पीला रंग ।

पॅचर=-सी० एशेही; सामान ! पॅचरमा=-अ० कि० हैरला; थाइ छेला, पना छनाला !

र् वैवरिश-सी० क्योदी: हार ।

पंपरिकाण-पुरु देव 'प्वरिया'।

पॅंबरिया-पु० पीरिया, द्वारपानः पुत्रवन्मके अवसर्वर गान्नगान गानेका पेद्या करनेवाला एक विशेष वर्ग, सादी । पॅंबरी-सी० ज्योद्धा क खडाऊँ।

प्यरा-स्वा॰ रुवाझा ६ छक्षक । पुषादा, पुषारा-पु॰ विस्कृत कथाः पीरमाथा, कोतिक्या ।

प्यार-पुर परमार, राजपूरीका एक भेदः भ मृता । प्यार-पुर परमार, राजपूरीका एक भेदः भ मृता । प्यारनार-पुर किर प्रकाश सूर करना, हराना । प्रशासा, प्रसारा-पुर हरे 'धनाका' ।

पैसरहृहा-पु॰ यह बाजार जिसमें वसारियोंकी दुकाने ही । पैसरहृहा-पु॰ समक्त समाने 'आदि प्रतिदिनके स्ववहारकी

पंसारी-पु॰ समक्त, समान्ते ेकादि प्रतिदिशके क्या वरतुर्दे, भोषपियों भादि वेचनेवाचा शनिया । पंसामार#-पु॰ पानेका क्षेत्र ।

पसानार=-पु॰ पामका धन । पसुरी, पसुळी-म्री॰ दे॰ 'वक्की'।

पंगरी-सी॰ पाँच संस्का शिक्ष या तसका बाट। प-वि॰ (सं॰) पाँचेतास्ता शिक्ष या तसका बाट।

पशाः भंडाः। पंत्रमः स्वरका संकेतः (नंगीतः) । षष्ट्रगरे – पु॰ दे॰ 'पंग' ।

पह्ना -सा॰ दे॰ 'मैस'। पहरा -सा॰ दे॰ 'मैस'।

पहरनार्ग-अ॰ शि॰ दे॰ 'वंडना' ।

पहुंसा-पु॰ एह छेर । पहुंसमा=-भ॰ कि॰ दे॰ 'पैटना' ।

षद्यमा॰=भ॰ कि॰ दे॰ 'पैटना' । षद्यार॰=ग्रु॰ गरेश ।

पर्टेरि॰-औ॰ स्तेत्र । पडनार्च -ए॰ पधनाण, संगणतंत्र ।

पडनीर-सी० देश दिनी । पडनीर-सी० देश दिनी ।

पडाला!-पु॰ यह सहाडे दिनमें भूँगेरी खगर रस्मी कर्गा रहती हैं।

परक्-री० पहरतेना काम या भाव, संस्थः व्यवस्था त तेः प्रतासि एक बर्ग्स (सिरंगः स्थान, अमुर्ति आरि क्षेत्र त्रिप्तानीती तिया साध्या स्थान प्रता प्रता प्रता प्रता वी क्षिते रागति सिरंग भावे भावा करणा की राग राग-सा परिशास की से । —सम्बन्ध-री० परवस्त । मुठ —सामा-री प्रतास जाता, निष्णा दीना। दोवी ठटराया जाना । -में भाना-१३४। थानाः बाबुः में किया जानाः बद्धवर्ती दोना ।

प्रक्रमा-स॰ कि॰ दिसी बराहुकी इस दंगमें इस्ते हेना या दवामा कि यह इपरच्या हट न महें। इस्ते इस्ते प्रमा मिन या न्यापारी निहत्त करना। मोन निहा-क्या प्रता क्याजा। मण्डी करने या बरहते हैं। हैटना दिसी काममें नाम के दुण्डी इराहरीने का बाता दिसी बराहिं। अपनेमें न्याम होने देना हिस्से मणुवे न्यास होना। अपनाना। आसतेत या बरोहन करना मनना। वेदी बराहिं। मिनदार हरना। दिसे बरुवे

चिपरताः समझना । पकद्याना-स॰ कि॰ पदन्तेमें प्रमुख धरना या छर। यना देना ।

पकड़ाना—म॰ कि॰ परानेने मुझ्छ करता। पकना—अ॰ कि॰ अगात, फर शादिता परिक्ता होता था उस अदरवानो पहुँचना निमते वाद वे सारुँ नगते है। परिचतावरमाले मात होता। क्या न रहना। और गादि करा और काल दोना। और या गरमी ताइर तन्ना या नरस होना। सीहला, पुरसा। (मानिक) मनेर होगा। पक्त होना। सीहला,पुरसा। समार्था मार अमेंसी अदरवाने पुरेचना। मोरियोग्रा सब राजीनो पार सर्वे

अपने व्यानेमं पदुचना (चीमर)। कारकार-२० कि. हे० 'वक्रका'।

पकरना - स॰ कि॰ दे॰ 'वस्त्रना'। परना - प॰ कीश।

पकला: -पु॰ पाता । यकवास-पु॰ पी या तेजमे तनी हुई भीउर वस्तु । पकषास(-स॰ कि॰ पकारीमें प्रदूध करना ।

पकाई-सी॰ परते, पहालेही किया था भाग पहालेही उत्तरतः। पकाला-सा॰ कि॰ अनाव, यक भारिकी परनेदी सरावा

पकरता-पा । पिन अनान, पत आहरू परनी मना पत्नी को पहुँचाता। स्रोंग पुँचावर दश और साम करना अपि या गर्मी पहुँचावर पत्नाना या गरम करनी विकासा, पुराना बनान्ता। एतेन करना या पत्नी परीस, पुंसी या पावसे अपार घर सानेशे अस्त्या पहुँचाता।

षद्भागः। वकाय-पु॰ परुनेशः माशः मनारः।

एकायन=-पु= पदमान । एकोडा-पु= भरी पर्शरी ।

पक्षीकी-स्थार वा वा नेनमें एमें दुई देशन वा चीडीकी

659 सी॰ एक तीर्थं। -० दम-पु॰ एक प्राचीन देश। -सोम-पु॰ वह मनुष्य जो चंद्रमाके समान हो। वड़ा बादमी । -हरि-पु॰ नृसिंह । नग-प॰ सिं०ो एक महादानी पौराणिक राजा जिन्हें एक बाह्मगरे शापसे गिर्गिटका शरीर घारण करना पड़ा था । नृतक*-पु॰ दे॰ 'नर्तक'। नृतना, नृत्तना*-अ० कि० नाचना । नृति−सी० [सं०] नाच, नतंत । मृत-पु॰ [सं॰] नाचनेवाला, नर्तक । नृत्-पु॰ [सं॰] नतंकः भूमिः क्रिमि । वि॰ हिंसा करने॰ बाला, हिंसक; दीर्घ। नृत्त~पु॰ [सं॰] यह नाच जिसमें केवल अंगोका विश्लेप किया जाय । मृ∙य-पु॰ (सं॰) ताल, छय और रसके अनुसार विकास॰ पूर्वक अंगोंका विश्लेष यस्त्रेका एक व्यापार, ताल, लय तथा रसके अनुसार किया जानेवाला नाच (रमके दी प्रधान भेद ई-(१) तांडव और (२) लास्य)। - प्रिय-प्रशासीर। –शास्त्रा–सी० नाचपर। –स्थान– पु॰ रंगशाला । मुपंजय-पु॰ [मं०] एक पुरुवंशी नरेहा । नुप-पु॰ [सं॰] (मनुष्योको रक्षा करनेवाला) राजा । -केंद्र-पु॰ लाल प्याज । -गृह-पु॰ राजभवन, राब-गदल । -चिह्न-पु॰ दवेत छत्र । -हुम-पु॰ शिरनीका पेश समन्तास । -नीति-ली० राजनीति । -पथ-पु० मुख्य मार्ग, राजमार्ग । -क्रिय-विव राजाका शिव, जी राबाको प्रिय हो। पु० एक प्रकारका बौन; लाल प्याबः भागः; जब्दन धान । —प्रिया—मी० चेतकी । —बद्द-प्र॰ यहां बेर । - स्रोगस्यक-पु॰ आदुस्यका पेड । -मान-पु॰ एक पात्रा जो राजाओंके मीजनके समय दशया जाता था। -लहम(न),-ल्लिंग-पु॰ राजनिद्धः -वलुभ-पु॰ आमः राजाका मित्र या त्रिय स्वक्ति। -यलमा-म्पो॰ रानीः केतकी । -युश्य-पु॰ एक वेह । ~शासन-पु॰ राजादा । -सम-पु॰ वद समा जिसमे रहत्ये रात्रे सम्मिलित हुए हो, राजाओकी समा (मंस्कृतमें मधुकः) । -सभा-सी० राजाको समा । -सुत-पु० रावदुमार । -सुता-सी० रावकुमारी । गुपात-पु॰ [मं॰] राज-या, उपनका छठा या माठवी भाग । पुपात्मज-९० [मं०] राजकुमार । मुपान्मजा-सी० [मं०] राजकुमारी । नुपारम् -पुर [मंत्र] सामग्य यह । मृताप्र-पु॰ [सं॰] राजाना अन्न, एक थान, राजान । नुरामोर-पुर [मं०] ६० 'न्दमान' । नुरामय-पु॰ [तु॰] रावरोग, यहना । नुरायसं-पु॰ [शं॰] ६३. रम, शतवसं । गुपासन-पु॰ [मं॰] भिद्दामन, तरन । A112-20 [ijo] seim cain i

द्र श्वमाष्, दाना वरद ।

नुमना-मी॰ [मं॰] धन्य हीपरी यद वहां मदी (पु॰) र

नुम्ण-पु॰ [सं॰] धन (वै॰); वल, पौरुप; कृष्ण । ने-प्र॰ भूतकालिक सक्तमंक कियाने कर्ताके आगे लगने-वाळा एक कारकचिद्र । नेअसत-सी॰ [अ॰] दे॰ 'नेमत' । मेहँ, मेहे*-छी० दे० 'नोवँ' । मेउछावरि†-सी० दे० 'निछातर' I नेउतना -स॰ कि॰ दे॰ 'नेवतना'। नेउतहरि, नेउतहरी#-पु॰ निमंत्रित व्यक्ति। नेउता! -प॰ दे॰ 'न्योता'। नेउला - पु॰ दे॰ 'नेवला'। नेक- # अ॰ जरा, थोड़ा । वि॰ जरा, थोड़ा सा; (फा॰) अच्छा, मला, उम्दा । -अंजाम-वि॰ जिसका परिणाम मला हो । -अंदेश-वि॰ मलाई चाहनेवाला, दितेया । -छुवाह्-वि॰ स्वामिमक्त, वकादार । −थलन-वि॰ अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी । **−चलनी-म्बो०** अच्छा चाल-चलन, सदाचारिता । -जात-वि० अच्छी जाति या नरङका । −तर,−तरीन−दि० बद्दत अच्छा, अति उत्तम । -दिल-दि॰ भच्छी नीयतवाला । -नाम -वि॰ जो अच्छे कामके लिए प्रसिद्ध हो। जिसकी अच्छी रुवाति हो, मुख्यात, यशस्त्री। -नामी-छी॰ नेकनाम होनेका मान या सदश्या, सल्याति, सप्रसिद्धि, सकीति । -नीयत-वि॰ अच्छी नीयतवाला, विसीकी दुराई न चाहनेवाला । -नीयसी-सी० नेकनीयत होनेका भाव, भरुमनसाहतः ईमानदारो । -- छएत- वि॰ अरऐ भाग्य-बाला, भाग्यशाली । -बद्धती-स्वी० सौभाग्य, सुश-किरमती। नेही-सी० [फा०] भलाई, उपकार, अच्छा काम, दिन। -यदी-सी॰ भलाई-नुराई। सु॰ -और पूछ-पूछ १-कदी नेकी भी पूछ-पूछकर की जाती है ! जिसकी भलाई करनी ही उसमें पूछनेशी जरूरत नहीं, किसीकी मनाई विमा उससे पूछे करनी चाहिये। नेकु•-वि॰ धोहा, जरान्सा । अ॰ जरा, घोडा । नेग-पु॰ विवाहादि मोगन्कि अवमरीपर सगे-संवंधियी तथा पीनियोंको सुद्य करनेके लिए हन्य-बस्य आदि देनेही श्रमः इस रहमके निमित्त दिया जानेवाला द्रव्यन्यन्य आदि । –चार,–जोग-पु॰ दे॰ 'मेग' । नेगरी -- पु॰ नेग या रोतिका अनुसर्य करनेशका, प्रधाका पाछन कश्नेवाला । नेगी-पु॰ नेग पानेवाला, यह जिमे नेग पानेका इक हो। मंपि मारिका प्रनंपक ! —जोगी-पु॰ दे॰ 'नेगी' ! नेटावर! –+३० दे० 'निटापर' । नेजर-पु॰ [गं॰] धोबी । नेजन−पु॰ [शु॰] धोना, नफाई करना । नेजा-पु॰ (का॰) यामा; राजाभीश निद्यान; चिन्धीता । −बरदार-पु॰ नेवा नेवर घटनेवाना । मेज:छ•–यु• भाषा । बेटा = - पण मास्की सान्ते निरम्पने नाटा स्थित है। महा मूरोचित-दि॰ [गं०] थी राजाई योग्य या अनुस्य ही। ञ्• –बहुना−मैटा-दु पैटा रहना।

नेप्रमाण-सण्डिक देण 'साहसा' ।

मेट्री – म॰ निष्ट, सनीय ।

सिंह,-स्वामी(मिन्)-पु॰ वरुइ : -वालक,-शायक -पु॰ निश्यिका बचा । -शाला-स्री॰ चिडियासानाः धोंगलाः विजनाः। पक्षीय-वि॰ [६ं०] पग्न-मंत्रेषीः पञ्का (समामांतुमे) । पदम(न)-५० [मं०] यरीनी; (फूलका) वेसर; पर, पंछ। -कोप,-प्रक्रीप-ए० ऑस गहनेका एक रोग जो दीय-विशेषके कारण क्रीनीके बालोंके काँखमें असे रहनेमे होता है। पदमल-वि॰ [मं०] सबी, सुंदर बरौनीवाला; बास्ट्रार । पहर-वि॰ [सं॰] पासमें दोनेवालाः सरफदारः हर पासमें **य**दम्बनेनासा । पु॰ पशु श्रहण बहनेवाला । परांदा-प॰ दे॰ 'पासद' । परांदी-विश देश 'वारांडी'। व पुरु कठपुरुटी नचाने-वाला। पत्प-न्ती व देव 'दरह्न' । पुरु पास्त । परा-स्वीत (कार) प्रतिकंषः धर्नः शतकाः हैन, नुकसः कमादः रोकः अनंगाः श्वनास । मु॰ -स्त्रगाना-रातं या देश सगानाः प्रतिषंध या रोक सगानाः रोहे सरकानाः अदंगा लगाना । -निकालना-दोष दिखाना, नुक्त निकालना । परादी-सं1० दे० 'वैहादी'। परायान-पु॰ पाँदका एक गहना। पस्तरना - स॰ निः वसारना, धोना । पद्मामा-स॰ कि॰ पसारनेमें प्रवृत्त बरना । पराराना = -स॰ कि॰ परार्वानाः शहवानाः। परारी-मी० दे० 'दारार'; दे० 'वैसही' ह परररेत-पु॰ बद थोड़ा, हाथी या बैन जिनपर पासर टाटी गयी हो। पानरीटा!-पु॰ षद पानका बीवा जिसपर मोने या घीटी-का बार्र छपेश गया हो। परस्वाद्यां -पु॰ दे॰ 'परस्वादा' ३ पन्तवारा-पु॰ महीनेहा आधा भाग, पंद्र दिमीका समय । पस्ता • - प्रवादी । परगादता -पुरु है र 'प्रगादत' । dialitia-do go dialiti, ! - na -do go dialiti-भेर । पत्मामा → पुर दशा, वरायवानः † देव 'वासानः' । पसारता-ग॰ कि॰ पानीने भोनाः भोतर नाक दर्गा । परमारह-पु॰ महाकः भीवनीः ग्रेंह धीनेका वाथ । परगळी~पु० भिरती ह पदायज~९० मुर्देत १ परराष्ट्रशान्त्रण पररायत्र वजानेवात् । परितया-पु॰ क्षणका स्तका सरनेताला । ति॰ व्ययंका, ९,२७ । पानी ह—पुरु देव 'दर्ग' ३ पानीरी+-पु+ दे+ 'पद्यो'। परादी, परा(शं - न्दी : देंव 'देंत्रही' । पर्तारा, प्रसुषा-पु॰ मनुष्यके शरीरमें वर्ष और बांदके जीव हे पमध्या मान, मुत्रमृष्टि प्रशास मान ह पहोार-पु॰ प्यो निहिद्या

परीवा -पु॰ चदद, सीठ, गुर मादिका पीत विने माली हुई वाय-मेसको कुछ दिनीतक शिमाने हैं। पमीआ=-पु० पंस । पगीटा-पु॰ पर, पंता कएलोना पर । परगैदा-पु॰ एक कुर; दे॰ 'शपुर।'। पसौरा-पु॰ दे॰ 'दसुरा' ! पत-पुरु परः दव । -र्दर्श-सी॰ मगुरवेदि सन्देते जंगल, क्षेत्र या मैदानमें बना दुवा पुरस्त शासा ।-तशी -स्ती॰ जुता I-दासी-सी॰ जुता, सहाउँ I -पात-पु॰ पैरके पंतेपर पहना जानेवाला एक ग्रना, प्यानी । पगड़ो—सी॰ विरुद्ध रुपेरी जानेशली सप्तेसी लंके पूर्व पाग, उप्पीप; दुकान आहि किरावेपर देनेके पूर्व माह किरायेदारमे नजरानेके स्पंग हो जानेवाली (६म) स् (विसीस)-भटकना-रिधीसे शास स्पता! -उद्यक्तना-बेरावती होनाः दुरंशा होना । -वएकता -देश्यत करनाः दुर्गत करनाः -उत्तरना-प्रविधा नष्ट द्दोना, अपमान द्दोना । -उतारमा-अपमानिष करना, बेह्य्बत करना। शुरुगा। धनका अपहरण करना। (किसीको)-वैधना-मान्याना मिलनाः उत्तराधिकार माप्त होनाः उच अधिकार मिलना। (किसीकी)-बाँधना -- मानिक वा सरदार बतानाः उत्तरापिकारी बमानाः उद्य अधिकार देना । -वहत्त्वमा-विदना करना ! -रास्ता-मान-मर्यासकी रक्षा करना, राजा रशका, प्रशिवादी रहा करना। (किमीके आगे या पैर्तिपर) -रखना-सहावतानी ग्रहार करनाः विषय हरनाः दयाकी भीरा मौगना। परासा-अ॰ कि॰ दिनी बरतुका शीरे आदिमें ४म मधा हुवा रहता कि यह उसमें अच्छी तरह भिन जादा हिमी तरल पदार्थके साथ हम प्रदार मिलगा कि यह अन ही वादा रम आदियें सम जाना, शराबोर होना; निमप्त होताः विप्त होता । पगनियाँ≠−ररी• जुनी। वसरा - पु टम, करमा प्रभागा मगार शुरू दरदेश समय । परारी - स्वी॰ देव 'पगरी' । पराष्टा-विक पायलः साराधाः । [स्रीक 'सामी'] । वर्षाहों -पु० दे॰ 'द्या' । प्रशाक-पुरु पगुरी; हु पृहा । प्या; देश 'पगरा' । वयाना-म॰ कि॰ पायनेका काम बराना। प्रस्तेत बरानाः निषय बरानाः अनुरस्त बरना । प्रवार-पु॰ वारा, विकास इतकर पार करने बीध्य अरी आदिः ? येगनः # दे॰ 'मादार' । वसारना !- स॰ (६० पेनाना । व्यविभागाः वृशिवामाः - सः दिः दे । 'दगामा' । यगिया =- मौ = दे = "पत्री" । पगुरामार्ग - अव कि अनाता वरमा, रागुर वरमा । मन कि॰ (सा॰) यथा काना, ब्रह्म काना ह ष्योष्टा-पु॰ [४०] बोद्धनंदिर । वदा-पु॰ दोर् बोदनेदी रस्ती । विद्याना - म॰ फि॰ दे॰ 'रिएस्सा' ।

नेमी(मिन्)-पु॰ [सं॰] तिनिश्च बृक्ष । नेपार्धता-स्रो० मिंग्रे एक काव्यदोष । जहाँ रूढि या प्रयोजनके विना लक्षणाका प्रयोग किया जाय वहाँ यह दोष होता है।

नेता - अ० पास, नजदीक । नेराना - अ० कि०, स० कि० दे० 'नियराना'।

नेहवा!-पु॰ कोल्हुके नीचेकी तेल बहनेकी नाली। नेरे, नेर्" *-अव समीप, नजदीक ।

मेय 4-पु० दे० 'तेव! । स्त्री० दे० 'तीव" । नेवग - पुण नेग, दस्तर ।

गेयगी *-प० देव 'नेगी' !

नेवछ।यरा - म्बा० दे० 'निछावर'।

नेयन - पु॰ देवताको अधित की जानेवाली मोक्य बस्तु,

मैक्जा-पु० [फा०] विलगोजा । नैयजी-सी० एक पुष्प।

मेयत!-पु॰ दे० 'स्थोता' ! नेयतना *-स॰ ऋि॰ निमंत्रित करना ।

भेवतहरी-पु० दे० 'स्योतहरी'।

नेवसा । - प० दे० 'स्वीता' ।

नेवना = - अ० कि० झुक्ता।

मेरर-पु॰ नृपुर, शुँघल । स्वी॰ दो पैरॉके आपसमें ठीकर या रगः खानेमे वोदेवे पैरीमें होनेवाला वावः घोडेके दी पैरीकी भाषमुकी इगह । † वि० बुरा; जी घटकर ही,

न्यून ।

नेररना - अ० कि० निवारित होना, दूर होना ।

मैपल = - पु० दे० 'नेवर' !

मेपला-प्र• शिल्हरीकी दाहुदा लगभग देद दाथ खंबा भूरे रंगका एक जंत की सीपकी मार्गके डिप बहुत

मेश-पु॰ शिति, प्रथाः दस्त्रः ब्रहावत । वि॰ तुस्य, समानः चुप, ग्रामीश्च ।

नेयाज-वि॰ दे॰ 'निवास' ।

भेषाजना - स० जिल् दे० 'नियाजना' । मेबादा-पु० देव 'तिवादा' ।

नेत्राची-सी॰ नेवारी ।

नेवानाव-मक कि शुकाना ।

मेपार-पु॰, शां० दे० 'निवार' ।

मेनारना - ११० ति । निपारण करना, दूर करना, हटाना । नेरारा-छो॰ जुद्दाकी जातिका एक पीपा विसमें छोटे

भीर समेद वृत्त लगने दें। मेरनर-पु॰ [पन॰] ३० 'सदनर'।

भेष्टा(स्ट्रु)-पु० [मे०] ऋक्षिह्। मेप्टु-पुर [#0] मिट्टीका देखा ।

मेग-पु॰ नंगणी जंतुओं हे सुरीते हाँत ।

मेमुक -- दि० धोहाना, अल, रंचमात्र । अ० वहा, धोहा । मेमुद्दा!-पु॰ गमा या चारा काटनेके बामना अमीनमे मारा वानेदाका धवतीका दुवता, ठीवा ।

मेगा-ति (पा) दिस्ता मन्तिव न की, जी न ही। -नाप्र-६० सर मूच्ये सह ।

नेस्ती-सी॰ (फा॰) अस्तित्वका अभाव, न होनेका मावः विनादाः बाहरस् ।

नेह*-पु॰ स्नेह, श्रेम, प्यार; तेल या धी । नेहरू-पु॰ दे॰ 'बवाहरलाल' तथा 'मोतीलाल नेहरू'।

नेही - वि॰ रनेही, प्रीति रखनेवाला, प्रेमी ।

नैःश्रेयस-वि॰ [सं॰] कत्याणकारकः मोक्षदायकः। नैन्स्व-पु॰ [सं॰] अकिचनता, निर्धनता।

ने-पु॰ दे॰ 'नय'। इ स्त्री॰ नदी; (फा॰) वाँसकी नली;

निगालीः बॉसरी । नैकता, नैकत्य -- वि॰ निक ति संबंधी, नैक त्य । पु॰ मूछ नक्षत्रः निशाचरः पश्चिम-दक्षिणका कीण ।

नैक-अ॰ दे॰ 'नैकु' । वि॰ दे॰ 'नैकु'; [सं०] एकमे अधिक, बद्दत, बद्दसंख्यक। पु० विष्णु। -चर-वि० श्रंट या जमातमें चरुमेवाला, जो भदेले न चले, समृहचारी (जैसे -हाथी, हिरन, भेट्र आदि)।-सायाध्यय-वि० अरियर, र्नचलः परिवर्तनशील । -भेद-वि० विभिन्न प्रसारका ।

-श्रंग-पु० विष्णु ।

नैकटिक-वि॰ सिं॰] पादर्ववर्तीः भिक्षा गादिके लिए ग्राम आदिके समीप रहनेवाला । प्र० सन्न्यासी, भिक्ष ।

नैकट्य-पु॰ [मं॰] निकटहोनेका भाव, निकटता,सामीप्य।

नैक्धा-स॰ [सं॰] बई तरहसे ।

र्नेकपेय∽पु॰ [मं॰] राक्ष्म (जिनकी उत्पत्ति निक्पारी हैं)। र्नकु-अ॰ बरा, भोदा । वि॰ धोदा-सा, अस्द ।

र्नकृतिक-वि॰ (५०) दसरेका अवकार करके अवना स्वार्ध सिद्ध बरनेवाला; दूसरेकी द्वानि पहुँचाकर अपनी जीविका चळानेवाळाः वेर्रमानः दृष्टः गर्मानः ।

नियम-वि॰ [सं॰] नियम-संबंधी; नियमका। पु॰ धेदका बह भाग जिसमें अहा आदिका प्रतिपादन है, उपनिषद् नीतिः शाधनः नागरिकः स्यापारीः पुक्रिमत्तापूर्णं स्यवदार् । नैगमिक-वि॰ [सं॰] वेद-संबंधी। वेदोने नियला हुआ।

मैगभेय, मैगमेय-पुर [मेर] काश्वियका एक अगुगरः दक बालबह (सुधत)।

नियंदक-पु॰ [सं॰] वैदिक अध्योका संप्रदर्भ क्रिसरी

व्यास्या यारक्षने अपने निरुष्ठमें की है। नैया-पु॰ (फा॰) एकपे बोधी पुरं दुवरेशी दोनी नहिया। बहुत दुवला-परला भादमी (स्पं०)। -धंद-पु० भेवा

बनाने या बॉयनेवाला । -धंदी-मी० नेवारेद्या साम । मैचिक-प॰ (सं॰) गाय या पैन्या गिए। नैचिकी-मी॰ [मं॰] भन्दी गाय।

नैची-छी॰ भोट छापले समय धेलाँने बार-बार माने और शीरनेके स्थि मुर्देके पाम बनी दुई वाह ।

मैज-वि॰ सि॰] निर्दात निवस ।

र्मनल-पुर्वाने वे नेहा स्वतः ।-सन्ना (सन्)-पुरु यम ।

मितिर-पि॰ मि॰] नीति मेर्यपेः नीतिरा । नैत्य-वि॰ [मं॰] नित्य होने या दिया जानेरात्रा नित्य

दिया अनिराश । पु॰ निरम्सने र र्गण्यक, मैथ्यिक-विक [गिक] निवसित स्थाने होने दा

विदा मानेवाणाः सनिदावे । मैदाघ-वि• [rie] निदायनांत्रोह निदायका, धौरमसा ह

प॰ शीपा धन् ।

दमरे रंगके पत्थरका जहात । -कार-प्रव पत्नी करने-बाला । -कारी-भी० पधी करनेका काम । अ० (विसीम)-हो जाना-विलवर पदस्य हो जाना. ष्टीन हो जाता। पराहर - प० दे० 'पहा" । परछताई*-मी० दे० 'दशपान'। परछढद्र-पु० [मं०] दे० 'प्रश्चाब्द' । परस्का - प० हे० 'वहिन्या'। परस्थाता -प० हे० 'प्रभावात' । पश्चिम-पुरु देव 'पूर्ता'। -बाज#-पुरु शहद । परिस्त परिस्ता - पुरु देव 'पहिनम'। परित्रती = -गा० चिटिया । पच्छिम-पु० दे० 'वरिचम'। पच्छी 🗝 पु० चिहियाः पश्च ब्रह्म करनेवाला । परछीय-९० [सं०] परदी हाहि, पर थोएर छाक बरना । पछ-'पीछा'का समासमें व्यवदन विकृत रूप। -समान-पु॰ दे॰ 'पिएलगा' । –लक्ष-पु॰,–लक्षी-सी॰ विद्या टोंगें हारा प्रहार । –छासा॰–पु॰ दे॰ 'पिछ्छमा' । पछदमा-भ॰ कि॰ पहाडा जानाः दे॰ 'पित्रहता' । पछताना-अ॰ कि॰ कोर्र अनुचित कार्य बरके बादमें वसके लिए दृ:सी **होना, पश्चामा**य क**रना** । परसानि#~मी० परसावा । परसाधां -प॰ टे॰ 'परानावा' । पद्यताचना = - अ० जि.० पद्यताना । पछताया -पु॰ वद दःख की किमीके मनमें कोई अन्धित कार्य कर स्वक्तेपर द्वीता है, किशी कार्यके अनी जिस्यके बोधने दीनेवाली भारमग्लानि, पश्चाताय ह पछमा-भ॰ जि॰ पाछा जामा । पु॰ पाछनेका श्रीबार । पद्मसन=-४० पीछे। पछरना •-- अ० कि० च्छडनाः शैरना । पछरा*-प॰ दे॰ 'पए।क' । पद्मवत-सी॰ फरान कर मुकनेपर बोधी जानेवाली बीज ह पद्या-नि॰ पश्चिमीय, पश्चिमका । स्ती॰ पश्चिमकी सोर्स्स मामनेवाली इवा, परिश्रमी इवा: शेरियाका मीटेंद्रे पीछेवी और पश्चेवाला भाग ह पर्छोद्द-पु॰ पश्चिमीय प्ररेशः पश्चिम दिश्स । पर्वोहिया-दि॰ रे॰ 'प्रांदी' । पर्वाही-विश्वप्रदेशका । पछाच-मी॰ श्रीवरी मुस्तित ब्राहर्वीटके बल निर वहना। श्रीकृति विक्रण दीवर गहिन्छहे विर पहला हे पुर अस्तीका पद दाँव । श्र - स्वाना-शोवने वृद्धित दोहर बाह्ये बन दा राई संदे दिए पहना । पहादना-स॰ कि॰ दुश्री या ल्हारी परस्मा या पराश्य बर्गाः भौते समय सप्रेकी पासना । पहाडी-सी॰ दे॰ 'तिहाडी' । पठामना =-स व दि द व "वहनानमा"। प्रदाया-पु किशे कानुको दिवस माग । प्रताही - स्वी । देश विद्याहर । षाप्राहता :- सर कि र दे : 'बतावना' ह प्रशासन्, प्रशासन्ति मन्द्रातः छात्रः लाहिन्तः यसः हृत्रः यसः ।

चेता । पराई-पुरु देश 'बराईह' । पछाहियाँ, पाराहीं-बि॰ दे॰ 'क्लांस' । पछित्राना, पछियाना •-स॰ कि॰ अनुगमन कानाः देश करना । पश्चित -प॰ दे॰ 'पश्चिम'। पछिताना == अ॰ कि॰ दे॰ 'पएसाता'। पछितानि-कौ॰, पछिताय-पु० २० 'शएनापा'। पछिषाउर, पछिषाचर-स्रो० है० 'क्राहर'। पछिषाय-प॰ पश्टिमी हवा । परिस्ता। == ५० दे॰ 'विएस्ता'। पश्चितना! -अ॰ कि॰ दे॰ 'पिएरना': दे॰ 'शिक्ता'। परित्या -वि॰ दे॰ 'विएका'। पछिषाँ, परायाँ-वि० सी० पनितारी । औ० पनितारी पछोल-सी॰ महानवा विद्याहाः महानदे पेटियी दीप्रहा परस्या-प॰ करे जैमा हाथमें पहनतेला यह महना। पर्छेलमा! –म• कि॰ पैछे होश्मा या इसमा । पछेला!-५० दाशमें बीधे पदमतेका पर गहना। हि० विस्तरहरू । पर्छेकी - ची॰ छोरा परेसा । पर्छेत्रज्ञा=-प्र० विशीसः धरर । पछोडना! -स॰ कि॰ सप्टे परदना। पछोरना==छ० कि० दे॰ 'पछीरना' । पछीरा-पुरु देव 'विहरीरा' । परः वायर-स्री० दे० 'वहाबर' । पन्नगरंगी-ला॰ (फा॰) बुम्स्सास्य । प्रामुद्यो-वि॰ (पा॰) कुन्दशाया हुआ, मुस्ताया दुला । पञ्चरताव-अ० जि.० अङ्गाः सम्माना । पञासा। -पु॰ पायत्रामा । यञ्चारसार-म॰ जि.० सन्दामा । पजाचा-४० (फा०) ईस्टा मट्टा । पजरूप-९० जैनोदा ६६ वर । पञ्चीन्या-प्रश्न मात्रमण्डमा । प्रस-पुरु [संर] शह । वाजादिका-भी॰ [लं॰] वह माधिक छेटा धीरी धेरी र 1 "spilp" of op-aspin पर-पू (मं) बल, क्या बागर क्या विष श्रीवरे-का कामम मा कपरेका प्रकाश पान (मनवा पान) छात्रनः ह्या विश्वीभीका वेद । -कर्म(त)-पु व वर्गा श्चना, बदन, जुलादेका थेया । - कार-पुर श्चनका विषयार । -पूर्ति-स्ता भेगा, संतु । -पू-पुण वयार । -धारी(रिन)-रिक भी बस्र पहते हो ! # 30 होएं! बानेबा प्रवास भविदारी । स्मृद्धन्-वापा-वेरम्(न) -पुर होता, रोहत -बाच-पुर द्वीत तैरा सदया (क्क्षीए) s -खास-पुर दक्तरी, बीमार भीती मा कारिय मीचे वहनजेवा किसीका ६व एरहपा घोनरा सामी क्षत्रश्च ब्रह्मदेशा शुर्वत्र प्रदश्च - चाराक्ष-प्रश्च दरमा बारानेका दुर्गावय प्रस्त वा भूते ह यह-पुत्र अप्रधान, बद्धानाम माहिका निमानि कारी

र्नपाद, नेपादि-पु० [सं०] निपादका पुत्र । र्नपेचनिक-पु॰ [सं॰] राज्याभिषेकके समय दिया जाने॰ बाला उपहार (की०) ।

नैप्दर्भ-पु० [मं०] निष्क्रियताः आरुस्य, कर्म न करनेका भावः सभी कर्मोका स्याग, आसक्ति और फलकी कामना रवागरूर दिये जानेवाले वर्मका अनुष्ठान (गी॰) ।-सिद्धि~ सी॰ सब प्रकारके कमोंसे निवृत्ति (गी॰)।

. में ब्रियम्य-पुर्व [संव] अकियनता, दरिहता ।

र्नेरिकक-वि० [मुं०] एक निष्कर्षे खरीदा हुआ। पु०टक-सानका प्रधान अधिकारी ।

र्नष्क्रमण-पु॰ [सं०] नवजात शिशुको पहले-पहल घरमे बाहर से जानेके समय किया जानेवाला कृत्य ।

र्नेष्टिक-वि॰ [मं॰] (तेष्ठायालाः उपनयनसे लेकर शृत्युनक मध्यसर्वका पालन करते हुए शुरुकुलधे निवास करनेवाला (महाचारी); किसी ब्रह्मे अनुष्ठानमें छगा हुआ; निश्चया-रमकः स्थिरः पार्यन ।

मैंप्दुपै-पु॰ [सं॰] निदुराई, निर्दयता ।

र्नेप्ट्य-पु॰ [मं॰] नियम निष्ठाः दहता ।

नसर्गिक-विव [संव] सिसर्ग-संबंधीः स्वामाविक, सहज, माकृतिका।

नैसा = -वि॰ अनिष्ट, बुरा ।

नसुक•⊸वि०, अ० दे० 'शेसुक'।

मैसिशिक-पु॰ [सं॰] तलबार हेकर खुद करनेवाला बोदा, सहपारी।

नैहर-पु॰ स्त्रीके विताका घर, मायका ।

मोभा†-पु० ३० 'नोई'।

मोहमी, मोई-सी० यह रस्ती त्रित्तसे दूध दुवनेके समय

गायको पिछली होंगे भीभी जाती है।

नोक-मा॰ [का॰] किसी बरतुका उस ओरका अग्रमाग विस और वह पनला होता चली गयी हो। किसी चीजका नियमा हुआ बारीक सिरा। किसी ओर निवला हुआ कोना । - झाँक-स्वी० समधन, समावट, अलबरण; तायः मनिमानः ताना, छीटाकशी, खुडीकी बातः छेड्छामीः मंपरं। विवाद ।-दार-वि॰ नीक्याला, गुकीला; सुरीला, पुमनेवाला। सत्रधनका, ठाउका । -परुक् -कांव चेहरे-धी गठन । -पान-पु॰ जुनेको बनायट, सुंदरता आदि । सु॰ नदी हेशा-दः बरकर वानेकरना ।-द्रम भागना-वृद्र औरसे भागना, देनहाद्या भागना ।-दमाना-दनाव-मिनार बरना ! - रह जाना - मान-मर्यादावी रक्षा होना, रजन वय जाना ।

मोक्ता•-भ० कि० संस्थाः मार्थ होना ।

मोशासींकी-मी॰ टीट'क्फी, तानावनी, एक दूमरेनी सुरीली बाउँ सहसा; हागदा, विवाद ।

मोदीला!-वि॰ दे॰ 'तुकाला' । नोम्पा॰-६० अनोस्स, अद्भुन, अपूर्व ।

मोच-मी॰ गांवनेका काम या भावा धीनने या दलपूर्वक ^{हिनेका कार्यः} दिनीकी घरेद्यान या वेदम करके अमने बार-बार बुछ नेता; बर्जनी स्वक्तियाँका बर्ड औरने यह साथ मांगमा । -गारीट-भी॰ स्ट्यार, धीमाराप्टी ।

मोचना-ग॰ हि॰ हती या बमी हुई वस्तुओ इन्टर्ड हे साव

इस प्रकार खींचना कि वह अपने स्थानमे अलग हो जाय. झटकेसे उपाइना या सोइनाः नए, दाँत मादिसे किसी बस्तुके कुछ अंञ्चको स्थीचकर अलग करना; शरीरपर नख था पंजेसे इस प्रकार आधात करना कि खरीच पड़ जाय: किसीको बेबस करके बार-बार उससे कुछ छेना, किसीको फेरमें ढालकर बार-बार अससे कछ न कछ अयल करनाः इतना माँगना कि जी ऊब जाय ।

नोचानाची-स्ती॰ दे॰ 'नोचरामोर'। नोच्-वि॰ नोचनेवाला; नोचससोट करनेवाला । नोट-पुरु [अंत्र] समरणके लिए लिया लेना, टाकना; संहेप; छोटा पत्र या लिखा हुआ परचाः निश्चित समयपर रुपया चुकानेकी प्रतिग्राः सरकार द्वारा रुपयेकी जगह चलाया

गया यह कागत्र जिसपर उतने रुपयेकी संख्या लिखी रहती है जितनेका यह होता है। -पेपर-पु॰ पत्र लिखनेका कागत्र। — बुक्र – स्ती० वद पुरितका जिसमें आवश्यक वार्ते रमरणार्थ लिख की जाती है ।

मोटिस-स्वी॰ [अं॰] स्वनाः इदतहार, दिशापन । मोदन-५० (सं०) कार्यविशेषमें प्रवृत्त करना, धेरणः स्रदित करना, एंडन; बैलीको हाँकनेका पैना । नोदना-सी॰ (सं॰) प्रेरणा ।

नोदयिसा(त)-वि॰ [मं॰] आगे बदानेवाला, प्रेरिस वरनेवाला ।

नोन!-प॰ नमक । -चा-प॰ नमकीन अनार, आमका एक प्रकारका अचार की उसकी फाँकोंमें केवल नमक लगा-कर तैयार किया जाता दें। लोगी जमीन । 🗕 छी – स्वी० लोगी मिट्टी । -हरासी -- वि॰ नमकहरामी ।

मोना!-प॰ शीक्षे कारण दीवार या जमीनमें समनेवासा नमकता अंदाः छोनी मिडीः नाव, जहात आदिहे पेंदेने लगनेवाला एक प्रकारका कीशा । वि० विभन्ने नमक्का अज्ञ हो, सारा: अच्छा: मंदर ।

नोनाचमारी-सो॰ एक मशहर जाद्गरनी।

नीनिया!-पु॰ एक जाति जो शोनी मिट्टीमें नमर तैयार बरती है। म्बी॰ एक भाभी की स्वादमें गमकी न होती है। शोजी-ग्दो॰ होना मिट्रीः नोनिया मामग्री मात्री। प्रि॰ सी० मन्धीः संदर् ।

नोर=-वि॰ नया, नृत्तम । पु॰ ऑस्.।

जील- * वि॰ दे॰ 'नवन' । † स्वी॰ विदिवारी चींच । नोबना॰-स॰ मि॰ दुहनेके समय गायको विद्यमा श्लोको घटमें श्रीधना !

नोहर - विश्व विसका मिलना कहिन हो, तो दही बहि-गारंगे मिने, दुप्ताप्य; भदुर्व, अङ्गत ।

नी-सी॰ [गं॰] नाव: बहात्र ग्रॅ-कर्ण-पु॰ प्रहादशे दनवार । - ० धार-पु० दोत्रवालक । - एकी-स्ते० कारिरेयकी एक मानुरा। -वर्म(न)-पुरु महादश वृत्तिः मोदीया पेशा। - ऋम-पु॰ नावेना पुनः। ~चर्−वि॰ वी ल्हाबसे बाद । दु॰ होंदी । -जीविक-पु॰ मंती। -सार्य-दि॰ मो नापने दर शिया याय । -वृष्ट-पुत्र वर्षि । - मेना(मु)-पुत्र वष्ट

को बदावधी पत्रशत चारण की, वर्णपत, महिन्द । -वंधन-पु॰ दिमावदरी वह भोजे बिग्ने मनुजे प्रकृत-

परानी-भी॰ परानदी का परान जानिकी की: परानक! रवनाव, पदानपन । वि० बदानदाः पदासन्देशी । -छोच-पु॰ पर जंगली पे॰ जिमसी छाल और पश्चिमों रंपरे तथा धररी और पर दशके रूप आने हैं। पठार -9° दरगर फैंगो हुई भीरम और कंगी जमीत। पराचन! -प॰ दनः इसोदी । पटावनि । - स्वेष देव 'पटावनी' । परायनी - श्री व दियी कार्य है जिब दियोकी कही सेवलाः विभीते भेजनेपर वही जानाः विभीती वही केवर्त का पहेंचानेकी उत्तरम ह पठि-सी० [गं०] पहनेही किया, अध्ययन । परिम-पि॰ [मे॰] पहा गुआ। पठिया-मी० जवान और दशनुष्ट औरत । पटोर-छी० शवाम और विना श्वायी हुई बदरी वा गर्गी । पठीन(=-भ• फ़ि॰ पटाता, भेन्नता । परीनी रं – ग्री० देव 'पहाबनी' । पट्यमान - नि० पर्रा चोग्य ।

पहरुती, पहरुक्ती-सी० पानोही भीरारने स्वानेके लिए क्यी दीवारपर स्त्री या लगायी जानेवाली सायज या रहे ।

पहरा ।- न्वी ॰ देव 'पहला' ।

पदतः-प॰ विमी मालकी वरीड या तैयारीका सर्वेः विक्रीके दावभंते स्थापन छोडकर होनेवाली बचतः औरनाः दरः लगानदी दर । ३१० -निकालना,-कंप्राना,-धैदाना-ए।पनका विचार कर भाव निश्चिम करना ।

पहलाल-सी॰ प्रमाननेहा काम वा भावः निरीधन, जीव (प्रायः 'जाव' श्रव्यके साथ प्रवृक्त); परवारी या कानुनगी द्वारा की जानेवाली घेत्रोबी एक विशेष प्रकारकी जीव

बिममें बीधी हुई फम्ब, बीनेवानेका साम, निवाई आदि-का व्योध किया प्राप्त है।

पदतालमा - म० कि० जॉन करना, हानदीन दरमा । .

यदनी-मी० दे॰ 'परती'।

प्रकार- भ॰ जि.० दिरला: दशे यहायक या पर्देयना: अगर बीमा: आश्री म भागा: शामा: शामा या पर्नेश्वाया नामा: विकाया, रूपा आसाः घटनाका रूप प्राप्त करनाः परित द्दीनाः भ्यादा जानाः रिधन द्दीनाः दशन देनाः शरीक शोबाः दिवस, उद्दरम, सुकाय करवाः वेश्याः गीमार श्रीनाः भिन्ताः पदमा रहानाः आमडनाः, साम आदिका परता होताः प्रथम पाप्त होताः अपन्तिम होताः राहमै प्रिष्टमाः निरम् भागः, पैरा शोनाः दोनाः दो जानाः तीप्रदश्ताः होताः पुत्र सरुर होताः निषय दिया जानाः हार्ट्र होनाः वत अन्ताः (विम्यीपर पदमा~भावत भागाः विपरित भागाः । क्या पद्यो है-न्या अनम्ब है 🕻 🕽 यश्च-पत्त-मो • अनेद बार और निर्देश प्रशास व्यव यावा । प्रवासामा - स॰ क्रि॰ 'पर-पन्न' शब्द होला। 'पन-पने शब्द बरागाः मिर्च मादि सीधीः वश्तुजीके शार्टी जीवका

वस्त्रे-हा सदमा ६ पहणवाहरू-न्यो॰ पश्यशनेकी क्रिया का आह । पद्यांगा-पु॰ देश 'दर्दाता' ।

dar, -d. ,çati, t

पद्या - लीव देव 'परिवा' । पुर देव 'पंत्रवा' । पद्याना--त० कि० पहनेश काम कराना । पहाधीरं - स्ती॰ वैद्याख या परीप्रमें बोदी जानेशनो एड प्रकारकी देख ।

पदा-प॰ भैगठा बद्धाः वृद्धाः ! पडाक्तां-प० टे॰ 'व्यक्ता'। पदाना-स॰ कि॰ गिराना। शिराना। गुराना। पारेने

मक्त करना ।

पहापल-न्नी॰ 'पन-पह'की आकात । अ॰ 'दर'वर'की भावाचके माध ।

पदाध-पु॰ सेना, काफिले या पविश्रीहा रानमर वा इट समयके लिए मार्गमें कही दहरता। यात्रियोह तहरने ही

जगह, दिहान है स॰ -आरमा-पहार हाने हुए हाकिरे या यात्रीन्द्रलको सहनाः काँहे मारी माहगहाकाम दरना। पहिया-सी॰ भंसरा मादा बस्ना ।

पहिचाना!-अ० कि॰ जैसका भैमेरी संयोग बोना। स॰

कि॰ भेंसेका भेंतमे शंदाय करना: देशा संदोग बराना !

पश्चिमां - स्ती० देव 'वरिवा' । वदीरा -पु॰ परमल ।

बढ़ीय-१० हिमीके शरके पागरे पर, प्रशिश हिमीके

यहरे आसपासकी जगह । म॰ -करना-पर्शसमे रहना। यद्योसी, प्रवीसी~प॰ प्रशेममें रहनेवाला । षदेत-मी० निरंतर पत्रमाः बाह **।**

पर्दसा-विक् प्रव प्रजेबाला । पदत-स्थै। यानेही विद्या, पाठ।

पदना-म॰ ति॰ निरी हुए अगुरी या धार्थीता कमी वच्यारण करना। पुरतक या लेश आहिकी रण प्रकार देगाना कि उसमें लिये हुए छम्प्समृहका भी बाभाव शमार्थे का वादा बीलदूर जपना मन ही मन भरत' बोल बोक्यर बाद बरवा, रक्ता, पोलमा राष्ट्र बरहा सीया मैगा आदिका भिरादि दूप शर्दीका चनवास बरना। भया गवद गौराना। शौराना । शुक्ष -िरखना-

शिक्ष याम बरना । पदनी उड़ी -न्यी॰ टीने, साइमी सादिशे वालहर मीने की एक बागरन ।

यहवाना-छ॰ कि॰ किगीड़ी पाने या परानेने माण धरमर १

षद्वीयार्ग-पुरु दही वर पहानेनामा ।

चहाई-शी॰ प्रतेश काम, परना विभेषा की, दिशा पहालेका काम, पाठना पहालेका नवे। अध्यवमहा धेगा पहालेके बड़ने दिया अध्येताचा पन, पहालेकी प्रश्न । पहाना-स॰ कि॰ शिक्षा देशा, शिक्षित बनाया, बेर्न रिवर या बार नियाला शोश मैल आरिडो किंगे। धार या धान्य गुनुषद्या प्रकारण बहुना निस्ताना ।

षदिना = प= घड प्रशासी *गएग*ी । बहैयारे – बु० पहले वा परानेबाना र

प्रम-पुर (रांक) है है था देव मारिट बरास प्रस् द्वाला feminites un gern ferendt unt offere बरावर द्वीता. बाप्र जुलाम वाली। बाबी लगापी दूरी गीवा ufrers ustiff naget, atfeffen bert afti मारी खेमा या तंत्रू । वि॰ वारीसे होनेवाला (जैसे-नीबती नुपार) । -दार-पु॰ खेमेका चौकीदारः प्रहरी, दार-पाल 1

नौमि-[सं०] प्रणाम करता हूँ। नीमी-सी० दे० 'नवमी'। नौ(ंगी । →सो० दे० 'नारंगी'।

नील≠∽वि० दे० 'नवल'। गीलां-पु॰ दे॰ 'नेवला'।

नौहासी-वि॰ महायम ।

मौबाय-पु॰ दे॰ 'नवाव'। मीवायी-स्वी० दे० 'नवायी' ।

मोशेरवॉ-पु॰ [फा॰] ईसाकी छठी सदीका फारसका एक

वति न्यायप्रिय प्रतापी बादशाह ।

नीसादर-पु॰ एक प्रकारका क्षार जी प्रायः जानवरीके मङमूत्रसे तैयार किया जाता है।

न्यंक-पु॰ [सं॰] रथका एक विद्येष अंग ।

स्यंकु-पु० [सं०] बारहसिंगा; एक मुनि । वि० बहुत चलनेवाला, अति ग्रामेशील । -भुरह-पु० छोनापाठा । -मारिणी-सी॰ एक वैदिक छंद ।

म्यंग-पु० [सं०] चिह्न; भेद, प्रकार !

न्यंचन-पु॰ [सं०] भोड़ा छिपनेका रथाना विवर।

म्यंचनी-स्रो० [सं०] गोद।

श्यंचित-वि० [सं०] नीचे फेंका हुआ, अधःक्षिप्तः शुकावा

न्यंत्रिका-छो० [मं०] नीचे शुकायो अंत्रछी। र्वन-पु॰ [मं॰] अंतिम भाग; सामीप्य ।

न्यक्(न्यंच्)-वि॰ [भं०] निम्न । -करंण,-कार-पु॰ नीया दिखानाः तिरस्कार ।

न्यस-पु॰ [मं॰] भैसाः परशुरामः एक तरहकी यास ।

दि॰ निकृष्ट, अधम; समग्र ।

म्या (- 'न्यम्'का समासगत रूप। - भाव-पु० घटकर शोना, अपर्त्यः तिरस्कार । -भावित-वि॰ तिर-स्तृत । -रोध-पु० वह, बरगदा दामीका पेडा बाडा र्थशरेका परिमाण जी ऊपर हाथ किये दुव मनुष्यके बराबर होता है, पुरसा; विष्णुः शिवः राजः उत्रसेनका एक पुत्र (५०): म्माकानी: मोहनीनिष । -०परिमंडल-५० एक इत्ता धरेता भादमा । -०परिमंडला-सी० महिन रेडनी, भारी निर्नवी तथा पननी कमरवाली की: संदर भी ।-रोधिका,-रोधी-सीव विषयमी ।

स्यक्षीपादितज-पु० [सं०] बरगद, पीपल जादि २३ वृधी-

द्दा एक गुल (आव नेव) ।

स्प्रमाधिक-वि० [मं•] महाँ या जिसमें बहुकी मनुहता हो। न्यस्तु-पु॰ [गं॰] तिस; एक शुऱ्र रोग जिसमें काने या सरद रगढे छोटे बहे दाम देहपर पह आने हैं (सुमून)। निव बहुत अवहा ।

^{इय्य-पु•} [मं•] ध्य, नादा ।

म्य दें द- दि । [२] दस अरद । पु ० दस अरदशी संस्था । म्पर्वेद्-पु० [छ०] एस स्ट्र ।

स्पान-पु॰ [ग़ं॰] विभीके पास जमा करनाः स्पनाः Bett. Die ben !

न्यस्त-वि॰ [सं॰] रखा या टाटा हुआ; निहित; छोड़ा हुआ, त्यक्त । -दंड-वि॰ सजा न देनेवाला । -देह-वि॰ मरा हुआ, मृत । -शस्त्र-वि॰ जिसने इथियार शक दिये हों: निहत्था, अरक्षित् ।

न्यस्य-वि॰[सं॰] रखने, निहित करने तथा छोड़ने योग्य । म्यद्ध-पु॰ [मुं॰] अमाका संध्याकार ।

न्यांकव-पु॰ [सं॰] यारहसिंगेका चमहा। न्याइ, न्याडी -पु॰ दे॰ 'न्याय'।

न्याक्य -पु॰ [सं॰] भूना हुआ चावल, परही । न्याति*-स्तं ॰ जाति ।

न्याद-प्र• [सं•] आहार; साना ।

व्याना। - वि० अनवानः अशेषः कम उधका। च्याय-पु॰ [मं॰] छचित-अनुचितका विवेक, मीनिसंगत बात, इंसाफ: बिबाद या मामहेमें दोनीं पक्षींकी सचार-इद्यार्ट आदिके अनुसार किया गया निबदारा, फैसला विष्याः साह्ययाः ६ व्यास्तिक दर्शनोंभेंसे एक जिसके प्रवर्तक

गौतम ऋषि माने जाते हैं: प्रतिग्रा, हेत, उदाहरण आदि ६ अंगोंबाल। बावय जिससे पदार्थानुमान संपन्न होता है (स्वा॰); होक, द्यान्त्री विशिष्ट प्रसंगर्ने प्रयुक्त होनेवाडा कहावसकी तरहका रष्टांस-शक्य (जैमे-देहसीदीपन्याय)। वि० ठीक, उनितः जैसा, समान । —कर्ता(में) —वि०,

पुण्नवाय करनेवाला, पीसला यारनेवाला, विचारपति, निर्णायक । -एध-पु॰ न्यायका मार्ग, न्यायोनिस मार्ग; मीमांसादर्शन । -पर-वि॰ न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, स्वायी । -परता-स्त्री व स्यायपर या स्यायी

होनेका भाव । - परायण-वि० दे० 'न्यायपर' ।- परा-यणता-सी॰ दे॰ 'न्यायपरता'। - निय-वि॰ तिसे न्याय त्रिय हो, न्यायशील । -वर्सी(तिन्)-वि० न्यायाः

नुसार भागरण करनेवाला । -धादी (दिन्)-वि० वधित वात कहनेवाला। - जुल-पु॰ शास्त्रविदित भाषार । -शील-वि॰ दे॰ 'स्यायपर'। -संगत-वि॰ स्यायो-

चित । -सभा-सी॰ अदालत, युचहरी, न्यायालय । -सारिणी-खी॰ युक्तिमंगत गार्थ । न्यायतः(तम्)-भ०[मं०] न्यायके अनुमार, न्यायको रहिः

में ररावे दुर, न्यायमे ।

न्यायाधीश-पु॰ [मं॰] विवाद या मागरेका निरदास करनेवाला अधिकारी, स्वायकर्ता, विचारपति, 'अन्न' । स्यायालय-पु॰ [मं॰] यह स्थान जहाँ स्यायाधीश दिवाद या मामदेका निर्वय करना है, अशहर, कपहरी। न्यायी(विन)-वि॰ [मे॰] न्यायहे अनुमार आपरण

बरनेशला, न्यायके पथपर चलनेवाला ।

ज्यायीचित्र-वि० [मं0] जो न्यादमः ठीर या विश्व हो। ओ न्दायके विगद्ध न हो।

स्यायय-वि॰ [मं॰] स्यायमंगप, स्याधीन्तिया । ज्यार--वि॰ रे॰ 'ज्यारा' । पु॰ नियो पान, निवार । ज्यारा-विश् जो दूर हो, दूरस्य, दूरवा; भी अलग हो: दूसरे प्रशास्त्रा, विज्ञ, दीमरा भर भूत, विविध, अपूर्व । न्यारिया-पु॰ वह ओ मुनारीसी दृश्याओं रास्य आदिहा।

क्षेत्रान्धंती निरासना है। स्यार्-भ० भ्रण्यः दूर् ।

प्रिक-पि० [स०] पैरक यननेवाना । प्रिमा-गी० द्वारा प्रकार साहार दिन्मा, भागा साताः पेराही, भागः, पराठे भारत्या स्था द्वारा करतीः भाद्व भारिता हुरुहा के पहा स्था स्था साहारा जाद । पु० रामकृतेको एक जाति। -ब्रार-पु० वह स्थान द्विता दिता भेषुकः संपत्ति सा स्वसायमें साहा हो। विशेषात

पर्गी(सिन्)-पु॰ [मं॰] पैदल सिपादी, प्यादा; पैदल चलने या यापा बरनेवाला ।

पत्र्-पु० [म०] एक प्रकारका दशकः शास चंदमः प्रनेष नामका पेर ।

प्राथक-पुरु देव 'पश्य' ।

प्रधर-पुर पृथ्वीका कहा स्तर, यह इस्य विगमे पृथ्वीका कड़ा रगर बना दोता है: इसका कोई इकड़ा: मीलकी संस्था स्नित परनेके लिए सहकते किनारे गाहा जाने-बाला प्रथरका उकता: भीमा या दर निर्भारित करनेके लिए गाहा आसेवाला परधरका दवडा, देला: ओका: हीहा जयाहर आदिः पाधरवेसे स्वभाव या ग्रुणने तुक्त बस्तः बह बन्दु जी कठीरता, बारीयन आदिमें पत्थरके समान हो। कुछ नहीं, साथ (ला॰) । -यत्ना-स्रो॰ यद मकारका पुराने दंगरी बंदक, तोडेदार बंदक । -चटा-प॰ एक प्रकारकी गाया बत्धर चारनेवाना एक प्रकारका भीपः एक तरहरी महली; बंजुल आपमी । वि० को अपना धामस्थाम धोदनर किनी और जगद न गया हो। एय-गोडमः । --चर--प्रश्यक्तरहरूता पीधा । --धार्मी-प्रश भाषी-पानीः धोर दुमिशः । -कुछ-पु॰ छरीना।-फोब्-पु॰ तुवदुद निविधाः एक तरहका छोटा पीथा को अधिक-तर बरमात्रम दोवारीकी फोडकर निकलता है ।-फोदा-पुरु पाधर सीवनेका साम करनेवाला, संगगराथा ।-वाज्ञ-Ro di fertige weit file utar amier nieft-धाळा। तिमे पणार्या देखा बद्यानेका अभ्याम हो। 🗝 बाली-भी वाधर जनावर गारनेकी किया, देलबाडी । म् • -का करेता, हिन्द या हृदय-अनि वर्धेर दृश्य, बन्त क्षत्रा दिल, ऐसा १८व जिसमें कृत्या, दवा आदि बीमन भागीहा उदय सही । -का छावा-लोधेओ एपार्व । - बते छाती-धोर वट या नियम परिविधीये भी भ टिगनेवाला चिना, सववृत दिस १ - वर्ष स्वक्रीय-स भिरानेपाणी मरत्। गदा भनी वहनेपाला वशा । - की लॉक समाना-अगोधर या इन्छाप्य कर्ष दश्ना। ⊶चटाना-पाप(पा रगप्रश पार एव बरना । −समेशे द्वाध निकलना-मारी करने पुरवारा मिलना । जनले हाय आना या द्वाम-ऐमें इंटरमें पर भागा जिल्ले शीध शरहास म विम सदे, भारी दियतिये पर जाना । -नियोदना-स्थि हैं। स्वतिमें कुछ प्राप्त करना या बगुन बद्दशा जिस्से जमका मिन्सा अनंतर हो। दिसीने हैं बार दिने बाम दिनामना की वसके अध्यापन दिनक बीर ब्रामेदव कार्य बद्धा । न्यक्रेनिय काव, काला वहे (गानी) 1 -पर नुष अमरा-मन्दोनी वात होगा। -पर्गाञ्चना या पिप्रक्षेत्रा∼निष्टुर दश्यवे दशका शंवार क्षेत्रस । - मारी भी 🔳 माना-एल्युका कारमा

रहते बुद भी न मस्ताः तस्ते न मस्ताः न्या सीव मारना या फ्रिंक मारना न्यद्रन करी बात करणा, रो-द्रक जशब देना ।

पत्मली ~पुण्देव 'पृथर' ।

पर्या-कां शिन् दियो पुरुषे मनद वर सी रिग्हे साम जसका न्याद हुमा हो, परियोत्ता को, मादी, योद। -यात-पुत्र विसादिता शर्मते क्याया और रिगो सीहे संवेध न रामोका सत्र । न्यास्ता-क्षण दमीहे रुटेश्व यर सा समसा। -संयाज,-संयाजन-पुत्र एव हैरिह

पत्नवाट—पु॰ [मं॰] पर्णागृह, कंतःपुर । पत्न्वाना॰—स॰ कि॰ दे॰ 'पनियाना' । पत्नारा॰—पु॰ दें॰ 'पनियाना' । पत्नारा॰—पु॰ दें॰ 'पनियाना' ।

पत्योरा! -पु॰ कच्युके पर्योक्षी रिवर्वेछ । पश्च-पु (मं) प्रशा विद्वी। कागवा वह सागव विभार कोई बाम दिसी था राजी हो। बह कागत या पामको परी जिसपर दिसी व्यवहारके निषयमें बीर प्रामाणिक लेग निया या गुरवाया गवा हो। (शामपत्र, शामपत्र)। विधी क्षवद्वार का घटनाके विषयता प्रमाणकृष केन्द्र (पहा, दश्याः बेज); रामाचारवत्र, शाहबाद; पुरतव, कारी साहिबा करें पन्ना, बर्दे: दिसी भारती पड़ी या परारा पंता देवपर्धाः माणका परकी सरह निकला हुमा दिस्मा। मान, मार्न, सवारीः चंदन,यागूरी कादि गंपप्रस्थीते स्रोतः प्रच मारिः पर बनावे जानेवारे विदीन प्रकारके निष्ठ या बूटे आहि नुदार, तलवार आदिया यन्। प्रता, बशार ! -बार "पृष समाचार्यपता संपादक वा लेराक ।-कारी-सी [रिन] पथुकारका 'वेशा । -काष्ट्रसा-स्वी चंदर प्रकाशने वा पत्ता रावस्तेने होनेवाना शब्द । -ग्रन्ध-पुर पटेंदे रसार रहतेना दस मन । -ग्रस-पु निक्ता पृत्र । —धना-भी॰ सानमा नामक पीपा 1-त-पु॰ तेत्रराना -इक्तिर-पु॰ नदीका प्रवाह I-संद्रस्ती-सी॰यदित्रता नतर-पु॰ दुश्यदिर ।-दारक-पु॰ भारा।-माविका॰ की विनेता सम्, वर्षेद्रा देशा । -वर्ष्य-पुर सीम्परी देशी !-पाल-पु॰ वदी स्ती ! -पाली-श्री : बलवा वसा देवी । -पाइपा-सी॰ लजादा पत्र विकेशी आमृत्य । -पिशासिका-मी॰ पविषे ही बनी छाती। -पुर-पु॰ पश्चेश पात्र, दोना। -पुश-भौ॰ एर प्रकारकी मान जिलकी लंबारे १६ कार और श्रीकार और वैनारं दोनी ४८ वान दोगी है।-मुख-दुः रस गुटमी पूक्त-प्रथाः, बामूनी भेंतः शत्यारबी मामूनी भीते।-दुस्प -पु: श्रीवपत्रं : -पुरव्या-स्टी: वाले गुनगी: गुलाी ! -धंध-पु॰ पूर्णीमें दिया मातेयाना विशेष प्रदेशका श्रीपार ४ —बास्य-पुण श्रीष्ठा १—भ्रीप्य-पुण श्रीरसः वण्यति वेशव व्यक्ति क्यांत्र, श्रम्य आदिश्त वस्ते प्राप्तेवारी विशेष प्रदार्के जिल्ल, बूरे कार्रि । -श्रीत,-श्रीनि-शेष दे॰ 'दबभव' । -माल-पुर देव । -दीवन-पुर वदः यरा, दिशालय ।-इचाना,-देन्त',-शेन्स-ग्री प्रवर्धना -हम-पुरु दही । -हाता-मीर वह मना किसी के क्ष के द्वा संग्रह्म । -त्रस्ती-मिन्

कुमानंपर चलने या प्राण गॅबानेका छक्षण प्रकट होना। -लगाना-पक्षीको सी गतिसे युक्त होना; उद्यान भरना। पॅसही-सी० फूलका यह परेके समान अवयव विसके संकोचसे वह मुकुलित रहता है और फेलाबसे खिल्वा

है, फूलकी पत्ती, पुष्पदल ।

के हूं न्या रेज उन्हें विससे हवा की वाती है; ने देव 'रसुरा'! -कुळी-पु० पंसा सीवनेवाला नीकर। -योश-पु० पंसेका सोल। सु० -करना-पंसा हुला-कर किसी ओर हवाला शोका या वासुका संचार करना।

पंराज-पु॰ परावज । पेरियप॰-सी॰ भूसीके महीन डुकदेः पेंखडी । पंराी-पु॰ परी: पेंखी: साल्के फलके कपरकी छोटी हलकी परी । की॰ छोटा पंरा ।

पेंसुदा, पेंसुरा -पु॰ दे॰ 'वस्तुरा' ।

पेंसुकी, पेंसुकी #-सी० देव 'पेंसड़ी'

पैसेस् -पु॰ दे॰ 'पलेस् '।

पंगश-वि॰ लॅगझा छुंठिता वेकामा अवरुद्धाः स्तन्थ । पंगतः पंगति-स्रो० पंक्ति, बतारः भोजमें एक छाथ खाने-

बाहोंकी पौन; समाज; भोज । पैगला-दि० दे० 'पंग' ।

पंगा-वि० दे० 'पंग' ।

पशु—वि० (मिं०) जो पाँचते वेकाम होनेसे चरु-फिर न एक्ता हो; जो चल न सके; गतिहोन । पु॰ श्रनि सहः हैना। आदमी । –गति-स्त्री० सर्विक होदेंका यक होर । "माह-पु॰ मगर; मकर राशि । –गीठ-पु॰ लेगडेको

विठावर वहीं से जानेकी गाधी, पर्व । पेंगुक-वि० [सं०] दे० 'दंतु' ।

पंगुना-सी० [सं०] दे० 'चंगुस्व'।

पेराय-पुर (संग) हमारी । —हारिणी—सी॰ शिमही मामक शुर । पेराष-पुर (संग) देश १ पुर हमारायनः वर्षेय जैमा ससेर

बुड़ा। बुड़ा।

पुँगुला-वि० दे० 'वंगु'।

पैय-वि॰ [सं॰] विरमृत । —सम्य-पु॰ पूजनके कामका गिलाग्रके आकारका यक चीड़े मुँहका पात्र (दे॰ 'वव(न्)' में भा)। —सुरा,—सबग्र—वि॰ चीड़े या विरमृत सुर्य-बाला। पु॰ सिह। (दे॰ 'वंच (जू)' से भी)।

पेंच(त)-[40 [संग] पांच पांच हिला। -कम्या
-की० करहवान हीपरी, तुंनी, सारा और मंदीरती-चें
विकास में मारा करवा रहां। -क्रमास-पु० वह
उतिहास निकास संस्तार चांच क्याको(कमेरी)में किया
नया है।। दिन याच कमोरीमें तैयार किया हुआ। -कपर्य
-चु० महाभारतमें वांच एक देशा। -कप्रय
-चु० महाभारतमें वांच एक देशा। -क्यों(त)-पु०
पेंच महारति क्षेन-करियन, कर्यक्ष्मा, अर्थक्ष्मा, महारा-केर तसमा (याण): देशकी निकास के क्यों का क्याक्सान।
-क्यां-क्ष्मा, वर्षेचान, तस्स्तान क्यांन क्यांन व्यांच, व्यापार,
-क्यांन -पु० वह भीता दिशके दर्व और स्वांच क्यांन,
-क्यांन -पु० वह भीता दिशके दर्व और हिंद मण्डेर
(रेड हें। दिमा सीरा वहन मोतिक साना करता है)।

वानेवाळा पाँच ग्रास अन्न । —कपाय,—पु॰ जामुन, सेमर, वेर, मौलमिरी और बरियारा-इन पाँच पृश्वीकी छालका रस ! --काम-पु॰ पाँच प्रकारके कामदेव । जिनके नाम है-काम, मन्त्रथ, बंदर्ष, अक्रएवन और भीनकेतु । -कारण-पु॰ कायोत्पत्तिके पाँच कारण-काल, स्वमाव, नियति, परुष और वर्म (जै०)। -कृत्य-प० रिश्वरके सृष्टि, ध्वंस, संहार, तिरीभाव और अनुग्रहकरण-ये पाँच बर्म । -कृष्ण-पु॰ एक कीड़ा । -कीण-पु॰ पाँच मुजाओंबाला क्षेत्र (ज्या॰) । वि॰ पाँच कोनीवाला । --कोल-पु॰ पीपर, पिपरामूल, चन्य, चित्रक्रमूल औ**र** सीठ-इन पाँच ओवधियोंका समाहार ।-कोरा,-कोप-प॰ वेदांतके अनुसार आत्माके आवरणरूप पाँच कीश जी इस प्रकार है-अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विशानमय कोश और आनंदमय कोश। -कोस-प्र॰ [हि॰] काशीपरी । -कोसी-ली॰ [हि॰] काशीकी परिक्रमा । -क्षीद्शी-सी॰ पाँच कोसका फासला: माधी-पुरी जो पाँच दोसमें बसी धुई है। -क्लेश-पु० अविधा अस्मिता, राग, होए और अभिनिवेश-ये पाँच करेछ (बो०)। -क्षारमण-पु॰ पाँच प्रसारके हदण-काच, र्भधव, सामुद्र, विट् और सीवर्चल (आ० वे०) 1-खटध⊶ पु॰ पीच राटियोंका समाहार। -राट्वी-सी० दे॰ 'वंश्यादव' । -गंग-पु॰ गंगा, यमुना, सरस्त्री, विर्णा और ध्वषापा-इन पाँच नदियोंका समाहार। -गंगा-(घाट)-पु॰ [दि॰] काछीका एक प्रसिद्ध स्थान जी कई नदियोका संगमस्थान माना जाता है। -राजयोग-प्र० विदारीगंथा, बहुती, पृश्चिपशी, निदिस्पिका और भक्षभांटका योग (आ० वे०) । - तस-वि० (यह राशि) को अपनेमें धाँच बार गुणित हो, नैसे ५/क (६१० ग०)। –श्च∽पु॰ पाँच गायों या थेलोंका समाहार । –ग्रस्य– पु॰ गायके दूध, दधी, थी, योबर और मूप्रको एकमें मिलाइर तैयार दिया जानेवाला एक पदार्थ जी बहुन पवित्र माना जाना है। -गु-वि॰ पाँच गारी देकर रारीटा हथा । −गण-प्र॰ श•द, रपर्श, रूप, रस और र्थ-ये वॉच गुव । वि॰ वेंचगुना । ~गुणी-सी० पृथ्ती। -ग्रह-पु॰ कर्यका यात्रीत दर्शन । -ग्रिहिस्या-सी० रप्रका । -बौड-पु॰ उधरी भारतके पीच प्रकारके बादान-सारस्वत, बान्यपुण्य, गीड, मैथिल भीर औत्पाल (अवल) !-द्रासी-सी॰ प्रेंच गावेशा समृद्र !-धात-य० संगीतका यक ताल । -चक्र-पुरु पाँच सक्री-राज-ध्यः, महासक, देवस्यः, श्रीरत्यः और दश्या-ना ममादार (नं०)। -शञ्ज(म्)-पु० ५८। -चामर-पु० दक् छेर । -चीर-पु० दक् पुढ़, मंजुधी । -पूद-वि॰ पीच क्षत्रविद्यों का केशगुरुटीशना। - नहा-भी॰ एड अपास । -शोल-पु॰ हिमानद-शेपीहा एड बाव ।-जन-पु॰ अल्माः यनुष्यः निराद एदिन आहाः आदि चार बर्गः देव, मनुष्य, नाग, गंधर्व और दिन्छ-धे दाँव प्रशर्द प्राची। एक अगुर जिले कृषाने प्रश्न स और हिस्सी हड़ीने दनका पोपमन्य नामक द्वारा बना बाद यस ममाप्ति अयदका एक पुत्र !- मनी-मी वर्षे ध्यत्तियोदा समुदाय ।- अनीन-पुर समिनेता, विद्वस्य ।

अधितक्र€ । परपादान, परपोदन-५० [मं०] पाधेय, संबस्त । पम्पाद्गी(शिन्)-वि॰ [सं॰] पथ्य गानेवाला ।

पत्र-पव [गुंव] पैरः हम, बदमः पैरका निद्यान, अस्थ-निद्धा निद्धा निद्यानः स्थानः आधारः योग्यता या अप्यी अनुसार नियम स्थान, ओहदा, दर्जा: विषय: पात्र: किमी १८८ या पपका चरण या चीवा नामः विवक्तिः प्रत्यय युक्त शुन्दः मंत्रमे प्रयुक्तः शन्दोको अलग-भलग बरना, प्रथमन शब्दोंका प्रशहरण (वै०): बाउय कादिका कोई अंद्राः विमातका कोए वा स्तानाः किरणः प्रदेशः दान-मी ये बस्तुएँ-जुता, छाता, कपना, अंगुठी, कमंदलु, भासन, बरतन और भीज्य बस्त (प् ·); वस्त: व्यवसाय: श्राण, रहा: बहाना: बर्गमूल (ग०); [हिं0] रेश-प्रार्थना-संबंधी गीनः मस्तिपद्ध गीतः, भवन । -क्रीवः,-क्रमुल-पुरु कमलवर्ग परण । -कार,-क्रम्-पुरु धर-पाटका रचिता (वै०) १ - ऋस-प० चलना, हम भरता: बेद-मंत्रोंके पराक्षी एक दूसरेले अलग करनेका क्रम । -ग-पु॰ पैरल दिपादी । -गति-सी॰ चलमेकी धन ।-धर-पु० प्यादा । ⊶चारण−पु० पेटल चलनो । −चारीः (रिन्)-वि॰ पैरम चलनेवाला। -चिद्व-पु॰ पैरका निशान । – पछेद-पु॰ किसी बास्य या यात्रयांशके पदोंको एक इमरेसे अलग करनाः विसी बारवके संदित श्रीर सतासगत परीको विभन्त करना । -च्यत-वि॰ जी अपने पर या दर्जेंसे हटा दिया गया हो, जिसका पर ग्रीन हिया गया <u>हो । -श्युति</u>~की॰ पदश्युत होनेश्री किया था दशा ! -ज-वि॰ पैर्से जलका पु॰ दैर्सी दैगलियोः शहर - ज्यान-प्र० प्रश्रम संबद्ध परी शीर यावयीका समूद्र ।—सस्त-पुरु सस्तवा ।—स्याग-पुरु अवना पर या भीरदा छोड़ देता, अपने वह, ओहदेसे सन्य हो जाना । - न्याण-पुरु जुता, राष्ट्राक्र आदि । - न्यान = -पु॰ दे॰ 'प्रताम' । -स्वस-स्के॰ ज्ञा । -वृक्तिस-वि॰ पेरी नने कुपला हुआ। -हारिका-मी॰ दिवाई। -न्याम-पु॰ पेर शाना, दग भरना: पेरबी एक गुहा: पश्चिम्न गौररम्। दिनी एउनामै पत्नी या शब्दोक्की शुन-मानकर राजा। विभी इनलाई भंगांत पड़ी या शब्दीका निषेश । नर्षकान-पश्च-पु॰ दे॰ 'पत्कमन' ≔पश्चसिन म्पो॰ पर्रावधीनी कनार । - पस्तरी-मो॰ [हि॰] एक शाहका गाम ! -पाठ-पुरु भेडालीका वह सम विग्नी त्रनी प्रयुक्त सनी पर निमन्त करने मधने सून राष्ट्री अध्या-क्रमण हो। गर्प दी: बह अंच दिसमें बेदअंचीका देखा गर्प-दम (हवा गया हो (मंदिना पाटका उत्तरा) :-याम-पुर भेर रहाना, बन भरना ! -प्रण-पुर दिशो होस्सी पृति दरमा । -वय-पु॰ प्या, रग । -मीत्रन-पु॰ शास्त्रीका विश्लेषण, दार्थोदी विश्लित । **~**मेजिहा~ली॰ टिच्यो । -संदा-पु॰ पान्तुरि १ -सास्य-की> सेपन-विधा । -मस-पु॰ सत्तवाः ग्रहमः, भाषप (ला॰) १-सैग्री-क्टी॰ दिन्ति छद दा बचने यह दी काल या बर्धकी समावत्रकारी आवृत्ति द्विते कविक पर्वति एक पूनरे के सन्माप विवति, धनुष्या । -योजना-सी॰ क्षेत्री या प्रकारित क्षेत्रमा दर्श या झन्त्रोको पुत्र-पुत्रकर स्थाना । -शिय-मेर्ड

कीटा । -बाख-पु॰ एक तर्दका दील । -विश्ली-पु॰ दे॰ 'परपात' । -पितहा-विष्टेर-पु॰ है। 'परबदेद' ।-विराम-पु॰ पण्ये चरमके बाका (साद । -विष्टंभ-प्रव दग, करम रछना; नरणदिह श्रम्भः। -बेदी(दिन्)-वि०, पु॰ श्वन्दशास दा मापा विहानस द्याना :--बादन्-पुरु आहर, पेर्ट्य थमक । -संपात-पुर शंक्षितामें विभक्त पदीकी एकमें दिलाला स्वत्यवर्ग । -समय-पु० दे० 'वर्षाठ' । -श्य-वि+ पेरत पत्रहे-बाला; जो किमी बहे दर्जे या ओइट्रेयर हो। -हथ,म~ पुर पेरका निष्ट है पद्क-पु॰ पूजनके क्रिए बनायी हुई किमी देरताहै धरमधे प्रतिमृद्धिः बालक्षेत्री प्रद्रनाया जानेवामा 🖼 प्रद्रारक गदना जिमपर रिसी देशनासा चरण बना १६ना देश्योर्र बहुत अच्छा या कमालका काम करमेचर किमोदी व्यवार-रूपमें दिया जानेवाला श्रीने चौदी श्राहिता सिक्टे बैगा गोल वा अन्य बारास्का द्रकता क्रिसर प्रायः देनेनतेश माम अंदिन रहता है, तमनाः [एं] एक गोश्यर क काविः प्राः रथानः ओहदशः गलेका एक गहनाः १८५७सा शाता १ बद्धम−पु॰ बादामकी जानिया एक पेड़ विसका करु सामे और माला बनानेके काम भाषा दे। व देव 'दम' । चनाड -पु॰ प्रश्नकाष्ट f पदमाकर=-पु॰ दे॰ 'वयावर'। पद्माना-स• कि॰ पशनेमें प्रशुष्ट करना ! पद्या, पद्यी-सी॰ [मं०] मार्ग, शाताः यनन, शाबी, पद्धति। रवामा राम, संस्था आदिशे श्रीरमे दिभेदोधी जानेवाली भादर मा बीन्यतामूलक उपापि, शिवाव रस्या ऑइदा । यदोह-१० (मं•) पेग्या निशान, परनिष्ठ । यहांती-मा॰ शि॰) इंतपरी मामकी मना ! यहाँत-पुर [शंर] परवा अंतिम भागा विशो श्लीव मा ववके महत्तका भीतम माग । वर्तातर-प्र [बंक] दूमरा दम दा दरमा वद दमकी द्रि दूसरा दश दूसरा १५:ग । यशीन्य-विव [शंक] परचे अनमे निवन, अंतिम । वर्षातीय-पु॰ [छ॰] दे॰ 'दरस्य'। प्रशासीम-विक शिको गाँवीने मुचना दुधा, गाम म वदायाम-पुर् (गेर) वैरदा प्रदार । यदाजि-पुरु (र्मन) पेरम निराधी । धदान-पु॰ [११०] दे॰ 'परानि' । बद्दाति-५० [तंत्र] पेट्स धमनेदामाः ध्य दा, पेटस शिवादी। चेरण माधी । परानिक, परानीय-पुर (४) है। 'दशांत' ।

बदादि-पुत्र [मंत्र] शहके फालहा आहंबा प्रान्दश करण 87² L "दवारी(रिय)-पुर (एंड) वर हो दिनो ५एम ale altabate !

पदाली(तिन्)-पु [एंड] पेटल विवाह । विव (वर

हैं।मा) दिन्हों पूरण मिराबी हो। पूरण धन देशना ।

ब्युनिकान-सीन वेश्स हेना ।

-वर-प॰ बहोपवीत । -घरी-सी॰ पीपल, वेल, बड, **ए**ड और अशोक-इन पाँच वृक्षीका समाहार (आस-पास रुगे हुए इन पाँच बृक्षोंके नीचे तप करना प्रशस्त माना गया है); दंदकारण्यमें वह स्थान जक्षाँ बनवासी रामने सीता और रुध्मणके साथ निवास किया था। - वर्ग-पु॰ पाँच पदार्थीका समृहः पाँच मकारके ग्राप्तचरोका समृहः पाँच ग्रानिदियाँ; शरीरको संप्रटित करनेवाल पाँच तस्त्र; पंच महायत । -वर्ण-पु॰ अकार, उकार, मकार, नाद श्रीर विद्वेस संयक्त ऑकार । - बल्कल-पु॰ वड, पीपल, षाकर, गुलर और वेत-इन पाँच बृक्षोंकी छाल । -घाण -पु॰ दे॰ 'पंचवाण' । -घातीय-पु॰ राजस्यके अत-गैत एक प्रकारका होम । -विंदाति-वि० पश्चीस। -**पृष्ठ-प्र॰** पाँच देववृक्ष-संदार, पारिजात, संतान, वरूप-वृष्ठ और हरिचंदम । —हाटम्-पु० पच मगलवायः र्चप्रविन आदि पाँच प्रकारको ध्वनियाः स्थ, वासिकः माध्य, कीप और कवियोंका प्रदोग (ब्यार)। — शस्प−पु• धान, मूँग, तिल, उड़द और जी~ये घाँन प्रकारके अन्न । – झाख-पु॰ पाँच द्यान्याओंका समाहारः धारः हाथी । [स्त्री० 'पंचशासी' ।] -शास्त्रा-प० [हि०] दे॰ 'पंत्रधाना' । –द्वाददीय–पु० एक वरा । –दिश्य-30 सांस्य दर्शनके पक प्रसिद्ध आचार्यः सिंह । -शीर्ष -पु॰ पक प्रकारका सर्प । -ह्युह्न-पु॰ एक जहरीका बीहा। - शुरुण-पु॰ अत्यम्क्षपणी, मालवंड, सुरम, सकेद प्रान और कांधीर-ये पाँच प्रकारके सरन। -क्षील-प पद पर्वत (प०)। -संधि-स्ना॰ पाँच प्रकारकी धीवयाँ-रवरसंधि, व्यंजनसंधि, विसर्गसंधि, स्वादिमंधि भीर महनिमाद (ब्या॰)। -सराक-पु॰ कामदेव। -सिदांती-सा॰ महा, म्यं, नोम आदि हारा उक्त व्दीनियके चेंच सिद्धान्तीका समादार । -सुगंधक-प॰ वपूर, चीतलभानी, लीग, सुपारी और जायकल-ये पाँच सुगप परार्थ (आ० वे०) । -मूना-मी० गृहरथके परम निम्नलिसिन पाँच बरतुएँ किनके द्वारा छोटे-छोटे की होंकी दिसा की जाया बरती दे-चृत्हा, चकी या क्षित्रबहाः साम , ओलली और पानीका यहा । -स्कंध-पु॰ रूप, येदना, संदा, संस्कार तथा विद्यान-ये यांच बानुए (बी०)। -स्नेह-पु॰ धा, तेल, यरवी, माजा भीर गोम-ये पाँच विकते पदार्थ । -श्रीत (स्)-प्र॰ हर तीर्थः एक प्रकारका योग । -हजारी-पु॰ [दि॰] दे॰ 'पंत्रहसारी'।

पंच-९० वॉच या अधिक मनुष्योंका समृहः सर्वनापारणः न्दाय बरनेवाली समाः पंचायतका सदग्यः मध्यन्थः न्तिका सदस्य । -नामा-पुरु वह कानत निमक्ते दारा बारी और प्रतिवादी किमी स्वक्ति या व्यक्तिमन्द्रकी अपने मामे का प्रेमला करनेका अधिकार देते हैं। वह कायन बिगपर देवीने अपनी संजवीज लिसी हो। शु॰ -की **इरादं-**सरायनाको पुकार । -ब्ही भीवन-सर्वसाधारण-की हरा, श्रीर अनुबद्ध । -यहमेश्वर-पंचीका बहुना रैपरोप बारपंदे ग्रमान दे । —बदनाः—सानना—समदे-का चैताला करनेके लिए सन्दर्भ बनाना ।

पॅच-'दोब'का समापने स्पट्ट रूप । -तोस्थिक-पुरु |

एक तरहका बदिया कपड़ा ! -तोलिया-पु॰ पाँच तोले-का बाटः एक तरहका बढिया कपडा । -पीरिया-प० पॉच पीरोंका पुजक । -मेल-वि॰ निसमें पॉच प्रकारकी वस्तुओंका मेल हो; जिसमें कई तरहकी चीजें मिली हो। -रंगः-रंगा-वि॰ पाँच रंगीवालाः वर्हे रंगीवालाः रंग-विरंगा । -छड़ा-वि॰ पाँच लड़ीका (हार) । -छड़ी-स्त्री० पाँच सहीवासी माला । नस्त्री-स्त्री० दे० 'पँच-ङ्का^र । −वाँसा−पु० गर्भरक्षाके निमित्त प्रथम गर्भाधान-के पाँचने महीने किया जानेनाला एक कृत्य । -धान् -पु॰ राजपूर्वीकी एक उपनाति ।

पंचक−दि० [सं०] पाँच अंगोंबालाः पाँच-संबंधीः घाँचमं खरीदा हुआ। पाँच प्रतिशत स्याज हेनेवाला । पु॰ पाँचका समूह (समासमें); धनिष्ठारी रेवतीतववे पाँच नक्षत्र; इन मक्षत्रीका बीगकाल जिसमें प्रेतदाह, दक्षिणकी यात्रा भादि निषिद्ध हैं। पचरतः सद्धन्नेत्र ।

पंचतय-वि॰ [गं०] वॅथगुना ।

पंचता-स्त्री॰,-पंचश्व-पु॰ [सं॰] द्यरीरके उपादानरूप पाँच महामृतीका अपने-अपने रूपको प्राप्त हो जाना, गृस्तु। पंचनी-सी॰ [सं॰] बिसात (शत(अ)।

पंचम -वि० [मं०] पाँचवाँ; दक्ष, चतुर; सुंदर, कांतिमान् । पुरु संगीतके मत्रकका पाँचवाँ स्वर जो कीयलकी कुनका स्वर माना जाता दै: एक राग; मैधुन; वर्गमा पाँचना वर्ण। पंचमी-सी० सि०ी चंद्रमाकी पाँचवी कलाः पक्षकी पाँचवी तिथि; द्रीपदी; अपादान कारक; निम्नात ।

पंचांग-वि॰ [सं०] पाँच अयोवाला । पु० पाँचका समा-दार; पाँच अंग; विसी वृक्ष या पीपेके ये पांच अंग-जह, छाल, पत्ता, फूल और फल; प्रदना, मिर, हाथ सथा छातीको प्रयोगे स्थाकर और ऑस्वोको देवताके वरणीकी ओर करके किया जानेवाला एक प्रकारका प्रमाम (नं०); तांत्रिक उपामनाके ये पाँच अंग-प्रवन, स्तीप, पद्धति, च्छल और सहस्रवामः यप, दोम, सर्पण, अभिपेक और वित्रक्षेत्रम−इन पाँच अंगोसे युक्तपुरक्षरण, मदापुरक्षरण (तं०); तिथि, बार, योग, नशत्र और धरण-दम पीच अवीरी तुक्त तिथिएम, एमा (उपी०); राजनीति है ये पीच अंग-सहाय, साधन, उपाय, देशकाल भेर और विषय-प्रनीकारः पंचभद्र पीताः वसुवा । -शुद्धि-भी । तिथि, बार, सहात्र, योग और बरण इन परेनरी निरीपना। वंद्यांशिक-वि॰ [सं॰] पॉप अंगीवाहा ।

वंद्यांगल-पि॰ [मं॰] जो नापमें पीच अगुरुका हो; दिसादे पाँच वैगलियाँ द्वी । पु॰ रेंब्र, सेवपत्ताः प्रेरेते आशास्त्री

gal 1 पंचांगुसि-बि॰ (मं०) जिले पाँच अंगुलियाँ हो । र्वचौगुन्ती-सी० [मं०] तकाहा सामक शुर । वंबांतरीय-४० मिन्। योच प्रकारके पाटक-माटा, दिना, અદેવ ઔર સહસા વાસ ઔર ચાવરોંચે હિરાદ (શ્રેષ્ટ) ક पंचांश-पु॰ (मं०) प्रविदा भाग । वंबाहर्सा =न्यो॰ दे॰ 'वंबायत' ।

वंचाइनीर-4ि॰ दे॰ 'दंबायारी'।

थंबाधर-विक (एक) यांच कप्रतिस्था । प्रकार हारेश शिक्त पंच अध्योपता संच, 'अं समा शिकास' ।

कि उनसे ममलका पूल बन जाता है। -धंधु-पु॰ सुदैः तगर। -योज-पु॰ कमलगङ्गा। -अयः,-अ-पु॰ मदा। - भास-५० विजाः शिव (१)। -मालिमी-री॰ हर्या। –भारति(दिम्)–पु॰ एक राहास। -सुग्री-मी॰ इब । -सद्धा-सी॰ हाध्यी उन्हिबंदी पर गुत्रा (तं०)। -योनि-प० महा। -शान-प० एक प्रसिद्ध रहा, लाल, गानिक। -रेग्या-खी॰ बन्नडडे आकारकी हरतरेखाओ अति धनवान होनेका लक्षण मानी जाती है। -लांडन-प्र॰ महाह स्या हरेत राजा। दि॰ निएके दाधमें प्रधारता हो। -व्हांतमा-म्बं । एक्षाः सरस्याः हारा देशे । अस्तोश्वय-विश्वसम्ब रीसे शेथीवाला : - वर्णा, - वर्णक-पु॰ पुष्टरमूल । -पासा-मी० ए४मी । -बीज-मु०दे० 'प्रानीम' । -पश्चिम-४० महाना । ~वश्च-४० परमहार । -वेश-प्र विवाधरीका एक राजा ! -व्याकोश-प्र॰ संपृद्धित कामनके आकारकी संघ । अध्यक्त-प्र• प्राचीन कालपा एक प्रदारको भोवाँगी विद्यो रीनिकोकी वर्ष दंगमें शहा करते थे कि कमलप्रध्यका साकार कन आता था। -धी-प्रकाशिक्षियाः वयः वीवसाय।-धंड-प॰ हे॰ 'पदरांट'। -गंबाश-वि॰ समक शेसा। -मंभय-५० मदा । -सद्या(धन्),-समासम-५० महा ! -सूत्र-पु॰ नमन पुप्तेको साला । -शनुवा-भी श्रेषाः दर्गा । —हरस-दि», प्र=दे 'प्राब्द' । -हस्सा-स्थे॰ सहमी i -हास-ए॰ दिल्हा प्राह-प्र• [र्श•] प्रान्द्रः कागीकी शृंदप्रके दागा प्रा **१८**की शबती। हर भामक औषशि प्रवासन । चग्रही(किन)-प्र• [सं•] हाथेर सुजंद्ध र प्रमोत्रा-पुर [तेर] दमनदश । प्रमा-मी॰ [मंग] सरमी: राजा पुरत्पकी पुत्री: मजसा देशी; सर्वम: मुग्नमका पूक्तः गेदा । प्रमाकर-पु॰ [गे॰] प्रमाशमा बह बता लाहाब दिल्ही कमा शाया क्षेत्र की; बमल-शाद्या दिशके वह मनिक 4141 पद्माक्ष-पुर [तंत्र] क्षत्रणाहाः द्वेत विश्वा । वित्र क्रियोटे भेष समन्दे शमान हो t dElit-d. 5. desia, 1 प्रशाद-पुरु शिक्षी सहस्य ह

पटा जानेगाला एक मंत्रः एक साग । −सामि-प्रव पद्माधीश∽पु॰ (ઇ०) रिच्य । . भिष्य । -नाल-मी॰ समस्यी इंटी । -निधि-सी॰ पदालय-१० (सं०) बदा । कुरेरकी एक निधि । -निमीलन-पु॰ कमलका संपूर्वित पद्मालया-स्तै॰ मि॰ी स्ट्राी: श्रीत । दोना । -मेश-वि॰ विस्ति नेत्र कमनके समान हो । पर्धावती-सी॰ [सं॰] मनसा देशा एक प्रारीन रही। पुर एक भावी भुद्धः एक पश्ची। -पश्च-पर्ण-पर एक सुर्रागनाः परनाका एक पुराना नामः कार्रीवर्त्रः पुष्तरम्छः वमलका पत्ताः पुरस्कः वमलको वैसदी। एक प्रसाना नामा भोडमधादै बनगार विदर्भी एर -पाणि-थि॰ बिसके दाधने कमलका फल हो। प॰ रावस्मारी जी विशीरके राजा रक्षतेमधी स्वाही थी। महाः विष्युः एव सुद्धः सूर्व । -पुरय-पुरु क्रवेरका वेहः पश्चामय-५० विंगी एक प्रकारका दोएलन क्रिपेट एक्टो मारकर समकर बैठते हैं। महााः दिए। सूर्व । यत पशी। -पुराण-पुर अठारह पुराणीमेंसे यक। - प्रभ-पु॰ एस शाबी सद (बी॰); बर्नमान करसर्पिशीके पद्माहा-भीव [ब्रंब] वेदाः सीत । छडे अदंव (बै॰)। −श्रिया−सी॰ जस्साह मुनिकी पश्चिमी-सी॰ (६०) कमण्या पीपाः कमण्या मन्त्र पसी मनमा देवी । - श्रेध-पुरु पक्ष प्रकारका चित्रकान्य कमनीका समझ कमलसे गल बनागवा हथिनी। बार या विश्रासंकार जिसमें अधर इस वंगमे निरो जाते हैं प्रदारकी शियोगेंगे प्रथम हेगीडी भी (हो हरा छ)। निर्देश की यक प्रशिक्ष राजी । - फंटक-पु॰ एक प्रकारको हार (कुछ) शेव । -कृति-पुर पूर्व । -ग्रंड-पुर क्यपीका समहा यह रवान यही कमलेकी प्रचरता हो। - मार्ग -प्रत्ये (-चंड्र-प्रदेश प्राप्तः । पद्मी(चिन्)-[४० (गुं०) समहारे गुफ, कारशाना दागदार । प्र० किया हाथी । पद्मेशय-पर [बर्ग विष्णु । पञ्चोत्रम-५० (सं०) एक समाचि एक श्रीदा एक हर । वद्योत्तर-१० [सं०] समुमः २६ वद । पचीत्रय∽पु॰ (मं॰) मदा । वचोक्तवा-सी॰ [मंग] मनमा देवी । **पद्य**≕नि० [र्ग०] पर-संबंधी। परीसामाः सम्दर्शकीः श्रातिम । एक बार धरणीबाला गाँद, धरोबळ वदना, गर्म का तल्याः शब्दगणा सहा वह सीवह थी पुरानुग न समा हो। प्रशंमा, साति । वरामय-दि॰ (शं॰) पचरूप, धरीबड । पचा-सी॰ (सं॰) पगददी। स्वयक्ते किनारेकी पेरक धनते -की परशे: शर्रश । पद्मागमक-दि० [सं=] दे० 'वयमय'। पञ्च-पुरु [मृंत] साम, गाँव । पष्ट-पुरु [धुरु] भूत्रोहः। सहसा १४ । यदा(हन)-पु॰ [मे॰] मार्ग । यस्तार-४० दि॰ प्रश्ता, धाना । व्यवस्थानस॰ कि॰ स्पार्दे साथ रिया बाटा। बार्रः पूर्वत बेटामाः स्वादित करना । वचरावली-स्थान वधारतेको जिया । प्यास्ता-४० दि० प्रापंत दश्या ध्रथा काता । मन क्षि प्रसारत । यस-प्रण वृक्त प्रत्यम भी मानवासक शेटा बनारेडे निव जानिवासक तथा ग्राप्ताध्य शंदाशीमें श्रीशा मणा है (त्रेथे-वेदार्यन मारि) । पुरु या, प्रश्टिश मार्वे यह भागीहिने बोर्ड बका एगा फिली, किन बीर 'दांब'डी श्रमान्त्रप्र विश्व कवे) ३ -बारा -पूर होते, वे प्रश्ते प्रपर क्षाती के अभिकास कारमी र-कावस-पुर करीर ने करी िल्ली सर्गदरी प्रशास भीता शरीपाणा केना स्थाप —द्वाल−पु० अदिपृष्टिकरित् सकल र ≔पुर्यालको ० रई

Bitt nerm fanle gig at fert 25% eine gicht fet

पंजर-पु॰ [सं॰] इट्टियोंका दाँचा, ठठरी, बंकाल; पसली; पित्रहा; शरीर; कलियुग; गायका एक संस्कार । - झुक-प॰ पिजरेमें बंद किया हुआ होता, पालत तोता । पंजरक-पुरु (संरु) पित्रहा ।

पॅजरना*-अ० क्रि॰ दे॰ 'पजरना'।

पंजरारीट-पु॰ [सं॰] मटली पकदनेका एक तरहका बाल या झावा ।

पँजरी-छो० अरथीः † पमली । पंजा-पु॰ [फा॰] पाँच सजातीय वस्तुओंडा समादारः गादीः पाँची उत्तिखाँके सहित इथेली या पैरका अवला भागः भपगुली मुद्री जिसमें अंगुठा और उँगलियों इस .रिथविमें हों कि विसी बस्तकी पकड़ा या बकोटा जा सके। उँगिटियोंके एहित इधेलीका अर्थमंपुट; जुतेका वद माग जी पंजेकी दके रहता है; पीठ गुजलानेका पंत्रेकी आकृतिका बना पर आलाः पंजा लडानेकी किया या प्रतियोगिताः पाँच मृटियोंबाला साहाका पत्ता; आदमीके पत्रेके आकारका दिन भादिका वह दुवड़ा जिसे लंबे बॉस आदिमें समाकर शंदेके रूपमें ताजियेके साथ हे गहते हैं।-सोब् बंटक-पु॰ कश्तीका एक पेंच । मु॰ -केश्लाः-मोद्दला-पंत्रेती लक्षर्रमें प्रशिद्धीको दशना । -फेलानाः-यदाना-हैने या अधिकारमें करनेकी चेष्टा करना । -मारना-रापट्टा मारता ।-लढाना,-लेमा-बमस्त या बरुपरीक्षा-के लिए उंगलियोंको फैसाकर जोर एगामा । - से जाना-पंत्रेशी प्रतियोगितामें हरा देना। -(जे)में-कार्यो, भिषकारमे ।-(जी)पर चलना-शतराना ।

पंजाय-पु॰ (फा॰) उत्तरी मारतका एक प्रांत । पंजाबी-वि० (फा०) पंजाबकाः पंजाब-संबधी । पु० पंजाब मीनका निवासी । [त्यी : 'पंजाबिन' ।] त्यी : पंजाबकी

भाषाः पंजारा-पु॰ सून वातनेवालाः धुनिया ।

पंताह-वि॰ [फा॰] पयास ।-साला-वि॰ पवास वर्षेका ।

पंजाहम-वि॰ [फा॰] पचासवाँ ।

पंजि, पंजी-सी० [सं०] पूनी; बदी, रजिस्टर; पंचांग । -कार,-कारक-पु॰ लेसक, बद्दा लियानेवाला, सुर्वे: पैयोग बनानेवाला ।-यत्-विव रजिरहीशुदा, रविस्टर्ट । पंजिका-सा॰ [मं०] देही टीका किसमें प्रत्येक श्रष्टका भर्य समझाया गया हो, बिहाद टीका; धंगांग, विधियत्र; भागम्यय लिसनेसी बद्दी; रतिरटर; यगग्री बद्दी जिसमें बीबोडे को क्षिमे जाते है । -कार,-कारक-पु॰ रेसक, वदी दिगानेवाला, हु ई: सायस्य ।

पंत्रीरी-भी॰ धनिया, औठ आदिका भीनी मिला इमा पूर्व भीर पीने भूना भाग जिल्हा प्रदीग प्रायः रीरेपचे तिए वरते हैं (वड़ा बड़ा केवल धनिया, कीनी भीर शोटने पंत्रीरी रीवार की जानी है, उनमें आदेश

कीय नहीं रहता)।

पंत्रम-रि॰ (५:१०) दॉवरॉ । पॅजेश-पुरु वरतन मादि शाननेका वेशा बारनेवाना । पंद-पु [मं] नपुंतर, दिवहा । विकास रहिन: निष्क्रण । वेंदरा, वेंद्रस्त -पुरु देश 'देहवा' । पंडल १ - दि० पीला । पु० दिश शरीह ।

पँडवा-पु॰ भंसका बद्या ।

पंडा-पु॰ तीर्थ, मंदिर या घारपर धर्मकृत्य करानेवाला ब्राह्मणः सौधेका पुत्रारी, घाटिया, शंगापुत्रः रहोई बनानेका काम करनेवाला मादाण, रसोरवा । [सी॰पंटाइन'।] सी॰ [सं॰] सत्-अस्वका विवेक करनेवाठी शक्किः निधयारिमका षद्धिः शानः विद्या ।

पुँढाइन-म्बी॰ पाँदेवी सी: पाँदे जातिकी सी। पंडापूर्य-पु॰ [सं॰] वह अध्य की अपना फल न दे सके,

फलरहित अरष्ट (मी०)। पंढाल-पु॰ किसी संस्थाके अधिवेदान आदिके हिए बना

हुआ बहा मंद्रप ।

पंडित-पु॰ [सुं॰] शासके तात्पर्यको जाननेवासा विहानः वह जिसमें सन्तः असन्तरा विवेश करनेकी शक्ति हो। शास्त्रश विद्वान् ; ब्राह्मण (स्रो०); संरकृतका विद्वान् ; एक गंधद्रव्य, सिहकः। दि॰ विद्रामः क्रश्चलः। —सातीय-वि॰ क्रस् चतुर । – मंहल – पु॰, – सभा – सी० विद्वानींकी मंहली। -मानिक,-भानी(तिन्)-वि॰ दे॰ 'पंटितम्मन्य'। -शाज-पु॰ बहुन वहा विद्वान् ; भंत्कृतके प्रसिद्धः विद्वान् जगन्नाथकी उपाधि। -बादी(दिन्)-वि॰ की पहिन द्योनेका द्याँग परे ।

पंडितक-बि॰ [सं॰] विदान् : चतुर । पु॰ विदान् व्यक्ति। पंडितरमन्य-बि॰ सि॰] जो अपनेशी बहुत बड़ा बिहान समझे ।

पंडिताइन । – सी० दे० 'पंडितानी'।

पंडिताई-गी॰ पंडित दोनेका मान या गुण, बिद्रसा, षांटिख ।

पंदिसाळ - वि॰ पंडितांके र्ययका, पंटित जैमा । पंडितानी-स्था॰ पंडितकी की: ब्राह्मकी।

वंडितिमा(मन्)-मी॰ (सं०) पांदिस्य, पहिलाई, विद्या। पंद्रक-पु॰ सन्भरकी आतिका एक इसके बत्पई रंगका पद्मी ।

पंद्रुर=-पु॰ जलसर्थ ।

पंद्रोही -पु॰ शारदान, पताला । पंडु, पंडुक-पु॰ भि॰) पंगु मनुष्यः (इतहा ।.

पॅर्तीजना-स॰ ति॰ म्हें भोरता।

र्वेसीजी-स्वा॰ वर्षे भूननेका भीबार, भूनदी । र्परवारी • नगी • पंक्ति, बनार् ।

पंच-पु॰ मार्ग, रास्ताः रीतिः धर्म, सप्तदायः पश्य, रोगीशा उपरासके बादका इसका भीजन । मुक नगहनाव-रास्ता परहना । -दिग्वाना-राग्या विग्रहानाः विशा देना । -देखना:-निहारना,-सेना-गट शेहना, प्रतिश बरना !-पर था में पाँच देना-मार्ग प्रदम करना !-पर लाना-लगाना-समार्गपर पनाना।(किमोके)-लयना-अनुबरम बरनाः घरेगान बरना ।

पंथक~दि॰ [मं•] मार्गने तरस्त्र । पंचकी -- प॰ वार्चा, समाहित् ।

षंधान•-पु• शाराः, मार्ग । वंधिक०-पुरु एदिह ।

चंबी-देश क्रीही, यात्री विमी महशा मान्नेहासा र र्ष १–५० (पा॰) शिरा, समेदता गुनाई ।

सपदा जो संधिरतर अस्तरके काम आता है। पनीभा! -पु॰ पानके परेकी पदीक्षी। पनौदी-मी॰ पान रहानेको पिटारी, बॉम्रका पानदान । परा-दि॰ [मे॰] पिरा हुआ, गीचे राशका हुआ; गया दुआ, गत । पु॰ नीचेनी और बाना, अधोगमन: रेंगला । -ग-प॰ दे॰ क्रममें। पसर्हे-दि॰ पंग्रे हे रंगका। पद्मा-पु॰ [मं॰] साँप (वा रेंगहर चलना है); सीसाः परमकाठः + पन्ना ।-केमर-पु॰ नागरेसर्।-नाशन-पु० गरह ।-पति-पु० दोपनाग । पद्मताहि, पद्मगादान-प्र॰ [ग्रं॰] गरह । पद्मगिनि=-धी० दे० 'पद्मगी'। पद्मगी-सी॰ [मं॰] मर्पिगी, मॉथिन; एक ब्री । पद्मदा, पद्मधी-सी॰ [१/०] जुना । पसा-पु॰ हरे रंगका वक प्रसिद्ध रस, जमुर्द्ध प्रसन्द आदिये दी पृष्ठ, वर्धः जुतेका यानः मेक्ने कानका वह कीहा दिरसा सद्दांसे कम काटने हैं। जाम आदिका पना । पद्धी-ली॰ रींगे बारिका इटका पत्तर जिसके उदशीकी इसरी बीभोपर मंदरताके किए निपकाते हैं। यह कागब या नमहा तिसपर सोने-चौरीका पानी चहाया गया हो: एक भीज्य बरहा है बास्टकी एक आप सेरकी तील। -माप्त-प्र॰ पन्नी बनानेका पेशा बरनेवाला ।-साली-सी॰ पधीमानका काम, पत्रीसातका देशा ह पश्ची-पु० [फा०] पटानीकी एक जाति । पपदा – पु॰ सदमी भारिका सुरा हिल्हा; रोडोदा हिल्हा । पपडिया, पपरिवा-दि० जिसमें पपती हो, वपतीदार ! -करवा-पु० सपेद करवा । पपविचाना-स॰ कि॰ किमी भीतपर वपकी बहुता: इन्तर धरा जाना कि करर पपड़ी यह आय, बहुन अधिह गुरा जाना । पपदी-सी॰ होत परहा किमा बरगुबी बह कशी परव भी वमदे बद्दा भविद स्टा जानेमें शिरहरूर अलगनी हो गयी हो, गुरुहर ^हही दुई कपरी परना शाबका स्(हा पश्रक्ते क्षम जगायी हुई मिठाई। बृहादी मृतकर निरद्ये हुई छान । पप्रशिक्षा-नि॰ यपरीशमाः जिस्मी दक्षी हो । पपर्मातं - सी० वरीमा १ पपशी-मा दे 'पारी' एक प्रेम जिल्हा जर दशके स्टाम माणा है। एपि-ए॰ [मेर्च] चेंद्रमा । वि० दीनेवाला ह मिवहारे-पुर देर 'पदेश' व पत्री-पुरु [अंत्र] सूर्वः भद्रमा ह पपीता-५० एक प्रनदार दूछ, यांड मेशा। पर्पातिक-मोक देव 'रिकेश्विय' । पर्योद्धरा । – पु ० दे० 'पर्यद्धः' । पपीड़ा-प॰ इतके कारे (एट) रह प्रशिद्ध पारी की कार्य श्रीर पापमने मीटे शेष्ट बीला बहता है। बाल्ड (बड धा महीं 'ये दर्श की दर मगाया करता है और वहा काला है कि केनब क्यान ही देंकी प्याप हलता है। वितासका है ९४० हास ९रेस ।

पपु-वि॰ [मं॰] रहर, पालन बरनेशना। भी॰ पाद। पर्यया -पुरु मीडी; अमीरेची अस्में सभी हुई गुरु संसे विमन्द्रर बनादी आनेवानी एक प्रकारको गीति, बाहेश र षषोडनां -मी॰ एक पीपा लिएडे परे पार पारेडे कि वाँधे जाने हैं। पपोटा –पु॰ दङ्ह । पपोरना॰-म॰ कि॰ बाहोंसे एँडटर उनदी पुरता देशमा (बलाबिमानका ग्यन)-'ईस मार्व मद गई हुन शरी परोरत गोर'-मर । पपोलना-भ॰ कि॰ दंगडीनहा हुँ६ सुमहाना । पबहुँ-सी॰ मैनानी जातिको पर निहिया। पचना॰-स॰ कि॰ पाना। प्यारना •-- म॰ कि॰ है॰ 'वंबारता'। पवि, परिय>-पु० दे० 'पवि'। पच्यय - प् परंत, प्रातः प्रार । परिसक-मी॰ [अ॰] सन्या, जनसपारम, सर्वापारम। वि॰ सार्वजनिक, भाग । -प्रासिक्युटर-पु॰ शारवारी बहाल। -वहर्स-पु॰ गहर, पुण भारि सोहोस्तेचे ची व बनानेका सरकारी काम, सामोरात । - शिपार्ट-मेंट-प्र॰ तामीशवका सरहमा, गार्ववनिक निर्माप-विमाग । थमरा-सी॰ (शं॰) यह राषद्भ्य, शहरी । षसामा=-भ• क्रि॰ टीग द्वारता। पमार-१० राजपूर्वाना यह भेगा शहर्र । परमान-प्र॰ एक प्रकारका वहे दानेका और समा देहें। पदा-'परामंदा समासगर इत । -बंदा-भी शीर - विदारी । -पयोष्मी-म्दो॰ १६ मरी । -पान-४० दूध देता । -वृह-पु+ जनाशव, शीम । -वेर्मी-भी। दर्भारेनी सामग्र श्व । पय(स्)-पु॰ [तं॰] पूरा तथा शुक्त क्षेत्रं अव, आहारा कोत्र, शक्ति । - मुक्त-पुर देव 'वर्गर' ! - पि: -निधि -- पु॰ द्योपि, दरेनियि । -हारी-वि॰ [वि॰] हेनम दश पीरह रहनेवाळा । पपनार्र –पु॰ दे॰ 'पैरा'। वयप्रय-प्र• (मृंग) प्रमाहद, होत ह प्यस्य-वि० [ग्०] हरसाथमा दुन्धा दूपमा जनहाँ पु॰ क्ष्पद्य विदाय-वही, सहा आहि। विशेष I ययस्या-और [लेंग] हशा बुरिया। शीरक्योगी वर्तर ययस्थार-दि॰ (र्शः) इत दा असी युद्ध । पुः वदा । थ्यस्यानी-मी० (१'०) बद्धी । पपश्वान्(पन्)-रि॰ (ग॰) पालीरे पुन्तः पानीराणाः दुवले सुरू । यचन्द्रिक्तं-व्हा (मंद्र) महा दूव देन्ताही गाप देही राष्ट्रा बहरी। बुबर्गली। दबरियारी। भीर्रदी र प्रमासी(विम्)-(१० (११०) दूप का अनते युव । प्याश-विक राम । युक देव प्यापा र यदान ~५० जस्तव, श्वस, र्थामध्ये १ यकाम-पुरु बि.भो पैराय, गीरा । थवारक-पुरु देव 'क्टाक' । सुव असाहसानदेव विदार

हुआ, औटा हुआ; रवास्थ्यवर्डक (पक्का पानी); जिसमें साहित मोने चौदीके तार रूगे हों, जी नकरी न ही (पक्षा काम); निरिचन; जो प्रमाणरूप माना जाय, टक-साली; जिसमें देर-फेर न किया जा सफे; जो दर नरहसे ठीक हो; जिमपर लिखी हुई बात कानूनके विरुद्ध न हो; जो मनी छुट न सुके (पदा रंग); अच्छी तरह जांचा हुआ: भिक्षमें अच्छी तरह जोंचा हुआ हिसाब दर्ज दिया गया हो (पक्ष) वही) । -गाना-पु॰ द्याखीय संगीत ।

पश्चार*-सी० दे० 'पारार'। वि० पद्धा, हदः अखर, तीक्ष्यः प्रचंदः तेज-।

पक्तपीह-पे० सि०] पखीड़ा नामक बृक्ष ।

पक्तव्य - वि० [सं०] पक्ताने योग्यः पचाने योग्य । पक्ता (क्त) - वि॰ [सं०] पदाने या पवानेवाला। पु०

जठराग्निः रसोदया । पक्ति-स्था॰ [सं०] (भाजन) पकाना, पाचन; (फल आदि-षा) पद्मताः प्रसिद्धिः बद्याः पाचन-संस्थानः। 💛 नाद्यानः

वि॰ पाचन स्तराद करनेवाला । ~झूल-पु॰ अर्आर्णके कारण होनेवाला दर्द । 🗕 स्थान - पु० पारान-संस्थान, ये

भग जो पचानेकी किया करते हैं।

पक्तियम--वि० [सं०] पका हुआ; पकाया हुआ; पकानेसे माप्त (समक्) ।

पर-वि॰ [सं०] पता हुआ; पकाया हुआ; पका; अनुभवी; 🖏 पुष्टः सफेद (बाल); पूर्णतः विकमित । पुरु पकाया इया मोजन । - कृत-५० नीमः प्यानेवाला, पादवर्शा । -केश-वि० तिसके बाल पर गये हो। -इस-पु० मधः श्रराथ। -बारि-पु० वॉनी।

पद्यता - स्वी०, पद्यस्य - पु० [सं०] पक दोनेका भाव । पक्स-पु॰ [गं॰] एक सीच जाति, चांडाल ।

पकातिसार, पकासीसार-पु॰ [छ॰] अविछारके याँच मेदोमेन एक।

पदाधान-पु० [मं०] पाचन-मंग्धानका वह भाग बहाँ माहार पवता है, आमाशय, जहर ।

पदाख-पु० [मं०] पदाया हुआ अग्नः पहाया हुई मोज्य वन्तुः पदावानः ।

पक्राशय-पु॰ [गं॰] दे॰ 'पक्राधान' ।

पस-पु॰ [मं०] किमा बस्तुका दायी वा यथी भागः भेगाः मदान भादिका भागेकी भीर यदा हुआ दायों या नायों भागः पादवे, मगनः द्वाची या घोडेवा दाहिला या व यां पार्यः और, गरपः विमी विषयका छोई अंगः विमी रिषयके हो पहलुभीभेंसे कोई एक विस्कृत स्वटन या महन दिया मान, विचारणीय विषयकी कोई कोडि; किमी धरतु-के पति किसीकी अनुकृतना या समर्थनका विधनित बादी या प्रति । होते मंदंबंधे अनुकृषत की विवति। बादः सामके दो भागोंसेन एकः यद बरन जिलम साध्यती विवति संदिग्ध हो (त्या॰); ममूह (देवल समासमें-बेदायम); बर्गविरीय, दहतिहोषा अनुवादीः सहायका अनुवादियो वा गहा-दर्भेश दना स्थि। विषय दे संवयमें विभिन्न मन स्राने-बारीया विशिष्ट वर्ग या दला बादियों था अतिवादियोंका दरा पा, परः पाणमें समा हुआ परः शरीरका अर्द्धशागः दीक्ष भंत्या। मेनाः सताः शृहदेवा श्रेवः शरीरः संक्षः |

इकः पत्नीः हाथका कहा । -गम-वि० उडनेवालो। -अहण-पु॰ दो पश्चीमेंसे किसी एकको अंगीकार बरना। -- घात-पु॰ दे॰ 'पश्चाघात' । -चर्-पु॰ चंद्रमा; यूथरो वहका हुआ हाथी; सेवक । —स्छिद् -पु॰ रंद्र । -ज,-जनमा(नमन्)-पु॰ चंद्रमा । -ह्रय-पु॰ विवादमे दोनी प्याः महीना । *—द्वार* —पु० चोर् दरवाजा । *—धर* —पु० वह जो किसीका पक्ष है; पश्ची; चंद्रमा; यूथभ्रष्ट हाथी। - धर्म-प्रश्यमें देवके दोनेका अनुमान ! - नादी-क्षी॰ पक्षीका मोश पर (ऐसा ही पर कलमके तीरपर इस्तेमाल विया जाता है) । -पात-पु॰ न्याय-अन्याय-का विचार स्थागकर किमीका पद्म ग्रहण करना, तरफ-दारी, अधिक चाहः पत्र या परका संचालन । -पासिता -की॰,-पातिरव~पु॰ पश्याती होनेका भाव, तरपः-दारी, पक्षत्रहण । -पासी(तिन)-वि० पद्यपात करने-बाला, तरफदार । -पालि-स्ती० चोर दरवाजा । -पुट -पु॰ पंख, दैना । -पोपण-वि॰ पूट बाहनेवाहा । -प्रशोत-पु॰ मृत्यमें हाथकी एक मुद्रा । -विद्रा-विद्र -प॰ वंद पशी । -भाग-प॰ हाथीका पादर्व । -मस्ति स्वी० वननी दूरी जितनी सूर्य एक परावारेंगं से फरता है। -मूल-पु॰ पंराकी जड़: परिवा। -रचना-सी॰ दलरंदी, शुट बनाना। -बध-पु० दे० 'पद्मापात'। —वाद-पु॰ एकतर्का वयान । —वाहन-पु॰ पशी । −सुंदर-पु॰ लोग । −हत्त-वि॰ जिसका एक पाइवं ककरेने रेकाम हो गया हो। -हर-पु॰ पशी; विश्वास-षाती ! **–होस**–पु॰ एवः पश शक्षतेवाला यद्य । पश्च(स्)-पु॰ [मं॰] पंगः रथादिका पाद्याः दरवाणेका

पहाः सेनाका पारमं अर्दभागः मामाद्यां नरीका किनाराः

पक्षक-पु॰ [मं॰] गिरुमी, पश्दार, शीर दरवामा; फाः मदाय ।

व्हाति-मोर्श्मेर्) रामग्री जन्म द्वाल प्रकी पहली तिथि। व्यक्षीत-पु॰ [गं॰] अमायग्याः पृणिमा ।

पक्षांतर-पु॰ [सं॰] दमरा पश ।

यक्षाधाल-१० [गं०] एक वानरीय जिसमें दारीरका बायाँ

या दाहना भाग ये हाम हो जाना है, एक्या । प्रधानाम-पु॰ [मं॰] देखावाममे गुक्त तर्ह ।

पद्मालिका-म्बं! [40] काश्चित्रवरी एक मानुका । षश्सालु-पुरु [मं०] वक्षी ।

पक्षावसर-पु॰ (सं॰) दे॰ 'बर्धान' ।

वक्षाहार-पु॰ [मं॰] पश्चे देवल एक बार भोड़न काना । प क्षणी-स्वी॰ [मं॰] मादा पर्या; हो दिनोंके बीचकी रात्र, वर्षमान तथा आगामी दिनके बीचकी शक्त पुलिमा । वि० न्दी० पश्चत्रान्दी ।

वक्षिल-पु•[एं•] बासवावन सुनि (बन्द्रोने गीउम है स्याय-गुवार माध्य निया है।

पर्शा(दिन्त्र)-पु॰ [गं॰] निहिया बाह्य शिव । वि॰ पंग-बालाः पश्च शहय बरनेशालाः नरपदार । −(शि)€12− पुरु होरी निर्दिया । चयति चुरु मंतरित बरादुरा भारे । -पानीपशासिका-मी० परिवेक्षे पानी पेटिया होत वा पाप । −तुंगव−पु॰ जापु। −प्रदर,–शज,–

विभिन्न र भीत है -पड़-पुर देश - प्रमुक्त । -पाक -पुर दूसरेके उदेश्यक्षे अवना चंत्रवहुके टिए मोत्रन तैयार परना (रगु०) । -० निवस-नि० जी पंत्रवत्र म करे (गृ०) । -० रस-दि॰ जो स्वयं धंचयद करे दर दूसरेका पान्य शासर निवांद करे । -पार-पु॰ दूसरा सिनारा, दूगरा धीर । -पिंड-पु॰ दूमरेका अन्न, दूसरेका दिया दुमा भोतन । -विद्वाद-विश् वो दृशरेका कप्र सादर निवाह करे । पुर भूत्य, भीवर । -पीडक-विर दूसरोकी पीरा पट्टनानेवासा, टसरॉको सनानेवासा । -पीरकः-वि॰ दूसरी है दुःसमे दुःसी दोनेवाला । - पुरंबय-पु॰ विनेताः वीर । - पुरुष-पु॰ पनिने विन्त पुरुषः अवनदीः पुरशोत्तमा बिन्तु । -पुष्ट-वि० जिसका पासन-पोषण दशरेने भिया द्वा १५० कोयल १ -० महोत्त्रय-५० भाग । -पुष्टा-सी० बेदवा, रंदी; वंदाक ।-पूर्वा-सी० वह की जिसने पहले पनिको छोडकर दूसरा पनि कर िया हो। -प्रयीय-पुरु प्रयोजना पुत्र। -प्रेय्य-पुरु दास । - प्रेरपा-सी० दासी । - वय-दि० [दि०] दे० 'दरवरा'। ~चसताई॰-की॰ दरवशता। ~प्रहा(नू)-पु॰ निर्श्य और उपाधिरहिन मदा। - सथ-पु॰ दूसरा जम्म । -भाग-पु॰ दृत्तरेका अंश वा हिस्सा; अंतिय भागः गुणरा उल्लयं: समृद्धिः सुसंबद्: प्रसुरता: उरह्रदता । -भाग्योपजीयी(विन्)-वि॰ दृशरेको कमारै वा दृशरे-का भन्न साक्षर निर्वाह करनेवाला। -भाषा-छी॰ शंतरूनमे शिन्स भाषाः दूसरी मात्रा । -भूक-वि० दूसरे-के दारा भोगा हुमा । - अस्त्र-वि० शो (यह सी) विश्वका किसी दूसरेके माथ ममागम हो चुका हो। -भूत -- वि॰ जिमका पाछन दूसरेने किया हो । पु॰ कोलिमः ब परागन । -भृग्-पु॰ क्षीमा । -मत्त-पु॰ दूनरेका गतः विरोधीसा मनः अपनेसे जिन्न मत । -सद-पु॰ बहुन अभिक नद्या, गरात्वय । -अर्मञ्च-वि॰ दृश्रदेश मेर भागनेवाता । ~सायु~पु+ कीमा । ~युग-पु+ वश्वर-वर्शी पुग, बादका पुग । -इसण-पु॰ व्याही हुई सीवा जार वा बार । -छोक-प॰ १४में भारि होद वहां मृत्यु-के प्रधान प्राचीकी भारता जाती है । 🗝 ग्राम,🗝 ग्रासन -पु॰,-॰ प्राप्ति-म्ही॰,-॰ यान,-॰ वाय-पु॰ सृत्तु (भाररार्वर) । == यामी(सिन्)=ति+ युन् । (श्र= स्थेक बनमा "गृजुके पथाद महात प्राप होना । - स्थोक विशादना-मृत्युद्धे दथान् अच्छी गतिको प्राय न होता । -लंक मियारमा-मरमा !) -बडा,-बड्य-दि० थी हुमरेंदे बग्नमें हो, पराचीन । "बग्नमा,"बश्यमा-सी॰ परवश होनेदा भाष, पहायीमना ३ -बाद-पुर अक्षपाद: द मुरेकी (नेदार मान्यार, विरोधहम अधर र-बाईर(दिन)-प • यह भी निगति विराधने मुध बहै- मन्युधर देनेवाला, प्रतिशारी । -वेहस(म)-पु॰ पामलमाहा बामल्यातः रेर्ड १ - मत-तु॰ भुगानु १ - झाला-तु॰ [रि॰] पर-गाए। । -संगत-दि॰ दुर्मादा मान करनेवाला दुनहें। सकीरमा । नर्गत्र-पुर अग्या । नार्ग-पुर शस्त्रे बंदते जानेताला प्रायम (ध्याक) ६ -समर्थ-दिक कर्दि सार्वेशने कोडे समाय (धाः) ६ -साल-४५ (दिः) तिको सा सगने साथ । नद्यीनको० पासी थी i ~

स्य-पु॰ दुमरेहा पन, दुमरेदी संपत्ति। - इस्य-पु॰ दुनरेका धन हर वेना । -हित-पु॰ दुत्तरेका कृत्वाम । वि॰ इमरेका बस्थाय करनेराहा । पर-पु॰ (फा॰) पंस, हेना । -कर,-करा-पि॰ शिरो पर वा पंस कटे हों। सु॰ -कट जाना-भगत्तहो समा -काट देना-महाक बना देना। -ईप करना-करूप आदिके पंस काट देना १ - जमना-पंस समसाः ग्रासट स्मना । (जाते हम्)-जलना,-इरमा-माँ१ वा पारे-का साइस न दीना । -न मारना-का न गरना। -- निकलना,-व बाल निकलना-नवा पा निधननाः दीवियार होना !-याच हैना-देश कामा ! पर्ही - नो॰ मिट्टीका बढ़ा बज़ीरा। परकना - अव कि परनता किमे व्यवसे हो। वहसा । परकसनाव-भ० जि.० महाशित होनाः प्रकट होना । परकानमं –ए॰ वि॰ परधानम विश्वीको विसी माइका यमका रुपाना । परकार-पुर [कार] बृक्तरी परिधि बनानेसा गर अलग • दें० 'प्रकृष्त'। परकाल-पु॰ दे॰ 'वरकार' । परकाला-पु॰ सोती। देहली। [५।०] दुइसा शीधेरा द्वरहाः विनगारी।(भाषान्यः परमाना-गप्तन दानेराणा) परकास•-प• दे॰ 'प्रशास'। परकारनाः – मु॰ क्रि॰ प्रकाशित करनाः प्रका करना । श॰ कि॰ प्रदाशित होनाः । परकितिः परकीतिः परकीर्ताः - मी॰ दे॰ 'प्रकृति' । परकीय-वि+ [र्गण] द्रगरेदा । प्रकीया-सी॰ [शंब] नाविद्वारा एक भेर, वह नाविद्वा जी द्वार रूपने परपुरवने प्रेम करे। परकीरतिर-स्तार है र 'प्रकृति' । परकोटा-४० गः शाहिको रक्षादे तिय पारी मोर-दशकी गदी दीवारः पानी आदि रीहनेका शीप । परम्य-सी॰ ग्रुप दोषके निर्मादको दक्षि। दिनी बर्द्धभी देखनेटी किया, परीक्षा किने के गुणधीपका बना समाने को शक्ति। परम्बचा-पु॰ इक्शा, संद । सु॰ -(चे)प्रदाना-संद शह बद देना, धीळवी वहाना । परस्ता-म॰ कि॰ गुल्लीयहे निश्लीयके किए किली व्यक्ति या बर्तुरी धनी भौति देशाना मधी भारि देशारी शुष दीष यान केमा: दिसीकी शाद देशना । परग्यामा-स॰ ६८० १० 'परगाना'। परम्बवैदाः पर्रारदा-पुर ५१मनेशभा प्रशाह –को॰ प्रशरेश कामा प्रायनेकी वहात है परणात्रा-ग॰ कि॰ दिशीधे प्रामिद्दा बाव कारण स्ट्रेंचशना ह बहार-बंबुक श्रां, प्रदान हे प्राप्तः = दिन प्रदेश, स्तर् १ यहराहमान- नर्गंद्र- घटा होता । छ॰ दिन प्रस्त्र दानी वश्यास=-५= ३= 'द(दन्ध' ३ बरराना-पुरु (बारू) मह भूमम (अमहे ४५री नामे

भार हीते हैं । - दार-पुण प्राचीका अपश्चा है

पधिलामा ं −स० क्रि॰ दे॰ 'विष्लाना'। पच-'पाँच'का समासगत रूप । -कल्यान-पु॰ दे॰ 'पंच-यस्याप' । -कल्पानी । -विश्वर्तं, चाहर्याः लंपट । -सना-वि॰ पाँस संहोंनालः। -गुना-वि॰ जिसमें बोर्र राशि या माप पाँच बार ज्ञामिल हो, पाँच गुना। -ग्रह-पु॰ मंगल, युभ, गुरू, शुक्र तथा झनि-ये पाँच ग्रह । –सूरा–पु० एक बाजा । –तोरिया–पु० एक तरहका कपड़ा !-तोलिया-प॰ एक तरहका कपड़ा; पाँच तोडेका बाट ।-पहुन्य-पु॰ दे॰ 'पंचपञ्चव' । -मेस्ट -वि॰ जिसमें मई या पाँच प्रकारकी वस्तुएँ मिली हों। -रंग-पु॰ चीक पूरनेके कामकी अवीर-बुक्ता आदि पाँच बस्तुओंका समूह । दि० दे० 'पचरंगा'। -रंगा-वि० भीन श्रीवाला; पाँच श्रीमें रेंगा हुआ या पाँच रंगोंके एनीसे बुना हुआ (कपड़ा); जो कई रंगीका हो । -लड़ी-सी॰ पाँच हरियोशाहा माहा जैसा एक गहना । -छोना -वि॰ त्रिसमें पाँच प्रकारके नमक मिले हो । पु॰ ऐसा मिन्नम, पंचलवण । -धहुँ । -ह्या देव 'प्यवाई' । -ह्या हु ─ली॰ एक प्रकारकी देशी शराव ।

पचक-पु॰ [सं०] पहानेवाला, रसोहवा।

पचकना-अ० कि० दे० 'विचकना'।

पपकाना-स॰ क्रि॰ दे॰ 'विचकाना' । पपस्ता-स॰ क्रि॰ दे॰ 'विचकना' । वि॰ दे॰ 'वच'र्ने ।

पचरा। - पु० दे० 'वंचक'।

परमा-पुरु बहेरा, रांजार एक सरहका गीत जिसे आवः भीता देवी आदिदी रत्नुसिम गाता है। छावनीकी तरहका गीत निसम पाँच-बाँच चर्गोंक संट होने हैं।

पचन-पु॰ (सं॰) पदने या पदानेका कार्यः अधिः पदाने॰ पात्राः पापदर्गाः पदानेका साथन ।

प्यना-मी० [मंठ] पतानेजी किया। अ० कि० पताया बानाः इतम दोनाः रापनाः, अन्य बरतुमें मिल जानाः अपिक परिस्रमसे क्षीण होना । अ० पत्य सरमा-बी-

वोह मेहनत करना । पचनागार-पु॰ [सं॰] रसोईपर ।

पचनारिन-सी॰ [सु॰] जटराझि ।

पषनिशा-सी० [सं०] सदाही।

पचनी-सी० [सं०] (जंगली) विजीस नीव्।

पपनीय-वि॰ [मं॰] पहाने योग्य । पपनय-मी॰ बार-बार उत्तप्त किया हुआ 'पन' शब्दा 'पन पन' शब्द होने सा सुन्देनी जिल्लामा स्थान

'पर पर' शब्द होने या करनेकी किया या भावः कीच । पुरुष्ति ।

पंचरधा-दिव अपूरा पता हुआ (मोजन); जिसका पानी परंद न हुआ हो।

पपरपाना-भ॰ कि॰ विमी बस्तुका बहुत बीटा होना । पपरन-वि॰ पनामभीर सेंग । पु॰पनपनटी मेस्पा, ५५३ पषपना॰-म॰ कि॰ देश पियाना ।

पवर्त्तर-दि० सत्तरमे याँग अधिक । यु० मत्तरमे याँन अधिको मंत्रया, ७५ ।

पषद्दा-दि॰ र्यंप रन्ही-परनीवानाः याँव गुना । पषा-भी॰ (सं॰) पहने या परानेची जिला ।

पेषाना-ग॰ कि॰ परांगाः जटरान्निको किया दाश साथे

हुए धराषंको रस बादिका रूप ग्रहण करनेको श्वितिको पहुँचाना। एक बनाना। नष्ट र देना। नता न रहने देना। रास्त्र कर देना। कर कर देना। कर कर देना। कर कर होना। हमस् करना। पराधी नीवको १९ प्रकार करना। पराधी नीवको १९ प्रकार अपना छेना कि वह वास्त्रविक अधिकारीको पुनः भिल न सके। किसी थात या भागरेको १९ प्रकार देना देना कि हुसरे उसे जान न सके या उसका भैर सुल न सके। बहुत अधिक काम देकर वा कह पहुँचानर एरोर आदिको हीण बनाना। किसी वरहाको पूर्णत्या छैन कर छेना। किसी वरहाको अध्वेत अध्वेत अध्वेत वरहाको अध्वेत वरहाको वर

पचारना * -स॰ कि॰ रुरुकारना । पचार्चा -पु॰ पचनेका कार्य या भाव ।

पचास-वि॰ दसका पाँच गुजा, चालीससे दम अधिक। पुरु पचासकी मंहया, ५०।

पचात्मा पुरु पदास राजातीय बस्तुओंका समाहार; वि.सी-के जीवनके प्रथम घरास बगें। पदास वरोंका समाहार ! पचास्ती-वि॰ अस्सीसे गाँच अधिक ! पुरु परामीकी संख्या, ८५ !

मस्या, ८५ । पचि–पु० [मं०] अग्निः पक्तां।

पचित−दि॰ पचा हुआ; # जड़ा हुआ, रायित । पचीस−दि॰ पीससे पाँच अधिक । पु॰ पधीसकी

मंख्या, २५।

पचीसी-सी॰ पचीम मजातीय वरतुओंका समाहारः दिसीके जीवनके प्रारंभिक पचीस वर्षः पचीस सपौका समाहारः यक तरहकी वृतनीहाः इसकी विसान।

पच्कां -पु॰ पिनकारी। पचेलिस-वि॰ (सं॰) को अपने आप पक्र आय; जो सीम

प्र जाय । पु॰ अस्तिः मूर्व ।

वचेलुक-पु॰ [तं॰] रसोदया । वचोत्तर-वि॰ त्रिसमें क्यरमे चाँच और मिनावा गया हो, बाँच अधिक । -सी-वि॰ एक सी चाँच । प॰ एउ सी

वाय आपका —सा-१४० एक सा पापा पुरु एक सा वायको मंस्या, १०५। वायोका-९० वरवशकी ओरसे कम्यापशके प्रोहितको

पचीतरा-पु॰ बरवध्या औरसं बन्यायस्य पुराहितको दिया जानेवाना बक्त नेव भिगमें उसे दिनस्ये हपयोमेंने भी वीछे पॉन रुपये मिलते हैं ।

पचीनी-सी॰ आमाश्रय, मेरा।

पचीरक-पु॰ दे॰ 'वचीना'-पु॰ ।

वचीली -पु॰ गाँवहा मुस्स्वा । स्वा॰ एक पीषा । वचीवर-वि॰ पनहरा ।

पश्चद-पु॰ दे॰ 'वश्द' ।

प्रस्-पु॰ मेंस अपना स्वतिको यह यही या गुत्ती विभे स्वतीको बनी मीजोर्ने मंदिनी दत्तर एते हैं कि द्वीडेंस या देशने हैं। मु॰ -अब्दाना-माण राजना, स्वाद्य देश करना, रोहे अरदाना। -टॉक्शा-टेग्ग कार्य बतना विममें दिसीको मारी बट वहुँचे या उमे बहुव देशन होना में। -मारता-होंडे हुए दानमें साथ अपना बने दर मेंन्यों दिलाई देता।

वची-सी॰ एक बस्तुओं हुम्ही अन्तुभे हम प्रकार शीतकर ओहमा कि दोनोंकी शत्रुहें एक मेन्से आ बाई कीर है वहत्त्व और भीड़ अंदी आज पहें। एक रंग्हे दायहरा

बाली बरनुः भादः, भोटः वृषटः छोगोनी दृष्टिने .अपनेको बचानेकी निवति: विभाग या आह करनेके लिए बनावी जानेवाची दीवारः मतदः, मंदल (दनिवादा प्रदा); रंग-मेनपर स्यादा जानेवाला 'बह आह करनेका कपका जी शमद-शमदपर उठाया और विश्वाया जाता है। पमरेडी यह शिही जो केल आदिमें आवरहरू हाम देती है। अंगरभेश वह दिस्सा जो शानी है ऋषा हरना क्षेत्र जनानसामाः भेदा शहरवा विसोदार मेवेके कवरका शिटरा: गितार, हारमीनियम आदिमें स्वर निरुष्टनेस रणानः फारशीके बारह रागोदिने हर एकः नावका यान । -शास-पुरु वर्धान । -द्वर-विरु द्वीप प्रकट सरवे-मामाः भेद सीमनेवामा । ⇔प्रशी−सी० दीव प्रस्ट सरवाः भेद स्रोक्षमा । -दार-वि० परदा दरनेवाला, हिस्ते-याला । -दारी-स्थे० ऐर हिपानाः मेर हिपाना । -- नशीन-वि॰ भी परदेने रहे। -- वौद्य-वि॰ देव िपानेबाला । -पोद्यी-स्वी० देश विपाना । स० -वढाना या ग्रालना-रहस्यरी शत प्रस्ट करनाः भेरकी नाम पाहिर करना । -दालमा-दियानाः प्रस्ट होनेसे रीक्ता । (ऑमपर)-पदना-शिक्षाई न देना । (बद्धि-पर)-पहना-समग्र नाती रहना, अत रास्त होना । -फटनार-इप्रत-प्रावस व बवना-'मेवरवी पादा फरे त सगरथ शीरे'-बिनय० । -फ्राश करना-दीप मध्य बहना; भेद स्त्रोलना । -क्राहा होमा-दोष प्रकट होताः भेर गुलना । (विस्तिका)-स्तमा-सिमी नराई-मी पादिर न दीने देना:प्रतिष्ठाकी रहा करना (-रणना-भारतेशी दिमीयी दक्षिमे धनाना, मामने न होता। दुराव-हिपार रमता । (हिसीको)-स्तत्तता-परदेमें रदनेटा नियम होना । अहोना-परदा रसने वा परदेमें रहनेका नियम दोना। दराव-टियाव दोना । -(हे)के पछि-ियं जि । -परहे-गुप रामिने, क्षि जि । -में छेर होना-परदेक पाँछ व्यक्तियार होना । -में स्थाना-(रियोंकी सर्दे शामने न होने देनाः ग्रम श्वना । -में रहमा-वियोश धर्मे बाहर न निरूप्ताः विश्वेतः वस्ते सामने म दीना। दिया रहना, शुप्त रहना। घरके मीतर रबनाः पहर म निरुक्ताः (म्बं॰)। परदारश-भी= (का+) परवरिद्याः सदायनाः ठीटः दुवस्त Cent I परपात-पु (कार) दुश्यी, सवासः चित्रशे स्परेयाः विषया शारिकाः वेग । वि+ (समानवे) करवेशनाः ग्रेक्ड (बादपादाय, निननापरपाद) । परमादा-9 शहादा कव, प्रशिवासह ३ [की॰'दरशाही') परन्द्रस्य - पुत्र प्रदेश ह परशीस -- पुर देव 'मरीव'; मारी बीच । परपास्त-विव देव प्रयान' । पुरु देव विदेशन' मेंची। मादकः मादाः मुक्ति व परम-प्र मृत्य आहि अवाय केलीके बीचने बजावे भारेशांते बीशीदे पुढश्व कारा, रेडा बला र ककार देव, भारत रे -मुची-सी:-सूद-पुण सीरेसी र ब्राह्मा०-४० हिन हेन 'नाटा' ह चरवासा~पुर कामादः हिन्छ।

परनानी-भी (परनानाधी भी। 41. परनाम! -प॰ दे॰ 'वणाम' । परनाला-पु॰ ष(के गर्द भागी भीर गरीको सहस मार्गे, मानदान, भोरी: वह बड़ी मार्ग दिसते हैं। र्मदा व'नी बहता है। परनासी-सी॰ होडा परनासा पोरोही रोडवा बंदी ही प्रहोंकी अपेशा नीचा होता थे। हनके तेम होनेश कला मारा जाता है। परनिष-सी० भारत, देव । परनी-नौ॰ सँ ऐसी पन्नी । परनीत=-भी= प्रवृति, प्रशाम । परपंच 6-पुर देर 'प्रपंच'। परर्वचन्त्र-विश्ववंत्र एयतेवात्रा, बरीहा सर्वावेशात्रा प्रमादीः धर्व । परर्वशेश-रि॰ दे॰ 'पर्पवस' ! परपट-५० भी(स मैदान। परपटी-सो॰ ६० 'पांटी'। वरवराण-विव्यवदाः वर-पर् आराबदे गाव हुरनेगणा चरचराना - अ॰कि॰ विर्व गाहि सीसी मधुमं हे १४% जीम भारिका अल्लेन्स सगरा । धरप्रशास्त्र-१री० परवरानेसी किया या म न । परपाजा-पु॰ दे॰ 'परदाश' । परपठा-पि॰ पद्या, १२ । परपंद-श्रीव दुंबादी तीमरी सदम ! परयोता-पु॰ पीनेका प्रम, अशीव ! परपास, परकालित - दि॰ दे॰ 'मपुत्र' । परबंद-पु॰ नायसी एद ग्रा पार्वप्र-प्रदेश प्राप्।। परय-पु॰ दे॰ 'पूरे' । ब्हाँ । दिनी रमहा होता हु दशा परवत-पुरु देव 'पर्यत'। वरवता-पु॰ वहादी होता ह परवस-व वि० दे 'प्रवह' । ने पुर ॥॥ तरकाती परकास-पु॰ वणकार नियमा दुमा वह सनावरवह वार ओ बरण कह देता है। # दे॰ 'प्रशाम' ! बरबी-स्ते॰ परंदा दिना स्पेशारी १ वरशील-दि॰ दे॰ 'प्रयोग' ह वरबेस•-व॰ दे॰ 'हरेश' । वस्योधक-पुरु देश 'मरीप' । दरकोधनार-सर्वाद्य मन्त्र बरमा, प्रणामा। बाह्य वर्षोतः देनाः समागना नृशाना, सांध्वना देवा । प्रभाव-स्थे व सिमार १ वस्माहरू-५० है। 'प्रमार' ३ वृहसानु=-पु० दे० 'सहात' । प्रकार्ता-सी॰ देव प्रवादी । प्रसाच - पु० देव मानाव । याम-दि॰ [तंब] जो साने एवं वा कप्र की। वाइड मुक्दा सकी पर्नेद्धाः सन्यः भाषात्तः सर्गापुरः सनी असारा इर दर्देहर । पुरु श्रीवाणा दिला दिल्ला वह में गुरुत का रखें था ही रे नकोंग्रनपुर बरून की द्वार संपत्ति बाराहर । -प्रति-बो॰ स्थित देव प्राप्त । नगीत-

अपने साथ छारो हैं; किवाइ; पाछकीका दरनाजा; सिंहा-पन; कुरतीका एक पैच; तस्ता; किसी वस्तुकी चिपटी और चौरम सतह: बिसी छोटी वस्तके गिरने, फटने आदि-से दानेवाला दाय्द; दे० 'पट्ट' (दिदीमें समाममें आने-बाला विक्रत रूप) । य० भति शीधः तत्काल । वि० जो पेरके वस विधन हो। औथा, जिनका उसरा । —ताल-प० मृदंगका एक साल । -पट-स्ती० अनेक बार और निरं-तर उत्पन्न 'पट' शब्द । अ० 'पट-पट' आवाजके साथ । ·~रानी-स्वी॰ वह रानी जिसके साथ राजा सिंहासनारूट इथा हो या हो, राजाकी सबसे वड़ी रानी, पट्टमहिया। -सासी-प॰ धारवादी जलाहोंकी एक जाति। स॰ -उपद्ता-दे॰ 'पर गुरुना'। -खुरुना-मंदिरका दार शुलना । -पहना-अधि पडनाः मंद होना ।- यद होना -मंदिरका द्वार बंद होना । -छेना-कुदतीमें पर नामके पैंचमें अपने प्रतिदंदीको परमध्येके किए उसकी टोर्गे अपनी भोर श्रीनमा ।

परहृतो - स्रो० परवा जातिकी स्त्री । परक-पु० [मं०] स्त्री सत्यक्षा दिशिवर; रोमा; अर्द्धमाम । परकन०-पु० परकनेकी मिला; समाचा; छन्नी ।

परकता-स० कि० शिसी वस्तु वा व्यक्तियोज्ञावर होते के साथ पूर्वो आदिषर तिराता; जठायो वा हाथमें की हुई यक्तिये प्रश्नो अप्राद्ध की स्था पूर्वो आदिषर कीरिस तिराता; कुरतिये पराम्च या है सहता। १ ७० कि० प्ये की आवान वस्ते हुए रहना या प्रक्रमा; स्वकता; सीकते या मीतनेते फूळे दुर पहना या प्रक्रमा; स्वकता; सीकते या मीतनेते फूळे दुर पहना या प्रक्रमा वस्तिये स्वकता । (सु० किस्तिव क्रयर, किसीवर या किसीवर या किसीवर व्यक्ता।—िक्सीवर व्यक्ता—िकसीवर क्रयर, किसीवर की की साथ की सीवर व्यक्ता—िकसीवर की स्वक्तिया।

पटकतिया। – स्त्री॰ पटकते था पटके जानेकी क्रियाः पछाइ।

परक्षीं-सी॰ दे॰ 'पदक्तिया' ।

पटका-पु० कमर्पर । मु० -पकड़ना-विशिक्षे किसी बातका क्यरदायी ठहराते हुए रोक रखना । -याँघना-वयत रोना, सम्रद्ध होना ।

पटकान-पु॰ पटकने या पटके जानेकी क्रियाः पटाः । पटचर-पु॰ (सं०) चोरः फटा-पराना कपका ।

TEGIT-To deci !

परशी-की॰ छोडा पडरा ।

परतर - पु बरावरी, तुक्तना, जनमा । विश्व हमवार,

परतरमाश्रमश्र शिश्व गुलना यस्ना, शमान दहराना, सम्मादिसाना।

परनारना-म॰ कि॰ ऊँची-नीची अमीनकी हमवार बनाना, भेरस बरना; • सलवार आदिकी धडार बरनेकी सुदार्ग

भीरत बरना; क तलबार आदिको प्रडार करनेकी सुद्रार्थ देशने ऐता; दक्ष वंभारताः । परक-पुर्व (मंदी चीर ।

तहला-तेव हैव (स्टेंस, ।

परना-कः कि पारा सानाः भर जानाः मेन सानाः राज्याते देशाः (करा) पुरान्पुरा करा दिया जानाः है भित्रा जानाः । पुत्र दिश्याली असुनिक राज्यानी पार्टिक उपः १९४७-वीहाना राजी परना सुरान्धः । सान्धः । परित्या, परनिद्वान्या राजी परना संवीदः परामि वता हुआ।

पटनी—की॰ कोठेबाले घरमें नीचेका कमराः वह दामीन विकास किसीके साथ स्थायी बंदीबरत कर दिया गया हो। वर्मानका स्थायी बंदीबरत करनेका रीतिः कुछ रहानेके क्लिक् ज्यिकों कहारे या दराज बनाकर दीवारमें लगायी वानेवाली पटरी।

पटपटाना—अ० क्रि॰ भूरा था गरमीसे तहपना; 'पट-पट' शब्द निकलना । स० क्रि॰ 'पट-पट' शब्द उत्पन्न करते हुए किसी चीनकी बजाना वा पीटना; † चने या मटरकी इस मक्रार भनना कि 'पट-पट' शब्द हो।

पटपर-वि॰ वीरस, समसल । पु॰ समसल मिदान; जगह जगह; बरसावमें नदीके पानोसे हुनी रहनेवाली जमीन । पटबंपक-पु॰ एक सरस्ता रेहन निसमें रेहन रसी हुई वरसुके लागने सुरक्षे सहित मूल धन अदा हो जानेपर रेहनदार जब बनुक्री थींश देवा है।

परवीजना#-५० जगन् ।

पटभाक्ष-पु० [सं०] एक प्रकारका प्रकाशनसंबंधी श्रंत्र । पटभाक्षरी-स्वी० [सं०] एक रागिनी ।

पटमय-वि० [मं•] वस्तिर्गित । पु॰ रोमा । पटरक-पु॰ (सं•] गुंद नामक नृण, परेर ।

पटरा-पुर क्षेत्र, चीकीर की सिंह कम मीटा चीरा हुआ कक्ष्मका समनन डुक्झा हॅगा; धोरीका पाट। सुर -कर देवा-मारकर या काटरर निरा देना; परवार कर देवा। -फेरना-पटेटेरी कमीन बरापर करना; ध्वस करना। -होना-मरकर वा कटकर निर जाना।

सबता, होटा घरराः चुन सबती निसपर वसे कियान सीमते हैं, वरिया। धरुमा। सप्तरके कियानियाँ वेदल जन्में सो बोड़ों केची और पतले जगह: नहरंके कियारितारिता राता। रिवेश सार्थ: करेंगे आदिता केरियर टॉकेनेश होते वा चौदी होरोंका कीला। एक महारकी नहाडी की हुन बीड़ी पूरी: केरर, बीटी; लोदेंगे हुन दे कियारे महा

पुरसवारीमें रान जमाना; मेल वैद्याना र र्चटना-मन मिलना: मेल पाना ।

वदर-पुर (निर्ण एक रोवा; आवरणस्य समुद्रातह, बरस; भौगका एक रोवा; समुद्र, राश्चिः छरोरके हिन्ती अवस्तका निद्ध (बेने-नित्न): स्थ्यूक, स्वाप्तमा; दोवरी। सुग्र: टेटक: पुष्तमान: अध्याय । —प्रति-पुर ओहसी। पदरस्क-पुर सिर्ण श्रीकासर, प्रती: मंद्रन्ती: दोवरी।

्राधि । प्रसी-मी॰ [में॰] छात्रम, छपरा वृधः प्रदेशः • भीदीः

पंकि:। पटवा-पु॰ गहना श्वीतिका देशा करनेपालाः गहना

्रीयनेका वेद्या करनेवाची जातिः एक तरहरा देणः प्राप्तन-की तरहका एक पीधा । प्रत्यामा—गण किण पारनेका काम करानः; भ्रतप्तर वरा-

वर बराजाः एत्र वैदार करानाः । सिन्दरानाः भटा - धर-वानाः श्रोत बन्जा ।

चटवारशिरी-न्दी॰ पटदारीसा दाम या पर ।

परवार्ता-परा (समासारामें) उदनेवालाः श्रीम मादनेवाला । परवासी-गी॰ (फा॰) उडाव (सप्रामानवें) । परवाणि-पु॰ [मं॰] धर्माध्यशः बरसरः काधिहेयका बाहन, परयान - पु प्रमानः अवधि, सोगाः बहाबदा मस्तूत । पर्यानना - म॰ कि॰ प्रमाणस्य मानना दीव समझना । परवानगी-मी॰ (फा॰) श्वात्रत, भारा, फरमान । परपाना-पु० [पा०] लिधिन बाहा, बाह्यपत, अनुमनि-पत्र, दुवमनामाः फरमानः जागौरका दनमः लाहर्नेनः भीररोटा आशापत्र, नियुक्तितत्रः नायवके नाम नेता वानेवाना भाषाययः शेरके मागे चक्रनेवाला बानवरः पतिया, पंथी । - सिरफ्लारी-प्र॰ वंदी बनातेहा आहा-पत्र । -तलाशी-प्र॰ गानावणाधीका बाहापत्र । -सपीस-५० परवाना हिरानेशमा कर्मशां। वह 🗺 हो प्रस्ताना निमे । -शहदार्श-प्र० इसरे देशमें जानेका सरकारकी औरमें मिलनेवाला स्वीकृतियन, 'वानवीर्ट' ! मु॰ (किसीपर)-होना-दिमीकेलिए बारनोलगं हरना, भरनी आन दे देना। परवाम्(धन्)-वि॰ [मे॰] पराश्रयो, पराधीनः असहाय । परवाया-प्र• मारपांकं पायोके और रखी जानेवासी बस्द्र । परवाल=-पु॰ दे॰ 'प्रदाल' । पर्यास•-पु॰ अच्छादनः प्रवास । परवाष्ट्र-सी॰ दे॰ 'परवा' । रे पु॰ प्रवाह, शबकी दिला अभावे नदीमें बहा देना । परधी - सीव परेदान । परयोज्ञ -- वि॰ दे॰ 'प्रवीच' । शातमके दक्षरेश तरहका धेरा: दे॰ 'परिवेष' ।

परचेत्र -- पु व यरा-करा संहमादे चारी ओर बन जानेवाका

परचेश =- पु० दे० 'प्रदेश' ।

परदा-ए० [मंग] पारम पन्धर म परदा-पु॰ [गं॰] मुनदार्वादी तरहका पद प्रतिष्ठ शाल, परशा (वदी परहारामका प्रधान शब्द था); हास्र । –धर -प्र• पद्म भारत करनेशाला बरहारामा गरीस ! -पन्नारा-पु कामेहा कन । -शहा-मी॰ उँवलियेही म्ह मसारको सुप्ता । -सम-पु: अमारकि कविते हुद पुष भी बिल्हारे सहे अवतार मध्ये आते है (हम्होंने ११ बार प्रभोशी शांतियोंने शहित बर दिवा का) : -बन-पुण एक सरक ।

परत्यथ-पुरु [तंत्र] परदा, बुदार । परमंत्रक-पुत्र देश देशहर्त । यरमंभार-भीर देश 'प्रणेश' ह

प्रसम्=-पुरु स्पर्ते, हुन्स । —प्रवास-पुरु पार्य क्षरह । वारात-१८० रगरी । क दिरु प्रशन्त, गुण---देव पर-

शत बंदे हरी दाव"-भूड १ दामनाव-सव क्रिक सानेवामी हे गामने भीस्य बर्दरे

क्समा एका, रुखं दश्मा ह

व्याप्तक - (३ × दे + द्वारक, ह

यहास्त्रपुर - स्री : दे । 'यहप्रकेटा' ।

परमर्ग-पुरु [स-] क्षान्दे काले क्षेत्रा कानेपाला अन्यय है।

परमा-५० करमाः हुङास पत्तक अर्थिमे स्या हुना स्ट व्यक्ति गानेमादा मोत्रन । परमाद्र-पु॰ दे॰ 'प्रमुद्र' ।

परसादी -मी० देव 'द्रगाद'। परसाना-स॰ कि॰ भीव्य बला सामने स्वताना गारी कराना, सुन्तानाः कैनामा-'यनद् पन्तिति वहरि दरद तं दस्तर् फन प्रमार्थाः -म्र

परमिद्ध•-वि॰ दे॰ 'प्रसिद्ध' । परिमया-मौ॰ ईतिया।

परसीया।-पु॰ यह पेर बिसुडी लक्षे मेन, कुनी नरी बनानेके बाम आरी है।

परसन्-पुरु देश 'ब्राह्म' । वरसम्ब-नि॰ दे॰ 'प्रवृत्त'। परसेद्र-पु॰ दे॰ 'प्ररोद' ।

परसाँ-अ॰ विद्यं दिनमे दक्त रिस परने: अवहे रिस्ते एक दिल आगे।

परमोतम=-५० दे० 'पुरशेराम' । परसीहाँ - दि॰ रपर्ध बरनेदाला, समेबाला ।

परस-भ॰ [मं•] दूर, परे । -पर-भ॰ दढ दूसरेडे साव, अक्तिम् । -- ज्ञ-पु॰ मिष्ट । परस्परीपमा-सी॰ [सं॰] उपमानंशास्त्रा दक्ष मेर, शार्र-

योपमा ह

परस्वय-पु॰ [सं॰] दे॰ 'नररहप'। परहरनाव-मध् किः स्यायता, धोदमा र परहेत-9॰ (छा॰) निविद्य बातुओंसे बदमा सीमार्थ शानिहर परार्थ स शाना, कुपन्तने बचना। गाने ऐने आदिया श्वमः दोष पायने वसना । -तार-रिश्वारेश कर्नेवालाः याप्ये वयनेवाला । -शारी-शीव परिव

बरतेका कार्य, शंवमा पापने बचमेका मारे । पर्देशनाक-सक सि॰ अवदेशना बरमा, भगरर द्वारा,

ष्ट्य सद्याना ।

वर्तिय-पुरु [र्शरु] द्यरेदा अंदा धेड अंग ।

यरीयद-पु॰ [गं॰] दिर । वर्शनय-पुरु (शंव) रुप्पद्र र

वरोज्-दि० [०|०] दे० द्रशक्त, ह यरांत्र, परांत्रन-पु । [रांश] नेत देरमेश धीशा केंगा प्रा मारिका कल १

वर्रोडा – ५० थी जनादर महेवर रेसी प्रतिराधी धर प्रस्ता की भगाने ।

वंद्य-तेर [श्र] बंजे । -क्षान-तेर मार्थना हेट्टू,

भेंदा द्वरीर संस्कृति श्रम ।

पश्चिम-पुर [लंग] दिव ।

बरा-प्रव- [बंब] रह प्रश्ममें हो करेंद्रे कविनेश्म शिर वर्त्ती, क्रांग्रन्त (क्रांग्य), क्रांग्र, (क्रांग्य), क्रांग्ल्य (seiner), fenn (grifen) urfif diene for शहुन्त बेंगा है हे और मुमायनी निवत स्टेंगणी क्तरकारियाँ क्याँक कक्षाँक्या ताला क्या क्या स्थापन विक् effer fite atte was -are -are witer afer. कांद्र कीरे वा तीया, बंदा प्रधानी कानी कारू र-कीरी-क्षींक हैक दिराहत्था ।-शतिनकी क साववं । नहिंतान

485 धनः बैचनेकी चीज, विक्रेय बस्तः व्यवहारः कलालः पण्याजीवक-पु॰ सि॰] व्यापारीः वाजार । पण्योपघात-पु॰ [सं॰] वेचे जानेवारे मानकी हाति । विजेताः घरः मुद्रीमर कोई वस्तः स्तृतिः विष्णु ! - ग्रंथि −म्प्री० धातार । −च्छेदन-पु० अँगुठा काटनेका दंट पतिसा िपु॰ एक प्रकारका वंगला। पतंग-प॰ [मं॰] स्यं; पशी, चिहिया; शलभ, टिट्टी; (को॰)। -जिस-वि॰ जुएमें जीता हुआ। -•दास-पु॰ वह जो ज़्एमें अपनेको हारकर विजेताका दास बन एक कीहा; एक प्रकारका धान; जलमहुआ; पारा; रोलने-गया हो । -फर-पु० हरनसे दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ का गेंद्र; एक प्रकारका चंदन; चिनगारी; विष्णु; [हि॰] और ग्यारहवाँ स्थान (ज्यो०) । -वंध-पु० वाजी एक वटा जिसकी लकड़ीसे एक बढ़िया लाल रंग तैयार ह्मगाना, विसोसे इस प्रकारकी प्रतिशा करना कि यदि किया जाता है, वहम । स्ती॰ बांसकी कमानियोंके दाँचेपर भाष ऐसा करेंगे तो में यह दूँगा या ऐसा करेंगा; इकरार; कागज महकर बनाया जानेवाला विसीना जिसे तागेसे मंथि। -स्त्री,-संदरी-स्त्रा० वेश्या। बॉपकर हवा चलते समय आसमानमें उड़ाते हैं, गटी, पणता-स्ती०, पणत्त्र-पु० [मं०] मृह्य । कनकौवा । -बाझ-पुरु पर्तंग उड़ाने, रुड़ानेवाला, बह वो बहुत अधिक गुट्टी उड़ाये ! - याज़ी-म्दी॰ पर्गगवात्र पणन - पु० [मं०] रारीदने वेचनेशी किया: बाभी छगाना, धर्ने छगानाः प्रतिद्या करना, इकरार करना, कौल करना । होनेकी किया या भावः पर्तन उदानेका हुनर । ग्र० पणनीय-वि० [सं०] खरोदने-वेचने योग्य । -काटना-अपनी पर्नवकी टोरीफी रगई इसरेकी पर्नगरी टोरीपर टालकर उसे काट देना। - हारी - चुन्ही पणप-प्रविश्व शिव हो द्वा दोल । पणवा-स्वी० [मं०] पणवः एक बृत्त । बरनेवास्त्र, स्माने बद्रानेवासा, सुगुन्दरीर । -वदाना-पणवानक-पु॰ [सं॰] नगाहा । टोर दीली करके पर्यगाने और उपर या आगे परेंचाना । पणगी(विन्)-पु० [मं०] शिव । पतंगम~पु॰ [र्म॰] पश्चीः शलम, पर्नगाः। पणस-पु० [सं०] विज्ञेय वस्तु । वर्तमा-पु॰ एक प्रकारका उदनेवाला बीडा, परियाः पर्णायना-सी० [सं०] वेदया । दीयेक फल, चिरागका ग्रहः चिनगारी । पणाया-सी० [मं०] क्रय-विक्रयका व्यवदारः मात्रारः पतंगिका-की॰ [सं॰] एक नरहकी मधुमवसी। हीरी व्यापारसे द्वोनेवाला लाभः स्तुतिः जुआ, यृतः। चिडिया। पणायित-वि॰ [सं॰] खरीदा या नेवा हुआ; रतुत । पतंगी(गिन्)-पु॰ [सं॰] पश्चा प्यार्गण-पु॰ [मं॰] इयत्हर, शर्त । पतंग्रह-पुरु [संर] गरइ। पगासी=-वि० विनाशक-'ही जब ही जब यूजन जात पतंचल-पु॰ [मं॰] एक गोत्र प्रवर्गय ऋषि । पितापरं पावन पाप पणासी'-रामचंद्रिका। वर्तस्वका-स्ती० (सं०) धनुपक्षी दोरी । पणादिय=स्वी० [मं०] सौडी । पसं अखि-पु॰ [म॰] एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने यागसूत्री-पणि-सी० [सं०] वाजार; दृकानींकी पॉन। पु० कंज्मः की रचना की है और जो योग-दर्शनके आदि भाषाय पाये। माने जाते हैं: एक ऋषि बिन्होंने पाणितिहे ब्यायहण-पणित-वि० [मं०] रारीदा या भेषा हुआ; जिसकी वाजी स्त्रीपर गदाभाष्य नामक प्रतिद्ध ब्यान्या ग्रंथ रचा है ष्टगायी गयी हो। स्तुत । पु॰ वाजी । (कुछ छोगोंने योगम्बकार पर्वतिहरी महामाध्यकार पणितथ्य-वि॰ [सं०] सरीहने वा वेचने बीग्यः वाती पर्तबन्धि अभित्र गागा ए। हगाने योग्य । पत =-पु॰ पतिः मान्तिक, अधीयर, प्रशु । सीव लातः पणिता(न)-पु॰ [मं॰] सीदागर, ब्यापारी । प्रतिष्ठा, इत्यत । -स्योवना -पु॰ भवनी प्रतिष्ठाका नाद्य पणी(णिन्)-दि॰ [मे॰] मृत्य-विक्रय आदि फरनेवाला । क्रमेवान्य । -पामी-पु॰ प्रनिष्ठा, श्वातः स्वातः मु॰ इ० एक कथि। उतारना-विशीकी प्रतिष्ठा भग बरना, अपनान बरना । पण्य-वि० [गं०] प्रय-विद्ययके योग्यः व्यवहार या व्यापार--र्राता-प्रतिशासी रक्षा परमा, दरात बचाता । र्थे बेरम । पु० विहेम बस्तु, सीदाः रीजनार, न्यापारः पत-'पत्ता'दा समासमें स्वयत्य एप। स्य, दाम; दुरान । -दासी-मी० होटी । -निचय-शिशिर ऋतु जिममें पेहोंनी पतियां शह आशा है।-इस्-30 विकास माल एकप करना । -निर्धाहण-पु॰ चुंगी हार्ट्यानकी० दे० 'प्रशाह' । -झाड,-झार-की० हे० दा महसूज दिये दिना दी माल निकाल हे जाना (की०)। 'परस्र'। -पति-पु॰ बदुन बड़ा स्वापारी, सारी स्ववमायी। पतर्दा-सी० पत्ती। -पत्तन-पुरु भेदी । -ब्चारिय-पुरु मंदीका नियम । पत्रग-पु॰ [छ] पर् । -परिणीता-ग्री० स्रोही । -पुरुत्य-पु० ब्यापारमें पत्रगञ्ज-पुर [मंग] गरु । देपति या साथ । -भूमि-व्दी० गोशम । -योपितः-वनतिष-पु॰ दे॰ 'पुत्र शिव'। विकासिनी-मी० वेदया ।-वीधि,-विधिका,-वीधीः पतन्-विव [मंव] विहना दुधाः मीचे भागा दुधा। पुव "शामा-भी॰ वाबार; दुकान । -सम्रवाय-पु॰ भीर प्रदेश - प्रदर्व-पुरु एक वास्यक्षेत्र अहाँ हिनी अर्थन्तर (र्यास मान । -संस्था-सी॰ सीदाम (की॰) । या दिगी रचनाधी उत्कृष्टनादा निर्भाद न दी गई। पन्यांत्रता-मी० [मं०] वेदवा ।

पण्याजीय-पु । [गंक] शत्त्, ब्दावारी ।

प्रमुख-पर मिर्ग बाहन, सशरी: देना, पर ।

वस्त्रि - ५० [गंग] पर् । विदिशा ।

परायत्यं-दि॰ मि॰] जो बदका, कीशया या उत्तरा क्रा सदे । -स्ययहार-पु॰ पेसना दिवे हुए मुस्दमेगर किर वियार करना, प्रेमण्या पुनविचार, अदील ! परायम् - पु० [भ०] असुरोसा एक होगाः एक गंदर्र । पराचर-पु॰ [मं०] बायुद्धे गुल भेडोंमेंमे एक (अंतिम) । पराविद्ध-पुरु [संर] कुदेर । पराकृत-वि॰ [मे॰] सीटा हुआ; सीटादा हुआ; बरसा TRI 1 परावृत्ति-स्तै। [मै०] होटना, पण्डनाः श्रीटाया जानाः पन्या यानाः पंत्रता क्रिये हुए मुख्यमेपर फिर्मे विचार परमाः । परायेत्री~म्दो० [मंत्र] बृहती, भरवटेवा । पराप्याप-पु० [तं०] हाथने पन्धर गृहनीपर बहाँनुक श्रीय यह मागना । पराचार-पु॰ [गं०] एत प्रसिद्ध गीय-प्रदर्गेड कृषि जी बनिष्ठके पीय थे (कृष्यदेवायन स्थान इन्होंके पुत्र थे); भागुर्वेदक एक साधारी एक लाग । पराजारी(रिन्)-पु॰ [मं॰] शिधुद: सन्दामी । पराश्रय-५० [मं०] दमरेका मदारा वा अवनंता नि० ष्ट्रारेषर आजित्र । पराक्षया-म्योव (मं•) परमाछा । परासंग-प्र• [sio] प्रव देव 'वरासव' । परास-पुर [होंर] देव 'परास्थाय'; होना † देव 'बलाहा' । परासन-पु॰ [गं॰] क्य, मारण । परामयीयळ-पु • दे • 'वारिम्बीयल' । परामी-ग्री॰ एक राविनी । परासु - विव [संव] भरा हुआ, भृत । पराम्धंदी (दिन्) -पु (ते) और । पराम्न-नि॰ [मं॰] हराया हुआ। जिसका प्रजाब यह हो गया हो। दश दुभा। चेंश दुभा: असीहत । पराह-प्र• [मं•] इमरा दिन । पराहत - दि० [मं०] क्यानंत्रः सदेश हुआ, इटाया हुआ: भीना सुभारगदिन र पुरु आयान । पराष्ट्रींग-मी॰ [मं०] संदत्त, विरीष । पराह्म - वि॰ [मं०] हरावा हुआ । परास-पु॰ [रां॰] बीपार दे आवेदा गमय, दिनदा तीपरा 457.1 पर्दिश-पु॰ (का॰) वर्धी, शिहिया । परि-११० (०.०) यह प्रकार्य ही सम्बद्धीबाद (दश्किम्य), स्वाति (परिगात), दीवस्थन (परिवाद), भूवप (परिश्वार), धारमेष (परिचया), पूजन (दरियया), मान्यादन (परिष्ठा) मादि महीहे होताहे जिए शक्तीहे पूर्व स्तर है। परिकॅप-पु॰ (गं॰) बंदरंगी। भाववित प्रद्र । परिक्या-मी॰ [रां॰] मनुद्रवा, यह होती बना की बड़ी सन्दे भेटर भागी हो। ह परिषर-पुर (१६०) परिकार अनुस्तरको अम्बर्तर स्थाen, frift ment berr feber grine, wentil.

(ना०): निर्देश:चैमना । परिकरमा - मी० देव 'परिक्रमा' । परिकर्शकृत-पुर '[तुक] वर्ष अर्थानका को विकेष अभिप्रायमे युक्त विभी विशेषका प्रयोग हो। परिकर्मन - पु॰ [मं॰] बारनाः मोहाबार सपराप शुन । परिकर्तिका-को० [नं•] शुरु । परिकर्म(न्)-प॰ [नं॰] दर्रारने धेगर भगीः नगणः पैर रेंगना या चलमें मदानर आदि वर्गमा अवेदा परस्यर योग, गुजन, माथ बादि (ग०)। पुत्रमा समामा परिष्यार । परिकर्मा(र्मन)-पु॰ [र्म०] शेरह, शनुबर, परिधार । य रिक्सी(मिन्)-पुर (प्रेर) गहायह: ग्रेवह, हाम १-दिर अर्जकृत धरनेवाला । परिकर्ष, परिकर्षण-पु॰ [गं॰] बाहर शीम कला हा निरमधनाः । परिकर्षित-पि॰ [मॅ॰] शहर खाँचा हमा। वार्पाटा । परिकलित-पु॰ [छं॰] आहमरा, अनुमात । परिकारका-पर मिर्ग भीता, हताकाशी ! परिकल्पन-पु॰, परिकायमा-भी॰ (मे॰) समय स्थाः इनमा, बनानाः कारिप्दाह बरमाः निर्देश निधाः बरनाः बरेनाः त्रस्तुन बरनाः । परिषरियत-वि• [मं•] धरमे गता हुमा रूमा हुमा भाविश्वतः नियोतः विशक्तः गुवय्या विवाद्यम् । परिकाशित-प्र• [मंग] भागा वरसी । परिकारों-दि॰ [र्ग•] भारों और प्रेमा हुमा, स्थाप गर्म हुआ, परिवेष्टिय ह परिक्रीसेन-पुर [मंर] योचित बरगा। गुर्नेश सरिष्ठ सर्था। क्रिमोदी बहुत सरिष्ठ प्रशंभा बरमा I परिक्रोलिय-विक [बंक] दिएका परिन्रोलेस दिया गया ही? परिकृत-पुर [संर] मगरके दारपरकी सारी एक लाप। परिकार-पर [गंर] सामना भूमि । परिकृता-रि॰ शि॰ बहुत प्राना शीम । परिकोप-पु० [र्ग०] सार्वावस क्रोप, प्रवंत कीत । परिक्रम-१० [तं] चारी और धूमता, प्रशीपपा कामा टरकताः अत्यः प्रदेशः । −शर्ट-पुर वहता । यरिकारण-प्रश्रीती है अपेदीकार्य । यरिक्मा-भी॰ पेरी, प्रश्तिमाः स्थि मरिर वा तीर्व अवधिया बहुनेदे लिए बत्याबी हुई अलह, बेरी देनेश परित्रम-पुर [लंक] मत्रहरी; अला: अरोहा कुछ मत्र[री त्री बरडे निवत बाल्ड्ड मेहार्वे हराना। रेता भगेर लिन्हे मण्डे बाने नाम दिवा थाय, विशेषदरप प्रकारण देशर गरीदा दवा घान । पश्चितितानि-दिन [मृत्र] जिल्हार सम्बन दिशा हुए हैं। है। पुष्रा र पुरु यह महान दिलाइट सदाव दिया तथा ही। गर्न-कर्रा ५% ह परिक्रिया-बरोक बिकी देशका, बाहि कार्यन देशका १४ दिन्दे होदेशका वह नावका सामा वसाम, संबोधित एक मर्देन्या पर्व विदेश माँच्याको पुत्र विदेशनका विद्यान-विक विकी बहुत महिन्द प्रवाद ना मदीन की। क्षेत्र, क्ष्मी बाताओंका सीत्कामी सूचन । बहिक्किल-दिन हिन्दे हिते बहुत क्षेत्र की स कहेंका में

'षत्रमंग ।=वाज=ष० चिडियाः पंस्रवाला वाण।⇒धाल= प॰ टे॰ 'पत्रवाल' । -बाह्र--बाह्रक-प॰ पक्षीः चिटी हे जानेवालाः बाण । -विशोधक-प० पत्रभंग ।-विप-पु॰ पर्रोसे प्राप्त विष । - वेष्ट-पु॰ कानका एक गहना सारंक । -च्यधहार-प॰ रात-किताबत, लिखा-पढी । -शबर-प॰ एक प्राचीन अनार्य जाति जो पत्तींसे अपनी देह सजाती थी। -झाक-पु० पुत्रबद्दल झान, ऐसी तर-गरी जिसमें पत्तोंका बाहस्य हो । −दिवा-स्ती० पत्तेकी 'नमः पत्रमंग । -श्रंगी-स्री० एक लताः मसाकानी । -धेणी-स्री० मसाकानीः पत्तीकी पंक्ति । -श्रेष्ठ-प्र० धेलका पेर । -सचि-सी० काँग ।-हिस-प० ऐसा मीसम जिसमें पाला पड़े या अधिक ठंडक रहे, हिमददिन। पग्रह-पर्व सिंबी प्रसार तेजपनार धनावेशर वसीकी खेली I पत्रमा-सी० सि॰ो पत्ररचनाः यामग्रे पंत समाना । पत्रीग-पु॰ [सं॰] बणम, पनंग; भी तपत्र नामका कुछ; दमलगदा । पत्रीप्छि-सी॰ [सं॰] पत्रमंग । पर्याजन-प० [सं०] स्याही । पन्ना-पु॰ पंचांगः पन्ना । पत्रान्य-पु॰ [सं॰] तालीसपत्रः सेजपात। पत्राचार-प्र॰ लिया-पडी, यत-किलावत । पत्राह्य-पु॰ [सं॰] पिपराम्छः पर्वतसूणः तालीसपत्र । पत्राम्य-प्रव सिंगी पत्ता, वदम । पदालु-९० [र्स०] इसदर्भाः वासाल । पत्रायसि-स्रो० [सं०] गेह: पत्तींकी पंक्ति या क्षेणी; पत्रभंग । प्रावली-सी० [मं०] दे० 'प्रावलि'; पोपलकी कोंपलोंके साम जी और सधका मिश्रण। पन्नाहार-पु० [मं०] सिर्फ पश्तियाँ रा।कर रहना । प्रिका-स्ता (सं०) चिह्नी; कागजका कोई दुकड़ा या पन्नाः एक सरहका गारः पत्तीः पादिकः मासिक आदि पत्र 1 (076) पविशालय-पु० [भं०] एक सरहका कपूर । पित्रणी-स्रो० [सं०] अनुवा, कौपल । पत्री-स्था [मंद्र] विद्वीः असुवा । पग्नी(ग्रिन्)-वि॰ [मं॰] परादारः पत्तियों वा पत्रीवाष्टाः रेपराला । पुरु बागः, पशीः बातः वृद्धः, पर्वतः रथः ताइ । प्योपस्कर-पु० [गं०] कासमई, बर्मादी। पत्रोण-पु॰ [मं०] रेहामी बस्त; गोनापाटा । पत्रेष्टास-प्र॰ [म॰] अंगुरा । प मल-पु॰ [मं॰] मार्ग, सहस्र । पप-पु [मं] मार्ग, रारना; बार्व या स्वयदारनी पद्धनिः दि 'पृथ्य' । -कस्पना-न्दी वादीगरी । -वार्मी-(मिन्),-चारी(रिन्)-पु॰ परिक, रादी। -दुर्मंबः -मद्भंब-९० राह दिसानवाला, रहनुमा । -सुंदर-5 • • इ दीना । - • थ-दि की मार्गेंसे ही, मार्गरेश । प्रस्ट-पु॰ [मं॰] रारतेना नानकार; मार्गदर्शन, 'गार्थ' ह प्यनत्-१६० तदने प्रयमाः मार्ने दौटनेसी किया ह पपन्(त्)-५० [तंच] सहसः मार्गः समन-इनी ध

डे॰ 'पत्थरकला' । -चटा-प॰ दे॰ 'पत्थरचटा' । पथरना!-स॰ कि॰ (औजार मादि) पत्थरपर रगडकर तेज वस्ताः स्मता । पथराना-अ० कि० सम्बद्धर पत्थर जैसा कहा हो जाता: रसदीन और कठोर हो जाना: शष्क हो जाना: चेतना-शन्य हो जाना, जह हो जाना, निजीव हो जाना । पयरी-सी॰ पत्थरकी कंटी, पत्थरकी महिया: सरतरे आदिकी धार तेज करनेका पत्थरका दकड़ा, सिली: चक-मक परथर: पश्चिमीके पेटका वह भाग जहाँ पहेँचरत जनकी सायों हुई कही चीजें पचती है। एक तरहरी महली: लाय-फलकी जातिका एक पेट जिसके फलोंसे तेल जिलाला जाता है: एक रोग जिसमें वृक्षों भादिमें परधरने छोटे उत्तरे जैसे पिए बन जाने हैं, सहमरी। वधारीका-वि॰ जिसमें परथरके दबहे मिले हों, परथरके टक्डोंमे तक। पधरीटा~प० पत्थरका बढ़ोरा जैसा पात्र । पथरौटी -सी॰ पन्धरकी में भी, पथरी। च्छारीडा रें -व॰ गोदर पाधनेकी जगह । वधिक-प॰ [सं॰] रास्ता यलतेवाना, राही, बरोही, यांत्री । -संतति,-संहति-सी० सार्थ । पधिका∽सी० सिं०ी मनकाः एक तरहकी अंगरी दाराध । पधिकाधय-प॰ मिं। पथिकांके ठहरनेकी जनहा, धर्म-शालाः सराथ । पयिन-प॰ [मं॰] मार्ग, रारताः कार्य या व्यवहारकी पदतिः यात्राः संबदायः मतः एक नरक (समासमें 'ग'का कीय हो जाता है। इसका प्रथमांत रूप 'पंथा' होता है। समासमें उत्तरपदके रूपमें प्रयक्त होनेपर इसका रूप 'पथ' हो जाता है, जैसे-दृष्टिएय, सरपथ: हिंदीमें वही रूप प्रयक्त होता है)। -(थि)कार-पु॰ रास्ता बनानेपाला। -स्त-प॰ मार्गदर्शेक (वै॰): अभिन । -श्रेय-प॰ मार्थ-अनिक मार्गपर लगनेवालां कर, 'रोटमेस'। -हम-प्र गदिर वक्ष । -प्रश्च-रि॰ मार्गेन परिचित्र । -प्रिय-पु॰ मिलनमार हमराही । -बाहक-दि॰ निष्दर, निर्देष। प॰ शिकारी, बदेलिया: बोझ दोनेवासा, मीरिया । -इथ-वि॰ जाना दुशा, चलनेमें प्रश्ता । वधिष्ठ-५० [गं०] पधिर, यात्री ह पर्धा(यिन्)-पु॰ [मं॰] पवित । वर्धाय-वि० [मै०] पथ-मंबंधी; यथस्त । पर्धेय ॰~प॰ दे॰ 'पायेय'। यधेरा-प॰ इंट. राददा यादनेवाया. बण्हार । पयीरा-प॰ गोबर पाधनेरा त्रगद । वध्य-वि॰ [ग्रं॰] लामसर,हिपरर (भादार,भीवप भारि); उधिकः अनुकृषः । पुरु होगोको दिया जानेवाला, होगदी रिवर्तिके अनुकृत और दिलुक्त आहारः रोगीके किए दिन-कर बन्ता बन्यामा इहका पेटा हैं या नमद । -शाय-पुरु भीरारेका शास । सुरु नमे रहना-सपाद स बरना, बरिन बर्पालीमें पादेन बरना, परिक्रने रहता। वृथ्या-शी [मं] इदा एक माजिक एका विक्तिता कर-क्ट्रीः सरह. रारण १ पया- चारा वा समाधान विकृत रूप ।" - कसा- को। प्रध्यापच्या-दिः [संब] रोगरी करन्याने विश्वत और

परिचना - = १ कि दे 'दरपना' । स॰ कि दरीशा परिश्रीयत-दि॰ (सं॰) अन्दर्ग मेमने भूमा हुमा । परिचेय-दि॰ [मं०] बान-१६ नान्हे होग्द, जान्दे होग्द परिचयल-वि॰ [मं॰] शति चंचन, तो वभी रिवर न रहे। ६४न ६१ने बोग्यः गोत्र ६१ने बाह्य परिचय-पुर्व (संर्व) यदत्र बहनाः देह समानाः चारी परियोक-पुरु परियय, जानकरी। औरने दरहा करनाः चारी और अमा करनाः अध्धी परिष्ठीद्-प्र॰ [गं॰] शायम धरनेशने सनुषर मारि । तरह जानना, पूरी जानकारी, जान पहचाना अस्वाम् अ परिष्ठय-पुरु [ग्रंग] टॉस्टेश्टे बानु। द्रास्ट्रेश स्था -कर्णा:-म्दो॰ बहुता श्रुवा वेन या बहुता ! - प्रश्ने-मादिः भारताना वस, पहनामा हामाहे गाह यहने पु॰ रिभी व्यक्ति या अधिहारीका दिया हुवा वह देव बारे अनुसर, सैनिक आदि। राषाहे बाग उपकार (१५८ बिमें कोई व्यक्ति रिमी अन्य व्यक्तिया अधिकारीको चमर आधिः यात्राहे लिए भारत्यह सामानः प्राप्तः भगरा परिचय देनेहे छिए दिगमाता है। शमदा∢ है परिचर-५० (मंत्र) मृत्य, सेवल, निरमनवार; रक्षी परिच्छन्न-दि॰ [मं॰] हटा हुमा, माइना परिच्या प्रसंप रशाके निय नियुक्त भैनिक, रचरश्रकः भंगरथकः बंदनायकः अञ्चयर बादिसे शुद्धा शिवादा हुमा। भारर-मरकार । वि॰ अमन्त्रीतः चन्दः बहनदीत । परिच्छा==श्री= हे= 'एराग्रा'। ' परिचरजा===शे= देव 'एरिसवां'। परिविधिश्च-मी॰ मि॰ अर्था या भागतरा निर्देश परिचरण-पुरु (संत) सेवा, शिरमना परिअमण ह शीमा, अवध्य अववारणा विभावता परिवित्ता गाँव परिचरणीय, परिचरितध्य-दिश [मंग] परिचरण बरने र्च(माषा । धीशव । परिष्टिन्स-दि॰ [मं॰] जिल्ली सीमा ॥ मानि निर्ण-परिचरिता(म्)-पु० [मं०] परिचर्या बरनेवाला, सेवह. रित की गयी हो। जिनदा चारी औरबा कुछ मंग्र ही। भी दर । दिया यथा हो। अलग दिया हुआ, निम्नलः परिनियः परिचरी-मा॰ [ग॰] गेविहा, दामी। उपवास्ति । पश्चिमीय-५० [गं०] यमहेदा फोना ह पश्चितेत्र-प॰ शि०ी कार-शांटकर अनग बरमार अर्थन शीमाः अवधारणः निर्मयः निधार (विधे साथ और मगारा परिचर्या-मी॰ मिं। मेमा, विद्यानः रोगीकी सेवा, सीमारदारी । का)ः विमानना परिमाणाः सरीक्ष परिमाणा गन की परिचायक-पुरु [गंरु] परिचय बरानेशानाः अनानेशानाः । विभागीपेने कोई एक बिनमें कीई संद रिश्वके अनुगर रिमल रहना है। दिनी संघ या प्रस्तरहा वर मारा निगरी परिचारय-पु॰ [मं॰] बहाबिः लगाममें पृद्धि कर्माः दिनी यह दिश्यकी चर्चा हो; उपभार: मार्ग । दशका लगाना । परिच्छेन्छ-पु॰ [सं॰] अवधि वा सामा निर्पारित सरदे-परिचार-पु॰ [मं॰] मेबा, लिडमना दश्सने, धूमनेकी बाला। बाँट छाँटसर अलग बरनेवाला। अवनाम बरने अगद: मेवद । बालाः विभाजम बरतेवालाः परिमापः बरातेगयाः परि परिमारकः परिमारिकः परिचारी(रिन्)-१० [मंग] मेचर, विश्मतमारः रोगोदी मेचा बरनेतामा, श्रीमारदारः पहेरद्रभी: शोमा, सब्दि । यरिक्छेद्य-पुर्वाको अवशास्त्र, विदेश शामाः विश्वास देवपंदिर आदिने कार्यकी देवस्थान वस्ते शना १ पश्चित्रण-१० [११०] शेदा ३ मुरमध्या भाषात वा विदास । वरिवादेशसील-दिक [लंक] क्षी सभी वरिभागको है भी दि परिचारमा = ग० हि. भेरा कामः । जिलकी कीया, दयला आदिका निर्वास से हो है। परियारिका-स्थान (तत) शेविका, टबल वरनेवामा १ यरिकारेय-दिक [लंक] वरिकारिके मोत्या वरिवेदा अरार्थ परिचारित-पुर [गर्क] रीत, ब्राहा, शक्तीविमीह । परिचार्ये - (4 • (4 •) मेबा करने दौरम, वरिनम्हें देशेया । यहिन्तुम - विक (अंक) होता मुभा, परिणा भय है परिरयुति-स्रो॰ (बे॰) याना भ्रम । परिचारक-दिन, दुन (संत) थारी और युपानेरामः યમાનેરામાં દિખાનેરામાં ક पश्चिम-ए० देश प्रस्ता । परिभारम-पुर (श्र) नहीं भेड़ने घराना दिसमान परिक्रपुर्ति-स्टेन हेन 'परश्य' । पश्चिंहण-१० देव 'रांद' ! पुत्र नाः गर्भी और पुत्रामा । परिचालित-(१० (८)०) जिल्लाका वर्ध सम्मार्थका समाचे। पश्चिद्दन्द-मुक् देव 'दर्शन' ह यहितान-पुर [बेर] सरश देशगरे लिए अलिए बेंग, की, परिचित्रम = द ॰ [त+] श्रमण दश्याः गोवना । पुष, दल लाहिए वे कोत हैं बन्दर और प्रशिपन्य की, व्यक्तिन-दिक [तक] जिल्ली काल व्यवन में, जिलाह द्रामः मार्टिके छात्रकाव चन्नेपाने सीतः प्रदृष्टनार्ट ह क्षरियद प्रभा हो। एकप दिशा हुआ। है। सराया पुआ: परिज्ञानमा-भीत [मत] परित्रत श्रीमेश लागा नियमण f Pizer artani i परिवित्त नार्षः विशे परिवयः बार वर्षाया ह वश्चिम्बा(स्थान्)-पुर्व (४०) संद्रमाः स्राप्तिः

afenfan ufenn-fee feel ur eerb bebr

परित्रक्त-दिन हैं। भू को भारी केंग्री की मान मा मार्थित

(242 4-1) 1

परिचित्रित्त-दिक (क्षेत्र) दिनाहर देवल्या हिया गाहर है

परिपरित्रं =[4+ किन्दी शिव्हाई केश को गयी हो। मेरिए ह

परिचंदम-पुर्व [मेर] अहिलाद देवीर सूदन्य र

क्षेत्र (५५०) व

पदाध्ययन-पु॰ [सं॰] पदपाठके अनुसार वेद पदना था | उसका पाठ करना ।

पदाना-स०कि० पादनेमें प्रवृत्त करनाः (गुरुही-डंडे बादि-वे रोठमें) बार-बार हराना और दौड़ाना; हैरान करना, परेद्यानं करना ।

पदानुग-वि॰ [सं॰] जो पोछे-पोछे चले; अनुकूछ। पु॰ पीछे चलनेवाला, अनुयायी; साथी ।

पदानुराम-पु॰ [सं॰] नौकर; सेना !

पदानुशासन-पु० [सं०] ब्याकरण । पदानुस्यार-पु० [मं०] एक प्रकारका साम ।

पदाब्त⊸पु० [सं०] दे० 'पदवांत'।

पदायता – स्ती० [सं०] जता।

पदार-पु॰ [सं॰] पेरकी धूरू, चरणरजः पैरका कपरी

पदारथ - पु० दे० 'पदार्थ' ।

पदारविंद्-पु० [सं०] दे० 'पदक्तंत्र' ।

पदार्थ-पु॰ [मं०] अतिथिको पेर धोनेके लिए दिया जाने-बाह्य जल ।

पदार्थ-पु० [सं०] पर या दाब्दका अर्थ; वह बस्तु जिसका विसी शब्दसे बीध हो। उत विषयों मेसे कोई एक जिनके नाम, रूप मादिका कथन न्याय, वैशेषिक आदि दर्शनों में शियां गया है। कोई अभिधेय वस्तु । (न्यायमें १६, वैद्रोविकः में ६ या ७, सांस्यमें २५, योगमें २६ और वेदांतमें २ परार्थ माने गये हैं।)-विद्या-सी॰ वह विद्या जिसमें पराधीका तिरुका किया गया हो।

पदापंग-पु० [मं०] पेर रखनाः आगमन (आदरस्चक) ।

पदालिक-पु॰ [सं॰] पैरका ऊपरी भाग ।

पदायनत-वि॰ [सं॰] पैरीपर झुका हुआ, विनीत ।

पदावली-स्रो० [मं०] पदों या शब्दोंकी परंपराः किसी रथनामें निवद्ध अनेक पद या दाब्द; दाब्दोंकी सड़ी; विसी वृति या लेखन द्वारा प्रयुक्त दाब्द-लमृहः [हि॰] भवनी भादिका संग्रह ।

पदाधित-दि० [सं०] आध्यमें रहनेवाला, शरणमें आया

पदास−सी० पादनेका मावः पादनेका शारीदिक वेग । पदासन-पु॰ [सं॰] पादपीठ, पैर रहानेंगी छोटी चीडी। पदामा-वि॰ दिने पदास लगी हो।

पदार्मान-वि० [सं०] (किमी विदोन) वदवर बाहद ।

पहाइत-वि॰ [मुं॰] पैरमे दुवराया हुआ।

पर्दिक-बि॰ [मं०] पैरल; एक टम जिनना लंबा; जिसमें ष्य दी विमान हो । पुरु प्यादाः पैरका अग्रमानः = गर्ने- व. भागूपन जिलपर किसी देवनाका थरण बना रहता है। वन्देश एक गहना, जुनन्: इतः तमगा । -हार-पु॰ रहोती माला।

परी-सी० (मे०) परीका समृह (समामांनवे)। • पु० च्यारा, परानि ।

पुम-पु॰ धोरेटे छरीरपर होनेवाला दक प्रकारका निहः क देव क्षेत्र । दिव देव स्टा ह षद्मिन्। ०-४० दे० 'दविनी'।

पर्क-पु [मं] बाब ।

पटेन-अ॰ सिं॰ पदकी हैसियतसे ('पद'का करण कारफ-का रूप)।

पदोड़ा-वि॰ जो बहुत पादे; कावर ।

पदोदक-पु॰ [सं॰] वह जल जिससे पर धोया गया हो, चरणामृत ।

पदौन्नति-सी॰ [सं॰] कर्मवारीके पदकी पृद्धि, तरकी। पद-पु॰[सं॰] पैरः चतुर्थ भाग १-श-पु॰ पैदल शिपाही।

-रथ-पु॰ प्यादा, पैदल सिपाही । पदुद्रां-वि० पदोड़ा।

पद्धटिका∽सी० [मं०] एक मात्रिक एंद । पत्नही-सी० दे० 'पद्मरिका'।

पद्धति, पद्धती-स्ती॰ (सं॰) पथ, मार्ग, राश्ना; प्रथा, रोति, परिपाटी, प्रणाली; पंक्ति, पाँत; यह प्रंथ जिसमें विसी अंथका सारांच समझाया गया हो: जाति आहि मुचित करनेके लिए ओड़ा गया उपनाम जिसे नामके आगे या पाछे लगाते ई (जैसे-सिंह, लाल, बसु, घोष आदि); वह पुस्तक जिसमें कर्मकांटकी कोई विधि लिखी गयी हो।

पद्धरि, पद्धरी-म्बा॰ दे॰ 'पद्धरिका' । पद्धिम-पु॰ [मं॰] पैरका ठंढापन, परशैस्य ।

पदा-पु॰ [मं०] कमल; वे बिदियाँ ओ हाथीकी गुँह आदि. पर होती हैं: एक प्रशास्त्री मोर्चा गरी, प्रमुद्धः करेरकी नी निधियों मेंसे एक: १०० मीलकी संस्थाः ६ चकी मेंसे बोई एक (तं०); पदमकाठ: सीसा: एक रतिवंध: प्रध्यार-मुळ; एक पुराण; एक वस्प (पु०); दाग, धम्दा, विद्वः मन्यके दारीरपरका कोई वाग, तिल आदि: पैरमें होने-

बाला यह भाग्यमुचय थिट (सामुद्रिक): रांबीसा एक भाग (वास्तविधा): एक प्रकारका मंदिर: एक आसनः वक नक्षत्र; यक गंधद्रश्य; समलकी जब; यक प्रकारका मौदः एक माबः एक बर्पन्तः रागः कार्तिवेयका एक अनुब्रः भारतके नवें बक्रवर्ताः करमीरका एक प्राचीन राजा निसने प्रयुर बसाया था । दि॰ शी मील ।-क्रंइ-व॰ समल्की जह । -कर-प॰ वि'गः सर्वः समल जैसा हाथ । दिव तिमके दाधमें समलदा पुन्न हो । --फरा--सी॰ लक्ष्मी । -कर्णिहा-सी॰ प्रयो गीतशीद्या प्रा नामक व्यूटमें व्यूट मेनाका बेंद्रमाग । -काष्ट-पु॰ एक

वश जिसकी रुक्ती दवाके काम आनी है, परमकाठ । -किजलक-पु॰ कमलवा देसुर I: -कार-पु॰ एक विभेना बीशा । -केसन-पु॰ गरहका एक पुत्र । -केस-

पु॰ एक प्रकारका पुष्टम्य शारा । - वैदार-पु॰ प्रमतः पुष्परा सूत्र । -सोश-पुरु कमल्या संपुरः कमल्ये

बीतरका छत्ता बिसुने उमहेशीय लग्ने हैं; मंपूरिन बमल-के आधारकी वंगतियोशी एक सुद्रा ! - क्षेत्र-पु॰ वरीमा

प्रांदिके अनुवृत्त एक तीर्थ । -गाँड-पुर प्रमाशि ! -र्मध-मंधि-रि॰ दमहरी-री गंपराला। पु॰ पय-कार १ -मर्भ-५० प्रयक्षेत्रका भीतरी माता प्रकार शिक्

दिन्तः सूर्व । -सून्य:-सुद्दा-स्तीः सद्भीः स्थत । −चारियौ−शी॰ शेरा; समीः दली । ~ज,-जान-

पुर अक्षा । -सँगु-पुर कमन्यी गाम, ध्याम ।-स्योत- -

द॰ होशन ! -नाम-पु॰ विकास वराहे है समस

परितिमा-पि॰ [मं॰] अति तिक, बहुत सीता । परितष्ट-वि॰ [मुं॰] जिमे पूरा मंतीर हो, अन्छी शरह तुष्ट, tigg t परिगृष्टि-सी॰ [मं॰] परिगृष्ट डीनेडा मार, परिग्रेष,

मंतीयः प्रमुख्या । परितृप्त-वि० [मॅ०] पृरी नरह अयाया बुआ; संनुह : परिमृति-म्यो० [गं०] परिमृत होनेहा मान, पूर्व तृष्टि ह परितीय-पु (मंग) मंत्रोष: तृमि: दिसी इच्छारी पृतिने

होनेवायी प्रमन्नवा । परितोषक-पु॰ [मं॰] परितृष्ट कानेवाळा । परिनोपण-पु॰ [मं॰] परिनुष्ट बरनेदा कार्य । परितोगी(पिन्)-वि॰ [धं॰] परितायबाला, परितीपगुक्त,

धंतीको । यरिनोगः == पु । देव 'वरिनोष' ।

परित्यक्त-वि॰ [मं॰] पूरे हीरने त्यामा दुआ, एकदम छोश दुमा छोश, धनाया दुवा (जैने बाय)। [सी॰

परिश्वलेय' ।] परित्यका (का)-वि०, प० [र्ग०] परित्याग इरनेवाला । परिश्यजन-तु॰ (सं॰) परिश्वाग ऋरनेदी क्रिया, स्वानना । परित्याग-पु॰ [मं०] पूरी ताह त्याय देना, एकदम छोत देना, पूर्व स्वाम; बद्दा जुदाई; उदाहना । परित्यारामा == म = क्रि वरित्याग करला ।

परिभ्याती(निन्द्र)-दि॰ [मं॰] को परित्यान हरे, पूरी नरष्ट धीर देनेवाना । परित्याजन-५० [मंग्] परित्याग दशना, धोरवाना ।

परिन्यास्य - रि॰ [मं॰] परित्याग ऋरते बोग्द, सोइने योग्य ।

परिचररा-वि [रां॰] शति वस्त्र, बदुत्र दश इसा । परिप्राण-पु॰ [ले॰] पूर्व रहा, पूरा वयाब; मनिटमें प्रपूछ न्यनिका निवारमा आग्मरया आध्यक प्रनाहा वाकः में ए।

परिचात-रि॰ (मं॰) तिमका परिचान सिवा गया हो । पश्चिमसम्बन्धः [मं•] परिचापः वस्ते ग्रीग्द । परिचाता(म)-विर, पुरु (छेरू) दरिवास अस्तेवासा ह परिश्रास-पु॰ [सं॰] भावधिक वाम, भागे भय ।

परिचेशित-दिश (लंग) जिएमे बादय बादय दिवा बीत 化海运性剂 1

परिदाय-(१० (गे०) जना, श्रूतमा दुआ । परिवर-पुर [मंत्र] मगुरीका यह रीत जिलमें बलु हे होतें।

अस्म हो आने और श्रम निरम्भना है। परिदर्शन-पु (संग्) सम्बद्ध दर्दन, सर बोहरी, बच्छी

नरष देशना १ परिष्ट्-तिक सिंको तुरी तरह बाद कावा दुवा प्रवर्ते हैं Buf faqt gat !

परिश्वत-पुर् (सर्) क्याता, शुभगता ह परिदाम-पुरु [रान] अप्रताबाता, विशिवया गरियर

भौतवा । यात्रिय-प्रदिशे हार्ग्य, हार द् विद्यार्ग(दिन्)-तु । (मंत्र) नव भी करनी कररीका । सामनेका वस बत्ता ।

परिदाह~पु॰ [मं॰] अति दाह मा तात, रहुत शहिरह बहनः अविधिक मानविक दृग्व, तीम मनशाय। परिदिग्ध-दि॰ [र्स॰] (स्गि बातुमे) बरुत सरिव स्था दुआ, जिसदर कोर्रे वस्तु बहुत अधिक मानामें स्ती 🖽 प्रतो हुई हो । पुर बह मांग्रगंद क्रियार क्रम्मी स्ट पहाची गरी हो।

परिदीन-वि॰ [मे॰] तिमे बहुत कविक सामित हास हो। तीव भांतरिक दुःसमे फेरित । -मानमा-साह-वि॰ जिमे तीम मनीम्पधा हो। सदि रिख ह परिद्रत-पि॰ शि॰ो अति स्ट । षरिदेव, परिदेवस-पुरु, परिदेवना-मौर्ग (मृंग्) क्रप अधिक रोजा-धीना, विकासा, विकास करना।

परिद्रष्टा(ध्द)-पु॰ [मं॰] परिदर्शन सरनेशश। वरिष्टीय-पर्ने विनी गरहरा हर प्रथ ।

परिध-पु॰ दे॰ 'परिशि' i परिधनग-प० दे० 'दरियान' । परिचर्षेश-पु॰ [मं॰] भाष्ठमणः शामि पर्देशमा । परिचान-पु॰ [तं॰] वारी मोरने पेरना वा मारूप करण

मानिने मीनेका ५६मायाः बन्दः ५६मनेका द्रणाः वन मारि धारण करना । परिधानीय-दि॰ [मंग] एश्मने बीग्द ।

वरियापम-पु॰ [शं॰] परमाना । परिधाय-पु०[र्शं+] अनुपरतनः दक्तनसः िर्रदीया मध्यः मागः पानी अमा करने या शीनेशी अगर, मलायान ।

परिधायक-पु॰ [बं॰] चारी भोरते देरने या भच्च बरने बाला। देशा देशा सदनी गर्रादश शहा ह परिचारण-पु॰ [मं॰] शहन करना ।

परिधायम् -पु । [मृं] की बा, मामनाः दिमी हे भाग भीत या रोधे-दोधे शीशमा ।

यरिपाधी(विन्)-दि॰ [लं॰] श्रीवृतेशका, भण्डेशका विगोदे यारी और या बीठे बीठे बीडने स्था। यारी और बहनेरामा । पुर विदारीवरी गेरणार ।

वरिचि-भी। [रांत] सहशे मारिहा देश या गर्भः मेयको समीवपाने बारम दुर्व M भंद्रमाडे वारी और धर अभिनाता महत्त, प्रतिका प्रशासनाता कृत कर्मरेकनी रेग्या चहिएका येगाः द्रामाधिके गाम और रधी बारेगानी दीन नेक्टियों दिविश कासमा पहनाबा गर पर्वे कीर्वे शाला विश्वे सीन्त्रम् क्षेत्रा कामा है। सीहरू बरनेश जिल्ल झालें । पुर शहर (वे) पूर्णांकी की हर

है) : -वितिष्टेवर्-पृत्र शिव : -र्य-पृत्र ध्यैपर्दे. हरीको रहा है किए दक्षरे बारी और विकृत रेटिक ! वरिधीर-नि॰ (बंब) व्हीर रोहीर (धरा, द्वाप) । वरिधावित-दिश् [तंश] पूर्व करते शासित ।

वरिष्मम-पुर्वाल) स्टला दर होन लिएटे स्वर्थ यविश्वाह-दिक [तंत्र] ब्यारी बहा हुमा, क्रिमी बहा हुई

mit, gr | यांचिय-दिश [शंब] व्यक्ती बेल्यन पुर अनेदे से में ल

दिवाद देने क्यांताने करे दिलाहा बना मार्च क्यापा अवते । विशिष्टेश-पूर्व [राव] वर्तती, विश्वास अर्थापार्थि

. पान मृद्रते हैं ! -कीया-पु॰ एक जलीय पश्ची, जल-होता । -शाचा-पु० वह खेत जिसमे पानी मरा हो। सीचा हुआ ऐत ! - गोटी - स्त्री॰ मोतिया श्रीतला । -धट-पु॰ पानी भरनेका घाट। -चक्की-स्त्री॰ पानीकी इक्तिमे चलनेवाली २को। —चोरा—पु० छोटे मुँद और पेरका जलपात्र । ~हड्या – पु० दे० 'पानदान' । ∽हुड्या -पु॰ गोताखोर: एक जलपक्षी जो पानीमें हुन-हुनकर मछलियाँ पत्रहता है। एक प्रकारका पानीमें रहनेवाला भूत (रनश्रुति) । -हुट्यी-स्त्री० एक जलपक्षी जो पानीमें हुन हुरकर मएलियाँ पकड़ता है। पानीके भीतर-भीतर चळने-बाजा एक प्रकारका जद्दाज, 'सदमेरीन'। -पथा -स्वी० पानी लगाबर हाथसे फैलायी जानेवाली रोटी । -वट्टा-प्रानके बीडे रखनेका एक प्रकारका हिस्से ।-बिछिया, "पिच्छी-सी॰ पानीमें रहनेवाला एक प्रकारका टंक मारनेवाला कीड़ा। — अता – पु० केवल पानीमें पकाया इमा भात । -भरा-पु॰ पानी भरनेवाला नौकर । [स्ती॰ 'पनमरिन' ।]-लगा-पु० दे० 'पनवटा' ।-धाडी-सी० पानका खेत, बरेजा । पु० तमोली । —चार्≉—पु० पत्तल । .-बारा-पु० पत्तलः पत्तलभर भीत्रनः एक प्रकारका र्धीप। -बारी-स्ती०, पु० दे० 'पनवादी'। -सखिया-की॰ एक प्रकारका फूल; इस फूलका पीथा। -सलुता-५० प्याक, ग्रीसरा । -साखा-पु॰ पाँच बत्तियोवाङी मग्राल । -सार्--पु॰ द्विसी स्थानकी पानीसे एकदम तर कर देनेकी किया; बहुत अधिक सिंचाई। —सारु, -साला-सा॰ पीसरा । -सृद्या-सी॰ होटी होंगी निसमें रिनेबाला दोनों ओरके टाँडे चला सकता है। -सेरी-सा॰ २० 'प्सेरा' । -सोईं।-की॰ दे॰ 'पन-एरवा'। -हदा-पु० पान या द्वाय भीनेके लिय पानी रखनेकी तमोलियोंकी हाँकी । -हरा:-हारा-पु॰ पानी महतेवाला नीकर, पनभरा । श्ली० 'वनहारन, पन-हारिन' ।]

पनग = -पु० ३० 'प्यत् ग'।

पनगनिक-म्बी० पन्नगी, सर्पिणी ।

पनय-हो॰ धनुष्की होरी। † बॉसका हिल्का। पनपना-अ॰ कि॰ पत्रवित होनाः हरामरा होनाः फूलनाः

फल्माः फिर्मे स्वस्थ दीना ।

पनपाना-स॰ कि॰ किसीके धनपनेका कारण दीना ।

पन्तर•~यु॰ दे॰ 'प्रम्य'; एक बाजा। पनशी-पु॰ इमेल आदिमें बीचोबीच लगायी जानेवाली

पन दे बाकारकी चीकी ।

पनम-दुः [मं०] कटहल; गाँटा; एक सरहका माँगः विभी-रता दह मंत्री; रामरी मैनाका एक बानर् । —सास्टिकाः −मास्टिका-स्री० वट**इ**ल ।

पनिमहा-स्तृत [संत] एक धुद्र रोग जिसमें कान और ग्रिन्द्र गोस्यार पुनियों निरूप भागी है।

पनमी-भी० [मे०] दे० 'पनमिना' ।

पनइ॰-भी॰ पनाइ।

पनदा-पु॰ बारहे आदिशी भीडाई: मेंदर चीडी गरे गालका रना क्यानेवामा या दगरे मिन् दिया जानेवामा पुरस्कार ! पनिहेषार्ग-म्बा॰ देव 'वनहीं'।

पनही*-र्खा० जता ।

पना−पु० अपनेसे पके या आगर्मे पकाये हर आम. इसली आदिके रस या गृदेसे तैवार किया जानेवाला एक प्रकार-का पेय पदार्थ, पानक, पन्ना।

पनाती~पु० नातीका वेटा ।

पनार#-पु॰ दे॰ 'पनारा'।

पनाराः पनास्ता-पु॰ नावदानः नालाः प्रवाह । पनारी-भी॰ नाली, भोरी; # धारा, बहाब; एक भीज्य वस्तु । ⊶दार चादर-सी॰ होहेकी कहर्रदार चादर जिसमें नालियां सी बनी होती है, कोरोगेटेटटिन ।

पनाळी∽सी० मोरी, नाली । पनासना । – स॰ फि॰ पाटना-पोसना ।

पनाह-सी॰ [फा॰] श्रश्न भादिसे बनाव,परियाणः शरणः आड़: शरण रुनेकी जगह, शरण्य। सुरु (किसीसे)-

मॉगना-किसी कष्टपद बस्तु या द्वानि पर्देचानेवाले व्यक्ति-के संसर्गसे वचना । ~स्त्रेमा ≁शरणके लिए कही जाना ।

पनि−'पानी'का समासमें प्रयुक्त विद्युत रूप । −गर−वि० पानीदार : -धट-पु॰ दे॰ 'पनघट' । -हार-पु॰ दे॰

'पनहरा' । –हारी-सी॰ पनहारिन । धनिच#-सी० दे० 'पनच'।

पनिया - नि॰ पानीकाः पानीमं उत्पन्न । पु॰ पानी । ~सोत-वि॰ बद्धत गइरा।

पनियाना! - स॰ कि॰ पानीसे सराधोर करना । अ॰ कि॰ पानीसे चपचपाना ।

पनियासां – प्र० ४।४ ।

पनियास्त−पु॰ एक तरहका फल ।

वनिष्टा-वि॰ जो पानीमें रहे: पानीका: निसमें पानीका थेल हो, जलयुक्त । पु॰ दे॰ 'पनदा' ।

धनी-पु॰ प्रण करनेवाला, कील करनेवाला। † स्ता॰ पन्नी, जुनहरू।-स्पद्दला कागव ।

वनीर-पु॰ (फा॰) फाड़े दूधका थवा, छेना: रखने तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी टिकिया जी शानेके साममें आती है: पानी नियोर्ड हुए दहीने तैयार किया जानेपाला एक प्रकारका साथ परार्थ । मु० - घटाना - कोई काम निकालनेके लिए किमीकी चापत्मी करना । -जमामा-कोई ऐसा काम करना विसने और भी कार्य छिद्ध हो सके। वनीशी - भी० और जगद स्यानेके लिए बगाये हुए छीटे पीपे: पनीरी उगानेकी बवारी ।

धनीला-वि॰ दिसमें पानी मिला दो, जलने भुक्त । पुर दे॰ 'पनेला' ।

धनुआँ-पु॰ तुरुके बहादेका पोवन निधे शरुनकी नरह

पीते हैं। विक जिसमें आवश्यकताने अपिक पानी पर गया हो, फीका ।

वनेकी - न्ये॰ वह रोडी जिसमें परेधनशी जगह पानी सरादा गया हो।

वनेरी-स्टां० देव 'वर्गारी' । पुर बंदीमी ।

पनेवा! –पु॰ रह परी। धनेहदी-सौ॰ पनहरा।

वनेहरा-५० ६नइरा । वर्तेण=९॰ रह तरहरा गाहा विस्ता और पनदश्च

84-2

परितिकः-परिष्यंसः । परितिक्त-वि॰ [मं॰] अति तिक्त, बहुत तीता। परिदाह-पु॰ [सं॰] अति दाह या साप, बरत अधिक परितप्ट-वि० [मं०] जिसे परा मंतीय हो, अन्धी तरह तप्ट. जलनः अत्यधिक मानसिक दःघ, तीम मन्ताप । संतष्ट ! परिदिग्ध-वि॰ [सं॰] (किसी वस्तुसे) बहुत अधिक दक्त परितृष्टि-स्री॰ [सं॰] परितृष्ट डीनेका माव, परितीय, हुआ, जिसपर कोई वस्तु बहुत अधिक मात्रामें लगी दा संतोषः प्रसन्नता । पुती हुई हो। पु॰ वह मसिखंड जिसपर बंबकी तह परितृप्त-वि० [मं०] पूरी तरह अयाया हुआ; संतुष्ट । चडायी गयी हो । परितृति -सी॰ [सं॰] परितृप्त होनेका भाव, पूर्ण तृष्टि । परिदीन-वि० [सं०] 'जिसे बहुत अधिक मानसिक दःस परितोप-पु॰ [मं०] संनोप; कृष्ति; किसी इच्छाकी पृतिसे हो, तीव आंतरिक दःससे पीकित ! -मानस-सर्व-होनेवाली प्रसन्नता । वि॰ जिसे तीज मनोव्यथा हो। वृति सिन्न । परितोपक-पु॰ [मं॰] परितृष्ट करनेवाला । परिदृद्ध-वि॰ [सं॰] अति दृद्ध । परितोपण-प॰ [मं॰] परितष्ट करनेका कार्य । परिदेव, परिदेवन-पु॰, परिदेवना-सो॰ [सं॰] शुरु परितोपी(पिन्)-वि॰ [सं॰] परितोषनाला, परितोषयुक्त, अधिक रीना-धीना, बिलखना, विलाप करना। परिद्रष्टा(ध्रु)-पु० [सं०] परिदर्शन करनेवासा । संतोषी । परितोस*-पु० दे० 'परितोष'। परिद्वीप-पु॰ [मं०] गरहका एक पुत्र । पश्चित्तन-वि॰ [सं॰] पूरे तीरसे त्यागा हुआ, एकदम परिध-पु॰ दे॰ 'परिधि' । छोड़ा हुआ; छोड़ा, चलाया हुआ (जैसे बाज)। [सी॰ परिधन•-पु० दे० 'परिधान' । परिस्यका'।] परिधर्पण-पु॰ (सं॰) साऋमणः हानि पर्देगाना । परित्यक्ता(क्त)-वि॰, पु॰ [सं॰] परित्याग करनेवाला । परिधान-पर [संर] चारों ओरसे पेरना या मारत करना परित्यजन-पु॰ [सं०] परित्याग करनेकी क्रिया, त्यागना । नाभिसे नीचेका पहनावाः वलः पहननेका कपशाः वस परित्वाग-पु॰ [सं॰] पूरी तरह त्याग देना, एकदम छोड आदि धारण करना । देना, पूर्ण स्यागः यद्यः जुदारैः उदारता । परिधानीय-दि॰ (सं०) पहनते योग्य । परिरयागना#-स॰ क्रि॰ परिस्वाग करना । पश्चिमपन-पुर्व (सं०) पहनाना । परित्यागी(शिन्)-वि॰ [सं॰] जो परित्यान करे, पूरी परिधाय-पु॰[सं॰] अनुबर्गणः दल-यतः नितंतरेशः मध्यः मागः वानी जमा करने या होनेकी जगह, जनस्वान । त्तरह छोड़ देनेवाला है परित्याजन-पु॰ [सं॰] परित्वाग कराना, छोडवाना । परिधायक-पु॰ [सं॰] चारों ओरसे पेरने वा आर्व करने परित्यास्य-वि० [सं०] परित्याग करने योग्य, न्होइने वाला; धेरा; देवा; लक्ष्म आदिका बाहा । योग्य । परिधारण-पु॰ [सं॰] सहन करना। परिधायन-प॰ [सं॰] दीइना, भागनाः क्रिमीके चारी परिग्रस्त्र∼वि० [सं०] व्यति त्रस्त, बहुत दरा हुआ ।' परित्राण-पु॰ [मं॰] पूर्ण रक्षा, पूरा बचाद; अनिष्टमें प्रवृत्त ओर वा पीछे-पीछे दीहना । परिधायी(विन्)-दि॰ [सं०] दीवनेवाला, मागनेवाला व्यक्तिका निवारणः भारमरक्षाः आध्यः पनाहः नासः किमीके चारों ओर या गोछे-पोछे दीइनेशानाः चारों और परिवास-वि० [मं०] जिसका परिश्राण किया गया हो। बहनेवाला । पु॰ छियालीसवी संरत्सर । परिग्रातब्य-विव [संव] परित्राण करने योग्य। परिधि-सी॰ [सं०] रुढ़ड़ी मारिका घेरा या बाहा। मेपकी समीपताके कारण सूर्य या नंत्रमाने चारी और पन परित्रासा(तृ)-दि॰, पु॰ [सं॰] परित्राण करनेवाला । वानेवाला भेटल, परिवेष: प्रशासमंदर: इस बनानेवाटी परिवास-पु॰ [सं०] अत्यधिक त्रास, भारी भव । परिदेशित-वि॰ [धं॰] जिसने कवच भारण दिया हो। रेखाः पश्चिका थेराः होमाधिके तीन और रक्षा आनेवाली तीन छटहियाँ; शिनियः आवरणः पहनावाः वस क्रंडी कवचान्त । कीई शासा विसमें बलिपश बाँधा जाता है। परिक्रमा परिदर्भ-वि॰ मि॰ जिला, सलसा हुआ। परिदर-पु॰ [सं॰] मन्दोंका एक रोग जिसमें समुद्रे दाँतोंसे करनेका नियम मार्ग । पुरु समुद्र (बी पृथ्वीकी घेरे हुए है) । -पतिस्वेचर-पु॰ शिव । -स्थ-पु॰ परियारहा अलग हो जाते और खन निरत्नता है। परिदर्शन-पु० [सं०] सम्वक् दर्शन, सब ओरमे, अच्छी रथीकी रक्षाफे लिए रखके चारों ओर नियुक्त ऐनिक ! परिधीर-वि॰ [मं॰] अति गंमीर (स्वर, ग्रन्ध)। तरह देशना । परिदष्ट-वि॰ (मं॰) दुरी तरह कार साया दुआ; दुकड़े-परिपृषित-वि॰ [सं॰] पूर्ण रूपसे बासित । परिधुमन-पु॰ [मं॰] हदारा एक रोग जिसमें मन्डी द्रकडे किया हुआ। परिदहन-पु॰ [मं॰] जलाना, झुलसना । वरिभूसर-वि॰ [सं॰] भृष्ठते भरा दुशा, निसर्ने स्व पूर्व परिदान-प॰ [सं॰] अदश-बदश, विनिमवः धरोहर सीटाना । लगी हो। यरिधेय-वि॰ [मं॰] यहनने बोग्य ! पु॰ नोभे या मीतर परिदाय-५० [मं०] सगंधि, सदान् ।

पहननेका एक कपशा ।

परिध्यंस-पु॰ [मं॰]- वर्षादी, विनामः बातिष्ट्रिम

परिदायी(पिन)-प॰ (६०) यह जो अपनी लहनीका

विवाह ऐसे स्पक्तिने करें जिसका बढ़ा मार्व व्याहा न हो।

झाइना'।

पपाल-पु॰ पके हुए धान, कोड़ो आदिके ने टॅठल जिनसे दाने अलग कर लिये गये हो। मु॰ -झाडुना-व्यर्थ सम बरना; ऐसे व्यक्तिकी सेवा करना जिससे कुछ प्राप्त स शो १

पयो-'पयस्'का समासगत रूप । ~गढ:-गळ-पु॰ भोला; दीप ! ∽प्रह्र−पु० एक यद्ग-संबंधी पात्र !−धन− पु॰ भोला । -जन्मा(न्मन्)-पु॰ बादल । -द्-पु॰ बाइल । --०सहदु-पु॰ मोर् । -धर-पु॰ बादल; स्तन; मोथाः नारियलः रीट । -धा(धस्)-पु॰ समुद्रः बारलः जलाश्य ।-धारागृह-पु॰ वह स्नानागार जिममें जल धाराके रूपमें गिरता हो। -धि~पु० समुद्र । -० ६-५० समुद्रफेन ।-निधि-५० समुद्र ।-मुक्(च्)-पु॰ बादल; मोधा । - राश्ति-पु॰ समुद्र । - बाहु-पु॰ बारलः मोथा । - धस-पु० केवल द्थ पीकर रहनेका वतः पयोष्णिजाता~सी [सं०] सरस्वती नदी ।

पयोध्यी-सी० [सं०] विध्याचलसे निपलनेवाली एक परानी नदी।

परंच-स॰ [सं॰] और भी; पर, हेकिन, तो भी। पंज-प॰ [एं॰] तेल पेरनेका कोल्ड; हरीका फल; फेन; र्दश्चा सह ।

प्रतन-पु॰ [सं०] वरुण ।

पांत्रय-वि० [मं०] शत्रुको जीतनेवाला । पु० वरूण । परंता-सी॰ [मं०] उत्सव आदिभें होनेवाली औनारोंकी ध्वनि ।

परंतप-वि॰ [मं॰] श्रुष्टभौको मंत्रस करनेवाला, श्रृष्ट्रतापक। परंतु-अ० [सं०] पूर्वकथित स्थितिसे वैपरीत्य या अंतर रिखलानेके हिए प्रयुक्त किया जानेवाला एक दाण्ट-मगर, हेकिन, किंतु ।

परंद, परंदा-पु॰ दे॰ 'पहिंदा' ।

परंपद-पु॰ [सं०] बैनुंठा मोदा उद्य पद ।

परंपर-पु॰ [मं॰] पीय, प्रपीत्र आदिः एक प्रकारका मृग । · रि॰ क्रमागत, सिलसिन्देबार ।

परंपरमा-अ॰ [मं०] परंपराके अनुसार; परंपरासे । परंपरा-सी॰ [तं॰] अविच्छित्र क्रम, चला आता हुआ षट्ट तिल्तिला, अनुक्रमः; फ्रमबद्ध समृह् या पंक्तिः प्रधाः, मताही; पुत्र-पीत्र मादि, वंद्य, संतति; वध ।

पर्रपराक-पु॰ [सं॰] यसपशुका वध । पर्यसमात-वि॰ [सं॰] सदासे चला थाता हुमा; क्रमागत। परंपरित-दि॰ [मं॰] परंपरायुक्तः परंपरापर अवलंबित । -रूपर-पु० रूपर अन्दारका एक भेद विसर्वे पहडा

मारोप विसी दूसरेके बारोपका देतु होता है। परंपरीय-वि• [मे०] बंशकमने प्राप्तः परंपरागतः । परा-'परम्'टा समासगढ ६५ । -कृत्वा-वि० वर्ष

इति। - गुँमा - सी० वह सी जो अपने पनिसे असंगृष्ट दोनेडे कारण परपुरचमे प्रेम करना भावती हो।-पुरुष-रि॰ मनुष्यम् उपनर । -दास-रि॰ क्षीने अधिक, दानाः भिर ।-ध(म्)-अ॰ हमारे बाद आलेवान दिन, प्रसी । पा- १० हिन्, तो भी, लेकिना चैटे: = पम । प्र० अधि-ररम बारतका निद्ध तिसमे आधार और आधेवटा संबंध । सचित होता है। वि॰ [सं॰] अपनेसे भिन्न, अन्य, दसरा, गैरः दसरेका, गैरका, परायाः आगेका, बादकाः जो जदा या अलग हो; अतिरिक्तः जो दूर या परे हो; जो किसी इदके बाहर हो; जो सबसे आगे या ऊपर स्थित हो; सबसे बड़ा, श्रेष्टः सर्वातीतः शत्रतापर्गं, विरोधीः छगा हुआः सीनः निरत । सर्वे० दसरा व्यक्ति । प्र० अजनशीः चरम विदः गौण भर्यः चत्रः देवल बद्धाः शिवः बद्धाः मोशः सामान्य नामक पदार्थका एक भेद (न्या०) । ~कलग्र-प० दसरेकी सी।-काज-प॰ [हि॰] दसरेका काम।-काजी-वि॰ [हिं0] दूसरेका काम करनेवाला, परोपकारी । -काम-पु॰ दसरेका शरीर । -॰ प्रवेश-पु॰ योगीका अपनी आत्माको किसीके शवमें पर्ववाना । -फ़ति-ली॰ इंसरे॰ की कृतिः दसरेकी कृतिका बर्गन । -क्षेत्र-पु॰ दूसरेका श्वरीरः दसरेका खेनः दसरेकी स्त्री । -शाद्या-प्र॰ [हि॰] दसरे पेडोंपर लगनेवाला पीधा, वंदाक 1 -शाली-खांव [हि॰] अमरबेल । -मामी(मिन्)-वि॰ द्वसरेके साथ जानेवालाः इसरेसे संबद्धः इसरेके लिए लामदायक। -गण-वि॰ इसरेके किए हितकर । -प्रीध-छी॰ (उँगली भादिकी) पोर । -ग्लानि-सी॰ शत्रुकी वश्रमें करनाः शत्रका दसन । - चक्र-प्र॰ शत्रका राष्ट्र मादिः दाञ्जकी सेना; दाञ्चका आक्रमण जिसकी गणना ६ ईतियों में है। - च्छेंश-वि॰ पराधीन । पु॰ इसरेकी इच्छा या मर्जीः अधीनता । - च्छंदानुवर्ती(तिन्) - वि॰ जी दसरेकी श्च्छाके अनुसार काम करे, पराधीन । - विख्य -प॰ दसरेका दीय। -ज-दि॰ जिसका पालन-पोषण किसी इसरेने किया हो। जो इसरेके बाद हो। धनुका । पुरु [{१०] एक राग । —जम-पु॰ पराया, रवजनका उल्ह्याः दे० 'परिजन' । —जास−दि० अन्य दारा पालितः परावरुंवी । पु॰ मीवरः (दि॰) दूसरी जातिका मनुष्य । सी॰ दूमरी जाति। -जाति-सी॰ दूसरी जाति। -जित-वि॰ इसरेके द्वारा पाला-भोसा हुआ। जिमे किसीने बीत हिया हो, विवित । पु॰ कीयत । ~तंग्र −वि॰ जी इसरेके बरावें हो, पराधीन ! -० हैथीमाय-प्र॰ दी इक्तिहाली और परस्पर विरोधी राज्योंके मध्यमें रहते हुए एकमे कुछ धन पाकर दोनोंसे मैत्रीमाव रखना । - हार-ह्यां दमरेकी स्ती, परायी स्ता: • हदमी: प्रमा । -द्वारिक,-दारी(रिन्)-पि॰, पु॰ व्यमिनारी । -द्वपण-संधि-म्बा॰ बह धीप विसमें राज्यको सारी आब देतेसी प्रतिहासी गयी हो ! ~हेपना~पु॰ १८४२ ! ~हेस~ अपने देशमे नित्र देश, दृगरा देश। – देशापपाइन -पु॰ दुसरे देशके क्षोगोंको दुनारर उनमे उपनिषेध बसाना (को॰) । –देशी–वि॰ (वि॰) इसरे देशका । पु॰ दमरे देशमे रहनेशनाः प्रशसी । ~होही(हिन),-हेपी-(पिन्)-नि॰ इसरेसे देश या राष्ट्रता वरनेवाना ! -धन -पु॰ दूसरेहा थन, दूसदी गंगति । -धर्म-पु॰ दूसरेहा बा इमुरा धर्म, अपने धर्मने नित्र धर्म । -धाम(न)-पुर बैंबुंडः परमेवरः विष्यु । —ध्याम-पु॰ वरः च्यान क्रिमुने क्येंबके मतिरिक्त कोई और बश्तु म रहे । -निरात-पुर नमासने पहते जाने योग्य शब्दना बादने रखा जाता (बेमे-भूतपूर्व) १ -पश-पुर रज्हा दशाविरोधीहा महा

परिपूर्णेट्र-पु॰ [सं॰] पूरा चाँद, सोल्हों बलागोंसे बुंक्त 'चंद्रमा Î परिपर्ति-सी० (सं०) सम्यक् पृति । परिपृच्छ-पु० [सं०] प्रश्न । परिप्रच्छक-वि॰, पु॰ [सं॰] प्रदन बरनेवालाः प्रहनेवालाः विद्यास । परिप्रच्छनिका-स्री॰ [सं॰] बाद-विवादका विषय । ः ः परिप्रच्छा-सी॰ [सं॰] प्रश्नः विशासाः पूछना । परिपेलव-वि॰ [सं॰] अत्यंत कोमल । पु॰ एक सुर्गधित :धास । ८ परिपोट, परिपोटक-पुर [संर] यानका एक रोग । परिपोदन-पु० [सं०] छिलका वा चमहा करुग होना । परियोप-प॰ सि॰] सम्बनः पृष्टिः सम्बनः पोपण । परिपोषण-पु० [सं०] परिपुष्ट करनाः वृद्धि करना । परिप्रदन-प्र• [सं॰] प्रदनः जिद्यासाः युक्तायुक्तताया प्रथ । परिप्राप्ति-छी० (एं०) मिलमा, प्राप्त होना । परिप्रेपण-पु॰ [सं॰] भेजनाः स्थापनाः निकाल बाहर परिप्रेपित-वि॰ [सं॰] भेजा हुआ: त्यागा हुआ:निर्वासित। परिप्रेश्य~वि० सि०] भेजने योग्य । १० भूत्य, नौकर । परित्रध-पर [मंर] तरनाः भीका पोतः बादः आप्रावित द्दीनाः पीइन । वि० हिल्ला हुमा, चंचल, अस्थिरः तिरहा तुआ । परिष्राधित-वि॰ [सं॰] दे॰ 'परिप्तृत'। परिप्तत-वि॰ [सं॰] जल आदिसे आई या सिक, सरा-बोरः जलसे आग्राबितः बादके पानीसे व्याप्तः अभिभूतः प॰ छलौग । परिप्लता-छी० [मं०] मदिरा; मैधुन-वेदनावती थोनि । परिप्लप् -दि० [सं०] जना तुआ; जलाया हुआ। परिद्रोच-पुर्व [संर] जलनाः जलानाः आंतरिक ताप । परिफल्ल-वि॰ [रो॰] वै॰ 'अपूरु'। परिबंधन-पु॰ [सं०] जकश्यर बॉधना । परिवर्ष - पु० [सं०] दे० 'परिवर्ड' । परियर्हण-प्र० [सं०] दे० 'परिवर्हण'। परिवाधा-कौ॰ [मं॰] बष्ट, तकलीकः श्रम, बावास । परियंहण-प्र॰ [सं॰] अन्यदयः वर्धनः बद्दानाः परक द्रोध । परिवृद्धित-थि॰ [री॰] बहाया हुआ, वर्षियः बृद्धिशीला ···से तुक्त । पु॰ हाथीकी निग्पाङ । परियोध-पुरु [गुरु] शान । परियोधन-पुरु, परियोधना-सौर (संर) नेतायनी । परिभंग-पु॰ [गं॰] उन्हे उक्हे दीना। परिभक्षग-५० [मं०] घर कर बाना । परिभारतंत-पु॰ [र्ह्न॰] टॉटना पटकारना, धमकाना । परिभाव-पुर [मंत्र] अनादर, तिरस्कार; पराजय । च्यद-प् देव गरत ! -विधि-मी वेबदरी, दिरस्कार ! यरिभवन-पु॰ [रां॰] अगादर करना, तिरस्कार बरना । परिभवनीय-वि० (रो०) जनावर वरने योग्य । परिभयो(विन्)-वि॰ [गं॰] अनादर या तिरस्कार करनेवाला । परिभाष-पु॰ [सं॰] भनादर, तिरस्कार ।

परिमाचन-पु॰ [मं॰] संयोग, गिलगः विचार करमा, ध्यनन करना । परिमावना-स्त्री॰ [सं॰] विचार करना, विचारना t परिभावित-वि॰ [सं॰] संयुक्तः व्याप्तः विभारित । परिभाषी(विज्)-वि॰ [सं॰] अनहर या विस्तार करनेवाला । ٤. परिमायक-वि॰ सिंगी अवहा करनेवाला । परिकायण-पु॰ [मं॰] बातचीत, बातांनापः भिरापुर्वेद दुर्वेचन कहना, फटकार; नियम। परिभाषा-स्तो॰ (सं॰) किसोका ऐसा नपान्तला परिचय विससे उसके स्वरूप, गुण, वैशिष्ट्य मारिका बरार्थ प्रान हो जाय, रुक्षण: किसी झाल, यला या विचाठे क्षेत्रजे विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला श्रम्य वा एंडा: मपरे प्रयोगके छिए शासकारी द्वारा रची हुई विशिष्ट संदाः परिभाषाका शान्त्रिक रूपः वरिभाषाकी श्रम्शवरीः पातः चीत, आलाप: ब्यास्या: निदा । परिभाषित-वि॰ '[सं॰] रषष्ट रूपमे कथित, समझाकेर कहा हुआ, स्याख्यात । परिभाषी(पिन्)-वि॰ [शं०] बोल नेवाला, सहनेवाला। परिभाष्य-वि० [सं०] वधनके योग्य । परिभिन्न-वि॰ [सं०] विदीर्णः श्रद्धाः विसका भाकार विरुष्ठ ही गया हो। परिमक्त-थि॰ [सं॰] जी भोगा जा चका हो। जी कामन रुप्या जा चुका हो। सामा हुआ। अधिहारमें दिया हुआ । परिभाग-वि० (सं०) शका हुआ, देश । परिभू-वि॰ [सं॰] चारी औरसे धेरने या आग्छारित करनेवालाः आवेष्टितः करनेवालाः ध्याप्त करनेवाला (इसका प्रयोग ईववरके शिय होता है)। परिभात-वि॰ वि॰] जिसका अनादर या निरस्कार दिया गया हो, अनारत, निरस्तन । परिभृति-सी॰ [शं॰] अनादर, तिरस्कार ! परिभूषण-९० (सं०) समाना, बनाव-सिगार करना, हैंदा-रमा; किसी प्रदेशकी पूरी मालगुजारी विपशीको हैटर की जानेबाली संधि । परिभृपित-दि॰ [सं०] सनाया हुआ, धैनारा हुआ। परिभेद-पु॰ [नं॰] शुक्त आदिया आपानः शन, पार । पृहिभेदक-पु॰ [सं॰] फाइने या छेतोबाहा संस्थिति। वि॰ पाधनेवासाः परिमित सरनेवासा । परिभोक्स (कः)-वि०, प्रव [तंक] विना भविदारके परायी बस्त काममें छानेवाला । परिभोग-पु॰ [सं॰] सेवन, उपगांग; सी-प्रसंगः दिना अधिकारके परायी वस्तुएँ काममें सामा । परिश्रांश-पुरु [मेरु] विश्वा, प्रतन, च्युत होता साव निरुष्या, प्रायन । परिश्रम-पु॰ [मं॰] इपर-उपर गुमताः चारी शोर गुमताः कोई बात प्रवानिकालर कहना; भग, शांति, गृष्ट । परिश्रमण-पु॰ [गं॰] चारी और गुमगा स्थर-उपर गुमना, पर्यटनः पहिषे आदिका यहर कानाः परिधि । परिश्रष्ट-विक [मंक] विदा दुआ, पविता सीमा दुआ, श्री लायता हो समा हो। सामा हुआ। बदका दुमा, दिलही

परतानी-को० दे॰ 'प्रतहनी' । प्रतसनाक-अ० क्रि॰ प्रवाहित होना; प्रकट होना । प्रतहनी-को० चाँदी, होनेकी गुहियाँ हालनेका एक नलोके आकारका आला।

परगाद*-वि॰ दे॰ 'प्रगाद'।

परगाद=पु० (का॰) व्यक्ति परिधि बनानेका एक आला। परगाद=पु० (का॰) व्यक्ति परिधि बनानेका एक आला। परगास=पु० वे॰ (प्रकाश)।

परगासना - स॰ कि॰ प्रकाशित करना । अ॰ कि॰ प्रका-शित होना ।

परघट+-वि० दे० 'प्रकट' ।

परघटे - वि० दे० 'प्रस्ट' । परघनी - सी० दे० 'परगइनी' ।

परचंद्र=-वि० दे० 'प्रचंद्र'। परचंद्र=-पु० दे० 'परिचय'।

परचत - स्ति जान-पहचान । परचना - अंशित किसीसे स्तमी जान-पहचान हो जाना कि उससे कोई सरका न रह जाय, हिस्स मिल जाना; सरका रूपना; * पहचाना जाना; सुरुपना । सुरु

परच पदना - पहचानमें आना ।

परवर्ष—पु. किलिंकी एक जाति । परवा—पु. (काल) कागजका उक्तका; कागजका वह उक्तका निवपर परीक्षावियोजे हक करनेके प्रश्न क्लिये रहते हैं, प्रश्नपत्र; पुरजा, रक्का; क परिचय—'कह कभीर परचा सवा गुरू दिखाई बार'—कभीर; परा, जीवा सबुत । युक —देता—दिसोको पूर्ण परिचय देना । —प्राग्ना—सबुत देनेजे करना; किसी देवो-देनतासे अपनी जारिक दिसानिकी

प्रार्थना करना (श्रीहा) । परचाना-स॰ क्रि॰ परचने देनाः हिलाना-मिलामाः वसका स्थानाः • सुलगाना-'दिरहा दहन काम नदैला परचाये

दे'-सेनापति ।

परचारां -पु॰ दे॰ 'प्रचार' । परचारना॰-स॰ क्रि॰ दे॰ 'प्रचारना' ।

परप्त-पु॰ भारा-पायल आदि भीजनको शामग्री । परप्ती-पु॰ परप्त वेयनेदाला । स्रो॰ परचूनीका काम ।

परिषे, पर्वा - पुर दे॰ 'गरिचय' । पराजी - सा॰ कमरेके भीतर बनी हुई सामान रखनेकी

पारनः इत्यो छाजन, इत्या छण्यः । परछन-पु॰ एक पैतादिन क्षेत्राचार जिनमें सियाँ बरको

परछन~पु॰ एस यैतादिक क्षेत्राचार जिममें सिवी बरकी वरी-अमृतका टीका क्ष्माती और मुस्त तथा बट्टा उमपरसे पुमाती दें; वरदी आरती जतारनेको सीत ।

परहना-स॰ फ्रि॰ परहन बहुना ।

राजना-च-विकास स्टाम स्टामा । स्टामा बुनाईसी मूल स्पेटनेनी जन्मी। बहु स्टामी। स्मामी मिट्टिया माने स्थापना स्टामी मही स्टामी। स्मामी मिट्टिया माने स्थापना स्टामी मेटिने या स्थापना स्टामी क्रियाना स्टामी स्टामी या प्रमाणना स्टामी स्टामी स्टामी

पराहिं-भी॰ स्थिति वह प्राया जो बबती हुए और यह रिशामें परती है किना। हुए और रिशामें बसते सेवने या बारिने प्रहाद फैल नहीं प्राया, विश्वासा यह, दरेश भारिने प्रशेषाओं हिमीनी प्रायाहित। सु॰ —से हरवा-भाजूनी बाग्री भी हरता, बहुव करिंड ध्रना ।

परछालना=-स॰ कि॰ प्रशालन करना, साफ करना, धोना।

परजंक•⊷पु० दे० 'पर्यंक' । परजन्य≠⊶पु० दे० 'पर्यंन्य' ।

परवार्य==पुरुष् ५ प्यत्य । परवार्ताः==अ० कि.० बलना;ं कृद्ध होना, सीत चलना; र्रम्यां करना, देव करना ।

परञ्चट-पु॰ दे॰ 'परजीट'।

परजा-सी॰ प्रजा, असामी, रैयतः नाई-बारी आदि आप्रित

परजाता-पु॰ एक प्रसिद्ध कुछ, हरसिंगार; इसका पौधा ।

परजाय = पु॰ दे॰ 'पर्याय'। परजीट - पु॰ सालाना रिस्तानपर महान उठाने, जमीन हेने देनेकी रीति; महान बनानेकी जमीनका सालाना

िंदराज । परज्यस्मारण्यक कि॰ प्रज्यस्ति करना । अ॰ कि॰ प्रज्यस् स्ति दोना ।

परणना=-स॰ कि॰ व्याहना ।

परतंचा, परतिंचा - सी॰ दे॰ 'प्रायंचा'।

परतः(तस्) - अ॰ [सं॰] दूसरेसै; शत्रुसे; बादमें, पीछे; परे, आगे। - प्रसाण-वि॰ शे दिसी दूसरे प्रमाणसे मिद्र हो, जिसते लिए दूसरा प्रमाण अपेक्षित हो, 'रहनः प्रमाण'का स्ट्रटा।

परत-सी॰ तह, स्नर, पुर ।

परतप्छ, परतछ=-वि॰, ब॰ दे॰ 'प्रत्यश्र'।

परतल-पु॰ ल्दुबा धोहेकी पीठपर रशनेका भेरा या गोनी। -काटर्टू-ल्दुबाधोश।

परतला-पु: परतली-भीः तलबार आदि रगमेदी यमहेदी यह पट्टी ओ संपेते स्टब्हायी जाती है।

परता-पु॰ दे॰ 'पहता' । परताजनार्र-पु॰ गहनीपर मएलीके सेहरेका आखार

बनानेका सोनारोंका एक बाला।

परताप≠−५० दे॰ 'दनाप'। परताल−को॰ दे॰ 'परत:ह'।

परतिग्वा, परतिज्ञाः - सी॰ दे॰ 'प्रतिद्वा' ।

परतापाः परतिकार-साथ देव प्रतिहाः। परता-सी० वद जमीन को कीती-बीदी न जानी हो। वह पहर जिसमें इसा करके सनाज भीताने हैं। सु० ⊷

्रेना−भेषाना । वस्तीत, वस्तीति≠−सी० दे० 'प्रमृति' ।

यस्तातः परताति = स्वा० देव 'प्रकृति' । परवेजना = नव क्रिव स्वायनाः, छोदना ।

परम मा (ति) दुष्ठरे स्थानमें; परभोदमें; उत्तरकाणमें । पु॰ परणोद । - भीद-दि॰ मिने परभोदमें दिगदनेदा भय दो, पार्मिक ।

परयनां --पु॰ दे॰ 'वनेश्वन' । परद॰--पु॰ दे॰ 'दरदा' ।

परद्विष्यताः परद्धिताः - स्टो॰ दे॰ 'माद्विणा' । परद्विषाः - स्टोनीः ।

परदर्नी=-भी भी है। दक्षिण मा ग्रह ।

परदा-पु॰ [पा॰] दिशी बग्न, स्वर्गित शाहिशे हिंशे स्रोतन बहरेने बामडा बहता. हार शाहिश कीट बहरेन

परिरमित-वि॰ सिं॰) (कामकीहा बादिसे) प्रसन्न किया परिराटी(टिन्)-वि॰ [सं॰] चीखने-चिष्ठानेवालाः रट लगानेवाला । परिरोध-प॰ [सं॰] रोक, रुकावट । परिलंघन-पु॰ [सं॰] उद्यलना, खाँमना । परिलघ-वि० (सं०) बहुत छोटा: बहुत हरूका: जो बहुत जस्द पच जाय । परिलिखन-पु॰ [गुं॰] रगइकर चिकना कंरना । परिलिखित-वि॰ [सं॰] जिसके चारी ओर रेखाएँ आदि बनायी गयी हो, ग्रेस आदिसे घेरा हवा । परिस्रीद-वि० (सं०) अच्छी तरह चाटा हुआ। परिलक्ष- वि० [सं०] स्तियस्तः सप्तः नष्ट । - संज्ञ-वि० वेद्दोशः संशादीन । परिल्डन-वि० सिं०] काटा हुआ। काटकर अलग किया हुआ । परिकेख-पु॰ वर्णना [सं॰] रेखा-चित्र, खाका; रेखाएँ या चित्र खींचनेका आला, कूँची, कलम आदि । परिक्षेखन-पु॰ [सं॰] वेदीके चारों ओर रेखाएँ बनाना । पश्छिलना#-स॰ कि॰ जानना, समदाना । परिलेही(हिस)-प्र० [सं०] कानका एक रोग। परिकोप-प॰ (स॰) कोरः नाद्यः शतिः उपेक्षा । परिवंचन-पु०, परिवंचना-स्रो० [सं०] भोसा देना, छलना । परिवका-सी० [सं०] गोल गहहा। परिवरसर-पु० [सं०] पुरा वर्ष । परिवरसरीण, परिवरसरीय-वि॰ [सं॰] हिसका मंगंध पूरे वर्षसे हो; पूरे वर्षभर रहनेवाला । परियदन-पु॰ [सं॰] निंदा करनाः किसीके दीप दिखानाः शोर मचाना। परिचयन-पु॰ [सं॰] कतरनाः मूँबना (बाल) । परिवर्जन-प॰ [सं०] स्वागना, स्वागः मार्ण । परिवर्जनीय-वि॰ [सं॰] स्वागने योग्य । परिवर्णित-वि॰ [मं॰] त्यागा हुना, स्वक्त । परिवर्त-पु॰ [सं॰] चहार, परिभ्रमण; किसी काल वा सुग-को समाप्ति, युगका अंतः (प्रंयका) परिच्छेद, अध्याय भादि: विनिमय, भदल-बदश: महायाण्यप: आहर्तिः प्रमर्जनमः राश्चित्रज्ञका फेराः पटायमः निवासस्थानः वृत्य-कापक पीत्र। परिवर्तक-वि॰ [मं॰] धुमानेवाला, जबर देनेवाला; चक्कर सानेवालाः विनिमयकर्षा । पुरु मृत्युका एक पौत्र । परिवर्शन-पु॰ [सं॰] फेरा, यहरः चकर देना, परिसमणः उल्हानाः प्रत्यनाः स्थायः हेनाः अदल-बदलः विनिययः हेर फेर होना, बदलना, एक रिपति, रूप बादिसे दसरी श्यिति, रूप आदिकी प्राप्त दीनाः किसी काल या अगका र्भत । परिवर्तनीय-वि० [सं०] परिवर्तनके योग्य । पश्चितिका-सी॰ [सं॰] हिर्गेद्रियका एक शह रोग । परिवर्तित-वि० [मं०] त्रिसने चहर दिया हो। जिसे चहर दिया गया हो। उल्टा-एल्टा हुआ। जिसका निनि-

मय किया गया हो; जिसमें हेर-फेर हुआ हो या किया गया हो; बदसा हुआ; सीटा हुआ। परिवर्ती(तिन्)-वि॰ [सं॰] जो बदलता रहे: विसर्ते परिवर्षन होता रहे; विनिमय करनेवाला; जो पमता मा चक्कर देवा रहे; भागनेवाला। परिवर्तेळ-वि० [ग्रं०] एकदम गोरु । परिवर्धन-पु॰ [सं०] अच्छी तरह बहुना या महाया बाना, सम्यक वृद्धि । परिवर्धित-वि॰ (सं॰) जो अच्छा तरह वटा हो या बहाया गया हो; जिसमें पूर्व वृद्धि की गयी हो; जिसमें कदाते कुछ और जोड़ दिया गया हो। परिधर्मा (र्मन्) -वि॰ [मं॰] जो कवबसे दका हो, हवबा-THE P परिवर्ष -प्र॰ सि॰] छत्र, चेंबर मादि राजनिक: राजानीके अनुचर भादि, दल-वटा फगरे या परका शाब-शामानः ·जीवनोपयोगी आवह्यक बर्तुएँ; संपत्ति । परिवर्द्दण-पु॰ [सं॰] अनुचरवर्गः वेश-भवाः पोशायः · बुद्धि, बाह: पूजा । परिवसम्ब-पुरु (सं०) गाँव । परिवह-पु॰ [सं०] सात अकारकी बाबुओं मेंसे पकः शक्तिया सात जिहाओं मेंसे एक। परिवा-की॰ पदकी पहली तिथि। परिवाद-प्र• [सं•] निदा, धिकायतः क्रिमीमें ऐसे दोष दिखाना मिनका अस्तित्व न हो। हाठी निदाः करपाति। अपवाद: आरोपित दोष, जुर्म: मितरार । परिवादक-प्रवृक्षिणे बादी, सरदे निंदा करनेरानाः बीणा बनानेवाछा । परिवादिनी –छी० (सं०) साह तारोंबाली योगा । परिवादी(दिन)-वि॰ (सं०) निंदा करनेवाला, अपनाद करनेवालाः भारीप करतेवालाः शीर मचानेवाला । परिचाप-प॰ (सं॰) पपन, शेलाः मंदन, मॅ्रनाः बनास्यः तालावः वरका उपयोगी सामामः अलचरवर्गः भूगा हुमा चारक, छाया, फरही; देना । पश्चिषपण-पु० (सं०) संदत्त । परिवापित-वि॰ [सं०] मैश हुआ, हंदित । परिवार-पु॰ [सं॰] कुटुंद आदि; आधिवजन, परिजना अनुवरीका समूद, दल-बल; दक्तनेवाली वस्तु, आवरण व्यानः राजातीय व्यक्तिः • बरनभोदा सगदाय, सगृह ! परिचारण-प॰ [सं॰] दक्षनेकी किया। सानरणः स्वान । वरिवारिस-वि० [मृं०] पिरा द्रशा, बावेहित । परिधास-पु॰ [मं॰] ठहरना, टिसना; सुर्गंप, सुराम । परिवाह-प॰ [मं॰] पानीका समस्कर वा प्रदश् वारी ओर बहुनाः वरे हुए पानीके बहुनेका मार्गः कालम् पानीः का निकास । परिवाही(हिन्)-वि॰ [मं॰] उमस्बर मा एत्यका मप्टनेवाला । परिविदक, परिविद्यु(त्)-पु॰ [सं॰] २॰ 'परिनिए'। परिविषणा, परिविश्न-पुर्व [मं•] दे॰ 'परिरिच'। परिवित्तः परिवित्ति-पु॰ [एँ॰] वह क्रिएका छोटा मारे वसने पहने ही विवाह या कांग्रश आपान बर से !

स्री॰ उत्तम गति, मुक्ति । - शध-पु॰, बहुत अच्छा साँइ । -गहन-वि० जिसे समझना या जिसका पार पाना नहत कठिन हो, बहुत पेचीदा, अति कठिन । -जा-सीव प्रकृति। -तस्य-पु॰ मृङतस्य, ब्रह्म। -धाम(नू)-पु॰ वैकंठ ।-पद-पु॰ सबसे उच पद या स्थानः सुक्ति । , -पिता(त)-प्र॰ परमेश्वर । -प्ररूप,-पुरूप-पु॰ पर-मातमाः विष्णु । -प्रस्य-वि॰ भति प्रसिद्ध । -फ़ल-पु॰ सरमे उत्त्रह फल; मुक्ति ।—ब्रह्म(न्)—प॰ दे॰ 'परमदा' । प्रह्मचारिणी-सी॰ दुर्गा। -अट्टारक-प॰ चक्रवती राजाओंकी एक प्राचीन उपाधि । -महारिका-स्त्री० पट-रानियोंकी एक प्राचीन खणाध । -अहान(हरा)-वि॰ सरते रहा; सबसे अधिक सहस्ववाला (काल, आकाश, भारमा और दिशा-वे चार सर्वगत होनेसे परम महत् माने जाते हैं) ।-रस-पु॰ तक, महा । -हंस-पु॰ एक महारका सन्त्याची (ऐसे सन्त्यासीके लिए दंड, शिखा, स्य आदिको कोई आवड्यकता नहीं होता); परमेश्वर । परमक-वि॰ [सं॰] सर्वोद्यः सर्वोत्कृष्ट । परमदा, परमादा-पु॰ अस्तरके काम भानेवाला एक इ.एडा । परमनेंट-वि० [बं०] रथायी, स्थिर । -सेटिलमेंट-प्र० · दभायी इंदोवरत । परमर्पि-पु॰ [सं॰] उद्य कोटिका ऋषि (जैसे वेदब्यास) । परमांगना-सी॰ सि॰] अच्छी सी । परमा-क्ला॰ शीमा, साँदर्य । † पु॰ प्रमेह रीग । परमाक्षर-पु० [मं०] ॐकार । परमाटिक-पु० [सं०] यजवेदकी एक शासा । पामाणु-पु॰ [सं॰] वृथिवी, जल, तेज और बायुका वह सबने छोडा माग जिसके और इकड़े ज हो नहें। किमी पदार्थका वह सबसे छोटा द्वकड़ा जिसके और हकड़े न रो सरें। -चम-पु॰ [[६०] ब्रेनियमने तैथार किया नानेवाला पक महाविध्वंसक वस जिसका आविश्वार दितीय महायुद्धके समाप्तिकालमें हुआ (हमी वसके प्रहार-से जापानने मित्र-सेनाओंके सामने पुरंग टेक दिये)। -पाद-पु॰ म्याय और वैदीपिक दर्शनका यह मन कि रीमारकी सहि परमाणशीमें हुई है। -बादी(दिन)-पुः परमाणुबादकी माननेवाला ।

परमातमा(मन्)-पु॰ [मं॰] परमेश्वर । परमाहैत-पु० [तु०] सभी भेदाने रहित परभारमाःविष्यु। परमानंद-पु॰ [सं॰] उत्तम भानंदः उत्तम मानंदस्य परमारमा १ परमान--पु० प्रमानः विश्वासः परिमाणः सन्य नातः

परमानना - स॰ कि॰ प्रमानस्पर्मे ब्रह्ण करना, प्रमान माननाः भंगांदार करनाः माननाः, विश्वास करनाः। परमाध-पु॰ [मृ॰] चावरुकी गीर, वावस । परमा मुद्रा-सी॰ [मं०] त्रिपुराची पूत्राके भौतर्गत एक सदा 🗓 परमायु(म्)- ही० [मं०] सर्वाधिक आयु १ प्रसामुक-पु. [तं] सम्म, विवयमान नामका देह ।

परमार-पु॰ राजपूरीसा एक भेख जिल्ली जरसील सहिन।

बंदमे मानी जाती है। धरमास्थ#-प॰ दे॰ 'परमार्थ' । परमार्थं –पु॰ [सं॰] सरकृष्ट वस्तः नित्य और अंदाधित पदार्थ; यथार्थ तत्त्व; सन्य; मोश; बहा ।-वादी(दिन्)-पुण नेदांती, तस्वशः - विद्-विण, पुण महाधानी, दार्शनिक । परमार्थी(थिन)-वि॰ सिं॰) परमार्थको जानने या प्राप्त करनेका इच्छक ।

परमाह-पु० सिं०] शम दिनः पुण्यदिवस् । परस्थिति# –को० परम सीमाः गर्यादा । परमाल =-वि॰ जिसने किसी ओरसे मेंह मीड दिया हो। पराङमुख । परमेश-पर [रांत] ब्रह्मा, बिल्लु और महेश-इन सीन रूपोवाका, सग्रण मधाः शिवः विभाः चत्रवर्ता राजः । 🔆 परमेश्वर-पु० [मृं०] दे० 'परमेश'; इंह । परमेइवरी-सी० [मुं०] दर्गा ।

परमेष्ट-पु० [सं०] महा; देवना । परमेष्टिनी-सी० (सं०) बाह्या बटी । परमेवी(किन) - प॰ मि॰। बद्धाः शास्त्रप्रामका पद्ध विव्रहः शिवः ग्रहः गहरः अदंत्, जिनः अग्नि । परमेसर, परमेसुर#-पु॰ दे॰ 'परमेश्वर'। परमेसरी =-की॰ दे॰ 'परमेथरी'। परमोद्ध-पु० है० 'प्रमीद'।

परमोधना =- स॰ कि॰ दे॰ 'परवीधना'- 'बात बताई जग ठग, मन परमोथा नाहिं - गारी। **परसंद्धक-पु**० हे० 'पर्यंक' । पररः-प॰ [मं॰] नीली भँगरेया । परलज्ञ - पु॰ दे॰ 'प्रलय' । वरस्रय#-वृ०, सी० दे॰ 'त्रस्य' ।

परला-वि॰ उस भोरका, दूमरी भारका, उरलाका उल्हा । [स्ती॰ 'परली' ।] सु॰ -(से)दरजेका,-सिरेका-परम कोटिका, इद दरवेका, अत्यप्ति । -पार होना-इदनक पहुँचना, अतिय गीमानक पर्देशनाः बद्दन दूरत्रक पर्देचनाः समाप्त दोना, पूरा दोना ।

वस्वर-19० दे० 'परवल': दे० 'मनर': ऑलहा एक होता। वि॰ दे॰ 'प्रवर': [पा॰] पालन पोपन बरनेशाला (समाम-में प्रयुक्त) । -विमार-पु॰ पालन-पोषण मरनेवाला, पालकः देशस्य अस्त्यः ।

वस्वतिद्य-न्गी॰ [फा॰] पालन-पोपणः मेदरशानी । चरवल-प्रवास प्रसिद्ध स्त्राः देश स्त्रादा प्रज की हर-कारीके बाम आता है: नियश बिगवा फल सरकारीके काम आपा है।

चरस्त्रजी !- स्टी॰ परवरिता, पणन देखा । धरवा-१० मिट्टीका बना यस तरहरा करोरे भीता बरतन.

कीना । की॰ पहनी पहनी तिथि, परिवाः । पश्च मामः दिमी शलकी और मन लगाना, ध्राम, अस्थान; सहस्थः शहारा, मरीमा दिए। पाट, माहिए। दिह, दिल, की यह बाटकाः गरत ह

परवाह-नी॰ (पा॰) उदमा, उदान: मार: पाट । दि॰

परिश्रपण-परिश्रय माना-पिनाने नदी प्रत्येत दमरेने किया हो। नीकर इधरमे चपर जाना, हिटना-शेलना । (विशेषतः यह जी सवारीके साथ साथ नले) । परिष्ठण्या, परिष्ठास-विक सिंको दिसदा बाउन अन्यके चपर दीइमा । द्वारा हुआ हो। प॰ ऐसा बद्या। परिष्कर~पु० [मं०] मुजाबर । परिष्कार-प॰ [मं०] सजावट, सिगार: पाक द्वारा सुखाडु पनानाः संस्कारः भूषण, यहनाः मार्जन आदि संस्कार, मकारं; परका उपयोगी सामान । क्षा, विसर्थ । परिष्क्रत-वि॰ [सं॰] त्सिका परिष्कार क्रिया गया हो: संवादा हुआ, सेवारा हुआ। पाक द्वारा सखाद धनाया गमनः रॅगना । हुआ; साफ किया हुआ; चयकाया हुआ; हुद्ध किया हुआ। परिष्क्रता-सी॰ [मं॰] यहके निमित्त शद की हुई भूमि । परिष्क्रति-सी० (सं०) शह परना, साफ करनाः चम-कामाः भैवारता ।

परिष्क्रिया-स्थे० सिं०) शत्रानाः अन्त्रन वरनाः शोधन । परिष्ट्यस=१० (ग०) स्तृति, प्रशंसा । परिधोम-प॰ [गं॰] द्वाधीकी शुल; आवरण, आच्छादन;

erer t परिएल-१० (सं०) चारी भारती, आसपासकी भूमि । --परिष्पंद-पु० [११०] सञाक्द्र, सिगार, पुल आदिने :बाली--को छजानाः परिष्ठारः निर्वाहका साधनः परिवाद, परि-जनः अनुषद् वर्गः स्वदन, द्वरातः कृषलना । परिष्यंत्र-पुर [गंर] प्रवाद, बहाव: नदी: बाईसा: हीप

(de) | परिवर्दा(दिन)-वि० (सं०) बहनेवाला, प्रवाहशील । े परिष्यंग, परिष्यंज्ञम, परिष्यज्ञम-पुरु [संरु] आस्मिन । पश्चिम:-दि॰ मि॰ दिसहा आहितत दिया गया हो. आर्टितिमः सावेष्टिम ।

परिमंदया-म्यो० [ये०] विनवी, ब्रह्मनाः एक अधीर्यकार यहाँ किमी बन्तका एक स्थानमें निवेध करके उसका दुमरे स्थानमें स्थापन हो। ऐसा विधान जिल्ली बिहित बरमुसे भिन्न सभी बरमुभीका निर्मेष हो जाय (मी०) । परिमंत्रयास-वि॰ [म॰] बिहारी परिमंत्वा हुई ही, परिगणितः जिल्हा साम सीरसे उत्तेश किया गया हो 👀 परिमंतपान-पु॰ (११०) गणनाः मही अनुमानः निशेष

बरतका निर्देश । पश्चित्र-प्र• [मंग] प्रस्यन्यान । परिमंचिम-[१० [मं०] जिमका मंचय दिया गया ही। संबित्र । परिसेतान-१० (००) नार, शांता संबी ।

परिसारय-पु॰ [सं॰] सभारत सारस्य ह परिममारन-पु॰ [गं॰] गमा वरना, पुरा करना ।

परिमागास-वि॰ [गं॰] पूरी शरह समाय । परिसमाप्ति-हो। (६०) पूर्व समाप्ति । परिसम्हत-पु॰ (१०) एउ.प करनाः वशक्तिं समिता टा॰नाः यदमै अधि पानौ और विरे गुर भूग आदिकी भागमें दानना। यदाधिके यांशे और शक्ती मार्यम

Tinja. परिमर-५० (मेर) मही, मगर, वर्षेत्र आहर्दे आगु वामुदी

भूमि। विभाग, निवमः स्थिति, श्रीकाः भूत्या एक देवताः 🕽

परिसरण-प॰ [सं०] चारी और गमना, पर्यटन: इपर-परिसर्प-पु॰ [भू॰] चारों बोर जाना था गुमना-फिरना, पर्यटनः जट आदिसे घेरनाः दिसीरी शोपते हुए उसके पीछे जाना, विसीका पीछा करनाः एक सम्स्थन यागः थेरना, आवेष्टनः एक प्रकारका सीपः एक प्रकारका सह

परिसर्पण-१० [सं०] १५१/उधर जाना या पुमना फिरनाः परिसर्या-सी॰ [र्थ॰] वारों और या श्वरत्वपर जानाः टहरूना, चमना, पर्दरनः एक प्रकारका शेव र परिसारवन-प॰ [मं॰] सांखना देना, द्वाइस वैपाना ।

परिसार-पर सिर्ण थारी ओर जाना या घमना। परिमारक-विक, पुरु [संर] चोरी और जाने या प्रमी-परिसारी(रिन)-वि॰ [बं॰] चारों ओर जानेवासा; इपरः

उपर प्रमनेबाला । परिसिद्धिका - सी॰ [मं॰] एक प्रधारकी नावलकी रुपनी ! परिसीमा-सी॰ [सं॰] धीहरी; अवधि, इद, अंतिम सीमा । परिस्त-पु॰ [रां॰] बद पर्दा तिमका वध बूचरगानेडे

बाहर किया गया हो (की॰)। - . . । । परिसेचना-सी॰ [रां॰] निधेप मेथा । परिस्कंच-प्र॰ [सं॰] दे॰ 'परिष्यंद'।' परिस्क्छ-वि०, तु० [मं०] दे० 'वरिम्दल'। परिस्तर-पु० (सं०) योकाना, व्याप यारना, टिनरानार जमा परनाः भारतः ।

वरिस्तरण-पु॰ (सं॰) दिनराना, फैनाना: झावरण र परिस्तान-पु॰ (फा॰) परियोका देश, परियोका कीर ! वरिस्तीले, वरिस्तृत-विक [शंक] पीकावा सुभा। आण्या-वहिरतोम-पु॰ [सं॰] दे॰ 'परिद्याग'। '

विरुधान-पुर् [मंर] बागरधानः दृता, दीसपन । वरिस्थिति - सी [गं०] बासपान, चारी भोरकी विधिः श्रवस्था । पहिस्पंद-पुक [तंब] देक 'परिष्ये:'। यरिश्यंद्रन-पु॰ [शं॰] बदुत अधिक संवित्र होगा । वरिस्ववां, वरिस्वयां-को॰ [मं॰] दे॰ 'प्रतिराह्यं' ॥

परिन्पर्दी(विन्), परिन्पर्धी(पिन)-विक [बोक] देव 'अरिसपढी' । वृहिस्पुट-पिक [गंक] गुन्यमः अन्दी तरह विश्वित.

सायाः रोगि सिनसिय र यरिक्परण-पु॰ [गं॰] बंदमा वन्तियुक्त होगा, वनीहा

विक्शना । धुरिस्मापम-पु॰ [गं॰] चढित दरना, अनंनेनै शालता । यरिक्यंत्-पु॰ [गं॰] भूना, रिमना; दे॰ 'दरिव्दर'.। विश्यय-पुर [बुंत] चारी शेरते चून, दश्मा मा रिम्नाः वहना, मगदिन दीना। नीचे संद्रशाह वर्णका

श्रन्म रेजा ।

सी॰ अध्यात्मविद्या ।

पराइ#-वि॰ स्ती॰ दृशरेकी है. .

पराक-पु॰ [मं॰] बारह दिनौतक भोजन न करनेका प्राय-धित्तरूपमें किया जानेवाला एक कृच्छु बतः बल्दिन करनेका खन्नः एक रोग । वि॰ छोटा ।

पराकरण-पु० [सं०] दूर करना, हटाना; बस्वीकार करना;

खेशा करना ।

पराकाश-पु॰ [सं॰] दूरवर्ती आशा ।

पराक्(च्)-वि॰ [मं॰] पराङ्गुसः ऊपरकी ओर जाने-बाला, करवंगामी; उलटा जानेवाला, प्रतिलोमगामी; प्रति-कुल; दूरवर्ती । ⇔पुरुषी—स्की० चिचकी ।

परावस-पु॰ [सं॰] भामध्यं, बल; शौर्यं; विक्रम, उद्योग; पुरवार्थः अभियान, आक्रमणः विष्णु । सु० -चलना-च्योग किया जा सकनाः शक्तिका साथ देना ।

पराक्रमी(मिन्)-वि॰ [सं॰] पराक्रमवाला,शूरः पुरपार्था। पराक्रांत-वि॰ [सं॰] शक्तिशाली; उत्पादी; वीर; आक्रांत; निसमा मुँह मोह दिया गया हो।

पराग-पु॰ [सं॰] फुलके भीतरकी घुल, वृष्परजः धुलः रेसरका चूर्ण आदि जिसे नहानेके बाद छगाते हैं; उपरागः चंदनः कपूरका चूराः चंद्र या मूर्यका ग्रहणः ख्यातिः एक पर्वना स्वच्छेद गति । -केसर-पु॰ फूलोके भीतरके वे पदले लंबे टोरे जिनपर बेसर लगा रहता है।

परागत-दि॰ [मं॰] मृत; आवृत, देष्टित; फैला हुआ । परागना = - अ० कि० प्रेमासक्त होना, प्रेममें पहना । पराह्मुख-वि० [सं०] जिसने किसी ओरने मुँह मोड़

निया दी, विमुख: प्रतिकृत ।

पराचीन-वि० [सं०] विमुख, प्राइमुख; बादमें होनेवालाः रत्तालमें शोनेवाला; जो दूसरी ओर, परे ही।

पराजय-सी॰ [सं॰] हार, विजयका खड़टा।

पराजिका-सी० एक रागिनी । पराजित-वि॰ [सं०] जिसने दार छायी हो, दारा हुआ, दराया दुआ।

पराणमा, परानसः-सं।०[सं०] चिकित्सा, श्रीवधीपवार ।

परात-सी॰ धालीकी शहका पीतल आदिका एक वहा बर्तन, बड़ा थाल ।

परात्पर-वि॰ [सं॰] जो सबसे परे हो । पु॰ परमारमा । परारित्रय-पु॰ [मं॰] तृशनिदीय ।

पराग्मा(गमन्)-पु० [सं०] दे॰ 'वरमारमा' । परादन-पु० [तं०] अर्बी योहा १

पराधि-भी० [र्ग•] बदुत तीव मानसिक स्थवा । परार्थान-(व॰ (सं॰) जो दसरेके अधीन हो, परवध ।

पराधीनता-रदी [नं] पराधीन दोनेशा भागः पराधीन रोनेसी दशा ।

वरानव-पु० दे० 'प्राप' १

परामा - स । दि । पहासन करना, भागना । पराध-पु॰ [धु॰] दूसरेका अन्न, दुसरेका थान्यः दूसरेका दिया द्वामा मीतन । -भोजी(जिन्)-दि० द्वारेका

िया माचर निर्मेद वरनेराता । परापर-दि॰ [मं=] पर और अपूरा परहर और अपूराव दोनी सुदोसे शुक्त (वैद्येपिक) ।

पराभव-प॰ सि॰] तिरस्कार, अनादर; हार, पराजय; विनाश ।

पराभिक्ष-पु॰ [तं॰] एक प्रकारका वानप्रस्थ जो धोदीनी भिक्षासे निर्वाह करता है।

पराभत-वि॰ [सं॰] जिसका पराभव हुआ हो; तिरस्कृतः

हारा हुआ, परास्त; नष्ट । पराभृति-सी॰ [सं॰] दे॰ 'पराभव'।

परामर्श-प॰ (सं॰) पददनाः खीचनाः आक्रमणः वाषाः रपर्शं बरनाः रोगाकांत होनाः विवेचनः रमरण करनाः याद करना (ने०); न्याप्य हेतुका परुधर्म द्दोना, परुमें

हेत्वे होनेकी अनुमिति (न्या॰); युक्तिः सलाह । परामर्शन-५० (सं०) पहड़नाः खीचनाः रमरण करनाः

विवेचन करनाः सलाह करना । परामृत=वि॰ [मं॰] डिसने मृत्युको जीत लिया हो।

पु० वर्षा। परामृष्ट-वि॰ [मं॰] पकड़कर खींचा हुआ; रप्रष्ट; विचारा हुआ: संबद्ध: जिसके विषयमें सलाह की या दी गयी हो।

परायचा-पु॰ वह जो करपोसंसि दीपियाँ आदि तैयार कर देचे: सिले हुए कपरे-वेचनेवासा ।

वरायण-दि॰ [मं०] अति आसक्त, निरतः अवलंबित । प्र० अति आसक्तिः उत्तम आश्रयः विष्णुः मंदिम हह्यः सार् ।

परायस-वि॰ [मं॰] पराधीन । चराया-वि॰ दृष्ठरेका, विशना; अपनेमे भिन्न। स्वि॰

'परायी' ।] परायु(स)-९० (सं०) नद्या । परार*-वि॰ दूसरेका, पराया । पु॰ पवास ।

परारच - पु॰ दे॰ 'परार्द्र'। वरारस्य, वरालस्थां -पु॰ दे॰ 'प्रारम्भ'।

परारि-अ० [सं०] पूर्वतर वर्धमें, परिवार भाल । परारु-पु॰ [मं॰] करेला ।

परारुक-पु॰ [मं॰] चट्टान, प्रथर । परार्थ-पु॰ [सं॰] दूसरेका प्रयोधन, दूसरेका कार्य; सबसे

बहा लाम । वि॰ जो द्सरेके निमित्त हो । पराद्धेः परार्थ-पुर्व [संव] गनितमे सबसे बहा संस्था। संस्था। ब्रह्मानी बायुका भागा भाग ।

परादर्ध-दि॰ [गुं॰] सेष्ठः उत्तम । पु॰ अग्रीम शंह्याः शक्ते बड़ी बरत आदि ।

पराय, पराया+-नि॰ पराया, दुगरेका ।

परावत-९० [मं०] पालसा ।

परायन-पु॰ बहुतीका एक गांध मागना, शामृदिद पला॰ यन, भगरदाक पर्वेदाल-'पूरे पूरव पुन्यतें परके परा वन बाव"-महिराम १

वरावर-वि॰ वि॰ पदन्दरा और पीछेबा: निस्टरा और दरबाः मार्थेशेषः पर्दपरायत् १ प्र० कारण और वार्षः विवा अधिकता १

परावरा-मी॰ [रा॰] एव प्रसारकी निया (उपनि॰)। व्हापनं, व्हावनंत-पु॰ [बं॰] ब्हालानहरू, विनियदा शीरमा, परवावृत्तिः वीतना उत्तरमाः ग्रंथीयी दीहरामाः उद्रस्त (१०)।

वरावर्तिय-दि॰ [१३०] मीधादा दुधा ।

अ० अवस्य 🕅 ! परीछत्र=-पु॰ दे॰ 'परीक्षित्र' । परीहरम-प० पैरमें पहननेका एक चौरीका गहना । परीहा = न्यां देव 'परीक्षा' । पर्राधित - वि॰ दे॰ 'परीक्षित्र' । पु॰ राजा परीक्षित् । . : परीपास-प॰ हिं० दे व 'परिचाम'। परीणाह-पु० [नं०]. गाँवके धारी ओर छोड़ी दुई सार्व-वनिक भूमि (रगु०); दिवा दे० 'परिवाद' । परीत-विव मिवी चकर देनेवालाः धरनेवालाः भीता हुआ। सन्: ग्रहान् । • ए० दे० प्रेस^{*} । - -पराताप-प॰ [गं०] दे॰ 'परिवाप' । -परीति-री० सिंगी पर्याजन । धरीतीय-पर्व मित्री देव 'परितीय'। परिस-वि॰ [मं०] दिया हुआ; चारीं औरसे बटा हुआ; संक्षित । पर्राहास-प० [मं०] दे० 'परिदाह' । परीधान-पर्व मिनी देव 'परिधान' । पर्राप्या-मी० मि०रे प्राप्त सरनेकी इच्छा: शीमना, जन्द-दाशी । परीक्षय-५० [मंग] दे० 'वरिमव' । परीभाव-५० [गं०] सनाइर, तिरस्कार ! परीमाण-पु० [मं०] दे० 'परिमाण' । परीरंभ-५० [मंग] आखिगन । परीर-प॰ [मं॰] फड़ । पर्रारण-१० [मं•] कलवाः संदा, बंदः बस्त । पशीवाय-पु० [मं०] दे० 'वरिवाद' । परीयाप-पर शिर्व देश परिवाप'। परीवार-पु॰ [मं०] दे॰ 'परिवार' । परीयाह-पु० [मे०] दे० 'परिवाह'। परीशान-नि॰ दे॰ 'परेशान' । परीक्षेत्र - पु॰ [गु॰] दे॰ 'परिशेष'। पर्राष्ट्र-म्यो॰ [मं॰] ब्राव्यक, मोधः प्रकाल, बाँवः श्रेशः स्तमानः स्वाहिशसंदी । पर्रामयौ-मा॰ [मे॰] ६० 'वरिसयो' । परिमार-ग॰ भिंगी देव 'परिमार' । परीहार-यु० [छ०] दे० 'परिहार'। परीदाग्र-५० (शं०) दे० 'परिदाम' । पर-पुर [गार] गामुद्रः न्दर्भे श्रीयः श्रीदः बहाह । 🛉 अर रत या भागामा वर्ष (मे) । पर् (स्)-प्र- [गं०] गंबि, गाँठा प्रशिरता कोई क्षेत्र । परभार - भी । एक प्रशासकी जमीतः अवनातका बदका । 40 बामधीर, जो बाम धेने समय बैठ जाब वा पह रहे (नैंद भारि) हारते आधिमें पहा हुआ (साल) ह पर्रहो-भा• भक्ष्येश अनाव भूमवेदी माँद । पारम्य १ – (१० देश 'देशक' । पहाराई -- श्री : परचता : कडीरता । प्राप्त - अव [बीव] गात वर्ष । परहार-3. [8] बीबा 1 परप-ति [तं] वहीर, मुका क्या: वर्रय: पुरा लगते-

धीनः नीरसः रसधीनः गंदाः चित्रकर्ते । प्र॰ क्रो कन्, द्वेचनः नोटी कटस्रीयाः फाल्सा । -वचन-प्र कठार बचन, बड़ी बात, अधिय बात, समनेवाल बात । परुषा-नि॰ सी॰ (सं०) 'परुष'का ग्राहिम रूप । -यसि - न्या काव्यकी तीन विश्वयोगिये एक विश्वमें ट. इ. ह. द बर्गी, हवे समाप्ती और ऐसे संवक्त बर्गीकी बोजना होती है जो कठोर होते है। परपासर-वि॰ सिंबी जिसमें रूपी दास्त्रीया प्रदोग ही. कड़े शब्दोंमें कहा हुआ। कड़े शब्द प्रयोगने सानेवाला । परपेतर-वि॰ [मे॰] कोमरु, गृद् । परुपोक्ति-सी० सिंगी निष्टर यसन, बडी वा अगनेशरी परुपोक्तिक-वि॰ मि॰ वदी बान यहनेवाला । परुसना=-न्न॰ कि॰ दे॰ 'परसना'। पर्देशाः – प्रश्नाहरूनकी प्रक्र जाति । परूप, परूपक-५० (४०) फालसा । परे-अ॰ उस ऑद: और आगे। बतुन दरा कर्षा, करहा बादः बाहर । म० -परे कहना-'दर हरे।', 'दर हरे।' कद्दना । -बिटाना-परास्त बरना, मान भरना । परेई −ग्नी॰ मादा परेशा, यत्गरी: पंटकी । परेखना-स॰ कि॰ अव्ही तरह देखना-भारता, परेशा करनाः जीवनाः • प्रनीक्षा घरना । षरेमा॰-पु॰ परीचा, व्यॅनः प्रधासाय। विचान । परेग-प्र॰ शोदेकी दील । परेट-पु॰, सी॰ दे॰ 'वरेड'। परेड-पु०, स्त्री॰ [अं०] शैनिकीकी बनायक उन्हें पुडकरा था शिक्षा देनेता मैदान । परेत-विक, प्रक [रांक] देक 'त्रेत'। -मतां(यं)-प्रक थगराव। - मुक्ति-मी॰ इमशान । -शट(म्)-प्र यमराज ! -याम-प्र॰ इमशास ! परेता-प्रश्तु क्षेटवेके कामका जुलाहीका एक भाषा वांगकी यत्रको धवरी तीश्योंसे तैयार दिया जानेशका बह बेचन शिसपर पर्पगढ़ी श्रीर रूपेडी जाती है। परेद्यवि, परेद्य (स्)-श॰ [मं॰] दशरे दिन । परेर*-प्रश्नापात्र । परेली-पु॰ तांटव मृत्यका एक भेड विसमें गरिनमधी स्यूनमा और गात्रविहेत्यको अधिकता १९मी है। परेया-पुर कर्नरा पहुंका बीरे लेज प्रश्नीवाना प्रीत शीमगामी परवाहरू, तेत्र चकतेवाना इरवारा । परेश-प्र• [मं•] परमारमा, परमेपर । परेवाम-विव (यान) सदिया ब्यानुमा देशन । परेमानी-नी॰ [का॰] उदिशता, ध्वातुलना । परेष्टि-पुर्व [मंत्र] अदा । परेरटू, परेष्ट्रका~म्दी : [do] बह गाए ही करें बार नथी दे पुर्धा हो। परेगरण-पुरु देश 'परेश'। परेड-पु॰ भी मा नेक्ने श्रीबस्ट प्रधाना आनेपासा नेवन या गोरीका पील जिलमें रहीती, रहे आदिकी प्रसी बराने हैं। देमनदी पटली कही । बापा गीम, या (बादु शारि)। कडीर इटब्बाया, इया । घरेड्डा -पु वह बमीन ही शेलने दे बार गीवी गर्नी है।

थका हुआ। पु॰ तक्लीफ, क्लेश, परेशानी। परिक्टेंद-पु॰ [सं॰] आईता, नमी, गीलापन । परिकागन-वि॰ [सं॰] उद्यस्वरयुक्त । परिक्षत-वि॰ [सं॰] बहुत अधिक क्षतिअस्तः नष्ट । परिक्षय-पु० [मं०] बर्वादी, नाश, लोप । परिका-मी॰ [मं॰] कीचड़ गीली मिट्टी; † दे॰ 'परीक्षा'। परिक्षाम-वि॰ [मुं॰] अति क्षीणः बद्धत दुर्बेछ । परिधारम-प॰ (सं॰) अच्छी तरह भोनाः भोनेके कामका पानी । परिश्तिम-वि॰ [मं०] इधर-उधर फेंका या फैलाया हुआ, प्रहीर्गः पिरा हुआ; खाईसे पिरा हुआ; त्याचा हुआ; त्यकः चारों ओरसे घिरी हुई (सेना)। परिक्षीण-वि॰ [मं॰] सुप्तः सष्टः, तबाहः अतिक्षीणः जिसका रिवाला निकल गया हो। शक्तिहीन (मेना)। परिसीय-वि० [मं०] प्रमत्त, बहुत मतवाला । परिक्षेप-पु॰ [सं॰] इधर उधर घृमना, टइलना; फैलाना, विशीर्ग करनाः परित्यामः चारी ओरसे पेरना, आवेष्टित करनाः आवेष्टिन करनेवाली वस्तः शानेदिव । परिन्तन + - पु॰ देसमाल करनेवाला । परिप्रमा = स॰ कि॰ प्रतीक्षा करनाः जीव करनाः गणना करनः । परिला-सी० [मं०] नगर या दुर्गकी दुर्गम बनानेके लिए उसके चारी और छोडी जानेवाली गाई। परिस्तात-पु॰ [सं॰] परिसाः चारों और साई स्रोदनैसी कियाः हराई, बाह । परियान-सी॰ गारीकी सीनः । परिशिक्स-दि॰ [शं॰] यहप्रस्म, पीदित, परेशान । पश्चिर्-पु॰ [सं॰] बहुत अधिक धकावटः सुर्दनी । परिलयात-(व॰ [मं०] बहुत अधिक प्रसिद्ध । परित्याति-मी० [गुं०] विशेष प्रसिद्धि । परिरांतच्य-दि० [मं०] प्राप्त करने योग्यः नानने योग्य । परिगणन-पु॰, परिगणना-भी॰ [मं॰] पूरी गणना बरनाः विभि तथा निर्मेश-शास्त्रतः निरीय स्पने कथन । परिगणनीय-दि० भि० परिगणनके योग्य । परिगणित-दि॰ [मं॰] जिमका परिगयन किया गया हो । पतिग्रच-१० मिने देन 'दरिगमनीय' । परिगत-दि॰ विक दिए हुआ, आवेदिनः पूर्वतः व्याहः थाना दुभा, द्वान: स्मृत: प्राप्त सिया, दुभा: मरा दुभा, मृतः विरमृतः अभिभृतः "मै दोडितः वादित । परिगम, परिगमन-पु॰ [मै॰] पेरना, अदेष्टित स्ताः •शास करना था द्वीनाः प्राप्त करनाः जानना । परिमानिक-पु॰ [गं॰] मर्भवशेखा दूध फीनेने होनेसना एड शह रोग । पश्चित-दि॰ [मं॰] निमे बदुत अधिर गई हो, बदुत गरीला । परिगष्टंग~पु॰ [मे॰] कति लिहा ।

परिगलित-दि॰ [सं॰] दिए दुवा, बहुता सुदा राजाबुधाः

नरम, दिएला १४३।

परिगद्दण-पुरु अपित जला सर्वेदी । परिगदम-रिश् (संस्कृति सहस्य । परिग्रहना र~स॰ कि॰ ग्रहण करना, अंगीरार करना । परिगीत-वि॰ [सं॰] जिसका बहुत अधिक वर्णन या कीर्तन किया गया हो। परिगीति-स्नी॰ [सं०] मृत्तविशेष ! परिगंदित-वि॰ [सं॰] शिपाया हुआ, दका हुआ ! प परिगृद्धित-वि॰ [मुं॰] धूलसे दका हुआ। परिगृह-वि॰ [सं॰] बहुत अधिक गूद, अन्यंन गुप्त । परिगृद्ध-वि॰ [सं॰] जिमे बहुत अधिक लालन हो। परिग्रहीत-वि॰ सि॰ो स्वीकृतः नारी ओरसे वेटा हुआ: पकड़ा, हुआ; धारण किया हुआ; ग्रहण किया हुआ; मंरक्षित; पाप्त किया हुआ; अनुस्त । यरिग्रहीता-वि॰ खी॰ [सं॰] विवाहिता । परिगृहीता(ह)-प्र॰ (सं॰) प्रतिः सहायकः गीर लेनेवाला ∓वस्ति । परिगृह्या-सी [मं०] विवाहिना सी । परिवह-पु॰ (सं०) छेना, स्वीकार - करना; प्रदूष करना; चारों ओरसे घरना, आवेष्टित करनाः धारण करनाः भन आदिका संचयः किसी दी हुई बस्तुनी प्रइण करना। किसी कौको मार्थारूपमें ग्रहण करनाः पत्ती, कीः पनिः यरः परिः बार: अनुचर: सेनाका विद्युष्टा भाग: राह हारा गर्व या चंद्रमाका यमा बानाः शपथ, यममः मूल, आधारः विष्यः जावदादः स्वीहृति, मंन्दीः दावाः स्वागन सम्बादः आ तिम्यसरकार बरनेवालाः आदरः ग्रहायताः दमनः दंदः राज्यः संबंधः योग, संस्कृतः द्याप । परिग्रहण-पु॰ [नं०] अच्छी तरद प्रहण करमा; पहमना। धारण करना । परिप्राम-प॰ [रां॰] गाँवके सामनेका भाग । परिवाह-पु॰ [सं॰] यहनी बेदीके चारी और गीन रेलाएँ धीचना । परिवाद्य-विक (मंक) परिवाहके योग्या शहरव्यवद्यारके योग्य । वरिय-पु॰ [मं॰] अर्गला छडा हंदा रोहा रही, भाना कीहमदाः यक्षाः धीरोध्ये सुरादीः गरानः रूप, गान करनाः आयान वरनाः फारवः गार्थं या प्रानःकास मुद्देवे मामने भानेदाने दादका वह शिशु जिसरी जन्मक समय रिवित बदल गयी हो। योगहा एक भेर । पश्चिहन-पु॰ [सं॰] पारी भारते रतहताः बल्टी शाहि॰ मे यारी भेरमे मधना या यनाना । पश्चिद्दिन-वि॰ [सं॰] डिमका परिषट्न क्या गया हो। परिधर्म-पु॰ [मं॰] एक विशेष प्रशासन द्वाराय । पश्चिमत-पु॰ [मं॰] मार टालनाः गष्ट रहमाः मार हासनेहा अन्यः शहाः उत्तरन दहना । परिचानन-पु॰ [र्ह•] मार् शहनाः मध्यर् देनाः मार् शामनेश बाद । वरियानी(तिन्)-दि॰ [र्गः) यार राजनेदाना स्ट बरनेरामाः जार्नपन सरनेराताः (भागा आदिस्) । परिपृष्ट-दिक [मेक] अबदी तरह निया दुशा । पहिल्लिक-पुक [तक] एक प्रकारका बानकार । वरियाच-दृ [में] श्रीस्थ माराष्ट्र सनुनित गाना श्री TVI PTPELITER I

पदा-पु० दे० 'परदा' । पूर्य-पु० [सं०] गृह, यर; हरी और नवी यास: पंगुश्रीकी एक रथान्से दूसरे स्थानतक छ जानेके कामकी पहिचेदार गार्थाः पंगपीठ । पर्यट-प० [तु०] विश्ववायदाः पापदः एक ओवधि ।-हस-

प० संभी वश । वर्षेत्री-सी० [रो॰] गोपीचंदसः पापदः एक संपदस्यः एक

इसीवधि १ वर्षती-क्री व पापदीः शिकी सवरीः जन्म । पर्परीक-पु॰ [सं॰] सूर्य; अधि: जलाशय ।

धर्वशीण-पर्व [संर] परेशी नस । वर्षिक-पर मिर) शर्धा आदिपर दोवा जानेवाला पंत । पर्याक-पर मिर्ग सया प्रत्य किरालय ।

धर्य-ए० दे० 'दर्वे'।

चर्यस-प्रदेश 'परंग'। यर्थती-विव पर्यम-भेरोपी, यहाती ।

पर्यं हर- ५० [म०] परंगः एक आसन, बीरासन (बो०): दें 'अवस्थिका'। पान्नी । -पादिका-मी० बासी मेम । -यंध-पु॰ वीरासन । -यंधन-पु॰ अपडेने चीठ

भीर पृथ्ने बाधकर बैठना। -भोगी(शिम्)-प्रक एक प्रकारका गाँव ।

पर्यंत-अ० (सं०) तक । वि० सीमिन । प्र० अतिम सीमा. दिनाराः शंत, समाप्तिरभान । -क्षेश्र-प॰ दे॰ 'दर्बत्थ'। -भ-भूम-भी-भाग नदा, नगर आदिके प्रसदा भूगाय । यर्थं भिका-मी० [म०] अधीका नाहाः नेतिक पतन ।

यर्थेटफ-प॰ (सं॰) भ्रमण करतेबाला । पर्यटल-पु॰ [शं॰] चारी ऒर घुमना, रूपर उपर धुमना,

श्रसम्म ।

पर्यमुयोग-पु॰ [मं॰] रिसी उक्ति या स्वानको मिन्दा शिक्ष सरवेदे लिए की वागेवाली प्रश्ताहः प्रध्नाहाः लिया ।

पर्यन्य-पुरु [श्र] देव 'प्रतेत्व' ।

पूर्वय-पु॰ [मं॰] येगा भागार भिगामें शाकीय और सीटिक स्थवदारका सनिकामण दी: बीनना (अंगे-'दास-वर्षकोः परिवर्गमः अञ्चयस्य ।

पर्ययण-प्र॰ (शं॰) पोरेश जीन, साटी।

पर्यवदास-(१० (११०) पूर्णतः द्वार, श्रांत रक्ष्यः । । पर्यवरोज-प॰ [शं॰] रीर, शंधा ह

पर्यवर्षभन-पु॰ [ग]॰ देश दालना, अवरोध ।

पर्यवसान-पुर [नेर] भंग, समान्तिः अवधारण, निध्य । पर्धवसित-वि॰ [मं॰] एमला शिक्षश निधव चुना हो।

तिशिषः स्थ । पर्यवस्था-भी । [मं] दिरीय: दिशेयमें यहाँ सवी वात.

प्रतिकासाद है पर्यवस्थाता(म)-पु॰ (छं॰) विरोध करनेवालाः प्रतिपत्ती । पर्यवस्थान-पर [गंर] दिरोध सरभाः प्रतिनाद करना । पर्यभ - (२० [मंग] जो महिन्नोंने भीन सा गया हो, बिसरी

मोर्ग में करून अधिक औनू वह रहे हो ह पर्ययम-पुर सं-) वेदलाः दृह सहनाः नाहर करनाः

ARTERY.

वर्षेख-विक [संक] फेंका हुआ; दर किया दुमा; बाहर क्यि। प्रमा, निकाला हमा । पर्यस्नापह नृति -सी॰ [सं॰] अवहति अधीर शास्त

एक भेद ज्हाँ निमी बस्त(उपमान)का गण दिपाकर किही दसरी बस्त(उपमेय)में उध्यी स्थापना की गाय । धर्येभिन-सी॰ [र्न०] दरकरनाः बीरामन लगास्र बैहना ।

पर्यस्तिका-की॰ सि॰ विरासनः पर्या । पर्याक्ल-वि॰ शिं०ी गेंदला: स्वायत, धरराया मुमा: शब्ध, दत्तेजिन: पर्ध, भरा दशा (क्रोपप्यांस्छ) ।

पर्यागत-वि॰ [सं॰] जो अपना चक्र पूरा कर नुका हो. परिवास किया हुआ (वर्षाह); जी अपना शांसारिक वीदन सनाम कर चका की: बशीकृत । पर्याचांत-पर [संर] वह गोगन को एक माथ मारेशमीर मेंने किसी एकके बीनमें की आधारन कर ऐनेके बार

औरों के आने बच रहा हो । दिन समयमें पहने ही आय-

मन किया द्वभा । चर्चाण-पर्व सिर्वी गोहेका जीन, काठी ।

पर्यास-वि॰ [मं॰] पावा द्रमा, प्राप्ता श्री शितना पादिये उतना हो, पूरा, काफी: समग्र; थे।ग्य: समर्थ: ४४। विस्तृतः समाप्त ।

प्यांति-मी॰ [मं०] विस्ता, प्राप्ति; ववेष्ट वा कार्फी होने-का भाषा अंत, समाप्तिः बीन्यताः तृतिः शंनीपः सामभ्यः निवारणः रक्षणः बन्छाः बस्तुश्रीयः ग्रुपमात भेर 🤄

चर्चाताय-पर्व सिंगी चवर, वेसा पेस ।

पर्याप्ट्रत-वि० [मंग] वेरा द्रमा । पर्याय-प्र॰ [१ं०] अनुक्रम, शिसमिना। स्यनीत होता (शमय): शमानार्थक शब्दाः प्रकार, शंगा भगसर, भीसा बनाना, निर्माणा द्रश्यका धर्म या सदत ग्रणा एक मधी-संखार प्रको एक बरतुका प्रामने अनेक आभय हेना दिगाया जाय या भनेक यस्तुओं हा एक के द्वा आधित दौना वर्षित हो। -च्यम-६० स्थासच्यमः जिमका स्वान दुगरेकी प्राप्त हुआ हो। -थचन,-हादद-पु॰ धमी-नार्थं श्रद्धाः -वाचरा-वाची(चित्र)-विश् समी मार्थकः। –दायम-पु॰ पहरेशारीका नारी-वारीमे घाँना। -सेपा-श्री शारी बारीने ग्रेश करमा ह

वर्यायोक्त-पुरु, पर्यायोक्ति-स्यार [मर] एक अवीर्रकार अर्था कीई नाम पूमा किराइट करी जाय था किया दम-भीव स्वाजने बार्यमाधन हिंधे आनेका बर्धन ही र

थयाँविर्णा-स्थाप (sie) स्वाधितारम श्री ३ पर्याटोचन-५०, पर्याटोचना-मी० (ग्रं) गायद विरे

बान, संबोधन । थयांवर्त-पुर [रोव] बारण आता, लीश्या: गुर्वेदा देण

परिश्रमण विसमें प्रवर्तन पश्चिम पश्चेतानी प्राप्ता पूर्वनी ओर परे म चर्यायर्गेन-पु= [ग+] एक शहर: दे= 'दर्शादर्ग'।

यवाधिल-दि॰ [तं॰] बदुन गेरस्य ।

थयांग-पु: [नं:] पदर देलाः धारी कोर पुमनाः परि श्रमया प्रणा हरस, अथा प्रणा स्था: प्रमारि है वर्षायम-९० [मंत्र] काहर, हेरा र

पर्वाहार-पुरु [6:0] जुला दीला, ले बाता। बीहा बहुन

इर तरहसे जीता जा सके।

परिजिहिपत-पु॰ [सं॰] सेवक्का अपने स्वामीकी निर्दयता. शरता आदिके वर्गन द्वारा अन्यक्त रूपसे अपना कौशल, उत्कर्ष आदि जतानाः उपेक्षित या अवमानित नायिकाका : स्यंग्यपूर्ण शब्दोंमें नायकती निर्दयता, शुठता आदिका वर्णन करना ।

परिजात-वि॰ [मं॰]**भे उत्पन्न; पूर्णतः विकसित । परिज्ञप्ति-स्री॰ [सं॰] अच्छी तरह जानना; पहचानना; बातचीतः वशोपकथनः ।

परिज्ञा-सी० [मं०] दे० 'परिशान'।

परिज्ञास-वि० सि० भेली गांति जाना हुआ: पहचाना हुआ ।

परिज्ञाता(मृ)-वि०, पु० [मं०] अच्छी तरह जाननेवालाः पद्दचामनेवाला ।

परिज्ञान-पु० (सं०) पूरी जानकारी, पूरा बाना सूक्ष्म धानः पहचान ।

परित्या(उद्यम्)-पुरु [संरु] संद्रमाः अक्षिः सेवक । परिद्वीन-प० [सं०] पश्चीका गोलाईमें खड़ना ।

परिणत-बि॰ [सं॰] चारी औरसे झका हुआ; बदुस हुका दुभा, अरर्थत नतः परिणाम या रूपांतरको प्राप्ता पका हुआ, पक्का; जिमकी पूरी हृद्धि हो खुकी हो। भौदा गुष्ट, परिपक्तः पना हुआः दलता हुआ (वय)ः समाप्त । पुरु मह द्वाभी जो दंश प्रदारके लिए एक और इक्ता दो ।

परिणति-छो० भिंगी चारी ओरमे झका दोनाः परा शुकावः अत्यंत गतिः स्पांतरको प्राप्त दोनाः पत्रना, पत्र दीनाः पूर्व पृक्षिः श्रीद होनाः परिणामः परिपाकः पननाः अतः, अवसागः ।

परिणञ्च-वि० [सं०] वंधा हुआ, महा हुआ; चीडा, বিহাদ।

परिणमन-पु॰ [गं०] रूपांतर होनाः परिणत होनेका कियाः परिणामको प्राप्त दोना ।

परिणमविता(म)-प् [मं] परिणन करनेवाना, परि-णामको भाग करानेवाला ।

परिणय-पु॰ [गं०] चारी और (विदोचनर विवाहमंडपर्ने रवारित अग्निरे चारों और) है जानाः विवाद । परिणयन-पु॰ [:]॰] ब्याहना, विवाहकी किया ।

परिणद्दन-पु॰ [मं॰] प्रसमा, लपेरमा ।

परिणाम-पुरु [होत] एवं अवस्थाने दूसरी अनुत्थाकी प्राप्त दीना, वयात्र दीना, बदलकर दूसरे सद, आहार, शुण आदिरी प्राप्त दीनाः प्रकृतिका अन्यका शाव (गां०): विशः, रेटिय आदिका क्रिया धर्म या संस्कारकी प्राप्त दोना (दो॰); पनना, परियाद: पूर्व वृक्ति, पूरा विकास: दहार, दवा दीनाः आयुक्तः दलनी, बुद्ध दीमाः शमय या सर्वाच्या समाप्त कोनाः कन, महीबाः कन सर्वार्णकार वहाँ प्रथमान प्राधेवदे साथ विल्का बीहे किया करे। -- इसी(सिन्)-दि॰ रिमी कार्यक्रे मते दा करे कलशे बाम्मेर, ए, दृहरक्षा । -इष्टि-न्ती । हिनी बार्नेके अहे या पूरे परियासकी जन्म नेसेकी काला ला नुविस हुए-द्रीपत्रः । विक् दृश्यद्रति । न्यस्य-दिक जिसकः दृशियास क्षता हो, क्षता धम देवेवाल । -बाइ-पु॰ शह

सिद्धांत कि कारणमें कार्य अन्यक्त रूपमें विचमान रहता है और इस प्रकार: अञ्चक्त कार्य ही कारण है तथा व्यक्त कारण ही कार्य । -बादी(दिन)-पु० परिणामनादको माननेवाला । -झूछ-पु॰ भोजनके पचते समय पेटमें उठनेवाला शुल ।

परिणासक-वि॰ [सं॰] परिणाम या रूपांतर लानेवाला । परिणासन-पु॰ [सं॰] परिणामको प्राप्त करानाः परिणत करनाः वर्द्धित करनाः संघक्षे वस्तओंको अपने काममें लासा (बी०) ।

वरिवासिक-वि॰ [में॰] जो शीप्र या आमातीसे पन जाय, सुपान्य ।

परिषामी(मिन्)-वि॰ [मं॰] को परिषामको प्राप्त होता रहे, परिणानकी प्राप्त होते रहना निम्नका रबमाव हो। परिणाय-पु० [मं०] चारों भीर या इधर-उधर है जानाः इत्रतंत्र, चौसर आदिको मोटीको चारों भोर नलानाः विवाह ।

परिणायक-पु॰ [गं॰] नेता: पति, भर्ता । -रम-पु॰ दे॰ 'परिणीन रन'।

परिवाह-पुर [मंत] पीलाव, विस्तार; आमीगः विशालनाः

परिणाहयान्(यत्) -वि०,पु०[रां०] विस्तारवाला,विस्पृत । परिणाही(हिम्)-वि० [गं०] दे० 'परिणाहवान्' ।

परिणिसक-पु॰ [गं॰] धूमनेवाला; सानेबाला । परिजिसा-सी॰ (ग्रं॰) शुमनाः साना । परिणीत-वि॰ [सं॰] विवादिताः पूरा किया हुआ, समाप्त,।

-हम्ब-पु॰ चहावनी राजाओंके सात प्रकारके कीपीमेंने एक (धी०) । वरिजीता-विक स्वीक [मंक] विवादिना (म्वी) । • •

वरिकेनस्याः परिकेशा-दि० स्ती० [मंठ] स्याहते थीन्य (हरची) ।

परिजेता(म)-पु॰ [मं॰] पति, रवामी । परिणेय-वि॰ [मं॰] जो नारी भीर गुमाना जान । वृश्यिया-निक् स्रीक [मेक] की चारों कीर मुनाबी बाब

(बद) । परितः(तम्)-म॰ [मं०] चारी ओरा चारी ओरमे । वश्तिबद्ध - वि० दे० 'प्रत्यक्ष' । अ० देशमे-देशमेः अभिनेते

सामने । परितस-वि॰ भि॰) बहुन नपा हुआ, बहुत गरम; बहुन क्षिक दर्गतन, मेनस १

परिसप्ति-सी॰ [मुं॰] परिशत दोनेरी किया था मानः

भाषंत्र नायः भग्यविक दुन्छः, शंनाय । परिसर्वण-पुरु [मंत्र] रिहोप सपने विवाद बरना र

पतितर्पण-प्र• [मं०] ध्यष्ट बरमा, सहा बरमा । -पहिलाप-पु [में] आपरिक लाग, बद्दत गरमी, अनि क्षाताः अध्यक्षिक द्वारा शतायः शीदा भया स्वतः स्वदिताः एक सरका ह

परिवार्था(पिन)-१४० [धंब] व्यति याचा, बर्त व्यस्त, जनना गुआन्याः हिमे परिनाय द्वीत र्यानायपुत्तः दर्व श्रीपद बरेश पर्वानेशना, वृति पुरावस । पुर शतानेशन्ता दृःस देशेशना ।

पर्याना-यु॰ दे॰ 'परवाना' । पर्यायश्चि-सी० सि०ी गाँठ, बीदः पर्वकाल का उपका पर्वास्कोट-प॰ [गं॰] उंगलियोंको चटकानेकी किया। पर्वाह-सा॰ दे॰ 'परवाह'। पु॰ [मं०] पर्वका दिस । पर्विणी-सी॰ [गं०] स्वोद्यास्ता दिन । पर्वित-पु॰ [मे॰] एक प्रहारकी महन्त्री । पर्वेश-पु॰ [सं॰] हदा, ६६, चंद्र, कुनेर, बस्य, अन्नि श्रीर यम जो छःन्छः मधीनेके ब्रह्मके अधिपति हुआ मरते हैं। प्रदारका अधिपति देवता I पर्दो-पु॰ (स॰) शायुषा अन्यः पर्दा, फरसाः पसन्ते । -पाणि-प्रव गणेशः परशराम । प्रशासका-नरीक [मंक] शासकी हुट्टी, प्रमुखी । षदर्वध-प॰ मि॰ी परमा, कटार । पर्यंद-छी॰ मिनो मनाः धर्मीपदेशक पंटिशोका समात्र । पर्यहरू-पु॰ [मं॰] सभाभद् । पहेंग-पु० दे० 'प्रदेश'। पर्लं हट-वि० [स०] भीत, दरपोत । पलंकर-५० (२०) विश्व नामक पानु । पर्लक्षप-प॰ (सं॰) दानवः सिद्दः समुद्रः राज्यलः पनाधा । पर्लक्या-औ॰ [२०] गुगुलः मासीः पलाहाः सारा । यहाँका = न्हीं व दरवर्गी स्थान । पर्लग-ए० वरी और बंदिया जारवाई, अधिक संबी-बीडी भीर संबद भारपाई। -तौद-वि॰ की विमा ऋठ कास थिये थी ही पहा रहे, निकम्मा, आल्सा । -पोदा-प्र पनगरी भारर । गु॰ —को लाग्न सारकर नक्त होना— मनी-वंगी द्वीयर संदोस बाहर भाना: विसी आरी नीमारी-में पुरकारा पादर स्वस्य क्षेता।-सोक्ना-कोई काम न करते हुए धीर्थ था पढ़े रहना, बेकार रहकर दिन दिवासा । -लागाना-पर्श्वेगपर क्षेत्र तरहमे दिशायस विद्यामा । पर्लेगरी-मा॰ रोटा पर्नन, भारवार्द । वर्द्धेशिका! –हाँ। होश प्रहंग या शहर ।

कर-पुर [sie] शांता समवदा एक कपु विभाग और ६० विषय अवीत् २४ मेदिहाँ बरावर होता हैं। ४ कवंदी एक प्राधीन तीनः पदाणः । पन्तः। −क्षाइ-प्र•स्तः। -गंद्र-५० दी शास्त्र पण्यत्य परनेवाला मिली, शक्षा -बार--य- यह सम्देवला । -यू-दि- विवादे क्षेत्रती भोग की । -- जिय-५० राष्ट्रका की गा। वि० जिसे श्रीय थ्यारा हो, मांसदिव र -मा-न्यीक विशुवन देशावर सर्वेड ९४ रामय भूरादी है इ' इडी मध्याहरी छाया । प्रसर्वे :- सी॰ परमा ग्रिया पेडची प्रत्यी और नरम शहनी । वशक-मी॰ बोसरी दरनेशना पनांदा वह परदा क्रिकट क्रिक्टी और एडमेने भाषा अगमें भंद शाहा और शुक्ती है। र स्था, निविष् । र सर शतकर । -शरियाः

-तृतियात्र,-शियात्रो -विश व्यति वदार ६ -वीदा-प्र

भागका एक रोग क्रियमें वरीनियाँ करीयकरीत हाव

मारी है, भारत शास्त्र करती है और रीवी चुच या

रीयनीकी भेट देश मही शहरात बह जिसे यह है।

इश की, रव रीवका रीवी । शक -प्रापको वा विशो-

देखने देखने, ध्यमस्में। -पसीत्रना-भौगोर्ने आंध् मानाः वयार्वे दोना । -बिछाना-दिसीका क्यी श्रद्धांचे स्थागत करना । -भैजना-भासका रशारा होना। -वाँजना-वाँखसे दशास बरना । -बारना-वाँखरे बद्यारा करनाः क्षपदी हेनाः पहक गिराना । -हमना-और। बंद दीना, भींद भाना । '--स्थाना-ऑस दंद करना। भीनेके लिए भाँख बंद धरता। -से पलक म लगना-व्यवसी क्यी रहना, मीर न माना ! -(स्री)ये ज्ञमीन झाइना या तिनके शनना-क्शमदाते रिमी-की मेवा करना। पसका = -प् वर्न्त, शस्या । पछत्रया-सी॰ [गे॰] पात्रवसा शाग । पारम्यन-५० पायरका पेर । पलटन-सी॰ [अ॰ 'स्टेट्न'] पैदल सैनिकॉका वह निर्माग विसमें २०० सैनिक हों। मैनिको या लोगोंका दल को समान स्टेश्यमे कही एकव हर हो, की हा। प्रस्टना-म॰ कि॰ उत्तर जाना; एकदम दरल माना, पर्धतया परिवर्तित हो जाना ('प्रामा' कियाने सार्थ)। भव्छी दशको प्राप्त होना। पोऐकी और उस दरगा। सुद्दनाः बापस काला, कीटना । स् । क्रि. एकटना, देशी रिधतिको पर्देशाला कि लीनेका साम उपर ही आद और कपरका माने: एकद्रश बदल देना, पूर्णतया परिवर्तित बर देना (दिना' या 'दाशना'के साथ); बार-बार उत्तरनाः यश बरगुके स्थानपर कुलरी वस्तु शहण करनाः किनी वस्तके बदले दुगरी वस्त केता वा बदलता। बात वतः देनाः सब्दर्भाः • बाप्स बरनाः श्रीटाना । प्रस्तिपा-दि॰ प्रस्तदा। पु॰ प्रस्तिमे काम **द**रने बाला भैनिक।

वादरा-पु॰ पण्टनेका कार्य या भागा प्रतिपत्ना मार्यी करी हुई वह पारी विशापत रोनेवा बेठता है; गरैवेदा की स्वरोत्तर पर्वेचकर बारीबी के छात्र धुनः नी ने दे व्यरीबी ओह सीटना, अवरोद: लोहे, पीतल वा आकरी अपन क्षण्यो। सुरतीका एक वेग । शुरु --सामा-रिवरिका पूर्णतः परिवर्तित हो जाना । पर्हेटामां~स॰ कि॰ बापन दश्मा, शीरामा; बदममा I

परुराय-पु॰ परुरे मानेका किया। यमहायमा-य॰ कि॰ दे॰ 'पण्डामा'र क द्रव्यामा ! यसरीरे-भी० एवरा बाताः वदही। पछटे!-अ॰ बदलेमे, हिराहदे रूपने। पळ्डा- पळ्डा-पु- धरान्हा पहा । वक्ष्मा -पु॰ बनेवा भारनेकी दिवा । यसची-मी॰ दादिने और बावें पैरीके पंजीकी समी

माधी और पाहिनी जोंबीके जीचे दशकर बैडमेका पक क्षायन । प्रमाना-अव कि व्यक्ति होता. प्रतान्देशा आसा इरें पुष बीना, शैवार बीना । यु दे पालमा । . . यसमामाण-सं कि श्रीत या सम्बद्ध नेदार दर्गी

(१व, घोडा) । यक्तम-बुर्व[रोक] साँगः ब्रोधवः भिन्दुरः शाप्तमः ।-देवर-

पुर दिन नामक पातु । -- प्रिय-पुर राएन। श्रीमधीना ।

tee विफलता । परिनंदन-दि॰ [सं॰] संबोषप्रद । पु॰ संबोष देना, संबुष्ट करना । परिनय*-पु॰ दे॰ 'प्रियय'। परिनास = पु॰ दे॰ 'परिणाम'। परिनिर्धपण-पु० [मुं०] शॅटना, देना । परिनिर्धाण-पु॰ [सं॰] पूर्ण निर्वाण, मोहा । परिनिवृत्ति-सी० [मं०] मुक्ति, मोश । परिनिष्टा-सी [एं॰] चरम सीमा; शानकी पूर्णता; पर्य-वसान । परिनिष्टिन-वि० [सं०] पूर्णतया निपुण। परिनेष्टिक-वि० [मं०] सर्वोध, चोटीका । परिन्यास-प॰ [सं॰] दिसी वानदका अर्थ पुरा करनाः क्यानहरी मूलभूत धरना(बीज) है। मंदेन हारा भूवन (ना०)। परिपंच+-पु॰ दे॰ 'प्रपंच'। परिपंथ, परिपंथक-पु॰ [गं॰] मार्ग रीकनेवाला, श्रृष्ठु । परिपंधी(थिन) -वि॰ [छं॰] मागं रोसनेवाहा । पु॰ शतुः शहरा, शक् । परिपक-वि॰ [सं॰] पूर्णतया पक, अच्छी तरह पहा हुमा; अध्धी तरह पचा हुआ; सम्यक् नीर्णः बिसका पुरा विकास को खुका की, मीद, जिसमें कचायन न की (मुद्धि, यान); पूर्णतमा अचल; परिपादको प्राप्त (स्त) । परिपक्तता-सी॰ [मं०] परिपक होनेहा भाव । परिपद्मायस्था-सी॰ [मं॰] परिपक होनेकी दशा । परिपाचत-वि॰ [सं०] पकाया हुआ । परिपण, परिपन-पु॰ [सं०] मूल धन, वृंजा । परिपणन-पु॰ [धं॰] बाबी समानाः बादा करना । परिपणित-दि॰ [मं॰] बादा दिया दुआ: त्रिगुरे विष शर्त की गयी हो। निसकी काबी लगायी गयी हो।-काल-संधि-श्नी वह संधि क्रिसमें यह प्रतिका की नायी हो कि बीन कियने समयनक करेगा । -देशमंधि-सी० वह शंपि मिगुमें यह निवन किया गया हो कि बीन पश किय देशपर चर्मा करेगा । -संचि-सी॰ वह संचि जिसमें इंग चौ स्वीसार की गयी ही। परिपणितार्थमंधि-म्बा॰ (सं॰) वह संधि वित्रमें यह से पापा दो कि कीन किलना कार्य करे । परिपतन-पु॰ [मं॰] चारी बोर उदना । परिपर-पु॰ [हं॰] धहरदार रास्ता। परिपयन-पु॰ [०]०] श्रीमामा। श्रीमानेहा श्रप्त । परिपंदिमा(मन्)-न्डी॰ [स॰] बहुन अविक सरोदी था दीमापन । परिपोद्द-रि॰ [र्ग॰] बदुन अधिक सर्वेद का दीला । परिपाँदुर-दि॰ [मं॰] बहुत स्पेट, भारवर हाड है परिपाद-पु (मैं) सम्बद् शहः अपने तरह पहना या प्रदास जानाः अष्टी तरह दुवना का प्रवास जानाः पूर्व दिस्तान श्रीत्वाकी प्राप्त कीला; चरिप्तीतः परिधामः पदा रीजा (दृष्टि, अनुसद, शन आहे); हुएलता, निष्मका । विविधियी-१० (शंक) निर्मेष ।

परिपाचन-वि॰ [सं॰] पकानेवाला। पु॰ परिपक बनाना। परिपाचित-वि॰ [सं॰] अच्छी तरह पदाया हुआ, भूना परिपाटल-बि॰ [सं॰] पौलापन लिये लाल रंगका । परिपाटलित-वि॰ [सं॰] वो हाल-पोला रँगा गया हो। जो रँगकर पीलापन लिये छाल रंगका बना दिया गया हो। परिपाटि, परिपाटी-सी॰ [मं॰] चला भाता हुआ अस, अनुक्रम, आनुपूर्वी, सिट्यिछा; रीति, दंग; अंगगणितः प्रया, चाल (हि॰)। परिपाठ-पु॰ [सं॰] विस्तारके साथ उहेरत या पाठ करना । धरिपाइवें-पु॰ [सं॰] बगल । वि॰ पासका, निकटवर्ता । -चर-वि॰ बगटमें या पास-पास चलनेवाद्या । -धर्सी-(तिन्)-वि॰ बगलमें या समीप रहनेवाला। परिपालक-पु॰ [सं॰] परिपालन करनेवाला । परिपालन-पु॰ [सं॰] रहा करना, रहाम; पालन-पोपण करना, पोषण। परिपालना-सी॰ [मं॰] रक्षण, वचाद । परिपालमीय-वि॰ [मं॰] परिपालन करने बोग्य । परिपारुविता(न)-पु॰ [मं०] परिपालन करनेवाला । परिपालयिया-न्दी॰ [मं॰] परिपालन करनेदी इच्छा । परिपाल्य-वि॰ [सं॰] परिपालनके थोंग्य । परिर्विग-दि॰ [मं॰] अति र्पिग, ललाई लिये भूरा । परिपितर-वि॰ [मं०] इसके लाल-भूरे रंगहा । परिविच्छ-पु॰ [मं॰] मोरकी पुँछमे तैवार किया जाने-बाहा एक प्राचीन आभूपण। परिपष्टक-पु॰ [गं॰] सोमा। परिपीष्टन-पु॰ [सं॰] बहुत पीड़ा देना; पेरना, बहुन दशनाः भनिष्ट दश्ना । परिपाहित-वि॰ [सं॰] अति पीरिन । परिपीचर-वि॰ [मं०] अति धैवर, बदुत भोटा। परिपुरन-पु॰ [मं॰] संपुटित करनाः हिनका या यमना भरूग दरना या द्वीगा ! परिपुष्ट-दि॰ [सं॰] जिसका पोपन अच्छी तरह दिया गया हो, सम्दर् पोदिनः अति पुर, पूर्ण रुपने पुर । परिपृत्रन-पु॰ [मं॰] सम्बद् पृत्रन । परियुत्रा-सी॰ [सं॰] गुम्दर, पूजा। परिवृत्रित-दि॰ [मं॰] अच्छी तरह पृत्रित, त्रिसरा सम्बद् पूजन किया गया हो। परिचूत-वि॰ [र्ग॰] पूर्वेतवा शुद्ध हिमा हुमा; भति पविषः गूर कारिसे अन्ती तरह शाफ किया हुआ (असे परिपृत थान्द)। परिपुरक−दि॰ [सं•] परिपूर्ण करमेवाला। सग्रद या पूर्ण-तदा नंदन बनानेबाना । परिष्रम-५० [बंध] शरिपूर्व बरमाः मर् देश । परिवृत्त्राच-दि॰ [र्व॰] वरिपूर्त बरने दोग्य । वरियान=-वि दे दरिप्तं' । यरिष्टित-विक [धक] दर्श्य विका दुवा । परिपूर्त -[त॰ [तं०] अप्टी नरह मरा दुआ, सूत भरा इमा पूरा किया इक्षा लेड्ड । - चंद्रविमस्यम-इक यद तरहरी समारि ।

पल्का । -पु॰ धरदी जातिहा एक पीपा । वि॰ पाला दुषा, पालत् ।

पञ्जवा - वि० प.सन् ।

पलद्दना - अ> कि॰ हरा धरा दोना, पट्टवित दीना । प्रतहाना - म॰ फि॰ दरा-भरा करना, प्रतिव करना -'बरो वो देल काँचि दलकाँ³-४० ।

पारेर-मा (भंग पूर्व) पट्टी समीत, मुरते बादिन भीतरकी और नगायी जानेवाली पड़ी । परिरम-पुरु (४० 'बेरेन') मुद्रणयंत्रका बद्द भाग दिसके

दबावमें अधर ग्रप्ते हैं 1

पलेहना ६ -- म० फ्रि॰ परफा देना । परिधन-पु॰ वह मुखा आटा जिमे छोईवर लगाउर शेटी देवते है। सु० -निकलना-सूर पोटा याना, गहरी मार परमा । -निकालना-गृह पोटनाः परेशान हरना । पछनर-पु॰ [अ॰ 'द्रेनर'] (एनाईवे) कमे हुए फरमेवें मतदमे कार प्रदे तुप टाइपोंकी बराबर करने है किय काठ-

का बना निषश दुरुहा। पक्षेता-पु० दे० 'प्रेसर'।

परहोदना = - म० क्रि॰ (पैर) दबाना । अ० कि० छोट-पोट करनाः भारी शारीरिक कष्टसे सङ्ग्रहाना-छटप्यना । प्रक्षीयम-पुरु देव 'प्रदेशन' ।

पहोयना•-म• फ्रि॰ (पैश) दबानाः सेपा-सुभुषा बरना । प्लीयना - ए० कि० साफ करना, थीना ।

पस्टा-पु॰ दे॰ 'दहरा'। पदर्यक-पु॰ [स॰] पर्भम, शस्या ।

पम्यपम-पु० [मं०] धोईका जीनः बागशीर ।

पाद-पु (मं) अलहा बदार ।

पदमय-पुरु [मंर] नदा और कोमल पत्ताः पासकी पत्तीः द्यभी: गंदान, बसमा अनस्ता वस सर्वनाः विस्तारः दिदया गुन्ना रमनी या बार हा होता लेका श्रेगारा दाम-क्षीता गरवमें दावशी एक मदाः यक्तियका एक वासीन राजवदा । -प्रादिता-भी श्रम्भा, अवूर्य शामः मामूनी मोशीये लगा रहता । -प्राहिपांडिय-पु• विषयम अपूर्व पान या अवशे जानस्थाः-द्राष्ट्री(द्रिन) -विश्व विगत्ते ६६वर अगे दी या अग रहे ही। अपूर्ण, अपूरा (द्वारा): अपूरी जानकारीकारण: अदमी कार्याने स्यस्य रक्षतेवाभाः । —ह्यु--पु॰ अद्योक्तप्रा देह । परमयक-पु॰ [तं॰] सपाः वेदवादा यादः अशीह पृश्वः

यत नाहरी महानी। केर्या, बीवण ।

परन्यमार-पर जिल्लाहरू होना । यस्त्रपोक्त, यस्त्रप्राचार-पुरु (शेव) द्राप्ता ह पस्त्रवाद-पुरु [मं•] दिश्य ।

पानवपायीडिल-दि॰ (म॰) कन्दिनीमें सदा दुआ ह परण्यास-पुर (तेर) कामदेव ।

यस्यविद-पुर्शाशिक्षानुद्रश

परविता-दिक [र्वक] शियाने एत्मब मने बो:दिश्यत: बारर दुला क्याने रेगा हुमा होमाबपुट । युक सहा-4" YE 1

परमारी(पिन्)-दिव दिवेदी जिल्ली करे देते दिवने ही है 7. 42 1

यन्छा-पु॰ दमदेवा होत, दामना दुरी। दुपलिया होरीश आधा दिस्साः अन्त बीवहर हे जानेदा टाट या गोनीः हजारे, चरमे, स्थार, हराजु, यूची आदिने दो दिस्होंमें। कोई एकः तीन यनका बोहा। † विश्देश परमा । --(स्डे)दार-९० यस्या होने या श्रीकनेरामा । नंदारी-स्री॰ प्रस्टेदारका काम । सु॰ - हृष्टना - मुश्सारा निजनाः विष्य सुरका । –राकामा–सही था लेका, विष्य प्रकास । -शक्ता-किमी पश्चका अधिक बरुवान् होला । - पश्च-इमा-सद्दारा हेना । -पसारता-दिप्तींदे सामने दामन फैलाना, किमोमे कुछ भौरा मॉगना। --मारी होना--दे॰ 'पत्ला झुकता' । -(हे)पयुना-दाध लगना, निन्ता । (किमीके)-धैंचना-विवाहित होता, : ध्याही जानाः ग्रीषा जाना। (किमीके)-बाँचना-म्यादरः जिन्ने बरना या लेना। −से वाँचना−किमी बरनाः

वस्ति, वस्त्री—स्वे॰ (र्स०) होता गाँव, घरो, रोगा सुरी। घरः शिवक्तीः भ्रमीतपर पीननेवाली लहा ।

पस्थिका-म्बा॰ (सं॰) होटा गाँव, छोटा बर्डा, दीणा डिगक्षी । पदस्ति -- पु॰ 'परन्य'; सनाम बाँधनेश हाट मारि ! · परवल-प्र॰ [म॰] ऐसा बमाराय, ऐसा तामाय र

परवस्तावास-प्र० (मं०) इत्या । पर्वेश-न्त्री० श्वोदी ।

पर्वेरिया॰-पु॰ दे॰ 'देवरिया'।

यय-भी० दे० 'दी' । पु० [रो०] बायु, इबा: गूप अ'रिमे भनावरी धूमी आदि निकालगाः शुष्टीकरण ।

पषद्री-सी० एस विदिया। ययन-पुरु [बेर] हवा: नायुके क्षरिप्रापृदेश प्रनाप्त नारि मात्रः करुनाः छलनीः नुष्टारका भागीः पानीः विद्या गुणारियाः प्रीययोः सरया । वि० शहाः विर्येश । —कुमार -पु॰ दन्मान्: मीमनेन । -चक-पु॰ संरर ! -चदी -भी (हिं) इवादी शसिनी धनर्मनामी दर्दी। - अ -समयः-मेदः-मेद्नः-पुष-पु॰ दे॰ 'पननपुषार'। -पति-पु॰ कायुरे अधिष्ठातृश्ये । -पशिशा-मीन आवार-शाया पृथ्विमाधी बायुवी दिशा देशनेकी एक विचा जिल्हे अनुसार उधोतियो भाउना प्रतिग्य बगलाने है। -प्य-दि॰ वायुने पनित्र रिया दुभा। व पु॰ दे॰ 'पवनपुत्र' । -बाज-पुत्र' देव 'दानाम' । -मुन्(प् -पु॰ शर्रेद १ -बाइन-तु॰ श्रीमा १ -श्याधि न्थी। बानहोग । पु॰ उद्दर्श । -स्वेदाल-पु॰ द्वारा कोटा ।

~श्लु~पु॰ दे॰ 'पानद्ग्यार्'। यचना - पुरु प्रस्ताः, पेना ।

यवनारमान-पुर्व (र्वत) इनुमान्: भौमर्वन । वचनाव-पुर्व (में०) पप्तररिधेर । वयनायाः ययनासान=पु» (शं॰) शांप । पि॰ दशापीदा

बहन्दरमा । पवनासनाम-पु॰ (४०) दम्पः हे'र । चयनार्द्धा(शिन्तु)-दि० [होन] श्रदा रोटर रहतेवाहा । 🖫

17.8 E चयनाद्य-५० [रो०] एक प्रशास्त्र भाग विगान प्राप्ति 491 , विफलता । परिनंदन-वि॰ [सं॰] संतोषप्रद । पु॰ संनोष देना, संतुष्ट करता । परिनय - पु व दे व 'परिणय' । परिनाम=-पु॰ दे॰ 'परिणाम' । परिनिर्धेपण-पु० [मुं०] बॉंटना, देना । परिनिर्वाण-पु॰ [सं॰] पूर्ण निर्वाण, भीख । परिनिवृत्ति-सी॰ [मं॰] मुक्ति, मोश । परिनिष्टा-सी [एं॰] चरम सीमा; शानकी पूर्णना; पर्व-बसान । परिनिष्टित-वि॰ (सं॰) पूर्णतया निषुप। परिनेष्टिक-वि० मि० सर्वोध, चोडीका । परिन्यास-प॰ [सं॰] किसी बायदका अर्थ पूरा करनाः सथानरकी मूलभूत धरना(शीज)का संकेत द्वारा खूबन (না॰)। परिपंच = -पु॰ दे॰ 'प्रपंच'। परिषंध, परिषंधक-पु॰ [मं०] मार्ग रोकनेवाला, दानु । परिपंधी(पिन) -वि॰ [एं॰] मार्ग रोकतेवाचा । प॰ शहः मुरेरा, दाकु । परिपद्य-दि॰ [सं॰] पूर्णनया पक, अच्छी तरह पका हुमा; मध्या तरह पचा हुमा; सम्बक् बीर्थ; जिसका पुरा विद्वास दो पुका दो, भीर, जिसमें क्यापन न हो (बद्धि, द्यान)। पूर्णस्या कुदालः परिपादको प्राप्त (रस) । परिपक्षता-छी० [मं०] परिपर होनेका भाव। परिपद्माधस्या - स्त्री॰ [सं॰] परिपक्ष होनेदी दद्या । परिपश्चित-दि॰ [ग्रे॰] पश्चाया हुआ। परिएण, परिपत-पु॰ [सं॰] मूल धन, पूँजी । परिपणन-प॰ [सं०] बाजी लगानाः बादा करना । परिपणित-दि॰ [गं॰] बादा दिया हुआ; जिमके लिए शर्त हो गयो हो। जिमको बाजी लगायो गयी हो (-काल-संधि - स्पे॰ वह संधि विसमें यह प्रतिका की नियो हो कि कीन दिवने समयवह छहेगा । -देशसंधि-स्ती० वह धीव दिएमें यह निवन रिया गया ही कि कीन पश दिस देशपर परार्थ करेगा । -संधि-सी॰ वह संधि जिसमें हुए शर्ने सीटार 🛍 गयी हो। परिपणिनार्धमंथि-मा॰ [मं॰] वह संपि जिनमें यह सै भाषा 🖬 कि कीन दिलना कार्य करें। परिवतन-पु॰ [मं॰] चारी मीर उदना । परिपर-९० [हं•] घटरदार रास्ता। परिषयन-पु॰ [ग]॰] भेंगाना; भौगानेका सुप्र ग परिपंडिमा(मन्)-शी [गं] बहुन अविद्व मखेदी दा रीवापन । परिपोंटु-रि॰ (मं॰) बहुत मध्कि सबैद दा पीना । परिपांदुर-विक [तंक] बहुत शरीह, आस्वर हुट ह परिवाद-पु [तं] सम्बद् बाह्य अवधी तरह पहना या प्रदासा जानाः अध्यक्षे तरह ययना या गराया जानाः क्तं विकास, मीत्याकी मात्र कीताः करियातिः वरियामः रवा दोना (दृद्धि, अनुसन, दान आदि): बुरस्ताः, Agrey : परिवादिजी-सी: [र्ड) निगीत ।

परिपाचन-वि॰ [सं॰] पदानेवाला। पु॰ परिपद बनाना। परिपाचित-वि॰ [सं॰] अच्छी तरह पकाया हुआ, भूना परिपाटल-बि॰ [सं॰] पौलापन लिये लाल रंगका । परिपाटिकत-वि॰ [सं॰] वो हाह-पौहा रेंगा गया हो, वो रॅंगकर पौलापन लिये लाल रंगका बना दिया गया हो। परिपाटि, परिपाटी-सी॰ [मं॰] चला आता हुआ क्रम, अनुक्रम, आनुपूर्वी, सिट्सिला; रीति, दंग; अंकगणितः স্থা, বান্ত ((६०)। परिपाठ-पु॰ [मं॰] विस्तारके साथ उहेख या पाठ करना । परिपाइव -पु॰ [सं॰] सगल । वि॰ पाछका, निकटवर्ता । -चर-दि॰ दगरुमें या पास-पास चलनेवाहा। -यर्ती-(तिन्)-वि॰ बगटमें या धनीप रहनेवाला। परिपालक-पु॰ [सं॰] परिपालन करनेवाला । परिपालन-प॰ [नं॰] रहा बरना, रहण; पालन-पोपण करना, पोपम। परिपालना-न्त्री॰ [मं॰] रक्षण, बचाव । परिपालनीय-वि॰ [सं॰] परिपालन करने बोग्य । परिपारुविता(न)-पु॰ [सं॰] परिपारुन करनेवाला । परिपालयिया-की॰ [सं॰] परिपालन करनेदी इच्छा । परिपालय-वि॰ (सं०) परिपालनके योग्य । परिधिंग-दि॰ [सं॰] व्यति पिंग, ललाई लिये भूरा । परिपित्रर-वि॰ [सं॰] इलके लाल-भूरे रंगका । परिषिच्छ-पु॰ [मं॰] मोरबी पुँछमें नैवार दिया जाने-बाहा एक प्राचीन आभवतः। परिपष्टक-पु॰ [म॰] सोमा। परिपीदन-पु॰ [सं॰] बहुन पीड़ा देना; पेरमा, बहुन दशमाः अनिष्ट दश्ना । परिपीडिन-वि॰ [सं॰] शति पीतिन । परिपीवर-वि॰ [मं॰] अति धेवर, बहुत मोटा । परिपुरन-पु॰ [सं॰] संपुटित करना; टिनका वा समदा कहम दरना या दोना ह परिपुष्ट-दि॰ [सं॰] जिसका पीपन अफ्टी तरह हिया गया थी, सन्दर् पोवितः अति पुर, पूर्ण रूपने पुर । परिपृत्रन-पु॰ [गं॰] सम्यक् पृदन । परियुत्रा-नी॰ [छ॰] सम्बर् पूजा। परिपूजित-वि॰ [सं•] बच्छी तरह पृतिन, तिसरा सम्बन् पूरन दिवा गदा हो। परिकृत-दि॰ [नं∘] पूर्वत्रवा हुइः किया दुव्याः अधि परित्राः मूच मादिसे मधी तरह साथ दिया दुशा (बैसे परिपृत थान्द) । परिष्रक-विक [संक] परिष्नं करनेशला; सन्य या पूर्णः त्तवा मेरब बनानेशक।। परिष्रण−दु॰ [मं॰] चरिपूर्व बरना। मर देना । परिपूर्वाय-दि॰ [मं॰] परिपूर्व दरने दोग्य । परिपूरमण-विक देक 'दरिपूर्य'। वरिवृत्तित-दिश् [बंश] दरिवृत्तं दिया दुशा । परिपूर्ण-दि॰ [छं॰] अपनी तरह मरा हुल', शृह मा इमा पूरा किया दुमा, ब्युट । -चंद्रविमक्यम-पुः दह एरइसी समादि ।

ार सेनान रहना ! - सहस्रना-एक रक्षक या रहरहरू ये स्थापन इतरा निवुध होना ! - स्थाना-भिजीको निमहणानीके रित्र चनके जान-वाल पहरेदार नियुक्त करना ! - (दे)में देना-नियरणानीके हिन्द पहरेदारी या सिशादियों के सिवुई करना, दिरासनने बरना ! - में रहना-दिशानार्थे रहना, दिरासनने बरना ! - में रहना-दिशानार्थे रहना ! - में होना-दिशानार्थे रहा

पदराद्वर-पु॰ पररा देनेशाला-'पदराहन पर शुक्ता गावती, रुप्ता वरने लागो भीर'-शुरुदान ।

पहराना!-म॰ कि॰ पहनाना ।

पहरायमी-सी॰ दान या शिष्ठभग है रूपमें दी जानेवाली

पहराया!-पु॰ दे॰ 'पहनावा' । पहराया!-पु॰ दे॰ 'पहनावा' ।

यहरु, यहरू - पु॰ पहरेदार । यहरुमा - पु॰ पहरेदार ।

प्रमुख्य पुरिसी ठीम वा पीरी चीवके तीन या कपिक कोरी वा कोर्नों के बीवकी चीरत सनदः भुनी हुई करेडी या कनदी ओंडे और जमी हुई तद या परतः रहाई, नीराड आदिके जीनरकी करेडी परतः पुरानी वर्षे का नमी हुई तद की दबाई, तीडाक बादिमेंने निजाली बची हैं। दिसी ऐंने कार्यका आर्टिम जिनाम अनिकारतक्ष्य पूर्वर यो तुरु बद, एक, समझ ७ परक, परतः । – दृत्र – दिल जिम्मी परक हैं, परकोशारा । सुल – निकारतमा— किश्री भीवसे पडण बनावा ।

पहलती-भी॰ वेरिको गील बरनेका सुनारीका यह भीतार।

पहरूपाम-पु॰ [फा॰] युश्मा कश्मेवाका मनसून और कमरती भारमी, महरू, युश्मोबाना दृष्ट-पुट और यथवान् भारमी।

षद्दरुषाती-मो॰ [का॰] कुरती शहनेका काम या देशाः माल्याः पदण्यान दोनेका भाष ।

यहरूवी-की॰ (का॰) ईरानको यक पुरानी माला । यहरा-वि॰ मी गणना या क्रमके लगुनार यहके श्वान-यर यहे, व्यक्ति यहनेवाला, बाय, प्रमध । † यु॰ पुरावी गरेबी नमी दुर्द नहा।

परेषी जमी दूरे नहा ।
पर्दान्त (कार) बाल, वीजदः क्रिमी प्रतानेका यादिना
या बेंदा मान, बान, वाजदः क्रिमी प्रतानेका यादिना
या बंदा मान बान, पापडे, मेगा या मदानका वादिना
या बाद्यां आत्मा बान, पापडे, मेगा या मदानका वादिना
या बाद्यां आत्मा बिनादा बाल, बाव्यां दिनी
योग भीन या मानेके बादि बीदों या प्रोनोर्ट तीम्बी
सीदा बाड, वादा, प्रतान विवाद कर्म क्रिमीवं क्षा व्या
मदान, बदामा १ न्यान-विव जिल्ली क्रिमीवं क्षा व्या
म् न्यापा हु होना-विवादमा जिल्ली क्या
प्रतान-विवाद होना-विवादमा जिल्ली क्या
प्रतान-विवाद अधित्य प्रतान विवाद क्षा व्या
प्रतान-विवाद क्षा विवाद क्षा विवाद क्षा व्या
प्रतान-विवाद क्षा विवाद क्षा व्यावाद क्षा व्यावाद व्यावाद व्यावाद क्षा व्यावाद व्यावाद क्षा व्यावाद क्षा

च्यती दुर्गरेष्ठे दोर्ग रागते पूर वाहमानी वारी दाना। -यचाना-मुहमेडका अदसर न आने देवे दुर आणे दह बाना, निरंत बचाते दुर रागणे निरंत जाना। -यसाना-पहोस्स ना चम्ला। -में बहना-क्रिके सरवर या स्पन्नद बहना। -में बहना-क्रिके स्वरं, क्रिकेड बहन समीप केट हुना।

पहले-स॰ श्रादिमें, गुनमें, देशा श्रिशंत मा गानवे सनु-सार प्रथम, पूर्वेते, प्रशास आगे। द्वराने समानेने, प्राधीय कालमें, काबीत बार्कों - चहल-स॰ श्रिप्यम, सम्प्रे

पहले जानी नार ।

पहलेको —पु॰ एक प्रकारका स्थानित सरस्था।

पहलेका पहलेका—पि॰ प्रमान गर्मने काला (पुथ), जो

और सभी लर्गने पहले देत हुआ हो, प्रवस्तात ।

पहलेकि पहलेकि —सी॰ बचा जनाये एको कि का प्रकारित पहलेकि —सी॰ बचा जनाये एको कि कि का प्रवास प्रमु आप कामीगरा । विश्वो के के पहले कि वां पहाइ —पु॰ प्रभार, कंतर, न्यूने। मिट्टी आरिकी पहानोश बह प्राइतिक पुंत को जमीगरी सवसी में पुण केमा होग देशीर बहुम सरस्ते पहल रहसा है। दिनी परार्थेक्ष बहुत कींना देश स्थार कारी स्थार कार्ये हुम्पर कार्ये पुल —स्वरात्ता नगीर काल सामने तेना। —कदान-आर्था कामका पूरा हो जाना। —हदना,—हट पदमा-धारी संबर आ पहला।

पदादा-पु० किमी अंदली ग्राणन मूची किने बच्चे मार सरते हैं।

पहारित्या - (२० २० 'पहारि'।
वहारि - (२० पहारते - (१० पहारा) पहारदा वा जारे
आपवार हरनेवण्या पहारदा होतेया है। प्राणि निवासे (१० वसी स्त्रीविता (वहासदे होतेया है। प्राणे निवासे (१० वसी स्त्रीविता (वहासदे (१० पो 'पहार्षे) का दो स्त्रीय बोता है। वसी वोता वहास प्राणे होत्रोंक नामेया एक तरस्यों ग्रामा एक हाणियों। इस भोर्षाय नामे एक तरस्यों ग्रामा एक हाणियों। इस भोर्षाय नामे एक प्राप्यों।

यहारा - चु- रू पह वहारी । यहारी - चिक् स्वेत दे वहारी । यहाराक-चु- घररात । यहिष्माता - स्वेत दे व्यत्यान । यहिष्माता - स्व टे रू व्यत्यान । यहिमाता - स्व टे रू व्यत्यान । यहिमाता - स्व टे रू व्यत्यान । यहिमाता - स्व टे रू व्यत्यान ।

पहिमाधाः -पु॰ दे॰ 'बहसाधा' । पहिमाँ॰-स॰ पातः । पहिचा-पु॰ गातः सल आर्थाः वर गातासार सन्दर विगढे धृरीसर मुसलेने वह सम्रमा नाना पनता रे।

थक, यहा। यहिरमा! – मन दिन देन 'यहजना' । यहिरामा! – मन दिन देन 'यहजाना'। यहिरायमा! – मन दिन देन 'यहजाना'।

परिमक्ति-सा॰ [सं॰] झुरकारा । परिश्रासग-पु॰ [मं॰] इथर-उथर शुमानाः चहर देनाः परिमुख-वि० [सं०] आसर्पस, संदर । (पहिचे बादिको) पुमाना । परिश्रामी(मिन्)-वि॰ [मं०] परिश्रमण वृहानेवाला । परिमृद-वि॰ [सं॰] धवराया हुआ, परेशान, ज्यातुरु । परिमंदल-वि० [मं०] बनुंलाकार, गोल; जो परिमाणमें एक परमाणुके बराबर हो । पु॰ वृत्त, घेरा, दायरा; पिंड, गोलकः परिधि । -कुष्ट-पुरु यक प्रकारका कोइ । परिमंदलता-सी॰ [सं॰] गोलाई। परिमंदरिस-वि॰ [मं॰] गोलाइति बनाथा हुआ। परिसंधर-वि० [मे०] बहुत धीमा, बहुत संद । परिमंद-वि॰ [सं॰] बहुत संद, बहुत धुँपला बहुत शीणा बहुत थोड़ा, अत्यहर; बहुत गुरू । परिमन्द-वि० [मं०] बहुत ब्रह्म । परिमर-पु० [अं०] विमाशः बायुः शतुभीके नाहाका एक सांत्रिक प्रयोग । परिमह-पु० [त्रं] वर्षण, रगहनाः नष्ट करना, विनादाः हिसमः मसलना, भीतना । परिमर्श-पु॰ [मं०] छु जाना, रपर्श; विचार करना, विधारण । प्रसिपं ∽पु० [तं०] ईप्यां; कीथ १ परिमल-पु॰ [गु॰] कुम्कुम, चंदन आदिकी रगदना बा पितनाः कुमकुमः परम आदिके मर्दनसे उत्पन्न सुनंधिः सुगंप, सुवास: सी-प्रमंग; पंटितीकी मंदछी; धम्बा, दाम । परिसक्तित-वि॰ (सं॰) बामा द्रभा, सुरासियः गंदा किया <u>ध्या ।</u> परिमाण-पु॰ [गं॰] सायः तीरुः गात्राः भारतर । परिमाणक-पु॰ [शं॰] शील; मात्रा । परिमासा(न)-पु॰ [शं॰] मापनेवाला; तीडनेवाला ह परिमाधी(धिन्)-वि॰ [मं॰] वह देनेशका । परिमाग = -पु॰ दे॰ 'परिमान' । परिमार्गे, परिमार्गेग-पु॰ [सं॰] स्रोजना, हिना, अभे-षणा मात्र बरनाः शंप है, १९र्श । परिमार्जन-विकाप (तिक) भीनेवानाः स्वच्छ करनेवालाः परिमार्जन-पु० [मे०] थीलाः साफ बरलाः स्वराप्त बरलाः श्रद और नेलमें बता हुई एक गिठाई। परिमार्जिय-वि॰ [एं॰] शीवा हुमा: ग्राट विवा हुमा, स्वय्य भिषा हुआ। परिमित-वि• [गंग] मादा दुमा; भीना दुमा; जी परि-मागर्ने सावस्थवताने म अविक हो, स कम: जिल्ली मात्रा समन्देश स हो। भोहाः मामून्त्र, शामान्यः सीमित । • अ दर्त । -हम-१० क्षत्वादी । -मुक्(च) -भौजन-विश्व कशाहाही। परिमितायु(गर्)-वि [ह]०] अन्यायु । परिमिताहार-दि० [मं०] अन्यहारी । परिमिति – सी॰ [ग॰] परिमाणः कवस्ति सीमाः ०मदौद्दा है परिमित्रन-दु॰ [सं०] संदोग, मिलनः स्ट्रा । परिमिलित-[६० [धंव] दिला हुआ। मिथिता चरा हुआ। परिमीद-दि: [धंद] सूची हिल्ह । परिमुक्त-दि॰ [११०] किमे पुरस्ता किमा हो, हुत्त । परिस्त्य-दि० [११०] स्मिने अभिनत दिवाहो। F4-X

साथ छुट गया हो। (किसी वस्तुसे) रहित किया हुआ।

परिमदित-वि॰ सि॰ कुचला हुआ; रगहा या पीसा हुआ; गार्लिगित । पश्चिम्ह – वि॰ [सं॰] परिमाजितः ध्रुआ हुआ, स्पृष्टः व्याप्त । परिसेय-वि॰ शि॰] मापने योग्यः शीहने योग्यः महः सीमित । परिमोक्ष-पु॰ (सं॰) सम्बक् सुक्ति, निर्वाणः सुक्त करना, छोदना, मीचन; मलत्याम; विष्णु; बच निकलना । पश्मिक्षण-पु॰ [सं॰] मुक्त करना, 'छोइनाः मुक्ति, एरटकाराः भीतित्रिया । परिमोप, परिमोपण-पु॰ [मं॰] जुराना, चोरा; डाका । परिमोचक परिमोपी(पिन्)-वि॰, पु॰ [मं॰] चौरी बरनेवाला; दावत हारुनेवाला । परिमोहन-प्र॰ [मं॰] पूरी तरत मुग्य कर देनाः किसीकी मनि इर लेना। परिस्कान-वि॰ सिं॰] गुरशाया हुआ, कुन्हलाया हुआ। जिमनर धन्या लगा हो; होत; शीप । पुरु शव दा दुःहही चेहरेकी रंगत बरलनाः धन्या, दाग । परिस्टायी(यन)-१० [गं०] ऑगरो क्रमेनिकाक एक रीम । वि॰ सुरशाया हुआ; निम्न । परियंक ० - पु० दे० 'पर्यंक' । पश्चित्त 🖛 भ॰ दे॰ 'वर्षत'। परियक्त-पू॰ [गु॰] शहरपतिसत्र आदि गीण याग । परिवश-वि॰ [बं॰] चारी भारते पिरा हुआ। परियष्टा(प्र)-पु॰ [मं॰] वह जो भारते वह आहेरी पहले सोमवाग करे। पश्या-प्रश्रद्धिय भारतकी एक प्राचीन जाति । वरियाण-पुर्व (गंर) परिधमन, पर्वटन । परियाणिक-पु० [धं०] पुमने-फिरने था फौरन करनेशी पश्चित्त-दि० [मं०] पूमा-फिरा दुभा; भाषा दुभा । परिरंधित-वि० [मंत्र] शत या मध दिया दशा । परिरंम, परिरंमण-पु॰ (गं॰) गु॰ साना, आहित्य करना । परिरंगना = -स । जि. भारियम करना । परिरक्षक-पुर [मंत्र] रशम करनेशाला, बाजियावक । चरिरशाम-प्र- [मंन] दर तरहमें रक्षा करना, पूरी तरह रशा बरनाः देखमानः बचावः चन्नन, तिमाना । परिस्थाओंप, परिरक्ष्य-नि॰ (छं॰) पूरी शरद रहा। बरने परिरक्षिय-दि॰ (वं॰) दिसुदी अध्यो तरह रहा दी गरी हो। मनी मंति निभाषा द्वाराः जिल्हा पूरी १५६ पानन दिया गया हो । परिरक्षिता(तृ), परिरक्षी(शितृ)-दिन, पुर (श्रेर] प्रत नरश्च वर्गः बदनेदाना व परिस्था-भी श्रीकी गरह १

क्या हुआ ।

पांचरादिहरू-प॰ (गं०) एक प्रकारका बाजा दिसमें चाँच प्रधारके स्वर मिने रहते हैं। संगीतवाचा चौव प्रशासका मंतीन ।

पाँचा -प॰ भमा बडोरनेके दानदा किमानोंदर एक बेंट-दार भाषा निसमें पवि डॉन होने हैं।

योगाधिक-पर्व मिन्री क्षेत्र ।

पांचाल-विक [मंक] पंचाल देश-संबंधी: दंबाल देशहा: पनाय देशपर शामन करनेवाया । पुरु पंचाय नामक देश; पंताल देशका राजा; पंताल देशके निवामी: बर्डा, ज्ञाहा, मार्र, धोरी और भोची-इन पॉबॉका समाहार । यौचालक-पुर (देन) पनाल देशका राजा ! विर देवाल-बाधियों हे संबंधका ।

पोचासिका~मी० मि०] कारे आहिकी बना दर्व शहिया.

प्रवर्ग ।

पांचाली-सां(भं) पंचाल देशकी की वा राजी: पांच्यों-की पत्री द्वीपती जो पंचाल देशकी राजकुमारी थी: वनली, ग़हिया। बाध्यकी एक मस्त्रिक्ष रचनारीली। जिसमें बरेन्बरे समाधीरे सुरह कांतिपुर्य यदावलीका समावेश होता है: श्वामाधनको एक शानि ।

पाँ पि॰ – की । दिनी पहनी चाँदश्री तिथि, बंचमी । पाँजमा-म॰ कि॰ लोहे, पीतन आदिकी बस्तबोकी टाँका

देवर ओश्मा, शालगा ।

प्रतिर-प शरीरका काँग और कमरके भागका प्रमुख्यी-बाला भाग, पावर्ष ।

चाँजीव-सी० मदीमे पानीकी प्रतनी बभी होना कि कीय यो इन्दर यार कर गर्दे ।

वाँडा-१४० इतकर पार करने बान्य (नदी) ।

पडिन्दिर [र्सर] देश 'दंह' । र्षोडक-प॰ पंरका

घोटर-पुर (गुरु) शर्वेष रेगाबीलाः बंदका पृत्रा शेला (४० गरेट रणहा । —प्रश्विम-मा॰ दोनला वृद्य । -पायम-प्रभ गरेर श्रीमा (धर्ममन गरा)। -बामा-(गम).-वामी (मिन्)-विश् दंश वन्त्रशहा ।

चौद्धरा - प० वय शहर की देख ।

यां हरेल १-दि॰ [मंग] प्रेमी निष्न, कामा १० व पोष्ट्य-पुर [गंर] पाइके पुत्र, लुविज्ञित, बीम, बर्जन, महत्र और गरदेश इन पांचीमेंने होई एका वंशवद्या वंश प्राप्तीय प्रदेशा उत्तर प्रदेशका निकास । - ध्रेष्ट-४०

वरिशिया । वोदयानील, पोदयापन=५० (१)०) हण्स परिविश्व-पुर (संर) यह गरहका सीरा । योष्ट्रप्रीय - ए० (श्र) प्रत्य लेवेची, परिदेशिक । पश्चित-ए॰ [मे॰] पश्चम पृष्क सहस्य ।

गोदिय-पुरु [धेर] परिवारे, विद्राला । पीत-पर मिनी समेद-देशा हका समेद हरा देखिया होता. गारेत बाबी: पाटवीचे विशा पांद्रवस, पर्वतः सम्बदेशकः यस प्राचीन प्रदेश । दिन रीमापन लिये हुए शरीद देशका,

सभेद नीते देगदार समेद देगदा र अब्बेट्स-पुर विश्वदा र ह नवंबल-पुर महिर रंगशा संबन्ध प्रातीशी शता वस घरणका राष्ट्र पायर ४ -व्हंबब्हे(लिख्)-दि० स्क्ट्रिडे

बंदछमे दश दमा (रवाहि) । -करण,-कर्म(न)-प॰ फीर्डका दाम निरानेका एक उपयार । -शाम-मरीक विनिनापर १ -लक-प॰ धवका देश - नाग-प॰ सफेद हाथी। सफेद साँप: प्रशासका पेट्टा - प्रार्थ-मीक एक गण्डाच्या, रेलुका । -पुण-पु० पांडुका पुत्र, पुनि-विरादिमेंने कोई पांटन । -पृष्ट-वि० विग्रको पीठ मारेड हो (यह एक दर्वश्रम माना याना है)। -पाय-प॰ परवण ! -फाजी-म्बं (बर्म) ! -अम-विश्वराधे भरती मफेद रंगकी हो। - मृत्(द), - मृशिहा-मी सहेद या मौते रंगकी मित्री सहिया ! -शंग-पन यक महत्वाही । - समा-पुरु सकेद रंग, सपेदी । - सेम -प्र• यक प्रशिद्ध रीव जिसमें शारा शरीर वीला का जाना है. वीसिया । −िलिधि−सी० दे० धारिनेली ब्रानहरू इन्निस्ति प्रति । -संस्थ,-सम्ब-पुर वर्गः कागन आदियर अंदित बह ऐका वा रेखायित जिले पुना काट-फोटकर और किया जाय. मन्दिया । -कोमसा:--सोमा-मी॰ गायप्या । नहोड-प॰ याता । नहाईस -न्यो॰ प्रमेदका यह भेर । -शर्मिला-छो॰ हीरते। –सोवादः-सीवाद-२० रक्त गंदर धार्ति ।

पोडक-पुरु [संरु] सकेर-योचा रंगः पोलिया रीगः राजा

पांदः पत्रकः एक सरस्या पान ।

यांद्रकी(किन्)-वि॰ मि॰] जिने पीनिया रोग हुमा ही। पांदर-पर लिंगी पीलायन निये हुए शहेद रंग, सहेद बीका बंग: बचेद बंग: बांच शेत: गुफेद कीट ! दि० बीमा: यम विदे तथ महेद रंगका। महेद रंगका। - हम-प्र बटम ब्राप्त, करेवा । -प्रश्न-दि॰ दे॰ 'पो'ताव' । -पासी -क्षेत्र एक शर १

प्रीहरक-वि० [मंग] समेप या पनिनामेद (गरा । पहिला-को० [कं०] मत्त्रपत्ती। एउ बीह्र देशे । पौद्रशिया(सन्) - औ॰ [बं॰] सरेश मिला हुम। पौनायना

mich t वोष्टरेश-५० (मंग्) एक प्रधारको रेगा साहेद रेगा ह पहि-५० मध्योती पद छर्पाः + अध्वापः हमीस्वा ।

वृद्धिय-पु॰ झायारीसी दश वदारि । व्यक्ति-पुर (तेर) पाद देशका निवारी। वोद देशका शामा दक्षिणका एक प्राचीन प्रदेश; दम प्रदेशका निवामी

WI FIRE & व्यात्र-को व वेशिः बनारा वंगमा सम्बद्धः ।

व्यक्ति-लोक बनारा यह राज शामेशमीका सबूह, यहा

श्वमनवर्ष । वृद्धि-व [मृत्र] पविष्ठ, राही। प्रशामीः स्टिमी यूर्व ! -मिवास-पु॰, -दात्रस-भी॰ पर्भग्रामा, गुराद,

नहीं। वर्षिक-मुक्र देश, घरम १ -चा-पुरु देश 'पार्टगा ! -ना

-- पश्च देश 'हर्नेगर' ह

क्रीव-पुर बद श्रेस क्रिक्ट बस प्राणी पणते हैं, रेर ! -पार्थी-बोर पेर दरकेशी शिवा। -पाँच-सर पेटना शुन - अदावा-दिनी पानवे केरण शाम देता। -अन्तर मा एट जामा-अन्तर्भे द्वर म गुरुत । नवस कर चारमा-देव भगगा । +वड साथा-भाने वारेडी

12:4/2 परिविद्ध-वि० [मं०] चारों शेरसे विधा हुआ। पु० करेरा परिविहार-पर्श मिर्ग शतरततः घमना, चहरुकदमी । परियोजित-दि॰ सि॰ जिसे पंखा झला गया हो । परिधीत-विक सिको परिवेधितः मावतः व्यास । पक महाका धनप । परिवाद-वि० सि०) १८. मजबत । प० खामी: सरदार । पश्चित-वि० [सं०] पिरा हुआ, आवेष्टितः ज्याप्तः शातः परिवति-सी० मि० वेरना, आवेष्टिस करना । परिवक्त-वि० [सं०] समाया हुआ; छीटावा हुआ: ब्हुला हुआ। समाप्तः पेरा हुआ। आवेष्टित । पु॰ आर्टियन; लदक्ता । परिवर्त्ति-सी॰ सि॰ प्रमादः धेरनाः आवेष्टिन करनाः समाप्तिः विनिमयः अदला-चदलाः एक दाण्डके स्थानपर दमरे शब्दको इस प्रकार रखना कि अधेमें अंतर न पहे. अधेती रक्षा करते हुए हिमी शब्दके स्थानपर उसका पर्याययाची शब्द रखना (जैसे-'बरण-कमलवे'के स्थानपर 'पाट-प्रथा' रागता): एक अर्थालंकार जडाँ सम या असम पदाधीका विनिमय हो अर्थात कुछ देकर कछ हेनेका वर्णत हो (सा०) । परिवल-दिव (tio) अवशी तरह बढा दमा । परिवादि-लो॰ [मं०] पर्ग वृद्धि, सम्बन नृद्धि । परिषेता(त्त), परिषेद्ध-पु॰ [मं॰] दे० 'परिवित्त' । पश्चित्र-पुर्व [गं०] यथार्थ द्वान । परिवेदन-पर्शांकी छोटे माईका वहे माईसे यहले ही विराह परमा था अग्निहोत्र से लेना: विवाह: ब्यापट यान, पुरी बानकारी; सर्वत्र स्थितिः वटः तर्क । परियेदना-सी॰ [सं॰] बुद्धिमत्ता, चानुरी; इरदक्षिता ! परिवेदनीयाः परिवेदिनी-न्दी॰ मिंशे दर्विसादी दक्षी ! परिवेश, परिवेश-पर्श (संश) घेरना, बेहन: इसके बारली-की विशेष रिपतिके कारण एएँ या भंद्रमाने चारी ओर बन बानेशला एक प्रदारका मंदल, किर्मीटा वह मंदल बी कभी-सभी सूर्य या चंद्रमाठी चाहीं और वन बाना है। परिभिः भारेष्टित बरनेवाची बरतः भोजन धरसना । परिवेषक-पु• [धु•] साना परश्चनेवाला । परिषेपण-पु॰ [गं॰] भीवन परशना-'परिवेपनगढ मुदुल बरोंने तुन्दें म बरने ईंगी में'-वंचवटी: घेरतेथी किया: एर्र या चंद्रफे चारों ओरका मंद्रक: परिधि ! पश्चिमन-पु [लं] चारी भीरते परनाः आयूत करने-बाली बर्ल, आवरण, आच्छाइमा घेरा, परिचित्र वरी । परियेष्टा(प्ट)-पु॰ [मं॰] भीवन प्रमुनेशना । परिवेष्टित-दि॰ [र] पारी श्रीरमे विरा दुवा: बाब्त, भाष्यादित । परिवेष्य-विव [मंक] परमने बोब्द । परिष्यन:-दि॰ [ग्रे॰] अति १५७ ह परिषय-पु॰ [मं॰] व्यव, सर्थ, लागनः बसाने । पश्चिमप-पु [ग्रं] पारी भेरते देशनेवालाः जनवनः

पश्चिमा-सी: [मं:] चारी बोर पुमना (रिग्रेक्ट

ब्रिगुशा); हदाबा; गःन्यान ।

परिवाज, परिवाजक-प॰ [सं॰] वह जो घर-वार छोड-वर चतर्थ आध्यामें प्रतिष्ठ हो गया हो। सन्त्यामी । परिचार (ज)-प॰ मिं०ी परिवाजक । परिशंकी(किन)-विक (संक) भय, आरंका करनेवाला । परिशादकत-वि० सि० हमेशा उसी रूपमें बना रहने-वास्त्र १ परिक्षिष्ट-वि॰ [सं॰] जो छट गया हो, बचा हुआ; समाप्त । प॰ किसी परतक या रेखका पुरक वंश । परिश्रीसन-पुरु [संब] स्पर्शः स्थावः किसी विषयपर परी तरह विचार करते दण उमे पदना, सम्यक् अध्ययन १ परिश्लीलित-वि॰ [संब] निसका परिशीलन रिया गया हो । परिश्रद्ध-विक [संक] पर्शनवा शहा चुकावा हुआ। जी बरी कर दिया गया हो । परिश्वति-सी० मिं०ी पर्ण शक्तिः रिहाई । पश्चित्क-विश् मिंशी अति राष्ट्र, एक दम सूचा दक्षाः मरशाया हमा: विवका हमा (क्योह आदि): नीरस । प० पदावा एआ मील । परिदान्य~दि० [गुं०] पर्णतः (रक्तः'''से पूर्णतः वंशित । परिश्रत-प॰ [सं॰] उत्साह, वर्मग, जोश, लगन । पतिहोष-प॰ मिंगी अवशेष, यह जी वच गया हो:समाप्ति। परिशोध-प॰ [गं॰] सम्पद शुद्धि, परी सकाई। कण आदिका भगतान, भगता। पविद्योधन-प॰ [सं॰] पर्णनया शब करनेकी क्रिया: भग-तान, भुक्ता करनाः संशोधन । परिशोध-पु० [मं०] बद्दन अधिक मूख जाना, शप्त हो. जाता 1 परिश्रम - प॰ मि॰ द्वितिः क्लेशकर भाषाम, मेहनन । परिधानी(सिन)-दि० मिंगी परिधात करतेवाला, जी वरिमम करे । परिश्रय-प॰ मि॰ी ब्राह्मयः समा । परिद्ययण-प॰ गि॰ी धेरना, आवेष्टित सरमा । परिधांत-दि॰ [लं॰] दिशेष स्पने बका हुना । परिधाति-मी॰ [सं०] अधिश धहावटा परिधम । परिधित-दि॰ [मं॰] मामिता चारों औरमें पेरा हमा ! पुर बाग्रयः यारी धोरमे धेरना ! वरिश्रत-वि॰ [ग्रं॰] विस्यात, प्रसिद्ध । परिध्यप्र-वि= भि= आसिवित । परिद्रमेष-५० शि॰ी शामियत । परिषद्, परिषद्य, परिषद्वस-पु॰ [मं॰] समागर्। पश्चित्र-न्दी॰ [मं०] समा बेद-बेदांग, धर्मशास्य आदिते पार्यंत माहायोंही वह शमा मिने मापीन काल है शका वर्गे बारिके बामकोका निर्मय करनेके किए बदाकरा दुलाया करने के समूह, बंदली । परिचित्र-दि॰ [गुं॰] ग्रीवा दुना, विमार जल कारि **जिन्हा गया हो ।** पश्चिषन-५० (४०) स्टंड रेना । परिषेक-५० [मंग] मीबना, हिहदान: स्रान । पश्चिषक-रिक, दुक [बंक] ग्रायनेशना, विवस्तेशना । परिचेषन~पु॰ [हं॰] होयना, दिस्यमा । पश्चिद्र-पु॰ [बं॰] वह शिल्बा पादन-पीत्रण उसके

स्टेर इसनेनारका हो। पाय नीवाला एक शनिक परमाना ह (ग॰ - • (मे)में हरा देना-१६ या गीवने नपहरास होता ! -से बाहर होता या निकार परना-बदन अधिर कर दोना, को भी कारिने बादर दोना है) -सेव-पुरु परिवर्ध पद्दननेका पद बुँग्स्टार गइना । -तराब-पुरुप्रस्थान । -साया-पुरु मोबाः सन्देवे आकारका पमहेका वह संता दकहा जिसे जुलेको सुम्य करनेके किए उपने राष्ट्री है। -नाम-दि॰ नाधवर, मराहर, प्रसिद्ध। -पौरा-पु॰ जुना । (श्॰ -॰ पर भारता-दुष्ट भी परवा न वर्रनाः अति तुष्छ ममसना ।) - प्यादा-अ० दिना सुवारीते, पेइस । - चंद-दि० वेथा हुआ: गिरप्रमार, बेटा थी हिमी नियम, धनन भाविका परी सरह पासन हते। भी किमी नियम, ययन आदिते पूर्ण-रूपमें बद्ध हो, जी किमी नियम, भगन शाहिका पार्रन करतेने लिए विका हो। सक्षवर, लाचार, कायम रहते-यान्या (रहानाः, हीनाचै साथ) । प० वेदीः घीटेकी विटले वैशोदी शोधने हे सामग्री रक्ष्मी, विद्यारी । 🗝 बेटी –स्वीव पार्वद श्रीतेची क्रिया या मात्रः निवस, बचन आदिका अतिवार्षे पालतः गानियतः सबद्धः । -योम-वि० पाँव भगनेशका, प्रवास करनेशका, आराद बजानेशका । पुरु दे 'पायोगी'। -बोमी-भाग्यं भगना या छना, प्रणमतः मानितः साजीम ।-अदं-वि० रिशर निरादानाः पीरा बहादर, हिम्मती । - सर्टी-भी० भीरता, रिवर-विचनाः बहारराः दिग्मन । -मान्द्र-दि० पेरी सने रीता हुआ, परप्रभित्र, सनद, बरबाइ (बहुला, ब्रोमाके नाष्) ! बरबारी !- मोल-पुरु एक प्रशासका कृतर निस्के पेत्री-क पर दोने है। एक एरदकी मुनी बिमने बंभीवर पर होते हैं। -बाध-बि॰ की धनकर यार दिया ना सके, क्षम गहरा। -याकी-औ॰ पावाब होना, वदलायम । -लासनां -ररी = समस्यात, मनाम ।

पाष्ट्रण-मु पेट, चाँव । -सारीश-म्या पर्यग्रहा पैरकी भीरका भाग, येनाला १ -आस०-नि० दे० 'पामास' १

माहरू - मृद देश 'वायस' ह पाइका-प्रविश्वी पर धवारका छातेता शहर भी १/६ इंध कीश होता है।

पाइट-म्योग माँग भादिका धना दशा यह दरेंबा बिक्यर भाषा द्वारा सुनी नागी है।

षाद्रप्र--प्रश्निको नगा समी। पार्नेशी कमा केनश जैनश बंद शहा: हुई दी जिल्ला ।

ब्राहरा रे क्या व रव रव र

वाहरू ४ - प्रवादम, काउँ र ।

वार्डे न्सर [बार] ("रहाने। संधने। योचे । -बारा-दुरू भरेदे बाच जना हुना गया,रायश्याय ह

याई-श्री की। यन देश साधने या पृथनेती दिया। eine difagt ut Gran en marran efer famer मानेदे मुनदी फेलकर जानारे यमे मॉबने हैं। रिवरी बीरेक्ट देह अपनेको एक क्षेत्रकी हराचेका प्राप्तिक वृधित सामेराची भीति सारी रेगा। हेर कि भीते अन्तरे इ.च. दिनो शब्दाचे अन्तिसमादी प्राप्टेम्पण होती. अन्ति । रूबीरा महतारबी भागाः वृत्ते विराम मृतित बारोदे क्रिय बानदर्के अंदर्वे कमायी जानेबाटी आही रूथान गडरे माहि रसनेकी नियोंकी पिशरी विशा एमा राइयः एक बीहा एक रोश मिला भी एक पैने हैं है है में बतारा दोना है, एक आनेका बाहदर्श या एक वैकेश मेनन भाग ।

पाउँ 🗝 पुरु पाँच, पैर् १

पाउँड-प्रव भिवी सीनेसा दक अंग्रेस निका और र शिक्षिमके बरावर बीला है। हवा अंग्रेजी बद्धन की अल्ब टर्टास्ने मुछ हम होता है।

थातर -प॰ पाँगः धनवांश । पाठकर-पु॰ (शं॰) घरा, बरमी: गुंदरता बराने वाजन्ती रंगन सानेके निय नेवरे आदियर स्मापा जातेरामा एड बकारका पुरा; पूर्ण की हुई दवा (बीन-टबपाउटर) । पाळ-ग॰ सिंबी पहले या पदारेशी किया या साग पदावा हुआ अब. स्मीर्ट: विद्यागरे तिमिल स्थी परेमा हुआ वादमा पश्वामा भीजनका पनमा; कोई, पन मारि-का प्रत्माः प्रय, फीराः प्रत्माके सारण क्षांका नवेद बोनाः बढिया परिषय बोनाः परिणामः शिशा एव रीन जिले बंदले भारत था। उत्तर रामामिः भक्त, भनाजा गुशाधिः भीत्रम यमानेका भागनाः भागक (विदीहादिका)ः वच्छेदा बक्ट-केट (देशका) । विक परा हुना। कावः प्रदानः परिवाः श्रीदशन्तः ।-कर्म(म)-पुर, -तिया-रही वहातेंदी किया, प्रशास । - अरम - कार - पर याजी क्षत्रकाः जीवनी कहीता । —ख-रिक पार में जायम । च • स्विता नपटः वरिषामश्चन ।- ब्रिट (च) - प= १इ । -चंडिय-पु॰ वर भी रसीरे बनानेमें विद्यारत हो। च्यात्र⊩मोष्ट-पु+ भोजन परानेदा पाप, दालोर्ड शाहि । -यही-मी॰ यम्हारहा आसी। -यत्रा-पुर वृद्धीतार्थ आदिने अनगरपर निया नानेनाला श्रीम विभने धनुका इबस दोवा है।-र्यक्रम-पुरु रोमप्रका ।-दिव-पुरु रहा -श-पुर सहित बागुः शास्त्रीकी शीनेवामा यद वरा, मुजरस्वराम्य सामग्रे भीतिय । पत्नी-गी। वर्धी। कार्यशासीको १ –शास्त्रा-भीक स्थीवित ।-शासन्त्र-१० इंद ।- बामनि-पु॰ इंदरा युध प्रपत्ना मान्ति भर्तन । -शुक्रा-स्था परिया विद्या ।-स्थली-स्था पा पारा -माम-द्र• श्रीरीपरः आर' । -ईमा(म)-द्र• दे॰ **'चप्रशासन'** ।

पाक-विक (पाक) हाड, दक्षित विदेशि, विदर्शको साम-संबद्धाः दिना दिलापानः , कानियाः बताः देवादः, पाप सा वरारीने चननेवाला, परते राग्ता र न्यान्त्र-दिक नी दीगाणा ल की। मारिका दास । —हाता-५० भोरी । अनुसान। - नामी-दिक शहर परित्र साधानाताला, जिल्हाच । दिक की करी (की) । ज्यासरी, ज्याससी नहीर शहरी आवश्यक्षे शुक्रमा निधापना (स्तिष्व । अदिसान्दिर gen niernennen ufen feingamt gupt. -शिक्षाह-माक वर्षक्य एकि, बाग्नवमन्त्राहे, निवत वर्ष है हिरू जिल्ली की बन्दरायको सीर की पीप की बाबा र-बीक्ष्य-कार कार्य शहर नर्रव्य र. १% हिश्य । -श्रव्याधितात-पुरु प्रशेष्ट । -याम-दिन

444 पविद्याव-पर्व तिवी चारी औरसे चना, टक्सना या रिसनाः एक रोग जिसमें गलके साथनाय पित्त और सफ गिरहा है (आ॰ वै॰): बच्चेका जन्म होना । परिसाधवा-प० मिठी वट बरतन जिसमेसे साफ 'बिया जातेवाला पानी टपकाने हैं। परिमाधी(धिन)-वि॰ [सं॰] चने, टपकने या रिसने-वालाः बहतेवाला । प० एक प्रकारका मर्गदर । परिस्नत-वि० सि०] स्वयुक्तः रसा दुवा । -दधि-प्र० बह दही जिसका पानी निचीड़ लिया गया हो। विकास-सीठ सिठी शरावः अंगरी शराव । परिस्तत-स्ती० सिं०] महिरा; चना, शत्य । वि० चनेवाला । परिस्वंजन-प्र० सिंगी देश 'परिप्यंग' । कतिसँग - पण हेप्यो, दाह । परिवत-गरी इलमें पीछेड़ी और खगी हुई वह लक्डी तिसे इल चलाने समय दायरी पकते रहते हैं। विव भिंगे दोला किया सभाः सारा दशा। परिहरण-पु० [मेक] स्थानमा, शतनाः दूर करनाः निवा-रण: छीन होना, अवहरण करना । क्षतिहरकीय-निक [मंद] परिहरणये थोग्य । परिहरना - ए० कि० छोडना, त्यागना । परिहस्त#-प॰ दे॰ 'परिचान'; दःस्र ।

परिवस्त-प० शिवी द्वाधका छला. गडिका १ पशिका-पण एक शहरी पश्चिमाण-प॰ सिंगी नकमान प्रदानाः शानि प्रदानाः शानि, थादा, यभी ।

परिद्रसित-विक शिको जी धेसा गया हो ।

परिवाणि, परिवासि-ग्दी० भिन्नी जनमान, प्राटाः सामः स्वागता, धोक्साः खेपमा वस्ता ।

परिद्वार-पर [गेर] स्थापना, धोहना; दोष आदिकी दर सरमा, पीपरा निरायरणः गाँवके चारी और अनतापी भोरमे परमा छोदा दुई जमीन (स्पृ॰); पराजित शतमे धीनी दुई परत्रे । हर या छगानकी आकी (१९१०): असा-दर, अवदा; गोरमा किमी बुक्त्यका आयश्चित करनाः राजपनीका एक वंश जी अधिवंशके अंतर्गंत माना जाना है। परिदारक-१४०, पुरु (११०) परिवार करनेवाला ४-ग्रास-प्र• यह गाँव जिल्ला मालगुजारी माफ हो (की॰) । परिद्वारना ! - स कि दूर करनाः प्रदार करना, बारना ! परिदारी(रिन्)-वि [मेर] स्वाम वा निवारण करने-

परिदार्थ-वि॰ [तं॰] परिदार वरने योग्य, स्थापने या निवारण करने योग्य ।

परिहास-पु॰ [यं॰] इंगी, मजार । -पेथी(विन्)-पु॰ मसम्बद्धाः ।

परिद्वारय-4० [शं०] परिद्वालंदे बोध्य । परिदिश-दि॰ [री॰] मापून, भाषारादितः पहना दुआः পালে কিবা হয়।

परिद्राण-दिश्वी विश्वकादाम दी नदी हो। दक्षिक रेगाम हमा बद्धित ह

परिद्रा-रिक किन्द्रे स्वाया हुना, छोता हुना: दूर स्विया । परिविद्यान-दिक देक 'परिद्यान' । युक देक 'स्ट्रिट्नि ।

हुआ: नष्ट किया हुआ: जिसका संदन किया गया हो: टिपाया दमाः धीना दमा ।

परिहति-सी० सिंगी त्यागना, छोइना ।

पर्वेदन-प॰ सिंशी तुष्ट करना; भेंट देना । पत्री-स्वी० किता परानी कथाओंके अनुसार अरहय होने तथा जहाँ चाहें वहाँ जा सकने आदिकी शक्तिने यक्त उन्तेवाली परम संदर खियाँ जिनका निवासरथान कोइ-काफ पहाड माना जाता है (फासी-उरंदी कवितामें इन्हें मंदर शियोंका उपमान बनाया गया है); अति रूपवती क्षी (छा०)। -श्वासा-प० परियों या इसीनीके रहते-का स्थान । - एवान-प्र॰ जंग-मंत्र करनेवाला । -स्वाजी-स्वी॰ जंब-मंत्र वरनेका काम या पेशा t -अटा-वि॰ जिसपर परीका सावा हो। -अमास्त-वि॰ इसीन, 'न्युबयुरत । -जाद-प्र॰ परीका वद्या । विक हमीत. संदर, ध्वयस्त । -हार-विक देव परी-जदा'। -श्रंद-प्रवाजभीपर पहननेका एक गहना। -- इट-विक बार्यत गंदर । -का साया-परीका असर । चरीक्षक-पु॰ [गुं॰] परीक्षा करने या हैनेवाला. परामे-वान्द्राः, जीवदेशसा ।

वरीक्षण-प॰ [सं॰] परीद्या करने था सेनेशी क्रिया. लॉच, परमा राजाके संत्री, घर आहिके दीवादीपकी लॉन काना ।

परीक्षना • – स॰ बि.॰ परीद्या छेना । वाशिका-को॰ विं विविधि गुण, दीप, योग्यमा, शक्ति आदिको सची जानकारीके लिए उसे अच्छी तरह देशना-जालता. दिमीके गण, दीप, बीम्यता आदिका पना क्यानेके किए किया जानेत्राका काम, इन्तहानः तर्दे, प्रमाण आदिके हारा नित्नी बरतके तरपरा निश्चय बरनाः किमी बरनका देसा प्रयोग की उत्तरे बारेमें कोई विशेष बान जिल्लाम बरसेके स्टिप विचा आया विद्याधियी या बम्बीदवारीकी योग्यताकी वह दिशेष प्रशासी औन विभवे उसने भौत्यक या किसिन रूपमें प्रान पूरे जाने द्वैः अवियस्त्री सदीवता या निर्धीवता भवता माधीबी सवारं या शहारेका निर्णय करनेकी एक प्राचीत रीति । -काल-पु॰ परीक्षांका मनव I -अवन-पु॰ बहु कमता या यर विगमें परीक्षाओं परीक्षा देने समय बैठते हैं. परीक्षा देनेका श्वान । -शानक-प्रण परीक्षाके निविध रिया जानेशमा द्रव्य ।

परीक्षार्थं - ब॰ [भं॰] पराक्षादे डिए ।

परीक्षार्थी(चित्र)-५० [८०] पराहा देनेराहा ।

परीक्षित-दि॰ [मं०] दिसरी परीशा सी गरी हो, थीना दभा, बाउमाया रशा ।

परिक्षिण्-५० (में) चांद्रशुपके एक प्रांगद्र राजा यो व्यक्तिमन्त्र हे प्रश्न और व्यक्तिके पीत्र वे (रान्ध्री मृत्य त्रध्य सर्वेदे बारनेने दुई और इन्टोद्दे स्वान्यक्रमें बॉल-बुदरा परार्थंद हुआ) ।

परिश्व-दि॰ [एं॰] परिशा केने बेएदा जिससे परिशा क्ष 314 1

पर्शमनाव-सव दिव प्रामनाः भौपना ।

भोजन प्यानेशमी विशेष प्रसारकी श्रीवयः बस्तामित द्वारा मीबतका पनाया आनाः सात रेवः पावकी भारतेकी र्किया: पावमेंने मवाद साहि निकालनेको किया ! कि प्रधाने या प्रमानेशाला-। - प्राक्ति-श्रीक भोजनकी बकाने-की शक्ति । पाचनक-प= [रो०] मोडागाः एक पेव बाहारः श्रीवपाति द्वारा पात भरनाः दे० 'पायन' ।

पाणनार-म० क्रि॰ पहासा । अ० क्रि॰ ब्रह्मा, यदमा । पाचनिका-मी० भिर्णे प्रशासः प्रयासः ।

पाचनी-म्री० (मे०) इह । पाचनीय-विक भिन्ने पराने बोग्यः वचाने दोग्यः । पार्थिसा(म)-तिक, पक भिन्ने पहानेवालाः प्रवाने-

षाचर!-५० दे० 'पधर'। यायल-दि॰ [मं•] प्रवासेवालाः प्रचानेवाला। प्र• शाहिताः सक्षिः शायुः पनानिवासी बस्तुः वंधनद्रव्य । पाचा, पाचि-मो (गंद) (मेंद्रत) प्राता । urdi-rije frie bar unt. urunudt i पाच्य-विक (शंक) थे। अवस्य पर का चन जाया प्रवास या

पहाले दोश्य । पाछ-सी॰ पाउनेशी किया या भावः पाउनेसे पक्षी का सगतेबामा बीरा। बह भीरा भी अर्थाम जिल्लाकतेचे क्रिय मान्द्री बोहेयर नहरतीमें लगाया जाना है। यह और औ श्रिमी पुश्चा रम या दभ निशासनेके किए समयर जनाया वाना है। † प्र• विद्यमा भागः पीता-'भागा सर्वज न ने बए रे कुपनच, पाप जिलादि'-विद्या॰ ३ ० वा॰ की ३ पाछना - भ॰ कि॰ रहत, पंछा या रहा सपना वन निकासने-में निए रहेरे मादिके इनके आपातने चार्गीके शहीरपर मा पर-पीरेपर श्रीहा मगाला छहे आदिके ब्रम्प्टे काधानने दारीर पर था पेश-धीपेयर अही नहीं और। समामा है -पातल, पादिल, पादिला 🗝 🗐 । १४७ । ।

पाछा ० - पूर्व पीरा । पाछी, पाछ, पाछ, पाछे - अ॰ परेको और, पीछे । पात्रक-पूर्व पॉल्ट, पादवं इ पामग्री -१० एड बनश्यति क्रिमने इंग निकासने हैं ।

पाजस्य-पुर्व [tio] प[तरः दगक (वै०) । पाश्री-40 पुर, बहमाश १ + पु+ पेटल निवाही, स्वादाः पद्दिराह, रहार-'गराम्सहार तही बादी पाती'-४० ह

-पन-५० दत्ता, स्रागादी । tritfer - en exist auer f

पार-एक [तंक] दिन्यार, फेबाबा घीलारे: [[हेक] देशमा बार: बंध क्षमा देशमा एक तरहका वैद्यानहाबीशाधानामा विकासन, राजगरी। पीडार परस्पति परिवार पोतीका कपने बीरेटे बालबा राज्य वा बाउदा वहा प्रवास वर्षा है ही भागीकी बोर्च परः ए.करेवानेके बैदनेके लिए बाल्यां थवादा प्रतिकाणा तकता। बुनेवह वृक्षी आधिवाली सप भारत संदर्भ दिस्तर गढ चंद वस्ताहर अपनी क्षेत्रको है। देशीया मद्य रीता व मातीकी परिवात -- प्रकारिकेत--महिल्ही,-शामी(-ब्री + प्राप्त है) ।

Titunge feief Gebent, miebeinit feiner

बरनेवालाः वॉश्का रह मागः वॉश्का बाजाः वह प्रशरका बायाः विनासः संश पारप्रकी मीरियोः सीरियोश्ये पर परंपरा दिल्ली उत्तरकर पानीमें पैठने हैं। मूल्पन मा देंगी-की ब्रानिः पाना शासना था फेंग्रनाः जरमें दाँव ब्रह्मा र

पाटचर-५० (सं०) चोरः शह । पाटन-की॰ पटनेसी किया है। माबा प्राप्ता एक मस्त्र-की पहिलों संक्रिक्त जानको संक्रिने भौतर दिन जनार है-का एक प्रदारका सकः नगर, पत्तन (बेगे-देशीकाम)। प॰ [मं॰] श्रीरमा, कारमा, क्षेत्रम । -क्रिया-मी॰ पार भीरना, शहरतिया ।

पाटना-म॰ कि॰ हिमी गइदेही या मीथी भूमिशी भरदर आश पामकी अमीनके बराबर कर देना। घर देना: पूर्ण कर देनाः दहनाः दिन्ती बन्तुकी भरमार कर देना, देर

खता देश । पाटनीय-विश् शिंको भीरने या फारने योग्य । चारक-व• शि॰ों सर्गा भिता हुआ उनका रंगः शुर्मारी रंगः पादरका पेदः इमका चनः एक प्रकारका नरसानी धानः साम सीधः वेमरः गुनाव (भाव) । दिव समार्थ लिये हुए सबले रंगसाः गुलाबी ।—कीर-पुण यस नार्या बोहा ! -चदा(म्)-दि॰ जिस्ती अस्तिमे गीतिवादिः

हो । -इस-पुर प्रजान । पारमञ्ज-विक (ग्रंक) साम-पीने रंगसा । पारका-प्रश्न एक सरहता गीना। व पान, पान । सी।

[त्र•] हुताः पादर । वाप्रमावकी-की । भिंगी दर्गाः एक प्रशासी गरी । क्षात्रक्रि-को । सिंवी बाहरका पेटा पादवर्षी । -एया.-युद्ध-पु॰ अक्षायशपुद्धा बमाया द्रभा मगरका एड श्राचीय रेतिशासिक यगर जिनका आसन्तिक भाग परना

दै (हमे प्रश्वदर या क्युमपुर भी करने थे) । वाहरिक-पु शि विवाधी। शिष्या पार्शनपुत्र । रिश इसरेका ग्रेड भागतेशमाः देश-सामका ग्राम शामेशमा ।

वाहित्रम-(४० शि०) लास रेगा द्रभा र वाटलिया(सन्)-भी॰ (४०) गुणावी रंग । पारली-मोर सबनेधे दर बहुत्रमें हैरोबानी बार्र मिनके

यब-यब छेदमेने माराज्या यब-यम स्था निकाली जाती बैश्रीओको बाह्यस प्रान्त्याचीः विचानित्यको सदन विक्रिके अनुरोधने कीरिया मुलिने पार्टान्युष बगामा मा सिनिया पुरात्त) । न्युद्धनपुरु देश 'दारशिवुत्त' ।

वाहारीवाह-पर्क [र]र्व शाम सामग्र रहा । पारस्था - औ॰ शि॰ वास्त-पुष्टीका समृद्ध ।

वाहच-पु । [शंक] बहुता, दशता, कीताला काहित्वा कात 'हा होद्याः संग्रहा ह वारतिक-दि० थि। रेश, बद्धम, पदा पूर्व ।

पारपी:-वि: धारानीने अलगा हुआ (ता व्यात)। याम का बला हुआ। रेशमी ह बार्टिक न्युक [बंक] अवादा बजानेशणा है

बारक्रिका-और शिकी श्रेतन वेंगवी ह dill-nite [eie] di ett! fein junt ; Jo [fe.] gat: व बर बा बारहण वद वता हवता दिलवर भीती बारी

बीता है। आहरे दिन की देरे पता प्रशास प्राप्तिकारी

998 परेधित-वि० [सं०] अन्य द्वारा पालिस । पु॰ कोकिल; सेवक । पर्वा =- अ० दे० 'परसी " । परो-'परम्'का समामगत रूप। -रजा(जस्)-वि॰ जो राग आदि भावींसे परे या अस्ए हो; विरक्त, विशुद्ध, विमुक्तः। – छक्ष-पु० एक स्रायसे अधिककी संस्या। वि॰ एक सामसे अधिक । परोक्तदोप-पु॰ [सं॰] न्यायाखयमें करपर्यंग बयान देनेका

अपराध । परोक्ष-दि॰ [स॰] जो ऑस्टोंके सामने न हो; बी नेत्रका विषय म हो, अप्रत्यहा; अनुपरिथतः हिपा हुआ, अलक्षित, गुप्तः अग्रान । पु॰ वर्तमान न दोनेकी रिथति, अनु-परिधतिः पूर्व भृतकाल (संस्कृत व्या०)। -सोग-पु० विसी परमुका ऐसा भीग जो उसके स्वामीकी अनु-परिधतिम विवा जाय । - यृश्वि-म्ही । अञ्चात जीवन ।

विश्व अद्यान रूपसे रहने वाला। परीक्षार्थ-वि० [सं०] जिसका अभिप्राय वा अर्थ रहरव-

परीजनां -पु॰ दे॰ 'प्रयोजन': विवाद मादि चत्सव । परीदा-सी॰ [मं॰] दसरेकी स्त्री।

परोग्कर्य-पु॰ [सं॰] दृसरेका अन्युदय । परोज्ञह-वि० (सं०) भन्य हारा पालित । पुरु कोकिल ।

परीना - स॰ फ़ि॰ दे॰ 'पिरीना'। परोपकार-पु० [सं०] दसरेकी भलाई ।

परोपकारी(रिन)-वि० [सं०] इमरेकी अलाई करनेवाला। परीपकृत-दि॰ [सं॰] निमही दूसरेने भलाई की हो। परीपदेश-पु॰ (सं॰) दूगरेकी उपदेश देला ।

परोपसर्पण-प्र• [सं•] भीता योगना । परीरना! - स॰ जि० अभिमतित पर्ना ।

परीशा -पु॰ परवन ।

परोल-पु॰ दे॰ 'पैरोल' । परोष्टि, परोध्मी-छी० [शं०] तेलं पीनेवाला एक श्रीहा. तेनच्या ।

परोस•-प• दे॰ 'परोम' ।

परोसना!-ग॰ जि॰ दे॰ 'ब्रह्मना'। परोमार्ग-पुर पत्तन या बालीमें रना दुआ यह व्यक्ति

रानिम(का भोषन की भाषन समितिन व बोनेवां दे यहाँ मेश वाता है।

परोसी! -पु॰ दे॰ 'वशाना'। परोसंपार -पुर भीवन परमनेवासा ।

परीहम-पु॰ मरारी या शेश लाइनेडे दाम आनेशला Tip

परोद्या - पुर मोट, पुर । प(-भिक्ष देश 'प्रसी ।

परंट-पु॰ [rie] बगनाः प्रधान्तान, बनानि । पर्देशि, पर्देश-स्थी॰ [गं॰] पाष्ट्या पेड्रा गयी शीवारी ।

पर्या-५० ३० 'दरवा' । पर्याता-मः क्षिः देश 'पर्याता' ।

पर्वेश = -दु = दे = 'दर्देश' ३ पर्वती-भी॰ [गु॰] दारहारी ह वर्जन्य-५० (सं०) मेघ, बादरु; बरसनेवाला बादरु; वर्षा; बादलोंका गर्जन; इंद्र; विष्णु !-पानी-स्ती० वद्या; इंद्रकी पसी श्रवी।

पर्जन्या-सी॰ [सं॰] दारहस्दी ।

पर्णे−प॰ [सं०] पत्ताः परः याणका पंगः, पानः पट्टाशका पेड़ । -कार-पु॰ बरर्ध, पनेरी ।-कुटिका,-कुटी-स्त्री॰ पत्तोंकी बनी कृटिया । -कृत्यं -पु॰ एक कृत्यू प्रत निसमें तीन दिन उपनास करनेके बाद पलाश, गुलर, कमल तथा बेलके पत्ती और कुशका काहा धीने हैं। -फुच्छू-पु॰ पाँच दिनोंका एक वत जिसमें वामसे एक-एक दिन बेवन पटाइ, गूटर, कमट तथा बेटके पर्चोका और कुराका काडा पाकर रहते हैं। - खंड-पु॰ यह वनस्पति त्रिसमें कभी फूल न रुगें; पत्तोंका समृद् ! - चीरपट-पु॰ शिव । -चोरक-पु॰ यस गंधहरूय । -सर-पुरु पणाक्षके पत्ती या सरपनका यह पुतला जिमे। विभीकी काद्य न मिलनेकी रिवितमें उसके रंपालपर जलाते हैं। -भेदिनी-छी० प्रियंगु नामको छता । -भोजन-वि० पत्ता सावर रहनेवाला । पु॰ वकरा । -भोजनी-भी॰ वकरी।—झणि∽पु० पक्षा (अथवंदेक); एक तरहरूत अस ।–साचाल-५० वर्ग(नन्श, कमरम्र ।–सुक्(ज्) -पु॰ शिश्चिर ऋतु, पनशह । -शूग-पु॰ वृश्चेपर रहने और दीइनेवाला जानवर (जैक्षे-धंदर, गिनहरी आदि) ।-स्ट्(६)-पु॰ वर्धन ऋतु ।-स्तना-स्ती॰ पास-क्षी शता !-चट्क-प॰ एक ऋषि !-चारी-मी॰ प्रशासी नामकी लता । -वाच-पु॰ पर्रे हे पने बानेकी प्रवानेके द्रोनेताला श्रष्ट । –वीटिका-मी॰ पानका योहा। -बाब्द-पु॰ पर्चोके सरकते आदिया बाब्द । -बादवा-रदी व पश्चीका विश्वतः, पश्चेषा विद्यावन ।- हायर-पुर एक प्राचीन देश !-प्रास्ता-स्थं० पर्नेनुरी । -हाट् (प)-प् शतिकाल । -संस्तर-वि॰ प्रधीके वितीनपर सीने-

बाला । पु॰ पर्धो है (रिश्तरपर सीमा । वर्णेल-दि॰ [मं॰] वधोमे भरा हुआ । पर्णसि-पु [बंब] जनाशयों बना हुआ परः श्रमकः

बनाव शिगारः स्टब्स्सी, माग । पर्णाद-पु॰ [धं॰] पधे सारह रहतेत्राना मनी। एव ऋषि । पर्णाप्तम-पुर्व [र्गर] बद भी परे सामर रहे। ग्रेप, शहस ।

पर्कांग-५० [एं०] नुरुक्त । पर्णोद्दार-पुरु [गंरु] देर 'दण्होरान' । पणिक-पु॰ [मं॰] परे देननेदाला । पणिदा-मी॰ [र्ने॰] ग्रामफरी; दिहरना भएती।

पर्णिनी-न्दी॰ [र्ग॰] माबरुद्धाः एक अप्रस्त । पणिय-दि॰ [शं०] दे॰ 'दर्सन' । पर्या(मिन)-पु॰ [मं॰] कुछ, देश शालपात विश्वतः

वेबरला । पर्वाह-पु॰ [धे॰] शुरुवरामा ।

यर्गीटब-दु॰ [र्व०] दर्गहुरी, प्रौद्राला । यम-न्दी॰ दे॰ 'दरन' । पर्य-पुक [मंक] बार्वेच्य समूद्ध कराम बाहुद्दा ह्याम ह

पर्वन-पुरु [मंत्र] अयत्र बन्द्रशास्त्रतः, यस्त्रतः । यहँगी०-भौत योगी।

परन्य-पुरु परनवसदी सह, अंगुनियौ । -पाञ्च-दिश दायमें सेवर दोनेशानाः जो हाथ या अंतन्ति यात्र या बरननका साम से। −याद्-पु॰ द्वाय और पैर्। − पीदन-पुर पानिधदण, विशादः दाब मधना । -पुटः-पुरक-पुरु सुरुद्धा - प्रणियती - स्री० प्रशी । - संध-पुर पारिप्रहर्ण, निवाह १ – अक्त(ज)-पुर स्थरका पेर । -मर-पु॰ परीदा ! -मुक्त-दि॰ हापमें फेहा जाने-बाला (अम्ब) । पुरु माला । -प्राम्य-दिश हायसे साने-बारा । पु० दिश्र (हमदा प्रयोग बहुबबनमें दी द्वारा है ।) न्मार-१० कमारे । न्हर(६),नहरू-१० सन, मागृत । -रेग्या-सी॰ इसरेग्या । -बादा-बादक-पुण्याली बनानेवालाः शृहंग आदि (हावने वयापे माने-माने बारे) बजानेवाला । -साम्या-सी० रस्ती (ओ हापी बनायी जानी है)। -स्वनिक,-स्वानक-पुरु द्यापने भागा वज्ञानेशभा । -हत्या-स्वीर एक तालाव निमे देवगाओंने भपने हावमे बुद्धके लिए तैवार दिया था। पाणिक-१० [मंद] प्तमे बामः को एकपामें स्तारा नवा हो। पु॰ ब्यापारी: ग्रंडका यस असुबह ।

पाणिका-भी० [मं०] एक नाइका गीतः एक सर्दकी

बहाइल ।

परिणामि-पु॰ (ग्रं॰) एक विर्यान मुनि जिन्होंने अहा-च्यायी नामका प्रसिद्ध गूचवळ व्यात्रशाधेब धनाया (इनका समय रीगवी पूर्व चनुर्व शनक माना जाना है भीर कहा जाना है कि शंबरके समाहने करने स्वाकरण-का स्थाप शान मात हुआ था)।

पाणिनीय~दि॰ [गं॰] पाणिनि-गंबी। पाणिनी द्वारा रेखित या उन्हा पुरु पारिनिदे अनुको सामनेवालाः पार्वितिका अनुपार्वी। पार्विका स्वाकरण ।

पाणी-पु॰ दे॰ 'पालि' ।

याणीकरण-५० [शं०] विशव ह पाषप - दि० [स०] प्रशंसन्दे सीरम, गुप्तम बाम मंत्री ह पानवास-दिश [मंत्र] हात्री शानेनाना (वितरा । यालीय-(४० जिल) यतियोधे गर्भकार भूगा है पार्तति-ए० (संब) शरीधरा यमा वर्णा श्रयोत ह

पालंबात-[६० [धं०] प्रतिहत्यांश्याः प्रतिविशः प्रतिवि क्षारा रुचित का धवन्तिया ५० वीत्रहास्य विगति काय

सारवर्ग एनवन्दि माने वाले हैं है

पान-पुर बारका पर सदला काला जूल, देवा वर्गाः [रांक] विश्वेदी विषा या मानः परना विश्वेदी विवा al Ale: attu: attu, antu.! Anter mit." reit (करोहदानुभ प्रदार (सप्रयाम): यासमा, के शाना (रहि-कृति। एएटर हिर्दि का ब्युल बंधिकी विधा का बाव (काहला ब्रोहकाट्टर भावत (यश्याकलका खलाला) स्टाहर 81584 1 840 1529 1

पानक-पुर (शंक) पार, सह दिशाचापर प्रेंच रे-अपgreit, getreit, genergente, eine mit wertwet राज्यो । विक रिसार्वेशामा व

क्षामुक्की(दिवस्) - हिन हैंही । पार्चाः अपहे अपहान्ती ह पालब-पुत्र [८०] जिल्लेको जिल्ला सुवानाः कारकर िक देना प्रवस्त कामनाः क्षेत्रका स्थाना संस्थातः

विश् दिशानेशामा । पातनीय-विश्व विश्वी विश्वी पोन्दः प्रदार करने बोन्द

('दारु'दे अन्द अवेंम भी)। पानधंदी-म्यी॰ वह नक्या विगये रिमी कापदारधे एटी हुई मानियत और उमपर था। हुना रुवे लिसा रह परी यातविना(त)-[४०, प० [र्यको विरावेशणा घरेरोताना

पासरी-मान परान्तः वेश्या । विक पनना, वारीका दुर्वन, शीम हाय: शह, मीच-'विविगः दानि('-मामनीव ! पानरिः पातरी-न्यो॰ पद्यतः। पातल==की॰ दे॰ 'पानर' ।

वातस्य-दि॰ सिंगी रहा करते योग्या पीने योग्या । पालशाह-पु॰ दे॰ 'पारशाह' । पातजाही-सी॰ दे॰ 'पाउजादी' ह

पातार-पुरु परा । पामा(म)-५० (००) रशहः पानेनानाः

वासारातः – पु॰ वत्र और अधना पृत्रनारी गपारंग सामग्रीः प्रामधी भेंद्र ।

पानार्1-पुर देश 'पानाव' ।

पानार-पु॰ [शं०] अवनका अधीमामा पृथ्योके कीनेटे मान कोडीवेने सबने मीनेडा लोड (पुराधीने मात बहार-के अधीलीको हा उल्लेख मिलना है-अन्म, दिनम, शुनन, रतातक, तलावक, शहावक श्रीर पावार)। ग्रका वारा बाहि श्रीवनेका एक यंत्रा शहदा बहबानमा बंदलीने थम पर्ने भीवा स्थान जिममें गुर्व दी। एरशे मेरवा, माला भारि निकासनेको एक रोति ((१०)। -धेन-थ॰ यह दानव । – गीवा-भी० दानान स्टेश्ने वद्रतेवाची । गंगा । -- राहड़ी-को० एक मना, दिल्हा । -- मुंधी--क्री व के ने दे वे बे देवाची यक अना । - जिए ए - नियास . . बामी(मिन)-पुरु दैला, दानदा मात्। -ब्रीय-दर

बालु यमाने, महे, नेन मादि तैयार बश्तेषा एव प्रच ह वातामीहा(कम्)-५० [५०] १० वानम जिल्ह्य ३ पाति-४० [संबोधन, स्वामंत्र पति। पूर्व । वे स्रोत पर्धाः विक्री ।

पातिष-१० (५०) एव । यागिय*-१० ४१६।

वासिम-दिव [क्षेत्र] दिशका बुधा वेंडा बुधा शुरुका

यानिय-पुर (शंन) परित होतेहा भागा प्रार्टिश्युनि \$714/4 s

यानिक्की⇔क्षीव [कर] दिश्य व्हाराज्ञेहर प्राप्ता प्रदार में महारका विद्वारत बरहाना विशेष बरोशे और र

यातिसप्-५० देश 'द्वीनताम' । वास्त्रियाण-पुन् (४)को परिवत्ता होतेदी प्राप्त परिवत्तात

यार्थी • ~ ब्रील बिन्ही, यन, यहा अन्ता, इसा अन्ता ।

unfilffen)-fes feist ferite mit freibemit g Saint 6

चालुक=दि० शि=्रे प्रावः दिश्लेशना, वर्ग्नाति । वर्षेत्रे नवृत्र क्षेत्रेकालाः, सर्द्रवायो हे पुरु प्रशास्त्र प्राप्तः अपन rett.

130 'अग्र जमा बरना । पर्यक्षण-पु॰ [सं०] हवन-पूत्रन आदि धार्मिक कृत्य करते समय अपने चारों ओर बिना मोई मंत्रपढ़े जल छिश्कना। पर्युक्षणी-सी॰ [गं॰] पर्युक्षण-मंबंधी जल रखनेका पात्र । पर्यास-पु० [गं०] उट खड़ा होना । पर्युत्मक-वि॰ [सं॰] बहुत एत्सुकः, चदाम, शिन्न, रंजीदाः .ब्याकुल, धु**य्य** । पर्युद्धन-पु॰ [सं॰] ऋण; उदार । पर्युदय-पु॰ [सं॰] आसत्र ग्योदयदास । पर्युद्रस्त-वि॰ [मं॰] गना किया हुआ, निषिद्धः अलग या अववाद किया हुआ। पर्युदास-पु० [मं०] निपंधः अववादः शुसतसमा । पर्युपस्यान-पु० [सं०] सेवा, टइल । पर्युपासक-पु॰ (सं॰) द्यपासना करनेवासा । पर्यपासम मपु० [२०] उपासना, सेवा, प्ताः मैधा, सङ्गा-वनाः शासःपास बैठना । पर्यपासिता(त), पर्यपामी(सिन्)-पु॰ [धं॰] उपासना यः रनेवासः । पर्यप्र-वि० [मं०] बीया हुआ । पर्वे सि-हो। [गं०] थोनेको किया, बोमाई। पर्युचण-पु॰ [मं०] पूजन, उपासना । पर्वपित-वि॰ [गं॰] तात्रा नदी, वासी: कुरम: मूर्स: गर्मश्री । पर्यहण-पु० [तु०] अग्निके चारी और जलसे मार्जन पर्वेषण-पु०, पर्येषण।-म्बी० [मं०] तर्व मारिके द्वारा की गयी छान्यीमा सीत, अन्येषणा पूजाः बादर-सत्कार । पर्येष्टि—स्वी० [मं०] अन्वेषण, स्वीतः पुछनाछ । पर्प(म्)-पु॰ [००] उत्सव, स्थोद्दार; क्याँ उत्सव या श्वीदार मनाने या कीई विशिष्ट पार्थिक गृत्य (श्लान भारि) बरनेशा नमय वा दिना चतुर्दशी, अहमी, अमा-बन्या मधा पुणिमा-पे पार तिथियों और रविसंजातिः परिवासे हेन्द्र प्रतिमा या अमावश्वानकता समयः सूर्व-प्रदेश, भंद्रप्रदेश, भदमर, भीता; भंधित्थान, गाँठ, जीहर भीरा शरीरको अन्यशीमा कोई भीका अंश, आगः पुरत्यका कोरे भाग (बेसे महाभारतरा); निधिन काल: पान: मांस्यमे दीनेशने यागः -बार,-कारी(दिन)-पु॰ पर माद्रान जो धनके शोमने पाँके दिनका कृत्य तंत्र दिन भी करे जिस दिन बोर्ड पर्व न हो । -- बाल्ड-पुण पर्वता समय। - सामी(मिन)-६०, पु० पर्व हे दिन औ प्रसंत करनेवाला । -चि-तु • धंदमा । -बुध्यिका,-बुध्यी-क्री • रामातीः मागाती । —पूर्णमा—सी • दिसी उत्सव या स्पोदारके तिए की जानेवाली तैवारी: विमी जलाव या रवेदारका संदर्भ दोना १ - भाग-पुरू वनाई १ - सून्द-पुरु पगुरंको सीर पृष्टिमा दा अमायन्यासा अधिकाल । -मृत्रा-भी । दरेता, मतेश प्त । -योजि-पु । वर पीषा या बनायति जिसने साँडे हो (हेस, बेंच साहि) ह −रट(ह)−पुर असार्या पेट । −श्रुपी−सी० वस प्रधारको पूर, माध्याद्वशे । - मधिय-व्योक प्रशिष्टकोत् हे

पुर्णिमा या अमावस्थाका संधिकार । पर्वंक-पु॰ [सं॰] पुरनेका जोइ। पर्यंग-पुरु [संरु] पुरा करनेकी किया, पूर्तिकरणा पक राधस । पर्वाणका-सी॰ [मं०] औसके जोरकाएक रोग (आ०वे०)। पर्वणी-स्री॰ [सं॰] पृशिमा; प्रतिपदा; उत्सव, त्योद्दार; ऑसके जोडमें होनेबाला एक रोग (आ॰ ने॰); परशाक; परा करना । पर्वत-पु० [मं०] पहाड़; चट्टान; मनावरी पहाड़: किसी वस्तका पहाड जैसा ऊँचा देर: एक देवपि: एक प्रकारको मछली; सातकी संख्या (पर्वत सात ६-निषध, देमकृड, नील, दनेत,श्रेगी, सास्यवान, गंधमादन); वृक्ष;पक प्रकार-का शाकः एक गंवनेः दश्चनामी सन्त्यासियोका एक भेद । -काक-पु॰ दोमकीआ !-कीला-सा॰ पृथी !ु-ज-वि॰ पर्वतसे उरपन्न ।-जा-सी॰ मदी: पार्वती ।-जाल-पुरु पर्वनश्रेणी । -तृषा-पुरु एकः प्रकारका सूरा । -सुर्ग -पुर दुरारोह पर्वतः पहाश्री किला । -नंदिनी-भीव पार्वनी । -पति-पु॰ हिमालय । -माला-स्वी॰ पहारी-की श्रेणी। −सोचा –सी० पहाडी केला। –राज –पु० बहा पढाहा दिमालय । —बासिनी-सी॰ दुर्गाः गावत्री । -बासी(सिन्)−्वि॰, पु॰ पदाइपर रदनेवाला; पदाशी। -स्थ-वि० पर्वतपर रिधन । पर्वतक-प्र० [भेर] पराह । पर्यं सारमञ – प्र॰ [सं॰] मैनावः । वर्षतारमञा-म्यै॰ [मं॰] पार्यती । वर्षताचारा-म्बं॰ (बं॰) पृथ्ता । पर्यतारि-पु॰ [मं॰] इंह । पर्यंतादाय-पु॰ [लं॰] मेप, बादल । पर्वताश्रय-५० (४०) शस्यः प्रतारपर रहतेयाना । दि० पर्वताश्रयो(यिन)-वि॰, पु॰ [मं॰] पहाइपर रहनेवाला । पर्वतासन-पु॰ (गु॰) एस आएन । पर्वतास्त्र-पुर्वांके एक सरहरा अन्य विएशा प्रयोग कर्ने-पर परभरीकी बुधां क्षीने लगती थी। पर्यतिया-पु॰ मेशहिन्दीना एक जातिहरू प्रधारका बहुदूर पढ प्रवारका निन्द । पर्वती-वि• दे• 'प्रवंतीय' । वर्षेतीय-विक [मंक] परंत मंद्रती; परंत्रता; पशाहपर रहने या पैदा होने सन्धा, पहाड़ी । पु॰ पदाड़ी माछनी दी यद उपाधि । पर्यतेषर-पुर्व (र्गर) दिवाहय । पर्यंत्रोद्धव-पु॰ [तं०] पासा शिवरफ । रि॰ परंतपर जाराज । यर्थतीज्ञानपुर [मं०] अवस्य । विर पर्रतार सारत । पर्यमोर्मि-पु॰ (गं॰) व्ह सदास्या वर्रना । पर्वेश्शि-क्षी देव 'पार्थार्थ' ह पर्वतीय-पुरु [एर] बाहुः परे गुण्यः गरी परेवा रहा ५५% सम् । श्रवी-मी॰ डे॰ 'रावर' । पुलियाचे मेर्नाट ऑह अंतरे आह दश प्रतिप्रशालका | वर्षांत्रगी-मी-दै-प्रहराजनी ।

मध, पेर; परवीठ । ∼ध्योद्र-पुथ् मुर्गेसा सुद्र ।∼पथ-पु । प्रारंशे । -प्रस्ति-की । प्रारंशे । -पा-सी पादकः, पादताम ।-पान्तिका-स्त्रीः सृपूरः। -पादा-पुः बोडिट डिड्रेर पेर बॉपरेडी रुग्मी, विद्वारी; नद रस्ती निममें कीर्र चीत्रावा राजा जावः द्यानः जुदुरः बुँदकः। -पाशी-सी० देशे, पंजीरा चर्राश यह सला। -पीठ-पुत्र केने मागनके पाम रही। जानेशाथी ऐसी चौकी या आधार जिम्मवर पेर रस्तरे हैं। पेर रसनेके ब्रामकी भीकी ह -पीरिका-मा॰ गुरशरम व्यस्तव, मानुष्टी देशा (रेने नारेना): मरेद सन्दर 1-बुरण-बु॰ दिनी कीह दा बराडे सिमी बरवको पूरा बरनाह बद बद्दर जिम्हे हारा कीर यहम पूरा दिया बाद ! -प्रशास्त्रन-पुर पैर भीने-दी प्रिया । -प्रणाम-पु॰ भाष्टश्य प्रमामः वैद पदना । -प्रशिष्ठाल-प॰ दे॰ 'प्रदर्शह' । -प्रधारण-प॰ जुनः, मादार्थं भारि । -प्रमारण-पु॰ पेर पीनामा -प्रहार-प्• देशो दिया गया आपात । +र्थपन-पु॰ जान्यरीके पेर ग्राननेशे समी। जानस्तिधे धाननेशे किया पशु-मन । - भाग-पुरु पेरवा निवन्य भागः चतुर्वाशः । – सदा–शांव पेरवा विद्या । – सुल –९७ स्थानाः दलवाः एरी। यह स्वात अहाँने पहादका भारम होता है। चरनदा साधित्य (सम्रात्त स्ट्रिय बर्जेट निष्ट प्रयुक्त) । 🗝सा – रक्षद्र-पु॰ क्षा, सदरमें आदि । नरशाण-पु॰ पैरवा शाबरण; ज्या, ध्रदाडे काहि । -रज्ञ(स्)-शो० पैरबी भूत ।-- श्रे मु -- श्री व द्वाचीने धेंद वीचने ही देशती या ने बीद ! -श्यो -श्यो प्रया धराक !-शेट्य-शेट्य-पुर परका १८। -स्रान्-६० शरमात्राः आधितः । -बंदम-५० नाग गुप्ता प्रणाप यथना । -बस्मीक-पुर पीनर्चन, रशेषाः । -विरता(जम्)-सी॰ जुनाः शराहे । पु॰ देवला । -सेएनिक-पुरु कानावा । -बाब्य्-पुरु देशकी थमक, भारत । -शासा-मी॰ पेरही अंतुनी । -र्शन-प्रभ दिशी प्रधानके पामका क्षीय बढाव । -क्षीय-प्रभ देर्द्रा कृत्र जाता । -शीच-पुरु देर चीता । -मेन्स-पुरु-संवा-सीर देर सुनात्मेश शुन्ता । -श्रमंतgo etal, to 1 -this-go ee ceifet gu feut-रिक्षा । - व्योजूल-पुरु पेर्से वर्णाना दीना १ -इत-हिक जिलार पारपदार किया गया ही : -हर्ष-पुर वह भूत्पर्राण विवास पेरमे मुल्यानी होता है । नहींनानविव नी अन्त्रे पहुर्व जाग वा नश्यमे शहन हो। जिसदे रेंट्र म दी र सामृज्ञ-तुर (संर) देश भनुबन्ध । शिरु फटनेतन्त्र । पादय मित-दि॰ (री॰) पादय प्राप्ते सा गानेशमा ह

भारता-म । कि अवन्त सन्तुदो गुरामार्गने नाहर निका witt, 1" ? want 5 बापुरी-पुत्र रेस है पर्र रा पूर्णिंदत का आमार्थ । साम्बद्ध - ५६ शिक्षे श्रीवह १ बार्गाह-पुर (पान) व ग्राहा स्थार ह - क्राहा-पुर etakune 1

मार्गाप्टी-भी श्राप्टी । बन्दोप्त-पुत्र [तत्र] देशक शिक्षान्त । बरद्रोगर् = ३०, यहर्शनर्ही =व्हें व [६२०] मून् ३

पार्शगन्ति, पार्शगन्ति-स्ते [लंब] पेर्द्ध रंगली । . पादांग्ष्ट-पु • [४०] पैरहा अंगृहा । पार्वान-पु॰ (रं॰) पैरका अधनायः रक्षेत्र या पपदे विशो परका अनिम भाग दा अवसान । -१६-दि॰ पार्राप्री न्वित, जो पर या प्रशंह अंतर्ने हो !

पार्श्व-पु॰ [मं॰] पेर पोनेश पानी। यपुर्वाश करनाता याद्मीय(स्)-५० [सं•] दे॰ 'वादांन्' । पादाकुरुफ-पु॰ [रो॰] दक्त मात्रावृष्ट । पादाक्रीत-वि॰ [मं॰] देशे तहे दराया हुआ। रीटा हुआ। पाष्ट्राम-पुर [६०] वैर्द्धा सदमाग् । पादाबात-पु॰ [गं॰] वैरक्ष प्रदार, मान मारता ! पादात~दु० पैरस निपद्या, पेरस मेना। पार्वातः पारातिक-पुर [गंर] पेरल सिराही । पादाध्यास-पु॰,[सं॰] शैदना, कुथतमा, प्रापान । पादानस-वि+ [तं+] पैरीक्र परा हुआ। पादामुमाम-पुर [शंर] दद श्रव्हानकार, प्रगत अनुपास ! पादानीन! −९० हाला नगढ।

पादास्यंत्रन-पु॰ [मं॰] पेरमें लगावा मानेशला पी वा पादारक-पु॰ [मं॰] गानको पररी: मनतून I पान्त्य -- पु॰ दे॰ 'हाबाई' । यादारविद्-पुर् [मंर] यरण समय । चादार्यक-यु० [हो०] दे० 'बरार्यय' ३ पादाळिऱ्-पु॰, पादाढिए। पादानिदी-मी॰ [मं॰]

पादावर्गं --पु॰ [ां॰] रहर । वादाबनेबन-पुर्व (मंग्) पेर थोगा पेर पेनिबा शामा । वादाविक-पुर्व (मेर्) पेश्स शिवादी ! दान्दर्शन्द-५० [नं•] दराया । वादाग्यम-पुरु [ग्रेर] पारदीह ।

वादावकाळन-पु॰ [मे॰] देरोडी बहिलारेंगे आगे महाना (तेने दीयशर्मे पत्तरे शतक)। पादाहन-दि॰ [बं॰] विगुपर पैरने शहार किया गया में t

वादाहति-क्षा॰ (लं॰) देखा भाषान, मान गारदेशी faq: i वादिष्ठ-दि॰ भिन्ने की दिलाई चनुर्यश्री बरावर ही

(रेने वर्षात्र शत्-वर्णम मश्चित्र)। यादी(दिन्द)-दि॰ [लंब] वैहरामा, दिशके वैह वा वर्ष बीं। बाह बरमीर बा, धार कारीरका। दिने दिनी रही। का भीता मण विशेषा विश्वता हो। भी दिन्ही अग्री है यतुर्वेद्धका व्यविकारी हो । पुरु देशकार, प्रमादनर मेर्ड [बार, वहराण, ब्लुका आहि); प्रश्न मी दिली नार्रण का अन्तराहरी कीने अपना अरिकारी हो। केंद्री है दिक्षीयार है।

वाहका-मी (हिंक) जुल्प शाहते । नवार-पूर मीदी धनरा दर्द ।

शाह्य-दिव [र्गक] देशम ध्रम देशमा र

बर्ग्य=क्ट्रान हैंगच्चे ज्ञात : च्यून्य्=पुन भ्रोपी ! quifte-go [r'o] ic aber um ur un fein

te s यमारि, यमाती-सी: [र्थः] बागुहा देर् ।

परगवित-दिश [रोव] आगा हुआ ।

प्रसाद-पु (१'०) द्यानः भृति । -दोहद्-पु० कम्मदः

पन्तानमान-वि० (धे०) अणाण हुआ।

धर्गीका । पलायन-पु. [tie] (दरवर) कृत्यी जगह यने जाना,

परायम, परायी(विन्)-दि॰, पु॰ [मं०] माग्नेशला,

गहनाः जीन । पलाख-दु० [मं+] दुलाइ । पेस्राप-पु॰ [गं॰] हाबीका क्रोहः दगहा।

का पिन्हासा । स॰ जि.० धराना । परानि∙−भी∙ शेन−'परै दशनित्र्रंगम पौठिदि'⊸द०। पलामी-म्बे॰ छप्पत् पंत्रेके कप्र पहलबंका क्रियोका एक

पहामना •- म । कि (में) अधिपर) पत्रान कमनाः भावमण बरनेशी तैवारी बरना । पछामा - अब कि भागताः तेत्रीने जानाः गाय दावादि-

पुलान-पु॰ धोडे आदिको पीडपर असा जानेवाला ओन या पारमामा ।

पलाद, पलादन, पलाशम-५० (मं॰) रादग्र । वि॰ मांस मानेवामा, भोसादारी।

भौचल, पहा, दिनारा; दिन्देंके दो भागेमिसे कोई एक । पछानिन-सी॰ [सं॰] रिश्त नामक धातु ।

पला-पु॰ ६० दिएक, यहा बड़ी पत्नीः क तराज्का पताः

पक्षांग-प्र॰ (सं॰) कह्मा; धेन । पर्छोद्र-प्र॰ (सं॰) प्यात्र ।

पलद्दा-पु॰ जनम-मृत्युकी सूचना; • पहच ।

पल्हना • – अ० कि० दे० 'वनुहना'।

करमा-परत करना। -बीका होना-शिथिक होनाः प्रमधीना । (किसीका) - विगड्ना या विगड् जाना-दे॰ 'पलरतर क्षाला क्षाना' । (किसीका)-विगाइना या थिगाइ देना-दे॰ 'पलस्तर दीला करना'।

पर्ख्या - पुरु पारुम-पोपण करनेवाला । पलस⊸पु० [सं०] दे० 'पनस'। पलस्तर-पु॰ [बं॰ 'बारटर'] जूना, वंसह, गुर्सा आदि मसासीसे सैयार किया हुआ एक तरहका लेप जो दीवार आदिपर चदाया जाता है। मु (किसीका)-डीला

प्रकारकी बड़ी नाव । प्रवारी-पु॰ नाव रोनेवाला, महाह ।

असुए निकलनेके बाद धेतको तर बनाये रसनेके छिए उसे पूरी पत्ती आदिसे इक देते हैं। माल लादनेकी एक

एक घासः । अंत्रलि । पछवाना—स॰ कि॰ किसीसै पाछन कराना । पछवार-पु॰ रंपाकी रोनी करनेका एक सरीका जिसमें

या बाँसका छ। वा । पलवल १ – पु० दे० 'परवल' । पछवा!-पु॰ ऊराका कपरी माग जी नीरस होना है:

पळळादाय-पु० [सं०] गलगंड, मेपा । परुष-पु॰ [सं॰] मछित्याँ फैमानेका एक सरहका जाल पलाव-प॰ [मं॰] महली फँसानेका काँटा, बंसी । पलादा-प॰ [मं॰] पत्ताः पलास, टेम्रः पलासका फुलः

राक्षमः मगथ देश: इस रंगः किमी रात्र हथियारका फल । वि॰ इसः नि॰द्रर, कठोरहदयः सांसाहारी। -पर्णी-स्त्री॰ अप्तर्गंथ । -पुट-पु॰ पहातके पत्तेका दीना ।

पळादाक-पु॰ [सं॰] पनासका पेह ।

पलादिका-को॰ [मं॰] वृक्षादिपर नदनेवाली रक लता ।

पळाडाी-सी॰ सिं॰ी बुधपर चढनेवाली एक लता; लाख । पराशि(शिन्)-वि॰ [सं॰] पर्सविकाः मांस सानेवासा

पलाय-पु॰ महोले आकारका एक प्रसिद्ध प्रदा निसदा

फुल बदुत लाल होता है, किज़क (दिंद इस मुक्षको पवित्र

मानते ई और मधानारी इसका रंग भारण करने है):

गीयकी जातिका यह मांसाहारी पत्नी । -पापहा-प्र.

पछिका- •पु॰ दे॰ 'पलका' । सी॰ [मं॰] तेल निकालने-

परित्वनी - सी॰ (सं॰) यह बुद्दी सी निसंदे बाल सप्रेप

ही गये ही। यह गाय थी पहले पहल गामिल हुई ही,

पलिश-प्र [मंव] काँचका घडाः प्रावार, महारदीवारीः

पस्ति-वि॰ [मे॰] वृद्धः दुरुद्धः परा दुमाया सपेद

दीनाः तात्र, गरमीः बीयदः धरीलाः सीहा । पस्तिती(निन्)-वि॰ [र्ग॰] जिमहे बाल मधेर हो।

(बान) । पु॰ वृद्धावस्थाने बारण बालीका करना वा सकेद

पिट्या-प्र• पशुओंका एक शेव जिसमें वसका गला सुत

पलिहरां -पु॰ भैनी फमन बोनेडे निम धोता आनेवाना

रीत जिसमें महर्र स बोबी जाय पर जीताई होनी रहे !

प्राती-म्बी॰ वह बहननीमेंने पी, नेन मादि हरक प्रार्थ

निकारनेका मोदेका एक आमा औ एक रंशीते सिरेयर

धोडीमी कडोरी जोहकर बनाया जाना है। मु**० --**यस्टी

जीहना-केश योश करके संचय करना; कीरी-कीरी

यमीता-पुरु येव निरा गुमा बागाव बिने बसीनी नरह

बनाबर जनाने दें। गोपदे रजकी आग नगानेश वहार भारिकी मोटी वचीर पनपानेपर रगवर अनारेकी सपी-

की विधेय मदारकी वर्ता । दिश् प्रति अस, श्रीपरी सम-

पर्वतिन्वित्र (बान) अग्रसः सर्पत्वः मारावः बुषः सीताः

हमाया हुआ। हेज यनमें दा दीवने शता, नीजगाती (

पळाशांता-स्ती० [सं०] कपुरकचरी, गंथपत्रा ।

पलाझाल्य-पु॰ [मं०] नारोहांग ।

प्र॰ क्षीरक्षः राक्षम् । पलादायि-वि० (सं०) पश्चीबाला, पत्रशक्त ।

बालगभित्री गी।

याना है।

जोहरू पन बटोहना । पर्शत-वि॰ दुधः पृथ्वैः गैदा । दु॰ भृत देत ।

याधीती—मी० होटा पणील ह

ग्रहार । पुरु भूत-देश ।

-पापडी-भी० प्रशासको शली।

चलिक-वि॰ [मं•] एक पल बन्नमरा।

कारकः योद्यालाः परियः क्षीरमञ्ज । पस्तिसंकरण-वि॰ [मं॰] बहित वा मरोद बसानेवाता ।

बिगुमें पानी, भार की, भारदार, खोतिमानूर प्रतिश्वासाता, इसरदारा सामियानी । - देवा - ५० वर्गेत बर्जेवानाः भक्षप्रताः पुत्रपरि । —कुल-पुर्व स्थिपाः । —केल-वर्गः पर प्रदासी नता । ग्र॰ -आना-को दीना।-उताना -वामी गीयना, गोयना । -उत्तरना-देशक्ष्मी होनाः भेऽर्वि होना I-उसार्ना-देश्यन वर्ना I **-करना**-गरम दना देना: बच प्यक्तिको शांत बहवा ।−हाहना− पानीकी रोधनेकाने क्षेत्र है। मेटकी कहा देना, पानीकी दर गाडीने दमरी नारीवें के बाजा 1 -वा बताया. -द्या युलयुषा-रागभगुर दशर्थ । -दी पोट-बद् परार्थ विगरी अन्न अधिह हो। -के सील-बहुत मस्ता ! -चलामा+-भीतर करमा । -छानना-पेयरकी थीयारीये पानी शामनेका वद कृत्य । *∽शाना*~मादरन्त हैता !-प्रामा-रेश्यव होता । -हश्या-वर्ष, ताल भारिके पार्माका बहुत कम हो जाना: बारिश बंद हो भागा।-तीयमा या बाटना-तैरने या नाव मेने गमद पानीशे द्वाच दा शहेथे भीरता । -दिग्यामा-षशुभीते मामने पीनेढे लिए पानी रमना, चौदावीठी षानी विजाता । —देना- तर्यंत्र बहताः भीवना । —न मौगना-तरहात घर अला। - न रह जाना-स्थत भिद्रीमे मिनना । - निकलना-वर्ष यद होना । -पदमा-वर्ग दीना । -पदा-जिसमें दमाबर म हो, दीमा दाशा । - पद्गाः-पदोरमा वा कुँकमा-अस्हो भगिमधिन वरमा । चयर सीवें द्वालमा-ऐमी बलारी भाषार बनाना नी रियाङ स बीहारिको खामधी दस मनार भागि नरना कि बद्ध बद्दश अबद दिगढ आय । -पर मीर्वे होमा-दिना वाम वा मादीवनदा दिशक म दोना। -पानी काला-दर्ग अविद सबसमा ह -पामी होना-बदुन करिक सजिन होता, प्राप्ता ह -पीश्र आति गुछमा-बोर्ड नाम बर मुबनेपर उसके भौजितहा जिल्ले बरना । -पी पीवर कोसना-इतनी है(नह बैगाना हि समा शूरा जाने दे बाहम नी धनी धने बागी बीता पूरे, बहुत प्रतिक्ष और देशनक कीमता ह (विज्ञायर)-विस्ता-धरवाद द्वांता, चीवर द्वांता । -कीर देवा-बरबार अर देवा, शीपर बर देवा । - बन्दाना -- इन्दाना - सर्वादादी दशा करना ।- बहाना --मियारीये एक क्यारी शह शानेतर दल्यी क्यारीये कानी : में बाजा । -व्यापना-वांध का ग्रेष बनावर पारीकी शेष शामा माहके द्वार अजीवा बदमना शेष देना ह -मुद्दासा-मी दूप सीट्रे मार्दिशे पानीवे बुराना । (विगीरे सामने या भगे)-मस्मा-= पुन्ह for their the tent - wil men-their श्राधाः -सामान्यात्रार्थः होनाः वान्यात्रार्थः होनाः (हिंदगीके मार)-मारमा-६८% देश दशाला । - में भाग समामा-कादन कादे वह शाननाः वरा इम्प्रचा कीना कमद सं की नहीं नी दणका लगा दैना ह -में पेंद्रमा था बहामा-मारा बन्त, वह बन्ता। च्छात्रा=पर्यः ४चा देशाः (दशीक्षः)-सराम− (शन प्रानुद्धाः सन्दूष्ण नः व्हीना, व्यक्तिदेशवदे सुरे ज्ञानाः (बान्या प्रमुद्दं प्रीतात न्तरेशन-वेद्यात् क्षत्रवात नहीत्

पनना-बदुव मुच्छा बदनामः बाहाम । –से पहले हुन, वाह या बाँध बाँधना-दिमी अनादा विश्वनिश क्लो-में ही बरोबार करने हमता, हिनो मंदरों करने हैं। मूर्य दी दमके निवास्त्रका अपूर इस्ते भएता । -से पराने मोजा उतारना-दे॰ 'पानीम परने पुण-रापता' । -होना-बाग सार्टिका स्था अवश्वाधे दरियम श्रेमा श (क्यिंक)-होता-हार शांत राज । यानीयन-प्रश्रीहरीके प्रापद्ध एक देशन वर्ध परत की बढ़े शुद्ध दूध है। पानीय-विव तिवी पीने बीग्या रहा सहने बंगद । पन अलावेव, शहाब (न०) । -काव्हिक-पु०, काविका-शी॰ दह पश्ची । च्युणिशा–शी॰ बात् । −सर्पर≖ पु॰ करदिलाय । -पृष्टत-पु॰ सम्।'हो । -पार-पु॰ मधानः। -मण्ड-ए॰ वर्षाः -परिशानके बारः। –शासा-शास्त्रिका-मी॰ देगरा, ध्यः हो । पानीपामण्ड-ए॰ (सं॰) पाना भी भाग । पानीपालु-पु॰ [शं॰] यह प्रश्नारश वंद । . षानुस-५० ६० धान्म । वामीस॰-व॰ वामहे वर्धेसे वर्धेस । षाञ्योग-पुर पार्ता-"उवी शरा पार्दी पार्दी '-गूर । षाप−(व• [मं•] निष्टशः मोता, प्रता श्रतान गीवः एषा (प्रायः समानमे प्रमुख-'पाएटमें', 'पापप्रद' मारि)। पुर कुरे बामीमे वलक होनेवाला वह करह कियने प्रमुख लरी गाँउदी प्राप्त कीता है। ऐना ब्राष्ट्र राज्यक्र का नेपाला कृत्यः मकृत्यः अवाधिक कृत्यः (श्रेश-दिशाः चीरी स रि)ः सनिष्टा सरहार, जामी वादी, बानबी । -का-दिन देन 'परादारद' । -क्यां(म्)-पर ऐता को जिले जरतेते वार करे, धर्म दिवस की, शोध हाम । नवमी(मैन), -वर्मी(विन्)-विश् वादी !-काच-तुश् मीन मानुष्रः मीश कामी ६ -बारक,-कारी(रिन्),-हन्-इन, विक प्राप्त समाजिवामा, यापी १ -- द्वरण -- युक प्राप्ता सामा । -रामि-दिक अवायाः, ब्रान्तरीय । नाइ-युक्तशान बाद पेने संगय, हाजि, राष्ट्र, केल या सूर्व अवशा प्रश्नेती दिशीमें युक्त बुद्द । -श्म-दिव प्राप्त मध् बदमेन मान पुर्व निक्र (विद्यादे प्राप्ती पापदा नाह्य दीना है) १०१मीन की व्हाना । -चा-चारी(रिम्)-विक राशवाण सर्नेशना १-वर्ष-पुर शाहाराज्य १-वेशा(शम्)-विश् तिसके मनमे रहा पाए बरे, शुध, ब्ह, ब्रहास र -वेश्वित्रा-वेसी-भी० प्रश्न अनुत्र -केन्न-पुर ब्हात बब्ह । दि० क्यांस बंध ब्राह्म ब्राह्मणा । -जीव-विक करी, दरागा -महीतिहरू)-वि git fammi budereis mele-fee fenci e't Paul fin familiefent feiter ger mel ent. जिल्के देशनेत विशेष अध्यक्त है। क्रिक्टी-विक प्रिन दुराधाः । अस्त्रम् - ५० अस्य अध्य । असर्पन् - १० भूते नार्ते । —संसा(सम्) —(स्त्राध्यक्त रूपे १८८ बहुव ही। -महाक्र-दिन १८०१ शता बरनेत गा

-माशाम-दिन पात अब बर्गेशना । एवं देशना सिक्त

श्चार्टिक्य व नव्यत्विमीनव्याः एक्षा, बानो प्रवर्ते ।

नवादीः(शिक्ष्) नहिरु चाद वर् ऋरोजना । नीवारीता

करनेपर बहुत तेत्र इवा या आँधो चलने समती थी, पवनवाण (प्०) । पचनाहत-वि॰ [गुं॰] बातग्रस्त । पवनी-सी० [सं०] हाहः † दे० पीनी ।

पवनेष्ट-पुरु [मं०] बकायन ।

पयमान-पु॰ [सं॰] बायु, इवा; गार्डपत्य अन्ति; सीम-देवता (वै०) ।

पयर=-विं प्रवर । सी० ट्योड़ी । पवरिया॰-पु॰ ह्योद्दीदार, पीरिया । पद्मशी - सी० दे० 'पीरी'।

पथर्ग-पु॰ [सं॰] देवनागरी वर्णमास्त्रके अंतर्गत 'प'से 'म'-तरः पाँच अक्षरीका समूद्र, पोचवाँ वर्षे ।

पर्योद्धा-पु० जी तथा देनेवाला शंबा आख्यानः बहुत बद्धाः

कर वहीं हुई बान; एक तरहका शीत ! पर्वार-पु॰ श्रुपियोको एक उपनातिः † चक्रवेंह । पर्योरता, प्रयासनाः - स॰ कि॰ फेंकमाः छीरता, छितराना,

फैलाना ।

पर्वारी!-सी० लोहा छेरनेवा छोटारीका एक आजा । पपाई-मी॰ तिशापत पैरका जना या खडाऊँ। चडीके ही पार्रीभेरी और एक ।

पदाका~भी० [मं०] बवंदर।

पवादां - पु० चकरें हा

पदाना - * स० कि॰ सिकानाः † मात्र कराना । पवि-पुरु [मंरु] बना; बाधी; बाण या आलेकी कीक; बाण; भवि । —घर-पु० इंद्र ।

पिता-वि॰ [स॰] द्वाद्य किया हुआ, साफ किया हुआ। go faci t

पिंदमा(ग)-वि० [गं०] पवित्र यहनेवाला । पविनाई १ - न्या । पवित्रता, शुक्रमा ।

पवित्तरां - विश् देश 'ववित्र'। पवित्र-नि० (गं०) द्वाप, निर्मल, स्वच्छ, पुनीत; जन,

धीन भारिने शुद्ध। पु॰ शुद्ध करनेवाली वस्तु, शुद्धता-मी गापनस्य मरत (एलमी आदि): कुछा कुछाके दी दल जिनसे बढमें धांका संस्कार करते हैं। क्रयाबी बनी हुई प्रित्री बिने थामिल पूरव करते समय अनामिकामे पदमा दें। यदीवर्गातः तींबाः बक्षेः अतः आर्यका उपकरणः प्ता मपुः तित्रका भीषाः मर्गणः। स्थान्य-पु॰ जी । -पाणि-वि॰ त्रिमुद्दे दायमे तुना दे।।

पविचक-पु • [मंग] वीयलका पहा मूलरका देशा शासियका भनेकः वृक्षः दौनाः एकतः जान ।

पवित्रता-भीव [मंद] খবিদ ছানিয়া মাৰ ।

पविद्या - स्रो॰ [शं॰] सुष्यी: इस्टी: यक प्राचीन नदी: मापा गुजा बाददी ।

पविदारमा(सन्)-वि॰ [मृ॰] दिल्की आत्मा पवित्र की, रिमको अंताबहण गुळ हो।

पवित्रारीयम्, पवित्रारीहण-तुः [हं:] दहादशत् भारम बराय, पाने दाता विद्यु आहि देवतालेके बद्यावधीत परमापा जाना (देशनब माबानसुद्धा सामग्रीकी किन्तु कृष्टिः की करोहरूरे में कहाता है हैं। ह पवित्रामानपुर [१४] समदा बना दुवा दोहा जी वहले

बहुत हाद माना जाता था । - ' --पविग्नित-वि० [सं०] शुद्ध किया दुआ। पवित्री-सी॰ [सं॰] कुराकी बनी हुई अंगूठी जैसी बरसु जिसे धार्मिक कृत्य करते. समय .अगामिकामें 'पहनते हैं) पंती ।

पधिर्या(त्रिन)-वि० [मं०] शुद्ध करनेवाला; शुद्ध ।" पवेरना! --स० कि० नीजीकी हां!ते हुए नीना ।

पचेशां-पु॰ बीजोंकी फैलाने या छितराते हुए बीनेकी किया।

पश्चम-पुर (फार 'पदम') नरम बाल; बहुत उन्हा और नरम कन जो अधिकतर पंजाब कश्मीर और तिम्बतकी बकरियोंसे प्राप्त होता है; पुरुष या कीको जननेंद्रिय-परके बालः बहुन तुब्छ वरतु । झु० - उस्तादमा - विना कुछ करेन्परे समय वितामा, स्वर्थ समय वितामा: धीना बी नुबसान न पर्देचा सकता। -न उपाइना-क्रष्ट भी करते भरते न बनना, कुछ भी काम न किया जा सकना: थोड़ा भी नुबसान व पटुँचना । -न समझना-पद्मसे भी गया गुजरा समदाना, क्रुछं भी च गुनना। -पर मारमा-अठि तुष्ट समहाना, नाथीज समहाना ।

पदार्माना-५० कदमीरमें बननेवाला एक सरहका बदत मलायम जनका कपहा ।

पदाब्य-वि॰ [मे॰] पशुके लिए उपयुक्तः पशु-संवेधीः पश्तापूर्ण । पु॰ पशुक्षीका शुंटः गीष्ठ ।

पशु-पु॰ (सं॰) बार पैरों भीर पूँछमे युक्त जानवर, चीपाया (जैसे-सिंह, शंघ, वैस, र्जट, बदरा आदि); जेतु, प्राणी। वह जंत जिसकी यहमें बलि दी जाय, बलिपद्युः शिवका एक पारिषद, प्रमथ; मूर्ग, विवेकशीन मशुष्य; बह यश विसमें पहारी शकि दी जाया बगरा। देवता। अधिः जीवारमा (पाष्ट्रापन दर्शन)। -कर्म(न्)-५०। -क्रिया~सी० पश्का बलिदानः मेगुन !-**गायग्री**-सी० एक मन निमे बन्ति-पशुक्ते कानमें शहते हैं- पशुपाधाय विषदं विश्वतंत्रीय शीमहि। सन्नी औवः प्रचीदवार् । −घास−पु॰ दक्षिपदाका वर्ष । −थर्षा−गरी• पदा जैसा कजारदित भाषारः मैमन । ≒जीवी(विन्)-वि० पहाका मांस गावर जीनेवाला । –दा-सी॰ बास्टियेयदी यक मातका। -देवता-प्रवद्य देवता निसन्ने निर्मिण विमी पशुका वथ किया जाय ।-धर्म-पु० पशुवप् बानरण या न्यवदारः विधवा-रिवादः मैधुन । –माद्य-पु॰ शिव । −पः−पासः,−पासक-पु॰ पशु पानगेवाना, वद औ वीविधाके निष् भेर-बरसे आदि पाटे । -पति-पु॰ पहा वासनेका व्यवसाय करनेवासाः शितः -पस्थान-प्र• बेबरी मीमा ।-बाह्यन-पुर्व होतिहादै निविध भेर करी आदि पालनेका काम !-वादा-पु॰ वनिःवसुकी वापने-की रसने। पश्चारी जीवेंका पंचन (पश्चन दर्शन)। -पाशक-पु॰ एट रन्धिंग : -प्रेरण-पु॰ प्रगुओंओ हाँदमा । –धाप-पुरु पश्या, प्राप्त । –यहा,-याग-बु॰ वह बद दिसमें दिनों पर्श्तों वॉन ही बादा-रक्षण-पुरु देश पिशुपानको । लहक्युल्स्यीम वित प्रशुक्ती बॉदकेन की रहती !-राज-पुर लेप्ट ! -हर्रायक्षी-रहेर काहरेर ርታ ጭም 1

बरो रम दिया जाना और बाजा बरने समय दिर उमे गांच हे लिया जाता है, प्राचान । और देर 'चार्यती' ह वार्यहास--१० दे० 'वान्त्रदाव' । वाय-प विकि यस: चित्रको पार्वे स्थानाते. इक्षाप्त हनतेने मिहतेवाहा रूप !~कार~प॰ (बतानेवाहेसे माह सर्गादर ददानसारोहे हाथ देवनेवाला, प्रवेदनादाँकरोश, रिमानी । -ग्रामा-पुरु देर 'पासामा' । -बाह-पुरु तरेना, मस्तरणः बायहरी । चत्रांजीवन्तिः शिरततारः मैर: दनियारे पंत्रीमें फेमा हमा। -जामा-प॰ है॰ 'पापामा' । - जेय-प० दे॰ 'पादेब' । -जेशरिक-म्दोक पारेका नगरमन्यक सामधानी । स्तानकन्यक देव 'पार्देता' । - महाच-पु > दे । 'पानहाब' । -- दास-पु ० मनारी गारीमें बाहरकी और कवाबा बभा समना वा सोदे-का भी धेर द्रवश विशापर पेर एखंबर गांधीबाल काले र्षे । −दास-५० वारु, कराः −हार-२० सवदर, दिवाक । -वासी-सीव मानवती, दिकावचन । -चोडा-पुरु देव 'पायीरा' । --संद-विक देव 'पार्थर' । -संग्री--म्बी व देव 'पार्थरी' । -- यहना-- दिव जिसके चैर देवे चेरे । च्योगी-स्थे॰ दे॰ 'वायोगी' । ज्यर्दी-स्थे॰ बहाहरी, यशोमरी । -माग्ट-वि॰ दे॰ 'पामाल' ।

स्वामहा । समार-१४० द० 'पामहतः । पापक-पु० दृगः निवतः पेदल निवादीः ७ सक्षः पटेबानः पराद्याः [ग्रं॰] पीनेपालाः पापकर्ताः ।

पायत-नी० देश 'पारर' । पायत्वर - पुरु रहार-'दर थेगा, सन्ना कर्गाः दिस्तृ पीट-पणत । येद गूर दोर पायता, भागी सन्त सुनान'

-स-पी। पायम-पु० [मं०] दिलामा। पायमा-की० [मं०] मीलमा विकासेटी दिवस बीमा

पायकारणान्यः । स्वयं । भागस्य विकासकाः । अस्यः | विकास मान परमाः । प्रतिक्षः व्यवस्थाः । पायकारणान्यः दृशसः हे यस मरवसः व्यवसः ।

पायक-मीर पर्ते प्रतिनेश रह पुनन्तर गहना, क्षत्रेश मृपुरा तेन भन्नोत्रामी श्रीकरी: श्रीवद्ये होती ।

पायग्र-रि॰ भिन्ने क्य या भागी भंतकः क्यकः वा जन-काः क्यं या भनका बना दुला । तु० द्वसः वृत्रवा दुला भावन, सीरा लगुना गुनर्देश गीदः, तार्दालः

षायगार-दुर पर्देश र

वायशिक्त-दिन (गण) जिले जनगर नुभा या तरस तुम दिन में। (ब्लो नेपालिकी) । वाराम-पूर्व दिना के पालिकी । वाराम-पूर्व दिना के स्विधे कर जिल्ले कर के रेशने करवार दिना के सीमेरी कोई कर जिल्ले कर के शिक्ष वर्ष है स्वार, शिक्ष के स्वेत, देश कुरितार है स्वी के कोड़ा बने कर से सीसे दिना कर दिना के स्वाप्त कर मन कर दस देशों कर है. प्रशोक्त की मुक्क अबुक्त है होशा-मने प्रशान

मानिक - दुर्ग (मेन) देशक विश्वाधी दुन् । बापो(दिन) - मिन, दुर्ग (मेन) देशेवामा अवादा शका-बार्जा व्यक्त स्थान मेन्यदा देशे । बार्जा व्यक्त संस्थित हो ।

वाष्ट्र-(१० (११०) होता है वाष्ट्र-(१० (११०) होते हैं करोबार पुरु बारा वरियाना हेला है हैला है (वी यह तरहदा प्रयाप माना भाषा है)। पार-प्र॰ [मंग] नहीं, शहद शादिका दशरी बीहर: बिनाराः विभी बसहका दशरा दिनारा। दिनी परतह कैंगी हुई बलावर अंतिम माग, मोतमागा हिनी। इस्तर धीनों दर्श बरमके दी दिलारीमेंने कोई बका बंदा दा: पाता । अरु परे, यह । -क्षाम-दिर दशरे दिनारे शके बा इपाछ । -श-वि॰ पर जानेवाताः पार परिवाने-बाला: जिमते किमी बग्गश पर पा शिवा हो। जिमने रिमी रिकामा बाल्पका पृश्व बाल मात बर लिश हो। (ममासमें धवल, जैस-'बेडांनदारम')। पुर दूरा बरश (बादा प्रक) । -बाल-दिक पारहक पर्देश हमा। जिन्दी पार का लिया हो: विसने दिनी विना वा जानका पूर्व क्षान प्राप्त कर किया की। पश्चिम । प्रश्व जिला (नेर)। -शति-न्ये वहना, अध्यवन । -नामी(मिन)-विः बार सानेबाला । -बार-बि॰ दूसरे दिनारे पर्दे वा दूमा । =श्रद्धांक=बि॰ पारकी या क्यों कियारेकी रिमानेवाना। श्चिक अपन्यार देशा जा संदे । -प्रशी(तिम्)-दिक दृद्द्यी, वरिणामाछी। वर्ष्ण, वरिन :- दृश्या(द्वेश) -बिक बुद्दाची। जिलने दिशी बालुका पूर्व बाल साम बर क्षिया हो, परश्तु । - क्षेत्रा(न) - विश्व या से आने राहा विनी विषयम पुरत यान करानेशामा । -पार-पुर विभाग श्राप - बातर प्राचा-देश 'पार प्रमुखा'। बीहे प्रवीजन विद्य बर्बी करना ही छामा ! - उत्तरता-हैर-कर या नार आदिने बाता नहीं आदिने यम पर माना। दिनी कार्यको समाप्त कार्य शामी सही पाना विभी कार्यमे स्थानका प्राप्त करमा। भवनेनामे सुभ्य कीना, क्षात्रके राह्यत्र प्रकात - जलारमा मा अस्मा-मही. शमूह आहिये वृत्ती दिनारे पहुँचाना। प्रदार परनी र -पाशा-दिशी बन्दुदे भेगन्द प्रश्वारः । (श्विराधि)= काला-परान्य करता ३ -कश्यात-वर्ध धननी । -ल्हासा-६०८ र}-मा । (दिशीषा वेश)+समध -युक्ता होता, निर्माह होता । (शिक्षानिवेषा)" क्याना-दिया का सहस्य ही भटना । - स्वामा-भेदी आहि है बुधी विकार पर्वेषालय समार बन्दार । (विन्धी:

धारहे-कीन हर वर्षण्य । बारब-हिन [40] पर प्रशेष मा। पर मार्गनेक्सा पुर करोद मा। पर मार्गनेक्सा पुर करोद मा। प्रशेष करोद्याच्या प्रकार दिन वर्षण्य प्रशेष करोद मा। पारब-दिन [40] ह्यांचर, च्यापा के दुसोद दिन दो। दो बरणेदर्व मार्ग दिनस्य हो। में दिनस्य दें। दें। चहुं दो बरणेदर्व मार्ग दिनस्य हो। में दिनस्य दें। दें।

का सेदा) -लगावा-निर्देश स्थार । -शेवा-प्रशे

fan's an mit que uf unt aun get ar fin' !

allianko-do go gingg, t alianto-nitor go girig, t do go jairsij, t militatio, and minto (twent see o an पहिरायनि, पहिरायनी =-स्ता॰ दे॰ 'पहनावा' । पहिला - वि॰ दे॰ 'पहला'। अ॰ पहले। पहिला - १० दे० 'पदला'। वि० सी० जो पहले पहल व्यायी हो । पहिलो-अ० दे० 'पहले' ।

पहिलींठा, पहिलीठा-वि॰ दे॰ 'पहलीठा' । पहिलींडी-स्रो॰ दे॰ 'पहलींडी'।

पहीतिश-मा॰ दान । पहुँच-सी० परुँचनेकी किया या माव; पहुँचनेकी शक्ति; पासतक रामनः गति, पैठ, प्रवेश (शास्त्र, विद्या आदिमें): परेंच जानेकी सबर या स्वना (जैसे पत्रकी पहुँच); सम-रानेकी सामर्थ्यः प्रहण या भारणकी शक्तिः जानकारी। पहुँचना-अ॰ कि॰ एक स्थानमे चलकर दूसरे स्थानको माप्त दोना; आगे बरुपर या फैलफर विद्याष्ट स्थानको

प्राप्त द्दोनाः भिन्धीस्थान या पर अवदिको प्राप्त द्दोनाः भ्याम होनाः समानाः विश्लो गृद या मार्थिक बातको जान क्षेत्रा, समहानक्ष विस्ता विषयकी दूरकी कार्ते गमशनेही शक्ति स्थानाः गति या जानकारी स्थानाः परुदे रूपमें मिलना या प्राप्त होनाः प्राप्त या अनुभूत दीनाः बराबरीमे आनाः शमान दोनाः समना करना । पहेंचा क्षका−सिद्ध।

पहेंचा-ए० वलाईके उपर और कहनीके मीचेका भागा † काम करनेकी शक्ति । सु॰ ~पऋद्वा-किशी कार्वके निमित्त वनपूर्वक किमीका हाथ पक्तना और उछे रोक रयना ।

पर याना-संकी किमी व्यक्ति वा पदार्थकी वस स्वानमे मलाहर या दशहर दूसरे स्थानको प्राप्त कराना, ले जानाः भागे बहाबर या पीलावर किमी विशिष्ट स्थानकी प्राप्त बरानाः कीरै स्थान वा पद आदि प्राप्त करानाः कीटानाः समयागाः पर्न्ये स्पेने प्राप्त करामाः अनुभव करामाः मधवश बनाना, बराबरीमें साना; तुन्य बनाना।

पर्टेची-भी॰ दाधमें पहननेवा विवीता दक प्रक्रिक गहनाः वेगारेरी रक्षपेर निय पदना जानेश्वला आवरण ।

पहनद्री - श्री० दे० 'पहनाई' ।

पहुँमा - ५० दे॰ 'पाटुमा' ।

पहुनाई-स्वी॰ पाटुना दीनेका भाषः पाटुना बनकर करी भागा या भागा। है हिसी मानेदारका पर अही पाउना मनवर जाया जाया पादुनेका सम्बाद, भारितिकामार । मु॰ -ररना-पद्नेर हुप्ये ब्रह्में ब्रह्में बारह यानाः पंटुरेके रूपने नारेशाई वहाँ माना ।

4 E4 = - do in a des 1

पटुम, पहुमि, पहुमी-स्री० पृत्ती । पदेशी - लीक देव 'ब्युली' ह

पहेंची-सीव विशेशी बुद्धि ह्वा समझकी परिष्टा हैनेके बामरा एक प्रधारका ग्राम, बादय या बर्धन जिलमें कियी वश्तुका भागत या देश गेंद्रा तपुत वेक्ट क्रमें बूटने का र्शारीक वरपुर्व साम बनानेकी बहते हैं। कुरीवरू बीर्ट |

रेपी बान या देश विषय भी जल्दी समझये व बारेंद्र विश्वसाय-पूर्व दिन्हें यह वैधाव नपाय । सिं। एमस्यापी श्रदी इत संबंधि मासदेश सुरुः

जल्द सननेवारेकी समझमें न भाषे । पद्यय-पु॰ [मुं॰] एक प्राचीन जाति, ईरानी (!) ।

पद्धवी-सी॰ ईरानको एक प्राचीन मापा। पहिका-सी॰ (सं०) बारिप्रनी, वलकंशी ।

पाँ, पाँहर-पु॰ देर, पाँव। पाँड्सा - पु॰ चारपार्दका पर रखनेका भीरका हिस्सा,

षायताना । पाँई बाग-५० दे॰ 'पाई साय'।

पाँउ 🗝 – पु॰ पैर, पाँव ।

पाँक#~पु॰ दंब, दोचह । पाँका!-प॰ दे॰ 'पाँक' ।

पाँकः-वि॰ [मं०] पंकि-संबंधीः पंक्तिका । पांक्टेय, पांक्त्य-वि० [सं०] जो पंगतमें औरोंके साथ वैठमे

योग्य हो। याँनमें गुन्मिलित होने योग्य । पॉस्त~षु० पंस, पर, ईना ।

पॉग्स्बा!-पु॰ पंरा, पर्। र्पोराही-स्रो॰ दे॰ 'दंसक्षे'।

पॉली - न्दी॰ दीपद्वपर जल मरनेवाली पॉलवाली सीही.

फरियाः एशे. चिहिया । पॉॅंसुरी। –गी० दे० 'दंसभे'।

पाँग-९० गंवररार, वटार । पाँगानीन-पु॰ रेहमे तैवार किया जानेवाला गमक।

पॉन्स्ट-वि॰ पंगु, लेनहा। पु॰ लेनहा मनुष्यः पैस्की

उँगली (विचा॰) । प्रांत्रस्य-पुर्व [मुंब] प्रांत्रम द्दोनेसा भागः एंगरापन । पाँच-वि॰ वारमे एक अधिक, दसका आधा । पु॰ पाँचका शंख्या, ५; + पाँच व्यक्ति बहुमने छोग, अनता। जानि-बिरादरीके नेना था सरदार । **−थाँ**-वि॰ गिनती या क्रमभे पौचके स्थानपर पहनेशना । अ**॰ पाँची धा** पाँची देंगतियाँ धीमें दीना-भूद कायदा वठाना।

-संवारीमें नाम किरतना-पात्रना न दीने हुए।भी अपने हो बड़ों में समितिय हरता !

पाँचक∽दु० दे० 'पंपर' । पोचकपाल-दि॰ [शं॰] दंनरपान-गुरंधी ।

पश्चिम्म-पु॰ (गं॰) कृष्यक्ष दोगः अक्षिः एव मकारकी मार्जीः जेन्द्रीयरे भार उपदीयीमेंने एक। -धर-पुर

पाँचदस-वि॰ (११०) महीनेके पेर्डवे रिमपे धंदद्र । पोचन्द्य-पु॰ [गं॰] ५,द्रशा गुनाहार ।

वांचनद्-वि॰ [एं॰] पंचनदर्नारंथी; पंजाबरा, वंजाबी। पु॰ पंतरूद अध्या पंतरहरू राषा दा बराँका निहामी ।

पोप्रभीतिक=दि॰ (दि॰) १५३, वल, नेव सादि पीच भूगो दा संबंदा बना दुशा ।

यांच्यक्तिक-दिव सिंवी देवयद-संदर्ध । पुत्र पाँच महा-दरीयेथे धीर्ष । पाँचर-पुरु बोस्ट्री हेंहरर, पश्चे बार कराना है, जना

जानेबासा सब्देशिक द्वबरा १

योबलिया-स्तेत [संब] देव 'द'सार्तिस' इ

-पुताना-अपनी बान्दी देने प्रश्तीनै वहना कि वह ! यांचवविक-दिर (bie) यांच वर्षवा श्वीति पंचदियों।

40-8

पारमीकेय-पि॰ विशे कारशक्तीतीः पारम्हा । पारस्कर-पर्व विनी यह प्राचीन देशा यह सहस्वतहार मनि । पारम्यभेष-पुरु [मंरु] परादी थीने उत्तव पुत्र ह पारम्परिक्ट-दि॰ मिनी आपन्छ, आपनी । पारस्य-प॰ (६) पारस या पारस देश है पारस्यकृ×ीन−रि॰ [मृं॰] इधरे कुच्ये करना ह पारहरूप-(४० (१०) दे० 'पारमहत्व' । पारा-भी। बिन्ने एक प्राचीम मही । प्रश्न विन्ने एक मिन्द्र भाषा नहीं पर्या दहता एक प्रकारकी होती दीवार की दिना गारे या मधानेके थी देही दा पायरके द्वादहीकी दय दुगरेपर रमदर भगावी जानी है । ग्र॰ -विमाना-दिशी किया द्वारा भारी बनाना । पारायल-पर्व (ग्रेन) स्वत्र । पाराचार-पर भिनी दीती दिनारे, समय तहा समूद है पारापारीय-विक भिर्म देव 'पारानारीय' । पारायण-पुरु [मंत्र] दिशी ग्रंगहा आयत पाद: मनुष्ता: पार प्राथा । पारायशिक-विक, पुक [मक] पारायण बरनेवाणा, परागादिका पाठ बार्गेकानाः गान्न १ पारायणी-स्ते (मं) भरत्योः मनन, विद्या कर्मः Harr t पाराष्ट्रय-प॰ [sia] पाथर, धिला : पाराधम-पुर (एर) स्पूत्रा यहका बंदरा पर्वता एक मार्था गर्दे ।-प्यानिकार मार्ग्यो सही ।-प्राची-स्था माञ्चलको। काकारेका । मारावत्राधि-सी: शिको व्योजित्यसं सामग्री सना र -विष्या-४० ६% एरहरा व श्वर । पाराचार्य-५० (८०) पृष्ट्य । पाराचारी-की • (मं) श्वाणीया मदामधा का शाह तिहा। बारकारे बनीत कवलता ३ पारावार-५० [गेव] दे० 'पारायाद' ३ षारापार्शिम-विक [elo] की दिन्छी बरमुक्ते सक्त किनारेथे कुशुरे किमारेनाइ परेख गया हो। जिग्ने बिगी विषयः रिया का प्राथमध्य पूर्ण क्षण्य प्राप्त कर किया की। मनुदर-1 100 पाशास-१० (०'+) पराक्षण है एक वेरम्यण । विक परा-क्षर इत्सा कार का रजिल ह काराजाहि - पुर्व शिक्षे हरहते वा वेतावाल । पागारी(रिष्ठ)-पुर [रोड] १०-१फी अग्रस हारा वर्तन्त्र क्षारीर्कन्त्रका भाग्यस्य ब्रह्मेश्रास्य हा-न्यानी ह क्षाराहित-दिक [4]को स्वापनी क्षाराहित है। renamin t बाराप्राची - पन (संत) तरापाची एव बेटामाना व unfim-qu (da) fer t Mille-m'e fem , dier mit, mig miller femme. Kur etar 1 कर्मावदेशकः कर्मावदेशीर्शिक्षक्र)-पुरू (४०) राज्यः -500 1 षादिक्षिण-पुर्व (स्पर्व औरियार्ट भूप कर्राटिया ह

पारित्र-दिक किंकी परिवासीत्याः परिवाद्या । कन्न पारमी, परमनेवाणाः ग्रावधारियेभी पर प्रवर्शन । क मीट है। 'दरम' । पारिक्षेप-विक किंको परिकार कार्रिने दिसा ग्रमा र पारिगर्भिक-प॰ [बे॰] ब्रवना । पारिमातिक-दिश मिश्री थी दिशी शहरदे पारी क्षेत्र विषय हो। जो गरिकी भारी और ही । यारिज्ञात-पुर [संक] पांच देवनुक्षीकी एकः प्राविक्ताः क्यनतः वरहतः वक् महिः साधि ह पारिजालक-पु॰ (बंब) मद देवनुमः हरनितारः प्रशास कचनार १ पारिकामिक-रि॰ शि॰ी प्रजीसामा जिल्हा विशय i in is पारिणाच्य-नि॰ [ग॰] विशाह गंदंगी। दिशाहर्ने एपा एका। यह यह यह थी दिनी कोड़ी भारते विश्व है और neur fami elt fang-tidage fent giar i पारिणाझ-पु॰ [लंब] वारपारं, धीबी, बरहम श्रारी परेष्ट्र यामान । वास्तियात-था॰ [बं॰] बाच गुइनेडे बाम भानेशयी मीतियोकी सरी। जीवपर पहना वानेबाला निवेश वह SEMBLE SEMI I पारिशोषिक-दिक लिको शंतुष बरमेशना प्रमन्न बरनेmimi ! go geemie, enin ! वाहिरवज्ञिक-पर्न शिक्षे शहा वेदर यस्त्रेशमा । वाहिनीचिक्र-पर शिकी गरेरत धीर । पारियास्त्र-पर् [शंर] हेन, परिवारी: निपक्षिणना । वारियातिकस्य-५० (ते०) वह १४ कियार १६। शारी बा प्रमाने दिश्मेदे किय निक्रमा जाय । वारियाय-पुर्व (ग्रंग) एक मुनार्शन १ यारियाध्यक्ष-१० [ति०] पारियाच मामद पर्वता क्षापर क्याजेर,मा । वारिवाहर्व – पुरु (सर) पादर्व वर्, अनुबर् ह वाश्यादर्वकः वाश्यादिवक-पुरु [ग्रंक] अनुपरः वैदया भारत दे नवामस्त्रा ग्यापक अप र वातित्र -विव्दर्भ व्यवस्थान्य, माह्या विराण प्रमा १० आहे, जनसाम, माहणण है वृत्तिकारुम्य - ५० (०) इत्। अन्तरभागा ब्रामा भेषमगा ह aliena-do [tjo] atacet get gettet stagen विका भौताबत देव व शाहित्रक्रक-नृष् (रांग) देवरादा शीमा एव मुक्तेपन १ वारिमाध्य-वृत्र [र'र] म"तत् वर मानिय हेर्पेक्टा माना 12 45 TH S utfentfen-fes feiel eifermagt fernt uiff fore felon with four wire, it wit felow wi after at anyther a वार्तिम्बिक्यम्-पुर [४'०] दर्शाम् अस्तामुका वरिमार्थत बार्रिशालन चन्न (१४०) स्टिहेर, देश र व्यक्तिक चन्त्र हिंदी की यद हर है mifen ein-le feit ur ein eb ete eineitelt कार्निक्षां अनुवर्त्व हैया है से बादि हा कार्य के हिर्देश कार के

शक्ति नष्ट हो जाना; चल बमना । -का खटका-पैरकी आहर ।-की जूनी-तुच्छ सेवक । -०सिस्को खगना-छोटेका यहेसे बरावरीका यावा करना। नकी खेड़ी-वंताल, दांदार । -गादना-जमक्द राहा रहनाः स्वार्धने ट्या रहना । -धिसना-चलते-चलते थक बाना। -जमना-द्वतापूर्वक स्थित दोनाः स्थिति दद दोना, ऐमी रिथतिमें दोना कि इस्ने या विचलित दोनेकी नीवत समाये। -जमाना-स्त्तापूर्वक रिथत होना, अपनी स्थिति स्ट करना । - डिराना-रिथर न रहना । -तलेकी धरसी रासकना-बहुत थपिक घररा जाना, होश उड़ जाना। -तरंकी घरती सरक जाना या मिट्टी निकल जाना-रतस्य रद जाना । -तोद्दकर येठना-कही जाना-आना बंद कर देना । -सोबना-बहुत अधिक चलकर पैरोंको थरा देना । -धरतीपर न पड़ना या न रखना-षष्टमे चर रहना । -धरना-प्यारमा । -धारना !-दे॰ 'पाँव धरना'। -धोकर पीना-बदुत आवमगत करनाः चरणागृत हेना । (किमीके)-म होना-टहरने-भी शक्ति या दम न होना, द्वनाका अभाव होना। -निकलना-दरनामी फैटना। -निकालना-अपनी रिधतिसे बद्दर बाम बरनाः मनमाना बरनाः दुष्यभेमें प्रकृत दोना। (किसी यामसे)-निकालना-१४६ हो जाना । -पकदना-पर एना, बदुन अधिक दीनता और विनय प्रकट करना । -पदना-चरणीपर विरनाः दैन्यमानमे नित्तव गरमा । -पर पाँच रूपकर बैटना-वेरावर दोनाः कुछ काम न करना। (किमीके)-पर पाँच रग्यना-विमीका पूरी तरह अनुगमन करना। -पर्यादनाः -परिन्यपी करना, पेर दवाना !-प्रमारना-कश्या करना: शहनाट करना । -पाँच चलना-पैटल षणना । -पीरमा-एटश्टानाः परेशाम श्रीमा ।-पुत्रमा-बहुत अधिक वावभगत करनाः विवाहमें कृत्यादान करने-या ने बरका पूजन करके छने कन्या समर्थित करना। -कृतना-भय आहिते कारण ठिटक बाना । -चेहने जाना-दुलहिनहा पहले पहल सगुरात जानाः दुलहिन-का समुरातमे पहने पर्व अदने माददे दा दिनो और रिरनेशरके यहाँ जाना। प्रश्ताका कुछ समयके निष अपने मायदे या दियो भीर रिश्तेशस्य वहाँ जाना ।-कृष्याना-मधिस पानिसे जिए प्रदान करनाः कथिस पानेसा सीम मरना। -यदाना-भीर अधिक नेगमे चलनाः कन्त्राः स्ता। =बाहर निकलना=दे॰ 'पाँच निकलना'। -भारी होता-गर्नेछी होता । (दिमीमे)-भी न भुलवाना-अति गुष्त समहना । -में बेही पदमा-वेशमधे प्रमा । - में मेंद्दी समना-केर्य काम करने: के निर बाहर म जामा । —सेपना॰-प्रण करनाः वाजी नगता । -स्यमा-धरम सूबर प्रयास **ब**र्ला । -समेरना-देर विकेतना पृत्यक्ता ! -मे पाँव बॉपरर स्थमा-एटा अपने पाए वा देखरेगाने स्मना, श्री श्रमने हा मॉसोंडे गामनेने इस्ते न देना । पीयका-पुर वह बदका की दिशी कारक्षीय क्यांन्द्री क्षेत्र रघटर प्रकोदे तिए छार्न्ड मार्नेमै सिहाका बाहा है।

पाँपश्री-भी॰ सर्धाः = जुलाशीशच्द्रा बुननेका कारहा |

युक्त काहरा।

पाँचर्य= विश्व नीयः तुम्छ, हुद्दः मूर्यं । पु० दे० 'पीवहा'।
पाँचर्या= मी० दे० 'पीवही', सीदीः क्षीतीः, रेका ।
पाँचान, पाँसन-विश्व मिंश्] नहरिका करनेवाला, अपमानित करनेवाला; प्रष्ट करनेवाला; इटः देव । (मावः
समासमें क्यवहान-पीकरत्य-कुल-पाँचना) पु० तिरस्तार,
पूषा।

पाँशव, पाँमच-वि॰ [मं॰] पांशुसे उत्पन्न, धृलिमय । पु॰ नोना मिट्टोसे निकाला हुआ नमक ।

पांतुर, पांतुर-पु॰ (शं॰) शीन; शंत्र, पंतु व्यक्ति। पांतुल, पांतुल-पि॰ [शं॰] निमम पुण नगी हो। सर्थ-दिन बरनेशन (सुन्यांतुङ)। भगवित्र। गरीप; स्रेप्ट, व्यक्तितारी। पु॰ व्यक्तिवारी पुरुष शिवका एक अस्त

पृतिहर्त्त्र ।

षोज्जनः, पोसुळा-सो॰ (सं॰) पुंदयपी, म्यक्रियारिकीः ् दबसमाः पृथ्वी । पास-सो॰ रागः, धोनर भारिनी सादः समीरः ग्रहान

विदाला द्वारा महुआ । विदाला द्वारा महुआ ।

पॉमना -स॰ कि॰ शेवमें साद देना। पॉमा-प॰ दे॰ 'वामा'।

पामा-चु- ६- पामा । पाँमी-मी॰ रस्मीदी बनी दूरं पास-मृमा रप्रमेशे जाने । पाँमु, पाँमुरी=-की॰ पण्डी-''''ममक्दी पाँमुरी प्रमेशि पाँमुत दें'-बिराहकी ।

पाँहीं - स॰ पास, दिस्ट ।

या—पु॰ (या॰) पेर, तीन करमः क्ष्मी वह ।—भीदान-पु॰ मारिकके टिकटे, मृंद, कन सारिमे तेता की माने-सानी एक मकरकी करोर यो पर पोठरेट कामने भागी रें!—कर-पु॰ करफीलका व्याप्ता भागाः निरमन-मारः —क्ष्म-दि॰ चींद मारनेदाना, मामनेदाना। -प्रामा—पु॰ सक. मुः महादान्तरे निनिम्न दगाना पुना दियो स्वाध्य काना सादमा । मु॰ निकासना-दान केर्द्र कर सन्ना !—० किर देना-परस्य स्था । माने सार्वेष कान संस्मा ।—० किर स्था नाम्या (या । माने-सार्वेष कान संस्मा ।—० किर देना-परस्य काना।)—विद्यान-स० कह चींदर । मानेपान दगाना। चार्यक्षीच-ति [मंग] प्रशंतवर शहनेवालाः प्रदाना । वन बह भी दर्शनार रहे, पहाशी: पहाशियोशी एक प्रशान प्रति । पार्वनिय-दि॰ [मे०] दर्शनने सारश्र । पु॰ शुरुमाः हुनानुन-बा देखा । पार्शय-पर्शानी पर्श या फरमेने यद करनेराता दीया । पार्श्वहर-स्री० (३,७) प्रामी । पार्य-१० [मं•] निकट, पणका । पु॰ क्युद्रे नीचेडा या ग्राहीते वादे-बावेदा माग, प्रोबश भगड-बग्छवी यगद्रः सामीव्यः गारीके अरेके हीरा पार्वनायः पमनियो-बा गुन्द, रमनियों। बया, भूगेता, एत । -कर-तुव रहाथा मामगुबारी । -गा-गम-दि० गाव रहनेदाना । go परिवारक, सेवद, मीहर !-गम-विक ओ शाब हो: रशिन, आधिन र - चर- विव देव 'पार्वन' । -वस्ति-.क्षी • वर्गणी शोभा, सद्यान शोभा । —व्-पु • दर्दिनाहरू, शेक्षः। -वैद्या-पुरु बगलः। -नाध-पुरु जैलेके रोर्देशी तार्थका । -परिवर्णग-पु॰ कश्या वरमना।-विष्यख-म ० ६९४१ वट धेरू । —आस्य-पुर वस्प, बाल्हा ~#श्रही(शिष्)-पु॰ स्वयं यह गुद्रा ।ं-वर्षप्र~पु॰ शिक : -- वर्गी(मिंगू)-विक शाब श्वमेवानाः वगनमे हा आहरताम दश्रीवाला । एक परिचारक, मेरफा महत्वह । . –शाय-वि ब्रायमें शीनेवालाः को दिनी करवर छोपा करे । -हाल-५० धीवरमें देशियका यहं । -संशास-पुर्व हेरोदी बगानी ओहाई (शुरुवशाध्य) । —शुश्रक-पुर बर प्रदान्द्रा गरना । -व्य-दिक भी बत्रवर्धे दी, लगी-दाय । यन बाहाबर, शाबीत पारिकार्यक्ष । पार्श्वक-पुर [bis] राजपूर्व कराया अना घोरा साथी: बादीगरा क्यर वा भूनेतामे धन क्यानिशका । विक वार्थमंत्रीत १ यात्रमंत्रीय-दिक [शंक] हो। यासदे हो, वार्थदर्श । साप्रश्रीमध्यर-१० (१:०) परियारक, धेनस । पाप्यांचान-दिन (गेन) थे। यात्र आशा ही व मृत्युविभिन्नमा । (११४) वाचेत्रूपः । बाह्यांचमर् -पुर्व (शंक्) पार्यस्य । याप्यांशक याप्यांगीम-विक [लंक] कम बेहा दूथा, Tifeet 1 मार्च मुर्दिश - अरे + (शंक) वस्त्री ह शास्त्रिक-दिव (तेन) पार्थ शंत्रको । पुरु प्रकार ती, नर्फ-बारा महत्त्वम, मानीः बाजीनाः कृषे अनुष्या बन्ना वा शकः ति देशा अधान्त्रेयामा । कार्थीदर्शातक-१० (तार) देशका र कार्यस-(८० (मण्डे प्रदाः विषयुक्तभेरते । पुरु हथ्या STATES F मार्चेनी-की (१४०) श्रीवरीत दुर्ले ह बार्चप्र-पुर्शासरो माजामाहा प्रतिकासको प्रका हिस्सी देवला-AT WHITE ! बार्केट-मी + (रेंग) प्रतिकृत क्या व कार्यक्त न्यु र (वृष्) शहायाह ह वार्तिक नर्ता के दिल्ली कारी। देश, विश्वास अग्रास्त केवलेका है बालायू-विक बाला पूजाई की बाला आहं करें है

करनेशना चन्द्र होताहै प्रहमशहा मायकः विष शहा । -धाम-प्र• प्राथवार, डीवर १-च-प्र• मेलाको स्थाने प॰ दे॰ 'दारियधान' । पार्यंस-पु॰ [थं॰] दाह पा रेड हारा भेरे करेगारे बालका पुलिया या पैकेट (—क्राफ्टे —पुरु फार्निनों के क्यार्था करनेवाच्य कर्मयारी ३ -- हेम-स्पान पार्मन क्रीनेवाणी रेन्यादी ३ -बाय-५० देक 'दार्गमद्राद्री' (पार्लंड-पु॰ [मे॰] पालड लामध भागः समर्थः बाय वर्षाः र वार्यकी-सी॰ [सं॰] वालक सामध राजाः क्रेट्स सामक र्गपट्टम्य १ पार्श्वय-५० (मं०) याण्य मामस माप । पार्श्वया-सी॰ (तं॰) बुंद्रह । वाह्म•-पु॰ प्रथ्म । पाल-प्र- थियो स्था करमा स्था करतेशहा परवासा eran Grena i fes que i sun-us autumi f पाल-पुरु साम, वेला आदि प्रशानिकी एक विदि निपर्ने करे वसीवर रशकर द्रमा वर्षाचे हो ४४ हेते है। भारके सरपुरुके शहारे शामा बानेशाचा वह अपदा दिग्रमें दयाने अरनेने थान यक्ती है। ध्यातिषीको एक उपाणि नंगामका यक प्रविद्य राजपाश गारी मा पालको आदिका कीहार भूत महीदेवे बनावते लिए चेदेदेशी महश्च क्षेत्रा मानेबामा शारा कपना कार्रिश करोंग मैजना 🔸 मीपा मेन-देश चाल शरबर वह भागे'--वक केवा विमाश, बग र १ --बीग --पुरु बराज्यका यस शक्तिक राजरण क्रियोन रंग और संगर्पर **७७% है॰ से ११६१ ई॰ एड शाब दिया था ह** शास्त्रक-दन पन्द, वर्षा ३ यामध-पुर यह प्रशिष्ट सागः (ग्रेर) इप्तरः, पापमः सानेः बाला: शाका: शांधा पीता पीता विषय प्रशा तिमनी लिए क्वांक विरावे विभोदर यामन रोला दिया रो। दिर बाबसः ब्रह्मेशकाः रिव्योग्समः (वैशे स्रोन्सामकोः 4 ८०५-'न् दिन दानक ने अ बढादे'-गामपदिया (क्षालक्षां - १८१० धराय हेरे हिस्सानेकी संबद सहसेके निय क्ष्यरक्षेत्र वृद्धे कीचे रक्षा सामेशाला सक्कीक प्रवास क्षालकाच्याः चपात्रकाश्य-५० (गं०) तदः मृति श्री अमः मान क्राइटिंग अनेन हरहरेष के प्राथमें, अनम अपनाई, अने कार्त है। अब, एवं कारित गरब शास विशेष शापि बीह बार्टिये महार, हुए अहिया नियम है। क्षात्रको - को - का १९४० व प्रश्ति किये अन्यान अविद्रा die f. menfent, füfent, einem fire ! कुल्लाहरू कुल और जिल्हा द्वारा सरकार र है और परेशाओं कर ER TIPE

पृष्ठ मानः बीतनेकी बन्द्रात क्रिकेश प्रशासन, होहरा

व्याचः तहसीकान् । क्याः महमतः हरः प्रेयती। ब्रुग्ते।

-श्रेम-पु॰ दह विश्वेदेव ! - इह-वि० दीवेवे दहाने-

बाला । पुरु अनुवादी (अपने पद्धा दी (१४८६)।

करना । -बाह-पुर मेमापर चीरोही भीरने सहदय

-प्रदम-प्रश् शहरो शैनावर गोठेवी ओरमे आह्या

शुद्ध द्वरववाहा, निष्पाय, स्वता, नेकनीयन । पुण्योग धाननेकी सामी । न्याद्गी न्यांण पास्त्रात्र होनेका मान पा गुण, गुद्ध द्वरवता, स्वारं, निष्पायता । न्यां निष् पवित्र दिधिने देवनेबाहा । न्युह्ध्यत्र न्यांण स्वारं आदि-की भावनासे रहित त्रेम, नियुद्ध श्रेम । न्यां निर्माण भावारसी शुद्धता, नेकनकनी । न्यः निष्युद्ध भावस्य-वाहा, नेकनकन । न्यांग्र-निष्युद्ध ।

पाकर-पु॰ दे॰ 'पाकेर'।

पाक्टो - वि॰ पता दुआ; परिपक्त बुद्धिवाला, अनुभवी;

सवल, मजबून । पाकद, पाकर-पु॰ बरगदकी जातिका एक प्रसिद्ध वेड ।

पारसाह-अ० क्रि० प्रसा । पारसीह-सा० दे० 'पारह' ।

पाकल-† वि॰ पता हुआ। पु॰ [सं॰] दे॰ 'पाक'में। पाकल-मी॰ [सं॰] युक्षविद्येष: रोहियी।

पाकार-पु॰ कोदा। वि॰ क्का हुआ।

पाकागार-पु॰ [सं॰] रसोईवर ।

पाकातिमार-५० (५०) और्ण भागानिसार।

पाकात्यय-पु० (सं०) ऑसका एक रोग । पाकाश्यमस-पि० (सं०) को परकेपर हो। विकामोग्मसः

पाकारि-पु॰ [मे॰] इंद्र ।

पाकिट-प॰ दे॰ 'पाकेट' ।

पाकिस-दि॰ [मं॰] परा हुआ; पदावा हुआ; पाद दारा

मा। (लरण आदि)।
पाकिस्ताल-पु०[माः] हिंदुरतान में सुमलिन-प्रधान प्रदेशी(सिध, पिन्हों-पित्ताल, सीमाप्रीत, परिष्टमी वंजाव और
पूर्व बंगास)मा संग जी १५ अनतत, १९४७ है०से स्वर्णन

रोज्य है । वाकिस्सामी-वि० विताली याकिस्तानका । त्रक वाकिस्तान-

का रहनेवाला ।

या रह-वाला । पार-द्यां॰ [पा॰] शुद्धता, पवित्रना; निदौवता, निष्ट्रहं-कृता;स्तार्थ ।

क्याःस्ताह। पार्वा(किन्)-वि॰ [सं॰] श्रे पद रहा हो (समासांतमें) । पार्वाप्रसी-स्वै॰ (पा॰) स्टब्हं: हासता, निर्दोषनाः

सुंदरता ।

षाचीतार्वातः (पाः) गातः सुबराः परिमानितः निर्दोत्रः, निष्ठत्रदः सरस्य सम्मान

निष्ठत्र हा सुदर्द हराना सन्दा ।

पार्- पाक्र-वि*, पु॰ [ले॰] साता प्रतिशासाः पान्तः।

पाने र न पुर्व (अर्थ) भेगी, रेब र नमाह न पुर्व बहु को बोरीन से नेबोने रववा पैता भारि निशासने सा त्रेब बारतेका बात बरे र नमारी नचीर पानेटमारका बेशा र मुर्व न सहम बरवा नपुर रेना, पुत्र रेना र

पारय-दि॰ (गे॰) पार्टे बीग्या चलाय १ पु॰ अशासारः भीगारम सारी लगना धीम १

पास-दिश् विशे पाने शेर्षय स्थानेतालाः, यादिका विशे यतने शेर्षय सम्पेतालाः

पासपातिश=(4+ (4'+) प्रशास क्रिनेशमाः कृष्टः शकने-राजाः पासिक-वि॰ [मं॰] पशु-संश्यी; पशुका; पास्तमरमें होने-बाला; प्रत्येक पशुमें होनेवाला; हर पंत्रहर्ये दिन होनेवाला; चित्रियाते मंश्य रस्तनेवाला; पशुषात परनेवाला; वैक-रिक्क । [स्त्री॰ पासिकी'।] पु॰ बहेटिया, निश्चमार; विकस्प।

विदस्य ।

पारांड - पु० [सं०] वेद-विरुद्ध आनारण यहनेवाला;

दिवावरी जवातना या मिक, पृत्रा-पाठ आदिका आप्रंपर;

वक्षेत्रस्य, त्येंग, वंचना, एल । वि० जो वेदके विरुद्ध
आन्दरण बहे । - फांडी - वि० [देंद-विरुद्ध आन्दरण
बहनेवाला; मिक्र या जवारानाजा होंग दचनेवाला; के वेक्क व्यवस्था करने या भोगा देनेते लिए पृत्रा-पाठ
आदि करें, एलिया, ठगः पुर्च । सु० - फर्माना - दूसरीं
को ठगनेके लिए विचेष प्रभारका रवींग बनाना; दूसरीं
भोगा देनेके लिए अनेक प्रहारके आयोजन करना। इसी-

पागंडी(हिन)-वि॰ [गं०] दे॰ 'पासंड'।

पार-पुः आषा महीना, पेदह दिनका पद्म, परामाः समरेकी भीडादंकी दीवारका वह तिकीना कपरी भाग निसंदर 'बहेर' रहाते हैं। पारावाडी दीवार।

पान्तर-की॰ रहार्रके वाथी या थोतेको रहाके निर पह-नायी जानेवार्टी सोदेकी हानः । १ पुरु देश 'पाक्ष' । पात्रदरी-न्दी॰ अनाव श्रदनेके निर गार्शवर निर्माण जानेवाला टाट ।

पासा-पु॰ परः पैसः ॰ कीता । पासानः -पु॰ पाषामः, परधरः ।

पान-मी॰ पगती हे पु॰ वह शीरा या विजयम जिसमें भिठाई आदिको दुवाते हैं, चाशनी; चाशनीमें दुवायो हुई पेटे आदिको मिठाई: मधु- चीनी श्रा मिनारीके चौरेमें सनी हुई दिशेष प्रकारको आपर: अपनेक ।

पासना-स॰ कि॰ पास या शीरेमें पुनास, भाशनीमें दुनासा • क॰ कि॰ सम्म दोना, शराबीर दोना ।

्रद्रवाग र के के कि करने दाना होता, शराबीर होता । पागरी-पुरु नावमें बीधा गानेवादा वह रम्मा विस्कृति स्वहारे अभे दिनारेको और सीचने हैं ।

पागरः- वि॰ [मं॰] विश्वहा दियान सराव हो गया हो। विरित्त, समसी जो वेस, क्रीव मारिम भिष्टे बादर हो गया हो। की मूर्रे, बहुत सामग्रा भन्ता। - पाना-युक् [दि॰] बह जनह जहां पागंती रेगरेस भीर जबभार विश्व जाता है। पागनेद स्टब्रेस जाह।

वागान्यवन-पु॰ पानन होनेहा भाव या रोगः एट प्रशार-की मानिक न्यावि जिल्लाने विषेठ तक हो आधा है और होती मालकातिक हाम बरना है, उत्तराः मूर्गता, मानकता

पामन्त्रित्री-स्थै॰ काणी, स्थित्त् स्थै ।

पामन्त्रेत्री-स्थै॰ काणी, (रहित्त् १दी । पाम्र(-द्र॰ सराज्ये।

पायह-दिन (५०) परानेवाला प्रयोशका १ पुन स्मीतं बनानेश रिया बरनेशाला स्मीतवा, स्पन्तातः भीता दिन्दं क्षेत्र भेरीनेने बना भीतवते प्रयोगको भीत्र । --मी-न्यी-स्मीरासिन १

पाचन-पु॰ (गं॰) पश्चे दा पप्तेगी दिया अति। अध्याम् स्थाते (पाना नाम दर्गेगात) प्राप्तिमा पालाई।-व्हीव द्वीद व

पायन-विश्वतिको पुरुष बर्देशका, परिण बर्देशकाः शह, परिष । १० कहि। देशवामा विभा विद्य प्रश्ना प्राविषया मानशविष विद्या शुक्ष करनेशशी शहा श्राद्रिश जन्मा गोहरा, बजारो। बज स्मामधी भीवरिश पीलेखा देश शोशन । –ध्यनि–पु॰ इ'स ।

पापमा- • ग० जि. प्राप्त करना, चानाः महसूस बहनाः समहानाः बीमना, गामा । पु॰ हुम्मेंने बददा कादि पाने-का मधिकार। यह रपवा या हम्य भी दमरेने जाना हो ।

पावनी-की॰ (मै॰) संस्कीः बादः संयाः हर । पापमान-पि (रे (रेड ग्रंप) शिवमें प्रायान अफ्रिक्टी अमृति की गरी है (वैश) ।

पापमानी-न्दी व [शंव] प्रमान मधिबाददी गुलः । पायर-पन [रं.+] वह यामा या पानेका पार्व जिल्लास वी विदियो बनी की। यह यागा में हतेश निहीय हाता [भ॰] यह शक्ति दिसर्हे दलमे मरीने चलावी जाती है. दवशीद जिने निष्याः धरिकमा शक्ति र्रभव्यमः शासन् । अस्म-४० ६५११विमे अन्तेशका सरका। -गरेशन,-शादम-पु॰ वर श्वाम प्रश्नो विश्रवादे विष् (भागी तैयार क्षेत्र भागी है। विश्वभीयर ह

पावसी-सी॰ पापी । याचम-५० सर्वे भए ह

माबा - रेषु र रेश 'यामा'स्थीरमान्त्रेते कश्रह-परिश्वमी विचन एक प्राचीन मान पड़ों हुए सुग्र सम्बद्ध हुईने में हैं।

पार्धा=भी• मैनाशी एक प्रार्ति ।

पान-पुर (शेर) शहरते सारी गाठवाना हम्भी, शह काहि-मा विशेष प्रशास्त्र पाश जिसके जम्मोने प्रापी वैन करण है। कीम (पाधीन बालमें सुद्धा भी सानुबन्धे क्यने क्याबा प्रवीत किया गांचा बारे। बहर-बहिन के बे कि मेहा आबा बनारा दिन्दे बन्दे हुई भीत्रका होरा भेगानेत्रामा बराई. र्थवन । (मस्ताब पात छन्द न्यह । श्वीता और अवश्र्य भारि मुख्य ब्रह्मा है। हैते-देशका, क्षाराम, देश-प्रभार) — स्टिन्डिक विक्ति स्टेसे प्रश्नि हो। ४ न स्टिक्टन भीत प्राप्त - प्राप्त-पुर शतरहरूपी अन्य र अध्यक्ष -पाशि-पुर बरण निर्दाह-पुर पनी बारियी दिलानर -मंच-पुर पान, पदा ३ -मंचक-पुर विशेषाह ३ नर्वयम् न<u>ीर प्राप्त ६ नवश्चन</u>(६० शासने वोदा नुवरः ष्ट्रोपने पीरम् दुवा १ नक्ष्युरूष्ट्र काह्य वस्था दशीक्षकः, मेंह हिल्ला मेंडन हो प्रकार कर निकास मान पान और बाब पानदी मंदीन है है होतर कब एक सेल्डे क्षेत्र प्रस्ताति । बार गाँ हे (४०) र न वृत्रभू - व्यव - व्यवसाय teil ! mgan-jo een que fee fint gielt क्षेत्र हो है

atten - er frat unt, fonntang with, tier : -- मीद्र-पुर पना रोटनेश रहार वा हैशान ह ब्राह्म - दुव हिल् मंद्रम, दुवर विकास में नाम है बन्ताम-दिश् (संग्) बहुत्र रेसे, बहुद्दर कुर बहुत्रीका 和美食 多一型性医疗一直多 每10% 电74 图 पाराधाराधानपुन (ताव) १५४ अतहता ३

TT WE - TIL To "segue" I

प्रसानि -१० (६०) दिनी प्रत्योधा एउटी धीना शता पाशिष्ठ-दु [ले०] निरीमार, बरेनिया । यातिम-रिक भिर्म प्रेस्त प्रकार इस ।

पार्सा(शिन)-५० (ग्रं०) वर्ग्य यसः गात्र, बहेन्स्र । विश्व प्रदेशका ।

पाञ्चन-वि॰ [म॰] प्रमुख-वर्वकी शिक्ष-विकी शाहिक बा: शिक्स दिया दुना, शिक्ष प्रत्या शिक्ष प्राण क्या थे। पहार्थात वर शिवारे लियित हो । पुरु परार्थेत हो शिक्स अवाग्यः वस प्रतिष्ठ प्रतिष्ठ स्थापन प्रतिष्ठ माननेशमा, दल शब्दा अनुवादी: बद-पुन्त । -पूर्णम्-पुर पुर प्रसिद दर्शन दिसमें भी होते दिसा, कीर हिस्सी वनका अधीषर माना गया है। पाद्यसाख-दु॰ (नं॰) रह भीषम अस विने अनेनने

शिरमें प्राप्त दिया था। पारक्षाञ्च-५० [मं•] पशुरामन, पशुरामनको पेशा । पाद्यविद्यक्र-पुर्व (ग्रंग) यहाने वह स्थान प्रदा गरिता

बॉया प्राप्ता था है

पालवंबका-सीव सिन्ते बनिरेती । पाक्षाय-विक शिकी पश्चिमहा, पश्चिमी। पश्चिमहा रक्षतेवालाः बादवाः विक्रमा । युक्त रिएना दिला। । पाचा-श्री० शि० वात्रा पाधानाम्ह । पार्णद्र-दिक [बंक] पुर देव 'प्रवाह' ।

वार्थप्रक, वार्थिक, वार्थशै(दिम)-दि॰ (गं॰) देश taries t वाचस-४० [संच] येरदा गस गरना ।

प्राप्तर==श्री• दें+ 'दागर्' ।

वापान-पुरु (ग्रंत) राचर, शिला । नगरीम-पुरु प्रकोदे मेरके रूप होनेरणी की गुरम । नवपूर्वी-सीर भटरत सही केटस । क्याचा-दारसक्त पर बारनेही ऐनी । -भेदबा-भेदना-भेदी(दिन)-५० दश देना, बदायभेद, दशर्पर । दिन दन्तर नीतने वा बन्दरेशका उन्होस्-पुर अपूर्णा, प्रदेश । ज्यसिन्धीर बहुरतहे प्रोत्तरी शुद्धा वा साली वरदा - हुनुष्ट् -दिन बिगदा दिन पन्दायी शरह बना हो, निरुद्दर, निर्देश है बाब ची:-शो॰ [स॰] राजरङ नशासा जाना । (१० मी०

करीत, बन्दादा दिस स्थानेशाणा । प्राथाय ० – दु ० या पार ।

वार्थता-पर दिए व "बान्ज"] मुरामुद्री की री बरादर बाबेंग के हिन्द हकरे ५४देश के र स्था पानेशमा ब्रहा औरी का प्रवान्द्रीय होता व हान (विशोधा) - भी म श्रोतान हिन्दे बुधारेने इस मी व होता।

ब्राह्म-का सरीह, अवराद, दुरदा सराग करियानी, वृद्धि हो है। इस है अपने के स्वर्ध है। लक्ष्या प्रचला प्रहेल, क्षेत्रहे जान ब्राप्टनेती हैं में देन साली है -que me us guit gibe, un quit fent! नवीर-युक्त एरी नुन्देशि बन्देशी गई संबर्ग थी। तुन्त्रीहे सदय क्षीरिकरण प्राप्ता सहिती है उ स्थापन, स्थापन महिन व कंत्राचा क्यांच्या । क्यांचा करिया पुत्र है व रि व्यंचारे र क्यान्द्रक-पूर्व है क "क र पर है है इसून (दिशक्ति) न सम्पर्ध

दीवार; दो दीवारोंके भीच कही, वाँस, घटरा आदि जड़कर धनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजे रसने दें * पहा । सु॰ -फेरमा-विवाहमें बर-बन्याको एक दूसरेके पीड़ेपर केराना ।

पाटिका-सी॰ [सं॰] इक दिनकी मजद्री; एक पीधा।

पाटिस-विव [मंब] फाड़ा हुआ, विदारित ।

पारी-मी॰ [सं॰] परिपारी, प्रणाली; रीति; अंतमणित; बहा, पारी। -नाणित-प॰ गणितशास्त्रः गणित।

वसा, पर्टात (न्यापा पुन नारकारका कर्याना प्रतिन्दित विशेष प्रकारका कर्याना वह नारकी विशेष प्रकारका कर्याना विशेष वह विशेष प्रवाद कर्या क्षिप्र वाद प्रवाद कर्या क्षार प्रवाद कर्या क्षार प्रवाद कर्या कार्य क्षार प्रवाद कर्यों कार्य कार्य क्षार क्ष

पार्टीर-ए० [मं०] चंद्रमः धेत, मैदानः दीनः बादलः एलतीः एक तीक्षण महा जकाम, प्रतिस्थायः बेणुसार । पाट-पु० [सं•] पुरनेकी किया या माना कोई भागिक या देक्पाक संभ निवासित रूपने प्रत्नाः बेडपाट, ब्रह्मवद्याः पदा था धदाया जातेवाला विषयः वि.मी पाट्य-पश्तकका यह शंदा जी किसी एक विषयंसे संबद ही, परिच्छेद: किसी विषयका उत्तमा अंद्रा जिल्ला एक बार्मे पराया लाय-शस्त्रः वाष्ट्रवः पत्त आदिका छिथिन रूप । -च्छेद-प० पाला विषयी बीचमें बीमेबाला विशासः यति ! -शोप-पुरु पाठ-संबंधी दीप (अटारह प्रदारके पाट-दीप गिनाचे गर्धे है, और-दिस्वर, बिराय, विदिल्ह, ग्राकरवर आदि) । -निश्चय-प॰ दाद पाठका निश्चय करना । -भ-मी॰ बह स्थान तही बेटीका अध्ययन किया जाय ! - शेल-प॰ दें० 'पारांतर'। -मंत्रही,~प्रास्त्रिकी -सी॰ मैता. सारिका । -शास्त्रा-सी० वह स्थान या संस्था प्रश्नी विद्याधियों हो, विशेषधर शोरी बद्धाओं है विद्याविधों हो एक था अधिक विषयीकी शिक्षा दी जाय, विद्यालय, रहस्तः बह शियानय जिसमें भेग्रन पहाथी आया संस्कृत पटालेका वियालव । - शासी(सिन्)-प्र• वियाणी, छात्र । -धार्खाय-दि॰ पारधाला संरंधीः पारशालाका ।

पारक-पुर [मंर] कथापदः स्थानागदः गुरः शाशः प्रते बानाः मादलीका एक शाः ।

पारत-पु॰ [रां॰] परागेशे किया, अप्यापत । -श्रीमी-

पार्शतर-पुर [गंड] द्वारा पाट, निम्न महारका पाटाविशी पुरुष पा मंपरे किंगी अंशका उनकी दूसरी माँव का मरिपोने दल्हा क्षेत्र होता, पाटने निल्लाम होता।

पारा-पु० अवाम और मीरा नाजा आरमी। अवान वेल, वार्ष, शेमा, वददा आर्टि व्योक सिंक] पारा नामशे

पारावणी-भी (तंर) पाठीका समझ वह पुक्तक किसमें दिनो दिवतदे पारीका संग्रह हो।

वार्टिड - दि॰ [११०] श्री सूत्र बाहरे शिल्या हो । वार्टिड : - ११० | यहमें बारी बाहरे बालो बाहरे पाटित-वि॰ [सं॰] पदाया हुआ।

पाठी(ठिन्)-पु॰ सि॰] वह जो अध्ययन समाप्त कर सुका हो; पाठ करनेवाला; पदनेवाला; चीतेका पेद । स्ति॰ 'पाठिनी'।] -(ठि)कुट-पु॰ चीतेका पेद ।

पारीन-पु॰ (सं॰) एक प्रकारकी मछली। गुगलका पेहः धरने-पदानेवाला। पुराज सादिका बाजक।

पाठ्य-वि॰ [सं॰] पहने योग्य; पहाने योग्य । - कम-पु० -पुस्तक-व्यी॰ निक्षी संस्था या परीशा-शनितिको नोर्गे किसी क्याने विधार्थियोंके पहनेके रिष्ट निर्धारित पुरसक, कोर्सनी किताय ।

पाइ-पु॰ भोती या साहीका किलारा, कोर: मधान: कुएँको हकनेके लिए रूकड़ी कथा किट्रयोंका बना विशेष प्रकारका होंगा; बॉप; वी दीवारोंके बीच कही, बॉए, परा साहि वहकर बनाया जोनाला आधार जिमपर भीते रमते हैं। वह सह सहता जिसपर गृह्युईड पानेवाले अपराधीको फीसी हैनेके लिए सहा सहता जिसपर

पाइट्ट॰-री॰ पाटक गागका बृद्ध । पाइसाखी-पु॰ दाखिगास्य जुलाहीत्री एक जाति । पाइन-पु॰ दोलाः महरूताः एक समुद्रा मछलाः भैसका

नर गधा ।

पाडिमी—सो॰ [सं॰] मिट्टीका बरतन, होते। । पाइ—पु॰ पीता वह पीता नितरर सुनार, छोहार आहि काम करते समय बैठते हैं: रसवाक्ष्मे बैटने-सोनेके लिए सेतमें बनावी जानेवाली मनाना दुर्लेपर रसा जानेवाला यहानी तरहका लक्ष्मिक खोषा सुनारीका महात्ती करनेके कामना पक जाला; किनारा (रस कर्ममें स्तो॰ की)। तरिल सामना पक जाला; किनारा (रस कर्ममें स्तो॰

वाइतः - स्वी० पत्नी बानेवाली बाताः मंतरः आहु । वादरः पादर-पु॰ एक पेट शिष्टारे पत्ते देनके पत्तीके समान क्षोने हैं और शिक्षमें लाल वा गांकर पुन्त लगने हैं, पारलः । • वि० किमारवार १

षाद्वा-स्वो॰ पाठा मामग्री लगा । ७ पु० दिशगरा पह भेट । वाण-पु [शं] स्वापार, स्वरमाय: स्वापारी, स्वरमायी: यतः शाँवः नामीः मतियाः बीतः इतरारः मशंताः द्वाय । वाणि-प्र- शिंगी दाया शर (देंग) । श्रीत वामार ! --क्षण्यापिका-म्यो॰ चेंगलियोंडी एड सुद्रा, पूर्मेसुद्रा । -हर्म-पु॰ शिर ! -हमां(संत)-पु॰ शिर ! वि० श्री हायमें बोर्ड बाश बताये, मूर्ग, होत आहि बतामें बाल ! -ग्रहीसी-सी॰ पनी । -प्रहा-प्रदेण-पु॰ विशह । -प्रदक्षिक-वि॰ विवाद मंत्र्या, वैदादिका पुण्यहेत्र, बीतुष्ट । -ब्रह्मीय-विव देव 'पाति-प्रहतिक्ष'। -ग्रहीता(त),-प्राहक-पु॰ पति । -प्राह-तु॰ इति: विवाह ! -गृहान-विक दिवादिन । -गृहीना-दिक, की॰ विवादिया। -घ-पु॰ मृत्या, होल साहि (हाइने चलाचे जानेवाने बाटे) बलानेबामाः दश्तराह । न्यामून पुक मूँमा: धूँमेवाडी: धूँमेवात्र । --वन-पुक प्रत्यार: पुरु स्वर १ -ताह-पुरु प्रदेशी ही मीनेदा पर प्राचीत वरियाद । नहारतनपुर वद प्रदाहरत नाम (केत्रेत) (-धर्म-द्रव पालियहण्यस्य धर्म, हिशहनधन्तर । -

विजन-पु॰ [मं॰] महे पुरतेशी शिक्षाः प्रशी । विज्ञार-विक (तेक) समार्थ सिवे पीने असदाः पीता । पुरु समार्थ किट पीमा हेगा भीता। बहरामा भागवेगमा दिवसा हर्द्याः बंबामः यह प्रहारका धोहा। एक प्रकारका गाँव ।

विज्ञरक-५० [रो॰] दरगान ३ र्षिज्ञरा-पुर संदे, बंध भाटिकी होतियोंका बना हमा एक प्रदेशका शाहा जिल्ले पाटन क्यी था परा रही जाते दे: बरम गेंदरी जगहा में हरा यह बा बहारा (शाक) है -पीर-पु+ दोशभा ।

विक्रशिष्ट-५० [र्ग०] एक बन्ध (मंगीत) ।

विक्रतिम-दिव शिवो की या सामन्त्रीने शाही हैता हुआ है विक्रशिया(यम्)-भीव भिन्ने अमर्थ क्षिपे भाग दा

थ.नः रंत । विश्वल-विक (मेक) स्वापन, बहुन परग्रदा हुमा; आली ित्र । पुरु हर्रासः वर्षाः देशा ।

विक्रमी-भी। [१ व] एक्से विसे दूर दी शहराह अस बिन्दे गएने विदेश अवस्त्रीपर हाबसे चारण करने हैं। पिळा-स्ताव (शव) हिस्सा स्थेत स्टीत आदग्रसी व पितास (पैप्राप्त - ५० (११०) मेला ।

विजिल्हा - स्था । [१.४] प्राथि । पिरिवास-४० वर्षे भेधनेनामा ।

विञ्चा (रंग्य-पु॰ विञ्ची-मी॰ (शं॰) प्रशिक्षा विद्याप-पुरु [घान] सामग्र शैल, घुँट १ र्वितेह्—पूर्व [सर्व] ध्रांग्यक्ष मेंच्य, क्षीयक्ष व fázila. fázilmi–réis fils) válic mentier t विञ्च-40 (संब) मला, होए। पुरु बोलदा बोला, विशी द्रायक होना रहेका (श्रेम सुर्गवर, अवन्तिर): देखाः प्रश्ना दो एक ६, १व, प्रदेश आदिका गीला विसे आयमे farthet wieg unf fir wieter Miegte um. fautt माना कृति। क्रवोद, देवा राजिन समूद्रा कोई वन्तुः स्वतान ni ulai alt eice nama wift feent gen wur. बाधानी: दावीदा धुनाधना राग्नि, सन (सहनक): श्चाना (देशामध्या सीराज्य वन्य क्रान्ति क्रीक्षा केला। मानः सरकत्त्वा देवस्ताः वयान्यतः ।- क्षेत्र-पुर्वः विद्यालः । -weith-sto be bidet gere -buil-do'ernifent,-ernist-eite Beifet be, ibnitt t -शीश-पुन श्वासा बेज १ -शन्युक विस्ते सम्बे fite eiferen die, mittes -frei-freie-en Bigene a maman fret aus der net mehrt Schaufe ! wern one forthk feller frei vieler neufte. केरेश्रर साम इ. -- निवायण - पुत्र विश्वतिक दिला देखा है समृत्य स्वर विद्या केरेकी विकार विद्यालयात र ल्यालिकार प्रिक, सुक दिलाठीन पंजिन्दर अवस्थितका इ अवस्थान पाना न्यून बान्दो । लक्षण्यलञ्चल अरोप्टका देव वर धूम. अवन्त, कर देशन, अन्दूषाः लगान्याः प्रथः, स्टब्स ह mattandr täntt mantmete jonejil t

-काजह-पुरु बाटेर र नकाल (जा)-पुरु दिशा पर्येषाः

भवित्र रहे हैं तर ह नाम विन्योप के विद्यार नाममूल

को । अपन्य दोक्त १० श्रुष्टा न श्रुष्टा । अपन्य अन्य का अन्य उन कार्य ।

पुर विध्यानस्य धर्म, विद्यान । -तेप-पुर धिरहा बह जेश की विद्यान करने समय हायदे गरा हर पाना है (राग्रहे समिकारी इस महिशामद साहि संग्र हिन्त वीते हैं) । नकीय-पुरु विद्यात्राहा अवन्तः विद्यात्रहा व्यवस्थानम्बद्धानम्बद्धानम्बद्धानस्थानस्थ ज्यारमे बनी दाईरा ३ ⇔शंबंद्य~४० उन्ह या प्रश्रद शीनेबा संबंध विशास भीर विश्वीपता होनेबा क्षेत्र । -हथ-वि॰ दक्षी विकास द्वारा, विशिष् । -वरेक्-पुर क्षम पश्चिम । मा -एरवा-स्टब्स् विश्वा **−पवना-रो**धे पश्मा ।

विषय-१० (र्ग०) वीषाः विशतः नामधा दशः भीततः बील नागह संबद्धम्या शिल्हा दशका साम्रा ।

दिद्य-पु [ते] विष्ट मनामाः दिशा बनामा। बीरा राणा १ चिह्नस-५० (ग्रंग) पुगः गाँच ।

विद्योग-मा॰ देश 'शिरणी'। विष्ट्य-५० [४/०] प्रम १ चित्रकी—भी व संग्रह्म पीटेसी बीसका गाँगन भगा ।

विद्यारी ६-३शे १ व. साह्या कपश ।

विष्टा-पूर [तार] निष्टा दारा जीविका समावेशका, fatta i

दिशा-न्यान [तेन] शीमाया एड प्रशासी अन्तरी। बंध-पूची ह पुर [विन] शीमा होन वा गान परावंता गोना चरे एक वारम बा क्यमदा बर बाबी तहा एमा मैता बिने दिनरीकी मादने अधिन बरने हैं। हारीर 1-नामी-पर बाह्य कीर गर्पन । बार --पानी क्षेत्रा-शब्द कीर

मर्दन दशमा । विश्वाकार-६० (०) गीम । विष्ठाम् - पुरु [सरु] कीवास । विदाय्याष्टायैक-५० (८०) कार्य, शाह । विद्यास—पुरु (संरू) बोपान । forena -qu fetal alunt e विशायम-५० [तः] कीला ।

विकात-यन शिवी शारान्य,शीय, व्यन्तान, मैलीका अर्थापन frame wer was provinged trees for married CIRT OF MIS I

विष्टारा-पुरु शब मरबवर राप्ट । विश्वाबी-पुत्र पश्चिमाने स्वयंत्राची बन्न प्रार्थन ह farmen-as feb neier : विकास नव (रॉ०) यह प्रदायका बंद, एवं प्रदारका अध्य

freite-go an murat at, bant an bien, 中型工

विद्यास, विद्यासन, विद्यासन, विद्यासी(विद्या) - 💵 (da) farra i

विद्याद्वालकी । [गर्ग गर्गात १

किंदि, दिशी-मा व किंदों के बहा होता। वर्षके की की die er bried minister fint mebr farit #0 श्वरणदी वर्गा है, यहकारि, क्षत्रप्रदा देशमी। मर्पाद anfer gengenberen ne, mein, Et, Aruff majori Lond Saderti sadenti met & sade

पासुर, पासुरजी, पासुरि-मी॰ देश्या, रंडी 1 पारय-(व॰ (सं॰) गिराने योग्यः छगाने योग्य (जैसे दंह.

जर्भाना); प्रदार करने योग्य ।

पात्र-पुर्व [मंद] जल आदि पीनेका बरतनः बरतनः कुछ रहाने या साने-पोने आदिके कामका आधाररूप पदार्थ; रावा आहि यदाने कामका कोई पदार्थ; कोई बस्तु पानेका अधिकारी व्यक्तिः अमिनेताः उप-यासमें वर्णित वह व्यक्ति निसप्ता कथावरतमे कोई स्थान हो (स्नी० पात्रा); नदीका पेटा या पाटः राजाका संबी, अमस्यः ४ सेरका एक प्राना परिमाण, आदकः बादेशः योग्यताः पत्ता । ~टीर-प्र॰ योग्य अमात्या चौरी, पीतल वा छोट्टेका कीई दरतनः अशि: बीआ: बंद नामक पक्षी: भीरवा, बंग: नाकमेंने नियमनेवामा मल, नेटा। -दृष्ट्रस-पु॰ यह तरहका काम्यदीप, परस्पर विरोधी बातें कहना (केश्ववदास)। -निर्णेश-पु॰ बरनन मॉजनेवाला ।-पास्र-पु॰ तराजुः को टॉक्स प्रवार । -शृत्-पु॰ नीवर, चावर ।-यगं-पु॰ अभिनेताओंका दल । -हादि-सी॰ बरतनोंकी मकारं। -शीप-प० उविष्ठत, जुडन । -संस्कार-पु॰ बरतनोदी सफाई: नदीका प्रवाह ।

पान्नक-पु॰ [मं॰] बरतनः छोटा बरतन ।

पाग्रट-पु॰ [मं॰] पात्र; ध्यान्ता; जीर्शवस, फटा-पुराना सपदाः समाल, तीलिया । वि० प्रश्च ।

पायमा-भी॰, पायाय-पु॰ पात्र शोनेका साव या धर्मः

पाद्यासाहत-पु० [स्०] यद्य-संबंधी पार्थोकी कमानुसार वनित्र स्थानपर रसना ।

शाबिक-वि॰ [गे॰] जो निमी यात्रसे नाया गया हो। भारपःमे तील। या गापा द्वभाः उपवक्तः। प्र• वरतनः हीतः बरनमः कटोश कादि ।

पानिका, पानिकी-मी॰ [गं॰] पान-वटीरा,

पानिया, पान्य-दि॰ [भं॰] जिलके साथ एक पात्रमें भीजन क्या आ गरे। वापी-सं: [गं•] वर्षन-भाकी मादि। दुगाँ छोडी मही। पार्था(थिन्)-दि• [सं•] विमक्ते पास बर्जन दी, पात्रमे गुप्तः बिगुर्वे पानु बीग्य व्यक्ति हो ।

पार्थाण-वि॰ [मं॰] पात्रमे नापत्र बीवा या पढावा दुआ र

पान्नीय-पु । [1] १३ तरहता यहपात्र ।

पार्धार-पुरु [गेर] यहमे समर्थित हिया आनेशका पदार्थ, नपदस्य ।

पायेषष्ट्राप्र-ए॰ [मं॰] वह जो मानेभर्द्रे तिए ग्राथ रहे भीर दिनी याम ॥ भावे ।

पान्नेमित-पु॰ (4) दे० 'पानेस्ट्रल'; वह पापारमा जो भगने तुग न करे और इसरोक्षी बच्टेस है. बीगी: mfest t

वाषांवहरव-१० (सं०) अलंदरयदे मुन्छ सावत, होय Brit weter t पाध-पुर (११०) अन्तिः गुर्वे। अस ४ शृश्याः सार्वे । —

माधः-विधि-पुरु शहुद् ॥

पाय(म)-पु॰ [मं॰] बल; वार्यु; सावपरार्थ; आकारा; इदयाकाश (वै०) । - (स्)पति - पु० वरुणः समुद्र । वाधना-स॰ कि॰ साँनेही सहायतासे या यी ही हाथींसे कोष-पीरका किमी मीटे उपादानने बड़ी दिनिया या पररी बादिनी तरहको विशेष आदारकी योई वस्त सैपार करनाः गरना, बनाना; मारना, पीरना !

वाधर०-प० दे० 'वत्थर' ।

पाधा⊶प॰ अत्र नापनेकी एक तीलः अत्रक्षी राशि नापनेके कामका एक प्रकारका बढ़ा टीकरा; उननी जमीन जिसनेमें एक पाथा अन्न बोबा जायः इलको ह्योपी जिसमें फाल ठींदा जाता है; कोन्ड हाँकनेवाला; अन्नमें लगनेवाला एक प्रकारका कीचा ।

पायि(स)-पु॰ [सं॰] समुद्रः नेषः सु(ह । पाधेय-पुर [संर] यह भोज्य बस्तु जिसे पथिक राहमें ह्यानेके हिए अपने माथ हे जाता है, भंदहः राहरायाँ बन्या राश्चिः एक देश ।

पायी-'पाथम्'का समासगत रूप । -ज-प्र॰ कमलः इसि । -इ,-धर-पु॰ शहल । -धि,-निधि-पु॰ समूद्र ।

पायोन-पु॰ बन्याराधि ।

पाद-पु॰ अवान वायुः (सं॰) चरण, पैरः इनोक, पथ या बंबरा चौथा मागः किसी बस्तुका भीवा भाग, शतुर्वाद्यः रिमी पुरत्क या अध्यायका श्रीषा भागा वध या पीपेकी जह: किमी बरनका निचमा सागः दिनी बहे पर्वतके पासका होटा पदादः व्हिरमा भाग, हिरसा, श्रद्धाः गमनः एक पैर या बारह अंगुलकी सापा क्लंब, संबाद एक प्रति। - बाटक-प्रव नप्र १-इमल-पुरु समझस्या घरण।-वीलिका-श्री॰ नेपर १-कृष्ण -पु॰ चार दिनोंगे परा किया जाते। बाशा रह प्रत या प्रायधिश । -क्षेत्-पु॰ पेर रराना, भरकत्यास ।-वांदीर-प्र॰ वेलवाँव, श्लीवर । -प्रांचि-की॰ दसना । -प्रदण-पु॰ देशा प्रमान निस्मै घरणहा रपर्ध किया वाया पेर एकर प्रचाम करता । - चतुर,-चायर-पु॰ निया करनेवाला, नियदः वस्ता पीपल्या देश बात्⊈ा बॉपा ओला ! —चार्∽पु० पेरल चलना । बारी(रिन)-दि॰ पैरन पहनेवाला पु॰ पैरन विपारी। -म-पु॰ सूद् । -बाद-पु॰ बहु मह क्षिमें हिसीका वैर पमारा गया दी। यह महा तिम्मे धनुर्वाग्र जल भिन्यया गया हो र−जाह~पु॰ दे० 'पादमृन' ।–टीहा~ क्षी॰ पारशिपाति, "पुरुवेशि" ।-सस्त-पु॰ सम्बा ।-म्ना-न्नाण-पुर शहा है, जुना, घट्टी साहि । दिर जिससे पैरकी रण दो !∽दल्टित∽दि॰ पैरोके मोचे मुचला हमा, सीदा दुमाः वृशे तरहमे दशया दुमा (ला॰)। -नारिका-द्वि - की व दिवादे सामका दोग १ - द्वाह-पुर्व पदः बात-रीम विसमें देशने बहन दोना है। -धायन-पु॰ देर थैनिये दिया ।-धापनिषा-भी । यह बाजू वा मिट्टी बिने लगावर देर दीवा प्राय !-मल-पु : देरवी नेपुणा-का एक १ - मक्त-दिन दिन्हीते, पेरमक मुद्दा हुआ। -वाब्दिश-औ॰ मृप्र । -विदेश-५० ऐर साम्या छोती चौडी, चारचीर । अस्याम-पुर देह स्राजा, बाहम व्यान्त ।-वृद्या,-व्या-दु०२० 'द र वस्त्र' (-व-व०

** 3 \$ -- 2 6

रिक्टमाना सम्बद्ध होद्देव होते हुनमा हा शुक्का १४०) व

বিশ্বহ-বিয়েশ विषय-५० (३३०) मेजबनहा देश ३ विषक्षिया। - भी । होती विद्यारीह एक प्रधारत हाहिया जिसमें देवन गुरु और मोद महि गांधी है। पिष्ठाः विषयो-पुर दिस्टासियेण्यासः विमुल-पुर्व [सुरु] सर्गान्धी होई शाहरत देश जनवरेषा ह वियोगरमी - दि॰ धीमे धीम अधिक । पु॰ भी और यॉय-47 85741, 3 64 6 विधाद-विक (तांक) दरावर विवस दिया द्राप्ता निनीस हुमा । ५० भोगुप श्रोताः भाग मानेशः रीय । विका-भार (मर्थ) मोलह मोलिबोही भरी जिसहा बधन मद यहत हो (नीतियोक एक परिमाण) । विशिष्ट-एक [रोब] एक विरेटा कीशा ह विधिय-विक्रोगिको देव 'विधर' । विषयः - १४ (११) प्राप्ताः स्पूरपुष्तः शृक्षः, सन्तीः यमा प्रेराहरू बारा कार्यमे स्था हुआ देख । -बाह्य-पुरु पैरदा १५ होता - वाच-पुर शामको । - सन्धा-बराक योगप्रदारे यह र विष्याह्र-पुर्व (सर्व) पूँछ, वृत्यवन्ते यर (नमामान्द्रे) र विषयान - विष विकि कि मन्त्री काला, विकास है विद्याल है पुर न शुक्ति नदाश एक नागा द्वीदामा सम्बागरेना भौकाम । विष्यात - और (संत) धीधरणा करना धीध, धानाण, बरेला गुपारी। वे मात्र मात्रः स्राताः पेल्टिः भोदे हे पैरवत यक रेक्टा क्षीरिमाः वर्णनामाः शीरमका वेदः निर्वेगीका वेदः क्यानारेका विकास है। विष्यानाय-५० (त०) विवनी भार । विविधासा-को (मक) बोहबताया गुण्या व विविद्यातिका-स्थान [० ०] द्रोद्यमस्य पेत व folografie bei fennagun fauen Gount gurin werrer, uniferer t go m'er mie, wit भारी रिलाप स्थानमा कमेरिका देश । +वस्त्रशाल-ब्लाल-भाव प्रश्तिका वृक्त देश र अध्यक्त (वर)-पुर शाहिती: ut be at miret fonett wien gift - mit-go Rigging f चित्रिक्षण्यास्य स्वरू (ग्रीक) धन्त्रात्र मुख्य क्रीमुग्न ध विविद्याला-भार (६०) र्याद्यम् हेन् विद्याद्य द्या केन करो, भन्दी, नापस्तरहाना, स्वीपूर्य, पायः वृद्धिप्रापीः mtel e fin alle to tfifoun' i fall-ig figet ber oge u fent a menti-de CO a fi Ladictur, materia nage all materials आध्यत्रे प्रदेशकात्रा शिवहत् साम्य । अस्ती नका व हिला मारा क्षेत्रेका भाषा सन्दर्भन क्ष्मा विकास हैतिया । -साम्-साम् १-पूर्व देन प्रियान, १ -सर्वी-स्ट्रीक बीहे, बाहे में देश फीट में बेल न महरतह है जायाई ल ल - दृहेत् भेद समाया अहेराका कारा । न्यारहात्न बारा-पूर्व प्रदानका रियाना लगा, बरवा के हेरी मीतनर है mm. naue et 412 6 300 man 1

विक्रमाई!-मा॰ पुरेष (शिष्टे देखारेस देखे कोर माना भागा ही। बादगानी । विद्यका-विरु देखेरी और पार्श्वाका, जो बारीमा क्षेत्र हीं, 'अरामा'का जलका भी क्रमने हिमोदे होते हो या बीहरियको अने कीर होरे हो? ही अपने ही 📰 पहें। बारबा, परवर्गा, बीका बुध्या, प्रथमीका पुरुष्यम् औ क्षिमी बरन्द्रे मंत्रिय भागने। मंदय, द्वीर अनिय आगस्य बह बराना बिसे बीजा इसमेवाने मुस्तायाम बहुत तर्थे बराने हैं । विकादी-स्थे॰ प्रभाग, पैटेश यागा योध्ये विटरे देतेहे मरिने श्रीपनेशी शानी । विद्याम!-नी॰ दें॰ 'रहयान'। विद्यान्ता==भ॰ कि॰ रे॰ 'बहभणमा' ६ विग्रासी = म्या॰ दे॰ 'रिजासे' । विक्तिबर्ग-विक जिसनी अपना मुंद भीरेची और कैर निया हो १ विर्तिशा - २० प्रीडेश भीर १ विवर्धितारे -- अ॰ देवेदी और र ਰਿਹੀਂਦੀ! –ਅ।• ਵੇ• 'ਮਿਲੇਦੀ' । वितासिक-- अर्थ के होने और बीटोची और है। विक्रीराक्त्युक द्वारा, उपराव । चित्रीतिक-स्थाप किरवे भी औरती। सप्ती भीता शारी श कोई यथ, ब्हेंद्रवी ह चिर्दकाक्षी, चिर्दकीकी-की० (तक) बंदबारणी र विर्देश-ब्दोर बीडनेको किया, मार, दिलाई ह चित्र-पुर [लेर] दिलाया गीहका मदाना होता क्षेत्रको है। को । हिंदी एवं प्रान्त की बन्ने और छोटे बन्देंबे अपने भाषात्रने प्रापन क्षेत्रा है । - विष्ट-सी॰ दी वा महिन बाद राज्य दिया हमा 'दिश' शब्द । विश्वष्ट-पु॰ (स॰) शिक्षाता बन्द, अप्यूषण प्रार्थित देखें है fle die auf bie ungebie die fente ber ber bei militate का बंदची परवापर है। विशेष प्रदार की राजनाओं का मधार territors, languages i fazer-eite fe'e) gienn ferici i frent - ma fa a ster and, and apart and a west वर्गना र है पुरु ही र्वेडर औ बार, महरी ह चित्रशिक्षामान्यक विक साधन्त होतार रह जाना र विद्रशिवार्त-और देश दिशादि' । Freezest-reaft of feet & the street freeze बारकारण दिस्ते हो पीरतेने प्रदेश प्रस्ता र froß-ere biebelfen, mibe fen, bibf 77171 Extra - to (a o) firrat, apolitic wild b famfazz-offo # 2021 Percentago a un, de entrata cotentida una fer रिमेरी क्लाम्बर बन्धः * समस्त । विद्यान्त्र रे मात्र किन बंधि का अ का, अक्षा दे दे दा लोगे । विद्यारित बीअ देशा कि का बाला का प्राप्त -का सार्व fiebligt u merunt nell, George fart, Mall Hille. भारभी बन्ध है।

किसीका भाँव पराारा गया हो, चरणामृत । षादोदर-पु० [सं०] सॉप ।

पाद्य-वि० [सं०] पाद-संबंधीः चरणका, परका । पु० पैर धोनेका पानी।

पाचार्घ, पाचार्थ-पु॰ [सं०] पाच और कां, पैर धोने-का पानी और दूब, अक्षय, जल आदि पृत्राके उपकरण (अर्थमें जल, दूध, दही, भी आदि आठ वस्तुएँ दी जाती है); भेंद, नजर (केशव) ह

•वाघा-पु॰ आचार्यः पंहितः।

पान-पु॰ [सं॰] जल आदि पीनेकी किया; पीनेका मात्र; द्याराव पीना; पेय द्रव्य (द्यारवत, द्याराव); द्याराव वेचने-बाला, शाहिक, कलवारः रहा करनेकी किया, रखणः निःश्यासः उरतरे, तलवार आदिवर मान चढ़ाना, इवि-यारोंकी भार तेज करना; नहर; चुवन ('अधरपान')। -गोष्टिका,-गोष्टी-मी॰ मय बादि पीनेके लिए एकश हुए लोगोंकी मंदली, शराबियोंकी मंदली। शराबकी हुकान। -दोप-पु॰ शराव भोनेको कुटेव। -प-वि॰ शराव पीनेवाला, मताप। -पर,-रत-वि॰ श्रराबी, को शराब पीनेका भादी हो। -पान्न,-भांड,-भाजन-पु॰ शराव भादि पीनेशा बरतन । -वणिक,-धणिक्(ज्)-पु॰ शाह देवनेवाला, कलाल । -श्रु-अमि,-भुमी-की॰ धाराव पीनेकी जगह, यह स्थान अहाँ धाराभी इनते होकर श्चराव विवे । -भोजन-पु॰ साना-बीना । -भंदल-प्रव मध्योंकी मंदली। -सत्त-विव नदीमें घर। -सद-पु॰ श्राहका मशा । -विभ्रम-पु॰ अधिक शाहक वीरीमे दोनेबाला एक प्रकारका विकाद जिसमें बमन, मुन्छां, सिरमें पीषा, बकरावण आदि खचलतं होते हैं, पानास्यय. मदात्यय । -वाँडि-वि॰, पु॰ अधिक मच पीनेवाला । पान-पु॰ एक लगाजिसके पशे सुपारी, गण्या आदिके माथ मराशब्दिके लिए साथै जाते है। इन लनावा पत्ताः प्रशाः = पानीः वह यमक ओ शासीपर उन्हें कागीः मपाक्र पानी भादिमें हशानेंने आना है: * प्राचनाय: पीसराः दारमें श्रया जानेवाला पानदे आकारका नावीजः जुनेमें प्रशिष्ट लगाया जानेवाला पानके आज्ञास्त पमरेका द्वरक्षा एक प्रदारका नायका क्या क्रियक मानदी मान-मान आप्रतियाँ दनी १६नी दे: • वार्यः शामा गुगकी माँदीमें निगीवर एसटा गाला वहना (जुमादा) । -दाम-पु॰ पानके पसे और अमहे बमाने रमनेट बामहा दिखाः पानके बीहे रशतेना दिल्याः पनिदिश्या । -पत्ता-पुरु शया हुआ पानः माधारम वपशाह, मुक्त भेंड । -कृष-पुर मुक्त भेंड: बहुत हीसन मग्यु । सुरु —उद्यासा—वेभी बन्म बर्दनेश दिन्मा ऐसा । -कमाना-कानके पर्णकी जरूर पुरस्क जनमेने गई श्रीको निकाम देना । -शिम्यामा-दिवादवे शिवयमे बर और बन्दा-पग्डा परचर बनागडा होता, आग है बरमा !-चीरमा-दिना बामका बाम वरनाः निर्धेकः कार्य घरता । - देशा-विशीम कोई बाम वह जासरेको । मान्या बरना दिसीकी कोई बच्च क्यूने कियो हैनेदे है तिए देशित बाला : .--चेत्सा-देश 'या बदाला'। च्याना या एगामा~पामका बीका नेवार वहमा: पाम ।

कमाना (१) ।-छेना-कोई काम कर टालनेका जिन्मा लेगा ।

पानक-पु॰ [सं॰] पेय: एक प्रकारका पेय जी पकार्य द्वप आम, इमली आदिके गुरेमें पानी, नमक, मिर्च आदि मिलाकर तैयार करने हैं, पना ।

पानडी-मी॰ एक प्रकारको पत्ती जो येय पदाधी और तेल-उब्दन जादिमें सुगंधि हिए होई। जाती हैं।

पानस-पु॰ एक पेड विसकी सक्ती बहुत दिकाक होगी है और सजाबदके सामान तथा गांधी मादि बनानेके काम आती है। -

पानरा#-प्र॰ पनारा ।

पानम्ब-वि॰ [मुं०] करहरूसे संबंध रेखनेवाला । पु॰ कर-इलमे सैवार की जानेवाली एक प्रकारकी दाराह ।

पानहाँ+=सी॰ जता ।

पाना-स॰ कि॰ प्राप्त करनाः कल या परिणामके रूपमें कुछ मान करना; दसरेके दाधमें गया हुई या सोवी हुई बस्तु पुनः प्राप्त करनाः समझ जामा, जान टेनाः देगानाः अनुभव करनाः भीगनाः येनन वा मनदरीके कापी कछ प्राप्त बरनाः विसीके पामतक पर्वजनाः परस्ताः परावतः बरनाः भोजन बरना। अ० फि॰ सरना (इन अवीर 'पाना'का प्रयोग संयोज्य क्रिया है रूपने होता है) । पुरु दे॰ 'पावना'।

चामागार-पु० [गं०] वद स्थान जहाँ बद्दतने क्षेत एएज होकर मध्यान करें, शराबस्याना ।

पानाम्यय-प्रशिशी अधिक दाराव धीनेने होनेवाला एक श्रद्धारका विकार क्षिममें गंत, शिरीनेहना, दाह, मुख्यां आदि उपनुर्ग दोने है।

पानिब-पु॰ दाथ; पानी; भाव, यमक । —प्रह्न-पु॰ दे॰ 'पाणियहण' ।

वानिक-पुरु [मेर] हाहार धेयनेशला, मदश्यमाती । थासिय=-प= पानि, भाष, लावव्यः पानी ।

पानिय॰-प॰ पानी । वि॰ रहा। बरने योग्य, रहाजीय १

षानिल-९० [मं०] पानप.च ।

पानी-पु॰ नदी, नुष भाषि धलाश्चेषी और बारश्ये भिन्नतेषाता एक शांत स्पर्ध समा प्रशिष्ठ गरून प्रस्त औ यगन्द मृष्टिके निम भनिवादै दोता है (भापुनिक विद्यान-के बन्धार यह बाल्यम और प्रश्न मंगरी ही मैस्से बनता है सबा स्वाप, रम बीर संपत्त रहिन और शह-वर्षक बीमा है); भीन, भीरा, बाद शाहिंग निवस्तीनामा क्लीय प्रार्थः यह पाना जिल्हें उन्हें उन्हें दश्या या निर्मादी दुई बरहुका संप्रधाम मिला हो (मीमका पानी); किमी हुई या गरम पराचेंद्रे भोतरने निरूतनेशका रुग दा पानी र्रमा तरक परार्थ-सर्विदण, सम्बुत शादि पाने का दसः कार, कारि। अविका, मानगर्याका, इप्तता समारक अर्थात इक्टेंकी धारका यह काला एलका वस हिलाने सनदी अन्तर्य व्यानी जाती है। साल, बच्चे बल्क्ट्रे, शुभग्राहः मामानिमान्य द्वार प्रोत्स थे दे भारि प्रारक्तिका क्राविक रिक्टेंडका पड़ी जिल रही सन्ता प्रजीही ren ferma verde Beifift un nicht fuere वन वातुः मामानिक निर्यतः चातुः। ए। - वात-दिः

रेश बरनेशनाः -मन्त्र-मी॰ दिलाहे प्रति आहर भीर प्रवेशित है बारा पात । अधीतत-वर्ग वितहेशा भीकन्। दिन्हीं हा भीक्ष प्रार्थ, शहद । - भागा(न)-प॰ बाबा । नर्शविर-६० दे॰ 'रिएम्ड' । नशावर्थ-वि॰ विशासानार्वे दिन्य भीता माँगलेशासा । -सेम-पुर यस प्रसारका लिखार्थ । —यज्ञा−५० शिक्षारेण (—याज्ञा→ पुर बद मार्ग जिसने विषय भेडलीहरी बाते हैं। -शास, -सट(छ)-पुर यम । -ज्ञाप-पुर (६४ । -लीक-पु॰ बद भीड जिसमें दिवर निवास बदने हैं। दिनसैदा मीन । न्यंशनपर विद्यारः गण । न्यम्,न्यस्ति)--पुरु इमराज । - सम्पति-भीः दम्याज । -विश्व-५० भार वादीची शंवरित, मीमनी भाषदाद । - बेउम्स(म्)-गा दिनाका घर, भावका । - झल -पु दिन्हमी: दिन्ही-थी पुत्रा बरनेशणा। -ध्याच-पु॰ विकास निविध दिया जानेवामा सन्द्र ३ -चयुन-पुरु वृद्ध ३ -च्यान्याः-स्वमा-मी॰ मुधा । -ध्वर्माय,-स्पर्माय-पु० पुनेहा मात्र । नश्च-म्हार दिलामही, दादी: सन्देशम, अत्या । -वधामा-वधामीय-प= वह हो शिमार्थ, व्यालय हो। श्रातिमानक, संस्थात । -हायक-मीक दिलाकी बहुवा । -हा(हम्)-बिक, पुर दिवाकी कृत्या कहतेताचा । -E-Jo sieni eie :

वितृष्ट-दि॰ [मे॰] पेतृर, दिलामे आम । वितृता-न्यो॰, वितृत्व-दु॰ [मे॰] दिला द्वीमेश भाद । वितृत्वमेयर-पु॰ [मे॰] भूत देला शित । वितृत्य-पु॰ [मे॰] पादा ।

पिनी नियान नुव देव 'शितिबार'।
विमान वृत्त शिव होति है तोन प्रिय होति है। यद वह
नीवार निर्माणि संदेश और कार्य होति है। नवय-दिव हो विन्तु प्रतास करें, कार्य होता है। नवय-दिव हो विन्तु प्रतास करें, का्री । नव्याय-मुक्त विन्धी प्रदेशों होतेशों आगे। नक्षेय-मुक्त विन्धी भिन्नी, विश्वास । नहीं सन्तुव विरोध प्रदेश । नयुक्त । दिह्य निर्मात करियागों कार्या प्रकार । नयुक्त । प्रवास अग्र संभाव कार्या प्रकार । नयुक्त । न्या-दिव निर्मा कार्या । नुष्ठी नवें होते होते ।

शिष्य क्या मा प्राप्त सरीवाणा । मुनी-कीठ गुरुवा ।

ग्वा-विक विकास पर्याप्त क्षेत्र (अपने स्वीतां) बीतेप्राप्त । —यण्ड,—दारा-पृत्त (अपने स्वीतां) बीतेप्राप्त । —यण्ड,—दारा-पृत्त (अपने स्वीतां) बीते-वा
प्रदर । —हार्या (विच्न जिल्को स्वाप्त क्षेत्र क्षार क्षेत्र क्षेत

fruit water any fire a named new meter than

के मबीपकी दर करतेशाला हे -द्याल-पुरु रिल्पे मदीपरे वंश्य होनेशमा शम श्वा - शोध-२० रिनव होता ·-मेरायम-प्रभावन, मार्ग्याम, मेपरण स्राीत दिल्ल नाराक भेवविद्योक्त समूद्र । नव्याम् - १० देश दिल-बोर्च'। -म्यंत्रम-वर्ग्य विश्वास नेप शिव । -शाः (इस्)~दि॰ दिसकी मारनेसमा । प॰ दिस्तापात म॰ -- उद्यतना या गीलमा-नर्ण मी/६ K'प शर्मा (बिसीश)-सस्य शोसा-द्रोपी स्वयंवदर रोज र विश्वन-दिक भिन्ने विश्वने दिएकी परिवास की, दिए-बहन । प॰ दीवुनः भीजपमः इत्यासः । विकास = गी॰ शि॰ो प्रसदीपत्र । विक्तांद्र-पुरु [मेर] कोशोंके शहरोत्तवा एक रीत र विकार-पक दिस्ताराया स्तरमा बनरा । -प्राप्त -रिक क्षेत्रस श्रीर दर्धर (दाम) । मुक् - प्रदक्षमा या श्रीयमा-भूत शीप माना । -वामी कर्या-पीर परिधय वरता । -बारना-बीपर्शनता दृर होता। श्रीप ताना रहता । -बाहमा-कीपदा शमन बरमा, बीपदे देगदी होतना प्रीक्षी रूपने स्ट्रेसर । विसानिमार-१० [गं०] रिएडे प्रदेशि हैं नेगना miffente s विक्ताधिक्यंब-पुरु [संर] यह विश्व मेप्सि निर्मे #र्दिशि पानी बहना है। विचारि-प+ विन्ते विच्यादश र विभारतय-५० [सं०] (१७४) येनी, (१७३) र विशाम-पुरु [गर] देव 'शित्रस्त' । विक्ति-भी । दिल्ली अधिकान का इस है अदिक कार्य के केरे प्रतास क्षेत्रीवाचा एक शिव जिलाने शारिका आवे पारे पे यह अने हैं। यह एका है है वर बाया करता है वियोज्य-पर (गर) देव 'शिय-१४म' । विकोचहरू-दिव (शंक) दिएहे प्रदेशिंग मार्थात १ fring-fen fain) fore einelt fanett fentber ! 30 क्षेत्र भ्रापा। बावश सहीरात संशा रुखना भेगूरे और कर्ने में है, की बढ़ा भागा मारा पहरा हिमादी प्रहर्ति है विषया-की । [शुरु सदावावाः वृद्धिता । विष्याम् – ५० (त०३ एक्ट) । दिगाल-पुर्व (११०) पर, ६४० । दिव्योहा-पूर्व दिलोधे भर्त्यम हिन्दु शमार पुरत्यात है free-up fere) fem 1 -unft-blie fenunt? विश्वासंग्र-पुर्व विदेश कर । frei-ge fechet att goodt & filt feer # fil are with Dewite errors which comits with & a विक्षी-की॰ बंदाबी जानियों कर गोड़ी डिटीबर, ब^{र्डर} 첫4점 앞지킨 8 freimunge fein) bith arministen unbab fairt 'अपन रण, आरशक, दशका, दशका वर द्या व दिशाई है क्षित्रमञ्जनक (००) धीरा, प्रशास प्रमान । वियमक, दिवाचीर्विक) नीव रेंगवी ४६४, डिटरे 4 = 1 = विकासका व देशको सामार साहर आहर महानेदे राज्यो मिटि

THE WAS STREET, WHITE A

विव पापकर्ममें लगा रहनेवाला, यापी । - निक्रचय-दिव सुरी नीयतवालाः दष्यमं करनेको प्रस्तुन । -निष्क्रति-स्री० प्रायदिवस । -पति-पु॰ जार । -पुरुप-पु॰ पापमय परप, बहत पायी सन्ध्यः एक प्रकारका पापमय पुरुष जिसुका ध्यान बाया कीएमें किया जाता है (सं०): परमेश्वर द्वारा सारे जगतके दमनके किए रचा गया पापमय पर्य जिसके विविध अंग भिन्न-भिन्न पापीसे तैयार किये गये माने जाते हैं (क्य पु०)। -फल-वि॰ वरे परिणामनाला, वरा पान देनेनाला, अज्ञान । -युद्धि-वि॰ जिसका मन सदा पापकी ओर प्रवृत्त रहे, दुरातमा । -अक्षपा-प॰ वाहभीत्य । -आक् (ज्)-वि॰ पापी । -भाव,-सति-वि॰ दे॰ 'पापनिद्'े। -मित्र-प॰ कमित्र, अहित यरनेवाला मित्र । - मुक्त-पि॰ जिसे पापने सुरकारा मिल गया हो, जो निष्याप हो गया हो । -मोसन-पु॰ पाप नष्ट करनेकी क्रिया, पापका निरा-करण। - सहसा(इसन्) - प्र यदमा नामर बुरा रोग, शय । -योनि-ली० तच्छ योनि (तैसे तियं स्योनि) । वि० जिसकी उत्पत्ति हिमी चुन्छ बोलिमें हुई हो ।-होस-प्र• दिसी पापके कुफल है रूपमें दीनेवाला बुरा दीव (बीरी-क्रम, यक्ष्मा, सन्माद आदि): धेनक । -रोगी-(तिन्)-वि॰ मा किया पापरीयसे अस्त हो। -छ-विव हैव 'क्रममें' । -ाटोक-यव पापियोंको मास होने-बाला लोक, नरवा। -लोक्य-विक नरक संबंधीः नरक-का, नारकोग । =बाद-प्र॰ शहाम शब्द ।-विनादान-पुरु देव 'पापमोधन'। -हासमी-विव वरीव पापका माध बरतेवानी । स्रो० धर्मका पेट । --इहिल-वि० पाप बरमा जिसका स्वमाब हो। जी गदा पाप किया करे। पापम निरत रहतेवाना । -होधन-प॰ पापीका मार्जन करना । -- संकार - विश् जिसका संकार पाप करनेका हो, पापलमा, पापी । पुरु पाप करनेका विचारः पापमय नियार । नहर-दि० थापीटा दरण करनेवालाः पाय-नायक। -हा(हन)-वि॰ पायोका माद्य करनेवालाः पापनाशकः। सुरु - उदय होना -पुरेशन पारमा कत मिनने समना । -क्टना-प्रावधित भादिने वापदा अंत दीनाः राषा माहिका दृह दीना ।-हमानाः-बटोहना-पारमय वादे बरना, देने दश्यने दश्या बिनया परिचान पुरा हो। -पदमार-वृद्धिन होता। -प्रोल हेना-बानदरावर बरोदेने बदना। ~स्थाना-वाद्या आगी श्रीमा ।

पापक-दि॰ [र्:॰] नृराः दृष्टा पार्था । तु॰ दृष्ट व्यक्तिः नुरा ग्रहा नुरूप, भपराध ।

वायह-पु॰ यहर वा भूगधी चौठामे नेवार को जानेत्रभी एक महार्की वारिक महार्रमार वरणी क्रिनेतर का चौते जगरद अवता मागार रेक्टर व्हेजबंद क्यों हाने हैं। दि॰ वागमण चनता हुना। मुक्त-बेलबा-चौर चर्र-क्या दश्या बहुत यह दोलगा भार्यका पर्यम्म बहला। चायहा-पु॰ चक्र महार्का छोरा देश। चायहान्तुव-कु के में में देशर दिवा शुनेक्या हुएहा

पापदी-मी॰ एव रेड जो मध्य मीश, इंग्रहकीर महत्त्व-में महिन होगा है। एवं निर्माह

पापरां - पु॰ (वंग एक् '।
पाँपर - पु॰ (वं॰) वह विसक्ते पास कुछ न हो, मुफल्सि आदसी, अकिनव व्यक्ति वह माफि निसे अपनी निर्भाता प्रमाणित बरनेष्ट दिना कोई आदातती रसूम या सर्ग अदा किंव ही दोषानीमें मुख्यत्मा रुपनेक्षी त्येत्राति मिली हो । - सूट - पु॰ 'पापर' दारा दारिष्ठ किया जानेवाल या रुपा वानेवाला मुकदमा, मुफल्सी दावा । पापर्टि - सी॰ [वं॰] दिवार, आदेट । पापराज - पु॰ (हं॰) दिवार, आदेट । पापराज - पु॰ (हं॰) दिवार, आदेट । पापराज - पु॰ (हं॰) दिवार, आदेट ।

पायांकुराा(ण्काइरां)—सी॰ [सं॰] भाषिन शुद्धा एकारसी । पाया—पी॰ [सं॰] तुषदी एक गतिः एक दिकारों मंतु । पायाचार—पु॰ [सं॰] पायमय भागरण, पायसे भारा दुभा इन्यः दुरायार । वि॰ मिन्नका भागरण पायमय दी । पायाध्या(स्मन)—वि॰ [सं॰] मिन्नकी भाराम पदा पायमें प्रवृद्ध रहें, जो बदा पार्य प्रकृष रहें, पार्य । पायाप्यास्य —पु॰ [सं॰] स्रायायी । पायाप्यास्य —पु॰ [सं॰] स्रायायी । पायाप्यास्य —पु॰ [सं॰] पायका दुष्यरिणाम ।

वारायुर्वित नरीं (सें) प्राविधि । वार्यार्युर्वित नरीं (सें) प्राविधि । वार्यार्यमक-विश् [मंश] को दुक्तमें करतेशक, वारी । वार्यार्यमक-विश् [मंश] के "वार्यवा" । वार्याद-पुर्विश कारीच्या दिना अञ्चम दिन । वार्याद-पुर्विश कारीच्या दिना अञ्चम दिन । वार्यादि-पुर्विश सें से श्राविधित कि वारी, अर्थन

कायस्य । प्रायो(पित्र) --वि॰ [सं॰] पाप करनेशाना, अपी; निन्दुर, निर्देश । पु॰ वर जो पण करें, पाप करनेशाना मनुष्ण । पापमा(पन्त्र) --पु॰ शि॰] पाप, डिस्विश दुष्णाहुमांग्य । वि॰ पापी झानिकार्द्ध ।

पामर्श==की॰ द्वहा, उपस्ताः प्रेशी । पामार्शम्)-पु॰ शि॰। दे॰ 'दान' । पामार्श-पु॰ [सं॰] संबद्ध ।

 वियूग-विष्ट पिपूग, पियूप"-पुर देव 'रेपूप'। विश्वेती -शी॰ पुरिया, पुणी ह विश्या-पुर माह या पानरका यह द्वारत विश्वतर श्यावर पूर्ण दशदी जाती है। पिरमी!-मी॰ दे॰ 'पृथ्वे' । -बामी-पुः 'पृष्टीसाव' । विशाई ० – गो० चैनादन, प्रशी। विराध-मी॰ गुरिश्वा प्रेम्प्र वह यहतान । पिरानाण-भगकिण पर्व करनाः दर्वता अनुभव करनाः हिंगी के दायाने दामी होना । विसासा - पु व बारू , शुरेश । पिरीत्रम•न्यु• विषया । विर्दिता = विक प्राप्त । विधिति "-सी श्रीति । विदेशको - तुक कार्रेशक । विशोगा-पुरु दशायन लिये और (शहा यह बद्रमुख्य वायह, पीरीका । पिरोधा-ए॰ कि॰ हाँदे छैश्में भागा शक्तमा दिशी बाराब दियों की भीत शालना। होरेबे मनवा आहि दर्गाना । विशेषा-५० दे० '(११शेषा' । विशेष्टमार-भाग दिन देन 'विशेखा' ह विसर्हे, विसर्दी । 🗝 । बरवा । विमाध-पन घट कीने (बहा, मैनाने कुछ छोता पटी, दिवर्गानाः भश्यम् सम्बद्धः । विषय मा – स॰ कि॰ विदासा देवेणमा । घ० कि॰ विद्यास बिद्यस् भागता । विमाधियाः – धी । एक संभोगी द्रीदी विदेश । विषयमा – मा दिश दिन परागाः बिष व्यानाः विपराग । पिल्समा-अन् जि. दिशी और देवते प्रकृत होता पुरा पहला शह परता स्थार क्षीता (दिसी कामने) जी-भारती लग पाताः । दिशी भीतः देशने शहरणाः देश 21:41 1 विकारियां नदिव देव 'दिव्यदिवा' ह finfqui-fen agm wen, freiben : -ge-alie tenfent gebat atte : विकायिकामा - ११० दि० थनी। भीतने अनुसन्धार दशका कि दिल्किता हो। सन्द का भौलतका देश का गुरा नादर ल्यिन हो। freieren ne fan feit finiet von neur. हिलानेक बाम बरामा देशनेक काल बरामा । fremiere for CP3 by starte start Chat ber, fart ein mielfat feit ben einen भोजन सरका वर्षेत्रोहे साल विद्याना—दिसमें देशभा ने दिल्लेष्टर -द्रव देव 'पुंजदर' ह चित्र -पूर [तार] के देश देश र अवशी-को र सूर्व सन्।। frequence [ro] to the विशासी - मी. हिं की खुरी मालत

दिशा-देश्य (मंत्र) विकास सेच कोर्याचा क्षेत्र हुन हेगा

241

विवासा - १० कि. दे व 'दिनाता' । पित्रांग-विक [मेक] समारे विदे भूरे (एका । पूक सन्तर्न न्त्रिभश रंग। पिर्वागरू-५० [मेन] शिलु दा शिलुद्ध प्रजूबर । पिश्वविका-न्योक (एंक) एक एएएक बिज पन्तु, काला । पितांगी(गिन्)-दि॰ (वं॰) एनाई निर्दे घुटे (एदट ह पिदा-विक विके पापने मुख्या महित क्ये बाला, बरवाप । विशाय-पुरु [गुरु] इतु प्रदास्त देवते विद्योगियो मे हरू वस नियन देववीचिः मैठः दश मनुष्य(मा•)ः-गुरीप्र-युक वह की विद्यापने अतिष्ट हो । -अ-दिक दिशाधीका साधा कालेपाला । पुर पीली गराति (शमका प्रपरीत प्रापा ओहा करते हैं। !-चर्षा-छी • इयहान-देशन । -प्र.-बुख-पुरु सिहोर्डा देह । -पशि-पुरु शिव (-सार्यः-की॰ रिशाय द्वारा माविष होता । - भाषा-भी - वैद्यारी प्राप्तप विश्वत प्राचीन शंग्ह्रपर्दे सारधीने विकरां है। -मीक्स-पुर यस क्षेत्रे (रहेंद्र पुर्व) सार्वाचा यस मामाथ जिलाहे दिलाहे गुबर बदनेश के दिए बापी विश शारते है : - बहुश-रिक क्रिक्टा मुँद रिशालकात ही ! -मंचार-पु । दिशावयाचा । विशाषक-५० [लंब] विशाध । विशावको(स्थि)-पुर् (११०) पुरेर । विशासीयका-की॰ (सं॰) (१११-दी १ विशासासय-पुर [संत] यह व्यान क्या सामहित्यकरे बार्क केरिये प्रशास हका करे र विकासिका-भार (संग) की विकास विकास में सी થશાંવદી પ્રદાસભીર વૈદ્યાનિકા સામસિ (સાર મધે) કે दिशासी-को र (तक) देव "दिए ईक्फ्रा"। विशिष्ट-पुर (१४) एक प्रध्येत देश । falemmun inim | wer nim eter nuret, un det – મુજૂ (છ) -ગુ ૦ રાજ્ઞાર સરમજજ કે જે (૧૬ ૧ विशिक्षक विशिक्षा-भाव हंग्रेको ज्ञापको । विशिक्षाता, विशिक्षाताम, विशिक्षाती(शिक्ष) = g + (F*) Calact see with the seed of विशामिका (तन् वामाना । formenge fete fentete eriberut, egenutet Erei बहान, अरहर कीमा, कह देन प्री शरितावरीकी बानी क्षत्वामा है। हिंद्यामान न कहार ६ हिंद महिन्द्र सहित्र हिंद्य स्रोतन्त्रकार्देश्यः साम्रोतं स्रोते र सम्मानस्य स्थापनाम् स्रोतनारः स्थापनाः स् विशंक्ताहरू ५ दर्भ । वो बन्दारक एक मेर । fem-fen [no] ferr gur, unt fant gur; fen't gurs ffer gute go feit gut veid, felter wit. कारहा प्रदेश, जेजनतः अवस्थानमुक्तः प्रशापित सर्गार क्ष्यान्त्रक हुने हुद साहेश नवार हुन्। श्रेष्ट्राह्म बाबक्ष नवाच्छ-पुर पराप्त बतावार नरिक्रनार Sell bimdeman ga "Amle, 5. mgatinganuite हैंको पुरुकों प्रेरप्यन, इंटरक्ष के हे करकार समझ नाएकी

विश्वका-मोश्र (६०) श्रीवर्ता ।

विष•-ष• विदयस,कोत्र ।

विद्यानपुर कृतेहा यर वया। ई कुला १ कि. पीली है

विस्तर्-पुर एक मधारका गर्भ र नवा को रा, दोना ।

Sos पारमी-पु॰ परसनेवाला, वह जिसमें परसनेकी शक्ति है। पारप्रामिक-वि॰ [मं॰] परायाः विरोधी । पारचा-पु० [फा०] दुबहाः थड्वीः कपहाः एक तरहका रेशमी कपड़ा; पोशाक, लिवास; कुएँके बुँहपर कुछ आगे-की ओर बदाकर राती जानेवाली वह चौड़ी और विपटी स्वरी जिसके कपरसे दी ररसी सटकाकर पानी स्वीनते ६ । –फ़रौदा−पु० दपहाथेचनेवाला, बजाव ।–क्ररोदाी− स्थी॰ बतालका काम, बजाजी ! - बाफ्र-पु॰ कपहा धुननेवाला, जुलाहा । पारजन्मिक-वि० [सं०] दूमरे जन्मसे संबंध रखनेवाला । पार्जातः - पु॰ दे॰ 'पारिजान'। पारजायिक-पु० [मं०] परस्रीगामी, लंपर, व्यभिचारी। पारटीट, पारटीन-५० [५०] बद्दान, शिला । परिण-पु॰ (सं॰) किसी जल या उपनामके नारका पहला भीवन (पार्ण उपवासका अंग माना जाता है)। बाइला पुति, संतीयः पूरा करनाः प्रत या उपवासके बाद भोजन षरनेकी किया। पहना, अध्ययनः पुरनकका सारा विषय । वि॰ पार करनेवालाः बद्धार करनेवाला ।

पारणा-स्ता० (८०) प्रयक्ते बादका ओजनः भीतन । पारणीय-वि० [मं०] समाप्तः पुरा व रने योग्य । पारर्रोज्य-पु॰ [सं॰] पराभीनता । पारत-पु॰ [मं॰] दे॰ 'पारा'। पारतविषक-पु॰ [मं०] परसीयामी, लेक्ट । पारच्चिक-वि० [गं०] परकोक संबंधीः धरलोकमाः धरकोक

यगानेकला । पारम्य-पु॰ [मं०] प्रशोदमें मिलनेवाला फल । पारध=-५० दे० 'पार्थ'। पारधी। पार्थिय+-पु॰ राजा; मिट्टीका शिवल्ति । वि॰ मिट्टी-मंबधीः सिडीका बना ग्रभा ह

पारद-पु॰ [गं॰] पारा। एक प्राचीन अग्रन्य जाति । पारकारिक-पु० (ग्०) परमीगामी, संपर । पारदायै-पु० (सं०) परश्रीगमन । पारवेदाक-१० [मंग] दूसरे देशका, विदेशी । पुण दूसरे

देशका निवासी। यात्री । पारदेरय−नि॰, पु॰ [सं॰] दे॰ 'पारदेशिक' । पारिष - पु० देव 'पारिषा' । - पश्चि-पु० चनुर्वशेषे श्रेष्ठ, बामदेव ।

पारधी-पु॰ बहेटियाः विशीमारः शिकारीः कमनेतः शायास । 🕇 स्थीन और, आह ।

पारन-०५० दे० 'दारल' ।

पारमा-ग॰ कि॰ अमीनवर शक देना। विराताः स्विनेतं या भीर किनी भीवने जगावर तुछ तैयार करना। क · श्रमानाः पटाश्नाः स्थानाः स्थितित कृत्नाः पदननाः बानाः शहनाः बाननं बहना । अ० कि० सहनाः बहनेने समर्थ शोला । पारमधी-न्दी देव "दाईनी" ह

पारमूत-५० उपन्य, मेर. सबर ३ पारमहंग, पारमहंत्य-दि० [यं०] प्राम्तः वंददी। प्रम-X1-31 1 थारमाधिक-दि: (वंग) कामार्थ-तृत्वाः शरिकारी और

साय; स्वामाविक (जैसे-पार्माधिक सत्ता); परमार्थका प्रेमी: परमार्थकी ओर दृष्टि रखनेवाला; अति उत्तम । पारमाध्ये-पु॰ [सं॰] परम सत्य **।**

पारमिक-वि॰ मि॰] सबसे बहा, सर्वश्रेष्टः प्रधान । पारमित-वि० [सं०] पार गया इआ। पारमिता-स्वी॰ [सं॰] पूर्वता, उत्कृष्टता (यह ६ प्रकारकी

मानी गयी है जो ये ई-दान, शील, शांति, वीर्य, ध्यान और प्रज्ञा । कुछ लोग सत्य, अधिष्ठान, भैत्र और उपेशाकी सम्मिलित कर इनकी संख्या दस भी भावते ई-(बी०) । पारमेदवर-नि॰ [सं॰] परमेश्वर-संबंधी ।

पारमेप्टय-वि॰ [मं॰] बदासे संबंध रखनेवाला; बदाका । प्रधानताः सर्वोद्य पदः सर्वेशस्ताः राजनिष्ठ । पारय-वि॰ [मं॰] उपयक्तः संनीयजनक । पारियप्णु−िव॰ [मं॰] एक्षिजनकः पार जाने या पुरा

बरनेमें समर्थ। पारस्मीन-वि॰ [सं०] परवर्ती सुमका; परवर्ती सुममें द्दीनेवाला ।

पारस्त्रोषय-वि० (सं०) परलीय-संबंधीः प्रशोकता । पारकांकिक-वि॰ [मं॰] परक्षोक-मुंबंधाः परक्षोत्रका ।

पु॰ भेत्वेष्टि जिद्या । पारयस-पु॰ [मं॰] सन्तर । वारवर्ग्य-वि॰ [सं॰] इसरे वर्गकाः विरोधाः। पारबश्य-प्र॰ [मं॰] पराधीनना, परवशता ।

पारविषयिक-वि॰ [मं॰] इसरे देश या राज्यका, विदेशी। पारशय-वि॰ [सं॰] परशु-वंदंगीः परशुक्ताः शोदेकाः का द्वभा । पु॰ कीहा: ब्राग्नम और शुप्तास उत्पन्न एक स्नेहर जातिः परायी न्दीने उत्पन्न पुत्रः एक प्राचीन देश :

पारश्यम, पारश्यधिक-पु॰ [तं॰] परशा शेवर श्रद दश्गेराष्ट्रा थोदा ।

पारपद-प्र॰ [सं॰] दे॰ 'पारिषद' या 'पार्षद'। पारम-पु॰ एक प्रकारका परभर जिल्की नपर्शमे होता शीना दो जाता दे, रार्चमण्डि बद्दत लाम पर्देशनेशासा वरार्थ, पारस जैना क्छम परार्थ। यात्रा हुआ मीतना वह पत्तन विसमें एवं भारमीके गामेभरका मीत्रन रहा। गया बी: एक महीने बाकारका पहानी पेट्ट हिंदुरतानके पश्चिम-में स्थित एक मिन्द देश ! वि॰ [मं०] कार्म देश-संबंध: कारसका कारस देशमें देश।

पारमध=--दि», पु॰ दे॰ 'पारदाव'। पारसा-वि॰ [पा॰] गापु-परितः धर्मामाः गर्वाशासी (भी) । -ई-न्दी॰ सामुता, पारिस्ता ।

वारसिक-म॰ [गं॰] दे॰ 'वारमाद'। पारमी-पु॰ एक मधिहमक जाति । सी॰ [रां॰] सारग देशकी मात्रा !-बोशा-प्रकाश-पु॰ एक प्रव शिगुने बारगी है राष्ट्रीका कर्व शंग्हरामें दिया दुवा है ।-विशोह —पु॰ वर प्रोध जिस्मी क्योंतिय तथा समीलक्षियांने अभिष् रमनेशने कारणे और भरती भाषाढे शब्दोक्षेत्र स्वाहता

होरह देने की गयी है। वारमीब-पु (वं) दल्म देवा पाम देवश पोता -कारम देशका निवामी । -कमानी-भीक मुस्त्राह्म अप्रदादन (- प्रका-ओ गुरुवराजी सम् ।

-गर्च,-गर्दी(तिम्)-दिव दट्ट । रियो महीप्रदेश के जनवर दुवत । नक्का बच्छा न विक्र रीको में यह समानी व करते हैं का से का करे. बिक्र भीता किलार महत्ता का करती बरते है अलहा बार दिल प्राप्त । अब्बा मीम्बर-बृदर्ग का बाद दो कर अब्ब शासान (दर क्षेत्र) में। संस्था करतेया सामी सम्बद्ध भीत विशो माद्यी बाम पति मा केटे । -- कार्यकृति है सरामा - हे सप्ता संयुक्ता है क्या पहरे देहते हैं कार क्षत्रे की लागा व नहीं बारा करेंगे. अध्या कर बर्दा बर्दा कर many han more the aff all all the पारित बारमा, बहुवन हैया । व्हिंशाया-यान कारा बोरात -देशान्यम् यात् क्षेत्रो सन्द होन् हेल्. नेशान - एक द्वाप केंद्रश्च-काचा देना प्राच्छी देश'र नवर होना न्यातरम् होता । न्येहस्य हेत भित्र विधानगाँक (विश्वविद्ये)-सहाराज्यक्र १३१ होत्य विश्वविद्या किये हालाव विश्वव द्वारा (विश्ववे विधा हो

बर्ग माच र निगमर हिमी देव प्रतिमाती नवामना हो। पिशानसः मृति भारिका आधारः यन ब्रशिष्ट क्वानेविने कीई यह ही विभाने पहले करे हुए श्रुति एकडे बरीडे विकिन काम विदियादर माते आहे है। बैहरेस बह दत, यह प्रकारका आजाना स्थान, भानद (वेग्रे-स्थित योड](शाहरमङ (३०-शास्त्राचेत्रभः बनका एक अन्ते । -बेहि-एर देर 'हैदार्गामार्थ । -स-दिर ६१ । -शर्भ-विवर-पु॰ म्^{रे}ने अध्यादीयः वद गएश शिस्रये बर अमाधा आना है। - नाक-मु॰ गाडी । - देवता-पुरु आदि देशना ३ क्लादिका नगी। वह सुगारी जो बुर्गपुत्रको समय देशी मणबर पुत्री मानी है। 🗕 महून भी दारी वे अम काफी पृति, दर । - अर्तना-५ म मान्यका विशेष प्रदेशका लाग की गुर्गीये कार्य कुछ माबर हो लु है। (बैले मामका शासा शामिका मानवता अब समा की अर्नाहरू है। बामही बादी। स्वादना बरना है (भार)। देशहादा सुन्यताह । अमार्ट्डिश-अरो॰ बद्द की हो। मामकारी हिराप्तिये माहिककी स्वाप्तम करती है (१०१०) ह wit-ofte fent un'is mites auch ber nera-मददा प्रोपेश प्राप्त विभागे की है है है है है है है है हिंदी परपूर अपनी शहर, दुए-दाए १ - दीनी - सर सन् वर्गवर्गन्तः भीषुतः अन्तर्भवत् । अतः न्याः-वर्षाः-

20 10: 1507 1 पीरमा-मा॰ ब्रिक स्थि बण्डस आयात बरमा, धीट प्राचित्रा विश्वी प्राणीवर बाब, बीट मारिने मार्याण बरमा, बारमा: कीने पाँडी काडिये प्रकारी बहाने या देशने हैं किए समहर इबीहे आहिमें आवाल बरनाह મિર્ગા કરફ સમાત **કરમા**, હૈદે-કૈકે જુશ **કરના: વૈ**ને કૈકે क्या नेना, रिशी भी तरह एए। विष् बरना । यु= रीना, भीता, दिइमा दिर्गात, भारी गण्ड ।

पीट-दु । [मू ने नवरी। १९४१ वा बायुवा आमन-बीहा,

धीडी **ब**र्गाः प्रतिहोर्दे देश्येश अगन्त (जैने~हराताह)ः

रेशन करने दा उमे बार्जि पर्नेपानेके नियाजिन्ह यह , धाना । -स्टामा-हिमी प्रदोधनकी विजिधे हिए दिगारा भाषा हेला विजी करेटी लिडिटे किए विजी है रे हे रो है रिस्थार दिस्ते अधिव या बारिबर बालुदा पीला

विद्या बाना, द्याश जाना । (ग्रेट्रे, बेल शाहिसी)-शतमा-देशस् जन्य क्षेत्रम्, रोत्सं स्र रोत (क्रिमीक्ष)-समाता-हुएश्री निष कर रेजा, क्या

चींटक-पुरु [मेरु] सच्या, थीरी, बुरगी प्रार्थि रह रस क्षे सम्बद्धे है

पीय-इन बरेश मीति वर्रे 🗆 धरेही पेरी मान् बनायों जानेरायो विशेष प्रधारशी भीत्रह बन्ताः * बीहा। पीडिका-स्थे॰ [शं॰] प्रापुत पातर था कार्यक्ष विहेत

प्रकारका भाषान (देने दोता, भीतो)। वर मारार विभात

दियों देव प्रतिमन्दी अवस्था की सदी ही, देशपृष्टि

आपराः सृष्टि, गीने सारिक्षाः सानासः पुरितकावरः रिरीप

पीरी-थो॰ वामीने जिलेकर विभी हो प्रशः स्राधा

चीडक-पु॰ [शंक] चोश हे≥शाना, पेरिन कामेराना,

व्यवस्थितामाः यसस्यामाः आदरेकामाः देशस्थातः 🥕

पीष्टम-पु: [र's] दवामा, भीता। मनमा पीटा प्रे

बरानाः बाना हेलाः समापारः देशसाः विक्रीतने या वेशीया

भीभार: कागावदे संदशने संवर्ध कथन करते है हिन

रीपता वा रीरवाताः भीत्रमाः समझनाः ग्रहमः वर्गनाः

बाबने केना, परवाम (तेने-इर्क्टरने), सर्व बा धार्य

बाह्यक महत्र बर्केट बरनार मध्यमानि दिनी १४६की हराता

वीष्ट्रजीय-दिक विकी पीटबरे बेर्ग्या उपनिवे काम आने

बच्या । युक्त दिना संची केंद्र रेज्यका हाता; आनुकारेब

वीक्ट-ब्री : सिंबी क्षारी (इ. मा मामित वम, अप),

ver aren vare fåh-winntun, fiere reif.

ज विश्वती बामाः वाद्या प्रतिश्वा दश्याः प्रदशः शैक्षीः

इति, क्यांत्रा भरत ब्रुष्ट : -ब्रह्-दिश ह श देवेद की बढ़ कोंद देवाचा र - खरश्-पुर प्रोप्ता, पीरित बाला र

-बाह्र-चुन बंदरा रहे, क्रियहर १-६थाह्न-पुर में रही।

क्षेत्रिक विक्रिक क्षेत्र के द्वारा प्रमुखारी सभी हो। उन था

दुन्ताइब्राच्याबुन्ताः, श्रीमाधुन्ताइक्षाः दुन्नाः, हार्गः मर्गाः,

हेंदा बुक्का बजा बुक्का, आका कुक्का, हेरा, इका, इका

क्रेन्ट्रे(हिन्)-हिन् हिन्दे वह देवना, ए हर बर्ग हमा।

र्जुन्न-पुर काड, कारा का का प्रश्न कर भीकी बैला सम्बद्ध Ruf ben net fibt au mat.

老我一样一张的一个,我也有为什么

men who wit regar to be even, but the

बुक्षा है पुरु क्षा है। की सार्व देवे होंदे जिल्ला है के वर्ष की प्रेस्ट है

क्या का विभाग, पुष्रभूमि। सामदान (धीर)।

चीक्-सी॰ एक प्रकारका छिरोत्त्रमा शेरा ह

काम जिल्लो कडीडी आदि बनाने हैं।

चेष विश्वासनेहें लिए चेंडोबी दवाना।

भेट का शहर ।

है कराब द्वारी है बदार ।

figgional + 3 - " (and)

장씨라도 되고수는 백리는 한 부인도 우리

4:1

क्षीविक्ये अभीत्र (शर) पुरेश्या, पुत्री र

पीडिक-म्योक दोह ।

जहाँ होग दिलबहरून या इवासी(कि लिए जाया

करते हैं।

604 पारियात्र-पु॰ [सं॰] पारियात्र नामक कुलपर्वत । पारियात्रिक-पु० [सं०] दे० 'पारिपात्रिक' । पारियानिक-पु॰ [सं॰] वह रथ जिसपर चदकर कही यात्रा की जाय । पारिरक्षक, पारिरक्षिक-पु॰ [सं॰] तपस्वी, तापस । पारिवित्य, पारिवेश्य-पुर्व [संब] बड़े भाईका अविवाहित दोना और छोटे भाईका विवादित । पारिवाजरः, पारिवाज्य-पु॰ [मं॰] मन्न्यास । षारिदा-पु॰ [सं॰] एक षृष्ठा, परास्त्रीपल, गर्दमांड । पारिशील-प० मिंगी एक तरहका पुआ। पारिरोध्य-पुरु [मंत्र] बाक्षा, वह ओ होद रह गया हो। पारिश्रमिक-पु० [सं०] किये गये परिश्रमके बदलेमें मिलने बाला धन या मजुरी, मेहनसाना । पारियद्-वि० [गं०] परिषद् मेवंधी; परिषदका । पुरु परिषद् वा सभामें बैठलेवाला, समामदः, राजाका मित्र वा शतुचरः किमी दैवनाका अनुचरवर्ग । पारिषय-पु० [२१०] दर्शनः सामाजिक । पारिमपीएल-५० भिरीकी जानिका एक पेह । पारिसीय-वि० [गं०] जी बिना ओने-बोधे अपन हो, भपने आप पैदा दोनेवाला (अग्न) । पारिहारिक-प० [मंग्री हरण करनेवालाः हार या मासाएँ रीवार करनेवालाः आगत बारनेवालाः धरनेवाला । वि० **पर**ण वरशेवालाः परश्चेवाला । पारिहारिकी-स्वी० [मं०] एक सरहती ग्रेसी । पारिहार्य-५० [मै०] दरण करनेकी क्रियाः बरुष, संख्या । पारिहास्य - पु॰ [सं॰] दिएगी, हॅसी-समाक । पारीह-पु० [ले०] सिंह: अमन्त । पारी-सी० वारी, भोनरी। है शह आदिया जमाया एआ बहा दीका: [सं०] हाथीके पेर बॉपनेका रहमा: जनराक्षिः ध्यानाः दोहनीः परायः पारीशित-पु० (शं०) राजा परीक्षित् । वजार बंदापर, अनमे अप । पारी ग्रस +-पु = दे = 'पारी शिन्ती । पारीण-वि॰ [मं॰] एस पारतक जानेवालाः पूरा करने-माणा माप्त करनेवालाः जो तिथी विद्या यां शास्त्रमें पारवत हो (समामतिये) । पारीणस्य-१० [र]०) दे० 'दाहिलाला' । पार्राय-वि॰ [मे॰] (समामांत्री) किमी विषयी दश । पार्रारण-पु॰ [रां॰] वार्थाः रंडाः एक पहनावा । पारीय=५० [मृंग] देव विद्यासम्बद्धाः ॥ पाद-पुर् [धेर] सुध अधिन । षार्था-पुत्र [मंत्र] एक नरहर पूर्व । पाराय-तु । [रांत्र] परवदीनेटा भाव (वात या व्यवदारमें); बटोरला; कराहे; दुर्व पना चंदका बना समागः पृष्ठायनि ह Titte -go [1'0] notit 1 पारेवत-पुर [: क] इह लहहता कहतू । परिशा-विक [र्वक] रहादमद्द गुमा अगाह १ Unign-g. [1'4] turn 1 41554 - 4. [1, 2] 46251 8

41-8

पार्घंट-पु॰ [सं॰] घृल या रास । पाजैन्य-वि० [मंग] मेघ संबंधी । पार्टी-सं । [अंगे दरु, मंदरी; फ़रीफ़, बादी था प्रतिबादी पश्चः प्रीतिभीत्र, दावन् । पार्ण-वि॰ [सं॰] पत्तीका या पत्तीका बना हुआ; पर्तिवीसे प्राप्त होनेवाला (कर) । षार्थ-पु॰ [सं॰] युधिष्ठिर, अर्जन या भीम (विशेषनः अर्जुन); अर्जुन नामका पेट्ट राजा। -सारधि-पु॰ कृष्णः मीमांसाके एक प्राचीन भाषापै । पार्यक्य-पुरु [संर] पूपकृ होनेका भाव, पूपकम्ब, भेद, अंतर; भपाय, जुदाई, विलगाय । पार्यय-पुरु [मंर] पूध होनेका भाव, स्थलताः विद्यालता । नि० पृथुन्धंबंधीः पृथुदा । વાર્થિય−વિ∘ [મં∘] વૃથ્કી∗ાંની; વૃથ્કીના; વૃથ્કીને સરવજ્ઞ: पृथ्यीतस्वका विकाररूपः मिट्टीका बना हुमाः को रामाके थीरव दो, संजीनित, राजगी; पृथ्नीका शासन करनेवाला; सांसारिक । पुरु पृथ्वीपर रहनेवाना प्राणी; राजा; गिहीका बरसनाः एक संबत्सरः सगरः मांसारिक पदार्थः श्वरीरः मृत्तिका निर्मित विदल्पि । - आय-की॰ मालगुजारीः क्रवान । -क्रम्या,-मंदिनी,-सुराा-मी॰ राज्युमारी । -नंदन,-मुस-पु॰ राजहगार !-किंग-पु॰ राजगि**ह।** श्रीप्र-पश्चीष्ठ राजाः उत्ताम राजाः। वाधिवायमञ्ज-प्रश्न भिन्ने राजक्रमार । पार्थिपाधम-५० [ग्रं॰] नीय राजा। पाधिषी-सी॰ [मै॰] मीनस स्थमा । वार्थी-पु॰ निद्दीका बनाय। हुआ दिवसिय । पार्षर-१० [मं॰] धुद्वीगर भावनः श्रव होगः रागः, भरमः यमः बारंदवा वेमर । पार्वतिक-वि० [पं०] अतिम। वार्थ-दि॰ शि॰] यो दमरे दिनारे हो। अंतिमः प्रभावहर, शक्त । पु० क्षेत्र, परिगाम । षायंतिक-वि॰ [मं॰] गंपूर्व । पार्लग्रेट-न्यो॰ (अं॰) राष्ट्रकी, विशेषतः मिटेनकी, निर्वा-बिन श्रिक्त गरा। पार्षण-विक विकी नी विकी पर्वपर था भ्रमाचन्याके हिल किया जाय । प्रश्निमी परंदर श्रमासम्मादे दिल हिला जारेगामा साह्य । षार्वत-विक (एक) पर्वतार होनेशालाः पर्वतार रहनेशालाः जहां या दिसने एक्ट्राइ की 1 पुरु सक् निका पार्षनायन-पु॰ [मं॰] पर्नेत करिया गीवापात । षार्थेतिस-५० [मेर] पर्रव्याम: । पापनी-को॰ (तक) दिवशे बहातिना गीरी थी दिमानद-की पुष्टी है, बना, महारी (में दुवंने करिया गांधी आही है और दिमानपर्के यह जन्म रिनेदे पहित्र समीदे अपने शिवडी अर्जागिनी थीं। वेपी। व्यक्तिमा प्रीप्री: ब्रह्मप्रजः क्ष्मर्थे, बीटी बेंद्रमा कीर्दमी क्ष्मर , बाबर प्रदासी कारून । च्युमार,-नेद्म-दु० वालियेवः होता । -मेष्र,--बाई-पुर [६०] मान्द्रे शंद्रदा यह शार्वत्रव्य प्रथम है स्पेयन-पुत्र स्थ्र माल (संदोत)। स्थानुनपुर हिन्तु (

चीनक-भी शिवधेनी दिया, भग्नीयदे गरीमें कीचा । व्येपना । **स्थ – से अला–भा**रत्यकेनकेने केंद्रने सहस्र । पीनपा-स्रो • [सं •] रहरूपः,मोस्के परिष्ठाः सरीक्ता पीमना - ११० दि । देश देश देश विशा पीनम-भी श्रातमा, ९७१३ । ५० (८०) साइका तुराम बिगमे गपगरगद्यो शन्दि मह हो बाही है।

यीमगा-गी० [ध्व] सद्धी । पीनिंगा, पीनमी(मिन्)-दि॰ (एँ॰) विने पैनन रोग

दुमा दी, दीलग देशमें ग्रंबत । पीता-पन कि कि कि दि प्रदेश प्रशासी प्रशीद कर है दिसे વર્ડે પાંચા, જામ શરનાર દિશ્કી શાજરી શકે જેમાર જિલ્લોની भीतर ही भीतर दक्षा देता, शमहते ज देता, शहर ज हैं भी देना; इताब है मा; ध्यानने मुलना दुवहे, निवरेट

शारिक्ष पुत्रों बारेपनार केंग्डला, याध्य ब्रह्मा है पीमीरामी-क्रीक (शंक) सारी बारवामा गाल ।

पीय-गरीर गांव का कोरेका गांध्य महाद । पीपर!-प्र देश 'रेप्प' । -प्रमंत-पुर देशपरा प्रशा इर्ड सहस्य ।

गीपशासम्बद्धाः पीपमासम्बद्धाः ५% प्रश्नितः श्रीवर्षिः विषयिः

परिवर्ति–पुर्कार्गको छोता पात्रप्र ।

चीयस-पुरु वहमहादी जा,तिका मद्द वेद किने दिवु परिच मातने हैं। महरूब I को॰ यह अधिक क्या जिल्हा क्या ष्ट्र राहे काम आगी हैंद्र शा लगाने केनी ह

पीयालपुर कार या मंदिका क्षेत्रके आकारका नमा सक मदा याप जिल्लोंने लेख महादि इन पश्चर्त हरते का बंद बहरे भारत होने वर्त हैं (छाली पीधीने भारत हो हुआ ही। 473 612

ধ্যায়লখনীৰ হৈছ হৈছে। मीयमञ्जूष भाष्मी, प्रति ह

पीयरां नहित्र देशा ह मीमारू-५० प्रति: १४ भी ह

यीग -पुर (तेन) बाल, लगवा बीअप लुपै। अभिना प्रकृत elist t

चीतृशानगीत (१)को चन्द्रश्रा रह शेट ६

सीन्यान-पुर देश 'दे रुष' । भीत्रीय - पुन (रोग) अधूना स्था का प्रवास्थानिक बाद स्वास यां गान दिनीनध्या द्वा -शामित-धामा(सम्)। न्धानुन्युव ०१दार =श्रुष्ट्(ऋ)-पूत्र देश्या ह - प्राप्ताः - महा(हत्). - श्रीच-दुर- ६३१५ व्हर ६ नवारीनारिक क्षुर रोग्द्र शर्फेड के शर्फेड बेल्हेड म्बर्भ न्यून बार्ट्स का अवदान का बाहर के ब्रम्स ब्द्रानीप्रहे इत्राम्य प्रदर्शका वर्गां हर

THE STATE ATT. ARTS. THE TELEFOR (19) 4 हेर - [४१+] यह , ब्राइ में लाय, खुलें ३ पुर ब्राइ सर्वाही, was, merur, to be select, grown or & select, रायश्य र लक्षापा-पुर पण का करेलुस्था कुछ ह क्रमान्त्रीय १८५ मृति क्षेत्रे क्रमानीवर्गान्यव वर्षः ब्राह की बंदिकामा के एका बहे, बहिएक ब्रह्म है metrigente en 27 ma en militario forme elegat o माने मारे लगता बीट एक हो परीप्तमा नेवा । अहर-शिष्ट-पुरु वर्तेपुर । -धीला-पुरु वर्त्तार । -सला-दिन पूर्व, पूर्व । -(१) हार-पुर पूर्व आहर्त । नस्ति **अग~पु॰ ग्**रिक्षेटा र्वस र

पीरमाव-वाक जिल रेरमा-विको हे का कोहर वरिते पान पुरित्र दरेड गोरी "नक्सीत । पीता –गारु देश 'देश' । दिन देश 'राज्य'त

पीराई-प्र- वह मारि भी बचार प्रेरी होंग शब्द भागी पीरिका यथाडी है। स्वाली है पीरान-मी॰ (पर॰) हिमा चेएछ रेश्व बालि स्ट हो

मृथ्यि क्रीरीको एक्पवराधि लिए क्रियो अप्रक्षेके साम बन्ह ब्दी पूर्व ज्योग ह पीरामी~ओ• (का•) गे एके पती । चीरानेपीर-पर (पार) चेतीका द्वार अपने वस हो र

पीरी-की॰ (पा॰) बुहाया रोटा में हरेया स्वारत्या गैक बादी पाणादी, पूर्णनाः बचारा, अविद्यारा हुकुमत्र ह परिमा-पुरु माद्य गरमदा सुर्व ह

पश्चित्रा-य॰ १० भिरोक्त'। चीन्ड-५० (४१०) शाबी। शामुदेशमा मध्य मोन्दरा तो लिखे बानता और रिस्तो की भारता में (\$1) र पुर क्यांग दीवृद्धा पेटर -दुशमा-पुरु द्वशिक्ष तार- -पाँच-मु॰ यह श्रांतिहारीत क्रियों प्राप्ता पानक प्राप्तिके शापिको कोएका काम सुद्र घाता है। स्थितक गुरनेपरे घेर बालीके प्रेक्टर तक्ष होता हो प्राप्त है) र -पान्तु है। "दीन्दर्शर" । -पाचा-पुरु बू-दी, देव । -तन्दर नपुर सरारण, दानीवान । -दाम-पुर दानी दनिशाना श्रद्धारम्, श्रव्होशास् । लक्षास् लबुरु हेन 'दीनश'र्न ।

वीलक-पुरु [बोर्ड] बन्दा बना भीता है में है रिम्हा दर्व የነርየ የ

भीनवां(ऋण्-पुन्दीवर् । चीला-दिक प्रशिक्ष संदर्भ करें। लेख पर कालों सीरा निरम्बः क्षेत्र । (ब्राः क्षेत्री ।) अस्त्रेरअपुर स्टेम्स मक् भेर देशका कुल गीत एतका और मीर्ड अपने का हेल्दा है ३ -प्रमृत्र-दुव शहर्यात । -बहेसरर-दुव स्ता केता । अधिर-पुण कारोशांध बीतेशका यह शहका वैर क्रिक्टर रव कुछ दे वा होता है । =(सी)क्रमेरी=मीर बद्दबद्दारको परेश्री हिल्ला कुन देवे हिलाई होता है। -विश्वीनकी (१९४४) विश्वपारक नार्धनकी signiffes -farfinette un neute fichet. 44 भीर केत राम्या राज्या । में के न्या का मान्त्री रहेर में हेरत र - (ब्लें) ऋदेश-- के ऋत्या र

পুৰিয়েশ্ৰ-মাৰ থানামৰ চ प्टेरिक्स - प्रच व^र ट्र डेप्स ह

क्षित्व-१० (० ०) ४६ वृद्धः हो १६ क्षाप्ती, प्रकाशः मावदी murgeren geftet eiges wirt ein, egtet gert करिक्का कि कृति, बीद्रव्य क्या के बंधी सामगण कार्याच्या प्रमुख्ये हे हिन्दू के प्रमुख्ये कि की विकास कर है है है कि है साम इत्या को मान्द्र स —साम्ब्र — मृत मिन्द्र की ही केए हैं ने सर्व for 3th had nature time? Allow as no b the field by the first the first work work 603 पालधी-सी० वैठनेका एक आसन जिसमें दाइने और नार्वे पैरीके पंत्रे प्रमुसे बाबी और दावी ऑपके नीचे दवे रहते हैं। पालन-वि॰ सि॰ रक्षा वरनेवाला । पु॰ रक्षा वरना, रक्षणः निर्वाह बरना, भरण-पोपण, परवरिशः निमाना, भंग न होने देना (जैसे प्रतिद्वापालन): तन्कालकी स्यायी दुई गायका दथ। पालना-स॰ जि.० भोजन वस्त्र आदि देवर वदा करना, भरण-पोषण करना, परवरिश करना; जीविका या मनी-रंजनके निमिश्व पशु-पश्ची आदिको आहार आदि देकर अपने यहाँ इसनाः उल्लंपन न करना, न टाल्ना, निवा-इना (आशा, यसन) । पुरु बर्योको ग्रुटानेके सामका एक प्रकारका छोटा शला वा हिंदीना ! पासमीय-वि० [मं०] पानम करने बाग्य । पारुपिता(५)-५० (५०) पारुन वरनेवाला । पासस-विव [मंब] निजन्तीमे बना हुआ ! पालध• ⊶पु॰ प्रत्यं, प्साः नया और कीमल पसा । पाला-प० हवामें मिले हुए सापके नृहम कम जो अभिक रंपक प्रतिपर सपीद तहके रूपमें अमीनपर अम आते हैं, दिग, तुपार, बर्फः ठंडक, सरदीः किसी प्रकारके व्यवदारका शवगर, शाबिका ('पहचा'के साथ); सदर मुकाम, शीमा-निर्देशी दिए बगाया जानेवाला मिट्टीका मेंड वा प्रसः यह भूस जी कबट्टीके शैलमें दशके नियानका काम देता है। अताम रराने के कामरा एक प्रकारका मिट्टीका गोला, क्या और बड़ा बरतम, देहरी: अलाहा: बह रबान जहाँ दम् पाँच भादमा वह बैहै । मु॰ (विमाम)-परमा-माबिका द्वारा, काम पहला । पालागल-५० [मे॰] द्न, मेबाइबाइक । पालागुली-भी [मं०] राजाकी भीवी और सबने कम भाषद् पानेवाला गहियो । पालास-प॰ दे॰ 'पगान' । पालाश-वि॰ (मं॰) पलाश-संबंधीः पलाशकाः पलाशकाः मना हुमा। हरा । पु॰ तेशपत्ताः हहा रंग ।—स्बंट्रः~खंट्र— पण्याप देश। पासाबि – पु॰ [सं॰] पनाश गोयदे प्रवर्तक ऋषि । पार्थिद्-पु • [गं०] इंद्रम्य मामहा संबद्ध्य । पासिदी-भी॰ [मं॰] इयामा लडाः विकृता । पार्टिपी~सी [मं•] सूच्य विकृता । पालिहिर-पु॰ [मं॰] एक प्रदारका गाँव । पानि-मो (मं) बानडी श्री; स्थिता श्रेपी, पवित धीमाः बॉपः पुत्रः मस्य नामकः परिमाणः गीतः परिशः षण्याः विद्वा शंरीतरा तालावः वह निवन मीवन श्री धीराणी या छापधी गुरुक्तमे दिया जाता बार जूँ। बह भी दिने पुरुषें से तरह दारी-वृद्धे कादि हो। प्रदृष्ण त्रत । -14र-ते० ८६ महारता व्यत् । -मूध-ते० ALASI STOR ! बालक-दे बाबद्या देश ह वासिका-स्रो॰ [र्ग॰] कामरी बीह तुनवार कारिकी वारह

बाभी १ दिन स्थीन रहिन्छ।

पालित-वि॰ मिं॰ो जिसका पालन किया गया हो, पाला हुआ; रश्चित । पु० सिद्दोरका पेह । पालित्य-पु॰ [मं॰] पठित होनेका भाव; बारोंकी सफेदी। पालिनी-वि॰ मी॰ [मुं॰] पालन करनेवाली; रहा करने-पालिया-छो॰ [बे॰] चिकताई और रीनक जो एक वस्तु-पर इसरी बस्तके रगइनेसे पैदा होती है; यह मसास्त जिसके खगानेसे किशी वस्तुपर, विकनाई और रीनक पैदा होती है। स॰ -करना-विशेष प्रशास्त्रा ममाला लगा-कर चित्रना और रीनक्दार बनाना। पालिसी-मी॰ (बं॰) नीति; पीमा-नंबंधी षष्ट प्रतिदापन जो दिसी बंपनीकी ओरने बीमा धरनेवालेकी मिलना है। -हाल्डर-पु॰ वह जिसके पाम विसी शामा कंपनीकी पारिसी हो। पार्खा -श्रीव तीनर, बटेर आदि लदानेकी जगह: मजदर्तिके काम करने या रोशांकियोंके रोलनेकी बारी: पर्रश वह प्रसिद्ध प्राचीन भाषा जिसमें बढ़ने अपने पर्नेहा उपरेक्ष दिया था और विमर्ने शैद्धांके धर्ममंत्र किमे हुए हैं। [मंग] दे॰ 'पालि'; बालोई । पासी(रिन)-वि॰ [मं॰] पानन दरनेवानाः करनेवाला । पाररीयत-पु॰ [मं०] एक पेइ। वासीवाल-५० भारवाडी माद्रापीदी एक स्वापि । पाल्ड-दि॰ पानन् । पारं-अ॰ बरामें, बंगुलमें । मु॰ (किमीबे)-पहना -चंग्रहमें ऐसना, काश्में भाना । पादय-वि॰ [गं०] पानने योग्य । कालका – मो॰ वि॰ी टहनियोमे शेला जातेशका एक धेन । वारुविक-दि॰ [मे॰] पीमनेशमा, प्रमरमशीन । वास्त्रल-दि॰ [गं॰] पन्दल या तुर्ववादाः पावत या त्रवेवाम क्षेत्रेशका । पुरु तब्देवाका पानी । षायँ-प॰ दे॰ 'वांद' । पार्वश-पु॰ दे॰ 'प्रीवश' । षायं सी-न्दी॰ दे॰ 'पींबरी' । पार्धेर--वि० दे० 'पोरर' । पार्वेशे-सी॰ दे॰ 'धेंबरी'। पाय-पु॰ भीवा आग, यह भीवाँ। नार एरोस्ट्री एड टीङ, यह भेरका थीया मागः । पेर । - माना - प्र हे । 'पापपान' । -मुद्द-म्दी॰ शाहबदादे समददा एक सिक्षा जो एक अग्रहकी के चनुवांग्र के बराबर कीना था। पायक-पुर [sto] अदि, आगः अदिदेश गुर्वे। सरगाः वैचन अधिः सदानारः अगेत्या देशः भीनेशा देशः स्वर्गाः वाज्य विवासी: बायरियंगः पूर्ववः नीगरी संस्थाः। विश् गुद्ध कर्नेदाला, प्रवित्र कर्नेदाला । --मालि--पश गुर्देशोतमस्यि बालग्री शोहा । पापकासञ्ज-पुर्व [नेर] कारियेषः गुरर्धन सामद्व एष्ट क्ष्मि । पायकि-पु० [सं०] दे० 'पायकाम्य'। मंत्रकन, परीर आदि बारने के बामडी सुदी। पासन कारी-पायकी-भी । [१'०] अधिकार प्रत्ना सरस्का (देव) ।

पायक्तरह-पुर देश 'दारावेशह' ।

2115-32 र्देशपानम् । [४] प्रदेशमात् पुरुषादः पुरुषके सामग्रामितः । दर्गतराच (रक्षाक): शहर वोर्द । लद्दीपान्यक सामग्री । ∽विप्रष्ट्र-पु• एक प्रदेशका शूण ।

तुमा-दुर हैदे या अर्थे क्षेत्रे धेल्ले नैवार दिया आहे-बानाबार प्रापित वरकार भी दी का तेकी रूपा बाता है। प्रभाग - पुरु देश 'ददान'ई है बाह प्रयोगी देह है वकार-मो शिरीका माम रेवर हतानेकी जिला का बाका क्या मा क्यारदे लिए दिगीची कर्ण व्यक्ते हकता, रेर, दर,है, दिशी कुछी निकारणी निमारिशी गरिसारीà sie al rel melet, miestre ferrett monte. क्षाइरोडे बारामीता मुक्तामा देश बीनेपर बादी कीर

प्रतिवादीका भाग ने हत् इत्रमानात नुवासा ह युक्तामा-ग॰ जि.॰ दिशेषी काम लेकर हुकारा। भागवा ereiere murry neur; Gierfieft anger, femmir रशा का बनायदे जिल्ला दिशीको आर्थ अरथे बसाबा, युक्तो देशा विशेष यह है विवाहाओं दिए किया बर्दिकारी-में प्राप्तभा बरामा, परिवाद कहना; अविदिश करवा:

बिरेश बरमा ।

प्रकार, प्रकार-पुर (१९०) बारान्य यह शंहर कार्यर अध्य

या गीन अर्थक र दिए क्षेत्र, क्ष्मीया र

राज्यात्र - दिश्रामेशीया, क्योता । प्रश्रास्य अपीता

nother a पुष्टार्थाः पृष्टगी~धी+ (र'०) जन्माना नीलका रीवाः

कार्टर प्रकार जातिको करी है

सुम्बर-दुव देव 'दुष्य' र

manit mire fin termi' s

पुराव, पुरावती -पुर बीखरा, मामाव ।

पुराहाल न पुर पार्ट १८३१ शहा लानिया स्था १

पुरुषान्ति (पार्व) सम्बूत, त्रष्टात स्थला विकाया वैतिस बना दुष्टा जानकथा अनुष्टरी, यूरी अधवाद निव्हित्र । न्यात्राम नविक विवादित । नमहार नविक वेर्पात्रपद ।

Militi-no fan dei dent i MARIE-Mis al Marie di ant las laste mis

भारत प्रकार महत्वेचे हैंचेक चीत्रीय प्राच्या करते हैं। सुध्याहरत प्रणामा (मान्य) विक कोईको व्यानेवानाः प्रको गरस्य बर ने पुर दिशीये भार भार भार महदर बराहा ।

Antigonia go ideta, i

भूषाविद्यानक कि र पेन्याः मुनारः देना व

Twitten fait eiger ibm wen Geber fami

Aft miffer uner Ge. geier fingt avert au बरद की हैं। में बरद्वपर बुचलर देहेंहे जिल्लाकारी काल करों हो। एटी हुए बहुब हर रेग्सरी सरख जानको अंदर nighter ance com ent neer ander fear. ने दिए बच्चा की नेवले की समाविके किए समाविक सार्थ हार्थ बहे मारे, शृक्षाभाषा चलाख्यतेह स्थल ह चुनर्रोद्यानपुन (४) रोष महाद्वशाच जान व

Tall-to feel for early the feel feeter mer.

भारती हैया कर का अध्यक्ष में अवदिकालकुर विस्तृत र देरे कर्यों व अन्योगां को लोब संदे । अ अन्याक बहुत है हरेंगी The three the street to street shorts

कर्पकृत्यः, इक्केस्टला सर्पुत् क्रम्प्यानम् बीम्, संदेष Emiligi en erjger aten erfa.etan duta. द्यक्ट्री कुर्रं दर दर वसके में व दूर रिकेंट अला उप

का बंदे कार्य कार्य व्याहरका अन्तरीय देन कारा and the section and that the contraction करम प्रश्नादेश पुरुष्य देश्वर सम्बद्धा देश, कारास्त्र रिक्स-Bem fin en Iraf die vern fest 2884

Mit-do beit une atten an ib. f. jem ant

ate to tears s युक्तीश्व-पुत्र मृत्या, पृत्राः पृत्राते वेदनार्थः करित की

四次和武 利田門片

कुर्देखार- पुन कृता बरतेशानाः आहे दा कृत करतानगर

gifte-ge be 'ga-ft' ! dyniamas agus

एकाही नदीन वह क्षेत्री का पान देशांचे कुमाबी म बंधी Provid & E

पुत्राती-पुर पृथा दरनेशाला दिन्त देवनादा हिन्तीन बायोह प्रथम करने बालह ह

प्रमानी व बहुक -बेम्बामी-बर्गामीकी वेदालीय देखाली दश्चीमाणा कामा ब्रह्मा कार्यवर में मान्त ।

पुरु ऋशीची दिवस मा आया पुरु बरलेदी कमान है नुप्तामा-सर्वादक देव देव दिवस्तारा पूरा कारण, दशीरी चुनि करता। बाद क करमा। यान, मार्ड मार्डिनी सरका है। शृक्षाया-पुरु देवद्रमादे परदरण, मुजनदी सामग्री सर होनी का पान रिमाने पुरत्यही शामारे हत्ते अने हैं,

पुत्रपाना-अरु दिन दिनारे पुत्रनेदा क्राम बर्गाना, पुत्र कराम्या अवसी वृक्षा, अवमी आवध्यात ब्रहास्था हिन्द्र' बा बार्ड से बाकी सेवत्यामुका बाराता और मेर बाहरासा भुषाई-स्टान मुप्रनेकी विद्या था अन्यानुबन्धी प्रकार

guni-me fae i glas gian, qui umi muce राध्यानित होत्या 🗢 पुरा होता ह पुत्रवसाब-शर्वाद पुरा कर्मा शहल क्राधा ।

च्यांज व्याद की का बारवानी चवना रे बानमपुरुष्टित व्यक्तिया-४० र्थन मेटा । श्राप्तियाते - पुर प्रानिष्ठाना, बीतक सावह ने वेपाना ह

लगी इंडरेश्मी स्थित दा सम्पादद बन्ता स्ट्रिसे स्ट्रे रदमेशका क्षतिय दा अवारशाह स्ट्रीक्ष । **ल्रा**डियार्ड-अन् देन 'बुडेदा' र प्रधार-१० : प्रानेशना, धीत धरत तैनेशना और

(महार्थित दीपा ह चळाला-तर मंदी पेटा पेटकी ताह भाषा वा घेटे असे बर्गा वह की गया दिसंदे की बदा की, शिक्षा, माबन्याय क्यी मा अही पूर्व ब्यायायब बर्गु, क्यादे

पुरदाय-दि॰ देश्यासः, द्वाराह । -तुमा-पुर हरान्द्ररा underm en leife umter net fant fich mit भारतस्था महत्र्याच्या महत्त्वी प्रशा दिवाची देशा है । प्रकास−पुर (हेर) ईटस्ट श्लेस शहर । लक्षी(विद्यान्)-रिक (नक) देवरानाः । दुक प्रतान कार

खरश्चरित एरगारी-क्यांत (संब) देवली पात्राजा है

-माग्र-५० ईटाई प्रदर्श

. -समागम वरना । -तक न फटकना-दूर ही रहना । -फटकना-सभीप जाना । (किसीके)-बैटना-सभ करना, सहवास करना । -बैटनेवाला-सभी, हेटी-

मेशी; धहवाधी । पास-पु० (फा॰) सवान, लिहात्र; निगहवानी; रिजायत; तीन पंटेका काल, पहर । —दाशी-की॰ तरफदारी, पद-पात ।-वर्ष,-यान-पि० रसवाली करनेवाला, नीकीदार,

स्रवात 1-साती न्हीं २ हरण, निगवनाती।
पास-पु० [७०] वर्षा वामेडो लिखित आदा वा अनुमतिः
वह दिवद या आधापय निमेडो लिखित आदा वा अनुमतिः
सेरीक दोक प्रत्य वह एकं। दि० जिमने पार दिवस हो।
जो दिखी परीधार्म सफट हो गुढा हो। उन्होंचं, फैन्स्का
कहा। जो दिखी दक्षा या मेगीको पास्तर कार्य वहा हो।
स्वीधन, मंन्दर 1-पोर्ड -पु० विदेश जानेके दिल सरकारसे निया जानेवाला अनुमतियम, राहदारीका वरचाना।
-पुक-सीठ प्रसेनी संस्तरीको वह दिला जिमने प्रया

जमा बरने आहिका हिसाब रहना है। पासनार्ग - अ॰ जि॰ पेन्हाना ।

पासनी #-व्या० अध्याद्यन, भटावन ।

पासा-पु० चीसरके रिलां पंता जानेवाला वह चीपहला क्षेत्रेत्य इट्टीजा या स्वयोद्या लगा दुकरा जिम्मप् दिन्दा से स्वयोद्या लगा दुकरा जिम्मप् दिन्दा सोहोत्यों है। पासीसे होता जानेवाला खेल, चीसर दुसी मुनारिके सामावा पीतल या जानेम्ब्रा चीकोर क्षेत्र उपण जिम्मप् गोल गढ़ दे नने होते हैं। —सार-पु० पामेको गोती पासेका रेला । मु० (किस्तिका) —पद्मा-पासेका मा हमसे गिरमा निस्मे चीन होते हिरोभीको स्वयोद्या हमसे मिरमा सिस्मे दिम्मेको जीत होते हिरोभीको स्वयोदेश हमसे मिरमा सिस्मे चिम्मप्त स्वयोद्या निस्मे चीन प्रमा स्वयोद्या सिस्मे जीन या हारहा होते प्रमा स्वयोद स्वयोद सिस्मा भागा स्वयोद सिस्म भागा । महत्वना—भागा, भागवा अनुस्वय प्रमा हारहा होते प्रमा आवा । महत्वना—भागा, भागवा अनुस्वय प्रमा हारहा होते स्वया । महत्वना—भागा, भागवा स्वयोद स्वया।

पासिक-पु॰ पंदा, बंधन । पासिक्ष॰-पु॰ पंदा। जाह ।

पासिका=-भौ॰ पंदा, दंधनः बाह ।

पासी-पु॰ बरेनियाः यक अरपूर्य जानि जिल्लाः येता सुभर पाणना या ताषी जनारना है। श्री॰ फॉस; वह जानी जिल्लासे प्रत्यु, मुना आदि बॉबते हैं। विद्यारी ।

पासुरी = म्यो = पमनी ।

पार्ट •- अ॰ पाम, गमीपः प्रति, से ।

पाड-पृण्यक प्रकारना पासर क्रियार शीन, पित्रहारे और अपीम पिश्वर अन्तिक श्यानिता लेप सेवार किया अन्तार्थः

पाहनः पादात-५० (मं=) अध्यामः शहपुनसः पेह ६

पाइन ० - पुण्य १ ।

पादमः - पु - पर्मः, पर (दार ।

पादा!-पु॰ मेह।

पार्दि = = ४० पस, सभीश प्रति, मे ।

पादि -((रपापः) [रोर] रशा क्योः रचाने र -पादि-रथा क्येरण करी, क्याने स्वाने र

पार्टीर-भार देश 'दर्हि' ।

पारी-भी का की दुवस या दुवते गरिका काल । दिवा विश्ववा पुरु देव कि वहाँ

जो बसा न हो। -कारत-पु॰ दूसरे गाँवमें रोती करने-बाला असामी। -रोती-न्ती॰ यह सेनी जो दूरवर्ती रथान या अन्य गाँवने हो।

पाहुँच=-क्षी० दे० 'पहुँच' । पाहुनां-पु० दे० 'पाहुना' ।

पाहुना-पु॰ अतिथि, मेहमान; दामार । पाहुनी-सी॰ सी अनिथि; उपप्रती; अनिथि सत्सार, मेह-

मानदारी।

पाहरा-पु॰ उपहार, भेंट; शयन ।

विंग-दिव [मंव] इन्हार्द स्थि भूरा, दौवशिताके रंगका । युक इन्हार्द स्थि भूरा रंग, विंग बनों इरतालः, चूका सेसा । -कियबा-न्योव तैल्ल्या नामका कीका । च्यक्क स्र्चानिक सिक्तो भीटों विंग करीतो हो। युक केंक्का नाकः । -कट-पुक दिव । -मल-पुक गाता ।

न्सान-पु॰ हरवाल । न्स्तरिक-पु॰ गोगिय ।
विषाल-पि॰ [१०] विष वर्गका, सलाई निवे भूरे रंगका ।
पु॰ विग वर्ग, ललाई निवे भूरा रंगा एक प्रामीन छीन
वो इंटरप्रास्त स्वयम आनार्थ मारी गाँव हैं। वर्ग सुनिव
हारा प्रतीत इंटरप्रास्त (हि॰); भीतः वेरदा एक संस्क छोटा छल्कः, नेयला। न्द्रा यूर्वना एक अनुवाद एक संव स्वस्त पुनेरकी एक निवेश एक प्रतासन छोटा एक प्रयोत स्वस्त एक अनुवाद एक दानवा एक पर्वना एक प्रामीन देवा एक प्रसादका स्वाद विषय हो सहस्तान एक

रागः । १ वस पद्मी, परीक्षा-पिनन है पिउ-पिउ सरे, ताओ बात न साव"-मार्गा। - कोट-पु० पोतन। पिनव्या-को० (वं) शीरते द्विम मानशे एक प्रशिक्त नापी। एक पद्मी। उन्त्रती एक जाति। पोनन, शोशाव्या वेडा गोरीमन वस्ती। सुगुर नासन, टिनमार्गा पत्नी। एक प्राचीन वेदया जो अपनी परीनिष्ठाले विज्ञानिक है।

विवासाध-पु॰ [मं॰] शिव । (व॰ दे॰ 'विवास' । विवासिका-व्यो॰ [मं॰] वर्ग भी एक बाति; जस्तुवा दद

वातिः एक प्रकारकी मनगी । पिंगलित-वि॰ [मं॰] पिंगल बांबा बनाया हुआ।

दिएथीकृत ।

विमा-पु॰ वद मनुष्य जिमके पर रेहे हों। श्री॰ [मं॰] शेरोचनः बंधरीचनाः हरतीः हुमीः प्रस्था।

विवाध-वि॰ [गे॰] विवयो धीने कनाई विथे वृरे रंगकी हो। पु॰श्चित इन्यान् ; वेश्यात्माकः विशो स्वयानुस । विवाध-पु॰ [गे॰] वारवर मानिस्स्य । मुख्याः ०४

महरश्ची महाली: वारा भीता । विमासी-स्थे (वंश) श्रालहा यीवा ।

विगिमा(मन्)-भी (हिंद) स्टाई हिंदे भूग (ग्रा

विगी-मी॰ (०) हमीश देश पुरिना।

विशेशन-पुर (वंश) शिव । विश्वतिमदे नेत्र विवर्त है हो। विशेश-पुर (वंश) अधि ।

वित्र-पृष्ट्विको देव 'दिन्छ'।

विज्ञ-विक [तक] व्याद्रण, घरशाया द्रमा । पुरू बना बना बन्द महारवा महुरा भागा। सन्ध ।

[[RE-90 [Lo] #'ast Zu, 41:24 1

मुलिशा-ब्रॉफ (रेंच) यह प्रदेशको होते बाह्यसीत मुख्य अपूत्र (ब्रांन) हैता, द्यारह बच्चा, क्याप्ट वह, दिलामानिहें malt mist uit fitt ung fait udigmaigenigene - र्वापा - व्याप - व्याप्त प्रदेश प्रदेश व्यवस्थान । - व्यक्तिः (म्)=५० पूर्वन्यरीत्रमध्येत प्रवद्य व नक्षात्र नीत्र विदेश पुष्ट कामना हो। सं पुष्टि क लगाने दिया माटेपाला दिन्तारिके र अक्षेत्रका नकी व क्षेत्र गीति है। स्टाउ व क्षेत्रकी चन्न क्षमीरहे करदाराहि है अञ्चलकार्य ग्रह श्री कुम्बी नहर अध्यायांचा नदा है, नेट विकाल्या ह -अक्ष्यू-पुर दश्रद पुष ३ अष्ट्रीमकी/र प्रद रूपेनश्रद बार्ग र बीच है = प्रावधी संबंधिय संबंधि कुली है। इहर बार्श्व बार्ग हो -भी ने न **मीप्रान्यायक्रमपुर र**ुप्तेकी शासका प्रयु हेका

sein's weis muist munt dant nuter ente -वृक्षानकोत्। सृष्टिम्बर ३ नविद्यानकोत् के (पुणव-484' I मुनामक्षण्युव (त्रः) द्रवया । पुराशिक्षा, पुरुशी न मो ० (०) वे पुरुशी ह

मुश्रक-पुर देश रेपुष्टी । मुखरी = नदी । देव 'युक्ते'। हैव 'युक्ति' । मुक्तमान्त्र [रो०] प्रत्यत् ३ -ब्रह्म-पुत्र हिस्त द्

बर १९११ थे हर प्राप्त है पुण्-पु । [ता ।] शह अन्छ निम्हते सुरक्षाता माहेबर महदत बुद माना प्राना है र लक्षलपुर हैन 'पुत्र' र

tinte 1 मुकारा-पुत्र दिनी मन्तुपर पानी, देश आदिने लट नपता fagbar mig mib, en mifift ne aber diffeift

की महाती हो। में हैवी बावडे बी नो राज्य बारा बारा धारान भागः । -शह-पश्चापदेशे जिल्लाकः -विद्याः प्रामा-त्र स प्रदेश प्रामा धर्मह होता ह पुनाई-मो॰ पेप्तरेश हिना वा नामा नेपादीशह माहि-पर मिट्टी, शीनर, अने सतीका लेक करणा दश बामधी

Erit t मुन्तर्या-क्रीक संदर्भ, चानु, चप्ते अधीरद्ध बन्ने हर्द स्ट्रीही प्रतिमा भी विशेषहर शिलीनेके बाय कार्य है, पुरिया मांगरि देवता वह कामा साम दिस्के सामग्री कर ग्रहत માં તેવાની શહિત શેર્મા છે. વસ્તા વસ્તીણ મના કાર્ય સીક

बुक्ता-दुर करती, पापु, बड़ी बादियी बनी हुई पुरवसी मीत्रत की विशेषका निकालिक काम आणी वैश्वीतनी न्दर्भियो शुरुपण, स्मृष्टे आदिकी बनायी पूर्व बह प्रतिया मी पार्क रावके समावते कोदेहि बहते है हिए या प्राप्ता माण यनामेदै निय बनायी जाद । मुरु (विद्यीका) -वॉपना-दिगोध भएपश वेनाना, दिनाही बरनाही

पुत्रमा-गुपीय का रहत । हिन्द की बहुप्यकारी । प्रतः-॥ देश दीन भागाः भ्रा सामा । THE - 3 . 4 . (3.41), 1 পুৰ্বাহি, পুৰবিষ্কাণ-মান ইণ 'পুণানিতা' ট मुन्दियान-स्टोट देव ब्यूनवी । पुत्र(१०-२१) र देश 'पुरुक्षी' र

> ange ber artent gut battem unfriger abbet देख, बुल्हार, बाह्य की दर व चाहरू ⁽(ब्) च्युर दे का है है क्षेत्रक्षिकार्वेश्व क्षेत्र होत्यते सुद्रशानी ह grantes (and) great the great graff medte feing fan jûn, gitt b gg-(ligg) - fin fen spine i मुखीब, मुख्य- हेरन है। रहे देन पट्टियाँ है

> पुण्डिक-दिन [र्राण] सुप्रशाला व मुक्तिकालको र हिन्दे हिन्दे मुख्या, मुक्तिम् मुक्ति व्यक्ति the new tell only green my fact to 1800 webbler auter fint freit nan inpunt an gengt, freit eine bart flaten mitory with more Travely of the Least and all all a trade 新城上野山本山市 在北京 · 李子子 · 李子子 · 李子子 · 李子子 व्यवसानश्रीति कार्यादा पुल्ली । चतुत्र नश्रूषान्द्री

> करीयद ह पुष्टची(सिंग्) दिन [सन) पुत्र फारनेवाला पुरव रिसी Roma englament

> मुख्यपूर(दिम्म)-दिव (राव) अपने व्यवी मा न नेवाया MALLINE ! पुषाक्षाच्-पुर [संत] बद हिरादा प्रदन वैत्ता अपने देव बरण हो, पुत्रको कथले का नेशालय बरीपीनर किस मेरी-

पुत्राचार्ये-हिन [शंन] बुनते पारेशवा ह पुचारिक्त-कार (संत) अन्दे देरेरी या वर्णताना ब्बरमी, मारियो इन्द्र सारक्षत्र शाना ह

शहरा यस वर्षना अस ब्राह्म बान, देखा देशमेंव मार्गेट है प्रप्रदा-मीक शिको देव 'ब्रिका' ह पुष्णवर्णाः - (६० मही ० (१)०) युपद और (०१) र न्त्रवय-दिव (शव) वृष्यापा ।

सन्दर्भ प्रतेष प्रोप्तेष्ट दृश्य श्रेप्यार्थित - सम्पूर्व-को व मानवादी वह यात्र माना भागति । -धारी-१०१०हरू े दिवारि प्रति क्योरिय सर्गाय । स्वीवीय-विश्वपुरि र्पेयको प्राप होतेपाला, सन्दर्भेत्रक । -प्रतिविधि - ६६ मुन्दे व्यानहरू भारताहर दुधनभारित, शतक बुन् । 🗕 प्रशासनीक स्वतिहार परेत् स्थारति । स्वापानप्रकारी बहा युव र अक्षाह्म-दिन वरीक एक गुण्यन एरटेशनी र -जिय-दिक पुरारी व्यादा है पुर पत प्रश्न हर रहा रहा -सदार-श्रीक वरी औरंगै । स्मीद्र-पुर देवपुर प्रविभिन्ति । - बाल-पुर युवश भार, प्रशाह स्थापि पुत्रवारको सहिवति (१वी०) । नशक्तनपुर कारी मारिक्ष प्राप्त केला । - क्यू-भाव पुरस्त करी, य रेहर १ -मर्राती-स्रोध सबले रेहा-मीक्ट नार्टम श्रीक पर्धा । - माना-एक प्रानीने देश कारीकान प्रानी रियो ६ —अनुस्राति –अर्थन कार्यन दश्यना गणधी ६ नअर्थन -- एक क्रवीनिक्षाल्यक शहरीकी यह किया द्वाराध कार्रिका हिवार दिवा जाना है। -श्-श्री : पुत्र शांव करनेवाची की र लहींसलीक किएके वृत्र से दिए कि 'प्रश्रदेश'। प्रकार-पुरु [रात] देशा प्रवास शहा धूने सनुष्या हुण्या-

विवाधिया । - मा-मीन प्रथम करेती, देशकीर प्रयूप्त

-प॰ अञ्चोदका पेड़ । -स्टेप-प॰ एक प्रकारका लेप या उब्दर्स । -हार-वि० पर बैठे-बैठे बीरताका दर्म सरने-बाला, गेहेशर। विहिका-सी० [मं0] हें0 'पिटि': गोलाकार द्रीय. गिल्टी। विदित-वि॰ सि॰ तिमे पिरका रूप दिया गया हो. पिडाकार बनाया हुआ। जी रुपेटकर पिडाकार बनाया गया हो: गुणा किया हुआ, गुणित: गिला हुआ, गणित: मिश्रित । प० स्रोबान । -द्रम-वि० वश्रीसे वर्ण । -स्नेष्ठ-वि॰ तिसमें गारी वसा भरी हो (बैसे मेजा) ।

र्विकितार्थ-ए० (श्रेश) सारांडा, मधिनार्थ ।

विविधा - सी० गाडा किये हुए उसके रस वा आम. भावने सादिये गरेका मडीमे दबाकर बनाया हुआ छोटा für 1

विश्वल-वि० (rio) जिसकी विश्वलियों वर्षी हो। जो गणना कानेम कराल हो । प० सेत, पला बॉपा देवरा, गणत । पिडी(डिन)-दि॰ [नं॰] पिटेका भागी, पिटा मास करमें बाला (वितर): दारीरधारी । प० शिशवः विद्वदान सरकेशासः ।

पिंद्यीकरण-प॰ [तुंण] पिंदाकार बनाना, पिंदका रूप

देश ।

पिंडीतक-५० [तं•] मैनफणः तगर । विद्यीभवस-प० [सं०] पिशकार होना या बनाया जाना। पिडीर-पु॰ (सं०) अनारका पेश समुद्रफेन । वि० ज्ञान्त.

भीरश्र । पिँद्रशी. विद्वली • ~सी० दे० 'शिंदली'।

विष्ठक-प॰ पंचकः उस्तः।

पिंडोइकक्रिया-सी॰ (सं०) पिटदान और सर्पण । विद्योक्षत्रण - प॰ [मं॰] साथ साथ विद्यान करना, विरुद्धर

विषा पारता ।

विद्योवजीवी(विन)-वि० [मं०] इमरेके दिवे इब ट्रहरीमे

धीयननिर्देश ब्रह्मेबाला ।

पिद्योग-मी० पैली मिट्टी ।

पिदीलि, पिटोलिका-मी॰ मि॰। जठम । पिभ•-प्र• दे॰ 'विव' । ६० व्यारा; शुंदर ।

पिभना! −स∙ क्रि॰ दे॰ 'दोना' ।

पिअशं ∽विश्वीला ।

पिअरवार्ग-पुरु पति, ग्यामी । विरु ध्वाहा ।

विभराष्ट्रे=-भीः दोनादन ।

विभरीरे-स्वी॰ इस्ती या दीने रंगी रंगी हुई चीतीः पेर्टिया रीय । • वि॰ स्वी॰ दीनी ।

विभाजी-प्रदेश 'ध्यात्र'।

विभागा! -म॰ जिल् देश 'दिश्राना'।

विभारा-प॰ दे॰ 'ध्दार'।

पिभारा!-दिक देक 'व्यादा' ।

पिभागा - शी । देव 'ध्याना' । विभागा। - दि॰ दे॰ 'ध्यामा'।

विषय-पुरु विवृत्तम, संपूर्

विदर्भा - शाब मून्त्र १

-भी • मरारह् । -धंबु-यु० आमशादेश । -व्हेंदव → |

प॰ वर्षेत कता। -मक्षा-स्ति॰ भूमिजंब। -गारा-बल्दम - प० दे० 'पिकतंथ'।

विकास-पर्व [संव] चातक ।

विकाश-वि॰ सि॰ विमकी ऑसे कीयलकी ऑसीके समान हो । ष० रोचनीः तालमगाना ।

पिकार्नट-प॰ [मं॰] वसंत ऋत !

विकेशका-की॰ सिंगी है॰ 'कोबिल ध'। पिक्क-प॰ सिंगी हाथीका बचाः शीस बरसका हाथीः

तरह शोतिवाँकी वह लड़ी जिसका यमन एक धरण हो।

विधाना - अ० कि० दे० 'विधलना' ।

विकासना-------- जि.० किमी जीम पदार्थका गरमी पावर सरल होजा, सापसे दबीमत होता: दयासे आई होना. प्रमीत्रना ।

विचलाना-न॰ वि॰ गरमी पर्नेगांकर विसी शेष पदार्थ-को तरछ बनानाः इयारी आई बरना ।

विचंद्र, विक्चिंद्र-पु॰ (सं॰) चदर, पेटा किसी जानवरका nie ils

पिरांदक, पिविंदक-वि॰ सि०] भीपरिक, पेट ।

विचंडिक, विचंडिल, विचिडी(दिन)-विवातिका, वंदियाला ।

विचंहिका-सी० [म०] पिएली।

विषा - स्वी० देव 'वान' ।

विस्रको - स्वीर देव '(पनकारी' ।

विचक्रता-अ॰ कि॰ दे॰ पूले या उगरे दए नलका भीतर-की और दबना, पुलाव या उभारते शिक होता, हैह जानाः सिरुह्मा ।

विचाकशासा-म॰ कि॰ पिचकामेरी प्रवत्त सरवार ।

पियका!-पु॰ वर्ग विचनारी।

विचकाना-स॰ कि॰ फूल वा उमरे हुए समग्री सीमा बरसा ।

पिचकारी-भ्योत एक प्रसिद्ध दोला यंत्र विगाद निगादे सिरेयर एक या अनेक धोटे छेए होने हैं और जिसटे हारर पानी था करूप दिनी तरल प्रार्थेकी शीयहर बाहर वेंसने है। सब - छटना-दिनी नरश प्रार्थका विश्वी श्वाममे रिवकारी हारा चेंचे जानेवाने प्रमाने गरह शहर निरम्मा । -छोदमा-रिगी हम प्रार्थशे (उद्यार्थाः भरे पानीको तरह बाहर निकासना ।

विश्वदां :- । भी श्विदारी ।

विषविचा-दि॰ चित्रचिदाः गुल्याल । विश्वविद्याना-अर्थ क्रिक याद शहिमेंने पेहा जिन्हानाः

याव मादिका भाई होता।

पिचिषिचाइट्र+व्नी॰ विनिविधानेदा भार ।

पिचलना!--न॰ जि.॰ 'बु उल्ला' । पिषाय-१० (रांश) सरकार रोजा ।

विचाम--पु॰ दे॰ 'रिए'य'-'इरि दिन हार् संगा प्राधा

वडी वियम्पर - मादी । विम्-पुर (मेर) करणनी गर्देश ही मेंतिया एक परिमान, वर्षः कीएवा पर मेगः यह महुरः यद प्रदारतः सन्।व ।

-स्व-पुर वयाको वर्दे । -संद्र-सर्दे-पुर सीसदा

प्रदेश क्षेत्र प्रदेश - पुरुष्ट क्षेत्र क्षेत्र

ार् पुरंदरक-दीक (संको स्था ह पुरंदिक पुरंधी-स्थाक (१ को प्रिकृष्यको स्था, (राम्यासिक) स्था १

पुरान'द्राय'का शतान्त्रे प्रदुष्त क्षत्र । च्याक-दिः क्षिमक्षे निदि निदर दो । च्याक्सोर्ट मूँ) - पुनः अस्ती दो अन्य स्वयोग्या गिल्हा । च्याम-दिश्या प्रकरिते । बामा । च्याक्टिक, पुनः देश पुरान्त्रे । च्याक-दिश्यो

सामने ही, प्रतिभिन्त ।

मुन-पुन विरोध न त्यार का देश मेहक, यानाद का दिने सुष्य
स्था बार्ग में अपना, प्रदार के देश मिल्या पुन क्या न्यार्ग में स्था माने अपनाद के द्वारा पुन क्या न्यार्ग में प्रतिभाग के स्था कर के प्रतिभाग कर के दिन के प्रतिभाग कर किया क्या के प्रतिभाग कर के दिन के प्रतिभाग कर के दिन के प्रतिभाग कर किया के प्रतिभाग कर के दिन के प्रतिभाग के प्रतिभाग कर के दिन के प्रतिभाग क

स्तित् । अनुस्त दे । - न्यान्त्र कृष्टा कृष्टा । स्तित् - कृष्टा - कृष्टा

अधिच पुरः जनदृश्य चेशः बालन्ति । न्यस्ति पुनः पुनः प्रतः व न्यस्ति प्रते । वेशः चित्रं व निर्माणि । अस्ति प्रतः व श्रेष्टः प्रति । अस्ति प्रतः व श्रेष्टः प्रतः । न्यस्ति (श्रिष्टः) पुनः व लावते व व्यवस्ता । वृत्रं व विष्यं प्रति । अस्ति । अस्

পুৰুষ্ঠ নামুক মহিদ্য লগে লগে সংক্ষা প্ৰস্থান কৰিছে। সংক্ষা হ'ল কৰিছে । নামুক আৰু সন্ধৃতি, মহিলে হ'ল কৰি স্থানত ইন্যায় কৰেছে ইংগাই নামুক হৌন হ'লি মুক্তি হ'ল ইংগাই অধ্যান কৰিছে।

मुंदर्गर के क्षित्र के किया है के स्वति है के स्वति है कि स्वति स्वति क्षित्र के स्वति है कि स्वति है स्वति है कि स् स्वत्यः, शृश्यः । न्यूरेन्तिः शिरासः धेरान्तिः -प्रसानिकः भीवने स्था दुस्यः । न्यूर्वनिकः होत्यः, स्वस्य १६, व्यास्यः । न्यूर्यन्तिः स्थाः, स्वत्यः । -सामानिकः वृत्यः । न्यूर्यन्तिः द्यास्यः । प्रदूष्णक-भोग्यस्य वृत्यः । व्यस्यः नात्यः । स्वसः । पुरुष्णक-पुरुष्णकृत्यास्यः

पुरसान्त्रक करने स्ववस्थ विशेषाति वाच्य को कृष्य पूर्वपुत्र (विलेन्सात, वरतातीः वरत्यूत (वर्श)। विवीक पुरसान्त्रक स्ववस्थ काला, प्रथमनेशे विकासक

ব্ৰহে-বুক (বক) কৰা, দীবা। বুৰল-বুক (বক) দদ্ধ । বুৰলা(কৰা) –কৰ (বিক) গ্ৰহণ, কৰা, । বুৰলাইটি –কিং বুল বুল বুল ব ব্যৱস্থিতি –কিং বুল বুল বুল সঞ্চল। দিয়া ব্যৱ

चुरमीर −औ० वेटके चेतृहेदा बढ रच्छा। किरा। बंद्रवरे स्व र पुरुषणाः पुरुषियः, पुरुषणाः −दि० चन्नहेदा। पुर्व स्थापीरे

विश्ववा-त्व तेरन्या । वे० वेश्या द्रीः ना अत्या विश्ववा-का० तु० ,वेश्या, । विश्ववारवेशकत्यः वैश्ववाश्व-विश्ववर्था मेर सम्प्रा

िन्दर्भाः । पुरिवद्याः -दिनः, यु= देन 'बुनिव्याः । पुरुवाः -दिनः, न्याः देन 'बुन्ताः ।

पुरस्य-भी> [र्गः] दुर्गः । शुरवद्वारी-भी> पुरस्को जीरमे बद्दो स्था दुर्गः शुर्गः । शुरववार-भाग्निः सरका, पुत्रस्था पूर्वः सरकार संय

दिन मुद्दा क्षेत्रण, कर्रात्व क्षेत्रण कं श्रुत्या-करण मुद्देवकी क्षेत्रके अञ्चलको हुन्। १ पुरु देवों का कड़ केल को प्रकार क्षा करकेश कोल्यु दें। विन्तुका लाले किला करत्यक कुलका क कोल्यु कर्म, क्षेत्रक की कर्म

पुरवार्षे नकीर पुरश्य द्वा । पुरवीनकीर (गण्डे वस र (ती) । पुरविधार-कीर देश 'पुरश्वरा' ।

पुरवार-भूगदेन (पुरश्रा) पुरवार-भूगद्वार । पुरवार-भूगद्वार (पुरवार वाद्योगद्वार नेदेशस्य । पुरवार-भूगदेवार, स्पृत्येत वाद्योगद्वार नेदेशस्य वदं व्यव

्यान्त्रक क्षत्र हुन्द्र क्षत्रुन्त्रक क्षत्र व्याप्ति है व कुल्की-न्यात्र हुक्ताहे तुर्धात्रे बात्र क्षत्रिक किला हिक्साने देश्य

कुशह असर कियों सामीह संगता भारते पर रे हे नक्षापण

पिटिक्या-सी० [मं०] पिटारीका समृह । विद्यद्ध-पर्ण भिर्वे दाँसकी पपड़ी, दंसकिह । पिट्स-स्रा० शोक-पिहल होसर छाती पीटना । सुक पदना,-मचना-बहुतींका वा सारे कुटुंबका एक साथ छानी पीटना, कुहराम मचना।

पिट्ट-वि॰ जिसपर प्रायः मार परे, जो प्रायः मारा-पीटा जाय t

विद्वी-सी॰ दे॰ 'वीठी'।

पिर्ठ-पु॰ पीछे पीछे चलनेवाला, अनुगामी (निंदा);सहा-यक, समर्थकः सुद्यामदीः साथ माथ रोठनेवाला, खेलका साथी: विभी गिलाशेका वह करियन साथी जिसके स्थान-पर वह अपनी वारी समाप्त कर फिर गुद्र ही रोलता है।

पिटमिला-प॰ अँगरशेका पौटनी संस्प्रका मान । पिटर-पु० [मं०] एक प्रकारका गर या कमरा; मोथा; एक अधिः सथानीः यटलोर्डः एक दालय । -पाक-प् वासना प्य प्रकार (नैयायिकोंका यह मिद्धांत है कि पहेके आयमें पक्ते समय उसके परमाण अलग-अलग नहीं होते, प्रस्युत रिद्रीसे द्वीकर गरमी परमाणुओं के रंगको बदल देती है,

अतः परेका पाक श्रीता है, परमाणभीका नश्री) । विटर्क:-पु० [मं०] कहादी; पात्र; एक भाग । **-कपा**ल-

पु॰ बरतनका दुक्या पिटरिका, पिटरी-सी० सिं०ो बरमोई: हाँही । पिटयम-म्ही॰ एक प्रशिद्ध एका जी दवाके काम आती है, पशियमी ।

पिटीनी - ना० दे० 'पिटबन'।

विटीरी-मी॰ पीटीसे शैवार की हुई कोई भोज्य बखा (पदीश भादि)। पिद्य-पु॰, पिद्या-स्री॰ [सं॰] पुश्या, पुनी ।

विश्वक्रिया-न्धां गुहित्या मामर परवान । पिबकी-सी॰ पुरिवार र एक पर्छा, चंद्रक ह विविधा-छी॰ चायलके ध्री दए भारेका संबोधरा उक्का बिने बनमें पराध्या सारे हैं।

पिटब्री-श्री शीश पीश: पीरेकी तरहका वह आधार जिमापर कीर्र होता नंत्र रहता जायः वेहमाही है होनेने पीछे भीर भागेची और समी हुई एउड़ीका बीचेंद्र बाहर

दीनों और निस्ता हुआ मात्। विदेश - स्वी॰ मनिया दे॰ 'दोदी'।

विषया-सी॰ [सं०] मान्यंगनी ! विषयाक-पुरु [मंत] समी; होत; शोदाना केमर् ।

पिलंबरी-पु॰ दे॰ 'प्लांबर' ।

वित्रपापका-पु॰ एक शुप की दबादे काम काता है। पितर-पु॰ एत पूर्वमः प्रदानते छुटे द्वय पूर्वम मिन्दे विहा-पानी दिया जाती है।-वित-पुरु बसराज ! दिनवाई थे। दिनवाई! -मी॰ वह बमाय में दीनमें दे बर-

त्वने गराई सर देटेने का अधिक देशतक मोत्रद्वा रम देवेचे उन्नते रूपच ही अल्य है। विविदेशो - दि॰ डीन्सदा बना डुआ, डीएम्सा बुन

दे प्रश्चा पशा ।

विमा(म)-पुर (तेर) दिल्ले क्लंबर्ने वा व्यक्ति दिल्ले कीरेंने काफी क्यांत दूरे हो, जनक, हारा (मामान्हें निक्

दे॰ 'पितु')। -पुत्र-पु॰ फिना और पुत्र, याप और देश। पितामह-प॰ [सं॰] दादाः महाः पितर । पितासही-सी॰ सि॰ो दादी। पितिजिया-पु॰ रंगुरीका तरहका एक पेड ।

पितिया!-पु॰ चाचा। -समुर-पु॰ सगुरका मार्र, चिवा समुर । -सास-छो॰ सगुरहे गारंकी सी। चिया सास्।

पितियानी । निमे नानी । पितु#-पु॰ पिना । -सात्*-पु॰ पिता और माता । • पितृ-पु॰ [सं॰] दे॰ 'पिना'; मरे हुए पुरहो; मेतल्बसे मुक्त पूर्वत । -ऋण-पु॰ एक प्रशासका द्यारवीक कण जिससे मनुष्य पुत्र वरपन्न करनेपर मुक्त होता है। -फर्म(न), -कार्य,-कृत्य-पु॰ बाद्य, तर्पण आदि को दिनरोंके निमिश्व किये जाते ई। -करप-पु॰ शासादि कृत्य। वि॰ जो पिनाके समान हो, पिगृतुल्य । -कानन-पु॰ इमझान । —बुळ-पु॰ विक्रके बंधके लोग । —कुख्या-की॰ मटब पर्वतमे निकल्मेनाभी एक मरी। -क्रिया-स्ती॰ दे॰ 'विनृद्ध्ये' । -राण-पु॰ नितरः मरीनि भादि क्रवियों हे पुत्र, अग्निष्वाच आहि । - गुणा-स्वी॰ दगी। -गाया-सी॰ दिनरी द्वारा पत्री गयी विदीय प्रशासी याबा (बराणभेदसे येगाथाएँ भी निश्वनिश्व है) । नगामी-(मिन्)-वि॰ विदार्शवंधी । -गृह-पु॰ मायका, संहरः इमग्रान । -प्रह-पु॰ स्वंद आदि नी बालग्रहीमेंने एक (शुत्रुत) । -धात-पु॰ विनादी द्राया करना ।-धातिकः -पाती(तिन्)-वि॰, पु॰ वितासावप करनेवाला । -सर्पण-पु॰ पिनराँके निर्मिश विया बानेवामा सर्पणा अँगुडे और तर्जनी है बीवटा स्थान क्रियन्टे हारा स्थेश समेदित दरनेका दियान दें। विकाशाद्यी समय दान की बानेवासी बरमुएँ। -सिधि-सी० अमावरवा। -सिथं-पु॰ गया भादि तीथी अगूटे और तार्गीके पीय-का भाग विग्ने द्वारा सर्वेचका अरू या दिव समर्थिय करना विदिन है। -इस-वि॰ निवासा दिया हुमा। -दान-पु॰ रिवरोटे निमित्त दिया जानेवाहा दान-निवाद । -दाय,-द्रम्य-पु॰ रिवारी मात संचित्त मीस्थी वायदाद । --दिन-पु॰ भमावत्या । --देय-पु॰ अधिप्याच अधि दिवसः विवास्या देवदा । दि० भी दिताको देवमुक्य माने । -देवन-विश् विसक्ते करिश्वाता वितर हो। विशवा गंदंध दिल्लोदी पूराने हो। यु॰ मना मध्य । - ईवाय-दिक विष्ठदेशी पुत्राने गुरुष एकते-बाला । दु॰ भटदा(विरोध माग् धी भट्टमी)ने. दिस दिया वानेशला दिगुकृष । ~नाथ;-पशि~पु॰ दशरावः अर्थमा नामक दिवर । -एक-पुर अधिनका कृत्रा स्म विसमें चित्रपृष्ट बरमा मधरत माना गया है। रितासा बुक, विष्टुका रिवृह्यस्य सञ्चया विना, विश्वसद् और मरिकासह ! -चह-युक दिन्हींका संदर्भ हमा मा विमह-का दर्श । - विसा(न)-पु॰ विशामद । - प्रस्-को॰ दिशमही, रारी; श्रावंदाल, र'च्या र -प्राप्त-दिर दिशाने किला हुमा । -बिय-पुरु केलीवा ! -बंगु-पुरु बह विकार दिलाई मंद्रकी विदेश हो (की दिलाई मुक्तान) दुष) । -भण-दि॰ दिगदा भन्, दिस्ति स्टेस्ट्रेन

चीर्रामान्यः सहस्य संद्रात्रं सहस्य महति की की र पुरु रहा । - #fg-9+ for # 21230-30 323 5 मुक्ता-पुर्व देव 'दुव्या' व प्रस-पुर (धेर) मर्ग, मर, बॉल्डा प्रशास मानत द्या मण्याः सन्दर्धे सत्तार बहसुरद शह दिनहे मध्यम् महर्द्ध सिरम्सी सृष्टि बरसी है। (यह विद्वालगण, ह भेतन, प्रश्चिति, रिग्य, वर्गस्यादर, निग्रंस नया निग्रं गुन्त है के हैं) इंदरमान्या दिल्हा ब्लाइका बाहर दारान मूत्र वाम तुम्ब (दृश्वकाराः)। शिक्त श्रीकृतिका स्तीत-प्रमी, दीमि, चेंबरे, मन्त्री, मही का ब्वारहती राहि (वदोष), बर्मवारी (राज्युक्षक); अवर्ष दा सहस्रोंदी हद प्रांचीन मार की पुरुष का रेडक अंगुलाई बरावर ही दी की मेर परेन, पृष्टास क्या कारण सुन्तुका वर्ति। 🔸 बूर्व-प्रका पुरमा । नकार-पुत्र पुत्रवाद, धीतक, वदीवा। - क्यान-द - धनुष्टाः शत : - केशशि(दिन्),-केमार्ग(रिम्)-पुर वह जी पुरुषे वे मिद्र समान ही, fiel til a uttait gent ferget generatet -वाति-पुर एक शहरका ग्रम ३ -ब्रह-पुर संदत्त. सर्वे और द्वार (प्रदेश) र नामीनदिक स्तीत हाल्यो हत्या कार्रिकानी १ लक्षामानपुर सन्वयस्तिका साल व -प्रिया-भीत कर पत्री ही अवस्थित स्टार्गत है, देश र नव्यान-दिश भी पंचानि पुरवहे दराहर हो। -दिर्(१)-9= विद्वा विदेश । -हेर्द्या-विक मीर भारते व निमे नेर (स्रोत्सन्तर (मो) अन्द्रेवरिचित्र) -दिन सन्दर्भ देव दरदेशका । अस्त्रे-तुक प्रमुख्यान् का बढे । - पीरेयक-तुः वेष तुरका -मस्त्र्य-तुः द्रान, मून, महार, पुन देश, शृह्यश्च भीत तुम्य देवश्च । लमाय-पुर नेशाचीतः साधाः अवहा-पुरु बाह्यान्तः सन्दर्भ अवद्रा । -मुंग्नक् न्यूंडरिय-दृश्केष पुरुष । "Ilmfe tietel nicht eine die eine beav e mate mitte Gen genit feiterfie ge Reit ammeler uprest falete aucht (lag)-lie milit de multente -mefen deng be nichtente fege gentlet; if i white to with the reland agree ete to mir it i enfinent ale, lege, tie क देर दिवस । देश होते सेते केते घर राष्ट्रीत् । अस्तकातुक å å gry, feng i sufåigmlen detwa mergmete ele, traingrates are green to the make इत रहर, मुस्रा अध्यासा-सार्थेस-१० वह हे पुत्रक दि लिवके के मान बेंग्डरिन हो। माद्रीन वर प्राप्त पुरुष है। नक्षीचीनपुर बहार कर दूध बल्दाहरती से देवह भी र भागी बहा रिवर्डि हैं कर ब्रांगले हैं के बहु बहुद्धि । ant ga net evenisten nicht and ende की प्रमुक्त न लेक्सिन देव देव देवप्रदेश होते हा च्या छ । to Medica- by Medical State and I will by भिक्र भारत न स्वतंत्र है के हैं। स्वतंत्रे प्रकृत जानाका है そ・ぞ 代州生

भौत नेपा र सहायानीय विस्तात आहार बहुरीने विदा

444-461.

महत्वही प्रधीन बन्ना चाति है (कुश्तर) बन माने सी बै-पर्क, ब्हर्व, मृत्य और होपूर्ण प्रांतेय, पृष्ट्य ह पुरुषाद्वी (विषय) - ५० (५०) राष्ट्रण । हुरकारिय-को॰ (तंर) सन्दर्भ इतुः । -प्राप्ती(विष्) -50 88 81 पुरुषी-भी १ (६)भी भी ह Jegu -d. fe of etutt ha Grat पुरुर्वेशमय-पुरु (८ र) देश पुरुष; (१७५) प्रान्तः स स्पराप तराज्ञात, करहार वे बद्ध सुरु बार्ट इप्ती ६—ध्रीष्ठणपुत्र देशिन-का वह पुष्टर् क प्रकृति अनुस्तान है। इस अर्थन है, प्रस्तान 결란 6 사회(행사결4 부탁수 없었는 보보고에 8 Tern-ge itel be fee'd statt पुष्टाबर्ध सन्)-१० [लेंग] १.६ शन्ति श्रीकरेशी र र farmer flere materia gue ur fee web e'xi first nitt en terite : मुरेपान-पुर इलको सुद ह वरेम, पुरेशिक .. १ दे र दुरहर ! . मुद्दी-'द्दान'ब्दालकारकक्ष ३०० संवर्गको नामी (विद्यु) -हिन देन 'देव्हार, हमें ह कर का केट! संग्रहें को है संह १ कहा, รี่ยง เองิก จ.เอ้า จะหลังราชา..พ รูปกา ชุดการ รหสาพ กรีสา ही बार हो की है होने बाहते का कुर क्षेत्र के आहर्ति नकी र के ही क्षारित्तर हे बुध के लगा है है। ब्राप्त अपने प्रकारित का राजारी afer nemel, bene e umenefenebalete हैंगाक्षा कर कार्र प्रार्थ प्रार्थ हुन जा अस्तान है है। 實際的資本表記主要的部門主於2月前首於新作業等所 के राष्ट्रक अवत्य वे स्टूबर कर है। हुन्हें, इन्हें राहार है को बहुत हुई कारत हरू चारित्रका स्वतं हुई बहुत्रह entificial profes marine 35 to a catholis date 更有有效的10mm。 含含的10mm 计数据电子数据程序 型甲醇 医四种肾中肾中毒管血中皮 Bitamer , but ather as 4, from a

[40 Fady use minth stylenis [40 Fady use minth stylenis Genigani-20 [40] Justyr etinis Genigani-20 [40] darrenjets Genigani-20 [40] fadrenjets Geniga-20 [40] [40] fad 4-00 8 Geniganis Geniganis (40) mindr Geniganis Justyr (40) da Geniganis (40) fady (40) 4 Geniganis (40) fady (40) 4 Geniganis (40) fady (40) 4 Geniganis (40) fady (40) 4

पुरुवायुव-वृद् (शेव) सन्ध्यको भागु । -मीवी(विव)-

जुहयाहम क-प्र देव 'दृश्द'ते' } . .

हिर भी सर्वावती वृति अपुरत ग्रीवे । (रहेर पुरशापुर

बुरुपार्थ-पुरु [र्थः] मञुरुदि प्रीरहरा प्रपन् स्थित

वह बानु का प्रशेषन क्रिके प्रशेष सानिविधे निः

क्या देता. यथप्र १

2(42,1)

694 विजयना-अव किव अफीस है सहीसे आगेडी और डाव-झक पहला, पीलक लेला: सीदके मारे वागेकी और झक-शक जानाः जैयना । पिसकी-वि•, प० पीनक हेनेवालाः अफीमची । वितल-दिव मिने धारण किया हुआ (बस्त आदि): वैधा हुआ: आस्ट्राटिन, आवत् । विज-विज्ञां - मी० हो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'वित' हाइट: बनीचे नवियावर और अस्पष्ट स्वामें क्व-रवकर रोजेका झध्य: मिक्याकर और एक-रककर रीना । पिनपिनहाँ।-वि० 'पिन-पिन' बरनेवाला, जो सहा पिन-विभागा करें। विज्ञविज्ञाला!-अ० क्रि॰ 'विन विन' शब्द करनाः बश्चेका लक्षित्राचन और अस्पष्ट स्वरमें रुद्ध-रुपचर रोना । पिनपिनाहर - शी॰ पिनपिनानेकी किया या भाव । पिनसन, पिनसिस-न्दी॰ दे॰ 'पेंडान': दे॰ 'पेंसिल' । पिनाक-प॰ [मं०] शिवसा धनुष , अजगवः धनुषः विश्वनः रंश या छुड़ी। धलकी बृष्टि : -गोसा(फा),-एक ,-प्रत -- पाणि -- हस्त-पु० शिव । सू० -- होना-(विसी बार्वका) दप्कर होता. बष्टमाध्य होना । पिनाकी (किन) - प० (सं०) शिव । विद्यासक्त-क्दी० लावाया एक होगा पीनम । पिसा - विक्तो बराबर रीया करे. रीनेबाला । पर धनकी। पिन्यास-पु० [ग०] द्वांग । पिन्य-पि० [गं०] बहाने या बहानेवाला । चित्रहामार्र-म० कि.० है० 'पड़जाला' । अ० कि.० है० t'erenn' t पिपतिचन्, पिपतिस-पु॰ [गं०] पदी । पिपरसिंह-प॰ [अं॰] प्रदोनेकी जातिका एक विदेशी चीपा भी प्रायः दवाके काम भाता है; इसका मन । पिपरामार-५० पीएलको भए, दिपलीगुरू । विचारत - स्री० विचासा, ध्याम । विवामा-सी॰ [मं॰] पीनेदी इच्छा ध्यास, हुना, सालव विवासिन-वि० [rio] जिमे ध्याम सबी हो, ध्यामा १ पिपामी(मिन्)-(४० (१०) ध्वामा । पिपाम्-वि [गं०] पीनेशे इच्छा हरानेशला, व्यागाः लामधी (दिः)। पिषियाना! - भ॰ कि॰ दीर पेटा हाना। स॰ कि॰ दीर पैश बरमा। पिपिछी-सी॰ (सं०) २० 'विहाली' ३ पिपीतक-पुर [गंर] दिरीतकी द्वारशीका सवर्गेक एक वियोत्त्वी-म्ये॰ [र्थ•] वैद्यान शहा कारती ह पियोल, वियोगक-पुर [हुर] श्रीत । विषीतिक-पु [शं] चाता एक प्रकारका भीता (दह भी बा मबन दिया हुआ माना आशा है)। -पुर-पुर-कार का - मारच,- मारचम-विक औ। कोति काल आस-को नाह दोवने दन्ता हो। विषीतिका-मार्वात्। (०) योश (-वाशिसर्वेदा-प्रक योशियोः |

या प्रवर् करर देशमा ४-सारव-युक यस प्रशास्त्री चात्राः | विद्यासीक-क्षीक यस महानी १

विविधिकोहाय-पर्व सिंवी बस्तीक । विचीली-मी० मि०] नारी । विष्यान-भ्योत सिंही एक प्रकारकी विकार । पिच्याल-४० मिंगी पीयलका पेष: बंधन-रहित स्ता हुआ पशीः पशीः आरतीनः च चक्, च नीः पीपलका गोदाः जलः विषय-भोत । विष्यलक-पर्व मिंत्री आवर्गान, 'पिन', चमकः सीनेका समा १ विष्यस्य – स्ती॰ सिं॰ी एक प्राचीन सदी। पिप्पलात-प॰ मिं०ो एक ऋषि । वि० गीटा साकर रहनेवाला । पिप्पलादान्न-दि० मिंग्री गोटा गावर रहतेशहा । विष्यन्ति - स्री । [सं] वीवल सामग्री भीवति । विष्यली-सी॰ [सं॰] दे॰ 'विष्यलि'। -सल-प्र॰ पीयर-की जड़- विचरामण । पिष्पलीका⇔मी॰ [सं०] पीपलका होटा पेर । विष्यका-सी॰ [गं॰] दांतपर जमनेवाडी प्राप्ती । पिष्पीक-पर्व शिवी एक पशी। विष्वीका-म्बार्ग सिर्ग एक प्रशी। विषय-पर्व तिंदी सता. तिल । विश् - पo विवनम, कांत, पति । वियर =- वि० पीला । -ई-सी० है० 'वियराई'। पियराई-ली॰ शेश्वरत । पियरवार - प्रश्निवतमः कांन । वियराना - भ० कि॰ पीना होता. पीला पहता । विवर्ताः - विक सीक पीली । स्वीक पीली भीती। पीलायना एक तरबका दीला रंगा ! पीलिया सामक रोग ! विवरोस्ता - प्रभीनामे करा होदे आहारको क्षेत्रे राज्या एक विक्रिया । वियाता-५० ६ दंधग्रहाँ बद्धाः † दिवरीता । विषयान, विषायाँमा-प॰ स्टमरेया । विद्या - २० दे । 'दिव' । वियाजां ~ ए० दे० 'ध्याच' । विद्याती! - विश् देश 'व्याची'। विचादा!--प॰ दे॰ 'प्यादा'। वियाना - स॰ कि॰ रिश्वतः। पियानी-पु॰ (शं॰) मेव हे आवारवा एक प्रतिक्क अंग्रेश पियासन~पु॰ राजज्ञम्य नामका गुरा । वियात-पुर देव 'शियान'; १ देव 'ध्यार'; क्याल । दिव terre t वियासा -- विक प्यास । विवास-५० [र्गः] दिशी क्षेत्र देश दा प्रमुख क्ष्म । विवासार्ग -पुरु देव 'द्वासा' । वियापवदा-पः इक् माहती विदर्ध । वियास =- स्टा॰ व्द म । विचासार-दिव देव 'ध्यामा' व वियासास-पुरु शहेरेशे प्रातिशाहक प्रात्ती देशा

रण सन् ।

सा हिन्द मा यस राष्ट्रण ह -(म)ता-बीर प्रधी ह -रिश्त-दिर्(१).-विद्युत्त-विद्य-द्वर देश-सर्वी-शैंक श्रेपी । पुररोगारि-पुर्श्तिको हरू ह

पुरुष्तर, पुरुषय-पुर्व [बर्ब] स्टू बंधर जारि विश्वकी पर्यान बाह्य और शहरों में बाजी बाही है। पुरुष-दिक (१००) क्षित्रिक । युक सह पुरुष ।

पुरुष्या 🗝 🗝 नाव रत राज्ञ महत्त्व ह

पुष्टारे नपुर देश 'पुन्ना' । प्रवाहरी-पण देश 'प्रवाहरी ह

पुष्टव-स्टोन (फान) योटा केटी। संबत्ता। माद्याया रहात १ -१उस-४० न् रशः । -१४११-५० चेन्द्र सुप्रतारीदाः चढ भागा जिसमें एक मिनेयर हाबीएडि हार मेंद्रिका यंत्रा लगा रक्षण है । जन्म गुरुष्य-म पुरुष्य-म वर्ष पीर्टीयोधिः पीडीन्दर-रेडी १ - प्रमुच्युक हरेगी हे अवस्ता हिसस र म्मामा नपुर बप बागत विश्वपूर दिशा वश या वणके र्मान्ति साम समायभ निर्मा दोऽसुरसंज मा ६ **~एमाह**~

पुण महद्वार, शहाबळ । + खाली + क्टेंश वह लक्षी औ

किराह या महन्द्रे कृति प्रमाने अवस्तिहे किए स्थानी TET:-- 40 (4 to) fert diered neurft for urft र्गान्दर, बनद का जानेशाला जिल्ला हैंद, याचद क्याँट्यर भूगा। बीचा कारोबी हीक्षणेडे हिन्द देवकाका जानेकामा कार दिलाक्ष्मे जिल्लाक चालिया कोशका कारण की कारणा প্রহান বাধা পালা। লক্ষ্মীল ক্ষমীত প্রবাদ বাধিনীকা কলে है।

गुरुपापुरुष - अन् (च-न) कर्र की (वीधी र Araili-de faie) Cast witgnier gine art!

egi i युक्षभी-को । भित्रको अल्लाहाः देशाः सददः अल्लाहाः।

विकासको विकास सङ्घा स्थानको वर्षा अवस्तर । **–वास** – पुर सार्वाके जिल्लाहरूप मा नकीम पार्टिया क्रीत 甲砂烷 加萨利利 甲基氯苯磺酸苯

पुर्वति नहीं नहीं ने की यह परिदर्शन प्राप्त करता होता है।

中国的 地名美国伊里 中原虫 लक्षण्डिक (६०) पाएक प्रशास सम्बेशक ॥ मुक्ता-भोग है। भी स स्टीमही, बर्ट महारोत्स

मेर्नियम-विक निर्मा है रिक्त कर दिल्ला किया ग्रहा हो। यह व मुंबद्दानपुत्र (३१० ६८४०, वृष्ट्र ३

mente ma file untitet, betret un, mente इंग्लेकी स्वक्षा अद्यान, कार, जीव कारण नवस्त्री मार्थः कृतः सार्यदेशः स्टार्थान्, पुरुष्टस्युत्तः, असः सन्द्रप्रदेशे ging pagratic aries, were an imaging all marking AM BE D'A MON HOUSE BEE REMOTE BERTE ब क्र रेंचू भी, ऐस्ट्रे बीजा, संक्ष काला, में कर्ज बाड़ी, बारता बावाहर हो राज्यात हैरात्री कारबेर अन्यो ब्रह्मकर असवर ब्रह्मक्ष्य ।

k feet a cliest, gesantteinte caribicate, ur. 42. birs in where an angelign. है,३६, ब्रायदेश्यत दुव करों हो अब अगूद बील हैंड निहेन्ड हे

the set from all activates suffere floor fire at

क्षरा-मीर देव "पुष्टरमूथ" । अमूर्य-वृत्र वृत्त्य भागाद भी में १ -बार्टी-म्होभ स्थलक्ष्यो र अक्षाप्रक पुरु विष्यु । --वज्र--वर्षा,--वज्रास-पुरु ६०१३) (४ वा रत्ता - निय-पुर क्षेत्र । - बीज-पुर स्टलक्ष केत्र १ - सुगा-पुरु ग्रेक्ट्रे हेर सदा हैए । हिरू हेरते हाम बैंगे मध्याला (कान) । -मळ-१० इत शावधी भीति है। समस्या सह है - स्पूर्ण-पुरु वृद्धिका न शाबिका-भी। इद प्रम प्रते । -शिका-भी। मध्या-सूच । न्यपू-पुक एक शीवदक्षी अति । न्यासूक प= पप्यस्मन । -मार्गा-स्तः एव विशे । नायप्रीयन तुर दिवा - नाम् (ज्) - भी र ब्रामाध्य प्रशेष्ट्री माना र

बुक महिल्लाह मन्द्र (१ ११ मेंसे दिवयत) ह लुप्यसाधा-विक विकि स्थानके श्रामा केनेनाना हेन् 1377 पुरवहारूप्-पुर [लेंग] स्पर्म पर्ता ५८ सामग्री कीर्या । पुरद्वराध-पुरु [भीर] श्रीहरूर बरायाच र

प्रकाशकारी-को किने एक मरी । पुरसहायम्बद्ध-पुर्व [सर्व] विपोधाः सदः सप्तिपृति । Tertie-3. [4.] g. ,Lettea, 1 नुषक्षित्र-की र [संब] दिश्यका प्रव हीन र पुरवृक्तिः—स्रोक्तिको प्रवितीः एक अवस्या वरणायः क्याचीका समुद्राः काणवा चीचाः क्याच्युम् जनाएरः मह

बाबीय बारी: पासुप मनुद्दी पानी मुख्यपुरी, पानी, भीड क नीवनी शाला ह पुरुवर्श (शिष्ट) - दिन [मीन] बण्यपुर्व र तुन प्राची र पुरुक्षण -विक्शिको सेष्ठाला सीकार पूर्व प्रश्वा प्रदेश बद्दान्। बब्दान्। रावन्तर्वत् । है-प्रदेशन्। । मुक् सत्मात्रः सान्दिरः

भीत्रह सुर्देश्य वह प्रामीन एदिश्या चार ग्राम निक्रकी इक प्राचीन परियाण। इस परियालको क्रिका एक महर्गा ging wif erengt an dal firet genetet en क्षत्राहरू होता. यस श्रद्धात्रमा अपनुष्ट नाम । gernen-ge feref blege, ar felget mifel, fit

किनी। की ए. को ला शूपण्य, बीवां बंधा ! मुदद्रमामनो नद्या । ।। । इत्ये द्वार मुद्र मुद्र मार्था रामार्थः ge-fee fort farat ben feet unt bie ben. alter eriet, meint dier, get ger migin unbermt?

बुक हेंब्लपुर बोज्य ह मुक्केन्स्रात्र सम्बद्धेत्र भीषात्र, रूप्तम् स्राप्टेस्यमे दशा १ que nate (sta) que fitas une, dirt, afere.

44,4.6% कुर्वित्र कार्या (५०) योजना केर्या अन्यास्था अन्यास्था

samir mada, unun, desc se misto es कुरुक्ता बहुद्धे देव देश, क्लादेव, कुल्या झाला द्वारा भी वंद संग्रह । भवना भवानक्ष भवितः होत्यः बाहिए गाः न्द्र क्यांनेराच्या क्यांक्ष्यक च्यार्थ(स्) व्यून १६ के हिंदे हैं कर भी अवबुद्ध है कि है है बन प्रारंग है अन्तर्हर है 有大夫 智 医外腺性肾上腺中肾炎 经工业 医水性角膜 唯以大利學生 Fir greet, greet a manual a meres mares हैं। ए दे व "मुन्देर्द" व अक्टबियर दुव क्षत्र क्षतीरत न सक्तार्थ व दुर केन्द्राधाने इ.चा प्रशोधन क्षेत्र है कह सामान , नाइस

बार-बार कहना; निरर्धंत धम !-व्याय-पुर एक न्याय जो किये हुएको स्यर्थ ही पुनः करनेपर प्रयुक्त दिया जाता है। -प्रमेष्ट,-मेह-पु॰ प्रमेहका एक मेद । -धर्ति-सी॰ देमन; पुर्भोस; जीके आटे, चावल और दालका बना हुआ पिट । –सीरभ-पु॰ (चुर्ष) चंदन ।

पिष्टक-पु॰ [सं॰] जिसी पिसे हुए पदार्थ, आटे, पीठी आदिसे बनी चीत-रोटी, बाटी आदिः तिलका चुर्णः स्रोगका एक रोग ।

पिष्टप-पु॰ [मं॰] गुवन, स्रोक्त ।

विष्टारा, विष्टासक-पु॰ [मं॰] अवीर; बुद्धा । पिष्टाद-वि॰ [मं०] आटा सानेवाला।

पिष्टाक्ष-पु० [सं०] आरेसे बनी हुई चीज ।

विष्टि-सी॰ [मं०] बारा, चूर्व ।

विष्टिक-प॰ [गं०] चावलको पीठी । पिष्टोद्रक-पु॰ [ri॰] वह जल जिसमें चावलका चूर्ण पोला गया हो।

पिच्यल-पु॰ [मं०] दे० 'पिप्फर'।

पिसंग-वि०, पु० [३०) दे० 'विशंग' ।

पिसनहारी-जी॰ आटा पीसनेवाडी, भाटा पीसनेका पेदा

बरनेवाला थी।

पिसना-भ० कि॰ पीसा जाना, नुश्रं किया जानाः दरकर विवटा हो जानाः बद्धत अधिक कष्ट बानाः धीर वरित्रम बरनाः घोर परिश्रमने थरुयर चूर होना ('जाना'के साथ)। पिसयाञ्चन्यी० दे० 'पेशवाज' ।

पिसवाना-स॰ जि॰ पीछनेमें प्रवृत्त्वरना, दिशीने पीसने-

का बाग वराजा ।

पिसाई-सी॰ पीमनेपी किया था भावः आटा पीछनेका पेशाः पीसनेकी छजरतः भीर परिश्रम ।

विमाच = -पु० देव 'पिशाच'।

विसानी-पु॰ भारा। विमाना-ग॰ कि॰ पै.मनेदा काम करागा । ई अ० कि॰

विमन् ।

पिमिया! -पु॰ पद प्रशादका छोटे दानेका लाल गेहें। मी॰ पाडा पीछनेशा पंपा।

पिमी। विम्यीर-गो॰ सदेद गेर्ट ।

पिस्त = -पु । पिस्त, सुगत्रधीई ।

पिमुसाई-सी॰ रहे ठदानर पूनी बनानेकेकाम आनेवाला गर्व देश दुक्ता ।

पिर्मानी-भी। पंगतिक साम, जाटा पंगतिक देशा धीर परिधान ।

विभनई-विश्वविश्वदेशीमा ।

पिरस्य पुर (फार) धीरमुधे सीनेहर उधार ह

पिग्ता-पुर हर प्रशिद्ध मेंबाः दशदा देश ।

पिग्नीस-१६० वंदूवरी द्वाद देशी दावनेका एक होटा र्यादवार ।

विषयु-पुरु बद्द मध्या जैया उद्देन और बारनेनामा धीरा

पिष्टकता-मन्तित क्षेत्रण, वर्धहे आदि मेर्डे संस्कृत वर्षिता बेलाना ।

विदान। -पु॰ दिशन, दहना, दहन।

48

पिहानी≠~सी० टक्क्न; हिपानेवाली बात । पिहित-वि॰ [सं॰] दका हुआ, आण्छादित, आवृत । पु॰ एक वर्धार्टकार जहाँ किसीके मनका भाव जानकर किसी किया द्वारा अपना भाव प्रदर्शित किये जानेशा वर्गन हो।

पीँजन-पु॰ घुनकी। पीँजना−स॰ कि॰ (रुई) धुनना ।

र्षीजर•∽पु० पित्ररा; अस्थिपंतर । र्पीजरा=-पु॰ दे॰ 'दि जरा'।

पींड्-t पु॰ किमा माला बलुका गोला; एक गहना। • शरीरः पेडका तनाः पिडसान्सः।

पीडी-सो॰ दे॰ 'विद्या'; † पौथा उत्पादते समय अव्के चारों ओरही मिट्टी हा पिट ।

र्योहरी=न्सी॰ दे॰ 'पिट्टी'।

पी॰-पु॰ मियतम, कांग ! ग्वी॰ परीहेकी मोली !-कहाँ-पु॰ पपीहेकी बोली । -रस्त-पु॰ पी-पी करनेवामा एक पश्री, पगी€ा ।

वीक-सी॰ पानका श्वः वह रंग जो करदेवर पहली बार-की रैगार्रेमें बदता है (रेंगरेंग)। -दान-पु॰ पानकी पीक स्कृतेका एक विशेष प्रकारका पात्र, उताल्हान । पीकना-बभव कि पपीर या कीयसका भीसना, भिष्कना;

र्र अपूर निकलना। पीकार-पु॰ नवा, क्षोमल पछा। सु॰ -फूदना-पएय

निवलना, परवित्र होना ।

षीच-स्वी॰ माँदा f दे॰ 'दीय'। पु॰ (सं॰) हुपी। पीछो-गरी॰ मांदः पश्चिमोदी पूछ ।

षीद्वा-पु॰ दिगी बस्तु वा स्यक्तिमा विष्टला भाग, भागादा वल्टाः दिनी पानाहे बादका समयः पीछ लगा रहना, विद्यन्ती । सुक - बरमा - रिसीवी परवी, भगाने या मारने हे किर उमके थेछे-पोछे बाना, छदेवना !-छकाना-हिसी भनिष स्वक्ति याबस्तुहि (पंट हुरुशना) —एटना -किमी अधिय व्यक्ति या बस्तुमे सुरकारा मिल्मा। -छीइना-पीटा दरनेके बार्वने विरंत दीना, दिनीहै पीछे लगे रहनेका कार्य पंद करना; स्थि प्रयोदनकी मिदिके लिए स्मिक्ति पीछे-पीछे पिरना वह बहुना। -दिग्राना-भाग गरा दोना। -देना-साथ छोड देना ! -परद्ना-दिग्धे आशामे स्थिता माथ दरना ।

पोएर-अ॰ दे॰ 'दोठे'। पछि-अ॰ पीटरी बोर, पृष्ट देशमें, आगेटा एउसा देश-क्षा अनुमार दिगी है परवान, आनित, बादा भनमे, बादनैः दम बीहमे दिश होनेया, यह शानेका निय, बारने, सानिहा बज्दमे, बदौदन । सु० (किमीके)-चलना-विधी बाहते दिशीका अनुगमन बरमा दा अनु-बारी होना । (किमीके)-एटना-स्मिन्धे विर्धाः, कार्य आदिया दश देनेंहे निविध समर्था निवसानीहे बिस नियुष्ट क्या जाना किहीची परतने हैं। तिह तैनात दिया ब'मा र -कुरबा-दिएर अला (राते हे सार्व) । (हिमी) के)-छोड्या-दिगोडी विर्दात बाई मारिया एश देशेड्र विविध कारी विमाणीत विद्याप राजा हिस्सी रह-वनेके निष्ट निर्मुण करता । (विमाकि)-प्रामानीसा बाहुकी निवादेगेके किए हुक शामा किया क्रिक्टी

भूष्यते अञ्चल होरा में हीर मुल्लाव गरी बुल हा रहते ह

ger gr (m) they east with which there

रिराम्द्र में कवर कांग्रुक्त हैं के शुक्त कांग्रह

Ashalian in fin fin danis, 1

ung milier finn, untatt ! -unffat. --दिल्ली, बन्दिस रे -बार्ल-१० प्रमुक्ती शहरे प्रमुक्त यन वेहायाः पुरुषः दश्योकाम् । पुरम्बक−न्दरे र्ीर्ट हो बादबीर विरक्ष हुने बी केर प्रकारिक कर -इद्धा-ब्रदोव बाचकी दक गुजर (४०) र Tradition fire bie artig Lines burn if प्रपद्धे आक्ष्यका । पुग्नकामारः पुरमकामाय-५० (१-०) वर ४८% त unte fank fallen ferit gent einer. पुरम्बारपुरा-पुर्व [र्गर] हिरार बर्र पेपीक देश्य र पुरवृक्षी-स्टार (सर्) होता संच । पुरित्तहर-शीक [शेक] १०११ पुरुषद । मुख्यी-की (क) शब्दे लिये हुरे पेट, रेट दिन्दा पुंडबर, पुरुषर+चपुर देर 'पुपर । पुष्तमार - अने कि व पेपा प्राचा, शुक्त प्राचा । बुद्धक्षीय-स्टीर प्रश्ने ह पुषामा-शन दिन र्वनस्थाः, रिटिनेश पाप सरावा व शुक्रमा के न्या, मुक्त । क्यार के मुक्तामा, क्यार । ल्हेंझ-यु+ मृत्दरेग्, प्राप्त 8 मुख्यों == क्षेत्रः सृद्धिः दश्शे । == द्विन=पूर्वः कार्यः । पुरुषीय-सीर मृद्दि, मुख्दी ह वृत्ता-स्टीक शहूबर अप्यक्त बाजा ह पुरु के देश की शह र्वेशी र नशीर यह तरहारी गोगुरी ह बुँछ-ब्रीन पर्युक्ती अर्थिते शर्मान्तर शह रीति मन क्षेत्र में प्र या ब्यूएक्ट्रे अनुकालया सुरान्द कहा पना प्राप है, एका दिसी परार्थक हिल्ला प्राप्त क्या के करा वक्ष्येकाताः पुरान्ताः कृति वर्ते भूगे हिन् भूगे हिन (विश्वीकी) -पश्चका प्रत्या-मांत होता विशेष कत्रास बरवा, रिस्तास शहादक्षी होते क्षाप्र दर्शन र्वेद्धनकीत देव 'दूध' ३ न्यान्य, व्यन्य-१८४ - देर 'दूर बुँद्वपुरे-१८५ ऐस्स अन्य प्रान्दि क्राने क्राने अपूर्वदान व्ययम्बर नम्भ विक देश विद्याला । ब्रीक्षकांत्राच्या रहे । देव देवर्ग्य का में है बुँक्षी कथी व सिक्त प्रतक्त दश अनव्या पुष्टा हुन, पह दर freige fie femmen feine geneumt albeft fin हेका बर्गहर अबा ५७, हरीका बन्ध, इक्टरपी ६० सम्ब Beit feneng mie, ferrigte, minger be anger युक्त केन गाँ ते हरियो । अवहित्र कुछ अब सबी अदिय नहें प्रयान और प्रदेशनार्थ देश सराहर अंदर्ग सीव REAL BY STATES SALE AS MARS MALLEN अहं प्रदेशका है, करं करें। हो दह जार एक है से एक हैंगी when you will sink singer you by many a fee 運動的中華 不清明 经收益帐 有的复数形式 實施一時日 安全 體一學用學的學學與 医环氧化剂 医机动机动物 电 March of the year, I from \$1 for \$10 Server - #\$fe) was #41, . Aprenium o you, age o

विसने सोया हो; सीचा हुआ; (अंविम तीन वर्धोमें 'शेत' का प्रयोग हिंदीमें नहीं मिलता) । पु॰ पीला रंगः पुस्त-रात्र; हरताल; गंपक; चंपक; कनेर; दीप; केमर; वस्कल; भवता पत्ती; सेदक; इंद्र: गरुह: बह्न खपशातु जिससे धेटे बनाये जाते हैं; गोमूत्र; शुत्रर्थः मैनाकी खींच । -कंद-पुरु गाजर । -कदरुरी-सीर स्वर्णकदली, सीनकेला । -करवीरक-पु॰ पीला सनेर I-काचेर-पु॰ देसर; एक वपशतु जिसके पंटे बनते ई । -काष्ट-पुरु पीटा चंदनः पीला सगर 1-कीला-सी॰ आवर्तकी 1 -कुरवक-पु॰ पीली बटसरैया ।-कुछ-पु० पील रंगका कोड़ ।-केदार-पु एक तरहका थान। - ग्रंथ-पु पीला चंदन। −घोषा-छी०एक हता जिस्को पूल पीले होते हैं। -चंत्र -पु॰ एक तरहका तीता। -चंदन-पु॰ पीला र्चद्रमः ऐसरः इन्द्री । -चंपक-पु॰ प्रदीप, दीपक । -चॉॅंप-प॰ [दि॰] फाद्यपुरुष । -झिटी-सी॰ पीसे पूर्लीवाश बदसरैया । -तंतुल-पु० कॅगनी । -तुंड~ पु॰ कार्रहत पक्षी ।-सैला-सी॰ मालकैंगनीः वशी भाल-4ॅं.गुनी । —**दारः** –पु० देवदारः सरलका पेतः दारहरूदीका पौषा।-द्वीसा-स्पौ० बीडॉको एक देवी। -दुरधा-खी॰ दूध देनेवाली गायः वह गाय जी स्ट्के प्रवत्में दूध पीने दे लिय क्रणदासायो दी गयी हो। -द्र-पु• सरस-या पेट: दारुइल्डी ।-धातुक-बी० गोपंग्येदन। -निद्र-वि॰ गहरी नीदर्भ छोया प्रमा । -नील-पु॰ हरा रंग । वि० हरे शंगरा । -पर्णी-सी० वृक्षियाली । -पादा-क्षी० मैना। -पिष्ट-प्र० शीशा। -पुरुष-वि० विसमें पीने पुन्त हराने हों, पीले पुन्तीवाला । पु॰ करोर, चंपा भादि । -पुरवा-सी० इंद्रवारणीः भाइकी । -पुरवी-रती व प्रतिपृथ्वी। सहदेशे कन्त्रीः तीर्यः नेमुक्षा - प्रष्टा-स्री॰ पीन्धी पीठवाली बीही।-प्रसम-पु॰ पीला करीर ह -फार-फारक-पुर मिद्दोरका पेतः कमरमः धव। -पे.म-पु॰ रोठा । -बालुका-ग्री॰ दश्री ।-बीजा-स्त्री॰ मेथो । -मृंगराज-९० पोला भेगरा । -स्रणि-पु॰ पुसरात्र । -सच-दि॰ विगने सपयान किया है। -मन्तव-प्र• पर पर्श !-माक्षिक-प्र• श्रीनामायी ! -मारत-पु॰ एक तरहरा शॉप I-ऑड-पु॰ एक तर€हा दिरम ।- गुह्र-पु व मृतक एक भेर । - मृतक-पु । गावर । -यथी-सी॰ भीतनुद्दी । -रणा-यु० एमाई भिन्ता दुमा दीना रंगा पुराराज । वि० सकाई मिले हुए पीने रंगहा । -रान-पुर्वाहित । -राग-पुर्वीस रंगः पप्रदेशसः भीम । दि॰ पीने रंगका । -होहिणी-सी॰ संबारी । -स्टोइ-पु॰ पीतक जामरी पापु । -- वर्ण --पु॰ दीना र्यमा एक पटी। बादवा मैनलिना बेमरा भीत भेरत । वि॰ भीते रंपदा, योजा । -बासा(सम्)-दिव दी है बारवामा । देव बूच्य ।-बृद्ध-देव हीनावाहा । -साग्र,-साग्रक-पु+ विश्वमार । -सेच-पु+ वह शी योनेदे बार बचा दी। दि॰ योनेदे बाद बचा हुआ। --सोतिय-६० (सह) जिस्ते रणपान दिया हो, सूनी I नमार-पुर पीना भेदमा बरिवेदमा शीवेदा अंदीमा क्रीयात । -व्याहक-पुक्त सीमहा देव । -व्याहि-व्योक शुरुवा १ -वरास्त्-वरास्त्य-पुरु दिश्रदस्त्रह १ -वस्त्रेय-

पीस∽पीन पुरु एक बृक्ष; सुभर ।-स्फटिक-पुरु पुराराज ।-स्फोट-पु॰ सुजली। –हरित-पु॰ पीलापन क्रिये हरा रंग। नि॰ पीलापन लिये हरे रंगका । पीतक-प॰ [मं॰] इरताल; बुसुमका फूल; केसर; अगर; पदमकाठः पीतलः सोनामाधीः एक उपधातः निसके धंटे बनते हैं। पीत चंदन; तूनका पेद; मशोतका पेद्र; विजय-सार; अन्यक्त राश्चि (भी० ग०); दारहत्दीका पीथा। -द्रम-पु॰ दारहत्त्रीका पीधा I पीतन-पु॰ [मं॰] सरल वृद्याः हरतालः आमदाः वेटारः पास्तर । पीतस•∽पु॰ त्रियतम, कांत । पीतर†≁पु० दे० 'पोतल' । पीतल-५० [मं०] एक प्रशिद्ध उत्थातु जो मुख्यतः ति और जरतेके योगसे तैवार की जानी है। पीला रंग । वि• पीटे रंगका । पीतलक⊸प॰ [गे॰] पोत्रल । पीतसरा−पु॰ चनिया सशुर । पीतांग-वि॰ [मं०] पीले अंगोंबाका । पु॰ सीनापाठाः एक सरहका मेहक। पीतांवर-पु॰ [सं॰] पीला यसः विद्येष प्रसारकी रेहामी धोती जिसे हिंदू पुत्रा-पाठ तथा संस्कार आदिके समय धारण करते हैं। कृष्ण, विष्णुः नर्तक, अभिनेताः पीत बार-थारी सन्त्यामी । वि० पीने वस्त्वाला, जिमने पीला बन्द धारण किया हो। पीता-मी॰ [मै॰] इस्दीः दारहस्तीः महाखीतिग्मनीः कपिङ दिएएपाः प्रियंग्रः भौरीचनाः भनिविषा । पीतारिध-पु॰ [गंव] सगराय मुनि (तिन्दीने ममुद्र मीत (रिया था) । पीताम-नि॰ [मं॰] पीने रंगसा । पीतारूम-पु॰ [धुं॰] एकारे किये हुए पीमा (गः गुर्व[हय-का मध्यकाल । दि॰ समाई तिथे पीने रंगदा । पीतायदोष-प्र॰ [सं॰] भी तुए पीनेके बाद बचा हो। वीताहमा(इमन्) - पु॰ [मं॰] पुराराज । पीति-पु॰ [मं॰] धोश । की॰ पोनेसी मिया, पाना गुँदा शनि, गमनः पोषशस्य । पीतिका-सी॰ [ग्रं॰] बेगरा दार इत्यी: छोनगरी । र्पातिमा(मन्)~ग्वै॰ (६०) दौनारम । यीती॰~न्दी॰ दे॰ 'प्रीति'। र्पाती(तिन्)~५० (६०) पोप्त । पीतु-पु [रांव] स्पेत मन्तिः वादिपीये दलका मादक, शावियोंना मुख्य । पीगोद्क-पु॰ [मं॰] नारियन (तिमुद्दे भीतर प्रश्न मा रग रहता है) । वि॰ शिमुने पानी विना ही दा जिसहा पानी रिया एसा दी १ पीय-पु॰ [रां॰] स्टी करिया जना थी। इन्त, सम्बा

हरा। देव ह

वीचि-५० (८०) वीवा ।

Salatatat.M. T

वीन-दिक (विक) व्यक्त, मीतापरितृश प्रश्य प्राप्ती। प्रश्-

पूरा । न्यक्षा(अस्)-दिः श्रीरा धार्मशाना, सिग्रह

मुन्तः सरमाधीतः सत्ता वामीत पूर व दिन दुर्ववदान्तः । पूत्र-पुन हिन्ते दूत्या । अद्यासन् अधि आवर्षेद्रं सूत्राव सर् बर्गेर मा १ -ब्राया-मी पुरिमा श्रम्बरीयः -बारा-५० दर्शन्दः हम् हेर्। -बार्म-बार्मद्व-पुन पह रीत हैं जाने बाजिंगे प्रयोग हिन्द्रसमा है र **अक्टा** -पुर देवराय १ **-पार्**क्ष-पुर सामदा देव १ *-प्रीह*~ पुरु यह नारको स्पृष्टाती ३ -देशह-पुरु हान्देशहः मुक्षपार्थात । नर्माचन्दिक दिस्परीते दुर्गेस दिन्दम ही ही. र्गेपनामा । भीक इसेट. बरब्द शब्द १ पुरु दशुरीका देश । नर्रायानभी । पह ते । नर्शीयानर्शियानिश र्रोपान, बाबु बारीयाना । न्यांचित्ररानमीर बहुनीः पोबार नद्यास नदुरु महा प्रकारका बंदु र नहीला नकीक प्रदेशिकारी र नम्बद्धान्त्वत वह होत क्रिकेट मान्यी शान र्रेष जिस्तार है। नहाँगड-हि॰ जिससे अपने बुर्देव जिदलते ही । चयम-वृष्ट्र वह महद्द्रश्च वर्षेक्षम्यः। -पश्चिमानगोः प्रशानिक भनातः अनुस्_र व्यार्थेश्व मुक् पुरिद्वार ६ -- प्रश्लेषा - स्टीक बद्दी व्हेल्ट ६ -- पूर्ण --प्रविद्यात्र । अपूर्विषयः । अधि अध्यान्तरः । अध्यानपुरः -पारत्-पार्यत्-भीक रामहाभी, क्ष्र हे र -भाव-दुर मारोदी किया । -श्रमृद्धिश-मार अवदेशा। च्यापुरणरच्यां। हेर्नेहर मृत्य ।-श्रृतिहरू-औक रार्नेहरू १ -शामिश्र-पुर १६ माद्द १ -हिपु-पुर दिग्यदित ह -पोसि-पुर वेर्गान्डर एक होग १ - व्यक्त्य-दिन हेज्यूने हींचरी दर्जन जिन्हण में की र अवस्थान दूस एको बनाई करान केपुरवेगवर देश ६ लक्ष्म-पुर क्षेत्रपादर ६ लक्ष्मde beit fifeint a et at alet mitte-de ष्ट्रवर्त ४ नदार्गरमा नधीन बर्गरकार, माण्ड ह सुनिया-पुरु (५ ५) विद्या, जान ६ दिन सरक्ताह ज giftemette [ite] freet eren wirft, fran : - सुब्रा - देव १५६०, बीहा ह **क्**लिक्केन्द्र-इत्र (शर) वृश्वदाहर क्षी नक्षी न महिरार अवश्वकारको बाँउ र क्ष्मीहरू मानू क दिन हे मुनिहर का क्षेत्रकार्क व मुनीक्षर्य - पुर है। दे मुन्दर है है 精油上解之四面乳 4 (数 4) 長 在 4 팔딱뚝이면 따면도 [라마] 큐마 시민들은 " 문 भूगक्राती नहीं र हेर्ग के सरद रहा अन्ये की स्टब्स की ह trefrege (re) be niere fein from ufab Mitth franch fi fie ate aufgembaben & \$11. 美州聖子 #TOET 第5 8

Machinely + free to 2 2 22 REALPHOLOGY SELL SCHOOL SERVICE ! Kantes fe e) ad? # dig & de and militat

मुक्तार है - यो र पर दश्य होते कही है है है है 有有有有的人对点情况 安全年產 聖田書中の村 日東中 からゆうち

मुक्तिनकान पूर्व हो व्हेंबा अप अक्टब्राब्यनकान्द्रेड B ir merfe & 11

\$43,4 - 44,4 \$ 12.44 w ال وديار = في ماله م عرفهما {PEP}

क्रमाः द्राम्यः, पूरमाः, कृतकाः, कृतिशा-धाः (॥) रथ लाइसे मोटी इसे र

क्ष-पुर्व (में के) होता. सदाहार क्षेत्र-पुर्व सह संग्रह रूप समेर-१० मंगर-४० शेर : नशुक्(म्)-रिक्तान हर्ष क्षेत्रमा । नगर-५० रथ (प्राप्तिके सन्ती पीड दिला पुष्टा सून दिवसना देवतीय दिस्त बुना हमा -बर्धेब-दिन विगद है कोई देखी दुरेश हो ह -ब्रुट्स बु र पद शहब ६ -- क्षी दिल्ल - मु र दे व "पुदर्शा" । - स्मू अ -पुर पृष्ट्वर बद्दारा श्रीतहरू गत् होता <u>१</u>

दुषम्-पुर [दर] हारा, देश । क्कारि-मेर [सर] श्रायत है। र

बुद्धारुष्ट-पुरु [१ ०] श्रोतरथ एड रिय (ज्याचे सफदा धर्यन बदान मुख्यत पर माना है और प्रमारे देश किस्मी 対の共産日 बुद्दीपु-पुत्र (०'०) वद स्ट्य व

बृह-वृक्ष्यां प्रदानको होत्र भरा सामेशका स्थाता. [no] अमरार्थिः सदादा सन्। जनागयः गानगे शाप बरमा बर भरना, बरगहरिक्षा भी दृष्ट किये है। की है, बाप-हिटोषा हर करो मादने की ने हैं। की क्षेत्र में जानहा कहिए

44, 8(11 बुरक्ष-दिन [न'न्हे पुरा बन्धेरामा, पुरि कार्येराजात्त क्रोन्यार पुरु वक्ष प्रकारका प्राप्ताय दिश के रू की बार्च रेत्राकी प्राणाल पुढ़ी परिचारि प्राप्ता वर्ते वर्ति की सिरीता क्षेत्र हाल्य क्षेत्र १८०% अदी प्रस्कार करे प्रारंक में प्रारं र्ने कुरु होने काल्य के देशकों है नहीं के प्रशासक समान में बार स्थाप Frencente erick are in white bir ficht बेलबा क्योर बनाग हैत हैंडान प्रोप्न्यों बार्ग क्ये बर्गने

हैंबद कपुरने देशलाहा सधीराकर संग्रह ह कृत्या—पुर्व हैर्सर है पूर्ण पर पुरत अत्मिद्ध दिश्वात सरके प n, a ber gran an nend figlige nibe grad than a dig. Mar. of t. white Added Br. हैंबण्युत्तेत्वः हैक्योः कष्वष्टाकोः पूर्वतः । सुबाबणः । सीनता (बर्बर, होन्द्रक क क दरिक बृद्द ब्रह्में हरून होति कर minder hinde um mangener titlette Al deg. कृत्या, क्षां दर्जन संबद्धाः, व कृते ।

mangement + file) en', frence fill ! बुक्कीय-दिन दिन है पूर्ण दरने शान्त ।

gewage tent mit ert freit fiebigt uit. niter am um fie be ber be " um mittenfe fie at ile famit den neimera, den nis ifg bag ; - Mady + = 46, = 44, 4 . 1

meren a sa tan ger atar, gra nevr, feit erri-THE BOAT FARTHER DIE , IN HO FIRST REEL SE BOT HETE REBONS ESPECT, RINSON, MINERTES 如如。 三時 如此人 电时性电影作用 斯伯伯尔 デキ क्षणका वर्ती ह पूर्वा काला के बनाता है अर हिन beig from Stagen State 9447, \$177. \$

पील्डक-पु० [म०] चीटा । पीछ-पु॰ कीकगर्मे होनेवाला एक कृश, गुडकला उसका फल जो दवाके काम आजा है; एक राग; देश 'दिस्तु'। मु - पदना-भिनी वरतुमें सहने आदिके कारण कीड़े रुएस हो जाना। पीय- # पु॰ मियतम । † स्वी॰ दे॰ 'पीप' । पीवना=-स॰ जि॰ दे॰ 'पोना'। चीवर-विव भिरु स्थल, मोटा: भरा-पुरा । पुरु बहुदा । -स्तनी-विक सीक श्रृष्ठ या गरे-पूरे स्तनीवासी (सी या गाय)। पीवरा-सी० (सं०) अमर्गभः मनावर् । षीवरी-स्वा० मि०) सरकी; गाय; बोममाता; शतमूनी; द्यान्द्रपर्शी । पीया-सी० [मं०] यस । पीया(यन्)-पु॰[म०] वातु । वि॰ मोश, रमृत्र; बहवान् । पीसना-स॰ फि॰ रगश्यर या दबार पर्वेचावर विसी कडी बस्तुकी चुरेके स्पर्भ बदलना, चूर्ण करना; किन्नी बस्तुको जक या किमी अन्य सहस्र प्रश्यके थोगरी हमहत्वह नारीक बनामाः विश्वी सरस यस्तको समहक्रद वा दशाव पहुँचा-मर बारीय बनाना। कुचल देनाः तंत्र करनाः दबाकर विपाः मर देना; भार परिधम करना; (दाँत) वटकटाना । यु० यह यरत भी दिसीकी पीसनेदे विष दी आय । वीशा -पु देव 'विस्तू' । **पीटर-पु॰ श**थका । पीक्षां -पु० दे० 'दिसर्' । सं, युम्(पुंत्)-पु । [तं] पुमान , पुरुषा शेवदा देनिय शब्दा पुलिय (ब्या॰)। आग्या १-अर्थ-प॰ पार प्रशास्त्रे पुरुवाधीमें नोरं एक। - (मुं)गत-पु॰ सहिः देहः (मगामांगर्ने) निगी वर्ष दा मनुदायरा केश व्यक्ति (मर-पुगर): क्षम गामरी भौति। - व्हेलु-पु॰ शिव । -तम्म(न)-पु॰ नर शिशुकी अपश्चि । -ध्यत्न-पु॰ बीरं मर जागरर: युरा ।-याम-यु॰ पान्धी ।-योग-पुरुषदा यीग या शर्रव : -शत-पुरु संग्र पुरुष, पुरवाम । -शादी-क्षी कर राह्मि (त्मे-सहर, जुंब) । -विता-द्रः पुरवसानिकः विद्या विक पुरवसदान (Cit-rdis) 1 -414-de anti 1 -44-de D रा । -वेप-रिश्वी पुरवेशमें हो। -सवन-4. यो प्रशेषिते एडायक हो। पु. दिवाधिकी इमरा भेक्षार के गर्भावको होत्तरे आग होता है। हुच । -मू-मान देवत पुत्र प्रतिकृती श्री ह पुंच-पूर्व (तेर) साम्या दिवला आग जिल्ला क्यो क्यो दा सम्भाग सामे के बाद बही ह पुँचित्र-(४० (१'०) शतवृत्त (बन्त) । 24-de (m.) 1.44: 1.45 1 नुरस्कार-ने । संश्री । 48-8

होत्र पाने हैं और बादमें उनके एकाकार होनेपर उस

पदार्थकी पुनः उत्पत्ति होनी है) ।-- व्वाद्-पु॰ वैशेषिक्री-

सुनावर । – मुस्री – सी॰ सनावर; साठपर्भा ।

का पाय संबंधी मत । -० यादी(दिन)-प० वैदीपिक। पुँछल्ला रे ने त्रिष्टाचा । पुँद्धार=-पु॰ मोर्। मुल-पु० पील्के पेडकी वड़ । −मृला−सी० असर्गंप; पुँडाला-पु॰ पुछलाः पूँछकी तरह लगी रहनेवाली यस्तुः पिछलगा । पुंज-प॰ मि॰] समहः राजि, हेर, अशला । पुंजि-सी॰ [मुं॰] राग्नि, देर । पुंजिक-पु॰ [सं॰] ओठा । पंजित-वि॰ [मं॰] राहीहत, देर छगाया हुआ; एक साथ दवाया दवा । पुंजिष्ट-वि॰ [सं०] देर किया हुआ, राजीकृत । पुंजीब-सी० देव 'पुँजी' । पुंड-पु॰ [सं॰] तिल्ब, टीका । पुंडरिया-पु॰ एक पीधा जिसके वसे शालपणीके वसेके समाज होने हैं। पुंडरी(रिन्)-प॰ [सं॰] पुंडरिया नामका पीपा। पुंडरीक-पु॰ [शं॰] दोन कमलः कमलः दोन छतः अनि-कोयका दिग्यमा बापा एक द्रव्यीपपा दीताः हराका एक भेदा आगवा एवः भेदः हाथीका प्रदः धडाः कर्महतुः द्वेत वर्णः एक प्रकारका कोशः एक प्रशास्का सांपः पक सरदका चात्रका अध्वा सांप्रताविक चिद्रा एक कोपकार । --दर्लापम-दि॰ कमलपत्र जैहा । --सपन,--होचन-वि॰ समल-नवन I-पालाशास-वि॰ समह-सवसः - प्रथ-पु० एक सर्दमः प्रशः - भाव-वि० कमनददन ।-मुग्दी-शी॰ एवं तरहरी क्षीय । पुंडरीकाश-वि॰ [46] दिसकी और इमनके समाम हो । पु० (बन्तु । पुंदरीवेध्यन-दि॰, पु॰ (धं॰) दे॰ 'बुंदरीयारा'। पुंड(विक-पु॰ [में०] पुंचरिया, स्थलक्ष्मण; एक विद्री-देव: एड भीएप । बुंदर्य-पुरु सिंग्] दीवा। सना। दर विशेष पीषा भी शेष्र-रोगमें दबाके काम काना है, चंदरिया। पुँड-पु॰ मि॰ एड सरददा रेग, पीशा बमना दोत-हमनः दक देखा एक प्राचीन देशा शम देशका निवासी। निष्य, दीवाः कृषिः दीवाः निष्यता पेवा पादश विविधास देह । -बेलि-पु रामा ! -यद्न-पु: पंडदेशकी माधीन शावपानी । पुँडक-पुरु [मेर] इंतारा एवं भेद, पौरा। विकार, द्वारा। रेशमध्योते पालनेश काम करनेराकाः मापरा लगाः टिसद क्या । पुंचप्र-पुंसवप्-रिक [गिक] पुरव जेगा । शक्यासी र्युधर्माः र्युबायू-स्थाः (शे०) ब्रम्शः नेरदा । र्वधानीय-पुर [तंत्र] बेरदाहा द्वा । वृश्चिष्ट-५० (११०) दिश । युंग ० – ५० ५२५ । र्युमवान्(बन्) -दि॰ [मं॰] द्रिये ५५ हो । र्नुसन्द्रज्ञ-दिव [sia] जिल्लो बहा धर्म हो ह र्द्रेगी-क्षी (शेष) बएशकारी सुद्र ।

पुंगल-पु॰ [मुं॰] आतमा ।

पंगीफल-५० सपारी ।

नातं क्रमोते जुरु रहेदर महार्थतं मुख्य है। दिल्लुहर भोदा सामत्ते भोद महार्था महार्थ र पुर्वातान्तिर (मार) दिल्ली महार्था पुरि ही हुआ है। र पुर्वाहुदिन-स्रोत (मार) हवा महार्थ दिल्ली हामते सामते सामति दिला भाग है, होमारोकी भीत्य महार्थी दिल्ली वार्नेसा हुस्य वह भीत दिल्ली पर पुरिनाकी मात्र है। हिली बार्नेसा सुख

भरा । वृत्तिमा, पृत्तिमामी-मोर्थान्द्रे सुद्ध ब्यारी शंत्रद दिहि, पुरु :

कृति : कृति दुन्त व [सर्] रोक्सी बन्नावीने मुख्य व्यवसार पृतिसार वर सर्व

वृत्तीन्त्रसम्बद्धः (११०) एव वृत्तिसीव वर्ततः वृत्तीवृत्तमम्भानः (११०) एव देवे १ वृत्तीवृत्तमम्भवेशः (११०) वृत्तमन्त्रस्य वर्षः केत्रः विवयो

वर्तीय, व्यस्तान, नाभव भीर कावार्य थर्ने, वे धारों स्व पण बीत्र मुर्च निर्म (गेन) पृथा विवय हुआ, मृतिया ववा हुआ, छाँ, बागार माणिता रहिए । गुरु पृशा बरनी आस्ता हुओं, माम्भूव वीत्रायों, प्रदिश अनुवारे भोरदा भानिक श्रवा पुरस्कार । नविवासा-मुख्य वर राज्यति विवय जिल्हें विवास मुख्या अपन, भुष्य सार्वि अन्यानेक क्षार नव्या है। प्रार्थ रहस श्रवणा, विवासक क्षार्य क्षार न्यानेक

मृति नदान (१४०) पुरा सर्वेद्धे कि दश पुरावः शतुषिक हाकि - जाग सरका, गाग्या पुरस्कार देनात पुरस्कार व मृति(विद्यु) निवर्शकारे पुरस्कार समाप्रकार प्रशासका स्रोदन - सरकारी सार्व सर्वोद्धाना व

मुच्चेनिहर, पुर, अर (शर्य) देश 'तूरे' (श्यास्ट ग्रेरे । मुच्चेनिहर (शर्म) पूरर खर्मी योग्य, गूल्में या परिकालकेटें

4-141 पुण्याम - विक (चर्का पुर्वेद्यानी ह पूर्व-दिन दिनी पूर्वाद बदशा, प्रथम, भन्दा बट्डेडा, भागीकाः क्षाचीकः युरानाः हैरहकाः यूरवर्धे रेन्द्यः ब्रह्मे net gwy uge fie is wit mit get ffere mill a go geer, weat fagubit femt, wee, भन्नार । अन् कार्ते, देश्यतः च्यार्थ(क्)-कृ वहतः कार, हरत प्रार्थ, पूर्व कालक करें। जेलाहा । चक्काल है बुक्त क्षान्द्रक कार्च ३ जनकावनपुर त्यारवर्ग, हे स्वताहको है APPRINT MIT, RETURE VETER MENT APPRIL - MITTER - 3 मुर्ग वाजीत अल्ल, भरता शहरह खडेड्राम्बन, देन्छ है · 克斯 松木木 【 1】 电动态处 电磁流流 一幅透透电池 中の作者・「日本を食用、中本」は、空下はり、なりなかりなどできま अक्षातिक विकास में १ वह दिया है। है पुरा बह कार्य gere und ab ift die fungat bie mein a meingel m 1679 · 考4日,如128 · 一里里~信1 · 药 · 64 · 商 tt t vo teast uit, genteut aftingenge र पूर्व रेट्स का भूतको भने, हुई रेटस्टबर करेक्स - वर्ड र मधीर धीर प्रश्न प्रश्न प्रेच्छ । नर्नेन्छ-धीन बला erth a masiciles dad urbevers tebasis beings पुर्वतर्ग । स्वयंत्रमाधिक प्रार्वे अववश्युमात् अनुपार्वे (क्रिक्ष्र) हे

wite to "god" is influttur cate as a best a lee

कीरिय-दिन वहते दश ग्रमा कृतेश्व र सम्बन्धित शिक्ष इ.मा.च बड्ड हुई बड़े दर्ग अलक देशा हैंग बार दे पर देश की होने जानक कुछ, देशान बन बर्च मण्डा प्राचीहम रहते हुने हिन्द हिन्दूर, हमुनीने हुरे पुरुष, बढ़ी वहीदा जेडा महदा सुरहे का सन्धा -जन्म(ब्र)-१० वर्गसास अस्ति स्वतिहा तथा (श्वा क्ष्य १ -क्रिया(श्राय)-५० देश धर्न । नक्षा-बन् बड़ी बहुन । -प्राति-स्तर मुद्दे क्रम्य । अजितानपुर पुराने रायदंदे दिना, सेव्युरेष बार्टर र अपूर्ण अपूर्ण कामरा हाया हुई करादे का है। इस अर्थ कर्म है विक अधिन केन्स्री विकास अधिनश्रीतीय व कुर अधिन क्षेत्र हे - क्षा-दिव यह रे दिवा हुआ। व्यक्ति (स.) व स्रो १ पुरुष, याची ३ नवपति नशीव इत १ न विश्वीतान पुरु इह र अदिमालुर दिवहा साम्राप्ती ५६ विशासात र -हिह्मलीव ११४। इस्से । -हिल्लाप अपन्ये अप शन्द निवन शुध्न, दुन्ध सर्वत । विश्व विश्व शाविताल स्त्रि विका का भुद्रा की, दुर्वितित । अपूर्णणान्तु पूर्व क्राज्य में केंद्र व न बूब नहें के बालीन हेंबरा अलाह में और जारावणा दिएए । -देखना-पुर्व हिन्स । न्हेग-करार विभे क्यान्त्रह सर्वेद्याल क्यारित प्रारम विकास सम बीर करें संस्थानक बाहिता हातार संन्यात कारी कार र नहे दिया नहे दिया नहिए पूर्व अध्या दिया हुआ है -महद्य-पुर चपरा रेचा रही । लीराप्रमण्डर करक १ व्यक्तियम नहिक दिराया गारिये दिशक की सुधी हो। -व्यक्त-पुरु कराता हिराम, मानस्री प्रतिकेतियो कट्याच्यान्त्रे रूपलाई क्यान्त्रे प्रशासी प्रशास प्राप्त विभागी विभाग दे दिवारोची कर होते. दिवारी विवासी दिवार वर्ष पर विका देवी अभी है। कियार का भवितील है व टीकी शीली बा मानिक मुद्देगी करिया। कुन्त प्राप्त नक्की (दिम्म्) = दिन, पु= पूर्व प्रमु अर्थ सर्व सर्वे राजा र न्यं व -पूर प्रदेशका वार्ता पुरत्या वार्त । लक्ष्मु-पुर शक्षार atotact atot samt manamas atreas -वाकी(विस)-१० १८। -शिकामित १५० ११वर्ग gia, withter a melitation's ere that मुक्तिक ६ अनुस्य-६० दुश्याः, दशान्त्राराशः कर्षः व magriculta actes and syle to advice. -entropy better for the district of managerity Reeffig - mil-de fant al atte men, beng क्टब्रुक्तुर १८) हर दिए द अग्रेसे स्टॉन शारी 李克·李丁多小教学性一张来 2006年5 英丁 # \$7 807 年 中 47 8年代 खबर करते व देव देव पर देवदेव है का<mark>र्स्ट के के</mark> दिस्सी undurent ferteit utaufer giegebentet? क्राक्रीविष्क्रीन्द्रवक्षण्य स्टास्ट पूर्वतानं क्राक्रमी विष् न्हेंबर कहते के करीको हर पृथ्वा गांच दिवसो हे नामु^{र्ज्या} 额之额产,海欧安敦省中国中北京一大学中国中华 verige, å a mærtifted) mfer sen er liem (religious and at their expect of the first 4元ママーはできるだけつみ (ctran) { ナトデザイサー 불가족하는 속산로 이 대**속**됐다음이 무리되는 최연부 축기부터

दो पात्र या मिट्टी आदिके दो क्याल, इस प्रकारका श्रीवध प्रकारिक कामका पात्र-विदेश पोदे की टाए श्रीवकी एवक वायकल, एक वर्गन्न । — कंट्--पु० साराही केंद्र । ——मीव--पु० कल्ला, गगरा, तीरिका कल्ल्ला। — पाक्क-पु० श्रीविपयोको पकानेनी एक क्रिया जिसमें उन्दे नासुन, दरगर आदिके घत्ती है स्थेट श्रीर करासे गीकी मिट्टी क्याकर को में स्वति है स्थित श्रीक श्रीकारिकी प्रकारिक प्रविचित्र का स्वति में स्वति हैं। स्वति हैं स्वति केंद्र का स्वति में परकारिक प्रविचित्र का प्रविची परकारिक प्रविची प्रविची

पुरक-पु० [सं०] दे० 'पुर'; समन ।

पुरकिसी-सी॰ [सं॰] कमलिसीः समलेका समृद्दः पप-

शुक्त स्थात ।

पुटकी-का॰ पोरडी। एकाएक दोनेवाली गृन्सु, भावतिमक गृरुपुः भारी आध्यम, वमप्पना वद आद्या या नेपन जो तरकारीके रोभें जसे पादा करनेके किट मिलावा जात्र है। सु॰ (किसीपर)-पदमा-भयानक गृरुपु दीना। भारी आफ्न पहना (नियाँ दाप देने समय करती है)।

पुटरिया, पुटरीं - न्वी॰ वीरकी ।

पुटालु-पु० [मं०] बारादी संह ।

पुरास-पु॰ दे॰ 'पोराश' । पुरास-पु॰ दे॰ 'पोराश' ।

पुटिका-सी० [र्ग०] पुरिया; इलावनी ।

पुटित-पि० [गंग] राषा या पोसा हुआ। फाश हुआ, दिशारितः भिनः हुआ। रितृतः हुआ। (बद शंव) जिसके भारिया शंनमें कोई मंत्रास्मक आहर या पर पहांचा अपा जावा बंद पिता हुआ (आ०)। पु० शंवनि ।

पुटियार - म्री० एक छोटी मछनी।

पुटिपानाः - ग॰ कि॰ पुननामा, समशानुसाकर राजी करमा या अपने पक्षमें साना ।

प्रशी-ली॰ [मंग] छोरा दोनाः कौरीमा गर्या, लातः

रिक स्थाना भाग्छादमः पुतिया ।

पुटीन-पु॰ स्थिति, गिहरिनी आदिने गीधे जहने और स्वतीकी भोजेंते ऐह आदि अतिनेते कामका तीमीचे तेत और परिया मिट्टीने तैयार किया जानेवाला एक मकारका मनाला।

पुरोरक-पु॰ [गं॰] गरीद छाना ।

पुरोद्य-पु॰ [sto] शारियल ।

प्रहानपुर भूगर र जारका मांगर मांगा भीशायोका, विजेश-बर पोरीका भूगरा पोडीको स्टब्स बतानेका डास्टा रिणाको जिल्ला जम स्रोतका बाग विषय तिसार की गयो रस्ती है।

प्रही-की॰ नवरीके वन सर्वभावतर द्वहरोतिने कोई यह किन्दे प्रथमे निमानर वैन्यानीका परिया तैया किया पात्रा दें।

पुटबार--शक द्वमात्ती, देते ।

प्रकार-प्रश्न करे हरे कामी छात्र देनेबाता, ब्रहराता रतके देशस प्रशाहरेनाता।

पुरा-दे बड़ी दुरिया होल मानेश बन्दा ।

पुविमानकी वर बागत या पण जिल्ली बोरी एवा या

जन्य बस्तु रुपेटकर बसी गयी हो; पुढ़ियामें रुपेश हुई पक सुराक दवा; खान, घर (जैमे-आप्रतकी पुविया)। पुड़ी-सी॰ दोल मदनेका चमदा; पूरी, सुहारी; * पुड़िया। पुण्य-वि॰ [सं॰] पवित्र, शुद्ध; शुग, भला; मियः सुंदर, सुन्द्र; अनुकूल; मधुर (गंध) । पु॰ शुभ अरष्टवाला कृत्य, शुम फल देनेवाला कार्य, गुरुत; गुरुर्मते उत्पन्न शुम अरष्टः पञ्जोंकी पानी पिलानेका हीतः पवित्रताः कुंडलीने लग्नमे नवाँ स्थानः एक अन विसे सियाँ परिप्रेमकी अशु-यता तथा पुत्रप्राप्तिके लिए करती ई ! - दर्ता(तृं) - वि०, पु॰ पुष्य करनेवाला । -कर्म (न्)-पु॰ यह वर्म जिसे करनेसे पुण्य प्राप्त हो । -कमां(मैन्)-वि०, पु० शुभ-क्षर्यं बर्नेवाला । —काल-पु० ऐमा समय निरागे रनाम, दान बादि करनेने पुण्य हो। -कीर्तन-पु॰ विष्णुः पुराणींका पाठ या वाचन । -कीर्ति-वि॰ जिमकी कीर्ति-के वर्णनसे पुण्य हो। स्वी॰ ऐसी कीति क्रिमने पुण्य हो। -कृत्-वि० पुण्य करनेयाला । -कृत्य-पु० ऐमा कार्य तिम बरनेमे पुण्य हो। -क्षेत्र-पु० तीर्थः आर्यावर्न। -र्मध-पु॰ नेपा । वि॰ सुपंपयुक्त । -र्मधा-स्री॰ सीनजुदी। -मंधि-वि॰ अच्छी गथवाला, सुदाद्दार । -मृह-पु० षद्द रमाम बहाँ अन्न सादि बाँटा जाय; देवालय। - जान-पु॰ सम्बनः राथसः यदा । —जित्त-वि॰ पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ (असे-पुण्यबित कोक) । - मृण-पु० दोन बुश । -दर्शन-वि० जिसका दर्शन शुभ कल देनेवाला हो; सुरर । पु॰ नीव्यंड यदी: पश्चिम म्यानीका दर्शन । -त्रह्(ह्)-ति० पुण्यरायकः। -पुरुष-पु० धर्माग्मा मनुष्य । -प्रताप-पु॰ पुण्यका प्रवाप। -पाल-पु॰ ज्ञान क्योंका पाला वह उपान नहीं लक्ष्मी निवास कर्गी र्षे । -भाव (ज्)-वि॰ धर्मामाः -मू,-भूमि-स्वी॰ आयोवनी पुत्रवती स्वी । -योश-पु॰ पूर्वनामी क्षिये दुर शुक्तका पाल । -स्टीक-पु० व्यमं । -विजिल -शि॰ पुण्य दारा मान रिवा दुमा । -शपुम-पु॰ शुम शहुनः शुभन्त्वर ५शी । –शील-वि॰ पुण्य समा विसना स्वमाय की, भर्भपरादण । -श्रीक-दि० उत्तम बद्यवाला, जिमना परित्र पायम हो । पु॰ विग्युः गुपिडिरः

श्वामः बुँदरीमें सम्बोधनार्थं स्थामः । पुरमक-पुरु [र्वाचे स्यापः भारि तत्र प्रिन्ते पुरुषः होताः देशस्य प्रत्य निर्मे पिर्वे प्रतिक्षेत्रस्य अप्युक्तः तथा पुत्र-प्राप्तिके प्रश्च करते। हैं। सिप्पुः — प्रतन-पुत्र पुत्रतानिके त्रिष्य एक वर्षे क्षित्रा जानेवाला विष्णु प्रतनका तरः।

सन । - झोका-दि॰ सी॰ उत्तम दशकाती, पारत पारि-

तवाली । क्यो॰ सीताः द्वीपदीः संगा । —हथान-पु० शीर्थः

पुण्यक्रनेषर-पु॰ [सं॰] कुरेर । पुण्या-गरी॰ [सं॰] सुत्रम् ।

स्वताई-कोश केरदश मधात :

पुरुषान्मा(मन्)-दिश् [गंत्र] पुरुष सरना तिगहा स्टबार थी, पुरुष्कान, वर्गामा स

पुरमाह-पुरु [धंर] ग्रुभ दिल १ न्यालम-पुरु देशी भाषिक शन्ददे आरंबमें जनकरण 'पुरदार' दाधा श्रीन भार बहना।

पुरुषी उप-पुरु [6'0] शुभ अरहता प्रश्च केला, कीलाक्

द्राप्त-पुरु प्रेट्सका ह पुरु - भी • (११) शह द्वार_ समहत् । पून्य-दिश (६४) दिन्छ दृष्ण, दिर्देशक स्वयः पुन्छ प्राप्त दुभा, पूर्व ३ एव चन, स्टब्स् ३

मुल्दि-की क्षिको विभाग विभाग क्यार्थ सर्वेष, बीगा 4777 1

पुष्राय - पुत्रः 'त को एक, व्याप्तीन ह पुरस्तक - पुर्व (६०) वृद्यतेसमा, विद्यास । पुरदान-पुर (६००) प्राप्तिकी क्षिया, प्रस्ता ह पुरद्धा - श्री १ (१०५) प्रदल्प महिन्छव हेवी प्रदल १ युवाना नशीक [मंक] वेजा बहा केवा दिस्के एक है हाती. મેત્રી કરા હતા. માટ્યામીની મીત મેરલેખ વૈરણ દિવસી

सीरशास र −प्रति-पुर ग्रेसारीयर-पाप्(४)-44 45 5

कृष्यपः स्टोप (०.०) हेराहा ह पूर्वम् – दि+ (++) प्रापुरा बहनेपाना, अ.व.न्द्रः । पुषाक् - संव (संव) भाषान, तृहा, हिला, विकार - स्वास-पुर, "विया"का अलग करनेवा बाया शिक्षेत्रण - बुल- विव हु। वे बुलदा, विश्व बुलदा ३ - होय-पुर क्स है, ए, पर निष्म बर्गाने मामधी पुरे शंगीत र - सहक-दिन भन्नम् म्हा भारते । भारतिकाताः अस्य सः अस्ति हिन्दः हरेदामा । अन्यकामधीक श्रुपीयमा । नवर्तीमधीक पुरित्रपारी, विद्यम् । -विष्य-पुण पुत्रपार क्रम्या क्रम्या क्र and the transmiss of a metadination man रीया । च्याची(विष्)-दिश करेने शाक्षणत् संनेत-4mm; i

प्रवादा-करान, प्रवादा-पन (लेन) प्रवाद होनेदा आह. रिन जन्म, बरपहरेगी। भीतीय गुणे देवी शब्द (स्थाप) ह क्रियार् - हेन्द्र है। साम नागान कन १ - अवन्यसन्तर-ऋहे ० क्रेन्ट्र feire, Afgire i -mingi(targ)-fe- fina, totem i mantiorar-actua dispare, actuare e m र्याचनदित दिल्ल क्षत्रको ६ लक्षत्र-पुत्र विकास कृति। स्वर्गेत्र, बोन्द्र, ब्राह्मेन्द्र इ अब्बिश्च-युक्त जिल्लाको ३ अन्त्रद्रश्च was fair were, une, fairms - my-fer मन्द्रियं सर्वोत्तानम्, जानस्य स्वत्यस्यम् । —हिम्बर्स्नाहेवस् वात्रस्

4944,3 मुख्योगका । (१४) देव क्रिता ।

Marmage frag a datas das emmede Audas. मा हुन भा^तहे. अत्य द्वार न सामक-मूक मु^नहींपुर, सर्व्य क्षेत्र (विदेशक अस्त्रकात अवश्विल्युक स्ट्रांस सञ्ज्ञ अल शुप्त न शर्यन पुर है र 'पुत्र' न स्वा' ।

म् क्षरानश्च (००) सम्बद्धान् । बुर्विको नको । हिन्तु है। दिनदे हैं नको सन्दर्भ है। क दिल्ला क्ष्मान करूर अगार हा कारण करूर प्रेटर दर्श प्रत्या, BETTH I THE THINGS BYET BUT, WERE HOUSE F 我去,只十一年,在日本民主、山山山一村在(近)一部沿山一 -444-41 \$, ALLE, 1-46-40 5 1/ 61 1

Prints (no) on the first from a mary to

"हरति" व —स्टाधकळपुर ११४९ व श्रुषु-विक हैसंको विक्लाले, स्रोप्ता कवान्, हिंद्याच्या प्रमुक्त arrural unti fefte biffe attel frei na feib देश शिक्षा यह बच्चर इंड क्ष्म्प्रेस्ट्र १६६४४४ हिल्ला मुक्त किराहे. बुक्ता, बेर्ड पुत्र की प्रवस शास बारी करे करे है कि हैंदे के किया होती क्षेत्री के के के के के के दिका को ६ वर्गन कामा औरता अपरीता हिल्लीन -बीर्ति-ब्रोध पट्टीको १६ परंत । है। ब्री होए माना, सदान् बद्धारी । —क्षीत्र – पुरु दश देर ४० क्षीद – रि॰ क्रोडे रहेंबरामा । च्यापुनपुर हो रहरा हुए। - ertif(fing)-fes gent beibene, gent's -व्य-पु॰ काल सरगुण र -वाताशिका-सीन प्री. क्ष्र । -प्रया-सता(शाय)-शिः शाः शिवतः -बीम्बर-दर भएत र अनेपार(माप)-पुर काली र -सोचन-विश्वती श्रीवीयणः । नविश्वनतुः शीवन क्षा । -मीरा-देश प्रका दश गुर । न्हांस्वरे व्या य**रण ३ ल्हाचा(यार्)-दिश परे का**नीशणा गाउँ Ried i de eifeguriat milatiebeine de क्षेत्रे क्षण्यक्ष स्व पुत्रकृत्यक्ष सन्तर १० वर्षी लाहिन वैकाप्रान्धि र -- क्षोति: - सीवी--दिश भी श्री किसी की व्यो में हैं।

च्यो इत् नीरश्यको । नश्योधनपुर १३५९ । THE-40 (60) feet, frem 1 पुरुष्टा - ब्रीच [ब्रीच] हिन्दुप्रधीः स्थीतवः । पूर्यक-दिक (संक) बयुष्य, बीहार दिनमेरी, दिशाकर म सर्वाय-शिव वर्शः क्षेत्रेयाला ३ - वद्मा (सप्)-शिव feret ein eber fie -laun-ler erraft. वर प्रदेश होते ह

कृत्या-भाग (श.०) (१८५४) ४ पुष्तुमाञ्च -हिक [संक] बन्दा प्रगति देशमा । Anta -de (ein) einem g lemget an ma fund. ***** #*# \$ 6 W \$ 1

क्रुप्रहरू-दिन हैन को बाद बेरक्या र देन हैंगा। व्यविष्या कर्ण के कि को देश "प्रवर्ध पर्दे । लुक्कारिकुन्द्र मृत्र (कर्म) रहतः र

करती-का क कर है कि स्व स्व कर कर के दार्ग्य हती होत्तर है, यांच द्रष्टण्युवाह है । वर्ष प्रतीया लग, क्षेत्र, बरणाः वदी दलावतीः विश्वतीः वदी gentlig wir after, mit gling ger megenent?" दर्भेड सन्दर्भ दर्भ र न्थानी कर्ने हेन्द्र र स्वार्त कर्ने करी। gu tien wurfen erer tree z wegen ente होत्या ३ स्वाद्यालयुक्त प्रार्थेत् ३ स्वाद्याल्य नामुन्दि,सामान्या । प्रार १९४० ६ - कुळ-कुर जालन शहरे अनुवर्द स्र है-महिन

कुर अवदार में कार्यक्रियानकुर हैंग "बुद्दर्श्य" र gefreinebn fent ein gereit. frauft ein

कुकुनकुन्न हुन है से है कर करना है है। बर्गाट वेंस्पहें हैं है

Auftengen funt fich Ranter gibt, benauchter

पुत्रीया-सी० [सं०] पुत्रसामग्री इच्छा । पुत्रेप्सु-वि० [मे०] पुत्रका इच्हुक ।

पुत्रेष्टि, पुत्रेष्टिका-स्ता॰ [मं॰] पुत्रसामकी इच्छामे निया ानिवाला यज्ञविशेष ।

पुत्रीयणा-स्त्री० [२१०] पुत्रप्राप्तिकी कामना । पुरीना-पु॰ एक प्रमिद्ध छोटा पौथा जिसकी पश्चिम जन्छी गंधवाली होती है और घटनी आदिने पीसकर खावी

दाती है।

पुत्रल-पु॰ [सं॰] प्रमाणुः भृत सामान्य, वे द्रव्य जिनके संपातसे शरीर तथा मन, प्राण आदिका निर्माण होता है

(वै०); आस्मा (बी०); द्यित्र । वि० सुंदर । पुहलास्तिकाय-पु॰ [नं∘] चीन दर्शनके अनुसार पाँच

प्रकारके द्रव्योगिसे एक ।

पुनः-'पुनर्'का समाम्रगन रूप । -करण-पुरु फिर करना। – पाक – पु० फिरमे पकानाया पकाया जाना। -पुन:-अ० बार-बार । -पुना-मी० पुनपुन नामकी नदी । -प्रसिनियर्तन-पु० पुनः आना, वायम आना ! -प्रमाद-पु॰ वार-वार शरूत वरना ! -प्राप्य-वि॰ पुनः प्राप्त करने योग्य । -मंशम-पु॰ किरसे गिलना । -मंद्रान-पु॰ सुर्गा गुरं अधिकोत्रको अग्निको फिरमे जलाता । नसंस्कार-यु० दिमानिका वद उपनयग भंस्य। इ वी। गीमांसमध्य, मुरायान आदिके प्रायधिकते रपमें दशा हो। असंस्कृत-विश्व पर सुपारा दुआ। जिएको मरम्मन की गया हो। - निक्छ-वि० पिरने परावा दुशा। -स्तोग-पुरु एक वाग। -स्थापन-

प्रविद्धि स्थापित महाना । पुन-वि॰ [गं०] शुक्ष, पवित्रकरनेवाला (समासांसर्म-नीवे

बुर्भपुत्र)। † पु० पुण्य । पुनपुन, पुनपुना-भी० गवाके बाहवी बक छोटी नदी

जो पवित्र मानी जाती है। पुनरवस्त, पुनरवार्श-पु० दे० 'पुनर्रश्व' । पुनर्-भव [मंत्र] एक बार और, फिर, दुवारा । -अपा-राम-पु॰ पुनः जागा । −अपि-अ० तिर मी: वार-बार । -अभिधान-पु॰ फिरमे बहुमा ।-आमत-दि० रिरने व्यापा हुमा, शीरा हुमा । – भागम, – भागमन – 3* विरमे भागाः सीरमा । -भागामी (मिन्)-विश रिर्म मानेराला, शीरनेराला । अभाजाति-स्ते० हिर मन्म नेना। --मादि-विश् विस्मेश्य सरनेशाला। -- आधान-पु॰ शीन, स्मार्ग अस्तितः पुनः स्थापन । -भाषेय-वि॰ विस्ते स्थावित मी जानेवानी (शक्ति) । ५० दे॰ 'पुनसासन'ः भीमग्रह । —आजयन-५० भीश भागा, पुनः मे भागा । —भाग्रेश-पु= पुनः ग्रह्म वर रेना । - भावतं-पु॰ मीरनाः शिरमे अन शहन बरना । —भाषानेश—दि० पुनः पुनः भानेनाना (४४१) । -भाषानी(तिम)-दिश दिशने या शार-वाद काम बहरा वरनेराना । -शाकुभ-दिव डीइरामा पुत्रनः वंशावी विरमे कामा दुश्रा कीम दुश्म । -आवृत्ति-श्मेक दोदन राना। दिस्से भारत, कीहरूक कंपुक्की दिक्की ब्याल, देव ११ प्राप्त मेता । लभादाव-द्रव द्वारा भीतम करताः | पुरुव-द्रव देव "दुव्द" ।

बार-बार वहा हुआ। पु॰ दुवारा बहना। -ठक्तयदा-भास-पु॰ एक श्रम्यालंकार जिसमें शम्य सुननेसे सी पुनर्गतःसी बान परे पांतु वास्तवमें पुनरक्ति न हो। ─उक्ति-की॰ दिसी वातको दहराना या एक ही बातको बार-बार कहना (साहित्यमें यह एक दोप माना जाता है) । ←उरधान−पु०पुनः उठनाः पुनरक्ता ।~उरपसि− सी॰ फ़िर उत्पन्न होना । —उत्पादन-पु॰ पुनः उत्पा॰ दन करनाः पुनः निर्माण करना । - उत्स्यूत-विश दुबारा खिला हुआ; बी फटनेपर सी दिया गया हो। -उपगम,-उपगमन-पु॰ लीटना । -उपनयन-पु॰ दे॰ 'पुनः-संस्कार'। -उपोद्याः-अञ्चा-दि॰ सी॰ को फिरसे व्यादी गयी हो, जिसका दुवारा प्याद हुआ हो। -शमन-पु॰ दुशरा जाना । -शेय-वि॰ जो फिर गाया जाय । - ब्रह्ण-पु॰ यलगुल आदिमे बार-वार बदण करना, निकालनाः पुनरावृत्ति । -जन्म(म्)-पु॰ गरनेके बाद फिरसे उत्पन्न होना, दुशारा दारीर भारण बरना । -- धानमा(नमन्)-पु॰ मध्यण ।-- सात-विश्व पिर जनमा हुआ। -डीन-पुश्व दहनेका एक प्रकार। - वाप-पु॰ सास्त्राः वि॰ दे॰ 'प्रसर्वत'। -दाय-पु॰ पुनः दे देना, श्रीश देना । -नय-वि॰ जी फिर-फिर शया ही जाना हो। पु०दे० 'पुनर्णव'। −नवा−ग्री॰ धारकी जातिहा एक परमाना पीथा, गरदपुरमा ! -भष-पु० किर शरीर भारण करना. दुशरा चरपत्र होनाः नागृतः एक तरहवा पुनर्नेशा। वि॰ ओ फिर जरपत्र हुमा हो । –भाष-पु॰ दूमरा जन्म। -अू-सी॰ यह सी ओं पक्षते पतिरे भरनेपर इसरेमे थ्यादी गयी ही । -भीग-पु॰ पूर्वकरिक फलके स्पर्ने गुरा वा दुःसका धुनः भीव। -मार-दु॰, -गृन्दु-ग्री॰ बार-बार मरमा । -लाभ-पु॰ फिर प्राप्त हो यामा १-वचन-पु॰ दुवारा कथन, पुनरत्नि शाल हारा . बार-बार बिहिन होना । - यसु-पु॰ मश्चारंत नएश्रीमेंग्रे सामयो नध्यः विष्युः शिवः साम्यायन मृतिः वह सीकः पुनः समृद्ध दोना । -पाद-उ॰ पुनरकि।-पार-भ॰ दुवारा । —विचाह--पु॰ हुग्ररा ध्दाह । पुनवामी -श्री॰ दे॰ 'कृरमाधी'। प्रमदा-'पुनर्'का समामार्ग रूप ! - चर्चण-पु वागुर बरमा । =चिति-मी॰ देर ल्यामा ।

धुनाराज-पुर्व [मॅर] नदा राज्य ।

युनिव-सव युगः, किर । -युनि-भव बार-बार ।

पुनिम•-मी• पृदिमा । पुर्माण-विक प्रत्यं बर्जेवानाः पुत्रवागमा । स्रीकः पृहिता ।

म॰ चुनः, निर्। प्रमीत-विक [ग्रेंक] परित्र क्रिया दुश्याः शुद्धः पाद ।

पुन्-'दुम्'दा समामात्र ६ ६ । - मश्य - पु मर्गापा वह नद्भ दिनके निर्देशकों पर शेनान प्रापन ही र -माग-५० वस वहा शराबदार देश केष्ठ पुरवा समेद दावी; इतेत कमका जादवल । ∽लाहा-नाह-पुर धार-बेरदा देखा ह

Seet ben fri nien : - auf-fe. Zeitt et | Janut(un)-2. fe.] Ad niuet met Zaut ich :

중앙-숙소 (내수) 학교하는 역상소, 현소 "학교" 및 निवास-कोक सिन्दे कहा प्रदेशको नेतानी की बहुदी हो। दिश्ती प्रापृद्धे बेर्नेन मार्केको एक्षेत्रीत देखीन कक्षायो. प्राप्तानेन की शहरत बैहरफर सेवार की आली है है

है। -पाप्रशास्त्रिक देशने देशन किया है।

बेड्स, बेड्स १ -- शेष हैं। १६ छा 🖰 🛭

चे हुम्मी १ ५ वर्ग । साद बर जेगावा कर जेवे दिनने बाल हिल्लें।

मध्या ६४, इस इपने पहाला दुमा भीत, प्राप्तः अभीतता T'R. BATE ! "

देश्यक्रम-१५ देशुर, देशप्रेक्षाणा, एव स.स बीपरामक-पार है। गार् सामाहरू, १६४ ह

मेश्यपात ज्ञान दि र देखागा ह बैक्ष-चर्चक्षामी स्पेष्ट स्वत्य संगठ समिता सर्वेष्ट भूपनीका परिक्ष वेरका जात, यह अवस्था की महिनाहि है

प्रिया बनो दर्प है, विक्रोद सुदिष्ठण, अस्तिहर्दे, चेप्पाप करने भागा करताहर महिर्माहरे हैं व करमें वह पर है। है। क्षाण'-दिशासा पत्र मानुषा औ बग्रास्ट बार्वेदी : कार बंधा जाना है, निरदेश वह धरवदा कानुवाद में।

aufer eine fant bier fie en, mitter unteret कीरे पुरुष्ता हिंगी प्रेयका यह क्षेत्र का पुरुषा किंग ष्यामे, दराने आहिने कान्ये दालाए हैदा हो ना है। सर्वा मानेशनी पार्ट ही दोरोडा मद्र पुर्वानी सन्हाधाः मृतिः, प्रशादः । नक्षारानाषु । बहरातीः, बहेदार्वीका बह भागा किया है में में में में है है है है प्रभाव्यमान मार्ग कर है यह है जह समाने के, बीटिया अब यादनदार अन्तर हीतानी बीन्स्या मान्त

रिवारी बीर्ड साथ समा हो। हैमसूरे बीर्ड प्रसान का सारेका हो। रमहार होना र मान्य सहान्य, मार्चिके प्राचन-पूर्व देवे हो। ger, fent alter greet ein nar bie eures **क्रमान करे करेंद्र** है सामान्द्र साहितान्द्र संस् अंदर्श संस्

केल्क चन्न देशको साम्य करीर करिया भारतार बारवीकी नेटचरिए बरा देश क्षेत्र (बाव) वरे बुद करे दी कीता, राज ह

Berte atte fein briefet mitt f শ্রমার্থারিন্দ) লবুন (পার্যার্থার ।

Bunterman ger in feriefe giere frei Bift Berte and no wait fem wien berfe untimmet 线上心 水南 多音

Afferbien eift eft ofe begebabit 医喉畸形 化硫化 医吸收管 医心脏炎 **बेर्-न्यून्ट मध्ये ५ (१९७५) अ**र्थनात्र वार्य क्राव्येत हो बोबान्य ही स्थाप

more throng a tax

安安を食けたいれたのととから かきしゅ はまし Busings - Country of the best and nationally reported founds.

sore to concern it was so a dies. 47:31, Bear

中やっけったりましたよくでき

के**ल्ड** केल्क्स केर हैं शरी प्रदेशकाल प्राप्त क A feet - agree of the street of

वेश-पुक्तिको बेक्स दिलाह सनुद्रा बादर, प्रशास [दिक] शर्रापका पर श्रावित रामाना क्या जिल्ही क्षेत्रहरू। पांच क्षेत्रण है, करण केन्द्रे क्षणाकी वर वेश Ant क्षारी दुवै बन्द्र जवा कुन्ते हैं, मामाताक स्तार्ग है भी देते

नेदर केम्प्रेस के किया है का अपने अपने, जाने, देवता कर ही के हिन्दी परिवानी बागाया और बहुत कान्यु बहुत का नेत्र दे girt grandelit witt Cantre. Chir क्षांचे तुरे हुए बाहों है बारों दर गोपरी आप, निभवर ४४९ अवाहिताल समझ्योरी अव्यु देवी सार्ग है। हिन्दा

बह प्राप्त किवरते हर वहाँ होता अना में क्रिक्टिंग बर्ग र वह बरी। वो स्ट्रीय हो हुए यो बच्चे रहाँ है बैभ्ये के कार पड़े । नवीं द्वारानपुर की व्यक्ता की -वीक्षकार - पुत्र अहा दिने केंग्रेस अल्या देत अन्तेयो fum mit ab e muerifemenn bib fer baum er व्यक्तिपाद बर्गेजनी क्या र कदारोकीर शे र कर वर्ग । शक नक्षा अपूर्णनानेत् एका में कारेशकात्रक mrenge-fint aufibl for un erm, emeite and for sudd a gift went as land as करियांत्र से देशदे हैं जबहा चर्चवर जबहे देशदे रिकारी हो है है

हो, तिहिद्दा १ - अह पार्थी का प्रवास - मेर्न के र करे-प्∑ि दिला का शहर अहताह -पा पार्थी से दिश्रणा बीडणाड की अन्न का प्रदानत के **-- क्राट क्रुग्ड**कन में संस्थित से की, संबोधकारि प्रदित्त ६ अक्षत्र श्राप्तकारी काल, लेके है। मही बन्द । नहीं बन्दान्त्रहार । नव शुक्रारान्द्री atige un famise mie mir unan mit febert -श्री क्षापु-शन्दी व न, नेदश व न, इदश्यदी गार ह नि इ. मा भागा है है का कुन्नाहित करेरदेशाह चाहरहाहर " —की क्षांच कारावा—कादाद के देशा, कृता रंगाय र ण क्ट्रप्राच्याच्या प्रकारत मुख्य होतेला करेड कार्यप्र myfte they but and I mayreteeth संभाग संबद्द के बहु व व्यक्तिस्था कर्तने का में देश वेग दिसाया wester west a management of the first of हिरमान्द्रेन्त्र कम द्राप्त होत्र । मस्प्रकानद्रश क्रीत्र myraniamuske alten in trans inflation i देश दिस्म कर अपूर्व क्षेत्रेक्षा व देश क्षरचा र जावैषालांकिली की करनी गृह में ए काम्यान हैंद्रान है बंगकी। राम बंदर्ग है -वृत्त्वी द्वीवरण्याः दश्य काल्यो । वृत्त्ववर-सिंहा

main feen near, wregingie unbige fleif कान्य र नश्रीय स्टूब हो प्राक्रान रहत देश में में मार entret einer be ist fit en Carellen कुलका-देशो करको घरते, राज्ये भागरे हैं ^{कु}रेंग ELECTION AND SECURI - SUSCIENT OF MINEY 古古花は有者 かっとて とくかかず おとかし からりつ もちゃか その現代者を ment-working went - it and hit and à forces en din nonco - à tênçar 🕈 बैन्ह्या देवडी धूक बर्द्या, बस्ते व्यक्ति में देवी all the hotel the transfer and the table of

कुरिक्कार १९४३ । अपने कुरू साहित कुरिकार्य कुर्या manter emile, Me Labe welder auf aber g -martin financian chief mic merelle phieft

\$77 £ +. :

पु॰ पुरस्कृत करनेकी क्रिया, आगे करना था रखनाः पूरा यरनाः दे० 'पुरस्कार'। -कार-पुण आगे करना या रतनाः आदर, सम्मानः पूजनः स्वीकारः दाशुपर आके-मण करनाः सिक्त करना, मेकः अविद्यापः उपहार, भेट (बैं०, हिं०); पारितीविक, इनाम (बें०, हिं०); पारिव्यमिक (दि॰) । -कृत-वि॰ आगे विया हुआ या रखा हुआ; आरत, सम्मादित; पुजित; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; पिक्त; शुद्र द्वारा आक्रांत; अभिदास; विमे पुरस्कार दिया गया हो या मिला हो (नै, दि०)। — किया—सी० बारं-भिक फूरपः आदर करना, सम्मान करना । -सर-वि० आगे चलनेवाला, अग्रगामी; सदित, उपेन (समासर्वे)। पु॰ नेना, अग्रणी, अग्रमा; अनुनर । -स्थायी(यिन्)-वि॰ आगे सहा रहनेवाला ।

पुरस्तात्-अ० [मं०] आगे, सामने: पहले, आरंगमें: पूर्व-में। अनमें। पूर्वकालमें। पादमें।

पुरदृत-पुर वह अन्न और द्रव्य जी मांगलिय कृत्योंके मार्गमें नेगोको दिवा जाता है। पुरहीं - ली॰ एक शाही जिसनी पश्चिम और जह दबाके

काम अती है, दरनेवड़ी।

पुरद्वत-पु॰ पुरद्व, रंड । पुरतिक-पु॰ [गं॰] छिप ।

पुरा-पु॰ बरता, गोर । २० [सं॰] प्राचीन कालमें, पहले; अवनकः शिवाः अस्य कारुमें, बोदे समयमे । (प्राचीन, भरीत भादि शयोका भी स्ममे चोतन होता है।) स्वी॰ प्राभी, पूरव; दवः गुगधित द्रव्यः गगाः किना ।-कथा-स्वी॰ प्राचीन वया, इतिहास । –क्टब्य-पुण्याचीन सुन, प्रानीन समयः प्रामीन कुस । -शृत-वि० पद्देशः किया हुआ। पूर्वप्रतामें किया हुआ। पुरु पूर्वप्रतास सर्म। -श-दि० पूर्वतामी । -तस्य-पु० पुरानी वानींदे अनु-रोपान तथा अध्ययमंग शंबंध रशनेवाली विशेष प्रशास्त्री विषा ।−योनि−वि॰ प्राधीन कालमें उत्पन्न । पु+ दिव । -धरु-पु॰ भीष्म : -बियु-बि॰ पुरानी वानीकी आगर्नेवास्या प्राचीन इतिहास आवनेवास्य । –शुस-पु॰ प्राचीन बार्गाः इतिहास । दि॰ प्राचीन, प्रामा । प्रताचीमां - वि॰ दे॰ 'दायान'।

30E-3. [44] 24 1

प्रराण-दि॰ [गं॰] प्रामीन, पुराना: बीगै-धीर्ण । पु० प्रापीन कुलांना गृष्टि, स्थ, मन्बंत्री तथा प्राचीन कवियी, श्रुनियों और राजाओं के बड़ी नया चहिनोंके बर्गनमें तुन्त प्रतिक विदू पर्मेश्वेव (क्री कठारक है-विष्णु, यस, अहा, शिष, भागवत, मारत, मार्चेटेच, व्यक्ति, अध्यक्षेत्रं, लिया, मराष्ट्र, स्वयः मामलः कृमे, मस्स्यः, सम्बः, प्रद्राप्तः और भविष्य)। इ.स. पुराला निका की करमी की दियों से बरावर होता बा, क्षात्रीयाः भटारहती शंग्याः दिल् १ --क्रम्य-द्र॰ दे॰ 'दुराददर' । -श-तु॰ क्रदाः पुराणदावड । -रष्ट-पि॰ प्राथीन कवियोका देशा का सामा दुआ। -444-2. Ziini niu (*j.) ! -484-3. 42 म्युप्तः विष्यु । समीहत्यु । हृशक्या श्रामान (बी०) । द्वाल्यून-देक [१,४] सतः देशकतः दृश्व सी क्षते कार्य १ प्रशास-दिक [बंब] प्राचीमा प्रशास ग्रीकानी पहते

हुआ हो, आप (जैसे-पुरातन पुरुष) । पु॰ विण्युः प्राचीन क्या । –पुरुष⇔पु० विष्णु । पुराधिष, पुराध्यक्ष-पु॰ [सं॰] नगरके शासन, रक्षम

आदिका प्रबंध करनेवाला प्रधान अधिकारी 1 पुरान†-वि॰ दे॰ 'पुराना' । पु॰ दे॰ 'पुराण' । प्रशाना-विण निसकी सत्ता बहुत पहलेसे हो। बहुत दिनी-का, नयाका उछटा; बीता हुआ; ओ बहुत पहले बीत जुका हो। विगन कालका; बहुत पहले बीते हुए समयका। जी दिनी होनेके कारण अच्छी दशामें न हो, जीपी जिमे किसी बातका पूरा अनुमन हो, पूर्व अनुमनीः परिणत-बुद्धि, पक्षा; सभा तुथा, मेंत्रा दुआ; निद्ध (पुराना द्वाप); जिसका दिवान उठ गया थी; जिसका समय भर न शी। स॰ कि॰ किसीने पूरनेका काम करागाः पूरा करानाः भरवानाः * पालन करानाः पूरा करना, भरनाः * सिद्ध कराना, पूर्ण कराना: * माटे, अरीर आरिसे (बीक) धन-बानाः इस मकार बाँटना कि कीई बिना पाये न रहे, भैंदाना ।

प्राप्तक-पुरु देव 'प्रमुख' । पुरायसी-सी॰ [मं॰] एक पुरानी नदी। पुरासाट (६)-५० [छ०] १६। प्रशामिनी-न्यी (सं०) सहदेर मागवी वृथे । पुरामुहद्-पु॰ [मं॰] शिव र पुरि-स्थार [भंग] पुरी, नगरी; शरीर: नदी ! पुण राजा । -श-पु॰ भीव ! -शस-वि॰ छरीएमें निवास सहरी-वासा ।

पुराराति, पुरारि-पु॰ [गं॰] शिव ।

पुरिना, पुरिपा - पु॰ पूर्वपुरूप, प्रासा । पुरिया-भी॰ रामा फैलानेडी मरी। गामा। 🕆 पुरिया । पुरिष्य=-पुर देव 'पुरीष' । पुरी-मी॰ (पा॰) भरा दोशा (समामन, जैने-सामा-प्रति): [मंत्र] नवति, शहरा नदीः शरीरा दिना, दर्गः दशमानी भन्त्यानियोदा एक भेटा प्रशेमाका एक प्रसिद्ध नगर । –शोह-पु॰ पन्ता । पुर्रामत-स्थी (र्थ) भागा हर्यके पागशी एक माथी। पुरिय-पुरु [मेर] विषय गूर मुक्ता सन (निवंद)।

−निप्रदृष्य-पु• योष्टरद्वता । पुरीयण-पु॰ (६१०) विद्या सम्बद्धा करना । पुर्रापम-५० [ग०] उरह । पुर्शयायान-पुर्व (शेर) सलाहाय र पुर्शिष्मग्रँ-पु॰ [ग्र•] मन्द्राम । पुष-पुरु [बांक] देवकीय, स्वर्ता एक देख विशे हक्षी मात बार बाजा बबारिया बनिय पुत्र किगते भागे रिकासी अपना श्रीवन मफॉपत दर दिया था। परावारा छटा शक्ता प्रतान । विक प्रतुर ६ -कृत्य-पुर क्रांपास्ता व्यवद्वा - कृत्यप-दुः दक्षः देश्यः। - येत्रम् - दिक मब्द, की बहुद्दीकी मायल हो। - जिल्लाहरू कर्मान है यामा राया हतिभोग विश्व । नदेशक-दुः रस् -दंबा(बार्)-५०४३६ -२-५०४१३६ -५५,

-मर(६)-पु॰ १६ । -भाक्र (त्रम्)-पु॰ कारण।

नसीहनकुर अवयोद्दर होता यादे । नशेवटनदिक

मेपहरू∽पुरु गरेता । हेर्देश-दुर देश ।

धेष्टम, चेष्टमी १ - औत्र देश विकाण व मेरा-पृष् [त्रांक] सन्त, क्षानूर्तक, देव "देशक" व सक (याक) सारा है, अजी, संद्रान् दर्ते, अध्य १ -अद्रूष-व्योध अजी ची मीते भगाची बारेशची अन्तर पुरुगेशच्य श्रीवत्री

न्यप्रान्त्री व स्वत्र, भीत वे न्यूरहनपुर देश क्री,हासारु रे भारते तरारे शत । भराजनदा दश्च क्रमेदारी भी । प्रतिहरूके

रायाने सार्वादी विभिन्न देश सम्मार्चे, विविधारवादाः हिल्ली राष्ट्रता का प्रत्यातका बद्द बर्जनाही की ब्राविक का

ब्रार्टिक में से समाप्ति के राज्यान विक्र खर्मी, प्रस्ताह प्रमुख्य कर्मी के बिदारामा है । - बाही-की र देएवाहबा काम वा वर । चर्तेसा−५० ३१ होता जी बराणी सरिवयन प्रदेवे ही क्षेत्र हिया राज्य है। विभावत कराता साल, बृशायत ह -

साम - ५०, वरीक १ इंचापा: रहशाय, कारशास्त्रविका र ~ शी लक्ष्मण हिल्ला करणाई शुक्त बर दिल्ला करहेरे। परिवर्णकर , बा पद भाग के बक्टेक्फेकी पार्थ, पुरा क्रीकेट बहुते ही दे दिवा ज मा है, दिक्षी दे बेग्रज का गुरुबारहा क्या प्रान्त

में। यो दियम निवंद यहते ही है दिश जाना है, कार्रे है. अधिया । -व्यक्ति-व्यक्ति हेन विद्यालयोर्थ । -व्यक्त-अन बार्ति, पूर्व । - स्वाम-पुरु देशहाह । - क्वाहिन्द्रीय वह ह

कारतको मिन्ते क्षेत्रं क्षतका गुरू हो। बाल । - हामान । mge fegunne, Dan t - ife-g- to "trett" : -वंदी-भार बुरर्शील्या दुरदेश र नश्यी-भार बाले mil und at tegat mit t netmage an mate में। का बन ही दीवर केट रहे बच्च मानत है। चीवन अन्ति।

की यह है प्रतिकृत्वा बारोगर, शुरू र कही करिक अले mit umbeme t ge fimer umer um geren, १५१ लक्ष वरा, ल(१) वरा ल्यु । सन्दर्भक्त । सुन चक्र महत्त्वसम्बद्धाः सहताः वर्षेत् वहताः ६ −क्राप्टर-कर्णे that, ereb teren bifbe dem : - munt mi

शाक्षा-देन 'रक भगता' । (दिशांधि)-वाचा-दान REFU Water feed wans heler }--- ge fert bie, wiefer einer wer.

क्षारिक, ब्रान्तभद्रद्य क्षा पूच्या ह केलव कि (१०) बीवन, मात्र क्षेत्र, इस.स्व.वस.) gene, ign inge feur gitem, diere e grarete jure der, negre, gfleer merfes

क्षणान मानिव हो प्रताप । नहीं नहीं ने देखां पर वाल का , Re. Bregatia

trery care (a o) trest, and fier merer. र्राम्पातं अतः वर्तादा सं संबद्धाः है।

केलन नव के बेन्दी पह नावल के बी बीच हिन्दी हैं है है anger einem fil gitte dens nicht alle Ent gleich 医皮骨切迹 覆孔 指枝等虫 跨电 四层跨域的 医甲醛多种化 By since and a sinder, Bode street at their suppress to

figurational a facilities, and fines, when 电传读 电传电 红蛇 覆细红 壓 一套 對學一切時

No. 1 · 46 \$14 \$1 \$1 \$10 \$6 \$4 \$4-\$22 A \$1745C. Marker arrisk eta tija troog af of somer o

देशाय-६० (६००) स्य, क्या शह, ४५ १ स्थानस्मार देशान कालेका प्रकार, वेद्वाप कालेके जिल्लाका पान बरह १ मुख् =बरमा-धुराधी म सुरण, बर्चन हैर श्योतियाः शास्त्र भेरता । (दिशन्ति) नवा विशास

प्रथमां −१(५ प्रशासे हीता। विशायर-पुरु विपन्ते अध्यापन्ता रथः प्रतिप्र सरस्त्रीत

चै हा – को व [मंत्र] बाहा क्षेत्रण बान्तिहरू, कृत्रण कन्यन्ति बहारको भी विकासिका हो हो। यह हो हरो। स्थ बारेका न्याना शक प्रकारका काषण यह पुरानी। क्षरी प्रश Feet with the engineer are figured, increase fight विसन्दे गर्भ काहर स्टब्ट है। लड्डीहालकीकनपुर KÇ] I

नेत्री-स्ट (१०) है। पेपी, [४०] रेप ब्रीमानीरे क्षेत्रे दिया का बच्छा अवस्थियने स्थाने मुक्तिया देश ब्रेम्स, मुबर्देश शुक्रमते । नवा मुद्रीतिन 5" E T 8 वेद्यां सर्वोर्ड – ब्रांफ [४००] हो देह की बाए दी पर हे की बाए

हेका, सरीव्य तारी । वैद्रमुर⇔सर (४३०) देव "रेप्टर्र" : केंच-५० (दन) बंबानेक क्रिया, बंबान है वीचक्क-पुन [र्ह्स) बीलक्षेत्रनक्षर र बेक्स-पूर्व [० ०] क्यादेश दिवा, रिक्की शहर र देवर्ज्यः, देवर्गाः—भी ० [श०] शिक्षः धक्षेत् शरमः १ देवसावनम्य हिन्देशस्य, ५११सम् । केप्रज्ञ-दिक, पुर्व दिश्को हैक रेड्स्कि है देवन्द्र - दुर [११०] है। ११५९१९ 축에 어떻게 들어나를 먹고 뭐 देवी-क्ट व [तन] दिवानी व वैदार् दर)-पुरु (४३) र्यम्प्रीरणा ।

李昭中一班一等中 李祥、王一本知一中。 第二人 李从安村、日 बैंगास स्थित, पूर्व (क्रिक) है र "रे इस्की ह geta-de fine tott een t adigitempe tet ent ? eur gar fort ! केरबह-हर (० ०) बल्दिनका, मरिहां के भीगर, मेरि 427FM11

化烷甲基甲烷基 化化类红松 电电影 电电影 电影 लहार के और संपर्ध कराईदे का व काम है। 축류문역(mgs 축소 /jd m) E

Bert-te giet etit bie Eint afer मेल-रेटर (संब) महर-मार्थ र

High - 얼마 라마스트 전 아름답다 모든 HER > 骨柱小腿片 聖代本縣 節門 家不前有效子 苍安的第四征 医乳头皮皮膏 经过分分别 电多分元卷天线 不

क्षिकेम्बर देवलेन काद प्रकृत रहेग्यानी कार हैरावेंत है 蓝黑松一套,有象 物理者 奉献 医外

質的ないないものをまれる。

· 李明·李郎 [12 4] 张 14 1

पुलकी (किन्) -वि॰ [मं०] पुलक्षवाला, रोमांनयुक्त । पु०

बर्दबका एक भेद्र ।

पुरीरसय-पु॰ (सं॰) नगरमरमें मनाया जानेवाला उत्सव । प्रोद्यान -पु॰ [सं॰] नगरके अंदरका उखान, 'पार्थ'। पुरोधा-मा० [गं०] पौरादित्य । पुरोधा(धस्), पुरोबानीय-पु॰ [सं॰] पुरोदिन । पुरोधिका-सीव [गुंव] ज्येष्टा, सबसे विव पत्नी । पुरोहित-पु॰ [२०] पानिक उत्य करानेवाला । पुरोहिताई-सी॰ पुरोहितका भावः पुरोहितका पेद्या । प्रशिक्तिवानी-सी० प्रशिक्तिकी परनी । पुरोहितिका-सी॰ [मं॰] पुरोहिनानी ! पुरोहिती-सी० पुरोहिताई। प्रशेक-पु० पुरुषद । षुरीका(कम्)-वि०, पु० [मं०] नगरवामी । पुरीसी । - स्पां क्या पूरी करना, पूर्वि । पुरीनी नन्ना॰ पूरा करनाः समाप्ति । पुजी-पु॰ दे॰ 'पुरजा'। पुनेशाल-पु॰ ध्रोपके दक्षिण-पश्चिममें स्पेनमे सगा हुआ। एक छोटा देश । पुर्तगासी-वि॰ पुर्नगास-मंबंधीः पुर्नगासका । पु॰ पुर्व-गालमे रहने राला, पुर्गगाल-निवासी । स्वी॰ पुर्नगालकी पुर्नेशीज्ञ-पु॰ [अं॰] पुर्तगाल-निवाधी । स्वी॰ पुर्नगाण्डी मापा । वि० पुर्नगाल संबंधी । पुर्वेक्षा-वि॰ दे॰ 'पुरवहा'। प्रमी - नि॰ दे॰ 'पुरमी'। प्रमी-सीव देव 'पुराति' । पुन- (१० [१०] यदा, भारी, महान् । पु० शेमहर्षेत्र, रीमांचः [फा॰] गरी, शोता, बाई बादि पार करने-या वह साभग भी नाव पारवर अथवा मंभीपर पटरियाँ भादि विद्यासर या पश्ची जीनाई बरफे बनावा जाता है. सेषु । **-मरास-५०** दोजसके उपस्का वह काट देसा बारीक और नलबार श्रेष्ठा तेज चुन्न जिमपरमे बजामत्ये बार मेक्टबर सभी शबर्रेंगे (बहुने हैं कि बेद मी बते भारानीने पार करने बहिरतमें चडे जावेंगे और बद छोग करकर दोगरामे विर अर्थन -शन्त्राम)। सुरु (किसी-षानरा)-पाँचना-सरमार दरना, शरी लगाना । पुलक-पुर्वभागे दर्व, मय कादिते कारण रीगडे करे दीना, मीमहर्रम, रामांब, ध्वर मुहल; एक प्रवादका राजा एक रानदीया एक प्रकारका वालिज पदार्थः दापीका गारिकः मयपानका पापः हरतातः वस प्रकारकी सहसीः वस संबर्धः यस महारूपी विद्वी । पुण्यमार-भर हिन पुण्डित होता, ह्पंदिहन होता । पुलक्षि-पु॰ [र्रः] कमाहा पादा । युलकाई = नर्गन युलक्षित होतेका जान, युलक । Zadiud-de (up) Eft ! पुरुवातिक-सीक देव पुरुवाकि । पुरुवायन्ति-भी। [संब] प्रेम का वर्ष प्रत्य शेर्याय है। प्रमादिमा-दि: [र्गन] जिने होगांच हुना हो। हुछ, प्रमान, Tificet

पुरोद्वाचीय-वि॰ [तं॰] पुरोहादाके कामका (यव, तंदुन्य

पुरुकोरकंप-पु॰ [सं॰] इषोंद्रेकमे यौपना । प्रकाहम, पुरुकोद्धेद-पु॰ [सं॰] रॉमटे सहे होना, लोमहर्पण । पुलर्टा –सी॰ पन्यनेशी क्रिया । पुरूटिय-स्त्री॰ इस्त्रेकी तरह पकायी हुई अस्त्री आदि वी धावपर उसे पहाने, फोड़ नेठे लिए गौंपने हैं। पुरुपुरु।-वि॰ दे॰ 'पुरुपुरु।'। पुरुपुला-वि॰ पिटपिला, जो भौतरसे नरम भीर दौला पुलपुल्याना-स॰ कि॰ विसी पुलपुली भीत्रको दवाना। दबाहर चृसना । पुरुस्त=-पु॰ दे॰ 'पुङ्खि'। पुरुस्ति, पुरुर् य-पु॰ [मं॰] एक प्राचीन ऋषि जी ब्रह्माके मानसपुत्रीमें ये श्रीर सत्तर्थियों तथा प्रजापित्यों में विने जाते हैं (ये रायगरी विनामह सथा विद्यप्रवारी विता थे); पुरुह-पुर्वाने एक प्राचीन कपि जी प्रचाने मानगपुत्री-मेंने थे और सप्तिपामि विने जाने हैं। शिव । पुरुष्टना ७ – अ० कि॰ दे॰ 'पुरुष्ता' । पुरता-सी॰ [मं॰] परिहा, उपबिदिया । पुरुष्क-पुर्वारं) बरबा पैया भागना पिता भागता सहित मंदेवः संपुत्वः स्वरा । पुलाकी(किन्)-पु॰ [र्ध॰] बृहा। पुरानिका-रगै॰ [री॰] खपादा बटिन पहना । पुन्यविश-पु॰ [र्ग॰] धोदेवा सर्पर धौदना । पुरुष्य-पु॰ यांस और चायन एकने पक्षाकर सेवार किया जानेवाला विशेष प्रशास्त्रा ब्वंबन । पुलिद्-पु॰ (सं॰) एक पुरानी भग्नन्य जाति। इस जातिके दमनेवा देश: यहात्रका मन्त्र । पुर्लिदा-पु॰ सपेटे दुए बागहका बेडम । स्ट्रां गारीकी ण्य महायद नदी । पुलिम-पु॰ [गं॰] नरीहा हिनासा रेनीला हिनासा मरी॰ में पढ़ी दुई रेत ह पुरनयमी-गी॰ [पं॰] नदी। पुलिरिक-पु॰ (१)०) गरी। पुलिस-पु॰ [ग्री=] यह प्राचीन कवि श्री स्थीतिपर्दे वस भिडांगडारक भागार्थ के (इनहा शिवांत पीटिया शिकांत बदमाता है)। वृत्तिम, वृत्तीम-१दी॰ (६०) बरताहे बात-मार भीर यांतिकी ब्रहाच्या अरंब बत्येदाला गरकारी गरकमा। क्स महर्थमेरे वर्तेचारी । -मैन-पुर पुलिस रिमातदा वर्म-थारी । पुलिशोरा०-पु॰ व्ह पर गान । पुर्यो - मा॰ वस्त्र भारतको एक विशिष्त । युष्पोपदी-भी॰ [सं•] महोश । पुर्वामा-भी॰ [हें। भूगु भविद्ये पणी भीर स्थानदी प्राथमा(मन)-६० (१०) पर देख से १४० एक एक भूरतीया भी, स्थानक यह मुक्त हो के हे पून प 로 되는 화는 없는 어로 모

ष्ट्रहानदेश किन्दों अध्यक्ष एंट श्राहा हजा हो। बन्धि, जा रा HA, RATT THE BEING THE S. OF STREET, MITTER

वैद:इस+अ) » (४:४) ए घोट, सद्य द ह में १ ५५४कि मध्य अध्यक्षतान् र दश्य, भूपहेरी है

والتعالم والمساوية वेश्वापारिक दिशाहे क्षात्र क्षात्र केत्रही, क्षेत्रहा विहान रिक्षा अला बोलान्द्र हो। बीलान्द्र करेग्रामा हो। क्षानी कार्य देश कहे। विकार पेटी होत्रव देन

क्षाच्येका संकेत अवस्था । दिक्तारा न्या । दिन न्द्री स देवी क्षेत्र देव स्वार देव ह

ब्रिक्ट्र प्रमुख (४००) ब्राह्म स्टेर्ट्स ह क्षित्रक पहिल्ला (१ वर्ग प्रेयमधी मन्द्रते कर दश्या प्रेयम्)

Berfielens क्षित्रकार प्रमुख्य (अ) हैं इस्तार का कि है। अपने का कि र्वेश्वर-भोद रमाधारी गुजरते हा रूपाना शिवेदा from 2

पैसापुत्त पन्ना । (घान) प्रदेश महीह माहिन्दी देव पर ह विशासान्त्र (कार) यह अन्यव दिल्ली बोहे दल्ला आहे. with after early a prefer t

केंबरीय-बर्ग र देश ग्रेंड ह

र्वे ब्रान्त प्रकार को अपने अपने, अपने प्रशेष ब्रह्म प्रवाह देखाउँ की व बाजा में होते, भारत हम बार्ड्ड के परिवास

देश-पुत्र दूर्ग दह क्षेत्र धर द्रिमदेवरका उन्य क्रामा हिन्देन हो न कोड अलड़े हैं, यह मह बहे हह हिन्द्राय अरमहिन्द्रा सरक्तरी काला लाई दिनको एवं व रहे छ। att, 我们在这 2 一定数据研究和各种数 电电影电子 werther to be the the first of the first अर र्रोड २ हर्षे २० इष्टब्स् झालागारी के ले १ दलो, चलतीकर इ.स. १ प्रमुख्या देव सार्थिय वर्षी १ प्रवेश १ - वर्ष समाप्त स देशहरू अंतर से दशकात व शासन करेंद्र . ter then her been appeared at \$100. **६९** संस्था र मा ५० वर्षमण्डः । स्वीत्रहस्थानमण्डल् fret, une a (Waltinge) im genetingen mir : महिम्मानस्यानस्य । त्राच्याः । जन्नस्य स्थान्तः हेर्न् सार्यः । 春中 未食工资保存工 一个中种中央人工基金的 山田子城市 king meine green e magazar mit migt start a sa watertweeper of a rice graph a ·阿克斯品·阿克·西斯·西斯克·斯克·高地·斯·西尔·西

田縣 養養職 李素者 多斯田八十四年 日時中,至至八十年以上 इन ५ वेडि बचन नर्दक ज्याहर

499 · 44 24 224 .

first are a compress and again force A Bu t with a group of the P wanter 神させい フェマー

통합 - 말이 우리 돌면 되는데, 속이보는 Winter, 특가축 되는데 없는 दह देवे वद्य इंद्रा सर्देश में प्रकारण क्षेत्र क्षांत्रिक 보다, 본 선칙에 되어온다는 중기라는데는 도둑 광고난 요즘 생각이다. मध्येक्ष वेष्ट बर्द्रक अन्युरको बन्तु दिलावे सुरक्ष कारने को है। प्रशास सरहते है। ईक रहे हैंव पेतृत्याक्षी ।

General and an action and for the fact by बद बण्डदी महें की भी शिल्ही साली हीने बाज्दों मूध हो हरह किया करा ही ह

वैराई -को व नेरवेश देशमा का कार, रेरतेया दूसर र ् वीराष्ट्र - पुरु देश 'रेगार' ह 역 87명 ~ 명 이 라마크 중 1874 B Germi-ne fre feit & fiebt une nem fleit

Palitan Bill Baran, Parang बैहाक-ए० अहा बर्गाटी वह स्थान की केवल ने दह राग दिशा था करे ।

विश्वाहरू पुरु (४०) दश घटनहो एनग्र रेजारे स्वी व्यवस्थित हिर्देशक अस्ति कुण ब्याद्याच्या ब्या मुक्तारियो क्षेत्र

वैद्यी मारे माने मारिका देखा यह वीदा स्वताहित दिना वर्णकी विवय प्रदान है। दे केरे विवय केरे हैं बर रहे हैं र, शंजिल देशन, कर्ता है। केंग्रे, पुरेशर

विवेदान्त्रकण्यान । व दिव दिव 'एर ६८ से,' । वॅर्नेटक्टर-५० देन 'देर रेन्द्र दे । वहाल-कुन , बन्दे काउन करने अकारे, विश्व सकाल

\$\$《 實色性 東京如作 (B) 其中的 中山原田中村 中村 दहरी कर्या देती क्यों हे चनने को हैर्स के समाप्त हैं। 医花类灰色的 見機 医医乳化性血化管炎 출내로마탈스 [아마] 속 구 속/년 4년 10년 12년 12년 12

44-5411 बेसल अपूर्व करती राष्ट्रवेदध और नेता रिवासी में से work streiterung wie flagt gewählich mittel

tei. 養成に、 ちょの あたらい いれ めばり あしむりにんか はしょれ と 활동분 시민이 '역사의 화장은 왜 작곡이 되면 그 목소를 받다 모양된 witter witten big as fless man it man, tit REW BOOK & GALLE GO DE BY BOOK BOOK BOOK * 25 Eur 20 Et 25 Et 2 Et Marine \$60 HG 医一层电阻 电影电影 领生。表现 如天中, 生民中国于如维性中 go for my les o o washing a lite ambit \$ 6. 4° 1

覆載電 Stanies arise Sta Netalini おりず。 for the agents

葡萄的水柱4 gle xy Fgx7 letyfeight frei MfH代 Tes, 24. \$192

BERREST CO SENSEME GREAT 1 CHIMALES HOT BUT PART LIVE THE THEFT Show a figer or year weare alex and All 东咖啡 机电极性地放射性 化聚焦十烷代代剂 屬於 "歌我,"可不有心识。 \$\$\$ mander \$1、 \$1 6 kits Anth

संप्रदाय । - मर्धन-दि० जिमसे अन्यदयकी सिद्धि हो। सरा, विभवकी वृद्धि करनेवाला । पु॰ सुर्गा ।

प्रक्रिका-स्वी॰ सिं॰ो सतही, सीपी । परपंधय-वि० [सं०] सक्रंद पान करनेवाला । पु० अमर । पुरव-पु० [सं०] पूछ, बुसुन्नः स्त्रीका रजः कुनेरका पुष्पक विमानः ऑराका एक रोगः पखराजः निकसित होनाः विकास खिलताः धीरता नमता आदि भावोंकी अभि-ध्यक्ति (ना॰)। -करंडा-करंडक-पु॰ उज्जयिनीका प्राचीन शिवीचानः फल सोइनेकी दलिया ।-करंदकिनी। -वर्गहका - कर्गहिनी -सी॰ उद्ययिनी । -कार-प० प्रथमत्रके रचिता। -काल-पु॰ वसंग कतः सियोका क्षुकाल। -कासीस-पु॰ एक प्रकारका क्मीम, हीरावसीस । -कीट-यु॰ फूलका कीड़ाः अमर, भौरा। -कुरुलु-पु॰ एक जत जिसमें कुछ फुलेंके कार्रेपर महीरोगर रहते हैं। -केसन-प॰ कामदेव ! -केन-प॰ वामरेयः पश्यांत्रनः वद । -ग्रंटिका-सी॰ लारवदी दम भेदींमेरी एक । -गंधा-स्ता॰ जुही । -गर्वे-धका-सी० नागरला । - प्रथम-प्र• मान्या गुपना । −धासक-पु॰ बाँस । –चयः,–चयन-पु॰ कुल लोइना। -श्राप,-धनु(स्),-धन्या(स्वन्)-पु॰ कामदेव। -धामर-पर गरन नामका पेका बेनकी छता । -ज-विक मुक्तमे सरपन्न दोनेवाला । पुरु मूलका रस, मकर्दर । -जीयी(विम्)-प॰ माही ! -इंत-प॰ शिवका एक धन परः विष्णका एक अनुचरः एक गंधवं विश्वने महिम्ब-रतीय रचा है। एक विचाधरा एक लागः वायस्य की गका दिभागः एवं और चंद्रमा (मंस्ट्रकों दिवचम) । -ईती-स्री॰ एक राष्ट्रसी । -वंद्र-पु॰ एक नाग । -व-प॰ बरा, वेड । -हाम(स्)-प्रव पृत्रीकी माला; यह हेद । -ह्रव-प्र• प्रस्ता रस्, अस्ट् । -ह्रम-प्र• प्रश्वप्रधान ब्रु, यह ब्रु प्री मेदन कृत्ये निय हो। -ध-प्र• एक काति विस्तरी उपाधि मास्य माध्ययमे मानी जानी है। -धारण-पु॰ विष्णु । -ध्यञ्च-पु॰ कामदेव ।-मिश्च-पु॰ भगर, भीरा । -निर्यास-पु॰ दे॰ 'वध्यद्वर'। -मैप्र-पुरुषक तरहकी विषयारी या समाई (आर वेट)। -पग्र-९० पुरुक्षी पैटारी। एक प्रकारका बादा । -पन्नी-(तिन्)-पु॰ कार्यदेव । -पय-पु॰,-पृष्ट्वी-क्री॰ रत निरम्नेहा मार्ग, दीति । -पोर्-पु॰ दर महारहा स्वि। -पात्र-पुर पूत्र स्टान्स पात्र । -विह-पुर मधीतः "पुर-पु॰ पुष्टामाबर्गाः पुनीमे भरी दुरे शीनो वा पाय (!) । -पुर-पुर वर्षेका एक प्राचीन शमा - पेशस-दि॰ हुन्दी टर्ड मानुद । - प्रचयः -प्रवाय-पु॰ शापने कृत नेशना । -प्रकाविका-की॰ कुल श्रीता । -प्राना(-इ॰ कुलीश सिरीता, कुल-राधा। -विवस-पु० (स्वरमानः। -कम-पु० श्रापितः देगा दुम्दरा । -शक्ति-ओ॰ पूओरी मेंट वा यहाशा। -बाय-पुर बामदेश पुराशीतका यह परेण एक रीय । -मम्-द्र- ६२ स्रोतना यह महत्रहा संस्थः। ─ममूक-दुः इट (रहेद दन । ~सव-दुः वृष्टोशः रम, सररह १ ~माञ्चन-पु॰ दें० "पुष्टसर" १ -सृषिष-रिष् पूर्णीने समाधा दुधा । नसंत्रहिकानकी० कील

कमलका पौषा । - मंजरी-सी० फलकी मंजरी ।-मास-प॰ चैत्र मासः बसंबद्धाल । – सिघ-प॰ दे॰ 'पुप्यसित्र'। -स्रयु-पु॰ नर्सङका एक भेद ! -मेघ-पु॰ पूल बरसानेबाला मेघ। −यसक∽प॰ यमरका एक भेद। -रस:-प॰ सर्वमित नामक फल ! -रचन-प॰ फुलेंदी माहा गेंथना । -रज(स)-की॰ पराग । -रध-प॰ यात्रा. हवासीरीके काम बानवाला रथ। -रस-प० कुलका रसः सकर्द । -रसाह्य-५० मध् । -रागः-राज-पु॰ पुसराज । -रेणु-पु॰ पराग । -रोचन-पु॰ नागरेमर । -छाव-पु॰ (फूल छोइनेवाला) माछो। -साबी-सी॰ (फूड सोइनेवाली) मारिन 1 -सिक्षा-छिट (€)-प॰ अमर, भारा। -िलपि-सी॰ पक प्राचीन लिपि। -वर्ग-प॰ कचनार, संगठ, अगस्य बादिके फ़र्डोका एक विशिष्ट समाहार (आ॰वे॰) ।-एस्मी• (सम्)-पु॰ हपर । -धर्प-पु॰ पुलोकी वर्षाः एक वर्ष-पर्वत । -वर्षण-प्र पुष्पशृष्टि । -यादिका,-वादी-सी॰ कुलबारी । -बाबा -विद्याग-पुरुषे 'प्राप्तशा'। -बाहिनी-सी॰ एक प्राचीन नरी। -विश्विया-सी० एक वस । -बाहि-सी० प्रश्नीरी वर्णे । -बेजी--स्ती॰ कुलोंकी मासा । -शकटिका,-शकटी-स्ती॰ भाषाद्यवादी, देवशदी। ~दाक्सी(लिन्)-प० एक प्रकारका विषदीन सर्प । -हाददा-सी० फर्मोदा विक्षीमा । -बार--धारासन्-शिलीमाय-५० बामदेव । -शाक-पुर शावके रूपमें वार्थ जानेशाने पूछ । - शून्य-विर कलीने रहित, दिसमें पूछ म नगे। पुर गुल्सका पेट ! -दोराह-पुरु पुष्पमान्। -श्रेणी-सीर गुगादानी। -समय-पु॰ वर्गन कतु । -साधारण-पु॰ वर्गन । -सायक-पु॰ बायदेव । -सार,-श्लेह,-श्वेह-पु॰ महर्दर या मध् । -मारा-मां गुमनी । -सीमा-मां। यह तरहरी पीनी। -मृत्र-पुरु गीभिनदा एक गुत्रपंथ। -शीश्मा-सी॰ वृद्धियारीया पृता । -श्नान-प॰ दे॰ 'वृष्यस्मान' । -श्येष्-पु॰ दे॰ 'वृश्यत्व' । -हास -वर बुक्तेश विकास विष्यु । -द्वारा-संश क्रम्मनी म्बी । -हील-विक पुर्लेने रहित, (वह पीपा वा देश) दिसमें बुक व करें ! -हीना-सी॰ गार्तवा नी: गहर-बा देह ह वृष्यक-पु॰ मिं०) कृत्रः पीएटः मुरेरदा रिमानः एड

बन्देल: विद्वीदा पुरदा या भेगोठी: लेटिया दहीता स्वीतः रीत्रा मैटा पर तरहरा गोरा पर परेंत्र। एत्परुद्ध-९० [मे॰] १० '१५४ हर'। पुरुषम्। नरीव [गव] एकस्ता स्ताः मरतः (प्रटी दूरे)

नेत्ररोगः संबाध राज्यय बंदणा एक प्रसार्श अपना

पुरुशंकन-पुरु भिर्म देशसङ्घे दशानमे । देशस् दिशा काले-द:ला वह अवन । मुक्तीबलि-बी॰ [में॰] बेबलीगर पूणा घेरठीये हरी हुए

युर्वाह, युर्वाहरू-दुर्व [६.४] भारता वह होई ।

Zenfan-do [1,0] x412 1 पुरदा-की विशे बटपुरी, बर्नमार माराजपुर्। F#1 #2 1

के दें, बीपान बढ़ बाप विशास करी। दिएकी मानुरी ही वे 1 करेर^{ेर} र क्यांस्टर्न्स अवश्विता अनुष्यति हवास्त्र स्वरूष् (रो जना २ - विसाह (ज्.) -पुर नार मा तहाको हारा । रत पार ब्रामीताला केन्द्रसाधीत स्वाप्तालय पार कीरेंगी 4---

बीक्-पुत्र अपनेदी जुलाका यह हरिद्या बाग्या वर्षीः भारत र क्षेत्र । क्षेत्रका क्षेत्र वामा र भक्तरभक्त वेर रीम देवश्व कराजदा बच्चा व्या सामा है, बाहाजधी। राजानेय कार्य करमानेका काय बस्त्रेयाच्या कर्नेवारी, गारशी र ब्राफ प्रमुश कामा - 3 रे- मेरे बाद पुरा

@F 4' 1 क्षीत्रभ्राम्य मन्त्र (हो व) पद्म का प्रवाद सामा की राम कह जा अराजी

क्षेत्रको नक्ष्य (४०) वर्षे ब्राह्मी क्ष्म । सीनुष्तान १०१ दे रही है चुणारी में ने दिलावर आदेशायर है क्षांत्र में (१९) - (वृह्ते)के अर्थात का अर्थन ना क m un wing, geir, Gein, with flowing and all matte f

effine fie fe'e) affen, Bur affen auftermen? ga te terroit : बीनवहरूम करा व की वर भर देखें मेरता हुई विद्या की र

केन्द्रभट्ट १४१केट केन्द्र का वेद्यालया वह केन्द्रिका क्षाद करतेच क्षेत्र क्षेत्र केन्द्र र क्रिक्षम् । न्स् रहित्र हिर्मा तरम यश्युकी अन्य पश्युक्त की दीन Mr wie un, appents fem neiges fiede et fe me eife

पर भेदर क्षा करार स्थापन हैंद कार्य क्षानी मह यह केर क्ष्म शिक्ष स्टेश स्टेश स्टेश में किए रेड्ड der. Bieten mille m. areite

电影神经学士 重田 共享的第三章 क्षेत्रा तपुत्र देहेदर हेहर, वीषा अवद्याप, अल्लाहा दीलहेदर बार : एक्टर किर मेरन के गारे किया मुला फेरके कार भ रेपाला हो है। यह प्रकारों संदर्भ के केया 有中心的现在分词 医二四氯甲胂四异四甲甲 难免 软形形

कुल है बरुका, बहर है कह देखा, की देह बहरता है बोबर्(म्)-१० (राज् कालक्ष दशको बाहरहो है है सके। Agrain 4

Authorite for some file

ब्रोक्स्प्राप्तात्रा वृक्षकातुः (११५) वश्याप्तात्रात्रः, इ. १८५ वश्याप्तात्रः म्बर्गियाचा मा १४ (४०) क्या हिए है हाम्बे द्वा स्वत्र ह doction to the state of magamagla wo dall a reflect dell the rich del State of the fill and the fill and 我们的我们有一个人 "你不少我看 我们还是什么我们

क्रीकिक्सर भारत है। एक इंडियाल है कार बक्क व क्षोतिकार व हुत तथ पर, पहुल आर्टी अक्षार्वकों केल्ट हैं बर्क बंब Antie, be man dagene mitg ber tabe grus .

स्तब्द। हैं उसी र अनुस्थान स्वर्णाका के छी बड़ होन्द्रन ह when his rise at the Blandar what we bil one have gently that he be be be

मान मान्य कर न्युकार व्यवस्था क्रास्ट्रिक व्यवस्था क्राक्टिक

प्रजीश पुनरस पुराश कैरनेयी दिया र होरे ए वीष-देश हैं। को श्रम्भवा मन्द्रि मी दा, का था वपः प्रवदः W"F: med k

योजन्यूच-पूर्व (११०) शहर ६ घेंग्डी(दिक्**)**-५० (तः) १५५ । योगडी-मी: [६.२] दश्योश जिल्ल भारेको मान्दे बारिए काल्यान कार्रे हिन्दी क्षेत्र स्टेट स्टब्स दोत्री है।

बीमा−दुर बन्नाको को सुर्ग, रहे रोहे र વોચી નથી > પ્રાથમ, દાવા નવામદી શકે દ चीरमा-४० वह होते दिरिया होते हरशा बनके, मण

माहरी र नहान्दर्व हीला ह वीर्याम्य देव प्राप्तान्त पौष्टार कष् । सन्दर्भारे चेट्यीको सक्ष यन हेंग्र, रोजनस्ट ह योगा-वर्गाटक की मिन्नी होते सरभा (रितंत कारणा वेशक

क्षीक-कुरु [बर] केमक्षे हे क्षेत्रम देशका अपगुरुष क्षा न बड़ी वर्ष हम अहिलान को य प्रतिहर बार्य न देवरण है बीपरान-देश किस्टो कीन क्षेत्र, जी भी स्टेशने क्षाता ही Their etern court from their etern tit

क्षीप्रमामा ⊷स× वि व वेप्यमा क्षीता है क्षेत्रकर्ण नवर्रात क्षणीयेको अवने कही हुई कामरी गुधर्मकी Coree away arbane ares feirwed warf fie

ETT - To Bren Cher, with women श्रीचार्चाई नहीं । प्रान्थकारी वर्ण । बीक्र-भर्त कालको राष्ट्र, उल्लाबी की बार्टिके देशकी 好吧,到我有明明我没有我的实际看他的好好的。

क्षेत्रा न पुरु काम राज्या मान्या । इस बा बा अरेट्स क्षेत्रा क्षेत्र BAC WYELL मीरिका-ब्रांन छल्का व्यक्ता एक व्यक्त में में पी

लेल्प्डिक्ट होतीन बहुका सन्तर है। चीर्योक्षणम् क है को को देखाई न्यूनमें ए सक्तर हुए हुए हो दे Am . d . (20) da' get (40) ne (40, 4.) the first an form, my negrous with with AL OF EAST O [TEAL SEED STOPE MICHAEL ALL MAN SOUTH waters. To erays, afternoon deadly blacks - And - ben (Ca) of the square to the Contract mugunge-terfier for gur gie bie ber 474't

(feether) - of engrature that fol ge that the

444.5 बोन्छक्ष अनुव है। अने ब्राव्हिंड वर्त नेक सक ररहर अप हैं nie byrnie deum Kleine driebe de skie french in was not the topos to Committee forge, where wire was at for all \$1. P मूक क्ष्मा अन्तर हैं है। जे द सर होती संख्या अन्या र ह स्था है।

黄铜织山蛇,花形生,至40年80年80年 安代 of the Tamero

पुत्रमान-वि॰ पृति होनेवाना, निस्को पूर्वा की बाती हो, पुस्य । युमपान-वि॰ [वी॰] भारत सम्मान दर्भेराना । पुत्रवितस्य-विक [गेक] पूजा बरने नीस्य । पुत्र पता(त)-विक, दुक [क्षेत्र] पूत्रा अक्रीताना । पूजा-मा: [मंक] एन, पुण, मंद अपदिके सुमार्गणके साथ हैरवर शा विभिन्न वेदणावर बदान, व्यक्त आहि अहरेन्द्रश इत्य, सर्वतः राष्ट्रार्, आवश्यातः, राणावताः, युव देवनः, विक मरम घरमा (लाक): नायन, शिर्म (लाक) । -कर-दिन. पुर पूथा बर्टेजन्तः । -बृष्ट-पुर मन्दर, देवालदाः परणाना गाँदर । नर्गभार-पुरु देव विजीवनका । बुजाधार-पुर (११०) वट वरावे विगर्की सत्यन सामन्तर 🕻 बुलि-स्टीन (११०) दिनवण, गुप्तणा दुर्गप, दरबूत होतिब 41

पुष्तनी-सी० (मा०) मादा गीरीवा र पुत्रमीय-रि॰ [मंत्र] पुत्रा करने द्यारवः आहरके वीस्व ।

वाना, भुतना होना ।

पुत्रम-पुर [मंत्र] पृत्रनेकी किया, अनेन: शहराह, आव-भगतः भादरकी मरार । पुजना-म॰ कि॰ पन, पुष्प, गोप, फल, जल आदि सम्वित बारणे, देश्वर या जिली विद्यात देवनाका भ्यान, स्मरण, म्मवन स्नाद यहना, देश्वर या दिशी देवनावा स्रवंत. भारापन बर्गाः सन्तर बर्गाः आवश्यात बर्गाः यम देना, बेर गरम हरना (छा॰) । अ॰ जि॰ पुरा होनाः मार, गाउँका भरतर बराबर क्षेत्रा; बराबर वा शामुक्य श्रीता-'मेरसाहि गरि पुत्रम येऊ'-पनः देशक हिया

कद्र करनाः दीक्रमाः जवाद तलद करना । भूष्ट्ररी - न्ही॰ पूँछ; पिछला भाग; गोवर्थन पदावदा अंतिम माग ।

पुराताची, पुरापाठी-मी॰ प्रशाह करनेकी किया ।

पुत्रक-पुर [मंर] पुत्रा यरनेवाला, उपासक ।

पराता-गरे किर दिना परवर्ते संबंधने दिनामे कोई प्रदन फरना, किमी बावकी निहासारी कोई प्रदन करना किसी-की कुदाल आदिके विषयमें प्रश्न करनाः सोध-सबद लेनाः

च्छ-मां० पटने, परे जानेका भाव या किया; सोतः कर, आदर: माँग (बरत्यें लिए)। -बाड-रदी॰ दे॰ 'पछ-ताछ'। -ताछ,-चाछ-संा॰ हिमी बातवी पदी जान-कारी है लिए समदे विषयों अतेह स्थक्तियोंने यह प्रकार-के प्रश्न पूछना ।

प्राी-नी० [सं०] शुपारीका वेडः सुपारी । ⇔पाल-प० सपारी । -छता-श्री॰ सपारीका पेड़ । धाय-वि० [मं०] समह-मं-धी।

पती³~करीर ।

बूगना - अ० जिल परा दोना- मार संग साथ नार्ट

व्ग-पु० [सं०] सुपारीका पेड या उसका फठ: कडहलका पुर या पाल: संगः समहा राशिः स्वमावः प्रकृति । -कान-वि॰ अमा किया हमा, रस्ट्रा किया हुआ, राशीकृत। -पात्र-पुरु पीक्टाना पानदान । -पीठ-पुरु पीक-दान । -परिपक्त-सी० विवाह-संतंध पहा होनेपर दिया बानेवाला पान-फल । -पोट-प॰ सुवारीका नया पेड । -फुल-पु॰ सपारी 1. -होट-पु॰ हिलालका येड 1 -चर-पु॰ वह विरोध, श्राप्ता को बहतमे सोगींसे हो ।

हिलोकी पता की जाय (जैमे-यंत्र, चक्र, प्रतिमा, शास-

पुननिका-मी॰ [ते॰] पुनना राएपी ह बुम्रर-पु (ris) एड. एक हुन तुम्स स्वर्थ (साs) । पुत्रश्य-पुरु देश 'पुत्रम्य'; पुत्र, देश । पूना-कोक (राक) द्रारी यह दृब र १ पुक देश, पुत्र र प्तामा(मन)-१० (०'०) गुद्र अंशाहरणका । इक from the !

की मारनेट किए मेंडके पर मेजा था, पर बष्ट अन्ते मारी गरी। राष्ट्रमी। बालके का बाद शुद्र रोग। यह प्रशासी हर। मध्यानी । -केश-पुर, -केशी-शीर एट दीवा । -क्षान-गृदन--हा(इन)-पुर हाता पुननारि-दु॰ [धु॰] मुःस ।

अमीर-पुरतेनी अभीर । व्यव-पुर [संत] भ्रदीनिही पद बाति या भेर, देलात । वनना-न्दी॰ [रां॰] एक प्रसिद्ध राष्ट्रशी जिसे श्रीरूने कृष्णः

वृत्रज्ञायी-श्री (गं०) पुरुष्तपुरी प्रधा, हासी । कतवा-प= धोटे वस्पेसा धांश पित्तर । -(ची)के

चुम-पुर पुत्र, बेटा: [मंद] शत्या शामा श्रीम कहा: [बर्ड-कत बुरा । वि॰ पवित्र किया हुआ, शुद्धा साक किया हुआ (अन्न); प्राथमित किया हुआ। दुर्गभवाला, बदबुद्दादः आदि र र । - मतु - पु । वर्ष - प्रथ - पु । वर्ष मामक दीया ।-तृष्य-पु० ददेश बुदा । -झू-पु० पत्रासदा पृष् । -धारप-पुर दिन । -पश्ची-सीर सुमही । -पापू-पान्या(चाम्)-विश्व पान्ने रहिन, जिलाव । -कुल-पुर काइलका देह ! -मिति-दिर नित्याप मुद्धियाचा ! go fija I

पठिण-मी० पीठ । पदार - पुरु पुना । वडी-सी॰ सब्दे मा घुदंगके शुँदपर महा हुआ चमशा है॰ 'दरी'।

पुरुषमान-वि॰ मि॰ जो पृत्रित हो रहा हो, पूजा जाता हुआ ।

पुत्रय-वि० [गुं०] पूत्रा करने योग्यः शस्कारके योग्यः भारत. आहरणीय । प॰ सम्माध्य स्वक्तिः इवशार ।-पाइ--विक जिलके चरण पत्रनीय हो। अति पत्रया पक देव-नंदी । -पूजा-स्वी॰ पूजनीय व्यक्तिकी पूजा। चत्रवता-सी० शि०ी पश्य होतेया माथ ।

चित्रतस्य-विव सिवी पत्राके योग्य, पत्रनीय । पुजिल-दि॰ [सं॰] पुत्राके योग्य । प॰ देवना । प्रजीपकरण-प॰ [सं॰] देवतारी पूजान लिए आवश्यक बस्तर्थे १

क्षजिल-विश् मिंशी जिसकी पंजा की गयी हो। अधितः जिसका सरकार किया गया हो। सरफ्रतः माना द्रभा। स्वीतनः जिसकी सिफारिश की गयी हो। अध्यपितः काशह । -पग्रकला-मी० एक पीपा। -पजरू-वि० सम्मानित व्यक्तिहा सम्माद वसनेवाला ।

पजाई-वि॰ सिं॰ी पजाके योग्या पनगीयः सत्कारके योग्य, मान्य ।

ग्राम भाडि) ।

प्रवासन्याम् वीद्यानित, पीर्मायव न्यु व (१००) देश ने पुर्वती व पीरावित न्यु विश्व देश ने प्रवासी हैं पीरावित न्यु के भीर मिलावित की व अधिक व व्यवस्था प्रया प्रकार के भीर विश्व व पीर्मु न्यु के शिक्ष व पीर्मु न्यु के शिक्ष के प्रयासिक के प्रयासिक के प्रयास की प्रवासी प्रया स्थाप प्रवास के प्रयासी विश्व विश्व के प्रयास की प्रयास की प्रवास की प्रयास की प्र

विशिक्त मिरिक नकीय प्रोत्ती ।
विशिक्षणमानु दे के रोरोप के विश्वासीय में दिन है के रोरोप कर के विश्वासीय में दिन है के रोरोप कर के विश्वासीय में दिन है के रोरोप कर के दिन है के रोरोप के विश्वासीय में दिन है के रोरोप के रोप के राप के रोप के राप के रोप के राप के र

कारण प्रतिकार के व्यक्ति विकास किया का व्यक्ति की व्यक्ति कि व्यक

ক্ষীপ্ৰস্কুত কুচ (১০১) হৈল বিশৈষ্ট্ৰত প্ৰতিক্ষ কাৰ্যালয়ে কুক্তকার । উল্লেখ্য ক্ষীপ্ৰস্কুত্বকাৰ বিশিষ্ট্ৰিক বিশেষ্ট্ৰত

हाराह्म कर्णाहर तर है के पार्ट के प्रतिकृति के प्रतिकृति है कि जा है कि जुह है कि क्षेत्र के प्रतिकृति के प्रति के प्रतिकृति के प्रतिकृति के प्रतिकृति के प्रतिकृति के प्रति

बॅरिक्ट्रमान्त्रः एको यह ती हार बॅरिक्ट्रमानेवर्षक दुवा तिको, स्थलकी जीकाने देखों वर्ष हाने - संस्था कर्णन्य पार्टिका ।

चीलकारकार पुर्व लियों केव लेखावर जातर जातर होताहै है चीलका महित्र होता है कि का तो दालका काल कुछा है चीलक महित्रकार लहुँच दिनहीं चलती। हुनार अस्ति कर्त्व में

- Promy - Prof. 200 (C.C.) Sing of Berney - Prof. 200 (C.C.) Sing of Sing of Control of Sing of Sing (C.C.) Si सीसी नहीं व है। बहे में मार देशों के सीदिन मीत सीटा पीता कर बनानी सभावदार दूसी क्रमा वह महाने मानद नी उन्होंना हो गए। के स्टानक नी क्रमा

वह अनुष्टि सान्द्रव रोग्य पीता, शामांस् के घेरवेड र देवर वित्यक्षण प्राप्ति हो बीतुम्बर-पूर्व (मेन) बाप्त कार्यव्या क्यार प्रक बाप्ते र वीतुम्बर-पान वित्या सामान्य, क्यारिय, वीति हेनक

चकरिये करी वृद्दे हार करहेता बीगहरे सामे बीगहा बहु सामे जिल्ली होग्दर होते सांबदेशका देव एका स्थान है। साम बीगहरियारे होते हैं कुदेवे सामान बीगबाट के हैं सामानशह नहीं हारण है। वृद्धिकाल है के दियाद कुमहरूसी स्थान्ट बाल स्टेमका

्योत्वरः व नशास्त्र न्युन्तः क्रोणः वतः प्राप्तः वर्षात्री विशेष्टे स्मी विशेष्टः सीमुण्डिकः विश्वापितः पूजनकारणः सूत्रस्याः प्रप्रमाणः प्रमादान्त्रमाणः वर्षात्रः विशेषात्रः विशेषाः वर्षात्रः विशेषाः वर्षात्रः विशेषाः वर्षात्रः व

चित्रा-मुक्त गीटा चेदा सदा दिंद व वीट्रिक-मधीर देश दिंदी द चीत्रपुर्विद्य-दिश [१०] वर्णन्य वीटेवालः व चीत्रपुर्विद्य-दिश [१०] कर्णन्य वीटेवालः व चीत्रपुरवण्युः हैं। मुक्तियञ्चः अगुर्गेन्द वर्णन्य धीनेश

आर्थं । बहित्स मुक्त क्वा, कामू, श्रीव, सामार मुक्त, में राज्यं कर ने से कामा विश्वारी पुरत समूत्री आर्था में स्वीत सबू के द्वीत हैं। सीता भीरवं हैं, मुम्लेश अनुमूर्यक्ष कर के स्कूम अम्मानावत से सामार्थास कामू (भाग काम्या)

वीनामानः, वीजीवासान् न्यूव (४०) वृत्तावा पाण वीजीवा गण आनुनित

बीक्यरेक्स विक दिन्ते मुख्येनकर वा । भीक्यरेक्स निकार के प्रकृति होता दिवान कर देवना निवास न जनारे , तुका दिवानुका होते जनक्यानुक कुम्बूका तुक विनास नाता का का के का कर चुना है। तानुकी दिवाने की स्वास्त्र मुद्दी दाना भी बाद अन्तर भीता है। तानुकी दिवाने निवास नी

्र बीरक क्षेत्रक कारण है। यो पुत्र कार्य है है तह है। बीरक पुत्र के कारण कार्य है जाता की महिला है है जो है? बारण का दिवार है है कार्य कार्य के दिया और है? बारण कार्य कारण के कार्य के

क्षेत्रकारिको कर्यो के विकास स्थापित है। क्षेत्रके स्थाप कर्यों है के बाद कर्यों क्षारित है रखें क्षारित क्षेत्र किंदिर साम क्षेत्रकार सुद्धा क्षाप्त क्षेत्र क्षेत्रमी क्षा सावकारित क्षाप्त के के के द्यारा सीकार्य

्रिक्षेत्रिक प्रकार क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक क्षेत्रिक १ क्षेत्रिक १ क्षेत्रिक क्षेत्र परनिमा १-सी० दे० 'पुणिमा"।

प्रवली#-सी० पूर्व जन्मका क्ये ।

दिशा । * वि० देव 'पर्व' । * अव पहरे, पूर्व ।

पुरिक-पु०, पुरिका-स्री० [मै०] क्वीही । परिस-दि॰ मिंगी परा दिया हुआ। महा हुआ। गुणा दिया द्रभाः गुनिनः वस । पुरिया-पुरु पए राग । -कल्याण-पुरु यक शेवर राग । पूरी-मी॰ भारेशी होटीकी तरह बेलकर भी या तेली छाना हुआ यह पहनान; सन्दे आदिके मुँदपरका जमहा: • याम आदिका पुरुष । परी(रिन्)-वि॰ [से॰] पुरा करनेवाला; भरनेवाला । पूर-पु (मं) गनुष्य (दे): रात्रा वयानिका वनिष्ठ पुत्र; अब कथिश एक पुत्र; एक शहाम।-क्रित्र-पुर्व विष्णु । पूर्ण तः (तम्), पूर्ण तया - भ॰ [एं । भरा तरह, पूर्ण वस्तर - व दे व्यव ! बुह्मा -पुरु देर 'पूर्व'। वृणांक-पु [गं] पृरी शंददा: अविमक्त शंच्या (ग); पुरुष-पुरु [ह] प्रथः अलगा । प्रवाद-प॰ [मं•] दर सर्भक्ष जानि । पूर्व-दिक [मंक] मदा दुवा। ममूना, अरोट, समझ, पूरा पूर्वा-की (वं०) चंद्रमारी पहारी कताः पंचमी, दशमी, भिया द्वमा, शिक्षा गुमास, गंपन्ना बिमे दिशी बातरी भरेशा न ही, आमरामा यदेष्ट, पर्शमा बीला दुमा, भागितासमा शन्दानीः स्थातः स्थानीः हादाया हुमा (यनुष्) । पुरु सम (वैरु); एक देवमधर्व। एक नामाः म्ह ताल (गंदीत)। ~क्ट्रपू~दि० तथः (देल)। -शाम-वि किसरी सभी इंग्लावें पूरी ही जुड़ी ही, मिन्नी की हत्या पूरी होत्नी बाही न हो, परितृष्टा िरीह । पुरु परमेथर । -बाह्या -रिक पूरा करनेवासाः गुप व (नेराना । -बाइयय-पु । उन हा सादिशकी दव विन्दे भगवान् मुक्की पराजित विद्या द्या । अवीम-दुर वस क्षारित मरा दुवा क्षमता वह प्रश्रंका सुद्धा मंदेरे मारावदा (दीव दहा) दीह ! -कोला-की वह क्षेत्रवित्र **—क्षेत्रा~क्षी० सन्दार्याद्यात —सम्ब**—दि० मीन लिया मेर्ने बुरी ताह प्रतियो पाप हो लुका हो। बिचाँ बतार-पुन मिन्। वह अन्तर मिन्नी हेरार प्राप्ती

प्रविद्या -पु॰ प्रनी देशका निवासी; दे॰ 'प्रदी'। पुरवी-वि॰ पुरव-मंगंधी; पुरवका । स्वी॰ एक राग । प्रियसस्य-वि० [सं०] परा करने वीग्य । पुरविता(म)-पु० [सं०] पूर्व वस्नेवालाः विष्यु । वि० पुरा करनेवालाः मंतुष्ट करनेवाला । पूरा-दि॰ भरा हुआ, परिपूर्ण, सालीका उलटा; जी अपने सभी अंद्यों, अंगोंने युक्त हो, समुना, अन्यून, सन्तकः तिसमें कोई कोर कसर स हो, जिसमें किसी अकारकी म्यनता न हो: यथेष्ट, प्याप्त, वितना चाहिये जनना जी अपूरा न हो, समाप्त, पूर्ण; मिद्र; शफल; पदा: ठीक, सही। मु॰ (कोई काम)-उत्तरना-भली भौति भंपन होना । (किसीका) - पदमा-अँट जानाः कमी म होना। (दिन)-(रे) फरना-शिमी सरद समय विताना I (दिस)-होता-अंतिम समय निवद भागा। पुरामद्र-५० [मं०] बृशाम्स ।

जो शीप्र बचा जननेवाटी हो । —चंद्र-पु॰ पुणिमाका बंदमा । -- निमानन-दि॰ विसका मुख पण बंदमाके प्रय-पु॰ गूरुजके निकलनेकी दिशा, पश्चिमके सामनेकी समान हो। -तुण-वि॰ जिसका तरवस बाणीसे भरा हो। -पर्वेद-सी॰ प्रामा, प्रते। -पात्र-पु॰ बलसे पुरवल = पु॰ प्राचीन काल, पुराना जमाना; पूर्वजन्म । भरा दुआ पात्र; दो सी छत्पन मुधियोका एक प्राचीन प्रयहा+-वि॰ प्राचीन समयका, प्राना; प्रंजन्मका । परिमाण; चावलमे भरा हुआ पहा जी होमके लंतन दक्षिणारे रूपमें बद्धाकी दिया जाता है। प्रधानमीत्मा मादिके समय स्वामीके दारीरपरने सेवकी धारा रिय आनेवाडे वस्त, भूषण आदि: सुर्ववाद छानेवाहे सेवकी या आतमीय जनीको बाँटे जानेवाने धरा, भूपण आदि । -प्रश्न-वि॰ परम द्वानी । पु॰ मध्वाचार्यको एक साम ! - ॰ दर्शम- प॰ सध्याचार्य द्वारा प्रशतित दर्शन । - बीजः ~बीज-पु॰ विजीरा सीवृ! ~बीघ-वि॰ दे॰ 'पूर्ण-प्रयु' । - अह-पु॰ एक नाग (महाभारत)। हरिजेश नामक यहाका पिता (रबंद पु॰)। -भेदी(दिन)-पु॰ थक पीपा। -मा-मां पना। -मानस-वि॰ एन्छ। -साम-पु॰ प्रिमादी दिया नानेवाला थाग-विशेषः नंदगा । -मासी-सी॰ शह पदारी भेतिम विधि जिसमें

चंद्रमा अपनी शोल्हों बलाओंसे सक्त हो गाता है, पनी । -मुग्र-पु॰ एक नाथ ओ जनमेत्रयके सर्वसप्रमें जैना

थाः एक वर्धा । -योग-५० एक प्रकारका माद्रवृद्ध । -यीवन-विश्वरा वदान । -रथ-पुरु पहा योदा ।

-लहमीक-दि॰ भी या धनमें भग्दी तरह संपत्त I -धर्मा(मेन)-प॰ एक मगानरेश : -धर्य-वि॰

विसकी अवस्था पूरे श्रीम मालकी हो। -पिरास-पुरु

बारवरी समाप्तिका ध्यक विद्य । -विवस-प्र॰ साली बक स्थान (भंगीत) । -येनाशिक-पु॰ सर्वश्रत्यानवाप

माननेवाला श्रीद । -धी-विव भगभान्यने वर्ण ।

-होस-पुर देश 'पृष्कीदृति'।

दर्भागद-५० (मं•) एक माग् ।

कृत्रीर्मेष्ट्-पुर्व [शंक] प्रशेरगर् ।

कार्यमध्य । येव हर्द शर्य ।

ब्द्रेट्ट्रक्र-पुरु [१३०] १० १५०ऐ.४२ १

हपने ।

पूर्ण क-पु० [शं०] याच प्रशः सुगाः यह कृत् ।

किमी प्रस्तपत्रके लिए निर्पारित श्रेष्ट ।

पुटिमा और कमावश्याः दक्षिय भारत्रशे एवः मही ।

अवसरपर विश्री भारिको ही प्रानेतानी जेंद्र ह

चुर्माकिन्याच-विक (विक) एनुष्ट, परिश्व र

युर्शीमिविक-पुरु [मंग] शामोदा एवं सेर ।

वृद्ध भिषेड-५० [राज] शालुंदा एक स्पर्य ।

पूर्णायुगा-सीव [११७] चंद्रमानी शेल्यमे ब्लान

वृज्योधान-पु॰ [मै॰] नानभे रह (रोप र्याम (स्थाप)।

पूर्णानक-पुरु [110] परदा परहरी व्याना पुत्रजन्मी भवी

वृत्रीयु(स्)-मीक [संक] हो करेडी आप (मनुष्ट्रश्री

वृति अपु भी वर्षती माना वदी है। कि भी बरेश

श्रीपञ्चाल नवामार्थ

क्षेत्र प्रमाण मान (११०) हार्य हता वर्ष विम्रे का वर्ष वर्ष ह र्वित्य नहर (तन) दूर बटानेशक, दुवैदर, इतिहार्वद ह

पुर राज, वज प्रणीकी वृद्धि कार्नेशणा सन्देशका वास में इन्द्रान्त्राव्य पर्दे क्याप संप्रण विदय प्राप्त है ह बीन्ता-का हिन्दे देवते अपूर्व है दिन मुद्देशन्ती ह

क्रीन्य नहित (तर) पुन्दर तरी। कुलीक्ष बना दुवा, कृतीय Par farrenta

भेजदश्च भव १ (१) व व्याप्त हम ह चीपरी-भो । [छन्] यह राष्ट्रदी शहाद में कृष्टेने केंद्रह क्षेत्रे भ नो है, कार्यकपुत्र, बच्चा ।

भीशकालपुर पर रचान वर्षा १६ गाँकी पर्वा पानी freigt gran fi seting t

कीतान । अबीक बराये देवर बक्त साद मिहिली देवरी क्या लेखा इंग्लंड के का ब्रीटिंग ही जा है।

मीर्गोशानभूर वहा मानका बार ह कीट्यो नहिन देश 'दयदारी' । बसम्भार - पुण है र विकासी ह

नवर्ष्ट्रमानपुरु (चार्च) काटा श्रीद्वापार एक क्रीप्ट क्षांच क्री अरमारी, समाने और दशके बाय मानर है ह मनुष्युरी सहित हिंद भी स्वापन है देवका, ब्रुप्तन्दर शुक्रान्दर है

enigemge fur! tem firmte get meiner mu क्षेत्ररा की क्षेत्र समार्थ है की र माने कारण है, बैरण ह woman witti, tru i work-we witte

une, fer worte क्षून्त्व नहित्र (सर्व) होत्ता, क्षीत्र ह

tiens emare file fie "fearus" e रक्षक्रम भए। (ला) वृद्धि, दर्शि हडी। प्रतिदर्शेक्ष हे terfemelte feit freit gir gi d'e freit Ein बर बर्द है, के क्षेत्रक बना बीकी का पह

who for i verengs bei stift, sterer, bangen reit, etre क प्राप्त करते, बाब पावड विद्वार अपन्य वर्ष कुट विद्वारिक かたなり ギャ 着りる ungengemaffen finit berr flege mete, Frift ber bied gie. the state wit, may exist must be the

et et unterfahre ber ber bei ber ber ber ber \$\$P\$\$7.4 \\ P. 18 \$\ 18 \$21 \$\$750 \$2 ad14-300 \$20. pre mile Willer die fent ablei ib er femer gerad देशना करते. अने दिने कहिंदे भीता होता है पूर्वा ATT . HIS. HET HITE OF FORDE TO THE BOOK | BOOK en er erte van Etricht unt, erer fing :

हिस्तु के भाषके बेरीनारे हैं ३ अपूज अन्तिका नाएक पर हिस्साधन प ngher and an igning fint a supplements a Em I whiter me de gate अक्षेत्रपुर्वत्व १७५० विके हेन्द्र होत्ते क्षेत्रह MENGAME 在文文記 在卷 网络江东京和 李少之心。 各真下。

मान दोगों के बातर करोड़न हरकर पुनार किया हरान्यों , मुक्तिनकी र अंग्यूनेस नक्दार कार की रंग अभिन्दी dans and to be byen a first a first a distribution of the first

न्याल पूर्व क्रमार हिन्दु प्रमुख द्वाप्ताची पूर्वि दशका ह ब्यास्त्राम् हिन हिंदी रक्षण अन्य क्षेत्र, हैररामार्थ हे

क्यांकर्णां व्हार्के स्थारिक, ए स्थारी स्थान की क्रिकेट विमयं एक बल्लाने के लाग बलाने कारे हैं जिसे हिंग बार्का है बाब क्षा में बंदे हैं। और विभाग का कामची चार्रेशकोद्धे ब्रह्नु फूड् ब्रश्न कर्मा है र

स्याप्तर्ने — अरे । है व विश्वर्त है स्त्रिक-देव क्षेत्र इस्त्री ह व्योगाहरू-पुर शासदी भ्यापी हुई साहक्षा हुई ह प्योबस्त्र - चूक क्षेत्र दिशुगुर, क्षेत्र र र्जिन्दर -पर देश ह

धर्वेत्रक-बुन दिश्तम, धनि, बांग र - अपने [अने] तथ अपनार्त हो राक्ते हैं स्पूर्त करका कर्णा देवरात्त्रे, स्टील (इ.स), अर्थित्य नेपरण, सम्मात । रेपरीय lates, later leters, and lands, the (animant, acen (angert, mit fannte fer (दारांत) सर्गाह हर देश्या सामा है।

श्चर्य-पृत्र (०,०) ब्रॅफरें हैं. घरशहर है matre ofen fein) Erifereit fen bereit genig. में ब ब्रुवार कर करका देशदेशी भीतरे हर्व हैया किया। meffen-fe- fen alest gett finet den Este as fewret gat t

क्वरी(दिक्क) -हिर हेंचने दिनकेरण्या क्रिकेशया ह प्रस्कानिक किलो किलो क्षेत्र महि हैं ह सक्दर-दिव (१००) को सु सामें हैं। संपर्ध सामेंदर, स्पी हिल्ला व दुवरेन दूबर हो। मेर हात म ही। एएस रे न से क्ष रह ४ १३, ००६ है है है है सकरण-पुर्वालाई सक्ता अपने का बीचेंगी किया र

RECUIRMENTAL SET STOP ! क्रक हिल्लामा दिल हिले के क्रिक्ट के प्रमाण के के प्रमाण के किए हैं। क्षकरी दश्या-पूर्व लग्ने एवर का मेरी रिक्षा, क्षेत्र वाधा र 你在我們在他一道在 [413] 宇宙山 森山山野 智田山 衛州山 東山山 सरसम्बद्ध किन्द्र देशित देशम ह

RRE-La (me balle arte man edita. Burn 秦帝 美姓姓氏 医电子性 电电子电话 电电子电话 वृत्व देन कार्रम । क्षक्रमा न्युर्ग हिन्दी हिंद्रपोत्ता, देवला वर्तेच, व्योष्टरी करता, अंतरे हैं, हिर्म का कर पुरुषक्ष पर वर्ष करना होगी

feeting force after the about the me fore for amplitude system Hall 紫原斑目衛之行 西西班牙安吉 医洋流病 可分分表化学 化水体 हिम्म के के महिल्द के के मान्य के कर है जा है कर है कर 医恐怖 经现代 电二对性关系的 豪克 化糖酸化异己烷醇

क्षप्रतिकद्दर क्षप्रकृति करित है वर्ग भागम की जुनाए Ben 野亲 : 经申申2年于16年2月 1977年11 黄帝李郎 如我不了如此了你的过去式和不好的 好年金好 स दर्भ हत्ये च देशक काका, बार्गान्य वंशकार्य ।

有平面本在於在水水時 在水熟等(4、)。

-रंग-पु॰ विष्तशांतिके लिए अभिनयके आरंगमें किये जानेवाले कृत्य-नांदी-पाठ आदि । -राग-पु॰ नायक भीर नाविकाने ध्रवण, दर्शन आदिके कारण भिक्रनसे पहले उत्पन्न होनेवाला अनुराम । -राज-पु॰ भृतपूर्व नरेश । -राग्र-पु॰ राशिका पूर्व भाग । -स्प-पु॰ पहलेबाला रूप, यह रूप जी पहले रहा हो। ऐसा लक्षण जिससे किमी गावी बरतके आवनकी श्चना मिले शेयका आरंभिक एक्षणः आमारः एक अर्थान्देकार उदाँ किसीके विनष्ट गुण, रूप आदिके फिरसे आ जाने या उस वस्तु अयवा न्यक्तिये पुनः अपने पूर्व रूपमें भा जानेका वर्धन होता है। - वय(स्),-वयस-पु॰ वयपन।-धया-(यस्)-वि॰ वचपनको अपरयावाला ।-यर्की(तिन्)-वि॰ पहले होनेवाला, पहलेका । -वाद-पु॰ वादीका अमियोग दा दावा, गुररंकी नालिश । -धादी(दिन्)-पु॰ मुद्दे, बादी । -विद्-वि॰ जिसे पुरानी बाने मानुस हों, पुराविद् । -विहित-वि॰ पहले जमा किया हुआ या गाहा हुआ (धन)। - जृत-वि॰ पहले चुना हुआ। -कृत-पु॰ पुराना क्लांतः दनिहासः परनेका चरित्र या भावरण । −धैरी(रिम्) –पु० परलेका वैरी। पुराना शतुः शतुना आरंभ करनेवाला ।-श्रील-पु॰ उदयानल । −संचित्त−दि॰ पहले एउ.त्र किया हुआ। −संध्या− सी॰ प्राप्तःकालः। ⊶स्तवधा–पुरु बंपाका उपरी भागः। ─ससिक-पु॰ पनगृहका प्रशान । ─सर्─वि॰ आगे मननेवाला, भागर। –साशर-पु॰ पूर्वी गुनुद्र। -मार-वि॰ प्रवात ओर जानेवाला । -माइस-पु॰ पदनाया गरते यहा इंट। -शुक्त-विश्व पदले से सीया हमा। -स्थिति-सी० पहलेकी दहा। पूर्वक-अ॰ [मं॰] माप, सदिन (मदाके साथ प्रतुत्तः, धीमे कृपापूर्वक) । वि० पहलेदाः पहला । पु॰ पुरशा । पूर्वतः (तम)~भ० (ते०) पट्ने, प्रधमनः, शामने । पूर्वतन-५० (०१०) पहला, पुराला । पूर्वप्र-भ० (सं०) पर्वेः पर्वे भाग वा स्थानमे । पूर्ययत्-भ० [मं०] परतेवी तरह । पु० बादेश वह अनु-मान भी जगर बारणशी देगहर हिया जाय। पूर्वायुधि-पु॰ [शं॰] पूरदी शहूद । पूर्वा-शीक [रोक] प्राप्त, पृत्य । -काल्मुनी-सीक स्ता-रंग मध्योतिन स्वारस्यो राहत । -भाजपदा-सीक मधारेस स्थलीतिने प्रजीनती सहज्ञ । प्योजिन-मी॰ (मे॰) आदगद्य अहि। पूर्वाचल, पूर्वाद्मि-पुर [शंरु] बददावल : पूर्वाधिकारी(रिन)-पु [लंब] पह रहा अविकारी र प्योनिय-पुरु [मंत्र] पूर्वी हवा, पुरवा व प्यांनुसाम-दश्रीतो देश 'कृदेस्त, व पूर्वोदर-विक [मैक] करणां कीर शिल्याः पूर्व और परिश्वमका । पुरु भागा पीराम प्रमाण भीर प्रमेष । पुष्रंपूर्व-पुर्व [र'र] पूर्वपरहा भाग । पुर्वोतिसुम्ब-वि-(गर्व) जिल्लाका पूरवंदी अहा हो। mo Litath Ball बुव्यक्तिषेश-पुरु (१ ०) वृश्चीत्र बागता वह होत् ।

42-8

पूर्वक-पूपासुहद् अभ्याम् । पूर्वाराम-पुरु [मंरु] एक श्रीद मह । पूर्वाचिक-पु॰ [सं॰] सामवेदका प्रवाद । पूर्वाजित-वि॰ [मं॰] पहलेका उपानन किया हुआ, पहले-का कमाया हुआ । पु॰ पैतृक्ष संपत्ति । पूर्वार्द, पूर्वार्थ-पुर [संर] दी बरावर मागीमेंसे पहला भाग, उत्तराईका उछटा । पुर्वाधिक-वि० [सं०] दे० 'पुर्वाध्यं' । चूर्वोध्ये-वि॰ [सं॰] पूर्वार्थ संबंधीः पूर्वार्थका । 🕆 पूर्वविदक-पु॰ [सं॰] बादी, मुद्दें । वृवाद्या-सी॰ [मं॰] पूर्व दिशा । पूर्वाश्रम-पुर [संर] महानवीश्रम । वृष्यांपादा-नी॰ [सं॰] सचाईस नक्षत्रोमेंने शीसवां नक्षत्र । " पूर्वाह-पुरु [गुं०] दे० 'पृत्रोह्न' । पूर्वाक्ष-पुरु [मंत्र] दिनका पदछा भाग, दिनके पहले दी प्रहर । पूर्वाहिक-वि० [मं०] पूर्वाट-गंदेशी । पु० दिनके पहले मागमें किया जानेवाटा पृश्य । पृषाँद्ध~पु० दे० 'पृषांद्र' । वूर्वी-दि॰ पूरवता, पूरवी । -बाट-पु॰ दक्षिण भारतके पूरवी तटपरकी बालामीरमे कन्याकुमारीतककी पर्यत-माला । -द्वीपममूद्द-पु॰ मारतके पूरवमें रिधन जावा, शुमात्रा, बोनियो आदि हीपीटा समूद । वर्धीण-वि० [वं०] प्रशनाः पैत्रक्ष । वृर्धेतर-वि॰ [गं॰] परिनमी । व्वेदाः(सम्)-अ॰ भि॰] दिल दिल, पूर्व दिल । पु० प्रायःकात्रः विराष्टा दिना एक विशेष शाहः। पूर्वोतः, पूर्वोदिस-वि० [मै०] विष्टा समन पहले हो लुका दी, पदने बहा हुमा । वर्षोत्तर-विक मिको उत्तरी-पूरवी । पुरु देव 'वृशीन्ता' । वृत्रश्चित्रा-सी० [लंब] वृदय और वत्रदेवे भीगकी दिशाः रैशाम कोग । पुन्त, पुरुक−पु० (६१०) तूच मादिका धेर, पृक्षा । पुन्ता-9. त्य श्रारिका वैथा दुवा मुद्दा; 'पद शांश जेवणी पेह जिल्ली छालके रेजीले रुग्ते तैवार क्रिये जाने हैं। र्यास-ति (६१०) ६० ,तेंडांसे, । वृत्तिका-भी॰ [मं॰] एक प्रकारकी भीठी पूरी। र्मा − १३० छोडा पृश्य । पुरुष-पु॰ [हो०] शोहरूमा दाला, पेदा १ गुवार्-पुरु दे० 'पुन्ना' । वृष-पु॰ भगदनदे बादका भदीना, पीपा [मे॰] हाइन्नहा पुषक-पुरु [मंत्र] अहत्यहा देश र पूषम, पूषम - पु । ग्रे । कुरा-की (शंक) चंद्रमानी शंकरी कुछ। १ वृष (यम्)-पु शिक्षे श्रदेश बारत कारियोधी पह । -(प)ईतदर-पु० बॅगमद हिम्में मुख्य तांत मान क्ष) । नमामानशीक प्रदर्भ पूर्व । सूचनसञ्ज-पुरु [tie] १४८ सेप, शहस । द्वीत्याम-पुर (१) दूरी दिया पूर्मा अवस्था घरतेन | वृत्यामुहर्म्(म्)-पुर [सर्व] शिव ह

mane, mer art, ermin, mun me, aut erft amiliam tie at wit dien fant mereke र्शाप्त बर बाल प्राच्य हैराच्ये कालद सराहि कार्र से देखालांद्र सन्दर्भतान कृत्य क्षेत्र) व्यक्ति काल हे = क्ष=हिस भएत, वरामादेवह । सम्बद्धानम् । वर्गनदेवी १ । स्थापन दर सन, अविचय क्षत्र । लक्षत्र नवर वक्षत्रे, सर्वाणः शहर, बीच, रक, रहे और रमन देश ए राज्योंने, ब्रहा no e morampe exercis politic for a wymne totale - green uplanti was at the िमारे प्रश्चि करूपी नार्यन, विश्वास क्रिक्ट के होसा

नदिव भी करते वददाव का बरवादी रिका हो। हो छ। franti, efen, same i श्राकृतिहरू – पु.च. (२ ७) बरका, कालाह क

क्षण्यानमान (कान) सहस्तानी, वहसायन्, ह बाहरणारिक (१०४) ब्रोधित जुला, बहायर जुला। बदर्ग हुन। WIEN, WHEN WE IS, QUE I

unter-eine feinf unnen uner arener, dbiete PETTE

शकी के न क किया है शहर कहा वह दिया देशन , मूनकरण, योज्य के palmane fent mertes um mehren felte. unen, feit burdit bie, pered ungebat Ferry to set 4

सारीहरूम नपुर (१०) वार्राहरू सम्बद्ध ४ हिन वाहरित REPORTER S mufffreifen fein feinf funte währ dem beneumen

die de la faire des a muligage für; eben aufft ben gudenent un, the sew at much me week and

west, serent where where dieself it field gat **सक्षीत्रक्ष अनुष (४००) सम्म १६ स्टब्स ६ वर्ष वामका कारण १** क्षांबार महिन रेलेंगरे अर्थ अर्थ में प्राची व वा बाली दर

我不敢 簡化時 医中心的原子 wemner fraften an eine genter ber beparte, a per, high t water was an arresting to "बरन प्रदेश र महिवाद न दिन भी कहन करने या रोध्हर

柳木 松木 **द्वाद्राम्** पुरं (रंग) कारमः केरमा, जनक कारमा, क्रांत्रह

W C" 4

सम्बद्धानिक - "६४ निवर्त अन्त क्ष ४८के वी एक व

mmit walt e funt arun fabr gu. meine foreit Anne floor of an air of the Butter as a go direct. 東3 Weefal 地口で記し Perps 京

the word of the street of the we bern miere Green wir finn ibit ein Seifen . 野門性、如監督者於主、新政司不事者明年 如有的 里村縣 林油产老城 御門 田山田 难至是十日

Maria o go farmi dine ngje s

BEB-Ba fold mile of the grows and

(A) -41 4-14: 24 (14) प्रकेशन पर्वत स्थिती का देला, नारा, संभावत । कारा देना THE CHARLE SHE MIT OF THE PE WILLIAM ! 40 mil 428" 8 untellentufet fentier erbemit fereb

物的色 इक्का क्रमान्य भए जिल्हें होते ही बार के वर्ष के बार के बार कर है। अक्षाप्र-तुक (शृंद) शहलता, का स i

स्थारिक्र - पूत्र (१९०) अपू ऋणश्र(ह यो जार र निरम्नीय सर्वन्य श्रीक । नगराय क्ष्मिन पुर्व (संबो जा । दिवास र दिन नदरापी दी गुहर, दिल्ही बन्दव बीहर्द पुर र सबस सर्वित-पृत्र विक्ते अप करतः । साधार-दिन, पुन हिंगी हैन विभाग है। इ क्षेत्रकार मान्यु व्य [ब्लब] अत्रक्षण, ब्लूबर ह प्रकारम-दिन हीको जन्द इत्तरे शहरून इस्त । . श्रमात्र-पूर्व (र्वाप) बन्दरिक्त । दिन शुद्ध ब्रह्मेनामा । प्रक्रासम्बन्धः (सन्) बार्योः शन्तः बरात्यः भोताः सन् neme ne mit famit alf ein fiche n. mb

> बर्जेका सन्दर्भ ह सहराष्ट्रशिक्त(क) अनुस (र्वाड) (सर्टर्वक्वे के प्रतया केले W1991 1

> शक्तिविक्रमाहिक किंको चीचा प्रथा साथ विक्रा प्रका बिक्टमा अवधिका दिवस करा ही र क्षप्राच्यक्ष-दिव हैंबन्दि बोजि बीचना प्रश्च करते तीच्य र क्षानिक - हैंदर किये है काम क्षान , अनुका कुछार छेकारे हैं है हैं Refer lang mer, Will war un famer gull

> unfre-fen (an) feren me nign femme eine e 11 क्षाचीर्रोक्षण्य-रिक (रोक) चीत्र क्ष्ये हो क्षेत्र क्षाच्या । क्षापुरुषा नदिव हैं रहे बूल बुका, भूने हैंद्राव द्रार्थ भीत की काका सम्माद की हुए मुख्य रेक्टाची ह Rightwich ford grant these way tradit were freigt unbeidt abgreicher wert fiese बर सबसे कर सूकते हैंग्ल बरच जेंग सपूर्व केंच्या क रिक्टच्या सन्। की बर्गना अने व्यापाली कारीपार्टी हैं

marines lift a mfalfandra ferades de fine er e BURRAGE BEST BROKE BURLE BUR SLIVET fore see free wit e

Wilrentes - Ce - Leve I mire u & King u 金髓 使唯一多人 化毛 药物 化分析子 鐵寶鐵鐵鐵 化重用量电池 医阿多斯氏 有加克 野原 打練 鱼 Morenites for a string or a sign and a state of

क्रव्यक्तक अवसीय हेलावी सन्दर्भ, स्टब्स में प्रमुख्या, में से वि gree green a But a fire from the K **密地内にうちゃ**うから だんから at それかして man fan fan i ste, ope, wort opdier tit i b

water and a fine of the water with the thirty 化设计 有气中腺病性 5

and the same washing a few and

219 शीगव यः नाजुकः चितवस्या । स्त्री० किरणः पृथ्वीः गुणाकी माता देवकी । पु॰ कीना; एक ऋषि । -गार्मे,-धर-पु॰ कृष्ण । -पणिहा;-पर्णी-सी॰ पिठवन। -भद्र-५० कृषा । -ध्रांग-पु० गणेशः विष्णु । पृदिनका-सी॰ [सं॰] जलकुंभी। पृर्ती-खी॰ [मं॰] जलकुंभी। पूर्णति-पु० [६०] जलकी बुँद । प्रयत-वि॰ [मं॰] चितकररा । यु॰ एक प्रकारका दिरन विसक्ते शरीरपर मुक्तेद थब्बे होने हैं; थब्बा; जलकी बूँद; माञ्जका बाह्म; द्रपदके विना । मृपतांपति-पु॰ [सं॰] बाबु । ष्ट्रपताइय-पु॰ (सं॰) बागु । पृपन् -पु॰ [मं॰] जल-विदुः चितकवरा हिरन । वि॰ सिक्त गरनेवालाः चित्तकवरा । मृतस्क-पु० [शं०] दाशः गोल धन्ता । पृपद्-'पूपद्'का समामगत रूप। -अंश-पु॰ बायुः शित्र। -अश्य-पु॰ वायुः शित्र। -आज्य-पु॰ दही मिला हुआ थी । - बल-पु॰ वायुका थोड़ा । पृपद् -पु० [मं०] बैवरवत मनुके एक पुत्र । पृयभाषा-नी० [मं०] इंद्रप्री, अगरावती । प्रयाकरा-मी० [मं०] पत्थरका बटराहा । पृपातक-पु॰ [सं॰] दही मिला हुआ थी। प्रयोदर-वि० [मं०] जिस है बेश्यर बुदे हों। छोटे वेरबाला 1 पु॰ बायु t पृषोधान-पु॰ [मं॰] होटा उपरत । पृष्ट-वि॰ [गं॰] पृष्ठा दुभा; जिसमे पृष्ठा नवा हो; निस्त । पु॰ प्रश्त । -हायन-पु॰ एक प्रकारका भनातः हाथी । पृष्टि-स्वीव [नंब] प्रानेकी कियाः स्वर्धः किरणः वृद्ध । प्रध-पु॰ [मं॰] पीट: निसी बस्तुका विद्या भाग; किमी परमुका कपरी माग, तला पुरतकते पत्रका वक औरका भाग, सपा: एन (सीपाप) । -श-दि॰ (योड़े बाहियर) णः। पुभा । -गामी(सिन्)-वि॰ पीछे चलनेवालाः भनुयायी । -शीप-पु॰ यह मैनिक भी सहनेवार्ड योद्या-के पीछे पसकी रक्षाके लिए नियुक्त रहना है। -ब्रॉबि-रि॰ तुन्ता । स्री॰ कृत्य: एक तरहका शीव । -ब्रह-पु॰ पीशीका एक राग । -चशु (स्)-पु॰ वेनशा भान् । -त-दि॰ बिगसी जपिं (रिमीरे) पीछे वा बादमें दुरे हो । पु॰ रशंदका एक रूप । --सरमन-पु॰ दायीकी पीटपरको बाहरी देशियाँ । -नाप-पु॰ मध्याद्वा - रष्टि-पु॰ वेदशा मानू । - देश-पु॰ पैटेंबा माग । -पार्वा(तिन्)-वि॰ अनुसमन दरमेवाला नियत्रम बरनेवाला । -पोएक-दि०, पु० [वं०, हि०] महादक । ~पोपण-पु (६०, दि०) शहायमा करमा । -र्माट-तु । एक प्रकारका बुद्ध । -भाग-पु । विद्यका भाग । -भृति-ली॰ मश्यम्धे उपछी मंदिल या छतः पीकी मृथि वा पीछेड़ा बहर, देविताः बहरेकी बार्ते ह -मर्म-पु॰ पीरणसा मधीकन । -मीस-पु॰ फीरसा र्यम् । न्यायार्-विकृषु० दीःहा सांग आवेताताः भुगनी बरनेराला, बुग्नसीर । नमीमाइन-५० ऐट-

को म'स सार्रेकी बिद्धाः सुदर्श साज्य । --दास-दुः

सवारी करना (पोड़े आदिकी)। -रक्ष-पु॰ दे॰ 'वृष्ठ-गोप'। -रक्षण-पु॰ पृष्ठमागरी रक्षा। -स्टान-वि॰ पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुयायी । -वंदा-पु० राद । −बाट्(ह्)-पु॰ दे॰ 'पृष्ठवाहा'। −धास्तु-पु॰ घरके कपर बना हुआ घर; महानकी कपरी मंत्रिल। –धाहा– बाह्य-पु॰ लदुवा बैल । −शय-वि॰ पीठके वल सोने-वाला । --श्रुंग-पुर जंगली बक्श ।--श्रंगी(गिन्) -पुर मेदाः भेषाः दिवहाः अर्जुनके मार्द भीम । -द्वेत-पुर पक्र तरहका पान । पृष्टक-पु॰ [मं॰] पुष्ठ, पीछेरी ओरका हिस्सा । पृष्टनः (तस्)-ब॰ [सं॰] पीष्टेः पीष्टेसे, पीठकी औरसे; चुपढेसे । -प्रधित-पु॰ तहवारका एक दाथ । प्रशतुन, प्रश्नमुनामी (मिन्)-दि॰ [मं॰] अनुनमन करनेवाला । पृष्ठास्थि-म्बी० [मं०] रीइ । पृष्ठेमुख-पु॰ [मं॰] कार्ति देवका एक अनुवर । पृष्टोइय-पु॰ [मृं॰] पीठकी ओरमे उदित होनेवाली शक्षि (जैमे-मेन, बृद, कई, धन, बसर और मीन)। पृष्ट्य-वि॰ (सं॰) पृष्ठ-संबंधीः पीटनः । पु॰ लहुभा धीरः । पुष्ट्या-मी॰ [मं॰] सदुई पोड़ी: येदीने पृष्ठभागका किनास । पृष्णि-मी॰ [मं॰] पद्मीः पिएला भागः किएन । गृव्जिहा-सी॰ [सं॰] दे॰ 'प्रसी'। गूर्णा-गी॰ [नं॰] दे॰ 'पृश्ती'। म-ना॰ रोने, बाबा पूँकते आहिने निरमनेवाला शब्द । र्वेश-को॰ श्रूलनेके समय मुँडे या दिटोडेका आगे पीछे जाना । † पु॰ एक पशी । सु॰ -मारना-गुरेकी वेगरी और दरनक सुनानेके लिए चगपर और पहुँचाना। औरने श्लामा या शक्ता। र्पियया मैना -म्प्रो॰ भैना चिहिदाको एव दानि । वैघर, वैद्या – पु॰ यह शरहरा पक्ष । वृद्ध-ते है । हेने । र्वेचक्र-म्बो० दे० 'देवक्र' (का०) । वॅडि-म्बी॰ दे॰ 'वे डि' १ पेंड~पु० (शं०) रत्त्या, सहस्त । वेंड्डम-पु॰ भि॰] दीसारपरीका वह स्टब्सेवाडा पुरुषा की बराबर दिल्ला रहता है। पेंद्रकी!-मी॰ पंद्रकः कामनाः होनारीकी पुँक्तीः गुहिबा नामरा परशान । वेंद्रसी-मी॰ दे॰ 'शिक्त'। पद्म-पु॰ किमी रहरी बन्तुसा नियम। माग विग्रसे बनवर बह स्थित बोनी हैं। किछी बहरी बाजुहा कुछ । पृद्धी-भी पदा मारा मारा दिया गारी बरनुवा तका गुदाः गारर या मुनोसी २४ । सु० (विता)-का फोटा-बर मनुष्य की किमी निधित विद्यालका से क्षेत्र मनुष्य जिस्की मंत्रि बदमा बरे। बद मनुष्य मी कुरी इस दश्र मिन बाद, इसी वस दश्र । चेंद्राम-म्यो॰ (ले॰) वह मार्थन्द्र या वारिक पृष्टि की दिली मालि दा अपटे बणार्ड बणार्ड वर्गा है। पन पूर्व पूर्व मार्थे

पुरुषाहरे कारी निर्देशन का कामीरी क्षेत्रने निर्देश

मुख्युं बच्चों व पर्रद्रियपत्रक परिययाम्बद्ध बार्गन ह मतान्तर (गवाच्ये) । दुः धेर । -वृह्य-ति रद प्रमुद्ध-ए० (शेष) प्रतिबन् रीव्य ह बना हुमा, प्रशासीर्थ । हुन मीर । प्रवार:(दान्)-पु: [40] दुरवर्ति । प्रमुख्या-भीन, प्रमुख्य-पुर्श (र्शन) प्रयूष होतेश क्या. प्रचर-पु॰ [श•] पूज का यज नीपनाः ग्रम्ट, पुंत्र, देर; MINTE I होतीलका पद भेर, दिवन गरेण (म्याक); एवडव, वृद्धिः प्रचेत्रमी नही । [रंक] बाह्यमा यथेनही स्था र एक प्रशास्त्रा वेदन है, एक मानि । प्रचेता(तम्)-९० (तंत्र) दश्या ६६ श्रीतक्षप् श्रीत प्रका-प्रश्नी को प्राप्ते, शहर यमन्, गीरि । माबीनविदे हे देश पुर । विश् पुढिमान, प्रत्र । श्चारमा-१० (६०) प्रत्या हिस्ता, दिवरमा स्वारिष्ट प्रचेशा(म)-पुर [लंगी यहत दर्भर नेप छत्रीत । Rivit and frant min s अवेतिष-विक [तेक] देशा पुष्का, विकास पुष्का । प्रचारणी-की (तीक) स्वतं । प्रचेष-दि॰ [११०] चदमदे बीध्य, खुमने बीध्या पृथ्ये प्रचरतार-प्रश्र द्वित प्रचारित होता: चीतवा: धतव: ३ प्रचरिष्ट-दिश् (संश्री क्रियका यन्तर क्षोत्व-दिष्टाश्वरूपतः प्रचेल -१० (४०) यो १ यंदन १ प्रचार - दि॰ [रॉ॰] ५ यम; मिमहा घटन हो। द्वाचेत्रक - ए० [बो०] बोहर ह दिव में पू में गर गार प्रभारक-पुर [1.0] धक विरेता कीता । प्रकोष्ट्-पुरु [तार] प्रेरुप्त परमा। प्रनेतित सरमा t प्रचरित्र-दिन, पुर [sie] प्रेर्शा बरवेताला, देशका प्राम्मत-पुर (००) दिलस्य भगना विरुगाः धयन, धनारः प्रचीहरू-पुर [तर] देरिए करता कोर्रीकर करवण गरिय क्षांच्य । प्रचानाम् -पुरु [११4] नाएकः साधना संघर्षः कनदी दा देशाः मध्देत । gate sign ! प्रचीत्वी-बांव [बंब] बरड़ीया देशा ह प्रमण्डी (दिश)-पूर [पेर] भेर व प्रचोडिय-दि- [राव] तिरो देशमा की मान दें। विशेष वर्तिक दिला कुमा बाहिका मिनिण, मेरिल ह प्रश्रमाच्य-५० (ग्रेड) शिद्धा माहिते शिवहा शुह्या ह समीपी(दिश)-दिश [ele] भ्याता देशाचा, देश मध्यवादिष-दि॰ [म॰] शुरूण तुला निहा वर्षादे बारण जिल्हा ही है शुद्ध हुए। ही है 422 grat 6 प्रचरित्र नहिर [राक] हेरमा पूजार महिन्दी छ हिलाबर समय है श्रवद्यक्ष-दिन, पुक्ष [शंक] कुल्ले(बन्बर, धरानंद के ह प्रदेश-पूर्व [बांर] इद्योशन्ता क्या मही, मनप्राधी हो। यत्र शृष्ट्रभा, जन्म, जो कल सुध्य हो ह रिक्क प्रमाने थ पर १ -प्रह-पुरु हम्में का मोगुनेका देण प्रमाय-पुर (होत्रे हेर 'सम्रह' ह Caret, Cheren, geam fett fen fentente until द्वाचायस-दिश्य पुरु लिस्ते दुश्य आदिशा अवस वहतेवासा । be mit feiner a प्रायम-पुर्व हिंदी पुल्ला, वास बरवा । प्रशासिका नगीत (राक) पुरुष वर्ती देश पहारी पुरुष अ दिन है प्रवक्तां मानि हैरावे करान, प्र संवर्ण है स्वयक्त निक (रोव) दशा कुमा, भागतक, दिना हैंगे. मा बदव धाने राजी और र muttinge fret gurufuter, ufer, waren mut युव । बुक कोर एर राज : हीराकी । अवारी (मेंब) गरिन Errifeet verfei berbe benteb urbert unb. केंद्र करते कर्न बरदेशमा । न्यंत्रप्रचार १ में ११ क्षा राज्य कर देश है देश कर तरह , क्षेत्र अने है दिल REZER-Se [e e] Rupyth Raf Let ett किकारों है किया, रेयून, बतन, ये, है बहारे एकी एकी कल्लारी वार्ति दे देशके बहा के शामिका वाले (१६०) व अक्टि । ~ 4 + # 4 4 4 4 5 4 . " " " " " " 田田門をおしかいっている なったないむり もにかりり प्रशासनीकार्त (१०) प्रशास वश्यका, र्वेकार gregrege wife, go forst gubbe er, myer tebben. **** (m 2+m;) mmittento feat faror. Correte क्षराम्ब्य-दुः (१०) इदके, अन्दर् करे दे किया, राज्य mergerenne fan mei't brat, ûntre, nwaren e 前 ひき かんし かっかり Amilia . Les fant meiat En: grade nane iffen ; melliga-fra fe-fan der! male tilene tu, **८६१ १९ प्रे**क शाहरू ४ प्रदेश अन्य के करते वाद के करते है क्यार्गित्र) नर्गान (त्र) मुक्तिवित्रेत्रका अवत् इति । स्वत्यक्षामुन (नत्र) वत्य क्षामा सामाण सामा 4 4 1, 82" \$ 25 6 2 10_ 2 京日前におおかっちのよりの よっちの 有明明中午日下午日 其四十九 田光大田田 ० क्राविक्षण स्थित है सम्बोधन क्षेत्र क्षेत्र है स्थाप है

प्रचेष-प्रशिक्ष

#"C 1

ह्माद्रीय-एक (र्राक) अंभी वर्षात् अवेष शब्द है

प्रचंद्र-दिक (पेक) अति तीय, प्रततः बहुत बीबी: बबतः

मीत, मेपा: अपि मेररदी: प्रकार: बनाय: बहा ह हु।

दुर दरण दुए । सीर मारी और रूपी ग्रारंत । दिर मीन-

प्राचीता - भरी भ (भ) अध्ययप्राचीत दर्शांकी सक्ष सुन्ती है

सर्दर बनेर १ - भीषा-दिश्वारी मात्रदामा १ - मृति - है

प्रयासन-५० (तंत्र) ध्यानेशे (६४) र

fart Ruts

प्रचारित्र-दिव [विक] ही बनाया सहर हो, प्रश्नीत

अधित-विक किनी दिएक मार्टिने दिशक्त अदस कुछ के.

सुना दुवार वसव विदा वृथार घार दुवार अनुसादा वृद्धाः को यात र तुरू देवक संरक्ष वस्तु धेर र

प्रमुश-विष (१०) बहुन अवित, प्रमुश्त का कृते.

पेटक-पु० [मं०] भैटाः पिटाराः संस्द । पेटकपाँ रे-अ० पेटके वल ।

पेटरियार्ग –सी० दे० 'विटारी' । पेटल –वि० बड़े पेटबाला, सींदू ।

भोर स्टब्स रहता है; पशुओंकी जेतही । पेट(क-पुरु [संरु] टीकरा, पिटारा ।

पैट्रासिक-सी० पेटकी आग, भूग । पैटारक-पु० दे० 'पिटारा' ।

पेटारा#-पु० दे० 'पिटारा' ।

पेटारी *-न्ती० दे० 'विटारी' ! पेटार्थी, पेटार्थ -वि० जी सदा गानंदी किमने रहे !

पटायाः पटाया नायण जा तथा कार्याः समान र पेटिका-सी० [म०] छोटा पिटाराः, पिटारी ।

पेटी—सी० तोहको तोष्डा वह तत्तमा जिममे पणमून, पैट भादि पहानेपर जनत्को जनने हैं, देवटः प्रपरातः नाहची-वह लोहरारः यह तामा जो हुन्युकको उनलेपर कैठानेके निम्म तक्की कमरमे क्षेत्रो हैं। [मंग] छोटा पिटारा, विसरी सम्मन्त्रा, छोटा महन्त्रा।

पेटीकोट-पु॰ [अं॰] याँगरेको तरहका एक हस्का पहनावा किने न्यियाँ सार्थाके नीने और स्टब्स्का कुनी, आबके

साथ पहनशी है, माया ।

रताय पर्याचा देव पानी पेट्ट~वि० जिसे शदा सानेकी चिता लगी रदे। बदुत अधिक

रशनेवाला, दीर्पादारी ।

पेटेंट-पु॰ [अं॰] यह सरकारी स्वीवृति वा स्वित्रदेशी विगक्ते अनुमार दिग्मेरो किमो क्ये आविष्कार या परार्थ-के तरपादम और स्वित्रदक्षा स्वाधिकार प्राप्त शेला है। दि॰ (यह बस्तु) विगकी ऐसी स्वित्रदेश दुई हो।

पेट्रोल-पु॰ [मे॰] पन महारका यानित्र नेठ विसाने सरका ग्राजिने मीटर गाहियाँ, वर्ते भादि जल्ला है।

पेटा-५० सकेद कुम्दवा ।

पेष-५० गुरु, दरत्य ।

पेडल-पु॰ (अ॰) सार्यक्त आदिमें एक पुरवा विने पैरसे सलानेपर साप्रक्ति सादि चलती हैं।

पेष्टा-भी । [मंत्र] बड़ा मैला, विश्वता ।

पेषा-पु॰ धर्नदे सामान्यों यह प्रान्य गिरारे से शहि मिन दुए कोरेने रीवार की जाती है। तुँचे दुए सरिक्षा भीरे ।

पेदार!-दु॰ एक वृश् ।

पेड़ी—पोर्क पर कार का शिर्म कुछ या घोषी कोशा अस्तरित क्या हुवा सामा देव या जिल्ला तथा—विश्वा ज्यारि देशों देशों च्या अस्तर्य कुछ की असके बद कारेडे बाद दर्शनी वसके दिला जीला प्रदान सामग्री हुएती देशा हुएती केशो उद्याद हुआ पाना प्रकार की इर्होंदे क्याहा कोशाना हुआ पाना प्रकार की

41-2. allitet bild nie dater ginat nicht

देगा-५० [एन] अपूर्व की, केंद्रा र

पेट्र-पु० दे॰ 'पिट्र'; † पक बड़ा अंगला पेड़ । पेन-सी॰ [अं॰] कलम, हेसनी । † पु॰ हसोड़ेकी जाति-का एक पेड़ !

पैनी-न्नी॰ [अं॰] एक अंग्रेजी क्षिका जो शिल्पिके पारहर्वे भागके बराबर होता है। -वेट-पु॰ एक अंग्रेजी तील जो २४ ग्रेन (लगमग १० रसीके) यराबर होती है।

चा रक्ष अन् (क्यमम् १० रचाक) यरावर दात है। पेन्हाना! – स॰ कि॰ दे॰ 'पहनाना'। अ॰ कि॰ गाय-भैस आदिके थनमें हूथ उत्तर आना।

पेयर-पु० अंश्रीकामक समागारका प्रसान्यत, परचाः निर्वेष, प्रकृष । --सिख-स्ती॰ वह मिल जिममें सामन तैयार किया जाव । --चेट-पु० पत्यत, काली आरिका इकला जो कामनपर वसे वन्नेसे रोकमेठे लिए राम जाना है।

वेस=-प्रदेश 'ग्रेग'।

पैय-वि॰ सि॰] पीने योग्यः जो विवा जाय । पु॰ पीने जीग्य वा पिया जानेवान्ता पदार्थः जलः दूषः शहबनः एक प्रकारका स्वीता ।

चेवा-सी० [स०] मॉझ एक प्रकारका मॉड मिला हुआ चेव परार्थ ।

वेयु-पु॰ [मं॰] समुद्रः अस्तिः गर्व ।

पेयूप∽पु॰ [गं॰] अमृन; सात्रा थी; गायका भ्यानेके दिनसे - छान दिनोंगरका दूप ।

चेरणी-रशे॰ [सं०] तांटव मृत्यात एत भेद । चेरमा-म॰ कि॰ किशी मुमनेवाउँ चदार्थ या यंत्रके हारा

रियो वर्श्युवर ऐसा द्वाव बहुँगाना कि जमहार सा या रेजेद लिचुक जाया बहुत कांपक क्रेडा पहुँगाना, महानाः किसी बामधे बहुत स्थितक क्रमाये रहना, दिशी काम-क्षेत्र करनेने बहुत स्थितक क्रमाये रहना, दिशी काम-

पेरपा: पेरवाद!-५० पेरनेराना ।

वेदा-१९७२० 'वेदा । श्री० यक प्रकारको मिट्टी जो पुँताई-के काम आजी दें, पेतानी मिट्टी [मंग्] एक प्रकारका बाजा। वेक्-पु० भिन्नु चुरी अस्ति। सागुर, मेरपर्यंत ।

वेरीज-पु॰ [मृं॰] एक उपरान, पीरीजा । वेरह-पु॰ [मृं॰] जानेकी किया गमना अंटकीप ।

वेतरह-पुरु [मंरु] भश्योष ।

पेत्रता-ग॰ कि॰ दशकर भीगर पर्देशाना भीरते भीवर श्रुमेरचा भेरित करला पॅन्सा इत्यान करना शक्ता - कापण तात करन मन देशे - रामाण पर्देन्दा। हेकता क्यारीन करना भाजमा करनेदे तिर मेरित करना क्या करना ।

चेराव-दिश (मेश) क्षेत्रका हुत्ता, श्रीता दिस्त । चेरावाना-मश्रीक क्षित्रेची देशकी प्रकृत कारणा क्षिते.

पञ्चानार्र्णमः ६२० हिस्ट्यां एकतेते प्रवृत्त करणाः हिस्ते। ते पेकनेटा काम बदाना ॥ पेज्यार्र्णुक पेजनेची जिल्ला या कान्। क बहाना बजानाः

क्षाविकार्यः व्यक्तः कार्यः वर्षः वर्षः

वैत्री(सिन्ने)-दृश् (स्व) कोश ४ वैत्रू-पृश्वितीसका ४ ग्राज्ञान-प्रसिवादी कीय भाषाने । — चानु(स्तृ)—पुण सूरवानुः नृदेशमधाः नेप रहित करता रहित्ती, जिल्हा प्रकारी सुन्नि द्वा अपनेका है राम रेगा देश र्वजन र । न्यासियानमा । साम दीन महिन्छ, पर्रावक बेलिन क्लिन हुई, पूरी क्लब हा। मर्दर (द्रण (सेंश्रा - माद्र-५० व्हिल्यूने लेखि - ह्यून-रिश ने हुर्रिय बाल्या हो। अधिक बुद्धियान् इ साल-इर । स्वदृत्य-दिश पुष्टियान् «प्रतियात् । स्वीतः-दिक निवृद्धि, हुवी ह मताच-रिक (संक) माधी तहह जाना दुव्यान्या। स्थि स्थितः प्राध्यक्षः स्थातनः विस्ता । मजाप्या(ध्यन्) ~ ६० (५०) ५६म बुद्धियन्त् । द्यारा म = पुत्र है। को बृद्धि, बिद्ध । दिक बृद्धित तु, दक्षिण । श्रामापन-पुर्व (शंक) अधाना, सुरिय करना ह प्राप्तान - [४० (४१०) पुरिकारत १ प्राप्ताचाम्(सप्) नर्वतः (संग) य १४, वृधिनान् व মালিক-বিক (১০) প্রিম্পে ব बर्ला(किन्)-(४० (४१०) ह्यान् ३ द्राप्त−(4 » (+ ») देश 'द्राप्त र पन्छ' । प्रशंकत -पुर (संर) प्रयात प्रदेशता, जेहरे अल्ला, श्चावित्रम् =वि+ (अ+) अवन्य मुख्यः, वृत्रपुर मुख्याः अन्य बुसा, यहस्य हुस्ता भागकीया । धारवाह-पुर्व (३११) प्रदश्च । नाप १ प्रचीत्र-वर्ग शिर्म प्रिया प्री कर प्रवासी वराज, पार्थे। મીત વધુના કરિયાનો જરાજ કારો છે. साम-तुर का दिशावर, या, प्रतिकात कि कि कि प्राचीन, Stim i क्षण्यान्त्र (११४) स्टब्स्ट अल्प्स स्टब्स प्रवाप-दिन (१.०) दिशेष्ट मणने शुक्त मुन्ना, जी प्रणाय कर इ. ही, ही क्षाप्त करते हैं, जिल्ला शुंधा की, क्षत्रणाया wurfente, nur, terminer unte, bie - mit-हिर कि दा शारेर शुद्धा और ने च्याल-चालक्क-पुरू क्षा का नाम के कार्य करते हैं। जा कार्य के कार्य के कार्य के कि कार्य के कि क्रमानि - को र हिलेको साथ में दो दिवश का का का का का पार पार्ट स्थाप 新姓品 家 (中華 海河市)。 电中心电影 主

स्वापन-पृष्ठ (१०४) संस्कृति कामा अस्य अस्य स्वापन-पृष्ठ (१०४) विधिक काम सुवत (१०१) विधिक काम सुवत (१०१) विधिक स्वापना विश्व (१०१) विधिक काम सुवत (१०१) काम

भीर विषयी प्रश्ति व हो ई प्राप्तपालकुर (मेर) बाला के श्राप्ता करता (विव्यवस्था विवासा रचना निर्माण (विश्वण (दय) देश) कारण बालाह एव्या करता ह

सम्बद्धाः विक्र [ताः] के वार्षः वोषदा तत्रवाः ब्रह्मे बीत्व रिप्रातिकः सम्बद्धाः विक्र [ताः] सम्बद्धाः वीतेश्यः वार्षः व्यवस्थितः सम्बद्धाः विक्राः विक्र सम्बद्धाः वीतेश्यः वार्षः व्यवस्थितः सम्बद्धाः विक्राः विक्र सम्बद्धाः वीतेश्यः वार्णः

र में मानवार किया होते हुन वह देव हुन है। क्यों है।

' प्राणीं (चित्र) – दिन हिंगई। मैन बारेश का, नहानी,

मानद्वार भारतेशक, दमादा दिन्द (गरेदों) हुन

क्या में में में करी दिन्द है।

प्राणवन्त है।

प्राणवन है।

सम्मान-दिन दिनि असे मुख की रहा की दिन्ही कुन है।
सम्मान-दिन दिनि विसे सम्मानात ।
सम्मानिका स्वार्धी-स्वार्ग दिन्ही हैन रिमानी देश ।
सम्मानिका स्वार्धी-स्वार्ग दिन्ही हैन रिमानी देश ।
सम्मानिका स्वार्धी स्वार्धी स्वार्धी स्वार्धी स्वार्धात स्वार्धी है।
सम्मानिका दिन्ही स्वार्धी स्व

व्यास-व्यवस्था व्यापन । प्रकार[शिक्ष] – दिवः [शंव] शुक्रीय तर, क्षण व कर्णे व व्यापन । प्रकार व्यापन वृद्ध [शंव] वेषार, यक्षणपुरोक्षः शैक्षणपुरितः प्रकार व्यापन – दिवने क्षणि व क्षणे वेषकः, शिक्षा दिवस

अभिन्यापारीहर्द्य सम्बंध सुक्र चीप् र

ক্ৰায়ক-পূত (বিত) কথাৰ কৃতিৰ মানাৰ।
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰিব (পত) জনাৰ সৰ্বাধানক মাই।
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰিব (পত) কৰাৰ কৰিব কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ
ক্ৰায়বিলাৰ-কৰাৰ

જાણાવારી (જિલ્લુ) અનિવર્ગ (બેન્ડ્રે જાણ પ્રત્યેસભાર છે. જ્ઞારિક લિલ્લુ અનેવર દેવાનું દિવાના ત્યું વર્ષ દેવારા ભાગો પીખ પૂર્વ જુલા છે. જીતિસ્તુર્ગત્રી અપૂર્વ (ત્યારે વારા પ્રત્યા પ્રત્યા વર્ષ પ્રત્યા છે. જેમાં પ્રત્યા જુલાના, આર્તિનો કૃત અપ્તાર, ત્રહ લાદવારી જુલાયો પ્રત્યા જુલાના, આર્તિનો કૃત અપ્તાર, ત્રહ લાદવારી જુલાયો

हेबरर, इ. को प्रीटरीक करोर, कहिंद क्षक प्राप्त कर कर विकास कहरण गण्ड वरण, व स्वकार क्षितक प्रीर्देशक के नोटन हैकरी बन्धान कर के की व स्टेंड्फी एंट-प्र अंगे वायजामेकी तरहका एक अंग्रेजी पहनावा,

वेंद्र-को॰ सोयो दर्र हंडीके स्थानपर लिखी गयी दूमरी हुंही, युद्धिरेट हुंदी; * बाजार, हाट; दुकान; बाजार हमनेका दिन, बादारका दिन ।

पॅठीर*--५० दुकान, हाट ।

र्वेड-पु॰ हम; राह, रास्ता ।

पेंडपातिक-वि० [मं०] दानपर निवाह करनेवाला (बी०)। पेंद्रा-पु॰ राह, रास्ता, पक्ष; रीति, चलनः पुद्रशार ।

म् -(ह)पदना -पीछे पहना । पेंटिक्य, पेंडिन्य-पु॰ [शं॰] भिदावृत्ति ।

र्वित-स्री० पामाः दाव, धःन । पितरा-पु॰ दे॰ 'वैतरा'।

वैतरी = सी व जुती।

पतासिस-वि०, पु० दे० 'पै"तालीस'।

ऍतालीस-दि॰ चालीसमे चाँच अभिक । पु॰ चालीसमे पांच अधिरुद्धी संख्या, ४५ ह

पिती-ना० दे० 'पवित्री'; तोने आदिकी बनी मेंदरी बिमे

पवित्रताकी दृष्टिमे अनामिकामें पहनते हैं। प्रतिस-दि॰ तीममे पाँच अभिक । दु॰ तीसमे पाँच अभिक-

की संख्या, ३५।

वैवाँ "-सी॰ पेर, पाँव । एसड-दि॰ साउसे पाँच अधिक। पु॰ साउसे पाँच अधिक-की संख्या, ६५ ।

च-= No ए(त. हेकिन: अवश्या प्रधात, बादा पासः भोर, तरफ । प्र॰ कपर, परा से । म्बी॰ ऐंब, दीव । पु॰

दे॰ 'पय'। -हारी-दि॰ दे॰ 'पयहारी'। प!-'पाय' (फा॰) का समामने स्वबद्धत विक्रम रूप ।

-करी-सी॰ पैरका यह गहना, पैरी । -रामा-पु॰ पाराना । -जामा-पु॰ पानामा । -ताना-पु॰ दे० 'वार्यना' । - माल-वि॰ दे॰ 'पामाल' । - लगी-को॰ पानागन, बर्चरपर्शने साथ दिया हुआ प्रचाम: प्रचाम ।

र्षक-पु॰ (पा॰) पेगाम लानेवाला, शरेशवाह्य । पैकर-पु॰ दपासने गर्द १६ड्डी सरनेशनाः (श्रं॰) मान,

निही भारिको बोरे 🔰 भैने भारिमें बंद बरसेवासा । पंकरमा = - भी ॰ दे ॰ 'परिक्रमाः' ।

पैका-पुरु [अंत 'पारदा'] यद विशेष आदारदा शादेखा शापा व पैसा-पैशा पैशा औहता जुड़की काब बरोड़ि"--

whit I पैशार-पु॰ [पा॰] पुरदर माल वेचनेवाला व्याधारी ।

पेशारी-पुर देन 'पेरार' ।

पंत्री-पु॰ पुम निरदर, पंता नेवर, दुष्ट' विनानेवालाः वामीगरा गर । स्पे॰ वासीगरी। जरीबा देशा ।

पेरेट-पुर [र्थर] दिस्ते आरिमें बंद दिया हुआ गान; विभी बस्तुका छीटा बहल ह

दीवर-पु (४:०) 'देगामहर' का कापक अनुब्देशिका freier ihm chebenen, freier ge. nich -Mait-de Edint :

पारिकारी-दिन पेत्रप्रका हे करेन देवदरका काम का क्य है प्रियम-पुत्र पर, दय-विदेश देव बलुका बड़ी शक बहुकी है

नाम'-रहीम। र्षेग्राम-पु॰ [का॰] सँदेसा, संवाद । -धर-पु॰ सैदेसा

परुवानेवाला, एसची, दूत । प्रामी-पु॰ [फा॰] दृत, संदेशवाहक ।

पैतार-पु॰ [फा॰] संदकः मद्याः इरुकी रुकीर, इराई ।

यैज्ञ#-सी० टेक, पग; होह ।

पंजनिया।-सी० दे० 'पैजनी'। पैजनी-सी॰ पैरका पोला कहा जिसमें बजनेके लिए कुछ

बंद्धियाँ राम दी गयी शोती हैं। वैज्ञार-पु॰ [फा॰] ज्हा ।

पैठ-सी॰ पैठनेकी किया ता भाव, प्रदेश; पर्देन, गति ।

पैठना-व॰ कि॰ प्रवेश करना, पुनना; भूमना ।

र्वेडाना −स॰ कि॰ प्रवेश कराना, भीतर पर्देचाना, गुमागा। र्पठार=-पु॰ प्रवेद्यः प्रवेश करनेका मार्ग, द्वार ।

पैटारी चन्दी॰ प्रवेश, पैठः पर्वेश ।

पैठीनसि-प॰ सिं॰! एक उपस्पृतिहार । पंड-पु॰ [अं॰] सीस्ते, पत्र लिखने आदिये काम भाने॰

बाले कागवदी गरी। पंडिक-वि॰ [मं॰] पीटिका, पुंत्ता-मंबंधी।

पैटी-का॰ सीटी: मोट सीचते मनय देशीके बार बार करें-के पासनक आने और कीश्में के लिए बना हुआ दाछवीं रास्ता; वह जगह जहाँ कुएँ भारिसे निराना हुआ

मि बाईका पानी दाला जाता है।

पंतरा-प्र• कुरती, परेवामी मारिमें प्रतिद्वियोका मिहने या बार करनेके पहले एक दूसरेने कवने ग्रुप कलापूर्ण दंगरी पुम-फिरकर विभिन्न मुद्राभीमें रिवन दोगाः परण-बिड ! -(१)वाहा-दि० चालवात ! -वाहरी-मी० बालवायो । मु॰ - बन्छना - कुर्ता, परेवामी बाहिये युग-फिरकर विविध मुद्राभीमें रियन श्रीना। मदी चाल

पननाः नवा दाव दिशाना । र्पेनला-नि॰ उपमा।

पैनामह-वि• सि•) रिनामह मेरंपी: दिनामहमे प्राप्तः बदा(रिपानः)सः बदाने प्राप्त ।

वैसामहिक-वि॰ [गं॰] विधामद-गंश्यी। विधामदेने प्राप्त । पेनुक-वि॰ [बं॰] दिशासा दिनारी माता पूर्व होशा पूर्व ही से प्राप्त, कीक्पी । पुरु दिवसीय निवित्त विया आनेशासा

पैतृसत्य−९॰ (गे॰) हुमारीने उत्पन्न पुत्रा स्थान स्यतिहा

पेनुस्वसेयः पेनृस्वसीय-पु॰ [शं॰] पुणेरा साहे ।

र्षेस, पैसिक-दि॰ [मं॰] जो रिएके प्रशेषि हुमा हो। रिचर्जारण । पैसल-वि॰ [सं॰] र्यातसदा दला दुशा ।

र्षत्र-विक्र[बोक] स्थितकोसी (साम्र मार्थि) । युक्र रिष्ट्रेगीसी (रम अर्थमें 'देनव' यो होता देश दिनहोंदे किए द्वित

वर्ष, माग दा दिन् । र्षयसा - दि॰ दे॰ 'देउना'।

पैदल-दिन पंद पंद प्रवरेशका, दिया गुराहित सम्हेन बाना । अ० दाव्यादे, वांदर्दर । पुरु क्षारहादे समसा शाब्दी बल्टेक्स हित्ती। बह विद्वारी में किन

क्रानिकाय-पार कि.मी जिल्हा शहाहरू है। पास, बार्कीहर है प्रतिकारियो - भं, र [००] शक्ती, र [१ । प्रतिकाद-५० (१)०) ५ व्याः प्रतिकृतिः प्रापः कारायः स्टब्र प्रतिकार-पुर (११०) देश निकामना, बामा सुकारा: मर भारत है। दिली संदर्भ दे परने दिया जाता Infanti, entra: feetr eine march feut underwi-दर्भात एक एक एको अधिक विकास अधिक श्रेमी प्रकार सार वरनेकी परिचार की जाती है। सकर्म(स्) सतुक यानिकार करणेका काया; विशेष ।-विचास-पुरु विक्रिया, reta i प्रतिकारक-दिन, पुन [बान] प्रतिकार करतेवाला ह प्रतिहारी(दिन्) नांदक, पर्क (कर्क प्रतिहत्त् बरवेवाया र श्रविश्वाप-दिश्विति देश विविश्वतिक्ये । प्रतिकाता नव । (गार) प्रतिकात, शालाव (वावा समास्त्रे) । प्रतिविश्वय - पुर्व (१२०) अप जिल्लो सन्त केनी अपादी बीमना ही, अका बीमनेवानेवा प्रीय । प्रतिश्रीवन-पेर (१'+) शहर रूपा, देश र प्रतिवचनक कि विकास मार्थ प्रतिकार-दिन विके दिश्या प्राप्त अवस्था सरदेशकाः नी अन्तुन म दी, विद्यान, दिस्य, अनुकृत्या उत्पक्त ह मुक्त दिरीयः शतिरोधः । चन्नार्वादि(सिम्)ः-कृत्यः-व्यापीः (fin)-fan fenn minen unberm, fattett e - इश्रीम-दिश की देखतेने अगुज का शक्ति करी। - प्रवर्त (सिंग) - विक शक्ष प्रश्न अ.केशना विकेश है: भनु बन पेरी (रासरा) र न्याय-पुर विशिधि कुछ बदाना, व्यवत क्ष्मपुणिकती । देव "हर्रमपुन्यवानी" । प्रतिबुद्धारा क्यों व है को बादानी ह minufere efen friet feltett, meers encharms a mbigmmfen febb forent Monte ut ufrebe fent

RET HE FAN REVER, PRINTS properties of a few latter & where, ages, wherea erute. mittet uffelfel milemmenfen feinblam, eifen ih ute unm mun

62m1 8 หรือทัวงาน จา (เกา) ริงรักปีนี้ หา้ว เปิดเกตร เปิด เ

聖代古田田一年- 1月1日 日本に 本曜日 mentagen at a feet to telegraph fact and व रिक्स करे अवसे होती हमना अपने, शहर है, अवस्त अवस्ति ह

स्राचित्रक नहिन हिर्दा हो होते हैं हो है Michaellen frag mein enenn mem depenten सर्वित्रहेता वर्ष रिक्ते बान्द्री की ब्रेन्डिंग का ब्रीएंग व where we is a wist only uses, before

playing ingo love strengt had a whateremented from his ment him at your भी रा दें। या नवा की, की बाका महा बी, अर्था पर देंशा For now the menty, from French Bear day

新光线电影子电影电影电影的影影 \$P\$\$P\$ \$P\$\$P\$ रीम अर्थ का अर्थन की क एक इंचान ह \$P\$\$P\$中央大学的大学家"看出

R'eur, n'oben - ga [etc] Le deur appe, fem-

क्षारा सेंडमाः स्टिबिटिना, क्रेप्ट ६ प्रतिकार-वर शिकी अन्यदे अन्यद कार्येश क्य विदेश रिवाँ र जिल्हें बीजियार्गहर कार्राष्ट्र की जाना है र

प्रतिक्यास-दिक [शृंक] बद्रण स्टिंड प्रक्रिय । प्रतिस्ताति – गोर्ड सिंडी बरण भरिष पनियं ३ प्रतिगत-दिन [लेन] कोटा हुना भागे देते. प्रसाहकः शिएका पुर्व कीरमा कीरपैसी का प्राप्त देंग परियोद्ध मानेपीते अने हुए प्रध्या है प्रनिगमन-१० (स॰) लौरभा ।

प्रतिमार्जना-कीर विकी दिलारे मार्नेट अपनारे दिल यदा गर्दम ह प्रतिगर्दिम-दिन (विन) विदिश्य । ufffinfe-ge feleführt vere, auffi feit errit

शास्त्रीका द्वार । प्रतिगृद्ध, प्रतिगृद्ध-- वर [ग्री । पर्वर १ प्रतिचरीय-विश्व विश्वी धरण दिना रूपाः भ्योपप्र दिना ERITA PRINCE MINT E प्रतिराद्य=दिक दिल्हें शहर क्षत्री देतन ह

प्रतिरायाण-को व देव "प्रतिप्रार"। प्रशिक्षक्ष-पुरु [रोन] प्राचाद वश्या, श्रीकार वश्याः विके पुर्वेद यान की जानेकारी पत्तु करोबार बरबा, राज केंगर की अन्तर्भादि के बारी दे अन्तर्भ है। वेदेशका क्षर बर्जेशनाः अनुसदा प्रयातः देशक्षाः राजेदेशी tien and, sector hour from um ture बार्नी बारा शहरा बरवा, मुलता; क्षेदार करना र प्रविद्यासम्बन्द्रण दिश्वो कर्मदार सहस्रा दास है सद ए मेरी के पूर्व प्राप्ता बहाता, क्वेप्ट्रांगा, चन्य ह प्रतिवादी(दिश्व)-रिक. पुरु [वाक] काल के देशका है

अभिवादीमा (म) -पूर्व [अंत्र] साम में प्रेरमा प्राप्त के minure-go [ete] wie dar; Gerter Ebertein ! ufruien, niguret (fen) -fer, ge fref tie केरेर ज्या ह स्तिमास-दिव (०००) सदाः अन्ते चेपदा स्रोतेष प्राप्ते T ST'E

miem-de fuel ar er einen eger eine einig gegen gegen well, weder mit e fer febre genem inge ar derer i

क्षानिकाल्याम् (चेंच) दिवारणः बाद महे वर्दे विशासनः mit ift miet, det egatt, eier ! क्षीनुक्षामुक्ष अहिन, पुन हिन्दे द्वीनुदान क्षत्रे सामा ह क्रुप्रियम्बरू च्यू (संग्रीकायम्, क्रा देशकान minamit(for)-"er, ye (see) farre mietien

aren tul-a astronomy filest, after out the क्र रिक्ट नवुष (४०) श्राप्तीय ह क्षत्रिक्षक हर्ने प्रक स्ट्रांस्क कार्यारेच कार्या

रिक्ष व देश कर दिला के देश देन सर्वेषक्रभाव वर्षे वर्षे भवत्रे अवस्था क्षेत्रे त्या ४

mirralegrefen fan) frem mein fler eer fi

वर्ण, धोर (छा०) ।

पेताची -सी० [सं०] धार्मिक कृत्यके अवसरपर दी आने-बालो भेंट; राजि: प्राफ्त भाषाका एक भेद ।

पशास्य-पु॰ [सं॰] विशासका स्वभाव, झूर स्वमाव । पंजान, पंजान्य-पु॰ [सं॰] पिजानता, सुगलसोरी; दुष्टता । पंष्-विव मिनी आदेशे तैयार किया हुआ।

पृष्टिक-पु० [मं०] आरेमे सैयार किया जानेवाला एक

प्रकारका गय । विव भारेका बना हुआ । पैष्टी-स्त्री० [मं०] दे० 'पैष्टिक'।

र्षसना • -- अ० कि० पुसना, प्रविष्ट होना ।

र्पयसाध-पु० हामेला, हाशर । पसा-पु॰ हाँदेवा वह सिका को आनेके बीधे और रुपवेडे

नीसटवें भागके बरावर दोता है। द्रव्य, धन । -(से)

पास्ता-वि॰ धनी, मालवर, मरांफ । र्पमार्श-पुरु प्रदेश, पैठ; पुसने-पैठनेका मार्ग । पैसेंजर-प॰ (अं०) यात्री । -हार्ची-स्वी॰ सवारी दोने-

यानी रेलगारी । - देन-श्री० दे० 'पैगेंजरगारी' । पैहस-अ॰ [फा॰] निरंतर, छगातार ।

पैहरा-५० कपासरी रहे १कड़ी करनेवाला । पाँ-रहा सीपा: मीपेदी कावात: अपानवास निकटनीका

पाँकता । - अ० कि० प्रता पारशना फिरनाः बहुन अधिक टरमा । पु॰ श्रीपायोदा एक दोग जिसमें उन्हें पनने दस्त

आने हैं। पीका-पु॰ एक बढ़ा फतिया ।

पीराराण-ए० मालक, नया ।

पींगली-स्रो० शॉम, नरवट शादिकी घीगी ।

पींगा-पु॰ बोसकी नली। दिस आदिका चींगा। वि॰ द्योगलाः भरः मुखं। - पंथी-को॰ मुर्खनापूर्व दार्थः

दीन । दि॰ मुर्गतापुर्ण, दीनी । पारी-सो॰ छोड़े नभी। जुलाई हा नासुक्रका यह आहा बिमपर गृत मधेरवर वे तामा-भरना वरने हैं। बॉसबी बह धौरी नाणी जी बेनेबी बॉईमें अम ओर पहनाबी रहती दें विधरने परुष्कर छने दुक्तते दें। बाँग आदि भीकी और गाँठपार बालुओंडा दी गाँठों है बीचका आगः

• तुमते । व्यक्ति = न्यो = देव व्यक्ति ।

पींडम-पु॰ दिशी श्मी, वरी दुई बस्तुवा पीडनेसे निवला

द्रभा भाग ।

पींछमा-स॰ दि: स्मि बन्तुपर द्वाप, खपना आदि चेर-बर प्रमाद स्याद्रमा तरल प्रदार्थ वटा देवा या भूक भारि साह वर देना । पु॰ चीतनेदे काम आनेवाला

4411 I पीटा – पु॰ साध्या घट ।

पौरी - भी । एक प्रशासी बल्या ।

यो-विन [मंत्र] परिया, सुद्रा, सम्बद्धानुद्र सहस्तिवाना । वीमा-पुर शोवश होता बस्ता व हेन्या ।

पीमाना-मन दिन दिनीने देनेश कान बराना रोध गानास प्रदेश नेरी देशा ।

विष्यान-कर्ण केन्द्रिक्षः स्त्रूष्ट्रा स्टुल्य

पोइस#-स्वी॰ सरपर ।

पोई-सी॰ एक छता जिसमें पानके आफाएको मोडे दलको परिवर्षे छमती हैं। असुआ; ईसका बहा; मेहें, ज्वार वादिका नरम पौषा ।

पोकना-अ॰ कि॰ दे॰ 'पो कना'।

पौरा - पु॰ पालन-पोषण करनेका संबंध । पोखनरीरे-म्बं ॰ दरकोदे बावकी साही जगह ।

पौराना - स॰ कि॰ पालन-पोपण धरना, पोसना । अ०

कि॰ गाय-भेस बादिका व्यानेका समय समीप आनेपर बदन दीला पदना ।

पोररर-पु॰ तालानः पटेनाजीका एक हाथ । पोसरा-पु॰ तालार ।

पोपरी-सी॰ छोरा वालाब ।

पोर्गंड-पु॰ [मं॰] पॉचमें इस (विसी किसीके मतमे १६) बरमतकती उपका सहका; वह जिएका कीई अंग छोटा-बदा या न्यूनाधिय हो। वि० अस्पवयमा, हो शमी ववान न हो।

योच-वि॰ नीय, अधम; तुष्यु, शुद्द । ली॰ स्रोटाई, नीयमाः दुरी बात ।

पौचारा−g॰ दुचारा¹ ।

षोची •-ररी • सीटाई; नीवता ।

पोट-स्थी॰ गटरी, भोटरी: राशि, देर, पुंत्र । पु॰ [मं०] परका नीवे; पदमे विकाना, श्रदेश । -शस्त-पुक नर्-

समः काश, काँमः एक प्रकारकी मछली । योटक-पु॰ [मं॰] सेवस, मीदर ।

पोटना॰-स० जि.० समेरता। अपने दाधमें बरना ।

पोररी = की० दे० 'पोरली' । पोरल, पोरलक-पु॰, पोरलिका-मी॰ [मं॰] पीरली I पोटत्य-५० बही गर्टरी ।

पोटर्न्स-व्या॰ छोडी गटरी: छोटेने बन्दमें बसुगर बांधा हुई थोधीनी बस्तु।

पोटा-पु॰ देखी थेकी अत्मकी पलका वैगर्भाका मिरा। हिम्मत, मजाल, पुततः चिहियासा यह पंशा निर्मे कथी पर न निरुष्ठे हों; सारका सन । औ० [गु०] पुस्पक्षे रुखपींधे वुष्क म्याः दागीः वह मनुष्य या जानवर जिस्सी

नर और मादा दोनोदे एश्य हो। पोटास-पु॰ [अं»] दह शार जो सातने जिस्ता है और

और व्यक्ति शामने भी नेपार किया जाता है। पोटिक-पुरु [र्हार] प्रोहा ।

योटी-को॰ देखी मैंगी; बरेबा; [१७] ग्रहा; परिवास्त्री वर्तन्या एक वन्त्रंतु, साद ।

षोद्दान-पु॰ (सं॰) दे॰ 'देरस'। योद्दलिया, पोइमी-भ्री० [स्क] ऐएना

पोंद्र−भी० [क्षेत्र] ब्हेस्सी, किस्सी कस्ताती हुई।

धोदण-दिल देल 'देन्त्र' ।

पोदा-वि॰ दर, सवन्ता बता, वरित । षोहासार्ग-जन मिन रह दीना, मनदूर दीना, पुत्र दीना ।

स॰ दि॰ दा बगाना। युद्ध दगाना । दोल-पुर्व (शंक) आनवस्था कहा, प्रमुगण्या राग वर्षेत्री

मस्तवाहा द्वाची शावा प्रदाश करते, बच्छा प्रदालक्ष

प्रतिनिधि-पुर (मंद) प्रतिष्य, प्रतियाः सह व्यक्तिको किर्देश्वे ब्रहानाम प्रधान कार्य क्षेत्र, द्विपाद्य स्थानास्य मर्गतः रेशे भीतः जुल्लासा श्रीतरहेदाम अधीरति इध्यद्वे बाताकी काहि बदायहर अवस्त बेटीहामा उच्छ।

प्रतिस । १ जिल्हा प्रतिविधित्व-१०६ को प्रतिविधाः प्रकाः प्रतिविधाः

मनिविषय-विष् [१४] पर्दाने विषय, जिल्लीय विश्वा

ቋምነ <u>የ</u>ደራሚያ ፣ प्रतिकित्तम=५० (०.०) सन्यान्य क्रियाः क्। व्यवस्थाः व प्रतिविक्तित-रिक्शिक (१०) विदियः, रिशिक्षः स्थाने कामने

माचा मुजी । श्रुतिविर्देश-तक (र'क) प्रता प्रकृतिक वर श्रवन करमा ह

মনিবিধীয়ৰ-বিশ (৪৬) বিচৰত প্ৰত্য ৰহবা বিহা লাভ চ प्रतिशिष्तिम् नपुर शिक्षे क्रमा लेखा, प्रश्वपुरश्य काश्याः Partie 1 प्रक्तियर्भम – ए० (२.०) दिवशका कीरदा व

प्रति विष्तिम - दिव [b a] क्षीत्रका कृत्रा । श्चितित्रशासम् १० (स०) वयः मरवधी (बल्ड्जोदी रोजाव ह प्रतिविद्यत्त (१ (१) की दह दी दक्ष के । - सून्य-

fre argue प्रतिनिधय = ५० (६०) विकेश प्राप्त । प्रजितिकात्रम - पर शिक्षो करणा, प्रजिब्हर । प्रतिकाल-पर्व शिकों से हे ब्रान्ता दर अवस्ति ह

प्रतिच-पुर (मा) हाता हाराम्ये हिलाह minten-ge [1 e] feliebat aus, farm aus, ferme

श्रम, विवेत्ता, प्रांतर ही। मुद्रानंत्र र दिन राल्या, सदाय र minerter-ei's feat aferriet mie, fefriem:

प्रतिपुर्वतिम्पानिक (१४०) (वह हेन्) में। अन्योग्यय अन्यत्र है Erric um er fiere)

श्रानिवाल (श्रिम्य) - पूर्व (तार्थ) व पूर्व विशेष वेह व M. MAKTI + A. fo . 12,200, 2

स्पिकार्धाः मञ्जः हैय 'दर्बराई' ह

मिनिन्त्र न्यून हिर्देश शहा अत्तर हत है। ब्रुट है Higher wegen for fire for the their of the fire mile

METERS STORE EMET ! affective to a traductive and a second constitution affectivence are described and the second an aner gift, nie, parete, meine bie mer mermitte gif in bath at feete ante anit. quires ext. meas des byte, prister पुरुष र नवारे (ब) न्युक वन बर्ज रेजन्यरे करने विशेष 我好 敲 賽、後世代皇帝有人李道芒如皇帝皇帝 里門不知道國史之 医电流压管 化二甲酚甲醇 经报本 电压管控制 化甲基苯酚 में व अन्यादा र न क्रिक्स पहल कर बेट वे अमें ब्राल्ड के पाँच है

4 KL 3rd 8

2 - 1 67m 2 4 " Traine Har She x + 4 4 4 4

मनिवास, प्रतिवासी-भीक (४४) वहारी वहारी क्रिके 27/4: 1

प्रतिपद्य-भोग सिन्दे एर्राया याती भारत प्रयाप, भार बिंद हरीहर हात्म वह ब्राप्ट प्राप्ती ४४औं रिस्ट प्राप्त BEEL MUIL AM ARING STATE BATTE BOTH AFTER प्रतिदश्य-विकृतिको प्रणा थानेव क्या हुमा, मार्चान, बेरीबार विदा बुधा, बरोहना विदा नुष्या बागा किरा

क्षणाः जिल्हा कटा दिशा हता हो। साल्या भाग हता. ब्रहरून् अस्यापित ब्राप्त बाहित दिया हुका, प्राप्तिक प्रतियुर्गेशिक्षा-कीक [४ ४] ४५ में, मुक्रियण । प्रतिप्राम-वर्ष किंको इरापे प्रतिप्रतिक स्थाप दुरा 276 8

श्चित्राम्ब-विक्षुक [बन] देशेतानाः विकास सारे sinds allester wegstein middet ander fig क्रामेशभा ।

प्रतिपादन-पुरु (शर) शास कारता, बीपना सिरी रिका ernann era, farra feit feren rerei मीतान, प्राप्तीया राज्य काम्य कामा, प्राप्तक काना वृद्दा ६(रा: ४ एव काला र

ufgriefeni(g)-fes, go [e'e] fem beim: agir sieger feine beninte er, there : प्रतिपार्विष्य-दिन (११०) प्रत्रका क्रिकेटिन, वर्षारीएन, ४००० fer, 41.21, alan

प्रतिपास-दिक विको दिनी प्रशासिक दिशा आपारिस प वक्दान्त्रमा दिना भारत देव ह

प्रतिराम-५० (०.०) इ २०१ ६ देश धारी । प्रतिवृत्त्व-दिव (राव) अवस्ताचे वर्ण अवस र परशेरण-जी बहरतेया बहला बहाईश के र खुक बुराप है कर र पुत्र

grav s ब्रान्स्यर्पर्वित्र)-हिन्द् (८०) देव प्रान्तान ह क्षतिक देव मानुष्ट के साम द्वारी हा पार्थ के पार्थ में दिन में इ. इ.हे प्रतिकार इक्टर बार्न अ दर्श परित्र हो ज्यादरित अभियाहकार-सर्वादक कुला करता, हरू केंद्र व

京をおおいるとなる かんかいあるともないとからり सन्दिक्ता न्यू व देशको बुक्तान ब्रोहिन, मा, पामर , हेश्रप है Riddinkante pa' dan etur Att seet but.

8147 6

क्षाज्ञिक्तकार्याच्यान्द्रीवर हिराज्ञे **दे**त्र ^१६ ^१०१ वर्ष ^१। BERTER - fen jang fange uma dere um f. 4 tot, for & agree and state a fine sand

Bir that fatt bert & B हर्षेण्डवस्थीय कर् ५ चन्न सम्बे देवा १५ को 4 47 1

Efe Endagen in effe r dialer fenn derricht. Mittelfette ff Ber Beite fert filleite bie eine enterfre bie

द्यानेपुष्टक द्वां नेपूर्वक न्यून हरेगी बूद बर्गान जी दिला है। externe disease was private mobilities 682

पोलाध-पु॰ दे॰ 'पुरुष' ।

पोस्टिद्र-पु० [मं०] जदात्र या नावका मस्तृत ।

पोलिका, पोली-मी॰ [मं॰] एक प्रकारकी पूरी, पूजा I पोलिटिकल-वि० [अं०] राजनीति-मंबंधी, राजनीतिक।

-एजंटा-रेजिटेंट-पु॰ वह अंग्रेज अफसर जी अंग्रेजी सरकारकी ओरसे मारतकी देशी रियासवीमें शासन-कार्यमें राजाओंको परामर्श देनेके लिए नियक्त किया

पोलिया-न्त्री॰ औरतोंका पैरमें पहननेका पक पोला

गहना । प्रः पीरिया ।

पोस्टो-पु॰ [sio] गेंदवा एक होल जो घोडेपर चःकर क्षेत्रा जाता है, चौगान । −िस्टक−न्वी॰ वह टंटा जिसने पोलो सेला जाता है।

षोधना#–स॰ क्षि॰ दे॰ 'दोना'।

पीश-पु० [का०] पहननेशी शील, कपहाः पहननेवाला, दर्भवाला (समामांतमे-नकाबयोदा, प्रत्यादादा); लोगीकी हरानेके लिए धोबियों, भगियों भादि हारा प्रवक्त होने-

बाला एक दाध्य ।

पोशाक-स्ता॰ (फा॰) पहनाना, जिनाम । मु॰ ~पदाना-स.पत्रे उतारका ।

पौर्शावती-न्दी । ग्रम द्वीनेदा भाव, टिपाव ।

पोशीदा-वि० [का॰] गुप्त, छिपा हुआ।

पोप-पु॰ [सु॰] पोसनेको जिया, पालनः पुष्टिः वृद्धिः • संदीप ।

पीपश-वि०, पु० [तं०] पीषण बत्तेवालाः बहानेवालाः, यर्जनः सदायकः।

पीपण-पुर [मंर] पीछनेकी क्रिया, पालमः बहानेकी निवा, बर्दनः सहायता देना ।

पीपध-पु॰ [मे॰] उपकाम हा खपवाम करनेका दिन,

श्चल (बीव) 1

घोषना । – म० हि.० धेषण बहना, पालना ।

पीपयिसा(मू)-दि॰, पु॰ [मं॰] पोषण बरनेवाला । पीपविश्व-पुरु (शंद) बोडिल ।

पौषित-वि॰ [मं॰] बिसहा पोका दिया गया हो। यहा

SMI I

पौषिता(न)-दि॰, पु॰ [मं॰] योषण करनेवाला, योषक । पोर्था(चिन्)-दि॰, पु॰ [तं॰] पोषण सरनेशाला, पांपड । पीष्टा(प्)-दि॰ [शं०] पीषह । पु० वीष्टा बरनेवालाः

यस लाइका सर्व ।

षोष्य-दि॰ [तं॰] दीवनके दीत्य, दान्ही होत्य, जिसहा दीवण बरना आवरणक हो, जिलहा दीवण बहना बर्लेन्य रामात जादः अस्पुरद कर्नेशनाः प्रसृतः –पुत्रः– स्त-पु॰ वह भी पुपरी तरह पाला गरा थी। दशका -बर्ग-पुर मात्रा, दिला, गुरु मादि जिनका शेषण करना पुष सर्वत्वा कर्तत्व साला करता है।

योग-५० रंगलेक्ष किया का आकः वाचलेका आताः दामोदा एक्ट्रा ।

योगर्गा॰=दु॰ श्रद्धांयदी ।

योगमञ्च । देन्त् ।

पीममा-ए॰ दि॰ बन्दार् अर्टर देवह वश बद्याः शतन ।

करनाः (पत्र-पश्चीको) आहार आदि देकर मनोरंजन या उपयोगके लिए अपने वहाँ रखना; हाँकना, हिपाना -'मोरि मरी करसों कच पोमै'-सपानिधिः पोंटना ।

पोस्ट-पु॰ [अं॰] संभा; टामः, स्थान, जगदः, परः,

नीकरी । –साफिस-पु॰ टाक्घर, टाकरामा, पत्रास्य । -कार्ड-पु॰ डाक्सानेसे स्तरीदा जानेवाला यह मोटे कागमका उक्डा जो पत्र-व्यवहारके काम आता है। -वाक्स-पु॰ विसीकी टाक या चिट्टियाँ सुरक्षित ररानेके लिए विशेष रूपसे रखी गयी पेरी ! -वैग-पु॰ डाक्स थैला । -सार्के -प॰ दावपरकी महर । -मास्टर-प॰ बारवरका प्रधानकर्मवारी, पत्रपाल। -०जेनरल-५० किमी प्रांतके डाव-विभागका सपने वहा अधिकारी। -मैन-पु॰ टारुगानेका वह कर्मचारी जो कोगोंके यहाँ उनकी चिट्टियो पटुँचाना है, टाकिया ।

पोस्टमार्थम-वि॰ (अ०) मन्दर्के बाइका । प० मायका कारण जामनेके लिए किमी प्राणीये दावकी चीर-फाइकर देगना, श्वन परीक्षा ।

पोस्टर-पुरु (अं०) किमा कागजपर वह अक्षरीमें छपी हुई। वह मोरिय यो जनवादी जानकारीके लिए अगह-अगह

दीवार आदिवर चषका दी जाती है ।

पोस्टल-वि० (वं०) दासपर-मंदंगी; टाक-विमाग-मंदंगी। -आर्डर-पुर वादयरसे मिल्नेसामी दक्ष तरहरी हुँही जो मनीआईरकी जगह काममें छायी जानी है, हाकी ह भारेश । -शाहब-पु॰ वह पुरवक निसमें हाब-तार आदिके निवस और बावस्यानोंकी गुनी ही गुई रहनी है। पोस्त-९० (फा॰) शान, यमनाः टिलेकाः छातः सह, परसः भगीमस्य पीपाः इस पीपेका टॉला ।

पोम्ता-पु॰ एक पीपा विसदे धोड्रेने अग्रीम निकलगा है.

भक्तमका पीका ।

पोस्मी-वि॰ महीयका सेवन कर्तवाला, अपीमशी: वीरनको भिगोनर उसमा पानी पौनेदालाः साहिल । प० एक विकास भी सीनेकी और भारी द्वीसाई और न्दिरनियर किर सम्रा दो जाता है।

योम्भीन-पु॰[वा॰] पःमीर, मुस्स्मित भीर गर्य एशिया॰ के लीवींका एक महारका पहलावा भी शुमूर भारि जान-बरीके बालदार भगवेगे बनाया जाना है। बालदार सम्बेर-का बोर ।

पोष्टमा - १ कि श्रेष्मा, विशेषाः धेरमा, देशमाः ष्याना, ल्यानाः जमाना, वेटाना । । ६ (४) प्रमनेवासाः र्वसन्दिक्षाः ।

योद्यमी०—भी० पृथ्ये ।

वीहर्श-५० वरागास वसुधीस भारा, वरी । वोहार-५० वीसदा र

योडिया - ५० परशहा ।

वींबा-पुरु को प्रोनदा पहारा। वीद-ए० दे० 'दार्थ'।

वीर्षे - विक चेरेके स्वरण । युक एक स्व को चीरेके स्वदा बोगा है।

पीष्टरीय-दिन [र्गन] यसन गर्नरी; असलका; कुमलहा बच्द हैंगर । तें । व्रत्यक्ता दर सहताहर वाह ।

श्चीतमान् – दिः (४०) प्रमानुष्यं, यप्यवस्थान्तः, क्ष्यान् । प्रतिमान– दुः (४०) प्रमान् प्रमाः वृद्धिः, समहः प्रमानाः आसं प्रमाः, सामुग्रं द्वीताः ।

प्रतिमानियत्र-विष् (४%) घाँचमाने सुन्तः विन्ये प्रतिमा हे स्टाः प्रताम ।

कातमानात्र(१९)-दिश् शिश्] ज्ञित्रसे प्रत्या हो। प्रति-भाषात्र(१९)-दिश् श्रिक्ष श्रुक्त स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धिः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्

क्रियास-(१) ६६१मा भारत्या संश्र विश्वासन् । क्रियासन-५० (१) अन्द्रनाः देणः दश्याः दिसर्थः

प्रतिशिक्ष-विक [धेक] विशवत भेदन विद्या गया हो। कामप दिया दृष्णा दिस्तवित ।

क्षतिबहु-युक्त (२१०) क्षणायत् क्षत्रभेतामाः, नार्वद्रश्च ६ क्षतिक्षेत् –युक्त (गिन्) विज्ञास क्षत्रमाः, वैदस्यवन्तः, बहरक प्रदेश -व्यवस्थाः, सेन् क्षीलस्य ६

करणा प्रस्ति । क्रियेश्वरम=पुर्वः (१००) विशोगे अगलाः भीतवाचाहस्याः (१८६ भारीः) निकल्य केलाः, दिलाण करमाः ॥

प्रतिसीता-वृत्र [एत] प्रचरेत ह

प्रशिव्यक्तिनपुर (१०) शृद्धे कारिके भारी कोहबा वेता,

प्रतिप्रतिष्य - दिव (१००) कर्मकृतः स्थापक द्वापः क्र प्रतिप्रतिष्य - दुव (१००) भण्यक व्यापक

प्रतिसंक्षित्र-दिश् (राश्चे क्षांत्रजीवन, संज्ञ द्वारत प्रतित्र दिवार पुन्त र

प्रतिमार्ग-५० (ग्रं॰) कल्कार एरड् बायधे लागा वातेवला अ.६. पुर्वेत

सरिवास-पुर्वानी कुरतेया थीता वह जी सुकासीचे स्ट्री-प्रतियोग

प्रतिमानन्त्रीन (तेन) सिही बारियों वर्गाह्म यू है है हरण अर्थाय मूर्ग प्रवाद वार्गाह्म वर्गाह्म मुद्रे हरणाय प्रदेश मुर्ग प्रवाद वार्गाह्म वर्गाह्म मुद्रे हरणाय प्रदेश प्रतिमानित्र कार्या प्रतिमानित्र कार्या प्रतिमानित्र कार्या प्रतिमानित्र कार्या प्रतिमानित्र कार्या कार्या मुद्रे हर्ग प्रतिमानित्र कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य का

क्षरिकारक नपुर (१००) पर दोनों है। यानिया, क्षेत्रेयुंग्व, हिन्दू, कार्यका, प्रात्येक प्रेक्षणावा की काला काला, क्षत्रेयुंग्व, हिन्दे प्राणीय की कहा काला, बाला, जायकात हिन्देश्य, व्यान्त्रहण, सार्यक्र, स्टार्ग है

B Childrengi, e (egg) mart, a å e

क्षानुक्रमान्त्रमानको । (४०) १५०० हिल्ली हे । सन्दर्भने ११ हाने कारी श्लेष्ट न्या असेना १

Ridmidmur (nu) de na na

क्रीनीक्रक्ततंत्रक हिन्दी दिल्लाक्ष्य व्यक्तिक प्रकृत क्री प्रदेश है। इसका क्षत्रकारी स्थानक क्षी प्रशिक्त

अधिकमुक्ते परिति हैने पहे कहानी शुक्ता, बारण विकार सुकार प्रक्रा है। - सार्थित केटा हुनार पहलार हुना- स्टीन्डमार झीला हुना, - मित्र प्रकार सुनार सेन्द्र हुना, वर्गान्य स क्रमितुम्बन्दुव (मान) यादवरी पीत वादिरीयते वस, मुक् वह प्रतिबंदा सम्बद्ध स्वस्थ । दिन जी सामध्ये भीतृत् हैं। ज्यानिका निवासका

व्यतिश्वयः-न्योन (संग्) सुराधी धार । प्रतिवृत्ति -न्योग (मेग्ने प्राथम, भाग, व्यतिश्व केमारी दूरी -देशन व्यतिश्चे सुनित्र व्यापुरीक विषय, व्यतिश्व ।

क्रियमिक्यानमाने (१०) केंद्र सरवरी पुरिच १ क्रियोक्स-पुन (१०) घेल, क्रिया क्रियोक्स-पुन (१०) घेला क्रियोक्स १

समितीसन-पुर (१०) वेपकी हात स्तान हिर्देश शरू केता, सम्बद्ध : सन्तिसीसन-दिन (१०) हात दिवा कुना रहिन : सन्तिसीसन-दिन (१०) हात दिवा कुना रहिन : सन्तिसीसन-दिन हिर्देश होती :

मन्त्रियाराज्यास्य राज्यास्य । प्रतिकाराज्यान्य (शक) विदेश प्रदेशनी विकासिकाराज्या

स्पारं अभिकासम्बद्धाः स्थापितः । अविकासम्बद्धाः स्थापितः । अस्तिपासस्य स्थापितः । अस्य सामारं । अस्तिपासस्य स्थापितः । स्थापितः ।

प्रतिपुत्र-दिन [बन्दे] वेदा प्रभा । प्रतिपुत्र-प्रतिपीयम-पुनिन्दे दिनो वे प्रवानेमें तरगः दिनाचे दिन्य तुर बरशः ।

स्रतिसूचन पुरु (र्व) सन् व वियो है हारवा बारवा है स्रतियोग पुरु (मा) विशेषा विश्वस त्वार, राज्या विधिये बारवे का स्थाप का में। विशेषा है समाकी मह बाँद मात्रा

सांत्रपोधारा नकोण [कर्ण] मान्त्रेची दोनेवा सन्त निर्मेक सन्दर्शना, बेला अपना १ न स्वीसानकोण दियों वन सा बहुदे कारेया क्षांत्रक वह प्रोत्ता ची बलको चेलाल ही मान्त्रदे किए जो जानी है और दिनके कर्णने हीनेवर्ण बाह्य दिवस बहुदे मान्त्रदें

स्मित्रीसीसिक्त्यो ज्यूब (क्या) विशेषा, स्टूट, विकित्ती स्मित्र सरकार कर विक्रास्त स्वयान बीच कर विकास विभिन्ने स्मित्र्य करत हो (शिक्तास स्मित्रा कर विक्रास विश्वास व्याप्त दिशीरणाः सह वालु वी स्थान कर जानमा कर्णाल हो विक्र विश्वास स्वरूपीया व

प्रतिकोकः प्रतिकोधी(विष्)ः प्रविकास (१४) वर्षः (क्यो स्वारतियं नवविष्णाः प्रतिकारः

सुनिवास प्रप् (४८) दोष्ट ६ सनिवासस्य पुरु सिवास्थान पन्नी व दिग्यो नेश्वर, विद्यान्ते । सनिवास प्रपुरु (४०) हे द्वारति संबीत कर, जानांचिर रेडीं)

क्राविकान न्यून (राज) है। कार, क्रम्बर अर्थना अर्थना । अर्थिकास च्यून (संग्) विकास अर्थना ।

क्षरिक्षणा च्युक [संग] दिवादी अरेश र सर्विक्षणा च्यार हेर्यन] यह १९५ र

क्षरिक्यम् वर्धिः र्रोजवर्षे रिस्टेब्स्यः कव्यम् र रिस्टेब्स्यर्थेः - वन्त्रः कर्षुनान्यः कार्यः क्षेत्रः र कन्त्रः सून्ये कर्मर्थः प्रति वेशः क्षितः - वन्त्रः क्षेत्रः

कारण है। व्यक्तिमा व्यक्ति एक प्रमाण कार्यक्रिक स्वार्किकी स्वतिक्षेत्रे कर्ने कर्ने क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्वतंत्र स्वतंत्रीति स्वतंत्र क्ष नागरिकः रोहिष नामकी घास । -कन्या-न्की॰ नगरकी स्ती, नागरी । -कार्य-पु० नगर-मंधंधी कार्यः जनताका कार्य । -जन-पु॰ नागरिक । -जनपद्द-वि॰ नगर भार अनपदका । पु॰ नगर और अनपदके निवासी । -मुख्य-पु॰ नगरका प्रमुख व्यक्ति । न्योपिन्ः-स्ती-सी॰ दे॰ 'पीर-कन्या'। - स्टोक-पु॰ नागरिक। - कृद्ध -प् प्रमा नागरिक ! -मस्य-पु॰ एक नगरका नाग-रिक होना, सहगागरिकता ।

पौरक-पु॰ [सं॰] नगर या घरके पासका नाग ।

पीरना! –अ० कि० तेरना ।

पौरय-दि० [म०] पुरु-सर्वर्धाः पुरुकाः पुरुके बोजर्भ उत्पन्न । पुरुषा गोत्रतः आयांवर्तका एक प्राचीन देश (मण भा०): इस देशका राजा वा निवासी ।

पीरबी-छी (सं०) वसुरेवकी एक वस्ती: एक मूब्हेना

(संगीत) । पौरवीय-वि० [सं०] जिसात अक्ति पौरव राजार्थे दो, जो

पारव राजाम अनुरक्त हो।

पीरस्य-वि॰ [म०] प्रवका, प्रवी, प्राप्यः प्रथम, आधा,

पीर्शनमा – लां० [सं०] नगरकी की, नागरी ।

षीरा 🗕 पु० रहे । हुए चरण, करम, आगमन । पौराण-पि० [२(०] प्राचीन कालकाः पहलेकाः पुराण-

सं-धीः पुराणकाः बिसका कथन या उद्धेय पुराणमें द्रीः प्रधानीक ।

पीराणिष्ट-वि॰ [म॰] दे० 'पीराज'; पुराणीका जानकार । पुराणका जानदार व्यक्तिः प्रराणवानदाः।

पीरि−श्री० दे० 'दी(ा'।

पीरिक-पु॰ [गुं॰] नागरिकः नगरका द्यायकः।

पीरिया-पुण कोशीयार, हार्याल । पीरी∽न्धा महास्था वह बीटरी था ननीकी तरहडा

भीनरी भाग भी प्रवेश बरने 🛍 पट्ना है, क्योडी: ग्रहाडेंड [में] भेगमुर्मे रहतेवारे संबदीकी प्राप्त ।

पीरमीद-पु॰ [गं॰] यह प्रकारका साम्र ।

पीरप-वि [मं०] पुरुष-मंत्री। पुरुषता । पु॰ पुरुषता भाव, पुरुषाय; पुरुषार्थ; शुक्तः सचमः विक्रम, प्राज्ञमा #वार वा गहराहेंही एक माप, पुरुशाः एक आदमीके ? भानेनरका बेताः पुरुषकी भिनिदिय ।

यौरपिक-पुरु [मेरु] पुरुपत्री पूजा बर्नेवाला ।

षीर्श्या-स्थान (सन्) स्था ।

पीरपेय-विक [मक] पुरवन्तर्वतीः पुरवनाः मानवीयः मनुष्यरा बनाय। दुक्ता, मनुष्यप्रयः आव्यान्तिक। पुः मनुष्दरश मनुष्यांका समुद्रा मनुष्यका कार्यः रोजीनेपर काम बरनेवामा सम्हर् ।

पीरण्य-पु • (११०) शहरा, मन्दालही । वीरहम-(४० (त०) रहन-दर्श रहता ह पीमा -भी। एड तरहरा स्तीन ।

चीरेय-दिश [•] शहरके समीतकः (श्यानः देश आहि)।

र्षाक्षेत्रव-५० (१ ०) (शाहास) चाकशासामा अध्यक्ष १ चीरोहारा नविक (१४०) पुरेशकाः शंक्तीः पुरेशकास्त्रा । पुरु हे

पुरोडाशके समर्पणके समय पड़ा जानेवाला मंत्र-विदोप । पौरोदादिक-पु॰ [मं॰] पौरोदाश नामक मंत्रका पाठ करनेवाला । -

पौरोधस-पु॰ [मं॰] पुराहितका पर: ऋत्विक: पुराहितका

पीरोभाग्य-पु॰ [सं॰] दोषदर्शन, छिदान्वेषण: देव:

दष्कर्भ । पौरोडिस-प॰ [मे॰] प्ररोहितका पर या कर्म ।

पीर्णसास-वि॰ [सं॰] पृणिमा-प्रंबंधी । पु॰ पृणिमाकी किया जानेवाला थागविशेषः; पूर्णिमा I

पौर्णमासिक-वि॰ [मं०] पृणिमान्मंत्रंभी; पूर्णिमाके दिन दोनेवाला ।

पौर्जभासी—सी॰ [मं॰] पुणिमा, पुनो; प्रतिपदा । पीर्णसास्य-पु॰ (एं०) पूर्णमाको दोनेनाला यह ।

यौर्णभी, यौर्णमा-मार [मंर] पूणिमा, पूनी ।

घौर्लिम~९० (सं०) सम्म्यामा ।

पौर्तिक-वि॰ [रां॰] पूर्व संश्ंधाः पूर्वका साधनरूप (कर्म) । पीर्य -वि॰ [मं०] पहल्काः पूरवी । [सी॰ 'वीवा' ।] वीर्यदेहिक, वीर्थदेहिक-(४० [ग्रं॰) पूर्व जन्म श्रंथी; पूर्व

जन्ममें किया हुआ। वीवंपदिक-विक [गंक] पूर्वपर संबंधी, जी समासके पूर्व-

पदमे मंदद्ध हो। वीद्यांपर्य-पु॰ [शं०] पूर्वापरया भाव, पूर्वापराया अनुक्रम ।

वीवांदिक-वि॰ (छे॰) प्रवादं-संदंधी। वीवांह्यिक-वि॰ [यं॰] पुत्रांव संबंधा पुत्रांवमें किया

धानेबाला । यौविक-दि॰ [रो॰] पर्ध्यका, प्रानीन; रीयुक्त ।

यील-न्दी॰ शस्त्राः सिंददार ।

धीलना॰-स॰ वि.॰ कारना । षीसकी-छो॰ [मं•] शूर्यनमा ।

पीलस्य-दिव [रांव] प्रशासनांवी। प्रशासकी गीवी

बरपन्न । ए० शक्या क्रवेरा विनोपमा बंदमा । वीला - पु॰ एक प्रकारको गरहारू विवास स्ट्रीको प्राह

रश्मी सभी रहती है। वालि-म्दी दे 'दीवा' । पु [गं) सम भूना प्रशा

क्षत्रः इस प्रकारके अपनी रोटी । वीलिया-पुरु देव 'देरिया'।

बीली-ओ॰ पीरी, कोडी: पैरवा पहारी पीत हवा भागा वैरका निश्चानः धरणःपिष्ट ।

चीम्प्रेम-दि॰ [रांक] पुलीया संदंगी। पुनीयादा। पुनीयादे गोलमे अपन्य । पुरु इंद्र (१) ।

पीलीमी-भी॰ [मंग] रहरी पत्री श्रमी, रहादी ।

-मंभप-पु॰ बदन् । थीता~पु+ नेरका श्रीना शाना शहनरका पता पर पार

कृष, मेन भारि जैहरेगरका बर्दन । यीप-५० (लंग) पूनका महीनाः एक ग्दीकारः ५४ ।

थीची=स्री॰ (गे॰) प्राप्ती पुरिप्ता । यान्यर-दिन (तेन) में लहमाननांत्रीत पुत्र पुत्रसम्बत्त

-श्रम-४० व्यवस्था

सीरक्षरिक्षी=स्थे= [४ ०] मुख्यारिको ।

प्रतिर्देश-पत्र (शत) तेर्या प्रतिकृतः सम्पन्ना बरका है । प्रतिकार = रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्राइ है

प्रतिग्रह-१० (तेर) स्टायम, बीचे दी; यम्ह । प्रतिश्राद्या-स्रीव विके वर्देश वश्वत न्या रहनेकाल

मुक्तिरहरू - ए । (११०) श्रुतिरहति, क्रिट । अन्य श्रुव्य श्रुव्य न C' 52 1

क्रितिहास नव । । भी विष्टित प्रश्वाप व क्रियायम्=पर (संब) दिन्दी करोत्रसे निर्देशेतर स्थान कर्मा श्रीत्यन दिशी हैश्या है बायने पहें ब्रह्मा है

ग्रमिसर्विम् -१४० (८१०) प्रीम्प्टच्य अरुवेशन्त । प्रतिराद्यां(शिक्) नद्र (श्रेष) देश 'हरिनेद्र' ह प्रतिप्राध्या - स्रो० (४०) प्राप्ता ।

क्षानिमाण-पत्र (रांक) यामध्ये बदनेते रिका कानेवाणा 241

प्रतिमागान - पुत्र (६०६) लैकर या दिल्ली होतेही जुलादर बरी लंडना पार्रिसी कायार नियुक्त करनाइ विरोधी या

fast wiegt arrive a प्रतिप्राप्तित-भी किन्हें भी दह अदिने मेहार आहि it sat t

प्रतिशिष्ट्रनीक (मेंक) जी बड़ी भेजा का फिरी काव्या fager fert mer it juiter mitt, feth: farer निराद्यमा दिया गया हो, विराधना प्रमान्त्रा प्रदेशका

प्रतिसीत्। प्रतिसीय-दिश मिन्ते दिश्मा पुत्रा हरणः

प्या स्था । ম্ৰনিয়াধ্য=দু= (৮০) ফণ্ডৰাৰ ৪ mage-wie feel to bertet's

mferein, mferein-ge (i's) gern, mit t Midela-do [e a] minitt bidenitt mimanejm' mit 20" of "1 7" 17 18 18" 1 17 8 18 1 प्रतिप्रमान्यक के कि के कि कि मानिक में कि व

प्रतिमादम् पत्र (सर्) शुक्रमाः प्रतिष्टः करेना । ministruje (e.e.) marren a प्रतिप्रमुक्तारेक हेर्सन हे जिल्लाहर क्षित्य की करिए क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र THE STATE OF

おとくれいがっている (から) かいまい かくまいかん だまる 世界中部中一時を1 (4)の2000年の16人のかりから प्रार्थिकोत्रकार्रको अर्थहरू, एक (४०) बद्धक का करोहरिए। देखे

*-e' + etaloguates fire) troops where four-monds Robber Erren Hern Sade det Et B

क्रानिस्त्रपूर्व हिस्सु ५ दिन, दुन हिरोपी वर्णा दन बर्वने संस्थान र Wierange fen, foren, feire, merte men BE MINTER MY TARE BOTH BY BOTH FOR 如花子母·西月2日十日秋月9日 10mg·前室 新食香 配子

医牙形神经节 High we wille, to fine, with the distance Rid to the 192 fort of the select State 电影电影性态化 电影电影话》 紫红红绿色中电子鱼 医皮型细胞素

Print the make of their bit

प्रतिषष्ठ-पुर्व (२०) १९, जन्मून १ क्षीताक्षत्र-प्रवेशियो द्वतः व एए में स्ट्रा

श्रतिष्क्रच-पु= (शंक्षे समितेश ११४), शहर १ प्रतिषक्षा-न्व विधि श्रेषाता, वेरिस्ट्र प्रतिष्ट्रीय-पुर हैंबोरी प्रार्थिश रहरह का रेज्यरेए क्षेत्रे स कार्यस्था स्टबा कारा ।

प्रतिकाश्य-दिन [मंग] दिल्पे बदादा काला महा है। हैन प्रतिष्ट-दिक दिलेको सक्तर, मनि प्र १

प्रतिष्टा-बीक दिल्हे विक्रिक प्रवृत्ति , इक्ष्मात, क्क्ष्मात, क्क्ष्मात, क्क्ष्मात, destinuit erren feit erre einfig fer क्षान्त्रप्र वद्यात्रः, जगहः, पृथ्वीः, चरः, वर्षणः, साधानः, वीरव काम महीरण कीवण है। में सरका हरती, हरीती, मार्थे हर्दे दिन्देश बहुदी सम्पूर्ण के महामुद्रिका करिएल

बार्च हेर्ड होता कार्यवा व्यक्तिहेर की प्राप्त अपने रहा। प्राप्त वर्णा हुभ ३ -- श्रम् - वृ० देव 'संस्वरूप' १ प्रसिष्ठाम् -पु ० (०१०) स्रायादा अपन्य, राहान, रनशः नारः क्वास्त्रा क्वितामानवा दृश देव (ग्र'दरानदे, १०वेदान्तेत

केंद्र का बीज कराई की बीरा-कार्यकर स्थापार करा है और ची बहबहादे मुर्वेद्रपष्ट द्राजाभाग्री द्रावसमी बाउ से शही। & familier ein midm weit, ihr minemantete 477 E F श्रानिकाच्य-पुरु [श्रान] क्य दिए क्यमेंद्रा काता देशीरेश

की रक्ताना, का गांब बरमा । प्रतिष्टाप्रिया-(भ)-दिक, पुर [1's] सांदर्शया बारे 4 1973 क्षानिहर्शिक्य-विक्रीमन्त्री विक्राहर प्रतिकृत्यन विकासित है।

श्रेतिष्ठाचान्य्(चमु)-हर्व (१०) श्रीरवद्यानीत स्राह्मसर्वारा E M', Elivery & क्षतिरिक्षण गाँव वर्तेसाँ वर्ते हो त्याची श्रीतिक स्थाप सारी, बीव महारी है we also, yet free good folker, for the few fengugme mere fe mar frem de menteren

far, errer e c ge freg t क्षा विश्व का न वृत्र हैं। को परश् के क्षार महान हुए हैं। "रना है maninte-fee funt fram unfile freit freit 76 80 8 14 16 1 4 1

Washingerade (be) Ger, Nece trat 14 44. # · 6.24 } 04.0 * 5 क्षीक्षंत्रीतित्व) - १६० (४१०) रमक अवन हर देशाया १

क्षेत्रिकेलक्षणकुरू उपन्यों द्वाराध्य अर्थ अर्थात अर्थ अर्था fem à fem 23 to à fon et et mon é, e ext क्षत्रकार हेळाल्या है। वर्ष करिया है कर वर्ष बहार संपर्ताति । of F. Fr () may so for return, or the fit with the देव हुन्। , प्रक्ता -, वर्त्यान कर्नु रवर्ग, क्षाप्रकार राष्ट्र ह Agriculate mare fiebe, et ein ablitation et fie bei der

eres m. 4.45's 4.450b, m. 48.6, 2"+1.67 1 क्षा कर होता है। वास कर में कि मार्थ के मार्थ के मार्थ

Pur 1

प्रवर्ग-पुर (संर) उत्पर्भ; उत्पनता; अविरेक, अधिकता; सांचनेकी क्रियाः शक्तिः विस्तारः विशेषशा । प्रकर्षक-पु॰ [मं॰] स्विनेवालाः कामदेव ।

प्रकर्षण-पु॰ [सं॰] धुन्ध, मदांत करना; खींचना; इल घलामा; लंबाई: लगाम: चायुक: उत्तमता: म्द्से अधिक रुपया बयुन्द करना ।

प्रकर्पित-वि॰ मि॰ दिया हुआ, ताना हुआ; मूदके अवि-रितः वयून किया हुआ। प्रकर्पी(पिन)-वि०[मं०] प्रकांत्रक, उत्तृत्र, श्रेष्ठ; चलाने-

बाला, नेतृस्य करनेवाला ।

प्रकला-सी० [सं०] कला(मनय)या साठवाँ मान ।-(ल)-बिद्-वि॰ अग्रान । पु॰ व्यापारी ।

प्रकृतपना-सी० [सं०] नियत गरना, श्यिर करना । प्रकृदिपस-दि॰ [सं॰] बनाया हुआ, निर्मित, रिमत; नियस

क्षिया दुआ, स्थिर किया दुआ। प्रकृष्य-वि० [मं०] निधित या रिथर किये जाने योग्यं । प्रकश-पु॰ (सं॰) चाषुकः सूत्रमलिकाः चोट पर्देचानाः वध यरना ।

प्रकृष्टि-पु०[सं०] पृथाः कृशका सनाः शासाः बादुका कपर-का हिरसा । वि॰ उत्तम, प्रशरत; मर्बेथेष्ठ; बदुत बड़ा ।

मक्डिक-पु० [मं०] दे० 'प्रकांड' । मकोदर-ए० (मे०) वृश् ।

प्रकास-वि॰ (सं॰) यथेष्ट, काफी: असमें कामवासनाकी अधिकता हो। पु॰ एक देवता; इच्छा; शृति।- अक

(ज) – वि॰ श्रयामर गानेवाला । प्रवासीहर - ५० [सं०] इरहासर नान करना । मकार-पु॰ [र्श•] भेद, किरमः शीति, देगः शास्त्रयः विशेषनाः । प्राकारः परकोशः। प्रकालन -पु • [सं०] गारणा यक नागः यक तरहका साँप। वि॰ दिगक। पीठा वरनेवाला ।

महादा~पु॰ [मं॰] स्थोतिष्मान् पदार्थीसे उत्पन्न होनेशसी बर चिक्त भी रेबर या भाषाचनस्वये हारा चारी ओर दीवती है, तेत्र, भाकोह, बीन, उबेना, अंपहारहा उल्ला भागपः भूषः विद्यासः अभिन्यस्तिः रषट द्योगाः प्रदृष्ट द्योगाः आर्थिमीयां किमी प्रंथ या पुस्तवका कोई विभागः प्रतिहित स्यातिः महद्वासः पीतव । वि॰ शकास्युक्तः स्पृतः स्पृतः मध्य प्राथित रहिता अति मन्द्र । -क्ष्मां(न)-पुः गर्ते। -काम-दि॰ स्यातिका इच्छुकः। -क्रय-पु॰ सुरेशाम दोनेशाला शरीर । -नारी-न्यी॰ वेरवा। -वियोग-पु॰ ऐमा दियोग औ संदर्ग प्रहा हो। -संयोग-पु॰ वह शंदीय थी नवपर धबट ही १-वर्गध-पु॰ मार्गप्रशानिके किए वेशा दुआ केंचा शांध शियरह रोधनी महावी काती है। (ला॰) मार्वप्रदर्शक । प्रकाशक-दि॰ [र्रः] धमधीलाः प्रकाश वरनेवालाः अभि-भ्यक्ष बर्तेशामा प्रदर बर्त्रेशमा प्रतिह । पुरु पुरुद्ध मारिकी ग्रासक्त प्रका कानेनामा, 'प्रीकार्ग' हुदै।

महिष्यभी स्वावता बहरेशना। - जाना(न) -संवाहान-पुरु [राव] आमेर्ट्डन बर्थना संबद ब्हामा सन्द बादर प्रदेश बरमा का करणाई सामने । स्थाना जहारिए ।

S+ 100 1

श्रंगदिः सरको स्चित करता, विशापनः विष्णु । वि० प्रसाशित करनेवाला । प्रकाशमान-वि॰ [सं॰] चमवता हुआ, पोतमानः प्रसिद्ध। प्रकाशवान्(धत्)-वि॰ [मे॰] प्रकाशयुक्त । प्रकाशासम्ब-नि॰ [मं॰] चमरीला, शीरिमान् । प्रकाशारमा(समन्)-वि॰ [सं॰] चमकीला, सतेन । पु० विष्णुः शिवः सूर्व । प्रकाशित-वि॰ [सं॰] प्रकाश्युक्तः प्रवट किया दुशाः आहोतित विया हुआ; हपतावर प्रकट विया हुआ; विद्यापित । प्रकाशी(शिन्)-दि॰ [सं॰] प्रकाशयुक्त, चमग्रीला ।

प्रकाश्य~दि० [सं०] प्रकाशित करने योग्यः प्रकाशनके योग्यः प्रस्ट । पुरु प्रकाश ।

प्रकास=-पु॰ दे॰ 'प्रशाश' । प्रकासना = - म॰ कि॰ प्रकाशित होना । प्रकरण-५० [सं०] फैलाना, रिमोरना; मिश्रण ।

प्रकीर्ण-दि॰ [मं॰] फैलावा हुआ, दिरीरा हुआ। मिलाया हुमा, मिश्रितः अस्त-व्यस्त विया हुमाः शुम्पः परिशिष्टः पुटबल । पु॰ किसी पुरतक या प्रेथका कोई परिच्छेत्र, प्रवरणः अनेक प्रदारकी बरनभीका निभगः विशेषनाः विधेयः विन्दारः पेंबरः पुरस्य बस्तुओंका संग्रहः करिहार करंत । -केश-दि० जिसके बाल दिसरे हो । -केशी-म्दो॰ दर्गा ।

प्रकृषिक-पर [र्शर] चेवरः घोडे हे निएए समाधी जानेवाकी बन्ध्यीः धोहाः पुरस्त बस्तुभीका संग्रहः यह परिच्छेर या प्रकरण विमर्ने पुरुवल बार्ने दी गयी हो। यह पाप बिसका प्रावरियत्त धर्मधर्मीमें न बनावा गया हो। प्रकरण, अध्याव । दि॰ टिनराया, फैलाया हुमा; पुरवास । प्रकीर्तन-प॰ (सं॰) प्रशंता, यदासा गानः पीपना । प्रकीर्तमा - नी॰ [मं॰] उत्नेग बर्गा, नाम मेना ।

व्यक्ति-स्ते श्री स्वारित वद्या पोषणा । प्रकार्तित-वि॰ प्रशेषित, बिसुरा वश गाया गया दी: हिसकी योषणा की गरी ही ।

प्रकार्थ-दि॰ [मं॰] यीलाने दोग्या विमेरने मौग्या मिधित हरने थोग्य । पु॰ रीटा बर्दन, बहिरार वर्दन । प्रकृष-पु॰ (एं॰) यह मान को रूपमा पर मुद्रो है बराबर द्दीना बन्, पह १

प्रकृषित्र∽दि॰ [मे॰] दृष्णिः सशाहुभा । प्रकृतित-दिक [मक] दिशेष मद्देश मृदिन, अति शाह । प्रवास-विक [मेर] देव 'प्रवृद्धित'। प्रकृष्य-पुर्व (वेश) सुदर श्रुति ।

प्रकृष्मीही-सी॰ [सु॰] दुर्स । प्रकृत-विक [र्गक] जिमहा कार्रम हो पुरा ही, कारम्यः

fant un Det the negrun: ger fent gen नियुक्त प्रश्निता ग्रुद्धा कराना करिन्ता सरन्तरू श्विष्ट् । शहनार्थ-पु॰ [८०] ददार्थ अन्याद । दि० धान्त ।

प्रकृति-म्याः [र्थः] रहणातः विशासः यह सुनन्तरः किम्बा परियम करण है, बगाबा प्रातान क्षास्त्रक मुक्तार (वर्तक): माना प्रमाणा पंत्र महामूना वहारी,

- 14

प्रमन्न, सुर्ती । प्रस्याति –सी॰ [सं॰] विशिष्ट स्याति, अधिक प्रसिद्धिः

प्रशंसाः रंदिय-प्राधाः ।

प्रस्थान-पु॰ [सं॰] स्वर देना, स्चित करनाः ग्यनाः अनुभव बरनाः।

प्रस्यापन-पु० [सं०] प्रसिद्ध करना, प्रचार करनाः स्चित

प्रगंड-पु॰ [सं॰] बाँद या कुदनीने करितकका भाग । प्रगंडी-सी॰ [सं॰] दुगे आदिके चारों शोरकी दीवार, प्राकार, परकोटा। परकोटेंमें वीदाओंके बैठनेकी जगद ।

प्रगीध-पु॰ [सं०] पर्वट, दवनपापदा ।

प्रगट-वि० दे० 'प्रगट' । ६० प्रगट रूपमे ।

प्रसटन-पु॰ दे॰ 'प्रकटन' ।

प्रसादमा = अ० क्रि॰ प्रकट दोनाः यस लेना । स॰ क्रि॰

प्रसराता - स॰ फि॰ प्रकृत बरना ।

प्रशत-वि॰ [मं॰] भागे सवा या वहा तुआः जी अलग या अधिक दूरीया हो । - जानु,-जानुक-वि॰ जिसके पुटने दक दूस्टेमे बहुन अलग हो (ऐसे प्राणीती टॉमें प्रानः

पनुषाकार दोनी दें)।

प्रगति-न्दीः [मृत] भागे बहुना, उन्नति । —हािछ-विव भागे बहुनेवाहरा, उन्नतिधील । प्रगत्स-चर्ण [मृत] प्रेमी और विविकास अनुहागका छदयः

म्बानुरात ।

प्रसम्मन-पुरु [मंद] आसे बहुना, उन्नति करनाः पूर्वासुरामः। प्रसम्बद्धा-पुरु [मंद] अनदा जवादः।

प्रगर्भन-पु॰ [मं॰] गरमेनेकी क्रिया; विद्याना । प्रगर्भ•-दि॰ दे॰ 'प्रगरभ'-'बेल्यो मगर्भ बानी कटोर'-

स्परामितः । प्रमारम् - दिव [शंक] प्रमिमायात् : जिस्सी दृद्धि अवसर्वे । स्रमायाः नाम बर जादः, प्रायुक्तस्मतिः सावसीः, दिसम् बरः। शृष्ठः, वीदः, बीमनेमें संदीयः स वरनेवालाः, भीतः, सुर्वेकः, स्रमायतः, द्रमारः निष्ठेत्रः, अनिमानीः, स्थानः । स्रमायसानः न्हीं। श्रीः प्रस्तकः होन्या भावः, स्निमानः

चानिनाः उत्पादः श्रीहरदाः भृष्टनाः वृत्रान्ताः वधनाः भीरताः निर्मादनाः प्रतिक्रिः अध्ययम्।यः प्रमादभा~गी॰ [गं॰] नाविज्ञासः थ्वः थेर्~टे॰ प्रीयः

माविकार दुर्गीर पुत्र करें।

प्रगतिभाग-विक [गंक] समेदी; प्रशिक्ष, स्थात । भगमनाक-भक भिक्त प्रदेश देशतः स्वस्त होता । भगाद-विक [गंक] दुवामा हुमा, तर दिया हुमा; भाग-विदा परा गहरा, प्रमा विदेश । ५० वहा नद्यत्वी ।

मगाना(न) - पुण, विश् तिशे भवाग गार्नेशाना । मनामी(मिन्) - दिशे प्रत्यात करणेशानाः ती मनाम कर रहा हो ।

मगापी(विज्) निक् [तंत्र] आनेवाला को बाजा आरंब बर रहा हो।

समीव-दिश् (रांक) सामा पुत्रा व पुत्र वाजा ह समीवि-त्योक (क्षत्र) गत्र समाहक रोग ह

47-8

भगा चन्यार [सर] यह प्रशासना रहेत । मानुष्य-विरुक्तिरे प्रहत्त द्वाराना, बल्प्य द्वारहानाः बुल्लः,

दश्चः सीपाः सरण स्वभावका, अङ्गदिरुः अनुकूरु । प्रमणन-प० मिं०ी सीपाः, चिकना करनाः व्यवस्थित

वस्ता । वस्ता । व्यक्तिन्दि॰ (इं॰) यसकर, दिकना या सीधा किया

ागुणत—१०० (५०) वरावरः । दक्ता या साधा । क्या हुआः सुव्यवस्थितः ।

प्रमुको(जिन्)-वि॰ [मं॰] चिरुनाः बरादरः मंत्रीपूर्ण । प्रमुको-वि॰ [मं॰] अधिकः उत्तम ।

प्रमृहीत-विश् [मंग] जन्छी सर्घ प्रकृत किया हुआ। विस्का उन्चारण विना संधिक नियमोंकाध्यान रमें किया नवा हो।

प्रमुख-वि॰ [सं॰] अन्छी तरह प्रदण करने थोग्यः (यह पर) जिस्मों स्वरमंति न दो सके (स्था॰) । पु॰ रमृतिः, वात्रयः।

बर्गे-अ॰ [सं॰] प्रायःकाल, तस्ये, सबेरे । -सिदा,-दाय -बि॰ जो नवेरा होनेपर भी फ़ोना रहे, प्रायःशायी ।

—१४० जा नररा द्दानपर भा साना रह, प्रानःशाया । प्रमेतन-४० [मं०] प्रानःकाल किया नारेशाला ।

प्रप्रह-पु॰ [गं॰] प्रहन करना, प्रशाना; निवमन; स्ट्रे-प्रहण अन्दा भेद्रप्रहणका आरंगः वाग्दोरः तरानृष्टें क्यो दुई रक्षाः कीशः दिरणः धुनाः कीरका पेशः येद, नेपाः भेदी, थीतः नेगाः अग्रमाः कींग्रार वृथः अनुप्रहः विष्णुः चोठः आदिवी साथना ।

धाइकात्का सामगाः प्रमहण-पुर्व [संर] प्रदम्न साने या पहनेको क्रियाः जियमनः सूर्वे या नंदमाने प्रदणका मार्गाः सागशेरः

नियमनः ध्ये या चंद्रमात प्रदणका मारंगः नगडोरः वंधतः योडे वादिकी माधनाः रोतृभ्य यरना । प्रकार-पर्व गिर्ण शहर यरने या प्रवरंगो जिताः वहनः

सराजुदी रागी। बागडीर । प्रश्लीय-युक शिकी रेगा दुमा सुन। पर या महानदे बागी

औरका नकडीयाँ पराः यानायमः हारीमाः पेड्ना गिराः अस्तरका नकडीयाँ पराः यानायमः हारीमाः पेड्ना गिराः

प्रचार -- वि॰ दे॰ 'प्रवर' । प्रचार -- दु॰ [बं॰] विद्यमा विद्यांता स्थापना । विद्याला

प्रपटनार्थ- त्रश्यात प्रवट होता । प्रपटा-नर्यः [संग्] विभी शासनी भूष और आरंशिक वात : - विश्व-विश्व प्रविधी शासनी मासूनी जान-वात ।

प्रयोगः प्रयोगः प्रयोग-प्रशान-पु॰ (१००) महानदे शहरी दरवानेके सम्मेका त्यान या हात्राः नावयत्र भेरिया

्यदा मा गुड़र । समार-पुरु (मेर्) अदिह प्रश्या, चेट्रपण राग्या, देख,

कपुर १ (४० मधिस सम्पेदाला, देवू । प्रथमान्त्रसंख्य (११०) वर्षान्ते देवसे यस मणुद्धा ।

प्रयाप-पुरु विशे मारा, दरण प्रदा पारी १४रेश

प्रमुच-दुः (१०) करिति, नेहरास । प्रमुच-तिः (१०) वृत्त्येशकाः चहरः शानेशकाः वृत् - करिति, नेहराक ।

प्रचीह-दिश [१ १] अति योग ।

प्रच्छेटक-प॰ (सं०) अविश्वसनीय पनिके प्रति पत्नी हारा गाया जानेवाचा गीत ।

प्रच्छेदन-पु० [मृं०] काटना, द्रकडे-द्रकडे करना । प्रचयव-पुरु [संरु] पतन, अंदा; श्ररण; पाँछे इटना; प्रवति । प्रच्यवन-पु॰ [मुं॰] पतनः क्षरण, चृनाः हटनाः हानि । प्रच्यावन-पु० [सं०] इटनेके लिए प्रेरित करनाः इटानेका

साधनः श्रमन करनेवाला । प्रचयत-वि॰ [मं॰] गिरा हुआ, पतित, अष्टः विचलितः

शरित, हारा हुआ; निष्कासितः भगाया हुआ। प्रच्यति-छी० (सं०) अपने स्थानने भ्रष्ट होना, पननः

प्रदालना #~स॰ कि॰ धोता।

प्रजंक≉⊸पु० पर्लग्।

प्रजंध-पु॰ [गं॰] एक राह्म; एक बानर । प्रजोधा-सी॰ [मं∘] जॉधका निचला मान ।

प्रजंत = -स॰ दे॰ 'पर्यंत' ।

प्रज-प॰ [मं०] पति ।

प्रजन-पु॰ [मं॰] गर्माधानके निष्ट नरपशुका मादासे संगम: संनान अरपन्न करना: जन्म दैनेशला, जनक ।

प्रजनन-पु॰ [मं॰] मंतान उत्पन्न बर्गाः जन्मः बीर्यः भगः पुरुषको लिगेदिया मंतानः नरपशुका गर्माधानके टिप

मादासे संगम करना । वि॰ उत्पन्न करनेवाला । मजनविता(त)-दि॰, पु॰ [मं॰] उरपन्न धरनेपाला ।

प्रजनिका~मी० [मं•] माता ।

प्रजनिष्णु-नि॰ [मं॰] स्तरम ऋरनेवाला । प्रजनुक-पु॰ [मं॰] शरीर ।

प्रजन्-सी० [सं०] योनि, शग ।

प्रजय-स्री॰ [शं०] विषय ।

মনদো•-১০ বি । বরুণ সদনা ।

प्रज्ञरूप-पु. [मंग] इपर-उपस्ती बान, नृप।

प्रजयपन-पु॰ [मं॰] बाद बर्माः गय बर्ना ।

मजिएत-(व॰ [मृं॰] कहा हुआ। पु॰ जी बान कही गरी हो। बार्गालाय ।

मजपन-वि [मंग] वेगवान्, नीज गरिवाना, तेज । मगवित-दि॰ [शं॰] दुलाया दुलाः प्रेरित किया दुलाः धनाया हुआ।

धमपी(पिन)-रि॰ [गं॰] अधिक देगवाना, तेत्र। पु॰

दूग, दरकारा ।

मनोनक-पु॰ [शं॰] दम ।

मसा-न्यी॰ [मं॰] प्रवतना शंपति, औषादा शुरू, वीर्थः मानी। विनी राभा दारा चानित जनताः विनी राज्य या राष्ट्रयी अनवा । - काम-विक शेवान आक्रमेसला, र'गानेपपु १ पुरु शंतामधी सामना १ —**सार**—पुरु प्रदा रापत्र बर्तेरामा, श्रृंशती, म्छा । -सुसि-की प्रवा-क्षी रहा । -र्सनु-पु॰ वंडसंदराः वंषः, स्थान ।-संब-इ॰ मशाका महाके महिलिको इत्यो परिनालित शुक्रान-व्यक्त । (त. प्रमाया प्रमाई प्रतिनितिहो । इता परि-थ (०१ (एमाय-व्यवस्था) । -सार्थ-पुर बन्द्रास्त गुप्त-बाम १ महन्दिन शंतास देनेदाला, क्रीसम्बद्ध बहुते-बाजा । –हा-सी । बीहारन हुए बस्टेराकी रखें अंजरित गर्मदात्री । -दान-पु॰ मंतानीत्पत्तिः चौदी । -हार-पु॰ सूर्व । -धर-पु॰ विष्णु । -नाथ-पु॰ प्रदााः मनुः दयः राजा । -निषेक-पु० गर्नाधान ।-प-पु० राजा। -पति-पु॰ सक्ति रचिता, सहिका अधिष्ठामा देवमा, स्टिकर्ता, महा; दश आदि दस शोकरता जिन्हें महाने सृष्टिके आदिमें उत्पन्न किया थाः विश्वरूमीः सूर्यः अपिः विष्णुः यद्यः राजाः जामाताः पिता, जनकः हिनेट्रिय । -पाल-पालक-पु॰ राजा। -पालन-पु॰ प्रश्राहा पालन । —पालि—पु॰ शिव । —पारूय—पु॰ रात्राका पर । -ष्ट्रि-सी॰ मंतानको बर्ती, संतानकी बर्ह्ता । -व्यापार-पु॰ प्रवासी देख-भारु, प्रवासा €तवितन । -सत्ता-नी॰ दे॰ 'धवार्तत्र' !-सत्ताकः-सत्ता'मक-वि॰ (ग्रामन-व्यवस्था) जिसमें शासन-पूप प्रजा या उसके प्रतिनिधियोंके हाथमें हो। -सुक्(ज्)-पु॰ प्रया। -हिस-पु॰ जल । वि॰ जी प्रवास निय हिनसर हो। -**हृद्य-पु॰ एक** प्रकारका साम ।

प्रजायर-पु॰ (१०) निट्राका भभाय, नीर य भागा, भनिदाः सतर्रताः रथकः पररा देनेवालाः विष्णु ।

प्रजागरण-पु॰ [मं॰] जागना।

प्रजासक-वि॰[मं॰] बच्छी तरह जगा हुमा; मार्थान । प्रसात-वि॰ [मं॰] सरम् ।

प्रकाता-स्वी॰ [सं॰] यह स्वी क्रिये संनान उत्पन्न हुई हो।, प्रजाति - नी॰ [सं०] प्रवा, मेनाना संनान सरस्य बरना।

प्रवतनः प्रवतनः श्रीकः पीत्रको कार्याच । प्रताध्यक्ष-पु॰ [रो॰] मूर्व; दश ।

प्रजायी(चिन्)-दि॰ [गुं॰] उत्पन्न करनेशना (तैमे--'बीरप्रजायी')। [स्वी० 'प्रजायिनी'।]

प्रजारना॰ - स॰ कि॰ पूरी तरह जनानाः वरीत बरना ।

प्रजायती-नी॰ [मं॰] मारंडी थी । दि॰ मी॰ गर्मेंशी। मंत्रानवाधी।

प्रतिन-वि॰ [मं॰] श्रोहा दुधा, प्रेरिन । प्रतिल्-दि॰ [मं०] विवदी। प्रतिन−पु• [मे•] पात्रु।

मजीवन-९० (मे॰) जीरेशा ।

महरना॰-म॰ दि॰ प्रस्थित दोनाः प्रसाधित होगा । प्रवृश्तिः प्रवृश्चितः - दि॰ दे॰ 'प्रवृश्चित्र'।

प्रजेप्यू-विश् [मंग] मंत्रानेध्य ।

प्रजेश, प्रजेश्वर-पुरु [शंरु] प्रशःक्षतः राजा । प्रजीम •- पुरु देश 'प्रदेश' ।

माञादिका-स्थै॰ [मं॰] माङ्करा एक ग्रंह । क्रिल-दिक (वृत्) प्रवृत्र पृद्धिकाला, पुढिमान्, मनिमान्: (हिन्दी बाजरी) जानवारी रसनेशाना (ग्रमागुमे)। पुरु

बुद्धिमान् मनुष्या ५रिए, स्टिशन् । प्रमुका-मी॰ (रांव) प्रद होतेश राष, बुदियशा, विद्राम । प्रकृति-क्षे (में) उनने या एप बराने से निया वा माना वृद्धिः व्योगः, बद्धामाः मनिता, कीना गरः देशाः

REFT HE ब्रह्म-की ब्रिंडों वृद्धि, स्थित, ब्रांटा म्यरप्टी। दिएते ।

-बाय-पुरुषक पूर्वीतक अनुति । -क्ट-पुरु एक allemen -gu-fte glaufer effet i ge ba

श्रतर्दन-प्र॰ [मं॰] ताइनाः ताइना करनेवाछाः विष्णाः

अवल-पु॰[मं॰] फैलावी हुई पांची उँगलियों सहित हथेली.

काशीके प्राचीन राजा दिवोदाप्तका प्रथ ।

240 प्रणिधि-पु॰ [मं॰] मेद रेना; गुप्तचर मेजना; गुप्तचर; अनुबर; याचन; अवधान । प्रणिधेय-पु॰ [मं॰] गुप्तवर भेजनाः नियुक्ति, प्रयोग । प्रणिनाद-प॰ [मं॰] भारी शब्द, धोर ध्वनि । प्रणिपतन, प्रणिपात-पु॰ [मं॰] प्रनाम करनाः चरणीपर विरता । प्रणिहित-दि॰ [सं॰] रसा हथा, स्थापितः प्राप्तः पीलाया हुआ; समाधिरथः कृतर्यकृषः सप्तर्भः गुप्त रूपमे पता समाया हुआ: मिश्रित । प्रकी-पु॰ [मं॰] ईशर । प्रणीत-वि॰ [म॰] बनाया हुआ, निर्मित, रचा हुआ; निवद: पेंडा हुआ: अलग किया हुआ: त्रिय: विसुद्धा प्रवेदा कराया गया हो। प्रवेशिनः विदित्तः जिसका संस्कार किया गया हो, संरक्षनः (दंउके रूपमें) लगाया हुआ। पु॰ मंत्र द्वारा मंस्कृत अस्तिः एकाया हुआ प्रदार्थ । प्रणीता-स्रो० [मं०] संत्र-मंरकृत अल रसनेका एक पात्र । प्रणीय-विश् मिले देव 'प्रलेप'। प्रणुत-पि॰ [गं॰] रतृत । प्रणुक्त-वि॰ [गं॰] भगाया हुआ, विष्कामित । प्रणुश-दि॰ (ले॰) प्रेरितः फंस्य हुआः भेता हुआ, प्रेविदः मगाया हुआ। गनिवक्त किया हुआ। दक्ति । प्रणेतन-९० [मं०] भोगाः प्रशासनः नहानाः वह पानी बिएमें कोई बन्तु धीवी जाव। प्रणेता(न)-पु॰[न०] पथप्रदर्शन बरनेवाला, नेता; बनाने-माला, निर्माताः पुरतक या अंथहा रचयिता, हेन्यहः हिसी सिद्धांत या गनका प्रश्तंक । प्रणेय-वि० [मे०] हे जाने थोग्य, प्रापतीयाः प्रथमदर्शनके योग्या विस्ता नेतृत्व किया वाया ओ किमीरे यद्यों हो. मधीना महीने मोग्या निश्य करने योग्या क्रियरे लीहिक धंसार हिथे वा मुक्ते ही। प्रकोद-पु० [मं•] प्रेरिन धरमा; भेतना, प्रेवन । प्रणोदित-वि॰ [मं॰] निमें प्रेरणा की गयी हो, प्रेरितः भेगा हुआ, देखित । प्रसंपा==भी+ रीश, भनुष्ठी होरी। प्रसद्ध+-दि० दे+ 'प्रापद्य' । प्रत्यस्य - (२० दे० 'प्रत्या'। मतग-दि॰ [रो॰] फेला हुआ या फैलावा हुआ: आहुत: त्रमा हुआ वा ताना हुआ: दिर्ग्याः। प्रतति-भी (मंब) विगास समा, बस्नी ।

प्रवन-१० (०) प्राचीन, पुरास ।

भ्रतपन-पु॰ (शु॰) सवाना, तम बर्नेश ध

मनमद-पु [त्र] ६६ मदास्य दमा ।

(-4. (t.) d.f #tml :

M'0.4; 1510 1

BIRTON I

पंजा; सात अधोलोक्षेमिसे एक । प्रसान-५० [मं०] पीडाव, विस्तार; एता; एतानंतु: मिर्गी रोग । प्रसानिनी-सी॰ (सं॰) शान्ताओं प्रशासाओंवाणी द्रतत फैन्डनेवासी सता । प्रतानी(निन्)-नि॰ [मं॰] द्रतर पैला दुमा; त्रिसमें नंत हो। वताप-पु॰ [मं॰] राजाका कोश-रंट-जनिन तेजः बीरताः प्रमुख, पराक्रम आदिका आगंक फैलानेवाला प्रभाव, रकरानः प्रज्ञष्ट तापः मदारका पेह ! त्रनापन~पु॰ [र्श॰] तम करनाः दुःस्य देगाः सनानाः विष्युः शिवः एक नरक । वि० तम करनेवानाः पीरक । प्रतापपान्(यत्)-वि॰ [वं०] प्रनारी । पु० विग्यः दिव । अतापस-पु॰ [गं॰] बदुस बहा तपरथी; मरोद गराह । प्रतापी(पिन)-वि॰ [बं॰] प्रनापनाला; दुःरा देनेताला, सनानेवासा । प्रतारक-वि०, पु० [गुं०] वेनक, रुगः भूने । प्रतारण-पु॰ [मं॰] प्यना, दगी । प्रतारणा-नी॰ [री॰] दे॰ 'प्रतारण'। प्रमास्मि-रि॰ [मं॰] वो हमा गया हो, मंनिन । प्रसिचा-भी॰ दे॰ 'प्रस्वेना'। श्रति-म्दी॰ नदमः बदुम सी पुरत्यी आदिशेमे एक अदद (जैमे-इन पुरुक्की सभी अनियाँ दिक गयी)। एए० [धं0] दक चएमर्ग भी दाब्दोंके पहले आहर विशेष, विष-रीवता (प्रतिकार, प्रतिरम्), बदला (प्रतिदान, प्रतिकल्), बीप्मा (प्रतिदिन, प्रतिगृह), स्टब्स्य (प्रतिदेवना, प्रतिमृति), मामना, राम्युरय (प्रायश्च), संश्न (प्रतिवार), मुद्दादना, और (प्रतिमर) आदिका कीवन करता है। स॰ और-नरका संबंधमें, दिख्यमें; सुरादरेमें । प्रतिशंतुर-९० [मं०] प्रतिरही, १९ । प्रतिक-दि॰ [मं॰] वो एक काशोरणमें राहोदा गया हो। प्रतिहर-पु॰ [सं॰] दिस्तीर्च दीनेरा माद, विमीर्गनाः विशेषा प्रतिशोषा श्रीपृति । प्रतिकरबीय-दि॰ [तं॰] दी रीत। जाया शिक्ता प्रति। रीप विदा जाता। प्रतिकर्णस्य-दि॰ [धं०] पुराने ता क्या पाने दीत्रा मन्तु-[4+ [4] अति शेला अति वृक्ष्मा बदेन प्रत्याः (क्या): प्रतिहार करने योग्या जिल्हा प्रतिहार किया जावा चिकित्या करने या भागा करने चीम्य (रोग) प्रतिष्ठमाँ(मुँ)-दिक, पुक [बंक] अस्तरका बरका है.हे. मनास-दि॰ [ती॰] दिहेर्च ६ पते त्याया शुभाव प्रदित्त । बाह्य, मायप्रशास्त्रा महिद्दाद करने राज्य। प्रतिकर्म(न)-पुर [र/र] काम्या प्रतिकारा शीवार, व्याल्यम् १ प्रत्यं-पुर [१४] पहर तुर्व, वित्यं क्षत्रम ब्रह्मा, प्रतिकर्ष -५० (००) प्रकृत प्रकृत राहेल । mingan-Te feje fate et femi t मत्रकेष+६० (र'+) शितके शरेह, शका स्थारमास । प्रतिकत्त-विक (blo) चलुक्की प्रशास म क्रिसाहा, मनवर्षे-दिव दिनो दिन्दे ब्युच्चे कर दिना या करेंद्र

वत्पनीय ।

```
द्रवाल-दर्व ३
 ETE A C. PARTE
원보이면 사건을 [474] 같은 학교에 다른 본
सभागी-को (४०) देव (प्रवर्धी ह
धमादरमान्यु > हे । "प्रान्यास" ।
प्रमाधक्र नर्देश, बुव देश शिक्षास्त्री ह
प्रतिपाल्य-९० (१°+) बाद, प्रारम् ४
सन्दिप्राप्तक-तुव देव "स्टेल्य त्र" ह
```

요청하는 국무 [4 7] 화기막, 확인한 모르는데 화인님,라워크는 모 प्रार्थापु - ६६ (४६) ईदरलाह, भ्रीलाह; ४०० ह, अव दह (अस्तू-का तत है, मक्कान रिका, बान, में त्या क्लिना शक्ति या दिन नाम विक्षेत्राच्या स्थेत्रा होते हो । 🗕 प्रश्चिम

ति। भाषकात्र, प्रेन्देकात्र । लक्षण्यस्य व्यव दिवसूत्र यस्य द श्चर्यक्य-दिन [४७] दिश्यम् अवदेशामाः व्यावदा करहे-Trees.

प्रपंचम् च्यु र सिंद। दिवता देवता का एका करता है utfag-fer (c.) feine feret feit em ib. रिम्मारिया और हरू कशाबी, अवस्थित विकास अस mit fibr

प्रचेषां (विन) नाव १००) प्राच इत्येवना, श्रांतकः, भे भे बर बंद में होता बर हर बहर में बंध्या है なけんなる murn-an ibbel an meil fiebent fieb? biene

करत की रेक्स में रेट्र एक गाम ह मीने विकास कर्य है um fenenten feief ab mei mit fin able ficht mmi from be strate . 49 4 grafes - the file force which धावाय-पून (सन्) भी ही शरक व दिव दिवा ए व

mann aller fein mit fenen a क्षप्रदान **व**ेश (४ ४) दशन्दी, सह ३ 問題をmar (ma) gita Mita, せみご gita, あなっち granger - go (ro) niem, alja i

megfenmilte fo ef mit erfd's begin ? man wite for a fix and street and another, was that for excess was parent and ह रामह चूरी का मेहन्द, हुन्। न महाहा अच्च हुन्न हुन्ना mand net leaf mega t

provimite feie fleie tanis efries ma giregm tone 2 W 5 P 5 मुक्तान्त्र महा हें नव मार्ग प्रदान हैंच्या, युवान संस् #4mm (44 }-18+ (++) miles >

Betranti = te , Jo filo , Fr feet z merente fer fire, gt. greimante met. THE ENTER AND PROPRESENT AND ADDRESS OF THE WAR TO SAME AND A CARE SAME WAS 如此中, 斯·七四本年二十日日 於上京衛月二

有する様となる こくりょう アモン をないで 自て後を wert, writing . In fine to ex-

在在大型公司中 (127、集中的、平均的、助力不远点点

METER - Ex Ex of No. 5 % on jobs now factor Comb !

un flow, wen now, folis hat, or दिशमप्रवर्गको की है लिहता प्राप्त के बच एए बच

मनेका हत्वे की होत कही, श्राम हर प्रमुख्या है।

सप्तानमञ्जूष है। भी विश्वास, क्षेत्रे के देश ह क्षातीन-प्रश्लेख होते हा एकेश प्रयानी(दिष्य)-पुर्व (४००) वर पर्याप का रहता जिल्ला दिवाश शहर की ।

द्रशाय-द्रव हिंगों साधा से रे मर्गाहब-पुर्व किंग् होत् र संद्रास्त्र-देश द्वाको द्वास्त्रोत् ३ प्रशास्त्र-१० शिकी वर्षा इ प्रकृति(रिष्ट्)-५० (६०) बनराय र अविकासक् - मृ≈ [संश] बरदाता प्रश्नाह, पृथ्य र

ष्टरिन प्रश्चेन्नम्भद्रे (बंध्वे स्त्रार्थः । प्रतिकृष्टर्≠पुर्व [६,४] दण्यात्र भाषा, स्रोत करान्ताः धारीक्षक्र नम्ब हैवावहै द्वापीक्षमाह बागारीवाचा व प्रवृद्धिम-पुर्व (१४०) सिनो हता, हेरता, हर वो दश है ह क्रवीय, प्रवीत्रार्विक है। वह सुन् तुमाह देशह देशा प्रदर्शित-व्हाव (स्त) एवंदी क्रिए। ३ प्रश्चिम्पुर [१4] बहा शहर ह

44-4 : {0 + } 2 4, 4m 1 द्रद्रवारः प्रद्रवारः प्रदृष्टारः ~ु० (००) ४४६(०) स्पूरक करेंदर हैंदर है पूर्व का क्षेत्रभग, बर के एका। दूर के हैं matem-de felng namel ant druit an Baat

क्षण्डिकार नकी ५ हैं। ५ है को होती, साम्बर्देश्त ह mellen fraßteine anti ger ibne ger unt! med mel ann t द्ववर्ग-१० (१०) अनदा के पेरते देशक र क्षक्रिक नकुर हेल्यों के बहुत से यहां है हर, हुए कि ए स्क्षेत्र बहुद (छन्) से देवर देश है

शहीको नका र हिल्लो बेपेन्डा देश ह Balakanda (na) ang kang t menter ber ber ber ber ber ber 雷雪 指注第一条 不 不 不 不 不 不 不 不 不 人 人 本 美 、 在 在 八 人 八 人 क्षापुर्वेद्याच्याचनीत्र केटावर् कृत्या, अर्थे मुलक्ष प्रश्नीर्वत्र क्षेत्राष्ट्रकरीर र (क्षेत्र) हेन "रहाले हे

nger-for for the tree fration feet by me AT THE THE WHAT WHAT " BE LEVEL. क्षीत्र एक्ष्याच्यां वेश्वर हो ह । अबूनुबन्दिन रीवन रीवन RESPONDED OF werm freue Bere, mubient termen be-

marting rivers for more notice or to complete 经未帐单 咖啡网络高格色多种体 重型性 粉末 要养 ter for gridening the district sprint of makely the selection of the color of erafaabiisida wax daraafsad pib

प्रतिहा करने योग्य । पु॰ स्पृति करनेवाला, बंदी, स्तुति-

प्रतितंत्र-पु॰ [मं॰] प्रतिकृष्ट शाम । –सिदांत-पु॰

"पाठक ।

८५९ प्रतिचार-पु० [मं०] बनाव, शृंगार, प्रसाधन । प्रतिचारी(रिन्)-वि॰ [मं॰] अभ्याम करनेवाला । प्रतिचितन-प॰ [मं॰] बार-बार गौर करना, सोचना । प्रतिचिकीपा-सी० [सं०] प्रतिकार करनेकी इच्छा । प्रतिचोदित-वि॰ [मुं॰] किमीके विरुद्ध प्रेरित या उत्तेतित किया हुआ। प्रतिच्छंद, प्रतिच्छंदक-पु॰ [सं॰] प्रतिमा, प्रतिमृतिः प्रतिच्छद्म-पु॰ (मं॰) दाँकनेवाली वस्तु, आच्छादन, आवरण । प्रतिष्यप्र-वि॰ [सं॰] आहतः बसाच्यादितः विषा हुआ, प्रतिच्छा#-स्त्री॰ दे॰ 'प्रतीखा' । प्रतिबद्धाया-सी० [गं०] प्रतिरूपः प्रतिमाः प्रतिबिन, परछाई । प्रतिष्टायिका - न्दी० (मं०) प्रतिमृतिः प्रतिमा । प्रतिच्छेर-पु॰ [मं०] बाथा, विरोधः प्रतिरोधः व्यटित प्रतिखाँई, प्रतिखाँह, प्रतिखाँही-मा॰ परधाई, प्रति-विदा प्रतिजेघा-स्रो० [गं०] श्रीयका भगता भाग । प्रतिजन्म(न)-प॰ [मं॰] प्रार्वन्म । प्रतिजन्य-प्र॰ [म॰] उत्तर । प्रतिज्ञदयक-पु॰ [मं॰] टाल मटीलयाना उत्तर (जो नरमी-यगढे साथ दिया जाव) । प्रतिजागर-पु॰ [मं॰] निगरानी, देखरेख, पदशा प्रतिज्ञासरण-पु॰ भि॰ देसरेस या निगरानी बरना-पद्या देना। प्रतिजिद्धाः प्रतिजिद्धिका-स्थे [ग्॰] ग॰हे भौतरका प्रतिजीवन-पु॰ [मं॰] फिल्मे की जाना, पुन बीबन । प्रतिज्ञांतर-पु॰ [गुं॰] एवः निग्नदृश्यान (न्या॰) । प्रतिज्ञा-मी॰ [मं॰] स्मि कार्यको करनेन करने आदिका दर नेत्रस्या वाषाः अगुगाम बादवरे द्वि अवस्त्रीहेते परना जिनमें शाध्यक्षा निरंश किया जाना है (जैने-परंन वहिमाम् दै-न्या): अभियोग, दावाः व्हीसार, अंगीसार । -प्य,-प्यह-पु॰ बह पत दा दागर विस्में हैछ-स्पेन कोर्र प्र'त्रा की गया की, दवस्त्यामा, शर्मनामा : -पालन-पु॰ प्रतिष्टा पूरी बरना, प्रतिदासी रहा, प्रतिराज्य निर्वाह । -भाग-पुरु प्रतिदासीह देना, प्रतिहा म निवास । -विशेष-पु॰ प्रतिश मोह देनाः एक निमहत्त्राम (म्या॰) । -वियादिम-वि॰ जिनकी सराई दो गरी हो। -सम्प्रमास-पु॰ प्रतिहासेगा दक्षः निवह-रचान (स्वा॰) । –हानि-मी॰ ९६ निग्रहस्वात । मनिकात-दि॰ [मं॰] शिमकी का दिमके दिवद्ये प्रिन्दा की गरी हो, क्रीबार किया हुआ व पुरु प्रतिदान हुए प्रतिकातार्थ-५० [तंत] बद्दार, दलव्य ह

प्रतिसाम-पुर्व (ela) स्विद्धः वरीकृत् व

प्रतिकृष शास्त्रसे लिया द्रथा सिदांत । प्रतितर-पु॰ [सं॰] शंदाः कर्णधार, मल्लाह । प्रतिताल, प्रतितालक-५० [मं०] एक प्रकारका ताल (मंगीत)। प्रतिताली-मा० [मं०] कुंडा, नाभी। प्रतितृणी-सौ॰ [सं॰] एक प्रकारका यानरीम । प्रतिदंड-वि॰ [सं॰] आधाका पालन न बरनेवाला, गृष्ट । प्रतिदत्त-वि॰ [मं॰] बरलेमें दिया हुआ। वापस किया दुआ । मतिदान-पु॰ [सं॰] किसी सी हुई वस्तुके बदनेमें दूसरी वस्त देना, बरहा, विनिमयः निशंप या भरोहर बापस बरना । प्रतिदारण-पु॰ [र्थ॰] काइना, चीरना, विदीर्ण बरमा; प्रतिदिन-अ॰ [र्न॰] प्रत्येक दिन, इर होता निस्य । प्रतिदिघा(यम्)-पु॰ [मं०] स्वं। प्रतिदत्त-पु॰ [40] बद्देशी भेजा हुआ दृन । प्रतिदेय-वि॰ [मं॰] जो ध्दला वा लीडाया जाव, बदली वा शीटाने योग्य । पु॰ सरीदकर शीटायी हुई सीज । प्रतिहृद्ध-पु॰ [सं॰] दो तुत्व बल गर्गोकी सहाई; प्रतिहृदी. प्रतिद्वदिता-सी॰ [मं॰] प्रतिदंदी दोनेका भाषा बरादर-बालींकी सहाई । प्रतिइंडी(डिन)-पु॰ [मं॰] विषशी, विरोधी, शत्रु । वि॰ मुकारका करनेवाला, प्रतिप्रशे । प्रतिपान-पु॰ [गं॰] विश्वत्र्य । प्रतिपायन-पु॰ [मं॰] बाबसन् । प्रतिपुर-पु॰ [सं॰] हुमरे थोहे हे माथ शुना हुआ थीता। प्रतिष्यवि-मी॰ [मं॰] हिमी शामका यह प्रतिहम भी वसके किमी बाधक पदार्थमें टबरानेपर कापत्र बीजा है और मृत श्राध्यक्षे उपरांत शुनाई पहता है, दिशी शब्दक्षे वयसीय ग्रामार्थ परनेवाला उगीने प्रापन हारगुष्टय शहर, अनिष्यनित-दि॰ [म॰] श्वा हमा । प्रतिष्यान-पु० [मे०] दे० 'प्र'ग्रंबाने'। प्रतिष्यानित-दि॰ [यं०] श्रंत्राया दूथा। प्रतिनेदन-पु॰ [बं॰] बादीबंददे साथ अविशदम प्रमा धन्यबार देनाः बधारे देनाः प्रयुक्तापूर्वेद स्थापत बरना । प्रतिनप्तः(ज)-पुरु [६१०] प्रातेष । प्रतिनव="वि॰ [ग्रं॰] जुन्त, शदा । प्रतिवाही-की (श्रेष) एएनापी। মনিসাহ-দু॰ [এ॰] ই॰ 'মণ্ডিংনি' । प्रतिनादित-दिव [मेर] वहाँ पा निगुन प्रतिनाद दुशा हो, वियुने प्रविताद प्रश्न हो, प्रवित्तरित । प्रतिनायक-पु॰ (११०) जारक्याप्रीवर्धाः (१९१०); प्रतिमार प्रतिवादी-क्री क [क्षेत्र] प्रतिवादिशी क्षी क् प्रतिशेष-दि (११४) दिस्के दिस्के प्रतिस की व्यापः Rfang-go [do] etel, fegge 1

ताननेके लिए फेंका करते थे कि बीर्ड जमा तो नहीं है। प्रतिपुस्तक -सी॰ [मं॰] किसी पुरतक या टेसकी इस्त-

लिसिन प्रतिकी नक्ष ।

प्रतिपृज्ञन-पु॰[मं॰] अतिवादनके बदले अभिवादन धरनाः भावभाग धरना ।

प्रतिवृजा-सीव [संव] देव 'प्रतिवृजन' ।

प्रतिपृत्तित-विव[संव] जिसका प्रतिपृत्तन किया गया हो । प्रतिपुत्रय-विव[संव] प्रतिपुत्रनके बोग्य ।

प्रतिपोपक-पु० [सं०] सहायकः समर्थकः ।

प्रतिप्रणाम-पु॰ [स॰] प्रनामके उत्तरमें किया जानेवाला

मसिमत्त-वि॰ (तं०) बदलेमें दिया हुआ, मरवर्षित ।

प्रसिप्रदान-पु० [गं•] प्रतिदान, प्रस्पंण ।

प्रतिप्रभा-न्त्री॰ [सं॰] परराँदी ।

प्रतिप्रदत्त-पु॰ [मं॰] प्रदनके बदलेंगे पूछा जानेवाला प्रदनः उत्तर ।

प्रतिप्रसय-पु॰ [गं॰] निधिद्दका पुनर्विधाना जावादका

भववादः प्रतिमन्त । प्रतिप्रसत्-विश् मिश्री विशेष अवसरपर निविद्य होने हस

भी स्वीकार किया हुआ।

प्रतिप्रस्थाता(गृ)-पु॰ [मं॰] छोल्ड छोमवाधी ऋत्विकी-

मेसे एक । प्रतिप्रस्थान-पु॰ (सं॰) शतुके पश्मे नाना, शतुमे मिल

जाता। प्रतिप्रहार-पु॰ [सं०] प्रहारके जवारमें किया जानेशला प्रहार।

मितिमाकार-पु॰ [शं॰] दुर्गका बादशे प्रकोश । मृतिमिय-पु॰ [शं॰] बर्रशी को कोनेवाणी क्या या सेवा ।

मतिप्रयम-पु॰ (सं॰) पीछित्रो और क्षत्रमा । मतिप्रयम-पु॰ (सं॰) प्रतिबंद, प्रतिब्दायाः विशोधे दिये

द्वरका अनुरूप प्रतीकारः परिणामः नतीत्राः प्रस्कारः बद्द क्षेत्र अनुरूप प्रतीकारः परिणामः नतीत्राः प्रस्कारः बद्द क्षेत्र वरलेने दिवा जावः

प्रतिकालक-पु॰ [सं॰] अस्य बाहरी, बरनुकी प्रतिकालित बरसेका बंध।

प्रतिफलन्-पु॰ [श•] दे॰ 'प्रतिकल' ।

प्रतिकारित-नि॰ [गं॰] प्रतिविधितः जिल्हाः बदशा दिवाः गणा को, प्रतिकृतः

प्रतिपृत्तक-दि० [शंव] प्रपृत्त :

प्रतिर्धेश-प् [१०] वॉपनेशी क्रिया वा मान, वंपना कका-यह, वापी, अररेप्ट, प्रतिरोधः सदा बना दहनेवाला वॉर्च्या विराद र

प्रतिधेषक -पुरु [गंव] बॉयनेवाला; दोहने या वाचा टासने-वाला, प्रतिदेशहर प्राप्ता, इक्ष्मी ।

मिविधेयान (यन) - विश् (विश्) प्रतिवेधी सुध्य । प्रतिवेधित प्रतिवेधी निर्माण (विश्) अनुविधी सुध्य ।

नाम् दोने राजा वर्णान । प्रतिवेधी(पित्र)-दिश् शिश्रो बोधीय नाम वासा वर्षे वासे-बाला रिक्रोक्टर्स देशी नाम वर्षे ने स्टेस्टर्स

बाबा: होइटेन महा हिते. बादा बहुँदी हो । प्रतिबंधुमापुर [गंन] बह को बंदुने शयान हो। बह जो बद

मादिमें समान हो।

श्रतिबद्ध-वि० सिंगी बेपा हुआ; लगाया हुआ, जमाया हुआ; जहा हुआ; विकार मितिये हो, जो मितियेका विषय हो; वित्तीमें कीर माथा लाटी गयी हो; किंता हुआ, अटका हुआ; जो विमीधे हम प्रकार संबंध हो कि अन्य म दिखा जा मजेंद्र हताहा, अलग दिखा हुआ।

प्रतिबल-दि॰ [मे॰] समान बल्दाला । पु॰ श्रुष्ठ; सामध्यं, शक्ति ।

प्रतियाधक-वि॰, पु॰ (सं॰) रोक्तेवाना, वाषा हालने-वानाः वष्ट पहुँचानेवाला ।

प्रतियाधन−पु॰ [सं॰] रोढना, बाधा दालना; प्रायाष्ट्र बरमा; सष्ट पर्दुवाना । प्रतियाधित−वि॰ [सं॰] निवारित, हटाया तुआ; वाधित;

पीड़ित । प्रतिबाधी(चिनु)-वि॰ (श॰) रोकनेवाला, गांधा - डीलने॰

बानाः बष्ट पर्दे वानेवाला । पु॰ श्रम्भ, विपक्षी । प्रतिबाहु—पु॰ थिं। बादुका अपमानः, लक्ष्मकः एक आर्षः । प्रतिबिंद्यः प्रतिबिंद्यः प्रतिबिंद्यः विविद्यः विविद्यः । प्रतिबंद्यः विविद्यः विविद्यः । प्रतिविद्यः विविद्यः । प्रतिकृतिः विद्यः । प्रतिकृतिः । प्रतिकृतिः । प्रतिकृतिः । प्रतिविद्यः । प्रत

इसरका प्रानावर माननका (महान । प्रतिविधक, प्रतिविधक-(४०, पु० (मं०) टायाशे तरह

अनुगमन करनेवाला । प्रतिबियन, प्रतिवियन-पु॰ [मं॰] प्रतिबियन श्रीमाः

अनुसर्णः नुमता । • प्रतिविद्यमाः – भ॰ क्रि॰ प्रतिविदिन होता ।

प्रतिथियितः प्रतिथिदित्त-वि॰ [मं॰] क्षिमकः प्रतिदिव पृत्रा वो, यर्पण भादिमें प्रतिकालितः।

प्रतियोश-पु॰ [गं॰] यह बीज जिम्हा बीशाब महही ' गुना हो, मरा दुआ बीज ।

प्रतियुद्ध-वि॰ [सं॰] जगा युगा, जापदा आणा युजा, धान, ध्यमना निन्दा युगा प्रतिक्षः प्रदान् । प्रतियुद्धि-को॰ [सं॰] आगरणा प्रत्या याविरोधका जाव ।

प्रतिवृद्धि नगे॰ [गे॰] जागरणः राष्ट्रना याविरीयदा मान । प्रतिकोच-पु॰ [गे॰] जागरणः, जागनाः ग्रामः रपृतिः बोशमें भानाः।

प्रतियोग्नर-4॰ (५०) जगानेशानाः शाम व राजेशानाः । प्रतियोगनान्तुः (१०) वरानिशे विषाः राग करामाः । प्रतियोगिन-वि॰ (४०) जगाशः द्वभाः विमे विमो वातकः । प्रतियोगिन-वि॰ (४०) जगाशः द्वभाः विमे विमो वातकः

प्रतियोधी(धिन्)-(व॰ (वं॰) नागण हुमाः दो शीप्र ही नागने वा रात भाग बरनेशना हो।

्यानन्या दान्याम् करन्याच्यास्य । प्रतिभट-पुर्वः [मंद्र] विमेत्री, शत्रुः द्वापु दश्या दोशाः - दल्देती ।

स्रतिस्थल-पुरु [६०] सत् का, सन्ताः (६० सहस्य । स्रतिस्थल-पे० (६०) द्वीति, स्थान त्यस्य मुद्दि, स्थान विभागा केदिव द्यांति स्थानपुरु । अनु-पुरु दक्ष सर्वेत्रस्य । -सस्य-पुरु-प्राति-स्थान ग्रील्या स्थान सर्वेत्रस्य स्थान, स्थेत्रस्य देशां । -स्थान्तिः स्थान मुद्दित स्थान । -सारस्य(सिन्न)-शिः विशो प्रात्म

की, महिनामुख्य व क्षितिक प्रतिकामान्त्रात् ।] -मीनस-वीक्षा महिनामुख्य व क्षितिक प्रतिकामान्त्रात् ।] -मीनस- प्राप्तीतितन—दिश्रोदेशोदेशका भागो होते की द म्रमुन्द्रभारित (० व) में तारहत्व वहत बीज हिट्या बन्द्र रहीत। म्रावीव व नज्ञ के विवेदी है

Killer William **ग्रामील - हो व**्यक्त है की खुन है जिल्ल

unn-we ert ft, aber a fer fe ef uten mer, प्रकार, हेडा अध्यापक वीर्त्यहर कुर श्रीकान्य अर्थना १ मुस्रा र न्या तुष्ट र प्रथा काला व क्षारिका भागस व

प्रमुख्य-दिन (गर्भ) म्थिएत, स्रवेत्र, बल्ट्रीयः बहुत्र गुरह र सर्वे दिना-दिक्ष किको अन्ति प्रदेशक र नवाइन्द्र नक्षी के अन्त बाद्रिक व -अद्रय-दिव निके अन्तिक अन्तिक प्रान्त्रक ब्राह्म

प्राप्तर नरीत (शर) क्षेत्रस १ तुर अति करें सामित्र-दिन चिन्डे अवस्था बुधार स दर्ब । genfigmennt . fein nu metent wirt :

स्रापृष्ट नहित्र है। १) घडनका द्वारा, ७६८महा द्वारा, स्ट्रांड mergange (de) wed gire, eler eine ein. ۾ هنديڙه ۾ ڪها " - آسما

unen fer fert Greit Greinen und fert gert, bier 関で 4.55 5、ちゃ 4 Bb 5 प्रशिष्ठ कि कि को प्रता का बहार कार है लेखन, ही प्रशा at the of the first to this at family fair.

gum grei gere einum fan ber, merend fix, aret e quar termené mon five of the to fame their some girl word इ. २ ४ १ दिन प्राप्त, बद्दाही देवपर ह

क्षप्रें महरू है है है है जो के क्षर्य है है है है के क्षर्य के क्षर्य के क्षर्य बार्ता के विद्यानकी राजन ब्रीमान बार रहे हैं।

muri(fem) - fec. an 'ete abrut buf- a 出記[詳 egs (en) st ezesse) おねっとだった。 を (e s

महीं देशमा करें के कि के महत्र का बी के महत्रामा महत है प्राथीनक्षम् त्युत्र देशीवते सुन्य बहावाद् धी हवा। अनुहत्ताद् करायात्र problement for the sign water of the margente feie, tren tie, metre untreffen Fa mouth the may to strong the Eliterations

的声像打扮和相手给 医皮肤疗法检疗上下 · 141 4. 2 我我我看着中心人 (44) 不知 在1553 电二重电子管理 짧답 『존역 나라는 수 글러스를 맞납러운 눈에는 악하셔 와 등속 봤는지 모

श्री पृत्तिको: "१० (४०) दश्य बर्धरेटान, सहय-4 my 4 m 4 1 18 m 7 8 2 18 2 2"

under to fell all at the estate and a 내리선명 구락구 복용도가 선수는 문자들은 도

grander to love to the same to be and the 有音的字节 经申约 感光素 安全日

まずなかったい、いらいからいないか まかっ ब्रम् प्रोमेर्डिक है गाँउ र (६०) । वस्त दश्य क्रमार्ड । दश्य र

717 " graded the tree date of day gar gar is reddan ; THE THOM FOR THE RE BY I WELLETTE

胃细胞 经完全帐户 机 家 改造者特别 医血性蛋白素 Breatists And a 140" Englaphic of

. mie . - go to "ria" :

হুছত্ব নৰিও বিবিধী ইঞ্চনৰৈ প্ৰতিপ্ৰতীয় স্থানৰ বিবিধ ৰাত্মিক कुछ, बक्रा : लुक्काचार व दिक्त स्वतेत्रीकृत सब, सन्दार र

90 9 9 39 39 M. FT 168 8 प्रवृत्या(ध्यव्)-दिव (व्या) दिवेगी द, मण्यां प्रश्ति । इक्क-पुर क्लिको दिया बार्च का कोरश्ये ए नेहे पिन धिर मध्यका अवद, प्रश्न, द्विष्य क्रवत्या क्षतिकार बारावाद के तुर्रोदेने मध्य प्रमान के ने के होंग शाप्तर पहेंड की के जैवानी दिया हमकी, बाम, दिया me er fent og sørere fant mert meles ache हीक में (ब्दान) र नहीं प्रशीचन हिन भी वर्षी नहीं है।

A. 4.9 1 ब्रचक्रकान्(**रप्)** - दिर (ल्ल) ब्रामध्ये एना दुरा, लॉहर ज्ञचनक-हेरू हिन्दे स्टलाने अर्टर देखन कीहर तीरो

55,41 Ex. 1 प्रकाश-दर (१००) हिंद्वीया एक प्रतिप्र रोडे केला कीर बहुबारे स्थापन क्या कुका है। बहुत पीप पहरे w K# +4+ \$0 1

प्रकारिकाक्त - है । यह ग्लाहा ५८१ । सन्दर्भम = ५० हेरावर्ड हिटारेटचा तथा हिटारियारी पुर के थे गाँउ स्वयास्त्रमञ्जूष है। कहेर देशवीयां स्वाप्त स्वर्णाय स्वर्णाय स्वर्णाय स्वर्णाय ब्राह्मण्याच्या (स.) अव.स. क्षरतास, कार्या, पुरुषे हिर्द Beer mer waren, mort, mit fat ibente fert Eff. ment, is fel d'as atoment femal una beidiff. " अध्यक्ष च में व प्रशतित बर्गाति । क्षेत्र में गरियो में गरियों व अन्यार्थ . बुंच कर्यदर्श संबंद संबंद हैंग र वर्ष पता वर्ष मधी मधी व कर पत कत्रका करावार जास्यानक बाद कार्य प्राप्त

我也在我们有在一个时,我的知识的 常性性異々では (t. v) おけりょうしかが からん れなり 보고 하는 사람이 아무를 다 아무지 수는 모든 가는 이번 수는 살이 되었다. हुम । हु। र प्रिष्टा एए।इस्ट अनुष्यको जेपासर्थ \$\$ 4.64 4 A. 48

water a serven a file files sear wear 童を 味をむり がか かっと arguitementene quint mor estat quir, ma dife

See East have gare

the things are not by the on the or the state of करान, मदान हमझे देशा है सदानत कार्य के देवली 426 2 4 1 4

医咖啡甘蔗生气化的治疗免疫 电影 医皮肤 化甘油石 to agree miles a profession to green to seems, with their diff वी, ब्रांट्र इस किन कारच करने देश की 直面 不到走到大街中面,我们有好,我们把 那么多个 . इ.स. १८५८ अला जब संदेत । असर देखा १८ देशूड 高於 哪門家,哪一時,我們 東北十季中期門 स्कृतकारम्यात संय वर्त्रमाय वृक्ष सम्माति । 密度等他一种大学的实际情况, 李树 分析 野红 野红

एक दानव । वि॰ एक 🛍 जैसे रूपश्रकाः संदरः उपवक्त । प्रतिरूपक-पु॰ [सुं॰] प्रतिबिंग; मृति; चित्र; जाटी पत्रादि । वि॰ एक ही जैमा (समासमें)।

प्रतिरोद्धा(दए)-प॰ [सं॰] दे॰ 'प्रनिरोधक'। प्रतिरोध-प॰ [सं०] रोक, रुकावट, वाथा; प्रतिबंध; विर-

रकार: हाका: चौरी: धेरा टालना: विरोध । प्रतिरोधक, प्रतरोधी(धन्)-पु॰ [मं॰] प्रतिरोध करने-षालाः •रोक्रनेवालाः, टाकुः चोरः घेरा टालनेवालाः

विरोधीः बाधा पर्वेचानेवाला । वि॰ बाधा डाळनेवालाः मवरोप करनेवाला ।

प्रतिरोधन-पु॰ (सं॰] प्रतिरोध करनेकी किया । प्रतिरोधित-वि॰ [सं॰] जिसका प्रतिरोध किया गया हो। प्रतिरोधिस-वि० [सं०] जो (पीपा) पुनः रोपा गया हो । प्रतिसंध-पुर [गुरु] लाम, प्राप्तिः निदा, इस्तामः जानना-

समयता ।

प्रतिस्क्षण-पु॰ [मं॰] विद्व । प्रतिलाभ-प॰ [सं॰] प्राप्तिः पुनः प्राप्त करना । प्रतिकिपि-सी॰ [मं०] विसी किसी दुई चीवकी नकत । प्रतिलोश-(द० [मं०] विपरीन, उलटा; अनुरोमका उलटा; नीच, अथम; अप्रियः प्रतिकृतः, वार्यो । पु० अप्रिय या शानिकर कार्य । - ज-दि॰ क्रिमकी उत्पत्ति उस बर्गकी मी भीर दानतर वर्गके पुरुषधे हुई हो। -विधाह-पुरु देशा विदाद जिममें वर मीच वर्णका हो और कम्या उध

पर्णकी । प्रतिकोसर-प॰ [शं॰] वसदा क्रम 1

प्रतिवचा(यम्)-दि०,प० [मं०] एचर देनेवानाः (कानुनदी)

ध्याक्या करनेशमा । मतियच(स्)-प॰ [मं॰] दे॰ 'मनिवयन' । प्रतियक्तन-पु॰ [मं०] उत्तर, जवाबा प्रतिस्वति । प्रतिवरमरः प्रतिवर्ष – अ॰ [गं॰] इर म:ल ।

प्रतिष्यिता-न्याः [मं०] भीतः सपन्री । प्रतिष्वित्र - दि॰ [मं॰] एक दी जैसे रंगदाला, समाज,

मतियर्तन~पु॰ (सं॰) धाँउना, बायम आना ।

प्रतिषदी(दिन)-दि॰ (१)०) जी महाबला हर गरे । प्रतिवसध-प्र॰ (सं०) गाँव। मनियानु-मी॰ [मं०] बद बानु जी रूप आदिमें दिसी

बरतुर्दे समाम द्री, मध्य बन्तुः हिसी बन्तुद्दे बदलेमें ही पानेशमा बर्गुः वष्मान् ह

प्रतिवस्त्वमा-न्ये॰ [रा॰] एवं अर्थानंदार जहाँ सब्सेय और जनमान बारबमें यह की गांधारण धर्म, शुब्दमेहमें, दश वाद।

प्रतियहन-प्रविशे पेटे में अला, कीरानाः निवास

मनियान् (च)-और [ग्रं+] उत्तर, अश्रद । uffeien-go [ein] mer, meie i fen mer 24

प्रतिवासी-मान [११०] है। 'प्रतिवाद'। प्रतिवाद ।

मानवान-दे (११) वर महेर विदर्भे दवा यम गर्भ हो । मिनवेरम(व)-दे (१०) वर्गे हिर यह र सब महत्त्वह है मनिवाद-पुर [१४] बादीकी बाबडे विदेशने बड़ा अपेर । प्रतिवेशय-पुरु (११०) पर्वत्रा ।

वाली बात, बादीकी बातका उत्तर; विरोध, संहत । प्रतिवादिता-सी॰ [मं॰] प्रतिवादीका माव; प्रतिवादीका कार्य ।

प्रतिवादी(दिन्)-पु॰ [मं॰] प्रतिवाद व (नेवाला; वादी-की बातका उत्तर देनेवाला; संहन करनेवाला, विरोध करनेवाला; वह विसपर दाया किया गया हो, मुहालेह; विरोधी, शत्र ।

प्रतिवाप-प्र॰ [मं॰] काथ बनने समय या बन जातेपर उसमें दबाएँ भिलाना 1

प्रतिवार-पु॰ [मं॰] निशरण, इटाना, दूर करना। प्रतिदिन; इर बार ।

प्रतिवारण-पु॰ [ग्रं॰] निवारणः विरोधी हाथी । प्रतिवारित-वि० [मं०] निवारितः रोका हुआ।

प्रतियाती-खी॰ [मं॰] जबार या उत्तरमें भेडा गया संबाद. अख़चररूप क्वांत । प्रतिवाश-पि॰ [मं०] रोटन करने बीग्य ।

प्रतिवास-५० [मं०] पहोसः सुनंशि । प्रतियासर-म॰ [गं॰] प्रति दिन, हर रोज, नित्य । श्रतिपासरिक-(d॰ (र्रा॰) तित्वरा, देनिक ।

प्रतिवासित-वि॰ [मं॰] आशाद दिया हुआ, बसाया हुआ। प्रतिवासी(सिन्)-प॰ [लं॰] वहासमें रहनेवाला, पहासा र्मि। 'प्रतिवासिनी'।] प्रतिवासदेव-पु॰ [गं॰] अपगांद, तारह भादि दिष्यते

भी शत्र ।

प्रतियाह-पु० [गं०] अन्त्रका एक भारे। प्रतिविध्य-पु॰ [छं॰] युधिश्वरका एक पुत्र। प्रतिविधात-पु॰ [गुं॰] शिवारणः रक्षण । प्रतिविधाम-पु॰ [मं॰] प्रनिकार: यहनिवात । प्रतिविधि-म्दी (गृं०) प्रतिकृत् ।

प्रतिविधितमा-मी (र्ग) प्रतिहार हरमेदी १५छ। प्रतिविधित्तु-पु॰ [सं॰] प्रतिहार क्रानेही रच्छा कर्तने

बाला (प्रतिविहत् - वि॰ [छं॰] सिहोरी ।

प्रतिविशिष्ट-वि॰ [मं॰] बहुन बहिया ।

प्रतिविय-पु॰ [मै॰] रिपरा प्रमान नष्ट करमेशाला परार्थ। प्रतिविपा-सो॰ [मं॰] प्रश्नीम ।

प्रतिविध्युक-पुरु [गंर] रावा मुवर्ग्या हुनगुंच्या वेह । प्रतिषिद्दित-दि॰ [मं॰] निवादित ।

प्रतियोत-दि॰ [मं०] दहा दुभाः दशया दुभा । प्रतिवीत-पु॰ [सं॰] विरीधी। प्रतिभा, प्रतिदेश ।

प्रतिविधि-दि॰ [मं॰] क्रिया भी ग्यम्मा बर्नेने शमर्थः भदिनीय, देशोह ।

प्रतिवेदित-(६० (मृं०) अत्याद विवा दुष्णा, अनावा दुशा । प्रतिवेदी(दिन्)-विक [शंक] ब्यहत र बारेन्सना, जालतेmaniferen i

प्रतिवेश्र⇔प्रव (१००) हर स्वर । प्रतिवेश-पुर [धर) प्रहेम; प्रदेशी।

प्रतिवेशी(शिन्)-पुर् (मार्) प्रतेप्त र

प्रलहार-प्रवर्तक जानाः विनाश, मंदारः संसारका अपने मूळ कारण प्रश्ति-में सांथा लीन ही जाना, सृष्टिता सर्वनाय: मृत्य: मृच्छां, बेदोद्या; एक सास्त्रिक माव निसमें मुख या दुःसके कारण मनुष्य जह हो जाता है (सा०); मारी या व्यापक संदारः जनार (वै०) । -कर-कारी(विन)-वि० दे० 'प्रत्यदर' । –काल-पु० प्रष्टयका समय । –जलधर-प॰ प्रत्यको समयका बाह्न । -पयोधि-प॰ प्रत्यके समयका समुद्र । प्रलखार-वि॰ (सं॰) जिसका एलाट केंचा हो। प्रस्य - प्र॰ [मं॰] अच्छी तरह काटनाः संह, सेश, द्रकड़ा । प्रस्यण-प्र• [में] प्रसंह कारना । प्रलविसा(म)-वि॰, पु॰ [सं॰] काटनेवान्स I प्रसचित्र-पु० [मे०] काटनेका सापन, इंसिया आदि । प्रसाप-पु॰ [धुं॰] दातवीत; अंद्र-वंट दक्ता, निर्धंक दात, भगवासः दुलका रीमाः ज्यराधिनयसे बेहोश होकर अंट-वंड वक्ता । →हा(हन्) - पु० एक सर्दका अंत्रन, कुछ-स्थांतन । प्रलापक -प्र• (स॰) रक्षशस करनेवालाः एक तरहका सक्रि॰ पात रोग जिसमें रोगी प्रलाप करता है। प्रहादी(दिन)-वि॰ [री॰] प्रहाप करनेवाला, जनाप-शनाप यव नेवाला । प्रसिष-थि॰, प॰ शि॰ केंप बरनेवाला । प्रलिस-वि॰ [मे०] निपरा हुआ, लिएश हुआ, दिस । प्रस्तीन-वि॰ गि॰। विलीन: हुप्त: प्रस्यको प्राप्तः विनद्यः हितः भेष्टाराज्यः जन्न । प्रसीनता-गा॰ मि॰] चेटागदा, वयता । प्रलीनेंद्रिय-वि॰ [मं॰] विसरी रदियों शिविल हो गयी हों। प्रत्रहित-वि॰ [मं॰] उप्रसना दुआ; सुद्रवता दुआ । प्रान्द्रध्य~ि [सं•] भी लालचमें पद गया हो। प्रावच्या-थिक, सीक भिको (वह स्वा) विसे दिमीसे अनु-नित्र प्रेम हो गया हो। प्रस्तुन-वि० [मं०] कारा तुमा । पु० वक नरका कीहा । प्रलेप-पु॰ [शं॰] हेए, पान वा कोरेपर कोई मसहम भारताः पान वा कोदेश शहानेका मनदम । प्रकेषक-पुर्व [मंत्र] प्रदेव बर्गनेवाकाः एक प्रकारका श्रंट 1 350 प्राप्टेयन-पुर [मंग] हेव करनेदी किया। प्रलेख-पि॰ [गंव] श्रेप बरने बोच्य । पु॰ शाय-सुधी, ग्राँटे शुप बाल । प्रसेष्ट-पु॰ [मं॰] एक प्रकारका स्थंत्रन, कोरमा । प्रसंहत-पु॰ (५०) घारमा । प्रालोहम - पु॰ [४०] वराणनाः दृददसः । प्रसादित-१० (सं०) दे॰ 'प्रचठित्र' । प्रशोप-पु॰ [मं॰] माद्य, विलय । प्रयोज-पु॰ [मं॰] अधिक कीम, कालया प्रकोमन । प्रकोशक-दि॰, प॰ [गं॰] प्रयोगन देनेवाला, लायध **एक्टर बर्गीशमा** ह प्रणोमन-पु॰ (गं॰) शालव देना, ' सम्बागः सम्बान-बहारी बाल्य ह

प्रस्ते नमी –औ॰ (लं॰) बाजु ।

प्रहोमनमें पहनेवाला । ਸਲੀਲ-ਰਿ॰ ਸਿੰਘੀ ਬਥਾ: ਚੰਪਿਨ । प्रसंग, प्रयंगम-पु॰ (सं०) पर्शाः पंतर । प्रबंचक-वि॰, प॰ [सं॰] रुग, ध्रतं। प्रबंचन-५० (स०) रुगना, भोरा देना । प्रवंचना-सी॰ (सं॰) हता, भोसेराबी, पर्नता । प्रवंचित−थि॰ (सं॰) यो ठगा गया हो, बिसे भेरा रिश गया हो। प्रवक्ता(यत्)-वि॰, पु॰ [शं॰] अच्छा बसा।वेर शाहिए बच्छी तर**इ** प्रवचन स्त्रनेवाला (रगु०) । अथरा-पु० [सं०] पश्ची; बंदर । प्रयचन-पु॰ [मं॰] विशेष रूपसे महना, अर्थ समगाी हुए कहना; बेद, पुराण आदिका उपरेश करना: शामा -पट-वि० शेटनेमें कुश्रुल, बाग्मी। प्रयचनीय-वि॰ सि॰। प्रवचनके थोग्य। प्रवट-प॰ मिंगे जी। प्रयण-वि॰ [सं०] हालुवी; टेदा, यह; राहा; रिमी वर्ग की ओर शुका हुआ, प्रश्चा नम्रा मामका शीया 👫 हेवा; अनुकूल । पु॰ चीराहा; हाल, उतार: स्रार् प्रवणता - वि॰ [२] प्रवृत्ति, शकाव । प्रवास्यत्-वि॰ [सं०] दे० 'प्रवास्यम्'। '-पतिद्यान प्रेयमी-सी॰ वह नाविका विस्ता नावक प्रतेम अने बाला हो। अवरस्यज्ञतुका—रडी० [सं०] दे० 'प्रवरस्यरपतिना' । प्रवस्त्यन् (स्) -[द० [मं०] जी विदेश जानेशमा शी। प्रवहन-पु॰ [६०] घोपणा । प्रवप-वि॰ [सं॰] रशुष्टकाय । प्रचपण-पु॰ [सं॰] ग्रंदन १ प्रवयण-पुर [शंर] चायुक्त अनुष्ठा क्योदा क्या हिस्मा । प्रचया(यस्)-वि॰ [सं॰] ईस, बुहा। प्रवर-वि॰ [र्थ॰] प्रधान, थेष्ठा सबसे नेवा । पु॰ प्राहाम यश आरंभ करनेके समय किया 'आमेबाला अकिकी माहानः संवतिः योव, संवामः दिशा गोवटे प्रराध मुनियों मेंसे कोई एकः अगरको रकती। आररणा वनामा -कान्याण-वि॰ बदुत गुंदर् ! -मिरि-पु॰ मत्रवी एक परित्र को आवस्त्र 'बराबर' प्रशह महलाता है। -जन-पु॰ अन्ते गुणीने पुक व्यक्ति । -सवित-रि° यह होट । -बाहन-पु० अधिनीमुमार रे प्रधरण-पु॰ [सं॰] आहातः वर्शवपर रीनेराणा रहेगा (30) t प्रवता-न्दी॰ [मं०] बोदावरीको एक ग्रहायह ब्रह्म हरी। की रुहरी। प्रवर्ते-पु॰ [लं॰] बहाबि, होमाबि; विष्णु। यह ब्राल गढ मिडीका यहपथ । प्रवर्त -पु॰ [तेंब] दिशी बार्नेहर का(या वरीनन) प्रवर्तक-पुर्वाने प्रकृत करतेवाना, रिशी बाममें सामे बानाः चनारेवाना, कार्म बरनेवाना, जारा बरनेवाना

 प्रतिसंबन्सर-अ० [सं०] इर साल ।

प्रतिसंधिद्-सी॰ [सं॰] किसी विषयका सांगोपांय ग्रान । प्रतिसंबेदक-वि॰ [सं॰] किसी विषयकी पूरी जानकारी

करानेवाला ।

प्रतिसंद्वार-पु॰ [गं॰] समेट छैनाः स्वागनाः किसी वस्तुमे दर रहना।

प्रतिसंहत-वि० सि०] समेरा हक्षाः स्वामा द्रुआ ।

प्रतिसम-वि॰ [गं०] जो समान न हो, विस्टाः जो मुकाबलेका हो ।

प्रतिसमाधान-पु॰ [मे॰] प्रतिकार, वर्षार ।

प्रतिसमासन-पु॰ [मं॰] निवारणः प्रतिरोध ।

प्रतिगर-पु॰ [म॰] रेश्नाका पिछला भागः वह पंतर जी क्याहवे पहले वर तथा यन्याकी कलाईपर बीधा जाता है। वंदण नामका आभूपणः एक प्रकारका एकः राग्धः मालाः पावता भरना, मणश्किः भेवक, टहलः, रक्षक, रमनाखाः

प्रमात । वि॰ अधीन, परतंत्र ।

प्रतिसरण-प॰ [मं॰] हिसी है सदारे उठॅपनेकी किया । प्रतिस्तरा-स्थे० [शंक] सेविका, द्वारो: पट्टी, शरमा । प्रतिमार्ग-पुर [40] रह, मनु, मरीनि आदि दारा की

गर्दा सृष्टिः प्रचयः पुराणका एक भाग जिनमे प्रकय आदिका विचार किया गवा है।

प्रसिख्य-दि० [मंग] प्रतिकृत, विरुद्ध भाषाण करनेवाता,

विस्दायारी।

प्रतिमाधानिक-पु॰ [मं०] च:रण, मागध । प्रतिसामंत-५० (ग्रं॰) श्राप्त, विश्शो ।

प्रतिमापग्-अ० [गं०] इर शाम ।

प्रतिग्रारण-पु॰ [शं॰] बुर इटाला, दृशीकाण, अपसारण: पावकी मरदम-पट्टी करना (शुभुक)ः अरदम समानेका दक भीतारा गुर्ग, बस्क भारिका संदायताम बाँत, जीम बादि-

की वेंगलीमें रगदशा (सुधन) ह

प्रतिगारणीय-वि॰ [मं०] प्रतिहारणहे थीव्य । प्रतिमार्श(रिम्)-वि॰ (गं॰) ब्रह्मी दिशामें जानेवाना ।

प्रतिगरीहा - म्यो : [ग्रं :] प्रदा ।

प्रतिसूर्य = पु । मं । पर प्रकारका अत्यान किसमे बनेमान गर्दरी भक्षाचा एक और गुणे दिलाई देखा है। गिरविट । मितारध-दि॰ [रां॰] भेजा पुणा, भेषिया जिलाहा जिला-बरण दिया गया हो। निराष्ट्रतः मरू, प्रश्वाना ।

प्रतिसेना-सी॰ [गं०] शहुदी हैना ।

प्रतिसीमा-मी॰ [सं०] एक वीता, महिष्यती ह प्रतिमर्थप-पृत्र [सत्] क्षांशिदेवरा एक सञ्चर ।

प्रतिकार-को० (११०) परादी की । मतिस्थान-४० (८०) इर बदह, सर्वत्र १

प्रतिस्ताल-[४० (गे०] नहादा दुभः, भी श्लान वर् पका हो।

श्रीतक्षेत्र-पुर [ete] मेमदे बाले दिया श्रानेवाणा सेम.

देशका प्रतिकृता । मनिवर्षद्म-५० (४'०) वर्षद्रम, बहुबन, बहुबन, व मानित्यमी मिनित्यमी-कीक [बांक] काम कार, की ह है।

प्रतिक्यति(दिन्), प्रतिक्यों(विन्)-पु० [००] प्रति-शरह) बस्टेशका, ब्रोप समावेशका, श्रावदेशी व

ष् रा वरनार ध्यास हैनार वचन क्रान्सि हुप्सन ह

प्रतिमाद-पु॰ [मं॰] नाक्ष्मे पीला और गाडा एक निय-रुनेका एक रोग ।

प्रतिस्वन-प्र॰ [र्ध•] प्रतिशस्त्र । प्रतिस्वर-५० [मं०] प्रतिचय्द ।

प्रतिहंता(न)-प॰ [मं॰] रोहनेवाला; निरारण करने-वाला ।

प्रतिहत्त-वि॰ [सं॰] रोका हुआ, अवस्द्धः दूर किया हुआ, निरस्तः निराद्य किया हुआः पराभूत किया हुआ । -धी,

−सति−वि॰ विरोध-भाव रखनेवाहा । प्रतिहत्ति-सी॰ [सं॰] आयातके जवाबमें किया जानेवाला भाषात, प्रतिपात: रोहने वा हरानेकी जिया: रोप, क्रोध:

प्रतिहरून-पुरु [गंरु] आयानके जनावमें आपान बरना । प्रतिहरण-प्र॰ सि॰ो निवारणः परित्यागः स्टाना ।

मतिहर्सा(मं)-प्र॰ [सं॰] सोनव प्रकारके ऋत्विकोमेरी एकः षटानेवालाः माश्र बरनेवाला ।

प्रतिहरत, प्रतिहस्तक∽प॰ [सं॰] प्रतिनिधिः सदायक् । प्रतिहार-पु॰ [मं॰] निवारणः हारपाल, क्वीद्रीदारः हार, दरबाजाः ऐद्रजालिक, मार्जागरः बाजीगरीः उपाता द्वारा गाये जानेवाल सामदा एक अववव ! -अमि-मी० रधोरी । -रहरी-म्हा॰ दारपालिसा ।

प्रतिहारक-पु॰ [मं॰] ^{(*}द्रवाहिकः इमरे स्थानपर हे जाने-

बालाः प्रतिहार सामदा गान वरनेवाला । प्रतिहारण-प्र॰ (गुं॰) प्रवेधः हारमे प्रवेश करतेया भाषा । प्रतिहाती-भी व [मं] दारपालका काम करने कथी और

हारपानिया । प्रतिहारी(रिम्)-पु॰ [4ं॰] शारपास ।

प्रतिष्टार्ये - पु॰ [मं॰] इंद्रवाय, बाबोगरी । पि॰ भीटाया, इटाचा जानेनालाः जिल्ला प्रतिरोध शिया जाय । प्रसिद्धारा-पुर्व [नेव] हेमने हे जबादमें इंसना; बनेट ह

प्रतिष्टिसा-म्बी॰ [शं॰] दिलाचे बदलेने की जानेबाकी रिया।

प्रसिद्धितन-प्र॰ [सं॰] दे॰ 'प्रशिक्षमा' । वि॰ विशे बहरें में एनि बहें वादी गयी हो।

प्रतिहित-रि॰ [गं॰] रुवा दुवा, जमादा दुमा ।

अर्जीयक-पु॰ (मे॰) विरेष देश। प्रतीक-विक [शंक] प्रतिकृत विश्वाः विकीय, वनदा ।

पुरु अंत, अवयमः अंत, मागः वह जिल्लाह दिलीका आरीप किया गया हो। प्रतिस्या प्रतिमात दिनी बाहत. पर, मंत्र आदिवे हुछ अशर विश्तो पूरेका बीच हो। हुँहा बेहरा। दिन्ने बोधना आवर दिस्ता ।

प्रसीपार-पुर [गंग] देव 'प्रदिशार' ।

प्रमीक्ता-पुर्व [मंदी देव 'प्रतिकाश' ।

प्रमुक्तियासमा-म्यो० (सं०) अक्के आरिश्य आरि प्रशेष्ट की अपर्राप्ति पराधना करना। दिशी है महीकरी की आहे-

बाणी कराणनाः प्रतिमानुस्य । श्रतीक्ष, श्रनीक्षक-विक, पुरे [बोर] प्रशिक्ष बरनेशृत्ता । प्रतिसम्ब−द्व॰ (वं॰) प्रतीश करनाः प्रतीशः सम्बद्धः,

प्रतिकानकी (हैंक) भागस, इनवार गुजा, सम्माना

समयका समहा

रथां हर ।

हाराप बद्धनेवाला ।

प्रांतः भेटारान्यः तर ।

शिन प्रेम हो गया हो।

श्रीटे हर बाल ।

प्रललार-वि॰ मि॰ो जिसका एलाट केंबा हो I

प्रत्यविता(म)~वि०, पु० [शं०] काटनेवाला ।

पात रोग जिसने रोगी प्रकाप करता है ।

प्रसिप-४०, ५० (सं०) रूप बरवेबाला ।

प्राचीनता − जी॰ (सं॰) चेहामाद्य, अपृता ।

प्रक्रिस-वि॰ [सं०] निपका हुआ, छिपरा हुआ, लिस।

प्रादित-वि॰ [मे॰] उएलना दुआ; स्टबना हुआ।

प्रस्टब्य-विव [मंब] भी लालवर्गे पद गया हो।

चहामाः चाप या प्रीतेषद् भदानेका मण्डम ।

प्राप्तेह-पुरु [मेंर] पक प्रशास्त्रा स्थानन, फीरना । प्रारेहन-पुर्श (मंग्) पाटना ।

प्रलेषन-पुर [मंद] देव बरनेकी किया ।

प्रकोरन−पु॰ [मं॰] उएनना; सुरवसा । মন্টাত্র-বি॰ বি॰ বি॰ 'মন্তির' ।

प्रक्रीप-पु॰ [मं॰] माझ, विक्य । प्रमोश – पु • [40] अधिक शोध, कालवा प्रवोधन ।

प्रक्षेपनी-भाः [शंश] काण् ।

क्षप्रत्म महत्तेशाया ।

बाली बान ।

प्रलिखन-पु० [२) कारनेका साधन, देखिया आदि ।

ब्रह्मण-प• [मं•] फसल कारमा ।

जाना; विनाश, शंहार; संसारका अपने मूळ कारण अपृति-प्रकोशित-वि॰ [सं॰] प्रकोशनमें परा रक्षा, प्रयत्या में सर्वया टीन हो जाना, सृष्टिया सर्वनायाः गृत्यः मृच्छी, प्रकोशी(भिन)-वि॰ वि॰ । एडवानेप्रहा, सबरी थेदीशी: एक सारिवक भाव जिसमें सख या दःसके कारण मन य जड हो जाता है (सा०): मारी या व्यापक संदार: अवार (वै०) । -कर,-कारी(रिन)-वि० दे० 'प्रज्यवर' । -काल-पु॰ प्रष्टवका समय । -जल्धर-पु॰ मन्त्रवर्षे रामयका बादल । -पयोधि-पु॰ प्रलयके प्ररुच-प॰ [सं॰] अच्छी तरह बाटना; संड, छेश, दकहा । अलाप-प॰ (सं॰) बातनीत: अट-बंट बक्रना, निरर्थक बात, भवतास: इराइ। रोला: च्यराधिनवधे वेदोश होकर अंड-भंट बहुता। -हा(हुन्)-पु० एक तरहका अंत्रन, कुल-प्रखापक-प्र∘ मि॰ी बक्तास घरनेवाछाः एकतरहका सक्षिः प्रसादी(विन)-वि० सि०) प्रसाप बरनेवाला, अलाप-प्रलीन-वि० मिनी विलीन: स्ताः प्रलयको प्राप्तः विलयः प्रस्तिनेद्विय-वि० [गं०] जिसकी बंदियाँ शिक्षक हो गया हो। प्रान्द्रच्या-वि , स्वीर्ण [सं०] (बह्र स्वी) जिसे दिसीने अन-प्रस्तुन-वि० [र्ग०] काटा हुमा । पु० एक तरका कीड़ा । दिसमा । प्रान्देव-प॰ [810] नेप, यात या को देवर कोई महत्वम प्रकेषक-पुरु [मंर] प्रदेष करनेवाला: एक प्रकारका बांड प्रारंप्य-दिव [र्गव] शेष सरने बोध्य । पुरु शाकासुधरे, (a) e) 1 श्रवता—धी॰ (र्न॰) गीदानरीडी एक ग्रदादस मधी ^{प्रता}र की हरशी ! प्रवर्श-पु॰ [शं॰] दहाबि, दोमाधिः विश्ता धड दनी प्रक्रोधाद्य-(४०, ५० (संव) प्रश्रोतात देवेशका, जाकप वद मिडीका यहश्य । प्रयम् -पु (एं) हिनी बार्वेश आ(मा उने रन र प्रक्रीभम-पु (ले) सामच देवा, सनगानाः समयाने-प्रवर्तक-पुर्वशिंको प्रकृत करतेवाणा, दिनी बन्धने समाने बाणाः चलारेवाला, अनुसं करतेवाला, जारी दगीरालय

प्रलोभनमें पहनेवाला । प्रकोल-वि॰ [सं०] सम्पः बंधित । प्रचंग, प्रधंगम-४० सिंग्री पश्चाः बंदर । प्रबंचक्र⊶वि॰, पु॰ [मं०] हम, भूतं । प्रवंचन-५० (स०) ठगना, पोसा देना । 🕡 प्रयंचना-सी० (सं०) हमा, पोलेबाबी, पर्नता । प्रवंचित-वि॰ सि॰ जो ठमा गया हो, हिमे भेता दिन गवा हो । प्रवक्ता(क्त)-विक पर सिंगी अवहा बक्ता वेर भारित भच्छी सरह प्रवचन सरनेवाला (१४०)। प्रधग-पुरु [मेर] पश्ची; बंदर ! प्रयासन-प्र- [मंग] विशेष स्पृते शहता, अर्थ , सनता है हुव कहनाः वेद, प्रशंण भारिका उपरेश करनाः शंम । -पट-वि॰ बीलतीमें कश्रक, बाग्मी। प्रधाननीय-विक सिको प्रवस्तते योग्य (प्रधट-प्र॰ मिनी सी । प्रयण-वि॰ [सं॰] हालुवाँ; देशा, वमा; सहा: दिमी वर्षे की ओर शुका हुआ, प्रश्चा नमः बाहफा शीनः हीने र्श्वाः अनुकृष्ट । पुर भीराहाः दास, उग्रादः उर्द प्रवणता-वि॰ [रो॰] प्रवृत्ति, ह्युकाव । प्रवरस्यम्-वि॰ [सं॰] दे॰ 'प्रवरस्यम्'। -पविशा-प्रेयसी-सी० वह नायिका निसना भाषक पररेग मने बाला थे। प्रवरस्यद्भर्तृका-न्त्री० [मं०] दे० 'प्रवरसापिका'। प्रयास्यन (स्) - (व० (सं०) औ विदेश जानेशमा हो। प्रचटन-प॰ (री॰) चीपमा । प्रवय-विक (गेक) शहरहाय । प्रयपण-पुर्व [शंव] मुंहस । " प्रवयण-पु॰ [रां॰] चार्डाः अनुष्ठाः दपहेदा क्रास्य प्रथया(यस)-वि॰ [धं०] १६, युरा । त्रयर-वि॰ [भे॰] प्रधान, भेष्ठा सरमे थेडा । पु॰ अहाता वश मार्रभ करनेके समय किया आनेशाहा लॉड्डा आहाल: संवति: वीतः संजाना विसी गीवरे प्रश्⁴ह मुनियोगिमे बार्र एक; अगर्या एकशी; बार्रश; इप्रमा -मञ्चाण-वि॰ वर्ष श्रद्ध - मिरि-पु॰ मान्ध एक पर्वेश की आरहण 'बरावर' प्रकार सरणांत है। -जन-पु॰ अप्ते गुणीमे मुन्द ध्वस्ति। -व्यक्तिन-पु॰ एक ग्रेंद । -बाह्म-पु॰ मधिनीकुमार । प्रवरण-पु॰ (सं॰) आहाना वर्षांपपर बीनेवाडा स्थेतार

प्रत्यक्ष-वि॰ [सं०] जो औरवंकि सामने हो, जो गाँखेंसे रिताई दे, परीक्षका उड़्या; जिसका बहन किमी वार्ने-दियमे ही सके; स्पष्ट, साफा । पुर एक प्रकारका धान जो इंद्रिय और अर्थके सक्षिक्षंसे उत्पन्न होना है और चार प्रशास्त्रे प्रमाणीके अंतर्गत माना जाता है। किमी हार्ने-द्रिय द्वारा वस्तु-विदोपका ग्रहण । अ० स्पष्टनः, साफ-साफ । -ज्ञान-पु॰ इंद्रिय और विषयके सजिवसंसे अरपग्न ग्रान । -दर्शन,-दर्शा(शिन्)-वि॰ जिसने कोर्र घटना साक्षात् देखी हो। पु॰ साक्षी, गवाह ! - हदय-

वि॰ जी औरोंने देखा जा सरे ।'-इष्ट-वि॰ प्रत्यक्ष रूपसे देशा हुआ। -प्रमा-न्दी० इंद्रियोके संपर्केने प्राप्त सदी हान । --प्रमाण-पु॰ प्रत्यक्ष हानस्य प्रमाग । -फल-वि॰ साधाप फल देनेवाला १ -भोग-पु॰ किसी बस्तुका बह भीग जो उसके स्वामीके मामने किया जाय । - छचण -पु॰ ब्यंत्रन आहिमें, उनके सिद्ध होनेके बाद, अपरमे

मिलाया या दिया जानेवाला नमक (बाद आदिमें ऐसा रुवण विभिन्त है)। -बाटी(दिन)-वि॰ देयर प्रायश माननेपाला । पुरु याचीक मन जो प्रत्यसके अनिरिक्त और किमी प्रमाणको नहीं मानताः वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने । -पिहित-वि॰ जिसका प्रत्यक्ष रूपसे विधान हो । -सिद्ध-वि॰ जी भावध प्रमाण द्वारा शिक्ष हो। विगात सिदिये लिए प्रस्वक्षके अतिरिक्त विसी और

प्रमाणकी भावद्यकता सही। प्र'यशता-सी॰, प्रत्यक्षाय-पु॰ [मं॰] प्रत्यक्ष द्वीनेका

प्रायक्षर्-२० [मं०] प्रत्येषः अभरमे, अग्रर-अभरमे । प्रायक्षी(दिश्न)-वि० [गं०] विशने निग्नी बानको सारगन् देखा हो, प्रत्यश्चन्न ।

प्रस्पक्षीकरण-पु॰ [मं॰] रक्षं अपनी ऑनोंने देशनेदी कियाः विभी इंद्रिय द्वारा ग्रहण बहनेकी किया । प्रायक्षीकृत-वि॰ [मं०] धाँसीमे देना द्रशाः विगदा

भद्रण विगी रंदिय हारा श्री सुद्धा श्री । प्रत्यक्षिमृत-वि॰ [मं॰] को प्रत्यक्ष हो भुका हो ।

प्रत्यम - 'भागव,'बा समाध्यत स्प । - अध्य-पु । अंदरहा भंग या मेत्र । वि॰ शरदर्वे अंगीवाला।-आत्मा(स्मृत्)-प्र• मान, परमानमाः भीरात्मा । —आद्या-न्ही • पश्चिम रिधा। - व्यति-पुर वस्ता। - उद्दुक् (च्) - स्ताः विधम और उपाउँ बीचश दिशा । अ॰ विधिशेषाची भोर । -रथ-पु॰ श्रीरण्य नामश्र प्राचीन देश; रहिण द्रांचास ६

प्रस्तप्र-दि॰ [de] सदा, शतका; छात्रा: द्वीदित, शुद्धः -रांबा-सी॰ भीत्रद्री।-यांबन-दि॰ वी मरी क्वानीli को । - वयम्ब-विक स्थी वसदा, सीवकात ।

मायम्य –पुरु [तर्त] मायमयहा निवासी या शहर । प्रायहत्त्वन-दिक [र'क] दिल्ला हिंह परिवाली और ही ह प्रत्यमंत्र - दि० [३/०] क प्रहरे, प्राचान्छ ह

मापनीय-पुर [ile] शहा राष्ट्रगा शपुनेगाः विरुद् मान्यामा रह भए नहार अहाँ शहरी म मानु स्वाहेदे क्षण गाडे पूर्व क्षिमी ब्रह्मिनो बेह जिल्लानेका क्षाँज दिया कार का दिनो दिवारी मन हैहे. बाते उनके हिया । झायाँ (स्थित)-युक (क्यो महामारिकारी, मुद्रानेह ।

संबंधी आदिके प्रति कोई अच्छा काम करना दिखाया चाय । वि॰ विरोधी, विषद्दी ।

प्रत्यनुमान−पु॰ [सं॰] प्रतिकृत अनुमान (रीसे="पर्वत बह्मिन् हुं" के विरोधमें "पूर्वत बद्धयभाववान हुं" ऐसा अनुभान)।

प्रत्यपकार-प॰ सिं॰] अपरास्के बदले किया आनेवाला अपदार ।

प्रस्यदन्त्र-अ० [सं०] प्रति वर्ष, इर साल । प्रत्यभिज्ञा-भी॰ सिं॰ो कमीके देही हुए स्वस्ति या पदार्थकी किर देखनेपर दोनेवाला यह ज्ञान कि यह अपना स्यक्ति था परार्थ है, पहचाना यह हान कि परमेश्वर भीर जीवारमा यक दें। −दर्नान−पु॰ यक दर्शन जिसके अग्रसार मदेशर वा परमशिव मदा या परमान्या मामे जाने हैं। प्रस्यभिज्ञात-वि॰ भि॰ो पहचाना हुआ।

प्रत्यभिञ्चान−५० [मं०] पहचानः वह वस्त या विद निमरी कीई पदचाना जाय ।

प्रत्यभिभृत-वि॰ [सं॰] पराभृत, विभिन्त । प्रस्यभियुक्त-वि॰ [मं॰] जिसपर प्रायमियोग लगाया

गवा थी। प्रत्यभियोग-पु॰ [नं॰] अभिवृक्त या प्रतिवादीकी औरसे बादीपर छगाया जानेवाला जनियोग।

प्रत्यभिवाद, प्रस्यभिवादम-५० [मृं०] प्रणाम करने गारेची दिया जानेवाला भाषीबाँदः प्रणामके बदले प्रणाम सरसा ।

प्रस्यभिरकंदन−पु० [मं०] दे० 'प्रस्पतियोग' । त्रायमित्र-पु॰ [गं॰] शपु, दरमन ।

प्रत्यय-प॰ [मं•] विधासः शानः शपथः भानारः विद्रा निधयः प्रसिक्षिः स्थातिः सहसारी सार्म (बी०); कारणा दक्षि स्वादः अभ्यामः प्रयोगः माघनः ध्यानः इंदोंकी इंदया जाननेकी एक रीतिः भाषित जना सहायकः विष्युः वह उपमर्ग जैसा श्रम्य की दिसी भाग या मुख शब्दकी अंतर्वे सीर्व संवादत, क्रियायत, अम्यय या विधेषण बनानेके डिप समाया जाना है, परमर्ग (स्वा॰) ।-कार,-कारी(दिन्न)-दि॰ विधान खापत्र करनेवाला । -कारिणी-त्योक मुद्दर, मुद्रा । -प्रतिम्-प्र• वद प्रतिम् ता अमानप्रदार श्री भूता हैनेबानेदे प्रति महामनशे पर विधाम दिलामा है कि "मैं इने जानता हैं। यह मना भारमी है।"-मितिः क्चन-पु॰ निधित्र और श्रष्ट जरार ।-सर्ग-पु॰ अहु॰

चन्य या बुदिने काका मुटि। प्राप्ययन-पुरु [मेर] महान होनेकी किया । प्रायवित-विश् (एं) विश्वता भए । प्राथमी(वित्र)-विक [बोक] विश्वात करमेशाना, विश्वात

可吃 8 प्राच्या-मी (मं) आरं दी शाम है कि बाद माद वरिषेठी पुरीने क्या जानेशकी स्वरी, गर । प्रायक-८० (००) शर्रके यश बसी बनी देख प्रतिशास

Seasing 8 प्राथमें-दिन (र'न) प्रपरेशी । पुन क्षत्रा प्रमुक्ता रिहित । प्राथमंड, प्राथमिंड-पुर (ale) शिक्षेत्र, शिक्ष्त्र ।

प्रविश-प० सिंगी पीला चेवन । प्रचिरल-वि॰ [गुं॰] शति विर्छ । प्रवित्य - पु० [मं०] दिवलनाः पूर्ण लव । प्रधियर-पर्व शिर्व प्रधास । प्रविविद्या-विश् मिश्री शिनकल कलगः पराश्री । प्रविपा-सी० [मुं०] अतिविषा नामक पृथ्, अनीस । प्रयिष्ट-वि० मि०) यसा हमा, अंदर गया हुआ । प्रविसना १-अ० कि० प्रवेश करता, यमना । प्रविस्तरः प्रविस्तार-५० [१:०] पेरा, फैछार । प्रचीण-(४० [मं०] निष्ण, कुशुरू । प्रचीणना – भी० [सं०] निष्यता, बीशक । प्रधीन र-वि० दे० 'प्रवीच' । स्वी० अच्छी बीचा । प्रचीर-पु० [मं०] अच्छा बीर, सुभट । वि० उत्तम; बली । -बाह-पुरु एक राहम । प्रवृत-(10 (10) लगा दुमा; (दक्तर हे रूपमें) प्रदूष किया हुआ। -हीस-पु० पक प्रधारका होता। प्रयस-विव शिव) प्रवृत्तिवक्त, स्था सभा, रतः विस्ता भारंस हुआ हो, आरण्यः निधितः निर्देशः निर्वाधः निधिवादः वर्तलाकार । प० एक गीलाकार गहनाः कार्य । प्रवृत्तक-पुर्व [शंर] एक माधावृत्त । प्रवृत्ति-सी० (एं०) प्रवाह, बहाब: मनका किशी विषयकी शीर शकायः वार्ता, कृतांतः आरंगः बत्पतिः आचार-क्यवद्दारः अध्यासाय।भाग्यः एवः प्रश्रदका प्रवरम (न्या०)ः द्यार्थीके अर्थका बीप करानेकी एक दास्तिः देदिय आदिका भगने-अपने निषयमें निर्म होना, सांमारिक निषयों अधि भागकि, विवृश्विका उल्टा; दार्थका सद्य रिनी वियमका निर्मा प्रसंगमें लगना। ~क्त~तु० मेदिया, जायुरा। -विभिन्न-पु० विभी शब्दके विश्वी विशिष्ट अर्थमे प्रतुक्त शोनेका हेतु । -पराइमुख-पि॰ को समाबार बनलाना म पाइता हो । -मोर्ग-पु० धंनारके धंधीने शंकान रद्वना । - विज्ञान-पुरु बाध जगरका धान (वी०) । प्रयुक्त-विक [गं०] अतिश्रय मृद्धिकी मातः बद्दम सभिक्र बहा हुमा; श्रीद: पर्गशी उमा विशल । प्रयेक-वि॰ [शं॰] प्रधानः भवेषिम । प्रयोग-पु० [शं०] अधिक वेग । प्रचेट-पुर्व (मंग्री भी १ प्रवेशि, प्रवेशि-मी॰ मि॰ो नेशी, भोडी। यह आदिवा प्रशाहः हानीकी शुक्तः पक मधी । प्रचेता(तृ)-पु॰ [नं॰] एव डॉकनेवामा, शारवि । प्रवेदन-पु॰ [मेर] प्रस्ट बर्गा, अर्थहर हरना । प्रवेच-पु • [१]०] बाग छोड़ता। लंबाईन्ड यह मात्र (दी०) । प्रवेष: प्रवेषक: प्रवेषधु: प्रवेषन-पु: [गं:] कांपन'; धंबङ होता । प्रमेशिय-निव लिको इवर-उपर केंद्र। हुआ ह प्रवेश-५० [ग्रं॰] दीओ सेत । प्रवेश-पु [4.4] भीतर जाना, पुलनाः पेट, पहुँन, रागरे। दिनी पापका रंगनेयार भाग (ना॰)। हिनी रिवद, प्राप्तकी जागकारी: अधिष्याः दुसरेके बामने दमक देना। मात्री रहाशा। शूर्वेदर विश्वी राशिमें श्यामणा | प्रारम्भिकार्यमे अंतर्वा सहसार हो देनेका विकास है।

--पत्र--पुर वह पत्र जिसके द्वारा यहाँ प्रदेश हारेश अधिकार प्राप्त हो । –हास्क-पुरु प्रदेश रानेहा करिया प्राप्त बरनेके लिए दिवा जानेवाला धन । प्रवेशक-प॰ सि॰] प्रवेश करनेकला: सहस्ये है। अहे है बीचका एक प्रकारका अंक जिसमें तीन पान न दियारी हुई तथा भागी परनाओंकी सूचना देते हैं।' प्रवेशन-पर्व सिंशी प्रोश करानाः प्रतेशः सार स्तारः विद्रहारः रतिक्रियाः से जाना, पर्नेनाना । प्रवेशना*-अ॰ कि॰ प्रवेश स्त्रना। स॰ कि॰ घोड कराना । प्रवेशिका-सी॰ मि॰ो प्रदेश-५४ वा प्रदेश रास्क मंध्यः अंग्रेनी आदिकी एक परीहा (आ०)। प्रवेशित-वि॰ [र्गु॰] युमाया हुआ, 'पैठावा हुआ। प्री नाया हमा। प्रचेहच-दि॰ [मं॰] प्रवेश करने थीग्य, ब्रिसमें प्रवेश दिस जायः जिल्ला प्रदेश कराया जायः की बनाया जय (बाध यंत्र) । पुरु बाहरते मातेवाला माल, आवार! -इंड्फि-प्र॰ बाहरसे आनेवाले सालपर छगाया जानेवण बर, भावासकर । प्रयोग १-- पुरु देव 'परिवेष' । प्रवेष्ट-पु॰ (सं॰) अता, कनार्थ। हाथीता मन्द्राः दारी पीठः दार्थानी शल । प्रवेष्टक-प्र॰ [र्ग०] हाहिती भूजा, शापी हाप । प्रवेष्टा(च्ड)-विक, पुक्तिको प्रदेश बहते या दगतेशमा। प्रस्पक्त-थिव [शंव] शुरु, १५४ । प्रच्याहार-पुर [गुंर] बाद-विशादना आरी रश्ता दी दशना । प्रस्थाहत-विक [मंत्र] बांशिता थी अभिन्वतानीहे स्वी कदा गया थे। । ब्रह्मजन-पु॰ [सं॰] सम्बाम केमा: विदेशनाहरा ! अवस्थित-दि॰ (वं॰) तिस्ति सन्दाप्त हिया ही, वनक्री वी भाग या बहन गया है। (पीड़ा आहि)। वी र'हर वन: गया हो । पु॰ सम्म्यासी बीस निस्ता धिया सम्बद्धाः श्रद्धाः गन्त्यागाभव । प्रश्नतिता-स्रो (शंव] जश्मागी। संदी; नाकी, गण्या बिनी । प्रमानवा-न्यो॰ [मं॰] शानवामा शानवासासता देशका दिरेश गाम । -प्रहरू-पुर सम्बाम हेमा । -प्रव मुक दिएमोटे जपनयनके इंगका नेशकी बीबीश दे प्रकारका शहरार । प्रसन्यापस्थित-पुर्व्सिः} वद को सम्पार्गः बहुत हो हरी हो, स्थायमाश्रह । प्रशास-पुर्व [तृंक] बल्ल्याम । सञ्जातक-पुर्व [संक] सम्बद्धाती । [क्रीक प्रजातिकः, तो ग्रवार् (क्)-५० (८०) अवधानी । प्रकृतिक-म्योक प्रशंभा, ब्लुनि । विक प्रशंसारे दीना । प्रश्तीरक-दि०, थू॰ [शं०] प्रत्येश प्रशेषाणा । ब्राइंसन-पुरु (शृंद) प्रशंका दश्या, प्रचेदा स्थान । majarell-seje [nio] go antieina ! e ele Era Hate. व्यक्ताः मार्शक व्यक्ताः गराहता !

प्रस्पाहरण-पु॰ [मं॰] पीछे सीवना, हटाना; निम्रह करना; रेट्रियों हो विगयोंसे निष्ट्रत करने ही किया। प्रस्पाहरर-पु॰ [मं॰] पीछे गींचना, हटाना; रेट्रियोंको विषयों में हटाना; अटांग योगहे अंगत पर बहिरंग साधन तिसमें रेट्रियोंको जनके निषयोंसे हटाकर विचक्ते समान गिहद करते हैं; प्रन्या, बणोंडो संक्षेत्रः प्रहम करनेकी

एक क्रिया (ब्या॰)।

प्रध्याहृते-वि॰ सि॰) वापस दुलाया दुआ। प्रत्याहृत-वि॰ सि॰) पीछे स्वीचा दुआ, इटाया दुआ;

विस्ता निमह किया गया हो। प्रस्तुक:-वि० [मंग] विस्ता उत्तर दिया गया हो; जिसका

कत्तर द्वारा संदन किया गया हो।

प्रायुक्ति-ली॰ [गं॰] उत्तर, ज्याद । प्रायुक्तार, प्रायुक्तारण-पु॰ [सं॰] पुनरुत्ति ।

प्रत्युक्तीवन-पु० [मं०] फिर्मे बी ठठना, पुनर्जीवन ।

प्रत्युत्त-भ० [मं०] इराके विपरीतः, बस्तः, बस्तः । प्रायुक्तम-पु० [मं०] आक्रमण वस्तेके लिए कृत करनाः।

शुक्रिती तैयारी। मुस्य कार्यकी सिक्षिके लिए किया जाने-बाह्य गीण वतर्थः पदला व्यस्म (निम्मी कार्यमें)।

प्रत्युत्तर-पुर [40] उत्तर पानेपर दिवा गया उत्तर, यत्तरका वत्तर।

वक्षरका बस्तर

गेवा हुआ ।

प्रश्वाचान-पुरु [मंत्र] कियो बहेके आनेवर उसके प्रति सम्मान प्रतः बरनेके लिए अपने आमनमे उठ जाना, अन्युत्यानः विरोधिका सामना अरनेके लिए उठ राहा होनाः श्वत या दिशी कायेके लिए सैवारी करना ।

प्रस्पुरिधता-वि॰ [गं॰] नी किमी बहेते शानेषर उसके प्रति सम्मान प्रकट बहनेके लिए या किमी शतुका मुलाबसा

करने है लिए वड सहा हुआ ही।

प्रायुष्यस्मि (११) थे। किश्मे उत्पन्न तुला हो। जो सन्दान उत्पत दुमा हो। उपस्थित । दुरु गुस्स । — प्रति— दिरु मिमे प्रतिन उत्तर दा उदाय तादान स्वा नाय, प्रतिमाधानी। माहमी।

प्रायुत्रहरण-पु॰ [ग०] प्रतिवृत्त उदाहरण, हिमी उदा-हरमके स्रोभमें दिया गया उदाहरण।

मायुहत-वि॰ [ग॰] किया व्यक्तिके प्रति आहर स्वतः बरनेके तिर अपने आमनमे वटा दुआह विग्रोके विषय

मागुप्रति-भी० [संत्र] देव 'प्रस्तुप्रमन' ।

मानुरसः प्रापृत्रसन-पुत्रः सिन्ते विशो वहे या अतिविके भानेपर पाठे भी सम्मान प्रका करनेटे लिए अपना भागन छोडकर महा ही जाता वा प्रमाने प्राप्तक बाना, स्थान करना।

मायुक्तमिय-विक (शेक) वदाना करनेटे बोल्यः युव्यः। युक्त वे प्रश्न (वेलि-पादर्) यो यद्य और सोजनके कवल्यस्य बामने क्षामे पार्वः व

मानुहार-पु । [रोत] ४४ पहारका लाही होन ।

मानुद्रमान्द्रक [११७] मानवार, मानिवार

nilanis-2. [: a] feit annig angig feni an.

प्रस्युपकारी(रिन्र)-वि॰.पु॰ [मं॰] प्रत्युपकार करनेवाला । प्रत्युपदेश-यु॰ [मं॰] उपरेशके बश्लेमें दिया हुआ उपरेश; राषके बरलेमें दी हुई राव ।

प्रस्युपपञ्च—वि॰ [सं॰] दे॰ 'प्रस्युत्वन्न' । प्रस्युपमान—पु॰ [सं॰] उपमानका उपमान ।

त्रखुपरुच्ध-वि॰ [सं॰] जो पुनः प्राप्त दुआ हो । त्रखुपरुधान-पु॰ [सं॰] पड़ोस ।

प्रश्युस-वि॰ [सं॰] जश हुआ, जमाया, बैटाया हुआ;

प्रश्युद्धक-पु॰ [सं॰] उल्लू जैसा एक पत्री; उल्लूबा श्रमु दूमरा उल्लू या कीमा ।

प्रस्युख्कक-पु॰ [सं॰] वस्त्र जैसा एक पर्धा ।

प्रत्युष-पु॰ (सं॰) प्रातःसातः । प्रत्युष(स्)-पु॰ (सं॰) प्रातःसात ।

प्रस्पूष-पु॰ [सं॰] प्रातःकालः आठ वसुभीनेथे एकः एएँ।

प्रत्यूप(स्)-पु॰ (सं॰) मातःकारः । प्रस्यूह-पु॰ [सं॰] दिप्त, बाधा ।

प्रत्येके-दि॰ [मंग] दी या दीने अभितानि एक एक, क्षत्रम-अक्षम, इर एक। - बुद्ध-पु० यह दुद्ध यो और बुद्धेनी उरह रोकर यापमें प्रदुष न होकर एकी गी सामना द्वारा अपना दी कन्याय करें।

प्रथम-पु॰ [मं॰] केलनाः प्रशिद्ध दोना या परनाः होई भीत्र फेलानेका स्थानः पेंडनाः प्रदर्शन करनाः ।

प्रथम-दि॰ [मं॰] समना या क्रमभें भित्तका स्थान पहला हो, अन्तरः जो सबसे दहस्य ही, मेशः प्रधान, मुख्यः यहनेहा। अ॰ पर्ते, आये। -करप-पु॰ सर्ते योग्य सबसे अच्छा उपाया मुख्य नियम । -कदिपक-पु॰ बद त्रिमने सभी योगास्याम आरंभ किया हो। मीसिस्या योगी । -बहिएन-दि॰ पर्ने सीना ग्रमा; शीर्परमा-मीय । -कारक-पु॰ दर्ना सारक (स्था॰) । -बुस्म-पुरु सुकेर अवस्त्रहा कुम । - ज्ञ-विरु की सुर्वेग वहाँ छत्यन दुश हो। ~द्रांन-पु॰ पदने पदन देशना। -धार-श्री॰ पहली बुँद १-निर्दिष्ट-वि० जिसका पर्ने उद्देश हुआ दी ! -पुरुष-पु॰ बह स्वक्ति क्सिहै निवय-में इ.छ कहा जाव (ब्या॰) ! -- प्रमुगा-स्रो॰ १इनी बार वधा देनेवानी (गाय) । अमेगान-विश्वहरूप्य । अ थीवन-पु॰ पहनी प्रशानी । -राग्र-पु॰ रातरा पहना शाम । -वप(स्)-पु॰ वयस्न । -वपसी(सिन्)-विक नदी एमसा । "चिरह"-पुक पर्ने पहन होनेशना विदेश । -साहस-पु॰ नदने इतकी सूत्रा, प्रारं म क्षात्रहा यह प्रहारका अर्थेटक दिलावे १५० प्राप्तक प्रहर माना दिया जाता था। -सुक्रम-पु॰ परणा वरदार दा गेवा।

प्रयमक-वि॰ (वे॰) १८मा । प्रयमकः(तम्)-४० (वे०) १८७, १८वे ५८७ ।

मध्या-की (बंध) बले बल्ड (मध्या) मध्या । मध्याके मध्यार्थ-पूर्वत्वे वे स्थान मध्येमे प्रकार पूर्वत्वे ।

्रम्पसम्बद्धन्य (सं) अस्पर्यस्य । अपसीर-कोर दुर्गा ।

44-6

प्रसम-पुरु [६१०] बनारहार, जन १ - मुसन-पुरु (नीमही कार्धिको बनाय ध्यान शहला, संशाला । -हरण-पुर बमपुर्वेद करण कर के जाना। मगयम-पुरु [१६०] जातः वर्षिनेधी दव्यी कादि व प्रमार-पु= [मंद] थामे बहुना, बहादा चैनना, पेलाद, विरुपार्। नेगा प्रवादः प्रष्टयः रुप्युदः कार्ताः शासमा सुद्धाः ATT ubit bicet unt. nieret neite merret

प्रसन्तेश-सी॰ [एं॰] एक प्रसारही महिला।

प्रमञ्जाना(गमन्)-पु॰ (मे॰)दिन्तु । दि॰ प्रमञ्ज, संत्रष्ट। ग्रमक्रिम=−विग्मस्थ, सुदा।

प्रारक्षा-शी॰ [मं॰] चावसमे बनी देई महिला प्रशास बरनेशी किया ।

६७२गा । प्रमाणीय-पुर शिर्श मेरिका एक मेथरीन ।

चैदरेने प्रमधना मक्त होती हो । प्रसम्बद्धाः न्यो॰ (गे॰) प्रमन्न दोनेका बावा स्वयद्याः

प्रमाच-वि॰ सिं॰) सिमैनः प्रमादसकः स्वन्तः घोतः शंतुषः ४पेतुत्तः, गुश्चः अभिनः, गुश्चः कृषाष्ट्र । 🖰कदप--वि॰ शांत्रप्राया सत्यपाय । -जल-सांसिख-वि॰ विगना पानी साफ दें। +शस्त्र-चटन-वि॰ विगने

प्राणिको प्रधानता रहती है और विविधी अप्रधानता । प्रसम्बद्धाः व्याप्त (संग्) निर्मेनसाः प्रस्त्रताः अनुसद् । प्रसरवा(श्यम्) – पुं• (४०) धर्मः प्रजापनि ।

प्रमात्रय-वि० [गं०] को गंबद्ध हिया आया की प्रयोगनें कावा बाद: मंतर । -प्रतिपेध-प्र• वह निरेध जिसते

बाला, निरय, श्याबी: प्राप्त: निरुट, सदा हुआ: रफटित । प्रसन्ति-की० (सं०) प्रसंगः शासक्तिः सापशिः सम्मितिः म्दातिः अध्यवसायः प्राप्ति ।

प्रमेखना - स० कि० प्रशंसा करना । प्रसन्ध-वि॰ [गं॰] जी प्रगंगका विषय हो। प्रमंगमाप्तः शंदध, लगा हुआ; आसफ, निरतः बरावर बना रहने-

प्रमंधान-पु॰ [सं॰] संधि, बोग, सेछ।

प्रसंज्ञन-पुर्व (संव) संयोग करना, भिलानाः प्रयोगमे

प्रसंगी(गिन्)-वि॰ [१:०] प्रमायका अनुरागरखनेवाला, भन्दागीः भइयास करनेवालाः गीणः आव्हरिमकः। प्रसंघ-पर (मंर) भारी संघः बहुत बहुत सहस्र । 🔧

-विषयंस-विधान-प॰ मानमोचनका एक उपाय । -विनियस्त-सी० रि.मी बानदा पटित न होना। -सम-प॰ प्रमागको भी प्रमाणित करमेका कृतकै (स्या०) ।

धनरकि, आमक्तिः प्राप्तिः चिरुसिकाः अवसर, मौकाः वान, विषय । —यान-पु॰ एक स्थानपर आक्रमण करनेकी बात चलाकर दमरे स्थानपर भाकामण कर देना ।

प्रसंग-ए० सिंग्री प्रकट संगः संबंध, खवायः न्यापिरूप मंदंधः विषयका मारतन्य, प्रकरणः एक प्रकारकी संगति (न्या॰); अवैध शृंदेध; स्ती-पुरुपका श्रंबोग, समागमः

प्रसंख्या – सी॰ [मं॰] फुछ अंक्रीका जीह; सनन, ध्यान । प्रसंख्यान-प्र॰ [सं॰] राजनाः सम्बक्त ग्रानःध्यानः स्यातिः भरायगी, मुकता ।

बात, पित्त आदिका घटन्यर जाना । प्रसरण-प॰ [सं॰] आरो बदना, सरवज्ञाः पनादनः देननः, असार: होनाका चारों और फैलकर क्षप्रको धेरजा: स भावका माधर्य ।

धेरना । प्रसरा–सी॰ सिं॰ो प्रसारणी छता । प्रसरित-वि० पैटा दकाः वागे दश हवा ।

प्रसर्ग-पुर्व [ग्रेंब] वेंकना, चलाना; पुषक करना ।

प्रसर्प-पर [संव] यहशाहाके 'सरस' गामह मेराई

असर्पंग-वृ॰ [सं॰] आगे बहना, शिसकनाः सेनाका वारी

और फैल जाना: यद्यशालाके 'सदम'में प्र**ोग्न दर्गा**।

प्रस्तर्पंजी-सी० (सं०) सेनाका चारों और पैस श्रामा (

प्रसर्वती-सी० विवे चमवनीरमन्प्रस सी हे प्रसव-पु॰ (सं॰) बचा जनना, गर्दमीनना स्त्रिस्टिन्दि

प्रमार्थी(विन्द्र)-वि॰ (सं०) सरकतेवाका, आगे आमेराका

रथानः फलः फुलः शप्रयः शंनति । -शह-५० १४।

जननेका घर, भीता -धर्मी(मिन्)-वि पन्यो

वरपादक । -वंधम-पु० बह पतला मोश्रा विश्वस इन फल काते हैं, बूंत । -वेदमा,-स्थ्या-मो प्रमारी

पीका, बधा जनते समय दोनेवानी पीका ! - स्थर्ती-भी

मानाः उत्परित्थानः । – स्थान – पुरु कथा असतेशे वरहा

प्रसद्यना॰-स॰ जि॰ जन्म देना । अ॰ जि॰ जन्म शेगा

प्रसचिता (मृ)-पु [६६०] उत्पन्न करतेवाटा, विशा, प्रवेद ।

प्रमाणिनी-वि॰ न्ती॰ [शुं॰] बन्म देशेशाला, सन्तक बन्ते-

प्रसंयो(विन्)-वि॰ [तं॰] काम देनेशका, व्यव

प्रसम्ब-(व॰ [गं॰] प्रतिकृत्ता को बायों और हो। भे^{न्दर्}

प्रसद्द-पु॰ [यं॰] शिकारी विदिया दा प्रशा प्रतिक

प्रमहन-पु॰ [सं॰] दिस पशुः सदना प्रतिरोध क्रीके

प्रवाद्य-अ॰ (वं॰) बलाय, वश्युर्वेद ! -चीर-पु॰ टार्

शुटेश ! -इस्म-पुरु बकाय हर देना, तील हैला। मू

श्रमातिका−की॰ [मं०] वारोड रागेवा अत्र(र[†]व] आरि) र

प्रवाद-पु [लें:] विसेशना, ररपाता कतुसर, क्षण

देवनाकी स्थापी गां। वन्तुः इर्थ, प्राप्तना प्रधानिक

शांति। श्वमावदी शहकताः महाामा मा छवती जाउन प

प्रसम्ब-पु॰ [गं॰] विवाल वृक्ष, निरीत्रीका देव ! प्रस्वत-पु॰-[र्ग॰] बचा जनना गर्ममी नम क्षाप्रहाना

प्रसिद्धि - स्ते । (ते) माना ।

प्रसर्जन-प्र॰ (सं॰) प्रेंदना, प्रशामा; बर्गामा ।

वानाः एक प्रकारका साम ।

रॅगनेशला । प्रसल-५० [मं०] हेमेत् ।

धींगणा ।

बाली ।

सहन ।

वेदा ह

करनेवाणा ।

अस्तृतः प्रमधनीय ।

गनः पराभूत करना ।

प्रसद्या-गी० (ग्रे॰) बद्दिस ।

प्रसरणी—सी० मि०) सेनाका जारी बोर पैकटर १७३३

203 प्रदेशित-वि० सि०ो दिग्यलायाः स्तलाया द्वमा १ प्रदेशीय-वि॰ [सं०] प्रदेश-संबंधीः प्रदेशका । प्रदेश(ध्ट)-पु० [सं०] प्रधान विचार-पति । प्रदेह-पुर्व [मुंब] प्रलेप, लेप करना; फोड़े आदिपर दवा महाना । प्रदोष-पु॰ [बं॰] भारी दोष; अन्यवस्था; सार्यकाल; रात-का पहला पहर; त्रयोदशी ब्रत जिसमें दिनमर वर्षास मरते दें और शायंताल शिवकी पूजा बरके मोजन करते र्द । वि॰ बुरा, दुष्ट । प्रदोषक-वि० [सं०] जो प्रदोषकालमें उत्पत्र हुआ हो । प्रदोह्न-पु० [सं०] दृध दुइना, दोइन । प्रचतित-दि० [सं०] आस्त्रेदित, प्रदादित । प्रचार-पुर [संर] कामरेव, कृष्णके वहे पुत्रः मनुके दस पुश्रीमेंसे एका विष्णुके बग्रदेव आदि चार अंदीवेंसे एक, चारुर्वेदारमञ्जविष्णुका एक अंश । वि० बहुत बली । प्रचीत-प्र॰ [मं॰] प्रकाशित करना; किरण; दीति, प्रमा; एक वस्त । प्रयोतन-पु॰ [मं०] चमवनाः दीति, प्रनाः सूर्व । नि॰ चमकनेबाना । प्रद्रय-पु॰ [मं॰] प्रायम, भागमा । वि॰ तरहः । प्रद्राच-पु॰ [गं॰] पहादम, भागनाः तेथीने जाना । प्रद्वापी(पिन्)-वि॰ [गं०] पनावनकारी, भागनेवाला ! प्रद्वार-५० [मं०] दारके सामनेका रथान । प्रदेष, प्रदेषण-पु॰ (सं०) अधिक हेव, तीम हेव; प्रया । प्रधन-पु॰ [मं॰] तुद्ध, लहाई; खुटका मान्द्र विगाद्याः बिद्रारणः किमीकी सबसे बहुमस्य बरशु । वि० बहुन धनी । प्रधमन-पु॰ (धं॰) एक तर€को शुपनीः नावने अवर गोनना (तुपनी भारि) । प्रथम -प॰ [ग] अपमान, परामवः विशी ग्रीका सनीत्र मह बरनाः बन्तास्थारः आहामग । प्रकृष्ट-दिन, पुर [मंत्र] भागमण करमेवाला; संग करमे-श्रीहर्ष है प्रथमेंग-५०, प्रथमेंगा-छो॰ [मं०] आक्रमण; अपनान; द्रध्येषद्वारः सनीत्व-द्रश्य । भयर्पित=वि+ [ri+] सामांत्रा शति-प्रश्ता वर्मती । मचा-की॰ [ले॰] दलको पर करवा और सरवच्छी एक पानी । मधान-वि॰ [रो॰] स्वते बहाः मुख्य । पु॰ अकृति (स्रो॰)। इदिनस्य (गां॰); परमारमाः सन्तिः, मंत्रीः दिग्री दृष्टः, शमात्र कारिका मनुसा व्यक्ति, सुशियाः हेनारिकः महारत । -धातु-सी॰ परीरकी सुस्य धातुः हाकः क्षेत्रे । -पुरुष-पुरु साम्यवा सर्वेत्रमुख व्यक्तिः दिस् । -भाव (स्)-विश्वदूत प्रसिद्ध । -संबी(बिन्)-पुरु दिनो देखे या शास्त्रदेश सबसे बशा संत्री ।-समिक-प्रवाहित्य प्रदान् । मधानक-पुरु (३१०) बुदिनुस्य (मा) । विरु सुस्य । मधानन (नार्)- अ: [+!+] मुक्तनाः, यवान क्यते ।

प्रवासभा-भीने (शन) प्रवास क्षेत्रेडा साव, गुरुस्था ।

Chiest Light betiet

प्रधानारमा(रमन्)-पु॰ [सं॰] विष्यु । प्रधानाध्यापक-पु॰ [सं॰] किसी विद्यालयका सुरुव अध्यापक । प्रधानामारय-प॰ सि॰ी प्रधान मंत्री । प्रधानी - स्ती॰ प्रधानका पद या कार्य । प्रधानोत्तम-वि॰ [सं॰] बहुत प्रसिद्धः वीर् । प्रधारण-५० [मं०] बचाना, रक्षण । प्रधारणा-सीव [संव] किसी विषयपर मरावर प्रधान समाये रहाना । प्रधावन-पु॰ [सं॰] बायुः मार्थन, प्रशासन । प्रधि-पु॰ [मं॰] रथ आदिके पश्चिका घेरा, नेमिः कुमाँ । प्रधी−रतै० [से०] वडी समझ । दि० बद्दु अधिक चन्द्र । प्रभृषित-वि॰ [सं॰] संताविन, तप्तः पीक्तः पृषितः, सवासित् । प्रथुपिता−की॰ [मं॰] वह दिद्या जिस भोर सूज परता देः बरमस्य स्त्री । प्रभृमित-वि॰ [मं॰] श्री भुशों दे रहा हो, भीतर 🛍 मीतर गुनग रक्षा की। प्रपट-वि॰ सि॰] नियके प्रतिदर्ध्यवहार या भौहत्य हिया गया हो। अपमानितः धर्मदी, शोरा । प्रधमापन-पु॰ [सं॰] स्वरमिकाकी बसावः दर करने, दवाम-किया ठीव करनेदा उपनार । मध्मापित-वि॰ (रां॰) पृष्का हुआ (शंरा) । प्रत्यान-प्र• (धे॰) प्रवाद विवन । प्रध्यंस-प्र॰ [मं॰] दिनाशा रिली पर।र्थसी भगीनावरथा (Hio) 1 प्रध्यंतक-विक प्रक [मेर] विनाश करनेवाना । प्रध्यंसाभाष-पु॰ [भं०] कारणभे कार्यदा वह अभाव जो वनदी वत्यचिक्ते पीछे श्रीमा है । प्रध्यंसित-वि॰ [मं॰] विनष्ट किया द्रमा । प्रध्येसी(सिन्)-दि॰ [लं॰] नाहाशील, नष्ट होनेपाला माध दरनेवाला । प्रध्यस्त-वि॰ [र्ग•] विग्रहा प्रध्रीग दुआ हो। दिन्ह । प्रमण्-पुरु देव 'प्रम'। प्रमात-(१० दे० 'प्रचान' । प्रनिति - शी॰ दे॰ 'प्रदर्शि' ह प्रनप्ता(प्र)-पु॰ [मं॰] परनानी, मादीश शहर । प्रमामन--पु॰ दे॰ 'प्रमामन' । प्रमागा•-ए• कि॰ प्रयाद काला । . अमय ० – ५० दे० 'प्राप्तः' । प्रजतित-वि [4] गतियान् दिया द्वमा देशित, शुक्त विषा द्रमा । धनवण-५० देव 'प्रदेश' । प्रमुखना=-श+ शि+ प्रसाद कृत्या ६ प्रवष्ट-दि॰ (तं॰) हुए। दुरी सरह स्टा मगा दुआ। दवादिन । प्रमास•-पु॰ दे॰ 'प्रयास' । धनामी १ लगीन हुए, जायाप मादिकी यागम बहते श्रमक मधानीम-पुर (संर) दिसी औत दा शरिवत मुख्य श्रीत ही जानेकारी दक्षिणा या केंद्र हे पुरु प्रणास बर्डे बाला ह प्रमायक-पूर्व (देव) प्रदेश संपद्ध र दिन दिनादा प्रपद्ध

बाला मंत्राप दिसर्गे प्रश्तनका परिचय आदि रहता है । रूपमें रता गरा हो (आ०) ३ प्रस्थित -पु॰ [मं॰] पूर्वी भारिका विद्यारन । प्रकृतिन, प्रकृतिम - दि॰ [गृं॰] संदृत्तः प्रवृतिन ६ प्रस्मान-वि= [र्ग•] विशेष स्थाने स्पन्तः शिवनी भागी साम रही हो, प्रवरणपाल, प्रारंथिका व्यक्तिया प्रवासनी क्रिया इम्या परिवा पदन, सैयारा कार्यन । पुन द्वारा दुवा विषय, प्रवर्णपता विषया प्रवृत्ति ह मानुगोहा-पु: [tie] बद कव्यानंदर प्रशे प्रश्नावे

प्रस्तायक-पुर सिंगी प्रस्ताय करनेवाला । प्रस्तापना-स्री० [मं०] आ(भा प्राथ्यमा नारव्ये आहेश्री मुखारका नदी, विद्यक या पारियाधिक माथ होते-प्रसादित-दि॰ [गुं॰] आर्थ हिया एथा, आरम्भा मिरिन, मृदिन: बिसामा प्रस्ताम किया गया हो। जी प्रत्नाव-

मस्ताप-पु॰ [मं॰] प्रवृष्ट रतुतिः अवसरः मीहाः प्रतंग, प्रदर्भः मामवेदमा एक बंदा विमका गान अस्पेता जामक मरिवन करमा दे: आरंग: नाःवयी प्रशासनाः समाने शामने विचारके लिए रशी हुई बल (आ०) ।

मन्त्रशी(रिन्)-(१० (६०) फैलानेवाका (समासमें)। १० एक नेपरीय । मन्तार्पैर्म-प्र• [मं॰] श्रॉराका एक रोग ।

आदिया विद्यावना विद्यावनः विश्वताः प्रत्यः प्रीत्स प्रैटानाः सीडी: एक प्रकारका लाल: छंदीके भेद जाननेकी एक विधि । -पंक्ति-मी० एव छेत्र ।

मस्तव-५० [गं०] रत्तिः समबसर । प्रस्तार-प॰ (सं०) पीलानाः दक्ताः वासदा नंगलः पशी

प्रस्तरेष्टा-पु० [र्ध०] एक विद्येरेव । प्रस्तरीयल-५० [मं०] चंद्रकोत गणि ।

जब शीप परवरने एविवारोंसे वाम सेते थे। प्रस्तरण-प्र• प्रस्तरणा-म्ही॰ भि॰ो विदायनः सामग्र ! प्रस्तरिणी-भौ० [मं०] सफेद हुव: बच ।

अस्तर-प्र• सिं•] पत्थरः पश्चो सदिका विधावनः विस्तराः विकारनः मुद्यका सद्धाः मणि, दशनः एक अकारका तालः पौरस मैदान: प्रधात अध्याय । —क्षेत्र-पण प्रधानभेदः **१** इमोद गागक लता । -युग-पु॰ वह ऐतिहासिक काल

शित । प॰ जातिच्यन व्यक्तिः पापीः नियम गंग करने-बाला ब्यक्तिः योदेका एक रोग । प्रस्केट-प्र (सं०) वर्तकाकार वेदी: सहारा. अवन्देव t प्रसंपलम-प्र• [सं•] रखनन, पनन १

प्रस्कृषय-पु० [मं०] एक ऋषि तो क्षण्यके पुत्र थे। प्रस्करा-विव थिवी कृदा हुआ। विरा हुआ। पतिला परा-

कृदा जायः अनीसारः विरेचनः गहादेव । प्रस्कृदिका - गी० (सं०) विरेचनः अतीसार ।

प्रस्कंदन~प॰ [मं॰] कृदना, फर्लोगः वह रथान जहाँसे

चमदेशा थेडा । प्रमेवक-पु॰ [मं०] बीणाडी तेंबी: कपडे या नमडेका

प्रमेन-प॰ मि॰ । एक प्राचीन राजा (हरिवंदा) । प्रमेनजित-पु॰ [पं॰] एक प्राचीन रागा (दिर्विश)। प्रसेव-प॰ [सं॰] प्रकृष्ट सेवनः बीपाका संबी: कपड़े या

कथनमें इसरे बांधित प्रस्तुक्या धोतन दिया बाद । अस्तुति-स्त्री॰ [सं॰] प्रशंमा (वै॰)।प्रकृष्ट स्तुति।दिन्द्रीक्षा

अस्तीता(त)−वि० (सं०] विशेष रूपने स्वरून स्वरूपणः। ५० सामका अवन भाग गानेवाला ऋत्विक ।

प्रस्तीम~पु॰ [मं॰] एक प्रकारका सामा प्रमंग; मंदर्ग । प्रस्थेयच-विक सिंकी परिवासतः एक प्रश्च प्रश्चेतन्त्रा

प्रस्थ-विव सिवी प्रवृष्ट रूपने रिक्षाः प्रायान करनेराणः पैत्यनिवालाः दहः रिधरः । पुरु पर्वतःहे कारके सर्वात भूमि, साना समतल भूमि, चीरम मैदाना रिखास रूपेन पलका - एक प्राचीन परिमाण, आहरूका धनुधारा १ प्रस्थके मापकी कोई वस्त । - कसमा-प्रश-प्रश् पर्गः

प्रस्थान-पुरु [संर] गमन, स्वानगी; त्रिगीपुरी मुद्द-पानी

कुन्य; प्रेषणः गार्गः एक प्रकारका' शाटक (मार्शः)। विकि पद्धतिः गृत्यु, मरणः अपरेशका सापन (वैमे-उपनिष्)

गीना और ज्ञानुत्र); यस आदि जी यात्राके पहने संनल

रथानकी दिशामें कही राज दिया जाता है (आ)। -

प्रस्थापन-पु॰ (सं॰) प्रकृष्ट रथापन; प्रत्यान वरनी

प्रस्थापिल-दि॰ [सं॰] विशेष रूपने स्थापितः गेश (मे

प्रस्थायी(यित्र)-वि॰ [ले॰] 'जी प्रस्थान दरनेशे कि

प्रस्थिति-सी॰ [मं॰] शतन, यात्रा, प्रशान, स्या

प्रस्मित्व-(४० (११०) दिन्दी हेल दा विस्तारे मधित है।

प्रस्तुत-वि॰ [गं०] टपक्षी, बद्दीवाठा । ' नानी-क्षेत्र

मानुष्य-विक शिकी सुरातः प्रकृतः, विक्रमितः प्रकृतः रहे ।

अक्षुत्रम-पुर्व [गृंद] दिश्यात दीता प्रस्त दीता। प्रश्युरण-पु॰ [गु॰] निक्तनाः पर्वथाः स्ता रहाः

प्रस्कृतिल-दिक [लंक] यदेवल दुला, हिला। दुला दे

प्रक्षितम-पु॰ [तं] विदेव प्रयो बाला या दिली

दीवार कुर विक्रमाना दिस्तित होना का बरमा। महामा

बह की शिसके कार्नीने बाज्य प्रेमके बारण दूव हरह

भेजनाः दौरवमें सनानाः प्रमाणित वर्ताः प्रवीवने स्टा

श्रमी-सी॰ उपनिषद्, गीवा और प्रक्षग्रा !

प्रस्थानी - वि० जानेवाला, प्रश्वाम करनेवाला है

प्रस्थापमा-भी॰ [गे॰] भैत्रमा, प्रेपण ।

प्रेषितः भागे बहादा हुना ।

जी दरी जारीबाला हो।

रूपमे रिथतः १३ ।

विशेष रिषति ।

क्षी) भारा: गन ।

रहा हो।

बंदन ।

प्रस्थिका-मी॰ शिंशी अंदरा रहा। प्रक्थित-वि॰ [शे॰] निस्ने प्रस्थान हिना है। हिदेश

प्रस्न-पु॰ [क्षेष] स्तासपात्रा क देव 'प्रश्न' । श्रक्तय-पु (रो) बदना। निकल्ना। (रामी, दूप प्राप्ती

प्रसन्ता-सी॰ [गं॰] पेलेगा सी, सर्वेष्ट्र ! प्रकाय-तिक [sie] श्लाम सहते गोम्य (दम मारि) !

'बर्वटम-५० (२०) प्रश्यम ।

पश्यांका हरण ।

एक प्रकारका नीव्। तुलसीही एक जाति।

प्रस्थल - पर्व विशेषक प्राचीन देश !

603 बाली (समिति) । -काच्य-पु॰ (मुस्तक्का उल्टा) वह पान्य जिसमें विसीके जीवनकी विशेष घटनाओंका कम-यद्र चित्रण किया गया हो। प्रयोगक-वि० प्र० [सं०] दे० 'प्रबंधकतां'। प्रवश्न-पु० [मं०] इंट्र । प्रयह -(वि० [मं०] प्रथान, श्रेष्ठ । प्रयल-वि॰ (सं॰) प्रहर यहवाला, बहुत बली; प्रचंड, स्म, भोरका; भारी, महानः हानिकर । पु॰ कॉपल, पन्टन । प्रयस्ता-सी० [मं०] प्रमारिकी सता । वि० सी० दे० 'प्रदस्द'। प्रयक्तिका-स्वी० [मं०] परेसी । प्रवाधक-वि० [मुं०] भगाने, इटानेवालाः निवारण वरने-याला; पीष्टन करनेवाला; अरबीहार करनेवाला । प्रयाधन-प॰ [सं॰] निवारण करनाः मसानाः शनकार प्रवाधित-वि॰ (सं॰) पीडितः भागे बदावा दुर्मा । प्रवाल-५० [मं०] नवा मीमन पत्ता, नव-पह्नवः मृताः बीणादी छक्त्री, बीणाईटा शिष्यः जालवर । -पश्च-पुरु साम सगल । -पाल-पु॰ लाल चंदम । -भस्म(नू)-पुर गुरोका भरम । -धर्ण-विव मृगेके रंगका, काल । प्रदालक-पु० (धु०) एक दश । प्रयास्टिक-पु॰ [40] एक शाक, मीवशाक । प्रवास = -पु० दे० 'प्रवास' । प्रवाह#-प्र• दे॰ 'प्रदाह'। प्रवाह-पु० [सं०] दाधका अगना भाग । प्रविमना - भ॰ कि॰ प्रदेश करना, गुमना ।

प्रयोग ! -- वि० दे० 'प्रदेश' । स्दी । अस्ती भीवा । प्रवीर =- वि॰ दे॰ 'प्रवार' । प्रमुद्ध-(४० (४०) जागा हुमा, बायदः प्रशेषवृक्तः पंटितः धानी। विस्ता दुशा, रिकमिता (बाहु भारि) जिल्ला असर पःने लगा दीः संत्रीय । प्रमाथ-५० [मं०] गहपि ।

प्रयोध-पु॰ [गं०] जागना, जानरणः सनेन होना (हा०); प्यार्थ दान, सावदान; शांत्रना, दाइमः शतर्रताः वही द्वरेगंपनी किर तेन बहना; पूचना खिलना, विकास: प्यान्या करता ।

प्रयोगक-दि॰, पु॰ [सं॰] जगानेवाला सचैन वरनेवाला (सा॰)। सान देनेवाला, सामदाताः वाद्य वेवानेवालाः राजाकी प्राप्ताकार जगानेकाला, स्तुतिबाट करनेवाला । मधोवन-पृण् (तेण) भगनाः भगानाः भधेन होनाः नःह-रामा बचार्व राजा भीवे बगजाः समहाजाः र्यवधी विर से द ब इसा ।

प्रयोधना १ - स॰ वरानाः संदेश बरनाः स्थानानाः इताना कोई बाद विभागत काइन वैदाल, समाबी

प्रकोषणी-कांत [क्षेत्र] देव ध्यक्तीरक्षी हे प्रवेशिय-दि॰ (संब) तागारा दुवार जिल्हा प्रशेष विदा रूटा हो, सम्रहाका जिल्लाका हुआ ह प्रयोग्याम - ३०) । (१'०) हद अर्ग बृश्न ह प्रवेशिको नको र [तरे] देवे। बात बक्त प्रश्लेष दुरानका ।

प्रभंग-दि॰ [सं॰] कुचला, रौदा दुआ; पूर्वतः पराभृत । प्रभंजन-पु॰ [सं॰] वोद-फाइ: वायु, हवा:प्रयंट वायु, बोरकी हवा; पक नाटी-रोग; एक प्रकारकी समाधि ! वि॰ तोइ-फोइ करनेवाला, नष्ट करनेवाला । -मुस-पु॰ इनुमान् ।

प्रभद्ग-पु॰ [सं॰] नीमका पेहा प्रसद्भक-पुर्व [गुंब] एक पर्यवृत्त । विव बद्रस संदर् । प्रमदा-सी॰ (मं॰) माववंती ।

प्रभव-पु॰ [मं॰] स्टब्सि, जन्म; सम्बद्धिका कारणः उत्पक्तिका स्थानः मूल, जदः नदी आदिवा उदमस्थानः पराक्रमः साह संवरमरों में मे एकः विष्णु ।

प्रमचन-पु॰ [गुं॰] उत्पत्तिः उत्पत्तिःथान । प्रभविता(मृ)-पु॰ [मं॰] शासकः प्रमु । प्रभविष्णु-वि॰ (वं॰) प्रमारशायीः शक्तिशासी। प्र० प्रमु, वर्षादवर, गाहिक: विष्ण !

प्रमिष्णुता-ररी० [मं०] प्रमायोत्पादवना । प्रमाजन-पु॰ [मं०] शोगांवन, सहिजनका पेह । प्रमा-नी॰ [मं०] तेत, चमर, दीतिः प्रशासः किरणः स्वं किंव; दुर्गा; कुवेरकी पुरी; स्पंकी एक पती; एक अपाराः नदुवदी माताः एवः नृषः। -कर्-पु० स्याः शिवः अधिः चंत्रमाः समुद्रः मदारका पीपाः भीगांसाहे एक प्रतिद्व आचार्य थी 'गुर' नामने विख्यात है। सुद्य-हीपहा एक पाँत ।-करी-छी॰ गिडियी दस अन्धाओं-मेंगे एक (बी॰) -कीट-पु॰ जुगन्। -प्रस्थित-वि॰ विसप्र दीसि पै.की दुई ही I-प्रशेह-पु॰ प्रशासकी बिरण !-लेपी(पिन)-वि॰ प्रशासने धरा हमा। प्रमक

बिगेरमा द्रभा । प्रमाद+-यु॰ दे॰ 'प्रशाद' । प्रभाग-पु॰ [मं॰] भागरा भाग, दुरदेश दुरहा; निवदा निश्र (देमे-१/३ का १/५)। प्रमात-९० (मं) मरेरा, प्रायन्ताना प्रमाने उपयप्र गुर्वेहा पुत्र है दिव की १९७ या अहाकिन होने नगा हो। -सन्वीय-पु॰ प्राप्तःकासदाः कृत्य । -कृत्यः।-प्राप-विश्वामाण्यः ।-बालः,-समय-पु० तद्याः, प्रामः-

कामधी देना ।-फोरी-की० [हि०] कीर उपान मगाने या किसी बातका प्रवाह करने के बरेदकने जन्मन बनावह विधेष प्रकारके नारे लगाने द्वार भीरमें परणी गुमना । प्रभावी-की शरेरे याथा यानेन ना एक महारवा माना दादन (गायभें ही कोनी) । प्रभान-५० (०) दीति, प्रदात ।

प्रभागन-पु॰ [शं॰] राहिमान् वर्गा।

प्रमाय-पुर (र्वत) दीवि, स्तिन प्रदम्न, क्यू ता माम्बर्दे, दान्ति, विक्रमा सुर्देश वक्त पुत्रा सुवी रक्त गत्र, मंत्री। राज-बीद प्रतिक शबादा बीपा कीत परने। पापत्र मेंबा प्रशास कर्ता वर्तमाना भगरा द्वारा सिन्ता । -वर-रिक कार्य शामनेवामा १-ज-दिन समापने पापका पुन सीम प्रवासी संवारियों केने यह जो बीच के हुए हैं। करने प्रशः शेरी है। न्हाप्सं(स्थि) नक्षि प्रसासन्। प्रभावक, प्रभावन-दि॰ [धेंचे] प्रमुख, शिल्या प्रमुख Chinara Erabates s

प्रति-प्र॰ मिं॰] अंत, श्रेष भागः सिरा, होरः स्निराः

कोना सीमा, इदा पृष्ठ मामा रिसी देशका कोई का

माग, प्रदेश (जैसे-बिहार, आ०); एक ऋषि। -ग-

चर-विक पास रहनेवाला ! -हर्ग-पुक नगरहे शरहें हैं

बाहरकी बस्ती; परकोटेके बाहरका दर्ग। -निवक्त

(सिन्)-वि॰ श्रीमायर रहनेवाणा। -पराा-माः

यक पीपा !:-भूमि-सी० वंतिम स्थानः सोडी। समारः।

-विरस-वि॰ की बंदमें निरसार हो। श्री कार्च सार

· द्दीन द्दो । —वृत्ति—सी० द्वितित्र । —शूम्य-दु० रारा

आदिने रहित एंबामार्न !-स्य-दि० सीमापर रहतेराण।

र्यांततः(सस्)-म॰ (सं॰) सीमा वा धीरसे होस्र ।

प्रांतर-प॰ सि॰ देश रास्ताः छाता भारिने रहित यहे

प्रहीण-प्राकृत सिन । प॰ दाल, सालन । प्रहीण-दि॰ [मृं॰] परित्यक्तः यकाकीः सुप्तः बीर्ण-शीर्णं । प॰ नाशः हानिः । -जीवित-वि॰ मृतः । -होष-वि० पापरदित, निष्याय । प्रहत-पु० [मं०] मृतयश, बलिबैदवदेव । प्रहेति-सी॰ [मं०] उत्तम होम (बै॰)। प्रहत-विव [मव] जिसपर प्रदार दिया गया दी, बाहतः . पेरा दुवा, चलाया दुवा, बढावा दुवा (बह्न बादि)। पु॰ आपात, बार । प्रहरू-वि॰ [सं॰] अति प्रमुख, प्रमुदितः सहा (रीम)। -चित्त,-मना(नम्)-वि॰ बहुन प्रमुख । -मुख,-षष्टन-वि॰ जिमका नेहरा प्रसन्न हो।-रूप-वि॰ छो प्रसन्न देख परे: निमे देखनेमे मनमें प्रमन्तना हो। -रीमा(सन्)-वि॰ त्रिप्तके बाह्य खडे हों। महरूक−पु॰ [गं∘] बाह्र । प्रहासमा(सम्)-वि॰ [मं०] दे० 'प्रहष्टिया' । महेणक-पु॰ [ग॰] पुत्रा; लप्छी; स्योदारमें बाँडी जानेशकी मिटाई ह प्रहेलक-पु॰ [छं॰] दे॰ 'प्रहेलक', बहेला । प्रदेखा-मा॰ [मं॰] स्वरहंद मोहा । प्रदेलि, प्रदेलिका-स्थ० [मृ०] पहेली । महादः महाव-पु॰ [मं॰] अतिशय आगंदः अध्यपिक प्रमाताः प्रमोदः भागातः, शब्दः विश्वासः एक प्रमिद्धः भक्त भी हिरण्यस्थिपुदा पुत्र थाः एक मागः एक प्राचीन देश । प्रहास-५० (सं०) धव । मञ्जू-पि॰ (से॰)प्रसुख । प्रदुत्ति, प्रदुन्ति-भी॰ [मै॰] प्रसन्ता । महत्त-विश् (संश्री मसत्र । महादक-वि॰ [मं॰] प्राप्त करनेवाला, इंपेकारक । [बी॰ 'महादिका' ।] प्रदादन-वि॰ [मं॰] प्रसन्न वरनेवाला, इर्पजनक । ge प्रसन्न करना । मद्यादिस-दि॰ (रां॰) प्रसन्न किया हुआ हे महादी(दिन्)-(४० (सं०) प्रमुख दोनेबाला । मह~ि॰ [सं॰] गग्रा सुदा दुवा दातुओं; आयस्त । महाग-पु । [गंव] गगरा प्रस्त वर्गके निए शकता । महत्य-प्रश्नीर्गश्ची संदर शरीर । प्रद्राचीया-सीव (मेव) पहेंची । महोजलि~[40 [मेर] दाव भीरवर छामने सुद्धा दुआ ह REIT-[40 [rio] tiet ger t

प्रद्वाप-पु॰ (गं॰) जाराइत, भाडात । प्रांग-रि॰ (गं॰) तरे शेल-शेषदा । पु॰ छोरा होल,

प्राचित्रतः-भी+ (से+) अपेटी स्ट्टना (

प्रोतस-५० (६०) कांगनः छोटा दोण, बस्त ।

प्रोजन-रिक् (मेर) भरत, शुक्रेश गरा, देमाल्यास सम

मांत्रति-दि॰ [संग] मो बाद मोई हो। बम्रोमीत र स्वीत

मार्थालक, मोवली (हिन्)-दि॰ [लं॰]दे॰ 'मांगीत' ।

TEX 1

सर, बरावर ।

कीरे दूर शाव ह

बनः पेर्का सीराहा भाग, कीरर । -शस्य-पुर है। 'प्रांतरान्य' I प्रांतिक-वि॰ सिं॰ दि॰ 'प्रांतीय' । मौतीय-वि॰ सि॰। मांत-संबंधीः मांतका । र्मासीयता – स्री०[रां०] अपने प्रांतके प्रति मी४ मा प्रप्रता प्रोज्ञ-वि॰ [लं॰] कॅमा: हवा। पु॰ लंबा अलगी। -प्राकार-वि० शिलका परकीरा बद्दत केंचा है। -सम्ब-नि॰ संदे मनुष्यको प्राप्य । प्राष्ट्रमरी-वि॰ बिं•ी बार्रविक, श्राप्रमिक ! -रहम-३॰ वद रमृत्व जिममें आरंभिक शिद्धा दी माय। माइयेट-वि॰ (अं॰) व्यक्तिविधेष्से संदर्भ व्यक्तिविधेषा निमी: भी भौरीने दिवाया जाय, श्रम, भारती: देर-सरकारी (जैसे-प्रारवेट सविम्) । -मेंग्रेटरी-प्र• विशे वर्षे भारमीका वह निश्री सहावक जी पत्र भारतार वट भन्य व्यक्तियन कार्योंचे वसकी सहायना धरमा 🕏 परा गरीस । प्राक्टय-पुर्व (मंग) प्रस्ट होनेसा भार, प्रस्तहा l प्राकरणिक-वि+ विंग) विगता प्रदेश हो, प्रकारण अरत्वा उपमेष । प्राकर्षिक-वि॰ [गु॰] नरशिष्ट देवेडे भारतह । भाकपिक-पु॰ [ejo] परदारीपश्रीरी। श्री शाम निर्म नर्नदः सियोधी मंद्रशीमें माननेवाना पुरुष । बाकास्य -यु॰ [मं॰] बाद गिहियोंमें एक विगरे प्रत हैं। जानेपर मनुष्य भी चार्चा है यह हो जाना है। बाकार-पु॰ [लं॰] सगर था दिखेंहे थांगे और शा दे दि बनायी जानेवाची दीवार, परकोशा हैंह, स्वती कारिय बनाया श्रथा देश है प्राकारीय-वि॰ [नि॰] प्रत्यारके बोग्या परकोटी जिले प्राकारप-पु॰ (गं॰) प्रवासारा भाष, प्रकासायिक श्यानि ह माहून-दि॰ [ele] महति-बुंदेवीर महतिकार मण्डिकी व अट्टा मीचा न्यताय शिक्ष, स्थामानिका सामारा, अपरी त्य । सी- प्रोटकी बीबी। एक प्राचीन माना शिक प्रदोष संबद्धतहे मारकी भारिये तथा करव अने में रिक" द्देः वद मध्यप्रधि । -ज्यर-पुर वर्षा, शहरू और मार् marramelin wie und nebell eident une! न्दोष-पु॰ दान, विद्युद्धि दीक्षी बन्ध्य दी ।

प्रमर्दन-पु॰ [सं॰] एक दैत्यः विष्णुः शिवका एक अनुचरः नाइ। करनाः निकालना । वि॰ नष्ट करनेवाला । प्रमर्दित -वि॰ [मं॰] नष्ट-धारत किया हुआ, रौदा हुआ।

प्रमर्दिता(तृ), प्रमर्दी(दिन्)-वि॰ [तं॰] कुचलनेवाला, नष्ट करनेवाला।

ग्रमा-सी॰ सिं॰ी चेतना, दोष; वो वैसा है उसको उस रूपमें जानना, किसी बरतुका यथार्थ ग्रान या अनुभव (न्या॰); आधार, नीव (वै॰); माप । प्रमाण-पु॰ [गुं॰] यह साधन जिसके द्वारा किसी वस्तुका

यथार्थ गारा हो। प्रमाना साधन (न्या॰); वह साधन जिसकी सहारे कोई बात सिद्ध की जाय, सब्तः वह जिसका बन्त या निर्णय यथार्थ या आप्त माना आया मापा परि-माण, माश्राः इयसा, सीमा, अविधः एक अर्थाणंकार जहाँ आठ प्रमाणीं मेरी किसी एकता कथन हो। धर्मशास्त्रः मूलधनः विष्णुः एकाः देतुः कारणः नियमः त्रेराशिककी पहली शाह्य (ग०); [दि०] यथार्थता, सत्यता; निश्चय, पक्षा इरादाः ठिकामाः भरोसाः मानने या मादर करने योग्य बरतः आतापत्र, आदेश । वि० यथार्थः चरितार्थः सत्यः उनिन, ठीकः । अ० तकः, पर्यनः । - कुदाल- वि० बाद-विवाद या बहम बरनेमें चतुर, बुक्तिच्छ । -कोटि -स्रो॰ प्रामाणिह बन्तुओं या काधारींकी श्रेणी या वर्गः बाद-विवादमें यह युक्ति की प्रमाण मानी आती है।-ज्ञ-दि॰ प्रमाण-भप्रमाणको जागनेवाला, पंडिन । पु॰ द्यित । -रष्ट-वि॰ शामादिसे सन्मन (वो प्रमाणके रूपमें पैश किया था सर्थ)। -पश्च-प्॰ यह पत्र या हेम की किसी शतरा प्रमाण गाना जाव । - जुद्दव-पु॰ मध्यस्थ, र्वन । ~प्रयोग-दि॰ नर्त-पुश्ल । ~सूत्त-दि॰ जी दिशी बानहा प्रमाण हो या माना जाय, प्रमाणस्य । पु॰ शिव । -धार्मा-वाषय-पु॰ स्वायभेगः वावय । -शास्त्र-पु॰ स्वावद्यास्य, तर्रद्यास्य ! ~सम्ब-पु॰ बहः सून विस्ते धोरं बरतु नापी जाय । विश्वास्यत ।

प्रमाणक-(१० [११०] (समागांत्रमे)प(साय दा

प्रमाणनः (तम)-४० [सं०] प्रमाणके अनुसार । प्रमाणना॰-अ॰ कि॰ दे॰ 'प्रमानना'।

प्रमाणाधि इ-दि॰ [रो॰] परिमाणने मधिकः अण्यदिकः।

प्रमाणिक-विक [मंक] विश्व है निय कोई प्रमाण हो, प्रमाण-िया भी तिभी बालका प्रमाण हो, प्रमानकृष (दि०) ।

पुर भौरीम भेतुलको एक लहाँकी माप, हाय । प्रमाणिशा-स्था (श्रे) एक शेर १

प्रमानित-[१० [११०] प्रमान दाश मिड, प्रवासीय । प्रमाणी-शी॰ (शं॰) एक धर, प्रमाणिका ।

प्रमाणीकृत-दिश [तंत्र] जी प्रमाण उदराया गरा ही । प्रमात्त्रस्य - दि । (०) ब्रह्म, मारमे दीव्य ।

प्रमाना(न)-(४० (४'०) प्रमाण्ड दाल्ही प्राय हरनेशानाः दी प्रवास प्राता किये क्युका प्रान प्रात करें। किये विकास समामान बर्जनाता, विक्ती । पुर क्षेत्रकार-

की कृतिने अवनिद्याल का बगाने महिकितित सैन्या (देश) ह HELLE-Z. [44] 4(2)31

ग्रमानामही -धीः (संत) सरज्ञाते ।

प्रमाथ-पु॰ [सं॰] मथना, मधनः बलपूर्वक इरण करनाः बळात्कार; बहुत अधिक दुःख देना, उत्पाटन; वध, संहार; कास्तिकेयका एक अनुचरः धृतराष्ट्रका एक पुत्रः शिवके एक प्रकारके बनुचर, प्रमध ।

प्रमाथिनी-सी॰ [मं॰] एक अप्परा । प्रमाधी(थिन)-वि॰ [सं॰] मधनेवाला; बलपुर्वक दर्प करनेवालाः पौद्या पर्वेचानेवालाः मारनेवालाः नष्ट करने-बालाः धुम्य करनेवालाः कारनेवाला । [स्री०'प्रमाथिती'।]

प॰ एक राक्षमः एक संबरसर । प्रमाद-प॰ [एं॰] कर्तव्यको अवर्तव्य समझकर एसभे

निकृत होना और अवर्गभ्यको कर्गभ्य समझकर उसमें प्रकृत होना, अनवधानताः भृष्ट-पुरु, गरुएत, हापरवाहीः मद, नद्याः उन्मादः मुख्याः संतरः, विषय्।

प्रसाद्वाम्(यन्)-वि॰ [मं॰] प्रमाद बरनेवाला, प्रसाद-युक्तः विना विचारे काम करनेवालाः मतवालाः पागण । प्रमादिका-सी॰ सिंगी वह बल्या जिमका बीमार्ग जिमीते नष्ट कर दिया हो। लापरबाह की ।

प्रमादित-वि॰ [मं॰] तिररहत, देव ममला हुआ। प्रमादी(दिम्)-वि॰ [सं॰] की बरावर प्रमाद करे, प्रमाद-

ग्रील, कापरवाह: मत्तः विश्विम ।

प्रमाम=-पु॰ दे॰ 'प्रमाण'। प्रमानना॰-स॰ कि॰ प्रमाणके रूपमें स्थाहार प्रमान प्रमाण मानमा, ठीक माननाः प्रमाणित वरनाः सिट

बरना १ प्रसानी - विश्व प्रामाधिक, मान्य ।

प्रमापक~वि॰ [वं॰] प्रमानित धरनेवाधा । पु॰ प्रमान । प्रमापण-पु॰ [सं॰] सारण, वध । प्रमापविता(म)-दि॰, पु॰ [गुं॰] मारनेशका, हायारा ।

प्रमापित-दि॰ [थं॰] रश्तः इत । प्रमार्पः (पिम्)-विक, प्रक [गंक] मारनेवालाः तृष्ट कारते-

प्रमायः प्रमायक-वि॰ [मं॰] भरवधीन, मधर । प्रमाशंक-दि॰ [रं॰] थीने, शक्त बरनेशना पीठतेशनाः

विद्यानेबाध्य । प्रमार्जन-पु॰ [र्स•] भीताः नाम करताः पंधनाः पुर करना ।

प्रसिम-वि॰ [मं॰] दिसहा दवार्थ राग दुभा हो। ए।न, क्कान् दरिवित, बहरा मात्रा दुआ; ममात्र द्वारा निव दिया पुनाः (सवामांत्रमें)---परिमान या दिश्यात्था । प्रसिनाक्षरा-न्दी (र्थ) यह श्रीक कृत्र ।

प्रसिति-की॰ [सं•] दिनी प्रसाय इत्स प्राप्त प्रशास इ.स. इसाः सार् ।

प्रसीड-वि॰ (गं॰) देए व किस दुष्टा, मृतिया पना।

प्रसीत-दि॰ विंको स्त, सरा दुन्या दनि सहाया दुन्या । पुरु बहरे निविध बाहा हुआ रहा ।

प्रमाणि-न्दी॰ [वं॰] स्पष्टा रुप्त । प्रमीतम्-पुर्व [मेंद] भारते यह स्थाना ।

unim-ele [tie] ein ficeer, pifer miech यह मार्थ ।

प्रसीतिका-स्तेश (तृथ) त्या ।

प्राप्तिपारः, प्राप्तविषेक-पु॰ [गं॰] स्याप द्रानेके हिए राजाती भारमे नियुष्ट हिनासक, स्थायाचीय । मार्णत-पु॰ (अ०) वापुः हमांचन १ प्रार्गती~मी॰ [मं॰] भूगः धीका दिशक्षी, दिशा । प्राण-१० ति । बाया शरीर के भीतरकी भीवनावारकपी बाय (रमुद्दे धीप भेर माने गरे हैं-वन्त, बरान, ब्यास, क्षप्तम् कीर सुमान); दशमः संगः भ्रमः नीरः बीरनः याना प्राप्ता प्राप्तिया पापमा काल्या मानक्य दशका गुवाशार्थे रहनेवाणी बानुः वद की प्राचीके बमान विद हो: वेदावत प्रावत्रको गार्विदीविने एका बाजाबा मण्या-मृत्य हरता बाद रोप्टास्य, योबहसर "व" वर्त, कराहा य.क. प्रसारका शामा अद्या किया । —आयारक—प्रश्न कर विसाद बीपर अवदेशित हो। श्रीवनदा सद्दाराः परि, शाविदा मेरी, सिंदनुष ३ - इ.इ-वि० तरवती कानेशन्ता वेक १

माज्य-वि॰ [मं॰] जिल्ली भूव भी बहा हो; प्रजुर, प्रमृतः रिज्ञाला क्षेत्रा। शीर्थ ह

प्राक्ती-लीव [मंद] विद्यांत विद्यानुकी खीत वृदेशी यह षग्नी ।

अपनेकी बहुत बुद्धिमान माननेवाला (इस अर्थने "प्राप्त-मानव" भीर 'प्राज्ञ मानी' रूप भी दोने दें)। प्राज्ञा-न्यो• [शंब] बृद्धिः बृद्धियती स्त्री ।

प्राजी(जिन्)-पु॰ [मं०] बात परी। प्रामेश-४० [तं] राहिणी नदात्र । माज्ञ-वि॰ [सं०] पुढिमान् : चतुर, दशः महामूर्य । पु० चनुर मनुष्या एक तरहका तीता; सन्तिरेक्षे की आई (९०); वीवारमा (४०) । -मन्य,-मार्ना(निन्)-नि॰

प्रातिक-प्रविशेशो नाथ पदी। माजिला(मु)-पु॰ [एं॰] सारवि ।

प्राजापस्ता नर्सा (सं०) भन्यास श्रद्धम करनेके पूर्व की जानेवाली एक प्रकारकी दृष्टि जिसमें दक्षिणाके स्वमें सर्वस्य दान कर दिया जाना है।

प्राजापम्य-दि॰ [मं॰] प्रभारतिसे उत्पन्नः प्रजापति संबंधीः प्रवापतिकाः श्री मनापति देवनाके निमित्त हो । प॰ आठ प्रकारके विवादीं मेंसे एक जिलमें बन्याका विता बर और करवामें गाईश्या धर्मका पालन करनेको प्रतिशा करानेके मनंतर दोनीको पुत्रा करके कन्यादान करना है: बारह रिनोंका एक प्रकारका मनः प्रयोगः निमुहोका किन्छ। रीदिशी सञ्ज ।

माच्यक-वि० [मं०] प्रवी, प्वंदिवत । प्राचक-पु॰ [मं॰] सार्थि । प्राजम-पु॰ [मंब] चाबुक,कोड़ा १ प्राजिहरा-पु॰ [ध़े॰] गाइंपरय अग्नि ।

प्राच्य-वि० [मं०] पूरवका, पूर्वाः पहनेका, पुरानाः सामगेका, अवसा । पु० दारावती वडीके पूर्वका देश; इम देशका निवासी । -आया-सी० पर्ना भाषा !-वशि-औ० एक ध्रद ।

बदुनायतः राधि । प्राचितम-पु॰ [मं॰] बाहमीदि सुनिः प्रचेतादा पुत्रः मनः दद्याः वरणके प्रत्र । प्राच्छित*-प्र• दे॰ 'प्रायधित्त'।

बहानेबाला, बलकारक । —कष्ट-पुरु भरतेहे स्वह होने वाला कष्ट । –सांत-पुरु विव स्वक्तिः पनि । –स्रमू-पुर प्रायका संबद्ध, आन-जोशिय । -प्रह्-पुर गरा −यात-पु॰ मार् दादमा, मारण । −धातक-रिः स हारूनेवाला, प्राय ६८ हेनेवाला । 🗝 स्व-वि• मी ४५ हर ले, वायक । -सय-पु० शक्तिवृद्धि । -रिहर्-ति। प्राम के क्षेत्रेवाला, प्राणहात्यः ! -रहें १-५० वर, १पा। -जीवन-प॰ विष्ण की शाणीस स्वापन भीर पंचा करते देः प्राणाधार । -स्याग-पु॰ मृत्युः भानस्या। -दंख-पु॰ मीतर्भ सना ।-ए-दि॰ जान रागरेराण। [सी॰ 'प्रानदा' ।] पु० चनः एतः भीवन मामग्रा हाः बिन्स् । -दियस-पु० पति । ति० मागमारा । -श्-रती॰ इह, इरीतशी; एक प्रकारकी गुरिका (हा॰ दे॰)। -दाता(त)-विश्वप्रकिरीकी जान म्पानेशामा । दाव-पु॰ प्राप देनाः विशेवी प्राण-रहा करना। -इरोर्स-क्स−पु॰ यान भीतिममें शहनाः ऋगभी गरी लगाना ।-श्रोह-पु॰ दिसीकी जान हैनेहे पेरमें स्टा -धन-पु॰ बह यो आगते समान प्याम हो। मारी विव व्यक्ति। -धार-दि० प्रिममे प्रता हो, वीरित। पु॰ प्राची ! -धारण-पु॰ जीरन भारण सरनेशे जिन वीव-शक्तिः जीननवत सहारा । -पारी(रिम्)-5° धाबी, श्रीय ह - नाथ-पु० पनि, हनामी। प्रेमयन, पिन समा यमा यक महारमा जिन्हीने 'परिकामी' श्वराप प्लावा (बनका सदय सर्वधर्ममगान्य था भीर वे अर्रोधी हिट्डबीटा वन्दि, सुमलमानीदा मेहरी और ईग्रारवेच मग्रीक्षा मानते थे) । —माधी-पु॰ [(१॰] महत्त्रः माणनायके संप्रदायका असुधायी। प्राणनावका यथाना हुवा संप्रशय । -नाश-पु॰ गृजुः यर । -नागह-शिः जान हेनेबाला, प्राणकारक । - मिमह-पु॰ प्रनामा -वज-पु॰ बानकी बाबी । -पति-पु॰ वृत्ति हेररण विषयमा वैयः आत्मा ।-पृत्ती-शीः ग्रसन्यति ।-पी क्रय-पु॰ आन्धी गांबी समाना । -परिमद-पु॰ हण भारण करमा, अन्य लेला i - स्याहर-पु । [१०] दह मे प्राणींके समान शिष हो। अगरत प्रिय ध्याप स्वादिशः भेमराथः मियतम् । (श्रीः 'मान्त्य'री') -प्रतिष्टा-की॰ देवप्रतिमात्रा एक प्रधारत राष्ट्र बिसने मंत्री हारह देवसम्बद्ध प्रतियामे भागारस असी है। मंत्री क्षारा किमी देवगासा समाग्र मीमामे क्रिक बहाता !-प्रजु-दिव प्राप्त है नेरामा, प्राप्तायका प्रमि की क्या करनेवानाः क्लामात्व । न्यापानशीः क्षी नासकी भीषांव । -प्रायाण-पुरु भूषु । -दिन-१० विषयम, प्रति । वि॰ भी आगेनी समान विव हैं। -बाच-पुरु बागदा साहा । -बाबा-र्गः [ite] है: 'मारहरू दे = अझ-दिर जी देशा हरा CEI IIT हो श्रमबन्तु॰ याद बादेता मनरा १-भाग्याम् (१९४)-वुक क्रमुद्र ।-सून्-दिक मन्त्रन्त्र , मीदिव । पुर वार् शिलु र नमीश्रय-पुत्र शृत्युर आप्यूराश्रार नदमन ते. बध्यदास । -सामा-धान भग्नप्रस्था (१६nion wife foods was favor foils for fi जीवन जिल्हे । -योजि-पुरु वर्गदेशको कार्य । मेर्ड

सरः परियामः प्रवस्त ।

प्रयत-दि० [मंठ] यस्त, सहिता अस्पष्टा सहत-प्रहना ध्यस्नः

दस लाग । प० दग लासकी संख्या. १०,००,००० ।

व्रयास-पुर मिठी योजाः भेताः वायः सन्त्वामीः हेट । प्रयक्त-पुर [ग्रंब] लहाई: लंग । बिर जी सद कर चका

द्योः यह वसनेवाला ।

प्रयोक्ता(क्त)-(४० मिं) प्रयोग करनेवाला. प्रयोगकर्नाः विसी कामने लगानेवाला, प्रेरक । पण कल देनेवाला, स्तुमर्थ, महाजलः सारकता शत्रकाः सम्मीनः पात बन्ती-

MIRT, MISTE

प्रयोग-पुर [संव] किमी बाममें साना वा लावा जाता. ब्यपदार, दरनेमालः अन्यानः (अस-दाम्य) चलाना या धोदना, शास्त्रपानः शानको अमलमें लाना या नरतना, भगत, प्रक्रिया-झाखका उल्हाः नाटमका रोका जाना. अभिनयः गारण-मोद्दन आदि साधिक अभिचारः वह ग्रंथ जिसमें यह मंदंधी जियाओंदी विधि दचायी गयी ही. पद्वतिः योजनाः साधमः पाठः आर्थाः परिणामः संस्थः भत-प्रेत आदिके उचारनके लिए किया जानेवाला मन्नी-बारणः सदपर रूपवा देलाः उदाहरण, रशतः माम, दाम सादिया अवलंदन । - मा-निप्रण-विश् विसे अध्यास-पाय सनभव प्राप्त हो ।-सिधि-श्वी श्रदीगद्वापत्र विधि (she) i

प्रयोगसः (सम)-अ० (सं०) प्रयोग दाराः परिणामस्पर्मेः

अञ्चलका मार्थकः ।

प्रयोगातिहाय-प॰ (मं॰) वह प्रस्तावना विग्रां प्रस्तव प्रयोगके भंगगंत दमरा प्रयोग उपस्थित हो जाता है और जनीपर पात्र प्रदेश करने हैं (मा॰) ह

प्रयोगार्थ-पुरु [मंत्र] सुरूप कार्यकी सिद्धिके लिए किया

आनेवाला गीम कार्य ।

प्रयोगार्द - दि॰ [ग] प्रयोगके योग्य, निमुद्रा प्रयोग दिया था गढ़े र

प्रयोगी(तिल)-रि॰ [गं॰] प्रदोन बरनेशला प्रदोनवर्ताः प्राप्तः जिएके शामने बीई उद्देश्य हो।

प्रयोग्य-प्र• शि•] (गारीमें स्रोतः ज्ञानेवाला) धीरा (वै•) । प्रयोजह-प• मि•ी प्रयोग हरनेवाला, प्रयोगहर्णः विशी कामने लगानेशाचा थीरनेशाचा यहणे निलानेशाचाः भैरणा करनेवाला, भैरका भैरणार्थक कियाचा चर्चा (न्या॰): शृक्ष्य व्यवा देनियाना, यहालमा होच नेकामा शंक्षापता

भनेशासी। वि॰ धेरका नि<u>य</u>ार बहनेवाला; वी नारण दने। मधीनन-पु॰ [गं॰] सङ्ख्या कारणमूत उदेव, बह परेरव जिल्हा पुष्टि निय कोई विशी कामी अनुस ही।

मधे, श्रामिशाय, गर्मा यपरीय, प्रश्तेशाण, कामा देखा गापन, बहुदा साथ । मयोजनवर्ता स्थाना-ग्रीवृतिको वह क्लाना दिल्दी प्राहा

क्यो विद्याना प्रमा

मर्रामनवान्(धन्)-(व० [तंक] तिर्वे केले क्वीवत होता मदी हत द्वारीकालप् शुक्रता का अवस्थित ।

प्रचीत्रनीय-दिन हैनेको धरीको अभि सेप्टर, व स्ट्रेस्ट ह

जालः भी कार्यो समावा साथ । पर कीजा, उद्दार: यस धन, वैंजी ।

प्रसारा -प० मि॰ रेसा करना १ ग्रह्म-४० मिंगी देवसेनाका एक सेनापति ।

प्रकाशित-वि० मिंगी दहत रोता-विरुताता हुआ।

प्रसद्द-विव मिंगी (श्रेयर आहि) भी उपरकी सीर बड़े । चक्कर-बिर्ण मिर्ने तमा हुआ (वस आहि): उत्पन्न: हिसने लट एउड़ ही हो, बद्धमूल सब बड़ा हुआ; सब बड़तेवाला (बेटा आहि) 1

प्रस्तवि-मी॰ सिं॰ी बाइ, वृद्धि ।

प्रस्तपण-पण, प्रस्तपणा-गरीण [गंण] व्यार्था करना, समझासा ।

प्रशेषन-पर [मंठ] कवि सर्वन करना, श्विनांपादना खरेतित बरनाः दे० 'प्रतेचला' ।

प्रशेचना-को॰ [सं॰] दे॰ 'प्रशेचन': स्तृति: नारकतारबी प्रशास दारा सारवाद प्रति दर्शकीले हरि। छापास कालाः आगे आनेपाली बातका इस प्रकार बाधन बहना कि दर्शको-

की रुचि या भीरमस्य बड जाय (me) ।

प्रशेष्ट-पर्व [मंद्र] अंदरित होना: तरपति: आरोह, लक्ष्मा अंग्रहः संनातः प्रकाश-दिरणः नया प्रशासा उद्यक्तीः सर्वेद । -असि-न्दीक उपहाक स्त्रीस । -इलाकी-(गिन)-वि॰ (बद पृथ) दिन्दी शाना सगायी जा B 3.58

प्रशेष्ट्रण-प॰ शि॰ो उपना, समनाः टवली ।

बरोडी(दिन)-वि॰ [वं॰] वगनेवाया, धमनेवाडा: तरपत

द्दीनेदालाः पदनेदाता । प्रार्थप्रम-५० सि॰ी स्टानः प्रया ।

प्रसंब-(४० (११०) स्टब्सा हुमा, सरदा हुमा। अधिक लंबा: सन्त १ पु० लश्यभेदी किया, लश्याचा लश्यभेवाली शीना प्राप्ताः, सामा स्त्रता मामाः एव प्रकारवा हारः एव अगुर विमे अन्दरभने मारा थाः सीरा। सैगाः गाथा ।

-ध्य-मधन-इ।(इन)-प्रव अपराम । -माह-विक जिल्ला मोद मधित लेवी भी, माधानुबाह ।

प्रार्टवक-४० (८) श्रीहर एए । प्रार्थम-पु॰ (मं॰) स्टब्ना; सर्वेशित होता ।

प्रार्थकोष्ट-विव विवे विश्वमा अंदरीय गीचेनम स्वाहा हो.

बरे अंदरीवराया । प्रत्येवित-विश् [र्षश] सरदा दुधा ।

धार्यपा(वित्र)-दिक [मेक] करकोत्रामा शहारा मेरेताहा। प्रजेस-पु॰ (धे॰) लाम, प्रातिः पीताः देनाः, रालनाः।

प्रारंभम -3° [६०] घेना देनद राज्या । प्राप्यत-प्र- [र'*] वार्तकारा अगर्थेश समय, प्रकार, वर्-

बन्धः दश्याः रीता । प्रामित-दिव (मेर) योजना थे। दीतनातु देव बहा करा

हो । यु रे र 'प्रत्यन' । प्रमाण-दिक [र्वक] मुर्वका वे एका गुड़ा हो। प्रकारका(दार)-विकास कि (कि) सन्द स्वीत्राचा, वेस्ट ।

प्रामाधीकार-विक (१८०) प्रामाप कार रेश रेश जाता ।

प्रकोश्य-दिक [na] प्रकेशके बीध्या की धमाया, येखा हे प्रसम्बन्धक (शेक) करकी मान दीन्या रूप होता, ता हुए

-कर्म(न),-कार्य,-कृत्य-युक प्रातःसाण दिया जाने-धाला कर्म (रंगमधंता कार्दि)। -काल,-ह्राया,-समय -पुक गर्भरेता समय, प्रधालः रालके धेन और स्वीरक्ष के वहत्या पील मुहुर्वत समय। अक संबेर, वाहे के।-कालिक,-कार्लीय-विक्शालःकाल्या प्रातःका कीर्या -संप्रा-चीक प्रतःसालको कोर्या, रातका कीर्या वानेयाला एगाकमें।-स्वान-पुक देव प्रातःसालको किया गोनेयाला एगाकमें।-स्वान-पुक देव प्रातःसालने।-स्वान-पुक संबेरेका रजान।-स्वार्या(यिन्)-विक धरेर स्वान कर्मनेयाला ।-स्वार्या(यिन्)-विक स्वार सार्या।-स्वारणीय-विक को प्रातःसाल रमर्या कर्मने सीर सी, पुक्यपति।

प्रात्य-पुरु गरेता, प्रात्यक्षात्व । + अरु सुनेते, तहके ! -

प्राप्तर-५० (२०) एक माग ।

प्रावर् — कर्णां) देर भावः'। — कश्चन — पुरु क्रान्तेवा। — कश्चन — प्रश्चे के रिएस्टरक्का स्थान, पूर्वेदा। — कश्चनी — क्रान्ने क्रान्ते क्

प्रातस्तन-(दः [संः] प्रात्रकार-संदेशः प्रातःस्ववसः । प्रातस्य-दिः [संः] देः 'प्रात्रनन'। ''' प्रातस्य-दिः (संः) स्वतस्यः हरः । --प्रियमी-स्वेः प्रातः। -व्ययन-पुः प्रातःसः हृद्यः वानेशस्य स्वसः। प्राति-सोः [संः] प्रतिः कामा वेगूटेरे सिरी वर्जनीदे

िरिन्द्यो दृति । प्रानिक्टिक-(वर्ष (११०) मणा प्रवरीवाणा । प्रानिक्-पोर्श (११०) प्रया, काटुल । प्रानिक्टिक-(१० (११०) प्रिट्स, प्रतिकृत । प्रानिक्टिक-(१०) (११०) प्रतिकृत । प्रतिकृत्य-पुर्व (११०) प्रतिकृत होनेद्रा प्राप्तिक प्रतिकृति । के निद्यानुष्ट ।

क ।तर वाहुक । माजिन पुण होने नाँका विषय । माजिदेवसिक - विश् शिश्रो माजिदम क्रीनेवाल । माजिदेवसिक - युश्व शिश्रो माजिदिश क्रीनेवाल शिदमुल्य । माजिदश-सि होन्द्री विकास माजिदस माजिदस्य - याजिदस होने हिन्दी स्थाप माजिदस ना स्थापन । माजिदश-पुण विश्वो होस्सा माजिदस माजिद स्थापन । माजिदस - विश् शिश्रो नामा क्रिनेवाला, साजिदे स्थीनेव स्थापन पुण क्रीनेवाला, साजिदे स्थीनेव

च र १ र प्राचा १ प्रातिपद्-दिश् (११०) वी प्रतिप्याती व्याप श्रुवा श्रीः प्रतिर प्रतन्तिपारि प्रतिस्थादी व्याप्तिहरू ३

मानियदिक-युर्ग्मिनो मॉन्स्य बाहु, प्राथम और प्राथशान है कि निक्र मर्नेरातु द्वारा, वर कर्वरानु छन्छ और बाहु और र सत्ययसे निश्व की और विश्वमें प्रत्य ने श्वा है, देते 'दाम' (संश्व्याः) । प्रातिस्न-विश् श्वित प्रतिमानांत्रेशी; प्रतिनाद्यः, प्राट-पुर, प्रतिमानात् । पुर प्रतिमा; योगमार्गेश स्त्र वरणां वः विश्व (पुर) ।

ाधन (पुण) । प्राविकारय-पुण [मंग] प्रतिमृक्ता भाव, प्रीप्मृत्य, वर्तार-दारो। वद चन जो प्रतिमृक्ता नातिनको देना हो। -फ्राण-पुण दिसीको जमानतवर त्रिया गया कत। प्राविकासिक-विक [संग] जो बारतव गर्वी वर कत्रव विदेश प्रकारका साहित होता हो, क्षवारत (जैमे-नोक्से चाँदीका मान)।

प्रातिस्त्रीयक-वि॰ [१०] उसी स्पन्ना, गरुनी । प्रातिस्त्रीमक-वि॰ (१०) (स्टर, विपत्तः भीत्र । प्रातिस्त्रीय-यु॰ (१०) प्रश्निक्टताः (राज्यः) पेपानः । प्रातिस्त्रीय-यु॰ (१०) प्रश्निक्टताः (राज्यः) प्रातिस्त्रीय-यु॰ (१०) प्रश्नीः ।

प्रशास । प्रातिबेश्य – पुरु [शंरु] परीमः परीमा, वर जिल्हा वर कपने यस्ये सामने या बाद हो ।

प्रातिकाण्य-पु॰ [शं॰] ये शंश्रीशीष जिल्हे हता निक निक्ष मेदी तथा यक ही पदके कते। तराने सार्थे जवारण, वरीते प्राम और पिन्छेर भारिहा निर्देश

होता है।

प्रासिसीय-पु० [नं०] चरेगी।

प्रासिसीय-पु० [नं०] चरोगी।

प्रासिदेवक-पि० [नं०] जराग-अपना, प्रापेदशा [तरी।

प्रासिद्ध-पु० [नं०] वर्षाग, प्रतिशोध।

प्रासिद्ध-पु० [नं०] प्रसिद्ध होग ।

प्रामिद्ध प्रासिद्ध स्वत्य प्राप्त हो स्वत्य ।

प्रामिद्ध स्वत्य प्राप्त हो स्वत्य ।

प्रामिद्ध स्वत्य (च० [नं०] हो स्वत्य ।

स्वार्थ पु० [नं०] हो स्वत्य ।

प्रान्तितिक-वि॰ [गं॰] तो वारत्य न दो पर भवान विदेश प्रवारका चानित होता हो, प्रातिवासिका हो देव प्राप्तामें हो।

भ्रामीय-पुर [40] भोभावितामको शिता गोना । प्रामाधिक-वित्र [40] प्रतिकृत भाषान करिन मा देने मुण्याधी (वर्षमा वस्ता । प्रामाधी-वित्र -वु [40] प्रामा नेश्चा राज्य साम्यका । प्राम्यका-वित्र [40] प्राम्य गोनी । प्राम्यका-वित्र -वु [40] प्राम्य मिन्न (वित्र वित्र प्रमा । प्राम्यका-वित्र -वु [40] मान्य प्रतिकृत । मान्यका-वित्र -वु [40] वर (वर्षा मान्य मान्यका ।

चीनका मार्गम दिया हो । आयमिक-दिन [मृंत] एएना, माहिया प्रदेखा प्रार्टिन प्रवर्ता कर पहित्र बोरेबाना ।

आपम्य-षु॰ (गे॰) प्रथम ब्राजेटर मार, परणारमें मार्चसिन्य-षु॰ (गे॰) चीक्रमा राजा। । मार्चानिक-वि॰ (गे॰) बीम, भिरेत क्रारिओरी । मार्चीविक-वि॰, षु॰ (गे॰) यर सेन क्रारिमें क्रांचे करणे

माना (र्शाः) ।

638 आविष्कार करनेवाला; (हिं०) उसकानेवाला, उमारने-याला; किमी पूर्व मृचित पात्रका प्रवेश (ना०); मध्यस्थ, र्षच । प्रयस्ति-पर्व [संव] प्रवृत्त करना, किसीको किसी बातमें लगानाः आरंभ करना, चलाना, जारी करनाः उपकानाः, उमारनाः आविष्कार बरना (हि॰)। प्रवर्तना-सीव मिवी प्रश्च करनेही किया, प्रेरण। प्रचतियता(तृ)-वि॰, पु॰ [सं॰] गति देनेवालाः आरंग बरनेवालाः स्थापित करनेवालाः उमग्रानेवाला । प्रयुत्तित-वि॰ [मं॰] आरम्पः चालितः स्थापितः वर्चेनितः प्रवर्शन्तः गृथिनः इदि किया हुना । प्रयती(सिन्)-वि॰ [मं॰] उइत या प्रवाहित होनेवालाः स्तियः आरंभ करनेशनाः प्रयोगमं लानेशनाः फैलाने-याला । प्रवर्द्धन, प्रवर्धन-पु॰ [मं०] बहती, वृद्धि । प्रवर्ष-५० [तं०] मारी दर्श, जोरकी बारिश । प्रवर्षण-पुरु [ग्रं] वर्षा, बारिशः पहली बारिशः किष्टियादे पासका एक पर्वत जिमपर रामने अपने बन-बाह्यराजमें कुछ समयतक निवास किया था। प्रपर्धे(पिन्)-वि॰ [गं॰] बरसानेवालाः थीटार करने-बाला (बाणी आदियी) । प्रपर्ट-वि० [मं०] दे० 'प्रवर्ष' । प्रचल्हाकी (बिन्दू)-पु० (मं०) सीयः मीह । प्रविद्वका-सी० [ग्रं०] दे० 'प्रदिहका' । प्रवसन-५० (स॰) विदेश-यात्राः मरण । प्रपष्ट-पु॰ [रो॰] बहार। बायुः सात प्रकारकी वायुक्तिने पक जिमते सहारे मध्य परिभाग करते हैं; अब्रिडी पहिषायाः पानी बहासर के जानेका बुंद । प्रथष्टण-पु॰ [शं॰] बद्दशी; टीकी; पीत; लद्दीनी ब्दाह दोनधंग । प्रवहसान-रि॰ (सं०) प्रशहरील, वहनेवाणा । प्रयद्भिः प्रवद्भिराः प्रयद्भी-श्वी॰ [श्वे॰] वर्देश्वे । प्रयाक-पुरु [ग्रंग] दोपना बेहनेवाला । प्रयाक(म्)-दि॰ [गं॰] युन्यिकः वाने सहनेवानाः

सान जिहाभीमें ने एकः पर, नगर आदिसे बाहर जाना, देनाः −श्रंग∽पु॰ जहात्रशानष्ट दोना, दोय-ध्यंछ, बार्पद्व, बाग्मीः बर्ग अस्ति बीलनेवामा, बाधाल । प्रवासक-दि॰ [रां०] बान्ती, गुवका; अदंगीतह । प्रवासन-पु॰ (सं॰) दिएति, योषनाः उपावि, लाग । प्रयास्य-पुर [गंद] गर्गहरियर रचना । प्रयाण-५० (मंग) बपोरा होह या श्रेयन बसामा । मपाणि, प्रवाणी-स्थाः [संत्र] जुलाहीकी दर्की । प्रवात-पुरु [६१०] क्षणा बापु, लाया इया तेत्र हवा: इंदारार प्रयद् । दि॰ जिसमें तेज इवा स्थानी हो। मवाह-९० [तं] बोलशा ध्यन बरनाः लोबीने प्रयति । बार्च, समप्रीर, विष्यंतीः बार्चथीतः बार्शनामः सुनीरी ह मप्राप्ट-(१० [११०] बाद स्टानेवाला (१५९७) ह मयारी(दिन्)-दिन, पुरु [व]ने प्रदाह कर्मेदामा व प्रवासकत्त्रक देव ब्रह्मकर् ह प्रवास-पुर [रान] घोड्येका सम्भ, प्रशासिक कोड्येक

प्रवर्तन −प्रविपल आच्छाइन । प्रवारण-पु॰ [मुं॰] निषेष, मनाही; प्रतिरोध: स्वेच्छामे किया जानेवाना दान, काम्यदानः उत्तम वस्त्र(तैसे हायी, घोहा आदि)का दानः महादानः दच्छा पूर्व करनाः दै॰ 'प्रवार'; वर्षांत्रमें होनेवाला बीटों हा एक ह्याहार । प्रवाल-प॰ सि॰ो दे॰ 'प्रशह'। प्रवास-पु॰ [सं॰] परदेशमें रहना, विदेशवास; परदेश जाना । -गतः-स्यः-स्थित-४० परदेश गया हुआः ओ घर स हो । प्रवासन-प्र• [सं•] बाहर रहना; देशनिष्यासम; वध । प्रवासित−वि॰ [र्स॰] देशमे निकाला हुमा । प्रवासी(सिन)-वि॰ सि॰ परदेशमें रहतेगला । प्रवास्य-बि॰ [मृं॰] देसनिकाला देने योग्य । प्रवाह-पु॰ [सं॰] बहनेकी किया या माद, बहावा जल आदिकी धाराः किसी वस्तुका अट्ट क्रम, वेंपा हुआ तार, करांड परंपरा; दावादिको नदीके पानीम बहा देना; पडना-इ.स. तालाव: शील: गण्डा घोषा: व्यवहार । प्रवाहक-विव सिंवी अवशी तरह बहुन बारनेवाला । पव राध्यम् । प्रवाहणी-सी॰ [गं॰] मलगार्गंथी एक पेशी की मलकी बाहर निकासमा है। प्रवाहिका-सी॰ [मं॰] प्रदेशी रीयः बहतेशासी, भारा, नदी-'मधर खालसाबी रुदरोंने यह प्रवादिका स्वेटित होनी'-कामायमी। प्रवाहित-दि॰ [र्स्॰] बहावा हुआ। दीवा हुआ। प्रवाहिमी-मा॰ [मं॰] गरी । प्रवाही-छी॰ (सं॰) शन् । प्रवादी(हिन)-वि॰ [मं०] बहनेबाला, प्रवादयका छ आरोबान्यः यनानेवाना । प्रविकट-दि॰ [मं॰] बहुत बहा, दिहान । प्रविष्टपंग-प॰ (सं॰) स्त्वना, वातना । प्रविक्रीण -वि० भि० हिन्सवा, पीनावा हमा। प्रविक्तवान-वि॰ (छं॰) सुप्रसिद्ध, बहुत महाहर । प्रविक्याति-भी (गं) अंगिश्चय प्रभिद्धि । प्रथिप्रष्ट-पु॰ [मं॰] मंबिबिन्छेर । प्रविश्वय-पुरु [शेरु] सीह, समुसंपान, श्रीवन्यस्ताल । प्रविचित-वि॰ [बं॰] जोवा दुशा, प्रांद्रिष्ठ । प्रविधेतन-५० हिंग्री गुमल, रोप । प्रवितन-दि॰ (हं॰) दिशेष रूपमे पैना दूजा, दूरतर कीना दुमा, स्थामा विमारे शूप (बाल) । प्रविदार-पुरु [र्हर] स्वेत्र । प्रविद्वारण-पुरु [र] मुहम्। विरोप विराहणा सुदा भीर-मश्का । प्रविद्ध-दिन [मेन] वेंदा दुभा; महा दुभा; वहिन्दान ह प्रविज्ञत-दिक [ग्रंक] विश्वद्वित्तर दिया द्वस्था सदाया प्रविधान-पुर [रंग] दिशी विषयात विचार कारण वर ज्याद विगयः प्रदीत दिशा गदा हो ।

प्रविध्यस्त-दि० [मंग] चेंश हुना, राहाला दुप्ताः सूच्य ।

प्रविदास-पुर [1'र] दिएपदा यद होता माना ।

परिमाणका काम दे: जो विमी बातरा प्रमाण की, प्रमाण-रुपः शास्त्रह । पुरु अमारोंको माननेवालाः वह जो प्रमाणीको जानता हो। प्रमाणनेका, न्यायशासीः ध्या-पारियोंका प्रधान ।

प्रामाण्य-प॰ [मुं०] प्रमाणत्य, शास्त्रसिक्ष होनाः विद्यमन नायताः प्रमाण । -धार्ता(दिन)-वि॰ प्रमाणमे विश्वास बरने ग्रन्थः ।

प्रामादिक-(१० (१)०) जो प्रमादके कप्रण हुआ हो, प्रमाद-जनिषः सदोष ।

प्रामारा-१० [मं०] अष्टमाः उत्मादः नद्याः कापरवादीः

भस । प्रामियरी-(४० (४०) विसमें किया बानकी प्रतिपा की गयी हो। - मोट-पु० वह लेख या पत्र जिनमें कोई म्यन्ति यह प्रनिशा बरना है कि में अमक मिनिकी या जर कभी भी भागनेपर अवस व्यक्तिको या इस प्रवर्क माहरु हो इनना रूपया देगा: यह कागत या ऋणपत्र विभवे गरवार प्रजाने वृद्ध ऋण लेकर यह अविका करनी है कि अग्रक क्वलिने इत्या फल दिया गया और उपका स्ट इस दिगावमे अजदानाको दिया जावगा ।

प्रामीरय-पु॰ [मे॰] ऋण, कर्षः सुन्तु । प्रामोहक, प्रामोहिक-दिव विवो धनीए, सरर, मनीहर । प्रायः(यम्)-वि॰ [वे॰] धनमन, वरीव सरीव । अ॰

भवित्रपर, अकुपर । प्राय-ए॰ [मे॰] मृत्यः अन्यान द्वारा द्वीनेपाली मृत्यः भागपानगृह्यः वाष्ट्रयः आधित्य । वि॰ तृत्वः शमानः पूर्व (इन अभीने इन श्रम्तका प्रदेश समामने श्रीवा है, थैमे-'बटपाय')। -शत-वि॰ शरणायत्र।-दर्शम-पुरु ह्यामान्य बात । -श्रव-दिश श्री भाषः दुमा करे, सामान्य । -विषायी(विन्)-वि॰ भी मादीवर्शन सर मरनेका संस्था वर सुद्धा हो । - जूना-नि॰ भी निल्लास होत्र स 🖺 १

प्रापण-पु. [मंत्र] प्रदेश, आर्था, ४६ शहर श्वारर दुभरेमें प्रदेश करना (स्तृत्र); शहा देना: शृत्युः व्हेब्हाने मरमा स्वात पदणमा श्रीवनमार्थः द्वारे यामि बना इप्रा एक व्यापा वह आहार जिल्ली अन्नान जेन किया जाव ।

प्रायक्तीय-(१० (१)०) भारतिह । ५० वर बाह की ओह-बागरे आरंतरे दिया प्राप्ता है। महानवागना पहणा दिन । श्रायाय-पुर [गार] परिवताः रिहाशता ।

मापर्जाय-ए॰ दे॰ 'मादोदीय' ह

द्रायक्ता(क्राय)- अ॰ [१००] अधिवनतः बद्दवा, अहमत् । प्राथितिम-पुर्व शिक्षी बहा उपस्य विदित समें जी भाषहा मार्चन कर्पन्ते लिए दिया नाया शीवन ।

मायश्चिम-न्या शिनो देश 'मायश्चित । प्राप्तिसिक्त - [40 [610] जिल्हा प्राथित दिवा जाव.

प्राथिक है दी था प्राथिक करें हैं। ग्रापधिनी(निय)-दि॰ १०० ग्रापधित कर्येशना । प्रायाणिक, प्रायाणिक-दिक [तक] औ याक' है सुध्य

mierite at blan fit g. biet, Ger, ud un'b प्रामाणक के बाबादि सहस्य शास कारी वाले हैं ह

प्रायिक-वि॰ [लं॰] की अधिरूपर होता ही, प्रारः हें दे बाला, सामान्य ।

त्रायुक्केपी(पिन)-प॰ [मं०] गोहा। प्रायोगिक-विक सिंकी विशवा निरंप प्रयोग होता है। जिसका निरुव प्रवीम किया आह 1 '

प्राचीज्य-विव सिंबी प्रवोत्रहरू थे।या, (वर कान) के

किमीके विशेष प्रयोजनको हो (तैमे-वंदिएके हिए प्रत्य बादि । चासके अनुसार ऐसी बाउभीका देशपा भी बरतओंकी मौति नहीं हो सरना) ह

प्रायो-"प्रायम"का समासगत रूप : -देवना-पु ना देवता विसे सभी मानवे ही, सर्वपुरुष देवता। नहीर-य॰ रवनका बह भाग को तीन और पार्गोंने थिए ही भी एक और रक्ति सना हो। - साधी(विन)-विश्वे आम तौरने होता हो, सामान्य ! -याप्-प्र शोहेति-यहादत् ।

प्राचीपतामम-प॰ मिनी देन 'प्राचीपनेश'। प्राचीपचीतिक-विर [संर] भी सापारण मी, सामध्य है प्रायोवविष्ट-विक [मंक] जी प्रायोवनेश कर रहा हो। प्रायोपधेश, प्रायोपधेशन - पु. [tie] अन देनेदे निर

बाना पानी धारवर पर रहना, शृत्वहे किद दिया मके बाक्षा अनद्यसम् । मापोपवेशमिका—सी॰ (सं०) दे॰ 'प्रावीपरेश' ! 🐪

प्रायोववेशी(शिन्)-विक [ग्रंक] प्रायोदरेश कर्मेशका। प्राचीपेत-दि॰ [मं०] जी प्राचीपरेश कर रहा है। प्रार्थेश-५० [थेव] सार्थाः कार्ये, प्रवास । प्रारंभण-पु॰ [शं॰] आरंभ करना, शह करना !

प्रारंभिक-वि॰ [र्ग्) आरंगसा आरंभमें दोनेगण। प्रारक्य-दि॰ [मृँ॰] भारंभ किया हुआ। हु॰ हीन प्रकृत के कमोरंसे वह विगरा कल भोगा आ दश दी मान्य-हिन्या: यह भी हारू दिया गया हो है

प्राविध-म्यो० [मं०] आरंबा दावी वॉबनेश स्ट्रांड EFFE B प्रारक्षी(विधन्)-दि॰ [शं॰] प्रारम्भशनाः अत्रवन् ।

ब्राहिप्सित-विक [गंक] बिने हार बरमेका विवार कि गया थी।

ब्रासोह-५० [र्ग•] मरीह, शहर १ प्रसाधिमा(म)-दि: [११०] शान व (मैरामा । प्राप्त-पु॰ [पी॰] प्रशास ऋण ।

मार्थक-दि॰ [सं॰] सार्वता बस्तेशाला । पु॰ क्राब्दी आवश्या करनेवामा ।

प्रस्थेम-पुर्व (र्थर) स्थिता, ब्यूया ब्यूया, मार्थ्य । प्राचीता- क मार्थ कि प्राचीता बहुता । सीव (t'e) दिवे में Mit minen feit eine fen feing fenetite बहुना, एवं निरेशम, बीनार न क्रमण, प्रतिस्था हिन्छ या प्रदारकी सुद्रा (१०): रूपाा, नाहा शान, क्रांशीरी - एय-पु॰ वह दव वा देश दिसने दिल्ली दिल कर्णी लिय पार्नमा की शरी हो। महती र नर्भमानपुर में केरी की मानीपूर्ण हं -समाज-ए॰ प्रदानमान केंग्र रह सरील संघरात । -शिक्षि-न्दी श्रापारी पृति ।

मार्चनीय-वित्र [तंत्र] रिक्टी रिट पार्देश 🗓 प्रन्य

638 आविष्यार करनेवालाः (दि॰) उम्रकानेवाला, उमारने-बाला; किमी पूर्व स्चित पाथका प्रवेश (ना॰); मध्यस्थ, पंच 1 प्रवर्तन-पु॰ [मं॰] प्रशुत्त बरना, किसीको किसी बानमें लगाना; आरंभ करना, चन्दाना, जारी करना; उपकानाः उमारनाः आविष्कार यहना (हि॰)। प्रवर्तनः-सी० [सं०] प्रश्त करनेकी किया, प्रेरण । प्रवर्तियता(म)-वि॰, प्र॰ [सं॰] गति देनेवानाः बार्रभ बरनेवालाः स्थापित करनेवालाः उसकानेवाला । प्रयतिस-वि॰ मि॰] आरम्भः चालितः स्थापिनः उत्तेतितः प्रव्यक्तिः मुचितः हाद किया हुआ । प्रवर्ती(तिन्)-दि॰ [मं॰] उहत या प्रवाहित होनेवालाः सक्रिया आरंभ करनेवालाः प्रवीममें लानेवालाः फैलाने-वाला । प्रवर्द्धन, प्रवर्धन-पुरु [मं०] बरती, वृद्धि । प्रवर्ष-पुर [मं०] भारी वर्षा, जोरकी बारिश । प्रयर्पण-पु॰ [मं०] वर्षा, बारिशः महली बारिशः किष्तिभाके पासका एक पर्वत जिमपर शामने अपने बन-बास्रकालमें कुछ समयतक निवास किया था। प्रयपी(पिन्)-वि॰ [रां॰] बरसानेवालाः बाहार करने-बाला (बाणी आहियी) । प्रपर्ह-दि॰ [शंब] देव 'प्रबर्ह'। मयलाकी(कि.म्)-पु॰ [स॰] सीरः मोर। प्रयक्तिका-मा० [ग०] ३० 'प्रवस्थिता' । मयसन-प० (सं०) विदेश-पात्राः भरण । प्रवह-पु [तृ | वहाव: वायु: सान प्रकारकी वायुओं मेंने पक निएके सहारे मध्य परिभ्रमण करते हैं। अहिसी सात बिहाओंमेंने एकः पर, नगर आदिने बाहर जाना, पहियांत्राः पानी पदायर के जानेका बुंड । मपहण-पु॰ [गं॰] बहली; होली; दोग; लहबीको व्याह रेगा। -भंग-९० बहाबका नष्ट होना, धेन ध्वस, **पोनर्धत** । मयहमान-दि० [सं०] प्रशाहशील, बहनेवाला । मपद्धि, प्रवृद्धिका, प्रयद्धी-सी० भि०) प्रदेशी । प्रयाक-पुर्व [मंत्र] दीपना करनेवाला । मयाक(थ्)-वि॰ [मं॰] मुक्तिमुक्त वाने सहनेशालाः मार्गपु, बाम्भी: बर्ग अधिक बीटनेवाटा, बापाट । मयाच इ~दि० [गं॰] बाग्मी, मुबन्ताः अर्वयोज्ञहः। प्रवासम-पुर [संन] विद्यात, योषणाः सद्यान, लाग । प्रयाच्य-पुत्र [मेत्र] शाहित्यहः स्थला । प्रयाण-पुर [ह]र दर्भाता सोह दा अवण बनाना । प्रवाणि, प्रवाली-सी॰ [गं॰] अवाहीकी दरवी । प्रवात-पुर्वात) स्वका वापुत लाबा हवातित हवा इंदलाइ मगह । दि॰ जिन्हें तेंब हवा मगनी हो। मवाद-पु॰ (११०) बीलनाः व्हणः बहनाः करेवीचे सन्तिन र पं. सरप्रति, स्विरती। बात्रधेत्र, बार्लनामा सुनीत्री । मपार्क-विक [र्गक] बाध बज्रानेवाला रिजीव) ह मचार्पा(दिल्)-दिक, दुक किंको सकत सकतेशका । धरास्त्र-५० देश चयान्त्र ।

आध्धादन I प्रवारण-पु॰ [सं॰] निरेष, मनाही; प्रतिरोष; स्वेन्तासे किया जानेवाला दान, काम्पदान; उत्तम वस्तु(नैसे हाथी, घोड़ा आदि)का दानः महादानः इच्छा पूर्व करनाः दे॰ 'प्रवार': वर्षातमें होनेवाला बौदोंका एक स्वोहार । प्रचाल-पु॰ [गुं॰] दे॰ 'प्रवाल' I व्रवास-प्र• [मं॰] परदेशमें रहना, विदेशवास; परदेश वाना । -गतः-स्थः-स्थित-विश्व परदेश गया हमाः यो घर न हो। प्रयासन-प्र॰ (सं॰) बाहर रहनाः देशनिष्कामनाः स्थ । प्रवासित-वि॰ [६०] देशमे निकामा हथा। प्रवासी(सिन्)-वि॰ [सं॰] परदेशमें रहनेवाला । प्रधास्य - (४० मि०) देसनिकाला देने योगम । प्रवाह-पु॰ [सं॰] बहनेको किया या माव, बहाव: जन आदिकी पारा; किसी वस्तुका अट्ट कम, वैपा हुआ सार, असंड परंपराः शवादिको नदीके पानीमें बहा देनाः परनाः क्रमः तालानः सीलः मन्द्रा धोडाः स्वयद्वार । प्रचाहक-वि॰ [सं०] अष्टी सरह यहन करनेवाला । पु० राध्य । प्रवाहणी-सी॰ [सं॰] महमार्गदी एक पेड़ी भी गुलको बाहर निकालती है। प्रचाहिका-सी॰ [सं॰] प्रदर्श रोगः बहतेवानी, भारा, नदी-'सपर खालसाबी सहरोंसे यह प्रवाहिका रंपेटिस होती'-कामावनी। प्रवाहित-वि॰ [सं॰] बहादा हुआ; वीया हुमा । प्रवाहिमी-स्रा॰ [मं॰] नरी । प्रवाही-सीव [मेंव] बाम् । प्रवाही(हिन)-वि॰ [मं॰] ब्र्नेशका, प्रवाहतुला हे जानेशन्यः पनानेशना । प्रविकट-बि॰ [मं॰] बहुत बहा, विशाल । प्रविक्षयंग-पु॰ (सं॰) सीयमा, तामना । प्रविद्धार्ण - वि॰ [मं॰] हिनशवा, फैनाया हुमा । प्रशिल्यात-दि॰ [सं॰] सुप्रसिद्ध, बहुत महाहर । प्रवित्याति-भी॰ [सं॰] श्रविद्यप प्रभिद्धि । प्रथिप्रह-पु॰ [गुं॰] यंचिनियहेट् । प्रविचय-पु॰ [मं॰] सीट, धनुमंशन, जीव-पहतान । प्रविचित-वि॰ (थे॰) जीया दुमा, परीशित ह प्रविचेतन-पुरु [मंत्र] समझ, बीर र प्रविमत-वि॰ (ए॰) विरोध रूपमे पैता प्रमा, पुरुष पैना दुला, ब्यामा दिगारे दुए (दाए) । प्रविदार-यु॰ [मं॰] १३:ेंट्र । अविद्यस्था-पुर [तंत्र] स्पृद्यतः विदेश विद्यस्यः सुद्यः भीद-भद्दा । प्रविद्य-दि॰ [सु॰] वें.हा दुक्ष'; यहा दुक्षा; पहिग्यमा । प्रविद्यन-दि॰ [मं॰] दिनर-स्टिर दिसा हुमा, मनाया प्रविधान-दुः [र्थः] हिमी विषयप्र रियार करता। वर उराय किमहा प्रदीम हिंदा सदा ही। प्रविध्यान्-दि॰ [८०] चेना हुआ, प्रशास हुआ। सुरद १.४ मबर्-पुर्व [the] क्षेत्रहेश वस्त, क्षेत्रहेश, क्षेत्रहेश | प्रवित्तत-पुर्व [the] वित्तवशक्त छोटा मारा ।

परिमाणका काम देश थी किमी बातरा प्रमाण हो, प्रचाय-मपः शास्त्र । पु॰ प्रमानींको मानवेशालाः वह औ प्रमानीको जानला हो, प्रमाणनेता, न्यायशासी, व्या-

पारियोका प्रधान । प्रामाण्य-पु॰ [र्ग०] प्रमागत्त्व, श्वास्पत्तिह्न श्लोनाः विद्यम-

नीयनाः प्रमाण । -वादी(दिन्)-वि॰ प्रमाणमें विश्वास यश्नेवानः ।

प्रामादिश-वि॰ [मं॰] हो प्रभादके करण द्वारा हो, प्रमाद-अनिनः सरोप ।

प्रामाच-पु॰ [मे॰] अहमा; उन्माद, नद्या; लाप्रवाही; भेस ।

प्रामिमरी-वि० [४२] जिममें किमी बानकी प्रतिपा की गरी हो ! - मोट-पु० यह लेग या पत्र जिसमें कोई क्यांत यह प्रतिशा वरता है कि में अमुक मितिकी या लब सभी भी मांगरेपर अमुद्र स्वस्तिको बा इस प्रवर्षे पाइन्छो इनना १५वा हुंगाः वह कायत्र या ऋणवत्र जिसमें मरकार प्रवास पुछ कय लेकर यह प्रतिका करती दै कि अ<u>म</u>क व्यक्तिने दवना ऋग लिया गया और दगका गहर वस दिमारमे फल्दानाको हिया अध्यमा ।

प्रामीरव-पु॰ [मं०] ऋण, कर्तं; शृहयु ॥

प्रामोदक, प्रामोदिक-वि॰ [मं॰] मनीए, सुरर, यनोहर । प्रायः (यम्)-वि॰ [मं०] समाम, दरीव दरीव । अ०

मधियत्तर, अवस्ट ।

प्राप-पु [मं] गृरमुः अनशन हारा होनेवानी मृत्युः भनशनगृत्युः बादुःय, माधिनय । वि॰ तुनय, समानः पूर्ण (रत भवीमें इस शास्त्रः प्रयोग समाममें होता है। भेग-'व ह्याय') । - मस-वि० महणामक । - हर्सन-पुण सामाग्य बात । -अय-विक जो प्रायः हुमा करे, सामान्य । -विचायी(विन्)-वि॰ को प्रावीपरेशन बर मरनेसा र्यस्य वर सुद्रा थी। - कुशा-दिक श्री दिन्दक भीत सही।

प्रायम-पुर [रंत] प्रदेश, मार्थ्य; यह शहर स्वायहर इसरेमें बरेश बरमा (१५०); शहम हेना; मृत्युः रहेश्याने गरमाः स्थान वदयनाः प्रीरममार्गः द्वारे दौराने बना हुमा एक ध्रांतना वह आहार जिल्ले अन्यान संग दिया श्राव ।

प्रायणीय-विक [राक] अर्थनिय । युक स्था काम भी भी।। बाग दे आरं अमें दिया अन्ता है। श्रीमवागुद्धा प्राप्ता जिल ।

मापन्य-पुरु [गंत्र] दश्यितः, दिहासूता । प्रायहाय-पुर देश "मार्गारीत" ह

प्रापशः(शास्)-अर [श्र] व्यस्तित्तः, बहुवा, व्यक्तातः। मापश्चित्त-पुरु [शर] बद शाम (हिंदन क्ये जो बादश मार्थन करते है जिल दिया जावा हो दन ।

प्रापश्चिणि नशी० [शं०] १० *a*व(६,ए* s

माप्रधित्तिक-दि [ति] दिन्दा पार्श्यन दिशा अस्

प्राथिकरे बेन्द्रा प्रार्थिकर्वारेती । मागश्चित्री(तिव)=दि॰ (१०) मार्शयस्य वरतेयाना ।

मायांतिक, मायांतिक-तिः [र'.] जी दावके छपक म'रायद का प्रतिन की । पुरु प्रीयः, देशक वही अपृति मान्य प्रमाण में बाजा है समय हात में में में है है

शायिक-वि॰ [सुं॰] श्री अध्यक्तर होता हो, मारः ऐंने दालाः सामान्य ।

प्रायुद्धेपी(पिन)-पु॰ [मे॰] धोहा। प्रायोगिक-दि॰ [मं॰] जिल्ला निष्य प्रवीप शेल हैं। जिमना नित्व प्रयोग दिया जाव ।

प्रायोज्य-विक मिंत्री प्रयोजनके क्षेत्र, (१६ का) के किमीके विज्ञेष प्रयोजनकी हो (जैसे-पहिनके किर पुरन्त

मादि । शासके भनुसार ऐसी परपुर्वेका बेरासाकी बराभोंकी मानि नहीं हो सरका)।

मायो-"प्रायस्'का समासगत रूप। -देपना-दृः स देवना विसे सभी मानने हो, सर्वपृथ्य देवना। -शीन-पुरु रदमका वह भाग की तीन और पानीने दिए है।

दक और रपण्ये ज्या हो। - भाषी(पिन)-दिश्रे माम तौरमे होता हो, सामान्य I च्याइच्युक मेर्स्टिक कदावन । प्रायोपगमन-पु॰ [गं॰] दे॰ 'प्रावीपरेश' ।

प्रायोगयोगिक-दि॰ [रो०] जो शापारण ही, स्टमप्ट । प्रायोपविष्ट-वित्र [र्गत] जी प्रायोगीश कर रहा हो। प्राचीपवेश, प्राचीपवेशम-पु॰ [मं॰] प्रान रे दे सि दाना-पानी धोइसर पह रहमा, अनु है तिए दिया व रे

बासा भगरागत्तर । प्रायोपवेशनिका-मां० (६०) दे० 'प्रावीशीए' । प्रायोगवेशी(शिन्)-वि• [वं•] श्रवंशिश दरेनाना प्रायोपेस-वि॰ [मुं॰] की प्रायोपवेश कर रहा ही। प्रारंभ-पु० [सं०] बारंभा दार्व, प्रयम्न ।

ब्रार्थण-पु॰ [र्ग॰] आरंब दरना, शुरू बरमा। प्रारंभिक-विक [गुंक] बारंभद्याः भारमने बीनेयाना र प्रारच्य-वि॰ [र्ग०] आरंग दिया तुमा । पु॰ हें न प्रश्य के कमीमेंने यह विश्वका याल भागा आ रहा है। प्राप्त-

किन्नक वह भी हाम किया गया ही। प्रारम्बि-म्बा॰ [मं॰] भारता हाथी बीबनेदा मुँत र teni t

प्रारटची(दिवन्)-दि॰ [ने॰] प्रारम्परामाः मागर् र् प्राविध्यम-ति॰ [मं॰] तिमे शह बरोहा विषय किए

गया हो । प्रारोह-पु॰ [र्थ•] प्ररोह, अंदर १

मामंबिना(न)-दि० [लंक] दान वर्तेराना ! ब्राज-पुर्व [ग्रं•] प्रशास क्रम ।

प्रापंद्र-वि॰ वि॰) प्रार्थेना बरनेशना । द्र॰ प्रण्या भान'शा दरनेवाचा ।

ब्राचीन-पुरु [मंत्र] ब्रांदरा, दावण दश्या, दावली प्राचना-क श्र= जि. प्राचना बन्ना १ और (तेर) कि an nicon fait site fer foitif fireffe बदमा, ज्या निवेदम, श्रीनार अप्रसार, स्टेस्स्या शिला कर प्रकाश मुद्रा (१७)। इस्ता, बाहा बाहा, क्रीरा र -पय-तुर बद पत दा लेख दिन्दी किनी विसे प्राप्ते किर पार्टमा की नदी हो। कर दी ! - मंग-१ र पार्टेग वी कारीपृति ३ -शसाम्र-पुर प्रशासात डेम्म १६

सरीन शंदराच । -सिदि-क्ष : इस्टाबी पूर्व हे undfin-fas [de] fant fax under & ver प्रशंसनीय-वि॰ [सं॰] प्रशंसा करने योग्य, स्तुत्य । प्रशंसा-सी० [सं०] गुणोका बरान, गुणकीर्तन, सारीफ, **बढ़ाई;** एयाति । **-मु**ग्वर-वि॰ उद्य स्वरमे प्रशंसा करनेवाला ।

- प्रशंसित-वि॰ (सं॰) निसकी प्रशंसा की गयी हो । प्रशंसी(सिन्)-वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रशंसक' । प्रशंसीपमा-नीर्वात्रे उपमादा एक भेद जिसमें उपमेव-

की प्रशसके द्वारा उपमानका उल्हर्ग दिखाया जाता है। प्रदांस्य-वि० [सं०] प्रशंसारे, योग्यः अरेहाकृत अच्छा । प्रशास्य-वि० [म०] अपनी श्रक्तियर करनेवाला ।

प्रशास्त्रशी~सी॰ [मं०] नदी ।

प्रदारया**(**रवन्)~पु० [सं०] समुद्र । प्रशम-पु॰ [तु॰] दांत परना, शमनः निवृत्तिः सांति । प्रशासन -पु० [मुं०] शांत करना, दवाना, श्रमन; नीरीय

बरमाः रक्षणः वयः शाति । प्रशस्त्र-पु० [स०] दे० 'प्रसन्त'।

प्रशस्त-दि० मि०) जिमकी प्रशंसा की गयी हो। प्रशंसाके योग्य, स्तुत्या शेष्ठ, उत्तमा शुभा विस्तृता साप-सुभरा (हि॰)। - पाद-पु॰ स्वायके एक प्राचीन आचार्य। -

यसन-प्रश्नानाम्य, श्तृति । प्रशस्ताद्वि - ५० (म०) मध्यदेशके शसका एक प्राई। मरास्ति-ली॰ [मं॰] प्रशंमा, तार्यक, बदाई; वर्णनः किसीबी प्रशंसामें नियों गयी कविता आदि। राजाका वद भाषायथ जो परवर गाहिपर सीदा जाता था और जिसमें राजवंश तथा जनकी कीनि आहिका कर्नन रहताथाः यह प्रशंसाय गए बारव थी। पत्रके आदिमें हिमा जाता है. मरनामाः प्राचीन ग्रंथ या प्रश्नवदा बद्द आदि और भेगबाला भेडा जिससे उसके स्थायता, गाल, विषय भारि-का दान दीवा दे। -साधा-न्ये० प्रशंकारमक योतः। **~पट्ट**~पु० आद्यापम, ऐरादम ।

प्रशास्य-वि॰ (गं॰) प्रशंगाके थोग्य, शुरुव, प्रशंगनीय

(इसका भनिशयार्थक रूप केंद्र हैं) ३

मशीत-दि॰ (गं॰) शाव दिया हुमा; शोगः मधावा दुमा; बधमें जिला हुमा; धृष । पु॰ दक्षिया और अमेरिहारे मीनशा एक महागागर, 'पेनिकिय' । -कास-वि+ विसक्ते दश्यार्थ पूरी दी गयी ही, मंतुष्ट । -श्विमा-प्री-विश्व दिएका मन द्यांत हो। -चेष्ट-दिश दियुने प्रयान **बरमा धीड दिया है। -बाच-वि+ विमरी छह बाधा**रे दर हो। यदी हो।

भगोतामा(गन्)-दि॰ (शे॰) दे॰ 'प्रशृहिवित् । प्रशासि-की (मं) सं(तः (क्यायः द्यायत क मगोतोत्री-(४॰ (११०) विश्वके यन्ति क्षेत्र हो गयी हो ४ प्रमान्य-दि (मेर) विषयी बहुत की शासाई बाही और पैनी हैं। (संस) ने अपनी चौनवी अन्यामें ही (तव)

काम पेरीका निर्माण होता है) ।

म्बारका - स्टेंक [१,६] शास्त्री हैंबंदणी हुई शास्त्राः दहनी | (इ. हेडमा है केब अनीपत इस अंगर मार्थ के सहते हैं) । unifere-efte [ele] egel, Citt wie i मसाबद्ध -पुरु (११०) द्राम्य सहित्वालयः सम्बन्धः मृत्यदेशः ।

प्राप्तास-पुर [तर] दिन्य कर्नदर्श को क्षार्रशको सर्नेन्दर है

की शिक्षाः ग्रासन् । प्रशासित-वि॰ सि॰] विशेष रूपसे शासितः आदिष्ट I प्रशासिता(त)-प्र॰[मं॰] शामन वरनेवाला,शासनकर्गा । प्रसास्ता (स्त)-पु॰ [मं॰] शासन बरनेवाला, शासनकर्ना,

राजाः होताका प्रधान सदायक, मैशावरूमः परामर्शदाता । प्रशास्त्र-पु॰ [मं॰] प्रशास्त्रा नागक ऋत्विस्का पद या कार्यः वह पात्र जिसमें प्रशास्त्रा सोमपान करता है। वि॰

प्रचारता-संबंधी । प्रक्रिप्ट-वि॰ सि॰ दासियः आदिष्ट । प्रदिष्य-पुरु [संर] शिष्यका शिष्य ।

प्रशीत−वि॰ [सं•] ठंदसे जमा हुन्ना । प्रदान-वि० सि०] स्वाहमा । प्रशोचन-पु॰ [र्स॰] जलामा, दागना ।

प्रकोष-पु॰ [स॰] स्टाना, सुदक होना । प्रशोषण-पु॰ [मं॰] एक रोगकारक राशस । प्रक्षोतन-पु॰ [40] मुनेश क्रिया, भूगा, शरण।

प्रका-पु॰ (में॰) सवालः पूछ-ताछः पूछी जानेवाली बाधः मुब्दिन-संबंधी जिल्लासाः विचारणीय विषयः समस्याः पुरतकका कोर्र छोटा गोट, 'पैरामाफ', एक उपनिषद् । -कथा-सी॰ यद कथा जिसमें कोई प्रश्न दो । -नृती-

न्यो॰ पदेशी । -पञ्च-पु॰ वह परया जिसपर खसर देने-के हिए प्रश्न अंकित हो। -बादी(दिन्)-प्र॰ व्योतियी,

दंबत । -विपाक-पु॰ वह क्योतिया भी प्रहदशा आदि-शं(भी प्रश्लोका उत्तर दे (वै•); मध्यरप, पंच ।~विवाद~ पु॰ निवादारपद प्रश्न ।

प्रभी(भिन्)-दि॰, पु॰ [६ं॰] प्रथ पृष्टनेवामा, पृष्ठ-ताप करतेवामा 1

प्रधोत्तर-पु॰ [रो॰] सवाय-प्रवाद। एक भवसार विश्वमें मध श्रीर उत्तर दोनो रहते हैं !

प्रश्रोपनियद -न्यी॰ [शं॰] अधर्य रहसी यह उपनिषद् । प्रभय-१० [सं०] शैथिन्य, रोहापन ।

प्रसदिध-भी० [गे०] रियाम ह द्रध्ययः द्रध्येषण÷ष्ठ० [सं०] वित्रवः प्राप्तः प्रीतिः ग्रहास

(4(14) प्रथमी(पिन्)-वि॰ (सं॰) सम्रागरहमप्रदिश्मिनसम्रार।

प्रधायम-पुरु (मेर) एक पर्वत । प्रस्मिन-विश् [गं॰] दे॰ 'प्रमदी' ।

प्रश्चनकि [हिंग] शिविनः प्रति।

प्रसिष्ट-वि॰ (में॰) सुर'वदा सुनित्रपा (ग्वर-वा) (वन्ने स्थित दुरे हो।

असेच-पुरु [मंत्र] प्रतिष्ठ सर्थाः व्यक्तिः भीत् । प्रचास-पुर (शर) गोत बाहर, निकालना बाहर निकली

रहे क^रन 1 प्रष्टम्य-विव (संव) पुराने दीव्य, की पुता जाद ।

ब्रष्टा(ष्ट्) - निक पुरु [यक] पुरुनेशाला, ब्रह्मको । प्रष्ट-दिवे [र्थक] आये प्रश्नेवरला, ब प्रग्रही। केंब्र, प्रवास :

-बार(ह)-पुर वह देश की इससे निक्त्या का ter it : प्रश्नीकिन्त्रीक किनी बद्द गांच थे। प्रपृति पद्दश गार्थित

परिमाणका काम देह जो दिन्ही बादका प्रमाण हो, प्रमाण-स्पः द्यासदः। पुरु प्रमान्तिको मानवेशानाः बह वो प्रमाणीकी जानना हो, प्रमानवेत्ता, न्यायशास्ती: स्था-पारियोंका प्रधान ।

प्रामाण्य-पुरु [मं०] प्रमाणाः, श्वास्त्रसिद्ध होनाः विद्वस-मीयताः प्रमाणः - यादी(दिन्)-वि॰ प्रमानमें विश्वस य:र नेवाना ।

ब्रामादिक-वि० [मं०] त्रो प्रमादके करण हुआ हो, प्रमाद-निनः सहीय ह

प्रामाय-१० [भंग] अश्माः जन्मार, नद्याः लापरवाहीः भूग्यः ।

प्रामिमरी-(४० (५)व) जिसमें दिनी बातकी प्रतिक्ष की गयी हो । - मोट-पु० बद लेग या पत्र जिसमें कोई स्यास यह प्रतिका बरता है कि मैं अनुक मितिशी या जर मभी भी भाँगनेपर अमुक स्वसिको बाइन पवके याइएको प्रनमा रुपया हैगाः यह कागन या भागवत्र िल्ली गरकार प्रमान पुछ ऋण हेकर यह अतिहा करती है ६ अगुरू व्यक्तिने इतना ऋग निवा नवा और इसका गुद्र इस हिमाबने कागदानाको दिया आयगा ।

प्रामीत्य-प्र॰ [मं०] ऋण, काः मृत्य । मामोदर, प्रामोदिक-४० [१०] मनात, मुरर, मनोहर ।

प्राय!(यम्)-दि० [रां०] शतात, वरीव दरीव ! अ० भाषिततर, अवगर ।

प्राय-पु॰ (सं॰) भृष्युः अनशन द्वारा दीनेवानी सृष्युः भनशनगृत्युः शहुन्य, भाविषय । विक शुक्य, समागः पूर्व (हत अधीमे हम श्रम्दका प्रयोग समासमें बीमा है, धेमे-'बहराय')। -शन-वि॰ मरणागन्न।-इस्म-पुर शामान्य बाप । -अष-दिश जी प्रायः हुआ करे, शामान्य ! -विधायी(विम्)-विश् वी प्राचीपवेशन हर गरनेका भंदरत कर सुद्धा थीं। नकुत्त-दि॰ शी दिन्तक गील संदेश

मायण-पु [१] प्रोध, आर्था पद श्रीर स्थानहर दुगरेंगे प्रदेश करना (रम्क); शरण हेना; मृत्यु, क्षेत्रशाने मन्त्राः स्थान बदलताः जीवनमार्गः मुच्छे योगने बना पुषा एड भागमा वह आहार विमाने अस्त्राम अंग दियां भाव ।

प्रामगीत्। [१०] भागीत्र । तु० वन मान जी जीत्र-बागुढे आरंशो दिया अन्या है। सीमदायक प्रत्या दिन ह

प्रापन्य-पुर्व [र्हेर] परिवत्ता, विश्वपत्त र श्रापद्वीच−प्र• दे॰ 'यादेखीय' ।

प्रायक्ता (बास्)-अ॰ [अ॰) अर्पहत्तह, बहुदा, प्रह्मह ह मामिधिल-पुर (धर) बद अल्ब विदिश बले और प्राप्त मार्टेन बर्पेटे लिए दिना जन्मा क्रोपंज ।

मापशिक्ति-मा॰ शिनो दे॰ "माद्यित्त" ।

urufufere-fie [e'e] faner unfur fent mit. मार्थायको बीहरः प्रावधिकश्रीकी ।

मायधिर्णाः(निज्)=दि० (११०) बार्शाधन ब्रह्मेशाला ६ मापालिक, मापालिक-विक [विक] और मापानि कार्य भारतपद तर प्रथित हो र पुरु प्राप्तः चेत्रतः हही अली

मंत्रप्रदेश्य भी बाकादे शरद शुन बाले जाते है र

प्रायिक-वि॰ [सं॰] श्री अभिक्रमर होता है। प्रायः हैं है बाजाः सामान्यः ।

मायुर्द्धेपी(चिन्)-१० [मे•] पीशा शायोगिक-विव [मंद] जिसका निष्य प्रयोग बीता है।

जिमका नित्य प्रयोग किया आह । प्रायोज्य-वि॰ [र्त्त॰] प्रयोजनहे योग्य, (१४ ११५) के किमी दे विशेष अयो बनकी हो (बेने-वंदिक्ट बिर हुए) मादि । ज्ञान्यके मनुसार ऐसी बस्तुमीका देशका श्री

बस्तुओं से मानि गई। हो सकता)। प्रायो-'प्रायम्'दा समामगढ रूप । -देवता-दुःश

देवता जिसे सभी मानते ही, सर्वपृत्रद देवता। -श्रीर-पु॰ स्वलका यह भाग जो तीन भीर प्रमीने पिरा ही की एक और १थलमे लगा हो। -आपी(पिन)-(१० ते भाग शीरमे होता हो, शामान्य ३ -शाह-ए॰ कोर्नेन बहादत ।

प्रायोपगमन-पुर [मंत] रे० 'प्रामीपरेश'। प्रायोपयोगिक-40 (तुं) वो माधारण हो। गणना प्रायोपविष्ट-वि॰ [लं॰] की प्रायोगंत्र कर रहा ही। प्रायोपवेदा, प्रायोपयेत्रत्-पु॰ [गं॰] प्रात रेडेडेली दाना-पानी धांदबर यह रहमा, भावते विष क्रिया यके

बाह्य अन्दार्गम् । प्रायोगयेशनिका-ली॰ (सं०) दे॰ 'प्रायोगीर्धा' । प्रायोज्येशी(शिन्)-[६० [मृ०] प्रायोज्येश वर्तन्यमा

प्रायोपेत-दि॰ [गं॰] वो भाषाप्रदेश कर रहा ही। ब्रार्थ्य-पुर [शंरु] ब्रार्थ्य, कार्य, प्रयुक्त । प्रार्थभण-पुर [शंर] आरंग हरना, श्रम हाना ।

प्रारंभिक-दि॰ [गं॰] बारंपठाः बारमने दीनेराया प्रारस्य-दि॰ [रो॰] आरंग दिया दुमा । दु॰ तंत प्रसी के कमोरीने वह विसक्त कन भीगा आ रहा हो, प्रश्रा किन्मता वह भी शुरू किया गया हो है

प्रारंदिय-भीक [मंक] आहंबा पानी प्रांपेश मीएकी श्रेमर १

मारक्पी(दिवन्)-दि॰ [शुं॰] प्रारम्पशना, प्रवार र्¹ प्रारिध्यत-विक [एंक] क्षिप हास करतेश दिशा दिश गदा हो ।

प्रासीह-य- (4-) प्रदेश, बंदू ह प्राजीवतः(न)-वि॰ [वि०] दान वर्गेनता । प्राज्ये-पुर्व (शृर्व) प्रचाल प्राप्त ।

प्राचक-दिक [मंक] पार्नेगर बरनेशाण । पुर प्रावर्ध अन्यांशः दरतेशका ।

प्रार्थन-१० (११०) धानना, धापना बन्धा, बायह । प्राचना-- न॰ दि । प्रचेता कामा। मी । [१ व] रिं Bu nionic failt ning for fen'tt fentife बदवा, रूप विदेशम, बावार अज्ञास, प्रदेशमा हिंदी, यह प्रकारकी गुद्रा (१०); हरूल, भारत वाजा, भावाला -पण-पु॰ वर पथ का सेस जिसदे किटी विके करो निर प्रारंत की वहां है। अनुकी । -अंग-इर प्रदेश की सरवीपृष्टि व -स्त्रसाल-५० प्रद्रासाय जैला हर

सरीत श्याराय र -विहासि-स्तेत रूपानी र्यो प्रार्थभीय-विक [तंक] हिन हे हिए प्रार्थत की मन उसके सा चुक्तेयर वर्षा हुई भोजब बस्तुः कान्यके तीन ग्रुणीमेंसे एक, किसे कान्य चा रचनाका विशेष रूपमें सरक और मुरोग होना; धर्मका कर पुत्रः भोजकर (मक्त-पाशुमंकी बोलांमी) के देव 'मासाद'। -पट-पुत्र राजायी ओरसे सम्मानार्थ दिया जानेबाला शिरोबत्र। -परास्थ्रार-विक प्रतिकृत, असस्त्रः विशोधी क्रपाकी परवा न सरनेबाल। -पात्र-पुत्र कुरापात्र। -स्थ-विक क्रमासुक्त मेहरवान, महत्रः।

ावण्ड्रासुका वर्षपान नाता । प्रसादक-पुण्डिमेश निर्मेश बनानेवाल्यः शसन्न करनेवाल्यः स्टा, पन आदिवा अपार्मिकके द्वाबंसे पर्मेनिष्ठके द्वाबंसे जाता (कीण)।

प्रसादन-वि॰ [मं॰] निर्भेष्ट बनागेवाला, प्रमाद-कारक, प्रमुख करनेवाला । पु॰ प्रसुष्ट करना; राजाका शेमा ।

प्रमुत्र करनेवाला । पुण्यसम्बद्धाः स्वाका समा । प्रसाद्धाः न्यो । स्वाः पूजाः स्वच्छ करना । ॥ स्व क्रिल प्रमुत्र करना ।

प्रसादनीय-वि॰ [सं॰] प्रसन्न करने योग्य । प्रसादित-वि॰ [सं॰] शास, प्रमन्न किया हुआ; आराधिनः

रवण्छ दिया हुआ । प्रसारी-सी० विसी देवताको चडायी दर्व बन्तः महारमाः

प्रसाद[—सा॰ (बसा दशाका चड़ाया हुर बन्तुः महास्मा, गुरु या किमी भाग्य व्यक्ति द्वारा दी गयी बस्तु । प्रसादी(दिन)—वि॰ (सं०) निर्मण बनानेवाला; असल

बर्गवालाः प्रशादसक्तः प्रशत

प्रसाधक-दि० [सं०] श्यार वरनेवाला, श्वक क्षित्र वा निष्युत करनेवाला, ग्राधनकर्गा, निष्युदक । पु० रामाका वह सेवड जो वसे वस्त, भूषण कादि पहलागा है।

प्रसाधन-पुर [गंर] शंगार, बनावः शंगारधी माममी, भूषण, बंधी कादि जिससे शंगार किया जाना देशनिष्पादन, सिद्धि।

प्रयाधनी-सी॰ [शं॰] रंथी।

मनाधिका-सी॰ [री॰] शेगार करनेवाणी, बसाधनकवी; रिप्री धान ।

प्रसाधित-पि॰ [सं॰] क्रिमका प्रसाधन या बगाव-श्रेगाइ दिया गया दो, धर्नकृता निश्वदित, संशदित; प्रमाधित । प्रमार-पु॰ [सं॰] क्रीलानेदी क्रिया, क्रीलाव, प्रमाद; क्रीलने या ब्याग दोनेदी दिवा; संनार, दशर-क्रार श्राला, क्रिता;

(मुँद) मॉडना ।

समारक-दिव [ग] कैनानेशान। समारक-दुव [गंव] कैनानेश क्रिया, केमाना, ब्यारला; बागे बरमा: बरामा: कैन्द्रद समुद्दो घेर हेमा: (विक्रदर्दे तिर) सोगबर रिशनता:

मनारना १- छ । बि. प्रमारता, पेलावा ।

मार्गार्थी - वीक पीर्वा, प्रवास मार्ग स्वास मार्ग स्वास्ति - वीक्षिति वीक्षा स्वास स्वास

मानातिन-वि+ (शे+) चैनामा तुमा, प्रतारा हुमा ।(विकत-दे निद) मद्दित्त ।

मगारी(रिष्)-दि॰ [तं०] चेन्द्रेशकाः निद्यनदेशकाः रागान्द्रे)।

मसार्थे - विक (१४०) मसार्थाके कोच्य, कीनांदे वीस्त्र व मसार्थ - पुरु (१४०) वस्त्रे करणा, जीनांदा असमार्थसम् व प्रसित-वि॰ [सं॰] बाबदा आसक्तः मंहरनः अति शुन्नः बहुत साफ । पु॰ पीवः मवाद ।

प्रसिति—मी० [मं०] बंधनः बंधनका साधनः, रस्साः, जंजीर आदिः जालः संतुः आक्रमणः विस्तारः श्रेपणः क्रमः अधि-कारः, प्रमावः ।

प्रसिद्ध-वि॰ सि॰ समाया या भँगारा हुआ, अलंक्स,
भृषितः विसकी प्रसिद्ध या द्योदरत हो, स्यान, मदाहर ।
प्रसिद्धि-स्रो॰ [सं॰] स्यातिः सजाने या मनारनेकी क्रिया,
शंगार करना, भृषक, बनावः सफलता, निद्धि ।

प्रसीदिका-नी॰ [सं॰] छोटी बाटिसा ।

प्रसुत-वि॰ [सं॰] निचीड़ा या दवागा दुशा। पु॰ एक बदुत वड़ी संस्था।

प्रसुस-वि॰ [मं॰] गहरी नींद सोवा हुआ; संवृदित (फूड); संस्कृति (सुधृत); निश्चित्र, निश्चेष्ट ।

असुसि -पाँ (मंद) गहरी भीदा संदादीनता। निदयेश्या । प्रसुसि -पाँ (मंद) उत्पन्न सरनेवाली; माता, पाँकी हेना। स्वा: अंतुमा; क्षीमक तुल ।

क्याः अन्तुनाः मानक तुम । प्रसक्त-मी॰ [मं॰] घोत्रो ।

अस्ता-पार्ट (पार्ट) असर किया हुआ; सरक, संबात । पु० फुल; स्परिका साधना; चाधुव मन्त्रका एक देवाण । प्रस्ता-प्यी० (सं०) वह सी थिमें पुछ दी काल पूर्व क्या

पैदा दुशा हो। जन्मा।

प्रमृति-सी० (ते०) प्रमयः उत्पत्तिः संमातः समायः सामाः प्रमृतः, वच्याः । -च-पु० प्रमयनेदमाः । -चयर-पु० प्रमयके तुष्ट वास्य वारः होनेवानाः उत्तरः। -चायु-सी० प्रमयकालमे समाज्ञयमे उत्तरन होनेवानी साम्।

प्रमृतिका-ची॰ [मं॰] प्रमृत्ता, बच्चा ।

प्रमृत-वि॰ [वं॰] उरस्त, श्रीत । पु॰ पृत्र, कश्र । -बाल, कार-पु॰ सामदेव । -वर्ष-पु॰ पुग्पर्या ।

प्रश्नक-पु॰ [गे॰] प्ल; करी। प्रश्नेषु-पु॰ [गे॰] कामरेव।

प्रश्यन-विक (मैंक) कामे बहा हुआ, शिष्टता हुआ। पैका हुआ, विश्तीमी: पंचा शंबाना विदिश गया हुआ, सन्। नित्युक्ता हुता प्रविधात सभ । पुरु अवस्तित, प्रमार दे। पक्षता एक सात । - ज-पुरु एक महारही बार अ

भवान । प्रमुखा∽सी० (शं०) प्रधा ।

प्रमुक्ता-को॰ [सं०] ध्या । प्रकृति-रक्षे॰ [सं०] आगे ब्राना प्रेष्टाना अहोत्रान, यमरा टो पन्या एक माल ।

अम्हर-दिक [मंक] स्थाना दुआ, द्विस्यक्द ।

प्रमुष्टान्योः सिक्षे पौलावी दुवं उत्तरी। युवस वक्ष तीब व प्रमेक-पुरु र्विको गोनता, सारियमाः भूगा, धरणा दुवि चारो प्रिया सा नात्रमे चारी विश्ताः वसना बरापुण्डी बरोरी !

कारतः प्रमेडी(किन्)-दि० (मॅ०) परनेशकाः बिग्ने प्रशः जित्रमणा रहेर केले प्रणशासात्र प्रश्न कर प्रशःस्वा कागण्य

जान या परव १ प्रसिद्दशनमूत्र प्रतिदेश प्रतित्तु १ प्रसिद्दशन्त्रीय स्थिते स्थेत स्थापन स्थापन

प्रमेरिका-मो॰ (लं॰) होते बादिरा, हत्तराम । प्रमेरिकान(बस्)-दि॰ (लं॰) प्रतान । प्रासाद-प्र॰ (सं॰) राजमदन, महरू; देवालद: विज्ञाल मवन, आडीशान इमारत: महल या बढ़े मवनकी छनः . दर्शनीते निए बना हुआ कैवा स्थान । -कुक्कुट-पु० पालत समग्र । -रार्भ-पु राजमकाने अंदरका शयमा-गार । -प्रतिष्ठा-सी॰ देशव्यमें मृर्तिका स्थापन । -मंदना-मी॰ रक प्रकारका रंग । -श्रंग-प॰ सहस वा गंदिरकी भीटा । -द्यायी(यिन्)-वि॰ प्रासादने गोनेदामा १

·प्रामादिक-वि॰ [सं॰] प्रपायुक्त, अनुकृतः शुंदर; जो प्रमादचे रूपमें दिया आव । प्रापार्टीय - (२० (२०) प्रापाद-संबंधी: प्रामादका । प्रामिक-पु॰ [मं०] मान्ये श्रदनेवाला दोहा । प्रास्तिक-वि० [गे०] प्रयुति-गेशंधी । ब्रासेव-पर [नंग] घोटेके सामग्री रस्ती । भास्कण्य-पुर [मेर] एक प्रकारका शाम । प्रारत-दि० [गं०] निकाला दुमा, वदिण्यून, निष्यासिनः

वेदा दुष्टा । प्रास्तारिक-रि॰ [गं॰] प्रशाद-गंबंधी; प्रशादमें काम मारेगामा ।

प्राम्नारिक-(४० (५०) प्रस्तावके रूपने द्वाम आनेवासाः प्रध्योतिकः समवेतिकः ।

प्राम्तरय-५० (१)०) दिवार वा सर्वता विषय काला । प्रार्थानिक-दि॰ शि॰ को प्रश्वानके समय आवादक या उभित्त को । ५० दे० 'प्रावानिक' ।

मारियक-4ि॰ [रॉ॰] तो तीतमें एड प्रश्व दो: त्री बड प्रत्य देकर गरीदा गवा हो। जिसमें एक प्रश्य क्षण अहे था परें: जिमे शेतेमें एक प्रश्च की व लगें !

प्राप्तवग-वि॰ सि॰ हरमा-वेदेवी । माह-पु• [स•] सुवकी दिशा । प्राष्ट्रारियः-पु॰ [म॰] प्रदर्ग, पुन्नि सर्वेथारी । प्राष्ट्रण, प्राष्ट्रण ह—९० [मं०] भतिथि, पाइन रे माह्य-प्र+ [ग्रं] दिवाना पूर्व माग्र, प्रशेष ! प्राहेत्य-(र॰ (ए॰) प्रदेश होनेवाला या प्रदेशवांची। माहार-पु [गं•] बहारका वंशम ह मिरर-प्र· [प्र·] सुदद, शारनेपाला ।

ब्रिटिशा-मां (मं) टापनेका काम, छवाई, मुद्रम । दिव शापनिर्माण । -ईक-को शपाके काम मानेवारी रवारी । नप्रेयनपुर शक्ते घणामी अतिवासी शहर धापतेकी मण ६ -माशीम-म्यो॰ टाइव छापनेकी यह कत्र भी शाबारण देव मेंसमें अवधी बीची है। और विदेश-**कर विद्रणोद्धे वस्ती मनती हैं** ह

किय-पुर (४०) राजाः राज्युनतः, शाहलणाः शाब्द्रसः का कोर्ड पुरुष र - शराम् बेस्स्य-पुरु वंगर्रहरू। स्वराज र दिस्मित्रण-पुत्र [प्रेर] शित्री कालेज सा वह विकासद्या लक्षे ध भागास्य या कविद्यारीत यह यस की गुरुष दिया रहा हो, मुख्यत्।

धिषिमी = स्टेंड पुरुष्टे, पर्यट ह विष्यंत्रर-दिन [१/०] प्राप्यदार्क १

विश्वती-मे (तन) होप्रत्यक्ति पुरुष् श्रीरूप

40-24FF B

मिर्वकार-विक [मेंक] २० 'विवक्त' ! वियंत्-सी॰ [तं॰] एक कुछः राई: देवल बेंगले समा

मधः मुख्दी । प्रियंबद्-वि॰ [सं॰] प्रिष बोलनेराष्टा। पु॰ एतावर्थ पश्ची, रोचर; एक गंधर्न ।

प्रियंपदा-मी॰ (सं०) एक ब्रुस विक सी॰ दिन होड़ो पारी ।

निय-वि॰ [सं॰] निसंहे प्रति प्रेम हो, घारा हर कपनेशका, इषः वो छोश न मा १६, किने व होनेकी बी न पादेः समाना । पु॰ सामी, पी। आधिका एक प्रदारका एगा बोहद सामग्री भी अच्छी स्वनेन्स्थे बात, अनुपूत्र दातः (१९१०% विव हर्षे उत्पन्न करनेशाचा, हर्षेत्रदा दिन दर्देनप ~कळत्र-पु॰ वह पुरुष को भएती पर्शाधी देश ध वरण हो। -वार्था(शिन)-वि॰ धना धारनेतर च्कास∽विश्वभना चाहर्नेदामा, हिनैदो । च्यादरं,° कारी(रिन)-वि० हित यहनेवाना । पु॰ निय ।- हुप्-पुर दिन करनेवालाः विष्यु । - जग-पुर स्वैदया न्यत्ति गयानंत्रपी । -तामि-पुर है। '(राध्यव') -जीव-पुरुमीनावाडा १-सोपन-पुरुद्ध रिवर । रिव पिरको नुष्ट करनेवामा ।—वशा—सी॰ दान की गरें ^{हार} पृथिती ।-सर्वा-विक देक 'विवदर्यम' । - सर्वन-विक मे वेदानेमें भना हुने, सुर्शन, शुरर । प्रशीका (स्पर् वंबरोंडा एड राजा । -इशीं(शिन्)-रिक प्रसी में। दे रिटम देसनेशामा । पुरु समार मशोरता हर अपी -देवन-वि॰ विमे अपनी प्रेम हो।-प्रामा(मन्)-पु॰ शिव । -नियेश्म-पु॰ सुनंबार । -निवेहनिया (म्)-विक, प्रक शंबादकाइक !-वाल-विक, प्रक धार्" -बुब-पु॰ दह पड़ी १ -श्राय-वि॰ अर्पा रिरा रि मिर बबन । -मेजू-दि० आहेर स्तुदी मानिती रनी रमनेवाता । -भाष-पुर प्रेम । -भाषत-पुर मि मबन । -भाषी(चिन्)-दिश मिद दीतनेशका मीर् बान कद्दीवाचा । [ब्री॰ 'शिवशाविनी' ।] नमंदमन्ति विभे भागृहण विष हो। -सपु-दिः विहे सत्तर भा हो। सप्तिय । पुरु बनराम । -रश-दिन दिने सुर हिर g), ett : -ard-(t. 4ft! Had ! -aut(44). कारत्व : -यचन-पु॰ क्यो सहदेश्यो ६६ मपुर वयन । दिश सपुन्धे सीडी बान करनेव नेन नेन आही । - स्वस्थ-पुर दिव दिव । - स्वी, - स्वीरे-मार विवेश : -पादिया-थी॰ एड वामा ! -वारियी॰ की॰ यह लाइकी बिहिना रे दिन क्षीत्र ग्राह देखरेराणी -बादी(दिव)-दिन, पुन दिव बोलमेशाम, बहुएकपी भारत्य ।- अन्-वि॰ विने अन् दिव ही। इः शायत् rige me da 1 - stimm -de fteinur mag. (थम्)-इ॰ विष्पु ।-शंतमय-१० दिन पेर दिन trebes sum min wir wirfel funter era! -sifti-jo mebi ai majen eint, greinfi ध्रद्धा देश । -श्रीप्रहात-दिश गुक्तवेशम । - स्रोताल" पुर दिय दर्शनके वे लाल बंदला र-मास न्यून रिव दिव Bent be t folle frereit if fie faftet mit

सपः (अन्न शादि) फटकना । गरमात-विक सिंको सन्ता हजा, विस्मृत । प्रसाति-स्वार्व सिंग्री मुखना, विस्मर्ण । यस्यंत, यस्यंतन-प० मि०] बहुना, धना, धरण । प्रसंख-प० [मं०] (तरना, (तर्महा) पात (सश्रत) । प्रसंसन-पु॰ [मं०] द्वावक प्रार्थ । प्रसंसी(सिन)-दि॰ [मं०] गिरनेवानाः (वह गर्भ) विसका पान हो जाय । प्रस्य-पु० [म्०]समातार चना या बहनाः स्वनसे निकला हुआ दूध: प्रशह, धारा: पेशाय: ऑम्: उवलते हुए भाषलका जयरसे बहदर गिरता हुआ माँह । प्रस्यवा-प॰ भिंगी जल आदिका समातार चना या बहुनाः प्रमीताः स्तनमे निहत्त्वा हुआ हुभः पेशान करनाः मह रक्षात जाहाँके बाक्षी शिरता था बढ़ना है। हारना-प्रवातः सान्यवास परंग । प्रस्तरणी-स्वी० सिंगी एक प्रकारकी योगि या भग । प्रसाय-प० [मं०] धनेशी किया, शरण, बहावा मुत्रा वरलते हर भावनदा ऊपरमे बद्दना द्रमा मोह । प्रचल-पिक सिको शरितः शहा हुआ । प्रस्यसः प्रस्तास-पर्व भिर्वे उद्य शब्दः ओस्दो भाषात्र । प्रस्वाप-प० मिन्। सोनेश क्रिया, शोनाः रहतः एक अस तिमरा प्रयोग शरनेपर शुपकी मीद आ जाती है। प्रस्वायक⇒ि० (rio) सन्तारेशनाः सार€ । प्रस्यापन-१० मि०) सनाताः एक शम जिसदा प्रयोग मरनेपर विपशीको जीह भा जाती है। प्रस्थापिनी-भी० मि०ो सरवमामाधी एक बहुत क्षे कृष्यकी पानी भी (हरिवंदा) । प्रस्पार-ए० (सं०) अंदार (पै०) ३ प्रश्यिकत-दिव [रांव] विशे परीना भा गया हो । प्रस्पेष्ट-पर्व (गृंद) प्रमोता । प्रस्पेदिश-रि॰ [गं॰] क्रिने प्रमीना भा गया हो। सप्त-पर्गामा कानेबाहा ।

प्रकेरी(दिन)=बिक सिकी प्रयोगेन नर-बन्छ। प्रहोतस्य - दि० [मं०] यथ्य । प्रदूषान-पुर् (व) देप, सहस्य । महणेति, प्रहतिमि-पु र [शं] बहुमा । महरा-भि [t'+] आहमा निहम, मारा हभाः (हीन आहि) विभवर आपात हिया गया दी। विनतः चैताया

દુમાં પરામુત્ર, વિદાન્ । ग्रहित-क्रीव [शंक] का,पुल, बोह १ प्रदर-पु (iie) एक दिवसा साहतो भाग, वाम, पहरः पररा । - मृहवी-सी वृहिती मामद शुर ।-विस्ति-*** \$5747 NT 1

महरक - ५० [गं॰] ५इटेराह, वहिदानी । महाराताक-भाव विक मान्य दीवा-दिशा महरते मुनि entalf,-entie !

महरम-पु: [शंद] शोजनाः हरानाः महाहः कारानः भाषमा देश देश, दहना अला (बहिने मुल्ली) देशन, परिष्टुनाही काक्षेत्री क्षांनक कर प्रहरू, सारी दे दे दे दे वा क्षान । - कालिका-कालिमा-मर्गक है केलावा हुआ केवा हुआ, केविता वित्रुमा वाकुमारिका-

प्रस्मत-प्रहित जीवस अध्योज्य एक शेट । ग्रहरणीय-वि॰ सिं॰ो छडने या आक्रमण करने योग्यः नष्ट करने, दर करने बीग्य । एव एक अस्र । प्रहरी(विन)-प॰ सिं० | पहरदार, पहिपाली । पहर्ता (ते)-वि०,पर्शामेर्ग भेडमेराहाः भारमग् सहार स्मनेवाला । धहर्ष-प॰ मिंगी अत्यधिक प्रसन्नताः प्रस्टियमे उत्तेतना या तसव आसी 1 प्रहर्षण-प० मिंगी हर्षे, प्रमुखाः हर्पेशन्य रीमांनः अभीष्टकी प्राप्तिः इप शहः एक कान्यालंकार जहाँ दिना वरिवय है ही कार्य थिट होते वा अमीरमें भी अधिक क्वानना क्रिन्तेज्ञा वर्णन विशा जाद अध्रा जर्रा यह दिखलाया जाव कि जिस बानके लिए यान भारंग किया गवा था। वह औनमें ही प्राप्त हो गयी। वि॰ प्रक्रवित बरनेवाला, प्रमन्न बरनेवाला । प्रहर्षणी, प्रहर्षिणी-मी॰ मि०] इलदी: एक वर्णहरा । प्रहर्षित-दि॰ सिं॰ी कडा दिवा दशा, मंगीगरे . निष बलेबिन किया हुआ: रोमांचिन: प्रमुद्ध । प्रदर्शल-पर्श मिर्ग वर ग्रह । प्रहर्मती-मी॰ [शुं॰] बड़ी अंगीठी। मुधी। बागंती सहा १ शहरात-पः सिंशी बीहरी हंमी: परिद्वास, दिलगी: भागको तरहका हास्य रसप्रधान एक रूपक (१११०)। क्रहमित-प॰ भिंगो एक सदः जीरमे हेंसता ! पि॰ हेंसना रशा प्रमय । ब्रहरत-पुर्व सिंगी पैवा, प्रमुख रायगरी गेनासा पुरू धेरराष्ट्रीय । प्रज्ञान-प॰ शिं•ी परिस्यामः प्यामः वैष्टाः उदीय । प्रहाणि-भी (मं) परित्यागः समी, भ्रमायः दानि ।

प्रहात्-च १ दे 'प्रहात' । प्रहाति+-स्री० दे० 'प्रहाति' । प्रहार-४० (ने०) आयान, बार: शारम: बंटहार !-यारी-सी॰ मांगरोकिय एका ।

ब्रहारक-दि० मि॰ ब्रहार बरनेशमा । प्रशास-प॰ (हो॰) कार्यशन, मनपादा दान । प्रकारमा = - स । जि. प्रशाह करता, कार करता, प्राप्ताः (अम्र) पेंस्ना दा प्रथाता

प्रहारात-पि॰ [मं०] भी भाषात्रने यादम श्री गया श्री । पुरु कापानके एनमें दोनेबाओं और हा नीत दीशा। प्रहारित॰-वि॰ विमक्त प्रदार स्थि। गया हो। प्रदारितिने-दि॰ [यं॰] प्रदार करनेवाना कालमा

बरनेशामा नष्ट बरनेशामा । पुर शेषु बीहा । ब्रहारुद्ध-दि० [रो०] दमपुर्वेद हाग्र बर्देशाना ! प्रशासि-दि॰ [०'०] प्रदार करने दीग्या हरण दरने दीग्य । ugre-ge [ite] ugen, erren ferreierefeffe:

दह नामा थिया गरा भोग गेरी । गिर्दा घरट । प्रहासक –दिन, पुरु (१०) हमाजेशका, प्रत्यारा । प्रशामी(विज्ञ)-विव्दर्श । १९४० व्याप्टराना, अपूर्व

र्रेगरेव भा यहकीरामा । पुर मोरारिहरू । प्रदित-दिश [de] धेंदा दूधा, धमाशा दूमा (ww);

41-8

ष्टा अभिनद । -सम्राज-पु॰ दर्जशेका समुदाय, दर्ज्ञ-

मृंद } मेद्रागार-पुर (छ्र) देश प्रेशागृह । प्रेक्षाबान्(यन्)-[४० [५०] मोन-समहाहर काम कर्न-धाना, चतुर ।

प्रेक्षित-१४० [मंग] देगा हुना। मेक्षिता(म)-वि०, पुर्व [वंत्र] देखनेवाला, दर्शंद ।

प्रेक्षा(दिन्त्)-विव [रोव] वेग्यनेवासाः गीरमे देखनेवासाः ···वेशा भागो या दश्याना (जैमे-'मनपेडियो') ।

मेहर-रिश् (मंद) देव 'प्रेक्ष्मीय'।

प्रेस-वि० [य०] यस हुआ, मृत । पु० मृतास्माः वह बोनि बिगुमें अनुष्य महतेथी उपरांत सपित होनेतह रहता है। इम योनिमें पही हुई मृतकती भारमाः एक प्रकारकी देव-योनिः मयस्य आवश्याणा आदमीः सरवमे रहनेवाणा प्राचीः अवत परिश्रम करनेवाना आहमी । -कर्म्य न). -शार्प, - मृत्य-पु० गुन्दकं निमित्त विये जानेवाले दाइ शादिने नेतर एप्टिश्रिश्यत्यके ज्ञाय । -काय-पुर दाव । −रास-वि० मृत । −सृह,-सोह-पु० दमशाम । -गोप-२० प्रेमीका रशक । -धारी(रिन्)-पु॰ शिव । -सर्ग-पुरु भेगके निमिश्च दिवा जानेवाना हर्पण प्रेयरे निविश्व मालमस्त्रक किया आनेराना विशेष प्रदारता तर्पयः – हाइ – पु॰ राषशे जनानेको किया। -मृष्ट-भीक,-दारीर-पु० वह द्यारि को मृतदकी भागमानी मरमेने बादमे नेदर गरिवीदरणका प्राप्त रहता दे। ∽ध्म-पु॰ निशाहा भुभां। ∽सदी−सी∙ पैतर•ी सदी । -नाथ-पुरु वयरात्र । -नाह-पुरु [दि] दे "मेननाथ"। -नियांतक,-निटांरक-पु॰ -श्वको स्मातानगढ के बालेशाना मनुष्य, शरहारकः। -प्रान्त (प्रकृत । -प्रशन्त प्राप्ति कारका एक प्रशास्त्र सामा की शबदाहरे समय समाया नाना था। -पश्च-पुर बसहात्र । -पर्यत्र-पुर सदरमीर्वेडे अंदर्वत या, पर्वतः --पाञ्च-पुरु शाइते द्वाम व्यवेशना वर्णनः । -पापश्च-द्र• शत्री समय दशशान, वन्धितात, चंतप भारि गुनी प्रगईमी दिगाई देनेवाणा धनना जुल धवाहा बिने मीत वेनभोना सम्हाने है। -बिश्व-५० बद निया भी पार्त ने वेदर गाविशीयरण के दिल्यक ग्रेमके निविश्व पारा जाडा है । चपुर-पुर,-पुरी-ब्दी० व्यवद्री । -साम-५० सन्दर्भ -शीम-शी० द्रम्यात् । -शेथ-पुरु मृत्रके निविध दिया जानेवाला बाह्र । -शक्तांची मधीन गुम्मी (बहुने हैं कि प्रश्नी गुम्मी ब्रुगी हैं वर्श भगनेत नहीं प्रति है। १ नहांस न्युन यनशब्द । नहीं ह -पु दातीस । नयम-पु दमलान। न्यादित-वित्र क्षित्र प्रश्न स्थार हो। यू विष्य । -बिधि-स्थि मन्द्र १ वहार । - शिक्षा - गी. वहारी है-रिवय यह ften fangt nich nicht nicht beit freifen utente भाषा है (तब्दर्भ) र न्युद्धिनम्हरू सहराही पढे देखे है मदिल बीमा र नव्यतिसन्द्रेण देश दिल्लादि दे स्वाहत्तर दश मञ्जूबर राज्यप्त -धाञ्च-पुर दापको रिन्देने देवर र् पर ब्रासार क्षाकी विकिल हैको अन्देशन सामोजिते हैं कोई पह र-प्रार-पर देन विल्डिकीय है। दिवस गानि है प्रेसता−स्वी॰ प्रेतम्ब~य≠ [मं•] यरयः प्रेटको *म*सस या धर्म ।

मेतनी-सी॰ नेहबी सी। प्रेताधिप-पु॰ [शं॰] यमहात्र । वेतास-५० [बुं•] प्रेतंति तिनिध पास वानेशमा सिध

पृष्टीन गाउन । प्रेतायन−पु॰ [तृं०] एक तरक । प्रेसाचास-१० [तृं०] १मशान । प्रेताशीच~पु॰ [र्ग॰] मृत्युढे दार्ग श्रीनेशना शरीद।

बेतान्य-सी॰ [सं॰] सुरॅकी रही। -पारी(पिर)-पु० दिखा। प्रेति-म्बं॰ [मं•] मृत्यः गमन । पु॰ भारार ।

ग्रेतिक-पु० [मं०] श्रेप । प्रेली॰-पु॰ प्रेत प्रानेशका, प्रेरपुन्छ ।

भेतेश, भेतेषर-पुर् [र्शः] वमरात्र । प्रेगोन्माद-पु॰ [गं॰] प्रेनशपादेवारण होनेशन करण प्रेरवजासि-स्थे० [लंब] शरपर किर अन्य केमा इर के पुन्धपति ।

प्रेरवभाव-पु॰ [शं॰] दे॰ 'प्रेन्वणा(१' । प्रेरवा(रवन्) -पु॰ (२१०) नायुः रेद् १

प्रेप्सा-सी॰ [बं॰] प्राप्त सरवेडी रच्या, क्षेत्री रच्या प्रेप्यु-तिक [र्गक] पानेकी क्ला करनेवाना, करेवा इम्दुद्ध ।

प्रेस(म्)-पुक [तंक] ब्दार, सुहम्बत, अनुरक्त प्रेर मीता देनिः भागेदा मत्राक्षा बाह्य देश दह मन्दर (बैश्व); माया और लोत । -समह-पुर देशक व प्रेयमें दिया आनेवामा बतह ! -गविता-मी श नादिका निमे भदने परिप्रेगका गर्ने ही । = प्रम,+वीर-पुरु देशके बारण कोर्गों ने निश्वनेवारे क्षेत्र, देशकी -जा-न्दी॰ महीथि करिशे पर्यो । -पानव-१ मेमाभुः नेष (मेमान् वदानेवाला) । अवाव-रिव्हा व्यातः, विदशान । -पाशा-पुर धेददा वदा वा दार -पुश्वविका-श्रो• दहा । -पुष्रद्र-पु• प्रेश्वे ४०४ बानेशका रामाच । -प्राथय-पुरु वेन्त अर्द्ध लाग હેલ (૩૦) ર—લંવ:–સંતન-તુર દેવર ૧૮૦ મારિ-क्षीक देवसाकी की श्रामिताओं विष्णुधीय हिंग्यों। -अस्तिक-शोक देव 'सेस स्ति, १ -सास-देव हुत्रत, भारत । त्यस्यसा अस्टि-मोक देव मिराजनेर ।-बर्नार

दु॰ वेसडे कारण अस्तिति निरमनेशा मध्या प्रेमवर्ती-भी॰ [मंग] प्रश्नी ह श्रेमाध्यत-तु० (do) एक प्रशाहता कार्यप सर्वतार हिल्दी मेमदर बार्टन करने समय प्रसंदे स्टापान का दिखा

आधा है (देशक) व प्रेसालाप-पु- [eiv] प्रेसपूर्वंद की अभिनाती अगाउँ पत दुर्गीने क्षेत्र कर्त्रेशमें हैं। का अन्दर धर्मधर्दर

ब्यापारी बालचील ह द्रेमार्जिशन-पुर (शा) प्रेयरे शान या देशी अरेगी क्षेत्र करणकात्र कार्यक्र कार्री प्रशासन कार्यक्ष कार्यक्ष है। मेमाम-पुर (शर) देवने ह रण करेंगे मनमा के मेंपूर

\$4\$ m"里 \$

-प्रत्यस्पुः एक प्रहारका प्रश्य विश्वमें प्रश्वीनकका महा-में रूप हो जाता थे। -प्रापुत्य-पुः क्षापारण व्यक्ति। -मिन्न-पुः प्राप्त्त चाउने देशके टीक बादबाटे देशका राजा। -हानु-पुः यह राजा विश्वका देश किसी कन्य राजाके देशसे स्लाहमा हो। प्राप्तारि-पुः [गं०] दे० 'प्राप्त्यच्य'।

प्राकृतारि-पु॰ [मं॰] दे॰ 'प्राकृतशयु'। प्राकृतिक-वि॰ [मं॰] प्रशृतिक उत्पन्तः प्रकृति-संबंधः प्रकृतिकः, पुरदर्शः, कीतिकः, असार । -शूनीक-पु॰ भगोल विभावत यह पाग निसर्वे समुद्र, पर्वेण, नदी जादि-

की प्रावतिक विशेषताओंका विवरण रहता है। प्राक् (च)-वि॰ [मं॰] सामनेका, अगला: पुरवहा, परनी: पट्टेंगा । अ० पदने, आगे ।-कथन-पु० भूभिक्षा, प्रस्तावता । -क्सें(स)-पु॰ पूर्व जनमका कमें । -काल-पु॰ पद्देशा समय, बीतः दुओ समयः प्राचीन बाल । -कास्तिक,-कासीन-वि० पहलेका, पुराना, प्राचीन । -कुल-वि॰ (वह नुष्टा) जिलका मिरा पुरवकी भीर हो । - गृत-वि० पूर्व जन्ममें किया हुआ । पु० पूर्व अम्मों किया ग्रमा वर्ग । - चत्रणा-छी॰ भग, योनि । -चिर-श॰ यथासमय, ठीक समदपर । -छाय-प्र॰ छावा पृह्दकी ओर पहनेका समय, अवहास । -सनय-पुरु पहरेका शिष्य । -तुल-विरु (कुद्य) विसन्ना सिरा पुरबद्धी और थी। पु॰ कुछका ऐमा सिरा। -प्रथण-वि॰ जी प्रश्वी और दालवी 🚮 । -प्रहार-पु॰ पहला भाषात् । -पल-पु० कटहरः । -फल्युनी-मी॰ पृशे-पास्त्रती सामक मध्य । -- अध-तुः **११**रपनि । --प्तारम्ब-पुर बृहरपनि । नसंध्यानन्दीर स्वीदयके समयकी में या, प्रातम्बानकी छेप्या र -सयन-पुर यह-मा प्रथम गान । -मीमिक-पु॰ छोमयागरे पहने दिये

जानेवारे अग्निदोत्र, दर्श, पीर्शनास मादि । न्योसा-(सन्)-वि० प्रवर्श और बहतेवाला । प्राप्तन-वि० शिंश) पहरेका, प्राचीना पूर्व जनवा । पुरु

भाग्य, प्रारम्प । **प्रारम्ये-५०** [मं•] प्रपरता, प्रवंदता, सीर्यता । प्राग्-'प्राम्'का समामगत रूप । -अनुराग-पु॰ पूर्वा-गुराग । --अभाव-पु॰ कार्यका अपनी प्रापश्चिक पहरे बारममें श रहना, भारती उत्सन्धि वहने बारममें कार्यका भगाव । - अभिद्वित-वि पूर्वद्वित । - टक्टि-व्यी० पूर्वेदयन । -डक्सर-विक पूर्वेश्वर । -डलरा-न्योक हैक 'प्रायुक्तियो' । - दर्शाची-भी • देशान केत १ - गृतिहा-सिक-दि॰ इतिहासमें दक्षित कालडे पूर्वका । -प्रयोतिय -पु॰ बाममय देश । -बपुर-पु॰ प्राव्यवीतित देशकी रावसानी रिएडा बायुनिड नाम नीहारी है। -व्हिस्स Ac it gan 1 -Bid-2. Edant bie 1 -Rial-2. भारतने परतेवः समय जी भीषवनीवलके दम बालमानी-मेने यस माना जाता है। भीजनके पहले औष्टरका नेवस ह ~सप-पु॰ पूर्व कास । ~साम-पु॰ काला साम् । -मार-द+ पंपर्दः परेन्दा श्रामाणा विशे वरद्वदा भएवन, राजि। -भाच-पु॰ पूर्व समा कार्यक,

मेश्या १ - क्या-दूर पूर्व किहा -वंद्या-दुर वहारामाः !

में हिन्मुंब पूरका पर विश्वे प्रभाग आदि रहते हैं। विष्णु: पहरेका बंदा । —स्वन-पु० पहरेका निश्वयः गतु आदिका बचन । —सुस, —सुस्तीत—पु० पहरेकी पडता । प्रायास्क्र —पु० [मंग्र] प्रशास होनेका मान, प्रशासना साहता प्रमेड दशवा: विकाम सामित्राः ठाट-बाटः एइता। प्रवटनाः स्वीका मन्ये रहित होना वो सास्किक भाग माना जाता है।

साहसः पर्मेडः दश्याः विकागः वागिमनाः ठाट-बाटः दृद्धाः अवस्थाः श्लीकः भवने रहित होना तो सारिषक भाव माना जाता है। प्रावाद-युक [मंक] सदन, दसादन । प्रावाद-युक [मंक] सदन, दसादन । प्रावाद-युक [मंक] चरम या दीर्थविद्ध । प्रसट-विक पहला, स्वस्ते आगेका । पहर-विक स्थाना, सुद्ध । प्रावाद-युक [संक] प्रवाच दर्दी, महा । प्रावाद-युक [संक] प्रवाच ।

स्वते व्यमेका । — हर — पि० प्रभान, मुन्य ।
प्रामार— पु० (चे) यस्त करा गरी, मट्टा ।
प्रामार— पु० (चे०) युक्ते ।
प्रामास— पु० (चे०) युक्ते ।
प्रामास— पु० (चे०) युक्ते ।
प्रामार— पु० (चे०) युक्ते ।
प्रामुण, प्रामुणक, प्रामुणक— पु० (चे०) व्यक्ति ।
प्रामुण क, प्रामुणक क्षामिण क्षामिण

भी मेरे करर दाना बर चुका है और वर्षने वसकी हार दुई है। - सुम्ब-६० किराका मुँह पूरवरी और हो, पूर्वासिमुख। प्रापंडय-पु० [मंग] प्रपंडत, वमना, मण्डरना। प्रापंडय-दि० [संग] में प्रवतिन प्रपाक रिन्द्र हो। पु० सम्मा क्षांम्

परारार वारी। प्राचार्य-पु॰ [नं॰] प्रहृष्ट भागार्थ। प्राप्तिका-स्वां॰ [नं॰] घोंना बात्रकी जानिकायक चिहिया। प्राप्ति-स्त्रो॰ [नं॰] परवः प्रयुक्त भीर प्रस्तुते बीचकी

प्राप्ता-का॰ [म॰] प्रकः वृत्य और पृत्रकः वाद्या प्राप्ता-का॰ [म॰] प्रकः वृत्य और पृत्रकः वाद्या दिशा या ग्यान । च्यनि-पु॰ दंप्र ! - मृत्रक-पु॰ पूर्व रितित्र ! प्राप्तीन-वि॰ [मं॰] प्रका, प्राची पर-ेका, प्राना !

प्राचीत-दिश (मंश) प्रस्ता, प्रशे, प्रत्या, प्राना ।
पुश् देश भागिर । - नामे-पुश्यक व्यंत्र । - नगयाको शुरानी दशा। - निमक-पुश्यक व्यंत्र । - एमयाको शुरानी दशा। - निमक-पुश्यक्ति । - एमयापुश्वका प्रेप्त । - नाहिंद् । - पुश्कका प्रमान प्रत्य भी समायी वहकाने पेशीर दिन्नी स्थाना प्रत्य शुरा देश । - मन-पुश्यक्ता विदशाः वह मण्डो साधीन कामी पना श्रा दशा।

क्षाचान कारण करण का इहाइ। प्राचीनमा-की॰ कि॰] प्राचीन देतेचा भाव, दुशगादन । प्राचीना-कि॰ की॰ [र्य॰] पुराले ('दायोज'का को॰) । की॰ दाना, पाटा ।

प्राचीनामसङ्=पु॰ (गं॰) प्रमध्यम् ।

प्राचीनाचीत-पु॰ [मे-] (बाडसे) दाहित बरेदरहे बाहर दिया द्वारावीत ।

प्राचीनार्थाती(तिन्)--वि॰ (गं॰) विगये प्राचीनार्थन भारत किया को । प्राचीनीर्यान-पुरु (गं॰) देन प्राचीनीर्यान-पुरु (गं॰) देन प्राचीनीर्यान-पुरु (गं॰) देन प्राचीनार्थान

प्राचीनीवर्गी(तिष्)-विक (क्षत) देव (प्राचीनावर्ग) । प्राचीन-पुत्र (क्षत) नावर, दिने क्षादि चारी और १४१८ विद्य नगरी नदी दौरान, प्राचीण, प्राचीनाति । प्राचीनपुत्र (क्षत) प्रमुद्ध कीचा सक्त प्रचुरण, क्षादिक

प्रोतोत्सादन-५० [सं॰] एव, रायाः क्षेत्राः । प्रोरहंड-वि॰ [गुं॰] निमुने बदनी यहदन कपर वठावी हो। जिने बहुत भरिक वस्तंहा हो ।

प्रोत्फर-वि॰ [सं॰] अति वल्हरः बदुत बहा । -स्मृत्य-पु॰ बदुत बड़ा समैचारी; प्रिय धेवस । भोसं ग-वि० [मं०] बहुन ऊँचा। ग्रीस्पित-दि॰ [एं॰] विशेष रूपने वटा दुमा, निकला

द्रमा दा उत्पन्न ।

मोग्फल∽पु॰ (गै॰) तार जैमा एक बृद्ध । प्रो^लपुल-दि॰ (वंक) अवही नरद निका हुआ, पूर्व रूपने दिश्रामित ।

धोग्मारण~पु॰ (ri॰) हटाना, निकालना; पिट सुहाना । मोरमारिय-दि॰ [मं॰] इटाया दुआ, निकाका हुआ। महाया दुभाः दिवा दुभाः ।

प्रीरमाह -तु । (१०) प्रदल उम्माद, भाविषद उस्माह । प्रोगसाहक-वि॰, पु॰ [शं॰] उश्मद बहानेवामा, चीड क्षेत्रनेशमा ।

धीम्माहन-पु॰ (गे॰) उलाह बहासाः एव प्रशासा मालार्थकरः दिश्मा बांधकर दिनी काममें क्याना (मा०)। प्रो'माहिस-(व॰ [गं॰] जिमका उत्माद बदावा गया हो। तिमनी बहाया दिया गया हो।

म्रोन्सिक्त-विव [मंत्र] जी बहुत बर्मह करें । मीय-दि॰ [छं॰] भवासका मनिका स्थादिना बाजावर

नियमा गुमा । पुर भोदेशी सावः मोदेशा ग्रंडा सुभरका मध्या परिका समरा गर्माशका भूतका गर्वा गुका सका माडी या माया: याती: आतंह, काम । प्रोपी (यिन)-५० [सं=] सोटा ।

माद्रक-रि [संत] मार्ड, गीला, सर जिल्मेंका पानी निरुष तथा हो।

मीपुर-विश् [र्शर] शेर्'दरामा । धीप्रम्-दि॰ [गंण] भागे निश्रमा हता। प्रोप्पष्ट-रिक्षां शिक्षे प्रकारमध्य ।

मोदायम-५०, प्रोद्यीयमा-व्हार [गंग] उद्य स्वरहे षोर्धिय सहस्रा । মীশ্বীয় –হৈণ (গাঁচ) সপৰা প্ৰমা, স্বান্তিৰ চ

मीजिय-विक [गान] अंदुरिना घेटन वह जियाना हथा । मीयाप्र-विक [बीक] प्रदाया द्वमाः वरिष्ठातः । मीमीर-पुर [मंग] बह रका थे। करे मेनेशनह हमीदे सहद

सभेद हे लेपका जिसका है, देवलेल । मीक्श-दि॰ [110] दिग्नेष क्यी कतान, खेला कारे ह

निश्चना दुला। बहाधताः प्रतिकाणीः । प्रोजेगा-इंग्पेरी किमी विश्वित्तक का वर्ष विकासक का सावारका क्यू की विज्ञानाने का प्रक्रीवारेनके जिल्

बण:ब'क्यो रिर्देशक बार्व बर्दे । प्रोतःह्मानीसस्य -पुर [अर] बण्यश्यानवास्य स्वाप्तः ।

BENERTH, BERRETE ! मोष-दर्भ (११०) दश्य होत्या, क्रमंत्रण, राहा संगाद ह mifen-fen feir] ut erbre ert Canmba-

विश्वदा-प्रेयमी।-मार्न्दा-बार बद के रिल्फा देन | व्यर्शन-पूर्व (१४) बाला शिया प्रवास देश बरहुत्र, सर्वा ब्रेट र नामानु न्यन वह तेवड हो सहुद बढना े ब्यान्यात न्यन हैनानै ब्रुटका व गर ह

से दःशी हो। -सरण-पुरु दिरेशमे मरणा। मोहः मौह-पु॰ [लं॰] सीरी महन्या स्रा, रेश रेव, गुर दक प्राचीन देश (म॰भा॰) १ -पर्-पु॰ माहहर, हरी का महीना । -पदा-सी॰ पूर्वमादसाऔर प्रजन माद्रपरा नश्चन । -पदी-सी॰ माद्रपर मण्यी हरितः -पाद-वि॰ विसदा जन्म पूर्वनाहरूर वा क्टान्यस नदायमें हुमा हो।

मोर्टी: मीर्टी-सी॰ [संब] भीरी मार्टी ! मोप्य∽विव [संव] बहुत गरम, व्यक्ति शब्द । मोह- मीह-पु॰ [नं॰] शारीका पेरा गर्दा रहा है। कुबियाना सार्थिक ।

मोहित-पु॰ दे॰ 'पुरोहिन'।

मीद-दिश् [संश] बिगरी पूरी पृद्धि ही पुरी ही, स्कृ निसनी वस अविह ही थला हो, होन और दबमदे ८० की अवस्थावानाः प्रष्टः, वरिवस्त्रः, जिसमे वर्षपा सामग्रे को (बैसे और दिशानु)। विषुण, दशा विशे छिने राजा पुरा अनुसव ही, हन्त्रस्थी, परिशपुरका एक्क प्रशा प्रयक्ता उद्या दिवादिकः चहावा क्रमा; क्रिक । हुन और अपृशीका मंत्र (de) । – अन्तर्य-पुर पना बल्ल । -१% -वि॰ जो उकरें देश हो, जिसके देशके हमरे अमरा ही हो । – वान-पु॰ प्रवृत्त सा गांगरी करिया

मीडता-का॰, मीहत्व-पु॰ [सं॰] जी; ब्रोवेश धार प्रीडा−पि॰ स्रो॰ [स्॰] दे॰ 'प्रीइ' । श्री॰ वह सी रार्ष या अधिक की जारी हो, सीमारी लेकर प्रथाप का प्रवासके बीमको सदस्यानाचा को। सुब प्रद्वारको रापि विदेश गर् हम हटत और प्रमुद्द कामरासनान की भरिष्ठ 'सारगर्द गाबिका (ना०) । -अधीरा-श्री वह प्रेवा माधित हे काने नादहरे परभी शंदीगर्क विश्व देशकर मरी है मनुदिन ही यदे । -धीरा-वह प्रीता शादिश श्रीति नमने विभागियद देशकर प्रायश कीर न का शांती भदना भाष प्रदेश बहे। -श्रीसाचीश-क्षण शत्रे diegianug fall genit an ner est du aget

बीडि-बीक [शंक] वृत्ते वृद्धि वर्तिवृद्दका गावकी, व्यक्ति बुरवाः शाक्षम । –वाल्-द्र० प्रश्न द्वान्, दर्वित। मीडोजि-भी॰ (लं॰) मन्त्र पाँठा रह कारलहा हर्ष बाहर्रहा की कारण म ही वर्ग बाहर कार कार राजा

अन्द । बील-विश्व (र्ह्म) विदुष्त, बुरान, विद्रान् ।

क्षेत्रे कीच प्रदक्षित बहसेशभी लाविका ।

व्यक्त-पु. शि.) यक्ष्या देश इंदू मारियात देशि ex(ge); foreit fact o ttur, tiell बस्मी अभीमः हिर्माना बद की वे हिरियाने र न्यायः -सीक व्यक्त्यी कडी र-प्रसीह-पुर सोण (राहार्व रेर -urtun,-ein-ge as rein be'd meren be-विकामी है, करावण उर्देश शहा (दर मार्ग व समुद्रभवाः भग्रमृद्रवाषका भक्षी । सुरश्यो हर्ति ।

ध्यक्षा -स्ते (हेन्) महरूरों भग र क्काइन्युत्तर्था - पूत्र [ब्रोव] करत्वर्थी अंदीवा तर्थन र

बीवनका मूल। -रंध-पु॰ गुँहः नाक। -रोध-पु॰ प्राणायामः जानका रात्रशः एक नरक। -वहाम-वि॰ 'प्रागप्रिय' । [सी॰ 'प्राणवहामा' ।] **–वाबु** –सी॰ प्राणस्पी वायु, प्राण । -विनास,-विष्ट्रध-पु॰ मृत्यु, मीत । -वियोग-५० मृत्यु । -वृत्ति -मी० प्राणका भास-प्रभाम आदि व्यापार । -व्यय-पु॰ प्राणस्यान, जीवनीरमगं । -शरीर-पु॰ परमेश्वर (जिसका प्राण-रमक रूपो। ध्यान विया जाता ई)। **−द्योपण**-पु॰ बाण । -संकट,-संदेह,-संदाय-पु॰ ऐमा संबट जी जानपर था जाय, जान जानेका भय, जानवीसी। ~संमृत~पु॰ थायु ।~संयम-पु॰ प्राणायाम ।~संहिता~ स्त्री॰ एक प्रकारका धेटपाठ ।-सञ्च (न्)~पु॰ शरीर । -सम-पु॰ पति, प्रियत्तमः। वि॰ प्रायप्रियः। -समा-सी। प्रती। -सार-वि॰ अनि बसदासी, बसप्री। -सूग्र-पु॰ श्रीवनसूत्र । -हंता(तृ)-वि॰, पु॰ जान श्रीवामा, प्राणहारक । -हर,-हारी(रिन्)-वि॰ प्राण द्दरनेवासा, जाम वेनेवाला: बसनादाक । -हार्क-विव जास क्षेत्रवाला, यागक । पु॰ यन्त्रनाभ नामक विषा -हानि-मी० प्राणनाश !-हीन-वि० नियान । सु०-धाना-भव कम दोना !- उद जाना या मृत्य जाना-बदहवास हो जानाः बदुस अधिक धवरा जानाः बदुत टर जाना। - राष्ट्रेतक आना-मरपानव ~एटमा,-जाना या निरूलना-मरना, देशवसान रोना । -छोदमा,-त्यागना-मरना । -डालमा-जीवनका संबाद बरना, सुजीब बनाना । -देना-मरनाः शरिक बह पानाः किमीको बहुत पाइना । -प्रयान होना - मरना । - वचाना - जान बबाना, पिट हहाना। -मेहपी भागा-बद्दत अधिक दुःस दोना, दुःगभे म्यानुल होना । -मुद्दीमें या हथेलीपर लिये १६मा-मर्नेदो तैयार रहना । -रायमा-जिलाना । -छेमा-मार् दावना । -इर्ना-मार् दालनाः बद्दा अधिक इट परेंगाना । -- द्वारमा *- मर जानाः इतीत्माद श्रीना । -रे द्वाप पोना-मर बाना। -(कॉ) पर का पहना-प्राय संस्टने पाना, यानगोली द्वीना। -पर भोजना – मानदी दावी स्पा देना, बान औरोपी सानना । ~पर भीतमा-प्राप स्थापे परना । प्राणक-प्र [र्गः] भीवः भीवद्र बुद्यः गोर् । माणभ-पु॰ [#a] वापुः शागः प्रशासीतः तीर्थे । दि॰ श्रुविद्यासी ।

माणम-पु (वं) गणाः पणः सामः अस्तः अस्तः अस्ति।

मागमप-रि= [रं+] तिमने मागहों, म ययुक्त ।-कोश-पुरु बेरानके अनुमार शरीरके चौच कोशोदेने हुम्साः चौच कर्रीह्मीदे गहित प्राप्त, अपन आदि धौन प्राप्त है

प्राप्तवशा-भीव [र्शव] प्राप्तवश् वा प्रीवित होनेहा प्राप्ता मात्रवाय्(वन)-विक [शंक] क्रिके बाम बी, क्यार, ! मीवित्र । [स्त्रीत वद्यास्त्रीत है]

मामोप-दि (का) मृत्यु, दीपू । मामोनस-दिक, दृक (त्र) मान के देशका व

पर्यंत रहनेवाला । पु॰ वध, हत्या; वधिशः । प्राणाधिहोत्र-५० सि॰ो दे॰ 'प्राणादति' । प्राणाधात-पु॰ [सं॰] वथ, इत्या । प्राणाचार्य-प्र॰ [मं॰] वैव । प्राचातिपात-प्र॰ [मे॰] वय, इत्या। -- विरमण-प्र॰

अहिंसा बत (वै०)। प्राणारमा(सन्)-प॰ [सं॰] जीवारमा, गुत्रारमा ।

प्राणान्यय-५० मि॰] मृत्यु, भीतः मृत्युका समगः जानका रातसः।

प्राणाद-वि॰ [मं॰] धानक । प्राणाधार-प॰ (सं॰) जीवनका अवर्थन या सहाराः परिः प्रियमम् ।

प्राणाधिक-वि० [मं०] जी प्राणेंमि भी बहरद हो। यह-

प्राणाधिनाथ-पु॰ [सं॰] पति । श्राणाधिप-पु॰ [मं०] भारमा ।

बाणाबाध-पु॰ [छं॰] जानका धनता ।

प्राणायतन-प्र॰ [मं॰] प्राणीके निरुष्ट्रमेरा प्रधान मार्ग (ये मी दे-दोनों कान, नाकते दोनो छेर, दोनो आहे. गुरा, उपस्थ और मुग) ।

प्राणायन-पु॰ [मं॰] शानेंद्रिय ।

प्राणायाम-पु॰ [मं॰] भाग-प्रचामरी पृतिहा नियमन, योग दे आह अंगोरीने एक ।

प्राणायामी(मिन्)-दि॰ [गं॰] प्राणायाम बर्दनेवाला । प्राणायप-वि॰ (गं॰) दवित, सप्यस्त । प्राणायरोध-९० [में] मागदा भरते।

प्राचासन-पु॰ [रां॰] एक प्रशास्त्रा मामन (नं॰) । प्राणाहति-छी० [र्ग०] भारमदे आरंभमें पाँच प्राम 'प्रानाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा' आदि मंत्र पहतर

पाँची प्राप्तीके निमिश्च सामा। प्राणिक-दि॰ [गं॰] दिना शीर विशे बोलने ग्रहा। प्राणित-वि॰ [में॰] जिसमें भीवनका संवार किया गया हो। प्राणी(चित्र)-दि॰ [सं॰] विग्रमें प्राप हो। प्राणशान् । पु नीव-नेतु, अनुष्यः व्यक्ति (दि)। -(वि)पानीः (तिन)-विक योगीको शया बर्गेनाना । - ज्ञान-पुर जीवक्षण , प्राणिवर्ष । -शाम-पुरु मेर्डे, सीमर आदिकी

लहादेवर बाजी लगाना १-परिया-मी० जीवीरी ग्रंपाना। -माना(म्)-मी॰ एड शुप, गर्भश्यो । -मोधम-पु॰ आतवरीको सक्तेने प्रकृष बहुता । अवध-पुर दीव-इत्या। -हिमा-भी० जीवीवी वष्ट देना या माहना ह -हिमा-की॰ कपुरा, स्वार्टी सुना र प्राणीख-पुर्व (११०) ऋगः, वर्षे ।

प्राणितः प्राणिकश-पु॰ [मृ॰] प्रानः, स्वामीः मेमश्य, faces !

बानेगा, बानेवरी-भी (शे) प्रती, विद्यमा ! प्रामीतक्रमण्यः, प्रामीत्मर्ग्ये-पुर (s'e) सृत्यु । माणीतहार-[40 [0'0] धीरन, शहर । प्राम्भेदेव-५० (६) श्रीकामुख, अभिन् ।

214-E4 (1.0) A-1 umifige-fee (t'e) mm gellein; wing: illen- | minifige)-go (t'e) par, magi mentit, ned:

भ्रोतोत्मादन-पु॰ [गं॰] एव, एत्या, होमा । प्रोर्फट-वि. [मं.] शिमने भएनी यरदन छपर खठावी हो। विने बहुत भरिक उन्हेंटा हो।

मोत्कर-वि• (गं०) भति उत्तर; बरुत बहा । -सृत्य-पुरु बद्दत बड़ा समेचारी; ग्रिय सेवह ॥ भोर्त्ता-निश्मिशे बहुन् ऊँचा। प्रोरियत-(४० [गं०] विदेश रूपने वठा हुमा, निरुण

दुमा दा उत्स्व। प्रोक्तर-पुरु (मंर) तार जैमा एक पृथ् ।

प्रो'पुष्ट-विक [बेक] अवदी नश्द लिना हुआ, पूर्व क्यमे

प्रोग्मारण-पु॰ (शं॰) हराना, विकानना; पिंट शुकाना है प्रोस्पारित−६० [र]•] इटावा <u>इ</u>भा, निरुद्धा दुआ; बहाया हुमा: दिया हुआ ह

प्रीग्याह-पु॰ (३१०) प्रश्त जलाह, शायशिव जलाह है प्रीग्साहक-वि॰, पु॰ [मं॰] उत्साह बहानेवाला, पीठ टींग्रेमिसा ।

में/ग्याहन÷पु॰ [मं॰] उत्पाह बहानाः एव प्रदारका गारपारकार। दिग्मन बॉथकर किशी बाममें समना (सा॰) ! प्रोग्याहिल-६० [गु॰] जिनका उत्पाद बहाया गया हो।

जिन्हों बहुवा दिया नवा हो। मोरियकः-पि॰ [मं॰] श्री श्टुन वर्माट करे ह

मोभ-दि॰ [गं॰] भयातकः प्रसिद्धः स्वादिनः वायापर निरमा हुमा । पु॰ धीरेशी माका धीरेबा गुँवा सुभवका मुक्ता प्रविद्धा बसदा समीशया जुनदा सहाम गुका सवा मंत्री दा सादाः दात्रीः भागतः हात् । प्राथी (पिन्)-पु॰ [शं०] थीहा।

प्राचक-रिक [मंक] बाई, गीला, नश जिलमेंदा वागी

निक्ष गया हो।

प्रीदर-६० [धं०] ने(देशका । भोडल-वि॰ [गं०] आगे निवला द्वा ह प्रीद्रमूष्ट-विक (संक) बाम्हाबयास ह

मोर्टापण-पु॰, माद्योचना-भी॰ [अ॰] वन्य स्ट्रि ची'वन करमा ।

मीडीस~दि० (वंक) प्रशन्त हथा, क्षक्त्रीतन ह मीजिश-दि॰ (गं॰) अनुदिना भेरन कर विकार हुआ ।

भीभात-रिक (ela) प्रकाश हुआ। परिकाश क मीमोर-पर (शंर) हा रका भी कर्न स्मेरणा राजीहे साथ राभेदर्दे में एका मियाना है। हैक्जेन्ट र

utver-les [eis] feite nut ware, dar beit

विकास मुख्या बराधरात प्रतिकालो । शीरोगा-पुर्द पर्दे थिये दिल्लीचन्द्र वह वह दिल्लाह-

का बायपदा कह है। विज्ञानान बाल्यांका है।दे किय इक्रम होते विदिश्य बादे करे ह प्रोत्राहरायोगसर्-पुर (थर) क्यूम्बान्सरहा सहारक

Wingetell' Salante !

মীক্ষত্ত (৪০) বলং ছালা, দলমা, হাছা চলায় ১ uifun-fen fein ab nibm ant ib. ment b.-वित्रका, प्रेयसी, पार्नका नहीं। वह की जिल्ला होंने कारोहा मन् हो है नक्षाची न्तुन वह पुरुष भी को है करना । स्वर्षात्रम् नुत्र (हार्ड्ड हेर्रह) कावह है

में हु:बी हो। -मरण-पु: दिरेक्षमें मत्ना। मोष्ट- बीह-पुर [मंग] गोरी महनी। संग, रेट: रेव, एक दक यापीन देश (स॰घा॰) । -पर्-पु॰ अपूरा, क्ं का महीना । -पदा-मी॰ पूर्वमार्द्या के रक्त भाद्रपदा सद्यव । --पृत्ती-क्षी॰ माद्रपद मन्द्री पृत्रियः। -पाइ-वि॰ विसदा अन्य पूर्वभाइएर मा कन्यरकर नयुत्रमें हुमा ही।

प्रोष्टी- भीशी-नी॰ [मं॰] शीरी माशी। प्रोध्य-विश् [मुंश] बदुन ग्रहम, ऋति वध्य । भोड- भीड-पु॰ [नं॰] दारोहा देश तरे। से 1 कि शुक्रिमाम् स्मारिक ।

प्राहितक-पुरु देव 'पुराहिम'।

भीड-वि॰ [रॉ॰] (टगरी पूरी इदि हो पुढी हो। हार, जिमारी उम्र अधिक ही यानी हो। तीम और दशपूरे गीर की अवस्थावालाः यष्ट्र, चरिष्यशः दिश्वी पूर्वना अपूर्व हो (देने और बिहान्): निपुत्त, हुए: विने किने राज परा अनुसर हो, अनुस्री, दरिशनक्षा एए, एए प्रवेषमा उद्या विश्वादिता प्रशास प्रभार स्थित । पुर धीत अस्रोका मंत्र (तं) । - आहमू-पु वमा बहम । नगर -वि॰ की बढ़ते बैठा हो, जिसके बेरोंके तको सम्पन्त

हो हो । - बाद्-पु+ प्रश्न या ग्र्या विद् प्रीदता-मा॰, प्रीहरव-प॰ (र/०) प्री: शेनेश मार्थ मीडा-वि॰ औ॰ [वं॰] देव 'मीड' । ओ॰ वह ओ शिक्षे -वस अधिक हो जाती हो, तीमुने शेक्ट चनचा हा बस्टा थीयकी व्यवस्थातानी नहीं। शब प्रदारती र्रिपे निर्मा हि कम मध्य और मसुर बायशासनावामी सर्विद असरवर्ध साविद्यः (ला॰) । —श्राचीरा—भीः वद् भीरा सारिः व अर्भे सायक्षी वरकी अंदीयके विश्व देशका अर्थे हैं अनुदिन की करें । -धींस-का प्रीरा मादिया जीति तमने विकाशनिय देखकर मध्यत्र कीर म कर संगी भागा भाग प्रश्न बहे। -धीराधीरा-भाग्याधी व्यक्तीयमारे किंद्र हैस्त्रह मुख्यका और हुए म्यद्र मप्ने क्रीय प्रशंतन बहने शर्वा शरीवहा ।

मीडि-ब्या॰ [शं०] वृत्ते वृद्धिः वृद्धिवृत्ताः सामग्रे. वृत्तिः मृहत्। नाहन । न्याच्-पु० प्रश्न वर्णा, होर्नेत्। प्रौहोन्द्रि-शीव [अव] प्रश्त श्रीला इक इन्यल्टर स क्रवर्षेत्र में बार्य स हो की क्रवा क्रवर क्रवर बाद है

प्रीत-4+(भंग) तिश्व, वश्रयः शिक्षः । कारा-दे (१०) बाबरका हो। पर माहि घार हती? er (9-); fivefit bied meter tiell रच्छे क्यांमा दिवसीका वह तीर्थ (इतिहार) । न्यान -क्ट्रेन बावदर्गः कहि १ -प्रशेष्ट्र-पुत्र वर्गत्य देशवर वर्गे । -प्रमादका-प्राथ-पुत्र वह क्यान अहीते शहरते क्रि जिल्लानी है, क्यांस्ती करीया क्या (मन भाग) है न समुद्रवदा,=समुद्रशाचडा=भीः शागरी दि ।

व्यक्ति-श्रुक [तिन] व्यव्हत् म्या ह क्यम्बिन्द्रस-पुर (१.०) शास्त्री स्त्रीका मान र या बेश-यू (४०) बच्चरा दिरता पं-इरदा देरे

प्रादराक्षि-पु॰ [मं॰] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि । प्राद्धमांच-पु॰ [सं॰] प्रस्ट होना, प्रकाश: उत्पत्तिः

भरितलग्रहणः देवताका पृथ्वीपरं प्रस्ट होना ।

प्रादर्भृत-वि॰ [सं॰] जिसका प्राद्भांब हुआ हो, जो प्रकट दुमा हो; उत्पन्न । -मनोभवा-सी॰ एक प्रकारकी मध्या नायिका जिसके मनमें कामका पूरा प्रादुर्मांव होता है और जिसमें कामफलाके सभी चिद्व प्रकट होते है (केशब) ।

प्रादुष्करण-पु॰ [मं॰] प्रकट करना; उत्पन्न बरना। प्राद्दश्स-वि॰ [सं॰] प्रवट किया हुआ; उत्पन्न किया हुआ, उत्पादितः प्रश्वतित किया हुआ।

प्राद्रदय-पुरु [सं०] प्रादुर्गाव ।

प्रादेश-पु॰ [मं॰] अंगरेके सिरेसे तर्रनीये विरेतरकी

द्री। प्रदेश, प्रांतः स्थान । प्रादेशन-५० [मं] दान ।

प्रादेशिक-वि॰ [सं०] प्रदेश-गंबंधीः प्रदेशकाः अर्थयोत्तकः प्रामानतः स्थानिकः सीमित । प्र॰ किसी प्रदेशका शासकः

स्पेदार । प्राहेशिनी-भी० (स०) तर्जनी !

मादेशी(शिन्)-वि॰ [म॰] अगृहेकी मोकने सर्वनीकी

नोक्सइ हवा।

प्रादीय, प्रादीयिक-विव [मव] प्रदीवन्त्रेवीः प्रदीवका । प्राथनिक-पर [गंर] विष्यंतक अखः ब्रह्मा जनस्य, सदाईया सामान ।

प्राप्ता-स्रो० [सं०] बह्ययकी एक पन्नी।

प्राधानिक-वि० [गुं०] शेष्ठः सुरुवानः प्रधानः सुटप्रकृति-

प्रापान्य-पु• [मं•] प्रधान दोनेदा भाव, प्रधानताः भेषता। मूल कारण।

मार्घीत-(४० [१)०] तिमने अच्छी तरद अध्ययन किया दे, प्रकृष्ट रूपने शिक्षित ।

प्राध्य-दिव [मंद] थी। पुर ही, दुववर्गी; नश; बढ; अनु-मूल । पुर संदी राष्ट्रा संदारी: रथ मादिः वंधनः चटि-€ासः शीदा ।

मान=-पु दे 'प्रापा' ।

प्रामी = पु = दे = 'बादी' ।

मामेग्रा - पा देव 'प्रानित' ।

माप-पु (शं) प्राति, पर्नुनना (जैले-इप्यात); जलका मपुर दोना । दि॰ प्राप्य ।

मापक-दि॰, पु॰ [गं॰] यात वहने या वहानेवालाः पूर-ष'नेशभा ।

प्रापण-५॰ [६०] प्राप्त करमा का करानाः यूषामाः से जानाइ श्वास्त्र ।

माप्रणिक्र-पुर् (ele) ब्यापारी, शौदागर क

प्रापक्तीय-(४० (११०) प्राप्त बहने या वहाने बोल्या पहुँ-भाने देशदा

प्रापृतिक सक्षीक प्राप्ति, यह विशिष्ट ।

प्राथनाव-श्व दिव प्रत्र कानाः वानाः व

प्राप्तिका(म्) -१२०, ५० (सं.) प्राप्त वह ेवाका अ

मारियान विक (तक) यात्र बहाया कुमार पहुँचाया बुका व

प्रापी(पिन्)-वि॰ [सं॰] प्राप्त करनेवालाः पर्देचनेवालाः (समासांनमें)।

प्राप्त-बि॰ मि॰ पाया हुआ, जो मिला हो, लम्प: जो आ पड़ा हो। उपस्थितः स्थापितः पूरा किया हुआः जहां कोई पर्देचा हो, आमादितः उचित । -कारी(रिन्)-वि० वित कार्य करनेवाटा । ⇔काल-दि॰ विसे परनेका समय उपस्थित हो। समयोजित । ए० उचित समय, किमी बातका उपयुक्त बवमरः मृत्युका समय । —जीवन–वि० जिसकी जान छीट भाषी हो, जो भरते-भरते सच गया हो । --दोप--वि० जिसे दोप लगा हो, दोगी ।-पंच-घ-वि॰ मरा हुआ, मृत । -प्रस्वा-वि॰ सी॰ श्री मधा जननेको हो । -वीज-वि॰ योगा हुआ। -पुद्धि-पि॰ वो देहोशीके सद फिर होशमें वा गया हो। सहिमान । -सार-दु॰ बोत दोनेवाला पहा (वेल मादि) ।-साय-वि॰ चतुरा संदर । -मनोरथ-वि॰ विसरा गनोरम पूर्व हो गया हो। - सीयन - दि॰ शिसकी जवानी आ गयी हो। -स्व-वि॰ उपयुक्त स्प्वान्, मनीहरा मुद्धिः मान् । - व्यवहार-वि० शास्त्रमः प्राह्मतुँ-स्वी० [म०] वह सहयी जो रवस्पता हो गयी हो।

प्राप्तस्य-वि० [सं०] पाने, मिलने गीम्य । प्राप्तार्थ - वि॰ [मं॰] सफ्ट । पु॰ मिली हुई यस्तु ।

प्राप्तायसर-दि॰ [सं॰] दे॰ 'प्राप्तकाल' । प्राप्ति-म्दी॰ मिं०] पादा जाना, भिल्ला, लाम: पर्देशी

उपार्थना उदया अनुमितिः हिरमा। भाग्या संहीि। पूर्व बभीना परः परायम (ना॰)। बाट विदियोगिरे एक जिसके हारा बत्येक भगीष्ट पदार्थ मिलता है। आय, बना-रामः कायदा, लाभः जरामंश्रदी एक प्रश्नी जी संगमे स्याही गदी थी। बायरेवरी एक प्रतीः भंद्रशासा स्थारक्यों स्थान (यः वदीः) । -सम-पु॰ स्थापने एट विशेष जाति । प्रार्थ्यासा-न्धे॰ (वं॰) प्राप्तिकी माधा, मिन्देनेकी भाषा:

बारच्य बावेडी एक भरत्या दिगमें कण्यातियी माधा क्षेत्री है (सा०) ह प्राच्य-वि+ [सं+] प्राप्त सरने दोग्या अहाँतक पहुँच हो

सदे। थी मिन वरे, निनने चीव्य !-कार्स((दिन)-पुर बह इंदिब की बिरुप्तक पर्देचकर जगना हान मराना है (बेने-भाग) । -रूप-दि॰ विमे प्राप्त दरना सरस हो । प्रावस्य-प्र• [मं•] प्रशानमाः प्रधानमाः प्रस्ति ।

प्राथान्तिक-पुरु [मंरु] देव 'प्रायान्तिय'।

प्राचीचक-पु॰ (वंश) दशहानः वंदी, माग्य । प्राचीधिक-पर्व मिंगी देव 'प्रतिपर्ध' ह

प्रामीत्रन-दिव (संव) व मुस्देवी । पुर व्यापी एकप । मार्भवनि-पु॰ [सं॰] हत्यात् : सीध्य ।

प्राध्यन-पुरु [मंत्र] प्रमुत्ता, प्रदुष्ता, प्रदासना, सेष्ट्रता । ब्राधवाय-पुर [रोर] दिवुस्तः प्रवृत्यः

माभाकार-दिक [रेक] मीचामादे प्रसिद्ध था गर्वे ममाप्रहर-वेर वर्ष्ट्रच क्यानेबाला व बुक प्रमाहरूके मनका मनुवादी व

प्रामानिक-दिश् (र्गश्री प्रमाननार्थः, प्राप्तादानिकः । । प्रानुतः प्रानृत्य - पुर्व [संत्र] परसार, धेर, शहरा (रूप्ता ब्रामाधिक-दि॰ (वें र) यो पापप्र श हि. ब्रमणे हैं। हिन्द

हो, सन्दर्भन्दा अन्त्रे दोन्हा समाप्ताहरी, दो अन्त्र,

वस्ता । – मास्ता – प्रांता ।

पंदी-मी॰ पोरी मारेशकी ववाईका पूर्व है होती 4 4 1

પંચ•-૫• વરા, તંત્રન-'ઘરિ ચોર્ટ લોવિસે લોવ કરે"–મુદદ व्यपीननाः वेगः, अनुहासः ।

पंजिहा-सी॰ (मे॰) मारंगीः क्यामाः देवपादः देवी । -पश्चिमा-सीः गुमाकाती ।

र्णजी - स्टेंश् (मे०) भार्यो; दंती; सजीह । पाँड-पृष् [श्व] उहर, बहरा [श्रव] बार्व विशेषके निष्

भनग या ग्रहत्र दिया दुधा धन ।

पीत्र - पुरु पारा, पासि, र्यपना सामाताना गाया व्येशः, दुसर १ -बार-बिर पंत्र भगतेशना, वेशनेशामा १ र्णदना, पाँदना •-- भ । कि वहेथे पहला, पाँचनाः सुच्य

শ্বীৰা। গ০ কিও ল'ঘনা, অবৈনা।

प्टेंद्श!-go दे॰ 'हेश' । फीश-पुत्र गर्दीनी गाँठीशामा रूगनी, नार आहिया विशेष प्रशास्त्रा पेता जिससे पेमलेसे प्राप्ती रेप जाना है, पर्वेसः पशु परिवोशी पंचानेका आणः वंगानेसधी बन्दः वधनः एन, मध्य, पीरमाः दुत्य, कष्ट ह शुक्ष नाइहामा नहैयसे विद्या बरना । -देना-विद्य देनाः पटा क्रमानः । (विमीपा)-परमा-रमा दुशा अर्थ भक्त होना। ~सारमा-बाधमे पंथाला । −(दे) में भागा वा

पदमा-लागी पंताता वहारी दीना । -में साना-पार्टने बामा, प्रतिकी सामा ।

पॅडामा-म॰ दि॰ दिलीने प्रतिन काम बरामा, दिलोकी परितेने प्रमुख करता। ब चरेने लाता, बीलाला ह

र्थे प्रधाना • मण दि • दे • 'वें दाना' ।

भैतिमा-भ कि दिश्यामा शीली दुव पूर्व शादिस #41 42·41 1

भूषिता – भ+ जि. महेरी पहला, प्रकृते आलाह चण्डाला ह विमीसे भूमना-दिनोने अहर संस्थ, अहनारे श्रीनः ।)

र्षेयरीरं नमीर प्राप्त, बंग्ह र

क्षीमामान्यवस्थितं प्रदेशे आए।इ प्रमहत्त्वान्त्री सहसा ह बीताय, बीताया न्युर बेटलेका आवा वह कीव दा बात

िल्ही भारती जैसे संग, सरकार है व्यादाशाव- युव वार जेवाला: प्रश्न ।

Matte amate and sign

षान्द्रण (रोग) अद्भानकः प्राथमकः विकास स्थानकः श्रीवरः । भार, रेन्स्री निष्टभाषा पृथ्वित दिनगाह व दिन सकर, र 2000 1

www.lis from the wife still the (en)-पर जाना या ही जाता-११दे मने रहत्वे ही जाता, बट्ट मेरिक प्रवृत्ति प्राप्ताः विवृत्ते हो प्राप्ताः ह ऋक्षरी-कोच क्र केंद्र-, हर्वे के ह

men-fie fuel uber, ben b me neute, fiele ;

· 在京本中時中 有 [4] 立在 11 日

अक्षीर पहुंच (यह) भीता भीतीहरू है तिवासी, बह औं । mertententa ben annennen geten nen uben i mußelben e je er bean b

भी कार्र देशकता ने सामुद्रका है वर्त अनुष्क दिक्तुका कहा। कार्युन्दिक देव "कार्यान" है। अपने नीत देन देन दिर्दि

दिन्हे वन्ध वेबध एक दिलहा भीतन हो) । सुर न्या घर बदा है-फरोरसे महनी एतिये वर उसहिएहैं। -की सहा-दर भाषात्र की पत्रीय ग्रंतीरे शहर रेने है।

ऋकोरमी-भी॰ भीग साँदनेशको भीग् । भागीशना-शिक्षकीरेडिशना, प्रशेशे जैना शुरु प्रदेशे थें प्रधेरिंहे निशंहरे लिए दान हो दश हो। क्रविशी-मी॰ पर्तारका भाग, निया हैपना थहिनता । विश्व प्रतिव्यंश्रीः वदीस्था - एएए-

पुर मापुन्यधीरही बहादी दुई दश, बही हुरी ! अक्रीह-पुर्वांबर] विकास सारानाती प्रतेतांवर प्रीतः फल-पुरु [एंट] दंग, विक्रमांग व्यक्ति । •

प्रकालपुर (अरु) शीलना; दी भुरी दुर्र भौतीने कर बरना, जुशना ।

पाद्वापु-पुरु वार्थानुपुषा, दुर्वयना यह गान्ति श्री स्वीतन द्वीते दुए श्री सन्तः यसा रहे। तस्त्रीमन स्त्रीत । नश्ला -दिक सामी-गुण पा अफ्रीबाध्य (१ -सामी-श्रीकराणी गुप्ता वरनेयाँ दिया ।

फल्लिका-क्री० (मंक) पूर्वकार की ताब विभवके (बेर मेर स्थित दिवा आता है। कवायुक्त अवनहार, भीमा, रका गावनुष्परिहम, भावनेरिहम-पुर (अर) पंदद हार्द्ध

बर दुरहे एकाना है बरंदर-यु० दे० 'गत्रा' ।

फ्रहरीर-वि॰ धर्मट करनेशला, होशी धारनेशहर 🖡

क्रार -पु (१३०) स है, यह दा अहर । प्रशिका−भ॰ गरी, वर्षहरे साप ।

प्रताश-युक्ष प्रपत, गरिश ।

बरमुक्ता-पुरु देश प्रायद्य र बरणहरू वरणहरूपे हिंदी उने बाला संतरार है क्षमुनदृष्ट-सी॰ यापुरुदे सहीतेते एकनेशकी पूक्त हो

भारिने पुरु जोतको बचा कागुमने बीने तथी गाँकी वस्तिया-५+ विश्वि सामन प्रणास ।

क्ष्माहरा, क्षमुद्दरसारं -पु॰ कल देलितेशाला बना करे

क्राज्य(-शी: (धः) द्राज्यः, नहदा । अभिध्-ते० [लंग] द्रेव त्रांध,।

क्रायिक न्यंप्र हुए ,य वर्, र क्रीव्यनिसाई == भी व क्रीवृत्र वस्ति की बाउँ

अर्थाता-ते देव त्राप्तिते । क्राम्स्त्रेशी - वर्डा ४ है व 'क्रास्ट्रेड व ' क

क्रकृष्टित्र - क्रांक (तक) रहेरव- स्ट्रप्ट । शुक्र - वा वर्ष " ur ge fent miler erber urre filent यशकी-देशका प्रश्नाचार हैंना, सरहे बरोप्टरी founding or can't before ancloses, विद्यान के में के कियर देश के किया के मार्थ है

friteranderbiet ? 1 mpfign-alle [ue] wie e, beiebe gent 40%

प्रार्थना करने योग्य । पु॰ द्वापर सुन ।

प्रार्थितस्य-वि० [मे०] प्रार्थना करने वा चाहने योग्य । प्रार्थिता(न)-वि०, प० [सं०] प्रार्थना करनेवाला,

याचकः प्रगयाकांशी ।

प्रार्थित-वि॰ [एं॰] जिमकी या जिसके लिए प्रार्थना की

गयी हो, याचितः आक्रांनः अवस्तः आहतः हनः विस्ती चाह, तलादा हो । पु॰ इच्छा । -दुरुँम-वि॰ जिसके लिए इच्छा की गुर्वी हो। पर जिसका मिलना बढिन हो।

प्रार्थी(थिन)-दि० [मं०] प्रार्थना वर्तनेवला; चाइनेवाला, इच्छकः आक्रमण करनेवाला ।

प्राथ्य-विव्यान प्रार्थना करने योग्य, जिसके लिए प्रार्थना

प्रार्लय-वि॰ [सं०] विशेष सपसे सटकनेनासा । पु॰ सीने-राक्र लटकनेबाली माला; एक तरहदी मोतियोंकी मालाः

भीका रतनः एक तरहका कदद ।

प्राप्तेवक-पु० (मं०) सीनेतक लश्यनेवाली भाष्टा । प्राप्तेयिका-सी० [मं०] एक तरहका शोनेका दार्।

प्रालेख-प॰ [गुं॰] हिम, यर्गः । -मुधर,-दील-पु॰

दिगारुव । - स्ट्रिम - पु० चंद्रमाः वपूर ।

प्राक्षेयांश्र-पु० [सं०] चंद्रमाः कप्र ।

प्रारुपाद्वि-५० [२१०] दिशालय ।

प्रापट-प॰ [शं॰] भी।

प्रायण-पु॰ (सं॰) पावका ।

प्रावर-पु॰ [मं॰] प्राभीर, घदारदीवारी: उपरमाः पढ

प्रावरण-पु॰ [मं॰] भोइनेसा वन्न, उत्तरीय, ओइनी,

भादर । प्रायरणीय-पु॰ [शं॰] उपहला आदि उपहले भीरतेका

Rid 1

प्राचार-प= (मं=) ओइनेहा वन्त, ओइनीह आवरणहण्य

विना या क्षेत्र । -कर्ण-पुरु यह प्रकारका उत्त्यु प्रशेष -कीट-पु॰ एक प्रकारका कपहेका कीकाः भीतर ।

प्राथारक-पु॰ [मं॰] ओहनेटा बन्द, उत्तरीय ।

प्रापारिक-पु॰ [मं॰] प्रावार बनानेवाला ।

प्रापालिक-पुर [गृंग] प्रशान, मृगेता ब्यापार करनेशाला ह

प्राचान्य-वि [वं+] प्रदान मा दावा-वंदेशे ।

प्रापागिक-वि॰ [मं॰] प्रवास था बाजारे उद्युक्त ।

श्राविरमण्डु शानुग, मर्शासनु, वायस ।

प्राविध-पु॰ [गे॰] रएन; शायव ।

प्राचीन्य-पुर [4] प्रशेष होनेहा वाल, हश्चना, लियु-

TR1 1

प्रापृर्(प्)-मा [मंत्र] वर्षका, शवन ।-(ट्)हाल -प= वर्षादा भीगम ह

माष्ट्रापय-पुर् (ग्रे) शर्त्राहा ह

मायून-दिक [संत] विदेश कर्फी आहुन, विशा दुला; दबा दुभा र पुर कीइनेश बार, जल्हीय, "रेंद्र"।

मापृत्ति-भीतः [शंब] माधीर, यहारदीशरीह काला आध्या-

ियह अवस्थात अधान (गादावा यह दरिकाम-देव) व मावृश्यिक स्थित (१४०) शाला प्राप्तवार । पुरु बूच, यसधी १

माह्य-पुर,-मापुषा-की० [तेर] वर्ष बाल, दावत !

प्राकृषायणी-सी० [मं०] पेशीय: दिसमीपरा ।

बावपिक-वि० [एं०] वर्षाकतु-संरंधा । ए० मोर् ।

प्रावृषिज्ञ~वि० [मं०] जो वर्गऋतुर्मे उत्पन्न हुमा हो । पु०

इंडाबात ।

प्रावृत्तीण-दि॰ [मं॰] को वर्षाऋतुमें उत्पन्न हो। प्रायुपेग्य-वि॰ [सं०] वर्षाकाल-संरंपाः वर्षाकालमे उरकाः

वर्षाक्तमें देव (क्रय आदि)। पुरु कदमसा पेड़ा बदमसा

पेद, क़रैया; प्रचरता, आधिनय ।

प्रावृष्ण्या-सी० [मं०] वेतीयः लास प्रगर्भवा ।

प्राष्ट्रपेव-वि॰ [मं॰] वर्षाऋतुमें द्वीनेवाला । प्राकृष्य-वि॰ [मं०] वर्षाऋतुमें होनेवाला। प० वैहर्य

मनिः धाराकदंबः कुर्रथाका पेहः बिराटक नृश ।

प्राचेण्य-पु॰ [मं॰] बदिवा करी चारर, शाल ।

प्रावेशन-नि॰ [नं॰] जी प्रदेशके समय दिया या किया

नाय । पु॰ कारसाना । प्रावेशिक-वि० सिंगी जिसमे या जिस्के द्वारा प्रवेश

निन्दे, प्रवेशका साधनस्यः प्रदेश संदंभीः जिसमें गुमनेकी भारत हो।

प्रावश्य-पु० [मं०] दे० 'प्राप्तान्य' ।

प्रावास्य - पु॰ [नं०] प्रवस्या, सन्यासा वेदार गुमना । प्राश-प॰ [मं•] भीवन करना: श्याद मेना: आहार !

ब्राह्मच्चित्र, पर्व मिन्ने गानेशसा ।

प्रधान-१० थिं। धानाः सिहामाः भोतन ।

प्राचार्नाय-वि० (मे०) साने योग्य, माप्य । पु० भाहार ।

प्राचन्य-प्र- [मंग] मगरा बोनेका भाष, प्रश्तनाः

विशिष्टमा ।

प्राचास्त-पु॰ भिं०] प्रशास्ता सामक कत्वित्या समै वा

पदः शागनः शस्य ।

प्राशिष्ठ-वि॰ [मं०] सावा हुमा, मधिन । पु॰ दिनुनर्वणा

भी बन, पराच ।

ब्राह्मिन-पु॰ [4:4] पुरीहाश आदिका वह भाग त्री प्रका-के जिए एक पात्रमें अनग रखा माना है। यह पात्रा

ग्रायस्थानं ।

प्रातिशाहरण-पु॰ (मं॰) गायहे कागदे आहारका वह

पः विवये प्रादित स्था जाता है।

प्राथी(शिन्)-वि॰ (१'०) प्राप्त कर्मनाहा, गारी-

बन्ता ! [स्रो० 'प्राशिमी' ।]

प्रादिनक-पु॰ [नं॰] प्रश्न बस्तेशका, प्रशाहनी। चंच, मध्यस्थः सादीः समाध्ये चार्डवारे करनेवाना, साम्य र

वि॰ विश्ववे प्रदेन हो। माइप-दि॰ विशे साने बोव्द ।

प्रार्थग~पु॰ [गं॰] वह जुमा दिलदे शहारे हरे देव

रियाने कार्र है। सम्राह्म सम्राह्म । प्रामंशिश-दिक [बंक] जिल्हा प्रयोग हो, प्रयोगप्रश

Marie Lang

प्रामीय-पु॰ (मै॰) वह नदा देंग की हर भारिमें निहास शासाको।

प्राथ-दु० (१ ६) चेंद्रश्य अपशु अनुद्रमा, शारिताहत ३ प्राथ्यस-पुत्र [बांक] क्षाला क्षाच्या ह

प्राथम-१० [ह] देदन्य १ देव 'हाएल' ह

फरवाना-१० मि॰ विकी हो फाइनेने प्रवत्त करना, दिनी-में फारनेका बाम बरामा ।

कर्डिया-सी॰ (गं॰) क्षियाः हीग्र ।

शासिया-पु पुरसर मान वेबनेवाला बनिया। जुण्डे अट्टे-का सार्वितः श्रीयकः ।

थारी-मी॰ हर, पाधा आहिए। एक गढ धीवा, एव तब केमा और साम गत्र मंबा देश।

कारमाः कारहाः –५० देश कारशः ।

म. सर्हे, मा.सरी! - ग्री० परवी, कार्दे; होता फावका । पाय-पुर (राष) गरिका फाना नामापुर, सवना ।- बार-युक्त होत्र । – धर-युक्त होत्रः शिक्ष । –क्षार-युक्त शिक्ष । ~भर~पु॰ गर्प र ~शृत्रु~पु० शांधः जीदी संस्त्रा र -मंदार-प॰ गाँउरा पन जो पेटी मारतेने गोनाकार की नया की, कुद्रशीष्ट्रत कर । - मणि-यु॰ नर्वके क्रायर श्यित मध्य ।

क्राचाम्(धम्)-प० [श्०] शर्व ।

पणा-स्ति हि को देव 'प्रयू' । -बार-पक सर्व । -धार-पुरु रार्थः। शिकाः 🗕 पालकः – पुरु पालको भीको स्पन्न । -धर-पु० प्रत्यस् । -भूगर्-पु० सर्व ।

फणावाम(यम्)-५० (ग०) गर्व ।

फ लक्ष-पुर [शंव] हार्च ।

फब्रिका-स्वी० (ग०) वर्षे गुणरका देव ।

फाणिश्वर, फाणिशहास-पु॰ (१००) महत्रशा वद नाइक्षी प्रथमी र

क्रिय-विश् (वेश्) गया हुआ, गया तर्छ दिया हुआ है गाजिमी-स्था (शंक) शृक्षिति। शक्षित्र जानकी औषति ।

मार्गीहा-पृथ् (४'०) रोपसाया बाह्यका वर्गमिन गुनि । मानी(शिम्)-१० (ते०) शर्म दाद्रा प्रमानित दोना का रीता - (णि)रूपा-मो+ साग्रस्था - केशर,-धेगर-पुर माग्रेशर । - लेख-पर दक्ष प्रशे ।- चळ-पुरु एक यह पहा शहरेकार बच्च जिलते हाता दाव का महाम नारीकृष कामा आवा है (वहांक) र निहान-जिल्लिका - स्वीत महाप्रशास्त्री, बढी स्वताबत । - स्वया-पुर सर्वेक्षणी राजा गर्ददाया । ५० शनपुर (रीजारात) शिक्षा । नवायश्च-पुरु वश्यादि । अधीत-पुरु वशासारी घेष वा मागुर्वः पर्रतीतः । स्त्रियनपुत्र वासु । स्टेस्स पुरु सबीय । अभाविमानविक वर्षवति सुन्ति हारा प्रस्तु untinet bet ger e. muter-go neufe nifeet te. La. raidid birr elitianat -Ma-(ज)-तुन शरूप दर्श भारतिके माने हैं। ब्रांच र-श्रावर-बुर बीरे हैं के बारे हैं। बादया कह की अप जी के रही र्म्यते आकृतकः कृत्या वर १ - लग्नसः,-स्यूरी-व्यक्ति स्थलः

को देज र नहीतीनको र संप्रमाद्त्री, रहासंग्र नहूम्य the fit finder t

manter - ma (da) to the transfer a

सर्शानुपर-प्र (४)०१देश "धर्मार्य" । अस्य अस्य स्थ प्रदानको सम्म दिलाई कुन्दरकुर्दिन्दी अनुवर्ग वरिने अञ्चलक पंद . इस भारि मान द्वीरीका मुख्यमुद्ध बन प्राप्टा के नर it ister i

ক্ষমমানপুৰ বিদৰ্শী ট্ৰিনট অনুষ্ঠ আন্তিত বল কাপুনিত ব্যক্তিই 🖔

मंदंशमें मुल्ही मा मुहर (धर्मायार्थ) हारा द्वास है अन मार ही गयी स्टबरका र

प्रताह-स्ती॰ मि॰। दिशय, श्रीपा शफरमा, कारश्यो। -गर्माय:-मंद:-पाय-विश् विमे विहद प्राप शे हैं। विवयी। स्टब्स, बागगाव । -मामा-प्र धार्थ मध्ये की आरोबाली रचला । -विश्व-१० दमरी होदरेश स देगा शिक्षीका बाल मैकीका यह रेका वक्ष मारश हरी का नैना । स॰ -को धंडा या महारा-रोग्दो छाने

बन्नाया जानेबाला मगावा । प्रमहपुरमीकरी-५० बागरा जिल्हे धपरी दर कि बागुप्रसिद्ध रक्षान (शहर और रागा श्रीवाश कुट गाँ दमा था)।

फर्सिमा -प॰ कोई परदार बीपा, विशेषवर यह भी देख या प्रशासन्य भुगता है, प्रांग, प्रानामा ह

क्रमील-पर बिनो हैन 'क्रीसा' । स्मीप्र-पुर है। 'क्षप्राचमतेश' ।

क्राणीला-पन (अन्) दोश्यक्षी वर्षी। विशेषि मेरी वर्णः बंद्रक मा टीएमें दी जानेवानी बची, फ्यांता रही काकारों लंदेश चुका कागत किसार कीर्द बंब निक्र बहता है और विमन्द्री भूती प्रेतमारत स्वीएकी की शह है, बनाना ह -बरोज्ञ-पंश्वीबर, हाम राग है .

क्षेत्रही – शोव देव 'क्षेत्रहो' ३ क्तूर-पु॰ दे॰ 'अभूर' ।

पान्तिया-दि॰ दे॰ 'नुभूदिया' । unen-site [no faite, date, ele) tite

भीता गरका मास । क्षमुदी-को॰ (थ॰) दमानदशे १६ मध्यते वि

आर्तामधी कृतनी दिनमें गाममेदी क्षेत्र दान मा द्वी लगाची ऋगी हैं। माने ० – स्थान पातपार विश्वय ।

करोड ० – भी । विश्वय, भी प्रश कामारी(दिन्)-५० (वन) पर्दाः विदिधाः

क्रमाञ्च-दि० यत्रद धर्देशयाः श्रीत्रवेशमाः । प्र बर्ग रेडश्ट १

काक्षमा = स० वि.० "का तार्व" याल्य वर्गमा भेगा, हरी कारिया बढाने समाव 'बाद बाद' धाना बहार'। करें। **********

athai, - de geiffe an meing fin miget e. अर पश्च निवास पार्व पान्य बारमा है है

प्रमुख्याम:-मन दिन शरीर्थे भरितः कृतिने बर मारीर्थे दाने विदल काला पूर्व का चैतिहे बहुत का सन्दर्भ उद्देश्यो विकास आज्या है। विमी पीत्रका शाहरे एएर "कर कर" शब्द करता र

क्रीएयर्ग-स्टब्स् देव व्यक्तियर्ग र

क्ष्य-पुत्र क्ष्य विश्वविद्ये बाध्यत विर अन वर वीजर्ध देणी बाद रहर हो हाता हो। हैन विभी र mu. munge fuel un, gres eit, feben, 256)

काया क्षेत्रक कींद्रका कारीनरीत प्रेचन, क्षेत्र वन्त्र चलान्ये, बक्लोर रहें क्षत्र आज सीमरान्दर कारडे हें^{री}र अप, अधेव क्षांनेवे हिन्दुस्य है ।

प्रार्थना करने योग्य । प॰ हापर सम ।

प्रार्थितस्य-वि॰ [मं०] प्रार्थना करने या चाइने बोग्य । ब्रार्थियता(त)-वि॰, प॰ (सं॰) प्रार्थना करनेवाला, याचकः प्रश्याकांशी । प्रार्थित-वि॰ [सं॰] जिसकी या जिसके लिए प्रार्थना की गयी हो, याचितः आजांतः शवरदः ब्राहतः इतः जिसकी भाइ, सलादा हो । पुरु इच्छा । — दुर्लंभ – विश् जिमके लिए इच्छा की गयी हो, पर जिसका मिलना कठिन हो। प्रापी(धिन)-वि० मिनी प्रार्थना करनेवासाः वाहनेवालाः इच्छकः आक्रमण करनेवासा । प्रार्थ-[२०[सं०] प्रार्थना बहरने योग्य, जिसके विए प्रार्थना थी जाय । प्रालंध-वि० [मं०] विशेष रूपसे सरकनेवासा । पु० सीने-तक लदकनेवाली माला; एक तरहकी मोतियोंकी मान्ताः ग्रीका रतमः एक सरहका मदद है प्रार्लयक-प॰ (सं०) सीनेन्द्र लख्यनेवाली माखा । प्राप्टेंबिया-स्ती॰ [मं०] एक तरदका सोनेका द्वार । प्राष्ट्रेय-पुर [संर] दिम, बर्फ । -अधर,-सील-पुर हिमालये । – रदिम – पु० चंद्रमाः कपूर । प्राष्ट्रेयांझ-५० (सं०) चंद्रमाः कपुर । प्राष्ट्रेयाप्ति—५० [२१०] दिगालय । प्रायट-५० (शं०) जी। प्रायण-पुरु (सं०) प्रायक्ष । प्रापर-५० [मं०] प्राधीर, घदारशीवारी: उपरमा: एक प्रायरण-पु॰ [मं॰] ओहनेका यम, उत्तरीय, ओहनी, माहर । प्रापरणीय-पु॰ [मं॰] उपरना भादि उपरमे ओइनेसा RIG ! प्राचार-प० [गं०] भी:नेदा बन्द, भीडमी: आवरणा एउ (बना था शेष । - कर्ण-पु॰ एक प्रदारका उनन् परी । -कीट-पु• एक महादका कपहेबा कीका: थीनर । प्राचारक-१० [गं०] ओडनेका बल, उश्लीय । प्रापारिक-पुर्व [मंत्र] प्रावाद बनालेबाला । प्राचान्तिक-पु । [4] प्रशास, मुँगेहा व्यापाद बरनेवाला । प्राचाम-वि॰ [मं॰] प्रवाम या यात्रा-मंदंगी । भाषानिक=दि• [मं•] भराग ला बात्रावे छश्तुनः । प्राविष्ट॰ "पु॰ प्रापुर, वर्षाक्रम, बाबम । प्राचित्र-पुरु [र] रशन्तः आसन् । मार्पाच्य-पुर [गंर] परीण द्वीनेदा मान, बुशलगा, निपु-Times i माष्ट्र(प्)-मी॰ सिंश्] वर्षामनुः वाका १-(४)हरार –पुरुवशीका सीमध । माब्रहायय-पुर्व (वांव) श्रान्हाल ३ प्राचन-दिर [र्तर] विदेश मधी अनुत, पिहा हुआ। एका इभा । पुर कीहरेस बार, प्रस्तीय, ग्रेंबर्' । मापृति नर्भात (१९०) प्राचीत, धहारतीवारीह बाबहर आध्यार fire steer, were (migrat we whate- 30) : प्रापृक्तिम-दिक (तक) कीमा प्रामकार व गुक क्षा, सकती व midig - Zo'- middi - sejn fejn fag bim' dinti ?

प्रावृषिक-वि॰ [मं॰] वर्षात्रतु-मंत्रंथी । पु॰ मोर् । प्रावृचित्र-वि० [मं०] जो वर्शकतुमें उत्पन्न गुभा हो। पु० इंद्राबान् । श्रावयीण−(३० मिं०] यो वर्षऋतमें उरपन्न हो । श्राजूषेण्य−वि० [मं०] वर्षाकाल-संबंधी; वर्षाकालमें उरपन्न; वर्षाक्षतुर्मे देव (क्षण आदि) । पुरु कदमका पेडा सुटबका पेश, कुरैयाः प्रचुरता, आधिनय । प्रावृष्ण्या-सी० [मं०] केवीव; हाल पुनर्भवा । प्राकृषेव-वि॰ [मं॰] वर्षाऋतुमें दीनेवाला । प्राकृत्य-वि॰ [मॅ॰] वर्शक्तुमें द्वीसेपाला । पु॰ वैदर्व मन्द्रिः भारावदंशः कुर्रवाका चेत्रः विशेष्ट्यः वशः । प्राचेण्य-पुरु [मंत्र] बंदिया कर्नी चाहर, हाल । प्राचेशन-वि॰ [सं॰] जी प्रवेशके समय दिया या किया बाय । पु॰ कार्याना । प्राचेशिक-४० (सं०) जिससे या जिससे दारा प्रवेश मिन्देः प्रदेशका साधनस्यः प्रदेश संबंधाः जिसमे पुरानेकी भाइत हो । प्राप्तस्य – पु॰ [शं॰] दे॰ 'प्राप्तस्य' । प्रायाज्य-पुरु [मैरु] प्रवच्या, सन्त्यामः देशार गमना । प्राप्त-पुर (मैं) भीवन बरना; स्वाद हेना; आहार । प्राशक-वि॰, प॰ [मं॰] खानेवाला । प्राचान-५० (८०) सामा; विद्यामा; भीतन् । प्राधानीय-वि॰ [लंब] माने थोग्य, गाम । पुर भाषार । प्रायस्य-प्रव [अंव] प्रशास बोलेका वाव, प्रशासकार विद्याष्ट्रमा ६ प्राचारत-पुर [ग्रंग] मशारवा नामक करियनका कर्म था पर: शागन: राज्य । प्रादित्त-वि॰ [म॰] साया द्वमाः भक्षितः। प्र॰ दिशुनर्वणः भोजन, भरूष । प्राशिश-पु॰ [+'•] पुरोराय मारिया बह भाग यो प्रका-के निष्यक यापने अन्य क्या जाना देवह पापा सायग्रहार्थ । प्राशियाहरण-पु॰ (मं॰) गायदे यातदे आहारदा यह पात्र जिसमें प्राधित स्माः जाता है । प्राथी(जिन्न)-दि॰ [एं॰] प्रारण कर्नेवाला, साहै-बन्दा । [स्दी० 'प्राहित्सी' ।] प्रादिनक-पुर [लेर] प्रश्न कररीयाना, प्रदश्कां; वंध, मध्यम्बः मधीः मधानी मार्यारे क्रीवाणाः भागाः। विक जिसमें प्रधन की ह प्राप्तप-विश्व [२००] शाने बॉस्य । प्रामीत-पु॰ (ति॰) वह ज्ञामा दिल्दे शहारे वदे देन निकारे जाते हैं। गुला; तुलाए । 🍃 प्रार्थितिक-दिक [र्वक] दिलका प्रध्य की प्रान्तकत्र धारेनी दिन ह प्रामीग्य-पुरु [६०] वह स्था देश हो इन क्षांत्रि तिहाला जारशाही र द्रास्य – पुत्र (१००) विकास क्षात्रस्य क्षात्रस्य क श्रासद-देव [धान] कामार्थिको र おはなな一覧を含むとうをまたける また faggrat f

बाव्यायणी-सी० [सं०] वेवॉन: विमहोपरा ।

Eu 1 - Mich-de und iff fint mylonian क्षांक्षेत्रे वे वेद्योदेने व्यव =क्षाक्ष्य-द्रव अन्तर्य =

शाली(विन)-निः बन्दूनः बन्द्रः। -शीना-

रेग्हा देश। -प्राप्ति-शीक बल्प्याँ प्रदेशका प्रस्त बल्पे

माना पान्ता धेने देवत्या घरण रे -धेयू-पूर मासा

-मोहरू नधी । धनीको अस्ताः। शहनश् । -मोहन्द्र-

-श्रिक्त-दिन पाक अभीत कालिकात - साम्बद्ध-पुर भारतिर्देशकान्त्रवा स्टिब्रिस्टेर व्यवस्थित ।

फलहा-पु॰ कहीना, शमहा। वास्त्री(किंत्)-दि॰ [सं॰] बलदी, हरागेचे दश प्रयो शो दान निवे हो १ ए० भी है। भैरत ! .चन्द्रशि–वि• भाग्राचीप । क्रलतः(सम्)-अ० (ां०) क्रमश्रम् १० वर क्तमप्र-५० वस वृक्त भीनी । क्ष्यम-पु॰ वि॰] क्षताः परिवास गरहत करणाः कलमा-मन मिन (देशी) कम सभा, कमपूर्वीम पुल देवा, कराजम्ब, होत्या अनुम्मर्श होत्य गुल्ये दानी या दुनियोश जिल्ह माना। ग्रुष्ट न्यूनरा प्रवयुक्त होत्या शामक्ष्यीक्षण होता. सुवन्त्रेष्टव्युर्व द्दीरा १ क्षप्रदेशक-युक्ष हैक 'प्ररूपः' । क्षण्याम्(बन्) - दि० (ता) सर्पातः कत्र हेरे वा प्रापति हरतेव मा दिल्ली लाइका एक ही। दुर कर्ण रे वृष् क्षवत्रती-की (तक) दिद्यु । दिक भी क्षत्र वी । क्षारा, क्षाय-पुरु (श्रेष) देश्या । क्रमध्यान्त्र [बर] क्यांत्री, सांवरण हत्र, fer: 1 **ब्रास्ट्राप्टी -पु ५ रहीजीवर, ब्राइटिय १** बार्डक-वृत्तित्रे मानाः काल्क्षी-व्योक हैंवी की सम्बद्ध काम रागी ह कत्रीपृष्टिक (कर्ज होते कपोट स्थिति दे बाही प्रश्नित दुर मुल्दा - सीवाया-सीम बदानुबद, मुल्लीदेशी ह do ted ! - dial-ife auf auf ; कर्मात्रक-मीन् कर्मतः स्टारिस में के क्रमेर से पूर्ण \$7000 \$10 \$2000 \$100 \$ क्रमीया - सर्देश क्रमी समाप्ति इन्नामुक्त-पूर्व क्षीतार्गम्पद्रम कल्दान ६ अवेतपु-सूर्व क्षायुर-रित्र - म्हारिक्यों - स्वित्र १ देशिक देशाने अपर स ब्हुजर्मुब्-वृक् हैलंको स्राप्त र bit bir mein-fen marfer, formu : - fingen i meiten genter ung fant unruf, auftit ? for was object and anterwood for mustion becomes being untilled betreet et et a

ब्हुन वर अमेनिव गरंथी दव । -सरध-विश्वमें नि भीड़ी जंबाहाता । प्रसक-पु•[ध•] मादाशः • स्थां । -मुदा-रिः पुर् बनका माहाः गुप्तनिम, करे द्वान । -परवाह-नीः आसमानपर पर्देशनेवाला । -मर्नबा-राप्तरार्थित उँचे बरपर काडीन, भागायनंश । -सर-रिश् कार्नि वान्य (पोदा) । भीव भंग । -(के) पीर-रिन्तु"-अरट । शुरु -हृहना:-पर चड़मा:-पर चारश-रेन "आगमान"मे । -बाद भागा-प्रगावेदे एक्ट्रेट रा कारहता०-४० दि० धन्नशाः प्रदेश ।

(देवरी) यत स्थाना, यस्ता । -सामा-स्ट,स्प्रीत पुरु भोदना । =चाना =नेनीश दिश्याः दिशीश्रः भिन्ना र न्हाना-बच स्थान, युरुमा; (४६९) १४-मनद होना ।

चलक~पु• [मे•] सहहीश सम्प्राः बही। दरि, हावेरीय

दक्ती भारिता प्रुती नेम दा लिके भागास स्प

दे। बीटी: निर्देश इवेदी। यत्ना परिवास साम प्राप्त

क्रमुख्या बीप्रशेषा समाध्यी मरिया चीर्पपा पा। एम

ष्ट, तीर्वी थॉवी !-वंब-पु+ मणशाप वं प्रशास है

प्रार्थना करने योग्य । पु॰ द्वापर सुन ।

प्रार्थियतस्य-वि० [मे०] प्रार्थना करने या चाहने योग्य ! प्राधियता(त)-वि०, प० (तं०) प्रार्थना करनेवाला,

याचकः प्रगयाकांशी ।

प्राधित-बि॰ (सं॰) जिसकी या जिसके लिए प्रार्थना की ग्या ही, याचितः आवांतः अवस्दः आहतः हतः विससी नाइ, तलाग्र हो । पु० इन्छा । -दुर्लम-वि० विम्के हिए इच्छा की गयी हो, पर विसक्ता मिलना कठिन हो। प्रार्थी(थिन)-वि॰ [मं॰] प्रार्थना बरनेवाला; चाहनेवाला,

इच्छ्कः आक्रमण करनेवाला ।

प्राप्त्य-विव्तिको प्रार्थना करने योग्य, जिसके निष प्रार्थना

प्रार्टेश-दि॰ मि॰ दिरोप सपमे शरकनेवाला । पु॰ सीने-सह लक्ष्मेबाली मालाः एक तरहवी मोतियाँकी मानाः भीका रतमः एक तरहवा कदद ।

प्रालंबक-पु॰ [मं०] शीतेनर संदर्भवाली माछा ।

प्राप्तिविका-शी० [मं०] एक तरहका शोनेका हार । प्राहेय-पु॰ [सं॰] हिम, वर्ष । -भूधर,-रील-पु॰

हिमालय । -रहिम-पु॰ चेत्रमाः कपुर । प्रात्रेयोदा-पु० (मं०) चंद्रमाः कपूर ।

प्राहेवाद्रि-पु॰ [मं०] हिमालय ।

प्रापट-पु॰ [मं॰] जी।

प्रायण-पुरु [शंर] पावदा ।

प्रावर-पु॰ [मं॰] प्राचीर, घटारदीवारी; उपरमा: एक

प्रावरण-पु॰ [मं॰] भोरनेका बन्न, उत्तरीय, भोरनी,

यादर ।

प्रायरणीय-पु॰ [मं०] उपहना भादि कपरते भोहनेका सम्ब

प्रावार-पु [मं] भोइनेसा बन्द, ओइमी: आवरण: यस दिला या क्षेत्र ! - कर्ण-पु॰ एक प्रकारका उक्त यही ।

--क्षीट-पु॰ यस प्रसारका सपहेका कोकाः धीनह ।

प्राधारक-पुर [मंत्र] ओदनेवा वस, उत्तरीय । प्रापारिक-पु॰ [शं॰] प्रावार बनानेवाला ।

प्रापालिक-पुर [मेर] प्रशास, भेगेरा व्यापाह बरनेशासा ।

प्राथास-वि [4] प्रदाम या वाया-वंदेशी ।

मापागिक-रि॰ [गं॰] प्रवास m बाबाहे उदबुक । प्राविट॰-पु॰ प्रान्?, बर्शकानु, यातम ।

प्रावित्र-पुर [शंर] रहनः शासव ।

प्राचीन्य-पुर [मंद] प्रशित होनेहा बार, प्रश्नना, निपुर

\$797 T

प्रावद्(प्)-सी॰ [सं॰] वर्शकतुः दावस् ।-(ट्र)हत्तर -- पुरु बर्गाहर क्षीमम ३

मात्रद्रप्य - १० (११०) शालकात ।

मायुष-(१० (१०) विरोध ककी अपूर्ण विशा हुआ; दक्षा मुभा । पुर कीर्रासा सम्म, प्रस्तित, गरेवर् ।

प्रापृति नर्भाव [र्राव] प्राचीर, पदावदीवारी। वाकाः आध्याfine weers, were (respective elevin-20) :

प्राष्ट्रीमस-दिस् (१९०) वेन्त्रा जानसम्ह १ दुव बून, सनदी ।

Ridandel-Ridaimerio (ero) editini disti i

प्रावदायणी-सी॰ [सं॰] बेलंच: विमरीपरा।

प्रावृत्तिक-वि॰ [मं॰] वर्षाः सतु-मंदंधी । पु० मोर ।

प्रावृधिज्ञ-वि॰ [मं०] जो वर्षाप्ततुमे उत्पन्न दुआ हो। पु०

होताबात ।

प्रावृपीण-वि॰ [मृं॰] वी वर्गत्र तुर्ने उत्पन्न हो।

प्रावृषेग्य-वि॰ [मं॰] वर्षाहाङ-मंत्रेषीः वर्षाहाङमें उत्पन्नः वर्षाच्छामें देव (ऋष आहि)। पुरु कदमका पेहः सहस्रका

पेर, क़रैवाः प्रचरना, आधिरव ।

प्राव्येण्या-सी॰ [मं॰] देशौन; लान पुनर्गना ।

प्रा**कृषेव−**वि॰ [मुं॰] वर्षाऋतुमे **शो**नेवाहा । प्रावृष्य-वि॰ [मं०] वर्गऋतुमें होनेवाहा। पु॰ वैदृषे

मनिः धाराकरंगः करैयासा पेशः विकास करा।

प्राचेष्य-पुरु [५ं०] बरिया करी मारद, शास । प्रावेशन-वि० [ने०] जी प्रोशके समयादिया वा किया

बाव । पु॰ कारसामा । प्राविशिष्ठ-वि॰ [मं॰] निमने या विमन्ने द्वारा प्रदेश

मिने, प्रदेशका साधनस्यः प्रदेश-धंदंधाः विसमें प्रमानेका आदन हो।

प्राक्षत्रय-पु॰ [मं०] दे० 'प्रावास्य' ।

प्रावास्य-पुर [मंर] प्रवस्या, मन्त्यासः वेशार पृथना । प्राज्ञ-प॰ [मं॰] मीयन बरनाः स्वाह हेनाः आहार ।

प्रात्तक-विक पर शिर्वे शानेवासा ।

व्यादान-पर्व भिर्मे सानाः शिकानाः भीतन् ।

प्राश्चनीय-विव [मंव] साने योग्य, शाय । पुर आहार ।

प्राह्मस्य -प्र॰ [गं॰] प्रशस्त क्रीनेका भाव, प्रशस्तनात

विशिष्टगा । प्राशास्त्र-पु॰ [गुँ॰] प्रशास्त्रा नामक किल्लका कर्म का

पदः शामनः शम्य ।

ब्राशिस-वि॰ [में॰] साया हुमा, भश्ति । पु॰ वितृत्वीया

भीवन, प्रश्चा प्राश्चित्र-पु॰ [मं॰] पुरोशश आश्चिम यह मान श्री प्रशा-

के लिए एक पात्रमें अन्य रखा जाता है। वह पात्र ELCTTIA 1

प्राधित्राहरण-पु॰ (मं०) गायदे कामदे आसारदा वह पन जिनमें प्रतित स्मा जाता है।

प्राधी(शिन)-वि॰ [मं॰] प्राधन बर्भवासा, साते-बन्धा । [ब्दी । 'प्राहिली' ।]

प्राहितक-पु॰ [लं॰] प्रश्न बरनेशाला, प्रश्नवृत्तीः हथ, मध्यक्यः स्थानैः समाधी कार्यसरं धरनेयाना, सम्य ।

वि॰ व्याने प्रदन हो।

प्राहत-दि॰ [६०] साने दोस्त ।

प्रार्थम-पुर (छेर) यह जुमा जिल्हे महारे वर्ष हेस जिस्ते अधे देश्युना मुम्लार ।

प्रामीविष्ट-वि॰ [वं॰] दिव्यतः मध्य हो, प्रानेत्रातः more set

प्रासीत्य-पुरु [तीर] पर मदा देश भी द्वार कार्दिमें हिन्दुन्तु भा रहा हो ह

प्राप्त-पुरु [र्थर] चेदभा; सन्दा; सनुप्रणा, श्रांगाम्य १ Mitte-de [no] spart eini 1

प्रमान-५० विकृतिसम्म १ देव प्राप्तन ।

परस्तुनी−,फाइक फारगुन मासः रहः अर्जुन । फल्गनी-की० [सं०] एक नक्षत्र ।-भय-पु० बृहरपति । फरमूरसय-पु॰ [बं॰] बसंतोत्सव, होली। फल्य~५० (से०) फूल; वला । पालकी (किन्)-पु॰ [सं॰] फलुई नामकी मछली । फरलफल-पु॰ [मं॰] फरकनेकी क्रियासे पैदा होनेवांली फसकड़ार्र -पुर चतुर टेक्कर और टीगे फैलाकर बैठनेका रंग । सु०-मारना-उक्त प्रकारसे बैठना । पसकना। - अ० कि० मसकना, फटना; धैनना। जस्य मसक्रेने या धैसनेवाला । पत्सद्धी*~वि० दे० 'पित्सप्री' । फसल-छी । [अन्] धेतीकी पैदाबार, उपना किमी पीनके उपजने, पलनेका काल, मीसम ।-की चीन -ऋतुविद्येषमें पैदा शोनेवाले फल, शाक आदि । फ्रसली-विश्यसलका, गीसमा । पुश्र देशा; देश 'क्रमकी-सन्'। −धौआ −पु० यहाई। योआ। वि० मतलवका यार । -गुलाय-पु॰ चैती गुलाव । -बुद्धार-पु॰ मीसमा मुदार, जुड़ी, भलेरिया। -सन् ,-साल-पु० अक्षरका चलाया हुआ सन् जिसका उपयोग जमीन, छगान, मालगुजारी आदिका हिसाब रखनेमें किया जारा है। फ़साद-पु॰ [अं०] विगाइ, धराची; वसेडा; शगण, लड़ाई, दंगा। -(दे)रान-पु॰ रक्तरोप। सु॰ -का धर-द्यगडेकी जड़। फ्रसादी-वि॰ फमाप करनेवाला, उपहुची, झगनाळ.। फ्रसाना-पु॰ (फा॰) बहानी, आख्याविका । -नवीस, -निगार-प॰ कहानीकार । · फ्रसाइत-की० भाषाका साध और परिमाजित होना, हिए, दिल्ह, अपचलित शब्दावलीसे रहित दोना, सुश-ययामी । फ्रसील-सी॰ [बा॰] दीवार; परकोटा, चहरपनाह । फ्रसीह-वि॰ [भ॰] साफ:शुंदर मापा बोलने-लिखनेवाला; क्रस्ट~सं!॰ (अ॰) रमको काट या छेरकर रक्त निकासना । म॰ −खोलना,∽होना−रगपर नदवर देना, रगसे रक्त निकालना । फ्रस्ट-की॰ [अव] रीतीकी पैदाबार; विसी बीचवे उपन जनेका काल; अंतर, बिलगाव; परदा; पुस्तकका परिच्छेद । -(है) गुरु-छी० फुलांका मासम, पसंत ो' -बहारं-' स्त्री० वसंत ऋतु । फ़र्स्टी-दि॰, पु॰ दे॰ 'कससी'। ' प्रस्याद-पु॰ [अ॰] फस्द खोलनेवाला, नरतर लगानेवाला। फ्रहस-स्वी॰दे॰ 'फ़हा'-३ फ्रहमाद्वरा-सी॰ दे॰ 'फ्रमारदा'। फहरना-अ० कि० फहराना, हवामें उड़नो ।

फहरान-सी॰ फहरानेका भाव । ' फहराना-अ॰ कि॰ हवार्षे हिस्ता, खोंके खाना, सहराना

(पताका फहराना) । स॰ कि॰ विसी लेशको इस तरह

'राहा करना कि इवामें हिले-लहराये, बहाना 🖟 🛼 🔑

एक गारमें फाँकी जांब: # फाँक । फाँकी र्में न्या देव 'कॉक': फाँकनेकी चीत । फॉबर, फॉबरी≉⊸की० एक सरहका साम (काँट-पु० (सं०) एक तरहका कादा को भीपप-पूर्णनी गरम पानीमें भिगीकर छान हैनेसे प्रातुत बीता है। वि ची आसात्रीमें तैयार किया गया हो। फॉट-पु॰ भाग, हिस्सा; क्रमसे वेंटा हुआ भाग। -वंदी-' स्थी० वह त्यागत जिसमें जमादारी हे हिस्मींका स्पीरा : लिया हो। फोटक~प॰ सि॰ो काथ, काहा । फॉॅंटना-स॰ कि॰ गाँदता, विभाग करना फॉॅंटा-पु॰ कोनिया । फांड-पु० [शं०] वेड, वदर । फॉॅंब्-शि॰ दे॰ 'फॉड़ा'। = समर-'फॉड़े सोहे गुतरामे 'केरा '-- प्रामगीत । ' फाँड्रा - पु॰ धोतीका कमर्ग गाँधा हुमा मान, देशा सु॰ -पकदन्त-केंद्रा चलइकर आगमेसे रोकगा किर्म क्षीका किमी पुरवको भएण पीपणके लिए जिम्मेदार हा-राना । -वाँधना-कमर कसना, तैयार द्वाना । ' फाँद-ব্রাণ ওণ্ডাল, তলাঁণ; দরা, রাজ। 🔭 फॉॅंद्ना-अव किव उद्युलना, छखाँग मरना। स॰ कि॰ कुरकर कॉघनाः 🛎 पंदेमें फॉसना । फाँदार −५० ५:दाः फॉॅंबी ~सी० गट्टा बॉधनेकी रस्सी ।' ' फाँफी-सी॰ बारीक शिलीः मलाईकी पतली तहा माँबा फॉल-सी॰ पाछ, फंदा; गाँस आदिका यन रेशा जी कोटेकी तरह चुभ जाय, किरिन; शनमें चुमने खरकते. बाली कात (जुमना, निवालना, निकालना)। गाँस आदिवी भतली सीला । मु॰ - निकलना -काँडा निकल्सा विश्वमे चुभनेवाली शतका हुर होना । फॉसना-स॰ ब्रि॰ फरेमें कसना (र्रासीमें डील)। करेमें फैसानाः दाँव-पेचमे वाँधनाः वसमे, द्वायमे करना । फाँसी-स्नी॰ रस्मीका फरा जिससे गना पुरकर जान 'निकल जाय: वह टिकटिकी या फंदा जिसपर प्राण्डड पाँवे हुए अपराधीको लटकाते हैं। ३स रीतिसे दिया आनेवाला ।आण्डेत र मु॰ -चढ्ना-कॉसी मंदायो जाना^{*}। --चढ़ानाः-देना-पंदेसे ^गला 'घोटकर भौतको सम देना । ⊷षड्या-फॉसीकी सजा पाना । –छग्रसा-पर्रे-से गरा दसना। , . फ्राइन-पु॰ [अ॰] जुर्माना । वि॰ बढ़िया, सुंदर्। फ्राइल-पु॰ [ब्॰] कर्म, फरनेवाला, क्रियाका कर्ता

फहरानि *-सी० दे० 'फशरान' ।

फ्रहा-सी॰ [अ॰] अञ्च, समग्र (समसांतमें)।

क्रह्माह्य-स्त्री॰ समझाना, शिक्षा; भादेश; चेतावती !

रूपमें विभाजित गंश को हिलकेने अंदर होता है। फॉकमा—स॰ कि॰ चूर-या दानेको शहवाती घोनके

फाँक-सी॰ पल आदिका चाकु शादिसे छंगईमें तराश

हुआ दुकहा, खंद; नारंगी, चबोतरे शादिका प्राहतिक

हाथकी होठसे सटाये पिना मुँहमें ठाल लेना, प्रकामारना

फाँका-प॰ फाँकनेवी किया, फंका; उउनी घीत दिल्ली

८९५ करनेवाला । -सत्य-पु० प्रिय लगनेवाला सत्य वचन । वि॰ जिमे सस्य भिष हो। –सालक-पु॰ पियासाल नामका पेशः -सुहृद्-पुरु प्यारा मित्रः। -स्वप्न-विरु तिमें सोना प्रिय हो। आससी । प्रियक-पु॰ [सं॰] विवासाल कृक्षः करंब बृद्धः एक सरहका चित्रकदरा हिरनः प्रियंगुः समरः बेसरः भाराकर्तनः एक पश्ची; कार्तिरेयका एक अनुचर । वियतम-विव [मंद] सबमे अधिक व्यासा । पुरु पति, खामी: प्रेमी, शाशिक । प्रियतमा-वि॰ सी॰ [मं॰] सुबसे अधिक ध्यारी। सी॰ पत्तीः प्रेमिका, माश्काः प्रियता-मी॰, प्रियत्य-पु॰ [मं॰] प्रिय होनेका साव; प्रेस 1 प्रियां व - पु॰ (सं॰) आमका पेइ । प्रिया-स्वा [मं] पत्नी, भावां; प्रेविकाः स्वा, नारीः शोडी इलायभी: अमेली: मदिरा: मंदाद, समाचार । प्रियास्य-(४० (२१०) सुसमाचार शुजानेवाला । नियागयाम-पुर्व (ग्रं) शुभ समानार । त्रियातिथि-वि० [सं०] अतिथि-सम्कार करनेवाला । श्चि**यास-५० [३१०]** ग्रहेगा शाम पदार्थ । विद्यापरय-प० [मे•] एक प्रकारका गुभ ! दिवापाय-पु॰ [rio] दिव वस्तुका अभाव । विवाप्रिय-पु॰ [मं॰] हित भीर भहित । वि॰ अच्छा नुरा। प्रियाई-पु० [ां०] विष्यु । वि० प्रेमके योग्य । प्रियाल-पु [sto] एक पेड़ जिसके फर्लोके श्रीमकी गिरी विरोजी होना है। प्रिचाररा-छो० [मंग] दाम । प्रियास-[१० [मं०] तिमे प्राण व्यारे हो । प्रियेपी(पिन्)-वि॰ [रां०] दिव चाइनेवाला । प्रियोसि:-श्री • [अं •] भाषतुरीकी बात, चाह बाहय । द्वियोदिस-पुर (शंक) देव 'प्रियोसिक' । मियो-(४० (४०) भगःगः। –क्सिल-व्योः समाद्या बादशाहरी, परामर्पपामाधीकी परिवर्त मेट बिटेनके

मधार्के परामधीरा परिषद् क्रिमके भद्रत्व राज-मूलके लीम, बहे बहे महरारी कर्मवारी नेपा पादरी साहि षात दे। इस बीलिमहा स्वाय-विभाग की मधेगी। शक्यमें अर्थालका सबने चढ़ा और अनिम स्थायालय है। ~वीशिवर-९० दिनी बीभिन्दा ग्रदहर । मीर्भक्ष-पुरुष श्रेष १ प्रीम-बि॰ [से॰] प्रीनिपुसः प्रगत्तः पुराजा ।

भीमन-पुरु [sie] प्रश्न करनाः प्रमान करनेपासाः । मीराम-पु॰ (de) वेदा । মাঁলিস্ব–বি০ (৮)০) মদতঃ গানুত চ मीत-दि [तन] मीरित्या सम्बत् हर । कशीक मेस् मीतम-पुर दिवनमः चीन, व्यामी दिन्ती कादिकाका मिछा-चीन (विन) देखना रददर दिनी व नहीं अधाने

Blick, wifer t भौतिनकीक [६,व] वर्षे, भावता, बाबीस मुन्ति केस. भ्यारत क्षेत्रात आमितिकारी काल कार्यात है वस्तुता कार्यात का

केंग्येट) द्वारा केंग्र (का क्येंग्र) र न्यादनदिव हे

इर्ष या प्रेम उत्पन्न करनेवाटा । —कर्म (नू)-५० प्रेम-पूर्वं कार्य, मैश्रीपूर्वं कार्यं । —कारक,-कारो(रिन्र)-वि० दे॰ 'प्रीतिकर'। -मृद्(प)-पु० कामदेव। -द-वि० प्रमन्न करनेवाना, इपेदायक । पुरु भौंह । –दूस-विरु ब्रीतिपर्वेक दिया हुआ। ५० वह धन जो बन्याको विवाह-में माता, विता मादिने मिले। -दान,-दाय-पु० धेम-वदादिया एमा पदार्थया द्रव्य, प्रेमोपहार । —धन-पु॰ प्रेमवद्य दिया हुआ धन । -पाप्र-दि०, पु० प्यारा, प्रेमनाजन । -भोज-पु॰ वह भोज जिनमें प्रियजन, सर्वे संबंधी सदयावसे समितिन हो (आ०)। -भोउप-वि॰ जो आनंदपूर्वक सामा जाय । -शिति नन्दी ॰ मीति-पूर्व व्यवहार, प्रेम-व्यवहार । -धर्द्धन,-धर्धन-प्र० विष्यु । विष्योति वहानेवाला । - चाह-पुरु मैत्रीपूर्ण बार । -खिवाह-पु० प्रेम-मंबंपके कारण होनेवाला विवाद । —रिनम्ध-वि० प्रेमके कारण आहे (ऑसें) । प्रीरवर्थ-२० [मंग] प्रमन्नताके सिए, प्रमुख बारोदी किए । प्रष्ट−वि० (मं०) अना दुवा, दरध । प्रथय-पुरु (संरु) वर्षाताला जलनिया सूर्या सिर्। विरु

प्रक्र-पुर [अंत] प्रमाण, सदमः किमी रापतेवानी बरगदा वह ममुना की वराती छताईके पहने बाद्धियाँ ठीक करने-के लिए सेवार किया बाता है। बर्मुविहीय है प्रभावने बचने-का साधन, वस्त्रविशेषका अतिरोधक (विग-'बाटरप्रक'. 'कावरम्य') । -रीडर-पु॰ मृत्रनी अञ्जीवर्ग होक परने-धाला । प्रम-प्र• समुद्रकी गहराई सापनेके बाग आनेवामा भीने मादिका बना दुमा सद्दृषे आराहका यंत्र ।

व्रीव – पु॰ (६१०) हाला, पालना । ब्रेंग्नण-पु॰ (भं॰) शुलनेशी शिया, शुलना; शुला; दक् प्रकारका बीर रम-प्रवान एकांकी आहता। -हाहिया-म्बो॰ सर्वदी ।

भेरबा-मी॰ [मं॰] शुला: परिशयण: सरद: पद प्रशासा वश पीदेवी यत्र प्रसारकी पाण । ग्रॅंबिस्स-वि॰ [मं॰] दंदितः हाता दुधा ।

धेंग्रोस, बेन्होसम-पु॰ (२०) दिनता, दीवता; शनगः । प्रेसक-दि॰, पु॰ [मं॰] देगनेवामा, दर्ग है। मेक्षण-पु॰ (de) देवलेक्षे जिया, देवना: श्रांता दिया

प्रसारका अनिनयः समाधा आहि शेल ! -वृष्ट-पुर क्षांग्रहा देखा । ग्रेक्षणक-पुरु [येक] नवाद्या देखनेदाका ।

ग्रेह्मजिहा-की॰ [बंब] यह की विधे नगाए। देशकेश प्रतिहासी । ब्रेक्षणीय-दिक [मेंक] देखने देखन शुन्छ हिलांचार रिकार दे होगद ।

धेशकीयक-पुर्श्वाकी नगासून ।

क्षेत्र बुरुर्वेद्या विदेवः दिन्तेः प्रदर्शवः स्टिप्टवः सम्पत्तः कारित देवती काम, कामा व -कारी(विम्)-दिक क्षेत्र-सराग्डर द्वार कर्त्रेशामा । --गृह--व्याप-पुत्र शामकेना द्या रहा (ग्यामा । -यर्थ - दुर प्रारट-

मसीटा होहा जिससे जमीन सुदनी है, कुसी; एक दिन्य या देवी पर्राक्षाः, माँगकी पट्टी, सीमंत मागः गुरुदस्ताः फर्लॉगः एक सरहका फानकाः पूछाः छठाटः बरूरामः शिवः विजीरा नीवः सूती वस्तः जीती हुई अमीन । वि० सती। – कृष्ट-थि॰ जुताहुआ। पु॰ ज्वाहुआ सेता -गुर-पु॰ बलराम ।

, फाल – দ্রী ০ [अ०] शुकुन ।—(हे) नेक – पु॰ शुम शुकुन । -घद-पु॰ अमगुन, अपशकुन ।

फालखेला-सी॰ [मं॰] एक पृशी ।

.फालत्-वि॰ आवस्यकतासे अधिक, फाजिल; बेकार,

.फालसई-वि॰ फालसेके रंगका। पु॰ फालमेके रंगसे मिलता हुआ रंग ।

.फालसा-पु॰ [फा॰] गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक छोटा फल जिसके खट्टा (शर्वती) और मीठा (शकरी) दो मेट होते है।

,फालसाई-वि०, पु॰ दे॰ 'फालसई'।

फालाइत-दि॰, पु॰ [मं॰] १० 'फालवृष्ट्र' ।

क्रालिज-पु० [अ०] एशायान रोग, आधे अंगका सुन्न हो जाना, लक्ष्या। - ज़दा-वि० त्रिसे फालित हुआ हो। स्व-गिरना,-मारना-फालिजकी बीमारी होना। .फास्ट्ररा-पु० [फा०] एक तरहकी मेवर्र जो मैदेने बारीक

इकहे दूध, दाकरमें बालकर तैयार की जाती है। फ्रालेज – पु॰ [फा॰] सरव्जे-फकडीका रोत ।

फाएग्म-पु० [सं०] फागुनका महीमाः अर्जुनः अर्जुन कृछ ! पारमुनानुज-पु० [मं०] चैत्रः वर्मतकालः नकुल-सहरेव ! फारगुमाल-पु॰ [मं॰] कारगुनका गदीना।

फाल्गुनिक-पु॰ (सं॰) फाश्गुन मास । वि॰ फस्गुनी सधन-संबंधीः काल्युनकी पृषिमा-संबंधी ।

फारगमी-की॰ [मं॰] फारगुनकी पूर्णिमाः पूर्वो कारगुनी या बत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । -भव-पु॰ बृहरपति ।

फायदा-पु॰ चींके फलकी कुदाल, बेळचा ।-(हे)से दाँत-चीहे, बदशक दाँत । मु०-यज्ञाना-स्रोदकर विरानाः दाना ।

फायड़ी - सी॰ छोटा फावड़ा; काठकी क्षराल जिससे धीड़े-की शीद आदि हटाते हैं।

फ्राश-वि॰ [का॰] शुला हुआ; प्रबट, सरीह । ~शलसी-स्त्री॰ खुली गलती। सु॰ (परदा)-करना-गुप्त बात प्रकट कर देना।

फासफरस~पु॰ [र्थ॰] एक ज्वलनशील मूल तस्व को धाधारण तापमानमें गुला रखनेसे .धारे-धारे बलता और अँधेरेमें दीप्तिमान् दिखाई देता है।

पासला−पु॰ दे॰ 'फ़ासिडा' ।

फ्रांसिय-वि॰ [अ॰] फमाद कर्नेवाला, खरावी, विवाह पैदा करनेवालाः प्रसानंसीटा ।

फ्रांसिल-वि॰ [भ॰] जुदा बरनेवाटा, अंतर बरनेवाटा । फ्रासिला-पु॰ (झ॰) दूरी, अंतर । ्

फाहर पु॰ इत्र, भी आदिने तर की हुई रहे या कपड़ा; सर-

र्फिकरना!-अ० कि० गीदहका शेलना । र्फिक्याना-स॰ कि॰ किसीसे फेंकनेका काम कराना। र्फिंगक-पु॰ [सं॰] एक पश्ची, किंगा।

किंगा-प् एक चिविया। क्रिकर-सी॰ दे॰ 'फिक'।

क्रिक्ररा-पु॰ [अ॰] उद्देश्य-विधेवयुक्त परसमूह, बास्र, जुमला; रीट्की हुनी; फरेबकी बाठ, चक्रमा, हाँसा। -वंदी-सी॰ तुकर्वदी। -(रे)यात्र- वि॰ नक्तमा रेने-बाला, घोरोबाज। -धाजी-स्ती० चकमा देना, धेरी-बाबी। सु०-चल जाना-चकमेरा काम कर बागा। —चुस्त करना –दिलमे कोई मौनूँ बात बोदधर करना। -(रे)जहबा-फन्ती, आवाजा कमना ।-जोड्ना-पूर्व

बात बनावर कहना । -वसाना-धीखा, चक्रमा देना। फिकवाना – स॰ कि॰ दे॰ 'फिँउवाना'। क्रिकाह-पु॰ [अ॰] इसलामी धर्मशास, समहरी बानूत। फिकेत-पु॰ गतका-फरी, पटा-यनेठीका खिलाडी, पटेतार।

किकेती-सा॰ गतदेन्यटे आदिकी स्थानना, परेवामी । क्रिक-स्ते॰ [अ॰] सीच, चिता; सदेशा; काव्य-रवनावे लिए किया जानेवाला चिनना परवाहः यस ।-मंद-वि विसे किसी बातकी बिंता छगी हो, सोबी।-(है) मभाष-

स्ती॰ सीविकाकी चिंता। क्रिगार-वि॰ (फा॰) (समासांतमें) बायल, जल्मी ('रिक' किगार', 'सीनाकिगार')। 🔑

फिचक्रर!-पु॰ मूच्छा आदिमें मुँहसे निकलनेवाहा पेता

फिट-अ॰ थिकार, शानत, पृदकार। फिटकरी-की॰ एक मित्र खानित्र पदार्थ जो रक्तरिकी तरह सफेद होता और दया, रेगाई आदिने काम भाता है। फिटकार-की॰ जानत, भिकारा ग्राप। सु॰(सुँह वा

चेहरेपर) -वरसना-चेहरेका मळिन, उत्तरा हुआ होना। फिटकारना-स॰ कि॰ धिकार फटकार बताना। फिटकिरी-सी॰ देव 'फिटकरी'।

फिटकी-खी॰ छोटा; कपहेकी बुनाबटमें निकले हुए पुचरें। * फिटकरी ।

फिटन-स्रो॰ [अं॰ 'फेटन'] बार पहियोंकी सुन्नी हराये घोडा-गारी ।

क्रिटर-पु॰ [बं॰] 'फिट' करनेवाला, कलोंबे पुरने दुस्त बरनेवासा गिस्तरी ।

फिटाना = - स॰ कि॰ इटा देना, मगा देना । 🔑

फिट्ट-बि॰ दे॰ 'फिट्टा'। फिट्टा-नि॰ (फटकार, अपमानसे) उत्तरा, सिवियामा इआ

(चेएरा)। कितना-पु॰ [अ॰] शनदा-प्रसाद; उपद्रव; दुहता; एह

वरहका इत्र (वढाना, नर्पा करना)। --अंदाज्ञ,-पर दाज - वि॰ सगहा उठानेबाला, प्रमादी । ग्र॰-जगाना मिटे हुए हागदेकी फिर चढाना ।

क्रितरत-सी॰ (अ॰) प्रकृति, स्वभाव; पैदारश; सृष्टिः चाळाबी; चाछ-।

क्रितरतन्-अ॰ प्रकृतिसे, स्वमावतः । कित्तरती-वि॰ प्रकृतिगत, पैदाइशी (इस मर्थमें अर किर्ती

प्रेमी(मिन्)-पु॰ [सं॰] प्रेम करनेवाला । वि॰ प्रेमयुक्तः ग्रेमबाला ।

प्रेय(स)-वि॰ मिं॰] अधिकतर प्यारा, प्रियतर। पु॰ सांसारिक सुरा; एक प्रकारका अलंकार; * प्रेमी-'तर्हें प्रतीय उपमा बहुत भूषण कविता प्रेय'-भू० ।

प्रेयसी-सी० [सं०] परनी: प्रियतमा ।

प्रेयान्(यस्)-वि॰, पु॰ [मं॰] दे॰ 'प्रेय' । प्रयोगत्य-पु० (मं०] बंद पश्री ।

मेरक-वि॰, पु॰ [मुं॰] प्रेरणा करनेवाला, प्रयोजका भैत्रनेवाला ।

प्रेरण-पु० [म०] विसीको विसी कार्यमें प्रशुच करना, प्रेरणा करनाः फेंकनाः भेजनाः आदेशः येशा । प्रेरणा-ची० [तं०] किसीकी किसी कार्यमें प्रवृत्त करने ही

किया, दिभीको किमी काममें लगानाः उपकानेकी कियाः र्फेंबलाः भेजना ।

प्रेरणार्यंक क्रिया-मी० (सं०) क्रियाका वह रूप जिससे यह बीध ही कि उसका न्यायार किमी अन्यकी घेरणासे

कतो द्वारा संपन्न हुआ है। प्रेरणीय-वि० [सं०] प्रेरण। बरने योग्य, जिसे किसा कार्य-

में प्रदूष किया जाया पेंक्ने योग्यः क्षेत्रने योग्य । प्रेरना - स॰ कि॰ भेरणा बरनाः फॅबना, जलानाः

भेत्रताः मेरियसा(स्)-वि०, प्र० [सं०] मेरणा करनेवाला, मेरकः

पॅकनेवालाः भेजनेवालाः । प्रैहित-विश् मिश्री सिमी कार्यमें प्रवत्त किया क्रमाः फेका

हुआ, चन्दाया हुआ। भेजा हुआ। आहिए।

मेप-पुर [नंर] मेपगः पीहाः श्रीकः।

प्रेपश-दिन, पुर [गंर] भेदनेवालाः आदेश देनेवाला । द्रीपण=प॰ [मं०] प्रेरणा बरनाः निदोगः भेष्टना । प्रैपणीय-वि [३:०] प्रेरण करने वीव्या भेतने बीव्या प्रेयनार-सर्धाः शिव भेतना ।

प्रैचित-विव [संव] प्रे रिश किया धुआ, निवीतिया क्षेत्रा हुआ। निर्यामित । पुरु स्वर् गाधनेत्री एक होति ।

प्रैषितस्य-दि॰ [म॰] प्रोरित घरने योग्य, निदीस्यः शेतने योग्यः निमे भेता ताव ।

मेष्ट-विक [मंक] जी सबसे अधिक प्रिय हो। अन्यंत दिय । पुर विवयसमा पनि ।

मेषा-स्था॰ (वं॰) विवनसाः जेपा ।

प्रेष्य-पुर [मंत्र] मोदर, पादर, हत्त्वा, दुश, मेना । हिन जिस प्रोरित किया जाय का भादेश दिया जाया की भेजा भाग । - जन-पु॰ शीहरीहा समुदाय । -आव-पु॰ Circa, Tinat 1

द्रेरपाया-न्यी० (६८०) दासयाः नाव्यीः देलाव । प्रेरवा-सीव [rie] श्रीहराती, भ्रमा ।

मेग-९० [सर] पह कल किने कोई थीत दवादी दा देरी कामा सामानेकी अन्य वह स्थान मा कामीनार जहाँ , एएर्डिश बाम रीता ही। एएएएएएर - मेंबर-दुक में भागवी कानून, बह कानून कियारे हाता सारिता ने-ब भीड़े अधिकारी अभीता निमंत्रमा विद्या वाचा है। -वियोरेश-पुर यह म्हान की दबके किए समासार दक्षण है

करता है। स॰ (किसी चीजका)-में होना-अप-कादात रूपमें होनाः छपनेकी रिधतिमें होना। त्रेसिटेंट−प॰ [अं॰] वह प्रधान सभासद जिसको देख•रेखमें

क्तिं। सभा या समितिकी काररवाश्याँ हो, किभी सभा या समितिका प्रधान पदाधिकारी; संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि प्रधातंत्र ज्ञासनवारे देशोंका राष्ट्रपति (आ०) ।

प्रैक्टिस-म्बं॰ अं॰ी प्रयोगः अभ्यासः रीति प्रथाः टास्टर या वकीलका व्यवसाय या कारीबार; व्यवद्वार (ग०) ।

प्रैय-पु॰ [सं॰] प्रियका भाव, प्रियता, रनेद: कुवा । प्रैष-प॰ [गुं॰] होद्या, यहः सर्दनः प्रेरणा करना, प्रेरणा

प्रेषणिक−वि० [सं•] आदेशका पालन करनेवाला (सेवक आदि)।

ब्रेंध्य-पु॰ [मं॰] दे॰ 'प्रेप्य' (समाम भी) । मोंछन-प॰ भि॰] पीटनेदी किया, पीटना: परे एट

गर्देश भुवना ।

भौड-प्र॰ [मं॰] पीवदान, उमानदान । भोक-40 (मंग) वहा हुआ, बक्त, वर्धित ।

प्रोक्षण-पु॰ [गं॰] हिइकाव, सेननः यहके निमित्त पशुका बध वरनाः वध ।

प्रोक्षणी-मी॰ [सं०] हिश्यनेका यह। यह यहपाय जिसमें यह बल रखा बाता है।

श्रीक्षणीय-वि॰ (मं॰) श्रीक्षणके योग्य, निसका श्रीक्षण दिया आव । प्रभोद्यापे काममें लाया जानेवाला जल ।

भोदिस्त-विव [संव] निसंपर जन सादि छित्रका मदा हो। जल भारिसे सिक्तः विसन्धी बनि दी गयी हो। बनिवान किया दुभा (पशु) ।

भोश्वितस्य-वि॰ वि॰ भोग्नन दरने वोध्य, तिसदा मोश्रण किया आध ।

भोशम-प॰ (भे॰) विधी न्यक्ति या भाषीत्रनका कार्यक्रमः बद पत्र या कागत्र जिल्पर कोर्र कार्यक्रम हिरा। हो ।

प्रीयचंद्र-थि॰ (में०) मनि प्रमंद १ भोष्युल−4ि॰ [धं•] स्पीतः दश दुमाः गुशा दुमा ।

श्रीकासम-९० [मं•] यारच, वर्ष । ब्रोउशन-पुर्व (⁶⁵०) परिस्थान । SHI.

प्रोजिशन-वि॰ वि॰ विशेष रूपने स्थाना

भोडीन-प॰ (अ॰) मारियो, तरवारियो, दानी आदिस दाया जानेवामा एक परार्थ जिसका मिनांत एकिनीएकिट-में शिवा है।

प्रीटेम्टेंट-पुर [4] विशेष यम्भेवाला। एक रेताई रुद्ध-दाय विने मार्टिन भूबरने रोमन देनेर्रालक स्वदाय. दोक्ड कविकार आहिके विरोधने ग्रेन्ट्या एकान्त्रीने म्रोपने भन्दारा बाह्यस्य स्प्रदायका अनुपादी ।

प्रोड-दि॰ (१'०) दे० 'जीउ' ।

प्रोहा-मो० [गे०] २० 'प्रीहा' र क्षीरि-महेश मिश्री है। मिहिरी

श्रीत-दिश् (एं) विशा दुवा, श्रेण हुमा। विरेता दुवा। त्ररार्दे वत चैनावा दुव्याः वैदा दुव्याः शिराः दुव्याः वता हुमार श्रीता हुमर ६ पुरु बन्धा स्मात र

मुकीला लोहा जिससे जमीन खुदती है, बुसी। एक दिन्य या देवी परीक्षा; माँगकी पट्टी, सीमंत भाग; गुरुदस्ता; फलॉन; एक तरहका फावड़ा; पूछा; खलाट; बलराम; शिवः विजीरा नीवः सूती वस्तः जीती हुई जमीन । वि० स्ती। -कृष्ट-वि० जुताहुमा। पु० जुता हुमा सेत। -ग्रस-पु॰ बलराम । .फाल-खी॰ (अ॰) शबुन।–(हे)नेक-पु॰शुम शुकुन।

—चद्-पु॰ अमगुन, अपराकुन ।

फालखेला-स्री० [मं०] एक पृथी ।

.पालत-वि॰ आवदयकतासे अधिक, फाजिल; वेकार, .फालसई-वि॰ फालसेके रंगका। पु॰ फालसेके रंगसे भिलता हुआ रंग ।

.फालसा-पु॰ [फा॰] गरमीके दिनोंमें होनेबाला एक छोटा पाल जिसकी खट्टा (शर्वती) और मीठा (शकरी) दी भेद होते हैं।

.फालसाई-दि॰, पु॰ दै॰ 'फालमई'।

फालाहत-वि०, पु० [मं०] दे० 'कालकृष्ट'।

फ्रालिज-पु॰ [अ॰] पक्षाचात रोग, साथे अंगका सुन्न हो जाना, लगवा। -ज़दा-वि० जिमे फालिज हुआ हो। म॰-गिरना-मारमा-फाछिनकी बीमारी होना। .फारहवा-पु० [फा०] एक तरहवा सेवर जो मैदेके बारीक द्वकों दूध, शकरमें डालकर तैयार की जाती है।

फालेज -पु॰ [फा॰] खरबूने कवदीका खेत । फारमुम-पु॰ [सं०] फारानका महीनाः अर्जुनः अर्जुन नृक्ष। फाल्गुनानुज-पु० [मं०] चैत्र; धमंतकाल; नकल सहदेय ।

फारमुनाल-पु॰ [सं॰] फारमुनका महीना। फाएगुनिक-पु० [सं०] फास्युन मास । वि० फस्युनी नस्रवःमंबंधीः फाश्युनकी पृणिमा-संबंधी ।

फारगुनी-स्री० [मं०] फारगुनकी पुणिमाः पूर्वा फारगुनी या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । -- अव - पु० बहरपति ।

फायबा-पु॰ चौडे फलको सुदाल, बेलचा ।-(हे)से दाँत-चीहे, बदशक्त दाँत । अ०-धजाना-खोदकर गिरानाः ढाना ।

फायड़ी-सी॰ छोटा फायड़ा; काठगी कुदाल जिससे थोड़े-

की छोद आदि हटाते हैं। फ्राश-वि॰ [फा॰] सुला हुआ। प्रस्ट, सरीह । ~सलकी~

की॰ सुली गलती। मु॰ (परदा)-करना-शुप्त बात प्रकट कर देना ।

फासफरम−पु॰ [अं॰] एक उवल्नदील गूल तस्व जी साधारण सापमानमें शुला रखनेसे धारे-धारे जलता और अॅथेरेमें दीप्तिमान् दिखाई देता है। फासला-पु॰ दे॰ 'फासिला'।

फ्रांसिद-वि॰ [झ॰] फसाद करनेवाला, खराबी, बिगाइ

पैदा करनेवाला, दुरा, सोटा । । फ्रांसिल-वि॰ [अ॰] जुदा करनेवाला, अंतर दरनेवाला ।

फ्रांसिला-पु॰ [त्र॰] दूरी, अंतर । 😘 फाहा-पु॰ १४, थी आदिमें तर की हुई रुई वा कपहा; सर-दम चुपड़ी हुई पट्टी।

फ़ाहिसा-सी॰ [अ॰] दुश्यरित्र सी, बुंधली।

फिकरना!-अ० कि० गीदहका घोलना । र्फिकवाना-स॰ कि॰ किसीसे फेंबनेश काम बराना। र्फिंगक-पु॰ [सं॰] एक पद्मी, फिंगा।

र्फिंगा-पु॰ एक चिहिया। फ्रिकर-सी० दे० 'फ्रिक्'।

फ्रिक्ररा-पु॰ [ख॰] उदेश्य-विधेययुक्त पश्समूह, शक्त, जुमला; रीदकी हुन्नी; फरेनकी बाउ, चक्रमा, हाँसा। -धंदी-सी॰ तुक्वेदी । -(रे)बाज़- वि॰ वहमादेने वाला, घोरोबाज । -याज्ञी-न्वी० चकमा देना, धोरी-बाजी। मु॰-चल जाना-चकमेका काम कर जाना। - चुस्त करना - दिलसे कोई मीजू बात जोइकर बहना। -(रे)बदना-फनती, आवाता क्मना ।-जोइना-हरी नात बनाकर कहना । -यताना-धीखा, चक्रमा देना।

फिक्**धाना**-स॰ कि॰ दे॰ 'किंक्बाना'। क्रिकाह-पु॰ [अ॰] इसलामी धर्मशास, मबहरी कानूत। फिकेत -पु॰ गतका-करी, प्रा-पनेठीका खिलाई।, परेवार। फिकेती-रदी० गतवे.पटे आदिकी कुशनता, पटेराबी। क्रिक-ची॰ [अ॰] सीच, विताः अदेशाः काम्य-रनगरे िष किया जानेवाला वितनः परवाहः यस !-मंद्र-रि॰ विसे किसी वातकी निता लगी हो, सोची।-(है)मभास-की॰ बीविहाकी विंता।

क्रिगार-वि॰ [फा॰] (समासांतमें) पायल, बस्मी (पिड-

किगार', 'सीनाफिगार')। फिचक्रा -पु॰ मुच्छा आदिमें मुँहसे निकलनेवाला पैनी

फिट-ज॰ धिकार, लानत, फटकार ।

फिटकरी-फी॰ एक मिश्र खनित ,पदार्थ जो फारिस्सी तरह सफेद होता और दवा, रॅगाई आदिके काम आता है। फिटकार-छी॰ लानत, विकार; शाप। सु॰(मुँह वा चेहरेपर)-बरसमा-चेहरेका मलिन, उत्तरा हुना होता। फिटकारना-स॰ कि॰ थिकार-फटकार बताना ।

फिटकिरी-स्ता॰ दे॰ 'फिरकरी'। फिटकी-सी॰ छोडा; कपहेकी बुनावटमें निकते हुए पुन्ते

फिरकरी । फिटन-सी॰ [बं॰ 'फेटन'] चार पहियोंकी खुली इलकी बोहा-गाही ।

क्रिटर-पु॰ [अं॰] 'फिट' करनेवाला, क्लोके पुरने दुस्न करनेवाला गिरहरी। 1 5 35 1

फिटाना*-स॰ कि॰ हटा देना, भगा देना ! .

फिद्द-वि० दे० 'फिद्रा'।

फिटा-बि॰ (फटकार, अपमानसे) उत्तरा, विसियाया दुवा (चेहरा)।

फिलाना-पु॰ [अ॰] झगडा-पासाद; उपद्रव; बुहता; पह तरहका रत्र (चठाना, बरपा करना) । -अंदामा-पर-.याज्ञ −वि॰ हागड़ा उठानेवाला, फसादी । **स०**-जगाना

मिटे हुए क्षगड़ेको फिर चढाचा । क्रितरस-सी॰ [अ॰] प्रकृति, स्वभाव; पैदारश; स्र^{हिः}

चालाकी; चाल-।

फ्रिसरतन्-व॰ प्रकृतिसे, स्वमावतः । • फिलरसी-वि॰ अकृतिगत, मैदादशी (इस अर्थमें अन फितरी ८९९

प्रवंगमेंद्र-पु॰ [सं॰] इनुमान् । प्रथ-पु॰ [मं०] तैरनेकी किया, तैरना; उद्याल, कुदान; होटी नाव, उद्धपः श्रपच, चांटाल; बंदर; भेदा; मेडक; राष्ट्र; कार्रटव पक्षी; जलपक्षी; मछली 'पकड़नेका एक प्रशास्त्रा जालः सीटनाः ब्हाबाः जलकुनकुट, मुर्गाबीः नागरमोधाः पाकदका पेदः दान्य उतारः शब्दः नदीकी बाद: पक संवत्सर । -ग-प्र॰ बंदर; सूर्यका सार्धि: मेदकः शिरीपका पेड ! -सति-पण मेदक ! -सा-स्नाण कन्या राश्चि ।

प्लयक-वि॰ [सं॰] उछलने, कृदनेवाला । पु॰ चांटाल; मेटकः पादः का पेकः रस्ता, तलवार आदिपर नाचनेवाला ।

ष्ट्रवरोद्र-पु० [मं०] इन्मान् । १रवन-प॰ [मं॰] तैरनेकी किया, तैरनाः उटलना, कृदनाः उद्दनाः महाग्लावनः दाल, उतारः धोदेकी एक

चाल । वि॰ दानवीं। फ्रयाका-सी॰ [गृं०] नाव, मेला ।

प्रतिक-पु॰ [मं॰] नावमे पार उतारनेवाला, माँदी।

प्यवित-५० [मं०] तेरनाः उद्ययना । फायिसा(१)-वि०, पु० [मे०] उष्टलनेवाला ।

प्काचिट-पुर [भर] पामके शाकारकी लक्कीकी वह छोटी तस्ता जिलके चीडे भागको भोर दो पाये और नोकको भीर एक पेंसिल लगी रहती है और तो चोरेमे उँगलियाँ रगनेपर समयने लगनी है, जिसमे उसमें छगी हुई पेंसिट-से भएने भाष भग्नर भादि बनने लगते हैं (प्रेतनिया) । प्याक्ष-दि० [मं०] प्रशु-मंबंधी, प्रश्याः प्रश्या बना दुआ, प्रश्निमित । पु॰ पाकदका पाल; पायदके पेढ़ोका अगुदाय । पताद-पु० [भं०] इगारत बनाने, शंनी करने आदिके कामधी जमीनका द्वरताः ऐसी कमीमका नक्ताः खक्तास. पदानी, नाटक मादिका कथानकः दर्शनमंथिः साबिधा । प्लान-पु॰ [थं॰] किमी बननेवाली इमारतका नकशाः गगर, जिन्दे भारिका यह पैमानेपर यना हुआ नकशाः

ध्याय-पु [गं०] जल आहिशा उमहस्य बहुनाः उछाल. ब्रजाना खबबी। (गरमी निकालनेके लिए किमी तरल

किशी किये जानेवाने कामकी बीजनाः स्टीम ।

परार्थकी) धानना ।

परायम~पु॰ [गं॰] जल आहिंदा समहक्षर बद्दनाः शीता लगामाः विशी वरधुरी पानीमें बोरनाः बाह्न, शैलाद । घरावित-दि॰ [गं॰] जिगपर पानी पर आया हो, जी अभमें पूज गया दो; अभ आदिते स्वात ह पुर बाह ह प्लापी(पिन्)-दि॰ [रां॰] उमहदर बहनेवाला। ग्रीनने-बाना, ध्याम दोनेवाना । [स्मी॰ 'ग्राविनी' ।] पु॰ दश्ती । प्तारप-दि॰ [मं॰] गोना दैने योग्या जो उठाना जाय ह प्याद्यक-दिव [ria] (दश अप) यो बहरी परकर नैदार री जाद (दे०) ।

ध्लास्टर-पु॰ [बं॰] स्त्रन, फोड़े आदिपर चढ़ाई जाने-वाली हेई जैसी दवा; चूना, वंकड़, मुखी बादिसे तैवार किया जानेवाला गारा जिसे दीवारपर उमे समतल और मुषड़ बनानेके लिए छगाते हैं, पलस्तर ।

च्हिहा(हन्), च्हीहा(हन्)-पु॰[ग़ं॰] बहुत ।-(ह)त्र, -शत्र-पु॰ रोहड़ा बृक्ष, रोहितक वृक्ष I

प्लीहा-सी॰ [सं॰] तिही, बरबर: एक रोग विसमें तिही बढ़ बाती है। -कर्ण-पु॰ कानका एक रोग। -शमू-पु॰,-हंबी-सी॰ दे॰ 'ग्रीहरापु'।

प्लीहारि~पु॰ [मं॰] पीपलका पेड़ ।

प्लीहोदर-प्र॰ [मं॰] तिहा रोग।

प्लीहोदरी(रिन्)-वि॰ [सं॰) विसे तिली रीम हुआ हो। प्युक्षि-पु० [मं०] अग्नि; स्नेह; पर जलना, गृहदाह । प्युत-वि॰ [सं॰] जल आदिसे व्याप्त, तराबीर; उछका हुआ: आइत, दका हुआ: तीन मात्राभीने युक्त (वर्ग) ।

पु॰ तीन मात्राओंबाला रवर या वर्गः उछाल, सुदानः थोरेकी एक प्रकारकी चाल; तीन माधाओं पाला ताल (भंगीत)। -शति-छी॰ उछलते या छलाँग मारते हुए गमन सरमा । बु॰ सरगोश ।

चन्ति-सी॰ [सं॰] उष्टलने सुर गमन करना; उष्टान, कुरानः वह भादिका उमहकर बद्दना था यारी और फेल जानाः हिमी स्वर या वर्गका तीन मात्राभी सदित

उवास्ति होताः धोहेरी यह विशेष चान । प्लप्ट-वि॰ [मं०] बला हुआ, दाप १

च्हेंग-पु॰ [ale] कोई अदानक शंकामक रीगा एक अवा-नद अंकामक रोग विसमें गिलटी नियमनी है और बदन तेत्र हुगार भाता है, ताइस १

च्छेट-पु॰ [अं॰] धातु सादिका चिपरा, समनल भीर प्रायः बराबर मोटारेका दुकता, पट्टा तांवे भारिका बह विपरी पट्टी जिसपर किसी प्रकारका केरर सुदा हो। मीने या वाँदीका व्याला या विशेष प्रकारको पट्टी की प्रश्रीह भादिने पानी मारनेवानेको पुरस्कारके रूपने दी जानी है। तरनरी, रहाशी कोटी केनेके कामदा शीला ।

प्लैटकार्म-पु॰ [बं॰] कोरं चौकोर और चीरम चनुत्रता, विशेषकः वह जिल्लास्य भावन या उपरेश दिया जाय-मंबा देल दे रहेशनीपरका वह संवा वेचा धवनता विमाह सामने हैंन समती दें और बिगवरमें बोबर सीम समय खबार होने या उसमे उत्तरते है।

र्फटिनम-पु॰ (बं॰) मचेर रंगदी एक प्रतिद्व बहुमूक्य भागु जो बहुत करी और प्रायः भाद भागुओं। मारी होती है।

क्योत-पुर (शंर) वास्त्रर दाँची आनेवामी पट्टी। स्पता । धरीय-पु॰ (मे॰) देम्ब होना, जलना; राहदी दीरा । यहोपन-दि॰ [लंब] बहनेशाला । युक असम् ।

ष-देवशासी बरीमानाचे । प्रवर्षका दिनीय वर्ष । प्रधान । वीवनीर्श-म्योव देव विदेश द रमाधान क्षेत्र ।

लाना । फिस्पलन∸स्रा॰ फिस्सनेकी क्रिया: फिस्सनेकी खगड I फिसलना-अ० क्रि॰ चिवनाईकी अधिकनासे पाँवका न दिवना, सरवनाः (छा०) हासानाः मनका शकान होनाः चवना, धर्म या नीतिसे डियना ! वि० फिसलनवाला । फिसलाना-स॰ कि॰ किसीवे फिसलनेका कारण होना ।

फ्रिडरिस्त∽सी० [अ०] स्थी, फर्ट ।

फींचना! -स॰ दि॰ (कपश) कवारना। फ़्री-मी॰ दोष, ब्रुटि, स्रोट । अ॰ [अ॰] में, बीचा है। प्रति, हर, पोछे। -कम-अ॰ प्रतिब्यक्ति, आदमी पीछे। - जमाना-अ॰ आजवे जमाने, वर्तमान कालमें.! -साल-अ॰ प्रतिरुपं । -सैक्ट्रे-अ॰ सैक्ट्रे पीछे, प्रति-হার 1

फीका-दि० सीठा, देमचा: जो शोख या श्टकीला न ही. इलका (रंग); बातिहीन; * बेभसर, ब्यर्थ । फ्रीता-पर [पर्तर] सत या रेशमधी पतली पड़ी की सीटे-किनारीकी शरह कपड़ीके हाकियेपर लगावी जाता है: निवादयी पमली धड़शी जिससे कागज आहि बॉधसे. अंग्रेजी हंगके जलोको कमते हैं।

फीफरी। -ली॰ दे॰ 'फिएरी'। फीरनी-की० दे० 'फिरनी'।

फ़रिरोज-वि॰ [फा॰] विजयीः संप्रतः सीमान्यशास्त्री। -संद-वि॰ सफल, श्रीमाग्यशाली । ≔दाह-प॰ दिद्-स्तानके खिलभी बादबाडोमेंसे एक को अपने मतीने मलाउद्दीगके हाभी (१९९० ई०वें) कतल किया गया: पुगलक पंदाका भादशाह, गयासहीन तुगलकका भार्व निष्ठका राज्यकाल कांति और शमक्रिका था (राज्यार)हण ₹842 £0) 1

फ्रीरोजा-प० फा०ो नगरे काम आनेवाला एक कीमती मस्थर जिल्ला रंगनीला याहरा होता है। — चक्रम — वि० शीष्टी औद्धांबाला । फ्रीरोज़ी-कां॰ विजयः सफलता, भाग्योदय । वि॰ फीरीजे-

के रंगका ।

फ्रील-पु॰ [अ॰] हाथो । -खाना-पु॰ हाथियाँका अस्त-'बल, हस्तिहाला । -वंदाँ-वि० वर्ष-वर्षे दांतींबाला । व० शाधीदाँत । -पा-प० एक रोग जिसमें एक या दोनी पाँव सूत जाते हैं, इलापद !-पाया-प्र• जोड़ाई करके बनाया हुआ सीटा रोभा । -यान-पु॰ हाथीवान, महावत । फीली-सी॰ विश्ली-'रोवॉ वहत जोध अरु फीली'-प॰ । फ्रीस-क्षां ० (अं०) शिक्षा शस्त्रः प्रवेश-शस्त्रः टावस्त्र, बद्धाल वादिका मेहनताना ।

फ़ीमागीस्स-पु॰ यूनानी वैद्यानिक और दार्शनिक औ ·आत्माकी अमरता और प्रनर्जन्मका कायल था । फॅॅंकस-अ० कि० फॅबा बाना, भरम दोना, अलगा: नष्ट होताः व्यथं सर्च होता । पुरु देव 'फुकना' ।

फ़ुक्ती-सी० दे० 'फ़ुक्ती'।

फ़ेंकरना-अ० फ़ि॰ पुषकारना, फूत्कार करना !

फ़ुँक्याना, फुँकाना-मा कि फूँकने या जलानेका काम वराना ।

फुंकार-५० फुफकार ।

फ़ॅकारचा -व॰ कि॰ फफकारचा, साँपका गरसेमें बेंडसे हत छोदना। - -

फ़्रॅंकेया-प्र• फ्रेंकनेवाला । फ़ॅंदकी-सी० गाँठ: विदी।

पुर्देदना-पु॰ मूल, कन आदिका फूल या गुच्छा, हमा। पुर्देशिया-सी० शब्दा, पुरस्ता । फ़र्री*-की॰ बिंदी-'सारी छटकति पारकी बिल्सित देवी खिखार'-मतिरामः गाँठ ।

फॉसी-सी० होरी पश्चित । पुर-पुर सिंधी मंत्र पदकर पूजितेका शब्द: मुख्य का । :

फुआ-सी॰ पिताकी बहुन, बुआ। फ़आरार्ग -- प्रवास ।

फ्रक-पर्व सिंगी पशी !

फुकन्।-पु॰ मराना, मुत्राहाय; वही फुकनी । फुक्ती-सी॰ बाँस आदिसी नहीं जिसके छेरमें पूँड गाए

बर आगरो हवा देते हैं। फचडा-प्र॰ (दरी आदिमें) मुनाबरमे बाहर निकला हुमा

सुन या रेशा। क्रमला-पु॰ [अ॰] बचा दुआ अंशः सीठीः मैन। .फु.जूल-वि॰ [फा॰] क्यादाः वेकार, अनावश्यक !- वर्ष -वि॰ अनावश्यक व्यय गरनेवासा, अपन्यवी। -ग्राची

— स्त्री० शतावडयक व्यय सरना, **अप**प्यय ! कुट-पु॰ [सं॰] सॉपका कन । वि॰ फटा हुआ; स्टुरिडा [दि॰] निना जोडेका, अपेला; जी फिसीके साय मा किसी थेणी-सिक्सिलेमें न हो । -मत-प्र मतभेर ।

पुट-पुव [अंव] वाँव, पाद: लंबाईकी एक मार जी ११ वंद को होती है। -सोट-पु॰ पुष्ठके नीचे दी बानेशडी टिप्पणी, पादटिप्पण ! -पाथ-पु० सहको आह्र नगर-की पर्ता । – बाल-पुरु चमहेका बढ़ा गेंद विसरे बीतर रवहकी थैलीमें हवा भरी रहती है। उस ग्रंस हेना जाने

वासा रोख। फुटकर, फुटकल-वि॰ पुट, अकेला, अवग, मिन्न गे किसी क्षेणी सिलिसिलेम न हो। जिसमे वह तरहकी धीरी हीं। विविध: थोडी माश्रामें तोक्यर होतेवाली (विही): खदां। प्र• रेबगरी।

फुटका-पु॰ छाला, फुफोला; धान आदिका लावा। कुटकी-सी॰ छोडी अंठी, दूध आदिये जमे हुए कृणा गारी चीजका छीटा: एक छोटी चिहिया, पुरसी ! फुटेहरा-पु॰ मटर आदिका भूना हुना दाना विश्वकी

छिलका फर गया हो। फरेल-वि॰ दे॰ 'कड़'ल'।

फ़ह-बि॰ दे॰ 'फूर' (हिं०) । फ़हक-प॰ सिं॰ी एक प्रकारका वस्ते ! फुट्टिका-सी० (सं०) एव प्रकारका बस्त । फुट्टैछ-वि॰ बिसका बोहा व हो। शुटमे अलग (हतेवाना

(ज्ञानवर); इतमाम्य ।

फ़ुलकार-पुण् प्रकार है ... क्रुत्र्र~पु॰ [अ॰] प्रसाद; शरारत; घटना; हमती(ी

च्हाराची ।

.फुत्रिया, ,फुत्री −वि० फुत्र करनेवाला।

फ्रवंगमेंद-पु॰ [सं॰] हन्मान् 1 प्लय-पु॰ [मं०] तैरनेका क्रिया, तैरनाः उद्याल, कुदानः धोटी नाव, उद्दर्भ श्रपच, चांहाल; बंदर; भेडा; मेडक; राष्ट्र; कारंद्रव पशी; जलपशी; मछनी 'पकड्नेका एक प्रशास्त्रा जालः सीटनाः बढावाः जलकुवकुट, मुरगाबीः नागरभोधाः पाकडका पेडः दाल, उतारः शब्दः नदीकी बाद: एक मंबत्सर । -श~प॰ बंदरः सर्येका सारिधः

मेदफ: दिलीववा पेड । -शति-पुरु मेदक । -सा-न्तीर अस्या राडि। t

फ्लबक-वि॰ [र्स॰] उछस्ते, कृदनेवासा l पु॰ चाँहास: ग्रेडकः पावडका पेड्: रस्सी, तलबार आदिपर नाचनेवाला। द्भवरोड्ड-पु॰ (सं॰) इन्यान् ।

प्रधन-पु॰ [शं॰] तैरनेकी किया, तैरनाः उछल्नाः कृदमाः उद्दमाः महाप्रायमः दाल, उतारः धोदेकी एक

चाल । वि० दालवाँ ।

फरवाका-की॰ मि॰। नाव, भेला। फ्लविक-पु० [सं०] नावभे पार उतारनेवाला, माँही ।

फायित-पु॰ [मं॰] तैरमाः उप्रसमा ।

प्यविता(त)-वि०, प० (२०) उप्रसनेवाना । प्क्रचिट-पु॰ [अं॰] पानमें आकारकी रूकड़ीकी वह छीटी सरता जिसके चीदे भागको और दो पाये और नोकको और एक पेंसिल लगी रहती है और जी धीरेसे जैंगलियों रक्षतेषर रामकने सगरी है. जिसमे उसमें सगी हुई पेंसिस-री अपने आप शहार आदि बनने रूपने है (प्रेतविया) ! प्याध-विव [गंव] प्रसन्तंबंधी, प्रश्वतः प्रश्वतः बना प्रमा, प्रश्निमित । पुरु पाकद्या करू: पाकदके पेशीका समुदाय । घडाट-प॰ (भ०) इमारत बनाने, सेनी करने आदिके

बागरी अधीनदा द्वपदाः देशी क्यांगका नवशाः उपन्यासः बहाती, नाटक आदिका कथानक; दुर्शिशंथि, साबिदा । प्तान-प॰ [भं•] रिमी धननेवाली धमारतका नकशाः शगर, जिले भारिका वहे पैमानेपर बना हुआ जक्याः विशी किये जानेवाले कामदी योजनाः स्टीम ।

च्याय-प्र• [रां॰] वत्र आदिका उमहक्त बहुनाः उद्यालः इरानः दुर्दाः (गर्या निकाटमेपे लिए विभी तरल

परार्थकी) धानना । घरायन्-पु॰ [शं॰] बल साहिदा बमदद्दर दहनाः गोना ष्ट्रमानाः किनी बन्तुको पानीमें बोरनाः बाट, शैलाब ह धराविम-दिश [मंश] क्रियार क्यों पर भावा हो. थी

जनमें हुब गया थी। जन भारिने म्यास हुए बाह । धराषी(चिन्)-रि॰ [गुं०] उमहबर बद्दीबानाः चीनने-बाला, स्थाम बीनेबाला । [स्ती० 'प्राविनी' ।] पुरु पशी । प्याच्य-दि॰ [गं॰] गीता देने बोग्या जी उछाना जन्द । प्याशक-विक [गंक] (बद्र क्षत्र) भी बहदी परवर नेवार

धी जाय (देश) ।

क-देवनावनी वर्धमानाने क वर्गवा दिवीय वर्ष । संबद्धाः । केंब्रमीर्ग-न्यो॰ दे॰ 'दंशी' । trivia de i

बीव ब-सीव बाँदा भीता दुव्या हुन्दशा ।

फ्लास्टर-प ॰ [अं॰] सजन, फोड़े आदिपर चढाई जाने-बाली टेई जैसी दबा; चुना, फॅक्ड, सुर्सी बादिसे तैयार किया जानेवाला गारा जिसे दीवारपर उसे समतुङ और मध्ड बनानेके लिए लगाते हैं, पलरतर ।

प्लिहा(हन्), प्लीहा(हन्)-पु॰ [गं॰] यहन ।-(ह)प्र,

-दाञ्च-प्र॰ रोहडा पृक्ष, रोहितक क्या ।

च्छीडा-ची॰ [सं॰] तिही, बरवट: एक रीग जिसमें तिही वड जाती है। -कर्ण-पु॰ कानका एक रोग। -दाश्र-

पुण-इंबी-सी० दे० 'प्रीइश्व'।

प्टोहारि-प० भि०ी पीपलका पेड ।

प्लीहोदर-प्र॰ [सं॰] तिही रोग !

प्लीहोदरी(रिन्)-वि॰ [मं॰] जिमे हिही रीन हुआ हो। प्यविश्व-प॰ [मं॰] अग्निः रनेदः पर जलना, ग्रहदाइ ।

प्लत-वि॰ [सं॰] जन कारिसे व्याप्त, तराबोर: उएला हुआ: आवत, दहा हुआ: तीन मात्राओं हे युक्त (बर्ग)। पुण्तीन मात्राभीवाला स्वर् या वर्गः उठालः कटानः योहेकी एक प्रकारकी चाल; तीन माप्राभोंबाला ताल

(मंगीत) ! -शति-खी॰ उदालते या प्रत्येत आहते हुए गमन करना । प॰ सरगोश ।

प्लति-ग्री० [मं०] उएलने दुए गमन करना; उपान, क्दानः जल आदिका उमहत्तर बदमा या चारी और फैल बाना: हिमी स्वर या वर्गका तीन गात्राओं महित जवारित होनाः घोडेगी एक विशेष चाल ।

प्लप्ट-वि० [भे०] जमा हुआ, दग्ध ।

च्हेग-पु॰ [ele] बोर्र भवानक भेजामक रोगा एक भया-नक भेकायक होय जिल्ला निकटी निकल्यों है और बहुत

तेत्र नगार भागा है। ताङ्ग । च्हेर-पु० [अं०] पातु आदिका चिपरा, समन्त्र और प्रायः परावर मोटारेका द्रकड़ा, पड़ी। ताँवे आदिको वह चिप्ती पट्टी निसपर किसी प्रकारका हैया सुदा हो। भीने का चाँदीका प्याना या विशेष प्रकारको पट्टी की प्रश्रदीक नादिमें वाजी बारनेवानेको प्रस्कारको रूपने दी जानी है।

त्रवरी, रकारी; कोटी केने है कामका श्रीद्या । च्छीडणाम-पु [बं] बोरं ची होर और चीर चीरम चनुनरा, विशेषकः वर विशयरणे भाषण मा उपरेश विया जाय।

मंगः रेवने श्रेधनींपरका वद संबा केया मनुतरा जिल्हा धामने हेंन समती है भीर जिम्परधे होकर साम समयह भवार होने या उन्नमे उन्हरने हैं।

र्थाटिनम-पुर [बंद] मुदेद (गरी एक प्रतिद बहुमुख्य चातु को बदुत करी और प्रायः सन्द पातुकीने भारी

रोग्रे हैं। क्योत-पुरु [तीर] बारपर शीरों तानेवाली पट्टी। स्परा ।

थरोप-पुरु [रोरु] दस्य द्वीता, अलता; दाइकी दीवा । पडाँपण-दि॰ [मं॰] अवनेशामा । पु॰ श्रम्म ।

ं बोंडा नडु॰ प्रत्या दाना या भूगे जिल्ला रक्ष कार्याती वा साथा जाया = पर्रेट, इंदरा ! शुरू -- ब्रह्मा-अह

फ़ुटल-वि॰ [मं॰] सिला हुवा, विकसित; प्रसन्न । पु० फूछ। -तुवरी-स्रो० फिटकरी। -दाम(न्)-पु० एक वर्णमृत्त । - नयन-पु॰ एक तरहका हिरन; वडी आँस । वि॰ दे॰ 'पु.हनेम'। -नेम्र,-छोचन-वि॰ विसकी ऑसें इपेसे सिल रही हों। -फाल-पु॰ फटकनेमें स्प

या छाजसे निकलनेवाली इवा । पुरुत−पु० [मं०] इवासे फुलाना ।

फुछरीक-पु॰ [स॰] जिला, भूमाग; सर्प । फ़ुविल-स्वा॰ [मं॰] पुष्पित होना, खिलना ।

फुल्ली-स्त्री॰ दे॰ 'मूली'; फुलिया; फूलके आकारका कोई गहना ।

फ़्यारा - पु॰ पुश्वारा ।

फुल-स्ता० बहुत धीमी, अस्फुट आवाजन -फुल-स्ती० बहुत थीमी, साफ सुनाई न देनेवाली आवाज: ऐसे स्वर्मी मही जानेवाली यात, कानाकूसी । यु० फुप्युन्त । अु० -फुल फरना-सुनाई न देनेवाले स्वरमें धोलना । -से-महुत भीमी आवाजमें, खुवकेसे ।

फुसकारना#-अ॰ कि॰ फुफकारनाः कूँक मारमा । फुसकी-सी॰ विना भावाजके निकलनेपाकी भपानवास । फुसबा-प्र॰ फुचवा ।

फुंस पुसा-वि॰ अन्दी हुट जानेवाला, कमजीर ।-फुसपुसाना-अ॰ कि॰ धीमी, असुट आवात्रमें दीलना,

फुसपुम् करना । फुललाना-स॰ कि॰ भीठी वासींते वहलाना, मुलावा

देना, वहफाना । फ़र्सें - पु॰ [फा॰] दे॰ 'अफसें' । -ग़र-पु॰ जादृगर ।

फुहर - वि०, ह्यी वे 'फूहक'। फुहार-सी॰ नन्हीं-नन्हीं बूँदोंकी झड़ी, झींसी, जलकण (खडमा, पदना) ।

फुहारा-पु॰ वारीक भार या फुहारके रूपमें पानी कपर र्फेकनेवाला यंत्रः इससे निकलनेवाली वारीक धार ।

फ़ही−स्री० फ़दार !

फॅक-बी॰ होंडोंको मिलाकर सुराके मध्य मागसे जीरके साथ निकाली हुई दवा, दम, साँसः किसीपर मंत्रका प्रभाव डाक्टरेके लिए गुँहसे छोड़ी हुई हवा; गाँजे बादिका यश। सु॰ -निकल जाना-दम निकल जाना, सर जाना । -मारना-किमापर फुँककी हवा छोड़ना, फूँकमा । —सा−बहुत कमश्रीर, दुवला-धनला (बादमी) ।

फ़ॅकना-स॰ कि॰ दींठोंकी मिलावर मुखके मध्य भागसे इवा छोड़ना, पूँक मारवा; मंत्र पहकर मुखसे हवा छोड़ना: फुँवकर नजाना; फूँवकी इवासे प्रज्वलित करना, जलानाः भरम करना; कुदता करना (थातु); बरबाद करना; फैलाना । सु॰ फूँक ताप हालना-वहा देना, भरबाद बर देना । कुँक-कुँककर कदम या पाँव रखना-बहुत सावयानतामे, इर तरहके खतरेसे वचते हुए काम करना ! फुँका-पुर्व पूँक मारनेकी किया; गायके अनपर छमनेवाछी . दवाएँ लगाकर नलीसे पूँक भारनाः पूँका भारनेकी नलीः फोड़ा ।

फूँद-सी॰, फूँदा*-पु॰ दे॰ 'कुँदना'। -(द) फुँदारा वि॰ जिसमें पुँदना छगा हो।

फूँस-पु॰ दे॰ 'फून्र'।

फु-सी॰ फुँकनेकी बाबाज। फुई-खी॰ फुहार; फर्द्री । सु॰ -फुई ताल भरता है-

थोड़ा थोड़ा करके बहुत हो जाता है। फूट-खी॰ फूटनेकी किया; पकाका उठ्या, विगाह, विहोत। पुर एक तरहकी बकड़ी की प्रक्रियर फट जाती है। स -डालना-दिगाइ₁' विरोध उत्पन्न करना। -पहना-फुट पेदा होना ।

फुटन-सी॰ फूटकर अलग हुआ दुकता: शरीरकी संधिति होनेवाली पीड़ा १

फुटना-अ॰ कि॰ चीट या धका खाकर टूटना, मह होना फटना, खचा या सतहकी भेदकर गहर आना, तोइ वा फोइकर निकलनाः (शब्दका मुँदसे) निकलनाः स्रापः . निकम्मा हो जाना (ऑस, सकदीर); उगना, अंदुरि होनाः द्याखारूपमें नियलमाः खिलनाः अलग, निरुष होनाः विखरनाः विषयसे जा मिलनाः प्रक्रियो, दानी आदिके रूपमें होनेवाले रोगका प्रकट होना (गरमी, बीरी) रयाधीका रसकर कागजका दूसरी और निकल्नाः बोरीरैं दर्श होनाः फोड़ा जाना (उँगलियाँ) । सु॰ फुट फुटकर रोना-विरुख-विरुखक्द रोना ।

फुटा-यु॰ खेतमें टूटकर गिरी हुई वालें; संधियोंने होनेवाली पीड़ा। विक फूटा हुआ; खराव, विगड़ा हुआ। -(री) कींदी-जी॰ निकम्मी कीई। सु॰ -(री)भाँसम सारा-कई वेटोंमेंसे बचा हुमा अमेला वेटा, बहुत पारा वेटा । -ऑलॉ म देख सकना-देखकर बलना, देखना भी सदा न होना। -आँदौँ न भाना-अति गरिर होना, सनिक भी अच्छा न स्थाना। -कौड़ी (पासमें) म होना-कुछ न होना, विलकुल मादार होना। -(है) मुँहसे न बीलना, यास न करना-दिलकुल ही जीहा करना, एक बात भी न करना।

पृश्कार−पु॰ [सं॰] पूँक, फुफकार; साँपका कुफकारा विष कनाः चीत्कार ।

फुरकृति –स्ती० [सं०] दे० 'फुत्कार' । फुफा-पु॰ फुफी वा बुआवा पति ।

फुफी-सी० बापकी बहित । क्षुन्-सी० दे० 'कृकी'।

क्रिंक∽ते० केंछ।

पूर्वनाश्र–अ॰ क्रि॰ पुष्पित होना । फूळ-पु॰ भीधोंका जननेदियस्य या फडोत्पादक आ वी सुंदरता और सुकुमारताका मतीक बन गया है, खिली है कली, पुष्पः फूलकी शहका चेल-बूटा, आभूषण इत्यांती पीतल आदिकी घुंडी; बत्तीका जला हुमा अंग्राहते कुछका दागः छियोंका मासिक स्ताव, रज्ञः गर्माश्रमः श्वदाहके बाद रहनेवाला अस्थि अवशेषा मुसलमानीन तीसरे या पाचर्वे दिनका फातिहा; सारः पहली बार सीवी हुई चराक ताँचे और रॉगेंके मेलले प्रस्तुत एक मिश्र पातुं। धुटनेकी गोल इड्डी। क सी० फूलनेका भाव, उनक् भानद ।—कारी-स्था० वेल-बूटे बनाना, गुलकारी ।-गोनी -स्तां वोधीका एक गेद जिसका फूल तरकारीके हरने खाया बाता है। -झरीश-खां० दे० 'पुरुवहां'। होए-

गर्व । -सर्वी-सी० दे० 'फर सन्वर्वे ' 1

फाल-पर् अर् अन्यह, दयाः विधाः महत्ता । फर-पु० (सं०) शॉपका फैला हमा फनः धर्न। मी० िहिं। किसी चौड़ी, कड़ी, इसकी तथा पत्रही चीवपर कापाल बरने अथवा उसके हिमी दसरी कड़ी बस्तवर विरत्ने या जोरमे दिलनेसे सरक्त दोनेवाला शब्द: लक्री-शॉप आदिके फरमेंसे सराव होनेवाला डाव्ट 1 -बर-सी॰ 'पर' ध्यनियी आपश्चि 1 -से-अति शीध-

सरकाल । फटक - पुर रफटिक, किलीर । स॰ तत्काल, तर्रत । फरक्त-मी० अस शाहि फरकनेमे निकलनेवाला अधारा

क्षा मारहीत प्रदार्थ ।

फटकसा-पुर गुलेलका फीना विसुपर रसकर गुलता फैंका जाशा है। स॰ जि॰ सप सारिके द्वारा अन्न आदि साफ करमा, शाहमा: • इस प्रकार हिलाना कि 'कट फट' शब्द सापश हो। ग्रेंकता, चलाला । अ॰ क्रि॰ आलाः चल बानाः पर्वेचनाः प्रक होताः तप्पदानाः अभ करना । स० -पछीरना-अप्र आदि खुप वा छात्र द्वारा साफ करनाः भरटी तरद देखना-भारुमाः परसमा (छा०)। -(मे) देना-आने देना।

फटकरना#-स॰ कि॰ फटकरा, साथ बरनाः फेंद्रना ।

फरकरीं - ली० दे० 'फिटबरी'। फरकवाला-स॰ हि॰ विशीकी परवनेमें प्रवत्त बहना.

दिसीम प्रकारिका काम कामसा । फटका - प॰ धनियेदी धनकी; काम्यके गणने शहन मृदिना, निरी नवारंती: तहफ्ताहट: माहक: विदिधींची

प्रशांकी लिए पूर्व हुए पेटमें रासीके सहारे बाँधी जानेवानी ककरी जिसे दिमाहर 'फर-फर' चम्द सरदत करने हैं। पटकाता - ए० कि ० देवनाः पटकवानाः पटकटानाः ।

फटकार-मी॰ एटकारनेकी किया दा मानः विमोदी स्वित बर्गी हा समया तिरासार बरनेचे किए कोचने आहेशारी दश प्राधेशको दशे शतः कानत-मनामतः।

भारकारमा-ग॰ कि॰ दिमीको एक्टिय बरने या जसका तिरस्टार बरगेदे लिए हीप्पर्वत क्राी वार्ने बहुता, लामक-मकामन बरमा: हारहा देशर हिनशाना वा राखा रखना (मृद्रिया प्रदर्शना); दशर्थन करनाः (रपता पालारमा): ववहेरी मात्र करने ममय पालर मादिवर परवासा, पाल्याः व वें हताः व धनानाः प्रशाह graff f

षाटविष्यारं चपु० एतः प्रशासका विष् १

फाटकी-मी विशिमारका पेनादी हुई चिहिन्ती कारनेका

षद तरहरत सारत दे॰ "काहर" ।

परना-म॰ प्रि॰ दिगी प्रदार्थ दवाव दा वापातने दिगी रापुरा दो या करिय संदोने सिमन्द दो जाना या जसने दशार पर आना, विशीर्ष होत्या, किया देशी या अधीनी भी हरे गंदीवने दिनी बन्तुमें दराह यह जाना वा हमहा कोरे माग सनम हो जानाः आवादादे क्याने कीते कुछ चार्वश रिक्टरिय है। बाबा (देवे-बारल बाटका बंदर बार्ड घरमारे पूथर हो जाता युच आहित अनु शहर है विष्या कीना कि प्रस्ता क्षत्रामा गर्मामने अन्य हो ।

लाव: किसी बस्तकी अधित्रना द्वीना (प्रशासि साथ): घोडेका मवारके आउँडाके विरुद्ध चलना ।

फटफटाना-स॰ क्रि॰ किमी वस्तरी 'पटफट' ग्रस्ट वस्पन करनाः वक्रवास करनाः दीइ-धप करना । अ० क्रि.० 'पाट-धर⁹ शस्त्र होता ।

फटहा -वि॰ फटा हुआ: अंट-वंध वक्तीवासा ।

करा-सी० सिंगी साँपरा फनः दौनः एल । वि० हिंगी जो फर गवा हो। जिसमें पराव या दरार हो। गवा-गजरा। प॰ हेट्टा-(टी)आधारा-सी॰ मराया हुई साराज।-(टे)-हाल-वि॰ जिसके पास कुछ न हो 1-हार्सी-म॰ सक्रि-चनताकी रियनिमें, मफलिमीसी दालनमें । श० (विसी-के)-(टे)में पाँव अवाना या देगा-जान-बराकर किमीके दाराहेमें पहला, किमीकी यहा अपने मिर लेना ।

फटाठा-प॰ 'पट'दी बलंद भावामः 🕇 परासा । फटाटीच-४० मि॰ी साँवटा कर पौलाता, प्रतका पौलाते।

फटाटोपी(विन)-प॰ भि॰) सीप ।

फटाय-पु॰ घटनेकी क्रिया: घटने वैसी पीशा घटनेके कारण परी हुई दरार आहि।

फटिक-प॰ दे॰ 'रफ़हिक'।

फटिया-स्वी॰ एक तरहरी शहाब जो जी आदिके गामीरसे बिसा सीने हैं वार की जानी है।

फट - न्ही॰ [मं॰] एक अल-धंव (तं॰); एए अनुब्रुए शहर बिसटा प्रवीग तथ्में अपमर्पण, वरम्याम, अंतरवाम और धार्यपात्रके प्रशासनः श्रीमारिनके सामारन धारिने ਦੀਆਂ है।

फद्रा-प्र॰ चीरै हुए भौसका लेबा उपना ।

पद्मी-सी० प्रदेश पद्मा (फाइ-मी॰ रायस दौरा जमादियों के सभा रोस्तेका स्थात. जपका अनुस बद्धानमें यह स्थान अहाँ बैटकर बद्धानकार बाल देपना है। पंस मादिके 'हिम्मेसे आयह होतेशमा शब्द: दक्ष, परित । पुरु मारीहा इरगा: वह गारी बिरायर कोय यही रहती है, यहन । -पाय-सी० है। वा अधिक बार वायत्र 'यार' शान्ता 'सत्त' शान्त्रकी अभिन बार बार्क्स : न्याज-प्रश्नामा रीमनेवामा, नयारी । -बाली-ब्लं पद्शायस याम, जुमा शेलता । म॰ -रम्प्रनाः-स्याना-दोर नगाना ।

कटक-छो॰ पहरतेश किया या माह, ग्रंतम, रपुर्य ।

याद्यान-स्थेष देश 'पापप्र' ।

फडरना-४० कि॰ १६-१६-१३ या संगानक शंतावतान दोमा, योहा योग देशित दोना, स्वीर के दिया अंग या भागका श्रह-सहदर गतिपुत्त होता या विवदना और बैन्नाः गुरित होनाः दिनगञ्जना दागतिपुत्त होना । अ॰ ऋषक अटबा~मन्त्र शेरा ध

पहरतना==== कि सिमेदो पहरतेमें प्राप्त करना:

राह्य हा प्राप्त बहुना (१९०) ह

कदनवीय-१० महारोधे शहरतप्रदेशोय वस सद्भार । बाह्यबामा-मन प्रिन दिनी वन्तुने 'यह प्रत्र'हान्द प्रमुख बहनाइ देश भादिको हम प्रकृत दिलाला हि आसे , चार-वर्षे शब्द रूप्त्र हो, करवरामा । सन (हरू , ब्यूहन्द र चन्द्र होताः प्राकानाः वशुद्ध होतः । 👊

49-8

फेरना=स॰ क्रि॰ प्रमाना, दिशा बदलना; सौटाना; बापस हेना; बदलना; पल्टना; धुमाना, भाँजना (मुग्दर, प्टा); क्रम बदलना; अभ्यास करना; चाल सियानेके लिए चंद्रर देना, निकालना (धोडा); इस बलसे उस बल दहना; उल्ट्रमा-पल्टना (पाध): अपना (माहा): पोनना, हेप बरनाः फिराना, धीरे धीरे इधर-उधर हे जानाः प्रचारित करना (होंडी) ।

फेरच-प॰ [मं॰] सियार: राक्षम । बि॰ धर्त: हिस्र । फेरवट-स्नी॰ धुमान, पेच; अंतरः † टूटे खपरैलोंको निकाल-कर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया, फेरीरी !

फेरबा-पु॰ तारको कई दार रुपेटकर बनावा हुआ सोनेका एहा ।

फेरा-प्र• रुपेश चौगिदां घुमानः परिक्रमा, चकर, भाँवरः बार-बार आना-जाना, गदतः फिर आमा, पनरागधनः (मिश्वको) छोटा देना। -फेरी-सी॰ वलट-पहटः प्राम बदलना। **मु॰-देना-**भिशुकको बिना <u>क</u>छ दिये लीटा देना; चक्कर देना।

फेरि#-अ० फिर, युनः।

फेरी-की॰ करा, चहर, गॉवर: गरत: खुर्राफरोशींका सौदा वेचनेके लिए गली कूचोंमें घूमना; रस्तीपर एँटन देनेकी चरखी। -बाला-पु॰ फेरी करके, पुम-फिरकर चीनें वेचनेवाला । सु०-एदना-मॉनर होना ।

फेर-प॰ [सं॰] सियार ।

फेरोरी!-सी॰ इटे सपरेंसोंको निकालकर उनकी जगह नथे रखनेकी किया।

फेल-प्र॰ [सं॰] ४च्डिष्ट, जठन । थि॰ अं॰ो विक्छ, नाकामयावः (परीक्षामें) अनुत्तीर्णं।

फ़ोल-पु॰ [झ॰] काम, कर्म; दुष्कर्म; क्रियापद (ब्या॰)। -मृत्रअही-पु॰ सर्व्यक किया ! -छाजिस-पु॰ अव-मेंक किया।

फैला, फैलिका, फेली—की॰ [ਜ਼ੰ॰] ਵੋ॰ 'फेल' (ਰੰ॰) ।

फ्रीहरिस्त−स्था० दे० 'फिडरिस्त'।

र्फेसी-वि० [बं॰] संदर: भइकदार, जिसपर काम किया

क्रीज - पु॰ [अ॰] लाम, मलाई । ~(ज़े) आस-पु॰ आम कोर्गी, जन-साधारणकी सलाई, क्षीकहित ।

फ्रीज़ी-पु॰ अजनरके दरनारका सुपश्चिद्ध विद्वान् अनुस्कैत पीनी जो अनुलक्षकका छोटा माई था और जिसने महा-भारतका फारसीमें उल्या किया है

फ्रीयाज – वि० [अ०] फ्रेंत पहुँचानेवाला, उदार, दरियादिल । फ्रेयाज़ी-र्खा॰ उदारता, दरिवादिली ।

फ़ीर-पु॰ बंदक, तमंचे या तीपका दागा वानाः इनका एक बार दगना (लगातार चार फैर किये)।

पेन्ड*-प॰ पेल, काम; सेल; नसरा, बनावट; राश्चिः पैलाव, विस्तार ।

फैलना-अ॰ क्रि॰ चिपिक रथान धेरनाः, आकारका बदनाः पसरना; ढीरका बढ़ना, मीटा होना; अधिक दूरतक जानाः प्रसिद्ध या प्रचारित द्दीनाः वृद्धि द्दीनाः निखरना, पूरा तनना (हाथ फैलना); मचलना; इठ करना ।

फॅलस्फ-पु॰(यू॰) इस्ती; महार् । वि॰(इ॰) फज्हसर्च ।

कैलस्की-सी॰[बृ॰]चालादी, महारी;[हिं॰]कृत्त्स्वी। फैलाना-स॰ फि॰ पशारना, विस्तार करना, विद्यार आयोजन करनाः विसेरनाः बदानाः श्रोलनाः तारतः प्रचार करनाः प्रसिद्ध करनाः हिसावको परी प्रक्रियः दिस्ताना, प्रस्तार करना (व्यांत फैलाना): गुणा भागते जाँच-षहताल बरना ।

फैलाब-प॰ लंबाई-चीडाई: विस्तार, प्रसार: प्रचार ! फेंडावट−सी॰ फेंटाव ।

क्रीदान-पु॰ [अं॰] हंग, तर्न; क्यारे आदिका प्रचटित हंग, वजाः प्रधा ।

फ्रीसल-पुरु [अर] निर्णय, निष्टारा (करना, होना)। फ्रीसला—पु॰ [अ॰] निर्णय, निवटाराः निश्चय । सु॰ =

सुनामा-मुक्दमेश निर्णय सुनाना । फॉॅंक-पु॰ तीरका पीएंटी श्रीरका विरा ।

फॉॅंका-पु॰ लंबा पोला चोंगा: फॅंका ! फीँदा#-पु० दे० 'कुँदना'। कॉफर्-वि॰ पोलाः निस्मार । प्र॰ छेद, खाली जगर

क्रीकी।-स्तं व्यामाः फकनीः छँछी। फोक-पु॰ फुबला; संद्रीः भूसी; नीरम पदार्थः एव पुर

सदमप्रयी ।

फोकट-वि॰ मृत्यरहितः निर्धेवः निःसार-धिंह वी और टीर दिखाव<u>ड</u> अपनी फीकट दान'-सर। -का-

मपत्त । -स-मपत्तमे । फोक्छा#-पु॰ छिलका । फोकली!-खी॰ दे॰ 'फोरहा'।

फोका#-पु॰ बुदबुदा । फोट#-पु० दे० 'स्फोर' ।

प्रोटक क-वि॰ दे॰ 'फोफर' । फोटा-पु॰ दिशी, टीका-'कलाट पावक सर्थि, टिवार फोटा'-विचापति (

फोटो-पु॰ [बं॰] छायाचित्र, अगस । -ब्राफ-पु॰ छारी; वित्र । -आफर-यु॰ फोडी, छायावित्र छतारनेवाही अदास । -प्राफी-की॰ छायाचित्र उतारनेकी छुठी।

फोइना-स॰ कि॰ सोइना, दुवहे करना; विदीर्ग कर^{ना}। कड़े छिलके, स्वचा आदिको सोहना (फीड़ा, नारियक)। शरीरमें जगह-जगह फोटे या याव पेदा कर देना; ग्राखी निकालनाः छेद करना, सेंध लगाना (दीवार): सर्ति अंचा करना (ऑर्रो); बहदा, पुस्तकावर अपनी और हर लैना (मबाह); प्रस्ट करना, स्रोल देना (भंडा)।

फोड़ा-पु॰ दरीरमें किसी रथानपर होनेवाला पीड़ाड़ार क्रीब, जिसके पक जानेपर भीतरसे पूर्व नियलता है, मन

वड़ी फुंसी । फो**टिया**-सी० छोटा फोड़ा !

फ्रोता-पु॰ [अ॰] बैली, खोप; अंदक्षीय; हगान, पीती कमरबंद या सिरबंद (?)। - (ते) दार-पु॰ सर्वांनी तहबीलदार । मु॰ -भरना-लगान देना । फोनोग्राफ-पु॰ [अं॰] एक यत्र जो प्वतियो अंकिन ग्रा बा छाएउडी चृथ्यिमि भरता और छुंजी देवर चृहियोंकी युमानेपर धुनः वसे वसी रूपों प्रकट कर देता है। पतकना-अ० क्रि॰ 'फन-फन' शब्द बरनाः मनसनाहरके साथ चलना 1

फनकार-सी० 'फन'की आवात । पत्नग्रना - अ० कि० कला फूटना, पनपना ।

फनगा - पु० फतिया; अंकुर, कहा ।

पतना!-अ॰ मि॰ सामदा आरंग होना, ठाना जामा ! फन फन -सी० दी या अधिक नार उत्पन्न 'फन' श्रन्दः

'पान' राष्ट्रकी आवृत्ति । फनफनाना-अ० जि.० 'फनफज' शब्द करनाः तेजीसे हिस्सा ।

क्तम्स-पु॰ पनस्, करहरू ।

फ्रमा-सी० [अ०] विमाश, अरितस्व नष्ट होना, मिरनाः भृत्यु, मीतः, परमारमा और जीवारमा या उपारय और उपासका अभेद दोना (स्०) । वि० नष्ट, वरवादः भृत ।

-फ्रिला-वि॰ देश्बरमें सीन ।

फनाना-स॰ कि॰ आरंग करनाः तैयार करना । फलिंग =-प्रव सर्व, नाग :

फर्लिट=-प०दे० 'फर्गाहर'।

पानि =-पु० दे० 'पाणी'; रे० 'फाण' । -धर-पु० सॉप । -पति,-राज-पु॰ दे॰ 'फल्पिति'।

फनिक, फनिस्-पु॰ सॉप; फनिया-'अब करि फनिय मूंग के करा'- ए०।

पानियाला-पु॰ साँपः † सानी रूपेटनेफे कामकी करपेडी एक रूवडी, रूपेशन ।

फ्रामी = - पु० दे० 'फर्गी' । स्वी० दे० 'फ्रम' ।

फन्स॰-पु० दे० 'प्रानृत'।

पाणी-की॰ पचरा कपना मुननेका एक औत्रार, राछ । थायक-भ्यो० वृद्धि, बाद ।

परपक्ता-अ० कि॰ बडना, पुष्ट दोना ।

फारमान-दि॰ बदुत मीटे और भद्रे द्वरीरवाला ।

पापकना-भग्नि वत-रकत् रोना ।

फफका - पु॰ हमदा, फक्षेत्रा ।

फफदनार्ग-भ॰ कि॰ गोरर आदिका विकारविद्योपके कारण बहर फैनना दार भादिका इदिकी शाम होना या

फफसार -पु॰ फेमहा । वि॰ जो भीतरमे साली हो, पीलाः म्बाहरदिया प्रीका ।

पार्टेड-भी० हुइसी ।

भारतीर-भी । गुरही होते विमने नियाँ शाकीनी शहर बांपणी है, भीति, नारा; चल, सहनी आदिपर बर्मानों मा भीकते सप्ता अमनेदासी कार्रदी तरहवी महोद बस्तु, કુશ્યો દ

प्रकोर-पु॰ एक नरहरा थंतनी व्याच ।

भारतेला-पु वनते, रगह बाते बादिने शरीरवर होते-बाला बमाद क्रिएके भीतर भेष का बाबी अश बहता है। रणमा, शाम्या, आरमा । गु॰ (दिलडे)-(हेर)कोहना **=**वणी केरी शुकासा ।

भाषद्यान्यक (६० देव 'चवदना'द मोश होता । च पत्री लच्ची । प्रत्यानु मृक्षः प्रतिद्वा केली । बाल की दिवीहरू में द होर परे, पुरेशो बात ! मुक - बदामा या कराया । परवर्षी-दिक परेशो, पायदात्र ।

—जुरीली बात कदना, जुरकी लेना ! फबन-सी० फननेका भावः शोभाः सीदर्य ।

फयना-अ॰ कि॰ शोमा देना, सतना, भला मासम

फवाना-स॰ कि॰ ऐसे स्थानपर लगाना जहाँ सजे या संदर जान पड़े ।

फवि॰-स्रो॰ शोमा, सुंदरता, एवि ।

कवीळा-वि॰ शोमा देनेबाँला, सबनेबाला, सुंदर । क्र**रंग, फ़रं**ज−पु॰ (फा॰) दे॰ 'क्रिरंग'।

फर-क्षु॰ दे॰ 'फरु'; दे॰ 'फर्स'; विष्टावन; तुद्ध, रण-'फर्में फते बंदेलन पार्र'-एश्रमकाशः [सं॰] फलक दाल ।

करक-पु॰ दे॰ 'जर्त । क स्ती॰ दे॰ 'कहक' । फरक-वि॰ [अ॰] तेज,तेज वलनेवाला । मु॰ (घडीका)

-होना-चाल बितनी चाहिए उसमे तेत होना। मार्का भागेका समय बताना । फ़रक़-पु॰ [अ॰] दे॰ 'प्रदां'।

फरकन==सी॰ फरकनेकी किया या भाव।

फरकना = - अव कि ० देव 'पाइकना' ।

फरका॰-पु॰ वेदेरपर रखा जानेवाला शुप्तरः दृश्यानेवर लगाया जानेवामा टडर-'चोरी करन उपारत फरको'-

सर । परकाना=-स॰ कि॰ दे॰ 'पहचाना'; अकृत बहना ।

फरकिच्छा-पु॰ गाधीमें हरसेके बाहर परहोंने लगाया जाने-बाना भेंटा जिसके सहारे उपरका हाँचा बनाया जाना है।

क्रसाम-५० परमानाका रहनेवाहा । फ्रर्गाना-पु॰ मुस्रिशनके चनक प्रवानंप्रका एक सना

जो बादरका पैतृक राज्य था। करका-दि॰ को जुडा न हो, गाप, हुद्ध । -हुँ-सी॰

स्पारं, शुद्धना ।

फरपाना!--म॰ कि॰ गाफ करनाः हाउ वरनाः भादेश देना १

क्रस्त्रंद-पु॰ (का॰) देश t

क्रार्जेटी-मी० पुत्रभाव, बाय-वेटेका माला ।

फ्रस्य-सी॰ [श॰] दरार, शियाफा पैनार । ए० १० 9.37

प्रशासनी-भी॰ दुवियानी। प्रस्थाना-वि॰ (या॰) बुद्धियान् ।

कर्वा जिल्ला - पुरु देश 'कर्यद' ।

प्रसानिय (कार) शतरंत्रहा वशीर भी सबसे महत्त्वहा मोहरा दोना है। -बंद-पु॰ पैरमके बोरदर पहनेतानी दशीरकी पादा वजीरके जीएपर देश हुमा भीहरा । सु -बनमा-पेरण्या बनीरके शामेंगे पर्वेषश्र बनीर बन आजा ।

प्रवर्ता-पु॰ दे॰ 'दर्यः' । वि॰ 'दर्यः' । प्रस्तृत-वि० (था०) व्यति बृष्ट, प्रस्ट । क्ररब-भी दे करें।।

प्रारद्धा~पुरु [४३०] कानेश्चरण दिल, ६५ । क्षाता॰-४० (८० दे॰ 'इन्सा' ह

चार्च्य-पुरु दलकाराः वरेद, दर्दन्ये ३; अस्तरः ।

थॅंटवाना-स॰ क्रि॰ बॉंटनेका काम इसरेने कराना। थॅटवारा-पु॰ बॉटनेका काम: विमाजन, अलगीता। र्यटा-पु॰ पान आदि रखनेका उद्या । वि॰ छोटे कदका । बॅटाई--स्त्री॰ बॉटनेका कामः बॉटनेकी डजरतः जमीन बंदी॰ बरतकी यह रीति जिसमें मालिककी लगानके रूपमें उपजका नियत भाग मिले, यटाई ।

यंटाधार-वि० चीपट, सत्यानास (कर देना) । चेँदाना-स० क्रि॰ बरवारा कराना; अपना दिरसा अलग बरा हेना; द्यामिल, दारीक होना ।

बॅटावन ≠⊸वि॰ ६ँटानेवाला ।

वॅटेया†-पु० वेटानेवाला । थंडल-पु॰ [अं॰] छोडी गठरी, पुलिंदा; गहा, पूला। घंडा-पु॰ अरुर्देकी जानिका एक बंद जो सरकारीके काम आता है। वही बसारी । वि० पुच्छद्दीन ।

बंडी-सी० मतुही। बगलबंदी ।

थॅंड्रेर, बॅंड्रेरा' -पु॰ छाजनके बीचोबीच छगाया जानेवाला बहा जिसपर ठाटका थोडा रहता है।

बेंदेरी-खो० दे० 'वेदेर'।

बंद-प॰ [फा॰] वॉथ, मेंड; केंद, वंधन; विरद्य, वॉठ; अंगों॰ का बोड़: जंजीर; सिला हुआ कीता जिसमें कॅगरसा, अँगिया बादिके पत्ते बाँधते हैं, तनीः कुदतीका वेंचः युक्ति, खपाय; पाँच या छ मिसरोंके उर्दू-फारसी पथका उकहा: स्वी, किहरिस्तः कागजका क्ष्वा द्वकषाः काराकी चपटी चूडी । वि॰ रका हुआ, वेंधा हुआ; कसा, जरुहा हुआ; भरा या पकता हुआ, फैद: बुंडी-ताला लगा हुआ, शिदा हुआ; जी खुला न हो, जी चलता न हो; जिसकी गति: किया रुद्ध हो। (समासके अंतमें) बाँधनेवाला (नालबंद)। -गोभी-छी० करमकल्या । -धंद-पु० जीह-जोह, गाँठ-गाँठ (इटना) । —बान#—पु॰ कारागास्का रक्षकः जैलर । –साल-छा॰ बंदीगृह, फैरखाना । सु॰ –बंद डीले कर देना-थका देना, परत कर देना ।

र्थदगी-छी॰ [फा॰] सेवा, चावतीः यंदना, आराधनाः नमस्कार, प्रणाम । मु॰ -कबृष्ट होना-प्रणाम, बंदना

रवीकार होना ।

वेदन-पु॰ दे॰ 'वंदन'; ≉ सिंद्र; रोली; वंदनवार ।. ः बंदनता-स्ती॰ 'बंदनीयता'। . र्यदनवार-पु॰ सुंदर ५सी, पृ.की आदिकी झालर की मंगल-अवसरीपर दरवाने, मंटप आदियर बाँधी नाती है।

बंदना-स्त्री॰ दे॰ 'बंदना' । स॰ फ़ि॰ बंदना करना, प्रणास

र्धदनी-सी॰ सिरपर पहननेका एक गहना, सिरवंदी । 🛎

वि॰ भी॰ वंदनीया (समासमें)।

र्यंदमीमाल-सी० पेर्शतक सरकनेवासी माला। ' यंदर-पु॰ एक स्तनपायी पशु निसकी कुछ वार्ते मनुष्यसे मिलता है और जिसमें बुद्धि बुछ विकसित होनी है, मर्बट, कपि । - खत-पु॰ 'बंदरका थाव । - घुडकी-स्ती॰ महत्त टरानेके लिए दी जानेवाली धमकी। अ॰ -का धाय-वह धाय जो कभी सूखे नहीं (बंदरका भाव अव चुसने लगना है तो यह सुभलाकर उसे छील देता है)। थंदर-पु॰ [का॰] बहामके रकने ठहरनेकी जगह, बंदर-

गाइ। -गाह-पु॰ समुद्र-किनारे वसा हुआ नगर उसे जहाज ठहरते हों, पोर्ट ।

वैदरिया, वैदरी-की० मर्वटी, बानरी। बंदा-पु॰ [फा॰] सेवक, दास; यशवर्ता (बका दित दिखानेके लिए अपने आपको कहता है)।-ए.सुरा-पु॰ सुदाका वंदा (साधारण आदमीका संवीधन)। -ण् वेदास-पु॰ वेदेने-कीडीका गुलाम। -कादा-पु॰ सेवबका बेटा, गुलामजादा (वक्ता नमनावश अपने बेटेग्रे

कहता है) । -ज़ादी-सी॰ सेवककी बेटी, गुलामवारी। -निचाज्ञ-वि॰ धंदेपर अनुग्रह करनेवाला (सम्मानप्त्र संबोधन) । -नियाजी-सी० कृता, अनुग्रह ।-परश्-· वि॰ वंदेका पालन करनेवाला (सम्मानसूदक संबोधन)।

थंदारु-वि॰ दे॰ 'यंदार'; पूजनीय, बंदनीय। वंदाल-पु॰ देवदाली ।

वंदि - सी० [सं०] वंधन, वेद । पु॰ हैती; चारण ! - होर* -पु॰ दे॰ 'वंदीछीर'।

थंदिरा-सी० [फा०] वॉथनेका भावः रोक, प्रतिकंशः गाँक य्ययोजना, रचनाः उपाय, पेशबंदीः साविशः। बंदी-खी॰ [सं०] केंद्र; [हि॰] सिरमा एक गहना, नंतीः दूकानी, कामकात्र शादिका बंद रहनाः [फा॰] गौरनाः र्वेद करनाः कैद करनाः बाँदीः लगतः। -प्रामा-घर-

पु॰ केटलाना । -छोर#-पु॰ बंधनसे धुरवानेवाना। −वान*-पु॰ कैदी।

वंदी(दिन्)-पु॰ [सं॰] चारण; वैदी। बंदूक - की॰ [फा॰] एक प्रसिद्ध आग्नैयाख जिनमें हरूगें के बुंदेमें कोदेकी संबी नहीं हगी होती है और उपने गोली भरकर बास्टकी सहायतासे दागी जाती है। -धी-पु॰ बंद्रक चलानेवाला सिपाधी। सु॰ -छति-याचा-भरी हुई बंदूककी छातीसे लगाकर निशान वाँथना । -दागना-वेद्य चलाना ।

धंदायां –सी० दे० 'बंदूक'। '' बँदेश-मा॰ दासा, बाँदी।

यंदोवश्त-पु॰ [फा॰] मांथ, इंतजाम; अमीनका प्ररेश खेतका लगान टहराकर किलाको जीतने बीनेके लिए देना जमीनकी नाप और खगान ते फर्नेका काम, 'हेरिक' मेंट' ! -अफ्रसर-प॰ बंदीवस्तका दाम करनेवाले मह कमेका प्रधान अधिकारा ! - इस्तमरारी-पु॰ आयी भंदीवस्त ।

र्थंध-पु॰ [सं॰] बंधनः बॉधनेका साधनः बाल बॉधनेकी चीटी; जंबीर, बेड़ी; बॉध; चैद; गाँठ; पकड़ना, बॉबना निर्माणः व्यवस्थाः संयोगः पट्टाः सामंत्रस्यः प्रदर्गनः जीवका बंधन (मुक्तिका उल्टा); परिणाम; अंगन्यापः स्नायुः शरीरः अधिका एक रोगः रिका कोई (मुस्य) मासनः वृंधक रती हुई वस्तु । -करण-पु॰ केंद्र करना। -संब-पु॰ पूरी सेना (जिसमें उसके सारे अंग ही) -मोचनिका:-मोचिनी-सी० एक बोगिनी I-स्तंभ-पु॰ हाथी अदि बॉधनेका लुँडा ।

बंधक-पु॰ [सं॰] बाँधने, पर इनेवाला; रसी; वाँधा गिरनीं अंगन्यासः बादाः भंग बरनेवालाः संभनः कैरः विनिमय ! बंधकी-सी० [मं०] पंरवली; वेरवा; हरितनी; बंध्या सी।

फलाकना-स॰ कि॰ एडाँग मारकर पार करना ! ` -फलाकांसा-सी॰ [मं॰] फलकी कामना I फलागम-प्र•[मुं•] फल आनाः फल आनेका कारुः शरद्

ऋतुः स्थानस्तुनी वह अवस्था जिसमें फलकी प्राप्ति होती है (ना॰)।

फलाइप्र-वि॰ [मुं॰] फलेंमे भरा हुआ । फलाइया-मी० [६०] संगठी बेला। पालातीं चप्र देश 'अकलातन'।

फलाइन-बि॰ [सं॰] फल-मश्क । पु॰ तीवा । फलादेश-पु॰ [सं॰] फल कहना, विशेषनः ग्रहादिका ।

फलाध्यक्ष-पु०[सं०] सिरनी; पर देनेवाला, ईयर; फलॉ-का अध्यक्ष ।

फलाना-वि॰ दे॰ 'पलाँ'। [सी॰ 'पलानी'।] स॰ कि॰ फलनेका कारण या प्रेरक होना ।

फलानी-मी० मग ।

फलानुर्यंच-पु॰ [सं॰] फली वा परिवामीका कम । फलानुमेय-वि॰ [मं॰] जी फलमे जाता जा सके। फलाम्बेची(चिन्न)-वि० [मं०] फलका आकांकी । पालापेक्षा - सी॰ [म॰] पानकी अपेक्षा, पालाक्षा ।

फलापेत-वि० (सं०) फल्हीनः अनुत्यादकः।

फालाफाल-पु० (००) कर्म विदीपका हामाहाम या दष्ट-अनिष्ट पुःच ।

पालाम्ल-पु० [मं०] राहे कलीवाला पेश; अम्लवेतः इमला। -पंचक-प्• धेर, अनार, विषाविल, अम्लदेन और विजीताका समाहार ।

पाछाब्लिक-वि॰ [सं॰] सर्टे प्रश्ने बना हुमा (परार्थ)। पु॰ इमनी भारिकी चटनी है

फलायोपित-स्वी० [मं०] शीग्रह ।

फानारां -पु० फनाहार ।

फलाराम-पु॰ (शं०) कशंका दाग ।

पाराधी(धिन्)-पि॰ [गे॰] फल्दी सामना दरनेदाना । प्राक्षादिन, ,फ्लार्सन-पु॰ [अ॰ 'ब्रहेनेड'] इह नाइदा

गुनायम कशी वापशा फलादान-वि॰ (११०) फलमोडी । पु॰ तीवा ।

फलाशी(शिन्)-दि॰ [गं॰] फल शाहर रहनेवालाः पट्टाहारी ।

पारासंग-पु॰ [गं॰] क्यरे प्रति आगस्ति ।

फलारक-(वर्षां) प्रत्ने भागति हरानेवाना, पत-पणासय-पु॰ (वं॰) दास, सपूर बादिने बनावा हुआ

WHEN !

पारप्राथ-प॰ [गं॰] सार्द्यनका पेड ।

पमादार-पुर [तंर] पमजूमका भारत । दिर एक शाहर रकरेदाला ।

काराहासी(दिन्)-दि॰ (र्थ०) कमाहार वस्तेवामाः दूध भारित लिमिन, अधरदित (बल विहारे) ।

महिल्या (६१०) यह प्रशासी कारणी ह स्थित-दिक [रंक] यसरा प्रसीत सरीयाना र पुर

eie:

तरहकी सेम, निष्पावी ।

फलित-वि॰ [सं॰] फला हुआ, सफल; फलीभृत । पु॰ फल-बृक्षः एक गंधद्रव्य, ईलिय । – उद्योतिष-प० उद्योतिष-का वह अंग जो अह-नदात्रींकी गतिमें शुभाशम अरष्ट बताता है।

फिसा-हो। सि। रजस्वरा हो। फलितार्यं-पु॰ [मं॰] सारपर्य, निचोद्र।

फल्टिन-वि॰ [मुं॰] फल्युक्त, फल देनेवाला । पु॰ क्टइस; इयोनाकः रीहा ।

फलिनी-सा॰ [सं॰] भिषंगु रुताः मग्निशिया वृक्षः इसायधी १

फ़र्छी – सी॰ संदोनरे पतले पत्र जिनमें एक साथ दर्ददाने या बीज होते हैं, मटर, सेम, देवाँच आदिः मिं । एक तरहकी मध्यी: दे॰ 'कठिमी'।

फ़र्छी(सिन्)-वि॰ [एं॰] फल्युक्त, फल देनेवाला; लाम-जनसः। पु० बृद्धः।

फलीकरण-पु॰ [मं॰] अनावको भूमे या भूसोस अलग करनाः माँदना, वृदनाः पदवनाः १

फछोक्त-वि॰ [मं॰] माँदा या कृटा हुमा; फटकर, गाफ किया दुआ।

फलीता-प्र॰ [ब॰ 'फनीला'] बची: ताबीमकी बची जिसकी धूनी मेवदाधावाले रीगीकी देते हैं। यह मधी जिससे बंद्र या तीपरी बास्ट्रसी आग देने हैं । मुक-दिम्यामा-भाग स्वानाः बंहुक या सीपता दावना । -भूषाना-

तारीत्र या यंत्रकी धनी देना। फलीम्स-दि॰ [र्ग॰] फलर्पर्वे परिणत, पतित, मपुल ।

पालद्वी - मी॰ एड मएली।

দত্তে – এ০ [নৃ০] যদ বিহাৰ জন্ম চ फर्पदा-प्र॰ बागुनका एक मेर बिमके पान अधिक गरेदार

और मीठे होने हैं। कर्लेड्-५० (मे०) रहा अमुन, करेंदा ।

फलो**चय-पु॰** [मे॰] पत्नीको राहि। । फुछोत्तमा-सी॰ [एं॰] एड तरहता भंगूर बिसुमें हीय

मद्री होते । कस्टोत्पत्ति – स्रो॰ [सं॰] फडरी बत्त्विः हाम i पु॰ आमसा बुध है

क्रमोदय-पु [मं:] क्लोत्द्शि; श्राम; हर्ष; र्यह; स्वां!

क्छोदेश-पु॰ [मं०] दे॰ 'प्रवादेश'। ।

फलोज्ञच-बि॰ [सं॰] क्षेत्र करूने करून हुआ हो। सम्मोपजीवी(विम्)-विण, पुण [गंण] समस्य ध्ययगाप

बर नेवाला । ष्टकोषेत-दि॰ [८०] एक उत्तक बरने, देनेदाना ।

पारक-दिक [मंक] दिल्हा अंतरीत्रा हुआ हो। दिल्लादिलांगः चम्यु-विक [मेंक] सारविका निर्यवेश गाहा करियोना कागया शामान्या रूप्य । औ॰ यह गरी विगदे दिनारे गदा अपार है; बर्ग्यहण्यः गुलामः विथ्या वर्षमः इडगुल्ह ।-व्-दि० लालबी वर्गा । -वा-भी वस्त बदो :-प्रामह-दि: अप दश्यामा ! -- वारिश-मी:

करम् १९ १० होता-होनाय-५० वद तर्थसा प्रदेशास १ वस्तिवा-भो॰ (४०) सहरत् कारियः मुद्दीना गारा, एक । चस्तुन-६० (ई०) चन्तुनी समुबसे पराह्मा साम । ५०

अ॰ अच्छी तरह, भली भाँति, सम्यक् रीतिमे ।-खेर-अ॰ कुशलपूर्वक, अच्छी तरह, भलाईसे । -धीरयत,-होरी-थत-अ॰ दीरियतके साथ, क्रमलपर्वक !-शैर-अ॰ विनाः सिवा। ~ज़रिया,-ज़रीया~अ० (-के) जरीये, (-के) द्वारा । -जा-वि॰ जो अपनी जगदपर हो, ठीया, उचित । ∽जाय−अ० (−वे) रथानपर, बदले । −िजस~अ० दे० 'बजिसह'।-जिसह-अ० हबह, ठीक-ठीक: कुछ; उर्योका रयो ।- ज़ज़-अ० सिया, धरीर, (-को) छोडवर ।-तौर-अ० (-के) तरीकेपरः द्वाराः मारफतः । --दस्त-अ० (-के) हाथसे, द्वारा, मारफत । -दस्तूर-ज॰ साधारण अन्यासके अनुसार, यथानियम; यथापूर्व, पहलेकी तरह । -वीलत-अ० (-के) सदारे, द्वाराः (-की) क्रपासेः (-के) कारण। -भास-अ० (-के) सामसे, सामपरः (-फे) प्रति, विरुद्ध (गुकदमेमें-रध्यीर सिंह बनाम रामधनी) । -निस्यत-४० अपेक्षा, मकावलेमें । -मळा-बला-स॰ (-मे) गुकाबलेम, तुलनाम । -मुद्दिकल-ध॰ घटिनाईसे, मुश्किलसे।-मृजिय-अ॰ (-ये) अनुसार, गताबिक । -वंग-अ० (-के) सरझ, यासित । -वाह-अ॰ (-क्षी) राष्ट्रेस (-क्षे) तीरपदः दे॰ क्रममें। -- वार्ते कि-अ॰ इस शर्तते कि, अगर । -सयय-अ॰ (-के) कारण। -सरत-अ॰ ध्रतमें, श्यितिमें, बहालत। -हपम-अ॰ आहाते, आदेशालुसार । -ईसियत्त-अ॰ (-के) रूपमें, वाते। (-की) स्थितिमें।

यष्टर≠⊸पु० वैर, दाशुताः † वेर । वि० वहरा, वधिर । बडर#-प० देव 'बीर'।

घउरा#−वि० दे० 'दावलः' ।

धवराना-भ॰ क्रि॰ पागल होना, उन्मत्त होना । यक-पु॰ [सं॰] बगला; यंचक, ठम; दोंगी; कुनेर; भीमके हाथों मारा गया एक राक्षतः कृत्यके हाथीं भारा गया एक राक्षसः एक ऋषिः एक प्रध्यवश्च, सगरतः वक्षयंत्र ह मि० मगळे जैसा सपोद । —चंद्रन →प० वृक्षविद्येष । -धन†-पु० दे० 'वयसंदन'। -चर-वि० डॉग करने-षाला ।-चिचिका-छो० एक तर्दकी मञ्ली ।-जिल्-पु॰ मीमः कृष्ण । -धूप-पु॰ एक प्रकारका संधदस्य । -ध्याम-पु॰ बगले जीसी ध्यानमञ्ज होनेकी दिखाळ गुद्रा, साधुताका दींग । -ध्यामी(निन्)-वि॰ वगला-मगत, बक्ष्यान लगानेवाला । -निगृदन-पु॰ कृष्णः भीम । -पंचक-पु॰ कास्तिक हाहा एकादशीसे पूर्णिमा-सकते पाँच दिन । - भीत-पुरु मक्ष्यान ! विरु वकः ध्यानी । --यंग्र-पु॰ एक अखुवेंद्रोक्त यंत्र जी अर्क आदि सीवनेके काम आता है। - रिष्ठ-पुर्व भीम। - वृत्ति-वि० बगुलाभगत, शान-ध्यानका द्वींग कर छोगोंको ठमने-बाला । स्त्री० वगलाभगत होनेका भाव, पाखट ! —धस-धर,-झती(तिन्)-वि० 'बकक्ति'।

बब्रवास, वेकार यात ! -बाद-सी॰ निरर्थक वार्ताः बक्रवास ! -धादी-वि॰ वक्षवाद करनेवाला, वक्षी ! ~धास-खी॰ बेबार बात जो छगातार कुछ देशतक कही जाय, बनवका मकतेकी जिल्ला। -धासी-वि॰ बक्लास धरनेपाला ।

चक-सां वक्तेकी क्रिया, वक्तास ! - झक,-- बक-सी॰

वक्षा-पु०दे० 'वक्तना'। वकची-सी॰ पक महली; दे॰ 'बकुची'। वकतर-पु० [फा०] जिरह, लोहेके पालका रना प्रभा क्यच । -पोश-वि० वो वक्तर पहने हो, कावपारी। यकताः चकतास्य-वि०, ५० दे० 'वक्ता'। -वकना – सर्व कि॰ बोलना, मेंहमें निकालना (गानवी)। ४० कि॰ बहुबहाना, बदाबास करना । स०-हाकना- स-बहाना, शरसेमें बोलना, दिगइना । बक्कर-पु० [अ०] गाय, बैल; कुरानकी एक सूरत !-ईंद-खी॰ मुसलमानीका थक स्वीहार जिस दिन ईस्वरके प्रीत्वर्ष पञ्चविक करना फर्ज माना जाता है ।-कसाव-पु॰ विक यकरना-अ० क्रि॰ अपना दोप, अपराध स्वीकार धरनाः वश्वद्वाना । यकरम-५० [अ० 'बक्रम'] गोंद मादिसे कहा किया हुय कपड़ा जो कपड़ोंके कालर, आस्तीन आदिमें महाई लानेहै लिए दिया जाता है। शकरसाना—स०क्रि० दिसीसे द्वीप-अपराभ स्वीकार कराना। यकरा-पु॰ एक प्रसिद्ध पालत् चीपायाः, द्यागः। [ही॰ 'बकरी'।] अ०-(रे)की माँ कवतक हीर मनायेगी-दोषी, अपराधी सनतक नच सकता है ? वक्ररीद-सी० देव 'बक्रर-देद'। वक्छस-पु॰ [अ॰ 'बकल्स'] छोडे, पीतल आदिका चौक्री छता जिससे तसमे बादिको फँताते हैं, बनस्मा। धकरत-प॰ छिलकाः छाल । थकवाना−स॰ कि॰ किसीकी वक्तेमें प्रवृत्त दरना ! बकस-पु॰ [अं॰ 'बॉक्स'] कपड़े आदि रखनेका छैत

संदक्षः गहने आदि रखनेका खन्या । बरुसन्ता –स॰ ब्रि॰ दे॰ 'बस्हाना'।

यक्सीस#-चा॰ दे॰ 'बरिचरा' । बकसु**का, चकसुवा—go देव 'बक्र**सर'।

धकाइन-पु॰ दे॰ 'बकायन' ।

धकाउ#-सी० दे० 'ददावली'।

धका**उर#**—सी॰ दे॰ 'बनावसी'।

बकारि-पु॰ [सं॰] भीम; कृष्ण ।

-गुँहसे शब्द, बात निकडना 1 बकावर=-सी० दे० 'गुलवसावली'।

मारा गया ।

बकाधरी=−सी० दे० 'गुलक्सावली' । यकावछी-की० दे० 'गुलवकावली'।

वकाना =-स॰ कि॰ कहलाना; वक्रवाना । यकायन-पु॰ नीमकी जातिका एक पेर जिसके कल, पूछ,

परियाँ आदि दवाके काममें आते हैं, महानिय। बकाया-वि॰ [अ॰] बचा हुआ, बाकी, अविशय ('दर्भवा'

का बहु०)। पु० बाकी सभी हुई भीज; स्थत; बाडी की

हुई रक्त । —लगान-पु॰ वाकी पड़ा हुआ लगान । .

धकारी-की॰ गुँदसे निकलनेवाला शब्द । मु॰ -फूटना

यकासुर-पु० [सं०] वक नामका देख को कृष्णके रामी

बक्सवाना । बकसाना - स॰ मि॰ दे॰ 'बहरवाना'।

सङ्गा-सी०[अ०] पाकी रहना, बना रहना, बीबित रहना।

(ब्या०) । स्त्री० (अ०) नदीला सार जिसपर जरूरी कायज नत्थी विये जाते हैं: मिलमिलेबार रंगे दण कागव, मिसिल: आराबार आदिके सिलमिलेमे चरथी दिवे हुए केंद्र । अब -करना-संधी करनाः मिसिटमें शामिल करना ।

फ्राइलीयत-सी॰ फाइल होना, बनंत्व ।

प्राका-ए० [११०] भरा रहना, उपनास, अनाहार । -क्या-विव पाना बरनेवाला, ध्रभाषीदित । -क्यी-भी०भगों गरनाः छगातार करै दिनीनकअन्न न भिलना। -(के) सस्त-विक मफलिसीम भी मस्त रहने, चिंवा-परवाद न यरनेवाला। -सस्ती-बी॰ तंगदस्तीकी हालत्में भी मस्य रहता। -शिक्ती-की॰ उपवास-थेग । सु॰ - (की)का सारा-जो फाके बरते का ते द्वला कमजोर हो गया हो। -मस्मा-भूगो मरना। फाररतहै-वि॰ फाखता(पॅडवी)के रंगका, सुखीमायल, खाको रंगका । पुर सुर्वामायल रंग, राज्ये रंग ।

कारासा-सा० कि० पेटकी, पेटकी कुमरी । स॰ -उद जामा-परश जानाः वेदोश होन। 1

याग-प॰ पागनमें होतेशाला शागरंग, होली: फायनमें गाया जानेवामा गीत ।

प्रागन-पु॰ माध्ये बाद आनेवाला महीना किममें होली होगी है, फाइयन ।

पत्तमानी-वि० पत्तानका ।

प्राज्ञिर-वि० [अ०] बदकार, द्रथरित्र । [स्त्री० 'फ्रामिसा' ।] फ्राजिल-वि॰ [अ॰] दश हुआ, आवरवदतामे अधिकः दिसाबने बटा या रार्थने मधा हुआ: विहान . शबी । -बाकी-छी० देने पावने वा आमदन्यनंके दिमाक्के बाइ नियमने या बाही रहनेवाली रक्त ।

फाटक-ए० वहा दरवाजाः सिंहदास होरणः र मदेशी-सामा, को शेबीस: + फटकन-'काटक देकर हाटक मॉनव भोरे नियर संधारी'-यर । -दार-म॰ काँदी दाउनका ndus. 1

फारवा-पु॰ गर्।, सहैदा जुमा ।-(के)बाल-पु॰ सहै-

पारकी-सी० मिन्ने पिरकिस ।

फाटना॰-भ॰ हि॰ दे॰ 'बदना' । पादम ~प॰ पादमेने तिरसा हमा द्वरा: हेनेदा वारी । फारमा-ग॰ कि॰ धीरना, शिगाफ सरना: 24हे बरना: माना, पैमाना (भाग, गुँद); सराई माहिने दोवने हपने अनीय भीर ठीम भीगते। अटन अश्य कर देला । साद श्याळ-विक पाह शानेवाला, विगर्देल । ग्रामा-भेडिये अर्थरश दिगीको धीरवर गा जानाः

शहरानाः कारने श्रीदना । पालि-मी॰ (मे॰) गुरा दहीने गुंचा दुवा सन । पाक्षिण-पुर्व (संर) हादा होहा ह

शांतिमा-गी॰ [श्र॰] गुरम्मानी नेटी में। संगोही स्पारी

यदी, रगन दुर्धनकी मात्रा । क्राविद्रा-शी॰ [स॰] काम्या बुरावदी पहली जुनना पर-राक्षण कामानी महिन्दे दिए महिन्द्र कार्य करिन्दे मानेक्षे सद । नहाबामीनकीय करीव्या पानेकी दश्य । मु॰ - परमा-बिहास दीला ।

फानना-मर्क फिर्फ (क्वे)धननाः र्ग विभी गामको शह कश्चा ।

कासी-वि॰ अि॰ पना होनेवाला, गरने-भिटनेवाला, जाद्यवान ।

पानम-५० (पा०) एक सरहवा शमाशन जिम्बर वारीक कवटे या कागत्रका क्लोब-मा बना होता है. एक तरहका बद्दा जंदील: द्वीडीका विलाम विभग्ने गोगवसी राष्ट्राणी वाती है । -(मे)राबाल,-राबाली-प॰ कागहका बना हुआ। बंदील जिसमें रूपे कागजरें, हाथा धीरे हुमाने चमने और उसकी शाका अंटीलके काराज्यर प्रश्ते हैं।

फाफर-प० कट । फाफा≔सी० घोपली बटिया ।

पार्यंता =-प० पतिया I फाय•-मी॰ करन, श्रीमा ।

पायसाइ-अ० क्रि० है० 'क्रास्ता' । क्रायदा-प॰ अ॰ हाम, सचाः प्राप्तिः प्रशेलमधी विदिः

ननीजाः गुण । -(मे) संद -वि० लागजनयः गणकाराः उपयोगी । .पायर-पर्शिर] आगः पेर ।-अलामे-पर आग स्तरीर

की समना अपने जाप किछ जानेकी स्वयस्था । - आर्य-पु॰ आग्नेयास्त्र, तर्मचा-बंदय आदि । -गंजिन-प॰ आग बलानेकी बल, दमदल । -विरोध-प्रश्नाम बलानेकाने क्रीनारियोका दस्ता । -सेन-प्र॰ इंजन था भटीत कोवन्त हाननेवाला या भाग बलानेबाचा गरीचारी ।

काया-प॰ दे॰ 'का**रा**' ।

4218-do ço (418, 1 फारमानी-म्बी॰ दे॰ 'फारियमनी' ।

चारमार-सर क्रिल है। 'वासमा' 1

कारम-प॰ दे॰ कार्म पारम-प० थि०) रेसन, पारम १

पारसी-सी॰ [अ०] पारमंत्री सापा l वि० पारसदा । प्रशासका रहनेवाला, देरानी । -हाँ-हिल्यासी परा द्रभा । स॰-चपारना-देवीचे पारागेदानी दिशाने-

के फिए फारभी धोणना ।

कारा - पु॰ बनका, यही दुई पहिंद, पान: परा। कारिस-वि॰ [अ॰] वी परायत ही सुरा ही, बार्यमे निकृतः निक्ति । - प्रती-सी० देवादीयी सुनीह । अ०

-होना-निकृष होनाः शीन गाना ।

.फारेन हाइट-पु॰ एक धर्नन विदानशिर क्याने प्रशिन शार श्रमोमीयका व्यक्तिः (दिया । -यमांग्रीटर-पु. बमोमीटर हे तीन घेडोमेंने एक निममें दियांत (क्रांतिन ध्यार्थ) १२° घर भीर अचन है (अगर्यां रग प्यार्थ) २१२°

पर दोता दे। .पार्म-पु॰ (पं॰) आहति। सरवाः, समृत्याः गर्नाः प्रस्ति। स दिवा भाग हुआ समुला। वंदीज दिया क्षीर चैनमें पूरण हुआ हानोदे दिए तैयाह मेरन पूरवर आदिका एक बारil एका दुका बंध, ज्या वहे स्वीवारीय, साम्बर भिष्मी वैद्यालक देवी केली का आहा।

मुत्रस-म्होत सही हुई सुवारी । कुत सही दह समुद्रा direct [e.e.] End geiff, wildt Athelai

धगरी-बच्चा विखरना । यगरी*~सी० वसरी, मकान । धगस्या*-५० वगूला, वर्वेडर । बगुरु-स्री० [फा०] मोइके नीचेका गढा, काँसः पहल . ·पार्थः समीपवर्ती स्थानः कपडेका दक्ता जो ॲंगरखे-करते आदिमें बंधेके नीचे लगाया जाता है, वगली ! -वंदी-की॰ एक भिर्जर जिसमें नगरूमें बंद गाँधे जाते हैं। ग्रु॰--का फोटा-काँखरे होनेवाला फोड़ा, कँबीरी। -का प्रसा-दे॰ 'बराली घुँसा'। -गरम करना-(स्नीका) साथ सोना, वगलमें सोना ! -बीर होना-वार्रियन करना, छातीसे हमाना !--झॅ-पासमें, एक और !--मॅ **ईमान द्याना-**वेरंमाभी करना, रंमान छोड़कर योलना। -में दवानाः-में दावना-काँसभें छिपा छेनाः कम्बेमें कर होना । - (हर्षे)झाँकना-निरचर होनाः वचावका शस्ता हेंद्रमा ! -यजाना-वगलमें हथेली दवाकर आवाज निकालनाः अति प्रसन्नता प्रकट करना । श्वाला-प• पक पक्षी जो मछलियों आदिका शिकार करता और अपनी सपटवृत्तिके लिए प्रसिद्ध है, वक ! [स्ती॰ 'भगलो' ।)-भगत-बि॰ साप्रताका सीम कर दनियाकी ठगनेवालाः पाखंदी । धगला, धगलामुखी-की॰ दे॰ 'बगला' ! धराकियाना - अ० कि० वगलते होकर जाला, अलग हट-कर जाना । स॰ क्रि॰ अष्टग करनाः वगलमें करना । **ध**राकी−वि० [फा॰] वगलका, एक ओरका । स्ती॰ सँग-रखे भादिमें एंधेके नीचे लगाया जानेवाला उकड़ा; वह थैली जिसमें दर्जी सुई, तागा रखते हैं: वगलमें रखनेका सकिया; दरवाजेकी बगलमें मारी जानेवाली सेंथ; मुगदर-की पक कसरत । - चैंसा - पु॰ वगलते मारा जानेवाला धुँसाः छिपकर किया जानेवाका बारः दौरत बनकर द्दरमनी करनेवाला। -टाँग-छी० कुदतीका एक पेंच। ~बॉह~की॰ पर तरहकी कसरत । ~ऊँगोद~प॰ क्षदतीका एक पैच । धगर्लिंदी-सी० पक चिडिया । चरार्लीहा *- वि॰ तिरहा । [की॰ 'बगर्लीही' ।] धगसना#-स॰ कि॰ दे॰ 'वस्टाला'। चना#-पु० जामा; बागा; बगला। यगाना - स॰ कि॰ प्रमाना फिरानाः सैर घराना । अ० कि॰ भागना, धीइना; पुमना-फिरना । बसारां -पु० गायोंकी बाँधनेकी जगह । यगारना*-स॰ कि॰ दे॰ 'वगराशा'। धरावत-सी० [वा०] मागी होनाः राज-विद्रोहः, विप्सवः अराजकता, बर्भमली । मु॰-का झंडा उठाना या पुलंद करना-विद्रोह करना, विद्रोहको योषणा करना । धरिया - छी० होटा दाम, नादिका ।

थराचा-प॰ वागः छोटा बाग । यगीची-सी० शोटा बाग ।

वगृरा*-पु॰ दे॰ 'वगृङा' ।

धगुला-पु॰ [फा॰] भैंवरकी तरह भूमती हुई हवा, वर्बेटर ।

यक इधियार विसमें वायके मलकी शक्कि काँटे निकी होते हैं, शेरपंता; क्लोंकी पहनातेका एक गहना। -नहाँक-पु० दे० 'बयनखा'। -नहियाँक-क्षी० देव 'बवनखा' ।-धार-पु॰ बायकी मुँछका वाल । यद्यमा = -पु॰ एक गहना जिसमें बायके तल लगे होने हैं। वघसरा#-ए० दे० 'वगुला'। वचार-पु० बवारनेकी किया। वह चीत्र वा मसला मे वधारनेके काममें लावा जाय. छीत: वधारकी गेप ! यघारना-स॰ कि॰ होंग, जीरा, प्यात आदि बीमें की बदाबर दाल, तरकारी आदिमें डालना, छीवना, तहा देनाः पांडित्य दिखानेके लिए किसी विषयकी चर्च करनाः छाँटना (बेदांत वधारना) । बध्रा*-पु॰ दे॰ 'बगुला'। वर्षेशां-पु॰ कक्दबन्धा । बघेलखंड-पु॰ मध्यमारतका एक प्रदेश जिसमें रोबा, मेरर आदि रियासर्ते थीं। बधेलखंडी~पु॰ ववेलखंडका रहनेवाला ।' स्नो॰ व्येष्टपं: की बीली। बच-की॰ एक पीथा जिसकी जड़ दवाये काम आती है। # पु॰ दे॰ 'वचन'। अचकारु−पु॰ आल्., कीको आदिका पतला विपरा हुका। विसपर वेसन रूपेटकर मी या तेकमें तकते हैं। अधकाना-वि॰ वद्योंके कायकः वद्योंकी नापका, छोटा। [सी॰ 'वचकानी' ।] बचत-छी० वचनेका मान, वचान; को खर्बसे वर्ग जाय। वची हुई चीज, रक्षभ; लाम, नका बचन-१० दे० 'वचन' । अचना-अ॰ कि॰ राकी रहना, सबैसे उनरना। रा वचाव शीना (खतरे, विषत, सांघातिय रोग आदिते)। प्राण-रक्षा होनाः जलग रहनाः परहेज महना। " स कि॰ बीलनाः सहना । व**चपन-पु॰** सहक्पन, बालावस्था । यचर्वया#~प्र॰ बचानेवाला, रक्षक । यखा - पु॰ दे॰ 'बन्ना'। वचाना-स॰ कि॰ रह्या करनाः शकी रसना हर्व न हीने देना; जलग रखना; छिपाता I यचाव-पु॰ वयनेका मात्र, रक्षाः भारमरकाः नकारै धनुसा-पु॰ दे॰ 'बगला'। -भगत-वि॰ दे॰' 'बगला-(अभियोगसे) । वज्ञा-पु॰ नवजात शिशुः शिशुः वत्स, सहका। वि॰

ममठम, नादानः अनुमन्हीन । -कदा-दि॰ सी॰ ब्रुन

यगेडी =-सी० दे० 'वगेरी'।

वरीचा -पुरु देर 'बगीचा'।

धग्गी-छी० दे० 'बग्धी'।

वर्धवर-पु॰ दे॰ 'वापंबर'।

सरदाञ ।

यभेदना - स० कि० धका देकर गिरा देना, इंटा देना।

बरोरी-सी॰ गौरैवासे मिछती सहती एक होटा विदिय

बध-'बाव'का समासमें आनेवाला लघु रूप। -छाला-

प्र० दे० 'बाधंबर'। -नाखा-प्र० उँगलीमें पहननेग

बरघी-सी० चार पहियेकी घोडानाडी, जोडी ।

चलता है); द्वारारती, चालबाब ! फितरी-वि॰ सहब, पैदादशी, महतिगतः प्राकृतिक। क्रित्र-५० हे॰ 'पुन्र'।

क्रित्री-वि॰ दे॰ 'पुन्त्री'। फिट्या-वि० देव 'हिड्बी'।

क्रिटा-वि॰ बि॰ मन्य, बामकः विमीपरवान देनेवालः। -हे-वि॰ मात्र निष्ठावर करनेवाला। पु॰ इस्माईस्थिया क्रिएडेका अनुवादी । **३१०-होना-आ**शिक होनाः विसीके

हिए जान देना ।

क्रिह्वी-वि॰ अ० किया होनेवाला; दिसीके लिए जान दैनेवाहा । ए० सेवक, दास (प्रार्थना-पत्रमें प्रार्थकि नामके पहले हिस्सा बाता है) ।

फिदा~प॰ दे॰ 'पिटा' ।

ফিলা−কাঁ≎ বি≎ ট≎ 'ফলা'।

फिलिया=-न्धी० कालमें पहलनेका वक गहला है

फिफरी = नहीं । परशे = हिंदू में श्रदनदी छाछिना फिफरी पर्ग अधरान'-रघराजः ।

फिर्रंग-५० वरोपः वरोपीयः गरमानी बीमारी । क की० विटायकी करवार-'चमकती चपटा न, फेरत किरंगे सर-..°−भूषण १

फिरंगिम्हान-पु॰ वृरोप ।

फिरंगी-पु॰ युरोनियन । वि॰ बुरोपीय, विलायती । स्री॰

विद्यावदी वद्यवार ।

फिर्रंट-वि॰ फिरा हुआ, विरुद्धः नारात्र ।

फिर-अ॰ पीछे, अनंतर; दूसरे ममय; तदः पुनः, दीवारा; रमुद्रे अधादा। -फिर-अ० दार-दार, युन:-पुन:।

−भी-अ॰ दिसप्र मी, दब मी। क्रिरशीत-पु॰ (स॰) मिसके आफोन बादशाहोकी उपाधि। वि॰ वर्महा, मर्द्रहा । - (ते) येमामान - पु॰ वह आदवी

भी निर्णन दोने हर भी धर्म**टी हो**।

फिरक्ता-अ० कि० धिरहता, नाचना । किरका-पु॰ (अ॰) जमात, समुदायः वाति, शंपदाय । -यंदी-गाँ० धमान बसाताः गरोहदंदी । -वार~श० रिर्दे, मंत्रशब्दे अनुसार । -बाराना-वि॰ साप्त-

दाविद्धः, भंजदायगत् । फिरकी-मा॰ चर्चा किरहरी; तक्टेमें लगा हुआ चमहे-का दुरशा मालगंतकी एक क्छारत; कुरतीका कर देव: षामा लपरनेका राष्ट्र । -वृंद्ध-पु॰ वक्र तरहका दह । सु॰ नकी तरह फिरना-एक अगह बा एक हालबनें

रियर न रहना।

फिरक्टैपॉॅं॰~सी॰ दश्र । फिरगाना॰-पु॰ प्रोफिनियमी; अंग्रेड । फिरता-वि॰ बादम् । पु॰ बादमीः अन्वीकार् ।

क्रिरदीय-५० [अ॰] स्वर्ग, सिहरतः उद्यान ।

बिरदीसी-पु॰ [४॰] पारसेंचे प्रस्थि महाकाल्य जाह- ' मामाश रमविता अदुल्यासिम तुनी (९३२-१०२० ई०) ।

फिरना-# • जि. समी इचर, समी तथर जाना, मूसना, समा बरनाः ५.६२ यानाः सङ्ग्रहार यूमनाः सीटनाः पण्डनाः द्वरमाः बद्रण्याः द्वरस्याः छोटाया जानाः रिरामा वाना। प्रसिद्ध का संचारित होना। पेरा दा

चडाया वाना (खरी फिरना); पेता वाना। स॰ कि॰ (पाखाना) करना या कर मारना। फिरकर-मण्डर. पन्दरकर ।

क्रिस्मी-नी॰ फा॰ो विमे हुए चावलेंबी सीर । फिल्वाना-स॰ कि॰ फिराने या फेरनेका काम कराना। फिराऊ-वि॰ जो फिरता हो सके, बाकह (माष्ट)।

फिराको -५० फेर, चिंता: टीड । क्रिसक-पु॰ [ब॰] वियोग, लुदाई । -(क्रे)यार-पु॰ विवनम्, प्रेमपात्रमे दिहोह ।

फिलाकिया-विश् विद्योगस्मद्य, जिल्हा विषय विद्योग हो । -- नद्भ-स्वी॰ वह काव्य दिसमें विरहका वर्तन हो ।

फिराट, फिरादि*-श्ली० फरियाद ।

फिरामा-स॰ कि॰ रथर-उधर चलाना, पुमाना, असग या हैर करानाः चक्कर खिलानाः साथ ठिये फिरनाः मोहना, शैदानाः औरका और बरनाः (पालाना) करनेमें

प्रवृत्त दर्मा । फ्रिसार-पु॰ (अ॰) माग जाना, पनायन दरना ।

क्रिसरी-वि॰ भागा हुआ, प्रकायित (अभियुक्त ३०)। फ्रिरासस−सी॰ फा॰ी बढिमानी, समझ्हारी; सामदिक । फिरि≉−क० दे० 'फिर'।

फिरिकी#-न्द्री॰ दे॰ 'दिस्की' । फिरियाद-ना० दे० 'फरियाद'।

फिरियादि#-श्वी० दे० 'प्ररिवाद' ।

फिरियादी-वि॰, प॰ दे॰ 'करियादी' ।

क्रिरिज्ञा-पु॰ (फा॰) देवताः समुख्यानीके विद्वासानसार क्योतिने निर्मित एक दिव्य योगि, देवदतः हिद्दतानके सुमलमान राज्योंके प्रसिद्ध श्विष्टाम 'तारीले किरिस्ता'-का टेखक । —ख़म्मछत,—,ग्र्–वि॰ देवीयम रवनावदाङा, नेक, अन्य । -मीरस-विश् माधुन्तित, नेक ! -भूरस-वि॰ बी देखनेमें बर्ब नेक, भना मानूम हो। मु॰ -(क्ते)का कानमें फ़्रीकना-धर्मरी दोना। -का गुज़र न होना,-की दाल न गलना-दिसीकी पर्देच न होना । नके पर जलना-प्रदेशका साहम न होनाः गुवर न होना। -दिखाई देना,-नज़र आना-मीट करीर दीना। -(इन्ती)को स्वयर न होना-निर्मात

गप्त होना । **पि:रिष्टरा-पु० यक विहिया 1**

फिरिहरी!-ऑ॰ दै॰ 'फिरकी'। क्रिका-प॰ (स॰) दे॰ 'हरसा'।

क्रिलकौर-म॰ फीरम, दुरवः सुदाकी राहपर, देश्यर-प्रीन्दर्थ ।

क्रिक्टक्रीक्रत-२० इटीएवर्ने, स्वस्य ।

फिल्हाल-४० टन्दण्ट, बनी, इस समय । क्तिती -सीव दिश्ही।

क्रिया-स॰ [फान] विद् , दी (दिरस्ट'रयूपक) ।

फिय-बि॰ मारहीतः बुध नदी । सु॰ -ही जाना-वेदार

शिद्ध दोनाः दुछ न रद्व जाना । फिसड्डी-वि॰ पाँछे रह जानेवाला, साममें पिएड़ा रहते-बालाः निकृष्या ।

किमकिमाना-ब॰ कि॰ रिग होता दोता, समर्वात हो

को उबरन मलना ।

घटमा - पु॰ संगतराशोंका एक औजार. कीनिया । घटला-५० वडी बटलोई १

घटली-सी॰ बरलोई।

यटलोई -सी॰ चारल, दाल आदि पकानेके काम आहे-बाला, हाँदीकी धारलका बरतन, पतीली, रवाली ।

बटवाना-स॰ कि॰ बाँटने या बटनेका काम दसरेसे कराना ।

चटा*-प॰ गोल बस्तः गेंदः रोडाः वटोही ।

थटाई-स्त्री॰ बटनेकी किया, बटन: बटनेकी सजरत: बॉटने-की क्रिया, बाँट, विभावनः जमीनके बंदोबस्तकी वह ध्यवस्था जिसमें गालिकको लगानके रूपमें पैटावारका नियस भाग किले. भावली ।

खटाऊ*-५० वटोशी, पथिक ।

घटाफ∗~वि० बदा, ऊँचा । घटालियन-पु० [अं०] पैदल सेनाका एक विमाग जिसमें

गई वंपनियाँ होती है।

बराली - ला॰ बदरवीका एक को बार, क्यांनी । यदिका-स्थी० दे० 'बरिका'।

यदिया-स्तं • छोरा, गोल, चिकना पत्थर (शालगामकी बटिया)। छोटा बहा, लोदिया: * मार्ग, शस्ता । यटी-स्त्री० गोलं, वटी; एक फहवान, बड़ी; # बाटिका I

बद्ध−पु० दे० 'ब्द्र'।

घटना-प्रश्रीय खानेदार थैला जो मँहपर लगी दोर प्रीचनेसे ख़लता-बंद होता है: † बही बटलोई ।

घटई-सी० छोटी बटलोई।

बदक-प्र॰ दे॰ 'बद्धम'; छवंग।

बद्धना - अ० कि० इक्ट्रा होना; सिमदना । बटला-पुरु मावल आदि प्रतानेका महे मँहका पात्र ।

यदली-स्ता० होटा यदला ।

बद्भवा-पु॰ दे॰ 'बटुआ'; # एक तरहका मांस।

यटेर - हो। वितार से मिलती प्रविधी एक चिडिया की अक्सर कहानेके श्रीकरे किए पाला जाती है। -बाज़-पु॰ बटेर पालने, लगनेवाला । न्याजी-सी० बटेर पालना, लडानाः इसका व्यसन ।

पटोर-प॰ आदमियींका नमायः विश्वी शास कामके टिप

बहरसे कीगोंका जना होता।

यदोरन-छी॰ झाइने-प्रहारनेसे इकट्टा होनेवाला कनाः शाह-बटीरकर लगामा हुआ वस्तुओंका देर; बटीरकर एक्ट किये जातेवाले धैनमें पढ़े दाने।

यदोरना-स॰ कि॰ समेटनाः स्कट्टा करनाः वमा करनाः दिशारी हुई चीजोंको इकट्टा बरना, चुनना ।

यटोही-पु० पथिक, राही।

यष्ट्र#-पु० गीला, बड़ा; गेंद्र; शिक्षम; एँठन; बाट ।

घटा-पु० वह इकम जी रुपये, नीट, हुंडी भादि सुनाने,

बदलने या बेचनेपर उसके मृत्यमेंसे काट ली बाय,दरन्ती, दलाही: कमी: पाटा, नक्सान ! -खाता-प्र॰ हानि वा षाटेका साता; वह साता निसमें हुवी हुई रक्तमें लिसी जार्य । मू॰ -छगना-बहुसे चटना, पूरा मूस्य न मिहनाः (रक्षतः, नाम आदिमें बट्टा हमना) कैमी होना,

दाग छयना ! -सहना-धाटा, मक्सान उठाना ! घटा-प॰ गोल. छंत्रोतरा परथर जिससे पीसने बटरेग काम लिया जाय, छोडा: पत्थरका चिवना, छोटा ग्रेग: बाजीयरका प्यालाः वह गोला जिसे वाजीयर समानप चलाते हैं; पान, रत्न बादि रसनेका टिम्बा!-डाल-वि॰ सब चौरस और चिकता । -(हे)वाज्ञ-५० धर्मः गर, नजरवंदीके धेठ करनेवालां । वि० धर्न, चालक । वड़ी-सी॰ छोटा बड़ा: (सातन बादिकी) दिविया। ग्राप होटी मेली ।

बह -पु॰ वजरवरद्रः धारीदार चारयानाः * स्टा, गीता-'बोगरि या जगमें ने उछरत, जैहि निधि,नरके कर " नागरीदास ।

धर्दशा−प॰ वॅंडेर १

यह-पु० बरगर, वट । -कौला,-यहा-पु० बरगरका

बह-'बड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप। ∸हंसा-पि॰ शे द्रतिवाला ! -दुमा-पु० संशी वृष्टवाला हाथी। -पैग्र -वि॰ बड़े पेटवाला । -वेरी-सी॰ हाउनेरी (!) i -योख,-योखा-दि॰ डांस मारनेवाला, बहे बील शेहने बाला । -भाग-वि॰ दे॰ 'बहमावी'। -भागी-वि वहे भाग्यवाला, खुशनसीव। -मुँहा-वि० वहे, अधि लंदे में ह्वाला; बहदीला ।

बद्-ली॰ थवदाद, दींग। ∽यद्-ली० प्रवः रती व्यर्थ दक्ते जाना । मु० -भारमा-हीग होंदमा ।

बहत्पन-पु० वहाई, सहसा, गीरव । बङ्बङ्गा-अ० कि० वसरक करनाः दीग मारना ।

यदयविया-वि० वहवहागेवाला ।

बकराश-वि॰ वडा । [सी॰ 'बबरी' ।] यदराना-अ॰ कि॰ दे॰ 'बरांना'।

वडया-सी॰ [सं॰] बोबो: अधिनी नशप्र;दासी; बहवादि। -कृत,-हृत-पु॰ वह दास को दासीके साथ न्या€ करनेसे दास बना हो। -मुख-पु० वहवाशि दिवा रह प्राचीन जनपर । -सुत-पु॰ अधिनीकुमार ।

बढवाशि*-छी० दे० 'बटवापि' बढबाग्नि-भी॰ [सं॰] समुद्दरियत कालानल I

बह्वानल-पु॰ [मं०] बहुवाशि । बहवार•-वि॰ वडा ।

यहचारी#-सी॰ प्रशंसाः यहप्पन ।

यस्हंस-पु॰ वक्र राग । –सारंग-पु॰ वक्र राग । यइहासिका-सी० एक रागिनी।

वद्द्वनां -पु॰ एक सरहका थान । वि॰ पड़ा । बड्हर, बड्ह्ख-पु॰ एक सट-मिट्टा फल; उनका पे**र** ।

यदृहार-पु॰ व्याहके बार कन्याप्यका औरने होनेवारी मर।तियोंकी क्योनार । बद्गा—वि॰ जिसका दील, फैलाव अधिक हो, स्था-वीगा।

द्योटेका चलटाः चलमें अधिकः पद, प्रतिष्ठा, अधिकार अादिमे अधिकः सारी सहस्तवाकाः कठिनाः विसार परिमाणबाला (रनवा, कितना दहा); सेवा, दिसाह (बहे हीसिडेका); अधिक, यहुत (यहा भारी)। [तर्रा 'बड़ी']। पु॰ बुजुर्ग, शुरुजनः वहा आदमी, अभिन्न प्रीफ

चलता है); शरारती, चालवाज ।

क्रितरी-वि॰ सहज, पैदारशी, प्रकृतिगत; प्राकृतिक ।

फ़ित्र-पु॰ दे॰ 'पुत्र'। फ़ित्री-वि॰ दे॰ 'फ़ुत्री'।

किद्वी-वि॰ दे॰ 'किदवी' ।

क्रिदा-वि॰ (अ॰) ग्रुग्थ, आसक्तः विसीपर जान देनेवाला।
-ई-वि॰ प्राण निटावर करनेवाला। पु॰ इस्माईलिया
फिरवेका अनुयायो। ग्रु॰-होना-आश्विक होनाः किसीके
रिए जान देना।

फ्रिइवी-वि॰ [अ॰] फिदा होनेवाला; किसीके लिए जान देनेदाला । दु॰ सेवक, दास (प्रार्थना-पत्रमें प्रार्थकि नामके

पहले लिखा जाता है)। फिहा-पु॰ दे॰ 'पिदा'।

फिला-सी॰ दि॰ दे॰ 'फला'।

फिलिया = न्ही० कानमें पहत्तनेका एक गहना।

फिफरी*-सा॰ पपदी-'डिव में भदनकी लेलिमा फिफरी परी अथरान'-रधुराजः।

फिरंग-पु० यूरोप; यूरोपीय; गरमोकी बीमारी। * स्ती॰ विलायती तरुवार-'चमकती चयका न, फेरत फिरंगे मट...'-भूपण।

फिरंगिस्तान-पु॰ वृरोप ।

फिरंगी-पु॰ यूरोपियन । वि॰ यूरोपीय, विलायती । स्ती॰

विलायती सलबार ।

फिरंट-वि॰ फिरा हुआ, विरद्धः नाराज ।

फिर-अ० पीछे, अनंतर; दूसरे समय; तकः पुनः, दोषाराः इसके अलावा। -फिर-अ० वार-वार, पुनः-पुनः । -भी-अ० तिसपर भी, तब भी ।

फिरभीन-पु॰ [अ॰] मिलने प्राचीन बादशाहोको उपाधि। वि॰ पर्मही, सरक्ष्यः।-(ने) येसामान-पु॰ वह आदमी जो निर्धन होने हुए भी पर्मही हो।

फिरक्सा-अ० कि० धिरकना, नाचना ।

क्रिरक्त-पु० [अ॰] जमात, समुदायः जाति, सम्रायः।
- संदी-सी॰ जमात बनाना, गरीहर्वदीः। - धार-अ॰
किरमे, सम्दायके अनुसार । - धाराना-वि॰ साम-द्यायक, सम्दायके

किरकी-की० कार्क। किरहरी। तन्नेमें लगा हुआ कारे-का हका। मालरांगकी पदः कार्क। कुश्मीका एक पैका भागा लेपनेती रीका - नईट-पु० पदः तरहदा रहा। मु॰ -वी तरह किरना-पदः अगह या पदः हालतमें रियर त रहना।

फिरकैयाँ - सी० चहर।

पित्याना - पु॰ यूरोप निवासी। अंग्रेज ।

फिरसा-वि॰ वापम । पु॰ वापमी; श्रस्तीकार । क्रिस्दीम-पु॰ (श्र॰) स्वर्ग, विद्दिन; उदान ।

किरदीसी-पु॰ [अ॰] पारशीचे प्रभिद्ध महादास्य ग्राह-नामारा रवित्रा ब्युक्टलास्य सुनी (१३२-१०२० १०)। सिरमा-४० दिन कदी १९४, कती १९४ का कर काम, पुमना, भागा दरमा १९४ माना। मेरलक्दर पुसना। शेटना, एग्टमा, ग्रहमा, दरमा, ग्रहमा शेटमा बाना, दिसमा वामा प्रसिद्ध या म्यास्ति दीमा क्रीम वा

चळाया जाना (छुरी फिरना); पोता जाना । स० कि० (पाराजा) करना या कर मारना । फिरकर-मुक्कर, पळटकर ।

प्रस्ति –स्ता॰ [फा॰] पिसे हुए चावलीकी खीर ।

फिरवाना−स॰ कि॰ फिराने या फेरनेका काम कराना। फिराऊ~वि॰ बो फिरता हो सके, जाकड़ (माल)। फिराकां −प़॰ फेर, विता: टोड ।

क्रिराक्र-पु॰ [अ॰] वियोग, जुदाई। -(क्रे)यार-पु॰ प्रियतम, प्रेमपायसे विद्योह।

क्रिराक्तिया-वि॰ वियोगात्मक, जिसका निषय वियोग हो। -नजुम-स्ती॰ यह काञ्य जिसमें विरहका वर्णन हो।

फिराद, फिरादि*-छी० फरियाद ।

फिराना - स॰ कि॰ इधर उथर चलाना, घुमाना, अमण या सैर कराना; चकर खिलाना; साथ लिये फिरना; मोइना, लौटाना; भीरका और करना; (पाखाना) करनेमें प्रकृत करना।

क्रिरार—पु॰ [अ॰] भाग जाना, पलायन करना । क्रिरारी –वि॰ भागा हुआ, पलायित (अगियुक्त द०) । क्रिरासत – जी॰ [का॰] बुढियानी, समझदारी; सासुदिक । फिरिंड—अ॰ दे॰ फिर'।

फिरिकी#-की० दे० 'फिरकी'। फिरियाद-सी० दे० 'फरियाद'।

किरियादि*-की॰ दे॰ 'करियाद' । किरियादी-वि॰, प्र॰ दे॰ 'करियाद' ।

किरिद्वार पुरुष्टिक के किर्माशास्त्र प्रदेश होता । सिंद्र किर्माशास्त्र स्विति स्विति । सिंद्र किर्माशास्त्र स्विति स्विति । सिंद्र किर्माशास्त्र स्वति स्वति । सिंद्र सिंद्र किर्माशास्त्र के सिंद्र किर्माशास्त्र के सिंद्र किर्माशास्त्र के सिंद्र किर्माशास्त्र के सिंद्र किर्माशास्त्र किरमाशास्त्र किर्माशास्त्र किरमाशास्त्र किरकार किर्माशास्त्र किर्माशास्त्र किरमाशास्त्र किर

न होना,-की दाल न मलना-किमोकी पहुँच न होना। -के पर जलना-मनेचका साहत न होना। गुकर न होना। -दिलाई देना,-नज़र आना-मीत सरीव होना। -(इतीं)की स्वयर म होना-नितांत श्रम होना।

फिरिहरा~पु॰ एक विदिया। फिरिहरी†-सी॰ दे॰ 'फिरकी'।

फ्रिको-पु॰ [अ॰] दे॰ 'फ़िरका' ।

क्रिलकौर-अ॰ फीरन, तुरतः मुदायी राहपर, दंश्वर-जीत्वर्थ।

अत्ययः -फ्रिलहङ्गीऋत−२० हदीकतमें, सचगुच । फ्रिलहाल−२० तत्वाल, सभी, इस मनय ।

पित्रदी†∽र्गा॰ पिरसी ।

क्रिया-अ॰ [फा॰] थिस् , दी (जिरस्कार्यप्रकः) ।

फिस-वि॰ सारहीन; कुछ नहीं १ सु॰ -हो जाना-वेहार सिद्ध होना: कुछ न रह जाना । फिसडी-वि॰ पीछ रह जानेवला, यामगे पिछता रहने-

वाणाः निवस्मा । चित्सपित्मावा-अ० कि० दिम श्रोनाः दोष्ठा, समन्तेर हो प० फरी-परानी पराडी जिसपर सथी पराडी वाँधी जाही

है: हाधका कड़ा । यतादार-पव सेव 'बतामा'।

गमाम#-भी० वायः वातरीय १

धतासा-प॰ पालिस दावरकी बनी हुई एक क्रिप्राई. शर्वरापण्यः एक आतिश्वासीः बलवला । स०-(से)सा

घलना-तद नष्ट हो जाना। यतिया~प॰ कछ ही दिनोंका लगा हवा छोटा फल ।

यतियानां −अ० कि० वात करनाः पेटों फलका सगना । चतियार=-की॰ वातचीत । बनीसा-प॰ बत्तीस दवाओं और प्रेवेंके योगसे बजाया

हुआ एउट या इलवा जो प्रसताको पश्चिके लिए विकासा जाता है। † दौत काटनेका घाव या चिक्र ।

यमीमी-लो॰ नीचे-उपकी टंतपंकिः वसीसी हाँसः मत्तीस चीजेंका समृह । ग्रु०-खिलना-ख़ककर हँसना । ~डाइसा – दाँतोंका गिर जाना। – दिखाला – दाँत दिखाला

हैंसना । –धजमा-अधिक जाहा समसा ।

धत#~प० कलायत्त !

वतोला-पु॰ भोला देनेका बात, भुलाबा, हाँसा। गु॰--(छे) बनाम(-वार्ने बनाना, गुलावा देना I

यसीरी-सी॰ अरंद, ददीरा-'उरपर कच नीके छरी अनत

वतीरी आहि'-रहीम ।

यत्तक-प० दे० 'दनल' ।

श्चमार-वि० दे० 'बदलर'।

यस्तिम-वि०, प० तेव 'बलीम'।

यशी-सी॰ वर्र, पराने कपढे आदिकी एँठ या बटकर बनायी हुई पनली पूनी जिमे तेलमें डालकर दिया जरु।ते हैं। मना हुआ, निवार रीमा, फीना जिसे लंगों में बालकर जलाते हैं: अपदेशी कही एँठी हुई धळी की घावके भीतर भरी जाती है। मीमवर्साः दिखाः कलीताः संदः आदिपर र्गधद्रभ्य छपेटकर बनायी हुई वस्ती जी पूजन आदिमें जलायी जाती है। चीरेका एँठा हुआ कपड़ाः चिरागः छात्रनमें लगानेका कास आदिका पछा । स०-दिखाना-रीशनी दिसलाना ! -हेना-दागना (तीप आदि)। -लगाना-नलाना, आग लगाना ।

वर्त्तीस-वि॰ तीम शीर दी । प॰ वर्त्तासकी संस्वा, ३२ ।

बक्तीसा-प॰ दे॰ 'बहीसा' ।

बसीसी-छा॰ दे॰ 'बतीसी' । यथान 🗝 🗝 गाय-बैल रखनेकी जगह ।

बधुआ-पुर एक पीपा जिसकी पत्तियाँ सामके रूपमें खायी जाती हैं।

धट-स्वी॰ गिलटी: चीपार्वेक्ट एक रोगः बदला, एवत्र ।

−में −वदलेमें 1

घट-वि॰ [का॰] तरा, सरावः द्रष्ट, खोटाः अञ्चय । -अंदेश-वि॰ बुरा चाहतेनाला, बदरुवाह ! -अंदेशी-सी० बदरवादी । -अनुस्ताक्र-वि० अशिष्ट, दुरशील । ~अमनी~सी॰ अद्यांति, उपद्वा -अमसी-सी॰ भव्यवस्या, अञ्चाति, गुद्धासन । —ईतन्नाम—वि० प्रवंषमें अपद्र, जिसके प्रवंधमें दीप, खरानियाँ हो ।-इंतज्ञासी-स्वी॰ कुप्रबंध । -कार-वि॰ कुक्रमों: व्यक्तिवारी, दुध-

रित्र । -कारी-सी॰ कुंकर्म, दराचार: व्यक्षितार, परक्षी-गमन । -किरदार-वि० दक्षरित्र । -किस्मन-वि० असाधाः वरी किस्मलवाटा । - नत्रत-विक जिसके क्या खराव हों। -खरी-सीव वरी हिखावर। - रा-दिन। वरी आदतीं वरे स्वमाववाला। -स्वाह-वि॰ इस चाहनेवालाः दरमन्। -एयाही-सी॰ देवः शहरा। -ग्रमान-वि॰ दसरेके विषयमें वरी धारणा रहतेतालाः संदेड करनेवालाः शकी । -ग्रमानी-स्री॰ कथाएवाः शक ! -बो-वि॰ बराई करनेवाला, निरुक ! -गोई-छी॰ पराई, जिंदा। −सोडल-प॰ मरते हुए पाउस श्रविरिक्त मांस । --चलन-वि० दश्ररित्र, व्यभिवारी। - चलनी - स्वी० दशरियता, व्यक्तिचार, वरा वाल-वहन । - अश्वान-वि० अवशब्द, गाछी-गठीत वानेवालाः ग्रॅंट कट । —जनसनी—स्वी० यो जन्म क्षरताः साली-गतीर । -जात-दि० खोटा. नीच. समीना ! -जापका-दि॰ जिसका स्वाद खराव हो। कस्वाद । -तमीत-वि॰ विवे तमीज, सलीका न हो, गुँबार; स्रशिष्ट, गुलाख। -तमीजी-सी॰ अशिष्टता, शरतासी। -तर-विः अधिक बरा, क्याना खराव । -नरीन-वि॰ हरेसे हरा। निहायस खराव। -नहजीय-वि० असन्य, अधिः। सम्य । – तहजायी – सी॰ असभ्यता, अशिष्टता, उज्युपन । -ह्यानत-वि॰ शिसकी नीयत इमरेकी जमा मार हेनेकी हो, वेईमान, बदनीयत । -दयानती-स्री॰ सवानक धर्मती, बदमिजात ! −विसाग-वि० -विमारारी-खी॰ धर्मंड, अपने आपको बहुत पहा सम द्याना । -दिल-वि॰ सन्तहदयः निराधः अप्रस्त्री —दुका-की० द्याप, अहितकामनाका उदगार ।-मन्द्र-वि॰ पुरी नजरवाला । स्ती॰ यरी निगार क्रांहि। -नसीय-वि० अभागा, वरकिरात ! की॰ दुर्भाग्य। -नस्छ-वि॰ धुरी मरतका, नीव, कमीना । - नाम-दि॰ लोग जिसकी निंदा करते हैं। जिसकी बुराईकी प्रसिद्धि हो। -नामी-सी॰ छोक्रनिश अपकीर्ति । - ० कर टीका - कोई वरी बात करनेका दौर कांद्रन, कलंक । -निगाह-वि०, स्त्री० देव 'बहनदर' ! -मीयत-वि॰ दुरी नीयतवाला, जिसके दिख्ये दुर्ग हो, बेईमान । -नीयती-ला॰ नायत, हरादेका साहा होना, वेईमानी ! - सुमा-वि॰ जी देखतेमें इस स्रो मदा, कुरूप । -परहेज -वि॰ जी साने पीनेमें परहेब न करे, जुपस्य करनेवाला। -परहेनी-सी॰ क्रवर्गः अयुक्त आहार-विदार । -फेल-वि० कुक्सी, व्यशियारी। -फेली-सी॰ बुकर्म, व्यभिचार, श्दकारी। -यहर्त-वि॰ अमागा, बदनसीव । -यहनी-सी॰ दुर्माख, इम बस्ती । -वू-न्ही॰ दुगंध, जुनास ! -० दार-िं बिससे बुरी बास आये, दुर्गभयुक्त । -मनगी-सी॰ वर मना दोना, बदुता, विनाए । -सन्ना-वि॰ विसवास्वार अच्छा न हो, कुरवाद, फीका। -सस्त-वि॰ शरावडे नदीमें चूर, मतबाला, सदहीश; कामुक। -मस्ती" स्त्री॰ मद्दीसी, मनवालापनः कामुकता । -मारा-रि दुष्दर्भसे जीविका करनेवाला; हुरे चाल-चलतका, दुर् छ। दुष्ट, लुच्या । पु॰ गुंडा, दुर्श च जन । -माशी-सी'

९१३ फुत्कर-पु॰ [सं॰] अग्नि । फुरकार-पु० [सं०] दे० 'फुरकार' । फुरकृत-वि० [सं०] फूँका हुआ; चिलाया हुआ। पु॰ कूँक-से बननेवाले वाधभी ध्वनिः चीत्कारः देव 'मृत्कृति'। फुरकृति-सी० [स०] दे० 'फूरकृति'। फुद्कना-अ॰ कि॰ (मेडक, छोडी चिडियों, चिडियोंके बद्योंका) उष्टलते हुए चलना, क्दनाः हर्पके अतिरेकसे फ़दकी-सी॰ एक छोटी चिड़िया जो फुरकगी हुई चरुती है। कुनंग-पु० देव 'पुनगी' । फुनकार-पु० दे० 'कुकार' । फुमगी - सी॰ वृक्ष या शाखाका सिरा; शाखाके अंतकी कीमल पश्चियों और इंसा । फुननारे-पु॰ दुँदमा) फुनफुनी*-अ॰ पुनःपुनः, वार-वार-'हरि सगति विमा दुःख फुनकुनी'-यवीर । फुरफुकारक-वि० [सं०] जो हांफ रहा हो, हॉकनेवाला। कुरफुस-पु० [मं०] फेफड़ा । फुर्वेंदी-ली॰ साध बसनेकी होरी वा सादीके दो छोरोंकी गीठ जो सियाँ सामनेकी और लगाती है। फुफकाना = - अ० कि० फुफकारना । फुफकार-पु॰ शॉपके सुँहसे हवा निकालनेकी आवाज, फुल्कार । फफरारना-अ॰ कि॰ सौपका गुरसेमें ग्रेंडमे जोरसे हवा निकालना, पुँकतार करना । फुली*-स्वा॰ दे॰ 'कुली'। फ़ुफ़्स-पु॰ [मे॰] दे॰ 'फ़ुप्मूस'। पुरमूक-सी० दे० 'कूफी' । फुकेरा-वि॰ फुका या फुकीके नातेका (भाई आदि) । फ़ुबती - श्री॰ साहीशा मुना दुआ किनारा । फ़र-मी॰ छोटा थिहियोरी उइनेमें होनेवाली परीकी आवाज (पुरसे उड़ जाना)। + वि० सत्य।-फुर्-सी० वार-वार श्रीनेवाली 'पुर'की भाराज । कुरक्रत-म्बी० [अ०] वियोग, जुदाई । फुरफगा! -स॰ कि॰ मुँहमे गुरवना (बहा भादि)। कुरती-सी॰ नेतीः मुस्तीः बद्धी । पुरतीला - वि॰ तेम; सुरतः पुरतीमे काम करमेवाला । पुरना = -अ॰ कि॰ सुदित दोनाः उद्भूत द्वानाः निदलना (शब्द): यमक पहना; सत्य होना; फलदायक होनाः भगर करनाः पाकना । पुरपुराना-अ० कि० रम सरह उक्ष्मा कि परी वा हैनीसे 'पुर-पुर' आवात हो । स॰ कि॰ पुरेरी किराना; पंप भारि पाइपादाना । कुरपुरी-मी॰ उद्देशे लिए थ्रा फड़फड़ाना । पुरमान•-पु॰ दे॰ 'ऋरमान' । पुरमाना॰-म॰ क्रि॰ दे॰ 'प्रस्माना'। .पुत्रमत-मी: [He] अवदाच, साली बक्ता सुदी; ११-मैनाना रोगने मुक्ति। **मु॰-पाना**∸हररासा पाना।

-से-स्वराहमें; धारे-धारे।

हरनाः हिल्लाः फड़क चठना । फुरहरी-सी॰ वरीं आदिकी फडफड़ाइट: कंप:दे॰ 'फुरेरी' । मु॰-लेना -कॉपना । पुजाना-अ॰ कि॰ सत्य होना, पुरना । मृ॰ कि॰ सत्य करना, सत्य सिद्ध करना । फ़रेरी∽स्ती॰ सींक या तिनकेके सिरेपर लपेटी हुई रुई जिसपर इत्र, तेळ आदि चुपड़ा जाय; कॅपकॅपी, कंप्युक्त रोमांचः फड़कनेका मान । मु०-लेना-कंफी साथ रोमांच होनाः दिलनाः सतर्क हो जाना । कुर्ती-स्री॰ दे॰ 'फुरती'। कुर्सत-सी॰ दे॰ '.कुरशत'। फुल-'फूल'का समासमें व्यवहत रूप !-कारी-सी॰ गुल॰ बुटेका काम, गुरुकारी; एक कपदा जिसपर रंगीन रेशमसे पूछ कड़े होते हैं। - जुही-सी० पक छोड़ी चिहिया जो फुलोपर उड़ा और उनका रस चुसा करती है। -झड़ी-खी॰ एक तरहकी आतिश्वामी जिसे जलानेपर फुल जैसी चिनगारियाँ शहती दें: शगहा लगानेवाली बात (फुलशही छोड़ना); झगड़ा कराने-छगानेवाली स्त्री। -धर-पु० एक कपड़ा जिसपर रेशमसे फूल बने होते हैं। -वाई --की॰ दे॰ 'फुलवारी' । -वादी-सी॰ दे॰ 'फुलवारी'। -धार--वि॰ प्रकुल, प्रमुदित । पु॰ रंगीन कागजके बने हुए फूल-पौधे जिन्हें सजाबदके लिए बरातके साथ ले जाते है। -वारी-की॰ फुड़ोंका (छोटा) बाग, पुण्पवाटिका। -तरा-सी॰ यक चिश्या। -सुँघी-सी॰ पुरुत्रही विदिया। -हारा-पु॰ माली। कुलका-पु॰ इसकी पनली रोटी, चपाती; * कफोछ। । फुछकी-सी॰ धीटा पुरुका । फुलकुला−वि० पूला-पूला-सा । फुल्रोग-पु॰ एक तरहकी भीग । फुलाई-ली॰ खुरेको बीमारी: बबुलका पक भेद: पुलानेको क्रिया 1 फुलाना-स॰ कि॰ किसी चीतकी हवा मरकर कैलानाः मोश करनाः चापलुमी करके किमीका दिमाग चहाना। गर्ने बढ़ानाः फूलनेका कारण दोसा, पुष्पित करना । अ० कि॰ पूसना । कुलायस•-पु॰ दे॰ 'पुन्रेट' । फुलाय−पु॰ दे॰ 'पुसाबर'। फुलाबट-भौ॰ फुलनेशी किया; पैलाव, उमार I फुलाया-पु॰ चीध या जुड़ा गॉभनेवी पुँदनेदार होती। फ़ल्सिंग-पु॰ दे॰ 'स्त्रहिय'। फुलिया-नी॰ एथाकार मिरेवाला बाँशा कानमे पहनने ह्ये स्तंग। पुर्तिसकेप-पु॰ [अ॰ 'कृत्स्पीप'] एक विशेष आसारका सफेर कागत (१२°×१५" या १२३°×१६")। फुलेस-५० पृष्ठीमे बनायी दुई एउटी । फुलेल~५० गुशब्दार तेल। कुनैली-सी० पुनेन स्मानेदा दरतम । कुल्डहरा - पु॰ यश या रेशमहा बना बंदनवार; पुरेशा। वुज्योस-५० दश पर्कार । पुरदेशनाव-अर प्रिव स्पृतित होना; प्रकट होना; पर- | पुरुवेशी-कोव येगनही परीक्षी ह

यदि* -सी॰ दरला, प्रवत । ब॰ दरले, प्रवत्में । यदी -सी॰ कृष्णपश्च, अधेरा पालः [फा॰] बुराई, अफतार, नेक्षीका उलटा ।

यदूर्यः म्सी० दे० 'बंदूबः'। यदूरः, यद्लः म्पु० दे० 'बाद्रः'। यदुः आ-सी० दे० 'बद्रुआ'।

यद्दू-पु॰(अ॰) अरको रेगिस्तानमें रहनेवाली एक असम्य आति: उस आनिका जन । † वि॰ बुरा; दोपमाजन

(दन्ना)ः बदनामः । सद्ध-विव [मंव] वेथा हुआ, वाँधा हुआ; भव-वंधनमें फेंसा हुमा, अमुक्त (जीव); ज़ुदा हुआ (बद्धांजलि); अमा हुआ। रचितः यंद किया हुआ। प्रदक्षित, प्रकटित र-कक्ष,-**कक्ष्य-वि० बद्धपरिवर । -केसर-वि० जिसमें किं**जस्क या केंसर वस गया हो। -कोष,-सन्यु,-रोष-वि० मीथ पालरीवाला: मोध दवानेवाला ! -कोछ-वि॰ जिसे कोष्ठपंथका रीग हो, कब्जमे पीड़ित। - मृद्-पु॰ एक रोग जिसमें आँतमें मलका अवरोध हो जाता है। - प्रह-वि॰ हठ प्राहा हुआ। -चिस-वि॰ जिसका मन किसी विषयपर जमा हो। जिह्न,-वाक् (ख्)-वि॰ मीन, जो चुप्पा साथे हुए हो । -रष्टि,-नेज़,-छह्य-वि॰ जो किसी चीतपर आँखें गढ़ाये, जमाये हो। **–धार-**वि० श्रमातार यहनेवाला। --निङ्चय-वि॰ जिसने पक्का निश्चय पर लिया हो । - नैपथ्य - वि० जो नट या अभि-नेताको वेद्यभूषा धारण किये हो। -परिकर-वि० जिसने कमर बाँध ली हो, तैयार । - धरीय-यि० जिसे क्षण हो। -प्रतिज्ञ-वि० वचनवह । -प्रतिधत-वि० प्रतिध्वनियुक्तः :-फल-पु० करंज । -भू,-भूमि-सी० मनानका (पका) फर्याः मकान बनानेके लिए तैयार की गयी जमीन ! - मुष्टि-वि॰ निसकी मुट्टी दानके किए न सुले, वंज मः जिसकी सुद्री वैंथी हो। नमूछ~वि॰ जिसने जह पराइ हो हो। ११मूल । -सीम-वि० तिसने नुष्पी साथ छी हो। -युक्ति-स्ता० वंशी यज्ञानेका एक ईय। (संगीत)। -रसाछ-पु॰ एक वश्या नाम। -सग-वि॰ किसीके प्रति दह रागयुक्त, आसक्त । -शास्य-वि॰ निसे राज्य प्राप्त हुआ हो, राज्यास्य । -वसति-दि॰ जिसकी रहतेका रथान निश्चित हो। -चेपश्च-वि० विसे वें.परंपी श्री गयी श्री। -वेर-वि० जिसके भनमें किसीके प्रति वेर बढमूल हो गया हो। -शिख-वि॰ जिसकी शिया वैभी हो: अरपवयस्य । पु॰ छोडा बद्या !-शिस्ता-स्त्री॰ भूम्यामलकी । -सृत,-सृतक-पु॰ विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ पारा !-स्नेह-विव (किसीपर) आसक्त

बद्धांजलि-पि॰ [सं॰] सम्मान-अदर्शनके लिए जिसके हाथ जुड़े हों।

यदानंद्-वि॰ (सं॰) बानंदपुकः। यदानुदान-वि॰ (सं॰) दे॰ 'बद्धान'। यदानुदान-वि॰ (सं॰) अतुकः क्रवंडस्व। यदानुदान-वि॰ (सं॰) जो दिग्यार बोपे हो, यसस्त्रा । यदानुव्य-वि॰ (सं॰) जिसके मनमे एका उत्तर्भ हो गयो हो। बद्धाः - वि॰ [सं॰] आशान्तित । बद्धी - स्त्री॰ बाँधनेका साधन, डोर, रस्सी; गरेने पहनदेश एक गष्टना ।

बद्धोःस्सय−वि॰ [सं॰] जो उत्सदका आनंद हे रहा हो आ उत्सव मना रहा हो । यद्बोदर−पु०[सं०] कोप्रवद्धता । वि॰ जिसे करत हो ।

यद्धोद्दर-पु॰[सं॰] कोष्ठवद्धता । वि॰ जिसे कम्म हो । यघ-पु॰ दे॰ 'वथ' ।

व्यवा— स्वर्कोक वय करणा, मार राज्या 19 थेरीरर पात्र विससे मुख्यमान प्रायः कोटेका काम देते हैं। व्यावहँ—कीक व्यावा, करवा, मंगळवारा, हुआँके मीके परका गाना-प्रवाना; इट-नित्रके हुएँ, सफल्यार हिरा - कानेवा का पूर्व-कारा, मुसारकपाद, मुसारकपाद मीत्र मुक्त-का वादियर वात्र ने सामकर हुएतार, कु-व्यवता-प्रक्र-कम वादियर वात्र, सामकर हुएताई, क्वता।

त्रधानाः – सः किः वध करानः । बधायाः – पु॰ वधारः । बधायनाः, बधायसः – पु॰ दे॰ 'वधाया' । बधायनाः, बधायसः – पु॰ दे॰ 'वधाया' ।

बचाबा—go बचाई; मंगलाबार; पुत्रकम बारिके अस्तः । पर मेत्रा पानेवाला उपहार । वधिक-पुठ वर करनेवाला, जहार; ब्याप, ब्हेलिया। वधिवा—go केल, बोडा, बकरा आदि जिल्हा बंदलेय कुचल वा निकाल दिया, जाया हो। बैल । क्यु०-बहुता-चलते हुए बेलका बैठ जाना; बारा होना।

विध्यानां - स॰ कि॰ यथिया गरना । विध्य-चु॰ सि॰] बदरा । विध्य-चु॰ सि॰] बदरावन । विधित्त-वि॰ (सि॰) बदरावन । विधित्त(म्ब)-ची० (सि॰) बदरापन । वध्य-ची० दे॰ 'वधू' । वधू-ची० दे॰ 'वधू' ।

न वायुक-पुरु वर 'बेपुर्स' । 1 वायुदी-न्द्रीर रेट 'बयुदी' ! 1 वायुसी-नुश बगुना, वर्षदर । - वायुसार-नोर रेट 'बयाई' ! वायुसार-नोर रेट 'बयाई' ! वायुसार-कार्यास रेट 'बयाई' । वायुसार-कार्यास रेट 'बयाई' । स्वार्ट-पुरु वार्गे

बंदर्को जातिका एक पीपा जिसको अङ्ग बनवासो अहरा स्वीदरस्य सात है। —कंद्रा—पुठ अपने अप पूरा हुआ गोवर जो ईपनवा काम दे। —कंद्रा—पुठ अपने अप पूरा हुआ जिसका पोर द्याके काम आशा है, पारमा। —कंप्रा— पुठ एक पोषा। —कंद्रा—पुठ अंगरे (काम)। नकंप्रा— सी० पक तरहका बंद्या ज्यारको बारवर आवार दर्तेया इक। —कंप्रास—पीठ प्रदेशकी जातिका एक गोपा। —कंप्रासी—सी० एक पीपा जिसके रोगीर रसी बार्ज है। —कंप्रा—कंप्रा—कंप्रा—कंप्रा—कंप्राची जातिका एक सी। इस्त मार्ग ।—कंप्रा—पुठ जंगरी है। —कंप्रा—कंप्य—कंप्रा—कंप्य—

-पु॰ कोनियाका साथ । न्संड-पु॰ वनका होई भाग वनस्वडी । न्संडी-स्वं॰ वनसंड । पु॰ वनसंडी । सरा-स्वे॰ वह जमीन दिसमें बनासंडी फूट होरी गयी रही हो ! नगरी®-स्वे॰ रहा गएको । नगाय पु॰ चैत्र-शृहा एकादशीको होनेवाटा एक उत्सव।-दान-पु॰ गुरुदस्ता रखनेका पात्र । -दार-वि॰ फूर्लोवालाः जिसपर फूल-पत्ते या बेल-बूटे बने हों। -विरंज-पु॰ एक तरहका विदया थान । --भाँग-न्ही॰ एक तरहकी मॉग। -मती-सी० एक देवे। -वाळा-पु० माठी। वि॰ फूलदार । – बाली –स्त्री॰ मालिन । सु॰ –स्नाना -फूल लगना। -उतारना;-स्रोदना-फूल चुनना। -चुनना-पूछ तोइकर एकत्र करना। -झड्ना-मुँहसे मीठे शब्द निकलना । -पहना-वत्तीके मुँहपर गुल वतना । -भेजना-फुलॅंके संकेत द्वारा प्रेमी-प्रेमिकाका एक पूरारेको सँदेसा भेजना । - बार्लीकी सँर-महरीली-(परानी दिश्ली)में होनेवाला एक सालाना मेला। −सा -बहुत सुकुमार ! -सुँघकर जीना या रहना-बहुत धोड़ा खाना, अल्पाहारी होना। - (लॉ)की चादर-चाररके रूपमें गुँथे हुए फुल जो पीरों आदिकी कर्मोपर डाले जाते हैं। –की छड़ी–फूलोंके दार लपेडी दुई छड़ी। −की सेज−पुष्पश्या, मुख और चैनमरी स्थिति। -की सेजवर सोना-सुदा-चैनकी जिंदगी वसर करना। -फे फॉर्टेमें शुरुना-बहुत सुकुमार दोना; राजसिक सुख भीगना !

पूरुमा-अ॰ विः॰ (पेर-पीपेमें) फूल आना, कुमुमित होनाः कडीका खिलनाः गर्वमे इतरामाः अति प्रसन्न होनाः हवा भरनेते तन जाना, फैलना; मोटा होना, सुबना; हीला, शिथिल होना (हाथ-पाँव फुलना): सठना, नाराज होना: भुनद्दने प्रकाशसे युक्त दोना । मु॰ फुलकर कुष्पा हो जाना-अत्यधिक इपं या गर्ने होनाः बहुत मोटा हो जाना । फूलना-फलना-धन-धान्य और बाल-वर्धीसे सुपी होगा । -फालना = -प्रसन्न होना । फला-फला पिरना-भानंदमें मध होकर या गर्वसे इतराक्षे हुए विच-रना । फुले न समाना-गुरीमें भाषेष्ठे बाहर हो जाना । फुला-पु॰ सील; मॉसकी फुर्ला ।

कृती-सी॰ माँसकी पुतर्लापर पड़ा हुआ सफेर दाग जिससे दृष्टि मंद दी जाती और मारी भी जाती है। एक तरहकी सजी।

पृता-पुरु पूरा तूग, पूस । ई स्वीर कुर्यो ।

पुत्र-पु॰ सूनी याम जी छप्पर बाँधने, ईपन आदिये काम भाये: जीर्प शीर्ण बरतु ।

पुद्धव-वि॰ मरे देगमे बाम बरनेवाला, वेशकर (विशेषनः भी); भरा, गंदा (-गाली) । सी॰ बेदाउर सी । -पन-पु॰ देश्यापन, महापन ।

पृहर् -शिक, श्तीव देव 'पृहरू'।

मृहा−पु० रईका गान्ता ।

मृद्दी-सी॰ पुदार, शांसी । पॅ.क-सी॰ पॅसनेसी किया।

पॅक्ना-म॰ कि॰ दिशी भीषठी दायने देनी। दरकत देना कि कुछ दूर जा गिरे; यभीनपर गिरानाः पटकनाः नद्याः नताः से याहर दूसरी जगह काटना (क्का): टाटना (की)। पत्ता); १४८-३४१ करेर देना; पत्ताना (नीर); सर्पर श्रीहाना (पोड़ा): गैंडाना: घोडना, परिस्वाय बहना: अपन्यम् करनाः गुमानाः, भौतनाः (एछ) ।

फॅॅंकरना≉−अ० कि० दे० 'ऐकरना' । **प्**काना –स॰ क्रि॰ पेंकनेका काम दूसरेसे कराना ।

केंगा!-पु॰ दे॰ 'किंगा'।

फॅॅंट-की॰ दे॰ 'फेॅंटा'; रुपेर; फेंटनेकी फिया। मु॰ --कसना,-वाँधना-कटिक्द होना ! -धरना,-एकडना जानेसे रोकना ।

फॅॅंटना-स॰ कि॰ हाथ या उँगलियोंकी हरकतसे भिलाना (पीठी इ०); अच्छी तरह मिलाना, गङ्गमङ्क करना(ताश) । फॅटा-पु॰ कमरका घेरा; कमरपर छपेटा हुआ कपड़ा, कमरवंद; धोतीका वह भाग जी कमरपर रुपेटा गया हो: सिरपर रुपेटा हुना कपड़ा, छोटी पगड़ी; सूनकी बड़ी अंटी ।

र्फेटी-स्ती० अटेरनपर रुपेटा हुआ सत । फेकरना - अ॰ कि॰ (सिरका) अनावृत होना; गीरह या

स्वारका चिस्लानाः कृट-कृटकर रोना, फॅकरना । फेकारना - स॰ कि॰ (सिरकी) खोलना, अनावृत यारना ।

फेकेत-प्र॰ फेंकनेवालाः पहलवान् । फ्रोज़-पु॰ कॅची दीवारकी तुकी टोपी ।

फेट-सी० दे० 'पे.'ट'।

फेटा-पु॰ दे॰ 'फेँटा'।

फेट्कार-पु॰ [सं०] गीदहोंका रोना । फेणे, फेन-पु॰ [सं॰] झाग, बुलबुलॉका समूह । -सुरधा-की विषया पासका एक मेद । -धर्मा (मेन्)-वि॰

क्षणभग्र । -पिंड-पु॰ बुद्बुदः निर्धित, सारहीन बात । -मेह-पु॰ प्रमेहका एक भेद । -धाही(हिन)-पु॰

हानने के काम आनेवाला कपहा । फेजक, फेनक-पु॰ [सं॰] फेन; यक मिठाई, बतासफेनी ।

फेर्ड - पु० फेरा। फेनका -स्ती॰ [सं॰] एक तरहदी पीठी।

फेनल-वि० [मं०] देव 'फेनिल' । फेना~सी० (सं०) एक धरा ।

केनाम-पु॰ (सं॰) बुलबुला । केनाशनि-प॰ (सं०) ध्रह ।

फेनिका-सी॰ [सं॰] दे॰ 'फेनका'; 'फेना'।

फेनिल-दि॰ [मं॰] फेनबुक्त, शागरार । केनी-सी॰ [स॰] बीमें छाना हुआ मेरेबा छव्छा निसे

दूधमें भिगोकर और शहर मिलाकर खाते हैं, सुपाफेनी। फेकडा-पु॰ छातीके नाने स्थित धेतीके आकारका अवयव बिससे रोइवाने अधिकांश यानी गांस हेते हैं, प्रमुख ।

केफ़री-माँ॰ सुरदीमे होठींवर पहनेवाहो पपरी।

केकरी = न्मी० दे० 'फेकरी'।

फेर**ंड**-५० [मं०] सियार, बीदह ।

फेर-पु॰ [सं॰] भोदकः [दि॰] ग्रुमानः रारोका ग्रुमान, चवरः परिवर्तन, बदलनाः भ्रमः रिपरीसता (समहाका केर); फर्ट, बंगरः उद्यानः बब्दानाः वदाया नुसमानः वित्राधाः बदला-ददला । • अ० और, तरफ (वर्देकर); दे॰ 'हिर' । -पल्टा-पु॰ गीना । -पत्र -पु॰ उमर-वेरः चहर । –धदस्य–पु० तदरीसी । मु० –स्याना– पहर बाटना, युमावके सारने जाना । -वेँघना-निष्ठ-

भिना हमना । –में पहना–मुक्तान चटानाः उन्हानः इटिमारेने दहना । – समाना–नुद्धि स्वाता ।

```
धनावंत, यनायनत≉-पु॰ वर-कन्याकी जन्मपत्रियोंका
   मिलान ।
  यनाय*-४० अन्छी तरहः बहुत क्यादाः विलकुल ।
  यनार-पु॰ चाकम्; कासमर्थःकाशीकी उत्तर-सीमापर् स्थित
   एक प्राचीन राज्य ।-
  धनारस-पु॰ वाराणसी, बाझी ।
  यनारसी-वि॰ बनारसकाः बनारसमें बना हुआ। पु०
   काशीवासी ।
 धनाच-पु॰ वनावदः बनना-सँवरनाः युक्तिः सपायः मेछ ।
   -सिँगार~पु॰ वनना-मँवरना ।
 यनायट - सी॰ बनानेकी क्रिया, रचना, गठन; रूप; बनने-
   का भाष, बाहंबर, दिखाया, नुमारश्च ।
 धनावटी-वि॰ दिसाऊ; कृत्रिम, नक्ली ।
 बनायन!-पु॰ समाज बनानेपर निकलनेवाली सिट्टी,
  ककड़ी, कचरा आदि।
 यनायनहार, यनायनहारा#-पु॰ बनानेवाला, रचयिताः
  सुधारनेवाळा ।
 यनावनः *~स० कि० दे० 'बनाना' ।
 यनावरि*-सी० वाणींकी सवलि, पंक्ति।
 यनास-क्षा॰ राजपृतानेकी एक नदी।
 यनासपाती*-का॰ दे॰ 'वनस्पति'-' "नासपाती खाती
  ते बनासपाती खाती है'-भूपण 1
 यमि = - स्त्री • अन्नये रूपमें दी जानेवाली दैनिक सजदरी।
  -हार-पु॰ वनीपर काम करनेवालाः खेतीके काममें
  भिसानकी सहायता करनेवाला स्वतंत्र मनद्र । ~हारी-
  रुती० दे० 'वनि'।
 थनिक-पु० दे० 'वणिक्'।
 बनिज-पु॰ दे॰ 'बाणिउय'। -टबोपार-पु॰ वाणिउय-
  व्यापार ।
यनिजन। #-स॰ कि॰ ब्यापार करना; कय करना ।
यगिजारा-पु॰ दे॰ 'वनजारा'।
यनिजारिन, धनिजारी-न्यो॰ बंनजारेकी स्ता।
यनित#-प्रश्नानाः सज्ञावट । ।
थनिता~सी० सी; परनी ।
थनिया-पु॰ न्यापार करनेवाली एक हिंदू वाति, वैदय;
 थादा दाल आदि देवनैवाछ। ।
यनियाहन-सी॰ गंनी जैसी कुरती यो बुनी होती है।
 मनियेकी स्त्री ।
यमी-ली॰ अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मनदूरी; बन-
 रथली; बाटिका; क्ष्वपू, नायिका । क्ष पु॰ वणिक्, बनिया ।
बनीनी। - सा॰ बनियेकी स्वः बनियायन ।
यनीर*-पु॰ वेत, वानीर ।
सनेटी-सी॰ पटेशाजीके अन्यासमें काममें लायी जानेवासी
 वह साठी विस्ते दोनी सिरीपर स्टूट स्मे रहते है।
यनैला-वि॰ जगली, बन्य ।
यनोवास•~पु॰ दे॰ 'बनवाम'।
वनीआ, बनीवा!-विव बनावटी ।
                                                  शिव । सु॰ -बस करना-शिवीपासकोंका शिवको प्रमन्
यनीडी-दि॰ क्यासके फूलके रंगका, क्यासी।
                                                 करनेके लिए 'बम-बम' कहना। -धीलना-समाग ही
यनीधा-पु० दे० 'बनवध'।
                                                 जाना (शक्ति,पूँजी, सामग्री आदिका),दिवाला हो जाना !
बनीसी –सी० ओहा, उपह ।
```

यञ्चात-सी॰ दे॰ 'दनात' । यसी—स्ती॰ अञ्चके रूपमें भिलनेवाली दैनिक मंबद्री। वन्हि-पु॰ दे॰ 'विद्वे' ।. 😘 यप≠-पु॰ बाप, विता । -मार-पु॰ बापको हत्या करने बाला, पितृपातकः धीला देनेवाला । . वपतिस्मा-पु॰ [बं॰ 'देप्टियम'] ईसाई धर्मकी दोहते समय किया जानेवाला एक संस्कार। यपना*-स॰ कि॰ बीज बीना, वपन । वपुः वपुस्त≠-पु॰ शरीर; स्प; अवतार । वपुरा = - नि॰ बेचारा, दीन, अशक्त ! वपौती-सी॰ वापकी छोनी हुई जायदाद, पैनुक संपंति। बप्पा -पु॰ बाप (पायः संबोधनरूपमें प्रयुक्त)। वेफारा-पु॰ भाषः दवा मिले हुए पानीकी भाषने धरीर 🛚 - अंगविशेषको सेंकना (देना, लेना); इस प्रकार काममें हारी जानेवाली दवा। यफौरी-सी॰ भागसे पकायी हुई परी। खबकना-अ॰ कि॰ उत्तेजित होसर वीलना, वगदना। उग्रलना । 📭 ययर-पु॰ (फा॰) अफोकामें पाया जानेवाला शेर, सिंह। - अकाली-पु॰ प्रथम महाधुद्रके बाद संबद्धित अग्राहिः , बोंका एक शप्त दल जो कुछ दिनोत्तक कराल, दर्देनी आर्थि करतारहार . यया#-पु॰ दे॰ 'बाबा'। बयुआां-पु० वड़ा लमीदार, वाबू: पुत्र, बामार, देश ·आदिका स्नेद्दयुचक संबोधन । यसुई। - सी० वह जमीदार, बानुकी बेटी; वेटी; छोटी ननर का संबोधन । यपुर्†-पु० दे० 'ववल । थयूल-पु॰ एक प्रसिद्ध सँटीला पेड़ शिसकी स्करी ⁸⁵⁷ कड़ी और मजबूत होती और फल, पत्तियाँ, गाँद सारि दवाके काम आते हैं, कीशर । ' -बव्ला-पु॰ दे॰ 'दग्ला'। दे॰ 'वुलदुला'। यमनी-सी॰ जोंकरे बाकारका छिएकछी जैसा एक नी विसकी पीठपर चमकीकी धारियों होती है ; बनकुस ! बभृतां - स्ती॰ दे॰ 'ममृत'। वभ्रवी-सी॰ [सं॰] दुर्गा । बार -वि० [सं०] गहरे मरे रंगका गंबा, खलाट। पुर अधिः नेवलाः गहरा मूरा रंगः भूरे बालावाला व्यक्ति शिवः विष्णुः चातकः सकारं करनेवालाः मूरे रंगदी कीर बस्तु । -केश-वि॰ भूरे वालीवाला । -धानु-सी॰ सीनाः गेरू। -छोमा(मन्)-वि० भूरे बालीवाना। ~बाह्न-पु॰ अर्जुनका एक पुत्र !· यम-पु॰ शिवकी प्रसन्तनाके लिए कहा जानेवाला एक कृष्टा एकके, बैकगाड़ी आदिमें आगेदी और निकला हुआ बाँस या एकई। जिसमें थोहे, बैठ आदि जोने वाते हैं। शहनाईके साथका छोटा या मादा नगादा । -भोटा-५०

यम-पु॰ [अं॰'बांब'] छोडेका छंशेतरा गोला निमर्भे सन्दर

यामोफोन । 🔍 फोया-पु॰ दे॰ 'फोहा' ।

फोरना*-स॰ कि॰ दे॰ 'फोड़ना'।

फ्रोरसेन-वि॰ अं॰ी छापेखाने, कारखाने आदिमें काम करनेवालोंका मध्यया या उनपर निगरानी रखनेवाला कर्मचारी ।

फोहा-पु॰ रुईका गाला जो फिसी चीजसे तर किया गया द्दी, फाहा ।

फ्रौआरा-पु॰ [अ॰] कुहारा ।

फ्रीक-स॰ सि॰। उत्पर 1 पु॰ संनाई; चोटी; शेष्टता।

मु॰ -रें जाना-आगे वह जाना । फ्रीज-लो॰ (अ॰) सेना; जनसमृह, मजमा । -दार-प्र॰ सेनानायकः बादशाह आदियो स्वारीमें हाभीपर आगे बैटनेवाला, कोतवाल । -दाश-सी० कीनदारका पदः मारपोट, छडाई ।-०शदालत-स्रो० अपराधीका विचार, निर्णय बारनेवाली अदालता दंद-न्यवस्था करनेवाला न्याया-च्या - ० अफ्रसर-प्० फीजदारी अदालतका हाकिस। मु -का धुँघट खाना-सेनाका दारना, पराजित द्रोता।

फ्रीज़ी-दि॰ फीनसे संबंध रखनेवाला । पु॰ संनिक ।

फ़ौत-की॰ [अ॰] मरना, गुजर जाना; खो जाना (होना) । -इदा-वि० मृत, मरा हुआ । कौती-वि॰ मृत्य संबंधी । खो॰ मृत्युकी स्चना । -नामा,

-रजिस्टर-पु॰ वह स्वी या रजिस्टर जिसमें मृतजनी-की मृत्युतिथि और उनका नाम-पता लिया नाता है 1

फ्रीरन्-न० [अ०] अभी, तुरत, झटपट । फ़ौरी-वि॰ जन्दीका ।

फ्रीलाद-पु॰ [फा॰] कड़ा और बढ़िया लोहा जिसके हथि-यार और तेज धारवाले औजार बनाये जाते है। -तन-

वि॰ ध्द शरीरवाला । फ्रांलादी-वि॰ फीलादका बना हुआ, बहुत कड़ा या

मजबता सी॰ बहमका टंडा।

फीवारा⊶पु० दे० 'क्रीआरा'। .फ्रांक-पु॰ फांस देशका सिका ।

.फांस-पु॰ यूरोपका एक देश जो स्पेनके उत्तरमें हैं। ,फोसीसी-वि॰ कांसका । पु॰ फ्रांसका रहनेवाला । स्वी॰ फांसकी भाषा, फेंच।

.फाक-पु॰ [अ॰] डीली, छोडी आस्तीनका संवा कुरता को बच्चे और खियाँ भी पहनती है।

फ्रेम-४० भि॰ो चीहरा ।

ष-देवनागरी वर्णमालामें प्वर्णका तीसरा वर्ण । उद्यारण- । स्थान ओष्ट्र ।

र्यक-वि० + टेडा, वज्ञः † तिरहाः बीर, पराक्रमीः • विकट, दुर्गम । • अ० वज्ररूपसे, तिरछी निगाइसे । -नास-सी॰ यह नहीं जिमसे सुनार जुड़ाई करते समय चिरागरी ही प्रैकते है।

चंक-पु [sio 'देक'] वह कार्यालय जो लोगोंका क्षया अमानतके रूपमें जमा करता और मींगनेपर खदके साथ

छन्हें बापस देना है। र्यक्ट-- वि॰ देश, वझ-'बंबर भीड् चपल अति छोचन'-

धंकराज-पु॰ एक तरहका माँप।

यंका=-वि० दे० 'कंक'; बहिया।

र्षकार्ड-सी० ५क होतेना भाव, बाँग्यन । वंश्मि-वि॰ देश।

शंतरक-विक देव 'बंदा' !

षंक्रताक-श्रीव देशपत ।

र्थेके अन्≠-अ० पुरनी के ब्रह्म ।

बॅग-पु॰ बंगाल, मगः • यह दवा की तावत बहानी है। • 4(4) (

दंग्दें।-४१० दस नरहरी फत्तमा शहारत, नकारी । बॅगला-विश् बंगलका । सीर वंगामको भाषा, 'बंगमाथा । पु॰ शुली अगहमे बना शुंदर छोटा हवादार सदानः सबसे उपन्या एवार बना दुआ छीटा हवादार कनरा: बंगालका

वैग्रही*-मी॰ इद गहना को शृद्धिके साथ पहना

नामा दे। पानीओ यह आहि ।

बंगसार-पु॰ बदाबपर चर्निके किय पुरु जैसा बना हुआ चब्तरा । र्यगारी -वि॰ देशः नदस्यः, उपद्रवीः अद्यान ।

वंगाल-पु॰ भारतका एक पूर्वी प्रांत, वंग देश; एक

वंगालिका-सी० एक रागिनी ।

र्यगानी-पुर वंगालका रहनेवाला, वंगरेशीय । स्तीर

दैवला भाषाः एक राविनी । धुँगुरी। – छी० एवं गहना, वेंगली ।

बंचक-१० दे० 'बंचक' ।

बंधकता, बंधकताईं €-सी० दे० 'बंधकता'।

र्थसन-पु॰ दे॰ 'बंचन'।

र्थसनार-स॰ क्रि॰ ठगना । म्रो॰ दे॰ 'बंचना'।

बैंचवाना - स॰ कि॰ परवाना ।

यंचित-पि॰ दे॰ 'वंधिन'!

वंडना - स॰ कि॰ वंडा करना, चाइना ।

बंद्यनीय = वि० दे० 'वांद्यनीय' ।

बंधित="नि॰ दे॰ 'वांटिन' ।

वंतर-पु॰ सेतांके अयोग्य जमीन, वह जमीन तिसे शिव

न बना सके उमर ।

बंजारा-पु॰ दे॰ 'बनजारा'।

दंजुल, दंजुलक-पु॰ दे॰ 'बतुन'।

बंधार - वि॰ म पलनेवाला (पेर, पांपा), बंध्य । वि॰,सी॰ बच्या । स्ती० बंच्या श्ती ।

बॅटना-स॰ कि॰ बॉटा बाना, माग किया बाला। विद्रारित दोना ।

बँटवाई-सी॰ बॉटनेडी उदस्त ।

44-16

-टेना-वदाना,वृद्धि करना।-होना-वदना,वृद्धि होना। यरकती-वि॰ जिसमें वरकत हो। वरकतके लिए निकाला हुआ (हुपया) । दरकता!-स॰ क्रि॰ घटित न होनाः टलनाः बचनाः अलग रहना । बरकासा#-स॰ क्रि॰ निवारण करना; इटाना; धचाना; पीछा छन्दाना । वरकायसा - स॰ कि॰ दे॰ 'बरकाता'। यरख*-पु० दे० 'वर्ष' । धरखना*-अ० क्रि॰ दरसना । स० क्रि॰ दरसाना । ग्रस्ता = -सी० वर्षाः वर्षा ऋत । यरवाता#-स॰ क्रि॰ दे॰ 'बरमाना' । बरग-पु० दे० 'वर्ग'; दे० 'वर्ग' ।-वरगद-पु॰ मारतका एक प्रतिद्ध पेड जिसकी गणना पाँच पवित्र बुझोंने हैं और जिसकी आयु और विस्तार संगवतः सद पेर्देसि अधिक होता है, वट । यरचर-प॰ एक तरहका देवदार I बरचडार्न -सी० दे० 'बरेच्छा'। बस्धा-पण्माला । यरछी-स्रो० होटा वरहा । धरर्छत#~प० वरछ। रखने, चलानेवाला । धरजना#-स॰ कि॰ मन। धरना, रोवना । यरजनि≉∼छी० मनादी, रोक । **श्राह**—पुर्व [मंत्र] एक अन्न । धरत~प॰ दे॰ 'वत' । स्ती॰ इस्सीः वह दस्सी जिसपर चरकर नद खेल घरता है। यरतम-ए॰ मिडी। धाद आदिका पात्र जो खासकर खाने-पीनेकी चीजें रखने या फ्लानेके काममें लाया जाय, आँडा: व्यवहार, बनीव । 📣 बरतना-स॰ कि॰ काममें लाना, इस्तेमाल करना; वर्ताव करना । धरतनी-सी॰ शब्दका वर्गक्रम, हिस्से। धरताना-स॰ कि॰ घाँटना, वितरण करना । पु॰ पुराने कपहे, उतारा । बरताय-प॰ बरननेका हंग, व्यवहार है बरती =- वि॰ दे॰ 'प्रही' । स्वी॰ वसी। धरद्र-पु॰ दे॰ 'बरवा'। बरद्याना। – स॰ कि॰ दे॰ 'बरदाना'। घरटा∸* ए॰ दे॰ 'बरधा'ः[त्∘] दासः सद्दर्श ।−क्रशेक -प॰ दास-रासियोंको खरीदने-वेचनेनाला ! -फ्रशेड्रा-धी॰ दास-दासियोंको सरादने वेचनेका रोजगार । यरदाना~अ० कि०-गाय, भेस आदिका ओहा छाना, गाभिन होना । † स॰ फि॰ गाय-भैस आदिको जोडा शिलाना, गाविन बराना, बरदवाना । थरदिया, वरधिया#-पु॰ चरवाहा । यरदौरां-पु॰ वैल आदि वॉधनेका स्थान, वधान । यर्थ, यर्था - पु० दे० देल' :- मुतान-मी० गीगृत्रिका। यरधाना−अ॰ क्रि॰, स॰ क्रि॰ दे॰ 'बरदाना'। धरन = -पु॰ रंग। अ॰ दिका यरनन+-पु० दे० 'वर्णन' ।

यरनना*-स॰ ब्रि॰ वर्णन दरना। वरनग-प॰ दे॰ 'वर्तग'। बरना - प० कि० वरण करनाः चुननाः व्याहनाः गार करनाः मना करनाः नियक्त करनाः निमंत्रित एरनाः व॰ कि॰ बसना । वरनाला-पु॰ ज्हाजका फाजिल पानी निकाल रेनेस ,परनाला । बरफ्र-सी॰ दे॰ 'बर्फ़'। वरफ्रानी~वि॰ दे॰ 'वर्फाती' । वरफ़ी-सी॰ एक मिठाई जो चीनीकी बाशनीमें सोग पेठा, बेसन आदि मिलाक्षर बनायी जाती है। : बरफ्रीला-वि॰ दे॰ वर्षाला'। वस्यंड = -वि० दे० 'वरियंड' । : घरवट=-अ० वरवम, हठात । बरवत-प॰ बि॰ो एक यात्रा, कट । बरवर-प॰ उत्तरी अफ्रीकाका सदाराके उत्तर और मिन .तथा भूमध्यसागरके बीचका भूखंड, वर्बर, इन्छ। वि असम्य, जंगली, वर्बर । # ली० दे० 'वहवड़'। बरवरियत - स्था॰ वर्गरना, जंगलीपन । बरबरिस्तान-प्र॰ वर्गर देश, अशीका । -श्रास्थरी-स्वी॰ बुढी वकरी । वि॰ वर्षरका, वर्षरीवित ! बरबस-अ॰ जबर्र स्ती, वलप्रवेकः अकारण, व्यर्थ ! यरम=-पु॰ दे॰ 'वर्म' । वरमा-प॰ छकडीमें छेद करनेका भीजारः भारतकी पूर्व सीमासे क्या हुआ एक देश, प्रसदेश। थरमी-पुरु बरमावासी । स्त्रीर बरमाकी भाषाः छोटा गरमा वि० वरमाकाः वरमा-संबंधी । बरह्या#-पु॰ ब्रह्मा; बरमा । चरहारत#-पु॰ दे॰ 'शरम्हाव'ः। बरम्हानाः, बरम्हावनाः - स० कि० भाशोबीर देना । बरम्हास=-प्र॰ ब्राह्मणत्वः आशीर्वोदः। धरराना-अ॰ कि॰ दे॰ 'बर्राना'। बररे-पु॰ वर्रे, सिष्ठ । बरवद-स्री॰ तिही । यरदा-पु० दे० 'वरवे' । बरवं-पु॰ पक मात्रिक शंद । वर्षना •- अ० कि.०, स० कि.० दे० 'बरसना'। वरंपा=-सी॰ दे॰ 'वर्षा'। वरपाना १-स० कि० दे० 'बरमाना'। वस्पासन~प॰ दे॰ 'वर्षाञ्चन' । वरस-पु॰ कालका वह मान जिसमें पृथ्वी मूर्वनी एक गर परिकमा करती है, ३६५ दिन ५ एटे ४८ मिना ४६ सेवेंटका समय, वर्ष । -गाँड-न्ही॰ जन्मदिवम, सा^ह गिरहः बन्गदिवसमा चल्छन । सु० -दिनमा दिना-धारा का दिन-सुशोका दिन, त्योद्दार जो सालभरके बाद सारे। वरसना-अ॰ कि॰ वायुमंटलके जलांशका पनीमृत होसर बूँदीकी शक्तमें नीचे भागा, क्यां धोना; बूँदीकी सार विरना, झड़ना (पूछ, रूपये); श्यारामसे मिलना; साह श्लकना, दश्कना । स॰ क्रि॰ बरसाता । सु॰ बरस पदमा-बहुत कुद होकर धोरमा, फारकारमा, पक्रश्र हरना।

यंधन-वि॰ [सं॰] बाँधनेवालाः रोकनेवालाः "पर अव-लंबित । पुरु बॉंपना; जंतीर, वेडी; रस्सी; प्वड्ना: कैट; बैदलानाः निर्माणः संयोगः रोकः क्षति पहुँचानाः डंठलः पेशी; स्तायु; पट्टी; बाँध; पुरु; धातुओंका मिश्रण; दमन । ~कारी(रिन्)-दि॰, पु॰ वॉथनेवाला; वालियन करने-वाला। -ग्रंथि-सी॰ पट्टीकी गाँठः फाँसः पदाओंको वॉथनेकी रस्ती। -पालक,-रक्षी(क्षिन्)-प॰ कारा-गारका रक्षक, जेटर । -रज्जु-सी० बॉयनेकी रसी। -चेस्म(न्)-पु॰ कारागार ! -स्तंम-पु॰ हाथी आदि भौधनेका खँदा । -स्थ-पुरु केंद्री । -स्थान-पुरु तदेखाः भरतवरू ।

यैधना-अ० कि० बाँधा जाना; वसा-जवजा, रूपेटा जाना; यद होना: मुख्य होना: फॅसना: गॅठना: पार्वद होना: निश्चित होनाः मोरचा नियत होना । पु० वंधनः बाँधनेका साधन (रस्ती, होर आदि); * दे॰ 'बयना' ।

र्यथनागार-पु॰ [सं॰] कारागार ।

र्थंधनारूय-पु॰ [सं॰] काशगार ।

यंधति = - ह्या ॰ वंधन, वॉधने, फॅमानेवाली चीज । **पंधनिक-पु॰** [सं॰] जेलर ।

यंधनी-छी॰ [सं॰] शरीरके सधि-स्थानीकी वाँधनेवाछी समें: बंधस, बाँधनेका साधन ।

यंधनीय-पु॰ [सं॰] याँभा वि॰ वाँभने योग्यः शेकने

थोग्य । यंधियता(त)-वि०, पु० [सं०] वाँधनेवाला ।

र्याध्य - प० दे० 'वाषव'। **र्येथयाना-**स॰ कि॰ बाँधनेका काम दूसरेने कराना ।

यंधाकि-पु॰ [सं॰] पदाद ।

र्यधान-पु॰ नेपा हुआ अम, परिपाटी; दरत्री: बॉप: तालका सम

येथाना-स॰ तिः वाधनेका काम दूसरेसे करानाः धारण करानाः केद कराना ।

र्यधाल-पु॰ नावमें यह जगह जहाँ रसक्रर आनेवाला

पानी जमा होता है।

यैधिका-मी॰ तानेकी साँधी बाँधनेकी होती।

र्षेधित-वि॰ [मं०] शाँभा दुआः जी मेद किया गया हो। वंधिय-प्र॰ (सं॰) कामदेवः शरीरपरका तिकः चमहेका tien t

षंधी। -- म्री० वधेत्र ।

षंची(चिन्)-वि• [सं•] बॉपने, पहदनेवाला (ममासमें

ध्यबद्दन,-मत्रयवंशी, इद्वर्वशी) ।

र्यंत-पु॰ [र्ग॰] स्वजन, सारनीय, शानि, सगीत्र; मार्रः; भित्रः पतिः दिताः बंधुशीव नामक पृष्टः संबंध १-काम-मारे-पंद, स्ववनी, संबंधियोंने स्नेह रसनेवाला । -ग्राय-प्र॰ गंदंधीसा धर्मस्य । -जन-पु० आस्मीय, निक? मंद्रियोधी समष्टि। मार्र-वंद । -द्रीव:-जीवक-पु॰ गुलपुपहरिया। -जीवी(चिन्)-पु॰ एक तरहका लान । - दम्प-दि० श्वेषियी दारा परित्यक्त । - दूस-पु॰ विवादके समय इन्याकी संविधिकोंने मिना हुआ धन । -वीपय-पु॰ स्वहन्शंबंधी, माई-वंह। -माय-पु॰ र्थपुताः मार्थपासा । -वर्ग-पुरु मार्थ-पुरु संपुष्टन ।

-हीन-वि॰ विसका कोई अपना न ही, असहाय I बॅघुआ, बॅघुवा-पु॰ केदी। वैधक-पु॰ (स॰) दे॰ 'वेधु-जीव'; जारज संतान ।

वंद्रका, वंद्रकी-सी॰ (सं॰) व्यभिचारिणी सी। बंधता-स्ती॰ सिं॰ो रिक्ता, संबंध; माईवारा; बंधवर्ग ।

बंधुरव-पु॰ [सं॰] माईचारा, संबंध; स्तेष । वंधुदा-सी॰ [ग़ं॰] पुंथली सी ।

वंधुमान्(मत्)-वि॰ [सं॰] जिमके मित्र और संबंधी ही। बंधर-प॰ [सं॰] मुक्दा गुलदपहरिया; भगः हंसः यगलाः खरी । वि॰ बहराः धका हुआ। वकः चढाव-उतारबासाः

र्जैवा-नीवा; श्वानिकारक; सुंदर ।

वंधरा-सी॰ [सं॰] कुल्टा; वेश्या । वेधुल-पु॰ [सं॰] कुलयका पुत्र; वेदया-पुत्र; वेदयाका टहला गुलद्पहरिया। वि० झका हुआ, वका सदर.

मनोहर । वैधक-५० सिं०ी गुरुदपहरिया ।

थंध्प≉-पु० ३० 'वंध्क'। बंधर-पु॰ [सं०] छेद । वि॰ दे॰ 'वंधर' ।

बंधिलि∽पु० [सं०] दे० 'बंधक'। बंधेज-प॰ बंधामः प्रतिबंधः स्तंमन ।

बंध्य-वि॰ [सं॰] बॉधने बोग्य, बंधनीय; निर्माणके बोग्य: बाँहः न फलनेवाला (बृक्षादि); बंचित (समासांतमें)।

∽फल−वि॰ न फलनेवाला, फलदीन । बंदबा-सी॰ (सं॰) बाँश सी या गाय: योनिका एक रोग: यक गंबह्र्य । -कर्क्टी-क्इवी करही।-समय,-

पुत्र,-सुत-पु॰ बाँराका देटा, अलीय, अनहीनी बात, वह विस्ता अस्तित्व मंभव न हो।

वंपलिस-की॰ म्युनिसिपलिडीकी ओरमे बना हुआ वह पाराना जो सर्वसाधारणके काम काता है।

र्वस-पु० देकाः 'रम-सम' शुष्ट । वंदा-पु॰ पानीकी बुक्तः पानी बहानेका नलः भीता ।

र्षेश्रामा-अ॰ कि॰ गाय-देहका रैशाना ।

थंग-प॰ चंड पीनेसी बौससी नहीं।

बंस-पु॰ वंश, पुलः बाँसः = बाँसरी । -छारक-प० बॉगुरी ! -सोचन-पु॰ दे॰ 'वंशकोचन' ।

थैमरी!-सी॰ दे॰ 'र्सी'।

र्वसवादी-स्ते॰ वह स्वान वहाँ मोंसकी बहुत सी योठियाँ श्री ।

वंसी - की॰ बांगुरी: महन्ये पेंमानेका बांका विष्यु, कृष्णाः दिके परणवि**ह । ∽धर-पु॰** कृत्य ।

वसोइ, वसोर-पु॰ शॉमके टोकरे आदि बनानेवाडी एक

जानि, धरनार । बहुगी-मी० दे० 'बहुगी'।

बंहिमा(मन्)--मा० [मं०] प्रानुर्य, श्राधिरय ।

बँहरा-पु॰ दे॰ 'बस्टा' ३ बॅद्दोल॰-म्दो॰ आस्टीन ।

बहोसीं-म्बं॰ दे॰ 'देहोस'।

ब-दु॰ [दं॰] बस्तः अन्यः गदः व्यद्धाः दुननाः द्यानाः ज्ञानं रोधक । अ० [का०] साथ, से, निय, बास्ते, पर (दिन दिन) !- ब्युद्र-भ० अस्तेने,-आएडी !- स्वी-

यरिया- । स्त्री॰ वटिका, गोली । वि॰ दे॰ 'वरियार' । --र्र#-स्त्रीव, सव देव 'बरिआई'। वरियात#-सी॰ दे॰ 'बरात' । धरियार!-वि० वलवान, शक्तिशाली । धरियारा-प॰ एक पीधा जिसकी जह दवाके काम आती है। बहित्यां - प० एक पकवान । यरिशी-सी॰ [मं०] सहली फुँसानेकी केंटिया, बंसी । वरिपना*-अ० क्रि॰, स० क्रि॰ 'बरसना' । यरिया#~सी० है० 'वयां'। बरिसां -प० दे० 'बरस'। यरी-* वि॰ वटी; अ॰] आजाद, रिहा: फारिंग: निर्दोष ! सी॰ [दिंग] फँका इथा संबद्ध, बंबरका सना: दे॰ 'बडी'। -का चना-वंतरका चना को पलस्तर आदिके काम आता है। बरीबर्द-प० सि०] दैल । बरीस∗-प० दे० 'बरस'। यरीसना = - अ० कि०, स० कि० दे० 'बरसना'। धर#--अ० वल्किः भले ही । यस्मा, यस्वां -पु॰ माक्रणक्रमार जिसका उपनयन हो रहा हो। उपनयनः वह गीत जिसे गाकर भिशा-वृत्तिवाने माध्यण उपनयनके निमित्त भीख माँगते हैं: बंगोली माहाणींका एक भेद: मूँचका छिलका जिससे रक्षिया आदि बनाते हैं। दि॰ दृष्ट, शरारती। यरुक#-स०दे० 'वरु'। यरणाख्य-प्र॰ समह । बदन#-पु० दे० 'वरुण'। धरुना-पु॰ एक पेड़ । स्ती॰ दे॰ 'बहणा' । यहती-सी० दे० 'बरीनी'। बरूथ-पु० दे० 'वरूथ'। यरूथी-छी॰ उत्तर प्रदेशकी एक छोटी नदी। **घरॅंडा†**-५० टाटके नीचे लंबाईमें दिया जानेवाला गोला मल्दा । यरँदी - छी० छोटा बरेंदा । घरे - अ॰ वाँची आबाजसे: बळवर्वक: बद्रछेमें। परेखी, परेपी - ली॰ ज्याहकी उहरीनी, सँगनी: बाँहपर पद्दननेका यक गद्दना । **घरेच्छा** – ली० व्याहकी ठहरीनी । यरेजः धरेजा-प्र॰ पानकी बादी । घरेठ, यरेठा – पु॰ भीवी । धरेत = न्हीं मधानीकी ररधी ! . यरेता-प॰ सनका मोटा रस्सा । यरेदी ं नपु॰ चरवाहा । बरेब र जप्य देव 'बरेन'। यर्डा - प्र॰ दे॰ 'बॅडेरा' । धरी-पण्यक धाम । यरोक-प॰ वह धन जो कन्याप्यकी औरसे वरपक्षकी इस-ेल्प दिया जाता है कि ज्याहकी शातचीत पही समझी जाय, फल्दान [बर्-रोक]। बा॰ बलपूर्वक-'होइ सो वेलि जे**दि वारी, आनदि स**र्व बरोक'—प॰ । यरोटा, यरीटा-पु॰ धेवदी: बैठक । -(हे)का चार-दार- ।

धरोस⊭−वि॰ सी॰ दे॰ 'वरोर'। बरोह—पु॰ बरगद, पाकड़ आदिकी हालियोंसे निकलनेगरे प्रशाखा जो धीरे-धीरे बमीनतक पहुँचकर जड़ पका है। है। बरगदकी जटा । वर्रीछी-स्त्री॰ सुत्ररहे शलोंकी कुँवी जिसमे सुनार परन साफ करते हैं । थरीनी-स्त्री० पलकके किनारेके बाल: † पानी भरने शारि का काम करनेवाली टहलबी, कहारित ! वरीरी≉−स्ती० दशे । वर्क-स्था॰ [अ॰] दिवसी, विद्युत् । –जुदा-दि॰ सि विजली विरी हो, विजलीका मारा हुआ। -साव-र्ग विजलीकी तरह श्रमकनेवाला । -दम-विश्वदुर्व दौड़ने, मागनेवालाः धारदार, तीश्ण ! -तुमा-विश्वतकी रिथित मालम करनेका आला। -रफ़्तार-अति इतगामी । यर्कत-सी० दे० 'बरकत'। यर्कर-वि० [सं०] यहरा । प्रण वकरी या मेहका वस वकराः खेल, परिद्वास । यर्की-दि॰ दिवलीकाः विवलीकी शक्तिसे चक्रनेवात (-पंता, रेखवे ह०)। यखास्त-१० दे० 'बरखासा'। वर्ग-प्र [काण] पत्ताः छड़ाईका इधियार। बर्ळा-प० है० 'बरळा' । यर्ज्य -वि० दे० 'वर्थ' ! यजेता-स॰ कि॰ दे॰ 'बरवता'। यर्णम-ए० दे० 'वर्णन'। यर्गानाक-स्व क्रिक वर्णन करना । सीक देव 'वर्गना'! यतीना, यर्तीना-स० कि० दे० 'बरतना' । यतांब-प॰ दे॰ 'बरताव' । यर्गेल-वि॰ दे॰ 'वर्गल' । थर्द-पु० देल । यदांइत-स्रा॰ दे॰ 'बरदाइत'। यर्ते = - प० दे० 'वर्ग' । सर्भेना - स॰ कि वर्णन सरना ! सी॰ दे॰ 'वर्गना'! थर्नर-पु॰ [अं॰] स्टेंपका यह हिस्सा जिल्ली सगी हुई पर मेंदपर जलती है। थनों है शा-पु॰ (जार्ज) १८५६-१९५०: ग्राप्तिह आवीर नाटककार जो अपनी चुभतो उक्तियोंके लिए तथा इपटायी का मंदाफोद करनेके कारण अत्यंत छीकप्रिय ही गया था वक्र -की॰ [का॰] जमा हुआ पानी; वायुमंडछकी मार्च व सरदीसे वनीमृत होकर रुईके गालेको शक्तमें जमीनक गिरती और फिर जमकर करी हो जाती है। बहुमें एउ जमाया दुवा दूध, फलोंका रहा आदि । नि॰ वर्ष वैष्ट ठंडा; वर्ष-सा सफेद (होना, हो जाना) ! -क्षी नदी-हिमानी, ग्लेशियर ।—की कुलक्री-मर्गने योगने हुट मैं जमाया हुआ दूध आदि । मु॰ -शिरनाः-पहना-जाकाशसे बद्धा विरनाः विभागतः। बक्रांनी-वि॰ [फा॰] बर्फका; बर्फसे दका हुआ (पहार)! बर्फ़ी-सी॰ देवं 'बरफी'।

पजा ।

प्रक्रित्य+-पु० दे० 'बकायन' । यकी-प्रते। (सं०) मादा बराजा; बकासुरको बहन, पूतना । यक्कीया-वि० (अ०) बर्को बना हुआ, अवश्विष्ट । यकुचन*-की० हाथ बोइना; मुट्ठी या पंत्रेमें प्रकृतना । यकुचन-अ० कि० विमय्ता, सिकुत्ता । यकुचा-पु० गर्टरा; अटेर, गुच्छा; जुङ्ग हुआ हाथ । यकुची-को० छोटी गर्टरा; एक छोटा पीच वो कॉरीमर्में छामदायक होता दें। सु० -ब्यायना,-सारना-हाव-पर

समेरवर गठरी जैसा यन जाना। यकुर्चीहाँ ४-४० बकुचे जैसा। यकुर-वि० [सं०] भवंतर। यु० विजली, बजा। यकुरनाक-ज० कि० दे० 'बबरना'।

बकुरनार-जिंद्यात्र पुरुष्य वस्तात्र । बकुराना*-स॰ फि॰ सबूल करानाः । बकुरा-पु॰ (सं॰] गोलसिरी; दिव । बकुरा†-पु॰ दे॰ 'वगला' ।

यक्छ−पु० [मं०] दे० 'बहुल' । यक्छ−पु० [मं०] दे० 'बहुल' ।

बफेन†-सी० गाय या भैस जिसे न्याथे ५-६ महीने ही गये हों, पेस या 'छवाई'का उछटा । फफेरका-सी० [सं०] छोटी बकी; इवासे खुकी हुई बुसकी

शासा । वर्ष्या –पु० पुटनांके वल चलनाः ऐसी चाल ।

यकोट-की व्योदनेशी किया; बकोटनेशी सुद्रामें हायकी चैंगलियों; बस्तुकी वह माश्रा जो बकोटनेसे चंगुरूमें आयी हो। पुरु [संग] बका

यजोटना-ए॰ ति॰ पंत्रे या नाम्यूनीसे बीचना । यजोटा-पु॰ बकोटनेकी क्रियाः बकोटनेकी सुद्राः वरतुकी यह मात्रा जो नंतुल या सुद्रीमें का जाय, बुगटा । यजोरी, यकौरी॰-की॰ बकावली, शुलबदावकी ।

षक्त-पु॰ एक पेड, पर्तत । षक्क-पु॰ छिलका, छाल ।

यक्षाल-पुर्व [मर्व] तरकारी वेचनेवाला (अप्र०); आय-दाल आदि वेचनेवाला, वनिया।

षष्टी-वि॰ वसरक सरनेवाला, वस्तादी । षवकुरां-पुण गुँदमें निकला दुआ शब्द, बोल । षवस्तर-पुण गाय-वेल बॉयनेका बाहा; देण 'बासर' ।

यक्तर-पु॰ दे॰ 'बबनर' । यक्षीज॰-पु॰ उरीज ।

षशन-पुर्व गरमः, संद्वा । सम्बद्धः-पुर्वरेशंपरम्' (बरमः'-'बंग सम् पुरस्य बरात सम रूपो मनः''' शक्ति। ।

षरातर-पु० दे० 'बदतर' । षम्परा-पु० दे० 'बागर'। 'बगरा' ।

यगरा-पु० दे० 'बागर'; 'बरहरा'। परारा-पु० (फा०) दिरसा, भाग, दुसदा।

परारी -शि (गाँवके सापारण मरीकी बटिमे) बड़ा, भरणा मकाना जमीदारका मकान ।

मन्छा महाना जमीदारका महान । यगरेत~पु॰ दिस्मदार ।

यगरते~पु० हिस्सेशर । यगसीमां नारी• दे० 'बहिशश' ।

यगरतीयना • - ए० कि० दे० 'बरहाना' । यगरान - पु॰ वर्षनः प्रशरं, गुल-स्थनः ।

परसान च न ना प्रसार, गुण-क्यन । परसानना-गु० कि० वर्धन करनाः ग्रहकाः, व्हाई करनाः

गाहियाँ देना, क्षेप्रना (सात पुरखा बसानना)। धंखार-पु॰ अनाव रखनेके हिप्प बनाया हुआ बहे कोठले जैसा थेरा।

विदेशवा-पु॰ [फा॰] दुहरे टॉकॉकी सिलाई, महीन और सबब्त सिलाईका एक प्रकार १ - सर-पु॰ विद्या करने-पाला 1 शु॰ - उधहना-विद्या, सीवन सुलना; संटा-कोइ होना । - उधेइना-सीवन सीलना; संटा-फोइ करना ।

वस्तियाना⊸स॰ क्रि॰ वक्षिया करना ! वस्त्रीरां—स्त्री॰ ईसका रस या गुइन्योनी देवर पानीमें फक्षाया इवा चावरु !

यख़ील∽वि॰ [ब॰] कंज्स, कृषण । यख़ीली−सो॰ कंज्सी ।

बखेदा'-पु॰ शगहा, टंटा; क्षेत्रट, शमेला; फटिनाई, परेशाना।

यसेदिया−4ि॰ बसेहा उठानेवाला, शतहाळु । यसेरना−स॰ कि॰ चीत्रोंकी क्षितरामा, फैलाना, तितर-विनर बरना।

बस्तोरना≠−स० कि० छेड़ना, टोकना । बह्त−पु० (का०] भागः भाग्यः सीमाग्य । बह्तर−पु० दे० 'कत्तर' !

यफ्तावर—वि॰ [फा॰] भाग्यसाला, कॅचे मसीववाला । यफ्तियार—वि॰ [फा॰] भाग्यवान्, सीभाग्यशाला । — । सिटजी—वि॰ खिलवी वंशका एक शदशाह ।

पद्मा (पुरवस्या वर्षका पत्र वादशह । यहा (वि दिन्ह) (शंशाप्रसे समरत होतर) वर्रहानेवाका, देनेवाका । पु॰ हिस्सा (मामीदे अंतमें) वर्रहानेवाका, देन, प्रमाद (गुरवस्या, क्रीमक्स्य)। —नामा-पु॰रे॰

'बस्यसनामा' । यद्भाना-स॰ कि॰ देना, दान करना; क्षमा करना । यद्भावाना, यद्भाना-स॰ कि॰ दिलाना; माफ कराना। यद्भावाना, वद्भाना-सान्सा-

पु॰ दिस्तानामा, दातपत्र । बस्दि -पु॰ (का॰) तनसाहबाँडनेवाला कर्मचारी, राजांची।

मनेशीसानेका भुंशी । बक्सीको -सी० दे० 'बरिशश' ।

सरा—व्युव बराहा; बाग का ल्यु और समासमें व्यवहृत स्प । —खुड:--खुड-अव सरपट, पेतहाशा । —सेस्ट-अव बाग मिलाये हुए । युव पंक्तिक होत्तर भावा बीजना; बराबरी । स्वाई! --सीव यह बाग्र जिमकी परितरों पुरियों आदि

यसहर-न्यां० एक पास जिमकी पत्तियाँ पुत्रियाँ आ बांधने और बान बनानेके काम आगो ई; कुकुरसाधी । बगदनार्ग-अ० कि० स्पिहना; सुरमेष्टे अटब्बंट बकना । बगदहर्गा-वि० स्मिहनेवाला; सहनेवाला ।

चयदहार—वि॰ विषदनैवालाः छदनेवालाः। चसदाद-पु॰ [फा॰] दराकका एक प्रसिद्ध पुरानाः नगर् । चसदादी-वि॰ [फा॰] वगतदकाः, वगरादकाः रहनेवालाः।

वनदानां-मु० जि॰ सराइ बरना, दिनाइना । वनना॰-स॰ जि॰ धूमना-किरना; दौहना; भागना । वनह॰-पु॰ महतः सकानः छहन; गरप बॉफ्नेका माहा ।

की॰ दे॰ 'क्यल' । यगहना॰-अ॰ कि॰ पीटना, बिगरना ।

यगरना॰-स॰ कि॰ पेटना, विगरना । यगराना॰-स॰ कि॰ वजेरना, पेटाना । स॰ कि॰ पेटना,

. ---

यलवार*-वि॰ वलवान्-'सहित बीर वानर वलवारे'-रप्रराज सिंह। वलसुम-वि॰ बहुआ, रेतीका ।

वलांगक-पु॰ [सं॰] वसंत ऋत । यला-स्नी॰ [सं॰] बरियाराः एक मंत्र बिसके प्रयोगसे योदाको भूरा प्यास नहीं लगती; पृथ्वी; दक्षकी एक कन्याः छोटी बहनका संबोधन (ना०)। -चतुष्ट्य-पु० वला (बरियारा), महाबला (सहदेवी) 🕇 अतिवला (देंगनी) और नागवला (गंगेरन) इन भार पौष्टिक ओपधियौंका समृह । —पंचक—पु॰ वलाचतुष्टय और राजवला ।

यसा-सी॰ [अ॰] कष्ट, आपत्ति, आपत्तः मृत-प्रेत, प्रेत-बाषाः रोग-व्याधिः वहुत कष्ट देनेवाली वस्तुः व्यक्ति। -करा-वि॰ मुसीदलें चठाने, कठिनाइयाँ झेलनेवाला । -- नसीय-दि० अभागा । -नोश-दि० बहुत खानेवालाः बहुत दाराथ पीनेवाला । -(ये)आसमानी-सी॰ अचा-मक धानेवाली विषत, दंबकोष । -जान-स्ती॰ जीका वंजाल, हंसर । -नागहान,-नागहानी-वी॰ बाक्-रिमक विपत्ति। -बद्-सी० बुरी बसा। सु० -उत-रना-विपत वाना, दैवकोप होना। (किसीकी)-(कछ)करे या करने जाय-नहीं करना। -का-गजद-मा, इद दरनेका। (मेरी)-जाने-में न जानता हुँ, न जाननेकी गरज है। -टलना-कटले, परीशानीसे या तंग करनेवाले आदमीसे छुटकारा मिलना। -पीछे रुगमा-वर्षेत्रा साथ होना । -मोल लेमा-जान-वृहा-कर क्षेत्रर-क्षमेलेमें पहना। (मेरी)-से-कुछ परवा नहीं, (मेरी) जुतीकी नोकसे। यलाय **छेना**-किसीकी कला, रोग-व्याधि अपने जपर छेना ।

बलाइ#-स्नी॰ दे॰ 'बला' [अ०]।

बलाक - पु० [tio] पगलाः एक पुराण वर्णित राजाः पुरुका पथ ।

यलाभा - ली॰ [सं॰] प्रियाः कामुकी स्वीः वगलीः वक्षंकिः

नृत्यका एक मेद्र। बलाकाइब-पु॰ (सं॰) जहनु-वंशका एक राजा।

बलाकिका-सी॰ [मं॰] एक तरहका छीटा बगला। यलाकी(किन्)−वि॰ [सं॰] वगलॉसे पूर्ण, वहाँ वहुतसे बगले हों। पु॰ धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

बलाम-go [सं०] सेनानायकः बहुत बही शक्ति । यसाट-सी॰ [सं०] मृँग ।

यलाह्य-दि॰ [मं॰] 4हरान् । पु॰ सरद ।

बलास्-अ॰ [मं॰] बलपूर्वक, अवर्रस्ती। -कार्-पु॰

मलपूर्वक, जबर्रस्ता कुछ करनाः बलप्रयोगः अन्यायः अत्याचारः सीनी इच्छाके दिरुद्ध बलपूर्वक किया जाने-बाला संबोगः महाजनका ऋषीको रोककर और मार-पीटकर पावना वस्ल करना (रसृ०) । —कृत्र⊸दि० जिसपर बलात्कार किया गया हो, जिससे जन्देंस्ती कछ बराया गया हो।

षलास्काराभिगम-५० [से०] बष्टपूर्वक किया नानेवाला संभोग ।

यन्त्रधिक-वि॰ [सं॰] अधिक बडवाडा । यलाधिकरण-पु॰ [मं॰] सेनादी काररवाई ।

वलाधिक्य-पु॰ [सं॰] बहदी अधिद्रता ! वलाध्यक्ष~पु॰ [सं॰] सेनापति । वलानुज-पु॰ [सं॰] गृष्ण । बलान्वित−वि० [सं०] बडी, बहशाहो।-वलावल-पु॰ [सं॰] बल और बलामाव; (दो पहों आरि का) तुलनात्मक वल और निर्वेटता, महत्त्व और महत्त

दीनता। वलाय-पु॰ [सं॰] वरुण चृष्ठ । स्त्री॰ [हि॰] दे॰ 'स्त्रा' [ब॰] । स्॰ -हेना-दे॰ 'बलावें' हेना । बलाराचि-पु॰ [मं॰] इंद्र ! यलालक−पु॰ [सं॰] जल-शॉवला ।

बलावलेप−पु॰ [सं॰] बलका धर्मह । बलास, बलास-पु॰ [सं॰] इ.फ. इव । - वस्त ऑखका एक रोग । -वर्धन-वि॰ कर, ब्हानेवाला बलासक-पु॰ सिं॰ी रोगके कारण आँखके सपेद रि बना हुआ पीला दाय।

बलासी(सिन्)-वि० [सं०] श्वरीगसे प्रस्त । यलाह-पु॰ [सं॰] जल ।

बलाहक-पु॰ [सं॰] बादलः मोधाः सर्वोका पक एक पर्वत ।

यर्छिद्म-पु॰ [र्ह्न॰] बिष्णु १

बलि-पु॰ [सं॰] विरोचनका प्रश्न देखरात्र निष्ठे पुरा अनुसार विष्णुने वामनुरूप धरकर एका वैवरका व की॰ देवताकी चड़ायी जानेवाली भीम, चढ़ावा, नी पूजाः बिलपहाः जमीनकी उपजका भाग को राष्ट्र मिले, राजकरः पंच महायहोंके अंतर्गत बीया, मृतः बल, सिकुइन; पेटमें नाभिके अपर पहनेवाली है। बवासीरका मरसाः शुदावर्तके यास होनेवाला यक की छ।जनका छोर; = सप्ता । -कर-दि॰ सर देनेना बलि घडानेवाला; झर्रा पैदा करनेवाला । -कर्म(र्) पु॰ भूतवराः पुत्राः रामकर देना । -तान-पु॰ देशाः पूजन-सामग्रीका अर्पणा देवताके सदेश्यसे पशुक्त कर कुरवानी । -हिट्(प्)-पु० विष्णु ।-ध्वंसी(सिन्) पु॰ विष्णु । —संद्रेन,—पुग्न,—सुत-पु॰ बागाहर ेपशु-५० वह पशु शिसका किसी देवताके प्रीत्यर्थ । किया जाय । -पुष्ट,-सुक्(ज्)-पु॰ कीमा -पोयकी-सा० बही पोय । -प्रिय-पु० होपका पेर ~र्यधन-पु॰ विष्णु। -भृत्-वि॰ कर देनेवान अर्थान । -भोज,-भोजन-पुर्व कीमा। -मंदिरा

पु॰ बंदर । -वंदयदेव-पु॰ भृतयम् । -हरण-पु॰ छ बीवोंको विल देना। -हा(हन्)-पु॰ विष्णु। सु॰ " घदना-बिटान होना, मारा बाना। -चदाना-वि देना । -जाना-निष्टावर होना । वलिक-पु॰ [र्स॰] एक नाग । वस्टित = - नि॰ निर चहाया हुआ, सारा हुआहरे ° बहिन् !

थेश्म(न्),-सद्म(न्)-१० पाताल सोक। -मुस-

वितिनी-सी॰ [गं॰] अतिषताः गरिवारा। यिलमा(मन्)-सी० [सं०] वस, तावत । यस्या। -वि॰ महवान् । षस्तिवर्-प॰ [सं०] दे॰ 'बसाबर्'।

वच्चे जनतेवाली, बहुप्रसवा (स्ती) । -क्झी-सी॰ वार-वार वचे देना। -दान-पु॰ गर्भाशव। -दानी-स्ती॰ दे॰ 'बचादान'। -बाज़-वि॰ छीडेबाज। -(च्चे)-करसे-प॰ वाल-वसे, छोटे बच्चे । −बाली-सी॰ वह स्त्री निस्की गोदमें बचा हो। मुख् -देना-गाय-भेंस बादिका बचा जनना ।-निकलना-अंटेसे बचेका बाहर भाना । -(चाँ)का खेल-बहुत आसान काम । यञ्ची-सी॰ पायजेवका प्रेयसः बचाका स्वीलिंग रूप । श्वच्छ+-पु॰ दे॰ 'वत्स'; ढाल; वक्ष, सीना ! धरछछ#-वि० दे० 'ब्रस्ट 1 बरउस*-पु॰ दे॰ 'वसु'। बन्छा ने पुरु देर 'बाहा'; 'बहहा'। यछ#-पु० वछड़ा।स्ती० दच। -नास-पु० एक स्थावर विष । घछदा-पु० गायका वद्या ! यस्ररा≉⊶पु० दे० 'बस्हक्ष' ३ यस्त्र=-प्रदेश 'वस्ता' । यप्रस्त :- वि॰ दे॰ 'बस्सल'। यद्यद्या*-पु० दे० 'ब्ह्रमा'। षछा#~पु॰ वछदा i यहिया-ली॰ गायका मादा नदा। स॰ -का ताऊ-सीधा-सादा, भोंद्र, मूर्ख, अहान । यरोहा-पु० पोहेका बधा । [स्ती० 'बरोही' ।] बछेरू -- पु॰ बछवा; बबवा-'बेसोदास मृगत बछेरू चोर्ब बाधिनीन चारत शर्म बाध बालक बदन है'-रामचंदिका। धर्मधी-प॰ बाजा बजानेवाला, बजनियाँ बाजा बजाने-यालीका गिरोह: मुसलमानीके राज्यकालमें पेरीवर गाने-यज्ञानेवालीसे किया जानेवाला कर । धजकना - अ० कि० दे० 'वजवजाना'। यज्ञकारं -पु॰ दे॰ 'बनका' । यज्ञद्र-पुर [अर] आय-ध्ययका तस्मीना, आयध्ययक । ध्यादा-पु॰ दे॰ 'बनरा' । यजनक-पु॰ पिरतेका फूल । धजना-भ० ति:० ध्वनि उत्पन्न श्रोनाः ध्वनि उत्पन्न दरने-षाष्टा आयात्र होनाः बाबेसे भावान निवलनाः बजाया जानाः गलना (लाठी, तलवार आदिका)ः प्रसिद्ध द्वीनाः • ४६ वरसा । यजनियाँ, यजनिहाँ । - पु॰ बाबा बजानेबाला । धन्ननी, धनन्। - वि० धननेवाला । दलयजाना! - अ॰ जि॰ सरे दुए गेरे पानी आदिमें बुल-ष्ट्रेष्ट उठना । यजमारा॰-वि॰ यजका मारा दुआ, विसपर विवली गिरी हो (मियो हारा शावरूपने प्रयुक्त) । यज्ञरंग-वि॰ दिसका शरीर कंत्र जैसाक्त को। पु॰ हुनू-मान्। - वाली - पु॰ इनुमान्। यमर • - पु० दे॰ 'बम्म'। - बर्ट - पु० दक्ष देशके फलका काला गोला बीज शिससी माला छोटे बण्योंकी पहनायी जानी है। -हड़ी-न्दी॰ धोईडा एक शेव। बलरा-पु॰ वर्ग और पति दुई नाव; † दे॰ 'बाबरा' ह दत्रसागिर-गरीर वजाप्ति, विज्ञाति।

बजरी-सी॰ कंतडी; गोला; छोटा कंगूरा; बाजरा । बजवाई-सी॰ वाजा बजानेकी उजरत । बजवाना-स॰ कि॰ वजानेका काम दूसरेसे कराना। य**जवेया ~पु॰** बाजा बजानेवाला । यजागि#-सी॰ वजाग्नि, विजली । वजामिन*-सी॰ वजाग्नि, दिउली । बज्ञाज्ञ, बज्जाज्ञ-पु॰ [अ॰] कपहा वेचनेवाला, बस-वणिक्। वज्ञाज्ञा-पु॰ कपर्नेका बाजार, वह स्थान जहाँ बजाजीकी दुकार्ने हों। बजाज़ी-छी॰ बजाजका व्यवसायः वेचनेका कपरा । वजाना-स॰ कि॰ आधातसे आवाज पैदा करनाः वाजेसे व्यावाज निकालनाः आवाज निकालकर जाँचनाः परखना (रुपया मादि); मारना, चलाना (लाठी, तलवार); पूरा करना ! वजाकर-इंका पीटकर, ख़ले खजाने । यजार*-पु॰ दे॰ 'वाजार' । वजारी - वि० दे० 'बाजारी'। बजारू।-वि० दे० 'वातारू'। यज्ञा-पु॰ दे॰ 'विज्ञा'। बज्ञना *-अ० कि० 'बज्रता'। यज्ञात=-वि॰ दे॰ 'बदजात'। वञ्च-पु० दे० 'वज्र'। यञ्जी-पु॰ दे॰ 'वजी'। वशना - अ॰ कि॰ फॅसना, उक्शना; बॅपना; इठ करना। यझाउ=-पु० दे० 'बहाब'। बझान-खी० वज्ञने, फँसनेदी किया। वद्माना ने 🗝 कि॰ फँसाना, उल्ह्याना । वद्याब-पु॰ उल्ह्यान, प्रसाव-। बद्गावट~सी॰ दे॰ 'बहाव'। यदायना = - स॰ कि॰ दे॰ 'बदाना'। बट-पु॰ दे॰ 'बर'; बाट, बजन: रास्ता (बाटका हमु रूप); बट्टा; बद्दा; बिसी चीजका गोला; * हिस्सा । स्ती० रहमी। की वेंद्रम, बदम । -पराक-पुरु देव 'बदमार'। -पार-पु॰ दे॰ 'बटमार'। -पारी-स्ती॰ दे॰ 'बटमारी'। -मार-पु॰ शहरी सुर लेनेवाला, राहजन। -मारी-स्ती॰ बटमारका काम, पेशा । -घायक-पु॰ रास्तेम पहरा देनेवाला । -बार-पु॰ रारतेपर पहरा देनेवालाः रास्तेका कर वग्छ करनेवाला । बर्ट्ड-सी० बरेर १ वटस्वरा-पु॰ बाट, बबन । बटन-सी॰ बटनेकी किया या भार, रस्मी आदिकी एँठना बादम्बेका एक तरहवा तार । पुरु [अंत्] सीप, सीग आदि-की छेददार या बिना छेदकी पुंडी जिमें काजमें भटकाकर कपहें दी मान या पते परस्पर मिलाये वाले है, बुताम; विजनी आदिका रिवच मा पुंडी जिसमें रोशनीका बस्ब जलाया-बुझाया, पंता मादि सोला-पंत किया जाता है। बटना-ए॰ कि॰ गुन, थारेके रेजों भारिको सामा, धोरी, रसीं बादि बनानेने निष मिलारर ऐंटना । अर कि दिसना, दिमा जाना । पु॰ रहमी दटनेका भागाः उदटन ।

मुक -होलमा-ध्याहर्दे अवसरपर परिदासार्थ एक दूसरे-

बस्मती-की॰ दे॰ 'वसमती' । यसरीं -स्ती० वॉसरी। यसछा-पु॰ पक श्रीजार जिससे बढई छकड़ी बाटता-छीलता है । यसकी-सी॰ छोटा बस्छा। वह औजार जिससे राज ईटें गदतान्द्रीलका है । **यसेरा-पु॰ रात** वितानेका स्थान, टिकनेका ठिकानाः वह जगद जहाँ चिहियाँ रात नितानें, घोंसला; रहना, दिवना; रष्ट्रनेवाला । सुरु -करनाः,-क्षेत्रा-रातमें दिवनाः, वसना । **यसेरी*-पु॰** वसने-दिकनेवाळा । थसीया*-प• दसनेवाला । **य**सोवास≠−प्र॰ वासस्थान । यसींची-मी॰ सुशासित और रुच्छेदार रयही। पस्ट-पु० [शं०] राही। वह चित्र वा मति विसमें बमाने **छप्र**का भागमर दिखाया गया थी। बस्त-मी॰ दे॰ 'बरत्न' (केवल 'बीज'के साथ समासमें प्रमुक्त) । पु० [सं०] वद्गरा । -कर्ण-पु० सालवा वेड़ । -रांधा,-मोदा-सी॰ अवसोदा। -मुख-वि॰ करेरे वीसे मुख्याला । -गरंगी-कौ॰ मेडासीगी । पस्तर!-प॰ दे॰ 'यहां'। -मोचन-प॰ विश्ववे बदनपर हँगोरीतक न रहने देना, सब कुछ छोन सेना । यस्तांग्र-प्र॰ [सं॰] बकरेका मुश्र । बस्ता-वि॰ [पा॰] वैभा हुआ (दरन-बस्ता, कमर-बस्ता); तद्द किया हुआ । पु॰ वद्द कपड़ा जिममें किताने या कायज-पत्र भाषे बाये, बेठन; बेठनमें वेशी हुई पुस्तक, कागावपत्र । गु॰ -याँधना-कागजपण समेटनाः (दन्तरः गदरसेने)

पसीना*~५० निवासः रहादशः। **घसी**छा-वि॰ नासवाष्टा, गंधवुक्तः दुर्गंधवुक्त । यस-प्रव देव 'बरा' । -- देख-प्रव देव 'बस'में । -- धा-स्त्री॰ दे॰ 'बस'में।

यसीकत, यसीगत् = न्या० वरता; वसनेकी किया, निवास। धसीकर*-वि० दे० 'वजीकर'। यसीकरम#-पु॰ दे॰ 'बशीकरण' । यसीठ-५० इत, संदेशवाहक । धसीदी-ली॰ दूतका काम, दौस्य। यसीत्यो#-प्र॰ नरती, निवासस्थान !

तिनसों बदा बसाय'-वि॰: वसना: गंध देना: बदव करना ! वसिआनाः वसियानाः – अ० क्रि॰ नासी हो जाना । यसिऔरा, वसियौरा!-प॰ रात्में होनेनाले कुछ पुत्रनी-का भगला दिन जन घरके सब छोग रासका पका हुना बासी ही खाना खाते हैं: बासी भोजन । यसियारं -वि॰ वासी । प॰ वासी भोजन । वसिष्ठ-प्र॰ दे॰ 'वसिष्ठ'।

यसात-सी० दे० 'विमात' । ब्रमाना-स॰ कि॰ वसनेको प्रेरित करनाः वसनेका प्रबंध बरनाः स्रावाद करनाः दिकानाः शासनाः सत्रासित करनाः विठाना । अ० कि० वस चलना—'सन मन हारेहें हैंके

यसाँधा*-वि॰ यासा हुवा, सुनासित ।

यसा-की॰ दे॰ 'बसा'; * बरें, भिड़।

घर जातेकी तैयारी बरना । वस्ताजिन-प्र॰ [सं॰] बकरेका चर्म । वस्तार-५० पुलिदा। बस्ति-सी० टे॰ 'वस्ति' १

वहँगा-पु॰ बड़ी वहँगी।

वंड योलना, यहबहाहर ।

(छोटी, नही बस्ती, दस इजारकी बस्ती)। बस्त-पु॰ दे॰ 'वस्त'।

यस्ती-स्ती० वसनेका भाव; आवादी, आवाद वर्रोका समुद्र -गाँव, बसवा इ०: स्थानविद्योषमें दसनेवारे होय, बार्डी

बस्य-वि॰ अधीन, बदामें आनेवाला। पु॰ अधीनस्य प्यतिः

बहुँगी→सी॰ बॉसके फुट्रेके दोनों छोरोंपर छीका हरकारर

बहक-सी० बहुकनेका माथ, प्रथमहताः वर-वर्षर मा ग्रेर-

यहकना-अ० कि० ठीक रास्तेसे इटकर गतत रास्नेस आना, पक्षभ्रष्ट होनाः चुकनाः भुक्तविम आना, शेना

सानाः नदोर्ने अंड-बंड या धर्महर्ने ४४-५१कर बीवनः

उद्यक्ता । अ॰ बहकी-बहकी थातेँ करना =मरोनकः

भ्रष्ट करनाः बुरे, दानियर कामग्रे किय प्रेरित काना

यह्न-सी॰ दे॰ 'नहिन'। + पु॰ (वायुका) दहना, होंका।

बहुना-अ० जि.० तर्छ प्रार्थका गीमेकी और जाती

धाराके रूपमें प्रवादित होनाः धारा या भहायके साथ आगे

जानाः इवाका चलनाः चुनाः स्वित होनाः पूरनाः प्रवतः

निकलनाः अपनी जगहते हृद जानाः चरित्रमृष्ट होनाः सर

होनाः दूव जानाः बहुत सस्ता विकताः * उठनाः वहता।

स॰ कि॰ यहन करना, दोना; धारण करना, निमाना।

मु॰ बहती गंगामें हाथ धीना-ऐसी चीत्रने काररा

बहनेली-सी॰ वह सी विसने साथ बहनका नाता बीरा

बहर = -अ० माहर - धावत प्राई छर शीलर वहरहें-

यहरा-वि॰ विसे शुनारं न दे, अवगश्रतिहोना केंवा सुन्ने

वाला; अनुमुनी करनेवाला, भ्यान न देवेवाला (-वन

की खरह और-बंड बक्तगाः बद-बदकर बोलमा । बहकाना-स॰ कि॰ ठीकरी गलत रास्तेपर है जाना, १४

मुलावा देना, भरमानाः बहुलाना (बहाँको)।

यहकाया - ५० वहकानेवाली वात, मुलाबा ।

यहस्रोल = न्यां पानी महनेकी नाली। यहत्तर-वि॰ सत्तर और दो । पु॰ सत्तर और होनी संस्कृत

यहकायर-स्ती॰ बहकानेकी किया।

बठाना जिसमे सब बठा रहे हाँ।

बहनी-* सी॰ दे॰ 'बहि'; † बोहनी।

बहनोईं∽पु॰ वदिनका पति, भगिनीपि ।

बहुनौता-पु॰ बहिनका बेटा, भाषा। बहनीरा~पु॰ बहिनकी समुराह I

बहनापा-पु॰ बहिनदा नाता।

घहनु •-- पु॰ वाहन, सवारी ।

गया हो, मेंहबोली बहन ।

बह्म-पु॰ दे॰ 'बह्म'।

सूर् । स्त्री॰, पु॰ दे॰ 'बह'।

वनाया हुआ बोहा दोनेका साधन, काँबर ।

प्रमावयाला पुरुष; चर्दकी पीठीकी घी वा तेलमें तली हुई रिकिया। -आदमी-पु॰ धनी, बड़े पद, प्रतिष्ठावाला व्यक्ति । -ई-स्त्री॰ वड़ा होनाः विस्तारः टीलः वड़प्पनः महत्ताः प्रशंसा । -कास-पु॰ भारी काम, कठिन काम । -कलंजन-प्र॰ मोथा। -धर-पु॰ बमीरका घर; जेल-खान ।(व्यं॰) ।-धराना-पु॰ ऊँचा घराना ।-जानवर-पु॰ मूअर: गाय-बैल।-दिन-पु॰ लंबा दिन: २५ दिसंबरका दिन, 'क्रिसमसटे'। -नहान-पु॰ प्रस्ताका चालीसर्वे दिनका स्नान (मुसल०) ।-बायू-पु॰ हेहहकाँ। -बृदा-पु॰ मुजुर्ग, गुरुजन। -धोल-पु॰ गर्वोक्ति, टींग। -साहय-५० प्रथान अधिकारी (यूरोपीय); कलेन्टर; रेजीहर । -(दी)इलायची-मी० वहे दानेकी इलायची जिसका दिलका इलके कत्यर रंगका होता है।-कटाई-ह्या वडी भरवरेया। -गोटी-स्वी० चौपायोंका एक रोग। - बात-स्थी॰ वादिन काम, वहा काम। -बी-स्त्री॰ वृद्धाका सम्मानस्त्रक संबोधन । -माता-स्त्री॰ भेचक, शीतला ! - मीमली-सी० नदाशी करनेका एक भीतार । -राई-सी॰ सरसीका एक भेद ।-(दे) अध्या-प्र सुसुर ।-यद्वे-बि॰ वहे नाम, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधि-कारवाले (लोग) ।-लाट-पु० ब्रिटिश मारतका गवर्नर-जेनरल। -लोग-पु॰ बड़े आदमा। सु॰-(ही) यही यार्त करना-इनकी हेना, दीन भारना। -(हे) यर-तनकी सुरचन-धनी, बढ़े आदमीकी जुठन । -वापका धेटा-वर्षे नाम, प्रतिष्ठावालेका बेटा, वहे धरानेका आदमी। -धोलका सिर नीचा-धर्महाको नीचा देखना परता है। बहिदा, परिदा-पु॰ (सं॰) महला कॅमानेकी कॅटिया, बंधी;

वाहरा, पालरा-पुरु [सर्ग मधला कमानका काट्या, वसाः नद्रभरके बामका एक प्राचीन द्वारत । यदी-म्ली॰ उरदकी पीटीमें पेटा, मसाला आदि मिलाकर

यनायी और सुपायी तुर्दे दिकिया, कुम्हदेशीः करीदी । यहुजान-पु० दे० 'विदीमा' ।

सहैरर॰-पु॰ समूला, बर्धहर । सहैरा-क वि॰ दे॰ 'बहा' । † पु॰ दे॰ 'बहेर' ।

यहेरी-सी० दे० 'नेहेर'।

यद्गिना - पु॰ बहाई, प्रशंसा ।

सर्दानी न्यां दे० 'बहती' । सद्र-स्यो० बहतेया भाव, बहती (मेसल समस्तपद 'सटबह'र्से स्थलहरू)।

चर्द-पु॰ एक दिन् जानि को ल्यशेका काम करती है। - शिरी-पी० सर्वका भूगा।

-गिरी-मी॰ बर्रेका थेथा । बर्ती-मी॰ यानेका मान, वृद्धि, अधिवनका धन-संबंधिः

षद्सी-न्दी० प्रनिता नाव, वृद्धि, अधिवनाः धन-संपत्ति-दी वृद्धि, समृद्धि। सु०-का पहरा-टर्जान समृद्धिने दिन, परार्थरान।

यहना-अ० कि० दीन, आबार, पैनाव, मंदवा, मात्रा आदिता अधित दीना, त्या, केवा दीना, वृद्धि दीना; पन पान्यी वृद्धि दोनाः भागे जाना; दुमरेने आधि सिक्त जाना नाम दोना; बर्देगा दोना विधानत बुनावा जानाः दुसान्या भेर किया जाना । बहुक्द-अधिक अवदा, केटा सुन बहुक्द चनना-चन्द्रेण दुस्ता । बहुक्द बीनना-पानी अधित दाम नगना, नशी बीनं दोन्या। बहुन्यास्य दोन्ना-टोग मात्रमाः दिवसं, सुन्धारी

करना । बदनी-सी॰ झाहू, बुहारी; पेशगीके रूपमें लिया जाने-बाला अन्न या स्पया ।

बदुवारि†-स्त्री॰ बदृती ।

पुरुवातः । स्व निर्माण विस्तार, संस्या, परिमाण व्यदाना न्युल कि अकार, निस्तार, संस्या, परिमाण व्यदिने मृद्धि करनाः पहल्से अधिक व्यनान्त्रीता, कैंचा करनाः, कपट् करानाः पन, मान आदिनो मृद्धि करा, सद्दिष्टी ना, करना (मान); आगे करनाः, आगे निकालना, ले जाना (ग्रीप्त); सरा- हमा, कराना (नेवा; समेरेना, उठाना (कुमान, दरतरस्थान); इद्याना (दिया); उतारना (चूनियाँ, ग्रहने) । * अ० क्षि० चुक्रमा, समाह होना ।

बढ़ाव-पु॰ बढ़नेकी किया या भावः बढ़नाः आगे जाना ' (सेनाका), फैटाव ।

(राजाका), प्रकार व यदायन पुरु गोवरका छोटा पिंड जो खिलयानमें सम्बद्धी राशिपर (बीलने, उठानेके पहले) पृद्धिननक मानकर रखा जाता है।

वदावा-पु॰ दिग्मत, दीमला बदानेवाली वात; प्रीरसाहम,

उत्तेत्रन, इदितयाल । यदिया-वि॰ अन्छा, उमरा, अन्छो क्षिरमका । स्री॰ एक तरहकी दालः * बाद-'त्रिन्हहि छाँहि बदिया मेंद्र आये,

ते बिवल मये बदुराय'-सूर् । यदेल-सी० ऊनवाली भेडोंकी एक जाति ।

यदेला-प॰ जंगली स्थर ।

यदं या- † पु॰ बदानेवासाः * बद्दं ।

बहोतारी-सी॰ दहतीः बहाया हुमा श्रेशः होएक । बिक्क (ज्)-पु॰ [सं॰] बतियाः, बतियः स्वापार सरते-बालाः विकेता (क्षारुः)। – (क्) स्टब्क-पु॰ स्वापाः रियोजा दङ, कारवाँ। – पद्म-पु॰ न्यापारः स्वापारीः

दुकानः तुला राशि । नसार्थ-पु॰ दे० 'बिएक्ट्रक' । बणिग्-'बणिक्'का समासगत रूप । नप्राम-पु॰ व्यापा-रियोका गोरङ । नबंधु-पु॰ गीडका पीमा । नघह-पु॰ केंट । न्योधी-स्तो॰ बाजारका मार्गः बाजार ।

-वृत्ति-की॰ व्यापार, कारबार । यत-'बान'का समासमें व्यवदृत लगु रूप । -व्हहाय†-यु॰ बातभीन; विवाद!-व्हही॰-र्तो॰ बातगीत।-च्छड़-वि॰ वदवादी। -व्यहृत्य-यु॰ बानका वह जाना, द्रागद्दा,

१९० वस्त्राचा (- वद्गाव-पु० वानका वद्ग जाना, द्रागा विवाद । - इस-पु० वार्गाका इस, वास्त्रीयका मना । यनक-स्वी० दे० (वस्त्र) ।

बतान-गरी॰ इंगरी जानिका एक जलपर्श ।

यतर्ग-वि० नदन्र। यतरामण्डनरी० 'बामचीन'।

वतरानाः - अ॰ मि॰ वागचीत करना। स॰ मि॰ वगणाना। वतराहाः - वि॰ वागचीत करनेमा दस्तुसः।

वतराहा • ~ १४० वारोचीत करनेश रेप्युरः । यतस्याना — मण्डिक दे० 'बतानः'। † भण्डिक वात करना ।

बनाना-ग॰ दि॰ बहुना, बचान बहुना, ज्ञाना, सम-हाना, जूबिन बहुना, बहुद बहुना, माने-नादनेमें जैन-जिबोने मान बा मुल्दे, भागेदी प्रदूर करना, (टा॰) सबहु हेना, महम्मत्र बहुना (बाने दो सो बगाडा है)।

-फ्ररोश-वि॰, पु॰ बात बनानेवाला, श्रुठी बाते आदि करतेवालाः चापत्म । मु॰-वाँचलमें बाँधना-दे॰ 'बात गाँठ गाँधना'। -भाना -चर्चा छिदना। (किसी-पर)-आना-दोषारोप होना। -आ यहमा-प्रसंग भानाः संयोग उपस्थित होना । -उठना-वर्षा वहना, दिक्र होता । -उटाता-चर्चा चलानाः वात न मानना । -उडना-चर्चा फैलना । -उड़ाना-बात टालना । -उल्टना-वात पलटनाः विरुद्ध वात कहना ।-कहते-तुरन, झर । −का ओर-छोर−बातका मतलब, वातका सिर-पेर । **⊷काटनाः—शैचमें** बोलना, टोकना, बातका सटन करना । ~का धनी,~का प्रा~नो कहे वह करनेवाला । -कान **एडना**-नातकी जानकारी दीना । -का यसंगड करना या धनाना-छोटीसी बातको बहुत बरी बना देना, तिलका तार बनाना । –की सह–असल मतलब, तारपर्य। -की पुढ़िया-बहुत बातुनी। -की थातम्-छन भरमे, तुरतः। -खुलना-छिपी बातका प्रकट दो जाना। -गढमा- झठी यात कहना। -गाँउ घाँधमा-बात दिलमें बैठा लेना, अच्छी तरह बाद कर हैना ।-पूँट जाना-दे॰ 'शत पी जाना' !-चवा जाना-बातको कहते-यहते बीचमें उदा देनाः बातका रुख इसरी भीर कर देना। - जाना - साख जाना, पतवार उठना। -टलमा-बातका अन्यथा दोना, कहे मुताबिक न होना ! ─टालमा-वात न माननाः सुनौ अनसुनी कर्ना। -उहरना-म्याद ते होना ! -बुहराना-दूसरेको बातको जलटकर जनाव देना । (मुँहसे)-न आना-मुँदसे वोल न निकलना । - न करना - धमंडके मारे न बोलना । -न पूछना-सोज-खबर न छेनाः थ्यान न देनाः तच्छ समझना । -निकलमा-चर्चा चलना ।-मीचे दालमा-अपनी बातको यद जाते देना, अपनी बातका आग्रह स्वात हेना ।-पक्दना-मधनमें गलती, असंगति बताना; नुका-बीनीकरता ।-पचना-सुनी हुई शतका दूमरीके न कहा जाना !- पर आना-अपनी बातका पर्छ। इठ करणा !- पर ज्ञाना-किशीके कहेपर विश्वास कर हेना, बात मानना। ~पर भूछ **श**ालना-किसी वातकी भूल जाना या उसपर ध्यान न देना । -पर यात कहना-अवाव देशा। -पर धास निकलना-चर्चा या प्रसंग, दूसरेके कुछ कहरेके कारण किमी बातका कहा जाना ! - पछटना-बात बदलना । —पाना—असल मतलब समञ्जना । —पी जाना-बानकी अनसुनी करना, नातको सद्द केना। ~पूछना ~ सीज-सवर क्षेत्रा, ध्यान देना; ● कद करना । -फॅंक्ना-ताने मारनाः कड रणना ! -फेरना-वान एकटना । --फीलना--चर्चा फैलना । --बदना--वातका बहस या दागरेका रूप है। लेना: मामलेका तल खीचना: सान्त, मान-प्रतिष्ठा बदना ! -बदाना-महस, हागड़ा करनाः मामलेको तुल देना । -बदलना-बातपर कायम ल रहना, दूसरी बात कहनाः बातका विषय, यहत् वद-रुता । - धनना-काम वननाः मानः साध बदना । . -यनामा-वदाना करनाः काम सँगाल लेना, विगदने न देना । -यास में -इर बातमें । -बिगडुना -काम विग-इनाः साख नष्ट दोना । -मारमा-असल बात छिपा

छेनाः व्यंग्य बोलना । —मुँहपर छाना-बार रोन्सा। -में फ़र्क आना-बात झुठी ठएरता। -में बर निकालमा-बातमें बारीकी निकालना, बाल्डी हुए सींचना । . - रखना - कहा मान हेना, बातका महर करनाः भान रखनाः अपने वचनका पालन सरहः दुराग्रह करना । -रहना-वचनदा पालन होनाः प्रतिहा वनी रहना। -लगना-वातसे भारत होना।-(है) छाँटना-बद्द-बद्दकर बोलना । -बनाना-बनावध गाँ, ·बहाना करना; चापल्मी करना। -मिलाना-हीं र्ष करना। -सुनना-कडी वार्ते सुनना।-(स्रो)की झाड़ी-बातोंका देरसक न टूटनेवाला सिलसिला, श्यानार बोलना । -बासी में -बातीकी सिलसिलेमें, बातनीतरे दरमियान । -में आना-वातीका विशास का हैन। थोला साना ।-में उद्दाना-इपर उपकी बातें वा की में शलना । —में लगामा—वारोंमें बहशाना, बहमारा। वातिन-पु॰ [अ॰] भीतरः अंतःशरण, मानस । यातिनी-वि० (अ०) भीतरी। बातिल-वि॰ [स०] शुरु, मिथ्या, गहनः रह किया हुआ। -परस्त-वि० मिध्याको पूजनेवाला, काफिर I बाती≉−सी० मधी । ें ः यात्रल-वि॰ दे॰ 'वातुरू' । बात्नी-वि॰ बहुत बोलनेवाला, बकी। बाथ-१५० गोद, अंकः [अं०] रतान । याथ्र-पु॰ वयुका नामका साग । वाद-अ॰ नेमतलन, फजूल, नेकार। पु॰ तकी नहसा इम्बा शर्तः वाजीः दस्त्रीः अतिरिक्त मृहय जी पीछे क्षप्त दिश जाता है । वि॰ छोड़ा हुना । मु॰ -करना, देना-भना कर देना, काट देना । -मेलना - चर्न नरना । बाद-स॰ (अ॰) पीठे, अनंतर । ≃को,−में-पीछे । वाद-पु॰ [का॰] हवा, बाद्यः थोता । -कदा-पु॰ एतने कटकनेवाला पंता: पीकनी । -स्वोर-पु॰ वाल सः योने की बीमारी, गंजापन ! -शह -पु धगुहा, वर्षरी -गीर-पु॰ झरोखा । -सुमा-पु॰ बायुका दिशा ^{बतानै} वाला आला। -पा:-रप्रतार-वि॰ दवादी तरह देव चकनेवाला (धेर्दा) । -धान-पु॰ पाल । -धानी-रि॰ पाछसे चलनेवाला (जहात)। -प्ररोश-वि॰ पापपन डीय भारनेवाला । -(हे)दिङ्गाँ-छी० पनग्रहमी इता। -फ्रिरंग-पु॰ गरमीकी बीमारी, आतशक ! - बहारी-पुरु बसंतकी सहावनी हवा ।

वादकाकुछ-पु॰ तालका एक गुरूप भेर । यादनाव-अ॰ कि॰ यहस करना, शागा करना हुन .कारना १

थादर-पु॰ मिं॰] कपासः कपासका ग्राः स्पी बमः हें देशमः जलः दक्षिणावर्ते शंखः + पु॰ बादल । दि॰ वेरहाः क्यासकाः भोटाः वारोकका उत्तरा । बादरा-सी० [सं०] बपासका देह वा यह ।

बाद्रायण-पु॰ [सं॰] बेदांत सूत्रके रचिता वेद-म्याप् -संबंध-पु॰ बहुत दूरका, शान-तानहर श्रीश दुशा संबंध । —सम्र-प्रक मदागुत्र ।

बादशयणि-पु॰ [सं॰] शुक्रेय ।

बंदचलनी; सुटाई, दुष्टता । -सिज़ाज-वि॰ बुरे, तीखे स्थमाववाला, चिड्चिडा, विगईल । -मिज़ाजी-खी॰ स्वमावका तीसा होना, चिड़चिड़ापन । -मुआमला-वि० छेन-देनमें वेईमानी करनेवाला, बददयानत । —यङ्गीन्-वि॰ सुरी बातपर विश्वास करनेवाला !-र्वंग-वि॰ बुरे रंगका, जिसका रंग उड़, बिगड़ गया हो, फीका । पु० जिस रंगकी चाल हो उससे भिन्न रंग (तादा); भिन्न रंगती गोट (चीसर)। -राह-वि॰ बुरे चलनवाला, कुचाली, दुष्ट, सीटा । -रिकाय-वि॰ (घोड़ा) जी सवार होते समय शरारत करे। -रू-वि० बुरी शक्लका, कुरूप। - इॉह *- वि० दे० 'बदराइ'। - रोधी-स्वी० रीव विगदना, थाव उठ जाना; अप्रतिष्ठा । ज्लगाम-वि॰ मुहें बोर, सरफश (बोड़ा); मुहंफट । -बज़ा-वि॰ त्रिसका सीर-तरीका अव्छान हो। −शकल,−शक्त-वि॰ कुरूप, भोंदा। -दागृत-वि॰ अशुअ, मनहूस। -शगृती-सी॰ असगुत । -सलीकगी-सी॰ वेशकरी, फूहइपनः बदतमी शी । -सलीक्रा-वि॰ वेशकर, फूहइः बदतमीतः। -सस्द्रकी-स्ती० दुर्व्यवहार, पुरा बर्ताव। -मीरस-वि॰ सोटे स्वभावका, दुरशील । -सरत-वि॰ कुरुप, भोड़ा, नुरी शहका। -स्रती-सी॰ कुरू-पना, खूबस्रतीका उलटा, भौडापन। -हज़मी-सी० भपच, अत्रीर्ण । -हथास-वि॰ जिसका द्देश-दवास ठिकाने न हो, धनराया हुआ, उद्विश । -हचासी-सी॰ शोश-हवासका ठिकाने ल शोना, धनराहट, परीशानी ! -हाल-वि० निसन्ना हाल बुरा हो, दुर्दशामस्त । बदन-पु॰ दे॰ 'बरन'; [फा॰] श्ररीर, देह। -सील-

भी • मालरांबकी एक कशरत । - निकाल-पु॰ माल-रांभकी एक बमरत । मु॰ -जलना-मुखारकी तेजी होना। -इटना-ओडोर्मे इलका दर्द, तनाव दीना (इदरक्षा पूर्वरूप)। ≠ढीला कहना-वदनका तनाव दृह यत्ना । -शहुता होना-ददन अहर जाना । -दुहुरा होना-बदन शुक्त जाना। -पालना-बदनवर पतेहे-पुंसियाँ नियलना। −में आग छगना−वदुत ग्रोध होना। -मनमनाना-बदनमें सनसनी पदा होना। -साँचेमें दला दोना-दर एक अंगरा संदर और सुना-शिव दोना । –सूराकर काँटा हो जाना–ददुत दुवला हो जाना । -हरा होना-बदनका तर और ताजा होना। यहना-ग॰ कि॰ टहरानाः नियत, पद्या यहना (कुदनी, चनका दिस, स्थान आहि); दार्न छनाना; निमला, सम-हाना (यह दिमीको कुछ बदता नही); मानना (गवाह बरना); • सहना, बर्जन करना-'वित्र बद्ध बहु बहि बहु भागा'-रपुरात्र । सदकर-दर्ग लगावर, पूरे औरके साथ। **बद्दाी-पि॰ देइ-मंदर्श, शारीदिक ।**

बद्र-पु॰ [मं॰] बेरका देश या उमुद्रा पन्नः क्याभः दिनीना । -पुण-पु॰ देर पत्नीका समय ।

सद्र - भ (तां) बाहर, दरवाजि बाहर (सहर-बार बरवा-ज्यारी निर्वोक्त करता) । नार्योस-सुक स्वित्व से मर्जदा, म मानसे लाहक दरने निर्वालना - नार्योसी-ची॰ बद्दानीयुक्त बाम । सुक निवदा-स्वा-दिमारने मनुगो निकालना दिगोदे दिन्से देखा

निकालना ।
बदरा-कौ० [संग] कपासका पीभा । * पु॰ भादल ।
बदराहें * न्की० परली ।
बदराहें * न्की० परली ।
बदरास्काल-पु॰ [संग] पानी आमला ।
बदरि-कौ० [संग] बेरका पेह वा फल; गंगाका एक
उद्यम्भान तथा उसका निहटतर्ती आसम-स्थान ।
बदरिकालम-पु॰[संग] शीनगर(गद्दाल)में रिश्त वैष्णवींका एक प्रधान तथी जहां नर-माहायण कियोंने तथस्या

की थी।

यद्दी-की० क बादल; [सं∘] कपासका पीपा; दे० 'बरदिका'। - छहन-पु॰ एक गंभरत्य: - नाम-पु॰ वरदिकाल मंदिर! - मारायण-पु॰ वरदिकाममें मदिछित नारायणकी मिसायणं बर्दरिका नामक रथान! - पदम
प्रक-पु॰ एक गंभरत्य! - क्रस्ट-पु॰ दर्शका क्रष्ट!
- फला-की० नील होकालिका! - चणा,-धन-पु॰
देरका जंगल; बददिकाभमा। - बादसा-की० हुगां।
- क्रस्ट-वर्शकाभमा। क्रस्टा-वर्श॰ हुगां।

्वांक -वर्दिकायमका पक परा । ।
बद्दल-पु (क्षण) देर-कार, परिवर्गना रुवा, वदका ।
बद्दल-पु (क्षण) देर-कार, परिवर्गना रुवा, वदका ।
बद्दलमा-क्षण किंग् रुवा, परिवर्ति जाता, भिन्न
होना, रंग-द्रप दूसरा हो जाना; परुको जगह दूसरा हो
बाना, दूसरी जाव से बा जाता, निवुक्त होना, वदारका
होना; (मत, विचार, रवशावका) तृसरा हो जाना (अव
वे दिक्तुक बदक गये है); बानसे हटना, मुतरता। सल
केंद्र हुसरा रोग-पर चेना, केंद्रभाद स्वता। हुक्को छोड़कर द्वार रुवा केंद्रभाव केंद्रभाव केंद्रमा, काममें छाना
(करहा, सतान); एक चोज देशर दूमरी चोज छेना, काममें

बदलवामा-स० कि॰ वहलेका काम महाना । बदला-पु॰ बदलेका दिना, अटक बदक एक के बदले दूसरी जीव देमा, ठेमा; बह जीव जी दिसी जीवते बदले में दी-ली जाए, मुमावमा: बह काम जी फिरी जाम-के बहलेम, जबश्में दिया जाय, एक्टा, मिलहार (जुहामा, ठेमा); बमेबा जल, मिलहार मु ० देमा-मासुपकार दहा। - टेला-मरस्पकार बहना। - (हे)में-(...के) एक्ट्रमी, उत्पादर।

बदलाई न्या॰ बदलोडी किया; बदलेने ली या दी जाने॰ बाली नीम: बोर्र नीब बदलनेने कराम लगनेवाली रक्म। बदलाना—ग्र॰ कि॰ दे॰ 'बदलवाना'।

बद्छी-ग्बी॰ छाये दुए बादल, घटा; एक्टें स्थानपर दूसरे-का रुगा, मेडा वा लगाया जाना, तरादला ।

बद्द्वीब्छां –भी॰ बद्द्यनेको क्रिया ।

बदा-वि० ('बदना'का मृतकाष्ट) नियन, भाग्यमें हिन्स पुमा (बी भाग्यमें बदा है वह होकर रहेगा)। पु॰ शरष्ट, नियति। सु॰-होना-मान्यमें हिन्सा होना। बदान-सी॰ बदनेशें हिन्सा या मान, मदा खाना।

बदाबदी-सी॰ होर, प्रतियोशिता । २० वर्षर, प्रति-योगिनान्युर्वेक ।

यदाम~पु॰ दे॰ 'नाराम' । यदामी~दि॰ दे॰ 'नारामी' ।

पापद्सी करना । -रे,-रे वाप-दुःख वा सव स्चित करनेवाला उद्घार १

यापा-प्रवाप; दे० 'बाव्या' । -बेर-पुरु पुरतेनी अदा-

यापिका-स्ती० दे० 'वापिका'।

वापी-सी॰ दे॰ 'वापी'।

थापुरा-वि॰ गरीवः वेचाराः तुच्छ, चगण्य । [सी॰

वापूर्र-पु॰ दे॰ 'वाप'; पिता या अन्य आदर्णीय जनका

याप्पा-पु॰ मेनाइके राजवंशका आदिपुरुष (जन्म ७६९ वैकम)।

बाफा - खी॰ भार।

वाफ्र-पु॰ [फा॰] संशापदसे समस्त होकर 'बुननेवाला' अर्थ देता है (न्रवाफ)।

याक्रता, बाक्ता-वि॰ [फा॰] बुना दुआ। पु॰ एक तरह-का रेशमी कपड़ाः कब्तरीका एक रंग। याय-पु० [अ०] द्वार, दरवाजाः दरमारः पुस्तकका अध्याय,

परिच्छेदः प्रकार, विषय । बायत - ली॰ [फा॰] विषय; वरीया । (किसीकी बायत-

किसीके विषय, बारेमें) । वायर-पु॰ भारतके मुगल राजवंशका अवर्गक जडीक्डीन गुहम्मद (१४८३-१५३० ई०)।

यावरची-पु॰ दे॰ 'बादरची'।

बाबरी-स्री० जुस्फ, कुाकुल ।

बाबा-पु॰ (फा॰) वापः दादाः बूढाः, यते बास्नेवासा भादमी। साधु-सन्त्यामी। एक संबोधना साधु-सन्त्यासियोंके लिए प्रयुक्त एक आदरस्वक शब्दः वच्चोंके लिए व्यारका ग्रन्द। -आदम-प्र० दे० 'आदम'; सरीका। -जी-प्र॰ साधु, सम्म्यासी; इनका संबोधन । सु॰-आदम निराका है-रीति-नीति निराधी है.।-

यायिल-प॰ इराकका एक माचीम नगर की करात सटीके किनारे वसा था और एक समृद्ध राज्यकी राजधानी था। 'बेनिलीनिया'।

यायी==सी॰ साप्ती।

बामुल-पु॰ दे॰ 'बाबिल'; बाप, विता । .

यायू-पु॰ यहा दात्रिय सभीदारः ठाकुरः विशिव, प्रतिष्ठित बना हर्क (यरे बाबू, ऐट छर्च); देव 'बाबूबी' ! - जी-पुर पिताः पिना या अन्य आदरणीय जनका संबोधन । --साहय-पु॰ भाररणीय जनमें, किए अयुक्त शब्द । धायना-५० दवानं काम आनेवाटा वक पीघा ।-(ने)का

सेल-बाबनेके कुलोदी निष्दे साथ परवर विकाला दुआ तेल। याभन ! - पु॰ दे॰ 'ब्रादाग'; भृमिहार ! ...

याम-वि॰ दे॰ 'वाम'। सी॰ एक गहनाः एक मछलीः सी । पु० (फा०) होठा, छत । —दैय-पु० 'बामदेव' । यामकी~सी० एक देवा ह

यामन-पु॰, वि॰ दे॰ 'बामन' ।

बामा-मी० दे० 'वामा' ॥

षामी - हो। वाँगी; एक छर्ड्डी मछन्दी । वि॰ वाममानी ।

बारहरा-प्० दे० 'नाहाप'।

वार्य --वि॰ दे॰ 'वार्या'; चुका दुआ । सु॰-देना-स देनाः पेरा देना । .

वाय = -सी० वायुः वातका कोप-'भटा एवको विन हो करै एकको बाय'; वापी, बावली ।

वायक=-पु॰ वाचक; दूत ।

यायकाट-पु० [अं०] संबंध-त्याग, वहिश्कार; सामास्वि ·या व्यापारिक संबंध, वस्तुविद्योषके व्यवहार आरिकालण वायन-पुर मित्री, संविधियोंके यहाँ मेरी बानेवही मिठाई आदि (बॉटना); † दे० 'वयाना' ! मु०-देवा-छेड़छाड़ करना (भले घर वायत दिया) !

यायविडंग−पु॰ एक रुता शिसने फुट दशके का बाते हैं।

वायवी-वि॰ बाहरी, गैर, अजनश्री ।

यायव्य-वि०, पु॰ दे॰ 'वायव्य'। बायलर-प॰ [अं॰ 'ब्लायलर'] बहा बरसग बिसमें श्री चीज उवाली जायः इंजनका बहु भाग जहाँ भाग हैरार करनेके लिए पानी खीलाया जाता है।

वायळा - दि॰ बाहकारक ।

यायली#-वि० दे० 'वायवी'। या**यस≠**∽पु० दे० 'शायस' ।

यायस्कोप-प॰ [अं॰] परदेपर चलते-फिरते वित्र रिष्ट **छानेवाला एक र्थन्न** ।

बायाँ-वि॰ पूरवकी ओर मुँह होनेपर उत्तरको ओर पनि ·वाका (अंग), दाइगाका उलटा, वाम; विरुद्ध, प्रतिरूत ! [स्ती॰ 'बायी' १] पु॰ बायें दाधसे मजाया जानेनारा तबला। सु०-कदम होना-दे० 'बायाँ पोव पूरता'। -देना-कतरा जानाः स्थाग देना। - पाँव वा देर प्जना –गुरु मानना; । हार मानना; उस्तादीदा रावः होना ।-(ये)हाथका कास या खेळ-बहुत शासन काम । -हायसे शिनवा या रखवा सेना-व्यवस्थी छेना, धरदा लेना ।

वायु∽सी॰ दे॰ 'बायु'। ः

वाय - अ॰ वार्या ओर: प्रतिकृष्ट (होना) । सु॰ -होना प्रतिकृत होना । '

वारंवार-स॰ फिर-फिर, कई बार ।

बार-सी॰ समयः देश दका, मतंत्रा । पु॰ हार (शरनाएं) जनसमृहः टट्टर, घेराः किनाराः भारा * हेश, शता ह बालकः ठिकानाः * वारि, लटः [रांग] दरार, छैर -निय,-वप् ,-वप्टी,-मुखी -सी वार्वप् !-बार" भ॰ पुनः पुनः, अनेत पार ।

वार-पु॰ (फा॰) बोस, भारः फलभारः फलः प्रशासा गर्ने, अणः दरनार, इत्रकासः दसक, पर्नेग । प्र ग्रेंडापदसे युक्त होतर 'बरमनेवाला' अर्थ देगा है ('गोदरबार'; 'दरियाबार') । -आधर-विक पास्तेवाता. कल्दार । -कश-दि॰, पु॰ बील धीनेराला ।-लाना-पु॰ माल्साना, गोदाम । -गह,-गाह-सी॰ दर्श कचहरी; बाही सेमा। -मीर-विव बीझ बीनेवास।

पु॰ कदाईके काम आनेवाला जानवरा पाँउ किए बाम करनेवाला, थमियारा ! —चा-पु॰ छोश दरवाता पुरु एक तरहका दिर्नः एक तरहका तेंद्र । --चर-पुरु दे॰ 'वनचर'। –चरी –स्रो॰ एक जंगली घास। –चानी -वि०, प० दे० 'वनशारी' । -शार.-शाँडी-शाँ० सरागाय '। -जा-जात-विण, प्र∘ देण 'वनन', 'वन-जात'। -इयोव्स्ता-सी० माधवी लता। -सरई-सी० वंदाल । -सलसी-स्री० एक पौथा जिसकी पत्तियाँ और मंत्रता तलसीसे मिलती है, बवंशी ! -दक-प॰ बादल, यसद । -दास-प्र॰ वसमाला । -देवः-देवता-प्र॰ है॰ 'बनदेवता' । -हेथी-सी॰ जंगरुकी अधिष्टात्री देवी । -धात-स्त्री॰ गेरू, रंगीन मिडी । -निधि-प॰ समद । -सीय-प॰ एक सदावहार शप ! -पट#-प॰ . पेडोंकी छालका बना सपदा । -पनि-प॰ सिंह । -पश्च-प॰ जंगलसे होकर गया हुआ सरता। -पाट-पु॰ जंगली पट्या, सत् । -पाती*-सी॰ 'वनस्पति' ।-पाल-प॰ बगीचेका रक्षक, माली । -पिंडास्ट्र-पु॰ एक शंगली पेड । -फल-पु॰ वनमें होतेयाउँ फल । -यकरा-प॰ ठंढे प्रदेशोंमें पाया जानेवाला एक पक्षी ।-याँर-पु॰ जंगली क्रमम, धारेजा। -दसन-पु॰ छालका बना हुआ कपडा । -वारी-वनकन्याः व पुष्पोद्यान । -वास-पुण वनमें बसनाः घर शीवकर अधिक करके रथानमें रहनेकी विवश किया जाना !-बासी-वि०, प० वनमें रहनेवाला, जंगहो । -बाह्रन-प॰ भीका, बहयान । -बिलाय-प॰ क्लिकी जातिका एक वन्य पंत । -मानस-प॰ दिना पेंछका बंदर जिसकी दावल आदमीसे कुछ अधिक मिलती है: निरा जंगली, असभ्य मनुष्य। -माल--माला-सी॰ दे॰ 'वतमाला'। -माली-प॰ दे॰ 'वत-माला'। -मुरगा-प॰ जंगली मुरगा।-मूँग-खी॰ मीठ । -शरा(-पु० वनकी रखनाकी करनेवालाः बहे-क्रियोंकी यक जानि :-राज-प्रव जंगलका राजा, सिंह: यहम बदा बुध ।-- राय-पु० दे० 'वनराज' । -- शेटा--प॰ जगली रीठा ।-रीहा-सी॰ एक पीधा जिसकी टालसे रस्सो बननी है।-रह-५० धंगली पेड़: कमल।-रहिया-स्ती॰ एक सरहकी कपास । न्यमन-प्र॰ छालका बस्त्र । -श्वली-मी० बंगल । -हरदी-हरूदी-सी० दारदलदी । यनउरा -५० विनीलाः श्रीला ।

वन दर्श - चुन (वना) हो। वनाया वनकी चयन । यनकर-पुन अस-प्रदारकी एक काटा देन 'बन'में। यनज-पुन रेन 'बिनमें' देन 'बन'में। यनजा-पुन रेन 'बिनमें' देन 'बन'में। यनजारा-पुन रिक्ता। यनजारा-पुन रेन 'बन' यनजारा-पुन रेन 'बन'। यनजारा-पुन की देनीय अनाज चादकर वेचनेकी के आद, दोग सादमारा बनिज, स्यापार करनेकाला। यनजार-पुन स्थापार (बोज केनी कीड वनदार (बुन विश्व स्थापार (बोज केनी कीड वनदा-पुन (बाज स्थापार क्षांक केनी कीड वनदा-पुन (बाज स्थापार पुन सेर) - न्येबारी-स्थान

प्यतना । यनतान्त्री बनायः। मेहः सन्मे नितारेशे देल जिस्के धोनी भीर द्रारिता हो ।

वनताई है — स्त्री॰ मनकी भयंकरता ।
वनना — अ॰ कि॰ बनाया जाना, निर्मित, रिचत, तैयार
होना; नवा रूप किण्यान सुमरी स्थितिमें जाना, आसीन,
तियुक्त होना; हुपरता; दुसरत होना; करा जाना, साफ
होना (अनाव); वेनकुक्त बनाया जाना; माल्यार होना;
घटना, नेल होना; हो सकना, शब्य होना । मु॰ वन
ज्ञाना—संयोग मिल्या, अगीट-सिदिका अवसर मिल्या।
वन पद्ना—हो सकना, सब्य होना । वन चन्ना।
वन पद्ना—हो सकना, सब्य होना । वन वन वन्ना—हो सकना, स्वय होना। वन वन वन वन होना।

यमप्रशाई-वि० वनपशेके रंगका । यनप्रशा-पुरु (फार्श एक पीधा की दवाके काम आता है। यनरा-प॰ दे॰ दस्हाः (छहातेक) स्याहर्मे गाया जानेवाला एक गीतः * चंद्रर । बनरी-सी॰ दुछहिन, नववधः मर्श्ताः । वनवध-पुर प्राचीन भारतका एक प्रांत । यनवना - स॰ कि॰ बनामा । बतवा-प॰ पेनडब्दी (बलपशी): यक तरहका बसनाग । वनचाना-स॰ क्रि॰ बनानेका काम कराना । वतवारी-प॰ धनमाली, कृष्ण । यनवैया - प्र॰ बनानेबाला । वनसवती!-सी॰ दे॰ 'बसस्पति'। यतसी!-सी॰ महली पँसानेदी फॅरिया: मरली । यसहरी-सी॰ एक तरहकी होश नाय। यना-प॰ दस्हा, वर; दे॰ 'बाना' । यनाहरू-अ० दे० 'बनाय' । बनाउं +-प॰ दे॰ 'बताव'। यनाउरि#-सी॰ वाणावशी । यनागि॰-को॰ दावानस । वनारिन-सी० दावानसः। बनात-की॰ एक रंगीन जनी अपदा जिसका अँगराम आदि बनाते हैं। यनाती-वि॰ बनायस बना हुआ ।

बनाना-ष्यक किं रचना, निर्मान करना, तैवार करना; परमुको कानमें स्वतं सादक रूप देना; वया रूप देना; पुरारी वर्षाने वरक देना (राज न्याना); शास्त्रकरान, दिनना-प्रदान (अनाम); काटनीण्डतः दुराग करना; भेतारना, किंगी परस्य नियुक्त, आसीन करना; सुरारात, मरागत्र करना, क्याना, परा करना (रथना करना); स्वत्य द्वारा करना करना, स्वान-निरादे होरा छननाना। बना-कर-अपरी, नवर । मुक-प्योद्धान-द्वारना, स्वतः करना अपरी, नवर। मुक-प्योद्धान-द्वारना, स्वतः करना अपरी, नवर। मुक-प्योद्धान-द्वारना, स्वतः करना ।-विसादना-करणी सा वृत्य स्वता। वनाये रसना-विदा स्वता, क्षावर स्वता। वनाये रसना-विदा स्वता, क्षावर स्वता।

44

बंद्क चलानेमें काम आता है। -गुज्ञाना-पु॰ बास्द या गोला बास्दका मंडार।

बारे-अ॰ [फा॰] अंतर्भ, व्यक्तिरकार, ठेकिन; दौर । बारोठा-पु॰ द्वार; स्वाहकी एक रस्म, द्वारपूजा। बार्वर-वि॰ [मं॰] वर्बर देशमें छल्छ। बार्वरीट-पु॰ [सं॰] आमकी गुठको; बेंसुवा; टीन; वेदया-

पुत्र । याई-वि॰ [म॰] मोरके पंस्तका बना हुआ,। याईस्पत, वाईस्पत्य-वि॰ [सं॰] वृहस्पति-संबंधी । पु॰ एक मंतरसर, एक दाब्दकोष ।

बार्हिण-वि॰ [सं॰] मयूर-संबंधी । बार्खना-पु॰ दे॰ 'दालंगु' ।

बार्लगू-पु० [फा०] दीरे जैसा एक बीज की दवाके काम आना है। तृत्मलंगा।

थाल-छी॰ जी, गेहें आदिका वह माग जिसमें दाने छगे होते हैं, खोशा; * बाला, तरुणी । पु॰[सं॰] यद्या, बालकः वह जिसकी उम्र सीलह वर्षसे कपर न हो; बछेड़ा; सुगंध-थालाः पाँच वरसका द्वाधीका वचाः दूषः नारिवलः केशः रोआँ; शोशे बादिया चीजोंमे एई। हुई दरार । वि॰ खो पूरी बादकी न पहुँचा हो। नवीदितः नासमझः मूर्खं । 🛥 कमानी-स्ता॰ [हि॰] धड़ीके देहेंसमें रुगायी जानेवासी थारीक कमानी। —कौड─पु० रामायणका पहला संड जिसमें रामचंद्रके जन्म, बाललीला, विवाह आदिका वर्णन 🕏 । --काल-पु॰ वयपन, वास्य । --कृमि-पु॰ जूँ । -कृष्ण-पु॰ कृष्णका बाहरूप । -केलि₃-केली-सी॰ पर्थाका रोल, यालकीटा । -क्रीडन-पु० वधोंकी कीहा। -फ़ीडनक-पु॰ क्रिलीना ! -फ़ीडा-लो॰ दे॰ 'बाल-केलि'। -एंडी-[हि०] पु० ऐवी हाथी। -श्विस्य-पु० क्तियों ता एक वर्ग (पुराणोंके अनुसार ये बीलमें अँगूटेके परावर है और सूर्य में स्थम आगे आगे चलते है, इनकी संख्या ६० इजार है)। -स्तोरा-पु० [हिंग] वाल झड़ने-का रोग, गंजापन । -गर्भवती -का० पहली बार गामिन होनेपाली गाय । —गोपाल-पु॰ वालकृत्माः वाल-वच्चे । --गोविद्-पु० वाङकुःण । -शह-पु० वाङकोको पीडा पर्देचानेवाका उपग्रह या विद्याच (इनकी संस्या ९ वदायी गयी है, नाम ये ई-स्ट्रंड, स्ट्रापरमार, शकुनी, रेवती, प्तना, रांधप्तना, शीतप्तना, मुखर्माउका, नैगमेय); शल-रीगविशेष । -चंद्र-पु० द्वका चाँद । -चर-पु० यालकों में चारित्य, श्रीहरीया और स्वायलंबनका बाव लाने-के लिए स्थापित संवक्षा सदस्य, 'ब्वायरकाउट'। —चहित -पु॰ वामलीला, बनपनके काम l -चर्य-पु॰ कार्ति-कैयां --चर्या-कीं॰ दच्चीका रस-रसाव, शिञ्चपालन । -चातुर्भद्रिका-सी॰ बच्चोंको दी जानेवासी एक दवा, भीदरी । –छड् –सी० ((६०)) जटामासी । –**छतरी**– स्तो॰ [दि॰] चुटिया; यज्नरोंकी छतरी । -संग्र-प्र॰ भागीयर्त । —सनय⇔पु० लेंदका देह । —नुण-पु० नस्यः नवजात घःस । —तोङ्-पु॰ [हि॰] बाल ट्रः वानेस होनेवाला फोड़ा । -दलक-पु॰ सैरका पेह । -धनgo नागालिगनी संपत्ति । -धि-go पूँछ । -धी--रती व देव 'यानिधि'। ←पत्र-प्रव हीरका देव; बवासा।

-पास्या-स्ती॰ वार्टोमें वॉधनेकी मोतियोंकी हो।-पुत्रक-पु॰ अस्पन्यस्क पुत्र । -पुर्वी-की॰ दुर्ता -वर्च-पु॰ [हिं०] छड़के वाले, संतान। -याँचा-रिः [हिं0] ठीक, सटीक, पहा। -० गुरुाम-पु०[हिं। हर आशासा पाछन करनेवाला, हशारेपर काम बरनेवला सेवड । –बुद्धि-स्त्रां॰ वालोचित पुद्धिः नामगरी, सन अक्टी । वि॰ लड्कॉकी-सी अक्ट रहनेवाला; अप्तर्दि। --बोध-वि॰ बाङकोंकी समरामें आनेवाला, अलाव। च्यहाचारी(रिन्) -पु० वचपनसे प्रहावर्ष रहानेगरा, आजन्म अद्भारत । —भद्रक-पु॰ एक दिव । –माव-पु॰ वचपनः वाल रूप । - भेपज्य-पु॰ रमांत्रतः।-भोर च्यु॰ प्रातःकालका (कलेवाहरू) नेवेष । -भोष्य-स चना । -ऑरी-छी॰ [हिं०] घोष्टोंका एक दोव। -मति —खी॰, वि॰ दे॰ 'बालदुद्धि'। **→म**रस्य-पु॰ होरी, रिन पालकी मछली । **−मरण−पु॰** मूखोंका मरनेशरां (वै॰) । –मुकुंद-पु॰ बालक कुला। -मूलक-पु॰ छोटी मूली । -मुलिका-सी० आमहेका देर । -स्ग-पु॰ मृग्हीना । -यक्कोपधीतक-पु॰ दे॰ 'बालोपरैंग'। -रिय-पु॰ बाङस्य । -रस-पु॰ 'एक आयुरेक्षेत्र भीषय । ~शज्ज-पु० वैदूर्य मणि । ~रोग-पु० बन्वेंके होनेवाला रोग । -लीला-ली० वाल-वरित, रामकोरा । ~बरस-पु॰ वछड़ा; सबूतर ! वि॰ जिस्का लड़्डा **ग**ी छोटा हो । -वघ-पु० बालककी हत्या । -वा**ग्र**-प्र बकरा !-विधवा-सी० छोटी उप्रमें ही विधवा ही गर्ने बास्ती स्वी; भीनां या पति-समागगके पहुछे विभागी नानेवाली स्त्री। -विधु-पु॰ दूजका चाँद, वाहबर i* विवाह-पु॰ वचपनका, छोटी उसका म्याह ।-व्यात-पु॰ चेंबर । -ग्रंग-वि॰ जिसके सीग भगी निक्ते ही। -संध्या-सी॰ बोधुलिवेला, संध्याका पूर्व भाग। " सत्ताः-सस्ति-प्र॰ वचपनका दोस्तः वच्चांका होताः मूर्यका दोस्त । -सफ्रा-वि० [हि०] बाल हाक हरते उद्दानेवाळा (प्राप्टन, दवा) ।-सारम्य-पु॰ दूध । -स्प ~पु॰ उपता हुआ सूर्व । -स्थान-पु॰ वयपन। "हर्न" पु॰ बब्बेका हठ, बिद । मु॰ -बामा,-पहना-शीरी चीनी, थातु आरिसी चीतीपर बिटक्तेका निशान पाना। -उगना-बाट असना ।-का क्वल बनामा,-ही भेर बनाना-अतिरंजना करना, तिरुका तार बनानाः पदा कीश बनाना। -की स्वास स्वीचना या निशासना बारीकी निकालनाः बहुत छान-दोन दरमा। -सिपरी होना-स्वाहसे सफेर बाल अधिक हो जाता। - प्यम पकाना-बूटा हो जातेषर भी धान, अनुभवने हेरा रहना ! (कियी काममें)-पदाना-(कुछ दरने 57) बुझ होनाः अनुभव माप्त शतमा । -यरायर-गर् वारीकः जरान्ता, रचीमर । -याँका होना-स्ट, याँ पहुँचनाः द्दानि, अनिष्ट दोना !-याँचा निशान उपानाः पदा, अनुक निद्याना स्याना । - यास-पूरा हिस्से पैरतकः हर एकः जरान्सा ।--बाछ राज मोती पिरीना-स्य बनाव-श्रेमार करना । -बाल गुनहगार होना-हर तरहरी, सिर्मे पैरतक, अपराधी होना । -बाल दुश्मव होना-हर पकता दुरमन होना, समीका शत हो बाना!

और हिटकनेवाली ची जें भरी होती है और जो 'हवाई जहाजसे गिराया जाता और हाथसे तथा तीपमें मरकर भी फुँका जाता है। -कांड-प्र॰ बमका प्रहार, विस्फोट। -गोला-प॰ नमका गोला । -बाज-वि॰ दश्मनपर वम बरसानेवाला (हवाई जहाज)। -बाजी--वारी-सी० वस-वर्ण १ वसकता-अ० कि० आवेशमें अपने बल-पौरूपकी टींग

मारनाः उछ्छनाः फुटना । यमचल-सी॰ शोरगुरु (मचाना)।

ग्रमना -स० कि० वशन करना । यमपुलिस-सी० दे० 'बंपसिस'।

यमुखाना-स॰ फ्रि॰ बहुबर बीलनेके लिए बहावा देना । धसीटा-प॰ वॉबी, वहमीक ।

बसोटां-प० दे० 'बसीटा' ।

याहती-सी० हे० 'वसती': ऑस्ट्रा एक रोग, विलगी: हाधीकी पँछ सङ्नेका रोगः लाल रंगकी जमीन । यय-सी॰ जुलाहोंका एक भीतार, बंधी। प्र॰, स्ती॰

है॰ 'वय'।

ययन≠⊸प० टे॰ 'बैन'।

दयना - स० द्वि० वीज कीता; वर्णन वश्ना । अ० कि० वहनाः लगना, आरीपिन हीना । प्र मित्रीं तथा संबं-थियोंके यहाँ भेजा जानेवाला पक्षान या इस तरहकी कोई चीज।

ययर - पुरु हुर 'वैर'।

ययस-सी० दे० 'वय(म्) । -धालाक-वि० वयस्त. युवा । -सिरोमनि#-प्र जवानी, योवन ।

यया-प॰ गौरैयामे मिलती-जलती एक चिहिया जी अपना धींसला बड़े कीशलते बनाती है। आइलों आदियें बाल

तीलनेका काम करनेवाला । चयार - स्वी० वयाका पंचाः तीलनेकी जनवतः सोलाई । ययान-पु० [अ०] यथन, वचन, उक्तिः वर्णनः बक्तव्यः तस्यीका वह विवरण जी अदालतमें बादी वा प्रतिबादी द्वारा लियकर या अशनी अस्तृत किया जायः (अरबी, पारसी) साहित्यशासकी दक शासा । -नहरीकी-प हिसा हुआ बयान की प्रतिवादी अस्त्रीदावेके जवाबने दासित करता है। -लाईटी-प॰ इसरेके क्यानको पृष्टि बरनेवाला बदान । -दाधा-पुरु दावेका विवरण । अर

-से पाइर-अवर्गनीय, जी कहा न जा सके। षपाना-पु॰ बद्द रकम को सीदा पद्धा करनेके निष्ट शरी-दार रेचनेवालीको देशगी देता और पीछे बसाके मुक्यमेंसे

शाह रेता है, साई । • अ॰ ति॰ बहबहाता । ययापान-पु॰ [पा॰] चंत्रक, उजारसंद ।

यपायानी-विव संगणी, बनवानी । यपारः यपारि - सी॰ इवा, वायुः शीतल-मंद्र वायु ।

ग• −करना−रंगा शहना, प्रेमें दवा बरना । यपारी-शीव स्थान्त् । देव "बयार" । वयामार-पुर वह हैर की बाहरका बरव देखने या गीनी षणानेके लिए दोवारमें बना हो; नागा, आना ह

षपालिम-विन, यु देन 'नदालीस' । वयामीम-दि॰ धन्त्रीम और दी १ पु॰ मालीम और दीनी

मंखा, ४२ । वयाच्यी-विक अस्मी और हो । पर अस्मी और दोसी

संख्या. ८२ । बरंगा - पु॰ छत पाउनेकी पत्थाकी पटियाः पाउने हैं लिए धानका सामग्री जानेवाली सकरी !

बर--प॰ दस्हा । --काज≠-प॰ न्याह । --का पानी--नहरूको समय बरका नहाबा हुआ पानी जो कन्याको नहलानेके लिए उसके यहाँ भेजा जाता है। −नेत नखी०

बसारकी एक रस्म । बर*-प॰ दे॰ 'बरू'-दिख्यो में राजकुमारको वर'-रामचंद्रिका । -और-विश्लीरदार, जबरंस्त ।-जोरी-

की० उदर्शनी । २० रसाम ।

बर=-वि॰ श्रेष्ठ । -र्शाध-प॰ सुगंधित मसाला ।

बर=-अ० दक्ति । पण वरगदः वरदान, आशोर्षादः 'शल' का विज्ञ रूप । -टट--तोर-प॰ दे॰ 'वलतोइ' ।

बर-अर्थपार्व कपर, पर: बाहर । पर पल: क्रीड, वपल: देह 1 वि॰ हे जानेवाला, होनेवाला (हिलवर, मादि): श्रेप्र, उत्तमः पूर्ण । ∽अकस-अ० एकटा, विरुद्धः विपरीत । -कुरार-वि० स्थिर, कायम, बहाल; रद: जीवित: बना हुआ । -स्वास#,-स्वास्त,-स्वास्त-वि० उठा हुआ, विस्तित (बहसा आदि): समाप्तः नीक्रीसे अहग किया हुआ, बरसरफ । -खास्तारी-की॰ समाप्तिः बरतरफो । - रिक्सफ-वि॰ विरुद्ध, प्रतिकृत । अ॰ (""में) विरुद्ध, विकास । - .स्वरदार-दि॰ सफल, फलता-फलता हआ: माम्बद्याली । पुरु बेटा संज्ञान । - ज्ञाबान-विरु जो जवानपर हो। बंडेस्थ, याद । ∽जस्ता-वि० ठीक, उप-वक्त, यथायोग्य ।-सर-दि० अधिक अच्छा, ऊँचा, श्रेष्ठ। -सरफ्र-वि॰ मौक्रो आदिसे अलग किया हुआ, मीक्सा। अ॰ एक भोर, अलग, दूर । ~सर्फ़ी~सी॰ नीवरीसे असहद्यो, भीकुको । -तुरी-सी० वय्वता, शेष्ट्रता । -वार-वि॰ उठानेवाला, दोनेवाला (संशापरको अंतर्ने-अलमन्दार) । -दारी-सी॰ दोना, वठाना (संदायरसे समस्त होया-बाजनस्यारी, बारबरदारी)। -बाइत-सी॰ सहन, उठानाः जानवर्षिनी देसमाल, रसरस्याव । -दास्ता-वि॰ वठाया, दराया दुआ ! -पा-वि॰ सहा, उपस्थित । सि॰ -॰ होना-सङ्गा होना, मधना (प्रसाद बरपा दोना) ।] -बस्तता -अ० दरपरी ।-बाद-वि० वेंका दुमा, नष्टः तवाद (जाना, दोना)। -धादी-सी० नाध, वदाही, खरानी । -सला-अ॰ सामने, मुँहपरः शुत्रममुद्धाः । – सहस्र – ४० टीक मीकेपर् । वि० मीकेराः उपयुक्त । - बद्रत - अं समयपर, भीवेपर । - हक्त-वि० दीक, यदार्थ; सच्या । गु०-आना-पूरा होना, सनल

बरह्-पु॰ तमोनी। बरक्रदाज्ञ-पु॰ संग काठी था बंद्रक शेकर घननेशना सिपादीः भौदीदार ।

होना । -छामा-पूरा बरना, सिद्ध हरना।

बरक्त-मी॰ [अ॰] वृद्धि, बददी; श्रीजान्द; लाम; बरु-तायतः परती गेस्या (बनिये तीलमेमें परने बदले आस्पर 'बरडड' बहते हैं); बहती सरनेक्षा सुच, प्रमाव, प्रमाह । मु॰-उटना-पूरा म पहना, परना; अवन्ति होना ।

यालेमियाँ-वाहर द्यालेमियाँ-प० गानीमियाँ । वासेय-वि॰ [सं॰] वालकंकि छिए हितकरः बिक्के योग्यः गृद, मुलायम; बलिसे उत्पन्न । पुरु बलिका बेटा: गुधा । याळेया-स्था॰ सिं॰ी बलिकी बेटी। द्यालेष्ट-प॰ सि॰ी बेरका घेड़ । यालोपचरण=प॰ [सं॰] बालकोंका उपचार । यालोपचार-प॰ सिंगी भर्तीका इलाज । यालोपचीत-पु॰ [सं॰] हँगोटी; बरीक । थाल्ट-पु० (अं० 'दोस्र') लोहे आदिका बनी एक प्रकारकी कील जिमके एक सिरेपर पुंची और दूसरेपर दिवरी कसने-के लिए चढ़ियाँ वनी होती है। **याल्य-पु॰ [मं॰] वचपम, बालकाल; १६ वर्**सतवकी अवस्थाः मासमझी । -काछ-पु० वचपनका समय । बारहक, बारिहक, बारहीक-पु॰ [सं०] बरुपदेश; बललका रहनेवालाः बलराका घोडाः केवरः हींग ! याय#-प्र॰ दे॰ 'बायु'; अपातवायु; वातदीव । धायदी-छा०दे० 'वावली'। यायन-वि॰ प्यास और दो; † दे॰ 'बामम' । पु॰ वावन-की संस्था: ५२: † ६० 'बामन'। ग्र०-तोले पाव रसी-बिरुकुरू ठीक । -बीर-महत चतुर और बहादर । याधमा !- वि० ठिंगनाः शैना । घावभक-पु० पागलपन । **याधर-***विव देव 'बायला' । पुरु (फारु) विश्वास । घाषरची - प्रव साना प्रानेबाना, रसोध्या । -खाना-प॰ रसीरें, पाकशाला। षाधरा *- वि० पागल । यावरि, यावरी-सी० दे० 'बावली' । यायला-दि॰ यानरोगी, पागल, सिद्दी ।-प्रश्न-पु॰ यागल-पन, सनक, मिन्न । याचली-सा॰ चीवा कर्मा जिसमें नीचे जानेके लिए सीदियाँ बनी हों। छोटा सोपानयुक्त तालाव । वि० स्ती० दे॰ 'बावला' । षायाँ ।- विव देव 'बायां'। थाबेळा-पण्डाराम । .**चा**शिदा-प॰ [फा॰] वसनेवाला । धारप~प्र∘[सं०] शॉप् : भाप: शोदा 1-कंट-वि० जिसका यमा भर शाया हो। - व्यक्त-बि॰ (इाध्द) जी ऑसओं दे

'कारण अस्पष्ट दो। -हुर्दिन,-पूर,-प्रकर-पु॰ ऑसुऑ-हो। तार । -मोध्र,-मोधन-पु॰ ऑस् बहाना ।

-पिह्न - विश् जो रोनेके कारण भवड़ा गया हो।

-पृष्टि-रर्गा० भौतुर्गोवी वर्गा। -संदिग्ध-वि॰ दे॰

् शाच्याकुल-विश् (तंत्र) जो ऑसुलोंके कारण संद पढ़

बारवी(न्पिन)-विश्वित) औद वा कीम बैका दीई सरम

'दाष्ट्राच्याच'। -तिलिल-पुरु अशुज्ज ।

बारपद्धा-सीव सिंगी विरापनी ।

बारप्रि-पुरु [सेर] अध्यस्त ।

वास्त्रिका-मी० [सं०] एक पीवा ।

बारमक-पुर्व (सं०) भाषा एक सान, सारित ।

बाज्यासार-3० [मंठ] देव 'शाप कृष्टि'। ` `

करनेकी इच्छा द्वीनाः अञ्चलका सञ्चलसा क्षावस करना। - असे म कुत्ता खाय-हाइ-वेहकर सर्व वा सानेवालेके यहाँ दूसरोंके लिए ग्रंगाइश कहाँ ! -मादन .खुदाका साझा-कठिमाईसे मिली रही चीरमें मी ,अकरमात् किसी वृंदानेवालेका आ पर्नुचना ! बासुकी-पु॰ वासुकि नाग । न्दी॰ सुगरित दुःपीकी हाना। यासॉर्धी −क्षा॰ दे॰ 'वर्सी धा' । यास्त-वि॰ [सं॰] बबरेगे प्राप्त या छंदंथ रखनेवाता । बाह्य-पु॰ [सं॰] बाहु: मोड़ा * प्रवाद: निकाण: क्षेत्रके ज़नारें। विश्वदः, मशसः। याहक-पु० दे० 'बाहक': # धुनार 1 बाहकी • −की॰ पालको दोनेपासी कहारिन । वाहन-पु० दे॰ 'बाहन'; एक पेष । बाहुना- चस्त्विक दोनाः दोसनाः फॅकनाः † सक कार्ताः शारना- अव इस बाल बाइनेके लिए इंचा उठावें। मारनाः खेल जोतनाः । गाय भारिका गामिन कराना । অং নিং ৰছনা ৷ याहनी=~सी० नदी: सेगा । बाहर-व॰ स्थान या वस्तुविशेषरी धीमारे वस दर्श श्रीपरका सल्याः अल्याः मूर, अन्यमः-१। अधिक (र्वते बाहर) । बु॰ भादास्य, करेग्री माना प्रदेश !- ज्ञामी !-.

भान ! — सती — पु॰ एक द्वातन्तर चावल !:

पासकरका — मी॰ दे॰ 'वासकरका ! ।

पासकरका — मी॰ दे॰ 'वासकरका !

पासक — पु॰ स्टक्ता कहा ! पु॰ पासक से संदर्भ ६१ ।

पासक — पु॰ स्टक्ता कहा !

पासका — पु॰ स्टक्ता कहा !

पासका — पु॰ सु॰ पित करनेवाल !

पासका — पु॰ सु॰ पित करनेवाल !

पासका — पु॰ दे॰ 'वासद' !

पासका — पु॰ दे॰ !

पासका — पु॰ कहा ।

पासका | पु॰ कहा ।

थासित - वि॰ वासित, सुगंधित किया दुशा; वर्षेत्रे दर्य

यासी-वि॰ रहनेवालाः देरका पका हुआ, दूसरे जुन द

रातका यचा हुआ (खाना); पिछले दिनका सोइ। रहा

हुआ (फल, पानी): गुला, गुन्दलाया हुआ। - हुँद्-ती॰

देवका दूसरा दिन। -तियासी-दि॰ वर्ष दिनौद्धा

-शुँह -बि॰ बिसने संबेरेसे कुछ खाया न हो। अ॰ विन

कुछ खाथे, खालो पेट । मु॰-व्हीमें उदाल साता-

बुदापेमें जवानीका जोश जगना; समय पीठ बानेगर हुए

यासिग≉~प्र∘ वासकि नाग ।

यासियी-की॰ बन्नस नंदी ।

पराधे बद्दानेवाला । बाष्पात्पीर—पुर्व [सं०] आँसुओका बाद । बाष्पाद्व —पुर्व [सं०] आँसुओका निवलना। बास्पीदक —वि०, पुर्व देव 'सासींदक'। बास—पुर्व निवासः वासस्थानः धन्नः ॥ दिन । सी० संत बासनाः आगः एक द्वियार । —सुरू-पुर्व ९ स्क सुर्वीत

बामाहस-स्त्री० जेह ददी अमानस्याः वट-सावित्री व्रतः * वर्षोक्तत ।

यरसाइन!-वि॰ सी॰ हर शाल नमा दैनेवाली (गाय-भैस) । स्त्री० ऐसी गाय ।

बस्साऊ-वि॰ वरसनेवाला (बादल) ।

यस्मात-छी० वर्षाके दिल, वर्षा ऋत-मोटे हिसाव आचाट-

में आधिततकका समय ।

धरसाती-वि॰ बरसातकाः बरसातमें होनेवाला । प॰ मीमजामे या दसरे वाटरप्रफ कपड़ेका बना हुआ ओवर-कीट: बाटरप्रफ: बरसातमें छोने लावक सबसे कपरकी मंजिलपर बना हुआ हुवादार कमरा या बरामदाः मकान-के आगे बना हुआ छतदार फाटक जिसमें घोडा-गाडी आदि जाकर रुकती हैं: घोडेका एक रोगः वरसावमें पैर आहियें श्रीजेवाले कोचे: चरम पशी ।

बरसाना - स॰ क्रि॰ वर्श करनाः वर्णकी बँटीकी तरह गिरानाः वडी संख्या, सात्रामें फेंकना, बखेरना (फल) ! पुर गोकलके समीवका एक प्रसिद्ध गाँव जो वृषमानुकमारी

राधाका जन्मस्थान ग्रासा आहा है।

परसायत-सी० शम-महतं; दे० 'बरसास्त' । यरसिंघा-पु॰ दे॰ 'बारहसिंगा'; वह बैल जिसका एक सींग

रूपर और इसरा तीची गया हो। बरसी-शी॰ मृत्युकी प्रथम बाविक तिथिको किया जानेवाला

ধাত।

घरमीला ७ – वि० बरमारेवाला ।

धासीँहा - वि० वरसनेवाला । यरहेटा--प० यहवा भंदा ।

बरहना-वि॰ [फा॰] नंगा, बसरहित । -पा-वि॰ सरो-

यरहर्मेट्ट = पु० दे० 'ब्रह्मांड'।

यरहम-वि॰ फा॰ परीशानः कदा छदिग्नः गद्व-भद्रः परहा-पु॰ भीश दश्सा; रीतीकी सिचाईके छिप बनी

हुई गाली।

घरडी-की॰ प्रमुताका शिश-वन्मके १२ वें दिसका स्तानः वयु दिनका वरसवा = जठानेकी सक्तीका गढाः मीटी ररमी । # पु॰ मीर, वहीं: साही: मरगा: अग्नि, वर्डि । -पीद - पु० भीरके पंतीका मुक्ट ।-मुख -पु० देवता । परहाँ - पु अनमके बादका बारहवाँ दिन ।

यरोटा-प॰ दे॰ 'बरामदा'।

यराही-सी० दे० 'बांदी'।

यरा -- पु॰ दे॰ 'बहा' • बरबुन्हः बाहुपर पहनसेका एक गहना। यराईक-सी० देव 'बहाई' ।

यराक-पु॰ दे॰ 'बराक' । वि॰ ग्रीननीय; बेनारा; अधम; सराह ह

यरार-पु॰ दे॰ 'बराहिका' ।

यरादिका-स्ते देव 'बरादिका'।

बरात-सी॰ बरके गाथ कन्यापछके दशी आनेवाने स्रोग, कोना दृब्देशी संवादीका चुत्रमः भीदः, सबमा । सु०-करना-दरावर्वे शासिक होना ।

षराजी-दिन परात्रमे सामित होनेवाने, बरपहरी कोरमे बरिपंडन-दिन बनवान्। प्रभंत, हुर्पं ।

बन्याकाळे यहाँ जानेवाले । प० वरातर्भे आये हुए स्रोग । बसनकोर-प० [अं० बाउनकोर] सिपाहियोका कसी स्रोवरकोर १

धराना-स॰ क्रि॰ परहेज करना, बचाना, अलग रपना: टालनाः रहा करनाः जननाः हाँदनाः ॥ जलाना । अ०

कि॰ जलमा-'जैन टीठ नहिं दिया गराडी'-प॰। बराबर-बि॰ फा॰ समान, तस्य, सदशः समतल, हम-नारः इत. दरजे साहिमें समान, समवस । अव समातारः एक पंक्तिमें: साथ: सदा: तक ! --का-वि॰ वल. वय आदिमें समानः जोश्काः सामनेका (दरावरके मकानमें)। -यहायर-अ॰ साथ-साथ, एक प्रातमें; समान भागमें. बाधेबाथ । स०-करना-समतल करना; परिमाण केंचाई आदिमें समान करनाः खतम कर देनाः बाकी न छोडना (मारी कमाई खा-पौदर बराबर कर दी) ।-(पर) इट्टना-करती, बटेरों आदिकी छढाईमें एडनेवालोंका विना हारे-जीने जलत हो आता. किमोकी जीन-हार स होता ।

~से विकलसा=गामने दितलमा । वरावरी-सी॰ समानता, प्रतिरुद्धाः गुरतासी ।

बरामद=४० फा॰ो बाहर शाला, नियलना, प्रयद होनाः निकासः भारुकी रवानगीः नदीके घटनेसे निकलनेवाली बमीन, ग्रंगवरार (वर-नेशामद= अपर, बाहर भाना)। -शी-हों वरामद होता । 210-करता-रिपी-रिपावी हुई चीजकी बाहर लाना, प्रवट करना (चौरीका माल, राजातेसे रपया)।-होना-याहर आगाः प्रस्ट होता। वरामहा-प॰ पितः मयान या बालायानेकी बीबारमे लगावर बनाया हुआ सायराज विसकी एन वा साजन रांभीपर दिसी हो।

बराव-अ॰ (फा॰) बास्ते, लिए। - खना-अ॰ सनावे बारते, इंथरके नामपर । -नाम-अ॰ नामके लिए, दिरमनेको । -वैस-अ० धंदके अनुरोधसेः पादपतिके हिए । दि॰ पादपरकः व्यर्थे, कारुत् ।

बराबन=-प॰ विवाहके समय दन्हेकी प्रमाया जानेवाला कोहेका छुट्टाः विवाहके समयका बरुद्य ।

बरार-प॰ एक अंगली जानवर: मध्यप्रदेशका एक भाग: [का॰] बर । वि॰ (समाशांतमें) काते, के जाते, पुरा बरनेवास ।

वरारी-सी॰ यक रागिती । -इयाम-पु॰ एक संकर राग। बराध-पु॰ दरानेका मान, बचाब, परदेव ।

बरायुर्-छो॰ [फा॰ बर-बार्ड] सनसाहका विद्राः तसमीनेदी पर्द, गोशनारा ।

बरास-प्रश्य सरहका सपर को अधिक सर्गधित होता है. मीमसेनी कपर ।

बरामी-सं:० [मं०] एक गरहका कपरा । यराह-पुरु देव 'बराह'। अव देव 'ब' में।

बरिआई०-न्द्री० जन्दर्ता । सर दनपूर्व । यरिभातः - स्री० दे० 'बरान' ।

वरिसार॰-दि॰ बळवान्-'तपदळ दियः सदा वरिमारा'--हासा० ।

वरिष्ठा-श्री॰ वरेष्टा, क्ष्यदान ।

49-2

विवक-विगाहा चंद्रमाका मंडल; कुँदरू; विर्विट; शलक; मंहल जैसा कोई

तल; उपमेय; आईना; * बॉबी । -फल-पु॰ कुँदरः। विवक-पु॰ [मं॰] चंद्रमा वा स्वैका मंदल; कुंदरू। वियट-पु॰ [सं॰] सरसे ।

विया, विवी-स्रो॰ [सं॰] कुंदरूकी लता। विवाधरोष्टी-वि॰ सी॰ [सं॰] जिसके होंठ कंदर जैसे ਲਾਲ ਗੈ।

विविका-भी० [सं०] मूर्य या चंद्रमाका मंडल; कुँदरुकी

विवित-वि॰ [स॰] प्रतिविदित ।

र्थिविसार−पु॰ [सं॰] मुद्दके समकाकीन मगधनरेश अजातशतुका पिता । चिंद्य-पु० [मं०] सुपारीका पेड़ ।

वियोष्ट, बिनीष्ट-वि॰ [सं॰] जिसके होंठ कुँदरकी सरह लाल हो । पु॰ कुँदरू जैसा लाल होंठ ।

यि, विश#-वि॰ दी। विअज्ञौ-पु॰ स्दः बहाना ।

विभाषां -पु॰ व्याधाः। स्ती॰ व्याधिः। विभाधि*-सी० दे० 'ब्याधि'।

विभाना ─स० कि० जनना। स० कि० प्रमुका क्या जनना। विभाषी ।- वि॰ व्यापी ।

विभाइना *~स॰ कि॰ ब्याइ करना। विकट-वि० दे० 'विकट' ह

यिकना - अ॰ कि॰ देवा जाना, दास छेकर दिया जाना।

गुग्ध होता । विकरम = पु॰ दे॰ 'विकम'; दे॰ 'विकमादिस्य'। बिकरार - वि० वेकरार, विकल; दे० विकराल !

विकराल-वि॰ दे॰ 'विकराल'। विकर्म-पु॰ कुकर्म, दुरा काम । विकल-वि० विकल, देवैन। यिकलई, यिकलाई = - सां॰ विकलता, वेचैनी ।

यिकलाना = -- अ० कि० ध्याकुल दीना । स० कि० व्याकल बिकयाना~स० कि० देवनेका काम दूसरेसे करानाः विकने-

में सदायता करना । 🕠 विकम्मा-भ॰ मि॰ खिलना, फूलनाः प्रसन्न होनाः पुरुवा, प्रदेशा ।

चिकसाना~स॰ क्रि॰ दिकसित बरना; असन करना । * भव कि: व देव 'विकसना' ह

यिकाऊ-वि॰ वी देना जानेवाला हो। · बिकाना = - अ० कि० दिवनाः वश्ये होना । स० कि०

सरीदना !

विकार-पु॰ दे॰ 'विकार' । * दि॰ विकृत ।। विकारी-सी॰ मन, सेर, रुपवे मादिके निद्धरूप, टेडी पाई । वि॰ दे॰ 'विकारी'।

विकास-पु॰ दें "विकास"। विकासना - ए० कि॰ निक्षित करनाः सोलना । ६०० फि॰ विक्र<u>ित दोनाः प्रकट होना</u>।

विष्ठेर १ – पु॰ नेपुंठ ।

विषया १ -- पुण निष् ।

विकी-सी॰ देचा जाना, विकय; विकीनी शय । विख =-पु॰ दे॰ 'विष' ।

विकस-पु॰ दे॰ 'विकम'।

विक्रमाजीत-प्र॰ दे॰ 'विक्रमादित्य'।

विक्रमी-वि॰ दे॰ 'विक्रमी'।

विखस#-वि॰ दे॰ 'विषम'। विखय - अ॰ विषयमें, संबंधमें।

विखरना-अ॰ कि॰ चीनोंका नेतरतीयीसे श्वर-प्रथर रेज्य, वितर-वितर होनाः फैल जाना । * -विस्तराना-स॰ कि॰ दे॰ 'बिसेरना'। विखाद≉−पु० दे० 'विषाद'। विखान#~पु० दे० 'विषाण'।

विखीला#-वि॰ विपैला। विखे*-अ॰ दे॰ 'बिसव'। विखेरना-स॰ कि॰ वितर-वितर करना, फैलाना, डिन

काना र विगंध=-सी० दुर्गथ, बर्बू । ' विग=-प॰ वृक्, भेड़िया। विगद्ना -अ० कि० गुण-रूप आदिमें विकार होता हता होनाः उपयोगिया घटना, काम देने लादक न रहन अच्छीसे हुरी दशामें आना; हृट-फूट आना; वेहार वर्न

दोनाः दुराईके रास्तेपर जाना, चाल-दंग हरार रोगः मृद्ध होनाः डाँटमाः हाथी-धोडे आदिका सवार मार्डि कार्में स रह जानाः दिगाइ, अन्दन होना। विदेश हरण नष्ट दोना, गलना-सहना (फल आदि)। -(१) देल-वि॰ वदमियात्रः छड़ाका । -रहंस-पु॰ बद् रांस रा अमीर वी फज्लबनीमें तबाह हुआ हो। बिगर्देख-वि॰ क्रोपी, इडी। कुमार्गगामी।

विगरः - अ० दे० 'बगैर'। बिगरमा=-अ॰ कि॰ दे॰ 'विगरना'। विगराइल, विगरायल, विगरेल=-वि॰ दे॰ 'श्गित'। बिगलित-वि॰ दे॰ 'विगलित'। विश्वसना - ना कि दे 'विवसना'। मा कि देना विगसाबा=-स॰ कि॰ है॰ 'रिक्रमाना'। म॰ कि॰ रै॰

विगहा ! - पु॰ दे॰ 'बीवा' । वियाद-पु० विगदनेया याव: सरावी: विकृति। जनवरी शगमा । विगाइना-ध॰ कि॰ दोष-विकार उत्तक करना, स्ता करना, कामके कायक न रहने देना; देहा, रिहन मरन (मुँद); बुरारंकी और ले बाना; बदकाना, दबक्ट दरिक

डरी बादत लगाना; सतीस्त शह करगा; गह, बारारे बरमाः सोइन्होह देना । विगाना!-वि॰ दे॰ 'वेगाना'। विवार- पु० दे० 'विवाद' । ई म्ही० दे० 'विवाद' । विगारिः विगारी =-सी॰ दे॰ 'बेगार'।

विगास॰-पु॰ दे॰ 'विहास' । विगामना -स॰ कि॰ विश्वानत बर्ना । विगाहा-पु॰ दे॰ 'निगाहा'।

'विकमना'।

-यर्फ्रीला-वि॰ वर्फसे युक्त, वर्फसे ढका हुआ। यर्बेट-पु॰ [सं॰] राजमाप ।

यर्थेटी - की॰ [सं॰] राजमाप; वेदया । † बोड़ां । यर्थेर - वि॰ [सं॰] असम्य, जंगली, चलकु; जनायं; बुँध-राहे । पु॰ गुँधराहे बाल: जंगली, असम्य जादमी। एक

कीड़ा; एक मछली; एक सुगंधित तृण; द्दश्यारोंकी आवाज; एक तरहका नृत्य ।

थर्यरा-स्ती॰ [सं॰] बनतुष्ठसी; एक नदी; एक सरहकी ' मकसी: एक फल: पीत चंद्रन !

यवं री-खी॰ [सं॰] यनतुरुसी; ईशुर । वर्षमी(दिन्न)-वि॰ [सं०] ग्रॅंथगाले वालींव

यर्परी(रिन्)-वि॰ [सं॰] गुँधराले बालोंबाला । यर्र न-पु॰ निष्ठ ।

यरींना-अ॰ क्षि॰ सपना देखते हुए आदमीका बीलनाः

बहुवहाना, प्रछाप करना । बहुँ - पु० मिह, तरीवा; सरसीके आकारका एक कॉटेंदार पीपा जिसमें केसरिया रंगके फूल लगते है और बीज नेलातके काम आता है।

धरांक-वि० थि० । चसकता हुआः तेज, इतगामीः चतुर ।

सलहराक वाम आता है। ससीत-स्ती० दे० 'बरसात'।

षह'-पु० (सं०) दे० 'वह' । यह'ग-वि० (सं०) शक्तिशालीः काकी या सीव लेनेवालाः चर्मार्गाप पैटा करनेवाला । प० पत्ताः सीवने, फाटनेटी

किया। यहीं(हिन्)-पु० [सं०] दे० 'वड़ा'। यहींद-वि० दे० 'बुहर्द'।

यलंदी-खी० दे० 'नुसंदी' । यल-प॰ सि॰ी दारीरकी दाकि, साबतः स्थलताः सेनाः दाकः बलरामः बंदवे हाथे मारा गया एव शक्षसः भरीसाः सदारा (दि॰); बलका गर्व; अधपका औ; कीआ: बरुण बरा। --कंद-प॰ बालाकंद। --कर--कारक-वि॰ वल देनेवाला ! -काम-वि० बलका इच्छक ! -काय-प० सेना । —चक्र-पु॰ सेनाः राज्यः साम्राज्यः। —जन्वि॰ बरुसे उत्पन्न, बरुवात । प्र० नगरका हारः रोतः फसरूः भन्नती राशिः युद्ध । -जा-श्ली० पृथ्वीः एक तरहकी जहीं। संदर की। दस्ती । -द-पु॰ बैछ, जीवक: गृहाकि-कारकभेद । विश्वक देनेबाला । ~दर्प~पुश्वकता मगेद । -दा-सी॰ अदयग्या । -दाउर॰-५० वल-राग। –देव-पु॰ बलरामः वायु। –द्विष्ट(थ)–पु॰ र्दा -नादान-पु॰ रदा -पति-पु॰ सेनापतिः रदा -पोयुर-पु॰ मुदका पीपा। -पुरस्क-पु॰ कीमा। ~एएक-९० रोट्ट मण्डी । -प्रमधनी-सी० दुर्गाका एक इप । -प्रमृ-ग्री वल्हागरी माता, होहियी । -वीस-पु॰ वंगोके वीत । -वीर-वॉद०-पु॰ कृष्ण (रणरामके भारे)। -यूना-पुर [दिंश] ताकन, जोर। -अस-पु॰ बहवान् पुरुषः बहरामः जील्यायः अनेतः कीम । -मदा-सी॰ वायमायाः क्षेत्रः प्रतुक्तारी । -मर्-पु॰ रहता पर्नेट । -सुरुय-पु॰ सेना-नादक । -राम-पु॰ प्रत्यदे बड़े भारे की रीहिनी है। गर्नेने सरवन दुए थे, पण्टेब, इलपर ।-पश्चित-दिश्वितंत ।-बर्धन-दि॰ वष्ठ बहानेदाला ।—वर्धिमी-स्वी॰ जीवह ! —वर्धी॰ |

(चिन्)-वि० वळ बड़ानेवाला ! — विकर्णिका—की० दुर्गका एक जाग ! — विन्यास—पु० सेना-च्यूहन ! — स्यूह्न एक राज्य ! — स्यूह्न एक एक साथि ! — स्यूह्न पु० एक साथि ! — साळि (लिन्) — वि० वळ्युक्त , वली ! — साळि लिन् नेक वळ्युक्त ! — स्यूह्न पु० एक सीक ! — स्यूह्न सिक वळ्युक्त ! — स्यूह्न — पु० हैं हा — सिक कर के साथि ! ! — हा कि निर्वेष्ठ के समयी ! ! यू० (किसीके) — पर क्यूना — किसीके मेरीसे इतराना ! — साया — चोकत दिखलाना, जोरों आता ! चळ — पु० पहळू, वनक, वरवा ! के जाना ! देवा दिखलाना हो हैं आता ! देवा दिखलाना हो हैं आता ! देवा स्वाचा ! चळ — पु० पहळू, वनक, वरवा ! के जाना ! कि कर पुना ! कि के साथ ! ! चळा साथ हो साथ ! यून आता — दिकन पुना कि का शाना ! — चक्र स्वता — कि कर हो ना ! — की

देहापता छचका फर्के। यादा। सु०-आना-दिशन वास-कारक अगाना। -उत्तरना-दिशन दूर होना।-की व्याद-कारक यादा-कारक वास-कारक यादा-कारक याद

यलकटी-जी० राज-शरकी किरत जो मुस्कमानी राज्य-कावमें प्रसक काटनेजे समय बस्क की जाती थी। यलकना, यहनानां -अ० कि० उमगना, जीदामें आना; इतरावर बीकना, बदकाना।

स्वतास्य पाठना। वद्यवाना प्रकारक-पुण्य देव 'बाकत' । प्रकारा-'चव किंव बवावना; उसगाना, उसकाना । प्रकारा-'विव [संव] येव, सप्तेर । पुण्यप्तेर रंग । न्यु--पुरु चंदमा । प्रकारास-'पुण्य विव] कुरु, स्टेम्सा ।

बलासी-निश्व करुपान (प्रकृति); करुपान (राग)। बल्हुद, कल्तोइ-पुश्व वाल टूटनेसे दोनेवाला कीडा। क्लिट्या-पुश्याय-केल वरानेवाला। बल्हा-पुश्चित्र वरानेवाला।

बळना:—अ॰ कि॰ जलना, रहवना । बळबळानां—अ०कि॰ उँटवा भेरना; वहपदाना; वफनना। बळबळाहटं—भी॰ वहपदानीकी क्रिया; उँटवो दोली । बळअं—यु॰ शि॰] एक वहरीला दौहा।

बळभ−पु॰ [स॰] यस जहरीला दीहा। बळमी∽सी॰ सबसे खपरकी छत्तपरकी कोठरी। बळम≉∽पु॰ प्रियतम।

षसमिक−पु॰ वाँवी । बस्तव•−पु॰ दे॰ 'बस्य' । बस्तव•−की॰ दे॰ 'बस्य' ।

यसल-पुर्व [मंग] बन्हरामः † इंद्र । बस्तमंद्रण-निगदेश रिक्तनंद्र । बस्तमंत्रण-निगदनसम्बद्धाः

बळवला-की॰ सिं०] बण्यान् होनेसा भाव, द्याल्या। व बण्या-पु॰ नंगा, प्रसाद, उपद्रव; गिरव, वगावद्र: पौरसे अध्यः कदमियोदा मिन्दर एक या अध्यः आदमियोदी मारना (ढा०)। -ब्रै-वि०,पु० वण्या बरनेसाला, विद्रोदी, बादी।

बलवान्(वन्)-वि॰ [लं॰] शनिशानी, रनी, तश्तन्तर ।

विज्ञहन-विदकाना विज्ञहन-वि॰ जिसका बीज नष्ट हो गया हो, हतवीर्य । यिजाली-वि० दे० 'विजानीय'। विज्ञान *-वि॰ ग्रानरहित, अनजान । विजायर-प्रश्वाज्यंद्र। विज्ञात्ति = स्त्री० दे० 'दिज्ञली' । . बिज्ञा, विज्ञान-पु॰ पशियों बादिको भगानेके लिए सेनमें बनाया हुआ पुतला आहि । यिज्ञ*-सी० दे० 'विजय'। बिजोग *-प॰ दे॰ 'वियोग'। विजोना - स॰कि॰ अच्छी तरह देखनाः देख-रेख करना । यिजोरा-पु० दे० 'विजीरा' । † वि० निर्वेछ । बिजोहा-प० दे० 'निज्जहा'। बिजीरा-प॰ मीवके वर्गका एक फल जी आकारमें वही नारंगी के बरावर होता है, बीजपुर; इसका पेड़: तिलके मेलसे बनी नई एक सरहकी बरी। बिजीरी-छी॰ एक प्रकारको बरोको चोठी और चेठेके भीजके मेलसे बनती है। बिज्ञ-सी॰ दे॰ 'दिन्छी'। -पाल≉-५० दिन्छी गिरना, वज्रपात । विज्जल#—सी॰ दे॰ 'विजली'। ४० डिलका. स्वचा । विषय - प्राप्त वस्य जेत जिसको यह विद्योगे शिक्तो है। बिक्जहा-प्र॰ एक वर्णवृत्त । विद्यक्ता = - स॰ हि । दे॰ 'विश्वकता' । बिह्यकना == अ० कि० दे० 'विचयना'ः तनना । विश्वका = -प॰ दे॰ 'विज्ञका' ! विहासाना = -स॰ फि॰ चौकानाः दरानाः चेपल कर देना । बिट-प्र॰ विदयका वेदयागामीः वेदय । स्ता॰ वाट । विटक-प॰ [मे॰] फीरा । बिटमा-मी० [मं०] दे० 'शिटक'। बिटप-प॰ पुरा; लाई। पुरादिकी नथी शास्ता । बिटवी-पु० दे० 'बिटवी'। बिहरता - अ॰ मि॰ धंगीना जाना । विद्यारना - स० कि० धेंपीयना, मदा करना । विदालना-स॰ कि॰ फैलाना, विधेरना । विटिनियारे - स्वार देव 'विदिया' । विटिया - स्नी० बेटी, बच्ची । **यिटीरा=~५० उ**रखीकी राशि । 'बिहार-पु॰ विष्णुका एक मामः पंषर्वर(मीलावर)मे रमाविम देवगृति । विटम्याना-स॰ कि॰ दे॰ 'विटामा'। पिटाना-म॰ कि॰ बेदाना । बिटाएना-म॰ हि.॰ दे॰ 'बिटाला' । बिदंब=-पु॰ भाष्ट्रर । विद्वना-मी० दे॰ 'विदेवना' । विश्व-पुर शहा देश 'विश्' [मंत्र] एक तरहका जमक, धारी नगर । विद्रई-मा० गेंद्ररी, दंदरी । पिएर-वि॰ अलग-अलग, जो सूझ न ही; · निटर, दीठ ।

बिहरमा - अ कि छिन्द-दिन्द दीनाः मायनाः हर्माः

षीतमा (शासवरीका) ।

बिद्धराना-स॰ कि॰ तितर-दिनर करनाः भगाना । विडयना#-स॰ कि॰ होइना । बिहा#-पु० ब्रह्म-'विश्ता चंदनका विशा बैठ्या माद पलाम्'-क्रशर । विद्वारना -स॰ कि॰ तितर-वितर कर देनाः विक्ती इटही बराकर मया देना-'मारीच विदारमी जलभि बनारकी'-रामचंडिकाः स्ट करता । विद्वारर-पु॰ [सुं॰] माओर। विलाव: एक दैत्य: शाँपदा देला । -पद--पदक-पुरु एक तील । -प्रतिक-दिर विद्यालक-प॰ [सं॰] विलावः नेत्रपिंड । विद्वालाख्य-वि० मिं∘ो जिसकी ऑर्डे रिहीकी-मी हों। विद्यालिका-स्ती॰ [सं॰] छोडी बिहो; इरतास । बिद्याली-सी॰ सिंगी विली। मासका एक रीग । विद्यक्त चप्र मिंशी पानका बीहा, विश्रीरी ! विज्ञीं -सी॰ दे॰ 'बीड़ी'। विद्रीजा(जस्)-पु॰ [सं॰] ध्रं। विदत्ती = -पु॰ कमार्थः लागः। विदयना, विदाना - मु॰ कि॰ कमाना। मंचद करता। वित#-प॰ दे॰ 'विश्व'। विससामा =- अ० कि० दिवल होना । स० कि० हुम देगा, सताना । बिलना=-पु॰ विचा i अ॰ कि॰ दे॰ 'बीडमा'-'सि बहुत दिन जास न आता'-रप्रदाम सिंह। यितरमा - स॰ कि॰ वितरण करना, बौदना ! . यितयना#-स॰ क्रि॰ विताना । विताना-स॰ कि॰ गुजारना, न्यतीत दरमा। • म॰ कि॰ शिवना-'भवी द्वीपश्वी बसन बानर नहीं निगव' -श्मराज । थितायना 🖛 स० कि० दे० 'विताना'। विसीननाण-अव मिल भीनना, गुजरना। सण् 🕅 विद्याना । यितंह-पु० देव 'वितंह'। विश्त-पु॰ विश्व, धन-दीलतः ईप्रियमः बुना, सामध्ये ! विसा-पु॰ अंगुटेके सिरेसे छिँगुनीके छोरतदकी कार्र बालिइम् । बिसी-श्री॰ भर्मादाय । विश्वकता-अ॰ कि॰ धहनाः मुग्प द्वीगाः महित द्वीता । विधरना, विधुरना - अ० कि० क्सिरना; अस्य अप श्रीनाः शिक्ना । विषराना, विशुराना! -स॰ क्रि॰ शिराना, ठिक्काना ! विधा"-सी० दे० 'स्वथा' । विधारमा - स॰ कि॰ विरोहना, शिवराना । विचित्त#--वि० दे० 'व्यवित्र'। बिथरित -- वि० दिसरा हुआ ! विधीतना - स॰ कि॰ दे॰ 'विषराना' । विद्वना - अ० कि० चौदना, महरता; पतना; ददन होना । विद्काना=-स॰ कि॰ फीजाना, भरकाना। पार्^{मा}। यायछ करना ।

यलिश-प० सिंगी केंटिया, बंसी 1 वलिए-दि॰ [सं॰] सबसे अधिक वली, अतिशय बलेबान् । प० और ।

विरुष्ण-वि० [सं०] अपमानित । विलिहारना *-स॰ बि ॰ निहाबर करना ।

यिलहारी-स्त्री॰ निछावर होना, कुर्वान जाना । स०-जाना-निछावर द्वीना ! -स्टेना-ब्लार्ये हेना ।

यली-सा॰ [स॰] स्वचापर शिक्रनसे पड़ी हुई रेखा, बिल;

रुता। -मुख-पु॰ वंदर।

बली(लिन)-वि० [सं०] बलवान , ताकतवर । प० मैसाः साँद: उँट: सूअर; बलराम: सैनिक: कफ: एक तरहकी चमेली।

यलीक-प्र• [सं०] छत्परका किनारा ।

बसीस-पु० [सं०] विच्छ । यलीयर - प० सिंगी सांदः देल ।

घलुआ - दि॰ जिसमें बाल, अधिक मिला हो, रेतीला।

पु॰ बलुई जमीन ।

यलच-प॰ वल चिरतानमें बसनेवाली एक जाति । यस्ट्रचिस्तान-१० हिंदुरतानके पश्चिममें अवस्थित एक देश । यसूची-पु॰ बस् विस्तानका निवासी ।सी॰ बस् विस्तानकी

बस्तुत-पु॰ [अ॰] उंटे देशों में दोनेवाला एक पेड़ निसे यरोपपाले पवित्र मानते हैं।

पर्दर्भ - वि० [सं०] बलवान , दासिद्धाली ।

बळला-प॰ पानीका बलबला ! पर्छया*-सी॰ दे॰ 'बला' । अ०-सेना-दे॰ 'बलाये हेना।

बरकल-पु॰ दे॰ 'बस्कल'।

बरकस~प॰ सि॰ो आसवकी सलहट ।

यरिक-म॰ [फा॰] किंतु, प्रत्युत; भच्छा हो कि (शरिक

तम यल आओ)।

यहय-पु॰ [अं॰] शीरीकी नहीका अधिक चौड़ा भागः प्रति धीशेका खोराला लट्ट किसके भीतर विजलीको बची होती है।

यस्य-दि॰ [सं०] बलवान् ; वलकारक । पु॰ बौद्ध मिशुः

शुक्त, वीर्य । यप्त्या-स्रो॰ [मं०] अतिवलाः अदवर्गशाः प्रमारिणीः श्चिमृटी ।

यलम-बि, पु॰ दे॰ 'बहम'।

यातभी -की० प्रियाः दे० 'बहाबी'।

बहुम-पु॰ देशा भाषा। पाँदी वा सीनेहा वसर घडा इमा सीटा जिमे राजामी, दूस्हों बादिकी सवारीके अवल-बगल हेंबर चलते हैं, सींटा । -बरदार-पु॰ बतम हेबर घरनेवाना, अनुबर् ।

मातुमदेर-पु॰ रवर्गभेवक, 'वाण्डियर' ।

मस्क्त्र(१-१४)० दे० 'वहर्रा' ।

बस्त्रव-पु. [र्गः] धरवाहा, भ्वामा; रमोहवा, वाचवः दिरा? दे यहाँ पानस्त्रा काम करते समय भीमका नाम । यस्त्रयी-सी॰ [गुं०] स्वतिम, गीरी ।

थरपा-पुर श्वदीवा संया, श्रीषा छट्टाः नाव धेनेदा र्षाहा मेर मारनेका चरश रहा, देश।

पस्छाती-को० एइ राजिती ।

यस्टी-सी॰ छोटा बलाः टाँडाः * रुता । बल्ब-पु॰ [सं॰] एक करण (ज्यो॰)।

वल्वज-पु॰, बल्वजा-स्ती॰ (सं॰) एक मोटी घास । बरुवल-प॰ सिं॰ी एक दैत्य जो बरुरामके द्वारों सारा

विहक, बल्हीक-पु॰ [सं॰] बलख देश या वहाँका

निवासी 1

यवँ हमा । अ० कि० वेकार धमना । ववंडर-पु॰ वगूला, अंधइ ।

ववंदा#~पु० बवंहर् ।

यर्वेडियाना! --अ० कि० भटकता ।

यय−प्र॰ [सं॰] ज्योतिषके करणोंमेंसे पहला । यवध्रा=-पु॰ बगुला ।

यवन#-प॰दे॰ 'वमन'।

वयना॰-स॰ कि॰ योनाः विसेरना । अ॰ कि॰ विसरना। विक पुरु बीना।

बवरना=-अ० कि० दे० 'बीरना'।

यवासीर-का॰ [ल॰] एक रोग जिसमें गुरामें मरसे पैदा

हो जाते हैं। विशिष्ट-पु॰ दे॰ 'वसिष्ठ'।

यशीरी-पु॰ एक तरहका बारीक रेशमी कपहा।

वय्कय-वि॰ [सं॰] (बछका) जो साफी बड़ा हो गया हो। बरकवणी, बरकवनी, बरकविणी, वरकविनी-स्री०[सं०] वह गाय, जिसका बछड़ा काफी बड़ा हो गया हो, बरेना ।

यक्किह−वि॰ सिं∘ी जरा-जीर्ण । वए-वि॰ (सं॰) मूर्यं, अशान ।

यसंत-प्र॰ दे॰ 'बसंत': एक पीधा । यमंता-प्र॰ एक चिविया।

यमंती-वि॰ वसंतकाः वसंती रंगका । पु॰ इलका पीका रंगः पीला कपहा ।

यसंदर=-प॰ दे॰ 'वैदवागर' ।

बस-पु॰ वशः शक्ति, कादू !-का-कादुका, इरितयारका। यस-जी॰ [अ॰] यात्रियोंको दोनेवाली छारी । अ॰ (फा॰) काफी, अलम्: बदुतः शतना हो: (आग्रा अर्थमें) ठहरी.

रही । -करी-ठहरी, रक जाओ, खतम गरी ।

बमतिब-सी॰ दे॰ 'बस्ती'। बसन-पृ० दे० 'दसन'।

यसना-अ॰ कि॰ स्थावी रूपमे रहना; दिवला, टहरना; आबाद होनाः सनुष्योका रहने लगनाः = वैठना-'प्यार-पनी पनरी विवकी बस्ति भीतर आपने सीस सेवारी'-देव: बसाया जाना, सुवंधसे बामा जाना। पु॰ बेठना पैली। रुवये रुगनेकी जानीदार थैली; † बरवन ।

बसनिर-सीर वस, रहारण ।

बसर्ना! - स्डी॰ रपये रमकर कमर्भे शॅंपनेटी एक प्रकारकी संस्थ वेन्द्रा ।

वसर-की॰ (दा॰) गुत्रर, निर्वाह (स्रमा, होना)। -भाकात-स्थै। निवाह, जीवन-पापन ।

बसवार - पु॰ हरदा, होद । वि॰ मीपा। वसवास॰-पु॰ क्षा, रहनाः ग्हनेका दिवानाः रहनेका

दंग १

विपत-विरले बिपत, विपता रं∽सी॰ दे॰ 'निपत्ति'। विपति*-सी० दे॰ 'विपत्ति'। विपत्ति-सी० दे० 'विपत्ति'। विषय-पु॰ गलत रास्ता, कुमार्ग । बिपद्, विपदार-मी॰ विपत्ति, मुसोबत, आकत । विपर*-प॰ दे॰ 'विप'। यिपाक-पु॰ दे॰ 'विपाक'। विपाशा, विपासा-सी॰ न्यास नदी । बिपोहना-स॰ कि॰ दे॰ 'विपोइना'। विपार =-वि॰ दे॰ 'विफल'। विकरना - अ॰ कि॰ गंदकनाः नाराज होनाः मध्छनाः विद्रोह करनाः समकता, उद्यवना (धोदेका) । वियासमा-अ॰ कि॰ विष्ही, विरोधी होना; उडहाना । विवर-प॰ दे॰ 'विवर'। श्चियरन क्र-बि॰ दे॰ 'बिवर्ग' । पु॰ दे॰ 'बिवर्ण' । धिवस#-वि॰ दे॰ 'विवश' : अ० लाचार होवर । विवसाना#-अ॰ कि॰ विवश होना । विग्रहार∗-प॰ दे॰ 'व्यवहार'। यियाई =-सी॰ दे॰ 'भिवाई' ! बियाक +-वि० दे० 'बेबारत' । विचाकी#-सी० दे० 'देवाकी' । यियादना == अ॰ कि॰ दिवाद बरना, शगहना । विधाहना =-स॰ कि॰ ध्याह करना। विविक-दि० दो । बिरधोक-पु०[गं०] गर्यपूर्ण ख्येहा; रूपादिके गर्वसे प्रियकी खुवसा (बा॰) । विभचारी#-वि० दे० व्यक्तिवारी'। विमाना = - भ० कि॰ चमक्ता, शोभित होना। बिभावरी = न्द्री • दे ॰ 'विभावरी' । विभिन्नारी :-- वि० दे० 'व्यभिन्नारी' । विभिनामा#-स॰ कि॰ भिन्न, अलग करना । बिभीएक-४० [सं॰] मयकारक, त्रास उत्पन्न करनेवाटा । विभीविका-सी॰ (सं॰) दे॰ 'विभीविका' । विभा=-पु॰ दे॰ 'विभु'। विभी • - पु॰ धेदनपैः प्रासुर्वे । बिमन - वि॰ उराम, विमनस्य । अ॰ विमा मनके । विगर्नमा - ए० जि॰ गर्नम दरमा, मधुरुमा; नष्ट बरमा । यिमान−पु॰ शतुवानः शनादर । विमानी =- विश्व मानरहित । बिमइ-वि॰ दे॰ 'निमुद्र'। विमोचना • -ग॰ कि॰ टफ्हानाः हो बना, मुक्त बहुना । विमोट, विमोटा-५० श्री, वन्मीक । विमोहना • − म॰ कि॰ सम्प, भाषक होना । स॰ कि॰ मण दरना। विमीटा 🗕 🖰 🧸 गीनी, भागीब 🛭 विषय • – दिव दी। दूगरा । दुव बीज ।

वियत-पुर भाराशः = प्रांत स्वान ।

विया- । विश्व दशरा । ई पुरु बीज ।

विषष्टगा ! - विश् विवादित ।

बियालां -पु॰ सूदः बहानः ।

बियाजूर -वि॰ स्याजपर दिया हुआ (पन) । विवाही-प्र• वह सेत जिसमें (धानके) बीव रोपते हैं जिए बोये जाये । विवाध, विवाधा=-पु॰ दे॰ 'ब्याध'। वियाधिश-सी० दे० 'ब्याधि' । वियाना! --स॰ कि॰, अ॰ कि॰ दे॰ 'ग्याना'। वियापना*-अ० कि० दे० 'ब्यापना'। वियाचान-पु॰ दे॰ 'ववाबान'। वियावानी-वि॰ दे॰ 'बयाबानी'। वियारीः वियास-छी॰, वियाल-५० १० 'म्बात्'। वियाल#-पु॰ सॉप; शेर् । विवाहां-पु० दे० 'म्वाह'। विवाहना = -स॰ क्रि॰ म्याह युरना । वियोग-पु॰ दे॰ 'वियोग'। विरंग-वि॰ बेरंगः कई रंगीवाला । विरंचि≉-प॰ ग्रह्मा। विर्देश-पु॰ [फा॰] चावलं; मातः [अ॰] पीतल । विरंजारी-पु॰ (फा॰) गलेका व्यापारी । विरंजी-सी॰ छोटी कीरु । वि॰ [अ॰] पीत्रस्या । विरई॰-सी॰ छोटा पीपा । विरक्त -- वि॰ दे॰ 'विरस्त'-'बेरागी विरमत यहा गेरी विश्व सदार'-साखी। विरत्यम, विर्वस - पु॰ दे॰ 'बृषम'। विरचना॰-स॰ मि॰ रचना, बनाना, सजाना। क्रि॰ उच्टना । बिरछ=-पु० दे० 'ब्रा' । विरक्षिक, विरक्षीक-पुरु देव 'वृक्षिक'। विरत्न-वि॰ निर्मेशः निर्दोषः गुणरहित । विरह्मत्। - अ० कि० उलझताः मचलनाः मुद्र होनाः। विरझाना#-स॰ जि:० शह्य होना । विरतंत, विरतांत≉~पु॰ दे॰ 'वृत्तांत' । विरता-पु॰ ब्ता, शक्ति। विस्ताना -स॰ कि॰ दितरण करना, गाँउना ! विरतिग-सी० दे० 'विरक्ति'। विरचा=-वि॰ व्यर्थ । अ॰ कदारण, निष्मयोत्तन । विरदंश•-पु॰ मृदंग । विरद्र−पु० नाम, बहाई, धदा । विरम्त-वि॰ वर नामवाना, विल्यात । पु॰ नामी वीका । विरघक-वि० दे० 'बुद्ध'। विरघाई•-मी॰ बुदापा । विरधापन • -- पु॰ नु:।पा। विरमना - अ० कि० क्वना, अरबना; देर बरना; दिमान करनाः प्रेममें बंधना । विरमाना - पा॰ कि॰ रोक, माका रसला मीर हैनी धेममें बॉबना; रिवाना । अ॰ क्रि॰ ठहरमा, रिपान बरना-'शयन शुंबत देठि वनपर भीर 🖹 दिरमाहि'-मुरः भूकाना । विरल-40 देव 'दिरम'। विरष्टा-दि॰ बहुतीनेसे होई दह । बिरहे:-वि॰ (बहु॰) बने-मिने, बहुत मीरे ।

जाना) । मु॰ -पत्थर-बहुत च्यादा बहरा । यहराना-स० कि० दे० 'बहलाना'; * बाहर करना । * अ० क्रि॰ बाहर होना; यह जाना; उड़ जाना । यहरिया! ~वि॰ दे॰ 'बाहरी' । पु॰ मंदिरका सेवक जो

बाहर रहे (बरलमसंप्रदाय)। यहरियाना!-स॰ कि॰ याहर करना; अलग करना। अ०

कि॰ वाहर् या बाहरकी ओर जाना; अलग ही जाना । यहरी-सी० बाजसे मिलती-जुलती एक शिकारी चिदिया ।

वि० दे० 'वक्ते'।

बहरूप-पु॰ गोरखपुर, चंपारन आदिमें बसनेवाली एक जाति जो वैलोंका रोजगार करती है।

थहल-छो । स्वारीके काम आनेवाली छतरीदार बैलगाकी, बहरी । - ख़ाना-पु॰ गाडीखाना ।

श्रष्टल-(व॰(एं॰) धना, ठोस, रद; हाबरीला; विस्तृत; गहरा; गादाः कर्कश्च (स्थर); प्रचुर । .पु० एक सन्दर्की देख । -गंध-पु० एक सरहका चंदन । -श्यच-पु० दवेतपुष्पी-बाला लोधा - बार्स (न्) - पु॰ ऑसका एक रोग।

यहळना-अ० क्षि॰ मनका दुःख, बलेश देनेवाली बातमे इटकर प्रसन्ताजनक व्यापारमें लगना, मनोरंजन होना । **घटलाना~स० क्रि॰ मनको दःस, बलेश देनेवाली बातसे** हराकर प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें रूगाना, दिरू पुश्च करना, मनोरंजन करना; भुष्टावा देना, बहकाना ।

यहलानुराग-५० [मं०] गादा सास रंग । **मह्लाव-पु॰** मनका बहरूमा, किसी मसन्नताजनक विषय,

व्यापारमें लग जाना 1 यहरित-वि॰ [सं०] जो ख़द ठोस और दर हो गवा हो।

यहरूी-सी० दे० 'बइस'।

घहाना#--पु० भानंद ।

पहल्ली-सी॰ कुरतीका एक पेंच ।

यहस-रही । [अ०] सवाल-जवाब; वाद-विवाद, गाँडन-मेदनः हुज्जनः हागहाः मुक्दमेमें फ्र्विदीवके बकीलका अपने पशको युक्तिप्रमाणके साथ प्रस्तुत करनाः मतलकः क्रमाव (मुद्रो दसरेमे कोई बहस नही): = होड ।-क्रानुनी-स्थी॰ कानून-विषयक बहस । - सुवाहिसा-पु॰ वाद-दिवाद, शान्तार्थ । -पाकियाती-सी० यह बहम ओ परनाओं, तस्योंको छेवर की आय ।

बहुम्मना - म । कि वहस करना, विवाद करना; हो इ रुगाना ।

यहादर - वि० देव 'बहादर'।

बहादुर-वि॰ (का॰) शूर-बीर; साइसी, निटर ।

बहादुरामा-भ॰ [फा॰] बीरतापूर्वक, बीरोनित प्रकारमे । रि॰ बीरीचित्र, बीरतागुलक ।

बहात्री-की० बीरना, मरदानती ।

यहामा-ए॰ कि॰ बहनेका कारण, वर्ता होना, वह या इसरे प्रकारके द्रव परार्थकी किमी विद्यामें प्रवादित करना; वहनेके तिए भारामें दालनाः पूँदी या पाराके रूपमें विराना, दालना (अंगू बहाना)। सन्ता बेननाः उहानाः ररशर करना। दु॰ (पा॰) किमी कामडे करने वा न बरनेश शुरु, बनावटी देलु, मिन, दीमा निमित्त, ब्याय ! -(मे) बाहरी-को॰ बहाने बनाना !

बहाने-अ॰ ''के बहानेसे;''के हेतु, निमित्त बनाकर । वहार-सी॰ [फा॰] वसंत ऋतु; सिरुतो हुई जवानी; विकास; शोमा; आनंद, लुत्क, मजा; तमाशा; नारंगीका फूल; एक रागिनी । **-गुर्जरी-क्षी॰** एक रागिनी । —नशाख−पु॰ एक राग ।—(रे)दानिश−स्त्री॰ फारसी॰ का एक प्रसिद्ध कहानी संग्रह । -हस्न-स्री॰ रूपकी छटा, यौवनश्री । सु॰ -पर आना,-पर होना-जवानी-पर आना, खिलना, पूर्ण विकास होना ।

यहारना - स॰ कि॰ शादना, शाद् लगाना । वहारी, बहारू-छी० बदनी, झाह

बहाल-म॰ [फा॰] असली हालतपर, पूर्ववत्। वि॰ ज्यों-का श्योः प्रसन्न, सुदाः तंद्ररुस्तः कायम ।

बहाली-स्नी॰ पुनर्नियुक्तिः † भुलावा देनेवाली बात, झौंसा ।

यहाव-पु॰ बहनेका भाव या किया, प्रवाह, भारा ।

बहिः(हिस्र)−म॰ [सं॰] बाहर, भीतरका उल्दा; बाहर-से, अलग । -शाला-सी॰ बाहरका कमरा । -शीत- . वि॰ जो बाहर ठंडा हो । -सद्-वि॰ बाहर बैठनेवाला।

-स्य-वि० वाहरका । यहिअरां - सी० वधू , सी । यहिकम#-पु॰ उग्र, अवस्था। यहिश्र--पु॰ दे॰ 'ददिश्र'। यहिन-स्री॰ पिताकी पुत्री, मगिनी। यहिनापा-प्र॰ दे॰ 'बद्दनापा'। 🔔 यहियाँ≉∽सी॰ वाँइ । यहिया-सी० बाह, प्रावन ।

यहिर, बहिरा#-वि॰ बहरा, विशर । यहिरत#-वि॰ बाहर ।

यहिरामा!-स॰ फि॰ बाहर निकालना । अ॰ फि॰ बाहर दोनाः यदरा दोना ।

बहिर्,−'बहिम'का समासगत रूप । −शंग−वि० धाइरी. अंतर्गका उत्तरा, बाइरवासा । पु॰ बाइरी भाग, क्षेत्र । -अर्थ-पु॰ बाह्य उदेश्य । -इंद्रिय-छो॰ बाइरी र्ददिय, शहा विवयोंकी प्रदण करनेवाली र्ददिय (कान, नाक आदि)। - गत-वि॰ याहर गया दुआ। जी बाहर हो। अलग । -गमन-पु॰ बाहर जाना । -गामी-(मिन)-वि॰ बाहर कानेबाला। -शेह-स॰ घरके बाहरः परदेशमे । —जगत्-पु॰ बाह्य जगत् । —जामु--अ॰ हार्थीको पुरनोंके बाहर दिये तुप । -देश-पु॰ गाँव था नगरके बाहरका स्थानः परदेश । —द्वार-पु॰ बाहरी दरवाजा, सोरम । -हारी (रिन्) -वि॰ जी परवे बाहर हो। -ध्वजा-सी० दुर्गा। -निःसारण-पु॰ बाहर निकानना । —अय—दि० बाहरी । —आगा—पु० बाहर-का दिल्ला। - मृत-वि० को बाहर ही या ही गया ही, वहिर्गत ! --सनस्क-दि० जिसदा मन दिसी भीर जगह । -अम्प-विश् विमका सम बाहरी विहरोंसे उल्झा. भागक हो; विगुद्ध । पु॰ देवता ! -यात्रा-सी॰;-

वान-पु॰ वण्डर जानाः विदेशयात्राः। -युति-वि॰

बाहर रह्या था बाँबा हुमा । --धोग-पुरु बाह्य विषयपर

भ्यान जमाना । - लंब-५० शरिय दोग दरानेदाना

विवत-विरष्ठे विषम, विषमा४-सी॰ दे॰ 'विषधि'। बिपति । - सी० देव 'बिपरिव' । विपश्चि-गरी० देव 'विपश्चि" । थिपथ-पु॰ गतन रास्या, कुमार्ग । विषयः विषयः -सी० रिप्तिः सुमीरतः भारतः। विषर • - पुरु १० विष । विपाक-तु॰ दे॰ 'नियाक' । वियासाः वियामा-सौ० व्याग नदी । वियोहना-म॰ प्रि॰ दे॰ 'विदेहना' । विफारक-वि० दे० 'दिकाल' ह विष्ठरना - भ कि महदनाः नतात्र दोनाः यदहनाः दिटीए दरगा: भमनमा, एएनमा (पोहेका) । वियान्ता-भ॰ कि रिप्धी, विशेषी दोनाः उक्त्रमा । बियर-पुर देर 'विवर' । विषरम•-वि॰ दे॰ 'नियां' । पु॰ दे॰ 'विवरण' । विद्यमण-पि॰ दे॰ 'विदश' । अ॰ छानार होसर । वियमानार-भ० जिर दिवस होता ह विवहार=-प् दे० 'व्यवहार' । विवार्द्ध - म्सी० दे० 'विवार्ड' । विषाह = - विश् देश विशाह है विवाही ==ग्री • देव 'बेबाजी'। विवादना = - भ कि. (साद दरना, शबदना । [बरबोक-पु॰[ग०] गर्वपूरी बरेग्राह कपादिसे गर्वने विषयी

विश्वाह्मसार-सार्श्वातः व्याह वरना । विविश्-(४० हो ।

34H (Bis) 1 विभागारी १ - वि दे १ व्यक्तिमारी । विभाना - अ॰ जि. पमहता, श्रीमित्र श्रीना । विभावती == श्री = दे = "विभावती" ।

विभिगारी =- विक देव "वद्यायारी" ह विधिमाना : - स॰ कि धिम्न, अन्य करमा । विभीषद्र-[१० [र्सन] सददार्द्र, प्रण वन्त्र करनेशना । विद्याचिका-मीक [ग्रंग] देक 'विभीविका' ।

बिश्रहण्याच्या देश दिल्' । विशी • - पु • देश वी बालवे । विस्तव - वि प्रशास, शिमलाब । त्रव विमा सन्दे ।

विभावेताय-वार्वाद- प्रदेव स्थान सम्बद्धाः भए ब्रुगः ह विधास-४० वास्त्रातः अन्तरह । विमान्ती = विक साजादित । QUIT-(12 44 'fenq' 1

विमार्गमा १ - १ - १ कि र स्थान्त हो हरा, मुक्त बरका । विभोदः विभीदा-तुः शंशे, बाबीब ध

प्रित्तेष्ट्रमा । "स दिन मुल्द, अलान्द दीना । शक्दिक 274 & C-654

विमाया पुरुवक्ति बार्याचा

बिएर-दिन दी, बूगदा र पूर बीज र विषय -पुर साहाह, व हवार क्वान । विष्णुम् निर्देश दिना है ।

बियानक विक दूधरा ३ में कुर बी छ ३ बिरम्पा भन्न भूगा अक्ता ।

वियात्र!-दि॰ व्यावदर दिशा दुशा (वत) है वियादां -पु॰ बह शेतु (अपने (शनदे) शेष रोहरे हैं। बोदे जार्य १

वियाध, वियाधा = -पु = दे = 'म्हाप' । वियाधिक-स्तीव देव 'ब्युःदि' ।

वियाना!--म॰ कि॰, ध॰ कि॰ दे॰ 'स्यागा' । वियापना=-== क्रि क्रि क्रि क्रिप्तना र वियाबान-पु॰ दे॰ 'बदादान' । विषायानी-दि॰ दे॰ 'दवारामी'। विवारी, विवास-न्यीन, विवास-पुर देन 'ध्याद्र' । वियासः -पुः साँपः शेर ।

विवाह!-५० दे० 'व्याह'। वियादना = - भ । जि. व्याद हरता । वियोग-पुर देव 'विधोग'। विरंग-दि॰ देशः को रंगीतामा । विरंधि+-पु• मद्रः। विर्देश-५० कार) यान्त्री माता (सर) गीयत ह विर्जारी-पु• (फा॰) गःग्रेका स्वापारी । विरंजी-सी॰ होरी बील । दि॰ [अ॰] पीएन्सा

विश्टें •-गी • छोता शेषा । बिररात-(4+ दे+ 'दिराह'-'वेरागी दिस्त मण हैने विश वदार¹-मादी । विरसम, विरयम=-पु= ६= 'द्रम' । विरुपता - मा दिल रुपता, बमागा, शहाता । अर

क्रि॰ वपरमा । विरद्ध=-पु॰ दे॰ 'बुर्स'। बिरिडिक, बिर्डिक-५० ६० 'गुस्सि'। **ब्रिट्स**-दि॰ निर्मेद्या निर्देश ग्रहराहिए । विरहाता - २० हि । वशाना स्थाना हर रेशा विरद्यामा 🗢 अ० वि.० बाह्य होता र

विस्ता-पुर वृत्ता, शक्ति। विश्वासाय-ग० हिर दिवस दाता, र ती। विविश्विण-म्ही० देव 'दिर्दाक्ष' व

विरसंत, बिरसीय=-प्रदेश 'क्टान' ।

विद्यान-दिन वर्ष । अन सदादा, शिक्षदीका ! विरर्थगर-पुरु वर्त । विरुच-पुरु म्हाम, नहारे, यश ।

विर्देश-विक बढ़े मामवाना, विम्यान । पुर प्रवाह देशा विशयक-विक देव 'ब्रह्र'। विर्घाई०-भी० मुहस्स ।

विषयानमञ्जूष पुरस्स । बिरमन्तर - १० दे इस्ता, बादमा दे। दरमा दिन

बरनाः प्रेपने बंबना । विद्याताक-ता कि देश. आहा दशमा देश केने had went fermit bie fie beite, fen काना-विषय गुंदन देश पतार प्रीर है निकारि

सुर्व सुकाश ह fin-fie to ffen' e

दिशसा-दिक प्रातिकेति कोरे वह र विरक्षे-दिन विद्वा को दिने, बहुत की वे धादरिक-वि० [सं०] वेर इकट्ठा करनेवाला ।

वादरिया, वादरी। -सी॰ नदली।

याद्छ-पु० वायुमंटलमं संचित्र और धनीभृत भाष यो मेरके कममे परतीपर आती है, मेर, अमा एक तरका दुश्या रंगका पथर। मु० -वड्डना, -चड्डा-चाटलेंका पेलना, छाना, यदा उडना।-गरजना-चाटलेंके संवर्षसे पोर ध्वनि उत्तक होना। -चिरना-चेयोका छाना। -छडना,-फडना-चाटका विस्तान। - मेर्स विस्तिको स्थाना-बडिन काम करना।-(कॉ)से वार्स करना-

भाकाशने वार्ते करना, बहुत ऊँचा होना। बादला-पु॰ चाँदीका चपटा तार जो गोटा तुनने या कला-

वत्त यनानेथे काम आता है, जरवपत ।

याद्वाह —पु॰ [का॰] राजा, सुल्तान; सरदार, देश्यः रमवेत्र मञ्जीतवा पुरदा चतरंजना एक सुसरा; धायक कर पता । —जादा —पु॰ वादाच्याद्वा देश, राजकुमार । —जादी—सी॰ वादशादकी रेशे, राजकुमारी । —पसंद पु॰ स्रावादी रंग । —(ह) यद्वत—पु॰ वर्गमान नरेज, वह वादशाद तो तक्ताल राज्य कर रहा है।

यादशाहत-सी॰ राज्य, हुक्मतः बादशाहका पदः

राजस्य ।

याद्वाही-वि॰ नादशहकाः रामोनिक, शाहाना। की॰ राज्य, शाहानामनाना न्यवहार ।-कृष्ये-यु॰ शाहाना-स्वर्थ, भारी पुज्करायों । --फ्रसमान,-हुन्म-यु॰ राजाता।

भाराम-पुरु [मारु] पक प्रसिद्ध सेवा जिसकी गिरी खायी आती और बदुत पुष्टिकर होती है; उसका पेड़ । —पाक्क-पुरु एक प्रसिद्ध पुष्टिकर पाक । —क्करीका-पुरु बादाम

धेचनेवाला ।

बादासी—वि॰ वादामके रंगकाः बादामको छङ्काः बादाम-का बना हुआ। पु॰ बादामके छिन्कसे मिलता हुआ रंगः वद स्वामास्य गिनकी वेदिय बहुत छोते हैं। वादामके रंगका पीहाः, किल्पिला पहीः कर भातः। की० बादामके रंगका पीहाः, किल्पिला पहीः कर भातः। की० बादामकी छङ्की एक विश्वा किसमें बनादरात रहते हैं। एक सर्दकी मिकारे गिक्से बादाम बाले बाते हैं। बादाम ररानेकी रिकारीः रिकारीको छङ्की एक निकार्ष। —भीष-की० बादामकी छङ्की छोडी और।

यादि० - अ० स्वर्थ, देशार ।

यादिस-विश्वासायाम्यादी।

बादी-पु० दे॰ 'बादी'। दि० बातकार्क, बातवा । सी० बादिवकार । -पग-पु० बायुविकार, बातकारक होता । -पगासीर-भी० बवागीरके हो भेदीमेसे एक जिसमे

मग्नेने स्न नहीं शाता । बादीगर॰-पु॰ बाबीगर ।

पादुर=-पु= चमगारह-'ते विधना बाहर रचे रहे जरण सुख मूल'-मासी।

बाध-पु॰ [गं॰] प्रतिरोधः शेक, प्रशिवंधः बद्धः, योगाः काया देनेवानाः है मूँबदी दश्मी ।

बापक-दि० (तं०) राधा बरनेवाला, स्वावट बालनेवाला; रिपानारक, बल देनेवाला । युक विश्वोद्धा एक रोग जो मध्यनमें वापक रोगा है ।

वाधन-पु॰ [सं॰] वाषा करना; विरोध करना; क्रष्ट देना । वाधना-की॰ [सं॰] अशांतिः कष्टः वाषा, प्रतिरोध; पीटन । * स॰ क्रि॰ स्कावट टाटना; विच्न करना । वाधिवता(तृ)-वि॰, पु॰ [सं॰] द्याने पहुँचानेवाटा;

वाधायतार्त्तां निष्यं पुण्यास्त्रात् । वाधा टालनेवालाः पीटकः । वाधा-स्त्री० सिं०] लङ्चनः, रुकावटः, विद्नः पीडाः, कष्टः

बाघा-स्थार (स्व) अन्यन, रूकान्ट, वन्तर पाड़ा, कट्ट; अय (श्रेतवाषा) ! -ह्यर-विरु वाधा दूर करनेवास्ता ! आधीत-विरु सिंठ] जिसमें रूकावट पड़ी हो; असंगत; अस्त; आसारी !

याधिता(न)-वि॰, पु॰ (सं॰) दे॰ 'बाधियता'।

वाधिर्य-पु॰ [सं॰] बहरापन । वाधी(धिन्)-वि॰ [सं॰] वाधा डालमेवाला; हानि पहुँ-

चानेवाला । बाध्य−वि० [सं०] पीडित; रोका हुआ; विवद्य; रद करने बोग्य । ⊷रेता(तस्रू)−वि० नुपुंसक ।

यान-पु॰ बाणः एक तर्दकी आतिश्रवानी; ऊँची लहर; वह पुननेका दंडा, गुठियाः बाथ, मूँजकी रस्सी; क कांति;

चमकः। स्ती॰ सजधनः आदतः। यामद्रतः=पु० दे० 'वानैतः'।

वानक भ-की॰ बाना, भेषः एक तरहका देशम । वानगी-की॰ थोड़ी-सी चीज जी प्राह्मकी देखनेके लिए बी जाय, नमुना ।

यानना == स॰ कि॰ बनाना ।

वानवे-वि॰ नन्त्रे और दो । पु॰ नन्त्रे और दोक्षी संख्या, ९२।

थानर्•−पु॰ दे॰ 'थेरर'। यानां-पु॰ पहनाया, भेसा; बुनावरः तानेमें मरा जानेवाला आक्षा युनाः पक ठरका वारीक ताना; माने जीना पक कपियार निसका कपरी हिस्सा दुगरी तकवारका-सा क्षेत्रा है: रीति, पाकः पद्धी जुताई। ● निशानः वर्गः

ंग । स॰ कि॰ फैलाना, प्रसारित करना (मुँद भागा) । वानात-व्यो॰ दे॰ 'बनात' ।

यानाधरी - न्यो॰ वाणावरी; वाणविधा (१) । यानि - न्यो॰ वान, आदन; सत्रपत; रंग, यमद; वचन,

वानाः वानिकः-सी० मेस्, वाना ।

यानिन−की॰ वनिषेती स्ती । यानिया•∽पु॰ दे॰ 'वनिया' ।

वानी-स्त्री॰ दे॰ 'बानी'; ॰ बर्ग; घमफ; ॰ बानिज्य । ॰ पु॰ बनिवा; [अ॰] नीतें टालनेवाछा, आरंग करने-बाला; कारणरूप; प्रेरक । -सवानी-पु॰ अनुक कारण । वान्त्री-स्त्री॰ (वा॰) भद्र सहिला, बुटांगना; शराबदी

ग्ररोदी ।

वर्णनत-पु॰ बाना फेरनेवाना; बान पनानेवाना; योदा ! बाप-पु॰ वित्त, वातावा वर्ति, जनह । -हादा-पु॰ पुर्ति, पूर्वेष्ठरण । सु॰ -बा-पेदर, भीरता। -बही चीह समस्त्रात-भरती (मिटनीयन प्रमान) । -हादा स्वास्त्र पुण्याना -हादा सम्पानना-पुरुष्ठ वर्षिण (मिटना । -हादा सम्पानना-पुरुष्ठ प्रमान वर्षानी । -हादा सम्पानना-पुरुष्ठ पुरुष्ठ । स्वान वर्षान्य पुण्याने ना । -हादा सम्पान वर्षानी पुण्यान वर्षाना वर्षानी पुण्यान वर्षाना । -हादा सम्पान वर्षानी पुण्यान वर्षाना वर्षानी । -हादास-पीहियोगे । -हादास-पीहियोगे । -हादास-पीहियोगे । -हादास-पीहियोगे । -हादास-पीहियोगे ।

बीख-पु॰ विभी बग्तु, क्षेत्र अर्थात्यः ग्राय मान, दर्शिकः

बन्या दी चीडीके सध्यक्षः चामित्रम्, संग्र, बर्धा • का

कर, अवकाश−'याथी क्षेत्र प्रश्नियानी इति हि

मीतुण जान्धी " सुरु । बार बी दमि, दर्मिकमः बर्पिमे

-विद्याप-पुरु मध्यापता, दिवर्त । -कारा-प

दिइ-दीश्री विष्ठ-दि० [पाः] देश 'देर्' । असर-दिश देश 'देरतर' । विद्या-५० दे० 'विद्या' । ब्रिटर, विष्टर--(२० दे॰ दिवद्र' । विद्वयतः - दि० देव 'विद्वन': शिक्षित । विटरमा•−¥• डि.• दिवरनाः विदार करना−'बमुवाबस (१६१७ प्रतनारी'-गुरः विदीर्थ होना, घटना । विद्यानाः -- भ• कि • परना । विद्वती - सी० नेरा । विद्वारा-पु॰ एक राज । विश्वागदा-५० एव राग । विद्वान-पुरु मरेता, शोर; अंत । सर आनेरणा दम ह विद्याला == स्व क्रिक स्वासना । स्व क्रिक बीउना । विहार-पु॰ दे॰ 'दिरार': बारनायंदा एक राज्य जी उछर-प्रदेश हे पुरुष में परशा है। विहारमा=-भ= कि॰ विहार काना । विहारी-पु शिक्षास्था रहतेत्राता । हिन दे० 'विहारी' । विष्ठारीत्राल -पु॰ दिशीदे श्यारशमके प्रसिद्ध कवि जिन्होंने uee दीशीदी 'माप्तमं 'बी रचना की I बिह्याद्ध = - दि० दे० 'नेहाल' ३ विदि •~व । विधि अक्षा । पिदिक्त-पु॰ (सा॰) रहते, बैशुंड, अग्रन्थानमानम स्थान। -(ते)वरी-दुर मरीय १४२, मरी । शुरु -श जानवर -मोर । -का मेवा-अनार । -श्री ,शुमरी-मायने-गार्नेशको स्रो । नकी ह्या-शोतक-मेर-शुरंप बायु । -को होकर या साथ मारमा-मि^र या पिण्ने वद समको विद्यिमी-पु॰ शिहरतका रहनेशनाः (मध्यमे) पानी भरनेशाला, जिल्हा । विही-पु विकि माधानती दे दिलका यह पूल्य व्यवहा देश भगमप्र । न्यामा-पुरु विदीना में ह विद्यी-भी । विश्व सम्म है। वेदी । नद्याहन्य प्रजाह भावनेत्रामा, दिनेत्री ह विश्वीम-दिश देश 'विश्वीन' । विश्वसम्बन्धन कि ने परिवृत्ता । तक कि बोहता। विकास ० - दिव देव देविहाल देव विशासनाम- भव कि विश्वता ।

a15; \$1

भीराभएर पर्याद्या रात होन्द्र भागाना देवते ।

WIRE FIRE PRINT WAT \$15

बीखन-इन हर, करदा है। प्रीक्षित ब्रोहरू मुक्त क्षेत्र कर्

det - 140 \$0 "0"2" 2

करीत बोहुद अन्तर्भ ह

भीदमार- १० दि अनुदान सरका, हेव 'तीहरा' ह

क्षीपालमुक्त मान हिन्दिन बद्दन दिव अहेद व्हरी धीर कह

दिनुषाः सन्दर्भ । शुक -क्यमा-दिवसं करमाः -शेत-सुन्नमगुन्ना, हरेशे थो: । -परमः-(स आदिये) वार्ड होना । -पारना-भेदः, स्टिया स्रा -बीचर्से-धोरी-धोरी हैरस । -में पुरुवानाता देना, रॉव भशना। -में शामना-मण्यप्रश्राताः −में देना~मादी बनामा । −में पदमा~दिवर्ग ६१८॥ बिग्मेदार बनना १ -स्टाना-भेर सरनाः जिला षीपावीश-होद मध्यमे । बीचि-स्टे॰ दे॰ 'देवि'। व्यक्तना == म॰ बि.० एशिया, मुससा १ -थीछी-न्दी॰, बीछ॰-पु॰ दे॰ 'रिन्हा'। सील-पु॰ [ता॰] कुलवान वेश-पीचेश सहीश वह हाना वा गुडनी जिमने पर पीचेका बाहर शते, गुण्य, दौरा। हुन् मून कारणः जनःकथानन्तरः मृषः मीप्रगतिनःभैतरः नीर कवः अञ्चर् या वहनिः संघदा मृत भागः मता । व भीव विश्लो । -क्यों(में)-पु॰ शिवो -हम-पु॰वेटे बरण । दिन बीर्वटाटक । -बीशा -काल-पुन मुजद बह भाग दिनमें बीत रहता है। वीमपार । "किशा" क्री॰ वीजयधिमही बिका !-क्षाह-थी॰ [fe+] क्रि जै की बीज-सादके (बद दी क्षानेवामी महावी ह नास्ति) -पु • गरिनदा एक थेए जिसमें संस्थाधी जाद स्थिति प्रयोग करते है । -शर्ध-पृण् शहरत । नगुप्ति-मी रेमा भूगी। जन्म । - स्टर्गह-पुर अमितरमें भागार हर्तेशना । -इच्य-पुरु मूल माना -एन्यन्तु र्धातवो । -सिर्वादण-५० श्रीत बेन्छ । -वाद्य-ई बिनावी । -बुर्य-पूर् युभवा सहित माना नहार-Je nent min : - di-dim-de lefff wif. -पेशिहर-को॰ अंश्योग । -प्रगेद्द-प्रगेदी(दिह) -दि॰ वीक्षी पारत होनेशसा । -पूलक पुर ((रीट मोह र नर्वद्रनपुर [वित्र] बहियति बात्र । नर्वद्रमपुर किनो देवनादे किए जिन्दिन धना गुर । - सन्तुना-धीर मींडर नमीर द्वातक देश होते भागता शेषुकी गर्बरेडा कमन्त्रः । –सार्ग-पु॰ वामसार्वदः १६ क्षेत्रः । न्दर्य -वैश्व प्रदेश -हर्न-देश क्ष्म, साम १ स्वेतदर्गा, बाग जैत्र मेर्ग बरू दुध्य सुद्ध थी हात्रप्रदेशीचे समाधा क्षमानवीरह ६ च्यपन-पुरु शेष्ट्र वीटा, रोह र अवर्ष ' पुर दीव वीनेशनाः दीव बीना । स्वाप्तर-५०दिए। -Afti-do municht ga t-timege Aufellenigg -बुक बीज बोहेडर सुर्व र -ब्रस्स-इर्रिकी-स्ट Puni-ils fes biet, buntes us fre be सर्वेद्धान्ते १ कोजक -पुरु [गुरु] दिलेश बीदा बीजा प्रमुक्ते मध्य बहेरी बीनभीत प्रतिष्टित वर्षतान् ग्रीते हिर्दिता प्रतिनार्वे हैं ferenmidt gein't diet et um ab. अलेक इ.स्ट इतारी राज्येर भारतिकारी मान व्यक्तिया है कथा हैते अभी है। इत्यामा के व

1 320 a 25

बीजन, जीजवार-१० व्यंत्रत, ११५१ हे

drafte-oft- to "lerd" t

बारजा । -दान--दाना--प० वह चीज जिसमें कछ रसा जाय, बोरा, थैला आदिः रसदः ट्रटे-फ्रटे सामान । -दार-वि० फलयक्तः गर्भवती ! - बटाई-स्वी० विना दाँवे बोझे धीर लेता । -बरदार-वि० बीझ दोनेवाला । पु० मोदियाः भगदर । *-यरटारी-स्त्री०* बोडा सामान डोनेका कामः दलाई, दोनेशी उत्तरतः हलाईका साधन, बाहन।-याब-वि॰ पहुँचनेवाला। -याची-स्नी॰ प्रवेश, पर्वेश -(रे)हहसान-प० उपकारका बोल । -श्वातिर-विक भारत्वरूप, कथ्रपद । -जहाज-प० जहाजका बीटा।

-सवत-प्र सावित करनेकी विम्मेदारी। क्षार-प० अं० वारिस्टरी, वकीलीका समहः वारिस्टरका वेजाः सत्यज्ञालाः महिरालय । -अस्मोसियेज्ञासः-एस्पो-सियोडान-ए० बद्रालांको सभा । -स्म-ए० (क्चहरीमें) वकीलोंके बेठमेका कमरा । -लाइग्रेशी-सी॰ वकीलोंके उपयोगके लिए (कथहरी है साय) स्थापित प्रस्तकालय ।

सारक-ह्या॰ है॰ 'हारिया' । # अ॰ एक बार । बारसा-प॰ बालागानेके सामने पाटकर बनाया हुआ गला

था खरवार बरामदी। शारण-प॰ दे॰ 'वारण' ।

धारता#-स्ती० दे० 'वार्ता' ।

कारसा-स॰ क्रि॰ रोकता, निवारण करना; न्योधावर करनाः जलाना ।

क्रानिस्ट-स्वी० क्षि० 'बारसिद्य' ।] स्तरी-चमडे आदिषर चमक लानेके लिए लगाया जानेवाला रोगनः गारनिश्चकी चप्रक ।

द्यारवा-सी० एक शामिनी ।

बारह-दि॰ दससे दी अधिक । प॰ बारहकी गंहवा, १२। -राष्ट्री-मी० व्यवनके वारही स्वरीसे सक्त रूप I-दरी-सी॰ यह कमरा जिममें सब और पारह या अधिक दरवाने हो । - व्यथर-पु॰ छायनीकी सीमा (उमपर प्राय: शहट परार गर्द होते है); छावनी । -बान-वाना-वि० दे० 'बारद्रवामी'। -वामी-वि॰ धराः साहिम (मोमा)ः निर्दोप, बेंधेवः परा, बामिल । —माम्या-प० वह पय वा गीत जिसमें बारही सहीलेंकी प्राप्तनिक विशेषपाओंका बर्गन हो।-मामी-वि॰ दारही महीते एसते-क्सीवासः पदाबहार। जो बारको सक्षेत्रे क्षेत्र, बाध वरे । -सकास-प्रव दरानी संगीतके बारह परदे । -बाहास-स्नीव द्यी-सण-भौतमको १२ वी निधि भी मुद्दम्पदको निधननिधि है। -सिंगा,-सिंपा-पु॰ हिरनदा एक मेंद जिस्हे नरके सोगोमें अनेक शासाएँ होती है। जुल-गुना शिरामा-दारमंत्रर पारद शुना देनेंदी अर्थ स्वीदार करना । -परधर बाहर करना-छावनीकी इदसे निहास देना । -पानीका-बारह बरमहा (सुभर) । -यदी-वार्छा-श्वरी: ४९पम्का वनै । -बाट करना-विक-रिश्त दर्माः दर्गाः, मह-अह बरना ।-बाट छालनाः--दे॰ 'बारद बाट बरमा' । -बाट जाना या द्वीना-निनद-निष्ठर होना। बरबाद, ज्ञष्ट-भ्रष्ट होना । **बारदाँ**-दि॰ शारदवाँ । बार दें क 'नारदा" ३

बारहा-भ॰ [पा॰] मतेह बार १ बारहीं-क्षीत बच्देश बर्द्धा ह

(- E

बारहाँ-प॰ मरनेके बाटका बारहवाँ दिन: संतानके जन्मसे बारहवाँ दिन ।

यारा-वि॰ बालक, किञ्चोर; कोमलवय, कमसिन । पु॰ बेटाः बारक । वारेते ह-वचपतमे ।

खारा⊶प० फा॰ो समय, बार: विषय, सामला: परकोश I (शार्रेकें ** के विकास)।

वाराम-सी० दे० 'बरात' ।

वाराती-वि॰, प॰ दे॰ 'वराप्ती' । वासादरी-स्वी० दे० 'बारहदरी' ।

बारास-प० कार्ग मेह, वि: बरमात । वि० दरमते-बाला। --गीर-पु॰ छजा। --दीदा-दि॰ जी बरसात

देख चका हो: अनभवी । बारामी-दि॰ पिता वर्णपर अवसंदित, मीची म जा सदनेवाली (फसल, जमीन)। स्वी० वह जमीन जिसमें केवल वर्षामे सिंचाई हो. कएँ आदिका सभीता स हो:

विना सीचे होनेवाली फसल: बरसाती कीर। बाराह-प॰ दे॰ 'बाराह' ! -कंट-प॰ दे॰ 'बाराहबंद' ।

याराही -सी॰ दे॰ 'वाराही'। शारिक-प० दे० 'बारि' । (-जा-रा-धि बाहि दे० ·'बारि'में) I

थाहिक-खी॰ शैनिकोंके रहनेके लिए वने लंगे दालांग जैसे सकानोंकी पाँत ! -मास्टर-प॰ वारिककी निगरानी बरतेवाष्टा अफसर ।

वारितार#-प॰ हथियारोपर सात रागनेवाला । बारिगहर-सी० दे॰ 'बारगढ'-'चितुवर सींड बारिगृड

सासी'-प०। कारिश-सी० प्राणी वर्षा, ग्रेष: यरमात ।

कारिस्टर-प० थि० 'वैरिस्टर') इंगलंडकी बजासनकी परीशामें उत्तीर्भ बढील, जो हिद्दनाममें निमा बढालत-मार्चे हे सबदगीमें पैरवी बर सरमा है।

याविष्टवी-स्दी० वारिस्टरका थेथा, वदालत । धारी-सी० अनेक व्यक्तियोसेरी प्रत्येक्को मिलनेवाला वधात्रम अवमर, पारी: पारीके बन्धारका दिन । -का-गरीने भानेबाला (भ्वर) । -यारीमे-एकी पाद दमरा । बारी-दि॰ सी॰ समित (लट्डी) ! सी॰ क्रिशीरी. बाहिसाः सबस्वनीः देशे पेशेका थागः विमाराः धारः छोरः औट: दे॰ 'बाली': बर: रिस्की । पु॰ दक हिंदू नाति जी

वार्शक-दि० [का०] महीन, यहम पनला: मुख्य: म्याराने-मै बहिन, गृद । -बीन-विक मुद्दमदशीः सोद्द्यपदिः नकाचीन । -वीजी-सी बारीवरीतका भाष ।

वारीका-पु॰ पननी रेसार सीवनेश मदीन तुनी। बारीकी-ब्दी॰ [फा॰] शरीकपत्र, सुध्मताः सूदी, सुध्म राज्योष ।

यारीस = - पु ० दे । 'बारीधा' । दारकी, बार्जीव-सी० देव 'दारकी'। बास्टब-स्टीव, बुव देव 'शुरु' ।

दोने पराण आदि बनानेका पंचा करता है।

यास्त-मी० [तु०] शहर । बारूब-की शीरे, संबद और बीदनेश अपीर वृत्ते की करिन्दे संदेशिये अवद बढता और भातिकाराजी तथा सीए-

स्प्नमीक, दुव व्याधीर्य । स्दर्भको । वेंद्रधी-भी श्री दिन या दान ! - दार-विश् विसंदर **मु.चुगाँना** – १० इ.सर्वेडे अनुरूप, शुर वर्तेपेश्य । बदुरामी भेदिस्यों बनी हो । यु,तुर्गी-मी० वहप्ताः वंशां । पुदा-पुर टिस्पी: रिस्पीके बादारका गैराना; बानका बुद्दाना-सक्राध्य (शाम, रीएइ व्यक्ति) क्राप्त हर ण्ड गदनाः । बैद् । द्योता, मांत द्योता: अनदी योगदा दंता होरण दुराव में दिया - भी। एक एरड की निटाई। वाना। यांत्र होता। निःमा (पाध)। (दिएया) सुन, पुरिश-५० (गुर्व) महान । वदाम होना । मुंदीदार−4० जिगदर दिदियी हो । प्रमाई-मी॰ वृहानेशे दिया वा श्रमण वृह्येनी दिए। पुरित्रमंद्र-पुर भुरिनोशा देश, भारतका बद गुभाग विसुधे मुझामा—स॰ हि॰ भाग हा। जनसीहुरे थीउसे देशसार, वधर प्रदेशके उद्यक्तिमके मूछ विने और पत्रा, छत्रर-पटनेस क्षेत्र करना, गुल क्रुन्यः अन्तर्भ क्षे योगसे पुर मादि दिवासने प्रती भी। पानीने बानकर देवा करना: तनकार कारिको पहर शि र्षदेसर्राष्ट्री-वि॰ वृदेशराह्या । पु० गुरेनगरेटरा निवासी । दुए पानीमें शतकर राज करना। जीव कामा, मिथा । (प्याम)) समझानाः बुगनेहाकाम बुक्तेम क्रायाः ध्रेतीः को ० मेरिक्स हेपी साम्रा ३ मुंदेला-पुर एक शरहदे रावपूर की बुदेलगंतमे रहते हैं। का नधर पूछना । ह अ॰ दि॰ शनि होना । र्षेत्राती - स्ती - देशिया नामको विद्वारे । श्रहारत-गरी॰ दिवान नयतनाः दिवान प्रदर्शाः। मुभा-मी देश 'बूगा' ह जुल्लीबाद-स्तो॰ दिशी मन्द्रशा रीगा अभेगा बार्थ विवर्ष पुष्ठ-भी । एड बारोड बएहा को बहरतायी तरह कहा दोता कापारपर उम्रहा अर्थ क्राने, जलर देने वा नगुहा अन है । पुरु [कांव] स्राप्त । बदानेमें बद्दा भीश-विभार करना पहें, परेशी ह सङ्घा-प्र• [फा॰] क्पहेकी गटरी ह गुरुव-भी० दे० (बरी) । पुरुषी-मी॰ होश हदना, दक्षिवोश देश निष्ये ने पुरमा•-भ• हि॰ हाना, धाराना । र्श्यः भाषा भारि रमने है **।** पुरकीर-श्री दुवही । पुरुदा, बुकदा-तु॰ दे॰ 'बहोता'। गुरुमा०~अ० दि० द्यता । मुक्तमी-सी० पूर्व। सप्ताः पूर्वस्व (म) पुरुषुद्रामा-भ० तिः व वृष्टुदासा । बुदाना०-- १० दे - 'तुनाना' । अक्षा -- मुक संबंधन । मुझ्य-पुरु देर 'बुद्धारे' । षुराय ५ - पुरु देव 'हुबार'। पुरुताय-पुरु मुद्दती। पाधक । पुरुश-दिः बृहा । [स्तेव 'पुरुशे' ।] मुक्त-पुरु [र्गर] हृदया हृदयश्य सम्मोन्तः वनशाः समय १ युक्सस-का मुद्दे प्रश्रीत हिमें, प्रीमीये बनार है **बुद्धम −पुरु [शंव] शुरी बारि बानवरीडा वेर**ण्या । मुद्रम-पु [रांग] पांशामा बंदी ह युराई-भीर गुराया, बुदायरया । -मुक्तारी-मी० (र्शक) ग्रीवरा पीपा १ पुरामार्ग – स॰ कि॰ वृदा होता । मुद्धा-पुर समहत्वा पूर्व ह स्वीर [संद] हरू ह बुद्राया-पुर ब्हा होतेरा अवस्या, बार्यवर, हरीते वयः(बान)-यः [त्। हे व 'द्रव ' वुडिया-को॰ इश को बुरे । -पुराम-पु॰ रूपरे श्रष्ट्री-व्याप [बांच] द्रवय, क्रेशा ! बात, यहोपारा । —बेरक्र-श्रीव यह शहरी है। मुरुप्रद-मुक्त (सन्) अपन्य करहा अनुस्ता, दिक्तवा गुरुप्त ह शुर्विशा–स्थे॰ पुरस्य । पुत्र-पुर (कार) यूनि, प्रतिया धेतपाय, बन्द्र ! कि गुरतारा-पु. संशी मुक्तिनान्दा यह प्रदेश वा जान्ही मृतिबी तरह पर तरथेहर - सामा-पुर बहेरर देश्वदाभी है -सराध-पुर वृतियाँ बन्दावेशमा । ज्यराग-प्र* र्रीः **पुष्टारी-१० वृद्धाराका एक्टेबल्य । को० बाहरह रोगत०** all gar andrient effediries ! - unterfi-a". में बलायों हुई जेनीयों ह स्तिप्ता । -दिस्म-पुर स्तिति नीर्यनिदरेशकी मु(च्या--पुर (तुर) बदरीटी मध्दी, नुबदा ह Alegan alemanen die letter be - ng सुराची-भा• होता गुराश १ क्रमा या हो। जामा-मृतिको मह रिया क्रि हैं। मान्त-पु (कान) बन्दरेश शहर । 4H-H+, elle [1'+] util, 44fi 1 -42ffu-ge £ (1112) \$ कार्ता, मुक्ता -दिख-तिक दर्शेव, श्रेष । -दिसी-धुनमर-मन दि० बुन्या शन होग्त । भुपाया-सन्दिक नुष्टात्राह चाल दश्या । सन्दिर देर भी। सामाध्य, बीचम् ह मुक्तिशासा-पुर अह बढती दा बंदर जिले कर्नदर है 'देइनः' ह धनानः की । क्षाम-१०४'न १ मुत्यानिनिक (बार) बहा, बहा बाहराहेद हे पुर हायका है बुशन-दिश देन हैंदर्ग ह ern. Reifer gener, bie unt begaft vorreift fremmen gibrigen नकारान्त्रिक पुरुष्तान, मुनीय र पुरु गुरुत्यो, हार्ग्य हे सुरुष्त्रान्त्रुरु मृत्युत्वा र

कार्य र मक्त्यमांक कुन्ते प्राया क्याका बाराके प्राया कुद्धमांक है। को अल बुक्ता क्राव्यावर्गाण विकीता

-याल बँधना या बँधा होना-(क्रिसीके ऋण उपकारसे) वदत अधिक वैधा, दवा होना । -वाल यचना-विषद्में पड़ते-पड़ते बच जाना, पड़नेमें तनिक सी ही कसर रहना. भाफ बचना !

यॉल-पु॰ [अं॰] गेंद; (यूरोपीय दंगका) नाचका बलसा, 'समूह-नृत्य । -डांस-पु॰ सामृहिक नृत्य ।

यालक-पु॰ [सं॰] वचा, एडका; नावालिय, अनवान, नामगञ्ज आदगी; अँगूरी; कड़ा, दंकण; धोटे या हाथीनी पुँछ; सुगंधवाला; केश; एक जलीय पौधा, मोथा। - प्रस्ट-पित-पु॰ गालकोंकीसी, नासमझीकी वात । -त्रिया-

सा० ग्रेसाः इंडवारणी । यालकताई ≠-सी० सहस्रवन, नासमती।

यालकपन-पु॰ वचपनः नासमशी । यालकी - स्त्री॰ वालिका।

यालकीय=वि० [सं०] बालक-संबंधी; वासकींका । यालटी-सी॰ सोटे, पीतल भादिका बना डोल !

घालदा - पु॰ बैल । याखना-स॰ कि॰ जलाना।

बालपन-पु॰ बनपन ।

पालम-पु॰ पतिः भेभी ।~खीरा-पु॰ एक तरहका खीरा । यालच-पु॰ [मं॰] ११ करणोमसे दूसरा (ज्यो॰)। थाला-पु॰ कानमें प्रमनेका एक गहना, बदी वाली; गेहूँ-. औदी पापलमें लगनेवाला एक कीशा ; स्ती॰ [पं॰] लड़की, बालकाः १६ वरममे कम बजकी युवतीः युवतीः पन्नाः इलदी: होटी इलायची: यक सालकी बिहादा: सुर्गथवाला: मारियलः शैरका पेडः प्रतक्रमारीः दस महाविधाओं मेसे एकः एकः वर्णवृद्ध । वि॰ [दि॰] कमसिनः वालस्वमायः

भोला । -जीयन-पु॰ [हि॰] उठती जवानी ।-भोला-বি০ (ছি০) सीधामादा, सरल ।

बाला-वि॰ [फा॰] कपरका; कैंचा । पु॰ टील, संबाई-उँनाई । - ए सक्त-वि० भलग, दूर (रसना)।-कृष्पी-स्ती । पुराने समयमें प्रचलित एक शारीहिक दंष । पुर मारी चौबोंको उपर उठानेका आला, 'केन' । -राजा-पु॰ कपरकी मंजिलका कमरा, अधारी । -दस्त-दि॰ परमें कें या, बहा । -पोश-पुरु परंगपोश: ओवरकोट । -थंद-प्रश्रिपः एक तरहका अंगरसाः एक तरहका लिए।पा ! - मर-पु॰ श्रेगरगेका वह भाग जो आगेकी क्रमीमे निकला दुमा और दामनके नीचे दिया रहता दे । -यान्ता-भ॰ जपर-उपर; बाहर-बाहर ।

यालाई-वि॰ [पा॰] उपका (हिरमा)। सी॰ महाई। -आमदनी-भी कपरी मागदनी, बेनन या वैधी वृत्ति-

थे अधिरिय मिलतेबाली रखम। बारराग्र-पु॰ [सं०] कब्भरका दहवा ।

यालाजी याजीराय-पु॰ तीमरा वेशवा (१७४०-६१ ई०) । यालाजी विश्वनाथ-पु॰ यहला महाराष्ट्र देशवा, देशवाई-

का संग्धापह (१७२० ·· हे०) ३ बासान्य-पुर [र]र] सुरेरेडी भूप । बासादिय-पु॰ [ग्रं०] नवीदित सर्व ।

बालाध्यापक-पु [sis] बदचीकी पहालेवाचा ह

बालापन-पु+ वयदन, स्टब्स्स ।

वालामय-पु॰ [सं॰] बच्चोंका रोग । बास्ताकं-पु॰ [सं॰] बालस्वं; कन्वाराशिमें रिथत सर्व । वात्रावस्थ-वि० सिं०] अल्पवयस्क, कमसिन ।

वालावस्था-सी॰ (सं॰) वचपन । बालि-क सी॰ मंत्ररी । पु॰ [सं॰] दे॰ 'वाली(लिन्)' ।-हंता(त),-हा(हन्)-पु॰ राम !-कुमार-पु॰ अंगर ! बालिका-सी॰ [मं॰] छोटी लड़की; वेटी; वाली; छोटी इलायचीः बालः। -विद्यालय-पु॰ लड़कियाँका मदरसा। बालिग-वि॰ बि॰] वयःप्राप्त, स्याना । पु॰ स्याना बादमी ।

बालिगा-स्रो० सवानी, १५ वर्षमे अभिक उनको छडकी,

यवती । वालिनी-सी॰ [सं॰] अधिनी नद्यश्र । '

वालिमा(मन्)-स्ती॰ [सं॰] दचपन, वालावस्था । वालिश-वि॰ सिं॰ बालोचितः बालपद्धिः नासमझः कावरवाह । पु॰ शिहाः मूर्तं व्यक्तिः [फा॰] तकियाः

मसनदः बदती । वालिटल-पु॰ [फा॰] अँगूठेके सिरेसे छिग्रनीके छोरतककी

संवाई, वित्ता। वालिश्तिया-पु॰ बीना, बहुत ही नाटा आदमी । यालिह्य-प॰ [सं॰] यचपनः मुर्राता ।

यालिस-* वि॰ दे॰ 'बालिश'। पु॰ दे॰ 'बालिश'; जिं 'बैन्टेस्ट'] परवरके छोटे-छोटे हुए हे जो सहक बनानेफे काम आते हैं, विट्टी t: -शादी-स्ति॰ विट्टी, बंबह आदि

दोनेवाटी रेलगाडी ! बार्सी-सी॰ [या॰] सिरहानाः तकिया ।

बाली-भी॰ सोने वा चाँदीके तारका छन्ना भी कानमें पहना जाता है; गेहूँ-औ भादिकी बाल, खोशा । बाली(लिन्)-प॰ [छ॰] विधियाका नानर राजा और समीवका बड़ा मार्ड जो रामके हाथों मारा गया ।-(लि)

कुमार,-सनय,-सृत-पु॰ अंगर। बर्छीदगी-मा० पारः बादः, बद्धिः। बालीश-पु॰ [एं॰] मूत्रावरीप । बालुंकी, बालुंगी-सी॰ [सं०] दे॰ 'बालुबी'।

बाल, बालक-पु॰ [सं॰] रहुवा। पानी-श्रीवना । वालका-सी॰ [मं॰] बाल् , रेतः क्यतीः कपूर । -शह-पु॰ यस तरहरी महन्ते । -यंग्र-पु॰ दवा पूँ समेका एक यंत्र । -स्वेद-पु॰ वमीना सानेके हिए तमें बालकी

पोरहीसे संस्ता । बालकी-को॰ [गं॰] यह सरहरी वकरी।

बालू-साँ॰, पु॰ रेत । -दानी-साँ॰ वह दिश्या विश्वमें स्वादी मुस्तानेके किए बाल रखने है। - मुद्र-वि० भी बालुमे जह हो गया हो। पु॰ वह बमीन जी रेत पह जाने दे कारण सेती दे लावक म रह गयी हो। -हााही-की॰ एक मस्ति निहार । -की पड़ी-धीरीमा भेटा-कार पात्र जिमने मही दुवे हैत जमके छेदसे एक धेटेसे मीचेंद्र पत्रमें विर जाती है। -ही भीत-धन भगर बन्तु, वह कीय विस्तृते स्मिर्नेमें देर स क्ष्में।

बारट्रक-प॰ [मं॰] एक विष्

बालेंद्र-पु॰ [मं॰] द्वशा चौर् ।

सुमायाना-ए॰ बि.॰ जुनातेबा क्ष्म ब्रह्ममा बीनजेवे TTO HEAL ! बुगाब-पुर (पुर) अफ्टो हिन्दमी बहुी, बरुवे बहरतेहा | RE PERMIT बुशाक्षी – दुव भी देखी ४% प्रार्टि हैं। मुक्तामा-सर्वाद पुरुष्याः, कृत्य कारोदी सहस्रात्रीकोः का रंकतेर यहन ब्रह्म ह सुक्राकाम हुन एक्ट्रीका कर्य, क्ट्रीका क् Andumente feint nur effet alle e

बद्दन शपुर बीडी है और जी बादमीनहरू बहावये व बीध कारीहर मानी रामी में र-माझ-पुर दुवनुक कहानेबाला। -(ले)प्रतिराह-पुर में बागादी । - हारार जान्याम-क्षीत भीडी क्षांबाब ह सुमञ्चार-पुरु बानीका कृत्य, कुर्तुरा, श्रमान्युर बरतु व

बमनाम् और सरावेजी प्रारमका ब्रीपुर दी र प्रमाण-भी। [भागे प्रवादेश विशेषा विरादी होती

सुन्यकोश-पु+ (भेन) विभावणा सुर्वन्दा एक रेप जी अदिक

क्रांदी-बी॰ (हान) प्रवर्तः उपार्व ह

हीस्तित्तर⇔दिक लेंथी दिश्यत, श्रीरित्तत्वाला ।

आवात । —शुक्रपाल = दिवः भाग्यवात् , शीवावदशासी । -परपाश-विक संदे यहतेपालाः संवे शयासकाः ष्ट्रदाक्ष्मी । ल्युरवाही-व्योक मृत्य प्रवासका अध्या anates - frung,-- वाचा--शामदा-६०

बाना) गपुन्यांन । – श्वारी – श्वी० गुप्तम्यांनना । पुर्वपरीश~५० विशेश यहार देन देनेवाना (क्टिन्देन्स) इ मुखंद-विक क्यान] नेपा ।-आवाहा-क्योक खेथी, योहको

सुष् –सी॰ [पा॰] नामरानी, नवार वाजीर चाररंश्रमें बाद-शाहका भरेचा रह जाला । -बार-दिश विशा वडाने-

सर्भे –५० गरमभा भीतारा श्रेरह, सञ्जा राधि है सुर्जी=भरे० होरा पुर्व ३

चुक्का - पु र [Mo 'सरा'] याम या गारकी हैं थी थी गर्द शाहते, बीट मीतरे, बाल मेराहते आदिने कामने लादी प्राप्ती है। सम्बीद बनाते, शा होतम वहनेके साम आने-बामी बामीकी में थी।

पुरुष-पुर [र्गर] एक मील जाति जो टीकरे, घराई आदि बगानेका बास बरगी है।

गारता। -शरष्ट पेश आना-दुम्पंबरार हरता। -समामा-दिटये दुगई गवाना, पारद्वि द्वाना । श्रद्धां ∾प्रवेश (दुर्भ) ।

-गत-गति-गी॰ दुर्गदाः दुग दाव । -यदी-सी॰ मुग्रीपनको पन्नी, विषयताम । - सहक्ष-मण पहुन बवादाः दमदर ।-नगर-निमाद-था॰ बुराईकी निमाद, पाप-क्ष रहि । -श्रमा-क्षी भारी कहा, बहुत क्षष्ट देनेकाओ भीवः स्पिरः। -सम-स्थे० वृद्दे। भारतः। -सुद्दवस-श्री • पूर्णपति। पुरेशा भाग । शु०-शतः **स**रसंर−यपुष

को बादका कर दिवसा। गरादा-पुर (यार) सदर्ग, बोदले बादिका धुरा । युदि - मा॰ भग, योजि । युरी-रिन, मोन्देन 'युरा' १-युरबर्-स्रोन श्रीतको सदर ह

> सुष्ट पता पुत्र महत्व हता बीतकहरी र हे दिए पुत्र हो। mermite all biebt, ift fefett meine & #1 र ब्रॉडर कुछ म्हाँ । अनुवृद्धिः अहितः सम्बन्धः अहमा १८ (भारति) अन्तिम् । दिन नव्या देवहार १० ई.स. १० हिर कर्रदेश अव-(१) में में की पहासा नहीं विकर क्ष का रेप करित विकास प्राप्ता । नहीं मुर्गित बुर्ग हैये सक्षान्द्रीये हुँ के क दि बहरता ह

स्वमान-भन्दिन प्रवेशः, साम्बर्धनारः mit-go umit paus urigene wreit al be es एका हो। व

बत्ते दुई पूज बन्धे । सुरी-भीर प्रशी लंदा अवनेदर की दूर संहितेय हैं। लागाडे कारोत्तर चन्तर हुई विद्या ।

बुटा-पुर क्षीय वीवा वृत्तवर क्षीरा क्षेत्रा, बहरे व शिह

वरे'−शकात । स्टब्सि॰ – स्टी॰ पोरप्टरी ३

बर बंदेनी पूर्व रिक्की उसलेने कुछ अपान्य प्री हैय स्टमार-भर विरु भागना-'बर्डे वर्डि १मी शहरे वेर्ड

ब्द्रसा-स॰ कि.च समजन्या अपन्याः 🗢 द्वारा हे मृष्ट-पूर बर्ड पासा भनेका बीधा व देहा [अंक] में रे महैं।

प्रजमार-भर दिर पोता देता र ब्ह्रमः, वृत्तीमा-५० (वा०) ४१४ । युरा-सी • क्लोहा बाया स्टाल ।

बुख्यु –पु० द्धारदे; जांस दिक्षेत्र । –हरामा –पु० स्पर्ध ररामा । **ब्या-ति० ६.मस्याः** नेपा ।

युष्टवा-स- क्रि. प्र ब्रह्मा, रीतना धौत्या विदेते बूदना) ६ युक्त-पुर दृदय, ब्रह्मेशः ।

सूई-पु॰ एक पीना जिलाने मध्योगार बना है है। बीता है कुर-पुर पंतरह, सुरद्वात बह बुर्छ, समगी ह

यू-भ्दी (चार) तथा शुनुवा दुर्भया (मार) द्वमूदा धार प्रव (सवाबीको बु)। देश १—बारर्-१री० बु १ गुरामाः नियान्तर मुक्-उक्सा--रीयमा-भेदा धर्मस्य प्रतिय हो प्राप्ता मुभान्त्रीक रियासी परिया पुत्री यह शोधी भेरी दुमरीके सिप आदरमूचक मेरीयना यह शरहकी महापे।

बनरा, रिया बीवै: यक स्तील स्तरा ध र्षेद्रा-द्र॰ वही टिहली, हुए। ह र्वेदाबाँदी-भी० हरूदी वर्ष ह वृद्धी-स्थीत दश्च सरहको भिहाई, हेरिया हशोदे प्रत्यो हैरा.

प्रहारमा~ध॰ कि॰ हा हा देवा, हास्तर ३ महारा-प्रश्निक हो। हराहा । मुद्दारी-स्टेश् दाहर, बद्धी । बुद्धा-स्थे (संब) दश योजा ह र्बेड्ड-क्वीन पानी सा दूसरे छहल परावेडा बर्डन होश शंच

युर्वाकाः मुखीवा!-पुरु देव पुनाशाः। 👈 बुस्न्या=-पु= देव 'न्यपुत्रा' । बुच, बुम-पु॰ [मं॰] धृगी; सुमा शेररा यन; गर्दंड र

पुरत-पुर [तेर] कनदा हिमदा।

पु॰ ईस्वरका सगुण रूप ! -बाहर-अ॰ ऊपर-ऊपरः दृर-ट्र ! -मीतर-अ॰ अंदर और बाहर ! -वाला-पु॰ मंगी। वि॰ बाहरी। -बाली-को॰ मंगिन। मु०-क्रमा-निकाल देना, अलग करना, दहिष्ट्रत करना। -का-दो घरकान हो, गैर; क्यरका। -की हवा स्राना-बाहरवालींका असर पड़ना; आवारा होना । -जाना-घरमे निकटना, परदेश जाना । -से-कपरसे, जाहिरा; दूसरे रथान, परदेशमे । (आज्ञा, हुतुम आदिसे)-होना-नाननेमे शनकार करना। बाहरी-वि॰ शहरका; गर, पराया; अवनवी, परदेसी; दिखाक । -रॉग-सी॰ हुदरीका एक पेंच । धार्हीं जोरीक-अ॰ हायसे हाथ मिलाये हुए। बाहा-सी॰ [मं॰] बाहु । बाहिज रे-अ० वाहरसे, ऊपरसे । वाहिनी-म्बं॰ सेनाः सवारी । वाहिय#-अ० वाहर। बाहिरां-अ० दे० 'दाहर'। बाहीक-वि॰ [मं॰] बाहरका, वाहरी । पु॰ पंजाबकी एक वादि या इस जाटिया व्यक्ति । बाहु-सी० [सं०] बाँद, मुखा।-कुँठ,-कुठत-वि० स्टा। -कुंध-पु॰ टैना। -ज-पु॰ क्षत्रियः तोताः अंग्डी तिल् । -तरण-प्रव तैरकर नदी पार करना । -था-श्राण-पु॰ बाहुपर बाँधा जानेवाटा वर्म । -ईड-पु॰ भुत्रदंड ।-पाश-पु० बाहाँको फैटाकर इधेलियोंको मिटा रेनेसे बननेबाटा घेरा, आर्टिंगन करते समय बाहुऑसी मुद्रा । -प्रसार-पु॰ हाथका फैटान । -बल-पु॰ सुब-बह, शुरीरवह: पराक्रम ! - भूपण पु०,-भूषा-भी० मुजबंद, बे.पूर । -मेदी(दिन्)-पु॰ विष्णु । -मूछ-पु॰ बंधे और बाँहका जोह । -युद्ध-पु॰ कुरती, मिईत । -योधा-योधी(धिन)-प्र• इस्ती एरनेवाला ।-छता-क्षी॰ एता जैसी बाँहः मुक्तमार बाह् । -विक्षेप-प॰ हाथक्रेंबनाः वैरना !-विमर्द-पु॰ वाइयुद्ध । -विस्फोट-पु॰ ताल ठोसमा । -बीयँ-पु॰ बाहुदल । -ध्यायास-प्र॰ दंद, कमरव । -शाली(लिन)-प्र॰ शिवः भीमः भृतराष्ट्रका एक पुत्र ! -शिखर-पु॰ कंश । -शोध-पु० बौदीमें दीनेवाला एक वात रीग । -संभव-पु॰ क्षत्रिय। -हजार≠-पु॰ दे॰ 'सहस्रवादु'। बाह्क-पु॰ [मै॰] एक नामः मनुहः वंदरः नहका उस समयदा नाम जर वे अवात्यानरेश ऋनुपर्वते सार्थि थे । दि॰ अपीन, माधितः तरनेवाला । बाहगुष्य-पु० [सं०] बदुत-से गुनोंका होना । बाहुजन्य-बि॰ [मं॰] जो ददुत बहे जनसमाजमें फैला हो। बाहुदंती(तिन), बाहुदंतिय-पु॰ [मै॰] ४८ । याहुदा-को॰ [गुं॰] महाभारतमे वर्णित एक नदीः राजा परीक्षित्रकी पूर्वा ह बाहुभाष्य-पु॰ [सं॰] बदस्य करना, बददासु । बाहुरना==भ॰ कि॰ मुदना, सीटना, बापम आना । वाहरूप्य-पु० [धु०] दहरूपुना । बाटुल-पु॰ [ले॰] दःसिट मामः बाहुवागः अस्ति ।-प्रीच-

पुर भीर ।

वाहली-सी॰ [सं॰] कार्तिकरी पृशिमा । बाहुल्य-पु॰ [मु॰] बहुतात, इफरातः बहुरूपता । वाहम्मस्य-पु॰ [मुं॰] बहुमृत होनेदा भाव । वाह-सी॰ दे॰ 'बाहु'। वाहेर्≠-अ॰ दे॰ बाहर । वाद्यन् 🗕 पु॰ हाद्धन् । वाह्य-पु॰ रव, वान । अ॰ वाहर, परे । वि॰ [सं॰] बाहरी; भैर, देगाना; बहिर्गत, दहिप्रुत; -कपरी, दिसाक। -करण-पु॰ वादा धार्नेदिय। -द्रति-क्षी॰ पारेना एक संस्कार । -पटी-सी॰ वननिका । -ह्य-पु॰ कपरी, दिसाक रूप। -रत,-संमोग-पु॰ मगके दाहरकी रतितिया। - लिंगी(गिन्)--वि॰ धर्मविरोधी । -बासी(सिन्)-वि॰ नरतीये बाहर रहनेवाला। पु॰ चांदाल। -विद्वधि-स्री॰ एक रोग । -विषय-पु॰ प्राणको शहर रोयना । -वृचि-को॰ प्रापायामका एक भेद । वाद्याचरण-पु॰ (मं॰) दक्षेप्रला । थाह्मम्यंतर-पु॰ (र्ध॰) प्राणायामका एक मेर**ा** वि॰ बाहरी और मोतरी (रोग)। वाद्यायाम-पु॰ [मं॰] धनुस्तम रोग । धनुष्टंशार ।-बाह्यास्य-५० (सं०) बाहोकीका देश ! बाह्रीक-पु॰ [मं०] दे॰ 'बाल्हीक'। विंगी-पु॰ दे॰ 'ब्वंग्व' । विञ्जन = -पु॰ दे॰ 'व्यंत्रन'। विद=-पु॰ विद्, बुँदा अमध्या विदी। विद्वि-पु॰ [मं॰] बै्द । विदा-पु॰ बद्दी विदी । स्वी॰ दे॰ 'हेदा' । बिंदी-की॰ सन्ना, निकरः तक्ताः गोल टीका । बिह-पु॰ [मं॰] बुँदा विदी; अनुस्वारका निष्टा शून्य; अधरक्षतः अमध्यः नाटकका वह स्थळ जहाँ गीम धरमाओ-का विस्तृत रूप ग्रहण करना आरंभ होता है। -चिग्न-चित्रक-पु॰ एक तरहका मृग विश्वके दश्मपर विश्वियाँ होती है। -वंश-पु॰ पासा; विसाद; लेलनेका गेंद। -देव-पु॰ शिवा -पत्र-पु॰ एक वृक्ष, भोजपत्र। -फल-पु॰ मोतो। -माली (लिन्)-पु॰ एक ताल। -राजि-पु॰ एक धर्ष । -रेसक-पु॰ अनुस्थार; एक पही ! -रेखा-सी॰ बिदुऑमे बनी हुई रेगा । -वासर-पु॰ गर्भापानका दिन । बिंदक-पु॰ [मं॰] बँद 1 विद्का-पु॰ दिशी। विद्वित-वि॰ [सं॰] विदियोंने पूर्ण । विदुरी-सी० दे० 'विदुरी'। विदुली-मी॰ विदो, दिस्ती। विद्वावन-पु॰ दे॰ 'बृ'दावन' । विध-पु॰ दे॰ 'विध्यावल'। र्विंघना−व॰ कि॰ कींभा जानाः उल्हाना। स॰ कि॰ विधाना-अ॰ कि॰ वेधा जाना । विधिया-पु॰ भोती बेधनेवाला । विष-पु॰ [मं॰] अस्छ, प्रतिच्छापाः कमंद्रष्टुः सूर्व या

शिष्या अंत स दी ६ -- अङ्ग्ला-- अङ्ग्ल-- दि० - वास्प्यहः तिर्वेद्ध । सम्बर्धानसीय माध्यसी, सूर्वेता । सम्बद्ध -विक वर्षे सा भारत सा सरवेगाला, स्थित स्थितीत, गुरतास । - सहयी-भी० भविनयः दिशकै गुरुतासी । -भाव-वि॰ रिगने आर-भन्छ न हो। -भावस्-विकास क्षेत्रासीय । —आयरुई—भी० देश्यती । -इंगाफ-विक-इंगाफी-वीक अन्याय, मारमाधी। -शासन-दि॰ प्रतिपारदितः अतीतः अपमानितः । --इरातमी-सी॰ देश्यत होनाः स्पतिहाः अपनाम । --इस्म-सि॰ अप:, स्पारहित ! -इस्मी-सी॰ नेइस्स होता, रिवादा शमाद ! -हैमान-दि॰ धर्मदी न मानने-बाला, देशीना देन रेमचे गुटारे बर्नेबाना, बरदवानडः बहुनीयना शुक्राः नमह हराय । —हुँगामी च्यी॰ वेदीनीः बरदयानतीः बदगीवतीः सुटारे । - अ.स-विश् विमे दिशी बान्ते मामने, दरनेये बोर्ड सात-अपूर्ण स हो। म॰ दिना दियो उपारे । - उम्पानी - श्री॰ देशवरणी: समीप्तितः । -क्रद्र-नि०दे० विकर्^१।-क्रद्र-वि० रिम्त्री की पुछ स की। -प्रद्री-को॰ आदरमानदा सभाव, देश्यती। पूछ भ बीता । -कुशर-वि॰ विक्रण, वेरीन । - प्रशासी-की वेरीनी, वेरली ! - खाय-दि॰ देवेन, विद्रम । -क्रमी-श्वी देवेनी र -बस-दिश सगराया दीमः निवतः । -कमी-भी+ अभ्यापायस्याः दीगता, दिवसता । -बडा-दिन थी दिगोडा बदनाः बाब म माने, स्वपाद । -ब्रानुसी-बिक देश्यान्ती. निवधिकत । - जाबू-दिक जिल्हा बल स वर्त, विषय, साग्रह । -काम-विव देव विदार । -कामकृति-कोव देशाया होता, श्रतिविधाताः श्रीवरमः - जायदा-विक शिवमविकातः शिवमद्दितः अभियमित । -- कार-वि जिसदे पास कोई बाब ज बो, निकास निकास विशिवणरा निर्देश । -बारी-सी॰ देशद बीताः वेशेन-गारी र - बुर्ग्य-दिक शिरधांचा जिल्लेत र -काइक--सरक्षे-अर दिवानधीयो, देशक १ -शास-विर farig i me feibe ebet, fent bit - gent-fen बिर्मात् देश्या समा अवस्तितात अद्व (विद्रान्ता)। -शायर-दि॰ दिने (दिन्दे मान्यी) जानगरी संशीः अनुन्त्रताम, अनुन्ताः वेत्रतः १ - वृहस्त्री-श्रीः वेशवर क्षीका ६ -व्हामसाधा-दिक केपाका, परदेशी ६ -व्हाह-दिन दिना बोटिया बन्स्टिन । -, मुन्-दिन किने अपनी राय-त्य म दी, महाप्रदिश्युत्ता महेन्द्र भूत, महिष्य ! --मधी-भो। आर्थस्थांत संबंधा । न्यांत्रन्तिः दिशा । सा दियोगणपूर्वसः दिना श्रे । अनुवासी वसीत सीह म अन्तर, जाताम । च्यानिक कि देरी केंद्र भिज्ञ ॥ हो । ल्याचारी नगीन देवानाको जनवानस्य । - सामा-दिक हैर, आया अवश्य । - सूत्र-दिक तुन-र्शन्त हिला होज मा दर्मानी सिन्धी हे लगासाबलीक fareing, beign i mo file all wing felt, war-रण । -श्रम्भी-कीन विशेषका, हेरूपते । न्युद्धावun ton femit 1 mur-unt-lie Geffie. मिन्दे को परका स हो। न्याहानीक देव कि विकार । अक्षानी कारिक देवता हता दीवता, विकारक वे

~चारा-वि॰ दोन, 'अमहाद, विश्व । ~विताप-ति वहीं दीया से बह 11 हो। कोई रहता में हो। रीतनागर र [मु॰ - ब्रोना-(दर) यशनाः रेटेश मा अना र - वें च चरा-म॰ दिना जन, दिना बुध बहे हुने। -र्थन-दि॰ देवम, बेहरार । -धैरी-मा॰ देवम, रस राइट । —चोषा—५० स्मिम्पेटा गीमा । – प्रद्र-रिः दिना अप्रक्षा निर्मृत ३ ~कृदाम्-दिर हा देखरेशका मृद (बावरर)। भी भेरती दशा सुर सदर महे। रेपा -शह-विक निर्देन, गरीव । -बदायां-विक किय ricz-giter. Eninelen ! - main-fer ift पटेग्रीवे नहीं; गरा बना **रह**नेशना। नक्षानी। भी अपनी बगहरर ल हो, रेमीका #3⁴4% हरा । —जान-वि॰ निष्यास सुरो। रेध्यः दुर्वतः। -क्राविनगी:-क्राय्नगी-सी॰ रेब'दिशास, सर्वर निनना । - क्राविता:- क्रायाः-(१० थे। दिवसपुरि स दी, बेहायदा । –हार्-दिक लाहामा द्वारी, शीपाय उना हुआ १ -कार्स-स्ती॰ महाप्रशी परेशाओं -ज्य-भ॰ देमीका, बुगमय । -सीय-निः स्मि क्षेत्ररा, कार्यदः क्रिक्टा क्षेत्र स हो, क्षाप्रशक्त देतेन । -रिकट-विक विश्वते पास रिका स हो। -रिकान'न दि॰ जिल्हा कुछ डीह न हो। भदिरशमरीय १-दिवालेन वि॰ भी भएनी अगहबर म दी, क्रांगण रिमा दी वा न्दिलका विशव महेशा म दिशामा परेशमा वेगीहे। -शील-दिश भरा, पुरुष । -शाल-दिश ही देशशासाः देशवदः महाः अध्यद्गितः । नदश्निः निरावे दणवाकाः देशः स्टीत्सम्बाधः । अ० वृत्ते छक् बदुव १वाश । -तत्रामान-४० वेलादे, विश्वीतः -त्रसस्युक्त-विक कम्प्य हर्द्वेशका, शहरद, अर्थारे । -- तक्तरातुक्की-क्षीक वदार्शानगाः विमीते प्राप्ता मे बराना । -सावयमुका-दिश दिगामे अनरश म दी। शांगा दिशास रिष्टाचार म बरनतेवाला मंद्रीय रहिन, गरिष (विश्व) १ वर निश्मकीया देशक १ - सहक्रमुडी-श्रेष बमाबर, शंदी बढी अवादा करकता। कावारी। क्षेत्रणा -शहकीर-दिव वेश्यूर हं -मुसीहा-दिव वर्ण्याहरू प्रवृत्त -लरलीय-दिन समार्थितः सहस्रुत सन्दर निवत ६ -शामीबी-भी० समय समाह, हिरायका -तरह-वि॰ वेदश् गैर श्रहमे बडी खारिशाण (१४व I सन पूरी नाह, बहुत क्यारा । नारीझा-पि क्यूर्टेस् वेशन्दरा । नम्बिन्यव अनुविक स्ट्री । नार्यक me fant beite fent uie i - mertige-fer und स देवेशका, वेपरवाद : समझाता-मन बहुत देती. बाहबार बीच्ह (बाराना); दिना हो है दियारे र न्याबन ter the feer, white medicals bit करीतमा १ -साम-दिन दिला पारचा १ - नवा स्वतः हु व दिला रापके दिवादम्बर सेना सारिताला मान, रहना gui t -dini-mint-jen ni whet. je bar, चूह अपूर र नमूबर-दिन देशित, अन्यन, हे रे दर्ग हरते केन्द्री कान बर्दरंगका, मुखादिश विद्योग सम्बद्धितीय the desire (dee) a (the maximal equite fee, die etnis -faute fliet -filidage

विशिर#-अ० दे० 'वगैर' । विग्न * - वि॰ विगुण, मुण-रहित, निर्शुण । बिगुर#-वि॰ जिसने गुरुसे दिक्षा वा दीक्षा न ली हो, निग्रस ।

बिगुरचन, विगुरचिन #-सी॰ दे॰ 'विगूचन'। विग्रचना *-अ० कि० दिक्तमें पहना !

विगरदा :- पुर पुराने समयका एक इथियार ।

विगल-प॰ अि॰ सेना या 'पुलिसमें सिपाहियोंको एकन करनेके लिए बजाया जानेवाला तुरहीके हंगका बाजा। स०-यजना-कच करने आदिका आदेश होनाः ढंका बनना ।

विम्चन*-को॰ उल्हान, असमंत्रमः कठिनाई। विगचना *-अ० कि० उल्हान, असमंत्रसमें पहनाः दबाया

जानाः स० क्रि॰ दबोचनाः।

विगृतना #-अ० क्रि॰ दे॰ 'विगूचना'।

विशोना#-स॰ कि॰ दिवाइना; गैंदाना, न्यर्थ दितानाः छिपानाः यहकासाः हैरान करना ।

विमाहा-प॰ आर्था छंदका एक भेद ।

विख्यान#-पु० दे० 'विज्ञान'।

विव्रह-पु॰ दे॰ 'विद्रह'। विघटन-प॰ दे॰ 'विधरन' ।

बिघटसा *-स० कि० तोइना, विघटित करना; विगादना । विधन*-५० विश्न, वाधाः वहा हथीहाः अभ्वास करना ।

─हरत#-प० दे० 'विश्तहरण' ।

विद्याहरू-पुर वाद ।

शिच#⊶अ० दे० 'बीच'। बिचकता-अ० क्रि॰ चौकता, भइकता । दि॰ चौकनेवाला । विश्वकाना-स॰ कि॰ भइकानाः मुँह बनाना, मुई चिद्राना ।

विचलोपदा - पु॰ विस्तापर।

विचर्छन - वि॰ दे॰ 'विचक्षण'; प्रकाशमान ।

विचरना- प्र० कि॰ पुमना-फिरना, स्वच्छंद अमण करना,

विचरण करना।

विचलना-अ० कि० विचलित होना, हटना; मुक्राना ।

विचला-वि॰ वीचका, मध्यम ।

विचलाना-स॰िकः विचलितं करनाः तितर-वितरं करना । विधयई-पु॰ वीच-विचाव करनेवाला, मध्यस्य । स्त्री॰

मध्यस्थता । यिचयान, विचयानी 🖛 पु॰ मध्यस्थ ।

यिचहत#-पु॰ अंतर; दुविधा ।

विचार-पु॰ विचार, रायानः इरादा । -मानश-वि॰

विचारवान्; विचारणीय : विचारना-भ० कि॰ विचार करना, शोचना; श्रादा करना।

थिचारा-ति॰ दे॰ 'बेचारा' । [स्ती॰ 'बिचारी' ।] विचारी-वि॰ विचारवान्, विचार करनेवाला । विचाल = -पु॰ विचलित करनेका मानः अंतर । विज्वना •-- दि० भीवनेवासा । अ० कि० चौदना ।

विचेत • -- वि॰ अवेत, वेदोश । विचीँहाँ • - वि॰ बीचवा, बीचवाटा ।

विध्छित्ति-स्त्री० दे० 'विन्छित्ति"।

विष्णी - न्दै॰ 'दिच्छु'।

विच्छ-पु॰ एक रेंगनेवाला अहरीला जंतु जिसके हंक मारने-से प्राणियोंको बहुत पीड़ा और कभी कभी मृत्य भी हो वाती है, वृक्षिकः एक तरहकी धास । विच्छेप*चपु॰ दे॰ 'विश्लेष'।

विद्यना⊶य॰ क्रि॰ विक्राया-फैलाया जाना।

बिछलन−छी॰ फिसलन ।

विद्यलनाः विद्यलाना-अ॰ कि॰ फिसलनाः टगमगाना । विख्वाना-स॰ कि॰ विद्यानेका काम किसी औरसे कराना । विद्याना-स॰ कि॰ आसन-विस्तर आदिको जमीन, चार-पाई बादिपर फैलानाः विखेरनाः मारकर गिरा देना । विद्यायस्य-स्ती॰ विद्यानेकी चीज, विद्यावन ।

विद्यावन-पु॰ दे॰ 'विद्यीन।'।

विछिप्त*-वि॰ दे॰ 'विक्षिप्त'। बिछिया-लो॰ पाँवकी उँगरिन्यों में पहननेका एक गहना।

विद्धुआ, विद्धुवा-पु॰ पाँवका एक गइना; एक तरहकी छरी (स्टार)।

विखुद्न = -सी॰ विखुद्देका भाग, वियोग, जुदाई। विद्युह्ना-अ०कि० जुदा होना, साथ छूटना, वियोग होना ।

बिखरता - पु॰ विख्वनेवाला; यह जो विख्वा हुआ हो। विद्धरना * - अ० कि० दे० 'विद्यहना'।

विद्यरनि = न्ही॰ दे॰ 'विद्युहन'। विस्ना - वि॰ विस्ता हुआ ।

बिछोई#-वि॰ दे॰ 'विछोद्दी'! विद्योदा#-पु० विद्यदन, विद्योग ।

विछोय = प॰ दे॰ 'विछोड'।

विछोह-पु॰ वियोग, जुदाई। विद्योही-निख्या हुआ, नियस । विछीना-पु॰ वह कपड़ा जिसे चारपाई आदिपर विछातर

सोया जाय, दिस्तर । विजन =-पु० दे० 'ब्यजन । वि० दे० 'विजन'-'...विजन

हुलाती ते वै विजन हुलाती है'-भूपण ।

विजना#-पु॰ पंखा।

बिजय-स्ती॰ दे॰ 'विजय'। -धंट-पु॰ मंदिरींमें लटबाया जानेवाला बढ़ा वंदा। -सार-पु० एक जंगली पेड़ जिसकी हकडी डोल बादि बनाने है काम आती है।

विजयी-वि॰ दे॰ 'विजयी' ।

विजली-सी॰ रगः, रासायनिक क्रिया या चुंपकीय शक्तिः से उत्पन्न शक्ति विशेष, वियुक्त एकमे दूसरे वादलमें या ' बादलसे धरतीकी ओर विजलाका विसर्जन; इस विसर्जनसे उत्पन्न प्रकास, वहित्; कानमें पहननेका एक गहना; गलेमें पद्दननेका एक गहना; आमदी गुठलीके भीनरका गुरा। वि॰ बहुत तेज, अति चंचल, इतगामी । -घर-पु॰ वह रथान जहाँ विजलोदी शक्ति उत्पन्न करके नगर या दोश-विशेषमें वितरित की जाय ।-- यचाय-पु॰ उँभी रमार्सों-पर विजलीसे वचावके लिए लगा हुआ नोकदार लोहा। -मारा-पु॰ एक बहा देह । सु॰ -का कहका,-सी कड़क-दिवली चमकने हे बाद सुनाई देनेवाली गुहगहा-इट !--सिरमा-- दिनलीवा बाकाशसे धरतीका और बानाः किसी चीवका विवलीके रास्ते या निशानेमें पहना, वज्र-पाव होना ।

au, रेनीरे, जुनमदमे । शि॰-०डी शविनी या शहनाई-पेर्मश्र रण मे-चड़ा-दिश् वयन्त्रः पाडन, हो किया विश्वीत 🖩 कर नेपालका मुलाहः जिलकी धीरता देने-बाधा । -युणाई-भ्योत देशमा दोलका मावा बेमुदीस्पी। मुन्तवा । -बाब्या-दि॰ देवदिवाः अदारमः नाहरः। -शाहर-दिव देशशीक्षा, पुरुष्त देशस्य । -साह-भव निमारीहर, असर १ −दास्य-न्दार्थ=वि० निर्देशक --वासीं-शीव मिर्नेताना र --न्युसार-विव व्यवस्थितः दक्षितर । =सँभर+=दि॰ देदोश ।=सँभारः=सँमाछ= शिक्ष वी वीमानके पाहर हो। • देहीता । -मनह-वि• तेता । –श्मरी-भी । श्वापन १ –वृष्य-अ० अहार्यः, रिशारवर : -सवस-दि॰ दे॰ 'देनह' : -सवसी-की क्षेत्री ।-स्वात-दिक सथर, दासम्पुर ।-सवाती-श्री। देगरान दील । -सपूरी-औ॰ देशकी । -सम्-विक विमान साथ. भीवार मा बी, अभीत । -सामी-स्टीक श्रुप्तित्ता । =समस्र-विक नामसन् । =समर्शन-व्यक श्राप्ति । न्यर्थ-विश आवदर्दित । न्यरा-सिरान (4. दिवादे विदेश कोई गड़ीर नाशाद !-महीमामाम-[so दिशक्षेत्र पास क्षेत्रे सामग्री स क्षेत्र = न्यस्थीहर-दि० देशका, पृथ्व । -माहुमा-विक स्वामाविक, अवृत्तिम, [अप्ते क्य सी मास परावी (बाव, प्रति) ।-शामान-(१० क्रिपोर्स पान मास-अमानाह या यहनी और शह अहि न हो, प्रवहत्यहोत् । -मामानी-भोः सुप्रतियोः सारत-सामधीरा अतार ।-सिम्मिन्टा-दिश् अमर्गरण, सावपावन ।-शिल्यानि-अ० विमा सम, निव्यानि है। -शाच-विक अनेत्र, वेदीयाः वात्राविक्तृतः -सुद-विक जिल्हा स्तर डीड न ही ! -सुरा-दिश की शुट अस्ते क मा सदी स्टर्शनपुत्र, लगुद्र स्टारी वाचा आदेनाता (१९७४) । (३१० १३८१) १) -सूर्-१० देशवदाः व्यरेश -सोधे मासी-मन दिना भावदिवाद दिवे, १८ । -- इत्राम्-विक करणाहित, याक्षणका व - प्रीमान-विक क्षेत्रेन, यहा । -हंगाय-विक देवल : -इज्रोडल-विक स्तर्भारतियोग् । अक्षत्वादिक भगीमा बहुत सर्विद । -ह्या-(६० तिर्देश, वेहते १-इपाई-धाः निर्देशताः शिक्षण का प्रामा पर्त सेवानक कर सुबका औड या भीरपर प्राप्त सेना-निकात निर्देश की बाला है -वृत्येका-दिक देवीयाः करियानाः पात्रकः -क्रास-दिकः स्वते द्वानुष् वित्रार १ म पृश्वी । -विकास-दिव रेन्स्स अन्तर्रदेश -दिस्रकी-कीक रेन्स्सि दिन्दे धाना । अधिकाण-दिश्र दिल्पी दिव्या संबंधि यह वेक इ afrei affe n'in'e, que afgernafes bur-चर्चन, स्टून अरादा । लहुमरा-हुनेशनशि विहे हु र मान्य भा की, अक्षाकी, वैद्यानन १- मुक्सामा-दिक देशदरा । -१९रामी-मोर देशतय : «हुम्सी-स्टेर देहरणा बर्गपुरूता, अक्षान्यका । सङ्ग्रामहिक अर्थातक बेलुक्या wifte, wert - e git-les fret est gebemer. stra deplar i nga melin gent - bitt-रिक दिने बन्ति हाती, अर्थेवता न्यूनिती-क्षीय अप्येत भर्ता, प्रत्यात हो व प्रश्ने प्रवृत्ति के विकास सर्व चप्रदाद भवदेके बहुत्तर अनुस्तरभभपुरस्वे वनने

अनदीनी बात कर नैजन हवाने हिरद बॉन्स र नर्देर्स्य सोटा या बचना⇒थे शिने शतरा नेश # स्रे.किय यन बरकना रहे, पुनसुख है शेवृत्तिक-मीन देन 'देखा' नवा 'रेस' । वेद्यारची = पुरु शेर्ने मुमाने छे भारात । देश्या-व्योः [ग्रं∗] व्यस् अन्तात्र । बेशक न्युव देव 'रेव्' । देख-सीव (साव) प्रकृति हे --सम्पन्ति । पह देवानि शक्षा १-कुमी-स्तेत्र थर दशाहरेता । -बबुवशान बुनिवाद्-की० ४९मून (प्रवाद देश) । बेग-पुर देश दिना दिली महोता भराप दिल्ली मामके माथ क्यादा अभैवामा दारिश सक्षान्त शन्द्रीः [शं 'बैन'] दिशीनवः यमते मार्गदा मरीना बर्गहा बाम देलेवाचा देला । -बाह्य-वुः देशहे मा बञाया अनिवाना एक बाता, मगादरीन । बेगर्र-९० होर्ल्सा कीरते। देशना == श कि देनपूर्व दरना, प्राप्त दारा । बेसम-स्रोप् [मुक पेर्युम"] को आपमीकी केरी, कार्य हानोः हानी ही द्यन्यामा माध्या पत्ता । चेतमान-बी० [गु०] बेदयदा ४९४६म । येगमी-3॰ कारी वासरा वह रोह । वि॰ देणकारी ! बेगर०-विक पूर्य , निश्व । बेगरणी-भी श्रह स्पेर्स । बेगार-म्ही० (बाव) बर्शनी, रिना स्टार रिटे बाल पार्रेकला नामः वह दिस्से देस तहहरा बाम देते। भाव (६६४मा); नेबनका करमा सुवनहासमार्थाः भन समार्थिः देशाहरी तरह सम्य करमा । वैताती – भी ० देश भेदार्थ । देशिक-प्रकृष्ण हो, वेदाईक हार्स ! बेगुन् -पुर रेश देशनी वैधक्क-पृत्र देवज्ञेशभग । बेबवा-वन हिन पान मेटर (होरे मन्तु) है।", हिस् मामाः देतिहे बरनेचे देवा (वर्ते, हेमान हर) । हुन हैप क्सामा – क्रम क्षेत्र हेक्स व्रहा व्यव मात्र म बेलपाना, धेषामाच्ना० हि.० देव 'विद्य'त' । हेची-भार दिया, स्टिन्स **देश-पु**क्षेत्रनेशकाः १ केंग्रु-पुर शह उत्तरी वात्पर हिराई र होता हथ रनाए 410 G 1 बेह्रक-बुक देव दिहाते ह बेशाब-प्रकृति द्वा शहर करित दिला है। अपन हेला अस्तर प्र देशमान-भर हिन रिग्रागा सराधा, देवरी । बेगरा -पु र है व "हेए हैं है हिमान-देन हेत दिया था ह 중국장 10-30 이 일이 다 하나 1 बेरुका, बेर्युन्ड-पूर्व देव "रेर," ह केल-दूर दुव, लग्दा, रहेद्दा रहेपार, पर दे नहेंगेन Wirdstannin Landing anding the gar. शुक्र-इक्षासामधीर वेता र

चित्रर-पु० विदर्भ देश, बरार; ताँवे और जस्तेके मेलसे बनी उपभात: इस उपभातका बना बरतन जिसपर चाँदी-के पत्तरसे बेल-बूटे बने हों। -साज्ञ-प्रव विदरका काम करनेवाला ।

बिदरन*-सी० विदीर्ण होना; दरार । वि० विदीर्ण करने-

विदरना*-अ० क्रि॰ परना, विदीर्थ होना । ब्रिट्सी-स्त्री० विदरके बरतन बनानेका काम । विदलना*-स॰ कि॰ दलित करना ।

बिदहना - स॰ कि॰ धान आदिको छीटकर जुताई करना। विदह्नी - स्ती० विदहनेकी किया ।

थिदा-सी० रवानगी, रखससः जानेकी इजानतः गौना। -ई-खी॰ रुखसती, रवानगी: विदा करते समय दिवे

जानेवारे रुपये आदि, रुखसतामा । विदारना *- स० कि० फाइना, विदीण करना; नष्ट करना। विदारी-पु॰ दे॰ 'विदारी'। -कंद-पु॰ दे॰ 'विदारी रंद'।

बिदिसा*-ली॰ दे॰ 'विदिशा'।

बिदीरना#-स॰ मि॰ विदीर्ण करना; आइत करना। विद्रराना *-अ० कि० सरकराना ।

विदरानि#-स्री० मस्तराहट।

विवृत्तमा, विवृपना*-स॰ कि॰ दोष देना, लगाना; विगाइना ।

विद्रित-वि॰ दूर किया हुआ।

बिदेस~पु॰ दे॰ 'विदेश'। बिदेसी-वि० दे० 'विदेशी'। बिद्रोख#-पु० वैर, विदेव ।

थिदोरना*-स॰ कि॰ चलानाः फैलाना-"खायके पान बिदीरत ओठ है, बैठि समामें यने अल्बेला'-य० की०। बिद्धत-सी० [अ०] नयी बातः ईजादः धर्ममें कीई नवी बात, नयी रीति निकालमाः जन्म, अत्याचारः दागडाः

विद्यक्ती-वि० विद्यत करनेवाला । बिहत-की॰ दे॰ 'बिदअत'; बराई; दर्दशा । विद्ध-वि॰ विधा हुआ। छेदा हुआ।

बिधँसना - स॰ कि॰ विध्वंस करना, नष्ट करना । विध-सी० दे० 'विधि'। पु० हाथीका चारा वा रातिवः दे॰ 'विधि'। सु॰-सिलाना-भाय-ब्ययका दिसाव ठीक करना ।

विधना-पु॰ विधि, मदाा । अ॰ क्रि॰ वेथा जाना, विधना । स॰ कि॰ प्रसाना ।

विधवपनां – पु॰ वैथव्य । विधवा #-सी० दे० 'विधवा' ।

विधवाना-स॰ कि॰ धेद बराना ।

विधासना#~स॰ कि॰ विध्वेस बहना, नष्ट बहना । ः

बिधाई - पु॰ विधायक । विधान-पु॰ दे॰ 'विधान' ।

विधाना-अ० क्रि॰ दे॰ 'शिधाना' ।

विधानी - पु॰ विधान करनेवाला, विधायक । विधि-सीन, पुन देन 'विधि' ।

विधिना = -पु॰ मद्या ।

विध्नतद-प्र॰ दे॰ 'विध्तुद'। विश्वसना - मु कि विश्वस करना, नष्ट करना !

बिधर-वि० दे० 'विधर'। दिस∓-अ० दे० 'बिना'।

विनई १-वि॰ दे॰ 'विनवी'। विनय*-सी० दे० 'विनय'।

विनठना*-अ० कि० नष्ट होनाः विगइना ।

विनता-सी॰ दे॰ 'विनता'।

विनति - स्ती॰ दे॰ 'विनती'। विनती-सी॰ प्रार्थना, सर्व ।

विनन-की० विननेकी किया; नीनकर निकाली पूर्व चीज (इड़ाकरकट); बुननेकी किया।

विनना-स॰ कि॰ जुनना, छाँटना; टंक मारमा। दे॰ 'बुनना'।

धिनय-सी० दे० 'विनव'।

विषयना - स॰ मि॰ विगय, प्रार्थना करना । बिनवट-शी॰ रूमाल या रस्तीमें पैसा आदि वाँधकर

यनेठी माँजनेकी कला जो बचावमें अधिक छपवोगी होती है।

विभवना#-स॰ कि॰ विनय करना । विनवाना-स॰ फि॰ चुनवाना; दे॰ 'बुनवाना'। विजयानाः विजयनाः --अ० कि० नष्ट होना । स० कि०

विनाश करना । यिनसाना - स॰ कि॰ विनाश करना, मिटामा । अ०

कि॰ नष्ट होना। विना-अ॰ गीर, छोइकर । सी॰ (अ०) नीर्वे, खुनियाद;

जदः कारण । - एं-दावा-सी॰ दावेका कारण, आधार । ~प्-मुद्रासिमत−खी० शगई या दावेका कारण । विनाई - सी॰ बीसने (चुनने) की किया या भाव; धीननेकी

मबद्रीः दे० 'शुनाई । विनाती*-छी॰ दे॰ 'विनती'-'पै गोमाई' संग एक

विनाती'-प० ! विनाना-स॰ कि॰ युनवाना ।

विनामी 🖛 वि॰ शानदीन, नासमहा – 'रोवन लागे कृष्ण विभानी'-सूर; विश्वानी । स्त्री० विचार ।'

बिनाघट! -स्ती॰ दे॰ 'सुनाबट' ।

विनास≉∽पु० दे० 'दिनाश'; नाक्से खृन जाना । चिनासना†-स॰ कि॰ विनाश वरना।

विनासी •-वि॰ विनासी, नष्ट होनेवाला, मधर । विनाह - पु॰ दे॰ 'विनादा'- 'साकत संग न की विधे जाते

द्दीर विनाद्द'-वतीर् । यिनि, विनुष-अ० दे० 'विना' ।

विनुरा•-वि॰ अनुरा ।

विनंग-सी० दे० 'विनव'।

विनीला -पु॰ वर्षासका बीज ।

विषदा-पु॰ दे॰ 'विषक्ष'। विषक्षी~वि॰ दे॰ 'विषद्धी' ।

विषयछ -पु॰ शतु, विरोधी पद्य । वि॰ प्रतितृत्त, विगस्त । विषच्छी=-वि॰ दे॰ 'विषशी'।

विपणि-मी० दे० 'विष्ति' ।

44 4 5

बेलमा-मः दिः घरनेत्रं देश्येने रोडी, पूरी सर्पर बनाना । पुरु देरु "देन=" । बैतपता-गुरु हि॰ देल्देश बन्म दुमरेसे बरान्। ३ वेजमना 🗝 🗠 🙉 । (१५१५), धीव बहुनह । मेणहरारे - पुर देश 'वित्रवरः' व मैत्रा-पुर २६ प्रशिष्ट सुगंदिन पून्। उसका यीवा: मोनिया: बीयराः बरोराः शास्त्री प्रैसा एक बाजा । म्बी॰ देवविज्ञाः सेनी-पुर शार्था, महापद व धेपट० -मी० रिश्यमा, ५,६१ । मुज्याद०-वे० हे० ,श्यावाद, ह मेद्रपारीक-पुरु देश क्यादारी है। क्षेत्रराव-पुर देश 'व्योरा' । -(रे)वार-अरु नक्षमीलके attig t क्षेत्रसाञ्च - युक देव "ब्द्रबस"य" । बेबरवा=नगीत्र शासीय दिशामा प्रदंश स्थिति । क्षेत्रप्रकार = २० क्षिण व्यवदार कर्मा, वरमना । धेवहरिया==पु० शहामन्य, मापूरताः मुनीम् । क्षेत्रहार्क-तुक देक 'ब्यदरार' । क्षेत्रा - स्ते • [या •] (६४था, शेंद्र । मेपाई-सी० देव 'विहारें' । ग्रेमानव-ए० देव विमान है द्वेश-रि (६१०) धारा, श्रीयः । -श्रीमत-दिः बर्-मुक्त, दाती । -क्रीमती-दिश देश 'देलकीयते' । -बहा -दिक वेशकीयत् । -यह-भग बहुता, अहमद । क्षेत्री-सीव भरिष्या, पृष्टि। स्वा ह धेशम-पुर देश 'नेहम'। बेर्सपुर--पुर मेथानर, व्यक्ति । मेश-वृण देव देश है। बेश्य-पुर ध्रीका आशा बेसबी-दिन देणमदा दल पूचा । मीन देणनदी बनी पूर्व 461 केराह - व्हर् क सम्बद्धा हर महागा, वह स्ट्टिश मुख्य ह मुक mate electrica mass miss क्षेत्रस्थ - ५० एड दिल्लाकी विशिष्टा स्टब्स्ट । हेश विशेष अ बेश्यार्त समी । देश्या, वेशी व न्याम-पूर्व देश्यात्ति व दैसहमात्र न्यान दिन बाहीह सहस्य, भेन्द नेता ह वेतराव-शी + देरदा, हडी ह Rutten-fen Eriberati telb, aucheim's बेहारक्षावन्याव माव दिन क्षेत्र लेका, व्यक्ति ह Atlakaile - sile egibt etga s दिर्मित्राक न मूक के दिन कर मिरि पूर्व वर्ष में म Bernenatte Grant क्षेत्रमारक - अव दिव देव देविसार । Agmaga beifte fure) wege, bart -ne-fer मादि सार्वा इस व बहुत कर्ता, संबद्धे बच्च है रिवी हैं। 的·大大·在大小 是: 2 山村村一时日 公田市、大大下山田里、一 वर्रा=मा • जनारे, दिनः स्टारणे । Benneite Ge treet bie ge fed mit fier

वेडनः े−पु॰ बनायदा गाँव र दिर ए'सा र वेहना - ५० ५/२१३ ज्याकी राज्य करणा । बेंद्ररू-दि॰ स्वावशा दिल्या, अशा । वक बचनीत बेहरना - ४० हि काना, दरार दरना । बेहरा०-दि॰ समग्र स्टार १ पु र दे । देवरा है। वेद्शमान-अन् विक शित्ते होता, प्राम् । शाही माहना, विशेषे बरना । वेहरी - स्री० भंश। बेहरा-पु॰ कार्रगोदे ईन्दर ६% पानश देश। बेहुम॰-४० स्तिः, बरेट् । दि॰ विदेश । वैक-पुरु [संग] भोतं हा बर्या जवा करूरे भीर बांधीय व्याचमहित भीत देनेहा बन्दराह बरनेवानी बोदी। धिरर--१० थिशी महात्रव । वितन-पु॰ दे॰ दिवन' । बैरानी-वि+ देन 'बेलती'। श्री र एर परताम ही वेराय हृहश देशनी संपादर तेनी तननेते धेवण होता है। धित्रमाः वीत्रवी०-२० पेटली । र्वेड-पु॰ (अ॰) बादधर्म, अंग्रेत्री बाता वननेत्री ज्याः वेदेदी शक्षाः -शास्ट्र-पुरु देशः (४४६ माय विशेषक । र्वेद्रता-ग॰ दि॰ दे॰ 'दे"नश्री । g 410-3 + 5 + 6. 61,1 र्वेन, बेना०~९० देव 'रेन'। क्ष-क्षाः पुणारीकी क्षेत्रा + पुन, शान्देन 'दर्शनस्पैद" स्थीत संधारीति र वि-ब्यान [सन] शेन आहियो हेतो दियो हिताहे सार्गार्ड बालेका पर धीवपर स्वादी और पूर्व शरिक र है गाउँ। -मामा-पुर बह बागुज औ वैचीनामा श्लीहरेशनेरी ferent & t वैद्यस्थ-मण्डित वहद्या । देव्हें ह-युक्त हेव 'देवृह'। बन्दर्ग-हरी = देव "नेपारी" ह वेशायस-१० है- 'देगायस' । Bild-Ge un ein! triet an Gifige a a al. **₹.** ₽4 1 बैद्यवी-दिक देवबोद अवस्था पुरू बेदानहै । वर्षे प्रश्नित की शीर र बैर्सनी, बैरायीमी-स्टेब रेक 'देर देहें)। ब्रिज्यहें-दिन एकड़े शीने इसका र पुर इसकी मीमा हैरी। देशमाय-पुर हैर 'देवन्यर'। ब्रिकी-दि- [सर्थ] अंदरा, घराबार १ **ह्या - पु० (सध) थट**्योरक्षेत्र ह Affin -fie feief din eifer Tre, gweit. ? 新年記 有知知。然此知 多 衛星一隻 (注意) 新史 於日子至十年日末 kele-ate (un) dission, emelek sertit hid हिरु कु राज्य अरहेदा वह अप ह fire-ete bifer gur, Arma tible fo mme, Eri, Ester fin, uger abeier fin fe

विरवा#-पु॰ पीषा, वृद्धा !-ई- † स्ती॰ दे॰ 'बिरवाही' ! विरवाही!-स्ती॰ छोटे पीपॉका समृद्द; वह स्थान जहाँ बहुतसे छोटे पीपे वगे हों ! विरस-वि॰ दे॰ 'बिरस'! पु॰ बिगाड़ !

बिरसना≠-अ० किं° दे॰ 'विलसना'।

विरह-पु॰ दे॰ 'विरद्द'।

बिरहा-पु॰ एक तरहका लोकगीत जिसे खास वीरसे अहीर गाते हैं; दे॰ 'विरह'।

विरहाना*-अ०कि० विरह-व्यथाका अनुभव करना-'राघा विरह देखि विरहानी, यह गति विन नेंदनंद'-सूर ।

धिरही-वि० दे० 'विरही'। विराग-पु० दे० 'विराग'।

बिरागना # - अ० कि० विरक्त होना ।

ब्बरागना = = अ० क्रि॰ शिक्षत होनाः वैठनाः, वासीन होनाः। बिरादर = पु० क्रि॰ शोभित होनाः वैठनाः, वासीन होनाः। बिरादर = पु० क्रि॰ क्रि॰ क्षेत्रः आई-वेदः, सत्रातीयः।

-कुशी-सी० वंधुवध।-ज्ञादा-पु॰ भतीना।-ज्ञादी-सी० भतीनी !

विरादरामा-वि॰ [फा॰] भार्रका सा, भार्रके अनुरूप ।

विरादरी-स्त्रो॰ [का॰] मार्रवाराः जाति, गोत्र । सु॰-से स्त्रारिज, बाहर होना-जातिच्युत होना ।

विरानः = वि॰ देगाना, पराया । विरानाः = वि॰ पराया । † स॰ कि॰ (सुँह) चिदाना ।

बिराल-पु॰ दे॰ 'बिडाल'।

विरायना *-स० कि० दे० 'विराना'।

बिरास*-पु॰ दे॰ 'दिलास'।

यिरासी*-वि॰ ६० 'विलासी'। विरित्स*-पु॰ दे० 'वृक्ष'; दे० 'वृष'।

विरिछ#=पु॰ वृक्ष ।

पिरिघ#−वि० दे० 'वृद्ध'।

बिरियाँ - ला॰ देला, समयः बार, दका ।

विरिया!-सी॰ कानका एक गहना ।

विरी = न्सी० पानका भीका; गठरी; मिस्सी ।

विरुप्तना, विरुप्ताना == अ० कि० उल्टानाः शगहनाः विरुप्तना।

विरुद्र-पु॰ दे॰ 'बिरद'।

बिहरत-वि०, पु॰ दे॰ 'निरदेत'।

विरुधाई -- सी॰ बुदापा । विरूप-वि॰ दे॰ 'विरूप'।

विशेगां~पु॰ दुःख, विता।

विरोजा-प्र॰ एक दवा, गंधाविरीजा ।

विरोधना ≠- क॰ कि॰ विरोध करना - नवहिं विरोधे नहिं

कल्याना'-रामा० । विरोलनाक-स० फि॰ दे॰ 'विलोइना' ।

षिलंद = - वि॰ दे॰ 'बुलंद' । षिलंब - पु॰ दे॰ 'विलंब' ।

बिलंबना - अ० कि० देर करनाः रक्ताः स्टबना ।

यिलंपित-वि॰ दे॰ 'विलंदित'।

यिछ-पु॰ [मं॰] जनीन या दीवारमें बनाया हुना छंदा ऐदा रस तरहका ऐद बिसमें बोर्ड जंतु (जूहा, सौंप आदि) रहता हो; बंदका थोता। -कार्स(रिन्)-पु॰ जूहा। -वास,-वासी(सिन्)-वि॰ मॉरमें रहनेवाला। पु॰ ऐसा जानवर।-हाय,-हायी(यिन्)-वि॰ विल्में रहने-बाला। पु॰ ऐसा जंतु! -स्वर्ग-पु॰ नरक। मु॰ -हुँड्ना-वालको जगह हुँड्ना। -में धुसना-छिप बाना, परमें कैठ रहना।

विल-पु॰ [अं॰] बेचे हुए माल या किये हुए कामके पादने॰ का पुरवा; कानूनका मरिवदा, विधेयक ।

बिळकुळ-अ० दे० 'विल्'म । विळखना-अ० कि० दुःखी होना, विलाप करना; * ताइ जाना ।

बाना। बिलखाना•~स॰ कि॰ दे॰ 'बिलखना'। स॰ कि॰ दुःख देना, रलाना।

विलग-वि॰ जलग, जुदा। श पु॰ विलगाव; रंज; धुराई। सु॰ -सानना-बुरा मानना; दुःखी होना।

विरुगाना—स॰कि॰ सरुग होना । स॰कि॰ सरुग करना । विरुगाव—पु॰ सरुग होनेका माद या किया ।

बिल्ड्झन =--वि॰ दे॰ 'बिल्झ्ग' । विल्डुना =-अ॰ कि॰ लखना, साइना ।

बिल्टी-सी॰ रेल्से मेने जानेनाले मालको रसीद जिसे दिखानेपर भेजा हुआ माल मिलता है।

बिलनी-जी॰ ऑसकी पलकपरकी फुंसी; एक कीका, भूगी। विलयनाक-अ० कि॰ विलाय करना।

यिलप्रनाक्ष−अ० कि० विलाय यिलप्रोल−अ० दे० 'विल'में।

चिलचिलाना नश् कि॰ दुःख, पीड़ा आदिसे निकल, बिहल दोना, रोना चिक्लाना; गिड़गिड़ाना; कीड़ोंका कुल-मुलाना।

बिलम = प॰ दे॰ 'बिलंब'।

बिलमना = - अ० कि० देर करनाः रुकनाः, भटकगाः प्रेममें वैधकर रक्ष जानाः।

बिल्माना = स॰ कि॰ रोकना, भटकाना; प्रेमने फँसामा, वॉधना :

विल्लाना = - अ॰ कि॰ विल्लाना, विलाप सरना - 'विल-कात परे इक कटे गात' - सुजान०; धवकामा ।

कात परे इक कटे गात'-सुजानण धरवाता । बिल्ला-विण् खेल-कृत, आवारधीमें समय विगानेवाला; वेशकर ।

विख्यानां –स॰ कि॰ सोना, गँदाना; सष्ट करना या कराना; ष्टिपाना । विख्याना=–स॰ कि॰ महना, शोधिक शैक्स । ए० कि॰

विलसना = नश् कि॰ सत्रना, शोभित दोना। स॰ क्रि॰ बरतना, भोगना।

थिलसाना≠-स॰ कि॰ वरतना, भोगना; द्सरेको वरतनेम प्रकृत करना । ः

विसस्तो −पु॰ दिचा।

विलहरा-पु॰, विलहरी-सी॰ गोंसकी तीहियोंका बना पान रखनेका दिन्या।

विसा-कर [कर] दिना, गाँद । -तकस्तुक्र-भरु निर्दानं स्रीप, दिना रकेश्वर्के । नाराग-भरु मनिदिन, हर रोत। -वजह-भरु कम्मारण । -वास्ता-भरु स्रोपे, रहारे रादाः वर्षेद करिके । -वास्तु-भरु निर्मार्थर, विधदपूर्वेक !-वार्त्व-कर स्विमा-भरु निर्मादक्त

गेर-स॰ दिना दूसरेकी शिरकतके।

चैन्याही-मार मैहनाको मेला, अवधारा प्राप्त मेर र देमाग-५॰ चैरदे बाद एरनेवाना महीता, नेशायाः -मेद्रम-प्रश्रेष्ट 'वैशहरतंद्रन' । धैमान्दी-ब्दा॰ रह बाह्य हिये देवपर मेन्द्रे ध्वते है। बैद्धान दी प्रशिक्त । र्थमाना, र्थमारना! ~छ॰ कि॰ दे॰ 'वैदाना' ।

र्वेन्प्रिक्ष-५० देव 'मैद्रिक्"। सहरूत-कीण वायु । विच शहाबला ह र्बोक्र-दश किरावधे पुरुशे जगह समादा बालेवाला

भीदिका श्रीमा । र्योगमार्र – पु॰ एक बरनन, बहुगुना।

सींदार-पुर रामप्रमे आग समारेको दस्की ह धींबीरे-मीर देव 'बी'बी' र योधनी - मी॰ देश केती ह

मीभाई-स्रोध मीरेफा सामा बीरेफी सम्बन्ध । योश्वर-एक वस्ता ।

योदमा - पुरु रहरा । योषमा १ – ५० सम्बद्धाः योज्ञाण-पर्य (र्व) नंदरा ।

क्षीत्याह्-पुरु देव 'गुरम्प्र' ३ भौगुमा-पुर घोडोडी वर बीसारी ह मीचनार्ग – मु॰ दि ० होताना, बोहना – जिन्हे नेदकी नरम

ष्ठारण दिया । पर में चीन स सकें'-बिदयी । षीत्र∽पुरु भीतीदी सद्द दिशस्त्र

थोजा-सीर पारणरी शहर ह षीश=५० नार, वरमा भारी समनेशमी फोमामधी, सद्दा, उपना भार, कामान दिलाला राष्ट्र भारती, वेणः ह भीता साथि यह बेप्से प्रदा शके, लेक मारी अवनेवाला ।

कार, भारती। कार्यतार, जिल्लाहरी । शक - प्रशासा-वे रे वरित वाम सर्वेदा भार रेजा । -क्षमस्मा-विमी कर्षित कामते प्रसान चन्याः भी चलका दीना व

बील्यान-११० कि.च महत्रमा, होता प्रधानः । बोहाम्ब, बोहिस्ट-पिक शही, बप्रजहार ह

बीक्रा-पुरु देश 'हे। हा । बीहार है - भी । फे.ए ने दर काम, बीहरी की प्रवत्त ।

श्रीष्ट-की ५ (र्थक) सन्दर पुर्व दश । Mrgt-ge wur'tt gat, ete, gunt e

कीरी-नीर म एका बीत हुवशा ब्राफ नकीरी काडमान शारिको होते हैं। इसते जब देना है अधीर करक्षणा—

क्षत् प्रम् ऋषक्षमाः बहुन् भूत्रक्त एक हीताः । भुन्द्रपुरक मात्र देश के पुर कर ह

ष्ट्रोड्ड अर्थ - पुरु राष्ट्र हिंददि हो ह

बोलानक समाधा कह प्राची, संदी क्रमी ही लखाती 42 22 4 4 H M B E

क्रीडी-भीत बहारी करूत क्षी रीपी बहार, री हो ह मीन्य-पुर दर्शन्दे सद प्रतिशृह

Anerent's alour be genu fend reen eit.

क्षेत्र राज्य है ने हैं। सम्बद्धिक स्थाप १ ११५ स MI MINER ANT BERT-BERNGTRING REIG E BERTE

बीमहरी-स्थीव कीटी बीगम । दिव बीएमडे शहरा बोता-दर केंग्रा बदाओं अरोधर है बहुई प्रदर्श म भागा हो।

योदशीर-मीर पुराम, बरेंदर ६५ मेर् ६ योद्र==भी॰ स-रेशी छति । थोदा∽विरु मोरी शहरा, सारदे; दश्यु ; हुल । –दर्-

पुरु मोडी महत्रा शोनाः दभ्यस्य । बोद्धस्य-दि॰ [र्थण] आसदे, ध्यान देने दीया अस हरने दोग्य । बोदा(द्य)-रिश्तुर्शनिश्चमने,सम्मरेरचारीर्शन

बोध-दे (है) देश शतकाति बनागा गाराह समारी । - कर-दिश अगानेपाला । पुत्र वर्षेत्राकाः वदी ।--राज्य-विश्वसमाध्ये आने शादक (-पामा-पुर देवीरदामी एकादशी ह

क्षोदाळ-विक विको बीच ब्रहानेकला, अश्वेतला, द्वारा पुक्र श्रीताहरताहा एक हाना ग्रुप्तकर, भेरिया । बोधस-पुर्व (तंर) दान बरामा, प्रश्नात प्रयागा वर्गमा वर्गमा विद्धान्ति कानाः पुत्र सह । योधमार-मर्काट कामहात्मा हुए मा इन हो है वोधनी-ब्री॰ विश्वे गमशः द्वानः क्रोटेन्से स्वप्री

योजन, क्रियमी ह क्षेत्रज्ञीष-वि० (११०) जनाते, अयाते बीव्य । बायविशा(म)-दिक, पूर्व (तक) अगानेगलत क्याने ।

रान्या ग्रिक्ट । बीपाम-दि: (तर) बनुर, नुदियान् । द्रव बनुर उर्देणः पुराव्य र

व्यापासम् – दुः (शं॰) अद्युक्तवृत्तिहे १५/५७१ ६३ ७ प^{न्}र mili-olio [eta] einifen un ber Erent bir -तब-प्रदेश-पृथ-पुर शहामे अशीवन केपना है। शिक्तरे नीचे पुरस्को पुरस्का प्रकार हो । नमीवयनी वह बा न प्रश्ने गीतमधी पुष्टाच प्राप्त प्रभाव नवार्थन पुर बुद्धान्य प्राधिका अधिकाति की क्रमी जन काल करें

म बद्धा हो। एडरिपोष र कोर्न्डल-दि॰ (त०) थिने बेच कराया गरा ही ¹ क्षोजिमस्ब-दि॰ (ग्रं॰) अन्यते दो।य १ बीची(चित्र)=रिव (००) कालीरातन वस नेरान्तर

Biriga-go fele) einer mie, gramen! क्रोध्य-(४० (११०) प्राथमे संख्या प्राप्त में क्रोप ! ब्रोब्स्-अन् दिन बीज वधीनक राजना विधेरण है

क्रेजी – ब्री ० क्रेडेवी दिवस क्रेडेस क्रेक्स ब्रीबर्जन्य वर्गा स्ट्रिया मानी प्राथमित है

od = ~ et, = \$ = . d, 1 weiner der geba ten, fer 1º 14

शहरा, वर्षे हैं का भी देश से दाय ।

भोरत्राहरू को विकास करूर राज्य र uffenn-mo fan geran, gener be been fem.

Europe arms with arm, non arm the stor mitty a

والمراجع والمحاربة والمراجع والمراجع कीरा-पूर्वाता वस बाद बेना राज्य स्टाप्ट करे विरवा≭-पु॰ पीपा, वृक्ष । -ई - † सी॰ दे॰ 'विरवाही'। विरवाहीं -सी॰ छोटे पीपीका समृदः वह स्थान बहाँ बहुतसे छोटे पीपे जो हों । विरस-(व॰ दे॰ 'विरस'। पु॰ विगाद ।

विरसना *-अ० कि० दे० 'विलसना'।

विरह-पु॰ दे॰ 'विरह'। विरहा-पु॰ एक तरहका लोदगीत जिसे खास चौरसे

अहीर गाते हैं; दे० 'विरह' । विरहाना*-अ०क्रि० विरह-व्यथाका अनुभव करना-'राथा

विरष्ट देखि विरष्टानी, यह गति विन नेंदर्नद् -सूर् । विरष्टी-वि॰ दे॰ 'विरही'।

बिराग-पु॰ दे॰ 'विराग'।

थिरागना*-अ० कि० विरक्त होना !

विराजना-अ० तिः शोभित होनाः पैठना, आसीन होना । विराहर-पु० [फा०] भाई, बंधुः भाई-बंद, सजातीय ।

-कुश्ती-स्नो॰ वंधुवथ।-ज़ादा-पु॰ भतीया।-ज़ादी-स्नो॰ भतीबी ।

विराद्शना-वि॰ [फा॰] भाईका-सा, भाईके अनुरूप।

विरादरी-स्ता॰ [फा॰] भार्रचाराः जाति, गोत । मु॰-से जारिज, बाहर होना-आतिच्युत होना ।

बिरान#−वि॰ वेगाना, पराया । बिराना−# वि॰ पराया । † स॰ कि.॰ (सुँद्द) चिटाना ।

विराल-पु॰ दे॰ 'विडाल'।

यराधना *- स॰ कि॰ दे॰ 'विराना'।

विरास#-पु॰ दे॰ 'विलास'।

विरासी*∽वि॰ दे॰ 'विलासी'। विरिख*∽पु० दे॰ 'वृक्ष'; दे॰ 'वृष'।

विरिष्ठ#-पु॰ वृक्ष ।

यिरिध#=वि० दे० 'वृद्ध'।

बिरियाँ = स्त्री॰ वेला, समयः बार, दफा। थिरियां - स्त्री॰ कानका एक गहना।

थिरिक−स्ता॰ कानका एक गहना। विरोक्तिका पानका बीड़ा; गठरी; भिरसी।

विरुझना, बिरुझाना*-अ० कि॰ उलझना; झगदना; विरुक्ता।

विरुद्-पु० दे० 'दिरद' ।

विरुदेत-दि॰, पु॰ दे॰ 'दिरदैत'। विरुधाई--सी॰ सुदावा।

विरूप-वि० दे० 'विरूप'।

विरोग!-पु॰ दुःख, चिता।

विरोजा-पु॰ एक दवा, गंधाविरीजा ।

पिरोधना = - अ० कि० विरोध करना - 'नवहि विरोधे नहिं करपाना' - रामा० ।

विरोलना#-स॰ क्रि॰ दे॰ 'विलोहना'। विलंद#-वि॰ दे॰ 'बुलंद'।

विलंब-पु॰ दे॰ 'विलंब' । '

यिलंबना - अ० कि० देर करनाः रचनाः स्टबना ।

विलंबिस-वि॰ दे॰ 'विलंबित'।

विल-पु॰ [गं॰] जमीन या दोवारमें बनाया दुशा स्वा ऐदा इस तरहता ऐद जिसमें कोई जंतु (जुहा, सौंप आदि) रहता दो। पंद्रता थीहा। —कार्गी(दिन्)—पु॰ चूहा। -चासा-चासा(सिन्)-चि॰ मॉरमें रहनेवाछा । पु॰ ऐहा बानवर !-हाय,-हायी(मिन्)-चि॰ विठमें रहने-बाछा ! पु॰ ऐहा चंदु ! -हवर्ग-पु॰ नरकः । गु॰ -हुँदना-चवावकी चगह हुँदना ! -में छुसना-छिए बाना, यस्में कैट रहना !

बिल-पु॰ [अं॰] बेचे हुए माल वा किये हुए कामके पायने॰ का पुरचा; कानूनका मस्विदा, विधेयक ।

बिलकुरु – अ॰ दे॰ 'बिल्'में । बिलस्त्रना – ज॰ कि॰ दुःखी होना, विलाप करना; * ताइ जाना।

बिलखाना≭--स॰ क्रि॰ दे॰ 'बिलखना'। स॰ क्रि॰ दुःख ्देना, रूलाना।

बिरुग-नि॰ अरुग, जुदा। * पु॰ निरुगान; रंज; धुर्दाई । सु॰ -मानना-बुरा मानना; दुःखी होता। बिरुगाना-अ०कि॰ अरुग होना। सु०कि॰ अरुग करना।

बिल्याव-पु॰ अलग होनेका भाव या किया।

विरुच्छन#–वि॰ दे॰ 'विलक्षण'। विरुक्षना#–व॰ ক্ষি॰ হুसना, ताइना।

बिल्टी-की॰ रेल्से मेने जानेनाले मालकी रसीद जिसे दिखानेपर भेत्रा हुना माल मिलता है।

विल्नी-ली॰ ऑसकी प्रकारकी फुंची;एक कीवा, गृंगी। विल्पना#-अ॰ कि॰ विलाप करना।

विलफ्रेल-अ॰ दे॰ 'दिल'में।

विरुविद्याना च्या कि॰ दुःख, पीडा आदिसे विरुद्ध, बिहल डोना, रोना चिक्लाना; विड्गिडाना; कौडोंका कुल-बुलाना ।

विस्म#-पु॰ दै॰ 'विसंव'।

विरुमना == अ॰ कि॰ देर करना; रक्ता, अटकना; प्रेममें वैधकर रक जामा।

विलमाना == स॰ कि॰ रोकना, बटकागा; प्रेममें फैंसाना,

विल्लाना = नव॰ कि॰ विल्लाना, विलाप करना = विल-लात परे इक कटे गात" - सुजान । परश्राना ।

कात पर इक कर बात —धुजानकः घवडाना । बिछ्छा-वि॰ छेल-चूद, आवारगोमें समय दितानेवाला; देशकर ।

वशकर। विख्याना -स॰ कि॰ खोना, गँवाना; नष्ट करना वा

करानाः छिपाना । विरुसनाः - अ० कि० सबना, शोभित होना । स० कि०

बरतना, भोगना । विल्साना - स॰ कि॰ बरतना, भोगना; दूगरेको बरतनेम

प्रवृत्त करना।

विलस्ता -पु॰ वित्ता।

विलहरा-पु॰, विलहरी-स्री॰ बॉसरी तीलियोंका बना पान रखनेका डिम्बा।

विळा-४० [४०] विना, बगैर । -तकल्लुक्र-४० गिरमं-बोच, विना रके-अट्डे ।-माग्रा-४० मिदिन, हर रोज। -धाड-४० अकारण । -वास्ता-४० मोभे, वराहे रास्त्र-वर्गेद वर्षिके । -वास्त्र-पुमा-४० गिरमंदेह,

रास्तः वर्गेरः बरियेके । --शकः,-शुभा-अ० निरसंदेरः, निश्चयपूर्वेक !--शर्ते-अ० विना विसी शर्वके !--शिरकत ग्रेर-अ० विना दुसरेकी शिरकतके !

देशनपूर । लगुर्वा(त्रिन्)-दि॰ क्रिम्हा उदस्यन शंदरूप हो गया हो।+गृह(स्)-दुश दिव र नर्नद∽ पुर प्रसाद, विच । नक्त्य-पुत्र गुक्की बानुमान्दि विमा इमोको दशका दुधा पाड गुजरर वेर परनेशासा । -स्व-पुर प्राप्तण्या पत । - र हारी (हिन्) - दिर अक्टान्स भ्रम सुराज्यामा । -हरमा-सी॰ हादणहा दथ जिने बगुर्वे बदायान्द्र स्थाया देश -हत्त्र-पुरु अप्टयका श्राप्तर गान्धर्य । -श्रद्य-यु० वह स्टाप्त । सद्भाग-(१० (त०) सद्मन'वधीः साद्रण्यतिष्टः प्राधिष्ठ । पुर प्रदर्भेश मारायणा वास्तिवेदा शनि महा महतूम

मैका गाह ह सद्याच-पु (मृं) प्रदासामा प्राप्तामा प्रदा, प्रतिस्था stre 1

सार्टार्थ-पुरु (श्रंप) प्रांतस कादि सनदश असि अस्तर कृषि । अर्देश-पुर कायोश्तर्वेश वह आता जिल्लाहे संदर मु प्रश्नेष, प्रायम, प्रायाम और द्वारतेलक देश करते हैं। सम्बद्धि-पुर (गार) अराजार प्रशाहीत जिमने अगुरमृति

शारिके अनुगार, रिनागई अधादी जन्मति हुई, दिव-होत्रव, शंपूर्व दिया शोगरी । -युराया-पुर १८ महा-पुरानीहेंसे ६६।

महानि(ग्र)-पृक [त्र मिन् मीम्प ।

महाा(सन्)-पू॰ [सं॰] हिनुवारी माने दुर विदेवनेने सबस मिथे शृदि दशमादा काम शीचा मथा है, विश्वि, पनुशासम् ।

महाश्वर-पु» (१°३) के 1

महाप्रम् । महात्माम्-पु । (गं) वेशा ।

महाजी-मी (मे) प्रशास सन्ति महामी सही महertir tiger (eingen); du nieur Cient getr au seff i

सद्यादमी-भो+ (H+) एड दोपा, दसरदी ! म्मानं इ-पुत्र (ते) म्रण्याद्यप्ति शामान्यास्यः मान्देर व सक्षाप्तवास-मुक्त (तिक) देशाच्यवन ।

अक्षांकित-ते० [१,२] कर बच्च इंडकर-लेशि । साम्पंत-पुरु [अंत] प्रश्यम्पति अर्थक्रियम् । सार्थकः

शासासम्बद्ध (११०) करम्बता कीर समझी अधियोदे क्षेत्रक रेश ह

स्मान्त्रवन्तुर (धर) हमाबे ध्याक्ती प्रश्तुभ साला सानैर 有性 化氯苯对甲丁

सहाधानपुर (गेर) ब्रह्मार्गापने वर्गपर्यातन कारीय अल्ला Rigardian met t

सिर्देश्य नहिन [मेन] बेर्ड दर बेर्ड बहुन व स्रातित्वा-मान् विक्री पुरुष

MEG-42.0 [814] \$0 . M. Apr. 2

श्राक्टेश्स - पुर [474] क भारते पर दिवानु ह सर्वानाहेशा-पन [रान] दर का अध्य लक्षे दिया ह

क्ष ग्रान्तक (०)०,०१८ (क) प्रान्ध क Hills- of a letal au Leaute, Elat a thinks wid + fix itsisty it

क्षान्त नहें व हिन्दी अग्रज वर्षा अग्रजनेत्री, अग्रजनेत्री व

Tra, ferit mirgert auf git g-egfift ge :

श्रापुण्ड बाद प्रदेशके दिशकोदेने एक शिव्हें क्या . बन्दामुक्त गृहित बरबी, दमगे दुध निवेरिता, एक ह अभी है, बस्पासन दिशक, स्टारत एक स्वाप्तर, होहिली महाबा ह्येलीहा अंगुहम्लदे में देश, मामा महा वर्देश बमुदावी (भार) । - अर्दोशव-द्रार महायाति भीत् राज् । न्यसँ-पु॰ राजा रामभेत्रस्यादशः ५००० बुक्त सर्दे बर्दाको वर्षे ३-विद्यान-४० वर्षी १-पुर्यान दु॰ अग्रदुरता । -अहिर-दु॰ अग्रदमास्या काण्यः गृह । - महून-पु॰ शहर किने प्रश्रे प्रीर ही दर । -विवाह-पुरु क्ष्मद्रपान विवाह । नस्त्रीय-कु हाता राजधीरमस्यक्ता यथाया हुमा परेशाया पेक माध्यमीदिश-सामात्री-पुर मतात्रामारदा महराते। ब्राह्मण-पु॰ [र्थ+] हिंदू पर्वत गाते द्वर यह स्पीत नीय विश्वामीनेने पहला: यम बर्गवा प्रण, अप्राप्ता. पुरीदिना नेपका अंथ का र दिनारी निष्य दिवार। प्रशास ख्रीयराचा अग्न । दि० महाराजीः अन्यत्रत्। तीर आहे चित्र । च्यावया =व्योक स्रोधानीते तिर्वेद । चत्र-विक अञ्चलकी दृश्या करनेवाला । सम्बद्धामनपुर दृश्य निविद्य वर्ध करनेवालाः सीत अन्यातः अन्यात् क्षेत्रे की शह दिनामे कार्य प्रभा : - तर्वेश-पु० प्रणापी क्रिक रिमादर र'तृष्ट दरवा । च्यूब्यच्युक अच्यादी परे । -हेची(चित्र)-दिक अच्याते देव बर्मेस्था । सीव

वे रण जानिने भरतेनी अञ्चय बहुरेमणा (अधीतम न्यू) सतेह ब्राह्मीकी रह साव निर्मातन हर निर्माणन र्थाटः-परिका-पर्धा-मी॰ अक्रान्य प्रशासी -सच-पुर मण्डलको द्वारा १ -मंत्रपंत-पुर मण्डले लिम्पारी, गृप्त करेशाः । अवदान्युक प्रण्डेमधा प्रवत्तान

-पुरु दिन्तु । -सम्भू पुरु संप्रकृति हो। हो। हो। हो।

हिल-विक अल्डाके किर काबूल । साक्ष्मक-तेर [ma] सार्थ्य, देश संबद्धारण दूत मन्द्रमा देशा बाद्रम्थम ।

माहारक च-पुन्देशक अन्यन प्रस सर्व अन्यन्तर प्रत्यवस्थी । सामान क्यांगी(तिम्)-पु (ति) क्षेत्र राश्ये महत्वर ege:fi i

ब्राह्म्यानित्रस्य ५५ है १५ है क्राइत हो अगार है।

MIRECAN-Zo (ejo) felid min belle natulaj GIVE BILLY S

क्षाकृष्टिक-दि० (ति०) त्र गाप मन्द्री । बाक्रमी-सोर (सर्) बाराका स्टाबामा सेप्र्योग

रिक्टबोड़ी क्रांक्स वह कीए होंगू, प्रकृति हम स्मार्ट Stide sitte. Cont.

#120ge-3+ [t.+] 46.1ad. gt 1 क्ष ब्राज्य लपुर (बंद) बन्यायका बर्ज, बन्नामान, अदर्गर्य क्ष्मुबर शब्द सहर र हीन अ र परहे दीवर, कर्री र

STET [4-3+ [6+] 4 24-44 1 सामी-में व [१ व] बसाबी सांता मारवर्ते, मार्च हुए their news amtifich for for all or red. fare from besmall and mic willie with

हैक्टीवादी प्राप्ति हुई। क्या प्रतिह हो। में क्या है। - glette um un bi mufe ar tiet ift. 983 बीजल-वि॰ सिं॰ विजदार । यीजांकुर-पु० [सं०] अंकुर ! -न्याय-पु० बीजसे अंकुर और अंकरसे बीजकी उत्पत्तिका अनादि भवाह । बीजा-पु॰ बीज । # वि॰ दूसरा। यीजाकृत-पु॰ [सं॰] यह खेत जो बीज छीटकर जोत दिया गया हो। यीजाक्षर-प॰ [सं॰] मंत्रका प्रथम अक्षर । **बीजारुय~पु॰** [सं॰] जमालगोटा ।

यीजाङ्य-(वे० [सं०] वीजसे भरा हुआ। बीजाध्यक्ष−पु० [सं०] शिव ।

बीजापहारिणी-सी० [सं०] जादूगरनी ! बीजार्थ-वि॰ [सं०] संतानेच्छु। बीजाश्व~पु॰ [सं॰] कोतस धोड़ा ।

घीजित-वि० [सं०] बीया दुआ। थीजी-स्ती० गिरी, मीगी, गुठली ।

यीजी(जिन)-वि० [सं०] बीजवाला । पु० पिताः क्षेत्रज संतानका असल बाप (क्षेत्रीसे भिन्न); सबै । यीजु *-स्ती० विजली-'चमकहिं दसन बीजुकै नाई'-प० ।

-पात-प॰ वजपात ।

यीजरी#−स्त्री० वित्रली । थीज-वि० बीजसे उत्पन्न; जो व.लगी न हो (-आम) । प्र० दे॰ 'बिउज् '।

यीजोदक-पु॰ [सं॰] ओला। वीजोसि-छी० [सं०] गीज बोनेकी किया। यीऽय~वि० [मं०] बीजसे उत्पन्न; कुछीन । यीश, धीशा#-वि॰ भीहड़, जनशून्य। थीहानाः = अ० कि० फॅसनाः, उछजना ।

योद-स्री० चिहियोका मैला।

योद-सा० गुहीकी शबलमें रसे हुए रूपवे। यीहा-पु॰ पानकी गिरुौरी; स्यानके मुँहके पास वेंथी *होरी* । सु॰ - उदाना-किसी कामका मार छेना, करनेकी प्रतिशा करना । - बालना - रखना - किन्नी कठिन कामका मार उठानेके किए सामंतों, सरदारींके सामने पानका बीहा रखना ! - देना-नाचने-गानेवाली आदिको साई देना ! यीदी-की॰ छोटा बीदा; गठरी; पत्ती छपेटकर बनायी हुई सिगरेद-वेसी वस्तः गिरसी ।

थीतना-अ० क्रि. गुजरना, बटना; दूर होना; वटित होना; पदना ।

योता - पु दे व 'विसा'।

पीती-की किसीके कपर थीती, गुजरी दुई बात, पटित पटनाः इत्तांत ।

यीथि, घीधी-सी॰ दै॰ 'बीबी'। चीथित≠-वि० दे० 'व्यथित'।

यीधना - अ० कि० दे० 'विधना' । स० कि० दे० 'वेषिना'।

थीधा-पु॰ गाँवकी मालगुजारी तै करना । यीन-सी० योणा । -कार-पु॰ बीणावादक । यीनना - स० कि॰ चुननाः वुनना । यीना-सी० दे० 'दीपा'। र्याफी-पु॰ मृदरपनिवाद ।

बीबी-की॰ मले घरकी की, कुलांगना; पत्नी; येटी, स्री और छोटी ननदका आदार(र्थक संबोधन; फातिमा। बीसरस-दि॰ [सं॰] प्रणा उत्पन्न करनेवाला; सहा-गला (मांसादि); पापी । पु॰ साहित्यके नी रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव जुगुप्सा है; घृणोत्पादक वस्तु; अर्जुन । वीभरसा-स्ती॰ [सं॰] धृषा, जुगुप्सा ।

बीमस्सित-वि॰ [सं॰] धृणित, निदित । वीमत्सु-पु॰ [सं॰] अर्जुनः अर्जुनका पेड़ । बीस-पु॰ फा॰ दि जोखिम । -व हरास-प॰ शीफ

और खतरा।

वीमा-प्र॰ फा॰] ठेका; जमानतः मृत्यु, दुर्धेटना, मालकै रास्तेमें खो जाने आदिकी हानि भर देने, उसके बदलेमें नियत थन देनेकी बिम्मेदारी, 'इंस्योरेंस'। च्हार-पु० बीमा करानेवाला, 'पालिसी-होल्डर'। मु = वर्ता-श्वविपतिकी जिम्मेदारी लेना। -(मे)की पालिसी-वीमेका इकरारनामा ।

बीमार-पु॰ [फा॰] वह व्यक्ति जिसे रोग हुआ हो, मरोज। वि॰ रोगी: आशिक। -दारी-स्त्री॰ रोगीकी सेवा तीमारदारी ।

बीमारी-स्तो॰ (फा॰) रोग, मर्ज; छत; झंझट । बीय, बीया*-वि॰ दूसरा । पु॰ बीज ।

बीर-वि॰ बीर, बहादुर। पु॰ बीर पुरुष; भाई; एक तरहका प्रेत । # की॰ सखी-'फिरत कहा है बीर बाबरी मांसी ""-हठीः कलाईका एक गहनाः कानका एक गहनाः चरागाहः चरानेका कर ।

धीरड#-पु० दे० 'बिरवा'। थीरज़#-ए० दे० 'बीयं'।

बीरन!-पु॰ भाई, बीर; दे॰ 'बीरण'। - मूल-पु॰ एक धीधा ।

बीरबहटी-सी० किलनीकी बातिका, गहरे लाल रंगका एक बरसाती कीड़ा, इदवधू । . .

बीहा - पु॰ दे॰ 'बीहा'; प्रसादस्वरूप दिये जानेवाले फल-फूल आदि । वीरी - की व पानका बीहा: मिस्सी: कानका एक गहना:

पत्तेसे बना हुआ सिगरेट । •

बीरी =-प्°दे॰ 'बिरवा'-'बस असोक दौरी तर सीता'-प॰। बील-वि॰ पोला। पु॰ नीची अमीन जहाँ पानी जमा हो जावः = गंत्रः बेल ।

वीयी - सी॰ (का॰) गांधी, सीः पानी, गृहिणी।

बीस-नि॰ दसका दूना, उन्नीससे एक अधिक; बढकर, श्रेष्ठ । पु॰ वीसकी संस्था, २०; व विष । -श्विस्ये-श्र० निद्वपपूर्वक, यकीननः बदुत कर्के ।

बीसना! - स॰ कि॰ शतरंब आदि खेळनेके लिए निसात देशता ।

यीसरना==अ॰ क्रि॰, स॰ क्रि॰ भूस जाना।

योसी-सी॰ बीसका समूह, कोही। साठ मंबरसरीके सीन-मेंने कोई विमाग; जमीनकी एक नाय।

बीड=-वि॰ दे॰ 'बीस'-'मीचड् में स्वार मुमवीदा'-रामा०।

बीहब्-वि॰ उवद-सावदः विप्रतः विमक्तः सुदा ।

भेंद्रशासः भेंद्रशिक्षा-दुर भाषदे गाव दोनेपाना एव तरहरा गाना । भंदन-पु॰ [सं॰] बरचः सुद्धः दर्तनः सुगरे । मीहना-स॰ डि.० दे॰ "धोहना" ह भीवमार्व-पुर देश 'बहार्दि' ह मंदरिया-स्ते । दोशार्ते वर्ता दुर्ग होते अनवारी ।

भेंदरिया-पुर्व देव 'बहुए' । दिव पासीर वर्ग । -वन-पुर भूनिम, वर्षात्र ह भेरमारां -भोः देश 'वेश्याल' ।

भेंदबाहर-भी शही । भेटा चतुः मोटा, परतनः शहश्य । चक्कोक्रच्यः शेर. द्विती शत्या मध्य श्री याना । सुरु -शूल्या-भेद शुरुता ।

र्भद्वाकी-को॰ [ite] दे॰ 'दटाशो' ।

भैदामार-मर्ग हर योशेशे होदना कोदमाः उठन-दूर भनाताः हेंद्रा ।

भीतार-पुर देरे, साशराया बद स्थान प्रशीपरका अवादि स्मा जाय, बीडास पाद्यात्ता देश श्रविदेल ह

भंतारा-५० मानुभीश भीतः देश भंतरः असमुद्र ह श्य -श्याद प्रामा-देश पत्तर आँश्रीका बाहर निक्रण 127,271 (

भैद्यारी-पुर अंतरका अन्यक्षः शेराम्बानेका दारोयाः = राजाची । और होससी बनी होते भवगाया होती

कोशीह म कीश, मधाना ह श्रीष्टिम्मानि [शेक] सदर ३ मुक लि विस्ता पेट १

श्रीहार-प्+ (१ र) पद्ध करि विश्ले अर्थशायाम शासदा

the until the foreign भौडिमा(मन्)-भी (मं) छन, बीसर ह

uffer-na (sie) foferen fil :

शहिल-पुर (र्वत) भागता कृतना रहित गाहरा दिल्ही।

foffmether i

भैरिहार-पुरुष्टि ह मंत्री-कर्न (त.) ए द्वारा है है है ।

sigingt-one [no] to foto

अंतीर-पुर (रेंग) चेपारे। विदिन्दा देश बरहुत। 一個個工一時 打造工具

1 Till - at + [1'+] 1 2 2 2 1

भेदील-इ० [मेर] सर्वत्रः व rie Minds ge gelad, :

मीतुक, मीतुक नद्दन (० ०) धानुह बदानी, वर्षाताब कुछ व Nelleuramen ba battent' :

र्वेशीमा नकुर र १९४१ को स्थाप को स्थाप कोई वे स्टार्टका

धीर्वनपुर सिन्, क्षापा गरिएकाइयाकासम्बद्ध दुरः 4443

교육원이 나무는 무슨 무슨 사람 그는 "건물이 목표 중점 문 मंत्रि-पुत्र (राज्ये स् देशर हेंद्रा लुका, मरित्रात हे र्वीब्दरमा - स० दि५ - ४०२० ३

भेदरमी एक्टर नक्षी व हिंग करें क्षा नहार ह الإولالمال دعاية أحداً وعاشة ف

테바다는 네가리에 막 밝는 6 80% 특성의 급드로 6

भैभागा-भव दिव शाय, देत बाहिया होगाने देखा रिकास ।

मेमारव-पुर [तार] गाद बारिडे हेंगानेश ग्रन्त । भैमीरी-की॰ एक महद्दा परिया ह में से हिल्लाको व गर, दर ।

भैमरः भैमार्थ -५० वर्ग मह्यम्हे (दिन्) श्रेषताक-सक कि भागा क्रमा, प्रमा बहा सहम,

र्दशस्य १ ऑबर--पु॰ शहरद् अभावते शहद्दा - क्षत्रहे-थो। क्षेत्र में जहीं पूरे वह करी थी शह और सुप्र शक्षे (दश्यातः पशुर्वीदे गरेकी अमेर्दे संगादी पान है। नक्रयन पुर सामाधिक शाहर । -धीराय-भीत बार रिट्यर मंदि अलेक्षी भीत, राष्ट्री । शुक्ष - में पह्ना-पर्द

क्षेद्रेने पहुंबा, यक्ता अहना । र्भेषश-५० भ्रमत्, धौरहः स्टर् ।

र्वेवरी-वरीव बण्या घषर, मारा विष, सारी वरा रहने की बीट व्यक्तिया बाबीका बाह केंद्रार बुधार, व्यक्ति की क्रमाः रातः द्य प्राप्तः भीतः वेदना ।

भैवासार-भाग जिल्ल पुराता हैरने कापा, वीर्

शक्ता । भैतासक-विक प्रस्तेशका, क्षणाकीत । म-3· [रां॰] रेचुना श्रदा शुक्रावाचे दर्पता प्राप्त थान्त्र सर्वेश क्ष्मया असर । -बद्या-और अपीध समनवार्व १ - पूर-पुर शाधिकोधा मद्द विभी रिवर की बद्धताचे बर्डाकाका द्वाराहरू जाया प्राप्ति च्याम-पु॰ हाराशास्त्रते अत्या दुवा पर स्थानिर्द मारियर्गे पुर और मंत्रदेशे छत्र रोते है। राजिया शहरत गतिकाते दरिसमत्। अशेकन्युः स्वरीश हमानवार्ते । च्यम-पुर रतीत्वदा स्थापस्य सर्वेशाः पुत्र अन्यास । - संदेखा-मार्गेनपुत्र हेत 'बार्डा' ! -शता-मी शायका अना -समृद्द-पुर रहरे

सर्ह १ –शृषक्ष-पु० व्यंभूति हे शक्ता-पुर सेनी वह अने वा बरायवनीय बीपानी -बी-पुरुक्षेदर प्रात्तवहें आक्षेत्र काले हैरे का बाहुत्व

बर्गातकता क्षत्र क्षत्रहरू शहीतिक सहते हैं। अक्रमाई -- शीर देव 'को शर्व ' ह

mung-nie er erne Chred unt tefft Brit fagnag & grat grat I no er enter f bege

चन्द्र सह पुरेषे किहनते हैं प्रान्त से संप अकारकारा-सन्दिन 'यह सद्' हाना दर्घ जना है TEREST WEST S

अक्षान्त्र - भाग स्था वर्षे सर्वेश्वे धर्य ।

श्रद्भावा, ब्रह्मामार्थ - कर दिल बाच वार्णाहे अर्थि

स्टर्ड को वहते हैं अन्तर स्ट्रा और राष्ट्र र प्राप्त स अक्टर हैं जबूब प्रदान के क्षेत्र, कोचा (का एक) प्रशासिक केन इ.स. चन्त्र है। इ

सक्षेत्रक सम्बद्धान्ति वृद्ध दृष्ट्रि, दिस्त्री कर्मापूर्व कि कहे हो !

胡寶 歌声,郑玄皇世纪一年《范文本文》《《花》中《篇》 भवत्रदः दिवा ह

(दिन्)-वि॰ वृद्धियादकी माननेवाला। -विलास-पु॰ वस्पना । — सेभव – पु॰ वुद्धिको प्रखरता, वुद्धिवल । –হান্ধি–লা০ ব্রহিনল। –হাল্ডী(ডিনু)–নি০ ব্রহি-मान्। - इत्द्व-दि० सच्चे भाववाला, नेकनीयत। -शुद्धि-छो॰ नेकनीयती । -सरा,-सहाय-पु॰ मंत्री। -हत्त-वि० वेभक्ष, निवृद्धि। -हा(हन्)-प्र॰ शराब (शक्किका माश करमेवाली) । -श्रीम-वि॰ निर्देखिः नासमझः । युद्धिमानी-छो० दे० 'मुद्धिमत्ता' । थुद्धिमान्(मत्)-वि॰ (सं॰) चतुर । विविवत-वि० अहमद, समगदार । पुद्धिय-सी॰ [सं॰] शानेंद्रिय, मन । सद्धी - सी० दे० 'तुद्धि' । बुदबुद-पु॰ [६०] बुहबुहा । युधंगह#-वि॰ मूर्स। पुच-पु॰ [सं॰] पंटिल, विदान् ; सीरमंदछका पक यह की प्राणीके अनुसार चंद्रमाका बृहरपतिकी पत्नी ताराके गर्मसे उत्पन्न पुत्र है। देवनाः कुत्ता । —चऋ—पु॰ मुपकी गतिका द्युमाञ्चम-गूचक एक चक्र । —जन-पुर पंटिन, विदान् । -- जायी • - पु॰ मुधके विना, चंद्रमा । -- स्टा-पु॰ पन्ना । -बार,-बासर-पु॰ मंगळवार और गुरवार-के बानका दिन, बहार दांवा । -सुत-पु॰ पुरुरवा । पुष्रधान - - दि० मुद्धिमान् । पुषान-पु॰ [सं॰] भागर्व । वि॰ विद्य, हानी: आगरित । **₹1-**₩

ब्रुद्धि-स्त्री॰ [सं॰] जानने, समझने और विचार करनेकी शक्ति, समझ, अङ्कः, अंतःकरणकी निदचयारिमका वृत्ति (वे०); प्रकृतिका पहला परिणाम, सहसत्त्व । -कामा-सी० कारिकेयकी एक मातृका । - कृत-वि० बुद्धिपूर्वक, · सोच-समझकर किया हुआ । -कोशक -पु॰ चतुराई। -ग्रस्यः-प्राह्म-वि॰ जो समझमें आ सके। −चक्कु-(स्)-वि॰ प्रज्ञाचश्च । पु॰ धृतराष्ट्र । -चितक-वि॰ बुद्धिमसापूर्वक सोचनेवाला । -जीवी(विन्)-वि॰ बुद्धिसे जीविका करनेवाला, दिमागी काम करनेवाला। -सस्य-पु॰ महशस्य । -दोच-पु॰ समझकी कमी, खरानी। −द्यस−पु॰ शतरंजका खेल। −पर+−नि॰ बुद्धिकी पहुँचके बाहर। -पुरस्सर,-पूर्वक-अ॰ स्रादा करके, इच्छा-पूर्वक, सोच-समझकर । -प्रामाण्यवाद-पु॰ 'बुद्धिवाद'। –थल-पु॰ बुद्धिका वल। –सोह-पुरु दिमागका धवका जामा । —योग-पुरु शानयोग । -बाद-पु० अन्य विषयोंकी तरह धर्ममें भी वृद्धि ही सर्वोपरि प्रमाण है-यह मत, 'रैशनलिउम'। -धादी-पुदिमत्ता-स्रो० [सं०] दुदिमानी, समझदारी ।

पु॰ बीद पर्मके प्रवर्तक गीतम युद्ध जो विश्णुके जब अवतार माने जाते हैं, सिद्धार्थ (अन्म ई॰ पू॰ ५५५०, निर्जाण ई॰ पू॰ ४४७)। नारा-टडी॰ गयाके पासका वह प्रवर्तक जहाँ युदको युद्धद्व माप्त हुजा। नृहयन पु॰ युद्धके रमृति-विद्ध (अरिथ, नख, केश आदि)। न्यस्मै-पु॰ बीद पर्म। न्युराण-पु॰ पराशररिका लिलकपुनिस्तर। युद्धयन-पु॰ [सं॰] युद्धपर। युद्धयान-पु॰ [सं॰] बीद पर्गके सिद्धांत।

बुधिक — सी० दे० 'बुद्धि'।
बुधित — विश्वि होता, बाना हुआ।
बुधिक — विश्वि होता, बाना हुआ।
बुधिक — विश्वि होता है।
बुध्य — विश्वि होता है।
बुध्य — विश्व होती होता।
बुध्य — विश्व होती होता।
बुध्य — विश्व होती होता।
बुध्य विश्व — विश्व होती होता।
बुध्य विश्व — विश्व होती होता।

बुनियाद-सी० [फा॰] जद, नीवें, आधार: आरंभा

बुनियादी—वि॰ मूलगनः नीवँकाकार्य देनेवालाः, आधाररूप । बवकना—ब॰ कि॰ दाद मारकरः, जोर-जोरसे रोना ।

ब्रनिया†−स्ती० एक मिठाई, हुँदिया ।

बुबुकारी-स्ती॰ दाद मारकर रोना । बुबुर-पु॰ [सं॰] जल ।

मु॰ −डालना,−रखना−भीवँ डालमा ।

युभुक्षा-सी॰ [सं॰] खानेकी इच्छा, भूस ।

बुभुत्सा-सी० [सं०] बाननेकी इच्छा ।

बुभुरसु-वि॰ [सं॰] जिदास ।

धरकाना-स॰ कि॰ दे॰ 'बुरकना' ।

बुभुक्षित, बुभुक्षु-वि॰ [सं॰] भूखा, धुधित।

बुर-सी॰ भग, योनि (प्रायः गानी-गलीजमें प्रयुक्त)।

ब्ररका-पु० [अ०] लंबा पहनावा जिससे बाहर निकलनेके

वक्त मुमलमान सिवाँ अपना सारा शरीर दक लेती है, - नकाव। - पौदा- वि॰ जो हुरका ओहे हो। मु॰- (के) में

पु॰ तुराई; हानि, अनिष्ट ।-ई-स्त्री॰ दे॰ क्रममें ।-क्राम

-पु॰ निदित सर्मः व्यभिचार ।'-भस्ता-दि॰ अच्छा-

बुरा । पु॰ हानि-लाभ (सीचना); गाली-गलीज; अपदाब्द (कहना, सुनना) ।—धहत—पु॰ दृष्टदा समय, विपत्साल ।

-हाल-पु॰ दुर्दशाः अधिक गष्टको स्थिति तकाही।

मु - करना - अनुचित काम करना, शानिकर कार्य करनाः

बुदशान पहुँचाना। "कहना-निदा करना, बदनाम

बरना । -चाहना-दुराई चाहना, (बिसीके) अनिष्टशी

कामना करना । -धनना-बुराई होना, दोपी दनना;

बदनाम होना। -मानना-दुःग्री होनाः नाशम होना।

~लगमा-नागवार रूपना, अध्या न रूपना ! - हाल

होना-सवाह होनाः धोर कष्टमें होनाः (रागाकी) हालत

विगदना । -(रे)दिन-विष्ये दिन, विप्यकाल । -०का

ब्रसाई-सी॰ दुस होना, ससानी, दोष: मुटाई, दुष्टता;

अपकार, अनिष्टः निदा, बरगोरं: दुश्मनी । -मलाई-

की॰ वेदी-बदी, अच्छानुहा काम । मु॰-आगे झाना-

साधी-विषयानमें साथ देनेवाला ।

वरकना-स॰ कि॰ चुर्ण जैसी वस्तुको छिएकना ।

र्छीछदे ग्राना-परदेम बदचलनी करना । बुरा-वि॰ राराव, दृषित; दानिवर; सोटा, कुवाली । भगपरीय-पुर्श्वको सगरहास्य १

सग्तपृ="प्रकार्" (सरहार्)द" सम्बद्ध रूप (-सीगा-बार करनेकर मैरायमे कुन्य द्वारा अर्जनदी दिवा सवा शान, भन्दि और वर्गशीय विवयस सप्देश ! - इस-पुक महारोधि वृद्ध । -भग्र-विक, पुरु मारावृद्ध भन्न, मेनार । अप्रतिह - भोन प्रयान्त्री गाँछ । अविप्रह -पु र प्राप्तान्छो सृति ।

भगपनमय-रिक (अंक) अग्रान्दे न-मय व

भगाया – दु॰ एवं, नगः सामाया तम रंगाने नेगा स्थान सम्र र भगराम्(यम्)-११० (०) रेचवर्धः पूरव । पुर पर्रमेशक्षा रिष्तुर दिश पुरा दिला पूत्रक

म दिमारासी दुरण । भगोद्य~तु० [गं०] बहायेह । भगाई ==भी : भगने से शिया है

शागाम्-पु वर्षादे शाहा अधीत वितृति ही प्रातिहाना गर्या वह गरहा भी कुधी वैद्य प्राप्ति वाद की व्यक्त है। भगामा-मन वि - दरश्यादादर यागन्धी विका बरना. सारेदमा, दुगदारमा: शी, वच्ये आदिदी बद्दक्षप्ट साव से बाह्य । व लव किन घारवा ।

भगाड-५० (ग) मनुष्यते शेषमे ।

शामाली(लिय)-५० (मं०) मन्ध्यशे सोर्श बास्य कालेशका, दिव ।

भगिनिका-की ((४०) महिला।

भारिति। न्योव हेर को शहिल, वेबीएरटा अल्यवनी और ह -पति,-अर्था(मे) -५० व्हारोर्दे ३ -हाम-५० अत्तर १ स्तिकीय-पुर्व [संत] स्रोता ह

भागीरम-पुर [११०] सूर्वक्या राजा दिक्किटे पुत्र जी मशा भागा है थि भीत गए करने गराकी ननरीर पुन्नीपर र सावे । -बजदा-सीच स्ता । न्यवस-प्रव सहायदासः अभाष्यास्य प्रयक्त । अनुसुरू नदीः शंदा ।

भगेषः । मगेल्य-विश् देश 'क्रवेश्वा' । धर्मपुर न बुव (ब्रेक्ट) येव्हर्ग देवतुः व

भागीया – दिश्व सामा बुभा । दणस्थिते भागने राज्यः एरति । शारीम्-पुरु शिको प्रमादे बन्दरी दिश्लेका दिवस्था ह

अर्थार्थी-दिन है। 'बर्थर्ग' । भागीनी रूपोर देव देवान्तरी ।

भारीक्ष्री-दिन सरीहरा समझा इन्दर्श होना वृक्षा, होदसा ह मगुल्ल-दिर राष्ट्र(देने साल हुसा, प्राहेश ह

बरमार्-दिक सन्देश, सर्वेग्स ३

भाग-विकृति है है। इस मुख्य, शंकित बहुत दिश्य मुख्य, सका देखा दुवना देशका दुवना दुवना हु है। देखा अभिन्या । नहार-दिश दिलाहर अद वेट हो कहा हो । -क्लिन्दि बच्चर्य, द्रिक्ष व च्येष्-दिव क्रिक Der fert fere it matemit -mm-ge en errer mer lifenis mig-fen find gir yn को भी । - दर्भ नहिन दिलका बड़द को बहुद महा कहा हो, । आपनीय-दिन (में) नामकर, मृत्या Month ! - Land & Sig Ed Bott titt ang. Marain-to te second as te main मन्तर पूर्व र निवस्त्रभावित की रुप्ति समय जन्तरीयानम्हाः अधिनम्बद्धान्तरित हिन्ती हेव विकासी है the many many good, vectors, place, where minerare make the off with any told 1" कृत्रीत्र वैक्तकार्टरः स्टूर सिम्बर्टरः क्रम्योप्टबर्ड कर्न्टरः । कारण र

श्र दिश्य दोष अन्या दें। -प्रा-ति। विश्वति देते, रीह हुर बादी की। सामानेने अपनेदाना है अध्यक्त-४५ हररफा हम दिवस भारत, बण्यक्ष हर्ने होता -प्रतिश्च-दिश दिशमें अपने इटिशा अव **ए**ए को हो। -मना(बस्)-विश्वामहास, श्रीभाषा -यहे-इच-दिन दिएल मने (ब, दिएइ) मने (व अन्दर्भ रा ही. माद्याम ३-माम-दिव सनचन, दिरहरू ३-दिय-बाह-दिर जिमके कीन हो तमें ही 1-अग्र-दिर शिक्ष लव हुद बचा हो ६ –धीर-दिन एएएरिएई। नर्भूए-दिन दे "मानविकार्य" । -संवि-ति विश्वी द्वांचा श्रेष टर राया हो । पुरु यद शेव । अनेदिक-पुरु क्रमान निवामा दशा रही, गेंग्ड र भवनोत्त-पुरु [क्ते] सुन्न पुष्यदा दी क्षण्यात्रमणीवकी देशे ब्राप्त क्षेत्र ह अस्तरमा(सम्)-५० (८१०) ५५४। र धानागर्-दि॰ [ते॰] दिलाने स्पती, धवरीय दिल

प्राप्त बार की दी। अग्मायरोष-५० (११०) सं१९९ । भागाय-दि॰ [१००] इतास । भाग्नी-सी० [में] है व 'ग्रांगनी' र अरबीकाह-दि॰ (६)०) जिल्ला जागह यह है। या ही। मानीयम्-दि॰ (तं॰) दिशदा प्रयथ दिएत हो दरा है।

शक्ट-ब्री॰ अवहाँका शब ना दिया है अच्छन्ना-सर्क जिन्हें सेराहोंने पुर सम्रशाह श्चरत्र ४ - यु ० हे ४ व्याद्य । হাৰপ্ৰস্থত-বিভ, বুভ বুঁভ নিবৃদ্ধি বি

अस्तात्व - पुर देव 'ब्यून्य' । अवस्थाना - मृश् दिश शास्त्रा, यक्षण वर्ता । भक्कर-दिन, पुरु [धंन] अवन वरित्र चररेनवा विवन

arares (भवन-पुर्व (संग्रेनेस, आस्प्रत) सम्बद्ध संग्री देवताबा माथ मनमा, स्मारण भारतात का देशा हैरतारे क्रमेन्द्रे इतिय दर हिंदिने। अन्तर हिरामन । न्यूप्तर पुर वृज्ञान्यामार -वारिश-पुर केंद्र शिलार वर्ष

4.440 सत्रमा-ता दि । वेदान्त्राचि कामा वसर है।परी die neuen naufe mited gene mite fei

क्र समाप्त पर्दे पारत् । भाषवार्तव-पुर्व (१०) स्वत्यत, भगान्ते वात वारेश क्षानंद । दिन सबस्ये नवर्षात रहरीयाना र अञ्चलकेती-दिव अवस्थान्तः, अन्दरप्रकृते प्रवर रही

भ्राप्तशी-दिश समन स्टोराणा ।

सबरीह, ध्यूकीपृदेशह -पूर अपन अपन वर्षी कार्रेशभाः १

मृदी-बि० स्त्री० दे० बिदुर्ग । -ईद-स्त्री० वह देद जो । रमजानके पूरे ३० दिन बाद होती है । -छड्डो-स्त्री० वहुत बुदी स्त्री ।

चृत−पु॰ दे॰ 'चृता' ।

यृता−पु॰ वल, शक्तिः वस, सामध्ये ।

बूना~षु० चनारका पेड़ । बूम−स्री० [का०] भूमि, जमीन ।

यूस-आर्ग कि देव 'बृहना' ! यूरना*-अर्थ क्रिव देव 'बृहना' !

वूरा-पु॰ कवी बीनी; चीनी; चूर्ण ।

सृंद−पु० दे० 'वृंद' ।

र्षुदारण्य-पु० [मं०] बृंदावस ।

र्धुद्ग-वि० [सं०] पोपक, पुष्टिकर । पु॰ पुष्ट करनाः एक

तरहकी मिठाई । धुक-पु॰ मेडिया; गीदड़ ।

일하~성이 어떤데; 제국수 !

शुगल−पु० [सं०] दुकशा, खंड; मास । धृरज्ञ=−पु० दे० 'ब्सु' (

यूप-पु० दे० 'शृप'। —केतु,-ध्वज-पु० शिव ।

यृपभ−पु० दे० 'वृषभ'।

षृषिका, वृत्तिका-स्रो० (सं०) दे० 'धृषो'। षृषी, बृत्ती-स्रो० (सं०) किसी आपि वा संत महारमाका

भारत ।

श्वर पुरुष्ट प्राप्त रूप। "जयन"। १९ वर्ष नितंशेवाला। "जन-पु॰ नामो, यशस्त्री पुरुष। " जीतक-पु॰ नराइमिहिस्-रक्षित जातकप्रेय। "जावाल-पु॰ पुन्न उपनिषद। "जीवंतिका, जीवंती-स्त्री॰ एक

भीपभि, महाजीवंती । वृहत्रुद्धा-पु० [सं०] भेरी, टंका ।

प्रतिका-सीव [संव] उपरमा, द्वटा ।

हरते न्त्रीः [सं०] वर्षा दोणाः नारदकी दोणाः ३६ की संदर्धा न्त्रीन और रोइते दोवका एक मागः बनमंदाः भट-बटैयाः वाणीः एक कृतः उपरमा ।—यदि—पु० ब्रह्मपति । पुहरू—वि० [सं०] बहाः विद्यालः लंबा-चोहाः च्यक्तिसालीः

पनाः चमकोङाः सप्तः उत्या (स्वर)। पु॰ विष्णुः पक सर्त । - क्षंत्र-पु॰ विष्णुदाः मात्राः। - क्ष्मा-की॰ धानाव्य-वित कहानियोको पुस्तकः। - क्षम्य-वि॰ विद्याल-कादः वरे शील-विश्वातः। - क्षांति-वि॰ वहुत चहासी। - क्षांत्र-वि॰ वशे शीहवालः। - नेक्ष्तु-पु॰ व्यावः। - क्षांत्र-वि॰ वशे शीहवालः। - क्षेतु-पु॰ व्यावः। - क्षांत्र-वि॰ वशे शीहवालः। - क्षांत्र-पु॰ व्यावः। - क्षांत्रावकी-को॰ पक्षः सहस्रकः कुनक्कः। - व्यावः।

नीम । न्यत्र-पुर हाथीयंदा सपेर होया काममर्थ । नपर्य-पुर सपेर होया -पाटिल-पुर धर्मा । न्याद्-

पु॰ बरमद ।-पार्स्टी(किस्)-पु॰ बनजीरा !-पीर्सु-पु॰ पदाप्री कसरोट । -पुरुप-पु॰ वेटा; केटेका पेड़ । -पुरुपी-स्त्री॰ सन्दर्ध !-पुरुट-पु॰ चिचन्ना; तुम्हवा;

-पुरपी-सी॰ सन्दे। -पाछ-पु॰ विचशाः तुम्हशः ष्टरस्य।वि॰ लामदायसः -सहाय-वि॰ शक्तिशाली

बृहद् - 'बृहद्'का समासगत रूप। - अंग्रा-वि० जिसका शरीर महा हो। जिसके बहुतसे भाग हों। पु० हाथी। -आरथसक -पु० दस सुख्य उपनिपदों मेरे एक । - एस्ट्रा -

'मित्रवाला । '

की० वड़ी इलावची । -दंती -क्षी० एक पीधा ।-दंल-पु० सफेद लोधा समर्पण ।-दंली-की० छनाल् । -वला की० छनाल् ;महावला,सफेद लोधा !-वीज-पु० भामहा। --भंडी-की० शायमाणा छता । -भट्टारिका-की०

्रांडी-सी० श्रायमाणा स्ता । न्याहास्कान्सी० दुगो ! न्यासुन्यु० अग्निः चौताः सूर्व । न्युज्ञ-वि० स्त्री शुआर्थोवास्त । न्ययन्यु० देहः स्त्रासंभक्ता स्ति । न्यादी(विन्) न्यु० एक सरका छोटा उत्त् । न्यारी(दिन्)-यु० सोतासासी । न्यस्त्री-सी० करेला । न्यादी(दिन्)-

वि॰ बद्-बद्दकर बार्ते करनेवाला, टीग मारनेवाला । खुहनू— बृहद[्]का समास्मात रूप । —नसी—सो० स्क विशेष पंषद्रक्य । —नट—पु० शर्तुन । —नह-पु० स्क तृषः अर्जुन । —नट—पु० शर्तुन; साँह । —नटा-क्का॰ अर्जुनका विराटके यहाँ की-स्पर्म रहते समयका नाम ।

-नाट-पु॰ एंक राग ! -नारदीय-पु॰ एक उपपुराण ! -नारायण-पु॰ एक उपनिषद् ! - निय-पु॰ महानिव !

-नेत्र-वि॰ द्रदशी, बुद्धिमान् ।

बृहस्पति—पु॰ [सं॰] शीरमंडलका पॉचवॉं और सबसे वश महः एक ऋषि जो देवताओं से गुरु माने जाते हैं। एक स्मृतिकार । —खक—पु॰ ३० मंबरसरॉका चक । — पुरोहित—पु॰ ईंद्र । —वार—पु॰ गुरुवार । —स्मृति—

स्त्री॰ बृहरपतिकी थनायी हुई रसृति ।

धॅग#-पु० मेदक्।

बेंच-की० [अं०] रुकड़ी-स्टोहे आदिको संबी, कम बीड़ी बीकी। जनका आसन, पद: न्यायालय; न्यायालय निरोपकी विचारकर्ता। आनरेरी और रेपेशरु मजिस्ट्रेटीका शत्रसाम, पार्कप्रद: व्यवस्थापक समार्भ पक्ष-विशेषकी बैठनेका स्थान।

बँट, बँठा - सी० मूठ, दरता । बँदु - सी० चोड़, टेस ।

बँड्ना-स॰ कि॰ वंद करनाः घेरना।

बँहा = -वि॰ आहा; सदिन । पु॰ घ्यों हा ।

विंड्री-सी॰ वेंसकी छिछली टोकरी किसने सिचाईके किय ताल आदिका पानी बलीचते हैं; दे॰ 'नेड्डो'।

र्वेत-पु॰ यक रुता जिसका ४८रू मश्रवूत और रूचीका होता है और टोकरे आदि बनानेत्रे काम आगा है; बेतती छड़ी: मु॰ -की सरह काँपना-हरसे बहुत काँपना।

वैद्द्ती — स्त्री॰ विदी, टिक्सी।

यदा-पु॰ वही दिकली; माधेपर्का एक गहना; दीका, तिलक।

वैदी-सी॰ विदी; टिकली; सुद्रा; माथेपर पहननेका एक गहना ।

विवहा-पु॰ व्योहा, अरगत । विवता -सा॰ दे॰ 'ब्यो त'।

यवता --सार्व कि० दे० "ब्योतना" । वैवसना--स॰ कि० व्योतना । वैवसना --सर्वे कराना ।

धे-अ॰ जरे, अने (का॰) दिना, नगर, नियाय । पु॰ फारती वर्गमाञ्चला दूसरा अञ्चर ! -अति#-वि० अधाह, भारतिकी-भार भारेदी रेटि ह भगुभाः! - पु = देश । भगा-द धर्मवारीसे दिवा वानेशका एकद्वार्व दा भी पत्र-वक्षा कीर्द में भी पहला भी कर्त आधि में पत्री महिर्देश विने १ मर्चय-विश् (वंश) पुरित्य, सामहित्या स्थव्याप । पुरु बीम्र fan i महर्देश-दिश मारीमें होनेशाला है और मारीने हीनेशायी भगाह-पुर्व (१३३) हीयण्य, अभूतप्य ह अष्टावर-४० मरेमान क्यानियर शक्तके अंतर्गय-एक अदेग्दर-दिर में। हा, देवता १ भवेतिया – दिश्टेश 'मोल्' ह भवतित्र-विश्व देश 'गरीहाँ '। मर्पार्टी व्यक्ति मार्पाने होनेनाना (गायः समस्य ४०) ह शकीतिया~तर गरावरका वक्षतेवात्यः शवियोध्ये दक 42 MAP શાજા-વિક વેરેલા, શ્રીકા, તેરીમાં સાંદ્રણ સંગ્રુષ્ટ કે – જાસ– युक्त विद्याराज्याः क्यारिक्षणाः अञ्चलकाः व शालीकार-दिन [गोन] योगणकात्रक, शुध्य ह प्रदर्शक्त चनुक (शंक) संदानगरपन क शक्त-दिक विकि शक्त, शहर क्षूप्त, शहर कारी श्रेता संदर्भ मुख्याला सम्मानिकाला होता कोला है। welter eben mit femier femme ebenfeber wu nem (polie); fin: nu mujent undbitenter und, un Cariff autrifenelt un unfelt mifie. જાઈ ત્યાં માર્જદાર મેજના પ્રદેશભગ ! જ દિલ્હ કેલ્પુંટ જિલ્લ दारी महिद्दा हरने हुन। दी-लिन्दी हरव नगाव हर प्रमु चुरान सद्य सबै नवी भारते - खुर र-बाँड-पुर शीररहा। न्यापिकनपुर दिश्व ३ - कायानिक शहर, अन्य देशwint i -wiem-fen ihme tien i de maturede बरिए एक प्राचीम देश र नकार्यो नगोर दुरादा एक क्षा करिन्देवदी वह मापुरा । -बार्स्स-स्ते० स्टब् Rimi 1 一般1在一篇中多大的6 1 一篇12一篇中 电电影的图 करा द्वार रक्षेत्रम् सम्मान । नक्षित्रम न्द्री । होत्रम भशक्तिपुर्भाषु र से एएरिंगार्ची अंग्लेश अर्थनी होता ह स्वाहर - धर्म-पुर म रहि विद्यार्गेक्ष यहा । लक्ष्यानपुर क देखारी में प्रशास कर राज्य व के बाद है । च्यू है च्यू है व्यू है व द्वित्र, रोक्ट तुन १ लक्षल्येर ६८ पुर, लक्षतंत्रवेर क्षत्र अपन्य क्रिक्ट प्रत्य हरिक । अनुसूक्षी नहीं न ११मद्भावद भारती द्वारता -सीत-१० अव्यवपूर्व भीति एक दीवे । समुद्राप्तसम्बद्धाः अवृद्धाः के करिन्दी अर्थे केरे एक र नर्ग - पुत्र वट लागुद्धर कार्यो र अर्थे निकास Mit Keit an gen - mid-Ar geliefe - mild-De beige eine na Len matifich eine पुरु भौरतिकः, करायोग्याः । अस्योग्रहा-भागः भागात्रः ।

अधिकिमानी । प्राप्तके देशह बदाप्ता प्राप्त अपि आर्टिका है

集体表 化奎醇 化配头 大大 经。 对于恐惧 自然 自然 医心脏性 一色 软膏软件集化剂的复数单点

पुरु बाह केंद्रिवाशक है -चीर -दुर होता आगर, से की रिलंडर कियी दाजा का देशसाता गरिकेट दिए ५० स्य द्रार्थं कीहर र अपूत्रपान्यु र देश मित्रपार अहता -- देन बन्द्रश्चित -- अग्रह-को ४ स.व.श. अग्री, अग्री/द मारा व नवात्त्वनपुर वीर्वदारेक्षे वर्त्यो कार्युक्त व्यक्तिका का दुष १ - भूजारा-शी० एक देश १ - मंद्रा-मद्र-पुर वर्ते तरहता दानी ३ -- समारी-न्यो । देरण्यते काल -सहिद्या-स्थे॰ दशक्षी १-श्वीत्र-तुः शाका (-सूत्र-दिक सुरह, धनाम चेहरेव था । पुर रक्ष अन्ता - सुन्ते-भीः भरत्ती (दिशारीयन) । - मुख्य-पुर,-मुख्य -मी- मानस्थीया ३ -मान-पुर प्रद शर्दश प्राथे । -मय-पुरु देहरी । न्याम-पुरु यह रीह अपूर्ण । स र्वेणु-पुरु वेदावत्त । —होहियो नगी । अह्ना । –क्ष्र-पुरु एवं प्रापीत होते । -बर्मा(मेंब)-१४ एउट्रिका -वृत्तिका-कीक रीप्पातिः अधेन्यम । नवृत्ति-कोक व्यक्तिकाः सापन्ते । अविष्युअनुपर्युपन्ताना प्रवाहाना fanz (u)-ve se elev i -mit-ei ele बेद १ -धय:-धिय:-धी-पुर परन १ -धेयन्द रिकेटलाई, पुरेबली बारालामेंहे एक राजा। नार्यन की। देशी र नक्षेत्र-पुर देशकी गामने प्रतास बहतेश वह पुत्र । –सीहार–सीर हरू महिन्स्या । अञ्चल-विक [यक] देव कियाँ हे पुरु ग्रीपार देशार है अञ्चलिकारिक हिंदी कुण्यकी सक्ष प्रदेश स्थिति स्थाप भारतास्(क्षा)-दिव [००] भेतवस्य ६ पुर देशात् ^१ भक्तीग्र-५० शिक्षे बनशम् । माहा-रिक स्टीन (र्वान) प्राप्त । स्टेन अल्ड प्राप्ता व्या ledest ferral eredt with gieth felest, efter इसीनिकार शास मार्थने हिन्द एक विशेषक मेंग्या प्रवर्ती gelier giebtigeren warn unteler ben Begir mait fatte aft dat dag i Branch. हैंबल बरवा, बावा प्रश्तित बीमा ह restanted and final test period and become शक्षाकृति नदिन हैरोन्द्रे शहर, मन्य न्द्रार्टन्यण्या भाइतमात्र-५० (गर) वात १ अक्रोज़ीय-यन रितेन्द्री बन्द शाल्यक्यी क्या अनामी हिंदीन ने भद्रासद्धनाँवर है। भी मना देश ह MINISTER - Go [or o] ME SE SE SE LES LES LES AND A ME I ध्यक्षांचार्यसम्बद्धाः वर्षत्र हेलाची सन्दर्भार व mural-she loof at all ! 建聚苯甲醇 一日記日 青日 中華 化红化树 大安 日,京市村 安徽 安徽市 अध्यक्तकार्य नहिन्दी र ने अद्रन्तवार है है MERCHE-TO LOW PORK ! males-An fem? gal eg by ang ar ar erjar 48 568 सक्तिस्थल चेंड है। भी डाबाधराज्य में अन्तर के सबस्क सहित्रा नका है। मूं स्वाहक दिए कर देन स्वाहतीय 我你我 promis 你好有情与行 till yoka \$16 5 보다가 어떻게 내 이 이 이 있었다는 사람이를 나왔다는 생고싶다. [अदर्श (दिक्ष) - हिन्द कियों + स्पष्ट अधि व

त्रिसका दखल, करना इटा दिया गया हो। -दुखळी-स्री॰ कच्चेका हटाया जाना, असामीका खेतसे वेदखक कर दिया जाना । - इस-वि॰ बेजान, सुद्धि बहुत कम-जीर, शिथिल । -वरेग़-अ० विना सीचे-अटके, बेधहक । वि॰ संकोच, आगा-पीछा न करनेवाला ! -दर्द -वि॰ निद्रा, निर्दय; जालिम। -दुर्दी-स्ती॰ निर्देवता, वे-रहमी। * वि॰ दे॰ 'बेदर्द'। -दाग्र-वि॰ जिसमें कोई · दाग न लगा हो, निष्कलंक, निदौष । -हाड-स्ती॰ ·भन्याय, जुल्म । - • सह-वि॰ जुल्म करनेदाला, भन्यायी। -दाना-वि० विना दानोंदाः मूर्ख। पु० भनारका एक बढ़िया भेद जिसके दानेमें नामकी ही सीठी होती हैं। एक तरहका शहततः विहीदाना ! -तामिशी-खी॰ मासमग्री, वेअकली । -ताम-वि॰ मुपत, विना दामका । [-०का गुलाम-वेपैसेका गुलाम, षाशकारी ।] -दाया-दि० दावा न करने, अधिकार न जतानेवालाः दरतवरदार । -दिमाना-वि॰ अप्रसन्नः यदिमजाज । -दिल्ल स्वि॰ खिन्न, उदास, भग्नहृदय । -दीद-वि॰ वेसुरीवतः निर्लब्ज। -दीन-वि॰ धर्मभ्रष्ट, धर्मको न माननेवाला। -धडक-अ० निभंव होकर, विना शोचे-अरवे । वि० निर्मय । -धरम-वि० धर्मभ्रष्ट, जिसका धर्म नष्ट हो गया हो। -धीर - वि० धैर्यरहित। -मंग-वि॰ निर्लं जा। -मजीर-वि॰ वेजोड, अनुपम। -ममक-दि॰ फीका, देमजा । -नवा-दि॰ दीन, अस-स्थ । पु॰ ससलमानोंका एक फिकां। —लाय-वि॰ न नापा हुआ । -नाम-दि॰ ग्रमनाम । -नामोनिशान-वि॰ वेपता, जिसका पता-ठिकाना न हो । -निमन --वि॰ सदितीय, वेजीइ। -नियाज्ञ-वि॰ जिसे किसी चीजकी चाह या आवदयकतान हो, नेपरवा !-नियाज़ी-षी॰ किसी चीजकी चाह, परवाह न दोना । -नियास-वि॰ नियामसे बाहर, नंगी (तळवार)। -नृह-वि॰ जिसकी उपोति चली गयी हो (आँस)। -पनाह-वि॰ जिससे बचाव न हो सके: निराशय । -परदगी:-पर्गी-सी॰ परदेका इट जानाः भेदका प्रकट ही जानाः पैरमती। -परता-वि॰ परदेसे नाहर; जिस(सी)का सुँद खुला दो; प्रकट, खुला । -परया,-परधाह-वि॰ शिवे किसी शातकी फिल न हो, निर्देह । -पश्चाई:-परवाही-सी॰ विफिनी; लापरवार्र । -पाइक-वि॰ निरुपाय, भीचक । -पीर-वि॰ निर्दय, दूसरोंका दुस-दरं न समदानेवालाः निगुरा। -फ्रसल,-फ्रस्ल-वि॰ देमीसमः वेवक्त । [-० की यहार-वेमीराम चीज (सोमचेवाले नेमीसम फल बेचते समय बहते हैं)।] ~फायदा-वि॰ जिससे कोई लाम, फल न हो, बेकार। -फ्रिक्र-वि॰ चितारदित, वेपरवा, निदंद्व। -फ्रिका-वि॰ वेफिनः। -फ्रिक्री-छो॰ निश्चितता। -बद्छ-वि॰ देवोह, देशिरल । —यरकत्त-वि॰ विसमें दरवत न रो, जिससे पुरा न पहे। -यरकती-वि० वरवान न होगा, पूरा न पहना । -वस-दि॰ दिवश, काबार, भग्रहाय । -पसी-सी॰ विश्वाता, काचारी ।-बहुरा-रि॰ अमागा; बिसे कुछ भागा भ हो, नेरस्म, बेटुसर ! -बाक-वि॰ निटर, धीठ । -बाक्र-वि॰ जिस(दिसाव- खाते)में कुछ बाकी न हो, चुकाया हुआ; जिसने पूरा पावना चुका दिवा हो। -बाकी-सी॰ निर्मयता, धष्टता । -बाकी-सी॰ वेवाक होना, चुकता, पूरी सफाई। -बाल च पर-वि॰ असहाय, दीन-धीन। -विनयाद-वि॰ विना जहका, निर्मूल; मनगरंत। ~ब्याहा-वि॰ अविवादित । -भाव-वि॰ वेदिसाव । [स्० - ० की पहना - वद्दत मार पहना।] - सज़ा-वि॰ स्वादरहितः वदबायका । - मतलव-४० निष्पयी-जन, वेकार l वि॰ निरर्थक l -मनका-प॰ जिसमें मन न हमता हो। -मरम्मत-दि॰ जिसकी गरम्मत न हुई हो, द्रशास्त्र । -सरम्मती-स्री० वैमरम्मत होनेका भाव। -मसरफ्र-वि० अनुप्योगी, वेकार, निकम्मा । - सहरू - वि० वेमीका । - मानी-वि॰ अर्थरहितः वैकार, लगो । -मास्ट्रम-वि॰ जिसका पता न लगे, अशात ! - मिलायट-वि॰ खालिस, शुद्ध । - मनासिय-वि॰ अनुचित । - मुरीवस-वि॰ निसमें लिहाज, सुरीवत न हो, तोताचरम । - मुरीवती-की॰ बेसुरीवत होना, तोतायहमी। -मेल-वि॰ जो मेल म खाता हो, अनमिल, बेजोड ।-सेह-वि० वेदर्द, निष्टर; निष्करण । -मीक्रा-दि॰ जिसका अवसर न हो; अयुक्त, नासनासिव । -भीक्रे-व० असमय, विना अवसर्क -मीत-अ॰ विना मीत आये. विना कालके (मरना)। -मौसिम-वि॰ बिसका मीसिम न हो, असाम्यिक । अ॰ दिसा उचित समयका !-रंग-वि॰ वेमहा, देलका । -रटत-वि॰ वेमेल; वेमीका । -रस-वि॰ रसहीस, देमजा। - रहम-वि॰ जिममें रहम न हो, निर्देश। -बहुमी-सी॰ निर्देयता, नेददाँ ! -राह-वि॰ प्रथम्रष्टः क्रवाली । -राही-की॰ पथत्रप्रता, ग्रमराही; क्रवाल । -रिया-वि॰ निरष्टक, सरक, संचा। -रात-वि॰ बेसरीबतः रुष्टः प्रतिकृत । -स्त्रती-स्ती० धपेकाः प्रति-कलताः देमरीवती । -स्पां-वि० करूप । -रेश-वि० जिसके दाडी-मुँछें न आयी हों। -रेशा-वि० विना रेशेका (आम १०)। -रोक-टोक-अ० बिना किमी रुका-बटके, बेखटके । -रीजगार-वि॰ जिसके पास जीविवाका साधन न हो। नीकरीसे अलग किया हुआ, वेकार ।-रोज-बारी-खी॰ देरीवगार होनेका मान, पेकारी। -रीनक-वि॰ जिसकी शोमा, चहल-पहल चली गयी हो, उदास । -शैनकी-सी॰ वेरीनक दोनेका माव । -स्टगास-वि॰ सुहँ बोर, सरकश, दाव म माननेवाला । [म०-० सुनाना-दोट्क कहना; बहुत यालियाँ देना ।]- सउज्ञास-वि॰ वेगवा, स्वादर्शहतः निष्याल । -लाग-वि॰ किसीकी स-रिभावत न करनेवाला, खरा; दोहूक (बात) । -सिहाम्-वि॰ दे<u>म</u>रीवनः निर्नेश । -सुरक्ष-वि॰ बेमजा, रसरदित । -ाजुल्ही-स्थी॰ रसभंग, बदमजगी, आनंद न बाना । ⇔सीस-वि॰ सरा। किमीका लिहान, भुरीवत न करनेवाटा । -स्टीमी-मी॰ रारापन, निष्प-छना। -बक्रअत,-धक्रत-वि॰ प्रतिहार[देत, तुन्छ, नगण्य ।-यत्रूर-विव सुरह, जलोल, बहस्त ।-यत्रुरी-को॰ बेरञ्जती, बिहन ।-बक्क-बि॰ निवुंद्रि, नासमञ्जा -वक्की-मी॰ नासमशी, मृतंता । -वन्त-अ० अस-

बेटी-सी० लड़की, पुत्री; बड़ेकी औरसे बालिका या जुब-तीका स्तेइस्चक संबोधन । ∸धाला चपु० कन्याका पिता । -व्यवहार-पु॰ विवाह-संबंध ! अ० -देना-वेटी व्या-इना । -छेना-किसीकी बेटीसे ब्वाह करना । येरीना - पु० वेटा । बेड-स्ही॰, दस्ता, मूठ । **येउन-पु॰ पुस्तक आदिको गर्दसे बचानेके छिए उसपर** लपेटा जानेवाला कपड़ा, खोल । बेड्-सी० बाह्, थाला। बेदना~स॰ फ्रि॰ बाइ लगाना, धाला वनना । बेदा-पु॰ लट्टों या तस्तोंको बाँधकर और उनधर बाँसका टट्टर रसकर बनायी हुई नाव: नावी या जहाजीका समूह; नाव । भु • - द्वायना - काम विगइमा, नष्ट, सवाह होना । -पार होना-संकर कटना, काम हो जाना ।

वैदिन, वेदिनी-की० नायने गानेका पेशा करनेवाली सी, येदी-स्रो० केदियों, हाथी घोड़ों आदिके पार्वोमें पहनायी

जानेवाली लोहेकी जंजीर, निगड (फटना, पड़ना)। वंधनः छोटा बेडा, नावः दे० 'बेंची' । वि० स्त्री० कठिन । येद-पु॰ घेरनेका कार्यः नाशः अंकुरित वीज । येदई-सां पीठी भरकर बनायी हुई रोटी । पेड़ना-स॰ कि॰ बाइ बनाना, रूँबना; होरोंकी घेरकर

हे जाना । मेदा-पु॰ एक तरहका कहाः सकानकी वारी।

बेणी-स्री॰ दे॰ 'बेणी'। –फुल-पु॰ सीसफूल। येत-पु॰ दे॰ 'वे स'। -पानि-वि॰ जिसके हाथमें वेत या देश 🚮 ह

पेतना *-अ० क्रि० जान पड़ना । षेतवा – स्ती० बुंदेळखंडकी एक नदी।

बेताल-पु॰ दे॰ 'बेताल'; दे॰ 'बे' में 🕸 चारण।

येर्∽पु० दे० 'वेर'; [फा०] वेंत। −बाफ्र∽पु० वेंतके िलवेत्ने कुरसियाँ आदि सुननेवाला। —वाफ्री-स्ती० वैदबाफका काम। - मजन् - दु० वे तका एक भेद जिसकी टहनियाँ जमीनकी और सुकी रहती है। →सुद्रक-मु० येनका एक मेद निसके फूटोंका अर्फ दवाके काम बाता है। धेदन=-स्था० दे० 'बेदन'।

षेत्ना-सी० दे० 'वेदना'।

थैदमाल-सी॰ वह तस्ती जिसपर सिक्लीगर अपना भीतार रगदते हैं।

थेदार-वि० [फा०] जागता हुमा, जागस्कः चौकत्रा । ~यहत्र-वि॰ भाग्यद्यासी । -मग्न-वि॰ बुद्धिमान् । ~बास-जागते रही (चीकीदारीकी आबाज)।

पेदारी-सी॰ [फा॰] जागरण, जागस्कता । वैष-पु॰ छेद; मोती, मृते आदिमें किया हुआ छेदः

देव दिया।

येथक-४० देधनेवाला ।

वेथना-स॰ फ़ि॰ छेर करना; पाच करना। वेधिया-पु० अंकुश ।

वेन = - पु॰ दे॰ 'वेनु'; मदुबर !

बेनर-नी॰ वंद्कमें सीनी रहनेवाली संगीतः 'ब्वीनेट' ।

बेना-† पु॰ वाँसके छिल्वेका बना हुआ,पंछा; एक गहनाः * खसः वॉस I

बेनिया! -सी॰ पंती; किवाइके पहेंके किनारे दूसरे पहेंको रोकनेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी।

बेनी-स्री॰ सियोंकी चोटी; त्रिवेणी; किवाइके परलेके किनारे लगायी जानेवाली वह रुकड़ी जो इसरे परलेको

ख़ुछनेसे रोकवी है। वेन-प॰ दे॰ विष्'। चेनीरा-पु॰ दे॰ 'विनीला' ;

बेनौरी-सी॰ दे॰ 'वनौरी'।

बेपारा-पु० दे० 'ज्यापार'। बेपारी ने -पु॰ दे॰ 'व्यापारी'।

वेमारी - स्त्री॰ दे॰ 'वीमारी'। बेमी सम-वि॰ दे॰ वि'के साथ।

वेयस-पु॰ यानसामा, बेरा । बेर-पु॰ एक प्रसिद्ध फल; उसका पेड़; देर, समय; शरीर ।

स्ती॰ वाद, दफा । -जरी-स्ती॰ शक्वेरी । वेश्वा । - ५० कलाई में पहननेका कहा।

थेरा! – स्ती॰ समयः सर्वेराः, दका। पुरु मिला हुआ औ और चना; * वेड़ा, नाव; पोत समृह; [अं०'नेअरर'] किसी बढ़े अफसरका चपरासी जिसका काम चिट्टी पथी। संदेशा बादि लाना, ले जाना हो; खानसामा

बेरादरी! -सी॰ दे॰ 'विरादरी'।

बेरामां-विं॰ दे॰ 'बीमार'। वेरिभा, बेरियाँ - सी॰ वेला, समय ।

बेरी-खा॰ मिली वर्ड सरसों और अलसी: # दे॰ विहा': # नीका । प्र॰ खत्रियोंकी एक जाति ।

बेलंद#-वि० बुलंद, कॅचा १

येलंग≠−प० विस्त्र, देर । बेल-पु॰ एक प्रसिद्ध फल वृक्ष जो हिंदू धर्ममें पवित्र माने गये ब्रह्मों में से है; इसका फल, दिल्व, श्रीफल। -गिरी-स्री॰ देलके फलका गुदा। -पत्ती-स्री॰ धेलपत्र। -पत्र

-प॰ बेलका पत्ता । -पास-प॰ बेलपत्र L बेल-की॰ जमीन, दीबार, पेइ आदिपर फीलतेबाला दिना

तनेका पीथा, खताः वंशः कागन, कपः आदिपर रंग, रेशम आदिसे बनाये हुए लक्षाको शब्दके फल-पर्छ। कपरे-पर टॉका जानेवाला फोता जिमपर जरीके तारींसे फूछ॰ पत्तियाँ बनी हों; दाग-बेल; ब बेला ! - बटा-पु० कागज, कपड़े आदिपर बनाये जानेवाहे फल-पत्ते। -हाशिया-पु॰ बेल छापनेका उप्पा । सु॰ -यदना-वंदा बदना। -मेंदे चड़ना-कामका पुरा होना ।

बेळ-पु॰ एक तरहकी कुराल । -चा-पु॰ छोडी कुराला लंबा शुरुषा । -हार-पु॰ फावहा चलानेवाला सहदर ।

–दारी-सी० बेलदारका काम । येलडी, बेटरी - मी० देल, सना ।

बेलन-प॰ बाटका बना लक्ष, गोला दरता जिपसे चय-है-पर रोधै। पापट आदि देखते देः पत्थर वा लोदेवा भारा

मोना जिममे सक्क मादि दबासर बराबर बरते हैं,'रीएर'; छापने, रैम पेरनेकी कम मारिका भेजनकी सन्तरा

ł

रिम्र गाल जो जन्त हो जाय ।

कामके लिए इकटा बैठना, जमावः जलसा, अधिवेशनः चरता-बैरता. सहबत: मर्ति वा खंधेके की बैका आधार: उठने बैठनेकी कमात: एक पँचा बैठकी: एक तरहकी पत्रा, नियाज । -- स्वासा-४० बैठने, मिलने-जलनेका कमरा । -याज -वि॰ धृतं, शरारती । बैठका-प॰ बैठने या मित्रोंसे मिलने-जलनेका कमरा । र्वेदकी-स्थीव उपने वैद्योगी समहतः भागतः मेजपा राज-बर जलानेका क्षेत्र, 'रेवल-हेप'। धेरन - छी० वैठनेजी क्रियाः वैठनेका दंगः आसन । चैरुना-अ० क्रि॰ इम तरह स्थित होना कि चतुङ जमीन ·या विसी आसन्तर रिका उहे और कमरसे ऊपरका धट एसके वस सीधा रहे, आसीन होना: चढना, सवार होता: इजलास करसा: अपनी जगहपर ठीक आना-छोटा-यहा स होना (चल, नय); (नस, जोएका) अपनी जगहपर था जाता: ॲटना; पॅसना, दबना; गिरना, दहना (घर): तहमें जमनाः तीलमें ठहरनाः खर्च होनाः पदना, कराना (काठी), टंडा); (स्त्रीका) रखेली बनना, परमें पड़ना: वेकार रहना: इथना, अरत होना; काम रिगइमाः सथना, मॅलना (हाथ); अंडे सेनाः (यावलका) सील साकर धका-सा ही जाना । -बैटा-टाला-वि० वैदार, निठहा । -बैटा भात-पु॰ पानी और चावलको पक साथ आगपर चढाकर पकाया हुआ भात । —बैठी-रोटी-खी० विना मेहनसकी आमदनी (पेंदान आदि)। मैंडे वंड-पु॰ एक सरहकी वसरत । बंडे विटाये, बेंटे-पैठे-अ० अकारण; सुफ्तमें; अचानक। यैटनि *-छी० बैठनेकी किया या तरीका । मैठनी-खी॰ करधेमें बननेवालेके नैठनेके लिए बनी हुई यैठवाना-स॰ कि॰ निठाने, अपूनी जगहपर समाने, रीपनेका काम इसरेसे कराना । र्थेडाना~स॰ कि॰ किसीकी मृत्रि या आसनपर रियत कराना, बैठनेको शहनाः स्थापित करनाः अपनी जगहपर रियत करनाः सवार करानाः जमाना, जहनाः अपनी जगहपर काला (सस, जोड़); दशाला, पिचकाला (फीड़ा); रीपना, गापनाः घरमें बाल लेनाः नेकार बना देना । येठारना =-स॰ क्रि॰ दे॰ 'बेठाना' । षेटाळना-स० क्ति॰ दे॰ 'बैटाना'। षेडाल-वि० [rio] विद्याल-संबंधी । - हात-पु० धर्मका भाइंपर । -प्रतिक,-प्रती(तिन)-वि॰ धर्मका आई-पर करनेवाला, होंगी। र्यद्रना क-ए० मि० दे० विद्रना'। र्षण-पु॰ [मं०] बॉसकी चीनें बनानेवाला । धेत-स्वा॰[अ०] शेर, एव । पु॰ घर, आल्य; स्वान । च्यामी –सी० पथ-पाठकी प्रतियोगिता; अंत्यासुरी । येतरनी-मी० दे० 'वैतरणी' । र्यताल-पु॰ नेनालः रत्ततिपाठकः माटः एक प्रेतयोनि । धनासिक-पु॰ दे॰ 'देनाहिक'। र्षेतुन्दराटा –पु॰ [अ॰] शीचान्त्र्य, पारााना ।

वैतलमकदस-प्र• [अ०] यहश्रहम । बैतलाह-प० बि०ो सदाका घरः खानएकावा । बैद≠~प० दे० 'वैद्य'। -ई-सी० वैद्यका पेशा। चैद्याई*−स्ती० चिकित्सा, उपचार I बैटर्य-४० दे॰ 'वैदर्य'। वैदेही-सी० दे॰ 'वैदेही'। ਹੌਜਾਂ≑⊸ਧ੦ ਰਚਜ਼, ਬੀਲ I बैततेय-प॰ दे॰ 'वैततेय' । बना!-प० टे॰ 'वायन': टे॰ 'वे हा'। # म० कि० बीना। बेपार-पु॰ दे॰ 'ब्यापार'। बैपारी-प॰ दे॰ 'न्यापारी' । वेयर*−सी० सी I बैयाँ = अ॰ घटनोंके वल । वैद्या#--प॰ वैसर । बरंग-वि॰ अं॰ 'बेयरिंग'! (चिट्टी, पारसलक्षादि) जिसका महत्त्व मेजनेवालेने न चुकाया हो। स्व -सीटना-विगा काम हर, विफल लीटना । बैर-प॰ दे॰ 'वेर': शतुमान, दुइमनी; विरोध, दुराई। अ॰ ~कादना,-लेना-बदला हेना । -रानना-शहता करना (लडनेकी तैयार होता?) । -पटना•~कर धेरक-ए० अ०] शहा, निवास । चरख#-पृ० दे॰ 'वेरक'। धेरन, चेरिन-सी॰ शत्र सी: सीत । **बेरा** ~प्र• चपरासी, बेयरा । बैराखी-सी० पक गहना, बरेखी । बैरागा, धेरास्य-पुरु देव 'वैरास्य' । बैरागर - प॰ खानि, आकर । येरासी-य॰ बेष्णव साधभीका यक भेद बेराना#--अ॰ कि॰ बातधस्त होनाः दे॰ 'बीराना'। ग्रॅरिस्टर-४० अं०ो देव 'वारिस्टर' । बैरी-वि॰, पु॰ हुइमन, विरोधी । बैल-वि॰ [सं॰] दिलमें रहनेवाला; दिलमें रहनेवाले जंतुओं से संबंध रखनेवाला । पु॰ [हि॰] गो-जातिका सर जी अनेक देशों में कृषिका मुख्य आधार है। वि॰ मूर्छं, निवंदि (ला॰) । -बाड़ी-सी॰ देल हारा खीची वानेवाली गारी । बैलर−प॰ दे॰ 'बायलर'। बैळन-पु॰ अं॰] इवासे इलकी गैससे मरा हुआ स्वरसा वैका जो भाषाशमें उत्ता है; गुम्बारा । र्यट्य-वि॰ [सं॰] देछ वृद्य-संदंधी; बेलको स्कृतीका बना दुभा; बैडके बृहोंसे पूर्ण । पु॰ बेडका फल । वैषक-पु॰ [मं॰] जानमें पेंसे दुए या शिकारी जतुके मारे द्वय जानवरका मांस । वैसंतर, वैर्मद्र - पु॰ वैरवानर, अनि । वस-सी० बदम, उप्र; जवानी । पुरु श्विदीका एक भेदः रै वैदय । सु॰ -चड़ना-जवानी आना । र्यमना॰--भ० कि॰ ३० 'ईटसा'। येनुलमाल-पु• [घ०] गार्ववनिक क्षोषः रावकीराः लावा-र्थसर-पु॰ जुलारीका यह की बार, देवी । बमवादा, बमवारा-पु॰ अन्यका परिएमी मान ।

रखते या भरकर अन्यत्र भेजते, ले नाते हैं; मुँगरू। योरिया-सी॰ छोटा बोरा । पु॰ [फा॰] खजूरके पत्तींकी चराई । -बाफ्र-प्र० चराई बनानेवाला । स् ० -बंधना उठाना या समेटना-चल देनाः रास्ता छेना ।-सम्हा-लना-चलनेकी तैयारी करना।

योरी-स्ती॰ छोटा बोरा ।

योरो-पु॰ एक तरहका थान ।

योर्ड-पु० [अं०] लक्ड़ीका तस्ता; दफ्ती; कमेटी, मंडल; कार्य-विशेषके लिए स्थापित (सरकारी) मंडल, विमाग (रेलवे बोर्ट); म्युनिसियल बोर्ड; जिला बोर्ड । -आय **ढाइरेक्टर्स** --पु॰ संचालक्रमंडल ।

बोर्दिग-हाउस-पु॰ [अं॰] छात्रावास।

बोल-पु॰ एक गंधद्रव्य, रसगंध; वचन, जो कुछ बोला जाय, बात; श्रम्दः गीतका द्वतश जो गाया या बजाया जायः किसी बाजेकी ध्वतिः तानाः भंख्याः प्रतिद्या । "चाल-स्री० बातचीतः साधारण व्यवहारकी भाषा, रोजिक बोलनेका दंग, रोजमर्रा; बातचीतका संबंध (-बंद होना)।-तान-छो० संगीतके दुकड़ोंको मूल रूपसे भिन्न भाकाप या तानके रूपमें रखकर गाना। मु॰ -बाला होना-पदती-चदती होनाः मान-प्रतिष्ठा अधिक होना । भारता-व्यंग्य करना ।

बोलता-वि॰ बोलता हुआ; बाचाल; सजीव, सप्राण । पु॰ माणः भारमा ।

बोलती-बि॰ सी॰ बोलती हुई। सी॰ बोलनेकी शक्ति। मु॰ न्धंद होना-बोल न सक्ना; रुजा वा दुःखके अविरेक्से मुँइसे बील न नियलना ।

बोलनहार#-पु॰ आत्मा, बोलता ।

बोछना-अ॰ क्रि॰ मुँहसे शुब्द, आवाज निकालना; शब्द करना (बाजे, पेर आदिका); चटलना (लकड़ी); रोक टीक करनाः भाषण करना । स० कि० कहनाः आहा देनाः जवाद देना; * मुलाना, पुकारना; मुल्दाना; * जानना; ऐर्छार करना। मु॰ घोल जाना-धतम हो जानाः जवाब देना, कामके लायक न रहनाः हिम्मत हार आना। योलि पठाना#-दुला भेजना ।

थोलवाना-स॰ कि॰ कहवानाः दे॰ 'मुख्याना'।

बोलवाला-पु॰ एक सदाबहार पेड़ ।

षोलरोविक-पु॰ शनिकवर्गके अधिनायवत्त्वका समर्थक । बोलसर-पु॰ मीलसिरीः एक तरहका मोहा।

थोलाचाली†=स्त्री॰ बातचीतः बातचीतका संबंध । थोलाना~स॰ क्रि॰ दे॰ 'गुलाना'।

बोलावा-पु॰ दे॰ 'बुलावा'।

योली-सी॰ बोल, वचन; भाषा, बोल-चाल; जीलामदी मावाज, स्रिदारको औरसे लगाया गया चीत्रका दाम; ≠र्थःव, पारती; पट्टा-पश्चियोको व्यावात। —टोली—स्ता॰ व्यंग्य, बटाहा (-मारना)। -दार-पु० वह असामी विभे गेत दिना लिसा-पड़ीके दिया गया हो। मु॰ --बसना-दे॰ 'बोली मारना' । -बोलना-व्यंग्य करनाः • फर्मी बमना; नीलाममें चीजके दाम छनाना।-सार्ना-

साने देना, आवाज वृत्पनः ।

योवना - स॰ कि॰ बोना ।

बोवाई-सी॰ दे॰ 'बोआई'। बोवाना-स॰ कि॰ दे॰ 'नोआना' । बोह-खी॰ दुबदी !

बोहनी-खी॰ पहली विकी। बोहित, बोह्थ - पु॰ नाव, बहाज।

चोहित्थ-पु॰ दे॰ 'वोहित्थ'। बॅडिश-सी॰ लंबी ट**ह**नी: लता ।

बींड्ना =-अ॰ कि॰ टहनी फेंकना; दूरतक फैलना; आगे बदनाः लिपदनाः ।

बौंहर#~पु॰ दे॰ 'बवंहर'।

बौंदी-सी॰ कचा, छोटा फल, दोंडी; फली: दमरी,

बौआना । - अ॰ कि॰ सपनेमें प्रलाप यहना । बौखल-वि॰ बदहवास, विश्विप्त १ बीखराना-अ० कि० होश-हवासमें न रहना, विक्षिप्तकेसे

काम करनाः कोधसे पायल हो उठना । बौखलाहट-स्त्री॰ बदहवासी, विक्षिप्तता; मोधावेश ।

बौखा-सी० हवाका तेज झोंका । बीछाइ-स्री॰ दे॰ 'बीछार'।

बौद्धार-स्वी॰ हवाके झोंकेसे तिरधी होकर गिरनेवाली बूँदें। वर्षाः लड़ीः भरमार (करना, पहना, होना) ।

धौडना#-स॰ कि॰ मतवाला होना । **बीहम−**वि॰ पागल, समकी ।

घोडहा-वि॰ वीइम, पागल । यौद्ध-वि॰ [सं॰] बुद्धि-संबंधी: बुद्ध-मंबंधी । पु॰ बुद्धप्रवृतित धर्मका अनुवायी । -धर्मा-सत-प्र॰ युद्ध हारा प्रवृतित

बीध-पु० [सं०] बुधका पुत्र, पुरुरवा ।

बीधायन-पु॰ [सं॰] दश्यसूत्रके रचिना एक ऋषि । बीना-वि॰ वहुत छोटे या ठिंगने यहका वामन । पु० ऐसा

धीर-पु॰ आमकी मंत्ररी, मीर्। बीरईं! −सी० पागलपन ।

बौरना-अ॰ कि॰ आममें भीर लगना, आमका फुलना। बीरहा#-वि॰ वीशम, पायल । दौरा-दि॰ पागळ; भोला-भाळा; गूँगा। --है॰-स्तै॰

बावछापन ।

बौराना =-अ॰ फि॰ बावला, पागल हो जाना । स॰ फि॰ उन्मस करना; बहदाना ।

थौराह#−वि॰ दे॰ 'बावला'। बौरी#-विण सीण बाउली, पगली । वीलसिरी-सी॰ मौलमिरी।

योहर•--स्तै॰ वपु, दलहिन । र्यंग-पु॰ चुरकी, सामा: गुहार्थ । ट्यंजन-पु॰ दे॰ 'व्यंवन'।

स्यसि:-सी॰, प॰ दे॰ 'व्यक्ति'। हयञ्चन-पु॰ दे॰ 'ब्ववन'।

व्यतीतना =- अ० कि० व्यनीत होना, गुजरना । हवया-की० दे० 'व्यक्ष'।

व्यर्लीक-वि०, पु॰ दे॰ 'ब्यूग्रीक'।

~गायग्री −स्रो० एक वैदिक छंद । माह्मथ-वि॰ [सं॰] दे॰ 'ब्राह्म'। विगेष्ट-पु० [सं०] सेनाका एक विमाग । ब्रिगेडियर-पु॰ [अं॰] ब्रिगेडका नायक । -जनरख-पु॰ निगेटियर । ब्रिटिश-वि॰ [अं॰] ब्रिटेनका, अंग्रेकी । -राज-पु॰ . अंग्रेजी हुकूमत । -द्वीप-पु॰ इंग्लैंड, वेल्स और स्काट-रुँड, ग्रेट ब्रिटेन । ब्रिटेन-पु० [अं०] इंग्लेड, वेश्स और स्काटलंड। बीइ-पु॰, बीड़ा-सी॰ दे॰ 'ब्रीड' ! बीड्ना*-अ० कि० लजित होना। यीवियर-पु० अ० । छापेके अक्षरो(टाइप)का एक भेद। प्रव, प्रवाण-वि॰ [सं॰] अपने आपको बहनेवाला, होनेका

दावा करनेवाला (बाह्मणमव, क्षत्रियम्ब)। लेक-प॰ [अं॰] पहिये या गतिचलको गति रोकनेवाला यंत्र; दे॰ वेकवान । -वान-पु॰ रेलमें गार्टका हच्या निसमें बेक लगा होता है। भु॰ -लगाना-गाड़ी आदि-को रोकनेके छिए बेकको दवाना। ब्हाउज-पु॰ [अं॰] विलायतो दंगकी जनाना करती । -पीस-प॰ साडीके साथ बना हुआ करतीका कपडा । ब्लाक-पु॰ [बं॰] चित्र, लिखान्ट, बंपीत्र किये हुए मैटर आदिका ताँने, जस्ते आदिपर नना हुआ ठप्पाः गैरआवाद जगहमें वसनेवाछेको राज्यकी ओरसे दिया जानेवाला जमीनका दुकड़ा; भूमिखंड; गृहसमूह; किसी यह मकानका बद खंड जो अपने आपमें पूर्ण हो। हलेटक -पु॰ [सं॰] जाल, फंदा।

मंगी(तिन्)-वि॰ [सं०] भंग हो जानेवाला, नाशवान :

भंग करनेवाला ।

भ-देवनागरी वर्णमालामें प्रवर्गका चौधा वर्ण । उद्यारण-स्थान क्षीप्र। भंकार-पु० भीषण शब्दः भनमनाहट। मंकारी-सी॰ [सं॰] डॉस; फनगा । मंका(कत)-वि०, पु० [सं०] तोइने, भंग करनेवाला । भंक्ति-सा॰ [सं॰] ट्रटने, खंडित होनेका भाव। मंग-पु॰ [मं॰] टूटना, खंडित होना; खंड, विषटन; ध्वंस, नाश (राज्यमंग, सत्वभंग); पराजय; संकोच; छहर; धुकावः अस्वीकारः प्राप्तः टेढापनः छलः कृटिलताः वाभाः भयः सोताः लकवा । -नय-प० विच्न-वाधाओंको दर करना । -चासा-स्रीव इल्डी । -सार्थ-विव कृटिल, र्भग-सी० भाँग। - घुटना-पु० भाँग घोटनेका सीटा। -ऋरोश-पु॰ माँग वेचनेवाला ! भैगद्द-वि॰ बहुत भाँग पीनेवाला, भँगेडी । - खाना-पु॰ मॉन छाननेका स्थान। भंगदी-वि॰ दे॰ 'मेंगेदी। भंगना - अ॰ क्रि॰ टूटना; पराजित दोना। सि॰ कि॰ तोइनाः नष्ट क(ना ! भगरा-पु॰ एक बूटी, मैंगरेवा; दे॰ 'मैंगेरा' । भगराज-पु॰ एक चिदियाः भँगरा । भँगरेया-स्ता भगराज । भंगा-सी॰ [सं॰] भाँग । -कट-पु॰ साँगका पराग । -स्वन-पु॰ महामारतोक्त एक राजवि। भेगान-पु॰ [सं॰] एक सरहकी मछली। भॅगार-पु॰ दे॰ 'भगाइ' । सी॰ कृहा-सरकट, कनवार-'बाहर भेष बनाइया भीतर भरी भेगार'-सासी। भंगारी-मी० [मं०] दे० 'संबारी'। मंगि-सी॰ [सं॰] देरापन, कुटिल्ता; रुद्दर, विच्छेद; इंग; वेश-दिन्यासः बहानाः छलः स्यंगः विनय । मंतिसा(मन्)-सी॰ [सं॰] दगता, कुटिवता ।. मंगी-पु॰ मैले, मूहा-करकारी सकार्य करनेवाणी एक अहूत नातिः उस जातिका स्यक्ति । वि॰ भाँग छाननेवाला । स्तीव [मेव] देव 'मिन'।

भंगील-पु॰ [सं॰] शानेंद्रिय संबंधी दोव । भंगर-वि॰ [सं॰] मंग दोनेवाला; अधिक दिश न दिकने-वाला; टेढ़ा, कुटिल; छली, वेईमान । पु॰ नदीका मोह । मंगरा-छी॰ [सं॰] अतिविषाः प्रयंग्र । भॅगेड़ी-वि॰ माँग पीनेका आदी, बहुत माँग पीनेवाला। भैंगेरा, भँगेला-पु॰ भाँगके रेशेका बना हुआ कपड़ा। भंग्य-पुर शिर् भाँगका रीत । विर भंग करने, होइने योग्य । भंजक-वि॰, पु॰ [सं॰] भंग करनेवाला, तोइनेवाला । भंजन-पु॰ [सं॰] भंग करना, सोहना; ध्वंस, नाश करना; दंतदाय । वि॰ भंग धरनेवाला; पोइर देनेवाला । भंजनक-पृ० [सं०] मुँदका देवा हो जाना, रूपवा ! भंजना-सी॰ [सं०] ट्राना, विसरना; नाश; पीहा; वाथा बालना । • स॰ फ्रि॰ तोइना । भैजना-अ॰ कि॰ भैजाया जानाः भाँजा जानाः यटा जानाः। भंजा-सी॰ [मं॰] अन्नपूर्णा । भैजाई-छी॰ मॉबनेकी किया या उत्तरतः नीर आदि अनानेके लिए दी जानेवाली रक्ता। मैजाना! - स॰ कि॰ तुश्वानाः सुनाना (शिववेका); भैत्र-वाना (रसी मादिका)। भंजी(जिन्)-वि॰ [सं०] तीइनेवाला, नष्ट करनेवाला । भंटाां चप्र∘ वैगन । भंटाकी-सी॰ [सं॰] भंटा । भंद्रक, भंट्रक-पु॰ [सं॰] श्योनाक वृक्ष । भंड-पु॰ पात्र, बरतन; भंदा'का समासगत रूप ।-फोब्-पु॰ मिट्टीके बरतनीको एककर तो इदेना या उनका तोहा जानाः भंटाफोह । भंड-पु॰ [मं०] भाँड, [अरहील बार्ने बक्तेबाला । वि० बरलील बार्ने कहनेवाला निर्लेखा पालंदी । -सपस्वी-(स्थिन्)-पु॰ बना दुभा तरस्वी, मापु । -हासिनी-सी॰ येरवा। भेडक-पु० [मे०] संदर्शिय।

भकुड़ा!-पु॰ तोषमें बत्ती महतेका गर्व ! मकोसना-स॰ क्रि॰ मक्षण करना; जस्दी-जल्दी सागा, हुँसना !

मकोस्-वि॰ मजोसनेवाला । मिक्का-ली॰ [सं॰] झाँगुर । भक्कप्र-पु॰ सि॰] एक तरहवी मछली ।

भक्त-वि० सि॰) अनुसारी, वकादार, अनुमतः असिद्धकः विभाजितः चाहा हुआ; पृजितः पकाया हुआ। पु॰ भोजनः मन्नः भातः भागः उपासकः सेवकः। —कसः, नपान्न नपु॰

श्रप्त, मातः आगः ज्यासकः सेवकः। —कंसः, —पात्र—पुरु ।

भावकी भाकी। —क्स्स—पुरु एक तरहकः पुर्व। —क्षार—

ए रहोस्या। —गृहन-पुरु श्रीद्र शिशुमोको मेत्रशाला।
—च्छंद—पुरु भोजनकी समय प्रवाया जानेवाला।

रक्ष प्राचीन वाथ। —हाता(नु), —हायकः,—दायी(पिन्)—दिरु, पुरु अरणःभीयण करनेवाला। —दासपुरु वह दास नित समके बरुकेमै मालिकसे केवल भीजन

मिखता रहे। —हेय-पुरु मंदामिन।—पुरु अपलका औरः माँद (?)। —चस्डछक —वि० देर 'भक्तकस्त्रल"।

—मंद्र,—मंद्रक—पुरु भातका माँच। —यस्तर—दिश्

मक्की प्यार करनेवाला, भक्के प्रति स्तेष्ट्रकु ।

—क्षरः—मुक्कि—मुक्कि भीजनवालाः भर्मिरदेशका

'स्थान । –सिक्थ-पु० दे० 'भक्तमंड' । भक्ता(क्तु)–वि०, पु० [मं०] पूजक, आराधक ।

भक्ताई • न्ही० भक्ति।

मक्ताक[क्रान-को० [कं0] जानेकी रुणा, भूवा ।
मित-को० [कं0] सेवा, आरायना, रैयर या पृत्य व्यक्तिके प्रति अरवतुराम; अद्या विभाग (तेंके, क्षेत्रमकिं);
निमागरेखा; रोगप्रवृत्तिः एक एता । न्यस्य-वि० सेवासे
प्राप्य (विवा) । -चडेन-पु० रेरामां द्वारा की जानेकान्ये
विप्रकारों, वेधनके विव्दुर्शनिकंत प्रता आर्थित । न्यविकवश्य भक्तिसिंहा । न्यव्य-वि० भक्तिमं छोन । न्यायनवि० शक्ति योग्य, अद्येष । न्यामं पु० नोध्यासिकं
तीन मानोमंसे एक। न्योग-पु० भक्तिरूप योग, भक्तिकं
तारा अरवान्त्रों पानेकी स्वाधना । न्यस्य-पु० रैयवर्दिः
प्रति उत्तरक अनुराग, रति। -छ-वि० वकादार, विधासी
(पास, नोवर्र) । न्यूय-पु० चादिन्यञ्चन अतिप्रतिप्रता प्रत्यान्यों ।

मिक्तिमान्(मन्)-वि॰ [गं॰] भक्तियुक्त । [सी॰ मिकि-मना' ।]

भक्तीपसाधक-पु० [गं०] रहीरया, पाचक । मक्त-पु० [गं०] भीतवा, साता, भाषा । -कार-पु० स्वादा रहीरया । -पाया-सी० पानकी देव । मसक-पि० [गं०] सातिवादा, भशा वस्तेवाद्या, पेटू । पु॰ आदार ।

मक्षरक-पु॰ [न॰] छोटा गोरगरू । मक्षण-पु॰ [नं॰] साना; दशिमे काटकर स्थाना । वि॰ सानेवाला ।

मसाजीय-१३० [मं०] मध्य करने घोष्य । मधना॰-स० क्रि० भध्य करना, बाजा । । मसयिता(न)-वि० पु० [मं०] भध्य करनेवाला । भक्षिका-सी॰ (सं॰) बाहार; खाना (समासातमें)। भक्षित-वि॰ (सं॰) खाया हुआ। पु॰ आहार। -शेप-पु॰ जुड़न।

भक्षी(क्षिन्)-वि॰ [सं॰] सानेवाला । भक्ष-वि॰ सिं॰] साने-योग्य । पु॰ वह जो खाया जाय,

भहार ! -कार-पु॰ रसोश्या, पाचक ! -वस्तु-स्नी॰ खानेकी चीज !

भक्ष्याभक्ष्य-वि॰ [सं॰] खाच-अखाच (पदार्थ) । अख*-पु॰ भक्ष्य, आहार ।

मखना*-स॰ कि साना, भश्रम वरना । - रं. े मखीर्र -सी॰ एक घास ।

भगैदर-पु॰ [सं॰] गुदावर्तके किनारे होनेवाला फोड़ा जो फूटनेपर नासर हो जाता है।

भूर-वर्षर नायर हा बाता हा भाग-पु [बंद) युद्ध [बंद्ध वा हा भाग-पु [बंद) युद्ध [बंद्ध वा व्याहरत्यों भंते पढ़ा श्रेष (श्रीभाय) जान और वेराय; सीमाय्य जान और वेराय; सीमाय्य माहार्य्य इच्छा; कांत्रि, मोद्धा भागे योति; गुद्ध और अंकोच वोषका स्थान; उत्तरा-फाट्यानी महत्र भन्त; वहा -काम-दि॰ संभोगका इच्छुक ।-म-पु विवा -वृत्त वु आपवार्य विवाद कर राजा जो कुरहोल कुरत्य राजा भा ।-वृत्य -पु वहा कि स्थान ।-वृत्य -पु वहा कि स्थान ।-वृत्य -पु वहा से साथ ।-वृत्य -पु वहा से साथ ।-वृत्य -पु वहा हो साथ अंकोच के स्थान ।-वृत्य -पु वहा हो साथ ।-वृत्य -पु वहा हो साथ ।-वृत्य -पु वहा ।-मादा -च्छा क्या ।-मादा -च्छा कुरत्य ।-मादा -छा वहा हु सु अंकु अंकु कुरत्य ।-मादा -छा कुर्य कुर्य हु सु ।-मादा -छा कुर्य कुर्य हु सु ।-चा साथ ।-चा कुरत्य कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्य कुर्य कुर्य ।-मादा कुर्य ।-मादा कुर्य कुर्

डंगोरी । भगत-वि॰ मक, भगवद्मजनमें ह्या रहतेबाला; तिरा-मियभोजी । स्त्रि॰ 'भगतिल' !] पु॰ वैध्यव साधुः राज-पुतानाकी एक जानि, मगतिया; होत्तीमें बनावा जानेबाडा एक तरहज स्वोग । न्याउड -वि॰ २० ' भजतसाड'।

-वाज-पु॰ र्लाडे नचानेवाला । भगति, भगती∗-खा॰ दे॰ 'भक्ति' ।

भगतिया-पु॰ राजपूतानामें बसनेवाली एक जाति यो गाने-प्रजानका पेद्या करती है। भगद्द, भगद्र-सी० बदुत-से लोगोंका बदहबास होकर

एक साथ मागना (एइना-मचना) ! भगन•-वि॰ दे॰ 'मग्न'। भगना-दु॰ मानजा ! अ० कि॰ दे॰ 'मागना'। .

भगना-पु॰ मानजा । अ० कि० दे० 'बागना' । . भगनी-सी० दे० 'बागनी' ।

भगर=-पु॰ दे॰ 'भगल' । भगरना-अ॰ हि॰ ससेमें स्मे दुए अनावका गर्मीन

सहने लगना । भगस•-पु॰ छन, पोरंबाओ; बाजीयरी । : -

भगश्य-पुर छन्, याग्यामा बाजागरा । भगश्य-विक छन्मा बाजागरा स्रोत्रामा । भगर्यत्व-पुर देव (मार्ग) ।

अगयती - गा॰ [शं॰] दुगाँ; स्थमो; देवी; सम्मान्य सी। अगयन्यदी - गाँ॰ [सं॰] संगा।

48-E

भजेन्य, भज्य-दि॰ [तं॰] दे॰ 'मजनीय'। भट-पु॰ [तं॰] योद्धा; सैनिकः, एक वर्णसंकर जातिः दासः कृतर। -देरक-पु॰ फीनकी दुकती। -चलाम-पु॰ वीर; सेना। -भेरा॰-पु॰ मुठभेरः, भिरंत, टकरः, अचा-कक सामना या भेट होता।

भदद्दे-की० शुठी तारीक, चावलुती, माटवन । भदकुदाई !-को० दे० 'सटक्टैया' ! भदकदाई !-को० दे० 'सटक्टैया' ! भटकटेया-को० दक वनीचिप, बंटकारी । भटकता-अ० कि० रास्ता भूठना, रास्ता भूठकर इधर-उधर किरना; ज्यर्थ धूमना; तलाशमें किरना; जममें

पहना; * चूक जाना। भटका#-पु० व्यथं घूमनेकी क्रिया; चकर-र्दार न पावै सन्दर्का फिरि फिरि मटका खायं-साखी।

सन्दर्का फिर फिर भटका खाय —साखा । भटकाना—स॰ कि॰ गलत रास्ता बताना, बहकाना ।

भटकेया*-पु॰ भटकनेवाला । भटकोहाँ*-वि॰ भटकानेवाला ।

भटतीतर-पु॰ एक चिड़िया । भटनास, भटवाँस†-खी॰ एक हता ।

भटनेर-पु॰ सिंधुके पूर्वी तटपर स्थित एक प्राचीन राज-थानी।

भटनेरा-पु॰ भटनेरका रहनेवाला; वैदयोंकी एक उपनाति । भटार्-पु॰ भटा, वैगम ।

भदिवारा-पु॰ भटा, वर्गम । भदिवारा-पु॰ दे॰ 'भठिवारा' ।

मदियारी-छो॰ दे॰ 'मिट्रयारी'; एक संकर रागिनी। भटिहारिन, भटिहारी-छो॰ दे॰ 'मिट्रहारिन'। भट्ट-छो॰ ससी, श्रक्ति (बराबरीकी लोका संबोधन)।

भटेरा!-षु० वैदयांकी एक उपजाति । भटेपा#-सी० दे० 'भटकटेवा' ।

न्दर्भा=रता॰ द्रश्यस्त्रद्धाः। भह्-यु (चित्र) माहः परितः साक्षिणात्य मात्राणीकी चक्र वतापिः च्यामी (नाटकादिमें राजाणीका संशेषका)। —नारायण-यु॰ वेणीतहार (संस्कृत) नाटकके स्वयिता। महायाय-यु॰ (चं) दर्शनद्वासका परितः, सम्मानित अध्यापक (परवीहरूमी मुद्रकः)।

सहार-पुरु (संत) पूज्य, माननीय (पर्वारूपमें प्रयुक्त) । महारक-विरु (संत) पूज्य, माननीय । पुरु राजा (नार); मुनिः तपरवी; पंटित; चुद्दैःदेवता । न्यार,-चास्तर-पुरु

रविवार । महारिका-सी॰ [सं॰] सन्मान्य सी, देवी ।

सहि—सी॰ [से॰] श्रीयर सामीशे पुत्र महिकृत (कुछ विद्यानीश मतसे भर्तृहरिकृत) संस्कृत महाकान्य । भहिनी—सी॰ [सं॰] अगमिविक रानी; बाह्मणी; सम्मान्य

सी। स्वी।

भहोजि-पु० [सं०] सिद्धांतकीमुदीके कर्ता । भहा-पु० बंधी असी: वेर्डे साथि स्वयोगा

भहा-पु॰ दशी मही। इट आदि पकानेका पनावाः यहा पूचा निषयर अहाद नहाबर ग्राप्त, भोवके लिए पृरियों भारि पनायो जाये। मही-न्यां आस कामांके लिए बना पुश्चा वस्ता पूखाः

मय बनानेका स्थानः + माँद । भठियानां - भ० कि० माटा भाना ।

मटिपारसाना-पु॰ महिपारीसा यह वह जगह उहाँ

बहुत शोरपुर होता हो; कमोने, असल्य लोगोंकी बैठक । भिटेबारन, भटिबारिन, भटिबारी-की॰ भटिबारेकी की; रुक्की औरत । मु॰ (भटिबारिनों)की तरह रुक्ना-बिहाते, उँगर्लिबों भादि चमकाते और गंदी गोलियों कहे दूर रुक्ना। भटिबां कहे दूर रुक्ना।

भाठवारपन-पु॰ भाठवारको पशाः भाठवाराको तरह टहना-श्रगहना, कभीनापन । भटिवारा-पु॰ सरावर्षे यात्रियोके टिकने, छाने-पीनेका प्रवंध करनेवाङा ।

भठिवाल⊶पु॰ माटा । भठिहारिन∸सी॰ मठिवारिन ।

भड-पु॰ [सं॰] पक वर्णसंकर जाति (प्रा॰)। महक-सी॰ चमक समक, भड़कीलापन; भड़कनेका भाव,

शिशक । -दार-वि॰ चमक दमकवाला । भद्कना-च॰ कि॰ प्रज्वलित होना, यल उठना, जोरसे जलने स्थना; कुद होना; चौकना, विदक्ता ।

महकाना-सुरु किर आगको तेत्र करना, प्रस्काना -उत्तेत्रित करना, बहाना देना; बह्माना; बह्माना, बहाना। भड़कीला करना, बहाना देना; बह्माना; बह्माना, बहाना।

-पून-पु॰ चमक-दमकः सहजीता होनेजा माथ । मक्केल-वि॰ महक्तेनाला, चौक्ते, विदक्तेनाला । मक्सेह-खू० वहे दोल, पोली चीज आदिकी आवाज। किसी चीजके बोरसे पिरनेकी आवाज; वजवास ।

मङ्भदाना न्स० कि० 'सङ्भद' आवाज पैदा करना'। श्र० कि० 'सङ्भङ' आवाज दोना । भक्षभट्टिया नवि० वक्षी, टीग मारनेवाला ।

सबसाइया नावण बका, टाव सारतवाला । भड़साइ नपुण एक बँटीला पीषा, घमोषा । भड़सूँचा नपुण एक बिंदू जाति जो दाना भूनने और भाड

होकनेका काम करती है, गुजवा। मह्या-पु॰ दे॰ 'मह आ'।

अदसाई, भदसायी-सी॰ माह। भदार=-पु॰ दे॰ 'संहार'।

महास-सी॰ दिलमें भरी हुई बातें, ग्रुवार, दिलका शुखार (निकालना)। भदिहा-पु॰ चोर ।-ई॰-सी॰ चोरा। स॰ चोरका तरह

-'इत उत वितै चला महिहाई'-रामा०। भंदी -सी० ब्हाना।

भव् शा-पु॰ सफरदार्रः रंडियोंकी दलाली करनेवाला । भदेरिया-पु॰ दे॰ 'भैदेरिया' ।

भट्टर-पु॰ माझणोंकी एक (नीची) जाति जो यात्रियोंको देवररोन बादि करानी है।

भणन-पु॰ भि॰) कष्टना, क्यन; वर्णन । भणना - स॰ फ़ि॰ क्हना, वर्णन करना ।

भणित-वि॰ सि॰] बहा दुआ, कवित । पु॰ कथन; वर्गन । भणिता(न)-वि॰, पु॰ सि॰] बीसनेवाला, पक्ता । भणिति-की॰ मि॰] कपनः वाता ।

भतरीष्-पु॰ मपुरा बीर ब्रावनके शेवका एक गाँव । भतवान-पु॰ भ्याके संबंधमें होनेवाली कपी ज्योनार । भतार -पु॰ दे० 'भवार' ।

भतीया-पु॰ मार्द्श देश !

भद्रेडवर-प॰ सिं॰ी शिवका एक रूप । भवेला-सी० [सं०] वडी इलायची । भटोटनी, भट्टीदनी-छी० (सं०) वला; बागवला । भनक-स्त्री॰ धीमी, अरपष्ट ध्वनि; उड़ती हुई खबर (पडना)। भनकना * - अ० कि० वोलना । भनता*-स॰ क्रि॰ कहना । भनभनामा-अ० कि० 'भन-भन' आवान करनाः ग्रंबार भनसनाहर-स्री० धीमी आवाजः गुंजार । भनित्र - वि, पु० दे० 'भणित' । भनितिक-सी० दे० 'भणित'; रचना । सबका~प० सर्व खींचनेका यंत्र । भवकी-स्था॰ झठी धमकी, बंदर-प्रहकी । मदभड, भस्भड-स्री० भीड-भाड, भग्रम-भका। भसक-स्त्री० भसकतेका मावः भडक उठनाः तेत्र बदब । भभकता-अ० कि॰ जोरसे जल उठनाः भहकता । भगका-पु॰ दे॰ 'गवका'। मसकी−सी० टे॰ 'सब्दी'। सभरना∗-अ० कि० टरनाः धनरानाः गरमना, अमने पदना, भूछना । भभीरी*-की॰ झीग्रर। अभका~प॰ रूपट, श्रीलाः चिनवारी । वि॰ अंगारेकी सरह , ভাল মুখ্যকিন । सभावा#-प॰ दे॰ 'समका' । मभूत-सी॰ वह भरम जिसे शिवमक श्रीरपर लगाते हैं, -यहर्षंड, धूनी आदिकी राख । अ०-रमाना-वैराग्य भारण करना, साध हो जाना । ममृद्र-की० दे० 'मुमल'। ममीरी*-की॰ क्षीग्रर-'बर्पा भये तें जैसे नोडत भगीरी खरः'ं−संदर । भयंकर-वि० [सं०] हरावना, भयोत्पादक। पु० एक सरहका छोटा उस्छ ; एक बाज । भय- * अ॰ कि॰ हुआ। पु॰ (सं॰) विषद् या अनिष्टकी र्षमावनासे उत्पन्न दुःखजनक भाव, दर, सीफ; खतराः भयानक रस ।-कंप-पुरु भयसे उरुषत्र होनेवाला कंपन । -बर,-जनक-वि॰ मय उत्पन्न करनेवाला, दशवना, खतर-गाक ।-दिविस-पु • एक रणवाय । -त्रस्त-वि॰ बहुत टरा दुआ ।-माता(त)-वि०, पु॰ भयसे खुदानेवाला । "दा-दायी(यिन्)-वि॰ भय उत्पन्न कर्नेवाहा। -दर्शा(शिन्)-बि॰ भयानक !-दान-पु॰ भयसे दिया जानेशका दान ।-द्वत-वि० हर्से भागनेवाका ।-धन-वि॰ मयानक । -नाशन-वि॰ भयका नाश करनेवाला । पु॰ विष्णु ।-नादिनी-स्वी॰ शायमाणा स्ता । -नादी-(शिन्)-वि॰ भव दूर करनेवान्य । -प्रतीकार-पु॰ भवका निवारण। -प्रदा-प्रदायी(यिन्)-वि॰ दरा-यना । -प्रदर्शन-पु॰ गय दिसाना, दराना । -प्राह्मण-पु॰ भएना मादागस्य बताबार रातरेने बचनेबा उपाय बरनेवाला। -भीत-वि० [हि०] हरा दुआ। -श्रष्ट--विक प्रकर भागा पुत्रा । --मोचन-विक भवते सुकाने-बाटा। -वर्जिता-सी॰ दी गाँबी है बीयकी छोमा जी

वादी-प्रतिवादी आपसमें गिलकर मान लें। -विद्वल-वि॰ टरसे जिसकी बद्धि ठियाने नहीं, भयाकल ।-इसह-प्रण भय उपस्थित होनेपर सेनाके रक्षार्थ रचा जानेवाला व्यहांबहोष । −इतिल-वि॰ टरपोक.। −हात्य~वि॰ निर्भय । -स्थान-पुर भवका कारण । -हरण,-हर्ता-(नं),-हारक,-हारी(रिन्)-वि॰ भय दर कर देनेवाला । —हेत-प० भयका कारण । भयवाद-पु॰ माई-वंद । भया-सी० सिं०] एक राष्ट्रसी जी कालकी बहन थी। * अ०.कि० इसा । भयाक्छ-वि॰ [सं॰] हरसे घनराया हुआ, गय-विह्नल । भयाकांत-वि॰ [सं॰] भवसे अभिभत । अयातीसार-प्र० सिं०] भयके कारण होनेवाला अतीसार। भयात्र-वि॰ [सं॰] दे॰ 'भयाकुल' । भयान#-वि॰ भवानक। भयानक-वि॰ सिं॰ो भय जरपन्न करनेवाला, टरावना । पुरु बाघा राहु: अयः काल्यके नी रसंसित एक जिसका स्थायी भाव भय है (सा०)।. भयाना#-अ॰ कि॰ हरना । स॰ कि॰ हराना । भयान्वित-वि॰ [सं॰] भयसे युक्त, दरा हुआ। भयापह-वि॰ [सं॰] भय दूर करनेवाला । भयायाध-वि॰ [सं॰] भवसे विचितित न होनेवाला । ... भयारा :- वि॰ भयानक । भयातं-वि॰ [सं॰] टरा हुआ । भयावदीण-वि॰ [सं॰] दे॰ 'मयविह्नल' । भयावन#-वि॰ दे॰ 'भयावना' । भयाधना-वि० दरावना । भयाबह-वि॰ सि॰ भयजनक, खतरनाक । भयोपशम-पु॰ [सं॰] भवका शमन, श्रीरसाहन । भस्या-प॰ दे॰ 'गैवा' । **भरंड-पु॰** [सं॰] स्वामी; राजा; वैरु; कीड़ा । भारत - खी॰ भारत, भग । भर-पु॰ एक अञ्चत हिंदू जाति । वि॰ सद, पुरा, सारा । * अ॰ के बल, द्वारा। -पाई-आ॰ कर पाने, खुकना हो जानेका मायः मर पाने, वेबाकीकी रसीद ।-पूर-वि० परी तरह भरा हुआ, परिपूर्ण । अ० परे लीरन । -चेट-अ॰ जी गरकर, पेड भरकर। -सक-अ॰ शक्तिभर, जितमा दी सके। मु०-पाना-पूरा पावना वयाल ही जानाः विवेदा पूल पाना । भर-पु॰ [सं॰] भार: देर, समूद: आधिवय, अतिरेक: पीनताः एक तौलः चोरीः स्तुतिः आज्ञमण । वि॰ '(समा-सांतमे) भरण करनेवाला; यहन करनेवाला । -श-वि० तेत्र जानेवाका । अरकौ-पु॰ एक चिहिया। भरकना = - अ॰ कि॰ दे॰ 'अरकना'। भरकाना - संव कि देव 'सरकाता' । शहर-पु० [मं०] नम्हार; शेवक । भरण-प॰ [रां॰] पासना पोपना धारणा सत्पादना भृति, वेतनः सर्पी नक्षत्र । दि॰ सर्प-पोषण कर्नेपाला ।

भरणी-रनी॰ [rio] २७ नक्षत्रोमेंसे दूसराह विवाहरोहें।